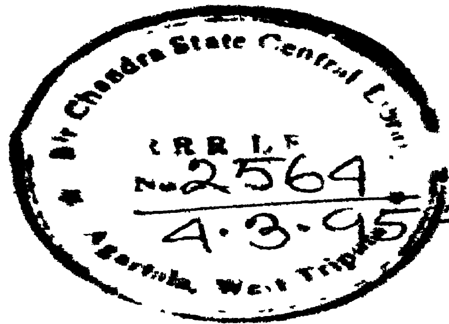
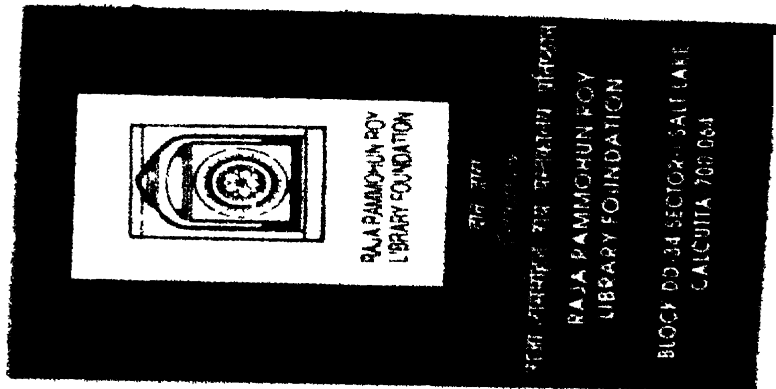
संस्कृत-हिन्दी कोश

संस्कृत - हिन्दी कोश



वामन शिवराम आप्टे



अमर पब्लिकेशन
वाराणसी (भारत)

भूमिका

[कोशकार का प्रथम प्राक्कथन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुलभ भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है यह हाई स्कूल अथवा कालिज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के पश्चवर्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदांत, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इस प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण है। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से गद्यकथा, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कालिज के अध्ययन काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह कोश भलीभांति-बल्कि कई अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के पश्चात् इसमें निहित शब्द योजना के विषय में यह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, संदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिन्हें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी को, विशेषतः आरंभकर्ता को, उपयुक्त पर्यायवाची या समानार्थक शब्द ढूंढने में ये निश्चय ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—अप्रस्तुत प्रशंसा, उपनिषद्, सांख्य, मीमांसा, स्थायिभाव, प्रवेशक, रस, वार्तिक आदि। जहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश का ही आश्रय लिया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुवलयानन्द और रसगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण शब्दचय, वाग्धारा, लोकोक्ति अथवा विशिष्ट अभिव्यंजनाओं को भी यथा स्थान रक्खा है, उदाहरण के लिए देखो—गम्, सेतु, हस्त, मयूर, धा, कृ आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः देखो—इंद्र, कार्तिकेय प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विशिष्ट यथा अतिथि, पुत्र, जाया, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० यज्ञ, मानस, वेद, हंस। कुछ आवश्यक लोकोक्तियाँ 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

छन्दों के विषय में है—इसमें गण, मात्रा, तथा परिभाषा आदि सभी आवश्यक सामग्री रख दी गई है। इसके तैयार करने में मुख्यतः वृत्तरत्नाकर और छन्दोमंजरी का ही आश्रय लिया है। परन्तु उन छंदों को भी जो माघ, भारवि, दण्डी, अथवा भट्टि ने अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त किया है, इसमें रख दिया गया है। दूसरे परिशिष्ट में कालिदास, भवभूति और बाण आदि संस्कृत के महाकवियों की कृति, तथा जन्म विवरण आदि दिया गया है। इस विषय में मैंने मैक्समूलर की 'इंडिया' तथा वल्लभदेव की सुभाषितावली की भूमिका से जो कुछ ग्रहण किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। तीसरा परिशिष्ट भौगोलिक शब्दों का संग्रह है, इसमें मैंने कनिंघम के 'एन्शेंट ज्याग्राफी' से तथा इंग्लिश संस्कृत डिक्शनरी में उपलब्ध श्री बोपदेव के निबंध से बड़ी सहायता प्राप्त की है तदर्थ मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

कोश के शब्दक्रम का ज्ञान आगे दिये गये "कोश के देखने के लिए आवश्यक निर्देश" से भली-भाँति हो सकेगा। मैं केवल एक बात पर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ कि मैंने इस कोश में सर्वत्र 'अनुस्वार' का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से चाहे यह प्रयोग सर्वथा सही न हो, तो भी छपाई की दृष्टि से सुविधाजनक है। और मुझे विश्वास है कि कोश की उपयोगिता पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाप्त करने से पूर्व मैं उन सब विविध कृतियों का कृतज्ञ हूँ जिनसे इसको तैयार करने में मुझे सहायता मिली। इसके लिए सबसे पहली रचना प्रोफ़ेसर तारानाथ तर्कवाचस्पति की 'वाचस्पत्य' है। इस कोश में दी गई सामग्री का अधिकांश उसी से लिया गया है, यद्यपि कई स्थानों पर संशोधन भी करना पड़ा है। वर्तमान संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरियों में जो शब्द, अर्थ और उद्धरण उपलब्ध नहीं हैं वे इसी कोश से लिये गये हैं। दूसरा कोश "दी संस्कृत-इंग्लिश-डिक्शनरी" प्रो॰ मोनियर विलियम्स का है जिनका मैं बहुत ऋणी हूँ। इस कोष का मैंने पर्याप्त उपयोग किया है। अतः मैं इस सहायता का आभारी हूँ। अन्त में मैं 'जर्मन वर्टरबुख' के कर्ता डा॰ रॉथ और बॉथलिंक को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। इनके कोश में अनेक उद्धरण और सन्दर्भ हैं—परन्तु अधिकांश वैदिक साहित्य से लिये गये हैं! इसके विपरीत मैंने अधिकांश उद्धरण अपने उस संग्रह से लिये हैं जो भवभूति, जगन्नाथ पंडित, राजशेखर, बाण, काव्य प्रकाश, शिशुपालवध, किरातार्जुनीय, नैषधचरित, शंकरभाष्य और वेणीसंहार आदि की सहायता से तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त उन ग्रन्थकर्ताओं और सम्पादकों का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता यदा-कदा प्राप्त करता रहा हूँ।

अन्त में मुझे विश्वास है कि 'स्टूडेंट्स संस्कृत-हिन्दी कोश' केवल उन विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी जिनके लिए यह तैयार की गई है-बल्कि संस्कृत के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकेंगे। कोई भी कृति चाहे वह कितनी ही सावधानी से क्यों न तैयार की गई हो—सर्वथा निर्दोष नहीं होती। मेरा यह कोश भी कोई अपवाद नहीं है। और विशेष रूप से उस अवस्था में जबकि इसे छापने की शीघ्रता की गई हो। अतः मैं उन व्यक्तियों से, जो इस कोश को अपनाकर मेरा सम्मान करें, यह निवेदन करता हूँ कि जहाँ कहीं इसमें वे कोई अशुद्धि देखें, अथवा इसके सुधारने के लिए कोई उत्तम सुझाव देना चाहें, तो मैं दूसरे संस्करण में उनको समावेश करने में प्रसन्नता अनुभव करूँगा।

वी॰ एस॰ आप्टे

कोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

१. शब्दों को देवनागरी वर्णों में अकारादि क्रम से रक्खा गया है।

२. पुंल्लिंग शब्दों का कर्तृकारक एकवचन रूप लिखा गया है, इसी प्रकार नपुंसक लिंग शब्दों का भी प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त रूप लिखा है। जो शब्द भिन्न भिन्न लिङ्गों में प्रयुक्त होता है, उसके आगे स्त्री० या पुं० एवं नपुं० लिखकर दर्शाया गया है।

विशेषण शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे वि० लिख दिया गया है।

३. जो शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा विशेषण या संज्ञा से व्युत्पन्न होते हैं उन्हें उस संज्ञा या विशेषण के अन्तर्गत कोष्ठक के अन्दर रक्खा गया है जैसे 'पर' के अन्तर्गत परेण या परे अथवा समीप' के अन्तर्गत समीपतः या समीपे।

४. (क) शब्दों के केवल भिन्न भिन्न अर्थों को पृथक् अंग्रेजी क्रमांक देकर दर्शाया गया है। सामान्य अर्थाभास को स्पष्ट करने के लिए एक से अधिक पर्याय रक्खे गये हैं।

(ख) उद्धृत प्रमाणों के उल्लेख में देवनागरी के अंकों का प्रयोग किया गया है।

५. जहाँ तक हो सका है शब्दों को पर्यायवाचिता तथा महत्त्व की दृष्टि से क्रमबद्ध किया गया है।

६. प्रत्येक मूल शब्द की संक्षिप्त व्युत्पत्ति [ ] प्रकोष्ठक में दे दी गई है जिससे कि शब्द का यथार्थ ज्ञान हो सके। प्रत्यय और उपसर्गों की सामान्य जानकारी के लिए—सामान्य प्रत्यय-सूचि साथ संलग्न है।

७. (क) समस्त शब्दों को मूल शब्द के अन्तर्गत सीधी रेखा (— मूल शब्द) के पश्चात् रक्खा गया है जैसे 'अग्नि' के अन्तर्गत—ईश, अग्नि+ईश प्रकट करता है।

(ख) समस्त शब्दों में—मूल शब्दों के पश्चात् रक्खे गये—को मिलाने में सन्धि के नियमानुसार जो परिवर्तन होते हैं उन्हें पाठक को स्वयं जानने का अभ्यास होना चाहिये—यथा पूर्व के साथ अपर को मिलाने से 'पूर्वापर' 'अधस्' के आगे गति को मिलाने से 'अधोगति' बनता है। कई स्थानों पर उन समस्त शब्दों को जो सरलता से न समझे जा सकें पूरा का पूरा कोष्ठक में लिख दिया गया है।

(ग) जहाँ एक समस्त शब्द ही दूसरे समस्त शब्द के प्रथम खण्ड के रूप में प्रयुक्त हुआ है वहाँ उस पूर्वखण्ड को सीधी रेखा के साथ लगा कर दर्शाया गया है जैसे—द्विज (समस्त शब्द) में इन्द्र या राज आरम्भ है तो लिखेंगे—°इन्द्र —°राज, और इस तरह द्विजेन्द्र या द्विजराज।

(घ) सभी अलुक् समासयुक्त (उदा० युधिष्ठिर, मनसिज, हृदिस्पृश् आदि) शब्द पृथक् रूप से यथास्थान रक्खे गये हैं। मूल शब्दों के साथ उन्हें नहीं जोड़ा गया।

८. कृदन्त और तद्धित प्रत्ययों से युक्त शब्दों को मूल शब्दों के साथ न रखकर पृथक् रूप से यथास्थान रक्खा गया है। फलतः 'कुलकथ' 'भयंकर' 'अन्नमय' 'पात्रस्तन' और 'हिमवत्' आदि शब्द 'कुल' और 'भय' आदि मूल शब्दों के अन्तर्गत नहीं मिलेंगे।

९. स्त्रीलिंग शब्दों को प्रायः पृथक् रूप से लिखा गया है, परन्तु अनेक स्थानों पर पुंल्लिंग रूप के साथ ही स्त्रीलिंग रूप दे दिया गया है।

१०. (क) धातुओं के आगे आ० (आत्मनेपदी), पर० (परस्मैपदी) तथा उभ० (उभयपदी), के साथ गणसूचक चिह्न भी लगा दिये गये हैं।

(ख) प्रत्येक धातु का पद, गण, मकार ( ) कोष्ठ के अन्दर धातु के आगे रूप के साथ दे दिया गया है।

(ग) धातु के लट् लकार का, प्रथम पुरुष का एक वचनांत रूप ही लिखा गया है।

(घ) धातुओं के साथ उनके उपसर्गयुक्त रूप अकारादिक्रम से धातु के अन्तर्गत ही दिखलाये गये हैं।

(ङ) पद वाच्य, विशेष अर्थ अथवा उपसर्ग के कारण धातुओं के परिवर्तित रूप ( ) कोष्ठकों में दिखलाये गये हैं।

११ धातुओं के साथ अनीय, और य प्रत्यययुक्त कृदन्त रूप प्रायः नहीं दिये गये। शतन्त और शानजन्त विशेषण तथा ता, त्व या य प्रत्यय के लगाने से बने भाववाचक संज्ञा शब्दों को भी पृथक रूप से नहीं दिया गया। ऐसे शब्दों के ज्ञान के लिए विद्यार्थी को व्याकरण का आश्रय लेना अपेक्षित है।
जहां ऐसे शब्दों की रूपरचना या अर्थों में कोई विशेषता है उन्हें यथास्थान रख दिया गया है।

१२ शब्दों से संबद्ध पौराणिक अन्तःकथाओं का शब्दार्थ के यथार्थ ज्ञान के लिए —( ) कोष्ठकों में संक्षिप्त रूप से रक्खा गया है।

१३ जो शब्द या संबद्ध पौराणिक उपाख्यान मूल कोश में स्थान न पा सके उन्हें परिशिष्ट के रूप में कोश के अन्त में जोड़ दिया गया है।

१४. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्दों के ज्ञान के लिए, तथा अन्य भौगोलिक शब्द एवं साहित्यकारों की सामान्य जानकारी के लिए कोश के अन्त में परिशिष्ट जोड़ दिये गये हैं।

विशेष वक्तव्य

भाषा की आवश्यकता का विशेष ध्यान रखकर इस कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने के लिए प्रायः सभी मूल शब्दों के साथ उनकी संक्षिप्त व्युत्पत्ति दे दी गई है।

शब्दों की रचना में उपसर्ग और प्रत्ययों का बड़ा महत्त्व है। इनकी पूरी जानकारी तो व्याकरण के पढ़ने से ही होगी। फिर भी इनका यहाँ दिग्दर्शन अत्यंत लाभदायक रहेगा।

उपसर्ग— उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्॥

उपसर्ग धातुओं के पूर्व लग कर उनके अर्थों में विभिन्नता ला देते हैं —

उपसर्ग	उदाहरण		
		उप	उपगमनम्
		दुस्	दुस्तरणम्
अति	अत्यधिकम्	दुर्	दुर्भाग्यम्
अधि	अधिष्ठानम्	नि	निदेश
अनु	अनुगमनम्	निस्	निस्तारणम्
अप	अपयश	निर्	निर्धन
अपि	पिधानम्	परा	पराजय
अभि	अभिभाषणम्	परि	परिव्राजक
अव	अवतरणम्	प्र	प्रबल
		प्रति	प्रतिक्रिया
आ	आगमनम्	वि	विज्ञानम्
उत्	उत्थाय उद्गमनम्	सु	सुकर

प्रत्यय—धातुओं के पश्चात् लगने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। शब्दों के पश्चात् लगने वाले प्रत्यय तद्धित कहलाते हैं।

कृत्प्रत्यय	उदाहरण		
		क्त	ज्ञातक
		क (अ)	ज्ञ
		कि (इ)	चक्रि,
अङ्	भिदा	कुरच्	विदुर
	छिदा	क्त (त न)	हत छिन्न
अच्, अप्	पच, सर	क्तवतु (तवत्)	उक्तवत्,
	कर	क्तिन् (ति)	कृति
अण्	कुम्भकार	क्त्वा (त्वा)	पठित्वा
अथुच्	वेपथु	क्नु (नु)	गृध्नु
अनीयर्	करणीय, दर्शनीय	क्यच्	पुत्रीयति
आलुच्	स्पृहयालु	क्यप् (य)	कृत्य
इक्	पचि,	क्रु (रु)	भीरु
इत्नु	स्तनयित्नु	क्वरप् (वर)	नश्वर
इष्णुच्	रोचिष्णु	क्विप्	स्पृक् वाक्
उ	जिगमिषु	खच् (अ)	स्तनंधय
उण्	कारु,	घञ् (अ)	त्याग, पाक

घिनुण् (इन्)	योगिन्, त्यागिन्
घुरच् (उर)	भङ्गुर
ड (अ)	दूरग,
डु (उ)	प्रभु
ण (अ)	ग्राह
णिनि (इन्)	स्थायिन्
णमुल् (अम्)	स्मारं स्मारं
ण्यत् (य)	कार्य
ण्वुल् (अक)	पाचक
तृच्	कर्तृ,
तुमुन् (तुम्)	कर्तुम्
नङ्	प्रश्न
यत्	गेय, देय
र	हिंस्र
ल्यप् (य)	आदाय
ल्युट् (अन)	पठनं करणम्
वनिप्	यज्वन्
वरच्	ईश्वर
वुञ् } (अक)	निन्दक
वुन् }	
श (अ)	क्रिया
शतृ (अत्)	पचत्
शानच् (आन या मान)	शयान, वर्धमान
ष्ट्रन् (त्र)	शस्त्रम्, अस्त्रम्
तद्धित तथा उणादि प्रत्यय	**उदाहरण**
अञ् (अ)	औत्स
अण् (अ)	शैव
असुन् (अस्)	सरस्, यशस्
अस्ताति (अस्तात्)	अधस्तात्
आलच्	वाचाल
आलुच्	दयालु
इञ्	दाशरथि,
इतच्	कुसुमित
इमनिच् (इमन्)	गरिमन्,
इलच्	फेनिल
इष्ठन्	गरिष्ठ
इस्	ज्योतिस्
ईकक् (ईक)	शाक्तीक,
ईयसुन् (ईयस्)	लघीयस्
ईरच्	शरीर
उरच्	दन्तुर
उकञ्	हर्षुक
ऊङ्	कर्कन्धू

ऋ	देवृ
एद्युसुच् (एद्युस्)	अन्येद्युः
क	राजकम्, सुवर्णकम्
क्स्न (स्न)	कृत्स्नम्
खञ् (ईन)	महाकुलीन
ङीप् (ई)	मृगी
चणप्	अक्षरचण,
छ (ईय)	त्वदीय, मदीय,
ञ (अ)	[illegible]
ञ्य (य)	पाञ्चजन्य
ष्फक् (आयन)	[illegible]
ठक् }	धार्मिक
ठञ् } (इक)	नैतिक
ठन् }	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] }	[illegible]
[illegible] }	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] }	[illegible]
[illegible] }	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] } ([illegible])	[illegible]
[illegible] }	[illegible]
म	[illegible]
मतुप् (मत्)	[illegible]
मतुप् (वत्)	[illegible]
मयट्	[illegible]
मात्रच्	[illegible]
य	सभ्य
यञ्	गार्ग्य
र	मधुर
लच्	मांसल
वलच्	रजस्वला
विनि	यशस्विन्
ष्कन् (क)	पथिक
ष्यञ् (य)	सौन्दर्यं, [illegible]
सन् (स)	चिकीर्षा
ह	इह

संकेत सूचि

अ०	अव्यय
अक०	अकर्मक
अलु० स०	अलुक् समास
अव्य० स०	अव्ययीभाव समास
आ०	आत्मने पद
उदा०	उदाहरणार्थ
उप० स०	उपपद समास
उभ०	उभयपदी
कर्म० स०	कर्मधारय समास
त० स०	तत्पुरुष समास
तृ० त०	तृतीया तत्पुरुष समास
दे०	देखो
द्व०	द्वन्द्व समास
द्वि० क०	द्विकर्मक
द्वि० स०	द्विगु समास
द्वि० त०	द्वितीया तत्पुरुष समास
ष० त०	षष्ठी तत्पुरुष समास
न० स०	नञ् समास
तुल०	तुलनात्मक
ना० धा०	नामधातु
सम्प्र०	सम्प्रदान कारक
सम०	समस्त पद
तु०	तुलना करो
प्रेर०	प्रेरणार्थक
ज्यो०	ज्योतिष
उ० अ०	उत्तमावस्था
ए० व०	एक वचन
भा० वि०	भाववाचक (निदर्शक) विशेषण
वि०	विशेषण
बी० ग०	बीजगणित
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
वर्त०	वर्तमानकाल
भूत०	भूत काल
प्रा० स०	प्रादि समास
न० ब०	नञ् बहुव्रीहि समास
न० त०	नञ् तत्पुरुष समास
पुं०	पुंल्लिंग
नपुं०	नपुंसक लिंग
स्त्री०	स्त्री लिंग
सक०	सकर्मक
पृषो०	पृषोदरादित्वात्
पर०	परस्मैपद
ज्या०	ज्यामिति
कर्म० वा०	कर्म वाच्य
कर्तृ० वा०	कर्तृ वाच्य
ब० व०	बहु वचन
म० अ०	मध्यमावस्था
अ० पु०	अन्यपुरुष
म० पु०	मध्यम पुरुष
उ० पु०	उत्तम पुरुष
ब० स०	बहुव्रीहि समास
भवि०	भविष्यत्काल
इच्छा०	इच्छार्थक सन्नन्त
भू० क० कृ०	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त (क्त)
स० कृ०	सम्बन्धक कृदन्त (ल्यप्)
वर्त० कृ०	वर्तमानकालिक कृदन्त (शत्रन्त या शानजन्त)
विप०	विपरीतार्थक
करण०	करणकारक
कर्तृ०	कर्तृकारक
कर्म०	कर्मकारक
आज्ञा०	आज्ञार्थक
वार्ति०	वार्तिक
वै०	वैदिक
अन्य० पा०	अन्य पाठान्तर
सर्वा०	सर्वनाम
यङ्०	यङ्लुगन्त
सम्ब०	सम्बन्ध
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
अधि०	अधिकरण कारक
उप०	उपसर्ग
भ्वा०	भ्वादिगण
अदा०	अदादिगण
जु०	जुहोत्यादिगण
स्वा०	स्वादिगण
दि०	दिवादिगण
तु०	तुदादिगण
क्र्या०	क्र्यादिगण
चु०	चुरादिगण
रु०	रुधादिगण
तना०	तनादिगण

संकेताक्षर-सूचि

संकेत	ग्रन्थ	संकेत	ग्रन्थ
अ० पु०	अग्नि पुराण	कौशि०	कौशिकसूत्र
अ० श०	अन्यापदेश शतक	कौषी०	कौषीतकी उपनिषद्
अ० सं०	अगस्त्य संहिता	ग० ल०	गंगा लहरी
अथर्व०	अथर्व वेद	घोषाल०	Ghosal's System of Revenue
अनर्घ०	अनर्घराघव		
अन्न०	अन्नपूर्णाष्टक	चण्ड०	चण्ड कौशिक
अमर०	अमरकोश	गण०	गणरत्नमहोदधि —वर्धमान कृत
अमरु०	अमरुशतक		
अवि०	अविमारक	चन्द्रा०	चन्द्रालोक
आनन्द०	आनन्द लहरी	चाण०	चाणक्य शतक
आर्या०	आर्या सप्तशती	चात०	चातकाष्टक
आश्व०	आश्वलायनसूत्र	चाल०	चौल चम्पू
ईश०	ईशोपनिषद्	चौर०	चौरपञ्चाशिका
उ० दू०	उद्धव दूत	छ०	छन्दोमञ्जरी
उ० सं०	उद्धव संदेश	छा०	छान्दोग्योपनिषद्
उणादि०	उणादि सूत्र	जानकी०	जानकीहरण
उत्त०	उत्तर रामचरित	जै०	जैमिनी सूत्र
ऋक्०	ऋग्वेद	जै० न्या०	जैमिनीय न्यायमाला विस्तर
एकार्थ०	एकार्थनाममाला	ज्यो०	ज्योतिष
ऐत० उ०	ऐतरेय उपनिषद्	त० कौ०	तर्क कौमुदी
ऐत० ब्रा०	ऐतरेय ब्राह्मण	तारा०	तारानाथ वाचस्पत्यम्
कठ०	कठोपनिषद्	तै० आ०	तैत्तिरीय आरण्यक
कथा०	कथासरित्सागर	तै० उ०	तैत्तिरीय उपनिषद्
कनक०	कनकधारास्तव	त्रिका०	त्रिकाण्ड शेष
कर्पूर०	कर्पूर मञ्जरी	तै० सं०	तैत्तिरीय संहिता
कलि	कलिविडम्बन नीलकंठ दीक्षित कृत	त० वा०	तन्त्रवार्तिक
		दाय०	दायभाग
कवि०	कविरहस्य	दु० स०	दुर्गासप्तशती
का०	कादम्बरी	दूत०	दूतवाक्यम्
कात्या०	कात्यायन	दे० म०	देवी माहात्म्य
काम०	कामन्दकी नीति	नवरत्न०	नवरत्नमाला
काव्य०	काव्यप्रकाश	ना० भा०	नारायण भाष्य
काव्या०	काव्यादर्श	नाग०	नागानन्द
काशि०	काशिकावृत्ति	नाना०	नानार्थ मञ्जरी
कि०	किरातार्जुनीय	नाभ०	नारायण भट्ट
कीर्ति०	कीर्तिकौमुदी	नारा०	नारायणीय
कुमा०	कुमार संभव	निघ०	निघण्टु
कुव०	कुवलयानन्द	नी०	नीतिसार
कृष्ण०	कृष्णकर्णामृत	नीति०	नीति प्रदीप
केन०	केनोपनिषद्	नील०	नीलकण्ठ
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र	नैष०	नैषध
कोल०	कोलकल्पतरु	पंच०	पंचतन्त्र

पञ्च०	पञ्चदशी	मृच्छ०	मृच्छकटिक
पञ्च०	पञ्चरात्रम्	याज्ञ०	याज्ञवल्क्य स्मृति
पा०	पाणिनि की अष्टाध्यायी	याद०	यादवाभ्युदय
पा० यो०	पातञ्जल योगशास्त्र	योग०	योगसूत्र
पुष्प०	पुष्पदन्त	रत्न०	रत्नावली
प्रता०	प्रतापरुद्रीय	रघु०	रघुवंश
प्रति०	प्रतिमा	रस०	रसगंगाधर
प्रबोध०	प्रबोधचन्द्रोदय	रसम०	रसमञ्जरी
प्रस०	प्रसन्नराघव	रा०	रामायण
ब० शि०	बंगाल शिलालेख	रश्मि०	रश्मिमञ्जरी
बाल०	बालचरित	राज०	राजप्रशस्ति
बाल० रा०	बालरामायण	राजत०	राजतरंगिणी
बु०	बुद्ध माहात्म्य ([illegible])	राम०	रामचरितम्
बु० च०	बुद्धचरितम्	ललित०	ललित सहस्रनाम
बृ० उ० (बृहदा०)	बृहदारण्यक उपनिषद्	वन०	वनस्पतिशास्त्र
बृ० क०	बृहत् कथा	वराह०	वराहमिहिर की बृहत्संहिता
बृ० सं०	बृहत्संहिता—वराहमिहिर कृत	वाज०	वाजसनेयि संहिता
भ० पु०	भविष्योत्तर पुराण	वा० प०	वाक्यपदीय
भग०	भगवद्गीता	वास०	वासवदत्ता
भट्टि०	भट्टिकाव्य	वि०	विक्रमोर्वशीयम्
भर्तृ०	भर्तृहरिशतकत्रयम् १ शृंगार २ नीति ३ वैराग्य	वि० पु०	विष्णु पुराण
		विक्रम०	विक्रमांकदेवचरित
		विश्व०	विश्व गुणादर्श चम्पू
भा०	भारत मञ्जरी	वे० दी०	वेदान्त दीपिका
भा० प्र०	भावप्रकाश	वे० सा०	वेदान्त सार
भाग०	भागवत	वेणी०	वेणीसंहार
भामि०	भामिनी विलास	वेदा०	वेदान्तस्तव
भाषा०	भाषा परिच्छेद	वैज०	वैजयन्ती
भोज०	भोज चरित	श०	शकुन्तला नाटक
म० ना०	महानारायण उपनिषद्	शंकर०	शंकर दिग्विजय
म० पु०	मत्स्य पुराण	श० चि०	शब्दार्थ चिन्तामणि
मनु०	मनुस्मृति	शत०	शतपथ ब्राह्मण
म० भा० (महाभा०)	महाभाष्य	शत श्लो०	शत श्लोकी
महा०	महाभारत	शार्ङ्ग०	शार्ङ्गधर
महावीर०	महावीर चरित	शब्द०	शब्दकल्पद्रुम
मा०	मानवगीता	शा० भा०	शारीर भाष्य
मान०	मानसार	शालि०	शालिहोत्र
मार्क०	मार्कण्डेय पुराण	शि०	शिलालेख
माल०	मालतीमाधव	शि० पु०	शिव पुराण
मालवि०	मालविकाग्निमित्र	शि० म०	शिवमहिम्न स्तोत्र
मी० सू०	मीमांसा सूत्र	शिव०	शिव भारत
मुं०	मुण्डकोपनिषद्	शिवानन्द०	शिवानन्द लहरी
मुद्रा०	मुद्राराक्षस	शिशु०	शिशुपालवध
मुग्ध०	मुग्धबोध	शुक्र०	शुक्रनीति
मेघ०	मेघदूत	शु०	शुल्बसूत्र
		शृंगार०	शृंगार तिलक

स्याद्०	स्यात्कारचक्रक	सु० (सुश्रु०)	सुश्रुत
श्रुत	श्रुतबोध	सुभा०	सुभाषित रत्नाकर
श्वेत० (श्वेता०)	श्वेताश्वतरोपनिषद	सुवासव०	सुबन्धु की वासवदत्ता
सर० क०	सरस्वती कण्ठाभरण	सुभाषित०	सुभाषितरत्नभाण्डागार
सुधा०	सुधालहरी	सू० सि०	सूर्य सिद्धान्त
स्वप्न०	स्वप्नवासवदत्तम्	सौ०	सौन्दर्य लहरी
सर्व०	सर्वदर्शन संग्रह	हंस०	हंसदूत
सा० द०	साहित्य दर्पण	हनु०	हनुमन्नाटक
सां० का०	सांख्य कारिका	हर०	हरविजय
सां० प्र०	सांख्यप्रवचन भाष्य	हरि०	हरिवंशपुराण
सि०	सिद्धान्त कौमुदी	हला०	हलायुध
सि० मु०	सिद्धान्त मुक्तावली	हर्ष०	हर्षचरित
सां० सू०	सांख्य सूत्र	हि०	हितोपदेश
सि० सं०	सिद्धान्तलेश संग्रह	हेम०	हेमचन्द्र

आप्टे

संस्कृत-हिन्दी-कोश

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर ।

अः [अव् + ड] 1 विष्णु पवित्र 'ओम्' को प्रकट करने वाली तीन (अ + उ + म्) ध्वनियों में से पहली ध्वनि —अकारो विष्णुरुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वरः । मकारस्तु स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु त्रयात्मकः ॥ 2 शिव ब्रह्मा, वायु या वैश्वानर ।

अ (अव्य०) 1 लैटिन के इन (in) अंग्रेजी के इन (in) या अन (un) तथा यूनानी के अ (a) या (an) के समान नकारात्मक अर्थ देने वाला उपसर्ग जो कि निषेधात्मक अव्यय नञ् के स्थान पर संज्ञाओं, विशेषणों तथा अव्ययों के (क्रियाओं के भी) पूर्व लगाया जाता है । यह 'अ' ही 'अनृणिन्' शब्द को छोड़कर शेष स्वरादि शब्दों से पूर्व 'अन्' बन जाता है ।

'न' के सामान्यतया छः अर्थ गिनाये गये हैं :— (क) सादृश्य समानता या सरूपता यथा 'अब्राह्मण' ब्राह्मण के समान (जनेऊ आदि पहने हुए) परन्तु ब्राह्मण न होकर क्षत्रिय वैश्य आदि । (ख) अभाव — अनुपस्थिति निषेध, अभाव, अविद्यमानता यथा 'अज्ञानम्' ज्ञान का न होना इसी प्रकार 'अक्रोध, अनंग, अकंटक, अघट' आदि । (ग) भिन्नता अन्तर या भेद यथा 'अपट' कपड़ा नहीं, कपड़े से भिन्न या अन्य कोई वस्तु । (घ) अल्पता लघुता, न्यूनता, अल्पार्थवाची अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—यथा 'अनुदरा' पतली कमर वाली (कृशोदरी या तनुमध्यमा) । (ङ) अप्राशस्त्य —बुराई, अयोग्यता तथा लघूकरण का अर्थ प्रकट करना यथा 'अकाल' गलत या अनुपयुक्त समय 'अकार्यम्' न करने योग्य, अनुचित, अयोग्य या बुरा काम । (च) विरोध — विरोधी प्रतिक्रिया, वैपरीत्य यथा 'अनीति' नीतिविरुद्धता, अनैतिकता, 'असित' जो श्वेत न हो, काला । उपर्युक्त छः अर्थ निम्नांकित श्लोक में एकत्र संकलित हैं :— तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ दे० 'न' भी ।

कृदन्त शब्दों के साथ इसका अर्थ सामान्यतः "नहीं" होता है यथा 'अदृष्ट्वा' न देखकर 'अपश्यन्' न देखते हुए । इसी प्रकार 'असकृत्' एक बार नहीं ।

कभी-कभी 'अ' उत्तरपद के अर्थ को प्रभावित नहीं करता यथा 'अमूल्य', 'अनुत्तम', यथास्थान । 2 विस्मयादि द्योतक अव्यय —यथा (क) 'अ अवद्यम्' यहाँ दया (आह, अरे) (ख) 'अ पचसि त्वं जाल्म' यहाँ भर्त्सना, निंदा (धिक्, छि) अर्थ को प्रकट करता है । दे० 'अकरणि' 'अजीवनि' भी । (ग) संबोधन में भी प्रयुक्त होता है यथा 'अ अनन्त' (घ) इसका प्रयोग निषेधात्मक अव्यय के रूप में भी होता है । 3 भूतकाल के लकारों (लङ्, लुङ् और लृङ्) की रूपरचना के समय धातु के पूर्व आगम के रूप में जोड़ा जाता है यथा अगच्छत्, अगमत्, अगमिष्यत् में ।

अनृणिन् (वि०) [नास्ति ऋणं यस्य न० ब०] (यहाँ 'ऋ' को व्यञ्जन ध्वनि माना गया) जो कर्ज़दार न हो, ऋणमुक्त ('अनृणिन्' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।)

अंस् (चुरा० उभ० अंसयति-ते) बाँटना, विभक्त करना, आपस में हिस्सा बाँटना, 'अंशापयति' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है । वि 1 बाँटना 2 धोखा देना ।

अंशः [अंश् + अच्] 1 हिस्सा, भाग, टुकड़ा; सकृदंशो निपतति —मनु० ९।४७ रघु० ८।१६ —अंशेन दर्शितानुकूलता का० १५९ अंशतः, 2 संपत्ति में हिस्सा, दाय स्वतोंऽशतः —मनु० ८।४०८, ९।२०१; याज्ञ० २।११५ 3 भिन्न की संख्या, कभी-कभी भिन्न के लिए भी प्रयुक्त 4 अक्षांश या देशांतर की कोटि 5 कंधा (सामान्यतः 'कंधे' के अर्थ में, 'अंस' का प्रयोग होता है दे०) । सम० **अंशः** अंशावतार, हिस्से का हिस्सा; **अंशिन्** (वि० वि०) हिस्सेदार, **अवतरणम्** **अवतार** —पृथ्वी पर देवताओं के अंश को लेकर जन्म लेना आंशिक अवतार, 'सार इव वर्णित्वम्' कु० १५१; महाभारत के आदिपर्व के ६४—६७ तक अध्याय, **भाज्**, **हर**, **हारिन्** (वि०) उत्तराधिकारी, सहदायभागी —विकृदोंशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः याज्ञ० २।१३२—१३३ **सवर्णनम्** —भिन्नों को एक समान हर में लाना, **स्वरः** मुख्य स्वर अलंकार ।

अंशकः [अंश् + ण्वुल्, स्त्रियां अंशिका] 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, संबंधी 2 हिस्सा, खंड, भाग, अंश और दिवस ।

अंशनम् [अंश् + ल्युट्] बाँटने की क्रिया ।

अंशभाज् (पुं०) [अंश्+भिज्+तृच्] विभाजक, बाँटने वाला।

अंशल (वि०) [अंश लाति ला+क] साझीदार, हिस्सा पाने का अधिकारी। 2 = अंसल दे०

अंशिन् (वि०) (अंश इनि) 1 हिस्सेदार, समुदायभागी, —(पूर्वविभागकरणे) सर्वे वा स्यु समांशिन याज्ञ० २।११४, 2 भागों वाला, साझीदार।

अंशुः [अंश्+कु] 1 किरण, प्रकाशकिरण चंड°, घर्मं° गरम किरणों वाला, सूर्य, सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् —कु० १।३२, चमक, दमक 2 बिन्दु या किनारा 3 एक छोटा या सूक्ष्म कण 4 धागे का छोर 5 पोशाक, सजावट, परिधान 6 गति। सम० —उदकम् ओस का पानी, —जालम् रश्मिपुंज या प्रभामण्डल —धरः —पतिः,—भृत्,—बाण, —भर्तृ— स्वामिन् —हस्त सूर्य (किरणों को धारण करने वाला या उनका स्वामी) —पट्टम् एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, —माला प्रकाश की माला, प्रभामण्डल, —मालिन् (पुं०) सूर्य।

अंशुकम् [अंशु+क—अंशव सूत्राणि विषया यस्य] 1 कपड़ा, सामान्यतः पोशाक। सितांशुका—विक्रम० ३।१२, —पवनाधूतांशुकाक्षेपविलज्जितानाम्—कु० १।१४, श० १।३२, 2 महीन या सफ़ेद कपड़ा —मेघ० ६३, प्राय रेशमी कपड़ा या मलमल। 3 ऊपर ओढ़ा जाने वाला वस्त्र लबादा, अधोवस्त्र भी, 4 पत्ता 5 प्रकाश की मद लौ।

अंशुमत् (वि०) [अंशु+मतुप्] 1 प्रभायुक्त चमकदार, —ज्योतिषां रविरंशुमान् भग० १०।२१ 2 नोकदार। —मान्(पुं०) 1 सूर्य —बालाशिर्स्वैरिवांशुमान् रघु० १५।१०, 2 सगर का पौत्र, दिलीप का पिता और असमंजस का पुत्र।

अंशुमत्फला—केले का पौधा।

अंशुल (वि०) [अंशु प्रभां प्रतिभा वा लाति-ला+क] चमकदार, प्रभायुक्त —लः चाणक्य मुनि।

अंस् (चु० पर० अंसयति-अंसापयति) दे० अंश्

अंसः [अंस्+अच्] 1 भाग, खंड दे० अंश, 2 कंधा, असफलक कंधे की हड्डी। सम० —कूटः बैल या सांड का डिल्ल अथवा कुब्ब, कंधों के बीच का उभार, —त्रम् 1 कंधों की रक्षा के लिए कवच 2 धनुष, —फलक रीढ़ का ऊपरी भाग — भारः कंधे पर रखा गया भार या जूआ — भारिक, —भारिन् (वि०) (अंसे) कंधे पर जूआ या भार ढोने वाला —विवर्तिन् (वि०) कंधों की ओर मुड़ा हुआ,—मुखमंसविवर्ति पक्ष्मलाक्ष्या,—श० ३।२४।

अंसल (वि०) [अंस+लच्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली मजबूत कंधों वाला,—युवा युगव्यायतबाहुरंसल रघु० ३।३४।

अंह् (भ्वा० आ० अंहते, अहितुं, अंहित) जाना, समीप आना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, प्रेर० 1 भेजना 2 चमकना 3 बोलना।

अंहतिः, —ती (स्त्री०) [हन्+अति-अंहादेशश्च] 1 भेंट, उपहार 2 व्याकुलता, कष्ट, चिंता, दुःख, बीमारी (वेद०)।

अंहस् (नपुं०)—(अंह —स्त्री आदि) [अम्+असुन् हुक् च] 1 पाप—सहसा महांसिमहसा विहन्तु अलम् कि० ५।१७ 2 व्याकुलता, कष्ट चिन्ता।

अंहितिः —ती (स्त्री०) [अंह् क्तिन् महादित्वात् इट्] उपहार दान।

अंह्रिः (अंह् क्रिन्-अंहति गच्छत्यनेन) 1 पैर 2 पेड़ की जड़ तु० अंघ्रि 3 चार की संख्या। सम० —पः पेड़ (पैरों से पीने वाला वृक्ष) —स्कन्धः पैर के तलवे का ऊपरी हिस्सा।

अक् (भ्वा० पर० अकति अंकित) जाना, सांप की तरह टेढ़ा मेढ़ा चलना।

अकच [न कच—सुलभा] बाल का अभाव पीस। शिरोभि पात।

अकच (वि०) [न ब] गंजा —च केतु (अवरोहणशील शिरोबिंदु)।

अकनिष्ठ (वि०) [न कनिष्ठ —न० त०] जो सबसे छोटा न हो (जैसे सबसे बड़ा भाई) बड़ा श्रेष्ठ —ष्ठ गौतम बुद्ध।

अकन्या [न न] जो कुमारी न हो जो अब कुमारी न रही हो।

अकर (वि०) (न ब) 1 लूला अपाहिज 2 कर या चुंगी से मुक्त 3 अक्रिय निकम्मा अकर्मण्य।

अकरणम् [कृ भावे ल्युट् न त] अक्रिया कार्य का अभाव अकरणात् मन्दकरणं श्रेयः तु० अंग्रेज़ी की कहावतें 'सम थिंग इज बैटर दैन नथिंग' (Something is better than nothing.) बैटर लेट दैन नैवर, (Better late than never) न होने से कुछ होना भला है, कभी न होने से देर में होना अच्छा है।

अकरणि (स्त्री०) [नञ्+कृ+अनि] असफलता, निराशा, अप्राप्ति अधिकांशतः कोसने या शाप देने में प्रयुक्त, —तस्याकरणिरेवास्तु सिद्धा० भगवान् करे उसकी आशा पूरी न हो, उसे असफलता मिले।

अकर्ण (वि०) [न ब] 1 जिसके कान न हों, बहरा 2 कर्णरहित —र्णः सांप।

अकर्तन (वि०) [नञ्+कृत्+ल्युट् न ब] ठिगना।

अकर्मन् (वि०) (न ब) 1 निष्क्रिय, आलसी, निकम्मा 2 दुष्ट, पतित 3 (व्या०) अकर्मक —र्म (नपुं०) 1 कार्य का अभाव 2 अनुचित कार्य, दोष, पाप। सम० —अन्वित (वि०) 1 जिसके पास काम न हो, खाली, निठल्ला 2 अपराधी, —कृत् (वि०) कर्म से मुक्त या अनुचित कार्य करनेवाला,—भोग कर्मफल भोगने से मुक्ति का अनुभव।

अकर्मक (वि०) [नास्ति कर्म यस्य, ब० कप्] वह क्रिया जिसका कर्म न हो (स्त्री० - **अकर्मिका**) ।

अकल (वि०) [नास्ति कला अवयवो यस्य, न० ब०] अखंड, भागरहित, परब्रह्म की उपाधि ।

अकल्क (वि०) [न० ब०] 1 तलछट रहित, शुद्ध 2 निष्पाप (स्त्री० - **अकल्का**) चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश ।

अकल्य (वि०) [न० ब०] 1 अनियमित, जिस पर कोई नियंत्रण न हो, 2 दुर्बल, अयोग्य 3 अनुल्लंघनीय ।

अकस्मात् (अव्य०) [न कस्मात् न० त०] अचानक, एकाएक, सहसा आकस्मिक रूप से —अकस्मादागन्तुना सह विश्वासो न युक्तः —हि० १।२ अकारण, बिना किसी कारण के व्यर्थ ही —नाकस्मात् शाण्डिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान् —प० २।६५—कथं त्वामत्यजेदकस्मात्पतिरार्यवृत्त —रघु० १४।५५, ७३ ।

अकाण्ड (वि०) [न० ब०] 1 आकस्मिक, अप्रत्याशित, —सहसा पुनरकाण्डविवर्तनदारुणः —उत्तर० ४।१४ मा० ५।३१, 2 जिसमें तना या शाखा न हो । सम० —**जात** (वि०) सहसा उत्पन्न या उत्पादित —**ताण्डवम्** क्रोध घबराहट आदि का अप्रासंगिक प्रदर्शन —**पात** आकस्मिक घटना —**पातजात** (वि०) जन्म होते ही मर जाने वाला, —**शूलम्** अचानक पेट का दर्द ।

अकाण्डे (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से, एकाएक, सहसा, —दर्भांकुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा —श० २।१२।

अकाम (वि०) [न०ब०] 1 इच्छा, राग, या प्रेम से मुक्त 2 अनिच्छुक, अनभिलाषी, 3 प्रेम से अप्रभावित, प्रेम की अधीनता से मुक्त, श० १।२३ 4 अचेतन अनभिप्रेत ।

अकामतः (क्रि० वि०) [अकाम—तसिल्] अनिच्छापूर्वक, बेमन से, बिना इरादे के, अनजानपने से —इतरे कृतवतस्तु पापान्येतान्यकामतः —मनु० ९।२४२ ।

अकाय (वि०) [न० ब०] 1 शरीररहित, अशरीरी 2 राहु की एक उपाधि 3 परब्रह्म की उपाधि ।

अकारण (वि०) [न० ब०] कारणरहित, निराधार स्वतः स्फूर्त, —**णम्** कारण प्रयोजन या आधार का अभाव —किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते —कु० ४।७ **अकारणम्**, **अकारणात्**, **अकारणे**—(क्रि० वि०) बिना कारण के, संयोगवश, व्यर्थ ।

अकार्य (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त —**र्यम्** अनुचित या बुरा काम, अपराधपूर्ण कार्य । सम० —**कारिन्** बुरा काम करने वाला, जो बुरा काम करे, कर्तव्य विमुख ।

[अ]काल (वि०) [न० ब०] असामयिक प्राक्कालिक —**लः** गलत समय, अशुभ या कुसमय, (किसी बात के लिए) अनुपयुक्त समय —अप्यकालज्ञो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः —रघु० १२।३३। सम० —**कुसुमम्** —**पुष्पम्** असमय पर खिलने वाला फूल, —**कूष्माण्ड** बिना ऋतु के उपजा हुआ कुम्हड़ा (आल०) व्यर्थ जन्म, —**ज**, —**उत्पन्न**, —**जात** (वि०) बिना ऋतु के उपजा हुआ, प्राक्कालिक; —**जलदोदय**, —**मेघोदय** 1 असमय में बादलों का उठना या इकट्ठा होना, 2 कुहरा, धुंध, —**वेला** ऋतु के विपरीत या अनुपयुक्त समय, —**सह** (वि०) 1 समय की हानि या देरी को सहन न करने वाला, अधीर, 2 शत्रु की शक्ति दृढ़ता के साथ अधिक समय तक न टिकने वाला ।

अकिंचन (वि०) [नास्ति किंचन यस्य न० ब०] जिसके पास कुछ भी न हो, बिल्कुल गरीब, नितांत निर्धन—अकिंचनः सन् प्रभवः स संपदाम् —कु० ५।७७ ।

अकिंचिज्ञ (वि०) [अकिंचित् —ज्ञा —क] कुछ न जानने वाला, निपट अज्ञानी, मनु० २।८ ।

अकिंचित्कर (वि०) [उप० स०] 1 अर्थहीन, —स्वगुणमिदमकिंचित्करं च —वेणी० ३, 2 भोला भाला ।

अकुण्ठ (वि०) [न० त०] 1 जो ठुंठा न हो, जिसकी धार अवरुद्ध न हो —आत्मन्यप्रहताप्यकुण्ठपरशो —वेणी० ३।८, 2 प्रबल काम करने योग्य 3 स्थिर 4 अत्यधिक ।

अकुतः (क्रि० वि०) कहीं से नहीं (इसका प्रयोग केवल समस्तपदों में होता है) । सम० —**चल**, शिव का नाम —**भय** (वि०) सुरक्षित जिसे कहीं से भी भय न हो —माद्दशानामपि अकुतोभयः संचारो जातः —उत्त० २ यानि त्रीण्यकुतो... ...पदान्याभरणरारोपयितुं (पाठान्तर) अपराजितमुखानि —उत्त० ५।३५ ।

अकुप्यम् (न०) [न० त०] 1 बिना खोट की धातु, सोना चाँदी, 2 कोई भी खोट की धातु ।

अकुशल (वि०) [न० त०] 1 अशुभ, दुर्भाग्यग्रस्त, 2 जो चतुर या होशियार न हो, —**लम्** अमंगल, दुर्भाग्य ।

अकूपार [नञ् —कूप —ऋ —अण्] 1 समुद्र 2 सूर्य 3 कछुआ 4 कछुओं का राजा जिस पर पृथ्वी का भार है 5 पत्थर या चट्टान ।

अकृच्छ्र (वि०) [न० ब०] कठिनाई से मुक्त, —**च्छ्रम्** कठिनाई का अभाव सरलता, सुविधा ।

अकृत (वि०) [नञ् —कृ —क्त] 1 जो किया न गया हो, 2 गलत या भिन्न तरीके से किया गया 3 अधूरा, जो तैयार न हो (जैसे रसोई), 4 अनिर्मित 5 जिसने कोई काम न किया हो 6 अपक्व, कच्चा; —**ता** जो बेटी होने पर भी बेटी न मानी जाकर पुत्रों के समकक्ष समझी जाय; —**तं** (नपु०) कार्य जो किया न गया हो, काम का न किया जाना, जो काम कभी सुना न गया हो । सम० —**अर्थ** (वि०) असफल, —**अस्त्र** (वि०) जिसे हथियार चलाने का अभ्यास न हो, —**आत्मन्** (वि०) 1 अज्ञानी, मूर्ख, असन्तुलित मस्तिष्क का 2 परब्रह्म या ब्रह्म के स्वरूप से भिन्न, —**उद्वाह** (वि०)

अविवाहित,—एनस् (वि०) अनपराधी,—ज्ञ (वि०) कृतघ्न—धी,—बुद्धि (वि०) अज्ञानी।

अकृष्ट (वि०) [नञ्+कृष्+क्त] जो जोता न गया हो। सम०—पच्य,—रोहिन् (वि०) बिना जुते खेत में बढ़ने वाला या पकने वाला, बहुतायत से बढ़ने वाला —अकृष्टपच्या इव सस्यसंपदः—कि० १।१७, रघु० १४।७७।

अक्का (स्त्री०) [अक्+कन्+टाप्] माता, माँ।

अक्त (वि०) [अञ्ज्+क्त] सना हुआ, अभिषिक्त, (इसका प्रयोग सामान्यतः समस्त पदों में होता है जैसे 'घृताक्त') —क्ता रात।

अक्तुम् [अञ्ज्+क्तु] कवच (वर्मन्)।

अक्रम (वि०) [नास्ति क्रमो यस्य—न० ब०] अव्यवस्थित —मः [न क्रमः—न० त०] 1 क्रम या व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अनियमितता 2 औचित्य का उल्लंघन।

अक्रिय (वि०) [नास्ति क्रिया यस्य—न० ब०] क्रिया शून्य, सुस्त —या [न० त०] क्रियाशून्यता, कर्तव्य की उपेक्षा।

अक्रूर (वि०) [न० त०] जो निर्दय न हो —रः एक यादव जो कृष्ण का मित्र और चाचा था।

अक्रोध (वि०) [नास्ति क्रोधो यस्य—न० ब०] क्रोध रहित —धः [न०त०] क्रोध का अभाव या उसका दमन।

अक्लिष्ट (वि०) [नञ्+क्लिश्+क्त] 1 न थका हुआ, क्लेश रहित, अनथक 2. जो बिगड़ा न हो, अविकल श० ५।१९।

अक्ष् [भ्वा० स्वा० पर० सक० सेट्] (अक्षति—अक्ष्णोति, अक्षित) 1 पहुँचना, 2 व्याप्त होना, पैठना 3 संचित होना।

अक्षः [अक्ष्+अच्—अश्+स वा] 1 धुरी, धुरा 2 गाड़ी के बीच में लगा लकड़ी का वह भाग जिसमें लोहे या लकड़ी की वह छड़ फंसाई हुई होती है जिस पर पहिया चलता है 3 गाड़ी, छकड़ा, पहिया 4 तराजू की डंडी 5 चौसिक अक्षांश 6 चौसर, चौसर का पासा 7 रुद्राक्ष 8 कर्ष नामक १६ माशे की एक तोल 9 बहेड़े (बिभीतक) का पौधा 10 साँप 11 गरुड़ 12 आत्मा 13 ज्ञान 14 कानूनी कार्य विधि, मुकदमा 15 जन्मांध, —क्षं 1 इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषय 2 सामुद्रिक लवण 3 नीला थोथा। सम०—अग्रकीलः (—कः) धुरे की कील —आवपनं चौसर का तख्ता,—आवापः जुआरी —कर्णः त्रिकोण में सामने की रेखा, —कुशल (वि०)—ज्ञ (वि०) जुआ खेलने में निपुण,—कूटः आँख की पुतली —कोविद (वि०) —ज्ञ (वि०) चौसर खेलने में कुशल—ग्लहः जुआ खेलना, चौसर खेलना—जं 1 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान, 2 वज्र 3 हीरा—जः विष्णु; —तत्त्व —विद्या जुआ खेलने की कला या विद्या;—दर्शकः—दृक् 1 न्यायाधीश 2 जुए का अधीक्षक;—देविन् जुआरी, जुएबाज; —द्यूतं चौसर का खेल, जुआ;—धूर्तः जुएबाज, जुआरी, —धूर्तिलः गाड़ी में जुता हुआ बैल या साँड —पटलं 1 न्यायालय 2 कानूनी दस्तावेजों के रखने का स्थान —पाटकः कानून का पंडित, न्यायाधीश, —पातः पासा फेंकना, —पादः गौतम ऋषि, न्यायदर्शन के प्रवर्तक या उसके अनुयायी, —भागः—अंशः अक्षरेखा, अक्षांश। —भारः गाड़ीभर बोझ, —माला—सूत्र रुद्राक्षमाला, हार —कृतोऽक्षसूत्रप्रणयी तया करः कु० ५।११ —राजः जुए का व्यसनी, पासों में प्रधान, कलि नामक पासा; —वाटः जुआ-खाना, जुए की मेज, —हृदयं जुए में पूर्ण दक्षता या निपुणता।

अक्षणिक (वि०) [न० त०] स्थिर दृढ़ जो चंचल न हो जो थोड़ी देर रहने वाला न हो, दृढ़तापूर्वक जमा हुआ, (ताक लगाने या टकटकी के समान)।

अक्षत (वि०) [नञ्+क्षण्+क्त न० त०] (क) जिसे चोट न लगी हो —स्वमसंगं [illegible] रति कु० ४।९ (ख) जो टूटा न हो, सम्पूर्ण, अविभक्त —तः 1 शिव 2 कूट फटक कर धूप में सुखाए गए चावल। —ताः (बहु०) अनटूटा अनाज, सब प्रकार के धार्मिक उत्सवों पर काम आने वाले पिठौर, कूटे तथा जल में धोये हुये चावल —लाजैरपामहस्ता रघु० २।२१ 3 जौ —तं 1 धान्य, किसी भी प्रकार का अनाज 2 हिजड़ा (पु० भी), —ता कुमारी, कन्या। सम० —योनिः (स्त्री०) वह कन्या जिसके साथ सम्भोग न किया गया हो मनु० ९।१७६।

अक्षम (वि०) [न० त०] अयोग्य असमर्थ असहिष्णु, अधीर, रघु० १३।१६ —मा 1 अधैर्य, ईर्ष्या, 2 क्रोध आवेश।

अक्षय (वि०) [न० ब०] जिसका नाश न हो, अनश्वर, अचूक, —विसायनायाक्षितिरिवार्थमजयम् रघु० ४।१३। सम० —तृतीया (स्त्री) वैशाखमास के शुक्लपक्ष की तीज।

अक्षय्य (वि) [न० त०] जो क्षय न हो सके, अविनाशी —तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः श० २।१३।

अक्षर (वि०) [न० त०] 1 अविनाशी, अनश्वर— कु० ३।५०, भग० १५।१६ 2 स्थिर, दृढ़। —रः 1 शिव 2 विष्णु। —रं 1 (क) वर्णमाला का एक अक्षर —अक्षराणामकारोऽस्मि भग० १०।३३ व्यंजन आदि। (ख) कोई एक ध्वनि,— एकाक्षरं परं ब्रह्म — मनु० २।८३ (ग) एक या अनेक वर्ण, समष्टिरूप से भाषा —प्रतिपेदाक्षरविन्यासाभिरामम् —श० ३।२५ 2 दस्तावेज, लिखावट (बहुव), 3 अविनाशी आत्मा, ब्रह्म 4 पानी 5 आकाश 6 परमानन्द, मोक्ष। सम०— —अर्थः शब्दों का अर्थ; —च(चु) चुः,—चणः (नः)

लिपिक, लेखक, नकलनवीस। इसी प्रकार °जीवक °जीवी, °जीविक· पेशेवर लेखक। —च्युतकम् किसी अक्षर के लुप्त होने के कारण दूसरा ही अर्थ निकलना। —छन्दस् (नपुं०) वृत्त वर्णों की संख्या से बद्ध छंद या वृत्त —जननी तूलिका सरकंडा या कलम। —(वि) न्यास 1 लिखना, वर्णक्रम 2 वर्णमाला 3 वेद —भूमिका तख्ती रघु० १८।४६ —मुख विद्वान् विद्यार्थी। —वर्जित (वि०) अशिक्षित बिना पढ़ा लिखा। —लिपि (स्त्री) गुप्त अक्षरों की लिपि। —संस्थान वर्णविन्यास लिखना वर्णमाला।

अक्षरक [स्वार्थे कन्] स्वर, अक्षर।

अक्षरशः (क्रि० वि०) [अक्षर + शस् (वीप्सार्थे)] एक एक अक्षर करके 2 शब्दशः शब्द शब्द करके।

अक्षवती (स्त्री०) [अक्ष + मतुप् + ङीप्] खेल पासे द्वारा [illegible]

अक्षान्ति (स्त्री०) [न० त०] असहिष्णुता स्पर्धा ईर्ष्या।

अक्षार (वि०) [न० ब०] कृत्रिम लवणरहित। —रः प्राकृतिक लवण।

अक्षि (नपुं०) [अश्नुते विषयान् — अश् + क्सि] (अक्षिणी अक्षीणि अक्ष्णा अक्ष्णः आदि) 1 आँख 2 दो की संख्या। सम० —[illegible]—रघु० १४।६७। —कूट —कटक —गोल —तारा आँख का डला आँख की पुतली। —गत (वि०) 1 दृश्यमान उपस्थित शि० ९।८१ 2 आँख में खटकने वाला आँख का काँटा, घृणित —सोऽक्षिगतस्य हास्यो जनः [illegible] १।९। —पक्ष्मन् —लोमन् (नपुं०) पलक —पटल 1 आँख की झिल्ली 2 झिल्ली से संबद्ध आँख का रोग —विकूणित, —विकूणित तिरछी नजर अधखुली आँखों से देखना।

अक्षुण्ण (वि०) [न० त०] 1 न टूटा हुआ अखण्ड 2 अपराजित सफल —अक्षुण्णोऽनुनयः वेणी० १।२, 3 जो कूटा पीटा न गया हो असाधारण शि० १।३२।

अक्षेत्र (वि०) [न० ब०] खेतों से रहित बिना जुता। —त्रम् 1 खराब खेत 2 (आल०) बुरा विद्यार्थी कुपात्र। सम० —विद् (वि०) आत्मज्ञान से विरहित।

अक्षोट [अक्ष + ओट] अखरोट (मरा० डोंगरी अक्रोड)।

अक्षोभ्य (वि०) [न० त०] स्थिर धीर—रघु० १७।७४।

अक्षौहिणी (स्त्री) [अक्षाणां रथानां सर्वेषामिन्द्रियाणां वा ऊहिनी ष० त०] [अक्ष + ऊह + णिनि + ङीप्] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें २१८७० रथ २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े तथा १०९३५० पदाति हों।

अखंड (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो संपूर्ण समस्त —अखण्डं पुण्यानां फलमिव —श० २।१० —डम् (क्रि० वि०) निरन्तर, अविराम।

अखंडन (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, टूट न सके, पूरा, संपूर्ण, —नं न टूटना, निराकरण न करना, —नः समय।

अखंडित (वि०) [न खंडित —न० त०] 1 न टूटा हुआ, 2 विघ्नरहित बाधारहित। सम० —ऋतु (वि०) सदा आमोदप्रिय, —ऋतु वह समय या ऋतु जिसमें सदा की भांति पुष्पादि उत्पन्न हों, (वि०) फलदायी।

अखर्व (वि०) [न० त०] 1 जो बौना या छोटे कद का न हो जिसकी शारीरिक वृद्धि न रुकी हो 2 अनल्प, बड़ा, —अखर्वेण गर्वेण विराजमान —दश० 3।

अखात (वि०) [न० त०] न खुदा हुआ न दफनाया हुआ —तः, —तम् 1 प्राकृतिक झील 2 मंदिर के सामने का पोखर।

अखिल (वि०) [नास्ति खिलम् अवशिष्टम् यस्य —न० ब०] 1 सम्पूर्ण समस्त पूरा इसका प्रयोग प्रायः 'सर्व' के साथ पाया जाता है —एतद्धि मत्तोऽधिजगे सर्वमेषोऽखिलं मुनिः मनु० १।५९ —लेन (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से 2 भूमि जो परती न हो जुती हुई हो।

अखेटिक (पुं०) [नञ् + खिट् + ठिकन् न० त०] 1 वृक्षमात्र 2 शिकारी कुत्ता।

अख्याति [न० त०] अपकीर्ति अपयश। सम० —कर (वि०) अपकीर्तिकर लज्जाजनक।

अग् (भ्वा० पर० अक० सेट् अगति आगीत् अगिष्यति, अगित) 1 सर्पिल गति से जाना टेढ़े मेढ़े चलना 2 जाना (अगति आगीत्-आदि)।

अग (वि०) [न गच्छतीति-गम् + ड, न० त०] 1 चलने में असमर्थ अगम्य —गः 1 वृक्ष 2 पहाड़, पत्थर 3 साँप 4 सूर्य 5 सात की संख्या। सम० —आत्मजा पर्वत की पुत्री पार्वती —ओकस् (पुं०) 1 पहाड़ी 2 पक्षी (वृक्षवासी) 3 शरभ नामक जन्तु जिसकी आठ टाँगें मानी जाती हैं 4 सिंह, —ज (वि०) पहाड़ों में घूमने वाला जंगली, —जम् शिलाजीत।

अगच्छ (वि०) [गम्-बाहुलकात् श—न० त०] न जाने वाला। —च्छः (पुं०) वृक्ष।

अगतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 आश्रय या उपाय का अभाव आवश्यकता 2 प्रवेश न होना (शा० और आल०)।

अगति (ती) क (वि०) [न० ब०] निस्सहाय, निराश्रय, निरवलम्ब —बालमेनामगतिमादाय—दश ९, अगतिकगतिका गति सा० १।३४६।

अगद (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ, रोगरहित। —दः 1 औषधि दवाई 2, स्वास्थ्य 3 विषहरण विज्ञान।

अगदंकार (पुं०) [अगदं करोति—अगद, कृ + अण् मुमागमश्च] वैद्य, चिकित्सक।

अगम्य (वि०) [न गन्तुमर्हति—गम् + यत् न० त०] 1 दुर्गम, न जाने योग्य, पहुँच के बाहर (शा० और

आलं०) योगिनामप्यगम्यः आदि 2. अकल्पनीय, अबोध्य—गाः संपदस्ता मनसोऽप्यगम्याः—शि० ३।५९। 'गम्य' के अन्तर्गत भी देखिए। सम०—रूप (वि०) अकल्पनीय तथा अनतिक्रांत रूप या स्वभाव वाला—°रूपां पदवीं प्रपित्सुना—कि० १।९।

अगम्या (स्त्री०) वह स्त्री जिसके पास मैथुन के लिए जाना उचित नहीं, एक नीची जाति °गमनं चैव जातिभ्रंशकराणि वा इत्यादि। सम०—गमनं अनुचित मैथुन, व्यभिचार गामिन् (वि०) अनुचित मैथुन करने वाला, व्यभिचारी।

अगद (न०) [न गिरति; गृ+उ न० त०] अगर—एक प्रकार का चंदन।

अगस्तिः, अगस्त्यः [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति, अस्+क्तिच्—शक०] [अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तम्भाति—स्त्यै+क, या अगः कुम्भः तत्र स्त्यानः संहतः इत्यगस्त्यः] 1 'कुम्भज' एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2. एक नक्षत्र का नाम।

अगस्त्यः—अगस्ति, दे० ऊपर।

अगाध (वि०) [न० ब०] अथाह, बहुत गहरा, अतल-अगाधसलिलात्समुद्रात्—हि० १।५२; (आलं०) गंभीर, सविवेक, बहुत गहरा—°सत्त्व-रघु० ६।२१,—यस्य ज्ञानदयासिंधोरगाधस्यानघा गुणाः—अमर०, अथाह, अबोध्य;—धः—धं गहरा छेद या दरार, सम०—जलः गहरा तालाब, गहरी झील।

अगारं [अगं न गच्छन्तम् ऋच्छति प्राप्नोति—अग+ऋ+अण्] घर; शून्यानि चाप्यगाराणि—मनु० ९।२६५, °दाहिन् घरफूंक आदमी।

अगिरः [न गीर्यते द्रुतेन गृ कर्मणि क—न० त०] स्वर्ग। सम०—ओकस् (वि०) स्वर्ग में रहने वाला (जैसे देवता)।

अगुण (वि०) [न० ब०] 1. निर्गुण (परमात्मा के संबंध में), 2 जिसमें अच्छे गुण न हों गुणहीन—अगुणोऽयमशोक—मालती० ३,—णः दोष, अवगुण।

अगुरु (वि०) [न० त०] 1 जो भारी न हो, हल्का, 2. (छंद में) लघु 3 जिसका कोई शिक्षक न हो;—रुः (नपुं० भी) अगर की सुगन्धित लकड़ी और पेड़।

अगृह (वि०) [न० ब०] बिना घर बार का घुमक्कड़, साधु।

अगोचर (वि०) [नास्ति गोचरो यस्य न० ब०] जो इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष न हो, अस्पष्ट, वाचामगोचरां हर्षावस्थामस्पृशत्—दश० १६९,—रं 1 अतीन्द्रिय, 2. अदृश्य, अज्ञेय 3. ब्रह्म।

अग्नायी (स्त्री०) [अग्नि+ऐङ्+ङीप्] 1 अग्नि की पत्नी, अग्निदेवी' स्वाहा 2. त्रेतायुग।

अग्निः [अंगति ऊर्ध्वं गच्छति—अङ्ग्+नि नलोपश्च] आग 1. कोप°, चिता° आदि, 2. आग का देवता 3. तीन प्रकार की यज्ञीय अग्नि—गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण 4. जठराग्नि, पाचनशक्ति 5. पित्त 6. सोना 7. तीन की संख्या; द्वन्द्व समास में जब कि प्रथम पद में देवताओं के नाम या विशिष्ट शब्द हों तो 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्ना' हो जाता है जैसे °विष्णू, °मरुतौ; 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' भी हो जाता है जैसे—°पर्जन्यौ, °वरुणौ, °षोमौ। सम०—अ (आ) गारं—रः,—आलयः—गृहं अग्नि का मन्दिर—रघु ५।२५।—अस्त्रं आग बरसाने वाला अस्त्र, रॉकेट, इसी प्रकार °बाण, आधानं अग्नि की प्रतिष्ठा करना, इसी प्रकार °आहितिः, आधेय वह ब्राह्मण जो अग्नि को प्रतिष्ठित रखता है, दे० आहिताग्नि,—उत्पातः अग्निमय उत्पात, उल्का या धूमकेतु आदि,—उपस्थानं अग्नि की पूजा, अग्निपूजा का सूक्त या मंत्र—कणः,—स्तोकः चिनगारी, कर्मन् (नपुं०) 1. अग्नि क्रिया 2 अग्नि में आहुति, अग्नि की पूजा, इसी प्रकार °कार्यं, निर्वर्तिताग्निकार्यं का० १६,—कारिका 1 पवित्र अग्नि को प्रतिष्ठित करने का साधन, 'अग्नीध्र' नामक ऋचा, 2 अग्नि कार्य, काष्ठं अगर,—कुक्कुटः अग्नि-शलाका,—कुंडं अग्नि को स्थापित रखने के लिए स्थान, अग्नि पात्र, कुमार,—तनय—सुतः कार्तिकेय जो अग्नि से उत्पन्न हुए कहे जाते हैं, दे० कार्तिकेय,—केतुः धूआं;—कोणः—दिक् दक्षिण-पूर्वी कोना जिसका देवता अग्नि है,—क्रिया अन्त्येष्टिक्रिया, और्ध्वदैहिक संस्कार 2 दाह क्रिया,—क्रीडा आतिशबाजी, रोशनी;—गर्भ (वि०) आभ्यन्तर में आग रखते हुए, °भां शमीमिव—श० ४।३. (—र्भः) सूर्यकान्त मणि जिसे सूर्य की किरणों के स्पर्श से आग उगलने वाला माना जाता है, तु०-श० २।७ (—र्भा) 1 शमीवृक्ष 2 पृथ्वी,—चित् (पुं०) अग्नि को प्रज्वलित रखने वाला—अग्निचित् साधंमनोज्ञानिर्जिताग्निचित्—रघु० ८।२५,—चयः—चयनं —चित्या अग्नि को प्रतिष्ठित रखना, अग्न्याधान;—ज (वि०) अग्नि से उत्पन्न होने वाला,—जः—जातः 1. कार्तिकेय 2. विष्णु,—जं—जातम्—सोना, इसी प्रकार °जन्मन्;—जिह्वा आग की लपट अग्नि, की सात जिह्वाओं (कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च जिह्वाः सप्त विभावसोः ॥ में से एक,—तपस् (वि०) बहुत अधिक आग के समान चमकने या जलने वाला;—त्रय त्रेता (स्त्री०) तीन अग्नियाँ (अग्नि के अन्तर्गत देखिए); —द (वि०) 1 पौष्टिक, क्षुधावर्धक 2 दाहक; —दातृ (पुं०) मनुष्य का दाहकर्म करने वाला, —दीपन (वि०) क्षुधावर्धक, पौष्टिक;—दीप्तिः, —वृद्धिः बढ़ी हुई पाचन शक्ति, अच्छी भूख;—देवा

कृत्तिका नक्षत्र —**आधानं** पवित्र अग्नि को रखने का पात्र या स्थान अग्निहोत्री का घर, —**आधेयं** अग्नि को सदा प्रतिष्ठित रखना, —**परिक्रिया** (स्त्री०) अग्नि-पूजा, —**परिच्छदः** यज्ञ के सारे उपकरण—मनु० ६।४, —**परीक्षा** (स्त्री०) अग्नि द्वारा परीक्षा, —**पर्वतः** ज्वालामुखी पहाड़ —**पुराणं** व्यास प्रणीत १८ पुराणों में से एक —**प्रतिष्ठा** (स्त्री०) अग्नि की स्थापना विशेष कर विवाह संस्कार की, —**प्रवेशः** —**प्रवेशनं** अग्नि में उतरना अपने पति की चिता पर किसी विधवा का सती होना —**प्रस्तरः** पलीता चकमक पत्थर, —**बाहुः** धुआँ —**भः** 1 कृत्तिका 2 सोना —**भू** (नपुं०) 1 जल 2 सोना —**भू** अग्नि से उत्पन्न कार्तिकेय, —**मणिः** सूर्यकान्त मणि पलीता —**मथः** —**मथनः** घर्षण या रगड़ द्वारा आग पैदा करना —**मान्द्यं** पाचनशक्ति का मंद होना भूख न लगना —**मुखः** 1 देवता 2 ब्राह्मणमात्र 3 मुँह में आग रखने वाला मार से काटने वाला खटमल का विशेषण पंच० १ —**मुखी** रसोई घर, —**रक्षणं** पवित्र गार्हपत्य या अग्निहोत्र की अग्नि को प्रतिष्ठित रखना —**रजः** —**रजस्** (पुं०) 1 इन्द्रगोप नामक एक सिंदूरी कीड़ा 2 अग्नि की शक्ति 3 सोना —**लोकः** अग्नि का वह संसार जो मेरु शिखर के नीचे स्थित है —**वधूः** (स्त्री०) स्वाहा, दक्ष की पुत्री और अग्नि की पत्नी —**वर्धक** (वि०) पौष्टिक —**वाहः** 1 धुआँ 2 बकरी —**वीर्यं** 1 अग्नि की शक्ति 2 सोना —**शरणं**-**शाला** —**शालं** अग्नि का मन्दिर वह स्थान या घर जहाँ पवित्र अग्नि रक्खी जाय—°रक्षणाय स्थानमग्निशरणम् विक्रम० 3 —**शिख** 1 दीपक राकेट 2 अग्निमय बाण 3 बाणमात्र 4 कुसुम या केसर का पौधा 5 केसर —**शिखं** 1 केसर 2 सोना —**ष्टुत** —**ष्टुभ** —**ष्टोम** आदि दे० °स्तुत —°स्तुभ आदि —**संस्कारः** 1 अग्नि की प्रतिष्ठा 2 चिता पर शव को दाह क्रिया—नास्य कार्योऽग्निसंस्कारः—मनु० ५।६९ रघु० १२।५६, —**सखः** —**सहायः** 1 हवा 2 जंगली कबूतर 3 धुआँ

अग्निसात् (वि० या क्रि॰ वि०) अग्नि को साक्षी बनाकर अग्नि के सामने —**पयसान्** मालवि० ४।१२ —**स्तुत्** (पुं०) एक दिन से अधिक चलने वाले यज्ञ का एक भाग —**स्तोमः** (°ष्टोम) वसन्त में कई दिन तक चलने वाला यज्ञीय अनुष्ठान या दीर्घकालिक संस्कार जो ज्योतिष्टोम का एक आवश्यक अंग है —**होत्रं** 1 अग्नि में आहुति देना, 2 होम की अग्नि को स्थापित रखना और उसमें आहुति देना,—**होत्रिन्** (वि०) अग्निहोत्र करने वाला, या वह व्यक्ति जो अग्निहोत्र द्वारा होमाग्नि को सुरक्षित रखता है।

अग्निसात् (अव्य०) अग्नि की दशा तक, इसका प्रयोग समस्तपद में 'कृ' धातु (जलाना, भस्म करना) के साथ किया जाता है—न चकार शरीरमग्निसात्—रघु० ८।७२, भू जलाया जाना।

अग्र (वि०) [अङ्ग्+रन् नलोपश्च] 1 प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम प्रमुख °महिषी मुख्य रानी, 2 अत्यधिक —**ग्रं** 1 (क) सर्वोपरि स्थल या उच्चतम बिन्दु (विप०—मूलम्, मध्यम) (आल°) तीक्ष्णता प्रखरता नासिका°—नाक का अग्रभाग समस्या एव विशा बिद्धाग्रेऽभवत—का० ३४६—जिह्वा के अग्र भाग पर थी (ख) चोटी शिखर सतह—कैलास° पर्वत° आदि 2 सामने 3 किसी भी प्रकार में सर्वोत्तम 4 लक्ष्य उद्देश्य 5 आरम्भ 6 आधिक्य, अतिरेक समस्त पदों में जब यह प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है— 'पूर्वभाग' 'सामने' 'नोक' आदि उदा० °पाद चरण। सम०—**अनी** (णी) क (कम्) सैन्यमुख मनु० ७।१९३—**आसनं** प्रमुख आसन मान-आसन—मुद्रा० १।१२ —**उप-हस्तः** —**ण** नेता मार्गदर्शक सबसे आगे चलने वाला —**गण्य** (वि०) श्रेष्ठ प्रथम श्रेणीमें रक्खे जाने योग्य —**ज** पहले पैदा या उत्पन्न हुआ, —**जः** अग्रजन्मा बड़ा भाई—अस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे-रघु० १४।७३ 2 ब्राह्मण—**जा** बड़ी बहन इसी प्रकार °जात °जातक °जाति। **जन्मन्** (पुं०) 1 पहले जन्मा हुआ बड़ा भाई 2 ब्राह्मण दश०१३ —**जिह्वा** जिह्वा की नोक —**दानिन्** (वि०) पतित ब्राह्मण जो मृतक श्राद्ध में दान लेता है —**दूत** आगे-आगे जाने वाला दूत—कृष्णाक्रोधाग्रदूत —वेणी० १।२२, रघु० ६।१२ —**नी** (णी) प्रमुख नेता—अग्रणीर्मन्त्रकृतामृषीणाम्-रघु० ५।४ **पाद** पैर का अगला हिस्सा पैर का अगला पंजा —**पूजा** आदर या सम्मान का सर्वोच्च या प्रथम चिह्न —**पेय** पीने में प्राथमिकता—**भाग** 1 प्रथम या सर्वोत्तम भाग 2 शेष शेष भाग 3 नाक सिरा —**भागिन्** (वि०) (शेषभाग) को पहले प्राप्त करने का अधिकार प्रकट करने वाला —**भू** °ज **भूमि** (स्त्री०) महत्त्वाकांक्षा का लक्ष्य या उद्दिष्ट पदार्थ —**मांस** हृदय का मांस हृदय—°म गानीतम्—वेणी० ३ —**यायिन्** (वि०) नेतृत्व करना सेना के आगे चलना पुत्रस्य ते रणशिरस्यग्रयायी श० ७।२६ **अग्रवीरः** (पुं०) मुख्य वीर, मुख्य योद्धा —**सन्धानी** यम द्वारा मनुष्यों के कार्यों का लेखा-जोखा रखने की बही —**सन्ध्या** (स्त्री०) प्रभात काल, कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या —श० ४ (पाठ०),—**सर**—**सारिन्** —नेतृत्व करने वाला—रघु० ९।२३, ५।७१, —**हस्तः** (पुं०) (—°करः,—°पाणिः)

हाथ या भुजा का अगला भाग, हाथी की सूंड का सिरा; कभी २ उंगली या उंगलियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, दाहिना हाथ—अथाग्रहस्ते मुकुलीकृतांगुली कुमा० ५।६३— हायण (ण) —वर्ष का आरम्भ मार्गशीर्ष (मर्गशिर) महीने का नाम, — हार: राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को जीवननिर्वाहार्थ दान में दी गई भूमि —क्षेत्रियस्याग्रहारे – दश० ८१।

अग्रत: (क्रि० वि० [अग्र+तसिल्] (सम्बन्धकारक के साथ) 1 सामने, के आगे, के ऊपर, आगे 2 की उपस्थिति में 3 प्रथम, सम० —सर नेता।

अग्रिम (वि०) [अग्रे भव —अग्र+डिमच्] 1 प्रथम (क्रम श्रेणी आदि में), प्रमुख, मुख्य 2 बड़ा ज्येष्ठ, —ज: बड़ा भाई।

अग्रिय (वि०) [अग्रे भव: —अग्र+घ] प्रमुख आदि —य: बड़ा भाई।

अग्रीय (वि०) [अग्रेभव —अग्र+छ] प्रमुख सर्वोत्तम आदि। दे० अग्रिम।

अग्रे (क्रि० वि०) 1 के सामने, पहले (काल और देश वाचक) 2 की उपस्थिति में, 3 के ऊपर 4 बाद में फलत —एवमग्रे वक्ष्यते, एवमग्रेऽपि द्रष्टव्यम् आदि 5 सबसे पहले पहले 6 औरों से पहले। सम० —ग नेता, —दिधिषु: पहले तीन वर्णों में से कोई एक पुरुष जो विवाहित स्त्री से विवाह करता है (अग्रे विवाहकारी), —दिधिषू: (स्त्री०) एक विवाहित स्त्री जिसकी बड़ी बहन अभी अविवाहित है (ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा, सा चाग्रेदिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा च दिधिषू: स्मृता) °पति: अग्रेदिधिषू स्त्री का पति, —वन-ं जंगल की सीमा या अन्तिम सिरा —सर (वि०) आगे २ चलने वाला, नेता मानमहतामग्रेसर: केसरी —भर्तृ० २।२९।

अग्र्य (वि० [अग्रे जात —अग्र+यत्] 1 प्रमुख सर्वोत्तम उत्कृष्ट, सर्वोत्तम, प्रथम—तदङ्गमग्र्यं मघवन् महाक्रतो —रघु० ३।४६, °महिषी १०।६६, अधिकरण के साथ भी, मनु० ३।१८४ —ग्र्य: बड़ा भाई।

अघ्=अघ् —दे० (चु० उभ०) बुरा करना, पाप करना।

अघम् [अघ्+अच्] 1 पाप अघौघविध्वंसविधौ पटीयसी —शि० १।१८, २६ °मर्षण आदि 2 कुकृत्य अपराध, दोष शि० ४।३७ 3 अपकृत्य, दुर्घटना, विपत्ति—क्रियाघाना मघवा विघातम् —कि० ३।५२, दे० अनघ 4 अपवित्रता, (अशौच) 5 व्यथा, कष्ट —घ: एक राक्षस का नाम, बक और पूतना का भाई जो कंस के यहां मुख्य सेनापति था। सम० —असुर: दे० ऊपर 'अघ', —अह: (अहम्) अपवित्रता का दिन, अशौच दिन, —आयुस् (वि०) पापमय जीवन बिताने वाला; —आश—नाशन (वि०) परिमार्जक, पापनाशक, —मर्षण (वि०) विशोधक, पाप को हटाने वाला, ऋग्वेद के मन्त्र जिनका सन्ध्या प्रार्थना के समय प्राय: ब्राह्मणों द्वारा पाठ होता है (ऋग्० म० १० सू० १९०) सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् अमर०, —विष: सांप, —शंस: दुष्ट आदमी जैसे चोर, —शंसिन् (वि०) किसी के पाप या अपराध को बतलाने वाला।

अघर्म (वि०) [न० ब०] जो गरम न हो ठंडा —धामन्-चन्द्रमा जिसकी किरण ठण्डी होती है।

अघोर (वि०) [न० त०] जो भयानक न हो भीषण न हो —र: शिव या शिव का कोई रूप जिसमें अघोर घोर हो। सम० —पथ: —मार्ग: शिव का अनुयायी —प्रमाण: भीषण शपथ या अग्नि परीक्षा।

अघोष (वि०) [नास्ति घोषो यस्य यत्र वा —न० ब०] ध्वनिहीन नि:शब्द —ष: प्रत्येक वर्ग के प्रथम दो अक्षर श ष तथा स।

अङ्क (चुरा० उभ०) चिह्न लगाना, मुहर लगाना—अङ्कयति-ते, अङ्कयित, अङ्कित 1 चिह्नित करना, छाप लगाना—स्वनामधेयाङ्कित—श० ४ [illegible] अङ्कित [illegible] विक्रम० ४।१७, 2 गिनना 3 धब्बा लगाना, कलंकित करना—[illegible] भर्तृ० नीति० ५८ 4 चलना, घूमना [illegible]।

अङ्क: (पु०) [अङ्क्+अच्] 1 गोद, क्रोड, —अङ्काद्ययावङ्कमुदीरिताशी: रघु० ७।१५ 2 चिह्न, संकेत —[illegible] धब्बा, लाञ्छन [illegible] दाग इन्दो: किरणेष्विवाङ्क: —कु० १।३ कन्या [illegible] निर्वास्या —मनु० ८।२०९, 3 अङ्क संख्या ९ की संख्या 4 पार्श्व पक्ष, सान्निध्य [illegible] शि० [illegible] 5 नाटक का एक खंड 6 काँटा या मुड़ा हुआ उपकरण 7 नाट्य रचना का एक प्रकार रूपक के दस भेदों में से एक दे० सा० द० ५१९ 8 पंक्ति मुड़ी हुई [illegible] एक मोड़ भुजा में मोड़। सम० —अवतार: जब नाटक के आगामी अङ्क में सामग्री प्रकट करता हुआ, पूर्वाङ्क के अन्त में—अङ्कसमाप्ति—किया जाता है उसे अङ्कावतार कहते हैं जैसे कि शकुन्तला का छठा अङ्क अथवा मालविकाग्निमित्र का दूसरा अङ्क —तंत्र संख्या-विज्ञान (अंकगणित या बीजगणित), —धारण-णा (नपुं० स्त्री०) 1 चिह्न लगाना या संकेत करना 2 आकृति या मनुष्य को आकने की रीति —परिवर्त: 1 दूसरी ओर मुड़ना 2 किसी की गोद में लुढ़कना या प्रेम के हाव-भाव दिखाना (आलिंगन के अवसर पर), —पालि: —पाली (स्त्री०) 1.

आलिंगन-तावदगाढं वितर सकृदङ्कपालीं प्रसीद-माल० ८।२, 2. दाढ़ें, नसें; —पाश: अंकगणित में एक प्रकार की प्रक्रिया जिसमें १—२ आदि संख्याओं के अदल-बदल से एक विचित्र शृंखला सी बन जाती है, —भाज् (वि०) 1. गोद में बैठा हुआ या लिया हुआ जैसे कि एक बच्चा 2 सुगम, निकटस्थ, सुलभ शि० ५।५२; —मुखं (या —आस्यम्) अङ्क का वह भाग जहाँ सब अङ्कों का विषय सूचित किया गया हो अङ्कमुख कहलाता है, इसी से बीज और फल का संकेत होता है—उदा० माल० १ में कामन्दकी और अवलोकिता उस अंश का संकेत करती हैं जिसका अभिनय भूरिवसु और अन्य पात्रों को करना है। इसमें कथावस्तु का क्रम भी संक्षेप में बतला दिया जाता है, —विद्या संख्या-विज्ञान, अंकगणित।

अङ्कन [अङ्क्+ल्युट्] 1 चिह्न, प्रतीक 2 चिह्नित करने की क्रिया 3 चिह्न लगाने के साधन, मुहर लगाना आदि।

अङ्कति: [अञ्च्+अति, कुत्वम् अञ्च् ... वा—अङ्ख्ति: अङ्कनिर्वा] 1. हवा, 2 अग्नि 3 ब्रह्मा 4 वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र करता है।

अङ्कुट: [अङ्क्+उटच्] ताली, कुंजी।

अङ्कुर: [अङ्क्+उरच्] 1 अंखुवा, किसलय, कोंपल —दर्भाङ्कुरेण चरण: क्षत: —श० २।१२, समस्त पद के अन्त में प्राय: इसका 'नुकीला' या 'तीक्ष्ण' अर्थ होता है—मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात्—भ० २।४ नुकीली दाढ़, (आल०) कलम, संतान, प्रजा —अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण —श० ७।१९, 2 पानी 3 रुधिर 4 बाल 5 रसौली, सूजन।

अङ्कुरित (वि०) [अङ्कुर+इतच्] नवपल्लवित, उत्पन्न, 'न मनसिजेन' विक्रम० १।१८ मानो काम ने किस लय पैदा कर दिये हैं।

अङ्कुश: [अङ्क्+उशच्] (लोहे का) काँटा या हाँकने की छड़ी, (आल०) नियन्त्रक, संशोधक, प्रशासक, निदेशक, दबाव या रोक —निरङ्कुशा: कवय: कवि नियन्त्रण से मुक्त होते हैं या उन पर कोई बंधन नहीं होता। सम० —ग्रह: पीलवान, —अनेकपानामङ्कुशग्रह: —शि० १२।१६; —दुर्धर दुर्दान्त, —धारिन् (पुं०) हाथीवान।

अङ्कुशित (वि०) [अङ्कुश+इतच्] अङ्कुश से हाँका गया।

अङ्कुशिन् (वि०) [अङ्कुश+इनि] अङ्कुश रखने वाला।

अङ्कूर: अंखुवा—दे० 'अङ्कुर'।

अङ्कूष:—दे० अङ्कुश।

अङ्कोट:-ठ:-ल: [अङ्क्+ओट-ठ-ल] पिस्ते का वृक्ष।

अङ्कोलिका [अङ्क+उल+क+टाप् या अङ्क—पालिका का अपभ्रंश] आलिंगन।

अङ्क्य (वि०) [अङ्क्+ण्यत्] दागने योग्य, चिह्नित या अंकित करने योग्य, —क्य: एक प्रकार का ढोल या मृदंग।

अङ्ख् (चु० पर० अक० सेट्) [अङ्खयति-अङ्खित] 1 पेट के बल सरकना 2 चिपटना 3 रोकना।

अङ्ग् (भ्वा० पर० अक० सेट्) [अङ्गति, आनङ्ग, अङ्गितुम्, अङ्गित] जाना, चलना; (चु० पर०) 1. चलना, चक्कर काटना 2 चिह्न लगाना।

अङ्ग (अव्य०) [अङ्ग्+अच्] संबोधक अव्यय, जिसका अर्थ है 'अच्छा' 'अच्छा श्रीमान्' 'निस्सन्देह' 'सच' 'हाँ' जैसा कि 'अङ्ग कुरु' में, —अङ्ग कच्चित्कुशली तात: —का० २२१; 'किम्' के साथ इसका अर्थ होता है 'कितना कम' 'कितना अधिक' —तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां किमङ्ग वाग्घस्तवता नरेण —पंच० १।७१। काशिकाकार ने इसके निम्नांकित अर्थ बताये हैं— 'अङ्ग च पुनरर्थे च सङ्गमामन्त्रणे ... इत्थं सम्बोधने चैव ह्यङ्गशब्द: प्रयुज्यते।' 'संस्कृत-रचना-छात्र निर्देशिका' का ३ ... भी देखें; —ग—1 शरीर 2 अंग या शरीर का अवयव—अंगप्रत्यङ्गनिर्माण—विधौ विधातु: —कुमा० १।३३, 3 (क) किसी संपूर्ण वस्तु का प्रभाग या विभाग, एक खण्ड या अंश, जैसे सप्ताङ्गं राज्यम्—चतुरङ्गं बलम् आदि (ख) सहायक या सहायक खण्ड, पूरक (ग) अवयव सारभूत घटक —सदङ्गमयं सखवत् सहाङ्कतौ —रघु० ३।४६, (घ) विशेषणात्मक या गौणभाव, गौण, सहायक या आश्रित अंग (जो मुख्य वस्तु का सहायक है), (इसका विप० है 'प्रधान' या 'अङ्गिन्' —अङ्गी रौद्ररसस्तत्र सर्वेऽङ्गानि रसा: पुन: —सा० द० ५१७ (ङ) सहायक साधन या युक्ति 4 (व्या०) शब्द का मूल रूप 5 (क) नाटकों में पात्रों, सखियों के उपभेद (ख) गौण लक्षणों में युक्त सपक्ष शरीर 6 छ: की संख्या के लिए आलंकारिक कथन 7 मन, —गा: (पुं० ब० व०) एक देश का नाम, उस देश के वासी—यह प्रदेश बंगाल के वर्तमान भागलपुर के आस पास स्थित है। सम० —अङ्गि, —अङ्गीभाव: शरीर के अंगों का संबंध, गौण अंगों का मुख्य अंग से संबंध या पोष्य अंग का पोषक अंग से संबंध (गौणमुख्यभाव, उपकार्योपकारकभावश्च) अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु सङ्कर: —का० प्र० १० (अनुग्राह्यानुग्राहकत्वम्) —अधिप:—अधीश: अंगों का स्वामी, कर्ण (पुं० राजा, पति ईश्वर, अधीश्वर), —ऋह: ढेंकल, —ज,—जात (वि०) 1 शरीर पर उपजा हुआ, या शरीर में जन्मा हुआ, शारीरिक 2 सुन्दर, अलंकृत; —(ज:)—जनुस् 1 पुत्र 2 शरीर के बाल (नपुं० भी), 3 प्रेम, काम, प्रेमावेश 4 शराबखोरी, मस्ती 5 एक रोग; —(जा) पुत्री; —(जं)

रुधिर, —द्वीप. छोटे छ द्वीपों में से एक, —न्यास उपयुक्त मंत्रों के साथ हाथ से शरीर के अंगों को स्पर्श करना, —पालि (स्त्री०) आलिंगन —पालिका= दे० अंकपालि —प्रत्यङ्ग छोटे बड़े सब अंग, —भू पुत्र 2 कामदेव —भङ्ग 1 गात्रपक्षाघात, लकवा— [illegible] भूत्वा स्थास्यामि —श० २, 2 [illegible] जैसा कि [illegible] मनुष्य करता है —मंत्र एक [illegible] का नाम —मर्द 1 जो अपने स्वामी के शरीर पर मालिश करता है 2 मालिश करने की क्रिया इसी प्रकार °मर्दक या मर्दन —मंत्र [illegible] —यज्ञ — याग यज्ञ से संबद्ध गौण क्रिया —रक्षक शरीर रक्षक अंगरक्षक —रक्षणी कवच पोशाक — राग 1 [illegible] सुगंधित उबटन का [illegible] सुगन्धित उबटन —रघु० १२।२७ ६।६० कुमा० ५।११ 2 लेप किया — विकल (वि०) 1 अपाहज लकवा मारा हुआ 2 मूर्छित —विकृति (स्त्री०) 1 शरीर में कोई विकार होना अपस्मार 2 मिरगी का दौरा [illegible] —विकार शारीरिक दोष —विक्षेप [illegible] शारीरिक चेष्टा — विद्या 1 ज्ञान के साधनभूत व्याकरण आदि शास्त्र 2 अंगों को [illegible] चिह्नों को देखकर शुभाशुभ कहने की विद्या बृहत्संहिता का [illegible] अध्याय जिसमें इस विद्या का पूर्ण विवरण निहित है —विधि गौण या सहायक अधिनियम जो कि मुख्य नियम का सहकारी है —वीर मुख्य या प्रधान नायक —वैकृत 1 संकेत इंगित या इशारा 2 सिर हिलाना आँख झपकना, 3 [illegible] शारीरिक रूप, —संस्कार —संस्क्रिया शरीर को आभूषणों से सुशोभित करना शारीरिक अलंकरण —संहति (स्त्री०) अंगसमष्टि अंगों की सामंजस्य शरीर देहशक्ति —संग शारीरिक संपर्क मैथुन संभोग —सेवक निजी नौकर —हार हाव भाव नृत्य —हारि 1 हावभाव 2 रंगभूमि रंगशाला —हीन (वि०) 1 अपाहिज विकलांग 2 विकृत अंगवाला।

अङ्गक [अङ्ग + अच् स्वार्थे कन्] 1 अङ्ग अङ्गामयैः स्थानों में कुतूहलमङ्गकैः —उत्त० [illegible] २४ 2 शरीर—शि० ४।६६।

अङ्गण=दे० अङ्गनम्।

अङ्गति [अङ्ग + अति] 1 सवारी यान (स्त्री० भी) 2 अग्नि 3 ब्रह्मा 4 अग्निहोत्री ब्राह्मण [illegible]

अङ्गद [अङ्ग द्यति दाति वा दै—दो+क] बाजूबंद ककण जो कोहनी के ऊपर भुजा में पहना जाता है बाजूबन्द, —तप्तचामीकराङ्गद —विक्रम० १।१५ संघट्टयन्नङ्गदमङ्गदेन—रघु० [illegible] —द 1 [illegible] किष्किंधा के वानरराज बालि का पुत्र 2 उर्मिला से उत्पन्न लक्ष्मण का पुत्र —रघु० १५।९० इसकी राजधानी का नाम अंगदीया था।

अङ्गन-नम् [अङ्ग + ल्युट्] 1 [illegible] आंगन चौक सहन अहाता [illegible] गगनाङ्गन आकाश अन्तरिक्ष, [illegible] भुवनमरङ्गणम्य मालं० [illegible] 2 सवारी 3 जाना चलना आदि।

अङ्गना [प्रशस्तम् अङ्गम् यस्याः सा — अङ्ग + न + टाप्] 1 स्त्रीमात्र [illegible] कोई भी स्त्री इत्यादि, 2 सुन्दर स्त्री 3 [illegible] सम० —जन 1 स्त्री जाति 2 स्त्रियां —प्रिय (वि०) स्त्रियों का प्रिय —प्रिय [illegible]

अङ्गस [illegible] पक्षी।

अङ्गार [illegible] 1 कोयला जलता हुआ या बुझा हुआ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पात्री शकटी [illegible] बनाने वाला [illegible]

अङ्गारक [illegible] 1 कोयला 2 मंगल ग्रह [illegible] —वार मंगलवार [illegible] अंगारक [illegible]

अङ्गारकित (वि०) [illegible] अङ्गारक [illegible] जला हुआ भुना हुआ

अङ्गारि [illegible] अङ्गारी [illegible]

अङ्गारिका [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

अङ्गारिणी [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अङ्गारित (वि०) [अङ्गार + इतच्] जला हुआ भुना हुआ [illegible] —ता 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

अङ्गारीय (वि०) [अङ्गार + छ] कोयला तैयार करने की सामग्री।

अङ्गिका [illegible] चोली अंगिया।

अङ्गिन् (वि०) [अङ्ग + इनि] 1 शारीरिक देहधारी — धर्मार्थकामाः [illegible] शरीरधारी हुआ हुआ रघु० १०।८४ ३८ 2 मौलिक अंगों वाला, मुख्य प्रधान— [illegible] एक [illegible] भवेच्छृङ्गारो वीर एव वा सा० द०।

अङ्गिरः, अङ्गिरस् (पुं०) [अङ्ग्+असि+इरुट्] ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि, (ब० व०) अंगिरा ऋषि की सन्तान।

अङ्गीकरणम्, अङ्गीकार, अङ्गीकृतिः (स्त्री०) [अङ्ग+च्वि+कृ+ल्युट् —कृ+घञ् —कृ+क्तिन्] 1 स्वीकृति 2 सहमति, प्रतिज्ञा, जिम्मेदारी आदि।

अङ्गीय (वि०) [अङ्ग+छ] शरीर संबंधी।

अङ्गु [अङ्ग्+उन्] हाथ।

अङ्गुरि री— दे० अंगुलि।

अङ्गुलः [अङ्ग्+उलच्] 1 अंगुली 2 अंगूठा (स्त्री० भी), 3 अंगुल भर की नाप (नपुं० भी) जो आठ जौ के बराबर होता है (24 अंगुलियों की एक 'हस्त' या बालिश्त और 48 अंगुलों का एक हाथ का माप होता है।

अङ्गुलिः -ली, अङ्गुरिः -री, (स्त्री०) [अंग्+उलि] 1 अंगुली (हाथ की अंगुलियों के नाम अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा या कनिष्ठिका हैं)। पैर का एक पांव को अंगुली कहलाती है 2 अंगूठा पैर का अंगूठा 3 हाथी की सूंड की नोक 4 अंगुल नाप विशेष। सम० —तोरणम् मस्तक पर चन्दन का अर्ध चन्द्राकार तिलक —त्र —त्राणम् अंगूठे की रक्षा के निमित्त बना एक प्रकार का दस्ताना जिसे धनुर्धर पहनते हैं —मुद्रा —मुद्रिका मोहर लगाने की अंगूठी —मोटनम् —स्फोटनम् चुटकी बजाना अंगुली चटकाना —संज्ञा अंगुलियों से संकेत —मुखार्पितैकाङ्गुलिसंज्ञयैव—कुमा० ३।४१ —संदेश अंगुलियों के इशारे से संकेत करना, —संभूत नाखून।

अङ्गुलिका अंगुलि।

अङ्गुलीयम्, -कम् [अंगुरि (लि)+छ—स्वार्थे कन्] अंगूठी—तव सुचरितमङ्गुलीय नूनं प्रतनु ममेव—श० ६।१० —(पुं० भी)—काकुत्स्थस्याङ्गुलीयक भट्टि० ८।११८।

अङ्गुष्ठः [अंगु+स्था+क] 1 अंगूठा, पैर का अंगूठा 2 अंगूठा भर नाप (प्रायः जो अंगूठे के समान होती है। सम० —मात्र (वि०) अंगूठे की लम्बाई के बराबर —पुरुषं निश्चकर्ष बलाद्यम महा०।

अङ्गुष्ठ्य [अङ्गुष्ठ भव -यत्] अंगूठे का नाखून।

अङ्गूष [अङ्ग्+ऊषन्] 1 नेवला 2 तीर।

अङ्घ् (भ्वा० आ० अक० सेट्) [अङ्घते—अङ्घित] 1 जाना 2 आरंभ करना 3 शीघ्रता करना 4 धमकाना।

अङ्घस् (न०) [अङ्घ्+असुन्] पाप—वेणी० १।१२ (पाठांतर)

अङ्घ्रिः-अंह्रिः—[अङ्घ्+क्रिन्] 1 पैर 2 वृक्ष की जड़ 3 श्लोक का चौथा चरण। सम० —पः वृक्ष —पिबत् ...पादपाङ्घ्रिपाङ्ग—वेणी० २।१८, —पान (वि०) बच्चे की भांति अपने पैर का अंगूठा चूसने वाला —स्कन्धः टखना।

अच् (भ्वा० उभ० इदित् अक० सेट्) [अचति—ते, अञ्चति, आनञ्च, अञ्चित,—अक्त] 1 जाना हिलना, 2 सम्मान करना प्रार्थना करना आदि दे० 'अञ्च्' से संबद्ध —च् (पुं०) [व्या०] स्वरों के लिए प्रयुक्त शब्द।

अचक्षुस् (वि०) [न० ब०] नेत्रहीन, अंधा °विषय (वि०) अदृश्य, (नपुं०) [न० त०] खराब आंख रोगी आंख।

अचण्ड (वि०) [न० त०] जो क्रोधी स्वभाव का न हो, शान्त सौम्य।

अचतुर (वि०) [न० ब०] 1 चार की संख्या से रहित 2 [न० त०] अनाड़ी।

अचर (वि०) [न० त०] स्थिर—चराचर विश्व—कुमा० ... —चराणाम् चराचराणाम् —मनु० ५।२९।

अचल (वि०) [न० त०] दृढ़ स्थिर निश्चल, स्थायी—स्थिरत्वमचलत्वं चामतम् —विक्रम० १।४ —लः 1 पहाड़ (कहा०) चट्टान 2 कब्जा या कील 3 सात की संख्या —ला पृथ्वी, —लं ब्रह्म। सम० —कन्यका, —तनया —दुहिता, —सुता हिमालय पर्वत की पुत्री पार्वती —कीला पृथ्वी —ज, —जात (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न —जा, —जाता पार्वती, —त्विष् (पुं०) कोयल —द्विष् (पुं०) पर्वतों का शत्रु, इन्द्र का विशेषण जिसने पहाड़ों के पंख काट दिये थे।

अचापल —ल्य (वि०) [न० ब०] चंचलतारहित स्थिर, —लम् —ल्यम् [न० त०] स्थिरता।

अचित् (वि०) अ [नञ्+चित्+क्विप् न० त०] 1 समझदारी रहित 2 धर्मशून्य 3 जड़।

अचित्त (वि०) चे० [न चित्त इति न० त०] 1 गया हुआ 2 अविचारित 3 एकत्र न किया हुआ।

अचित्त (वि०) [न० ब०] 1 अकल्पनीय 2 बुद्धिरहित अज्ञान मूर्ख 3 न माना हुआ।

अचिन्तनीय-अचिन्त्य (वि०) [नञ्+चिन्त्+अनीयर्, चिन्त्+यत्] जो सोचा भी न जा सके समझ से परे, —°अचिन्त्यः खलु तव प्रभाव —रघु० ५।३३ —न्त्यः शिव।

अचिन्तित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, आकस्मिक, पंच० २।३।

अचिर (वि०) [न० त०] 1 संक्षिप्त, क्षणिक, क्षणस्थायी, —दे० द्युति °भास् °प्रभा आदि 2 नया -रघु० ८।२०; समस्त पदों में 'अचिर' का अर्थ है हाल में, अभी, कुछ ही पहले—प्रवृत्त ग्रीष्मसमयमधिकृत्य—श० १, अभी अभी °प्रसूता—श० ४—अभी २ जिसने बच्चे को पैदा किया है (यह एक हरिणी के विषय में कहा गया है जो प्रसवोपरान्त थक गयी है)—अचिरा नाम जिसने

बछड़े को जन्म दिया है –रे [क्रि० वि०] [अचिरेण, अचिराय, अचिरात् और अचिरस्य भी इसी अर्थ के द्योतक हैं] 1 बहुत देर नहीं हुई, अभी कुछ पहले 2 हाल ही में, अभी, 3 शीघ्र जल्दी, बहुत देर न करके। सम०– **अंशु,**– **आभा,**– **द्युति,**– **प्रभा,** – **भास्,**– **रोचिस्** (स्त्री०) बिजली–°द्युतिविलासचचला लक्ष्मी– कि० २।१९ °भासा तेजसा चानुलिप्तै –श० ७।७।

अचेतन (वि०) [न० ब०] 1 निर्जीव अबोध –चेतन चेषु– मेघ० ५ 2 बोधरहित अज्ञानी।

अच्छ (वि०) [नञ् + छो + क] स्वच्छ निर्मल पारदर्शक विशुद्ध–मुक्ताच्छदन्तच्छविदन्तुरेयम्–उत्त० ६।२७ मघ० ५१ –कि रत्नमच्छा मति–भर्तृ० १।१६ –च्छ 1 स्फटिक 2 भाल–तु० °भल्ल भी। सम०– **उदन** [अच्छोद] (वि०) स्वच्छ जल वाला –द कादम्बरी में वर्णित हिमालय पर्वत पर स्थित एक झील –भल्ल रीछ।

अच्छ-च्छा (अव्य०) वै०–की ओर (कर्म कारक के साथ) की तरफ।

अच्छन्दस् (वि०) [न० ब०] 1 उपनीत न होने के कारण या शूद्र होने के कारण वेद को न पढ़ने वाला 2 छंदरहित रचना।

अच्छावाक [अच्छ + वच् + घञ्] सोमयाग का ऋत्विज जो होता का सहायक होता है।

अच्छिद्र (वि०) [न० ब०] छिद्ररहित अक्षत निर्दोष दोषरहित–अपच्छिद्र नपच्छिद्र रच्छिद्र श्राद्धकर्माणि सर्वं भवतु अच्छिद्र ब्राह्मणानां प्रसादतः –द्र [न० त०] निर्दोष कार्य या दशा दोष का अभाव °द्रेण बिना रुके आदि से अन्त तक।

अच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 अटूट लगातार चलने वाला, अनवरत 2 जो कटा न हो अविभक्त अक्षत अखण्ड।

अच्छोटनम् [नञ् –छुट् + णिच् + ल्युट्] आखेट शिकार।

अच्युत (वि०) [न० त०] 1 अपने स्वरूप से न गिरा हुआ दृढ़, स्थिर, निर्विकार, अचल 2 अनश्वर स्थायी –तः विष्णु, सर्वशक्तिमान् प्रभु, गच्छाम्यच्युतदर्शनेन–काव्य० ५ (यहाँ अ° का भी अर्थ है–दृढ़ जो वासनाओं का शिकार न हो)। सम०–**अग्रज** बलराम या इन्द्र –**आत्मज**,–**आत्मज**,–**पुत्र** कामदेव कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र –**आवास**,–**वास** पीपल का वृक्ष।

अज् (भ्वा० पर० सक० सेट्०–आर्धधातुक लकारों में विकल्प से 'वी' आदेश होता है) [अजति आजीत् अजितुम्, अजित–वीत] 1 जाना 2 हाँकना, नेतृत्व करना 3 फेंकना (उपसर्गों के साथ इस धातु का प्रयोग केवल वेद में ही पाया जाता है)।

अज (वि०) [न० त०–न जायते नञ्–जन् + ड] अजन्मा, अनादि–अजस्य गृह्णतो जन्म–रघु० १०।२४ –जः 1 अज सर्वशक्तिमान् प्रभु का विशेषण विष्णु, शिव ब्रह्मा 2 आत्मा, जीव 3 मेढ़ा बकरा 4 मेषराशि 5 अन्न का एक प्रकार 6 चन्द्रमा कामदेव। सम० –**अजनी** (स्त्री) कटीली कांकमाची धमासा –**अविकं** छोटा पशु –**अश्व** बकरे और घोड़े –**एडक** बकरे और मेढ़े –**गर** अजगर नामक भारी साँप जो कहते हैं बकरियों को निगल जाता है –(री) एक पौधे का नाम–**गन्ध** दे० नी० अजगन्ध –**जीव**, **जीविक** गडरिया इसी प्रकार– **प** –°**पाल**, –°**भार** 1 कसाई 2 एक प्रदेश का नाम (वर्तमान अजमेर) **मीढ़** 1 अजमेर नामक स्थान का नाम 2 युधिष्ठिर का उपाधि **मोदा मोदिका** अजमोद नामक औषध का नाम जिसे मराठी में ओवा कहते हैं **शृङ्गी** मेढ़ासिंगी पौधे का नाम।

अजकव –वः [अज विष्णु क ब्रह्माण वाति आदि वा + क] शिव का धनुष।

अजका-अजिका [स्वार्थ कन् + टाप्] छोटी बकरी बकरी का बच्चा।

अजकाव–वः [अज विष्णु क ब्रह्मा नाम पर्याप्त द्वार अव + अण] शिव का धनुष पिनाक।

अजगव [अजगौ विष्णुब्रह्माणौ सार्थौ व क] शिव का धनुष पिनाक।

अजगाव [अजगौ विष्णुब्रह्माणौ प्रभवे अण] शिव का धनुष पिनाक।

अजड (वि०) [न० ब०] जो जड न हो समझदार।

अजन (वि० [न० ब०] अजनः जनशून्य बियाबान।

अजनि (स्त्री) [अज् + अनि] पथ मार्ग।

अजन्मन् (वि०) अनुत्पन्न अजन्मा ईश का विशेषण (पु०) पुनर्जन्म छुटकारा अपमोक्ष।

अजन्य (वि० [न० त०] उत्पन्न होने के अयोग्य मानव जाति के प्रतिकूल –न्यम् अपशकुनसूचक अशुभ घटना जैसे कि भूचाल।

अजप [न० ब०] वह ब्राह्मण जो सन्ध्योपासना उचित रूप से नहीं करता है।

अजंभ (वि०) [न० ब०] दांत रहित –भः 1 मेंढक, 2 सूर्य 3 बच्चे की वह अवस्था जब उसके दांत नहीं निकले हैं।

अजय (वि०) [न० ब०] जो जीता न जा सके जो हराया न जा सके, नाय, –यः हार, पराजय, –या भांग।

अजय्य (वि०) [नञ् + जि + यत् न० त०] जो जीता न जा सके, श० ६।२९, रघु० १८।८।

अजर वि० [न० त०] 1 जिसे कभी बुढ़ापा न आवे, सदा

अजान 2 जो कभी न मुर्झावे, अनश्वर, –पुराणमजर विदु –रघु० १०।१९— र देवता, –र परमात्मा ।

अजर्य [नञ् + जृ + यत् न० त०] (अभिहित या अध्याहृत संगत के साथ) मित्रता मृगैरजर्यं जरसोपदिष्टम् रघु० १८।७ ।

अजस्र (वि०) [नञ् + जस् + र न० त०] अविच्छिन्न अनवरत, लगातार रहने वाला, –°दीक्षाप्रयतस्य रघु० ३।४४, –स्रम् (अव्य०) सदा अनवरत लगातार तपश्च धनायजस्रम उत्त० ४।–६ ।

अजहत्स्वार्था [न जहत् स्वार्थो यत्र हा + शतृ न० ब०] लक्षणा शक्ति का एक भेद जिसमें मुख्यार्थ पद अन्यथा के कारण नष्ट नहीं होता जैसे कुन्ताः प्रविशन्ति कुन्त धारि पुरुष इसे उपादान लक्षणा भी कहते हैं ।

अजहल्लिङ्गम् [न जहत् लिङ्गं यत् हा + शतृ न० ब० संज्ञा शब्द जिसका लिंग नहीं बदलता जब वह विशेषण के भाव से वहां न प्रयुक्त किया जाय उदा० –वेद प्रमाणं, श्रुति प्रमाणम प्रमाण अथवा प्रमाणा नहीं, ।

अजा (स्त्री०) [नञ् + जन् + ड टाप्] 1 सांख्य दर्शन के मतानुसार प्रकृति या माया 2 बकरी समः० गलस्तन बकरियों के गले में लटकने वाला थन (आल०) किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने में इसका उपयोग होता है । धर्मार्थ काममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते । °स्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम ।। –जीव पालक गडरिया ८. अजाजीव आदि ।

अजाजिः –जी (स्त्री०) [अजेन आजः गमनं यस्याम् – अज + आज + इन्] सफेद या काला जीरा ।

अजात (वि०) [न० त०] अनुत्पन्न –अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम् —पंच० १ जो अभी उत्पन्न न हुआ हो, पैदा न किया गया हो अविकसित हो, °ककुद्, °पक्ष इत्यादि । सम० —अरि, –शत्रु (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो जो किसी का शत्रु न हो, (–रि–त्रुः) 'युधिष्ठिर' की उपाधियाँ—हन्त जातमजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा –शिशु० २।१०२, न द्वेक्षि यज्जनमतस्त्वमजातशत्रुः —वेणी० ३।१३, शिव तथा दूसरे अनेक देवताओं की उपाधि, —ककुत् –द् (पुं०) छोटी उम्र का बैल जिसका कुब्ब अभी न निकला हो, —व्यंजन (वि०) जिसके दाढ़ी आदि अभिज्ञान चिह्न न हों —व्यवहारः अवयस्क, नाबालिग जिसको अभी तक वयस्कता न मिली हो ।

अजानिः [नास्ति जाया यस्य–जायाया निङादेश –न० ब०] जिसके स्त्री न हो, पत्नीहीन, विधुर ।

अजाजिकः [अजेन आजो जीवनं यस्य–ठन्] गडरिया, बकरियों का व्यापारी ।

अजानेय (वि०) [अजेऽपि आनेय —यथास्थानं प्रापणीयः– इति अज् + अप–आ + नी + यत्] उत्तम कुल का, निर्भय (जैसे घोड़ा) ।

अजित (वि०) [नञ् + जि + क्त] 1 जो जीता न जा सके, अजेय, दुर्धर °म पुण्य''' मह –उत्त० ५।२७ 2 न जीता हुआ (देश आदि) अनियन्त्रित, अनिरुद्ध, °आत्मन्, °इन्द्रिय = जिसने अपने मन या इन्द्रियों का दमन नहीं किया है, –तः विष्णु, शिव, या बुद्ध ।

अजिन [अज् + इनच्] बाघ, सिंह या हाथी आदि, विशेषकर काले हिरन की रोएँदार खाल जिसके आसन बनते हैं या जो पहनने के काम आती है—अथाजिनाषाढधरः– कुमा० ५।३० ६७ कि० ११।१५ 2 चमड़े का थैला या धौंकनी । सम०–पत्रा,–पत्री,–पत्रिका चमगादड़, –योनिः हरिण कृष्णसार मृग–वासिन् (वि०) मृगचर्म पहनने वाला,–सन्ध मृगचर्म का व्यवसाय करने वाला ।

अजिर (वि०) [अज् + किरच्] शीघ्रगामी स्फूर्तिवान्, –रं 1 आंगन अहाता, अखाड़ा, उटजाजिरप्रकीर्ण– श० ४।९ 2 शरीर 3 इन्द्रियगम्य पदार्थ 4 वायु, दूर्वा 5 मेंढक –रा 1 एक नदी का नाम 2 दुर्गा का नाम ।

अजिह्म (वि०) [न० त०] 1 सीधा 2 सच्चा, खरा, ईमानदार –°गामिभिः –शि० १।६३ बेलाग और खरा –ह्मः मेंढक । सम०–ग (वि०) सीधा चलने वाला –अजिह्ममजिह्मगम –मनु० ६।३१–गः तीर ।

अजिह्व [न० ब०] मेंढक ।

अजीकवं [अज्या छागवर्णेन क ब्रह्माणं वाति प्रीणाति वा + क] शिव का धनुष ।

अजीगर्तः [अजं गमनाय गर्तं यस्य–ब० स०] साँप ।

अजीर्ण (वि०) [न० त०] न पचा हुआ, न सड़ा हुआ, –र्णं अपच ।

अजीर्णिः (स्त्री०) [नञ् + जृ + क्तिन्] 1 मन्दाग्नि— कैर-जीर्णभयाद् भ्रातर्भोजनं परिहीयते–हि० २।५७ 2. बल शक्ति, तप का अभाव ।

अजीव (वि०) [न० ब०] निर्जीव, जीव रहित, –वः [न० त०] सत्ता का अभाव, मृत्यु ।

अजीवनिः (स्त्री०) [नञ् + जीव् + अनि] मृत्यु, सत्ता का अभाव (अभिशाप के रूप में प्रयुक्त)–अजीवनिस्ते शठ भूयात्–सिद्धा०–अरे दुष्ट ! भगवान् तुम्हें मृत्यु दे, भगवान् करे, तुम मर जाओ ।

अज्झलं 1 ढाल 2 जलता हुआ कोयला ।

अज्ञ (वि०) [नञ् + ज्ञा + क न० त०] 1 न जानने वाला, ज्ञान रहित, अनुभवहीन–अज्ञो भवति वै बालः–मनु० २।१५३ 2 अज्ञानी, अनजान, मूर्ख, मूढ़, जड़ (मनुष्यों और पशुओं के विषय में भी कहा जाता है)–अज्ञ

कुसुमाराध्य—भर्तृ० २० 3 अजान, समझ की शक्ति से हीन।

अज्ञात (वि०) [न० त०] न जाना हुआ, अप्रत्याशित, अनजान—°पात सलिले निमज्ज्य रघु० १६।७२। सम० —चर्या,—वासः छिप कर रहना (पाण्डवों के विषय में 'अज्ञातवास' प्रसिद्ध है)।

अज्ञान (वि०) [न० ब०] अनजान, बेसमझ,—नम् [न० त०] 1 अनजानपना 2 विशेष करके आध्यात्मिक अज्ञान—अर्थात् अविद्या जिसके वशीभूत हो कर मनुष्य अपने आप को ब्रह्म से पृथक् समझता है तथा भौतिक संसार की वास्तविकता को मानता है। समस्तपदों में 'अज्ञान' का अनुवाद 'अनजान में', 'अनवधानता में' 'बेखबरी में' किया जा सकता है। °आचरित, °उच्चारित इत्यादि।

अञ्च् (भ्वा० उभ० सक० सेट्) [अञ्चति ते, आनञ्च, अञ्चितुं, अञ्च्यात्, अच्यात्, अक्त, अञ्चित] 1 झुकाना, शिरोऽञ्चित्वा—भट्टि० १।४० 2 जाना, हिलना, झुकाव होना—स्वतन्त्रा कथमञ्चसि भट्टि० ४।२२, न वेदञ्चसि लोमम् भामि० १।४६ लालायित होना 3 पूजा करना, सम्मान करना, आदर करना, सुशोभित करना, सम्मानित करना दे० आगे अञ्चित 4 प्रार्थना करना, इच्छा करना, 5 बुड़बुड़ाना, अस्पष्ट बोलना। प्रेर० या चु० उभ०—प्रकट करना, प्रकाशित करना,—मुदमञ्चय—गीत० १०। उपसर्गों के साथ प्रयोग अप्—दूर करना, हटाना, हटजाना, आ—झुकाना, उद् 1 ऊपर उठना 2 उन्नत होना, प्रकट होना, उदञ्चनमात्मयं ग० ल० ६, उप् खींचना (जल) ऊपर निकालना, नि—1 झुकाना, इच्छा करना 2. कम करना, अपेक्षा करना न्यञ्चति वयसि प्रथमे भामि० २।४७ परा—मोड़ना, मुड़ना—यातायातैः परा ञ्चन्ति द्विरदानां रदा इव भामि० १।६१, परि—घुमाना चक्कर में डालना, मरोड़ना, वि—खींचना, नीचे को झुकना, फैलना, फैलाना, सम्—भीड़ करना, इकट्ठे होकना, इकट्ठे झुकना।

अञ्चलः—लम् [अञ्च्+अलच्] 1 वस्त्र का छोर या किनारा, गोट या झालर, लोलाञ्चलमिव पीनस्तन-जघनाया—उद्भट 2 कोना या आँख का बाहरी कोण—दृगञ्चलैः पश्यति केवलं मनाक् उद्भट।

अञ्चित (भू० क० कृ०) [अञ्च्+क्त] 1 (क) मुड़ा हुआ, झुका हुआ, रघु० १८।५८, (ख) धनुषाकार, सुन्दर (जैसे कि भौंहें); °अक्षिपक्ष्मन् रघु० ५।७६, छल्ले-दार, घुंघराले (जैसे कि बाल), 2 सम्मानित, अलंकृत, सुशोभित, शोभायमान, सुन्दर, गतेषु लीलाञ्चित-विक्रमेषु—कु० १।३४, °ताभ्यां यताभ्याम् रघु २।१८, ९।२४, 3 सिला हुआ, बुना हुआ, व्यवस्थित—अग्रं-चिता सत्वरमुत्थितायाः (रशना) रघु० ७।१०, अर्धगुम्फित या पिरोया हुआ। सम०—भ्रू धनुषा-कार या सुन्दर भौंहों वाली स्त्री।

अञ्ज् (रुधा० पर० सक० अनिट्) [कहीं कहीं—आत्मनेपद] अनक्ति अक्ते अक्त। 1 लेपना, सानना, रंग पोतना 2 स्पष्ट करना, प्रस्तुत करना, चित्रण करना 3 जाना 4 चमकना 5 सम्मानित करना, समारोह करना 6 सजाना। प्रेर० 1 सानना 2 बोलना, चमकना उपसर्गों के साथ अधि उपकरण जुटाना, सुस-ज्जित करना, अभि 1 लीपना, सानना 2 कलुषित करना, मलिन करना, अभिवि प्रकट करना, [illegible] करना, आ 1 लेप करना 2 सरल बनाना, तैयार करना 3 सम्मानित करना, वि प्रकट करना, प्रदर्शन करना, आविष्कार करना, अकिञ्चनत्वं मखजं व्यनक्ति रघु० ५।१६, शि० २६।

अञ्जन [अञ्ज्+ल्युट्] [पश्चिम या दक्षिण दिग्गज [illegible] [illegible]—नम् 1 लेपना, पोतना, [illegible] 2 प्रकट करना, व्यक्त करना 3 काजल या सुरमा जो आँखों में लगाया जाता है, [illegible] [illegible] सम्भाव्य रघु० ७।८ [illegible] [illegible] ८।१४ [illegible] १।३४, आलं० में अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया, चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः—शिक्षा० ४० (तु० दारिद्र्य परमोऽञ्जनम् 4 जैव सौंदर्य प्रसाधक उबटन 5 मसी 6 आग 7 रात्रि 8 —ना —ना (सा० शा०) व्यंग्यार्थ, व्यंग्यार्थ के प्रकट होने की प्रक्रिया, अनेकार्थक शब्द का प्रयोग जिसका प्रसंगानुसार विशेष अर्थ होता है अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद्व्यापृतिरञ्जनम्॥ काव्य २ दे० व्यंजना भी। सम० —अम्भस् (नपुं०) आँख का पानी, —शलाका सुरमा लगाने की सलाई।

अञ्जना (अञ्ज्+ल्युट्+टाप्) 1 उत्तर भारत की हथिनी 2 हनुमान् या मारुति की माता।

अञ्जलि [अञ्ज्+अलि] 1 दोनो खुले हाथों को मिलाकर बनाया हुआ कटोरा, करसंपुट, अञ्जलिभर वस्तु सुपूरो मूषिकाञ्जलिः—पंच० १।२५ प्रकीर्णपुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम्—वेणी० १।१, अञ्जलि-भर फूल, इसी प्रकार—जलस्याञ्जलयो दश—या० ३।१०५, दस अञ्जलियां अर्थात् जल से तर्पण,—जलाञ्जलिपुटपेयम् वेणी० १।४, अंजलिं रच्, बंध्,—कृ या —धा, हाथ जोड़कर नमस्कार करना 2 आदर एवं सम्मान या नमस्कार का चिह्न रघु० ११।७८, 3 अनाज की माप=कुडव। सम० —कर्मन् (नपुं०) हाथ जोड़ना, आदरयुक्त नमस्कार,—कारिका मिट्टी की गुड़िया,—पुटः—टं दोनों खुले हाथों को जोड़ने से बने कटोरे के आकार का गर्त, हाथ की खुली हथेलियाँ।

अञ्जलिका [अञ्जलिरिव कायते प्रकाशते कै + क + टाप्] एक छोटा चूहा।

अञ्जस (वि०) [illegible] **अञ्जसी**, अञ्ज् + असच्] अ कुटिल सीधा ईमानदार खरा।

अञ्जसा (अव्य०) 1 सीधी तरह से 2 यथावत् ठीक रूप से ठीक तरह से [illegible] ऽञ्जसा—रघु० [illegible] 3 शीघ्र जल्दी तुरन्त।

अञ्जिष्ठ [illegible]

अञ्जीर [illegible] और उसके फल।

अट् [illegible] (घूमना) [illegible] कमी इधर उधर घूमना [illegible] के साथ [illegible] [illegible] अटाट्यते [illegible] [illegible] इधर उधर [illegible] है।

अट (वि०) [illegible] घूमने वाला भ्रमण [illegible]

अटन [अट् + ल्युट्] घूमना भ्रमण करना—[illegible] आदि।

अटनि नी (स्त्री०) [अट् + अनि ङीप् वा] धनुष का [illegible] [illegible] कु० ११।४४।

अटा [अट् + अङ् + टाप्] साधु संतों की भांति इधर उधर घूमने की आदत इसी प्रकार **अटाट्या**।

अटरूष (क) म [अट + रुष + क] अडूसा वासक का पौधा।

अटवि वी (स्त्री०) [अट् + अवि ङीष् वा] वन जंगल [illegible] अटव्या [illegible] श० [illegible]

अटविक [अटवि + ठन्] वन में काम करने वाला दे० आटविक।

अट्ट् (भ्वा० आ०) 1 वध करना 2 अतिक्रमण करना परे जाना (आत्म० रूप से भी) प्रेर० 1 घटाना कम करना 2 घृणा करना तिरस्कार करना।

अट्ट (वि०) [अट्ट् + अच्] 1 ऊंचा उच्चस्वरयुक्त 2 बार-बार होनेवाला, लगातार [illegible] 3 शुष्क सूखा —ट्टः [अट्ट् + घञ्] 1 अटारी 2 कंगूरा, मीनार बुर्ज—नरेन्द्रमार्गाट्ट इव—रघु० ६।६७ 3 हाट मंडी 4 महल, विशाल भवन—ट्ट भोजन भात, अट्टशूला जनपदा: महा० (अट्टम् अन्नम् शूलं विक्रेयं येषां ते नीलकंठ)। सम० **अट्टहास** ठहाका, **हासः**, **हसित**, —**हास्यं** जोर की हंसी या ठहाका, शिव का अट्टहास —त्र्यंबकस्य मेघ० ५८, **हासिन्** (पुं०) 1 शिव, 2 ठहाका लगाकर हंसने वाला।

अट्टक [अट्ट + अच् स्वार्थे कन् + टाप्] चौबारा, महल।

अट्टाल—अट्टालक [अटट इव अलति अल + अच् स्वार्थे कन्] अटारी बालाखाना चौबारा महल।

अट्टालिका [illegible] स्वार्थे कन्] महल उच्च भवन। सम० **कार** [illegible] चिनाई करने वाला (राजमहलों का निर्माता)।

अड्डन [illegible]

अण् [illegible] शब्द करना 2 [illegible] (दिवा० आ०) सांस [illegible]

अण [illegible] बहुत [illegible] [illegible]

अणि [illegible] **अणी** [illegible] [illegible] [illegible]

अणिमन् (पुं०) [illegible] **अणुता**, **अणुत्व** [illegible] सूक्ष्मता 2 [illegible] सिद्धि में से एक दैवीशक्ति जिसके [illegible] अणु जैसा छोटा बन सकता है।

अणु (वि०) [illegible] **अण्वी** [illegible] सूक्ष्म बारीक [illegible] परमाणुसंबंधी अणोरणीयान् भग० [illegible] 1 अणु [illegible] 2 [illegible] [illegible] 2 समय का अंश [illegible] का नाम [illegible] जैसा विमलों रेणु आसव [illegible] [illegible]

अणुक (वि०) [illegible] अतिसूक्ष्म अत्यन्तसूक्ष्म 2 सूक्ष्म अत्यन्त बारीक 3 तीक्ष्ण।

अणीयस्, अणिष्ठ (वि०) अणु ईयसुन्, अणु + इष्ठन्] तुच्छतर तुच्छतम अत्यन्त तुच्छ अणोरणीयांसम्—भग० [illegible]

अण्ड [illegible] [अम् + ड] 1 अण्डकोष 2 फोता 3 अंडा ब्रह्मा के बीजभूत अंडे से उत्पन्न होने के कारण संसार भी ब्रह्मा ब्रह्मांड कहलाता है 4 मृगनाभि या कस्तूरीकोष 5 वीर्य 6 शिव सम० **आकर्षणं** बधिया करना **आकार, आकृति** (वि०) अंडे के आकार का, अंडाकार अंडवृत्ताकार (—र—ति) अंडवृत्त—**कोशः** (**ष**) **कोषक** फोते **ज** (वि०) अंडे से उत्पन्न (—**जः**) 1 पक्षी परदार जन्तु—कु० ३।४२ 2 मछली 3 सांप 4 छिपकली 5 ब्रह्मा (—**जा**) कस्तूरी **धर** शिव का नाम —**वर्धनं** **वृद्धि** (स्त्री०) फोतों का बढ़ जाना **सू** (वि०) परदार जन्तु।

अण्डक [अण्ड स्वार्थे कन्] फोता का छोटा अंडा—अमदंड-कैकलस्तहसित—शि० ९।९।

अण्डालुः [अण्ड + आलुच्] मछली [illegible]

अष्ठीरः [अष्ठ+ईरच्] पूर्ण विकसित पुरुष, बलवान् हृष्टपुष्ट पुरुष।

अत् (भ्वा० पर० अक० सेट्) [अतति, अत-अतित] 1. जाना, चलना, घूमना, लगातार चलते रहना 2. प्राप्त करना (बहुधा वे०) 3. बाधना।

अतट (वि०) [न० ब०] तटरहित, खड़ी ढाल वाला,—टः चट्टान, ढलवा चट्टान।

अतथा (अव्य०) [नञ्+तत्+था] ऐसा नहीं, °उचित (वि०) अनधिकारी, अनभ्यस्त।

अतदर्हम् (अव्य०) [नञ्+तदर्हम् न० त०] अनुचित रूप से, अनधिकृत रूप में।

अतद्गुणः (सा० शा०) 'अतद्ग्राही', एक अलंकार का नाम जिसमें कि प्रतिपाद्य पदार्थ—कारण के विद्यमान रहते हुए भी दूसरे के गुण का ग्रहण नहीं करता—काव्य० १०।

अतन्त्र (वि०) [स्त्री० —न्त्री] [न० ब०] 1. बिना डोरी का, या बिना संगीत के तार का 2. बिना लगाम का 3. विचारणीय नियम की कोटि से बाहर की वस्तु जो अनिवार्य रूप से बंधन की कोटि में न हो—द्वारग्रहणमतन्त्रम् सिद्धा० 4. सूत्ररहित या अनुचित सिद्ध किया।

अतन्द्र-अतन्द्रित-अतन्द्रिन्-अतन्द्रिल—(वि०) [नास्ति तन्द्रा यस्य न० ब०, न तन्द्रित न० त०,न० त०] सावधान, अम्लान, सतर्क, जागरूक, अतन्द्रिता सा स्वयमेव वृक्षकान्—कु० ५।१४, रघु० १३।३९।

अतपस्-अतपस्क वि० [न० ब०] धार्मिक तपश्चर्या की अवहेलना करने वाला।

अतर्क (वि०) [न० ब०] तर्कहीन, युक्तिरहित,—र्कः [न० त०] 1. युक्ति या तर्क का अभाव, बुरा तर्क 2. तर्कहीन बहस करने वाला।

अतर्कित (वि०) [न० त०] न सोचा हुआ, अप्रत्याशित,—तं (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से। सम०—आगत,—उपगत (वि०) अप्रत्याशित रूप से होने वाला, अकस्मात् होने वाला—उपपन्न दर्शनम्—कु० ६।५४।

अतल (वि०) [न० ब०] तल रहित,—लं [न० त०] पाताल,—लः शिव। सम०—स्पृश्,—स्पर्श (वि०) तल रहित, बहुत गहरा अथाह।

अतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1. इसकी अपेक्षा, इससे (बहुधा तुलनात्मक अर्थ वाला) किमु परमतो नर्तयसि माम्—भर्तृ० ३, ६ 2. इस या उस कारण से, फलतः, सो, इस लिए ('यत्' 'यस्मात्' और 'हि' का सहसंबंधी—अभिहित या अध्याहृत) रघु० २।४३, ३।५०; कु० २।५. 3. यहाँ से, अब से या इस स्थान से; (—परम्,—ऊर्ध्वम्) इसके पश्चात्। सम०—अर्थं,—निमित्तं इस कारण, फलतः, इस कारण से,—एव (अव्य०) इस ही लिए—ऊर्ध्वं अब से लेकर, इसके बाद;—परं (क) इसके आगे, और फिर, (अपा० के साथ) इसके पश्चात् (ख) इसके परे, इससे आगे, भाग्यायत्तमतः परम्—श० ४।१६।

अतसः [अत्+असच्] 1 हवा, वायु 2 आत्मा 3. अलसी के रेशों से बना हुआ कपड़ा (यह शब्द बहुधा नपुं० होता है)।

अतसी [अत्+असिच् ङीप्] 1 सन 2 पटसन 3 अलसी।

अति (अव्य०) [अत्+इ] 1 विशेषण और क्रियाविशेषणों से पूर्व प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग—बहुत, अधिक अतिशय, अत्यधिक (उत्कर्ष को भी यह शब्द प्रकट करता है), **नातिदूरे** आश्रमपदात्—दूर नहीं, क्रिया और कृदन्त रूपों से पूर्व भी प्रयुक्त होता है—स्वभावो ह्यतिरिच्यते आदि 2 (क्रियाओं के साथ) ऊपर परे, **अति+इ**—परे जाना, इसी प्रकार क्रम, वह् और चर आदि [illegible] 3. (क) (संज्ञा व सर्वनामों के साथ) परे पार करते हुए, श्रेष्ठतर, प्रमुख, पूज्य, उत्कृष्ट, ऊपर कर्मधारयसमास के रूप में द्वितीया विभक्ति के साथ या बहुव्रीहि प्रथम पद के रूप में, अथवा तत्पुरुष समास में सामान्यतः श्रेष्ठता और प्रमुखता के अर्थ को प्रकट करता है **अतिराजन्**, °**गार्ग्य** प्रशस्तो गार्ग्यः **राजन्** श्रेष्ठ राजा, अथवा द्वितीय पद के साथ [illegible] अर्थ—अतिक्रान्त होता है परन्तु इस अवस्था में द्वितीय पद में दूसरी विभक्ति होती है **अतिमर्त्य** मर्त्यानतिक्रान्त °**माल** —अतिक्रान्तो मालाम इसी प्रकार **अतिकाय**, [illegible] केशर अति [illegible] —सिद्धा० (ख) (कृदन्त शब्दों से पूर्व) अतिरंजित अत्यधिक अतिमात्र, उदा० °**आदरः**—अत्यधिक आदर °**आशा**—अतिरंजित आशा इसी प्रकार °**भयम्**, °**तृष्णा**, °**आनन्दः** इत्यादि (ग) अयोग्य, अनुचित, असमीचीन (अयुक्तता) तथा क्षेप (निन्दा) के अर्थ में यथा अतिनिद्रम् निद्रा संप्रति न युज्यते—सिद्धा०।

अतिकथा 1 अतिरंजित कहानी 2 निरर्थक भाषण।

अतिकर्षणं [अति+कृष्+ल्युट्] बहुत अधिक परिश्रम, अत्यधिक मेहनत।

अतिकश (वि०) [अतिक्रान्तः कशाम्—अ० स०] कोड़े को न मानने वाला, घोड़े की भांति वश में न आने वाला।

अतिकाय (वि०) [अत्युत्कृष्टः कायो यस्य—ब० स०] भारी डील डौल वाला, विशालकाय।

अतिकृच्छ्र (वि०) [अत्युत्कृष्टं कृच्छ्रम्—प्रा० स०] अति कठिन,—च्छ्रं बहुत बड़ा कष्ट, १२ रात्रियों तक कठिन तपस्या करने का व्रत; मनु० ११।२१३—४।

अतिक्रमः [अति + क्रम् + घञ्] 1. सीमा या मर्यादा का उल्लंघन, हद से आगे बढ़ना 2. कर्तव्य या औचित्य का भंग, उल्लंघन, मर्यादा का अतिक्रमण, अवैध प्रवेश, अवज्ञा, चोट, विरोध, ब्राह्मण° त्यागो भवतामेव भूतये—महावीर० २।१०, 3. बीतना (समय का) गुज़रना—अनेकसंवत्सरातिक्रमेऽपि—उत्त० ६, 4. जीत लेना, बढ़ जाना (बहुधा 'दुर्' के साथ)—स्वजातिर्दुरतिक्रमा 5. उपेक्षा, भूल, अप्रतिष्ठा 6. भारी आक्रमण 7. आधिक्य 8. दुरुपयोग 9. दुर्व्यवहार।

अतिक्रमणं [अति + क्रम् + ल्युट्] आगे बढ़ जाना, समय का बीतना, आधिक्य, दोष, अपराध।

अतिक्रमणीय (वि०) [अति + क्रम् + अनीयर्] मर्यादा भंग करने के योग्य, उपेक्षा करने के योग्य अथवा उल्लंघन करने के योग्य [illegible] मे मलङ्घावचनम्—श० २ ३, ६, ७।

अतिक्रान्त (वि०) [अति + क्रम् + क्त] आगे बढ़ा हुआ, आगे गया हुआ, पार पहुँचा हुआ अति—[illegible] प्रमाणविषय—मेघ० १०३, बीता हुआ, गया हुआ, पहला (—न्तं) बतीत विषय, अतीत की बात, अतीत।

अतिखट्व (वि०) [अतिक्रान्तः खट्वाम्—प्रा० स०] चारपाई रहित, चारपाई के बिना काम चलाने वाला।

अतिग (वि०) [अति + गम् + ड] (समास में) बढ़ने वाला, बढ़बढ़कर काम करने वाला, सर्वातिशायी, [illegible] वाला सर्वलोक° मुद्रा० १।२, [illegible] [illegible]—मुद्रा० १, [illegible] अनादृत करने वाले रोगों के द्वारा।

अतिगन्ध (वि०) [अतिशयितो गन्धो यस्य—ब० स०] अत्यन्त तीक्ष्ण गंध वाला, —न्धः गंधक।

अतिगव (वि०) [गामतिक्रान्तः प्रा० स०] 1. [illegible] बिल्कुल जड़ 2. वर्णनातीत।

अतिगुण (वि०) [गुणानतिक्रान्तः प्रा० स०] 1. [illegible] गुणों वाला, 2. गुणरहित, निकम्मा —णः [illegible] गुण।

अतिगो (स्त्री०) [illegible]

अतिग्रह (वि०) [ग्रहम् अतिक्रान्तः—प्रा० स०, [illegible] —ग्राहः 1. ज्ञानेन्द्रियों के विषय, जैसे [illegible] जिह्वा का रस आदि, 2. सत्य ज्ञान [illegible] दूसरों को पीछे छोड़ देना आदि।

अतिथम् (वि०) [धर्ममतिक्रान्तः—प्रा० स०] [illegible] [illegible] प्राप्त करने वाला।

अतिचर (वि०) [अति + चर् + अच्] बहुत परिवर्तनशील, [illegible] —रा कमलिनी का पौधा, पद्मिनी, पद्मचारिणी लता।

अतिचरणं [अति + चर् + ल्युट्] अत्यधिक अभ्यास, [illegible] से अधिक करना।

अतिचार: [अति + चर् + घञ्] 1. मर्यादा का उल्लंघन, 2. आगे बढ़ जाना 3. अतिक्रमण 4. ग्रहों की त्वरित गति, ग्रहों का एक राशि पर भोगकाल समाप्त हुए बिना दूसरी राशि पर चले जाना।

अतिच्छत्र, **अतिच्छत्रा**, **अतिच्छत्रका** [अतिक्रान्तः छत्रम्—प्रा० स०] कुकुरमुत्ता, खुंब; सौंफ, सौंफ का पौधा।

अतिजन (वि०) [अतिक्रान्तो जनम्] अनुचित, जो आबाद न हो।

अतिजात (वि०) [अतिक्रान्त: जात—जाति जनक वा] पिता से बड़ा हुआ।

अतिडीन [अति + डीङ् + क्त] (पक्षियों की) असाधारण उड़ान।

अतितराम्-अतितमाम् (अव्य०) [अति + तरप् (तमप्) + आम्] अधिक, उच्चतर (अपा० के साथ) 2. अत्यधिक, अत्यन्त, बहुत अधिक, बहुत।

अतितृष्णा [तृष्णामतिक्रान्त—प्रा० स०] गृध्नुता, अत्यधिक लालच या लालसा, °ष्णा न कर्तव्या—पंच० ५—अत्यधिक [illegible] नहीं करना चाहिए।

अतिथि [अतति गच्छति न तिष्ठति—अत् + इथिन्] मेहमान, अभ्यागत, यात्री [illegible]—एकरात्रं तु निवसन् अतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः। अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते॥ मनु० ३।१०२ अभ्यागत (आत्म० भी) अतिथिनेव निवेदितम्—श० ४, कुसुमलताप्रियातिथे—श० ५—प्रिय अथवा स्वागत के योग्य अभ्यागत। सम० **क्रिया**, **—पूजा**, **सत्कार**, **—सत्क्रिया**, **—सेवा** अभ्यागत का सत्कार [illegible] आतिथ्यक्रिया, अभ्यागतों का [illegible] **—धर्म** [illegible] करने का अधिकार [illegible] का [illegible]।

अतिदान [अति + दा + ल्युट्] बहुत अधिक दान, अत्यधिक [illegible] [illegible]—बाल० ५८।

अतिदेश [अति + दिश् + घञ्] [illegible] [illegible] [illegible] अन्यत्र [illegible] [illegible] के कारण [illegible], [illegible] के [illegible] [illegible] अतिदेश [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समदुःखी गवय [illegible] [illegible] का निर्देश है।

अतिद्वय (वि०) [द्वयमतिक्रान्तः—प्रा० स०] दोनों से बढ़ा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं हुई।

अतिधन्वन् पुं० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अतिनिद्र (वि०) [निद्रामतिक्रान्तः—प्रा० स०] बहुत सोने [illegible]

वाला 2 निद्रा से वंचित निद्रारहित —द्र निद्रा के समय से परे—ग्र बहुत अधिक सोना।

अतिनु—अतिनौ (वि०) [अतिक्रान्त नावम् प्रा० स० नाव से उतरा हुआ नाव से भूमि पर आया हुआ

अतिपक्वा [पञ्चवर्षमतिक्रान्ता प्रा० स० पांच वर्ष से अधिक अवस्था की लड़की।

अतिपतन [अति+पत्+ल्युट्] उड़कर पार निकल जाना मूल उपेक्षा अतिक्रमण अत्यधिक सीमा से बाहर जाना।

अतिपत्ति [अति+पत्+क्तिन्] 1 समाप्त पर जाना समय का बीतना ... पूरा न होना ...

अतिपत्र [अतिरिक्त ... ब० स० ... सागौन का वृक्ष।

अतिपथिन् (पुं०) [पन्थानमतिक्रान्त—प्रा० स०] सामान्य सड़कों की अपेक्षा अच्छा मार्ग सन्मार्ग।

अतिपर (वि०) [अतिक्रान्त परान्—प्रा० स० जिसने शत्रुओं को पराजित कर दिया है ... शक्ति में बढ़ा चढ़ा ...।

अतिपरिचय [प्रा० स०] अत्यधिक जान पहचान या घनिष्ठता विष० ... अतिपरिचयादवज्ञा— अतिपरिचय से होती है अरुचि अनादर भाव

अतिपात: [अति+पत्+घञ्] 1 (समय का) बीत जाना 2. उपेक्षा मूल अतिक्रमण—अवश्यकार्यातिपात: ... 1, (यदि इस प्रकार दूसरे कर्तव्य की उपेक्षा न करे ...), सर्वसम्मत नियम या प्रथाओं का उल्लंघन 3 ... घटना, बटना 4 दुर्व्यवहार या दुरुपयोग 5 विरोध वैपरीत्य।

अतिपातक: [अतिपात स्वार्थे कन्] बड़ा जघन्य पाप व्यभिचार।

अतिपातिन् (वि०) [अति+पत्+णिच्+णिनि] ... में आगे बढ़ जाने वाला ... ३।१०।

अतिपात्य (वि०) [अति+पत्+णिच्+ण्यत्] ... या स्थगित करने योग्य कामसर्गिताय ... देवरुय—म ५।

अतिप्रबंध: [अतिशयित प्रबन्ध—प्रा० स०] अत्यन्त सातत्य बिल्कुल लगा होना, °प्रहित ... —रघु० ३।५८।

अतिप्रगे (अव्य०) [अति+प्र+गै+के] प्रभात में बहुत तड़के, प्रभात काल में—मनु० ४।६२।

अतिप्रश्न: [अति प्रच्छ्+नङ्] इन्द्रियातीत सत्यता के विषय में प्रश्न तंग करने वाला तर्कहीन प्रश्न—उदा० बृहदारण्यक उपनिषद् में बालाकि का याज्ञवल्क्य के प्रति बड़ा विषयक प्रश्न।

अतिप्रसक्ति:, अतिप्रसक्ति (स्त्री०) [अति+प्र+सञ्ज्+क्तिन् वा] 1 अत्यधिक लगाव 2 धृष्टता 3 किसी (व्या०) नियम का व्यर्थ अधिक विस्तार अर्थात् अतिव्याप्ति 4 बहुत घनिष्ठ संपर्क 5 प्रपञ्च अत्यधिकप्रसङ्गेन मुद्रा० १।

अतिबल (वि०) [ब० स०] बहुत बलवान् या शक्ति ... का अप्रतिम या बेजोड़ योद्धा —ला बड़ा ... भारी शक्ति ... का एक शक्ति शाली मंत्र या विद्या जिसे विश्वामित्र ने राम को सिखाया।

अतिबाला [अतिक्रान्ता बाल्यावस्थाम् प्रा० स० दो वर्ष की अवस्था की गाय

अतिभर (भा) र [प्रा० स०] अत्यधिक बोझ भारी ... अतिभारात् ... पञ्च०—पंच० १।८।१८ अधिक वजन का कारण। सम०-ग: स ...

अतिभव [अति+भू+अप्] ... ।

अतिभी (स्त्री०) [अति+भी+क्विप्] ... इन्द्र के वज्र की कौंध।

अतिभूमि (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 आधिक्य पराकाष्ठा ... नियम या आधिक्य ... पराकाष्ठा ... पहुंचना —तम सकारान्त ... मालवि० ... प्रसिद्ध—शि० ९।७८ ... 2 ... अलौकिक औचित्य की सीमाओं का ... करना—शि० ८ ... प्रमत्ता ...

अतिमान: (स्त्री०) मान [प्रा० स०] अहंकार बहुत अधिक घमंड अभिमान न कीरता —भाग० ५०।

अतिमर्त्य मानुष (वि०) अतिमानव।

अतिमात्र (वि०) [अतिक्रान्तो मात्राम् —प्रा० स०] मात्रा से अधिक अत्यधिक अतिशय— °मृदु महान्ति—श० ७।३ जिसका बिल्कुल समर्थन न किया जा सके — मुनिरप्यनैरन्त्वामतिमात्रकर्शनाम्— कु० ५।४८, —त्र मात्रया (अव्य०) मात्रा से अधिक, अतिशय कुमारसं०।

अतिमाय (वि०) [अतिक्रान्ता मायाम् प्रा० स०] पूर्णतः ... से मायिक माया से मुक्त।

अतिमुक्त (वि०) [अतिशयेन मुक्त—प्रा० स०] 1 पूर्ण ... मुक्त 2 बंजर 3 मोतियों (की माला) से बढ़ कर —क, —कक: एक प्रकार की लता (माधवी), जो आम की प्रिया के रूप में आम के वृक्ष पर लिपटी रहती है।

अतिमुक्ति (स्त्री०) अतिमोक्ष [प्रा० स०] (मृत्यु से) ... छुटकारा।

अतिरंहस् (वि०) [अतिशयित रंहो यस्मिन्—ब० स०] बहुत फुर्तीला या शीघ्रगामी—मार्गेणातिरंहसा श० १।५।

अतिरथ [अतिक्रान्तो रथम् प्रा० स०] एक अद्वितीय योद्धा जो अपने रथ में बैठा हुआ ही युद्ध करता है (अमितान्योधयेद्यस्तु सम्प्रोक्तोऽतिरथस्तु स)।

अतिरथः [प्रा० स०] बड़ी चाल, द्रुत गमन हड़बड़ी।
अतिराजन् (पुं०) [प्रा० स०] 1 असाधारण या उत्कृष्ट राजा 2 राजा से बढ़ चढ़ कर।
अतिरात्र [प्रा० स०] 1 ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग 2 रात्रि का मध्य भाग।
अतिरिक्त (वि०) [अति+रिच्+क्त] 1 आगे बढ़ा हुआ 2 फालतू 3 अत्यधिक 4 अद्वितीय, उत्तुंग।
अति (ती) रेक [अति+रिच+घञ्] 1 आधिक्य अतिशयता, महत्ता, गौरव 2 समधिकता, अतिशेष बाहुल्य 3 अन्तर।
अतिरुच् (पुं०) [अति+रुच्+क्विप्] 1 घुटना, (स्त्री०—क्) एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री।
अतिरो (लो) मश (वि०) [अति+रो (लो) मन्+श] बहुत बालों वाला, बहुत रोम वाला—शः 1 जंगली बकरा 2 बड़ा बन्दर।
अतिलङ्घन [अति+लङ्घ्+ल्युट्] 1 अत्यधिक उपवास रखना 2 अतिक्रमण।
अतिलङ्घिन् (वि०) [अति+लङ्घ्+णिनि] गलतियां या भूलें करने वाला।
अतिवयस (वि०) [अतिशयितं वयः यस्य—ब० स०] बहुत बूढ़ा, बड़ी अधिक आयु का।
अतिवर्णाश्रमिन् (पुं०) [प्रा० स०] जो वर्ण और आश्रमों की मर्यादा से परे हो।
अतिवर्तन [अति+वृत्+ल्युट्] क्षम्य अपराध सामान्य अपराध दण्ड से मुक्ति इस प्रकार के दस अपराधों का वर्णन मनु ने किया है—मनु० ८।२९०
अतिवर्तिन् (वि०) पार करने वाला दूसरों से आगे निकलने वाला आगे बढ़ने वाला अतिक्रमण करने वाला उल्लंघन करने वाला।
अतिवाद [अति+वद्+घञ्] अतिकठोर गाली और अपमान युक्त वचन, भर्त्सना झिड़की अतिवादांस्तितिक्षेत मनु० ६।४७।
अतिवादिन् [अति+वद्+णिनि] बहुत बोलनेवाला वाग्मी।
अतिवाहनं [अति+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 बिताना, यापन 2. बहुत अधिक परिश्रम करना या बहुत बोझा उठाना 3 प्रेषण, भेजना, छुटकारा पाना।
अतिविकट (वि०) [प्रा० स०] भीषण—टः दुष्ट हाथी।
अतिविषा [प्रा० स०] अतीस नामक विषैली औषधि का पौधा।
अतिविस्तरः [प्रा० स०] बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता।
अतिवृत्तिः (स्त्री०) [अति+वृत्+क्तिन्] आगे बढ़ जाना, अतिक्रमण, अतिरंजना।
अतिवृष्टिः (स्त्री०) [अति+वृष्+क्तिन्] अत्यधिक या भारी वर्षा, ऋतु विषयक ६ विपत्तियों में से एक, दे० ईति।

अतिवेल (वि०) [अतिक्रान्ता वेलां मर्यादां कूलं वा—प्रा० स०] अत्यधिक, फालतू, सीमारहित,—लम् (क्रि० वि०) 1 अत्यधिकता से, 2 बिना ऋतु के, बिना मौसम के।
अतिव्याप्तिः (स्त्री०) [अति वि+आप्+क्तिन्] 1 किसी नियम या सिद्धान्त का अनुचित विस्तार 2 प्रतिज्ञा में अनभिप्रेत वस्तु का मिला लेना, 3 लक्षण में लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य अनभिप्रेत वस्तु का भी आ जाना (न्याय में) जिसके फलस्वरूप वह वस्तुएँ भी सम्मिलित हो जाएँ जो लक्षण के अनुसार नहीं आनी चाहिए, लक्षण के तीन दोषों में से एक।
अतिशय [अति+शी+अच्] 1 आधिक्य, प्रमुखता, उत्कृष्टता वीर्य° रघु० ३।६२, तस्मिन् विधानातिशये विधातुः रघु० ६।११, 2 श्रेष्ठता (गुण एवं और परिमाण आदि की दृष्टि से), समास में प्रायः विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर 'अधिकता के साथ' अर्थ होता है आसीदनतिशयप्रेक्ष्यः रघु० १७।२५, (वि०) श्रेष्ठ प्रमुख, अत्यधिक बहुत बड़ा बहुल। सम० - उक्तिः (स्त्री०) 1 बढ़ाकर या अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कहे हुए वचन, अतिरंजना 2 अलंकार जिसके सा० द० कार ने ५ भेद तथा काव्यप्रकाशकार ने ४ भेद माने हैं।
अतिशयन (वि०) [अति+शी+ल्युट्] आगे बढ़ने वाला (समास में) बड़ा, प्रमुख, बहुल —नम् आधिक्य, बहुतायत, बहुलता।
अतिशयालु (वि०) [अति+शी+आलुच्] आगे बढ़ जाने या बढ़-चढ़ कर रहने की प्रवृत्ति वाला।
अतिशयिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] 1 श्रेष्ठ, बढ़िया, प्रमुख —इदमुत्तममतिशायिनि व्यंग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः—काव्य० १ विक्रम० ५।२१ 2 अत्यधिक बहुल।
अतिशायन [अति+शी+ल्युट्] उत्कृष्टता, श्रेष्ठता।
अतिशायिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] आगे रहने वाला, आगे बढ़ जाने वाला 2 अत्यधिक।
अतिशेष [अति+शिष्+अच्] अवशिष्ट भाग, बचा हुआ भाग (जैसे कि समय का), कुछ अवशेष।
अतिश्रेयसिः [श्रेयसीमतिक्रान्तः—प्रा० स०] सर्वोत्तम स्त्री से श्रेष्ठ पुरुष।
अतिश्व (वि०) [श्वानमतिक्रान्तः—प्रा० स०] 1 वेग में कुत्ते से बढ़ा हुआ (जैसे कि सूअर) 2 कुत्ते से भी बुरा होना; —श्वा सेवा।
अतिसक्तिः (स्त्री०) [अति+सञ्ज्+क्तिन्] घनिष्ठ संपर्क या आसक्ति, भारी आसक्ति।
अतिसंधानं [अति+सं+धा+ल्युट्] छल करना, धोखा देना,—परातिसंधान° कु० ५।२६, चालबाजी, चालाकी।

अतिसरः [अति+सृ+अच्] 1 आगे बढ़ने वाला 2 नेता

अतिसर्गः [अति+सृज्+घञ्] 1 स्वीकार करना, देना—रघु० १०।४२, 2 अनुमति देना (जो इच्छा हो) 3 (नौकरी से) पृथक् करना, कार्यभार से मुक्त करना।

अतिसर्जनम् [अति+सृज्+ल्युट्] 1 देना, स्वीकार करना, सौंपना—कु० ३।३२, 2 उदारता, दानशीलता 3 वध करना 4 वियोग।

अतिसर्व (वि०) [प्रा० स०] सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ,—र्वः परब्रह्म—अतिसर्वाय सर्वाय—मुण्ड०।

अति- (ती) -सारः [अति—सृ+णिच्+अच्] पेचिश, मरोड़ों के साथ दस्तों का आना।

अति(ती)सारिन् (पुं०) [अन्यत्र सारयति मलं] अतिसार नाम का रोग जिसमें बारबार शौच आना पड़ता है, (वि०) —अति(ती)सारकिन् (वि०) [अतिसारो अस्यास्ति—इनि, कुक् च] अतिसार रोग से पीड़ित, पेचिश रोग से ग्रस्त।

अतिस्नेह [प्रा० स०] अत्यधिक अनुराग, °हः पापशङ्की—श० ४, बुराई की आशंका में प्रवण होता है।

अतिस्वार्य [प्रा० स०] अर्धस्वर तथा स्वरों के लिए पारिभाषिक शब्द।

अतीत (वि०) [अति+इ+क्त] 1 परे गया हुआ पार गया हुआ 2 आगे बढ़ने वाला परे जाने वाला, गत, बीता हुआ आदि, भूत, संख्यामतीत या संख्यातीत अगण्य।

अतीन्द्रिय (वि०) [प्रा०स०] ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच के बाहर —यः आत्मा या पुरुष (सांख्य दर्शन) परमात्मा, —यम् 1 प्रधान या प्रकृति (सां० द०) 2 मन (वेदान्त)।

अतीव (अव्य०) [अति+इव] बहुत, अधिकता के साथ, बहुत अधिक, बिल्कुल, बहुत ही, °पीड़ित °कृश आदि।

अतुल (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय अतुलनीय, —लः तिल का पौधा, तिल।

अतुल्य (वि०) [न० त०] अनुपम बेजोड़।

अतुहिन (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो। सम०—कर इसी प्रकार अतुहिनधामन् °रश्मि, °धामन् °रुचि सूर्य।

अतुष्टि [न० त०] थोड़ा सा दाम।

अतेजस् (वि०) [न० ब०] 1 जो चमकीला न हो, धुंधला 2 दुर्बल, निर्बल 3 निस्तेज, इसी प्रकार अतेजस्क, अतेजस्विन्, —(पुं०) [न० त०] धुंधलापन, छाया, अंधकार।

अत्कः [अत्+टक्+टाप्] 1 ... 2 ... शरीर।

अत्ति (स्त्री०) अत्तिका [अद्+ति ...] बड़ी बहन, माता की बहन आदि।

अत्नः, अत्नुः [अतति सततं गच्छति—अत्+न, नु वा] 1 हवा 2. सूर्य।

अत्यग्नि [प्रा० स०] पाचन शक्ति की बहुत अधिकता।

अत्यग्निष्टोम [प्रा० स०] ज्योतिष्टोम यज्ञ का दूसरा ऐच्छिक भाग।

अत्यङ्कुश (वि०) [प्रा० स०] निरंकुश, नियन्त्रण में रहने के अयोग्य, उच्छृंखल जैसे हाथी।

अत्यन्त (वि०) [अतिक्रान्तः अन्तम् सीमाम्—प्रा० स०] 1 अत्यधिक, अधिक, बहुत बड़ा, बहुत बलवान्, °वैरम्—बड़ी शत्रुता इसी प्रकार °मैत्री 2 संपूर्ण पूरा नितांत 3 अनन्त, नित्य, चिरस्थायी, किं वा तवात्यन्तवियोगमोघे हतजीविते—रघु० १४।६५ कस्यात्यन्तं सुखमुपनतम्—मेघ० १०९,—न्तम् (अव्य०) 1 अत्यधिक बहुत अधिक, 2 हमेशा के लिए आजीवन जीवनभर। सम०—अभावः नितान्त या पूर्ण सत्ताहीनता, नितान्त अनस्तित्व, —गत (वि०) सदा के लिए गया हुआ, जो फिर कभी न आयेगा कथमत्यन्तगता न मां दहेः—रघु० ८।५६ —गामिन् (वि०) 1 बहुत अधिक चलने वाला बहुत तेज या शीघ्र चलने वाला, 2 अत्यधिक अधिक, —वासिन् (पुं०) जो विद्यार्थी की भांति लगातार अपने गुरु के साथ रहता है —संयोगः 1 घनिष्ट सामीप्य, अबाध नैरन्तर्य, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे—, 2 अवियोज्य सहअस्तित्व।

अत्यन्तिक (वि०) [अत्यन्त+ठन्] 1 बहुत अधिक या बहुत तेज चलने वाला 2 बहुत निकट 3 जो समीप न हो, दूर,—कम् घनिष्ट सामीप्य अव्यवहित पड़ोस या अत्यन्त समीप होना।

अत्यन्तीन (वि०) [अत्यन्त+ख] 1 बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज चलने वाला—अथमी परस्परोपां त्वमरसत्यन्तीनमध्यन्तरम्—भट्टि०।

अत्ययः [अति+इ+अच्] 1 चला जाना, बीत जाना काल° 2 समाप्ति उपसंहार, अवसान, अनुपस्थिति, अन्तर्धान 3 मृत्यु, नाश 4 भय, चोट, बुराई—प्राणात्यये च संप्राप्ते—या० १।१७९, 5 दुःख 6 दोष, अपराध, अतिक्रमण 7 आक्रमण, अभियान।

अत्ययिक दे० आत्ययिक।

अत्ययित (वि०) [अत्यय+इतच्] 1 बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ, 2 उल्लंघन किया हुआ, जिस पर अत्याचार किया गया है।

अत्ययिन् (वि०) [अति+इ+णिनि] बढ़ने वाला, आगे निकलने वाला।

अत्यर्थ (वि०) [प्रा० स०] अत्यधिक बहुत बड़ा, °बहुत, —र्थम् (क्रि० वि०) बहुत अधिक, निहायत ज्यादा।

अत्यह्न (वि०) [प्रा० स०] अवधि में एक दिन से अधिक रहने वाला।

अत्याकार [प्रा० स०] 1. घृणा, कलंक, निन्दा, स्वाकारात्याकारतदवेतेषु पा० ५।१।१२४, 2 बड़ा डील डौल, विशाल शरीर।

अत्याचार (वि०) [आचार मति क्रान्त] मानी हुई प्रथाओं और आचारों के विपरीत चलने वाला, उपेक्षक, —रः आचारानुमोदित कार्यों का न करना, धर्म के विपरीत आचरण।

अत्यादित्य (वि०) [प्रा० स०] सूर्य की ज्योति से अधिक चमकने वाला, —अत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः —मेघ० ४३।

अत्यानन्दा [प्रा० स०] मैथुन के प्रति उदासीनता।

अत्याय [प्रा० स०] 1 अतिक्रमण, उल्लंघन 2 आधिक्य।

अत्यारूढ (वि०) [प्रा० स०] बहुत बढ़ा हुआ, —ढः,—ढिः (स्त्री०) बहुत ऊँची पदवी, अभ्युदय।

अत्याश्रम [प्रा० स०] 1 जीवन का सबसे बड़ा आश्रम —सन्यास 2 इस आश्रम में स्थित संन्यासिन्।

अत्याहितम् [अति+आ+धा+क्त] 1 बड़ी विपत्ति भय, दुर्भाग्य, अनर्थ, दुर्घटना न किमप्यत्याहितम् —श० १, प्राय विस्मयादिद्योतक के रूप में प्रयोग हाय दई, हाय रे 2 उद्दंड तथा साहसिक कार्य पांडुपुत्रैर्न किमप्यत्याहितमाचेष्टितं भवेत् —वेणी० २।

अत्युक्तिः (स्त्री०) [अति+वच्+क्तिन्] बढ़ा चढ़ा कर कहना, अतिशयोक्ति, अतिरंजित रंगीन चित्रण—अत्युक्ते यदि न प्रकुप्यसि मृषावादं च नो मन्यसे—उद्भट०, दे० अतिशयोक्ति भी।

अत्युपध (वि०) [उपधामतिक्रान्तः—प्रा० स०] परीक्षित, विश्वस्त।

अत्यूह [प्रा० स०] 1 बहुत चिन्तन या मनन गंभीर तर्कना, 2. जलकुक्कुट।

अत्र (अव्य०) [इदम्+त्रल्—प्रकृतेः अशादेशश्च] 1 इस स्थान पर, यहाँ - अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः —श० १, 2. इस विषय में, बात में, मामले में, इस संबंध में। सम० - अन्तरे (क्रि० वि०) इसी बीच में,—भवत् (पुं० — भवान्) सम्मानसूचक विशेषण जो 'आदरणीय' 'सम्माननीय' 'माननीय श्रीमान्' अर्थ को प्रकट करता है तथा उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है जो वक्ता के पास उपस्थित या निकट विद्यमान हो, दूरवर्ती या परोक्ष के लिए तत्रभवत् शब्द है, °भवती =आदरणीय श्रीमती, (पूज्यं तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि), अत्र भवान् प्रकृतिमापन्नः —श० २, शकुन्तलामुद्दिश्य परिश्रान्तामत्रभवतीं लक्षये —श० १।

अत्रत्य (वि०) [अत्रभव —अत्र+त्यप्] 1 इस स्थान का, या यहाँ से संबंध रखने वाला 2 यहाँ उत्पन्न, यहाँ पाया गया, या इस स्थान का, स्थानीय।

अत्रप (वि०) [न० ब०] निर्लज्ज, अविनीत, अशिष्ट।

अत्रिः (स० अत्रि) [अद्+त्रिन्] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेद के कई सूक्तों के द्रष्टा हैं। सम० —जः,—जातः,—दृग्जः,—नेत्रप्रसूतः,—प्रभवः,—भवः चन्द्रमा, पु०,—अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः —रघु० २।७५।

अथ (अव्य०) [अर्थ्+ड पृषो० रलोपः] 1 मंगलसूचक शब्द जो किसी रचना के आरंभ में प्रयुक्त होता है—और जिसका अनुवाद 'यहाँ' 'अब' — मंगल, आरंभ, अधिकार, किया जाता है। परन्तु यदि सही रूप से देखा जाय तो 'अथ' का अर्थ 'मंगल' नहीं है, तो भी इस शब्द का उच्चारण या श्रवणमात्र 'मंगल' का सूचक समझा जाता है, क्योंकि यह शब्द ब्रह्मा के कण्ठ से निकला हुआ माना जाता है —ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कंठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेन मांगलिकावुभौ। और इसी लिए हम शांकरभाष्य में देखते हैं—अर्थान्तरप्रयुक्त अथशब्दः श्रुत्या मंगलमारचयति, अथ निर्वचनम्, अथ योगानुशासनम् (बहुधा अंत में 'इति' शब्द का प्रयोग पाया जाता है —इति प्रथमोऽङ्कः समाप्तः —आदि) 2. तब, उसके पश्चात्—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्। वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच — रघु० २।१, प्राय 'यदि' या 'चेत्' का सहसम्बन्धी 3 यदि, कल्पना करते हुए, अच्छा तो, ऐसी स्थिति में, परंतु यदि—अथ कौतुकमावेदयामि — का० १४४, अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुध्वम्—वेणी० ४, 4 और, इसी से तो और भी, इसी भांति—भीमोऽथार्जुनः —गण० 5 प्रश्न आरंभ करते समय या पूछते समय, बहुधा प्रश्नवाचक शब्द के साथ—अथ सा तत्रभवती किमाख्यस्य राजर्षेः पत्नी - श० ७, 6 समष्टि, सम्पूर्णता अथ धर्मं व्याख्यास्यामः —गण०, अब हम 'धर्म' की (उपकरण सहित) पूरी व्याख्या करेंगे 7 संदेह, अनिश्चितता—शब्दो नित्योऽथानित्यः —गण०। सम० अपि (अव्य०) और भी, और फिर आदि (='अथ' अधिकांश स्थानों पर),— किम् (अव्य०) और क्या, हाँ, ठीक ऐसा ही, बिल्कुल ऐसा ही, अवश्य ही, च (अव्य०) और भी, इसी प्रकार, —वा (अव्य०) 1 या 2. अधिकतर, क्यों, कदाचित्, पिछली बात को संशुद्ध करते हुए—गमिष्याम्युपहास्यताम्। अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् —रघु० १।३-४, अथवा मृदु वस्तु हिंसितुम् - ८।४५, वीर्ये किं न सहस्रबाहुरवधि रामेण किं दुष्करम् —उत्त० ६।४०।

अथर्वन् (पुं०) [अथ+ऋ+वनिप्] 1 अग्नि और सोम का उपासक पुरोहित 2 अथर्वा ऋषि की सन्तान—ब्राह्मण, (ब० व०), अथर्वा ऋषि की सन्तान, अथर्ववेद के सूक्त, (पुं०—अथर्वा तथा नपुं०—अथर्व), °वेद अथर्ववेद जो चौथा वेद माना जाता है, तथा जिसमें

शत्रु—नाश के लिए अनेक अमंगलप्रार्थनाएँ और अपनी सुरक्षा के लिए तथा विपत्ति, पाप, बुराई, एवं दुर्भाग्य से बचाव के लिए असंख्य प्रार्थनाएं पाई जाती हैं, इसके अतिरिक्त दूसरे वेदों की भांति इसमें भी धार्मिक एवं औपचारिक संस्कारों में प्रयुक्त होने वाले अनेक सूक्त हैं जिनमें प्रार्थनाओं के साथ-साथ देवताओं का अभिनन्दन किया गया है। सम० —निधिः,-विद् (पु०) अथर्ववेद के ज्ञान का भंडार, अथवा अथर्व-ज्ञान से संपन्न गुरुणा अथर्वविदा कृत क्रियः रघु० ८।४, १।५९।

अथर्वणि [अथर्वन् + इन् न टिलोप] अथर्ववेद में निष्णात अथवा इसमें निर्दिष्ट संस्कारों के अनुष्ठान में कुशल ब्राह्मण।

अथर्वाणं [अथर्वन् + अच् पृषो० दीर्घ] अथर्ववेद की अनुष्ठान पद्धति।

अथवा—दे० अथ के अन्तर्गत।

अद् (अदा० पर० सक० अनिट्) [अत्ति, अन्न—जग्ध] 1 खाना, निगलना, 2 नष्ट करना 3 दे० अद्, प्रेर० खिलवाना, सन्नन्त० जिघत्सति—खाने की इच्छा करना।

अद्, अद (वि०) [अद् + क्विप् अच् वा] (समास के अंत में) खाने वाला, निगलने वाला।

अदंष्ट्र (वि०) [न० ब०] दन्तहीन —ष्ट्रः वह सांप जिसके जहरीले दांत तोड़ दिये गये हैं।

अदक्षिण (वि०) [न० त०] 1 जो दायां न हो अर्थात् बायां 2. जिसमें पुरोहितों को दक्षिणा न दी जाय बिना दक्षिणा का (जैसे यज्ञ) 3 सरल, दुर्बलमना मूर्ख 4 अनुपस्थित, अदक्ष या अपटु, गंवार, 5 प्रतिकूल।

अदण्ड्य (वि०) [न० त०] 1 दण्ड का अनधिकारी, 2 दण्ड से मुक्त या बरी।

अदत् (वि०) [न० ब०] दन्तरहित, बिना दांतों का।

अदत्त (वि०) [न० त०] 1 न दिया हुआ 2 अनुचित तरीके से दिया हुआ 3 जो विवाह में न दिया गया हो,—त्ता अविवाहित कन्या—त्तं वह दान जो रद्द कर दिया गया हो। सम०—आदायिन् (वि०) जो न दी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जाता है—जैसे कि चोर —पूर्वा वह कन्या जिसकी सगाई न हुई हो—अदत्त पूर्वेत्याशङ्क्यते—माल० ४।

अदन्त (वि०) [न० ब०] 1 दन्त रहित 2 वह शब्द जिसके अन्त में 'अत्' या 'अ' हो,—तः जोंक।

अदन्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो दांतों से संबंध न रखता हो 2 दांतों के लिए अनुपयुक्त, दांतों के लिए हानिकारक।

अदभ्र (वि०) [न० ब०] अत्यन्त, प्रचुर, पुष्कल।

अदर्शन [न० त०] 1 न दिखना, अनवलोकन, अनुपस्थिति, दिखाई न देना 2 (व्या०) अन्तर्धान, लोप, लुप्ति अदर्शनं लोपः पा० १।१।६०।

अदस् (सर्व०) [पु०-स्त्री० असौ, नपुं० अदः] वह (किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करना जो अनुपस्थित हो या वक्ता के समीप न हो) इदमस्तु संनिकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्। अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्। यह 'यहां' 'सामने' अर्थ को भी प्रकट करता है। 'यत्' के सहसंबंधी तत् के अर्थ में भी प्रायः प्रयुक्त होता है। परन्तु जब कभी यह संबंध वाचक सर्वनाम' के तुरन्त बाद प्रयुक्त होता है (योऽसौ वे अयोध्यां आदि) तो इस का अर्थ होता है 'प्रसिद्ध' 'सुख्यात' 'पूज्य', दे० 'स' भी।

अदातृ (वि०) [न० त०] 1 न देने वाला कृपण 2 लड़की का विवाह न करने वाला।

अदादि (वि०) [न० ब०] दूसरे गण की धातुओं का समूह जो 'अद्' से आरम्भ होता है।

अदाय (वि०) [नास्ति दायो यस्य न० ब०] जो (संपत्ति में) हिस्से का अधिकारी न हो।

अदायाद (वि०) [न० त०] 1 जो उत्तराधिकारी न बन सके 2 [न० ब०] जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

अदायिक (वि०) [स्त्री० —अदायिकी] [न दायमर्हति नञ् + दाय + ठक् न० ब०] 1 जिसका कोई उत्तराधिकारी दावेदार न हो जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो अदायिकं धनं राजगामि कात्या० 2 [न० त०] उत्तराधिकार से संबंध न रखने वाला।

अदिति (स्त्री०) [दातुं छेत्तुं अयोग्या दो + क्तिन्] 1 पृथ्वी 2 अदिति देवता, आदित्यों की माता पुराणों में इसका वर्णन देवों की माता के रूप में किया गया है, 3 वाणी 4 गाय। सम० —जः, —नन्दनः देवता, दिव्य प्राणी।

अदुर्ग (वि०) [न० त०] 1 जो दुर्गम न हो जहाँ पहुँचना कठिन न हो 2 [न० ब०] वह स्थान जहाँ किले न हों —°विषय एक दुर्गरहित देश।

अदूर (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न हो, समीप (काल और देश की स्थिति से),—रं सामीप्य, पड़ौस —असन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः —रघु० ६।३४ जिसको अदूरे वसंतः इति अदूरभवा —भवा० अदूरे भ्,-त:,-रात्,-रे,-रेण (संबंधकारक या अपादान के साथ), अधिक दूर नहीं, बहुत दूर नहीं।

अदृश् (वि०) [नास्ति दृग् दृष्टिर्यस्य न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा।

अदृष्ट (वि०) [नञ् —दृश् + क्त] अदृश्य, अनदेखा, °पूर्व - जो पहले न देखा गया हो, 2 अननुभूत 3 अदृष्टपूर्व, अप्रत्याशित, छिपा खोया हुआ, अज्ञात 4

अननुमत, अस्वीकृत, अवैध,—ष्टं 1 अदृश्य 2 नियति भाग्य, प्रारब्ध (शुभ या अशुभ) 3 गुण तथा अवगुण जो कि सुख तथा दुःख के अनुवर्ती कारण हैं 4 दैवी विपत्ति या भय (जैसा कि आग या पानी आदि से)। सम० —अर्थ (वि०) आध्यात्मिक या गूढ अर्थ वाला, आध्यात्मिक,—अर्थम् (वि०) अव्यावहारिक, अनुभवहीन —फल (वि०) जिसके परिणाम अदृष्ट हों, —फलं शुभाशुभ कर्मों का आगे आने वाला फल।

अदृष्टि (स्त्री०) [न० ब०] बुरी या द्वेषपूर्ण दृष्टि, कुदृष्टि —ष्टि (वि०) [न० ब०] अंधा।

अदेय (वि०) [न० त०] जो देने के लिए न हो, जो दिया न जा सके या दिया न जाना चाहिए, यथा जिसका देना न उचित है और न आवश्यक है, इस श्रेणी में पत्नी, पुत्र, धरोहर और कुछ अन्य वस्तुएं आती हैं।

अदेव (वि०) [न० त०] 1 जो देवताओं की भांति न हो या दिव्य न हो 2 देवविहीन, अपवित्र, अधार्मिक, जो देवता न हो। सम० —मातृक (वि०) [illegible] न हुई हो माता की भांति दूध पिलाने या [illegible] के लिए वर्षा [illegible] काम न [illegible] [illegible] वि० १।२५।

अदेश [न० त०] 1 अनुपयुक्त स्थान 2 बुरा देश। स० —काल अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त काल, —स्थ (वि०) अनुपयुक्त स्थान पर ठहरा हुआ, उपयुक्त स्थान से विरहित।

अदोष (वि०) [न० ब०] 1 दोष, बुराई और त्रुटि से रहित, से मुक्त 2 अपराधरहित [illegible] सा० [illegible] दोषों से मुक्त, दे० दोष, —अदोषौ शब्दार्थौ काव्य० १, अदोषं गुणवत्काव्यम् सा० द० १।

अदोहः [न० ब०] 1 वह समय जो दोहने के लिए अनुकूल न हो 2 [न० त०] न दुहा जाना।

अद्धा (अव्य०) 1 सचमुच, बिल्कुल, अवश्य, निःसंदेह रघु० १३।६५ 2 प्रकटरूप से, स्पष्टरूप से [illegible] च पतन्ति [illegible] भामि० १।९५

अद्भुत (वि०) [अद् + भू + डुतच् न भूतम्] आश्चर्यजनक, विचित्र [illegible] —रूप गूढ़ अलौकिक, —तः 1 आश्चर्य, आश्चर्यजनक बात या घटना, विलक्षण घटना, चमत्कार [illegible] अथवा आश्चर्य (पु०) भी, [illegible] आठ या नौ रसों में से एक अद्भुत (अनोखा) रस। सम० —सार खदिर या खैर की आश्चर्यजनक राल —स्वन शिव का नाम।

अद्मनि — [अद् + मनिन्] अग्नि।

अद्मर (वि०) [अद् + क्मरच्] बहुत अधिक खाने वाला, पेटू।

अद्य (वि०) [अद् + यत्] खाने के योग्य —द्यम् भोजन, खाने के योग्य पदार्थ, (अव्य०) आज, इस दिन अद्य त्वां त्वरयति दारुणः कृतान्तः —मा० ५।२०, "रात्री आज की रात, यह रात। सम०—अपि अभी, अब तक, आज तक, अभी नहीं, —[illegible] [illegible] [illegible] ०१।११ (चौरपञ्चाशिका के ५० श्लोक 'अद्यापि' से आरम्भ होते हैं), —अवधि (अव्य०) 1 आज से लेकर 2 आज तक, —पूर्वम् पहले, अब, —प्रभृति (अव्य०) आज से, इस दिन से लेकर अद्य प्रभृत्यवनताङ्गि तवास्मि दासः कु० ५।८६, —श्वीना (वि०) आसन्नप्रसवा, स्त्री जिसका प्रसव काल निकट है —अद्यश्वीनावष्टब्धे० पा० ५।२।१३।

अद्यतन (वि०) (स्त्री० —नी) [अद्य + ट्यु, तुट् च] 1 आज से संबंध रखने वाला, आज का संकेत करते हुए या विद्यमान होते हुए 2 आधुनिक —नः चालू दिन, यह दिन, चालू दिन की अवधि दे० अनद्यतन भी —नी (अर्थात् वृत्ति) लुङ् लकार का नाम (भूत०)।

अद्यतनीय [illegible] 1 आज का 2 आधुनिक

अद्यत्वे [illegible] [illegible] आजकल [illegible] [illegible] [illegible] वि० प्र० [illegible] [illegible]।

अद्रि: [अद् + क्रिन्] 1 पहाड़ 2 पत्थर 3 वज्र 4 [illegible] सूर्य 6 [illegible] एक प्रकार का म[illegible] सात की संख्या। सम० —ईशः, —नाथः, —पति:, —राजः आदि, 1 कैलाश का स्वामी हिमालय 2 शिव (कैलाशपति) —कन्या, —तनया, —दुहिता, —सुता आदि पार्वती —कीला [illegible] —द्विष्, —भिद् (पु०) पहाड़ों का शत्रु या उन्हें तोड़ने वाला, इन्द्र का विशेषण —द्रोणि-णी (स्त्री०) 1 पहाड़ की घाटी 2 पर्वत से निकलने वाली नदी —पतिः —राजः आदि [illegible] —शय्यः शिव, —भू: —सानु: पहाड़ की चोटी —सारः पहाड़ों का सार, लोहा।

अद्रोहः [न० त०] द्रोहराहित्य, बुराई का न होना, मित्रता, मृदुता मनु० ४।२

अद्वय (वि०) [नास्ति द्वयं यस्य न० ब०] 1 दो नहीं, अद्वितीय, अनुपम [illegible] 2 बुद्ध का नाम, —यम् [न० त०] द्वैत का अभाव, एकता, विशेषतया ब्रह्म और विश्व का तादात्म्य या प्रकृति और आत्मा का तादात्म्य, परम सत्य। सम० —वादिन् (अद्वैत०) 1 विश्व और ब्रह्म तथा प्रकृति एवं आत्मा के तादात्म्य का प्रतिपादक 2 बुद्ध।

अद्वारम्—[न० त०] जो दरवाजा न हो, मार्ग या रास्ता जो नियमित रूप से द्वार न हो,—अद्वारेण न चातीयाद् ग्रामं वा वेश्म वा पुरम्—मनु० ४।७३ ।

अद्वितीय (वि०) [न० ब०] 1 जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेजोड़, लासानी,—न केवलं रूपे शिल्पेऽप्यद्वितीया मालविका—मालवि० २, 2 बिना साथी के, अकेला, —यम् ब्रह्म ।

अद्वैत (वि०) [न० ब०] 1 द्वैत हीन, एकस्वरूप, एकस्वभाव, समभाव, अपरिवर्तनशील, °त सुखदुःखयो— उत्त० १।३९, 2 बेजोड़, लासानी एकमात्र, अनन्य —तम् 1 द्वैत का अभाव, तादात्म्य विशेषतया ब्रह्म का विश्व या आत्मा के साथ, या प्रकृति का आत्मा के साथ, दे० 'अद्वय' भी 2 परमसत्य या स्वयं ब्रह्म। सम०—वादिन्—अद्वयवादिन् दे० ऊपर, वेदान्त का अनुयायी।

अधम (वि) [अव्+अम, वस्य स्थाने धादेश] निम्नतम अधन्यतम अत्यंत कमीना, बहुत बुरा, नीच या निकृष्ट (गुण, योग्यता और पदादिक की दृष्टि से) (विप० उत्तम),—मः निर्लज्ज लम्पट,—मा पापी स्त्रालुमितो यतामि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्—काव्य० १, —मा निकम्मी गृहस्वामिनी। सम०—अङ्गम् पैर, —अर्धम् नाभि से नीचे का शरीर,—ऋण, —ऋणिकः कर्जदार (विप० उत्तमर्ण),—भृत, —भृतकः कुली, साइस।

अधर (वि०) [न ञ् +धृ+अच्] 1 नीचे का, अवर, निचला 2 नीच, कमीना, जघन्य, गुणों में नीचे दर्जे का, घटिया, 3 निरुत्तर, दलित, —रः नीचे का (कभी ऊपर का) ओष्ठ, ओष्ठमात्र,—पक्वबिम्बाधरोष्ठी—मे० ८२, पिबति रतिसर्वस्वमधरम्—श० १।२४,—रम् 1 शरीर का निम्नतर भाग 2 अभिभाषण, व्याख्यान (विप०—उत्तर) कभी २ उत्तर के लिए भी प्रयुक्त होता है। सम०—उत्तर (वि०) 1 उच्चतर और निम्नतर अच्छा और बुरा,—तत्र समक्षमेवावयो °व्यक्तिर्भविष्यति—मालवि० १, 2 शीघ्र या विलम्ब से, 3 उलटे ढंग से, उलट-पलट 4 निकटतर और दूरतर, —ओष्ठः नीचे का ओष्ठ,—कण्ठः ग्रीवा का निचला भाग, —पानम् चुम्बन, शाब्द० अधरोष्ठ को पीना, —मधु,—अमृतम् ओष्ठों का अमृत,—स्वस्तिकम् अधोबिन्दु।

अधरस्तात्, —रतः,—रात्, रात् —तात्, —रेण (अव्य०) नीचे, तले, निचले प्रदेश में।

अधरीकृ (तना० उभ०) [अधर+च्वि+कृ] आगे बढ़ जाना, पटक देना, पराजित करना।

अधरीण (वि०) [अधर+ख] 1 नीचे का 2 निंदित, कलंकित, तिरस्कृत।

अधरेद्युः (अव्य०) [अधर+एद्युस्] 1 पहले दिन 2 परसों (जो बीत गया)।

अधर्म—[न० त०] 1 बेईमानी, दुष्टता, अन्याय, अधर्मेण अन्यायपूर्वक 2 अन्याय्य कर्म, अपराध या दुष्कर्म पाप। धर्म और अधर्म न्यायशास्त्र में वर्णित २४ गुणों में दो गुण हैं और यह आत्मा से संबंध रखते हैं ये दोनों क्रमशः सुख और दुःख के विशिष्ट कारण हैं यह इन इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं हैं, परन्तु इनका अनुमान पुनर्जन्म तथा तर्कना के द्वारा लगाया जाता है 3 प्रजापति या सूर्य के एक अनुचर का नाम —र्मा साकार बेईमानी —र्मम् विशेषणों से रहित ब्रह्म की उपाधि। सम०—आत्मन् चारिन् (वि०) दुष्ट पापी।

अधवा (न० ब०) विधवा स्त्री।

अधस्, अधः (अव्य०) [अधर, अस् अधरशब्दस्य स्थाने अधादेश] 1 तले नीचे —यत्त्वया धाम विसाति मन त —शि० १।२, निम्नप्रदेश में नारकीय प्रदेश में या नरक में (प्रकरण के अनुसार अधः शब्द का अर्थ कर्तृकारक का होता है— °अधः आदि अपादान के साथ —अधो वृक्षात् पतति या अधिकरण के साथ अधो गृहे शेते), 2 संबंधकारक के साथ संबंधबोधक अव्ययों की भांति प्रयुक्त कि नीचे के तले अर्थ को प्रकट करते हैं— तरूणाम् —श० १।१४, (जब द्विरुक्ति की जाती है तो अर्थ होता है)—नीचे-नीचे, तले तले—अधोऽधो गंगेयं पदमुपगता स्तोकम्—भर्तृ० २० १०, (कर्मकारक के साथ) नीचे से नीचे ही नीचे— नवानधोऽधो बृहतः पयोधरान्—शि० १।४। सम० —अंशुकम् अधोवस्त्र, —अक्षजः, विष्णु— अधस् दे० ऊपर,—उपासनम् मैथुन —करः हाथ का निचला भाग (करभ),—करणम् आगे बढ़ जाना, हरा देना, अपमानित करना —खननम् अंदर-अंदर सुरंग खोदना गति (स्त्री०) —गमनम् —पातः 1 नीचे की ओर गिरना या जाना, उतरना 2 अध:पतन, हार गण्डु (पु०) चूहा,—चर चोर, जिह्विका उपजिह्वा (मराठी में 'पडजीभ' कहते हैं) —दिश् (स्त्री०) अधोबिन्दु, दक्षिण की दिशा, —दृष्टि (स्त्री०) नीचे की ओर देखना—पात —°गति दे० ऊपर, प्रस्तरः घास का बना आसन विलाप करने वाले व्यक्तियों के बैठने के लिए, भागः 1 शरीर का निचला भाग 2 किसी चीज का निचला हिस्सा—भुवनम्,—लोकः —पाताल लोक, निम्नतर प्रदेश,—मुख, —वदन (वि०) नीचे को मुख किये हुए, लंब 1 पंसाल, साहुल 2 खड़ी सरल रेखा, —वायु अपानवायु, अपकारा, स्वस्तिकम् अधोबिन्दु।

अधस्तन (वि०) [स्त्री० —नी] [अधस्+ट्यु, तुट् च] निचला, निम्न स्थान पर स्थित।

अधस्तात् (क्रि० वि० या सं० बो० अव्य०) नीचे, तले, अवर, के नीचे, के तले आदि (संबंधकारक के साथ) दे० अधः, धर्मेण गमनमूर्ध्वं गमनमधस्ताद्भवत्यधर्मेण—सां० का० ।

अधामार्गवः—अपामार्गः ।

अधारणक (वि०) [स्वार्थे कन् न० ब०] जो लाभदायक न हो—°क मर्मताम्यानम्—पंच० २।

अधि (अव्य०) [आ+धा+कि पृषो० ह्रस्वः] 1 (धातु के साथ उपसर्ग के रूप में) ऊर्ध्वं ऊपर,—°रुह् अति उगना या ऊपर उगना, अधिकता के साथ भी 2 (पृथक् क्रि० वि० के रूप में) आगे बढ़ कर, ऊपर 3 (न० बो० अव्य० के रूप में) (कर्म० के साथ) (क) ऊपर, आगे, पर, में (ख) संकेत करते हुए, के संबंध में, के विषय में (ग) (अधि० के साथ) आगे, ऊपर (किसी वस्तु पर प्रभुता या स्वामित्व प्रकट करते हुए) अधिभुवि रामः 4 (न० स० के प्रथम पद के रूप में) (क) मुख्य, प्रमुख, प्रधान,—°देवता प्रमुख देवता (ख) अतिरिक्त, फालतू, °दन्तः अध्यारूढ़ दंत, अधिक, °अधिक्षेप, अत्यधिक परिनिन्दन ।

अधिक (वि०) [अधि+क] 1 बहुत, अतिरिक्त, बृहत्तर (समास में संख्याओं के साथ) धन, से अधिक—अष्टाधिकं शतम्—१००+८=१०८ 2 (क) परिमाण में बढ़कर, अधिक संख्यावाला, यथेष्ट, अधिक, बहुल—समास में या करण कारक के साथ (ख) अतिमात्र, बढ़ा हुआ, से भरा हुआ, पूर्ण, कुशल—शिशुरधिकवया—वेणी० ३।३०, बड़ा, अधिक आयु का—भवनेषु रसाधिकेषु पूर्वम्—श० ७।२०, 3 बहुत, अधिकतर, बलवत्तर—ऊन न सत्त्वेष्वधिको बबाधे—रघु० २।१४, बलवत्तर जन्तु ने अपने से दुर्बल जन्तु का शिकार नहीं किया 4 प्रमुख, असाधारण, विशेष, विशिष्ट—इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य क्षत्रियस्य च, प्रतिग्रहोऽधिको विप्रे याजनाध्यापने तथा । या० १।११८, श० ७, 5 अतिरिक्त, फालतू—°अंग अतिरिक्त अंग वाला—नोद्वहेत्कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम्—मनु० ३।८, —कम् 1 अतिशेष, अधिक बहुत—लाभोऽधिकं फलम्—अमर०, 2 अतिरिक्तता, फालतू होना 3 अतिशयोक्ति के समान अलंकार, (क्रि० वि०) 1 अधिकतर, अधिक मात्रा में रघु० ४।१, समास में इयमधिकमनोज्ञा—श० १।२०, °सुरभि—मेघ० २१, 2 अत्यन्त, बहुत अधिक । सम० **अंग** (वि०) [स्त्री०—गी] अतिरिक्त अंग रखने वाला, —**अर्थ** (वि०) बढ़ा कर कहा हुआ, °**वचनं** अतिशय कथन, अतिशयोक्त वक्तव्य या वचन (चाहे प्रशंसा के हो या निन्दा के), —**ऋद्धि** (वि०) प्रचुर पुष्कल—रघु० १९।५,—**तिथिः** (स्त्री०),—**दिनम्**,—**दिवसः** बढ़ा हुआ चांद्र दिवस,—**वाक्योक्तिः** (स्त्री०) बढ़ा चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति अलंकार ।

अधिकरणम्—[अधि+कृ+ल्युट्] 1 प्रधान स्थान पर रखना, नियुक्ति 2 संबंध, उल्लेख, संपर्क 3 (व्या०) अनुरूपता, लिंग, वचन, कारक और पुरुष की समानता, अन्वय, कारक चिह्नों का इतर शब्दों से संबंध 4 आश्रय, विषय उपरान्त 5 अधिष्ठान, स्थान, अधिकरण कारक का अर्थ आधारोऽधिकरणम्—पा० १। ४।४५, 6 प्रस्ताव, विषय, किसी विषय पर पूर्ण तर्क, (मीमांसकों के अनुसार पूर्ण अधिकरण के ५ अंग होते हैं [illegible]) 7 न्यायालय, कचहरी, न्यायाधिकरण स्वान्दोषान् कथयन्ति नाधिकरणे—मृच्छ० ९।३, 8 दावा 9 प्रभुता । सम०—**भोजकः** न्यायाधीश, **मंडपः** कचहरी या न्यायभवन,—**सिद्धान्तः** ऐसा उपसंहार जिसका प्रभाव औरों पर भी पड़े ।

अधिकरणिकः [अधिकरण+ठन्] 1 न्यायाधीश, दण्डाधिकारी मृच्छ० ९, 2 राजकीय अधिकारी ।

अधिकर्मन् (न०) [प्रा० स०] 1 उच्चतर या बढ़िया कार्य 2 अधीक्षण,—(पुं०) जिसके ऊपर अधीक्षण का कार्य भार हो । सम०—**करः**,—**कृत्** एक प्रकार का सेवक, कर्मचारियों का अध्यवेक्षक ।

अधिकर्मिकः [अधिकर्मन्+ठ] किसी मंडी का अध्यवेक्षक जिसका कार्य व्यापारियों से कर उगाहने का हो ।

अधिकाम (वि०) [अधिक कामो यस्य] 1 उत्कट अभिलाषी, आवेशपूर्ण, कामातुर,—**मः** उत्कट अभिलाषा ।

अधिकारः [अधि+कृ+घञ्] 1 अधीक्षण, देखभाल करना 2 कर्तव्य, कार्यभार, सत्ताधिकार का पद, प्रभुत्व—द्वीपिनस्ताबूलाधिकारो दत्तः पंच० १, स्वाधिकारात् प्रमत्तः—मेघ० १, अधिकारे मम पुत्रको नियुक्तः—मालवि० ५, 3 प्रभुसत्ता, सरकार या प्रशासन, न्यायक्षेत्र, शासन 4 हक, प्राधिकार, दावा, स्वत्व (धन, संपत्ति आदि का), स्वामित्व या कब्जे का अधिकार—अधिकारः फले स्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभुः—सा० द० २९९ 5 विशेषाधिकार (राजा के) 6 प्रकरण, अनुच्छेद या अनुभाग, प्रायश्चित्त°—मिता०, दे० 'अधिकरण' 7 (व्या०) प्रधान या शासनात्मक नियम । सम०—**विधिः** किसी विशेष कार्य को करने के लिए पात्रता का कथन,—**स्थ**,—**आरूढ** (वि०) पद पर विराजमान ।

अधिकारिन्, **अधिकारवत्** (वि०) [अधिकार+इनि, अधिकार+मतुप्] 1 अधिकार संपन्न, शक्तिसम्पन्न 2 स्वत्व संपन्न, हकदार, सर्वे स्युरधिकारिणः 3 स्वामी,

मालिक 4 उपयुक्त (पु० -री,—वान्) 1 राज पुरुष, पदाधिकारी कार्यकर्ता, अधीक्षक, प्रधान, निर्देशक, शासक 2 सही दावेदार, मालिक, स्वामी।

अधिकृत (वि०) [अधि+कृ+क्त] अधिकार प्राप्त, नियुक्त आदि,—तः राजपुरुष, पदाधिकारी, किसी पद के कार्यभार को संभालने वाला।

अधिकृति (स्त्री०) [अधि+कृ+क्तिन्] हक, प्राधिकार, स्वामित्व, दे० अधिकार।

अधिकृत्य (अव्य०) [अधि+कृ+(क्त्वा) ल्यप्] उल्लेख करके, के विषय में, के संबंध में —शीतलमधिकृत्य गीयताम् —श० १, शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि —श० २।

अधिक्रमः, **अधिक्रमणम्** [अधि+क्रम्+घञ्, ल्युट् वा] हमला, चढ़ाई।

अधिक्षेपः [अधि+क्षिप्+घञ्] 1 गाली, दोषारोपण, अपमान, भवत्यधिक्षेपो ज्ञानुशासनम् —कि० १।२८ 2 पदच्युत करना।

अधिगत (वि०) [अधि+गम्+क्त] 1 अर्जित, प्राप्त आदि —भर्तृ० ३।१७, 2 अधीत, जाना, सीखा हुआ किमित्येव पृच्छ्यमानमधिगतमवगमयेयम् ...

अधिगमः, **अधिगमनम्** [अधि+गम्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अर्जन, प्राप्ति 2 जानकारी, अध्ययन, ज्ञान 3 व्यापारिक लाभ, लाभ, मुनाफा प्राप्त करना, निधि प्राप्ति —मिता० धन प्राप्ति, 4 स्वीकृति 5 मैथुन।

अधिगुण (वि०) [अधिका गुणा यस्य] 1 श्रेष्ठ गुण रखने वाला, योग्य, गुणी —शत्रुणां ... लब्धकामा —मेघ० ... 2 जिसकी डोरी कसकर खिंची हो (जैसे धनुष)।

अधिचरणम् [अधि+चर्+ल्युट्] किसी के ऊपर चलना।

अधिजननम् [अधि+जन्+ल्युट्] जन्म।

अधिजिह्वः—[ब० स०] साँप, —ह्वा, —जिह्विका 1 नाग जिह्वा 2 जिह्वा की सूजन (रोग)।

अधिज्य (वि०) [अध्यारूढा ज्या यत्र, अधिगता ज्या यं] धनुष की डोरी को कस कर खींचे हुए, या कस कर खिंची हुई डोरी वाला (जैसे कि धनुष)। सम०—धन्वन्,—कार्मुक (वि०) धनुष की डोरी को तान हुए —स्थाय चापिज्यकार्मुके—श० १।६।

अधित्यका [अधि+त्यकन्+टाप्] गिरिप्रस्थ (पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि) उच्चतमभूमि ... तपस्यन्तमधित्यकायाम् —कु० ३।१७ अधित्यकायामिव धातुमय्याम्—रघु० २।२९।

अधिदन्तः [अध्यारूढो दन्तः—प्रा० स०] दांत के ऊपर निकलने वाला दांत।

अधिदेवः, **अधिदेवता** [प्रा० स० अधिष्ठाता—त्री देव देवता वा] इष्टदेव प्रधान देव, अभिरक्षक देवता, यथावे पादुके पश्चात्कर्तुं राज्याधिदेवते —रघु० १२। १७, १६।९, भामि० ३।३

अधिदैवम्, **अधिदैवतम्** [अधिष्ठातृ दैवं दैवतं वा] किसी वस्तु की अधिष्ठात्री देवता।

अधिनाथः [प्रा० स०] परमेश्वर।

अधिनायः [अधि+नी+घञ्] गन्ध महक।

अधिपः, **अधिपतिः** [अधि+पा+क, डति वा] स्वामी, शासक, राजा, प्रभु, प्रधान—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते—रघु० २।१ (अधिकतर समास में प्रयुक्त)।

अधिपत्नी [प्रा० स०] स्त्री०—स्वामिनी, स्वामिनी।

अधिपु (पु) रुष [प्रा० स०] पुरुषोत्तम, परमेश्वर।

अधिप्रज (वि०) [अधिका प्रजा यस्य ब० स०] बहुत सन्तान वाला (स्त्री या पुरुष)।

अधिभूः [अधि+भू+क्विप्] स्वामी, श्रेष्ठ, प्रमुख।

अधिभूतम् [अधि+भू+क्त प्रा० स०] —भूत प्राणिमात्र सर्वाधिकृत्य वर्तमानम् [?] परमेश्वर, परमात्मा या आत्मरूपी सर्वव्याप्त प्रभाव।

अधिमात्र (वि०) [अधिका मात्रा यस्य ब० स०] माप से अधिक, बहुत अधिक, अत्यधिक।

अधिमासः [प्रा० स०] मैद्र या मलमास, मलमास।

अधियज्ञः [प्रा० स०] 1 प्रधान यज्ञ 2 ऐसे यज्ञ को प्रभा-वित करना।

अधिरथ (वि०) [अध्यारूढो रथं अधिरथः वा] रथ ... —थः —1 सूत, सारथि 2 सूत का नाम जो अंगदेश का राजा था और कर्ण का पालक पिता था।

अधिराज्, (पु०) **अधिराजः** [अधि+राज्+क्विप् टच् वा] [टच् वा] प्रभुसत्ता सम्पन्न या सार्वभौम सम्राट् —प्रजाधिराजः... —रघु० ६।१६ राजा प्रधान, स्वामी (मनुष्य और पशुओं का), हिमालयो नाम नगाधिराजः —कु० १।१, इसी प्रकार मृग नाग आदि।

अधिराज्यम्, **अधिराष्ट्रम्** [अधिकृतं राज्यं राष्ट्रम् वा] 1 शाही हकूमत या साम्राज्य का शासन, सर्वोच्चसत्ता शाही मर्यादा 2 साम्राज्य, देश का नाम।

अधिरूढ (वि०) [अधि+रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ 2 बढ़ा हुआ।

अधिरोहः [अधि+रुह्+घञ्] 1 सवार होना 2 सवार होना, चढ़ना।

अधिरोहणम् [अधि+रुह्+ल्युट्] चढ़ना, सवार होना, चिता ... —णी सीढ़ी, सीढ़ी का डंडा (लकड़ी आदि का)।

अधिरोहिन् (वि०) [अधि+रुह्+णिनि] चढ़ने वाला, सवार होने वाला, ऊपर उठने वाला, —णी सीढ़ी जीने की पौड़ी या डंडा।

अधिलोकम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 विश्व से संबंध रखने वाला 2 विश्व में।

अधिवचनम् [अधि + वच् + ल्युट्] 1 पक्षसमर्थन, पक्ष में बोलना, 2 नाम, उपनाम, अभिधान।

अधिवासः [अधि + वस् + णिच् + घञ्] 1 आवास, निवास वास, तस्यापि च स एव गिरिरधिवास — का० १।३७, बस्ती, बसना 2 बसना देना 3 यज्ञारंभ से पूर्व देवता का आवाहन पूजन आदि 4 धरना, पराश्रयण, जबरदस्ती 5 सुवासित और सुगंधित उबटन लगाना सुगंधयुक्त तथा महकदार पदार्थों का मलना औषधामोदविशेष [illegible] — रघु० [illegible]।

अधिवासनम् [अधि + वस् + णिच् + ल्युट्] सुगंध से बसाना, मूर्ति की प्रारंभिक प्रतिष्ठा पूजन में देवता की प्राण प्रतिष्ठा करना।

अधिविन्ना [अधि + विद् + क्त] वह स्त्री जिसके रहते हुए पति दूसरा विवाह कर ले, या० १।७३, ७, मनु० ९।८०-८३।

अधिवेत्तृ (पुं०) [अधि + विद् + तृच्] एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह करने वाला।

अधिवेदः, अधिवेदनम् [अधि + विद् + घञ्, ल्युट् वा] एक स्त्री के रहते अतिरिक्त स्त्री से विवाह करना।

अधिश्रयः [अधि + श्रि + अच्] 1 आधार 2 उबालना, (आग पर रखकर) गर्म करना।

अधिश्रयणम्, अधिश्रपणम् [अधि + श्रि (श्रप्) + ल्युट्] गर्म करना, उबालना, — णी [अधिश्रीयते पच्यतेऽत्र आधारे ल्युट् + ङीप्] चूल्हा, अंगीठी।

अधिष्ठः (वि०) [अधिकाः श्रीर्यस्य] ऊँची प्रतिष्ठा वाला, सर्वश्रेष्ठ, बड़ा धनाढ्य, प्रभुसत्तासंपन्न स्वामी —इष्टमहेन्द्रप्रभृतीनधिश्रियस्त्रिदिवौकसः [illegible] — कु० ५।५३।

अधिष्ठानम् [अधि + स्था + ल्युट्] 1 निकट होना, पास में स्थित होना, पहुँच 2 पद, स्थान, आधार, आसन, जगह, नगर 3 निवास स्थान, आवास 4 अधिकार शक्ति नियन्त्रणशक्ति 5 सरकार, उपनिवेश 6 चक्र, (गाड़ी आदि का) पहिया 7 दृष्टान्त, निर्दिष्ट नियम 8 आशीर्वाद।

अधिष्ठित (वि० [अधि + स्था + क्त] 1 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) स्थित, विद्यमान (ख) अधिकृत (ग) निदेशन, प्रधानता करना 2 (कर्मवाच्य के रूप में) (क) आवृत, अधिकृत (ख) भरा हुआ ग्रस्त, अधिभूत (ग) परिरक्षित, सुरक्षा प्राप्त, पर्यवेक्षित (घ) नीत, संचालित, आदिष्ट, प्रधानता किया गया।

अधीकारः दे० अधिकार, स्वाम्यत स्वानधीकारानन्व [illegible] — कु० २।१८।

अधीतिन् (वि०) [अधीत + इनि] खूब पढ़ा लिखा, निष्णात अधीती चतुर्ष्वाम्नायेषु — दश० १२०, (वेद व्याकरण आदि में)।

अधीतिः (स्त्री) [अधि + इ + क्तिन्] 1 अध्ययन, अनुशीलन °बोधाचरणप्रचारणैः — नैष० १।४, 2 स्मरण, प्रत्यास्मरण।

अधीन (वि०) [अधिगतम् इनम् प्रभुम् - प्रा० स०] आश्रित मातहत, निर्भर (बहुधा समस्त पदों में) स्थाने प्राणा कामिना दूत्यधीना: —मालवि० ३।१४, मदधीन [illegible] सुखम् — कु० ८।१०, इक्ष्वाकूणां दुरापे [illegible] हि सिद्धय — रघु० १।७२।

अधीयानः (वि० [illegible]) [अधि + इ + शानच्] विद्यार्थी, [illegible]।

अधीर (वि०), [illegible] 1 साहसहीन, भीरु 2 उद्विग्न, उत्तेजित, उत्कंठित 3 अस्थिर 4 पैर्यरहित, चंचल — रा 1 बिजली 2 मनचली या झगड़ालू स्त्री।

अधीवासः [अधि + वस् + घञ् उपसर्गस्य दीर्घत्वम्] लम्बा चोगा जिससे सारा शरीर ढक जाय, लबादा, दे० अधिवास भी।

अधीशः [प्रा० स०] स्वामी सर्वोच्च स्वामी या शासक [illegible] यथा [illegible] °, मनुज° आदि।

अधीशत्वम्, [प्रा० स०] सर्वोच्च स्वामी या शासक।

अधीष्ट (वि०) [अधि + इष् + क्त] सम्मानित प्रार्थना, अवैतनिक पद या कार्य, ऐसा कार्य जिसमें सामर्थ्य का उपयोग हो सके, [illegible] सत्कारपूर्वको व्यापारः — सिद्धा०।

अधुना (अव्य०) [इदमो धुनादेश: पा० ५।३।१७] अब, इस समय —प्रमदास्त्वमधुना विकल्पसा — कु० ४।११।

अधुनातन (वि०) (स्त्री० —नी) [अधुना + ट्युल्-तुट् च] वर्तमान काल से संबंध रखने वाला, आधुनिक।

अधूमकः [न० त०] जलती हुई आग।

अधृतिः (स्त्री०) [नञ् + धृ + क्तिन्] 1 दृढ़ता या संयम का अभाव शिथिलता 2 असंयम 3 दुःख।

अधृष्य (वि०) [न० त०] 1 अजेय, दुर्धर्ष, अनभिगम्य (विप० अभिगम्य) अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः — रघु० १।१६, 2 लजीला, शर्मीला 3 घमंडी।

अधोक्ष, अधोक्षज, अधोऽशुक — दे० "अधस्" के नीचे।

अध्यक्ष (वि०) [अधिगतम् अक्षम् इन्द्रियम् - प्रा० स०, अध्यक्ष्णोति व्याप्नोति इति अधि + अक्ष् + अच्] गोचर, दृश्य, प्रत्यक्षैरेव निजमक्ष ईश्वर स्यादध्यक्षः — भामि० [illegible] निरीक्षक, अधिष्ठाता, — क्षः अध्यक्षक, प्रधान मुख्य मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् — भग० ९।१०, प्राय: समस्त पदों में, गज°, सेना° ग्राम°, द्वार°।

अध्यक्षरम् [प्रा० स०] रहस्यमय अक्षर 'ओम्'।

अध्यग्नि (अव्य०) विवाह संस्कार की अग्नि के निकट या ऊपर, (नपुं०—ग्नि) विवाह के अवसर पर अग्नि को साक्षी करके स्त्री को दिया जाने वाला उपहार, धन—विवाहकाले यत्स्त्रीभ्यो दीयते ह्यग्निसंनिधौ, तदध्यग्निकृतं सद्भिः स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ।

अध्यधि (अव्य०) [अधि+अधि] ऊपर, ऊँचे (कर्म० के साथ) लोकम् सिद्धा० ।

अध्यधिक्षेपः [प्रा० स०] अत्यन्त अपशब्द या दुर्वचन, कुत्सित गालियां ।

अध्यधीन (वि०) [प्रा० स०] नितान्त अधीन, बिल्कुल वशीभूत, जैसे कि दास सेवक या० ३।१८२ ।

अध्ययः [अधि+इ+अच्] 1 ज्ञान अध्ययन स्मरण 2 दे० अध्याय ।

अध्ययनम् [अधि+इ+ल्युट्] सीखना, जानना, पढ़ना (विशेषतया वेदों का), ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक। वेदाध्ययन केवल प्रथम तीन वर्णों के लिए विहित है, शूद्र के लिए नहीं मनु० १।८८-९१ ।

अध्यर्ध (वि०) [अधिकमर्धं यस्य] जिसके पास अतिरिक्त आधा हो—शतमध्यर्धमायता महा० अर्थात् १५० योजनशतात्—पंच० २।१८ ।

अध्यवसानम् [अधि+अव+सो+ल्युट्] 1 प्रयत्न, दृढ़निश्चय आदि, दे० अध्यवसाय 2 (सा० शा० में) प्रकृत और अप्रकृत दोनों वस्तुओं का इस ढंग से एक रूप करना जिससे कि एक वस्तु दूसरी में विलीन हो जाय, निगीर्याध्यवसानं तु प्रकृतस्य परेण यत् काव्य० १०, इसी प्रकार की एकरूपता पर अतिशयोक्ति अलंकार और साध्यवसाना लक्षणा आश्रित हैं।

अध्यवसायः [अधि+अव+सो+घञ्] 1 प्रयास, प्रयत्न, परिश्रम 2 दृढ़निश्चय, संकल्प, मानस प्रयत्न या विचारों का ग्रहण, 3 धैर्य, उद्यम, लगातार कोशिश ।

अध्यवसायिन् (वि०) [अधि+अव+सो+णिनि] प्रयत्नशील, दृढ़संकल्प वाला, धैर्यशाली, उत्साही ।

अध्यशनम् [अधि+अश्+ल्युट्] अधिक खाना, एक बार का खाना पचे बिना फिर खा लेना ।

अध्यात्म (वि०) [आत्मनः संबद्धम्] आत्मा या व्यक्ति से संबंध रखने वाला,—त्मम् (अव्य०) आत्मा से संबद्ध —त्मम् परब्रह्म (व्यक्ति के रूप में प्रकट) या आत्मा और परमात्मा का संबंध; सम०—ज्ञानम्,—विद्या आत्मा या परमात्मा संबंधी ज्ञान अर्थात् ब्रह्म एवं आत्म-विषयक ज्ञानकारी (उपनिषदों द्वारा बताये गये सिद्धांत)—रति (वि०) जो परमात्मचिन्तन में सुख का अनुभव करे ।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—की] अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला ।

अध्यापकः [अधि+इ+णिच्+ण्वुल्] पढ़ाने वाला, गुरु, शिक्षक-विशेषतया वेदों का, व्याकरण°, न्याय°; भृतक अर्थार्थी अध्यापक । विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक दो प्रकार के हैं—एक तो 'आचार्य' जो कि बालक को यज्ञोपवीत पहनाकर वेद-पाठ में दीक्षित करते हैं, दूसरे 'उपाध्याय' जो अपनी जीविका कमाने के लिए अध्यापन कार्य करते हैं, दे० मनु० २।१४०-४१ ।

अध्यापनम् [अधि+इ+णिच्+ल्युट्] पढ़ाना, सिखाना, व्याख्यान देना, ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक, भारतीय स्मृतिकारों के अनुसार अध्यापन तीन प्रकार का है 1 धर्मार्थ किया जाने वाला 2 मजदूरी प्राप्त करने के लिए 3 की गई सेवा के बदले ।

अध्यापयितृ (पुं०) [अधि+इ+णिच्+तृच्] अध्यापक शिक्षक ।

अध्यायः [अधि+इ+घञ्] 1 पढ़ना, अध्ययन, विशेषकर वेदों का 2 पाठ या पढ़ने के लिए उचित समय 3 पाठ व्याख्यान 4 खण्ड, किसी रचना के भाग निम्नांकित कुछ एसे नाम हैं जो सम्भवतः लेखकों ने 'खण्ड या 'भाग' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये हैं सर्गो वर्गः परिच्छेदोद्घाताध्यायाङ्कसंग्रहाः उच्छ्‌वासः परिवर्तश्च पटलः काण्डमाननम्, स्थानं प्रकरणं चैव पर्वोल्लासाह्निकानि च स्कंधांशौ तु पुराणादौ प्रायशः परिकीर्तितौ ।

अध्यायिन् (वि०) [अध्याय+णिनि] अध्ययन करने वाला, अध्ययनशील ।

अध्यारूढ (वि०) [अधि+आ+रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ 2 ऊपर उठा हुआ, उन्नत 3 ऊँचा, श्रेष्ठ नीचा, निम्नतर ।

अध्यारोपः [अधि+आ+रुह्+णिच्+पुक्+घञ्] 1 उठना, उन्नत होना आदि 2 (वे० द० में) भ्रमवश एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम के कारण एक वस्तु के गुण दूसरी वस्तु में जोड़ना, भ्रमवश रस्सी को सांप समझना असर्पभूतरज्जौ सर्पारोपवत्, अजगद्रूपे ब्रह्मणि जगद्रूपारोपवत्, वस्तुनि अवस्त्वारोपोऽध्यारोपः वे० सा०, 3 भ्रान्तिपूर्ण ज्ञान ।

अध्यारोपणम् [अधि+आ+रुह्+णिच्+पुक्+ल्युट्] 1 उठना आदि 2 (बीज) बोना ।

अध्यावापः [अधि+आ+वप्+घञ्] 1 बीजादिक बखेरना या बोना 2 वह खेत जिसमें बीजादिक बो दिया गया हो ।

अध्यावाहनिकम् [अध्यावाहन (पितृगृहात्पतिगृहगमनम्) लक्ष्यार्थे ठन्] छः प्रकार के स्त्रीधनों (वह सम्पत्ति जो एक स्त्री अपने पिता के घर से पति के घर को विदा होते समय प्राप्त करती है) में से एक—यत्पुनर्लभते नारी नीयमाना तु पैतृकात् (गृहात्) अध्यावाहनिकं नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ।

अध्यासः, अध्यासनम् [अधि+आस्+घञ्, ल्युट् वा] 1 ऊपर बैठना, अधिकार में करना, प्रधानता करना 2 आसन, स्थान।

अध्यासः [अधि+आस्+घञ्] 1 मिथ्या आरोपण, मिथ्या ज्ञान, दे० 'अध्यारोप' को भी 2 परिशिष्ट 3 कुचलना —पादाध्यासे शतं दम:—या० ２।२१७।

अध्याहारः } [अधि+आ+हृ+घञ्, ल्युट् वा] 1
अध्याहरणम् } न्यूनपदता को पूरा करना 2 तर्क करना, अनुमान करना, नई कल्पना, अभ्याशा या अनुमान।

अध्युष्ट्र: [अधिगत उष्ट्रं वाहनत्वेन] ऊँटगाड़ी।

अध्यूढः [अधि+वह्+क्त] उठा हुआ, उन्नत,—ढः शिव—ढा वह स्त्री जिसके पति ने उसके रहते हुए दूसरा विवाह कर लिया हो दे० अधिविन्ना।

अध्येषणम् [अधि+इष्+ल्युट्] किसी कार्य को करने की प्रेरणा देना, विशेषतः आचार्य के द्वारा, अर्थात् आदर पूर्वक किसी कार्य में प्रवृत्त करना,—णा निवेदन, याचना।

अध्रुव (वि०) [न० त०] 1 अनिश्चित, सन्दिग्ध 2 अस्थिर, चपल, पृथक्करणीय,—वम् अनिश्चितता, यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते, ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च।

अध्वन् (पुं०) [अद्+क्वनिप् दकारस्य धकार:] 1 रास्ता, सड़क, मार्ग, मकान मार्ग २(क) दूरी, स्थान (चलकर पार किया गया और पार करने के निमित्त)—अपि लंघितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः—रघु० १।४७, तस्य खिन्नाध्वा—मेघ० ४५ (ख) यात्रा, गमन, प्रमाण, प्रस्थान—नैकः प्रपद्येताध्वानम् मनु० ४।६०, 3 समय (काल), भूतकाल 4 आकाश, अन्तरिक्ष 5 उपाय साधन, प्रणाली 6 आक्रमण। सम०—गः 1 मार्ग चलने वाला, यात्री, बटोही—अस्तामन्तरध्वगाधा-सुप्तविवादराध्वगम्—कु० ६।४६ (°गामिन्), 2 ऊँट 3 खच्चर 4 सूर्य,—गा गंगा,—पतिः सूर्य, —गः 1 यात्रा करने के लिए गाड़ी 2 हरकारा जो चलने में चतुर हो।

अध्वनीन } (वि०) [अध्वन्+ख, यत् वा] यात्रा पर जाने
अध्वन्य } के योग्य, तेज चलने वाला—जिन ततोऽध्वन्य-दूरगामी—भट्टि० २।४४,—नः,—न्यः तेज चलने वाला यात्री, बटोही।

अध्वरः [अध्वानं सत्पथं राति—इति अध्वन्+रा+क अथवा न ध्वरति कुटिलो न भवति ध्वृ+अच्, ध्वरतिहिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधो निपातः अहिंस्र—निरु०] यज्ञ धार्मिक संस्कार, सोमयाग, तमध्वरे विश्वजिति —रघु० ५।१,—रः,—रम् आकाश या वायु। सम०—दीक्षणीया अध्वर संबंधी संस्कार, इसी प्रकार °प्रायश्चित्तिः—प्रायश्चित्त, यज्ञनिष्कृति,—मीमांसा जैमिनि की पूर्वमीमांसा।

अध्वर्युः [अध्वर+क्यच्+युच्] 1 ऋत्विक्, पुरोहित, पारिभाषिक रूप से 'होतृ' 'उद्गातृ' तथा 'ब्रह्मन्' से अतिरिक्त ऋत्विक्, 2 यजुर्वेद। सम०—वेदः यजुर्वेद।

अध्वाति=अध्वग।

अध्वान्तम् [न० त०] संध्या, अन्धकार।

अन् (अदा० पर० सेट्) [अनिति, अनित] 1 सांस लेना, 2 हिलना, जीना, प्रेर० आनयति, इच्छा० अनिनिषति। (दिवा० आ०) जीना, 'प्र' उपसर्ग के साथ—जीवित रहना—सद्य पुनरेव प्राणिति—का० १५, प्राणिमत्स्य मामार्य—भामि० ४।१८।

अनः [अन्+अच्] सांस, श्वास।

अनंश (वि०) [न० ब०] जिसका पैतृक सम्पत्ति पर कोई अधिकार न हो।

अनकदुन्दुभिः=दे० आनकदुन्दुभिः।

अनक्ष (वि०) [न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा।

अनक्षर (वि०) [न० ब०] 1 बोलने में असमर्थ, मूक, गूंगा 2 अशिक्षित 3 बोलने के अयोग्य,—रम् दुर्वचन गाली, निन्दा या अपशब्द, (क्रि० वि०) बिना शब्दों के— °व्यंजित दौहृदं रघु० १४।२६।

अनग्निः [न० त०] 1 अग्नि का न होना, अग्नि के अभाव कोई दूसरी वस्तु—यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते, अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्। निरु० 2 अग्नि का अभाव, (वि०) [न० ब०] 1 जिसे अग्नि की आवश्यकता न हो—विदधे विधिमस्य नैष्ठिकं यतिभिः सार्धमनग्निमग्निचित्—रघु० ८।२५, 2 अग्निहोत्र न करने वाला, 3 श्रौतस्मार्त कर्म से विरहित, अधार्मिक 4 अग्निमांद्य रोग से ग्रस्त 5 अविवाहित।

अनघ (वि०) [न० ब०] 1 निष्पाप, निरपराध—अवैमि चैनामनघेति—रघु० १४।४०, 2 निर्दोष, सुन्दर, —अनघनयम्—श० २।१३, खजं ग्रामवासितोरका-भस्त्वामनघा बुधा:—अमर० 3 अक्षुण्ण, पापरहित, अक्षत, सुरक्षित—अविघ्नमनघोऽभवन्ना प्रसूति—रघु० ५।७, नृपवपुर्मदा अनघप्रसवा भवति—श०४, जिसका प्रसव अक्षुण्ण हो चुका हो या जो प्रसव के पश्चात् अक्षुण्ण अवस्था पर जीती हो 4 पवित्र, निष्कलंक,—घः 1 सफेद सरसों, 2 विष्णु या शिव का नाम।

अनङ्कुश (वि०) [न० ब०] 1 अदृश्य, उच्छृंखल 2 (कृषि की भांति) स्वच्छन्द।

अनङ्ग (वि०) [न० ब०] देहरहित, अशरीरी, आकृतिहीन —अनङ्गः करवाक्ता रति:—कु० ४।९,—गः (देहरहित), कामदेव—गम् 1 आकाश, वायु, अन्तरिक्ष, 2 मन। सम०—क्रीडा कामक्रीडा,—लेखः=मदन

लेख, प्रेम०, °लेखक्रियोपयोग (वज्रति) कु० १।७, °शम्भु, °अच्युत आदि—शिव जी के नाम।

अनञ्जन (वि०) [न० ब०] बिना अंजन, वर्णक या काजल के—नेत्रे दूर मनञ्जने—सा० द०, —नम् 1 आकाश, वातावरण 2 परब्रह्म विष्णु या नारायण (पु० भी)।

अनडुह् (पु०) [अन शकट वहति नि०] [अनड्वान् °ड्वाही, °डुहाम् आदि०] 1 बैल, साँड 2 वृषराशि,—ही (अनड्वाही) गाय।

अनति (अव्य०) [न० त०] बहुत अधिक नहीं, 'अनति से आरम्भ होने वाले समस्त पदों का विश्लेषण 'अति' से आरम्भ होने वाले शब्दों की भाँति किया जा सकता है।

अनतिविलम्बिता विलम्ब का अभाव, व्याख्यानदाता का एक गुण धाराप्रवाहिता, ३५ वाग्गुणों में से एक।

अनद्यतन वि० [स्त्री०—नी] [न० त०] आज या चालू दिन से संबंध न रखने वाला, पाणिनि का एक पारिभाषिक शब्द जो लङ् और लुट् लकार के अर्थ को प्रकट करता है,—नः जो चालू दिन न हो, अतीताया रात्रेः पश्चार्धेन आगामिन्या रात्रेः पूर्वार्धेन सहितो दिवसोऽद्यतनः—सिद्धा०, तद्भिन्न काल।

अनधिक (वि०) [न० त०] 1 जो अधिक न हो, 2 असीम पूर्ण।

अनधीनः [न० त०] अपनी इच्छा से कार्य करने वाला स्वाधीन बढ़ई, कौटतक्ष।

अनध्यक्ष (वि०) [न० त०] 1 अप्रत्यक्ष, अदृश्य 2 शासक हीन।

अनध्यायः } [न० त०] न पढ़ना, पढ़ाई में विराम, वह
अनध्ययनम् } समय जब कि इस प्रकार का विराम होता है या होना चाहिए, एक अवकाश का दिन (°दिवस) अद्य शिष्टानध्यायः—उत्तर० ४ किसी पूज्य अतिथि के सम्मान में दिया गया अवकाश।

अननम् [अन्+ल्युट्] साँस लेना, जीना।

अननुभावुक (वि०) जो समझने के अयोग्य हो।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य न० ब०] अन्तरहित, अपरिमित, निस्सीम, अक्षय,—°रत्नप्रभवस्य यस्य—कु० १।३,—तः 1 विष्णु की शय्या शेषनाग, कृष्ण, बलराम, शिव, नागों का पति वासुकि 2 बादल 3 कहानी, 4 चौदह ग्रन्थियों से युक्त रेशमी डोरा जो अनंत चतुर्दशी के दिन दक्षिण भुजा पर बाँधा जाता है;—ता 1 पृथ्वी (अन्तहीन) 2 एक की संख्या 3 पार्वती 4 सारिवा, अनंतमूल, दूर्वा आदि पौधे;—तम् 1 आकाश, वातावरण 2 असीमता 3 मोक्ष 4 परब्रह्म। सम०—तृतीया वैशाख, भाद्रपद और मार्गशीर्ष मास की शुक्लपक्ष की तीज—दृष्टिः शिव, इन्द्र,—देवः 1 शेषनाग 2 नारायण जो शेषनाग के ऊपर सोता है, —पार (वि०) असीम विस्तारयुक्त निस्सीम °र किल शब्दशास्त्रम्—पंच० १ —रूप (वि०) अगणित रूपवाला विष्णु, —विजय युधिष्ठिर का शंख भग० १।१६।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अंतरं यस्य—न० ब०] 1 अन्तररहित, सीमारहित 2 जिसके बीच देश काल का कोई अन्तर न हो सटा हुआ, लगा हुआ 3 संसक्त, पड़ोस का, बिल्कुल मिला हुआ, निकटवर्ती (अपादान के साथ) ब्रह्मावर्तादनन्तरः मनु० २।१९ 4 अनुवर्ती सन्निहित होना (समास में) 5 अपने से ठीक नीचे के वर्ण का, —रम् 1 संसक्तता, सन्निकटता 2 ब्रह्म, परमात्मा —रम् (अव्य०) तुरन्त बाद, पश्चात् 2 (सम्बन्धवाचकता की दृष्टि से) बाद में (अपादान के साथ) पुराणपत्रापगमादनन्तरम् रघु० ३।७ गोदानविधेरनन्तरम् ३।३३ ३६ २ ७१। सम०—ज या —जा 1 क्षत्रिय या वैश्य माता में, अपने से ठीक ऊपर के वर्ण के पिता के द्वारा उत्पन्न सन्तान मनु० १०।४ 2 'सरपरिया' भाई बहन, (—जा) छोटी या बड़ी बहन अनुष्ठितानन्तरजाविवाहः रघु० ७।३२ इसी प्रकार °जात।

अनन्तरीय (वि०) [अनंतर+छ] क्रमानुक्रम में ठीक बाद का।

अनन्य (वि०) [न० त०] 1 अभिन्न, समरूप, वही, अद्वितीय 2 एकमात्र, अनुपम, जिसके साथ और दूसरा न हो 3 अविभक्त, एकाग्र अन्य की ओर न जाने वाला, —अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते भग० ९।२२, समास में 'अनन्य' शब्द का अनुवाद किया जा सकता है 'दूसरे के द्वारा नहीं' और किसी ओर लग्न या निर्देशित नहीं' 'एकाग्रमपि'। सम०—गतिः (स्त्री०) एकमात्र सहारे वाला अनन्यगतिके जने विगतपातके चातके उक्त०, -चित्त, चित्त,—चेतस्, —मनस्, —मानस, —हृदय (वि०) एकाग्रचित्त, जिसका मन और कहीं न हो; —जः,—जन्मन् (पु०) कामदेव, प्रेम का देवता—मा मूमुहन्खलु भवन्तमनन्यजन्मा—मा० १।३२, —पूर्वः वह पुरुष जिसके और कोई स्त्री न हो, (—र्वा) कुमारी, बिनब्याही स्त्री—रघु० ६।७; —भाज् (वि०) किसी और व्यक्ति की ओर लगाव न रखने वाला;—अनन्यभाजं पतिमाप्नुहि—कु० ३।६३; —विषय (वि०) किसी और से संबंध न रखने वाला, —वृत्ति (वि०) 1 वैसे ही स्वभाव का 2 जिसकी दूसरी जीविका न हो 3 एकनिष्ठ मनोवृत्ति वाला; —साधारण,—साधारण्य (वि०) दूसरे के न मिलने वाला, असाधारण, ऐकान्तिक रूप से लगा हुआ, केवल-मात्र,—अनन्यनारी सामान्यो दासस्त्वस्याः पुरूरवाः—विक्रम० ३।१८ °राजशब्दः—रघु० ६।३८;—सदृश (वि०) [स्त्री०—शी] बेजोड़, अनुपम।

अनन्वय [न० त०] 1 सबंध का अभाव 2 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की तुलना उसी से की जाय और उसकी तुलना के लिए [illegible] किया जाय जिससे कोई और उपमान ही न हो। जैसे गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव।

अनप (वि०) [न० ब०] जलहीन [illegible]

अनपकारणम्, **अनपकमन**, **अनपक्रिया** [न० त०] 1 [illegible] 2 [illegible] का अभाव 3 [illegible] ऋण न [illegible]।

अनपकार [illegible] रहित [illegible]

अनपत्य [illegible]

अनपत्रप (वि०) [illegible]

अनपभ्रंश [illegible]

अनपसर (वि०) [न० ब०] जिसमें से निकलने का [illegible] मार्ग न हो [illegible] अधिकार [illegible] जाए।

अनपाय (वि०) [न० ब०] 1 हानि या नाश से रहित 2 अनश्वर अक्षय अमरी—प्रणमन्त्यनपायमुत्थितम् [illegible] (कुमार) कि० ११११—यः [न० त०] 1 अनश्वरता स्थायिता 2 शिव।

अनपायिन् (वि०) [अनपाय + णिनि] अनश्वर दृढ़ [illegible] अचल [illegible]—प्रमादादभिमतो [illegible] आराधो [illegible]—रघु० १७।१६, [illegible] अनपायिनि [illegible]

अनपेक्ष-क्षिन् (वि०) [न० ब० [illegible]] 1 असावधान 2 [illegible] 3 स्वतंत्र दूसरे [illegible] 4 [illegible] 5 असंबद्ध —क्षा [न० त०] असावधानी [illegible] मानना [illegible] ऋ० वि० [illegible] के स्वतन्त्र रूप से परवाह न करते हुए [illegible] बातों में।

अनपेत (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न गया हो बीता न हो 2 विचलित न हुआ हो (अपा० के साथ) अर्थात्-दनपेतम् अव्ययम्—सिद्धा० 3 अविरहित सम्पन्न—ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४।

अनभिज्ञ (वि०) [न० त०] अनजान, अपरिचित अनभ्यस्त (प्राय संब० के साथ) °ज्ञः वैदग्ध्य—श० ५, °ज्ञः परमेश्वरगृहाचारस्य—महा० २।

अनभ्यासवृत्ति (स्त्री०) [न० त०] पुनरुक्ति का अभाव—अनागमभ्यावृत्त्या वा काम क्षाम्यतु य क्षमी—शि० २।४३

अनभ्यास—स (वि०) [न० ब०] जो निकटस्थ न हो दूरस्थ [illegible] (वि०) दूर से ही छिटकने वाला शि० [illegible]

अनभ्र (वि०) [न० ब०] बिना बादलों के इयत्तनभ्र [illegible] बिना ही बादलों के आकाश से [illegible] —भ्रं न अभ्र [illegible] या आकस्मिक घटना।

अनम [न० ब०] [illegible] जो दूसरे को न तो नमस्कार करता है और न [illegible] नमस्कार का उत्तर देता है।

अनमितम्पच (वि०) [illegible] कृपण मक्खीचूस

अनम्बर (वि०) [illegible] नंगा [illegible] बौद्धभिक्षु

अनय [illegible] दुर्व्यवहार [illegible] अन्याय [illegible]

अनयन [illegible]

अनर्घ [illegible]

अनर्घ्य (वि०) [न० ब०] अनमोल [illegible] अमूल्य जिसके मूल्य [illegible] अनुमान [illegible]

अनर्थ (वि० [न० त०] समन्त [illegible] आर्थिक सम्मान्य।

अनर्थ (वि०) [न० ब०] 1 अनुपयुक्त निकम्मा 2 अभाग्य [illegible] अर्थहीन निरर्थक [illegible] अनर्थ [illegible] या मूल्य का न होना 2 निरर्थक या अनुपयुक्त वस्तु [illegible] विपत्ति [illegible] शब्दनिकार [illegible] 4 अर्थ का न होना अर्थ का अभाव। सम० [illegible]

अनर्थक [illegible] निरर्थक [illegible] दुर्भाग्यपूर्ण [illegible]

अनर्ह (वि०) [न० त०] [illegible] अनधिकारी अयोग्य 2 अनुपयुक्त (संब० के साथ या समास में)।

अनल [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य—न० ब०] 1 आग 2 अग्नि या अग्निदेवता 3 पाचनशक्ति 4 पित्त। सम० —द (वि०) [अनल + हन्] 1 गर्मी या आग को नष्ट करने वाला 2 [illegible] अग्निद —दीपन (वि०) जठराग्नि या पाचनशक्ति को बढ़ाने वाला —प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा —साद [illegible] क्षुधा का नाश, अग्निमांद्य।

अनलस (वि०) [न० त०] 1 आलस्यरहित, चुस्त, परिश्रमी 2 अयोग्य असमर्थ।

अनल्प (वि०) [न० त०] 1 बहुसंख्यक 2 जो थोड़ा न हो, उदारात्मा उदार (जैसा कि मनु आदि) अधिक,

अल्पत्यनल्पाक्षरम् पंच० १।१३६ विकसितवदनाम नल्पजल्पेपि —भामि० १।१०० २।१३८।

अनवकाश (वि०) [न० ब०] 1 अनाहूत, 3 अप्रयोज्य 2 जिसके लिए कोई गुंजायश या मौका न हो —श [न० त०] स्थान या कार्यक्षेत्र का अभाव।

अनवग्रह (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके सुकुमार कायमनवग्रहः स्मरः (अभिहन्ति) मा० १।३९।

अनवच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 सीमाकन रहित, अपृथक्कृत 2 सीमारहित अधिक 3 अनिर्दिष्ट, अविविक्त अविकृत 4 अबाधित।

अनवद्य (वि०) [न० त०] निर्दोष कलंकरहित, अनिंद्य रघु० ७।७०। सम० अंग रूप (वि०) निर्दोष या नितान्त सुन्दर अंगों वाला (—गी) रूपवती स्त्री।

अनवधान (वि०) [न० ब०] निरपेक्ष ध्यान न देने वाला, —नम् [न० त०] प्रमाद, असावधानता ना-लापरवाही।

अनवधि (वि०) [न० ब०] असीमित अपरिमित।

अनवम (वि०) [न० त०] जो नीच या तुच्छ न हो बड़ा श्रेष्ठ, सुधर्मानवमा सभाम रघु० १६।२७ ९।१४।

अनवरत (वि०) [न० त०] अविराम निरंतर 'धनुर्ज्या स्फालनक्रूरपूर्वम् श० २।४ तम् (क्रि० वि०) बिना रुके, लगातार।

अनवराध्यं (वि०) [अवरस्मिन् अर्धे भव इत्यर्थे नञ् + अवरार्ध + यत् न० त०] मुख्य सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ।

अनवलंब - बन (वि०) [न० त०] अवलंबहीन निराश्रित — ब,—बनम् स्वतंत्रता।

अनवलोभनम् [न० त०] गर्भ के तीसरे मास किया जाने वाला एक संस्कार।

अनवसर (वि०) [न० ब०] 1 व्यस्त 2 निरवकाश —र [न० त०] 1 अवकाश का अभाव कुसमय होना असामयिकता के याचे यत्र यत्र ध्रुवमनवसरग्रस्त एवार्थिभाव मा० ९।३० ।

अनवस्कर (वि०) [न० ब०] मलरहित स्वच्छ साफ।

अनवस्थ (वि०) [न० त०] अस्थिर, —स्था [न० त०] 1 अस्थिरता 2 अनिश्चित अवस्था 2 चरित्रभ्रष्टता लम्पटता 3 (दर्शन० में) किसी अन्तिम निर्णय पर न पहुँचना, कार्य-कारण की ऐसी परंपरा जिसका अन्त न हो तर्क का एक दोष —एवमप्यनवस्था स्यात्सा मूल क्षतिकारिणी काव्य० २ एवं च 'प्रसंगः—सा०।

अनवस्थान (वि०) [न० ब०] अस्थायी, अस्थिर, चंचल, —नः वायु —नम् [न० त०] 1 अस्थिरता, 2 आचार-भ्रष्टता, लम्पटता।

अनवस्थित (वि०) [न० त०] 1 अस्थिर, अस्थिरचित्त 2 परिवर्तित 3 आवारा।

अनवेक्षक (वि०) [न० त०] असावधान बेपरवाह, उदासीन।

अनवेक्ष-क्षा दे० अनपेक्ष—क्षा।

अनवेक्षणम् [नञ् + अव + ईक्ष + ल्युट्] लापरवाही अन-वधानता।

अनशनम् [नञ् + अश + ल्युट्] उपवास आमरण उपवास।

अनश्वर (वि०) [स्त्री०—री] [न० त०] अविनाशी।

अनस (पुं०) [अन् + असुन्] 1 गाड़ी 2 भोजन भात 3 [illegible] 4 प्राणी 5 [illegible]

अनसूय —**यक** (वि०) [न० ब०] द्वेष रहित [illegible] —या [न० त०] ईर्ष्या का अभाव 2 [illegible] [illegible] पातिव्रत्य और सतीत्व का ऊँचा नमूना।

अनहन (नपुं०) न० त०, बुरा दिन दुर्दिन।

अनाकाल [न० त०] 1 कुसमय 2 दुर्भिक्ष [illegible] [illegible] शब्द का [illegible] —भृत [illegible] [illegible] बचाने के लिए स्वयं दूसरे का दास बन जाता है।

अनाकुल (वि०) [न० त०] 1 शान्त प्रकृतिस्थ स्वस्थ 2 [illegible]

अनागत (वि०) [न० त०] 1 न आया हुआ न पहुँचा हुआ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अविज्ञात [illegible] [illegible] [illegible] 4 [illegible] —सम [illegible] [illegible], भविष्य [illegible] **अवेक्षणम्** भविष्य की ओर देखना आगे की ओर दृष्टि रखना **अबाध** आने वाला [illegible] या विपत्ति — **आतवा** [illegible] [illegible] साथ [illegible] [illegible] **विधातृ** (पुं०) [illegible] [illegible] होने [illegible] [illegible] [illegible] दूरदर्शी [illegible] [illegible] इस नाम [illegible] [illegible]।

अनागम [न० त०] 1 न आना 2 अप्राप्ति।

अनागस् (वि०) [न० ब०] निरपराध निर्दोष— [illegible] [illegible] प्रजास्वनागःसु— श० ९।११।

अनाचार [न० त०] अनुचित आचरण, दुराचरण कुरीति।

अनातप (वि०) [न० ब०] धूप या गर्मी से मुक्त ताप रहित ठंडा।

अनातुर (वि०) [न० त०] 1 असंपृक्त उदासीन 2 न थका हुआ अक्लान्त —भेजे धर्ममनातुरः —रघु० १।२१ 3 अच्छा स्वस्थ।

अनात्मन् (वि०) [न० ब०] 1 आत्मा या मन से रहित 2 अनात्मिक 3 जिसने अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रक्खा है,—(पुं०) जो आत्मिक न हो, आत्मा से भिन्न अर्थात् नश्वर शरीर। सम०—ज्ञ,—वेदिन् (वि०)

अपने आपको न जानने वाला, मूर्ख जड़—मा तावद-नात्मज्ञे—श० ६,—संपन्न (वि०) मूर्ख।

अनात्मनीन (वि०) [नञ् + आत्मन् + ख] जो अपने ही लाभ के लिए कार्य करने का अभ्यस्त न हो नि स्वार्थ, स्वार्थ रहित।

अनात्मवत् (वि०) [आत्मा वशत्वेन नास्ति इत्यर्थे—नञ् + आत्मन् + मतुप् न० त०] असयत इन्द्रिय परायण।

अनाथ (वि०) [न० ब०] असहाय निर्धन स्वामी माता पितृहीन बिना मा बाप का बच्चा, विधवा स्त्री सामान्यत जिसका कोई रक्षक न हो—नाथवन्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे उत्तर० १।६३। सम०—सभा अनाथालय।

अनादर (वि०) [न० ब०] उदासीन उपेक्षापूर्ण —र: [न० त०] अवहेलना तिरस्कार अवज्ञा—परा-वानादरे—पा० २।३।१७।

अनादि (वि०) [न० ब०] आदि रहित नित्य अनादि काल से चला आता हुआ—अनाद्यनन्तस्य—कु० २।१६। सम०—अनन्त अन्त (वि०) आदि और अन्त रहित नित्य (—न्त) शिव निधन (वि०) जिसका आरम्भ और समाप्ति न हो शाश्वत—मध्यान्त (वि०) जिसका आदि मध्य और अन्त कुछ भी न हो नित्य।

अनादीनव (वि०) [न० त०] निर्दोष—यदृच्छया सनादीनवमनादीनवं नृपम्—शि० २।७०।

अनाद्य (वि०) [न० त०] 1 दे० अनादि, 2 अभक्ष्य खाने के अयोग्य।

अनानुपूर्व्यम् [न० त०] 1 दूसरे पदों के बीच में आ जाने के कारण समास के विभिन्न पदों का पृथक्करण 2 नियत क्रम में न आना।

अनाप्त (वि०) [न० त०] 1 अप्राप्त 2 अयोग्य अकुशल पर अजनबी।

अनामक } (वि०) [न० ब० स्वार्थे कन्] बिना नाम का
अनामन् } अप्रसिद्ध (पु०) 1 मलमास 2 कनिष्ठिका तथा मध्यमा के बीच की अंगुली दे० नीचे अना-मिका।—(ना०) बवासीर।

अनामय (वि) [नास्ति आमयः रोगो यस्य न० ब०] स्व-स्थ, तन्दुरुस्त,—यः,—यम् स्वास्थ्य अच्छा होना महाश्वेता कादम्बरीमनामयं पप्रच्छ का० १५२ उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की —यः विष्णु (कइयो के मत में 'शिव')।

अनामा, अनामिका [नास्ति नाम अस्याः—नञ् + ब० स्वार्थे कन्] कानी तथा बिचली अंगुली के बीच की अंगुली—इसका यह नाम इस लिए पड़ा कि दूसरी अंगुलियों की भांति इसका कोई नाम नहीं, पुरा कवीनां

गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा, अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव। सुभा०।

अनायत्त (वि०) [न० त०] जो दूसरे के वशीभूत न हो, —क्रोधस्य का० ४५ जो क्रोध के वशीभूत न हो, स्व-तन्त्र —ततावज्ञमनाकल्य्य मदनायत्तवृत्तिना—हि० ३।२२ स्वतन्त्र जीविका।

अनायास (वि०) [न० त०] जो कष्टप्रद या कठिन न हो, आसान—समाप्येकस्मिन् °मे कर्मणि त्वया सन्नायेन भावितव्यम् श० २ —सः 1 सरलता कठिनाई का अभाव °मेन आसानी से बिना किसी कठिनाई के।

अनारत (वि०) [न० त०] 1 अनवरत, निरन्तर अबाध 2 नित्य —तम (अव्य०) लगातार नित्यरूप से अनारतं तेन पदेषु लम्भिता कि० १।१५, ६०।

अनारम्भ [न० त०] आरम्भ न होना विकार मनु तत्पूर्वतया अस्त्या ° भ प्रतीकारस्य—श० ३।

अनार्जव (वि०) [न० त०] कुटिल बेईमान—वम् 1 कुटिलता कपट 2 रोग।

अनार्तव (वि०) [स्त्री० —वी] [न०त०] असामयिक —वा वह कन्या जो अभी तक रजस्वला न हुई हो।

अनार्य (वि०) [न० त०] अप्रतिष्ठित नीच अधम —र्यः 1 जो आर्य न हो 2 वह देश जहाँ आर्य न हों, 3 शूद्र 4 म्लेच्छ ५ कमीना।

अनार्यकम् [अनार्ये देशे भवम् अनार्य + क] अगर की लकड़ी।

अनार्ष (वि०) [न० त०] 1 जो ऋषियों से सम्बन्ध न रखता हो अवैदिक सबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे— पा० १।१।१६ (—वैदिके सिद्धा०) 2 जो ऋषि-प्रोक्त न हो।

अनालम्ब (वि०) [न० ब०] असहाय अवलम्बहीन —म्बः अवलम्ब का अभाव नैराश्य —म्बी शिव की वीणा।

अनालम्बु (भू) —का [न० त०] रजस्वला स्त्री।

अनावर्तिन् (वि०) [न० त०] फिर न होने वाला, फिर न लौटने वाला।

अनाविद्ध (वि०) [न० त०] न बिंधा हुआ जिसमें छिद्र न किया गया हो।

अनावृत्ति (स्त्री०) [न० त०] 1 फिर न लौटना 2 फिर जन्म न होना, मोक्ष।

अनावृष्टि: (स्त्री०) [न० त०] सूखा पड़ना, 'ईति' का एक भेद।

अनाश्रमिन् (पु०) [न० त०] जो जीवन के चार आश्रमों में से किसी को न मानता हो, न किसी से सम्बन्ध रखता हो। अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु क्षणमेकमपि द्विज—स्मृ०।

अनाश्रव (वि०) [नञ् + आ + श्रु + अच्] जो किसी की न सुने, ढीठ, किसी की बात पर कान न दे—विवशा-मनाश्रव रघु० १९।४९।

अनाश्वस् (वि०) [नञ् + अश् + क्वसु नि०] जिसने भोजन न किया हो, उपवास रखने वाला।

अनास्था [न० त०] उदासीनता, तटस्थता, आस्था का अभाव—अनास्था बाह्यवस्तुषु—कु० ६।६३, पिंडेष्व-नास्था खलु भौतिकेषु—रघु० २।५७, स्त्री पुमानित्य-नास्थैषा वृत्तं हि महितं सताम्—कु० ६।१२, 2 श्रद्धा या विश्वास का अभाव, अनादर।

अनाहत (वि०) [न० त०] 1 आघातरहित, 2 कोरा या नया।

अनाहार (वि०) [न० ब०] बिना भोजन के रहने वाला, उपवास करने वाला—रः [न० त०] भोजन न करना, उपवास रखना।

अनाहुतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 होम का न होना, कोई होम जो होम कहलाने के भी योग्य न हो 2 एक अनुचित आहुति।

अनाहूत (वि०) [न० त०] न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित। सम०—**उपजल्पिन्** बिना बुलाया वक्ता, **उपविष्ट** (वि०) अनिमन्त्रित अभ्यागत के रूप में बैठा हुआ।

अनिकेत (वि०) [न० ब०] गृहहीन, आवारागर्द, जिसका कोई नियत वासस्थान न हो (जैसे सन्यासी)।

अनिगीर्ण (वि०) [न० त०] 1 न निगला हुआ 2 (मा० शा० में) जो गुप्त या छिपा हुआ न हो, प्रस्तुत, व्यक्त।

अनिच्छ-च्छक } (वि०) [नास्ति इच्छा यस्य न० ब०,
अनिच्छु-च्छुक } नञ् + इच्छुक, नञ् + इष् + शतृ न०
अनिच्छत् } त०] न चाहता हुआ, इच्छारहित, बिना इच्छा के।

अनित्य (वि०) [न० त०] 1 जो नित्य न हो, सदा रहने वाला न हो, क्षणभंगुर, अशाश्वत, नश्वर 2 क्षणस्थायी आकस्मिक, जो नियमत अनिवार्य न हो, विशेष, 3 असाधारण, अनियमित, 4 अस्थिर, चपल, ५ अनिश्चित, संदिग्ध—विजयस्य ह्यनित्यत्वात्—पंच० ३। २२, —त्यम् (क्रि० वि०) कदाचित्, अकस्मात्। सम० —कर्मन्, —क्रिया आकस्मिक कार्य जैसा कि किसी विशेष निमित्त से किया जाने वाला यज्ञ, ऐच्छिक या सामयिक अनुष्ठान,—दत्तः, —दत्तकः, —कृत्रिमः, माता पिता के द्वारा अस्थायी रूप से किसी को दिया गया पुत्र,—भावः क्षणभंगुरता, क्षणभंगुर स्थिति —समासः वह समास जो प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य न हो (जिसका भाव अलग-अलग विश्लिष्ट पदों द्वारा भी समान रूप से प्रकट किया जाय)।

अनिद्र (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागने वाला, (आलं०) जागरूक।

अनिन्द्रियम् [न० त०] 1 तर्क 2 जो इन्द्रिय का विषय न हो, मन।

अनिभृत (वि०) [न० त०] 1 सार्वजनिक, प्रकाशित, जो छिपा न हो, 2 धृष्ट, साहसी 3 अस्थिर, अदृढ। दे० 'निभृत' भी।

अनिमकः [अन् + इमन्—अनिम = जीवन तेन कायते प्रकाशते कै + क] 1 मेंढक 2 कोयला 3 मधुमक्खी।

अनिमित्त (वि०) [न० ब०] निष्कारण, निराधार, आकस्मिक,—आलक्ष्यदन्तमुकुलाननिमित्तहासैः—श० ७।१७, —त्तम् 1 पर्याप्त कारण का अभाव 2 अपशकुन, बुरा शकुन—ममानिमित्तानि हि खेदयन्ति—मृच्छ० १०, (क्रि० वि०) °तः अकारण, बिना हेतु के। सम० —निराक्रिया अपशकुनों का निराकरण।

अनिमि(मे)ष (वि०) [न० ब०] टकटकी लगाये एक स्थान पर जमा रहने वाला, बिना आँख झपके—शते स्तमक्ष्णामनिमेषवृत्तिभिः—रघु० ३।४३, —षः 1 देवता 2 मछली 3 विष्णु। सम० —दृष्टि,—लोचन (वि०) टकटकी लगा कर या स्थिर दृष्टि से देखने वाला।

अनियत (वि०) [न० त०] 1 अनियन्त्रित 2 अनिश्चित, संदिग्ध, अनियमित (रूप भी) °वेलम् आम्रमांसमश्यते—श० २, 3 कारणरहित, आकस्मिक 4 नश्वर। सम० —अंकः अनिश्चित अंक (गणित में) —आत्मन् (वि०) जिसका मन अपने वश में न हो, —पुंस्का दुश्चरणशील स्त्री, व्यभिचारिणी, —वृत्ति (वि०) 1 बेधा काम करने वाला, (शब्द) जिसका प्रयोग निश्चित न हो, जिसकी आय नियत न हो।

अनियंत्रण (वि०) [न० ब०] असंयत, अनियन्त्रित, स्वतंत्र °अनुयोगो नाम तपस्विजनः—श० १।

अनियमः [न० त०] 1 नियम का अभाव, नियन्त्रण; अधिनियम या निश्चित क्रम का अभाव, निदेश या व्यवस्थित नियम का अभाव—पंचमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः, षष्ठे पादे गुरु ज्ञेयं शेषेष्वनियमो मतः। छं० म० 2 अनिश्चितता, निश्चयाभाव, संदेह 3 अनुचित आचरण।

अनिरुक्त (वि०) [न० त०] 1 स्पष्ट रूप से न कहा हुआ 2 स्पष्ट रूप से व्याख्या न किया हुआ, जिसकी परिभाषा स्पष्ट न दी गई हो, अस्पष्ट निर्वचन सहित।

अनिरुद्ध (वि०) [न० त०] बिना रोकटोक वाला, स्वतन्त्र, अनियन्त्रित, स्वच्छंद, उच्छृंखल, उद्दाम,—द्धः 1 गुप्तचर 2 प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। सम०—पथम् 1 ऐसा मार्ग जहाँ कोई रोक न हो, 2 आकाश, अन्तरिक्ष,—भाविनी अनिरुद्ध की पत्नी उषा।

अनिर्णयः [न० त०] अनिश्चितता, निर्णय का अभाव।

अनिर्दश } (वि०) [न निर्गतानि दशाहानि यस्य] बच्चे
अनिर्दशाह } के जन्म या मरण के फलस्वरूप अशौच के दस दिन जिसके न बीते हों।

अनिर्देशः [न० त०] निश्चित नियम या निदेश का अभाव।

अनिर्देश्य (वि०) [न० त०] अपरिभाषणीय, अवर्णनीय —श्यं परब्रह्म की उपाधि।

अनिर्धारित (वि०) [न० त०] जिसका कोई निर्णय या निश्चय न हुआ हो।

अनिर्वचनीय (वि०) [न० त०] 1 कहने के अयोग्य, अवर्णनीय 2 वर्णन करने के अयोग्य—यम् (वेदान्त में) 1 माया, भ्रम, अज्ञान, 2 संसार।

अनिर्वाण (वि०) [न० ब०] अनधुला, जिसने अभी स्नान नहीं किया।

अनिर्वेदः [न० त०] अनवसाद, विषाद या नैराश्य का अभाव, स्वावलम्बन, उत्साह।

अनिर्वृत (वि०) [न० त०] खिन्न, अशान्त, दुःखी।

अनिर्वृतिः } (स्त्री०) [न० त०] 1 बेचैनी, विकलता 2
अनिर्वृतिः } निर्धनता —अनिर्वृतिनिशाचरी मम गृहान्तरालं गता —उद्भट।

अनिलः [अन् + इलच्] 1 वायु 2 वायुदेवता 3 उपदेवता, जो संख्या में ४९ हैं तथा वायु की श्रेणी में आते हैं 4 शरीर में रहने वाली वायु -त्रिदोषों में से एक—वात 5 गठिया या और कोई रोग जो वातप्रकोप के कारण उत्पन्न माना जाता है। सम० —अयनम् वायु का मार्ग,—अशन, -आशिन् (वि०) वायुभक्षी, उपवास करने वाला (पुं०—न्) सांप -आत्मजः वायु का पुत्र, हनुमान् और भीम की उपाधि,—आमयः 1 वातरोग 2 गठिया,—सखः अग्नि (वायु का मित्र), इसी प्रकार °बंधुः।

अनिलोडित (वि०) [न० त०] जो सुविचारित न हो, सुनिर्णीत न हो—°कार्यस्य वाच्यातं वाग्मिनो वृथा— शि० २।२७।

अनिशम् (अव्य०) [न० ब०] लगातार, निरन्तर— अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन्नभिमतो मे— श० ३।४, भामि० २।१६२।

अनिष्ट (वि०) [न० त०] 1 न चाहा हुआ, जिसकी इच्छा न हो, अननुकूल 2 अनर्थ 3 बुरा, दुर्भाग्यपूर्ण, अमंगलसूचक 4 यज्ञ द्वारा असम्मानित, —ष्टम् 1 बुराई, दुर्भाग्य, विपत्ति, 2 असुविधा, अहित। सम० —आपत्तिः (स्त्री०)—आपादनम् अवांछित पदार्थ का प्राप्त करना, अवांछित घटना—ग्रहः बुरा या हानिकारक ग्रह, —प्रसंगः 1 अवांछित घटना 2 अयोग्य पदार्थ, तर्क या नियम से संबंध, —फलम् बुरा परिणाम —शंका बुराई की आशंका, —हेतुः अपशकुन।

अनिष्पत्रम् (अव्य०) [न० त०] इस प्रकार जिससे कि तीर का पंखयुक्त भाग दूसरी ओर न निकले—अर्थात् बहुत बलपूर्वक नहीं।

अनिस्तीर्ण (वि०) 1 जो पार न किया गया हो, जिससे छुटकारा न मिला हो 2 जिसका उत्तर न दिया गया हो, जिसका निराकरण न किया गया हो (दोषारोपण की भांति)।

अनीकः-कम् [अन् + ईकन्] 1 सेना, सैन्यपंक्ति, सैनिक दस्ता, दल, दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकम् —भग० १।२, 2 समूह, वर्ग 3 संग्राम, लड़ाई, युद्ध 4 पंक्ति, श्रेणी, चलती हुई सेना की टुकड़ी 5 अग्रभाग, प्रभाग, मुख्य। सम० —स्थः 1 योद्धा 2 सिपाही (सुसज्जित), पहरेदार 3 महावत या हाथी का प्रशिक्षक 4 युद्धभेरी या बिगुल 5 संकेतक, चिह्न, संकेत।

अनीकिनी [अनीकानि सन्ति अस्य —अनीक+इनि+ङीप्] 1 सेना, सैन्यदल, सैन्यपंक्ति 2 तीन सेनायें या पूर्ण सेना (अक्षौहिणी) का दशम भाग।

अनील (वि०) [न० त०] जो नीला न हो, श्वेत,—वाजिन् (पुं०) श्वेत घोड़े वाला, अर्जुन।

अनीश (वि०) [न० त०] 1 प्रमुख, सर्वोच्च 2 स्वामी या नियंता न होना (अव० के साथ) बाणानामनीशोऽस्मि संवृत्त —श० २,—शः विष्णु।

अनीश्वर (वि०) [न० त०] 1 जिसके ऊपर कोई न हो, अनियन्त्रित 2 असमर्थ—अवितथा सविशेष्यनीश्वरा सफली कर्तुमहो मनोरथान्—भामि० २।१८२, 3 जो ईश्वर से संबंध न रखे 4 नास्तिक। सम०—वादः नास्तिक वाद, ईश्वर को सर्वोच्च शासक न मानने वाला, नास्तिक।

अनीह (वि०) [न० त०] उदासीन, इच्छारहित,—हा अवहेलना, उदासीनता।

अनु (अव्य०) [अव्ययीभाव समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है, या क्रिया अथवा कृदन्त शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, अथवा स्वतन्त्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में कर्मकारक के साथ प्रयुक्त होता है और कर्म प्रवचनीय माना जाता है] 1 पश्चात्, पीछे, सर्वे नारदमनु उपविशन्ति—विक्रम० ५, मन्त्रेण सुप्तामनु संविवेश सुप्तोत्थितां प्रातरनूदतिष्ठत्— रघु० २।२४; अनुविष्णु=विष्णोः पश्चात् सिद्धा० 2 साथ-साथ, पास-पास; जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनु राजधानीम्—रघु० १३।६१, अनुगंगं वाराणसी—गंगा के साथ-साथ स्थित या बसी हुई; 3 के बाद, फलस्वरूप, संकेत किया जाता हुआ—जपमनु प्रावर्षत् 4 के साथ, साथ ही, संबद्ध -नदीमनु अवसिता सेना सिद्धा० 5 घटिया या निम्न दर्जे का, अनुहरिं सुराः=हरेर्हीनाः; 6 किसी विशेष स्थिति या संबंध में—भक्तो विष्णुमनु सिद्धा० 7 भाग, हिस्सा, या ताल्लुक रखने वाला—लक्ष्मीर्हरिमनु, 8 पुनरावृत्ति; अनुदिवसम्—दिन-ब-दिन, प्रति दिन 9 की ओर, दिशा में, के निकट, पर,—अनुवनमशनिर्गतः—सिद्धा०—°अवनि-नदि शि० ७।२४, नदी के निकट 10 क्रमानुसार, के अनुसार, अनुक्रमम्, नियमित क्रम में, अनुज्येष्ठम्

(छोटे बड़े की दृष्टि से) 11 की भांति, के अनुकरण में—सर्वं मामनु ते प्रियाविरहजा त्व तु व्यथा मानुभू—विक्रम० ४।२५, इसी प्रकार अनुगर्ज = बाद में गरजना, गर्जने की नकल करना, 12 अनुरूप—तमेव सोऽनुरूपवर्षो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२, (अनुवतोऽस्य)।

अनुक-(वि०) [अनु + कन्] 1 लालची, लोलुप 2 कामुक, विलासी।

अनुकथनम् [अनु + कथ् + ल्युट्] 1 बाद का कथन 2 संवाद, प्रवचन, वार्तालाप।

अनुकनीयस् (वि०) [अनु + अल्प (युवन्) + ईयसुन् कनादेशः] छोटे से बाद का, सबसे छोटा।

अनुकंपक (वि०) [अनु + कम्प् + ण्वुल्] दयालु, करुणा करने वाला।

अनुकंपनम् [अनु + कंप + ल्युट्] करुणा, तरस, दयाकुला, सहानुभूति।

अनुकंपा (स्त्री) [अनु + कंप् + अच् + टाप्] करुणा, दया।

अनुकंप्य (वि०) [अनुकम्प् + यत्] दयनीय, सहानुभूति का पात्र,—कि तस्य येनासि ममानुकम्प्या— रघु० १४।७४; कु० ३।७६-प्यः हरकारा, द्रुतगामी दूत।

अनुकरणम्—कृतिः (स्त्री०) [अनुकृ + ल्युट्, क्तिन् वा] 1 नकल करना, प्रतिलिपि, अनुरूपता, समानता, शब्दानुकरणम् = एक अलंकार।

अनुकर्षः—कर्षणम् [अनु + कृष् + अच्, ल्युट् वा] 1 खिंचाव, आकर्षण, 2 (व्या०) पूर्व नियम में आने वाले नियम का प्रयोग 3 गाड़ी का तला या धुरे का लट्ठा 4 कर्तव्य का विलंब से पालन, अनुकर्षन् भी।

अनुकल्पः [अनु + कल्प् + अच्] गुरु का गौण अनुदेश जो आवश्यकता होने पर उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब कि मुख्य निदेश का प्रयोग संभव नहीं— प्रभु: प्रथम कल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३०, ३।१४७।

अनुकामीन (वि०) [अनुकाम + ख] अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला,—अनुकामीनतां त्यज—भट्टि०।

अनुकारः = दे० अनुकरणम्।

अनुकाल (वि०) समयोचित, सामयिक।

अनुकीर्तनम् [अनु + कृत् + ल्युट्] कथन, प्रकाशन।

अनुकूल (वि०) [अनु + कूल + अच्] 1 मनोवांछित अभिमत. जैसे कि वायु, भाग्य आदि 2 मित्रता पूर्ण कृपापूर्ण 3 अनुरूप,—लः मिष्टाचार तथा कृपालु पति, (एकरतिः—सा० द० या, एकनिरत एकस्यामेव नायिकायाम् आसक्तः) नायक का एक भेद—लम् अनुग्रह, कृपा—नारीणामनुकूलमाचरसि चेत्—काव्य० ९।

अनुकूलता (ना० धा०) अनुकूल या मुवाफिक होना, प्रसन्न होना।

अनुकूलित (वि०) [प्रा० स०] वक्रित, 'दांतेदार जैसा कि आरा।

अनुक्रमः [अनु + क्रम् + अच्] 1 उत्तराधिकार, क्रम, तांता, क्रमस्थापन, क्रमबद्धता, उचितक्रम—प्रणम्य सर्वानुगमनुक्रमशः—रघु० ६।७०, स्वक्रम सर्वमनुक्रमेण—१४।६०, 2 विषय सूची, विषयतालिका।

अनुक्रमणम् [अनु + क्रम + ल्युट्] 1 क्रम पूर्वक आगे बढ़ना, 2 अनुगमन—णी,—णिका (स्त्री०) विषय सूची विषयतालिका या किसी ग्रन्थ के क्रमबद्ध विषयों का दिग्दर्शन कराये।

अनुक्रिया दे० अनुकरणम्।

अनुक्रोशः [अनु + क्रुश् + घञ्] दया, करुणा, दयाकुलता (अधि० के साथ) भगवन्कामदेव न ते मय्यनुक्रोश —श० ३, मंच० १९५।

अनुक्षणम् (अव्य०) प्रतिक्षण, लगातार, बारबार।

अनुक्षत्तृ (पु०—त्ता) [प्रा० स०] द्वारपाल या सारथि का टहलुआ।

अनुक्षेत्रम् [प्रा० स०] उड़ीसा के कुछ मन्दिरों में पुजारियों को दी जाने वाली वृत्ति।

अनुख्यातिः (स्त्री०) [अनु + ख्या + क्तिन्] 1 पता लगाना 2 विवरण देना, प्रकट करना।

अनुग (वि०) [अनु + गम् + ड] (समा०) पीछे चलने वाला, मिलान करने वाला, गः-अनुचर, आज्ञाकारी सेवक, साथी तदनुगमनायानुग रघु० २।५८ ९।१२।

अनुगतिः (स्त्री०) [अनु + गम् + क्तिन्] पीछे चलना—गतानुगतिको लोक पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला दे० 'गत' के अन्तर्गत।

अनुगमः, -गमनम् [अनु + गम् + अप्, ल्युट् वा] 1 अनुसरण 2 सहमरण, अपने स्वर्गीय पति की चिता पर विधवा स्त्री का सती होना 3 नकल करना, समीपतर जाना 4 समरूपता, अनुरूपता।

अनुगर्जित (वि०) [अनु + गर्ज् + क्त] दहाड़ा हुआ,—तम् दहाड़।

अनुगवीनः [अनु + गु + ख] गोपाल, ग्वाला।

अनुगामिन् (पु०) [अनु + गम् + णिच् + णिनि] अनुयायी, सहचर।

अनुगुण (वि०) [ब० स०] समान गुण रखने वाला, उसी स्वभाव का, अनुकूल या रुचिकर, उपयुक्त, अनुरूप, समानशील; —(वीणा) उत्कण्ठितस्य हृदयानुगुणा वयस्या—मृच्छ० ३।३ मन को लुभाकर, अभिमत, मनोनुकूल (ता० वा० के अनुसार यहाँ "ना से अभिप्राय 'तन्त्रीयुक्त वीणा' से है)—णम् (क्रि० वि०) 1. अनुकूल, इच्छाओं के समरूप 2 अभिव्यक्तिपूर्वक या समरूपता के साथ (समा० में) 3 स्वभावतः।

अनुग्रहः—हणम् [अनु + ग्रह + अप्, ल्युट् वा] 1 प्रसाद, कृपा, उपकार, आभार— निग्रहानुग्रहकर्ता—पंच० १ पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम् रघु० २।३५, 2 स्वीकृति 3 सेना के पृष्ठभाग की रक्षा करने वाला दल।

अनुग्राहक [प्रा० स०] कौर, निवाला।

अनुचरः [अनु + चर् + ट] 1 सहचर अनुयायी नौकर सेवक तेनानुचरेण धेनोः – रघु० २।४ २६।५२ —रा,—री (स्त्री) दासी सेविका।

अनुचारक [अनु + चर + ण्वुल्] अनुचर सेवक —रिका दासी सेविका।

अनुचित (वि०) [न० त०] 1 गलत अनुपयुक्त 2 निराला अयोग्य।

अनुचिन्ता, चिन्तनम् [अनु + चिन्त् + अ + टाप्, ल्युट् वा] 1 याद करना सोचना मनन करना 2 प्रत्यास्मरण फिर से ध्यान ... 2 अनवरत सोच चिन्ता।

अनुच्छाद [अनु + छद् + णिच् + घञ्] साड़ी या धोती का वह छोर जो कंधे के ऊपर होकर छाती पर लटकता रहता है।

अनुच्छित्ति, (स्त्री०)—**च्छेद** [अन् + छिद् + क्तिन् घञ् वा] कट कर अलग न होना नाश न होना अनश्वरता।

अनुज—जात (वि०) [अनु + जन् + ड क्त वा] बाद में उत्पन्न, पीछे जन्मा हुआ छोटा भाई असौ कुमारस्तमजोऽनुजातः रघु० ६।७८, —जः —जातः छोटा भाई —जा,—जाता छोटी बहन।

अनुजन्मन् (पुं०) [ब० स०] छोटा भाई अननाथ नवानुजन्मनाम कि० २।१७।

अनुजीविन् (वि०) [अनुजीव + णिनि] आश्रित पराप जीवी –(पुं०—वी) परावलम्बी, सेवक अनुचर अवच नीया प्रभवोऽनुजीविभिः—कि० १।४, १०।

अनुज्ञा ज्ञानम् [अनु + ज्ञा + अङ् ल्युट् वा] 1 अनुमति सहमति स्वीकृति 2 जाने की अनुमति या छुट्टी 3 बहाना 4 आज्ञा आदेश।

अनुज्ञापक [अनु + ज्ञा + णिच् + ण्वुल्] आज्ञा देने वाला हुक्म देनेवाला।

अनुज्ञापनम्–प्ति (स्त्री०) [अनु + ज्ञा + णिच् + ल्युट् क्तिन् वा] 1 अधिकृत बनाना 2 आज्ञा या आदेश जारी करना।

अनुज्येष्ठम् (अव्य०) ज्येष्ठता की दृष्टि के अनुसार।

अनुतर्षः [अनु + तृष् + घञ्] 1 प्यास सोपचारमुपशान्तविचारः सातनर्षमनसंघदेन —शि० १०।२ (प्यास और मुरा) 2 कामना इच्छा 3 जल पीने का पात्र 4 मद्य।

अनुताप [अनु + तप् + घञ्] पश्चात्ताप, संताप— ज्वालानुतापेव सा विक्रम० ४।१८ संताप से पीड़ित।

अनुतर्षणम् अनुतर्ष 3 और 4।

अनुदिनम् (अव्य० स०) दाना दाना करके अर्थात् कण कण करके, अत्यन्त सूक्ष्मता से।

अनुत्क (वि०) [न० त०] जो अधिक उत्सुक न हो, जो पश्चात्तापकारी या खेदयुक्त न हो।

अनुत्तम (वि०) [न० त०] 1 जिससे अच्छा कोई और न हो, जिससे बढ़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा सबसे बढ़िया प्रमुख रूप से सर्वोपरि—सवप्रयोगविशेष इत्थमन्दुरनुत्तमम् हि० प्र० ४ —काञ्चनं रानमनुत्तमम्— मनु० २।२४२, 2 (व्या० में) जो उत्तम पुरुष में प्रयुक्त न किया जाय।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] 1 प्रधान मुख्य 2 बढ़िया, सर्वोत्तम 3 बिना उत्तर के। मूक उत्तर देने में असमर्थ —भवत्यवज्ञा च भवत्यनुत्तराम्— नै० 4 निश्चित, स्थिर 5 निम्न, घटिया छोटा कमीना 6 दक्षिणी, —रम् उत्तर का अभाव (टालमटूल या आनाकानी का उत्तर अनुत्तर समझा जाता है) —रा दक्षिण दिशा।

अनुत्तरङ्ग (वि०) [न० ब०] स्थिर, अनुद्वेलित, अविक्षुब्ध अपामिवाधारमनुत्तरङ्गम्— कु० ३।४८।

अनुत्थानम् [न० त०] प्रयत्न या सत्कर्मों का अभाव।

अनुत्सूत्र (वि०) [न० त०] पाणिनि या नैतिकता के सूत्रों से अविरुद्ध अविशृंखल, नियमित °पदन्यासा—सद्वृत्तिः सन्निबन्धना – शि० २।११२।

अनुत्सेक [न० स०] घमंड या अहंकार का अभाव °कालक्षमा – भग० १।६३ शालीनता।

अनुत्सेकिन् (वि०) [अनुत्सेक + णिनि] जो घमंड के कारण फूला हुआ न हो ...नी भव— श० ४।१३।

अनुदर (वि०) [न० ब०] पतली कमर वाला, पतला, कृश, क्षीण (दे० 'अ')।

अनुदर्शनम् [अनु + दृश् + ल्युट्] निरीक्षण।

अनुदात्त (वि०) [न० त०] गुरुस्वर, जो उदात्तस्वर की भाँति उच्च स्वर से उच्चरित न होता हो, स्वराघात होने पर गुरुस्वर।

अनुदार (वि०) अन [न० त०] 1 जो उदार (दानशील) न हो कंजूस अनुत्तम अभद्र – जो अपनी पत्नी के अनुकूल चलने वाला हो या वह जिसकी पत्नी पति के अनुकूल चलने वाली हो यस्मिन् प्रसीदति पुनः स भवत्युदारोऽनुदारश्च-काव्य० ४, ('अदाता' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 3 उपयुक्त और योग्य पत्नी वाला।

अनुदिन **दिवसम्** (अव्य० स०) प्रतिदिन, दिन ब-दिन।

अनुदेश [अनु + दिश् + घञ्] 1 पीछे संकेत करना, नियम या निदेश जो पीछे किसी पूर्व नियम की ओर संकेत करे यथासंख्यमनुदेशः समानाम्—पा० १।३।१०, 2 निदेश, आदेश।

अनुद्धत (वि०) [न० त०] जो अहंकारी या घमंडी न हो—°ता: सत्पुरुषा: समृद्धिभि: —श० ५।१२।

अनुद्धुर (वि०) [न० त०] 1 जो साहसी न हो, विनीत, सौम्य 2 जो उन्नत या बहुत ऊँचा न हो।

अनुद्रुत (वि०) [अनु+द्रु+क्त] 1 अनुगत, पीछा किया गया (कई बार कर्तृ० में प्रयुक्त) 2 भेजा हुआ या लौटाया हुआ (जैसे कि ध्वनि)—तम् संगीत में काल की माप=आधा द्रुत।

अनुद्वाहः [न० त०] विवाह न होना, ब्रह्मचर्य पालन।

अनुधावनम् [अनु+धाव्+ल्युट्] 1 पीछे जाना या भागना, पीछा करना, अनुसरण करना—तुरग° कण्डितसंधे —श० २; 2 किसी पदार्थ का अत्यंत पीछा करना, अनुसन्धान, गवेषणा 3 किसी स्त्री को पाने का असफल प्रयत्न करना 4 सफाई, पवित्रीकरण।

अनुध्यानम् [अनु+ध्यै+ल्युट्] 1 विचार, मनन, धार्मिक चिंतन 2 सोचविचार, याद,—या न: प्रीतिर्विरूपाक्ष त्वदनुध्यानसंभवा—कु० ६।२१, 3 हितचिन्तन, स्निग्धचिन्तन।

अनुनयः [अनु+नी+अच्] 1 मनावन, प्रार्थना प्रकृतिमक स कस्यामनुनयं प्रतिगृह्णाति—श० ४, 2 शालीनता, शिष्टता, सान्त्वनायुक्त आचरण, 3 नम्रनिवेदन, विनय, प्रार्थना, °आमन्त्रणम्—विनीत संबोधन 4 अनुशासन, प्रशिक्षण, आचरण के अधिनियम।

अनुनादः [अनु+नद्+घञ्] शब्द, कोलाहल, गूंज, प्रतिध्वनि।

अनुनायक (वि०) [अनु+नी+ण्वुल्] सुशील, विनम्र, विनीत।

अनुनायिक (वि०) [अनु+नय+ठक्] मैत्रीपूर्ण,—का नाटक की मुख्य पात्र नायिका की अनुचरी जैसे कि सखी, धात्री या दासी आदि,—सखी प्रव्रजिता दासी प्रेष्या धात्रेयिका तथा। अन्याश्च शिल्पकारिण्यो विज्ञेया ह्यनुनायिका:।

अनुनासिक (वि०) [अनु+नासा+ठ] 1 नासिक्य, नासिका से उच्चरित,—कम् गुनगुनाना। सम० —आदि: अनुनासिक वर्ण (ङ ञ् ण न् म्) से आरम्भ होने वाला संयुक्त व्यंजन।

अनुनिर्देशः [अनु+निर्+दिश्+घञ्] पूर्ववर्ती अनुक्रम के अनुसार वर्णन,—भूयसामुपदिष्टानां क्रियाणामथ कर्मणाम्। क्रमशो योऽनुनिर्देशो यथासंख्यं तदुच्यते। सा० द०।

अनुनीतिः=दे० अनुनय:

अनुपघातः [न० त०] उपघात या क्षति का अभाव, °—अर्जित बिना किसी क्षति के प्राप्त किया।

अनुपतनम्—पातः [अनु+पत्+ल्युट्, घञ् वा] 1 ऊपर पड़ना, एक के बाद दूसरे का गिरना 2 पीछा करना, अनुसरण 3 भाग 4 त्रैराशिक—तम् (अव्य०) [पत्+णमुल्] क्रमिक अनुसरण, अनुगमन;—लतानुपातं कुसुमान्यगृह्णात् —भट्टि० २।११; (लतामनुपात्य एक लता से दूसरी लता पर जाकर, या लताओं को झुका कर)।

अनुपथ (वि०) [प्रा० स०] मार्ग का अनुसरण करने वाला,—थम् (क्रि० वि०) सड़क के साथ साथ।

अनुपद (वि०) [प्रा० स०] नितान्त कदम कदम अनुसरण करता हुआ,—दम् सम्मिलित गायन, गीत का टेक, (अव्य०) 1 कदम के साथ-साथ, पैरों के निकट; 2 कदम कदम करके, प्रति पद, 3 शब्दश: 4 एड़ियों पर, बिल्कुल पीछे, तुरन्त बाद—'गच्छतां पुरो भवन्ती,' अहमप्यनुपदमागत एव —श० ३ (प्राय संब० के साथ, या समास में इसी अर्थ में), (ती) आशिषामनुपदं समस्पृशत् पाणिना —रघु० ११।३१,—अमोघा: प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिष: —१।४४।

अनुपदवी [प्रा० स०] मार्ग, सड़क।

अनुपदिन् (वि०) [अनुपद+इनि] अनुसरण करनेवाला ढूंढने वाला अर्थात् अन्वेषक, या पृच्छक—अनुपदमन्वेष्टा गवामनुपदी सिद्धा०।

अनुपदीना [अनुपद+ख+टाप्] जूता, बूट, ऊँची एड़ियों का जूता, या चप्पल।

अनुपधः [न० ब०] उपधा रहित, ऐसा अक्षर जिसके पूर्व कोई दूसरा अक्षर न हो।

अनुपधि (वि०) [न० ब०] छल रहित, कपट रहित—रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते —उत्त० २।२।

अनुपन्यासः [न० त०] 1 वर्णन न करना, बयान न देना 2 अनिश्चितता, सन्देह, प्रमाणाभाव।

अनुपपत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 असफलता, असिद्धि,—अन्यथा एवमसम्बन्धस्तात्पर्यानुपपत्तित: —भाषा० ८२, तात्पर्य° उद्दिष्ट या किसी अभीष्ट अर्थ को प्राप्त करने में असफलता, 2 अव्यावहारिकता, व्यावहारिक न होना 3 अयुक्तियुक्ति, तर्कयुक्त कारण का अभाव।

अनुपम (वि०) [न० ब०] अतुलनीय, बेजोड़, सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ —मा दक्षिण पश्चिम प्रदेश की हथिनी (कुमुद की सखी)।

अनुपमित } **अनुपमेय** } (वि०) [नञ्+उप+मा+क्त, अनुपमा+य] बेजोड़, अतुलनीय।

अनुपलब्धिः (स्त्री०) [न० त०] पहचान न होना, प्रत्यक्ष न होना, मीमांसकों की दृष्टि में ज्ञान का एक साधन, परन्तु नैयायिकों की दृष्टि में नहीं।

अनुपलम्भः [नञ्+उप+लभ्+णिच्+घञ्] बोध का अभाव, अप्रत्यक्ष होना।

अनुपवीतिन् [न० ब०] अपने वर्ण के अनुसार यज्ञोपवीत धारण न करने वाला।

अनुबन्धकः [स० त०] रोग को उभाड़ने या भड़काने वाली परिस्थिति ।

अनुपसंहारिन् [न० त०] न्यायशास्त्र में हेत्वाभास का एक भेद जिसके अन्तर्गत पक्षसंबंधी सभी ज्ञात बातें आ जाती हैं, और दृष्टान्त द्वारा, चाहे वह विधेयात्मक हो या निषेधात्मक, कार्यकारण-सिद्धान्त के सामान्य नियम का समर्थन नहीं हो पाता — यथा सर्वं नित्यं प्रमेयत्वात् ।

अनुपसर्गः [न० त०] 1 उपसर्ग की शक्ति से विरहित शब्द [निपात आदि] 2 (न० ब०) जिसमें कोई उपसर्ग न हो ।

अनुपस्थानम् [अनुप + स्था + ल्युट्] अभाव, निकट न होना ।

अनुपस्थित [नञ् + उप + स्था + क्त] जो उपस्थित नहीं अप्रस्तुत ।

अनुपस्थितिः (स्त्री०) [अनुप + स्था + क्तिन्] 1 गैरहाजरी 2 याद करने की अयोग्यता ।

अनुपहत (वि०) [न० त०] 1 जिसे चोट नहीं लगी 2 अप्रयुक्त, कोरा, नया (कपड़ा) ।

अनुपाख्य (वि०) [न० ब०] जो स्पष्ट रूप से दिखलाई न दे या पहचाना न जा सके ।

अनुपातः —तु० अनुपातनम् ।

अनुपातकम् [अनु + पत् + णिच् + ण्वुल्] जघन्य पातक जैसे चोरी, हत्या, व्यभिचार आदि, विष्णुस्मृति में ऐसे ३५ तथा मनुस्मृति में ३० पातक गिनाये गये हैं ।

अनुपानम् [अनु + पा + ल्युट्] दवा के साथ या पीछे पी जाने वाली वस्तु, औषधि लेने की मात्रा ।

अनुपालनम् [अनु + पाल् + ल्युट्] परक्षण, सुरक्षण, आज्ञापालन ।

अनुपुरुषः [प्रा० स०] अनुयायी ।

अनुपूर्व (वि०) [प्रा० स०] 1 नियमित, उपयुक्त मान रखने वाला, क्रमबद्ध — वृत्तानुपूर्वं च न चातिदीर्घं कु० १।३५ °केश जिसके बाल यथाक्रम हैं, °गात्र जिसके अंग सुगठित हैं, इसी प्रकार °दंष्ट्र, °नाभि, °पाणि 2 क्रमबद्ध सिलसिलेवार 1 सम० °वत्सा (वि०) नियमित परम्परा में उत्पन्न, बछड़ा नियमित रूप से बच्चे देने वाली गाय ।

अनुपूर्वशः } (क्रि० वि०) नियमित क्रम से क्रमागत रीति
अनुपूर्वेण } से ।

अनुपेत (वि०) [न० त०] 1 विरहित 2 यज्ञोपवीत धारण न किये हुए ।

अनुप्रज्ञानम् [अनु + प्र + ज्ञा + ल्युट्] पदचिह्नों का अनुसरण, टोह लगाना ।

अनुप्रपातम्, प्रपादम् [अव्य० स०] क्रमागत रीतिपूर्वक — गेहं °तम्-दम् आस्ते, गेहम् अनुप्रपातम्-दम् सिद्धा० ।

अनुप्रयोगः [प्रा० स०] अतिरिक्त उपयोग, आवृत्ति ।

अनुप्रवेशः [अनु + प्र + विश् + घञ्] 1 दाखला — रघु० ३।२२, १०।५१; 2 अनुकरण — अपने को दूसरे की इच्छा के अनुकूल ढालना ।

अनुप्रश्नः [प्रा० स०] बाद में किया जाने वाला प्रश्न । (अध्यापक के पूर्व कथन से संबद्ध) ।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) [अनु + प्र + सञ्ज् + क्तिन्] 1 प्रगाढ़ संबंध 2 शब्दों का अत्यधिक तर्क संगत सम्बन्ध ।

अनुप्रसादनम् [अनु + प्र + सद् + णिच् + ल्युट्] आराधन, मनाना ।

अनुप्राप्तिः (स्त्री०) [अनु + प्र + आप् + क्तिन्] प्राप्त करना, पहुँचना ।

अनुप्लवः [अनु + प्लु + अच्] अनुयायी, सेवक — सानुप्लवः प्रभुरपि क्षणदाचराणाम् रघु० १३।७५ ।

अनुप्रासः [अनु + प्र + अस् + घञ्] एक समान ध्वनियों अक्षरों या वर्णों की पुनरावृत्ति — वर्णसाम्यमनुप्रासः — काव्य०, परिभाषा और उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ६३३–३८, और काव्य० ९वाँ उल्लास ।

अनुबद्ध (वि०) [अनु + बन्ध् + क्त] 1 बँधा हुआ, जकड़ा हुआ, 2 यथा क्रम अनुसरण करने वाला, फल स्वरूप आने वाला 3 संबद्ध 4 अनवरत चिपका हुआ, लगातार ।

अनुबंधः [अनु + बन्ध् + घञ्] 1 बंधन, कसना, संबंध, आसक्ति, बंधान (शब्द० बाल) 2 अबाध परम्परा, सातत्य श्रेणी, शृंखला — बाष्प कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् — श० ४।१४, वैर°, मत्सर°; सानुबन्धाः कथं न स्युः संपदो मे निरापदः रघु० १।६४, 3 अनुक्रम, फल (शुभ या अशुभ) 4 इरादा, योजना, प्रयोजन, कारण — अनुबन्धं परिज्ञाय देशकालौ च तत्त्वतः । साराऽपराधौ चालोक्य दण्डं दण्ड्येषु पातयेत् — मनु० ८।१२६; 5 संबंध जोड़ने वाला, गौण 6 आरंभिक तर्क (वेदान्त के आवश्यक तत्त्व); 7 (व्या०) एक संकेतक अक्षर जो कि इस शब्द के स्वर या विभक्ति में कुछ विशेषता का द्योतक हो जिसके साथ वह जुड़ा हो — जैसे कि 'गम्ल्' में ल् 8 बाधा, रुकावट 9 आरंभ, उपक्रम 10 मार्ग, अनुगमन ।

अनुबंधनम् [अनु + बन्ध् + ल्युट्] संबंध, परम्परा, सिलसिला आदि ।

अनुबंधिन् (वि०) [अनुबंध + णिनि] [प्रायः समस्त पद के अन्त में] 1 संबद्ध, संसक्त, संयुक्त 2 क्रम, परिणामी फलस्वरूप दुःखं दुःखानुबन्धि — विक्रम०, ४ एक दुःख के बाद दूसरा दुःख या दुःख कभी अकेला नहीं आता 3 फलता फूलता हुआ, संपन्न, अबाध — ऊर्ध्वं गतं यस्य न चानुबन्धि — रघु० ६।६७, अबाध या सर्वव्यापक ।

अनुबन्ध्य (वि०) [अनु + बन्ध् + ण्यत्] 1 प्रधान, मुख्य, 2 मारे जाने के लिए (जैसे बैल) ।

अनुबलम् [प्रा० स०] पीछे स्थित सैन्यदल, मुख्य सेना की रक्षा के लिए पीछे आती हुई सहायक सेना।

अनुबोधः [अनु + बुध् + णिच् + घञ्] 1 बाद का विचार, प्रत्यास्मरण, 2 कम पड़ी हुई सुगंध को पुनर्जीवित करना।

अनुबोधनम् [अनु + बुध् + ल्युट्] प्रत्यास्मरण, पुनः स्मरण।

अनुभवः [अनु + भू + अप्] 1 साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान, व्यक्तिगत निरीक्षण और प्रयोग से प्राप्त ज्ञान मन के संस्कार जो स्मृतिजन्य न हो ज्ञान का एक भेद, दे० तर्क० ३४, (नैयायिक ज्ञान प्राप्ति के प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द नामक चार साधन मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक इनमें अर्थापत्ति और अनुपलब्धि नामक दो साधन और जोड़ देते हैं)। 2 तजुर्बा—अनुभवचमा सखि लुम्पसि नै० ४।१०५; 3 समझ 4 फल, परिणाम। सम०—**सिद्ध** (वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात।

अनुभावः [अनु + भू + णिच् + घञ्] 1 मर्यादा, व्यक्ति की मर्यादा या गौरव राजसी चमक दमक, वैभवशक्ति, बल, अधिकार,—(परिमेयपुरःसरौ)। अनुभाव, विशेषात्तु सेनापरिवृताविव—रघु० १।३७, —संभावनीयानुभावा अस्याकृतिः —श० ७; २ (सा० शा० में) दृष्टि, संकेत आदि उपयुक्त लक्षणों द्वारा भावना का प्रकट करना,—भाव मनोगत साक्षात् स्वगतं व्यंजयति येतेऽनुभावा इति ख्याता, यथा भ्रूभंग कोपस्य व्यंजक —दे० सा० द० १६२; 3 दृढ़ संकल्प विश्वास।

अनुभावक (वि०) [अनु + भू + णिच् + ण्वुल्] अनुभव कराने वाला, द्योतक।

अनुभावनम् [अनु + भू + णिच् + ल्युट्] संकेत और इंगितों द्वारा भावनाओं का द्योतक।

अनुभाषणम् [अनु + भाष् + ल्युट्] 1 कही हुई बात को खंडन के लिए फिर से कहना, 2 कही हुई बात की पुनरावृत्ति।

अनुभूतिः (स्त्री०) =पु० अनुभव।

अनुभोगः—[अनु + भुज + घञ्] 1 उपभोग 2 की हुई सेवा के बदले मिलने वाली माफी जमीन।

अनुभ्रातृ (पु०) [प्रा० स०] छोटा भाई।

अनुमत (वि०) [अनु + मन् + क्त] 1 सम्मत, अनुज्ञात, इजाजत दिया हुआ, स्वीकृत, गमना —श० ६।९, जाने के लिए अनुज्ञप्त 2 चाहा हुआ, प्रिय,—तः प्रेमी —तम् स्वीकृति, अनुमोदन, अनुज्ञप्ति।

अनुमतिः (स्त्री०) [अनु + मन् + क्तिन्] 1 अनुज्ञा, स्वीकृति, अनुमोदन 2 चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा। सम० —**पत्रम्** स्वीकृति सूचक पत्र या लेख।

अनुमननम् [अनु + मन् + ल्युट्] 1 स्वीकृति, रजामंदी 2 स्वतंत्रता।

अनुमंत्रणम् [अनु + मन्त्र् + णिच् + ल्युट्] मंत्रों द्वारा आवाहन या प्रतिष्ठा।

अनुमरणम् [अनु + मृ + ल्युट्] पीछे मरना—तन्मरणे चानुमरणं करिष्यामीति मे निश्चयः—हि० ३, विधवा का सती होना।

अनुमा [मा + अङ्] अनुमिति, दिये हुए कारणों से अनुमान, दे० अनुमिति।

अनुमानम् [अनु + मा + ल्युट्] 1 अनुमिति के साधन द्वारा किसी निर्णय पर पहुँचना दिये हुए कारणों से अनुमान लगाना, अनुमान उपसंहार न्याय शास्त्र के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार साधनों में से एक 2 अटकल, अन्दाजा 3 सादृश्य 4 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें प्रमाण निर्धारित वस्तु का भाव अनोखे ढंग से प्रकट किया जाता है— सा० द० ७११—यत्र पतत्यबलानां दृष्टिर्निशिताः पतन्ति तत्र शराः, तच्चापरोपितशरो धावत्यासां पुरः स्मरो मन्ये॥ दे० काव्य० १०. । सम०—**उक्तिः** (स्त्री०) तर्कना, तर्क सगत अनुमान।

अनुमापक (वि०) [स्त्री० —पिका] अनुमान कराने वाला, जो अनुमान करने का आधार बन सके।

अनुमासः [प्रा० स०] आगामी महीना,—सम् (अव्य०) प्रतिमास।

अनुमितिः (स्त्री०) [अनु + मा + क्तिन्] दिये हुए कारणों से किसी निर्णय पर पहुँचना, वह ज्ञान जो निगमन द्वारा या न्यायसंगत तर्क द्वारा प्राप्त हो।

अनुमेय (वि०) [अनु + मा + यत्] अनुमान के योग्य, अनुमान किया जाने वाला—फलानुमेयाः प्रारम्भाः —रघु० १।२०।

अनुमोदनम् [अनु + मुद् + ल्युट्] सहमति, समर्थन, स्वीकृति, सम्मति।

अनुयाजः [अनु + यज् + घञ्] यज्ञीय अनुष्ठान का एक अंग, गौण या पूरक यज्ञानुष्ठान, [प्रायः 'अनूयाज' लिखा जाता है 'अनुयाग' भी]।

अनुयातृ (पु०) [अनु + या + तृच्] अनुगामी।

अनुयात्रम्—**त्रा** [अनु + यात्रा + अण् स्त्रियां टाप्] परिजन, अनुचरवर्ग, सेवा करना, अनुसरण।

अनुयात्रिक [अनुयात्रा + ठन्] अनुचर, सेवक, श० १।२।

अनुयानम् [अनु + या + ल्युट्] अनुसरण।

अनुयायिन् (वि०) [अनु + या + णिनि] अनुगामी, सेवक, अनुवर्ती,—(पु०) पीछे चलने वाला (श० आल०) —रामानुजानुयायिन —पदावलंबी या सेवक,—स्मर्यते शैलोऽप्यनुयायिवर्गः —रघु० २।४, १९।

अनुयोक्तृ (पु०) [अनु + युज् + तृच्] परीक्षक, जिज्ञासु, अध्यापक।

अनुयोगः [अनु+युज्+घञ्] 1 प्रश्न, पृच्छा, परीक्षा 2 निंदा, झिड़की 3 याचना 4 प्रयास 5 धार्मिक चिन्तन टीका-टिप्पण । सम०—कृत् (पुं०) 1 प्रश्नकर्ता 2 अध्यापक, अध्यात्म गुरु ।

अनुयोजनम् [अनु+युज्+ल्युट्] प्रश्न, पृच्छा ।

अनुयोज्यः [अनु+युज्+ण्यत्] सेवक ।

अनुरक्त (वि०) [अनु+रञ्ज्+क्त] 1 लाल किया हुआ, रंगीन 2 प्रसन्न, सन्तुष्ट, निष्ठावान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु+रञ्ज्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति, अनुराग, स्नेह ।

अनुरंजक (वि०) [अनु+रञ्ज्+ण्वुल्] प्रसन्न करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला ।

अनुरंजनम् [अनु+रञ्ज्+ल्युट्] संराधन, सन्तुष्ट करना, सुख सेवा प्रदान करना, सन्तुष्ट रखना ।

अनुरणनम् [अनु+रण्+ल्युट्] 1 अनुरूप लगना, नूपुर या घुंघरुओं की आवाज से उत्पन्न अनवरत प्रतिध्वनि, 2 'व्यंजना' नामक शब्द शक्ति, तु०, वास्तविक कथन से व्यंजित होने वाला अर्थ व्यंग्य—क्रमलक्ष्यत्वादेवानुरणनरूपो यो व्यंग्य —सा० द० ४ ।

अनुरतिः (स्त्री०) [अनु+रम्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति ।

अनुरथ्या [प्रा० स०] पगडंडी, उपमार्ग ।

अनुरसः,—सितम् [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुरहस (वि०) [प्रा० स०] गुप्त, एकान्तप्रिय, निजी, —सं (क्रि० वि०) एकान्त में ।

अनुरागः [अनु+रञ्ज्+घञ्] 1 लालिमा 2 भक्ति, आसक्ति, निष्ठा, (विप० अपरागः) प्रेम, स्नेह (अधि० के साथ या समास में) कंटकितेन प्रथयति मय्यनुरागं कपोलेन—श० ३।१५, रघु० ३।१०, °इंगित संकेत या प्रेम को प्रकट करने वाला एक बाह्यसंकेत ।

अनुरागिन् } (वि०) [अनुराग+इनि, मतुप् वा] आसक्त,
अनुरागवत् } प्रेम से उत्तेजित ।

अनुरात्रम् [क्रि० वि०] [अव्य० स०] रात में, हर रात, प्रति रात्रि ।

अनुराधा [प्रा० स०] २७ नक्षत्रों में से सतरहवाँ नक्षत्र, यह चार नक्षत्रों का समूह है ।

अनुरूप (वि०) [प्रा० स०] 1 सदृश, मिलता-जुलता, तदनुरूप, योग्य, अनुरूप वरम्—स० १, 2 उपयुक्त या योग्य, अनुकूल, (संब० के साथ या समास में) —भव पितुरनुरूपस्त्वं गुणैर्लोककांतैः—विक्रम० ५।२१ ।

अनुरूपम्,—पतः } (क्रि० वि०) समनुरूपता या अभिमति-
—पेण,—पशः } पूर्वक ।

अनुरोधः,—धनम् [अनु+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 विनय, आराधना, इच्छापूर्ति करना 2 समरूपता, आज्ञापालन, लिहाज, विचार—धर्मानुरोधात्—का० १९०, १८०, १९२; 3 आग्रहपूर्वक प्रार्थना, याचना, निवेदन 4 नियम का पालन ।

अनुरोधिन्—धक (वि०) [अनुरोध+इनि, अनिरुध्+ण्वुल्] विनयी ।

अनुलापः [अनु+लप्+घञ्] आवृत्ति, पुनरुक्ति ।

अनुलासः,—स्यः [अनुलस्+घञ्, यत् वा] मोर ।

अनुलेपः,—लेपनम् [अनु+लिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अभिषेक, तेलमर्दन 2 सुगंधित लेप, उबटन—सुरभिकुसुमधूपानुलेपनानि—का० ३२४ ।

अनुलोम (वि०) [प्रा० स०] 1 'बालों के'—ऊपर से नीचे की ओर आने वाला—नियमित, स्वाभाविक क्रमानुसार (विप० प्रतिलोम), (अत) अनुकूल—°कृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षति—सिद्धा०, नियमित दिशा में हल चलाया हुआ; 2 मिश्रित (जैसे कि जाति) (क्रि० वि०) स्वाभाविक या नियमित क्रम में —मा: (ब० व०) मिश्रित जातियाँ । सम०—अर्थ (वि०) पक्ष में बोलने वाला,—वदाम्यनुलोमार्थान् प्रत्याकृतिना गिर—शि० २।२५,—ज,—जन्मन् (वि०) ठीक क्रम में उत्पन्न, उच्चवर्ण के पिता तथा नीचवर्ण की माता से उत्पन्न सन्तान, मिश्रित जाति का ।

अनुल्बण (वि०) [न० त०] 1 अधिक नहीं, न कम न अधिक 2 स्पष्ट या साफ नहीं ।

अनुवंशः [प्रा० स०] वंशतालिका ।

अनुवक्र (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत टेढ़ा, कुछ टेढ़ा या तिरछा ।

अनुवचनम् [अनु+वच्+ल्युट्] आवृत्ति, सस्वर पाठ, अध्यापन ।

अनुवत्सरः [प्रा० स०] वर्ष

अनुवर्तनम् [अनु+वृत्+ल्युट्] 1 अनुगमन (आलं० भी), अनुवर्तिता आज्ञाकारिता, अनुरूपता 2 प्रसन्न करना, अनुग्रह करना 3 स्वीकृति 4 फल, परिणाम 5 पूर्वसूत्र से पूर्ति करना ।

अनुवर्तिन् (वि०) [अनु+वृत्+णिनि] 1 अनुगामी, आज्ञाकारी 2 अनुरूप (कर्म० के साथ या समास में) ।

अनुवश (वि०) [प्रा० स०] दूसरे की इच्छा के अधीन, आज्ञाकारी —श: अधीनता, आज्ञाकारिता ।

अनुवाकः [अनु+वच्+घञ्] 1 आवृत्ति करना 2 वेद के अध्याय, अनुभाग, अध्याय ।

अनुवाचनम् [अनु+वच्+णिच्+ल्युट्] 1 सस्वर पाठ कराना, अध्यापन, शिक्षण 2 स्वयं पाठ करना, दे० 'वच्' अनु के साथ ।

अनुवातः [प्रा० स०] वह दिशा जिस ओर की हवा हो ।

अनुवादः [अनु+वद्+घञ्] 1 सामान्य रूप से आवृत्ति 2 व्याख्या, उदाहरण, या समर्थन की दृष्टि से आवृत्ति 3 व्याख्यात्मक आवृत्ति या पूर्वकथित तत्व का

उल्लेख, विशेष रूप से ब्राह्मण ग्रन्थों का वह भाग जिसमें पूर्वोक्त निदेश या विधि की व्याख्या, विवरण या उसके टीका-टिप्पण निहित हैं और जो स्वयं कोई विधि या निदेश नहीं है 4 समर्थन 5 विवरण, अफवाह।

अनुवादक, वादिन् (वि०) [अनु+वद्+ण्वुल्—णिनि वा] 1 व्याख्यापरक 2 समरूप, समस्वर।

अनुवाद्य (वि०) [अनु+वद्+णिच्+यत्] 1 व्याख्येय, उदाहरणसापेक्ष 2 (व्या०) वाक्य में किसी उक्ति का कर्ता, 'विधेय' का विपरीतार्थक जो कि कर्ता के विषय में कुछ विधि या निषेध करता है वाक्य में पहले से ज्ञात अनुवाद्य या कर्ता की पुनरुक्ति विधेय के साथ संबंध जतलाने के लिए की जाती है अतः उसे वाक्य में पहले रक्खा जाता है अनुवाद्यमनुक्त्वैव विधेयमुदीरयेत्।

अनुवारम् (अव्य०), समय समय पर, बार बार, फिर दोबारा।

अनुवासः—सनम् [अनु+वास्+घञ्, ल्युट् वा] 1 सामान्यतः धूप आदि सुगंधित द्रव्यों से सुवासित करना 2 कपड़ों के किनारे डुबोकर सुगंधित बनाना 3 (नमी) पिचकारी, तेल का एनिमा करना, या स्निग्ध बनाना।

अनुवासित (वि०) [अनु+वास्+क्त] धूपित, धूनी दिया हुआ, सुगंधित किया हुआ।

अनुवित्तिः (वि०) [अनु+विद्+क्तिन्] निष्कर्ष, प्राप्ति।

अनुविद्ध (वि०) [अनु+व्यध्+क्त] 1 छिदा हुआ सूराख किया हुआ, कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन काव्यता—सा० द० 2 ऊपर फैला हुआ, अन्तर्जटित, पूर्ण, व्याप्त, मिश्रित, मिलावट वाला, अन्तर्मिश्रित—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, 3 संयुक्त, संबद्ध 4 स्थापित, जड़ा हुआ, चित्रित—रत्नानुविद्धार्णवमेखलाया दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः—रघु० ६।६३।

अनुविधानम् [अनु+वि+धा+ल्युट्] 1 आज्ञाकारिता 2 आदेशादि के अनुरूप कार्य करना।

अनुविधायिन् (वि०)[अनु+वि+धा+णिनि]आज्ञाकारी, विनीत।

अनुविनाशः [अनु+वि+नश्+घञ्] बाद में नष्ट होना।

अनुविष्टंभः [अनु+वि+स्तंभ्+घञ्] फलस्वरूप बाधा का होना।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्+क्त] 1 आज्ञाकारी, अनुगामी 2 अबाध, निरन्तर।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु+वृत्+क्तिन्] 1 स्वीकृति 2 आज्ञाकारिता, अनुकूलता, अनुगामिता, नैरन्तर्य 3 अनुकूल या उपयुक्त कार्य करना, आज्ञापालन, मौन सहमति, संतुष्ट करना, प्रसन्न करना-कांतां वानुवृत्तिरपि शिथिलित बलेन—उत्त० ३, मा० ९, 4 (व्या०) आगामी नियम में पिछले नियम की पुनरुक्ति या पूर्ति. पिछले नियम का आगामी नियम पर निरन्तर प्रभाव 5 पुनरुक्ति वर्णानामनुवृत्तिरनुप्रासः।

अनुवेधः तु० अनुव्याध।

अनुवेलम् [अव्य०] [प्रा० स०] कभी-कभी, बारबार, इति स्म पृच्छत्यनुवेलमादृतः रघु० ३।५।

अनुवेशः शनम् [अनु+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अनुगमन, बाद में दाखिल होना, 2 बड़े भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का विवाह।

अनुव्यञ्जनम् [अनु+वि+अञ्ज्+ल्युट्] गौण लक्षण या चिह्न।

अनुव्यवसायः [अनु+वि+अव+सो+घञ्] (न्या० में) प्रत्यक्ष का बोध या चेतना (वेदा० में) मनोभाव या निर्णय का प्रत्यक्षीकरण।

अनुव्याधः वेधः [अनु+व्यध्+घञ् विध्+घञ् वा] 1 चोट पहुँचाना, छेदना, सूराख करना न हि कीटानुवेधादयो रत्नस्य रत्नत्वं व्याहन्तुमीशाः सा० द० १, 2 संपर्क, मेल सुमामोद मदिरया कृतानुव्याधमुद्वमन् —शि० २।२० 3 मिश्रण 4 बाधा डालना।

अनुव्याहरणम् —व्याहारः [अनुव्या+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1 पुनरुक्ति, बारबार कथन 2 अभिशाप कोसना।

अनुव्रजनम्-व्रज्या [अनु+व्रज्+ल्युट्, क्यप् वा] अनुसरण, अनुगमन विशेषतया विदा होता हुआ अभ्यागत।

अनुव्रत (वि०) [प्रा० स०] भक्त, निष्ठावान्, संलग्न (कर्म० या संब० के साथ)।

अनुशतिक (वि०) [अनु+शत+ठन्] सौ के साथ या सौ में मोल लिया हुआ।

अनुशयः [अनु+शी+अच्] 1 पश्चात्ताप, मनस्ताप, खेद रंज, तन्मनुशयस्थानमेतत् —मा० ८,—हतो गतस्यानुशयो मा मदिनि विक्रम० ४, शि० २।१४, 2 अति वैर या क्रोध शिशुपालोऽनुशयं परं गतः —शि० १६।२, —यस्मिन्ननुशयात्यापा मदैव जागर्ति भुजगी—मा० ६।११, 3 घृणा 4 गहरा संबन्ध, जैसा कि क्रमागत, (किसी पदार्थ से) गहन आसक्ति 5 (वेदा० में) दुष्कर्मों का परिणाम या फल जो कि उनके साथ संयुक्त रहता है और पुनर्जन्म से अस्थायी मुक्ति का उपभोग कराके फिर जीव को शरीरों में प्रविष्ट करता है, 6 क्रय के मामलों में खेद जिसे पारिभाषिक रूप में 'उत्साहन' कहते हैं दे० क्रीतानुशय।

अनुशयान (वि०) [अनु+शी+शानच्] खेद प्रकट करता हुआ, ना नायिका का एक भेद, यह नायिका अपने प्रेमी के वियोग का ख्याल करके उदास और खिन्न रहती है।

अनुशयिन् (वि०) [अनुशय+इनि] 1 अनुरक्त, भक्त,

समाकुल 2 पश्चात्ताप करने वाला, पछताने वाला 3 अत्यधिक घृणा करने वाला 4 मानों किसी फल के कारण सबद्ध।

अनुशरः [अनु + शॄ + अच्] भूत प्रेत, राक्षस।

अनुशासक,-शासिन्, **शास्तृ,-शासितृ** (वि०) [अनु + शास् + ण्वुल्, णिनि तृच् वा] निदेशक, शिक्षक, शासन करने वाला, दंड देने वाला कविं पुराणमनुशासितारम् भग० ८।९ शासन कर्ता, एष वारानुशासी राजर्षिः भयादुत्पतितः - विक्रम० ६।

अनुशासनम् [अनु + शास् + ल्युट्] आदेश, प्रोत्साहन, शिक्षण नियमों विधियों का बनाना भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम् कि० १।२८, आदेश या शिक्षा के शब्द - तयोरनुशासनम् मनु० ८।१३९ सार्वजनिक संज्ञाओं के प्रयोग संबंधी नियमों का निर्धारण तथा व्याख्या– शब्दानुशासनम् सिद्धा०।

अनुशिक्षिन् [अनुशिक्ष् + णिनि] क्रियाशील सीखने वाला।

अनुशिष्टि (स्त्री०) [अनुशास् + क्तिन्] शिक्षण, अध्यापन आदेश, आज्ञा।

अनुशीलनम् [अनु + शील् + ल्युट्] अभिप्रेत तथा प्रगाढ प्रयोग सतत प्रयत्न या अभ्यास, सतत या बारबार अभ्यास या अध्ययन।

अनुशोक,- **शोचनम्** [अनु + शुच् + घञ् ल्युट् वा] रंज पश्चात्ताप, खेद, इसी अर्थ में अनुशु (शो) चितम्।

अनुश्रवः [अनु + श्रु + अप्] वैदिक परंपरा।

अनुषक्त (वि०) [अनु + षञ्ज् + क्त] 1 संबद्ध 2 संलग्न या संसक्त।

अनुषङ्गः [अनु + षञ्ज् + घञ्] 1 गहन लगाव संबंध, संयोग, साहचर्य, 2 मेल 3 शब्दों का पारस्परिक संबंध 4 आवश्यक परिणाम 5 दया तरस करुणा।

अनुषङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग + ठ] अनिवार्य फलस्वरूप सहवर्ती।

अनुषङ्गिन् (वि०) [अनु + षञ्ज् + णिनि] 1 संबद्ध, अनुरक्त, संसक्त 2 अनिवार्य परिणाम के रूप में आने वाला 3 व्यावहारिक, सामान्य, छा जाने वाला विभुतानुषङ्गि भयमेति जनः –कि० ६।३५।

अनुषंजनीय (वि०) [अनु + षञ्ज् + अनीय] (शब्द की भांति) पूर्ववाक्य से ग्राह्य।

अनुषेकः,–**षेचनम्** [अनु + सिच् + घञ्, ल्युट् वा] दोबारा पानी देना, फिर से जल छिड़कना।

अनुष्टुतिः (स्त्री०) [अनु + स्तु + क्तिन्] प्रशंसा, सिफारिश (क्रमानुसार)।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) [अनु + स्तुभ् + क्विप्] 1 प्रशंसा में अनुगमन, वाणी 2 सरस्वती 3 बत्तीस अक्षरों का एक छंद जिसमें आठ २ अक्षरों के चार २ पाद होते हैं।

अनुष्ठातृ,–**ष्ठायिन्** (वि०) [अनु + स्था + तृच्, णिनि वा] कार्य करने वाला, अनुष्ठान करने वाला।

अनुष्ठानम् [अनु + स्था + ल्युट्] 1 कार्य करना, धर्मकृत्य करना, कार्य में परिणत करना, कार्यनिष्पादन, आज्ञापालन, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्–श० ४, धार्मिक तपश्चर्याओं का प्रयोग 2 आरम्भ, उत्तरदायित्व, कार्य में व्यस्तता 3 आचरणपद्धति कार्यपद्धति, 4 धार्मिक संस्कारों या कृत्यों का प्रयोग।

अनुष्ठापनम् [अनु + स्था + णिच् + ल्युट्] कार्य कराना।

अनुष्ण (वि०) [न० त०] 1 जो गर्म न हो, ठंडा 2 वीतराग सुस्त, शिथिल –स्पर्श शीतस्पर्श, –कम् कुमुद, नील कमल।

अनुष्यंद [अनु + स्यन्द् + घञ्] पिछला पहिया।

अनुसंधानम् [अनुसम् + धा + ल्युट्] 1 पूछताछ, गवेषण, गहन निरीक्षण या परीक्षण जांच 2 उद्देश्य 3 योजना, क्रमबद्ध करना तत्पर होना 4 उपयुक्त संयोग।

अनुसंहित (वि०) [अनु + सम + धा + क्त] पूछताछ किया गया जांच पड़ताल किया गया –तम् (क्रि० वि०) संहिता पाठ में, संहिता पाठ के अनुसार।

अनुसमय [प्रा० स०] नियमित और उचित संयोग जैसे कि शब्दों का।

अनुसमापनम् [अनु + सम् + आप् + ल्युट्] नियमितरूप से किसी कार्य की समाप्ति।

अनुसंबद्ध (वि०) [अनु + सम् + बन्ध + क्त] संयुक्त।

अनुसरः [अनु + सृ + अच्] अनुगामी, साथी अनुचर।

अनुसरणम् [अनु + सृ + ल्युट्] 1 अनुगमन, पीछा करना पीछे जाना 2 समनुरूपता।

अनुसर्पः [अनु + सृप् + अच्] सर्पसदृश जन्तु, सरीसृप।

अनुसवनम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 यज्ञ के पश्चात् 2 प्रत्येक यज्ञ में 3 प्रतिक्षण।

अनुसाम (वि०) [प्रा० स०] मनाया हुआ, मित्र सदृश, अनुकूल।

अनुसायम् (अव्य०) [प्रा० स०] प्रति सायंकाल।

अनुसूचनम् [अनु + सूच + ल्युट्] संकेत करना, इशारा करना।

अनुसारः [अनु + सृ + घञ्] 1 पीछे जाना, अनुगमन (आल० भी) पीछा करना शब्दानुसारेण अवलोक्य श० ३ जिधर से आवाज आ रही थी उस ओर देखते हुए 2 समनुरूपता, के अनुसार, प्रयोग के अनुरूप, 3 प्रथा, रिवाज रस्म 4 माना हुआ अधिकार।

अनुसारक, **सारिन्** (वि०) [अनु + सृ + ण्वुल् णिनि वा] 1 अनुगामी, पीछा करने वाला पीछे आने वाला, सेवा करने वाला मृगानुसारिणं पिनाकिनम्–श० १।६, कृपणानुसारि च धनम्–पंच० १।२७८; 2 के

अनुकूल या समनुरूप, बाद में आने वाला—यथाशास्त्र° मनु० ७।३१, 3 तलाश करना, ढूंढना, खोजना जाँच करना।

अनुसारणा [अनु+सृ+णिच्+युच्+टाप्] पीछे जाना पीछा करना—तस्मात्पलायमानानां कुर्यान्नात्यनुसारणम् महा०।

अनुसूचक (वि०) [अनु+सूच्+ण्वुल्] संकेत करने वाला इशारा करने वाला।

अनुसृति (स्त्री०) [अनु+सृ+क्तिन्] पीछे जाना अनुगमन, अनुरूप होना अनुसार होना।

अनुसैन्यम् [प्रा० स०] सेना का पिछला भाग अनुरक्षक सेना।

अनुस्कन्दम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः प्रविष्ट होकर क्रमानुसार अन्दर आकर गेहं गेहमनुस्कन्दम्—सिद्धा०।

अनुस्तरणम् [अनु+स्तॄ+ल्युट्] चारों ओर बखेरना या फैलाना, —णी गाय विशेषतया वह गाय जिसका बलिदान अन्त्येष्टि संस्कार के समय किया जाय।

अनुस्मरणम् [अनु+स्मृ+ल्युट्] 1 फिर से ध्यान में लाना स्मरण करना 2 बारबार स्मरण करना।

अनुस्मृति (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्तिन्] 1 वह स्मृति या स्मरण जो प्रिय हो 2 अन्य विषयों को छोड़कर केवल एक ही बात का चिन्तन करना।

अनुस्यूत (वि०) [अनु+सिव्+क्त—ऊठ्] 1 नियमित तथा निर्बाध रूप से मिला कर बुना हुआ 2 सिला हुआ, बंधा हुआ, 3 सुबद्ध और सुश्रृंखलित।

अनुस्वानः [अनु+स्वन्+घञ्] 1 अनुरूप शब्द करना 2 बाद में शब्द करना गूंज, दे० 'अनुरणन'।

अनुस्वारः [अनु+स्वृ+घञ्] नासिक्य ध्वनि जो वर्ण के ऊपर एक बिन्दु लगा कर प्रकट की जाती है और जो सदैव पूर्ववर्ती स्वर से संबद्ध होती है।

अनुहरणम्, हारः [अनु+हृ+ल्युट् घञ् वा] नकल, मिलना-जुलना समानता।

अनूकः,—कम् [अनु+उच्+क कुत्वम् नि०] 1 कुल, वंश 2 मनोवृत्ति, स्वभाव चरित्र वंश की विशेषता।

अनूचान (वि०) या —न [अनु+वच्+कान नि०] 1 अध्ययनशील विद्वान् विशेषतया वेद वेदांगों में ऐसा पारंगत विद्वान् जो उन्हें सुना सके और पढ़ा सके इदमूचुरनूचानाः—कु० ६।१५, 2 सुशील।

अनूढ (वि०) [न० त०] 1 न ले जाया गया, 2 अविवाहित, —ढा अविवाहित स्त्री। सम० —मान (वि०) लज्जालु,—गमनम् (°ढा°) कुमारी कन्या से संभोग, —भ्राता (पु०) (°ढा°) 1 अविवाहित स्त्री का भाई 2 राजा की उपपत्नी का भाई।

अनूदकम् [उदकस्य अभावः न० त०] जल का अभाव, सूखा पड़ना।

अनूद्देशः [अनु+उत्+दिश्+घञ्] 'सापेक्ष क्रम' एक अलंकार का नाम जिसमें कि यथा क्रम पूर्ववर्ती शब्दों का उल्लेख होता है, —यथासंख्यमनूद्देश उद्दिष्टानां क्रमेण यत् सा० द० ७३२।

अनून (वि०) [न० त०] 1 जो घटिया न हो, कम न हो, अभाव वाला न हो वृन्दावने चैत्ररथादनूने रघु० ६।५० गुणैरनूना रघु० ६।३७, 2 पूर्ण, समस्त सकल बड़ा महान् शि० ४।११।

अनूप (वि०) [अनुगता आपः यस्मिन् —अनु+अप्+अच् ऊदनोर्देशे इति ऊ] जलीय, जलबहुल अथवा दलदल वाला प्रदेश —पः, पम् 1 जलबहुल स्थान या देश 2 एक देश का नाम (ब० व०) रघु० ६।३७ 3 दलदल कीचड़ 4 पानी का तालाब 5 नदी का किनारा पर्वत का पहलू 6 भैंस 7 मेंढक 8 एक प्रकार का तीतर 9 हाथी। सम० —ज आर्द्र अदरक, —प्राय (वि०) दलदल वाला, कीचड़ से भरा हुआ।

अनूराध, अनूराधा अन्यत्र अनुराधा।

अनूरु (वि०) [न० ब०] जिसके जंघा न हों —रु सूर्य का सारथि अरुण (जिसका जंघारहित होने का वर्णन पाया जाता है) उषा दे० अरुण। सम० —सारथि सूर्य (अनूरु जिसका सारथि है) —गत तिरश्चीन मनूरुसारथेः शि० १।२।

अनूर्जित (वि०) [न ऊर्जित न० त०] 1 अशक्त, दुर्बल शक्तिहीन 2 दर्परहित।

अनूषर (वि०) [न ऊषर —न० त०] 1 रेहीला बंजर जैसी (भूमि) दे० उत्तम और अनुत्तम 2 जिसमें रेह न हो।

अनृच—च (वि०) [न० ब०] 1 बिना ऋचा का 2 जो ऋग्वेद का ज्ञाता न हो या ऋग्वेद का अध्येता न हो यज्ञोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार न हो—अनृचो माणवकः मुग्ध०।

अनृजु (वि०) [न० त०] जो सरल न हो कुटिल (चाल) अयोग्य दुष्ट, बेईमान।

अनृण (वि०) [न० ब०] जो कर्जदार न हो —एनामनृणां करोमि —श० १, प्राणैर्दशरथप्रीतेरनृणं (गृध्रं) रघु० १२।५४ प्रत्येक द्विज को तीन ऋणों से उऋण होना पड़ता है ऋषिऋण देवऋण और पितृऋण। जो व्यक्ति वेदाध्ययन करके यज्ञ में देवताओं का आवाहन करता है और फिर गृहस्थाश्रम में रह कर पुत्र प्राप्त करता है वही 'अनृण' कहलाता है दे० रघु० ८।३०।

अनृणिन् (वि०) [न० त०] अनृण।

अनृत (वि०) [न० त०] 1 जो सत्य न हो, मिथ्या (शब्द) प्रियं च नानृतं ब्रूयात् —मनु० ४।१३८ —तम् असत्यता झूठ बोलना धोखा, जालसाजी 2 कृषि (विप० 'सत्य') मनु० ४।५, । सम० —वदनम् —वाक्यम्,—आख्यानम् झूठ कहना, मिथ्या भाषण,

वादिन्,—**वाच्** (वि०) झूठ बोलने वाला,—**व्रत** (वि०) अपने वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करने वाला।

अनृतुः [न० त०] अनुपयुक्त ऋतु, अनुचित समय या असमय। सम०—**कन्या** वह कन्या जो अभी रजस्वला न हुई हो।

अनेक (वि०) [न० त०] 1 जो एक न हो, एक से अधिक, बहुत से, अनेकपितृकाणां तु पितृतो भागकल्पना—या० २।१२०, कि० १।१६, कई, कई एक 2 अलग-अलग, भिन्न भिन्न। सम०—**अक्षर**,—**अच्** (वि०) एक से अधिक अक्षर या स्वर वाला, नाना अक्षर सहित,—**अन्त** (वि०) 1 अनिश्चित संदिग्ध अस्थिर स्यादित्यव्ययमनेकान्तवाचकम् 2 (पु०) अनेकान्तिक (—तः) अनिश्चित अवस्था, स्थायित्व का अभाव 2 अनिश्चितता, अनावश्यक अंश जैसे कि कई अनुबंध, °**वादः** संशयवाद, स्याद्वाद,—**वादिन्** (पु०) स्याद्वादी जैनियों के स्याद्वाद को मानने वाला,—**अर्थ** (वि०) 1 एक से अधिक अर्थ वाला, समनाम जैसे कि गो, अमृत, अक्ष आदि, अनेकार्थस्य शब्दस्य—काव्य० २ 2 अनेक शब्द के अर्थ वाला 3 बहुत से प्रयोजन या उद्देश्य रखने वाला, (—र्थः) पदार्थों का बाहुल्य, विषयों की विविधता,—**आश्रय**,—**आश्रित** (वि०) (वैशे०) एक से अधिक स्थानों (जैसा कि 'संयोग' या 'सामान्य') पर रहने वाला,—**गुण** (वि०) बहुत प्रकार का, विविध प्रकार का, विभिन्न भेदों का,—**गोत्र** (वि०) दो कुलों से संबंध रखने वाला, एक तो अपने कुल से (जब तक कि गोद न लिया गया हो), तथा गोद लिये जाने पर गोद लेने वाले पिता के कुल से,—**चित्त** (वि०) चंचलमना,—**ज** (वि) एक से अधिक बार उत्पन्न,—**जः** पक्षी,—**पः** हाथी मु० 'द्विप' से, वन्यतरानेकपदर्शनेन—रघु० ५।४३ शि० ५।३५ १२।७५,—**मुख** (वि०) (स्त्री०—**खी**) 1 बहुत मुंह वाला 2 तितर बितर, बहुत सी दिशाओं में फैलने वाला (बलानि) जगाहिरेऽनेकमुखानि मार्गान्—भट्टि० २।५४,—**युद्धविजयिन्** (वि०) बहुत से युद्धों का विजेता,—**रूप** (वि०) 1 नाना रूपों का, बहुत रूपों वाला, 2 नाना प्रकार का 3 चंचल, परिवर्तनीय विविध स्वभाव वाला—वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा—पंच० १।४२५,—**लोचनः** शिवजी, इन्द्र,—**वचनम्** बहुवचन द्विवचन,—**वर्ण** (वि०) एक से अधिक राशियों वाला,—**विध** (वि०) विविध, विभिन्न,—**शफ** (वि०) फटे हुए खुरों वाला,—**साधारण** (वि०) बहुतों के लिए सामान्य।

अनेकधा (अव्य०) [नञ् + एक + धा] विविध रीति से नाना प्रकार से; जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा—भग० ११।१३।

अनेकशः (अव्य०) 1 कई बार, बारंबार—अनेकशो निर्जितराजकस्त्वम्—भट्टि० २।५२, 2 विविध रीति से, 3 बड़ी संख्या में या बड़े परिमाण में—पुंसा अनेकशो मृता दाराश्च हि० १।

अनेड [न एडः न० त०] मूर्ख पुरुष, अज्ञानी व्यक्ति, मूढ। सम०—**मूक** (वि०) गूंगा और बहरा 'मूकानेडमूकवत् दोषैरसम्मतान्—का० ७ 2 अंधा 3 बेईमान दुष्ट, दुःशील।

अनेनस् (वि०) [न० ब०] निष्पाप, कलङ्करहित।

अनेहस् (पु०) [न हन्यते—हन् + असि धातोः एहादेश—नञ् + एह + असुन्] (हा, हसौ आदि) समय, काल।

अनैकान्त (वि०) [न० त०] परिवर्त्य, अनिश्चित, अस्थिर, सामयिक।

अनैकान्तिक (वि०) [नञ् + एकान्त + ठक्—न० त०] (स्त्री०—की) 1 अस्थिर, जो बहुत आवश्यक न हो 2 (तर्क० में) हेत्वाभास के मुख्य पाँच भागों में से एक, अन्यथा यह 'सव्यभिचार' कहलाता है, और तीन प्रकार का है—(क) 'साधारण' जहाँ कि हेतु दोनों ओर—स्वपक्ष, तथा विपक्ष में—पाया जाय, फलतः तर्क अतिसामान्य हो जाय, (ख) 'असाधारण' जहाँ हेतु केवल पक्ष में ही पाये जायें फलतः तर्क अतिसामान्य न हो, (ग) 'अनुपसंहारी' जहाँ पक्ष में प्रत्येक ज्ञात बात तो सम्मिलित है, परन्तु तर्क की अभी समाप्ति नहीं हुई है।

अनैक्यम् [न० त०] 1 एकता का अभाव, बहुवचनता 2 एकत्व की कमी अव्यवस्था 3 अशान्ति अराजकता।

अनैतिह्यम् [न० त०] परंपरागत प्रामाणिकता का अभाव, या जहाँ इस प्रकार की स्वीकृति अपेक्षित है।

अनो (अव्य०) [न० त०] नहीं, न।

अनोकशायिन् (पु०—यी) [न० त०] घर में न सोने वाला, भिक्षुक।

अनोकहः [अनस् शकटस्य अकं गतिं हन्ति—हन् + ड] वृक्ष,—अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी—रघु० २।१३, ५।६९।

अनौचित्यम् [नञ् + उचित + ष्यञ्] अनुपयुक्तता, अनुचितता—अनौचित्यादृते नान्यद्रसभङ्गस्य कारणम्—का० ७।

अनौजस्यम् [नञ् + ओजस् + ष्यञ्] शक्ति सामर्थ्य या बल का अभाव, सा० द० दौर्बल्याद्यैरनौजस्यं दैन्यं मलिनतादिकृत्।

अनौद्धत्यम् [नञ् + उद्धत + ष्यञ्] 1 अहंकार से मुक्ति, शालीनता, विनय, 2 शान्ति, नदीरनौद्धत्यमपङ्कता मही—कि० ४।२२।

अनौरस (वि०) [न० त०] जो औरस—अर्थात् विवाहिता पत्नी से उत्पन्न न हो, अपना भी न हो, (पुत्र के रूप में) गोद लिया हुआ।

अंत (वि०) [अम्+तन्] 1 निकट 2 अन्तिम 3 सुन्दर, मनोहर, मेघ० २३, शि० ४।४० (इसका सामान्य अर्थ—'सीमा' या 'छोर' है, यद्यपि 'शब्दार्णव' का उद्धरण देते हुए मल्लिनाथ इसका अर्थ 'रम्य' करते हैं) 4 नीचतम, निकृष्टतम 5 सबसे छोटा, —**तः** (कुछ अर्थों में नपुं०) 1 (वि०) छोर, मर्यादा, (देश काल की दृष्टि से) सीमा, चरम सीमा, अन्तिम बिन्दु या पराकाष्ठा - स सागरान्तां पृथिवीं प्रशास्ति हि० ४।५०,—दिगन्ते भूयन्ते भामि० १।२, 2 छोर, सरहद, किनारा परिसर, सामान्य रूप से स्थान या भूमि यत्र रम्यो वनांतः, उत्त० २।२५,—ओदकांतात् स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य —श० ४, रघु० २।५८, 3 बुनी हुई किनारी का पल्ला वस्त्र°, पट°, 4 सामीप्य सन्निकटता, पड़ौस, विद्यमानता गंगा प्रपातान्तविरूढशष्पं (गह्वरम्) रघु० २।२६, पुसो यमान्तं व्रजतः —पंच० ३।११५, 5 समाप्ति, उपसंहार अवसान,—सेकान्ते—रघु० १।५१, दिनान्ते निहितम् —रघु० ४।१, 6 मृत्यु, नाश जीवन का अन्त,—राका मवेत्स्वन्तिमती त्वदन्ते—रघु० २।४८, अद्य कांत कृतान्तो वा दुःखस्यान्तं करिष्यति —उद्भट 7 (व्या० में) शब्द का अन्तिम अक्षर 8 समास में अंतिम शब्द 9 (प्रश्न का) निश्चय, निर्णीत या अंतिम निश्चय—उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभि: भग० २।१६; 10 अंतिम अंश, अवशेष—यथा सिद्धान्त वेदान्त 11 प्रकृति, दशा, प्रकार, जाति 12 वृत्ति, तत्त्व मुद्रान। सम०—**अवसायिन्** (पुं०) चांडाल - **अवसायिन्** (पुं०) 1 नाई 2 चांडाल, नीच जाति का, —**कर**, —**करण**, —**कारिन्** (वि०) घातक, मारक, संहारक, —**कर्मन्** (नपुं०) मृत्यु, —**काल**, —**वेला** मृत्यु का समय,—**कृत्**(पुं०)मृत्यु, —**ग** (वि०)किनारे तक जाने वाला, पूरी तरह से जानकार या परिचित, (समास में) —**गति**, —**गामिन्** (वि०) नाश होने वाला, —**गमनम्** 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 मृत्यु, —**दीपकम्** सा० शा० में एक अलंकार, —**पाल** 1 सीमा की रक्षा करने वाला, 2 द्वारपाल —**लीन** (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, —**लोप:** शब्द के अंतिम अक्षर को निकाल देना,—**वासिन्** (°सी°) (वि०) सीमान्त प्रदेश के निकट रहने वाला, निकट ही रहने वाला, (—पुं०) विद्यार्थी (जो शिक्षा ग्रहण करने के निमित्त सदैव गुरु के निकट रहता है), चांडाल (जो गाँव के किनारे रहता है) —**शय्या**=पुं० °काल:—**शय्या** 1 भूमिशय्या 2 अंतिम शय्या, मृत्युशय्या 3 कब्रिस्तान या श्मशान भूमि, —**सत्क्रिया** अन्त्येष्टि संस्कार,—**सद्** (पुं०) विद्यार्थी, तमुपासते गुरुमिवान्तसदः—कि० ६।३४।

अन्तक (वि०) [अन्तयति—अन्तं करोति—ण्वुल्] मारने वाला, नाश करने वाला, घातक—रघु० ११।२१, —**क** 1 मृत्यु 2 साकार मृत्यु, संहारक, यम, मृत्यु का देवता, ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुम् रघु० २।६२।

अंततः (अव्य०) [अन्त+तसिल्] 1 किनारे से 2 आखिरकार, अन्त में, अततोगत्वा, निदान 3 अंशतः, कुछ 4 भीतर, अन्दर 5 अधम रीति से ('अंत' के सभी अर्थ 'अंततः' में समा जाते हैं)

अन्ते (अव्य०) ['अन्त' का अधि०, क्रि० वि० में प्रयोग] 1 अन्त में आखिरकार 2 भीतर 3 (की) उपस्थिति में, निकट, पास ही। सम० —**वास** 1 पड़ौसी, साथी, 2 छात्र शि० ३।५५, वेणी० ३।६ —**वासिन्** तु० अंतवासिन्।

अंतर् (अव्य०) [अम्+अरन् तुडागमश्च] 1 [क्रियाओं के साथ उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होता है तथा संबंधबोधक अव्यय समझा जाता है] (क) बीच में, के मध्य में, के अन्दर °हन्, °धा, °गम्, °म, °इ, °भी आदि (ख) के नीचे 2 (क्रि० वि० प्रयोग) (क) के मध्य, के बीच, के दरम्यान, के अन्दर, मध्य में या अंदर, भीतर (विप० बहि:) अंतर्गतान रघु० २।३२, अन्तर्यश्च मृग्यते विक्रम० १।१, आन्तरिक रूप से, मन में (ख) ग्रहण करके या पकड़कर अंतर्हत्वा गतं (हृत परिगृह्य) 3 (वियुक्त होने योग्य सम्बन्धबोधक के रूप में) (क) में, के मध्य, बीच में, के अन्दर (अधि० के साथ) निवसन्नन्तर्दारुणि लंघ्यो वह्नि: —पंच० १।३१, अप्स्वन्तरमृतमप्सु —ऋग् १।२३ (ख) के मध्य (कर्म० के साथ) वेद० —हिरण्मय्योर्हि कुश्योरंतरवहित आस—शत० (ग) में, के अन्दर, भीतर, बीच में (संब० के साथ) प्रतिबल जलधेरंतरौर्वायमाणे—वेणी० ३।५, अंत: कंचुकिकंचुकस्य —रत्न० २।३, —कदुवृत्तितया स्थितां मतां बहिरन्तश्च नृपस्य मंडलम्—कि० २।५३, 4 समस्त शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो बहुधा निम्नांकित अर्थ होते हैं —आंतरिक रूप से, के अन्दर, भीतर, भीतर रह कर, भरा हुआ, अन्दर की ओर, आंतरिक, गुप्त, तत्पुरुष तथा बहुव्रीहि समास के क्रियाविशेषणात्मक रूप बनाने वाला (नोट —समस्त पदों में 'अन्तर्' का र् वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स् से पूर्व विसर्ग का रूप धारण कर लेता है जैसे अन्त:करण, अन्तःस्थ आदि)। सम० - **अग्निः** आन्तरिक आग, वह अग्नि जो पाचन शक्ति को उत्तेजित करे, —**अंग** (वि०) 1 अंदर की ओर, आन्तरिक, अन्तर्गत (अपा० के साथ), त्रयमंतरंगं पूर्वेभ्य: —पातंजल० 2 शब्द के मूलरूप या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या उसका उल्लेख करने वाला, 3 प्रिय, प्रियतम (—गम्) 1 अंतरंग अंग,

हृदय, मन 2 घनिष्ठ मित्र, या विश्वस्त व्यक्ति, -आत्मन्: तेजोवह तत्त्व या ब्रह्म जो मनुष्य के हृदय में रहता है (उपनिषदों में प्राय यह शब्द पाया जाता है) -आकूतम् गुप्त और छिपा हुआ प्रयोजन -आत्मन् (पु०-त्मा) 1 अन्तस्तम प्राण या आत्मा, मन या आत्मा, आन्तरिक भावना, हृदय, जीवसत्ता तरात्मास्य मनु० १२।१३, भग० ६।४७, 2 (दर्श० में) अन्तर्हित सर्वोपरि प्राण या आत्मा (मानव के भीतर रहने वाला) अन्तरात्मासि देहिनाम् कु० ६। २१, -आराम (वि०) अपने आप में मग्न, अपने आत्मा या हृदय में ही सुख ढूंढने वाला, योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव स भग० ५।२४, -इन्द्रियम् आन्तरिक अंग या ज्ञानेन्द्रिय, -करणम् हृदय, आत्मा, विचार और भावना का स्थान विचार शक्ति, मन, चेतना—प्रमाण० प्रवृत्तय श० १।२२ -कुटिल (वि०) अन्दर से कपटी (आल०) (-लः) सीप,—कोण अन्दर का कोण, -कोष गुप्त कोष, अन्दरूनी गुफा -गडु (वि०) व्यर्थ, अनावश्यक, निष्फल—किमनेनान्तर्गडुना सर्व० -गम् -गत दे० 'अन्तर्गम्' के नीचे -गर्भ (वि०) पेट वाली, गर्भवती, -गिरम् -गिरि (अव्य०) पहाड़ों में -गूढ (वि०) अन्दर से छिपा हुआ, °विष हृदय में जहर छिपाए हुए -गृहम् -गेहम्, -भवनम् घर का भीतरी भाग, -घण -घणम् घर के अन्दर की खुली जगह -चर (वि०) शरीर में व्याप्त, -जठरम् पेट, -ज्वलनम् जलन या सूजन, -ताप (वि०) अन्तर्दाह से युक्त (-पः) अन्दरूनी ज्वर या गर्मी, —श० ३।१३, -दहनम् -दाह: 1 अन्दरूनी जलन 2 सूजन -देशः परिधि के बीच का प्रदेश, -द्वारम् घर के अंदर निजी या गुप्त दरवाजा, -धि -हित आदि दे० शब्द के नीचे -धा:, -पटम् दो व्यक्तियों के बीच में कपड़े का परदा -पदम् (अव्य०) पद (विभक्तियुक्त शब्द) के भीतर, -परिधानम् सबसे नीचे पहना जाने वाला कपड़ा, -पात, -पात्य 1 (व्या०) बीच में अक्षर रखना 2 यज्ञभूमि के मध्य में लगाया हुआ स्तंभ (संस्कार विधियों में प्रयुक्त), -पातित, -पातिन् (वि०) 1 बीच में समाविष्ट 2 सम्मिलित या समाविष्ट, अन्तर्गत होने वाला, -पुरम् 1 महल का अन्दरूनी भाग जो महिलाओं के उपयोग के लिए नियत किया गया हो, स्त्रियों के रहने का कमरा, रनवास, कन्यान्तःपुरे कश्चित् प्रविशति —पंच० १; 2 रनवास में रहने वाली स्त्रियां, रानी या रानियां, स्त्रियों का समुदाय—°विरहपर्युत्सुकस्य राजर्षेः श० ३, °अध्यक्ष:, °रक्षक:, °वर्ती अन्तःपुर का अधीक्षक या संरक्षक, °चर:—कञ्चुकी, °जन महल की स्त्रियां रनवास की महिलाएँ, °प्रचार: अन्तःपुर की गप्पें, कदाचिदस्मत्प्रार्थनामन्तःपुरेभ्यः कथयेत्—श० २ °सहाय: अन्तःपुर से संबंध रखने वाला, -पुरिकः कञ्चुकी =°चर, -प्रकृति (स्त्री०) 1 मनुष्य का शरीर या उसका आन्तरिक स्वभाव 2 राजा का मन्त्रालय या मन्त्रिमंडल 3 हृदय या आत्मा, —प्रकोपनम् आन्तरिक विरोध जगाना —प्रतिष्ठानम् -भीतरी आवास -बाष्प (वि०) 1 जिसने आंसुओं को रोका हुआ हो - अन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ—मेघ० ३, 2 जिसके आंसू अन्दर ही अन्दर निकल रहे हों -भावः, -भावना दे० 'अन्तर्भू' के अन्तर्गत, -भूमि (स्त्री०) भूमि का भीतरी भाग —भेदः वैमनस्य आन्तरिक विरोध -भौम (वि०) भूमि के नीचे रहने वाला —मनस् (वि०) उदास व्याकुल, -मृत (वि०) गर्भ में ही मर जाने वाला,—याम: वाणी और श्वास को रोकना, -लीन (वि०) 1 निहित, गुप्त अन्दर छिपा हुआ, °नस्य दुःखाग्ने: उत्तर० ३।९, 2 अन्तर्निहित,- वंश: —°पुरम्, तु० -वंशिक:, -वांशिक अन्तःपुर का अधीक्षक,—वत्नी गर्भवती स्त्री, -वस्त्रम्, -वासस् (नपुं०) अधोवस्त्र,—वाणि (वि०) बड़ा विद्वान्, -वेग: आन्तरिक बेचैनी या चिन्ता, आन्तरिक ज्वर -वेदि:-दी गंगा और यमुना के बीच का भूभाग -वेश्मन् (न०) घर के अन्दर का कमरा, भीतरी कोठा,—वेश्मिकः कञ्चुकी, -शरीरम् मनुष्य का आन्तरिक या आत्मिक भाग शरीर का भीतरी भाग, -शिला °विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली नदी,—संज्ञ (वि०) अन्तश्चेतन,—सत्त्वा गर्भवती स्त्री,—संताप: आन्तरिक पीड़ा, शोक, खेद,—सलिल (वि०) जिसका पानी भूमि के अन्दर बहता हो,—नदीमिवान्तःसलिलां सरस्वतीम्—रघु० ३।९,—सार (वि०) अन्दर से भरा हुआ, या शक्तिशाली, बलवान् भारी और कठिन—°रं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वाम्—मेघ० २० (-रः) आन्तरिक कोष या भंडार, आन्तरिक निधि या तत्त्व,—सैन्यम् (अव्यय) सेनाओं के बीच में,—स्थ ('अन्तस्थ' भी) अर्धस्वर, क्योंकि वे स्वर और व्यञ्जनों के बीच में स्थित हैं, और वागिन्द्रिय के जरा से संपर्क से बोले जाते हैं,—स्वेद: मस्त हाथी,—हासः गुप्त या दबाई हुई हंसी,—हृदयम् हृदय का भीतरी भाग।

अन्तर (वि०) [अन्तं राति ददाति-रा + क] 1 अंदर होने वाला, भीतर का, (विप० बाह्य) 2. निकट, समीप 3. सबद्ध, घनिष्ठ, प्रिय-अयमत्यन्तरो मम-भारत 4. समान ('अन्तरतम' भी) (ध्वनि और शब्दों के विषय में)-स्थानेऽन्तरतम -पा० १।१।५० 5. के भिन्न, अन्य (अपा० के साथ) 6. बाहर का, बाह्यस्थित, बाहर रहने वाला

(इस अर्थ में इसके रूप विकल्प से कर्तृ० ब० व०, अपा० और अधि० एक व० में 'सर्व' की भांति होते हैं) इसलिए—अन्तरायां पुरि, अन्तरायै नगर्यै, —रम् 1 (क) भीतर का, अन्दर का—लीयन्ते मुकुलान्तरेषु—रत्न० १।२६, (ख.) छिद्र, सुराख 2. आत्मा, हृदय, मन—तथ्यं पुरुषान्तरविदो महेन्द्रस्य—विक्रम० ३, 3. परमात्मा, 4. अन्तराल, मध्यवर्ती काल या देश—अम्बुकुम्भान्तरा—विक्रम ४।२६, बृहद्भुजान्तरम्—रघु० ३।५४, 'अन्तरे' का बहुधा अनुवाद किया जाता है - मध्य में, बीच में—न मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे श० ६।१७, 5. स्थान, जगह, देश—मृणालसूत्रान्तरमप्यलभ्यम् कु० १।४०, पौरवं वस शोकस्य नान्तरं दातुमर्हसि—रा० शोक मत करो,—अन्तरम्-अन्तरम्—मृच्छ० रास्ता छोड़ो, 6. पहुंच, अन्दर जाना, प्रवेश, कदम रखना—केऽनेन्तरं चेतसि नोपदेशः—रघु० ६।६६ कन्यान्तरा शावरणेऽपि गेहे - १६।७, 7. अवधि (काल की), निर्दिष्ट अवधि,—मासान्तरे देयम्—अमर०, इति तौ विरहान्तरक्षमौ—रघु० ८।५६, 8. अवसर, संयोग, समय यावत्त्वामिन्द्रगुरवे निवेदयितुमन्तरान्वेषी भवामि—श०, ७, 9. भेद (दो वस्तुओं के बीच) (सम० के साथ या समास में)—तव मम च समुद्रपल्वलयोरिवान्तरम्—मालवि० १, यदन्तरं सर्षपशैलराजयोर्यदन्तरं वायसवैनतेययोः—रा०, द्रुम सानुमतां किमन्तरम्—रघु० ८।९०, 10 (गणित) भिन्नता, शेष, 11. (क०) भेद, अन्य दूसरा, परिवर्तित, बदला हुआ (रीति, प्रकार, ढंग आदि) (ध्यान रखिये इस अर्थ में 'अंतर' सदैव समस्तपद का उत्तर पद रहता है तथा इसका लिंग वही बना रहता है—अर्थात् नपुं० चाहे पूर्वपद का कुछ भी लिंग हो - कन्यान्तरम् (अन्याकन्या), राजान्तर (अन्यो राजा), गृहान्तरम् (अन्यद् गृहम्), इसका अनुवाद बहुधा 'अन्य' शब्द से किया जाता है)—इदमवस्थान्तरमारोपिता — श० ३, परिवर्तित दशा, (ख) विविध, विभिन्न (ब० व० में प्रयुक्त)—लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु—श० ४।२, 12. विशेषता, (विशिष्ट) प्रकार, विशेष, या किस्म—शौर्यान्तरेऽप्यणु—कि०, मीनो राज्यन्तरे—तद्० 13. दुर्बलता, आलोच्य स्थल, असफलता, दोष, सदोष स्थल,—प्रहरेदन्तरे रिपुं—शब्द०, सुजय खलु तादृगन्तरे—कि २।५२, 14. जमानत, प्रत्याभूति, प्रतिभूति, 15. सर्व श्रेष्ठता,—गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः—मालवि० १।६ (यह अर्थ ११ के अन्तर्गत से भी आना जा सकता है), 16 वस्त्र (परिधान) 17 प्रयोजन, आशय (मल्लि०—रघु० १६।८२) 18. प्रतिनिधि, स्थानापत्ति, 19. हीन होना। सम० —अपत्या गर्भवती स्त्री, —ज्ञ (वि०) अन्दर का रहस्य जानने वाला, प्राज्ञ, दूरदर्शी,—नान्तरज्ञाः श्रियो जातु प्रियैरासां न भूयते—कि० ११।२४,—दिशा (अन्तरा दिक्) परिधि का मध्यवर्ती प्रदेश या दिशा,—पू (पु) रुषः आन्तरिक मानव आत्मा (मानव के अन्दर निवास करने वाला देवता जो कि उसके सब कार्यों को देखता है)—प्रभवः मिश्रित जाति में जन्म लेने वाला,—स्थ —स्थायिन्, —स्थित (वि०) 1 आभ्यन्तरिक, आंतरिक, अन्तर्हित 2. अन्त क्षिप्त, अन्तर्वर्ती।

अन्तरतः (अव्य०) [अन्तर+तसिल्] 1 भीतर, आंतरिक रूप में, मध्य, 2. के अन्दर (सब० के साथ)।

अन्तरतम (वि०) [अन्तर+तमप्] अत्यन्त निकट, आंतरिक, निकटतम, घनिष्ठतम सदृशतम —मः उसी श्रेणी का अक्षर।

अन्तरयः, रायः [अन्तर+अय्+अच्] अवरोध बाधा, रुकावट,—स चेत् त्वमन्तरायो भवसि च्युतो विधिः रघु० ३।४५, १४।६५, अस्य ते बाणपथवर्तिनः कृष्णसारस्य अन्तरायौ तपस्विनौ संवृत्तौ—श० (पाठ०)

अन्तरयति [ना० धा० पर०] 1 बीच में डालना, हटाना, स्थगित करना भवतु तावदन्तरयामि - उत्तर० ६, 2. विरोध करना, 3 दूर हटाना पीछे से धकेलना।

अन्तरयण —अन्तरय

अन्तरा (अव्य०) [अन्तरेति—इण्+डा] 1 (क्रि० वि० के रूप में) (क) भीतर, अन्दर भीतर की ओर (ख) मध्य में, बीच में, त्रिशंकुरिवान्तरा तिष्ठ श० २, रघु० १५।२० (ग) मार्ग में बीच में विलम्बपां च मातरा महावीर० ७।२८ (घ) पड़ौस में, निकट ही लगभग (ङ) इसी बीच में (च) समय समय पर यहाँ वहाँ, कभी कभी कुछ समय तक अब अभी—अन्तरा पितृसकाशमन्तरा मातृसकाशमन्तरा शुकनासमयं कुर्वन्नालाप —का० ११८ 2 (कर्म के साथ स० अव्य० की भांति) (क) अन्तरा त्वां मां च कमण्डलुः —महा० (ख) के बिना, सिवाय न च प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते - मुद्रा० ३। सम० —अंसः छाती —भवदेहः, —भवसत्त्वम् —आत्मा या जीवात्मा जो जन्म और मरण की अवस्थाओं के बीच में रहता है शिशु दे० —अन्तर्दिश —वेदि—दी (स्त्री) 1. स्तम्भाश्रित बरांडा, दहलीज, ड्योढ़ी 2. एक प्रकार की दीवार—रघु० १२।९३, —शृंगम् (अव्य०) सींगों के बीच में।

अन्तरायः—अन्तरय दे०

अन्तरालम् } [अन्तरं व्यवधानसीमाम् आराति गृह्णाति
अन्तरालकम् } अन्तर+आ+रा+क रस्य लत्वम्] 1. मध्यवर्ती प्रदेश, स्थान या काल, अवकाश—दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दक्षिणपूर्वा—सिद्धा०, अंतराले बीच में, के मध्य, के बीच, अवकाश के समय, बाष्पाम्भःपरिपतनोद्गमान्तराले—उत्तर० १।३१,

2. भीतर, अन्दर, भीतरी या मध्यभाग 3. मिश्रित जाति या समुदाय।

अन्तरि(री)क्षम् [अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते—इति अन्तर् + ईक्ष् + घञ्, पृषो० ह्रस्व वा] आकाश और पृथ्वी के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश, वायु, वातावरण, आकाश। सम०—**उदरम्** वातावरण का मध्य भाग, —**चर** पक्षी, —**लोकम्** व्योम, लोक, मध्यवर्ती प्रदेश जो कि एक स्वतन्त्र लोक समझा जाता है।

अन्तरित (वि०) [अन्तर् + इ + क्त] 1 बीच में गया हुआ, अन्तर्वर्ती 2 अन्दर गया हुआ, गुप्त, ढका हुआ, पृथक् किया हुआ, अदृश्य—पादपान्तरित एव विश्वस्तामेनां पश्यामि—श० १, लता के पीछे छिपा हुआ—शारसेन स्वदेहान्तरितो राजा—हि० ३ पट के पीछे छिपा हुआ 3 अन्दर गया हुआ, प्रतिबिम्बित—स्फटिकभित्त्यन्तरितान् मृगशावकान् (क) अवरुद्ध, बाधित, रोका गया—स्वबुद्ध्यन्तरितानि शास्त्राणि मुद्रा० ४।१५ गोपालस्य देवान्तरितपौरुष—पंच० १।१३ (ख) पृथक्कृत, अदृश्य, रुद्धदृष्टि, मुहूर्तान्तरितमाधवा दुर्मनायमाना—माल० ८ मेघैरन्तरितः प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी—मा० ८० (ग) ढका हुआ, तिरोहित 4 ओझल, नष्ट, वियुक्त, सहृत—अन्तरिते तस्मिन् शबर सेनापती—का० ३३ 5 अतिक्रान्त, भूला हुआ।

अन्तरीप [अन्तर्मध्ये गता आपो यस्य ब० स० अत ईत्वम्] भूमि का टुकड़ा जो समुद्र के भीतर चला गया हो, भूनासिका, द्वीप।

अन्तरीयम् [अन्तर + छ] अधोवस्त्र।

अन्तरेण (अव्य०) [अन्तर + इण् + ण] 1 [कर्म० के साथ सं० अव्य० के रूप में] (क) सिवाय, के बिना—किमप्यस्ति स्वरान्तरायमन्तरेण आर्य द्रष्टुमिच्छामि—मुद्रा० ३, न राजापराधमन्तरेण प्रजास्वकालमृत्युश्चरति—उत्तर० २ क्षणिक को नरेन्द्राणामन्तरेण मधुव्रतम्—भामि० १।११७ (ख) के विषय में, संकेत करते हुए, के संबंध में—अथ भवन्तमन्तरेण कीदृशोऽस्या दृष्टिरागः—श० २ तदस्या देवीं वसुमतीमन्तरेण महदुपालम्भनं गतोऽस्मि—श० ५ (ग) के बीच में, त्वां मां चान्तरेण कमण्डलुः—महा० 2 (क्रि० वि०) (क) के बीच में, के मध्य (ख) हृदय में।

अन्तर्गत } (वि०) [अन्तर् + गम् + क्त णिनि वा] 1 बीच
अन्तर्गामिन् } में, मध्य में गया हुआ (भूर शब्द की भांति) बीच में आया हुआ 2 अन्तःस्थित, अन्तःसम्मिलित विद्यमान, संबद्ध 3 गुप्त, आन्तरिक, अन्दर की ओर, रहस्य, गूढ़,—अन्तर्गतमपास्तं मे रजसोऽपि परं तमः—कु० ६।६०, मौलिभिरन्तर्गतकाणपकठ—रघु० १४।५३, गैरवकनविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः—पंच० १।४४ 4 स्मृतिपथ से गया हुआ, भूला हुआ 5 नष्ट हुआ, ओझल, 6. अदृष्ट। सम०—**उपमा** गुप्त उपमा, —**मनस्** = अतर्मनस् तु०।

अन्तर्धा [अन्तर् + धा + अङ्] आच्छादन, गोपन, अन्तर्धा-मुपययुः पल्लवावलीषु—शि० ८।१२।

अन्तर्धानम् [अन्तर् + धा + ल्युट्] अदृश्य होना, ओझलपना, दृष्टि से चूक जाना—°व्यसनरसिका रात्रिका रात्रिका-लीयम्—काव्य० १०, °गम् या इ—अदृश्य होना, ओझल होना।

अन्तर्धि (स्त्री०) [अन्तर् + धा + कि] ओझल होना, गोपन।

अन्तर्भव (वि०) [अन्तर् भवतीति—भू + अच्] अन्दर की ओर, आन्तरिक।

अन्तर्भाव [अन्तर् + भू + घञ्] 1 अन्तर्भूत या अन्तर्निहित होना, अन्तर्गत होना,—तेषां गुणानामोजस्यन्तर्भाव—काव्य० ८ 2 अन्तर्हित भाव।

अन्तर्भावना [अन्तर् + भू + णिच् + ल्युट्] 1 सम्मिलित करना 2 अन्तश्चिन्तन या चिन्ता।

अन्तर्य (वि०) [अन्तर् + यत्] आन्तरिक, बीच में।

अन्तर्हित (वि०) [अन्तर् + धा + क्त] 1 बीच में रखा हुआ, पृथक्कृत, दृष्टिरुद्ध, गुप्त, छिपा हुआ—अन्तर्हिता शकुन्तला वनराज्या—श० ४, 2 ओझल हुआ, नष्ट, अदृश्य—अन्तर्हिते शशिनि—श० ४।२, । सम०—**आत्मन्** (पुं०) शिव।

अन्ति (अव्य०) [अन्त + इ] पास में (सब० के साथ) (स्त्री०—ति) बड़ी बहन (नाटकों में)।

अन्तिका [अन्त + इ स्वार्थ कन् टाप्] 1 बड़ी बहन 2 चूल्हा, अंगीठी, 3 एक पौधे का नाम (सातलाख्य या शातलाख्य औषधि)।

अन्तिक (वि०) [अन्तः सामीप्यमस्यास्तीति—अन्त + ठन्] 1 निकट, समीप (सब० या अपा० के साथ) 2 पहुंचने वाला, टिकाऊ तक—**कम्** निकटता, सामीप्य, पड़ौस, उपस्थिति—न त्यक्ष्यति ममान्तिकम्—हि० १।४६, °**स्थम्**—रघु० २।३४, **कर्ण**—°**चर**—श० १।२८ (क्रि० वि०) [सब० और अपा० के साथ अथवा समास के अन्त में] निकट, पड़ौस में,—अन्तिकं ग्रामात् ग्रामस्य वा सिद्धा० सामीप्य या सन्निधि में, अन्ति-केन—निकट (सब० के साथ) अन्तिकात्—निकट, पास में से (अपा० या सब०) °कादागत,—अन्तिके निकट—हमयन्त्यास्तवान्तिके निपेतुः—नल० १।२२। सम०—**आश्रयः** पास की वस्तु का सहारा देने वाला, लगातार सहारा (जैसा कि वृक्ष के द्वारा लता को दिया जाता है)।

अन्तिम (वि०) [अन्त + डिमच्] 1 तुरन्त बाद आनेवाला, 2 आखरी, अन्त का, परम—अकालमृत्युमूर्छितो वरमा-ष्टी न चान्तिम—हि० १।। सम०—**अंकः** आखरी

अंक, नौ की संख्या, **अन्त्याङ्गुलि** छोटी (कनिष्ठिका) अंगुली।

अन्ती [अन्त + इ, ङीप्] चूल्हा, अंगीठी।

अन्ते—दे० अन्तत के नीचे।

अन्त्य (वि०) [अन्त + यत्] 1 अन्तिम, चरम (अक्षर या शब्द आदि) अन्त में (समय, क्रम या स्थान की दृष्टि से) जैसे कि अक्षरों में ह, नक्षत्रों में रेवती [illegible] वयसि बूढ़ी अवस्था में रघु० [illegible] अन्त्यम् ऋणम्—रघु० [illegible] अन्तिम ऋण [illegible] 2 तुरन्त बाद में (समा०) 3 [illegible] अधम, घटिया, नीच—त्य: 1 अधम जाति का मनुष्य 2 शब्द का अन्तिम अक्षर 3 अन्तिम चान्द्र मास अर्थात् फाल्गुन 4 म्लेच्छ—त्या अधम जाति की स्त्री—त्यम् 1 सौ नील की संख्या (1000000000000000) 2 मीन राशि 3 प्रगति का अन्तिम अंग। सम० —**अवसायिन्** (पु०-यी स्त्री-यिनी) अधम जाति की स्त्री या पुरुष [illegible] इसी श्रेणी में [illegible] वाले समझे जाते हैं [illegible] वैदेहकस्तथा मागधायोगवौ [illegible]।

आहुति—**इष्टि** (स्त्री०)—**कर्मन्**—**क्रिया** [illegible] संस्कार का [illegible] या और्ध्वदैहिक [illegible]। **ऋणम्** तीन ऋणों में [illegible] व्यक्ति का उऋण होना है [illegible] दे० अनृण [illegible] —**जन्मन्** (पु०) 1 शूद्र 2 [illegible] जातियाँ (चाण्डाल आदि) में से एक। **जन्मन्** **जाति** —**जातीय** (वि०) 1 नीच जाति में [illegible] होने वाला 2 शूद्र 3 [illegible] **भम्** [illegible] नक्षत्र—रेवती। **युगम्** [illegible] **योनि** (वि०) नीच वंश का मनु० [illegible] **लोप** [illegible] अन्तिम अक्षर का लोप करना। **वर्ण**—**वर्णा** [illegible] जाति का पुरुष या स्त्री शूद्र या शूद्रा।

अन्त्यक [अन्त्य एव इति स्वार्थे कन्] नीच जाति का पुरुष।

अन्त्रम् [अन्त् + ष्ट्रन्, अम् [illegible]] और अंतड़ी [illegible] भेदन क्रियते [illegible] महावीर० 3। सम० —**कूजः** —**कूजनम्**, **विकूजनम्** आंतों में होने वाला [illegible] गड़गड़ाहट की आवाज। **वृद्धि** (स्त्री०) [illegible] की बीमारी, हर्निया, अंडकोष बढ़ने का रोग। —**शिला** विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली एक नदी। **स्रज्** (स्त्री०) अंतड़ियों की माला (जिसको नृसिंह ने धारण किया)।

अन्त्रन्धमि (स्त्री०) अजीर्ण, अफारा।

अन्दु—**दू** (स्त्री०) } [अन्द् + कु, पक्षे ऊङ्] 1 [illegible] या हथकड़ी [illegible] 2 हाथी के [illegible] बांधने के [illegible] 3 नूपुर।
अन्दुक }

अन्दोलनम् [अन्दोल + ल्युट्] झूलना, घुमाऊ, कम्पनशील [illegible] दोलन [illegible]।

अन्ध (चु० उभ०) 1 अंधा बनाना, अंधा करना, अंधयति [illegible] 2 अंधा होना।

अन्ध (वि०) [अन्ध् + अच्] 1 अंधा (शब्द० और आल०) [illegible] दृष्टिहीन, देखने में असमर्थ (किसी विशिष्ट समय पर) अंधा किया हुआ [illegible] हिरण्यरेतसा [illegible] मदान्ध नशे में अंधा, इसी प्रकार दर्पान्ध, क्रोधान्ध 2 अंधा बनाने वाला, दृष्टि को रोकने वाला, नितान्त पूर्ण अंधकार [illegible] 3 [illegible] **धम्** 1 अंधेरा 2 [illegible] जल। सम० **कार** अंधेरा (शब्द० और आल०) काम, मदन [illegible] चक्षु [illegible] सम्मिलित हो जाता है। **कूप** 1 कुआँ जिसका मुँह ढँका हुआ होता है, ऐसा कुआँ [illegible] ऊपर घास उगी हुई हो 2 एक नरक का नाम —**तमसम् —तामसम् अन्धातमसम्** [illegible] **तामिस्र**, **—स्रम् तामिस्रम्** [illegible] घोर [illegible] [illegible] **पूतना** राक्षसी [illegible] मानी जाती है।

अन्धकरण (वि०) [illegible]

अन्धभविष्णु, —भावुक (वि०) [illegible] होने वाला।

अन्धक [illegible] अंधा—**क:** [illegible] और [illegible] के द्वारा मारा गया था। सम० **अरि**, **रिपु** —**शत्रु**, **घाती** [illegible] अन्धक को मारने वाला [illegible] की उपाधि **वर्ग** [illegible] **वृष्णि** पु० [illegible] अन्धक और वृष्णि के वंशज।

अन्धस् (न०) अद + असुन् [illegible] भोजन [illegible]।

अन्धिका [अन्ध + [illegible]] 1 रात्रि 2 एक प्रकार का खेल, आँखमिचौनी, जुआ 3 आँख का रोग।

अन्धु [अन्ध + कु] कुआँ।

अन्ध्र [अन्ध् + रक्] 1 एक देश का नाम, उसके निवासी 2 [illegible] का नाम 3 [illegible] वर्ण का पुरुष।

अन्नम् [अद् + क्त, अन्न [illegible]] 1 आहार, भोजन [illegible] आत्मा [illegible] सूप। सम० **अन्नम्** [illegible] भोजन [illegible] **आच्छादनम्** भोजन और [illegible] **काल** भोजन करने का समय। **किट्ट** [illegible] **कूट** भात का ढेर। **कोष्ठक** 1 खत्ती, अनाज की कोठी 2 विष्णु 3 सूर्य। **गंधि** पेचिश बच्चों की बीमारी

– जलम् अन्न और जल, –दासः भोजन मात्र पाकर सेवा करने वाला दास या नौकर, –देवता आहार की सामग्री की अधिष्ठात्री देवी, –दोष निषिद्ध भोजन के खाने से उत्पन्न पाप, –द्वेष, भोजन में अरुचि, भूख का अभाव, –पूर्णा दुर्गा देवी का एक रूप (अर्थात् सम्पन्नता की देवी), –प्राशः, –प्राशनम् १६ संस्कारों में से एक संस्कार जबकि नवजात बालक को पहली बार विधिवत् भोजन देने का क्रिया सम्पन्न किया जाता है, यह संस्कार ५ से ८ महीने के मध्य (प्रायः छठे मास में) मनु० २।३४ किया जाता है, –ब्रह्मन्, –आत्मन् (पुं०) आहार का प्रतिनिधित्व करने वाला ब्रह्म, –भुज् (वि०) भोजन करने वाला, शिव की उपाधि, –मय (वि०) दे० नीचे, –मलम् 1 विष्ठा 2 [illegible] –रसः भोजन के रस [illegible] –रक्ष आहार [illegible] –वस्त्रम्, –आच्छादनम् नपुं० –व्यवहार [illegible] सबंधी प्रथा या विधि अर्थात् दूसरों के साथ मिलकर खाना या न खाना, –शेष जूठन, उच्छिष्ट, –संस्कार देवताओं के निमित्त अन्न का समर्पण।

अन्नमय (वि०, स्त्री०—यी) अन्न [illegible] अन्न से बना पदार्थ, –कोशः, –कोषः भौतिक शरीर, स्थूलशरीर जो अन्न पर ही आधारित है तथा जो कि आत्मा का पांचवां वस्त्र या परिधान है, [illegible] स्थूलतम तथा निम्नतम रूप [illegible] आपको सांसारिक सत्ता के रूप में [illegible] माना जाता है, –मय अन्न की बहुतायत।

अन्य (वि०) [नपुं० –अन्यत्] 1 दूसरा, भिन्न, और सामान्यतः दूसरा और [illegible] भर्तृ० [illegible] 2 अपेक्षाकृत दूसरा, से भिन्न, की अपेक्षा और (अपा० के साथ, बहुव्रीहि समास में अन्तिम पद) [illegible] [illegible] का० ३२, [illegible] कर्माण्यो न [illegible] रघु० १२।७९ ३ अनोखा, असाधारण, विशेष [illegible] मानस प्रवृत्ति [illegible] दे० नी० [illegible] अन्यत्त्व [illegible] इसके [illegible] साथ [illegible] का प्रयोग [illegible] एक अन्य [illegible] दूसरा [illegible] ७८ दे० [illegible] के नीचे भी अन्य-अन्य और नी० अन्यस्मात् अन्यविवरणे—मुद्रा० ५ [illegible] अन्य अन्य-अन्य आदि पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि।

—असाधारण (वि०) जो दूसरों के प्रति साधारण न हो, विशेष, –उदर्य (वि०) दूसरे से उत्पन्न (–र्य:) सौतेली माता का पुत्र, अर्धभ्राता (–र्या) अर्ध-भगिनी, –ऊढा (वि०) दूसरे से विवाहित, दूसरे की पत्नी, –क्षेत्रम् 1. दूसरा खेत 2. दूसरा देश या विदेश 3 दूसरे की पत्नी, –ग, –गामिन् (वि०) 1 और के पास जाने वाला 2 व्यभिचारी, लम्पट, –गोत्र (वि०) दूसरे कुल या वंश का, –चित्त (वि०) किसी और पदार्थ पर ध्यान लगाने वाला दे० °मनस्, –ज, –जात (वि०) भिन्न कुल में उत्पन्न, –जन्मन् (नपुं०) दूसरा जीवन, पुनर्जन्म, आवागमन, –दुर्वह (वि०) जो दूसरे को सहन न कर सके, –देवत, –दैवत्य (वि०) दूसरे किसी देवता को समर्पित करने वाला या मंत्र द्वारा उल्लेख करने वाला, –नाभि (वि०) किसी दूसरे कुल से सम्बन्ध रखने वाला, –पदार्थ 1 दूसरी वस्तु 2. दूसरे शब्द का भाव, °प्रधानो बहुव्रीहिः बहुव्रीहि समास निश्चित रूप से अन्यपदार्थप्रधान होता है – पर (वि०) 1 दूसरे का भक्त 2 किसी दूसरे का उल्लेख करने वाला, –पुष्ट, –भृत, –भृत जो दूसरे से पाला हुआ हो [illegible] जो कि कौवे के द्वारा [illegible] समझी जाती है अतएव 'अन्यभृत्' कहलाती है [illegible] कु० [illegible] कलमन्य-भृतासु भाषितम् रघु० [illegible] –पूर्वा 1 वह स्त्री जिसका वाग्दान किसी और के साथ हो चुका है 2 पुनर्विवाहित विधवा, –बीज, –बीजसमुद्भव, –समुत्पन्न गोद लिया हुआ पुत्र (दूसरे माता पिताओं से उत्पन्न) जो कि औरस पुत्र के अभाव में गोद लिया जा सके, –भृत (पुं०) कौआ (दूसरों को पालने वाला), –मनस्, –मनस्क, –मानस (वि०) 1 असावधान 2 [illegible] अस्थिर, –मातृजः अर्धभ्राता (दूसरी मां से [illegible]), –रूप (वि०) परिवर्तित या बदले हुए रूप [illegible] –लिङ्ग, –लिङ्गक (वि०) दूसरे शब्द के लिंग वाला अर्थात् [illegible] विशेषण, –वाप [illegible] –विवर्धित (वि०) [illegible] –संगम [illegible] रति क्रिया अवैध मैथुन, –साधारण (वि०) बहुतों के लिए सामान्य, –स्त्री दूसरे की पत्नी, जो अपनी पत्नी न हो [illegible] [illegible] —स्वीया अन्या साधारणी [illegible] किसी दूसरे की पत्नी [illegible] अथवा अविवाहित कन्या जो [illegible] दूसरे की [illegible] [illegible] [illegible] होती है [illegible] ० [illegible]) या व्यभिचारी।

अन्यक – अन्य।

अन्यतम (वि०) [अन्य + डतमच्] सर्व शब्द की भांति कारक रूप] बहुतों में से एक, बहुत संख्या में से कोई एक

अन्यतर (वि०) [अन्य + डतरच्] (सर्व नाम की भांति रूप)

दो में से (पुरुष या पदार्थ) एक, दोनों में से कोई सा एक (संब० के साथ), सत परीक्षान्यतरस्मुखन्ते - मालवि० १।२ अन्यतरस्याम् (°रा का अधि० ए० व०) किसी तरह, दोनों तरह, इच्छानुरूप।

अन्यतरतः (क्रि० वि०) [अन्यतर + तसिल्] दो में से एक ओर।

अन्यतरेद्युः (अव्य०) [अन्यतरस्मिन्नहनि अन्यतर + एद्यु नि०] दो में से किसी एक दिन, एक दिन दूसरे दिन।

अन्यतः (अव्य०) [अन्य + तसिल्] 1 दूसरे से 2. एक ओर, अन्यतः अन्यतः, एकतः - अन्यतः एक ओर दूसरी ओर, तपनमण्डलदीपितमेकतः सततनैश-तमोवृतमन्यतः कि० ५।२, 3 किसी दूसरे कारण या प्रयोजन से।

अन्यत्र (अव्य०) [अन्य + त्रल्] (प्राय = अन्यस्मिन् संज्ञा या विशेषण के बल से) 1. और जगह, दूसरे स्थान पर 2. किसी दूसरे अवसर पर 3 सिवाय, के बिना 4 अन्यथा, दूसरी अवस्था में।

अन्यथा (अव्य०) [अन्य + थाल्] 1 वरना दूसरी रीति से भिन्न तरीके से यदमावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा - हि० १ अन्यथा-अन्यथा एक प्रकार से दूसरे ढंग से, अन्यथाकृ दूसरी तरह करना, परिवर्तन करना बदलना, बिगाड़ना मिथ्या करना - त्वया कदाचिदपि मम वचन नान्यथाकृतम् पच० ४, 2 नहीं तो, वरना, इसके विपरीत अव्यक्त नास्ति कथमन्यथा वासन्त्यपि ता न पश्येत् —उत्तर० ३, 3. इसके विपरीत 4. मिथ्यापन से, झूठपने से - किमन्यथा भट्टिनी मया विज्ञापितपूर्वा —विक्रम० २ 5 गलती से, भूल से, बुरे ढंग से जैसा कि अन्यथा सिद्ध दे० नीचे। सम० —अनुपपत्तिः (स्त्री०) दे० अर्थापत्ति, कारः परिवर्तन अदल बदल, (—कारम्) [क्रि० वि०] भिन्न तरीके से भिन्न ढंग से—पा० ३।४।२७ ख्यातिः (स्त्री०) शक्ति की गलत अवधारणा, सामान्य रूप से (दर्शन शास्त्र में) मिथ्या अवधारणा,—भाव अदलबदल परिवर्तन, भिन्नता,—वादिन् (वि०) भिन्न रूप से या मिथ्या बोलने वाला, (विधि में) अपलापी साक्षी —वृत्ति (वि०) 1 परिवर्तित 2. बदला हुआ 3 भावा विष्ट, सबल संवेगों से विक्षुब्ध, - मेघ० ३, -सिद्ध (वि०) जो मिथ्या ढंग से प्रदर्शित या प्रमाणित किया गया हो, (न्याय में) उस कारण को कहते हैं जो सत्य न हो, तथा जो केवल मात्र आकस्मिक एवं दूरगामी परिस्थितियों का उल्लेख करे,—सिद्धम्,— सिद्धि (स्त्री०) मिथ्या प्रदर्शन, अनावश्यक कारण, आक-स्मिक या केवल मात्र सहवर्ती परिस्थिति —भाषा० प० १६,—स्तोत्रम्—व्यंग्योक्ति, ताना, व्यंग्य।

अन्यदा (अव्य०) [अन्य + दा] 1. किसी दूसरे समय, दूसरे अवसर पर, किसी दूसरे मामले में अन्यदा भूषणं पुंसां क्षमा लज्जेव योषिताम् शि० २।४४, रघु० ११।७३, 2. एक बार एक समय पर, एक अवसर पर, 3. किसी समय।

अन्यदीय (वि०) [अन्यदा + छ] 1 किसी दूसरे से संबंध रखने वाला 2. दूसरे में रहने वाला।

अन्यर्हि (अव्य०) [अन्य + र्हिल्] किसी दूसरे समय (अन्यदा)।

अन्यादृश्--श् श (वि०) [अन्य इव पश्यति अन्यदृश् कर्म विवन कञ्, वा आत्वम् च] परिवर्तित असा धारण अनोखा।

अन्याय (वि०) [न० ब०] न्यायरहित अनुपयुक्त, -य 1 कोई न्याय रहित या अवैधकृत्य—दे० न्याय, अन्यायेन अन्याय के साथ, अनुचित ढंग से 2 न्याय का अभाव औचित्य का अभाव 3 अनियमितता।

अन्यायिन् (वि०) [अन्याय + णिनि] न्यायरहित अनुचित।

अन्याय्य (वि०) [न० त०] 1 न्याय रहित अवैध 2 अनुचित अशोभनीय 3 अप्रामाणिक।

अन्यून (वि०) [न० त०] दोषरहित त्रुटिहीन पूर्ण समस्त सकल अधिक न परिपूर्ण न आवश्यकता से अधिक। सम० अंग (वि०) निर्दोष अंगों वाला।

अन्येद्युः (अव्य०) [अन्य + एद्युस् नि०] 1 दूसरे दिन अगले दिन अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं जिज्ञासमाना रघु० २।२६ 2 एक दिन एक बार।

अन्योन्य (वि०) [अन्य कर्मव्यतिहारे द्वित्वम्, पूर्वपदे सुश्च] एक दूसरे को परस्पर (सर्वनाम की भांति) प्राय समस्त पदों में, कलह पारस्परिक झगड़ा इसी प्रकार बल, न्यम् (अव्य०) आपस में। सम० अभाव पारस्परिक सत्ता का न होना, अभाव के दो प्रकारों में से एक, ('भेद' का समानार्थक) आश्रय (वि०) आपस में एक दूसरे पर निर्भर (-यः) आपस में या बदले की निर्भरता कार्यकारण का (न्याय में) इतरेतर संबंध, —उक्तिः (स्त्री०) वार्तालाप —भेदः पारस्परिक द्वेष या शत्रुता,—विभाग साझीदारों द्वारा रिक्थ का पारस्परिक विभाजन (बिना किसी और पक्ष के सम्मिलित हुए), वृत्ति (स्त्री०) किसी वस्तु का एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव, व्यतिकरः, - संश्रय इतरेतर क्रिया या प्रभाव, कार्य कारण का पारस्परिक संबंध।

अन्वक्ष (वि०) [अनुगत अक्षाणाम् इन्द्रियम् प्रा० स०] 1 दृश्य 2 तुरन्त बाद में आने वाला, क्षम् (अव्य०) 1 बाद में, पश्चात् 2 तुरत बाद में, सामने, पीछे-पा० ३।२१।

अन्वक् (अव्य०) [अनु + अञ्च् + क्विप् अनु० प्रा० स०] 1 बाद में, 2 पीछे से 3. मैत्रीभाव में अनुकूल, अनुकूल

रूप में, अन्वक्कृत्वा, -कारम्,— आगे से विनम्रतापूर्वक व्यवहृत होना 4 (कर्म० के साथ) पश्चात् ताम् अन्वगयो मध्यमलोकपाल: रघु० २।१६।

अन्वञ्च् (वि०) [अनु+अञ्च्+क्विप्] पीछे आने वाला पीछा करने वाला, अव्यय पीछे की ओर, पीछे से।

अन्वय: [अनु+इ+अच्] 1 पीछे जाना, अनुगमन, अनुगामी परिजन, सेवकवर्ग का त्वमेकाकिनी मोह निरन्वयवने वने भट्टि० ५।६६ 2 साहचर्य, मेलजोल संबंध 3 वाक्य में शब्दों का स्वाभाविक क्रम या संबंध, व्याकरण विषयक क्रम या संबंध,-तात्पर्याख्यां वृत्तिमाहु: पदार्थान्वयबोधने सा० द० शब्दों का युक्तियुक्त संबंध 4 तात्पर्य अभिप्राय प्रयोजन 5 जाति कुल वंश रघूणामन्वयं वक्ष्ये रघु० १।९ १२।६ 6 वंशज पीढ़ी बाद में आने वाली सन्तान ताम्र ... अन्वय या० १।११७ 7 कार्यकारण का तर्कसंगत संबंध तर्कसंगत नैरन्तर्य अन्वयात्मकस्य यता... भाग० ८ (न्या० में) [हेतुसाध्ययोः व्याप्तिरन्वयः] भारतीय अनुमितिवाद में साध्य और हेतु की सतत तथा अपरिवर्त्य सहवर्तिता का वर्णन। सम० **आगत** (वि०) आनुवंशिक, ... वंशावली प्रणेता रघु० ६।८ **व्यतिरेक:** (द्वौ या 'कम) 1 विधायक और निषेधात्मक प्रतिज्ञा, सहमति और वैपरीत्य अर्थात् भिन्नता 2 नियम और अपवाद, **व्याप्ति:** (स्त्री०) स्वीकारात्मक प्रतिज्ञा या सहमति अंगीकारसूचक सामान्यपद।

अन्वर्थ (वि०) [अनुगत: अर्थम् प्रा० स०] शब्द की व्युत्पत्ति के द्वारा हो जिसका अर्थ आसानी से जाना जा सके, भाव के अनुकूल, सार्थक तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात् -रघु० ४।१२, अन्वर्था नैवसुन्धरा कि० ११।६४। सम० **ग्रहणम्** शब्द के अर्थ को शब्दश: स्वीकार करना (विप० रूढ़) **संज्ञा** 1 उपयुक्त नाम एक पारिभाषिक नाम जो अपना अर्थ स्वयं प्रकट करता है 2 यथार्थ नाम जिसका अर्थ स्पष्ट है।

अन्ववकिरणम् [अनु+अव+कृ+ल्युट्] क्रमपूर्वक चारों ओर बखेरना।

अन्ववसर्ग: [अनु+अव+सृज्+घञ्] 1 शिथिल करना 2 इच्छानुसार व्यवहार करने देना कामचारानुज्ञा, 3 स्वेच्छाचारिता।

अन्ववसित [अनु+अव+सो+क्त] (वि०) संयुक्त संबद्ध बंधा हुआ।

अन्ववाय: [अनु+अव+अय्+घञ्] जाति, कुल, वंश।

अन्ववेक्षा [अनु+अव+ईक्ष्+अङ्+टाप्] लिहाज विचार।

अन्वष्टका [अनुगता अष्टकाम् प्रा० स०] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा के पश्चात् आने वाले पौष, माघ और फाल्गुन के कृष्णपक्ष की नवमी।

अन्वष्टक्यम् [अन्वष्टका+यत्] अन्वष्टका के दिन होने वाला श्राद्ध या ऐसा ही कोई दूसरा अनुष्ठान।

अन्वष्टमदिशम् (अव्य०) [प्रा० स०] उत्तर पश्चिम दिशा की ओर।

अन्वहम् (अव्य०) [अनु+अहम् प्रा० स०] दिन-ब-दिन, प्रति दिन।

अन्वाख्यानम् [अनु+आ+ख्या+ल्युट्] बाद में उल्लेख करना, या गिनना, पूर्वोक्त का उल्लेख करते हुए व्याख्या करना।

अन्वाचय: [अनु+आ+चि+अच्] 1 प्रधान कार्य का कथन करके गौण कार्य की उक्ति मुख्य पदार्थ के साथ गौण पदार्थ का जोड़ना 'च' निपात का एक अर्थ— भो भिक्षामट गां चानय -यहां पर भिक्षुक के प्रधान कार्य —(भिक्षार्थ बाहर जाने) के साथ एक गौणकार्य (गाय का ले आना) भी जोड़ दिया गया है 2 इस प्रकार का स्वयं एक पदार्थ।

अन्वाजे (अव्य०) [अनु+आजि+डे] ('उपाजे' की भांति इसका प्रयोग 'कृ' के साथ होता है) दुर्बल की सहायता करना (यह विकल्प से उपसर्ग समझा जाता है) °कृत्य, या °कृत्वा।

अन्वादिष्ट (वि०) [अनु+आ+दिश्+क्त] 1 बाद में या के अनुसार, कहा हुआ, पुन: काम पर लगाया हुआ 2 घटिया, गौण महत्त्व का।

अन्वादेश: [अनु+आ+दिश्+घञ्] एक कथन के पश्चात् दूसरा कथन पूर्वोक्त की पुनरुक्ति।

अन्वाधानम् [अनु+आ+धा+ल्युट्] अग्निहोत्र की अग्नि में समिधाएँ रखना।

अन्वाधि: [अनु+आ+धा+कि] (व्यवहारविधि में) 1 जमानत किसी तीसरे व्यक्ति के पास धरोहर या प्रतिभूति जमा करना जिससे कि समय पर वह यथार्थ स्वामी को सौंपी जा सके 2 दूसरी धरोहर 3 अनवरत चिन्ता खेद, पश्चात्ताप।

अन्वाधेयम्-यकम् [अनु+आ+धा+यत् स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का स्त्री-धन जो विवाह के पश्चात् पितृकुल या पतिकुल की ओर से या उसके अपने संबंधियों की ओर से उपहार स्वरूप दिया जाय—विवाहात्परतो यत्तु लब्धं भर्तृकुलात्स्त्रिया, अन्वाधेयं तु तद्द्रव्यं लब्धं पितृ (बन्धु) कुलात्तथा।

अन्वारम्भ: —भणम् [अनु+आ+रभ्+घञ्, ल्युट् वा मुम् च] स्पर्श, संपर्क, विशेषतया यजमान (यज्ञ का अनुष्ठाता) को पुनीत संस्कार के सुफल का अधिकारी बनाने के लिए स्पर्श करना।

अन्वारोहणम् [अनु+आ+रुह्+ल्युट्] स्त्री का अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना।

अन्वासनम् [अनु + आस् + ल्युट्] 1. सेवा, परिचर्या, पूजा 2. दूसरे के पीछे आसनग्रहण करना 3. खेद, शोक।

अन्वाहार्य: (—र्यक:), —र्यकम् [अनु + आ + हृ + ण्यत् स्वार्थे कन्] पितरों के सम्मान में अमावस्या के दिन किया जाने वाला मासिक श्राद्ध।

अन्वाह्निक (वि०) [स्त्री०—की] दैनिक, प्रतिदिन का।

अन्वाहित=तु० अन्वाधेय।

अन्वित (वि०) [अनु + इ + क्त] 1 अनुगत, अनुष्ठित, सहित युक्त 2 अधिकार प्राप्त, रखने वाला, आहत, प्रभावित (करण के साथ या समास में) 3 संयुक्त, जोड़ा हुआ, क्रमागत 4 व्याकरण की दृष्टि से संयुक्त। सम० - अर्थ (वि०) प्रकरण से ही जिसके अर्थ आसानी से समझ में आ सकें, - अभिधानवाद: अन्विताभिधानवाद: मीमांसकों का एक सिद्धांत जिसके अनुसार वाक्य में शब्दों का अर्थ सामान्य या स्वतंत्र रूप से नहीं होता, बल्कि किसी विशेष वाक्य में एक दूसरे से संबद्ध होकर शब्द का जो अर्थ निकलता है, वही होता है। दे० काव्य० २, अभिहितान्वयवाद भी यही सिद्धान्त है।

अन्वीक्षणम्—णा [अनु + ईक्ष् + ल्युट्, अच् वा] 1 खोज, ढूंढना, गवेषणा 2 प्रतिबिंब।

अन्वीत =तु० अन्वित।

अन्वृचम् (अव्य०) [प्रा० स०] एक ऋचा के पश्चात् दूसरी ऋचा।

अन्वेष:—षणम्—णा [अनु + इष् + घञ्, ल्युट् वा, स्त्रियां टाप्] ढूंढना, खोजना, देखभाल करना - अथ तस्यान्वेषणान्मधुकर हृता —श० १।२४, रघ्वान्वेषणदक्षाणा द्विषा रघु० १२।११।

अन्वेषक, अन्वेषिन्, अन्वेष्टृ (वि०) [अनु + इष् + ण्वुल्, णिनि, तृच् वा] ढूंढने वाला, खोजने वाला, पूछ ताछ करने वाला।

अप् (स्त्री०) [आप् + क्विप् + ह्रस्वश्च] (परिनिष्ठित भाषा में केवल ब० व० में ही रूप होते हैं यथा आप:, अप:, अद्भि: अद्भ्य: २ अपाम्, अप्सु, परन्तु वेद में एक वचन और द्विवचन भी होते हैं) पानी, तानि चैव स्पृशेदद्भिः —मनु० २।६०, पानी बहुधा सृष्टि के पाँच तत्त्वों में सब से पहला तत्त्व समझा जाता है यथा—अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् मनु० १।८, श० १।१ परन्तु मनु० १।७८ में बतलाया गया है—कि मन, आकाश, वायु और ज्योति अथवा अग्नि के पश्चात् तेजस् या ज्योतिस् से जलों की उत्पत्ति हुई। सम०—चर: जलचर, जलीय जन्तु, —पति: 1 जल का स्वामी वरुण 2 समुद्र, दूसरे समस्त पदों को शब्दों के अन्तर्गत देखो।

अप (अव्य०) 1. (धातु के साथ जुड़कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है)—(क) से दूर, अपयाति अपनयति (ख) ह्रास,—अपकरोति-बुरी तरह से या गलत ढंग से करता है (ग) विरोध, निषेध, प्रत्याख्यान - अपकर्षति अपचिनोति (घ) वर्जन - अपवह, अपवद् (प्रेर०), 2. सं० और ब० स० का प्रथम पद होने पर इसके उपर्युक्त सभी अर्थ होते हैं—अपयानम्, अपशब्द: - एक बुरा या भ्रष्ट शब्द,—भी निडर, अपराग: असन्तुष्ट (विप० अनुराग), अधिकांश स्थानों पर अप को निम्न प्रकार से अनूदित कर सकते हैं 'बुरा' 'घटिया' 'भ्रष्ट' 'अशुद्ध' अयोग्य' आदि 3. पृथक्करणीय अव्यय (अपा० के साथ) के रूप में - (क) से दूर - यत् प्रत्यब्लोकेभ्यो लक्ताया वर्षासिभूबेत् भट्टि० ८।८७ (ख) के बिना, के बाहर अपहरे संसार सिद्धा० (ग) के अपवाद के साथ, सिवाय अप त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देव सिद्धा०, के बाहर, को छोड़कर इन वाक्यों में 'अप' के साथ क्रि० वि० (अव्ययीभाव समास) भी बनते है - अपविष्णु संसार —बिना विष्णु के, अपत्रिगर्तवृष्टो देव अर्थात् त्रिगर्त को छोड़कर अप निषेध और प्रत्याख्यान को भी जतलाता है - अपकाम, शकम्।

अपकरणम् [अप + कृ + ल्युट्] 1 अनुचित रीति से कार्य करना 2. अनुपयुक्त काम करना, चोट पहुचाना, दुर्व्यवहार करना, कष्ट पहुँचाना।

अपकर्तृ (वि०) [अप + कृ + तृच्] हानिकारक कष्टदायक, (पु०—र्ता) शत्रु।

अपकर्मन् [प्रा० स०] 1 ऋण से निस्तार 2 ऋणापाकरण, दत्तस्यानपकर्म च मनु० ८।४, 2 अनुचित, अनुपयुक्त कार्य दुष्कर्म, दुष्कार्य 3. दुष्टता हिंसा, उत्पीडन।

अपकर्ष: [अप + कृष् + घञ्] 1 (क) नीचे की ओर खींचना, कम करना घटाना, हानि, नाश —तेजोऽपकर्ष वेणी० १, ह्रास (ख) अनादर अपमान (सभी अर्थो में विप० उत्कर्ष) 2 बाद में आने वाले शब्दों का पूर्वविचार (व्या० काव्य और मीमांसा आदि में)।

अपकर्षक (वि०) [अप + कृष् + ण्वुल्] कम करने वाला घटाने वाला, मे निकालने वाला दोषास्तस्य (काव्यस्य) अपकर्षका सा० द० १.।

अपकर्षणम् [अप + कृष् + ल्युट्] 1 दूर करना, खींचकर दूर करना या नीचे ले आना, वञ्चित करना, निकाल देना 2. कम करना, घटाना 3. दूसरे का स्थान ले लेना।

अपकार: [अप + कृ + घञ्] 1 हानि, चोट, आघात, कष्ट (विप० उपकार) उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा, उपकारापकारौ हि लक्ष्य लक्षणमेतयो: —शि० २।३७, अपकारोऽप्युपकारायैव संवृत्त 2. दूसरे का बुरा चिन्तन, दूसरे को चोट पहुँचाना 3. दुष्टता,

हिंसा, उत्पीडन 4. गिरा हुआ, नीच कर्म। सम० अर्थिन् (वि०) द्वेषी, दुरात्मा, गिर् (स्त्री०—गीः) शब्दः गालियाँ, भर्त्सना दायक तथा अपमानजनक शब्द।

अपकारक, कारिन् (वि०) [अप + कृ + ण्वुल् णिनि वा] क्षति पहुँचाने वाला, अनिष्टकारी, कष्टप्रद, अहितकारी पंच० १।१९५, शि० २।३७—कः, दो बुरा करने वाला।

अपकृति - तु० अपकार, इसी प्रकार **अपक्रिया** आघात, चोट, अनिष्ट, कुकृत्य, ऋणपरिशोध।

अपकृष्ट (वि०) [अप + कृष् + क्त] 1 खींच कर दूर किया गया, दूर हटाया गया 2. नीच, कमीना अधम (विप० उत्कृष्ट) न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते श० ५।१०, —ष्टः कौवा।

अपकौशली समाचार, सूचना

अपक्ति (स्त्री०) [नञ् + पच् + क्तिन्] 1 कच्चापन, परिपक्वता का अभाव 2. अपच, अजीर्ण।

अपक्रमः [अप + क्रम् + घञ्] 1 दूर चले जाना, पलायन पीठ दिखाना, 2. (समय का) बीतना - (वि०) 1 क्रमरहित 2. अनियमित गलत क्रम वाला।

अपक्रमणम्, —क्रामः [अप + क्रम् + ल्युट्, घञ् वा] पीछे मुड़ना, हटना, उड़ान, भागना।

अपक्रोशः [अप + क्रुश् + घञ्] गाली, भर्त्सना।

अपक्ष (वि०) [न० ब०] 1. पंखों से या उड़ान की शक्ति से रहित. 2 किसी पक्ष या दल से संबंध न रखने वाला 3 जिनके मित्र समर्थक न हों 4 निष्पक्ष, पक्षरहित। सम० —पातः निष्पक्षता,—पातिन् वि० पक्षपात रहित।

अपक्षयः [अप + क्षि + अच्] छीजना, ह्रास, नाश।

अपक्षेपः - **क्षेपणम्** [अप + क्षिप् + घञ्, ल्युट् वा] 1 दूर करना या नीचे फेंकना 2 फेंक देना, नीचे रखना, वैशेषिक दर्शन में निर्दिष्ट पांच कर्मों में से एक कर्म, दे० कर्मन्।

अपगंड [अपगि (बैच) कर्मणि गड त्याज्य.] जिसने वयस्कता प्राप्त कर ली है, दे० अपोगंड।

अपगमः —**गमनम्** [अप + गम् + अप्, ल्युट् वा] 1 दूर जाना, हट जाना, वियोग, सजगामा सापगमा.—हि० ४।६५, 2 गिरना, हटना, ओझल होना—पुराणपत्रापगमादनन्तरं—रघु० ३।७, 3. मृत्यु, मरण।

अपगतिः (स्त्री०) [अप + गम् + क्तिन्] दुर्भाग्य।

अपगरः [अप + गॄ + अप्] 1. निंदा, भर्त्सना 2. निन्दक, भर्त्सक।

अपगर्जित (वि०) [अप + गर्ज + क्त] (बादल की भाँति) गर्जनाशून्य।

अपचयः [अप + चि + अच्] 1. न्यूनता, कमी, ह्रास, छीजन, गिरावट (आलं० भी)—अर्थापचय—दश० १६०, 2. नाश, असफलता, दोष।

अपचरितम् [अप + चर् + क्त] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म आहोस्वित् प्रसवो ममापचरितैर्विष्टम्भितो वीरुधाम् - श० ५।९।

अपचारः [अप + चर् + घञ्] 1 प्रस्थान, मृत्यु—सिद्धयोपदेशकालकापचार निर्भिन्न - दश० ७२, 2 कमी, अभाव 3 दोष अपराध, दुष्कर्म, दुराचरण, जुर्म -राजन्प्रजासु ते कश्चिदपचार: प्रवर्तते—रघु० १५।४७ 4 हानिकर या कष्टप्रद आचरण, क्षति 5 दोष या कमी—नापचारमगमन् क्वचित्क्रिया —शि० १४।३२, 6 अस्वास्थ्यकर या अपथ्य—ॠ पापवातोऽपि परिन्नाविकृतांपक्षि, असाध्य कुरुते कोप प्राप्ते काले गदो यथा। शि० २।८४, (यहाँ अ' भी आघात या क्षति का अर्थ रखता है)।

अपचारिन् (वि०) [अप + चर् + णिनि] कष्ट पहुँचाने वाला, दुष्कर्म करने वाला, दुष्ट, बुरा।

अपचितिः (स्त्री०) [अप + चि + क्तिन्] 1 हानि, छीजन नाश 2 व्यय 3 प्रायश्चित्त, सम्पूर्ति, पाप का प्रायश्चित्त 4 सम्मानन पूजन, आदर प्रदर्शन पूजा—विहितापचितिर्महीभृता शि० १६।९ (इसका अर्थ 'हानि' और 'नाश' भी है)।

अपच्छत्र (वि०) [ब० स०] बिना छाते के, छतरी के बिना।

अपच्छाय (वि०) [ब० स०] 1 छायारहित 2 चमकरहित, धुंधला - यः जिसकी छाया न होती हो, अर्थात् परमात्मा तु० नै० १४।२१, श्रिय भजन्ता कियदस्य देवाश्छाया नलस्यास्ति तथापि नैषाम्, इतीरयन्तीव तया निरैक्षि सा (छाया) नैषधेन त्रिदशेषु तेषु।

अपच्छेदः - **छेदनम्** [अप + छिद् + घञ्, ल्युट् वा] 1 काट कर दूर कर देना, 2. हानि 3 बाधा।

अपजयः [अप + जि + अच्] हार, पराजय।

अपजातः [अप + जन् + क्त] कुपुत्र, जो गुणों की दृष्टि से माता पिता से हीन हो -मातृतुल्यगुणो जातस्त्वनुजात पितु समः, अतिजातोऽधिकस्तस्मादपजातोऽधमाधम —सुभा०:

अपज्ञानम् [अप + ज्ञा + ल्युट्] मुकरना, गुप्त रखना।

अपञ्चीकृतम् [न० त०] जिसका पचीकरण न हुआ हो, पंचमहाभूतों का सूक्ष्म रूप।

अपटी [अल्पः पट पटी—न० त०] 1 कपड़े का पर्दा या दीवार विशेष रूप से 'कनात' जो तम्बू को चारों ओर से घेर लेती है 2 पर्दा। सम० —**क्षेपः** (अपटाक्षेप:) पर्दे के एक ओर गमन, °क्षेपेण (= अकस्मात्) जल्दी से पर्दे को एक ओर करके, (यह शब्द बहुधा रंगमंच के निदेशार्थ प्रयुक्त होता है तथा भय, उतावली या घबराहट के कारण हड़बड़ाहट के

साथ पात्र के प्रवेश को प्रकट करता है जैसा कि बिना किसी भूमिका (तत प्रविशति आदि) के, पात्र अकस्मात् पर्दे को उठा कर प्रविष्ट होता है)।

अपटु (वि०) [न० त०] 1 अनिपुण अदक्ष मंदबुद्धि भोंदू, 2 जो बोलने में चतुर न हो 3 रोगी।

अपठ (वि०) [न० त० नञ् + पठ् + अच्] पढ़ने में असमर्थ, न पढ़ने वाला, कुपाठक तु०, 'अपच्'।

अपण्डित (वि०) [न० त०] 1 जो विद्वान् या बुद्धिमान् न हो, मूर्ख, अनाड़ी—विभूषणं मौनमपण्डितानाम् भर्तृ० नी० ७, 2 जिसमें कुशलता, रुचि तथा गुणों की सराहना करने का अभाव हो।

अपण्य (वि०) [न० त०] जो बिक्री के लिए न हो — जीविकार्थे चापण्ये—पा० ५।३।९९।

अपतर्पणम् [अप + तृप् + ल्युट्] 1 उपवास रखना (रुग्णावस्था में) 2 तृप्ति का अभाव।

अपतानक [अप + तन् + ण्वुल्] एक प्रकार का रोग जिसमें अकस्मात् मूर्छा आती है, दौरे पड़ते हैं तथा पेशियों में सिकुड़न होती है।

अपति,–तिक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वामी न हो जिसका पति न हो, अविवाहित।

अपत्नीक (वि०) [न० ब०] जिसकी पत्नी न हो।

अपतीर्थम् [प्रा० स०—अपकृष्टं तीर्थम्] बुरा तीर्थस्थान।

अपत्यम् [न पतन्ति पितरोऽनेन —नञ् + पत् + यत्] 1 सन्तान, बच्चे, प्रजा, संतति (मनुष्यों की और पशुओं की), बेटा या बेटी, एक ही कुल में उत्पन्न पुत्र पौत्र तथा प्रपौत्र आदि —अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् पा० ४।१।१६२ —अपत्यैरिव नीवारभागधेयोचितैर्मृगैः रघु० १।५०, 2. अपत्यवाचक प्रत्यय। सम० —काम (वि०) सन्तान का इच्छुक —पथ योनि प्रत्यय अपत्यवाची प्रत्यय, —विक्रयिन् (वि०) सन्तान का विक्रेता वह पिता जो धन के लालच से अपनी कन्या को भावी जामाता के हाथ बेच देता है —शत्रु 1 केंकड़ा 2 साँप।

अपत्रप (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज बहया —पा —लज्जा, हया।

अपत्रपिष्णु (वि०) [अप + त्रप + इष्णुच्] शर्मीला, लजीला।

अपत्रस्त (वि०) [अप + त्रस् + क्त] डरा हुआ भयभीत तरंगापत्रस्त तरंगों से किंचित भीत।

अपथ (वि०) [न० ब०] मार्गरहित बिना सड़क के —थम् (अपन्थाः) [न० त०] जो मार्ग न हो मार्ग का अभाव कुमार्ग (शाब्द०) (आलं०) नैतिक अनियमितता या स्खलन, कुमार्ग या कुमार्ग अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः रघु० १।७४, । सम० —गामिन् (वि०) कुमार्ग पर चलने वाला, विधर्मगामी।

अपथ्य (वि०) [न० त०] 1 अयोग्य अनुचित, असंगत दूषित अकार्यं कार्यसंकाशमपथ्यं पथ्यसंमितम् रा० 2 (आयु० में) अस्वास्थ्यकर रोगजनक (जैसा कि भोजन पथ्यापथ्य) सन्तापयति कमपथ्यभुजं न रोगाः हि० ३।११७, 3 बुरा दुर्भाग्यपूर्ण। सम० —कारिन् (वि०) कष्टप्रद।

अपद [न० ब०] बिना पैर का —दम् [न० त०] 1 आवास या स्थान का अभाव, 2 सदोष स्थान या अनुपयुक्त आवास 3 ऐसा शब्द जिसके साथ अभी विभक्ति चिह्न न जुड़ा हो 4 अन्तरिक्ष। सम० —अन्तर (वि०) संलग्न संसक्त समीपस्थ (—रम्) सामीप्य संसक्तता।

अपदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] बाईं ओर।

अपदम (वि०) [ब० स०] आत्मसंयम से हीन।

अपदश (वि०) [ब० स०] दस की संख्या से दूर।

अपदानम्, दानकम् [अप दा ल्युट् स्वार्थे कन् च] 1 पवित्राचरण मान्य जीवनचर्या 2 उत्तम कार्य सर्वोत्तम कार्य (कदाचित् अवदानम् के स्थान पर) 3 भली भाँति पूर्ण रूप से किया गया कार्य निष्पन्न काम।

अपदार्थ [न० त०] 1 कुछ नहीं सत्ता का अभाव 2 वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ न होना—अपदार्थोऽपि वाक्यार्थं समुल्लसति काव्य० 2।

अपदिशम् (अव्य०) [अव्य० स०] मध्यवर्ती प्रदेश में परिधि के दोनों प्रदेशों के बीच।

अपदेवता [प्रा० स०] पिशाच भूत प्रेत।

अपदेश [अप + दिश् + घञ्] 1 बहाना उपदेश नाम का उल्लेख करते हुए संकेत करना नैव व्याजा यद्दानुरागदश दश० ६० हेत्वपदेशात् प्रतिज्ञाया पुनर्वचनं निगमनम् न्या० सा० 2 बहाना छल कारण अतश्च स्वापदेशान पुनराश्रम सञ्जाय श० ५ रक्षापदेशान्मुनिहोमधेनोः रघु० २।८ 3 कारणों का वर्णन एक प्रस्तुत रचना भारतीय न्याय वाद के पाँच अंगों में से दूसरा अंग (वैश० के अनुसार) 4 निशाना चिह्न 5 स्थान दिशा 6 अस्वीकृति 7 प्रसिद्ध यश 8 छल।

अपद्रव्यम् [प्रा० स०] बुरा द्रव्य बुरी वस्तु।

अपद्वारम् [प्रा० स०] बगल का दरवाजा असली द्वार के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रवेश द्वार।

अपधम (वि०) [ब० स०] जिसमें धर्म न हो धर्मरहित।

अपध्यानम् [प्रा० स०] बुरे विचार आंतरिक चिन्तन मन ही मन कामना।

अपध्वंस [प्रा० स०] अधःपतन गिरावट लाञ्छन। सम० —ज आनुलोम्य प्रतिलोम तथा निम्न जाति से उत्पन्न मनु० १०।४१ ४६।

अपध्वस्त (वि०) [अप + ध्वंस् + क्त] 1 जिसका मथा

अभिशप्त, धृणित 2. अपूर्ण रूप से या बुरी तरह पीसा हुआ, 3 त्यक्त, सम० दुष्ट पाजी जिसमें बुरे भले की समझ न हो।

अपनयः [अप + नी + अच्] 1. ले जाना, हटाना, निराकरण करना 2 दुर्नीति या दुराचरण 3 क्षति, अपकार नय सपत्नावनयनस्मरणानुशयस्फुरा शि० २।१४।

अपनयनम् [अप + नी + ल्युट्] 1 ले जाना हटाना नाति श्रमापनयनाय श० ५।६, 2 आरोग्य देना, इलाज करना 3 ऋण परिशोध कर्तव्य का निर्वाह।

अपनस (वि०) [ब० स०] बिना नाक का—अभिवीक्ष्य मुखमप्यकारणपनसं मुखम् —भर्तृ० ४।३१।

अपनुत्तिः (स्त्री०) [अप नुद क्तिन् घञ् ल्युट् वा] हटाना ले जाना नष्ट करना, प्रायश्चित्त, (पाप का) परिशोधन पापानामपनुत्तये मनु० ११।२१५।
अपनोद-नोदनम्

अपपाठ [प्रा० स०] अशुद्ध पठन, बुरी तरह पढ़ना, पढ़ने में अशुद्धि द्वादशापपाठा अस्य जाता।

अपपात्र (वि०) [ब० स०] सामान्य पात्रों के उपयोग से वंचित नीची जाति का।

अपपात्रित [पात्रभोजनाद् बहिष्कृत अपपात्र + इतच्] किसी बड़े पाप या अपराध के कारण जाति से बहिष्कृत होकर जो अपने संबंधियों के साथ सामान्य पात्रों में खान-पान के योग्य नहीं है।

अपपानम् [अप पा + ल्युट्] अपेय बुरा पेय।

अपपुत (वि०) [ब० स०] जिसके नितंब या कूल्हों की बनावट सुडौल न हो —स्त्री बेडौल कूल्हे।

अपप्रजाता [अपगतः प्रजातो यस्याः ब०स०] वह स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपप्रदानम् [अप प्र + दा ल्युट्] घूस रिश्वत।

अपभय भी (वि०) निडर निर्भय निश्शंक रघु० ३।५१।

अपभरणी [अप + भृ ल्युट् ङीप्] अन्तिम नक्षत्रपुंज

अपभाषणम् [अप भाष ल्युट्] बुरा भला कहना।

अपभ्रंश [अप भ्रंश + घञ्] 1 नीचे गिरना पतन अत्याक्षिपिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा —मा० ४ 2 भ्रष्ट शब्द भ्रष्टाचार (भाषा) अशुद्ध शब्द चाहे वह व्याकरण के नियमों के विपरीत हो और चाहे वह ऐसे अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो जो संस्कृत न हो 3 भ्रष्ट भाषा (काव्य में) अहीरों आदि के द्वारा प्रयुक्त प्राकृत बोली का निम्नतम रूप (शास्त्र में) संस्कृत से भिन्न कोई भी भाषा आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम् काव्यादर्श १।

अपम (स्त्री० में) [अपकृष्ट मीयते मा क बा०] कुतु-

बनुमा में सुई का उत्तर से ठीक पूर्व या पश्चिम की ओर घुमाव क्रान्तिवलय।

अपमर्दः [अप + मृद् घञ्] जो बुहारा जाता है, धूल, गर्दा।

अपमर्शः [अप + मृश + घञ्] छूना चरना।

अपमान [अप + मन् + घञ्] अनादर, सम्मान का न होना लाञ्छन —अपमाने बृहत्पवज्ञानमपमाने च पुष्कलम् पंच० १।६३।

अपमार्ग [अप + मृज् + घञ्] छोटा रास्ता, बगल का मार्ग बुरा रास्ता।

अपमार्जनम् [अप + मार्ज् + ल्युट्] 1 धोकर साफ करना मांजना साफ करना 2 हजामत बनवाना नाखून कटाना।

अपमुख (वि०) [ब० स०] 1 औंधे मुंह वाला 2. विरूप, कुरूप।

अपमूर्धन (वि०) [ब० स०] जिसके सिर न हो, कलेवर अमर०।

अपमृत्यु [प्रा० स०] 1 आकस्मिक या असामयिक मरण दुर्घटना के कारण मृत्यु 2 कोई भारी भय या रोग जिससे कि रोगी (जिसके जीने की आशा न रही हो) आशा के विपरीत स्वस्थ हो जाता है।

अपमृषित (वि०) [अप + मृष + क्त] 1 जो समझ में न आ सके अस्पष्ट जैसे कि कोई वाक्य या वक्तृता 2. जो सह्य न हो जिसे कोई पसन्द न करे विहित मयाद्य सदसीदमपमृषितमच्युतार्चनम् यस्य —शि० १५।४६।

अपयशस् (न० [illegible]) [प्रा० स०] बदनामी कलंक अपकीर्ति—अपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना—भर्तृ० नी० ५५।

अपयानम् [अप या + ल्युट्] दूर जाना वापिस मुड़ना भागना।

अपर (वि०) [न० ब०] (कुछ अर्थों में सर्वनाम की भांति प्रयुक्त होता है) 1 असीमहन्ती बजोड़ तु० अनुत्तम अनन्तर 2 [न० त०] (क) दूसरा अन्य (वि० व नाम की भांति प्रयुक्त) (ख) और अतिरिक्त (ग) दूसरा और (घ) भिन्न अन्य मनु० १।८५ (ङ) तुच्छ मध्यम 3 किसी और से संबंध रखने वाला जो अपना निजी न हो (विप० स्व) 4 पिछला, बाद का दूसरा बाद में (काल और देश की दृष्टि से) (विप० पूर्व), अन्तिम उपरान्त काल निक० जब षष्ठीतत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तब पिछला भाग उत्तरार्ध अर्थ होता है, – दिवस मास का उत्तरार्ध हेमन्त सर्दियों का उत्तरार्ध काय शरीर का पिछला भाग, आदि, वर्षा, शरद बरसात या पतझड़ का उत्तरार्ध, 5 आगामी, अगला 6 पश्चिमी शि० ९।१, कु० १।१ 7 घटिया

निम्नतर, 8. (न्या० में) अविस्तृत, अधिक न ढकने वाला, जब 'अपर' शब्द एक वचन में 'एक' (एक, पहला) के सह संबंधी के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है 'दूसरा, बाद का' एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान् रघु० ५।६०, जब यह ब० व० में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'दूसरे' और इसके सहसंबंधी शब्द प्राय 'एके' 'केचित्' 'काश्चित्' 'अपरे' 'अन्ये' आदि हैं एके समूहुर्बलरेणुसहतिं शिरोभिराज्ञामपरे महीभृत शि० १२।४५, कुछ और, शाखिन केचिदध्यास्थुरन्ये मान्नुसुरपरेऽम्बुधौ, अन्ये त्वलङ्घिषु शैलान् गुहास्त्वन्ये व्यलेषत, केचिदासिषत स्तब्धा भयात्केचिदघूर्णिषु । उदतारिषुरम्भोधिं वानरा सेतुनापरे भट्टि० १५।३१-३३,—र: 1 हाथी का पिछला पैर 2 शत्रु,—रा 1 पश्चिमी दिशा 2 हाथी का पिछला भाग 3 गर्भाशय, गर्भ की झिल्ली 4 गर्भावस्था में रुका हुआ रजोधर्म —रम् 1 भविष्य 2 हाथी का पिछला हिस्सा, —रम् (क्रि० वि०) पुन:, भविष्य में, अपरञ्च इसके अतिरिक्त, अपरेण पीछे, पश्चिम में, के पश्चिम में (कर्म० या सब० के साथ)। सम० —अग्नि (अग्नि-द्वि० व०) दक्षिण और पश्चिमी अग्नियां (दक्षिण और गार्हपत्य) —अङ्गम् काव्य के द्वितीय प्रकार गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेदों में से एक भेद, काव्य० ५, इसमें व्यंग्यार्थ किसी और का गौण अर्थ है, उदा०—अयं स रशनोत्कर्षी पीनस्तनविमर्दनः नाभ्यूरुजघनस्पर्शी नीवीविस्रंसन: कर:। यहाँ शृंगाररस करुण का अङ्ग है, —अन्त (वि०) पश्चिमी सीमा पर रहने वाला, (न्त:) 1. पश्चिमी सीमा या किनारा, अन्तिम छोर, पश्चिमी तट 2 (ब० व०) सह्य पर्वत का निकटवर्ती पश्चिमी सीमा प्रदेश या वहां के निवासी—अपरान्तजयोद्वृत्तैः (अनीकैः) रघु० ४।५३, पश्चिमी लोग 3 इस देश के राजा 4 मृत्यु —अन्तक: = °अन्त: (ब०व०) अपरा:, रे, राशि दूसरे और दूसरे, कई, बहुत —अर्धम् उत्तरार्ध, —अह्न: दोपहर बाद, दिन का अन्तिम या समापक पहर, —इतरा पूर्वदिशा, —काल: बाद का समय, —जन: पश्चिम देश का वासी, पश्चिमी लोग —दक्षिणम् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम में, —पक्ष: 1 मास का दूसरा या कृष्णपक्ष, 2 दूसरी या विपरीत दिशा, प्रतिवादी (विधि में), —पर (वि०) कई एक, बहुत से, विविध,—अपरपरा सार्था गच्छन्ति—पा० ६।१।१४४ सिद्धा०—कई समुदाय जा रहे हैं, —पाणिनीया: पश्चिम के निवासी पाणिनि के शिष्य, —प्रणेय (वि०) जो दूसरों के द्वारा आसानी से प्रभावित हो सके, विधेय, —रात्र: रात्रि का उत्तरार्ध या रात का अन्तिम पहर, —लोक: दूसरी दुनिया, अगला लोक, स्वर्ग,— स्वस्तिकम् क्षितिज में पश्चिमी बिन्दु, —हैमन (वि०) सर्दी के उत्तरार्ध से संबंध रखने वाला।

अपरक्त (वि०) [अप+रञ्ज्+क्त] 1 रक्तहीन, रुधिररहित, पीला,—श्वासापरक्ताधर श० ६।५, 2. असन्तुष्ट, सन्तोषरहित।

अपरता-त्वम् [अपर+तल्, त्वल् वा] दूसरा या भिन्न होना, (२४ गुणों में से एक) भिन्नता, विपर्यय, आपेक्षिकता।

अपरति: (स्त्री०) [अप+रम्+क्तिन्] 1 विच्छेद (= अवरति तु०) 2 असन्तोष।

अपरत्र (क्रि० वि०) [अपर+त्रल्] दूसरे स्थान पर, और कहीं, एकत्र या क्वचित् अपरत्र एक स्थान पर दूसरे स्थान पर।

अपरथ [प्रा० स०] 1 झगड़ा विवाद (संपत्ति के भोग के विषय में) उपभोग बिना झगड़े के, बिना विवाद के (किसी वस्तु को अधिकार में करते समय) 2 बदनामी।

अपरस्पर (वि०) [द्व० स० अपरश्च परश्च, पूर्वपदे सुट्च] एक के बाद दूसरा निर्बाध अनवरत —रा: सार्था गच्छन्ति सततमविच्छेदेन गच्छन्तीत्यर्थ: सिद्धा०।

अपराग (वि०) [ब० स०] रङ्गहीन —ग: [न० त०] 1 असंतोष, स्नेह का अभाव, अनुराग का अभाव अपरागसमीरणे रतः—कि० २।५०, 2 विराग, शत्रुता।

अपराञ्च (वि०) [अपर+अञ्च+क्विन्] (राङ्, °राची, 'राक्) दूर न किया गया, मुंह न फेरा हुआ, सम्मुख होने वाला सामने होनेवाला, (अव्य०) (—राक्) के सामने। सम० —मुख (वि०) (स्त्री० —खी) 1 मुंह न मोड़े हुए, मुंह सामने किये हुए, 2 साहसपूर्ण पग रखते हुए।

अपराजित (वि०) [न० त०] जो जीता न गया हो, अजेय —त: 1. विषैला जन्तु 2 विष्णु, शिव —ता दुर्गादेवी जिसकी पूजा विजया दशमी के दिन की जाती है, एक प्रकार की ओषधि जो कि तावीज के रूप में भुजा में बांधी जाती है, 3. उत्तर-पूर्व दिशा।

अपराद्ध (भू० क० कृ०) [अप+राध्+क्त] 1 जिसने पाप किया है, किसी को कष्ट दिया है, अपराध का करने वाला, कष्ट देने वाला, (कर्मार्थ में भी प्रयुक्त)—कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला श० ४, 2. जो चूक गया हो, निशाने पर न लगने वाला (तीर की भांति) — निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२६ 3. जिसने उल्लंघन किया है, अतिक्रान्त, —द्धम् अपराध, कष्ट।

अपराद्धि: (स्त्री) [अप+राध्+क्तिन्] 1. दोष, अपराध, 2. पाप।

अपराध: [अप+राध्+घञ्] अपराध, दोष, जुर्म, पाप

—अयमपराधमव यदि पश्यसि विक्रम० ४।२९, यथापराधदण्डानाम् रघु० १।६।

अपराधिन् (वि०) [अप+राध्+णिनि] कष्टकर, दोषी।

अपरिग्रह [न० ब०] जिसके पास न कोई सामान हो, न नौकर चाकर, जो सब प्रकार से हीन हो निराश्रय; —हः 1 अस्वीकृति इन्कारी 2 दरिद्रता, गरीबी।

अपरिच्छद (वि०) [न० ब०, गरीब दरिद्र।

अपरिच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 जिसका अंतर न पड़ जाना गया हो 2 सीमा रहित।

अपरिणय: [न० त०] चिरकौमार्य ब्रह्मचर्य।

अपरिणीता [न० त०] अविवाहित कन्या।

अपरिसंख्यानम् [न० त०] असीमता असंख्यता।

अपरीक्षित (वि०) [न० त०] 1 बिना परीक्षा लिया हुआ बिना जांचा हुआ, अप्रमाणित 2 अविचारित मूर्खता पूर्ण, विचारहीन (पुरुष या वस्तु) —कारक नाम पञ्चम तन्त्रम् पञ्च०, जो कभी विचारशील नहीं 3 जो स्पष्ट रूप से स्थापित या सिद्ध न हुआ हो।

अपरुष (वि०) [न० त०] क्रोधशून्य —अपरुषपरुषाक्षरमीरिता रघु० ९।८।

अपरूप (वि०) [स्त्री० —पा —पी] [ब० स०] कुरूप, विरूप, बेडौल शक्ल वाला —पम् [प्रा० स०] विरूपता।

अपरेद्युः (अव्य०) [अपर+एद्युस्] अगले दिन।

अपरोक्ष (वि०) [न० त०] 1. दृश्य 2. प्रत्यक्ष 3 जो दूर न हो —क्षम् (क्रि० वि०) की उपस्थिति में (संब० के साथ) अपरोक्षात् प्रत्यक्ष रूप से दृश्यतापूर्वक।

अपरोध [अप+रुध्+घञ्] वर्जन निषेध।

अपर्ण(वि०) [न० ब०] बिना पत्तों का —र्णा पार्वती या दुर्गादेवी, कालिदास इस नाम का कारण बतलाते हुए कहते हैं —स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः। तदप्यपाकीर्णमतः प्रियंवदां वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः॥ कु० ५।२८।

अपर्याप्त (वि०) [न० त०] 1 जो यथेष्ट या काफी न हो अपूर्ण जो पर्याप्त न हो 2 असीमित 3 अयोग्य असमर्थ —अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् भग० १।१०।

अपर्याप्ति: (स्त्री०) [नञ्+परि+आप्+क्तिन्] यथेष्टता का अभाव।

अपर्याय (वि०) [न० ब०] क्रमरहित, —यः क्रम या प्रणाली का अभाव।

अपर्युषित (वि०) [नञ्+परि+वस्+क्त] जो रात का रक्खा हुआ न हो ताजा नूतन।

अपर्वन् (वि०) [न० ब०] जिसमें जोड़ न लगा हो, (नपुं०) [न० त०] 1 जोड़ या संयोग बिन्दु का अभाव 2. जो पर्व का दिन न हो —अर्थात् अनुपयुक्त समय या ऋतु।

अपल (वि०) [न० ब०] बिना मांस का, —लम् कील या कुंडी।

अपलपनम्-अपलाप: [अप+लप्+ल्युट्, घञ् वा] 1 छिपाना गोपन 2. छिपाव या जानकारी से मुकर जाना, टालमटोल,- न हि प्रत्यक्षसिद्धस्यापलापः कर्तुं शक्यते —शारी० 3. मन्तव्य, विचार व भावनाओं को छिपाना घटाकर बतलाना। सम० —दण्डः (विधि में) उस व्यक्ति पर किया जाने वाला जुर्माना जो कि दोष सिद्ध होने पर भी अपने दोष को स्वीकार नहीं करता।

अपलापिन् (वि०) [अप+लप्+णिनि] मुकरने वाला, दोष को स्वीकार न करने वाला, छिपाने वाला।

अपलाषिका [अप+लष्+ण्वुल् स्त्रियां टाप्] अत्यधिक प्यास या इच्छा या सामान्य तृषा (कई बार इसी अर्थ में अपलासिका शब्द भी प्रयुक्त होता है, परन्तु उसे अशुद्ध समझा जाता है)।

अपलाषिन्-लाषुक (वि०) [अप+लष्+णिनि, उकञ् वा] 1 प्यासा 2 प्यास या इच्छा से रहित - प्रकामिना भविष्यन्ति कदा न्वेतेऽपलाषुकाः महाभा०।

अपवन (वि०) [न० ब०] बिना वायु या हवा के, हवा से सुरक्षित —नम् [प्रा० स०] नगर के निकट लगाया हुआ बाग वाटिका या उपवन।

अपवरक:-का [अप+वृ+वुन् स्त्रियां टाप्] 1 भीतर का कमरा शयनागार 2 वातायन, मोखा —तनयमेकस्मादपवरकात् दश०।

अपवरणम् [अप+वृ+ल्युट्] 1. आच्छादन, पर्दा 2. पोशाक, वस्त्र।

अपवर्ग: [अप+वृज्+घञ्] 1 पूर्ति, समाप्ति, किसी कार्य की पूर्णता या निष्पन्नता —अपवर्गे तृतीया —पा० २।३।६ क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृता —कि० १।१४, अपवर्गे तृतीयेति भणतः पाणिनेरपि—नै० १७।६८ कि० १६।४९ 2 अपवाद विशिष्ट नियम —अभिव्याप्य एकदेशसमपवर्गः —सुश्रु० 3 मोक्ष, परमगति —अपवर्गमहोदयार्थयोर्भुवमंशाविव धर्मयोर्गतौ —रघु० ८।१६, 4. उपहार दान 5 त्याग 6 छोड़ना (जैसे बाण का)।

अपवर्जनम् [अप+वृज्+ल्युट्] 1. त्याग (प्रतिज्ञा) पालन (ऋणादि) परिशोध, 2. उपहार या दान 3 परमगति।

अपवर्त [अप+वृत्+घञ्] 1. निकाल लेना, दूर करना 2 (गण०) सामान्यविभाजक जो दोनों राशियों में व्यवहृत होता है।

अपवर्तनम् [अप+वृत्+ल्युट्] 1 दूर करना, स्थान° स्थानान्तरण 2. निकाल लेना वञ्चित करना, न

त्यागोऽस्ति द्विषन्त्यागस्य न च दारापकर्षणम्—मनु० ९।७९।

अपवादः [अप+वद्+घञ्] 1. निन्दा, भर्त्सना, कलंक—लोकापवादो बलवान्मतो मे—रघु० १४।४०, आक्षेप लोकनिन्दा,—देव्यामपि हि वैदेह्यां सापवादो यतो जनः—उत्तर० १।६, 2. सामान्य नियम को बाधित करने वाला विशेष नियम (विप० उत्सर्ग)- अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः—कु० २।२७, रघु० १५।७, 3. आदेश, आज्ञा—सतोपवादेन पताकिनीपतेश्चचाल निर्ह्रादवती महाचमूः—कि० १४।२७, 4. निराकरण, (वेदान्त०) मिथ्यारोपण या मिथ्याविश्वास का निराकरण,—रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववत्, वस्तुभूतब्रह्मणो विवर्तस्य प्रपञ्चादेः वस्तुभूतरूपतोऽपदेश अपवाद—सारा० 5. भरोसा 6. प्रेम, घनिष्ठता।

अपवादक } (वि०) [अप+वद्+ण्वुल्, णिनि वा] 1
अपवादिन् } कलंक लगाने वाला, निन्दक, बदनाम करने वाला—मृगयापवादिना माढव्येन श०२, 2. विरोध करने वाला, एक ओर रखने वाला, निकाल देने वाला।

अपवारणम् [अप+वृ+णिच्+ल्युट्] 1 आच्छादन, छिपाव, 2. ओझल होना।

अपवारित (भू० क० कृ०) [अप+वृ+णिच्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, —तम्, अपवारितकम् छिपा हुआ या गुप्त ढंग, —तम्, अपवारितकेन,, अपवार्य (अव्य०) (नाटकों में बहुधा प्रयुक्त) 'पृथक्' 'एक ओर' अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय (विप० प्रकाशम्) यह इस ढंग से बोलने को कहते हैं कि केवल वही सुने जिसे कहा गया है—तद्भवेदपवारितं रहस्यं तु यदन्यस्य परावृत्य प्रकाश्यते, त्रिपताककरेणान्यमपवार्यान्तरा कथाम्—सा० द० ६।

अपवाहः-हनम् [अप+वह्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1 दूर ले जाना, हटाना 2. घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि को निकालना।

अपविघ्न (वि०) [ब० स०] निर्बाध, बाधारहित—रघु० २।३८

अपविद्ध (भू० क० कृ०) [अप+व्यध्+क्त] 1 दूर फेंका हुआ, त्यक्त, अस्वीकृत, उपेक्षित, दूरीकृत, मुक्त, विरहित 2. नीच, कमीना —द्ध:, °पुत्रः माता या पिता या दोनों से त्यागा हुआ पुत्र जिसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने गोद ले लिया हो, हिन्दुओं में १२ प्रकार के पुत्रों में से एक- मनु० ९।१७१, याज्ञ० २।१३२।

अपविद्या [प्रा० स०] अज्ञान, आध्यात्मिक अज्ञान, माया या भ्रम (अविद्या),—तत्त्वस्य संविदितिरिवापविद्याम् कि० १६।३२।

अपवीण (वि०) [ब० स०] जिसके पास वीणा न हो, या खराब वीणा हो —णा [प्रा० स०] खराब वीणा।

अपवृक्तिः (स्त्री०) [अप+वृज्+क्तिन्] पूर्णता, निष्पन्नता, पूर्ति।

अपवृतिः (स्त्री०) [अप+वृ+क्तिन्] सुराख, छिद्र, रंध्र।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] अन्त, समाप्ति।

अपवेध [प्रा० स०] गलत जगह या बुरे ढंग से (मोती आदि में) छेद करना।

अपव्यय [प्रा० स०] अत्यधिक खर्च, अपव्यय।

अपशकुनम् [प्रा० स०] असगुन, बुरा सगुन।

अपशङ्क (वि०) [ब० स०] निर्भय, निश्शंक, —कम् (क्रि० वि०) निडरता के साथ।

अपशदः = तु० अपसद।

अपशब्दः [प्रा० स०] 1 अशुद्ध शब्द (व्या० की दृष्टि से), भ्रष्ट शब्द (रूप और अर्थ की दृष्टि से), —त एव शक्तिवैकल्यप्रमादालसतादिभिः, अन्यथोच्चारिताः शब्दा अपशब्दा इतीरिताः। अपशब्दशतं माघे - सुभा० 2 ग्राम्य शब्द 3 व्या० की दृष्टि से अशुद्ध भाषा 4 झिड़की वाला शब्द गाली, दुर्वचन, निंदा।

अपशिरस् } (वि०) [अपगतं शिरः शीर्षं वा यस्य -
अपशीर्ष-र्षन् } ब० स०] सिर रहित, बे सिर का।

अपशुच् (वि०) [ब० स०] शोकरहित, (पु) आत्मा।

अपशोक (वि०) [ब० स०] शोकरहित, —कः अशोकवृक्ष।

अपश्चिम (वि०) [न० त०] 1 जिसके पीछे कोई न हो, अंतिम (अधिकतर 'पश्चिम' शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है तु० उत्तम और अनुत्तम, उत्तर और अनुत्तर), अयमपश्चिमस्ते रामस्य शिरसि पादपङ्कजस्पर्शः उत्तर० १ प्रसीदतु महाराजो ममानेनापश्चिमेन प्रणयेन - वेणी० ६, 2. अनन्तिम, प्रथम, सर्वप्रथम 3 चरम, - अपश्चिमामिमां कष्टामापदं प्राप्तवत्यहम् रामा०।

अपश्रयः [अप+श्रि+अच्] गद्दी, तकिया।

अपश्री (वि०) [ब० स०] सौन्दर्य से वञ्चित —शि० ११।५४।

अपश्वासः दे० अपान।

अपष्ठम् [अप+स्था+क] हाथी के अंकुश की नोक।

अपष्ठु (वि०) [अप+स्था+कु] 1. विरुद्ध, विपरीत, 2. अननुकूल, प्रतिकूल 3 बायाँ, —ष्ठु (क्रि० वि०) 1 विरुद्ध, 2 असभ्यतापूर्वक, 3 निर्दोषता के साथ भली-भांति, ठीक तरह से।

अपष्ठुर -ल (वि०) [अप+स्था+कुरच्, कुलच् वा] विरुद्ध, विपरीत।

अपसदः [अप+सद्+अच्] 1 जाति से बहिष्कृत, नीच पुरुष, प्राय समास के अन्त में प्रयुक्त होकर अर्थ होता

हूँ—दुष्ट, पाजी, अभिशप्त,—कापालिक° मा० ५, रे रे ब्राह्मणापसद —वेणी० ३, 2. इस प्रकार की अनुलोम सन्तान—अर्थात् पहले तीन वर्णों के मनुष्यों द्वारा अपने से नीच वर्ण की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोः द्वयोः, वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन् षडेतेऽपसदाः स्मृताः। मनु० १०।१०।

अपसरः [अप + सृ + अच्] 1 प्रस्थान, पलायन 2 उचित कारण।

अपसरणम् [अप + सृ + ल्युट्] जाना, वापिस मुड़ना, पलायन।

अपसर्जनम् [अप + सृज् + ल्युट्] 1 त्याग, उत्सर्ग 2 उपहार या दान 3 मोक्ष।

अपसर्पः, **—र्पकः** [अप + सृप् + अच्, स्वार्थे कन् च] गुप्तचर, जासूस, भेदिया—सोऽपसर्पैर्जजागार यथाकालं स्वपन्नपि रघु० १७।५१, १४।३१।

अपसर्पणम् [अप + सृप् + ल्युट्] पीछे हटना, लौटना जासूसी करना।

अपसव्य, **अपसव्यक** [ब० स०] 1 जो बायां न हो, दायां—अपसव्येन हस्तेन मनु० ३।२१४, 2 उल्टा, विपरीत—**अपसव्यम्** (अव्य०) दाईं ओर दाहिने कंधे के ऊपर से जनेऊ को शरीर के वाम भाग पर लटकाना (विप० सव्यम् जब कि वह बायें कंधे के ऊपर से लटकता है)—**अपसव्यं कृ** दाहिनी ओर रखते हुए किसी की परिक्रमा करना, जनेऊ को दायें कंधे से लटकाना।

अपसव्यवत् (वि०) [अपसव्य + मतुप्] दाहिने कंधे पर से यज्ञोपवीत पहनने वाला।

अपसारः [अप + सृ + घञ्] 1 बाहर जाना, लौटना 2 निर्गमस्थान निकास।

अपसारणम्, **—णा** [अप + सृ + ल्युट्, स्त्रियां टाप्] हटाकर दूर करना, हांकना, बाहर निकालना—किमर्थमपसारणा क्रियते —मुद्रा०, स्थान देना।

अपसिद्धान्तः [प्रा० स०] गलत या भ्रमयुक्त निर्णय।

अपसृप्तिः (स्त्री०) [अप + सृप् + क्तिन्] दूर चले जाना।

अपस्करः [अप + कृ + अप् सुडागम] 1 पहिये को छोड़कर गाड़ी का कोई भाग (—रथ भी) 2 विष्ठा, मल 3 योनि 4. गुदा।

अपस्नानम् [अप + स्ना + ल्युट्] 1 किसी संबंधी की मृत्यु के उपरांत किया जाने वाला स्नान 2 मृतक स्नान, स्नान किये हुए पानी में स्नान करना।

अपस्पश (वि०) [ब० स०] जिसके पास भेदिये न हों—शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा—शि० २।११२।

अपस्पर्श (वि०) [ब० स०] संज्ञाहीन।

अपस्मारः, **—स्मृतिः** (स्त्री०) [अपस्मृ + घञ्, क्तिन् वा] 1 स्मरण शक्ति का अभाव 2. मिरगी रोग, मूर्छा रोग।

अपस्मारिन् (वि०) [अप + स्मृ + णिनि] मिरगी रोग से ग्रस्त।

अपस्मृति (वि०) [ब० स०] विस्मरणशील।

अपह (वि०) [अप + हा + ड] (समास के अन्त में) दूर हटाना, दूर करना, नष्ट करना, श्रमिय यदि जीविता-पहा रघु० ८।४६।

अपहतिः (स्त्री०) [अप + हन् + क्तिन्] दूर करना, नष्ट करना।

अपहननम् [अप + हन् + ल्युट्] दूर हटाना, निवारण करना।

अपहरणम् [अप + हृ + ल्युट्] 1 दूर ले जाना, उठा ले जाना दूर करना 2 चुराना।

अपहसितम्, **—हासः** [अप + हस् + क्त, घञ् वा] अकारण हँसी, मूर्खता पूर्ण हँसी, ऐसी हँसी जिससे आंखों में आंसू आ जायें (नीचानामपहसितम्)।

अपहस्तित (वि०) [अपहस्त + इतच्] दूर फेंका हुआ, रद्दी किया हुआ, परित्यक्त।

अपहानि (स्त्री०) [अप + हा + क्तिन्] 1 त्याग, छोड़ देना 2 रुक जाना, ओझल होना 3 अपवाद, निकाल देना।

अपहार [अप + हृ + घञ्] 1 उठा ले जाना, दूर ले जाना, चुरा लेना, नष्ट कर देना—निद्रापहार, विष° 2 छिपाना, मालूम न पड़ने देना—कथमात्मापहारं करोमि—श० १, अपने आप को, अपने नाम को और अपने चरित्र को मैं किस प्रकार छिपाऊं?

अपह्नवः [अप + ह्नु + अप्] 1 छिपाव गोपन, अपनी भावना ज्ञान आदि को छिपाना 2 सचाई से मुकर जाना दुराव—वेणी० पा० १।३।४४ 3 प्रेम, स्नेह।

अपह्नुतिः (स्त्री०) [अप + ह्नु + क्तिन्] 1 सत्य को छिपाना, मुकरना 2 एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु के वास्तविक चरित्र को छिपा कर कोई और काल्पनिक या असत्य स्थापना की जाय—नेदं नभोमण्डलम-म्बुराशिः, नैतास्च तारा नवफेनभङ्गाः। काव्य०, १० वां समुल्लास तथा दे० सा० द० ६८३।८४ पृष्ठ।

अपह्रासः [अप + ह्रस् + घञ्] घटाना, कमी करना।

अपाक् (अव्य०) दे० अपाच्।

अपाकः [न० त०] 1 अपच, अजीर्णता 2 अपरिपक्वता।

अपाकरणम् [अप + आ + कृ + ल्युट्] 1. दूर कर देना, हटाना 2 अस्वीकृति, निराकरण 3 अदायगी, कार-बार का समेट लेना।

अपाकर्मन् (न०—र्म) [अप + आ + कृ + मनिन्] चुकता कर देना, कारबार उठा देना।

अपाकृतिः (स्त्री०) [अप + आ + कृ + क्तिन्] 1. अस्वीकृति, दूर करना, 2 क्रोध से उत्पन्न उद्वेग, भय आदि—कि० १।२७।

अपाङ्ग (वि०) [अपगतः अङ्गमिङ्गितम्] 1. विकलांग, अपंग 2. [ब० स०] नेत्रहीन, आंखों वाला।

अपाङ्क्त, अपाङ्क्तेय, अपाङ्क्त्य (वि०) [न०त०] जो समान पंक्ति में न हो, विशेषत वह व्यक्ति जो बिरादरी में अपने बन्धु-बांधवों के साथ एक पंक्ति में बैठने का अधिकारी न हो, जाति बहिष्कृत।

अपाङ्ग —ङ्गक [अपाङ्गम तिर्यक् चलति नेत्र यत्र अप + अङ्ग् घञ्, कन् च] 1 आँख की बाहरी कोर या आंख की कोण चलापाङ्गा दृष्टि—श० १।२४ 2 सम्प्रदाय सूचक माथे का तिलक 3 कामदेव प्रेम का देवता। सम० दर्शनम्, —दृष्टि (स्त्री०) विलोकितम् वीक्षणम् तिरछी चितवन कनखियों से देखना पलक झपकना देश आंख की कोर नेत्र (वि०) सुन्दर कनखियों से युक्त आँखों वाला (यह प्राय स्त्रियों का विशेषण है) यदि पुनरप्यपाङ्गनेत्रा परिवृत्ताधमुखी मयाद्य दृष्टा विक्रम० १।१७।

अपाच्, अपाञ्च् [अपाञ्चति—अञ्च + क्विप] 1 पीछे की ओर जाने वाला या पीछे स्थित 2 अमुक्त अस्पष्ट 3 पश्चिमी 4 दक्षिणी क (अव्य०) 1 पीछे पीछे की ओर 2 पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर।

अपाची [अप + अञ्च + क्विन स्त्रियां ङीप] दक्षिण या पश्चिम दिशा इतरा उत्तर दिशा।

अपाचीन (वि०) [अपाची + ख] 1 पीछे की ओर स्थित पीछे की ओर मुड़ा हुआ 2 अदृश्य अप्रत्यक्ष ऋक ७।६।४ 3 दक्षिणी 4 पश्चिमी 5 विरोधी।

अपाच्य (वि०) अपाची + यत् पश्चिमी और दक्षिणी।

अपाणिनीय (वि०) [न० त०] 1 जो पाणिनि के नियमों के अनुकूल न हो 2 जिसने पाणिनि व्याकरण को भली भाँति नहीं पढ़ा हो पल्लवग्राही विद्वान् संस्कृत का अल्पज्ञान रखने वाला।

अपात्रम् [न० त०] 1 निकम्मा बर्तन 2 (आल०) अयोग्य या अनधिकारी पुरुष दान लेने के लिए अयाग्य 3 कुपात्र जो उपहार दान आदि का अधिकारी न हो। सम० कृत्या अपात्रीकरणम् अनुचित तथा निर्मर्यादि कर्म करना अपात्रता दे० मनु० ११।७० — वर्षिन अयोग्य पुरुषों को देने वाला, — भृत् (वि०) अयोग्य और निकम्मे व्यक्तियों का भरणपोषण करने वाला आयणापात्रभृद्भवति राजा —पंच० १।

अपादानम् [अप + आ + दा + ल्युट्] 1 ले जाना दूर करना, अपसरण 2 (व्या० में) अपा० का अर्थ ध्रुवमपायेऽपादानम् पा० १।४।२४।

अपाध्वन् (पु०) [अपकृष्ट अध्वा प्रा० स०] कुमार्ग बुरामार्ग।

अपानः [अप + अन + अच्, अपानयति मूत्रादिकम अप + आ + नी + ड वा] श्वास बाहर निकालना श्वास लेने की क्रिया, शरीर में रहने वाले पाँच पवनों में से एक जो कि नीचे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है म मध् गुदा। सम० द्वारम् गुदा पवन वायु प्राणवायु जिसे अपान कहते हैं।

अपान्त (वि०) [ब० स०] मिथ्यात्व से रहित, सत्य।

अपाप-पिन (वि०) [ब० स० णिनि वा] निष्पाप पवित्र पुण्यात्मा।

अपाम् (अप् जल का सब० ब० व०) [समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त] — ज्योतिस (न०) बिजली नपात् अग्नि और सावित्री की उपाधि —नाथ —पति 1 समुद्र 2 वरुण निधि 1 समुद्र 2 विष्णु —पावक (नपु०) भाजन पित्तम अग्नि यानि समुद्र।

अपामार्ग [अप + मृज + घञ् क अर्थ में] चिचड़ा एक बूटी।

अपामार्जनम् [अप + मृज + ल्युट्] सफाई करना शुद्ध करना (रोग शारीरिक) को दूर करना।

अपाय [अप + इ + अच्] 1 चले जाना विदाई 2 वियोग—ध्रुवमपायेऽपादानम् पा० १।४।२४ यत्र जाने प्रियापाय कहद हसकोकिलम् भट्टि० ६।७५ 3 आकुल होना लोप अभाव 4 नाश हानि सन्यासकरणापायविभिन्नवर्णया रघु १४ 5 अनिष्ट दुर्भाग्य विपत्ति भय (विप० उपाय) त्याग संनिहित मार हि० ४।६९ 6 हानि क्षति।

अपार (वि०) [न० ब० ,] 1 जिसका पार न हो 2 असीम सीमारहित 3 जो समाप्त न हो, अपरिमित 4 पहुँच के बाहर 5 जिसे पार करना कठिन हो जिस पर विजय न पाई जा सके रम् नदी का दूसरा पट।

अपार्ण (वि०) [अप + अर्द् + क्त] 1 दूरस्थ, दूरवर्ती 2 निकटस्थ।

अपार्थ, अपार्थक (वि०) [अपगत अर्थ यस्मात् ब० स०] 1 व्यर्थ असामर्थ्य निकम्मा 2 निरर्थक अर्थहीन थम् अर्थहीन या असगत बात या तर्क (सा० शा० की दृष्टि से रचना सबधी दोष तु० काव्य० ३।२८ समुदायार्थशून्य यत्तदपार्थमितीष्यते)।

अपावरणम्, अपावृति (स्त्री०) [अप + आ + वृ + ल्युट् क्तिन् वा] 1 उद्घाटन 2 ढकना, लपेटना बन्द करना 3 छिपाना गोपन करना।

अपावर्तनम्, अपावृत्ति (स्त्री०) [अप + आ + वृत् + ल्युट् क्तिन् वा] 1 लौटना पीछे हटना अपकर्षण 2 घूमना।

अपाश्रय (वि०) [ब० स०] आश्रयहीन निराश्रय, असहाय, —य शरण सहारा जिसका सहारा लिया जाय 2 चंदावा शामियाना 3 सिरहाना।

अपासंग [अप + आ + सञ्ज् + घञ्] तरकस।

अपासनम् [अप + अस् + ल्युट्] 1 फेंक देना, रद्दी कर देना 2. छोड़ देना 3. वध करना ।

अपासरणम् [अप + आ + सृ + ल्युट्] विदाई लौटना, दूर हटना —दे० 'अपसरण' ।

अपासु (वि०) [ब० स०] निर्जीव, मृत ।

अपि (अव्य०) [कई बार भागुरि के मतानुसार 'अ' का लोप—वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयो पिधा, पिधानम् आदि] 1 (संज्ञा और धातुओं के साथ प्रयुक्त होकर) निकट या ऊपर रखना, की ओर ले जाना, तक पहुँचाना, सामीप्य सन्निकटता आदि 2 (पृथक् क्रि० वि० या समो० अव्य० के रूप में) और, भी, एवम्, पुनश्च, इसके अलावा इसके अतिरिक्त—अस्मि न गतः रोहोप्येतेषु श० १ अपनी ओर से तो, अपनी बारी आने पर—विष्णुशर्मणापि राजपुत्रा पाठिता पंच० १, अपि अपि अपि च भी और भी—अपि स्तुहि अपि सिंच सिद्धा० न चापि न चैव, न चापि, चापि वा, न चापि न—न, 3 'भी' 'अति' 'बहुत' शब्दों के अर्थ पर बल देने के लिए भी बहुधा इसका प्रयोग होता है, अद्यापि आज भी, इदानीमपि —अब भी, यद्यपि —अगर्चे, चाहे, तथापि तो भी कई बार केवल तथापि शब्द के प्रयोग से ही 'यद्यपि' का अध्याहार कर लिया जाता है—उदा० कि० १।२८, 4 अगर्चे (भी, चाहे) —सरसिजमनुविद्ध शैवलेनापि रम्यम् श० १।२०, चाहे ऊपर से ढका हुआ, इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी श० चाहे वल्कल वस्त्र में 5. (वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होकर 'प्रश्न सूचक') अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः —श० १, अपि क्रियार्थसुलभ समित्कुशम्... अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे—कु० ५।३३, ३४, ३५, 6. आशा, प्रत्याशा (प्राय विधिलिङ के साथ) कृत रामसदृश कर्म, अपिजीवेत्स ब्राह्मणशिशुः —उत्तर० २ मुझे आशा है कि ब्राह्मण बालक जी उठेगा। विशे० इस अर्थ में 'अपि' बहुधा 'नाम' के साथ जुड़ कर निम्नांकित भाव प्रकट करता है (क) संभावना 'शक्यता' (ख) शायद, संभवत (ग) 'क्या ही अच्छा हो यदि', 'मेरी आंतरिक इच्छा या आशा है कि —अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्, श० १, श० ७, तदपि नाम मनागवतीर्णोऽसि रतिरमणबाणगोचरम् मा० १, शायद, सम्भवत —अपि नामाहं पुरूरवा भवेयम् विक्रम०—क्या ही अच्छा होता यदि मैं पुरूरवा होता 7. (प्रश्नवाचक सब्दों के साथ जुड़ कर 'अनिश्चितता' के अर्थ को बतलाता है) कोई, कुछ, कोपि—कोई, किमपि —कुछ, क्वापि —कहीं; इस शब्द को 'अज्ञात' 'अवर्णनीय' 'अनभिज्ञेय' अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है—व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोपि हेतुः—उत्तर० ६।१२, 8 (संख्या वाचक शब्दों के पश्चात् प्रयुक्त होने पर 'कात्स्न्र्य' और 'समस्तता' का अर्थ होता है) चतुर्णामपि वर्णानाम्—चारों वर्णों का, 9 (यह शब्द कभी २ 'संदेह' 'अनिश्चितता' और 'शंका' भी प्रकट करता है) —अपि चौरो भवेत् —मन० शायद यहाँ चोर है 10 (विधिलिङ के साथ 'संभावना' अर्थ होता है)—अपि स्तुयाद्विष्णुम्, 11 घृणा, निन्दा —अपि जाया त्यजसि जातु गणिकामाधत्से गर्हितमेतत्—सिद्धा०, लज्जा की बात है, धिक्कार है—धिग्जाल्मं देवदत्तमपि सिंचेत्पलाण्डुम्, 12 लोट् लकार के साथ प्रयुक्त होकर 'वक्ता की उदासीनता' प्रकट करना है और दूसरे को यथारुचि कार्य करने देना है —अपि स्तुहि सिद्धा० (आप चाहें तो) स्तुति करें,—अपि स्तुह्यपि सेवास्मास्तथ्यमुक्तं नगरान —भट्टि० ८।८२ 13 कभी विस्मयादि द्योतक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त होता है 14 'इसलिए' 'फलत' (अत एव) के अर्थ में कभी ही प्रयुक्त होता है 15 सब० के साथ प्रयुक्त होकर 'अध्याहार' के भाव को प्रकट करता है—उदा० सर्पिषोऽपि स्यात् —यहाँ (बिन्दुरपि —जरा सा एक बूंद) जैसा कोई शब्द अध्याहृत किया जाता है, संभवत 'एक बूंद भी' अभिप्रेत है ।

अपिगीर्ण (वि०) [अपि + गृ + क्त] 1 स्तुति किया गया, यशस्वी 2 कथित, वर्णित ।

अपिच्छिल (वि०) [न० त०] 1. जो गदला न हो, स्वच्छ अपंकिल 2 गहरा ।

अपितृक (वि०) [न० ब०] 1 जिसका पिता जीवित न हो 2 अपैतृक ।

अपित्र्य (वि०) [न० त०] अपैतृक ।

अपिधानम्, पिधानम् [अपि + धा + ल्युट्, भागुरि के मत में विकल्प से 'अ'लोप] 1 ढकना, छिपाना 2 चादर ढक्कन, आच्छादन (आल० भी) ।

अपिधिः (स्त्री०) [अपि + धा + कि] छिपाव ।

अपिव्रत (वि०) [ब० स०-अपि संसृष्ट व्रत भोजन जिसको या यस्य] धार्मिक कृत्य का सहभागी, रक्त द्वारा संबद्ध ।

अपिहित, पिहित [अपि + धा + क्त—भागुरिमतेन अकार लोप] 1 बंद, बंद किया हुआ, ढका हुआ, छिपाया हुआ (आल० भी) बाष्पापिहित —आँसुओं से ढका हुआ 2. जो छिपा न हो, स्पष्ट, स्पष्ट. —अर्थो गिरामपिहित पिहितश्च किंचित् सत्य चकास्ति मरहट्टवधूस्तनाभ कुमा० ।

अपीतिः (स्त्री०) [अपि + इ + क्तिन्] 1 प्रवेश, उपागम 2 विघटन, नाश, हानि 3 प्रलय—अपीतौ तद्वत् प्रसंगादसमञ्जसम्—ब्रह्म० ।

अपीनसः [अपीनाय, अपीनत्वाय सीदति अस्मात् कर्मकर्तरि क—तारा०] नाक की शुष्कता, जुकाम ।

अपुंस्का (स्त्री०) [नास्ति पुमान् यस्याः —न० ब०] बिना पति की स्त्री—नापुंस्कासीति मे मतिः —भट्टि० ५।७०।

अपुत्रः [न० त०] जो पुत्र न हो, (वि०)—पुत्रक(वि०) (स्त्री० —त्रिका) जिसके कोई पुत्र या उत्तराधिकारी न हो।

अपुत्रिका (स्त्री०) [न० ब० कप्, टाप् इत्व च] पुत्रहीन पिता की ऐसी कन्या जिसके कोई पुत्र न हो, जो पुत्राभाव की स्थिति में पिता द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए नियत न की गई हो, तु० 'अकृता'।

अपुनर् (अव्य०) [न० त०] फिर नहीं, एक ही बार, सदा के लिए। सम० —अन्वय (वि०) न लौटने वाला, मृत,—आदानम् फिर न लेना, वापिस न लेना —आवृत्तिः (स्त्री०) फिर न लौटना, परम गति, —प्राप्य (वि०) जो फिर प्राप्त न हो सके, —भव 1 जो फिर उत्पन्न न हो (रोगादिक भी), 2 मोक्ष या परमगति।

अपुष्ट (वि०) [न० त०] 1. जिसका पोषण ठीक तरह से न हुआ हो, दुबला पतला, जो स्थूल न हो 2 (स्वर) जो ऊँचा या भीषण न हो, मृदु, मन्द 3 (सा०शा०) जो (अर्थ का) पोषक या सहायक न हो असंबद्ध अर्थदोषों में से एक उदा० सा० द० ५७५—विलोक्य वितते व्योम्नि विधुं मुञ्च रुषं प्रिये—यहाँ आकाश का विशेषण 'वितत' शब्द कोप की शान्ति में कोई सहायता नहीं करता इसलिए असंबद्ध है।

अपूपः [न पूयते विशीर्यते —पू+प, न० त० तारा०] मालपुआ, शर्करादिक डाल कर बनाया गया रोटी से मोटा पदार्थ, इसे 'पूआ' कहते हैं।

अपूपीय, अपूप्य (वि०) [अपूपाय हितम् —छ, यत् च] अपूप सबन्धी,—प्यम् —आटा, भोजन।

अपूरणी (स्त्री०) [न० त०] सेमल का पेड़।

अपूर्ण (वि०) [न० त०] जो पूरा या भरा न हो, अधूरा असम्पन्न—अपूर्णमेकेन शत क्रतूनाम् —रघु० ३।३८, अपूर्णे एवं पंचरात्रे दोहदस्य—मालवि० ३।

अपूर्व (वि०) [न० ब०] 1 जैसा पहले न हुआ हो, जो पहले विद्यमान न था, बिल्कुल नया,—अपूर्वमिदं नाटकम् —श० १।२, 2. अनोखा, असाधारण, अद्भुत; —अपूर्वो दृश्यते वह्निः कामिन्याः स्तनमंडले, दूरतो दहतीवांगं हृदि कण्ठलग्नस्तु शीतलः —शृंगार० १७, निराला, अनुपम, अभूतपूर्व—अपूर्वकर्मचण्डालमयि मुग्धे विमुंच माम् —उत्तर० १।४६, अप्रतिम युक्तता करने वाले 3. अज्ञात 4. अजनबी,—र्वम् 1. किसी कार्य का दूरवर्ती फल जैसा कि सत्कार्यों के फलस्वरूप स्वर्गप्राप्ति 2. पुण्य और अपुण्य जो भावी सुख दुःख के अनिवार्य कारण हैं;—र्वः परब्रह्म। सम०—पति (स्त्री०) जिसे अभी तक पति प्राप्त नहीं हुआ, कुमारी कन्या,—विधिः नया आधिकारिक विधि या अवज्ञा।

अपृथक् (अव्य०) [न० त०] अलग से नहीं, साथ-साथ, समष्टि रूप से।

अपेक्षणम् } [अप्+ईक्ष्+ल्युट्, अप+ईक्ष्+अ] 1
अपेक्षा } प्रत्याशा, आशा, चाह, 2 आवश्यकता, जरूरत कारण प्रायः समास में स्फुलिंगावस्थया वह्निरेधापेक्ष इव स्थित —श० ७।१५, अपने की प्रतीक्षा में 3 विचार उल्लेख, लिहाज —कर्म के साथ अधि० में, प्रायः समास में, करण० या कभी-कभी अधि० में, (अपेक्षया, अपेक्षायां) समास में बहुधा प्रयुक्त का अर्थ 'का उल्लेख करते हुए' 'लिहाज करके' 'के निमित्त' नियमापेक्षया रघु०।४९, प्रथमसुकृतापेक्षया —मेघ० १७ अत्र व्यंग्यं गुणीभूत तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्—काव्य० १, इसकी तुलना में 4 मेलजोल, संबंध 5 देखभाल, ध्यान, सावधानी —देवापेक्षास्तथा यूय धाता दायांगुलीयकम्—भट्टि० ७।४९, 6 सम्मान, समादर 7 (व्या० में) —आकांक्षा।

अपेक्षणीय, } (वि०) [अप+ईक्ष+अनीयर्, तव्यत्,
अपेक्षितव्य, } ण्यत् वा] अपेक्षा करने के योग्य जिसकी
अपेक्ष्य } आवश्यकता या आशा हो जिसकी प्रत्याशा या विचार किया जा सके वाञ्छनीय।

अपेक्षित (भू० क० कृ०) [अप+ईक्ष्+क्त] जिसकी तलाश की गई हो, जिसकी आशा की गई हो जिसकी आवश्यकता हो, जिसका विचार किया गया हो, —तम् चाह, इच्छा, लिहाज, उल्लेख।

अपेत (भू० क० कृ०) [अप+इ+क्त] 1. गया हुआ ओझल हुआ, अपेतयुद्धाभिनिवेशसौम्या—कि० ३।१ 2 वियुक्त या विचलित, विरुद्ध (अपा० के साथ) अर्थादनपेतम् अर्थ्यम् —सिद्धा०, 3 मुक्त, वंचित (अपा० के साथ या समास में) सुखादपेत —सिद्धा०, उदवहदनवद्यां तामवद्यादपेत रघु० ७।७०, निर्दोष।

अपेहि (लोट् म० पु० ए० व०) (मयूरव्यंसकादि श्रेणी से संबद्ध समासों के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त) °कथा, °द्वितीया, °स्वागता आदि जहाँ इस शब्द का अर्थ होता है "के बिना" "निकाल कर" "सम्मिलित न करके" उदा० °वाणिजा—इस प्रकार का समारोह जहाँ व्यापारियों को सम्मिलित न किया जाय,—इसी प्रकार °द्वितीया आदि।

अपोगण्डः [अपगतः (वैकल्यमिति) गंडः स्थाल्यः —तारा०] 1. अधिक अंगों वाला, या कम अंगों वाला 2. जो सोलह वरस से कम आयु का न हो, मनु० २।१४८ 3. शिशु 4. अतिभीरु 5. झुर्रीदार।

अपोढ (वि०) [अप+वह्+क्त] दूर हटाया गया (अपा० के साथ); कल्पनापोढ:—कल्पनायाः अपोढ; दे० अपपूर्वक 'वह्'।

अपोह [अप + वह् + घञ्] 1 हटाना, दूर करना [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] [illegible]

अपोहनम [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अपोहनीय } [illegible]
अपोह्य } [illegible]

अपौरुष, अपौरुषेय [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अप्तोर्याम [illegible] यज्ञ का नाम [illegible] जाता है [illegible]

अप्यय [अपि + इ + अच्] 1 उपागमन सम्मिलन 2 [illegible] 3 प्रवेश [illegible] 4 नाश।

अप्रकरणम् [न० त०] जो मुख्य या प्रधान विषय न हो, अप्रासंगिक या असंबद्ध विषय।

अप्रकाश (वि०) [न० ब०] 1 न चमकने वाला, अंधकारपूर्ण, प्रकाशरहित, [illegible] प्रकाश्यप्रकाश्य [illegible] रघु० १।६८ 2 स्पष्ट न प्रकाशित 3 गुप्त [illegible] —शम् (अव्य०) गुप्त रूप से, अप्रकट।

अप्रकृत (वि०) [न० त०] 1 जो मुख्य या प्रधान न हो, आनुषंगिक 2 अप्रस्तुत [illegible] असंबद्ध [illegible] अप्रकृतमनुसरामः [illegible] —तम् [illegible] मानक (विप० प्रस्तुत)।

अप्रगम (वि०) [न० ब०] दूसरों से इतनी तेज चलने वाला कि दूसरे जिसका अनुसरण न कर सकें।

अप्रगल्भ (वि०) [न० त०] आत्मविश्वासरहित, विनीत।

(विप० धृष्ट) [illegible] पार्श्वे वसति नियत दूरतस्त्व-प्रगल्भ हि० २।२६।

अप्रगुण (वि०) [न० ब०] विस्मित, व्याकुल।

अप्रज (वि०) [न० ब०] 1 निस्संतान, संतान रहित 2 अजात 3 जहाँ बस्ती न हो, बिना बसा।

अप्रजस् } (वि०) [न० ब०] संतान रहित, जिसके कोई
अप्रजात } बच्चा या संतान न हो, अतीतायामप्रजसि [illegible] —स्त्री निस्संतान [illegible]

अप्रतिकर्मन् (वि०) [न० ब०] 1 अनुपम कार्य करने [illegible] 2 [illegible]

अप्रति [illegible] [न० ब०] [illegible]

अप्रतिघ (वि०) [न० ब०] 1 जिसे हराया न जा सके, अजेय 2 जिसे रोका न जा सके 3 अक्रुद्ध।

अप्रतिद्वन्द्व (वि०) [न० ब०] 1 युद्ध में जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो, अप्रतिरथ 2 अनुपम, बेजोड़।

अप्रतिपक्ष (वि०) [न० ब०] 1 अप्रतिद्वंद्वी, [illegible] 2 अनुपम।

अप्रतिपत्ति (स्त्री०) [न० त०] 1 कार्य का संपादन न [illegible] 2 उलझन, घबराहट 3 समझदारी का अभाव 4 निश्चय का अभाव, अव्यवस्था [illegible] अप्रतिपत्तिजडता [illegible] का० [illegible] उत्तरस्याप्रतिपत्तिरवस्था —गौतम०

अप्रतिबन्ध (वि०) [न० ब०] 1 निर्बाध, बेरोकटोक 2 बिना झगड़े के प्राप्त [illegible] जिसमें किसी दूसरे का [illegible] उत्तराधिकार की प्राप्ति)।

अप्रतिबल (वि०) [न० ब०] अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, अनुपम [illegible]

अप्रतिभ (वि०) [न० ब०] 1 विनीत, सलज्ज 2 अप्रत्युत्पन्नमति, मन्दबुद्धि।

अप्रतिमल्ल (वि०) [न० ब०] अप्रतिद्वन्द्वी—द्व बेजोड़ [illegible]।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अतुलनीय, बेजोड़, अप्रतिद्वन्द्वी, इसी प्रकार अप्रतिमान।

अप्रतिरथ (पुं०) [न० ब०] ऐसा वीर पुरुष जिसके मुकाबले का योद्धा और कोई न हो, बेजोड़ अप्रतिद्वन्द्वी योद्धा, सौमित्रिमप्रतिरथं तनयं निबोध [illegible] उ० ४।२०, ५।२३।

अप्रतिरव (वि०) [न० ब०] निर्विरोध, निर्विवाद—सर्वेषां [illegible] सत्त्वानामप्रतिरवं स्वत्वं समयति—[illegible]।

अप्रतिरूप (वि०) [न० ब०] 1 असमरूप, अयोग्य 2 अनुपम रूप वाला 3 अनूठा।

अप्रतिवीर्य (वि०) [न० ब०] अतुलशक्तिशाली।

अप्रतिशासन (वि०) [न० ब०] जिसका प्रतिद्वन्द्वी शासक न हो, जहाँ एक ही व्यक्ति का राज्य हो—रघु० ८।२७।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० ब०] 1. अस्थिर, अदृढ़, अस्थायी 2. अलाभकर, व्यर्थ 3. बदनाम।

अप्रतिष्ठानम् [न० त०] अस्थिरता, दृढ़ता का अभाव (आलं० भी)—तर्काप्रतिष्ठानादप्यन्यथानुमेयम—शारी०।

अप्रतिहत (वि०) [न० त०] 1 निर्बाध, बाधा रहित, अप्रतिरोध्य—अस्मद्गृहे गतिः पंच० १, मृग्यताग्रप्रतिहतप्रसरमार्यस्य कौशलं नि वेणी० १, शक्ति (बोध शक्तिसम्पन्न 2 अक्षुण्ण, अक्षत, अप्रभावित, —मा बुद्धिरप्रतिहता—भर्तृ० २।४० पंच० ४।२६, इसी प्रकार °चित्त, °मनस् 3. जो निराश न हो। सम० —नेत्र (वि०) स्वस्थ आंखों वाला।

अप्रतीत (वि०) [न० त०] 1. अप्रसन्न, अप्रहृष्ट 2. (सा० शा० में) जो स्पष्ट रूप से न समझा जा सके, एक प्रकार का शब्ददोष (उस शब्द को 'अप्रतीत' कहते हैं जो किसी विशिष्ट स्थान पर ही प्रयुक्त होता हो, सामान्य प्रयोग का शब्द न हो)। दे० काव्य० ७।

अप्रत्ता [न० त०] कुमारी कन्या, जिसका दान न किया गया हो।

अप्रत्यक्ष (वि०) [न० ब०] 1. अदृश्य, अगोचर 2 अज्ञात अनुपस्थित।

अप्रत्यय (वि०) [न० ब०] 1 आत्मविश्वास रहित, अविश्वासी—(अधि० के साथ) बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः—श० १।२ 2. अनभिज्ञ 3 (व्या० में) प्रत्यय रहित,—यः 1 आशंका, अविश्वास, विश्वास का अभाव—क्षेमप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९.१ 2 समझ में न आने वाला 3. जो प्रत्यय न हो—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।

अप्रदक्षिणम् (अव्य०) [न० त०] बाएँ से दाहिनी ओर।

अप्रधान (वि०) [न० त०] अधीन, गौण, घटिया आवां तावदप्रधानौ—हि० २,—नम् (°ता °त्वम्) 1. अधीनता, गौणस्थिति, घटियापन 2. गौण या अमुख्य कार्य ('अप्रधान' शब्द प्रायः नपुं० में प्रयुक्त होता है चाहे वह अकेला प्रयुक्त हो या समास में)।

अप्रधृष्य (वि०) [न० त०] जो जीता न जा सके, अजेय—मयाप्यस्य भीष्ममत्यन्तक्रूरं हतं पार्थेनाहवेऽप्रधृष्यम्—महा०, मालवि० ५।१७।

अप्रभु (वि०) [न० त०] 1. शक्तिहीन, असक्त 2. असमर्थ, अयोग्य, अक्षमः (संब० या अधि० के साथ)।

अप्रमत्त (वि०) [न० त०] जो प्रमादी न हो, खबरदार, सावधान, जागरूक।

अप्रमद (वि०) [न० ब०] आमोद-प्रमोद से विरत, उदास, अप्रसन्न।

अप्रमा [न० त०] भ्रांत ज्ञान (विप० प्रमा)।

अप्रमाण (वि०) [न० ब०] 1 असीमित, अपरिमित 2 अनधिकृत 3. अप्रामाणिक, अविश्वस्त—श० ५।२५ —णम् [न० त०] जो किसी कार्य में प्रमाण रूप से प्रस्तुत न किया जा सके; अर्थात् वह कार्य जो अपरिहार्य न समझा जाय 2 असंबद्धता।

अप्रमाद (वि०) [न० ब०] खबरदार, जागरूक,—दः [न० त०] खबरदारी अवधान, जागरूकता।

अप्रमेय (वि०) [न० त०] 1 अपरिमित, असीमित, सीमारहित, 2 जिसका भलीभांति निश्चय न किया जा सके, न समझा जा सके, अतर्क्य अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभु मनु० १।३—यम् ब्रह्म।

अप्रयाणिः (स्त्री०) [न+प्र+या+अनि] न जाना, प्रगति न करना, (कोसने के लिए ही प्रयुक्त होता है)—अप्रयाणिस्ते भूयात्—सिद्धा० (भगवान् करे, तुम प्रगति न कर सको) दे० अजीवनिः,

अप्रयुक्त (वि०) [न० त०] 1 जो इस्तेमाल न किया गया हो, जो काम में न लाया गया हो, अव्यवहृत, 2 गलत तरीके से काम में लाया गया शब्द 3 विरल, असामान्य (सा० शा० में) (शब्द के रूप में किसी विशेष अर्थ या लिंग में प्रयुक्त चाहे वह कोशकारों से सम्मत ही क्यों न हो, तथा मन्ये दैवतोऽस्य पिशाचो राक्षसोऽथवा काव्य० ७, यहाँ 'दैवत' शब्द "अमरकोश" द्वारा सम्मत होने पर भी कवियों के द्वारा पुंलिंग में प्रयुक्त नहीं किया जाता—अतः यह 'अप्रयुक्त' है)।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. कार्य में न लगना, प्रगति न करना, किसी बात का न होना 2. आलस्य, क्रियाशून्यता, उत्तेजन या प्रोत्साहन का अभाव।

अप्रसङ्गः [न० त०] 1. आसक्ति का अभाव 2. संबंध का अभाव 3. अनुपयुक्त समय या अवसर,—अप्रसङ्गाभिधाने च श्रोतुः श्रद्धा न जायते।

अप्रसिद्ध (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, तुच्छ,—कु० ३।१९, 2 असाधारण, असामान्य।

अप्रस्ताविक (वि०) [स्त्री० —की०] [न० त०] विषय से संबंध न रखने वाला, असंगत (= अप्रास्ताविक दे०)।

अप्रस्तुत (वि०) [न० त०] 1. जो समय या विषय के उपयुक्त न हो, जो प्रसंगानुकूल न हो, असंगत 2. बेहूदा, मूर्खतापूर्ण 3. आकस्मिक, असंबद्ध। सम० —प्रशंसा एक अलंकार जिसमें विषय से भिन्न अर्थात् अप्रस्तुत का वर्णन करने से प्रस्तुत अर्थात् विषय का संकेत हो

जाता है—अप्रस्तुतप्रशंसा सा या सैव प्रस्तुताश्रया— काव्य० १०, इसके ५ भेद हैं—कार्ये निमित्ते सामान्ये विशेषे प्रस्तुते सति, तदन्यस्य वचस्तुल्ये तुल्यस्येति च पंचधा—अर्थात् जबकि प्रस्तुत विषय पर (क) कार्य के रूप में दृष्टिपात किया जाय जिसकी सूचना कारण बतलाकर दी जाती है, (ख) जब कार्य को बतलाकर कारण पर दृष्टिपात किया जाय। (ग) जब कोई विशेष निदर्शन देकर सामान्य बात पर दृष्टि डाली जाय (घ) जब किसी सामान्य बात का कथन करके विशेष निदर्शन पर दृष्टिपात किया जाय, अथवा (ङ) जब कि समान बात का कथन करके समान बात पर दृष्टिपात किया जाय, उदा० के लिए का० १० और सा० द० ७०६।

अप्रहत (वि०) [न० त०] 1. जिसे चोट न लगी हो 2. परती की भूमि, अनजुती 2. नया या कोरा कपड़ा।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री—की] [न० त०] 1. जो प्रकरण से संबंध न रखता हो, अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुत प्रशंसा—काव्य० १०।

अप्राकृत (वि०) [न० त०] 1. जो गवांरू न हो 2. जो मौलिक न हो 3. जो साधारण न हो, असाधारण 4. विशेष।

अप्राग्र्य (वि०) [न० त०] गौण, अधीन, घटिया।

अप्राप्त (वि०) [न० त०] 1. जो प्राप्त न किया गया हो, अप्राप्तवास्तु या राशिं सैव सर्वांग ईरिता भाषा० 2. जो न पहुँचा हो या जो न आया हो, 3. नियमत अनधिकृत, अननुगामी 4. न आया हुआ, न पहुँचा हुआ। सम० —अवसर, —काल (वि०) बुरे समय का, असामयिक, जो ऋतु के अनुकूल न हो, —°काल वचन बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, लभते बुद्ध्यवज्ञानमपमानं च पुष्कलम् पंच० १।६३, —यौवन (वि०) अवयस्क, नाबालिग, —व्यवहार, —वयस् (वि०) (विधि में) अल्पवयस्क, सार्वजनिक कार्यों में अपने उत्तरदायित्व के भरोसे भाग लेने के लिए जिस की आयु न हो, अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का) —अप्राप्तव्यवहारोऽसौ यावत् षोडशवार्षिक:—दक्ष०।

अप्राप्ति: (स्त्री०) [न० त०] 1. न मिलना, तदप्राप्तिमहादुःखविलीनाशेषपातका काव्य० ४, 2. जो किसी नियम से सिद्ध या स्थापित न हुआ हो; —विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियम: पाक्षिके सति—मीमा० 3. किसी बात का न होना, किसी घटना का घटित न होना।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री० —की] [न० त०] 1. जो प्रामाणिक न हो, अयुक्तियुक्त, इदं वचनमप्रामाणिकम्— 2. अविश्वसनीय, जिस पर भरोसा न किया जा सके।

अप्रिय (वि०) [न० त०] 1. नापसंद, अनभिमत, अरुचिकर,—अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ:—रामा०, मनु० ८।१३८, 2. निष्ठुर, अमित्र, —य: शत्रु, दुश्मन, —यम् अनुतापपूर्ण या अनिष्टकर कर्म,—पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री नाचरेत्किंचिदप्रियम्—मनु० ५।१५६,। सम० —कर, —कारिन्, —कारक, (वि०) अनिष्टकर, अरुचिकर —वद (°द), —वादिन् (वि०) निष्ठुर और कठोर शब्द बोलने वाला, —वन्ध्यार्थघ्न्यप्रियवदा—या० १।७३, माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी—चाण० ४४।

अप्रीति: (स्त्री०) [न० त०] 1. नापसंदगी, अरुचि 2. शत्रुता।

अप्रौढ (वि०) [न० त०] 1. जो ढीठ न हो 2. भीरु, नम्र, अभागी 3. जो वयस्क न हो, —ढा 1. अविवाहित कन्या 2. वह कन्या जिसका विवाह तो हो गया हो, परन्तु अभी तक वयस्क न हुई हो।

अप्लुत (वि०) [न० त०] वह स्वर जो आवाज की दृष्टि से लंबा न किया गया हो।

अप्सरस् (स्त्री०) (—रा:, रा) [अद्भ्य सरन्ति उद्गच्छन्ति—अप् + सृ + असुन्] [तु० रामा० अप्सु निर्मथनादेव रसात्तस्माद्वरस्त्रिय:, उत्पेतुर्मनुजश्रेष्ठ तस्मादप्सरसोऽभवन्]। आकाश में रहने वाली देवांगनाएँ जो गन्धर्वों की पत्नियाँ समझी जाती हैं, उन्हें मनमौजी बड़ी रुचिकर है, वह अपना रूप बदल सकती है तथा दिव्य प्रभाव से युक्त है, वह प्राय: इन्द्र की नर्तकियाँ हैं और 'स्वर्वेश्या' कहलाती हैं। बाण ने इस प्रकार की अप्सराओं के १४ कुलों का वर्णन किया है—दे० का० १३६, यह शब्द बहुधा बहुवचन में (स्त्रियां बहुष्वप्सरस) प्रयुक्त होता है, परन्तु एक वचन में प्रयोग तथा 'अप्सरा' रूप कई बार देखने में आता है—नियमविघ्नकारिणी मेनका नाम अप्सरा प्रेषिता—श० १, एकाप्सर आदि०—रघु० ७।५३,। सम० —तीर्थम् अप्सराओं के नहाने के लिए पवित्र तालाब, यह सम्भवत: किसी स्थान का नाम है दे० श० ६, —पति: अप्सराओं का स्वामी इन्द्र की उपाधि।

अफल (वि०) [न० ब०] 1 निष्फल, फलरहित, बंजर (आ० और आलं०) °ला ओषधय:, °लकांक्ष आदि °अनुर्वरा, निरर्थक, व्यर्थ,—यथा षण्ढोऽफल: स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला, यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रो ऽनृचोऽफल:। मनु० २।१५८। पुंस्त्व से हीन, बधिया किया हुआ—अफलाञ्च कृत्स्नेन कौशल्या च निराकृता —रामा०। सम० आकांक्षिन्, प्रेप्सु (वि०) जो पारिश्रमिक पाने की इच्छा नहीं रखता, स्वार्थरहित, —अफलाकांक्षिभिर्यज्ञ: क्रियते ब्रह्मवादिभि:—महा०।

अबीज (वि०) [न० ब०] बिना बीज का, बीज रहित —जम् अफीम।

अबद्ध-द्धक (वि०) [न० त०] 1 स्वच्छन्द, न बंधा हुआ, बेरोक 2 अर्थहीन, बेमतलब, बेहूदा, विरोधी उदा० यावज्जीवमहं मौनी ब्रह्मचारी च मे पिता माता तु मम वन्ध्यासीदपुत्रश्च पितामहः। (विरोधी) अत्युद्गत कमलपादुकाभ्यां द्वारि स्थितो गायति मङ्गलानि—अमर० रायमुकुट। सम० मुख (वि०) दुर्मुख, गाली से युक्त, बदजबान।

अबन्धु-बान्धव (वि०) [न० ब०] मित्रहीन एकाकी।

अबल (वि०) [न० ब] 1 दुर्बल बलहीन, 2 अरक्षित,- ला स्त्री (अपेक्षाकृत बलहीन होने के कारण),—नून हि ते कविवरा विपरीतबोधा ये नित्य माहुरबला इति कामिनीनाम्, याभिर्विलोलतरतारक दृष्टिपातैः शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ता भर्तृ० १।११, °जन स्त्री बलम् निर्बलता बल की कमी, दे० बलाबलम् भी।

अबाध (वि०) [न० ब०] 1 अनियन्त्रित, बाधारहित 2 पीड़ा से मुक्त —धः [न० त०] 1 बाधाहीनता 2. निराकरण का अभाव।

अबाल (वि०) [न० त०] 1 जो बालक न हो, जवान 2. छोटा नहीं, पूर्ण (जैसा कि चन्द्रमा)।

अबाह्य (वि०) [न० त०] 1 जो बाहरी न हो भीतरी 2 (आल०) परिचित, जानकार।

अबिन्धनः [आप इन्धनं यस्य —ब० स०] बडवाग्नि (जो समुद्री पानी पर पलती है)—अबिन्धनं वह्निमसौ बिभर्ति रघु० १३।४।

अबुद्ध (वि०) [न० त०] मूर्ख, नासमझ —अपकारमाचरम्-बुद्धानाम् शां० सू०।

अबुद्धि (स्त्री०) [न० त०] 1 समझ की कमी, 2 अज्ञान, मूर्खता। सम० — पूर्व, —पूर्वक (वि०) अनभिप्रेत (—र्वम्,-र्वकम्) (क्रि० वि०) अनजाने पन में, अज्ञात रूप से।

अबुध-बुध (वि०) [न० त०] मूर्ख, मूढ, (पु०) अज्ञ (स्त्री०—अबुध्) अज्ञान बुद्धि का अभाव।

अबोध (वि०) [न० ब०] अनजान मूर्ख, मूढ —धः [न० त०] 1 अज्ञान, अज्ञता, समझ का अभाव —°बोधहृतास्तान्चैव –कु० ३।२ निसर्गदुर्बोधमबोध विक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः कि० १।६ 2. न जानना, जानकारी न होना। सम० गम्य (वि०) जो समझ में न आ सके, अकल्पनीय।

अब्ज (वि०) [अप्सु जायते— अप् + जन् + ड] जल में पैदा हुआ या जल से उत्पन्न, -ब्जम् 1 कमल 2 एक अरब की संख्या (१०००००००००) सम० —अक्षिणी कमलों का छत्ता — ज, -भव, भू, —योनि ब्रह्मा के विशेषण — बान्धव कमलों का मित्र सूर्य, —वाहन शिव की उपाधि।

अब्जा [स्त्रियां टाप्] सीपी।

अब्जिनी [अब्ज + इनि स्त्रियां ङीप्] 1 कमलों का समूह 2 कमलों से पूर्ण स्थान 3 कमल का पौधा। सम० पति सूर्य।

अब्द [अपो ददाति दा + क] 1 बादल 2 वर्ष (इस अर्थ में नपुं० भी) 3 एक पर्वत का नाम। सम० अर्धम् आधा वर्ष —वाहन शिव —सारम् सारः एक प्रकार का कपूर।

अब्धि [आपः धीयन्ते अत्र —अप् धा + कि] 1 समुद्र जलाशय (आल० भी) दुग्ध कार्य ज्ञान आदि किसी चीज का भंडार या समूह 2 ताल झील 3 (गण० में) सात की संख्या कई बार चार की संख्या। सम० अग्नि बडवाग्नि —कफ, —फेन समुद्रझाग —ज 1 चन्द्रमा 2 शंख (—जा) 1 वारुणी (समुद्र से उत्पन्न) 2 लक्ष्मीदेवी —द्वीपा पृथ्वी —नगरी कृष्ण की राजधानी द्वारका —नवनीतक चन्द्रमा —मण्डूकी मोती की सीप —शयन विष्णु आदि रत्न।

अब्रह्मचर्य (वि०) [न० ब०] जो ब्रह्मचारी न हो —र्यम्, —र्यकम् [न० त०] असंयतता कामुकता 2 मैथुन।

अब्रह्मण्य (वि०) [न० त० नञ् ब्रह्मन् + यत्] 1 जो ब्राह्मण के लिए उपयुक्त न हो अब्रह्मण्यम वर्णं स्यात् ब्रह्मण्यं ब्राह्मणो हितम् तुला० 2 ब्राह्मणों के लिए अनुचित् —ण्यम् अब्राह्मणोचित कार्य या जो ब्राह्मण के लिये योग्य न हो। नाटकों में प्राय यह शब्द दुहाई देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है अर्थात् रक्षा करो सहायता करो एक अत्यन्त भीषण और अक्षम्य कर्म हो गया है —अयोध्य योगनन्दस्य व्यापादितमभिभव पुरा अब्रह्मण्यमनुष्ठानत्रीचो योगनिद्रितो द्विज —बृह० क०।

अब्राह्मण् (वि०) [न० ब०] ब्राह्मणों से वियुक्त या विरहित —नाब्रह्मक्षत्रमृध्नोति — मनु० ९।३२२।

अभक्ति (स्त्री०) [न० त०] 1 भक्ति या आसक्ति का अभाव 2 अविश्वास अनिष्ठता।

अभक्ष्य (वि०) [न० त०] 1 जो खाने योग्य न हो, 2 खाने के लिये निषिद्ध —क्ष्यम् खाने का निषिद्ध पदार्थ।

अभग्न (वि०) [न० ब०] अटूटा अखण्डित।

अभद्र (वि०) [न० त०] अशुभ, कुत्सित दुष्ट —द्रम् 1 दुष्कर्म पाप दुष्टता 2 शोक।

अभय (वि०) [न० ब०] निर्भय सुरक्षित भयमुक्त, —वैराग्यमेवाभयम् भर्तृ० ३।३५, —यम् 1 भय का अभाव भय से दूर रहना 2 सुरक्षा, बचाव, भय या

डर में रखा,—मया तस्याभय दत्तम्—पंच० १, । सम० —कृत् (वि०) 1 जो भयानक न हो, मृदु, 2 सुरक्षा देने वाला,—डिण्डिम 1 सुरक्षा या विश्वसनीयता का ढिंढोरा, 2 युद्धभेरी, द,—दायिन्,—प्रद (वि) सुरक्षा का वचन देने वाला, —दक्षिणा, —दानम्, —प्रदानम् भय से मुक्ति का वचन या सुरक्षा की गारंटी —सर्वप्रदानेष्वभयप्रदान (प्रधानम्) पंच० १।२९०, —पत्रम् सुरक्षा का विश्वास दिलाने वाला लिखित पत्र, तु० आधुनिक 'सुरक्षा आचरण'—याचना रक्षा के लिए प्रार्थना, —वचनम् —वाच (स्त्री) सुरक्षा का वचन या भय से मुक्त करने का प्रतिज्ञा।

अभयंकर —कृत (वि०) [न० त०] 1 जो भयानक न हो 2 सुरक्षा देने वाला।

अभव [न० त०] 1 अविद्यमानता —मत एव भवाभवौ महा० 2 कुरुक्षेत्र टीका प्रारंभम —अभवाय ज्ञाति वा —कि० १२।३०, १८।२३ 3 समाप्ति या प्रलय —अभवाय सर्वभूतानामभवाय न रक्षसाम् रामा०।

अभव्य (वि०) [न० त०] 1 जो न होना हो 2 अनुपयुक्त अशुभ 3 दुर्भाग्यपूर्ण अभागा —उपनतमवधीरयन्त्यभव्याः कि० १०।५१।

अभाग (वि०) [न० ब०] 1 जिसका संपत्ति में कोई हिस्सा न हो 2 अविभक्त।

अभावः [न० त०] 1 न होना अनस्तित्व —गतो भावोऽभावम्—मृच्छ० १ (अन्तर्धान हो गया) 2 अनुपस्थिति, कमी, असफलता,—सर्वेषामप्यभावे तु ब्राह्मणा रिक्थभागिनः मनु० ९।१८८, अधिकतर समास में —सर्वाभाव हरेन्नृप १८९ सब कुछ विफल हो जाने पर 3 सर्वनाश, मृत्यु, विनाश सत्ताशून्यता, नाभाव उपलब्धेः शारी० 4. (दर्शन० में) नाश, असत्ता, अविद्यमानता या निषेध, कणाद के मतानुसार सातवां पदार्थ या वर्ग, (इसके दो भेद हैं संसर्गाभाव और अन्योन्याभाव, पहले के फिर तीन उपभेद हैं प्रागभाव प्रध्वंसाभाव, और अत्यन्ताभाव)।

अभावना [न०त०] 1 सत्यविवेचन या निर्णय का अभाव 2 धार्मिक ध्यान का अभाव।

अभाषित (वि०) [न० त०] न कहा हुआ। सम० —पुंस्क वह शब्द जो कभी पुं० या स्त्री० में प्रयुक्त न होता हो अर्थात् नित्यनपुंसक।

अभि (अव्य०) [नञ् + भा + कि] (धातु और संज्ञा से पूर्व लगाया जाने वाला उपसर्ग) अर्थ (क) 'की ओर', 'की दिशा में', अभिगम की ओर जाना, अभिया, °गमनम्, °यानम् आदि (ख) 'के लिए' 'के विरुद्ध' °सृप्, °षण् आदि (ग) 'पर' 'ऊपर' °सिच् पर छिड़कना आदि (घ) 'ऊपर से' 'ऊपर' 'परे' °भू हावी हो जाना, °नन्द् (२) 'अधिकता से' 'बहुत' °कंप 2 (विशेषण तथा स्वतन्त्र संज्ञा शब्दों से पूर्व लगने वाला उपसर्ग) —अर्थ (क) तीव्रता और प्राधान्य, °धर्म —प्रधान कर्तव्य, °ताम्र —अत्यंत लाल °नव बिल्कुल नया (ख) 'की ओर' 'की दिशा में', अव्ययीभाव समास बनाना °वेगम्, °मुखम् °मुखि आदि 3 (कर्म० के साथ सब० अव्य० के रूप में) (क) 'की ओर' की दिशा में 'के विरुद्ध' (कर्म के साथ या इसी अर्थ में समास के साथ) अग्निमभि या अभ्यग्नि शलभाः पतन्ति वृक्षमभिद्योतते विद्युत्—सिद्धा० (ख) 'निकट' 'पहले' सामने 'उपस्थिति में' (ग) 'पर' ऊपर संकेत करते हुए के विषय में साधु देवदत्तो मातरमभि सिद्धा० (घ) पृथक् पृथक् एक-एक करके (विभाग द्वारा) वृक्षं वृक्षमभिषिञ्चति सिद्धा०।

अभि (भी) क (वि०) [अभि + कन्] कामी, लंपट, विलासी, —नाभिकामभिक कुञ्चित काञ्चन स्वयमवर्तत्समा —० ६ अभिमिव कृशानो त्व दर्पं मर्यापि यासि नक भट्टि० ० २।

अभिकांक्षा [अभि + कांक्ष् + अ + टाप्] कामना, इच्छा, लालसा।

अभिकांक्षिन् (वि०) [अभि कांक्ष् + णिनि] लालसा रखने वाला कामना करने वाला।

अभिकाम (वि०) [अभिवृद्धः कामो यस्य— अभि + कम् + अच् ब० स०] स्नेही, प्रेमी, इच्छुक, कामनायुक्त कामुक (कर्म०से या समास में) यान्वे त्वामभिकामाहम महा०, स (प्रा० स०) 1 स्नेह, प्रेम 2 कामना इच्छा।

अभिक्रम [अभि + क्रम् + घञ् अवृद्धि] 1 आरम्भ, प्रयत्न व्यवसाय, नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते भग० २।४०, 2 निश्चित आक्रमण या धावा, अभियान हमला 3 आरोहण, सवार होना।

अभिक्रमणम्-क्रान्ति (स्त्री०) [अभि + क्रम् + ल्युट्, क्तिन् वा] उपागमन आक्रमण करना दे० अभिक्रम।

अभिक्रोश [अभि + क्रुश् + घञ्] 1 पुकारना, चिल्लाना 2 अपशब्द कहना निंदा करना।

अभिक्रोशक [अभि + क्रुश् + ण्वुल्] पुकारने वाला, गाली देने वाला कलंक लगाने वाला।

अभिख्या [अभि + ख्या + अङ् + टाप्] 1 चमक-दमक, शोभा कांति, कान्त्यभिख्या तदागमात् वसन्तो मुखवेषकौ रघु० १।६५, सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् मेघ०, ८० कु० १।४३ ७।१८, 2 कहना, घोषणा करना, 3 पुकारना, संबोधित करना 4 नाम, अभिधान 5 शब्द, पर्याय 6 प्रसिद्धि, यश, कुख्याति, माहात्म्य।

अभिख्यानम् [अभि + ख्या + ल्युट्] ख्याति, यश।

अभिगम—गमनम् [अभिगम्+अप्, ल्युट् वा] 1. (क) उपागमन, पास जाना या आना, दर्शनार्थ गमन, पहुंचना, तवार्हतो नाभिगमेन तृप्तम् रघु० ५।११, १७।७२, ज्येष्ठाभिगमनात्पूर्वं तेनाप्यनभिनन्दिता १२।३५, 2 संभोग (स्त्री या पुरुष के साथ) परदाराभिगमनम् - का० १४७, प्रसह्य दास्यभिगमे या० २।२९१।

अभिगम्य (सं० कृ०) [अभिगम्+य] 1 उपागम्य, दर्शनीय अन्विष्य, कु० ६।५६, 2 प्राप्य, आमन्त्रक, -भीमकान्तैर्नृपगुणैः अधृष्यश्चाभिगम्यश्च—रघु० १।१६।

अभिगर्जनम्- } [अभिगर्ज् + ल्युट्, क्त वा] जंगली तथा **अभिगर्जितम्** } भीषण दहाड़, चीत्कार।

अभिगामिन् (वि०) [अभि+गम्+णिनि] निकट आने वाला, सभोग करने वाला।

अभिगुप्तिः (स्त्री०) [अभि+गुप्+क्तिन्] संरक्षण, बचाव।

अभिगोप्तृ (पु०) [अभि+गुप्+तृच्] बचाने वाला संरक्षक।

अभिग्रहः [अभि+ग्रह्+अच्] 1 छीन लेना, ठगना, लूटना 2 धावा, हमला 3 ललकार 4 शिकायत 5 अधिकार, प्रभाव।

अभिग्रहणम् [अभि+ग्रह्+ल्युट्] लूटना, छीन लेना।

अभिघर्षणम् [अभि+घृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना झगड़ना, 2 बुरी भावना से अधिकार करना।

अभिघातः [अभि+हन्+घञ्] 1 आघात करना, मारना चोट पहुंचाना, प्रहार, तटाभिघातादिव लग्नपङ्कं —कु० ७।४९, 2 विध्वंस, पूर्ण नाश, समूलोन्मूलन —दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ—सां० का० १, —तम् कठोर उच्चारण (सन्धि नियमों की उपेक्षा के कारण)।

अभिघातक (वि०) [स्त्री० —तिका] (मार कर) पीछे हटाने वाला, दूर कर देने वाला।

अभिघातिन् (पु०) [अभि+हन्+णिनि] शत्रु।

अभिघारः [अभि+घृ+णिच्+घञ्] 1 घी 2 यज्ञ में घी की आहुति, —प्रणीतपृषदाज्याभिघारघोरस्तनूनपात् —महावी० ३।

अभिघारणम् [अभि+घृ+णिच्+ल्युट्] घी छिड़कना।

अभिघ्राणम् [अभि+घ्रा+ल्युट्] सिर सूंघना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिचरः [अभि+चर्+अच्] अनुचर, सेवक।

अभिचरणम् [अभि+चर्+ल्युट्] 1 झाड़ना-फूंकना, जादू टोना, बुरे कामों के लिए मंत्र पढ़ कर जादू करना, इन्द्रजाल 2 मारना।

अभिचारः [अभि+चर्+घञ्] 1 (मंत्रादि द्वारा) झाड़ फूंक करना, मंत्रमुग्ध करना, जादू के मंत्रों का बुरे कामों के लिए प्रयोग करना, जादू करना 2. हत्या करना। सम०—ज्वरः जादू के मंत्रों द्वारा किया गया बुखार,—मन्त्रः जादू का गुर, जादू करने के लिए मंत्र-फूंकना, शि० ७।५८,—यज्ञः, —होमः जादू टोने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, होम।

अभिचारक } (वि०) (स्त्रियाम् —रिका, —रिणी) [अभि **अभिचारिन्** } +चर्+ण्वुल्, णिनि वा] अभिचार करने वाला, जादू टोना करने वाला, —कः,—री ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

अभिजनः [अभि+जन्+घञ्, अवृद्धि] 1 (क) कुटुम्ब, वंश, अन्वय (ख) जन्म उत्पत्ति, कुल 2 उत्तम कुल में जन्म, उत्तम कुटुम्ब में उत्पत्ति —स्मृत्य तत्महात्म्य यदभिजनतो यच्च गुणतः मा० २।१३, शील शैलतटात्पतत्वभिजनः सदह्यतां वह्निना भर्तृ० २. ३९, 3 जन्मभूमि, मातृभूमि, बापदादाओं की जन्मभूमि (विप० निवास) यः पूर्वैरध्युषितः सोऽभिजनः सिद्धा० 4 ख्याति, प्रतिष्ठा 5 घर का मुखिया या कुलभूषण (श्रेष्ठव्यक्ति) 6 अनुचर, परिजन।

अभिजनवत् (वि०) [अभिजन+मतुप्] उच्च कुल का, उत्तम वंश में उत्पन्न — वनाभर्तुः श्लाघ्याभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे श० ४।१८।

अभिजयः [अभि+जि+अच्] जीत, पूर्ण विजय।

अभिजात (भू० क० कृ०) [अभि+जन्+क्त] 1 (क) उत्पन्न, मनु० १२।३१५ (ख) सर्वथा विकसित (ग) योग्य 2 जन्मा हुआ, पैदा हुआ 3 कुलीन, उच्चकुल में उत्पन्न, उच्च वंश में जन्म लेने वाला,—जात्याभिजातेन शूरः शौर्यवता कुशः रघु० १७।४, शिष्ट, नम्र अभिजातं खल्वस्य वचनम् - विक्रम० १ 4 योग्य, उचित उपयुक्त 5 मधुर, रुचिकर, प्रव्रजिताप्यासीदभिजातवाचि कु० १।४५, 6 मनोहर, सुन्दर 7 विद्वान्, बुद्धिमान् विवेकशील,—तम् कीर्तिमभिजातेषु नाप्रवृद्धेषु सत्कृतम् (वदेत्)।

अभिजातिः (स्त्री०) [अभि+जन्+क्तिन्] उत्तम कुल में जन्म।

अभिजिघ्रणम् [अभि+घ्रा+ल्युट् जिघ्रादेश] नाक से सिर का स्पर्श करना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिजित् (पु०) [अभि+जि+क्विप्] 1 विष्णु 2 एक नक्षत्र का नाम।

अभिज्ञ (वि०) [अभि+ज्ञा+क] 1. जानने वाला, जानकार, अनुभवशील, कुशल (संब० या अधि० के साथ अथवा समास में) —यद्वा कौशलमिन्द्रसूनुदमने तत्राप्यभिज्ञो जनः उत्तर० ५।३४, अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः - कु० २।४१, मेघ० १६, रघु० ७।६४, अनभिज्ञो भवान्सेवाधर्मस्य— 1, 2. कुशल, दक्ष, चतुर, —ज्ञा 1 पहचान 2. याद, स्मृति चिह्न।

अभिज्ञानम् [अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1 पहचान, –तदभिज्ञान-हेतोर्हि दत्तं तेन महात्मना –राम० 2 स्मरण, प्रत्यास्मरण 3 (क) पहचान का चिह्न (पुरुष या वस्तु), –वत्स योगिन्यस्मि मालत्यभिज्ञानं च धारयामि –मा० ९, भट्टि० ८।११८, १२४ इसी प्रकार शाकुन्तल 4 चन्द्रमण्डल में काला चिह्न। सम० –आभरणम् पहचान का भूषण, अंगूठी श० ४।

अभितः (अव्य०) [अभि+तसिल्] (क्रि० वि० के रूप में अथवा कर्म० के साथ संब० अव्य० के रूप में प्रयुक्त) 1 निकट, की ओर, सब ओर से, अभितस्तं पृथासूनुः स्नेहेन परितस्तरे कि० ११।८ 2 (क) निकट मिला हुआ समीप में ...ता ...आश्रमोद्वारमुपत्रमभित स्थितम् राम० ...) के सामने, की उपस्थिति में ...र्निषद्ध ...गुरुमन्वासनम् कि० २।५९, 3 सामने ... आगे सामने कि० ६।१, ५।१४ 4 दोनों ओर ...कृशानुबिम्बकनकपर्माभितस्तू पीठयुग्लम उत्तर० ४।२० भट्टि० ५।१६७ 5 पहले और पीछे 6 सब ओर से चारों ओर से (कर्म० या संब० के साथ) परिजना यथाव्यापारं राजानमभितः स्थिताः श० ...१।७ 7 पूर्ण रूप से पूरी तरह से सवत्र 8 शीघ्र ही।

अभिताप [अभि+तप्+घञ्] अत्यन्त गर्मी–चाहे शरीर को हो या मन को, आवेश, बहुत अधिक दुःख या पीड़ा –शि० ९।१ कि० ९।८ अत्यन्तमुन्नतं मनसोऽभितापं विक्रम० ३।

अभिताम्र (वि०) [प्रा० स०] बहुत लाल, –ताम्रमुख रघु० १५।४९।

अभिदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] दक्षिण की ओर (–तु० प्रदक्षिणम्)।

अभिद्रवः, द्रवणम् [अभि+द्रु+अप्, ल्युट् वा] आक्रमण हमला।

अभिद्रोह [अभि+द्रुह्+घञ्] 1 चोट पहुंचाना षड्यन्त्र रचना हानि करना 2 गाली निन्दा।

अभिधर्षणम् [अभि+धृष्+ल्युट्] 1 भूत प्रेतादि से आविष्ट होना 2 अत्याचार।

अभिधा [अभि+धा+अङ्+टाप्] 1 नाम, संज्ञा (प्रायः समास में) कुसुम शरा–भिधस्य मा० द० २ 2. शब्द, ध्वनि 3 शाब्दिक शक्ति या शब्दार्थ, संकेतन, शब्द की तीन शक्तियों में से एक, वाच्यार्थोऽभिधया बोध्यः सा० द० २ (अभिधा शब्द के संकेतित अर्थ को बतलाती है) स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते काव्य० २। सम० –ध्वंसिन् (वि०) अपने नाम का नाश करने वाला –मूल (वि०) शब्द के संकेतित या मुख्यार्थ पर आधारित।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] 1 कहना, बोलना, नाम रखना, संकेत करना, –एतावतामर्थानामिदमभिधानम् निरु० 2 प्रकथन, वचन दे० पा० २।३।२ सिद्धा० 3 नाम, संज्ञा, पद, –अभिधानं तु पश्चात्तस्याहमश्रौषम्–का० ३२, नवाभिधानात् व्ययते नतानन कि० १। भूणाभिधानात् २४, (समस्तपद के अन्त में) पुकारा गया, नाम लिया गया –भूणाभिधानात् वचनात् रघु० ३।२०, 4 भाषण, व्याख्यान 5 कोश, शब्दावली, लुगत (अंतिम दो अर्थों में पु० में भी)। सम० –कोश, –माला शब्दकोश।

अभिधायक (स्त्री० –यिका, –यिनी) } (वि०) [अभि+धा
अभिधायिन् } +ण्वुल्, णिनि वा]
1 नाम रखने वाला वाचक –कर्पूरः कुल्याभिधायिनी अमर०,–संकेत करता है, अर्थ बतलाता है, भाव रखता है, 2 कहने वाला, बोलने वाला, बतलाने-वाला लक्ष्मीमित्यभिधायिनि प्रियतमे अमरु० २३, तच्छाभिधायी पुरुषः पृष्ठमासाद उच्यते–त्रिका०।

अभिधावनम् [अभि+धाव्+ल्युट्] आक्रमण, पीछा करना।

अभिधेय (सं० कृ०) [अभि+धा+यत्] 1 नाम दिये जाने योग्य कथनीय शब्द 2 नाम के योग्य (तर्क० में) अभिधेया पदार्थाः –यम् 1 वाचकता, अर्थ, भाव ...नाय कि० १४।४ 2 भावार्थ 3 विषय, इत्यभिधेय ...मनम्–काव्य० १, इति प्रयोजनाभिधेयम् ...सा० 4 मुख्यार्थ (–अभिधा) अभिधायिका ...लक्षणोच्यते काव्य० २।

अभिध्या [अभि+ध्यै+अङ्+टाप्] 1 दूसरे की संपत्ति के लिए ललचाना, 2 ...कामना चाह सामान्य इच्छा –अभिध्यापदेशात् ब्रह्म० 3 ग्रहण करने की इच्छा।

अभिध्यानम् [अभि+ध्यै+ल्युट्] 1 चाहना, प्रबल इच्छा करना ललचाना कामना करना 2 मनन करना, प्रचिन्तन।

अभिनन्द [अभि+नन्द्+घञ्] 1 प्रहर्ष, प्रफुल्लता प्रसन्नता 2 प्रशंसा सराहना अभिनन्दन बधाई देना, 3 कामना इच्छा 4 प्रोत्साहन कार्य में प्रेरणा।

अभिनन्दनम् [अभि+नन्द्+ल्युट्] 1 प्रहर्षण अभिवादन, स्वागत करना 2 प्रशंसा करना, अनुमोदन करना 3 कामना इच्छा।

अभिनन्दनीय } (सं० कृ०) [अभि+नन्द्+अनीय, ण्यत्
अभिनन्द्य } वा] प्रहृष्ट होना, प्रशंसित होना सराहा जाना –कामसमन्तादभिनन्दनीयम् ...१, रघु० ५।३१।

अभिनम्र (वि०) [प्रा० स०] झुका हुआ, विनीत, –स्तनाभिरामस्तबकाभिनम्राम् रघु० १३।३२।

अभिनयः [अभि+नी+अच्] 1 नाटक खेलना, अंग-विक्षेप, नाटकीय प्रदर्शन (किसी मनोभाव या आवेश को

दृष्टि, संकेत या मुद्रादि से प्रकट करने वाला)—सूत्वाभिनयक्रियाच्युतम्—कु० ५।७९, अभिनयान् परिचेतुमिवोद्यता—रघु० ९।३३, नर्तकीरभिनयातिलङ्घिनी, १९।१४ 2. नाटकीय प्रदर्शनी, स्वांग, मंच पर प्रदर्शन करना,—कलितमभिनयं तमद्य भर्ता मदना द्रष्टुमनाः सलोकपालः—विक्रम० २।१८, सा० द० अभिनय का निरूपण इस प्रकार करता है —भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः स चतुर्विधः, आङ्गिको वाचिकश्चैवमाहार्यः सात्त्विकस्तथा। २७४। अभिनय —किसी दशा का अनुकरण करना है, यह चार प्रकार का है —(१) आंगिक—शारीरिक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त होने वाला (२) वाचिक—शब्दों द्वारा प्रकट होने वाला (३) आहार्य—वेशभूषा, अलंकार, सजावट आदि से व्यक्त होने वाला (४) सात्त्विक—स्वेद, रोमांच आदि के द्वारा आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने वाला।

अभिनव (वि०) [प्रा० स०] 1 बिल्कुल नया या ताजा (सर्वथा) पदपङ्क्तिर्दृश्यतेऽभिनवा—श० ३।८, ५।१, अभिनवा वधू का० ९, नवोढा 2 बहुत छोटा, अनुभवहीन। सम०—यौवन —वयस्क, नौजवान, बहुत छोटा।

अभिनहनम् [अभि+नह् ल्युट्] आँख पर बाँधने की पट्टी, अंधा।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+नि+युज्+क्त] काम में लगा हुआ, व्यस्त।

अभिनिर्मुक्त (वि०) [अभि+निर्+मुच्+क्त] 1 सूर्यास्त होने के कारण छूटा हुआ कार्य या छोड़ा हुआ कार्य 2 सूर्यास्त के समय सोया हुआ।

अभिनिर्याणम् [अभि+निर्+या+ल्युट्] 1 प्रयाण 2 आक्रमण किसी शत्रु के सामने अभिप्रस्थान।

अभिनिविष्ट (भू० क० कृ०) [अभि+नि+विश्+क्त] 1 घुसा हुआ, लीन, जुटा हुआ 2 दृढ़ता पूर्वक जमा हुआ सावधान लगा हुआ 3 सम्पन्न अधिकार युक्त,—गुरुभिरभिनिविष्टं (गर्भं) लोकपालानुभावैः रघु० २।७५, 4 दृढ़निश्चयी कृतसंकल्प 5 (कदर्थ०) हठी, दुराग्रही।

अभिनिविष्टता [अभिनिविष्ट+तल्+टाप्] दृढ़संकल्पता, दृढ़निश्चय, निन्दाक्षेपापमानादेरमार्गेऽभिनिविष्टता सा० द० —अर्थात् निंदा, भर्त्सना या अपमान की परवाह न करते हुए अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से आगे बढ़ते जाना।

अभिनिवृत्तिः (स्त्री०) [अभि+नि+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्ति।

अभिनिवेशः [अभि+नि+विश्+घञ्] 1 लगन, आसक्ति एकनिष्ठता दृढ़ विनियोग (अधि० के साथ या समास में), कतमस्मिन्नस्त भावाभिनिवेश विक्रम० ३, अहो निरर्थकव्यापारेष्वभिनिवेश का० १२०, बलीयान्खलु मेऽभिनिवेश श० ३, असत्यभूते वस्तुन्यभिनिवेश—मिता० २ 2 उत्कट अभिलाष, दृढ़ प्रत्याशा 3 दृढ़संकल्प, दृढ़ निश्चय, धैर्य, जनकात्मजायां नितान्तरूक्षाभिनिवेशमीशम् रघु० १४।४३ अनुरूपाभिनिवेशतोषिणा कु० ५।७, 4 (योगदर्शन में) एक प्रकार का अज्ञान जो मृत्यु के भय का कारण हो सांसारिक विषय-वासनाओं तथा शारीरिक आमोदप्रमोद में व्यस्त रहना साथ ही यह भय भी लगा रहे कि मृत्यु के द्वारा इन सब से वियोग हो जाना है।

अभिनिवेशिन् (वि०) [अभि+नि+विश्+णिनि] 1 आसक्त, संलग्न 2 जमा रहने वाला अनन्यभक्त, 3 दृढ़ निश्चयी कृतसंकल्प।

अभिनिष्क्रमणम् [अभि+निस्+क्रम्+ल्युट्] बाहर निकलना।

अभिनिष्टानः [अभि+नि+स्तन्+घञ्,—सस्य षत्वम्] वर्णमाला का अक्षर।

अभिनिष्पतनम् [अभि+निस्+पत्+ल्युट्] टूट पड़ना, निकल पड़ना।

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+निस्+पद्+क्तिन्] पूर्ति समाप्ति निष्पन्नता पूर्णता।

अभिनिह्नवः [अभि+नि+ह्नु+अप्] मुकरना, छिपाना।

अभिनीत (भू० क० कृ०) [अभि+नी+क्त] 1 निकट लाया गया, पहुँचाया गया 2 किया गया, नाटक के रूप में खेला गया 3 सुसज्जित, अलंकृत, अत्यन्त श्रेष्ठ 4 उपयुक्त, उचित, योग्य, अभिनीततरं वाक्यमित्यब्रवीद् युधिष्ठिरः —महा० 5 सहनशील, दयालु, समचित्त 6 क्रुद्ध 7 कृपालु, मित्र सदृश।

अभिनीतिः (स्त्री०) [अभि+नी+क्तिन्] 1 इंगित, भावपूर्ण अंग विक्षेप, 2 कृपालुता, मित्रता, सहिष्णुता, —सान्त्वपूर्वमभिनीतिहेतुकम् कि० १३।३६।

अभिनेतृ (पुं०) नाटक का पात्र,—त्री नाटक की पात्री।

अभिनेतव्य, **अभिनेय** (सं० कृ०) [अभि+नी+तव्य, यत् वा] नाटक के रूप में खेले जाने योग्य,—दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम् - सा० द० २७३, तस्य (प्रबन्धस्य) एकदेशः अभिनेयार्थं कृतः—उत्तर० ४, इसका एक अंश रंगमंच के उपयुक्त बना दिया गया।

अभिन्न (वि०) [न० त०] 1 न टूटा हुआ, अनकटा 2 अविकृत 3 अपरिवर्तित 4 जो अलग न हो, वही, एकरूप (अपा० के साथ), [illegible] प्रबोध०।

अभिपतनम् [अभि+पत्+ल्युट्] 1 उपागमन 2 टूट पड़ना, आक्रमण करना, चढ़ाई करना 3. कूच करना, रवानगी।

अभिपत्तिः (स्त्री०) [अभि+पद्+क्तिन्] 1 उपागमन, निकट आना 2 पूर्ति।

अभिपन्न (भू० क० कृ०) [अभि + पद् + क्त] 1 समीप गया हुआ या आया हुआ, उपागत, की ओर दौड़ा हुआ या गया हुआ 2 भागा हुआ, भगोड़ा शरणार्थी 3 पराभूत पराजित पीड़ित तिरस्कार किया हुआ पकड़ा हुआ, —कालाभिपन्ना सीदन्ति सिकतासेतवो यथा रामा०, रोग , कष्ट , व्याघ्र° आदि 4 भाग्यहीन संकटग्रस्त 5 स्वीकृत 6 दोषी ।

अभिपरिप्लुत (वि०) [अभि + परि + प्लु + क्त] डूबा हुआ भरा हुआ, बाढ़ग्रस्त उमड़ा हुआ, शोक क्रोध आदि से ।

अभिपूरणम् [अभि + पृ + ल्युट्] भरना, काबू में लाना ।

अभिपूर्वम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमश ।

अभिप्रणयनम् [अभि + प्र + नी + ल्युट्] वेदमंत्रों के द्वारा संस्कार करना ।

अभिप्रणय [अभि + प्र + नी + अच्] प्रेम, कृपादृष्टि अनुरंजन ।

अभिप्रणीत (भू०क०कृ०) [अभि + प्र + नी + क्त] 1 संस्कार किया हुआ —अध्वाग्नं लोकाभ्युदये स राजा यथाध्वरं वह्निरभिप्रणीतम् भट्टि० १।४ 2 लाया हुआ ।

अभिप्रथनम् [अभि + प्रथ् + ल्युट्] फैलाना विस्तार करना ऊपर से डालना ।

अभिप्रदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] दाहिनी ओर ।

अभिप्रवर्तनम् [अभि + प्र + वृत् + ल्युट्] 1 आगे बढ़ना 2 प्रगमन आचरण 3 बहना बाहर आना जैसे पसीने का निकलना ।

अभिप्राप्तिः = दे० प्राप्ति ।

अभिप्रायः [अभि + प्र + इ + अच्] 1 लक्ष्य, प्रयोजन उद्देश्य आशय कामना इच्छा,—अभिप्रायो न सिध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत् पंच० १।१५८ नाभिप्रायाणि वचामि—पंच २ गम्भीर शब्द, भाव नवेऽभिप्राय 2 अर्थ भाव तात्पर्य या शब्द अथवा किसी परिच्छेद का उपलक्षित भाव तेषामयमभिप्राय इस प्रकार का उनका आशय है तात्पर्य (परिच्छेद का) 3 सम्मति विश्वास, 4 संबंध उल्लेख ।

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि + प्र + इ + क्त] 1 अर्थपूर्ण, उद्दिष्ट, साशय, आकलित —अथायमर्थोऽभिप्रेत निवेदयाभिप्रेतम् पंच० १, 2. इष्ट, अभिलषित, —यथाभिप्रेतमनुष्ठीयताम् हि० १ 3 सम्मत, स्वीकृत 4 प्रिय, रुचिकर ।

अभिप्रोक्षणम् [अभि + प्र + उक्ष् + ल्युट्] छिड़कना छिड़काव ।

अभिप्लव [अभि + प्लु + अप्] 1 कष्ट, बाधा 2. बाढ़, उतरा कर बहना ।

अभिप्लुत (भू० क० कृ०) [अभि + प्लु + क्त] पराभूत, व्याकुल (शा० तथा आलं०) ।

अभिबुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] बुद्धीन्द्रिय या ज्ञानेन्द्रिय (विप० कर्मेन्द्रिय), आंख, जिह्वा, कान, नाक और त्वचा ।

अभिभवः [अभि + भू + अप्] 1 हार, पराभव दमन, स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद्वमन्ति श० २।७ (जब दूसरी शक्ति के द्वारा आक्रान्त अवरुद्ध या पराभूत हो) —अभिभव कुत एव सपत्नज —रघु० ९।४ 2 पराभूत होना,—जराभिभवविच्छाय —का० ३४६ आक्रान्त या प्रभावित होना, (ज्वरादिक से) मूर्छित होना 3 तिरस्कार अपमान निरभिभवसारा परकथा भर्तृ० २।६४, 4 निरादर, मानभंग —अनभ्यशाखाभिभवेयमाकृति कु० ५।४९ 5 प्रबलता, —प्रभुत्व विस्तार, —अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रिय भग० १।४१, कि० २।३७ ।

अभिभवनम् [अभि + भू + ल्युट्] हावी होना, पराजित करना जीतना पराभूत होना ।

अभिभावनम् [अभि + भू + णिच् + ल्युट्] विजयी कराना, पराजित करने वाला बनाना ।

अभिभाविन्-भाव (व्) क (वि०) [अभि + भू + णिनि, वुकञ् वा] 1 पराजित करने वाला, हराने वाला, जीतने वाला 2 दूसरों से आगे बढ़ने वाला, परमोत्कृष्ट श्रेष्ठ होने वाला —सर्वतेजोऽभिभाविना रघु० १।१४ कि० ११।६ ।

अभिभाषणम् [अभि + भाष् + ल्युट्] सम्बोधित करते हुए बोलना भाषण देना ।

अभिभूतिः (स्त्री०) [अभि + भू + क्तिन्] 1 प्रधानता, प्रभुत्व 2 जीतना, हराना, पराभव अभिभूतिभयादसूनत सुखमुज्झन्ति न धाम मानिन —कि० २।२०, 3 अनादर अपमान

अभिमत (भू० क० कृ०) [अभि + मन् + क्त] इष्ट, अभीष्ट प्रिय प्यारा रुचिकर, वाञ्छनीय —नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूना - ३५, ५८, अभिमतफलशंसी चारु पुस्फोर बाहु —भट्टि० १।२७, 2 सम्मत, स्वीकृत, माना हुआ - न किल भवता स्थान देव्या गृहेऽभिमत तत —उत्तर० ३।३२, प्रसिद्धमाहात्म्याभिमतानामपि कपिलकणभुक्प्रभृतीना शारी०, सम्मानित, आदृत, —तम् कामना, इच्छा —त: प्रियव्यक्ति, प्रेमी ।

अभिमनस् (वि०) [प्रा० स०] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आतुर उत्कंठित भवतोऽभिमना: समीहते सरुष कर्तुमुपेत्य माननाम् शि० १६।२ (यहाँ अभि "निश्चय" अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिमन्त्रणम् [अभि + मन्त्र् + ल्युट्] 1 विशेष मंत्रों को पढ़कर संस्कारयुक्त करना, या पवित्र करना,—याज्ञ० १।२३७, 2 सुहावना, मनोहर 3 संबोधित करना, आमंत्रित करना, परामर्श देना ।

अभिभवः [अभि+भू+अच्] 1 हत्या, नाश वध करना 2 युद्ध, संघर्ष 3 अपने ही पक्ष द्वारा विश्वासघात अपने ही पक्ष वालों से भय 4 बंधन बेड़ी या हथकड़ी।

अभिमर्द [अभि+मृद्+घञ्] 1 मलना रगड़ 2 कुचलना, लूटखसोट, (शत्रु [illegible]) देश का उजाड़ [illegible] 3 युद्ध, संग्राम 4 मदिरा शराब।

अभिमर्दन (वि०) [अभि+मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला दमन करने वाला, —नम् कुचलना दमन करना।

अभिमर्शः-र्शनम् **अभिमर्षः-र्षणम्** [अभि+मृश् (ष्)+घञ् ल्युट् वा] 1 स्पर्श संपर्क 2 अभ्याघात हिंसा बलात्कार, संभोग कृताभिमर्शामनमन्यमान [illegible] ५।२०, इन्द्रियासक्ति के कारण किया गया आलिंगन अथवा सतीत्व भ्रष्ट करना या बलात्कार —पराभिमर्शो न तवास्ति कु० ५।४३ (मल्लि० —परपराभव) मनु० ८।३५२, याज्ञ० [illegible]।

अभिमर्शक-र्षक **अभिमर्शिन्-र्षिन्** (वि०) [अभिमृश् (ष्)+ण्वुल् णिनि वा] 1 स्पर्श करने वाला संपर्क में आने वाला, 2 बलात्कार करने वाला त्वत्कलत्राभिमर्शी वैरास्पद धनमित्र – दश० ६३।

अभिमादः [अभि+मद्+घञ्] नशा मादकता।

अभिमानः [अभि+मन्+घञ्] 1 गौरव स्वाभिमान, सम्माननीय या योग्य भावना मदाभिमानैकधना हि मानिनः शि० १।६७ 2 अहंकार घमंड [illegible] अहम्मन्यता —वत् घमंडी गर्वीला 3 सभी पदार्थों का आत्मा से संकेन्द्रित करना अहंकार का क्रिया व्यक्तित्व 4 कल्पना अवधारणा [illegible] 5 स्नेह प्रेम 6 इच्छा कामना 7 चोट पहुँचाना हत्या करना चोट पहुँचाने का प्रयत्न करना। सम० —शालिन् (वि०) घमंडी —शून्य (वि०) [illegible] घमंड से रहित विनीत।

अभिमानिन् (वि०) [अभि+मन्+णिनि] 1 [illegible] मानी 2 अहम्मन्य घमंडी गर्वीला [illegible] 3 सभी पदार्थों को आत्मा में संकेन्द्रित मानने वाला।

अभिमुख (वि०)[स्त्री० —खी] 1 जो किसी की ओर मुख किये हुए हो, जो ओर किसी की ओर मुड़ा हुआ [illegible] —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् [illegible] २।११ [illegible] आने वाला समीप आने वाला [illegible] —विक्रम० २।९ 3 विचार करते हुए [illegible] (कुछ करने के लिए)—[illegible] २।१९, प्रमादाभिमुखो वेधा [illegible] कु० १।१६, ५।६०, उत्तर० [illegible] 4 अनुकूल, अनुकूलतापूर्वक सम्पन्न 5 सब ओर को उठाये हुए, —खम् —खे (अव्य०) की ओर दिशा में सामना करते हुए के सामने की उपस्थिति में निकट (कर्म० या सब० के साथ अथवा समास में)

—आसीताभिमुखं गुरोः मनु० २।१९३, तिष्ठन्मुनेरभिमुखं स विकीर्णधाम्नः कि० २।५९ नेपथ्याभिमुखमवलोक्य – श० १ कर्ण ददात्यभिमुखं मयि भाषमाणे श० १।३१।

अभियाचनम् **याच्ञा** [अभि+याच्+ल्युट् नङ् वा स्त्रियां टाप् च] मांगना याचना अनुरोध [illegible] निवेदन।

अभियाति, **—यातिन्** (पुं० [illegible]) शत्रुता की भावना के साथ पहुँचने वाला शत्रु दुश्मन [illegible]।

अभियातृ **—यायिन्** (वि०) [अभि+या+तृच् णिनि वा] निकट आने वाला आक्रमण करने वाला।

अभियानम् [अभि+या+ल्युट्] 1 [illegible] 2 चढ़ाई करना धावा बोलना आक्रमण करना [illegible] [illegible] १० [illegible] प्रस्थान।

अभियुक्त (भू० क० कृ०) (वि०) [अभि+युज्+क्त] 1 (क) [illegible] (ख) [illegible] व्यस्त [illegible] 2 [illegible] दत्तचित्त सावधान [illegible] विधिवदभियुक्तेन मनसा उत्तर० ३ [illegible] 2 [illegible] सार्वभौम [illegible] 3 [illegible] हटो अध म) [illegible] किया गया [illegible] अभियोग [illegible] आरोपण किया गया [illegible] प्रतिवादी [illegible]।

अभियोक्तृ (वि०) [अभि+युज्+तृच्] आक्रमण करने वाला [illegible] करने वाला (पु० —क्ता) 1 [illegible] आक्रमणकारी आक्रान्ता 2 (विधि में) [illegible] वादी मुद्दई अभियोजक मनु० [illegible] 3 [illegible] अभियोगी।

अभियोग [अभि+युज्+घञ्] 1 [illegible] मनु० [illegible] 2 [illegible] प्रबल प्रयास [illegible] मनु० [illegible] 2 (क) किसी कार्य को सोचने की लगन [illegible] मालवि० ५ (ख) [illegible] अभियोगस्य [illegible] 4 आक्रमण हमला चढ़ाई (किसी [illegible] पर), शुचिसि [illegible] कि० ३।१०, २।४५, 5 (विधि में) आरोप दोषारोपण पूर्वपक्ष —अभियोगमनिस्तीर्य नैनं प्रत्यभियोजयेत् —याज्ञ० २।९।

अभियोगिन् (वि०) [अभि + युज् + घिनुण्] मनोयोग पूर्वक लगा हुआ, तुला हुआ, 2 आक्रमणकारी, हमलावर 3 दोषारोपण करने वाला (पुं०) वादी मुद्दई।

अभिरक्षणम् } [अभि + रक्ष् + ल्युट्, अङ् वा] सब ओर
अभिरक्षा } से बचाव, पूरा २ बचाव, -प्रश.त्वयाभिरक्षया कि० ११९८।

अभिरतिः (स्त्री०) [अभि + रम् + क्तिन्] आनन्द, हर्ष सन्तोष, आसक्ति, लगन,—न मृगयाभिरतिर्न दुरोदरम् (जनपदान्न) रघु० ९।७ कि० ६।४४।

अभिराम (वि०) [अभि० + रम् + घञ्] 1 आनन्दकर, हर्षपूर्ण मधुर रुचिकर मनोभिरामा (केका) रघु० १।३९, २।७२ 2 सुन्दर, सुहावना, मनोहर मनोरम —स्वादस्थाने गतवमृताम्भःप्रमथाभिरामा—मेघ०५३ राम ग्यामिरामेण वपुषा तस्य वादिन—रघु० १०।६७ मम् (अव्य०) सुन्दर रीति से ग्रीवाभङ्गाभिरामम्—श० १।७।

अभिरुचि (स्त्री) [अभि + रुच् + इन्] 1 इच्छा शौक पसन्दगी रुचि, हर्ष आनन्द यशसि चाभिरुचि भर्तृ० २।६३ परमाभिरुचिनिपुणो विवाह का० २६७ 2 यश की इच्छा महत्त्वाकांक्षा।

अभिरुचित [अभि + रुच् + क्त] प्रेमी कि० १०।६४।

अभिरुतम् [अभि + रु + क्त] ध्वनि चिल्लाहट, कोलाहल।

अभिरूप (वि०) [अभि + रूप् + अच्] 1 अनुरूप समनुरूप उपयुक्त—अभिरूपमस्या वयसो वल्कलम्—श० १ पाठ० 2 सुखद हर्षपूर्ण—उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च (कन्या दद्यात्) मनु० ९।८८ 3 प्रिय प्यारा इष्ट, कृपापात्र 4 विद्वान् बुद्धिमान समझदार अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्—श० १—पः 1 चन्द्रमा, 2 शिव 3 विष्णु 4 कामदेव। सम०—पति रुचि के अनुकूल सुन्दर पति प्राप्त करना', नाम का एक संस्कार जो परलोक में अच्छा पति पाने की इच्छा से किया जाता है—मन्त्र० १।

अभिलङ्घनम् [अभि + लङ्घ् + ल्युट्] कूद कर पार करना छलांग लगाना।

अभिलषणम् [अभि + लष् + ल्युट्] इच्छा करना चाहना।

अभिलषित (भू० क० कृ०) [अभि + लष् + क्त] इच्छित चाहा हुआ, अभीप्सित,—तम् इच्छा, कामना, संकल्प।

अभिलापः [अभि + लप् + घञ्] 1 कथन, शब्द भाषण 2 घोषणा वर्णन विशेष विवरण, 3. किसी धार्मिक कर्तव्य या किसी उद्देश्य की प्रतिज्ञा की उद्घोषणा।

अभिलावः [अभि + लू + घञ्] काटना, कटाई, लवन।

अभिलाषः [कई बार 'स'] [अभि + लष् + घञ्] इच्छा कामना, उत्कंठा, अनुराग, प्रियतम से मिलने की उत्कंठा, प्रेम (प्रायः अधि० के साथ) अतोऽभिलाषे प्रथमं तथाविधे मनो बबन्ध—रघु० ३।४, न खलु सत्यमेव शकुन्तलायां ममाभिलाषः—श० २, पंच० ५।९७।

अभिलाषक,—लाषिन् (लि)न् } (वि०) [अभि + लष् +
लाषुक } ण्वुल्, णिनि, उकञ् वा] कामना या इच्छा करने वाला, (कर्म० अधि० के साथ या समास में) चाहने वाला, लालायित, लालची, -यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः—श० १।२२, अक्षमभवान नृपमरातिष्वभिलाषुक—कि० ११।१८, शि० १५।५९।

अभिलिखित (वि०) [अभि + लिख् + क्त] लिखा हुआ, खुदा हुआ—तम्, अभिलेखनम्, 1 लिखना, खोदना 2 लेख,

अभिलीन (वि०) [अभि + ली + क्त] 1 चिपटा हुआ, लगा हुआ आसक्त,—रघु० ३।८ 2 आलिंगन किये हुए ढकते हुए—मेघ० ३६।

अभिलुलित (वि०)[अभि + लुड् + क्त डस्य लः] 1 क्षुब्ध, बाधायुक्त 2 क्रीड़ा युक्त अस्थिर।

अभिलूता (प्रा० स०) एक प्रकार की लकड़ी।

अभिवदनम्[अभि + वद् + ल्युट्] 1 संबोधन 2 नमस्क्रिया।

अभिवन्दनम् [अभि + वन्द् + ल्युट्] सादर नमस्कार, बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ दूसरों के चरण स्पर्श करना, नीचे दे० अभिवादन।

अभिवर्षणम् [अभि + वृष् + ल्युट्] बारिस होना, बरसना, पानी पड़ना।

अभिवादः—वादनम् [अभि + वद् + घञ्, ल्युट् वा] सम्मान नमस्कार, छोटों के द्वारा बड़ों को प्रणाम, शिष्य के द्वारा गुरु को प्रणाम इसमें तीन बातें निहित हैं—(१) प्रत्युत्थान—अपने स्थान से उठना (२) पादोपसंग्रह—पैर पकड़ना या छूना (३) अभिवाद—प्रणाम शब्द मुँह से कहना—जिसमें अभिवाद्य व्यक्ति की उपाधि तथा अभिवादक का नाम—वर्ण्य है।

अभिवादक (वि०) [स्त्री—दिका] 1 नमस्कार करने वाला, 2 नम्र, सम्मान पूर्ण, विनीत।

अभिविधि [अभि + वि + धा + कि] 1 पूरा सम्मिलन या समावेश, 'आ' का एक अर्थ—आङ् मर्यादाभिविध्योः —पा० २।१।१३ आरंभिक सीमा ('अन्तिम सीमा' का विरोधी) इसका अनुवाद 'से' 'के साथ' 'मिलाते हुए' शब्दों से किया जाता है उदा०—आबालम्= आबालेभ्यः हरिभक्ति, 2 पूर्ण प्रसार।

अभिविश्रुत (वि०) [अभि + वि + श्रु + क्त] सुविख्यात, सुप्रसिद्ध।

अभिवृद्धिः (स्त्री०) [अभि + वृध् + क्तिन्] बढ़ना, विकास, योग, सफलता, सम्पन्नता।

अभिव्यक्त (भू० क० कृ०) [अभि० + वि + अञ्ज् + क्त] 1 प्रकट किया हुआ,प्रकाशित, उद्घोषित 2 विविक्त, स्पष्ट, साफ।

अभिव्यक्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+अञ्+क्तिन्](कारण का कार्य रूप में) प्रकट होना, वैशिष्ट्य, दिखावा, प्रदर्शन,—सर्वाङ्गसौष्ठवाभिव्यक्तये—मालवि० १, दूतोसम्प्रेषणैर्नार्या भावाभिव्यक्तिरिष्यते—सा० द० ६।

अभिव्यञ्जनम् [अभि+वि+अञ्ज्+ल्युट्] प्रकट करना, प्रकाशन करना, ।

अभिव्यापक, -व्यापिन् (वि०) [अभि+वि०+आप्+ण्वुल्, णिनि वा] सम्मिलित करने वाला, समझने वाला, प्रसार करने वाला।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+आप्+क्तिन्] सम्मिलित करना, सर्वत्र फैलाव।

अभिव्याहरणम्,—व्याहार [अभि+वि+आ+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1 बोलना, उच्चारण करना, कहना 2. प्राञ्जल तथा सार्थक शब्द, संज्ञा, नाम।

अभिशंसक,—शंसिन् (वि०)[अभि+शंस्+ण्वुल्, णिनि वा] दोषारोपक, कलंक लगाने वाला, अपमान करने वाला।

अभिशंसनम् [अभि+शंस्+ल्युट्] दोषारोपण, दोष लगाना (चाहे सत्य हो या मिथ्या) मिथ्या —याज्ञ० २।८१ गाली, अपमान, निरादर,—पञ्चाशद् ब्राह्मणो दण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने—मनु० ८।२६८।

अभिशङ्का [अभि+शङ्क्+अ+टाप्] संदेह आशंका, भय, चिन्ता।

अभिशपनम्,—शाप [अभि+शप्+ल्युट्, घञ् वा] 1 शाप, किसी का बुरा मनाना 2. गंभीर आरोप, दोषारोपण—याज्ञ० २।९९, अभिशापः पातकाभियोग—मि० 3. लाञ्छन, मिथ्या आरोप। सम०—ज्वरः शाप के उच्चारण से उत्पन्न होने वाला बुखार।

अभिशब्दित (वि०) [अभि+शब्द्+क्त] उद्घोषित, प्रकाशित, कथित, नाम लिया हुआ।

अभिशस्त (भू० क० कृ०)[अभि+शंस्+क्त]1 कलंकित, अभिशप्त, अपमानित—मनु० ८।११६, ३७३ याज्ञ० १।१६१, 2. चोट पहुँचाया हुआ, क्षतिग्रस्त, आक्रान्त ('अभिशस्' से बना समझा गया),—देवि केनाभिशस्तासि केन वासि विमानिता—रामा० 3 अभिशप्त 4. दुष्ट, पापी।

अभिशस्तक (वि०)[अभिशस्त+कन्] मिथ्या दोषारोपित बदनाम।

अभिशस्तिः (स्त्री०) [अभि+शंस्+क्तिन्] 1 अभिशाप, 2. दुर्भाग्य, अनिष्ट, कष्ट 3 निंदा, लाञ्छन बदनामी, अपमान 4. पूछना, मांगना।

अभिशापनम् [अभि+शप्+णिच्+ल्युट्] शाप देना, कोसना।

अभिशीत (वि०) [अभि+श्यै+क्त] शीतल, ठंडा जैसा कि वायु।

अभिशोचनम् [अभि+शुच्+ल्युट्] अत्यंत शोक या पीड़ा, कष्ट।

अभिश्रवणम् [अभि+श्रु+ल्युट्]श्राद्धके अवसर पर बैठे हुए ब्राह्मणों द्वारा वेदमन्त्रों का पाठ।

अभिषङ्गः—सङ्गः [अभि+सञ्ज्+घञ्] 1 पूरा संपर्क या मेल, आसक्ति, संयोग 2 हार, वैराग्य, पराजय,—जाताभिषङ्गो नृपतिः—रघु० २।३०, 3 अचानक आया हुआ आघात, शोक, दुःख, संकट या दुर्भाग्य तमोऽभिषङ्गानलविप्रविद्धा —रघु० १४।५४, ७७, 'अज विजविलाप' —रघु० ८।७५ 4 भूत प्रेतादिक से आविष्ट होना,—अभयानाभिषङ्गाभ्यामभिचाराभिशापा —माघ० 5 शपथ 6 आलिंगन, संभोग 7 अभिशाप, कोसना, दुर्वचन कहना 8 मिथ्या दोषारोपण, बदनामी या लाञ्छन 9 घृणा, अनादर।

अभिषञ्जनम् = तु० अभिषङ्ग।

अभिषव [अभि+सु+अप्] 1 सोमरस निचोड़ना, 2 शराब खींचना 3 धार्मिक कृत्यों या संस्कारों से पूर्व किया जाने वाला स्नान या, आचमन 4 स्नान या आचमन 5 यज्ञ ... कांजी।

अभिषवणम् [अभि+सु+ल्युट्] स्नान।

अभिषिक्त (भू०क०कृ०) [अभि+सिच्+क्त] 1 छिड़का हुआ, आर्द्र किया हुआ सद्यः पुनर्वहुतरामभूताभिषिक्ताम् चौर० ४९, 2 जिसका अभिषेक हो चुका हो, प्रतिष्ठापित, पदारूढ।

अभिषेकः [अभि+सिच्+घञ्] 1 छिड़कना, पानी के छींटे देना 2 राज्यतिलक करना, राजा या मूर्ति आदि का जलसिंचन द्वारा प्रतिष्ठापन 3 (विशेषतः) राजाओं का सिंहासनारोहण, प्रतिष्ठापन, पदारोहण, राज्यतिलक संस्कार अथाभिषेकं रघुवंशकेतोः—रघु० १४।७, 4 प्रतिष्ठापन के अवसर पर काम आने वाला पवित्र जल, रघु० १७।१४, 5 स्नान आचमन पवित्र या धर्मस्नान, अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय श० ४, अथाभिषेकाय तपोधनानाम्—रघु० १३।५१ 6 उस देवता पर जल छिड़कना जिसकी पूजा की जा रही है। सम० अहः राजतिलक का दिवस, शाला राज्याभिषेक का मंडप।

अभिषेचनम् [अभि+सिच्+ल्युट्] 1 जल छिड़कना 2 राजतिलक, राज्यप्रतिष्ठापन।

अभिषेणनम् [सेनया सह शत्रोः अभिमुखं यानम्—इति—अभि+सेना+णिच्+ल्युट्] शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए कूच करना, शत्रु का मुकाबला करना।

अभिषेणयति (ना० धा०) (सेना के साथ) कूच करना, आक्रमण करना, सेना द्वारा शत्रु का मुकाबला करना,—क सिषुणयमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० २।२५, शि० ६।६४।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अप्] प्रशंसा, स्तुति ।

अभिष्यं (ष्य)दः [अभि+स्यन्द्+घञ्] 1 स्राव, बहाव टपकना 2 बाहर आना 3 अतिवृद्धि, अतिरेक, आधिक्य, अतिरिक्त भाग, —स्वर्गाभिष्यन्दवमनं कृत्वे-वोपनिवेशितम् (ओषधिप्रस्थम्) कु० ६।३७, अति-रिक्त जनसंख्या को दूर करके, अर्थात् उपनिवेशन द्वारा —तु० —रघु० १५।२९ ।

अभिष्वङ्गः [अभि+स्वञ्ज्+घञ्] 1 संपर्क 2, अत्यधिक आसक्ति, प्रेम, स्नेह, —विद्यास्वभिष्वङ्ग —दश० १५५, अहो अभिष्वङ्ग —मा० १ ।

अभिसंश्रयः [अभि+सम्+श्रि+अच्] शरण, आश्रय ।

अभिसंस्तवः [अभि+सम्+स्तु+अप्] महती प्रशंसा ।

अभिसंतापः [अभि+सम्+तप्+घञ्] युद्ध, संग्राम, संघर्ष —अन्यः स्यादभिसम्पातः —हला० ।

अभिसंस्नेहः [अभि+सम्+स्निह्+घञ्] 1 विनिमय, 2 जननेन्द्रिय ।

अभिसंधः—धकः [अभि+सम्+धा+क, स्वार्थे कन् च] 1. धोखा देने वाला वंचक, 2 निन्दक, लांछन लगाने वाला ।

अभिसंधा [अभि+सम्+धा+अङ+टाप्] 1 भाषण, उद्घोषणा शब्द, कथन, प्रतिज्ञा, —तेन सत्याभिसंधेन त्रिवर्गमनुतिष्ठता —रामा०, वचन का पालन करने वाला, 2 धोखा ।

अभिसंधानम् [अभि+सम्+धा+ल्युट्] 1 भाषण, शब्द सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, सा हि सत्याभिसंधाना— रामा०, 2 ठगना, धोखा देना —पराभिसंधानपरं यद्यप्यस्य विचेष्टितम् —रघु० १७।७६ 3 उद्देश्य इरादा, प्रयोजन —अन्याभिसंधानेनाभ्यवहारितममृत-तुल्य च —मिता० 4 सन्धि करना ।

अभिसंधायः = अभिसंधि ।

अभिसंधिः [अभि+सम्+धा+कि] 1 भाषण, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा 2 इरादा, लक्ष्य प्रयोजन, उद्देश्य 3. निहितार्थ, अभिप्रेत अर्थ, जैसा कि—अयमभिसंधि (व्याख्यात्मक सूक्तियों में बहुधा प्रयुक्त) 4 सम्मति, विश्वास 5 विशेष अनुबंध, अनुबंध की शर्तें, प्रति-बंध, करार ।

अभिसमवायः [अभि+सम्+अव+इ+अच्] एकता ।

अभिसंपत्तिः (स्त्री०) [अभि+सम्+पद्+क्तिन्] पूर्ण रूप से प्रभावित होना, अपने मत को बदल देना, परिवर्तन, बदल जाना ।

अभिसंपरायः [अभि+सम्+परा+इ+अच्] भविष्यत् काल ।

अभिसंपातः [अभि+सम्+पत्+घञ्] 1 इकट्ठे मिलना, समागम, संगम 2 युद्ध, संग्राम, संघर्ष, 3 अभि-शाप ।

अभिसंबन्धः [अभि+सम्+बन्ध्+घञ्] संबंध, रिश्ता, संयोजन, संपर्क, मैथुन—मनु० ५।६३ ।

अभिसंमुख (वि०) [प्रा० ब०] सम्मुख होने वाला, सामने खड़ा हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला ।

अभिसरः [अभि+सृ+अच्] 1. अनुगामी, अनुचर, 2 साथी ।

अभिसरणम् [अभि+सृ+ल्युट्] 1 उपागमन, मुकाबला करने के लिए आना, 2 सम्मिलन, संकेतस्थान, नायक या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना— स्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती —गीत० ६ ।

अभिसर्गः [अभि+सृज्+घञ्] सृष्टि, रचना ।

अभिसर्जनम् [अभि+सृज्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. हत्या ।

अभिसर्पणम् [अभि+सृप्+ल्युट्] उपागमन, मुकाबला करने के लिए शत्रु के निकट जाना ।

अभिसां (शां) त्वः, —त्वनम् [अभि+सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] सुलह, समझौता, ढाढ़स, तसल्ली ।

अभिसायम् (अव्य०) [अव्य० स०] सूर्यास्त के समय, सन्ध्या-समय—विनोदयाद्रेरभिसायमुच्चकै —शि० १।११ ।

अभिसारः [अभि+सृ+घञ्] प्रिय से मिलने के लिए आना, (मिलन स्थान) नियत करना या स्थिर करना, —रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषम्—गीत० ५, २ वह स्थान जहाँ नायक नायिका नियत समय पर मिलते हैं, संकेतस्थल,—त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्— गीत० ६, 3 हमला आक्रमण, —स्त्रोऽभिसारः पुरस्य न —रामा०। सम० —स्थानम् मिलने के लिए उप-युक्त स्थान, दे० 'अभिसारिका' के नीचे ।

अभिसारिका [अभि+सृ+ण्वुल्+टाप्] वह स्त्री जो अपने प्रिय से मिलने जाती है, या उसके द्वारा नियत संकेत का पालन करती है कु० ६।४३, रघु० १६।१२, —कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका—अमर० सा० द० निम्नांकित ८ स्थान नायक नायिकाओं के मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) खेत (२) बाग (३) भग्न मंदिर (४) दूती का घर (५) जंगल (६) तीर्थ स्थान (७) श्मशानभूमि (८) नदीतट, क्षेत्रं वाटी भग्नदेवालयो दूतीगृहं वनम्, मालयं च श्मशानं च नद्यादीनां तटी तथा ।

अभिसारिन् (वि०) [अभि+सृ+णिनि] मिलने, दर्शन करने, आक्रमण करने, जाने वाला, जल्दी से बाहर आने वाला—पुराभिसारिन —उत्तर० ५.—णी = दे० ऊपर अभिसारिका ।

अभिस्नेहः [अभि+स्निह्+घञ्] आसक्ति, अनुराग प्रेम इच्छा, य सर्वत्रानभिस्नेहः —भग० २।५७ ।

अभिस्फुरित (वि०) [अभि+स्फुर्+क्त] पूर्ण रूप से फैला हुआ, पूर्ण विकसित (जैसे कि फूल) ।

अभिहत (वि०) [अभि+हन्+क्त] प्रहृत (आलं° से भी) पीटा गया, आहत, घायल किया गया—धारा-भिरातप इवाभिहतं सरोजं - मालवि० ५, अमरु० २, 2. जिस पर प्रहार किया गया है, अभिभूत, पराभूत, शोक°, काम°, दुःख° 3. बाधामय 4. (गण०) गुणित।

अभिहतिः (स्त्री०)[अभि+हन्+क्तिन्] 1 प्रहार करना पीटना, चोट पहुँचाना 2 (गण०) गुणन, गुणा।

अभिहरणम् [अभि+हृ+ल्युट्] 1 निकट लाना लाकर लाना—रघु० ११।४३ 2 लूटना।

अभिहवः [अभि+ह्वे+अप्] 1 आवाहन, आमंत्रण 2 पूर्ण रूप से यज्ञानुष्ठान 3 यज्ञ, बलिदान।

अभिहार [अभि+हृ+घञ्] 1 ले जाना, लूट लेना चुरा लेना 2 हमला आक्रमण 3 शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, शस्त्र ग्रहण करना।

अभिहासः [अभि+हस्+घञ्] दिल्लगी मजाक, विनोद।

अभिहित (भू० क० कृ०) [अभि+धा+क्त] 1 कहा गया, बोला गया, घोषित किया गया 2 संबोधित किया गया, पुकारा गया। सम०—**अन्वयवाद**,—**वादिन्** (पुं०) नैयायिकों का एक विशेष प्रकार का सिद्धान्त (या उस सिद्धान्त के अनुयायी)। इस सिद्धान्त के अनुसार नैयायिकलोग मानते हैं कि शब्द स्वतंत्र रूप से अपना अर्थ रखते हैं, जो बाद में वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक संयुक्त विचार को अभिव्यक्त करते हैं, दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह वाक्य के शब्दों का तर्कसंगत संबंध ही है जो वाक्य के अभीष्ट अर्थ को प्रकट करता है न कि शब्दों का केवल अपना भाव। अतः वे तात्पर्यार्थ में विश्वास रखते हैं जो कि वाच्यार्थ से भिन्न है—काव्य. २।

अभिहोम [प्रा० स०] घी की आहुति देना।

अभी (वि०) [न० ब०] निर्भय, निडर, रघु० ९।६३, १५।८।

अभीक (वि०) [अभि+कन् दीर्घ] 1 प्रबल इच्छा रखने वाला, आतुर 2. कामुक विषयासक्त, विलासी—मदयन्ति: शरदसोपगतानभीकान् -शि० ५।६४, 3 निर्भय, निडर।

अभीक्ष्ण(वि०)[अभि+क्षणु+ड, दीर्घ] 1. दुहराया हुआ, बार २ होने वाला 2 सतत, निरन्तर 3 अत्यधिक,—**क्ष्णम्** (अव्य०) 1 बारबार, पुनः पुनः 2 लगातार 3. अत्यंत, बहुत अधिक।

अभीघात =भू० अभिघात।

अभीप्सित (वि०) [अभि+आप्+सन्+क्त] चाहा हुआ अभीष्ट,—**तम्** कामना, इच्छा।

अभीप्सिन् } (वि०) [अभि+आप्+सन्+णिनि, उ वा] **अभीप्सु** } इच्छुक, प्राप्त करने की इच्छा वाला।

अभीर [अभिमुखी कृत्य ईरयति गा, अभि+ईर्+अच्] 1 अहीर, गोपाल, गडरिया 2 ग्वाला,(दे० आभीर)। सम०—**पल्ली** ग्वालों का गाँव।

अभीशाप [अभि+शप्+घञ्] कोसना दे० अभिशाप।

अभीशुः -षु. [अभि+अश्+उन् पृषो० अत इत्वम्-अभि+इष्+कु वा] 1 बागडोर, लगाम—तेन हि मुच्य न्तामभीशवः—श० १, 2 प्रकाशकिरण—प्रफुल्लतापिच्छनिभैरभीशुभिः शि० १।२२ सम० अंशुमाल, अस्युतम 3 इच्छा 4 आसक्ति।

अभीषङ्गः दे० अभिषंग।

अभीष्ट (भू० क० कृ०) [अभि+इष्+क्त] 1 चाहा हुआ इच्छित 2 प्रिय इच्छानुकूल, प्रियतम—**ष्टः** प्रिय तम—**ष्टा** गृहस्वामिनी प्रेमिका—**ष्टम** 1 अभीष्ट पदार्थ 2 इच्छित पदार्थ अन्यस्मै हृदयं देहि नानभीष्टं घटामहे भट्टि० २०।२४।

अभुग्न (वि०) [न० त०] 1 जो झुका हुआ या टेढ़ा मेढ़ा न हो सीधा 2 स्वस्थ नीरोग।

अभुज (वि०) [न० ब०] बाहुरहित, लूला।

अभूतक्रिया [न० त०] जो धार्मिक या सांस्कारिक न हो, तन्त्र-मन्त्र।

अभू [न० त०] विष्णु जो पैदा न हुआ हो।

अभूत (वि०) [न० त०] अवास्तविक जो हुआ न हो, अवि द्यमान, स्वाभाविक मिथ्या। सम०—**आहरणम्** असत्य स्वर अपराध या असत्य बात कहना—**तद्भाव** जो पहले विद्यमान न हो उसका होना या बनना या बदलना अभूततद्भावे च्वि अकृष्णं कृष्णं सपद्यते तं करोति कृष्णाकरोति सिद्धा० न० पूर्व —**पूर्व** (वि०) जो पहले न हुआ हो जिसमें आगे कोई न बढ़ा हो—अभूतपूर्व राजा चिन्तामणिर्नाम, वासव० १ वेणी० ३।२४ प्रादुर्भाव जो पहले न हुआ हो उसका प्रकट होना,—**शत्रु** (वि०) शत्रुहीन, जिसका कोई शत्रु न हो।

अभूतिः (स्त्री०) [न०त०] 1 सत्ता हीनता, अविद्यमानता 2 निर्धनता।

अभूमि (स्त्री०) [न० त०] 1 भूमि का न होना, भूमि को छोड़ कर अन्य कोई पदार्थ, 2 अनुपयुक्त स्थान या पदार्थ, अनुचित स्थान, अभूमिरियमविनयस्य श० ७, स मन्मनोरथानामभूमिर्विसर्जनावसर-सत्कारः श० भरी आशाओं से बहुत अधिक आगे बढ़ा हुआ शि० १।४२।

अभृत, अभृत्रिम (वि०) [न० त०] 1 जिसको भाड़ा न दिया गया हो 2 जिसका समर्थन प्राप्त न हो।

अभेद (वि०) [न० ब०] 1 अविभक्त 2 समरूप, वही —**दः** [न० त०] 1 भिन्नता का अभाव, समरूपता या समानता का होना, तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमे-

यथो ... वाक्य० १० 2 घनिष्ट ... बर्धिनमदम ... [illegible] विश्यास्भदम ... १।२४।

अभेद्य, } अभेदिक } (वि०) [illegible] 1 ... 2 ... [illegible]।

अभोज्य (वि०) [illegible] 1 ... (अन्न) ... [illegible]

अभ्यग्र (वि०) [illegible]

अभ्यङ्ग [illegible]

अभ्यङ्ग [illegible]

अभ्यञ्जनम् [illegible] 2 ... [illegible]

अभ्यधिक (वि०) [illegible]

अभ्यनुज्ञा [illegible] 1 स्वीकृति 2 सहमति ... [illegible] 3 ... 4 ... [illegible]।

अभ्यन्तर (वि०) [सं० स०] 1 भीतरी भाग आन्तरिक अन्दरूनी (विप० बाह्य) रघु० १३।४१ ... 2 अन्तर्गत होना किसी समूह या शरीर का एक अंग ... 3 ... दीक्षित, परिचित, कुशल ... 4 निकटतम घनिष्ट ... 1 भीतर का भीतरी अन्दर का (किसी वस्तु का) अन्दरूनी भाग भीतरी स्थान ... रघु० ... ५।२७ 2. सम्मिलित किया हुआ स्थल समय या स्थान का अवकाश ... पञ्च० ४ ३ सम० करण (वि०) अन्दर ही अन्दर गुप्त अंगों द्वारा प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति का अन्दर रखने ... [illegible] ... प्रेम लीला या ... [illegible]।

अभ्यन्तरक [illegible] घनिष्ट मित्र।

अभ्यन्तरी कृ [illegible] (तना० उभ०) 1 [illegible] 2 [illegible] ... कु० १०१ ... 3 [illegible]।

अभ्यमित [illegible] रोगित [illegible]

अभ्यम् [illegible] 1 प्रहार ... [illegible]

अभ्यमित्रीय [illegible] [अभि + अम + क्त] 1 [illegible]

अभ्यर्चनम् [illegible] अभ्यर्चन (कि० ...) [illegible]

[illegible] [illegible] ... सामान्य [illegible]

अभ्यर्ण [illegible] 1 ... 2 ... [illegible]

अभ्यवपातम् [illegible] अङ्क + टाप [illegible]

अभ्यश (वि०) [अभि अश् क्त] निकट समीप स्थान के ... [illegible] ... रघु० २।३० ... [illegible] ... प्रमान्वया राघवा ... कि० ३।२९।

अभ्यसनम्-ना [अभि ... ल्युट् स्त्रियां टाप्] प्रार्थना अनुरोध ... कु० ११५।

अभ्यर्थिन् (वि०) [अभि अर्थ + णिनि] याचना या प्रार्थना करने वाला।

अभ्यर्हणा [अभि अर्ह + युच् स्त्रियां टाप्] 1 पूजा 2. आदर सम्मान सत्कार।

अभ्यर्हित (वि०) [अभि अर्ह क्त] 1 सम्मानित प्रतिष्ठित, 2 आदरणीय 2 योग्य सुहावना, उपयुक्त अभ्यर्हिता बन्धुषु तुल्यरूपा ... तपोधनानाम् कि० ३।११।

अभ्यवकर्षणम् [अभि+अव+कृष्+ल्युट्] निकालना, खींचकर बाहर करना।

अभ्यवकाशः [अभि+अव+काश्+घञ्] खुली जगह।

अभ्यवस्कन्दः —न्दनम् [अभि+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1 डट कर शत्रु का मुकाबला करना, शत्रु पर चढ़ाई करना 2 शत्रु को निश्शस्त्र करने के लिए प्रहार करना 3 आघात।

अभ्यवहरणम् [अभि+अव+हृ+ल्युट्] 1 नीचे फेंक देना 2 भोजन ग्रहण करना, गले के नीचे उतारना (कण्ठादधोनयनम् —मल्लि०)।

अभ्यवहारः [अभि+अव+हृ+घञ्] 1 भोजन ग्रहण करना, आहार लेना, खाना पीना आदि 2 आहार — अन्नशब्दोऽभ्यवहारार्थवाची —काशी० °संवादापेक्षी — मालवि० ४।

अभ्यवहार्य (वि०) [अभि+अव+हृ+ण्यत्] खाने के योग्य, भोज्य,—र्यम् आहार, सर्वत्रौदरिकस्य अभ्यवहार्यमेव विषयः —विक्रम० ३।

अभ्यसनम् [अभि+अस्+ल्युट्] 1 बार बार करना, बार-बार किया गया अभ्यास 2 निरन्तर अध्ययन, अनुशीलन (नाम्) विद्याभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि— रघु० १।८८।

अभ्यसूयक (वि०) [स्त्री—यिका] [अभि+असू+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, डाहभरा, निन्दक, कलंक लगाने वाला —मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः —भग० १६।१८।

अभ्यसूया [अभि+असू+यक्+अ+टाप्] डाह, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध,—शङ्काभ्यसूयाविनिवृत्तये य —रघु० ६।७४ क्रमेषु वेदेषु च साभ्यसूया —७।२ १।६४।

अभ्यस्त (भू० क० कृ०) [अभि+अस्+क्त] 1 बार बार दोहराया गया, बार बार अभ्यास किया गया —नयनयोरभ्यस्तमामीलनम् —अमरु० ९२, प्रयोग में लाया गया, आदत डाली हुई —अनभ्यस्तरथचर्या —उत्तर० ५, 2 सीखा हुआ, पढ़ा हुआ — शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां —रघु० १।८, भर्तृ० ३।८९ 3 (गण०) गुणा किया गया 4 (व्या० में) द्वित्व किया गया।

अभ्याकर्षः [अभि+आ+कृष्+घञ्] हाथ से छाती ठोक कर ललकारना (जैसे पहलवान कुश्ती के लिए)।

अभ्याकाङ्क्षितम् [अभि+आ+काङ्क्ष्+क्त] 1 मिथ्या आरोप, निराधार शिकायत 2 इच्छा।

अभ्याख्यानम् [अभि+आ+ख्या+ल्युट्] मिथ्या आरोप, लाञ्छन, निन्दा, बदनामी।

अभ्यागत (भू० क० कृ०) [अभि+आ+गम्+क्त] 1 निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 2 अतिथि के रूप में आया हुआ,—सर्वस्याभ्यागतो गुरुः —हि० १।१०८ —तः अतिथि, दर्शक।

अभ्यागमः [अभि+आ+गम्+घञ्] 1 निकट आना या आना, पहुँच, दर्शनार्थ गमन—तपोधनाभ्यागमसम्भवा मुदः —शि० १।२३, किं वा मदभ्यागमकारणं ते —रघु० १६।८, महावी० २।२२, 2 सामीप्य, पड़ोस, 3 मुकाबला, हमला 4 युद्ध, संग्राम 5 शत्रुता, विद्वेष।

अभ्यागमनम् [अभि+आ+गम्+ल्युट्] उपागमन, पहुँच, दर्शनार्थ गमन, हेतुः तदभ्यागमने परीप्सुः —कि० ३।४।

अभ्यागारिक [अभि+आगार+ठन्] परिवार के पालन में यत्नशील।

अभ्याघातः [अभि+आ+हन्+घञ्] हमला, आक्रमण।

अभ्यादानम् [अभि+आ+दा+ल्युट्] उपक्रम, प्रारम्भ, सूत्रपात करना।

अभ्याधानम् [अभि+आ+धा+ल्युट्] रखना, डालना (जैसा कि ईंधन)।

अभ्यान्त (वि०) [अभि+आ+अम्+क्त] बीमार, रुग्ण, रोगी।

अभ्यापातः [अभि+आ+पत्+घञ्] संकट, दुर्भाग्य।

अभ्यामर्दः -मर्दनम् [अभि+आ+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] युद्ध, संग्राम, संघर्ष, आक्रमण।

अभ्यारोहः -रोहणम् [अभि+आ+रुह्+घञ्, ल्युट् वा] चढ़ना, सवार होना, ऊपर तक जाना।

अभ्यावृत्ति (स्त्री०) [अभि+आ+वृत्+क्तिन्] दोहराना, बार-बार होना दे० अनभ्यावृत्ति भी।

अभ्याश (वि०) [अभि+अश्+घञ्] निकट, समीप —शः 1 पहुँचना, व्याप्त होना 2 समीपस्थ, पड़ोस, आस पास का (दे० 'अभ्यास'), —बाणसाभ्याशे समुपविष्टम् —पञ्च० २, सहसाभ्यागतां भैमीमभ्याशपरिवर्तिनीम् —महा०, दश० ६२ 3 परिणाम, फल 4 अभ्युदय, प्रत्याशा, अत: शीघ्रता के अर्थ में प्राय: प्रयुक्त।

अभ्यासः [अभि+आ+अस्+घञ्] आवृत्ति —अभ्यासा व्याख्याता इति पदाभ्यासोऽध्यायपरिसमाप्तिं द्योतयति—शारी० नाभ्यासक्रमयीमतें-वच १।१५१ 2 बार-बार किसी कार्य को करना, लगातार किसी कार्य में लगे रहना,—अविरतश्रमाभ्यासात् —का० ३०, अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते —भग० ६।३५, ४४ अनवरत अभ्यास के द्वारा, (पवित्र और अविकृत रहना) १०।१२ °निगृहीतेन मनसा—रघु० १०।२३ इसी प्रकार शर,° अस्त्र° आदि 3 आदत, प्रथा, चलन अयत्नकृतभ्यासास्तथा-कु० ५।६५, या० ३।६८, 4 शस्त्रास्त्र विषयक अनुशासन, कवायद सैनिक कवायद 5 पाठ करना अध्ययन करना, कारक शिक्षाभ्यास काव्य० १ 6 आसपास का, सामीप्य, पड़ोस ('अभ्याश' के लिए) नृपाभिज्ञानमभ्यासे (से) सखी प्रत्यभाषत —कु०६।२ ('अभ्यासे'—सखी का यहाँ अर्थ मन को संबोधित करना है जो कि उसके निकट है—अर्थात् अपने आपको पूर्ण रूप से उसके सामने प्रकट करके।

यहाँ पार्वती की उपमा पूर्णतः सुरक्षित है—अर्थात् स्वयं चुप रहते हुए अपनी सखी को सम्बोधित करने के बहाने अपने प्रियतम से बात करना) अपि तेन तथा न्यासे सीता पुष्यद्रना बभू उत्तर० ७।१७ आग्रहो सौंपी हुई, अभ्यासा (शा) आगत —सिद्धा० (अव्ययी समास के रूप में) 7 (व्या० में) द्वित्व होना 8 द्वित्व हुए मूलशब्द का प्रथम अक्षर, द्वित्व अक्षर 9 (गणित में) गुणा 10 सम्मिलित गान, गीत की टेक। सम० —गत (वि०) उपागत निकट गया हुआ —योग अनवरत गहन चिंतन से उत्पन्न मनोयोग—अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय—भग० १२।९ —लोप द्विरुक्त किये हुए अक्षर का हटा देना —व्यवाय द्वित्व अक्षर से उत्पन्न अन्तराल।

अभ्यासादनम् [अभि+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] शत्रु का सामना करना या उस पर हमला करना।

अभ्याहननम् [अभि+आ+हन्+ल्युट्] 1 प्रहार करना और पहुँचाना, हत्या करना 2 रोक लगाना या बाधा डालना।

अभ्याहार [अभि+आ+हृ+घञ्] 1 निकट लाना 2 लूटना।

अभ्युक्षणम् [अभि+उक्ष्+ल्युट्] 1 (जल) छिड़कना, तर करना —परस्पराभ्युक्षणतत्पराणाम् (तासाम्) रघु० १६।६७ 2 अभिषेक द्वारा संस्कार।

अभ्युचित (वि०) [प्रा० स०] प्रचलित, प्रथा के अनुकूल

अभ्युच्चय [अभि+उत्+चि+अच्] 1 वृद्धि, आगम 2 सम्पन्नता

अभ्युत्क्रोशनम् [अभि+उत्+क्रुश्+ल्युट्] ऊँचे स्वर से चिल्लाना।

अभ्युत्थानम् [अभि+उद्+स्था+ल्युट्] 1 (आदर के रूप में) स्वागतार्थ उठना, किसी के सम्मान में खड़े होना 2 रवाना होना, प्रस्थान करना, कूच करना 3 उठना (शा० आलं०) उन्नति, समृद्धता, प्रतिष्ठा —नवाभ्युत्थानदर्शिन्यो ननन्दुः सप्रजाः प्रजाः—रघु० ४।३ यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्—भग० ४।७।

अभ्युत्पतनम् [अभि+उत्+पत्+ल्युट्] किसी पर उछलना, कूदना, अकस्मात् झपटना, हमला करना —अभ्यभित्र्याभ्युत्पतनो नृपाणां—रघु० ७।२३।

अभ्युदय [अभि+उद्+इ+अच्] 1 सूर्य चन्द्रादि का निकलना, सूर्योदय 2 उन्नति, सम्पन्नता, सौभाग्य, ऊँचा उठना, सफलता—प्रसादेन स्वामिनमभ्युदयेन—रत्न० १ भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्—रघु० ३।१४ 3 उत्सव, उत्सव का अवसर 4 उपक्रम, आरम्भ।

अभ्युदाहरणम् [अभि+उद्+आ+हृ+ल्युट्] विपरीत बात के द्वारा उदाहरण या निदर्शन देना।

अभ्युदित (भू० क० कृ०) [अभि+उद्+इ+क्त] 1 निकला हुआ 2 उन्नत 3 सूर्योदय के अवसर पर सोया हुआ।

अभ्युद्गमः, गमनम्, **अभ्युद्गतिः** (स्त्री०) [अभि+उद्+गम्+घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1 किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अतिथि के सम्मानार्थ उठकर चलना 2. निकलना, होना, उत्पन्न होना।

अभ्युद्यत (भू० क० कृ०) [अभि+उद्+यम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊपर उठाया हुआ जैसा कि आयुध, शस्त्र 2 तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील, तुमुन्नन्त के साथ 3 आगे गया हुआ, निकला हुआ, सामने दिखाई देने वाला, निकट आने वाला —कुलमभ्युद्यतनवेश्वरम् रघु० ८।१४ 4 अयाचित दिया हुआ या लाया हुआ।

अभ्युन्नत (वि०) [अभि+उद्+नम्+क्त] 1 उठा हुआ, ऊपर किया हुआ 2 ऊपर को उभरा हुआ, बहुत ऊँचा कु० १।

अभ्युन्नतिः (स्त्री०) [अभि+उद्+नम्+क्तिन्] बड़ी उन्नति या समृद्धि।

अभ्युपगमः [अभि+उप+गम्+घञ्] 1 उपागमन, पहुँच, स्वीकार करना, मानना, सत्य समझना (दोष) मान लेना 2 इकरारनामा, प्रतिज्ञा करना, निर्णय—मालवि० १ संविदा, करार, प्रतिज्ञा। सम० —सिद्धान्त मानी हुई प्रस्थापना, प्रमाणित या स्वीकृत।

अभ्युपपत्तिः (स्त्री०) [अभि+उप+पद्+क्तिन्] 1 सहायतार्थ निकट आना, दया करना, कृपा करना 2 ढाढस बंधाना 3 रक्षा, बचाव —ब्राह्मणाभ्युपपत्तौ च शपथे नास्ति पातकम्—मनु० ८।११२ 4 इकरार मानना, स्वीकृति प्राप्ति 5 स्त्री का गर्भवती होना (विशेषत भाई की विधवा पत्नी का नियोग द्वारा)।

अभ्युपाय [अभि+उप+इ+अच्] 1 प्रतिज्ञा, वादा, इकरार 2 साधन, युक्ति, उपचार —विक्रमाभ्युपाय—कि० ३।१९।

अभ्युपायनम् [अभि+उप+अय्+ल्युट्] सम्मानसूचक उपहार, प्रलोभन, रिश्वत।

अभ्युपेत (भू० क० कृ०) [अभि+उप+इ+क्त] 1 निकट आया हुआ, उपागत 2 प्रतिज्ञात, स्वीकृत, आश्रित—मेघ० ३८।

अभ्युपेत्य (अव्य०) [अभि+उप+इ+ल्यप् (क्त्वा)] पहुँच कर स्वीकार करके, प्रतिज्ञा करके। सम०—अशुश्रूषा हिन्दूधर्मशास्त्र के १८ अधिकारों में से एक, स्वामी और सेवक के मध्य की हुई संविदा का भंग।

अभ्यूषः, अभ्योषः [अभि-ऊष्यते दह्यते—उ-अभ् बाहु० क] एक प्रकार की रोटी,

जाती।

अभ्यूह [अभि+ऊह्+घञ्] 1 तर्क करना, दलील देना, विचार विमर्श करना 2 आगमन (घटना), अनुमान अटकल —पराभ्यूहस्थानान्यपि तनुतराणि स्थगयति —मा० १।१४ 3 अध्याहार करना, 4 समझना।

अभ्र् (भ्वा० पर०) [अभ्रति आनभ्र अभ्रित] जाना इधर उधर घूमना वनेष्वानभ्र निर्भय: भट्टि० ४।११ १४।११०।

अभ्रम् [अभ्र्+अच् या अप+भृ अपो बिभर्ति भृ+क] 1 बादल 2 वायुमंडल आकाश—परितो विपाण्डु दधदभ्रशिर: शि० ४।२ दे० अभ्रंलिह् आदि 3 चिल चिल अबरक 4 (गण०) शून्य। सम० —अवकाश बचाव के लिए केवलमात्र बादल बारिश होना —अवकाशिक, —अवकाशिन (वि) बारिश में रहकर (तपस्या करने वाला), बारिश से बचाव का कोई उपाय न करने वाला —उत्थ आकाश में उत्पन्न इन्द्र का वज्र —नाग ऐरावत नाम का हाथी जो धरती को धारण किए हुए है —पथ 1 वायुमंडल 2 गुब्बारा —पिशाच,—पिशाचक राहु की उपाधि —पुष्प एक प्रकार की बेंत —पुष्पम् 1 पानी 2 असंभव बात, हवाई किला —मातङ्ग इन्द्र का हाथी ऐरावत, —माला,—वृन्दम् बादलों की पंक्ति या समूह।

अभ्रंलिह (वि०) [अभ्र+लिह् खश् मुमागम] बादलों को चूमने वाला' स्पर्श करने वाला अर्थात् बहुत ऊँचा —अभ्रंलिहाग्रा: प्रासादा: मेघ० ६६ प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह—रघु० १४।२९ —हः वायु, हवा।

अभ्रकम् [अभ्र+कन्] चिलचिल अबरक। सम० —भस्मन् (नपुं०) अबरक का कुश्ता अबरक की भस्म —सत्त्वम् इस्पात।

अभ्रङ्कष (वि०) [अभ्र+कष+खच् मुमागम] बादलों को छूने वाला, बहुत ऊँचा —आदायाभ्रङ्कषं प्रायो मलयं फलशालिनम्—भट्टि० —षः 1 वायु हवा 2 पहाड़।

अभ्रमुः (स्त्री०) [अभ्र+मा+उ] इन्द्र के हाथी ऐरावत की सहचरी, पूर्वदिशा के दिग्गज की हथिनी। सम० —प्रिय,—वल्लभः ऐरावत।

अभ्रि:—भ्री (स्त्री०) [अभ्र+इन् ङीष् वा] 1. लकड़ी की बनी हुई नोकदार फावड़ी जिससे नाव की सफाई की जाती है, 2 कुदाल, खुरपी।

अभ्रित (वि०) [अभ्र+इतच्] बादलों से आच्छादित बादलों से घिरा हुआ रघु० ३।१२।

अभ्रिय (वि०) [अभ्र+घ] बादलों से संबंध रखने वाला आकाश या मुसला अथवा बादलों से उत्पन्न, —यः बिजली, —यम् गरजने वाले बादलों का समूह।

अभ्रेष [न० त०] औचित्य, योग्यता, उपयुक्तता।

अम् (अव्य०) [अम्+क्विप्] 1 जल्दी, शीघ्र 2 जरा थोड़ा।

अम (भ्वा० पर०) [अमति अमितुम् अमित] 1 जाना, की ओर जाना 2 सेवा करना, सम्मान करना 3. शब्द करना 4 खाना (चु० प० या प्रेर०) [आमयति] 1 टूट पड़ना आक्रमण करना रोग से कष्ट होना, किसी व्याधि से पीड़ित होना 2 रोगी होना कष्टग्रस्त या रोगग्रस्त होना।

अम (वि०) [अम+घञ् अवृद्धि] कच्चा (जैसा कि फल) —मः 1 जाना 2 रुग्णता रोग 3 सेवक अनुचर 4 यह स्वयम।

अमङ्गल—ल्य (वि०) [न० ब० न० त०] 1 अशुभ बुरा अकल्याणकर—रघु० १।८६ [illegible] वे० ५।१६ अमङ्गल [illegible] मार्दवमलिकम् —कु० 2 भाग्यहीन दुर्भाग्यपूर्ण —लः एरण्ड का [illegible] —लम् अशुभता अकल्याण [illegible] शास्त्र में प्रयुक्त [illegible]

अमण्ड (वि०) [न० ब०] 1 बिना सजावट का अलंकार-रहित 2 बिना माण्ड का या बिना माड़ का (उबला हुआ चावल) —ण्डः एरण्ड का वृक्ष।

अमत (वि०) [न० त०] 1 अननुभूत मन के लिए अज्ञात अज्ञात 2 अपमानित अमान्य —तः 1 समय 2 रुग्णता रोग 3 मृत्यु।

अमति (वि०) [न० ब०] दुष्ट, दुष्ट दुश्चरित्र, —तिः 1 चोर कपटी 2 चाँद 3 समय,—तिः (स्त्री०) [न० त०] अज्ञान मनःहीनता ज्ञान का अभाव अदूरदर्शिता असावधानी यदि अमत्या मनु० ५।२०, ४।२२२ सम० —पूर्व (वि०) अज्ञानकृत विचारहीन।

अमत्त (वि०) [न० त०] जो मद में न हो, सही दिमाग का।

अमत्रम् [अमति भुङ्क्ते अन्नमत्र—अम्+आधारे अत्रन्] 1 बर्तन भाजन पात्र 2 सामर्थ्य, शक्ति।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्यालु या डाहयुक्त न हो, उदार।

अमनस्, **अमनस्क** (वि०) [न० ब० कप् च] 1 बिना मन का, ध्यान के 2 बुद्धिहीन (जैसे कि बालक) 3 ध्यान न देने वाला 4 जिसका अपने मन के ऊपर कोई नियंत्रण न हो 5 स्नेहहीन (नपुं०—नः) 1. जो इच्छा का अंग न हो, प्रत्यक्षज्ञान का अभाव 2 ध्यानशून्य (पु०—ना) परमेश्वर। सम० —गत (वि०) अज्ञात, अविचारित,—ज्ञ,—नीत, अपमानित, रद्द किया गया तिरस्कृत,—योगः ध्यान न देना,—हर (वि०) जो सुखकर न हो, जो रुचिकर न हो।

अमनाक् (अव्य०) [न० त०] थोड़ा नहीं, बहुत, अत्यधिक ।

अमनुष्य (वि०) [न० ब०] 1 अमानुषिक, जो मनुष्यों के योग्य न हो 2 जहाँ मनुष्य का आना जाना बहुत कम हो, -ष्यः [न० त०] 1 जो मनुष्य न हो 2 राक्षस ।

अमन्त्र,-त्रक (वि०) [न० ब० कप् च] 1 वैदिक मन्त्रों से रहित, वह संस्कार जिसमें वेदमन्त्रों के पाठ की आवश्यकता न हो 2 जिसे वेद के पढ़ने का अधिकार न हो जैसे शूद्र या स्त्री 3 जो वेदपाठ से अनभिज्ञ हो, अव्रतानाममन्त्राणाम्—मनु० १२।११४, 4 रोग की वह चिकित्सा जिसमें जादू-मन्त्र की क्रिया न की जाती हो -अन्यदा कथमन्यथावर्जितः न हि शीतरश्मि जना मनागपि—शि० २।१११ ।

अमन्द (वि०) [न० त०] 1 जो सुस्त या मन्द न हो, फुर्तीला, बुद्धिमान् 2 तेज़ प्रबल, प्रचण्ड (वायु आदि) 3 अत्यन्त, अति, अधिक बहुत तीव्र अमन्द मधुसूदन—उत्तर० ५।५ अमन्दमिलदिन्दिरे निखिल-माधुरीमन्दिर भामि० ४।१ ।

अमम (वि०) [न० ब०] बिना अहंकार के, स्वार्थ या सांसारिक आसक्ति से शून्य ममतारहित,— शरण्यस्य ममत्वैव वृक्षमूलनिकेतन — मनु० ६।२६ ।

अममता-त्वम् [न० त०] उदासीनता, स्वार्थराहित्य ।

अमर (वि०) [न० म० मृ - पचाद्यच्] जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो न मरने वाला, अविनाशी -अजरा-मरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च साधयेत् हि०, पञ्च० 3 मनु० २।१४८, रः 1 देव, देवता 2 पारा 3 सोना 4 तैंतीस की संख्या (क्योंकि गिनती में इतने ही देवता हैं) 5 अमरसिंह 6 हड्डियों का ढेर—रा 1. इन्द्र का आवासस्थान (तु० अमरावती) 2 नाल 3 योनि 4 गृहस्तम्भ, री 1 देवपत्नी देवकन्या 2 इन्द्र की राजधानी । सम० अङ्गना, स्त्री दिव्य अप्सरा, देवकन्या—भुजाग्र स्वामिन् हृतमङ्गना -शि० १।५१, अद्रिः देव-पर्वत अर्थात् सुमेरु पहाड़ — अधिप, - इन्द्र, - ईशः, — ईश्वरः, — पतिः, — भर्तृ,—राजः देवताओं का स्वामी, इन्द्र की उपाधि, कई बार विष्णु और शिव की भी उपाधि —आचार्यः, — गुरुः, —पूज्यः देवताओं के गुरु, बृहस्पति की उपाधि, —आपगा, —तटिनी, —सरित् (स्त्री) स्वर्गीय नदी, गंगा की उपाधियाँ,—°तटिनीरोधसि वसन्—भर्तृ० ३।१२३, —आलयः देवताओं का आवासस्थान, स्वर्ग, —कण्टकम् विन्ध्यपर्वतश्रेणी के उस भाग का नाम जो नर्मदा नदी के उद्गम स्थान के निकट है - कोशः, - कोषः अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत भाषा का एक सुप्रसिद्ध कोश — तरुः, —दारुः 1. दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष.—अमरतरु-कुसुमसौरभसेवनसम्पूर्णसकलकामस्य—भामि० १।२८ 2 =देव दारु 3 कल्पवृक्ष, —द्विजः देवल ब्राह्मण जो मन्दिर या मूर्ति संबंधी कार्य करता हो, मन्दिर का अधीक्षक —पुरम्, देवताओं का आवासस्थान, दिव्य स्वर्ग,—पुष्पः, —पुष्पकः कल्पवृक्ष —प्रख्य,—प्रभ (वि०) देवताओं जैसा, —रत्नम् स्फटिक, -लोकः देवताओं की दुनियाँ, स्वर्ग, ता स्वर्गीय सुख, -तेषु सम्यग्वर्तमानो गच्छत्यमरलोक-ताम्—मनु० २।५,—सिंह अमरकोश के रचयिता का नाम, वह जैन धर्मावलम्बी थे, कहा जाता है कि विक्रमादित्य महाराज के नवरत्नों में एक रत्न थे ।

अमरता-त्वम् [अमर + तल्, त्वल वा] देवत्व ।

अमरावती [अमर + मतुप् दीर्घ] देवताओं का आवासस्थान, इन्द्र का पुर —अमरावत्यामिन्द्रः … निमीलिता-क्षीव भियाऽमरावती । शि० ।

अमर्त्य (वि०) [न० त०] जो मरणधर्मा न हो, दिव्य अविनाशी °भावेऽपि रघु० ७।५३, —र्त्यम्—त्वम्, —ता अविनश्वरता, —र्त्यः देवता, । सम०—आपगा देवनदी गंगा की उपाधि —विक्रमाङ्क० १८।१०४ ।

अमर्मन् (नपुं०) [न० त०] शरीर का वह अंग जो मर्म-स्थल न हो । सम०—वेधिन् मर्मस्थल को न बींधने वाला मृदु, कोमल ।

अमर्याद (वि०) [न० ब०] 1 उचित सीमाओं को पार करने वाला, सीमा को उल्लंघन करने वाला, अनादर करने वाला, अनुचित —°मर्यादायाममर्यादा स्त्रियस्ति-ष्ठन्ति सर्वदा—पञ्च० १।१४२, तादृश त्वममर्यादं कर्म कर्तुं चिकीर्षसि —राम० 2 सीमारहित, असीम—दा [न० त०] उचित सीमा का उल्लंघन करना, आचरणहीनता, अप्रतिष्ठा, उचित सम्मान की अवहेलना ।

अमर्ष (वि०) [न० ब०] असहनशील,- र्षः [न० त०] 1 असहिष्णुता, असहनशीलता, धैर्यशून्यता, - अमर्ष-शून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः — कि० १।३३, ईर्ष्या, ईर्ष्यायुक्त क्रोध,— किम् बलवत्साल-प्रतापोत्कर्षोऽप्यमर्ष —उत्तर० ५, सा० द० में ३३ व्यभिचारी भावों में से एक—अमर्ष है० सा० द०; रस० निम्नपरिभाषा बताता है —परकृतावज्ञानादि-नानापराधजन्यो मौनवाक्पारुष्यादिकारणीभूतश्चित्त-वृ. °विशेषोऽमर्षः 2. क्रोध, आवेश, कोप,—पुनरपाम-र्षोद्दीपितेन गाण्डीविना—वेणी० २, सामर्ष क्रुद्ध, कुपित, सामर्षम् कोपपूर्वक 3. तीव्रता, प्रचण्डता । सम०—ज (वि०) क्रोध या असहनशीलता से उत्पन्न, —हासः कोपपूर्ण हँसी, तिरस्कार व्यंग्य ।

अमर्षण,-र्षिन, } (वि०) [न० ब०, न० त०] असहिष्णु,
अमर्षवत्,-र्षिन् } असहनशील, क्षमा न करने वाला—पञ्च०

१।३२९, २. क्रुद्ध, कुपित, प्रचण्ड स्वभाव का—हुविजयो गोत्रभिदप्यमर्षण—रघु० ३।५३—अभिमन्युवधामर्षिताः पाण्डुपुत्राः—वेणी० ४, 3. प्रचण्ड, दृढ़-संकल्प।

अमल (वि०) [न० ब०] 1. मलरहित, मलमुक्त, पवित्र, निष्कलंक, विमल,—अमलाः सुहृदः—पंच० २।१७१, विशुद्ध, निष्कपट 2. श्वेत उज्ज्वल,—कर्णावसक्तामलदन्तपत्रम्—कु० ७।२३, रघु० ६।८०,—ला 1. लक्ष्मी देवी 2. नाल 3 आँवले का वृक्ष,—लम् 1. पवित्रता 2. अबरक, 3 परब्रह्म। सम०—पतत्रिन् [पु०—त्री] जंगली हंस,—रत्नम्,—मणिः स्फटिक पत्थर।

अमलिन (वि०) [न० त०] स्वच्छ, बेदाग, पवित्र, (नैतिक रूप से भी)—कुलममलिनं नन्वेवायं जनो न च जीवितम्—मा० २।२,।

अमसः [अम्+असच्] 1 रोग 2. मूर्खता 3 मूर्ख 4 समय।

अमा (वि०) [न० त०] अपरिमित—(अव्य०) 1 में, निकट, पास 2. के साथ, से मिलकर, जैसा कि अमात्य अमावस्या (स्त्री) नूतन चन्द्रमा का दिन, सूर्य और चन्द्र के संयोग का दिन,—अमायां तु सदा सोम ओषधीः प्रतिपद्यते—व्यास 2 चन्द्रमा की सोलहवीं कला, पु०—आत्मा। सम० —अन्तः नूतन चन्द्रमा के दिन की समाप्ति,—पर्वन् (नपु०) अमा का पवित्र काल, नूतन चन्द्रमा का दिवस।

अमांस (वि०) [न० ब०] 1. बिना मांस का मांस रहित, 2 दुबला पतला, कमजोर,—सम् [न० त०] जो मांस न हो, मांस को छोड़ कर और कोई वस्तु। सम०—ओदनिक (वि०) [स्त्री० —की] मांसयुक्त बने हुए चावलों से संबंध न रखने वाला।

अमात्यः [अमा+त्यप्] राजा का सहचर या अनुयायी मंत्री, अमात्यपुत्रैः सवयोभिरन्वितः—रघु० ३।२८।

अमात्र (वि०) [न० ब०] 1 सीमारहित, अपरिमित 2 अपूर्ण, अल्पमात्र 3 जो मात्रिक न हो,—त्रः परब्रह्म।

अमानस्यम्—स्यम् [न० त०] अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा।

अमानस्यम् [न० त०] पीड़ा।

अमानिन् (वि०) [न० त०] विनम्र, विनीत।

अमानुष (वि०) [स्त्री० —षी] [न० त०] अमानवी मनुष्य से संबंध न रखने वाला, अलौकिक, अमानवीय, अतिदैवीय,—अमानुषीषु तनुषु दृश्यते—श०

१।२।

अमानुषीय (वि०) [न० त०] अप्राकृतिक, अपौरुषेय आदि।

अमावसु (स्त्री) दे० = अमावस्या या अमावास्या।

अमाय (वि०) [न० ब०] 1.अकुटिल, सच्चा, ईमानदार, निष्कपट 2. जो मापा न जा सके,—या 1. कपट-शून्यता, ईमानदारी, निष्कपटता 2. (वेदा० में) भ्रम का अभाव, परमात्मा का ज्ञान—यम् परब्रह्म।

अमायिक,—यिन् (वि०) [न० त०] मायारहित, निश्छल, ईमानदार।

अमावस्या,—वास्या
अमावसी,—वासी
(अमामसी,—मासी) } [अमा+वस्+यत्, ण्यत् वा; अमा+वस्+अप्, घञ् वा] नूतन चन्द्रमा का दिन वह समय जब कि सूर्य और चन्द्रमा दोनों संयुक्त रहते हैं, प्रत्येक चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन—सूर्याचन्द्रमसोर्यः परः सन्निकर्षः साऽमावस्या—गोभिल०।

अमित (वि०) [न० त०] 1 जो मापा न गया हो, असीम, सीमारहित, विशाल—मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुतः अमितस्य हि दातारं भर्तारं का न पूजयेत्—रामा० 2 उपेक्षित, अनादृत 3 अज्ञात 4 असंस्कृत। सम०—अक्षर (वि०) गद्यात्मक,—आभ (वि०) अधिकांतियुक्त, असीम प्रभायुक्त,—ओजस् (वि०) असीम तेजोयुक्त, अमित शक्तिसंपन्न, सर्वशक्तिमान् तेजस्,—द्युति (वि०) असीम तेज या कांतियुक्त—विक्रमः 1 असीम बल शाली, 2 विष्णु।

अमित्रः [अम्+इत्र] जो मित्र न हो, शत्रु, विरोधी, वैरी, प्रतिद्वंद्वी, विपक्षी,—त्रा ,.अमित्री मित्रं च सहजप्राकृतौ, अपि—शि० २।३६, नन्वमित्राणामिच्छ्याऽस्ते—२०१ प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधव कि० १४।२१,। सम० —घात, —घातिन्,—घ्न,—हन शत्रुओं को मारने वाला,—जित् (वि०) अपने शत्रुओं को जीतने वाला, अमित्रजिन्मित्रजिदोजसा स यत्—नै० १।१३।

अमित्र्य (वि० वि०) [न० त०] जो मित्र न हो, अमित्रमत्र तामनुव्रते प्रियमप्रियमपथ्या—रघु० १४।६।

अमिन् (वि०) [अम्+णिनि] बीमार, रोगी।

अमिषम् [अम्+टिषच्] 1 सांसारिक सुख के पदार्थ विलास की सामग्री 2 ईमानदारी, निश्छलता, निष्कपटता 3 मांस।

अमीवा [अम्+वन् ईडागम] 1 कष्ट, बीमारी, रोग 2 दुःख, त्रास—वम् कष्ट, दुःख, पीड़ा, चोट।

अमुक (स० वि०) [अदस्—टेरकच् उत्वमत्वे—पा०] कोई व्यक्ति या पदार्थ, फलां २, ऐसा-वैसा (जब व्यक्ति को नाम से उल्लिखित न किया जाय), यतं सेऽमुकपुत्रस्य प्रयोगे विधेयम्—सिद्ध० ७।८६, ८७, इत्यसावमित्रविनाशायामुकपुत्रो,......

अमुक्त (वि०) [न० त०] 1. जिसको बन्धनों से न छूटे हों, जो ज्ञान में स्वतंत्र नहीं 2 जन्ममरण के बन्धन से जिसे छुटकारा न मिला हो, जिसे मोक्ष प्राप्त न हुआ हो,—क्तम् एक हथियार (चाकू या तलवार आदि) जो सदैव पकड़ा जाता है, फेंका नहीं जाता। सम०

—हस्त (वि०) मितव्ययी, कंजूस (कदर्थना के लिए) अल्पव्ययी, परिमितव्ययी,—सदा प्रहृष्टया भाव्यं व्यये चामुक्तहस्तया —मनु० ५।१५० ।

अमुक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 स्वातन्त्र्यशून्यता 2 स्वतन्त्रता या मोक्ष का अभाव ।

अमुतः (अव्य०) [अदस्+तसिल् उत्व-मत्व] 1 वहां से, वहां 2. उस स्थान से ऊपर से अर्थात् परलोक से या स्वर्ग से 3 इस पर ऐसा होने पर अब से आगे ।

अमुत्र (अव्य०) [अदस्+त्रल् उत्व मत्व] (विप० इह) 1 वहां, उस स्थान पर, वहां पर अमुत्रासन यवना दश० १२७ 2 वहां (जो कुछ पहले हो चुका है या कहा गया है) उस अवस्था में 3 वहां ऊपर परलोक में, आगामी जन्म में—यावज्जीव च तत्कुर्याद्येन मुत्र सुखं वसेत् 4 वहां अनेनैवार्भका सर्व नगरेऽमुत्र भक्षिता कथा० ।

अमुथा (अव्य०) [अदस्+थाल् उत्व मत्व] इस प्रकार इस रीति से ।

अमुष्य (अदस सब०) उस का (केवल समास में) । सम० कुल [अलुक स०] (वि०) उस कुल से संबंध रखने वाला (—लम्) प्रसिद्ध घराना —पुत्र,—पुत्री ऐसे प्रसिद्ध कुल का पुत्र या पुत्री दे० आमुष्यायण

अमूदृश्, —श, —क्ष (वि०) [स्त्री० —शी —क्षी] [अदस्+दृश्+क्विन्, कञ्, क्स वा स्त्रियां ङीप्] ऐसा इस प्रकार का इस रूप या ढंग का ।

अमूर्त (वि०) [न० त०] आकारहीन, अशरीरी शरीर रहित (विप० —मूर्त-मूर्तत्वम् अवच्छिन्नपरिमाणवत्त्वम् मुक्ता०) —र्तः शिव । सम० गुण (वैशे० में) धर्म, अधर्म जैसे गुणों को अमूर्त या अशरीरी समझा जाता है ।

अमूर्ति (वि०) [न० ब०] आकार हीन रूपरहित —तिः विष्णु, —र्तिः (स्त्री०) [न० त०] रूप या आकार का न होना ।

अमूल—लक (वि०) [न० ब०] 1 निर्मूल (ना०) (आल०) बिना किसी आधार के निराधार आधार रहित 2 बिना किसी प्रमाण के जो मूल में न हो —नामूलं लिख्यते किंचित्—मल्लि० 3 बिना किसी भौतिक कारण के जैसा कि सांख्य का प्रधान ।

अमूल्य (वि०) [न० ब०] अनमोल बहुमूल्य ।

अमृणालम् [नास्ति मृणालं यस्य न० त०] एक सुगन्धित घास की जड़ (खस या उशीर) जिस के परदे या टट्टियां बनती हैं ।

अमृत (वि०) [न० त०] 1 जो मरा न हो 2 अमर 3 अविनाशी अनश्वर —तः 1 देव, अमर देवता 2 देवों के वैद्य धन्वन्तरि,—ता 1 मादक शराब 2 नाना प्रकार के पौधों के नाम —तम् 1 (क) अमरता (ख) परममुक्ति, मोक्ष —मनु० १२।१०४, स भिये चामृताय च—अमर०, 2 देवों का सामूहिक शरीर 3 अमरता की दुनिया, स्वर्गलोक 4 सुधा, पीयूष, अमृत (विप० विष) जो समुद्र मंथन के फल स्वरूप प्राप्त समझा जाता है—देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थे —कि० ५।३०, विषादप्यमृतं ग्राह्यम्—मनु० २।२३९ विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया— रघु० ८।४६ (प्रायः वाच्, वचनम्, वाणी आदि शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है) कुमारजन्मामृतसंमिताक्षरम्— रघु० ३।१६ 5 मोक्षरस 6 विष नाशक औषध 7 यज्ञशेष मनु० ३।२८५ 8 अयाचित भिक्षा (दान) बिना मांगे दान मिलना — मनु० ऋतामृताभ्यां जीवेत्, भैक्ष्यममृतं स्यादयाचितम्—मनु० ४।५ 9 जल—अमृतान्धाः अमृत —अमर० १० भोजन के पूर्व या बाद में आचमन करते हुए ब्राह्मणों के द्वारा पढ़े जाने वाले मंत्र (अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा अमृतापिधानमसि स्वाहा), 10 औषधि 11 घी अमृतं नाम यत्सन्तो मन्त्रजिह्वेषु जुह्वति —शि० २।१०७ 12 दूध 13 आहार 14 उबले हुए चावल भात 15 मिष्ट पदार्थ कोई भी मधुर वस्तु 16 सोना 17 पारा 18 विष 19 परब्रह्म । सम० —अंशु,—कर,—दीधिति,—द्युति,—रश्मि चन्द्रमा के विशेषण अमृतदीधितिरेष विदर्भजे—नै० ४।१०४ —अन्धस् —अशन,—आशिन (पुं०) वह जिसका भोजन अमृत है देवता अमर —आहरण गरुड़ जिसने एक बार अमृत चुराया था —उत्पन्ना— मक्खी (—न्नम्), —उद्भवम् एक प्रकार का सुर्मा,—कुण्डम् वह बर्तन जिसमें अमृत रक्खा हो, —क्षारम् नौसादर,—गर्भ (वि०) अमृत या जल से भरा हुआ अमृतमय (—र्भः) 1 आत्मा 2 परमात्मा —तरंगिणी ज्योत्स्ना, चांदनी —द्रव (वि०) चन्द्रकिरण जो अमृत छिड़कती हैं (—वः) अमृत प्रवाह —धारा 1 एक छन्द का नाम 2 अमृत का प्रवाह —प, 1 अमृत पान करने वाला देव या देवता 2 विष्णु 3 शराब पीने वाला —धृतमधुमधुपनामवाप्स्यथासाभिघरमम् मधुपस्त्वाजिहानि— शि० ३।४५ (यहां अ का अमृत पीनेवाला भी अर्थ है) —फला अंगूरों का गुच्छा अंगूरों की बेल द्राक्षा, —बन्धु 1 देव देवता 2 घोड़ा चन्द्रमा,—भुज् (पुं०) अमर देव देवता जो यज्ञशेष का स्वाद लेता है —भू (वि०) जन्ममरण से मुक्त —मथनम् अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र का मथन —रसः 1 अमृत, पीयूष —काव्यामृतरसास्वादः — १० विविधकाव्यामृतरसान् पिबामः —भर्तृ० ३।३० 2 परब्रह्म —लता, —लतिका अमृत देने वाली बेल —वाक् अमृत जैसे मधुर वचन बोलने वाला —सार (वि०) अमृतमय (—रः) घी —सू,—सूति 1 चन्द्रमा (अमृत चुवाने वाला) 2 देवताओं की माता —सोदर अमृत का भाई, उच्चैः

—धारा:" नामक घोड़ा,—प्रवाह: अमृत का प्रवाह,—स्रुत् (वि०) अमृत चुवाने वाला —कु० १।४५।

अमृतकम् [अमृत+कन्] अमृत अमरत्व प्रदायक रस।

अमृतता—त्वम् [अमृत+तल्, त्वल् वा] अमरत्व, अमरता।

अमृतेशय [अलुक् स०] विष्णु (क्षीर सागर में सोने वाला)।

अमृषा (अव्य०) [न० त०] झूठपने से नहीं सचमुच।

अमृष्ट (वि०) [न० त०] न मसला हुआ न रगड़ा हुआ। सम० मृज (वि०) अक्षुण्ण पवित्रता वाला।

अमेदस्क (वि०) [न० ब० कप् च) जिसमें चर्बी न हो दुबला-पतला।

अमेधस् (वि०) [न० ब०] बुद्धिहीन मूर्ख जड़।

अमेध्य (वि०) [न० त०] 1 जो यज्ञ के योग्य या अनुमत न हो 2 यज्ञ के अयोग्य नामेध्यं प्रक्षिपेदग्नौ मनु० ४।५३ ५६ ५।१ १३२ 3 अपवित्र मल युक्त, मैला गंदा अम्बच्छ भग० १७।१०, भर्तृ० ३।१०६ —ध्यम् 1 विष्ठा लीद सम्मृज्मेद्गामार्गे वस्त्वमेध्यमनार्पादि मनु० ४।१२८२, ५।१२६ 2 अपशकुन अशुभशकुन—अमेध्य दृष्ट्वा सूर्यमुपतिष्ठेत —कात्या०। सम० —कुणपाशिन् (वि०) मुर्दा खाने वाला —युक्त, —लिप्त (वि०) मलयुक्त मैला, मलिन गंदा।

अमेय (वि०) [न० त०] 1 अपरिमेय सीमारहित अमेयो मितलोकस्त्वम् रघु० १०।१८ 2 अज्ञेय। सम० —आत्मन् अपरिमेय आत्मा को धारण करने वाला, महात्मा, महामना (पु०) विष्णु।

अमोघ (वि०)[न० त०] 1 अचूक ठीक निशाने पर लगने वाला—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम् कु० ३।६६ रघु० ३।५३ १२।९७ कामिलक्ष्येष्वमोघै मेघ० ७३, 2 निर्भ्रान्त अचूक (शब्द, वरदान आदि) —अमोघा प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिष —रघु० १।४४ 3. अव्यर्थ सफल उपजाऊ —यदमोघमपामन्तरुप्तं बीजमज त्वया —कु० २।५ इसी प्रकार °क्रम °शक्ति °वीर्य °क्रोध आदि, —घ 1 असफल 2 विष्णु। सम०—दण्ड दण्ड देने में अटल शिव —दर्शिन् —दृष्टि (वि०) निर्भ्रान्त मन वाला अचूक नजर वाला —बल (वि०) अटूट शक्ति संपन्न —वाच् (स्त्री०) वाणी जो व्यर्थ न जाय वाणी जो अवश्य पूरी हो (वि०) जिसके शब्द कभी व्यर्थ न हों —वाञ्छित (वि०) जो कभी निराश न हो —विक्रम अटूट शक्तिशाली शिव।

अम्ब् (भ्वा० पर०) 1 जाना 2 (आ०) शब्द करना।

अम्बः [अम्ब्+घञ् अच् वा] पिता, —म्बम् 1. आँख, 2. जल, —म्ब (अव्य०) स्वीकृति बोधक 'हाँ' बहुत अच्छा' अव्यय।

अम्बकम् [अम्ब्+ण्वुल्] 1 आँख ('त्र्यम्बक' में) 2. पिता।

अम्बरम् [अम्ब शब्द तं राति ददाति इति— अम्ब+रा+क] 1 आकाश वायुमंडल, अन्तरिक्ष— सावशेषोदम्बरे रघु० १२।४१ 2. कपड़ा, वस्त्र, परिधान पोशाक -दिव्यमाल्याम्बरधरम् भग० ११।११ रघु० ३।९ दिगम्बर, सागराम्बरा मही— समुद्र की परिधि से युक्त पृथ्वी 3 केसर 4 अबरक 5 एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। सम० —अन्तः 1 वस्त्र की किनारी 2 क्षितिज —ओकस् (पु०) स्वर्ग में रहने वाला, देवता (भस्मरज) विलिप्यते मौलिभिरम्बरौकसाम् कु० ५।७९ —द कपास,—मणि सूर्य, —लेखिन् (वि०) गगनचुंबी रघु० १३।२६।

अम्बरीषम् [अम्ब+अरिष नि० दीर्घ०] (कुछ अर्थों में अम्बरीषम् भी) 1 भाड़, कड़ाहा 2 युद्ध, युद्ध 3 युद्ध संग्राम 4 नरक का एक भेद 5 छोटा जानवर, बछड़ा 6 सूर्य 7 विष्णु 8 शिव।

अम्बष्ठ [अम्ब+स्था+क] 1 ब्राह्मण पिता तथा वैश्यमाता से उत्पन्न सन्तान—ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते— मनु० १०।८ याज्ञ० १।९१ 2 महावत 3 (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम —ष्ठा कुछ पौधों के नाम—(क) मल्लिका यूथिका (जूही) (ख) पाठा (ग) चुक्रिका (घ) अंबाष्ठा —ष्ठी अम्बष्ठ जाति की स्त्री।

अम्बा [अम्ब्+घञ्+टाप्] (वैदिक संबोधन —अंबे, बाद की संस्कृत में अम्ब) 1 माता (स्नेह अथवा आदर पूर्ण संबोधन में भी इसका प्रयोग होता है) भद्र महिम्ना भद्र माता-किमम्बाभिः प्रेषित अम्बाना कार्यमित्यत श० ७ कृताञ्जलिरम्ब यद्यस्य सस्यात् रघु० १४।१६ 2 दुर्गा भवानी 3 पाडु की माता, काशिराज की कन्या [यह और इसकी दो बहनें भीष्म के द्वारा सन्तानहीन विचित्रवीर्य के लिए अपहृत की गई थीं। क्योंकि अम्बा की सगाई पहले ही शाल्व के राजा से हो चुकी थी अतः इसे उन्हीं के पास भेज दिया गया। परन्तु दूसरे के घर में रही होने के कारण शाल्व के राजा ने उसे ग्रहण नहीं किया अतः यह वापिस आई और उसने भीष्म से प्रार्थना की कि वह अब उसे स्वीकार करें परन्तु उन्होंने अपना आजन्मब्रह्मचर्य भंग करना उचित नहीं समझा फलतः वह जंगल में जाकर भीष्म से प्रतिशोध लेने की तपस्या करने लगी। शिव उस पर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके दूसरे जन्म में, अभीष्ट प्रतिशोध दिलाने की प्रतिज्ञा की। बाद में वह द्रुपद के घर शिखण्डिनी के रूप में पैदा हुई और शिखण्डी कहलाने लगी, और अंत में वही भीष्म की मृत्यु का कारण बनी]।

अम्बाडा-ला [अम्बा+ला+क+टाप्—डलयोरभेदात् अम्बाडा अपि] माता।

अम्बालिका [अम्बाला+क+टाप् इत्वम्] 1 माता, भद्र महिला, (सम्मान तथा स्नेहसूचक शब्द) 2 अंबाडा नामक पौधा 3. काशिराज की सबसे छोटी पुत्री—विचित्रवीर्य की पत्नी (जब, सत्यवती ने निस्सन्तान विचित्रवीर्य के लिए एक पुत्र पैदा करने के लिए व्यास का आवाहन किया तब व्यास के द्वारा उत्पन्न 'पाण्डु' की यह माता बनी)।

अम्बिका [अम्बा+कन्+टाप् इत्वम्] 1 माता, भद्र महिला, ('अम्बा' की भांति स्नेह और आदर सूचक शब्द),—अम्बिके अम्बिके शृणु मम विज्ञप्तिम् मृच्छ० १, 2. शिव की पत्नी पार्वती,—आशीभिरेधयामासुः पुरः पाकाम्बिकाम्... कु० ६।९० 3 काशिराज की मझली पुत्री, तथा विचित्रवीर्य की ज्येष्ठ पत्नी अपनी छोटी बहन की भांति इसके भी कोई सन्तान नहीं हुई, फिर व्यास के द्वारा इसमें उत्पन्न पुत्र 'धृतराष्ट्र' कहलाये ऊपर दे० 'अम्बा' सम०—पति, —भर्तृ शिव, —पुत्र, —सुत धृतराष्ट्र।

अम्बिकेय,—यक [अम्बिका+ढ] [अधिक शुद्ध रूप आम्बिकेय है] गणेश या कार्तिकेय या धृतराष्ट्र।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब्+उण्] 1 जल—यामम्बु निःस्यन्दि... काव्या० १० 2 रुधिर के अन्तर्गत अम्लीय तत्त्व। सम०—कण पानी की बूंद, —कण्टक (छोटी नाक वाला) घड़ियाल, —किरात घड़ियाल, —कीश, —कूर्म कछुवा, —केशर नींबू का पेड़, —क्रिया पितृतर्पण, पितरों को जलदान, —ग, —चर, —चारिन् (वि०) जल में रहने वाला, जलचर, —चत्वर झील, —ज (वि०) जल में उत्पन्न, जलज (विप० स्थलज), मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम् ... (—जः) 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 सारस पक्षी 4 शंख (—जम्) 1 कमल—इन्दीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन शृंगार० 3 2 इन्द्र का वज्र, °भू, °आसन कमल से उत्पन्न देवता ब्रह्मा, °आसना लक्ष्मी देवी, —जन्मन् (नपुं०) कमल (पुं०) 1 चन्द्रमा 2 शंख 3 सारस पक्षी, —तस्कर, —भक्ष, सूर्य, —द (वि०) जल देने वाला (—दः) ... नवाम्बुदानीकमुहूर्तलाञ्छने रघु० ३।५३ —धर 1 बादल शीतमस्याश्चकुम्भरावश्च ... कु० ३।५३ ... रघु० ६।४४ ... —धि 1 पानी का आशय जलाशय, —अर्णवोदधि... सिद्धा० 2 समुद्र, —धार ... भर्तृ० २।६ ... —निधि पानी का खजाना, समुद्र, देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थे कि० ५।३० —प (वि०) पानी पीने वाला (—प.) 1 समुद्र 2. वरुण—जल के स्वामी,—पात: जलधारा, जलप्रवाह, नदी या झरना गङ्गाम्बुपातप्रतिमा गृहेभ्यः भट्टि० १।८, —प्रसाद:, —प्रसादनम् कतक निर्मली का पेड़—फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम् न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति 1 —भवम् कमल —भृत् (पुं०) 1 जलवाहक, बादल 2 समुद्र 3 अबरक —मात्रज (वि०) जो केवल जल में ही उत्पन्न हो (—जः) शंख —मुच् (पुं०) बादल —ध्वनितसूचितमम्बुमुचां चयम् —कि० ५।१२, —राज 1 समुद्र 2 वरुण, —राशि जलाशय या पानी का भंडार, समुद्र, —स्वमिव ज्वलन्तीवमिवाम्बुराशी श० ३।३ चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशि: कु० ३।६७ रघु० ६।५७ ... —रुह् (नपुं०) 1 कमल 2 सारस —रुहम्, —रुहम् कमल—विपुलिनाम्बुरुहा न सरिद्वधू: कि० ८।१० —रोहिणी कमल —वाह: 1 बादल —तडित्वन्तमिवाम्बुवाहम् कि० ३।१ —सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य मेघ० १०१, 2 झील 3 जलवाहक —वाहिन् (वि०) पानी ले जाने वाला (पुं०) बादल —वाहिनी काठ का डोल, एक प्रकार का पानी उलीचने का बर्तन—विहार जल क्रीड़ा —वेतस एक प्रकार का बेंत, नरकुल जो जल में पैदा होता है —सरणम् जलप्रवाह, जलधारा, —सर्पिणी जोंक —सेचनी जल छिड़कने का पात्र।

अम्बुमत् (वि०) [अम्बु+मतुप्] पनीला जिसमें जल हो, (—ती) एक नदी का नाम।

अम्बूकृत (वि०) [अम्बु+च्वि+कृ+क्त] बड़बड़ाया हुआ, दांतों को बन्द करके अस्पष्ट रूप से कहा हुआ, मुंह में ही कहा हुआ, मुंह से थूक उछलते हुए कहा हुआ। —तम् बड़बड़ाने का शब्द, भालू के गुर्राने का शब्द—दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनामनुरसितगुरूणि स्त्यानमम्बूकृतानि—उत्तर० २।२१ मा० ९।६ महावी० ५।४१।

अम्भ् (भ्वा० आ०) [अम्भते, अम्भित] शब्द करना, आवाज करना।

अम्भस् (नपुं०) [अम्भ्+असुन्] 1 जल—कथम् ... अम्भसा ... कु० ... ... कि० ... ... पानी द्वारा किया हुआ, ... 2 आकाश 3 जन्मकुंडली में लग्न से चौथा स्थान। सम०—ज (वि०) जल में उत्पन्न (—जः) 1 चन्द्रमा 2 सारस पक्षी (—जम्) कमल—कान्त्या ... शृंगार० १७ इसी प्रकार ... नेत्र, —जिनी कमलों का समूह —कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम् —शि० ११।६४ —जन्मन् (पुं०) —जनि, —योनि कमलोत्पन्न देवता, ब्रह्मा की उपाधि —जन्मन् (नपुं०) कमल —द, —धर बादल

—**धि**,—**निधि**,—**राशि** जल का भंडार, समुद्र — सभ-याम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा — शि० २।१००, यादवाम्भोनिधीन्रुन्धे वेलेव भवतः क्षमा ५८, इसी प्रकार अम्भस् निधि [illegible] निधि — शि० १।२८ —**वल्लभ** मगा —**रुह** (नपुं०) —**रुहम्** कमल [illegible] — कु० ५।१३, —**सारम्** मोती [illegible]।

अम्भोजिनी [illegible] कमलों का समूह [illegible] कमलों का समूह [illegible] से हो।

अम्मय (वि०) [स्त्री० —यी] [अप् + मयट्] जल से बना हुआ।

अम्र पुं० आम।

अम्ल (वि०) [अम् + क्ल] 1 खट्टा तीखा [illegible] लवणकटुकषायतिक्तमधुरकषायविदाहिन [illegible] आहार [illegible] १७०, —**लम्** खटास, खट्टापन [illegible] में एक 2 सिरका 3 [illegible] इमली 4 [illegible] का वृक्ष 5 उद्गार। सम० —**अक्त** (वि०) खट्टा किया हुआ —**उद्गार** खट्टी डकार —**केशर** चकोतरे का वृक्ष —**गन्धि** (वि०) खट्टी गंध वाला —**गोरस** खट्टी छाछ, —**जम्बीर** —**निम्बक**, नींबू का वृक्ष —**पित्तम्** एक रोग जिसमें आहार आमाशय में पहुँच कर अम्ल हो जाता है, खट्टा पित्त —**फलम्** इमली का फल (—**लम्**) इमली —**रस** (वि०) खट्टे स्वाद वाला (—**सः**) खटास तेजाबी अंश —**वृक्ष** इमली का वृक्ष —**सार** नींबू का पौधा —**हरिद्रा** आम्रहरिद्रा [illegible] पौधा।

अम्लक [अम्ल + कन् (स्वार्थे)] लकुच वृक्ष।

अम्लान (वि०) [न० त०] 1 जो मुर्झाया न हो (पुष्पादिक) 2 स्वच्छ साफ, [illegible] चमकीला, निर्मल बिना बादलों का — [illegible] कणोत्पन्न[illegible] — न बाणपुष्पवृक्ष [illegible]।

अम्लानि (वि०) [न० ब०] सशक्त न मुर्झाने वाला —**नि** (स्त्री०) [न० त०] 1 शक्ति 2 ताजगी हरियाली।

अम्लानिन् (वि०) [न० त०] स्वच्छ साफ, —**नी** बाणपुष्प वृक्षों का समूह।

अम्लिका (स्त्री) **का** [अम्ल + कन् टाप् इत्वम्, अम्ल ङीप् + क + टाप् वा] 1 मुँह का खट्टा स्वाद, खट्टी डकार 2 इमली का वृक्ष।

अम्लिमन् (पुं०) [अम्ल + इमनिच्] खटास, खट्टापन।

अय् (भ्वा० आ०) [कई बार भी, प०, विशेषतः उद् उपसर्ग के साथ] [अयते अयांचक्रे, अयितुम्, अयित] जाना। **अन्तर्** अन्तःप्रवेश करना, हस्तक्षेप करना [illegible] — मृच्छ० २, **अभ्युद्** 1 निकलना (जैसा कि चन्द्रमा, सूरज) 2 फलना-फूलना समृद्ध होना **उद्** 1 निकलना उगना (जैसा कि सूर्य) — उदयति हि शशाङ्कः कामिनीगण्डपाण्डुः — मृच्छ० १।५७, 2 प्रकट होना दिखाई देना — मुहूर्तो यत्रिय [illegible] — महा० 3 फूटना उदय होना, जन्म लेना उत्पन्न होना — [illegible] नै० ३।० [illegible] (हाथ का) [illegible] आगमन [illegible] होना भाग आना।

अय [illegible] 1 जाना चलना फिरना (अधिकतर [illegible] अन्तर्गत) 2 पूर्वजन्म के अच्छे कृत्य [illegible] [illegible] ८।—६ 4 पांसों का पासा। सम० —**अन्वित** [illegible] भाग्यशाली [illegible] — शि० ५।२०।

[illegible]

अयज्ञ (वि०) [न० ब०] यज्ञ न करने वाला —**ज्ञः** [न० त०] यज्ञ का न होना, बुरा यज्ञ।

अयज्ञिय (वि०) [न० त०] 1 जो यज्ञ के योग्य न हो (जैसे कि [illegible]) 2 जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो [illegible] 3 लौकिक, [illegible]

अयत्न (वि०) [न० ब०] बिना ही यत्न किये होनेवाला [illegible] — रघु० ८।२२ —**त्नः** (न० त०) श्रम [illegible] —**त्नेन** —**त्नात्** —**त्नम्**, बिना [illegible] आसानी से तत्परता के साथ।

अयथा (अ०) [न० त०] जिस प्रकार होना चाहिए वैसे न होना, अनुपयुक्त रूप से अनुचित ढंग से, गलत तरीके से। सम० —**अर्थ** (वि०) 1 जो नितान्त भाव के अनुरूप न हो अर्थहीन, भावरहित 2 असंगत अयोग्य मिथ्या शि० ३।२ अशुद्ध गलत — अनुभवो द्विविधो यथार्थोऽयथार्थश्च — तर्क० °अनुभव अशुद्ध या असत्य ज्ञान, गलत भाव —**इष्ट** (वि०) 1 जो इच्छानुकूल न हो नापसन्द 2 अपर्याप्त नाकाफी —**उचित** (वि०) अयुक्त अनुपयुक्त —**तथ** (वि०) 1 जो जैसा होना चाहिए वैसा न हो अयुक्त अनुपयुक्त, अयोग्य — इदमयथातथं स्वामिनश्चेष्टितम् — वेणी० ३, 2 अर्थहीन व्यर्थ, लाभरहित (—**थम्**) (अव्य०) 1 अयुक्तता के साथ, अनुपयुक्तता के साथ, 2 व्यर्थ [illegible] बेकार, [illegible] — मनु० ३।२४० —**तथ्यम्** अनुपयुक्तता, असंगतता व्यर्थता —**द्योतनम्** आशातीत घटना का होना —**पुर**, —**पूर्व** (वि०) जो पहले कभी न हुआ हो अभूतपूर्व अनोखा —**वृत्त** (वि०) गलत तरीके से काम करने वाला —**शास्त्रकारिन्** (वि०) शास्त्रानुकूल कार्य न करने वाला, अधार्मिक, — अयथाशास्त्रकारी च न विभागं पिता प्रभुः — नारद०।

अयथावत् (अव्य०) गलती से, अनुचित रीति से।

अयनम् [अय् + ल्युट्] 1 जाना, हिलना, चलना, जैसा कि 'रामायणम्' में 2 राह, पथ, मार्ग, सड़क -अगस्त्यचिह्नादयनात् रघु० १६।४४, 3 स्थान, जगह, घर, 4 प्रवेशद्वार, व्यूह में प्रवेश करने का मार्ग -अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः -भग० १।११ 5 सूर्य का मार्ग, सूर्य की विषुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर गति 6 (अत एव) इस मार्ग का अवधि-काल छः मास, एक अयनबिंदु से दूसरे अयनबिंदु तक जाने का समय— दे० उत्तरायण, दक्षिणायन 7 विषुव और अयनसंबंधी बिन्दु, - दक्षिणम् अयनम्-शिशिरान्तमात्र का अयन, उत्तरम् अयनम्-ग्रीष्म अयन 8 शास्त्रसम्मत मान्य पन्था (सिद्धान्तविषय)—स्वेता०। सम० कालः दोनों अ... के मध्य की अवधि (दोनों अयनों का मध्यकाल) -वृत्तम् ग्रहणरेखा।

अयन्त्रित (वि०) [न० त०] अनियन्त्रित, जिसको रोका न जा सके, स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला।

अयमित (वि०) [न० त०] 1 अनियमित, 2 जिस पर प्रतिबंध न लगा हो 3 (जिसकी काट-छांट न की गई हो), असज्जित (जैसा कि नाखून आदि), -मेघ० ९२।

अयशस् (वि०) [न० ब०] यशोहीन, बदनाम, अकीर्तिकर ('अयशस्क') भी इसी अर्थ में, (नपुं० - शः) बदनामी अपकीर्ति, कुख्याति, अपमान, निन्दा —अयशो महदाप्नोति—मनु० ८।१२८, किमयशो ननु घोरमतः परम् -उत्तर० ३।२७ स्वभावलोलेत्ययशः प्रमृष्टम्— रघु० ६।४१। सम० -कर (वि०) (स्त्री० -री) बदनाम, कलंकी।

अयशस्य (वि०) [न० त०] बदनाम कलंकी।

अयस् (नपुं०) [इ + असुन्] 1 लोहा, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु रघु० ८।४३ 2 इस्पात, 3 सोना, 4. धातु, 5. अगर नामक लकड़ी। (पुं०) अग्नि। सम० अयस,—अयघनम् हथौड़ा, मूसल,—अग्रः 1. लोहे का बाण 2. बढ़िया लोहा 3. लोहे का बड़ा परिमाण,- कान्तः (अयस्कान्त) 1 चुबक चुबक पत्थर, प्रान्तोऽयमस्त्यकमाकृष्टमयस्कान्तेन लोहवत्,- कु० ११५९ स चकर्ष परस्मात्तदयस्कान्त इवायसम् रघु० १७।६३, उत्तर० ४।२१, 2 मूल्यवान् पत्थर °मणिः चुबक पत्थर—अयस्कान्तमणिशलाकेव लोहधातुमन्तःकरणमाकृष्टवती—मा० १,—कारः लुहार, लोहे का काम करने वाला,—कीलम् लोहे का डंडा या मुर्गा—कुंभः लोहे का बर्तन, इंजिन का बायलर आदि, इसी प्रकार °पात्रम्, -घनः लोहे का हथौड़ा अयोघनेनाय इवाभितप्तम् रघु० १४।३३, चूर्णम् लोहे का चूरा —जालम् लोहे की जाली,—पेडः लोहे की नुपुर,—धातुः लोहधातु- उत्तर० ४।२१, प्रतिमा लोहे की मूर्ति, —यन्त्रम् लोहे का यंत्र, इसी प्रकार °रथः, °रसः, —मुखः लोहे की नोक लगा हुआ बाण—शैलस्थलम् कुम्भमयोमुखेन रघु० ५।५५,—शंकुः 1 लोहे की बर्छी 2. लोहे की कील, नोकदार लोहे की छड़—रघु० १२।९५, - शूलम् 1 लोहे का भाला 2. प्रबल साधन, तीक्ष्ण न्याय-सिद्धा०, (तु० आय शूलिक काव्य० १०, अयःशूलेन अन्विच्छतीत्यायःशूलिक), —हृदय (वि०) लोह-हृदय, कठोर, निष्ठुर, -अयोहृदयो हृदयः प्रतिगर्जिताम् रघु० ९।९।

अयस्मय (अयोमय) (नपुं०) [स्त्री०—यी] [अयस् + मयट्] लोहे या और किसी धातु का बना हुआ।

अयाचित (वि०) [न० त०] न मांगा हुआ, अप्रार्थित (भिक्षा, आहार आदि) अमृतं स्यादयाचितम् —मनु० ४।५ —भक्ष्य अप्रार्थित भिक्षा। सम०—उपपन्न,—उपस्थित बिना निमन्त्रण या प्रार्थना के पहुंचा हुआ,— अयाचितोपस्थितमम्बु केवलम्—कु० ५।२२,—वृत्तिः बिना मांगी या अप्रार्थित भिक्षा पर जीवित रहना।

अयाज्य (वि०) [न० त०] 1 (व्यक्ति) जिसके लिए यज्ञ नहीं करना चाहिए, या जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (शूद्रादिक), 2. (अत एव) जातिबहिष्कृत, पतित 3. यज्ञ करने का अनधिकारी। सम० —याजनम्,—संयाज्यम् उस व्यक्ति के लिए यज्ञ करना जिसके लिए किसी को यज्ञ नहीं करना चाहिए—मनु० ३।६५, ११।६०।

अयात (वि०) [न० त०] न गया हुआ। सम०—याम (वि०) जो बासी न हो, ताजा, जो उपयोग में आने के कारण जीर्णशीर्ण न हुआ हो,—°मं च यौवनम् —दश० १२३, नया, खिला हुआ।

अयाथार्थिक (वि०) [स्त्री० -की] [न० त०] 1. जो सत्य न हो, न्याय विरुद्ध, अनुचित 2. अवास्तविक, असंगत, बेतुका।

अयाथार्थ्यम् [न० त०] 1 अयोग्यता, अयुक्तता 2. बेतुकापन, असंगतता।

अयानम् [न० त०] 1 न जाना न हिलना-डुलना, ठहरना, टिकना 2 स्वभाव।

अयि (अव्य०) [इ + इनि] 1 मित्रादिकों के प्रति यह संबोधन, ओह, ए अरे आदि सामान्य संबोधन बोधक अव्यय, —अयि विवेकविश्रान्तमभिहितम् —मालवि० १, अयि भो महर्षिपुत्र —श० ७, अयि विद्युत्प्रमदानां त्वमपि च दुःखं न जानासि —मृच्छ० ५।३२,दे० मालवि० १।५, ११,४४। 2. प्रार्थना या अनुरोध बोधक अव्यय अयि संप्रति देहि दर्शनम्—कु० ४।२८, प्रोत्साहन तथा अनुनय के अर्थ में भी —अयि मन्दस्मितमधुरं वदनं तन्वंगि यदि मनाक्कुरुषे—भामि० २।१५०, 3. सामान्य सानुग्रह-पृच्छा बोधक अव्यय

—अयि जीवितनाथ जीवसि– कु० ४।३,—अयीदमेव परिहासः—५।६२ ।

अयुक्त (वि०) [न० त०] 1 जो जुता न हो, या जिस पर जीन न कसा गया हो, 2 जो मिला हुआ न हो, सबद्ध या संयुक्त न हो 3 जो भक्त या धार्मिक न हो, ध्यान रहित, उपेक्षाशील 4 अभ्यासमसापेक्ष, अनभ्यस्त, जो नियुक्त न हुआ हो, °बुद्धि, °चार 5 अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त अयुक्तोऽयं निर्बंधः– पा० ४।२। ९४, महा० 6. झूठ, गलत । सम०– **कृत्** अनुचित या गलत काम करने वाला,– **पदार्थः** शब्द का वह अर्थ जो दिया न गया हो, जैसे कि 'अपि' शब्द, **रूप** (वि०) असगत, अनुपयुक्त,—अयुक्तरूप किमत परं वद—कु० ५।५९ ।

अयुग–ग्म (वि०) [न० त०] 1 पृथक्, अकेला 2. ऊबड़-खाबड़, विषम । सम०—**अर्चिस्** (पु०) आग –**नेत्र** –**नयनः**,– **शरः** दे० अयुग्म के अन्तर्गत.—**सप्ति**. सात घोड़ो वाला, सूर्य ।

अयुगपद् (अव्य०) [न० त०] 1 सब एक साथ नहीं, क्रमशः, यथाक्रम, । सम०—**ग्रहणम्** –क्रमपूर्वक समझना,—**भावः** अनुक्रम, आनुक्रमिकतः ।

अयुग्म (वि०) [न० त०] 1 अकेला, न्यारा 2 निराला, विषम, (संख्या), । सम० – **छदः**,—**पत्र**. सप्तपर्ण नामक पौधा, —**नयनः**,—**नेत्रः**, —**लोचन**. विषम (३) आँखों वाला, शिव—कु० ३।५१।६९,– **बाणः**, – **शरः** विषम (५) बाणों वाला, कामदेव, – **वाहः**,—**सप्तिः** सात घोड़ो वाला सूर्य ।

अयुज् (वि०) [न० त०] निराला, विषम (विप० युज् =सम) । सम०—**इषु**, –**बाणः**,– **शरः** पाच बाणों वाला, कामदेव, **छदः**= सप्तपर्ण वधूरयुक्छद-गुच्छसुगन्धय —शि० ६।५०, **पलाश** = सप्तपलाश, –**पाद**, यमकम् पहले और तीसरे पाद में भिन्न अर्थों वाले एक से अक्षर रखने वाला अनुप्रास का एक भेद, –**नेत्र**, –**लोचन**, **अक्ष**, **शक्ति** शिव ।

अयुत (वि०) [न० त०] न मिला हुआ, पृथक्कृत, असबद्ध,—**तम्** दस हजार, दस सहस्र की संख्या । सम०—**अध्यापक** अच्छा अध्यापक, – **सिद्ध** (वि०) (वैशे० में) अपृथक्करणीय, अन्तर्निहित, – **सिद्धिः** (स्त्री०) ऐसा प्रमाण जिससे निश्चय हो कि कुछ वस्तुएं तथा मान्यताएं अपृथक्करणीय, तथा अन्तर्हित हैं ।

अये (अव्यय) [इ+एच्] 1 संबोधनात्मक अव्यय या संबोधन का भद्र प्रकार (=अयि)—अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शंभो त्रिनयन– भर्तृ० ३।१२३ 2 विस्मयादि बोधक अव्यय—(क) ओह, अये आदि शब्दों में सूचित आश्चर्य तथा विस्मय की भावना,—अये मालति –मा० ९ (ख) उदासी, खिन्नता– –अये देव-पादपद्मोपजीविनोऽवस्थेयम् मुद्रा० २, शोक (ग) क्रोध (घ) सलवर्ली, श्रम (ङ) प्रत्यास्मरण (च) भय (छ) थकावट ।

अयोगः [न० त०] 1 अलगाव, वियोग, अन्तराल 2 असंगतता, अनौचित्य, असगति 3 अनुचित संबंध 4 विधुर, अनुपस्थित प्रेमी या पति 5 हथौड़ा (अयोघ तथा अयोघन) 6 अरुचि ।

अयोगवः (स्त्री० वा, वी) [अय इव कठिना गौर्वाणी यस्य ब० स० मि० अच्] शूद्र पिता और वैश्य माता की सन्तान दे० आयोगव ।

अयोग्य (वि०) [न० त०] जो योग्य न हो, अनुपयुक्त निरर्थक ।

अयोध्य (वि०) [न० त०] जिस पर आक्रमण न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके, अद्यायोध्या महाबाहो अयोध्या प्रतिभाति न रामा०, –ध्या सरयू नदी के तट पर स्थित वर्तमान अयोध्या नगरी रघुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी ।

अयोनि (वि०) [न०ब०] 1 अजन्मा नित्य, –अयोनिरयोनिस्त्वम् कु० २।९ 2 जो जन्म से उत्पन्न न हो, अधर्म अथवा अवैध रूप से उत्पन्न –**नि** (स्त्री०) [न० त०] जो योनि न हो –**नि** ब्रह्मा, शिव, सम०, **ज**, **जन्मन्** (वि०) जो गर्भाशय से न जन्मा हो, सामान्य जन्मपद्धति के अनुसार जिसने जन्म न लिया हो तनयाम् अयोनिजाम् रघु० ४८, कन्या रत्नमयोनिजन्म भवनामास्ते –महावी० १।३०, '**ईश**' ईश्वर. शिव, (–**जा**) –**अयोजा** जनक की पुत्री सीता जो कि खेत के खूड से उत्पन्न हुई थी ।

अयौगपद्यम् [न० त०] समकालीनता का अभाव ।

अयौगिक (वि०) [स्त्री० –की] [न० त०] व्याकरण के नियमानुसार जो शब्द व्युत्पन्न न हो ।

अरः [ऋ+अच्] पहिये के अरे या पहिये का अर्धव्यास (°र भी) – अरै समार्पिते नाभि साभौ धारा प्रतिष्ठिता –पच० १।८१, । सम० **अंतर** (ब० ब०) अरों का अन्तराल—विक्रम० १।४, –**घट्ट**, – **घट्टक** 1 रहट जिसके द्वारा कुएं से पानी निकाला जाता है °घटी रहट में प्रयुक्त किया जाने वाला डोल,– कूप-मासाद्य °टोयार्मेण सर्वस्नेनाहीत —पच० ४, 2 गहरा कुआं ।

अरजस्, **अरज**, **अरजस्क** (वि०) [न० ब०] 1 धूल या गर्द से रहित, साफ स्वच्छ (आल० भी) 2, रज या वासना से मुक्त 3 जिसे मासिक धर्म न होता हो, (स्त्री०—**सा**:) वह कन्या जिसे अभी रजोधर्म आरंभ नहीं हुआ ।

अरज्जु (वि०) [न० ब०] जिसमें रस्सियां न लगी हों, रस्सियों से विरहित, (नपुं०) कारागार।

अरणिः (पुं०,स्त्री०) [स्त्री० णी] शमी की लकड़ी का टुकड़ा, जिसके घर्षण से यज्ञ के अवसर पर अग्नि जलाई जाती है, आग उत्पन्न करने वाली लकड़ी पु०, पंच० १।२१६, णी (द्वि० व०) यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने के लिए लकड़ी की दो समिधाएँ, णिः 1 सूर्य, 2 आग 3 चकमक पत्थर।

अरण्यम् (कई बार पुं० भी) [अर्यते गम्यते शेष वयसि ऋ+अन्य] जंगल, वन उजाड़ ...किल अगदरण्य हि सर्वाणि उत्तर० ६।३० माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम् चाण० ४४ जंगली, जंगल में उत्पन्न (यदि समस्त पद का प्रथम खण्ड हो)। °**बीजम्** जंगली बीज, इसी प्रकार °**मार्जार**, °**मूषक**। सम० °**अध्यक्षः** वन की देख रेख करने वाला राजिक °**अयनम्**, °**यानम्** जंगल में चले जाना वानप्रस्थ होना —**ओकस्**, °**सद्** (वि०) 1 अरण्यवासी जंगल में रहने वाला वैकल्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः—श० ४।५, 2 विशेषतः वह जिसने अपना परिवार छोड़ दिया हो और वानप्रस्थी हो गया हो, जंगल में रहने वाला,—**कदली** जंगली केला, °**गजः** जंगली हाथी (जो पालतू न हो) —**चटकः** जंगली चिड़िया —**चन्द्रिका** (शा०) जंगल में चन्द्रमा का प्रकाश (आल०) निरर्थक शृंगार या आभूषण ऐसा बनाव-सिंगार जिसे कोई देखने सराहने वाला न हो इसी लिए मल्लिनाथ स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः कु० ७।२२, पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं अन्यथा ऽरण्यचन्द्रिकास्यादिति भाव, °**चर** / °**जंचर** भा०, °**जीव** (वि०) जंगली °**ज** (वि०) वन्य, °**धर्मः** जंगली अवस्था या प्रथा जंगली स्वभाव नवारण्य धर्माद्वियोज्य ग्राम्यधर्मे नियोजित पंच० १ °**नृपतिः** °**राज्** (ट्) °**राजः** जंगल का स्वामी सिंह या व्याघ्र का विशेषण इसी प्रकार अरण्यानां पतिः,— °**पण्डित** 'वन में विद्वान्' (आल०) मूर्ख पुरुष जो वन में ही (जहाँ कोई सुनने-टोकने वाला नहीं होता) अपना पाण्डित्य प्रकट कर सके, °**भव** (वि०) जंगल में उत्पन्न जंगली °**मक्षिका** डांस °**यानम्** जंगल में चले जाना °**रक्षक** अरण्यपाल °**रुदितम्** (°**दनं**) जंगल में रोना अरण्यरोदन (आल०) ऐसा रोना जिसे कोई सुनने वाला न हो निष्फल क्रन्दन अरण्ये मया रुदितम् श० २, पोवन भ्रष्टानि हीनस्य अरण्यरुदितोपमम् पंच० १।३९३ नदलमधु नारण्यरुदितैः अमरु० ७६, °**वायसः** जंगली कौवा पहाड़ी कौवा, —**वासः**,—**समाश्रयः** जंगल में चले जाना, जंगल में आवास,—**वासिन्** (वि०) जंगल में रहने वाला (पुं०) अरण्यवासी, वानप्रस्थी,—**विलपितम्**, विलाप. (र्यं) = °रुदितम् —**श्वन**(पुं०) जंगली कुत्ता भेड़िया, °**सभा** जंगल की कचहरी।

अरण्यकम् [अरण्य + कन्] जंगल, वन।

अरण्यानि-**नी**(स्त्री०) [अरण्य+आनुक् ङीप् च] एक बड़ा जंगल या बीहड़ मरुभूमि, विस्तृत उजाड़।

अरत (वि०) [न० त०] 1 मन्द, विरक्त, अनासक्त 2 असंतुष्ट तृप्तिरहित पराङ्मुख,—**तम्** अमैथुन। सम० °**त्रप** (वि०) मैथुन करने में न लजाने वाला (व., कुत्ता (गलियों में बिना किसी प्रकार की लज्जा के मैथुन करने वाला)।

अरति (वि०) [न० ब०] 1 असन्तुष्ट 2 सुस्त, निढाल, **तिः** (स्त्री०) [न० त०] 1 आमोद-प्रमोद का अभाव (प्रेम की प्रबल उत्कण्ठा से पैदा होने वाला), स्वाभीष्टवस्त्वलाभेन चेतसो या त्ववस्थितिः अरतिः सा सा० द० 2 पीड़ा कष्ट 3. चिन्ता, खेद, बेचैनी, क्षोभ ... भृशमरतिं हि मद्वियोग – कि० ५।५१, 4 असन्तोष सन्तोषाभाव, 5 निढालपना, सुस्ती 6. पत्त दैहिक रोग।

अरत्निः (पुं० स्त्री०) [ऋ+कत्नि=रत्निः, न नास्ति यत्र] 1 कुहनी कई बार मुक्का, 2 एक हाथ की माप, कुहनी से कानी उंगली के छोर तक की माप, लंबाई मापने का पैमाना अरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना—अमर°, मध्यांगुलिकूर्परयोर्मध्ये प्रामाणिक कर, बद्धमुष्टिकरो रत्निररत्निः सकनिष्ठिकः। हला०, कि० १८।६,।

अरत्निकः [अरत्नि + कन्] कुहनी।

अरम् (अव्य०) [ऋ + अम्] 1 तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित 2 तत्परता के साथ।

अरमण, **अरममाण** (वि०) [न० त०] 1 जो सुखकर न हो असन्तोषजनक अरुचिकर 2 अविराम अनवरत।

अररम् [ऋ + अरन्] किवाड़ का दिला—सरभसमररानि द्वारपाट्टत महावी० ६।२७ (—र —री, री)—कल्व-कोटिविपाटिताररपुटा यास्याम्यहं पञ्जरात् भामि० १।५८ 2 ढक्कन म्यान, र आरी।

अररे (अव्य० [अर + रा + के] (द) बड़े उतावलेपन (क्ष) तथा घृणा और अवज्ञा को प्रकट करने वाला संबोधन वाचक अव्यय अररे महाराज प्रति कुत क्षत्रिया मन०।

अरविन्दम् [अरान् चक्राङ्गानीव पत्राणि विन्दते —अर+विन्द् + श] 1 कमल (कामदेव के पाँच बाणों में से एक —दे० पंचबाण के नीचे)—अभ्यधररविन्दसुरभि — श० ३।६ यह सूर्य-कमल है —सु०सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवार-विन्दम् कु० १।३२, स्थल°, चरण°, मुख° आदि 2. लाल या नील कमल, —**दः** 1 सारस पक्षी, 2.

तोया। सम० —अक्ष (वि०) कमल जैसी आखों वाला, विष्णु की उपाधि, - बन्धुः सूर्य, -सम्भवः ब्रह्मा। -नाभः, —भः विष्णु,—हृदयो मदीये देवश्चकास्तु भगवानरविन्दनाभ - भामि० ४।८,—सद् (पु०) ब्रह्मा।

अरविन्दिनी [अरविन्द + इनि + ङीप्] 1 कमल का पौधा —प्रपीतमधुका भृङ्गा मुदितेवारविन्दिनी भट्टि० ५।७०, 2 कमल फूलों का समूह 3 वह स्थान जहाँ कमल बहुतायत से होते हों।

अरस (वि०) [न० ब०] 1 रसहीन, नीरस, फीका 2 मंद, बुद्धिहीन 3 निर्बल, बलहीन अप्रभाव।

अरसिक (वि०) [न० त०] 1 रूखा, रसहीन, फीका बिना स्वाद का, 2 भावना या स्वाद से विरहित मन्द काव्यादि का रस लेने में असमर्थ कविता के मर्म को न जानने वाला — अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख, मा लिख, मा लिख-उद्भट०।

अराग, अरागिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] शान्त वासना रहित,-- समहमरागमकृष्ण कृष्णद्वैपायनं वन्दे- वेणी० १।४।

अराजक (वि०) [न० ब०] बिना राजा का, जहाँ राजा न हो - नाराजके जनपदे रामा० मनु० ७।३ अराजके जीवलोके दुर्बला बलवत्तरैः, पीड्यन्ते न हि वित्तेषु प्रभुत्वं कस्यचित्तदा। महा०, वोढव्य राज्यमराजकम्—बाण० ५७।

अराजन् (पु०) [न० त०] जो राजा न हो। सम० —भोगीन (वि०) राजा के काम के अनुपयुक्त, - स्थापित (वि०) जो किसी राजा द्वारा प्रतिष्ठित न किया गया हो, अवैध, गैरकानूनी।

अरातिः [न० त०] 1 शत्रु, दुश्मन, - देश सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन् ह्रदाः पूरिताः वेणी० ३।३१ 2. छः की संख्या। सम० -भंग. शत्रुओं का नाश।

अराल (वि०) [ऋ-णिच् अरम् आलाति, ला + क] मुड़ा हुआ, टेढ़ा,—पादावरालाङ्गुली मालवि० २।३, -लः 1. वक्र भुजा 2. मतवाला हाथी,—ला पुंश्चली वेश्या, वारांगना। सम० —केशी घुंघराले बालों वाली स्त्री —मिव्या निरालकामदरालकेश्या -रघु० ६।८१, -पक्ष्मन् (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला—कु० ५।४९।

अरिः [ऋ + इन्] 1 शत्रु, दुश्मन, विजिताग्निपुर मर रघु० १।५९, ६१, ४।८ 2 मनुष्य जाति का शत्रु (मनुष्य के मन को व्याकुल करने वाले ६ शत्रु बताये गये हैं—काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः, —कृतारिषड्वर्गजयेन - कि० १।९ 3 छः की संख्या 4. गाड़ी का भाग 5. पहिया। सम० —कर्षण (वि०) शत्रुओं को पीड़ित या पराभूत करने वाला,—कुलम् 1 शत्रुओं का समूह, 2 शत्रु,- -घ्नः शत्रुओं का नाश करने वाला,— चिंतनम्,—चिंता शत्रुओं के नाश के लिए बनाई हुई योजनाएँ, विदेश विभाग का प्रशासन, -नन्दन (वि०) शत्रु को प्रसन्न करने वाला, शत्रु को विजय दिलाने वाला, -भद्रः बड़ा शक्तिशाली शत्रु—रघु० १४।३१,—सूदन, हन्,- हिंसक. शत्रुओं का नाश करने वाला रघु० ९।१८।

अरिक्थभाज्, अरिक्थीय (वि०) [न० त०] जो पैतृक संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी न हो (जैसे कि कोई नपुंसकता आदि अवगुणों के कारण अनधिकृत कर दिया गया हो)।

अरित्रम् [ऋ + इत्र] 1 डाँड —लोलैररित्रैश्चरणैरिवाभितः शि० १२।७१ 2 पतवार लंगर।

अरिन्दम (वि०) [अरि + दम् + खच्, मुमागम] शत्रुओं का दमन करने वाला शत्रु विजयी शत्रु का जीतने वाला।

अरिप्रम् [न० त०] लगातार वर्षा होना, व एक प्रकार का गुदारोग।

अरिष्ट (वि०) [न० त०] अक्षत पूर्ण, अविनाशी निरापद —ष्टः 1 बगला, 2 जंगली कौवा 3 शत्रु 4 नाना प्रकार के पौधों के नाम (क) रीठे का वृक्ष (ख) नीम का वृक्ष 5 लहसुन, —ष्टम् 1 दुर्भाग्य अभाग्य, बदकिस्मती 2 दुर्भाग्यसूचित अनिष्टसूचक घटना अपशकुन 3 प्रतिकूल लक्षण-विशेषतः मृत्युसूचक —रोगिणो मरणं यस्मादवश्यं भावि लक्ष्यते, तल्लक्षणमरिष्टं स्याद्रिष्टमप्यभिधीयते 4 सौभाग्य, अच्छी किस्मत सुख 5 सौरी 6. छाछ 7 मादक शराब— शि० १८।७७। सम० —गृहम् सूतिकागृह, —ताति (वि०) सौभाग्यशाली या सुखी बनाने वाला, शुभ, —ति. (स्त्री०) सुरक्षा, सौभाग्य का उपार्जन, अनवरत सुख, मदत्रभवता निष्पन्नाशिषां काममरिष्टतातिमाशास्महे महावी० १ —नेमिः शिव विष्णु, —शय्या प्रसूता का पलंग अरिष्टशय्यां परितो विसारिणा - रघु० ३।१५, —सूदनः, -हन् (पु०) अरिष्टनाशक, विष्णु की उपाधि।

अरुचिः (स्त्री०) [न० त०] 1 अनिच्छा, किसी वस्तु का अच्छा न लगना,—क्व सा भोगानामुपर्यरुचिः —का० १४६ 2 भूख न लगना स्वाद न लगना, उकता जाना सन्निपातक्षयश्वासकासहिक्कारुचिप्रणुत्—सुश्रु० 3 संतोषजनक व्याख्या का अभाव।

अरुचिर, अरुच्य (वि०) [न० त०] भला न लगने वाला अरुचिकर उकताहट पैदा करने वाला।

अरुज् (वि०) [न० त०] रोगमुक्त स्वस्थ, नीरोग।

अरुज (वि०) [न० त०] स्वस्थ, नीरोग।

अरुण (वि०) (स्त्री—णा,—णी) [ऋ + उनन्] 1 अर्धरक्त या कुछ २ लाल, भूरा, पिंगल, लाल, गुलाबी (सांध्य लालिमा के विपरीत प्रभातकालीन सूर्य का रंग) —भवनान्यरुणानि कुर्वन्—कु० ४।१२, 2 विक्षिप्त,

अरुण [illegible] 3 मूक—णः 1 लाल रंग, उषा का रंग या प्रातःकालीन संध्यालोक, 2 सूर्य का सारथि [illegible] —आविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः —श० ४।१ [illegible] विभावरी यदरुणाय कल्पते —कु० ५।४४, रघु० ५।७१, 3 सूर्य—रागेण बालारुणकोमलेन कु० ३।३० [illegible] सरसिजैररुणांशुभिन्नैः रघु० ५।६९ —णम् 1 लाल रंग, 2 सोना 3 केसर। सम० —**अग्रज** गरुड़, —**अनुज**, —**अवरज** अरुण का छोटा भाई गरुड़ —**अर्चिस्** (पुं०) सूर्य —**आत्मज** 1 अरुण का पुत्र जटायु, 2 शनि सावर्णि मनु, कर्ण सुग्रीव, यम और अश्विनीकुमार (जा) यमुना नदी —**ईक्षण** (वि०) लाल आँखों वाला [illegible] दिन निकलने [illegible] [illegible] प्रातररुणोदय [illegible] —**कमल** लाल कमल —**ज्योतिस्** (पुं०) शिव —**प्रिय** लाल फूल या कमलों का प्यारा सूर्य —या [illegible] पत्नी 2 छाया —**लोचन** (वि०) लाल आँख वाला, —**सारथि** सारथि जिसका सारथि अरुण है सूर्य।

अरुणित, अरुणीकृत (वि०) [अरुण + णिच् [illegible] अरुण + च्वि + कृ + क्त इत्वम्] लाल किया हुआ [illegible] में रंगा हुआ [illegible] [illegible] [illegible] —कु० [illegible]

अरुन्तुद (वि०) [अरूंषि मर्माणि तुदति इति अरुस् + तुद् + खश् मुम् च] मर्मस्थानों को छेदने वाला [illegible] वाला, पीड़ाजनक तीक्ष्ण, [illegible] [illegible] [illegible] —रघु० १।७१ [illegible] 2 तीक्ष्ण, उग्र कटुस्वभाव।

अरुन्धती [न रुन्धती प्रतिरोधकारिणी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रघु० १।५६ 2 प्रभात [illegible] [illegible] पत्नी [illegible] [illegible] सप्तर्षियों में एक है [illegible] [illegible] पत्नी। अरुन्धती कर्दम प्रजापति की [illegible] उत्पन्न) [illegible] पुत्रियों में से एक थी [illegible] का सर्वश्रेष्ठ नमूना है [illegible] के कारण विवाह संस्कारों में वर [illegible] द्वारा उसका आवाहन किया जाता है। स्त्री होते हुए भी उसको वही सम्मान दिया गया है जो सप्तर्षियों को [illegible] अपने पति की भाँति वह भी रघुवंश के [illegible] [illegible] की निर्देशिका और नियंत्रिका रही [illegible] [illegible] का निवारण [illegible] के [illegible] किया। कहते हैं कि जिनका मरण [illegible] निकट हो उन्हें अरुन्धती तारा दिखलाई नहीं देता [illegible] १।७६)। सम० —**जानि**, —**नाथ** —पति वशिष्ठ [illegible] [illegible] का एक तारा —**दर्शनन्याय** दे० न्याय के नीचे।

अरुष्-ष (वि०) [न० त०] अक्रुद्ध, शान्त।

अरुष (वि०) [न० त०] 1 अक्रुद्ध 2. चमकीला, उज्ज्वल।

अरुस् (वि०) [ऋ + उसि] घायल, चोट खाया हुआ (पुं—स) 1 आक का पौधा मदार 2 लाल खदिर [illegible] नपुं०) 1 मर्मस्थल पर घाव व्रण (पुं० भी)। सम० —**कर** (वि०) क्षतविक्षत करने वाला, घायल करने वाला।

अरूप (वि०) [न० ब०] 1 रूप रहित, आकार शून्य 2 कुरूप विरूप [illegible] विषम असम —पम् 1 एक बुरी या भद्दी आकृति [illegible] सांख्य का प्रधान तथा वेदान्तियों का ब्रह्म। सम० —**हार्य** (वि०), जो सौन्दर्य से आकृष्ट या वशीभूत न किया जा सके अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात् कु० [illegible]।

अरूपक (वि० [illegible] न० ब० [illegible] बिना किसी आकृति या रूपक के जो आलंकारिक न हो शाब्दिक।

अरे (अव्य० [illegible]) एक संबोधन [illegible] अव्यय— [illegible] [illegible] अरे [illegible] [illegible] [illegible] प्रिया [illegible] [illegible] [illegible] अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा। (ख) क्रोधावस्था में [illegible] महाराज प्रति कुत [illegible] [illegible] उत्तर० [illegible] [illegible] प्रकट करने के लिए।

अरेपस (वि० [न० ब०]) 1 [illegible] निष्कलंक 2 निर्मल पवित्र

अरेरे (अव्य०) [अरे अरे इति [illegible] [illegible]] विस्मय [illegible] [illegible] [illegible] (क) क्रोध पूर्वक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —वेणी० [illegible] [illegible] —मा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अरोक (वि०) [illegible] [illegible] मलिन धुंधला

अरोग (वि०) [न० ब०] [illegible] नीरोग स्वस्थ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अरोगिन्, अरोग्य (वि०) [न० ब०] नीरोग स्वस्थ।

अरोचक (वि०) [illegible] [न० त०] 1 जो चमकता न हो [illegible] भूख बन्द करने वाला —कः भूख का बन्द [illegible] अरुचिकर [illegible]।

[illegible] (स्वा० प०) 1 गढ़ करना 2 स्तुति करना।

अर्क [अर्च् + घञ् कुत्वम्] 1 प्रकाश किरण बिजली की [illegible] 2 सूर्य, आविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः — [illegible] [illegible] 3 अग्नि 4 स्फटिक 5 तांबा 6 रविवार [illegible] आक का पौधा मदार अर्कस्योपरि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सदापुष्पफलोऽपि सन् – पंच० १।५१. 8. इन्द्र, 9. आहार 10 बारह की संख्या। सम० – अश्मन् (पुं०) –उपल: सूर्यकान्तमणि,– आह्वः मदार, आक,–इन्दुसंगमः सूर्य और चन्द्रमा का संयोग,(दर्श, या अमावस्या), –कान्ता सूर्यपत्नी,–चन्दनः एक प्रकार का रक्तचन्दन,– जः कर्ण की उपाधि, यम, सुग्रीव (–जौ) स्वर्ग के वैद्य अश्विनीकुमार, तनयः 'सूर्य पुत्र' कर्ण का विशेषण, यम और शनि दे० 'अरुणात्मज' (–जा) यमुना और ताप्ती नदियाँ, –त्विष् (स्त्री०) सूर्य की ज्योति, –दिनम्, –वासरः रविवार, –नन्दनः, –पुत्रः,–सुतः, –सूनुः शनि, कर्ण और यम के नाम, –बन्धुः,–बान्धवः कमल (सूर्य-कमल) –मण्डलम् सूर्यमंडल,–विवाहः मदार से विवाह (तीसरा विवाह करने वाले पुरुष के लिए पहले मदार से विवाह करने का विधान किया गया है, ताकि तीसरी पत्नी चौथी हो जाय); – चतुर्थादिविवाहार्थं तृतीयेऽर्क समुद्वहेत् काश्यप०।

अर्गल:–लम्, अर्गला–ला [अर्ज्+कलच् न्यङ्क्वादि० कुत्व – तारा०] अगरी, किल्ली या मूसल (यह दरवाजे को बन्द करके रोकने के लिए लकड़ी के बने यन्त्र हैं) ब्योड़ा सिटकिनी, आगल, –पुरार्गलादीर्घभुजो बुभोज – रघु० १८।४, १६।६ अनाप्तसार्गलम् –मृच्छ० ५, मनःप्रणेन्द्र दुरपानितार्गला निमीलितालीव भियाऽमरावती –शि० १, आल० के यह शब्द बाधा, रोक या अवरोध के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होता है –ईप्सित तदवज्ञानाद्विद्धि सार्गलमात्मनः –रघु० १।७९, आधित – वार्यर्गलाभङ्ग इव प्रवृत्त –५।४५, कंठ केवलमर्गलेव निहिता जीवस्य निर्गच्छत –काव्य० ८, २० 'अर्गल' भी, 2 तरंग या लहर।

अर्गलिका [अर्गला+कन्+टाप् इत्वम्] छोटी आगल, छोटी चटखनी।

अर्घ् (भ्वा० पर०) [अर्घति, अर्घित] मूल्यवान् होना, मूल्य रखना, मूल्य जमना, –परीक्षका यत्र न सन्ति देशे नार्घन्ति रत्नानि समुद्रजानि –सुभाषि०।

अर्घः [अर्घ्+घञ्] 1. मूल्य, कीमत –कुर्युरर्घं यथापण्यं –मनु० ८।३९८ याज्ञ० २।२५१, कुरस्या स्यु कुपरीक्षका हि मणयो यैरर्घतः पातिता –काव्य० २।२५, वास्तविक मूल्य से घटी हुई, अवमूल्यित, इसी प्रकार अनर्घ अमूल्य, महार्घ मूल्यवान् 2. पूजा की सामग्री, देवताओं या सम्मान्य व्यक्तियों को सादर आहुति या उपहार, –कुसुमाञ्जलि: कल्पितार्घ इव लक्ष्मी –मेघ० ४ (इस आहुति की सामान निम्नांकित है, –आप: क्षीरं कुशाग्रं च दधि सर्पि: सतण्डुलम्। यव: सिद्धार्थकश्चैव अष्टाङ्गोऽर्घ: प्रकीर्तित:। दे० 'अर्घ्य' नीचे। सम० –अर्ह (वि०) सामान्य उपहार के योग्य,–बलाबलम् मूल्य की दर, उचित मूल्य, मूल्यों में घटत बढ़त, –संस्थापनम्,–संस्थापनम् मूल्यांकन, वस्तुओं का मूल्यनिर्धारण करना, कुर्वीत चैषां (वणिजाम्) प्रत्यक्षं धर्मसंस्थापनं नृप –मनु० ८।४०२।

अर्घीशः (पुं०) शिव।

अर्घ्य (वि०) [अर्घ+यत् अर्घमर्हति] 1. मूल्यवान्, अनर्घ्य– अनमोल दे० श० के नी० 2 सम्माननीय –तानर्घ्यानर्घ्यमादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरि: – कु० ६।५०, शि० १।१४ –र्घ्यम् किसी देवता या सम्मान्य व्यक्ति को सादर आहुति या उपहार, अर्घ्यमस्मै –विक्रम० ५, ददतु तरव पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युत: –११।० ३।२४, अपर्यपर्घ्यमिति वादिन नृपम् – रघु० ११।६९ कु० १।५८ ६।५०।

अर्च् (भ्वा० उभ०) [अर्चति–ते, अर्चित] 1 (क) पूजा करना, अभिवादन करना, सत्कार करना – रघु० १२।८९, २।२१ ४।८४, १२।८९ मनु० ३।९३ भार्यैर्द्विजातीन् रामार्थमर्चितान् – भट्टि० १।१५, १४।९३, १७।५ (ख) सम्मान करना अर्थात् अलंकृत करना, सजाना –कुमार० ७।१, 2 स्तुति करना, (वेद०), (चु० पर० या पर०) सम्मान करना, अलंकृत करना, पूजा करना स्मर्यां कथमार्चितमर्चयिता –कु० १।५९, अभि –अर्चयति – पूजा करना, अलंकृत करना, सम्मान करना, –आशीभिरभ्यर्च्य नराः निनीतं – भट्टि० १।२४, भग० १८।४६ प्र– 1. स्तुति करना, स्तुतिगान करना 2 सम्मान करना पूजा करना, प्रानर्चुरर्च्यां जगदर्चनीयम् –भट्टि० ३।२८।

अर्चक (वि०) [अर्च्+ण्वुल्] पूजा करने वाला, आराधना करने वाला – कः पूजक – गुरुदेवद्विजार्चक – मनु० ११।२२५।

अर्चन (वि०) [अर्च्+ल्युट्] पूजा करने वाला, स्तुति करने वाला –नम्, –ना पूजा, अपने से बड़ों का और देवों का आदर व सम्मान।

अर्चनीय, अर्च्य (सं० कृ०) [अर्च्+अनीय, ण्यत् वा] पूजा या आराधना करने के योग्य, सम्माननीय, आदरणीय –रघु० ३।१०, भट्टि० ६।७०।

अर्चा [अर्च्+अङ्+टाप्] 1 पूजा, आराधना 2. वह प्रतिमा या मूर्ति जिसकी पूजा की जाय –मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चा: प्रकल्पिता –महा०।

अर्चिः (स्त्री०) [अर्च्+इन्] किरण, (आग की) ज्वाला या (प्रातःकालीन या सांध्य) ज्योति,–आसीदासन्ननिर्वाणप्रदीपार्चिरिवोषसि –रघु० १२।१, नैशस्यार्चिर्हुतभुज इव छिन्नभूयिष्ठधूमा –विक्रम०।

अर्चिष्मत् (वि०) [अर्चिस्+मतुप्] लपटवाला, उज्ज्वल, चमकदार-विक्रम० ३।२, (पुं०) 1. अग्नि, 2. सूर्य।

अर्चिस् (नपुं०) (–**चिः**) [अर्च्+इसि] 1. प्रकाशकिरण, लौ,—प्रदक्षिणार्चिर्हविरादधे—रघु० ३।१४, 2 प्रकाश, चमक,—प्रशमादर्चिषाम्—कु० २।२०, रत्न० ४।१६, (स्त्री० भी), (पुं०) 1 प्रकाशकिरण 2 अग्नि।

अर्ज् (भ्वा० पर०) [अर्जति, अर्जित] 1. उपार्जन करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, कमाना- प्राय. प्रेर०, इस अर्थ में—पितृद्रव्याविरोधेन यदन्यत्स्वयमर्जितम्—या० २।११८, 2. ग्रहण करना- आनर्जुर्नृपभोऽस्त्राणि भट्टि० १४।७४, (चुरा० पर०—या प्रेर०) उपार्जन करना, अधिकार में करना, प्राप्त करना —**स्वयमर्जित**, **स्वार्जित**, अपने आप कमाया हुआ। उप— प्राप्त करना या उपार्जन करना।

अर्जक (वि०) [स्त्री० –**र्जिका**] [अर्ज्+ण्वुल्] उपार्जन करने वाला, अधिकार में करने वाला, प्राप्त करने वाला।

अर्जनम् [अर्ज्+ल्युट्] प्राप्त करना, अधिग्रहण करना—अर्थानामर्जने दुःखम्—पंच० १।१६३, अर्जित-स्यागोऽर्जनम्- दाय०।

अर्जुन (वि०) [स्त्री० –ना, –नी] [अर्ज्+उनन्, णिलुक् च] 1 सफेद, चमकीला, उज्ज्वल, दिन जैसा रंगीन,—पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्—शि० १।६ 2 रुपहला,—नः 1 श्वेतरंग 2 मोर 3 गुणकारी छाल वाला अर्जुन नामक वृक्ष 4 इन्द्र द्वारा कुन्ती से उत्पन्न तृतीय पाण्डव (इसीलिए इसे 'ऐन्द्रि' भी कहते हैं) [अपने कार्यों में पवित्र और विशुद्ध होने के कारण—वह अर्जुन कहलाया। द्रोणाचार्य से उसने शस्त्रास्त्र की शिक्षा ली. अर्जुन द्रोण का प्रिय शिष्य था। अपने शस्त्र-कौशल के द्वारा ही उसने स्वयंवर में द्रौपदी को जीता। अनिच्छापूर्वक किसी नियम का उल्लंघन हो जाने के कारण उसने अल्पकालिक निर्वासन ग्रहण किया तथा इसी बीच परशुराम से शस्त्रविज्ञान का अध्ययन किया। उसने नागराजकुमारी उलूपी से विवाह किया—जिससे इरावन् नामक पुत्र पैदा हुआ। उसके पश्चात् उसने मणिपुर के महाराज की कन्या चित्रांगदा से विवाह किया—इससे बभ्रुवाहन का जन्म हुआ। इसी निर्वासन-काल में वह द्वारका गया और वहाँ कृष्ण के परामर्शानुसार सुभद्रा से विवाह करने में सफलता प्राप्त की। सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ। इसके पश्चात् उसने खाण्डव-वन को जलाने में अग्नि की सहायता की जिससे कि उसने 'गाण्डीव' धनुष प्राप्त किया। जब उसके ज्येष्ठ भ्राता धर्मराज ने द्यूत में राज्य को दिया और चारों भाई निर्वासित कर दिए गए तो वह देवताओं का अनुरंजन करने के लिए हिमालय पर्वत पर गया जिससे कि कौरवों के साथ होने वाले युद्ध में उपयोग करने के लिए उनसे दिव्य शस्त्रास्त्र प्राप्त कर सके। वहाँ उसने किरातवेषधारी शिव से युद्ध किया, परन्तु जब उसे अपने विपक्षी के वास्तविक चरित्र का ज्ञान हुआ तो उसने उनकी पूजा की, शिव ने भी प्रसन्न होकर अर्जुन को पाशुपतास्त्र दिये। इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर ने भी अपने-अपने अस्त्र उसे उपहारस्वरूप दिए। अपने निर्वासनकाल के तेरहवें वर्ष में पाण्डव राजा विराट् की नौकरी करने लगे—अर्जुन कंचुकी के रूप में नृत्यगान का शिक्षक बना। कौरवों के साथ महायुद्ध में अर्जुन ने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया। उसने कृष्ण की सहायता प्राप्त की, उसे अपना सारथि बनाया। जिस समय युद्ध के पहले ही दिन अर्जुन ने अपने बन्धु-बान्धवों के विरुद्ध शस्त्र उठाने में संकोच किया—उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'भगवद्-गीता' का उपदेश दिया। उस महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने कौरव सेना के जयद्रथ, भीष्म तथा कर्ण आदि अनेक दुर्दान्त योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। जिस समय युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर आसीन हुआ—तो उसने अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया—फलतः अर्जुन की संरक्षकता में एक घोड़ा छोड़ा गया। अर्जुन ने अनेक राजाओं से युद्ध किया तथा अनेक नगर और देशों में घोड़े का अनुसरण किया। मणिपुर पहुँचने पर उसे अपने ही पुत्र बभ्रुवाहन से युद्ध करना पड़ा। फलतः अर्जुन, जब इस प्रकार बभ्रुवाहन से लड़ता हुआ युद्ध में मारा गया तो अपनी पत्नी उलूपी द्वारा दिये गए जादू-रत्न से वह पुनर्जीवित किया गया। उसने इस प्रकार सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया। वह नाना प्रकार की भेंट, उपहार तथा अपहृत सम्पत्तियों के साथ वह हस्तिनापुर वापिस आया—तो उस समय अश्वमेध यज्ञ किया गया। इसके पश्चात् कृष्ण ने उसे द्वारका में बुलाया—और जब पारस्परिक गृह-युद्ध में यादवों का अंत हो गया तो अर्जुन ने वसुदेव और कृष्ण की अन्त्येष्टि-क्रिया की। इसके बाद शीघ्र ही पाण्डवों ने अभिमन्यु के एक मात्र पुत्र परीक्षित को हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बिठा दिया तथा स्वयं स्वर्ग की यात्रा को चल दिये। पाँचों पाण्डवों में अर्जुन सबसे अधिक पराक्रमी, उदार, धैर्यवान्, सुंदर और उच्च विचारों का मनुष्य था—अपने सब भाइयों में वही प्रमुख व्यक्ति था] 5. **कार्तवीर्य**—जिसे परशुराम ने मौत के घाट उतारा था—दे० **कार्तवीर्य**, 6. अपनी माता का एक मात्र पुत्र, —**नी** 1. कुटनी, कुट्टनी 2. गाय 3. एक नदी जिसे 'करतोया' कहते हैं, —**नम्** घास। सम०—**उपमः** सागवान का वृक्ष, —**छवि** (वि०)

उज्ज्वल, उज्ज्वल रंग वाला, —ध्वज श्वेत-ध्वजा वाला, हनुमान् ।

अर्क [ऋ+क] 1. साम्वान का वृक्ष 2 (वर्णमाला का) एक अक्षर ।

अर्णवः [अर्णांसि सन्ति यस्मिन्—अर्णस् + व, सलोप] (वैकल्पिक) समुद्र, सागर (आल० भी) शोक° शोक का समुद्र, इसी प्रकार चिन्ता°, जन° जनसमुद्र, संसारार्णवलंघन—भर्तृ० ३।१० । सम०—अन्तः सागर की सीमा, —उद्भवः चन्द्रमा (—वा) लक्ष्मी, (—वम्) अमृत,—पोतः,—यानम् किश्ती या जहाज, - मन्दिरः 1. सागर वासी वरुण, जलों का स्वामी 2 विष्णु ।

अर्णस् (नपुं०) [ऋ+असुन् नुट् च] जल । सम० —द बादल,—भवः शंख ।

अर्णस्वत् (वि०) [अर्णस्+मतुप्] बहुत अधिक पानी रखने वाला, (पुं०) सागर ।

अर्तनम् [ऋत्+ल्युट्] निन्दा फटकार, अपशब्द या गाली ।

अर्तिः (स्त्री०) [अर्द्+क्तिन्] 1 पीड़ा, शोक, दुःख—शिरोऽर्तिः सिर-दर्द 2 धनुष का किनारा ।

अर्तिका [ऋत्=ण्वुल्] बड़ी बहन (नाट्य साहित्य में) ।

अर्थ् (चु० आ०) [अर्थयते, अर्थित] 1 प्रार्थना करना, याचना करना, गिड़गिड़ाना, मांगना, अनुरोध करना दीन भाव से मांगना (द्विकर्मक)—स्वामिसमर्थमर्थयसे दश० ७१, तमभिक्रम्य सर्वेऽत्र वयं चार्थामहे धनु—महा०, प्रकृत्यामर्थयाचक्रे योद्धुम् भट्टि० १४।९९, 2 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, चाहना, इच्छा करना अभि—मांगना, गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना —इम सारङ्ग प्रियाप्रवृत्तिनिमित्तमभ्यर्थये—विक्रम० ४ अवकाशं किलोदन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददौ रघु० ४।५८, अभिप्र —1. मांगना, प्रार्थना करना 2 चाहना प्र- 1 मांगना, प्रार्थना करना, याचना, प्रार्थना —येन भवन्तं प्रार्थयते-श० ७ 2 चाहना आवश्यकता होना, इच्छा करना, प्रबल अभिलाष रखना —अहो विघ्नवत्यः प्रार्थितार्थसिद्धय —श० ३, स्वर्गति प्रार्थयन्ते—मनु० ९।२०, भट्टि० ७।४८, रघु० ७।५० ९४, 3. ढूंढना, तलाश करना, खोज करना —प्रार्थयध्वं तथा सीताम्—भट्टि० ७।४८ 4 आक्रमण करना, टूट पड़ना—अथ अहमसौ क्षत्रप्रार्थीकेन यवनेन प्रार्थित —मालवि० ५, पूर्व०। लवण भूतो विमुक्त प्रार्थना-सिद्धि—रघु० १५।५, ९।५६, प्रति 1 (युद्ध के लिए) ललकारना, मुकाबला करना, शत्रुवत् व्यवहार करना—एते सीतादृह तस्थुरे प्रत्यर्थयन राघवम्—भट्टि० ६।२५, 2 किसी को शत्रु बनाना, सम् - 1. विचार करना, सोचना, ख्याल रखना, चिन्तन करना—समर्थये यत्प्रथमं प्रियां प्रति विक्रम० ४।३९, तथा न साधु समर्थितम्—विक्रम० २, अनुपयुक्त-मिवात्मानं समर्थये—श० ७, 2 समर्थन करना, सहायता करना प्रमाणद्वारा सिद्ध करना—उक्तमेवार्थमुदाहरणेन समर्थयति, समभि—,संप्र - याचना करना प्रार्थना करना आदि ।

अर्थः [ऋ+थन्] 1 आशय, प्रयोजन, लक्ष्य उद्देश्य अभिलाष, इच्छा - ज्ञातार्थो ज्ञातसंबन्धः श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते, सिद्ध परिपन्थी मुद्रा० १, समास के उत्तर पद के रूप में प्राय इसी अर्थ में प्रयुक्त होता तथा निम्नांकित अर्थों में अनूदित किया जाता है के लिए के निमित्त की खातिर के कारण के बदले में संज्ञाओं को विशेषित करने के लिए विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है सन्तानार्थाय विधये रघु० १।३४ या देवताग्निपितृक्रियार्थी (धेनुम्) २।१६ द्विजार्थो यवागू सिद्धा० यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र भग० ३।९ क्रिया विशेषण के रूप में भी यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है यथा अर्थम्, अर्थे या अर्थाय, किमर्थम् किस प्रयोजन के लिए, वस्तार लक्षणार्थम् [illegible] [illegible] साध्य कु० ५।१३ गमयत्यस्यार्थे च पथ १।४२० [illegible] भग० १।९ [illegible] [illegible] नल० १३।१९ [illegible] सार्थय — [illegible], 2 कारण प्रयोजन हेतु साधन अनुपस्थित मूर्ने क्रियार्थ रघु० ४।५० साधन या हेतु 3 अभिप्राय तात्पर्य सार्थकता आशय अर्थ तीन प्रकार का है वाच्य (अभिव्यक्त) लक्ष्य (संकेतित या गौण) और व्यंग्य (ध्वनित) [illegible] शब्दार्थों काव्य० १ अर्थो वाक्यस्य [illegible] [illegible] विधायतः मा० १० २, 4 वस्तु या विषय पदार्थ सारांश -अर्थो हि कन्या परकीय एव श० ४।२१ जो ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जाना जा सके ज्ञानेन्द्रिय की वस्तु इन्द्रिय -हि० १।१४६ कु० ७।७१ इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मन -कठ० (ज्ञानेन्द्रियों के विषय पांच हैं रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द) 5 (क) मामला आचार, काम, कार्य प्राक् प्रतिपन्नोऽयमर्थोऽङ्गराजाय -वेणी० ३, अर्थोऽयमर्थान्तरभाव्य एव कु० ३।१८ अर्थोऽर्थानुबन्धी दश० १७, सङ्गीतार्थ मेघ० ५६, गायन-व्यापार अर्थात् तानसेन गाना (गाना सीखना), सन्देशार्थाः—मेघ० ५, सदेश की बातें अर्थात् संदेश (ख) हित, इच्छा (स्वार्थपरायणतत्पर —मनु० ४।१९६, दुष्यन्तार्थमनायतनम् -रघु० १।१९, दुरापेऽर्थे १।७२ सर्वार्थचिन्तक -मनु० ७।१२१ आज्ञा-पिकाया न मे कश्चिदर्थ —मालवि० (ग) विषय सामग्री, विषय-सूची कुमारमुपनायामि करिष्यति—मुद्रा० (मैं आपको विषय-सामग्री से परिचित कराऊंगा),

तेन हि अस्य गृहीतार्था भवामि---विक्रम० २. (यदि ऐसी बात है तो मुझे इस विषय की जानकारी होनी चाहिए), 6. दौलत, धन, सम्पत्ति, रुपया---त्यागाय संभृतार्थानाम्---रघु० १।७, विगतार्था कष्टमवस्था---पंच० १।१६३, 7 धन या सांसारिक ऐश्वर्य का प्राप्त करना, जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक---अन्य तीन हैं---धर्म, काम और मोक्ष; अर्थ, काम और धर्म मिलकर प्रसिद्ध त्रिक बनता है, तु० कु० ५।३८,---अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिण---रघु० १।२५, 8. (क) उपयोग, हित, लाभ, भलाई,---तथा हि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणा---रघु० १।२९, यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके---भग० २।४६, दे० व्यर्थ और निरर्थक भी (ख) उपयोग, आवश्यकता, अकाल, प्रयोजन---करण० के साथ---कोऽर्थः पुत्रेण जातेन---पंच० १ (उस पुत्र के पैदा होने से क्या लाभ ?) काव्य तेनार्थ---दश० ५२ कोऽर्थस्तिरश्चां गुणैः---पंच० २।३३, कुछ व्यक्ति गुणों की क्या परवाह करते हैं ? भर्तृ० २।४८,---अन्यासामपि अर्था न स्यात्तेन---शि० २।६६ नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन---भग० ३।१८, 9 याचना, याचना, प्रार्थना, दावा, याचिका 10 कार्यवाही, अभियोग (विधि०) 11 वस्तुस्थिति, वास्तविकता, जैसा कि यथार्थ और अर्थतः में---तत्त्वविद 12. रीति, प्रकार, तरीका 13 रोक दूर रखना---मशकार्थो धूम, प्रतिषेध, उन्मूलन 14 विष्णु। सम०---अधिकार: रुपये-पैसे का कार्यभार, कोषाध्यक्ष का पद०, रे न नियोक्तव्यौ हि० २ अधिकारिन् (पु०) कोषाध्यक्ष,---अन्तरम् 1 अन्य अभिप्राय या भिन्न अर्थ 2 दूसरा कारण या प्रयोजन---अर्थान्तर-न्यासः---कु० ३।१८ 3 एक नई बात या परिस्थिति, नया मामला 4 विरोधी या विपरीत अर्थ, अर्थ में भेद,---न्यासः एक अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष या विशेष से सामान्य का समर्थन होता है यह एक प्रकार का विशेष से सामान्य अनुमान है अथवा इसके विपरीत उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात् सामान्यविशेषयोः। (१) हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम्। (२) गुणवद्वस्तुसंसर्गाद्याति नीचोऽपि गौरवम्, पुष्पमालानुषङ्गेण सूत्रं शिरसि धार्यते॥ कुवल०, तु० काव्य० १० और सा० द० ७०९,---अभिलाष (वि०) 1 धनवान्, दौलतमंद 2. सार्थक,---अर्थिन् (वि०) जो अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए या धन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है---अलंकारः साहित्यशास्त्र में वह अलंकार जो या तो अर्थ पर निर्भर हो, या जिसका निर्णय अर्थ से किया जाय, शब्द से नहीं (विप० शब्दालंकार),

---आगमः 1. धन की प्राप्ति, आय 2. किसी शब्द के अभिप्राय को बतलाना,---आपत्तिः (स्त्री०) 1 परिस्थितियों के आधार पर अनुमान लगाना, अनुमानित वस्तु, कल्पितार्थ, ज्ञान के पाँच साधनों में से एक अथवा (मीमांसकों के अनुसार) पाँच प्रमाणों में से एक, प्रतीयमान असंगति का समाधान करने के लिए यह एक प्रकार का अनुमान है, इसका प्रसिद्ध उदाहरण है---पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते, यहाँ देवदत्त के 'मोटेपन' और 'दिन में न खाने' की असंगति का समाधान 'वह रात्रि को अवश्य खाता होगा' अनुमान से किया जाता है, 2 एक अलंकार (कुछ साहित्यशास्त्रियों के अनुसार) जिसमें एक सबद्ध उक्ति से ऐसे अनुमान का सुझाव मिलता है जो प्रस्तुत विषय से कोई संबंध नहीं रखता---या इसके ठीक विपरीत है यह कैमुतिकन्याय या दण्डापूपन्याय से मिलता जुलता है, उदा०---हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिंकराः। अमरु० १००, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु---रघु० ८।४३---उत्पत्तिः (स्त्री०) धन प्राप्ति, इसी प्रकार 'उपार्जनम्,---उपक्षेपकः (नाटकों में) एक परिचयात्मक दृश्य---अर्थोपक्षेपका पंच---सा० द० ३०८,---उपमा जो उपमा अर्थ पर निर्भर रहे शब्द पर नहीं दे० 'उपमा' के नीचे---उष्मन् (पु०) धन की चमक या गर्मी---अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव---भर्तृ० २।४०---ओघः---राशिः कोष, धन का भंडार,---कर (स्त्री०---री)---कृत् (वि०) 1 धनी बनाने वाला 2 उपयोगी, लाभदायक,---काम (वि०) धन का इच्छुक, (---मौ---द्वि० व०) धन और चाह या सुख रघु० १।२५,---कृच्छ्रम् 1 कठिन बात 2. आर्थिक कठिनाई---न मुह्येदर्थकृच्छ्रेषु---नीति०---कृत्यम् किसी कार्य का सम्पन्न करना अभ्युपेतार्थकृत्याः---मेघ० ३८---गौरवम् अर्थ की गहराई---भारवेरर्थगौरवम्---उद्भट० कि० २।२७,---घ्न (वि०) (स्त्री०---घ्नी) अतिव्ययी, अपव्ययी फिजूलखर्च,---जात (वि०) अर्थ से परिपूर्ण (---तम्) 1 वस्तुओं का संग्रह 2 धन की बड़ी रकम, बड़ी सम्पत्ति,---तत्त्वम् 1 वास्तविक सचाई, यथार्थता, 2 किसी वस्तु की वास्तविक प्रकृति या कारण,---द (वि०) 1 धन देने वाला, 2. लाभदायक, उपयोगी, उदार,---दूषणम् 1 अतिव्यय अपव्यय 2. अन्यायपूर्वक किसी की सम्पत्ति ले लेना, या किसी का उचित पावना न देना,---दोषः (अर्थ की दृष्टि से) साहित्यिक त्रुटि या दोष, साहित्य-रचना के चार दोषों में से एक---दूसरे तीन हैं---पद दोष, पदांशदोष और वाक्य दोष, इनकी परिभाषाओं के लिए दे० काव्य० ७,---निबंधन (वि०)

धन के ऊपर आश्रित,—**निश्चयः** निर्धारण, निर्णय, —**पतिः** 1 'धन का स्वामी', राजा,—किंचिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे—रघु० १।५९, २।४६, ९।३, १८।१, पंच० १।७४, 2. कुबेर की उपाधि,—**पर**,—**लुब्ध** (वि०) 1 धन प्राप्त करने पर जुटा हुआ, लालची 2. कंजूस, —**प्रकृतिः** (स्त्री०) नाटक के महान् उद्देश्य का प्रमुख साधन या अवसर, (इन साधनों की संख्या पाँच है,—बीजं बिन्दुः पताका च प्रकरी कार्यमेव च, अर्थप्रकृतय पञ्च ज्ञात्वा योज्या यथाविधि—सा० द० ३१७), —**प्रयोगः** ब्याजखोरी, —**बंधः** शब्दों का यथाक्रम रचना, रचना, पाठ, श्लोक, चरण—श० ७।५ ललितार्थबंधम् विक्रम० २।१४,—**बुद्धि** (वि०) स्वार्थी,—**बोधः** वास्तविक आशय का संकेत,—**भेदः** अर्थों में भेद —अर्थभेदेन शब्दभेदः,—**भाजम्**,—**भा** सम्पत्ति, धन-दौलत, —**युक्त** (वि०) सार्थक,—**लाभः** धन की प्राप्ति,—**लोभ** लालच,—**वादः** 1. किसी उद्देश्य की घोषणा, 2 निश्चयात्मक घोषणा, घोषणाविषयक प्रकथन, व्याख्यापरक टिप्पणी, किसी आशय की उक्ति या कथन, वाक्य (इसमें उचित अनुष्ठान के करने से उत्पन्न फलों का वर्णन करते हुए किसी विधि की अनुशंसा की जाती है, साथ ही अपने पक्ष के समर्थन में ऐतिहासिक निदर्शन देकर यह बतलाया जाता है कि इसका उचित अनुष्ठान न करने से अनिष्ट फल मिलता है) 3 प्रशंसा, स्तुति;—अर्थवाद एष , दोष तु मे कश्चित्कथ्यताम्—उत्तर० १,—**विकल्पः** 1 सचाई से इधर-उधर होना, तथ्यों का तोड़-मरोड़ 2 अपलाप, °वैकल्पम् भी, —**वृद्धिः** (स्त्री०) धन-संचय, —**व्ययः** धन का खर्च करना, °**ज्ञ** (वि०) रुपये-पैसे की बातों का जानकार —**शास्त्रम्** 1 धन-विज्ञान (सार्वजनिक अर्थशास्त्र) २. राजनीति-विज्ञान, राजनीतिविषयक शास्त्र, राजनय —**द०** १२०, इह खलु अर्थशास्त्रकाराः त्रिविधां सिद्धिमुपवर्णयंति —मुद्रा० ३. °**व्यवहारिन्** राजनीतिज्ञ, 3. व्यावहारिक जीवन का शास्त्र,—**शौचम्** रुपये-पैसे के मामले में ईमानदारी या खरापन —सर्वेषां एव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्—मनु० ५।१०६ —**संचयः**, 1. धन का संचय 2. कोष, —**संबन्धः** वाक्य या शब्द से अर्थ का संबंध,—**सारः** बहुत धन —पंच० २।४२,—**सिद्धिः** (स्त्री०) अभीष्ट सिद्धि, सफलता ।

अर्थतः (अव्य०) [अर्थ+तसिल्] 1. अर्थ या किसी विशेष उद्देश्य का उल्लेख करते हुए,—यच्चार्थतो गौरवम्—मा० १।७, अर्थ की गहराई, 2. वस्तुतः, वास्तव में, सचमुच,—न नामतः केवलमर्थतोऽपि—शि० ३।५६, 3. धन के लिए, लाभ या प्राप्ति के लिए—ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४. 4. के कारण ।

अर्थना [अर्थ्+युच्+टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, नालिश, याचिका—नै० ५।११२ ।

अर्थवत् (वि०) [अर्थ+मतुप्] 1 धनवान् 2. सार्थक, अभिप्राय या अर्थ से परिपूर्ण,—अर्थवान् खलु मे राजशब्दः—श० ५, 3 अर्थ रखने वाला —अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५ 4. किसी प्रयोजन को सिद्ध करने वाला, सफल, उपयोगी ।

अर्थवत्ता [अर्थ+मतुप्+तल्+टाप्] धन-दौलत, सम्पत्ति ।

अर्थात् (अव्य०) ['अर्थ' का अपा० का रूप] 1 सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह, वस्तुतः—भूमिकेण इत्यो भक्षित इत्यनेन तत्सहचरितमपूपभक्षणमर्थादायात भवति—सा० द० १०, 2 परिस्थिति के अनुसार, तथ्यानुसार 3 कहने का भाव यह है कि, नामों के अनुसार ।

अर्थिकः [अर्थयते इत्यर्थी । कन्] 1 चिल्लाने वाला, चौकीदार, 2 विशेषतः भाट जिसका कर्तव्य दिन के विभिन्न निश्चित समयों की (जैसा कि जागने का, सोने का, या भोजन करने का) घोषणा करना है ।

अर्थित (भू० क० कृ०) [अर्थ्+क्त] प्रार्थित, याचित, इच्छित —तम् चाह, इच्छा, नालिश ।

अर्थिता-त्वम् [अर्थिन्+तल्+टाप्, त्वल् वा] 1. मांगना, प्रार्थना करना, 2 चाह, इच्छा ।

अर्थिन् (वि०) [अर्थ्+इनि] 1 प्राप्त करने की चेष्टा करने वाला अभिलाषी, इच्छुक—करण० के साथ अथवा समास में—कोषदण्डाभ्याम्—मुद्रा० ५, को बधेन समार्थी स्यात्—मुद्रा०, अर्थार्थी—पंच० १।४।९, 2 अनुरोध करने वाला, या किसी से कुछ मांगनेवाला (संब० के साथ)—अर्थी वररुचिर्मेऽस्तु—कथा० 3 मनोरथ रखने वाला, (पुं०) 1 याचक प्रार्थयिता, भिक्षुक, दीन याचक, निवेदक, विवाहार्थी—यथाकामार्चितार्थिना —रघु० १।६, २।६४, ५।३१, ९।२७, कोऽर्थी गतो गौरवम् —पंच० १।१४६, कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते वयं चार्थिनः —महावी० १।३०, 2. (विधि में) वादी अभियोक्ता, प्राभियोजक, —स मार्गस्थानशस्त्रादिप्रत्यर्थिनां स्वयं, ददर्श संशयच्छेद्यान् व्यवहारानतन्द्रित —रघु० १७।३९, 3 सेवक अनुचर। **सम०** **भावः** याचना, माँगना, प्रार्थना —मा० ९।३०, —**सात्** (क्रि० वि०) भिखारियों के अधिकार में करके —विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः—नै० १।१६ ।

अर्थीय (वि०) [अर्थ+छ] 1. पूर्वनिर्दिष्ट, अभिप्रेत, कष्ट उठाना भाग्य में बदा था—शरीरं यातनार्थीयम्—मनु० १२।१६. 2. संबंध रखने वाला—कर्म चैव तदर्थीयम्—मनु० १७।२७ ।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+यत्] 1. जिससे सर्वप्रथम याचना की जाय, 2. योग्य, उचित 3. उपयुक्त, आशय से

इधर उधर न होने वाला, सार्थक - स्तुत्यं स्तुतिभिरर्थ्याभिरुपतस्थे सरस्वती --रघु० ४।६, कु० २।३, 4. धनी, दौलतमंद 5 समझदार, बुद्धिमान्, --र्थ्यम् गेरु।

अर्द् (भ्वा० पर०) [अर्दति, अर्दित] 1 दुःख देना, व्यथित करना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना -- रक्षःसहस्राणि चतुर्दशार्दीत् --भट्टि० १२।५६ दे० नीचे प्रेर०, 2 मांगना, प्रार्थना करना, निवेदन करना -- निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि --रघु० ५।१७, (प्रेर० या चु० पर०) 1 (क) सताना, पीडित करना, दुःखाना--कामार्दित, कोप°, भय° आदि (ख) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, वध करना - येनार्दिदत् दैत्यपुरं पिनाकी -- भट्टि० २।४६ अति - अधिक सताना, आक्रमण करना, टूट पड़ना--अत्यार्दीत् वालिनः पुत्रम्--भट्टि० १५।११५, अभि - दुःखाना, सताना, पीडित करना।

अर्दन (वि०) [अर्द् + ल्युट्] दुःखाने वाला सतानेवाला, --नम् पीडा, कष्ट, चिन्ता, उत्तेजना, क्षोभ, - नम्, ना 1 जाना, हिलना 2 पूछना, मांगना 3 वध करना, चोट पहुँचाना, पीडा देना।

अर्ध (वि०) [ऋध् + णिच् + अच्] आधा, आधा भाग बनाने वाला, - र्धम्, र्धः 1 आधा, आधा भाग -सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः, गतमर्धं दिवसस्य विक्रम० २, यदर्धं विच्छिन्नं --श० १।९, आधा-आधा बँटा हुआ (अर्ध शब्द का लगभग सब संज्ञा व विशेषण शब्दों के साथ जोड़ा जा सकता है संज्ञा के साथ समास में प्रथमपद के रूप में इसका अर्थ है 'आधा' 'काय' अर्धकायम्, विशेषणों के साथ इसका अर्थ क्रियाविशेषणात्मक है, श्याम आधा काला, क्रमसूचक संख्याओं के साथ 'संख्या का आधा' अर्थ होता है, तृतीयम् दो और आधा तीसरा अर्थात् अढ़ाई। सम० --अक्षि (नपुं०) अपांगदृष्टि, आँख का झपकना मृच्छ० ८।४२, --अङ्गम् आधा शरीर --अंशः, आधा भाग, आधा हिस्सा, --अंशिन् (वि०) आधे का हिस्सेदार, --अर्धः, --अर्धम् 1. आधे का आधा, चौथाई--चतोरर्धार्धभागाभ्यां तामयोजयतामुभे रघु० १०।५६, 2 आधा और आधा, --अवभेदकः आधासीसी, आधे सिर की पीडा, --अवशेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष बचे, --आसनम् 1 आधा आसन --अर्धासनं गोत्रभिदोऽधितस्थौ --रघु० ६।७३, मम हि दिवौकसां समक्षमर्धासनोपवेशितस्य --श० ७ (आगन्तुक अतिथि को अपने ही आसन पर अर्धासन देना अत्यधिक सम्मान का चिह्न समझा जाता था) 2. सम्मानपूर्वक अभिवादन करना 3 निन्दा से मुक्ति --इन्दुः 1. आधा चाँद, दूज का चाँद, 2 अंगुली के नाखून की अर्धवर्तुलाकार छाप, बालेन्दु के आकार की नख-छाप--नै० ६।२५, 3. बालचन्द्र के आकार के समान सिर वाला बाण (=अर्धचन्द्र नी०), °मौलि शिव, --मेघ० ५६,--उक्त (वि०) आधा कहा हुआ, --राममद्र इति अर्धोक्ते महाराज --उत्तर० १, उक्तिः (स्त्री०) भग्नवाणी, अन्तर्बाधित वाणी, --उदय 1 अर्ध चन्द्रमा का निकलना 2. आंशिक उदय, °आसनम् समाधि में बैठने का एक प्रकार का आसन, --ऊरुकम् स्त्रियों के पहनने का अन्तर्वस्त्र, पेटीकोट, --कृत (वि०) आधा किया हुआ, अपूर्ण, --गंगा, री एक प्रकार का माप, आधी खारी --गंगा कावेरी नदी इसी प्रकार °जाह्नवी, --गुच्छ २४ लड़ियों का हार,--गोल गोलार्ध, --चन्द्र (वि०) बालेन्दु के आकार वाला, (--न्द्र) 1 आधा चन्द्रमा, बालेन्दु - सार्धचन्द्रं बिभर्ति यः --कु० ६।७५, 2 मोर की पूंछ पर अर्धवर्तुलाकार चिह्न, 3 बालचन्द्र के आकार के सिरे वाला बाण--अर्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीसुखम्--रघु० १२।९६, 4 बालचन्द्र के आकार की नख-छाप 5 अर्धवृत्त के रूप में झुका हुआ हाथ, जो कि किसी वस्तु को पकड़ने के लिए मोड़ा गया हो °दा --गर्दनिया देकर बाहर निकालना -- दीयतामेतस्यामर्धचन्द्र - -पंच० १, --चन्द्राकार,- -चन्द्राकृति (वि०) आधे चन्द्रमा के आकार वाला, --चोलक अंगिया, --दिनम्, दिवसः 1 आधा दिन, १२ का मध्यभाग, 2 १२ घण्टे का दिन,--नाराचः बालचन्द्र के आकार का लोहे की नोक वाला बाण,--नारीशः, --नारीश्वरः शिव का एक रूप (आधा पुरुष तथा आधी स्त्री), --नावम् आधी किश्ती,--निशा मध्यरात्रि, आधी रात --पञ्चाशत् (स्त्री०) पच्चीस, --पणः आधे पण की माप, --पथम् आधा मार्ग (--थे) मार्ग के मध्य में, --प्रहर, आधा पहरा, डेढ़ घण्टे का समय, --भागः आधा, आधा भाग या हिस्सा, --तदर्धभागेन लभस्व काङ्क्षितम् --कु० ५।५०, रघु० ७।४५, --भागिक (वि०) आधे भाग का साझीदार,--भाज् (वि०) 1. आधे भाग का हिस्सेदार, आधे भाग का अधिकारी, 2 साथी, साझीदार, --भास्करः दिन का मध्यभाग, दोपहर, --माणवकः --माणवः १२ लड़ियों का हार, (माणवक २४ लड़ियों का होता है), --मात्रा 1 आधी मात्रा, 2. व्यंजन वर्ण,--मार्गे (अव्य०) मार्ग के बीच में--विक्रम० १।३, --मासः आधा महीना, एक पक्ष, --मासिक (वि०) 1. प्रत्येक पक्ष में होने वाला 2 एक पक्ष तक रहने वाला, --मुष्टिः (स्त्री०) आधा भिंचा हुआ हाथ, --यामः आधा पहर,--रथः किसी दूसरे के साथ रथ पर बैठ

कर युद्ध करने वाला योद्धा (जो कि स्वयं 'रथी' के समान कुशल नहीं होता)—रथे रथेऽभिमानी च विमुख-श्चापि दृश्यते, घृणी कर्णः प्रमादी च तेन मेऽर्धरथो मत महा०, —रात्र आधी रात—अर्धरात्रे स्तिमितप्रदीपे —रघु० १६।४,—विसर्ग,—विसर्जनीय क् ख् तथा प् फ् से पूर्व विसर्गध्वनि,—वीक्षणम् तिरछी चितवन, कनखी,—वृद्ध (वि०) अधेड़ उम्र का, —वैनाशिक कणाद का अनुयायी (अर्धविनाश का तार्किक)—वैशसम् आधा या अपूर्णवध - कु० ४।३१, —व्यासः वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी, —शतम् पचास,—शेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष रहा है,—श्लोक. आधाश्लोक या श्लोक के दो चरण,—सीरिन् (पु०) 1 बटाईदार अपने परिश्रम के बदले आधी फसल लेने वाला किसान - याज्ञ० १।१६६, 2 —हे० अधिक, हार ६४ लड़ियों का हार,—ह्रस्व लघु स्वर का आधा ।

अर्धक (वि०) [अर्ध + कन्] आधा, दे० 'अर्ध' ।

अर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्धमर्हति—अर्ध + ठन्] 1 आधी नाप रखने वाला 2. आधे भाग का अधिकारी,—कः वर्णसंकर,—वैश्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः, अर्धिकः स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः —पराशर० ।

अर्धिन् (वि०) [अर्ध + इनि] आधे भाग का साझीदार ।

अर्पणम् [ऋ + णिच् + ल्युट् पुकागम] 1. रखना, स्थिर करना, जमाना, पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम् —रघु० २।३५, 2. बीच में डालना, रखना, 3 देना, भेंट करना, त्यागना,—स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण —रघु० २।५५, मुक्तार्पणेषु प्रकृतिप्रगल्भा - १३।९, तत्कुरुष्व मदर्पणम् —भग० ९।२७, 4. वापस करना, देना लौटा देना न्यास" अमर० 5 छेदना, गोदना —तीक्ष्णतुण्डार्पणैर्ग्रीवो नम्रं सर्वा व्यदारयत् -रामा० ।

अर्पिसः [ऋ + णिच् + इसुन् पुकागम] हृदय, हृदय का मांस ।

अर्व् (भ्वा० पर०) [अर्वति, आनर्व, अर्वितुम्] 1 की ओर जाना, 2 वध करना, चोट मारना ।

अर्बु (र्वु) दः - दम् [अर्व् (र्व्) + क्विप्—उद्—इ + क] 1 सूजन, (नाना प्रकार की) रसौली 2. दस करोड़ की संख्या 3. भारत के पश्चिम में स्थित आबू पहाड़, 4 सांप, 5 बादल 6. मांस पिंड 7. सांप जैसा राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था ।

अर्भक (वि०) [अर्भ + कन्] 1 छोटा, सूक्ष्म, थोड़ा 2 दुबला, पतला 3 मूर्ख 4 बच्चा, क्षीणा,—कः 1 बालक, बच्चा—सुतस्य यायादयमन्तमर्भकः—रघु० ३।२१, २५; ७।६७, 2. किसी जानवर का बच्चा 3. मूर्ख जड़ ।

अर्य (वि०) [ऋ + यत्] 1. श्रेष्ठ, बढ़िया 2. आदरणीय,—र्यः 1 स्वामी, प्रभु 2. तीसरे वर्ण का व्यक्ति, वैश्य,—र्या वैश्य की स्त्री । सम०—अर्यः सम्मान्य वैश्य ।

अर्यमन् (पु०) [अर्यं श्रेष्ठं मिमीते—मा + कनिन् नि०] 1 सूर्य 2. पितरों के प्रधान—पितॄणामर्यमा चास्मि —भग० १०।२९, 3 मदार का पौधा ।

अर्याणी [अर्य + ङीष्, आनुक्] वैश्य जाति की स्त्री ।

अर्वन् (पु०) [ऋ + वनिप्] 1. घोड़ा,—श्लथीकृतप्रग्रहमर्वता व्रजा —शि० १२।३१, 2 चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक 3 इन्द्र 4 गोकर्णपरिमाण —र्वी 1. घोड़ी 2 कुटनी, दूती ।

अर्वाच् (वि०) [अवरे काले देशे वा अञ्चति अञ्च् + क्विन् पृषो० अवादेश] 1 इस ओर आते हुए (विप० पराञ्च्) 2 की ओर मुड़ा हुआ, किसी से मिलने के लिए आता हुआ 3 इस ओर होने वाला 4. नीचे या पीछे होने वाला 5 बाद में होने वाला, बाद का —क् (अव्य०) 1 इस ओर, इधर की तरफ 2 किसी एक स्थान से 3 पहले (समय या स्थान की दृष्टि से) - अर्वाक्सृष्टेरर्वाक् सलिलात्स्य ब्रह्माण्डमभूत् —का० १२५ अर्वाक् सवत्सरात्स्वामी हरेत परतो नृप —याज्ञ० २।१७३, ११३, १।२५८, 4 नीचे की ओर, पीछे, नीचे (विप० ऊर्ध्व) 5. बाद में, पश्चात् 6. (अपा० के साथ) के अन्दर, निकट—एते चार्वागुपवनभुवि छिन्नदर्भाङ्कुरायाम् —श० १।१५ । सम०—कालः बाद में आने वाला समय,—कालिक (वि०) आसन्नकाल से संबंध रखने वाला, आधुनिक,—ता आधुनिकता, उत्तरकालीनता,—कूलम् नदी का निकटस्थ तट ।

अर्वाचीन (वि०) [अर्वाच् + ख] 1 आधुनिक, हाल का 2 उलटा विरोधी,—नम् (अव्य०) (अपा० के साथ) 1 इस ओर 2 के बाद का—यदूर्ध्वं पृथिव्या अर्वाचीनमन्तरिक्षात् - शत० ।

अर्शस् (नपु०) [ऋ + असुन् व्याधौ शुट् च] बवासीर । सम०—घ्न (वि०) बवासीर को नष्ट करने वाला (—घ्नः) सूरण, भिलावा (क्योंकि कहते हैं कि यह बवासीर नाशक है) ।

अर्शस (वि०) [अर्शस् + अच्] बवासीर से पीड़ित ।

अर्ह् (भ्वा० पर०) [अर्हति, अर्हितुम्, आनर्ह, अर्हित] (आर्ष प्रयोग—आ०, रावणो नार्हते पूजाम्— रामा०) 1 अधिकारी होना, योग्य होना (कर्म० तथा तुमुन्नन्त के साथ)—किमिव नायुष्मानमरेश्वरान्नार्हति —श० ७, 2 अधिकार रखना, अधिकारी बनना—न मर्म पित्र्यं रिक्थमर्हति—श० ६, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति—मनु० ९।३ 3. योग्य होना, पात्र बनना —अर्थमा मयि भवाद्भिः कर्तुमर्हति—नै०५।११३, रघु०

१३७, 4. समान होना, योग्य होना—न ते माधाम्यु-पचारमर्हन्ति- श० ३।१८, सर्वे ते जपयज्ञस्य कला नार्हन्ति षोडशीम् मनु० २।८६, 5 योग्य होना, अनुवाद 'सकता'—न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति श० ४ 6 पूजा करना, सम्मान करना नीचे प्रेर० दे० 7 (मध्यम पुरुष के साथ—कभी-कभी अन्यपुरुष के साथ भी तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है), 'अर्ह्' धातु मृदु आदेश, शिष्ट प्रार्थना तथा परामर्श के लिए प्रयुक्त होता है इसका अनुवाद होता है कृपा करना, अनुग्रह करना प्रसन्न होना द्वित्राण्यहान्यर्हसि सोढुमर्हन्- रघु० ५।२५, कृपया प्रतीक्षा कीजिए नार्हसि मे प्रणयं विहन्तुम् २।५८, [प्रेर० या चु० पर०] सम्मान करना, पूजा करना —राजाजिहत मधुपर्कपाणि भट्टि० १।१७, मनु० ३।११९।

अर्ह (वि०) [अर्ह् + अच्] 1 आदरणीय आदर योग्य पात्र अधिकारी अर्होऽविभोजयन् विप्रो दण्डमर्हति माषकम् मनु० ८।३९२, 2 योग्य दावेदार, अधिकारी (कर्म०, तुमुन्नन्त, तथा समास में) नैवार्हः पैतृकं रिक्थं पतितोत्पादितो हि सः—मनु० ९।१४४, सत्कारमर्हस्त्वं न च लभ्यसे—रामा०, तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान् भग० १।३७ इसी प्रकार मान॰ वध॰ दण्ड॰ आदि 3 सुहावना, उचित, उपयुक्त – केवल यानमर्हं स्यात् पंच० ३, (सब० के साथ भी) —स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् पंच० १।८७-९२, 4 उचित मूल्य का, कीमत का, दे० नीचे, र्हः 1 इन्द्र 2 विष्णु 3 मूल्य (जैसा कि 'महार्ह' में) – महार्हशय्यापरिवर्तनच्युतैः कु० ५।१२ (महानर्हो यस्याः मल्लिनाथ) —र्हा पूजा, आराधना।

अर्हणम्-णा [अर्ह् + भावे ल्युट्] पूजा, आराधना, सम्मान, आदर तथा सम्मान के साथ व्यवहार करना अर्हणामर्हते चक्रुर्मुनयो नयचक्षुषे रघु० १।५५ शि० १५।२२।

अर्हत् (वि०) [अर्ह् + शतृ] योग्य अधिकारी, पूजनीय – (पुं०) 1 बुद्ध 2 बौद्धधर्म की पुरोहिताई में उच्चतम पद 3 जैनियों के पूज्य देवता, तीर्थंकर सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः, यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः।

अर्हन्त (वि०) [अर्ह् + झ बा०] योग्य, अधिकारी, —न्तः 1. बुद्ध 2 बौद्धभिक्षु।

अर्हन्ती (स्त्री०) पूजा के योग्य होने का गुण, सम्मान, पूजा,—ओजोऽर्हन्तीवर्णगुर्वी -भिट्टि०।

अर्ह्य (सं० कृ०) [अर्ह् + ण्यत्] 1. योग्य, आदरणीय, 2. प्रशंसा के योग्य।

अल् (भ्वा० उभ०) [अलति-ते, अलितुम्, अलित] 1. सजाना, 2 योग्य या सक्षम होना 3 रोकना, दूर रखना, दे० अलम्।

अलम् [अल् + अच्] 1 बिच्छू का डंक जो उसकी पूंछ में होता है 2 पीली हरताल।

अलक. [अल् + क्वुन्] 1 घुंघराले बाल, जुल्फें, बाल लर्भाटिका चन्दनधूसरालकाः कु० ५।५५ अलके बाल कुन्दानुविद्धम् मेघ० ६५ (यह शब्द नपुं० भी है जैसा कि मल्लिनाथ के उद्धरण स्वभाववक्राण्यलकानि तासाम् से प्रकट होता है) 2 मस्तक के घूंघर 3 शरीर पर मला हुआ केसर —का 1 आठ से दस वर्ष तक की आयु की कन्या 2 यक्षों के स्वामी कुबेर की राजधानी विनन्दि यस्याः अन्तिमालकाया मनोहरा वैश्रवणस्य लक्ष्मी भामि० २।१०, गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम् मेघ० ७। सम० अधिप, ईश्वर, पति अलका का स्वामी, कुबेर अरयमैत्रदमगालकेश्वरो रघु० १९।१९, अन्त घूंघर का किनारा, या नंदा —नन्दा 1 गंगा, गंगा में गिरने वाली नदी 2 आठ से दस वर्ष के बीच की आयु की लड़की, प्रभा कुबेर की राजधानी संहति घूंघरों की पंक्तियाँ शि० ६।३।

अलक्तः-क्तकः [न रक्तोऽस्मात्, यस्य लत्वम् —स्वार्थे कन् तारा०] कुछ वृक्षों से निकलने वाली गोंद, लाल रंग की लाख महावर (प्राचीन काल में स्त्रियों द्वारा शरीर के कुछ अंग इसके द्वारा रंगे जाते थे विशेषरूप से पैरों के तल और ओष्ठ) (दन्तवासमा) चिरोज्झितालक्तकपाटलेन कु० ५।३४, मालवि० ३।५, अलक्तकाङ्कां पदवीं तरन् रघु० ७।७, स्त्रियां हुताशं पुण्य निरर्थं निष्पीय गलकलकवस्यजन्ति मुक्त० ४।, । सम० रस महावर लाक्षारस अलक्तरसरक्ताभावलक्तरसवर्जितौ, अद्यापि चरणौ तस्याः पद्मकोशसमप्रभौ रामा०—राग महावर का लाल रंग।

अलक्षण (वि०) [न० ब०] 1 चिह्नरहित 2 परिचायक चिह्न से हीन, परिभाषारहित, 3 जिसमें कोई अच्छा चिह्न न हो अशुभ अशकुन—क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम् रघु० १४।५ णम् 1 बुरा या अशुभ चिह्न 2 जो परिभाषा न हो, बुरी परिभाषा।

अलक्षित (वि०) [न० त०] अदृष्ट अनवलोकित—अलक्षिताभ्युत्पतनो नृपेण रघु० २।२७।

अलक्ष्मीः (स्त्री०) [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत, निर्धनता।

अलक्ष्य (वि०) [न० त०] 1 अदृश्य, अज्ञात, अनवलोकित 2. चिह्नरहित, 3 जिस पर कोई विशिष्ट चिह्न न हो 4 देखने में नगण्य 5 जिसमें कोई बहाना न हो, छल-कपट से रहित 6 अर्थों की दृष्टि से गौण। सम० -गति (वि०) अदृश्य रूप से घूमने वाला, -जन्मता अज्ञात जन्म, अप्रकट जन्म

–वपुर्विरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता—कु० ५।७०, –लिङ्ग (वि०) जो वेश बदले हुए हो, जिसका नाम पता छिपा हो, –वाच् (वि०) किसी अदृश्य वस्तु को संबोधित करके बोलने वाला — कु० ५।५७।

अलगर्दः [लगति स्पृशति इति लग्+क्विप्, लग् अर्दयति इति अर्द्+अच्, स्पृशन् सन्, अर्दो न भवति] पानी का साँप।

अलघु (वि०) [स्त्री०–घु, –घ्वी] [न० त०] 1 जो हल्का न हो, भारी, बड़ा 2 जो छोटा न हो, लम्बा (छंद शास्त्र में) 3 संगीन, गंभीर 4 गहन, प्रचण्ड, बहुत बड़ा। सम० –उपल चट्टान, –प्रतिज्ञ (वि०) गंभीर प्रतिज्ञा करने वाला।

अलङ्करणम् [अलम्+कृ+ल्युट्] 1 सजावट, सजाना 2 आभूषण (शा० तथा आल०) सुजनि ... गुणाकरं पुरुषालमलङ्करणं भुवः — भर्तृ० ११०।

अलङ्करिष्णु (वि०) [अलम्+कृ+इष्णुच्] 1 आभूषणों का शौकीन 2 सजाने वाला, सजाने की विद्या में कुशल।

अलङ्कार [अलम्+कृ+घञ्] 1 सजावट, सजाना या अलंकृत करने की क्रिया 2 आभूषण (आल० से भी) —अलङ्कारः स्वर्गस्य विक्रम० १ 3 अलंकार जिसके शब्द, अर्थ तथा शब्दार्थ के अनुसार तीन भेद हैं 4 काव्य के गुण दोष बताने वाला शास्त्र। सम० –शास्त्रम् काव्य कला तथा साहित्य शास्त्र, –सुवर्णम् आभूषण घड़ने के लिए सोना।

अलङ्कारकः [अलम्+कृ+घञ् स्वार्थे कन्] आभूषण, सजावट, मनु० ७।२२० [अलम्+कृ+ण्वुल्] सजाने वाला।

अलङ्कृतिः (स्त्री०) [अलम्+कृ+क्तिन्] 1 सजावट 2 आभूषण, कर्णालङ्कृति –अमरु० १३ 3 साहित्यिक आभूषण, अलंकार —तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि काव्य० १, यः विद्वान्मन्यते काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती, असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती — चन्द्रा० मालङ्कृति श्रवणकोमलवर्णराजि — भामि० ३।६, (यहाँ अ द्वितीय तथा तृतीय अर्थ प्रकट करता है)

अलङ्क्रिया [अलम्+कृ+श+टाप्] अलंकृत करना, आभूषित करना, सजाना। (आल० भी)।

अलङ्घनीय (वि०) [न० त०] जो लांघा न जा सके, पार न किया जा सके, जहाँ पहुँचा न जा सके, पहुँच के बाहर।

अलजः [अल+जन्+ड] एक प्रकार का पक्षी।

अलञ्जरः,—**जुरः** [अलं सामर्थ्यं जृणाति –जृ+अच् पृषो० उत्‌ वा] मिट्टी का बर्तन, मर्तबान, घड़ा।

अलम् (अव्य०) [अल्+अम् बा०] 1 (क) पर्याप्त, यथेष्ट, काफी (सम्प्र० या तुमुन्नन्त के साथ) —तस्यालमेषा क्षुधितस्य तृप्त्यै रघु० २।३९ अन्यथा प्रातराशाय कुर्याम त्वामलं वयम्—भट्टि० ८।९८ (ख) समकक्ष, तुल्य (सम्प्र० के साथ) दैत्येभ्यो हरिरलम् सिद्धा० अलं मल्लो मल्लाय महाभा० 2 योग्य, सक्षम (तुमुन्नन्त के साथ) अलं भोक्तुम् सिद्धा० वरेण शमितं लोकानलं दग्धुं हि तत्तपः कु० २।५६ (अधि० के साथ भी) ... 3 बस, बस करो, हो चुका, कोई आवश्यकता नहीं, काफी ... (निषेधात्मक बल रखना) करण० या क्त्वान्त के साथ ... गृहीत्वा मा० ... रघु० ... कु० ... (ख) पूर्ण ... (ग) बहुत, अत्यधिक, बहुत ही अधिक, ... यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति अमर०। सम० –कर्मीण (वि०) काम करने में सक्षम, दक्ष, कुशल, ... –जीविक (वि०) जीविका के लिए यथेष्ट, –धन (वि०) यथेष्ट धन रखने वाला, धनवान्—निरा ... मनु० ८।१६०, –धूम अधिक धुआँ, धुएँ का अंबार, –पुरुषीण (वि०) 1 जो मनुष्य के योग्य हो, मनुष्य के लिए पर्याप्त हो, –बल (वि०) पर्याप्त बल वाला, यथेष्ट शक्तिशाली, –बुद्धि पर्याप्त समझ, –भूष्णु (वि०) योग्य, सक्षम ... शि० २।१०।

अलम्पट (वि०) [न० त०] जो लम्पट या विषयी न हो, शुद्ध चरित्र वाला, –टः अन्तःपुर।

अलम्बुष [अलं पुरुषार्थं इति ... पृषो० ...] 1 वमन, छर्दि 2 खुले हुए हाथ की हथेली।

अलय (वि०) [न० ब०] 1 गृहहीन, आवारा 2 नाश न होने वाला, अविनश्वर, –यः [न० त०] 1 अनश्वरता, स्थायित्व 2 जन्म, उत्पत्ति।

अलर्कः [अलम् अर्च्यते अर्च्यते वा अर्क्+अच्, अच्+घञ् वा शक० पररूपम्] 1, पागल कुत्ता या सदाभ्रम व्यक्ति 2 सफेद मदार।

अलले (अव्य०) [अर+रा+के रस्य लः] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त होने वाला पैशाची बोली का शब्द जिसका कोई अपना तात्पर्य नहीं।

अलवालम् [न० त०] वृक्ष में पानी देने के लिए जड़ में बना हुआ स्थान दे० 'आलवाल'।

असम् (वि०) [न० त० न्स + क्विप्] न चमकने वाला।

अलस (वि०) [न लसति [illegible] + अच्] 1 अक्रिय स्फूर्तिहीन सुस्त आलसी 2 थका हुआ श्रान्त [illegible] 3 मृदु कोमल [illegible] मन्द(गति म) [illegible] मेघ० [illegible] ईक्षणा वह स्त्री जिसकी मदभरी दृष्टि हो।

अलसक (वि०) [अलस कन्] अकर्मण्य सुस्त [illegible]

अलात [illegible] अंगार अधजली लकड़ी [illegible]

अलाबु, बू (स्त्री०) [illegible] लौकी [illegible] इसका फल जो पानी पर तैरता है [illegible] मनु० [illegible] पात्रम् तुम्बी का बना बर्तन

अलारम् [illegible]

अलि [अल् + इन्] 1 भौंरा 2 बिच्छू 3 कौआ 4 कोयल 5 मदिरा। सम० **कुलम्** भौंरों का समूह [illegible] संकुल [illegible] कुब्ज नामक पौधा —जिह्वा,—जिह्विका [illegible] का कौआ [illegible] प्रिय [illegible] जैसा [illegible] —माला भौंरों का समूह [illegible] भौंरों का गुंजार [illegible]

अलिकम् [illegible] विक्रम० [illegible]

अलिन् (पुं०) [illegible] 1 बिच्छू 2 भौंरा [illegible] का [illegible]

अलिगर्द [पुं० [illegible] एक प्रकार का सांप

अलिङ्ग (वि०) [illegible] 1 जिसका कोई चिह्न न हो [illegible] 2 [illegible] 3 (व्या० में) जिसका [illegible]

अलिञ्जर [illegible] जलपात्र [illegible]

अलिन्द [illegible] 1 घर के दरवाजे के सामने का चबूतरा [illegible] —मालवि० ५, 2 दरवाजे पर बनी चौकोर जगह।

अलिपक [न० त०] 1 कोयल 2 भौंरा 3 कुत्ता।

अलिमक दे० अलिमक।

अलिम्पक [illegible]

अलीक (वि०) [illegible] 1 अप्रिय अरुचिकर 2 [illegible] कम 1 [illegible] 2 [illegible]

अलीकिन् [illegible] 1 अरुचिकर अप्रि 2 मिथ्या [illegible]

अलु [illegible]

अलुक् समास [illegible]

[illegible]

अलौकिक [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

[illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] जो थोड़ी देर और कभी-कभी होने वाला विरल,

ल्पम ल्पेन, ल्पात् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सम० **अल्प** [illegible] थोड़ा थोड़ा करके [illegible] **आकांक्षिन** (वि०) थोड़ा [illegible] **आयुस** [illegible] 2 [illegible] **आहार** — **आहारिन** [illegible] **इतर** (वि० [illegible] 2 [illegible] **ऊन** [illegible] **गंध** [illegible] **धम** [illegible] **कमल** [illegible] **छद** छाद [illegible] [illegible] (वि० [illegible] वाला **मोती** [illegible] 1 ठिगना [illegible] 2 [illegible] **दृष्टि** (वि०) जिसकी [illegible] **धन** (वि०) जो धनवान [illegible] **धी** (वि०) [illegible] **प्रजस्** (वि०) थोड़ी संतान वाला **प्रमाण** **प्रमाणक** (वि०) 1 थोड़े वजन का थोड़े माप का 2 [illegible] थोड़े से [illegible] **प्रयास** (वि०) [illegible] **प्राण** **असु** (वि०) थोड़ा [illegible] 1 थोड़ा [illegible] 2 [illegible] वर्णमाला के [illegible] **अल्पस्वर** [illegible] **अक्षर** **बल** (वि०) दुर्बल, बलहीन, कम शक्ति रखने वाला **बुद्धि** **मति** (वि०) दुर्बलबुद्धि, मूर्ख [illegible] — [illegible] **भाषिन्** (वि०) [illegible] [illegible] बोलने वाला — [illegible] (वि०) पतली कमर वाला **मात्र** (वि०) थोड़ा सा [illegible] — **मूर्ति** (वि०) छोटे कद का, ठिगना ([illegible] स्त्री० छोटी आकृति या वस्तु — **मूल्य** (वि०) थोड़ी कीमत का सस्ता **मेधस्** (वि०) थोड़ी समझ का, अज्ञानी मूर्ख **वयस्** (वि०) थोड़ी आयु का, कमसिन —**वादिन्** (वि०) अल्पभाषी —**विद्य** (वि०) अज्ञानी अशिक्षित —**विषय** (वि०) सीमित परास या योग्यता से युक्त, — [illegible] मति [illegible] १।२ **शक्ति** (वि०) कमजोर, दुर्बल **सरस** (नपुं०) पोखर, छोटा जोहड़ (जो गर्मियों में सूख जाता है)।

अल्पक (वि०) [illegible] [illegible] [अल्प कन्] 1 [illegible] 2 [illegible]

अल्पंपच (वि०) [अल्प [illegible]] (थोड़ा पकाने वाला) [illegible] मक्खीचूस — [illegible]

अल्पशः [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible]

अल्पित (वि [illegible] 1 [illegible]

अल्पिष्ठ (वि [illegible]

अल्पीयस् (वि [illegible]

अल्ला [illegible]

अव [illegible] 1 [illegible] **रक्षा** करना [illegible] **मेदिनी** [illegible] 3 [illegible] [illegible] प्रयोग [illegible]

अव [illegible] जैसा [illegible] 2 [illegible] वियोग (ख) [illegible] **अवक्षि** (ग) [illegible] (घ) थोड़ा [illegible] (ङ) [illegible] जैसा [illegible] (च) [illegible] (छ) [illegible] अवहेलना [illegible] (ज) [illegible] (झ) अवसाद, नीचे झुकना — [illegible] अवगाह [illegible] 3 [illegible] समास के प्रथम पद के रूप में इसका अर्थ होता है — [illegible] **उदा०** **अवकोकिल** **अवकुष्ट** [illegible]।

अवकट (वि०) [अव स्वार्थे कटच्] 1 नीचे की

[illegible] पीछे की [illegible] 2 [illegible] हम [illegible] है [illegible]।

अवकर [illegible]

अवकर्तन [illegible]

अवकलनम् [illegible]

अवकर्षणम् [illegible] 2 [illegible]

अवकलित [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

अवकाश [illegible] 1 [illegible]

[illegible]

अवकीर्णिन् (वि०) [illegible] बढ़ा [illegible] अपने ब्रह्मचर्य व्रत [illegible] [illegible] किया [illegible]

अवकुञ्चनम् [अव [illegible]] [illegible] सिकुड़न।

अवकुण्ठनम् [अव + कुण्ठ् [illegible]] 1 [illegible] 2 आकृष्ट [illegible] पकड़ना।

अवकुण्ठित (वि०) [अव + कुण्ठ् + क्त] 1 [illegible] परिवेष्टित 2 आकृष्ट।

अवकृष्ट (भू० क० कृ०) [अव + कृष् + क्त] 1 खींचकर [illegible] 2 दूर हटाया हुआ 3 निष्कासित [illegible] 4 घटिया नीच पतित बहिष्कृत [illegible] प्रकार, [illegible] वह नौकर जो [illegible] झाडू बुहारी आदि का काम करता है (सम अवकृष्टान्न [illegible] वकृष्टस्य पड्कृष्टस्य [illegible] मनु० ३।१०६

अवक्लृप्ति [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अवक्रोश [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अवक्षिप्त [illegible]

अवक्रन्द [illegible] क्रन्द् [illegible] रुदन करना [illegible] निर्झनाद वाला [illegible]

[illegible] विस्फोटात्मक ऊंचे [illegible]

अवक्रम [illegible] उतरना [illegible]।

अवक्रय [illegible] 1 [illegible] 2 मजदूरी [illegible] 3 किराये पर देना पट्टे पर [illegible]

[illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

[illegible]

अवक्षेप [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अवक्षय [illegible] 1 [illegible]

अवक्लेदनम् [illegible]

अवक्वण [illegible]

अवक्षाम [illegible] चमड़ा [illegible]।

अवक्षय [illegible] बरबादी [illegible]।

अवक्षालनम् [illegible] आदि का [illegible]।

अवक्षेप [अव + क्षिप् + घञ्] 1 लाञ्छन निन्दा 2 आक्षेप।

अवक्षेपणम् [अव+क्षिप्+ल्युट्] 1. नीचे की ओर फेंकना, कर्म के पाँच प्रकारों में से एक, दे० 'कर्म' 2. घृणा, नफरत 3 बदनामी, लाञ्छन 4 पराजित करना, दमन करना — **णी** बागडोर, लगाम।

अवखण्डनम् [अव+खण्ड्+ल्युट्] बाँटना, नष्ट करना।

अवखातम् [प्रा० स०] गहरी खाई।

अवगणनम् [अव+गण्+ल्युट्] 1 अवज्ञा तिरस्कार, अवहेलना 2 निंदा, लाञ्छन 3 अपमान मानभंग।

अवगण्डः [प्रा० स०] फोड़ा फुंसी जो गाल पर होता है।

अवगतिः (स्त्री०) [अव+गम्+क्तिन्] 1 ज्ञान प्रत्यक्षीकरण, समझ लेना और निश्चित ज्ञान ... निर्दिष्ट ...

अवगमः, -गमनम् [अव+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1 निकट जाना नीचे उतरना 2 समझ, प्रत्यक्षीकरण ज्ञान।

अवगाढ (भू० क० कृ०) [अव+गाह्+क्त] 1 डुबकी लगाया हुआ, घुसा हुआ, डूबा हुआ ... वात्सगाढोऽस्मि श० ३ 2 नीचे ... नीचा, गहरा (शा० अर्ध०) ... गाढा जघनगौरवात्तदवगाढम् ... जमा हुआ (जैसे रक्त)।

अवगाहः-गाहनम् [अव+गाह्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्नान, —सुभगसलिलावगाहाः —श० १।३ मदावगाढक्षमवार्येयेव ... —ऋतु० १।१ 2 डुबकी लगाना डुबाना घुमना— परबंगावगाहनात्—हि० ३।५५, ... क्षणमात्रशाल्ना—रघु० ५।४३ ... विधिना रम्य मनो निर्मितम्—भृगार० १, 3 (आलं०) निष्णात होना, गोता लगाना 4 स्नानागार।

अवगीत (भू० क० कृ०) [अव+गै+क्त] 1 अमित स्वर में गाया हुआ, बुरी तरह से गाया हुआ 2 बदनाम किया हुआ गाली दिया हुआ ... 3 दुष्ट बदमाश 4 गान द्वारा व्यंग्यात्मक ढंग से बाद किया गया, —**तम्** 1 व्यंग्यगान, परिहास 2 धिक्कार, लाञ्छन।

अवगुणः [प्रा० स०] अपराध, दोष, बुराई —अल्पदोष परावगुणम् —मल्लि० कि० १३।६८।

अवगुण्ठनम् [अव+गुण्ठ्+ल्युट्] 1 घूंघट निकालना, छिपाना, बुर्का ओढ़ना 2 पर्दा (मुह के लिए) (आलं० भी) अवगुण्ठनवतीना कुलजाभिसारिकादि सा० द० —कृतशीर्षावगुण्ठन —महा० ६, 3 घूंघट, बुर्का।

अवगुंठनवत् (वि०) [अवगुण्ठन+मतुप्] घूंघट से ढका हुआ, पर्दे में आवृत ... नारी ... ५।

अवगुण्ठिका [अव+गुण्ठ+ण्वुल्+टाप्] 1 घूंघट, पर्दा 2. आवरण 3. चिक ... पर्दा।

अवगुण्ठित (भू० क० कृ०) [अव+गुण्ठ्+क्त] पर्दा पड़ा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ रजनीतिमिरावगुण्ठिते कु० ४।११।

अवगुरणम्,-गोरणम् [अव+गुर्+ल्युट्] धमकाना, धमकाना, मार डालने के इरादे से प्रहार करना, शस्त्रों से आक्रमण करना।

अवगूहनम् [अव+गुह्+ल्युट्] 1 छिपाना, प्रच्छन्न रखना 2 आलिंगन करना।

अवग्रह [अव+ग्रह्+घञ्] 1 समास पद के घटक शब्दों का अलग अलग करना —सन्धिच्छेद करना 2 इस प्रकार की पृथकता का ज्ञापन करने वाला चिह्न 3 ... लोप का चिह्न (जैसा कि ...) 4 ... 5 वर्षा का न होना, सूखा पड़ना अनावृष्टि —वृष्टिर्भवति शस्यानामवग्रह... 6 बाधा, रोक 7 हाथियों का समूह 8 हाथी का मस्तक 9 प्रकृति, मलस्वभाव 10 दण्ड (वि० अनुग्रह) 11 कामना गाली देना।

अवग्रहणम् [अव+ग्रह्+ल्युट्] 1 बाधा, रुकावट 2 अनादर अवहेलना।

अवग्राहः [अव+ग्रह्+घञ्] 1 रुकना, वियोजन 2 अवरोध 3 शाप दे० अवग्रह।

अवघट्टः [अव+घट्ट्+घञ्] 1 बिल, गुहा, मांद 2 ... (अनाज पीसने के लिए), 3 ओर से ...।

अवघर्षणम् [अव+घृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना 2 मलना 3 ... मलना।

अवघातः [अव+हन्+घञ्] 1 प्रहार करना 2 मार डालना, मारना 3 अचानक आघात, चोट आघात — कृतावघातमवमानं ... —भट्टि० ... 4 धान आदि को ओखल में ... से कूटना।

अवघूर्णनम् [अव+घूर्ण्+ल्युट्] घूमेरी आना, चक्कर आना।

अवघोषणम्, -णा [अव+घुष्+ल्युट्] 1 घोषणा करना 2 उद्घोषणा।

अवघ्राणम् [अव+घ्रा+ल्युट्] सूंघने की क्रिया।

अवचन (वि०) [न० ब०] न बोलने वाला, चुप, वाणी रहित —अकृतार्थ आत्ममादवचना निरुठति—श० १, —**नम्** 1 शब्दों का अभाव, चुप्पी, मौन 2. निन्दा, लाञ्छन, भर्त्सना —**कर** (वि०) आज्ञा न मानने वाला।

अवचनीय (वि०) [न० त०] 1. जो कहने के या उच्चारण करने के योग्य न हो, अश्लील या अशिष्ट (भाषा) —वादेष्ववचनीयेषु तदेव द्विगुणं भवेत्—मनु० ८।२६९, 2. जो निन्दा या लांछन के योग्य न हो, निन्दा से मुक्त —अकिंचनवचनीया भवन्ति —मृच्छ० २, या कहने में अनौचित्य, निन्दा से मुक्ति —सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता —उत्तर० १।५।

अवचय (या) य [अव+चि+अच्, घञ् वा] चयन करना (फल फूल आदि का) —तत्र प्रविश्यास्य कुसुमावचयम् भिनयन्त्यौ सख्यौ —श० ४, अविरलकुसुमावचायले-ख्यम —शि० ७।३१।

अवचारणम् [अव+चर्+णिच्+ल्युट्] किसी काम पर नियुक्त करना, प्रयोग, प्रगमन की पद्धति।

अवचूड:-ल [अवनता चूडा अग्र यस्य वा हा०] रथ के शिखर पर लगा ध्वज, ध्वजा के शिरोभाग से बंधा हुआ (चौरा जैसा) अधोमुख गुच्छा, अवचूडमनुसायधवमध्याम —शि० ५।१३, १२।८६, —वारणसद्दावचूडकवामरकलापम —का० २९।

अवचूर्णनम् [अव+चूर्ण्+ल्युट्] 1 चूरा करना, पीसना चूर्ण बनाना 2 चूरा बुरकाना, विशेषकर कोई चूर्ण दवा घाव पर बुरकाना।

अवचूल दे० अवचूड।

अवचूलक:-कम् [अवनता चूडा यस्य, ह्रस्व लत्वम् स्वार्थे कन्] मक्खियों को उड़ाने के लिए बुश या चंवर।

अवच्छद (दा) द [अव+छद्+क] आवरण, ढक्कन —काचनावच्छदान् (आसनान्) —रामा०।

अवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [अव+छिद्+क्त] 1 काटा हुआ 2 अलगाया हुआ, बटा हुआ, पृथक् किया हुआ 3 (तर्कशास्त्र में) अपने विहित विशिष्ट गुणों द्वारा दूसरी सब वस्तुओं से पृथक् की गई वस्तु 4 सीमित विकृत, निश्चित—दिक्कालाद्यनवच्छिन्न—भर्तृ० २।१, 5 किसी विशेषण से युक्त विशिष्ट विविक्त तथा उपलक्षित।

अवच्छुरित (वि०) [अव+छुर्+क्त] मिश्रित तम् अट्टहास।

अवच्छेद: [अव+छिद्+घञ्] 1 खंड, अंश 2 सीमा मर्यादा 3 विच्छेद 4 भेद, विवेचन, (विशेषणों द्वारा) विशिष्टीकरण 5. दृढ निश्चय, निर्णय, फैसला —शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः —वाक्य० १, 6 पदार्थ का वह गुण जो उसे औरों से अलग कर दे, लक्षणदर्शी गुण 7 सीमा बांधना, परिभाषा करना।

अवच्छेदक (वि०) [अव+छिद्+ण्वुल्] 1 वियोजक 2 निर्धारक, निर्णायक 3. सीमा बांधने वाला 4. विवेचक, विशिष्टीकारक 5. विशेष लक्षण —क: 1 जो विवेचन करे 2. विधेय, लक्षण, गुण।

अवजय: [अव+जि+अच्] पराजय, दूसरों पर विजय, येनेन्द्रलोकावजयाय दृप्त —रघु० ६।६२।

अवजिति: (स्त्री०) [अव+जि+क्तिन्] विजय, पराजय।

अवज्ञा [अव+ज्ञा+क] अनादर, तिरस्कार, अवमति, अवहेलना (कर्म०, करण०, अधि० या सब० के साथ) आत्मन्यवज्ञा शिथिलीचकार —रघु० २।४१, ये नाम केचिदिह न: प्रथयन्त्यवज्ञाम् —मा० १।६। सम० —उपहत तिरस्कारपीडित नीचा दिखाया गया—दु:खम् नीचा दिखाये जाने की वेदना —मा जीवन् य: परावज्ञादु:खदग्धोऽपि जीवति —शि० २।४५।

अवज्ञानम् [अव+ज्ञा+ल्युट्] अनादर, तिरस्कार।

अवट: [अव+अटन्] 1 विवर, गुफा 2 गर्त —अवटे चापि मे राम प्रक्षिपेमं कलेवरम्, अवटे ये निधीयन्ते —रामा० 3 कुआं 4 शरीर का कोई दबा हुआ या नीचा भाग, नासावेण, अवटश्चैवमर्माणि स्थानान्यत्र शरीरके—याज्ञ० ३।९८ 5 बाजीगर। सम० —कच्छप: कुएँ में घुसा हुआ कछुवा (आलं०) अनुभवशून्य, जिसने संसार का कुछ न देखा हो।

अवटि:-टी (स्त्री०) [अव्+अटि पक्षे ङीष्] 1. विवर 2 कुआं।

अवटीट (वि०) [नासिकाया नत अवटीटम्, अव+टीटच्] नासिकाया नमनाम् नासिकाप्यवटीटा, पुरुषोऽप्यवटीट:] जिसकी नाक चपटी है चपटी नाक वाला।

अवटु: [अव+टीक्+डु] 1 विल 2 कुआं 3 गरदन का पृष्ठभाग, 4 शरीर का दबा हुआ अंग—टु: (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग, —टु (नपुं०) विवर दरार।

अवडीनम् [अव+डी+क्त] पक्षी की उड़ान, नीचे की ओर उड़ना।

अवतंस:-सम् [अव+तंस्+घञ्] 1. हार 2. कर्णाभूषण, अंगूठी के आकार का आभूषण, कान का गहना (आलं०) —वाणा नमेरुप्रसवावतंसा —कु० १।५५, स्वबाहुलोभनलावतंसा— ७।३८, रघु० १३।४९, 3 शिरोभूषण, मुकुट (आलं०) आभूषण का काम देने वाली कोई भी वस्तु —तामरसावतंसा जलनिवेशा —मालo २।३, पुष्पावतंसाभि: परिलाभि: —रामा० —पुष्पावतंस सलिलम् —सुभ०।

अवतंसक: [अव+तंस्+ण्वुल्] कर्णाभूषण, आभूषण।

अवतंसयति (ना० धा० पर०) कर्णाभूषण के रूप में प्रयुक्त करना, कानों की बालियाँ बनाना —अवतंसयन्ति दयमाना प्रमदा: शिरीषकुसुमानि —श० १।४।

अवततिः (स्त्री०) [अव+तन्+क्तिन्] फैलाव, प्रसार।

अवतप्त (भू० क० कृ०) [अव+तप्+क्त] गरम किया हुआ, चमकाया हुआ—अवतप्ते नकुलस्थितम्—आवेदी नेवले का गर्म भूमि पर खड़ा होना, (क्षण के

ढंग से इस प्रकार मनुष्य की अस्थिरता के विषय में कहा जाता है) अवतप्ते नकुलस्थितं त एतत् सिद्धा० ।

अवतमसम् [प्रा० स०] झुटपुटा, अल्पांधकार क्षीणेऽवतमसं तमः अमर० अंधकार—अवतमसभिदायै भास्वतामभ्युद्गतेन शि० १।२७ (यहाँ मल्लि० कहता है यद्यपि क्षीणेऽवतमसं तमः इत्युक्तं तथापि इह विरोधाद्विशेषत्यागेन सामान्यमेव ग्राह्यम्) ।

अवतरः [अव + तृ + अप्] उतार नै० ३।२३ शि० १।४३ ।

अवतरणम् [अव + तृ + ल्युट्] 1 स्नान करने के लिए पानी में नीचे उतरना उतार नीचे आना 2 अवतार दे० 'अवतार 3 पार करना 4 स्नान करने का पवित्र स्थान 5 एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना 6 परिचय ' उद्धृत किया हुआ, उद्धरण ।

अवतरणिका [अवतरणी + कन् ह्रस्व गाप] 1 ग्रन्थ के आरम्भ में किया गया मंगलाचरण जो कि कहते हैं सबोधित किये गये देवताओं को स्वर्ग से नीचे उतार लाता है, 2 प्रस्तावना, भूमिका ।

अवतरणी [अवतरति ग्रन्थोऽनया अवतृ + करण ल्युट्] भूमिका ।

अवतर्पणम् [अव + तृप् + ल्युट्] शान्ति देने वाला उपचार ।

अवताडनम् [अव + तड् + णिच् ल्युट्] 1 कुचलना रौंदना,—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि—उत्तर० १।१४ 2 मारना ।

अवतानः [अव + तन् + घञ्] 1 फैलाव 2 धनुष का तनाव 3 आवरण, चंदोवा ।

अवतारः [अव + तृ + घञ्] 1 उतार, उदय आरंभ —वसन्तावतारसमये—श० १, 2 रूप, प्रकट होना —अस्त्यादिभिरवतारैरवतारवतारस्वतारमुपाम्—शक ... 3 देवता का भूमि पर पदार्पण अवतार लेना —का... संप्रति मम पुष्पावतार उत्तर० ५।३३ धर्मार्थ ... ...ामवतार इवात्ममान् - रघु० १०।८४, 4 विष्णु का अवतार— विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे—भर्तृ० ३।९५, (विष्णु के दस अवतार निम्नलिखित श्लोक में बताये गये हैं – वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते, दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते, म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः, रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश ॥ गीत०) 5. नया दर्शन, विकास, जन्म- नवावतारं कमलादि... —रघु० ३।३६, ५।२४, 6 तीर्थ स्थान 7 (जहाज से) उतरने का स्थान 8 अनुवाद 9. जोहड़ तालाब 10 प्रस्तावना भूमिका ।

अवतारक (वि०) (स्त्री० रिका) [अव + तृ + णिच् + ण्वुल्] 1 किसी को जन्म देने वाला 2 अवतार लेने वाला ।

अवतारणम् [अव + तृ + णिच् ल्युट्] 1 उतारना 2 अनुवाद 3 किसी भूत प्रेत का आवेश 4 पूजा आराधना 5 भूमिका या प्रस्तावना ।

अवतीर्ण (भू० क० कृ०) [अव + तृ + क्त] 1 नीचे आया हुआ उतरा हुआ 2 स्नात 3 पार गया हुआ पार किया हुआ ... ...गाहीसि ... मा० ३ ।

अवतोका अवगलित तोकम् अस्याः प्रा० ब०] स्त्री या गाय जिसका किसी दुर्घटना के कारण गर्भ गिर गया हो ।

अवदान (वि०) [अव + दो + क्त] जो विभाजन करता है ... पृथक् करता है ... पांच भागों में बांटा गया ।

अवदंशः [अव + दंश ...] ऐसा चटपटा भोजन जिसके खाने से प्यास लगे उत्तेजक ।

अवदाघः अव + दह् ... 1 गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु ।

अवदात (वि० [अव + दै + क्त] 1 सुन्दर अवदातकान्ति दश० १७ 2 स्वच्छ पवित्र विमल ...—सर्वविद्यावदातचेताः का० ३६ 3 उज्ज्वल ... ... कु... ... 4 पीला ... 5 ... ।

अवदानम् अव + दो + ल्युट् 1 पवित्र या मान्यता प्राप्त कार्य 2 ... कार्य 3 ... कार्य ... कु० ७।४८ प्रागदनवदानतामिव ...—रघु० ११।२१ 4 ... वस्तु 5 काट कर टुकड़े - करना ।

अवदारणम् [अव दृ + णिच् + ल्युट्] 1 फाड़ना तोड़ना ... काट कर टुकड़े - करना 2 कुदाल खुर्पा ।

अवदाहः [अव + दह् + घञ्] गर्मी जलन ।

अवदीर्ण (भू० क० कृ०) [अव + दृ + क्त] 1 फटा हुआ टूटा हुआ 2 पिघलाया हुआ ... 3 घबड़ाया हुआ ।

अवदोहः [अव दुह् घञ्] 1 दुहना, 2 दूध ।

अवद्य (वि०) [न० त०] ... निंद्य, प्रशंसा के अयोग्य न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् मालवि०

१।२, 2 सदोष, दोषयुक्त निन्दार्ह अवविकर, अप्रिय उदवहदनवद्यां तामवद्यादपेत रघु० ७।७० 'अनवद्य' भी 3 वर्षा के अयोग्य, 4 नीच अधम —द्यम् 1 अपराध दोष खोट 2 पाप दुर्व्यसन 3 लाञ्छन निन्दा झिड़की उदवहदनवद्यां तामवद्यादपेत—रघु० ७।७० ।

अवद्योतनम् [अव + द्युत् + ल्युट्] प्रकाश ।

अवधानम् [अव + धा + ल्युट्] 1 ध्यान अवधानपरे चकार सा प्रलयान्तोन्मिषिते विलोचने कु० ४।२ एकाग्रता सावधानी दत्तावधान भूयादि सब ध्यानपूर्वक सुनता है 2 ध्यान सतर्कता चौकसी अवधानात् सतर्कतापूर्वक ध्यानपूर्वक भृणुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विक्रम० १।२ (१।२।५०) ।

अवधार [अव + धृ + णिच् + घञ्] सही निश्चय, सीमा

अवधारक (वि०) [अव + धृ + णिच् + ण्वुल्] निश्चय करने वाला ।

अवधारण (वि०) [अव + धृ + णिच् + ल्युट्] प्रतिबन्धक सीमित करने वाला —णम् 1 निश्चय निर्धारण 2 पुष्टीकरण बल 3 सीमा नियत करना (शब्दों के अर्थों को) यावदवधारण तावदवधारणम् मात्र शब्द से अवधारण अमर० 4 किसी एक नियत सीमा तक या सबसे पृथक करके प्रतिबंध लगाना ।

अवधि [अव + धा + कि] 1 ध्यान देना 2 सीमा मर्यादा अन्तसमकारी या एकान्तिक (स्थान और समय की दृष्टि से) गिरा समाप्ति स्मरशापाव घिरा सरस्वती—कु० ४।४३ उपसंहार प्राय समास के अन्त में अर्थ होता है के साथ सम्पन्न होते हुए यथासम्भव तक तब से जीवितावधि प्रवा: उत्तर० ? 3 निर्धारित समय रघु० १६।५२ दशान् मासान् बिभ्रतीदमवध्यं रम्यावधवा मेघ० ० यदवधि तदवधि जबसे—तबसे जबतक तबतक 4 पूर्वनियुक्ति 5 नियुक्ति 6 प्रभाग जिला विभाग 7 विवर गर्त ।

अवधीर (चु० पर०) अवहेलना करना अनादर करना नीचा दिखाना अवधीरितसुहृद्वचनस्य —हि० १ घृणा करना तिरस्कार करना ।

अवधीरणम् [अव + धीर + ल्युट्] अनादर पूर्वक बर्ताव करना ।

अवधीरणा [अव + धीर + ल्युट् + टाप्] अनादर तिरस्कार कृतवत्यसि नावधीरणामपराद्धेऽपि यदा चिरं मयि—रघु० ८।४८ मालवि० ३।१९ अप सनाथे निमृष्ठंति साकूतमोत्सुकी विजृम्भे भीरु मतोऽवधीरणाम् [illegible] ३।१४ ।

अवधूत (भू० क० कृ०) [अव + धू + क्त] 1 हिलाया हुआ लहराया हुआ 2 त्यागा हुआ अस्वीकृत, घृणित रघु० ? ।१८, ? अपमानित तिरस्कृत —त: वह संन्यासी जिसने सांसारिक बन्धनों तथा विषय-वासनाओं को त्याग दिया है —यो विलङ्घ्याश्रमान् वर्णानात्मन्येव स्थितः पुमान् अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूतः स उच्यते । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

अवधूननम् [अव + धू + ल्युट्] 1 हिलाना लहराना 2 क्षोभ कम्पन 3 [illegible] ।

अवध्य (वि०) [न + वध् + यत्] मारने के अयोग्य पवित्र [illegible] [illegible] ।

अवध्वंस [अव + ध्वंस् + घञ्] 1 परित्याग उन्मोचन 2 चूरा [illegible] 3 [illegible] निन्दा लाञ्छन 4 गिर कर अलग होना [illegible] [illegible] ।

अवनम् [अव + ल्युट्] 1 रक्षा प्रतिरक्षा—तन्त्र० १।८ 2 सन्तोषकर प्रसन्नतादायक 3 कामना इच्छा 4 हर्ष सन्तोष ।

अवनत (भू० क० कृ०) [अव + नम् + क्त] 1 नीचे झुका हुआ निम्न विनत [illegible] 2 डूबता हुआ झुकता हुआ नीचे गिरता हुआ ।

अवनति (स्त्री०) [अव + नम् + क्तिन्] 1 झुकना मस्तक नवाना झुकाव अवनतिमवनम् मुद्रा० १।२ शि० ९। 2 पतिपक्ष व छिपना डूबना 3 प्रणाम दण्डवत् 4 झुकाव; जैसे [illegible] —[illegible] का० (यहाँ [illegible] का अर्थ [illegible] भी होता है) 5 शालीनता, विनम्रता ।

अवनद्ध (भू० क० कृ०) [अव + नह् + क्त] 1 निर्मित, बना हुआ 2 स्थिर बैठाया हुआ बांधा हुआ, जुड़ा हुआ एक जगह रक्खा हुआ —द्धम् ढोल

अवनम्र (वि०) [प्रा० स०] अवनत झुका हुआ—पर्याप्त पुष्पस्तबकावनम्रा कु० ३।५४ पाद पैरों पर गिरा हुआ ।

अवनय (ना) य [अव + नी + अच् घञ् वा] 1 नीचे ले जाना 2 नीचे उतारना ।

अवनाट (वि०) [नते नासिकायाः, अव + नाटच् टे० अवटीट] चपटी नाक वाला ।

अवनाम [अव + नम् + घञ्] 1 झुकना, नमस्कार करना पैरों पर गिरना 2 नाम झुकाना ।

अवनाह [अव + नह् + घञ्] बांधना पेटी लगाना कसना ।

अवनि —नी (स्त्री०) [अव + अनि पक्षे ङीप्] 1 पृथ्वी 2 आकृति 3 नदी । सम० ईश, ईश्वर, नाथ, पति, पाल भूस्वामी राजा सोऽवनिपति पतीना तैलक्षकाशो धनुषि रघु० १०।८६ ११।९३,

—**चर** (वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला, आवारागर्द घुमक्कड़ -**ध्र** पहाड़ -**तलम्** पृथ्वीतल -**मण्डलम्** भूमंडल,—**रुह**, वृक्ष।

अवनेजनम् [अव + निज् + ल्युट्] 1 प्रक्षालन, मार्जन न कुर्याद्गुरुपुत्रस्य पादयोश्चावनेजनम् मनु० २।२०९ 2 धोने के लिए पानी, पैर धोना 3 श्राद्ध में पिंडदान की वेदी पर बिछाए हुए कुशों पर जल छिड़कना।

अवन्ति—**ती** (स्त्री०) [अव + झिच्, वा० ङीप्] 1 एक नगर का नाम, वर्तमान उज्जयिनी [illegible] सात पवित्र नगरों में से एक [illegible] मरने से शाश्वत सुख मिलता है [illegible] माया [illegible] काञ्च्यवन्तिका [illegible] सप्तैता मोक्षदायिकाः। [illegible] मे अत्यन्त [illegible] [illegible] नाम [illegible] आजकल मालवा [illegible] इसकी राजधानी [illegible] उज्जयिनी नगरी है [illegible] महाकाल का एक मन्दिर था [illegible] रघु० ६।३२ असौ महाकालनिकेतनस्य [illegible] चन्द्रमौलेः [illegible] प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान् मेघ० ३० [illegible] नगरी [illegible] ५४। सम०-**पुरम्** [illegible] नगर उज्जयिनी।

अवन्ध्य (वि०) [न० त०] [illegible]

अवपतनम् [अव + पत् + ल्युट्] [illegible]

अवपाक (वि०) [अवकृष्टः पाको [illegible] ब० स०] बुरी तरह पकाया हुआ [illegible]

अवपात [अव + पत् + घञ्] 1 नीचे गिरना [illegible] [illegible] वपातम् [illegible] चापलमौ 2 [illegible] विशेष [illegible] [illegible] दिना [illegible] पकद्विपम् रघु० १६।७८।

अवपातनम् [अव + पत् + णिच् + ल्युट्] गिराना, नीचे फेंकना।

अवपात्रित (वि०) [अपपात्र (ना० धा०) [illegible]] जातिबहिष्कृत, ऐसा व्यक्ति जिसको बिरादरी के लोग अपने पात्र में भोजन करने के लिए अनुमति न देते हों।

अवपीड [अव + पीड् + णिच् + घञ्] 1 नीचे दबाना, दबाव 2 एक प्रकार की औषधि जिसके सूंघने से छींकें आती हैं, नस्य।

अवपीडनम् [अव + पीड् + णिच् + ल्युट्] 1 दबाने की क्रिया 2 नस्य, [illegible] आघात।

अवबोध [अव + बुध् + घञ्] 1 जागना, जागरूक होना (विप० स्वप्न) यौ तु स्वप्नावबोधौ तौ भूतानां प्रलयोदयौ कु० २।८ भग० ६।१७, 2. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण [illegible] रघु० ७।४१ ५।६४, प्रतिकूलेषु तैक्ष्ण्यस्याव-बोधः [illegible] मा० द०, 3 विवेचन, निर्णय 4 शिक्षण, समूचन।

अवबोधक (वि०) [अव + बुध् + ण्वुल्] सचेतक, दर्शाने वाला,—**क**: 1 सूर्य 2 भाट 3 अध्यापक।

अवबोधनम् [अव + बुध + ल्युट्] ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण।

अवभङ्ग [अव + भञ्ज + घञ्] नीचा दिखाना, जीतना [illegible]।

अवभास [अव + भास् + घञ्] 1 चमक दमक, कान्ति, [illegible] 2 ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण 3 प्रकट होना, प्रकाशन, [illegible] 4 स्थान, पहुंच [illegible] 5 मिथ्याज्ञान।

अवभासक (वि०) [अव + भास् + ण्वुल्] प्रकाशक, [illegible] परब्रह्म।

अवभुग्न (वि०) [अव + भुज् + क्त] सिकुड़ा हुआ, झुका हुआ, टेढ़ा किया हुआ।

अवभृथ [अव + भृ + क्थन्] 1 मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर शुद्धि के लिए किया जाने वाला स्नान -**मृथ** [illegible] [illegible] रघु० १।८४, [illegible] 2 मार्जन के लिए जल 3 अतिरिक्त यज्ञ जो पूर्वकृत मुख्य यज्ञ की त्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाता है सामान्य यज्ञानुष्ठान स्नातवत्यवभृथे ततस्त्वयि शि० १४।१०। सम० स्नानम् यज्ञानुष्ठान की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान।

अवभ्र [illegible] उठाकर ले जाना।

अवभ्रट (वि०) [नासिकायाः [illegible] अव + भ्रटच्] चपटी नाक वाला।

अवम (वि०) [अव + अमच्] 1 पापपूर्ण 2 घृणित, कमीना 3 [illegible] घटिया (विप० परम) [illegible] रघु० २।१६, दे० 'अवमम' 4. अगला, घनिष्ट 5 पिछला, सबसे छोटा।

अवमत (भू० क० कृ०) [अव + मन् + क्त] घृणित, कुत्सित। सम० —**अङ्कुश**: अंकुश को न मानने वाला हाथी, मदमत्त [illegible] —शि० १२।१६।

अवमति (स्त्री०) [अव + मन् + क्तिन्] 1 अवहेलना, अनादर 2 अरुचि, नापसन्दगी।

अवमर्द [अव + मृद् + घञ्] 1 कुचलना, 2 बर्बाद करना, अत्याचार करना।

अवमर्श. [अव + मृश् + घञ्] स्पर्श, संपर्क।

अवमर्शः [अव + मृश् + घञ्] 1. विचारविमर्श, आलोचना, 2 नाटक की पाँच मुख्य सन्धियों में से एक—यत्र मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः, शापाद्यैः सान्तरायश्च सोऽवमर्श इति स्मृतः। सा० द० ३३६, 'विमर्श' भी इसी को कहते हैं, 3 आक्रमण करना।

अवमर्षणम् [अव + मृष् + ल्युट्] 1 असहनशीलता, असहिष्णुता 2 मिटा देना, मिटा डालना, स्मृतिपथ से निर्वासन।

अवमानः [अव + मन् + घञ्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना।

अवमाननम्-ना [अव + मन् + णिच् + ल्युट्, युच् वा] अनादर, तिरस्कार।

अवमानिन् [अव + मन् + णिच् + णिनि] तिरस्कार करने वाला, घृणा करने वाला, अपमान करने वाला—भिक्षामप्यवमानेनावमानिनम् श० ६, अपि आत्मगुणावमानिनि — श० ३।

अवमूर्धन् (वि०) [अवनतो मूर्धा यस्य] सिर झुकाये हुए, सम०—**शय** (वि०) सिर को नीचे लटका कर लेटा हुआ, जैसे कि असुर (विप० देव) — अवमूर्धशयाः असुराः।

अवमोचनम् [अव + मुच् + ल्युट्] स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, ढीला करना।

अवयवः [अव + यु + अच्] 1 (शरीर का) अंग, सदस्य—वयवैःस्ता नाम रघु० १९।१३, अमरु० ६०, ८६, मनमथ—कविमिन्धिकर्मिः अवयवैः तदन्यविग्रहवती सद्भिः। 2 भाग, अंश 3 तर्कसंगत युक्ति या अनुमान का घटक या अंग (यह पाँच हैं—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन) 4 शरीर 5 घटक सामग्री या उपादान (जैसे किसी सम्मिश्रण के)। सम०—**अर्थः** शब्द के संघटक अंशों का अर्थ।

अवयवशः (अव्य०) [अवयव + शस्] अंश अंश करके अलग 2 टुकड़े टुकड़े करके।

अवयविन् (वि०) [अवयव + इनि] अवयव, अंश या अंगों से बना हुआ, (पु०—वी) 1 पूर्ण 2 अनुमानवाक्य या कोई तर्कसंगत युक्ति।

अवर (वि०) [न वरः इति अवरः, न० त० वृ + अप् वा०] 1 (क) आयु में छोटा—समोनावर मासावर—सिद्धा० (ख) बाद का, परवर्ती, पिछला (समय और स्थान की दृष्टि से)—परावर कौतामख्या, परावरमाघ्रातवत्या सिद्धा० 2 अनन्तर उत्तरवर्ती 3 नीचे, अपेक्षाकृत नीचा, घटिया, कम से नीच, महत्त्वहीन सबसे बुरा, निम्नतम (विप० उत्तम) अवरयात्मवर स्मृतम्—काव्य० १, दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय भग० २।४९, श्रद्धधानः शुभां विद्यामाददीतावरादपि मनु० २।२३८ 5 अंतिम (विप० प्रथम) सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम्—कु० ७।४४, 6 न्यूनातिन्यून, (प्राय. समास के उत्तरपद के रूप में अंकों के साथ)—अवरे सार्धमिर्मोन्य—मनु० ८।६०, त्र्यवरा परिषद् ज्ञेया—१२।११२, याज्ञ० २।६९ 7 पश्चिमी, **रम्** हाथी की पिछली टाँग (—रा भी)। सम०—**अर्धः** 1 थोड़े से थोड़ा भाग, न्यूनातिन्यून 2 उत्तरार्ध 3 शरीर का पिछला भाग, **अवर** (वि०) नीचतम सबसे घटिया—न हि प्रकृष्टान् प्रेष्यान् प्रेषयन्त्यवरान् गमा०, **उक्त** (वि०) अन्त में कहा हुआ, **ज** (वि०) अपेक्षाकृत छोटा, कनीयान् (—जः) छोटा भाई—विदर्भराजावरजा रघु० ६।५८, ८४, १२।३२, **वर्ण** (वि०) नीच जाति का (—र्णः) 1 शूद्र 2 अन्तिम या चौथा वर्ण, वर्णजः शूद्र—**शैलः** सूर्य,—**शैलः** पश्चिमी पहाड़ (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ समझा जाता है)।

अवरतः (अव्य०) [अवर + तसिल्] पीछे, बाद में, पिछला, परवर्ती।

अवरतिः (स्त्री०) [अव + रम् + क्तिन्] 1 ठहरना, रुकना 2 विराम, विश्राम, आराम।

अवरीण (वि०) [अवर + ख] 1 पदावनत, चोट मिला हुआ 2 घृणित।

अवरुग्ण (वि०) [अव + रुज् + क्त] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ 2 रोगी।

अवरुद्धि (स्त्री०) [अव + रुध् + क्तिन्] 1 रुकावट, प्रतिबन्ध 2 घेरा 3 प्राप्ति।

अवरूप (वि०) [प्रा० स०] कुरूप, विकलांग।

अवरोचक [अव + रुच् + ण्वुल्] भूख न लगना।

अवरोध [अव + रुध् + घञ्] 1 बाधा, रुकावट 2 प्रतिबन्ध—मेघ० ११, 3 अन्तःपुर, —अवरोधः—कु०—रघु० ५।३, ३।११ 4 राजा की पत्नियाँ (समस्त रूप में) (प्राय ब० व०)—अवरोधे महति रघु० १।३२, ४।६८, ६९, ६।४८, १९।५८, 5 घेरा 6 किलाबंदी, नाकेबंदी 7 8 9 चौकीदार 10 ढकना।

अवरोधक (वि०) [अव + रुध् + ण्वुल्] 1 बाधा डालने वाला 2 घेरा डालने वाला, **कः** पहरेदार, रक्षक आदि।

अवरोधनम् [अव + रुध् + ल्युट्] 1 किलाबंदी, नाकेबंदी 2 बाधा, रुकावट, अड़चन 4 राजा का अन्तःपुर—गाधावरोधनवधूरवनावयन्त—शि० ५।१८।

अवरोधिक (वि०) [अवरोध + ठन्] 1. बाधाजनक, अड़चन डालने वाला 2 घेरा डालने वाला। **कः**

अंतःपुर का पहरेदार, —का अन्तःपुर की पहरेदार स्त्री रघुमुपस्थिता [illegible] शि० ९।७० ।

अवरोधिन् (वि०) [अवरोध + इनि] 1 रुकावट डालने वाला, बाधा डालने वाला, 2 घेरा डालने वाला ।

अवरोपणम् [अव + रुह् + णिच् + ल्युट्, पुकागम] 1 उन्मूलन 2 नीचे उतारना 3 ले लेना, वंचित करना, घटाना ।

अवरोहः [अव + रुह् + घञ्] 1 उतार 2 नीचे से चोटी तक वृक्ष के ऊपर लिपटने वाली लता 3 [illegible] 4 लटकती हुई शाखा (जैसे [illegible]) [illegible] कीर्णं वटभासाद्य तस्थुः —रामा० 5 (संगीत में) स्वरों का ऊपर से नीचे आना ।

अवरोहणम् [अव + रुह् + ल्युट्] 1 उतरना, नीचे आना 2. चढ़ना ।

अवर्ण (वि०) [न० ब०] 1 रंगहीन 2 बुरा रंग वाला —र्णः 1 [illegible] [illegible] न वक्तव्यमवर्णमीर्षा —रघु० १४।५७, 2 [illegible] निन्दा —न चावदद्भर्तुरवर्णमार्या [illegible] कहा ।

अवलक्ष (वि०) [अव + लक्ष् [illegible]] [illegible] लिया जाता है । [illegible] [illegible] वर्ण ।

अवलग्न (वि०) [अव + लग् + क्त] चिपका हुआ [illegible] हुआ, सटा हुआ, [illegible] कमर ।

अवलम्बः [अव + लम्ब् + घञ्] 1 नीचे लटकना 2 सहारे लटकना सहारा (आलं० भी) [illegible] लम्बा —मेघ० ७०, कुर्यादवलम्बं [illegible] मेघ० [illegible] ११६७ 3 स्तंभ, आड़, आश्रय [illegible] —मावलम्बनमना —रघु० ११।७०, दूसरों के सहारे रहने वाली, —मन्दीभविनष्टतरङ्गलब्धावलम्ब [illegible] नैव दन्तहस्तावलम्बे —रत्न० ४।८ 4 बीमारों या छड़ी जो सहारे के लिए रक्खी जाती है ।

अवलम्बनम् [अव + लम्ब् + ल्युट्] 1 टेक, सहारा, आश्रय अवलम्बनाय [illegible] शि० ९।६, प्रयमावलम्बनमनस्विनिकान्ततरं —शि० [illegible] मम पृष्ठे [illegible] [illegible] 2. सहायता, मदद ।

अवलिप्त (भू० क० कृ०) [अव + लिप् + क्त] 1 घमंडी उद्धत, अभिमानी 2 लिपा पुता, सना हुआ ।

अवलीढ (भू० क० कृ०) [अव + लिह् + क्त] 1 खाया हुआ, चबाया हुआ —दर्भैरर्धावलीढैः —श० १।७, 2 चाटा हुआ, [illegible] करके पीया हुआ [illegible] (आलं० भी) [illegible] [illegible] जवानी में व्याप्त, [illegible] रत्नैरीर्षायमाणे —वेणी० ३।५, चारों ओर से घिरा हुआ 3. मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

अवलीला [अवगता लीला —प्रा० स०] 1. क्रीडा, खेल, प्रमाद 2 तिरस्कार ।

अवलुञ्चनम् [अव + लुञ्च् + ल्युट्] 1 काटना, फाड़ना उखाड़ना, [illegible] 2 उन्मूलन ।

अवलुण्ठनम् [अव + लुण्ठ् + ल्युट्] 1 भूमि पर लोटना या लुढ़कना 2 लूटना ।

अवलेखः [अव + लिख् + घञ्] 1 [illegible] [illegible] छीलना 2 [illegible] काट छांट ।

अवलेखा [अव + लिख् + अ + टाप्] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] ।

अवलेप [अव + लिप् + घञ्] 1 अहंकार, घमंड [illegible] [illegible] का अर्थ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible]

अवलेपनम् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 घमंड

अवलेह [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अवल्गिका [illegible]

अवलोक [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] ।

अवलोकनम् [अव + लोक् + ल्युट्] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] करना [illegible] [illegible] [illegible] 3 दृष्टि और 4 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 5 [illegible] करना [illegible] ।

अवलोकित (भू० क० कृ०) [अव + लोक् + क्त] देखा हुआ —तम् दृष्टि डालना ।

अववरकः [अव + वृ + अप् + क, स्वार्थे वुन्] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] ।

अववाद [अव + वद् + घञ्] 1 निन्दा 2. विश्वास भरोसा 3 [illegible], अनादर 4 सहारा, आश्रय 5 [illegible] 6 आदेश [illegible]

अवशप्तः [अव + शप् + क्त] शिकारी, आखेट ।

अवश (वि) [न० ब०] 1 स्वतन्त्र मुक्त 2 जो वश में न हो [illegible] अवशानीन्द्रियाणि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अवशा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इन्द्रियाणि [illegible] [illegible] कु० ६।९५ [illegible] पराधीन, असहाय, शक्तिहीन बलात् बाधित भग० ३।५, कथमवशो ह्यशरीरिण [illegible] —मृच्छ०

१०।१३। समस० **इन्द्रियचित्त** (वि०) जिसका मन और इन्द्रियाँ किसी दूसरे के अधीन न हों।

अवशङ्गम: [नि० त०] जो दूसरे की इच्छा के अधीन न हो।

अवशातनम् [प्रा० स०] 1 नष्ट करना 2 काटना, कत्ल गिराना 3 मुर्झाना, सूख जाना।

अवशेष [अव + शिष् + घञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी [illegible]

[illegible]

जकड़ा हुआ 3 निकटवर्ती समस्त 4 सम्पन्न, झुका हुआ 5 बाधा हुआ बंधा हुआ।

अवष्टम्भ: [illegible]

[illegible]

अवसर्पः [अव+सृप्+घञ्] भेदिया, गुप्तचर।

अवसर्पणम् [अव+सृप्+ल्युट्] नीचे उतरना, नीचे जाना।

अवसादः [अव+सद्+घञ्] 1 उदासी, मूर्च्छा, सुस्ती 2 बर्बादी, विनाश — विपदेति तावदवसादकरी — कि० १८।२३, ६।३१ 3 अन्त, समाप्ति 4 स्फूर्ति का अभाव, थकान, थकावट 5 (विधि में) अभियोग का खराब होना, पराजय, हार।

अवसादक (वि०) [अव+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1 उदास करने वाला, मलिन करने वाला, असफल बनाने वाला 2 खिन्न या क्लान्त करने वाला, थकान पहुँचाने वाला।

अवसादनम् [अव+सद्+णिच्+ल्युट्] 1 दमन, नाश 2 शोधन 3 समाप्त कर देना।

अवसानम् [अव+सो+ल्युट्] 1 ठहरना 2 उपसंहार, समाप्ति, अन्त — [illegible] पुनरेव [illegible] [illegible] [illegible] 3 मृत्यु — [illegible] 4 सीमा, मर्यादा 5 (व्या० में) किसी शब्द या अवधि का अन्तिम अंश (विप० आदि) 6 विराम 7 स्थान, विश्रामस्थल, आवास स्थान।

अवसायः [अव+सो+घञ्] 1 उपसंहार, अन्त, समाप्ति 2 अवशिष्ट 3 पूर्ति 4 संकल्प, दृढ़निश्चय, निर्णय।

अवसित (भू० क० कृ०) [अव+सो+क्त] 1 समाप्त, अन्त किया गया, पूरा किया गया — प्रणयवचोऽवसिते क्रियाविधौ — [illegible] अवसितमण्डनासौ — [illegible] उस पक्ष का काम समाप्त हो चुका है — वचस्यवसिते तस्मिन्ससर्ज गिरमात्मभूः — कु० २।५३ 2 ज्ञात, अवगत 3 प्रस्तावित, निर्धारित, निश्चय किया गया 4 जमा किया हुआ, एकत्र किया हुआ (जैसा कि अन्न) 5 बंधा हुआ, नत्थी किया हुआ, बांधा हुआ।

अवसेकः [अव+सिच्+घञ्] 1 छिड़काव, भिगोना — देशं को नु जलावसेकशिथिलं — मृच्छ० ३।१२।

अवसेचनम् [अव+सिच्+ल्युट्] 1 छिड़कना 2 छिड़कने के लिए पानी — पाद्य — मनु० ४।१५१ 3 रुधिर निकलना।

अवस्कन्द—न्दनम् [अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1 आक्रमण करना, आक्रमण, हमला 2 उतार 3 शिविर।

अवस्कन्दिन् (वि०) [अव+स्कन्द्+णिनि] आक्रमणकारी, हमलावर, बलात्कार करने वाला।

अवस्करः [अवकीर्यते इति-अवस्करः कृ+अप्, सुट्] 1 विष्ठा, मल 2 गुह्यदेश (योनि, लिंग, गुदा आदि) 3 गर्द, बुहारन।

अवस्तरणम् [अव+स्तृ+ल्युट्] बिछौना, बिछावन।

अवस्तात् (अव्य०) [अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरस्मिन्वर्थे अवर+अस्ताति अवादेशः] 1 नीचे, नीचे से, नीचे की ओर 2 अधस्तात्, नीचे।

अवस्तारः [अव+स्तृ+घञ्] 1 पर्दा 2 चादर, कनात 3 चटाई।

अवस्तु (नपुं०) [न० त०] 1 निकम्मी वस्तु, तुच्छ बात — अवस्तुनिर्बन्धपरे कथं नु ते — कु० ५।६६ 2 अवास्तविकता, सारहीनता — वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽज्ञानम्।

अवस्था [अव+स्था+अङ्] 1 हालत, दशा, स्थिति — [illegible] महत्यवस्था वर्तते — [illegible] प्रथम दशा [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] वयोवस्था [illegible] 4 [illegible] 5 दर्जा, अनुपात 6 स्थिरता, दृढ़ता, जैसा कि 'अनवस्थ' में है [illegible] [illegible] अवस्था में [illegible] होना [illegible] — **चतुष्टयम्** मनुष्यजीवन की चार [illegible] (बाल्य, कौमार, यौवन और बार्धक्य) — **त्रयम्** तीन अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति) — **द्वयम्** जीवन की दो [illegible] सुख और दुःख।

अवस्थानम् [अव+स्था+ल्युट्] 1 खड़ा होना, रहना, बसना 2 स्थिति, हालत 2 आवासस्थान, घर, ठहरने का स्थान 3 ठहरने का समय।

अवस्थायिन् (वि०) [अव+स्था+णिनि] ठहरने वाला, रहने वाला।

अवस्थित (भू० क० कृ०) [अव+स्था+क्त] 1 रहा हुआ, ठहरा हुआ — [illegible] — का० १५८ इन परिस्थितियों में 2 उद्देश्य में स्थिर, दृढ़ 3 टिका हुआ, सहारा लिए हुए।

अवस्थितिः (स्त्री०) [अव+स्था+क्तिन्] 1 निवास करना, बसना 2 निवासस्थान, आवास।

अवस्यन्दनम् [अव+स्यन्द्+ल्युट्] बूंद २ टपकना, रिसना।

अवस्रंसनम् [अव+स्रंस्+ल्युट्] नीचे टपकना, नीचे गिरना, अधःपात।

अवहतिः (स्त्री०) [अव+हन्+क्तिन्] पीटना, कूटना।

अवहननम् [अव+हन्+ल्युट्] 1 चावल कूटना, पीटना — अवहननायोलूखलम् — महा० 2 फेफड़े — अपानमवहननम् — याज्ञ० ३।९४ (अवहननम् फुप्फुस — मिता०)।

अवहरणम् [अव+हृ+ल्युट्] 1 ले जाना, हटाना 2 फेंक देना 3 चुराना, लूटना 4 सुपुर्दगी 5 युद्ध का अस्थायी स्थगन, संधि।

अवहस्त [अवरं हस्तस्य इति ष० त०] हथेली की पीठ।

अवहृति: [प्रा० स०] लूट जाना, घाटा।

अवहार: [अव+हृ+घञ्] 1 चोर, 2. शार्क नाम की मछली 3 अस्थायी युद्धविराम, सन्धि, 4 बुलावा, आमन्त्रण 5 धर्मत्याग 6 मुसुर्दगी, वापस लेना।

अवहारक: [अव+हृ+ण्वुल्] शार्क मछली।

अवहार्य (सं० कृ०) [अव+हृ+ण्यत्] 1 ले जाने के योग्य, हटाने के योग्य 2 दण्ड के योग्य सजा दिये जाने के योग्य, 3 पुन प्राप्त करने योग्य फिर माल लेने के योग्य।

अवहालिका [अव+हल्+ण्वुल् टाप् इत्व] दीवार।

अवहास [अव+हस्+घञ्] 1 मुस्कराना मुस्कान 2 दिल्लगी, मजाक, उपहास—यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि भग० ११।

अव (व) हित्था-त्थम् [न बहि तिष्ठति इति स्था—क पृषो०] 1 पाखंड, 2 आन्तरिक भावगोपन ३३ व्यभिचारिभावों में से एक भयगौरवलज्जादेर्हर्षाद्याकारगुप्तिरवहित्था सा० द० रस० के अनुसार क्रीडा किन्हीं निमित्तन हर्षाद्यनुभावानां गोपनाय अभिनयो भाव विशेषोऽवहित्थम्—उदा० कु० ६।८४ भामि० २।८०।

अवहेल —ला [अव+हेल्+क स्त्रियां टाप्] अनादर तिरस्कार अवहेलना अवहेला कुटज मधुकर मा गा भामि० १।६।

अवहेलनम् ना [अव+हेल्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] अवज्ञा।

अवाक् (अव्य०) [अव+अञ्च्+क्विन्] 1 नीचे की ओर 2 दक्षिणी, दक्षिण की ओर। सम० —मानम् अनादर भव (वि०) दक्षिणी मुख (वि०) (स्त्री खी) 1 नीचे की ओर देखने वाला अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टि रघु० २।६०, १५।७८, 2 सिर के बल शिरस् (वि०) नीचे को सिर लटकाये हुए स मूढो नरकं याति कालसूत्रमवाक्शिराः मनु० ३।२४९ ८।९४।

अवाक्ष (वि०) [अवनतान्यक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य ब० स०] अभिभावक, संरक्षक।

अवाग्र (वि०) [अवनतमग्रमस्य ब० स०] नीचे को सिर किये हुए, नीचे को झुके हुए।

अवाच् (वि०) [न० ब०] वाणीरहित, मूक (नपुं०) ब्रह्म।

अवाच् } (वि०) [अव+अञ्च्+क्विन्] 1. नीचे की
अवाञ्च् } ओर झुका हुआ मुड़ा हुआ—कुर्वन्नाभ्यवनतिमरेण नगानवाच शि० ६।७९ 2 नीचे की ओर स्थित, अपेक्षाकृत नीचा 3 सिर के बल 4 दक्षिणी (पुं० नपुं०) ब्रह्म, ची 1 दक्षिणदिशा, 2 निम्नप्रदेश।

अवाचीन (वि०) [अवाच्+ख] 1 नीचे की ओर, सिर के बल 2 दक्षिणी 3 उतरा हुआ।

अवाच्य (वि०) [न० त०] 1 जिसे संबोधित करना उचित न हो—अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना यवीयानपि यो भवेत् मनु० २।१२८, 2 बोले जाने के अयोग्य, निकृष्ट दुष्ट अवाच्य वदतो जिह्वा कथं न पतिता तव रामा० मग० २।३६ 3 अस्पष्ट उक्ति, शब्दों द्वारा अकथनीय। सम० देश: बोलने के अयोग्य स्थान योनि।

अवाञ्चित (वि०) [अव+अञ्च्+क्त] झुका हुआ, नीचा।

अवान [अव+अन्+अच्] सांस लेना श्वास अंदर की ओर ले जाना।

अवान्तर (वि०) [प्रा० स०] 1 बीच में स्थित या पड़ा हुआ — दे० समास 2 अन्तर्गत सम्मिलित 3 अप्रधान, गौण 4 घनिष्ट संबंध से रहित असंबद्ध अतिरिक्त। सम० दिश् दिशा मध्यवर्ती दिशा (जैसा कि आग्नेयी ऐशानी नैर्ऋती और वायवी), देश दो स्थानों का मध्यवर्ती स्थान अन्त प्रदेश।

अवाप्ति (स्त्री) [अव+आप्+क्तिन्] प्राप्त करना, ग्रहण करना तप क्लिष्ट तदवाप्तिसाधनम् कु० ५।६४।

अवाप्य (सं० कृ०) [अव+आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य।

अवार रम् [न वार्यते जलेन वृ+कर्मणि घञ्] 1 नदी का निकटस्थ किनारा 2 इस ओर। सम० पार, समुद्र, पारीण (वि०) 1 समुद्र से संबंध रखने वाला 2 समुद्र को पार करने वाला।

अवारीण [अवार+ख] नदी का पार करने वाला।

अवावट: प्रथम पति को छोड़कर उसी जाति के किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ किसी स्त्री का पुत्र — द्वितीयेन तु य: पित्रा सवर्णायां प्रजायते, अवावट इति ख्यात शूद्रधर्मा स जातित ॥

अवावन् (पुं०) [ओण् (वह) +वनिप्] चोर, चुराकर ले जाने वाला।

अवासस् (वि०) [न० ब०] वस्त्र न पहने हुए, नंगा (पुं०) बुद्ध।

अवास्तव (वि०) [स्त्री०—वी] 1. अवास्तविक 2 निराधार विवेक शून्य।

अवि: [अव्+इन्] 1 भेड़ [इस अर्थ में स्त्री० भी] ... कार्मुकवल्काविकान् —मनु० ११।१३८, ३।६ 2 सूर्य 3 पहाड़ 4 वायु, हवा 5 ऊनी कंबल 6 खाल 7 दीवार बाड़ा 8. चूहा, वि (स्त्री०) 1 भेड़ 2 रजस्वला स्त्री। सम० कट: रेवड़,—कटोरण: एक प्रकार का उपहार (जो भेड़ों के रूप में दिया जाता है) दुग्धम् दूसम् मरीसम्, सोढम् भेड़ का दूध, पट भेड़ की खाल, ऊनी कपड़ा, —पालः गडरिया स्थलम् भेड़ों का स्थान, एक नगर का

माध—अविस्थलं वृकस्थलं माकन्दी वारणावतम् —महाभा०।

अविकः [अवि+कन्] भेड़ का भेद, —कम् हीरा।

अविका [अवि+कन्+टाप्] भेड़, भेड़ी।

अविकत्थ (वि०) [न० ब०] जो शेखी न मारता हो अभिमान न करता हो।

अविकत्थन (वि०) [न० ब०] जो शेखी न बघारे जो अभिमान न करे विद्वांसोऽविकत्थना भवन्ति —मुद्रा० ३।

अविकल (वि०) [न० त०] 1 अक्षत, समस्त पूरा सम्पूर्ण, सारा—तानीन्द्रियाण्यविकलानि —भर्तृ० २।४०, °ल फलम् मेघ० २४।३४ °शरच्चन्द्रमधुरः मा० २।११, पूर्ण, पूर्णगोलाकार 2 नियमित सुव्यवस्थित सुसंगत, शान्त —कलमविकलतालं गायकैर्बोधहेतोः शि० ११।१०।

अविकल्प (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनीय —ल्पः 1 सन्देह का अभाव 2 इच्छा या विकल्प का अभाव 3 विधि या नियम, —ल्पम् (अव्य०) निस्सन्देह, निस्संकोच।

अविकार (वि०) [न० ब०] निर्विकार —रः अविकृति अपरिवर्तनशीलता।

अविकृतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 परिवर्तन का अभाव 2 (सांख्य द० में) अचेतन सिद्धान्त जिसे प्रकृति कहते हैं और जो इस विश्व का भौतिक कारण है मूलप्रकृतिरविकृतिः —सां० का०।

अविक्रम (वि०) [न० ब०] शक्तिहीन, दुर्बल, —मः कायरता।

अविक्रियः (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनशील निर्विकार, —यम् ब्रह्म।

अविक्षत (वि०) [न० त०] अक्षत पूर्ण समस्त —त्रिरूनं प्रतिदेयं तदस्मिन्नेवाक्षतमविक्षतम् स्मृति।

अविग्रह (वि०) [न० त०] शरीररहित परब्रह्म का विशेषण, —हः (व्या० में) नित्यसमास जिसके विधायक शब्दों के पृथक्-पृथक् अर्थ की अभिव्यक्ति न हो सके।

अविघात (वि०) [न० ब०] बाधारहित बिना रुकावट के, °गति (वि०) अपने मार्ग में निर्बाध।

अविघ्न (वि०) [न० ब०] निर्बाध, —घ्नम् बाधा या रुकावट से मुक्ति, कल्याण (यह शब्द नपुंसक लिंग है यद्यपि 'विघ्न' पुं० है)—अथवाभ्यर्थितमविघ्नमस्तु ते रघु० ११।९१ अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणाम्—१।९१।

अविचार (वि०) [न० ब०] विचारशून्य, विवेकरहित —रः [न० त०] अविवेक, नासमझी।

अविचारित (वि०) [न० त०] बिना विचारा हुआ, जो भली-भांति विचारा न गया हो। सम० —निर्णयः पक्षपात, पक्षपातपूर्ण सम्मति।

अविचारिन् (वि०) [न० त०] 1 उचित अनुचित का विचार न करने वाला, विवेकहीन 2 आशुकारी।

अविजानत् (वि०) [न० त०] अनजान (पुं० —ता) परमेश्वर।

अविडीनम् [न० त०] पक्षियों की सीधी उड़ान।

अवितथ (वि०) [न० त०] 1 जो झूठा न हो, सच्चा —नर्दानिधनेवादीद्य-समय पियेति—शि० ११।३३, अवितथा वितथा मोक्ष मा भि० ६।१९, 2 पूरा किया गया सफल —थम् [न० त०] सचाई अवितथमाह प्रियंवदा श० ३ प्रियंवदा ठीक (सही) कहती है, —थम् (अव्य०) जो मिथ्या न हो सत्यतापूर्वक मनु० ३।१४४।

अवित्यजम् [न० त०] पारा।

अविदूर (वि०) [न० त०] जो दूर न हो निकटस्थ, समीपस्थ —रम् सामीप्य —रम् अव्य० निकट दूर नहीं हुआ —अविदूरेण अविदूरात्, दूरतः —दूरे।

अविद्य (वि०) [न० ब०] अशिक्षित मूर्ख नासमझ —द्या [न० त०] 1 अज्ञान मूर्खता ज्ञान का अभाव 2 आध्यात्मिक अज्ञान 3 भ्रम माया। यह शब्द वेदान्त में बहुधा प्रयुक्त होता है इसी माया के द्वारा आत्मा विश्व को (जिसका वस्तुतः कोई अस्तित्व नहीं) सत्ता में वर्तमान देखता है [illegible]।

अविद्यामय (वि०) [अविद्या+मयट्] जो अज्ञान या भ्रम के द्वारा उत्पन्न हो।

अविधवा [न० त०] जो विधवा न हो विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो —भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि मामम्बुवाहम् मेघ० ९९।

अविधा (अव्य०) विस्मयादिद्योतक अव्यय जो भय के अवसर पर सहायतार्थ बुलाने में प्रयुक्त होता है, सहायता सहायता बोला जाता है।

अविषय (वि०) [न० त०] जो वश में न किया जा सके —[illegible] विषयमनसाम् मुद्रा० ६।०।

अविनय (वि०) [न० ब०] अविनीत दुर्विनीत अशिष्ट —यः [न० त०] 1 शिष्टता या शालीनता का अभाव 2 दुर्व्यवहार उद्दण्ड अशिष्ट या अभद्रव्यवहार अथवा चालचलन [illegible] गर्विकर [illegible] श० १।२४, अभद्रता आचरण का अनौचित्य 3 अशिष्टाचार, अनादर 4 अपराध जुर्म दोष 5 घमंड अहंकार, धृष्टता [illegible] श०।

अविनाभाव [न० त०] 1 वियोग का अभाव 2 अन्तर्हित या अनिवार्य चरित्र (सम्बन्ध न टूटने योग्य सम्बन्ध) 3 संबंध —अविनाभावोऽत्र सम्बन्धमात्रं न तु नान्तरीयकत्वम्—काव्य० २।

अविनीत (वि०) [न० त०] 1 विनयशून्य दुःशील 2 धृष्ट, उद्दण्ड।

अविभक्त (वि०)[न० त०] 1 न बंटा हुआ अविभाजित संयुक्त (जैसे कि पारिवारिक सम्पत्ति) 2 जो टूटा न हो समस्त।

अविभाग (वि०) [न० ब०] [illegible] 1 [illegible] न होना 2 [illegible]

अविभाज्य (वि०) [illegible] ज्यम 1 [illegible] हो [illegible] भी कोई नहीं माना [illegible] पृथक्करण [illegible] की आज्ञा [illegible]

अविरत (वि०) [न० त०] [illegible] 1 [illegible] अविरताश्रव [illegible] लगातार [illegible] (अव्य०) निरन्तरपूर्वक लगातार [illegible]

अविरति (स्त्री०) [न० ब०] निरन्तर [illegible] 1 [illegible] 2 काम [illegible]

अविरल (वि०) [न० त०] 1 घना सघन [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 निर्बाध लगातार [illegible] 1 घनिष्ठतापूर्वक अविरलमालिङ्गन [illegible] 2 निरन्तर रूप से लगातार

अविरोध [न० त०] मुसंगतता अनुकूलता [illegible] परायमूल्यमलम स्वार्थाविर [illegible] अपने स्वार्थ के अनुकूल

अविलम्ब (वि०) [न० ब०] [illegible] विलम्ब का अभाव, आनुकूल्य [illegible] अविलम्बन (अव्य०) बिना [illegible]

अविलम्बित (वि०) [न० त०] बिना [illegible] क्षिप्र [illegible] तुरन्त [illegible] देर किए

अविला [illegible]

अविवाहित (वि०) [न० त०] 1 [illegible] 2 [illegible] बोलने या कहने के लिए न हो।

अविविक्त (वि०) [न० त०] 1 जिसका [illegible] गई हो जो भली भांति विचारा न गया हो 2 जो विभक्त या अलग न [illegible] सार्वजनिक।

अविवेक (वि०) [न० ब०] विचारशून्य, विवेकशून्य [illegible] [न० त०] 1 भेदक ज्ञान या विचार का अभाव, [illegible] बार [illegible] परमापदां पदम् [illegible] 2 जल्दबाजी, उतावलापन।

अविशङ्क (वि०) [न० ब०] [illegible] सन्देहशून्य, निडर [illegible] अविश [illegible]

अविशङ्कित (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 निस्सन्देह [illegible]

अविशेष [illegible] अभाव [illegible] चारों के अन्तर [illegible]

अविषय [illegible] 1 [illegible] 2 पृथ्वी 3 आकाश।

अविषय [illegible] 1 [illegible] निर्विषय, जो पहुंच [illegible] इन्द्रियों की [illegible]

[illegible] रजस्वला [illegible]

अवीचि [illegible] नरक विशेष।

अवीर [illegible] 1 [illegible] हो कायर 2 [illegible] जिसके न कोई पुत्र हो [illegible] जिसकी परिभाषा [illegible] मनीषिभिः [illegible] मनु० [illegible]

अवृत्ति [illegible] 1 जिसकी सत्ता न हो जो विद्यमान न हो 2 जिसकी जीविका न हो [illegible] जीविका का [illegible] आश्रय अर्थात् [illegible] मनु० [illegible] एकरात्रिकम् [illegible] तु अनौचित्य

अवृथा [illegible] सफलतापूर्वक [illegible]

अवृष्टि [illegible] बरसने वाला [illegible] का अभाव अनावृष्टि।

अवेक्षक [illegible] निरीक्षण करने [illegible] अवेक्षक

अवेक्षण [illegible] 1 किसी ओर देखना नज़र [illegible] 2 रखवाली करना देखरेख रखना, सेवा

करना, अवीक्षण, निरीक्षण अर्थाभिमावेक्षणजागरूक रघु० १४।८५ 3 ध्यान देखरेख, पर्यवेक्षण 4 खयाल करना, ध्यान रखना दे० अनवेक्षण।

अवेक्षणीय (स० कृ०) [अव + ईक्ष् + अनीयर्] देखने के योग्य आदर करने के योग्य ध्यान रखने के योग्य विचार किये जाने के योग्य तपस्विसामान्यमवेक्षणीया रघु० १४।५७।

अवेक्षा [अव + ईक्ष् + अङ् + टाप्] 1 देखना दृष्टि डालना 2 ध्यान देखरेख खयाल।

अवेद्य (वि०) [न० त०] 1 न जानने योग्य गुप्त 2 प्राप्त करने के योग्य, –द्य बछड़ा।

अवेल (वि०) [न० ब०] 1 असीम सीमारहित निस्सीम 2 असामयिक –ल [न० त०] जानकारी का छिपाव, –ला प्रतिकूल समय।

अवैध (वि०) [स्त्रियाम् –धी] [न० त०] 1 अनियमित जो नियम या कानून के अनुसार न हो अवैधं पञ्चमं कुर्वन् राज्ञा दण्डेन शुध्यति 2 जो शास्त्रविहित न हो।

अवैलक्षण्यम् [न० त०] एकता।

अवोक्षणम् [अव + उक्ष् + ल्युट्] झुके हुए हाथ से छिड़काव करना उत्तानेनैव हस्तेन प्रोक्षणं परिकीर्तितम् न्यञ्चताभ्युक्षणं प्रोक्तं तिरश्चावोक्षणं स्मृतम् ॥

अवोद [अव + उन्द् + घञ् नि० न लोप] छिड़काव करना गीला करना।

अव्यक्त (वि०) [न० त०] 1 अस्पष्ट, अप्रकट, अदृश्यमान अनुच्चरित °वर्ण अस्पष्ट भाषण श० ७।१७ 2 अदृश्य, अप्रत्यक्ष 3 अनिर्दिष्ट अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयम् भग० २।२५ ८।२० 4 अविकसित अरचित 5 (बीज० में) अज्ञात –क्त 1 विष्णु 2 शिव 3 कामदेव 4 मूल प्रकृति 5 मन –क्तम् (वेदा० में) 1 ब्रह्म 2 आध्यात्मिक अज्ञान (सा० द० में) सर्व कारण प्रजननात्मक नियम का मूलतत्त्व जिससे भौतिक संसार के सारे तत्त्व विकसित हुए हैं ब्रह्मेत्यादिवाव्यक्तमुदाहरन्ति रघु० ।१६ महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः कठ० 3 आत्मा –क्तम् (अव्य०) अप्रत्यक्षरूप से अस्पष्ट रूप से। सम० –अनुकरणम् अनुच्चरित तथा निरर्थक ध्वनियों की नकल करना –आदि (वि०) जिसका आरम्भ अगाध हो –क्रिया बीजगणित का एक हिसाब –पद (वि०) अनुच्चरित शब्द –मूलप्रभवः सांसारिक अस्तित्व रूपी वृक्ष (सां० में) –राग (वि०) हलका लाल गुलाबी (–गः) ऊषा का रंग अव्यक्त रागस्त्वरुण अमर०, –राशि (बीजगणित में) अज्ञात अंक या परिमाण –लक्षणः, –व्यक्तः शिव –वर्त्मन्, –वार्त्त (वि०) जिसके मार्ग अगाध और अज्ञेय हैं, –वाच् (वि०) अस्पष्ट रूप से बोलने वाला, –साम्यम् अज्ञात परिमाणों की समीकरण राशि।

अव्यग्र (वि०) [न० त०] 1 अक्षुब्ध, अनाकुल स्थिर शान्त 2 किसी काम में न लगा हुआ।

अव्यङ्ग (वि०) [न० त०] जो अंगविकल या दोषयुक्त न हो सुनिर्मित ठोस पूरा।

अव्यञ्जन (वि०) [न० ब०] 1 चिह्नरहित लक्षणरहित (जैसे कि लिंगभेदक) –ना कन्या 2 अस्पष्ट –नः बिना सींग का पशु (सींग आने की आयु होने पर भी)।

अव्यथ (वि०) [न० ब०] पीड़ा से मुक्त –थः साँप।

अव्यथिष [न व्यथ् + टिषच्] 1 सूर्य 2 समुद्र, –षी 1 पृथ्वी 2 आधीरात रात।

अव्यभिचारः (भी) चारः [न० त०] वियोग का अभाव अन्योन्यस्याव्यभीचारो भवेदामरणान्तिकः मनु० ९।१०१ 2 एकनिष्ठता वफादारी

अव्यभिचारिन् (वि०) [न० त०] 1 अविरोधी अप्रतिकूल, अनुकूल कु० ६।८६ 2 अपवादरहित यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये न रूपमित्यव्यभिचारि तद्वचः कु० ५।३६ रघोरनिमित्तो नर्यो हरिः यदुच्यते तदव्यभिचारिवचः श० ६ 3 सदगुणी सदाचारी ब्रह्मचारी (सती) 4 स्थिर स्थायी श्रद्धालु।

अव्यय (वि०) [न० ब०] 1 (क) अपरिवर्तनशील अविनश्वर अक्षय्य वे० 'वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् भग० २।२१ विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति १७ (ख) नित्य शाश्वत अव्ययः प्राहुरव्ययम् भग० १५।१ अकीर्तिं कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् २।३४ 2 जो खर्च न किया गया हो जो व्यय नष्ट न किया गया हो 3 मितव्ययी 4 शाश्वत फल देने वाला –यः 1 विष्णु 2 शिव –यम् 1 ब्रह्म 2 (व्या० में) वह शब्द जिसके रूप में वचन लिंग आदि के कारण कोई विकार नहीं होता सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्। सम० –आत्मन् (वि०) अविनश्वर या नित्य (–त्मा) आत्मा या ब्रह्म –वर्ग अव्ययों की सूची।

अव्ययीभाव [अनव्ययम् अव्ययं भवत्यनेन अव्य० च्वि + भू + घञ्] 1 संस्कृत भाषा के चार मुख्य समासों में से एक क्रियाविशेषण समास (अव्यय से बना हुआ अर्थात् अव्यय अथवा क्रियाविशेषण तथा संज्ञा के मेल से बना हुआ) अधिहरि यथाक्रमं आदि 2 व्यय का अभाव (दरिद्रता के कारण) –द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गृहे नित्यमव्ययीभावः तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः। उद्भट० (जो संस्कृत के समासों को आँखों के सामने रख देता है) 3 अनश्वरता।

अव्यलीक (वि०) [न० त०] 1 जो झूठा न हो, सच्चा

2 प्रिय, अरुचिकर भावनाओं से रहित — इन्थ निर प्रियतमा इव सोऽभ्यधीका [illegible] मुक्तमनयरत्र [illegible] शि० ५।१।

अव्यवधान (वि०) [न० ब०] 1 मिला हुआ, [illegible] का अन्तररहित 2 खुला हुआ 3 जो ढका न हो [illegible] 4 असावधान लापरवाह — **नम** लापरवाही।

अव्यवस्थ (वि० [न० ब०] 1 जो नियत न हो, हिलने डुलने वाला अस्थिर — स्थलारविन्दश्रियमव्यवस्थाम् कु० १।३३ 2 अनिश्चित विशृंखल अनियमित **स्था** 1 अनियमितता मान्यता प्राप्त नियम से [illegible] 2 शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था।

अव्यवस्थित (वि०) [न० त० 1 जो प्रचलित व्यवस्था या कानून के अनुसार न हो 2 [illegible] अस्थिर [illegible] प्रमादादि [illegible] 3 जो क्रमबद्ध न हो [illegible] न हो

अव्यवहार्य (वि०) [न० त०] 1 जो जात [illegible] के साथ खान पान का अधिकारी न हो [illegible] 2 जो मुकदमे का विषय न बनाया जा सके [illegible] के अयोग्य

अव्यवहित (वि०) [न० त० [illegible] हुआ।

अव्याकृत (वि०) [न० त०] 1 अविकसित [illegible] [illegible] व्याकृत इव नामरूपाभ्यामव्याकृतम् शा० 2 प्रारंभिक **नम** (वेदान्त०) 1 प्रारंभिक [illegible] ब्रह्म के समरूप इसमें संसार की सभी वस्तुएँ बना 2 (सांख्य० में) प्रधान, प्रकृति का प्रारम्भिक अणु।

अव्याज [illegible] [न० त० 1 छल-कपट का अभाव ईमानदारी 2 सादगी अकृत्रिमता, बहुधा समास में सुन्दर और मनोहर के साथ प्रयुक्त प्रकृतिगता या अकृत्रिमता के अर्थ में प्रयुक्त हुए किसलय [illegible] मनोहरवपु [illegible]

अव्यापक (वि०) [न० त०] 1 जो बहुत विस्तार न [illegible] 2 [illegible] सकने वाला [illegible]

अव्यापार (वि०) [न० ब०] जिसके पास कोई काम न हो काम में न लगा हुआ [illegible] 1 काम से विराम 2 ऐसा काम जो न तो किया जा सके न समझ में आवे 3 जो अपना निजी व्यापार न हो —अव्यापारेषु व्यापारम् दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करना।

अव्याप्ति (स्त्री) [न० त०] 1 अपर्याप्त विस्तार या प्रतिज्ञा पर अधूरी व्याप्ति 2 परिभाषा में दिए गये लक्षण का घटित न होना परिभाषा के तीन दोषों में से एक — [illegible] लक्षणस्यावर्तनमव्याप्ति।

अव्याप्य (वि०) [न० त०] जो सारी स्थिति के लिए लागू न हो समस्त विस्तार पर छाया हुआ न हो — [illegible] समस्त० **वृत्ति** (स्त्री) [illegible] [illegible] सांमिश्रित प्रयोग के एक श्रेणी उदाहरण के [illegible] और [illegible] [illegible] जैसे सुख-दुःख अथवा [illegible] विशेषगुण इच्छा भाषा० [illegible]

अव्याहत (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ बाधारहित, [illegible] माना हुई (आज्ञा) [illegible] रघु० १० [illegible]

अव्युत्पन्न (वि०) [न० त०] 1 अकुशल अनअनुभवी [illegible] अव्युत्पन्न [illegible] 2 (शब्द) जिसका व्युत्पत्ति निर्धारित न हो [illegible] व्याकरण तथा धातु [illegible] [illegible] आधारभूत।

अव्रत (वि०) [न० ब०] जो धार्मिक संस्कार तथा अन्य [illegible] [illegible] [illegible] सम्बन्ध [illegible] परिवर्तन [illegible] १६०

अश 1 (स्वा० [illegible] 1 व्याप्त होना [illegible] प्रविष्ट होना, — स प्रावेश [illegible] 2 पहुंचना [illegible] उपस्थित होना प्राप्त होना [illegible] 3 प्राप्त करना [illegible] प्राप्त करना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्वर्ग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्राप्त करना [illegible] ग्रहण करना [illegible] ग्रहा० [illegible] मनु [illegible] पूर्ण करके भरना [illegible] होना [illegible] ग्रहण करना [illegible] [illegible] रघु० ३ १४ [illegible]

अश 2 (क्र्या० [illegible] 1 खाना [illegible] भोग करना [illegible] [illegible] 2 स्वाद [illegible] [illegible] आशयति) खिलाना भोजन कराना [illegible] (कर्म० के साथ) [illegible] 1 पीना [illegible] 2 खाना [illegible] प्राप्त [illegible] [illegible] १११३, १५।२९ **सम्** 1 खाना [illegible]

समझनेवाला [illegible] 2 [illegible] मना [illegible]

अशकुन [illegible]

पशांवन (स्त्री०) [illegible] नाम [illegible]

अशक्य [illegible]

[illegible] अशाकुन [illegible]

[illegible]

अशना [illegible] किया [illegible]

अशनाया [illegible]

अशनायित **अशनायुक** (वि०) [illegible]

अशनि (पु० स्त्री०) [illegible] 2 बिजली का चमक [illegible] अशनि [illegible] नाक (पु०) 1 इन्द्र 2 अग्नि 3 [illegible] पैदा हुई आग।

अशब्द (वि०) [illegible] किसी शब्द [illegible] अन्यक्त 1 अव्यक्त अर्थात् ब्रह्म 2 [illegible] प्रकृति का [illegible] ११९।

अशरण (वि०) [सं० ब०] [illegible]

अशरीर (वि०) [न० ब०] शरीररहित [illegible] 1 परमात्मा ब्रह्म 2 कामदेव प्रेम [illegible] 3 सन्यासी जिसने अपना [illegible] दिये हैं।

अशरीरिन् (वि०) [न० [illegible]] [illegible] अपार्थिव स्वर्गीय (प्राय वाणी वाक आदि शब्दों के साथ)।

अशास्त्र [illegible] [न० त०] जो धर्मशास्त्र के अनुकूल न [illegible] सम० विहित, सिद्ध जो धर्मशास्त्र [illegible]

अशास्त्रीय (वि०) [illegible] विधि विरुद्ध [illegible]

अशित [illegible] 1 खाया हुआ [illegible] 2 [illegible]

अशितम्भव [illegible]

अशित्र [illegible] आहुति।

अशिर [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible]

अशिरस [illegible] बिना [illegible]

अशिव (वि०) [illegible] 1 [illegible] अमंगलकारी [illegible] 2 [illegible] 1 दुर्भाग्य [illegible] 2 [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अशिष्ट [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible]

अशील [illegible] कर रहित [illegible]

अशीत [illegible] सहित [illegible] इसका [illegible]

अशीतिक [illegible]

अशुचि (वि०) [न० ब०] 1 जो [illegible] गन्दा मलिन [illegible] अपवित्र [illegible] 2 [illegible] (वि० [illegible]) 1 [illegible] 2 [illegible]

अशुद्ध [illegible] 1 [illegible] 2 अशुद्ध [illegible]

अशुद्धि [illegible] 1 अपवित्र [illegible] 2 [illegible] [illegible]।

अशुभ (वि०) [illegible] 1 अमंगलकारी 2 अपवित्र [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] सम० उदय अशुभ शकुन।

अशून्य (वि०) [न० त०] 1 जो रिक्त या शून्य न हो 2 परिपूर्ण किया गया पूरा किया गया निष्पादित

— त्वन्नियोगमशून्यं कुरु (नाटकों में प्राय प्रयुक्त) अपना कार्य संपन्न करो।

अशृत (वि०) [न० त०] बिना पकाया हुआ, कच्चा, अनपका।

अशेष (वि०) [न० त०] जिसमें कुछ बाकी न बचा [illegible] सम्पूर्ण, समस्त, पूरा, समग्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] **षम्**, **अशेषेण**, **अशेषतः** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अशोक (वि०) [न० ब०] [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] **कम्** 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] **अष्टमी** चैत्र शुक्लपक्ष की अष्टमी [illegible] **वृक्ष** अशोकवृक्ष, **त्रिरात्र**, **व्रतम्** [illegible] **वनिका** अशोक वृक्षों का उद्यान, [illegible] [illegible]

अशोच्य (वि०) [न० त०] जिसके लिए शोक करना उचित नहीं, अशोच्यानन्वशोचस्त्वं [illegible] [illegible] [illegible]

अशौचम् [न० त०] 1 अपवित्रता, [illegible] [illegible] [illegible] 2 (किसी संबंधी के जन्म या मरण के कारण होने वाला) सूतक, [illegible] मृताशौच, [illegible] [illegible] मनु० [illegible]

अश्नया भूख।

अश्नीतपिबता [अश्नीत पिबत इति [illegible]] [illegible] [illegible] [illegible] जिसमें खाने पीने के लिए [illegible] आमंत्रित किए [illegible] है [illegible] [illegible]

अश्मकः (ब० व०) [अश्मेव [illegible] [illegible]] 1 दक्षिण में एक देश 2 उस देश के निवासी।

अश्मन् (पुं०) [अश् + मनिन्] 1 पत्थर नारायणोपमी-ध्यारमीमभ्योषां [illegible] रघु० ४।७३ 2 चकमक पत्थर 3. बादल 4 वज्र। सम० — उत्थम्

शिलाजीत, — **कुट्ट**, **कुट्टक** (वि०) पत्थर पर रखकर चीज़ तोड़ने वाला (ट्ट, ट्टकः) भक्तों का समुदाय, [illegible] [illegible] मनु० ६।१७, — **गर्भः**, — **गर्भम्**, — **गर्भजः**, **जम्**, **योनिः** पन्ना, **जः**, **जम्** 1 गेरु 2 लोहा, **जतु** (नपुं०), **जतुकम्** शिलाजीत **दारणः** पत्थर तोड़ने के लिए हथौड़ा **पुष्पम्** शिलाजीत **भाण्डम्** पत्थर को खरल या कूंडी का इमामदस्ता **सार** (वि०) पत्थर का [illegible] [illegible] **रः**, **रम्** 1 लोहा 2. नीलमणि।

अश्मन्तम् [अश्मानम् [illegible]] 1 अंगीठी, [illegible] 2 खुला मैदान 3 मृत्यु।

अश्मन्तकः [अश्मानमन्तयति इति — अश्मन् + अन्त + [illegible]] [illegible] अंगीठी, **कः** एक पौधे का नाम [illegible] [illegible] की रस्सी बनाई जाती है।

अश्मरी [अश्मानं [illegible] इति [illegible] + क + ङीप्] (चिकित्सा में) एक रोग का नाम जिसे पथरी कहते हैं, मूत्रकृच्छ्र।

अस्रम् [अस्यते क्षिप्यते अस् + रक्] 1 आँसू, 2. रुधिर [illegible] [illegible] है), — **स्रः** किनारा (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त होता है)। सम० — **प** रुधिर पीने वाला राक्षस, नरभक्षक।

अश्रवण (वि०) [न० ब०] बहरा, जिसके कान न हों, **णः** सांप।

अश्राद्ध (वि०) [न० त०] श्राद्ध का अनुष्ठान न करने वाला, **द्धम्** श्राद्ध का अनुष्ठान न करना। सम० **भोजिन्** (वि०) जिसने श्राद्ध-अनुष्ठान में भोजन न करने का व्रत ले लिया है।

अश्रान्त (वि०) [न० त०] 1 न थका हुआ, अथक 2. [illegible], लगातार — **न्तम्** (अव्य०) निरन्तर, लगातार।

अश्रि, **श्री** (स्त्री०) [अश् + क्रि पक्षे ङीप्] 1 (कमरे का या घर का) किनारा कोण समास के अन्त में चतुर, त्रि, षट् तथा और कुछ शब्दों के साथ प्रयुक्त [illegible] [illegible] चतुरस्र) 2 (शस्त्र की) तेज धार [illegible] [illegible] कुण्ठिता [illegible] कु० २।२० 3 किसी वस्तु का तेज किनारा, धार।

अश्रीक [illegible] (वि०) [न० ब० कप् [illegible]] 1 श्रीहीन, [illegible] शि० १५।९६ 2 भाग्यहीन, जो समृद्ध न हो।

अश्रु (नपुं०) [illegible] [illegible] नेत्रमदर्शनाय — अश् + क्रुन्] आँसू [illegible] [illegible] [illegible] — रघु० ३।६१। सम० **उपहत** (वि०) आंसुओं से ग्रस्त, आँसुओं से ढका हुआ — **कला** आँसू की बूँद **बिन्दु** — **परिपूर्ण** (वि०) आंसुओं से भरा हुआ °**अक्ष** आंसुओं से भरी हुई आँखों वाला **परिप्लुत** (वि०) आंसुओं से भरा हुआ [illegible], **पातः** आँसू गिरना, आँसुओं का

निराशा, —पूर्ण (वि०) आंसुओं से भरा हुआ, °आकुल आंसुओं से भरा हुआ तथा व्याकुल रघु० २।१ —युत (वि०) आंसुओं से युक्त, अचानक आंसू गिराने वाला,—लोचन,—नेत्र (वि०) आंसुओं से भरी हुई आंखों वाला, जिसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई हों।

अश्रुत (वि०) [न० त०] 1 न सुना हुआ जो सुनाई न दे 2. मूर्ख, अशिक्षित।

अश्रौत (वि०) [न० त०] अवैदिक, जो वेदों के द्वारा अनुमोदित न हो।

अश्रेयस् (वि०) [न० त०] 1 अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो, घटिया (नपुं० —स्) बुराई, दुःख।

अश्लील (वि०) [न श्रियं लाति —ला+क] 1. भद्दा, कुरूप 2 ग्राम्य भद्दा, अशिष्ट— अश्लीलप्रायान् कलकलान् दश० ४९, °परिवाद—माल० १।१३ 3 अमांगलिक, —लम् 1 देहाती या गंवारू भाषा, गाली 2 (सा० शा० में) रचना का एक दोष जिसमें ऐसे शब्द प्रयुक्त किये जायें जिनसे श्रोता के मन में शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा हो—उदा० साधन सुमहद्यस्य, मुग्धा कुड्मलिताननेन दधती वायुं स्थिता तत्र सा, तथा —मृदुपवनविभिन्नो मत्प्रियाया विनाशात् —में साधन, वायु और विनाश शब्द अश्लील हैं और क्रमशः शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा करते हैं 'साधन' शब्द तो लिंग (पुरुष की जननेन्द्रिय), 'वायु' शब्द अपान (गुदा से निकलने वाली दुर्गंधयुत वायु) तथा 'विनाश' मृत्यु को प्रकट करता है।

अश्लेषा [न श्लिष्यन्ति यत्रोत्पन्नेन शिशुना, श्लिष्+घञ्, तारा०] 1 नवां नक्षत्र जिसमें पांच तारे होते हैं 2 असंबंध, वियोग। सम० —भ,—भव:, भू केतुग्रह अर्थात् उतार का शिरोबिन्दु।

अश्व: [अश्+क्वन्] 1 घोड़ा 2 सात की संख्या का प्रकट करने वाला प्रतीक 3 (घोड़े जैसा बल रखने वाले) मनुष्यों की कोटि, काण्ठमूल्यवपुर्धृष्टो मिथ्याचारश्च निर्भय:। द्वादशाङ्गुलमेढ्रश्च वरिष्ठम् हयो मत:। —श्वौ (द्वि० व०) घोड़ा और घोड़ी। सम० —अजनी हंटर —अधिक (वि०) जो अश्वारोहियों में प्रबल हो जिसके पास घोड़े अधिक हों, —अध्यक्ष: अश्वारोहियों का सेनापति,—अनीकम् अश्वारोहियों की सेना,—अरि: भैंसा, —आयुर्वेद: अश्वचिकित्सा—विज्ञान —आरोह (वि०) घोड़े पर चढ़ा हुआ (—ह:) 1 घुड़सवार, अश्वारोही 2. घुड़सवारी,—उरस् (वि०) घोड़े की भांति चौड़ी छाती वाला,—कर्ण:,—कर्णक: 1 एक वृक्ष 2. घोड़े का कान, —कुटी घुड़साल, —कुशल, —कोविद (वि०) घोड़ों को सधाने में चतुर, —खर: खच्चर,—खुर: घोड़े का खुर, —गोष्ठम् घुड़साल, अस्तबल,—ग्रासः घोड़े की चरागाह,—चलनशाला घोड़ों को घुमाने का स्थान,—चिकित्सक:,—वैद्य: शालिहोत्री, पशुओं का डाक्टर,—चिकित्सा घोड़े की चिकित्सा, पशुचिकित्साविज्ञान, —नय: नरतुरग (जिसका शरीर घोड़े का तथा मस्तक मनुष्य की होती है) —दूत: घुड़सवार दूत —नाय: घोड़ों को चराने वाला, घोड़ों का समूह —निबन्धिक: घोड़ों का साइस, घोड़ों को बांधने वाला —प साइस, —पाल, —पालक, —रक्ष घोड़ों का साइस —बन्ध साइस —भा बिजली, —महिषिका भैंसे और घोड़े के बीच रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता —मुख (वि०) जिसका मुंह घोड़े जैसा है (—ख:) घोड़े के मुंह वाला प्राणी किन्नर, देवदूत (—खी) किन्नर स्त्री —सिन्दूरितमन्दास्तनितमश्वमुख्य: कु० १।११, —मेध: एक यज्ञ जिसमें घोड़े की बलि चढ़ाई जाती है यथाश्वमेध: क्रतुराट् सर्वपापापनोदन: मनु० ११।२६१ —मेधिक, —मेधीय (वि०) अश्वमेध के उपयुक्त या अश्वमेध से संबंध रखने वाला (—क:, —य:) अश्वमेध के उपयुक्त घोड़ा —युज (वि०) जिसमें घोड़े जुते हुए हों (जैसे कि घोड़ागाड़ी) (स्त्री०) 1 एक नक्षत्रपुंज अश्विनी नक्षत्र 2 मेष राशि 3 आश्विन मास —रक्ष अश्वारोही या घोड़े का रखवाला साइस —रथ घोड़ागाड़ी (—था) गन्धमादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी —रत्नम —राज: बढ़िया घोड़ा या घोड़ों का स्वामी, अर्थात् उच्चैःश्रवा, —लाला एक प्रकार का सांप —वक्त्र अश्वमुख दे० किन्नर और गन्धर्व —वडवम् सांड घोड़ा की जोड़ी —वह अश्वारोही —वार —वारक अश्वारोही, साइस —वाह —वाहक घुड़सवार —विद् (वि०) 1. घोड़ों को सधाने में कुशल 2 घोड़ों का दलाल (पु०) 1 पेशेवर घुड़सवार 2 नल का विशेषण —वृष बीजाश्व, सांडघोड़ा —वैद्य घोड़ों का चिकित्सक, —शाला अस्तबल —शाव बछेरा, बछेरी —शास्त्रम् शालिहोत्र पशुचिकित्सा विज्ञान की पाठ्य पुस्तक, —शृगालिका घोड़े और गीदड़ की स्वाभाविक शत्रुता —साद: —सादिन् (पु०) घुड़सवार अश्वारोही अश्वसैनिक रघु० ७।४९ —सारथ्यम् कोचवानी सारथिपना, घोड़ों और रथों का प्रबंध सूतानामश्वसारथ्यम् मनु० १०।४७ —स्थान (वि०) अस्तबल में उत्पन्न (—नम्) घुड़साल तबेला —हारक: घुड़चोर घोड़ों को भगाने वाला, —हृदयम् 1. घोड़े की इच्छा 2. अश्वारोहिता।

अश्वक (वि०) [अश्व+कन्] घोड़े जैसा —क: 1 छोटा घोड़ा, 2 भाड़े का टट्टू 3. सामान्य घोड़ा।

अश्वकिनी [अश्वस्य क: मुखं तत्सदृशाकारोऽस्त्यस्य इनि ङीप् तारा०] अश्विनी नक्षत्र।

अश्वतर: (स्त्री० —री) [अश्व+ष्टरच्] खच्चर।

अश्वत्थः [न श्वः स्थिर शाल्मलीवृक्षादिवत् तिष्ठति स्था+क पृषो० तारा०] पीपल का पेड़, ऊर्ध्वमूलो-ऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः कठ०, भग० १५।१।

अश्वत्थामन् (पुं०) [अश्वस्येव स्थाम बलमस्य, पृषो० तु० महा० अश्वस्येवास्य यत्स्थाम नदतः प्रदिशो गतम्, अश्वत्थामैव बालोऽयं तस्मान्नाम्ना भविष्यति] द्रोण और कृपी का पुत्र, कुरुराज दुर्योधन की ओर से लड़ने वाला ब्राह्मण योद्धा व सेनापति (यह अत्यन्त शूरवीर, प्रचण्डक्रोधी, युवक योद्धा था, इसका बड़ा तेज कर्ण के साथ वाग्युद्ध में प्रकट हुआ, जब कि द्रोणाचार्य के पश्चात् कर्ण को सेनापतित्व दिया गया दे० वेणी० तृतीय अंक, यह सात चिरजीवियों में से एक है)।

अश्वस्तन, **स्तनिक** (वि०) [न श्वो भव इति श्वस्+ट्युल् तुट् च, न० त०] [श्वस्तन+ठन् च न० त०] 1 जो आगामी कल का न हो, आज का 2 जो आगामी कल का प्रबंध नहीं रखता है मनु० ४।७।

अश्विक (वि०) [अश्व+ठन्] जो घोड़ों से खींचा जाय।

अश्विन् (पुं०) [अश्व+इनि] 1 अश्वारोही, घोड़ों को सधाने वाला —नौ (द्वि० व०, देवताओं के दो वैद्य जो कि सूर्य के द्वारा घोड़ी के रूप में एक अप्सरा से युग्म पैदा हुए थे।

अश्विनी [अश्व+इनि+ङीप्] 1 २७ नक्षत्रों में सबसे पहला नक्षत्र (जिसमें तीन तारे होते हैं), 2 एक अप्सरा जो बाद में अश्विनीकुमारों की माता मानी जाने लगी, सूर्य पत्नी जो कि घोड़ी के रूप में छिपी हुई थी। सम० कुमारौ, पुत्रौ सुतौ सूर्य की पत्नी अश्विनी के यमज पुत्र।

अश्वीय (वि०) [अश्व+छ] घोड़ों से संबंध रखनेवाला घोड़ों का प्रिय, —यम् घोड़ों का समूह, अश्वारोही सेना शि० १८।५।

अषडक्षीण (वि०) [न षडक्षीणि यत्र न० ब०, तत ख] जो छः आंखों से न देखा जा सके, जो केवल दो व्यक्तियों के द्वारा निश्चय या निर्णीत किया जाय, —णम् रहस्य।

अषाढ [अषाढया युक्ता पौर्णमासी आषाढी सा अस्मिन् मासे अण् वा ह्रस्व] अषाढ का महीना (प्रायः 'आषाढ' लिखा जाता है)।

अष्टक वि० [अष्टन्+कन्] आठ भागों वाला, आठ तह वाला, —क जो पाणिनि निर्मित आठों अध्यायों का जानकार है, या उनका अध्ययन करता है, —का पूर्णिमा के पश्चात् सप्तमी से आरंभ करके आने वाले तीन (सप्तमी, अष्टमी और नवमी) दिन 2 उन तीन महीनों की अष्टमियां, जबकि पितरों का तर्पण होता है, 3. उपर्युक्त दिनों में किया जाने वाला श्राद्ध-अनुष्ठान, —कम् 1. आठ अवयवों की बनी कोई समूची वस्तु 2. पाणिनिसूत्रों के आठ अध्याय 3. ऋग्वेद का एक खंड (ऋग्वेद ८ अष्टक या दस मंडलों में विभक्त है) 4 आठ वस्तुओं का समूह यथा वानराष्टकम्, नागाष्टकम्, गंगाष्टकम् आदि 5. आठ की संख्या। सम० —अंग, —गम् एक प्रकार का फलक या कपड़ा जिस पर आठ खाने बने होते हैं और जो पांसा खेलने के काम आता है।

अष्टन् (सं० वि०) [अश्+कनिन्, तुट् च] (कर्तृ०, कर्म० अष्ट, अष्टौ) आठ, कुछ संज्ञाओं तथा संख्यावाचक शब्दों में मिलकर इसका रूप समास में 'अष्टा' रह जाता है, उदा० अष्टादशन्, अष्टाविंशति, अष्टापद आदि। सम० —अंग वि० जिसके आठ अंग या अवयव हों —गम् 1. शरीर के आठ अंग जिनसे अति नम्र अभिवादन किया जाता है, °पातः, —प्रणामः साष्टांगनमस्कार शरीर के आठों अंगों से किया जाने वाला नम्र अभिवादन जानुभ्यां च तथा पद्भ्यां पाणिभ्यामुरसा धिया, शिरसा वचसा दृष्ट्या प्रणामोऽष्टांग ईरितः॥ 2 योगाभ्यास अर्थात् मन की एकाग्रता के आठ भाग 3 पूजा की सामग्री, °अर्घ्यम् आठ वस्तुओं का उपहार °धूपः आठ औषधियों से बनी एक प्रकार की ज्वर उतारने वाली धूप, °मैथुनम् आठ प्रकार का संभोग-रस, प्रणय की प्रगति में आठ अवस्थाएँ स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्, संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च।, —अध्यायी पाणिनि मुनि का बनाया व्याकरणग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं —अस्रम् अष्टकोण,—अस्रिः अष्टकोणीय —अह(न्) (वि० आठ दिन तक होने वाला, —कर्ण (वि०) आठ कानों वाला, (—र्णः) ब्रह्मा का उपाधि, —कर्मन् (पुं०), —गतिकः राजा जिसने अपने आठ कर्तव्य पूरे करने हैं (आठ कर्तव्य आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषनिषेधयोः पंचमे चार्थवचने व्यवहारस्य चेक्षणे, दंडशुद्ध्योः सदा रक्तस्तेनाष्टगतिको नृपः। —कृत्वस् (अव्य०) आठ बार,- कोण आठ कोण वाला, अठपहला, —गवम् आठ गौओं का समूह, — गुण (वि०) आठ तह वाला —दाप्योऽष्टगुणमत्ययम् मनु० ८।४००, (—णम्) वह आठ गुण जो ब्राह्मण में अवश्य पाये जाने चाहिए- दया सर्वभूतेषु, क्षांति, अनसूया, शौचम् अनायास, मंगलम् अकार्पण्यम्, अस्पृहा चेति गौ०। —आढ्य (वि०) इन आठ गुणों से युक्त —त्र (—त्रा) —चत्वारिंशत् (वि०) अड़तालीस, —तय (वि०) आठ तहों वाला,—त्रिंशत् (—त्रा) (वि०) अड़तीस,—त्रिंशत् चौतीस, —दलम् 1. आठपंखड़ियों वाला कमल, 2 अष्टकोण, —पदम् (°पदा°) नीचे दे०,—दिश् (स्त्री०) आठ

दिग्बिन्दु — पूर्वाग्नेयी दक्षिणा च नैऋती पश्चिमा तथा वायवी चोत्तरैशानी दिशा अष्टाविमाः स्मृताः ।

—दिग्गज आठ [illegible] हुआ पर [illegible] आठ [illegible] वाला आठों दिशाओं के [illegible] दिग्पाल [illegible] —इन्द्र, [illegible] (यम) नैऋत, वरुण, मरुत (वायु) कुबेर, ईश [illegible] पूर्वादि [illegible] —**गज** आठ [illegible] ऐरावत [illegible] दन्त सार्वभौम सुप्रतीकश्च [illegible] अमर — **धातु** आठ धातुओं [illegible] ताम्र च रङ्क [illegible] —**पद** (पद [illegible]) वि० 1 आठ पैरों वाला 2 [illegible] नाम का जन्तु, 3 [illegible] —**पद** [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] या एक फलक [illegible] —**मङ्गल** एक [illegible] —मनुष्य [illegible] वस्तुओं का संग्रह [illegible] वृषो नाग कलशो [illegible] —पद्मकुलम् । दूसरों के [illegible] —मासिक (वि०) आठ महीनों में [illegible] होने वाला —**मूर्ति** अष्टमूर्ति, शिव का विशेषण [illegible] रूप हैं — पांच तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) सूर्य चन्द्रमा तथा यज्ञ करने वाला पुरोहित [illegible] या [illegible] वह्निः [illegible] श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् । [illegible] सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ [illegible] में संक्षेप से कहे गये निम्नांकित क्रमानुसार नाम — जलं वह्निस्तथा यष्टा सूर्याचन्द्रमसौ तथा आकाशं वायुरवनी मूर्तयोऽष्टौ पिनाकिनः । —**रस** आठ रस — रसा नाटकों में प्रयुक्त आठ रस — शृंगारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः । काव्य० ४ (इनमें नवां रस 'शान्त' भी जोड़ दिया जाता है — [illegible] स्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः —सा०) —**आश्रय** (वि०) आठ रसों से सम्पन्न या आठ रसों को पद [illegible] करने वाला — विक्रम० २।१८, —**विध** (वि०) आठ तरह वाला, या आठ प्रकार का, विभाजित

(स्त्री०) [illegible] अठाईस [illegible] [illegible]

अष्टमय (वि [illegible]) आठ [illegible] [illegible]

अष्टधा (अव्य०) [illegible] 1 आठ [illegible] 2 [illegible] [illegible]

अष्टम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कार्तिक [illegible] [illegible]

अष्टमक (वि) [illegible] [illegible]

अष्टमिका [illegible]

अष्टादशन [illegible] उपपुराणम् [illegible] [illegible] —पुराणम् [illegible] [illegible] दे० मनु०

अष्टि (स्त्री०) [illegible] 1 [illegible] 3 [illegible] 1

अष्ठीला [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] या [illegible] 3 [illegible] 4 बीज या अनाज ।

अस 1 (अदा० पर०) [illegible] आसीत्, अस्तु, स्यात्, आर्धधातुक लकारों में सदैव रूपरचना अर्थात् भू

धातु से] 1 होना, रहना, विद्यमान होना (केवल सत्ता) नासदासीन्नो सदासीत् ऋग्० १०।१२९ [illegible] नामनाम [illegible] 2 होना (अपूर्ण विधेयक की क्रिया या विधेयक शब्द के रूप में प्रयुक्त [illegible] संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण [illegible] शब्द आता है) धार्मिक [illegible] मनु० [illegible] 3 [illegible] अधिकार में करना [illegible]

[illegible]

आवास [illegible]

[illegible] 10 [illegible]

अस्तु [illegible]

[illegible] आविष्कृत [illegible]

[illegible] धातु [illegible]

[illegible] अधि [illegible]

[illegible]

अस् (दिवा० [illegible]) [illegible] 1 फेंकना, छोड़ना, [illegible] (निशाना) [illegible] रघु० [illegible] 2 [illegible] आना, [illegible] छोड़ देना, जैसा कि [illegible] अनदयाय और अकर्मक [illegible] **अति**, निशाने से परे (तीर गोली आदि) फेंकना,

हावी होना, [illegible] दूर परे निशाना लगाकर, बढ़ बढ़ कर (हि० त० म० में [illegible]) **अधि**, 1 [illegible] के ऊपर दूसरी वस्तु रखना 2 बाढ़ना, 3. एक वस्तु की प्रकृति को दूसरी में घटाना,—[illegible] **अप** 1 फेंक देना, दूर करना, छोड़ना, त्याग देना, रद्दी में डालना [illegible] [illegible] पौवन [illegible]

[illegible] **अभि** 1 अभ्यास करना, मश्क करना—[illegible] [illegible] 2 [illegible] दोहराना [illegible] 3 अध्ययन करना, [illegible] **उद्** 1 उठाना, ऊपर [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] **उपनि** 1 [illegible] 2 कहना, [illegible] [illegible] 3 [illegible] सुपुर्द करना [illegible] **नि** 1 उपक्रम करना [illegible] 2 [illegible] [illegible] प्राणान् [illegible] 3 [illegible] रखना [illegible] [illegible] देखरेख में रखना [illegible] 5 देना, प्रदान करना [illegible] 6 [illegible] प्रस्तुत करना [illegible] **निस्**—1 निकाल फेंकना, फेंक देना, छोड़ना, छोड़ देना, खारिज [illegible] छोड़ देना [illegible] कि० [illegible] 2 नष्ट करना, दूर करना, हराना, मारना, मिटाना [illegible] रघु० [illegible] रक्षांसि वेदीं परितो निरास्थत्

—भट्टि० १।१२, २।३६, 3 निकालना, निष्कासन निर्वासित करना—गृहान्निरस्ता न तेन वैदेहसुता मनस्तः—रघु० १४।८४, 4 बाहर फेंकना, (तीर) छोड़ना 5 अस्वीकार करना (सम्मति आदि का) निराकरण करना 6 ग्रहण लगना छिप जाना पृष्ठभूमि में गिर पड़ना भट्टि० १।३ परा— छोड़ना, त्यागना, त्याग देना छोड़ देना परास्त वसुधो सुधाविवसनि कि० ५।२७ 2 निकाल देना 3. अस्वीकार करना निराकरण करना प्रत्याख्यान करना— इति यदुक्तं तदपि परास्तम् मा० [illegible] परि— 1 चारों ओर फेंकना सब ओर फैलाना प्रसार करना 2 फैला देना घेरना [illegible] कु० १।४४ 3 मोड़ लेना पर्यस्तविलोचनेन—कु० ३।६८ 4 (आंसू) गिराना नीचे फेंकना—रघु० १०।७६ मनु० ११।१८३ 5 उलट देना पलट देना, 6 बाहर फेंकना रघु० १३।१२ [illegible] पर्यसि— ,फैलाना बिछाना पर्युद् 1 अस्वीकार करना निकाल देना 2 निषेध करना आक्षेप करना, प्र—,फेंकना, फेंक देना, उछाल देना वि— ,उछालना बखेरना, अलग-अलग फेंकना, फाड़ देना नष्ट करना —भट्टि० ८।११६, ९।११, 2 भागों में विभक्त करना, पृथक्-२ करना, क्रम से रखना [illegible] वेदान् व्यस्यन्—[illegible]० ४।५०, विव्यास वेदान् यस्मात्स तस्माद् व्यास इति स्मृतः,— महा० रघु० १०।८० 3. अलग-अलग लेना, एक-एक करके लेना तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने— कु० ५।७२ 4 उलट देना, पलट देना 5 निकाल देना, हटा देना विनि—, 1 रखना, जमा करना, रख देना विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः मेघ० ८८, भट्टि० ३।३, 2 जमा देना, किसी की ओर निर्देश करना —रामे विन्यस्तमानसा —रामा०, 3 सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, किसी के जिम्मे कर देना,—सुतविन्यस्तपत्नीकः—याज्ञ० ३।४५, 4. क्रम में रखना, संवारना, विपरि—, 1 उलट देना, पलट देना, औंधा कर देना, 2. बदलना, परिवर्तन करना— उत्तर० १, 3. भ्रमग्रस्त होना, गलत समझना,—प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः—भर्तृ० ३।९२, 4 परिवर्तित होना(अक०), सम्— मिलाना, एकत्र करना, मिलाना, जोड़ देना —मनु० ३।८५, ७।५७, 2. समास में जोड़ देना, समासकरना 3 सामुदायिक रूप से ग्रहण करना—समस्तैरथवा पृथक्—मनु० ७।१९८, संयुक्त रूप से या अलग अलग, संनि —, 1 रखना, सामने लाना, जमा करना, 2 एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, छोड़ देना—संन्यस्ताभरणम् रघु० २।५९, संन्यस्ताभरणं गात्रम्—मेघ० ९३, कु० ७।६७, 3 दे देना, सौंपना सुपुर्द करना, हवाले करना- भग० ३।३०, 4 (अक० के रूप में प्रयुक्त) संसार को त्यागना सांसारिक बंधन तथा सब प्रकार की आसक्तियों को त्याग कर विरक्त हो जाना सदृश्य क्षणभङ्गुरं तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति भर्तृ० ३।१३२।

अस् (भ्वा० उभ०) [असति ते असित] 1 जाना 2 लेना ग्रहण करना पकड़ना 3 चमकना (इस अर्थ को दर्शाने के लिए प्राय निम्नांकित उदाहरण दिये जाते हैं निष्प्रभश्च प्रभराम भूभृताम रघु० ११।८१ [illegible] १८।२३ [illegible] कु० [illegible] [illegible] है [illegible] उपर्युक्त उदाहरणों में [illegible] [illegible] अधिक उपयुक्त है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १२० पर)।

असंयत (वि०) [न० त०] 1 संयमरहित अनियंत्रित 2 बंधनहीन जैसे असंयता [illegible] में।

असंयम [न० त०] संयमहीनता नियन्त्रण का अभाव विशेषत ज्ञानेन्द्रियों के ऊपर।

असंव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधान रहित, अवकाश रहित (समय और काल का)।

असंशय (वि०) [न० ब०] संदेह से मुक्त, निश्चयवान् —यम् (अव्य०) निस्सन्देह असंदिग्धरूप से, निश्चय ही असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा श० १।२२।

असंश्रव (वि०) [न० ब०] जो सुनने से बाहर हो जो सुनाई न दे असंश्रवे सुनने के क्षेत्र से बाहर रघु० [illegible]।

असंसृष्ट (वि०) [न० त०] 1 असम्मिश्रित, अयुक्त 2 जो सबके साथ मिल कर न रहता हो, संपत्ति का बंटवारा होने के पश्चात जो फिर न मिला हो (उत्तराधिकारी के रूप में)।

असंस्कृत (वि०) [न० त०] 1 संस्कारहीन अपरिष्कृत, अपरिमार्जित 2 जो संवारा न गया हो, सजाया न गया हो 3 जिसका कोई शोधनात्मक या परिष्कारात्मक संस्कार न हुआ हो,—तः व्याकरणविरुद्ध, अपशब्द।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] 1 अज्ञात, अनजाना, अपरिचित असंस्तुत इव परित्यक्तो बान्धवो जन —का० १७३, कि० ३।२, 2 असाधारण, विचित्र 3 सामञ्जस्य रहित- धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः —श० १।३४।

असंस्थानम् [न० त०] 1 संसक्ति का अभाव 2 अव्यवस्था, गड़बड़ 3 कमी, दरिद्रता।

असंस्थित (वि०) [न० त०] 1 अव्यवस्थित, क्रमरहित 2 असंगृहीत।
असंस्थिति: (स्त्री०) [न० त०] 1 अव्यवस्था, गड़बड़।
असंहत (वि०) [न० त०] 1 न जुड़ा हुआ, असंयुक्त बिखरा हुआ 2 ... पुरुष या आत्मा (सां० द० में)।
असकृत् (अव्य०) [न० त०] एक बार नहीं, बार-बार, बहुधा असकृदेकरथेन तरस्विना रघु० ९।२३, मेघ० ९२, ९३। सम० —**समाधि** बारबार चिन्तन मनन —**गर्भवास:** बारबार जन्म।
असक्त (वि०) [न० त०] 1 अनासक्त ... उदासीन ... 2 न रुका हुआ ... 3 सांसारिक भावनाओं या ... के प्रति अनासक्त —**क्तम्** (अव्य०) 1 अनासक्ति से ... [illegible]।
असगन्ध (वि०) [न० ब०] गन्धरहित।
असपत्न [न० त०] शत्रु विरोधी।
असगोत्र (वि०) [न० ब०] जो एक ही गोत्र या कुल का न हो।
असंकुल (वि०) [न० त०] जो भीड़-भाड़ से भरा न हो, खुला हुआ चौड़ा, जैसे कि सड़क — सः चौड़ा सड़क।
असंख्य (वि०) [न० ब०] गिनती से परे, संख्यारहित, अनगिनत मनु० १।८०, १२।१५ —ता-ख्यम् अनन्तता।
असंख्यात (वि०) [न० त०] संख्यारहित, अनगिनत।
असंख्येय (वि०) [न० त०] अनगिनत —यः शिव की उपाधि।
असङ्ग (वि०) [न० ब०] 1 अनासक्त, सांसारिक बन्धनों से मुक्त 2 बाधारहित, निर्बाध, अप्रतिहत 3 असंयुक्त, अकेला, निर्लिप्त, —ग: [न० त०] 1 अनासक्ति मनु० ६।७५ 2 पुरुष या आत्मा (सां० द०)।
असंगत (वि०) [न० त०] 1 न जुड़ा हुआ, न मिला हुआ 2 अनुचित, बेमेल 3 ऊबड़-खाबड़ अशिष्ट, अपरिष्कृत।
असंगति (स्त्री०) [न० त०] 1 मेल का न होना 2 असंबद्धता, अनौचित्य 3 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें कार्य और कारण की स्थानीय अनुकूलता न पाई जाय अर्थात् कारण और कार्य के प्रतीयमान संबंध का उल्लंघन हो।
असंगम (वि०) [न० ब०] न मिला हुआ, —म: 1 वियोग, अलगाव 2 असंबद्धता।
असंगिन् (वि०) [न० त०] 1 न मिला हुआ, असंबद्ध 2. सांसारिक विषयों में अनासक्त।
असंज्ञ (वि०) [न० ब०] संज्ञाहीन, —ज्ञा वियोग, असहमति, असामञ्जस्य।
असत् (वि०) [न० त०] 1 अविद्यमान जिसका अस्तित्व न हो —असति त्वयि— कु० ४।१२, मनु० ९।१५४, 2 सत्ताहीन, अवास्तविक, —आत्मनो बहुरूपा- ... क: करिष्यति 3. बुरा (विप० सत्) सदसद्व्यक्तिहेतव: रघु० १।१०, 4 दुष्ट, पापी, नीच जैसे विचार 5 अव्यक्त 6 गलत, अनुचित, मिथ्या, असत्य इति यदुक्तं तदसत् (प्राय: विवादास्पद रचनाओं में प्रयुक्त) (पुं० न्) इन्द्र, (नपुं० त्) 1 अनस्तित्व असत्ता 2 झूठ, मिथ्यात्व —स्त्री दुश्चरित्रा स्त्री असती भवति सलज्जा —पंच० १।४१८। सम० —**अध्येतृ** (पुं०) वह ब्राह्मण जो पाखंडयुक्त रचनाओं को पढ़ता है, जो अपनी वेदशाखा की उपेक्षा करके दूसरी शाखा का अध्ययन करता है शाखारंड कहलाता है स्वशाखां य: परित्यज्य अन्यत्र कुरुते श्रमम् शाखारण्ड: स विज्ञेयो वर्जयेत्तं क्रियासु च —**आगम** 1 धर्मविरुद्ध शास्त्र या सिद्धान्त 2 अनुचित साधनों से (धन की) प्राप्ति 3 बुरा साधन —**आचार** (वि०) दुराचारी, बुरा आचरण करने वाला दुष्ट, (—र:) अशिष्ट-आचरण, —**कर्मन्** —**क्रिया** 1 बुरा काम 2 बुरा व्यवहार, —**कल्पना** 1 गलत कार्य 2 मिथ्या प्रपंच —**ग्र(ग्रा)ह:** 1 बुरी टेव 2 बुरी राय, पक्षपात 3 बच्चों जैसी इच्छा —**चेष्टितम्** क्षति, आघात, प्राणिवधमथे- ... शि० ... —**दृश्** (वि०) बुरी दृष्टि वाला —**पथ** 1 बुरा मार्ग 2 अनिष्ट-आचरण या सिद्धान्त, -नाद्या: कुल मनामसत्पथमुपायायु समाना: शतम्—भा० ४।३६ —**परिग्रह** बुरे मार्ग को ग्रहण करना, —**प्रतिग्रह** 1 बुरी वस्तुओं का उपहार 2 (तिल आदि) अनुपयुक्त उपहार ग्रहण करना या अनुचित व्यक्तियों से लेना —**भाव** 1 अनस्तित्व अभाव 2 बुरी राय या दुर्भाव 3 अहितकर स्वभाव, —**वृत्ति** —**व्यवहार** (वि०) अनिष्टकर आचरण करने वाला, दुष्ट —**वृत्ति** (स्त्री०) 1 नीच या अपमानजनक पेशा 2 दुष्टता —**शास्त्रम्** 1 गलत सिद्धान्त 2 धर्मविरुद्ध सिद्धान्त —**संसर्ग:** बुरी संगति —**हेतु:** बुरा या आभासी कारण, दे० 'हेत्वाभास'।
असत्ता[illegible] दुष्टता।
असत्ता [न० त०] 1 अनस्तित्व, 2 जो सच्चाई न हो 3. दुष्टता, बुराई।
असत्त्व (वि०) [न० ब०] 1 शक्तिहीन, सत्तारहित 2. जिसके पास कोई पशु न हो, —**त्त्वम्** [न० त०] 1 अनस्तित्व, 2 अवास्तविकता, असत्यता।
असत्य (वि०) [न० त०] 1. झूठ, मिथ्या 2. काल्पनिक, अवास्तविक —त्य: झूठा, —**त्यम्** मिथ्यात्व, झूठ बोलना, झूठ। सम० —**वादिन्** (वि०) झूठ बोलने वाला, —**संध** (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहने वाला, झूठा, कमीना, धोखेबाज, °धे जने सखी पदं कारिता—श०।
असदृश (वि०) [स्त्री०—शी] [न० त०] 1. असमान, बेमेल 2. अयोग्य, अननुरूप, अनुचित, °संयोगकारिन्

का० १२ अयोग्य मान [illegible] बदलने वेणी० ४।२।

असद्यस् (अव्य०) [न० त०] तुरन्त नहीं [illegible]।

असन् (नपुं०) (केवल 'असृज्' शब्द की कारकरचना में [illegible] वि० ब० के पश्चात् प्रयुक्त) रुधिर।

असनम् [अस्+ल्युट्] फेंकना [illegible] बन्दूक, [illegible] चलाना जैसा कि [illegible] नाम का वृक्ष [illegible]

असन्दिग्ध (वि०) [न० त०] 1 जिसमें [illegible] साफ 2 निश्चित [illegible] निश्चय ही, निस्सन्देह।

असन्धि (वि०) [illegible] 1 [illegible] (जैसे [illegible] शब्द 2 [illegible] —धि सन्धि का अभाव

असम्बद्ध (वि०) [न० त० 1 [illegible] न हो 2 [illegible]

असन्निकर्ष [न० त०] 1 [illegible] मन का [illegible] 2 दूर

असन्निवृत्ति (स्त्री०) [न [illegible] —असन्निवृत्तै [illegible] सदा के लिए [illegible]

असपिण्ड (वि०) [न० त० जो [illegible] जो रुधिर सम्बन्ध [illegible] कुल का न हो।

असभ्य (वि०) [न० त०] सभा में [illegible] गँवार [illegible]

असम (वि०) [न० त० 1 जो बराबर [illegible] विषम (जैसा कि संख्या), 2 [illegible] मर्यादा की दृष्टि से [illegible] १।१४ 3 असदृश [illegible] सम० —इषुः, —बाणः, —सायकः विषम संख्या के बाणों को धारण करने वाला कामदेव जिसके पांच बाण हैं, —नयन, —नेत्र, —लोचन (वि०) विषम संख्या की आँखों वाला, शिव जिनके तीन आँखें हैं।

असमञ्जस (वि०) [न० त०] 1 अस्पष्ट जो बोधगम्य न हो [illegible] उत्तर० ४।१८ मा० १०।२ 2 अयुक्त अनुचित [illegible] असमञ्जसमिति मत्वा [illegible] 3 बेहूदा निरर्थक, मूर्खतापूर्ण।

असमवायिन् (वि०) [न० त०] जो घनिष्ठ या अन्तर्हित न हो आनुषंगिक, [illegible]। सम० —कारणम् (तर्कशास्त्र में) आनुषंगिक कारण अन्तर्हित या घनिष्ट सम्बन्ध न होना [illegible] —भाषा० सभा तन्तुयोग पटस्य।

असमस्त (वि०) [न० त०] 1 अपूर्ण आंशिक अधूरा 2 [illegible] समास न हो जिसमें समास न हुआ हो 3 [illegible] (वि० प्रस्त) सम० [illegible] समास के विग्रह [illegible]

असमाप्त [illegible] 1 [illegible] पूरा न हुआ [illegible] 2 [illegible]

असमीक्ष्य [illegible] विचार किए [illegible]

असमर्थ [illegible]

असम्पूर्ण [illegible]

असम्बद्ध [illegible]

असम्बाध [illegible]

असम्बन्ध [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] हुआ [illegible]

असम्भव [illegible] —व 1 अनस्तित्व 2 [illegible] अभाव [illegible]

असम्भाव्य, **असम्भावित** (वि०) [न० त०] 1 [illegible] 2 [illegible]

असम्भावना [न० त०] [illegible] की कठिनाई या असम्भवता, [illegible]

असम्भृत (वि०) [न० त०] जो कृत्रिम उपायों से प्रकाशित न किया गया हो, अकृत्रिम प्राकृतिक —असम्भृतं मण्डनमङ्गयष्टेः कु० १।३१ 2 जो भलीभाँति पाला पोसा न गया हो।

असम्मत (वि०) [न० त०] 1 अननुमोदित अननुज्ञात, अस्वीकृत 2 [illegible] 3 असहमत भिन्न मत रखने वाला [illegible] काव्य० ७। सम० —आदायिन् (वि०) स्वामी की

स्वीकृति के बिना उसकी चीज उठा ले जाने वाला चोर।

असम्मतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 विमति, असहमति 2 अस्वीकृति, नापसंदगी।

असम्मोहः [न० त०] 1 मोह का अभाव 2 प्रशान्तता, स्थैर्य, शान्तचित्तता 3 वास्तविक ज्ञान, सच्ची अन्तर्दृष्टि।

असम्यच् (वि०) [स्त्री० — मीची] [न० त०] 1 बुरा, अनुचित, अशुद्ध 2 अपूर्ण, अधूरा।

असलम् [असु + कलच्] 1. लोहा 2. अस्त्र छोड़ते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र 3 [illegible]।

असवर्ण (वि०) [न० त०] भिन्न जाति या वर्ण का — अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसम्भवा स्यात् श० १।

असह (वि०) [न० त०] 1. जो सहा न जाए, असह्य, अधीर 2 असहिष्णु, (प्रायः समास के साथ, कर्म० के रूप में) — [illegible] — मुद्रा० ६।१३।

असहन (वि०) [न० त०], असहिष्णु, असहनशील, ईर्ष्यालु, — नः शत्रु, — नम् [न० त०] असहिष्णुता, अधीरता, [illegible]।

असहनीय, असहितव्य, असह्य (वि०) [न० त०] जो सहा न जाय, दुःसह, असहनीय, असह्य — [illegible] — रघु० [illegible], कु० ४।१।

असहाय (वि०) [न० ब०] 1 मित्रहीन, अकेला, एकाकी 2 बिना सगी साथियों के [illegible] — यम् [illegible]।

असाक्षात् (अव्य०) [न० त०] 1 जो आंखों के सामने न हो, अदृश्य रूप से, अप्रत्यक्ष रूप से।

असाक्षिक (वि०) [स्त्री० — की] [न० ब०] 1 जिसका कोई गवाह न हो, बिना साक्ष्य के, जिसका कोई साक्षी न हो — असाक्षिकेषु त्वर्थेषु मिथो विवदमानयोः — मनु० ८।१०९।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] 1 जो चश्मदीद गवाह न हो 2 जिसका साक्ष्य कानूनी दृष्टि से ग्राह्य न हो 3. जो किसी कानूनी दस्तावेज को प्रमाणित करने का अधिकारी न हो।

असाधनीय, असाध्य (वि०) [न० त०] 1 जो सम्पन्न न किया जा सके, जो पूरा न किया जा सके 2 जो प्रमाणित होने के योग्य न हो 3. जिसकी चिकित्सा न हो सके (रोग या रोगी) — असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा — शि० २।८४।

असाधारण (वि०) [न० त०] 1. जो साधारण न हो, असामान्य, विशेष, विशिष्ट, 2. (तर्क शास्त्र में) जो सपक्ष या विपक्ष किसी में भी हेतु के रूप में विद्यमान न हो — यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स त्वसाधारणो मतः 3 निजी, जिसका कोई और दावेदार न हो, — णः तर्कशास्त्र में हेत्वाभास, अनैकान्तिक के तीन भेदों में से एक।

असाधु (वि०) [न० त०] 1 जो अच्छा न हो, बुरा, सदाचाररहित, अप्रिय — असाधुरिति असाधुमसाधु साधुना जि० [illegible] 2 दुष्ट 3 दुश्चरित्र (अधि० के साथ) — [illegible] — [illegible] 4 भ्रष्ट अशुद्ध (शब्द)।

असामयिक (वि०) [स्त्री० — की] [न० त०] बिना अवसर का, जो ऋतु के अनुकूल न हो — [illegible]।

असामान्य (वि०) [न० त०] 1 जो साधारण न हो, विशेष — रघु० १५।३९, 2 असाधारण — न्यम् विशेष या विशिष्ट संपत्ति।

असाम्प्रत (वि०) [न० त०] 1 अनुपयुक्त, अशोभन, अनुचित — तम् (अव्य०) अनुचित रूप से, अयथावत्, युक्त विरुद्ध रीति से — [illegible] — स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् — कु० २।५५, [illegible] — शि० २।४७, रघु० १३।६२।

असार (वि०) [न० ब०] 1 नीरस, स्वादहीन 2 (क) व्यर्थ, निरर्थक (ख) निकम्मा, अपर्याप्त, सारहीन — असारे खलु संसारे [illegible] — असारं संसारं [illegible] — मा० ५, [illegible] 4 निर्बल, [illegible] — शि० [illegible], — रः, — रम् [न० त०] 1. अनावश्यक, या महत्त्वहीन भाग 2. [illegible] वृक्ष 3 अगर की लकड़ी।

असारता [असार + तल् + टाप्] 1 नीरसता, 2 निकम्मापन 3 सारहीन प्रकृति, क्षणभंगुर अवस्था — [illegible] — रघु० ८।५१।

असाहसम् [न० त०] बलप्रयोग का अभाव, सुशीलता।

असिः [अस् + इन्] 1 तलवार 2 पशुओं की हत्या करने वाला चाकू — सि (अव्य०) तु, तु० असिम। सम० — गंडः गालों के नीचे रखा जाने वाला छोटा तकिया, — जीविन् तलवार ही जिसकी जीविका का साधन है, वेतन पाने वाला सैनिक योद्धा, — धेनुः, — धेनुकः छुरी, चाकू, — दंतः घड़ियाल, — दशः घड़ियाल, — धारा तलवार की धार — क्षुरस्य इव दन्तैर्भङ्गदे-ष्वासिधारे — रघु० १०।८६, ४१, — धारात्रतम् 1. (किन्हीं के मतानुसार) तलवार की धार पर खड़े होने की प्रतिज्ञा (दूसरों के मतानुसार) युवती पत्नी के साथ रह कर भी उसके साथ मैथुन की इच्छा को दृढ़ता पूर्वक रोकना; — अभिवेदमहत्यापि प्रच्छन्न नीच-

भुज्यते, असिधाराव्रत नाम वदन्ति मुनिपुंगवा । अथवा- युवा युवत्या सार्धं यन्मुग्धभर्तृवदाचरेत् अन्तर्निवृत्तसंगः स्यादसिधाराव्रतं हि तत् यादव 2. (अल आल०) कोई भी अत्यन्त कठिन काम —सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् भर्तृ० २।२८, ६४ —धावः धावकः शस्त्रकार सिकलीगर या शस्त्र परिष्कारक —धेनुः,—धेनुका चाकू–विक्रमांक० ४।६९ —पत्र (वि०) जिसके पत्र तलवार की आकृति के हैं रघु० १६।४८ (—त्रः) 1 गन्ना ईख 2 एक प्रकार का वृक्ष जो कि निचले संसार में उगता है (—त्रम्) 1 तलवार का फल 2 म्यान —वनम् एक प्रकार का नरक जहाँ वृक्षों के पत्ते तीक्ष्ण होते हैं जैसे कि तलवार —पत्रकः गन्ना ईख —पुच्छः —पुच्छकः सूँस शिशुमार सकुची मछली —पुत्रिका —पुत्री छुरी, —मेदः विट्खदिर —हत्यम् तलवार या छुरियों से लड़ना —हेतिः खड्गधारी पुरुष तलवार रखने वाला ।

असिकम् [असि + कन्] ठोडी और निचले ओठ के बीच का भाग ।

असिक्नी [सिता केशादौ शुभ्रा न स्त्री तद्भिन्ना अवृद्धा — असित— तकारस्य क्नादेशः ङीप् च] 1 अन्त पुर की युवती परिचारिका 2 पंजाब देश की एक नदी ।

असिक्निका [सज्ञायां कन् ह्रस्व] युवती सविका ।

असित (वि०) [न० त०] जो सफेद न हो काला नीला गहरे रंग का,—असिता मोहरजनी— शा० ३।८ याज्ञ० ३।१६६ °लोचना °नयना आदि —त 1 गहरा नीला रंग 2 चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष 3 शनिग्रह 4 काला साँप —ता 1 नील का पौधा 2 अन्त पुर की दासी (जिसके बाल अधिक आयु के कारण सफेद न हुए हों) दे० 'असिक्नी' 3 यमुना नदी । सम० —अंबुजम् —उत्पलम् नील कमल —अचिस् (पु०) अग्नि —अश्मन् (पु) उपल गहरा नीला पत्थर —केशा काले बालों वाली स्त्री —केशान्त (वि०) काली जुल्फों वाला —गिरिः, —नग नील गिरि —ग्रीव (वि०) काली गर्दन वाला (—व) अग्नि —नयन (वि०) काली आँखों वाला मेघ० ११२ —पक्ष कृष्ण पक्ष —फलम् मीठा नारियल —मृग काला हरिण ।

असिद्ध (वि०) [न० त०] 1 जो पूरा या सम्पन्न न हो 2 अपूर्ण अधूरा 3 अप्रमाणित 4 अनपका कच्चा 5 जो अनुमेय न हो —द्ध हेत्वाभास के पाँच मुख्य भागों में से एक यह तीन प्रकार का है (1) आश्रयासिद्ध — जहाँ गुण के आश्रय की सत्ता सिद्ध न हो (2) स्वरूपासिद्ध जहाँ निर्दिष्ट स्वरूप पक्ष में न पाया जाय तथा (3) व्याप्यत्वासिद्ध जहाँ सहवर्तिता की उक्त स्थिरता वास्तविक न हो ।

असिद्धि (स्त्री) [न० त०] 1 अपूर्ण निष्पन्नता विफलता 2 परिपक्वता की कमी 3 निष्पत्ति का अभाव (योग० में) 4 (तर्क० में) वह उपसंहार जो प्रतिज्ञा में सम्मोहित न हो ।

असिर [अस् + किरच्] 1 शहतीर किरण 2 तीर सिटकिनी ।

असु [अस् + उन्] 1 श्वास प्राण आध्यात्मिक जीवन 2 मृतात्माओं का जीवन 3 (ब० व०) शरीर में रहने वाले पाँच प्राण असुभिः स्थास्नु यशश्चिचीषत कि० २।१९ (नपु० सु) शोक दुःख । सम० —धारणम् प्राण जीवन धारण जीवन अस्तित्व —भंग 1 जीवन का नाश जीवहानि —सलिलमसुभङ्गाय्यमुन्नयम् भर्तृ० २।२८ 2 जीवन का भय या आशंका —भृत् (पु०) जीवित जन्तु प्राणी —सम (वि०) प्राणों के समान प्यारा (—मः) पति प्रेमी ।

असुमत (वि०) [असु + मतुप्] 1 जीवित प्राणी (पु०) 1 जीवित प्राणी ४।२९ 2 जीवन ।

असुख (वि०) [न० ब०] 1 अप्रसन्न दुःखी 2 जिसका प्राप्त करना आसान न हो कठिन —खम् [न० त०] दुःख पीड़ा । सम० —आविष्ट (वि०) दुःख से पीड़ित —उदर्क (वि०) अन्त में पीडाकर —जनन (वि०) अप्रसन्नता पैदा करने वाला मनु० ११।१० —जीविका निकृष्ट जीवन ।

असुखिन (वि०) [न० त०] अप्रसन्न दुःखी ।

असुत (वि०) [न० ब०] निस्सन्तान पुत्रहीन ।

असुर [अस् न सुर इति न० त० वा] 1 दैत्य राक्षस रामायण में सुरों का कारण बतलाया गया है सुराप्रतिग्रहाद्देवाः सुरा इत्यभिविश्रुताः अप्रतिग्रहणात्तस्या दैतेयाश्चासुरास्तथा । 2 देवताओं का शत्रु दैत्य दानव 3 भूत प्रेत 4 सूर्य 5 हाथी 6 राहु 7 बादल —री 1 रात्रि 2 राशिचक्रक संकेत 3 असुरों की दानवी असुर की पत्नी । सम० —अधिप —राज् —राज 1 असुरों का स्वामी 2 बलि की उपाधि प्रह्लाद का पौत्र —आचार्य —गुरु 1 असुरों के गुरु शुक्राचार्य 2 शुक्रग्रह —आह्वम् तांबे और टीन की मिश्रित धातु —क्षयण —क्षिति (वि०) राक्षसों का नाश करने वाला —द्विष् (पु०) राक्षसों का शत्रु अर्थात् देवता —माया राक्षसी जादू —रिपु —सूदन राक्षसों का हन्ता, विष्णु —हन् (पु०) 1 राक्षसों का नाश करने वाला अग्नि इन्द्र आदि 2 विष्णु ।

असुरसा [न० ब० न सुरसः रसो यस्याः] एक प्रकार का पौधा तुलसी का एक भेद ।

असुर्य (वि०) [असुरस्य इदम् असुर० यत्] राक्षसी, आसुरी ।

असुलभ (वि०) [न० त०] जो आसानी से उपलब्ध न हो सके प्राप्त करने में कठिन विक्रम० २।१।

असुसु [असून् प्राणान् सूयति -सू + क्विप्] तीर न नासि मामुसू मामा [illegible] कि० १५। ५।

असुहृद् (पुं०) [न० त०] शत्रु शि० २।११७।

असूक्षण [सूक्ष् आदरे + ल्युट् न० त०] अपमान अनादर।

असूत असूतिक (वि०) [न० त०, न० ब० कप्] जिसने कुछ पैदा नहीं किया है बांझ।

असूति (स्त्री०) [न० त०] 1 पैदा न करना बांझपना 2 अड़चन स्थानान्तरण।

असूयति (ना० धा० पर०) 1 डाह करना ईर्ष्यालु होना [illegible] मान घटाना अप्रसन्न होना घृणा करना अप्रसन्न होना [illegible] असूयन्ति सचिवा [illegible] असूयन्ति मह्यं प्रकृतय विक्रम० [illegible]

असूयक (वि०) [असूय् ण्वुल्] 1 ईर्ष्यालु मान घटाने वाला निंदक 2 असन्तुष्ट अप्रसन्न अपमान कर्ता ईर्ष्यालु व्यक्ति मनु० [illegible] याज्ञ० १।२८।

असूयन [असूय् + ल्युट्] 1 अपमान निन्दा 2 ईर्ष्या डाह।

असूया [असू अङ् टाप्] 1 ईर्ष्या असहिष्णुता डाह [illegible] मृगयापि तेषां प्रति काम [illegible] १।४। १६ सासूयम् ईर्ष्या के साथ 2 निन्दा अपमान असूया परगणेषु दोषाविष्करणम् [illegible] [illegible] रघु० ६।८२।

असूयु [असूय् उ] 1 ईर्ष्या डाह करने वाला 2 अप्रसन्न।

असूर्य (वि०) [न० त०] [illegible]

असूर्यम्पश्य (वि०) [illegible] जो सूर्य को [illegible] भी न देख सके [illegible] रानियां [illegible] असूर्यम्पश्या राजदाराः [illegible] 2 पति परायणा स्त्री।

असृज् (नपुं०) [न सृज्यते इतरवासवत् समस्या सहज स्यात् न + सृज् + क्विन्-नाग०] 1 रुधिर 2 मंगल ग्रह 3 केसर। सम० -कर लसिका -धरा त्वचा चमड़ी -धारा 1 रुधिर की धार 2 चमड़ी, -प या -पा -पायिन् लोहू पीने वाला राक्षस -पात रुधिर का गिरना, -वहा रक्त वाहिका, नाड़ी -विमोक्षणम् रुधिर का बहना, -स्राव (स्रव) रुधिर का बहना।

असेचन, -नक (वि०) [न० त०] जिसे देखते २ जी न भरे मनोहर सुन्दर।

असौष्ठव (वि०) [न० ब०] 1 सौन्दर्यविहीन, लावण्य-रहित, जो सजीला न हो -शरीरमसौष्ठवम् -मा० १।१७ 2 कुरूप विकलांग -वम् 1 सिफारिश की हीनता 2 विकलांगता कुरूपता।

अस्खलित (वि०) [न० त०] 1 अटल, दृढ, स्थायी 2 अक्षत 3 अविचलित सावधान -रघु० ५।२०।

अस्त (भू० क० कृ०) [अस् + क्त] 1 फेंका हुआ, क्षिप्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ- असमये मत्स्यकास्तोऽभिमान वेणी० ६ 2 समाप्त 3 भेजा हुआ। सम० -करुण (वि०) दयारहित -धी (वि०) मूर्ख, -व्यस्त (वि०) इधर उधर बिखरा हुआ। अव्यवस्थित क्रमरहित, -संख्य (वि०) अनगिनत।

अस्तः [अस्यन्ते सूर्यकिरणा यत्र-अस् + आधारे क्त] अस्ताचल या पश्चिमाचल (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ माना जाता है) -अचिरोद्गुमस्तगिरमभ्यपत्सत् -शि० ९।१, विश्वमस्तमस्तनिमग्नसूर्यम् -रघु० १६।११, श० ४।१ 2 सूर्य का डूबना 3 डूबना, (आलं०) गिरना, पतन द० नीचे अस्त + इ, -गा, -इ, याय् (क) डूबना पश्चिमी क्षितिज में गिरना, यतोऽस्तमर्के-सूर्य डूब गया (ख) रुकना नष्ट होना दूर हटना, अंतर्धान होना समाप्त होना -विषयिणः कस्यापदोऽस्तं गता पंच० १।१४६, धृतिरस्तमिता -रघु० ८।६६, (ग) मरना अथ चास्तमिता त्वमात्मना रघु० ८।५१ १२।११। सम० -अचल, -अद्रि, -गिरिः, -पर्वत, अस्ताचल पहाड़ या पश्चिमी पहाड़, -अव-लम्बनम् क्षितिज के पश्चिमी भाग पर आकाशस्थित सूर्य चन्द्रादिक का डूबते समय आराम करना -उदयौ (द्वि० व०) डूबना और निकलना, उदय और पतन, अन्तोदयावविरमादपरिविभिन्नकालम् मुद्रा० ३।१७, -ग (वि०) डूबने वाला तारे की भांति अदृश्य हो जाने वाला -गमनम् 1 डूबना छिपना 2 मृत्यु, [illegible] भा० ९।

अस्तमनम् [illegible] (वा०) [illegible] अदर्शनस्य असम् [illegible] } (सूर्य का) गिरना।

अस्तमय [illegible] इति अस्तम् + इ + अच्] 1 (सूर्य का) [illegible] कालास्तमय विव-स्वान् कि० ५।३५, (विप० उदय) 2 नाश, क्षय, पतन हानि 3 पात अभिभव उदयमस्तमयं च रघू-द्वहात् -रघु० ९।९ 4 तिरोधान, अन्धकार ग्रस्त होना प्रभाप्ररोहास्तमय रजांसि रघु० ६।३३, 5. (किसी ग्रह का) सूर्य से मयोग।

अस्ति (अव्य०) [अस् + श्तिप्] 1 होना, सत्, विद्यमान, जैसा कि अस्तिक्षीरा में, °काय, 2 प्रायः किसी घटना

या कहानी के आरम्भ में या तो केवल "अपूरक" अर्थ में प्रयुक्त होता है, अथवा 'बात यह है कि' अर्थ को प्रकट करता है—अस्ति सिंह प्रतिवसति स्म —पंच० ४। सम०—काय वर्ग या अवस्था (जैन मतानुसार) —नास्ति (अव्य०) सन्दिग्ध, आंशिक रूप से सत्य।

अस्तित्वम् [अस्ति + त्व] सत्ता, विद्यमानता।

अस्तेयम् [न० त०] चोरी न करना।

अस्त्यानम् [न० त०] झिड़की, कलंक।

अस्त्रम् [अस् + ष्ट्रन्] 1 फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार,—प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात् रघु० २।३४, प्रत्याहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात्— २।४१, ३।५८, अधिगतास्त्र पितुरेव—रघु० ३।३१, आयुधविज्ञान 2 तीर, तलवार 3 धनुष। सम० अ (आ) गारम् अस्त्रशाला, तोपखाना, आयुधागार —आघातः व्रण घाव,—कंटकः तीर, —कारः,—कारकः,—कारिन् हथियार बनाने वाला,—चिकित्सकः चीरफाड़ या शल्य क्रिया करने वाला, जर्राह,—चिकित्सा चीरफाड़ या शल्य क्रिया, जर्राही,—जीवः—जीविन् (पु०)—धारिन् (पु०) सैनिक, योद्धा,—निवारणम् हथियार के वार को रोकना,—मंत्रः अस्त्रचालन या प्रत्याहरण के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र,—मार्जः,—मार्जकः सिकलीगर, —युद्धम् हथियारों से लड़ना,—लाघवम् अस्त्रधारण या चालन में कुशलता, —विद् (वि०) आयुध विज्ञान में दक्ष,—विद्या,—शास्त्रम्, —वेदः अस्त्रचालन विज्ञान या कला, आयुधविज्ञान, —वृष्टिः (स्त्री०) अस्त्रों की बौछार,—शिक्षा सैनिक अभ्यास, अस्त्र चालन व प्रत्याहरण की शिक्षा।

अस्त्रिन् (वि०) [अस्त्र + इन्] अस्त्र से युद्ध करने वाला, धनुर्धारी।

अस्त्री [न० त०] 1. जो स्त्री न हो 2. (व्या० में) पुंल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग।

अस्थान (वि०) [न० ब०] बहुत गहरा,—नम् [न० त०] 1. बुरा स्थान, 2 अनुचित स्थान, पदार्थ या अवसर।

अस्थाने (अव्य०) बिना ऋतु के, उपयुक्त स्थान से बाहर, बिना अवसर के, गलत जगह पर, अयोग्य वस्तु पर—अस्थाने महानर्थोत्सर्गः क्रियते—मुद्रा० ३।

अस्थावर (वि०) [न० त०] 1. चर, जंगम, अस्थिर 2. (विधि में) निजी चल वस्तु जैसे कि सम्पत्ति, पशु, धन आदि (=जंगम)।

अस्थि (नपुं०) [अस्यते—अस् + क्थिन्] 1. हड्डी (कई समस्त पदों के अंत में बदल कर 'अस्थ' हो जाता है—दे० अनस्थ, पुरुषास्थ) 2. फल की गिरी या गुठली—[illegible]—मनु० ४।७८। सम०—कृत्,—तेजस् (पुं०),—संभवः,—सारः, —स्नेहः मज्जा, [illegible],—ज 1. मज्जा, 2. वज्र,—[illegible] [illegible],—धन्वन् (पुं०) शिव,—पंजरः हड्डियों का ढांचा, कंकाल,—प्रक्षेपः मृतक की हड्डियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना, —भक्षः,—भुज् हड्डियों को खाने वाला, कुत्ता —भंगः हड्डी का टूट जाना, —माला 1 हड्डियों का हार 2 हड्डियों की पंक्ति, —मालिन् (पु०) शिव,—शेष (वि०) ठठरी मात्र —संचयः 1 शवदाह के पश्चात् उसकी हड्डियों और भस्मावशेष को एकत्र करना, 2 हड्डियों का ढेर —संधि. जोड़, जोड़बन्दी, —समर्पणम् मृतक की अस्थियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना, —स्थूणः हड्डियों को स्तम्भ के रूप में धारण करने वाला, शरीर।

अस्थिति (स्त्री०) [न० त०] 1 दृढ़ता या जमाव का अभाव (आल० भी) 2 मर्यादा या शिष्ट व्यवहार का अभाव।

अस्थिर (वि०) [न० त०] जो स्थिर या दृढ़ न हो, डांवाडोल, चपल।

अस्पर्शनम् [न० त०] संपर्क का न होना, (किसी चीज के) स्पर्श को टालना प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनम् वरम् —सु० 'इलाज से बचाव अच्छा'।

अस्पष्ट (वि०) [न० त०] 1 जो स्पष्ट न हो, स्पष्ट रूप से दिखाई न देता हो 2 धुंधला, जो साफ समझ में न आवे, संदिग्ध —अस्पष्टब्रह्मलिङ्गानि वेदान्तवाक्यानि —शारी०।

अस्पृश्य (वि०) [न० त०] 1 जो छूने के योग्य न हो 2. अशुचि, अपावन।

अस्फुट (वि०) [न० त०] दुर्बोध, अस्पष्ट, —टम् दुर्बोध भाषण। सम० —फलम् धुंधला या दुर्बोध परिणाम —वाच् (वि०) तुतला कर बोलने वाला, अस्पष्टभाषी।

अस्मद् (सर्व०) [अस् + मदिक्] सर्वनामविषयक प्रातिपदिक जिससे कि उत्तमपुरुषसंबंधी पुरुषवाचक सर्वनाम के अनेक रूप बनते हैं, यह अपा० का ब० व० का रूप भी है,—पुं० परमात्मा, जीवात्मा। सम० —विध, अस्मादृश (वि०) हमारे समान या हम जैसा।

अस्मदीय (वि०) [अस्मद् + छ] हमारा, हम सब का, —अस्मदीयं न हि तत्त्वं[illegible]—पंच० २।१०५, भग० १२।२६।

अस्मार्त (वि०) [न० त०] 1. जो स्मृति के भीतर न हो, स्मरणातीत 2. अवैध, धर्म-धर्मशास्त्रों के विपरीत 3. स्मार्त संप्रदाय से संबंध न रखने वाला।

अस्मि (अव्य०) [अस् + मिन्] ('अस्'—होना धातु का वर्तमान काल, उत्तम पुरुष, एक वचन) मैं—अहम्, —[illegible] भवतु यातः—कि० ३।६, [illegible] [illegible]—[illegible]।

अस्मिता [अस्मि + तल् + टाप्] अहंकार ।

अस्मृतिः (स्त्री०) [न० त०] स्मृति का अभाव, भूलना ।

अस्रः [अस् + रन्] 1 किनारा, कोना 2 सिर के बाल, —**स्रम्** 1 आँसू 2 रुधिर । सम० —**कण्ठः** बाण —**जम्** मांस, —**पः** रुधिर पीने वाला राक्षस, पा जोंक —मातृका [illegible] आसिरम ओध ।

अस्व (वि०) [न० ब०] 1. अकिंचन, निर्धन 2 जो अपना न हो ।

अस्वतंत्र (वि०) [न० त०] 1 आश्रित अधीन पराधीन अस्वतन्त्रा स्त्री पुरुषप्रधाना [illegible] 2 विनीत ।

अस्वप्न (वि०) [न० त०] निद्रारहित जागरूक —**प्नः** 1 देवता 2 अनिद्रा ।

अस्वरः [न० त०] 1 मन्द स्वर 2 व्यंजन —**रम्** (अव्य०) ऊँचे [illegible] नहीं धीमी आवाज में ।

अस्वर्ग्य (वि०) [न० त०] जो स्वर्ग प्राप्त कराने के [illegible] न हो अस्वर्ग्यं [illegible] धर्ममप्यन्वर्तेत न तु—[illegible] ११५६ ।

अस्वस्थ (वि०) [न० त०] 1 जो नीरोग न हो, [illegible] [illegible] अस्वस्थ—[illegible] अनियन्त्रित ।

अस्वाध्याय [न स्वाध्यायः [illegible] न० त०] 1 जिसने अभी अध्ययन आरम्भ नहीं किया [illegible] यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो 2 अध्ययन में [illegible] (जैसे कि अष्टमी, ग्रहण आदि के कारण अनध्याय) ।

अस्वामिन् (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु का अधिकारी न हो, जो स्वामी न हो । सम० —**विक्रय** बिना स्वामी बने किसी वस्तु का बेचना ।

अह् (स्वा० आ० या चुरा० उभ०) दे० 'अंह्' ।

अह (अव्य०) [अह् + घञ्, पृ० न लोप] निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला निपात या अव्यय (क) स्तुति (ख) वियोग (ग) दृढ़संकल्प या निश्चय (घ) अस्वीकृति (ङ) प्रेषण तथा (च) पद्धति या प्रथा की अवहेलना ।

अहंयु (वि०) [अहम् + युस्] घमंडी, अहंकारी, स्वार्थी —भट्टि० १।२० ।

अहत (वि०) [न० त०] 1 अक्षत, अनाहत 2 बिना धुला, नया, —**तम्** बिना धुला (कोरा), या नया कपड़ा, दे० 'अप्रहत' ।

अहन् (नपुं०) [न जहाति त्यजति सर्वथा परिवर्तनं, न + हा + कनिन् न० त०] (कर्तृ० अहः, अह्नी-अहनी, अहानि —अह्ना अहोभ्याम् आदि) 1 दिन (दिन और रात दोनों को मिलाकर) —अत्याहानि मनु० ५।८४, 2. दिन का समय —सन्ध्यासारामहनि न तथा [illegible] —मेघ० ९०, —अपह्नि कुर्वीत पापम्— दिन में, (समस्त पद के अन्त में 'अहन्' बदल कर 'अहः—अहन् या अह्न' रह जाता है परन्तु समस्त पद के आदि में यह 'अहन्' —या अहर्' बन जाता है यथा अहर्पति या अहर्पति आदि) । सम० —**आगमः** (अहरा) दिन का आना, —**आदिः** उष काल, —**करः** सूर्य [illegible] —**गणः** 1 यज्ञ के दिनों का सिलसिला 2 महीना —**दिवम्** (अव्य०) प्रतिदिन, हर रोज दिन प्रति दिन —**निशम्** दिन-रात —**पतिः** सूर्य —**बान्धवः** सूर्य —**मणिः** सूर्य —**मुखम्** दिन का आरम्भ, प्रभात उष काल, —[illegible] महूर्त स्यादहोरात्रं तु [illegible] —मनु० १।६६, ६५, —**शेषः**, —**षम्** सायकाल ।

अहम् (सर्व०) [अस्मद् शब्द का कर्तृ कारक ए० व०] मैं । सम० —आपकी श्रेष्ठता के लिए होड़ प्रतिद्वन्द्विता —**अहमिका** 1 होड़ प्रतियोगिता अपनी श्रेष्ठता का दावा अहमहमिकया प्रणामलालसानाम् का० ५६ 2 अहंकार 3 सैनिक अहम्मन्यता, —**कारः** 1 अभिमान आत्मश्लाघा वेदान्त दर्शन में 'आत्मप्रेम' [illegible] आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है, —[illegible] [illegible], मनु० १।१४, 2 घमंड, स्वाभिमान [illegible] 3 (सां० द० में) सृष्टि के मूलतत्त्व या आठ [illegible] में से तीसरा अर्थात् आत्माभिमान या [illegible] सत्ता का बोध, —**कारिन्** (वि०) घमंडी स्वाभिमानी, —**कृतिः** (स्त्री०) अहंकार, घमंड, —**पूर्व** (वि०) होड़ में प्रथम रहने का इच्छुक —**पूर्विका**, —**प्रथमिका** 1 होड़ के साथ सैनिकों की दौड़, होड़, प्रतियोगिता अहमहपूर्विकया [illegible] कि० १४। [illegible] 2 डींग मारना, आत्मश्लाघा, —**भद्रम्** स्वाभिमान अपनी श्रेष्ठता का दृढ़ विचार —**भावः** 1 घमंड, अहंकार —भामि० ४।१०, [illegible] —**मतिः** (स्त्री०) 1 [illegible] या स्वानुराग जो आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है (वेदा०) 2 दम्भ घमंड, अहंकार ।

अहरणीय, अहार्य (वि०) [न० त०] 1 जो चुराये जाने के योग्य न हो या हटाये जाने अथवा दूर ले जाये जाने के योग्य न हो अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञा नित्यमिति स्थितिः —मनु० ९।१८९, 2 वफ़ादार, निष्ठावान् 3 दृढ़, अविचल, अननुनेय कु० ५।८, —**र्यः** पहाड़ ।

अहल्या (वि०) [न० त०] बिना जोता हुआ —**ल्या** गौतम की पत्नी (रामायण के अनुसार अहल्या सबसे पहली स्त्री थी जिसे ब्रह्मा ने पैदा किया और गौतम को दे दिया, इन्द्र ने उसके पति का रूप धारण करके उसे सतपथ से फुसलाया इस प्रकार उसे धोखा दिया । दूसरे उपाख्यान के अनुसार वह इन्द्र को जानती थी और उसके अनुराग तथा ममता के वशीभूत हो वह उसकी चापलूसी का शिकार बन गई थी । इसके अतिरिक्त एक और कहानी है जिसके अनुसार इन्द्र ने चन्द्रमा की सहायता प्राप्त की । चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर आधी रात को ही बांग दे दी । इस बांग से

गौतम को अपने प्रातःकालीन नित्यकृत्य करने के लिए जगा दिया। इन्द्र ने अन्दर प्रविष्ट होकर गौतम का स्थान ग्रहण किया। जब गौतम को अहल्या के पथभ्रष्ट होने का ज्ञान हुआ तो उसने उसे आश्रम से निर्वासित कर दिया और शाप दिया कि वह पत्थर बन जाय तथा तब तक अदृश्य अवस्था में पड़ी रहे जब तक कि दशरथ के पुत्र राम का चरण-स्पर्श न हो, जो कि अहल्या को फिर पूर्वरूप प्रदान करेगा। उसके पश्चात् राम ने उस दीन-दशा से उसका उद्धार किया—और तब उसका अपने पति से पुनर्मिलन हुआ। अहल्या प्रातःस्मरणीय उन पाँच सती तथा विशुद्ध चरित्र महिलाओं में एक है जिनका प्रातःकाल नाम लेना श्रेयस्कर है—अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा मन्दोदरी तथा, पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक नाशिनी। सम०—जारः इन्द्र,—नन्दनः शतानन्द मुनि, अहल्या का पुत्र।

अहह (अव्य०) [अह् बहानि इति—हा+क पृषो०] विस्मयादि द्योतक निपात निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होता है—(क) शोक, खेद—अहह कष्टमपण्डितता विधेः—भर्तृ० २।९२, ३।११, अहह ग्रामराशिविनष्ट—मुद्रा० २ (ख) आश्चर्य, विस्मय—अहह महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतयः—भर्तृ० २।३५, ३६, (ग) दया, तरस—शान्ति० ४।१९ (घ) बुलाना (ङ) थकावट।

अहिः [आहन्ति—आ+हन्+इण् स च डित् आङो ह्रस्वश्च] 1. साँप, अजगर—अहय. सविषाः सर्वे निर्विषाः डुंडुभाः स्मृताः—कथा० १४।८४, 2 सूर्य 3. राहुग्रह 4. वृत्रासुर 5. धोखेबाज, बदमाश 6. बादल। सम०—कान्तः वायु, हवा,—कोषः साँप की केंचुली—छत्रकम् कुकुरमुत्ता,—जित् (पुं०) 1 कृष्ण (कालिय नाग को मारने वाला) 2 इन्द्र—तुण्डिकः साँप पकड़ने वाला, सपेरा, बाजीगर,—द्विष्,—द्रुह्,—मार,—रिपु,—विद्विष् (पुं०) 1 गरुड़ 2. नेवला 3. मोर 4. इन्द्र 5 कृष्ण—कि० ४।२७, शि० १।३१,—नकुलम् साँप और नेवले,—नकुलिका साँप और नेवले के मध्य स्वाभाविक वैर—निर्मोकः साँप की केंचुली,—पतिः 1 साँपों का स्वामी, वासुकि 2. कोई बड़ा साँप, अजगर साँप—पुत्रकः साँप के आकार की बनी किश्ती,—फेनः,—नम् अफीम,—भयम् किसी छिपे हुए साँप का भय, धोखे की आशंका, अपने—मित्रों की ओर से भय,—भुज् (पुं०) 1. गरुड़ 2. मोर 3. नेवला—भृत् (पुं०) शिव।

अहिंसा [न० त०] 1. अनिष्टकारिता का अभाव, किसी प्राणी को न मारना, मन वचन कर्म से किसी को पीड़ा न देना—अहिंसा परमोधर्मः—भग० १०।५, मनु० १०।६३, ५।४४, ६।७५, 2. सुरक्षा।

अहिंस्र (वि०) [न० त०] अनिष्टकर, निर्दोष, अहिंसक—मनु० ४।२४६।

अहिक. एक अंधा साँप।

अहित (वि०) [न० त०] 1. जो रक्खा न गया हो, धरा न गया हो, जमाया न गया हो 2. अयोग्य, अनुचित मनु० ३।२०, 3. क्षतिकर, अनिष्टकर 4 अनुपकारक 5 अपकारी, विरोधी,—तः शत्रु—अहितानिलोद्धूतैस्तर्जयन्निव केतुभिः रघु० ४।२८, ९।१७, ११।६८,—तम् हानि, क्षति।

अहिम (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म। सम०—अंशुः,—करः,—तेजस्,—द्युतिः,—रश्मिः, सूर्य।

अहीन (वि०) [न० त०] 1. अक्षुण्ण, पूर्ण, समस्त 2. जो छोटा न हो, बड़ा—अहीनबाहुद्रविणः शशास—रघु० १८।१४, 3. जो वञ्चित न हो, अधिकार प्राप्त—मनु० २।१८३ 4 जातिबहिष्कृत न हो, दुश्चरित्र न हो,—नः कई दिनों तक होने वाला यज्ञ, (नपुं-भी)। सम०—वादिन् (पुं०) गवाही देने में असमर्थ, अयोग्य गवाह।

अहीरः [आभारी+पृषो० साधु] ग्वाला, अहीर।

अहुत (वि०) [न० त०] जो यज्ञ न किया गया हो, जो (आहुति के रूप में) हवन में प्रस्तुत न किया गया हो—मनु० १२।६८,—तः धर्मविषयक चिन्तन, भजन, प्रार्थना और वेदाध्ययन (पाँच महायज्ञों और कर्तव्यों में से एक)—मनु० ३।७३, ७४।

अहे (अव्य०) [अह+ए] (क) झिड़की, भर्त्सना (ख) खेद तथा (ग) वियोग को प्रकट करने वाला निपात।

अहेतु (वि०) [न० ब०] निष्कारण, स्वतः स्फूर्त अहेतुः पक्षपातो यः—उत्तर० ५।१७।

अहै(है)तुक (वि०) [न० ब० कप्] निराधार, निष्कारण, निष्प्रयोजन भग० १८।२२।

अहो (अव्य०) [हा+डो न० त०] निम्नांकित अर्थों का प्रकट करने वाला अव्यय—(क) आश्चर्य या विस्मय—बहुधा रुचिकर अहो कामी स्वतां पश्यति श० २।२, अहो मधुरमासां दर्शनम् श० १, अहो बकुलावलिका—मालवि० १, अहो रूपमहो वीर्यमहो सत्त्वमहो द्युतिः—रामा० (अहो उसका रूप आश्चर्य जनक है—आदि) (ख) पीड़ाजनक आश्चर्य—अहो ते विगतचेतनत्वम्—का० १४६, 2 शोक या खेद—अहो दुष्यन्तस्य संशयमारूढाः पिण्डभाजः—श० ६, विधिरहो बलवानिति मे मतिः—भर्तृ० २।९१, 3. प्रशंसा (शाबाश, बहुत खूब)—अहो देवदत्तः पचति शोभनम्—सिद्धा० 4. झिड़की (धिक्,) 5. बुलाना, संबोधित करना 6. ईर्ष्या, डाह 7. उपभोग, तृप्ति 8. थकावट 9. कई बार केवल अनुपूरक के रूप में—अहो नु खलु (भोः), सामान्य रूप से आश्चर्य को द्योतक हो—अहो नु खलु ईदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, अहो नु खलु भोस्तदेतत्

-कालीय नाम मा० ५, 'अहो बत' प्रकट करता है (क) दया, तरस तथा खेद अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्--भग० १।४४, (ख) संतोष--अहो बतासि स्पृहणीयवीर्य --कु० ३।२० (मल्लि० यहाँ 'अहो बत' को संबोधन के रूप में ग्रहण करता है (ग) संबोधित करना, बुलाना (घ) थकावट। सम० -पुरुषिका--तु० आहोपुरुषिका।

अह्नाय (अव्य०) [ह्नु + घञ् वृद्धि, पृषो० वस्य यत्वम्] तुरन्त, शीघ्र फौरन अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज --कु० ५।८६ अह्नाय तावदरुणेन तमो निरस्तम् रघु० ५।७१ कि० ९।१६।

अह्रीक (वि०) [न० ब० कप्] निर्लज्ज, ढीठ—क बौद्ध भिक्षुक।

आ

आ देवनागरी वर्णमाला का द्वितीय अक्षर।

आ 1 विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) स्वीकृति हाँ (ख) दया 'आह' (ग) पीड़ा या खेद (बहुधा --अस् या आ लिखा जाता है) 'हा' 'हत' (घ) प्रत्यास्मरण 'अहो--ओह' आ एवं किलासीत् --उत्तर० ६ (ङ) कई बार केवल अनुपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है आ एवं मन्यसे 2 (संज्ञा और क्रियाओं के उपसर्ग के रूप में) (क) 'निकट' 'पार्श्व' 'की ओर' सब ओर से 'सब ओर' (कुछ क्रियाओं को देखो) (ख) गत्यर्थक गमनार्थक तथा ज्ञानात्मकद्योतक क्रियाओं से पूर्व लगकर विपरीतार्थ का बोध कराता है यथा गम्--जाना आगम् आना दा--देना आदा लेना 3 (अपा० के साथ वियुक्त निपात के रूप में प्रयुक्त होकर) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) आरम्भिक सीमा (अभिविधि) 'से' से लेकर तक आमूलात् श्रोतुमिच्छामि श० १ आ जन्मनः श०।।२४ (ख) पृथक्करणाय या समाप्तिसूचक सीमा (मर्यादा) को प्रकट करता है [illegible]

[illegible]

4 [illegible]

आ [illegible]

आः 1 तु० आम् 2 [illegible]

आकम्पनम् [आ + कम्प् + ल्युट्] डींग मारना, शेखी बघारना।

आकम्पः [आ + कम्प् + घञ्] 1 मृदु कंप 2. हिलना, काँपना।

आकम्पनम् [आ + कम्प् + ल्युट्] कंपयुक्त गति, हिलना।

आकम्पित आकम्प्र [आ + कम्प् + क्त र वा] हिलता हुआ काँपता हुआ हिला-डुला विक्षुब्ध।

आकर [आकुर्वन्त्यस्मिन् आ + कृ + घ] 1 खान--मणिराकरोद्भवः रघु० ३।१८ आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः हि० प्र० ४४ (आल०) खान या किसी वस्तु का समृद्ध साधन श्लाघ्यो गुणाकर विक्रम० १।९ अगण्यगुणाकरम् --भर्तृ० २।६५ कु० ३।२९ 3 सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ।

आकरिक (वि०) [आकर + ठन्] (राजा के द्वारा) नियत व्यक्ति जो खान का अधीक्षण करता है।

आकालिक (वि०) [आकाल + ठञ्] 1 [illegible] उत्पन्न [illegible] 2 अस्थायी [illegible]

आकर्णनम् [आ [illegible] ल्युट्] सुनना कान लगा कर सुनना

आकर्षः [आ + कृष् + घञ्] 1 खिंचाव या [illegible] 2 [illegible] दूर ले जाना [illegible] 3 [illegible] प्रलोभन [illegible]

[illegible]

आकर्षक [illegible]

आकर्षणम् [illegible]

आकोशक [illegible]

आकिंचन [illegible] आ [illegible] (कुछ नहीं) [illegible]

आकलनम् [आ + कल् + ल्युट्] 1 बांध रखना, पकड़ना —मेखलाकलन० का० १/३ बन्दीगृह में रहना 2 गिनना, हिसाब लगाना 3 चाह, इच्छा 4 पूछ ताछ 5 समझ बूझ।

आकल्प [आ + कृप् + णिच् + घञ्] 1 आभूषण, अलंकार —आकल्पसारो रूपाजीवाजनः दश० ६३, रघु० १७।२२, १८।५२ 2 वेशभूषा 3 रोग, बीमारी।

आकल्पक [आ + कृप् + णिच् + ण्वुल्] 1 दुःखपूर्ण स्मृति, स्मृति का लोप 2 मूर्छा 3 हर्ष या प्रसन्नता 4 अन्धकार 5 गांठ या जोड़।

आकष [आ + कष् + अच्] कसौटी।

आकषिक (वि०) [आकषेण चरति —ठन्, आकष + ठन्] परखने वाला, कसौटी पर कसने वाला।

आकस्मिक (वि०, स्त्री० —की) [अकस्मात् + ठक्, टिलोपः] 1 अचानक होने वाला, अचिंतित, अप्रत्याशित, सहसा 2 निष्कारण, निराधार —[illegible] आकस्मिक स्नान शा०।

आकाङ्क्षा [आ + काङ्क्ष् + अ + टाप्] 1 इच्छा, चाह —कुमु० समक० 2 (व्या० में) अर्थ को पूरा करने के लिए आवश्यक शब्द की उपस्थिति, किसी विचार या वाक्य के भाव को पूरा करने के लिए तीन आवश्यक तत्त्वों में से एक (दूसरे दो हैं योग्यता और आसत्ति) आकाङ्क्षा प्रतीतिपर्यवसानविरहः सा० द० 3 अर्थ की पूर्ति या अभाव 3 [illegible] 4 प्रयोजन, इरादा 5 पूछ ताछ [illegible]।

आकाय [आ + चि + कर्मणि घञ्] 1 चिता पर रक्खी हुई अग्नि 2 चिता।

आकार [आ + कृ + घञ्] 1 रूप, शक्ल, आकृति —द्विरूप हो या दो प्रकार का 2 डील, सूरत, सत्ता, मूर्ति, चेहरा —आकारसदृशप्रज्ञः रघु० १।१५, १२।१ 3 (विशेषतः) चेहरे का रंग ढंग जिससे मनुष्य के आन्तरिक विचार तथा मनोवृत्ति का पता लगे —तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च रघु० १।२० सवाऽपि संवृताकारमास्ता —विक्रम० २ 4 इशारा, संकेत निशानी। सम० —गुप्ति (स्त्री०) —गोपनम्, —गूहनम् छिपाव, मन के भावों का छिपाना।

आकार (ण) णम्, —णा [आ + कृ + णिच् + ल्युट्, युच् वा] 1 आमन्त्रण, बुलावा —सवयाकारणाय दश० १७५ 2 आह्वान।

आकाल: [आ + कु + अल् + अच् को कादेश] ठीक समय।

आकालिक (वि०) (स्त्री० —की) [अकाल + ठञ्] 1 क्षणिक, अल्पकालिक मनु० ४।१०३ 2 बेमौसम, अकालपक्व, असामयिक —आकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम् —कु० ३।३४, मृच्छ० ५।१, —की बिजली।

आकाश: —शम् [आ + काश् + घञ्] 1 आसमान —आकाशभवा सरस्वती कु० ४।३९ [illegible] आदि 2 अन्तरिक्ष (पाँचवाँ तत्त्व) 3 सूक्ष्म और आध्यात्मिक द्रव्य जो समस्त विश्व में व्याप्त है, वैशेषिकों द्वारा माने हुए ९ द्रव्यों में से एक, यह शब्द गुण का आधार है —शब्दगुणकमाकाशम् तर्क०, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् शा० १।१ 4 अवकाश [illegible] रघु० १३।[illegible] 5 मुक्त स्थान 6 स्थान [illegible] भवनाकाशम् [illegible] 6 ब्रह्म (अन्तरिक्ष सदृश) आकाशस्तल्लिङ्गात् ब्रह्म० [illegible] 7 प्रकाश, स्वच्छता [illegible] आकाश शब्द नाटकों में प्रयुक्त होता है जब कि रंगमंच पर स्थित पात्र किसी व्यक्ति से बातें करता है जो वहाँ उपस्थित न हो और उसके उत्तर को सुनता है जो कि 'किं ब्रवीषि' इत्यादि शब्दों से आरम्भ होता है —दूरस्थाभाषणं यत्स्यादशरीरनिवेदनम् परोक्षान्तरितं वाक्यं तदाकाशे निगद्यते ॥ [illegible] (आकाशे) [illegible]। सम० —ईश: 1 इन्द्र 2 (विधि में) असहाय व्यक्ति (जैसे कि बच्चा, स्त्री, दरिद्र) जिसके पास भाग्य के अतिरिक्त और कोई सहारा नहीं [illegible] —गङ्गा स्वर्गीय गंगा, मन्दाकिनी [illegible] रघु० १३।[illegible] —जननिन् (पुं०) झरोखा, प्राकार में बना तोप का झरोखा, बन्दूक या तोप आदि चलाने के लिए भित्ति में बना छिद्र 1 —दीप:, —प्रदीप: 1 कार्तिक मास में दिवाली के अवसर पर लक्ष्मी या विष्णु का स्वागत करने के लिए लकड़ी पर रक्खा हुआ दीपक 2 बाँस के सिरे पर बाँध कर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन, प्रकाशस्तम्भ पर रक्खा हुआ दीया या लैम्प, —भाषितम् 1 रंगमंच पर अनुपस्थित व्यक्ति से भाषण करना, एक काल्पनिक भाषण जिसका उत्तर इस प्रकार दिया जाय मानो वह बात वस्तुतः कही और सुनी गई है —किं ब्रवीषीति यन्नाट्ये विना पात्रं प्रयुज्यते, श्रुत्वेवानुक्तमप्यर्थं तत्स्यादाकाशभाषितम् —सा० द० ४२५, 2 आकाश में कही बात या शब्द, —मण्डलम् खगोल, —यानम् 1 हवाई जहाज, गुब्बारा 2 आकाश में घूमने वाला, —रक्षिन् (पुं०) किले की बाहरी दिवारों

की रक्षा करने वाला, °अवनम् °आधिनम्—दे० °वर्त्मन् (नपुं०) 1 अन्तरिक्ष 2 वायुमंडल, वायु, °वाणी आकाश से आई हुई आवाज, अशरीरिणी वाणी, °सलिलम् वर्षा, ओस—स्फटिकः ओला ।

आकिञ्चन्यम्, आकिञ्चन्यम् [अकिञ्चन + अण्, ष्यञ् वा] गरीबी, धन का अभाव ।

आकीर्ण (भू० क० कृ०) [आ + कृ + क्त] 1 बिखरा हुआ, फैला हुआ, भरा हुआ, व्याप्त, संकुल, खचाखच भरा हुआ, परिपूर्ण, भरपूर—जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव—श० ५।१०, आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वाररोधिभिः—रघु० १।५० ।

आकुञ्चनम् [आ + कुञ्च् + ल्युट्] 1 झुकाना, सिकोड़ना, संकोचन 2 पाँच कर्मों में से एक—सिकुड़न 3 एकत्र करना, ढेर लगाना 4 टेढ़ा होना ।

आकुल (वि०) [आ + कुल् + क] 1 भरपूर, भरा हुआ—प्रचलदूर्मिमालाकुलम् (समुद्रम्)—भर्तृ० २।४, बाष्पाकुला वाच—नल० ४।१८, आलापकूजनाकुलानि ?—अमरु ८१, 2 प्रभावित, प्रभावग्रस्त, पीड़ित, आहत—हर्ष°, शोक°, विस्मय°, स्नेह° आदि 3 व्यस्त, लीन 4 घबराया हुआ, विक्षुब्ध, उद्विग्न—अविवेकप्रतिकूलमुखमीक्ष्यमाणकाण्डयाकुल—शि० २।१, विस्मित, किंकर्तव्यविमूढ, अनिर्धारित—आकुल, अत्यन्त क्षुब्ध 5 बिखरे बाल वाला, अव्यवस्थित 6. असंगत, विरोधी, —लम् आबाद जगह ।

आकुलित (वि०) [आ + कुल + क्त] 1. दुःखी, उद्विग्न, विक्षुब्ध—मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धुः—कु० ५।८५, 2 मैला हुआ 3 मलिन, धूमिल, धूमदूषित—श० ४, 4 अभिभूत, पीड़ित—शोक°, पिपासा° आदि ।

आकूणित (वि०) [आ + कूण् + क्त] कुछ संकुचित—मदनशरशल्यवेदनाकूणितत्रिभागेन—का० १६६, ८१ ।

आकूतम् [आ + कू + क्त] 1 अर्थ, इरादा, प्रयोजन—इतीरिताकूतमनीलवाजिनम्—कि० १४।२६, 2 भावना, हृदय की स्थिति, संवेग, चूडामण्डलबन्धनं तरलयत्याकूतजो वेपथुः—उत्तर० ५।३६, भावाकूत—अमरु ४ मा० ९।११, साकूतम् भावनापूर्वक, साभिप्राय (प्रायः नाटकों में रंगमंच के निर्देश के रूप में) 3 आश्चर्य या जिज्ञासा 4. चाह, इच्छा ।

आकृतिः (स्त्री०) [आ + कृ + क्तिन्] 1 रूप, प्रतिमा, शक्ल—गोवर्धनस्याकृतिरन्वकारि—शि० ३।४, 2. शरीर, काया—किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—श० १।२०, विकृताकृति—मनु० ११।५१ इस प्रकार घोर° 3. दर्शन, सुन्दर रूप, सद्रूप,—न ह्याकृतिः सुसदृशं विजहाति वृत्तम्—मृच्छ० ९।१६, यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति—सुभाषित० 4. नमूना, प्रकार 5. कबीला, जाति । सम०—गणः व्याकरण के किसी विशेष नियम से संबंध रखने वाले शब्दों की सूची—जो केवल नमूनों की सूची है (बहुधा गणपाठ में अंकित) यथा अर्शादिगण, स्वरादिगण, चादिगण आदि,—छत्रा घोषातकी नाम की लता ।

आकृष्टि (स्त्री०) [आ + कृष् + क्तिन्] 1. आकर्षण 2. खिंचाव, गुरुत्वाकर्षण (गणित ज्योतिष), —आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत्स्वस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या, आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् क्व पतत्वियं खे ।—गोलाध्याय० 3. धनुष का खींचना या झुकाना, ज्या°—अमरु० ।

आकेकर (वि०) [आके अन्तिके कीर्यते इति आ + कृ + अप् + टाप्—आकेकरा दृष्टिः सा अस्ति अस्य इति—आकेकरा + अच्] अधमुंदा, अर्धनिमीलित (आँखें)—निमीलिताकेकरलोलचक्षुषा कि० ८।५३, मु० ३।२१, दृष्टिराकेकरा किंचित्स्फुटापाङ्गे प्रसारिता, मीलितार्धपुटालोके ताराव्यावर्तनोत्तरा ।

आकोकेरः (ग्रीक शब्द) मकर राशि ।

आक्रन्दः [आ + क्रन्द् + घञ्] 1 रोना, चिल्लाना 2 पुकारना आह्वान करना, 3 शब्द, चिल्लाहट 4 मित्र, रक्षक 5 भाई 6. रोने का स्थान 7 वह राजा जो अपने मित्र राजा को दूसरे की शत्रुता करने से रोके वह राजा जिसकी राजधानी मिलती हुई किसी दूसरी राजधानी के पास है ।—मनु० ७।२०७ ।

आक्रन्दनम् [आ + क्रन्द् + ल्युट्] 1 विलाप, रुदन 2. ऊँचे स्वर से पुकारना ।

आक्रन्दिक (वि०) [आक्रन्दं धावति इति आक्रन्द + ठञ्] वह व्यक्ति जो किसी दुखिया के रोने को सुनकर दौड़ कर उसके पास जाता है ।

आक्रन्दित (भू० क० कृ०) [आ + क्रन्द् + क्त] 1 दहाड़ने वाला, या फूट २ कर रोने वाला, 2. आहूत, बुलाया हुआ,—तम् चिल्लाना, दहाड़ना ।

आक्रमः—क्रमणम् [आ + क्रम् + घञ्, ल्युट् वा] 1 निकट आना, उपागमन 2. टूट पड़ना, आक्रमण करना, हमला 3. पकड़ना, हड़पना, कब्जे में करना, 4 पार करना, प्राप्त करना 5. विस्तार करना, चक्कर लगाना, बढ़ चढ़ कर होना 6. शक्ति से अधिक बोझा लादना ।

आक्रान्त (भू० क० कृ०) [आ + क्रम् + क्त] 1. पकड़ा हुआ, अधिकार में लिया हुआ, पराजित, पराभूत—आक्रान्तविमानमार्गम्—रघु० १३।१७, तल पहुँचा, भरपूर, अधिकृत, ढका हुआ—कुसुमे तेन आक्रान्तं मञ्जुलाक्रान्तं महत्—रघु० १७।२९, शक्तिनिर्मुक्ताक्रान्तम्—भर्तृ० ३।१४, इसी प्रकार मदन°, भय°, क्रोध° आदि, 2. लदा हुआ (जैसे बोझ से) 3. बढ़ा हुआ, बहुत बढ़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ—रघु०

१०।३८ मालवि० ३।५ 4 प्राप्त किया हुआ अधिकार में किया हुआ।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ + क्रम् + क्तिन्] 1 ऊपर रखना अधिकार में करना पददलित करना —आक्रान्तिसम्भावितपादपीठम्—कु० ३।११ 2 पराभूत करना दबाना लादना 3 आरोहण आगे बढ़ जाना 4 शक्ति शौर्य, पैल।

आक्रामक [आ + क्रम् + ण्वुल्] आक्रमणकर्ता, हमलावर।

आक्रीडः-डम् [आ + क्रीड् + घञ्] 1 खेल, क्रीडा आमोद 2 प्रमदवन क्रीडोद्यान आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिताः स्वेषु वेश्मसु—कु० २।४३, कस्याप्याक्रीडशालाद तम विनिश्रमिषु —दश० १२।

आक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [आ + क्रुश् + क्त] 1 डाट-डपट किया हुआ निन्दित, तिरस्कृत, कलंकित—शि० १२। २७ 2 ध्वनित, चीत्कारपूर्ण 3 अभिशप्त,—ष्टम् 1 जोर की पुकार 2 घोर शब्द या रुदन, गालीगलौजयुक्त भाषण—मार्जारमूषिकास्पर्शे आक्रुष्टे क्रोधसंभवे—कात्या०।

आक्रोशः-शनम् [आ + क्रुश् + घञ्, ल्युट् वा] 1 पुकारना या जोर से चिल्लाना, उच्चस्वर से रोना या नाद 2 निन्दा, कलंक, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना —याज्ञ० २।३०२ 3 अभिशाप, कोसना 4. शपथ लेना।

आक्लेदः [आ + क्लिद् + घञ्] आर्द्रता, गीलापन, छिड़काव।

आक्षद्यूतिक (वि०) (स्त्री० —की) [अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम् इति—ठक्] जुए में प्रभावित या समाप्त किया हुआ।

आक्षपणम् [आ + क्षप् + ल्युट्] 1 उपवास रखना, उपवास या व्रत द्वारा आत्मशुद्धि मथन।

आक्षपाटिक [अक्षपट + ठक्] 1 द्यूतक्रीडा का निर्णायक, द्यूतगृह का अधीक्षक 2 न्यायाधीश।

आक्षपाद (वि०) (स्त्री० —दी) [अक्षपाद + अण्] अक्षपाद या गौतम का [illegible] व न्यायशास्त्र का अनुयायी, नैयायिक [illegible]

आक्षार [आ + क्षर् + णिच् [illegible]] [illegible] लगाना ([illegible]) [illegible] करना

आक्षारणम्-णा [आ + क्षर् + णिच् + ल्युट्] [illegible]

आक्षारित (भू० क० कृ०) [आ + क्षर् + णिच् + क्त] 1 [illegible] 2 [illegible]

आक्षिक (वि०) (स्त्री० —की) [अक्ष [illegible]] 1 पासों से [illegible] 2 [illegible] में जाता हुआ 3 [illegible] —आक्षिकं ऋणम् मनु० ८। १५९ [illegible] में किया हुआ [illegible] —कम् 1 [illegible] में जीता हुआ धन 2. [illegible] का ऋण।

आक्षिप्तिका [आ + क्षिप् + क्त + टाप् क, इत्वम्] रंगमंच पर आते हुए किसी पात्र के द्वारा गान विशेष विक्रम० ४।

आक्षीब (वि०) [आ + क्षीब् + क्त नि०] 1 जिसने कुछ मद्यपान किया हुआ हो 2 मस्त, नशे में चूर।

आक्षेपः [आ + क्षिप् + घञ्] 1 दूर फेंकना उछालना, खींचकर दूर करना छीन लेना — अंशुकाक्षेपविलज्जितानाम् —कु० १।१४ पीछे हटना 2 भर्त्सना, झिड़कना, कलंक लगाना, अपशब्द कहना, अपमानपूर्ण निन्दा —[illegible]प्रगल्भतया उत्तर० ५।२९, विरुद्धमाक्षेपवचस्तितिक्षितम् कि० १४।२५ 3 मन की उचाट मन का खिचाव —विषयाक्षेपपर्यस्तबुद्धे —भर्तृ० ३।४७, २३, 4 प्रयुक्त करना, लगाना भरना (जैसे कि रंग) —गोरोचनाक्षेपनितान्तगौरैः कु० ७।१७, 5 संकेत करना (किसी दूसरे शब्दार्थ का) मान लेना, समझ लेना स्वसिद्धये पराक्षेप —काव्य०, 6 अनुमान 7 धरोहर 8 आपत्ति या संदेह 9 (सा० शा० में) एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तु को एक विशेष अर्थ जतलाने के लिए प्रकटतः दबा दिया जाय या निषिद्ध कर दिया जाय —काव्य० १०, सा० द० ७१४, और रसगंगाधर का आक्षेपप्रकरण।

आक्षेपक [आ + क्षिप् + ण्वुल्] 1 फेंकनेवाला, 2 उचाट करने वाला, कलंक लगाने वाला दोषारोपण करने वाला 3 शिकारी।

आक्षेपणम् [आ + क्षिप् + ल्युट्] फेंकना, उछालना।

आक्षोटः-डः [आ + अक्ष् + ओट् (ड) + अण्] अखरोट की लकड़ी। दे० अक्षोट।

आखेटनम् [आच्छोदनम्] आखेट शिकार।

आखः, आखनः [आ + खन् + ड, घ वा] फावड़ा, खुर्पी।

आखण्डल [आखण्डयति भेदयति पर्वतान् आ + खण्ड् + डलच् [illegible]] इन्द्र आखण्डल काममिदं बभाषे कु० ३।११, [illegible] कामुकाणामखण्डलचापमिवभाति [illegible] ८।२३ मेघ० १५।

आखनिक [आ + खन् + इकक्] 1 खोदने वाला खनिक 2 चूहा या मूसा 3 सूअर 4 चोर 5 कुदाल

आखर [आ + खन् + अर] 1 फावड़ा 2 खोदने वाला खनिक।

आखातः —तम् [आ + खन् + क्त] प्राकृतिक [illegible] जलाशय, खाड़ी।

आखानः [आ + खन् + घञ्] 1. चारों ओर से खोदना 2 फावड़ा 3 कुदाल कुल्हाड़ा।

आखुः [आ + खन् + कु डिच्च] 1 मूषिक चूहा छछूंदर अपूं धा(?)छति [illegible] गणपतेराखु क्षुधार्तः फणी —पंच० १।१५९, 2. चोर 3. सूअर 4. फावड़ा

5. कंचुक — विषमे मनि नैवाप्ति न ददाति अहर्पि न समाहृणाक्षम् । सम० — उत्कर: वल्मीक ममा — उत्थ (वि०) चूहों से उत्पन्न (—त्थम्) चूहों का निकाला चूहों का समूह, — ग: — रथ: — वाहन: गणेश जिसका वाहन चूहा है, — पाल: शूद्र और वैश्य जाति का पुरुष, (शा०) चूहा का पकड़न और मारने वाला बहेड़ा, — पाषाण: चुम्बक पत्थर — भुज् — बिल्ला, ।

आखेट: [आखिट्यन्ते त्रास्यन्ते प्राणिनोऽत्र आ + खिट् + घञ् तारा०] शिकार करना पीछा करना । सम० — शीर्षकम् 1 चिकना फर्श 2 खान गुफा ।

आखेटक (वि०) [आखेट + कन्] शिकार करने वाला — क: शिकारी, — कम् शिकार ।

आखेटिक: [आखेटे कुशल: ठक्] 1 शिकारी 2 शिकारी कुत्ता ।

आखोट: [आख: खनित्रमिव उटानि पर्णानि अस्य ब० स०] अखरोट का वृक्ष ।

आख्या [आख्यायतेऽनया आ + ख्या + अङ्] 1 नाम, अभिधान — किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या श० ७।३३, यथार्थाख्या सुमुखी जगाम कु० ६।२६, तदाख्यया भुवि पप्रथे रघु० १५।१०१, बहुधा समास के अन्त में जब प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'नामक' या 'नाम वाला' अथ किमाख्यस्य राजर्षे: सा धर्मपत्नी श० ७, रघुवंशाख्य काव्यम आदि ।

आख्यात (भू० क० कृ०) [आ + ख्या + क्त] 1 कहा हुआ बताया हुआ, घोषणा किया हुआ 2 गिना हुआ, पाठ किया हुआ बतलाया हुआ 3 नामक या क्रियापद, — तम् क्रिया, भावप्रधानमाख्यातम् नि० धात्वर्थेन विशिष्टस्य विधेयत्वेन बोधने समर्थं स्यार्थं यत्तस्य शब्दो वाख्यातमुच्यते ।।

आख्याति: (स्त्री०) [आ + ख्या + क्तिन्] 1 कहना समाचार, प्रकाशन 2 यश 3 नाम ।

आख्यानम् [आ + ख्या + ल्युट्] 1 बोलना घोषणा करना, बतलाना, समाचार 2 किसी पुरानी कहानी की ओर निर्देश करना — पूर्ववृत्तकथनम् मा० द० (उदा० — देव: ... निर्जित ... अकैदंऽयम यदा पूरिता ... वेणी० ... 3 कथा कहानी विशेषकर से काल्पनिक या पौराणिक उपाख्यान — अप्सरा पुरूरवस चकमे इत्याख्यानविद आचक्षते — मा० २, मनु० ३।२३२ 4 उत्तर प्रश्नाख्यानयो पा० ८।२।१०५ 5 भेदक धर्म ।

आख्यानकम् [आख्यान + कन्] कथा, छोटी पौराणिक कहानी, कथानक, — आख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन — का० ७ ।

आख्यायक (वि०) [आ + ख्या + ण्वुल्] कहने वाला, सूचना देने वाला, — क: 1 दूत, हरकारा आख्याय- कात् भूतमुन्नयन्न भट्टि० ७।६४, 2 अग्रदूत ...घोषक ।

आख्यायिका [आख्यायक + टाप् इत्वम्] गद्य रचना का नमूना सुसंगत कहानी, आख्यायिका कथावत्स्यात् कवेर्वंशादिकीर्तनम् अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित् कथाशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते । आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् । अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम् सा० द० ५६८ (साहित्य शास्त्र के लेखक 'गद्यरचना' को प्राय: दो (कथा और आख्यायिका) भागों में बांटते हैं वह बाण के हर्षचरित को 'आख्यायिका' तथा कादम्बरी को 'कथा' के नाम से पुकारते हैं । दण्डी इस प्रकार के भेद को स्वीकार नहीं करता — काव्या० १।२८ — तत्कथाख्यायिकेत्येका जाति: संज्ञाद्वयांकिता ।।

आख्यायिन् (वि०) [आ + ख्या + णिनि] जो व्यक्ति कहता है, सूचना या समाचार देता है — रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुकर्णान्तिकचर — श० १।२४ ।

आख्येय (सं० कृ०) [आ + ख्या + यत्] कहने या समाचार देने के योग्य, — यम् शब्दों में कहने के योग्य, मौखिक संदेश मेघ० १०३ ।

आगति: (स्त्री०) [आ + गम् + क्तिन्] 1 पहुंचना, आगमन — लोकस्यास्य गतागतिम् रामा०, इति निश्चित प्रियतमागतय शि० ९। ८३ 2 अधिग्रहण 3 वापसी 4 उद्गम ।

आगन्तु (वि०) [आ + गम् + तुन्] 1. आने वाला, पहुंचनेवाला 2 भटका हुआ 3 बाहर से आने वाला, बाह्य (कारण आदि) 4 नैमित्तिक आनुषंगिक, आकस्मिक — तु नवागन्तुक अजनबी अतिथि । सम० — ज (वि०) आनुषंगिक रूप से या अकस्मात् उत्पन्न होने वाला ।

आगन्तुक (वि०) (स्त्री० — का, — की) 1 अपनी इच्छा से आने वाला, बिना बुलाये आने वाला आगन्तुका ... 2 भटका हुआ (जैसे कि जानवर) ... 3 आनुषंगिक आकस्मिक नैमित्तिक ... 4 ... — क: 1 अजनबी, अतिथि, अभ्यागत 2 अजनबी ... अभ्यागत ।

आगम: [आ + गम् + घञ्] 1 आना पहुंचना दर्शन देना — लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्यागम: कुत: उत्तर० ५।२० अकस्माद् आगमन, मम: प्रभवस्यागमे, राज्यागमे प्रणीयन्ते — भग० ८। १८, रघु० १४। ८०, पंच० ३। ४८, 2 अधिग्रहण ...

आगम —मुद्रा० १, श० ६, विद्यागमनिमित्तम् विक्रम० ५ 3 जन्म, मूल, उत्पत्ति आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत भग० २।१४, 4 संकलन, संचय (धन का) अर्थ, धन आदि 5 प्रवाह, जलमार्ग, धारा (पानी की) रक्त फेन 6. बीजक या समापक द० अनागम 7 ज्ञान शिष्यप्रदेयागमा भर्तृ० २।१२ प्रज्ञया सदृशागम आगम सदृशारम्भ रघु० १।१५ 8 आय राजस्व 9 किसी वस्तु का वैध अधिग्रहण आगमोऽपि बल नैव भुक्ति स्तोकापि यत्र ना याज्ञ० २।२७ 10 संपत्ति की वृद्धि 11 परंपरागत सिद्धांत या प्रमाण धार्मिक लेख, धर्मग्रन्थ, शास्त्र—अनुमानेन न चागम क्षत कि० २।२८ परिशुद्ध आगम ३३ 12 शास्त्राध्ययन वेदाध्ययन 13 विज्ञान, दर्शन बहुधा प्यागमैर्भिन्ना पन्थानः सिद्धिहेतवः रघु० १०।२६, 14 वेद धर्मग्रन्थ न्यायनिर्णीतसारत्वान्निरपेक्षमिवागमे कि० ११।३९ 15 चार प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम जिसे नैयायिक 'शब्द' या 'आप्तवाक्य' कहते हैं ('वेद' ही ऐसे प्रमाण समझे जाते हैं) 16 उपसर्ग या प्रत्यय 17 (शब्द साधन में) वर्ण की वृद्धि या अन्तःक्षेप 18 वृद्धि इडागम 19 सिद्धान्त का ज्ञान (विप० प्रयोग)। सम०—गीत (वि०) अधीत पठित, परीक्षित, वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ बहुत विद्वान् पुरुष -प्रनीय इत्यागमवृद्धसेवी रघु० ६।४१, वेदिन् (वि०) 1 वेदों का जानने वाला 2 शास्त्रनिष्णात, सापेक्ष (वि०) प्रमाणकतापेक्षी, प्रमाणक से समर्थित।

आगमनम् [आ+गम्+ल्युट्] 1 आना, उपागमन, पहुँचना—रघु० १२।२४, 2. लौटना 3 अधिग्रहण 4. मैथुनेच्छा के लिए किसी स्त्री के पास पहुँचना।

आगमिन्, आगामिन् (वि०) [आगम+णिनि वा ह्रस्व] 1. आने वाला, भावी 2 आसन्न पहुँचने वाला।

आगस् (नपुं०) [इ+असुन्, आगादेश] 1 दोष, अपराध, उल्लंघन—महत्यपि हयमागामिनि मूनोन्मे इति यस्त्वया—शि० २।१०८ हो रिपू मम मनो समागमो —रघु० ११।७४, कृतागाः -मुद्रा० ३।११ 2 पाप। सम०—कृत् (वि०) अपराध करने वाला, अपराधी, जुर्म करने वाला—अभ्यर्णमागस्कृतमस्पृशद्भिः —रघु० २-३२।

आगस्ती [अगस्तस्य इयम्, अण्—यलोप] दक्षिण दिशा।

आगस्त्य (वि०) [अगस्त्यस्येयम्, अण्—यलोप] दक्षिणी।

आगाध (वि०) [अगाध एव स्वार्थे अण्] बहुत गहरा, अथाह, (आलं० भी)।

आगामिक (वि०) (स्त्री०—की) [आगाम+ठक्] 1. भविष्यत्काल से सम्बन्ध रखने वाला -भवितव्यता-

मिका प्रेया वृद्धिस्तत्कालदर्शिनी—हैम० 2. आसन्न, आने वाला।

आगामुक (वि०) [आ+गम्+उकञ्] 1 आने वाला, 2 पहुँचने वाला 3 भावी।

आगारम् [आगम्—ऋच्छति—ऋ+अण्] घर आवास। सम० दाह: घर को आग लगा देना दाहिन् (वि०) घर फूँक व्यक्ति, गृहदाहक (बम आदि), धूम निम: घर से निकलने वाला धुआँ।

आगुर (स्त्री०) [आ+गुर्+क्विप्] स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा।

आगु (गु) रणम् [आ+गुर्+ल्युट्] गुप्त सुझाव।

आगू: (स्त्री०) सहमति प्रतिज्ञा।

आग्निक (वि०) (स्त्री० की) [अग्नेरिदं वा० ठक्] अग्नि से संबंध रखने वाला, यज्ञाग्नि से संबद्ध।

आग्नीध्रम् [अग्निमिन्धे अग्नीत् तस्य शरणम् रण् भस्वात्] यज्ञ स्थान, यज्ञाग्नि जलाने का स्थान हवनकुंड, ध्र यज्ञाग्नि जलाने वाला पुरोहित।

आग्नेय (वि०) (स्त्री० यी) 1 आग से संबंध रखने वाला प्रचंड 2. अग्नि को अर्पित, य: 1 स्कंद या कार्तिकेय की उपाधि 2 दक्षिण-पूर्वी (आग्नेय कोण) दिशा, -यम् 1 कृत्तिका नक्षत्र 2 सोना 3 रुधिर 4 घी 5 आग्नेयास्त्र।

आग्रभोजनिक [अग्रभोजनं नियतं दीयते अस्मै -ठक्] भोज में सर्वप्रथम या सबसे आगे आसन ग्रहण करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आग्रयण: [अग्रे अयनं शस्य यत्र तेन कर्मणा पृषो० ह्रस्व दीर्घ व्यत्यय] अग्निष्टोम याग में सोम की प्रथम आहुति, —णम् वर्षा ऋतु के अन्त में नये अन्न तथा फलादिक से युक्त हवि।

आग्रह: [आ+ग्रह+अच्] 1 पकड़ना, ग्रहण करना 2 आक्रमण 3 दृढ़ संकल्प, दृढ़भक्ति, दृढ़ता -चलेऽपि काव्यस्य पदार्थग्रह नै०, कु० ५।७ पर मल्लि०, 4 कृपा, संरक्षण।

आग्रहायण: [अग्रहायण+अण्] मार्गशीर्ष का महीना, णी 1 मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा 2. मृगशिरस् मास का नक्षत्र-पुंज।

आग्रहायणक (णि) क [आग्रहायणी पौर्णमास्यस्मिन् मासे —ठक्] मार्गशीर्ष का महीना।

आग्रहारिक (वि०) (स्त्री०—की) अग्रहार (ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि) प्राप्त करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आघट्टना [आ+घट्ट+णिच्+युच्+टाप्] 1. हिलाना-डुलाना, काँपना, किसी से रगड़ना- रथाङ्गुराघट्टनया ममस्वत —शि० १।१० 2. घर्षण, रगड़।

आघर्षः,-र्षणम् [आ+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] आलिङ्गन

करना, रगड़, किसी से रगड़ना—मदकलकलापवदनमदन्म घोषकद्रवद्रुमस्कंध निकायिनोऽमय शि० १२।६४।

आघातः [आ+हन्+घञ्, निपात] हद, सीमा।

आघातः [आ+हन्+घञ्] 1 प्रहार करना, मारना 2 चोट, प्रहार, घाव—लीलाघातप्रतिहततरुस्कन्धमग्नैकदन्त श० १।३३, अभ्यघ्नन्ति तटाघातम्—कु० २।५०, 3 दुर्भाग्य, विपत्ति 4 कसाई-खाना—आघातं नीयमानस्य हि० ४।६३।

आघारः [आ+घृ+घञ्] 1 छिड़काव 2 विशेषकर यज्ञ की अग्नि में घी डालना 3 घी।

आघूर्णनम् [आ+घूर्ण+ल्युट्] 1 लोटना 2 उछालना, घूमना, चक्कर खाना, तैरना।

आघोषः [आ+घुष्+घञ्] बुलावा, आवाहन।

आघोषणम्—णा [आ+घुष्+ल्युट् स्त्रियां टाप्] ढिंढोरा, उद्घोषणा—एवमाघोषणायां कृतायाम् पंच० ५।

आघ्राणम् [आ+घ्रा+ल्युट्] 1 सूंघना 2 सन्तोष, तृप्ति।

आङ्गारम् [अङ्गाराणां समूहः अण्] अंगारों का समूह।

आङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) 1 शारीरिक, कायिक 2 हाव-भाव से युक्त, शारीरिक चेष्टाओं से व्यक्त—आङ्गिकोऽभिनय, दे० 'अभिनय'—कः तबलची या ढोलकिया।

आङ्गिरस [अंगिरस्+अण्] बृहस्पति, अंगिरा की संतान (पुत्र)।

आचक्षुस् (पुं०) [आ+चक्ष्+उसि बा०] विद्वान् पुरुष।

आचमः [आ+चम+घञ्] कुल्ला करना, आचमन करना (हथेली पर जल लेकर पीना)।

आचमनम् [आ+चम्+ल्युट्] कुल्ला करना, धार्मिक अनुष्ठानों से पूर्व तथा भोजन के पूर्व और पश्चात् हथेली में जल लेकर घूंट-घूंट करके पीना—दत्ताचमनं तत - याज्ञ० १।२४२।

आचमनकम् [स्वार्थे आचारे वा कन्] पीकदान।

आचयः [आ+चि+अच्] 1 इकट्ठा करना, बीनना 2 समूह।

आचरणम् [आ+चर्+ल्युट्] 1 अभ्यास करना, अनुसरण करना, अनुष्ठान-धर्म°, मंगल° आदि 2. चाल-चलन, व्यवहार,—अप्रीतिबोधादिरनाचरणे—मै० १।४, उदाहरण (विप० उपदेश) 3 प्रथा, परिपाटी 4 गाड़ी।

आचान्त (वि) [आ+चम्+क्त] 1 जिसने कुल्ला करके मुंह साफ कर लिया है, या जिसने आचमन कर लिया है 2. आचमन के योग्य।

आचामः [आ+चम्+घञ्] 1 आचमन करना, कुल्ला करके मुंह साफ करना 2. पानी या गर्म पानी के साथ।

आचारः [आ+चर्+घञ्] 1 आचरण, व्यवहार, काम करने की रीति, चालचलन 2 प्रथा, रिवाज, प्रचलन अधिगम्य च आचारः आचारस्त्वर्षपरम्पराक्रमागतः मनु० २।१८, 2 लोकाचार, प्रथा संबंधी कानून (विप० व्यवहार) समास में प्रथम पद के रूप में यदि प्रयुक्त हो तो अर्थ होता है—'प्रथासंबंधी', 'पूर्ववत् व्यवहार या प्रचलन के अनुसार'—दे० °धूम, °लाज 4 रूप, उपचार—आचार इत्यवहितेन मया गृहीता- श० ५।३, महावी० ३।२६ रिवाजी या रस्म उपचार - आचार प्रतिपद्यस्व श० ४। सम०—दीपः आरती उतारने का दीप,—धूमग्रहणम् आग के द्वारा धूआँ ग्रहण करने का संस्कार—विशेष जो कि यज्ञानुष्ठान के समय किया जाता है, —रघु० ७।२७, कु० ७।८२, —पूत (वि०) शुद्धाचारी—रघु० २।१३,—भेदः आचरण संबंधी नियमों का अन्तर,—भ्रष्ट,—पतित (वि०) स्वधर्म भ्रष्ट, जिसका आचार—व्यवहार बिगड़ गया हो, या जो आचरण से पतित हो गया हो,—लाजाः (पुं० ब० व०) धान की खीलें जो कि सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किसी राजा या प्रतिष्ठित महानुभाव पर फेंकी जाती हैं—रघु० २।१०,—वेदी पुण्यभूमि आर्यावर्त।

आचारिक (वि०) [आचार+ठक्] प्रचलन या नियम के अनुरूप, प्राधिकृत।

आचार्यः [आ+चर्+ण्यत्] 1 सामान्यतः अध्यापक या गुरु 2 आध्यात्मिक गुरु (जो उपनयन कराता है तथा वेद की शिक्षा देता है)—उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः, सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते। —मनु० २।१४०, दे० 'अध्यापक' शब्द भी 3 विशिष्ट सिद्धान्त का प्रवर्तक 4 (जब व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से पूर्व लगता है) विद्वान्, पंडित (अंग्रेजी के 'डाक्टर' शब्द का कुछ समानार्थक),—र्या गुरु (स्त्री), आध्यात्मिक गुरुआनी। सम०—उपासनम् धार्मिक गुरु की सेवा करना,—मिश्र (वि०) प्रतिष्ठित, सम्माननीय।

आचार्यकम् [आ+चर्+वुञ्] 1 शिक्षण, अध्यापन, (पाठादिक का) पढ़ाना—कङ्कुरप्रोताः पुनरपाके विज्ञानाचार्यकं दधौ —रघु० १२।७८—आचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत्—मा० १।२६, 2 आध्यात्मिक गुरु की कुशलता।

आचार्यानी [आचार्य+ङीष्, आनुक्] आचार्य या धर्मगुरु की पत्नी, मधुमक्षवनृत्यानि मनुष्याचार्य... नैकाचार्येनाचार्यानी च पार्वतीम् महावी० ३।६।

आचित (भू० क० कृ०) [आ+चि+क्त] 1. पूर्ण, भरा हुआ, ढका हुआ—अथाचितो विश्वचिकत्सको... —शि० १।१६, आचितनक्षत्रा द्यौ—आदि 2. बंधा हुआ, गुंथा हुआ, बुना हुआ—अथाचिता... —रघु० ७।१० कु० ७।११, 3. एकत्रित, संचित, ढेर किया हुआ,—तः 1 गाड़ी भर बोझ 2. (कर्ष०

भी) दस भार या गाड़ी भर की तोल (८०,००० तोला)।

आघूर्णनम् [आ + घूर् + ल्युट्] 1 घूमना, घुमाना 2 घुमा कर बाहर निकाल देना (आघू० म) मिगो लगाना।

आच्छादः [आ + छद् + णिच् + घञ्] कपड़ा पहनना या वस्त्र।

आच्छादनम् [आ + छद् + णिच् + ल्युट्] 1 ढकना, छिपाना 2 ढक्कन, म्यान 3 कपड़ा, वस्त्र — भूषणाच्छादनानैः याज्ञ० १।८२, 4 छाजन।

आच्छुरित (वि०) [आ + छुर् + क्त] 1 मिश्रित, मिलाया हुआ 2 खरोंचा हुआ, खुजलाया हुआ — तम् 1 नखों को आपस में एक दूसरे से रगड़ कर एक प्रकार का शब्द पैदा करना, नखवाद्य 2 ठहाका मार कर हँसना, अट्टहास।

आच्छुरितकम् [आच्छुरित + कन्] 1 नाखून का घाव 2 अट्टहास।

आच्छेदः, —दनम् [आ + छिद् + घञ् + ल्युट् वा] 1 काट देना, अपच्छेदन 2 जरा सा काटना।

आच्छोटनम् [आ + स्फुट् + ल्युट् पृषो०] अंगुलियाँ चटकाना।

आच्छोदनम् [आ + छिद् + ल्युट् पृषो० द] आखेट, शिकार करना, पीछा करना।

आजकम् [अजानां समूहः — अज + वुञ्] बकरों का झुंड।

आजगवम् [अजगव + अण्] शिव का धनुष।

आजननम् [आ + जन् + ल्युट्] ऊँचे कुल में जन्म होना, प्रसिद्ध या विख्यात कुल।

आजानः [आ + जन् + घञ्] जन्म, कुल — नम् जन्मस्थान

आजानेय (वि०) (स्त्री० —यी) [आजाने विशुद्धे कुले भवः] अश्ववाहो ढक्कयानेमरश्च ... 1 अच्छी नस्ल का, कुलीन घोड़ा 2 निर्भय, निडर — य: अच्छा नस्ल का घोड़ा — शक्तिभिर्भिन्नहृदयाः स्खलन्तोऽपि पदे पदे, आजानेयाः ... ... शब्दक०।

आजि: [अजन्त्यस्याम् — अज् + इण्] 1 युद्ध, लड़ाई, संघर्ष — ते सुमावन्त एवाजौ ... रघु० १२।४५, 2 कुश्ती या दौड़ की प्रतियोगिता 3 रण क्षेत्र — मरणाध्यानो नयनसलिल चापि तुल्यं मुमोच — विक्रम० ३।९।

आजीव, —वनम् [आ + जीव् + घञ्, ल्युट् वा] 1 जीविका, जीवननिर्वाह का साधन, भरण — भवत्या-जीवन तस्मात् — पञ्च० १।४८, तु० कुमाजीव, अजाजीव, शस्त्राजीव आदि शब्दों की 2 पेशा, वृत्ति, — वः जैन-भिक्षुक।

आजीविका [आ + जीव् + अ + कन् + टाप्, अत इत्वम्] जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति।

आजुर् — आजू (स्त्री०) [आ + ज्वर् + क्विप्, आ + जू + क्विप् वा] 1 बेगार, बिना पारिश्रमिक प्राप्त किये काम करना 2 बेगार में काम करने वाला 3 नरक वास।

आज्ञप्ति (स्त्री०) [आ + ज्ञा + णिच् + क्तिन्, पुकागम ह्रस्वश्च] आदेश, हुक्म, आज्ञा।

आज्ञा [आ + ज्ञा + अङ् + टाप्] 1 आदेश, हुक्म — तयेति शासनमिव भर्तुराज्ञाम् — कु० ३।... 2 अनुज्ञा, अनुमति। सम० — अनुग — अनुगामिन, अनुयायिन्, अनुवर्तिन् अनुसारिन्, संपादक, वह (वि०) आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती — कर — कारिन् (वि०) आज्ञा मानने वाला, आदेश का पालन करने वाला, आज्ञाकारी, (— र:) सेवक, — करणम्, पालनम् आज्ञा मानना, आदेश का पालन करना — पत्रम् हुक्मनामा, लिखित आदेश — प्रतिघातः, — भंग आज्ञा न मानना, आज्ञा के विरुद्ध काम करना — नाज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयः त्वादृशाः सार्वभौमाः — मुद्रा० ३।२४।

आज्ञापनम् [आ + ज्ञा + णिच् + ल्युट्, पुकागम] 1 आदेश देना, हुक्म देना 2 जतलाना।

आज्यम् [आज्यते — आ + अञ्ज् + क्यप्] 1 पिघलाया हुआ घी — घृताज्यमथवाज्यम् — ... (घर बहुधा घी से भिन्न समझा जाता है सर्पिविलीनमाज्यं स्यात् घनीभूतं घृतं भवेत्)। सम० — पात्रम्, स्थाली घी रखने का पात्र या बर्तन — भुज् (पु०) 1 अग्नि का विशेषण 2 देवता।

आञ्चनम् [आ + अञ्च् + ल्युट्] सींग या तीर आदि किसी चीज का हड्डी आदि से बाहर खींचना या शरीर से बाहर निकालना।

आञ्छ (भ्वा० पर०) [आञ्छति, आञ्छित] 1 खींचना, फैलाना 2 नियमित करना (हड्डी या टूटे अंग को) ठीक बैठाना।

आञ्छनम् [आ + ञ्छ + ल्युट्] (हड्डी या अंग को) ठीक बैठाना।

आञ्जनम् [अञ्जनस्येदम् — अण्] 1 मरहम, विशेषतः आंखों के लिए 2 (र्थी) मारुति या हनुमान, — दाशरथि बलीस्थाञ्जनतीलनलपरिगतप्राज्ञी ... का० ५८।

आञ्जनी [अञ्जनस्येदम् — अण् स्त्रियां ङीप्] आंखों में डालने का मरहम या अंजन। सम० — कारी लेप या उबटन आदि तैयार करने वाली स्त्री।

आञ्जनेयः [अञ्जना + ढक्] हनुमान्।

आटविकः [अटव्यां चरति भवो वा — ठक्] 1 वनवासी, जंगल में रहने वाला पुरुष 2 मार्गदर्शक, अगुआ।

आटि: [आ + अट् + इण्] 1 एक प्रकार का पक्षी (शरारि)।

आटीकनम् [आटीक्+ल्युट्] बछड़े की उछल-कूद ।

आटीकरः [आटी+कृ+अच्] सांड ।

आटोपः [आ+तुप्+घञ्, पृषो० टत्वम्] 1 घमंड, स्वाभिमान, हेकड़ी, साटोपम्—घमंड के साथ, राजकीय या शाही ढंग से (समास के अंतिम पद के रूप में प्रायः प्रयुक्त) 2 सूजन फैलाव, विस्तार, फुलाना —गो०—कटाटोपो भयङ्करः —हि० १।७४ ।

आडम्बरः [आ+डम्ब्+अरन्] 1 घमंड, हेकड़ी 2 दिखावा, सजावट, बाहरी ठाठ बाट—निर्गवनमानसम् कपाडम्बरम्—का० ५, निर्गुण शोभते नैव विपुलाडम्बरोऽपि ना—भामि० १।११५, 3 आक्रमण के समय का बिगुल का बजना 4 आरंभ 5 प्रचण्डता रोष आवेश 6 हर्ष प्रसन्नता 7 बादलों की गरज हाथियों की चिंघाड़ 8 युद्धभेरी 9 यज्ञ का कोलाहल या शोर-गुल ।

आडम्बरिन् (वि०) [आडम्बर+इनि] हेकड़, घमंडी ।

आढकः-**कम्** [आ+ढौक्+घञ्, पृषो०] अनाज की माप, चौथाई द्रोण अष्टमुष्टिर्भवेत् कुंचि कुंचयोऽष्टौ तु पुष्कलम्, पुष्कलानि च चत्वारि आढकः परिकीर्तितः ।

आढ्य (वि०) [आ+ध्यै+क, पृषो०—तारा०] 1 धनी, धनवान् आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया—भग० १६।१५, पंच ५।८, 2 (क) सम्पन्न, समृद्ध, सम्पन्नतायुक्त, (करण० या समास के अंतिम पद के रूप में) -सत्य पंच ३।९, बिल्कुल सम्पन्न -बलासपल्लावण्याढ्याय दश० १८ (ख) मिश्रित, मिश्रित, गन्धाढ्य, स्रज उत्तमगन्धाढ्या महा० 3 प्रचुर, पर्याप्त । सम० चर (वि०) [स्त्री० री] जो कभी ऐश्वर्यशाली रहा हो ।

आढ्यङ्करण (वि०) [स्त्री० णी] समृद्ध करना, णम् समृद्ध करने का साधन, धन ।

आढ्यम्भविष्णु, **भावुक** (वि०) [आढ्य भू+इष्णुच्, उकञ् वा] धन सम्पन्न या प्रतिष्ठित होने वाला ।

आणक (वि०) [अणक+अण्] नीच, ओछा, अधम कम् विशेष आसन में होकर मैथुन करना, रतिबंध- आणक सुरतं नाम दम्पत्यो पार्श्वसंस्थयोः ।

आणव (वि०) (स्त्री० वी) [अणु+अण्] अत्यन्त छोटा,- वम् अत्यंत छोटापन या सूक्ष्मता ।

आणि: (पु० स्त्री०) [अण्+इण्] 1 गाड़ी के धुरे की कील, अक्षकील 2 घुटने के ऊपर का भाग 3 हद, सीमा 4. तलवार की धार ।

आण्ड (वि०) [अण्डे भव अण्] अंडे से पैदा होने वाला (जैसे कि पक्षी), डः हिरण्यगर्भ या ब्रह्मा की उपाधि -डम् 1 अंडों का ढेर, पशु-पक्षियों का समूह, पक्षिशावक 2. अंडकोष, फोता ।

आण्डीर (वि०) [आण्डमस्ति अस्य-- ईरच्] 1 बहुत अंडे रखने वाला, 2 वयस्क, पूर्णवयस्क (जैसे कि सांड) ।

आतङ्कः [आ+तङ्क्+घञ्, कुत्वम्] 1 रोग शरीर की बीमारी दीर्घतीव्रामयग्रस्तं ब्राह्मणं गामथापि वा, दृष्ट्वा पथि निरातङ्कं कृत्वा वा ब्रह्महा शुचिः —याज्ञ० ३।२४५ 2 पीड़ा, आधि, व्यथा, वेदना किमिति मिनोऽप्यमानङ्कं —श० ३, आतङ्कस्फुरितकठोरगर्भगुर्वी उत्तर० १।४९, विक्रम० ३।३ डर, आशंका पुष्णन्त्युपकारेण्या निरातङ्का निरामयः रघु० १।६३, भ्रांति, भ्रम 4 ढोल या तबले की आवाज़ ।

आतञ्चनम् [आ+तञ्च्+ल्युट्] 1 जमाना, गाढ़ा करना, 2 जमा हुआ दूध 3 एक प्रकार की छाछ 4 प्रसन्न करना सन्तुष्ट करना 5 भय, संकट 6. गति, वेग ।

आतत (वि०) [आ+तन्+क्त] 1 फैलाया हुआ, विस्तारित 2 ताना हुआ (जैसे कि धनुष की डोरी) ।

आततायिन् (वि० या—सज्ञा) [आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलमस्य —तारा०] 1 किसी का वध करने के लिए प्रयत्नशील साहसी -गुरु वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मण वा बहुश्रुतम् आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । मनु० ८।३५०।१, भग० १।३६, 2. जघन्य पाप करने वाला जैसे कि चोर, अपहरणकर्ता, हत्यारा, आग लगाने वाला महापातकी आदि—अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो धनापहः क्षेत्रदारहरश्चैतान् षडेव विद्यादाततायिन — शुक्र० ।

आतपः [आ+तप्+घञ्] 1 गर्मी (सूर्य अग्नि आदि की) धूप, -आतपायोज्झितं धान्यं —महा०, धूप में डाला हुआ, प्रचंड —ऋतु० १।११ 2 प्रकाश । सम०—**अत्ययः** सूर्य की गर्मी (धूप) का गुजरना, या बीत जाना, मूर्धाहनं आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु—रघु० १।५२ —**अभावः** छाया, उदकम् मरीचिका, **त्रम्**,- **त्राणम्** छाता तमातपक्लान्तमनातपत्रम् - रघु० २।१३, ४७, पंच० ४।५ राज्यं स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम् - श० ५।६, **लङ्घनम्** गर्मी या धूप में रहना, लू लग जाना --आतपलङ्घनाद्बलवदस्वस्थशरीरा शकुन्तला - श० ३, **वारणम्** छाता छतरी —नृपतिककुदं दत्त्वा यूने सितातपवारणम्—रघु० ३।७० ९।१५, -**शुष्क** (वि०) धूप में सुखाया हुआ ।

आतपनः [आ+तप्+णिच्+ल्युट्] शिव ।

आत(ता)रः [आतरति अनेन आ+तृ+अप्, घञ् वा] दरिया की उतराई, मार्गव्यय, भाड़ा ।

आतर्पणम् [आ+तृप्+ल्युट्] 1 सन्तोष 2. प्रसन्न करना सन्तुष्ट करना, 3 दीवार या फर्श पर सफेदी करना (उत्सव आदि के अवसर पर) ।

आतापि (पि) न् [आ+तप् (ताप्)+णिनि] एक पक्षी चील ।

आतिथेय (वि०) [स्त्री० —यी] [अतिथिषु साधु —ढञ्, अतिथये इदं ढक् वा] 1 अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथियों के उपयुक्त प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेय रघु० ५।२ ७।२९ तमातिथेयी बहुमानपूर्वया कु० ५।३१, 2 अतिथि के उचित या उपयुक्त - आतिथेय सत्कार श० १,—यम् अतिथि-सत्कार —आतिथेयमनिवारितातिथि -शि० १४।३८ सज्जातिथेया वय—मा० २।५०—यी सत्कार मेहमान नवाजी —भामि० १।८५।

आतिथ्य (वि०) [अतिथि + ष्यञ्] सत्कारशील अतिथि के लिए उपयुक्त स्यः अतिथि —थ्यम् सत्कारपूर्वक स्वागत, अतिथि-सत्कार तथातिथ्यक्रियाशान्तरथक्षोभपरिश्रमम् रघु० १।५८।

आतिदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [अतिदेश + ठक्] (व्या० में) अतिदेश से सम्बद्ध—सु०।

आतिरे (रे) **क्यम्** [अतिरेक + ष्यञ् पक्षे उभयपद वृद्धि] फालतूपन, अधिकता, बहुतायत।

आतिशय्यम् [अतिशय + ष्यञ्] अधिकता, बहुतायत बहुत परिमाण।

आतुः [अत् + उण्] लट्ठों का बना बेड़ा, घन्नई (घड़ों को बाँध कर बनाई गई नौका)।

आतुर (वि०) [ईषदर्थे आ + अत् + उरच्] 1 चोटिल घायल 2 (रोग से) ग्रस्त, प्रभावित, पीडित गाधनापरत्था तम राघव मदनातुरा— रघु० १२।३२ काम°, मद° आदि 3 रुग्ण (मन या शरीर से) आकाशेशास्तु विज्ञेया बालवृद्धकृशातुरा मनु० ४।१८४, 4. उत्सुक, उतावला 5 दुर्बल, कमजोर ६ रोगी। सम०—शाला हस्पताल।

आतोद्यम्,—**तकम्** [आ + तुद् + ण्यत्, स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र आतोद्यविन्यासादिका विषय —वेणी० १ ऊजमातोद्यशिरोनिवेशिताम् - रघु० ८। ३४, १५।८८, उत्तर० ७।

आत्त (भू० क० कृ०) [आ + दा + क्त] 1 लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ— घनुरात्तरतिः - रघु० ११।५७, मालवि० ५।१, 2. अंगीकार किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ 3 आकृष्ट 4. खींचा हुआ, निस्सारित—गामात्तसारां रघुरप्यवेक्ष्य—रघु० ५।२६ इसी प्रकार आत्तवर्ग ११।७१, के बाधा बचा। सम०—गन्ध (वि०) 1 जिसका घमंड निकाल दिया गया हो, आक्रान्त, पराजित—हेवात्तगन्धो मानवक.—श० ६ 2. सूंघा हुआ (जैसे कि फूल)—आत्तगन्धमवधूय चक्षुषि —शि० १४।८४ (यहाँ अर्थ सं० 1 में बताये अर्थ भी रखता है),—गर्व (वि०) अपमानित, तिरस्कृत, बलहृत,—चेतस् (वि०) उत्कलित मन की अवस्था वाली

वाला —मनस्क (वि०) जिसका मन (हर्ष आदि के कारण) स्थानान्तरित हो गया हो।

आत्मक (वि०) [आत्मन् + कन्] (समास के अन्त में) से बना हुआ, से रचा हुआ, स्वभाव का, लक्षण का, पञ्च पांच तत्त्व वाला, मिश्रित—सदिग्ध स्वभाव का इसी प्रकार दु ख, दहन।

आत्मकीय आत्मीय (वि०) [आत्मक (न्) छ] अपना, से सम्बन्ध रखने वाला, अपना सब कार्यमात्मीय पश्यति श० २ स्वामिनमात्मीय कर्तिस्याप्ति हि० २, और लेना प्रमाद्यमात्मीयमिवात्मदर्शा रघु० ७।६८ कु० २।१९ बन्धु सम्बन्धी बान्धव।

आत्मन् (पु०) [अत् + मनिण्] 1 आत्मा जीव किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत् -हि० १ आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु कठ० ३।३ 2 स्व आत्म स्वयं अर्थ में प्राय यह शब्द तीनों पुरुषों में तथा पुल्लिंग व एक वचन में प्रयुक्त होता है चाहे उस संज्ञा शब्द का लिंग, वचन कुछ ही हो जिसका यह उल्लेख करता है आत्मनदर्शनम आत्मना पुनामह श० १ गुप्तं ददृशुरात्मानं सर्वाः स्वप्नेषु वामनैः रघु० १०।६० देवी प्राप्तप्रसवमात्मानं गङ्गादेव्यां विमुञ्चति उत्तर० ७।२ गोपायन्ति कुलस्त्रिय आत्मानमात्मना महा०, 3 परमात्मा ब्रह्म तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः उप०, उत्तर० १।१ 4 सार प्रकृति दे० आत्मक ऊपर 5 चरित्र विशेषता 6 नैसर्गिक प्रकृति या स्वभाव 7 व्यक्ति या समस्त शरीर स्थित सर्वोन्नतनोवी क्ष्मा मेरुरिवात्मना रघु० १।१४ मनु० १२।१२ 8 मन बुद्धि महात्मन महात्मन् आदि 9 समझ तु० आत्मवत् आदि 10 विचारशक्ति विचार और तर्क शक्ति 11 सप्राणता, जीवट, साहस 12 रूप प्रतिमा 13 पुत्र आत्मा वै पुत्रनामासि 14 देखभाल, प्रयत्न 15 सूर्य 16 अग्नि 17 वायु—'से बना या से युक्त' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'आत्मन्' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है —दे० आत्मक। सम० —अधीन (वि०) अपने ऊपर आश्रित, स्वाश्रित, मिताश्रित (—नः) 1 पुत्र 2 साला, पत्नी का भाई 3 मसखरा या विदूषक (नाट्य साहित्य में),— अनुगमनम् व्यक्तिगत सेवा,—अपहारः अपने आप को छिपाना—कथं वा आत्मापहारं करोमि—श० १, —अपहारक: छद्मवेषी, कपटी,— आराम (वि०) 1 ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील (जैसे कि कोई योगी), आत्मज्ञान का अन्वेषक—आत्मारामा विहितरतयो निर्विकल्पे समाधौ—वेणी० १।२३, 2. अपने आप में मग्न,—आशिन् (पु०) मछली (ऐसा समझा जाता है कि मछली अपने बच्चों को खा जाती आदि के

सबसे कमजोर जीवों को खाकर पलती है) मु०—मत्स्या इव जना नित्यं भक्षयन्ति परस्परम्—रामा० **आश्रय** अपने ऊपर निर्भर करना, **ईश्वर** (वि०) आत्मसात् करने वाला, अपना स्वामी आप आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्ना: समाधिभेदप्रभवो भवन्ति कु० ३।४० **उद्भव** 1 पुत्र 2 कामदेव (—वा) पुत्री **उप-जीविन्** (पु०) 1 जो अपने परिश्रम पर निर्भर करता है श्रमिक 2 मजदूर 3 जो अपनी पत्नी के ऊपर आश्रित रहता है (मनु० ... पर कुल्लूक) 4 ... **काम** (वि०) 1 अपने ... प्रेम करने वाला, अभिमान से युक्त घमंडी 2 ... **गत** (वि०) ... —**गम** ... समझा ... **प्रकाशक** ... [illegible]

[illegible] ... **गुप्ति** ... **घातिन्** (वि०) आत्मघाती ...

घात 1 आत्महत्या, 2 ... **घातक**

घातिन् (पु०) 1 आत्महत्यारा ... [illegible] ... **घोष** 1 मुर्गा 2 कौआ

ज ... **जात** ... **प्रभव**, **सम्भव** 1 ... —**त्याग**

[illegible] ... **ज्ञ**, ... **ज्ञान** 1 ... 2 ... **तत्त्व** आत्मा ... **त्राण** 1 स्वयं ... 2 ... **त्यागिन्** (पु०) 1 आत्महत्या करने वाला ... 2 नास्तिक

त्राणम् 1 आत्मरक्षा 2 शरीर रक्षक **दर्शिता** प्रमादमात्मार्गमिवात्मदर्शी रघु० ...

दर्शनम् 1 अपने आपको देखना 2 आध्यात्मिक ज्ञान **द्रोहिन्** (वि०) 1 अपने आपको पीड़ित करने वाला 2 आत्महत्या करने वाला **निन्द** (वि०) लगातार हृदय में रहने वाला अपने आपको अति प्रिय,

निन्दा अपनी निंदा **निवेदनम्** अपने आपको प्रस्तुत करना (जैसे किसी प्राणी का किसी देवता के प्रति बलिदान)- **निष्ठ** (वि०) आत्मज्ञान का अनवरत अन्वेषक —**प्रभ** (वि०) स्वयं प्रकाशवान् **प्रभव** - **ज** ... अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना **बन्धु**, **बान्धव** अपना निजी सम्बन्धी—आत्म-मातुः स्वसुः पुत्रा आत्मपितुः स्वसुः सुताः आत्ममातुल-पुत्राश्च विज्ञेया ह्यात्मबान्धवाः—शब्दक०। अर्थात् मौसी का पुत्र, बुआ का पुत्र और मामा का पुत्र **बोध** 1 आध्यात्मिक ज्ञान 2 आत्मा का ज्ञान **भू**

योनि 1 ब्रह्मा ... 2 विष्णु 3 शिव ... 4 कामदेव ... (स्त्री०—भू) 1 पुत्री 2 बुद्धि ... **माया** परमात्मा की ... **मानिन्** (वि०) स्वाभिमानी आदरणीय 2 घमंडी **याजिन्** (वि०), अपने लिए यज्ञ करने वाला ... [illegible] ... को ... करता है ... सब प्राणियों को अपने समान समझकर ... [illegible]

... **योनि** ... [illegible]

... **रक्षा** ... [illegible] ... (वि०) ...

[illegible] ... **वञ्चक** ... अपने आपको धोखा देने वाला **वञ्चना** ... अपने आप को धोखा देना

वध **वध्या**, **हत्या** आत्महत्या करना

वश (वि०) अपने ... रहने वाला

(—**श**) 1 आत्मसंयम, आत्म प्रशासन 2 अपनी ... अधीनता ... **वशीकृ** अधीन करना, विजय प्राप्त करना —**वश्य** (वि०) अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला आत्मसंयमी, अपने मन व इंद्रियों को वश में रखने वाला **विद्** (पु०), बुद्धिमान पुरुष ... जैसा कि ... **विद्या** आत्मा का ज्ञान अध्यात्म ज्ञान **वीर** 1 पुत्र 2 पत्नी का भाई 3 विदूषक (नाटकों में) **वृत्त** (वि०) आत्मा में रहने वाला (**त्ति** स्त्री०) 1 हृदय की अवस्था, अपने से सम्बद्ध रखने वाली चेष्टाएँ अपनी निजी अवस्था या परिस्थिति ... रघु० ... **शक्ति** (स्त्री०) अपनी निजी सामर्थ्य या योग्यता अन्तर्हित शक्ति या बल

दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या पञ्च० १।३६१ अपनी शक्ति के अनुसार **श्लाघा** **स्तुति** (स्त्री०) अपनी प्रशंसा स्वयं करना शेखी बघारना डींग मारना **संयम** अपनी इंद्रियों पर काबू रखना

—संभवः—समुद्भवः 1 पुत्र —अकारं नाम्ना रघुमात्मसंभवम् रघु० ३।२१ ११।५७, १७।८ 2 प्रेम का देवता, कामदेव 3 ब्रह्मा की उपाधि, शिव, विष्णु (—वा) 1 पुत्री 2 समझ,—संपन्न (वि०) 1 स्वस्थ चित्त, 2 बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, - हन् = घातिन्—हननम्, - हत्या आत्मघात,- हित (वि०) अपने लिए हितकर, (—तम्) अपना निजी भला या कल्याण।

आत्मना (अव्य०) ['आत्मन्' का करण० ए० व०] आत्मवाची कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—अथ वाम्नमिता स्वमात्मना—रघु० ८।५१, तुम स्वयम्, यह प्राय क्रमिक संख्यासूचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—उदा०—°द्वितीयः आप सहित दूसरा अर्थात् वह तथा स्वयं।

आत्मनीन (वि०) [आत्मन्+ख] 1 अपने से संबंध रखने वाला, अपना निजी, - कस्यैव आत्मनीन मालवि० ४, 2 अपने लिए हितकर—आत्मनीनमुपतिष्ठते—कि० १३।६९,—नः 1 पुत्र 2 पत्नी का भाई 3 विदूषक (नाटकों में)।

आत्मनेपदम् [आत्मने आत्मार्थ-फलबोधनाय पदम्—अलुक् स०] 1 आत्मवाची क्रियापद, दो प्रकार के क्रियापदों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से एक जिनमें कि संस्कृत भाषा की धातु—रूपावली पाई जाती है, 2 आत्मनेपद के प्रत्यय।

आत्मंभरि (वि०) [आत्मानं बिभर्ति इति—आत्मन् + भृ + खि, मुम् च] स्वार्थी, लालची, (जो केवल अपनी ही उदरपूर्ति करता है)—आत्मंभरिस्त्वं पिशितैर्नराणाम्—भट्टि० २।३३, हि० ३।१२१।

आत्मवत् (वि०) [आत्मन् + मतुप्—मस्य व] 1 स्वस्थ चित्त, 2 शान्त, दूरदर्शी, बुद्धिमान् —किमिवावसादकरमात्मवताम्—कि० ६।१९।

आत्मवत्ता [आत्मवत् + तल् + टाप्] स्वस्थचित्तता, स्वनियमन, बुद्धिमत्ता —प्रकृतिष्वात्मजमात्मवत्तया— रघु० ८।१०, ८४।

आत्मसात् (अव्य०) [आत्मन् + साति] अपने अधिकार में, अपना निजी, (प्राय 'कृ' और 'भू' के साथ)—धुरि—रपि कर्तुमात्मसात् - रघु० ८।२।

आत्यंतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अत्यन्त + ठञ्] 1 सतत, अनवरत, अनन्त, स्थायी, नित्यस्थायी स आत्यन्तिको भविष्यति—श० ७।०४, विच्छुगुप्तहृतकन्यात्यन्तिकश्रेयसे—२।१५, भग० ६।२१, 2 अत्यधिक, प्रचुर, सर्वाधिक 3. सर्वोच्च, पूर्ण—आत्यन्तिकी स्वत्वनिवृत्तिः—मिता०।

आत्ययिक (वि०) [स्त्री० —की] [अत्यय + ठक्] 1 नाशकारी, सर्वनाशकर 2 पीडाकर, अमंगलकर, अशुभसूचक 3. अत्यावश्यक, अपरिहार्य, आपाती।

आत्रेय (वि०) (स्त्री० —यी) [अत्रि + ढक्] अत्रि से संबंध रखने वाला, या अत्रि की संतान,—यः अत्रि का वंशज —यी 1 अत्रि की पुत्री 2 अत्रि की पत्नी 3 रजस्वला स्त्री।

आत्रेयिका [आत्रेयी + कन् + टाप् ह्रस्व] रजस्वला स्त्री।

आथर्वण (वि०) (स्त्री० - णी) [अथर्वन् + अण्] अथर्ववेद या अथर्वा ऋषि से संबंध रखने वाला —णः 1 अथर्ववेद का अध्येता या ज्ञाता ब्राह्मण 2 यज्ञ का पुरोहित जिससे संबद्ध यज्ञ कर्म पद्धति का विधान अथर्ववेद में निहित है 3 स्वयं अथर्ववेद 4 गृहपुरोहित।

आथर्वणिकः [अथर्वन् + ठक्] अथर्ववेद का अध्येता ब्राह्मण।

आदंशः [आ + दंश् + घञ्] 1 डंक डंक मारने से पैदा हुआ घाव, 2 डंक, दांत।

आदरः [आ + दृ + अप्] 1 आदर, पूज्यभाव सम्मान, - निर्माणमेव हि तदादरलालनीयम् मा० ९।४९, न आत्महार्दैन न विद्विषादरः कि० १।३३, कु० ६।२० 2 अवधान सावधानी, सम्मान्य व्यवहार कु० ६।९१, 3 उत्सुकता, इच्छा स्नेह - मृगान्तरार्थमादर कु० ६।०३, गलिकन्दनकारितायामादर का० १२०, 4 प्रयत्न चेष्टा—गृहयन्त्रपताकाश्रीरपौरादरनिर्मिता कु० ६।४१, 5 उपक्रम आरंभ 6 प्रेम, आसक्ति।

आदरणम् [आ + दृ + ल्युट्] सत्कार, इज्जत सम्मान।

आदर्शः [आ + दृश् + घञ्] 1 आईना मुँह देखने का शीशा, दर्पण आत्मानमालोक्य च शोभमानमादर्शबिंबे स्तिमितायताक्षी कु० ६।२२, 2 मूल पाण्डुलिपि जिससे प्रतिलिपि तैयार की जाय, (आलं०) नमूना प्रतिकृति, प्रकार, आदर्श शिक्षितानाम् मृच्छ० १।४८, आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् का० ५, इसी प्रकार,—गुणानाम् आदि 3 कार्य की एक प्रतिलिपि 4 टीका, भाष्य।

आदर्शकः [आदर्श + कन्] दर्पण, आईना।

आदर्शनम् [आ + दृश् + ल्युट्] 1 दिखलाना, प्रदर्शन 2 दर्पण।

आदहनम् [आ + दह् + ल्युट्] 1. जलन 2. चोट पहुँचाना, हत्या करना 3 खरी-खोटी सुनाना, घृणा करना 4 श्मशान।

आदानम् [आ + दा + ल्युट्] 1. लेना, स्वीकार करना, पकड़ना—कुशांकुरादानपरिक्षतांगुलि—कु० ५।११, आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, 2 उपार्जन, प्रापण 3 (रोग का) लक्षण।

आदायिन् (वि०) [आ + दा + णिनि] ग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला।

आदि (वि०) [आ + दा + कि] 1 प्रथम, प्राथमिक, आदिम —निदानं त्वादिकारणम्—अमर०, 2 मुख्य,

पहला, प्रधान, प्रमुख —प्राय समास के अन्त में—इसी अर्थ में नी० दे० 3. समय की दृष्टि से प्रथम —वि 1 आरंभ, उपक्रम (विप० अन्त) अप एव समसृष्टी तासु बीजमवासृजत्—मनु० १।८, भग० २।६९, अनादिरनादिरन्त्यम् कु० २।९, समास के अन्त में प्रयुक्त होकर बहुधा निम्नांकित अर्थों में अनूदित किया जाता है 'आरंभ करके' 'वगैरा' 'इसी प्रकार और भी' (उसी प्रकृति और प्रकार के) 'ऐसे' —इन्द्रादयो देवा —इन्द्र तथा अन्य देवता, या 'भू' आदि से आरंभ होने वाले शब्द धातु कहलाते हैं और पाणिनि के द्वारा वह प्राय. व्याकरण के शब्द-समूह को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये गये हैं अदादि, दिवादि, स्वादि इत्यादि 2 पहला भाग या खंड, 3 मुख्य कारण। सम०—अन्त (वि०) जिसका आरंभ और समाप्ति दोनों है (—न्तम्) आरंभ और अन्त, —अन्त—सान्त, समर्पिका, —उदात्त (वि०) वह शब्द जिसके आरंभिक अक्षर पर स्वरा घात हो, —कर,—कर्तृ, —कृत् (पु०) सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का विशेषण—भग० ११।३७ —कविः प्रथम कवि, ब्रह्मा की उपाधि—क्योंकि उसी ने संसार को सर्वप्रथम रचना की तथा वेदों का ज्ञान दिया वाल्मीकि की उपाधि क्योंकि उसी ने सर्वप्रथम कविता का पथप्रदर्शन किया—जब कि उसने क्रौंच दम्पती के एक पक्षी को व्याध के द्वारा मारा जाता हुआ देखा, उसने उस दुष्ट व्याध को शाप दिया और उसका वही शोक अपने आप कविता के रूप में प्रकट हुआ (श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः) इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वाल्मीकि को राम का चरित्र लिखने के लिए कहा, फलस्वरूप संस्कृत साहित्य में प्रथम काव्य रामायण के रूप में प्रकट हुआ —काण्डम् रामायण का प्रथम खण्ड, —कारणम् (विश्व का) प्रथम या मुख्य कारण, जो कि वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है, तथा नैयायिकों विशेषत वैशेषिकों के अनुसार विश्व का प्रथम या भौतिक कारण अणु है परमात्मा नहीं, —काव्यम् प्रथम काव्य अर्थात् वाल्मीकि रामायण दे० 'आदि कवि,' —देवः 1 प्रथम या सर्वोच्च परमात्मा—पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेवमज विभुम् भग० १०।१२, ११।३८ 2 नारायण या विष्णु 3 शिव 4 सूर्य, —दैत्य हिरण्यकशिपु की उपाधि, —पर्वन् महाभारत का प्रथम खंड, —पु (पू) रुषः 1. सर्वप्रथम या आदिम प्राणी, सृष्टि का स्वामी 2. विष्णु, कृष्ण या नारायण—तं च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः—रघु० १०।६७ समर्प्य-मर्प्यादिवकादिपूरुषः—शि० १।१४—बलम् जननात्मक शक्ति, प्रथम वीर्य, —भव,—भूत (वि०) 1. सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ। (—वः,—तः) 'आदिजन्मा' आदिम प्राणी, ब्रह्मा की उपाधि 2 विष्णु—रसातलादादि-भवेन पुसा रघु० १३।८, 3 बड़ा भाई, —मूलम् पहली नींव, आदिम कारण, —वराहः 'प्रथमशूकर' विष्णु की उपाधि उसके तृतीय अवतार (वराहावतार) की ओर संकेत —शक्तिः (स्त्री०) 1 माया की शक्ति 2. दुर्गा की उपाधि —सर्गः प्रथम सृष्टि।

आदितः, आदौ (अव्य०) [आदि+तसिल् अधि० ङि० वा] आरंभ से, सबसे पहले—तदेवनादितः [illegible] उत्तर० [illegible]

आदितेय [अदिति+ढक्] 1 अदिति का पुत्र 2 देवता सामान्य देव।

आदित्य [अदिति+ण्य] 1 अदिति का पुत्र देव देवता 2 [illegible] आदित्य (सूर्य के भाग) का समुदायवाचक [illegible] सूर्य [illegible] नौ [illegible] 3 सूर्य 4 [illegible] अव-तार, [illegible] —सूनु सूर्य का पुत्र सुग्रीव [illegible]

आदिन (वि०) [illegible] आदीनवः [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] दे० [illegible]

आदिम (वि०) [आदौ भवः आदि+डिमच्] प्रथम [illegible]

आदीनव [illegible]

आदीपनम् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

आदृत [illegible] 1 सम्मानित [illegible] 2 [illegible] सम्मान [illegible]

आदेवनम् [आ+दिव्+ल्युट्] 1 जुआ खेलना 2 जुआ खेलने का पासा 3 जुआ खेलने की बिसात खेलने का स्थान।

आदेश [आ+दिश्+घञ्] 1 हुक्म, आज्ञा —आनुशासि-माझादेश—रामा० [illegible] आदेश देशकालज्ञः प्रतिजग्राह रघु० १।९२ [illegible] शाक० १।२०१, [illegible] के द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को करने वाला 2 सलाह, निर्देश, उपदेश, नियम 3 विवरण सूचना, संकेत 4 भविष्यकथन—विप्राश्निकादेशवचनानि का० ६४, 5 (व्या०) स्थानापन्न—भावी स्थान इवादिश सुग्रीव सन्यवेशयत्—रघु० १२।५८।

आदेशिन् [आ+दिश्+णिनि] 1 आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला 2 उत्तेजक, भड़काने वाला — रघु० ६८ —(पुं०) 1 सेनापति, आज्ञप्ता 2 ज्योतिषी ।

आद्य (वि०) [आदौ भव — यत्] 1 प्रथम आदि कालीन 2 मुखिया, प्रमुख अगुआ आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव — रघु० १।११ 3 (समास के अन्त में) आरम्भ करके, वगैरा ? दे० आदि **आ** 1 दुर्गा की उपाधि 2 मास का पहला दिन **द्यम्** 1 आरम्भ 2 अनाज आहार। सम० — **कविः** आदिकवि ब्रह्मा या वाल्मीकि की उपाधि दे० आदिकवि। **बीजम्** विश्व का मुख्य या भौतिक कारण जो सांख्य मतानुसार 'प्रधान' या जड़नियम कहलाता है।

आद्यून (वि०) [आ दिव् + क्त ऊठ् नत्व च अद् खाना से व्युत्पन्न पर्सी ? हुआ है] बहुभोजी बाउचप पेटू भुक्खड़ वि० ११।५।

आद्योत [आ + द्युत् + घञ्] प्रकाश चमक

आधमनम् [आ + ध्मा + ल्युट्] 1 धरोहर गिरवी रखना ? मनीषा सर्वथा ? ... मनु० ८।१६० 2 बिक्री के सामान का पर्णना के साथ मूल्य बढ़ाना।

आधमर्ण्यम् [अधमर्ण + ष्यञ्] कर्जदारी।

आधर्मिक (वि०) [अधर्म + ठञ्] अन्यायी बेईमान।

आधर्ष [आ + धृष् + घञ्] 1 घृणा 2 अनादर चोट पहुँचाना।

आधर्षणम् [आ + धृष् + ल्युट्] 1 दोष या अपराध का निश्चय दण्डादेश 2 निराकरण 3 चोट पहुँचाना सताना।

आधर्षित (भू० क० कृ०) [आ + धृष् + क्त] 1 चोट पहुँचाया हुआ 2 तर्क द्वारा निराकृत 3 दण्डादिष्ट सिद्ध-दोष।

आधानम् [आ + धा + ल्युट्] 1 रखना ऊपर रख देना 2 लेना मान लेना प्राप्त करना शामिल करना 3 यज्ञाग्नि को स्थापित करना (अग्न्याधान) पुनर्दार क्रियां कुर्यात् पुनराधानमेव च — मनु० ५।१६८ 4 करना कार्य में परिणत करना निष्पन्न करना 5. बीच में रखना, रख देना — गुणो विशेषाधानहेतुः सिद्धो वस्तुधर्मः — सा० द० २ प्रजानां विनयाधाना-द्रक्षणाद्भरणादपि रघु० १।२४ 6 बीजारोपण, उत्पादन — कौतुकाधानहेतोः — मेघ० ३, गर्भाधानक्षणपरिचयात् — ९, 7 निक्षेप, धरोहर — याज्ञ० २।२३८, २४७।

आधानिकः [आधान + ठञ्] सहवास के पश्चात् गर्भाधान के निमित्त किया जाने वाला संस्कार।

आधारः [आ + धृ + घञ्] 1 आश्रय, स्तंभ, टेक 2 (अत) सँभाले रखने की शक्ति, सहायता, संरक्षण, मदद — त्वमेव चातकाधारः भर्तृ० २।५०, 3 भाजन आशय — तिष्ठन्त्याप इवाधारे — पंच० १।६७, धराधाराणां भूतानां कुक्षिराधारता गत कु० ६।६७ कु० ३।४८ श० १।१४ 4 आलवाल आधारबन्धप्रमुखैः प्रयत्नैः रघु० ५।६, 5 पुलिया बाँध पुश्ता, (नदबन्ध) 6 नहर 7 अधिकरण कारक का भाव स्थान — आधारोऽधिकरणम्।

आधि [आ + धा + कि] 1 मानसिक पीड़ा वेदना चिन्ता (विप० व्याधि शारीरिक पीड़ा) — न वेत्ताम्यापदं सन्निनामयो व्याधयस्तथा महा०, मनोगतमाधिहेतुम् श० ३।११ रघु० ८।२७ १४।५६ भर्तृ० ३।१०५ भामि० ४।११ 2 विपत्ति अभिशाप सन्ताप आन्त्येव गर्हणीयपद यक्षयो वामा कृतम्माधयः श० ४।१७ महावीर० ५।०८ 3 निक्षेप धरोहर गिरवी रेहन याज्ञ० २।२३ मनु० ।१४३ 4 स्थान आवास 5 अवस्थान ठिकाना 6 परिवार के भरण पोषण के लिए चिन्तातुर। सम० — **ज्ञ** (वि०) पीडाग्रस्त — **भोग** धरोहर की चीज का उपयोग (जैसे बोझ गाय आदि का) — **स्तेनः** स्वामी से पूछे बिना धरोहर की राशि को खर्च करने वाला व्यक्ति।

आधिकरणिक [अधिकरण + ठक्] न्यायाधीश मृच्छ० ९।

आधिकारिक (वि०) (स्त्री० — की) 1 सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ 2 अधिकारी।

आधिक्यम् [अधिक + ष्यञ्] अधिकता बहुतायत प्राचुर्य।

आधिदैविक (वि०) (स्त्री० — की) [अधिदेव + ठञ्] 1 अधिदेव या इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देव से सम्बन्ध रखने वाला (जैसा कि एक मन्त्र) मनु० ६।८३ 2 दैवकृत भाग्य में लिखी हुई (पीडा आदि) सुश्रुत के अनुसार पीडा तीन प्रकार की है आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक।

आधिपत्यम् [अधिपति + यक्] 1 सर्वोपरिता शक्ति प्रभुसत्ता राज्य गुणानामपि चाधिपत्य (अवाप्य) भग० २।८ 2 राजा का कर्तव्य पाण्डो पुत्र प्रकुर्वन्वाधिपत्ये महा०।

आधिभौतिक (वि०) (स्त्री० — की) [अधिभूत + ठञ्] 1 प्राणियों पशुपक्षियों से उत्पन्न (पीडा आदि) 2 प्राणियों से सम्बन्ध रखने वाला 3 प्राकृतिक भौतिक।

आधिराज्यम् [अधिराज + ष्यञ्] अधिराज का पद या अधिकार, प्रभुसत्ता, सर्वोपरि प्रभुत्व अथो भूय कुमारत्वादाधिराज्यमवाप्य स रघु० १७।३०।

आधिवेदनिकम् [अधिवेदनाय हितं ठक्, तच्च कालेन दत्त — ठञ् वा] सम्पत्ति, उपहार आदि जो दूसरा विवाह करने पर पहली पत्नी को सन्तोषार्थ दिया जाय,

—यच्च द्वितीयविवाहार्थिना पूर्वस्त्रियै पारितोषिक धन दत्त तदाधिवेदनिकम् विष्णु०, मनु० याज्ञ० २।१४३, १४८।

आधुनिक (वि०) (स्त्री० —की) [अधुना+ठञ्] नया आजकल का, अब का, हाल का।

आधोरण: [आ+धोर्+ल्युट् धाव्] गतिचातुर्ये] महावत पीलवान, आधोरणानां गजसंनिपाते — रघु० ५।४९, ५।४८ १८।३९।

आध्मानम् [आ+ध्मा+ल्युट्] 1 फूंक मारना, फुलाव (आल०) वृद्धि 2 शेखी बघारना 3 [illegible] का फूलना शरीर का फुलाव [illegible]।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री० —की) [अध्यात्म+ठञ्] 1 परमात्मा से [illegible] रखने वाला 2 आत्मा सम्बन्धी, पवित्र 3 मन से सम्बन्ध रखने वाला 4 मन से उत्पन्न (शोक, दुःख आदि) दे० आधि-दैविक।

आध्यानम् [आ+ध्यै+ल्युट्] 1 [illegible] 2 [illegible] प्रत्यास्मरण 3 मनन।

आध्यापक [अध्यापक+अण्] [illegible] गुरु।

आध्यासिक (वि०) (स्त्री० —की) [अध्यास+ठञ्] अध्यास द्वारा स्थापित अर्थात् [illegible] एक वस्तु के गुण व प्रकृति का दूसरी वस्तु पर आरोप करना।

आध्वनिक (वि०) (स्त्री० —की) [अध्वन्+ठञ्] राह पर यात्री — कश्चिदाध्वनिकस्त्वस्मिन् [illegible] है — महा०।

आध्वर्यव (वि०) (स्त्री० —वी) [अध्वर्यु+अण्] अध्वर्यु या यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला, —वम् 1 [illegible] किया जाने वाला कार्य 2 [illegible] अध्वर्यु पुरोहित का कार्य।

आन: [आ+अन्+क्विप्, नन् अण्] 1 सांस भीतर खींचना 2. श्वास लेना, फूंक मारना।

आनक: [आनयति उत्साहं करोति अण्, कित् तारा०] 1 बड़ा सैनिक ढोल — नगाड़ा — पणवानक गोमुखाः सहसैवाभ्यहन्यन्त — भग० १।१३, 2 गरजने वाला बादल। सम० — दुन्दुभिः कृष्ण के पिता वसुदेव की उपाधि (—भिः, —भी (स्त्री०)) बड़ा ढोल नगाड़ा।

आनतिः (स्त्री०) [आ+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, नमस्कार करना, झुकाव (आल० भी) — गुणवत्स्वपि सिद्धानतिः प्रयेदे — कि० १३।१९ 2 नमस्कार या अभिवादन 3 श्रद्धांजलि, सत्कार, श्रद्धा।

आनद्ध (वि०) [आ+नह्+क्त] 1 बांधा हुआ, मढ़ा हुआ 2. बद्धकोष्ठ, अवरुद्धमल (जैसा कि उदर) —द्धः 1 ढोल 2 वस्त्रों का पहनना, बनाव-सिंगार।

आननम् [आ+अन्+ल्युट्] 1 मुंह, चेहरा — रघु० ३।३, नृपस्य कान्तं पिबतः सुताननम् - १७, 2. किसी ग्रन्थ या पुस्तक के बड़े २ खण्ड (उदा० रमयगाधर के दो आनन)।

आनन्तर्यम् [अनन्तर+ष्यञ्] 1. अव्यवहित उत्तराधिकार 2 व्यवधान रहित आसन्नता।

आनन्त्यम् [अनन्त+ष्यञ्] 1 असमापकता अनन्तता (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से) — आनन्त्याद् व्यभिचाराच्च — काव्य० २, 2 असीमता 3 अनश्वरता नित्यता 4 [illegible], स्वर्ग, भावी सुख — [illegible] [illegible] [illegible] कुमान कल्याणि सोऽमृ[illegible] [illegible] महा०।

आनन्दः [आ+नन्द्+घञ्] 1 प्रसन्नता, हर्ष, खुशी [illegible] 2 [illegible] (नपुं० भी इसी अर्थ में) 3 शिव। सम० — काननम्, — वनम् काशी [illegible] — पूर्ण (वि०) आनन्द से ओतप्रोत —[illegible] परमात्मा — प्रभवः वीर्य।

आनन्दथु (वि०) [आ+नन्द्+अथुच्] प्रसन्न, हर्षोत्फुल्ल, —थुः प्रसन्नता, हर्ष, सुख।

आनन्दन (वि०) [आ+नन्द्+ल्युट्] सुखकर, प्रसन्न करने वाला —नम् 1. खुश करना, प्रसन्न करना 2 प्रणाम करना 3 मित्र या अतिथियों के साथ, मिलने पर अथवा विदा होते समय समुचित व्यवहार, शिष्टाचार, [illegible]।

आनन्दमय (वि०) [आनन्द+मयट्] 1 आनन्द से परिपूर्ण, हर्ष या हर्ष सहित, —यः परमात्मा, —कोशः अन्तरतम आवरण या शरीर का परिधान।

आनन्दिः [आ+नन्द्+इन्] 1 हर्ष, प्रसन्नता 2. जिज्ञासा।

आनन्दिन् (वि०) [आ+नन्द्+णिनि] 1. प्रसन्न, खुश 2 सुखकर।

आनर्तः [आ+नृत्+घञ्] 1 रंगमंच, नाट्यशाला नाचघर 2 युद्ध लड़ाई 3 देश का नाम ('सौराष्ट्र' भी इसी देश का नाम है)।

आनर्थक्यम् [अनर्थस्य भाव — ष्यञ्] 1. अनुपयुक्तता, निरर्थकता — भूतानर्थक्यमितिचेत् - आश्व० आम्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानाम् — जै० सू० 2 अयोग्यता।

आनायः [आ+नी+घञ्] जाल।

आनायिन् (पुं०) [आनाय+इनि] मछुवा, धीवर — आनायिभिस्तामपकृष्टनक्राम् — रघु० १६।५५, ७५।

आनाय्य (वि०) [आ+नी+ण्यत्, आयादेशः] निकट लाने के योग्य, —य्यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई पवित्र अग्नि (दक्षिणाग्नि' भी कहलाती है)।

आनाहः [आ + नह् + घञ्] 1 बन्धन 2. मलावरोध कब्ज 3 लम्बाई (विशेषत कपड़े की)।

आनिल (वि०) (स्त्री० ली) [अनिल + अण्] वायु से उत्पन्न, –लः, आनिलि हनुमान्, भीम।

आनील (वि०) [प्रा० स०] हल्का काला या नीला,– लः. काला घोड़ा।

आनुकूलिक (वि०) (स्त्री० की) [अनुकूल + ठक्] हित-कर, अनुरूप।

आनुकूल्यम् [अनुकूल + ष्यञ्] 1 हितकारिता उपयुक्तता – यत्रानुकूल्यं दम्पत्योस्त्रिवर्गस्तत्र वर्धते – याज्ञ० १। ७४ 2 कृपा अनुग्रह।

आनुगत्यम् [अनुगत + ष्यञ्] जान-पहचान परिचय।

आनुगुण्यम् [अनुगुण + ष्यञ्] हितकारिता उपयुक्तता अनुकूलता।

आनुग्रामिक (वि०) (स्त्री० की) [अनुग्राम + ठक्] देहाती ग्रामीण गँवार।

आनुनासिक्यम् [अनुनासिक + ष्यञ्] अनुनासिकता।

आनुपदिक (वि०)(स्त्री० की) [अनुपद + ठक्] अनुसरण करने वाला, पीछा करने वाला पदचिह्न या लीक के सहारे पीछा करने वाला अध्ययन करने वाला।

आनुपूर्वम्,–र्व्यं–र्वी [अनुपूर्वस्य भाव ष्यञ्, स्त्रियां वा ङीष् य–लोप] 1. क्रम परम्परा सिलसिला मनु० ७।४१ 2 (विधि में) वर्णों का नियमित क्रम यथानुपूर्व्या विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान् –मनु० ३।२३।

आनुपूर्वे, र्व्येण,–ण (अव्य०) एक के बाद दूसरा ठीक क्रमानुसार।

आनुमानिक (वि०) (स्त्री० –की) [अनुमान + ठक्] 1. उपसंहार से सम्बन्ध रखने वाला 2 अनुमान प्राप्त —कम् सांख्यों का 'प्रधान' –आनुमानिकमप्येकेषामिति चेन्न —ब्रह्म०।

आनुयात्रिकः [अनुयात्रा + ठक्] अनुयायी, सेवक अनुचर।

आनुरक्तिः [आ + अनु + रञ्ज् + क्तिन्] राग स्नेह अनुराग।

आनुलोमिक (वि०) (स्त्री० की) [अनुलोम + ठक्] 1. नियमित, क्रमबद्ध 2 अनुकूल।

आनुलोम्यम् [अनुलोम + ष्यञ्] 1 नैसर्गिक या सीधा क्रम, उपयुक्त व्यवस्था आनुलोम्येन संभूता जात्या ज्ञेयास्त एव ते मनु० १०।५ १३ 2 नियमित सिलसिला या परम्परा 3. अनुकूलता।

आनुवेश्यः [अनुवेश + ष्यञ्] वह पड़ोसी जिसका घर अपने घर से एक छोड़कर हो – प्रातिवेश्यानुवेश्यौ च कल्याणे विंशति द्विजे –मनु० ८।३९२ (इस पर कुल्लूक कहता है —निरन्तर गृहवासी प्रातिवेश्य —तदनन्तरगृहवास्यानुवेश्य.) यह शब्द 'अनुवेश्य' लिखा भी पाया जाता है।

आनुषङ्गिक (वि०) (स्त्री० की) [अनुषङ्ग + ठक् स्त्रियां ङीप्] 1 निकट्य सहवर्ती 2 ध्वनित 3 अनिवार्य, आवश्यक 4 अप्रधान, गौण अर्थाश्रयाणाम् यथाविधवीचल नन् लक्ष्मी फलमानुषङ्गिकम् कि० ११ अन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेऽन्वाचय सिद्धा० दे० अन्वाचय 5. संलग्न शौकीन 6 आपेक्षिक, आनुपातिक 7 (व्या०) अध्याहार्य।

आनूप (वि०) (स्त्री० पी) [अनूपदेशे भव अण्] 1 जलीय दलदलीय आर्द्र 2 दलदल–भूमि में उत्पन्न —पः दलदली भूमि में घूमने वाला पशु (जैसे भैंस)।

आनृण्यम् [अनृण ष्यञ्] ऋणपरिशोध दायित्व निभाना उऋणता दे आनृण्य।

आनृशंस–स्य (वि०) [अनृशंस + अण् (स्वार्थे) ष्यञ् वा] मृदु कारुण्य दयालु –सं, –स्यम् 1 मृदुता 2 कृपा महा० १।०७ ७।९७ 3 करुणा दया अनुकम्पा।

आनैपुणम्,–ण्यम् [अनिपुण अण् ष्यञ् वा] भद्दापन अनाड़ी।

आन्त्य (वि०) (स्त्री० ती) [अन्त + अण् स्त्रियां ङीप्] अन्तिम अन्त का –तम् (अव्य०) पूर्णरूप से अन्त तक।

आन्तर (वि०) [अन्तर + अण्] 1 आन्तरिक गुप्त छिपा हुआ उत्तर० ६।१२ मा० १।२४, 2 अन्तस्तम, अन्तर्वर्ती, –रम् अन्तस्तम स्वभाव।

आन्तरि(री)क्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) [अन्तरिक्ष + अण् —स्त्रियां ङीप्] 1. वायव्य स्वर्गीय, दिव्य 2 वायु में उत्पन्न, —क्षम् व्योम पृथ्वी और आकाश के बीच का प्रदेश।

आन्तर्वेशिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्तर्वेश + ठक्] अधिकारी (जैसे कोठी में, सेना में)।

आन्तर्गेहिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्तर्गेह + ठक्] घर में रहने वाला या घर में उत्पन्न।

आन्दिलका [अन्दिका + अण् + टाप्] बड़ी बहन।

आन्दोल् (चुरा० पर०) [दोलयति दोलित] 1 झूलना, इधर से उधर या उधर से इधर स्पन्दन 2. हिलाना, कपकपाना।

आन्दोल [आ + दुल् + घञ्] 1 झूलना, झूला 2 हिलना डुलना।

आन्दोलनम् [आन्दोल् + ल्युट्] 1. झूलना 2. हिलना–डुलना, स्पंदन, कंपित होना; –किमासामरविन्दसुन्दरदृशां द्राक् चामरान्दोलनात् – उद्भट० 3 काँपना।

आन्धसः [अन्धस् + अण्] माँड।

आन्धसिकः [अन्धस् + ठक्] रसोइया।

आन्ध्यम् [अन्ध + ष्यञ्] अंधापन।

आन्ध्र (वि०) [आ [illegible]] आन्ध्र देश की (जैसे कि भाषा) **ध्र** (ब० व०) तेलगु देश वर्तमान [illegible]।

आन्वयिक (वि०) (स्त्री० **की**) [अन्वय + ठक्] 1 [illegible] अभिजात 2 [illegible]।

आन्वाहिक (वि०) (स्त्री० **की**) [अन्वह + ठञ्] प्रति दिन [illegible] आन्वाहिकाम् मनु० ३।६७

आन्वीक्षिकी [अन्वीक्षा [illegible] ङीप्] 1 तर्क [illegible] 2 आत्मविद्या आन्वीक्षिक्यां [illegible] हेतुमत्ताम् [illegible] काम० [illegible] आन्वीक्षिकी [illegible] मनु० ७।४३।

आप् (स्वा० पर०) [illegible] 1 [illegible] अथवा [illegible] 2 पहुँचना [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] मनु० [illegible] **अनु०** 1 [illegible] 2 पहुँचना [illegible] 3 [illegible] **अव** 1 [illegible] प्राप्त करना [illegible] अवाप्नोति [illegible] रघु० [illegible] 2 पहुँचना [illegible] **परि** [illegible] प्रयोग मिलता है, 1 समर्थ होना [illegible] भग० ११। [illegible] 2 [illegible] 3 पूरा होना [illegible] 4 घेरना [illegible] करना [illegible] ५।११ **प्र** 1 हासिल करना प्राप्त करना 2 आना पहुँचना [illegible] प्राप्य [illegible] मनु० ११।६७ रघु० १।४८, भट्टि० १५।१०६ इसी प्रकार [illegible] नदी संगम आदि के साथ 3 मिल जाना, पकड़ लेना भट्टि० ५।१०६ **वि** 1 पूरी तरह से भर देना, व्याप्त हो जाना [illegible] व्याप्य [illegible] विक्रम० १।१, भग० १०।१६ रघु० १८।४०, भट्टि० ७।१६, **सम्** 1 हासिल करना प्राप्त करना, 2 समाप्त करना, पूरा (प्रेरणार्थक रूप भी) करना यावतैवा समाप्येरन् यज्ञा पर्याप्तदक्षिणा रघु० १३।१७, ७८, समाप्य सान्ध्यं च विधिं —२।२३।

आपकर (वि०) (स्त्री० — **री**) [अपकर + अण्, स्त्रियां ङीप्] अनिष्टकर अमैत्रीपूर्ण, बुराई करने वाला।

आपक्व (वि०) [आ + पच् + क्त] अनपका, अधपका — **क्वम्** [illegible]

आपगा [आपः समूहः आपम् तेन गच्छति—गम् + ड] दरिया, नदी [illegible] —शि० ३।७२।

आपगेय [आपगा + ढक्] गंगा का पुत्र, भीष्म या कृष्ण का [illegible]।

आपण [आ + पण् + घञ्] मंडी दुकान।

आपणिक (वि०) (स्त्री० — **की**), [आपण + ठक्] 1 [illegible] मंडी से सम्बन्ध रखने वाला व्यापारिक 2 [illegible] —**कः** दुकानदार, सौदागर, [illegible] विक्रेता।

आपतनम् [आ + पत् + ल्युट्] 1 निकट आना, टूट पड़ना 2 घटित होना घटना 3 प्राप्त करना 4 ज्ञान, [illegible] मा० द० १० 5 नैसर्गिक क्रम, स्वाभाविक परिणाम।

आपतिक (वि०) (स्त्री० — **की**) [आपत् + ठञ्] आक-स्मिक अदृष्ट दैवी — **कः** बाज, श्येन।

आपत्ति (स्त्री०) [आ + पद् + क्तिन्] 1. बदलना, परि-[illegible] होना 2 प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना 3 मुसीबत संकट 4 (वर्शन० में) अवांछित [illegible] या अनिष्ट प्रसंग।

आपद् (स्त्री०) [आ + पद् + क्विप्] 1 संकट, मुसीबत, [illegible] दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम् रघु० १।६०, अविवेकः परमापदां पदम्—कि० [illegible] —प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः भर्तृ० २।९०। **सम०** — **कालः** विपत्ति के दिन कष्ट का समय, — **गत**, — **ग्रस्त**, — **प्राप्त** (वि०) 1 मुसीबत में पड़ा हुआ 2 दुर्भाग्य-ग्रस्त, पीड़ित, — **धर्मः** अत्यन्त कष्ट या संकट के समय अनुमति दिए जाने योग्य आचरण या वृत्ति, या कोई कार्य विधि जो प्रायः किसी वर्ण या जाति के लिए उपयुक्त न हो।

आपदा [आपद् + टाप्] मुसीबत, संकट।

आपनिकः [आ + पन् + इकन्] 1. पन्ना, नीलम 2 किरात या असभ्य व्यक्ति।

आपन्न (भू० क० कृ०) [आ + पद् + क्त] 1 लब्ध, प्राप्त —जीविकापन्न 2 गया हुआ, कम हुआ ग्रस्त—कष्टां दशामापन्नोऽपि —भर्तृ० २।२९ इसी प्रकार दुःखा-

पीड़ित, कष्टग्रस्त, कठिनाई में फँसा हुआ—आपन्नभयसत्वेषु दीक्षिताः खलु पौरवा—श० २।१६, मेघ० ५३। सम० —सत्त्वा गर्भवती, गर्भगुर्वी, गर्भवती स्त्री - सममापन्नसत्त्वास्ता रेजुरापाण्डुरत्विषः - रघु० १९।५९।

आपमित्यक (वि०) [अपमित्य परिवर्त्य निर्वृत्तम्—कक्] विनिमय द्वारा प्राप्त —कम् विनिमय द्वारा प्राप्त वस्तु या सम्पत्ति।

आपराह्णिक (वि०) (स्त्री० की) [अपराह्ण+ठञ्] तीसरे पहर होने वाला।

आपस् (नपुं०) [आप्+असुन्] 1 जल आपोऽशितमांसेन कृत्वा 2 पाप।

आपातः [आ+पत्+घञ्] 1 टूट पड़ना, गिर पड़ना, हमला करना, आ धमकना, उतरना—सद्यःपातमयात् त्वयि—कु० २।४५ गरुडापातविश्लिष्टमेघनादास्त्रबन्धनः—रघु० १२।७६ 2 उतरना गिरना, नीचे डालना 3 (क) वर्तमान क्षण या काल—आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः कि० ११।१२, आपातमधुरे भोगे निमग्नाः किं न कुर्वते—शा० ह० भामि० १।११५, मा० ५ (ख) प्रथम दर्शन दे० 'आपाततः' 4 घटित होना, प्रकट होना।

आपाततः (अव्य०) [आपात+तसिल्] पहली निगाह में, हमला करते ही, तुरत।

आपादः [आ+पद्+घञ्] 1 अवाप्ति, प्राप्ति 2 पारितोषिक, पारिश्रमिक।

आपादनम् [आ+पद्+णिच्+ल्युट्] पहुँचाना, प्रकाशित करना, झुकाव होना—द्रव्यस्य सक्ष्यान्तरापादने—सिद्धा०।

आपानम् -नकम् [आ+पा+ल्युट्] 1 मद्यपों की मण्डली, पानगोष्ठी मृच्छ० ८, आपाने पानकलिता दैवेनाभिप्रणोदिता—महा०, 2 मद्यशाला, मदिरालय—सा च लीला दम्भैस्तत्र रचितापानभूमयः—रघु० ४।४२, कु० ६।४२, आपानकमुत्सवः का० ३२।

आपालिः [आ+पा+क्विप्=आपा, तदर्थमलति अल्+इन्] जूँ।

आपीडः [आ+पीड्+घञ्, अच् वा] 1 पीडा देना चोट पहुँचाना 2 निचोड़ना, भींचना 3 कण्ठहार, माला—चूडापीडकपालसङ्कुलगलन्मन्दाकिनीवारयः—मा० १।२, 4 (अत) मुकुटमणि तस्मिन्कुलापीडनिभे विपीडम्—रघु० १८।२९ मा० १।६, ७।

आपीन (भू० क० कृ०) [आ+प्यै+क्त] मजबूत, मोटा, सबल,—नः कुआँ,—आपीनोऽन्धु—सिद्धा०,—नम् ऐन, थन का अग्रभाग—आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात्—रघु० २।१८।

आपूपिक (वि०) (स्त्री० की) [अपूप+ठक्] 1 अच्छे पूए बनाने वाला 2 जिसे पूए अधिक पसंद हो, —कः पूए बनाने वाला, हलवाई,—कम् पूओं का ढेर।

आपूप्यः [अपूपाय साधु या० य, अपूप+ष्य वा] आटा।

आपूरः [आ+पृ+घञ्] 1 प्रवाह, धारा, परिमाण—स्वेदापूरो युवतिसरितां व्याप गण्डस्थलानि—शि० ७।७४, 2 भरना, पूरा करना।

आपूरणम् [आ+पृ+ल्युट्] भरना भर कर पूरा करदेना, गर्त° कृतम् पंच० १।

आपूषम् [आ+पूष्+घञ्] धातु की एक प्रकार (संभवत 'टीन')।

आपृच्छा [आ+प्रच्छ्+अङ्+टाप्] 1 समालाप 2 विदा करना, 3 जिज्ञासा।

आपोशानम् [आपम्भा जलेन अशानम् इति -अश्+आनच्] भोजन से पूर्व और पश्चात् आचमन करने के मन्त्र (क्रमशः अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा और अमृतापिधानमसि स्वाहा) याज्ञ० १।३१ १०६,—नम् भोजन के लिए स्थान बनाना तथा भोजन को ढक देना।

आप्त (भू० क० कृ०) [आप्+क्त] 1 हासिल किया, प्राप्त किया, उपलब्ध किया—°काम °दाप आदि 2 पहुँचा हुआ जा पकड़ा हुआ 3 विश्वास योग्य, विश्वसनीय, प्रामाणिक (समाचार आदि), 4 विश्वस्त, गोपनीय निष्ठावान् (पुरुष)—रघु० ३।१२, ५।११, 5 घनिष्ट सूर्पणखिन 6 तर्कसंगत समझदारी से युक्त—प्तः 1 विश्वासयोग्य विश्वसनीय योग्य व्यक्ति, विश्वस्त पुरुष या साधन,—आप्तः यथार्थवक्ता तर्क स० 2 सखी मित्र, निग्रहात्स्वसुराप्तानां वधाच्च धनदानुजः रघु० १२।५२ कथमाप्तवर्गोऽस्य भवत्या मालवि० ५ —प्तम् 1 भजन 2 आप्तसामान्य। सम० —काम (वि०) 1 जिसने अपनी इच्छा पूर्ण करली है 2 जिसने सांसारिक इच्छाओं और आसक्तियों का त्याग कर दिया है (—मः) परमात्मा—गर्भा गर्भवती स्त्री —वचनम् किसी विश्वास योग्य या विश्वस्त व्यक्ति के शब्द रघु० ११।४२, १५।४८,—वाच् विश्वास के योग्य, जिसके शब्द प्रामाणिक और विश्वसनीय होते हैं—पराभिसन्धानमधीयते यैर्विधेयानि ते मक्तु किमाप्तवाचः शि० ५।२५ (—स्त्री०) 1 किसी मित्र या विश्वसनीय पुरुष की सलाह 2 वेद, श्रुति, प्रामाणिक वचन (यह शब्द स्मृति इतिहास और पुराणों पर भी लागू होता है क्यों कि प्रामाणिक समझे जाते हैं)—आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वां प्रति का कथा—रघु० १०।२८, श्रुतिः (स्त्री०) 1 वेद 2 स्मृतियाँ आदि।

आप्तिः (स्त्री०) [आप्+क्तिन्] 1 हासिल करना, प्राप्त करना, लाभ, अधिग्रहण 2 जा पहुँचना, (दुर्दशा में) ग्रस्त होना 3. योजना, अभिवृत्ति, औचित्य 4 सम्पूर्ति, पूरा करना।

आप्य (वि०) [अपाम् इदम्—अण्, ततः स्वार्थे ष्यञ्] 1. जलमय 2. [आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य, प्राप्य।

आप्यान (भू० क० कृ०) [आ+प्याय्+क्त] 1 मोटा, बलवान्, हृष्टपुष्ट, ताकतवर 2. प्रसन्न, संतुष्ट,—नम् 1 प्रेम 2. वृद्धि, बढ़ना।

आप्यायनम् —ना [आ+प्याय्+ल्युट्, युच् वा] 1 पूरा भरना, मोटा करना, 2 संतोष, तृप्ति—देवस्याप्यायना भवति—पंच० १, 3 आगे बढ़ना, पदोन्नति करना 4 मोटापा 5. बल-वर्धक औषधि।

आप्रच्छनम् [आ+प्रच्छ्+ल्युट्] 1 विदा करना, विदा माँगना 2 स्वागत करना, सत्कार करना।

आप्रपदीन (वि०) [आप्रपदं व्याप्नोति—ख] पैरों तक पहुँचनेवाला (वस्त्र आदि)।

आप्लवः, —प्लवनम् [आ+प्लु+अप्, ल्युट् वा] 1 स्नान करना, पानी में डुबो देना 2 चारों ओर पानी का छिड़काव करना। सम०—व्रतिन् या आप्लवव्रतिन् (पुं०) दीक्षित गृहस्थ (जिसने ब्रह्मचर्य अवस्था पार करके गार्हस्थ्य अवस्था में पदार्पण किया है) तु० 'स्नातक'।

आप्लावः [आ+प्लु+घञ्] 1 स्नान 2 छिड़काव 3 बाढ़, जल-प्लावन।

आफूकम् [ईषत्फूत्कार इव फेनोऽत्र—पृषो०] अफीम।

आबद्ध (भू० क० कृ०) [आ+बन्ध्+क्त] 1 बाँधा हुआ, बँधा हुआ 2 जमाया हुआ—रघु० १।४० 3 निर्मित, बना हुआ—आबद्धमण्डला तापसपरिषद्—का० ४१, मण्डलाकार बैठी हुई, 4 प्राप्त 5 बाधित,—द्धम् (नपुं० भी) 1 बाँधना, जोड़ना 2 जुआ 3. आभूषण 4 स्नेह।

आबन्धः, —बन्धनम् [आ+बन्ध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 बंध, /बन्धान (आल०)—प्रेमाबन्धविवर्धित—रत्न० १।१८, अमरु ३८, 2 जुवे की रस्सी 3 आभूषण, सजावट 4 स्नेह।

आबर्हः [आ+बर्ह्+घञ्] 1 फाड़ डालना, खींचकर बाहर निकालना 2 मार डालना।

आबाधः [आ+बाध्+घञ्] 1 कष्ट, चोट, तकलीफ सताना, हानि—न प्राणाबाधमाचरेत्—मनु० ४।५४, ५१, —धा 1. पीड़ा, दुःख 2 मानसिक वेदना, आधि।

आबुत्तः = दे० आवुत्त।

आबोधनम् [आ+बुध्+ल्युट्] 1 ज्ञान, समझदारी 2 शिक्षण, सूचन।

आब्द (वि०) (स्त्री०—ब्दी) [अब्द+अण्] बादल संबंधी या बादल से उत्पन्न।

आब्दिक (वि०) (स्त्री०—की) [अब्द+ठञ्, स्त्रियां ङीप्] वार्षिक, सालाना—आब्दिक कर—मनु० ७।१२९, ८।१।

आभरणम् [आ+भृ+ल्युट्] 1 आभूषण, सजावट (आल०)—किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४, प्रशमाभरणं पराक्रमः—कि० २।३२ 2 पालन पोषण करना।

आभा [आ+भा+अङ्] 1 प्रकाश, चमक, कान्ति,—दीपाभां जनयां यथा—पंच० ४, 2 वर्ण, आभास, रूप प्रशान्तमिव शुद्धाभम्—मनु० १२।२७ 3. सादृश्य, मिलना-जुलना—इन्हीं दो अर्थों को प्रकट करने के लिए यह शब्द प्राय समास के अन्त में प्रयुक्त होता है—यत-कृताभम्—पंच० १।०८, मरकताभम्—रघु० २।१० 4 प्रतिबिम्बित प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब।

आभाणकः [आ+भण्+ण्वुल्] कहावत, लोकोक्ति।

आभाषः [आ+भाष्+घञ्] 1 सम्बोधन 2 प्रस्तावना, भूमिका।

आभाषणम् [आ+भाष्+ल्युट्] 1 सम्बोधित करना, सम्बोधन 2 समालाप—सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः—रघु० २।५८।

आभासः [आ+भास्+अच्] 1 चमक, प्रकाश, कान्ति 2 प्रतिबिम्ब तथाज्ञान विषया स्वयैवाभासात् घटः स्फुरेत्—वेदान्त, 3 (क) मिलना-जुलना, समानता (प्राय समास के अन्त में)—नभश्च रुधिराभासम्—रामा० (ख) आकृति छायापुरुष मस्मादृशामाभासम् मा० ?, सनकीपन की भांति दिखाई देता है, 4 अवास्तविक या आभासी रूप (जैसा कि 'हेत्वाभास' में) 5 हेत्वाभास, तर्क का रूप दे० 'हेत्वाभास' 6. आशय, प्रयोजन।

आभास्वर (वि०) शानदार, उज्ज्वल,—रः ६४ उपदेवताओं का समुदाय वाचक नाम।

आभिचारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिचार+ठक्] 1 जादू सम्बन्धी 2 अभिशापात्मक, अभिशापपूर्ण,—कम् अभिचार इन्द्रजाल, जादू।

आभिजन (वि०) (स्त्री० —नी) [अभिजन+अण्, स्त्रियां ङीप्] जन्म से सबन्ध रखने वाला, कुलसूचक (नाम आदि)—सा पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना—कु० १।२६, —नम् कुलीनता, उच्च कुल में जन्म।

आभिजात्यम् [अभिजात+ष्यञ्] 1. जन्म की श्रेष्ठता—रत्न० ३।१८ 2 कुलीनता 3 पाण्डित्य 4 सौंदर्य।

आभिधा [अभिधा+अण्] 1 ध्वनि, शब्द 2. नाम, वर्णन—दे० 'अभिधा'।

आभिधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिधान+ठक्] 1. किसी शब्द-कोश में हो,—कः कोशकार।

आभिमुख्यम् [अभिमुख+ष्यञ्] किसी के संमुख होना—°ख्यं याति—सामना करने या मिलने के लिए जाता है 2 के सामने होना, आमने सामने—नीतोऽभिमुख्यं पुनः—रत्न० १।२, 3. अनुकूलता।

आभिरूपकम्, आभिरूप्यम् [अभिरूप+वुञ्, ष्यञ् वा] सौंदर्य, लावण्य।

आभिषेचनिक (वि०) (स्त्री० —की) [अभिषेचन ठञ्] राजतिलक से संबन्ध रखने वाला [illegible] निक यत्ते [illegible] [illegible]

आभिहारिक (वि०) (स्त्री० —की) [अभिहार [illegible]] उपहार के रूप में दी [illegible] —कम् भेंट, उपहार।

आभीक्ष्ण्यम् [अभी [illegible] भाव [illegible]] [illegible] आवृत्ति [illegible] पा० 3। [illegible]

आभीर [आ समन्तात् [illegible]] [illegible] 2 [illegible] निवासी [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] स्त्री। सम० —**पल्लि** —**पल्ली** (स्त्री०) [illegible] ग्वालों का [illegible]

आभील (वि०) [illegible] भयानक [illegible] —**लम्** [illegible]

आभुग्न (वि०) [आ —भुज् —क्त] [illegible] झुका हुआ।

आभोग [आ —भुज् —घञ्] 1 [illegible] विस्तार (दीर्घीकरण) [illegible] खिलो [illegible] 1 गगनाभोग [illegible] 2 [illegible] परिमाण [illegible] 3 प्रयत्न 4 [illegible] के रूप में प्रयुक्त [illegible] यथाभोगं [illegible]

आभ्यन्तर (वि०) (स्त्री० —री) [illegible] भीतरी, [illegible]

आभ्यवहारिक (वि०) (स्त्री० —की) [illegible] ठक् [illegible]

आभ्यासिक (वि०) (स्त्री० —की) [illegible] 1 अभ्यासजनित 2 अभ्यास [illegible] 3 निकटस्थ, पड़ोस में [illegible]

आभ्युदयिक (वि०) (स्त्री० —की) [illegible] 1 मङ्गलात्मक [illegible] 2 [illegible] —**कम्** श्राद्ध या पितरों को [illegible] का अवसर।

आम् (अव्य०) [अम् [illegible] क्विप्] निम्नांकित भावनाओं को प्रकट करने [illegible] विस्मयादि बोधक अव्यय (क) [illegible] —आह हाँ आ कम [illegible] (ख) प्रत्याख्यान —आ [illegible] श० 3 [illegible] कमा (ग) निश्चयेन निश्चय ही, अवश्य ही आ चिरस्य खलु प्रतिबुद्धोऽस्मि (घ) उत्तर।

आम (वि०) [आम्यते ईषत् पच्यते —आ+अम्+कर्मणि घञ्] [illegible] 1 कच्चा, अनपका, अपक्व (विप० [illegible]) [illegible] 2 हरा, [illegible] आग में न पकाया हुआ (बर्तन आदि) 4 [illegible] 1 रोग, बीमारी 2 अजीर्ण, कब्ज 3 [illegible] आमाशय [illegible] उदर का ऊपरी [illegible] —कुम्भः कच्चा [illegible] [illegible] (नपुं०) [illegible] कच्चे मांस का शव के [illegible] [illegible] —पात्रम् बिना [illegible] रक्तम् [illegible] रस [illegible] —**वात** कब्ज [illegible]

आमडक [illegible]

आमड [illegible]

आम (मा) [illegible]

आमन्त्रणम् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

आमन्त्र [illegible]

आमय [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

आमयाविन् (वि०) [आमय+विनि] बीमार, मंदा [illegible] रोग से ग्रस्त।

आमरणान्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रा० स० [illegible]] मृत्युपर्यंत रहने [illegible] कालान्तरक्षम [illegible] मनु० [illegible]

आमर्द [आ —मृद् —घञ्] 1 कुचलना, मसलना, निचो- ड़ना 2 निचम [illegible]

आमर्श [आ —मृश् —घञ्] 1 स्पर्श करना, रगड़ना 2 सलाह, परामर्श।

आमर्ष, —**णम्** [आ —मृष् —घञ्, ल्युट् वा] क्रोध कोप, असहनशीलता दे० अमर्ष।

आमलक, की [आ + मल् + वुन् [illegible] ङीप्] आँवले का वृक्ष — कम् आँवला (फल) — बदरामलकाम्रदाडिम [illegible] भाग [illegible]।

आमात्य [अमात्य + अण्] मंत्री [illegible] दे० 'अमात्य'।

आमानस्यम् [illegible] पीड़ा, शोक।

आमिक्षा [आमिष्यते सिच्यते मिष् सक [illegible]] जमा हुआ दूध व छाछ [illegible] और [illegible] दूध का मिश्रण छेना।

आमिषम् [अम [illegible]] 1 मांस [illegible] 2 [illegible] [illegible]।

आमीलनम् [आ [illegible]] आँखों का बंद करना [illegible]।

आमुक्ति (स्त्री०) [illegible] [illegible]।

आमुखम् [illegible] 1 प्रारंभ 2 (नाटकों में) प्रस्ता[illegible] [illegible] मे [illegible] कर [illegible] [illegible] [illegible] अभि० मत के सम्मत।

आमुष्मिक (वि०) (स्त्री० — की) परलोक से संबंध रखने वाला [illegible] [illegible]।

आमुष्यायण (वि०) [illegible] की [illegible] [illegible] मा० ९ महावी० ९

आमोचनम् [आ + मुच् + ल्युट्] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 धारण करना मानना।

आमोटनम् [आ + मुट् + ल्युट्] कुचलना — मा० ३

आमोद [आ + मुद् + घञ्] 1 हर्ष प्रसन्नता खुशी 2 सुगंध (व्यापी) सौरभ — आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनिःश्वासानुकारिणम् रघु० १।४३ आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते मृद्गन्धं न हि कुसुमानि धारयन्ति — सुभाषित [illegible] शि० २।२०, मेघ० ११।

आमोदन (वि०) [आ + मुद् + ल्युट्] खुश करने वाला, प्रसन्न करने वाला — नम् 1 खुशी प्रसन्नता 2 सुगंधित करना।

आमोदिन् (वि०) [आ + मुद् + णिनि] 1 प्रसन्न 2 सुगंधित [illegible]।

आमोष [आ + मुष् + घञ्] चोरी डाका।

आमोषिन् (पुं०) [आ + मुष् + णिनि] चोर।

आम्नात (भू० क० कृ०) [आ + म्ना + क्त] 1 विचार [illegible] 2 अधीत [illegible] 3 [illegible] अध्ययन।

आम्नानम् [illegible] 1 वेद या धर्म ग्रंथों का [illegible] 2 [illegible]।

आम्नाय [illegible] 1 पुण्य परम्परा [illegible] वेद (ब्राह्मण, उपनिषद् [illegible]) [illegible] दशा० [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]।

आम्बिकेय [illegible] और कार्तिकेय [illegible]।

आम्भसिक (वि०) (स्त्री० — की) [illegible] मछली।

आम्र [illegible] आम का वृक्ष — म्रम् आम [illegible] — कूट [illegible] नाम [illegible] — बणम् आमों का बाग अमराई [illegible]।

आम्रात [illegible] [illegible] 1 [illegible] — तम् [illegible] फल (अमड़ा) [illegible]।

आम्रातक [illegible] 1 आम का वृक्ष 2 अमावट।

आम्रेडनम् [illegible] पुनरुक्ति [illegible]।

आम्रेडितम् [आ + म्रेड् + णिच् + क्त] 1 शब्द या ध्वनि [illegible] 2 [illegible] हुआ [illegible] शब्द [illegible]।

आम्ल [illegible] अम्ल [illegible] 8० से० [illegible] अम्लता।

आम्लिका (स्त्री०) [illegible] पक्षे पृषो० दीर्घः] 1 इमली का वृक्ष 2 [illegible] अम्लता (खटास)।

आय [आ + इ + अच् अथवा आ + अय् + घञ् वा] 1 पहुँचना आ जाना 2 धनागम धनार्जन (विप० व्यय) 3 आमदनी राजस्व, प्राप्त धन — ग्रामेषु स्वामिग्राह्यो भाग आय — सिद्धा० याज्ञ० १।३२२ ३२६ मृच्छ० २।६,

मनु० ८।४१९, आयाधिकं व्ययं करोति—अपनी आमदनी से अधिक खर्च करता है 4 नफा, लाभ 5 अन्तःपुर का रक्षक। सम०—व्ययौ (द्वि० व०) आय और व्यय।

आयःशूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [अयःशूल+ठक्] सक्रिय परिश्रमी, अथक ... इष्ट की सिद्धि के लिए सबल ... का सहारा लेता है (तीक्ष्णोपायेन यो ... न्विच्छति आयःशूलिकः जनः) ... काश० ... अयःशूलेन अन्विच्छति इति आयःशूलिकः।

आयत (भू० क० कृ०) [आ+यम्+क्त] 1 लम्बा —हालमध्याय (योजनम्) आयता महा० 2 विकीर्ण अतिविस्तृत 3 बड़ा विस्तृत गम्भीर 4 ... 5 समस्त ... आयताकार (रेखा गणित में)। सम०—अक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) —ईक्षण,—नेत्र, लोचन (वि०) बड़ी आंखों वाला, अपांग (वि०) लम्बी कोर की आंखों वाला, —आयति (स्त्री०) दीर्घ निरन्तरता बहुत दूर बाद आने वाला भविष्य शि० १६।... —च्छदा केले का पौधा (पेड़) —लेख (वि०) दीर्घवक्राकार कु० १। ४७ —स्तू (पु०) चारण भाट।

आयतनम् [आयतन्तेऽत्र आ+यत्+ल्युट्] 1 स्थान, आवास घर, विश्राम-स्थल (आलय भी) ... मुद्रा० ७, जल्लाद ... कु० ३।... उसमें ... रघु० ३।३६ ... मेकैकमध्येयामायतनम् का० १०३ (अतः) आश्रय घर 2 यज्ञ अग्नि का स्थान वेदी 3 पवित्र स्थान, पुण्यभूमि जैसा कि देवायतनम् महायतनम् आदि में 4 मकान बनाने का स्थान।

आयतिः (स्त्री०) [आ+यम्+क्तिन्] 1 लम्बाई विस्तार 2 भावी समय भविष्यत् ... कि० ... भूयसी तव यदायतिरायति शि० ... रहस्यत्यापदुपेतमायतिः—कि० २।१४ 3 भावी फल या परिणाम —आयतिं सर्वकार्याणां तदात्वं च विचारयेत् मनु० ७।१७८, कि० १।१५ ... 4 महिमा प्रताप 5 हाथ फैलाना स्वीकार करना ... 6 कम —यथाविध ध्रुवं लब्ध्वा कृशमन्यायतिक्षमम्—मनु० ७।२०८ (कमक्षमम् कुल्लूक) 7 नियन्त्रण (मन का) निग्रह।

आयत्त (भू० क० कृ०) [आ+यत्+क्त] 1 अधीन आश्रित, सहारा लिए हुए (अधि० के साथ या समास में)—दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्—वेणी० ३।३३, भाग्यायत्तमतः परम्—श० ४।१६ 2 वश्य विनीत।

आयत्तिः (स्त्री०) [आ+यत्+क्तिन्] 1 आश्रय, अधीनता 2 स्नेह 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 हद, सीमा 5 युक्ति, उपाय 6 महिमा प्रताप 7 आचरण की स्थिरता।

आयथातथ्यम् [अयथातथ+ष्यञ्] अयोग्यता, अनुपयुक्तता अनौचित्य शि० २।५६।

आयमनम् [आ+यम्+ल्युट्] 1 लम्बाई विस्तार 2 नियन्त्रण निग्रह 3 (धनुष की भांति) तानना।

आयल्लकः [आयम्भिव लीयते अत्र ली+ड (बा०) ...] ... का अभाव प्रबल लालसा।

आयस (वि०) (स्त्री०—सी) [अयसो विकारः अण्] लौह निर्मित लोहा धातुनिर्मित आयसं दण्डमेव वा मनु० ८।३१५ सलिलमिव ... रसना ... शि० ... —सी कवच बख्तर —सम् 1 लोहा ... कु० २।... 2 लौह निर्मित वस्तु 3 हथियार।

आयस्त (भू० क० कृ०) [आ+यस्+क्त] 1 पीड़ित दुःखी 2 ... 3 क्रुद्ध ... 4 तीक्ष्ण।

आयानम् [आ+या+ल्युट्] 1 आना, पहुँचना 2 नैसर्गिक स्वभाव स्वभाव।

आयामः [आ+यम्+घञ्] 1 लम्बाई नियोगायामयोगी मेघ० ... 2 प्रसार विस्तार कि० ७।६ 3 फैलाना विस्तार करना 4 निग्रह नियन्त्रण रोकथाम प्राणायाम ...

आयामवत् (वि०) [आयाम+मतुप्] विस्तारित लम्बा विक्रम० १।४ शि० ९१।२५।

आयासः [आ+यस्+घञ्] 1 प्रयत्न प्रयास कष्ट कठिनाई श्रम—बहुलायासम् भग० १८।२४, कु० अनायास 2 थकावट थकान ... देहश्रमाणि भयानि च शोकहर्षौ तथायासं ... महा०।

आयासिन् (वि०) [आ+यस्+णिनि] 1 परिश्रान्त थका हुआ 2 प्रयास करने वाला प्रबल उपयोग करने वाला ... श० २।१ ५।१।

आयुक्त (भू० क० कृ०) [आ+युज्+क्त] 1 नियुक्त कार्यभार युक्त (प्रायः ... या अधि०) भट्टि० ८।११५, 2 संयुक्त प्राप्त —क्तः मन्त्री अभिकर्ता या कार्यवाहक।

आयुधः धम् [आ+युध्+घञ्] हथियार ढाल शस्त्र (यह तीन प्रकार के हैं (क) प्रहरण—खड्गादिक (ख) हस्तमुक्त चक्रादिक (ग) यन्त्रमुक्त बाणादिक, न मे त्वदन्येन विसोढमायुधम् रघु० ३।६३। सम० अ(आ)गारम् शस्त्रागार हथियार गोदाम —अहमप्यायुधागारं प्रविश्यायुधसहायो भवामि—वेणी० १ मनु० ९।२८० —जीविन् (वि०) शस्त्रास्त्र से जीवन निर्वाह करने वाला (—पुं०) योद्धा, सिपाही।

आयुधिक (वि०) [आयुध+ठञ्] शस्त्रास्त्रों से सम्बन्ध रखने वाला —कः सिपाही, सैनिक।

आयुधिन्, आयुधीय (वि०) [आयुध+इनि छ वा] हथियारों को धारण करने वाला, (पुं०—धी)—धीय योद्धा।

आयुष्मत् (वि०) [आयुस्+मतुप्] 1 जीवित जीता हुआ 2 दीर्घायु (नाटकों में प्रायः वृद्ध पुरुष मान्यजनों कुछ व्यक्तियों को इसी नाम से सम्बोधित करते हैं उदा० एक सारथि राजा को 'आयुष्मन्' कह कर सम्बोधित करता है ब्राह्मण को भी अभिवादन करने के लिए इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है तु० मनु० ४।१२५,—आयुष्मन् भव सौम्येति वाच्यो विप्रः अभिवादने)।

आयुष्य (वि०) [आयुस् + यत्] लम्बा जीवन करने वाला दीर्घ जीवनसाधक इदं यशस्यमायुष्यमिदं निःश्रेयसं परम् मनु० १।१०६ ३।१०६ —ष्यम् जीवन प्रद शक्ति।

आयुस् (नपुं०) [आ+इ+उस्] 1 जीवन जीवनावधि दीर्घायु रघु० ९।६२, नालकेनापि दारस्थ आयुर्मर्माणि रक्षति हि० ४।१६ दीर्घायुर्भव पुत्र ऐत० 2 जीवन दायक शक्ति 3 आहार (वाक्य रचना में आयुस् का अन्तिम स् बदलकर अघोष व्यंजनों से पूर्व ष् तथा घोष व्यंजनों से पूर्व र् बन जाता है)। सम० —कर (वि०) (स्त्री०—री) दीर्घ जीवन करने वाला —काम (वि०) दीर्घायु या स्वास्थ्य की कामना करने वाला —द्रव्यम् 1 औषधि 2 घी —वृद्धि (स्त्री०) लम्बा जीवन दीर्घायु —वेद स्वास्थ्य या औषधि विज्ञान —वेददृश् वैदिक —वेदिन् (वि०) औषध से सम्बन्ध रखने वाला (—पुं०) वैद्य डाक्टर —शेष जीवन का शेष भाग °शेषतया—पंच० १।२ जीवन का ह्रास या अवसान —स्तोम (आयुष्टोम) दीर्घायु पाने के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

आर्वे (अव्य०) [प्रा० म०] स्नेहबोधक सम्बोधनात्मक अव्यय।

आयोगः [आ+युज्+घञ्] 1 नियुक्ति 2 किया कार्य सम्पादन 3 पुष्पोपहार 4 समुद्रतट या नदी किनारा।

आयोगव [अयोगव+अण्] शूद्र द्वारा वैश्य स्त्री से उत्पन्न पुत्र (इसका व्यवसाय बढ़ईगिरी है तु० मनु० १०।४८) —वी इस जाति की स्त्री।

आयोजनम् [आ+युज्+ल्युट्] 1 सम्मिलित होना 2 पकड़ना ग्रहण करना 3 प्रयास प्रयत्न।

आयोधनम् [आ+युध्+ल्युट्] 1 युद्ध लड़ाई संग्राम —आयोधने कृष्णगतिं सहायम् रघु० ६।४२ आयोधनाग्रसरतां त्वयि वीर याते ५।७१, 2 युद्धभूमि।

आर. —रम् [आ+ऋ+घञ्] 1 पीतल 2. असंस्कृत लोहा 3 कोण किनारा —रः 1 मंगल ग्रह 2 शनिग्रह —रा 1 मोची की रापी, 2 चाकू अन-शलाका। सम० —कूट, —टम् पीतल, उत्तर० ५।११।

आरक्ष (वि०) [आ+रक्ष्+अच्] परिरक्षित, —क्षः, —क्षा 1 प्ररक्षण परिरक्षण, रक्षक (पहरेदार, सन्तरी)—आरक्षे मध्यमं स्थितान् गामा०, शा० ७।५, मनु० ३।२०४ 2 हाथी की कुम्भसंधि, 3 सेना।

आरक्षि(क्षि)क (वि०) [आ रक्ष् ण्वुल् आरक्ष+ठन्] 1 पहरेदार सन्तरी 2 देहाती या पुलिस का दण्डाधिकारी (मैजिस्ट्रेट)।

आरट [आ+रट्+अच्] नट नाटक का पात्र।

आरति [आ+ऋ+अति] भँवर जलावर्त।

आरण्य (वि०) (स्त्री० —ण्या —ण्यी) [अरण्य+अण्, 'स्त्रीत्व' रात्र डीप् वा] जंगली जंगल में उत्पन्न।

आरण्यक (वि०) [अरण्य+वुञ्] वन सबंधी वन में उत्पन्न जंगली जंगल में उत्पन्न —कः जंगल में रहने वाला जंगली वनवासी —पा बहुमानगमलक्ष्य दददारण्यका हि म कि० २।१३ —कम् आरण्यक ग्रंथ (यह ब्राह्मणग्रंथों से सम्बद्ध धार्मिक तथा दार्शनिक रचनाओं का एक समुदाय है जो या तो जंगल में रचे गए हैं या वहीं उनका अध्ययन किया गया है।
अरण्येऽनूच्यमानत्वात् आरण्यकम्—बृहदा० अरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम्।

आरति (स्त्री०) [आ+रम्+क्तिन्] 1 विराम, रोक 2 प्रतिमा के सामने दीप-दान, या कपूर दीपक घुमाना, आरती उतारना।

आरनालम् [आ+ऋ+अच् नल+घञ्, आरो नालो गमो यस्य ब० स०] मांड चावल का पसाव।

आरब्धि (स्त्री०) [आ+रभ्+क्तिन्] आरम्भ, शुरू।

आरभट [आरभ+अट] उपक्रमशील या साहसी पुरुष, —टः —टी दिलेरी विश्वास —टी 1 नाट्यकला की शाखा ३० सा० द० ४२० तथा आगे 2. साहित्य की एक शैली 3 विशेष नृत्यशैली।

आरम्भ [आ+रभ्+घञ्, मुम् च] 1 आरम्भ, शुरू °उपाय पारम्भिक योजना नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छाम् मेघ० ३९ 2 प्रस्तावना 3 कार्य, व्यवसाय कृत्य काम —आरम्भे सवृत्तारम्भ —रघु० १।१५ ७।८१ भग० १४।१६,4 त्वरा वेग 5 प्रयास, प्रयत्न—भग० १४।१२, 6 दर्प कर्म चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे रघु० २।३१ 7 मार डालना हत्या करना।

आरम्भणम् [आ+रभ्+ल्युट् मुम् च] 1 काबू में करना, पकड़ना 2 पकड़ने का स्थान दस्ता, मूँठा।

आर (रा) व [आ ऋ + अप्, घञ् वा] 1 आवाज 2 चिल्लाना, गुर्राना।

आरस्यम् [अरस + ष्यञ्] नीरसता, स्वादहीनता।

आरा—दे० आर के नीचे।

आरात् (अव्य०) [आ + रा + आति ...] आर का अपा० ए० व०] 1 निकट, के पास (अपा० के साथ या स्वतन्त्र)—...मागादभिवर्तमानं रघु० २। १० ५।३ 2 से दूर ... इन दोनों अर्थों में। शि० ३।३१ दूर ... 3 फासले पर, दूरी से उत्तर० ३।२६।

आराति [आ + रा + क्तिच्] शत्रु।

आरातीय (वि०) [आरात् + छ] 1 निकट का 2 दूर का।

आरात्रिकम् [अरात्राविव ...] 1 रात के समय भगवान की मूर्ति के सामने आरती उतारना —सर्वेषु ... कुर्यात् 2 आरती उतारने का दीपक ... कटाक्ष ... ।

आराधनम् [आ + राध् + ल्युट्] 1 प्रसन्नता ... सेवा (खातिर)—...उत्तर० १ यदि वा जानकीमपि आराधनाय ... मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा १।१२ 2 सेवा, पूजन, उपासना, अर्चना (देवता की) आराधनायास्य सखीसमेताम् कु० १।५८, भग० ७।२२ 3 प्रसन्न करने का उपाय ... तु ते भक्तिनम्र सतामाराधनं वपुः कु० ६।३३ 4 सम्मान करना, आदर करना उत्तर० ... 5 पकाना 6 पूर्ति ... —ना सेवा की (देवता की) पूजा, उपासना, अर्चना।

आराधयितृ (वि०) [आ + राध् + णिच् + तृच्] उपासक विनम्र सेवक, पूजक।

आरामः [आ + रम् + घञ्] 1 खुशी, प्रसन्नता, इन्द्रिया राम—भग० ३।१६ आत्मारामा वेणी० १।२३ एका राम—याज्ञ० ३।... 2 बाग, उद्यान, प्रियारामा हि वैदेह्यासीत् उत्तर० २ आरामाधिपतिर्विवेकविकल —भामि० १।३१

आरामिकः [आराम + ठक्] माली।

आरालिकः [अराल + ठक्] रसोइया।

आरुः [ऋ + उण्] 1 सूअर 2 केकड़ा।

आरुक (वि०) [ऋ + ऊ + णित्] भूरे रंग का।

आरूढ (भू० क० कृ०) [आ + रुह् + क्त] सवार, चढ़ा हुआ, ऊपर बैठा हुआ, आरूढो वृक्षो भवता सिद्धा० प्रायः कर्तृवाच्य में प्रयुक्त—आरूढमद्रीन्—रघु० ६।७७।

आरूढिः (स्त्री०)[आ + रुह् + क्तिन्] चढ़ाव, ऊपर उठना, उन्नयन (आलं० व शा०)—अस्याकडिसंवति महता-मप्यपभ्रंशनिष्ठा—श० ४, ५।१।

आरेकः [आ + रिच् + घञ्] 1 रिक्त करना, 2 संकुचित करना।

आरेचित [आ + रिच् + णिच् + क्त] भींची हुई या सिकोड़ी हुई (आंख की भौंह)।

आरोग्यम् [अरोग + ष्यञ्] अच्छा स्वास्थ्य।

आरोपः [आ + रुह् + णिच् + घञ् पुकागम] 1 एक वस्तु के गुणों को दूसरी वस्तु में आरोपित करना ... ... दे० ... ... 2 भार ... (जैसा कि ...) 3 ... 4 ... लगाना।

आरोपणम् [आ + रुह् + णिच् + ल्युट् पुकागम] 1 ... ... आरोपणम् ... रघु० ... 2 ... 3 ... ।

आरोहः [आ + रुह् + घञ्] 1 ... सवार ... 2 ... ऊपर ... ऊँचाई 4 ... 5 ... 6 ... 7 ... 8 एक प्रकार का माप 9 ... ।

आरोहकः [आ + रुह् + ण्वुल्] सवार ... ।

आरोहणम् [आ + रुह् + ल्युट्] 1 सवार होना, ऊपर चढ़ना या उदय होना की क्रिया ... 2 (घोड़े का) सवारी करना 3 ... ।

आर्कि [अर्कस्यापत्यम् इञ्] अर्क का पुत्र, यम की उपाधि, शनि ग्रह, कर्ण, सुग्रीव, वैवस्वत मनु।

आक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [ऋक्ष + अण्] नक्षत्रों द्वारा व्यवस्थित अथवा ... से सम्बद्ध।

आर्घा [आ + अघ् + अच् ...] एक प्रकार की पीली मधुमक्खी।

आर्घ्यम् [आर्घा + यत्] जंगली शहद।

आर्च (वि०) (स्त्री०—र्ची) [अर्चा अस्त्यस्य ण] भक्त, पूजा करने वाला, पुण्यात्मा।

आर्चिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऋच् + ठक्] ऋग्वेद संबंधी या ऋग्वेद की व्याख्या करने वाला,—कम् सामवेद का विशेषण।

आर्जवम् [ऋजु + अण्] 1 सरलता 2 स्पष्टवादिता, सच्चरित्र, खरापन, ईमानदारी, निष्कपटता, उदारहृदय होना अहिंसा क्षान्तिरार्जवम्—भग० १३।७, क्षेत्रमार्ज-वस्य का० ४५ 3 शालीनता।

आर्जुनि [अर्जुनस्यापत्यम्—इञ्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।

आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] 1 कष्टप्राप्त, उपहत, पीड़ित, प्रायः समास में—कामार्त, क्षुधार्त, तृषार्त, आदि 2 बीमार, रोगी—आर्तस्य यथौषधम्—रघु० १।२८, मनु० ४।२३६ 3 दुःखित, कष्टप्राप्त, संकटग्रस्त, अत्याचार-पीड़ित, अपसन्न—आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १।११ रघु० २।२८, ८।३१, १२।१०, ३२। सम०—**नाद**, **ध्वनि**, —**स्वर** दर्दभरी आवाज़, **बन्धु**—**साधु** दुःखी का मित्र।

आर्तव (वि०) (स्त्री०—वा, —वी) [ऋतु+अण्] 1 ऋतु के अनुरूप ऋतुसम्बन्धी मौसमी अभिनव विभूतिमार्तवीम्—रघु० ८।३६, कु० ३।१०, अमन्दकालीन रघु० ९।— 2 मासिक स्राव सम्बन्धी, —**वम्** 1 (स्त्रियों का) मासिक स्राव—... मार्तवदर्शने मनु० ... 2 मासिक स्राव के पश्चात् गर्भाधान के लिए उपयुक्त दिन 3 फूल।

आर्तवेयी रजस्वला स्त्री।

आर्ति (स्त्री०) [आ+ऋ+क्तिन्] 1 दुःख कष्ट व्यथा पीड़ा, अर्ति (शारीरिक या मानसिक)—आर्तिं न पश्यसि पुरूरवसस्तदर्थे—विक्रम० ५।१६ आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्—मेघ० ५३ 2 मानसिक वेदना दारुण दुःख—उत्कण्ठार्ति—अमरु ३९, 3 बीमारी रोग 4 धनुष की नोक 5 विनाश विध्वंस।

आर्त्विजीन (वि०) (स्त्री०—नी) [ऋत्विज्+खञ्] ऋत्विज् के पद के उपयुक्त।

आर्त्विज्यम् [ऋत्विज्+ष्यञ्] ऋत्विज का पद मर्यादा।

आर्थ (वि०) (स्त्री०—र्थी) 1 किसी वस्तु या पदार्थ से सम्बन्ध रखने वाला 2 अर्थ सम्बन्धी, अर्थाश्रित, (विप० शाब्द) आर्थी उपमा आदि।

आर्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्थ+ठक्] 1 सार्थक 2 बुद्धिमान् 3 धनवान् 4 तथ्यपूर्ण वास्तविक।

आर्द्र (वि०) [अर्द्+रक् दीर्घश्च] 1 गीला तरादार सीला तन्वीमार्द्रां नयनसलिलैः मेघ० ८० ८४ 2 रसयुक्त, हरा, रसीला 3 ताजा नया कार्मीवाद्रापराध—अमरु ७, कान्तमार्द्रापराधम्—मालवि० ३।१२, 4 मृदु, कोमल प्रायः स्नेह, दया, तथा करुणा जैसे शब्दों के साथ क्रमशः "खिला हुआ" "पसीजा हुआ" "पिघला हुआ" अर्थ प्रकट करता है स्नेहार्द्र-हृदय दया से पिघले हुए दिल वाला —र्द्रा छठा नक्षत्र। सम०—**काष्ठम्** हरी लकड़ी —**पृष्ठ** (वि०) सींचा हुआ, विश्रान्त किया हुआ आर्द्रपृष्ठाः क्रियन्तां वाजिनः—श० १, —**शाक** ताजा अदरक।

आर्द्रकम् [आर्द्रा+वुन्] हरा अदरक, गीला अदरक।

आर्द्रयति (ना० धा०—पर०) गीला करना, तर करना भर्तृ० २।५१।

आर्ध (वि०) [अर्ध+अण्] (समास के आरम्भ में ही प्रयुक्त) आधा। सम०—**धातुक** (वि०) (स्त्री०—की) (व्या० में) आधी धातुओं में लागू होने वाला, (—कम्) आर्धधातुक छः गणों से सम्बन्ध रखने वाली विभक्तियाँ व प्रत्यय (विप० 'सार्वधातुक') —**मासिक** (वि०) (स्त्री०—की) आध महीने रहने वाला।

आर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्ध+ठक्] आधे का भागीदार आधा ले... रखने वाला,—कः जो आधी फसल के लिए ... है वैश्य स्त्री से उत्पन्न ... जिसका पालन-पोषण ब्राह्मण के द्वारा होता है दे० मनु... आधिक के नीचे।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1 आर्यन या आर्य के योग्य 2 मान्य, आदरणीय, सम्माननीय कुलीन उच्चपदस्थ यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः—श० १।२२ यह शब्द प्रायः नाटकों/योगी भाषा में सम्मान सूचक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है सम्बोधन की आदरपूर्ण पद्धति है आर्य सम्माननीय या आदरणीय श्रीमान् जी। आर्ये आदरणीय या सम्माननीय श्रीमती जी। लोगों को सम्बोधित करने के लिए आर्य शब्द के प्रयोग के नियम ... नियम है (क) वाच्यौ नटीसूत्रधारावार्यनाम्ना परस्परम् (ख) वयस्येत्युत्तमैर्वाच्यो मध्यैरार्येति चाग्रजः (ग) (वक्तव्यो) अमात्य आर्येति चेतरैः (घ) स्वेच्छया नामभिर्विप्रैः आर्येति चेतरैः सा० द० ४३१ 3 अत्युत्कृष्ट सर्वश्रेष्ठ —र्यः 1 ईरान के ... हिन्दू जाति जो अनार्य, दस्यु तथा दास से भिन्न है, 2 जो अपने देश के नियम तथा धर्म के प्रति निष्ठावान है कर्तव्यमाचरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्, तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृतः। 3 पहले तीन वर्ण (विप० शूद्र) 4 सम्माननीय या आदरणीय पुरुष प्रतिष्ठित व्यक्ति 5 सत्कुलोत्पन्न पुरुष 6 सच्चरित्र पुरुष 7 स्वामी, मालिक 8 गुरु, अध्यापक 9 मित्र 10 वैश्य 11 श्वसुर (जैसा कि 'आर्यपुत्र' में) 12 बुद्धभगवान् —र्या 1 पार्वती 2 श्वश्रू 3 आदरणीय महिला 4 छन्द दे० परिशिष्ट। सम०—**आवर्तः** श्रेष्ठ और उत्तम (आर्य) लोगों का आवास विशेषण वह भूमि जो पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक फैली हुई है तथा जिसके उत्तर में हिमालय एवं दक्षिण में विन्ध्य पर्वत है तु० मनु० २।२२, आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्, तयोरेवान्तरं गिर्योः (हिमविन्ध्ययोः) आर्यावर्तं विदुर्बुधाः। १०।३४ मी—**गृह्य** (वि०) 1 श्रेष्ठ पुरुषों से सम्मानित, श्रेष्ठ पुरुषों का मित्र, सम्मा-

नीय व्यक्तियों के पास जिसकी पहुंच अनायास होती है,— तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनु — रघु० २।३३, 2 आदरणीय भद्र, —देश: वह देश जहाँ आर्य लोग बसे हुए हैं, —पुत्र: 1 सम्माननीय व्यक्ति का बेटा 2 आध्यात्मिक गुरु का पुत्र 3 बड़े भाई के पुत्र का सम्मानसूचक पद पत्नी का पति के लिए तथा सेनापति का राजा के लिए सम्मानसूचक पद 4 श्वसुर का पुत्र अर्थात् पति (प्रायः नाटक में बहुधा संबोधन के रूप में, अन्तिम दो अर्थों के लिए प्रयुक्त), —प्राय (वि०) 1 जहाँ आर्य लोग बसे हों 2 जहाँ प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते हों —मिश्र (वि०) आदरणीय, योग्य पुरुष (—श्र:) सज्जनपुरुष, गौरवशाली पुरुष (ब० व०) 1 योग्य और आदरणीय व्यक्ति, सभ्य या सम्माननीय व्यक्ति आर्यमिश्रान् विज्ञापयामि विक्रम० १ 2 श्रद्धेय मान्यवर (आदरयुक्त संबोधन) —नन्वार्यमिश्रैः प्रथममेव आज्ञप्तम् — श० १ —लिंगिन् (पुं०) पाखंडी —वृत्त (वि०) सदाचारी, भद्र — रघु० १४।५५ —वेश (वि०) अच्छी वेशभूषा में, आदरणीय वेश धारण किये हुए —सत्यम् अत्युत्कृष्ट और अलौकिक सत्य —हृद्य (वि०) जो श्रेष्ठ व्यक्तियों को रुचिकर हो।

आर्यक: [आर्य+स्वार्थे कन्] 1 सम्माननीय या आदरणीय पुरुष, 2 बाबा, दादा।

आर्यका, आर्यिका [आर्या+कन् ह्रस्व: पक्षे इत्वम्] आदरणीय महिला।

आर्ष (वि०) (स्त्री० —र्षी) [ऋषेरिदम् —अण्] 1 केवल ऋषि द्वारा प्रयुक्त, ऋषिसंबंधी, आर्ष, वैदिक (विप० 'लौकिक या श्रेण्य') आर्ष प्रयोग, संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे सिद्धा० 2 पवित्र, पावन, अति मानव, —र्ष: विवाह का एक प्रकार, आठभेदों में से विवाह का एक भेद जिसमें दुल्हिन का पिता वर महोदय से एक या दो जोड़ी गाय प्राप्त करता है आदायार्षस्तु गोद्वयम् — याज्ञ० १।५९, मनु० ३।२९,६ विवाह के आठ प्रकारों के नामों के लिए दे० 'उद्वाह' —र्षम् पावन पाठ, वेद।

आर्षभ्य [ऋषभ+ञ्य] बछड़ा जो पर्याप्त बड़ा हो गया हो, काम में लाया जा सके या सांड बनाकर छोड़ा जा सके।

आर्षेय (वि०) (स्त्री० —यी) [ऋषि+ढक्] 1 ऋषि से संबंध रखने वाला 2 योग्य, महानुभाव, आदरणीय।

आर्हत (वि०) (स्त्री० —ती) [अर्हत्+अण्] जैनधर्म के सिद्धांतों से संबंध रखने वाला,— त: जैन, जैनधर्म का अनुयायी,— तम् जैनधर्म के सिद्धान्त।

आर्हन्ती,—न्त्यम् [अर्हत्+ष्यञ्, नुम् च] योग्यता।

आल:—लम् [आ+अल्+अच्] 1 अंडों का ढेर, मछली आदि के अंडे, 2 पीला संखिया।

आलगर्द: [अलगर्द+अण्] पनिया साँप।

आलभनम् [आ+लभ्+ल्युट्] 1 पकड़ना, कब्जा करना 2 छूना 3 मार डालना।

आलम्ब: [आ+लम्ब्+घञ्] 1 आश्रय 2 थूनी टेक (जिसके सहारे मनुष्य खड़ा होकर विश्राम करता है) इह हि पततां नास्त्यालम्बो न चापि निवर्तनम् — शा० ३।२ 3 सहारा, रक्षा —तवालम्बादम्ब स्फुरदलघुगर्वेण सहसा — गंगा० 4 आगार।

आलम्बनम् [आ+लम्ब्+ल्युट्] 1 आश्रय 2 सहारा, सहारा देना (कि० १३ सहारा देते हुए — मेघ० 6 3 आगार, आधार 4 कारण 5 (सा० शा० में) किसी रस का आश्रय रहता है जो (व्यक्ति या वस्तु) जिसके उत्पन्न होने से रस की निष्पत्ति होती है रस को उत्पन्न करने वाले कारण दो हैं — नैसर्गिक और औपचारिक, रस की निष्पत्ति के कारण (विभाव) भी दो भेद हैं आलम्बन और उद्दीपन इनमें से प्रथम (आलम्बन) तो रस का आश्रय है, और दूसरा (उद्दीपन) वे परिस्थितियाँ जो भावनाओं को उत्तेजित करती हैं, इसके विपरीत ... दूसरे रसों के लिए दे० सा० द० २१०-२१८।

आलम्बित (वि०) [आ+लम्ब्+णिच्+क्त] 1 लटका हुआ, सहारा लगा हुआ, झुका हुआ 2 सहारा देने वाला, बनाये रखने वाला, थामने वाला 3 पकड़ा हुआ।

आलम्भ:, भनम् [आ+लभ्+घञ्, मुम् च, पक्षे ल्युट्] 1 पकड़ना, कब्जा करना, स्पर्श करना 2 फाड़ना 3 मार डालना (विशेषत: यज्ञ में पशु की बलि देना) अश्वालम्भ, गवालम्भ।

आलय:,—यम् [आ+ली+अच्] 1 आवास, घर, निवास, गृह (आ० पि०) दृष्टान्तासामर्थ्यो 'नखमन्त्रालये चिरम् रामा०, सर्वाश्रमस्थानकृतालयान् — रामा० जो जन-स्थान में रहा 2 आशय, आसन या जगह, हिमालयो नाम नगाधिराज: — कु० १ इसी प्रकार देवालयम्, विद्यालयम आदि।

आलर्क (वि०) [अलर्कस्येदम्—अण्] पागल कुत्ते से संबंध रखने वाला या उससे उत्पन्न —आलर्कं विषमिव सर्वत: प्रसृतम् — उत्तर० १।४०।

आलवण्यम् [अलवणस्य भाव: —ष्यञ्] 1 फीकापन, स्वादहीनता 2 कुरूपता।

आलवालम् [आसमन्तात् लवं जललवम् आलाति —आ+ला+क तारा०] (वृक्ष की जड़ के चारों ओर) पानी भरने का स्थान, थाँवला, —"पूरणं नियुक्ता — श० १— विश्वासाय विहगानामालवालाम्बुपायिनाम् — रघु० १।५१।

आलस (वि०) (स्त्री० —सी) [आलसति ईषत् व्याप्रियते —अच्] सुस्त, काहिल, ढीला-ढाला।

आलस्य (वि०) [अलसस्य भावः ष्यञ्] सुस्त ढीला ढाला काहिल, —स्यम् सुस्ती, शिथिलता, स्फूर्ति का अभाव शक्तस्य वाप्यनुत्साहः कर्मस्वालस्यमुच्यते —सुश्रुत, आलस्य (स्फूर्ति का अभाव) ३३ व्यभिचारिभावों में से एक है उदा० न तथा भूषयत्यङ्गं न तथा भाषते मधीम् जृम्भत मधुरालीना बाला गर्भभरालसा —मा० द० १८३।

आलातम् [अलात + अण्] जलती हुई लकड़ी।

आलानम् [आ + ली + ल्युट्] 1 वह स्तंभ जिससे हाथी बाँधा जाय बाँधे जाने वाला खंबा रस्सा भी जिससे हाथी बाँधा जाता है अतन्तुर्दमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः —रघु० १।७१ ४।६९ ८१ आलाने गृह्यते हस्ती —मृच्छ० १।५०, 2 हथकड़ी बेड़ी 3 जंजीर रस्सा 4 बंधना, जकड़ना।

आलानिक (वि०) (स्त्री० —की) [आलान + ठञ्] उस खूंटी का काम देने वाली वस्तु जिसके सहारे हाथी बाँधा जाता है आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः —रघु० १४।३८।

आलाप [आ + लप् + घञ्] 1 बातचीत भाषण यथा —या अये दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते —श० १ 2 कथन उल्लेख।

आलापनम् [आ + लप् + णिच् + ल्युट्] बोलना बातचीत करना।

आलाबु —बू (स्त्री०) घीया तोरा कद्दू तुम्बड़ा दे० अलाबू।

आलावर्तम् [आलः पर्याप्तमावर्तते इति आल + आ + वृत् + णिच् + अच्] कपड़े का बना पंखा।

आलि (वि०) [आ + अल् + इन्] 1 निकम्मा सुस्त 2 ईमानदार —लि: 1 बिच्छू 2 मधुमक्खी —लि:, —ली (स्त्री०) 1 (किसी स्त्री की) सहेली विवाहपूर्वार्थतिकिमकार्षं वद्—कु० ५।५३ ३।६८ अमरु ७३ 2 पंक्ति परम्परा अविच्छिन्न रेखा (तु० आवलि) —आपादतलमविच्छिन्न रत्नानां मणिपरम्परा —कु० ६।४८ रदनालि —अमरु ८२ 3 रेखा लकीर 4 पुल 5 पुलिया बांध।

आलिङ्गनम् [आ + लिङ्ग् + ल्युट्] परिरंभण गले लगाना गलबाही देना — (स प्राप) आलिङ्गननिर्वृतिम् —रघु० १२।६५।

आलिङ्गिन् (वि०) [आ + लिङ्ग् + इनि] गलबाही देने वाला, (पुं० —गी), आलिङ्ग्य जौ के दाने के आकार जैसा बना छोटा ढोल।

आलिञ्जर [अलिञ्जर एव स्वार्थे अण्] मिट्टी का बड़ा घड़ा।

आलिन्द —न्दक: [अलिन्द + अण्, स्वार्थे कन् च] 1. घर के सामने बना चौतरा, चबूतरा 2 सोने के लिए ऊँचा बनाया हुआ स्थान।

आलिम्पनम् [आ + लिप् + ल्युट्, मुम् च] उत्सवों के अवसर पर दीवारों पर सफेदी करना, फर्श लीपना आदि, तु० 'आदीपनम्'।

आलीढम् [आ + लिह् + क्त] बन्दूक से निशाना लगाते समय दाहिने घुटने को आगे बढ़ा कर और बायें पैर को मोड़ कर बैठना, —अतिष्ठदालीढविशेषशोभिना —रघु० ३।५२, दे० कु० ३।७० पर मल्लि०।

आलु [आ + लु + डु] 1 उल्लू 2 आबनूस, काला आबनूस, —लु: (स्त्री०) घड़ा, —लु (नपुं०) लट्ठों को बाँध कर बनाया गया बेड़ा, घन्नई (दो घड़ों को बाँध कर बनाई गई नौका)।

आलुञ्चनम् [आ + लुञ्च् + ल्युट्] फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।

आलेखनम् [आ + लिख् + ल्युट्] 1 लिखना 2. चित्रण करना 3 खुरचना, —नी कूची, कलम।

आलेख्यम् [आ + लिख् + ण्यत्] 1 चित्रकारी, चित्र —इति सगौरवं ... आलेख्यदेवता —शि० २।६७, रघु० ३।१५ 2. लिखना। सम० —लेखा बाहरी रूपरेखा, चित्रण, —शेष (वि०) चित्र को छोड़ कर जिसका और कुछ अंश न रहा हो अर्थात् मृत मरा हुआ —आलेख्यशेषस्य पितुः —रघु० १४।१५,

आलेप —पनम् [आ + लिप् + घञ्, ल्युट् वा] 1 तेल या उबटन आदि का मलना लीपना, पोतना 2 लेप।

आलोक —कनम् [आ + लोक् + घञ्, ल्युट् वा] 1 दर्शन करना देखना 2 दृष्टि पहलू दर्शन —अपाङ्गालोके मुखमम् —श० १।१९, कु० ७।२२, ४६, भुज° —विक्रम० ४।४४ 3 दृष्टि-परास आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा —मेघ० ८४, रघु० ७।५ कु० २।४५, 4 प्रकाश प्रभा, कान्ति निरालोकं लोकं —भा० ५।३० १।३७, 5 भाट, विशेषत भाट द्वारा उच्चरित स्तुति-शब्द (जैसे 'जय, आलोकय') —शब्दावुदीरितालोक —रघु० १७।२७, २।९, का० १४।

आलोचक (वि०) [आ + लोच् + ण्वुल्] आलोचना करने वाला देखने वाला, —कम् दर्शन-शक्ति, दृष्टि का कारण।

आलोचनम्-ना [आ + लोच् + ल्युट्, युच् वा] 1. दर्शन करना देखना, सर्वेक्षण, समीक्षा 2. विचार करना, विचार विमर्श।

आलोडनम् —ना [आ + लुड् + णिच् + ल्युट्] 1 बिलोना हिलाना, क्षुब्ध करना 2 मिश्रण करना।

आलोल (वि०) [प्रा० स०] 1 कुछ कांपता हुआ, (आँखों को) घुमाता हुआ 2. हिलाया हुआ, विक्षुब्ध —अमरु १, मेघ० ६१।

आवनेय [अवनि + ढक्] भूमिपुत्र, मंगल ग्रह की उपाधि।

आवन्त्य (वि०) [अवन्ति + ञ्यङ्] अवन्ति से आने वाला, या संबन्ध रखने वाला, —न्त्य अवन्ती का राजा,

अवन्ती का निवासी, पतित ब्राह्मण की सन्तान—दे० मनु० १०।२१।

आवपनम् [आ+वप्+ल्युट्] 1 बोना, फेंकना, बखेरना 2. बीज बोना 3. हजामत करना 4. बर्तन, मर्तबान, पात्र।

आवरकम् [आ+वृ+ण्वुल्] ढक्कन, पर्दा।

आवरणम् [आ+वृ+ल्युट्] 1 ढकना, छिपाना, मूंदना,—मूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा—रघु० ५।१३, १०।४६, १९।१६, 2 बन्द करना, घेरना 3 ढकना 4 बाधा 5. बाड़ा, अहाता, चहार-दीवारी— रघु० १६।७, कि० ५।२५, 6 कपड़ा वस्त्र 7 ढाल। सम०—शक्ति मानसिक अज्ञान (जिससे वास्तविकता पर पर्दा पड़ा रहता है)।

आवर्तः [आ+वृत्+घञ्] 1 चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2 जलावर्त, भँवर—सुर्यं समावर्तमनोज्ञनाभि —रघु० ६।५२, वलिताकर्णनाभेः --मेघ० १८, आवर्त संज्ञावानाम्—पंच० ११९१, 3 पर्यालोचन, (मनमें) घूमना 4 बालों के पट्ठे, बघाल 5 घनीबस्ती (जहाँ बहुत पुरुष इकट्ठे रहते हों) 6 एक प्रकार का रत्न।

आवर्तकः [आवर्त+कन्] 1 मूर्त बादल का एक प्रकार —जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्—मेघ० ६, कु० २।५० 2 जलावर्त 3 कान्ति, घुमाव 4 घुंघराले बाल।

आवर्तनम् [आ+वृत्+ल्युट्] 1 चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2 वृत्ताकार गति, घूर्णन 3 (धातुओं का) पिघलाना, गलाना 4 आवृत्ति करना,—नः विष्णु,—नी कुठाली।

आवलिः—ली (स्त्री०) [आ+वल्+इन् पक्षे ङीप्] 1 रेखा, पंक्ति, कतार—अरावलीम्—विक्रम० १।४, इसी प्रकार अलक° दन्त°, हार° रत्न° आदि 2 सिलसिला, अविच्छिन्न लकीर।

आवलित (वि०) [आ+वल्+क्त] जरा सा मुड़ा हुआ।

आवश्यक (वि०) (स्त्री० —की) [अवश्य+वुञ्] अनिवार्य, जरूरी—एतेष्वावश्यकस्त्वसौ- याज्ञ० ७२, —कम् 1. जरूरत, अनिवार्यता, कर्तव्य 2 अनिवार्य फल।

आवसतिः (स्त्री०) [प्रा० स०] रात्रि (विश्राम करने का समय), आधीरात।

आवसथः [आ+वस्+अथच्] 1 आवास, आवास—स्थान, घर, निवास—निवसन्नावसथे पुराद्बहिः—रघु० ८।१४ 2. विश्राम करने का स्थान, विश्रामस्थल 3 छात्रावास, संन्यासाश्रम।

आवसथ्य (वि०) [आवसथ + ञ्य] गृही, घर में विद्यमान, —थ्यः (अग्निहोत्र की) पावन अग्नि जो घर में रक्खी जाती है, यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली पंचाग्नियों में से एक, दे० 'पंचाग्नि,'—थ्यः —थ्यम् छात्रावास, संन्यासाश्रम,—थ्यम् घर।

आवसित (वि०) [आ+अव+सो+क्त] 1 समाप्त, पूर्ण किया गया 2 निर्णीत, निर्धारित, निश्चित,—तम् पका हुआ अनाज (खलिहान से लाया हुआ)।

आवह (वि०) [आ + वह् + अच्] (समास का अन्तिम पद) उत्पन्न करने वाला, राह दिखाने वाला, पैदावार करने वाला, लाने वाला,—क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाऽहम् रघु० १४।५, इसी प्रकार दुःख°, भय°।

आवापः [आ + वप् + घञ्] 1 बीज बोना 2 बखेरना, फेंकना 3 आलवाल 4 बर्तन, अनाज रखने का मटका 5. एक प्रकार का पेय 6 कंकण 7 ऊबड़-खाबड़ भूमि।

आवापकः [आवाप + कन्] कंकण।

आवापनम् [आ+वप्+णिच्+ल्युट्] करघा खड्डी।

आवालम् [आ+वल्+णिच्+अच्] थांवला आलवाल।

आवासः [आ+वस्+घञ्] 1 घर, निवास 2 आश्रय-स्थान, मकान आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि रघु० २।१७।

आवाहनम् [आ+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 बुलवाना, निमन्त्रण पुकारना 2 देवता का (यज्ञ में उपस्थित होने के लिए) आवाहन करना (विप० विसर्जन) 3 अग्नि में आहुति डालना याज्ञ० १।२५१।

आविक (वि०) (स्त्री० —की) [अवि + ठक्] 1. भेड़ से संबंध रखने वाला आविकं क्षीरम् मनु० ५।८ २।४१ 2. ऊनी, —कम् ऊनी कपड़ा।

आविग्न (वि०) [आ+विज्+क्त] दुःखी, कष्टग्रस्त।

आविद्ध (भू० क० कृ०) [आ+व्यध्+क्त] 1 बिंधा हुआ, छेदा हुआ 2 मुड़ा हुआ, टेढ़ा 3 बलपूर्वक फेंका हुआ, गति दिया हुआ।

आविर्भावः [आविस्+भू+घञ्] 1 अभिव्यक्ति, उपस्थिति, प्रकट होना 2 अवतार।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टिं स्तृणाति—विल्+क तारा०] 1. पंकिल, मैला, गदला —प्रहुष्यदिव कलस्येव निकषेणाविलं पयः मालवि० २।८, तस्याविलाम्भः परिशुद्धिहेतोः—रघु० १३।१६ 2 अपवित्र, दूषित (आलं० भी),—स्वर्गौकसामाविलम् -कु० ५।५७, 3 काले रंग का, हलके काले रंग का 4. धुंधला, निष्प्रभ—आविला मृगलेखाम् - रघु० ८।४२।

आविलयति (ना० धा० पर०) मैला बनाना, कलंक लगाना।

आविष्करणम्, आविष्कारः [आविस्+कृ+ल्युट्+घञ् वा] अभिव्यक्ति, दर्शन देना, प्रकट करना —अनुभावो गुणेषु दाक्षाविष्करणम्—अमर०।

आविष्ट (भू० क० कृ०) [आ+विश्+क्त] 1. प्रविष्ट 2. (भूत प्रेतादिक से) ग्रस्त 3. संपन्न, भरा हुआ, वशीकृत,

काबू पाया हुआ, भय° क्रोध° 4 निमग्न, तीन अंधकार में किया हुआ, जुटा हुआ।

आविस् (अव्य०) [आ + अव् + इसुन्] निम्नार्थों को प्रकट करने वाला अव्यय — आंखों के सामने, [illegible] 'प्रकटन' (प्राय: यह अव्यय अस्, भू, और कृ धातु से पूर्व लगता है) [illegible] मा० ९।२०, [illegible] आविष्कृ [illegible] [illegible] कु० [illegible] रघु० [illegible]।

आवीतम् [आ [illegible]] [illegible] [illegible] हो।

आवुक [illegible] पिता।

आवुत्त [आ [illegible]] [illegible] [illegible] ६।

आवृत् (स्त्री०) [आ [illegible]] 1 [illegible] [illegible] ३।१४८ [illegible] 4 [illegible]।

आवृत (भू० क० कृ०) [आ + वृ + क्त] 1 [illegible] हुआ, [illegible] हुआ 2 [illegible] हुआ [illegible] 3 [illegible] हुआ, [illegible] किया हुआ।

आवृत्ति (स्त्री०) [आ + वृत् + क्तिन्] 1 मुड़ना, लौटना, वापिस आना [illegible] २।१८ भग० ८।२३, 2 प्रत्यावर्तन [illegible] 3 चक्कर खाना, बारी-बारी से आना 4 (सूर्य का) उसी स्थान पर फिर लौटना [illegible] रघु० ८।३३ 5 जन्म-मरण का बार-बार होना, सांसारिक जीवन अनावृत्तिभयम् कु० ६।७३ 6 आवृत्ति दोहराना, संस्करण (आधुनिक प्रयोग) 7 दोहराया हुआ पाठ, अध्ययन आवृत्तिः सर्वशास्त्राणां बोधादपि गरीयसी — उद्भट०।

आवृष्टि (स्त्री०) [आ + वृष् + क्तिन्] बरसना, [illegible] की बौछार।

आवेग [आ + विज् + घञ्] 1. बेचैनी, चिन्ता, उत्तेजना, विक्षोभ, घबराहट — अलमावेगेन श० [illegible] 2 उतावली, हड़बड़ी 3 क्षोभ (३३ व्यभिचारि भावों में से एक समझा जाता है)।

आवेदनम् [आ + विद् + णिच् + ल्युट्] 1 समाचार देना, सूचना देना 2 सम्बोधन 3 अभियोग का वर्णन (विधि० में) 4 अभिवादन, अर्जीदावा।

आवेश [आ + विश् + घञ्] 1 प्रविष्ट होना, प्रवेश 2 अधिकार में करना, प्रभाव, अभ्यास, स्वर्ग° अभिमान का प्रभाव — रघु० ५।१९ 3 एकनिष्ठता, किसी पदार्थ के प्रति अनुरक्ति 4 घमंड, हेकड़ी 5 हड़बड़ी, क्रोध, क्रोध, प्रकोप 6 आसुरी भूतबाधा 7 लकवे की बेहोशी या मिरगी की मूर्छा।

आवेशनम् [आ + विश् + ल्युट्] 1 प्रविष्ट होना, प्रवेश 2 आसुरी प्रेतबाधा 3 प्रकोप क्रोध, प्रचण्डता 4 शिल्पशाला, कारखाना — मनु० ९।२६५ 5 घर।

आवेशिक (वि०) (स्त्री० — की) 1 विशिष्ट, निजी [illegible] का अतिथि दर्शक।

आवेष्टक [आ + वेष्ट् + णिच् + ण्वुल्] दीवार, [illegible] अहाता।

आवेष्टनम् [आ + वेष्ट् + णिच् + ल्युट्] 1 लपेटना, बंधन [illegible] 2 [illegible] 3 दीवार, बाड़, अहाता।

आश (वि०) [अश् + अण्] खानेवाला, भोक्ता (प्राय: समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है [illegible] — [अश् + घञ्] भोजन (जैसा कि प्रातराश में)।

आशंसनम् [आ + शंस् + ल्युट्] 1 प्रत्याशा, इच्छा — इच्छा [illegible] सिद्धा० 2 कहना, घोषणा करना।

आशंसा [आ + शंस् + अ] 1 इच्छा, अभिलाष, आशा निदध विजयाशंसा चापे सीता च लक्ष्मणे — रघु० १२।४४ भट्टि० १९।२ 2 भाषण, घोषणा 3 कल्पना आशंसापरिकल्पितास्वपि भवत्यानन्दसान्द्रो लय: मा० ५।७।

आशंसु (वि०) [आ + शंस् + उ] इच्छुक, आशावान्।

आशङ्का [आ + शङ्क् + अ] 1 भय, भय की सम्भावना, [illegible] [illegible] — श० १।१६ आशङ्कया मुक्तम् भर्तृ० ३।५, 2 सन्देह, अनिश्चयात्मकता, इत्याशङ्कायामाह — बहुधा 3 अविश्वास, शक।

आशङ्कित (भू० क० कृ०) [आ + शङ्क् + क्त] 1 भीत, डरा हुआ — तम् 1 भय 2 सन्देह 3 अनिश्चयात्मकता।

आशय [आ + शी + अच्] 1 शयनकक्ष, विश्रामस्थल, शरणागार 2 निवास-स्थान आवास, आसन, आश्रय-स्थान वायुर्गन्धानिवाशयात् भग० १५।८, सपुष्पक° उत्तर० १।४१, 3 पात्र आधार — विषमोऽपि विगाह्यते नय: कृततीर्थ: पयसामिवाशय: — कि० २।३, तु० जलाशय, आमाशय, रक्ताशय आदि 4 पेट 5 अर्थ इरादा, प्रयोजन, भाव — इत्याशय:, एवं कवेराशय: टीकाकारों के द्वारा बहुधा प्रयुक्त है० 'अ.भि-प्राय') 6 भावनाओं का स्थान मन, हृदय — अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थित: — भग० १०।२०, महावी० २।३३, 7 सम्पन्नता 8 कोठार 9 मन, इच्छा 10 भाग्य, किस्मत 11 (जानवरों को पकड़ने के लिए बनाया गया) गर्त — आस्ते परमसन्तप्तो नूनं सिंह इवाशये महा०। सम० — आश अग्नि।

आशर: [आ+शृ+अच्] 1. अग्नि 2. असुर, राक्षस 3. वायु।

आशवम् [आशोर्भावः—अण्] 1. वेग फुर्ती 2. खींची हुई शराब, अरिष्ट (अधिकतर 'आसव' लिखा जाता है)।

आशा [आ+अश्+अच्] 1 (क) उम्मीद, प्रत्याशा, भविष्य—तामाशां च सुरद्विषाम्—रघु॰ १२।९६, आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्—सुभाष॰, त्वमाशे मोघाशे 2. मिथ्या आशा या प्रत्याशा 3. स्थान, प्रदेश, दिग्देश, दिशा—अवस्थापरितामाशामनाशास्य-वशो वशी—रघु॰ ४।४४, कि॰ ७।९। सम॰ —अन्वित,—वत् (वि॰) आशावान्, आशा बढ़ाने वाला,—गज दिग्गज दे॰ 'अष्टदिग्गज',—तन्तु आशा की डोर, क्षीण आशा मा॰ ४।३, ९।२६ पाल दिक्पाल दे॰ 'अष्टदिक्पाल', पिशाचिका आशा की कल्पना-सृष्टि,—बन्ध 1. आशा का बन्धन, विश्वास, भरोसा, प्रत्याशा गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साह-यति—श॰ ४।१५, मेघ॰ १०, 2 मकड़ी 3 मकड़ी का जाला,—भंग निराशा, नाउम्मीद,—हीन (वि॰) निराश, हताश।

आशाढः दे॰ 'अ(आ)षाढ'।

आशास्य (सं॰ कृ॰) [आ+शास्+ण्यत्] 1 वरदान द्वारा प्राप्य 2. अभिकथनीय, वांछनीय—रघु॰ ४।४४, —स्यम् वाञ्छनीय पदार्थ, चाह, इच्छा, —मालवि॰ ५।२०, 3. आशीर्वाद, मंगलाचरण— आशास्यमन्यत्पु-नरुक्तभूतम्—रघु॰ ५।३४।

आशिञ्जित (वि॰) [आ+शिञ्ज्+क्त] झनकार (आभू-षणों की) कु॰ ३।२६।

आशित (वि॰) [आ+अश्+क्त] 1 भुक्त, खाया हुआ 2 खाकर तृप्त —तम् भोजन करना।

आशितङ्गवीन (वि॰) [आशिता अशनेन तृप्ता गावो यत्र —खञ्, निपातनात् मुम्] पहले पशुओं द्वारा चरा हुआ।

आशितम्भव (वि॰) [आशित+भू+खच्, मुम्] तृप्त होने वाला संतृप्त करने वाला (भोजन के रूप में) —वम् 1 आहार भोज्य पदार्थ 2 अघाना तृप्ति (पु॰ भी) फलैर्यश्चाशितम्भवम् भट्टि॰ ४।११।

आशिर (वि॰) [आ+अश्+इरच्] भोजनभट्ट —र 1 अग्नि 2 सूर्य 3 राक्षस।

आशिस् (स्त्री॰) (शा आशीः आदि) [आ+शास्+क्विप्, इत्वम्] 1 आशीर्वाद मंगलकामना (परिभाषा वा-मन्याचार्य मार्गेन कानिष्ठयाभिप्रायम् इष्टावधारक वाक्यमाशी या परिकीर्तिता।) आशिस् और 'वर' भिन्नार्थक शब्द हैं आशिस् तो केवलमात्र किसी की मंगलकामना या सद्भावना की अभिव्यक्ति है वह चाहे पूरी हो या न हो, इसके विपरीत 'वर' शब्द की भावना अधिक स्थायी और पूर्णता की निश्चायक है—तुल॰—वर आत्मेव मान्यो—श॰ ४, आशिषो गुरुजनवितीर्णा वरतामापद्यन्ते—का॰ २९१, अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः—रघु॰ १।४४, सपत्नी कु॰ ७।४७, 2 प्रार्थना, चाह, इच्छा—कु॰ ५।७६, मन॰ ४।२१, 3. साँप का विषैला दाँत (तु॰ 'आशीविष')। सम॰—वाद,—वचनम् (आशीर्वाद आदि), आशीर्वाद, मंगलाचरण, किसी प्रार्थना या सद्भावना की अभिव्यक्ति आशीर्वचनसंयुक्ता नित्यं यस्मात् प्रकुर्वते—सा॰ द॰ ६, मन॰ २।३३,—विष (आशीविष) साँप।

आशी [आशीर्यति अनया आ+शृ+क्विप् पृषो॰,] 1. साँप का विषैला दाँत, 2 एक प्रकार का सर्पविष 3 आशीर्वाद, मंगलाचरण। सम॰ —विष 1 साँप, —गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः रघु॰ ३।५७, 2 एक विशेष प्रकार का साँप कर्णाशीविषभोगिनि प्रशमिते वेणी॰ ६।१।

आशु (वि॰) [अश्+उण्] तेज फुर्तीला —शुः,—शु (नपुं॰) चावल (जो बरसात में ही शीघ्रतापूर्वक पक जाते हैं) —शु (अव्य॰) तेजी से जल्दी से, तुरन्त, शीघ्र —यत्नं मानोऽस्य जाशु—मेघ॰ ३९।२२। सम॰—कारिन्, —कृत (वि॰) जल्दी करने वाला, चुस्त, फुर्तीला —कोपिन् (वि॰) गुस्सैला, चिड़चिड़ा, —ग (वि॰) फुर्तीला, तेज (—गः) 1 वायु 2 सूर्य 3 बाण यथा-वनास्वादितपूर्वमाशुगः—रघु॰ ३।५४, ११।८२, १२।९१ —तोष (वि॰) अनायास प्रसन्न होने वाला (—षः) शिव की उपाधि, —व्रीहि बरसात में ही पक जाने वाले चावल।

आशुशुक्षणि [आ+शुष्+सन्+अनि] 1 वायु, हवा 2 अग्नि मन्त्रपूतानि हवींषि प्रतिगृह्णात्यनश्नोऽप्याशुशुक्षणि ६४।

आशेकुटिन् (पु॰) [आशेरतेऽस्मिन् इति—आ+शी+विच् —क इव कुटति इति णिनि] पहाड़।

आशोषणम् [आ+शुष्+णिच्+ल्युट्] सुखाना।

आशौचम् [अशौच+अण्] अपवित्रता दे॰ 'अशौच' दशाहम् शावमाशौचं ब्राह्मणस्य विधीयते मनु॰ ५।५९, ६१ ६२ याज्ञ॰ ३।१८

आश्चर्य (वि॰) [आ+चर्+ण्यत् सुट्] चमत्कारपूर्ण, विरल असाधारण आश्चर्यजनक, अद्भुत—आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा—कठ॰ सिद्धाश्च तदनु वक्तु पुण्यमाश्चर्य-भूता रघु॰ १६।८७ आश्चर्यदर्शनो मनुष्यलोक —र्यम् 1 अचम्भा अजूबा 2 कौतुक रमाश्चर्यं क्षितीशा प्रीणता यमसूनिका सङ्कट कर्माश्चर्याणि उत्तर॰ १—आश्चर्यजनक काम-भग॰ ११।६ २।२९, 2 अचरज विस्मय अचम्भा।

(विस्मयादि द्योतक अव्य० के रूप में प्रयुक्त) आश्चर्य (कितना अचम्भा है, कितनी अजीब बात है)—आश्चर्यं परिपीडितोऽभिरमते यच्चातकस्तृष्णया—चान० २१४।

आश्च्योतनम् (श्च्योत) तनम् [आ + श्चुत् (श्च्युत्) त् + ल्युट्] 1 छिड़कना, छिड़काव 2 पलकों के घी चुपड़ना।

आश्म (वि०) (स्त्री०—श्मी) [अश्मन् + अण्] पत्थर का बना हुआ, पथरीला।

आश्मन (वि०) (स्त्री० —नी) [अश्मनो विकार: अण्] पथरीला, पत्थर का बना हुआ —नः 1 पत्थर की बनी कोई वस्तु 2 सूर्य का सारथि अरुण।

आश्मिक (वि०) (स्त्री० —की) [अश्मन् + ठञ्] 1 पत्थर का बना हुआ 2 पत्थर ढोने वाला।

आश्यान (भू० क० कृ०) [आ + श्यै + क्त] 1 जमा हुआ, सकेलित कि० १२।१० 2 कुछ सूखा —आश्यानवालनकर्दमान् —रघु० ५।४८ कु० ७।९ धूएँ के सहारे सुखाये हुए (जैसे बाल) —रघु० १७।२२।

आश्रपणम् [आ + श्रा + णिच् + ल्युट्] पकाना, उबालना।

आश्रम् [— अमेव स्वार्थेऽण्] आँसू।

आश्रम —मम् [आ + श्रम् + घञ्] 1 पर्णशाला, कुटिया, कुटी, झोपड़ी, संन्यासियों का आवास या कक्ष 2 अवस्था, संन्यासियों का धर्मसंघ, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास), क्षत्रिय और वैश्य भी पहले तीन आश्रमों में पदार्पण कर सकते हैं, तु० श० ७।२० विक्रम० ५. कुछ लोगों के विचारानुसार वह चौथे आश्रम में भी प्रविष्ट हो सकते हैं (तु०—स किलाश्रमं अन्त्यमाश्रित —रघु० ८।१४) 3 महाविद्यालय विद्यालय 4 जंगल, झाड़ी (जहाँ संन्यासी लोग तपस्या करते हैं)। सम० —गुरु: धर्मसंघ के प्रधान, प्रतिष्ठाता आचार्य, —धर्मः 1 जीवन के प्रत्येक आश्रम के विशिष्ट कर्तव्य 2 वानप्रस्थी के कर्तव्य —य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते —श० १, —पदम्, —मण्डलम्, —स्थानम् संन्यासाश्रम (आस-पास की भूमि समेत) —पुण्याश्रमान्तर्निविष्टमाश्रमपदम् —श० १।१६, —भ्रष्ट (वि०) धर्मसंघ से बहिष्कृत, स्वधर्मच्युत, —वासिन् आलय, —सद् (पुं०) संन्यासी, वानप्रस्थ।

आश्रमिक, आश्रमिन् (वि०) [आश्रम + ठन्, इनि वा] धार्मिक जीवन के चार भागों या पदों में किसी एक से संबंध रखने वाला।

आश्रय: [आ + श्रि + अच्] 1 विश्रामस्थल, सदन, अधिष्ठान —सौहृदादपृथगाश्रयामिमाम् —उत्तर० १।६५, ५।१, 2 जिसके ऊपर कोई वस्तु अधिष्ठित रहती है 3 ग्रहण करने वाला भाजन —समाश्रयं तुल्यमहत्त्व तेजसा —रघु० ३।५८ 4 (क) शरणस्थान, शरणगृह —भर्ता ते गतिराश्रयः स्त्रीणाम् —वेणी० नदहमाश्रयोन्मूलनेनैव स्वामिकार्यं करोमि—मुद्रा० २, (ख) आवास, घर 5 सहारा लेने वाला (प्राय: समास में) 6 निर्भर करना (प्राय: समास में) 7 पालक, प्रतिपोषक —विनाश्रयं न तिष्ठन्ति पण्डिता वनिता लता: —उद्भट 8 वृत्ति, संग —रघु० १।६० 9 संरक्षण —वामाश्रयमुपाश्रमसमुद्धरन् —रघु० ११।२९ 10 अधिकार, सम्पादन, प्रमाण, अधिकार पत्र 11 मेलजोल, संबन्ध, साहचर्य 12 दूसरे का समय लेने वाला, छः गुणों में से एक। सम० —असिद्ध:, —द्धि: (स्त्री०) हेत्वाभास का एक प्रकार, असिद्ध के तीन उपभागों में से एक, —आश. —भुज् (वि०) संपर्क में आने वाली वस्तुओं का उपभोग करने वाला (—श:, —क्) अग्नि, —दुर्वृत्तः क्रियते धुरि —यौवनात्मविमुक्तये, कि नाम कलुषसंगं कुरुते नाश्रयाशयम् —उद्भट, —लिङ्ग विशेषण (अपने विशेष्य के अनुरूप अपना लिंग रखने वाला शब्द)।

आश्रयणम् [आ + श्रि + ल्युट्] 1 दूसरे के संरक्षण में रहना, शरण लेना 2 स्वीकार करना, छांटना 3 शरण, शरणस्थान।

आश्रयिन् (वि०) [आश्रय + इनि] 1 सहारा लेने वाला, निर्भर करने वाला 2 संबद्ध विषयक —विक्रम० ४।१०।

आश्रव (वि०) [आ + श्रु + अच्] आज्ञाकारी, आज्ञापालक —प्रियजनाश्रव —रघु० १९।४९, नै० ३।८४, —वः 1 नदी, दरिया 2 प्रतिज्ञा, वादा 3 दोष, अतिक्रमण —दे० 'आस्रव' भी।

आश्रि (स्त्री०) [प्रा० स०] तलवार की धार।

आश्रित (भू० क० कृ०) [आ + श्रि + क्त] (कर्म० के साथ कर्तृवाच्य में प्रयुक्त) 1 सहारा लेते हुए—कृष्णाश्रित —कृष्णमाश्रित —सिद्धा० 2 रहने वाला, वास करने वाला, किसी स्थान पर स्थिर रहने वाला 3 काम में लाने वाला, सेवा में रखने वाला 4 अनुसरण करने वाला, अभ्यास करने वाला, पालन करने वाला —कु० ६।६ —भट्टि० ३।५२, 5 निर्भर करने वाला 6 (कर्मवाच्य के रूप में प्रयुक्त) सहारा लिया हुआ, बसा हुआ —त: पराधीन सेवक, अनुचर, —अस्मदाश्रितानाम् —हि० १, प्रभुणा प्रायश्चल गौरवमाश्रितेषु —कु० ३।१।

आश्रुत (भू० क० कृ०) [आ + श्रु + क्त] 1 सुना हुआ, 2 प्रतिज्ञात, सहमत, स्वीकृत, —तम् पुकार जो दूसरा सुन सके।

आश्रुति: (स्त्री०) [आ + श्रु + क्तिन्] 1 सुनना 2. स्वीकार करना।

आश्लेष: [आ + श्लिष् + घञ्] 1 आलिंगन, परिरम्भण, कांची-कोली —आश्लेषलोलुपवधूस्तनकार्कश्यसाक्षिणी

—शि० २।१७, अमरु, १५।७२, ९४, कण्ठाश्लेष-प्रणयिनि जने—मेघ० ३।१०९, 2. संपर्क, घनिष्ट संबंध, संबंध,—षा ९वाँ नक्षत्र।

आश्व (वि०) (स्त्री०—श्वी) [अश्व+अण्] घोड़े से सम्बन्ध रखने वाला, घोड़ों के पास से आने वाला —श्वम् घोड़ों का समूह।

आश्वत्थ (वि०) (स्त्री०—त्थी) [अश्वत्थ+अण्] पीपल के वृक्ष से संबंध रखने वाला या पीपल से बना हुआ, —त्थम् पीपल का फल, गूलर।

आश्वयुज (वि०) (स्त्री०—जी) [अश्वयुज्+अण्] आश्विन मास से [illegible] संबंध रखने वाला, —जः आश्विन मास—मनु० [illegible] —जी आश्विन की पूर्णिमा का दिन।

आश्वलक्षणिकः [अश्वलक्षण ठक्] अश्वपारखी, अश्वचिकित्सक, साईस (घोड़े की देखभाल करने वाला)।

आश्वासः [आ+श्वस्+घञ्] 1 सांस लेना, मुक्त श्वास लेना, चैन का सांस 2 तसल्ली, प्रोत्साहन 3 रक्षा और सुरक्षा की गारंटी 4 शोकनाश 5 किसी पुस्तक का पाठ या अनुभाग।

आश्वासनम् [आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] प्रोत्साहन, दिलासा, तसल्ली—सदिदं द्वितीयं हृदयाश्वासनम्—श० ७।

आश्विकः [अश्व+ठञ्] घुड़सवार।

आश्विनः [अश्विनी+अण्] मास का नाम (जिसमें चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र के निकट होता है)।

आश्विनेयौ (द्वि० व०) [अश्विनी+ढक्] 1 दो अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य) 2 नकुल और सहदेव के नाम, पाँच पाण्डवों में से अन्तिम दो।

आश्वीन (वि०) (स्त्री०—नी) घोड़े द्वारा प्राप्त (यात्रा आदि) °नोऽध्वा—सिद्धा०।

आषाढः [आषाढी पूर्णिमा अस्मिन्मासे अण्] 1 हिन्दुओं का एक महीना (जून और जुलाई में आने वाला), —आषाढस्य प्रथमदिवसे—मेघ० २, शते विष्णु सदाषाढे कार्तिके प्रतिबोध्यते—वि० पु० 2 ढाक की लकड़ी का दण्ड जिसे संन्यासी धारण करते हैं—अथाजिनाषाढधरः प्रगल्भवाक्—कु० ५।३०,—ढा २०वाँ या २१वाँ नक्षत्र—पूर्वाषाढ़ा तथा उत्तराषाढ़ा, —ढी आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आष्टकः [अष्टम+ञ] आठवाँ भाग।

आस्, **आः** (अव्य०) निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय—(क) प्रत्यास्मरण —आः उपनयतु भवान् भूर्जपत्रम्—विक्रम० २ (ख) क्रोध—आः कथमद्यापि राक्षसत्रासः—उत्तर० १—आः पापे तिष्ठ तिष्ठ—मा० ८ (ग) पीड़ा—आः शीतम् —काव्य० १० (घ) अपाकरण (सरोष विरोध) —आः क एष मयि स्थिते—मुद्रा० १ —आः वृथा-मंगलपाठक वेणी० १ (ङ) शोक, खेद विद्यामातरमा प्रदर्श्य नृपशून् भिक्षामहे निस्त्रपा—उद्भट।

आस् (अदा० आ०) (आस्ते, आसित) 1. बैठना, लेटना, आराम करना,—एतदासनमास्यताम्—विक्रम० ५ —आसीनमासनशिलातलमभिमुखं गुरोः—मनु० २।१९३ 2. रहना वास करना तावद्वर्षसहस्राणि देवलोके—महा०, कथायां शेषायां तथाय[illegible] का० [illegible] तूष्णीमास्ते—सिद्धा० 3 चुपचाप बैठे रहना, [illegible] व्यवहार न करना बेकार बैठना —आसीत [illegible] हयम्—शि० २।५७, 4 होना, अस्तित्व या विद्यमानता होना, 5 स्थित होना, रक्खा होना [illegible] तस्या सविकाशमासत—शि० १।२६ 6. [illegible] टिके रहना, किसी अवस्था में ठहरना या [illegible] रहना (अनुबन्ध या निर्धारित क्रिया का प्रकट [illegible] के लिए बहुधा वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ इस धातु का प्रयोग होता है) [illegible] [illegible], फाड़ता रहा और परजा [illegible] [illegible] [illegible] जाना (सप्त० के साथ) आसनः [illegible] सङ्कुलितं [illegible] [illegible] [illegible] देना [illegible] रहने दो, [illegible] बिठाना [illegible] बाना स्थिर करना [illegible] सिद्धा० अधि [illegible], बसना, अधिकार करना, अधिष्ठ होना (स्थान में कर्म० के साथ) [illegible] कुलपतिना [illegible]—रघु० १।९५ [illegible], [illegible] [illegible] ९, अनु 1. निकट बैठाया जाना 2 सेवा करना सेवा में प्रस्तुत रहना सखीभ्यामन्वास्यते श० ३, अन्वासितमरुन्धत्या—रघु० १।५६ 3 [illegible] —[illegible]—रघु० [illegible], उद्—उदासीन या बेलाग होना, निरपेक्ष या तटस्थ होना, निष्क्रिय या अकर्मण्य होना तत्किमित्युदासते भरताः मा० १ विषाद और सामर्थ्य सहारते व उदासते—शि० २।७२, भग० ९।९, मुद्रा० १, उप—1. सेवा में प्रस्तुत होना, सेवा करना पूजा करना—अम्बामुपास्य सदयाम् अम्ब० १३, उद्यानपालसामान्यमृतवस्तमुपासते कु० २।३६ 2 उपागमन करना, की ओर जाना उपासांचक्रिरे द्रष्टुं देवगन्धर्वकिन्नराः भट्टि० ५।१०७, ७।८९, 3 भाग लेना, (पुण्य कृत्यों का) अनुष्ठान करना 4. (समय) बिताना—उपास्य रात्रिशेषं तु—रामा० 5. भोगना, झेलना—अलं ते पाण्डुपुत्राणां भक्त्या क्लेशमुपासितुम्—महा०, मनु० ११।१८४ 6. आश्रय लेना, काम में लगाना, प्रयोग करना—लक्ष्मणोपास्यते यस्य कृते—सा० द० २, 7. धनुर्विद्या का अभ्यास करना 8.

प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, पर्युप- 1 उपासना करना, पूजा करना, अर्चना करना—पर्युपासन्त प्रत्यञ्चम् --रघु० १०।१२, कु० २।३८, मनु० ७।१७, 2 (रक्षा के लिए) पहुँचना, शरण लेना, या संरक्षण में जाना —अबला इव सर्वेष पर्यपासते—भाग० ११२४१, 3 घेरना, घेरा डालना 4 भाग लेना, हिस्सा लेना 5 आश्रय लेना, सम्—1 बैठ जाना—समुपाविशत समासीन वसिष्ठम्—रामा० 2. मिल कर बैठना, समुप -1 सेवा के लिए प्रस्तुत रहना, पूजा करना, सेवा करना समुपास्यत पुत्रभोग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रिय श्रिया रघु० ८।१४, 2 अनुष्ठान करना - मे नव संध्या समुपासते - रामा० ।

आसः [आस् + घञ्] 1 आसन 2 धनुष (—सम्, औ) स सामि ना सूक्ष्म मास कि० १५।५ ।

आसक्त (भू० क० कृ०) [आ + सञ्ज् + क्त] 1 जमा हुआ, लटका हुआ, जुड़ा हुआ, बंधा हुआ (प्रायः अधि० के साथ या समास में) 2 स्थिर, टिका हुआ—निवारा-सक्तमेता कु० ६।४०, 3 निरन्तर, अनवरत, शाश्वत । सम० चित्त, -चेतस्, -मनस् एकनिष्ठ एकाग्र ।

आसक्तिः (स्त्री०) [आ + सञ्ज् + क्तिन्] 1 अनुराग, भक्ति, लगाव आशिकाधरितेष्वासक्तिः —का० १२०, 2 तल्लीनता, लगाव ।

आसङ्गः [आ + सञ्ज् + घञ्] 1. अनुराग भक्ति —सुखासङ्गमुक्ता —का० १।१, 2. सम्पर्क, अनुरक्ति, मिलाप —(पङ्कज) स दैवकाद्रागमपि प्रकाशते कु० ५।१ ३।४६ 3 लाहुकर्म संयोग, संमिलन, - त्यक्त्वा कर्म-फलासङ्गम्- भग० ४।२०, इसी प्रकार 'कण्ठासङ्गम्' आदि 4 स्थिरीकरण, बन्धन ।

आसङ्गिनी [आसङ्ग + इनि + ङीप्] बवण्डर, बगूला, धूआं ।

आसञ्जनम् [आ + सञ्ज् + ल्युट्] 1 बाँधना, जमाना, (शरीर पर) धारण करना 2 फंस जाना चिपकना —क्षतशिखरवादपसञ्जनात् श० १।३३, ५।११ 3 अनुराग, भक्ति 4 सम्पर्क, सामीप्य ।

आसत्तिः [आ + सद् + क्तिन्] 1 मिलन, संयोग 2. घनिष्ठ मेल, घनिष्ठ सम्पर्क किमपि किमपि मन्द मन्दमासत्तियोगात् उत्तर० १।२७ 3 उपलब्धि, लाभ उपार्जन 4 (तर्क० में) सामीप्य दो या दो से अधिक निकटस्थ शब्दों का सम्बन्ध और उनके द्वारा अभिव्यक्त भाव कारण सन्निधान तु पदस्यासत्तिरुच्यते —भाषा० ८३ ।

आसन् (नपुं०) मुख (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् सभी विभक्तियों में 'आस्य' के स्थान में विकल्प से आदेश होने वाला शब्द) ।

आसनम् [आस् + ल्युट्] 1 बैठना, 2 आसन, स्थान, स्टूल - स वासवेनासनसन्निकृष्टम् —कु० ३।२, आसनं मुच् —अपना आसन छोड़ना, उठना—रघु० ३।११, 3 एक विशेष अंगविन्यास या बैठने का ढंग—तु० पद्म° वीर° 4 बैठ जाना या ठहरना 5 रतिक्रिया की विशेष विधि 6. शत्रु के विरुद्ध किसी स्थान पर डटे रहना (विप० यानम्) विदेशनीति के ६ प्रकारों में से एक—संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः—अमर० मनु० ७।१६०, याज्ञ० १।३४६ 7. हाथी के शरीर का अगला भाग, जोड़े का कन्धा,—ना 1 आसन, चारपाई जिस पर बैठा जाय, टेक 2 बैठने का एक छोटा स्थान स्टूल 3 ठहराव, अवस्थिति । सम० —बन्धधीर (वि०) बैठने के लिए दृढ़ अंगविन्यास, अपने आसन पर दृढ़, —निषेदुषीमासनबन्धधीरः —रघु० २।६ ।

आसन्दी [आसद्यतेऽस्याम्—आ + सद् + ट, नुम् नि० ङीप्] मचिया, आराम कुर्सी ।

आसन्न (भू० क० कृ०) [आ + सद् + क्त] 1 समीप (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से) निकट, —आसन्नविंशाः—बीस के लगभग या निकट 2 निकटवर्ती सन्निहित—आसन्नपतत्रे धूमे—मालवि० सम० —कालः 1 मृत्यु का समय 2. जिसकी मृत्यु निकट हो —परिचारकः—अंगरक्षक अभिरक्षक सेवक शरीर रक्षक ।

आसम्बाध (वि०) [आसमन्तात् सम्बाधा यत्र ब० स०] 1 अवरुद्ध, रोका हुआ, (चारों ओर से) घेरा हुआ —आसम्बाधा भविष्यन्ति पन्थानः शरवृष्टिभिः — रामा० ।

आसवः [आ + सु + अप्] 1 अर्क 2 काढ़ा 3 मद्य —अनासवाख्यं करणं मदस्य - कु० १।३१ इत्यादि ।

आसादनम् [आ + सद् + णिच् + ल्युट्] 1 प्राप्त करना उपलब्ध करना 2 आक्रमण करना ।

आसारः [आ + सृ + घञ्] 1. (किसी वस्तु की) मूसलाधार बौछार- आसारसिक्तक्षितिबाष्पयोगात् —रघु० १३। २९, मेघ० १७ पुष्पासारैः- ४३, इसी प्रकार शरासार° रुधिर° आदि - धारासारैर्वृष्टिर्वभूव--हि० ३ मूसलाधार वारिश हुई 2 शत्रु का घेरा डालना 3 आक्रमण अचानक हमला 4. अपने किसी मित्र राजा की सेना 5 रसद आहार —अम० ३।४१ ।

आसिकः [असि + ठक्] तलवारी तलवार लिए हुए ।

आसिधारम् [असिधारा इव अस्त्यत्र अण्] एक प्रकार का व्रतविशेष —युवा युवत्या सार्धं यन्मुग्धभर्तृवदाचरेत् —आसिधारव्रतम् रघु० १३।६७, व्याख्या के लिए दे० असि के नीचे 'असिधारा' शब्द ।

आसुतिः (स्त्री०) [आ + सु + क्तिन्] 1 अर्क, 2. काढ़ा ।

आसुर (वि०) (स्त्री० —री) [असुर + अण्] (विप०

री) 1. असुरों से संबन्ध रखने वाला 2. भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला,—आसुरी माया, आसुरी रात्रिः आदि 3. नारकीय, राक्षसी—आसुरं भावमाश्रित भग० ७।१५ (असुर-आचरण के पूर्ण विवरण के लिए दे० भग० १६। ७-२४)—रः 1. राक्षस, 2 आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कि वर, वधू को उसके पिता या पितृबान्धवों से खरीद लेता है (दे० उद्वाह)—आसुरो द्रविणादानात्—याज्ञ० १।६१, मनु० ३।३१,—री 1. शल्यचिकित्सा, चीरफाड़ 2 राक्षसी —कंजनामासुरीति—मैथी० १।१।

आसूत्रित (वि०) [आ+सूत्र्+क्त] 1. माला पहने हुए या माला के रूप में, 2. अंतर्ग्रथित।

आसेकः [आ+सिच्+घञ्] गीला करना, सींचना, ऊपर से उँडेलना।

आसेचनम् [आ+सिच्+ल्युट्] ऊपर से उँडेलना, गीला करना, छिड़कना।

आसेधः [आ+सिध्+घञ्] गिरफ्तारी, हिरासत, कानूनी प्रतिबंध यह चार प्रकार का है.—स्थानासेध कालकृतः प्रवासात् कर्मणस्तथा —नारद।

आसेवा—वनम् [प्रा० स०] 1 सोत्साह अभ्यास, किसी क्रिया का सतत अनुष्ठान, 2 बारंबार होना, आवृत्ति —पा० ८।३।१०२, आसेवनं पौनःपुन्यम् —सिद्धा०।

आस्कन्दः—दनम् [आ+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1 आक्रमण, हमला, धावा, परजनिता °प्रचलस्य —मैथी० २, 2. चढ़ना, सवारी करना, रौंदना, 3 भर्त्सना, दुर्वचन 4. घोड़े की सरपट चाल 5. लड़ाई, युद्ध।

आस्कन्दितकम्—तकम् [आ+स्कन्द्+क्त, स्वार्थे कन् वा] घोड़े की चाल, घोड़े की सरपट चाल।

आस्कन्दिन् (वि०) [आ+स्कन्द्+णिनि] चढ़ बैठने वाला, कूद पड़ने वाला—रघु० १७।५२।

आस्तरः [आ+स्तृ+अप्] 1. चादर, ओढ़ने का वस्त्र 2. दरी, बिछावन, चटाई—श० २।२० 3. बिस्तरण, फैलाव (वस्त्रादि)।

आस्तरणम् [आ+स्तृ+ल्युट्] 1 बिस्तरण, बिछावन 2. बिछावन, शय्या, कुसुम° फूलों की क्यारी—कु० ४। १५, कलमकलमास्तरणाम् रत्नम्—रघु० ६।१४ 3. गद्दा, रजाई, बिस्तर के कपड़े 4. दरी 5. हाथी की झोल-पोश, कामदार झूल, रंगीन झूल।

आस्तारः [आ+स्तृ+घञ्] फैलाना, बिछाना, बखेरना। सम०—पंक्तिः छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

आस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [अस्ति+ठक्] 1. जो ईश्वर और परलोक में विश्वास रखता है 2. अपनी धर्म-परंपरा में विश्वास रखने वाला 3. धर्मात्मा, भक्त, श्रद्धालु—आस्तिकः श्रद्धधानश्च—याज्ञ० १।२६८।

आस्तिकता,—त्वम्, आस्तिक्यम् [आस्तिक+तल् त्व ष्यञ् वा] 1. ईश्वर और परलोक में विश्वास 2 पवित्रता, भक्ति, श्रद्धा—भग० १८।४२ आस्तिक्य मदधानता परमार्थेष्वागमार्थेषु शंकर०।

आस्तीकः एक प्राचीन मुनि, जरत्कारु का पुत्र (जरत्कारु के बीच में पड़ने से ही जनमेजय ने तक्षक नाग को छोड़ दिया था, जिसके कारण कि सर्पयज्ञ रचा गया था)।

आस्था [आ+स्था+अङ] 1. श्रद्धा, देखभाल, आदर, विचार, ध्यान रखना (अधि० के साथ) मर्त्येष्वास्थापराङ्मुख - रघु० १०।४३ मय्यप्यास्था न ते चेत् भर्तृ० ३।३० दे० अनास्था भी 2 स्वीकृति वादा 3 थूनी, सहारा, टेक 4 आशा भरोसा 5 प्रयत्न 6 दशा, अवस्था 7 सभा।

आस्थानम् [आ+स्था+ल्युट्] 1 स्थान जगह 2 नींव, आधार 3 सभा 4 देखभाल श्रद्धा, दे० 'आस्था' 5 सभागृह 6 विश्रामस्थान,—नी सभा-भवन। सम० -गृहम्, निकेतनम्, मंडपः सभाभवन।

आस्थित (भू० क० कृ०) (कर्तृवाच्य के रूप में प्रयुक्त) रहने वाला, बसने वाला, आश्रय लेने वाला, काम में लगने वाला, अभ्यास करने वाला अपने आपको डालने वाला।

आस्पदम् [आ+पद्+घ सुट् च] 1 स्थान, जगह, आसन, ठौर —मन्यास्पद श्रीपूर्वराजभाजितम् रघु० ३।३६, ध्यानास्पदं भूतपतेर्विवेश - कु० ३।४३, ५।१०, ४८, ६९, 2 (आल०) आवास, स्थान, आशय - करिष्य कालव्यास्पदम्—मालवि० १।२, 3 श्रेणी, दर्जा, केन्द्र स्थान 4 मर्यादा, प्रामाणिकता पद 5 व्यवसाय, काम 6 थूनी, आश्रय।

आस्पन्दनम् [आ+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कना, कांपना।

आस्पर्धा [प्रा० स०] होड़, प्रतिद्वंद्विता।

आस्फालः [आ+स्फल्+णिच्+अच्] 1 मारना, रगड़ना, हवें २ चलाना 2 फड़फड़ाना 3 विशेष रूप से हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

आस्फालनम् [आ+स्फल्+णिच्+ल्युट्] 1 रगड़ना, दबा कर रगड़ना, (पानी आदि का), हिलाना फड़फड़ाना —अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम् श० २।४, आलान प्रकास्फालनतत्परेणाम् - रघु० १६।६२, ३।५५, ६। ७३, अमरु ५४, ऐरावत° कर्कशेन हस्तेन कु० ३।२२ 2. घमंड, शेखी।

आस्फोटः [आ+स्फुट्+अच्] 1 आक या मदार का पौधा 2. ताल ठोकना,—टा नवमल्लिका का पौधा, चमेली जैसी बेली।

आस्फोटनम् [आ+स्फुट्+ल्युट्] 1. फटकना 2 कांपना 3. फूंक मारना, फुलाना 4. सिकोड़ना, बन्द करना 5. ताल ठोकना।

आस्माक (वि०) (स्त्री० की), **आस्माकीन** (वि०) [अस्मद् + अण्, खञ्, अस्माक आदेश] हमारा हम सब का —आस्माकदन्तिसान्निध्यात् शि० २।६३, ८।५०।

आस्यम् [अस्यते ग्रासोऽत्र अस् + ण्यत्] 1 मुंह, जबड़ा आस्यकुहरे विवृतास्य 2 चेहरा आस्यकमलम् 3 मुख का वह भाग जिसमें वर्णोच्चारण में काम लिया जाता है 4 मुंह, विवर व्रणास्यम् अङ्गुलास्यम् आदि। सम० आसव थूक और मुखासव, पत्रम् कमल —लाङ्गूल 1 कुत्ता 2 सूअर —लोमन् (नपुं०) दाढ़ी।

आस्यन्दनम् [आ + स्यन्द् + ल्युट्] बहना, रिसना।

आस्यन्धय (वि०) [आस्य धयति —धे + खश्, मुम्] मुखचुम्बन करने वाला।

आस्या [आस् + क्यप्] दे० आसन।

आस्रम् [अस्र + अण्] रुधिर। सम० —प रक्त पान करने वाला राक्षस

आस्रव [आ + स्रु + अप्] 1 पीड़ा कष्ट दुःख 2 बहाव स्रवण 3 (मवाद आदि का) बहना निकलना 4 अपराध अतिक्रमण 5 उबलते हुए चावलों का झाग।

आस्राव [आ + स्रु + घञ्] 1 घाव 2 बहाव निकास 3 लार 4 पीड़ा, कष्ट

आस्वाद [आ + स्वद् + घञ्] 1 चखना खाना—चूत कषु रास्वादकषायकण्ठः कु० ३।३२ शि० ११।५२ 2 स्वाद लेना ज्ञातास्वादो विवृतजघना को विहातुं समर्थः मेघ० ४१ मुखास्वादादरः हि० ४।३६ 3 सुखोपभोग करना अनुभव करना, वत् (वि०) स्वादिष्ट रसीला आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानाम् रघु० ५।९।

आस्वादनम् [आ + स्वद् णिच् ल्युट्] चखना खाना।

आह (अव्य०) [आ + हन् + ड] 1 निम्नांकित भावनाओं को द्योतन करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय—(क) झिड़की (ख) कठोरता (ग) आज्ञा (घ) फेंकना, भेजना 2 'कहना बोलना' अर्थ को प्रगट करने वाली सदोष क्रिया के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एक वचन का अनियमित रूप (भारतीय वैयाकरणों के मतानुसार यह रूप 'ब्रू' धातु का है तथा पाश्चात्य विद्वान् इसको अह से बना हुआ मानते हैं संस्कृत भाषा में इस धातु के वर्तमान रूप आह, आहतुः, आहुः आत्थ, और आहथुः हैं)।

आहत (भू० क० कृ०) [आ + हन् + क्त] 1 जिस पर प्रहार या आघात किया गया हो, पीटा गया (ढोल आदि) 2 रौंदा गया पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति शि० २।४६ 3 घायल, मारा हुआ 4 गुणित (गणित में) 5 धुकाया हुआ (पासा) 6 मिथ्या कहा हुआ,—तः ढोल, —तम् 1 नई पोशाक, नया वस्त्र 2 भावहीन या निरर्थक भाषण, असम्भावना की वृद्धोक्ति उदा० एष वन्ध्यासुतो याति—सुभा०। सम० लक्षण (वि०) = आहितलक्षण।

आहति (स्त्री०) [आ + हन् + क्तिन्] 1 हत्या करना 2 प्रहार चोट मारना, पीटना 2 यष्टि, छड़ी।

आहर (वि०) [आ + हृ + अच्] (समास के अन्त में) लाने वाला ले आने वाला, ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला समित्कुशफलाहरः रघु० १।४९, रः 1 ग्रहण करना पकड़ना 2 पूरा करना सम्पन्न करना 3 यज्ञ करना।

आहरणम् [आ + हृ + ल्युट्] 1 ले आना (निकट) लाना समिदाहरणाय प्रस्थिता वयम्—श० १ 2 पकड़ना ग्रहण करना 3 हटाना निकालना 4 सम्पन्न करना, (यज्ञादिक) पूरा करना 5 विवाह के समय दुलहिन को उपहार के रूप में दिया जाने वाला धन दहेज, सम्बन्धानुरूपाहरणीकृतश्रीः रघु० ७।३२।

आहव [आ + ह्वे + अप्] 1 युद्ध संग्राम, लड़ाई एवं विधेनाहवचेष्टितेन रघु० ७।६७ हत्वा स्वजनमाहवे भग० १।३१ 2 ललकार चुनौती आह्वान, °काम्या लड़ने की इच्छा 3 यज्ञ तत्र नागफलवर्ती महाहवे शि० १४।४४।

आहवनम् [आ हु + ल्युट्] 1 यज्ञ इष्ट्याहवनमाहवनं सम्नाम् शि० १४।३८ 2 आहुति।

आहवनीय (स० कृ०) [आ + हु + अनीयर्] आहुति देने के योग्य,—यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई अभिमन्त्रित अग्नि, तीन अग्नियों में से एक, चौथी) जो यज्ञ में प्रज्वलित की जाती है। दे० अग्नित्रय' शब्द 'अग्नि' के नीचे।

आहार [आ + हृ + घञ्] 1 लाना, ले आना, या निकट लाना 2 भोजन करना 3 भोजन— °वृत्तिमकरोत् पञ्च० १ भोजन किया। सम० पाकः भोजन का पचना,—विरहः भोजन की कमी, भूखों मरना,—सम्भवः शरीर का रस लसीका।

आहार्य (स० कृ०) [आ + हृ + ण्यत्] 1 ग्रहण करने या पकड़ने के योग्य 2 लाने या ले जाने के योग्य 3 कृत्रिम, नैमित्तिक, बाह्य आहार्यशोभारहितैरमायैः भट्टि० २।१४, न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्—कि० ४।२३, कु० ७।२० पर मल्लि० भी 4 साभिप्राय, अभिप्रेत, उदा० रूपक में उपमेय या उपमान का आरोप जिसके विषय में वक्ता पूर्ण रूप से जानकार होता है। 5 शृंगार या आभूषा से सम्पादित या प्रकाशित, अभिनय के चार प्रकारों में से एक।

आहावः [आ + ह्वे घञ्] 1 पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएं के पास बनी कूड 2 संग्राम, युद्ध 3. आह्वान, ललकार 4 अग्नि।

आहिण्डिकः [आहिण्ड+ठक्] निषाद पिता और वैदेही माता से उत्पन्न वर्णसंकर,—आहिण्डिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते—मनु० १०।३७।

आहित (भू० क० कृ०) [आ+धा+क्त] 1 स्थापित, जड़ा गया, जमा किया गया (धरोहर के रूप में रक्खा गया) 2 अनुभूत, सत्कृत 3 सम्पन्न, किया गया। सम० -अग्निः ब्राह्मण जो यज्ञ की पावन अग्नि को अभिमंत्रित करता है, -अंक (वि०) चिह्नित, चित्तीदार, -लक्षण (वि०) परिचायक चिह्न वाला, -ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणोऽभूत् -रघु० ६।७१ (मल्लि० के अनुसार— अच्छे गुणों के कारण प्रख्यात)।

आहितुण्डिकः [अहितुण्डेन दीव्यति ठक्] बाजीगर सपेरा ऐन्द्रजालिक या जादूगर —अहं खल्वाहितुण्डिको जीर्णविषो नाम —मुद्रा० २।

आहुतिः (स्त्री०) [आ+हु+क्तिन्] 1 किसी देवता को आहुति देना, पुण्यकृत्यों के उपलक्ष्य में किये जाने वाले यज्ञों में हवनसामग्री हवन कुंड में डालना —होतुराहुतिसाधनम् रघु० १।८२, 2 किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (हवनसामग्री)।

आहूतिः (स्त्री०) [आ+ह्वे+क्तिन्] चुनौती ललकार, आह्वान।

आहेय (वि०) [अहि+ढक्] सांपों से संबंध रखने वाला —पंच० १।११।

आहो (अव्य०) निम्नांकित भावनाओं को व्यक्त करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय; (क) सन्देह या विकल्प, प्राय 'किम्' का सहसंबंधी - किं दैवतानम् यतं निर्वाहितव्यम्. ... आहो निवत्स्यति सम इति भावनानि —श० १।२७, दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुल श० ५।२९ (ख) प्रश्नवाचकता —। सम० -पुरुषिका 1 अत्यधिक अहंमन्यता या घमंड—आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि -अमर०, आहोपुरुषिकां पश्य मम सद्रत्नकान्तिभि —भट्टि० ५।२७ 2 सैनिक आत्मश्लाघा, शेखी बघारना 3 अपने पराक्रम की डींग मारना - निजभुजबलाहोपुरुषिकाम्—भामि० १।८४, -स्वित् (अव्य०) 'संदेह' 'संभावना' 'संभाव्यता' आदि भावनाओं को प्रकट करने वाला अव्यय ('किम्' का सहसंबंधी) -आहोस्वित्प्रसवो ममापचरितैर्विष्टम्भितो वीरुधाम् —श० ५।९, किं द्विज पचति आहोस्विद् गच्छति -सिद्धा०।

आह्नम् [अह्नां समूह अण्] दिनों का समूह, बहुत दिन।

आह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [अह्नि भव, अह्ना निर्वृत्त साध्य ठञ्] 1 दैनिक प्रति दिन का, प्रति दिन किया गया, दिन भर किया गया धार्मिक संस्कार या कर्तव्य जो प्रति दिन नियत समय पर किया जाने वाला है, प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य जैसे कि भोजन करना स्नान करना आदि कृताह्निक सवृत्त विक्रम० ४, 2 दैनिक भोजन 3 दैनिक कार्य या व्यवसाय।

आह्लाद [आ+ह्लाद्+घञ्] खुशी, हर्ष साह्लाद वचनम् पंच० ४।

आह्लादनम् [आ+ह्लाद्+ल्युट्] प्रसन्न करना, खुश करना।

आह्व (वि०) [आ+ह्वे+क] 1 जो पुकारता है बुलाता है बुलाने वाला ह्वा [आ+ह्वे+अङ+टाप्] 1 बुलाना पुकारना 2 नाम, अभिधान (प्राय समास के अन्त में) अमृताह्व शताह्व, आदि।

आह्वय [आ+ह्वे+श वा०] 1 नाम अभिधान (समास का अन्तिम पद) काव्य रामायणाह्वयम् राम० 2 एक कानूनी अभियोग जो मुर्गों की लड़ाई जैसे पशु-खेलों से होने वाले झगड़ों से पैदा हो (कानून के १८ नामों में से एक) —पणपूर्वकं पक्षिमेषादियोधनं आह्वय मनु० ८।७ पर राघवानन्द की व्याख्या।

आह्वयनम् [आ+ह्वे+णिच्+ल्युट्] नाम अभिधान।

आह्वानम् [आ+ह्वे+ल्युट्] 1 ललकार आमन्त्रण 2 बुलाना, निमंत्रण, आमन्त्रित करना, सुहृदाह्वान प्रकुर्वीत—पंच० ३।४३ 3 कानूनी आमन्त्रण (कचहरी या सरकार से किसी न्यायाधिकरण के सम्मुख उपस्थित होने के लिये बुलाना) 4 देवता का संबोधन मनु० ९।१२६, 5 चुनौती 6 नाम अभिधान।

आह्वाय [आ+ह्वे+घञ्] 1 बुलाना 2 नाम।

आह्वायकः [आ+ह्वे+ण्वुल्] 1 दूत, संदेशवाहक आह्वायकान् भूमिपतेरयोध्याम् भट्टि० २।४४।

इ

इ [अ+इण्] कामदेव (अव्य०) (क) क्रोध (ख) पुकार (ग) करुणा (घ) झिड़की तथा (ङ) आश्चर्य की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

इ (क) (अदा० पर०) (एति, इत) 1 आना, की ओर जाना निकट आना अभिन पुनरेति शर्वरी रघु० ८।५६ 2 पहुँचना, पाना प्राप्त करना चले आना निर्वृतिं अयमेति मृच्छ० १।१४, नष्ट हो जाना है, बर्बाद होता है इसी प्रकार वश, अनुत्व, शून्यताम् आदि. (ख) (भ्वा० पर०)= दे० अय् (ग) (दिवा० आ०) 1 आना या चमकना 2 भागना छूटना 3 शीघ्र जाना बार बार आना। अति 1 परे चले जाना पार करना ऊपर से चले जाना—यथा [illegible] हिमवानवामुर्वी कि० [illegible] [illegible] [illegible] आवश्यकानि [illegible] मेघ० [illegible] बुद्धि है प्रभावक हो जाता है [illegible] आगे बढ़ जाना पीछे छोड़ देना [illegible] [illegible] [illegible] हृदिस्थो हृदीश्व [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कान्तिमतीय [illegible] [illegible] [illegible] 3 नाम से निकल जाना पीछे छोड़ देना [illegible] जाना उपेक्षा करना [illegible] रघु० [illegible] 4 [illegible] [illegible] (मध्य का) [illegible] [illegible] [illegible] भामा० अतीत [illegible] दे० अतीत अधि 1 याद करना [illegible] [illegible] ध्यान पूर्वक याद करना मनु० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अधीते इस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्राप्त करना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अध्याय [illegible] [illegible] [illegible] अनु 1 अनुसरण करना पीछे चलना [illegible] [illegible] रघु० १।९० 2 [illegible] जाना 3 अनुगमन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अनुकरण करना [illegible] [illegible] पीछे जाना अनुसरण करना अन्तर 1 बीच में आना हस्तक्षेप करना 2 रोकना बाधा डालना 3 छिपाना गुप्त रखना [illegible] [illegible] दे० अन्तरित अप 1 चले जाना विदा होना पीछे हटना लौट पड़ना अपेहि दूर दूर जाना दूर हटो 2 वंचित होना मुक्त होना दे० अपेत 3 [illegible] नष्ट होना अभि 1 पास पहुँचना निकट आना—अभ्यागमिष्यन्तीति भट्टि० [illegible] 2 अनुसरण करना सेवा करना 3 प्राप्त करना मिलना भुगतना (अच्छी बुरी बातें) जानना अभिप्र की ओर जाना इरादा करना अर्थ रखना उद्देश्य बना कर -कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् पा० १।४।३२ अभ्या पहुँचना अभ्युद् 1 उठना ऊपर जाना 2 (आलं०) फलना-फूलना समृद्ध होना अभ्युप— 1 निकट जाना पहुँचना आपहुँचना—व्यतीतकाल स्त्वहमभ्युपेतः—रघु० ५।१४, १६।२२, 2. विशिष्ट दशा को पहुँच जाना, प्राप्त करना—[illegible] न [illegible] [illegible]—हि० १।६१ 3 जिम्मेवारी लेना, सहमत होना, स्वीकार करना (कोई काम करने की) प्रतिज्ञा करना [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] मेघ० ३८ 4 मानलेना, अपना लेना, स्वीकार करना 5 [illegible] मानना, अधीनता स्वीकार करना अव— जानना, ज्ञान प्राप्त करना, जानकार होना—अवैहि मां किंकरमष्टमूर्तेः रघु० २।३५, कु० ३।१३ [illegible] [illegible], जाना निकट खिसकना, उद्—1 (सूर्य आदि का), उदय होना (आलं० भी) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—श० ७।३ [illegible] सविता [illegible]—आदि 2 उठना उछलना पैदा किया जाना 3 फलना-फूलना, समृद्ध होना उप 1 पहुँचना निकट खिसकना, पास जाना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मनु० ८।२८ 2 [illegible] जाना [illegible] [illegible] पहुँचना, प्राप्त करना, (किसी [illegible] [illegible] पहुँच जाना [illegible] सत्त्वं परिणामरम्य-[illegible] कि० ४।२२, 3 आ पड़ना, निर्— विदा होना प्रस्थान करना यथा 1 चले जाना दौड़ जाना भाग जाना वापिस मुड़ना—न परैति न [illegible]—पं० [illegible] भागते बच्चा अपनी जान बचा लेता है [illegible] जान बचाने के लिए भागना, 2. पहुँचना प्राप्त करना कि० १।२९ 3 इस प्रकार से कूच [illegible] दे० परेत परि ,1 परिक्रमा करना, प्रदक्षिणा करना [illegible] [illegible] परीत्य— मेघ० ५५ मनु० २।४ 2. घेरना, चारों ओर चक्कर लगाना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पा० ५।१० [illegible] [illegible] [illegible] रघु० १२।६१, इसी प्रकार कोपपरीत 3 पास जाना, (चीजों का) चिन्तन करना 4 बदलना, रूपान्तरित होना, प्र ,1 निकल जाना, विदा होना प्रेत्य प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति— [illegible] 2 (अत) जीवन से विदा लेना, मरना, प्रेत्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को इह—अम० १०,२८ मनु० [illegible] [illegible] प्रति - 1 वापिस आना, लौट आना प्रत्येष्यति [illegible] [illegible] रघु० ५।३५ भट्टि० ३।१९ 2 विश्वास करना भरोसा करना [illegible] प्रत्येति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ४, 3 ज्ञान प्राप्त करना, समझना जानना [illegible] [illegible] [illegible] कि० १।२०, शि० १।६९ 4 विख्यात होना प्रसिद्ध होना—सोऽयं बटे श्याम इति प्रतीतः रघु० १३।५३ 5 प्रसन्न होना संतुष्ट होना रघु० ३।१२ १६।२१ (प्रेर०—प्रत्याययति) विश्वास दिलाना भरोसा पैदा करना [illegible] [illegible] प्रत्याययतीव मे हृदयम् श० ५।२१, [illegible] [illegible] प्रत्याययतु मैथिली—रघु० १५।७३, प्रत्युद् , स्वागत या सत्कार करने के लिए

उठ कर अगवानी करना —तपस्यैवा प्रत्युदियाय पार्वती —कु० ५।३१, वि—, 1 चले जाना, विदा होना —तस्यामहं त्वयि च संप्रति वीतचिन्तः श० ५।१२, इसी प्रकार वीतभय, वीतक्रोध 2 परिवर्तित होना —सदृशं त्रिषु लिंगेषु ... न व्येति तदव्ययम् —सिद्धा० 3 खर्च करना—दे० व्यय, विपरि—, बदलना (बुराई के लिये) दे० विपरीत, व्यति—, 1. बाहर जाना पथविचलित होना, अतिक्रमण करना —रेखामात्रमपि क्षुण्णादा मनोर्वर्त्मनः परम्, न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः । रघु० १।१७, 2 (समय का) गुजरना, व्यतीत होना सम्यग्व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु० २।२५, व्यतीते काल—आदि 3 परे चले जाना, पीछे छोड़ना रघु० ६।६७, व्यप 1 विदा होना विचलित होना, मुक्त होना व्यपेतभयमत्सर —याज्ञ० १।२६७ स्वाध्यायाद्व्यपेतेन मार्गेण —२१५, 2 चले जाना, जुदा होना, अलग-अलग होना —समेत्य च व्यपेयाताम् हि० ४।६९ मनु० ९।१४२ ११।१७, सम् —, इकट्ठे आना, इकट्ठे मिलना, समनु , साथ चलना, अनुसरण करना, समव 1 एकत्र होना, इकट्ठे आना समवेता युयुत्सवः भग० १।१ 2 संबद्ध होना, संयुक्त होना दे० समवाय, समा इकट्ठे आना या मिलना—समेत्य च व्यपेयाताम् हि० ४।६९, समुद् ,एकत्र होना संचित होना— अथ समुदितः सर्वो गुणानां गणः रत्न० १।६, समुप , उपलब्ध करना, प्राप्त करना, संप्रति —, निर्णय करना, निश्चित करना, निर्धारित करना, अनुमान लगाना —किं तत्कथं वेत्युपलब्धसंज्ञा विकल्पयन्तोऽपि न संप्रतीयुः —भट्टि० ११।१० ।

इक्कट: (पुं० न०) गन्ना, ईख, ऊख ।

इक्षु: [इष्यतेऽसौ माधुर्यात् —इष् + क्सु] गन्ना, ईख । सम० —काण्ड:,—डम् गन्ने की दो जातियाँ काश और मुञ्जतृण, —कुट्टक: गन्ने इकट्ठे करने वाला —दा एक नदी का नाम, —पाक: गुड़, शीरा, राब, —भक्षिका गुड़ और शक्कर से बना भोज्य पदार्थ, —मती, —मालिनी,—मालवी एक नदी का नाम, —मेह: मधुमेह —यन्त्रम् गन्ना पेलने का कोल्हू, —रस: 1. गन्ने का रस 2 गुड़, राब या शक्कर, —वणम् गन्ने का खेत, गन्ने का जंगल, वाटिका, —वाटी, गन्नों का उद्यान, विकार: शक्कर, गुड़ या राब,—सार: गुड़ या राब ।

इक्षुक: [स्वार्थे कन्] गन्ना, ईख, दे० इक्षु ।

इक्षुकीया [इक्षुक+छ स्त्रियां टाप्] गन्नों की क्यारी ।

इक्षुर: [इक्षुम् राति— इति रा+क] गन्ना, ईख ।

इक्ष्वाकु: [इक्षुम् इच्छाम् आकरोति इति —इक्षु + आ कृ + डु] अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं का पूर्व पुरुष, यह वैवस्वत मनु का पुत्र था और सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुरुष था। इक्ष्वाकुवंशोऽभिमतः प्रजानाम् उत्तर० १।४४ 2 इक्ष्वाकु की सन्तान गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम् —रघु० ३।७० ।

इख्, इङ्ख् (भ्वा० पर०) (एखति इङ्खति) जाना हिलना डुलना (प्राय: प्र के साथ) हिलना-डुलना, कांपना भा० ६ ।

इङ्ग् (भ्वा० उभ०) (इङ्गति —ते, इङ्गित) 1 हिलना, कांपना क्षुब्ध होना यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते —भग० ६।१९ ... 2 जाना हिलना-डुलना

इङ्ग (वि०) [इङ्ग् + अच्] 1 हिलने डुलने योग्य 2 आश्चर्यजनक विस्मयकारी —ग: 1 इशारा या संकेत 2 इंगित द्वारा मनोभाव का संकेत देना ।

इङ्गनम् [इङ्ग् + ल्युट्] 1 हिलना डुलना, कांपना 2 ज्ञान दे० इग

इङ्गितम् [इङ्ग् + क्त] 1 धड़कना, हिलना 2 आन्तरिक विचार इरादा प्रयोजन आकारसदृशेङ्गित: —कु० ... अवगच्छति मूढचेतनः ... कु० ५।६२, रघु० १।२०, हि० १।४४ 3 इशारा संकेत अंगविक्षेप ... 4 शरीर के विभिन्न अंगों की चेष्टा जो आन्तरिक इरादों का आभास देती है अंगविक्षेप आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने में सक्षम है आकारैरिङ्गितैर्गत्या ... गृह्यतेऽन्तर्गतं मन: मनु० ८।२६ । सम० —कोविद, —ज्ञ (वि०) बाहरी अंगचेष्टाओं के द्वारा आन्तरिक मनोभावों की व्याख्या करने में कुशल, संकेतों को जानने वाला ।

इङ्गुद,—दी [इङ्ग + उ ... इङ्ग् ...] एक औषधि का वृक्ष हिंगोट का वृक्ष ... —इङ्गुदीपादपः संश्रयस्ते उत्तर० १।१६ —दम् इंगुदी का फल ।

इच्छा [इष् + श + टाप्] 1 कामना, अभिलाषा रुचि इच्छया रुचि के अनुसार 2 (गणित में) प्रश्न या समस्या 3 (व्या० में) सन्नन्त का रूप । सम० —आप्तम् अभिलाषा का पूर्ण होना, —निवृत्ति: (स्त्री०) कामनाओं की शान्ति, सांसारिक इच्छाओं के प्रति उदासीनता —फलम् किसी प्रश्न या समस्या का समाधान —रतम् अभिलषित रत्न ... —वसु: कुबेर —संपद् (स्त्री०) किसी की कामनाओं का पूर्ण होना ।

इज्य: [यज् + क्यप्] 1 अध्यापक 2 देवों के अध्यापक बृहस्पति की उपाधि ।

इज्या [इज्य + टाप्] 1 यज्ञ जगत्प्रकाशं तदशेषमिज्यया —रघु० ३।४८ १।६८, १५।२, 2 उपहार, दान 3

प्रतिमा 4 कुट्टिनी, दूतिका, गाय। सम० - शील सदा यज्ञ करने वाला।

इच्चरः [इषा कामेन चरति —इष्+क्विप् इट्+चर्+अच्] बैल या बछड़ा जो स्वच्छन्दता पूर्वक घूमने के लिए छोड़ दिया जाय।

इडा-ळा [इल्+अच्, लस्य डत्वम्] 1 पृथ्वी 2 भाषण 3 आहार 4 गाय 5 एक देवी का नाम, मनु की पुत्री 6 बुध की पत्नी तथा पुरूरवा की माता।

इडिका [इडा+क इत्वम्] पृथ्वी।

इतर (सा० वि०) (स्त्री० रा नपु० रत्) [इना कामेन तर —इति ? + अप्] 1 अन्य, दूसरा, दो में से अवशिष्ट इतरा दहने स्वकर्मणाम् रघु० १।२८ अने० पा० 2 शेष या दूसरे (ब० व०) 3 दूसरा से भिन्न (अपा० के साथ) इतरतापशतानि यथेच्छया वितर तानि सहे चतुरानन उद्भट, इतरो रावणादेष राघवानुचरो यदि —भट्टि० ८।१०६ 4 निराधो या तो अकेला स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त होता है अथवा विशे षण के साथ, या समास के अन्त में अक्षमालातरांशि च रामा०, विजयायेतराय वा महा० इसी प्रकार दक्षिण (बायां) वाम (दायां) आदि 5 नीच अधम, गवार सामान्य—इतर इव परिभूय ज्ञान मन्मथेन अतीकृत —का०—१५९। सम० —इतर (सा० वि०) पारस्परिक, स्व-स्व, अन्योन्य आश्रयः— पारस्परिक निर्भरता, अन्योन्य संबंध योगः 1. पारस्परिक संबंध या मेल, शि० १०।२४, 2 द्वन्द्व समास का एक प्रकार (विप० समाहार द्वन्द्व) जहाँ कि प्रत्येक अंग पृथक् रूप से देखा जाता है।

इतरतः, इतरत्र (अव्य०) [इतर+तसिल्, त्रल् वा] अन्यथा, उससे भिन्न, अन्यत्र दे० अन्यत, अन्यत्र।

इतरथा (अव्य०) [इतर+थाल्] 1 अन्य रीति से, और ढंग से 2 प्रतिकूल रीति से 3 दूसरी ओर।

इतरेद्युः (अव्य०) [इतर+एद्युस्] अन्य दिन, दूसरे दिन।

इतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1 अत, यहाँ से इधर से, 2 इस व्यक्ति से, मुझ से —इत स दैत्य प्राप्तश्रीर्नेत एवार्हति क्षयम् कु० २।२५ 3 इस दिशा में, मेरी ओर, यहाँ—इतो निषीदेति विसृष्ट भूमि —कु० ३।२, प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात् —रघु० २।३४, इत इतो देव —इधर इस ओर महा राज (नाटकों में) 4 इस लोक से, 5 इस समय से, इतः—इतः —एक ओर—दूसरी ओर या एक स्थान में—दूसरे स्थान पर, यहाँ—वहाँ।

इति (अव्य०) [इ+क्तिन्] 1 यह अव्यय प्राय किसी के द्वारा बोले गये, या बोले समझे गये शब्दों को वैसा का वैसा ही रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिसको कि हम अंग्रेजी में अवतरणांश चिन्हों द्वारा प्रकट करते हैं, इस प्रकार कही गई बात हो सकती है (क) एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया गया हो (शब्दस्वरूपद्योतक) —राम रामेति रामेति कूजन्तं मधुराक्षर—रामा०, अतएव नविस्याह – भर्तृ०, (ख) या कोई प्रातिपदिक जो कि अपने अर्थों को संकेतित करने के लिए कर्तृकारक में प्रयुक्त होता है (प्रातिपदिकार्थद्योतक) —वय-मित्यवादि-यवधारित पुरा ` कमादम् नारद इत्य-बोधि स शि० १।३, अवैमि चैनामनघेति—रघु० १४।४०, दिलीप इति राजेन्दु —रघु० १।१२, (ग) या पूरा वाक्य जब कि इति शब्द वाक्य के केवल अन्त में ही प्रयुक्त किया जाता है (वाक्यार्थद्योतक) ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाक इति शि० १।१३ 2 इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त 'इति' के निम्नांकित अर्थ हैं (क) 'क्योंकि', 'चूंकि', 'कारण यह कि' आदि शब्दों से व्यक्तीकरण—वैदेशिका इति पृच्छामि उत्तर० १ पुराणमित्येव न साधु सर्वम् मालवि० १।२ प्राय किम् के साथ (ख) अभिप्राय या प्रयोजन रघु० १।३७ (ग) उपसंहार द्योतक (विप० अथ) इति प्रथमोऽङ्कः —यहाँ प्रथम अंक का उपसंहार होता है (घ) अत, इस प्रकार इस रीति से- इत्युक्तवन्तं परिरभ्य दोर्भ्याम्— कि० ११।८० (ङ) इस स्वभाव या विवरण वाला—गौरवं पुरुषा इत्यनीतिज्ञानि (च) जैसा कि नीचे है, —ध लिखे परिमाणानुसार रामाभिधानो हरिरित्युवाच —रघु० १३।१ (छ) जहाँ तक, की हैसियत से, के विषय में (पारिता और संबंध प्रकट करते हुए)— पिंगेति स पूज्य, अध्यापक इति निन्द्य, शीघ्रमिति सुकरम्, निभृतमिति चिन्तनीय भवेत् —श० ३ (ज) निदर्शन (प्राय 'आदि' के साथ) इन्दुरिन्दुरिव श्रीमानित्यादौ तदनन्वय —चन्द्रा० गौ शुक्लश्चलो डित्थ इत्यादौ—काव्य० २, (झ) मानी हुई सम्मति या उद्धरण— इति पाणिनि इत्यापिशलि इत्यमर विश्व आदि (ञ) स्पष्टीकरण। सम० —अर्थः भावार्थ, सार, —अर्थम् (अव्य०) इस प्रयोजन के लिए, अत, —कथा अर्थहीन या निरर्थक बात, —कर्तव्य, —करणीय (वि०) नियमत उचित या आवश्यक (—व्यम्, —यम्) कर्तव्य, दायित्व, °ता, —कार्यता, —कृत्यता कोई भी उचित या आवश्यक कार्य —कर्तव्यतामूढ़ः कि कर्तव्य विमूढ़, असमंजस में पड़ा हुआ, व्याकुल, हतबुद्धि, —भाव (वि०) इतने विस्तार वाला, या ऐसे गुण का —वृत्तम् 1 घटना, बात 2 कथा, कहानी।

इतिह (अव्य०) [इति एव ह किल —द्व० स०] ठीक इस प्रकार, बिल्कुल परंपरा के अनुरूप।

इतिहासः [इति+ह+आस (अस् धातु, लिट् लकार, अन्य पु०, ए० व०)] 1. इतिहास (परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह)—धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्, पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते । 2. वीरगाथा (जैसा कि महाभारत) 3. ऐतिहासिक साक्ष्य, परंपरा (जिसको पौराणिक एक प्रमाण मानते हैं) । सम०—निबन्धनम्—कथाख्यानयुक्त या वर्णनात्मक रचना ।

इत्थम् (अव्य०) [इदम्+थमु] इस लिए, अत, इस रीति से—इत्थं रते किमपि भूतमदृश्यरूपम्—कु० ४।४५, इत्थं गते—इन परिस्थितियों के कारण । सम०—कारम् (अव्य०) इस प्रकार,—भूत (वि०) 1 इस प्रकार परिस्थितियों में फंसा हुआ, ऐसी दशा में ग्रस्त—कु० ५।२६ कथमित्थंभूता—मालवि० ५ का० १४१, 2. सच्चा, यथातथ्य, सही (जैसे कि कहानी),—विध (वि०) 1 इस प्रकार का 2 इस प्रकार के गुणों से युक्त ।

इत्य (वि०) [इण्+क्यप्, तुक्] जिसके पास जाया जाय, जहाँ पहुँचना उपयुक्त हो—इत्यः शिष्येण गुरुः,—त्या 1. यात्रा, मार्ग 2. डोली, पालकी ।

इत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [इण्+क्वरप्, तुक्] 1 जाने वाला, यात्रा करने वाला, यात्री 2 क्रूर, कठोर 3. नीच, अधम 4. वंचित, निर्धन 5 निर्धन,—रः हिजड़ा,—री 1. अभिसारिणी, कुलटा 2. अभिसारिका ।

इदम् (सा० वि०)[पु०—अयम्, स्त्री०—इयम्, नपुं०—इदम्] [इन्द्+कमिन्] 1. यह—जो यहाँ है (वक्ता के निकट की वस्तु की ओर संकेत करते हुए—इदमस्तु संनिकृष्टं रूपम्) इदं तत्… इति यदुच्यते—श० ५, यह है कमल की सफलता 2 उपस्थित, वर्तमान ('यहाँ' की भावना को प्रकट करने के लिए कर्तृकारक के रूप प्रयुक्त किये जाते हैं—इयमस्मि—यह रही मैं, इसी प्रकार,—इमे स्मः, अयमागच्छामि—यह मैं आता हूँ) 3. यह शब्द तुरन्त ही बाद में आने वाली वस्तु की ओर संकेत करता है जब कि 'एतद्' शब्द पूर्ववर्ती वस्तु की ओर अनुकल्पस्तत्वयं ज्ञेयः सदा सद्भिरनुष्ठितः—मनु० ३।१४७ (अयम् = वक्ष्यमाणः—कुल्लू०) भूर्लोकमिदमूचुः—4. किसी वस्तु को अधिक स्पष्टतया या बलपूर्वक बतलाने या कई बार अवमाविषय प्रकट करने के लिए यह शब्द यत्, तत्, एतद्, अदस्, किम् अथवा किसी पुरुषवाचक सर्वनाम के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है—कोऽयमारादितरश्मितम्—श० ११२५, सेयम्, सोऽयम्—यह वही,—अयमहं भोः—श०, ४, अरे यहाँ तो मैं हूँ ।

इदानीम् (अव्य०) [इदम्+दानीम्, इश् च] अब, इस समय, इस विषय में, अभी, अब भी—वत्से प्रतिष्ठस्वेदानीम् श० ४, आर्यपुत्र इदानीमसि—उत्तर० ३, इदानीमेव—अभी, इदानीमपि—अब भी, इस विषय में भी ।

इदानीन्तन (वि०) (स्त्री०—नी) वर्तमान, क्षणिक, वर्तमान कालिक ।

इद्ध (भू० क० कृ०) [इन्ध्+क्त] जला हुआ, प्रकाशित—द्धम् 1 धूप, गर्मी 2 दीप्ति, चमक 3 आश्चर्य ।

इध्मः, इध्मम् [इध्यतेऽग्निरनेन इन्ध्+मक्] ईंधन, विशेषकर वह जो यज्ञाग्नि में काम आता है रघु० १४।७०, । सम०—जिह्वः अग्नि—प्रवश्चनः कुल्हाड़ी कुठार (परशु) ।

इध्या [इन्ध्+क्यप्+टाप्] प्रज्वलन प्रकाशन ।

इन (वि०) [इण्+नक्] 1 योग्य, शक्ति शाली बलवान् 2 साहसी—नः 1 स्वामी 2 सूर्य—शि० २।१५ 3 राजा—न न महीनमहीनपराक्रमम्—रघु० ९।५ ।

इन्दिन्दिरः [इन्द्+किरच् नि०] बड़ी मधु-मक्खी—उन्मद्रिन्दिन्दिरेषु निपतत्सु—भामि० २।१८३ ।

इन्दिरा [इन्द्+किरच्] लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी । सम०—आलयम् इन्दिरा का आवास, नील कमल—आलयः विष्णु का विशेषण (—यम्) नील-कमल ।

इन्दीवरिणी [इन्दीवर+इनि+ङीप्] नील-कमलों का समूह ।

इन्दीवारः [इंदा वारा वरणम् अत्र ब० स०] नील कमल ।

इन्दुः [उनत्ति क्लेदयति चन्द्रिकया भुवनम्—उन्द्+उ आदेरिच्च] 1 चन्द्रमा दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव—रघु० १।१२, 2 (गणित में) एक की संख्या 3 कपूर । सम०—कमलम् सफेद कमल,—कला चन्द्रमा की कला या अंश (यह कलाएं गिनती में १६ हैं, पौराणिक कथाओं के आधार पर इनमें से प्रत्येक कला क्रमशः १६ देवताओं के द्वारा निगली जाती है)—कलिका 1 केतकी का पौधा 2 चन्द्रमा की एक कला,—कान्तः चन्द्रकान्तमणि (—ता) रात,—क्षयः 1 चन्द्रमा का प्रतिदिन घटना 2 नूतन-चन्द्र दिवस, प्रतिपदा,—जः,—पुत्रः बुधग्रह (—जा) रेवा या नर्मदा नदी,—जनकः समुद्र,—दलः चन्द्रमा की कला, अर्धचन्द्र,—भा कुमुदिनी,—भृत्,—शेखरः,—मौलिः मस्तक पर चन्द्र को धारण करने वाला देवता, शिव,—मणिः चन्द्रकान्तमणि,—मंडलम् चन्द्रमा का परिवेश, चन्द्र मण्डल,—रत्नम्—मोती,—लेखा (रे) चन्द्रमा की कला,—लोहकम्,—लौहम् चाँदी,—वदना छन्द का नाम दे० परिशिष्ट,—वासरः सोमवार ।

इन्दुमती [इन्दु+मतुप्+ङीप्] 1 पूर्णिमा 2. 'अज' की पत्नी, 'भोज' की बहन ।

इन्दुरः [इन्दु+र पृषो० अत्वम्] चूहा, मूसा।

इन्द्रः [इन्द्+रन्, इन्दतीति इन्द्रः, इदि ऐश्वर्ये- मल्लि०] 1. देवों का स्वामी 2. वर्षा का देवता, वृष्टि 3. स्वामी या शासक (मनुष्यादिक का), प्रथम, श्रेष्ठ (पदार्थों के किसी वर्ग में), सदैव समास के अन्तिम पद के रूप में, नरेन्द्र -मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा इसी प्रकार मृगेन्द्र-शेर, —गजेन्द्र, योगीन्द्र, कपीन्द्र, —द्रा इन्द्र की पत्नी, इन्द्राणी (अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र भारतीय आर्यों का वृष्टि-देवता है, वेदों में प्रथम श्रेणी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता है, परन्तु पुराणों की दृष्टि से यह द्वितीय श्रेणी के देवता माने जाते हैं। यह कश्यप और अदिति के एक पुत्र हैं। ब्रह्मा विष्णु और महेश के त्रिक से यह निम्नतर है, परन्तु यह और दूसरे देवताओं में प्रमुख हैं और सामान्यतः इन्हें सुरेश या देवेन्द्र आदि नामों से पुकारा जाता है। जैसा कि वेदों में वर्णित है उसी प्रकार पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष तथा पूर्व दिशा के अधिष्ठातृ देवता माने जाते हैं, इनका लोक स्वर्ग कहलाता है। यह वज्र धारण करते हैं, बिजली को भेजते हैं और वर्षा करते हैं, यह असुरों के साथ प्राय युद्ध में लगे रहते हैं और उनको भयभीत करते रहते हैं, परन्तु कई बार उनसे पराजित भी हो जाते हैं। पुराणों में वर्णित इन्द्र कामकता और व्यभिचार के लिए प्रख्यात हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण उनके द्वारा गौतम की पत्नी अहल्या का सतीत्वहरण है जिसके कारण इन्द्र अहल्या-जार कहलाता है। गौतम ऋषि के शाप से इन्द्र के शरीर पर स्त्री-योनि जैसे हजार चिह्न बन जाते हैं इसीलिए उसे सयोनि कहते हैं, परन्तु बाद में यह चिह्न 'आँख' के रूप में बदल जाते हैं इस लिए यह सहस्रनेत्र, सहस्रयोनि या सहस्राक्ष कहलाने लगते हैं। रामायण में वर्णन आता है कि रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को पराजित कर दिया तथा वह उसे उठा कर लंका में ले गया, इसी साहसिक कार्य करने के उपलक्ष में मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि मिली। ब्रह्मा तथा दूसरे देवताओं के बीच में पड़ने पर कहीं इन्द्र का छुटकारा हुआ। इन्द्र के विषय में बहुधा वर्णन मिलता है कि वह सदैव राजाओं को १०० यज्ञ पूरा करने से रोकता रहता है, क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि जो कोई १०० यज्ञ पूरा कर लेगा, वही इन्द्र का पद प्राप्त कर लेगा, यही कारण है कि वह सगर और रघु के यज्ञीय घोड़ों को उठा कर ले गया, दे० रघु० तृतीय सर्ग। वह सदैव घोर तपश्चर्या करने वाले ऋषि-मुनियों से भयभीत रहता है और अप्सराएँ भेज कर उनके मार्ग में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है (दे० अप्सरस्)। कहा जाता है कि उसने पर्वत के पंख काट डाले जब कि वह कष्ट देने लगे थे। उसी समय उसने बल तथा वृत्र की हत्या कर दी। इनकी पत्नी पुलोमा राक्षस की पुत्री है इनके पुत्र का नाम जयन्त है। यह अर्जुन के पिता भी कहे जाते हैं)। सम० —अनुजः, —अवरजः विष्णु और नारायण की उपाधि, —अरिः एक राक्षस —आयुधम् इन्द्र का शस्त्र, इन्द्रधनुष् रघु० ३।४, —कीलः —1. 'मंदर' पर्वत का नाम 2 चट्टान (—लम्) इन्द्र की ध्वजा, —कुञ्जरः इन्द्र का हाथी, ऐरावत —कूटः एक पर्वत का नाम —कोशः (षः), —षकः 1 कोच, सोफा 2 प्लैटफार्म या समतल बना चबूतरा 3 खूंटी या ब्रैकेट जो दीवार के साथ लगा हो, —गिरिः महेन्द्र पर्वत —गुरुः, —आचार्यः इन्द्र का अध्यापक, अर्थात् बृहस्पति, —गोपः, —गोपकः एक प्रकार का कीड़ा जो सफेद या लाल रंग का होता है, —चापम्, —धनुस् (नपुं०) 1 इन्द्रधनुष 2 इन्द्र की कमान —जालम् 1 एक शस्त्र जिसे अर्जुन ने प्रयुक्त किया था, युद्ध का दाँवपेंच 2 जादूगरी बाजीगरी —स्वप्नेन्द्रजालसदृशः खलु जीवलोकः शा० ४।२, —जालिक (वि०) छलपूर्ण, अवास्तविक, भ्रमात्मक (—कः) बाजीगर, जादूगर, —जित् (पुं०) इन्द्र को जीतने वाला रावण का पुत्र जो लक्ष्मण के द्वारा मारा गया (रावण के पुत्र मेघनाद का दूसरा नाम 'इन्द्रजित्' है। जब रावण ने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से युद्ध किया तो मेघनाद उसके साथ था - वह बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा। 'शिव' से अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण मेघनाद ने अपनी इस जादू की शक्ति का उपयोग किया, फलतः इन्द्र को बाँध कर वह उसे लंका में उठा लाया। ब्रह्मा तथा अन्य देवता उसे मुक्त कराने के लिए आये और उन्होंने मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि दी, परन्तु मेघनाद इन्द्र को मुक्त करने के लिए राजी न हुआ जब तक कि उसे 'अमरता' का वरदान न दिया जाय। ब्रह्मा ने उसकी इस अनुचित माँग को मानने से इंकार कर दिया, परन्तु मेघनाद अपनी माँग का निरन्तर आग्रह करता रहा और अन्त में अपना अभीष्ट प्राप्त कर लिया। रामायण में लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का सिर काटे जाने का वर्णन है जब कि वह यज्ञ कर रहा था) —हन्तृ, —विजयिन् (पुं०) लक्ष्मण, —तूलम्, —तूलकम् रुई का गद्दा, —दारुः देवदारु का वृक्ष, —नीलः नीलकान्तमणि, —नीलकः पन्ना —पत्नी इन्द्र की पत्नी शची, —पुरोहितः बृहस्पति —प्रस्थम् यमुना के किनारे स्थित एक नगर जहाँ पांडव रहते थे (यही नगर आज कल वर्तमान दिल्ली है)। —इन्द्रप्रस्थगमस्तावत्कारि मा सन्तु चेदयः —शि० २।६३, —प्रहरणम् इन्द्र का शस्त्र, वज्र, —भेषजम्

सोंठ,—**महः** 1. इन्द्र के सम्मान में किया जाने वाला उत्सव 2. बरसात,—**लोकः** इन्द्र का संसार, स्वर्गलोक, —**वंशा**,—**वज्रा** दो छंदों के नाम दे० परिशिष्ट, —**शत्रुः** 1 इन्द्र का शत्रु या इन्द्र को मारने वाला (जब कि स्वराघात अन्तिम स्वर पर है), प्रह्लाद की उपाधि,—रघु० ७।३५, 2 इन्द्र जिसका शत्रु है, वृत्र का विशेषण (जब कि स्वराघात प्रथम स्वर पर है) [यह घटना शतपथ ब्राह्मण के एक उपाख्यान की ओर संकेत करती है, यहाँ बतलाया गया है कि वृत्र के पिता ने अपने पुत्र को इन्द्र के मारने वाला बनाने का विचार किया और उसे "इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व" बोलने को कहा, परन्तु भूल से उसने प्रथम स्वर पर बलाघात किया और इन्द्र के द्वारा मारा गया - तु० शिक्षा—५२—मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह, स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ।] **—गोपः** एक प्रकार का कीड़ा, बीरबहूटी, **—सुतः**,—**सूनुः** (क) जयन्त का नाम (ख) अर्जुन का नाम (ग) वानरराज बालि का नाम —**सेनानीः** इन्द्र की सेनाओं का नेता, कार्तिकेय की उपाधि ।

इन्द्रकम् [इन्द्रस्य राज्ञः कं सुखं यत्र—तारा०] सभा-भवन बड़ा कमरा ।

इन्द्राणी [इन्द्रस्य पत्नी आनुक् + ङीप्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

इन्द्रियम् [इन्द्र + घ—इय] 1 बल, शक्ति (वह गुण जो इन्द्र में विद्यमान था) 2 शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, ऐसे अवयव (इन्द्रियाँ) दो प्रकार के हैं (क) ज्ञानेन्द्रियाँ या बुद्धीन्द्रियाँ - श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी (कुछ के अनुसार 'मन' भी) (ख) कर्मेन्द्रियाँ - पायूपस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता मनु० २।९९, 3 शारीरिक या पुरुषोचित शक्ति, ज्ञानशक्ति 4 वीर्य 5 पाँच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति । सम०- **अगोचर** (वि०) जो दिखलाई न दे सके, - **अर्थः** 1 इन्द्रियों के विषय (वह विषय ये हैं — रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी—अमर०), भग० ३।३४, रघु० १४।२५,—**आयतनम्** इन्द्रियों का आवास अर्थात् शरीर,—**गोचर** (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा देखा या जाना जा सके (—रः) ज्ञान का विषय, **—ग्रामः**, **—वर्गः** इन्द्रियों का समूह, समष्टि रूप से ग्रहण की गई पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति —मनु० २।२१५, **निर्जितवार** मधुनीन्द्रियवर्गे —शि० १०।३, —**ज्ञानम्** चेतना, प्रत्यक्ष करने की शक्ति, **निग्रहः** ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण, **—वधः** अचेतता,- **विप्रतिपत्तिः** (स्त्री०) इन्द्रियों का उन्मार्गगमन,—**संनिकर्षः** ज्ञानेन्द्रिय का संपर्क (चाहे वह बाह्य विषयों से हो या मन से)—**स्वापः** अचेतता, अचेतना, जड़िमा ।

इन्ध् (रु० आ०) (इंद्धे या इंधे, इद्ध) प्रज्वलित करना, जलाना, आग लगाना, (कर्मवा०—इध्यते) जलाया जाना, प्रदीप्त होना लपटें उठना, **सम्**—, प्रज्वलित करना ।

इन्धः [इन्ध् + घञ्] ईंधन, (लकड़ी कोयला आदि) ।

इन्धनम् [इन्ध् + ल्युट्] 1 प्रज्वलित करना, जलाना 2 ईंधन (लकड़ी आदि) ।

इभः [इ + भन्, किच्च] हाथी,—**भी** हथिनी । सम० —**अरिः** सिंह, —**आननः** गणेश तु० 'गजानन'—**निमीलिका** चतुराई, बुद्धिमत्ता, सतर्कता,—**पालकः** महावत, —**पोटा** अल्पवयस्का हथिनी, **पोतः** अल्पवयस्क हाथी, हाथी का बच्चा, **युवतिः** (स्त्री०) हथिनी ।

इभ्य (वि०) [इभं गजमर्हति यत्] धनाढ्य, धनवान् —**भ्यः** 1 राजा 2 महावत,—**भ्या** हथिनी ।

इम्यक (वि०) [स्वार्थे कन्] धनाढ्य, धनी ।

इयत् (वि०) [इदम् + वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने विस्तार का —इयन्त्यायुः दश० ९६, इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रम् रघु० १३।६७, इतने वर्ष—इय नीतिरितीयती—शि० २।३०, इतनी ।

इयत्ता, **इयत्त्वम्** [इयत् + तल् + टाप्, त्वल् वा] 1 (क) इतना, निश्चित माप या परिमाण- ईयत्तया रूपमियत्तया वा —रघु० १३।५, न ···यस्य परिच्छेदमियत्तयालम्—६।७७ (ख) सीमित संख्या, सीमा —न गुणानामियत्तया रघु० १०।३२, 2 सीमा, मानक ।

इरणम् [ऋ + अण् पृषो०] 1 मरुस्थल 2 रिहाली या ऊसर भूमि, बंजर भूमि, तु० 'इरिण' ।

इरम्मदः [इरया जलेन माद्यति वर्धते इति इरा मद् - खश् मुम्] 1 बिजली की कौंध, बिजली के गिरने से पैदा हुई आग, 2 बाडवानल ।

इरा [इ + रन्, इं कामं राति -रा + क वा तारा०] 1 पृथ्वी 2 वक्तृता 3 वाणी की देवता सरस्वती 4 जल 5 आहार 6 मदिरा । सम० —**ईशः** वरुण विष्णु, गणेश,—**चरम्** ओला, इसी प्रकार 'इराम्बरम्' ।

इरावत् (पुं०) [इरा + मतुप्] समुद्र ।

इरिणम् [ऋ + इनन्, किच्च] ऊसर भूमि, रिहाली जमीन ।

इर्विलु -रु (वि०) [उर्व + आरु, पृषो०] नाशक, हिंसक —**रुः** (पुं० स्त्री०) ककड़ी ।

इल् (तु० पर०) (इलति, इलित) या (चु० उभ०) 1 जाना, चलना-फिरना 2 सोना 3 फेंकना, भेजना, डालना ।

इला [इल + क + टाप्] 1 पृथ्वी 2 गाय 3 वक्तृता —दे० 'इडा' । सम० —**गोलः**, —**लम्** पृथ्वी, धरती भूमंडल,—**धरः** पहाड़ ।

इलिका [इला + कन् इत्वम्] पृथ्वी, धरती।

इल्वका का (ब० व०) [इल् + वल, इल् + क्विप् + वलच् वा] मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर स्थित पाँच तारे।

इव (अव्य०) [इ + क्वन् बा०] 1 की तरह, जैसा कि (उपमा दर्शाते हुए) वागर्थाविव संपृक्तौ—रघु० १।१ 2 मानो, (उत्प्रेक्षा को दर्शाते हुए) पश्यामीव पिनाकिनम् श० १।६ लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः मृच्छ० १।३४ 3 कुछ, थोड़ा सा, कदाचित् कडार इवायम् गण० 4 (प्रश्न वाचक शब्दों से जुड़े हुए) संभवतः बतलाइये तो 'निस्सन्देह'—विना मीनं दक्षा किमिव हि न तुष्ट्य रघु [illegible] उत्तर० ६।३० क इव किस प्रकार का 'किस भांति का' [illegible]—केवल क्षण भर के लिए, किंचित्—क्षण भर थोड़ा सा, इसी प्रकार ईषदिव नातिदूरमिव आदि।

इवीलिका इलीका।

इष् I (तुदा० पर०) (इच्छति इष्ट) 1 कामना करना चाहना [illegible] इच्छा होना इच्छामि नव [illegible] कु० [illegible] 2 खोजना 3 प्रयत्न करना [illegible] तलाश करना, ढूंढना 4 अनुकूल होना 5 [illegible] करना [illegible] देना (भा० व०) 1 चाहा जाना 2 [illegible] किया जाना [illegible] मनु० ८।२०० अनु ढूंढना कोशिश करना प्रयत्न करना अभि [illegible] करना चाहना, परि ढूंढना प्रति प्राप्त करना स्वीकार करना [illegible] श० ६ (ख) (दि० पर०) (इष्यति इषित) 1 जाना चलना फिरना 2 फैलाना 3 [illegible] फेंकना अनु ढूंढना, ढूंढने के लिए जाना न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् कु० ५।४५ प्र (प्राय पेर०) 1 भेज देना भगा देना, फेंक देना भट्टि० १४।३७ 2 भेजना प्रेषण करना—किमर्थमृषयः प्रेषिता स्युः श० ५ (ग) (क्रया० उभ०) (इष्णाति) जाना चलना फिरना अनु—अनुसरण करना।

इष [इष् + क] 1 बलशाली शक्ति संपन्न 2 आश्विन मास [illegible] शिव० ६।४९।

इषि (षी) का [इष् गत्यादौ क्वुन् अत इत्वम्] 1 सरकंडा, नरकुल, [illegible] रघु० १२।२३ 2 बाण।

इषिर: [इष् + किरच्] अग्नि।

इषु [इष् + उ] 1 बाण 2 पाँच की संख्या। सम०—अग्रम्, अनीकम् बाण की नोक, —असनम्, —अस्त्रम् धनुष्, रघु० ११।३७ —आसः 1 धनुष 2 धनुर्धर, योद्धा, भग० १।४, १७, —कारः, —कृत् (पुं०) बाण बनाने वाला —धरः —भृत् धनुर्धर, —पथः, विक्षेपः तीर जाने का स्थान बाण का परास, —प्रयोगः बाण छोड़ना, तीर चलाना।

इषुधिः [इषु + धा + कि] तरकस।

इष्ट (भू० क० कृ०) [इष् + क्त] 1 कामना किया गया, चाहा गया, जी से चाहा हुआ, अभिलषित 2 प्रिय पसंद किया गया अनुकूल प्यारा 3 पूज्य, आदरणीय 4 प्रतिष्ठित, सम्मानित 5 उत्सृष्ट, यज्ञों से पूजा गया —ष्टः प्रेमी, पति, —ष्टम् 1 चाह, इच्छा 2 संस्कार 3 यज्ञ (अव्य०) स्वेच्छापूर्वक। सम० अर्थः अभीष्ट पदार्थ, —आपत्तिः (स्त्री०) चाही हुई बात का होना, वादी का वक्तव्य जो प्रतिवादी के भी अनुकूल हो—इष्टापत्तौ दोषान्तरमाह [illegible], —गन्ध (वि०) सुगंधयुक्त (—न्धः) सुगंधित पदार्थ (—न्धम्) रेत, —देवः, —देवता अनुकूल देव अभिभावक देव।

इष्टका [इष् + तकन्] ईंट—मृच्छ० ३। सम०—गृहम् ईंटों का घर, —चित (वि०) ईंटों से बना (इष्टकचित भी), —न्यासः घर की नींव रखना —पथः ईंटों से बना मार्ग।

इष्टापूर्तम् [समाहार द्व० स० पूर्वपददीर्घ] यज्ञादिक पुण्य कार्यों का अनुष्ठान, कुएँ खोदना तथा दूसरे धर्मकार्यों का सम्पादन —इष्टापूर्तविधेः सपत्नशमनात् महावी० ३।१।

इष्टि (स्त्री०) [इष् + क्तिन्] 1 कामना, प्रार्थना, इच्छा 2 इच्छुक होना या कोशिश करना 3 अभीष्ट पदार्थ 4 अभीष्ट नियम या आवश्यकता की पूर्ति (भाष्यकार द्वारा कात्यायन के वार्तिकों अथवा पतञ्जलि के भाष्य में कुछ अतिरिक्त [illegible]—इष्टयो भाष्यकारस्य) तु० उपसंख्यानम् 5 [illegible] शीघ्रता 6 आमंत्रण, आदेश 7 यज्ञ। सम० —पचः कंजूस इसी प्रकार °मुष्, —पशुः यज्ञ में बलि दिया जाने वाला जानवर।

इष्टिका [इष्ट + तिकन् + टाप्] ईंट आदि, दे० 'इष्टका'।

इष्मः [इष् + मक्] 1 कामदेव 2 वसन्त ऋतु।

इष्यः —ष्यम् [इष् + क्यप्] वसन्त ऋतु।

इस् (अव्य०) [इ काम स्यति सो + क्विप् नि० ओलोप] क्रोध, पीड़ा और शोक की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

इह (अव्य०) [इदम् + ह इशादेश] 1 यहाँ (काल, स्थान या दिशा की ओर संकेत करते हुए), इस स्थान पर, इस दशा में 2 इस लोक में (विप० परत्र या अमुत्र)। सम०—अमुत्र (अव्य०) इस लोक में और परलोक में यहाँ और वहाँ, —लोकः यह संसार या जीवन, —स्थ (वि०) यहाँ विद्यमान।

इहत्य (वि०) [इह + त्यप्] यहाँ रहने वाला, इस स्थान का, इस लोक का।

ई

ई: (पुं०) [ई - क्विप्] कामदेव (अव्य०) (क) खिन्नता (ख) पीड़ा (ग) शोक (घ) क्रोध (ङ) अनुकंपा (च) प्रत्यक्षज्ञान या चेतना (छ) तथा संबोधन की भावना को अभिव्यक्त करने वाला [illegible] यादिद्योतक अव्यय।

ई (क) (दिवा० आ०) (ईयते) जाना (ख) (अदा० पर०) 1 जाना 2 चमकना 3 व्याप्त होना 4 चाहना कामना करना 5 फेंकना 6 खाना 7 प्रार्थना करना (आ०) 8 गर्भवती होना।

ईक्ष् (भ्वा० आ०) (ईक्षते, ईक्षित) 1 देखना, ताकना, आलोचना करना, अवलोकन करना, टकटकी लगा कर देखना या घूरना 2 ख्याल रखना, विचारना, समझना — सर्वभूतस्थमात्मानं [illegible] ईक्षते योगयुक्तात्मा [illegible] 3 हिसाब में लगाना, परवाह करना — [illegible] 4 भावना, विचार करना [illegible] 5 सावधान रहना या किसी के [illegible] (सम्प्र० के साथ) [illegible] अभि [illegible] कुहकचकितो [illegible] अव, ध्यान से देखना [illegible] ढूँढना, ढूँढ-भाल करना, अप— 1 प्रतीक्षा करना, इन्तज़ार करना [illegible] कु० [illegible] 2 आवश्यकता होना, [illegible] होना [illegible] 3 [illegible] सा० द० [illegible] हिसाब में लगाना [illegible] करना, आदर करना [illegible] अभिवि— [illegible] देखना, अव—, 1 दृष्टि डालना, [illegible] करना 2 [illegible] लगाना [illegible] करना [illegible] ८।६० [illegible] रक्षा करना [illegible] 4 भावना, विचारना [illegible] उद्—, 1 देखना, खोजना, [illegible] मुखीमिव [illegible] कु० [illegible] 2 प्रतीक्षा करना [illegible] कुमारी [illegible] उप—, 1 ध्यान न देना, [illegible] उत्प्रेक्षमाणा जघनाभिघातम् — मुद्रा० २, 2 अनुमान लगाना, अंदाज करना — किमुत्प्रेक्षसे कुतस्त्योऽयमिति — उत्तर० ४, 3 विश्वास करना, सोचना — उत्प्रेक्षामो [illegible] उद्वि—, ऊपर ताकना [illegible] उप—, 1 अवहेलना करना, नजर अंदाज करना, परवाह न करना, — उपेक्षा [illegible] — कु० [illegible] रघु० [illegible] 2 भाग जाने देना, जाने देना [illegible] 3 ध्यान से देखना, विचारना निर्—, 1 टकटकी लगाकर देखना [illegible] देखना, [illegible] रघु० [illegible] 2 ढूँढना, खोजना [illegible] परि—, 1 ध्यान करना, [illegible] 2 परखना, परीक्षा करना, जाँच करना [illegible] रघु० [illegible] प्रति—, [illegible] प्रतीक्षा करना [illegible] प्रत्यव— [illegible] सम्—, 1 देखना, [illegible] 2 [illegible] समीक्ष्य [illegible] 3 ध्यानपूर्वक जाँचना [illegible] समव— 1 देखना, निरीक्षण करना, 2 सोचना [illegible] ... कु० [illegible]

ईक्षक [illegible] दर्शक।

ईक्षणम् [ईक्ष् + ल्युट्] 1 देखना, ताकना 2 दृष्टि, दृश्य 3 आँख [illegible] रघु० [illegible]

ईक्षणिकः [ईक्षण + ठन्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता।

ईक्षित [ईक्ष् + णिच्] देखना, दृष्टि — ईक्षितेनिर्वाच्यम् [illegible]

ईख [ईख् + अ + टाप्] 1 दृश्य 2. नजर डालना, विचार करना।

ईक्षिका [ईक्ष् + ण्वुल्, ईक्षा + कन् + टाप् वा इत्वम्] 1. आँख 2 झाँकना, झलक।

ईक्षित (भू० क० कृ०) [ईक्ष् + क्त] देखा हुआ, ताका हुआ, ख्याल किया हुआ —**तम्** 1 दृष्टि, दृश्य 2 आँख —अभिमुखं मयि [illegible] श० २।११।

ईख्, ईंख् (भ्वा० पर०) (ईखति, ईंखति) 1 जाना, हिलना-डुलना [illegible] प्रे० [illegible] 2 हिलाना, [illegible] भ्रमण कराना — [illegible] भट्टि० [illegible] प्रेङ्खद्[illegible] [illegible]

ईज्, इञ्ज् (भ्वा० आ०) 1 जाना 2 निंदा करना, कलंक लगाना।

ईड् (अदा० आ०) [illegible]

ईडा [ईड् + अ + टाप्] [illegible]

ईड्य [illegible]

ईति (स्त्री०) [illegible] [illegible] अनावृष्टि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] 4 युद्ध।

ईदृक्ष [illegible] [illegible]

ईदृश [illegible] (स्त्री०—शी) [ईदृश् [illegible]] इस प्रकार का, इस शक्ल का, ऐसे गुणों से युक्त।

ईप्सा [आप् + सन् + अ + टाप्] 1 [illegible] इच्छा 2 कामना [illegible]।

ईप्सित (वि०) [आप् + सन् + क्त] [illegible] प्रिय —**तम्** इच्छा, कामना।

ईप्सु (वि०) [आप् + सन् + उ] प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाला, प्राप्त करने की कामना या इच्छा करने वाला (कर्म० और तुमु० के साथ परन्तु प्रायः समास में) मोक्षधर्मार्थ[illegible] रघु० [illegible]

ईर् (अदा० आ०) (ईर्ते ईर्णे) (भ्वा० पर० भी) (क्तान्त ईर्ण) 1 जाना, हिलना डुलना, हिलाना (सक० भी) 2 उठना, निकलना, उगना, (चुरा० — उभ०) या प्रेर० (ईरयति, ईरते) 1 फेंकना, छोड़ना, (तीर) चलाना, डालना [illegible] महाद्रुमम् —भट्टि० १५।५२ 2 कहना, उच्चारण करना, दोहराना — इतीरयन्तीव तया निरैक्षि — नै० १४।२१, शि० १।६९, कि० १।२६, रघु० ९।८, मा० १।२५ 3 चलाना, हिलना-डुलना, हिलाना — वातेरितपल्लवाङ्गुलिभिः — श० १ 4 नियुक्त करना, काम लेना, उद् —, उठना (प्रेर०) 1 कहना, उच्चारण करना, [illegible] करना, बोलना [illegible] — रघु० १।६३ [illegible] 2 [illegible] [illegible] रघु० ८।६२ 3 [illegible] आदि) [illegible] 4 [illegible] आदि) उठना 5 [illegible] करना, प्रकाशित [illegible] **प्र** 1 डालना, [illegible] 2 प्रेरित [illegible] [illegible] 3 चमकाना, भड़काना, [illegible] **सम्** — 1 [illegible] 2 हिलाना, हिलना-डुलना [illegible]

ईरण [illegible] **—णम्** 1 [illegible] करने वाला, [illegible] 2 [illegible] जाने वाला 3 [illegible]।

ईरिण [illegible] **—णम्** ऊसर, [illegible]

ईर्क्ष् [illegible]

ईर्षा [illegible] [illegible]

ईर्ष्या [illegible] [illegible] पुल्लिङ्ग [illegible] के रूप में, इसी [illegible]

ईर्ष्यालु [illegible] [illegible] ककड़ी।

ईर्ष् [illegible] (भ्वा० पर०) [illegible] (ईर्ष्यति) डाह करना, [illegible] दूसरों की [illegible] को देखकर असहिष्णु होना [illegible] ईर्ष्यति — सिद्धा०, [illegible]

ईर्षा, ईर्ष्या, ईर्ष्यक (वि०) [ईर्ष्य् + अच्, उण्, ण्वुल् वा] [illegible]

ईर्ष्या, ईर्षा [illegible] डाह, [illegible] दूसरों की [illegible] को देखकर जलन पैदा [illegible]

ईर्ष्यालु, ईर्ष्यु [illegible] [ईर्ष्य् + आलुच्, उ वा] [illegible]

ईलि [illegible] एक हथियार, [illegible] तलवार।

ईश् (अदा० आ०) (ईष्टे, ईशिते) 1 [illegible] करना, स्वामी होना, शासन करना, आदेश देना (सब० के साथ) —अर्थानामीशिषे त्वं वयमपि च गिरामीश्महे यावदर्थम् — भर्तृ० ३।३० 2. योग्य होना, शक्ति रखना, (तुम् के साथ) माथुरमीष्टे हरिणान् ग्रहीतुम् — रघु० १८।१३, 3 स्वामी होना, अधिकार में करना।

ईश (वि०) [ईश्+क] 1 अधिकार रखने वाला, स्वामी, मालिक, दे० नीचे 2 शक्तिशाली 3 सर्वोपरि,—**शः** 1 मालिक, स्वामी (सर्व० के साथ या समास में), कथयितेशा मनसो बभूव कु० ३।३४ इसी प्रकार वागीश और सुरेश आदि 2 पति 3 ग्यारह ४ शिव, —**शा** 1 दुर्गा 2 ऐश्वर्यशालिनी स्त्री, धनाढ्य महिला। सम० **कोण** उत्तर पूर्वी दिशा **पुरी,** - **नगरी** बनारस वाराणसी **सख** कुबेर का विशेषण।

ईशान [ईश् ताच्छील्ये चानश्] 1 शासक स्वामी मालिक 2 शिव—कु० ७।५६ 3 सूर्य (शिव के रूप में) 4 विष्णु भी दुर्गा।

ईशिता-त्वम् [ईशितो भाव ईशित + तल् + टाप् त्व वा] सर्वोपरिता महत्त्व शिव की आठ सिद्धियों में एक, दे० 'अणिमन' या सिद्धि।

ईश्वर (वि०) (स्त्री० रा -री) 1 शक्तिसम्पन्न योग्य समर्थ (तुमुन् के साथ) कु० ४।११ 2 धनाढ्य दौलतमंद —**रः** 1 मालिक स्वामी ईश्वर लोका उर्वन सेवते मद्रा० ९।१४ 2 राजा राजकुमार शासक 3 धनाढ्य या बड़ा आदमी मा प्रयच्छेश्वरे धनम् हि० १।१५ मु० उल्टे बांस बरेली को 4 पति —कि० ९।३९ 5 परमेश्वर 6 शिव विक्रम० १।१ 7 कामदेव **रा, री** दुर्गा। सम० **निषेध** परमात्मा के अस्तित्व को न मानना नास्तिकता -**पूजक** (वि०) पुण्यात्मा भक्त **सद्मन्** (नपुं०) मन्दिर —**सभम्** राजकीय दरबार या सभा।

ईष् (भ्वा० उभ०) (ईषति-ते ईषित) 1 उड़ जाना 2 देखना, नजर डालना 3 देना 4 मार डालना।

ईष [ईष्+क] आश्विन मास तु० ईष।

ईषत् (अव्य०) [ईष् + अति] 1 जरा, कुछ सीमा तक थोड़ा सा—ईषद् बुध्यिवतानि—श० १।३। सम०—**उष्ण** (वि०) गुनगुना **कर** (वि०) 1 थोड़ा करने वाला अनायास पूरा हो जाने वाला, —**जलम्** उथला पानी, —**पाण्डु** (वि०) हल्का पीला, कुछ सफेद,—**पुरुष** अधम और घृणित व्यक्ति, -**रक्त** (वि०) पीला लाल, हल्का लाल -**लभ**, -**प्रलंभ** (वि०) थोड़े से में सुलभ, —**हास** थोड़ी हंसी, मुस्कराहट।

ईषा [ईष्+क+टाप्] 1 गाड़ी की फड़ 2 हलस।

ईषिका [ईषा+कन्, ह्रस्व] 1 हाथी की आंख की पुतली 2 रंगसाज की कूंची 3 हथियार तीर, बाण।

ईषिर [ईष्+किरच्] अग्नि आग।

ईषीका [ईष्+ईकन् इत्वम् दीर्घश्च] 1 रंगसाज की कूंची 2 ईंट 3 इषीका।

ईष्म,-ष्व इष्म इष्व।

ईह (भ्वा० आ०) (ईहते ईहित) 1 कामना करना चाहना सोचना (कर्म० या तुमुन् के साथ) भाग० ९६।१२ भट्टि० १।११ 2 प्राप्त करने का प्रयत्न करना 3 लक्ष्य बनाना प्रयत्न करना प्रयास करना कोशिश करना, माधर्म्यमुर्विन्दुना रचयितुं धारा स्वबराहने भर्तृ० २।६ राम० ४।१।१ **सम्** 1 कामना करना इच्छा करना 2 करने का प्रयत्न करना कोशिश करना प्रियाणि वाञ्छत्यसुभि समीहते कि० १।१९।

ईहा [ईह् अ] 1 कामना इच्छा 2 प्रयत्न प्रयास, चेष्टा मनु० २ ०९। सम० **मृग** 1 भेड़िया 2 नाटक का एक खंड जिसमें ४ अंक होते हैं परिभाषा के लिए दे० सा० द० ५१८ **वृक** भेड़िया।

ईहित (भू० क० कृ०) [ईह् + क्त] चाहा हुआ खोजा हुआ प्रयत्न किया हुआ **तम्** 1 कामना इच्छा 2 प्रयत्न प्रयास 3 अध्यवसाय, कार्य कृत्य कि० १।२०।

उ

उ [अत्+डु] शिव का नाम, ओम् के तीन अक्षरों (अ+उ+म्) में से दूसरा दे० अ (अव्य०) 1 पूरक के रूप में काम में आने वाला अव्यय—उ उमेशा —सिद्धा० 2 निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय, (क) पुकार—उ मेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम कु० १।२६ (ख) क्रोध (ग) अनुकम्पा (घ) आदेश (ङ) स्वीकृति (च) प्रश्न वाचकता या केवल (छ) पूरणार्थक, श्रेण्य साहित्य में मुख्य रूप से अथ (अथो) न (नो) और किम (किमु) के साथ प्रयुक्त होता है दे० शब्दों को।

उक्त (भू० क० कृ०) [वच्+क्त] 1 कहा हुआ, बोला हुआ 2 वर्णित, बताया हुआ (विप० अनुक्त या संभावित) 3 बोला हुआ, संबोधित अतोऽवनुक्तो ऽपि महाय एव—कु० ३।२६ 4 वर्णन किया गया बयान किया हुआ, **क्तम्** भाषण शब्दसमुच्चय, वाक्य। सम०—**अनुक्त** कहा और बिना कहा का

उपसंहार: संक्षिप्त वर्णन, सारांश, इतिश्री, **निर्वाह:** कही बात का निर्वाह करना, **पुंस्क** ऐसा शब्द (स्त्री० या नपुं०) जो पुं० भी हो, और जिसका पुं० से भिन्न अर्थ लिङ्ग की भावना से ही प्रकट होता है, **प्रत्युक्त** भाषण और उत्तर व्याख्यान ।

उक्ति: (स्त्री०) [वच् + क्तिन्] 1 भाषण अभिव्यक्ति, वक्तव्य उक्तिरर्थान्तरन्यास: स्यात्सामान्यविशेषयो: चन्द्रा० ५।१२०, मनु० ८।१०४ 2 वाक्य 3 अभिव्यक्त करने की शक्ति शब्द की अभिव्यञ्जनाशक्ति —जैसा कि एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ अमर० ।

उक्थम् [वच् + थक्] 1 कथन वाक्य स्तोत्र 2 स्तुति प्रशंसा 3 सामवेद ।

उक्ष् (भ्वा० उभ०) (उक्षति, उक्षते) 1 छिड़कना गीला करना तर करना व भिगोना भीमान शोणितमम्भोदा: भट्टि० १४।९७ ३।५ शि० ५।२० रघु० ११।२० कु० ११।५ 2 निकालना विकीर्ण करना **अभि**— पवित्र तथा अभिमंत्रित जल छिड़कना निरगमि दाशरथिसवर्णान् ... श० ६ **परि**— इधर उधर छिड़कना, **प्र**— पवित्र जल के छींटे देकर अभिमंत्रित करना प्रोक्षणीयं तथा श्राद्धे प्रोक्षितं ... याज्ञ० १।१९० मनु० ५।२७ **सम्प्र**— जल के छींटों से अभिमंत्रित करना याज्ञ० १।२४ ।

उक्षणम् [उक्ष् + ल्युट्] 1 छिड़काव 2 छींटे देकर अभिमंत्रित करना —वसिष्ठमन्त्रोक्षणजात् प्रभावात् रघु० ५।२७ ।

उक्षन् (पुं०) [उक्ष् + कनिन्] बैल या सांड कु० ७।५० (कुछ समासों में उक्षन् का उक्ष रह जाता है — महोक्ष वृद्धोक्ष आदि) । सम०— **तर** छोटा बैल कु० वत्सतर ।

उख्, उङ्ख् (भ्वा० पर०) (ओखति, उङ्खति ओखित, उखित) जाना हिलना डुलना ।

उखा [उख् + क + टाप्] पतीला, डेगची ।

उख्य (वि०) [उखायां संस्कृतम् यत्] 1 पतीली में उबाला हुआ —शूल्यमुख्यं च ह्यमान भट्टि० ४।९ ।

उग्र (वि०) [उच् + रन् गश्चान्तादेश:] 1 भीषण क्रूर हिंस्र, जंगली (दृष्टि आदि में) दर्शन 2 प्रचण्ड डरावना भयानक भयंकर सिंहनिपातमुग्रम् —रघु० ३।६०, मनु० ९।७२, १०।३२ 3 शक्तिशाली मजबूत दारुण नाद उग्रातपां वेलाम् श० ३ अत्यन्त गर्म उग्रशोकम् मृच्छ० १।८ अने०पा० 4 तीक्ष्ण प्रचण्ड, गर्म 5 ऊँचा सं० —**ग्र:** 1 शिव या रुद्र 2 वर्णसंकर जाति क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की सन्तान 3 केरल देश (वर्तमान मलाबार) 4 रौद्र रस । सम०—**गन्ध** (वि०) तीक्ष्ण गन्ध वाला (—**न्ध:**) 1 चम्पक वृक्ष 2 लहसुन —**चारिणी, —चण्डा** दुर्गा देवी —**जाति** (वि०) नीच वंश में उत्पन्न जारज —**दर्शन, —रूप** (वि०) घोर दर्शन वाला भयानक दृष्टि वाला, —**धन्वन्** (वि०) मजबूत धनुष को धारण करने वाला (पुं०) शिव, इन्द्र —**शेखरा** शिव की चोटी गंगा, —**सेन** मथुरा का राजा और कंस का पिता (कंस ने अपने पिता को गद्दी से उतार कर कारागार में डाला था परन्तु कृष्ण ने कंस को मार कर उसके पिता को कारागार से मुक्त कर सिंहासनासीन किया) ।

उग्रंपश्य (वि०) [उग्र + दृश् + खश्, मुमागम] भीषण दृष्टिवाला डरावना, विकराल ।

उच् (दिवा० पर०) (उच्यति उचित या उग्र— अधिकांश में भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त) 1 संचय करना एकत्र करना 2 शौकीन होना प्रसन्नता अनुभव करना 3 उचित या योग्य होना अभ्यस्त होना ।

उचित (भू० क० कृ०) [उच् + क्त] 1 योग्य ठीक सही उपयुक्त —उचितस्तदुपालम्भ: — उत्तर० ३, प्राय: तुमुन् के साथ उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम् श० ४ 2 प्रचलित प्रथानुरूप —उचितेषु करणीयेषु श० ४ 3 अभ्यस्त प्रचलित (समास में) —नीवारभागधेयोचितै: रघु० १।५० २।२५ ३।५४, ६० ११।१९ वि० १।३८ 4 प्रशंसनीय ।

उच्च (वि०) [उद् + चि + ड] 1 (सभी बातों में) ऊँचा लम्बा ... कु० ७।६३ उन्नत, ... आदि 2 ऊँचा ऊँची आवाज वाला— उच्चा दक्षिणा — शि० ... 3 तीव्र दारुण, घोर । सम०— **तरु** नारियल का पेड़ —**ताल** ऊँचा संगीत नृत्य आदि —**नीच** (वि०) 1 ऊँचा नीचा 2 विविध —**ललाटा, टिका,** ऊँचे मस्तक वाली स्त्री, —**पद** (वि०) ऊँचा पद ग्रहण करने वाला (नक्षत्रादिक) रघु० ३।१३ दे० टी० पर मल्लि० ।

उच्चकै: (अव्य०) [उच्चैस् + अकच्] 1 ऊँचा ऊँचाई पर उन्नत (आल० भी) —अन्तर्दिशादिरसि सायमुच्चकै: शि० १।१६ १६।४६ 2 ऊँचे स्वर वाला ।

उच्चक्षुस् (वि०) [ब० स०] 1 ऊपर को आँखें किए हुए ऊपर की ओर देखते हुए 2 जिसकी आँखें निकाल दी गई हों अंधा ।

उच्चण्ड (वि०) [प्रा० स०] 1 भीषण, भयानक उग्र 2 ... 3 ऊँचा आवाज वाला 4 क्रोधी, चिड़चिड़ा ।

उच्चण्डा (उच्छिष्ट वहाँ यत्र — अल्पा० स०) रात का अन्तिम पहर ।

उच्चय [उद् + चि + अच्] 1 संग्रह, राशि, समुदाय

—रूपोच्चयेन— श० २।९ तु० शिलोच्चय भी 2 एकत्र करना सचय करना (फूल आदि)—पुष्पोच्चय नाटयति—श० ४, कु० ३।६१ 3 स्त्री के ओढ़ने की गांठ 4 समृद्धि अभ्युदय।

उच्चरणम् [उद्+चर्+ल्युट्] 1 ऊपर या बाहर आना 2 उच्चारण करना।

उच्चल (वि०) [उद्+चल्+अच्] हिलने डुलने वाला [illegible] मन।

उच्चलनम् [उद्+चल्+ल्युट्] [illegible]

उच्चलित [illegible]

[illegible]

उच्चैस्तमाम् (अव्य०) [उच्चैस्+तमप्+आम्] 1 अत्यन्त ऊंचा 2 बहुत ऊँचे स्वर से।

उच्चैस्तराम् (अव्य०) [उच्चैस्+तरप्+आम्] 1 ऊँचे स्वर से 2 अत्यन्त ऊँचा कु० ७।६८।

उच्छ् (तुदा० पर०) (उच्छति, उष्ट) 1 बांधना 2 पूरा करना 3 छोड़ देना त्याग देना।

उच्छन्न (वि०) [उद्+छद्+क्त] 1 नष्ट किया हुआ, उखाड़ा हुआ (कदाचित् उत्सन्न) के० उच्छिन्न 2 लुप्त (रचना आदि)।

उच्छलत् (शतन्त वि०) [उद्+शल्+शतृ] 1 चमकता हुआ इधर उधर हिलता डुलता हुआ 2 हिलता डुलता [illegible] 3 ऊपर को उड़ता हुआ ऊपर ऊंचाई [illegible] हुआ।

उच्छलनम् [illegible]

[illegible]

[illegible] अक्षम [illegible] मानसम् नाम।

उच्छीर्षकम् [illegible] 1 [illegible] 2 सिर।

उच्छुष्क (वि०) [उद्+शुष्+क्त] सूखा मुर्झाया हुआ।

उच्छून (वि०) [उद्+श्वि+क्त] 1 सूजा हुआ फूला [illegible] नेत्र प्रियाया मेघ० ८६ [illegible]

मण्डूकपाटितोदरसन्निभम्—काव्य० ७, अनवरतरुदितो- च्छूनताम्रदृष्टम्—दश० ९५ 2. मोटा 3. ऊँचा, उन्नत।

उच्छृङ्खल (वि०) [उद्गतः शृङ्खलात् —ब० स०] 1 बेलगाम, अनियंत्रित, निरंकुश—°वाचा—पंच० ३, अन्य- दुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्—शि० २।६२ 2. स्वेच्छाचारी 3. अनियमित, क्रमहीन।

उच्छेदः, **—दनम्** [उद्+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 काट कर फेंक देना 2. मूलोच्छेदन, उखाड़ देना, काम तमाम कर देना [illegible] भवोच्छेदकर पिता ते—रघु० १४.७४ 3 अपच्छेदन।

उच्छेषः, **—षणम्** [उद्+शिष्+घञ्, ल्युट् वा] अवशेष।

उच्छोषण (वि०) [उद्+शुष्+णिच्+ल्युट्] 1 मुरझाने वाला, सुखा देने वाला [illegible] —नम् [illegible] मुरझाना, सुखाना।

उच्छ्रयः, **—ग्रा**, [illegible] 1 [illegible] आदि का उदय होना 2. [illegible] 3 ऊँचाई [illegible] (शारीरिक और [illegible]) [illegible] [illegible] 4 विकास [illegible] [illegible] समाप्त।

उच्छ्रयणम् [illegible]

उच्छ्रित [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] हुआ [illegible] ऊँचा [illegible] [illegible] अभिमानी।

[illegible]

उच्छ्वसनम् [illegible] 2 [illegible] सांस लेना।

उच्छ्वसित [illegible] (कर्तरि प्रयोग) 1 गहरी सांस [illegible] 2 मुँह से सांस बाहर निकालना [illegible] विकृत 4 तरोताजा [illegible] [illegible] —मेघ० [illegible], —तम् 1 सांस, [illegible] सा कुच्यतेर च्छ्वसितमिव [illegible] 2 [illegible] फूंक मारना 3. सांस बाहर निकालना—[illegible] 4 गहरी सांस लेना [illegible] शरीर में रहने वाले पाँच प्राण।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1 सांस [illegible] अन्दर खींचना, सांस बाहर निकालना—मुखोच्छ्वासगन्धम् विक्रम० ४।२४, रघु० ११३, मेघ० १०२ 2 प्राणों का आश्रय 3. आह भरना 4 आश्वासन, प्रोत्साहन —अमरु ११, 5. फुफकारो 6 पुस्तक का खंड या भाग (जैसे हर्षचरित का) तु० अध्याय।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उच्छ्वास+इनि] 1. सांस लेने वाला 2. गहरी सांस लेने वाला, आह भरने वाला 3. मिटने वाला, मूर्छित होने वाला।

उज्जयिनी (वि) नी [प्रा० स०] एक नगर का नाम, मालवा प्रदेश में वर्तमान उज्जैन, हिन्दुओं की सात पुण्य- नगरियों में से एक, (तु० अवन्ति)—सौधोत्सङ्गप्रणय- विमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः—मेघ० २७।

उज्जासनम् [उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] मारना, हत्या करना—चौरस्योज्जासनम्—सिद्धा०।

उज्जिहान (वि०) [उद्+हा+शानच्] ऊपर जाता हुआ, (सूर्य की भांति) उदय होता हुआ—उज्जिहानस्य [illegible] मुद्रा० [illegible] [illegible] होता हुआ, बाहर जाता हुआ, [illegible] —मा० १०।

उज्जृम्भ (वि०) [ब० स०] 1 फूंक मारा हुआ, फुलाया हुआ—[illegible] 2 [illegible] खुला हुआ —भः 1 विदर फुलाव [illegible] करना [illegible] करना

उज्जृम्भा, **—णम्** [उद्+जृम्भ् [illegible] ल्युट् वा] 1 जम्हाई लेना 2 [illegible] 3 [illegible]

उज्झ्य (वि०) [illegible] व० स०] [illegible] [illegible] की [illegible] हुआ।

उज्ज्वल (वि०) [illegible] 1 उज्ज्वल, चमकीला [illegible] —शि० ९।४८ 2. प्रिय सुन्दर [illegible] —नै० ३।१३६ 3 [illegible] हुआ [illegible] 4 अनियंत्रित [illegible] रंग, —लम् सोना।

उज्ज्वलनम् [उद्+ज्वल्+ल्युट्] 1 जलना, चमकना 2 प्रकाश, दीप्ति।

उज्झ (तुदा० पर०) [illegible] 1 छोड़ना [illegible] [illegible] —रघु० [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] 2 [illegible] बचना [illegible] करना, बाहर निकालना, [illegible] [illegible] —कि० [illegible] शि० [illegible]।

उज्झक [illegible] 1 बादल 2 भक्त।

उज्झनम् [उज्झ्+ल्युट्] [illegible] दूर करना, छोड़ना।

उञ्छ (तुदा० पर०) [illegible] दाने इकट्ठे करना, बीनना, (एक एक करके)—शिलानप्युञ्छत —मनु० ३।१००

उञ्छः [उञ्छ्+घञ्] [illegible] करना या अनाज के दाने बीनना—[illegible] —रघु० ५।८, मनु० १०।११२, —छम् दाने इकट्ठे करना। सम० —वृत्ति, —शील (वि०) जो शिलोञ्छन से अपनी जीविका चलाता है, खेत में बचे अनाज के कणों को चुन कर पेट भरने वाला।

उञ्छनम् [उञ्छ् + ल्युट्] खेत में पड़े अनाज के दानों को एकत्र करना।

उटम् [उ + टक्] 1 पत्ता 2. घास। सम० — **जः**, **—जम्** —(उटेभ्यो जायते) झोंपड़ी, कुटिया, आश्रम (पर्णशाला) उञ्छशारविरूढनीवारबलि विलोकयत श० ४।२०, रघु० १।५०, ५२।

उडु (स्त्री०) **उडु** (नपु०) [उड् + कु बा०] 1 नक्षत्र, तारा इन्दुप्रकाशान्तरितोडुतुल्या —रघु० १६।६५ 2 जल (केवल नपु० में)। सम० **—चक्रम्** राशि चक्र — **पः**, **—पम्** लकड़ी का बना बेड़ा —तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् रघु० १।२, धनोडुपम् परलोकनदीं तरिष्ये —मृच्छ० ८।२३ (**—पः**) चन्द्रमा मृच्छ० ४।२४ —**पतिः**, **—राजः** चन्द्रमा जितमुडुपतिना —रत्ना० १।८ रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मयः — कु० ५।२२ **—पथः** आकाश, अन्तरिक्ष।

उडुम्बरः [उडुम्बरं वृणोति उ, वृ, खच्, मुम् उत्कृष्ट उम्बर —प्रा० स० दस्य डत्वम्] 1 गूलर का वृक्ष (औदुम्बर), 2 घर की देहली या ड्योढ़ी 3 हिजड़ा 4 एक प्रकार का कोढ़ (— **रम्** भी) **—रम्** 1 गूलर का फल 2. तांबा।

उडूप — उडुप।

उड्डयनम् [उद् + डी + ल्युट्] ऊपर उड़ना उड़ान लेना गतो विरुत्योड्डयने निराशताम् — नै० १।१२५।

उड्डामर (वि०) [प्रा० स०] 1 हर्षकर, श्रेष्ठ 2 प्रबल, भयावह उड्डामरव्यस्तविस्तारितदोः खण्डपर्यासितक्ष्माधरम् मा० ५।२३।

उड्डीन (भू० क० कृ०) [उद् — डी + क्त] उड़ा हुआ ऊपर उड़ता हुआ **—नम्** 1 ऊपर उड़ना उड़ान लेना 2 पक्षियों की एक विशेष उड़ान।

उड्डीयनम् [उड्ड स इव आचरति क्यङ् उड्डीय + ल्युट्] उड़ान।

उड्डीशः [उद् + डी + क्विप् उड्डी तस्य ईशः] शिव।

उड्रः [उड् + रक्] देश का नाम वर्तमान उड़ीसा दे० ओड्र।

उण्डेरकः [?] आटे का लड्डू, गोला रोटी तथैवोण्डेरकस्रजः —याज्ञ० १।१२८।

उत् (अव्य०) [उ + क्विप्] (क) सन्देह (ख) प्रश्नवाचकता (ग) सोचविचार और (घ) तीव्रता।

उत (अव्य०) [उ + क्त] 1 निम्नांकित भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय —(क) सन्देह अनिश्चितता अनुमान (या), —स्थाणुरयमुत पुरुषः स्यादुत यथा मे मनसि वर्तते —श० ३ स्थाणुरयमुत पुरुषः गण० (ख) विकल्प प्राय 'किं' का सहवर्ती (या), —किमिदं गुरुभिरुपदिष्टमुत धर्मशास्त्रेषु पठितमथ मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम् —का० १५५, कु० ६।२३, 'उत' के स्थान में 'आहो' या 'आहोस्वित्' भी प्रयुक्त होता है, कई बार तो 'आहो' आहोस्वित्' या 'स्विद्' को 'उत' से जोड़ दिया जाता है (ग) साहचर्य संयोग ('और भी' शब्दों द्वारा समुच्चयात्मकता का बोध कराने वाला) —उत बलवानुताबलः (घ) प्रश्नवाचकता —उत दण्डः पतिष्यति 2 प्रति, इसके विपरीत, दूसरी ओर, बल्कि — सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः शि० २।५५ 3 किम् कितना अधिक कितना कम दे० किम् उत उत ...— ... परमामृत राज्यमुताश्रम गण०।

उतथ्यः (?) अंगिरा का पुत्र तथा बृहस्पति का बड़ा भाई। सम० **—अनुजः**, **—अनुजन्मन्** (पुं०) बृहस्पति देवताओं का गुरु तथ्यमुतथ्यानुजवज्जगादाग्रे गदाग्रजम् — शि० २।६९।

उत्क (वि०) [उद्-स्वार्थे कन्] 1 इच्छुक, लालायित उत्कण्ठित (समास में) —अद्रिसुतासमागमोत्कः कु० ६।९५ मानसोत्का —मेघ० ११ कई बार तुमुन् के साथ — शि० ४।१८ 2 खिन्नमना, दुःखी, शोकान्वित 3 उन्मना।

उत्कञ्चुक (वि०) [ब० स०] बिना अंगिया पहने या बिना कवच धारण किये हुए।

उत्कट (वि०) [उद् — कटच्] 1 बड़ा, प्रशस्त उत्तर० ४।२९ 2 शक्तिशाली, ताकतवर, भीषण 3 अत्यधिक ज्यादह अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते हि० १।८२ 4 भरपूर, समृद्ध 5 मदिरासेवी, मदमत्त उन्मत्त, मदान्वित 6 श्रेष्ठ, उत्तम 7 विषम **—टः** 1 हाथी के मस्तक से बहनेवाला मद 2 मदमत्त हाथी।

उत्कण्ठ (वि०) [उन्नतः कण्ठो यस्य] 1 गर्दन ऊपर को उठाए हुए (अत) तत्पर, तैयार, करने के लिए उन्मुख (समास में) आज्ञापनोत्कण्ठः श० ४ स्वरमनोत्कण्ठमग बाल्मीकीये तपोवने रघु० १५।११ 2 (अत) चिन्तातुर उन्मुख —**ठः** ... संभोग करने की एक रीति।

उत्कण्ठा [उद् + कण्ठ् + अ + टाप्] 1 चिन्तातुरता बेचैनी — यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया श० ४।५ 2 प्रिय वस्तु या प्रियतम पाने की लालसा —दृष्टिरधिकं सोत्कण्ठमुद्वीक्षते अमरु २४ 3 खेद, शोक किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना गाढोत्कण्ठा मा० १।१५, मेघ० ८३।

उत्कण्ठित (भू० क० कृ०) [उद् + कण्ठ् + क्त] 1 चिन्तातुर व्यथित होनेवाला शोकान्वित 2 किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के लिए लालायित, **—ता** अपने अनुपस्थित प्रेमी या पति से मिलने की प्रबल लालसा रखने वाली नायिका आठ नायिकाओं में से एक सा० द० १२१ में दी गई परिभाषा आगन्तुं कृतचित्तोऽपि दैवान्नायाति यत्प्रियः, तदनागमदुःखार्ता विरहोत्कण्ठिता तु सा।

उत्कन्धर (वि०) [उन्नत: कन्धरो यस्य ब० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए, उद्ग्रीव—उत्कन्धरं दारुकमित्युवाच—शि० ४।१८।

उत्कम्प (वि०) [ब० स०] कांपता हुआ, —पः, —पनम् कांपना, कपकपी, त्रास—त्रिगुणितकम्प्रोत्कम्प दिशा सम्प्रदीक्षसे अमरु ४८, मालवि० ७२।

उत्कर: [उद् + कृ + अप्] 1 ढेर, समुच्चय 2 अम्बार, चट्टा 3 मलबा—मृच्छ० ३।

उत्कर्कर: [ब० स०] एक प्रकार का वाद्य उपकरण बाजा।

उत्कर्तनम् [उद् + कृत् + ल्युट्] 1 काट देना, फाड़ देना 2 उखाड़ देना, मूलोच्छेदन।

उत्कर्ष: [उद् + कृष् + घञ्] 1 ऊपर को खींचना 2 उन्नति, प्रमुखता, उदय, समृद्धि—निनीषुः कुलमुत्कर्षम्—मनु० ४।२४४, ९।२४ 3 वृद्धि, बहुतायत, अधिकता—प्रजानामपि सतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः—रघु० ४।११ 4 उत्कृष्टता, सर्वोपरि गुण, यश—उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २, ५ अहम्मन्यता, शेखी 6 प्रसन्नता।

उत्कर्षणम् [उद् + कृष् + ल्युट्] 1 ऊपर खींचना, ऊपर लेना, ऊपर करना।

उत्कल [उद् + कल् + अच्] 1 एक देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा या उस देश के निवासी (ब० व०)—प्रतस्थे प्राग्देशः उत्कल परिकीर्तितः—दे० आह्व—उत्कला-दर्शित पथः रघु० ४।३८ 2 बहेलिया, चिड़ीमार 3 कुली।

उत्कलाप (वि०) [ब० स०] पूंछ फैलाये हुए और सीधी उठाये हुए रघु० १६।६४।

उत्कलिका [उद् + कल् + वुन्] 1 चिन्तातुरता, बेचैनी, —आना नोत्कलिका—अमरु ७८ 2 लालसा करना, खेद प्रकाश करना, किसी वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना 3 काम क्रीड़ा, हेला 4 कली 5 तरंग—क्षुभितमुत्कलिकातरलं मनः—तरंगों द्वारा क्षुब्ध मा० ३।१० (यहाँ स्वयं उत्कलिका का अर्थ 'चिन्तातुरता' है) शि० ३।७०। सम०—प्रायम् गद्यरचना का एक प्रकार जिसमें समास बहुत हों तथा कठोर वर्ण हों—भवदुत्कलिकाप्रायं समासाढ्यं वृत्तान्तरम्—छ०।

उत्कषणम् [उद् + कष् + ल्युट्] 1 फाड़ना, ऊपर को खींचना 2 जोतना, (हल आदि) खींच कर ले जाना—सद्य सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालम्—मेघ० १७, 3 रगड़ना—भामि० १।७३।

उत्कार: [उद् + कृ + घञ्] 1 अनाज फटकना 2 अनाज की ढेरी लगाना 3 अनाज बोने वाला।

उत्कास:, **—सनम्**, **उत्कासिका** [उत्क + अस् + अच्, ल्युट्, ण्वुल् वा] खखारना, गले को साफ करना।

उत्किर (वि०) [उद् + कृ + अ] हवा में उड़ता हुआ, ऊपर को बिखरता हुआ, धारण करता हुआ—कु० ५।२६, ६।५ रघु० १।३८।

उत्कीर्तनम् [उद् + कॄ + ल्युट्] 1 प्रशंसा करना, कीर्तिगान करना 2 घोषणा करना।

उत्कुटम् [उन्नतं कुटो यत्र ब० स०] ऊपर को मुंह करके लेटना या सोना, चित लेटना।

उत्कुण: [उद् + कुण् + क] 1 खटमल 2 जूं।

उत्कुल (वि०) [उत्क्रान्त: कुलात् अत्या० स०] पतित, कुल का अपमानित करने वाला—यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा, त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया—श० ५।२७।

उत्कूज: [प्रा० स०] (कोयल की) कूक।

उत्कूट [उन्नतः कूटमस्य ब० स०] छाता, छतरी।

उत्कूर्दनम् [उद् + कूर्द् + ल्युट्] कूदना, ऊपर को उछलना।

उत्कूल (वि०) [उत्क्रान्त: कूलात् अत्या० स०] किनारे से बाहर निकल कर बहने वाला।

उत्कूलित (वि०) [उद् + कूल + क्त] किनारे तक पहुंचने वाला शि० ३।७०।

उत्कृष्ट (भू० क० कृ०) [उद् + कृष् + क्त] 1 उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ, उन्नत 2 श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम, सर्वोच्च मनु० ३।१४४, ८।२८१ —बल—पञ्च० ३।३६ बलवत्तर 3 जोता हुआ, हल चलाया हुआ।

उत्कोच [उद् + कुच् + घञ्] रिश्वत—उत्कोचमिव ददती —का० २३७ याज्ञ० १।३३८।

उत्कोचक [उत्कोच + कन्] 1 घूस, रिश्वत 2 (वि०) [उद् + कुच् + ण्वुल्] रिश्वतखोर, घूस लेने वाला मनु० ९।२५८।

उत्क्रम: [उद् + क्रम् + घञ्] 1 ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2 क्रमोन्नति 3 विचलन, अतिक्रमण, उल्लंघन।

उत्क्रमणम् [उद् + क्रम् + ल्युट्] 1 ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2 चढ़ाई 3 पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना 4 (शरीर में से) आत्मा का पलायन अर्थात् मृत्यु—मनु० ६।६३।

उत्क्रान्ति: (स्त्री०) [उद् + क्रम् + क्तिन्] 1 बाहर निकलना, ऊपर जाना, कूच करना 2 आगे बढ़ जाना 3 उल्लंघन, अतिक्रमण।

उत्क्राम: [उद् + क्रम् + घञ्] 1 ऊपर या बाहर जाना, प्रस्थान करना 2 आगे बढ़ जाना 3 उल्लंघन, अतिक्रमण।

उत्क्रोश: [उद् + क्रुश् + अच्] 1 हल्ला गुल्ला, कुलकुलाहट 2 घोषणा 3 कुररी।

उत्क्लेद [उद् + क्लिद् + घञ्] आर्द्र या तर होना।

उत्क्लेश: [उद् + क्लिश् + घञ्] 1 उत्तेजना, अशान्ति

2 शरीर का ठीक हालत में न रहना 3 रोग विशेष कर सामुद्रिक रोग।

उत्क्षिप्त (भू० क० कृ०) [उद् + क्षिप् + क्त] 1 ऊपर को फेंका हुआ, उछाला हुआ, उठाया हुआ 2 पकड़ा हुआ, सहारा दिया हुआ 3 ग्रस्त, अभिभूत, आहत -विस्मय [illegible] 4 गिराया हुआ, ध्वस्त – [illegible] धतूरे का पौधा।

उत्क्षिप्तिका [उत्क्षिप्त + कन् + टाप्, इत्वम्] [illegible] के आकार का कान का आभूषण।

उत्क्षेप [उद् + क्षिप् + घञ्] 1 फेंकना, [illegible] [illegible] 2 [illegible]

[illegible]

[illegible]

उत्सङ्गित [illegible]

[illegible]

का अथ [illegible] तम [illegible] [illegible] [illegible] काल [illegible] [illegible] भाग या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उत्तम्भित (वि०) [illegible] विषम (विप० सम) [illegible] [illegible] यथा [illegible] [illegible] ३० ४।

उत्त (वि०) [उन्द् + क्त] आर्द्र, गीला।

उत्तंसः [उद् + तंस् + अच्] 1 शिखा, मोर का चूड़ा, मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण उत्तंसान्हरन्त [illegible] शि० ८।५७ सु० कर्णोत्तंस 2 कान का आभूषण मा० ५।१८ [illegible] १।९४।

उत्तंसित (वि०) [उत्तंस + इतच्] 1 कानों में आभूषण पहने हुए 2 [illegible] धारण किया हुआ– भर्तृ० ३।१[illegible]।

उत्तट (वि०) [[illegible]] किनारे के [illegible] ११।९८।

उत्तप्त (भू० क० कृ०) [उद् + तप् + क्त] [illegible] [illegible] हुआ [illegible]

[illegible]

उत्तम [illegible]

[illegible]

उत्तर (वि०) [illegible] 1 [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] ऊंचा (विप० 'अधर') [illegible] [illegible] 3 (ख) बाद का दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० पूर्व) पूर्व मेघ उत्तर मेघ, मीमांसा, उत्तरार्ध आदि, राम

चरितम् (च) आगामी, उपसंहारात्मक 4. बायां (विप० दक्षिण) 5 बढ़िया, मुख्य, श्रेष्ठ 6 अपेक्षाकृत अधिक, से अधिक (बहुधा संख्याओं से युक्त समस्त पदों में अन्तिम खंड के रूप में प्रयुक्त) -- षडुत्तरा विंशतिः --२६ अष्टोत्तर शतम् १०८, 7 से युक्त या सहित, पूर्ण, मुख्यतया ... से युक्त, से अनुगत (समास के अन्त में) -राज्ञा तु अभिलाषैर्या दृ [illegible] ५।० ५, अज्ञानरत्नाभिधानः कु० ५।६१ 8 बार किया जाता,- रः 1 आगामी समय भविष्यत्काल 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] -रा 1 उत्तर दिशा [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] -रम् 1 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्धम् 1 शरीर का [illegible] भाग 2 [illegible] उत्तरार्ध, [illegible] पूर्वार्ध), -आ [illegible] आभास [illegible] उत्तर दिशा, [illegible] -आषाढ़ा २१ वाँ नक्षत्र [illegible] आसंग [illegible] उत्तर पहनने का [illegible] शि० ...१६, कु० [illegible] इतर [illegible] भिन्न अर्थात् दक्षिणी (-रा) दक्षिण-दिशा, उत्तर (वि०) 1 अधिक और अधिक [illegible] 2 [illegible] पञ्च० १, याज्ञ० ...१३५ (-रम्) प्रत्युत्तर, उत्तर का उत्तर [illegible] मुद्रा० ३ ओष्ठः ऊपर का होंठ (उत्तरो-ऽ-ष्ठ) -काण्डम् रामायण का सातवाँ काण्ड, —कायः शरीर का ऊपरी भाग --रघु० ९।६०, -कालः भविष्यत्काल, -कुरु (पु० ब० व०) संसार के ९ भागों में से एक, उत्तरी कुरुओं का देश, -- कोसलाः (पु० ब० व०) उत्तरी कोशल देश—पितुरनन्तरमुत्तर-कोसलान् --रघु० ९।१, —क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदैहिक श्राद्धादिक कर्म,—छदः बिस्तर की चादर, बिछावन (सामान्य)- रघु० ५।६५, १७।२१,- ज (वि०) बाद में पैदा होने वाला,—ज्योतिषाः (पु० ब० व०) उत्तरी ज्योतिष प्रदेश, --दायक (वि०) जो आज्ञाकारी न हो, जवाब देने वाला, धृष्ट, —दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा, -ईशः, —पालः उत्तर दिशा का पालक या स्वामी कुबेर, -पक्षः 1. उत्तरी कक्ष 2 चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष 3. किसी विषय का द्वितीय पक्ष--अर्थात् उत्तर, उत्तर में प्रस्तुत तर्क वक्ष का [illegible] सिद्धान्त पक्ष (विप० पूर्वपक्ष) प्राप्यन् [illegible] शि० २।७५ 4 प्रदर्शन [illegible] 5 अनुमान की प्रक्रिया [illegible] 6 [illegible] अधिकरण का पाँचवाँ [illegible] -पदं 1 [illegible] 2 [illegible] उत्तर दिशा को [illegible]

[illegible]

[illegible] -प्रच्छदनम् 1 [illegible] 2 [illegible] आषाढ़म् -- २१ वाँ नक्षत्र [illegible] मीमांसा [illegible] [illegible] -लक्षणम् वास्तविक [illegible] वस्त्रम् [illegible] वयस् [illegible] -वादिन् [illegible] -- साधक [illegible]

उत्तरङ्ग (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] रघु० [illegible]

उत्तरतः [illegible] 1 उत्तर से उत्तर दिशा [illegible] बाईं ओर को (विप० दक्षिणतः) [illegible]

उत्तरत्र (अव्य०) [उत्तर + त्रल्] पश्चात्, बाद में [illegible] (किसी रचना में) [illegible] ।

उत्तराहि (अव्य०) [उत्तर + आहि] उत्तर दिशा की ओर, (अपा० के साथ) के उत्तर में, –भट्टि० ८।१०७।

उत्तरीयम्--यकम् [उत्तर + छ, वा कप्] ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र ।

उत्तरेण (अव्य०) [उत्तर + एनप्] (संब०, कर्म० के साथ अथवा समास के अन्त में) उत्तर की ओर,' के उत्तर दिशा की ओर तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्— मेघ० ७७ अ० पा० भा० ९।२४।

उत्तरेद्युः (अव्य०) [उत्तर - एद्युस्] अगले दिन, आगामी दिन, कल।

उत्तर्जनम् [उद् + तर्ज् + ल्युट्] जबरदस्त झिड़की।

उत्तान (वि०) [उद्गतस्तानो विस्तारो यस्मात् ब० स०] 1 पसारा हुआ फैलाया हुआ विस्तार किया हुआ प्रसृत किया हुआ- उत्तर० ३।२३ 2 (क) चित लेटा हुआ—भा० ३ उत्तानोच्छूनमण्डूकपाटितोदरसन्निभे- काव्य० ७ (ख) सीधा खड़ा 3 खुला 4 स्पष्ट, निष्कपट, खरा स्वभावोत्तानहृदय श० ५ स्पष्टवक्ता 5 मनोहर 6 छिछला। सम० पाद एक राजा ध्रुव का पिता ज ध्रुव (उत्तानपाद का पुत्र), ध्रुव तारा शय (वि०) पीठ के बल सोता हुआ, चित लेटा हुआ कदा उत्तानशयं पुत्रक जनयिष्यति मे हृदयाह्लादम् का० ६२ (य या) छोटा बच्चा दूध पीता या दुधमुँहा बच्चा शिशु।

उत्ताप [उद् + तप् + घञ्] 1 भारी गर्मी जलन 2 कष्ट, पीड़ा 3 उत्तेजना जोश।

उत्तार: [उद् + तॄ + घञ्] 1 परिवहन, वहन 2 पार उतरना 3 तट पर लगना तट पर उतारना 4 मुक्ति पाना 5 वमन करना।

उत्तारक [उद् + तॄ + णिच् + ण्वुल्] 1 उद्धारक बचाने वाला 2 शिव।

उत्तारणम् [उद् + तॄ + णिच् + ल्युट्] उतारना उद्धार करना, बचाना, ण विष्णु।

उत्ताल (वि०) [अत्या० स०] 1 बड़ा मजबूत 2 प्रबल घोर–शि० १२।३१ 3 दुर्धर्ष, भयानक, भीषण उत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्संगमाः उत्तर० २।३०, शि० २०।६८ भा० ५।११ २३ 4 दुष्कर कठिन 5 उन्नत, उत्तुंग ऊँचा- शि० ३।८ —ल लंगूर।

उत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] उच्च ऊंचा लंबा करप्रचयोत्तुङ्गैः प्रभुशक्तिं प्रथीयसीम् शि० २।८९, हम पीठानि २।५।

उत्तुष: [उद्गत तुषोऽस्मात् ब० स०] भूसी से पृथक किया हुआ या भुना हुआ (लाजा) अन्न।

उत्तेजक (वि०) [उद् + तिज् + णिच् + ण्वुल्] 1 भड़काने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक क्षुधा, काम आदि।

उत्तेजनम्, -ना [उद् + तिज् + णिच् + ल्युट् युच् वा] 1 जोश दिलाना, भड़काना, उकसाना— समर्थ दत्वा उत्तेजना - मुद्रा० ४, महावी० ७, 2 उकसाना, हाँकना 3. भेजना, प्रेषित करना 4. तेज करना, धार लगाना, (शस्त्रादिक) चमकाना 5 बढ़ावा देना, प्रोत्साहन देना।

उत्तोरण (वि०) [ब० स०] उठी हुई या खड़ी मेहराबों आदि से सजा हुआ उत्तोरणां राजपथं प्रपेदे कु० ७। ६३, रघु० १४।१०।

उत्तोलनम् [उद् + तुल् + णिच् + ल्युट्] ऊपर उठाना, उभारना।

उत्त्याग [उद् + त्यज् घञ्] 1 निकाल देना छोड़ देना 2 फेंकना उछालना 3 सांसारिक वासनाओं से संन्यास।

उत्त्रास [उद् + त्रस् + घञ्] अत्यन्त भय आतंक।

उत्थ (वि०) [उद् स्था + क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 पैदा या उत्पन्न उदय होने वाला जन्म लेने वाला रजोमात्रोत्थैः ... कु० ... ६।... रघु० ... 2 ऊपर उठा हुआ, ऊपर आता हुआ।

उत्थानम् [उद् स्था + ल्युट्] 1 उदय होना या ऊपर उठने की क्रिया ... 2 (नक्षत्रादिक का) उदय होना रघु० ... 3 उद्गम उत्पत्ति 4 मलोत्सर्ग 5 प्रयत्न ... शि० ... मनु० ... प्रयत्न सक्रिय अभियान 6 पौरुष 7 हर्ष प्रसन्नता 8 युद्ध, लड़ाई 9 सेना 10 आंगन चहारदीवारी 11 अवधि सीमा हद 12 जागना एकादशी उठनी कार्तिक-शुक्ला एकादशी विष्णु ...।

उत्थापनम् [उद् + स्था णिच् + ल्युट् पुक्] 1 ... खड़ा करना जगाना 2 उभारना उन्नत करना 3 उत्तेजित करना भड़काना 4 जगाना प्रबुद्ध करना (आत्म० भी) 5 वमन करना।

उत्थित (भू० क० कृ०) [उद् स्था क्त] 1 उठा या (अपने आसन से) उठा हुआ खड़ा ... ... रघु० ... कु० ... 2 ... ऊपर गया हुआ ... 3 ... उदित ... रघु० ... (जैसा कि आग) 4 बढ़ता हुआ वर्धनशील (बल में) प्रगति करता हुआ 5 सीमा बद्ध 6 विस्तृत प्रसृत –श० ... सम० अंगुलि फैलाई हुई हथेली।

उत्थिति (स्त्री०) [उद् + स्था + क्तिन्] उन्नति ऊपर उठना।

उत्पक्ष्मन् (वि०) [ब० स०] उल्टी पलकों वाला ... क्षणानं ... ... विक्रम० ...।

उत्पत [उद् + पत् + अच्] पक्षी।

उत्पतनम् [उद् + पत् + ल्युट्] 1 ऊपर उड़ना उछलना 2 ऊपर उठना या आना चढ़ना।

उत्पताक (वि०) [उत्तोलिता पताका यत्र ब० स०] झंडा

ऊपर उठाए हुए, जहाँ झंडे फहरा रहे हों—पुरवासी पुरमुत्पताकम् —रघु० ७।७४।

उत्पतिष्णु (वि०) [उद् + पत + इष्णुच्] उड़ता हुआ ऊपर जाता हुआ।

उत्पत्ति (स्त्री०) [उद् + पद् + क्तिन्] 1 जन्म विरहु त्पत्तिमतामुपस्थिता—रघु० ८।८३ 2 उत्पादन—कुसुमे कुसुमोत्पत्तिः श्रूयते न तु दृश्यते —शृंगार० १७ 3 स्रोत मूल—उत्पत्ति माधवानां —का० ६५ 4 उठना ऊपर जाना [illegible] उपजाऊपन पैदावार। सम० —व्यंजक जन्म का एक प्रकार (उपनयन संस्कार करके या यज्ञोपवीत पहनाकर छात्र को दाखिल करना) द्विजत्व का चिह्न —मनु० २।६८।

उत्पथ [illegible] [illegible] (आल० भी) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उत्पन्न (भू० क० कृ०) [उद् + पद् + क्त] 1 जात पैदा हुआ [illegible] 2 उठा हुआ ऊपर गया हुआ 3 प्राप्त

उत्पल (वि०) [illegible] [उद् + पल् + अच्] मांसहीन क्षीण दुबला पतला —लम् 1 नील कमल कमल कुमुद [illegible] —रघु० ६।३६, १०।६ मेघ० २६ [illegible] —ऋतु० १।१८ इसी प्रकार —रक्त० 2 [illegible] पौधा। सम० —अक्ष, —चक्षुस् (वि०) कमल जैसी आँखों वाला —पत्रम् 1 कमल का पत्ता 2 किसी स्त्री के नाखून से की गई खरोंच नखक्षत

उत्पलिन (वि०) [उत्पल + इनि] कमलों से भरा हुआ —नी 1 कमलों का समूह 2 कमल का पौधा जिसमें कमल लगे हों।

उत्पवनम् [उद् + पू + ल्युट्] मार्जन करना शोधन करना —मनु० ५।११५।

उत्पाट [उद् + पट् + णिच् + घञ्] 1 मूलोच्छेदन उन्मूलन 2 बाह्य कान में शोथ।

उत्पाटनम् [उद् + पट् + णिच् + ल्युट्] उखाड़ना, मूलोच्छेदन, उन्मूलन।

उत्पाटिका [उद् + पट् + णिच् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] वृक्ष की छाल।

उत्पाटिन् (वि०) [उद् + पट् + णिच् + णिनि] (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त) मूलोच्छेदन करने वाला फाड़ने वाला —कीलोत्पाटीव वानर —पंच० १।२१।

उत्पात [उद् + पत् + घञ्] 1 उड़ान, छलांग, कूदना —एकोत्पातेन एक छलांग में 2 उछल कर आना, ऊपर उठना (आल० भी)—करनिहतकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम्—हि० १, अने० पा० 3 अनहोनी, संकटसूचक अशुभ या आकस्मिक घटना,—उत्पातेन ज्ञापिते च—शाति०, वेणी० १।२२, सापि सुकुमार-सुभगेत्युत्पातपरंपरा केयम्—काव्य० १० 4 कोई सार्वजनिक संकट (ग्रहण, भूचाल आदि) —केतु —का० ५, धूमकेतुरिवोत्पातकेतु—मा० १।१८। सम० —पवन,—वात,—वाताति: अनिष्टसूचक या प्रचण्ड वायु बवंडर या आंधी—रघु० १५।२३।

उत्पाद (वि०) [ब० स०] जिसके पैर ऊपर उठ हों —दः जन्म उत्पत्ति प्रादुर्भाव —दुः च शोणितान्नाद [illegible] —याज्ञ० २।२२५ मज्जगृहम् —पंच० [illegible]। सम० —शयः —यनः 1 बच्चा 2 एक प्रकार का तीतर।

उत्पादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [उद् + पद् + णिच् + ण्वुल्] [illegible] उत्पादक पैदा करने वाला, —कः पैदा करने वाला जनक पिता —कम् उद्गम कारण।

उत्पादनम् [उद् + पद् + णिच् + ल्युट्] जन्म देना पैदा करना जनन—उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम् मनु० ९।२७।

उत्पादिका [उद् + पद् + णिच् + ण्वुल् + टाप् इत्वम्] 1 एक प्रकार का कीड़ा दीमक 2 माता।

उत्पादित (वि०) [उद् + पद् + णिच् + क्त] पैदा हुआ [illegible]—सर्वमुत्पादितं [illegible] —हि० १।७०।

उत्पाली [उद् + पल् + घञ् + ङीप्] स्वास्थ्य

उत्पिञ्जर-ल (वि०) [प्रा० स०] 1 मुक्त जो पिंजड़े में बन्द न हो 2 क्रमहीन अव्यवस्थित

उत्पीड [उद् + पीड् + घञ्] 1 दबाव 2 [illegible] धारा प्रवाह धाराप्रवाहो बाष्प स्रावप्रत्युत्पीड —का० [illegible] उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्रागावृणोति माम् —उत्तर० [illegible] नवनलिनीदलोत्पीडन[illegible] —मेघ० [illegible] प्रवाह आधिक्य पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया—उत्तर० ३।२९ 3 झाग फेन।

उत्पीडनम् [उद् + पीड् + णिच् + ल्युट्] 1 दबाना निचोड़ना 2 [illegible] आघात करना का० [illegible]।

उत्पुच्छ (वि०) [ब० स०] जिसकी पूंछ ऊपर उठी हुई

उत्पुलक (वि०) [ब० स०] 1 रोमांचित जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों 2 हर्ष से प्रसन्न

उत्प्रभ (वि०) [ब० स०] प्रभा या कांति [illegible] —भः दहकती हुई आग।

उत्प्रसव [उद् + प्र + सू + अप्] गर्भपात

उत्प्रास-सनम् [उद् + प्र + अस् + घञ्, ल्युट् वा] 1 फेंकना उछालना 2 मज़ाक व्यंग्य 3 अट्टहास 4 खिल्ली उड़ाना उपहास करना व्यंग्योक्ति।

उत्प्रेक्षणम् [उद् + प्र + ईक्ष् + ल्युट्] 1 दृष्टिपात करना

प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 2 ऊपर की ओर देखना 3. अनुमान, अटकल 4. तुलना करना।

उत्प्रेक्षा [उद्+प्र+ईक्ष्+अ] 1. अटकल, अनुमान 2. उपेक्षा, उदासीनता 3 (अल० शा० में) एक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय को कई बातों में समान समझने की कल्पना की जाती है, और उस समानता के आधार पर उनके एकत्व की संभावना की ओर स्पष्ट रूप से या किसी तात्पर्यार्थ के द्वारा संकेत किया जाता है— उदा० लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः —मृच्छ० १।३४ स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः —कु० १।१, तु० सा० द० ६८६-९२, और उत्प्रेक्षा के प्रसंग में रस०।

उत्प्लवः [उद्+प्लु+अप्] उछल-कूद, छलांग, —वा किश्ती।

उत्प्लवनम् [उद्+प्लु+ल्युट्] कूदना, उछलना ऊपर से छलांग लगाना।

उत्फलम् [प्रा० स०] उत्तम फल।

उत्फालः [उद्+फल्+घञ्] 1 कूद, छलांग —उत्फालैः —मृच्छ० ६, 2. कूदने की स्थिति।

उत्फुल्ल (भू० क० कृ०) [उद्+फुल्+क्त] 1 खुला हुआ, (फूल की भांति) खिला हुआ 2. खूब खुला हुआ, प्रसारित, विस्फारित (आंखें), 3 सूजा हुआ, शरीर में फूला हुआ 4 पीठ के बल सोया हुआ, तु० उत्तान, —ल्लम् योनि, भग।

उत्सः [उनत्ति क्लेदेन, उन्द्+स किच्च नलोपः] 1. झरना, फौवारा 2. जल का स्थान।

उत्सङ्गः [उद्+सञ्ज्+घञ्] 1. गोद, —कुमुदमिवोत्सङ्गम् —उत्तर० १, विक्रम० ५।१० न केवलमुत्सङ्गः... मनोरथोऽपि मे पूर्णः —उत्तर० ४, मेघ० ८७, 2. आलिंगन, संपर्क, संयोग —मा० ८।६, 3 भीतर रहने वाला —दरीगृहोत्सङ्गनिषक्तभासः कु० १।१०, शय्योत्सङ्गे —मेघ० ९३ 4 सतह, पार्श्व, ढाल —तुषारो शाखिनोत्सङ्गा —रघु० ४।७४, १४।७६ 5. नितंब के ऊपर का भाग या कूल्हा 6. ऊपरी भाग, शिखर 7. पहाड़ की चढ़ाई तुङ्गं नगोत्सङ्गमिवारुरोह —रघु० ६।३ 8. घर की छत।

उत्सङ्गित (वि०) [उत्सङ्ग+इतच्] 1. संयुक्त सम्मिलित, संपर्क में लाया हुआ —शि० ३।७९, 2. गोद में लिया हुआ।

उत्सञ्जनम् [उद्+सञ्ज्+ल्युट्] ऊपर को फेंकना, ऊपर उठाना।

उत्सन्न (भू० क० कृ०) [उद्+सद्+क्त] 1. सड़ा हुआ 2. नष्ट, बर्बाद, उजाड़ा हुआ, उजाड़ा हुआ —उत्सन्नोऽस्मि —का० १६४, बर्बाद —मकरध्वज इवो-त्सन्नविग्रहः—का० ५४, भग० १।४४ —निद्रा —का० १७१, 3. अभिशप्त, शापग्रस्त का मारा 4. व्यवहार में न आने वाला, विलुप्त (पुस्तकादिक)।

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1. एक ओर रख देना, छोड़ देना, तिलाञ्जलि देना, त्यागना —कु० ७।४५, 2. उंडेलना, गिरा देना, निकालना —तोयोत्सर्गद्रुततरगतिः मेघ० १९।२७ 3 उपहार, दान प्रदान मनु० ११।१९४ 4 व्यय करना 5 ढीला करना, खुला छोड़ देना जैसा कि पशु का छोड़ना 6 आहुति, तर्पण 7 विष्ठा, मल आदि —पुरीष, मलमूत्र 8 पूर्ति (व्रत या धार्मिक कृत्य की) 9 सामान्य नियम या विधि (विप० अपवाद एक विशेष नियम) अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः कु० २।२७ [illegible] रघु० १५।७ [illegible]।

उत्सर्जनम् [उद्+सृज्+ल्युट्] 1 त्याग (तिलाञ्जलि देना), ढीला करना, मुक्त करना आदि 2 उपहार, दान 3 वेद अध्ययन का स्थगन [illegible] धार्मिक संस्कार [illegible] —[illegible] मनु० [illegible]।

उत्सर्पः, —सर्पणम् [उद्+सृप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 ऊपर को जाना या सरकना 2 फूलना, हाँफना।

उत्सर्पिन् (वि०) [उद्+सृप्+णिनि] 1 ऊपर को जाने या सरकने वाला, उड़ने वाला —[illegible] 2 उभरने वाला, प्रोज्ज्वल —उत्सर्पिणी खलु महतां [illegible]।

उत्सवः [उद्+सू+अप्] 1 पर्व, हर्ष या आनन्द का अवसर, जयन्ती, [illegible] या हर्षनृत्य [illegible] 2 [illegible] प्रमोद आमोद [illegible] विरतमुत्सवम् [illegible] [illegible] 3 ऊंचाई [illegible] इच्छा, [illegible] —संकेताः (पुं० ब० व०) [illegible] हिमालय निवासी जंगली जाति [illegible] स कृत्वा विरतोत्सवान् —रघु० ४।७८।

उत्सादः [उद्+सद्+णिच्+घञ्] नाश, अपक्षय, बर्बादी, हानि —[illegible] —का० ३२।

उत्सादनम् [उद्+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. नाश करना, उखाड़ देना —उत्सादनार्थं लोकानां —महा०, भग० १।१९, 2 स्थगित करना, बाधा डालना 3 शरीर पर सुगंधित पदार्थ मलना —मनु० २।२०९, २११, 4 घाव भरना 5 ऊपर जाना, चढ़ना, उठना 6 ऊंचा होना, उठाना 7 खेत को भली-भांति जोतना।

उत्सारकः [उद्+सृ+णिच्+ण्वुल्] 1 आरक्षी 2 पहरेदार 3 कुली, द्वारपाल।

उत्सारणम् [उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. हटाना, दूर रखना, मार्ग में से हटा देना 2. अतिथि का स्वागत करना।

उत्साहः [उद् + सह् + घञ्] 1 [illegible] प्रयास—अनुत्साह- समन्वित भग० [illegible] 2 [illegible], उमंग, इच्छा [illegible] मन्दोत्साहकृतोऽस्मि [illegible] [illegible] 3 [illegible] [illegible] 4 [illegible] 5 सामर्थ्य, [illegible] [illegible] **शालिन्** [illegible] **हेतुक** [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 4 [illegible] [illegible]

उत्सुक (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible]

उत्सूर (पुं०) [illegible] 1 [illegible] 2. [illegible] [illegible]

उत्सूरः [illegible] —[illegible]] सायंकाल, संध्या।

उत्सेकः [उद् + सिच् + घञ्] 1 छिड़काव, उंडेलना 2 फुहार छोड़ना, बौछार करना 3 उमड़ना बढ़ि [illegible] दर्प बल आदि 4 घमंड, अहंकार, धृष्टता — उदग्र [illegible] [illegible], अनुत्सेकी [illegible]

उत्सेकिन् (वि०) [उत्सेक + इनि] 1 उमड़ने वाला, [illegible] 2. घमंडी, अहंकारी, उद्धत—भाग्येष्वनु-त्सेकिनी [illegible]

उत्सेचनम् [उद् + सिच् + ल्युट्] फुहार छोड़ना, या बौछार करना।

उत्सेध [illegible] 1 ऊंचाई, उन्नतता [illegible] (वल्कलम्) [illegible] 2 मोटाई, [illegible] 3 शरीर [illegible] मारना, वध करना।

[illegible] [illegible]

[illegible] आवाज करने वाला, [illegible]

[illegible] [illegible] के कारण [illegible]

[illegible] नाम और धातुओं से [illegible] निम्नांकित अर्थ [illegible] 1 स्थान पद या [illegible], उच्च, उद्गत ऊपर पर [illegible] 2 वियोजन, [illegible] आदि (उद्गच्छति) [illegible] 4 [illegible] 5 प्रकाशन (उच्चारित) 6 [illegible] (उद्गत) 8 [illegible] 9 [illegible] प्रयत्न (उत्कृष्ट) 11 [illegible] के साथ लगाकर इससे [illegible] और [illegible] समास बनाये जाते हैं [illegible] [illegible] उत्पथम् और [illegible]

उदक् [illegible] (उत्तर की ओर [illegible])।

उदकम् [illegible] पानी, [illegible] दु० ५.२४ [illegible] **—अर्थिन्** (वि०) [illegible] कुआं, **—अन्त** [illegible] **उदरम्** जलोदर (एक रोग जिसमें पेट में पानी भर आता है), **—कर्मन्**, **—कार्य**, **—क्रिया**, **—दानम्** मृत पूर्वजों या पितरों को जल से तर्पण करना [illegible] [illegible] **—कुम्भः** पानी का घड़ा, [illegible] पानी में घुसना, स्नान करना, **—ग्रहणम्** पानी पीना, **—दात्**, **—दायिन्**, **—दायिक** जल देने वाला (—रः) 1 पितरों को जल-दान करने

वाला 2 उत्तराधिकारी, बन्धु-बान्धव, —वाचम् = °कर्मन्, —धरः बादल, भारः, बीवधः पानी ढोने की बहंगी, वर्षः गरज के साथ बौछार, —शाकम् कोई भी वनस्पति जो जल में पैदा होती है, शान्तिः (स्त्री०) ज्वर दूर करने के लिए रोगी के ऊपर अभिमन्त्रित जल छिड़कना, तु० शान्त्युदकम्, स्पर्शः शरीर के विभिन्न अंगों पर जल के छींटे देना —हारः पानी ढोने वाला, कहार।

उदक (कि) ल (वि०) [उदक + लच्] [illegible] पनीला, रसेदार, जलमय।

उदकेचर [अलुक् स०] जल में रहने वाला जन्तु।

उदक्त (वि०) [उद् + अञ्च् + क्त] ऊपर उठाया हुआ ऊपर को उभारा हुआ [illegible]

उदन्य (वि०) [illegible] जल की अपेक्षा करने वाला [illegible] रजस्वला स्त्री।

उदग्र (वि०) [illegible] शिखर वाला [illegible] हुआ, यथा [illegible] उच्छ्रित [illegible] ऊँचा [illegible] विस्तृत [illegible] 4 वयोवृद्ध [illegible] भयावह [illegible] 8 उत्तेजित [illegible] —रघु० [illegible]

उदङ्क [illegible] चमड़े का बर्तन, कुप्पा

उदच्, उदञ्च् [उद् + अञ्च् + क्विप्] [illegible] नपुं० —उदक् स्त्री० —उदीची) 1 ऊपर की ओर मुड़ा हुआ या जाता हुआ 2 ऊपर का, उच्चतर 3 उत्तरी, उत्तर की ओर मुड़ा हुआ 4 बाद का, सम० —अद्रिः उत्तर का पहाड़, हिमालय, अयनम् (उत्तरायण), सूर्य का उत्तर की ओर गति, —आवृत्तिः (स्त्री०) [illegible] उत्तर दिशा में लौटना [illegible] —पथः उत्तरी देश, —प्रवण। (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर झुका हुआ, मुख (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर मुँह किये हुए [illegible] मेघ० १६।

उदञ्चनम् [उद् + अञ्च् + ल्युट्] 1 बाल्टी, डोल —उद [illegible] सरज्जु [illegible] 2 उदय होता हुआ, चढ़ता हुआ 3 ढकना, ढक्कन।

उदञ्जलि (वि०) [ब० स०] दोनों हथेलियों को मिला कर संपुट बनाये हुए।

उदधिपालः [अव्या० स०] 1 मछली 2 एक प्रकार का साँप।

उदधि दे० उदन् के नीचे।

उदन् (नपुं०) [उन्द् + कनिन्, उदक इत्यस्य उदन् आदेश,] जल (यह शब्द प्रायः समास के आरम्भ या अन्त में प्रयुक्त होता है और कर्म० के द्वि० व० के पश्चात् [illegible] —सम० कुम्भः जल का घड़ा [illegible] —धिः 1 [illegible] 2 [illegible] —पानम् [illegible] —पात्रम् [illegible] —बिन्दुः [illegible] —मेघः [illegible] —वाहः (वि०) पानी ढोने वाला [illegible] —वाहनम् पानी का बर्तन [illegible] —हरणम् पानी निकालने का बर्तन।

उदन्तः [illegible] 1 समाचार, [illegible] विवरण, वर्णन, इतिवृत्त [illegible] कालिदास [illegible] मेघ० १०० 2 पवित्रात्मा, साधु।

उदन्तक [उदन्त + कन्] समाचार, सूचना देने वाले।

उदन्तिका [उद् + अन्त् + [illegible] + टाप्] [illegible] [illegible]

उदन्य (वि०) [उदक + क्यच्, नि० उदन् आदेश] पिपासा, प्यास, निबंध्यं [illegible] वेणी० ६ [illegible]

उदन्वत् (पुं०) [उदक + मतुप्, उदन् आदेश, मस्य व:] समुद्र,—उदन्वच्छन्नाभू.— बालरा० १।८, रघु० ४।५२, ९८, १०।६, कु० ७।७३।

उदय: [उद् + इ + अच्] 1. निकलना, उगना (आल० भी)—चंद्रोदय इवोदधे: रघु० १२।३६ २।७३ ऊपर जाना 2. आविर्भाव, उत्पादन—घनोदय: प्राक्—श० ७।३०, फलोदय —रघु० १।५, फल का निकलना या निष्पन्न होना —कु० ३।१८ 3 सृष्टि (विप० प्रलय) कु० २।८ 4 पूर्वाद्रि (उदयाचल- जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना माना जाता है)—उदयगूढशशाङ्कमरीचिभि: —विक्रम० ३।६ 5 प्रगति, समृद्धि, उदय (विप० 'व्यसन')- तेषामुदयस्य मूलकारणमनोदयाभ्याम् - श० ४।१, रघु० ८।८४, ११।७३ 6 उन्नयन, उत्कर्ष, उदय, वृद्धि- उदयमस्तमयं च रघूद्वहात् —रघु० ९।८९, 7 फल, परिणाम 8 निष्पन्नता, पूर्णता —उपस्थितोदयम्- -रघु० ३।१, प्रारब्धमदृशोदय: १।१५, 9. लाभ नफा 10 आय, राजस्व 11. ब्याज 12. प्रकाश, चमक। सम०—अचल:,—अद्रि:, —गिरि:,—पर्वत:,—शैल: पूर्व दिशा में होने वाला उदयाचल, जहाँ से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होना माना जाता है—उदयगिरिवनालीबालमन्दारपुष्पम् —उद्भट, श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकै:—शि० १।१६, तत उदयगिरेरिवैक एव —मा० २।१०,—प्रस्थ: उदयाचल का पठार जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना समझा जाता है।

उदयनम् [उद् + इ + ल्युट्] 1 उगना, चढ़ना, ऊपर जाना 2. परिणाम,—न: 1. अगस्त्य मुनि 2. वत्सदेश का राजा—प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, (उदयन प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा था, यह वत्सराज के नाम से विख्यात है। उदयन कौशाम्बी में राज्य करता था। उज्जयिनी की राजकुमारी वासवदत्ता ने उसे स्वप्न में देखा, तथा देखते ही वह उस पर मोहित हो गई। चण्ड महासेन ने उदयन को धोखे से पकड़ लिया और कारागार में डाल दिया, परन्तु बाद में मन्त्री के द्वारा मुक्त किये जाने पर वह वासवदत्ता को उसके पिता तथा अपने प्रतिद्वन्द्वी से निकाल कर ले भागा। रत्नावली नामक नाटिका का नायक भी उदयन है। इसके जीवन की घटनाओं के आधार पर और कई रचनाएँ हो चुकी हैं) दे 'वत्स' भी।

उदरम् [उद् + दृ + अप्] 1 पेट- कुम्भीपूरोदरपूरणाय —भर्तृ० २।११९, मु० कृशोदरी, उदरंभरि आदि 2 किसी वस्तु का भीतरी भाग, गह्वर, तथा अन्द° पंच० २।१५० रघु० ५।७०, त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्—श० ६।१९, १।१९, अमरु ८८, 3. जलोदर रोग के कारण पेट का फूल जाना—तस्य होदरं जज्ञे —ऐत० 4. वध करना। सम०—आध्मान: पेट का फूलना,—आमय: पेचिश, अतिसार,—आवर्त: नाभि, —आवेष्ट: केचुआ, फीताकृमि,—त्राणम् 1. वक्षस्त्राण या आंगिया, कवच या जिरहबख्तर जो केवल छाती पर पहना जाय 2. पेट को कसने वाली पट्टी,—पिशाच: (वि०) पेटू, खाऊ, (बहुभोजी जिसकी भूख राक्षसों जैसी होती है),(—च:) भोजनभट्ट,— पूरम् (अव्य०) जब तक पूरा पेट न भर जाय- —उदरपूरं भुङ्क्ते —सिद्धा०, पेट भर कर खाना है,—पोषणम्,— भरणम् पेट भरना, पालन पोषण करना,— शय (वि०) पेट के बल लेट कर सोने वाला (—य:) भ्रूण,— सर्वस्व: पेटू, बहुभोजी, स्वादलोलुप, (जिसके लिए पेट ही सब कुछ है)।

उदरथि: [उद् + ऋ + अथिच्] 1. समुद्र 2 सूर्य।

उदरंभरि (वि०) [उदर + भृ + इन् मुमागम] 1 केवल अपना पेट भरने वाला स्वार्थी 2 पेटू बहुभोजी।

उदरवत्, उदरिक—ल (वि०) [उदर + मतुप् मस्य व, उदर + ठन्, इलच् वा] बड़ी तोंद वाला स्थूलकाय, मोटा।

उदरिन् (वि०) [उदर + इनि] बड़ी तोंद वाला मोटा स्थूलकाय, —णी गर्भवती स्त्री।

उदर्क: [उद् + अर्क (अर्च्) + घञ्, —उद् —ऋच् — घञ् वा] 1 (क) अन्त, उपसंहार —सुखोदर्कम् —मा० १।२८ (ख) फल परिणाम, किसी क्रिया का भावी फल —किन्तु कल्याणोदर्कं भविष्यति उत्तर० ४, प्रयत्न: सफलोदर्क एव —मा० ८ मनु० ४।१७६ ११।१० 2. भविष्यत्काल, उत्तरकाल।

उदर्चिस् (वि०) [ऊर्ध्वमर्चि: शिखाऽस्य ब० स०] चमकने वाला, ऊपर की ओर ज्वाला विकीर्ण करने वाला ज्योतिर्मय, उज्ज्वल—स्फुरदुदर्चिः सहसा तृतीयादक्ष्णः कृशानुः किल निष्पपात - कु० ३।७१, ७।७९ रघु० ७।२४, १५।७६,—(पुं०) 1 अग्नि- प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्—शि० २।४२ २०।५५ 2. कामदेव 3. शिव।

उदवसितम् [उद् + अव + सो + क्त] घर, आवास।

उदश्रु (वि०) [उद्गतान्यश्रूणि यस्य ब० स०] फूट-फूट कर रोने वाला, जिसके अविरल आँसू बह रहे हों, रोने वाला —रघु० १२।१४, अमरु ११।

उदसनम् [उद् + अस् + ल्युट्] 1 फेंकना, उछालना सीधा खड़ा करना 2. बाहर निकाल देना।

उदात्त (वि०) [उद् + आ + दा + क्त] 1 उच्च उन्नत —°शब्दैः —श० ९२, वेणी० १, 2 बड़ प्रतिष्ठित 3 उदार, वदान्य 4. प्रसिद्ध, विख्यात, महान्-मालतीदानमहिमा —भामि० १।७९, 5. प्रिय, प्रियतम

6. उच्च स्वरयुक्त दे० नी०,—त्तः 1 उच्च स्वर में उच्चरित—उच्चैरुदात्तः—पा० १।२।२९, ताल्वादिषु स्थानेषूर्ध्वभागे निष्पन्नोऽजुदात्तः —सिद्धा०, अनुदात्त के नीचे भी दे०,—निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव—शि० २।९५, 2. उपहार, दान 3. एक प्रकार का वाद्य—उपकरण, बड़ा ढोल,—त्तम् (अलं० शा०) एक अलंकार—सा० द० ७५२, तु० काव्य० १०, उदात्तं वस्तुनः संपन्महतां चोपलक्षणम्।

उदानः [उद्+अन्+घञ्] 1 ऊपर को सांस लेना 2 सांस लेना, श्वास, 3. पांच प्राणों में से एक जो कण्ठ से आविर्भूत होकर सिर में प्रविष्ट होता है - अन्य चार हैं:—प्राण, अपान, समान और व्यान;—स्पन्दयत्यधरं वक्त्रं गात्रनेत्रप्रकोपनः, उद्वेजयति मर्माणि उदानो नाम मारुतः। 4 नाभि।

उदायुध (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र उठा लिया है शस्त्र ऊपर उठाये हुए—मधुकरपुष्टिनिर्भयैरुदायुधैर्भृङ्ग-स्वायुधैः, वेणी० ३।२२; उदायुधानापततस्तान्दृप्तान्प्रेक्ष्य राघवः—रघु० १२।४४।

उदार (वि०) [उद्+आ+रा+क] 1 दानशील, मुक्तहस्त, दानी 2 (क) बड़ा, श्रेष्ठ—स तथेति विनेतुरुदारमतेः—रघु० ८।९१ ५।१२, मेघ० ७।१८ (ख) उच्च, विख्यात, पूज्य,—°कीर्ति—कि० १।१८, 3 ईमानदार, निष्कपट, खरा 4 अच्छा, बढ़िया, उत्तम—उदारः कल्पः—श० ५ 5 वाग्मी 6 बड़ा, विस्तृत विशाल, शानदार—रघु० ११।७९, —उदारनेपथ्य-भृताम्—१, 6. मूल्यवान् वस्त्र पहने हुए 7 सुन्दर, मनोहर, प्यारा—कु० ७।१४, शि० ५।२१,—रम् (अव्य०) जोर से—शि० ४।११। सम०—आत्मन्, —चेतस् —चरित, —मनस्—सत्त्व (वि०) विशाल-हृदय, महात्मना—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् —हि० १, - धी (वि०) उदात्त प्रतिभाशील, अत्यन्त बुद्धिमान्—रघु० ३।३०,—दर्शन (वि) जो देखने में सुन्दर है, बड़ी आंखों वाला—कु० ५।३६।

उदारता [उदार+तल्+टाप्] 1. मुक्तहस्तता, 2 समृद्धि (अभिव्यक्ति की)—वचसाम्—मा० १।७।

उदास (वि०) [उद्+अस्+घञ्] तटस्थ, वीतराग, उदासीन,—सः, 1. निःस्पृह, दार्शनिक 2. तटस्थता, अनासक्ति।

उदासिन् (वि०) [उद्+आस्+णिनि] 1. निःस्पृह, 2. तत्त्ववेत्ता।

उदासीन (वि०) [उद्+आस्+शानच्] 1. तटस्थ, बेलाग, निर्लिप्त—तद्दर्शिनमुदासीनं त्वामेव पुरुषं विदुः—कु० २।१३, (भौतिक संसार की रचना में कोई भाग न लेते हुए) दे० सांख्य 2. (विधि में) अभियोग से असंबद्ध व्यक्ति 3. निष्पक्ष (जैसा कि राजा या राष्ट्र),—नः 1 अजनबी 2. तटस्थ —मनु० ७।१५५ 3 सामान्य परिचय।

उदास्थितः [उद्+आ+स्था+क्त] 1 अधीक्षक 2 द्वारपाल 3. भेदिया, गुप्तचर 4 तपस्वी जिसका व्रत भङ्ग हो गया है।

उदाहरणम् [उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1 वर्णन, प्रकथन, कहना 2 वर्णन करना, पाठ करना समालाप आरंभ करना—अथाङ्गिरसमग्रण्यमुदाहरणवस्तुषु—कु० ६।६५ 3 प्रकथनात्मक गीत या कविता, एक प्रकार का स्तुतिगान जो 'जयति' जैसे शब्द से आरम्भ हो तथा अनुप्रास से युक्त हो—चरणोन्यस्तस्तवीय जयोदाहरणं श्रुत्वा—विक्रम० १ जयोदाहरणं बाह्वोर्गापयामास किन्नरान् रघु० ४।७८ विक्रम० २।१४, येन केनापि तालेन गद्यपद्यसमन्वितम्, जयत्युपक्रमं मालिन्यादिप्रासविचित्रितम्, तदुदाहरणं नाम विभक्त्यष्टाङ्गसंयुतम् —प्रतापरुद्र। 4 निदर्शन, मिसाल, दृष्टान्त —समूलघातमघ्नन्तः परान्नोद्यन्ति मानिनः प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणं रविः। शि० २।३३ 5 (न्या० में) अनुमानप्रक्रिया के पांच अंगों में से तीसरा 6 (अलं० शा०) 'दृष्टान्त' जो कुछ आलंकारिकों द्वारा अलंकार माना जाता है—यह अर्थान्तरन्यास से मिलता जुलता है उदा० अमितगुणोऽपि पदार्थो दोषेणैकेन निन्दितो भवति निखिलरसायनराजो गन्धेनोग्रेण लशुन इव। रस०, (दोनों अलंकारों में भेद स्पष्ट करने के लिए उदाहरण के नी० दे० रस०)

उदाहारः [उद्+आ+हृ+घञ्] 1 मिसाल या दृष्टान्त 2 किसी भाषण का आरम्भ।

उदित (भू० क० कृ०) [उद्+इ+क्त] 1 उगा हुआ चढ़ा हुआ—उदितभूयिष्ठ—मा० १ भामि० २।८५ 2 ऊँचा, लंबा, उन्नत 3 बढ़ा हुआ, प्रवर्धित 4 उत्पन्न, पैदा हुआ, 5 कथित उच्चरित (वद् का भ० क० कृ० रूप)। सम०—उदित (वि०) शास्त्रों में पूर्ण-शिक्षित।

उदीक्षणम् [उद्+ईक्ष्+ल्युट्] 1 ऊपर की ओर देखना 2. देखना, दृष्टिपात करना।

उदीची [उद्+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] उत्तर दिशा, —तेनोदीचीं दिशमनुसरेः—मेघ० ५७।

उदीचीन (वि०) [उदीची+ख] 1. उत्तर दिशा की ओर मुड़ा हुआ 2 उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला।

उदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तर दिशा में होने या रहने वाला,—च्यः 1. सरस्वती नदी के पश्चिमोत्तर में स्थित एक देश 2. (ब० व०) इस देश के निवासी —रघु० ४।६६,—च्यम् एक प्रकार की सुगन्ध।

उदीप [उद्गता आपो यत्र—उद्+अप् (ईप्) ब० स०] बढ़ता पानी, जलप्लावन बाढ़।

उदीरणम् [उद्+ईर्+ल्युट्] 1 बोलना, उच्चारण, —अभिव्यंजना उद्घात प्रणवो यासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम् —कु० २।१२, 2 बोलना, कहना 3 फेंकना (अस्त्रादिक का) चलाना।

उदीर्ण (भू० क० कृ०) [उद्+ईर्+क्त] 1 कहा हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, उन्नत 3 वर्धित, गहन।

उदुम्बर दे० उडुम्बर।

उदूखल=उलूखल।

उदूढा [उद्+वह्+क्त—टाप्] विवाहित स्त्री।

उदेजय (वि०) [उद्+एज्+णिच्+खश्] हिलाने वाला, कंपाने वाला, भयंकर —उदेजयान् भूतगणान् न्यषेधीत् भट्टि० १।१५।

उद्गतिः (स्त्री०) [उद्+गम्+क्तिन्] 1 ऊपर जाना उठना चढ़ना 2 आविर्भाव उदय जन्मस्थान 3 वमन करना।

उद्गन्धि (वि०) [उद्गतो गन्धोऽस्य ब० स० इत्वम्] 1 सुगंधयुक्त, सुगंधदार —विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु रघु० १६।४७ 2 तीव्र गंध वाला।

उद्गमः [उद्+गम्+घञ्] 1 ऊपर जाना, (तारों आदि का), उगना चढ़ना आचन्द्रमार्कोद्गमात् श० १।१५ 2 (बालों का) सीधे खड़े होना रोमोद्गमः प्रादुरभूदुमायाः कु० ३।६८ मालवि० ४।१ अमरु ३६, 3 बाहर जाना, विदा 4 जन्म, उत्पत्ति रचना —पारिजातस्योद्गमः —मा० ९ आविर्भाव—फलेन सहकारस्य पुष्पोद्गम इव प्रजा —रघु० ४।९ कतिपय-कुसुमोद्गमः कदम्बः उत्तर० ३।२० अमरु ८१ 5 उभार, उन्नयन 6 (किसी पौधे का) अंकुरण —हरित-तृणोद्गमशङ्कया मृगीभिः कि० ५।३८ 7 वमन करना, उगलना।

उद्गमनम् [उद्+गम्+ल्युट्] उगना, दिखाई देना।

उद्गमनीय (सं० कृ०) [उद्+गम्+अनीयर्] ऊपर जाने या चढ़ने के योग्य, —यम् धुले कपड़ों का जोड़ा (तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्)—गृहीतोद्गमनीयवस्त्रा —दश० ४२, गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा— कु० ७।११ (यहाँ मल्लि० 'उद्°' का अनुवाद 'धौतवस्त्र' करते हैं और कहते हैं कि 'धुकाङ्कं तु नाभिमानिप्रायम्' दे० वहीं)।

उद्गाढ (वि०) [उद्+गाह्+क्त] गहरा, गहन, अत्यधिक, अत्यंत —उद्गाढरागोदया —मा० ५।७, १।१९, —ढम् आधिक्य,—(अव्य०) अत्यधिक, अत्यन्त।

उद्गातृ (पुं०) [उद्+गै+तृच्] यज्ञ के मुख्य चार ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है।

उद्गारः [उद्+गॄ+घञ्] 1. (क) निष्कासन, थूकना, वमन करना, कफ डालना, उत्सर्जन—सर्जुनीस्वच्छ-महाना मवोद्गारसुगन्धिषु—रघु० ४।५७, भर्तृ० २।३६ मेघ० ६३,६९, शि० १२।९, (ख) शब्द, प्रवाह दिल में भरी हुई बात का बाहर निकालना —रघु० ६।१९ महावी० ६।३३ 2 बार बार कहना वचन० ४ २।१३, 3 थूक, लार 4 डकार, कण्ठगर्जन।

उद्गारिन् (वि०) [उद्+गॄ+णिनि] 1 ऊपर जाने वाला, उगने वाला 2 वमन करने वाला बाहर भेजने वाला रघु० १३।४७।

उद्गिरणम् [उद्+गॄ+ल्युट्] 1 वमन करना 2. थूक या लार निगलना 3 डकारना 4 उन्मूलन।

उद्गीतिः (स्त्री०) [उद्+गै+क्तिन्] 1 ऊँचे स्वर से गान करना 2 सामवेद के मन्त्रों का गान 3 आर्या छन्द का एक भेद दे० परिशिष्ट।

उद्गीथः [उद्+गै+थक्] 1 सामवेद के मंत्रों का पाठ (उद्गाता का पद) 2 सामवेद का उत्तरार्ध—भूमानमुद्गीथविदो वदन्ति उत्तर० २।३ 3 ओम् जो परमात्मा का तीन अक्षरों का नाम है।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गॄ+क्त] 1 वमन किया हुआ 2 उगला हुआ बाहर उडेला हुआ।

उद्गूर्ण (वि०) [उद्+गुर्+क्त] ऊँचा किया हुआ ऊपर उठाया हुआ —वेणी० ६।१२।

उद्ग्रन्थः [उद्+ग्रन्थ्+घञ्] अनुभाग अध्याय।

उद्ग्रन्थि (वि०) [ब० स०] बन्धनमुक्त (आल० भी)।

उद्ग्रहः, —हणम् [उद्+ग्रह्+अप् ल्युट् वा] 1 लेना उगना 2 ऐसा कार्य जो धार्मिक अनुष्ठान अथवा अन्य कृत्यों के सम्पन्न हो सकता है 3. डकार।

उद्ग्राहः [उद्+ग्रह्+घञ्] 1 उठाना या लेना, 2 वाद का उत्तर देना, प्रतिवाद।

उद्ग्राहणिका [उद्+ग्रह्+णिच्+युच्+टाप्+क, इत्वम्] वाद का उत्तर देना।

उद्ग्राहित (भू० क० कृ०) [उद्+ग्रह्+णिच्+क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ या लिया हुआ 2 हटाया हुआ 3 श्रेष्ठ, उन्नत 4 न्यस्त मुक्त किया गया 5. बद्ध, बद्ध 6. प्रत्यास्मृत, याद किया गया।

उद्ग्रीव, उद्ग्रीविन् (वि०) [उन्नता ग्रीवा यस्य—ब० स०, उन्नता ग्रीवा प्रा० स० उद्ग्रीवा+इनि] गर्दन ऊपर उठाये हुए —उद्ग्रीवैर्मयूरैः— मालवि० १।२१, अमरु ११।

उद्घः [उद्+हन्+ड] 1 श्रेष्ठता, प्रमुखता (समास के अन्त में) ब्राह्मणोद्घः —एक श्रेष्ठ ब्राह्मण—उद्घा-[illegible] [illegible]—शिशु०, [illegible] प्रकाण्ड[illegible] —अमर० 2. हथेली 3. अग्नि 4. [illegible] 5. नमूना 6 शारीरिक आंतरिक वायु।

उद्घनः [उद्+हन्+अप्] लकड़ी का तख्ता जिस पर बढ़ई लकड़ी रख कर घड़ता है, आधारी - लौहोद्घन-घनस्कन्धा ललितापघना स्त्रियम् —भट्टि० ७।६२ ।

उद्घट्टनम्-ना [उद्+घट्ट+ल्युट्, युच् वा] रगड़, टकराना—मेघ० ६१ ।

उद्घर्षणम् [उद्+घृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना, घोटना—अस्थ्नोऽ-प्युद्घर्षणकोष्टकैरपि यथा पृष्ठे न याति किण —मृच्छ० २।११, 2 सोटा ।

उद्घाटः [उद्+घट्+घञ्] चौकीदार या चौकी (जिसमें सैन्य संरक्षक दल ठहरे) ।

उद्घाटकः [उद्+घट्+णिच्+ण्वुल्] 1 कुंजी 2 कुएँ की रस्सी और डोल, कुएँ की चर्खी (—कम् भी) ।

उद्घाटन (वि०) (स्त्री०—नी) [उद्+घट्+णिच्+ल्युट्] खोलना, ताला खोलना —कर्म यो न करोति निश्चितमति स्वर्गार्गलोद्घाटनम्—हि० १।१५३,—नम् 1. प्रकट करना—वेणी० १ 2 उघाड़ करना ऊपर उठाना 3 कुंजी 4 कुएँ पर की रस्सी व डोल, पानी निकालने की चर्खी ।

उद्घातः [उद्+हन्+घञ्] 1 आरंभ, उपक्रम —उद्घातः प्रणवो यासाम्—कु० २।१२ आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः—रघु० ४।२० 2 संकेत, उल्लेख 3. प्रहार करना, घायल करना 4 प्रहार धक्का, आघात 5 हचकोला, झकझोरना, (गाड़ी आदि का) धचका—शि० १२।२, रघु० २।७२, वेणी० २।२८, 6 उठना, उन्नत होना 7 मुद्गर 8 शस्त्र 9 पुस्तक भाग, अध्याय, अनुभाग, परिच्छेद ।

उद्घोषः [उद्+घुष्+घञ्] 1 ऊँची आवाज में कहना ढिंढोरा पीटना 2. सर्वजन प्रिय बात, सामान्य विवरण ।

उद्दंशः [उद्+दंश्+अच्] 1 खटमल 2 जूं 3 मच्छर ।

उद्दण्ड (वि०) [ब० स०] 1 जिसका डंडा, डंठल या दस्ता उठा हुआ हो—उद्दण्डपद्मं गृहदीर्घिकाणाम्—रघु० १६।४६, °धवलातपत्रा मा० ६ 2 मजबूत, भयानक । सम०—पालः 1. दंड देने वाला 2 एक प्रकार की मछली 3. एक प्रकार का साँप ।

उद्दन्तुर (वि०) [प्रा० स०] 1 जिसके दाँत लंबे, या बाहर निकले हुए हों 2. ऊँचा, लंबा 3 भयानक भयंकर ।

उद्दानम् [उद्+दो+ल्युट्] 1 बंधन, कैद—उद्दाने क्रियमाणे तु मत्स्यानां तत्र रज्जुभिः—महा० 2 पालतू बनाना, वश में करना 3 मध्यभाग, कटि 4 चूल्हा, अंगीठी, 5. बड़वानल ।

उद्दान्त (वि०) [उद्+दम्+क्त] 1. ऊर्जस्वी 2. विनीत ।

उद्दाम (वि०) [ब० स०] 1. निर्बंध, अनियंत्रित, निरंकुश, मुक्त—शि० ४।१० 2. (क) उत्कट, प्रचण्ड—रघु० ९।१४८ (ख) गंभीर, मात्रा में पूर—ओजस्वि[illegible] दिखावे—रघु० १।५८—शि० ११।१९ 3. असाधारण 4 स्वेच्छाचारी 5 अतिबहुल, विशाल, बड़ा, अत्यधिक —मेघ० २५, रत्ना० २।४, -मः 1 यम 2. वरुण, —मम् (अव्य०) प्रचण्डता के साथ, तीव्रतापूर्वक, बलपूर्वक —उद्दामं व्याकियत—उत्तर० ३।१९ ।

उद्दालकम् [उद्+दल्+णिच्+अच्+कन्] एक प्रकार का शहद, लसोड़े का फल ।

उद्दित (वि०) [उद्+दो+क्त] बंधा हुआ, बद्ध ।

उद्दिष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+दिश्+क्त] 1 बतलाया हुआ, विनिर्दिष्ट, विशेष रूप से कहा गया 2. इच्छित 3 चाहा हुआ 4 समझाया गया, सिखाया गया ।

उद्दीपः [उद्+दीप्+घञ्] 1 प्रज्वलित करने वाला, जलाने वाला 2 प्रज्वालक ।

उद्दीपक (वि०) [उद्+दीप्+णिच्+ण्वुल्] 1 उत्तेजक 2 प्रकाशक, प्रज्वालक ।

उद्दीपनम् [उद्+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1 जलाने वाला, उत्तेजना देने वाला 2 (अलं० शा०) जो रस को उत्तेजित करे, दे० 'आलंबन' 3 प्रकाश करना, जलाना 4 शरीर को भस्म करना ।

उद्दीप्र (वि०) [उद्+दीप्+रन्] चमकता हुआ, दहकता हुआ—प्र, —प्रम् गुग्गुल ।

उद्दृप्त [उद्+दृप्+क्त] घमंडी, अभिमानी ।

उद्देशः [उद्+दिश्+घञ्] 1 संकेत करने वाला, निर्देश करने वाला 2 वर्णन, विशिष्ट वर्णन 3 निदर्शन, व्याख्यान दृष्टान्त 4 निश्चयन, पूछताछ, गवेषण, खोज 5 संक्षिप्त वक्तव्य या वर्णन—एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया —भग० १०।४०, 6. दत्त-कार्य 7 अनुबन्ध 8 अभिप्राय प्रयोजन 9 स्थान, प्रदेश जगह—अहो प्रवातसुभगोऽयमुद्देशः—श० ३, मालवि० ३ ।

उद्देशकः [उद्+दिश्+ण्वुल्] 1 निदर्शन, दृष्टान्त 2 (गणित में) प्रश्न, समस्या ।

उद्देश्य (सं० कृ०) [उद्+दिश्+ण्यत्] 1 उदाहरण देकर स्पष्ट करने या समझाये जाने के योग्य 2. अभिप्रेत, लक्ष्य —श्यम् 1 लक्ष्यार्थ, प्रोत्साहक 2 किसी उक्ति (क्रिया) का कर्ता, (विप० विधेय) दे० 'अनुवाद' भी ।

उद्द्योतः [उद्+द्युत्+घञ्] 1 प्रकाश, प्रभा (शा० और आलं०)—निखिलेषु कृतोद्द्योतम्—महा०, कुलोद्द्योत-करी तव रामा० अलंकृत करते हुए 2. किसी पुस्तक के प्रभाग, अध्याय, अनुभाग या परिच्छेद ।

उद्द्रावः [उद्+द्रु+घञ्] भागना, पीछे हटना ।

उद्धत (भू० क० कृ०) [उद्+हन्+क्त] 1. ऊँचा किया हुआ, उन्नत, ऊपर उठाया हुआ—लाङ्गूलमुद्धतं धुन्वन् —भट्टि० ९।७ वात्योद्धतैरपि रजोभिः—श० १।८, उठाई हुई, रघु० ९।५० हाँका हुआ—कि० ८।५१

2. अतिशय, अत्यन्त, अत्यधिक 3. अभिमानी, निरर्थक, व्यर्थ फूला हुआ—अनन्यजोद्धतः—रघु० १२।६१ 4. कठोर 5. उत्तेजित, भड़काया हुआ, प्रचंड °मनोभवरागा—कि० ९।६८, ६९, मदोद्धता प्रत्यनिक विजेष कु० ३।११ 6 शानदार, राजसी—धीरोद्धता नमयतीव महिर्वसुधाम्—उत्तर० ६।१९, अक्खड़, अशिष्ट, —तः राज-मल्ल। सम०—मनस्,—मानस (वि०) दम्भी, अहंकारी, घमंडी।

उद्धतिः (स्त्री०) [उद्+हन्+क्तिन्] 1. उन्नयन 2. घमंड, अभिमान,—कि० ३।२८, 3. अक्खड़पना, धृष्टता 4. प्रहार।

उद्धमः [उद्+ध्मा+श बाहुलकात्] 1 आवाज निकालना, बजाना 2 जोर से सांस लेना, हाँफना।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] 1 निकालना, बाहर करना, (वस्त्रादिक) उतारना 2 निचोड़ना, निस्सारण, उखाड़ लेना, शल्य° मनु० ९।२५२, चक्षुषोरुद्धरणम्—मिता०, 3 उद्धार करना, मुक्त करना, अभय करना—दीनोद्धरणोचितस्य—रघु० २।२५, न सम्पूर्णो विपन्नामापद्युद्धरणक्षमः—हि० १।१, 4 उन्मूलन, नाश, पराजय 5 उठाना, ऊपर करना 6. वमन करना 7 मोक्ष 8 ऋणपरिशोध।

उद्धर्तृ-उद्धारक (वि०) [उद्+(हृ)धृ+तृच्, ण्वुल् वा] 1 ऊपर उठाने वाला 2. साझीदार, सम्पत्ति का हिस्सेदार।

उद्धर्ष (वि०) [उद्+हृष्+घञ्] खुश, प्रसन्न,—र्षः 1 बहुत प्रसन्नता 2. किसी कार्य को संपन्न करने के लिए उत्तरदायित्व लेने का साहस 3. उत्सव (धार्मिक पर्व)।

उद्धर्षणम् [उद्+हृष्+ल्युट्] 1. आग फूंकना 2. रोमांच होना, पुलक।

उद्धवः [उद्+हु+अप्] 1. यज्ञाग्नि 2 उत्सव, पर्व 3 इस नाम का यादव जो कृष्ण का चाचा तथा मित्र था (जब अक्रूर द्वारा कृष्ण मथुरा ले जाये गये, तो गोकुल वासियों ने उद्धव से मथुरा जायें-और वहां से कृष्ण का वापिस किया जाने की प्रार्थना की। यादवों के अवश्यंभावी विनाश को देख कर उद्धव कृष्ण के पास गये और पूछा कि अब क्या करें, कृष्ण ने तब उद्धव को बतलाया कि वह बदरिकाश्रम जाकर तपस्या करें तथा स्वर्गलाभ करें। 'उद्धवदूत' और 'उद्धवसंदेश' की रचना का विषय 'उद्धव' है)।

उद्धस्त (वि०) [ब० स०] हाथ आगे पसारे हुए या उठाये हुए।

उद्धानम् [उद्+धा+ल्युट्] 1 चूल्हा, अंगीठी, अग्निकुण्ड 2. उगल देना, वमन करना।

उद्धान्त (वि०) [उद्+हा+क्त वा०] उगला हुआ, वमन किया हुआ,—न्तः हाथी जिसके मस्तक से मद चूना बन्द ही गया हो।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. खींचकर बाहर निकालना, निस्सारण 2. मुक्ति, त्राण, बचाव, छुटकारा, छुटकारा 3 उठाना, ऊपर करना 4 (विधि में) पैतृक सम्पत्ति में से पृथक् किया गया वह भाग जिसे नाम केवल ज्येष्ठ पुत्र ही उठा सके, छोटे भाइयों दिये जाने वाले भाग के अतिरिक्त यह अंश कानूनन बड़े भाई को ही मिले—मनु० ९।११२, युद्ध की लूट का छठा भाग जिसका स्वामी राजा होता है—मनु० ७।९७, 6 ऋण, 7 सम्पत्ति का फिर प्राप्त हो जाना 8 मोक्ष।

उद्धारणम् [उद्+हृ(धृ)+णिच्+ल्युट्] 1 उठाना, ऊँचा करना 2. बचाना, भय से निकाल लेना, छुटकारा, मुक्ति।

उद्धुर (वि०) [उद्+धुर्+क] 1. अनियन्त्रित, निरङ्कुश, मुक्त 2 दृढ़, निश्शङ्क 3 भारी, भरपूर—शि० ५।६० 4 मोटा, फूला हुआ, स्थूल 5 योग्य, सक्षम—शामि० ८।४०।

उद्धूत (भू० क० कृ०) [उद्+धू+क्त] 1 हिलाया हुआ, गिरा हुआ, उठाया हुआ, ऊपर फेंका हुआ—मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धुः शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ ... शरीरोद्धूतोऽपि धूलिचय—मा० 2 उन्नत, ऊँचा।

उद्धूननम् [उद्+धू+ल्युट्, नुगागम] 1 ऊपर फेंकना, उठाना 2 हिलाना।

उद्धूपनम् [उद्+धूप्+ल्युट्] धूनी देना, धुपाना।

उद्धूलनम् [उद्+धूल्+णिच्+ल्युट्] चूरा करना, पीसना; धूल या चूरा बुरकना—भस्मोद्धूलन—काव्य० १०।

उद्धर्षणम् [उद्+धृष्+ल्युट्] रोंगटे खड़े होना, पुलकना, रोमांचित होना।

उद्धृत (भू० क० कृ०) [उद्+हृ(धृ)+क्त] 1. बाहर खींचा हुआ, निकाला हुआ, निचोड़ कर निकाला हुआ 2 उठाया हुआ, उन्नत, ऊँचा किया हुआ 3. उखाड़ा हुआ, उन्मूलित—उद्धतारिः—रघु० २।३०।

उद्धृतिः (स्त्री०) [उद्+हृ(धृ)+क्तिन्] 1. खींच कर बाहर निकालना, निचोड़ना 2. निचोड़, चुना हुआ संदर्भ 3 मुक्त करना, बचाना 4. विशेषतः पाप से मुक्ति दिलाना, पवित्र करना, मोक्ष—स्वर्गाभिष्यन्दवमनं कृत्वेवोपनिवेशितम्, तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ—गंगा० २८।

उद्ध्मानम् [उद्+ध्मा+ल्युट्] अंगीठी, चूल्हा, स्टोव।

उद्ध्यः [उज्झत्युदकमिति निरु०—उद्+उज्झ्+क्यप्, नि० उज्झेर्धत्वम्] एक दरिया का नाम—सोऽयमपांस्पदयोरुद्ध्यमिवापो—रघु० ११।८।

उद्बद्ध (वि०) [प्रा० स०] ढीला किया गया-द्धः,—बन्धनम् 1. बाँधना, लटकना 2. स्वयं फाँसी लगा लेना।

उद्बन्धकः [उद्+बन्ध्+ण्वुल्] वर्णसंकर जाति जो धोबी का काम करती है—पु०—उन्मा—आत्मोद्बन्धेन

स्त्रियां जातास्ताओपजीविन:, तस्यैव नृपकन्यायां जात: सूतिक उच्यते। सूतिकस्य नृपायां तु जाता उद्बन्धका स्मृता, निर्णेजयेयुर्वस्त्राणि अस्पृश्याश्च भवन्त्यत: ।

उद्बल (वि०) [ब० स०] सबल, बलवान ।

उद्बाष्प (वि०) [ब० स०] अश्रुपरिपूर्ण, अश्रुपरिप्लावित कि० ३।५९ ।

उद्बाहु (वि०) [ब० स०] भुजाएं ऊपर उठाये हुए, भुजाओं को फैलाये हुए- प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामन: रघु० १।३ ।

उद्बुद्ध (भू० क० कृ०) [उद्+बुध्+क्त] 1 जागा हुआ, जगाया हुआ, उत्तेजित 2 खिला हुआ, फैला हुआ, पूर्ण विकसित- मा० १।४० 3 याद दिलाया गया 4 प्रत्यास्मृत ।

उद्बोध:,—धनम् [उद्+बुध्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1 जगाना, ध्यान दिलाना 2 प्रत्यास्मरण करना, उठाना नमु कथं रामाभिरत्याद्बुद्बोधकारणी सीताविधि वामाभिकाना रत्युद्बोध — सा० द० ३ इसी प्रकार—रस° ।

उद्बोधक (वि०) [उद्+बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1 ध्यान दिलाने वाला, 2 उत्तेजना देने वाला,—क: सूर्य ।

उद्भट (वि०) [उद्+भट्+अच्] 1 श्रेष्ठ, प्रमुख पदे पदे सन्ति भटा रणोद्भटा — नै० १।१३२ 2 उत्कृष्ट महानुभाव, —ट: 1 अनाज फटकने के लिए छाज 2. कछुवा ।

उद्भव: [उद्+भू+अप्] 1 उत्पत्ति,-रचना, जन्म, प्रसव (आ० तथा आल०) इति हेतुस्तदुद्भवे—काव्य० १ याज्ञ० ३।८०, बहुधा समास के अन्त में "से उत्पन्न" अर्थ को प्रकट करता है- ऊरूद्भवा—विक्रम० १।३ यदिराकरोद्भव —रघु० ३।१८ 2 स्रोत, उद्गमस्थान 3 विष्णु ।

उद्भाव: [उद्+भू+घञ्] 1 उत्पत्ति, सन्तति 2, औदार्य ।

उद्भावनम् [उद्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. चिन्तन, कल्पना 2. उत्पत्ति, उत्पादन, सृष्टि 3. अनवधान, उपेक्षा, अवहेलना ।

उद्भावयितृ (वि०) [उद्+भू+णिच्+तृच्] ऊपर उठाने वाला, उत्कृष्ट बनाने वाला ।

उद्भास: [उद्+भास्+घञ्] चमक, प्रभा ।

उद्भासिन्, उद्भासुर (वि०) [उद्भास्+इनि, घुरच् वा] देदीप्यमान, चमकीला, उज्ज्वल; —विभूषणोद्भासि पिनद्धभोगि वा—कु० ५।७८ मृच्छ० ८।३८, अमरु ८१ ।

उद्भिद् (वि०) [उद्+भिद्+क्विप्] उगने वाला, अंकुर फूटने वाला—(पुं०) 1. पौधे का अंकुर—अनुद्भिदोऽपि नवोद्भिदि—अमर० 2. पौधा 3. झरना, फौवारा ।

सम०—ज (वि०) (उद्भिज्ज) फूटने वाला, (पौधे की भांति) उगने वाला- (—ज्ज:) पौधा,—विद्या वनस्पति विज्ञान ।

उद्भिद (वि०) [उद्भिद्+क] फूटने वाला, उगने वाला ।

उद्भूत (भू० क० कृ०) [उद्+भू+क्त] 1 जात, उत्पन्न, प्रसूत 2 (आ० तथा आल०) उत्तुंग 3 जो कर्णेन्द्रियों द्वारा जाना जा सके (गुणादि) ।

उद्भूति: (स्त्री०) [उद्+भू+क्तिन्] 1 प्रजनन, उत्पादन 2 उन्नयन, उत्कर्षण, समृद्धि - कर मन्मुखतं ह्मेव त्वन्मुखोद्भूतये विधि —कु० ६।८२ ।

उद्भेद: —दनम् [उद्+भिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 फूट पड़ना, बेधना, दिखाई देना, आविर्भाव, प्रकट होना, उगना - उमास्तनोद्भेदमनुप्रवृद्ध —कु० ७।२४,न धीवनोद्भेदविशेषकान्त—रघु० ५।३८ शि० १८।३६ 3. निर्झर, फौवारा 4 रोमाञ्च जैसा कि 'पुलकोद्भेद:' में ।

उद्भ्रम: [उद्+भ्रम्+घञ्] 1 अन्धूर्णन चक्कर देना, (तलवार आदि का) घुमाना 2 घूमना, 3 खेद ।

उद्भ्रमणम् [उद्+भ्रम्+ल्युट्] 1 इधर-उधर— हिलना-डुलना घूमना 2 उगना, उठना ।

उद्यत (भू० क० कृ०) [उद्+यम्+क्त] 1 उठाया हुआ ऊँचा किया हुआ -°असि, पाणि आदि 2 संभाल कर रखने वाला परिश्रमी, धुन्न 3 तुला हुआ तना हुआ (धनुष आदि) कि० १।२१ 4 आमादा, तैयार, तत्पर, उत्सुक, तुला हुआ, लगा हुआ, व्यस्त (सप्त०, अधि० तथा तुमुन्नन्त के साथ या बहुधा समास में)—उद्यत: स्वेषु कर्मसु— रघु० १७।६१, हन्तुं स्वजनमुद्यता —भग० १।४५ जय°, वध° आदि० ।

उद्यम [उद्+यम्+घञ्] 1 उठाना, उन्नयन 2 सतत प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, धैर्य—निशम्य चैनां तपसे कृतोद्यमाम् कु० ५।३ —कलाक देना न निकन्तुमुद्यमात् - ५ पृ सकल्प—उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै - पंच० २।१३१ 3 तैयारी, तत्परता । सम० —भृत् (वि०) घोर परिश्रम करने वाला—भर्तृ० २।७४ ।

उद्यमनम् [उद्+यम+ल्युट्] उठाना, उन्नयन ।

उद्यमिन् (वि०) [उद्+यम्+णिनि] परिश्रमी, सतत प्रयत्नशील ।

उद्यानम् [उद्+या+ल्युट्] 1. भ्रमण करना, टहलना 2. बाग, बगीचा प्रमोदवन,— बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ० ७, २६, ३३ 3. अभिप्राय, प्रयोजन । सम०—पाल:,—पालक:,—रक्षक: माली, बाग का रखवाला, ।

उद्यानकम् [उद्+या+ल्युट्+कन्] बाग, बगीचा ।

उद्यापनम् [उद्+या+णिच्+ल्युट्, पुकागम:] व्रतादिक का पारण, समाप्ति ।

उद्योगः [उद्+युज्+घञ्] 1 प्रयत्न, चेष्टा, काम धंधा — तद्दैवमिति संचिन्त्य त्यजेन्नोद्योगमात्मनः पंच० २।१४० 2 कार्य, कर्तव्य, पद — तुल्योद्योगस्तव दिनकृतश्चाधिकारो मतो नः विक्रम० २।१ 3 धैर्य, परिश्रम।

उद्योगिन् [उद्+युज्+घिनुण्] चुस्त, उद्यमी, उद्योगशील।

उद्रः [उन्द्+रक्] एक प्रकार का जल जन्तु।

उद्रथः [उद्गतो रथो यस्मात् — ब० स०] 1 रथ के धुरे की कील, सकल 2 मुर्गा।

उद्रावः [उद्+रु+घञ्] शोरगुल, कोलाहल।

उद्रिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+रिच्+क्त] 1 बढ़ा हुआ, अत्यधिक, अतिमात्र 2 विशद, स्पष्ट।

उद्रुज (वि०) [उद्+रुज्+क] तट को नष्ट करने वाला, जड़ खोदने वाला (नदी आदि) यथा कूलमुद्रुज इव।

उद्रेकः [उद्+रिच्+घञ्] वृद्धि, आधिक्य, प्राबल्य, प्राचुर्य — [illegible] १।८३ [illegible] शि० ३।४६।

उद्वत्सरः [उद्+वस्+सरन्] वर्ष।

उद्वमनम् [उद्+वम्+ल्युट्] 1 उद्गार, वमन 2 उछलना, उचाटना।

उद्वमन,-उद्वान्ति (स्त्री०) [उद्+वम्+ल्युट् क्तिन् वा] वमन करना, उगलना।

उद्वर्तः [उद्+वृत्+घञ्] 1 अवशेष, आधिक्य 2 आधिक्य, बाहुल्य 3 (तेल, उबटन आदि) सुगंधित पदार्थों की मालिश।

उद्वर्तनम् [उद्+वृत्+ल्युट्] 1 ऊपर जाना, उठना 2 उगना, बाढ़ 3 समृद्धि, उन्नयन 4 करवट बदलना — उद्दाम [illegible] चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि मेघ० ४० 5 पीसना, चूर्ण करना 6 सुगंधित उबटन आदि पदार्थों का शरीर पर लेप करना, या पीड़ा आदि को दूर करने के लिए सुगंधित लेप।

उद्वर्धनम् [उद्+वृध्+ल्युट्] 1 वृद्धि 2 दबाई हुई हँसी।

उद्वह (वि०) [उद्+वह्+अच्] 1 ले जाने वाला, आगे बढ़ाने वाला 2 आगे रहने वाला, निरन्तर रहने वाला (वंश आदि), कुल° उत्तर० ४ इसी प्रकार रघूद्वह ४।८२ रघु० ९।९ ११।५४ —हः 1 पुत्र 2 वायु के सात स्तरों में से चौथा स्तर 3 विवाह —हा पुत्री।

उद्वहनम् [उद्+वह्+ल्युट्] 1 विवाह करना 2 सहारा देना, संभाले रखना, उठाये रखना — भुवः प्रयुक्तोद्वहनक्रियायाः रघु० १३।१ १६।२० रघु० २।१८ कु० ३।१३ 3 ले जाना, सवारी करना मनु० ८।३७०।

उद्वान (वि०) [उद्+वन्+घञ्] वमन किया हुआ, उगला हुआ —नम् 1 उगलना, वमन करना, 2 अंगीठी, स्टोव।

उद्वान्त (वि०) [उद्+वम्+क्त] 1 वमन किया हुआ 2 मद रहित (हाथी)।

उद्वापः [उद्+वप्+घञ्] 1 उगलना, बाहर फेंकना 2 हजामत करना 3 (तर्क० में) पूर्व पद के अभाव में परवर्ती उपसर्ग के अस्तित्व का अभाव (विलयन)।

उद्वासः [उद्+वस्+घञ्] 1 निर्वासन 2 तिलांजलि देना 3 वध करना।

उद्वासनम् [उद्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 बाहर निकालना, निर्वासित कर देना 2 तिलांजलि देना 3 (आग से) निकालकर दूर करना 4 वध करना।

उद्वाहः [उद्+वह्+घञ्] 1 संभालना, सहारा देना 2 विवाह, पाणिग्रहण — असवर्णास्वयं ज्ञेयो विधिरुद्वाहकर्मणि मनु० ३।४३ (स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन है — ब्राह्मो दैवस्तथा चार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमः स्मृतः)।

उद्वाहनम् [उद्+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 उठाना 2 विवाह, —नी 1 बटनी, रस्सी 2 कौड़ी, वराटिका।

उद्वाहिक (वि०) [उद्वाह+ठन्] विवाह से संबंध रखने वाला, विवाह विषयक (मंत्रादिक) मनु० ९।६५।

उद्वाहिन् (वि०) [उद्+वह्+णिनि] 1 उठाने वाला, खींचने वाला 2 विवाह करने वाला —नी रस्सी, डोरी।

उद्विग्न (भू० क० कृ०) [उद्+विज्+क्त] संतप्त, पीड़ित, शोकग्रस्त, चिन्तित।

उद्वीक्षणम् [उद्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] 1 ऊपर की ओर देखना 2 दृष्टि, आँख, देखना, नजर डालना — सखीजनोद्वीक्षणकौमुदीमुखम् रघु० ३।१।

उद्वीजनम् [उद्+वीज्+ल्युट्] पंखा झलना।

उद्वृंहणम् [उद्+बृंह्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

उद्वृत्त (भू० क० कृ०) [उद्+वृत्+क्त] 1 उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2 उमड़कर बहता हुआ, उमड़ा हुआ — उद्वृत्तः क इव सुखावहः परेषाम् शि० ८।१८ (यहाँ उद्वृत्त का अर्थ 'विचलित, दुर्वृत्त' है)।

उद्वेगः [उद्+विज्+घञ्] 1 कांपना, हिलना, लहराना 2 क्षोभ, उत्तेजना, भग० १२।१५ 3 आतंक, भय — शान्तोद्वेगस्तिमितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्या — मेघ० ३६, रघु० २।७ 4 चिन्ता, खेद, शोक 5 विस्मय, आश्चर्य 6 सुपारी।

उद्वेजनम् [उद्+विज्+ल्युट्] 1 क्षोभ, चिन्ता 2 पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना — उद्वेजनकरैर्दण्डैश्चिह्नयित्वा प्रवासयेत् मनु० ८।३५२, 3 खेद।

उद्वेदि (वि०) [उन्नता वेदिर्यत्र ब० स०] जहाँ आसन या गद्दी ऊँची हो—विमान नवमुद्वेदि—रघु० १७।९।

उद्वेपः [उद्+वेप्+घञ्] हिलना, कांपना, अत्यधिक कपकपी।

उद्वेल (वि०) [अत्क्रान्तो वेलाम्—अत्या० स०] 1. अपने तट से बाहर उमड़ कर बहने वाला (नदी आदि) —रघु० १०।३४, का० ३३३ 2. उचित सीमा का उल्लंघन।

उद्वेल्लित (भू० क० कृ०) [उद्+वेल्ल्+क्त] हिलाया हुआ, उछाला हुआ,—तम् हिलाना, झकोलना।

उद्वेष्टन (वि०) [ब० स०] 1. ढीला किया हुआ—कथा-चिदुद्वेष्टनवान्तमाल्यः—रघु० ७।६, कु० ७।५७, 2. बन्धनमुक्त, बन्धनरहित,—नम् 1 घेरा डालना 2. बाड़ा, बाड़ 3 पीठ या कूल्हों में पीड़ा।

उद्वोढृ (पु०) [उद्+वह्+तृच्] पति।

उन्दम् (नपु०) [उन्द्+असुन्] ऐन, औडी दे० 'ऊधस्'।

उन्द् (रुधा० पर०) (उनत्ति, उत्त उन्न) आर्द्र करना, तर करना, स्नान करना—या पृथिवीं पयसोनत्ति।

उन्दनम् [उन्द्+ल्युट्] तर करना आर्द्र करना।

उन्दरः, उन्दुर, उन्दुरु, उन्दूरु [उन्द्+उर—उरु वा] मूसा, चूहा।

उन्नत (भू० क० कृ०) [उद्+नम्+क्त] 1 उठाया हुआ, उन्नत किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ (आलं० भी)—भर्तृ० ३।२४, शि० ९।७९, नतोन्नतभूमिभागे —श० ४।१४ 2 ऊँचा (आल० भी) लम्बा, उत्तुंग बड़ा, प्रमुख—रघु० १।१४ विक्रम० ५।२२, कि० ५। १५, १४।२३, 3 मांसल, भरा-पूरा (स्त्री का वक्षस्थल आदि),—तः अजगर,—तम् 1 उन्नयन 2 उन्थान, ऊँचाई। सम०—आनत (वि०) उन्नत और दलित, विषम—बन्धुर नूनतानतम्—अमर०, —चरण (वि०) दुर्दान्त —शिरस् (वि०) अहम्मन्य, बड़ा घमंडी।

उन्नतिः (स्त्री०) [उद्+नम्+क्तिन्] 1 उन्नयन, ऊँचाई (आल० भी) नीचे दे० 'उन्नतिमत्' 2. उत्कर्ष, मर्यादा, अभ्युदय, समृद्धि—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्य धोगतिम्—पञ्च० १।१५०, शि० १६।२२, भामि० १। ४०—महाजनस्य संपर्कः कस्य नोन्नतिकारकः हि० ३ 3 उठाना। सम०—ईशः गरुड़, (उन्नति का स्वामी)।

उन्नतिमत् (वि०) [उन्नति+मतुप्] उन्नत, उभरता हुआ फूला हुआ (जैसे कि स्त्री का वक्षस्थल) मा पीनो-न्नतिमत्पयोधरयुगं धत्ते—अमरु ३०, शि० ९।७२।

उन्नमनम् [उद्+नम्+ल्युट्] 1 ऊपर उठाना ऊँचा करना 2. ऊँचाई।

उन्नम्र (वि०) [उद्+नम्+र] लंबा, सीधा, उत्तुंग, ऊँचा (आल० भी)—उन्नम्रताम्रपटमण्डपमण्डितम् तत्—शि० ५।२१।

उन्नयः, **उन्नायः** [उद्+नी+अच्, घञ् वा] 1 उठाना, ऊँचा करना 2 ऊँचाई उन्नयन 3. सादृश्य, समता 4 अटकल।

उन्नयनम् [उद्+नी+ल्युट्] 1 उठाना, ऊँचा करना, ऊपर उठाना 2 पानी खींचना 3 पर्यालोचन, विचार-विमर्श 4 अटकल।

उन्नस (वि०) [उन्नता नासिका यस्य ब० स०] ऊँची नाक वाला—उन्नसं दधती वक्त्रम् भट्टि० ४।१८।

उन्नादः [उद्+नद्+घञ्] चिल्लाहट, दहाड़, गुंजन, चहचहाना।

उन्नाभ (वि०) [उन्नता नाभिर्यस्य—ब० स०] जिसकी नाभि उभरी हुई हो, तुंदिल, तोंद वाला।

उन्नाहः [उद्+नह्+घञ्] 1 उभार, स्फीति 2. बांधना, बन्धनयुक्त करना,—हम् चावलों के माँड से बनी कांजी।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्य—ब० स०] 1 निद्रा रहित जागा हुआ—त्वामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थः मेघ० ८८ विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः—श० ६।४, मुद्रा० ४ 2 प्रसृत, पूर्णविकसित मुकुलित (कमल आदि)—उन्निद्रपुष्पाक्षिसहस्रभाजा शि० ४। १९, ८।२८।

उन्नेतृ [उद्+नी+तृच्] उठाने वाला—(पु०) यज्ञ के १६ ऋत्विजों में से एक।

उन्मज्जनम् [उद्+मस्ज्+ल्युट्] बाहर निकलना, पानी से बाहर निकलना।

उन्मत्त (भू० क० कृ०) [उद्+मद्+क्त] 1 मदिरा नशे में चूर 2 विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल हा हतोऽस्म्युन्मत्तो —विक्रम० ४ मनु० ९।७९, 3 फूला हुआ, उच्छ्रित, बहुगर्वी पंच० १।१६१, कि० ६।३१ 4 भूत या प्रेत से आविष्ट—याज्ञ० २।३२, मनु० ३।१६१, (कान्-पिलक्लैब्य स्तनिपातवहुमग्धोन्मत्तमूकव —मिता०), —त्तः धतूरा। सम०—कीर्तिः,—वेशः शिव —गंगम् एक देश का नाम (यहाँ गंगा भीषण कल्लोल करती हुई बहती है) —दर्शन,—रूप (वि०) देखने में पागल,—प्रलपित (वि०) पागल की बहक (—तम्) पागल के शब्द।

उन्मथनम् [उद्+मथ्+ल्युट्] 1 झाड़ना, फेंक देना 2 वध करना अस्त्रादस्मात्सुतोन्मथनात्—रघु० ७।५२।

उन्मद (वि०) [उद्गतो मदो यस्य—ब० स०] 1 नशे में चूर उन्मादी, रघु० २।९, १६।५४ 2 पागल, कामोद्दीप्त, उत्कट—शि० १०।४, १६।६९ 3 नशा करने वाला मादक—मधुकरांगनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे शि० ६।२०,—दः 1. विक्षिप्त 2 नशा।

उन्मदन (वि०) [उद्भूतो मदनोऽस्य – ब० स०] प्रेमपीडित, प्रेमोद्वेलित —अवाप्य भूयस्तुन्मदना पितुर्गृहम् कु० ५।५५ ।

उन्मदिष्णु (वि०) [उद् + मद् + इष्णुच्] 1 पागल 2 नशे में चूर, जिसने मदिरा पी हुई हो 3 जिसे मद चूता हो (हाथी) ।

उन्मनस्-मनस्क (वि०) [उद्भ्रान्तं मनो यस्य – ब० स० कप् च] 1 उत्तेजित, विक्षुब्ध, मनःक्षुब्ध, बेचैन रघु० ११।२२, कि० १४।६५ 2 खेद प्रकट करता, किसी मित्र के बिछोह से उदास 3 आतुर, उत्सुक, उतावला ।

उन्मनायते (ना० धा० आ० उन्मनीभू) बेचैन होना, मन में क्षुब्ध होना ।

उन्मन्थः [उद् + मन्थ् + घञ्] 1 क्षोभ 2 वध करना, हत्या करना ।

उन्मन्थनम् [उद् + मन्थ् + ल्युट्] 1 हिलाना, क्षुब्ध करना 2 वध करना, हत्या करना, मारना 3 (लकड़ी आदि से) पीटना ।

उन्मयूख (वि०) [ब० स०] चमकदार, देदीप्यमान —रघु० १६।६९ ।

उन्मर्दनम् [उद् + मृद् + ल्युट्] 1 रगड़ना, मलना 2 मालिश करने के लिए सुगंधित (तैलादिक) ।

उन्माथः [उद् + मथ् + घञ्] 1 हिलाना, अभिपीडन 2 हिला देना, क्षुब्ध करना 3 वध करना, हत्या करना 4 जाल, पाश ।

उन्माद (वि०) [उद् + मद् + घञ्] 1 पागल, विक्षिप्त 2 असंतुलित, —दः 1 पागलपन, विक्षिप्त बुद्धि —उन्माद उत्तर० ३ 2 तीव्र मनोभाव 3 विक्षिप्तता, सनक (मानसिक विकार) 4 (अलं० शा० में) ३३ संचारिभावों में से एक —चित्तसम्मोह उन्मादः कामशोकभयादिभिः —सा० द० ३ ... विप्रलम्भमहार्णव— परमानन्दाविर्भाव ... उन्मादः रस० 5 खिलना —उन्मादं वीक्ष्य पद्मानाम् सा० द० ।

उन्मादन (वि०) [उद् + मद् + णिच् + ल्युट्] पागल बना देने वाला, मादक, —नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

उन्मानम् [उद् + मा + ल्युट्] 1 तोलना, मापना 2 माप, तोल 3 मूल्य ।

उन्मार्ग (वि०) [उत्क्रान्तः मार्गात् – अत्या० स०] कुमार्गगामी, —र्गः 1 कुमार्ग, सुमार्ग से विचलन (आलं० भी) 2 अनुचित आचरण, बुरी चाल —उन्मार्गप्रस्थितानि इन्द्रियाणि—का० १६५, प्रबोध० १०३, —र्गम् (अव्य०) कुमार्ग पर रघु० ९।६१ ।

उन्मार्जनम् [उद् + मृज् + णिच् + ल्युट्] रगड़ना, पोंछना, मिटाना ।

उन्मितिः [उद् + मा + क्तिन्] माप, तोल, मूल्य ।

उन्मिश्र (वि०) [प्रा० स०] मिला-जुला, मिश्र-विमिश्र ।

उन्मिषित (भू० क० कृ०) [उद् + मिष् + क्त] खुला हुआ (आँख आदि), खिला हुआ, फुलाया हुआ, —सन्दृष्टि ... कु० ५।२५ ।

उन्मीलः, -लनम् [उद् + मील् + घञ्, ल्युट् वा] 1 (आँखों का) खोलना, जागना 2 प्रकाशित करना, खोलना उत्तर० ६।२४ 3 फुलाना, फूक मारना ।

उन्मुख (वि०) (स्त्री० —खी) [उद् ऊर्ध्वं मुखं यस्य –ब० स०] 1 मुँह ऊपर की ओर उठाये हुए, ऊपर देखते हुए, —अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिः मेघ० १४, १०० रघु० १।३९, ११।२६ श० १।७३ 2 तैयार, तुला हुआ, निकटस्थ, उद्यत —समरवेगसमाधयोन्मुखम् रघु० ८।१२, चल में चले जाने के लिए तत्पर —१६।९, ३।१२ 3 उत्सुक, प्रतीक्षक, उत्कंठित —तस्मिन् संयमिनामाद्ये जाते परिणयोन्मुखे —कु० ६।३४, रघु० १२।२६, ६।२१, ११।२३ 4 शब्दायमान, शब्द करता हुआ —कु० ६।२ ।

उन्मुखर (वि०) [प्रा० स०] ऊँचा शब्द करने वाला, कोलाहलमय ।

उन्मुद्र (वि०) [उद्गता मुद्रा यस्मात् —ब० स०] 1 बिना मुहर का 2 खुला हुआ, खिला हुआ, (फूल की भाँति) फूला हुआ ।

उन्मूलनम् [उद् + मूल् + ल्युट्] जड़ से फाड़ देना, उखाड़ना, मूलोच्छेदन करना —प्रपातपोन्मूलनशक्ति रंहः रघु० २।३४ ।

उन्मेदा [प्रा० स०] स्थूलता, मोटापा ।

उन्मेषः, -षणम् [उद् + मिष् + घञ्, ल्युट् वा] 1 (आँखों का) खोलना, पलक मारना —मुद्रा० ३।२१, 2 खिलना, फूलना —उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशायाम् —काव्य० १० दीर्घिकाकमलोन्मेषः कु० २।३३ 3 प्रकाश, कौंध, दीप्ति —मनःप्रसादोन्मेष भर्तृ० २।११४ विद्युदुन्मेषदृष्टिम् मेघ० ८१ 4 जाग उठना, दिखलाई देना, प्रकट होना, आरम्भ —का० ३।१३ ।

उन्मोचनम् [उद् + मुच् + ल्युट्] खोलना, ढीला करना ।

उप (उप०) 1 यह उपसर्ग क्रिया या संज्ञाओं से पूर्व लग कर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है —(क) निकटता, समीपता —उपविशति उपगच्छति (ख) शक्ति, योग्यता —उपकरोति (ग) व्याप्ति —उपकीर्ण (घ) परामर्श शिक्षण (जो अध्यापक द्वारा प्राप्त हो) उपदिशति, उपदेश (ङ) मृत्यु, उपरति, उपरत (च) दोष, अपराध —उपघात (छ) देना —उपनयति, उपहरति

(ञ) चेष्टा, प्रयत्न—उपत्वा नेष्ये (झ) उपक्रम, आरम्भ—उपक्रमते, उपक्रमः (ञ) अध्ययन—उपाध्यायः, (ट) आदर, पूजा—उपस्थानम्, उपचरति पितरं पुत्र 2 जिस समय यह उपसर्ग क्रियाओं से संबद्ध न होकर संज्ञा शब्दों से पूर्व लगता है तो उस समय—सामीप्य समता, स्थान, संख्या, काल और अवस्था आदि की संसक्ति, तथा अधीनता की भावना आदि अर्थों को प्रकट करता है। उपकनिष्ठिका—कनिष्ठिका के पास वाली अंगुली, उपपुराणम्—अनुवर्ती पुराण, उपगुरुः—सहायक अध्यापक, उपाध्यक्षः—उपप्रधान, अव्ययीभाव समासों में भी इन्हीं अर्थों में इसका उपयोग होता है—उपगङ्गम्—गङ्गायाः समीपे, उपकूलम्, °वनम् आदि 3 संख्यावाचक शब्दों के साथ लग कर संख्याबहुव्रीहि बन जाता है और 'लगभग' 'प्रायः' 'तकरीबन' अर्थ को प्रकट करता है,—उपत्रिंशाः—लगभग तीस 4 पृथक् रहता हुआ भी यह (क) कर्म के साथ 'हीनता' को प्रकट करता है—उपहरिं सुराः—सिद्धा० देवता हरि के निकट हैं (ख) अधि० के साथ यह 1 'अधिकता' और 'उत्कृष्टता' को—उपनिष्के कार्षापणम्, उपपरार्धे हरेर्गुणाः 2. तथा योग या जोड़ को प्रकट करता है।

उपकण्ठ—कण्ठम् [उपगतः कण्ठम्—अत्या० स०] 1. सामीप्य, सान्निध्य, पड़ौस—प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः—रघु० ४।३४, १३।४८ कु० ७।५१ मा० ९।२ 2 ग्राम या उसकी सीमा के पास का स्थान—(अव्य०) 1. गर्दन के ऊपर, गले के निकट 2. के निकट, नजदीक।

उपकथा [प्रा० स०] छोटी कहानी, किस्सा।

उपकनिष्ठिका कन्नो अंगुली के पास वाली अंगुली।

उपकरणम् [उप+कृ+ल्युट्] 1. सेवा करना, अनुग्रह करना, सहायता करना 2. सामग्री, साधन औज़ार, उपाय—उपकरणीभावमायाति—उत्तर० ३।३, परोपकारोपकरणं शरीरम्—का० २०७, याज्ञ० २।२७६, मनु० ९।२७० 3. जीविका का साधन, जीवन को सहारा देने वाली कोई बात 4. राजचिह्न।

उपकर्णनम् [उप+कर्ण्+ल्युट्] सुनना।

उपकर्णिका [उपकर्ण (अव्य०)+कन्+टाप् ह्रस्व] अफ़वाह, जनश्रुति।

उपकर्तृ (वि०) [उप+कृ+तृच्] उपकार करने वाला, अनुग्रहकर्ता, उपयोगी, मित्रवत्—हीनान्यनुपकर्तॄणि प्रवृद्धानि विकुर्वते—रघु० १७।५८—उपकर्त्री रत्नद्वीपानाम्—मा० द० ६२४, शि० २।३७।

उपकल्पनम्—ना [उप+कृप्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. तैयारी 2. अयोलकल्पित (तथ्यों का) सृजन करना, गढ़ना।

उपकारः [उप+कृ+घञ्] 1 सेवा, सहायता, मदद, अनुग्रह, आभार (विप० 'अपकार') उपकारापकारौ हि लक्ष्य लक्षणमेतयोः—शि० २।३७, आत्मोत्प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४० ३।७३, याज्ञ० १।२८४ 2 तैयारी 3 आभूषण, सजावट,—री 1 राजकीय तंबू 2 महल 3 सराय, धर्मशाला।

उपकार्य (वि०) [उप+कृ+ण्यत्] सहायता करने के उपयुक्त,—र्या राजभवन, महल—रम्या रघुप्रतिनिधिः स नवोपकार्या बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास रघु० ५।६३, आहूहि सेना—५।४१, ११।९३, १३।७९, १६।५५, ७३।

उपकुञ्चिका:, —चिका [उप+कुञ्च्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] छोटी इलायची।

उपकुल्य (वि०) [अत्या० स०] 1 निकटस्थ, समकक्ष 2 अकेला, निर्जन, एकान्त।

उपकुर्वाणः [उप+कृ+शानच्] ब्राह्मण ब्रह्मचारी जो गृहस्थ बनना चाहता है।

उपकुल्या [उप+कुल्+यत्+टाप्] नहर, खाई।

उपकूपम्—पे (अव्य०) [अव्या० स०] कुएँ के निकट, जलाशयः कुएँ के पास बना चुबच्चा जिसमें गाय भैंस पानी पीते हैं।

उपकृतिः (स्त्री०) उपक्रिया [उप+कृ+क्तिन् श वा] अनुग्रह, आभार।

उपक्रमः [उप+क्रम्+घञ्] 1 आरंभ, शुरू—रामोपक्रममाचख्यौ रक्षःपरिभवं नवम्—रघु० १२।४२ राम के द्वारा आरम्भ किया गया 2 उपागमन, साहस—पूर्वक आगे बढ़ना मा० ३, इसी प्रकार—प्रयोगश्च सुकुमारोपक्रमता—मा० 3 उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय कार्य, जोखिम का काम 4 योजना, उपाय, तरकीब, युक्ति, उपचार—सामादिभिरुपक्रमैः—मनु० ७।१०७, १५९, रघु० १८।१५, याज्ञ० १।३४५, शि० २०।७६, 5 परिचर्या, चिकित्सा 6. ईमानदारी की जाँच दे० 'उपधा'।

उपक्रमणम् [उप+क्रम्+ल्युट्] 1 उपागमन 2 उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय 3. आरम्भ 4 चिकित्सा, उपचार।

उपक्रमणिका [उपक्रमण+ङीप्, कन्, टाप् ह्रस्व] भूमिका, प्रस्तावना।

उपक्रीडा [अत्या० स०] खेल का मैदान, खेलने का स्थान।

उपक्रोशः—शनम् [उप+क्रुश्+घञ्, ल्युट्] निन्दा, झिड़की, अपकर्ष—प्राप्तैरुपक्रोशमलीमसैर्वा—रघु० २।५३।

उपक्रोष्टु (पुं०) [उप+क्रुश्+तृच्] (जोर से रेंकता हुआ) गधा।

उपक्वण (क्वा)णः [उप+क्वण्+अप् घञ् वा] वीणा की झंकार ।

उपक्षयः [उप+क्षि+अच्] 1 ह्रास करना, ह्रास, हानि 2 व्यय ।

उपक्षेपः [उप+क्षिप्+घञ्] 1 फेंकना, उछालना 2 उल्लेख, इंगित, संकेत, सुझाव—कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयन् मुद्रा० ४।३ -दारुणः खलूपक्षेपः पापस्य —वेणी० ५ 3 धमकी 4 विशेष दोषारोपण ।

उपक्षेपणम् [उप+क्षिप्+ल्युट्] 1 नीचे फेंकना, डाल देना 2 दोषारोपण, दोषी ठहराना ।

उपग (वि०) [उप+गम्+ड] (केवल समास में) 1 निकट जाने वाला, पीछे चलने वाला, संयुक्त होने वाला 2 प्राप्त करने वाला मनु० १।८६, शि० १६।६४ ।

उपगणः [प्रा० स०] अप्रधान श्रेणी ।

उपगत (भू० क० कृ०) [उप+गम्+क्त] 1 गया हुआ, निकट पहुँचा हुआ 2 घटित 3 प्राप्त 4 अनुभूत 5 प्रतिज्ञात, सहमत ।

उपगतिः (स्त्री०) [उप+गम्+क्तिन्] 1 उपागमन, निकट जाना 2 ज्ञान, जानकारी 3 स्वीकृति 4 उपलब्धि, प्राप्ति ।

उपगमः -गमनम् [उप+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1 जाना, आकृष्ट होना, निकट जाना—सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् मेघ० ६८ तुम्हारा आना—[illegible]नाप्योपगमात्कृतार्था रघु० ६।६०, ९।५० 2 ज्ञान, जानकारी 3 स्वीकृति, प्राप्ति—विवादोपगमाद् [illegible] श० १।१४ 4 समागम (स्त्री-पुरुष का) 5 समाज—समाजो न पुनरधमानामुपगमः हि० १।१३६ 6 झेलना, भुगतना, अनुभव करना 7 स्वीकृति 8 करार, प्रतिज्ञा ।

उपगिरि-रम् (अव्य०) [अव्य० स० टच् (विकल्प से)] पहाड़ के निकट, —रिः उत्तर दिशा में पहाड़ के समीप स्थित देश ।

उपगु (अव्य०) गौ के समीप, —गुः ग्वाला ।

उपगुरुः [प्रा० स०] सहायक अध्यापक ।

उपगूढ (भू० क० कृ०) [उप+गुह्+क्त] गुप्त, आलिंगित, —ढम् आलिंगन—उपगूढानि सवेपथूनि च कु० ४।१७, शि० १०।८८, कण्ठाश्लेषोपगूढम् —भर्तृ० ३।८२ मेघ० ९७ ।

उपगूहनम् [उप+गुह्+ल्युट्] 1 गुप्त रखना, छिपाना 2 आलिंगन 3 आश्चर्य, अचम्भा ।

उपग्रहः [उप+ग्रह्+अप्] 1 कैद, पकड़ 2 हार, असफलता—मुद्रा० ४।२ 3 कैदी 4 संयोजित होना, जोड़ना 5 अनुग्रह, प्रोत्साहन 6 लघु ग्रह (राहु, केतु आदि) ।

उपग्रहणम् [उप+ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना (नीचे से) सहारा देकर रखना, (जैसा कि 'पादोपग्रहणम्' में) 2. पकड़, गिरफ्तारी 3 सहारा देना, बढ़ावा देना 4. वेदाध्ययन —वेदोपग्रहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः —रामा० ।

उपग्राहः [उप+ग्रह्+घञ्] 1. उपहार देना 2 उपहार ।

उपग्राह्यः [उप+ग्रह्+ण्यत्] 1 भेंट या उपहार 2 विशेष रूप से वह भेंट जो किसी राजा या प्रतिष्ठित व्यक्ति को दी जाय, नजराना ।

उपघातः [उप+हन्+घञ्] 1 प्रहार, चोट, अतिक्षेप मनु० २।१७९, याज्ञ० २।२५१ 2 विनाश, बर्बादी 3 स्पर्श, संपर्क 4 दुर्व्यवहार, उत्पीडन 5 रोग 6 पाप ।

उपघोषणम् [उप+घुष्+ल्युट्] ढिंढोरा पीटना, प्रकाशित करना, विज्ञापन देना ।

उपघ्नः [उप+हन्+क] 1 अवलम्ब, सहारा—छेदादिवोपघ्नतरोर्व्रतत्यौ रघु० १४।१ 2 शरण, सहारा, आश्रय ।

उपचक्रः [प्रा० स०] एक प्रकार का लाल हंस ।

उपचक्षुस् (नपुं०) [प्रा० स०] [illegible], चश्मा ।

उपचयः [उप+चि+अच्] 1 इकट्ठा होना, ढेर, अभिवृद्धि 2 वृद्धि, बढ़, आधिक्य—बलं का० १०५, स्वशक्त्युपचये शि० २।५७, ९।३२ 3 परिमाण, ढेर 4 समृद्धि, उत्थान, अभ्युदय ।

उपचरः [उप+चर्+अच्] 1 इलाज, चिकित्सा 2 निकट आना ।

उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट या समीप आना ।

उपचाय्यः [उप+चि+ण्यत्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि ।

उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1 सेवा, शुश्रूषा, सम्मान, पूजा, सत्कार—अत्यर्हितोपचाराम्—रघु० ५।२० 2 शिष्टता, सजनता, सौजन्य, नम्र व्यवहार (सौजन्य का बाह्य प्रदर्शन), परिभ्रष्ट —हि० १।१३३ विधिवदुपचाराय मालवि० ३।३ °पद न चेदिदं —कु० ४।९ केवल सम्मान सूचक उक्ति, चाटुकारितापूर्ण अभिनन्दन 3 अभिवादन, प्रणामपूर्वक नमस्कार, बद्धांजलि —तोपचारमञ्जलिं— श० ३।१८, °यन्त्रणा —मालवि० ४ °अंजलि रघु० ३।११, नमस्कार करते समय दोनों हाथ जोड़ना 4 सत्कार या अभिवादन की रीति का एक रूप—[illegible] प्रत्युपचारं काङ्क्षते नातपत्रिकस्य —उत्तर० १ यथा गुरुजनोपचारेण—१ 5 बाह्य प्रदर्शन या रूप, सत्कार, —प्राभृतैरिव [illegible] राजोपचारः —विक्रम० ४ 6 चिकित्सा, उपचार, इलाज या चिकित्सा का प्रयोग, शिशिर° —रत्न० १५ 7 अनुष्ठान, उपाख्यान, प्रबन्ध—[illegible]° —मनु० ११।१११ १०।३२, कार्योपचारेषु —रत्न० ८१, प्रेम—वार्ता के संचालन में 8. श्रद्धांजलि अर्पित करने या सम्मान प्रदर्शित करने के

साधन —प्रकीर्णाभिनवोपचारम् (राजमार्गम्) रघु० ७।४, ५।४१, 9 अंश (पूजा, उत्सव या सजावट आदि की) कोई भी आवश्यक वस्तु सम्पन्नलोपचाराणाम् —रघु० १०।७७, कु० ७।८८, रघु० ६।१, पूजा की वस्तुओं या उपचारों की संख्या भिन्न-भिन्न (५ १० १६, १८ या ६४) बतलाई गई है 10 व्यवहार शील, आचरण —वैद्य-यूहोपचार च - मनु० ११।११६ 11 काम में आना उपयोग 12 धर्मानुष्ठान संस्कार —प्रयुक्त पाणिग्रहणोपचारौ—कु० ७।८६ महावी० १।२४ 13 (क) आलंकारिक या लाक्षणिक प्रयोग गौण प्रयोग (विप० मुख्य या प्राथमिक भाव) —अचेतनेऽपि चेतनवदुपचारदर्शनात्—शारी० न चास्य करवृतत्व तस्यनाऽस्ति इति मुख्येऽपि उपचार एव शरणं स्यात् काव्य० १० (ख) समता के आधार पर बना काल्पनिक अभिप्राय—उभयरूपा चेयं शुद्धा उपचारेणामिश्रितत्वात्—काव्य० २ 14 रिश्वत 15 बहाना—शि० १०।२ 16 प्रार्थना, याचना 17 विसर्ग के स्थान में स् या ष् का होना

उपचितिः (स्त्री०) [उप + चि + क्तिन्] इकट्ठा करना संचय करना वर्धन वृद्धि।

उपचूलनम् [उप + चूल + ल्युट्] गरम करना जलाना

उपच्छदः [उप + छद् + णिच् + घ] ढक्कन चादर

उपच्छन्दनम् [उप + छन्द् + णिच् + ल्युट्] 1 प्रलोभन देकर मनाना या फुसलाना समझा बुझा कर किसी कार्य के लिए उकसाना—उपच्छन्दनैरेव त्वं ते दापयिष्यन्ति —मुद्रा० ६। 2 आमंत्रण देना।

उपजनः [उप + जन् + अच्] 1 आधे वृद्धि 2 परिशिष्ट 3 उगना, उद्गमस्थान।

उपजल्पनम्,-ल्पितम् [उप + जल्प् + ल्युट् क्त वा] बात चीत।

उपजापः [उप + जप् + घञ्] 1 चुपचाप कान में कुछ फुसफुसाना या समाचार देना ...मुद्रा० २ 2 शत्रु के मित्रों के साथ गुप्त बातचीत ... शत्रु के राज्य में जाकर विद्रोह के लिए भड़काना ...उपजाप कृतस्तेन तानाकोपवतस्त्वयि शि० २।९९ उपजापसहान् ... भिन्द्यात् ... —कि० १।४२ 3 अनैक्य, वियोग।

उपजीवक,-विन् (वि०) [उप + जीव् + ण्वुल् णिनि वा] किसी दूसरे के सहारे रहने वाला ... से जीविका करने वाला (करण० के साथ या समास में)—यति भार्योपजीविनाम्—मनु० १२।११६ ...उपजीविनाम् १।२५७ ...क्षेमाय मुद्रा० २,—(पुं०) पराश्रित, अनुचर जीवकार्मैनिरनुपायी ... रघु० १।१६।

उपजीवनम्,—जीविका [उप + जीव् + ल्युट् क्वुन् वा] 1 जीविका 2 जीवन-निर्वाह का साधन, गुजारा या वृत्ति निश्चितार्थोपजीवनम् याज्ञ० १।२६६ 1 जीविका का साधन संपत्ति आदि किंचिद्दत्त्वोपजीवनम् मनु० ११।७०।

उपजीव्य (वि०) [उप + जीव + ण्यत्] 1 जीविका प्रदान करने वाला याज्ञ० २।७२ 2 संरक्षक संरक्षण देने वाला 3 (आ० ला०) लिखने के लिए सामग्री देने वाला जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे सर्वेषां कविमुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति महा० —व्य 1 संरक्षक 2 स्रोत या प्रामाणिक ग्रंथ (जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे) ...मान्याता व्याख्याता ... मा० द० ४।

उपज्ञोषणम् [उप + जुष् + ल्युट् वा] 1 ... 2 ... 3 ...

उपज्ञा [उप + ज्ञा + अङ्] 1 ज्ञान ... में अपने आप उपजा हुआ ज्ञान ... इस समास में यही नपु० समझा जाता है ...पाणिन्युपज्ञं ग्रन्थ सिद्धा० ... रघु० १५।६३ 2 व्यवसाय ... गया हो ... भवदुपज्ञमेव लिप्सु ... रघुवंश पर मल्लि०

उपज्ञोषणम् [उप + जुष् + ल्युट्] सम्मानपूर्ण और प्यार उपहार ...

उपतापः [उप + तप् + घञ्] 1 गर्मी आँच 2 कष्ट दुःख पीड़ा ... ह्याद्यन्ततो न बलं न स्यादुपतापात मा० १३५ 3 संकट ... 4 बीमारी 5 शीघ्रता हड़बड़ी।

उपतापनम् [उप + तप् + णिच् + ल्युट्] 1 ... 2 कष्ट देना सताना

उपतापिन् (वि०) [... णिनि] 1 ... 2 ... बीमार ...

उपतिष्यम् ... 1 ... 2 ... नक्षत्र।

उपत्यका [उप + त्यकन्] पहाड़ के नीचे की भूमि सिद्धा० ... रघु० ४।८१ ...

उपदंशः [उप + दंश् + घञ्] 1 भूख या प्यास लगाने वाली वस्तु चटनी अचार आदि ... नृपपाना—दश० ११३ ...मनु० ... 2 काटना, डंक मारना 3 आतशक रोग।

उपदर्शक [उप + दृश् + णिच् + ण्वुल्] 1 मार्गदर्शक निर्देशक 2 द्वारपाल साक्षी, गवाह।

उपदशक (वि०) [ब० स० व० स०] लगभग दस।

उपदा [उप+दा+अङ्] 1 उपहार, किसी राजा या महापुरुष को दी गई भेंट —उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोशलेश्वरम् —रघु० ४।७० ५।४१ ७।३० 2 रिश्वत, घूस।

उपदानम्, **—नकम्** [उप+दा+ल्युट् कन् च] 1 आहुति, उपहार 2 संरक्षा या अनुग्रह प्राप्त करने के लिए दी गई भेंट जैसे कि रिश्वत।

उपदिशम् (स्त्री०), **उपदिशा** [प्रा० स०] मध्यवर्ती दिशा जैसे कि ऐशानी, आग्नेयी, नैर्ऋती और वायवी।

उपदेव —**देवता** [प्रा० स०] छोटा देवता, घटिया देवता।

उपदेशः [उप+दिश्+घञ्] 1 अध्यापन, अनुदेशन, समादेश, निर्देशन— सुशिक्षितोऽपि सर्व उपदेशेन निपुणो भवति —माल० १, विदुषामुपदेशेन ... ... —कु० १।... मालवि० २।... रघु० ... मनु० ८।... अमरु० २९ रघु० १।... परोपदेशे पाण्डित्यम् हि० १।१०३ 2 विशिष्ट निर्देश, उल्लेख 3 उपदेश, नसीहत 4 दीक्षा, दीक्षा मन्त्र देना —चन्द्रसूर्यग्रहे तीर्थे सिद्धक्षेत्रे शिवालये मन्त्रमात्र प्रकथनमुपदेशः स उच्यते।

उपदेशक (वि०) [उप+दिश्+ण्वुल्] शिक्षण प्रदान करने वाला, अध्यापन करने वाला —कः शिक्षक, निर्देशक, गुरु या उपदेष्टा।

उपदेशनम् [उप+दिश्+ल्युट्] समादेश करना, शिक्षण देना।

उपदेशिन् (वि०) [उप+दिश्+णिनि] समादेश करने वाला, शिक्षण देने वाला।

उपदेष्टृ (वि०) [उप+दिश्+तृच्] समादेश या शिक्षण देने वाला (पु०—ष्टा) अध्यापक, गुरु, विशेषकर अध्यात्म गुरु —... ... उपदेष्टा ... —वेणी० ...

उपदेह [उप+दिह्+घञ्] 1 मरहम 2 ... ...

उपदोह [उप+दुह्+घञ्] 1 गाय के थन का अग्रभाग 2 दूध दुहने का पात्र।

उपद्रव [उप+द्रु+अप्] 1 दुर्भाग्य, दुर्घटना, मुसीबत, संकट 2 चोट, कष्ट, हानि —प्रजानामसपीडानां ... ... —पंच० १।३२४ निरुपद्रव ... —पंच० १ 3 अत्याचार, उत्पीडन 4 राष्ट्रीय संकट (जैसा दुर्भिक्ष या ऋतु के प्रकोप से) 5 राष्ट्रीय अशान्ति, विद्रोह 6 लक्षण, अकस्मात आ टपकने वाला रोग।

उपधर्म [उप+धृ+मन्] उपविधि, एक अप्रधान या गौण धर्म नियम (विप० 'पर')—मनु० २।२३७ ४।१४७

उपधा [उप+धा+अङ्] 1 छल, जालसाजी, धोखा-देही, कपट —मनु० ८।१९३ 2 ईमानदारी की जांच या परीक्षण (—धर्मार्थकामभयैर्यत्परीक्षणम्—यह चार प्रकार [निष्ठा, निष्कलता, संयम तथा साहस] का कहा गया है), (सचिवं) धर्मोपधाभिर्विप्रास्च सर्वाभिः सचिवान् पुनः —कामन्दकी 3 उपाय, तरकीब उपधाभिश्च राज्ञां कण्टका मध्यादुत्— कि० ११।५८ 4 (व्या० में) अन्त्याक्षर से पहला। सम० —भृत बेईमान सेवक —शुचि (वि०) परीक्षित, निष्ठावान्।

उपधातु [प्रा० स०] 1 घटिया धातु, अर्धधातु— यह गिनती में सात हैं —सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिन्दूरं च शिलाजतु। स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, तूतिया, कांसा, पीतल, सिन्दूर और शिलाजीत। 2 शरीर के अप्रधान स्राव जो गिनती में छः हैं —स्तन्यं रजो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्तथैव च औजस्यं सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः (दूध, रज, चर्बी, पसीना, दांत, बाल और ओज।)

उपधानम् [उप+धा+ल्युट्] 1 ऊपर रखना या आराम करना 2 तकिया, गद्देदार आसन —विपुलमुपधानं भुजलता —भर्तृ० ३।८० 3 विशेषता, अतिशयता 4 स्नेह, कृपा 5 धार्मिक अनुष्ठान 6 श्रेष्ठता, श्रेष्ठ गुण —प्रणयप्रवणा प्रिय वीरता ... ... —कि० ३।३३ (यहाँ उपधान का अर्थ तकिया भी है।)

उपधानीयम् [उप+धा] तकिया, गद्दी।

उपधारणम् [उप+धृ+णिच्+ल्युट्] 1 चिन्तन, विचार विमर्श 2 खींचना (अंकुश द्वारा) ...

उपधि [उप+धा+कि] 1 धोखा, बेईमानी —... ... ... —शि० ... 2 ... ... 3 ... ... 4 पहिये का वह भाग जो नाभि और पुट्ठों के बीच का स्थान है, पंजरा।

उपधिक [उपधि+ठन्] धोखेबाज, प्रवञ्चक (दे० औपधिक) ...

उपध्मित (वि०) [उप+ध्मा+क्त] 1 फूंकी दिया गया ... ...

उपधृति (स्त्री०) [उप+धृ+क्तिन्] प्रकाश की किरण।

उपध्मानम् [उप+ध्मा+ल्युट्] आरह ... फूंक ... ...

उपध्मानीय [उप+ध्मा+अनीयर्] प और फ से पूर्व श्वास अथवा महाप्राण विसर्ग —उपूपध्मानीयानामोष्ठौ —सिद्धा०

उपनक्षत्रम् [प्रा० स०] गौण नक्षत्र पुंज, अप्रधान तारा (ऐसे तारे गिनती में ७२९ बतलाये जाते हैं)।

उपनगरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपनत (भू० क० कृ०) [उप+नम्+क्त] आया हुआ, पहुँचा हुआ, प्राप्त, आ टपका हुआ आदि।

उपनतिः (स्त्री०) [उप+नम्+क्तिन्] 1 पास आना 2. झुकना, नति, नमस्कार।

उपनयः [उप+नी+अच्] 1 निकट लाना, ले जाना 2 उपलब्धि, अवाप्ति, काम लेना 3 काम पर लगाना 4 उपनयन संस्कार, जनेऊ पहनाना, वेदाध्ययन की दीक्षा देना—गृह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः बालो वेदाय तद्योगात् बालस्योपनयं विदुः। 5 तर्कशास्त्र में भारतीय अनुमान प्रक्रिया के पाँच अंगों में से चौथा—प्रस्तुत विशिष्ट तर्क का प्रयोग—व्याप्तिविशिष्टस्य हेतोः पक्षधर्मताप्रतिपादकं वचनमुपनयः—तर्क०।

उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] 1 निकट ले जाना 2 उपहार भेंट 3 जनेऊ-संस्कार—आत्ममातृस्वसुर्दुहितृष्वपि... गत्वोपनयनो द्विजः—मनु० २।१०८, १७३।

उपनागरिका [प्रा० स०] वृत्त्यनुप्रास का एक भेद यह माधुर्य-व्यंजक वर्णों के योग से बनता है, उदा० मु० काव्य० ९ में दिये गये उदाहरण को—अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः, अलमलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला।

उपनायः,—**नायनम्**=दे० उपनय।

उपनायकः [उप+नी+ण्वुल्] 1 नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायक का प्रधान सहायक हो उदा० रामायण में लक्ष्मण, मालतीमाधव में मकरन्द आदि 2 उपपति प्रेमी।

उपनायिका [प्रा० स०] नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायिका की प्रधान सखी या सहेली हो जैसे मालतीमाधव में मदयन्तिका।

उपनाहः [उप+नह्+घञ्] 1 गठरी 2 किसी घाव पर लगाई जाने वाली मरहम 3 वीणा की खूँटी जिसको मरोड़ने से सितार के तार कसे जाते हैं।

उपनाहनम् [उप+नह्+णिच्+ल्युट्] 1 उबटन आदि का लेप 2 मालिश करना, लेप करना।

उपनिक्षेपः [उप+नि+क्षिप्+घञ्] 1 धरोहर या न्यास के रूप में रखना 2 खुली धरोहर, कोई वस्तु जिसका रूप परिमाण आदि बता कर उसे दूसरे को सौंप दिया जाता है—याज्ञ० २।२५ (इस पर मिता० कहती है—उपनिक्षेपो नाम रूपसंख्याप्रदर्शनेन रक्षणार्थं परस्य हस्ते निहितं द्रव्यम्)।

उपनिधानम् [उप+नि+धा+ल्युट्] 1 निकट रखना 2 जमा करना, किसी की देख-रेख में रखना 3 धरोहर।

उपनिधिः [उप+नि+धा+कि] 1 धरोहर, अमानत 2 (विधि में) मुहरबंद अमानत—याज्ञ० २।२५, मनु० ८।१४५, १४९, मु० मेधातिथि—यत्प्रदर्शितरूपं सचिह्नमुद्रादिना पिहितं निक्षिप्यते—मु० याज्ञ० २।६५, और मिता० में उल्लिखित नारद।

उपनिपातः [उप+नि+पत्+घञ्] 1 निकट पहुँचना, निकट आना 2 आकस्मिक तथा अप्रत्याशित आक्रमण या घटना।

उपनिपातिन् (वि०) [उप+नि+पत्+णिनि] अचानक आ टपकने वाला—रक्षोऽग्निपातितोऽस्थी श० ५।

उपनिबन्धनम् [उप+नि+बन्ध+ल्युट्] 1 किसी बात को सम्पादित करना 2 बंधन, फंदा।

उपनिमन्त्रणम् [उप+नि+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] आम... बुलाना, प्रतिष्ठापन, उद्घाटन।

उपनिवेशित (वि०) [उप+नि+विश्+णिच्+क्त] रक्खा गया, स्थापित किया गया, बसाया गया—रघु० ... १५।२९।

उपनिषद् (स्त्री०) [उप+नि+सद्+क्विप्] 1 ब्राह्मण ग्रन्थों के साथ संलग्न कुछ रहस्यवादी रचना जिसका मुख्य उद्देश्य वेद के गूढ़ अर्थ का निश्चय करना है—भामि० २।४०, मा० १।७ (निम्नांकित व्युत्पत्तियाँ उसके नाम की व्याख्या करने के लिए दी गई हैं (क) उपनीय तमात्मानं ब्रह्मापास्तद्वयं यतः निहन्त्यविद्यां तज्जं च तस्मादुपनिषद्भवेत्। या (ख) निहत्यानर्थमूलं स्वाविद्यां प्रत्यक्तया परम् नयत्यपास्त संभेदमतो वोपनिषद्भवेत्। या (ग) प्रवृत्तिहेतून्निःशेषांस्तन्मूलोच्छेदकत्वतः यतोऽवसादयेद्विद्या तस्मादुपनिषद्भवेत्। मुक्तिकोपनिषद् में १०८ उपनिषदों का उल्लेख है परन्तु इस संख्या में कुछ और वृद्धि हुई है 2 (क) एक गूढ़ या रहस्यमय सिद्धान्त (ख) रहस्यवादी अर्थ या सिद्धांत महावी० ...२ 3 परमात्मा के संबंध में सत्य ज्ञान 4 पवित्र एवं धार्मिक ज्ञान 5 गोपनीयता, एकान्तता 6 समीपस्थ भवन।

उपनिष्करः [उप+निस्+कृ+घ] गली, मुख्यमार्ग, राजमार्ग।

उपनिष्क्रमणम् [उप+निस्+क्रम्+ल्युट्] 1 बाहर जाना, निकलना 2 एक धार्मिक अनुष्ठान या संस्कार जिसमें बच्चे को सर्वप्रथम बाहर खुली हवा में निकाला जाता है (यह संस्कार प्रायः चार मास की आयु होने पर मनाया जाता है) मु० मनु० २।३४ 3 मुख्य या राजमार्ग।

उपनृत्यम् [ब० स०] नाचने का स्थान, नृत्यशाला।

उपनेतृ (वि०) [उप+नी+तृच्] जो नेतृत्व करता है, या निकट लाता है, ले जाने वाला—कु० १।६०,

माणवकमिवाग्न्युपनेष्यमाणो – मा० ९ (पु० –ना) उप[illegible] नयन संस्कार को कराने वाला गुरु ।

उपन्यासः [उप + नि + अस् + घञ्] 1 निकट रखना, अगल बगल रखना 2 धरोहर, अमानत 3 (क) वक्तव्य सुझाव, प्रस्ताव, प्रायः वाक् एव वचनोप-न्यास मु० ५ (ख) भूमिका, प्रस्तावना, निवारण [illegible] वामकौरवीकवचनोपन्यासमालोकयन् [illegible] 3 (ग) संकेत, उल्लेख, आगमन, उपन्यासपूर्वक [illegible] 4 विवाद, विधि ।

उपपति [प्रा० स० [illegible] [illegible] गच्छत्यसौ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उपपत्तिः [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] [illegible] 6 [illegible] 7 [illegible] 8 [illegible] प्राप्त करना [illegible] [illegible] दुर्बलता [illegible] [illegible] अनुपपत्ति 9 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उपपदम् [प्रा० स०] 1 [illegible] [illegible] [illegible] जाता हो या बोला गया हो [illegible] [illegible] कि० १।१४ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 3 व्याकरण का पारिभाषिक [illegible] [illegible] [illegible] जाता (कृदन्त) शब्द से पूर्व [illegible] [illegible] निपात आदि शब्द ।

उपपन्न (भू० क० कृ०) [उप + पद् + क्त] 1 प्राप्त, मिलित, सहित, युक्त 2 ठीक, उचित, योग्य, उपयुक्त (सम्ब० या अधि० के साथ) उपपन्नमिदं विशेषणं वायो: विक्रम० २ उपपन्नमनयोर्विवरणम् [illegible] श० २ ।

उपपरीक्षा, –क्षणम् [उप + परि + ईक्ष् + अङ्, ल्युट् वा] अनुसंधान, जाँच पड़ताल ।

उपपातः [उप + पत् + घञ्] 1 [illegible] [illegible], 2 संकट, मुसीबत, दुर्घटना

उपपातकम् [प्रा० स०] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुरूणि पापान्यल्पानि [illegible] [illegible] पातकमाहुः [illegible] तन्यूनमुपपातकम् । याज्ञ० [illegible]

उपपादनम् [उप + पद् + णिच् + ल्युट्] 1 कार्यान्वित करना, अमल में लाना, संपन्न करना 2 देना, सौंपना, प्रस्तुत करना 3 प्रमाणित करना, प्रदर्शन तर्क द्वारा स्थापना 4 परीक्षा, निर्धारण ।

उपपातम् = उपपातकम् ।

उपपार्श्व –र्श्वम् [प्रा० स०] 1 कन्धा 2 पार्श्ववीप पार्श्व 3 विरोधी पक्ष ।

उपपीडनम् [उप + पीड् + णिच् + ल्युट्] 1 [illegible] [illegible] [illegible] 2 प्रपीडित करना और पहुँचाना [illegible] –मनु० ६।६२, 3 पीड़ा सहना ।

उपपुरम् [प्रा० स०] [illegible]

उपपुराणम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उपपुष्पिका [प्रा० स०] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उपप्रदानम् [प्रा० स०] [illegible] करना, [illegible] करना

उपप्रदानम् [illegible] 1 [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उपप्रलोभनम् [प्रा० स०] 1 बहकाना, फुसलाना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उपप्रेक्षणम् [प्रा० स०] [illegible] [illegible] करना

उपप्लव [प्रा० स०] [illegible] [illegible]

उपप्लवः [उप + प्लु + अप्] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] –रघु० [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 4 [illegible] [illegible] 5 [illegible] [illegible] 6 [illegible] [illegible] 8 [illegible]

उपप्लवित (वि०) [उपप्लव + इतच्] 1 दुःखी, कष्टग्रस्त 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रघु० १३।७ ।

उपबन्धः [उप + बन्ध् + घञ्] 1 संबंध 2 उपसर्ग 3 [illegible] का आसन विशेष

उपबर्ह –र्हणम् [बर्ह + घञ्, ल्युट् वा] तकिया ।

उपबहु (वि०) [प्रा० स०] कुछ थोड़े बहुत

उपबाहु [प्रा० स०] [illegible] से नीचे का हाथ का भाग

उपभङ्गः [उप + भञ्ज् + घञ्] 1 भाग जाना, पलायन 2 (कविता का) एक भाग

उपभाषा [प्रा० स०] बोलचाल की बोल भाषा।

उपभृत् (स्त्री०) [उप+भृ+क्विप्, तुकागम] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला गोल प्याला।

उपभोगः [उप+भुज्+घञ्] 1 (क) रसास्वादन लेना, चखना — न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति — मनु० २।९४, याज्ञ० २।१७१, काम — भग० १६।११ (ख) उपयोग, प्रयोग श० ४।४ 2 रति-सुख, स्त्रीसहवास — रघु० १४।२८ 3 फलोपभोग 4 आनन्द, संतृप्ति।

उपमन्त्रणम् [उप+मन्त्र्+ल्युट्] 1 संबोधित करना, आमंत्रण बुलाना 2 उकसाना, उपच्छन्दन।

उपमन्थनी [उप+मन्थ्+ल्युट्+ङीप्] अग्नि को उद्दीप्त करने वाली लकड़ी।

उपमर्दः [उप+मृद्+घञ्] मर्दन, रगड़ दबाव, बोझ के नीचे कुचल जाना — अभ्यासु तावदुपमर्दसहासु भृङ्ग लोलं विनोदय मनः सुमनोलतासु — श० ५ (यहाँ 'उपमर्द' का अर्थ है उद्दाम व्यवहार या संभोगजन्य रतिसुख) 2 नाश, आघात, वध करना 3 तिरस्कार दुर्वचन कहना, अपमानित करना 4 भूसी अलग करना 5 आरोप का निराकरण।

उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] 1 समरूपता, समता, साम्य — स्फुटोपमं भूतिसितेन शंभुना — शि० १.४, १७।६९, 2 (अलं० शा०) एक दूसरे से भिन्न दो पदार्थों की तुलना, तुल्यता, तुलना — साधर्म्यमुपमा भेदे — काव्य० १०, सादृश्य सुन्दरं वाक्यार्थोपस्कारकमुपमालंकृतिः — रस०, या — उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः, हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गङ्गामवगाहते। चन्द्रा० ५।३ उपमा कालिदासस्य — सुभा० 3 तुलना का मापदण्ड — उपमान यथा कान्ता निशान्त्यो नैतत् सोपमा स्मृता मेघ० ६।१९ दे० 'इव' भी०, बहुधा समासान्त में 'की भांति' 'मिलते-जुलते' वृषभं न वृषोपमं — रघु० १।४३, इसी प्रकार अमरोपम अनुपम आदि 4 समानता (चित्र, मूर्ति आदि की)। सम० — द्रव्यम् तुलना के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला पदार्थ — सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन — कु० १।४९।

उपमातृ (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 दूसरी माता, दूध पिलाने वाली धाय 2 निकट संबंधिनी स्त्री — मातृष्वसा मातुलानी पितृव्यस्त्री पितृष्वसा, श्वश्रूः पूर्वजपत्नी च मातृतुल्याः प्रकीर्तिताः ब्रह्म०।

उपमानम् [उप+मा+ल्युट्] 1 तुलना, समरूपता — जातास्तदूर्वोरुपमानबाह्याः — कु० १।३६ 2 तुलना का मापदण्ड जिससे किसी की तुलना की जाय (विप० उपमेय) उपमा के चार अनिवार्य अंगों में से एक — उपमानमभूद्विलासिनाम् — कु० ४।५, उपमानस्यापि सखे प्रत्युपमानं वपुस्तस्याः — विक्रम० २।३, शि० २०।४९, 3 (न्या० दर्शन में) सादृश्य, समानता की मान्यता, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो यथार्थ ज्ञान तक पहुँचाने में सहायक होता है इसकी परिभाषा — प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनम्, या, उपमितिकरणमुपमानं तच्च सादृश्यज्ञानात्मकम् तर्क०।

उपमितिः (स्त्री०) [उप+मा+क्तिन्] 1 समरूपता, तुलना, समानता — पल्लवोपमितिसाम्यसपक्षम् मा० द० तदाननस्योपमितौ दरिद्रता — नै० १।२४ 2 (न्या० द० में) सादृश्य निरूपण सादृश्य से प्राप्त अनुमान, उपमान के द्वारा निर्धारित उपसंहार — यथा — गवयपदमितिभिन्नयोर्मितिर्भवत्र — भाषा० ७२ 3 एक अलंकार उपमा।

उपमेय (सं० कृ०) [उप+मा+यत्] समानता या तुलना करने के योग्य, तुल्य (करण० के साथ या समास में) भूयिष्ठमासीदुपमेयकान्तिः मयूरपृष्ठाश्रयिणा गुहेन — रघु० ६।४, १।३४ कु० ७।२ — यम् तुलना करने का विषय, तुलनीय (विप० उपमान) उपमानोपमेयत्वं एकस्यैव तु वस्तुनः — चन्द्रा० ५।३ ९। सम० — उपमा एक अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान की तुलना इस दृष्टि से की जाती है कि उनके समान कोई और वस्तु है ही नहीं — विपर्यास उपमेयोपमानयोः — काव्य० १०।

उपयन्तृ (पुं०) [उप+यम्+तृच्] पति — अथोपयन्तारमलं समाधिना — कु० ५।४५, रघु० ७।१ शि० १०।४५।

उपयज्ञम् [प्रा० स०] यज्ञ का एक छोटा उपकरण।

उपयमः [उप+यम्+अप्] 1 विवाह, विवाह करना — कन्या अन्यकन्योपयमे मनस्वी तपस्विनां मा० ८० 2 प्रतिबंध।

उपयमनम् [उप+यम्+ल्युट्] 1 विवाह करना 2 प्रतिबंध लगाना 3 अग्नि का स्थापित करना।

उपयष्टृ (पुं०) [उप+यज्+तृच्] यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक जो पाठ करने वाला प्रति प्रस्थाता नामक ऋत्विक।

उपयाचक (वि०) [उप+याच्+ण्वुल्] मांगने वाला, प्रार्थी, विवाहार्थी, भिक्षुक।

उपयाचनम् [उप+याच्+ल्युट्] निवेदन करना, मांगना, प्रार्थना करने के लिए किसी के निकट जाना।

उपयाचित (भू० क० कृ०) [उप+याच्+क्त] जिससे मांगा गया हो, या प्रार्थना की गई हो, — तम् 1 निवेदन या प्रार्थना 2 मनौती, अपनी अभीष्टसिद्धि हो जाने पर देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रतिज्ञात भेंट (चाहे वह कोई पशु हो या मनुष्य) निर्धनो जिसमें मुख्य सदास्याम्युपयाचितम् पञ्च० १।१८ अद्य सदा भगवत्या करालाया अनुपयाचितं स्त्रीरत्नमुपहर्तव्यम्

—श० ५ 3. अपनी इष्टसिद्धि के लिए देवता के प्रति प्रार्थना या निवेदन ।

उपयाचितकम् = ऊपर दे०, उपयाचित—भिद्यापयनानि कुम विविधदेवतोपयाचितकानि—का० ६४ ।

उपयाजः [उप+यज्+घञ्] यज्ञ के अतिरिक्त यजुर्वेदीय मंत्र ।

उपयानम् [उप+या+ल्युट्] पहुँचना, निकट आना, —दूरोपयाने त्वरिता बभूव—कु० ७।२२ ।

उपयुक्त (भू० क० कृ०) [उप+युज्+क्त] 1 प्रयुक्त 2. योग्य, सही, उचित 3 सेवा के योग्य, काम का ।

उपयोगः [उप+युज्+घञ्] 1 काम लाना प्रयोग सेवन ..... —अनाकुलोऽवकिञ्चोपयोगम कु० ११७ 2 औषधि [illegible] या देना 3 [illegible] उपयुक्तता, औचित्य 4 सम्पर्क, आसन्नता ।

उपयोगिन् (वि०) [उप+युज्+घिनुण्] 1 काम में आने वाला, लाभदायक 2 सेवा के योग्य, काम का 3 योग्य, उचित ।

उपरक्त (भू० क० कृ०) [उप+रञ्ज्+क्त] 1 कष्टग्रस्त सङ्कटग्रस्त दुःखी 2 ग्रहण-ग्रस्त 3 रंजित रंगीन —शि० २।१८, —क्त ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा ।

उपरक्षः [उप+रक्ष्+अच्] अंग रक्षक ।

उपरक्षणम् [उप+रक्ष्+ल्युट्] पहरेदार गारद, चौकी ।

उपरत (भू० क० कृ०) [उप+रम्+क्त] 1 निवृत्त विरक्त —रजस्युपरते मनु० ५।६६ 2 मृत ..... —मुद्रा० ४ । सम०—कर्मन् (वि०) सांसारिक कार्यों पर भरोसा न करने वाला, —स्पृह (वि०) इच्छा से शून्य, सांसारिक आसक्ति और सम्पत्ति के प्रति उदासीन ।

उपरतिः (स्त्री०) [उप+रम्+क्तिन्] 1 विरक्ति निवृत्ति 2 मृत्यु 3 विषय-भोग से विरक्ति 4 उदासीनता 5 यज्ञादि विहित कर्मों से विरक्ति प्रथापालन के हेतु किये जाने वाले कर्मकांड में अविश्वास ।

उपरत्नम् [प्रा० स०] अप्रधान या घटिया रत्न,—उपरत्नानि काचश्च कर्पूरोऽश्मा तथैव च, मुक्ता शुक्तिस्तथा शङ्ख इत्यादीनि बहून्यपि । गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा, किन्तु किञ्चित्ततो हीना विशेषोऽयमुदाहृत ।

उपर (रा) मः [उप+रम्+घञ्] 1 विरक्ति, निवृत्ति 2. परिवर्जन, त्याग 3 मृत्यु ।

उपरमणम् [उप+रम्+ल्युट्] 1 रति सुख से विरक्ति 2 प्रथानुकूल कर्मकाण्ड से विरति 3. विरक्ति, निवृत्ति ।

उपरसः [प्रा० स०] 1 अप्रधान खनिज धातु 2 गौण भाव या आवेश 3 अप्रधान रस ।

उपरागः [उप+रञ्ज्+घञ्] 1 सूर्य ग्रहण चन्द्र ग्रहण —उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम् —श० ७।२२, शि० २०।४५ 2. राहु या शिरोबिन्दु की ओर बढ़ने वाला 3 लाली, लाल रंग, रंग 4 सङ्कट कष्ट आघात -मृणालिनी हैममिवोपरागम्—रघु० १६।७ 5 झिड़की, निन्दा, दुर्वचन ।

उपराजः [प्रा० स०] वाइसराय, राजप्रतिनिधि, [illegible] शासक ।

उपरि (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिल्, उप आदेश] पृथक् रूप से प्रयुक्त होने वाला सम्बन्धबोधक अव्यय (बहुधा सम्ब० के साथ, कभी कभी अधि० के साथ कि० प्रयोग), निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है— (क) ऊपर, अधिक पर, पै, की ओर (विप० अधः) (सब के साथ—[illegible] —श० ७।७ [illegible] [illegible] —कु० २।६० [illegible] [illegible] बहुधा [illegible] में रख [illegible] [illegible] [illegible] सर्वानन्दानामुपरि [illegible] [illegible] [illegible] अतिरिक्त [illegible] [illegible] (ख) के सबंध में के विषय में [illegible] —[illegible] —रघु० ३।२४—श० ३ [illegible] [illegible] [illegible] —कुमारो [illegible] (ङ) के बाद —मुहूर्तादुपरि उपाध्यायश्चेदागच्छेत —श० ३ ३, ९ [illegible] । सम०—उपरि (उपर्युपरि) 1 (कर्म० और सम्ब० के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) ऊपर ऊपर —लोकानुपर्युपरि [illegible] —भाग० (ख) उच्च से उच्चतर, कहीं ऊँचा, ऊपर, ऊँचाई पर—उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा—महा० 2 (क्रियाविशेषण के रूप में) अर्थ है (क), अत्यन्त ऊँचाई पर, पर, ऊपर की ओर (विप० अध)—पर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति —हि० २।२, बहुधा समास में —स्तनमुखोपरिविनिहितम् —याज्ञ० १।३११ (ख) इसके सिवाय, इसके अतिरिक्त, अधिक, और —शतान्युपरि चैवाष्टौ तथा भूयश्च सप्तति —महा० (ग) बाद में —अत्र पूर्वं गतोऽस्म्युपरि च तथा नैव गदिता—श० २।७, सर्पि पीत्वोपरि पय पिबेत् - सुश्रुत,—चर (वि०) ऊपर विचरने वाला (पक्षी आदि)—तन, तम (वि०) अधिक ऊपर का अपेक्षाकृत ऊँचा,—भागः ऊपर का अंश या पार्श्व, —भाव ऊपर या अपेक्षाकृत ऊँचाई पर होना —भूमिः (स्त्री०) ऊपर वाली धरती ।

उपरिष्टात् (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिष्टातिल्, उप आदेश] 1 क्रियाविशेषण के रूप में इसका अर्थ है —(क) अधिक, ऊपर, ऊँचे —भर्तृ० ३।१३१, याज्ञ० १।१०५ (ख) इसके आगे, बाद में, इसके पश्चात्—[illegible] हि कन्यामपत्युपरिष्टाद्भवति—मा० ६, इदमुपरिष्टाद् व्याख्यास्याम, अन्त में (ग) के पीछे (विप० पुरस्तात्)

2 संबंधबोधक अव्यय के रूप में इसका अर्थ है: —(क) अधिक, पर (सब० के साथ, कर्म० के साथ विरल प्रयोग,) शि० १।१३ (ख) सिर से पैर तक (ग) के पीछे (सब० के साथ)।

उपरीतक: [उपरि+इ+क्त+कन्] रतिक्रिया का आसन विशेष ('विपरीतक' भी कहलाता है)—ऊरावेकपदं कृत्वा द्वितीयं स्कन्धसंस्थितं, नारी कामयते कामी बन्धः स्यादुपरीतकः। शब्द०।

उपरूपकम् [उपगतं रूपकं दृश्यकाव्यं सादृश्येन—प्रा० स०] घटिया प्रकार का नाटक, इसके निम्नांकित १८ भेद गिनाये गए हैं—नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम्, प्रस्थानोल्लाप्यकाव्यानि प्रेंखणं रासकं तथा, संलापकं श्रीगदितं शिल्पकं च विलासिका, दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च। सा० द० २७६।

उपरोध: [उप+रुध्+घञ्] 1 अवबाधा रुकावट, रोक —रघु० ६।४४ शि० २०।१४ 2 बाधा कष्ट—तपोवननिवासिनामुपरोधो मा भूत् श० १, अनुग्रह —न्वेष नोपरोध: विक्रम० ३ 3 आच्छादित करना, घेरा डालना, अवरुद्ध करना 4 सरक्षा, अनुग्रह।

उपरोधक (वि०) [उप+रुध्+ण्वुल्] 1 अवबाधक 2 आड करने वाला, घेरा डालने वाला, —कम्, भीतर का कमरा, निजी कमरा।

उपरोधनम् [उप+रुध्+ल्युट्] अवबाधा रुकावट आदि दे० उपरोध।

उपल: [उप+ला+क] 1 पत्थर, पाषाण —उपलशकलमेतद्भेदकं गोमयानाम्—मुद्रा० ३।१५, —कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेत: शृंगार० ३, मेघ० १९, श० १।१४ 2 मूल्यवान् पत्थर, रत्न, मणि।

उपलक: [उपल+कन्] पत्थर, —ला 1 रेत, बालू 2 परिष्कृत शर्करा।

उपलक्षणम् [उप+लक्ष्+ल्युट्] 1 देखना, दृष्टि डालना अंकित करना —वेलोपलक्षणार्थम् श० ४ 2 चिह्न विशिष्ट या भेदक रूप—विक्रम० ४।३३ 3 पद, पदवी 4 किसी ऐसी बात का ध्वनित होना जो वस्तुत: कही न गई हो, किसी अतिरिक्त वस्तु की ओर या अन्य किसी समरूप पदार्थ की ओर संकेत जबकि केवल एक का ही उल्लेख किया गया हो समस्त वस्तु के लिए उसके किसी एक भाग का कथन, पूरी जाति को प्रकट करने के लिए व्यक्ति की ओर संकेत आदि (स्वप्रतिपादकत्वे सति स्वेतरप्रतिपादकत्वम्) मन्त्रग्रहणं ब्राह्मणस्याप्युपलक्षणम् पा० ११।४।८० सिद्धा०।

उपलब्धि: (स्त्री०) [उप+लभ्+क्तिन्] 1 प्राप्ति, अवाप्ति, अभिग्रहण —वृथा हि मे स्यात्स्वपदोपलब्धि: रघु० ५।५६, ८।१७ 2 पर्यवेक्षण प्रत्यक्षज्ञान ज्ञान —आभाव उपलब्धे: —न्या० सू० ३।२८ 3 समझ, मति 4 अटकल, अनुमान 5 संलक्ष्यता, आविर्भाव (मीमांसकों ने 'उपलब्धि' को प्रमाण का एक भेद माना है) दे० 'अनुपलब्धि'।

उपलम्भ: [उप+लभ्+घञ्, नुम्] 1 अभिग्रहण—अस्मात्कुलीयोपलम्भात्मनिरुपलम्भा — श० ७ 2 प्रत्यक्षज्ञान, अभिज्ञान, स्मृति से भिन्न मनोबोध (अर्थात् अनुभव) —प्राक्तनोपलम्भं मा० ५ ज्ञातौ सुतस्पर्शसुखोपलम्भात् —रघु० १४।२ 3 निश्चय करना, जानना —अविघ्नक्रियोपलम्भाय श० १।

उपलालनम् [उप+लल्+णिच्+ल्युट्] लाड प्यार करना।

उपलालिका [उप+लल्+ण्वुल्, इत्वम्] प्यास।

उपलिङ्गम् [प्रा० स०] अपशकुन, दैवी घटना जो अनिष्ट सूचक हो।

उपलिप्सा [उप+लभ्+सन्+अ+टाप्] प्राप्त करने की इच्छा।

उपलेप: [उप+लिप्+घञ्] 1 लेप, आलेप 2 साफ़ करना, सफ़ेदी पोतना 3 अवबाधा, बंद होना (ज्ञानेन्द्रियों का) सुन्न होना।

उपलेपनम् [उप+लिप्+ल्युट्] 1 मालिश, लेप पोतना 2 मलहम, उबटन।

उपवनम् [प्रा० स०] बाग़ बगीचा, लगाया हुआ जंगल —पवनोपवनेपवनानयोविपिनोपवनयो: कैः कृतं मुक्तिमन्नी... मेघ० ३३ रघु० ८।७३, १३।७९, तथा उद्यान को बाल।

उपवर्ण: [उप+वर्ण्+घञ्] सूक्ष्म या ब्यौरेवार वर्णन।

उपवर्णनम् [उप+वर्ण्+ल्युट्] सूक्ष्म वर्णन ब्यौरेवार चित्रण —अतिशयोक्त्या वर्णन ...सुश्रुत याज्ञ० १।१२०।

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] 1 व्यायामशाला 2 ज़िला या परगना 3 राज्य, 4 कीचड़ दलदल।

उपवसथ: [उप+वस्+अथ] गाँव।

उपवस्तम् [उप+वस् (स्तम्भे) +क्त] उपवास, व्रत।

उपवास: [उपवस्+घञ्] 1 व्रत —सागारवासस्यह् वसेत् याज्ञ० १।१३५, ३।१९० मनु० ११।१९६ 2 यज्ञाग्नि का प्रदीप्त करना।

उपवाहनम् [उप+वह्+णिच्+ल्युट्] ले आना, निकट लाना।

उपवाह्य: —ह्या [उप+वह्+ण्यत्, स्त्रियां टाप्] 1 राजा की सवारी का हाथी या हथिनी —अवश्यगमनोपवाह्या गजवशा मुद्रा० २ 2 राजकीय सवारी।

उपविद्या [प्रा० स०] सांसारिक ज्ञान, घटिया ज्ञान।

उपविष—षम् [प्रा० स०] 1 कृत्रिम ज़हर 2. निद्राजनक, मादकद्रव्य नशीली औषध —अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं ... करवीरश्च गुञ्जाऽहिफेन... विषानि...

उपवीणयति (ना० धा० पर०) (किसी देवता के आगे) वीणा या सारंगी बजाना — उपवीणयितुं ययौ रवेरुदयावृत्तिपथेन नारदः — रघु० ८।३३, नै० ६।६५, शि० १०।३८।

उपवीतम् [उप+वे+क्त] 1 जनेऊ संस्कार, उपनयन संस्कार 2 जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसको हिन्दू जाति के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं — पित्र्यमंशमुपवीतलक्षणं मातृकं च धनुरूर्जितं दधत् — रघु० ११।६४, कु० ६।६ शि० १।७ मनु० २।४४, ६४, ४।३६।

उपबृंहणम् [उप+बृंह्+ल्युट्] वृद्धि, संचय।

उपवेदः [प्रा० स०] घटिया ज्ञान, वेदों से निकला गौण ज्ञान का ग्रन्थसमूह। उपवेद गिनती में चार हैं और प्रत्येक वेद के साथ एक एक उपवेद संबद्ध है, यथा०, ऋग्वेद के साथ आयुर्वेद (सुश्रुत आदि विद्वानों के मतानुसार आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है।) यजुर्वेद के साथ धनुर्वेद या सैनिक शिक्षा, सामवेद के साथ गान्धर्ववेद या संगीत और अथर्ववेद के साथ स्थापत्यशास्त्र या शिल्पकला।

उपवेशः, -शनम् [उप+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 बैठना, आसन जमाना जैसा कि 'प्रायोपवेशन' में 2 संलग्न होना 3 मलोत्सर्ग।

उपवैणवम् [उप+वेणु+अण्] दिन के तीन काल अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायंकाल — त्रिसन्ध्या।

उपव्याख्यानम् [प्रा० स०] बाद में जोड़ी हुई व्याख्या या टीका।

उपव्याघ्रः [प्रा० स०] एक छोटा शिकारी चीता।

उपशमः [उप+शम्+घञ्] 1 शान्त होना, उपशान्ति, मिटाना — कुतोऽस्या उपशमः — वेणी० ३, मन्दायते न खलु ... एष शान्त्युपशमं ना शान्तवाहे स्फुरम् — अमरु ५, निवृत्ति, रोक, परिसमाप्ति 2 विश्राम, छुटकारा, विराम 3 शान्ति, स्थैर्य, धैर्य 4 ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण।

उपशमनम् [उप+शम्+णिच्+ल्युट्] 1 शान्त करना, शान्ति रखना, चुप करना 2 न्यूनकरण 3 बुझाना, विराम।

उपशयः [उप+शी+अच्] 1 पास लेटना 2 मांद, घात का स्थान — शि० २।८०।

उपशल्यम् [अत्या० स०] ग्राम या नगर के बाहर का खुला स्थान, नगराञ्चल, उपनगर — अर्धोपशल्ये रिपुमांसशल्य — रघु० १६।३७, १५।६०, शि० ५।८।

उपशाखा [प्रा० स०] गौण शाखा, अप्रधान शाखा।

उपशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 विराम, शमन, प्रशमन — रघु० ८।३१, अमरु ६५ 2 आश्वासन, अभिशामन।

उपशायः [उप+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना, दूसरे पहरेदारों के साथ रात को सोने की बारी।

उपशालम् [अत्या० स०] घर के निकट का स्थान, घर के आगे का सहन, -लम् (अव्य०) घर के निकट।

उपशास्त्रम् [प्रा० स०] लघु विज्ञान या ग्रन्थ।

उपशिक्षा-क्षणम् [उप+शिक्ष्+अ, ल्युट् वा] अधिगम, सीखना, प्रशिक्षण।

उपशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य — शिष्योपशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम — उद्भट।

उपशोभनम्-शोभा [उप+शुभ्+ल्युट्, अ वा] सजाना, अलंकृत करना।

उपशोषणम् [उप+शुष्+णिच्+ल्युट्] सूखना, मुर्झाना।

उपश्रुतिः (स्त्री०) [उप+श्रु+क्तिन्] 1 सुनना, कान देना 2 श्रवण-परास 3 रात को सुनाई देने वाली भविष्यसूचक देववाणी — नक्तं निर्गत्य यत्किंचिच्छुभाशुभकरं वचः श्रूयते तद्विदुर्धीरा देवप्रश्नमुपश्रुतिम्। हारा० परिकलनाऽपि कान्ता मनसमुपश्रुत्यै निरगाम — का० ६५ 4 प्रतिज्ञा, स्वीकृति।

उपश्लेषः, -षणम् [उप+श्लिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 पास पास रखना, संपर्क 2 आलिंगन।

उपश्लोकयति (ना० धा० पर०) कविता में स्तुति करना, प्रशंसा करना।

उपसंयमः [उप+सम्+यम्+अप्] 1 दमन करना, रोकना, बांधना 2 सृष्टि का अंत, प्रलय।

उपसंयोगः [उप+सम्+युज्+घञ्] गौण संबंध, सुधार।

उपसंरोहः [उप+सम्+रुह्+घञ्] एक साथ उगना, ऊपर उगना, बराबर आना (जख्म भरना)।

उपसंवादः [उप+सम्+वद्+घञ्] करार, संविदा।

उपसंव्यानम् [उप+सम्+व्ये+ल्युट्] अन्तःपट, — अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः — पा० १।१।३६।

उपसंहरणम् [उप+सम्+हृ+ल्युट्] 1 हटा लेना, वापिस लेना 2 रोक रखना 3 बाहर निकालना 4 आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारः [उप+सम्+हृ+घञ्] 1 एक स्थान पर कर देना, सिकोड़ देना 2 वापिस लेना, रोक रखना 3 संचय, संग्रह 4 उटोरना, समेटना, समाप्ति 5 (किसी भाषण की) इति श्री 6 सारसंग्रह, संक्षिप्त विवरण 7 संक्षेप, संहृति 8 पूर्णता 9 विनाश, मृत्यु 10 आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारिन् (वि०) [उप+सम्+हृ+णिनि] 1 समाविष्ट करने वाला 2 एकान्तिक, अपवर्जी।

उपसंक्षेपः [उप+सम्+क्षिप्+घञ्] सार, सारांश, संक्षिप्त विवरण।

उपसंख्यानम् [उप+सम्+ख्या+ल्युट्] 1 जोड़ना

2. बाद में जोड़ा हुआ, वृद्धि, अतिरिक्त निर्देशन (यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिकों के लिए प्रयुक्त होता है, जिनका आशय पाणिनि के सूत्रों में रही छूट व भूलों को सुधारना है, अतः वे परिशिष्ट का काम देते हैं) उदा०—कुप्वादिविरामप्रत्याहाराणामुपसंख्यानम् तु० इष्टि 3. (व्या० में) रूप और अर्थ की दृष्टि से प्रत्यादेश।

उपसंग्रहः,-हणम् [उप+सम्+ग्रह्+अप्,ल्युट् वा] 1. प्रसन्न रखना, सहारा देना, निर्वाह करना 2. सादर अभिवादन (चरण स्पर्श करते हुए) स्फुरति रचकास्त्वाभिः पादोपसंग्रहणाय च —महावी० २।३० 3. स्वीकरण, दत्तक लेना 4. विनम्र संबोधन, अभिवादन 5. एकत्रीकरण, मिलाना 6. ग्रहण करना, (पत्नी के अंगीकार करना रूप में)—दारोपसंग्रहः—याज्ञ० १।५६ 7. (बाहरी) परिशिष्ट, कोई ऐसी वस्तु जो या तो उपयोगी हो, अथवा सजावट के काम आवे, उपकरण।

उपसत्तिः (स्त्री०) [उप+सद्+क्तिन्] 1. संयोग, मेल 2. सेवा, पूजा, परिचर्या 3. भेंट, दान।

उपसदः [उप+सद्+क] 1. निकट आना 2. भेंट, दान।

उपसदनम् [उप+सद्+ल्युट्] 1 निकट आना, समीप पहुँचना 2. गुरु के चरणों में बैठना, शिष्य बनना —तमोपसदनं चक्रे द्रोणस्येष्वस्त्रकर्मणि—महा० 3. पास-पड़ोस 4 सेवा।

उपसंतानः [उप+सम्+तन्+घञ्] 1. अव्यवहित समीप 2. संतति।

उपसंधानम् [उप+सम्+धा+ल्युट्] जोड़ना, मिलाना।

उपसंन्यासः [उप+सम्+नि+अस्+घञ्] डाल देना, छोड़ देना, त्याग देना।

उपसमाधानम् [उप+सम्+आ+धा+ल्युट्] एकत्र करना, ढेर लगाना—उपसमाधानं राशीकरणम् —सिद्धा०।

उपसंपत्तिः (स्त्री०) [उप+सम्+पद्+क्तिन्] 1. समीप आना, पहुँचना 2. किसी अवस्था में प्रविष्ट होना।

उपसंपन्न (भू० क० कृ०) [उप+सम्+पद्+क्त] 1. उपलब्ध 2. पहुँचा हुआ, 3. अभ्यस्त, परिचित 4 यज्ञ में बलि दिया गया (पशु), बलि दिया गया—मनु० ५।८१,—न्नम् मसाला।

उपसंभाषः,-षा [उप+सम्+भाष्+घञ्, अ वा] 1. वार्तालाप—कि० १।१ 2. मैत्रीपूर्ण अनुरोध—उपसंभाषा उपसान्त्वनम्—का० १।३।४७ सिद्धा०।

उपसरः [उप+सृ+अप्] 1. (सांड का गाय की ओर) अभिगमन 2. गाय का प्रथम गर्भ—गवामुपसरः—सिद्धा०।

उपसरणम् [उप+सृ+ल्युट्] 1. (किसी की ओर) जाना 2 जिसकी शरण ग्रहण की जाय।

उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] 1. बीमारी, रोग, रोग से उत्पन्न कृशता आदि विकार—क्षीणं हन्युपसर्गप्रभुता—सुश्रु० 2. मुसीबत, कष्ट, संकट, आघात, हानि—रघु० ११।१० 3 अपशकुन, अनिष्टकर प्राकृतिक घटना 4 ग्रहण 5. मृत्यु का लक्षण या चिह्न 6. धातु के पूर्व लगने वाला उपसर्ग—निपाताश्चादयो ज्ञेयाः प्रादयस्तूपसर्गकाः, द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकादवगता इमे। गिनती में उपसर्ग २० हैं—यथाहि प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस् या निर्, दुस् या दुर्, वि, आ (ङ्) नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप, या २२ यदि निस्-निर् और दुस्-दुर् को अलग २ शब्द समझा जाय। इन उपसर्गों की विशेषता के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त हैं। एक सिद्धान्त के अनुसार तो धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं (अनेकार्था हि धातवः), जब उपसर्ग उन धातुओं के पूर्व जोड़े जाते हैं तो वह केवल धातुओं में पहले से विद्यमान - परन्तु गुप्त पड़े हुए —अर्थ को प्रकाशित कर देते हैं, वह स्वयं अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करते क्योंकि वह है ही अर्थहीन। दूसरे सिद्धान्त के अनुसार उपसर्ग अपना स्वतंत्र अर्थ प्रकट करते हैं, वह धातुओं के अर्थों में सुधार करते हैं, बढ़ाते हैं, और कई उनके अर्थों को बिल्कुल बदल देते हैं—तु० सिद्धा० —उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते, प्रहाराहार-संहारविहारपरिहारवत्। और तु० धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते, तमेव विशिनष्टयन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा।

उपसर्जनम् [उप+सृज्+ल्युट्] 1. उंडेलना 2. मुसीबत, संकट (ग्रहण आदि), अपशकुन 3. छोड़ना 4 ग्रहण लगना 5. अधीनस्थ व्यक्ति या वस्तु, प्रतिनिधि 6. (व्या० में) वह शब्द जिसका अपना मूल स्वतंत्र स्वरूप व्युत्पत्ति के कारण या रचना में प्रयुक्त होने के कारण नष्ट हो गया हो और जब कि वह दूसरे शब्द के अर्थ का भी निर्धारण करे (विप० प्रधान)।

उपसर्पः [उप+सृप्+घञ्] समीप जाना, पहुँच।

उपसर्पणम् [उप+सृप्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना, अग्रसर होना।

उपसर्या [उप+सृ+यत्+टाप्] गर्भिणी हुई या ऋतुमती गाय जो सांड के उपयुक्त हो।

उपसुन्दः [प्रा० स०] एक राक्षस, निकुंभ का पुत्र तथा सुंद का भाई।

उपसूर्यकम् [उपसूर्य+कन्] सूर्यमण्डल का परिवेश।

उपसृष्ट (भू० क० कृ०) [उप+सृज्+क्त] 1. मिलाया हुआ, संयुक्त, संलग्न 2. भूत-प्रेताविष्ट, या भूत-प्रेतग्रस्त—उपसृष्टा इव भूताभिषङ्गरूपया—का० १०७ 3 कष्टग्रस्त, अभिभूत, अतिपीड़ित—रोगोपसृष्टतनुदुर्वसतिं-

वति ममुम् — रघु० ८।९४ 4. ग्रहण-ग्रस्त 5 उपकर्ण-मूल (धातु) कृञुपहुश्कोऽस्य मृदुतयो कर्मे—पा० १।४।३८, —ग्रह: ग्रहण से ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा, —गमनम् मैथुन, सम्भोग।

उपसेक:-उपसेचनम् [उप + सिच् + घञ्, ल्युट् वा] 1 उंडेलना, छिड़कना सींचना 2 भीगना रस, भी कड़छी या कटोरी जिससे उडेला जाय।

उपसेवनम्, सेवा [उप + सेव् + ल्युट्, अ + टाप् वा] 1 पूजा करना सम्मान करना आराधना 2 उपासना —रत्न° मनु० ३।६४ 3 लिप्त होना विषय° 4 काम सेना, (स्त्री का) उपभोग करना परदार° —मनु० ४।१३४।

उपस्कर: [उप + कृ + अप्, सुट्] 1 जो किसी दूसरी वस्तु को पूरा करने के काम आवे संघटक, अवयव 2. (अत:) (मसाले मिर्च आदि) मसाला जो भोजन को स्वादिष्ट बनाये 3 सामान उपकरण, उपांग, उपकरण —शि० १८।७२ 4 घर-गृहस्थी के काम की वस्तु (जैसे झाड़ू) याज्ञ० १।८३, २।१९३ मनु० ३।६८ १२।६६, ५।१५० 5 आभूषण 6 निन्दा, बदनामी।

उपस्करणम् [उप + कृ + ल्युट्, सुट्] 1 वध करना क्षत-विक्षत करना 2 संग्रह 3 परिवर्तन, सुधार 4 अध्याहार, 5 बदनामी निन्दा।

उपस्कार: [उप + कृ + घञ्, सुट्] 1 अनुपूरक, परिशिष्ट 2 अध्याहार (न्यून पद की पूर्ति) —साकांक्षमनुपस्कारं विष्वग्गति निराकुलम् —कि० ११।३८ 3 सुन्दर बनाना, सजाना, शोभायुक्त करना उपमेयार्थं सोपस्कारमाह रघु० ११।४७ पर मल्लि० 4 आभूषण 5 प्रहार 6 संग्रह।

उपस्कृत (भू० क० कृ०) [उप + कृ + क्त, सुट्] 1 तैयार किया हुआ 2 संचित 3 सजाया गया, अलंकृत किया गया 4 अध्याहृत 5 सुधारा गया।

उपस्कृति (स्त्री०) [उप + कृ + क्तिन्, सुट्] परिशिष्ट।

उपस्तम्भ:-म्भनम् [उप + स्तम्भ् + घञ्, ल्युट् वा] 1 टेक, सहारा 2 प्रोत्साहन, उकसाना, सहायता 3 आधार, नींव, प्रयोजन।

उपस्तरणम् [उप + स्तृ + ल्युट्] 1 फैलाना, बिछाना, बखेरना 2. चादर, 3 बिस्तर 4 कोई बिछाई हुई (चादर आदि) —अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

उपस्ती (स्त्री०) [प्रा० स०] रखैल।

उपस्थ: [उप + स्था + क] 1 गोद 2 (शरीर का) मध्य भाग, पेडू, —स्थ:—स्थम् 1 (स्त्री या पुरुष की) जननेन्द्रिय, विशेषत योनि —स्थाने शौचोर्थमावेज्या स्वाध्यायोपस्थनिग्रहः —याज्ञ० ३।३१४ (पुरुष का लिंग) स्थूलोपस्थस्थलीषु —भर्तृ० १।२० (स्त्री की योनि), हस्ती वायुरुपस्थश्च —याज्ञ० ३।९२ (यहाँ यह शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त है) 2 गुदा 3 कूल्हा। सम०—निग्रह: इन्द्रियदमन, संयम याज्ञ० ३।३१४, —दल: —पत्र:, पीपल का वृक्ष (क्योंकि इसके पत्ते स्त्री-योनि के आकार के समरूप होते हैं)।

उपस्थानम् [उप + स्था + ल्युट्] 1 उपस्थिति, सामीप्य 2 पहुँचना जाना, प्रकट होना, दर्शन देना 3 (क) पूजा करना, प्रार्थना, आराधना, उपासना —सूर्योपस्थानात्प्रतिनिवृत्तं पुरूरवसं मामुपेत्य —विक्र० १, सूर्यस्योपस्थानं कुर्वं —विक्रम० ४, याज्ञ० १।२२, (ख) अभिवादन नमस्कार 4 आवास 5 देवालय, पुण्यस्थल, मन्दिर 6 स्मरण, प्रत्यास्मरण, स्मृति —याज्ञ० ३। १६०।

उपस्थापनम् [उप + स्था + णिच् + ल्युट्] 1 निकट रखना तैयार होना 2 स्मृति को जगाना 3 परिचर्या, सेवा।

उपस्थापक: [उप + स्था + ण्वुल्] सेवक।

उपस्थिति (स्त्री०) [उप + स्था + क्तिन्] 1 पास जाना 2 सामीप्य विद्यमानता 3 अवाप्ति, प्राप्ति 4 सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना 5 स्मरण प्रत्यास्मरण 6 सेवा, परिचर्या।

उपस्नेह: [उप + स्निह् + घञ्] गीला होना।

उपस्पर्श:-र्शनम् [उप + स्पृश् + घञ्, ल्युट् वा] 1 स्पर्श करना सम्पर्क 2 स्नान करना प्रक्षालन, धोना 3 कुल्ला करना, आचमन करना, मार्जन करना (अंगों पर जल के छींटे देना —एक धार्मिक कृत्य)।

उपस्मृति: (स्त्री०) [प्रा० स०] लघु धर्मशास्त्र या विधि ग्रन्थ (यह संख्या में १८ हैं)।

उपस्रवणम् [उप + स्रु + ल्युट्] 1 रज का मासिक स्राव होना 2 बहाव।

उपस्वत्वम् [प्रा० स०] राजस्व, लाभ (जो भूमि अथवा पूंजी से प्राप्त हो)।

उपस्वेद: [उप + स्विद् + घञ्] गीलापन, पसीना।

उपहत (भू० क० कृ०) [उप + हन् + क्त] 1 क्षत-विक्षत, जिस पर आघात किया गया हो, क्षीण, पीडित, चोट लगा हुआ कु० ५।७६ 2 अभिभूत, आक्रान्त, आहत, पराभूत दारिद्र्य°, लोभ°, दर्प°, काम°, शोक° आदि 3. सर्वथा विनष्ट —कथमद्यापि दैवेनोपहता वयम् मुद्रा० २, दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा पूर्वं विपर्यस्यति —मुद्रा० ६।८ 4 निन्दित, भर्त्सना किया गया, उपेक्षित 5 दूषित, कलुषित, अपवित्रीकृत —शारीरैर्मलैः सुराभिर्मद्यैर्वा यदुपहतं तदत्यन्तोपहतम् —विष्णु। सम०—आत्मन् क्षुब्धमना, उद्विग्नमना, —दृश् (वि०) चौंधियाया हुआ, अंधा किया गया: —कि० १२।१८, —धी (वि०) मूढ।

उपहतक (वि०) [उपहत + कन्] हतभाग्य, अभागा।

उपहति: (स्त्री०) [उप + हन् + क्तिन्] 1 प्रहार 2 वध, हत्या।

उपहृत्या [प्रा० स०] आँखों का चौंधियाना ।

उपहरणम् [उप+हृ+ल्युट्] 1 निकट लाना, लाकर लाना 2 ग्रहण करना, पकड़ना 3 देवता आदि को भेंट प्रस्तुत करना 4 बलिपशु देना 5. भोजन परोसना या बाँटना ।

उपहसित (भू० क० कृ०) [उप+हस्+क्त] मजाक उड़ाया गया, भर्त्सना किया गया,--तम् व्यंग्यपूर्ण अट्टहास, हंसी उड़ाना ।

उपहस्तिका [उपहस्त+कन्+टाप्, इत्वम्] पान-दान, —उपहस्तिकायास्ताम्बूलं कर्पूरसहितमुद्धृत्य दश० ११६ ।

उपहारः [उप+हृ+घञ्] 1 आहुति 2 भेंट, उपहार -रघु० ४।८४ 3 बलि-पशु, यज्ञ, देवता का नजराना —रघु० ११।३१ 4. सम्मान-सूचक भेंट, अपने बड़ों को उपहार देना 5 सम्मान 6. क्षति के मूल्य स्वरूप क्षति पूरक उपहार -हि० ४।११० 7 अभ्यागतों में परोसा गया भोजन ।

उपहारिन् (वि०) [उपहार+णिनि] देने वाला उपहार प्रस्तुत करने वाला, लाने वाला ।

उपहालकः [?] कुन्तल देश का नाम ।

उपहासः [उप+हस्+घञ्] 1 मजाक उड़ाना हंसी-दिल्लगी रघु० १४।३३ 2 व्यंग्यपूर्ण अट्टहास 3 हंसी मजाक, खेलकूद । सम० -आस्पदम्, -पात्रम् उपहास की सामग्री, मौज, उपहास्य ।

उपहासक (वि०) [उप+हस्+ण्वुल्] हंसी-मजाक उड़ाने वाला, -कः विदूषक, दिल्लगी बाज ।

उपहास्य (वि०, सं० कृ०) [उप+हस्+ण्यत्] मजाकिया -स्यता गम् या या - हंसी मजाक की वस्तु बनना, ठिठोलिया —गमिष्याम्युपहास्यताम् रघु० १।३ ।

उपहित (वि०) [उप+धा+क्त] रक्खा गया, दे० उपपूर्वक 'धा' ।

उपहूतिः (स्त्री०) [उप+ह्वे+क्तिन्] बुलावा, आह्वान, निमंत्रण, —शि० १४।३० ।

उपह्वरः [उप+ह्वृ+अच्] एकान्त या अकेला स्थान, निजी जगह —उपह्वरे पुनरित्यधिगम्य वनमियम् - दश० ५८ 2. सामीप्य ।

उपह्वानम् [उप+ह्वे+ल्युट्] 1 बुलाना, निमन्त्रित करना 2 प्रार्थना मंत्रों के साथ आवाहन करना ।

उपांशु (अव्य०) [उपगता अंशवो यत्र] 1. मन्द स्वर से, कानाफूसी 2. चुपके से, गुप्तरूप से—परिचेतुमुपांशु-धारणाम् —रघु० ८।१८ —शुः मन्द स्वर में की गई प्रार्थना, मंत्रों का जप करना तु०, मनु० २।८५ ।

उपाकरणम् [उप+आ+कृ+ल्युट्] 1. आरंभ करने के लिए निमंत्रण, निकट लाना 2. तैयारी, आरम्भ, उपक्रम 3. प्रारंभिक अनुष्ठान करने के पश्चात् वेद-पाठ का उपक्रम तु० उपाकर्मन्,— वेदोपाकरणाख्यं कर्म कर्तव्ये श्रावणी मत्र ।

उपाकर्मन् (नपुं०) [उप+आ+कृ+मनिन्] 1 तैयारी, आरंभ, उपक्रम 2 वर्षारंभ के पश्चात् वेदपाठ के उपक्रम से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान (तु० श्रावणी) याज्ञ० १।१४२, मनु० ४।११९ ।

उपाकृत (भू० क० कृ०) [उप+आ+कृ+क्त] 1 निकट लाया हुआ 2 यज्ञ में बलि दिया गया 3 आरब्ध उपक्रान्त ।

उपाक्षम् (अव्य०) [अव्य० स०] आँखों के सामने, अपने समक्ष ।

उपाख्यानम्-नकम् [उप+आ+ख्या+ल्युट् पक्षे कन् च] छोटी कथा, गल्प या आख्यायिका उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः महा० ।

उपागमः [उप+आ+गम्+अप्] 1 निकट आना पहुँचना 2 घटित होना 3 प्रतिज्ञा करार 4 स्वीकृति ।

उपाग्रम् [प्रा० स०] 1 चोटी या किनारे के निकट का भाग 2 गौण अंग ।

उपाग्रहणम् [उप+आ+ग्रह+ल्युट्] दीक्षित होकर वेदाध्ययन करना ।

उपाङ्गम् [प्रा० स०] 1 उपभाग, उपशीर्षक 2 कोई छोटा अंग या अवयव 3 परिशिष्ट का पूरक 4 घटिया प्रकार का अतिरिक्त कार्य 5 विज्ञान का गौण भाग वेदांगों के परिशिष्ट स्वरूप लिखा गया ग्रन्थ समूह (ये चार हैं पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राणि) ।

उपाचारः [उप+आ+चर्+घञ्] 1 (वाक्य में शब्द का) स्थान 2 कार्यविधि ।

उपाजे (अव्य०) (केवल कृ धातु के साथ प्रयोग) सहारा देना उपाजेकृत्य या कृत्वा सहारा देकर —पा० १।४।७३ सि० ।

उपाञ्जनम् [उप+अञ्ज्+ल्युट्] मलना लीपना (गोबर आदि से) पोतना (सफेदी, चूना आदि) —मनु० ५।१०५, १२२।१२४, मठादेः (सुधागोमयादिना समार्जनम् लेपनम् —मेधातिथि) ।

उपातिक्रमः [उप+अति+क्रम्+अच्] उल्लंघन करना, (प्रचलित प्रथा से) विचलन ।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] 1 लेना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, अवाप्त करना—विप्रकृष्टं ब्राह्मणं ब्रूयात् द्रव्योपादानमाचरेत् —मनु० ८।४१७, विद्या° —का० ७५ 2 उल्लेख, वर्णन 3. समावेश, मिलाना 4 सांसारिक पदार्थों से अपनी ज्ञानेन्द्रियों व मन को हटाना 5. कारण, प्रयोजन, प्राकृतिक या तात्कालिक कारण—स्वादीनावानो [illegible] उत्तर० १, सर्व० पा० 6. सामग्री जिससे कोई वस्तु बने, भौतिक कारण—निमित्तमेव [illegible] स्थापुत्रादीनां च

वेशवाक्य — अविकरणमात्रा 7 अभिव्यंजना की एक रीति जिसमें अपने वास्तविक अर्थ को प्रकट करने के अतिरिक्त न्यूनपद की पूर्ति भी अध्याहार द्वारा कर ली जाती है—स्वसिद्धये पराक्षेप उपादानम्—काव्य० २। सम० —कारणम् भौतिक कारण प्रकृति स्वोपादानकारणं च ब्रह्मा युगपत्स्वयम्—शारी० —लक्षणा अजहत्स्वार्था दे० काव्य० २ सा० द० १४ भी।

उपाधि [उप + आ + धा + कि] 1 जालसाजी धोखा छल 2 प्रवंचना (वेदान्त में) छद्मवेष धारण करना 3 विवेचक या विभेदक गुण विशेषण 'घटोपाधि तद्रूपावेव संकुल' काव्य० २ यह वार प्रकार का है जाति गुण क्रिया तथा संज्ञा 4 पद उपनाम (अश्वत्थामा यह अश्वत्थामा पदिन आदि 5 अपेक्षा (देश काल परिस्थिति) अवस्था बहुधा देशकालानुसार स 6 प्रयोजन उद्देश्य अभिप्राय 7 (तर्क में) विशेष सामान्य बात का नियमक तत्त्व 8 जो व्यक्ति अपने परिवार का भरण पोषण करने में सावधान है।

उपाधिक (वि०) (प्रा० स०) अधिक फालतू, अतिरिक्त।

उपाध्याय उपेत्य अधीयते अस्मात् उप + अधि + इ + घञ्] 1 अध्यापक गुरु 2 विशेषतः धार्मिक उपदेशक। उपाध्याय जो वेद के किसी भाग को केवल पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए पढ़ाता है (आचार्य से भिन्न पदवी का) गु० मनु० २।१४१ एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते। दे० अध्यापक और आचार्य के साथ भी। —या, —अध्यापिका —पी 1 अध्यापिका 2 गुरुपत्नी।

उपाध्यायानी उपाध्याय + ङीष् आनुक् गुरुपत्नी।

उपानह् (स्त्री०) [उप + नह् + क्विप्, उपसर्गदीर्घ] जूता उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतेव भू हि० १।१२० मनु० ४।६६ नष्टा उपांशु किमत राजा न किं न उन्मार्ग ... हि० २।५८।

उपान्त [प्रा० स०] 1 किनारी छोर गोट प्रान्त सिरा —उपान्तयोर्निष्कुषितं विहङ्गैः —रघु० ७।५० कु० ३।६१ ७।३२ अमर २३ उत्तर० १।२६ वल्कल —क० १०६ 2 आँख की कोर रघु० ३।०२ 3 अव्यवहित सान्निध्य पड़ौस —नगरोपान्तस्थित सिद्ध मैथिलम् रघु० ३।१७ ७।२४, १६।२१, मेघ० २४ 4 पार्श्वभाग, नितम्ब मेघ० १८।

उपान्तिक (वि०) [प्रा० स०] निकटस्थ समीपी, पड़ौसी —कम् पड़ौस, सामीप्य।

उपान्त्य (वि०) [उपान्त + यत्] अन्तिम से पूर्व का —उत्तमपदमुपान्त्यस्योपलक्षणार्थम्—सिद्धा०,—त्यः आँख की कोर,—त्यम् पड़ौस।

उपाय [उप + इ + घञ्] 1 (क) साधन तरकीब युक्ति—उपायं चिन्तयेत्प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत् पञ्च० १।४०६ अमरु २९ मनु० ७।१७७ ८।४८ (ख) पद्धति रीति कार्यक्रम 2 आरम्भ उपक्रम 3 प्रयत्न चेष्टा भग० ६।३६ मनु० ९।२४८ १० 4 शत्रु पर विजय पाने का साधन (यह चार हैं साम, दान, भेद और दंड— साम समझौता-वार्ता दान भेंट देना भेद-फूट डालना और दंड —सजा देना, साथ धावा बोलना। कुछ लोग तीन और भाग देते हैं माया धोखा उपेक्षा—दाँव-पेच अवहेलना इन्द्रजाल—जादू-टोना करना इस प्रकार कुल मिला कर सात हुए) चतुर्थोपायसाध्ये रिपौ सान्त्वमपकारकम् शि० २।५४ सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः मनु० ७।१०९ 5 सम्मिलित होना पास पहुँचना 6 पहुँचना सम० —चतुष्टयम् शत्रु के विरुद्ध की जाने वाली चार तरकीबें दे० ऊ० —ज्ञ (वि०) तरकीब निकालने में चतुर —तुरीय चौथी तरकीब अर्थात् दण्ड —योगः साधन या युक्ति का प्रयोग मनु० ७।१०।

उपायनम् [उप + अय् + ल्युट्] 1 निकट जाना पहुँचना 2 शिष्य बनना 3 किसी धार्मिक संस्कार में व्यस्त रहना 4 उपहार भेंट सान्धिविग्रहिकोपायनप्रेषिता मालवि० १ यस्योपायनयोग्यानि वस्तूनि सरितां पतिः कु० २।३७ रघु० ४।७९।

उपारम्भ [उप + आ + रभ् + घञ् नुम्] आरम्भ उपक्रम शुरू।

उपार्जनम् —ना [उप + अर्ज् + ल्युट् युच् वा] कमाना अर्जन, उपार्जन।

उपार्ध (वि०) [ब० स०] आधे मूल्य का।

उपालम्भः —म्भनम् [उप + आ + लभ् + घञ्, मुम्, ल्युट् वा] 1 दुर्वचन उलाहना निन्दा अन्यदा भूषणं पुंसः ... प्रथमं तत् प्रेम ... २ नवोपालम्भे पतितास्मि मालवि० १ तुम्हारा उलाहना सिर—माथे पर 2 विलम्ब करना स्थगित करना।

उपावर्तनम् [उप + आ + वृत् + ल्युट्] 1 वापिस आना या मुड़ना लौटना त्वदुपावर्तनशङ्कि मे मनः (करोति) रघु० ८।५३ 2 घूमना चक्कर काटना 3 पहुँचना।

उपाश्रय [उप + आ + श्रि + अच्] 1 अवलम्ब, सहारा, सहारा भर्तृ० २।४८ 2 पास पाने वाला 3 भरोसा, निर्भर रहना।

उपासकः [उप + आस् + ण्वुल्] 1 सेवा में उपस्थित, पूजा करने वाला 2 सेवक अनुचर 3. शूद्र, निम्न-जाति का व्यक्ति।

उपासनम् —ना [उप + आस् + ल्युट् युच् वा] 1 सेवा, हाजरी, सेवा में उपस्थित रहना 2 तीर्थ चलाने का-

नाम् (विलम्बयति) पंच० १।१६९ उपासनामेत्य पितुः स्म सृज्यते नै० १।३४, मनु० ३।१०७ भग० १३।७ याज्ञ० ३।१५६ 2 आसन्न तुला हुआ, जुटा हुआ संगीत मृच्छ० ६ मनु० २।६९ 3 पूजा आदर आराधना, शराभ्यास 5 धार्मिक मनन 6. यज्ञाग्नि ।

उपासा [उप+आस्+अ+टाप्] 1 सेवा, हाजरी 2 पूजा आराधना 3 धार्मिक मनन ।

उपास्तमनम् [प्रा० स०] सूर्य छिपना ।

उपास्तिः (स्त्री०) [उप+आस्+क्तिन्] 1 सेवा सेवा में उपस्थित रहना (विशेषतः देवता की) 2 पूजा आराधना ।

उपास्त्रम् [प्रा० स०] गौण या छोटा हथियार ।

उपाहार [प्रा० स०] हल्का जलपान (फल मिष्टान्न आदि) ।

उपाहित (भू० क० कृ०) [उप+आ+धा+क्त] 1 रक्खा गया, जमा किया गया पहना गया आदि 2 संबद्ध सम्मिलित —तः आग से भय या आग से होने वाला विनाश ।

उपेक्षणम् =उपेक्षा ।

उपेक्षा [उप+ईक्ष्+अ+टाप्] 1 नजर-अंदाज करना लापरवाही बरतना अवहेलना करना 2 उदासीनता घृणा, नफरत— कुर्यामुपेक्षां हतजीवितेऽस्मिन् रघु० १४।६५ 3 छोड़ना छुटकारा देना 4 अवहेलना दांव पेच, मक्कारी (युद्ध में विहित ७ उपायों में से एक) ।

उपेत (भू० क० कृ०) [उप+इ+क्त] 1 समीप आया हुआ पहुँचा हुआ 2 उपस्थित 3 युक्त सहित (करण० के साथ या समास में) गुणैरेव गुणादेश बकलिनमाप्नुहि—श० १।१२ ।

उपेन्द्र [उपगत इन्द्रम् अनुजत्वात्] विष्णु या कृष्ण (इन्द्र के छोटे भाई के रूप में अपने पांचवें अवतार (वामन) के अवसर पर) दे० इन्द्र उपेन्द्र वज्रादपि दारुणा नि मीन० ५ यदुपेन्द्रस्त्वमतीन्द्र —शि० ११।७० ।

उपेय (सं० कृ०) [उप+इ+यत्] 1 पहुँचने के योग्य 2 प्राप्त कर लेने के योग्य 3 किसी भी साधन से प्रभावित होने के योग्य ।

उपोढ (भू० क० कृ०) [उप+वह्+क्त] 1 संचित एकत्र किया हुआ जमा किया हुआ 2 निकट लाया हुआ, निकटस्थ 3 युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध 4 आरब्ध 5 विवाहित ।

उपोत्तम (वि०) [अत्या० स०] अन्तिम से पूर्व का —मम् (अक्षरम्) अन्तिम अक्षर से पूर्व का अक्षर ।

उपोद्घातः [उप+उद्+हन्+घञ्] 1 आरम्भ 2. प्रस्तावना, भूमिका, 3 उदाहरण, समुपयुक्त तर्क या दृष्टान्त 4 सुयोग साधन, साधन —तस्मिन्नवसरक- मुपोद्घातेन माधवास्तिकमुपेयात मा० १ 5. विश्लेषण, किसी वस्तु के तत्त्वों का निश्चय करना ।

उपोद्बलक (वि०) [उप+उद्+बल्+ण्वुल्] पुष्ट करने वाला ।

उपोद्बलनम् [उप+उद्+बल्+ल्युट्] पुष्ट करना समर्थन करना ।

उपोषणम् **उपोषितम्** [उप+वस्+ल्युट्, क्त वा] उपवास रखना व्रत ।

उप्तिः (स्त्री०) [वप्+क्तिन्] बीज बोना ।

उब्ज (तुदा० पर०) (उब्जति उब्जित) 1 भींचना दबाना 2 सीधा करना ।

उभ्, उम्भ् (तुदा० क्र्या० पर०) (उभति या उम्भति उभ्नाति उम्नाति) 1 सीमित करना 2 संक्षिप्त करना 3 भरना —उभकुम्भसुदिवसं सर्पिः मधुना समान —भट्टि० ४।१४ 4 आच्छादित करना, ऊपर फैलाना —सर्वमयं कालकुरवमौर्नसलीरुन्निमीपूर्णं भट्टि० १४।८८

उभ (सर्व० वि०) (केवल द्विवचन में प्रयुक्त) [उभ्+क] दोनों उभौ तौ न विजानीतः भग० २।१९, कु० ४।४३ मनु० ४।१२४ नि० ५।८ ।

उभय (सर्व० वि०) (स्त्री० यी) [उभ्+अयट्] (यद्यपि अर्थ की दृष्टि से यह शब्द द्विवचनान्त है परन्तु इसका प्रयोग एक वचन और बहुवचन में ही होता है कुछ वैयाकरणों के मतानुसार द्विवचन में भी) दोनों (पुरुष या वस्तुएँ) —उभयमप्यपरितोषं समर्थये श० ३ उभयप्राप्तीतर श्रमुत्सर्पिषा रघु० ९।१ उभयी सिद्धिरुभावबाप्तम् ८।२३ १०।३८ अमरु ६० कु० ७।७८ मनु० २।५५ ४।२२४ ९।३४ । सम० —चर (वि०) जल स्थल या आकाश में विचरण करने वाला, जल स्थल चारी —विद्या दो प्रकार की विद्याएँ परा और अपरा अर्थात् आध्यात्म विद्या और लौकिक ज्ञान —विध (वि०) दोनों प्रकार का, —वेतन (वि०) दोनों स्थानों से वेतन ग्रहण करने वाला दो स्वामियों का सेवक, विश्वासघाती, —व्यञ्जन (वि०) (स्त्री और पुरुष) दोनों के चिह्न रखने वाला —तमय उभयानीम सुविधा ।

उभयतः (अव्य०) [उभय+तसिल्] 1 दोनों ओर से दोनों ओर (कर्म० के साथ) — उभयतः कृष्णं गोपा सिद्धा० याज्ञ० १।५८, मनु० ८।३१५ 2 दोनों दशाओं में 3 दोनों रीतियों से मनु० ११।८७ । सम० —दत्, —दन्त (वि०) दोनों ओर (नीचे और ऊपर) दांतों की पंक्ति वाला मनु० १।४३, —मुख (वि०) 1 दोनों ओर देखने वाली 2 दुमुहा (मकान आदि) (—खी) ब्याती हुई गाय —याज्ञ० १।२०६-७ ।

उभयत्र (अव्य०) [उभय+त्रल्] 1. दोनों स्थानों पर, 2. दोनों ओर 3. दोनों अवस्थाओं में—मनु० ३।१२५, १६७।

उभयथा (अव्य०) [उभय+थाल्] 1. दोनों रीतियों से—उभयथापि घटते—विक्रम० ३ 2. दोनों दशाओं में।

उभय(ये)द्युः (अव्य०) [उभय+द्युस् एद्युस् वा] 1. दोनों दिन 2. आगामी दोनों दिन।

उम् (अव्य०) [उभ्+मुम्] (क) क्रोध (ख) प्रश्नवाचकता (ग) प्रतिज्ञा या स्वीकृति और (घ) सौजन्य या सान्त्वना को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

उमा [ओः शिवस्य मा लक्ष्मीरिव, उ शिवं माति मन्यते पतित्वेन मा+क वा तारा०] 1. हिमवान् और मेना की पुत्री, शिव की पत्नी, कालिदास ने इस नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है उ मेति (ओह, तप अब तपस्या न करो) मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम—कु० १।२६, उमावृषाङ्कौ रघु० ३।२३ 2. प्रकाश, आभा 3. यश, कीर्ति 4. शान्ति, प्रशान्तता 5. रात 6. हल्दी 7. सन। सम०—गुरुः,—जनकः हिमालय पर्वत (उमा का पिता होने के नाते),—पतिः शिव—[illegible] कि० ५।१४, इसी प्रकार °ईश, °वल्लभ, °सहाय आदि,—सुतः कार्तिकेय या गणेश।

उम्ब(म्बु)रः [उम्+बु+अच् पृषो०] शहतीर, द्वार की चौखट की ऊपर वाली लकड़ी।

उरः [उर्+क] भेड़।

उरग (स्त्री०—गी) [उरसा गच्छति, उरस्+गम्+ड सलोपश्च] 1. सर्प, साँप—[illegible]—रघु० १।२८, १२।५, ९१ 2. नाग या पुराणों में वर्णित मानव मुख वाला सर्प—[illegible]—श० १।२८, मनु० ३।१९६ 3. सीसा, 4. एक नगर का नाम—कु० ६।५९। सम०—अरिः,—अशनः 1. गरुड़ (साँपों का शत्रु) 2. मोर,—इन्द्रः,—राजः वासुकि या शेषनाग,—प्रतिसर (वि०) विवाह-मुद्रिका के स्थान में साँप रखने वाला,—भूषणः शिव (साँपों से सुभूषित),—सारचन्दनः, —नम् एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,—स्थानम् नागों का आवासस्थान अर्थात् पाताल।

उरङ्गः—**मः** [उरस्+गम्+खच्, सलोपः, मुमागमश्च] साँप।

उरणः (स्त्री०—णी) [ऋ+क्यु, उत्व, रपरत्व] 1. भेड़ा, मेढ़ा—वृकीवोरणमासाद्य मृत्युरादाय गच्छति—महा० 2. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार दिया था,—णी भेड़ी।

उरणकः [उरण+कन्] 1 भेड़ा, मेष 2. बादल।

उरभ्रः [उरु उत्कटं भ्रमति इति उरु+भ्रम्+ड पृषो० उलोपः] भेड़, मेष।

उररी (अव्य०) [उर्+अरीक् बा०] 1. सहमति या स्वीकृति बोधक अव्यय (इस अर्थ में यह शब्द कृ, भू और अस् धातुओं के साथ प्रयुक्त होता है—तथा गतिसंज्ञक या उपसर्ग समझा जाता है, इसी लिए 'उररीकृत्वा' न बनकर 'उररीकृत्य' बनता है, इस शब्द के रूपान्तर हैं—उरी, उररी, ऊरी और ऊररी) 2. विस्तार (उररीकृ [तना० उभ०] सहमति देना, अनुमति देना, स्वीकार करना—विरमत्सु कायमुररीचकार—भामि० २।१३, शि० १०।१४)

उरस् (नपुं०—रः) [ऋ+असुन्, उत्व रपरत्व] छाती, वक्षःस्थल—व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः—रघु० १।१३, कु० ६।५१. उरसि कृ छाती से लगाना। सम०—घातः छाती की चोट,—ग्रहः,—घातः छाती का रोग, फेफड़े की झिल्ली की सूजन, प्लूरिसी,—छदः चोली, अँगिया,—त्राणम् कवच, सीनाबन्द—शि० १५।८०,—जः,—भूः, उरसिजः, उरसिरुहः स्त्री की छाती, स्तन, रेजाते रुचिरदृशामुरसिजकुम्भौ—शि० ८।५३, २५, ५९,—भूषणम् छाती का आभूषण,—सूत्रिका मोतियों का हार जो छाती के ऊपर लटक रहा हो,—स्थलम् छाती, वक्षःस्थल।

उरसिल (वि०) [उरस्+इलच्] विशाल वक्षःस्थल वाला।

उरस्य (वि०) [उरस्+यत्] 1. औरस सन्तान 2. एक ही वर्ण के विवाहित दम्पती का पुत्र या पुत्री 3. उत्तम,—स्यः पुत्र।

उरस्वत् (वि०) [उरस्+मतुप्, मस्य वः] विशाल वक्षःस्थल वाला, चौड़ी छाती वाला।

उरी स्वीकृतिबोधक अव्यय—दे० उररी (उरीकृ अनुमति देना, अनुज्ञा देना, स्वीकृति देना—[illegible]—भट्टि० ८।११, रघु० १५।७० 2. अनुसरण करना, आश्रय लेना. अपि रोषमुरीकरोषि नो चेत्—भामि० १।७४।

उरु (वि०) (स्त्री०—रु,—र्वी) तु० (वरीयस्, उ० अ० वरिष्ठ) 1. विस्तृत, प्रशस्त 2. महान्, बड़ा—रघु० ६।७४ 3. अतिशय, अधिक, प्रचुर 4. श्रेष्ठ, मूल्यवान्, कीमती। सम०—कीर्ति (वि०) प्रख्यात, सुविख्यात—रघु० १४।७४,—क्रमः वामनावतार के रूप में विष्णु भगवान्,—गाय (वि०) उत्तम व्यक्तियों द्वारा जिसका स्तुतिगान किया गया हो—अमर० ११,—[illegible] लंबी सड़क,—विक्रम (वि०) पराक्रमी, बलशाली,—स्वन (वि०) ऊँची आवाज वाला, अत्युच्च शब्दकारी,—हारः मूल्यवान् हार।

उर्वरी—उररी

उल्लूकः = उलूकः।

उर्णनाभः [उर्णेव सूत्रं नाभौ गर्भेऽस्य—ब० स०] मकड़ी, तु० ऊर्णनाभ।

उर्णा [ऊर्णु+ड ह्रस्व] 1 ऊन, नमदा या ऊनी कपड़ा 2 भौंहों के बीच केशावर्त —दे० ऊर्णा।

उर्दः [उर्+अट्+अच्] 1 बछड़ा 2. वर्ष।

उर्वरा [उरु अस्त्यादिकम् ऋच्छति—ऋ+अच्] 1 उपजाऊ भूमि —शि० १५।६६ 2 भूमि।

उर्वशी [उरून् महतोऽपि अश्नुते वशीकरोति—उरु+अश् +क गौरा० ङीष्—तारा०] इन्द्रलोक की एक प्रसिद्ध अप्सरा जो पुरूरवा की पत्नी बनी, (उर्वशी का ऋग्वेद में बहुत उल्लेख मिलता है, उसकी ओर दृष्टि डालते ही मित्र और वरुण का वीर्य स्खलित हो गया—जिससे अगस्त्य और वसिष्ठ का जन्म हुआ [दे० अगस्त्य] मित्र और वरुण द्वारा शाप दिये जाने पर वह इस लोक में आई और पुरूरवा की पत्नी बनी जिसको कि उसने स्वर्ग से उतरते हुए देखा था तथा जिसका उसके मन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। वह कुछ समय तक पुरूरवा के साथ रही, परन्तु शाप की समाप्ति पर फिर स्वर्गलोक चली गई। पुरूरवा को उसके वियोग से अत्यन्त दुःख हुआ, परन्तु वह एक बार फिर उसे प्राप्त करने में सफल हो गया। उर्वशी से 'आयुस्' नाम का पुत्र पैदा हुआ - और फिर वह सदा के लिए पुरूरवा को छोड़ कर चली गई। विक्रमोर्वशीय में दिया गया वृत्त कई बातों में भिन्न है, पुराणों में उसको नारायण मुनि की जंघा से उत्पन्न बतलाया गया है)। सम०—रमणः, -वल्लभः, -सहायः पुरूरवा।

उर्वारुः [उरु+ऋ+उण्] एक प्रकार की ककड़ी, दे० 'इर्वारु'।

उर्वी [ऊर्णु+कु, नलोपः, ह्रस्व, ङीष्] 1 'विस्तृत प्रदेश' भूमि - स्तोकमुर्व्यां प्रयाति —श० १।७, मृगान् गोकपतरामिवोर्वीम् रघु० २।३, १।१४, ३०, १५ २।६६ 2 पृथ्वी, धरती 3 खुली जगह, मैदान। सम०—ईशः, —ईश्वरः, —धवः, —पतिः राजा, —धरः 1 पहाड़ 2 शेषनाग, —भृत् (पुं०) 1 राजा 2 पहाड़ —रुहः वृक्ष —शि० ४।७।

उलपः [वल्+कपच्, संप्रसारण] 1 लता, बेल 2 कोमल घास—गोगर्भिणीप्रियनवोलपमालभारिसेव्योपकण्ठविपिनावलयो भवन्ति —मा० ९।२, शि० ४।८।

उलूप = दे० उलप।

उलूकः [वल्+ऊक संप्रसारण] 1 उल्लू — नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् —भर्तृ० २।९३ त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः —शि० ११।६४ 2. इन्द्र।

उलूखलम् [ऊर्ध्वं खम् उलूखम्, पृषो० ला+क] ओखली (जिसमें धान कूटे जाते हैं) अवहननायोलूखलम् —महा०, मनु० ३।८८, ५।११७।

उलूखलकम् [उलूखल+कन्] खरल।

उलूखलिक (वि०) [उलूखल+ठन्] खरल में पीसा हुआ।

उलूतः [उल्+ऊतच्] अजगर, शिकार को दबोच कर मारने वाला विषहीन सर्प।

उलूपी [?] नाग कन्या (यह कौरव्य नाग की पुत्री थी, एक दिन जब वह गंगा में स्नान कर रही थी उसकी दृष्टि अर्जुन पर पड़ी। वह उसके रूप पर मुग्ध हो गई फलतः उसने अर्जुन को अपने घर पाताल लोक में लिवा लाने का प्रबन्ध किया। वहाँ पहुँचने पर उसने अर्जुन से अपने आपको पत्नीरूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की जिसे अर्जुन ने बड़े संकोच के साथ स्वीकार किया। इरावान् नाम का एक पुत्र उलूपी से पैदा हुआ। जब बभ्रुवाहन के बाण से अर्जुन का सिर कट गया था तो उस समय उलूपी की सहायता से ही उसे पुनर्जीवन मिला)।

उल्का [उष्+कक्+टाप् षस्य लः] 1 आकाश में रहने वाला दाहक तत्त्व लूक —शि० १४।९१, मनु० १।३८ याज्ञ० १।१४५ 2 जलती हुई लकड़ी, मशाल 3 अग्नि, ज्वाला —मेघ० ५३। सम०—धारिन् (वि०) मशालची —पातः उल्कापिंड का टूट कर गिरना, —मुखः एक राक्षस या प्रेत (अगिया बैताल) मनु० १२।७१ मा० ५।१३।

उल्कुषी [उल्का+कुष्+क+ङीष्] 1 लूक, उल्का 2 मशाल।

उल्बम्, **-ल्वम्** [उच्+ब (व) न चस्य लः] 1 झिल्ली 2 योनि 3 गर्भाशय।

उल्ब (ल्व) ण (वि०) [उत्+बण् (वण्)+अच् पृषो०] 1 गाढ़ा जमा हुआ, पर्याप्त प्रचुर (शरीर आदि) 2 अधिक, अतिशय, तीव्र —शि० १०।७६, कु० ४।४ 3 दृढ़, शक्तिशाली, बड़ा —शि० ८।४१ 4 स्पष्ट ... तत्याज तूल्वणं मार्गं —रघु० ८।३।

उल्मुकः [उष्+मुक् षस्य लः] जलती लकड़ी, मशाल।

उल्लङ्घनम् [उद्+लङ्घ्+ल्युट्] 1 छलांग लगाना, लांघना 2 अतिक्रमण, तोड़ना।

उल्लल (वि०) [उद्+लल्+अच्] 1 डांवाडोल, कम्पमान 2 घने बालों वाला, झबरा।

उल्लसनम् [उद्+लस्+ल्युट्] 1 आनन्द, हर्ष 2 रोमांच।

उल्लसित (भू० क० कृ०) [उद्+लस्+क्त] 1 चमकीला, उज्ज्वल, आभायुक्त 2 आनन्दित, प्रसन्न।

उल्लाघ (वि०) [उद्+लाघ्+क्त] 1. रोग से मुक्त,

स्वास्थ्योन्मुख 2 दक्ष चतुर, कुशल 3 पवित्र 4 आनन्दित, प्रसन्न ।

उल्लाप [उद् + लप् + घञ्] 1 भाषण शब्द सूना मयार्यपुत्रस्योल्लापा उत्तर० 3 2 अपमानजनक शब्द, मागाजन भाषण उपालंभ अप्रोल्लापाः सोढा भर्तृ० 3।6 3 ऊँची आवाज से पुकारना 4 संवेग या रोग आदि के कारण आवाज में परिवर्तन 6 संकेत, सुझाव ।

उल्लाप्यम् [उद् लप् + णिच् यत्] एक प्रकार का नाटक दे० सा० द० ५४५ ।

उल्लास [उद् + लस् + घञ्] 1 हर्ष खुशी प्रोल्लास ... उत्तर० 6 ... उल्लास फुल्लपङ्केरुह ... सा० द० 2 प्रकाश, आभा 3 (अलं० शा० में एक प्रकार - परिभाषा अन्यदीयगुणदोषप्रयुक्त ... दोषयोराधानमुल्लास ... उदाहरणों के लिए दे० रस० या चन्द्रा० ५।१३१ १३३ 4 पुस्तक के प्रभाग अध्याय अनुभाग पर्व काण्ड आदि जैसे कि काव्य के दस उल्लास ।

उल्लासनम् [उद् + लस् + णिच् + ल्युट्] आभा ।

उल्लिखित (वि०) [उद् + लिख् + क्त] प्रसिद्ध विख्यात ।

उल्लीढ (वि०) [उद् + लिह् + क्त] रगड़ा हुआ, उजला किया गया मणिः शाणोल्लीढः भर्तृ० २।४४ ।

उल्लुञ्चनम् [उद् + लुञ्च् + ल्युट्] 1 नोचना काटना ... पावकेनाशकाकरोल्लुञ्चनम् पंचतंत्र दश (दश)... याज्ञ० ३।२७ 2 बालों को नोचना उखाड़ना ।

उल्लुण्ठनम् उल्लुण्ठा [उद् + लुण्ठ् + ल्युट् अ टाप्] व्यंग्यात्मक बोलचाल में कुछ भी कहना, अस्वर सूम सा० द० १३० —**सोल्लुण्ठनम्** व्यंग्यपूर्वक नाटकों में प्रायः मञ्चनिर्देश के रूप में प्रयुक्त ।

उल्लेख [उद् + लिख् + घञ्] 1 सन्दर्भ, जिक्र 2 वर्णन उक्ति 3 खुरचना करना रगड़ाई 4 (अलं० शा० में) एक अलंकार बहुभिर्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते स्त्रीभिः कामोऽर्थिभिः स्वर्द्रुः कालः शत्रुभिरैक्षि सः चन्द्रा० ५।१९, तु० सा० द० ६८२ 5 रगड़ना खुरचना फाड़ना शरमुखोल्लेख-का० १९१ कुट्टिम २३२ ।

उल्लेखनम् [उद् + लिख् + ल्युट्] 1 रगड़ना खुरचना छीलना आदि 2 खोदना याज्ञ० १।१८८ मनु० ५।१२४ 3 वमन करना 4 जिक्र, संकेत 5 लेख चित्रण ।

उल्लोच [उद् + लोच् + घञ्] वितान या शामियाना चंदोवा, सिरपाल ।

उल्लोल (वि०) [उद् + लोड् + घञ्, डस्य लत्वम्] अति चपल, अत्यन्त कंपनशील —शा० ५।३, —लः एक बड़ी लहर या तरंग ।

उल्व, उल्वण दे० उल्ब, उल्बण ।

उशनस् (पुं०) [वश् + कनसि —संप्र०] (कर्तृ०, ए० व०—उशना, संबो० ए० व० उशनम्, उशन, उशन) शुक्र-ग्रह का अधिष्ठातृ देवता, भृगु का पुत्र, असुरों का गुरु वेद में इसका नाम 'काव्य' मिलता है इनकी बुद्धिमत्ता की ख्याति के कारण मिलता है —तु० कवीनामुशना कविः, भग० १०।३७ ये गुरु व धर्मशास्त्र के प्रणेता माने जाते हैं—याज्ञ० १।४, नैतिक राज्य व्यवस्था पर भी यह प्रमाणस्वरूप समझे जाते हैं— ... प्रभावात्- मुद्रा० ५ ... नीतिम् कु० २।६ ।

उशी [वश् + ई संप्र०] कामना, इच्छा ।

उशीर (रः) रम्, उशीरम् (रम्) [वश् + ईरन्, किन् संप्र० उश + कीरन् वा स्वार्थे कन् च] वीरणमूल खस स्तनन्यस्तोशीरम् —श० ३।९ ।

उष् भ्वा० पर० (ओषति ओषित-उषित-उष्ट) 1 जलाना, उपभोग करना, खपाना, ओषाञ्चकार कामाग्निर्दशवक्त्रमहर्निशम् भट्टि० ८।१ १४।६२, मनु० ७।१८९ 2 दण्ड देना पीटना दण्डेनैव तमप्योषेत् —मनु० ९।२७३ 3 मार डालना चोट पहुँचाना ।

उष [उष् + क] 1 प्रभात काल पौ फटना 2 लम्पट 3 रिहाली धरती ।

उषणम् [उष् + ल्युट्] 1 काली मिर्च 2 अदरक ।

उषप [उष + कपन्] 1 अग्नि 2 सूर्य ।

उषस् (स्त्री०) [उष् + असि] 1 पौ फटना प्रभात —अनीशार्थिरिवोषसि—रघु० १२।१ उषसि उत्थाय प्रभात काल में उठकर 2 प्रातःकालीन प्रकाश 3 सांध्यकालीन (प्रातः और सायं) अधिष्ठातृदेवी (द्वि० व० में प्रयोग) । —सी दिन का अवसान, सायंकालीन संध्या । सम० —बुध अग्नि—उत्तर० ६ ।

उषा [ओषत्यन्धकारम् उष् + क] 1 प्रभात काल, पौ फटना 2 प्रातःकालीन प्रकाश 3 संध्या 4 रिहाली धरती 5 दुधारी बटलोई 6. बाण राक्षस की पुत्री तथा अनिरुद्ध की पत्नी [उषा ने अनिरुद्ध को स्वप्न में देखा और उस पर मोहित हो गई । उसने अपनी सखी चित्रलेखा की सहायता माँगी —चित्रलेखा ने उसे परामर्श दिया कि वह आस पास रहने वाले सभी राजकुमारों के चित्र अपने पास ले ले । जब ऐसा किया गया तो उसने अनिरुद्ध को पहचान लिया और उसे अपने नगर में लिवा ले गई जहाँ कि उसका अनिरुद्ध से विवाह हो गया—दे० 'अनिरुद्ध' भी) । सम० —ईशः उषा का स्वामी अनिरुद्ध,—कालः मुर्गा, —पतिः, —रमणः अनिरुद्ध, उषा का पति ।

उषित (वि०) [वस् (उष्)+क्त] 1 बसा हुआ 2. जला हुआ।

उषीर =दे० उशीर।

उष्ट्रः [उष्+ष्ट्रन्, कित्] 1 ऊँट,—अथोष्ट्रवामीशतवाहितार्थम्—रघु० ५।३२, मनु० ३।१६२, ४।१२०, ११।२०२ 2 भैंसा 3 ककुद्मान् सांड – ष्ट्री ऊँटनी।

उष्ट्रिका [उष्ट्र+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 ऊँटनी 2 ऊँट की शक्ल की मिट्टी की बनी मदिरा रखने की सुराही —शि० १२।२६।

उष्ण (वि०) [उष्+नक्] 1 तप्त गर्म- °अंशु, °कर आदि 2 तीक्ष्ण, स्फूर्त, फुर्तीला—पादपे मानिनोत्साहो भगस्त्वामिव दक्षिणम्—रघु० ४।८, (यहाँ 'उष्ण' का अर्थ 'गर्म' भी है) 3. तिक्त, तीखा, चरपरा 4 आतुर, फर्तीला 5 क्रोधी —ष्णः, —ष्णम् 1 ताप, गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु 3 धूप। सम० - अंशुः, - करः, - गुः, - दीधितिः, —रश्मिः, —रुचिः गर्म किरणों वाला, सूर्य -रघु० ५।४, ८।३०, कु० ३।२५ —अभिगमः,—आगमः, उष्णगम गर्मी का निकट आना, ग्रीष्म ऋतु, —उदकम् गर्म या तप्त पानी,—कालः, —गः गर्म ऋतु— वारण ; 1 आँसू 2 गर्म भाप, —वारणः—णम् छाता छतरी, यथम्यम्भोऽर्थिनोऽम्भवारणम्,—कु० ५।५२।

उष्णक (वि०) [उष्ण+कन्] 1 तेज फुर्तीला, सक्रिय 2 ज्वरग्रस्त, पीड़ित 3 गर्मी पहुँचाने वाला गर्म करने वाला,—कः 1 ज्वर 2. निदाघ ग्रीष्म ऋतु।

उष्णालु (वि०) [उष्ण+आलुच्] गर्मी न सह सकने वाला, सतप्त, —उष्णालुः शिशिरे निषीदति तरोर्मूलालवाले शिखी विक्रम० २।२३।

उष्णिका [अल्प+कन् नि० उष्ण आदेश टाप्+इत्वम्] मांड।

उष्णिमन् (पुं०) [उष्ण+इमनिच्] गर्मी।

उष्णीष, —षम् [उष्णमीषते हिनस्ति ईष्+क तारा०] 1 जो सिर के चारों ओर बांधी जाय 2 अत पगड़ी, साफा, शिरोवेष्टन मुकुट बलाकापाण्डुरोष्णीषम् मृच्छ० ५।१९ 3 प्रभेदक चिह्न।

उष्णीषिन् (वि०) [उष्णीष+इनि] शिरोवेष्टन पहने हुए या राजमुकुट धारण किए हुए —पु० २२० (पुं०) शिव।

उष्मः, **उष्मकः** [उष्+मक् कन् च] 1 गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु 3 क्रोध 4 उत्सुकता उत्कण्ठा। सम० —अन्वित (वि०) क्रुद्ध —आगम (पुं०) ग्रीष्म ऋतु, —भागः —भास स्थान।

उष्मन् (पुं०) [उष्+मनिन्] 1 ताप, गर्मी —मनु० ५।१४५, ९।१२३ कु० ५।४६, ७।१४ 2 वाष्प भाप कु० ५।२३ 3 ग्रीष्म ऋतु 4 सरगर्मी उत्सुकता 5 (व्या० में) श ष स और ह अक्षर दे० ऊष्मन्।

उस्र [वस्+रक् सप्र०] 1 (प्रकाश की) किरण, —अवर्णम् सुवर्णम्॥ ... 2 बैल 3 देवता —स्रा 1 प्रभात काल 2 प्रकाश 3 गाय।

उह् (भ्वा० पर०) [ओहति] 1 चोट मारना, नाशित करना 2 मार डालना —अप या आप के साथ ... ।

उह, उहह (अव्यय०) बुलाने या पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

उहू [वह+रक् सप्र०] सांड।

ऊ

ऊः [अवतीति—अव्+क्विप् ऊठ्] 1 शिव, 2 चन्द्रमा —(अव्यय०) 1. आरम्भ-सूचक अव्यय 2 (क) बुलाना (ख) करुणा (ग) तथा भर्त्सना को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

ऊढ (वि०) [वह्+क्त सम्प्र०] 1. ढोया गया ले जाया गया (बोझा आदि) 2. लिया गया 3 विवाहित —ढः विवाहित पुरुष,—ढा विवाहिता लड़की। सम० —कङ्कट (वि) कवचधारी, —भार्य (वि०) जिसने विवाह कर लिया है,— वयस्कः नवयुवक।

ऊढिः (स्त्री०) [वह्+क्तिन्] विवाह।

ऊतिः (स्त्री०) [अव्+क्तिन्] 1 बुनना, सीना 2. रक्षा 3. उपभोग 4. क्रीड़ा, खेल।

ऊधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन् ऊध आदेश] ऐन औड़ी (बहुव्रीहि समास में बदल कर 'ऊधन्' हो जाता है)।

ऊधस्यम्, **ऊधस्यम्** [ऊधस् (न्)+यत्] दूध (औडी में से प्राप्त) ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुम् रघु० २।६६।

ऊन (वि०) [ऊन् अच्] 1 अभावग्रस्त, अधूरा कम —किं बहुनमनर्थो ... रघु० १०।१ अपूर्ण अगोचर 2 (संख्या आकार या आयाम में) अपेक्षाकृत कम ऊनाधिकैर्निष्यन्ते ... याज्ञ० ३।१ दो वर्ष से कम आयु का 3 अपेक्षाकृत दुर्बल, घटिया—ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे रघु० २।१४ 4 घटा कर (संख्याओं के साथ इसी अर्थ में) एकोन = एक घटा कर,— विंशतिः एक घटाकर बीस = १९।

ऊम् (अव्य०) [ऊन्+मुक्] (क) प्रश्नवाचकता (ख) क्रोध (ग) भर्त्सना, दुर्वचन (घ) धृष्टता और (ङ) ईर्ष्या को प्रकट करने वाला विस्मयादिबोधक अव्यय।

ऊय् (भ्वा० आ०) (ऊयते, ऊत) बुनना, सीना।

ऊररी = दे० उररी।

ऊरव्यः (स्त्री० व्या) [ऊरु+यत्] वैश्य तृतीय वर्ण का पुरुष (ब्रह्मा या पुरुष की जंघाओं से पैदा होने के कारण) तु०, मनु० १।३१, ८७।

ऊरुः (पुं०) [ऊर्णु+कु, नुलोप] 1. जंघा—ऊरू तदस्य यद्वैश्यः —ऋक् १०।९०।१२। सम०—अष्ठीवम् जंघा और घुटना, —उद्भव (वि०) जंघा से उत्पन्न—विक्रम० १।३, —ज, —जन्मन्, —संभव (वि०) जंघा से उत्पन्न —(पुं०) वैश्य, —दघ्न, —द्वयस, —मात्र (वि०) जंघाओं तक पहुँचने वाला, घुटनों तक, —पर्वन् (पुं०)(नपुं०) घुटना, —फलकम् जांघ की हड्डी, कूल्हे की हड्डी।

ऊरूरी = दे० उररी।

ऊर्ज् (स्त्री०) [ऊर्ज्+क्विप्] 1 सामर्थ्य, बल 2 रस्य भोजन।

ऊर्जः [ऊर्ज्+णिच्+अच्] 1 कार्तिक का महीना शि० ६।५० 2 स्फूर्ति 3 शक्ति, सामर्थ्य 4 प्रजननात्मक शक्ति 5 जीवन, प्राण, —र्जम् 1 भोजन, 2 स्फूर्ति 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 वृद्धि।

ऊर्जस् (नपुं०) [ऊर्ज्+असुन्] 1 बल स्फूर्ति 2 भोजन।

ऊर्जस्वत् (वि०) [ऊर्जस्+मतुप्] 1 भोज्य-समृद्ध रसीला 2 शक्तिशाली।

ऊर्जस्वल (वि०) [ऊर्जस्+वलच्] बड़ा, शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर—रघु० २।५०, भट्टि० ३।५५।

ऊर्जस्विन् (वि०) [ऊर्जस्+विनि] ताकतवर, दृढ़, बड़ा।

ऊर्जित (वि०) [ऊर्ज्+क्त] 1 शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर—मातुः च धनुरूर्जितं दधत् रघु० ११।६४ बलशाली, दृढ़ (वाणी) शि० १६।३८ 2 पूज्य बढ़िया श्रेष्ठ, सुन्दर °श्री शि० १६।८५, भक्त्योर्जितश्रेष्ठम् -रघु० ९।३९ 3 उच्च, भव्य, तेजस्वी —°आशयं वच —कि० २।१ ओजस्वी या शानदार, —तम् 1 सामर्थ्य, ताकत 2. स्फूर्ति।

ऊर्णम् [ऊर्णु+ड] 1 ऊन 2 ऊनी वस्त्र। सम०—नाभः, —नाभिः, —पटः मकड़ी—म्रद, —मृदु (वि०) ऊन की भांति नरम।

ऊर्णा [ऊर्ण+टाप्] 1 ऊन मनु० ११।८७ 2 भौंहों का मध्यवर्ती केशगुच्छ। सम०—पिण्डः ऊन का गोला।

ऊर्णायु (वि०) [ऊर्णा+यु] ऊनी, —युः 1 भेड़ा 2 मकड़ी भामि० १।९० 3 ऊनी कंबल।

ऊर्णु (अदा० उभ०) (ऊर्णौ(र्णो)ति, ऊर्णुते, ऊर्णित) ढकना, घेरना, छिपाना भट्टि० ४।१०३ शि० २०।१४ (प्रेर०) ऊर्णावयति, (इच्छा०) ऊर्णुनूषति, ऊर्णुन-विषति, प्र—ढकना, छिपाना आदि।

ऊर्ध्व (वि०) [उद्+हा+ड पृषो० ऊर् आदेशः] 1. सीधा, खड़ा, ऊपर का, °केश आदि, ऊपर की ओर उठता हुआ 2. उठाया हुआ, उन्नत, सीधा खड़ा —°हस्त, °बाहु आदि 3. ऊँचा, बढ़िया, श्रेष्ठतर ऊँचा या ऊपर का 4. खड़ा हुआ (विप० आसीन) 5 फटा हुआ, टूटा हुआ (बाल आदि), —र्ध्वम् ऊंचाई, ऊँचाई, —र्ध्वम् (अव्य०) 1. ऊपर की ओर, ऊँचाई पर, ऊपर 2 बाद में (= उपरिष्टात्) 3. ऊँचे स्वर से और से 4 बाद में, पश्चात् (अपा० के साथ) —ते व्यहादूर्ध्वमवलनात्—मनु० ६।९३, रघु० १४।६६। सम०—कच, —केश (वि०) 1 खड़े बालों वाला 2 जिसके बाल टूट गये हों (—चः) केतु, —कर्मन् (नपुं०) —क्रिया 1 ऊपर की गति 2. ऊँचा पद प्राप्त करने के लिए चेष्टा (—पुं०) विष्णु, —कायः, —कायम् शरीर का ऊपरी भाग, —ग, —गामिन् (वि०) ऊपर जाने वाला, चढ़ा हुआ, उठता हुआ, —गति (वि०) ऊपर की ओर जाने वाला (स्त्री० —तिः) —गमः, —गमनम् 1 चढ़ाव, उन्नतता 2. स्वर्ग में जाना, —चरण, —पाद (वि०) ऊपर को पैर किये हुए (—दः) शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु, —जानु, —ज्ञ, —ज्ञु (वि०) 1 घुटने उठाये हुए, घुटनों के बल बैठा हुआ—शि० ११।११ 2. उकड़ूं बैठा हुआ, —दृष्टि, —दृश् (वि०) 1 ऊपर को देखता हुआ 2. (आलं०) उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी (स्त्री०—ष्टिः) भौंहों के बीच में अपनी दृष्टि को संकेन्द्रित करना (यो० द०), —देहः अन्त्येष्टि संस्कार, —पातनम् ऊपर चढ़ाना, परिष्करण (जैसे पारे का), —पात्रम् यज्ञीय पात्र—याज्ञ० १।१८३ —मुख (वि०) ऊपर को मुंह किये हुए, उन्मुख —कु० १।१६, रघु० १।५७, —मौहूर्तिक (वि०) थोड़ी देर के पश्चात् होने वाला, —रेतस् (वि०) अनवरत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्त्री-संसर्ग से सर्वथा विरत रहने वाला, —(पुं०) 1. शिव 2 भीष्म, —लोकः ऊपर की दुनिया, स्वर्ग, —वर्त्मन् (पुं०) पर्यावरण, —वातः, —वायुः शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाली वायु, —शायिन् (वि०) ऊपर को मुंह (बच्चे की भांति) करके चित सोया हुआ—(पुं०) शिव, —शोधनम् वमन करना, —श्वासः सांस छोड़ना, प्राण त्यागना,—स्थितिः (स्त्री०) 1 अश्व पालन 2 घोड़े की पीठ 3 उच्चता, श्रेष्ठता।

ऊर्मि (पुं०, स्त्री०) [ऋ+मि, अर्तेरुच्च] 1 लहर झाल पयोवेगदुपगतसोर्मिः—मेघ० २४ 2 धारा प्रवाह 3 प्रकाश 4 गति, वेग 5. वस्त्र की सिकुड़न या घुमाव 6 पंक्ति, रेखा 7 कष्ट, बेचैनी, चिन्ता।

समा०—मालिन् (वि०) तरंग मालाओं से विभूषित —(पुं०) समुद्र ।

ऊर्मिका [ऊर्मि+कन्+टाप्] 1. लहर 2. अंगूठी (लहर की भांति चमकीली) 3. खेद, कोई वस्तु के लिए शोक 4. मक्खी का भिनभिनाना 5. वस्त्र में पड़ी सिकन या चुन्नट ।

ऊर्व (वि०) [ऊरु+व] विस्तृत, बड़ा,—र्वः बडवानल ।

ऊर्वरा [उरु सस्यादिकमृच्छति—ऋ+अच्+टाप्] उपजाऊ भूमि ।

ऊलुपिन् [दे० उलुपिन्] शिशुक, सूँस ।

ऊलूक = दे० उलूक ।

ऊष् (भ्वा० पर०) (ऊषति) रुग्ण होना, अस्वस्थ होना, बीमार होना ।

ऊषः [ऊष्+क] 1. रिहाली धरती 2. क्षार 3. दरार, दरेड़ 4. कर्णविवर 5. मलय पर्वत 6. प्रभात, पौ फटना, कुछ कोशों के मतानुसार (—षम्) भी ।

ऊषकम् [ऊष+कन्] प्रभात, पौ फटना ।

ऊषणम्—णा [ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 काली मिर्च, 2. अदरक ।

ऊषर (वि०) [ऊष्+रा+क] नमक या रेहकणों से युक्त, - रः, - रम् ऊसर भूमि जो रिहाल हो शि० १४।४६ ।

ऊषवत् = दे० (शि०) ऊषर ।

ऊष्मः [ऊष्+मक्] 1 ताप 2 ग्रीष्म ऋतु ।

ऊष्मण, ऊष्मल (वि०) [ऊष्म+न] [ऊष्मन्+लच्] गर्म, भाप निकालने वाला ।

ऊष्मन् (पुं०) [उष्+मनिन्] 1 ताप, गर्मी 2 ग्रीष्म-ऋतु, निदाघ 3 भाप, वाष्प, उच्छ्वास 4 सरगर्मी, जोश, प्रचण्डता 5 (व्या० में) श्, ष्, स् और ह् की ध्वनियाँ । सम० ऊष्मागमः ग्रीष्म ऋतु का आगमन, -पः 1 अग्नि 2. पितरों की (ब० व० में) एक श्रेणी ।

ऊह् (भ्वा० उभ०) (ऊहति -ते, ऊहित) 1. टीकना, अंकित करना, अवेक्षण करना 2 अटकल लगाना, अंदाज करना, अनुमान लगाना अनुकानमूहति पथिकोऽयम् पञ्च० १।४३ 3 समझना, सोचना, पहचानना, आशा करना ऊहाञ्चक्रे जयं न च—भट्टि० १४।७२ 4 तर्क करना, विचार करना- (प्रेर०) तर्क या चिन्तन करवाना, अनुमान या अटकल लगवाना —कि० १६।१९, अप— 1 हटाना, दूर करना- स हि विघ्नानपोहति -श० ३।१ 2 युक्ति अनुकरण करना, अपवि— रोकना हटाना अभि—, अटकल लगाना अंदाज लगाना 2 ढकना उप— निकट लाना, निर्— , मतपत्र करना, प्रकाशित करना ... (निर्मूह) परि— , इधर-उधर छितकाना, प्रति— 1 विरोध करना, बाधा डालना, रुकावट डालना ... (दे० प्रत्यूह) प्रति— ... विरुद्ध ... मोर्चा लगाना, वि— , युद्ध के अवसर पर सेना की व्यवस्था करना सूच्या वज्रेण चैवैतान् व्यूहेन व्यूह्य योधयेत् - मनु० ७।१९१, सम्— , एकत्र करना, इकट्ठे होना ।

ऊहः [ऊह्+घञ्] 1 अटकल, अंदाज 2 परीक्षण, निर्धारण 3 समझ-बूझ 4. तर्कना युक्ति देना 5 अध्याहार (न्यूनपद की पूर्ति) करना । सम० —अपोहः पूरी चर्चा, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियों पर पूरा सोच-विचार, — भामि० २।७४ दे० 'अपोह' ।

ऊहनम् [ऊह्+ल्युट्] अनुमान लगाना, अटकलबाजी ।

ऊहनी [ऊहन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी ।

ऊहिन् (वि०) [ऊह+इनि] तर्क करने वाला, अनुमान लगाने वाला, - नी 1 समाज, समूह 2 जाम, कमबद्ध समुदाय (तु० 'अक्षौहिणी')

ऋ

ऋ (अव्य०) (क) बुलाना (ख) परिहास और (ग) निन्दा या अपकर्षत्मक विस्मयादिद्योतक अव्यय ।

ऋ i (भ्वा० पर०) (ऋच्छति ऋत—प्रेर० अर्पयति, इच्छा० अरिरिषति) 1 जाना हिलना-जुलना—अम्भश्छायामच्छामृच्छति—शि० ४।६४ 2. उठाना, उद्युक्त होना ।

ii (जु० पर०) (इयर्ति, ऋत) (बहुधा वेद में प्रयुक्त) 1. जाना 2. हिलना-जुलना, लगातार होना 3. प्राप्त करना, अवाप्त करना, अधिकार करना, भेंट होना, 4 चलायमान करना, उत्तेजित करना ।

iii (क्र्या० पर०) (ऋणाति, ऋण) 1. चोट पहुँचाना, घायल करना 2 आक्रमण करना- -प्रेर० —(अर्पयति, अर्पित) 1 फेंकना, डालना, स्थिर करना या जमाना —रघु० ८।८७ 2. रखना, स्थापित करना, स्थिर करना, निर्देश देना या (आंख आदि को) फेरना 3. रखना, सम्मिलित करना, देना, सौंप देना, जमा

देना 4 सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, हवाले कर देना इति सूतस्याभरणान्यर्पयति श० १।४, १९।

ऋक्ण (वि०) [व्रश्च्+क्त पृषो० वलोप] घायल, क्षत-विक्षत आहत।

ऋक्थम् [ऋच्+थक] 1 धन दौलत 2 विशेषकर सम्पत्ति हस्तगत सामग्री या सामान (मृत्यु हो जाने पर छोड़ा हुआ) दे० रिक्थ 3 सोना। सम० —ऋक्थम् प्राप्त करना या उत्तराधिकार में (सम्पत्ति) पाना, —ग्राह उत्तराधिकारी या सम्पत्ति का प्राप्तकर्ता —भाग 1 सम्पत्ति का बँटवारा विभाजन 2 अंश दाय —भागिन् —हर, —हारिन् (पुं०) 1 उत्तराधिकारी 2 सह उत्तराधिकारी।

ऋक्ष [ऋष्+स किच्च] 1 रीछ मनु० १२।६७ 2 पर्वत का नाम —क्षः, —क्षम् 1 तारा तारकपुंज नक्षत्र मनु० ४।९ 2 राशिमाला का चिह्न राशि —क्षाः (ब० व०) सप्तर्षिमण्डल के सात तारे जो बाद में सप्तर्षि कहलाए रघु० १२।२५ —क्षा उत्तर दिशा —क्षी रीछनी मादा भालू। सम० —चक्रम् तारामंडल —नाथः —ईशः तारों का स्वामी चन्द्रमा —नेमि विष्णु —राजः —राट् 1 चन्द्रमा 2 रीछों का स्वामी जाम्बवान —हरीश्वरः रीछों और बन्दरों का स्वामी रघु० १२।७०।

ऋक्षर [ऋष्+क्सरन्] 1 ऋत्विज 2 काँटा।

ऋक्षवत् [ऋक्ष+मतुप् मस्य वः] नर्मदा के निकट स्थित एक पहाड़ वप्रक्रियामृक्षवतस्तटेषु रघु० ५।४४ ऋक्षवन्तं गिरिश्रेष्ठमध्यास्ते नर्मदां पिबन् रामा०।

ऋच् (तुदा० पर०) (ऋचति) 1 प्रशंसा करना स्तुति गान करना 2 ढकना पर्दा डालना 3 चमकना।

ऋच् (स्त्री०) [ऋच्+क्विप्] 1 सूक्त 2 ऋग्वेद का मंत्र ऋचा (विप० यजुस् और सामन्) 3 ऋक्संहिता (ब० व०) 4 दीप्ति (इस अर्थ में 'रुच्') 5 प्रशंसा 6 पूजा। सम० —विधानम् ऋग्वेद के मंत्रों के पाठ के साथ कुछ संस्कारों का अनुष्ठान —वेदः चारों वेदों में सबसे पुराना वेद हिन्दुओं का अत्यन्त पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ —संहिता ऋग्वेद के सूक्तों का क्रमबद्ध संग्रह।

ऋचीष [ऋच्+ईषन्] चक्की, तवा कड़ाही।

ऋच्छ् (तुदा० पर०) (ऋच्छति) 1 कड़ा या सख्त होना 2 जाना 3 क्षमता का न रहना।

ऋच्छका [ऋच्छ+कन्+टाप्] कामना इच्छा।

ऋज् I (भ्वा० आ०) (अर्जते, ऋजित) 1 जाना 2 प्राप्त करना हासिल करना 3 खड़े होना या स्थिर होना 4 स्वास्थ्य का हृष्ट-पुष्ट होना।

II (भ्वा० पर०) अवाप्त करना, उपार्जन करना दे० 'अर्ज्'।

ऋजीष—दे० 'ऋचीष'।

ऋजु, ऋजुक (वि०) [अर्जयति गुणान्, अर्ज्+उ] (स्त्री० —जु—ज्वी) (म० अ०—ऋजीयस्, उ० अ० ऋजिष्ठ) 1 सीधा (आल० भी)—उमा स पश्यन् ऋजुनैव चक्षुषा —कु० ५।३२ 2 खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी—पंच० १।४१९ 3 अनुकूल, अच्छा। सम० —ग 1 व्यवहार में ईमानदार 2 तीर, —रोहितम् इन्द्र का सीधा लाल धनुष।

ऋज्वी [ऋजु+ङीष्] 1 सीधीसादी सरल स्त्री 2 तारों की विशेष गति।

ऋणम् [ऋ+क्त] 1 कर्ज (तीनों प्रकार का ऋण, दे० अनृण) अन्त्य ऋण (पितृणम्) पितरों को दिया जाने वाला अन्तिम ऋण अर्थात् पुत्रोत्पादन 2 कर्तव्यता दायित्व 3 (बीजग० में) नकारात्मक चिह्न या ऋणात्मक घटा चिह्न (विप० धन) 4 किला दुर्ग 5 पानी 6 भूमि। सम० —अन्तकः मंगल ग्रह —अपनयनम्,—अपनोदनम्,—अपाकरणम्,—दानम्, —मुक्ति, —मोक्ष, —शोधनम् ऋणपरिशोध करना ऋण चुकाना, —आदानम् कर्जा वसूल करना उधार दिया हुआ द्रव्य वापिस लेना —ऋणम् (ऋणार्णम्) एक कर्ज के लिए दूसरा कर्ज एक ऋण चुकाने के लिए दूसरा ऋण ले लेना —ग्रहः 1 रुपया उधार लेना 2 उधार लेने वाला —दातृ —दायिन् (वि०) जो ऋण दे देता है —दासः वह कीत दास जिसका ऋण परिशोध करके उसे लिया गया है —ऋणमोचनेन दास्यत्वमभ्युपगतः ऋणदास - मिता० —मत्कुणः, —मार्गणः प्रतिभूति जमानत —मुक्त (वि०) ऋण से मुक्त —मुक्ति आदि दे० 'ऋणापनयनम्' —लेख्यम् ऋण-बन्धपत्र तमस्सुक जिसमें ऋण की स्वीकृति दर्ज हो (विधि में)।

ऋणिक [ऋण+ठन्] कर्जदार याज्ञ० २।५६, ९३।

ऋणिन् (वि०) [ऋण+इनि] कर्जदार ऋणग्रस्त अनुगृहीत (किसी भी बात से)।

ऋत (वि०) [ऋ+क्त] 1 उचित सही 2 ईमानदार, सच्चा —मनु० १०।१४ 3 पूजित प्रतिष्ठाप्राप्त —तम् (अव्य०) सही ढंग से उचित रीति से —तम् (लौकिक साहित्य में इसका प्रयोग प्राय नहीं मिलता) 1 स्थिर और निश्चित नियम विधि (धार्मिक) 2 पावन प्रथा 3 दिव्य नियम दिव्य सचाई 4 जल 5 सचाई अधिकार 6 खेतों में उञ्छवृत्ति द्वारा जीविका (विप० कृषि), ऋतमुञ्छशिलं ज्ञेयम्—मनु० ४।५। सम० —धामन् (वि०) सच्चे या पवित्र स्वभाव वाला —(पुं०) विष्णु।

ऋतीया [ऋत+ईयङ्+टाप्] निन्दा, भर्त्सना।

ऋतु [ऋ+तु, किच्च] 1 मौसम वर्ष का एक भाग, ऋतुएं

गिनती में छः हैं—शिशिरश्च वसन्तश्च ग्रीष्मो वर्षाः शरद्धिमः—कभी कभी ऋतुएँ पाँच समझी जाती हैं (शिशिर और हिम या हेमन्त एक गिने जाने पर) 2. ऋत्वारंभ, निश्चित काल 3. आर्तव, रजःस्राव, माहवारी 4. गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल—वरमृतुषु नैवाभिगमनम्—पंच० १, मनु० ३।४६, याज्ञ० १।११ 5. उपयुक्त मौसम या ठीक समय 6. प्रकाश, आभा 7. छः की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०—कालः,—समयः,—वेला 1. गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् रजःस्राव से लेकर १६ रातें, दे० ऊ० ऋतु 2 मौसम की अवधि,—गणः ऋतुओं का समुदाय,—गामिन् (गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय पर अर्थात् मासिकधर्म के पश्चात्) स्त्री से संयोग करने वाला,—पर्णः अयोध्या के एक राजा का नाम, अयुतायु का पुत्र, इक्ष्वाकु की संतान, (अपना राज्य छिन जाने पर निषध देश का राजा नल जब आपद्ग्रस्त हुआ तो वह राजा ऋतुपर्ण की सेवा में आया। द्यूतक्रीडा में बड़ा कुशल था। अतः उस राजा ने नल से द्यूतक्रीडा सीखी तथा बदले में उसे अश्वसंचालन का काम सिखाया। फलतः इसी की बदौलत राजा ऋतुपर्ण, इससे पूर्व कि दमयन्ती अपना दूसरा पति चुनने के विचार को कार्य में परिणत करे, नल को कुण्डिनपुर पहुँचाने में सफल हुआ),—पर्यायः,—वृत्तिः ऋतुओं का आना-जाना,—मुखम् ऋतु का आरम्भ या पहला दिन —राजः वसन्त ऋतु,—लिङ्गम् 1. रजःस्राव का लक्षण या चिह्न (जैसे की वसन्त ऋतु में आम के बौर आना) 2. मासिक स्राव का चिह्न,—संधिः दो ऋतुओं का मिलन,—स्नाता रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करके निवृत्त हुई, और इसीलिए संभोग के लिए उपयुक्त स्त्री—धर्मलोपभयाद्राज्ञीमृतुस्नातामिमां स्मरन्—रघु० १।७६,—स्नानम् रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करना।

ऋतुमती [ऋतु+मतुप्+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

ऋते (अव्य०) सिवाय, बिना (अपा० के साथ)—ऋते क्रौर्यात्समायातः—भट्टि० ८।१०५ ऋतेहि मां प्रीतमृते गुरुशुश्रूषात्—रघु० ३।६३ पापादृते—श० ६।२२, कु० २।५१, २।५७, (कभी-कभी कर्म० के साथ) ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे—भग० ११।३२ (करण० के साथ विरल प्रयोग)।

ऋत्विज् (पुं०) [ऋतु+यज्+क्विन्] यज्ञ के पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला, चार मुख्य ऋत्विज—होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा हैं, बड़े २ संस्कारों में ऋत्विजों की संख्या १६ तक होती है।

ऋद्ध (भू० क० कृ०) [ऋध्+क्त] 1. समृद्ध, फलता-फूलता, धनवान्—रघु० १७।१०, २।५०, ५।४० 2. वृद्धि-प्राप्त, वर्धमान 3. जमा किया हुआ (यथाविधि), —द्धः सिद्धम्,—द्धम् 1 वृद्धि, विकास 2 प्रदर्शित उपसंहार, स्पष्ट परिणाम।

ऋद्धिः (स्त्री०) [ऋध्+क्तिन्] 1 विकास, वृद्धि 2. सफलता, सम्पन्नता, बहुतायत 3 विस्तार, विभूति, विभूति 4. अतिप्राकृतिक शक्ति, सर्वोपरिता 5. समृद्धता।

ऋध् (दिवा० स्वा० पर०) (ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध) 1. सम्पन्न होना, समृद्ध होना, फलना-फूलना, सफल होना 2 विकसित होना, बढ़ना (आलं० भी) 3. संतुष्ट करना, पूरा करना, प्रसन्न करना, मनाना—भा० ५।२१, सम्—फलना-फूलना।

ऋभुः [अरि स्वर्गे अधिवसति इति—ऋ+भू+डु] देवता, दिव्यता, देव।

ऋभुक्षः [ऋभवो देवा निवसन्ति यस्मिन्—ऋभु+क्षि+ड] 1 इन्द्र 2 (इन्द्र का) स्वर्ग।

ऋभुक्षिन् (पुं०) (पुं० ऋभुक्षाः, कर्म० द्वि० व०—ऋभुक्षणौ) [ऋभुक्षः वज्रं स्वर्गो वाऽस्त्यस्य—इनि] इन्द्र।

ऋम्फलकः [?] एक प्रकार के वाद्ययंत्र को बजाने वाला।

ऋश्यः [ऋश्+क्यप्] सफेद पैरों वाला या श्वेतपाद हरिण, —श्यम् हत्या। सम०—केतुः,—केतनः 1 अनिरुद्ध, प्रद्युम्न का पुत्र 2 कामदेव।

ऋष् i (तुदा० पर०—ऋषति, ऋष्ट) 1 जाना, पहुँचना 2. मार डालना, चोट पहुँचाना।
ii (भ्वा० पर०—अर्षति) 1 बहना 2 फिसलना।

ऋषभः [ऋष्+अभक्] 1 साँड 2 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम (समास के अंतिम पद के रूप में) यथा पुरुषर्षभ, भरतर्षभ, आदि 3. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा—ऋषभोऽत्र गीयते इति—आर्या० ? 4 सूअर की पूंछ 5 मगरमच्छ की पूंछ, —भी 1. पुरुष के आकार प्रकार की स्त्री (जैसे कि दाढ़ी आदि का होना) 2. गाय 4 विधवा। सम०—कूटः एक पहाड़ का नाम, —ध्वजः शिव।

ऋषिः [ऋष्+इन्, कित्] 1. एक अन्तःस्फूर्त कवि या मुनि, मंत्र द्रष्टा 2. पुण्यात्मा मुनि, संन्यासी, विरक्त योगी 3. प्रकाश की किरण। सम०—कुल्या पवित्र नदी,—तर्पणम् ऋषियों की सेवा में प्रस्तुत किया गया तर्पण—(जलांजलि),—पंचमी भाद्रपदशुक्ला पंचमी को होने वाला (स्त्रियों का) एक पर्व,—लोकः ऋषियों का संसार,—स्तोमः 1. ऋषियों का स्तुति-गान, 2. एक दिन में समाप्त होने वाला एक विशेष यज्ञ।

ऋष्टिः (पुं०—स्त्री०) [ऋष्+क्तिन्] 1. दुधारी तलवार 2. (सामान्यतः) तलवार, कृपाण 3. शस्त्र (बर्छी, भाला आदि)।

ऋष्यः [ऋष्+क्यप्] सफेद पैरों वाला बारहसिंगा

हरिण। सम०—अंक,—केतन,—केतुः ऋष्यमूक —मूकः पंपा सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहाँ कुछ दिनों तक राम वानरराज सुग्रीव के साथ रहे थे — ऋष्यमूकस्तु पंपायाः पुरस्तात्पुष्पितद्रुमः — शृङ्गः एक मुनि का नाम (यह विभाण्डक का पुत्र था, इसके पिता ने जंगल में ही इसका पालन-पोषण किया, अतः जब तक यह वयस्क न हुआ तब तक इसने किसी दूसरे [illegible] नहीं देखा। अब अनावृष्टि के कारण [illegible] [illegible] [illegible] हो गया तो उसने [illegible] [illegible] [illegible] पराशर्मविद्वान् ऋष्यशृङ्ग को [illegible] [illegible] बुलाया और अपनी पुत्री शान्ता (यह दत्तक पुत्री थी इसके वास्तविक पिता राजा दशरथ थे) का विवाह इससे कर दिया। ऋष्यशृङ्ग ने इस [illegible] से प्रसन्न होकर उसके राज्य में पर्याप्त [illegible] कराई। यही वह ऋषि था जिसने राजा दशरथ के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान किया—जिसके फलस्वरूप राम और उनके तीन भाइयों का जन्म हुआ)।

ऋष्यक [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

ऋ

ऋ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — ऋ 1 भैरव 2 एक दानव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ऋ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] झुकना-झुकना

ए (पुं०) [illegible]

एक (सर्व० वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] केवल मात्र 2 जिसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बिल्कुल वही समान [illegible] [illegible] [illegible] महात्मनाम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 5 अकेला प्रकार का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुख्य सर्वोपरि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भर्तृ० ३।१२० 7 असमान बेजोड़ [illegible] [illegible] में से एक मेघ० ३०। 9 बहुधा [illegible] के अर्थ स्वयवाचक निपात [illegible] [illegible] का प्रयोग [illegible] ज्योतिरेकं —श० ५।३० एक [illegible]। [illegible] अर्थ को प्रकट करने के लिए बहुवचनान्त प्रयोग [illegible] [illegible] इसके सहसम्बन्धी शब्द हैं। सम० — अक्ष (वि०) 1 एक धुरी वाला 2 एक आँख वाला (— क्षः) 1 कौवा 2 शिव, — अक्षर (वि०) एक अक्षर वाला (—रम्) 1 एक अक्षर वाला 2 पावन अक्षर ओ३म् — अग्र (वि०) 1 केवल एक पदार्थ या बिन्दु पर स्थिर 2 एक ही ओर ध्यान में मग्न एकाग्रचित्त, तुला हुआ,—रघु० १५।६६, अनुमेकाग्रमासीनम्—मनु० २१ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — अङ्ग (—कृत्यम्, [illegible]) — अङ्गः 1 [illegible] रक्षक 2 मंगलग्रह या बुध ग्रह — अनुदिष्टम् [illegible] [illegible] जो केवल एक ही [illegible] मृत) का उद्देश्य करके किया गया हो — अन्त (वि०) 1 अकेला 2 एक ओर, पार्श्व में 3 केवल एक ही पदार्थ या बिन्दु की ओर निर्दिष्ट हो 4 सर्वाधिक बहुत—कु० १।३६ 5 निरपेक्ष [illegible] [illegible]—[illegible] भर्तृ० २।७ मेघ० १०९ [illegible]। एकमात्र आश्रय निश्चित नियम—नैव [illegible] [illegible] नैकान्तं कालकारं महीपते—शि० २।८१ —तम्, —तेन, —तात्, —ते) (अव्य०) 1 केवल मात्र अवश्य सदैव नितांत 2 अत्यन्त बिल्कुल सर्वथा —वयमप्येकान्ततो निःस्पृहा—भर्तृ० ३।२४, दु खमेकान्ततो वा—मेघ० १०९ —अन्तर (वि०) [illegible] जिसमें केवल एक का ही अन्तर रहे, एक के बाद एक को छोड़ कर—मनु० ७।२७,—अन्तिक (वि०) अन्तिम निश्चयिक —अयन (वि०) 1 जहाँ से केवल एक हो जा सके, (जैसे कि पगडंडी या सड़क) 2 नितान्त ध्यानमग्न तुला हुआ दे० एकाग्र (—नम्) 1 एकान्त स्थल या निर्जन स्थली 2. मिलने का स्थान, संकेत-स्थल 3. [illegible] 4. केवलमात्र

उद्देश्य—आ स्नेहस्य एकावलीभूता—मालवि० २।१५, —अर्थः 1 वही वस्तु, वही पदार्थ या वही आशय 2. वही भाव,—अहन् (न०) 1. एक दिन का समय 2. एक दिन तक चलने वाला यज्ञ,—आतपत्र (वि०) एकच्छत्र से विशिष्टीकृत (विश्वभर की प्रभुता को बताने वाला)—एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम् -रघु० २।४७ शि० १२।३३ विक्रम० ३।१९, —आदेशः दो या दो से अधिक अक्षरों का एक स्थानापन्न (या तो एक स्वर का लोप करके या दोनों को मिला कर प्राप्त किया गया) जैसे कि 'एकायन' में आ,—आवलिः

—ली (स्त्री०) मोतियों की या अन्य मनकों की एक लड़, एकावली कण्ठविभूषणं व — विक्रमांक० १।३०, लताविटपे एकावली लग्ना —विक्रम० १।० (अलं० शा० में) ऐसी उक्तियों की पंक्ति जिसमें कर्ता का विधेय और विधेय का कर्ता के रूप में नियमित संक्रमण पाया जाय—स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्वं परस्परम्, विशेषणतया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा —काव्य० १० —उदक (संबंधी) जो एक ही मृत पूर्वज से जल के तर्पण द्वारा संबद्ध हों। —उदरः,—रा सगा (भाई या बहन) उद्दिष्टम् श्राद्धकृत्य जो केवल एक ही मृत व्यक्ति को (दूसरे पूर्वजों को सम्मिलित न करके) उद्देश्य करके किया गया हो, ऊन (वि०) एक कम एक घटाकर

एक (वि०) एक एक करके व्यष्टिरूप से एक अकेला—रघु० १७।४३, (—कम्) – एकैकशः (अव्य०) एक२ करके, व्यक्तिशः पृथक्-पृथक् —ओघः एक सतत धारा,—कर (वि०) (स्त्री० —री) 1 एक ही कार्य करने वाला 2 (—रः) एक ही हाथ वाला 3 एक किरण वाला कार्य (वि०) मिलकर काम करने वाला सहयोगी सहकारी (—र्यम्) एक मात्र कार्य, वही कार्य,—काल 1 एक समय 2. उसी समय,— कालिक,—कालीन (वि०) 1. केवल एक बार होने वाला 2 समवयस्क, समसामयिक,—कुंडलः कुबेर, बलभद्र, शेषनाग,— गुरु, —गुरुक (वि०) एक ही गुरु वाला (—रुः,- रुकः) गुरुभाई,—चक्र (वि०) 1 एक ही पहिये वाला 2. एक ही राजा द्वारा शासित, (—क्रः) सूर्य का रथ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) इकतालीस,—चर (वि०) 1. अकेला घूमने या रहने वाला—कि० १३।३ 2 एक ही अनुचर रखने वाला 3 असहाय रहने वाला —चारिन् (वि०) अकेला, (—णी) पतिव्रता स्त्री, —चित्त (वि०) केवल एक ही बात को सोचने वाला (—त्तम्) 1 एक ही वस्तु पर चित्त की स्थिरता 2. ऐकमत्य—एकचित्तीभूय हि० १—एक मत से, —चेतस्,—मनस् (वि०) एक मत, दे० °चित्त,

—जन्मन् (पुं०) 1 राजा 2 शूद्र, दे० नीचे, °जाति — जात एक ही माता-पिता से उत्पन्न,—जातिः शूद्र (विप० द्विजन्मन्) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः —मनु० १०।४, ८।२७०,— जातीय (वि०) एक ही प्रकार का या एक ही परिवार का,—ज्योतिस् (पुं०) शिव,—तान (वि०) केवल एक पदार्थ पर स्थिर या केन्द्रित नितान्त ध्यानमग्न - ब्रह्मैकतानमनसो हि वशिष्ठमिश्रा —महावी० ३।११ - तालः संगति गीतों का यथार्थ समजन नृत्य वाद्य यंत्र (तु० तौर्यत्रिकम्)

—तीर्थिन् (वि०) 1 उसी पावन जल में स्नान करने वाला 2 एक ही धर्मसंघ से संबद्ध रहने वाला— याज्ञ० २।१३७, (पुं०) सहपाठी गुरुभाई त्रिंशत् (स्त्री०) इकतीस - दन्त् दन्त एक दांत वाला गणेश का विशेषण दंडिन् (पुं०) संन्यासियों या 'भिक्षुकों' का एक समुदाय (जो हंस कहलाते हैं) इनके चार भेद हैं कुटीचको बहूदको हंसश्चैव तृतीयकः चतुर्थः परहंसश्च यो यः पश्चात्स उत्तमः। हारीत दृश, दृष्टि (वि०) एक आंख वाला —(पुं०) 1 कौवा 2 शिव 3 दार्शनिक —देश परखना

देशः 1 एक स्थान या स्थल 2 (भाग या) एक भाग या अंश, एक पार्श्व— प्रशांतदमन ... ८४ [illegible] विक्रम० ८।१७ °इतम अंश का दावा किया जाता है वह सभी व्यक्ति के द्वारा दिया जाना चाहिए जो उसके एक अंश का प्राप्तकर्ता प्रमाणित हो जाय (इसी बात को कभी-कभी एकदेशविभक्तिन्याय कहते हैं) धर्मन्, धर्मिन् 1 एक ही प्रकार के गुणों या स्वभाव वाला या एक ही प्रकार की सम्पत्ति का स्वामी वाला 2 एक ही धर्म का मानने वाला धुर, धुरावह —धुरीण (वि०) 1 जो एक ही प्रकार का भार सह सके 2 जो एक ही प्रकार से जुत सके (जैसे कि विशेष बोझ के लिए कोई पशु) पा० ४।४।७९, —नटः नाटक में प्रधान पात्र सूत्रधार जो नान्दीपाठ करता है, —नवतिः (स्त्री०) इक्यानवे, —पक्षः एक पक्ष या दल 'आश्रय विकल्पत्वात्—रघु० १४।३४,- पत्नी 1 पतिव्रता स्त्री (पूर्णम् सती साध्वी) 2 सपत्नी, सौत —सर्वासामेकपत्नीनामेका चेत्पुत्रिणी भवेत्—मनु० ९।१८३,—पदी पगडंडी,—पदे (अव्य०) अकस्मात्, एकदम, अचानक—निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव —शि० २।९५, रघु० ८।४८, —पादः 1. एक या अकेला पैर 2 एक या वही चरण 3 विष्णु, शिव, —पिंगः, पिंगलः कुबेर,—पिंड (वि०) असपिंडित पिंड-दान के द्वारा संयुक्त, —पत्नी एक पतिव्रता और सती स्त्री, (—कः) केवल एक पत्नी रखने वाला,

--भक्त (वि०) सच्चा भक्त, ईमानदार, यष्टिः, यष्टिका मोतियों की एक लड़ी, --योनि (वि०) 1 सहोदर 2 एक ही कुल या जाति के—मनु० ९।१४८ --रस 1 उद्देश्य या भावना की एकता 2 केवल मात्र रस या आनन्द --राज्,—राज (पुं०) निरंकुश या स्वेच्छाचारी राजा, --रात्र एक पूरी रात तक रहने वाला पर्व --रिक्थिन् (पुं०) सह उत्तराधिकारी,--रूप (वि०) 1 एक सा समान 2 समरूप, --लिंग 1 एक ही लिंग रखने वाला शब्द 2 कुबेर --वचनम् एक संख्या को प्रकट करने वाला शब्द, --वर्ण एक जाति --वर्णिका एक बार की प्रक्रिया --वाक्यता अर्थ की संगति एकरूप विभिन्न उक्तियों का सामंजस्य, --वारम् --वारे (अव्य०) 1 केवल एक बार 2 तुरन्त अकस्मात् 3. एक ही समय, --विंशति (स्त्री०) इक्कीस --विलोचन (वि०) एक आंख वाला दे० एकाक्ष --विवादिन् (पुं०) प्रतिद्वन्द्वी, --वीर सबसे बड़ा योद्धा —महावी० ५।४८ --वेणि, --वेणी (स्त्री०) बालों की एक मात्र चोटी (विरह स्त्री पति वियोग के चिह्न स्वरूप धारण करती है) गण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण —मेघ० ९२ श० ७।२१, --श्रफ (वि०) अखंड खुर वाला (--फः) एक पशु जिसके खुर या सुम फटे हुए न हों जैसे घोड़ा गधा आदि, --शरीर (वि०) रक्तसंबद्ध एक खून का --अन्वय- एक ही गोत्र की सन्तान अव- यव एक रक्त के गोत्रज या रक्त संबंधी --शाख एक ही शाखा या विचार का ब्राह्मण, --शृङ्ग (वि०) केवल एक सींग धारी (--ग) 1 अश्वमेधी गड़ा 2 विष्णु --शेष एकशेष द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमें केवल एक ही पद अवशिष्ट रहता है उदा० पितरौ माता और पिता (मातापितरौ) इसी प्रकार भ्रातरौ भ्राता, आदि --श्रुत (वि०) एक ही बार सुना हुआ --श्रुतधर (वि०) एक बार सुनी हुई बात का ध्यान में रखने वाला --श्रुति (स्त्री०) एकस्वरता --सप्तति (स्त्री०) इकहत्तर, --सर्ग (वि०) नितान्त ध्यानमग्न --साक्षिक (वि०) एक व्यक्ति द्वारा देखा हुआ --हायन (वि०) एक वर्ष की आयु का —मा० ४।८, उत्तर० ४।२८, (--नी) एक वर्ष की बछिया।

एकक (वि०) [एक + कन्] 1 इकहरा, अकेला, एकाकी, बिना किसी सहायक के —उत्तर० ५।१५ 2 वही, समरूप।

एकतम (वि०) (नपुं०—तमम्, स्त्री० तमा) [एक + डतमच्] 1 बहुतों में से एक 2 एक (अनिश्चयवाचक रूप में प्रयुक्त)।

एकतर (सर्व०, —तरम्) [एक + डतरच्] 1 दो में से एक, कोई सा 2 दूसरा, भिन्न 3 बहुतों में से एक।

एकतः (अव्य०) [एक + तसिल्] 1 एक ओर से, एक ओर 2 एक एक करके, एक एक, एकतः-अन्यतः एक ओर, दूसरी ओर—रघु० ६।८५, कि० ५।२।

एकत्र (अव्य०) [एक + त्रल्] 1 एक स्थान पर 2 इकट्ठे, सब इकट्ठे मिल कर।

एकदा (अव्य०) [एक + दा] 1 एक बार, एक दफा, एक समय 2 उसी समय, सर्वथा एक बार, साथ ही साथ—हि० ४।९३।

एकधा (अव्य०) [एक + धा] 1 एक प्रकार से 2 अकेले 3 तुरन्त उसी समय 4 मिलकर, साथ साथ।

एकल (वि०) [एक + ला + क] अकेला, एकाकी— उत्तर० ४।

एकशः (अव्य०) [एक + शस्] एक एक करके, अकेले।

एकाकिन् (वि०) [एक + आकिनच्] अकेला, केवल एक।

एकादशन् (सं० वि०) [एकेन अधिका दश इति] ग्यारह।

एकादश (वि०) (स्त्री —शी) ग्यारहवाँ, —शी चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, विष्णु संबंधी पुनीत-दिवस। सम० --द्वारम् शरीर के ग्यारह छिद्र दे० ख --रुद्राः (ब० व०) ११ रुद्र - दे० रुद्र।

एकीभाव [एक + च्वि - भू + घञ्] 1 मइति साहचर्य 2 सामान्य स्वभाव या गुण।

एकीय (वि०) [एक + छ] एक का या एक से—य: तरफदार सहकारी।

एज् (भ्वा० आ० (म० का० प० पर०) - एजते, एजित) 1 कांपना 2 हिलना-डुलना 3 चमकना (पर०), अप , दूर हाँक देना उद्—, उठना, ऊपर को होना।

एजक (वि०) [एज् + ण्वुल्] कांपता हुआ, हिलता हुआ।

एजनम् [एज् + ल्युट्] कांपना, हिलना।

एठ् (भ्वा० आ० एठते, एठित) छेड़ना, रोकना, विरोध करना।

एड (वि०) [इल् + अच्, डलयोरभेदः] बहरा,—ड: एक प्रकार की भेड़। सम० --मूक (वि०) 1 बहरा और गूंगा—मु० अनेडमूक 2 दुष्ट, कुटिल।

एडक: [एड + कन्] 1 मेंढा, 2 जंगली बकरा,—का, भेड़ी।

एण:, एणक: [एति द्रुतं गच्छति इति—इ + ण, एण + कन् च] एक प्रकार का काला बारासिंघा हरिण, निम्नां- कित श्लोक में अनेक प्रकार के हरिणों का उल्लेख है —अनूपो माधवो ज्ञेय एक कृष्णमृग स्मृतः, रुरुर्गौर- मुख प्रोक्त: शंबर शोण उच्यते। सम०—अजिनम् मृगचर्म,—तिलकः,—भृत् चन्द्रमा, इसी प्रकार "अंक, "लांछन आदि,—दृश् (वि०) हरिण जैसी आँखों वाला,-(पुं०) मकर राशि।

एणी [एण + ङीप्] काली हरिणी।

एत (वि०) (स्त्री०—एता, एनी) रंगबिरंगा, चमकीला —तः हरिण या बारहसिंगा ।

एतद् (सर्व० वि०) (पुं०—एषः, स्त्री० –एषा, नपुं० —एतद्) [इ+अदि, तुक्] 1 यह, यहाँ, सामने (वक्ता के निकटतम वस्तु का उल्लेख करना—समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्), इस अर्थ में 'एतद्' शब्द कई बार पुरुषवाचक सर्वनाम पर बल देने के लिए प्रयुक्त होता है,– एषोऽस्मि कार्यवशादायोध्यिकस्तदानीन्तनश्च संवृत्तः उत्तर० १ 2 यह प्रायः अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है विशेषकर जबकि यह इदम् या किसी और सर्वनाम के साथ संयुक्त किया जाय —एष वै प्रथमः कल्पः –मनु० ३।१४७ इति यदुक्तमेतत्त्विन्नन्यम् 3 यह संबंधबोधक वाक्यखंड में भी प्रायः प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में—संबंधबोधक बाद में आता है मनु० १।८५७ (अव्य०) इस रीति से, इस प्रकार, अत:, ध्यान दो, एतद् शब्द उन समासों में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है जो प्रायः निगदव्याख्यात या स्वतः स्पष्ट हों उदा० —°अनन्तरम् इसके तुरन्त बाद अतः इस प्रकार समाप्त करते हुए । सम० द्वितीय (वि०) जो किसी कार्य को दोबारा करे, –प्रथम (वि०) जो किसी को पहली बार करे ।

एतदीय (वि०) [एतद् –छ] इसका, के की ।

एतनः [आ + इ + तन] श्वास, साँस छोड़ना ।

एतर्हि (अव्य०) [इदम् + र्हिल्, एत आदेश] अब, इस समय, वर्तमान समय में ।

एतादृक्ष,—दृश,—दृश्, (वि०) [स्त्री० क्षी, शी] 1 ऐसा, इस प्रकार का –सर्वेऽपि नैतादृशाः भर्तृ० २। ५१ 2 इस प्रकार का ।

एतावत् (वि०) [एतद् + वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना विस्तृत, इतनी दूर इस गुण का या ऐसे प्रकार का —एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे —रघु० २।५१, कु० ६।८९, एतावान्मे विभवो भवन्तं सेवितुम् मालवि० २, (अव्य०) इतनी दूर इतना अधिक, इतने अंश में, इस प्रकार ।

एध् (भ्वा० आ०—एधते, एधित) 1 उगना, बढ़ना—पंच० २।१६८ 2 फलना-फूलना, सुख में जीवन बिताना द्वावेतौ सुखमेधेते—पंच० १।३१८, प्रेर० उगवाना, बढ़वाना, अभिवादन करना, सम्मान करना –कु० ६।९० ।

एधः [इन्ध् + घञ्, नि०] ईंधन,–स्फुलिङ्गावस्थया वह्निरेधापेक्ष इव स्थितः –श० ७।१५, शि० २।९९ ।

एधतुः [एध् + चतु] 1 मनुष्य 2 अग्नि ।

एधस् (नपुं०) [इन्ध् + असि] ईंधन—यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन – भग० ४।३७ वनकायामुपचस्थैधसे –रघु० ८।७१ ।

एधा [एध् + अ + टाप्] फलना-फूलना, हर्ष ।

एधित (भू० क० कृ०) [एध् + क्त] 1 विकसित बढ़ा हुआ 2 पाला पोसा —मृगशावैः सममेधितो जनः –श० २।१८ ।

एनस् (नपुं०) [इ + असुन् नुडागम] 1 पाप, अपराध, दोष शि० १४।३५ 2 कुचेष्टा, जुर्म 3 खिन्नता 4 निन्दा, कलंक ।

एनस्वत्, एनस्विन् (वि०) [एनस् + मतुप् व आदेश विनि वा] दुष्ट, पापी ।

एरण्डः [आ + ईर् + अण्डच्] अरंडी का पौधा (बहुत थोड़े पत्तों वाला एक छोटा वृक्ष) अन्य० स्तो० – निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ।

एलकः [इल् + अच् + कन्] मेढ़ा दे० एडक ।

एलवालु (नपुं०) एलवालुकम् [एला + वल् + उण्, हृस्व कन् च] 1 सुगन्धयुक्त छाल 2 एक रवेदार या दानेदार द्रव्य (जो औषधि या सुगंध के रूप में प्रयुक्त होता है) ।

एलविलः [इलविला + अण्] कुबेर दे० ऐलविल ।

एला [इल् + अच् + टाप्] 1 इलायची का पौधा –एलानामुत्पतिष्णवः रघु० ४।४७, ६।६४ 2 इलायची (इलायची के बीज) । सम० –पर्णी एक प्रकार का एक पौधा ।

एलीका [आ + ईल् + ईकन् + टाप्] छोटी इलायची ।

एव (अव्य०) [इ + वन्] किसी शब्द द्वारा कहे गये विचार पर बल देने के लिए बहुधा इस अव्यय का प्रयोग होता है 1 ठीक, बिल्कुल, सही तौर पर एवमेव बिल्कुल ऐसा ही, ठीक इसी प्रकार का 2 वही, सही, समरूप अर्थात्ता विचरित पुरुष स एव अम० ४।४० 3 केवल, अकेला, मात्र (बहिष्करण की भावना रखते हुए) सा त्वदावाभिह्लिता भवेन कु० ३।६३ केवलमात्र सचाई, सचाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं 4 पहले ही 5 कठिनाई से उसी क्षण, ज्यूँ ही (मुख्यतया-कृदन्तों के साथ) उपस्थितेय कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत् रघु० १। ८७ 6 की भाँति, जैसे कि (समानता प्रकट करते हुए) श्रीस्त एव मज्जनु—गण० (मत इव) और 7 सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए अविनयमेव तेन – उत्तर० ४, यह बात निश्चित रूप से होगी, निम्नांकित अर्थ भी इस शब्द द्वारा प्रकट होते हैं 8 अपयश 9 न्यूनता 10 आज्ञा 11 नियंत्रण तथा 12 केवल पूर्ति के लिए ।

एवम् (अव्य०) [इ + वमु (बा०)] 1 अत:, इसलिए, इस रीति से—अस्त्वेवम्—पंच० १, यह इस प्रकार है,–एववादिनि देवर्षौ—कु० ६।८४, यथा एवम्—मेघ० १०१ (जो कुछ बाद में आता है)— एवमस्तु—ऐसा

ही हो, –स्वस्ति, यद्येवम् यदि ऐसा है 2 बिल्कुल ऐसा ही (स्वीकृति रखते हुए) –एवं यदात्थ भगवान् —कु० २।३१। सम० –अवस्थ (वि०) इस प्रकार स्थित, या ऐसी परिस्थितियों में फँसा हुआ, —आदि —आद्य (वि०) ऐसा और इस प्रकार का, –कारम् (अव्य०) इस रीति से, –गुण (वि०) ऐसे गुणों वाला श० १।१२, –प्रकार प्राय (वि०) इस प्रकार का उत्तर० ४।१९, मा० ३।१८ भूत (वि०) इस प्रकार के गुणों का ऐसा इस ढंग का रूप (वि०) (वि०) इस प्रकार का ऐसे रूप का, –विध (वि०) इस प्रकार का, ऐसा।

एष् (भ्वा० उभ०—एषति—ते, एषित) 1. जाना, पहुँचना 2 शीघ्रता से जाना, दौड़ कर जाना, परि–, ढूँढ़ना।

एषण [एष् + ल्युट्] लोहे का तीर,—णम् 1 ढूँढ़ना 2. कामना करना, –णा कामना, इच्छा।

एषणिका [इष् + ल्युट् + कन्, टाप्, इत्वम्] सुनार का कांटा तोलने की तराजू।

एषा [इष् + अ + टाप्] इच्छा, कामना।

एषिन् (वि०) [इष् + णिनि] इच्छा करते हुए, कामना करते हुए (समास के अन्त में), –यौवने विषयैषिणाम् रघु० १।८।

ऐ

ऐ (पुं०) [आ + इ + विच्] शिव, (अव्य०) क) बुलाना (ख) स्मरण करने या (ग) आमन्त्रण को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ऐकध्यम् (अव्य०) तुरन्त।

ऐकमत्यम् [एकमत + ष्यञ्] (मतैक्य) समझौता, सहमति या बात की ऐकान्तिकता।

ऐकपत्यम् [एकपति + ष्यञ्] परम प्रभुता सर्वोपरि शक्ति।

ऐकपदिक (वि०) (स्त्री० –की) [एकपद + ठञ्] एक पद से संबंध रखने वाला।

ऐकपद्यम् [एक पद + ष्यञ्] 1 शब्दों की एकता 2 एक शब्द बनना।

ऐकमत्यम् [एकमत + ष्यञ्] एकमतता सहमति भाग० १८।३६।

ऐकागारिक [एकागार + ठञ्] चोर – बैकल्पिक ह्यस्तनं कार्गारिकेण दश० ६३ शि० ११।११९ 2 एक घर का मालिक।

ऐकाग्र्यम् [एकाग्र + ष्यञ्] एक ही पदार्थ पर जुट जाना एकाग्रता।

ऐकाङ्गः [एकाङ्ग + अण्] शरीर रक्षक दल का एक सिपाही राज० ५।२४९।

ऐकात्म्यम् [एकात्मन् + ष्यञ्] 1 एकता आत्मा की एकता 2 समरूपता, समता 3 परमात्मा के साथ एकता या तादात्म्य।

ऐकाधिकरण्यम् [एकाधिकरण + ष्यञ्] 1 संबंध की एकता 2 एक ही विषय में व्याप्ति, (तर्क० में) —सह चिरस्मृति साम्येन हेतोरैकाधिकरण्य व्याप्तिरुच्यते —भाषा० ६९।

ऐकान्तिक (वि०) (स्त्री० –की) 1 पूर्ण, समग्र, पूरा 2 विश्वस्त, निश्चित 3 अनन्य।

ऐकान्यिक [एकान्य + ठक्] वह शिष्य जो वेद का सस्वर पाठ करने में एक अशुद्धि करे।

ऐकार्थ्यम् [एकार्थ + ष्यञ्] 1 उद्देश्य या प्रयोजन की समानता 2 अर्थों की संगति।

ऐकाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [एकाह + ठक्] 1 अल्पायुक 2 एक दिन का उसी दिन का, दैनिक।

ऐक्यम् [एक + ष्यञ्] 1 एकपना, एकता 2 एकमतता, 3 समरूपता समता 4 विशेष कर मानव आत्मा की समरूपता या विश्व की परमात्मा से एकरूपता।

ऐक्षव (स्त्री०—वी) [इक्षु + अण्] गन्ने से बना या उत्पन्न, –वम् 1 चीनी 2 मादक शराब।

ऐक्षव्य (वि०) [इक्षु + ण्य] गन्ने से बना पदार्थ।

ऐक्षुक (वि०) [इक्षु + ठञ्] 1 गन्ने के लिए उपयुक्त 2 गन्ने वाला क गन्ने ले जाने वाला।

ऐक्षुभारिक (वि०) [इक्षुभार + ठक्] गन्ने का बोझा ढोने वाला।

ऐक्ष्वाक (वि०) [इक्ष्वाकु + अ] इक्ष्वाकु से संबंध रखने वाला – कः, कु 1 इक्ष्वाकु की सन्तान,—सत्यमैक्ष्वाकः खल्वसि उत्तर० ५, २ इक्ष्वाकु वंश के लोगों द्वारा शासित देश।

ऐङ्गुद (वि०) [स्त्री०—दी] [इङ्गुदी + अण्] इंगुदी वृक्ष से उत्पन्न दम् इंगुदी वृक्ष का फल।

ऐच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इच्छा पर निर्भर, इच्छापरक 2 मनमाना।

ऐड (वि०) (स्त्री० की) भेड़ का,—डः भेड़ की एक जाति।

ऐड (ल) बिल. (ल) [इडविडा + अण् पक्षे डलयोरभेद] कुबेर।

ऐण (वि०) (स्त्री०—णी) बारहसिंगा हरिण की (खाल, ऊन आदि) याज्ञ० १।२५९।

ऐणेय (वि०) (स्त्री०—यी) [एणी+ढक्] काली हरिणी या तत्संबंधी किसी पदार्थ से उत्पन्न,—यः काला हरिण, —यम् रतिबंध, रतिक्रिया का एक प्रकार।

ऐतदात्म्यम् [एतदात्मन्+ष्यञ्] इस प्रकार के गुण या विशिष्टता को रखने की अवस्था।

ऐतरेयिन् [ऐतरेय+इनि] ऐतरेय ब्राह्मण का अध्येता।

ऐतिहासिक (वि०) (स्त्री०—की) [इतिहास+ठक्] 1. परम्परा प्राप्त 2 इतिहास संबंधी,—कः 1 इतिहासकार 2 वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्यानों को जानता है या उनका अध्ययन करता है।

ऐतिह्यम् [इतिह+ष्यञ्] परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन,—ऐतिह्यमनुमानं च प्रत्यक्षमपि चागमम्—रामा०, त्रिवेदैतिह्ये (पौराणिक 'ऐतिह्य' को प्रत्यक्ष, अनुमान आदि के साथ प्रमाण का एक भेद मानते हैं—दे० 'अनुभव')।

ऐदम्पर्यम् [इदम्पर+ष्यञ्] आशय, क्षेत्र, संबंध (इदंपर होने की अवस्था अर्थात् अर्थ, आशय या क्षेत्र रखना)—इदं तावदैदम्पर्यम्—मा० २।७।

ऐनसम् [एनस्+अण्] पाप।

ऐन्दव (वि०) (स्त्री०—वी) [इन्दु+अण्] चंद्रमा संबंधी,—वः चान्द्रमास।

ऐन्द्र (वि०) (स्त्री०—ऐन्द्री) [इन्द्र+अण्] इन्द्र संबंधी या इन्द्र के लिए पवित्र,—रघु० २।५०,—न्द्रः अर्जुन और बाली,—न्द्री 1 ऋग्वेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को संबोधित किया गया है—दाशतयीका कापिलेयी समाम्नाता—जै० न्या० 2. पूर्व दिशा (इस दिशा का अधिष्ठातृदेवता इन्द्र है) कि० ९।१८ 3 मुसीबत संकट 4. दुर्गा की उपाधि 5 छोटी इलायची।

ऐन्द्रजालिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रजाल+ठक्] 1. धोखे में डालने वाला, 2. जादू-टोना विषयक 3 मायावी, भ्रान्ति जनक 2 जादू-टोने का जानकार,—कः बाजीगर—शि० १५।२५।

ऐन्द्रलुप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रलुप्त+ठक्] केशरोग से पीड़ित, गंजा।

ऐन्द्रशिरः [इन्द्रशिर+अण्] हाथियों की एक जाति।

ऐन्द्रिः [इन्द्रस्यापत्यम्—इन्द्र+इञ्] 1 जयन्त, अर्जुन, सुग्रीव आदि 2. कौवा—ऐन्द्रिः किल नखैस्तस्या विददार स्तनौ द्विजः—रघु० १२।२२।

ऐन्द्रिय,—यक (वि०) [इन्द्रिय+अण्, वुञ् वा] 1. इन्द्रियों से संबंध रखने वाला, विषयी 2 विद्यमान, ज्ञानेन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रियगोचर,—यम् ज्ञानेन्द्रियों का विषय।

ऐन्धन (वि०) (स्त्री०—नी) [इन्धन+अण्] जिसमें ईंधन विद्यमान हो,—नः सूर्य।

ऐयत्यम् [इयत्+ष्यञ्] परिमाण, संख्या।

ऐरावणः [इरा आपः तानि वनति सम्भजते—इरा+वन्+अच् इरावण—ततः अण्] इन्द्र का हाथी।

ऐरावतः [इरा आपः सन्ति अस्मिन् इरावान् समुद्र, तस्मादुत्पन्न अण्] 1 इन्द्र का हाथी 2 श्रेष्ठ हाथी 3 पाताल निवासी नागजाति का एक मुखिया 4 पूर्व दिशा का दिग्गज 5 एक प्रकार का इन्द्रधनुष,—ती 1 इन्द्र की हथिनी 2. बिजली 3 पंजाब में बहने वाली नदी, रावी (इरावती)।

ऐरेयम् [इरायाम् अन्ने भवम्—इरा+ढक्] मदिरा (जो भोज्य पदार्थ से तैयार की जाय)।

ऐलः [इलाया अपत्यम्—अण्] 1 पुरूरवा (इला और बुध का पुत्र) 2 मंगलग्रह।

ऐलवालुकः [एलवालुक+अण्] एक सुगंध द्रव्य।

ऐलविलः [इलविला+अण्] 1 कुबेर शि० १३।१८ 2 मंगलग्रह।

ऐलेयः [इला+ढक्] 1 एक प्रकार का गन्ध द्रव्य 2 मंगल ग्रह।

ऐश (वि०) (स्त्री०—शी) [ईश+अण्] 1 शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० २।७५ 2 सर्वोपरि, राजकीय।

ऐशान (वि०) [ईशान+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला,—नी 1 उत्तरपूर्वी दिशा 2. दुर्गादेवी।

ऐश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [ईश्वर+अण्] 1 शानदार 2 शक्तिशाली, ताकतवर 3 शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० ११।७६ 4 सर्वोपरि, राजकीय 5 दिव्य,—री दुर्गादेवी।

ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] 1 सर्वोपरिता, प्रभुता—एकैश्वर्ये स्थितोऽपि—मालवि० १।१ 2 ताकत, शक्ति, आधिपत्य 3 उपनिवेश 4 विभव धन, बड़प्पन 5 सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ।

ऐषमस् (अव्य०) [अस्मिन् वत्सरे इति नि० साधु] इस वर्ष में, चालू वर्ष में।

ऐषमस्तन,—मस्त्य (वि०) [ऐषमस्+तनप्, त्यप् वा] चालू वर्ष से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [इष्टि+ठक्] यज्ञसम्बन्धी, संस्कार विषयक। सम०—पूर्तिक (वि०) इष्टापूर्त (यज्ञ अथवा अन्य धार्मिक कृत्य) से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐहलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [इहलोक+ठञ्] इस संसार से सम्बन्ध रखने वाला, या इस लोक में घटित होने वाला, ऐहिक, दुनियावी (विप० पारलौकिक)।

ऐहिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इस लोक या स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, सांसारिक, दुनियावी, लौकिक 2 स्थानीय,—कम् व्यवसाय (इस संसार का)।

ओ

ओ (पुं० ओ) [उ + विच्] ब्रह्मा (अव्य०) 1 सम्बोधनात्मक (ओ) अव्यय 2 (क) बुलाना (ख) स्मरण करना और (ग) करुणा द्योतक विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ओक: [उच् + क नि० चस्य कः] 1 घर 2 शरण, आश्रय 3. पक्षी 4 शूद्र।

ओकण: (णि) [ओ + कण् + अच्, इन् वा] खटमल इसी प्रकार 'ओकोदनी'।

ओकस् (नपुं०) [उच् + असुन्] 1. घर, आवास—जैसा कि दिवौकस् या स्वर्गौकस् (देवता) में 2 आश्रय शरण।

ओख् (भ्वा० पर० ओखति, ओखित) 1 सूख जाना 2 योग्य होना, पर्याप्त होना 3 सजाना, सुसज्जित करना 4 अस्वीकृत करना, 5 रोक लगाना।

ओघ: [उच् + घञ्, पृषो०] 1 जलप्लावन, नदी, धारा पूर्णोघेन हि युज्यते नदी कु० ४।४४ 2 जल की बाढ़ 3 राशि, परिमाण समुदाय 4. समष्टि 5. सातत्य 6 परम्परा, परम्पराप्राप्त उपदेश 7 एक प्रमुख नृत्य।

ओंकार: [ओम् + कार] दे० 'ओम्' के नीचे।

ओज् (भ्वा० चुरा० उभ० ओजति, ओजयति—ते, ओजित) सक्षम या योग्य होना।

ओज (वि०) [ओज् + अच्] विषम, असम अम् = ओजस्।

ओजस् (नपुं०) [उब्ज् + असुन् बलोप, गुणश्च] 1 शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति 2 वीर्य, जननात्मक शक्ति 3 आभा, प्रकाश (आल० शा० में) 4 शैली का विस्तृत रूप, समास की बहुलता (दण्डी के अनुसार यही गद्य की आत्मा है) ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम्—काव्या० १।८०, रसगंगाधर में इसके पाँच भेद बतलाये गये हैं 5 पानी 6. धातु की चमक।

ओजसीन, ओजस्य (वि०) [ओजस् + ख, यत् वा] मजबूत, शक्तिशाली।

ओजस्वत्, ओजस्विन् [ओजस् + मतुप्, विनि वा] मजबूत वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली।

ओड्र: (पुं० ब० व०) एक देश का तथा उसके निवासियों का नाम, (आधुनिक उड़ीसा)—मनु० १०।४४, —पुष्पम् जवाकुसुम।

ओत (वि०) [आ + वे + क्त] बुना हुआ, धागे से एक सिरे से दूसरे तक सिला हुआ। सम०—प्रोत (वि०) 1. लम्बाई और चौड़ाई के बल आर-पार सिला हुआ 2. सब दिशाओं में फैला हुआ।

ओतु: [अव् + तुन्, ऊठ्, गुणः] बिलाव (स्त्री० भी) बिल्ली—जैसा कि 'स्थूलो (तो) तु:' में।

ओदन:—नम् [उन्द् + युच्] 1. भोजन, भात,—उदा० दध्योदन और घृत° 2 दलिया बना कर दूध में पका हुआ अन्न।

ओम् (अव्य०) [अव् + मन्, ऊठ्, गुण] 1. पावन शब्द 'ओम्' वेद-पाठ के आरम्भ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण, या मन्त्र के आरम्भ में बोला जाने वाला 2. अव्यय के रूप में यह (क) औपचारिक पुष्टीकरण तथा सम्मानजनक स्वीकृति (एवमस्तु, तथास्तु) (ख) स्वीकृति, अंगीकरण (हाँ, बहुत अच्छा)—ओमित्युच्यतामयमात्य—मा० ६, ओमित्युक्तवतोऽथशार्ङ्गिण इति शि० १।७५, द्वितीयश्चेदोमिति ब्रूम—मा० ५० १ (ग) आदेश (घ) मांगलिकता (ङ) दूर करना या रोक लगाना की भावना को प्रकट करने वाला अव्यय 3. ब्रह्म। सम०—कार: 1. पवित्र ध्वनि 'ओम्' 2. पवित्र उद्गार 'ओम्'।

ओम्मक: [?] गहरी खरोंच—मा० ७।

ओल (वि०) [आ + उन्द् + क पृषो०] आर्द्र, गीला।

ओलंड (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—ओलंडति, ओलंडयति ओलंडित) ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उछालना।

ओल्ल (वि०) [ओल—पृषो०] आर्द्र, गीला,—ल्ल: प्रतिभू 'आल्लक: प्रतिभू' या जामिन के रूप में लाया हुआ (यह शब्द एक ही बार विद्धशालभञ्जिका में आया है)।

ओष: [उष् + घञ्] जलन, संदाह।

ओषण: [उष् + ल्युट्] तिक्तता, तीक्ष्णता, तीखा रस।

ओषधि:,—धी (स्त्री०) [ओष + धा + कि, स्त्रियां ङीप्] जड़ीबूटी, वनस्पति 2. औषधि का पौधा, ओषधि 3 फसली पौधा या जड़ी बूटी जोकि पक कर सूख जाती है। सम०—ईश:-गर्भ:,—नाथ: चन्द्रमा (वनस्पतियों का अधिदेवता तथा पोषक)—ज (वि०) वनस्पति से उत्पन्न,—धर:,—पति: 1. ओषधि-विक्रेता 2 वैद्य 3 चन्द्रमा,—प्रस्थ: हिमालय की राजधानी —तत्प्रयातौषधिप्रस्थं स्थितये हिमवत्पुरम्—कु० ६। ३३, ३६।

ओष्ठ: [उष् + थन्] होठ (ऊपर का या नीचे का)। सम० —अधरौ-रम्, ऊपर और नीचे का होठ,—ज (वि०) ओष्ठस्थानीय,—जाहः होठकी जड़,—पल्लव:,—पुष्पम् किसलय जैसा, कोमल ओष्ठ-पुटम् होठों को खोलने पर बना हुआ गढ़ा।

ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ + यत्] 1. होठों पर रहने वाला 2 ओष्ठ—स्थानीय (ध्वनि आदि)।

ओष्ण (वि०) [ईषद् उष्णः—प्रा० स०] थोड़ा गरम, गुनगुना।

औ

औ [आ+अव्+क्विप्, ऊठ्] (क) आमंत्रण (ख) संबोधन (ग) विरोध तथा (घ) निश्चयोक्ति अथवा संकल्पद्योतक अव्यय।

औक्थिक्यम् [उक्थ+ठक्+ष्यञ्] उक्थ का पाठ सामवेद।

औक्थम् [उक्थ+अण्] पाठ करने की विधि (उक्थ अंश से संबंध रखने वाली) रीति।

औक्षकम्,—औक्षम् [उक्ष्णां समूहः इत्यर्थे उक्षन्+अण् टिलोपः वुञ् वा] बैलों का झुण्ड—शि० ५।६४।

औग्र्यम् [उग्र+ष्यञ्] क्रूरता, भीषणता, भयंकरता क्रूरता आदि।

औघः [ओघ+अण्] बाढ़, जलप्लावन।

औचित्यम्, औचिती [उचित+ष्यञ्, स्त्रियां ङीष् यलोपश्च] 1 उपयुक्तता, योग्यता, उचितपना 2 संगति या योग्यता, वाक्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्धारण करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक—सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः—सा० द० २।

औच्चैःश्रवसः [उच्चैःश्रवस्+अण्] इन्द्र का घोड़ा।

औजसिक (वि०) (स्त्री०—की) [ओजस्+ठक्] ऊर्जस्वी, बलवान्।—कः नायक शूरवीर।

औजस्य (वि०) [ओजस्+ष्यञ्] बल और स्फूर्ति का संचारक,—स्यम् सामर्थ्य, जीवनशक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति।

औज्ज्वल्यम् [उज्ज्वल+ष्यञ्] उज्ज्वलता, कान्ति।

औडुपिक (वि०) (स्त्री०—की) [उडुप+ठक्] किश्ती में बैठ कर पार करने वाला—कः किश्ती या बेड़े का यात्री।

औडुम्बर [उदुम्बर+अञ्] = दे० औदुम्बर।

औड्रः [ओड्र+अण्] ओड्र (वर्तमान उड़ीसा) देश का निवासी या राजा।

औत्कण्ठ्यम् [उत्कण्ठा+ष्यञ्] 1 इच्छा, लालसा 2 चिन्ता।

औत्कर्ष्यम् [उत्कर्ष+ष्यञ्] श्रेष्ठता उत्कृष्टता।

औत्तमिः [उत्तम+इञ्] १४ मनुओं में से तीसरा।

औत्तर (वि०) (स्त्री०—री,—रा) उत्तरी। सम०—पथिक उत्तर दिशा की ओर जाने वाला।

औत्तरेयः (उत्तरा+ढक्) अभिमन्यु और उत्तरा का पुत्र परीक्षित्।

औत्तानपादः,—पादिः [उत्तानपाद+अण्, इञ् वा] 1. ध्रुव 2 उत्तर दिशा में वर्तमान तारा।

औत्पत्तिक (वि०) (स्त्री—की) [उत्पत्ति+ठक्] 1. अन्तर्जात, सहज 2. एक ही समय पर उत्पन्न।

औत्पात (वि०) [उत्पात+अण्] अपशकुनों का विवेचक।

औत्पातिक (वि०) (स्त्री—की) [उत्पात+ठक्] अमंगलकारी, अलौकिक संकटमय रघु० १४, ५३, —कम् अपशकुन या अमंगल।

औत्सङ्गिक (वि०) (स्त्री० —की) [उत्सङ्ग+ठक्] कूल्हे पर रक्खा हुआ या कूल्हे पर धारण किया हुआ।

औत्सर्गिक (वि०) (स्त्री० —की) [उत्सर्ग+ठञ्] 1 सामान्य विधि (जैसे कि व्याकरण का नियम) जो अपवाद रूप में ही स्थगित किये जाने के योग्य हो 2 सामान्य (विप० विशेष) प्रतिबन्धरहित सहज 3 व्युत्पन्न यौगिक।

औत्सुक्यम् [उत्सुक+ष्यञ्] 1 चिन्ता, बेचैनी 2 प्रबल इच्छा, उत्सुकता, उत्साह—औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा—श० ५।६, औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया—रत्न० १।२

औदक (वि०) (स्त्री० —की) [उदक+अण्] जलीय पनीला, जल से संबंध रखने वाला।

औदञ्चन (वि०) (स्त्री० —नी) [उदञ्चन+अण्] डोल या घड़े में रक्खा हुआ।

औदनिक (स्त्री०) [ओदन+ठन्] रसोइया।

औदरिक (वि०) (स्त्री० —की) [उदर+ठक्] बहुभोजी पेटू—आद्यः सर्वमौदरिकस्याभ्यवहार्यमेव विषयः—विक्रम० ३, मालवि० ४।

औदर्य (वि०) [उदरे भव यत्] 1 गर्भस्थित 2 गर्भाशय प्रविष्ट।

औदश्वित्कम् [उदश्वित+अण्] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा।

औदार्यम् [उदार+ष्यञ्] 1 उदारता, कुलीनता, महत्ता 2 बड़प्पन, श्रेष्ठता 3 अर्थगांभीर्य (अर्थसंपत्ति)—[illegible]—कि० ११३, दे० कि० ११।४० पर मल्लि० और 'उदार' के नी० उदारता।

औदासीन्यम्, औदास्यम् [उदासीन+ष्यञ्, उदास+ष्यञ्] 1 उपेक्षा, निस्पृहता—पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुमौदासीन्येन वर्तितुम्—रघु० १०।२५, इदानीमौदास्यं यदि भजसि भागीरथि तदा—गंगा० ४ 2 एकान्तिकता, अकेलापन 3 पूर्ण विराग (सांसारिक विषयों से), वैराग्य।

औदुम्बर (वि०) (स्त्री० —री) [उदुम्बर+अञ्] गूलर के वृक्ष से बना या उससे प्राप्त,—रः ऐसा प्रदेश जहाँ गूलर के वृक्ष बहुतायत से हों,—री गूलर की शाखा,—रम् 1 गूलर की लकड़ी 2. गूलर का फल 3 तांबा।

औद्गात्रम् [उद्गातृ+अञ्] उद्गाता ऋत्विज का पद या कार्य।

औद्दालकम् [उद्दालक+अण्, संज्ञायां कन्] मधु जैसा एक पदार्थ जो तीखा और कड़वा होता है।

औद्देशिक (वि०) (स्त्री० –की) [उद्देश+ठक्] प्रकट करने वाला, निर्देशक, संकेतक।

औद्धत्यम् [उद्धत+ष्यञ्] 1 ढेकड़ी, ढीठपना 2 भारी मिजाज, औद्धत्यपूर्ण कार्यों में हिम्मत — औद्धत्यमायोजितकामसूत्रम् — मा० 1।4।

औद्धारिक (वि०) (स्त्री० –की) [उद्धार+ठञ्] पैतृक सम्पत्ति में से बचाया हुआ, विभक्त करने योग्य, बांटने योग्य — कम् (पैतृक सम्पत्ति में से बचाया भाग) एक अंश या भागभाग।

औद्भिदम् [उद्भिद्+अण्] 1 झरने का पानी 2 सेंधा नमक।

औद्वाहिक (वि०, स्त्री० –की) [उद्वाह+ठञ्] 1 विवाह से संबंध रखने वाला 2 विवाह में प्राप्त — याज्ञ० 2।118, मनु० 9।206, — कम् विवाह के अवसर पर वधू को दिये गये उपहार, स्त्रीधन।

औधस्यम् [ऊधस्+ष्यञ्] दूध (औधी से प्राप्त) रघु० 1।86 मल्लि०, पा०।

औन्नत्यम् [उन्नत+ष्यञ्] ऊंचाई, ऊँचा उठना (नैतिक रूप से भी)।

औपकर्णिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपकर्ण+ठक्] कान के निकट रहने वाला।

औपकार्यम्, –र्या [उपकार्या+अण्] निवास स्थान, डेरा या आवास स्थल।

औपग्रस्तिकः, –स्तिक [उपग्रस्त+ठञ्] 1 ग्रहण 2 ग्रहण ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।

औपचारिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपचार+ठक्] लाक्षणिक, आलंकारिक, गौण (विप० मुख्य) — कम् आलंकारिक प्रयोग।

औपजानुक (वि०) (स्त्री० –की) [उपजानु+ठक्] घुटनों के पास होने वाला।

औपदेशिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपदेश+ठक्] 1 अध्यापन या उपदेश द्वारा जीविका कमाने वाला 2 शिक्षण द्वारा प्राप्त (जैसे कि धन)।

औपधर्म्यम् [उपधर्म+ष्यञ्] 1 मिथ्या सिद्धान्त, धर्मद्रोह 2 घटिया गुण या गुण का अपकृष्ट नियम।

औपधिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपधि+ठञ्] धूर्त, धोखेबाज।

औपधेयम् [उपधि+ढञ्] रथ का पहिया, रथाङ्ग।

औपनायनिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपनयन+ठक्] उपनयन सम्बन्धी या उपनयन (यज्ञ के साथ दीक्षा देने का संस्कार) के काम का — मनु० 2।68।

औपनिधिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपनिधि+ठक्] धरोहर से सम्बन्ध रखने वाला — कम् धरोहर या अमानत, जो वस्तु धरोहर या अमानत के रूप में रक्खी जाय — याज्ञ० 2।65।

औपनिषद (वि०) (स्त्री० –दी) [उपनिषद्+अण्] 1 उपनिषदों में बताया हुआ या सिखाया हुआ, वेद विहित आध्यात्मिक 2 उपनिषदों पर आधारित, व्युत्पन्न या उपनिषदों में गृहीत — औपनिषदः पुरुषः (वेदा० द० का दूसरा नाम), — दः 1 परमात्मा, ब्रह्म 2 उपनिषदों के सिद्धान्तों का अनुयायी।

औपनीविक (वि०) (स्त्री० –की) [उपनीवि+ठक्] स्त्री या पुरुष की धोती की गांठ या नाड़े के निकट रक्खा हुआ — औपनीविकमरुन्ध किल स्त्री (करम्) शि० 10।60, भट्टि० 4।21।

औपपत्तिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपपत्ति+ठक्] 1 तैयार, निकट 2 योग्य, समुचित 3 प्राक्कल्पनिक।

औपमिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपमा+ठक्] 1 तुलना या समानता से संबन्ध रखने वाला 2 उपमा द्वारा प्रदर्शित।

औपम्यम् [उपमा+ष्यञ्] समता, समरूपता, सादृश्य — आत्मौपम्येन भूतेषु दयां कुर्वन्ति साधवः — हि० 1।10।

औपयिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपाय+ठक्] 1 समुचित, ठीक, उपयुक्त 2 प्रयत्न द्वारा प्राप्त, — कम् उपाय, साधन, युक्ति — शिवमौपयिकं गरीयसाम् कि० 2।35।

औपरिष्ट (वि०) (स्त्री० –ष्टी) [उपरिष्ट+अण्] ऊपर होने वाला, ऊपर का।

औपरोधिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपरोध+ठक्] 1 अनुग्रह सम्बन्धी, कृपा सम्बन्धी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप 2 विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला — कः पीलु वृक्ष की लकड़ी का डंडा।

औपल (वि०) (स्त्री० –ली) [उपल+अण्] पाषाणमय, पत्थर का।

औपवस्त्रम् [उपवस्त्र+अण्] उपवास रखना, उपवास।

औपवस्तम् [उपवस्त+अण्] 1 उपवास के उपयुक्त भोजन, फलाहार 2 उपवास करना।

औपवास्यम् [उपवास+ष्यञ्] उपवास रखना।

औपवाह्य (वि०) [उपवाह्य+अण्] 1 सवारी के काम आने वाला — ह्यः 1 राजा का हाथी 2. कोई राजकीय सवारी।

औपवेशिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपवेश+ठञ्] पूरी लगन के साथ काम कर के अपनी आजीविका कमाने वाला।

औपसङ्ख्यानिक (वि०) (स्त्री० –की) [उपसङ्ख्यान+

ठञ्] 1. जिसका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो 2. परिशिष्ट।

औपसर्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसर्ग+ठञ्] 1 विपत्ति का सामना करने योग्य 2 अमङ्गल सूचक।

औपस्थिक (वि०) [उपस्थ+ठक्] व्यभिचार द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।

औपस्थ्यम् [उपस्थ+ष्यञ्] सहवास स्त्रीसंभोग।

औपहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपहार+ठक्] उपहार या आहुति के काम आने वाला —कम् उपहार या आहुति।

औपाधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठञ्] 1. विशेष परिस्थितियों में होने वाला 2 उपाधि या विशेष गुणों से सम्बन्ध रखने वाला फलित कार्य।

औपाध्यायक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाध्याय+वुञ्] अध्यापक से प्राप्त या आने वाला।

औपासन (वि०) (स्त्री०—नी) [उपासन+अण्] गृह्याग्नि से सम्बन्ध रखने वाला,—नः गार्ह्यस्थ्य पूजा के लिए प्रयुक्त अग्नि, गृह्याग्नि।

औम् (अव्य०) शूद्रों के लिए पावनध्वनि (क्योंकि ओम् का उच्चारण शूद्रों के लिए वर्जित है)।

औरभ्र (वि०) (स्त्री०—भ्री) [उरभ्र+अण्] भेड़ से सम्बन्ध रखने वाला, या भेड़ से उत्पन्न —भ्रम् 1 भेड़ या बकरे का मांस 2. ऊनी वस्त्र मोटा ऊनी कम्बल (°भ्र भी)।

औरभ्रकम् [उरभ्राणां समूहः—वुञ्] भेड़ों का झुण्ड।

औरभ्रिकः [उरभ्र+ठञ्] गडरिया।

औरस (वि०) (स्त्री०—सी) [उरसा निर्मितः—अण्] कोख से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैध— रघु० १६। ८८,—सः,—सी वैध पुत्र या पुत्री—याज्ञ० २।१२८।

औरस्य=औरस।

और्ण, और्णक, और्णिक (वि०) (स्त्री०—र्णी—की) [ऊर्णा+अञ्, वुञ् वा] ऊनी, ऊन से बना हुआ।

और्ध्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ध्वकाल+ठञ्] पिछले समय से संबद्ध या बाद का।

और्ध्वदेहम् [ऊर्ध्वदेह+अण्] अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।

और्ध्वदे (दै) हिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ध्वदेहाय साधु—ठञ्] मृत व्यक्ति से संबद्ध, अन्त्येष्टि °क्रिया प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार,—कम् अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।

और्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [ऊरु+अण्] 1 धरती से सम्बन्ध रखने वाला 2 जंघा से उत्पन्न,—र्वः एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (भृगुवंश में उत्पन्न हुआ था। महाभारत में वर्णन मिलता है कि भृगु के वंशजों का नाश करने की इच्छा से कार्तवीर्य के पुत्रों ने गर्भस्थित बालकों को भी मौत के घाट उतार दिया। उस वंश की एक स्त्री ने अपने गर्भ की रक्षा के लिए उसे अपनी जंघा में छिपा लिया —इसीलिए जंघा से जन्म होने के कारण वह और्व कहलाया। उसको देख कर कार्तवीर्य के पुत्र अंधे हो गये। उसके क्रोध से उठी ज्वाला ने समस्त संसार को भस्म कर देना चाहा। परन्तु अपने पितरों की इच्छा से उसने अपनी क्रोधाग्नि को समुद्र में फेंक दिया जहाँ वह घोड़े के मुख में गुप्त पड़ा रहा —तु० बडवाग्नि। बाद में और्व अयोध्या के राजा सगर का गुरु हुआ) 2 बडवाग्नि —अवलग्नौर्व इवाम्बुराशौ शि० ३।३ इसी प्रकार अनल।

औलूकम् [उलूकानां समूहः—अञ्] उल्लुओं का झुंड।

औलूक्यः [उलूकस्यापत्यम्—यञ्] वैशेषिक दर्शन के निर्माता कणाद मुनि, (दे० सर्व० में औलूक्यदर्शन)।

औल्बण्यम् [उल्बण+ष्यञ्] आधिक्य, बहुतायत, बाहुल्य।

औशन, औशनस (वि०) (स्त्री०—नी,—सी) उशनस् अर्थात् शुक्राचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उशना से उत्पन्न या उशना से पढ़ा हुआ,—सम् उशना का धर्मशास्त्र (नागरिक व दण्ड व्यवस्था पर लिखा ग्रन्थ)।

औशीनरी [उशीनरस्यापत्यम्—अञ्+ङीप्] उशीनर की पुत्री जो राजा पुरूरवा की पत्नी।

औशीरम् [उशीर+अण्] 1 पंखे या चँवर की डंडी 2 बिस्तरा औशीरे कामचारः कृतो ऽयम् दश० ५० 3 आसन, कुर्सी, स्टूल आदि, 4 खस का लेप 5 खस की जड़ 6 पंखा।

औषणम् [उषण+अण्] 1 तीक्ष्णता तीखापन 2 काली मिर्च।

औषधम् [औषधि+अण्] 1 जड़ी-बूटी, जड़ी-बूटियों का समूह 2 दवादारू सामान्य औषधि 3 खनिज।

औषधि,—धी (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 जड़ी-बूटी वनस्पति —दे० ओषधि 2 दवा, रोगनाशक जड़ी-बूटी अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः रत्न० २ 3 आग उगलने वाली जड़ी —निर्यान्ति ... ऽग्निनुमौषधयः कि० ५। २४, (तृणज्योतींषि मल्लि०) तु० कु० १।१० 4 वर्षभर रहने वाला या सालाना फसल वाला पौधा, —पतिः सोम औषधियों का स्वामी।

औषधीय (वि०) [औषध+छ] औषधि संबंधी रोगनाशक, जड़ी-बूटियों से युक्त।

औषरम्, —रकम् [उषरे भवम्—अण्, स्वार्थे कन्] सेंधा नमक, पहाड़ी नमक।

औषस (वि०) (स्त्री०—सी) [उषस्+अण्] उषा या प्रभात से सम्बन्ध रखने वाला —सी पौ फटना, प्रभात काल।

औषसिक, औषिक (वि०) (स्त्री०—की) [उषस्+ठञ्, उषा+ठञ् वा] जिसने प्रभातकाल में जन्म लिया है, उषः काल में उत्पन्न।

औष्ट्र (वि०) (स्त्री० —ष्ट्री) [उष्ट्र + अण्] 1. ऊँट से उत्पन्न या ऊँट से सम्बन्ध रखने वाला 2 जहाँ ऊँटों की बहुतायत हो,—ष्ट्रम् ऊँटनी का दूध।

औष्ट्रकम् [उष्ट्र + वुञ्] ऊँटों का झुंड—शि० ५।६६।

औष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ + यत्] होंठ से सम्बद्ध, ओष्ठ स्थानीय। सम०—वर्णः ओष्ठस्थानीय अक्षर—अर्थात् उ ऊ, प् फ् ब् भ् म् और व्,—स्थान (द्वारा) होठों द्वारा उच्चरित,—स्वरः ओष्ठस्थानीय स्वर।

औष्ण्यम् [उष्ण + ष्यञ्] गर्मी, ताप।

औष्म्यम्, औष्मकम् [उष्म + ष्यञ्, उष्म + वुञ्] गर्मी —रघु० १७।३३।

क

कः [कच् + ड] 1 ब्रह्मा 2 विष्णु 3 कामदेव 4 अग्नि 5 वायु 6 ... 7 सूर्य 8 आत्मा 9 राजा या राजकुमार 10 गाँठ या जोड़ 11 मोर 12 पक्षियों का राजा 13 पक्षी 14 मन 15 शरीर 16 समय 17 बादल 18 शब्द, ध्वनि 19 बाल —कम् 1 प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द (जैसा कि स्वर्ग में) 2 पानी —मत्स्येन सार्धमिरका न ककोंऽप्यभिलाष्य कम —याज्ञ० २।१०८ केशव पतितं कृष्णा पाण्डवा हर्षनिर्भरा —सुभा० (यहाँ 'कशव' में श्लेष है) 3 सिर जैसा कि 'कधरा' (= कं शिरो धारयतीति) में।

कंस:, —सम् [कम् + स] 1 जल पीने का पात्र, प्याला कटोरा 2 कांसा, सफेद तांबा 3 'आढक' नाम की एक विशेष माप —सः मथुरा का राजा उग्रसेन का पुत्र, कृष्ण का शत्रु (कंस को कालनेमि नामक राक्षस से समता की जाती है कृष्ण के प्रति शत्रुता का व्यवहार करते करते यह कृष्ण का घोर शत्रु बना। जिन परिस्थितियों में इसने ऐसा किया वह निम्नांकित हैं "देवकी का वसुदेव के साथ विवाह हो जाने के बाद जब कि कंस अपना सुखसम्पन्न दाम्पत्यजीवन बिता रहा था उसे आकाशवाणी सुनाई दी जिसने उसे सचेत किया कि देवकी का आठवाँ पुत्र उसको मारने वाला होगा। फलतः उसने दोनों को कारागार में डाल दिया, मजबूत हथकड़ी और बेड़ियों से जकड़ दिया, और उनके ऊपर सख्त पहरा लगा दिया। ज्यूँही देवकी ने बच्चे को जन्म दिया त्यूँही कंस ने उसे छीन कर मौत के घाट उतार दिया, इस प्रकार उसने छः बच्चों का काम तमाम कर दिया। परन्तु सातवाँ और आठवाँ (बलराम और कृष्ण) बच्चा इतनी सावधानी रखते हुए भी सकुशल नन्द के घर पहुँचा दिया गया। भविष्यवाणी के अनुसार कंसहन्ता कृष्ण नन्द के यहाँ पलता रहा। जब कंस ने सुना तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ, उसने कई राक्षस कृष्ण को मारने के लिए भेजे, परन्तु कृष्ण ने उन सबको आसानी से मार गिराया। अन्त में उसने उन बालकों को मथुरा लिवा लाने के लिए अक्रूर को भेजा। फिर कंस और कृष्ण में घोर मल्लयुद्ध हुआ जिसमें कृष्ण के हाथों कंस मारा गया); सम०—अरिः,—अरातिः,—जित्,—कृष्,—द्विष्,—हन् (पुं०) कंस का मारने वाला अर्थात् कृष्ण —स्वयं सविकारिणा कंसारिणा दूतम्—वेणी० १, निर्वेदवान् कंसकृषः स विष्टरे —शि० १।१६ —अस्थि (नपुं०) कांसा, —कारः (स्त्री० —री) 1 एक वर्णसंकर जाति, कसेरा—कंसकारशङ्खकारौ ब्राह्मणात्संबभूवतुः—ब्रह्म० 2 कांसा या सफेद पीतल के बर्तन बनाने वाला, कांसे की ढलाई का काम करने वाला।

कंसकम् [कंस + कन्] कांसा, कसीस या फूल।

कक् (भ्वा० आ०—ककते, ककित) 1 कामना करना 2 अभिमान करना 3 अस्थिर हो जाना दे० कख्।

ककुंजलः [क जलं कूजति याचते क + कूज् + अलच्, पृषो० मुम् ह्रस्वश्च] चातक, पपीहा।

ककुद् (स्त्री०) [क सुखं कौति सूचयति —क + कु + क्विप्, तुकागम, नान्य द] 1 चोटी, शिखर 2 मुख्य, प्रधान —दे० नी० 'ककुद' 3 भारतीय बैल या सांड के कंधे के ऊपर का कूबड़ या उभार 4 सींग 5 राजचिह्न (छत्र, चामर आदि) (पाणिनि सूत्र ५। ४।१४६-७ के अनुसार 'ककुद' के स्थान में बहुव्रीहि समास में 'ककुद्' आदेश होता है उदा० त्रिककुद्)। सम०—स्थः इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजा शशाद का पुत्र पुरंजय,—इक्ष्वाकुवंश्यः ककुदं नृपाणां ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणोऽभूत्— रघु० ६।७१ (पौराणिक कथा के अनुसार राक्षसों के साथ देवों के युद्ध में जब देवों को मुँहकी खानी पड़ी तो वह इन्द्र के नेतृत्व में पुरंजय के पास गये और उससे युद्ध में साथ देने के लिये प्रार्थना की। पुरंजय ने इस शर्त पर स्वीकार किया कि इन्द्र उसे अपने कंधे पर उठा कर चले। फलतः इन्द्र ने बैल का रूप धारण किया और पुरंजय उसके कंधे पर बैठा—इस प्रकार पुरंजय ने

राक्षसों का सफाया कर दिया। इसीलिए पुरञ्जय 'ककुत्स्थ' 'कूबड़ पर बैठा हुआ' कहलाता है)।

ककुद—**दम्** [कस्य देहस्य सुखस्य वा कु भूमि ददाति —दा + क] 1 पहाड़ का शिखर या चोटी 2 कूबड़ या डिल्ला (भारतीय बैल के कंधे का उभार) 3 मुख्य सर्वोत्तम प्रमुख ककुदं वेदविदां तपोधनश्च मृच्छ० ९।४, इक्ष्वाकूणां ककुदं [illegible] रघु० ६।७१ 4 राजचिह्न [illegible] रघु० १३।२७।

ककुद्मत् (वि०) [ककुद् + मतुप्] 1 कूबड़ या शिखर से युक्त (पुं०) पहाड़ (जिसके शृंग हों) 2 भैंसा —महोक्षता ककुद्मान् रघु० [illegible] कूबड़ वाला बैल १३।२७, कु० १।५६ [illegible] की कन्या और नितंब।

ककुद्मिन् (वि०) [ककुद् + मिनि] शिखरधारी कूबड़ युक्त (पुं०) 1 कूबड़धारी बैल 2 पहाड़ 3 राजा [illegible] का नाम °**कन्या** —**सुता** बलराम की पत्नी रेवती—शि० २।२०।

ककुद्मत् (पुं०) [ककुद् मतुप् [illegible]] कूबड़धारी भैंसा।

ककुन्दरम् [कस्य शरीरस्य कुम् अवयवं दृणाति कक् [illegible] + खच् मुम्] नितंबों का गड्ढा, जघनकूप याज्ञ० ३।९६।

ककुभ् (स्त्री०) [क + स्कुभ् —क्विप] 1 दिशा, [illegible] परिधि का चतुर्थ भाग विशुक्ता: कान्तेन स्त्रिय इव न राजन्ति ककुभः मृच्छ० ५।२६ शि० ९।२५ 2 आभा, सौन्दर्य 3 चम्पक पुष्पों की माला 4 [illegible] 5 शिखर, चोटी।

ककुभ [कस्य वायो कु स्थानं भाति [illegible] कक् [illegible] वा + क पृषो० [illegible] वाल स्कुभ्नाति विस्तारयति क + स्कुभ् + क] 1 वीणा के सिर पर मुड़ा हुई लकड़ी 2 अर्जुनवृक्ष ककुभसुरभिः शैलः उत्तर० १।३३ [illegible] कुटज वृक्ष का फल [illegible] ९०।

कक्कुलः [कक्क् + उलच्] बकुल वृक्ष।

कक्कोल, **ली** [कक् + क्विप् कुल [illegible] कक् [illegible] इति कर्म० स०] [illegible] फलदार वृक्ष कक्कोली फल[illegible] मा० ६।१० अन० मा० —**लम्** —**लकम्** 1 कक्कोल का फल 2 इसके फलों से तैयार किया गया गन्धद्रव्य।

कक्खट (वि०) [कक्ख् + अटन्] 1 कठोर [illegible] 2 हंसने वाला।

कक्खटी [कक्खट + ङीष्] खड़िया।

कक्षः [कष् + स] 1 छिपने का स्थान 2 बीच पहने जाने वाले वस्त्र का सिरा, कच्छे का सिरा 3 बेल, लता 4 घास, सूखी घास—यतस्तु कक्षस्तत एव वह्निः —रघु० ७।५५, ११।७५, मनु० ७।११० 5 सूखे वृक्षों का जंगल, सूखी लकड़ी 6 कांख प्रविश्योदधिम् कक्षे [illegible] शि० २।४० 7 राजा का अन्तःपुर 8 जंगल का भीतरी [illegible] [illegible] कक्षात्—मृच्छ० [illegible] 9 (किसी वस्तु का) पार्श्व 10 भैंसा 11 द्वार 12 शुष्कदर्भ [illegible] —**क्षा** 1 कमर [illegible] काछ [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 9 निवास 10 [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible] 13 प्रतिस्पर्धा [illegible] 14 [illegible] 16 [illegible] **सम्** 1 [illegible] 2 [illegible] **अग्नि** [illegible] रघु० [illegible] **अन्तरम्** [illegible] **अवेक्षक** 1 अन्तःपुर का [illegible] 2 [illegible] 6 [illegible] 9 [illegible] या नाटकों का [illegible] [illegible] (**आ**) पट [illegible] [illegible]

कक्ष्या [कक्ष [illegible]] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] 4 [illegible]

कक्ष्या [illegible] प्रभाग या अवयव।

कङ्क [कङ्क् + अच्] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 आश्रय 5 [illegible] म [illegible] द्वारा रक्खा गया अपना नाम। [illegible] [illegible] [illegible] रघु० [illegible] उत्तर० [illegible] **पत्रिन्** (पुं०) [illegible] बाण, [illegible] [illegible] माना हुआ)।

कङ्कट, **कङ्कटक** [कक + अटन् [illegible]] 1 कवच रक्षात्मक जिरह बख्तर सैनिक [illegible] वेणी० २।२६ [illegible] रघु० [illegible] 2 अंकुश।

कङ्कण, **णम्** [कम इति शब्दम् कणति कम + कण् + अच्] 1 कड़ा—दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन विभाति भर्तृ० २।७१ इदं सुवर्णकङ्कणं गृह्यताम् हि० १ 2 विवाह सूत्र, कंगना (कलाई के चारों ओर बंधा हुआ) —उत्तर० १।१८ मा० ९।१९, देखो कङ्कणमोक्षण

सिलिकया [illegible] प्रच्यनाम महावी० [illegible] | 3 [illegible] 4 [illegible] की कफू [illegible] —[illegible] कभूमिस्य [illegible] —की कचूलिका 1 [illegible] 2 [illegible]

कचकत [illegible] लिका [illegible] कचा [illegible]

कचूरम [illegible] हुआ

कचूल [illegible] पातालम [illegible]

कचूलम [illegible]

कचूलम [illegible]

कचूली [illegible]

कचूरम [illegible]

कच [illegible]

[illegible]

कच [illegible] अपनी चूत [illegible] बृहस्पति [illegible] ([illegible]) [illegible] शुक्राचार्य [illegible] गुप्त [illegible] वश [illegible] करने के लिए [illegible] था [illegible] शुक्राचार्य के [illegible] परन्तु [illegible] देवयानी के [illegible] कि कच से प्रेम हो गया था; [illegible] फिर [illegible] किया । इस प्रकार [illegible] उसको [illegible] हुआ [illegible] उसके [illegible] किया और उसको [illegible] शुक्राचार्य की [illegible] की । परन्तु देवयानी ने उस युवक को पुनर्जीवित करने की अपने पिता से फिर प्रार्थना की । उसके पिता ने उसे फिर जिला दिया [illegible] देवयानी उसको और भी अधिक प्रेम करने लगी । परन्तु कच ने उसके प्रेम प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि तुम मेरी छोटी बहन हो । इस बात पर देवयानी ने युवक को शाप दे दिया कि वह विद्या जो उसने सीखी है शक्तिहीन हो जायगी । बदले में कच ने भी उसे शाप दिया कि उसका कोई ब्राह्मण विवाह नहीं करेगा और उसे क्षत्रिय की पत्नी बनना पड़ेगा) [illegible] । सम० [illegible] —[illegible] [illegible] कु० [illegible] बाल पकड़ना [illegible] रघु० [illegible] ११।३१ [illegible], —[illegible], [illegible] [illegible] अमर [illegible] के अनुसार [illegible] समूह का [illegible] करते हैं [illegible] कलापार्ध [illegible] ।

कचकुम्भ [illegible] सम० [illegible] वह [illegible] जहाँ [illegible] पर किसी प्रकार का [illegible]

कचकूल [illegible] —[illegible] [illegible] ।

कचाकचि (अव्य०) [illegible] युद्ध प्रवृत्तम [illegible] एक दूसरे के [illegible] युद्ध करना

कचाटुर [illegible] —कच —अट— [illegible]

कच्चर वि० [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

कच्चित् [illegible] इच्छा [illegible] पूर्ण [illegible] प्रश्नवाचकता [illegible] रघु० [illegible] (क) [illegible]

कच्छ [illegible] 1 [illegible] सीमावर्ती प्रदेश [illegible] 2 दलदल [illegible] पङ्कभूमि 3 [illegible] को [illegible] काम दे [illegible] 4 किश्ती का एक भाग 5 कछुए का [illegible] विशेष (जैसा [illegible] में) [illegible] सम० [illegible] या नदी का किनारा [illegible] (स्त्री० [illegible]) 1 कछुआ [illegible] मनु० १।४४ [illegible] 2 मल्लयुद्ध में एक स्थिति 3 कुबेर की नौ निधियों में से एक (—पी) 1 कछुवी 2 एक प्रकार की वीणा, सरस्वती की वीणा —भू (स्त्री०) दलदली भूमि, पङ्कभूमि ।

कच्छ (कच्छ) टिका, कच्छाटी (कच्छ+अट्+अच्+कन्, ह्रस्वः, शक० पररूपम्, परस्यामावे 'कच्छाटिका' इत्यपि रूपं 'कच्छाटी') धोती का छोर जो शरीर पर चारों ओर लपेटने के बाद इकट्ठा करके लांग की भांति पीछे टांग लिया जाता है।

कच्छुः, कच्छूः (स्त्री०) [कष्+ऊ, छ आदेशः, विकल्पेन ह्रस्वश्च] खुजली, खाज।

कच्छुर (वि०) [कच्छू+र ह्रस्वश्च] 1 खाज वाला, खुजली की बीमारी वाला 2 कामुक लम्पट।

कज्जलम् [कुत्सितं जलमस्मात्प्रभवति — को कदादेशः] दीपक की कालिमा जो औषध के रूप में आंखों में आंजी जाती है काजल, तथा यथा तैल चाहता दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति—का० १०५, अद्यापि तां विधृतकज्जल लोलनेत्राम् चौर० १५, कालिमा अमरु ८ 2 सुर्मा (जो अञ्जन की भांति प्रयुक्त किया जाता है) 3 स्याही, मसी। सम० ध्वजः दीपक, लैम्प —रोचकः, —कम् दीवट, (लकड़ी का बना दीपक का स्टैण्ड)।

कञ्च् (भ्वा० आ०) 1 बांधना 2 चमकना।

कञ्चारः [कम्+चर्+णिच्+अण्] 1 सूर्य 2 मदार का पौधा।

कञ्चुकः [कञ्च्+उकन्] 1 बख्तर, कवच 2 सांप की त्वचा, केंचुली—पञ्च० १।१६६ 3 पोशाक, वस्त्र कपड़ा—धर्म प्रवर्तित श० ५ 4 अंगरखा चोगा —अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः —रत्न० २।३, पञ्च० २।६८ 5 चोली अंगिया —क्वचिद्विवृण्वमर्जितकञ्चुका-शि० ६।१२ १०।७० अमरु ८१ (उक्ति—निन्दति कञ्चुककारं प्रायः शुष्कस्तनी नारी—सु० 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा')।

कञ्चुकालुः [कञ्चुक+आलुच्] सांप।

कञ्चुकित (वि०) [कञ्चुक+इतच्] 1 बख्तर में सुसज्जित, कवच धारण किये हुए 2. पोशाक पहने हुए —कञ्चुकि° -मर्त० ३।१२०।

कञ्चुकिन् (वि०) [कञ्चुक+इनि] कवच या शिरस्त्राण से सुसज्जित,—(पुं०) 1 अन्तःपुर का सेवक, जनानी ड्योढ़ी का द्वारपाल (नाटकों में आवश्यक पात्र —अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः, सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते) 2 लम्पट, व्यभिचारी 3. सांप 4. द्वारपाल 5. जौ।

कञ्चुलिका, कञ्चुली [कञ्च्+उलच्+ङीप्, पक्षे ह्रस्व] चोली—त्वं मत्कानि विनैव कंचुलिकया धत्से मनोहारिणीं लक्ष्मीम्—अमरु २७।

कञ्जः [कम्+जन्+ड] 1 बाल 2. ब्रह्मा, —जम् 1 कमल 2. अमृत, सुधा। सम०—जः ब्रह्मा,—नाभः विष्णु।

कञ्जकः, —की कञ्ज केश इव कायति—कञ्ज+कै+क] एक प्रकार का पक्षी।

कञ्जनः [कम्+जन्+अच्] 1 कामदेव 2 एक प्रकार का पक्षी (कोयल)।

कञ्जरः, कञ्जारः [कम्+जॄ+अच्, अण् वा] 1 सूर्य 2 हाथी 3 पेट 4 ब्रह्मा की उपाधि।

कञ्जलः [कञ्ज्+कलच्] एक प्रकार का पक्षी।

कट् (भ्वा० पर० कटति, कटित) 1 जाना 2 ढकना। प्र 1 प्रकट होना 2 चमकना (प्रे०—कटयति) प्रकट करना प्रदर्शित करना, दिखलाना स्पष्ट करना —औत्सुक्य परमानन्द प्रकटयत्यागमनम् तम —मा० ५।१२ मुद्राङ्क प्रकटय्य मुखपदा अधमलेक-[illegible]

कटः [कट्+अच्] 1 चटाई मनु० [illegible] 2 [illegible] 3 कूल्हा और कटिप्रदेश कमर के ऊपर का भाग 4 हाथी का गण्डस्थल कण्डूयमानेन कटं [illegible] रघु० [illegible] 5 एक प्रकार का घास 6 शव 7 शवयाहन अर्थी 8 पासे का विशेष प्रकार से फेंकना [illegible] 9 आधिक्य (जैसा कि 'उत्कट' में) 10 बाण 11 प्रथा 12 समाजशास्त्र कर्मविस्तार। सम० —अक्षः तिरछी निगाह [illegible] —उदकम् 1 [illegible] 2 मद (हाथी के मस्तक से बहने वाला तरल पदार्थ), —कारः 1 मिश्र जाति (शूद्र माता और क्षत्रिय पिता) [illegible] 2 चटाई बुनने वाला —कोलः पीकदान, —खादकः 1 गीदड़ 2 कौआ 3 शीशे का बर्तन —घोषः गोशालापुरी —पूतनः, —ना एक प्रकार के प्रेतात्मा अमध्यकुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः मनु० १२।७१, [illegible] कटपूतना-प्रभृतयः [illegible] कुर्वते - मा० ५।१४, (पूतन अन० पा०) २३ भी,—प्रूः 1 शिव 2 भूत या, पिशाच 3 कीड़ा, प्रोथः, —भू नितंब, —भंगः 1 हाथ से दाने एकत्र करना (शिलोञ्छन) 2 राजसंकट, आकस्मिक मृत्यु।

कटकः —कम् [कट्+वुन्] 1 कड़ा आबद्धहेमकटका रहसि स्मरामि —चौर० १५ 2 मेखला करधनी 3 रस्सी 4 मुक्ता की एक लड़ी 5 चटाई 6 खारी नमक 7 पर्वत पार्श्व प्रभुभ्वावृथी कटकैरिव स्वैः कु० ७।५२, रघु० १६।३१ 8 अधित्यका कि० ५।१५ 9 सेना, शिविर—मुद्रा० ५।१० 10 राजधानी

11. घर या आवास 12. वृत्त, पहिया।
कटकिन् (पुं०) [कटक + इनि] पहाड़।
कटङ्कटः [कट + कट् + खच् बा०, मुम्] 1. आग 2. सोना 3. गणेश — याज्ञ० १।२८५।
कटनम् [कट् + ल्युट्] घर की छत या छप्पर।
कटाहः [कट + आ + हन् + ड] 1 कड़ाई 2. कछुवे की कड़ी खाल 3. कुआँ 4 पहाड़ी मिट्टी का टीला 5 टूटे बर्तन का खंड — शि० ५।३७, नै० २२।३२।
कटिः, टी (स्त्री०) [कट् + इन्, कटि + ङीप् वा] 1 कमर 2 नितंब (साहित्य शास्त्री इस बात को 'ग्राम्य' समझते हैं इसका उदाहरण सा० द० ५७४ पृष्ठ पर दिखाये गये हैं) 3 हाथी का गण्डस्थल। सम० — **तटम्** कूल्हा — कटीतटनिवेशितम् मृच्छ० १।२७, — **त्रम्** 1 धोती 2 करधनी, — **प्रोथः** नितंब, — **मालिका** स्त्रियों की तगड़ी या करधनी, — **रोहकः** महावत, पालकवान, — **शीर्षकः** कूल्हा, — **शृङ्खला** घुंघरू लगी करधनी, — **सूत्रम्** करधनी या तगड़ी।
कटिका [कटि + कन् + टाप्] कूल्हा, कमर।
कटीरः, रम् [कट् + ईरन्] 1 गुफा, खोखर 2 कूल्हे का गर्त, — **रम्** कूल्हा।
कटीरकम् [कटीर + कन्] नितंब, कमर।
कटु (वि०) (स्त्री० — टु या ट्वी) [कट् + उ] 1 तिक्त, कड़वा, चरपरा (रस का एक भेद माना जाता है रस छः हैं — कटु, अम्ल, मधुर, लवण, कषाय और तिक्त) — भग० १७।९, 2 गंधयुक्त, तीखी गंध वाला — रघु० ५।४३ 3 दुर्गन्धयुक्त बदबूदार 4 (क) कटु अरुचिकर (शब्द), याज्ञ० ३।१४० (ख) अप्रिय, अरुचिकर — अकरुणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः रघु० ६।८५, 5. ईर्ष्यालु 6 गरम, प्रचण्ड, — **टुः** तीखापन, तिक्तता कड़वापन (६ रसों में से एक), — **टु** (नपुं०) 1 अनुचित कार्य 2 लोकापवाद, दुर्वचन, निन्दा। सम० — **कीटः** — **कीटकः** डाँस, मच्छर, — **क्वाणः** टटीहरी, — **ग्रन्थि** (नपुं०) सोंठ, इसी प्रकार — **भंगः**, — **भद्रम्** सोंठ या अदरक, — **निष्पाकः** अनाज जो जल की बाढ़ में न आया हो, — **तैलम्** एक सुगन्धित द्रव्य, — **रवः** मेंढक।
कटुक (वि०) [कटु + कन्] 1. तीक्ष्ण, चरपरा 2 प्रचंड, गरम 3. अप्रिय, अरुचिकर, — **कः** तीखापन, चटाख (६ रसों में से एक) दे० क० 'कटु'।
कटुकता [कटुक + तल्] अशिष्ट व्यवहार, अभद्रपना।
कटुरम् [कट + उरच्] पानी मिला हुआ मट्ठा।
कटोरम् [कट् + ओरच् रस्तोरच्चेत्] मिट्टी का कसोरा।
कटोलः [कट् + ओलच्] 1. चरपरा स्वाद 2. नीच जाति का पुरुष, जैसा कि चाण्डाल।
कठ् (भ्वा० पर०) कठिनाई से रहना — दे० 'कण्ठ्'।

कठः [कठ् + अच्] एक मुनि का नाम, वैशम्पायन का शिष्य यजुर्वेद की कठ शाखा का प्रवर्तक, — **ठाः** कठ मुनि के अनुयायी। सम० — **धूर्तः** यजुर्वेद की कठ शाखा में निष्णात ब्राह्मण, — **श्रोत्रियः** यजुर्वेद की कठ शाखा में पारगत ब्राह्मण।
कठमर्दः [कठ + मृद् + अण्] शिव।
कठर (वि०) [कठ् + करन्] कड़ा, सख्त।
कठिका [कठ् + वुन् बा०] खड़िया।
कठिन (वि०) [कठ् + इनन्] 1 कड़ा, सख्त — कठिनविषमामेकवेणीं करेण — मेघ० ९२, अमरु ७२ इसी प्रकार — स्तनौ 2 कठोर-हृदय, क्रूर, निर्दय — न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः — कु० ४।५ रघु० ९।६४ अमरु० ९, इसी प्रकार — हृदय 3. कठोर, अकड़ा 4. तीक्ष्ण, प्रचंड, उग्र (पीड़ा आदि) — नितान्तकठिनां रुजं मम न वेद सा मानसीम् — विक्रम० २।११ 5 पीड़ा देने वाला, — **नः** मुरमुरा, — **ना** 1 साफ़ की हुई शक्कर से बनी मिठाई 2 खाना बनाने के लिए मिट्टी की हांडी (इसी अर्थ में नपुं० भी)।
कठिनिका, कठिनी [कठिन + ङीष्, कन् + टाप्, ह्रस्वः] 1 खड़िया 2 छोटी अंगुली।
कठोर (वि०) [कठ् + ओरन्] 1 कड़ा, ठोस — कठोरास्थिग्रंथि — मा० ५।३४ 2 क्रूर, कठोर-हृदय, निर्दय — अयि कठोर यशः किल ते प्रियम् — उत्तर० ३।२७, इसी प्रकार — हृदय, चित्त 3 तीक्ष्ण, चुभने वाला — अंकुश — शा० १।[illegible] 4 पूर्ण विकसित पूर्ण, पूरा उगा हुआ — कठोर- [illegible] विमुक्त [illegible] ३।१९ इसी प्रकार कठोरताराधिपलाञ्छनच्छविः शि० १।२० 5 (आलं०) परिपक्व, परिपूर्ण — कलाकलापालोचनकठोरमतिभिः — का० ७।
कड् = दे० कर।
कड (वि०) [कड् + अच्] 1 गूंगा 2 बहरा 3 अनजान, मूर्ख।
कडङ्गरः [कड + गृ (गॄ वा) + अच्, मुम्] तिनका।
कडङ्गरीय (वि०) [कडङ्ग(गा)र + छ] जिसको तिनका खिलाया जाय, — **यः** घास खाने वाला पशु (गाय, बैल आदि) रघु० ५।९।
कडत्रम् [कडयते सिच्यते जलादिकम् अत्र - कड् + अत्रन्, डकारस्य ककार] एक प्रकार का बर्तन।
कडन्दिका [कलन्दिका] विज्ञान, शास्त्र।
कडम्बः [कड् + अम्बच् डस्य डः] डंठल, (शाक भाजी का)।
कडार (वि०) [कड् + आरन् बाहुलकात्] 1. भूरे रंग का 2. घमंडी, अभिमानी, ढीठ, — **रः** 1. भूरा रंग 2. सेवक।
कडितुलः [कट्यां तोलनं यस्य, पृषो० टस्य डः] तलवार, खड्ग।

कण् I (भ्वा० पर० कणति, कणित) 1 शब्द करना चिल्लाना, (दुःख में) कराहना 2 छोटा होना 3. जाना।
II (चुरा० पर० या प्रेर०) आँख झपकना, पलक बन्द करना।

कण [कण्+अच्] 1 अनाज का दाना—त्वक्सारकणान् हि० १ मनु० १०।१२ 2. अणु या (किसी वस्तु का) लव 3 बहुत ही थोड़ा परिमाण द्रविण शा० ११९, ३।५ के मूल का जरा रघु० ११।८ पराग —विक्रम० ३।५ (पानी की) बूँद ? तुषार —कणवाही मालिनीतरङ्गाणाम्- श० ३।५ मधु- अश्रु'- मेघ० २६ ४५, ६९, अमरु ५८ 6 अनाज का बाल 7 (आग की) चिंगारी। सम० **अद**, **भक्ष**, —**भुज्** (पुं) वैशेषिक दर्शन के निर्माता का नाम (जिसे अणुवाद का सिद्धान्त कह सकते हैं) **जीरकम्** सफेद जीरा,- **भक्षक** एक प्रकार का पक्षी - लाभ [illegible] बलावर्त।

कणप [कण्+पा+क] लोहे का भाला या छड़ [illegible] —शस्तु कणप वैज० चापचक्रकणपकर्पण [illegible] दश०।

कणशः (अव्य०) [कण+शस्] छोटे २ अंशों में दाना दाना, थोड़ा-थोड़ा बूंद-बूंद नदिव कणशो विकीर्यते (मत्स्य) कु०—४।२७।

कणिकः [कण्+कन्, ह्रस्वम्] 1 अनाज का दाना 2. एक छोटा कण 3. अनाज की बाल 4 भुने हुए गर्ह का भोजन।

कणिका [कण+ठन्+टाप्] 1 अणु एक छोटा अथवा सूक्ष्म अंश 2. (पानी की) बूंद मेघ० ९८ 3 एक प्रकार का अन्न या चावल।

कणिशः [illegible] [कणिन्+शी+ड अनाज की बाल।

कणीक (वि०) [कण्+ईकन्] छोटा नन्हा।

कणे (अव्य०) [कण्+ए] इच्छा-सन्तृप्ति का अभिव्यञ्जक अव्यय (मनःप्रतीघात) —कणेहत्य पयः पिबति—सिद्धा० 'वह मन भर कर दूध पीता है।

कणेरा—रः (स्त्री०)[कणेर+टाप्, कण्+एरु] 1 हथिनी 2 वेश्या, रंडी।

कण्टकः,—कम् [कण्ट्+ण्वुल्] 1. काँटा, पादलग्न करभेन कण्टकेनैव कण्टकम् (उद्ध'रे) - चाण० २२ 2. फांस डंक —याज्ञ० १।५१ 3. (आल०) ऐसा दुःखदायी व्यक्ति जो राज्य के लिए काँटा तथा उसके प्रशासन एवं शान्ति का शत्रु हो उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽपि —रघु० १४।७३, निर्जितमूलनगरमकण्टकम्—श० ३। ३, मनु० ९।२६० 4. (अतः) सताने या कष्ट पहुँचाने का मूल-कारण, उत्पात -मनु० ९।२५३ 5. रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना 6 अंगुली का नाखून 7 कष्ट पहुंचाने वाला भाषण, -कः 1 बांस 2 कारखाना निर्माणी। सम० **अशन**, **भक्षक** **भुज्** (पुं०) ऊँट **उद्धरणम्** 1 (शा०) काँटा निकालना, सफाई करना 2 (आल०) जनसाधारण को सताने वाले तथा चोर आदि उत्पातकारियों को दूर करना —कण्टकोद्धरण नित्यमातिष्ठेद्यत्नमुत्तमम् मनु० ९।२५२ **द्रुमः** 1 काँटेदार वृक्ष [illegible] कण्टकद्रुमाः [illegible] 2 [illegible] **प्रावृता** [illegible] **विशोधनम्** [illegible] [illegible] विजयाय १।४१?

कण्टकित (वि०) [illegible] इतच् 1 काँटेदार 2 [illegible] [illegible]

कण्टकिन् (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] कण्टकद्रुम।

कण्टकिफल [illegible] इतच् [illegible] वृक्ष

कण्ठ [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का प्रयोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कण्ठः [illegible] 1 गला [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 3 स्वर आवाज या मुरझाया [illegible] विक्रम० [illegible] कण्ठे [illegible] आयानुपातीत [illegible] 3 4 बर्तन की गर्दन या किनारा 5 पड़ोस अति निकट सामीप्य (जैसा कि [illegible]) । सम० **आभरणम** गले का आभूषण [illegible] मताम्भोकस्य कण्ठाभरणमस्तु विक्रमांक० १।२४ गू० [illegible] —**कुणिका** भारतीय वीणा **गत** (वि०) गले में रहने वाला गले में आने वाला अर्थात् निकलने को होने वाला, [illegible] भाषा प्राणाः कण्ठगतैरपि सुभा०, **तटः**, **तटम्**, गर्दन का पार्श्व या भाग, **दघ्न** (वि०) गर्दन तक पहुँचने वाला,

—नीलकः मशाल, —नीलकः बड़ा लैंप या मशाल, —पाशकः 1 हाथी की ग्रीवा के चारों ओर बंधी हुई रस्सी 2 गलकंठ माला, —भूषा छोटा हार —विहृता कण्ठभूषा-त्वमेतु-विक्रमांक० १८।१०२, —मणिः 1 गले में पहनने का मणि 2 प्रिय वस्तु, —लता 1 पट्टा 2 घोड़े को रोकने वाला, —वर्तिन् (वि०) गले में होने वाला अर्थात् विदा होने वाला प्राण —रघु० १२।०८, —शोषः (प्रा०) 1 गले का सूख जाना, सूख का जाना 2 (आल०) निष्फल प्रतिवाद, —सज्जनम् गर्दन के सहारे लटकना, —सूत्रम् एक प्रकार का आलिंगन —यत्कुर्वते वक्षसि वल्लभस्य स्तनाभिघातं निबिडोपगूहात् परिश्रमार्थं शनकैर्विदग्धास्तत्कण्ठसूत्रं प्रवदन्ति सन्तः, सुभ्रमपदिश्य योषितः —रघु० १९।३२ (स्वर्णाभिनव भी कहलाता है), —स्थ (वि०) 1 गले में होने वाला 2 कण्ठस्थानीय।

कण्ठतः (अव्य०) [कण्ठ + तसिल्] 1 गले से 2 स्पष्ट रूप से, स्फुटरूप से।

कण्ठालः [कण्ठ + आलच्] 1 किश्ती 2 फावड़ा, कुदाली 3 युद्ध 4 ऊँट —वा वर्तन जिसमें दूध बिलोया जाय।

कण्ठिका [कण्ठ + ठन् + टाप्, इत्वम्] एक लड़ का हार या माला।

कण्ठी (स्त्री०) [कण्ठ + ङीष्] 1 गर्दन, गला 2 हार पट्टी 3 घोड़े की गर्दन के चारों ओर बंधी रस्सी। सम० —रवः 1 सिंह 2 मदमाता हाथी —कण्ठीरवो महा-शहेण न्यपतत् दश० ७ 3 कबूतर 4 स्पष्ट बोलना या उल्लेख (इति कण्ठीरवोक्तम्)।

कण्ठीलः [कण्ठ + ईलच्] ऊँट।

कण्ठेकालः [कण्ठे कालो विषपानजो नीलिमा यस्य अलु० स०] शिव।

कण्ठ्य (वि०) [कण्ठ + यत्] 1 गले से संबंध रखने वाला गले के उपयुक्त, या गले से होने वाला 2 कण्ठस्थानीय। सम० —वर्णः कण्ठस्थानीय अक्षर नामतः अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् और ह्, —स्वरः कण्ठस्थानीय स्वर (अ और आ)।

कण्ड् (भ्वा० उभ०) 1 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना 2 घमंडी होना 3. कूटकर भूसी अलग करना, (चुरा० उभ० — कण्डयति-ते, कण्डित) 1 (अनाज), गाहना दाने अलग करना 2. रक्षा करना, बचाना।

कण्डनम् [कण्ड् + ल्युट्] 1 छटकना, दानों से भूसी अलग करना —कण्डनताडनानि (अवघातम्) तुषाणां कण्डनं यथा 2. भूसी, —नी 1. ओखली 2 मूसल।

कण्डरा [कण्ड् + अरन्] नस।

कण्डिका [कण्ड् + ण्वुल् + टाप्] छोटा अनुभाग, छोटे से छोटा अनुच्छेद (जैसा कि शुक्ल यजुर्वेद में)।

कण्डूः (पुं० स्त्री०), कण्डूः (स्त्री०) [कण्डू + कु, कण्डू + यक् + क्विप्, अलोपः यलोप] 1 खुजलाना 2 खुजाना —कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुम् —कु० १।९, मा० ६।१७।

कण्डूतिः (स्त्री०) [कण्डू + यक् + क्तिन्] 1 खुरचना 2 खुजली, खुजाना।

कण्डूय् (ना० धा०, उभ०) (पृ० क० कृ० —कण्डूयित) 1 खुरचना, रगड़ना 2 मसलना —कण्डूयमानेन कटं कदाचित् —रघु० २।३७, मृगीमकण्डूयत कृष्णसारः —कु० ३।३६, शृङ्गे कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगीम् —श० ६।१६, मनु० ४।८२।

कण्डूयनम् [कण्डू + यक् + ल्युट्] खुरचना, मसलना —कण्डूयनैर्दंशनिवारणैश्च —रघु० २।५, —नी मसलने के लिए बुश।

कण्डूयकः [कण्डूयन + कन्] खुजली पैदा करने वाला गुदगुदी करने वाला —मनु० ११।७१।

कण्डूया [कण्डू + यक् + अ + टाप्] 1 खुरचना 2. खुजलाना।

कण्डूल (वि०) [कण्डू + लच्] जिसे खुजली का विकार हो, जो खुजली अनुभव करता हो, या खुजलाहट पैदा करने वाला —कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकषणोत्कम्पेन सम्पातिभिः —उत्तर० २।९।

कण्डोलः [कण्ड् + ओलच्] 1 (बेंत या बाँस की बनी) टोकरी जिसमें अनाज रखा जाय 2 डाली, भण्डार-गृह 3 ऊँट, —ली चाण्डाल की वीणा।

कण्डोषः [कण्ड् + ओषच्] शलभ, एक तरह का कीड़ा।

कण्वः [कण् + क्वन्] एक ऋषि का नाम, शकुन्तला का धर्मपिता काण्व ब्राह्मणों का प्रवर्तक। सम० —दुहितृ —सुता शकुन्तला, कण्व की पुत्री।

कतः, कतकः [क जलं कायति प्रकाशयति —कै + क, तारा०] निर्मली का पौधा (इसका फल गदले पानी को स्वच्छ कर देने वाला बतलाया जाता है) रीठा —फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम्, न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति। मनु० ६।६७, —कम् —तकम् इस वृक्ष का फल, रीठा, दे० 'अम्बुप्रसादन' भी।

कतम (सर्व० वि०) (नपुं० —म्) [किम् + डतमच्] कौन या कौन सा —अपि ज्ञायते कतमेन दिग्भागेन गतः स जाल्म इति —विक्रम० १, अथ कतमं पुनर्ऋतुमधिकृत्य गास्यामि —श० १, कतमे ते गुणास्तत्र यानुदाहर-न्त्यार्यमिश्रा —मा० १, (कभी कभी 'किम्' के स्थान में प्रश्नवाचक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होता है)।

कतर (सर्व० वि०) (नपुं० —रद्) [किम् + डतरच्] कौन, दो में से कौन सा, —नैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः —भग० २।६।

कत्तृणम् [कुत्सितं तृणम् कोः कदादेशः कत्ति व्याप्नोति कत् + तृण्] घास, तृ० कत्तृणम्।

कति (सर्व० वि०) [किम् + डति] (सदैव ब० व० में प्रयुक्त —कति, कतिभिः) 1. कितने —कतमत्र कति

सूर्यास- ऋक्० १०।८८।१८ 2 कुछ (जब 'कति' के साथ चिद्, चन या अपि जोड दिया जाता है, तो शब्द की प्रश्नवाचकता नष्ट हो जाती है और वह अनिश्चयार्थक बन जाता है अर्थ होता है कुछ, कई, थोडे से—तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा—श० २।१२, कत्यपि वासराणि—अमरु २५ तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबला विप्रयुक्तः स कामी नीत्वा मासान् मेघ० २) ।

कतिकृत्वः (अव्य०) [कति + कृत्वसुच्] कितनी बार ।

कतिधा (अव्य०) [कति + धा] 1 कई बार 2 कितने स्थानों पर, या कितने भागों में ।

कतिपय (वि०) [कति + अयच्, पुक् च] कुछ, कई, कई एक —कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः उत्तर० ३।२० मेघ० २३ —कतिपयदिवसापगमे कुछ दिनों के बीत जाने पर वर्षैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव – शि० २।७२ ।

कतिविध (वि०) [ब० स०] कितने प्रकार का ।

कतिशः (अव्य०) [कति + शस्] एक बार में कितना ।

कत्थ् (भ्वा० आ०—कत्थते कत्थित) 1 शेखी बघारना, इतरा कर चलना कृत्वा [illegible] न कत्थते भट्टि० १६।४, कुर्वीणस्तत्कर्मणा मत्वं कत्थेथाः महा० 2 प्रशंसा करना, प्रतिष्ठा करना 3 गाली देना, दुर्वचन कहना वि—, 1 शेखी मारना का नुत्थानं प्राज्यमाना विकत्थसे– विक्रम० २ 2 दाम घटाना, तुच्छ करना, उपेक्षित करना –सदा भवान् फाल्गुनस्य गुणैरस्मान् विकत्थते– महा० ।

कत्थनम्, **-ना** [कत्थ् + ल्युट्, युच् वा] डींग मारना, शेखी बघारना ।

कत्वरम् [कत्व + वृ + अप्] कढ़ी ।

कथ् (चुरा० उभ०—कथयति कथित) 1 कहना, समाचार देना, (प्राय: सम्प्र० के साथ) —[illegible] दर्शनो मुक्तैकस्मिन्नथ कथयावभूव [illegible] रघु० ११।३७ 2 घोषणा करना, उल्लेख करना मनु० २।३४ रघु० ११।१५ 3 वार्तालाप करना, बातें करना, आपबीती कहना —कथयित्वा सुखं [illegible] सह रामा० 4 संकेत करना, सिद्ध करना, दिखलाना—विक्रम० १।७ आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति—श० ७ 5 वर्णन करना, बखान करना,—किं कथ्यते श्रीरुभयस्य तस्य कु० ७।७८ कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते हि० १।१, 6. सूचना देना, सूचित करना, विज्ञापन करना —पञ्च० १ ।

कथक (वि०) [कथ् + ण्वुल्] कहानी कहने वाला, बयान करने वाला –कः 1 मुख्य अभिनेता 2 कथक 3 कहानी सुनाने वाला ।

कथनम् [कथ् + ल्युट्] कहानी कहना, वर्णन करना, बयान करना ।

कथम् (अव्य०) [किम् प्रकारार्थे थमु, कादेशश्च] 1 कैसे, किस प्रकार, किस रीति से, कहाँ से कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः हि० १ मातृवत्सा कथं न स्यु[illegible] सपत्नी मे निरापदः रघु० ११।६८ ३।४४ कथमात्मानं निवेदयामि कथं वा मापहारं करोमि श० १ (यहाँ बोलने वाले का अपने कथन के औचित्य में सन्देह है) 2 यह बहुधा आश्चर्य प्रकट करता है —(अहो) कथं मामेवोद्दिशति श० ६ 3 यह प्रायः इव, नाम, नु, वा स्विद् के साथ जोड़ दिया जाता है जब कि इसका अर्थ होता है क्या सचमुच, क्या सम्भावना है, मुझे बतलाइए तो (यहाँ प्रश्न का सामान्यीकरण कर दिया जाता है) कथं वा गम्यते उत्तर० ३ कथं नामैतत् [illegible] 4 जब यह चिद्, चन या अपि के साथ जोड़ दिया जाता है तो इसका अर्थ हो जाता है इस प्रकार से [illegible] किसी न किसी प्रकार, बड़ी कठिनाई से [illegible] [illegible] कथमपि [illegible] कथमप्युन्मिषिता न [illegible] [illegible] कथंचिदास [illegible] कथमपि [illegible] [illegible] कथंक (विशा०) [illegible] [illegible] कथंकारम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कथंप्रमाण (वि०) किस माप तोल का **भूत** (वि०) किस स्वभाव का, किस प्रकार का (प्राय: टीकाकारों द्वारा प्रयुक्त) **रूप** (वि०) किस शक्ल सूरत का ।

कथन्ता [कथम् + तल्] कथा प्रकार, कथा रीति ।

कथा [कथ् + अङ् + टाप्] 1 कहानी 2 कल्पित या मनगढ़न्त कहानी कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते हि० १।१ 3 वृत्तान्त, सन्दर्भ, उल्लेख —कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः शि० २।४० 4 वार्तालाप, बातचीत, वक्तृता 5 कल्पनामयी रचना का एक भेद जो आख्यायिका से भिन्न है (प्रबन्धकल्पना स्तोकसत्या प्राज्ञा कथां विदुः, परम्पराश्रया या स्यात् सा मताख्यायिका बुधैः) 'आख्यायिका' के नीचे भी देखो। का कथा या प्रश्नपूर्वक कथा (क्या कहना) क्या कहने की आवश्यकता है' कहना नहीं' 'कुछ नहीं कहना' 'और कितना अधिक' 'और कितना कम' आदि अर्थों को प्रकट करते हैं का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैव दूरतः हुंकारेणेव धनुषः स हि विघ्नानपोहति श० ३।१ अभिभूतकरोऽपि बालकेन गजेन्द्रश्च कथा कथीर्दिष्य –रघु० ८।४५, का त्वं वा न कामात्मा कामकथा का धनि का कथा—१०।२८, वेणी० २।२६ ।

सम०—अनुरागः वार्तालाप करने में आनन्द प्राप्त करना, —अन्तरम् 1. वार्तालाप के मध्य में स्मर्तव्योऽस्मि कथान्तरेषु भवता मृच्छ० ७।७ 2. दूसरी कहानी, —आरम्भः कहानी का आरम्भ,—उदयः कहानी की शुरुआत,—उद्घातः 1 प्रस्तावना के पाँच भेदों में से दूसरा प्रकार जब कि नेपथ्य से सुनने के बाद प्रथम पात्र सूत्रधार के शब्दों या भाव को दोहराता हुआ रंगमंच पर आता है—दे० सा० द० २९०, उदा० रत्न०, वेणी० या मुद्रा० 2 किसी कहानी का आरम्भ आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः रघु० ४।२०, —उपाख्यानम् वर्णन करना, बयान करना,— छलम् 1 कथा के बहाने 2 मिथ्या वृत्तान्त बनाते हुए, —नायकः —पुरुषः (कहानी का) नायक, —पीठम् कथा या कहानी का परिचयात्मक भाग, —प्रबन्धः कहानी, बनावटी कहानी, कपोलकल्पित कहानी,—प्रसङ्गः 1 वार्तालाप, बातचीत या बातचीत के दौरान में नाना कथा प्रसंगावस्थित हि० १, मिथः कथाप्रसङ्गेन विवादं किल चक्रतुः —कथा० ४२, १८१, नै० १.३२, 2 विषवैद्यक कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतात्—कि० १।२४ (यहाँ शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है), —प्राणः अभिनेता, —मुखम् कहानी का परिचयात्मक भाग, —योगः बातचीत के मध्य, —विपर्यासः कहानी का मार्ग बदलना, —शेष, —अवशेष (वि०) जिसका केवल 'वृत्तान्त' ही बाकी रह गया है अर्थात् मृत (कथाशेषतां गतः मृत, मृतक) (—षः) कहानी का बचा हुआ भाग।

कथानकम् [कथ् + आनक बा०] छोटी कहानी उदा० वेतालपञ्चविंशति।

कथित (भू० क० कृ०) [कथ् + क्त] 1 कहा हुआ वर्णित, बयान किया हुआ 2 अभिहित, वाच्य। सम० —पदम् पुनरुक्ति, दोहराना, (पुनरुक्ति वाक्य में एक प्रकार का रचना विषयक दोष है जब कि एक शब्द का बिना किसी विशिष्ट अभिप्राय के दोबारा प्रयोग किया जाता है) काव्य० ७, सा० द० ५७५, एत०।

कद् I (दिवा० आ०—कद्यते) हतबुद्धि हो जाना, घबरा जाना, मन में दुःखी होना II (भ्वा० आ० कदते भ्वा० पर० भी) 1 चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना 2. शोक करना 3. बुलाना 4 मारना, प्रहार करना —दे० कंद्।

कद् (अव्य०) [कद् + क्विप्] (समास में 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होने वाला अव्यय) बुराई, अल्पता, ह्रास निरर्थकता, तथा दोष आदि को प्रकट करने वाला अव्य०। सम० —अक्षरम् 1 बुरा अक्षर 2. बुरी लिखाई, —अग्निः थोड़ी आग, —अध्वन् बुरा मार्ग, —अन्नम् बुरा भोजन, —अपत्यम् बुरा बच्चा, —अभ्यासः बुरी आदत, बुरी प्रथा,—अर्थ (वि०) निरर्थक, अर्थहीन, —अर्थनम्,—ना कष्ट देना, दुःखी करना, सताना, —अर्थयति (ना० धा०, पर०) 1 घृणा करना, तिरस्कार करना 2 कष्ट देना, सताना —भर्तृ० ३।१००, नै० ८।७५,—अर्थित (वि०) 1 घृणित उपेक्षित, तिरस्कृत —कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्तेर्न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् —भर्तृ० २।१०९ 2 सताया गया, पीड़ित किया गया—आः कदर्थिताऽहमेभिर्वार वार वीरसंवादविघ्नकारिभिः —उत्तर० ५ 3 तुच्छ, नीच 4 बुरा, दुष्ट, —अर्यः कंजूस— मनु० ४।२१०, २२४, याज्ञ० १।१६१ —आचारः लोलुपता सूमपन,—अश्वः बुरा घोड़ा —आकार (वि०) विकृतरूप, कुरूप, —आचार (वि०) दुराचारी, दुष्ट दुश्चरित्र (—रः) दुराचरण,— उष्ट्रः बुरा ऊँट —उष्ण (वि०) गुनगुना थोड़ा गरम (—ष्णम्) गुनगुनापन —रथः बुरा रथ या गाड़ी—युधि कद्रथवद्भीमं बभञ्ज ध्वजशालिनम् भट्टि० ५।१०३, —वद (वि०) 1 दुर्वचन कहने वाला, अयथार्थ या अस्पष्ट वक्ता— पंते जाने प्रियापाये कद्वदं हंसकोकिलम् भट्टि० ६।७५, वाग्विदां वरमकद्वदो नृप कि० १४।१ 2 दुष्ट, घृणायोग्य।

कदकम् [कद मेघ इव कायति प्रकाशते कद + कै + क] शामियाना, चंदोआ।

कदनम् [कद् + ल्युट्] 1 विनाश, हत्या, तबाही 2 युद्ध 3 पाप।

कदम्बः, **कदम्बकः** [कद + अम्बच्] 1 एक प्रकार का वृक्ष (बादलों की गरज के साथ इसकी कलियों का खिलना प्रसिद्ध है)—कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः —उत्तर० ३।२०, मा० ३।७, उत्तर० ३।४१ मेघ० २५ रघु० १३।२९ 2. एक प्रकार का घास 3 हल्दी, —म्बम् 1 समुदाय - छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु- श० २।६ 2 कदंब वृक्ष का फूल—पृथुकदम्बकदम्बकराजितम्—कि० ५।९ सम०—अनिलः (कदंब पुष्पों की सुगन्ध से युक्त) सुगन्धित वायु, ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः —काव्य० १ 2 वसंत, —कोरकन्यायः न्याय के नी० दे०,—वायुः सुगंधित पवन —अनिलः।

कदर [क जलं दारयति नाशयति —क + दृ + अच्] 1 आरा 2 अङ्कुश, —रः जमा हुआ दूध।

कदलः, **कदलकः** [कद् + कलच् कन् च] केले का पेड़, —ऊरुद्वयं मृगदृशः कदलस्य कान्तौ अमरु ९५ —ली 1 केले का वृक्ष—कि यासि बालकदलीव विकम्पमाना— मृच्छ० १।२०, पात्यत्यूरू सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम् — मेघ० ९६, ७७, कु० १।३६ रघु० १२।९६, माघ० ३।८ 2 एक प्रकार का मृग 3 हाथी के द्वारा वहन की जा रही ध्वजा 4 ध्वजा या झंडा।

कदा (अव्य०) [किम् + दा] कब किस समय कदा गमि ष्यसि—एव गच्छामि कदा कथयिष्यसि आदि अपि जोड़ने पर यह शब्द 'कभी-कभी' किसी समय समय निकाल कर' अर्थ प्रकट करता है, न कदापि कभी नहीं, यदि 'चन' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है किसी समय 'एक दिन एक बार एक दफा'—आनन्द ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कदाचन मनु० २।५४ १४४ ३।२५ १०१ यदि 'चित' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है एक बार 'एक दफा किसी समय अथ कदाचित एक बार —रघु० २।३३ १२।०१ नाली कौतुकदाश्चित मनु० ४।७४, ६५ १६० कदाचित कदाचित अब अब कभी-कभी कदाचित काननं जगाहे कदाचित कमला-रम्य देसे का० ५८ अमु० ।

कद्रु (वि०) (स्त्री० द्रु या द्रू) [कद् + रु] भूरे रंग का —द्रु,—द्रू (स्त्री०) कश्यप की पत्नी तथा नागों की माता । सम० सुत, सुत साँप ।

कनकम् [कन् + वुन्] सोना—कनककलश सम्य ... प्रतिसारयिते भा० ३।१३ मेघ० ... १ ढाक का वृक्ष 2 धतूरे का वृक्ष 3 पहाड़ी आबनूस । सम० अचल सोने का पहाड़ अचल, अद्रि, —गिरि, शैल सुमेरु पहाड़ के विशेषण, अधुना कुची ते स्पर्धते किल कनकाचलेन सार्धम—भा० २।१ —आलुका सोने का घड़ा या फूलदान —आह्वय धतूर का पौधा,—टङ्कः सोने की कुल्हाड़ी—दण्डम्, कनकदण्ड (सोने के डंडे वाला) राजछत्र पत्रम् सोने का बना कान का आभूषण- जीवेति मंगलवचः परिहृत्य कोपात कर्णे कृतं कनकपत्रमनालपन्त्या चौर० १० —पराग सुनहरी रज —रसः 1 हरताल 2 पिघला हुआ सोना —सूत्रम् सोने का हार,—कनका कनकसूत्रेण कृष्णसर्पो विनाशितः - पंच० १।२०७,— स्थली स्वर्णभूमि सोने की खान ।

कनकमय (वि०) [कनक + मयट्] सोने का बना हुआ सुनहरी ।

कनखलम् [?] एक तीर्थस्थान (हरद्वार) का नाम तथा उसके साथ-लगी पहाड़ियाँ, (तीर्थं कनखलं नाम गङ्गाद्वारेऽस्ति पावनम्) —तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां जह्नोः कन्याम्—मेघ० ५० ।

कनल (वि०) [कन् + क्वुन्] एक आँख का तु० 'काण' ।

कनयति (ना० धा० पर०) कम करना, घटाना, छोटा करना, न्यून करना—कीर्ति न कनयन्ति च- भट्टि० १८।२५ ।

कनिष्ठ (वि०) [अतिशयेन युवा अल्पो वा—कनादेश —कन् + इष्ठन्] 1 सबसे छोटा, कम से कम 2 आयु में सबसे छोटा ।

कनिष्ठिका [कनिष्ठ + कन् + टाप्] सबसे छोटी अंगुली —कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा सुभा० ।

कनीनिका कनीनी [कनीन + कन + टाप, इत्वम्—कन + ईन + ङीप] 1 छोटी अंगुली कन्या 2 आँख की पुतली ।

कनीयस् (वि०) (स्त्री० सी) [अयमनयोरतिशयेन युवा अल्पो वा कनादेश कन + ईयसुन् स्त्रियां ङीप] 1 छोटा म से छोटा अपेक्षाकृत कम 2 आयु में छोटा कनी पा भाता कनीयसी भगिनी आदि ।

कन्तरा [कन ... टाप्] 1 कन्या 2 हथिनी (तु० कणेरु) ।

कन्तु कन् तु 1 कामदेव 2 हृदय (विचार और भावना का स्थान) 3 अनाज की मण्डी ।

कन्था [कम् ... थन् ...] गुदड़ी ... [illegible] ... वाग्जाल ... [illegible] ... पोता करते हैं ... [illegible] ...

कन्द [कन्द् ... अच्] 1 गाँठदार जड़ 2 गाँठ ... [illegible] ... 3 ... 4 ... द 1 बादल 2 ... सम० मूलम् मूली ... [illegible] ... उद्यान ।

कन्दरटम् [कन्द ...] श्वेत कमल तु० कन्दोट ।

कन्दर, रम् [कम् + दृ + अच्] गुफा घाटी ... कन्दरेण्य प्रलयमुपगतो भर्तृ० ३।६९ वसुधाधरकन्दराभिसर्पी विक्रम० १।१६, मेघ० ५६ —रः अंकुश रा, री गुफा घाटी ... —आकारः पहाड़ ।

कन्दर्प [कं कुत्सितो दर्पो यस्मात् ब० स०] 1 कामदेव पञ्चबाणाभिभूता कन्दर्प मनु० १८।२८ कन्दर्प इव रूपेण महा० 2 प्रेम । सम० कूपः योनि, ज्वरः काम ज्वर, आवेश, प्रबल इच्छा,—दहनः शिव, मुषलः मुसलः पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग, शृंखलः 1 मैथुन 2 रतिक्रिया का विशेष प्रकार, रतिबंध ।

कन्दल:, लम् [कन्द् + अलच्] 1 नया अंकुर या कोंपल उत्तर० ३।४० 2 झिड़की, निन्दा 3 वाद, वाद और कलपटी 4 अपशकुन 5 मधुर स्वर 6 केले का पेड़ —कन्दलकलोकलता पयोविन्दव — अमरु ४८,— लः 1 सोना 2 युद्ध, लड़ाई 3 (लम्) कासनृक्ष, वादविवाद, - कम् कन्दल का फूल- विदलत्कन्दलकम्पनालिता —शि० ६।३०, रघु० १३।२९ ।

कन्दली [कन्दल + ङीष्] 1. केले का पेड़—वारस्तवतां... रिवे कुसुमैकन्दलीनां कदिलकोर्वी, कोपवस्तवेजि स्मरदति मां कोपने तस्या । विक्रम० ४।५, मेघ० २१, ऋतु० २।५ 2. एक प्रकार का मृग 3. झंडा 4 कमलगट्टा या कमल का बीज । सम०—कुसुमम् कुकुरमुत्ता ।

कन्दुः (पुं० स्त्री०) [स्कन्द् + उ सलोपश्च] पतीली, तन्दूर।

कन्दुक, -कम् [कम् + दा + डु + कन्] खेलने के लिए गेंद —पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः —भर्तृ० २।८५ कु० १।२९, ५।१९, १९, रघु० १६।८३। सम० -क्रीडा गेंद का खेल।

कन्दोट (टः) [कन्द् + ओटन्] 1 श्वेत कमल 2 नील कमल, (नीलोत्पल का प्रान्तीय रूप) मारुतकुलाय-मानमेचकन्दोटयुगल —मा० ७।

कन्धरः [कं शिरो जलं वा धारयति —कम् + धृ + अच्] 1 गर्दन 2 जलधर बादल, रा—गर्दन—कन्धरा समपहाय कन्धरा प्राप्य मर्यादि जहास कस्यचित —शा० ८। २२० अमर १६ दे० उत्कंधर भी।

कन्धिः [कं शिरो जलं वा धीयते अत्र —कम् + धा + कि] समुद्र, (स्त्री०) गर्दन।

कन्नम् [कद् + क्त] 1 पाप 2 मूर्छा बेहोशी का दौरा।

कन्यका [कन्या + कन् ह्रस्वता] 1 लड़की —सदृशैर्दत्तानाम कन्यकानि —रघु० १६।२८, ११।५३ 2 अविवाहित लड़की कुमारी कुँआरी या (अपरिणीता) तरुणी गृहे गृहे पुरुषाः कुलकन्यकाः समुद्वहन्ति —मा० ७ याज्ञ० १।१०५ 3 दसवर्षीय कन्या (अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी दशमे कन्यका प्रोक्ता अत ऊर्ध्वं रजस्वला —शब्द०) 4 (अल० शा० में) अनेक प्रकार की नायिकाओं में से एक कुमारी कन्या (जो किसी काव्यकृति में मुख्य पात्र समझी जाती है) दे० अन्य स्त्री के ना० 5 कन्या राशि। सम० -छलम् कुमारी-कन्या का धोखे से अपहरण —पैशाच कन्यकाच्छलात् —याज्ञ० १।६१, —जनः कुमारिया —विश्रब्धमुग्ध कुलकन्यकाजन —मा० ७।१ —जातः कुमारी कन्या का पुत्र —याज्ञ० २।१२९ (दे० कानीन)।

कन्यसः [कन् + ईयस् + क] सबसे छोटा भाई, —सा कानी उँगली, —सी सब से छोटी बहन।

कन्या [कन् + यक् + टाप्] 1 अविवाहित लड़की या पुत्री —रघु० १।४१, ७।१०, ३।३३ मनु० १०।८ 2 दस-वर्षीय कन्या 3 अक्षतयोनि कुमारी —मनु० ८।३६७ ३।३३ 4 (सामान्य) स्त्री 5 छठी राशि अर्थात् कन्या राशि 6 दुर्गा 7 बड़ी इलायची। सम० —अन्तःपुरम् रनवास —मृगशिशुरपि कन्यान्तःपुरे कश्चिन्नप्रविशति —पंच० १ महावी० २।५०, —अाट (वि०) युवती लड़कियों का पीछा करने वाला (—टः) 1 घर का भीतरी कमरा 2 जो तरुणी कन्याओं के पीछे फिरता रहता है, —कुब्जः एक देश का नाम (—ब्जम्) भारत के उत्तर में एक प्राचीन नगर जो कि गंगा की सहायक नदी के किनारे स्थित है, वर्तमान कन्नौज, —गतम् कन्या राशि में गया हुआ नक्षत्र, —ग्रहणम् विवाह में कन्या को स्वीकार करना, —दानम् कन्या का विवाह करना, —दूषणम् कौमार्य भंग करना, —दोषः कन्या में दोष का होना, बदनामी (जैसे कि किसी रोग के कारण), —धनम् दहेज —पतिः (पुं०) पति दामाद —भर्तृ० —पुत्रः कुमारी कन्या का पुत्र (कानीन कहलाता है), —पुरम् रनवास-खाना, —भर्तृ (पुं०) 1 जामाता 2 कार्तिकेय —रत्नम् अत्यन्त सुन्दरी कन्या —कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते —महावी० १।३० —राशिः कन्या राशि —वेदिन् (पुं०) दामाद (जामाता) —याज्ञ० —शुल्कम् कन्या के मूल्य के रूप में कन्या के पिता को दिया गया धन कन्या का क्रयमूल्य, —स्वयंवरः किसी कुमारी कन्या के द्वारा अपना पति चुनना, —हरणम् कौमार्य-भंग के विचार से किसी तरुणी कन्या को फुसलाना —मनु० ३।३३।

कन्याका कन्यिका [कन्या + कन् + टाप्, ह्रस्व वा] 1. तरुणी लड़की 2 कुमारी (अपरिणीता लड़की)।

कन्यामय (वि०) [कन्या + मयट्] कन्याओं वाला, कन्या-स्वरूप —रघु० ६।११, १६।८६, —यम् रनवास (जहाँ अधिकांश लड़कियाँ ही हों)।

कपट —टम् [के मूर्ध्नि पट इव आच्छादक] जालसाजी, धोखादेही, चालाकी, प्रवचना —कपटशतमयं क्षेत्रम-प्रत्ययानाम् —पंच० १।१९१, कपटानुसारकुशला —मृच्छ० ९।५। सम० —तापसः पाखण्डी संन्यासी, बनावटी साधु —पटु (वि०) धोखा देने में चतुर, छलपूर्ण —छलयन् प्रजास्त्वमनृतेन कपटपटुरैन्द्रजालिक —शि० १५।३५, —प्रबन्धः छल से भरी हुई चाल —कि० १, —लेख्यम् जाली दस्तावेज —वचनम् धोखे की बात, —वेश (वि०) बनावटी भेस वाला, नकाब-पोश (—शः) कपटवेश[illegible]।

कपटिकः [कपट + ठन्] बदमाश, छलिया।

कपर्द, कपर्दक [पर्द् + क्विप्, अलोप, पर्, कस्य गंगा जलस्य परा पूरणेन दापयति शुध्यति —क + पर् + दै + क, कपर्द + कन् वा] 1 कौड़ी 2 जटा (विशेषत शिव का जटाजूट) —गंगा० २२।

कपर्दिका [कपर्दक + टाप्, इत्वम्] कौड़ी (जो सिक्के के रूप में प्रयुक्त होती है) —भिक्षाभ्यसितां यान्ति यस्य न स्युः कपर्दि (दं) का —पंच० २।९८।

कपर्दिन् (पुं०) [कपर्द + इनि] शिव की उपाधि।

कपाटः, —टम् [कं वातं पाटयति लुम्पति रुणद्धि —तारा०, क + पट् + णिच् + अच्] 1 किवाड़ का फलक या दिला —कपाटवक्षाः परिणद्धकन्धरः —रघु० ३।३४, स्वर्ग-द्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपि नोपार्जितः —भर्तृ० ३।११ 2 दरवाजा —शि० ११।६०। सम० —उद्घाटनम् दरवाजा खोलना, —घ्नः सेंध लगाने वाला, चोर, —सन्धिः किवाड़ों के दिलों का जोड़।

कपालः —लम् [कं शिरो वलं वा पालयति —क + पाल्

अम 1 खोपड़ी खोपड़ी की हड्डी चूडापीठकपालसङ्कटगलन्मन्दाकिनीवारयः मा० १।२ छहा पन कपालपाणिपुटक भिक्षाटन कारित –भत० ३।९२ 2 टूटे बरतन का अंश ठीकरा कपालम् भिक्षार्थी मनु० ६।४४ 3 समवाय समुच्चय 4 भिक्षुक का कटोरा मनु० ११।७२ 5 प्याला बर्तन पञ्चकपाल 6 ढक्कन। सम० पाणि भृत मालिन, शिरस (पुं०) शिव की उपाधि मालिनी दुर्गा देवी।

कपालिका कपाल + ठन् + टाप् इत्वम् ठीकरा मन ८।३८ २८।

कपालिन (वि० कपाल + इनि 1 खोपड़ी रखने वाला 2 खोपड़ी पहने हुए कपालिन् का सामान्य दृष्टान्त (पुं०) क० ४ ९ (३०) 1 शिव का विशेषण कर कपाल दधनारि किल कपालि प्रभवति गगा० २८ 2 नव जाति का पुरुष (ब्राह्मण माता तथा मछुवे पिता की सन्तान)।

कपि कम्प इ नलोप 1 लंगूर बंदर कपेरत्रासिवुर्नादिन भट्टि० ९।१ 2 हाथी। सम० आख्य धूप लोबान आदि इज्य 1 राम का विशेषण 2 सुग्रीव का विशेषण इन्द्र (बन्दरों का मुखिया) 1 हनुमान का विशेषण नन्दन दृष्टा बृहांत कपीन्द्र भट्टि० १०।१४ 2 सुग्रीव का विशेषण व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे उत्तर० ३।४५ 3 जम्बवान् का विशेषण कच्छु (स्त्री) एक प्रकार का पौधा केतन केतुः ध्वज अर्जुन का नाम भग० १।२० ज तैलम् नामक (नपुं०) शिलाजीत गुग्गुल प्रभु राम का विशेषण लोहम् पीतल।

कपिञ्जल क + पिञ्ज + कलच् 1 पपीहा 2 टिटिहरी।

कपित्थ कपि + स्था + क) कैथ का वृक्ष –स्यम् कैथ का फल। सम० आस्य एक प्रकार का बन्दर।

कपिल (वि०) [कम्प् इलच् पादेश] 1 भूरे रंग का आरक्त—कल्माष कपिलम् विदुः महा० 2 भूरे बालों का मनु० ३।८ (कृष्ण० कपिलकेशा) –लः 1 एक ऋषि का नाम (सगर के साठ हजार पुत्र थे अपने पिता के यज्ञीय घोड़े को ढूंढते हुए ये कपिलमुनि से जब यह और उन पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाया इसमें कुद्ध हो कपिल ने इन सब को भस्म कर दिया दे० उत्तर० १।२३) यह सांख्य दर्शन का प्रवर्तक समझा जाता है 2 कुत्ता 3 लोबान 4 धूप 5 अग्नि का एक रूप 6 भूरा रंग –ला 1 भूरी गाय 2 एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य 3 एक प्रकार का शहतीर 4 जोंक। सम० –अश्वः इन्द्र की उपाधि, –द्युतिः सूर्य धारा गंगा की उपाधि स्मृतिः (स्त्री०) कपिल मुनि का सांख्य-सूत्र।

कपिश (वि०) [कपि शः] 1 भूरे रंग का सुनहरी 2 आरक्त (ग्रामा) मध्यापयोदकपिशा पिशिताशनानाम् श० ३।२७ नाय काञ्चनपद्मरेणुकपिश ७।१२ विक्रम० ४।१३ मेघ० २१ रघु० ९।४८ –शः 1 भूरा रंग 2 शिलाजीत या लोबान –शा 1 माधवी लता 2 एक नदी का नाम।

कपिशित (वि०) [कपिश + इतच्] भूरे रंग का शि० ६।५।

कपुच्छलम् कपुष्टिका कस्य शिरस पुच्छमिव लाति ला + क पुच्छल कस्य शिरस पुष्टि पोषणाय कायति कै + क पृषो० स्त्रियां टाप्] 1 मुण्डन संस्कार 2 सिर के दोनों ओर रक्खा हुआ केशसमूह।

कपूय (वि०) [कुत्सितं पूयते कु पूय अच् पृषो० त्वात्] अधम निकम्मा कमीना नीच।

कपोत [को वातं पोत इव यस्य ब० स०] 1 कबूतर 2 पक्षी। सम० –अरिः एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य अञ्जनम् सुर्मा –अरि बाज शिकरा चरण एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य पालिका पाली (स्त्री०) चिड़ियाघर कबूतर का दड़बा कबूतरों की छतरी –राजः कबूतरों का राजा –सारम् सुर्मा –हस्तः, डर या अनुनय-विनय के अवसर पर हाथ जोड़ने का ढंग।

कपोतकः [कपोत + कन्] छोटा कबूतर –कम् सुर्मा।

कपोल [कपि + ओलच्] गाल कान्तामुखकपोलमालम् श० ३।१० ६।१८ रघु० ४।६८। सम० –कापः जिसमें गाल बजाये जायँ कि० ५।३६ –भित्ति (स्त्री०) कनपटी और गाल, चौड़ा गाल –फलकः पु० गण्डभित्ति, गालों की लाली।

कफ [केन जलेन फलति फल + ड तारा०] 1 बलगम, कफ या श्लेष्मा (शरीर के तीन रसों में से एक –शेष दो हैं वात और पित्त) कफापचयादारोग्यीकमूलता शायाभिनहीषित दश० १६० प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते- उद्भट 2 झागीला झाग फेन। सम० – अरिः सौंठ,—कूर्चिका लार, थूक –क्षयः कफज का क्षय रोग,—घ्न, –नाशन, हर (वि०) कफ को दूर करने वाला, कफ नाशक –ज्वरः बलगम अधिक हो जाने से उत्पन्न बुखार।

कफणिः, कफोणिः (स्त्री० –णी) [केन सुखेन फणति स्फुरति—क + फण् + इन, क + फण् (स्फुर्) + इन् पृषो० कफोणि + ङीप्] कोहनी।

कफल (वि०) [कफ + लच्] जिसे बलगम अधिक आता हो, कफप्रकृति।

कफिन् (वि०) (स्त्री० –नी) [कफ + इनि] कफ की अधिकता से पीड़ित, कफग्रस्त।

कबन्धः,—न्धम् [क मुखं बध्नाति क + बन्ध् + अच्] सिर-

रहित धड़ (विशेषत: जब कि उसमें प्राण बाकी हों) (स्व) नृत्यत्कबन्धं समरे ददर्श रघु० ७।५१, १२।४९, —धः 1 पेट 2 बादल 3 धूमकेतु 4 राहु 5 जल (इस अर्थ में यह शब्द नपुं० भी होता है) शि० १६।६७ 6 रामायण में वर्णित बलवान राक्षस (जब राम और लक्ष्मण दण्डक वन में रहते थे तो एक बार कबन्ध राक्षस ने इन पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में मारा गया। कहते हैं कि इन्द्र द्वारा शाप दिये जाने से उसे राक्षस का रूप धारण करना पड़ा और जब तक कि राम और लक्ष्मण ने नहीं मारा वह राक्षस बना रहा)।

कबर, —री (प्राय: कवर, —री लिखे जाते हैं)।

कबित्थ [कपित्थ, पृषो० साधु:] कैथ का वृक्ष।

कम् (भ्वा० आ० — कामयते, कामित, कान्त) 1 प्रेम करना, प्यार करना, प्रेम करने लगना — कन्यां कामयमाना मां न त्वं कामयसे कथम् — महाभा० ४।७।३ (कामना का एक उदाहरण।—कामयमाना) अन्यत्रापि—कामयते मा० १ 2 चाहना, इच्छा करना, लालसा करना, इच्छा करना — न चीयते … — रघु० १९।४, नितम्बगुर्वी … कु० ५।२९, १०।५३ भट्टि० १४।८० — अभि 1 प्रेम करना 2 चाहना, निरन्तर अधिक चाहना, प्रबल इच्छा करना।

कमठ [कम् + अठन्] 1 कछुआ — कमठः … नियत नाट्यतव … पञ्च० २।१२४ 2 बांस 3. जल का घड़ा — ठी कछुवी या छोटा कछुआ। सम० —पतिः कछुओं का स्वामी।

कमण्डलु: —लु [कस्य जलस्य मण्डमलति — क + मण्ड + अल् + कु] (लकड़ी या मिट्टी का) जलपात्र जो संन्यासी रखते हैं — कमण्डलुपाणिरात्रेयोऽनुगतो … कि० ३।१, कमण्डलुनादकम् … मा० १।६४ याज्ञ० १।१३३। सम० —तरुः वह वृक्ष जिसके कमण्डलु बनते हैं — धरः शिव का विशेषण।

कमन (वि०) [कम् + ल्युट्] 1 विलासी, कामुक 2 मनोहर सुन्दर —नः 1 कामदेव 2 अशोक वृक्ष 3 ब्रह्मा।

कमनीय (वि०) [कम् + अनीयर्] 1 जो चाहने योग्य, चाहने के योग्य, अनन्यनारीकमनीयमङ्कम् कु० १।३७ 2 मनोहर, सुहावना, सुन्दर — … कि० ७।६० … कु० ३।९ अने० पा०।

कमर (वि०) [कम् + अरच्] विषयी, इच्छुक।

कमलम् [क + अल्, मल् + अच् + कम् …] 1 कमल — कमलं … नेत्र° चरण° आदि 2 जल 3 तांबा 4 दवादारू, औषधि 5 सारस पक्षी 6 मृगविशेष, —ल: 1 सारस पक्षी 2 एक प्रकार का मृग। सम० —अक्षी (क्षी) कमल जैसी आंखों वाली स्त्री —आकरः 1 कमलों का समूह 2 कमलों से भरा सरोवर —आलया लक्ष्मी की उपाधि —आसनः 1 कमल पर स्थित, ब्रह्मा —… कु० ७।७०, —ईक्षणा कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री —उत्तरम् कुसुम का फूल, —खण्डम् कमलों का समूह —जः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 रोहिणी नाम का नक्षत्र —जन्मन् (पुं०) —भवः, —योनिः, —सम्भवः कमल से उत्पन्न ब्रह्मा की उपाधि।

कमलकम् [कमल + कन्] छोटा कमल।

कमला [कमल + अच् + टाप्] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 सुन्दर स्त्री। सम० —पतिः, —सखः विष्णु की उपाधि।

कमलिनी [कमल + इनि + ङीप्] 1 कमल का पौधा, मा भूदेवं … न प्रबुद्धा न सुप्ता — मेघ० ९० … कमलिनीहरिते सरांसि … रघु० ९।३० १९।११ 2 कमलों का समूह 3 कमल स्थली (जहाँ कमल बहुतायत से हों)।

कमा [कम् + णिङ् + अ + टाप्] सौंदर्य, मनोहरता।

कमितृ (वि०) (स्त्री० —त्री) [कम् + तृच्] विषयी, लम्पट।

कम्प् (भ्वा० आ० — कम्पते, कम्पित) हिलना-डुलना, कांपना, इधर उधर आना जाना (आल० भी) — चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः रघु० ४।८१ मृच्छ० … भट्टि० १४।३१ १५।७०, —अनु तरस खाना, करुणा करना — नायमाना … कम्पसे … मा० … कि० … (प्रेर०) … कु० ४।३९, —आ हिलना-डुलना, कांपना, (प्रेर०) हिलाना-डुलाना, कंपाना — अनाकम्पितपुष्पम् … रघु० २।१३, ऋतु० ६। —प्र हिलना, कांपना — प्राकम्पत भृशं … रामा०, प्राकम्पन महाशैल — महा०, (प्रे०) हिलाना, चलाना — भट्टि० १५।७३ —वि हिलना, कांपना — … विकम्पमाना मृच्छ० १।२०, … विकम्पते —९।३० भग० ११।२१ (प्रेर०) हिलाना-डुलाना — रघु० ११।१९, ऋतु० ५।१७, —सम्, तरस खाना, करुणा करना रघु० ९।१४।

कम्प: [कम्प् + घञ्] 1 हिलना-डुलना, थरथराहट — कम्पेन किञ्चित्प्रतिगृह्य मूर्ध्न: — रघु० १३।४४ अंग या सिर हिला कर या मोड़ कर … कु० ७।४६ भयकम्प, विद्युत्कम्प आदि 2 स्वरित स्वर का रूपान्तर, —पः हिलाना, चलायमान करना, थरथराहट। सम० —अन्वित (वि०) कम्पायमान, क्षुब्ध, —लक्ष्मन् (पुं०) वायु।

कम्पन (वि०) [कम्प्+युच्] कम्पायमान, हिलने वाला, —नः शिशिर ऋतु (नवम्बर, दिसम्बर)—नम् 1 हिलना, कपकपी 2 कड़कड़ाता उच्चारण।

कम्पाक [कम्पया चलनेन कायति -कम्पा+कै+क] वायु।

कम्पिल्ल =काम्पिल्ल।

कम्प्र (वि०) [कम्प्+र] हिलने वाला, कम्पायमान चलायमान, हलचल पैदा करने वाला विचाय कम्प्राणि मुखानि क प्रति नै० १।१४२ कम्प्रा शाखा —सिद्धा०।

कम्ब् (भ्वा० पर०—कम्बति, कम्बित) जाना, चलना—फिरना।

कम्बर (वि०) [कम्ब्+अरन्] रंगबिरंगा —रः चित्र विचित्र रंग।

कम्बल: [कम्+कल, वुकागम] 1 (ऊनी) कंबल—कम्बल-वन्त न बाधते शीतम् सुभा०, कम्बलावृतेन तेन हि० ३ 2. सास्ना, गाय बैल के गले में नीचे लटकने वाली खाल 3. एक प्रकार का मृग 4 ऊपर से पहनने का ऊनी वस्त्र 5. दीवार, —लम् जल। सम० —वाह्यकम् बहली (चारों ओर मोटे कपड़े से ढकी हुई गाड़ी जिसमें बैल जुते हों)।

कम्बलिका [कम्बल+ई+कन+ह्रस्व टाप्] 1 एक छोटा कंबल 2. एक प्रकार की मृगी।

कम्बलिन् (वि०) [कम्बल+इनि] कम्बल से ढका हुआ —(पु०) बैल, बलीवर्द। सम० वाह्यकम् बहली (मोटे कम्बल से ढकी गाड़ी जिसमें बैल जुते हों) बैलगाड़ी।

कम्बि (बी) (स्त्री०) [कम्ब्+इन् वा० ङीप] कड़छी, चम्मच।

कम्बु (वि०) (स्त्री० बु या बू) चितकबरा, रंगबिरंगा —बु:, -बु (पु० नपु०) शंख, सीपी, स्मरस्य कम्बुं कियदं वकास्ति दिवि त्रिलोकी जयवादनीय नै० २२।२२,—बुः 1 हाथी 2 गर्दन 3 चितकबरा रंग 4 [illegible], शरीर की नस 5 कड़ा 6 नलीनुमा हड्डी। सम० —कण्ठी शंख जैसी गर्दन वाली स्त्री, —ग्रीवा 1 शंखनुमा गर्दन (अर्थात् शंख की भांति तीन रेखाओं से युक्त—यह चिह्न सौभाग्यसूचक समझा जाता है) 2 स्त्री जिसकी गर्दन शंख जैसी हो।

कम्बोज [कम्ब+ओज] 1 शंख 2. एक प्रकार का हाथी 3 (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी—कम्बोजाः समरे सोढुं तस्य वीर्यमनीश्वराः —रघु० ४।६९ अने० पा०।

कम्र (वि०) [कम्+र] मनोहर, सुन्दर।

कर (वि०) (स्त्री०—रा, री) [प्राय समास के अन्त में] [करोति, कीर्यते अनेन इति, कृ (कॄ)+अप्] जो करता है या कराता है दुःख°, सुख°, भय°, —रः 1 हाथ कर व्यापुन्वती पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् श० १।२० 2 प्रकाश-किरण रश्मिमाला यमुद्वर्तं पुत्रा अवमित इवालम्बितकर विक्रम० ४।३४, प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाध नता अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि शि० ९।६ (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3 हाथी की सूंड —सक [illegible] करेण विहित उत्तर० ३।१६ प्रसू० ३।२० 4 लगान शुल्क, भेंट युवा कराक्रान्तमहीभृदुच्चकैः असंशयं सम्प्रति तेजसा रवि शि० १।७० (यहाँ कर का अर्थ 'किरण' भी है) (यहीं) अवगान्तमहीपाल व्याजेन रक्षे करम् रघु० ४।५०, मनु ७।१२८ 5 ओला 6 २४ अंगुल की माप 7 हस्त नाम नक्षत्र। सम० —अग्रम् 1 हाथ का अगला भाग 2 हाथी के सूंड की नोक —आघातः हाथ से की गई चोट —आरोट अंगूठी, —आलम्बः हाथ से सहारा देना सहायक बनना —आस्फोट 1 छाती 2 थप्पड़, —कटक, —कम् नाखून —कमल, —पङ्कजम्, —पद्मम् कमल जैसा हाथ सुन्दर हाथ—करकमलवितीर्णैरम्बुनीवारशष्पैः —उत्तर० ३।२५, —कलश:, जब हाथ की अंजलि (पानी लेने के लिए) —किसलय:,—यम् 1 कोमल जैसा हाथ कोमल हाथ करकिसलयतालैर्मुग्धया नर्त्यमानम् उत्तर० ३।१९ ऋतु० ६।३० 2 अंगुलि, —कोष हथेली का गर्त हस्ताञ्जलि पेयमपु भर० ४८ —ग्रह —ग्रहणम् 1 लगान या शुल्क लेना 2 विवाह में हाथ पकड़ना 3 विवाह —ग्राह 1 पति 2 शुल्क लेने वाला —ज नाखून तीक्ष्णकरजक्षुण्णात् —वेणी० ३।१ इसी प्रकार अमरु ८५, (जम्) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य —जालम् प्रकाश की धारा —तल हथेली अलकैकलाकरतले क० ४।४, करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति—पञ्च० २।१२४ —आमलकम् (शा०) हथेली पर रक्खा हुआ आंवला (आल०) प्रत्यक्षीकरण की सुगमता तथा स्पष्टता जैसा कि हथेली पर रक्खे फल के विषय में स्वाभाविक है मु० करतलामलकफलवदखिलं जगदालोकयताम् —का० ४३ °स्थ (वि०) हथेली पर रक्खा हुआ —ताल:, —तालम् 1 तालियां बजाना या बहुत उचककरताल मुच्चकैः शि० १५।३९ 2 एक प्रकार का वाद्य यन्त्र सम्भवत झांझ —तालिका, —ताली 1 तालियां बजाना —उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीभिरेष नै० ३।७ 2 तालियाँ बजा कर समय मिलाना —तोया एक नदी का नाम, —द (वि०) 1 लगान या शुल्क देनेवाला 2 सहायक करदीकृताखिलनृपां मेदिनीम् —वेणी० ६।१८,—धारा,—पत्रम् आरा,—पालिका [illegible]

या जल-क्रीड़ा करते समय जल उछालना,—कमलः 1. कोमल हाथ 2. अंगुलि—तु० °किसलय,—पालः, —पालिका, 1. तलवार 2. कुदाली,—पीडनम् विवाह तु० पाणिपीडन, —पुटः दोनों हाथ मिला कर (दोनों की भांति) बनाई हुई अंजलि,—पृष्ठम् हथेली की पीठ, —पालः,—वालः 1. तलवार—चलोत्खड्ग. करवालपाणिभिर्वाणायित.—मा० ९, स्नेहवतीमिवहृनिकार्ने करवालि करवालम् —गीत० १ 2 नाखून,—भारः लगान या शुल्क की भारी राशि, —रुहः नाखून, —सूत्रम् कड़ा या कंगन आदि कलाई में पहनने का गहना,—शाखः उंगली, —शूलम् बड़ा हथियार—दे० आयुध,—रुहः 1 नाखून अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः —श० २।१०, मेघ० ९६ 2. तलवार, —वीरः, —वीरकः 1 तलवार या खड्ग 2 कब्रिस्तान 3 चादि देश का एक नगर 4 [illegible] —शीकरः हाथी की सूंड द्वारा फेंका हुआ पानी, —शूकः नाखून —स्वापः किरणों का मंद पड़ जाना, —सूत्रम् कंगना या विवाह-सूत्र जो कलाई में बांधा जाता है,—स्फालिन् (पुं०) शिव, —स्फोटः तालियाँ बजाना ।

करकः, —कम् [किरति करोति वा जलमत्र कृ (कॄ) + वुन्] (संन्यासी का) जलपात्र—का० ४१,—कः अनार का वृक्ष, —कः, —कम्, का ओला, ताम्रकुर्वीधारानुमुक्तकरकावृष्टिपाताभकीर्णान्—मेघ० ५४, भामि० १।३५, । सम० —अम्भस् (पुं०) नारियल का पेड़ —आसारः ओलों की बौछार,—जम् पानी,—पात्रिका संन्यासियों का जलपात्र ।

करङ्कः [करम् रङ्कु इव ब० स०] 1 अस्थिपंजर 2 खोपड़ी प्रेत-रङ्कः करङ्कादङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति —मा० ५।१६, ५।१९ 3 (नारियल का बना) छोटा पात्र छोटा बक्स या डिब्बा जैसा कि 'ताम्बूलकरङ्कवाहिनी (कादम्बरी में प्रयुक्त) ।

करञ्जः [क शिरोजलं वा रञ्जयति —तारा०] एक वृक्ष का नाम (इससे औषधियाँ तैयार की जाती हैं) ।

करटः [किरति मदम् —कृ + अटन्] 1 हाथी का गण्डस्थल 2 कुसुम्भ का फूल 3 कौवा —मा० ४।१९ 4 नास्तिक, ईश्वर और वेद में विश्वास न रखने वाला 5 पतित ब्राह्मण ।

करटकः [करट + कन्] 1 कौवा —मृच्छ० ३ 2 चौर्य-कला व विज्ञान का प्रवर्तक कर्णीरथ 3 हि० और पंच० में गीदड़ का नाम ।

करटिन् (पुं०) [करट + इनि] हाथी —दिवसे मृगरम्ते मदमीलितगण्डाः करटिनः —भामि० १।२ ।

करट (टे) डुः [क + अटु के जले वाणी वा रटति —क + रेट् + कु] एक प्रकार का पक्षी सारस ।

करणम् [कृ + ल्युट्] 1 करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, पटीकृत°, अंजली°, विष° आदि 2. कृत्य, कार्य 3. धार्मिक कृत्य 4. व्यवसाय, धंधा 5. इन्द्रिय — वपुषा करणोज्झितेन सा निपतन्ती पतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, ४२, पटुकरणैः प्राणिभिः—मेघ० ५, रघु० १४।५० 6. शरीर—जनान्तमनुविद्धकाषिणां करणं यस्य कान्तिमत्तया —कु० ४।५ 7. कार्य का साधन या उपाय —वर्णसिद्धिकरणमुपमानम्—तर्क स० 8. (तर्क० में) साधनविषयक हेतु जिसकी परिभाषा है— व्यापारवदसाधारणं कारणं करणम् 9. कारण या प्रयोजन 10 (व्या० में) करण कारक द्वारा अभिव्यक्त अर्थ—साधकतमं करणम् —पा० १।४।४२ या क्रियायाः परिनिष्पत्तिर्यद्व्यापारादनन्तरम्, विवक्ष्यते यदा यत्र करणं तत्तदा स्मृतम् 11 (विधि में) दस्तावेज, तमस्सुक, लिखित प्रमाण—मनु० ८।५१, ५२, १५४ 12. लयात्मक विराम विशेष, समय काटने के लिए ताली बजाना—कु० ६।४० 13. (ज्योतिष में) दिन का एक भाग (यह करण गिनती में ११ हैं) । सम०—अधिपः आत्मा,—ग्रामः इन्द्रियों का समूह —त्राणम् सिर ।

करण्डः [कृ + अण्डच्] (बांस की बनी) छोटी डलिया या टोकरी— करण्डपीडिततनोः भोगिनः—भर्तृ० २।८४, सर्वमायाकरण्डम् १।७७ 2. मधुमक्खियों का छत्ता 3 तलवार 4 एक प्रकार की बत्तख, कारण्डव ।

करण्डिका, करण्डी (स्त्री०) [करण्ड + ङीष्, टाप्, ह्रस्व] बांस का बना छोटा सन्दूक, बांस की पिटारी ।

करन्धय (वि०) [कर + धे + खश्, मुम्] हाथ चूमने वाला ।

करभः [कृ + अभच्] 1 हाथ की पीठ (कलाई से लेकर नाखूनों तक)—[illegible], जैसा कि 'करभोपमोरु' रघु० ६।८३ में, दे० नी० करभोरु 2. हाथी की सूंड 3 हाथी का बच्चा 4 ऊंट का बच्चा 5. ऊंट 6 एक सुगंधित द्रव्य । सम० —ऊरुः (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जंघाएँ हाथ के अग्रभाग की पीठ से मिलती जुलती हैं अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते —श० ३।२१, शि० १०।६९, अमरु ६९, (दूसरी व्याख्या के अनुसार) जिसकी जंघाएँ हाथी के सूंड से मिलती जुलती हैं ।

करभकः [करभ + कन्] ऊंट ।

करभिन् (पुं०) [करभ + इनि] हाथी ।

करम्ब, करम्बित (वि०) [कृ + अम्बच्, करम्ब + इतच् वा] 1 मिश्रित, मिला-जुला, चित्रविचित्र, रंगबिरंगा,—प्रकामविस्तारफलप्रकटकी करम्बिता मोदभर विवृण्वती —नै० १।११५, स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् —गीत० ११ 2 बैठाया हुआ जड़ा हुआ ।

करम्भः (कः) [क + रम्भ् + अच्] 1 दही मिला आटा या अन्य भोज्यपदार्थ 2 कीचड़ करम्भवालुकाता-

पाम् —मनु० १२।७६, (यहाँ इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गई हैं, परन्तु मेधातिथि इसका अर्थ 'कीचड़' ही मानते हैं) ।

करहाटः [कर + हट् + णिच् + अण्] 1 एक देश का नाम (संभवतः सतारा जिले का वर्तमान कहाड), करहाटपते पुत्री त्रिजगन्नेत्रकार्मणम् विक्रमांक० ८।२ 2 कमल का डंठल या रेशेदार जड़ ।

कराल (वि०) [कर + आ + ला + क] 1 भयानक भीषण, डरावना, भयंकर—उत्तर० ५।५, ६।१, मा० ३ भग० ११।२३ २५ २७ रघु० १२।९८ महावी० ३।४८ 2 जम्हाई लेता हुआ, पूर्णतया खोलता हुआ - उत्तर० ५।६ 3 बड़ा विस्तृत ऊँचा, उन्नत 4 असम, जिसमें झटका या हचकोला लगे नोकदार —वेणी० १।६ मा० १।३८ —ला दुर्गा का प्रचण्ड रूप °आयतनम् न करालोपहारात्फलमन्यद्विभाव्यते मा० ४।३३, । सम० —दंष्ट्र डरावने दाँतों वाला, —वदना दुर्गा की उपाधि ।

करालिकः [कराणां करसदृशशाखानाम् आलिः श्रेणी यत्र ब० स० कप्] 1 वृक्ष 2 तलवार ।

करिका [कर + अच् + ङीष् + कन्, टाप् ह्रस्व] खरोंच नखाघात से हुआ घाव ।

करिणी (स्त्री०) [कर + इनि + ङीप्] हथिनी कथमेत्य मतिविपर्ययं करिणी पङ्कमिवावसीदति कि० २।६, भामि० १।२ ।

करिन् (पुं०) [कर + इनि] 1 हाथी 2 (गण०) आठ की संख्या । सम० —इन्द्रः, —ईश्वरः, —वरः बड़ा हाथी, विशालकाय हाथी —सदादानः परिक्षीणः शस्त एव करीश्वरः पंच० २।७० दूरीकृताः करिवरेण मदान्धबुद्ध्या नीति० २, —कुम्भः हाथी के मस्तक का ललाट भामि० २।१३७ —गर्जितम् हाथी की चिंघाड़, (बृंहितं करिगर्जितम् —अमर०) —दन्तः हाथी दाँत, —पः महावत, —पोतः, —शावः, —शावकः हाथी का बच्चा —बंधः स्तंभ जिससे हाथी बाँधा जाय —माचलः सिंह, —मुखः गणेश का विशेषण, —वरः °इभः, —वैजयन्ती (पुं०) झंडा जो हाथी के द्वारा ले जाया जा रहा हो, —स्कन्धः हाथियों का समूह ।

करीरः [कॄ + ईरन्] 1 बाँस का अंकुर 2 अंकुर आनिन्दिरे करभकाः करीरैः शि० ४।१४ 3 काँटेदार वृक्ष जो मरुस्थल में पैदा होता है तथा जिसे ऊँट खाते हैं —पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् —भर्तृ० २।९३, तु० —किं पुष्पैः किं फलैस्तस्य करीरस्य दुरात्मनः, येन वृद्धिं समासाद्य न कृतः पत्रसंग्रहः । —सुभा०, 4. पानी का घड़ा ।

करीषः, —**षम्** [कॄ + ईषन्] सूखा गोबर । सम० —अग्निः सूखे गोबर या कंडों की आग ।

करीषंकषा [करीष + कष् + खच्, मुम्] प्रबल वायु या आँधी ।

करीषिणी [करीष + इनि + ङीप्] संपत्ति की अधिष्ठात्री देवी ।

करुण (वि०) [करोति मनः आनुकूल्याय कृ + उनन् —तारा०] कोमल मार्मिक दयनीय करुणात्मक शोचनीय—करुणध्वनि उत्तर० ३ शि० ९।६७ विफलकरुणैरार्यक्रन्दितैः उत्तर० ३।४८ —णः 1 दया अनुकम्पा, दयालुता 2 करुण रस शोक रस (आठ या नौ रसों में से एक) पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः —उत्तर० ३।१ १३ °विप्रलम्भ करुणार्थग्रथितं प्रियां प्रति रघु० ८।७० । सम० —मल्ली मल्लिका का पौधा —विप्रलम्भः (अलं० में) वियुक्तावस्था में प्रेम भावना ।

करुणा [करुण + टाप्] अनुकम्पा दया दयालुता प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा मेघ० ९३ इसी प्रकार 'सकरुण' सदय तथा अकरुण निर्दय । सम० —आर्द्र (वि०) कोमल-हृदय दया से पसीजा हुआ संवेदनशील —निधिः दया का भण्डार पर, —मय (वि०) अत्यन्त कृपालु —विमुख (वि०) निर्दय क्रूर करुणाविमुखेन मृत्युना रघु० ८।६७ ।

करेटः [करे + अट् + अच्, अलुक् स०] अँगुली का नाखून ।

करेणुः [कृ + एणु अथवा के मस्तके रेणुरस्य तारा०] 1 हाथी —करेणुरारोहयते निषादिनम् शि० १२।५ ४।६८ 2 कर्णिकार वृक्ष —णुः (स्त्री०) 1 हथिनी ददौ रसात्पङ्कजरेणुगन्धि गजाय गण्डूषजलं करेणुः कु० ३।३७ रघु० १६।१६ 2 गालकाप्य की माता । सम० —भू, —सुत हस्तिविज्ञान का प्रवर्तक पालकाप्य ।

करोटम्, करोटिः (स्त्री०) [क + रुट् + अच् इन वा] 1 खोपड़ी महावी० ५।१९ 2 कटोरा या पात्र ।

कर्क [कृ + क] 1 केंकड़ा 2 कर्क राशि, चतुर्थराशि 3 आग 4 जलकुंभ 5 दर्पण 6 सफेद घोड़ा ।

कर्कटः, —**टकः** [कर्क + अटन्, स्वार्थे कन् च] 1 केंकड़ा 2 कर्कराशि चतुर्थराशि 3 वृत्त घेरा ।

कर्कटिः, —टी (स्त्री०) [कर + कट + इन् शक० पर रूपम्, ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी ।

कर्कन्धुः, —**धूः** [कर्क कण्टकं दधाति धा + कु] 1 उन्नाव का पेड़ कर्कन्धूफलमिश्रशाकपचनामोदः परिस्तीर्यते —उत्तर० ४।१ कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या —श० ४, अन० पा० 2 इस वृक्ष का फल- याज्ञ० १।२५० ।

कर्कर (वि०) [कर्क + रा + क] 1 कठोर, ठोस 2. दृढ़, —रः 1 हथौड़ा 2. दर्पण 3 हड्डी, (खोपड़ी का) भग्न टुकड़ा, ठीकरा,—भा० ५।१९ 4 चीता या चमड़े की

पेटी। सम० —अक्षः हिलती पूंछ वाला (खंजन) पक्षी, —अङ्गः खंजन पक्षी, —अन्धुकः अंधा कुआँ, तु०, अंधकूप।

कर्करादुः [कर्कं हासं रटति प्रकाशयति, कर्क+रट्+कुण्] तिरछी दृष्टि, कनखी, कटाक्ष।

कर्करालः [कर्कर+अल्+अच्] घुँघराले बाल, घूर्णकुन्तल।

कर्करी [कर्कर+ङीप्] ऐसा जलपात्र जिसकी तली में चलनी की भाँति छिद्र हों।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1. कठोर, कड़ा (विप० कोमल या मृदु) सुरद्विपास्फालनकर्कशाङ्गुली रघु० ३।५५, ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन पस्पर्श तदङ्गमिन्द्रः कु० ३।२२, १।३६, शि० १५।१० 2 निष्ठुर, क्रूर, निर्दय (शब्द, आचरण आदि) 3 प्रचण्ड, प्रबल अत्यधिक तस्य कर्कशविहारसंभवम् - रघु० ९।६८ 4 नि[illegible] 5 दुराचारी, दुश्चरित्र, स्वामिभक्ति से हीन (जैसा कि कोई स्त्री) 6 समझ में न आने योग्य, दुर्बोध - तर्के वा भृशकर्कशे मम समं लीलायते भारती —प्रस० ४, —शः तलवार।

कर्कशिका, कर्कशी [कर्कश+कन्+टाप्, इत्वम्, ङीप् वा] जङ्गली बेर, झड़बेर।

कर्किः [कर्क्+इन्] कर्क राशि, चतुर्थ राशि।

कर्कोटः, -टकः [कर्क्+ओट, स्वार्थे कन्] आठ प्रधान सांपों में से एक (जब राजा नल को कलि के दुष्प्रभाव से नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करनी पड़ी तो उस समय कर्कोट ने, जिसे नल ने एक बार आग से बचाया था, ऐसा विकृत कर दिया कि विपत्काल में भी उसे कोई पहचान न सके)।

कर्चूरः [कर्च्+ऊर, पृषो० च आदेश] एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष, —रम् 1 सोना 2. हरताल।

कर्ण् (चुरा० उभ० कर्णयति—ते, कर्णित) 1. छेद करना, सूराख करना 2 सुनना (प्राय 'आ' उपसर्ग के साथ) आ—, सम—, सुनना, ध्यान से सुनना - सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति श० १ आकर्णयन्नुत्सुकहंसनादान् —भट्टि० ११।७।

कर्णः [कर्ण्यते आकर्ण्यते अनेन- कर्ण्+अप्] 1 कान - अहो खलभुजङ्गस्य विपरीतवधक्रमः, कर्णे लगति चान्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते। पंच० १।३००, ३०५, कर्णं दा ध्यान से सुनना, कर्णागतम् कान तक आना, ज्ञात होना - रघु० १।९, कर्णे कृ कान में डालना, - वीर० १०, कर्णे कथयति कान में कहता है दे० षट्कर्ण, चतुष्कर्ण 2 मगाल का कड़ा 3 नाव की पतवार 4 त्रिभुज के समकोण के सामने की रेखा 5 महाभारत में वर्णित कौरव पक्ष का एक महारथी (जब कुन्ती अपने पिता के घर रहती थी, उस समय सूर्य देव के संयोग से कुन्ती की अविवाहितावस्था में कर्ण का जन्म हुआ। (दे० कुंती) बालक उत्पन्न होने पर कुन्ती ने अपने बन्धु-बान्धवों की निन्दा तथा लोक-लज्जा के कारण उसे नदी में फेंक दिया। धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ ने उसे नदी से निकाल कर अपनी पत्नी राधा को दे दिया। उसने उसे पालपोस कर बड़ा किया, इसी लिए कर्ण को सूतपुत्र या राधेय कहते हैं। बड़ा होने पर दुर्योधन ने कर्ण को अङ्ग देश का राजा बना दिया। अपनी दानशीलता के कारण वह दानवीर कर्ण कहलाया। एक बार इन्द्र (जो अपने पुत्र अर्जुन पर अनुग्रह करने के लिए आतुर रहता था) ने ब्राह्मण का वेश धारण किया और कर्ण को झांसा देकर उसके दिव्य कवच व कुंडल हथिया लिये, बदले में उसे एक शक्ति या बरछी दे दी। युद्ध की कला में अपने आप को दक्ष बनाने की इच्छा से कर्ण ब्राह्मण बन कर परशुराम के पास गया, वहाँ उसने परशुराम से अस्त्र-संचालन की शिक्षा प्राप्त की। परन्तु यह भेद बहुत दिन तक छिपा न रहा। एक बार जब परशुराम अपना सिर कर्ण की जंघा पर रख कर सो रहे थे, तो एक कीड़ा (कई लोगों के मतानुसार इन्द्र ने कर्ण को विफल करने की दृष्टि से 'कीड़े' का रूप धारण किया था) कर्ण की जंघा को खाने लगा, उसने जंघा में गहरा घाव कर दिया, परन्तु उस पीड़ा से भी कर्ण टस से मस न हुआ। इस अनुपम सहन शक्ति से परशुराम को कर्ण की असलियत का पता लग गया, फलतः उसने कर्ण को शाप दे दिया कि आवश्यकता के समय—उसकी विद्या—काम नहीं आवेगी। एक दूसरे अवसर पर उसे एक ब्राह्मण ने (जिसकी गौएँ अनजाने में पीछा करते हुए कर्ण द्वारा मारी गई थी) शाप दे दिया कि संकट आ पड़ने पर उसके रथ का पहिया पृथ्वी खा लेगी। इस प्रकार की कठिनाइयों के होते हुए भी कर्ण ने भीष्म और द्रोण के पतन के पश्चात् कौरव सेना के सेनापति के रूप में कौरव-पाण्डवों के युद्ध में अपना युद्ध कौशल खूब दिखाया। तीन दिन तक वह पाण्डवों के सामने रणक्षेत्र में डटा रहा। परन्तु अन्तिम दिन जब कि उसके रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया था, वह अर्जुन के द्वारा मारा गया। कर्ण, दुर्योधन का अत्यन्त घनिष्ठ मित्र था, पाण्डवों का नाश करने के लिए शकुनि से मिल कर जो योजनाएँ या षड्यन्त्र दुर्योधन ने किये, उन सब में कर्ण उसके साथ था)। सम० —अंजलिः बाहरी कान का [illegible]-भाग, —अनुजः युधिष्ठिर, —अन्तिक (वि०) कान के निकट —स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः - श० १।२४, —आभू[illegible] (स्त्री०) कान का आभूषण, कान की बाली, —अर्पणम्, कान देना, ध्यान से सुनना, —आस्फालः हाथी के कानों की फड़फड़ाहट, —उत्तंस

कान का आभूषण या (कइयों के मतानुसार) केवल आभूषण, (मम्मट कहता है कि यहाँ 'कान' का अर्थ 'कान में स्थिति' है —तु० उसका एत० टिप्पण कर्णावतंसादिपदे कर्णादिध्वनिनिर्मित सन्निधानावबोधार्थं स्थितेष्वेतत्समर्थनम् । काव्य० ७), —उपकर्णिका अफवाह (शा० 'एक कान से दूसरे कान तक'), —क्ष्वेडः (आयु० में) कान में लगातार गूंज होना, —गोचर (वि०) जो कानों को सुनाई पड़े, —ग्राह: कर्णधार, —जप (वि०) (कर्णेजप भी) रहस्य की बात कह जाने वाला, पिशुन, चुगलखोर, —जप:, —जाप: चुगली, निन्दा करना, चुगली करना, कलंक लगाना, —जाह कान की जड़ —अपि कर्णजाहविनिवेशिताननः —मा० ५।८, —जित् (पुं०) कर्णविजेता, अर्जुन, तृतीय पाण्डव, —ताल: हाथी के कानों की फड़फड़ाहट या उससे उत्पन्न आवाज —विस्तारित कुञ्जरकर्णतालैः —रघु० ७।३९, ९।७१, शि० १३।२७, —धार: मल्लाह, नाविक —अकर्णधारा जलधौ विप्लवतेह नौरिव —हि० ३।, अविनयनदीकर्णधारकर्ण —वेणी० ४, —धारिणी हथिनी, —पथ: श्रवणपरास, —परम्परा एक कान से दूसरे कान, अनुश्रुति—इति कर्णपरम्परया श्रुतम् —रत्न० १, —पालि: (स्त्री०) कान की लौ, पाली, सुन्दर कान, —पूर: 1 (फूलों का बना) कान का आभूषण, कान की बाली—स्वयं च करतल विनिर्मित कर्णपूरतामापादितम् —का० ६०, 2 अशोकवृक्ष, —पूरक 1 कान की बाली 2 कदम्ब वृक्ष 3 अशोक वृक्ष 4 नील कमल, —प्रान्त: कान की पाली, —भूषणम्, —भूषा कान का गहना, —मूलम् कान की जड़ —रघु० १२।२, —मोटी दुर्गा का एक रूप, —वंश: बांसों से बना ऊँचा मचान, —वर्जित (वि०) बिना कानों का, (—त:) सांप, —विवरम् कान का श्रवण मार्ग, —विष् (स्त्री०) कान का मैल, —वेध: (बालियाँ पहनने के लिए) कानों का बींधना, —वेष्ट:, वेष्टनम् कान की बाली, —शष्कुली (स्त्री०) कान का बाहरी भाग (श्रवण मार्ग पर के आगे वाला) नै० २।८, —शूल, —शूलम् कानों में पीड़ा, —श्रव (वि०) जो सुनाई दे, ऊँचा (स्वर) —कर्णश्रवेऽनिले —मनु० ४।१०२, —स्राव, —स्रव: कानों का बहना, कान से मवाद निकलना, —सू (स्त्री०) कर्ण की माता, कुन्ती, —हीन (वि०) कर्णरहित (—न:) सांप।

कर्णाकर्णि (वि०) [कर्णे कर्णे गृहीत्वा प्रवृत्त कथनम् —अव्ययीभावे इच्, पूर्वस्य दीर्घश्च] कानों कान, एक कान से दूसरे कान।

कर्णाट: [कर्ण+अट्+अच्] भारत प्रायोद्वीप के दक्षिण में एक प्रदेश—(काव्य) कर्णाटेन्द्रोऽयमिति विदुषा कण्ठभूषा त्वमेतु—विक्रमांक० १८।१०२, —टी (स्त्री०) उपर्युक्त देश की स्त्री —कर्णाटी चिकुराणां ताण्डवकर —विद्ध० शा० १।२९।

कर्णिक (वि०) [कर्ण+ठन्] 1 कानों वाला 2 पतवार धारी, —क: केवट, —का 1 कानों की बाली 2 गांठ, गोल बिन्दी 3 कमल का फल, कमलगट्टा 4 एक छोटी कूची या कलम 5 मध्यमा अंगुली 6 फल का डंठल 7 हाथी के सूंड की नोक 8 खड़िया।

कर्णिकार: [कर्णि+कृ+अण्] 1 कनियार का वृक्ष —निर्भिद्योपरि कर्णिकारमुकुलान्यालीयते षट्पद: —विक्रम० २।२३, ऋतु० ६।१८, २० 2 कमल का फल, कमलगट्टा, —रम् कनियार का फूल, अमलतास का फूल (यद्यपि यह फूल बड़े सुन्दर रंग का होता है परन्तु सुगंध न होने के कारण इसे कोई पसन्द नहीं करता —तु० कु० ३।२८ —वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म चेत: प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृज: प्रवृत्ति:।

कर्णिन् (वि०) [कर्ण+इनि] 1 कानों वाला 2 लम्बे कानों वाला 3 फल लगा हुआ (जैसे तीर) (पुं०) 1 गधा 2 मल्लाह 3 गांठों से सम्पन्न बाण।

कर्णी (स्त्री०) [कर्ण+ङीष्] 1 पुष्पाकार या विशेष आकार का बाण 2 चौर्य कला व विज्ञान के निर्माता मूलदेव की माता। सम० —रथ: स्त्रियों की सवारी, पालकी —कर्णीरथस्था रघुवीरपत्नीम् —रघु० १४।१३, —सुत: चौर्यकला व विज्ञान के प्रवर्तक मूलदेव —कर्णीसुतकथेव संनिहितविपुलाचला —का० १०, कर्णीसुतप्रहिते व पथि मतिमकरवम् —दश०।

कर्तनम् [कृत्+ल्युट्] 1 काटना, कतरना —याज्ञ० २।२२७, २८६ 2 रूई कातना (तर्कुं वर्तनसाधनम्)।

कर्तनी (स्त्री०) [कर्तन+ङीप्] कैंची।

कर्तरिका, कर्तरी (स्त्री०) 1 कैंची 2 चाकू 3 छोटी तलवार।

कर्तव्य (सं० कृ०) [कृ+तव्य] 1 जो कुछ उचित हो या होना चाहिए —ईश्वरा न कर्तव्या कर्तव्यो महदाश्रय: —हि० ३।११, मया प्रातरिह सत्रं कर्तव्यम् —रघु० १ 2 जो मारना या कतरना चाहिए, नष्ट करने योग्य —पुत्रं सखा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गुरु: । रिपुस्थानेषु वर्तन्त: कर्तव्या भूतिमिच्छता —महा०, —व्यम्, कर्तव्यता, जो होना चाहिए, धर्म, आचार —कर्तव्यं वा न पश्यामि —कु० ६।२१, ७।६२, याज्ञ० १।३३०।

कर्तृ (वि०) [कृ+तृच्] 1 करने वाला, कर्ता, निर्माता, सम्पादक —व्याकरणस्य कर्ता = रचयिता, सुखस्य कर्ता, ऋणं करने वाला, हितकर्ता = भला करने वाला, सुवर्णकर्ता = सुनार 2 (व्या० में) अभिकर्ता (करण

कारक का अर्थ) 3. परशु 4. ब्रह्मा का विशेषण विष्णु या शिव

कर्त्री (स्त्री०) [कर्तृ+ङीप्] 1. चाकू 2. कैंची।

कर्दः, कर्दटः [कर्द्+अच्, कर्द+अट्+अच्, पररूपम्] कीचड़।

कर्दमः [कर्द्+अम] 1. कीचड़, दलदल, पंक —धावी नूपुरभग्नकर्दमपरी प्रक्षालयन्ती स्थिता मृच्छ० ५।३५, पथश्चाश्यानकर्दमान्—रघु० ४।२४ 2. कूड़ा, मल 3 (आलं०) पाप, —मम् मांस। सम०—आटकः मलपात्र, मलमार्ग आदि।

कर्पटः, -टम् [कृ+विच्=कर्, पट, कर्म० स०] 1 पुराना, जीर्ण-शीर्ण या मैला कुचैला कपड़ा 2 कपड़े का टुकड़ा, धज्जी 3 मटियाला या लाल रंग का कपड़ा।

कर्पटिक, न् (वि०) [कर्पट+ठन्, इनि वा] जीर्ण शीर्ण कपड़ों (चिथड़ों) से ढका हुआ।

कर्पणः [कृप्+ल्युट्] एक प्रकार का हथियार चापचक्रकणपकर्पणप्रासपट्टिश आदि—दश० ३५।

कर्परः [कृप्+अरन् बा०] 1 कड़ाह, कड़ाही 2 बर्तन 3 ठीकरा, टूटे बर्तन का टुकड़ा—जैसा कि घट कर्पर में —जीयेय येन कविना यमकैः परेण तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण—घट० २२ 4 खोपड़ी 5 एक प्रकार का हथियार।

कर्पासः,—सम्,—सी [कृ+पास, स्त्रियां ङीष्] कपास का वृक्ष।

कर्पूरः,—रम् [कृप्+ऊर] कपूर। सम०—खंडः 1 कपूर का खेत 2 कपूर का टुकड़ा, —तैलम् कपूर का तेल।

कर्फरः [कृ+विच्=कर्, फल्+अच्, रस्य लः कीर्यमाणं फलं प्रतिबिम्बो यत्र ब० स०] दर्पण।

कर्बु (वि०) [कर्ब्(र्व्)+उन्] रंगबिरंगा चितकबरा —याज्ञ० ३।१६६।

कर्बुर (वि०) [कर्ब्(र्व्)+उरच्] 1 रंगबिरंगा, चितकबरा—पर्याकिस्मसमदूषर्णनिकुरम्बकर्बुर—शि० १७।५६ 2. कबूतर के रंग का, सफेद सा, भूरा—पवनैर्भस्मकपोतकर्बुरम् कु० ४।२७, -रः चितकबरा रंग 2. पाप 3. भूत, पिशाच 4 धतूरे का पौधा, —रम् 1. सोना, 2. जल।

कर्बुरित (वि०) [कर्बुर+इतच्] रंगबिरंगा—उत्तर० ६।४।

कर्मठ (वि०) [कर्मन्+अठच्] 1 कार्यप्रवीण, चतुर 2. परिश्रमी 3 केवल धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न, —ठः यज्ञ निदेशक।

कर्मण्य (वि०) [कर्मन्+यत्] कुशल, चतुर,—ण्या मजदूरी, —ण्यम् सक्रियता।

कर्मन् (नपुं०) [कृ+मनिन्] 1 कृत्य, कार्य, कर्म 2 कार्यान्वयन, सम्पादन 3. व्यवसाय, पद, कर्तव्य—संगति विवर्धयानां कर्म—मालवि० ४ 4. धार्मिक कृत्य (यह चाहे, नित्य हो, नैमित्तिक हो या काम्य हो) 5. विशिष्ट कृत्य, नैतिक कर्तव्य 6. धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान (कर्मकाण्ड) जो ब्रह्मज्ञान या अध्यात्म प्रधान धर्म का विरोधी है (विप० ज्ञान)—रघु० ८।२० 7 फल, परिणाम 8. नैसर्गिक या सक्रिय सम्पत्ति (धरती के आश्रय के रूप में) 9 भाग्य, पूर्वजन्म के किये हुए कर्मों का फल— भर्तृ० २।४९ 10 (व्या०) कर्म का उद्देश्य—कर्तुरीप्सिततमं कर्म—पा० १।४।४९ 11 (वैशे० द० में) गति या कर्म जो सात द्रव्यों में एक माना जाता है (परिभाषा इस प्रकार है - एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणं कर्म- वैशे० सू०, कर्म पाँच प्रकार का है—उत्क्षेपणं ततोऽवक्षेपणमाकुञ्चनं तथा, प्रसारणं च गमनं कर्माण्येतानि पञ्च च—भाषा० ६। सम० —अक्षम (वि०) कार्य करने में असमर्थ, —अङ्गम् कार्य का अंग, यज्ञीय कृत्य का भाग (जैसा कि वर्णो यज्ञ का प्रयाज), —अधिकार धर्मकृत्यों को सम्पन्न करने का अधिकार, —अनुरूप (वि०) 1 किसी विशेष कार्य या पद के अनुसार 2 पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार, —अन्तः 1. किसी कार्य या व्यवसाय की समाप्ति 2 कार्य, व्यवसाय, कार्य सम्पादन 3 कोष्ठागार, धान्यागार—मनु० ७।६२, (कर्मान्त इक्षुधान्यादिसंग्रहस्थानम्—कुल्लू०) 4. जुती हुई भूमि, —अन्तरम् 1. कार्य में भिन्नता या विरोध 2. तपस्या, प्रायश्चित्त 3. किसी धार्मिक कृत्य का स्थगन,—अन्तिक (वि०) अन्तिम (-कः) सेवक, कार्मिक,—आजीवः किसी पेशे से (जैसे शिल्पकार का) अपनी जीविका चलाने वाला, —आत्मन् (वि०) कार्य के नियमों से युक्त, सक्रिय मनु० १।२२,२३; (पु०) आत्मा - इन्द्रियम् काम करने वाली इन्द्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न हैं (वे यह हैं—वाक्पाणिपादपायूपस्थानि मनु० ११।९१ 'इन्द्रिय' शब्द के नी० भी दे०, —उदारम् साहसिक या उदार कार्य, उच्चाशयता, शक्ति, —उद्युक्त (वि०) व्यस्त, संलग्न, सक्रिय, सोत्साह, —करः 1 भाड़े का मजदूर (वह सेवक जो दास न हो) —कर्मकरा स्थपत्यादय पच १, शि० १४।१६ 2. यम,—कर्तृ (पु०) (व्या० में) कर्ता जो साथ ही साथ कर्म भी है- न्हा० पच्यते ओदनः, इसकी परिभाषा यह है- क्रियमाणं तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति, सुकरैः स्वैर्गुणैः कर्तुः कर्मकर्तेति तद्विदुः। —काण्डः,—ण्डम् वेद का वह विभाग जो यज्ञीय कृत्यों, संस्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान से उत्पन्न फल से सम्बन्ध रखता है, —कारः 1 जो किसी व्यवसाय को करता है, कारीगर, शिल्पकार (जो भाड़े पर काम करने वाला न हो) 2 कोई भी मजदूर (चाहे भाड़े

का हो या बिना भाड़े का) 3. लुहार,—हरिणाक्षि कटाक्षेण आत्मानमवलोकय, न हि खड्गो विजानाति कर्मकारं स्वकारणम्। उद्भट 4 सांड़,—कारिन् (पुं०) मजदूर कारीगर,—कार्मुकः—कम् एक मजबूत धनुष, —कीलकः धोबी, —क्षम (वि०) कोई कार्य या कर्तव्य सम्पादन करने के योग्य,—आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः—रघु० १।१३,—क्षेत्रम् धार्मिक कृत्यों की भूमि अर्थात् भारतवर्ष, तु० कर्मभूमि,—गृहीत (वि०) कार्य करते समय पकड़ा हुआ (जैसे कि चोर),—घातः कार्य को छोड़ बैठना या स्थगित कर देना, —चं(चा)डालः 1 काम करने में नीच, नीच या निकृष्ट कर्म करने वाला व्यक्ति, वशिष्ट उनके प्रकारों का उल्लेख करता है—असूयकः पिशुनश्च कृतघ्नो दीर्घरोषकः, चत्वारः कर्मचाण्डाला जन्मतश्चापि पञ्चमः। 2 जो अत्याचार पूर्ण कार्य करता है—उत्तर० १।४६ 3. राहु,—चोदना 1 यज्ञानुष्ठान में प्रेरित करने वाला प्रयोजन 2 धार्मिक कृत्य की विधि,—ज्ञः धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित,—त्यागः सांसारिक कर्तव्य और धर्मानुष्ठान को छोड़ देना,—दुष्ट (वि०) कार्य करने में भ्रष्ट, दुष्ट, दुराचारी अनादरणीय,—दोषः 1 पाप, दुर्व्यसन—मनु० ६।६१, ९५ 2 त्रुटि, दोष, (कार्य करने में) भारी भूल—मनु० १।१०४ 3 मानवी कृत्यों के दुष्परिणाम 4 निंद्य आचरण, —धारयः समास, तत्पुरुष का एक भेद (इसमें प्राय विशेषण व विशेष्य का समास होता है), तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहि —उद्भट, —ध्वंसः 1 धर्मानुष्ठानों से उत्पन्न फल का नाश 2. निराशा,—नामन् (व्या० में) कृदन्तक संज्ञा, —नाशा काशी और बिहार के मध्य बहने वाली एक नदी, —निष्ठ (वि०) धर्मानुष्ठान के सम्पादन में कुशल, —पथः 1 कार्य की दिशा या लक्ष्य 2. धर्मानुष्ठान का (कर्म) मार्ग (विप० ज्ञान मार्ग),—पाकः कार्यों की परिपक्वावस्था, पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का फल,—प्रवचनीय कुछ उपसर्ग तथा अव्यय जो क्रियाओं के साथ संबद्ध न होकर केवल संज्ञाओं का शासन करते हैं उदा० 'आ मुक्तेः संसारः' में 'आ' कर्मप्रवचनीय है, इसी प्रकार 'जपमनु प्रावर्षत्' में 'अनु', तु० उपसर्ग, गति या निपात, —त्यागः धर्मानुष्ठानों के फलों का परित्याग, —फलम् पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल या पारितोषिक (दुःख, सुख), —बन्धः, —बन्धनम् जन्म-मरण का बन्धन, धर्मानुष्ठानों के फल चाहे शुभ हों या अशुभ (इनके कारण आत्मा सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त रहता है), —भू, —भूमिः (स्त्री०) 1 धर्मानुष्ठान की भूमि अर्थात् भारतवर्ष 2. जुती हुई भूमि,—मीमांसा धार्मिक अनुष्ठानों का विचारविमर्श या मीमांसा,—मूलम् कुश नामक पवित्र घास, —युगम् चौथा (वर्तमान) युग, अर्थात् कलियुग,—योगः 1 सांसारिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का सम्पादन 2 सक्रिय चेष्टा, उद्योग, —वशः भाग्य जो पूर्व जन्म में किये गये कार्यों का अनिवार्य परिणाम है,—विपाकः = कर्मपाक,—शाला कारखाना, —शील,—शूर (वि०) कर्मवीर, उद्योगी, परिश्रमी, —संगः सांसारिक कर्तव्य तथा उनके फलों में आसक्ति। —सचिवः मंत्री, —संन्यासिकः,—संन्यासिन् (पुं०) 1 धर्मात्मा पुरुष जिसने प्रत्येक सांसारिक, कार्य से विरक्ति पा ली है 2 वह संन्यासी जो कर्म फल का ध्यान न करते हुए धर्मानुष्ठानों का सम्पादन करता है —साक्षिन् (पुं०) 1 आँखों देखा गवाह, प्रत्यक्षदर्शी साक्षी कु० ७।८३ 2 जो मनुष्य के शुभाशुभ कर्मों को प्रत्यक्ष देखता रहता है (इस प्रकार के नौ देवता हैं जो मनुष्य के समस्त कार्यों को प्रत्यक्ष देखते हैं तथाहि—सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च, एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः। —सिद्धिः (स्त्री०) अभीष्ट कार्य की सिद्धि, सफलता कु० ३।५७, —स्थानम् सार्वजनिक कार्यालय, काम करने का स्थान।

कर्मन्दिन् [कर्मन्द+इनि] संन्यासी, धार्मिक भिक्षु।

कर्मारः [कर्मन्+ऋ+अण्] लुहार याज्ञ० १।१६३, मनु० ४।२१५।

कर्मिन् (वि०) [कर्मन्+इनि] 1 कार्य करने वाला, क्रियाशील, कार्यरत 2 किसी कार्य या व्यवसाय में व्याप्त 3 जो फल की इच्छा से धर्मानुष्ठान करता है कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन भग० ६।४६ (पुं०) कारीगर शिल्पकार याज्ञ० २।२६५।

कर्मिष्ठ (वि०) [कर्मिन्+इष्ठन् इनो लुक्] व्यापार-कुशल चतुर, परिश्रमी।

कर्वटः [कर्व्+अटन्] बाजार, मंडी या किसी जिले (जिसमें २०० से ४०० तक गांव हों) का मुख्य नगर।

कर्ष [कृष्+अप् घञ् वा] 1 रेखा खींचना, घसीटना, खींचना—याज्ञ० २।२१७ 2 आकर्षण 3 हल जोतना 4 हल रेखा, खाई 5 क्रोध, —र्षः, —र्षम्—चाँदी या सोने का १६ माशे का वजन, सम० आपण कार्षापण।

कर्षक (वि०) [कृष्+ण्वुल्] खींचने वाला, —कः किसान, खेतिहर याज्ञ० २।२६५।

कर्षणम् [कृष्+ल्युट्] 1 रेखा खींचना, घसीटना, खींचना, झुकाना, (धनुष का)—भज्यमानमतिमात्रकर्षणात् रघु० ११।४६, ७।६२ 2 आकर्षण 3 हल जोतना, खेती करना 4 क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, पीड़ित करना—मनु० ७।११२।

कर्षिणी [कृष्+णिनि+ङीप्] लगाम का दहाना ।

कर्षूः (स्त्री०) [कृष्+ऊ] 1. कुल्या-रेखा, खूड 2. नदी 3. नहर (पुं०) 1. सूखी पत्तों की आग 2. कृषि, खेती 3 जीविका ।

कर्हिचित् (अव्य०) [किम्+र्हिल्, कादेश,+चित्] किसी समय, (प्रायः 'न' के साथ प्रयोग) मनु० २।४, ४०, १७; ४।७७, ६।५० ।

कल् i (भ्वा० आ०—कलते, कलित) 1 गिनना, 2 शब्द करना ।

ii (चुरा० उभ०—कलयति-ते, कलित) 1 धारण करना, रखना, ले जाना, संभालना, पहनना, करतलकरकलदली-कलितमल्लवार्जिके [illegible] ५।५, म्लेच्छनिवह-निधने कलयसि करवालम् -गीत० १, कलितललित-वनमालः; कुर्क कलयते—उ०, [illegible] पानी पवे कुछ नुपुरी—१२, बा० ७।१८ 2. हिलाना, हिलाया जमाना—काक [illegible]—भग० १०।३० 3. धारण करना, लेना, रखना, अधिकार में करना—कलयति हि हिमांशोर्निष्कलङ्कस्य लक्ष्मीम्—मा० १।२२, शि० ४।२६, ९।५९ 4 जानना समझना, पर्यवेक्षण, ध्यान देना, सोचना—कलयन्नपि सव्यथो-[illegible]—शि० २।८१, कोपितं [illegible] कान्त-[illegible] १०।२९, मै० २।६५, ३।१२ मा० २।९ 5. सोचना, आदर करना, ख्याल करना—[illegible] नाथ—शि० २।५८, ६।५४, बा० ७।१५, [illegible] कलयति [illegible]—गीत० ४।७ 6. शब्द करना, प्रमा-णित होना—[illegible] मा० ८, यस्य कोऽपि न विधिना कलयति प्राप्ते नवे यौवने—भर्तृ० १।७२ 7. करना, सम्पादन करना 8 जाना 9 आसक्त होना, लेटजाना, सुसज्जित होना, । आ— 1 पकड़ना, ग्रहण करना—शि० ७।२१,—कुतूहलाकलित-हृदया—का० ४१ 2 ख्याल करना, आदर करना, जानना, ध्यान देना—स्वर्गमपि पावनमाकलयन्ति—का० १०८, [illegible] हृदय तथाकलयामि—गीत० ३ 3 बांधना, जकड़ना, बंधन युक्त होना, रोकना या मजबूती पकड़ना—शि० ११९, ९।७५, का० ८४, ९९ 4. प्रहार करना, फेंकना—शि० ११।७३ 5 हिलाना, परि—, 1. जानना, समझना, ख्याल करना, आदर करना 2. जानकार होना, ज्ञात करना वि— , वर्णन करना, विकलांग करना विकृत करना, सम्—, 1. जोड़ना, एकत्र करना—तु० संकलन 2 ख्याल करना, आदर करना ।

iii (चुरा० उभ०—कालयति—ते, कलित) प्रोत्सा-हित करना, हांकना, प्रेरणा देना ।

कल (वि०) [कल् (कड्)+अच्, अपृक्ति०, रक्तोर-केऽ:] 1. मधुर, और अस्पष्ट (अस्पष्टमधुर)—कर्णे कल किमपि रौति—हि० १।८१, वाचैः कलोन्मुखीं—रघु० १।४१, ८।५९, काव्यवि० ५।१, 2. मन्द मधुर (स्वर) 3. कोलाहल करने वाला, झनझनाता हुआ, टनटन करता हुआ—[illegible]—रघु० १६।१२, कलकिङ्किणी-रवम्—शि० ९।७४, ८२, कलकोकिलकलकलः ५।१४, ४।५७ 4. दुर्बल 5. कच्चा, कच्चा,—लः मन्द या मृदु और अस्पष्ट स्वर,—लम् वीर्य । सम०—अङ्कुरः सारस पक्षी,—अनुनादिन् (पुं०) 1. चिड़िया 2. मधु-मक्खी 3. चातक पक्षी,—[illegible] चिड़ा,—आलापः 1 मधुर गुंजार 2. मधुर और रुचिकर प्रवचन—स्फुट-[illegible] करोति [illegible] कौतुका-[illegible]—का० २ 3. मधुमक्खी,—उत्ताल (वि०) ऊँचा, तीक्ष्ण,—कण्ठ (वि०) मधुर कंठ वाला (—ठः) (स्त्री०—ठी) 1. कोयल, 2. हंस, राजहंस 3. कबू-तर,—कलः 1. भीड़ की मर्मरध्वनि या भनभनाहट 2. अस्पष्ट या संकुल ध्वनि—चकितया [illegible] कलकल-[illegible]—शि० ६।१४, नेपथ्ये कलकलः (नाटकों में), भर्तृ० १।२७ ३७, अमरु २८ 3. शिव,—कूणिकः—कूणिका [illegible] स्त्री, [illegible] कोमल,—कूणिका लम्पट या छिनाल स्त्री,—घौतम् 1 चाँदी—शि० १३।५१ ४।४१ 2. सोना—[illegible]-पीठलक्ष्मा [illegible]—वेणी० ३ °लिपिः (स्त्री०) 1 सुनहरी पांडु लिपि की झनझनाहट 2. स्वर्णाकार—[illegible]—गीत० ८,—ध्वनिः 1 मन्दमधुर ध्वनि 2. कबूतर 3. मोर 4 कोयल,—नादः मन्द मधुर स्वर,—आलापन् गुनगुनाना,—[illegible]—बचपन की चहक,—रवः 1 मन्द मधुर ध्वनि 2 कबूतर 3 कोयल,—हंसः 1 हंस, राजहंस—[illegible] कलहंसकलापम्—कु० ५।६७ 2. बत्तख, पुरुषश्रेष्ठ, भट्टि० २।१८, रघु० ८।५९ 3. परमात्मा ।

कलङ्कः [कल्+विच्,कल् भावी अङ्कयति कर्म० स०] 1 धब्बा, चिह्न, काला धब्बा (आ०) रघु० १३।१५, 2 (आल०) दाग, बट्टा, बदनामी—व्यपनयतु कलङ्कं स्वस्वभावेन सैव मृच्छ० १०।३४, रघु० १४।३७, इसी प्रकार—कुल° 3. अपराध, दोष—भर्तृ० ३।४८ 4 लोहे का जंग, मोर्चा ।

कलङ्कषः (स्त्री०—षी) [कषेण कषति हिनस्ति—कल+कष्+खच्, मुम्] सिंह, शेर ।

कलङ्कित (वि०) [कलङ्क+इतच्] 1 धब्बेदार, लांछित, बदनाम ।

कलङ्कुरः [क जल कङ्कुरति आवपति, क+कङ्कु+णिच्+उरच्] जलावर्त, भँवर ।

कलत्रम् [कं आत्मानं—क+त्रा+क] 1. पत्नी

2. विशेषे खल्ल से उत्पन्न पुष्प आदि वस्तु,—अम् ऐसे वस्तु का मांस।

कलत्रम् [गड्+अत्रन्, गकारस्य ककार:, डलयोरभेद:] 1. पत्नी,—वसुमत्या हि नृपा: कलत्रिण:—रघु० ८।८३, १।३२, १२।३४, वज्रमुरिव हिमनिवसति तत्कलत्रम् भर्तृ० २।९८ 2. कूल्हा या नितम्ब—स्मुमूर्तिविम्बोहा-वलम्बन विलास... कलत्राम्—का० १८९ (यहाँ 'कलत्रम्' के दोनों अर्थ हैं) शि० ८।९, १७ 3. राज-कीय दुर्ग।

कलनम् [कल्+ल्युट्] 1. धब्बा, चिह्न 2. विकार, अप-राध, दोष 3. ग्रहण करना, पकड़ना, जानना—कल-मात्मर्ववृत्तानां स काल: परिकीर्तित: 4. जानना, सम-झना, बोध पाना 5. ध्वनि करना, —ना 1. लेना, पक-ड़ना, जानना—...कलना —आन० २९ 2. करना, क्रियान्वयन 3. वश्यता 4. समझ, समवबोध 5. पह-नना, धारण करना।

[illegible] [कल+वा+क+कन्+टाप्, ह्रस्वम्, पृषो० मुम्] बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा।

कलभ: (स्त्री० —भी) [कल्+अभच्, करेण शुण्डया भाति भा+क रस्य लत्वम्—तारा०] 1. हाथी का बच्चा, बच्चा ...—मनु कलभेन शुभपते स्नूकतम्—मालवि० ५, छिपेन्द्रमाव कलभ: ...—रघु० ११३२, ६।११९, १८।३७ 2. तीस वर्ष का हाथी 3. ...वर्ष का बच्चा, धतूरा वृक्ष।

कलम: [कल्+अम] 1. धान-धूप में बोया हुआ चावल जो दिसम्बर-जनवरी में पक जाता है—सुतेन पाण्डो: कल-मस्य गोपिकाम्—कि० ४।९, ३४, कु० ५।४७, रघु० ४।३७ 2. लेखनी, लिखने की कलम 3. चोर 4. दुष्ट, बदमाश।

कलम्ब: [कड्+अम्बच्] 1. तीर 2. कदम्ब वृक्ष।

कलम्बुटम् [क+लम्ब्+उटन्] (ताजा) मक्खन नवनीत।

कलल:,—लम् [कल्+कलच्] भ्रूण, गर्भाशय।

कलविङ्क:,—क: [कल्+वङ्क्+अच्, पृषो० ह्रस्वम्] 1. चिड़िया, मनु० ५।१२, याज्ञ० १।१७४ 2. धब्बा, दाग या लांछन।

कलश:,—श: [केन जलेन लश(स)ति—तारा०] (—शम्, —शी) घड़ा जलपात्र, करवा, गगरी—स्तनौ मांस-ग्रन्थी कनककलशावित्युपमिती—भर्तृ० ३।२०, १।९७ स्तनकलश:—अमरु ५४ °उद्धव:, °उद्भव: अगस्त्य मुनि।

कलशी (सी) (स्त्री०) [कलश(स)+ङीप्] घड़ा, करवा। सम०—सुत: अगस्त्य।

कलह:,—हम् [कलं कामं हन्ति—हन्+ड तारा०] 1. झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई—...कलह:—भर्तृ० ११२, ... शृंगार० ८, इसी प्रकार ...कलह:, प्रणय-कलह: आदि 2. संग्राम, युद्ध, 3. दाँव, धोखा, मिथ्या-पन 4. हिंसा, ठोकर मारना, पीटना आदि—मनु० ४। १२१ (यहाँ मेधातिथि और कुल्लूक, कलह शब्द की व्याख्या क्रमश 'दंडाविनेतरेतरमाडनम्' और 'वाग्-दंडपारुष्यादि' करते हैं)। सम० —अन्तरिता अपने प्रेमी से झगड़ा हो जाने के कारण उससे वियुक्त (जो दुःखी भी है साथ ही अपने किये पर पछताती भी), सा० द० इस प्रकार परिभाषा करता है चाटुकारमपि प्राण-नाथं रोषादपास्य या, पश्चात्तापमवाप्नोति कलहान्त-रिता तु सा। ११७,—अपहृत (वि०) बलपूर्वक अपहरण किया गया, —प्रिय (वि०) जो लड़ाई-झगड़ा करने में प्रसन्न होता है—ननु कलहप्रियोऽसि—मालवि० १, (—य:) नारद की उपाधि।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1. किसी वस्तु का छोटा खण्ड टुकड़ा, लवमात्र,—कलामप्यकृतपरिग्रह.—का० ३०४ सर्वे ते मित्रगात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्—पंच० २।५९, मनु० २।८६, ८।३६ 2. चन्द्रमा की एक रेखा (यह १६ अंश है) अपि अनवद्ये ते भाया नवेन्दु-कलादय.—मा० १।३६ कु० ५।७२, मेघ० ८९, 3. मूलधन पर ब्याज (लिये गये धन के उपयोग के विचार से)—धनवीचिवीचिमयनीर्णवनो निशिरम्भसामुपचयाय कला.—शि० ९।३२, (यहाँ कला का अर्थ रेखा भी है) 4. विविध प्रकार से आकलित समय का प्रमाण (एक मिनट, ४८ सैकण्ड या ८ सैकण्ड) 5. राशि के तीसवें भाग का साठवाँ अंश, किसी कोटि का एक अंश 6. प्रयोगात्मक कला (शिल्पकला, ललित कला) इस प्रकार की ६४ कलाएँ हैं, जैसे कि संगीत, नृत्य आदि 7. कुशलता, मेधाविता 8. आत्मश्लाघी, धोखादेही 9. (छन्द. शास्त्र में) मात्रा छंद 10. जिल्ली 11. रज-स्राव। सम० —अन्तरम् 1. दूसरी रेखा 2. ब्याज, लाभ—यासे शतस्य यदि पञ्चकलान्तरं स्यात्—लीला०, —केलि: कलाबाज, नट, तलवार की तीक्ष्ण धार पर नाचने वाला, —अङ्कुरम् भयंकर विष, —केलि (वि०) छबीला, विलासी (—लि:) काम का विशेषण,—क्षय: (चन्द्रमा का) क्षीण होना—रघु० ५।१६,—धर:,—निधि: —पूर्ण: चन्द्रमा,—अहो महत्त्व महतामपूर्वं विपत्तिकालेऽपि परोपकार., यथास्यमध्ये पतितोऽपि राहो. कलानिधि: पुण्यचयं ददाति। उद्भट,—भृत् (पुं०) चन्द्रमा, इसी प्रकार कलावत् (पुं०)—कु० ५।७२।

कलाद:,—दक: [कला+आ+दा+क] सुनार।

कलाप: [कला+आप्+अण्, घञ्] 1. बण्डल, गठरी —मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य—कु० १।४३, मोतियों का हार—रत्नकलाप: —पुष्पकलाप मेखला 2. वस्तुओं का समूह या संचय—अविरलकलाकलापकलितम्—का० ७ 3. मोर की पूँछ—...

शिञ्जितम् - विक्रम० ५।१३, पञ्च० २।८०, ऋतु० १।१६, ३।१६ 4 स्त्री की मेखला या करधनी (प्राय. 'कांची' और 'रशना' आदि के साथ) भर्तृ० १।५७, ६७, ऋतु० ३।२०, मृच्छ० १।२७ 5 आभूषण 6 हाथी के गले का रस्सा 7 तरकस 8 बाण 9 चन्द्रमा 10 कामदेव, बुद्धिमान् 11 एक ही छन्द में लिखी गई कविता, - पी घास का गट्ठर।

कलापकम् [कलाप + कन्] एक ही विषय पर लिखे गये चार श्लोकों का समूह (जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य हो) (अनुभिरस्तु कलापकम्) उदाहरण के लिए दे० कि० ३।४१, ४२, ४३, ४४ 2 वह ऋण जिसका परिशोध उस समय किया जाय जब मोर अपनी पूंछ फैलाते हैं, - कः 1 एक जत्था या गट्ठर 2 मोतियों की लड़ी 3 हाथी की गर्दन के चारों ओर लिपटने वाला रस्सा 4 मेखला या करधनी (कलाप) शि० ९।४५ 5 (समवायवाचक) मस्तक पर तिलकविशेष।

कलापिन् (पुं०) [कलाप + इनि] 1 मोर—कलापिनामपि कलापिकदम्बकम् शि० ६।३१, पञ्च० २।८०, रघु० ६।९ 2 कोयल 3 अंजीर का वृक्ष (प्लक्ष)।

कलापिनी [कलापिन् + ङीप्] 1 रात 2 चांद।

कलायः [कला + अय + अण्] मटर शि० १३।२१।

कलाविकः [कलम् आविष्कार्यति विशेषेण रौति—कल + आ + वि + कै + क] मुर्गा।

कलाहकः [कलम् आहन्ति कल + आ + हन् + ड : कन्] एक प्रकार का बाजा।

कलिः [कल् + इनि] 1 झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई, असहमति मतभेद शि० ३।५५, कलिकामजित् रघु० ९।३३, अमरु ११ 2 संग्राम, युद्ध 3 सृष्टि का चौथा युग कलियुग (इस युग की आयु ४३२००० मानव वर्ष है तथा ईसापूर्व ३१०२ वर्ष की १३ फरवरी को इसका आरम्भ हुआ था) मनु० १।८६, ९।३०१—कलिवर्ज्यानि इमानि आदि० 4 मूर्तिमान् कलियुग (इसने नल को यातना दी थी) 5 किसी वर्ग का निकृष्टतम व्यक्ति 6 विभीतक या बहेड़े का वृक्ष 7 पासे का पहलू जिस पर एक का अंक अंकित है 8 नायक 9 बाण —(स्त्री०) बिना खिला फूल। सम० —कारः, —कारकः,—प्रियः नारद का विशेषण, —द्रुमः, —वृक्षः बिभीतक या बहेड़े का वृक्ष, —युगम् कलिकाल कलियुग मनु० १।८५।

कलिका, कली (स्त्री०) [कलि + कन् + टाप्] 1 अनखिला फूल कली,—लतानां चिरनिर्गतापि कलिका बध्नाति न स्वं रजः मा० ९।६, किमारब्धकलिकाभङ्गमारभसे—श० ६, ऋतु० ६।१७, रघु० ९।३३ 2 अंक, रेखा।

कलिङ्गाः (ब० व०) [कलि + गम् + ड] एक देश और उसके निवासियों का नाम, —उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखो ययौ रघु० ४।३८ (इसमें इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है) —अयमात्मलाभसदृशः ... कलिङ्गदेश ... ।

कलिञ्जः [क + लञ्ज् + अच् नि० साधु०] चटाई, परदा।

कलित (वि०) [कल् + क्त] जाना हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ दे० कल्।

कलिन्दः [कलि + दा + खच्, मुम्] 1 वह पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है 2 सूर्य। सम० —कन्या, —जा, —तनया, —नन्दिनी यमुना नदी की उपाधियाँ —कलिन्दकन्या मथुरां गतापि रघु० ६।४८, कलिन्दजानीर -भामि० २।१२०, गीत० ४,—गिरिः कलिन्द नाम का पहाड़, —जा, —तनया, —नन्दिनी यमुना नदी की उपाधियाँ - भामि० ४।३, ४।

कलिल (वि०) [कल् + इलच्] 1 ढका हुआ, भरा हुआ 2 मिला, घुला-मिला—गत एकाकल्मषकलिल ... महावी० १ 3 प्रभावित, अवगं कि,—... कि० ११।१८ 4 अभेद्य, अक्षोभ्य,- —लम् 1 बड़ा ढेर, अव्यवस्थित राशि—विषादि हुतस ... —भर्तृ० ३।१४ 2 गड़बड़, अव्यवस्था—यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति—भग० २।५२।

कलुष (वि०) [कल् + उषच्] मलिन, गन्दा, कीचड़ से भरा हुआ, मैला—यथा रोषकलुषया बुद्धया प्रमादम्—विक्रम० २।८ कि० ८।३२, घट० १३ 2 ... बेसुरा, अटका हुआ —कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।६ 3 दूषित, भरा हुआ ... ४ 4 क्रुद्ध, आवेश, उत्तेजित— ... दधितेव रात्री - रघु० ५।६४ (मल्लि० 'कलुष' का अर्थ 'अयोग्य' और 'असमर्थ' मानता है) 5 दुष्ट, पापी, बुरा 6 क्रूर, निन्दनीय रघु० १४।७३ 7 अन्धकार युक्त, अन्धकारमय 8 निठल्ला, आलसी, —षः भैंसा, —षम् 1 मलिनता, मैल, कीचड़—विगतकलुषमम्भः—ऋतु० ३।२२ 2 पाप 3 क्रोध। सम० —योनिज हरामी, वर्णसंकर - मनु० १०।५७, ५८।

कलेवरः, —रम् [कले शुक्रे वरं श्रेष्ठम्—अलुक् स०] शरीर, -मातास्वयमपि कलेवरमुह्य —भर्तृ० ३।८८ शि० ११।५७, नव० ८।५, भामि० ११०३, २।८९।

कल्क: —ल्कम् [कल् + क] 1 चिपचिपी गाद जो तेल आदि के नीचे जम जाती है, कीट 2 एक प्रकार की लेई या पेस्ट —याज्ञ० १।२७७ 3 (क्वाथ) गदली, मैल 4 कीट, विष्ठा 5 नीचता, कपट, दम्भ शि० १९।१८ 6 पाप 7 बुरा मिला चूर्ण—तो कौशलत्वेन ... कु० ७।९। सम० —फलः अनार का पौधा।

कल्कनम् [कल्क्+णिच्+ल्युट्] धोखा देना, प्रतारणा, विप्रलम्भना।

कल्किः, कल्किन् (पुं०) [कल्क्+णिच्+इन्, कल्क+इनि] विष्णु का अन्तिम और दसवाँ अवतार (संसार का उसके शत्रुओं से उद्धार करने वाला तथा दुष्टों का दमन करने वाला) (विष्णु के अवतारों का उल्लेख करते हुए जयदेव कल्कि नामक अन्तिम अव-तार का इस प्रकार निर्देश करता है —म्लेच्छनिवह-निधने कलयसि करवालम् धूमकेतुमिव किमपि करा-लम्, केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे - गीत० १।१०।]

कल्प (वि०) [कृप्+अच्, घञ् वा] 1 व्यवहार में लाने योग्य, साध्य संभव 2. उचित योग्य, सही 3 समर्थ, सक्षम (संबं० अधि० तुमुन्नन्त के साथ अथवा समास के अन्त में)—धर्मस्य, यज्ञस्य कल्प मालवि० अपना कर्तव्य आदि करने में समर्थ,—स्वक्रियायामकल्प श०, अपना कर्तव्य पूरा करने में असमर्थ इसी प्रकार —स्वकार्यकल्प आदि,—ल्पः 1 धार्मिक कर्तव्यों का विधि-विधान, नियम, आदेश 2 विहित नियम विहित विकल्प, ऐच्छिक नियम—प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३० अर्थात् उस विहित विधि का अनुसरण करने में समर्थ जिसको दूसरे सब नियमों की अपेक्षा अधिमान्यता दी जाती है, प्रथम कल्प—मालवि० १, अर्थात् बहुत अच्छा विकल्प,—एष वै प्रथमः कल्पः प्रदाने हव्यकव्ययोः – मनु० ३।१४७ 3 (व्रत) प्रस्ताव, सुझाव, निश्चय, संकल्प -उदार कल्प—श०७ 4 कार्य करने की रीति कार्य विधि, रूप, तरीका, पद्धति (कर्मणि प्रयोगों में)—आर्येण कल्पे नोपनीय- उत्तर० २, कल्पवित्कल्पयामास वन्या-मेवास्य संविधाम् -रघु० १।९४ मनु० ७।१८५ 5 सृष्टि का अन्त, प्रलय 6 ब्रह्मा का एक दिन या १००० युग, मनुष्यों का ४३२०००००० वर्ष का समय, तथा सृष्टि की अवधि का माप, क्षीणेतवाराह कल्पे (वह कल्प जिसमें सब युग रहते हैं)- ... स्थितः ... 'कम् - श० ४।२ 7 रोगी की चिकित्सा 8 छः वेदांगों में से एक—नाम जिसमें यज्ञ का विधि-विधान विहित है तथा जिसमें यज्ञानुष्ठान एवं धार्मिक संस्कारों के नियम बतलाये गये हैं, दे० 'वेदांग' के नी० 9 संज्ञा और विशेषणों के अन्त में जुड़ कर निम्नांकित अर्थ बतलाने वाला शब्द -'अपेक्षाकृत कुछ कम' 'प्राय: वैसा ही' 'लगभग बराबर' (हीनता की अवस्था के साथ २ समानता का प्रकट करना) कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् - रघु० ५।३६ ... राजनि श० ४ ... रघु० ३।२ इसी प्रकार मृतकल्प, प्रतिपन्नकल्प आदि। सम०—अन्तः सृष्टि की समाप्ति, प्रलय—भर्तृ० २।११, °स्थायिन् (वि०) कल्प के अन्त तक ठहरने वाला —आदिः सृष्टि में सभी वस्तुओं का पुनर्नवीकरण, —कारः कल्पसूत्र का रचयिता, —क्षयः सृष्टि का नाश, प्रलय—उदा०—पुरा कल्पक्षये वृत्ते जातं जलमयं जगत् -कथा० २।१० —तरुः, —द्रुमः, —पादपः, —वृक्षः 1 स्वर्गीय वृक्षों में से एक या इन्द्र का स्वर्ग रघु० १।७५ १७।२६ कु० २।३९, ६।४१ 2 इच्छानुरूप फल देने वाला काल्प-निक वृक्ष कामना पूरी करने वाला वृक्ष —नाकस्य कल्प-द्रुमतां विहाय जातं तमात्मन्यसिपत्रवृक्षम् रघु० १४।४८, नै० १।१५ 3 (आलं०) अत्यन्त उदार पुरुष —सकलार्थिसार्थकल्पद्रुमः -पंच० १ —पालः शराब बेचने वाला —लता, —लतिका 1 इन्द्र की नन्दन कानन की लता भर्तृ० १।९० 2 सब प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली लता ... भर्तृ० २।४१, दे० ऊ० 'कल्पतरु' से, —सूत्रम् सूत्रों के रूप में यज्ञ-पद्धति।

कल्पक [कृप्+ण्वुल्] 1 संस्कार 2 नाई।

कल्पनम् [कृप्+ल्युट्] 1 रूप देना, बनाना, व्यवस्थित करना 2 सम्पादन करना, करना, कार्यान्वित करना 3 छंटाई करना, काटना 4 स्थिर करना 5 सजावट के लिए एक दूसरी पर रक्खी हुई वस्तु —ना 1 बनाना, स्थिर करना —अनेकपितृकाणां तु पितृतो भागकल्पना -याज्ञ० २।१२० २४७ मनु० ९।११६ 2 बनाना, अनुष्ठान करना, करना 3 रूप देना, व्यवस्थित करना मृच्छ० ३।१४ 4 सजाना, विभू-षित करना 5 सज्जन 6 आविष्कार 7 कल्पना विचार कल्पनापोढ सिद्धा० =कल्पनाया अपोढ 8 विचार उत्प्रेक्षा, प्रतिमा (मन में कल्पना की हुई) सा० २।७ 9 बनावट मिथ्या रचना 10 जाल-साजी 11 कपट-प्रबंध कूटयुक्ति 12 (मीमा० द० में)=अर्थापत्ति।

कल्पनी [कल्पन + ङीप्] कैंची।

कल्पित (वि०) [कृप्+णिच्+क्त] व्यवस्थित, निर्मित, तरतीब बना हुआ दे० क्लृप् (प्रेर०)।

कल्मष (वि०) [कर्म कुत्सितं स्यति नाशयति -पृषो० साधु] 1 पापी, दुष्ट 2 मलिन मैला —षः, —षम् 1 मैल गन्दगी उच्छिष्ट 2 पाप न हि गगन-विहारी कल्मषध्वंसकारी हि० १।२१ भग० ४।३०, ५।१६, मनु० ४।२६०, १२।१८, २२।

कल्माष (वि०) (स्त्री०—षी) [कलयति, कल्+क्विप्, तं माषयति अभिभवति माष्+णिच्+अच्, कल भाषी माषवत् कर्म० स०] 1 रंगबिरंगा चित्ती-दार, काला और सफेद,—षः 1 चितकबरा रंग

2 काले और सफेद का मिश्रण 3 पिशाच, भूत,—ली यमुना नदी। सम०—कण्ठः शिव की उपाधि।

कल्य (वि०) [कल्+यत्] 1 स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त —सर्व कल्ये वयसि यतते लब्धुमर्थान्कुटुम्बी—विक्रम० ३ माल० १।२८, यावदेव भवेत्कल्यः तावच्छ्रेयः समाचरेत् —महा० 2 तत्पर सुसज्जित—कल्यस्त्वं कथामेतां कस्या स्म श्रवणे तव महा० 3 चतुर 4 रुचिकर मङ्गलमय (जैसा कि प्रवचन) 5 बहरा और गूंगा 6 शिक्षाप्रद, —ल्यम् 1 प्रभात की फटना 2 आने वाला कल 3 मादक शराब 4 बधाई, मंगल कामना 5 शुभ समाचार। सम०—आशः —जग्धिः (स्त्री०) सवेरे का भोजन कलेवा—पालः, पालकः कलवार शराब खींचने वाला —वर्तः सवेरे का भोजन कलेवा (र्तम्) (अन्) कोई भी हल्की चीज तुच्छ या महत्त्वहीन, मामूली —ननु कल्यवर्तमेतत् मृच्छ० २ क्षुद्र वस्तु —तीक्ष्ण्यवर्तस्य कारणेन ४, स इदानीं मर्त्यकल्यवर्तस्य कारणाद्विहसकार्यं करोति ९।

कल्या [कल्याणं भावयति कल+णिच्+यत्+टाप्] 1 मादक शराब 2 बधाई। सम०—पालः,—पालकः शराब खींचने वाला कलवार।

कल्याण (वि०) (स्त्री० —णा,—णी) [कल्ये प्रातः अण्यते शब्दाते अण् घञ्] 1 आनन्ददायक, सुखकर सौभाग्यशाली भाग्यवान्—त्वयैव कल्याणि तयोस्तु नीया रघु० ६।२९ मेघ० १०९ 2 सुन्दर रुचिकर, मनोहर 3 श्रेष्ठ गौरवयुक्त 4 शुभ, क्षेमस्कर मंगलप्रद भद्र—कल्याणानां त्वमसि महतां भाजनं विश्वमूर्ते मा० १।३, —णम् 1 अच्छा भाग्य आनन्द भलाई समृद्धि कल्याण कुशल—जनस्य मनःप्रियाणि दुर्लभानि हि० १।१८८, तदस्य कल्याणपरम्पराणां भोक्तारमूर्जस्वलमात्मदेहम रघु० २।५० १०।१ मनु० ३।६० इसी प्रकार अभिनिवेशी —का० १०४ 2 गुण 3 उत्सव 4 सोना 5 स्वर्ग। सम० —कृत् (वि०) 1 सुखकर लाभदायक हितकर भग० ६। ४० 2 मङ्गलप्रद भाग्यशाली 3 गुणी, —वचनम् (वि०) शुभसम्पन्न— वचनम् मित्रवत् भाषण शुभ कामना।

कल्याणक (वि०) (स्त्री०—णिका) [कल्याण+कन्] शुभ, समृद्धिशाली आनन्ददायक।

कल्याणिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [कल्याण+इनि] 1 प्रसन्न समृद्धिशाली 2 सौभाग्यशाली, भाग्यवान् आनन्ददायक 3 मंगलप्रद शुभ।

कल्याणी [कल्याण+ङीप्] गाय रघु० १।८७।

कल्ल (वि०) [कल्ल+अच्] बहरा।

कल्लोल [कल्ल+ओलच्] 1 बड़ी लहर ऊर्मि आपूकल्लोलकल्लोल भर्तृ० ३।८३ कल्लोलमालाकुलम् भामि० १।५९ 2 शत्रु 3 हर्ष प्रसन्नता।

कल्लोलिनी [कल्लोल+इनि+ङीप्] नदी—त्वल्लोकनकल्लोलिनि त्वं पाप तिरयाद्रुना मम भवसागरतीरधारमन —गङ्गा० ५०, इसी प्रकार—विपुलपुलिना कल्लोलिन्य।

कव् (भ्वा० आ०—कवते, कवित) 1 स्तुति करना 2 वर्णन करना, (कविता) रचना करना 3 चित्रण करना चित्र बनाना।

कवकः [कव्+अच्+कन्] मुट्ठीभर,—कम् कुकुरमुत्ता विड्जानि कवकानि च याज्ञ० १।१७१, मनु० ५। ५ ६।१४।

कवचः, —चम् [कु+अच्] 1 कवच, जिरह बख्तर, वर्म रक्षाकवच तावीज रहस्यपूर्ण अक्षर (हुं हूं) जो कि रक्षाकवच की भांति प्रारक्षक समझे जाते हैं 3 बड़ा ताशा। सम०—पत्रः भोजपत्र का पेड़, पाकर का वृक्ष —हर (वि०) 1 कवचधारी 2 कवच धारण करने योग्य आयु का कवचहर कुमार —पा० ३।२। १० पर सिद्धा० तु० वर्महर – रघु० ८।९४।

कवाटी [कु+वटन्+ङीप्] दरवाजे का पल्ला या पल्ला।

कव (ब) र (वि०) (स्त्री०—रा, —री) [कु+वरच्] 1 मिश्रित अन्तमिश्रित शि० ५।१९ 2 खचित जटित जड़ा हुआ 3. चितकबरा रंगबिरंगा —रः,—रम् 1 नमक 2 खटाई, अम्लता —रः चोटी जूड़ा।

कव (ब) री [कवर+ङीप्] चोटी, जूड़ा—इयती विलोल कवरीकमाननम् —उत्तर० ३।४, शि० ९।२८ अमरु ५।१९। सम०—भरः भारः गुंथी हुई चोटी– वटब अवने कांचीमच जटा कवरीभरम् गीत० १२।

कवलः, —लम् [केन जलेन बलते चलति—बल्+अच् तारा०] 1 मुट्ठीभर—आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानाम् — रघु० २।५ ९।५९ कवलपङ्क्तिषु सम्पादिता—उत्तर० ३।१६।

कवलित (वि०) [कवल+इतच्] 1 खाया हुआ निगला हुआ (मुट्ठीभर) 2 चबाया हुआ 3 (अन) लिया हुआ पकड़ा हुआ—जैसा कि मृत्युना कवलित।

कवाट [कवं शब्दम् अटति, कु+अप् अट्+अच्] दे० कपाट।

कवि (वि०) [कु+इ] 1 सर्वज्ञ भग० ८।९ मनु० ४।२४ 2 प्रतिभाशाली, चतुर बुद्धिमान 3 विचारवान् विचारशील 4 प्रशंसनीय, —वि 1 बुद्धिमान पुरुष विचारक ऋषि—कवीनामुशना कविः भग० १०। ३७ मनु० ७।४९ २।१५१ 2 काव्यकार—तद् बुद्धि रामचरित आद्य कविरसि—उत्तर० २ मन्द कवियशःप्रार्थी—रघु० १।३ इह कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे उत्तर० १।१ शि० २।८६ 3 असुरों के आचार्य शुक्र की उपाधि 4 वाल्मीकि आदिकवि 5 ब्रह्म 6 सूर्य (स्त्री०) लगाम का दहाना —दे० कवी।

का। सम० —ज्येष्ठः आदिकवि वाल्मीकि की उपाधि, —पुत्रः शुक्राचार्य की उपाधि, —राजः 1 महाकवि —(श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालंकारहीरः सुतम् यह वाक्य नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में पाया जाता है) 2 कवि का नाम, 'राघवपाण्डवीय' नामक काव्य का रचयिता —रामायणः वाल्मीकि की उपाधि।

कविकः,—का [कवि+कन्, स्त्रियां टाप् च] लगाम का दहाना।

कविता [कवि+तल्+टाप्] काव्य —सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् भर्तृ० २।२१।

कवि (वी) यम् [कवि+छ] लगाम का दहाना।

कवोष्ण (वि०) [कुत्सितम् ईषत् उष्णम् कर्म० स०, को कवादेशः] कुछ थोड़ा गर्म, गुनगुना- रघु० १।८७, ८४।

कव्यम् [कूयते हूयते पितृभ्यः यत् अन्नादिकम् कु+यत्। (विप० हव्यम्) मृत पितरों के लिए अन्न की आहुति, —हव्यं च प्रथमं कल्पः प्रदाने हव्यकव्ययोः — मनु० ३।१४७, ९७, १२८, —व्याः पितरों का समूह। सम० —वाह् (पुं०), —वाहः, —वाहनः अग्नि।

कशः [कश्+अच्] कोड़ा (प्रायः बहुवचनान्त), —शा चाबुक —इदानीं सुकुमारेऽस्मिन् निःशङ्कं कर्कशाः कशाः, तव गात्रे पतिष्यन्ति सहास्माकं मनोरथैः। मृच्छ० ९।१५ (यहाँ कशा शब्द स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में हो सकता है) 2. कोड़े लगाना 3 डोरी, रस्सी।

कशिपुः (पुं० या नपुं०) [कशति दुःखं कश्यते वा, मृगय्यादित्वात् निपातनात् साधुः] 1. चटाई 2. तकिया 3 बिस्तरा, —पुः 1. भोजन 2 वस्त्र 3. भोजन-वस्त्र (विश्वकोश के अनुसार)।

कशे (से) रु (पुं०, नपुं०) [के देहे शीर्यते, कं जलं वा शृणाति, क+शॄ+उ, एरुआदेश, कश्+एरु वा] 1. रीढ़ की हड्डी 2. एक प्रकार का घास।

कश्मल (वि०) [कश्+कल, मुट्] मैला, गन्दा, अकीर्तिकर, [illegible] —उत्तर० १।४२, —लम् मन की खिन्नता, उदासी, अवसाद —कश्मलं महदाविशत् —महा०, कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् —भग० २।२ 2. पाप 3. मूर्छा।

कश्मीर (ब० व०) [कश्+ईरन्, मुट्] एक देश का नाम, वर्तमान कश्मीर (तन्त्र ग्रन्थों में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—शारदामठमारभ्य कुंकुमाद्रितटान्तकः, तावत्कश्मीरदेशः स्यात् पंचाशद्योजनात्मकः) सम० —जः, —जम्, —जन्मन् (पुं० नपुं०) केसर, जाफ़रान —कश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या —भामि० १।७१।

कश्य (वि०) [कशामर्हति —कशा+य] कोड़े या चाबुक लगाये जाने के योग्य —श्यम् मादक शराब।

कश्यप [कश्य+पा+क] 1 कछुवा 2 एक ऋषि, अदिति और दिति के पति, अतः देवता और राक्षस दोनों के पिता। (ब्रह्मा का पुत्र मरीचि था, मरीचि का पुत्र कश्यप हुआ। सृष्टि के कार्य में कश्यप ने बड़ा योग दिया। महाभारत तथा दूसरे ग्रंथों के अनुसार उसका विवाह अदिति तथा दक्ष की अन्य १२ पुत्रियों के साथ हुआ। अदिति से उसके द्वारा १२ आदित्यों का जन्म हुआ। अपनी दूसरी १२ पत्नियों से उसके अनन्त और विविध प्रकार की सन्तान हुई — साँप, रेंगने वाले जन्तु, पक्षी, राक्षस, चन्द्रलोक की नक्षत्रपुञ्ज तथा परियाँ। इस प्रकार वह देव, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी और सरीसृप आदिकों का अर्थात् सभी जीवधारी प्राणिमात्र का पिता था। इसी लिए उसे बहुधा प्रजापति कहा जाता है)।

कष् (भ्वा० उभ० कषति ते, कषित) 1 मसलना, खुरचना, कसना —समुत्कषन् कवनि— —सिद्धा०, भट्टि० ३।४९ 2 परीक्षा करना, जाँच करना, कसौटी पर कसना (सोना आदि) —स्वर्णहेम कषनिकषाकनक-पाषाणनिभे नमस्तस्मै —नै० २।६९ 3 चोट मारना, नष्ट करना 4 खुजाना।

कष (वि०) [कष्+अच्] 1 रगड़ने वाला, कसने वाला, —षः रगड़ कसना 2 कसौटी— स्वर्णहेम कषनिकषाकनक-पाषाणनिभे नमस्तस्मै —नै० २।६९, मृच्छ० ३।१७।

कषणम् [कष्+ल्युट्] रगड़ना, चिह्नित करना, खुरचना —कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकषणोत्कम्पेन सम्पातिभिः —उत्तर० २।९, कषणकम्पनिरस्तमहाहिभिः —कि० ५।४७ 2 कसौटी पर कस कर सोने को परखना।

कषा=कशा।

कषाय (वि०) [कषति कण्ठम् —कष्+आय] 1. कसैला —सु० २ 2. सुगंधित —स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः —मेघ० ३१, उत्तर० २।२१ महावी० ५।४१ 3. लाल, गहरा लाल —चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः —कु० ३।३२ 4. (अतः) मधुर-स्वर वाला —शि० ७ 5. भूरा, 6. अनुपयुक्त, मैला —यः, —यम् 1. कसैला स्वाद या रस (६ रसों में से एक) दे० रस् 2. लाल रंग 3. एक काढ़ा औषधि, चार आठ या १६ भाग पानी में मिलाकर बनाया हुआ (रस को मिलाकर उबालना जब तक कि चौथाई न रह जाय), काढ़ा —मनु ११।१५४ 4. लेप करना, पोतना —कु० ७।१७, धूपना 5 उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करना —ऋतु० १।४ 6. गोंद, राल, वृक्ष का निःस्राव 7. मैल, अस्वच्छता 8. मन्दता, जड़ता 9. सांसारिक

विषयों में आसक्ति, —यः 1 आवेश, संवेग 2. कलियुग।

कषायित (वि०) [कषाय+इतच्] 1 हलके रंग वाला, लाल रंग का, रंगीन—अमुनैव कषायितस्तनी—कु० ४।३४, शि० ७।११ 2 ग्रस्त।

कषि (वि०) [कषति हिनस्ति कष्+इ] हानिकारक, अनिष्टकर, पीडाकर।

कशे (से) रुका [कष् (स)+एरक्, उत्वम्, कन्—टाप्] रीढ़ की हड्डी मेरुदण्ड।

कष्ट (वि०) [कष्+क्त] 1 बुरा, अनिष्टकर, रोगी, ग्रस्त—गाम्भीर्यमनुप्राप्य कष्टात् कष्टतरं गता—रघु० १५।४३, अर्थात् अधिक बुरी अवस्था हो गई (बुरे से बदतर हो गई) 2 पीडामय, संतापकारी—मादृशामप्यकष्टतरं पदमा... कु० १४।५६ कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः—रत्न० १, चिन्ताओं से भरा हुआ—मनु० ७।५०, याज्ञ० ३।२९ कष्टा वृत्तिः पराधीना कष्टो वासो निराश्रयः निर्धनो व्यवसायश्च सर्वकष्टा दरिद्रता। चाण० ९१ 3 कठिन—अर्थोऽपि कष्टोऽधिकारः—विक्रम० ३।१ 4 दुर्धर्ष (शत्रु की भांति) मनु० ७।१८६, २१० 5 अनिष्टकर, पीडाकर, हानिकर 6 गर्हित —ष्टम् 1 बुराई, कठिनाई, संकट, व्यथा, यन्त्रणा पीडा—कष्टं खल्वनपत्यता—श० ६ निर्गतां कष्टमयथा—पंच० १।१९६ 2 पाप दुष्टता 3 कठिनाई, प्रयास, कष्टेन किसी न किसी प्रकार, —ष्टम् (अव्य०) हाय!—हा धिक् कष्टं, हा कष्टं जरयाभिभूतपुरुषः पुत्रैरवज्ञायते पंच० ४।७८, सम० —आगत (वि०) कठिनाई से आया हुआ पहुँचा हुआ, —कर (वि०) पीडाकर, दुखदायी—तपस् (वि०) घोर तपस्या करने वाला श० ७, —साध्य कठिनाई से पूरा किए जाने के योग्य —स्थानम् बुरा स्थान, अरुचिकर या कठिन जगह।

कष्टिः (स्त्री०) [कष्+क्तिन्] 1 परख जाँच 2 पीडा, कष्ट।

कस् i (भ्वा० पर० कसति कसित) हिलना जुलना आना, पहुँचना, निस् (प्रेर०) 1 निकालना, बाहर खींचना 2 खोलना, बाहर हाँक देना निर्वासित करना निष्कासन करना निरकासयद्रविमपेतवसुं वियदालयादपरदिग्गणिका शि० ९।१० येनाहं जीवलोकान्निष्कासयिष्ये मुद्रा० ६ प्र०, खोलना, प्रसार करना—घनमुक्ताकुसुमप्रकाशितं (कुसुमं)—घट० १९ वि—, खुलना, प्रसन्न होना (आल० भी) विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकम्—मा० १।२८ शि० ९।४७, ८२ कु० ७।५५ निमज्जुदिव विकसन् भर्तृ० २।७८ (प्रेर०) खोलना, प्रसार करना—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् भर्तृ० २।७३, शि० १५। १२, अमरु ८४।

ii (अदा० आ०—कस्ते, कंस्ते) 1. जाना 2. नष्ट करना।

कस्तु (स्तू) रिका, कस्तूरी [कसति गन्धोऽस्याः—कस्+ऊर्+ङीष्, सुट्, कन्+टाप् ह्रस्व] मुश्क, कस्तूरी—कस्तूरिकातिलकमालि विधाय सायम्—भामि० २।४, १।१२१, चौर० ७। सम० —मृगः कस्तूरीमृग—(वह हरिण जिसकी नाभि से कस्तूरी नामक सुगन्धित द्रव्य निकलता है)।

कह्लारम् [के जले ह्लादते—क+ह्लाद्+अच् पृषो० दस्य र] श्वेत कमल कह्लारपद्मकुसुमानि मुहुर्विधुन्वन्—ऋतु० ३।१५।

कह्व [के जले ह्वयति आह्वयते स्पर्धते वा—क+ह्वे+क] एक प्रकार का सारस।

कांसीकम् [कंसाय पानपात्राय हितम्—कंस+छ+कन्] कांसा।

कांस्य (वि०) [कंसाय पानपात्राय हितं कंसीयं तस्य विकारः यञ्, छलोप] कांसे या कस्त का बना हुआ मनु० ४।५, —स्यम् 1 कांसा या कस्त—मनु० ५।११४, याज्ञ० १।१९० 2 कांसे का बना घड़ियाल —... —स्यम् जल पीने का बर्तन (पीतल का) प्याला शि० १५।८१। सम० —कारः (स्त्री० —री) कसेरा, ठठेरा —ताल झाँझ, करताल —भाजनम् पीतल का बर्तन, —मलम् ताम्रमल, तांबे का जंग।

काक [कै+कन्] 1 कौवा—काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते पंच० १।२४ 2 (आल०) घृणित व्यक्ति नीच और ढीठ पुरुष 3 लंगड़ा आदमी 4 केवल सिर को भिगोकर स्नान करना (जैसा कि कौवे करते हैं) —की कौवी —कम् कौवों का समूह। सम० —अक्षिगोलकन्याय दे० न्याय के नीचे —अरि उल्लू, —उदरः साँप काकोदरो येन विनीतदर्पः —कविराज —उलूकिका, —उलूकीयम्, कौवे और उल्लू की नैसर्गिक शत्रुता (पंचतंत्र के तीसरे तंत्र का नाम है), —चिञ्चा गुञ्जा का पौधा (रत्ती) —छदः, —छदिः खञ्जनपक्षी 2 ... —दे० काकपक्ष —जात कोयल —तालीय (वि०) जो बात अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से हो घटना अहो नु खलु भो तदेतत् काकतालीयं नाम मा० ५, काकतालीयवदुपगतम् दृष्ट्वापि निधानकं कि० प्र० ३५ कभी कभी कितने वृत्तान्त अकस्मात् होकर संयोग से अर्थ को प्रकट करता है, अस्ति काकतालीयतेयं प्राक्तन विपाकम् वेणी० २।१४, —न्यायः दे० न्याय के नीचे —तालुकिन् (वि०) घृणित, निन्द्य, —दन्तः (शा०) कौवे का दाँत (आल०) असम्भव बात जिसका अस्तित्व न हो —गवेषणम् असंभव बातों की खोज करना। सार्थ और

अनायासकर कार्यों के संबंध में कहा जाता है),—ग्रन्थिः बाडवानल,—निद्रा हल्की नींद या झपकी जो आसानी से टूट जाय,—पक्षः,—पक्षकः (विशेष कर क्षत्रियों के) बालकों और तरुणों की कनपटियों के लंबे बाल या जुल्फें—काकपक्षधरमेत्य याचित:—रघु० ११।१, ३१, ४२, ३।२८, उत्तर० १,—पदम् हस्तलिखित पुस्तक या लेखों में चिह्न (^) जो यह प्रकट करता है कि यहाँ कुछ छूट गया है,—पदः रतिबंध की एक विशेष रीति,—पुच्छः,—पुष्टः कोयल,—पेय (वि०) छिछला—काकपेया नदी—सिद्धा०, -भीरुः उल्लू,—मद्गुः जलकुक्कुट —यवः अन्न का वह पौधा जिसकी बाल में दाने न हों यथा काकयवा प्रोक्ता यथारण्यभवास्तिला, नामधारा न सिद्धौ हि धनहीनास्तथा नरा । पंच० २।८६,—रुतम् कौवे की कर्कश ध्वनि (कांव कांव) जिससे परिस्थिति के अनुसार भावी शुभाशुभ का ज्ञान होता है—शि० ६।७६,—वन्ध्या ऐसी स्त्री जिसके एक पुत्र होने के पश्चात् फिर कोई सन्तान न हो,—स्वरः कर्कश ध्वनि (जैसे कि कौवे की कांव कांव) ।

काकणि(क)क (वि०) 1. डरपोक, कायर 2 नंगा 3 गरीब, दरिद्र, —कः 1 औरत का गुलाम, पत्नीभक्त 2 (स्त्री०—की) 2. उल्लू 3 धोखेबाज़, धोखा, चौकन्ना ।

काक (का) लः [का इत्यव्यक्तं कलो यस्य ब० स०] पहाड़ी कौवा,—लम् कंठमणि ।

काकलिः,—ली (स्त्री०) [कल्+इन्=कलि, कु ईषत् कलिः, कोः कादेशः, स्त्रियां ङीष् च] 1 मन्द मधुर स्वर—अनुकलमुग्धकाकलीविहितम्—उत्तर० ३, ऋतु० १।८ 2 एक प्रकार का मन्द स्वर का बाजा जिसके द्वारा चोर यह पता लगाते हैं कि लोग सोये हैं या नहीं—फणिमुखकाकलीसदंशक ... प्रभृत्यनेकोपकरणयुक्त: दश० ४९ 3 कैंची 4 घुंघची का पौधा । सम०—रवः कोयल ।

काकिणी, काकिणिका [कक्+णिनि+ङीप्=काकिणी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 सिक्के के रूप में प्रयुक्त होने वाली कौड़ी 2 एक सिक्का जो २० कौड़ी या चौथाई पण के बराबर होता है 3 चौथाई माशे के बराबर वजन 4 माप का एक अंश 5 तराज़ू की डंडी 6 हस्त (एक प्राचीन माप जिसकी लम्बाई एक हाथ के बराबर होती है) ।

काकिनी (स्त्री०) [कक्+णिनि+ङीप्] 1. पण का चौथाई 2 माप का चौथाई 3 कौड़ी—हि० १।१२३ ।

काकुः (स्त्री०) [कक्+उण्] 1 भय, शोक, क्रोध आदि संवेगों के कारण स्वर में परिवर्तन—भिन्नकण्ठध्वनिर्धीरैः काकुरित्यभिधीयते—सा० द०, अलीककाकुकर्कुलता—का० २२२ (अत्र) 2 निषेधात्मक शब्द जो इस ढंग से प्रयुक्त किया जाय कि विरुद्ध (स्वीकारात्मक) अर्थ को प्रकट करे (इस प्रकार के अवसरों पर स्वर की विकृति से ही अभीष्ट अर्थ प्रकट किया जाता है) 3 गुनगुनाना, गुनगुनाना 4 जिह्वा ।

काकुत्स्थः [ककुत्स्थ+अण्] ककुत्स्थवंशी, सूर्यवंशी राजाओं की उपाधि, काकुत्स्थमालोकयतां नृपाणाम्—रघु० ६।२ १२।३०, ४६, दे० 'ककुत्स्थ' ।

काकुदम् [काकु ध्वनिभेदं ददाति - काकु+दा+क] तालु ।

काकोलः [कक्+णिच्+ओल] 1 पहाड़ी कौवा - याज्ञ० १।१७४ 2. सांप 3 सूअर 4 कुम्हार 5 नरक का एक भाग याज्ञ० ३।२२३ ।

काक्ष. [कुत्सितम् अक्ष यत्र - कोः कादेशः] तिरछी चितवन, कनखियों से देखना, -क्षम् त्योरी चढ़ाना, अप्रसन्नता की दृष्टि, द्वेषपूर्ण निगाह—काक्षेणाभावरोकित बहृटि० ५।२८ ।

काग: (पु०) कौवा, तु० 'काक' ।

काङ्क्ष् (भ्वा० पर० (महाकाव्यों में आ०भी) - काङ्क्षति काङ्क्षित) 1 कामना करना चाहना, लालायित होना—अन्काङ्क्षति गर्भोभिरम्यमुग्धकर्णानिर्जलनवस्वाम्बयी —ऋ० ७।१२, न शोचति न काङ्क्षति भग० १२।१७ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण—१।३२ रघु० १२।५८, मनु० २।२४८ 2 प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, अभिलाषायित होना, कामना करना, अभि—,1 चाहना, लालसा करना, कामना करना,—प्रत्याक्रमस्व रिपुराचकाङ्क्ष- रघु० ७।४७, ५।१८, मनु० २।१६२ मेघ० ११, याज्ञ० १।१५३ 2. अपेक्षा करना आवश्यकता होना,—प्रत्या—,पास में रहना, सेवा में उपस्थित रहना वि—कामना करना, चाहना लालसा करना, सम्—कामना करना, चाहना ।

काङ्क्षा [काङ्क्ष्+अ+टाप्] 1 कामना, इच्छा 2 रुचि, अभिलाषा जैसा कि 'भक्तकाङ्क्षा' में ।

काङ्क्षिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [काङ्क्ष्+णिनि] कामना करने वाला, इच्छुक, इच्छुक, उत्सुक आदि—भग० ११।५२ ।

काच [कच्+घञ्] 1 शीशा, स्फटिक—काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम् हि० प्र० ४४, काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया—शा० १।१३ 2 छंका, लटकता हुआ (बहँगी का) तख्ता, कुएँ से बंधी हुई रस्सी जो बोझ की सहार से 3 आंख का एक रोग, आंख की नाड़ी का रोग जिससे दृष्टि धुंधली हो जाय । सम० - घटी शीशे की झारी या जग, -भाजनम् शीशे का पात्र, —मणिः स्फटिक, बिल्लौर,—मलम्,—लवणम्,—सौवर्चलम् काला नमक या सोंचर ।

काचनम्, काचनकम् [कच् + णिच् + ल्युट्, कन् च] डोरी या फीता जिससे कागजों का बण्डल या हस्तलिखित पत्र बाँधे जाते हैं, तु० कचेल ।

काचनकिन् (पुं०) [काचनक + इनि] हस्तलिखित ग्रन्थ लेख ।

काचूकः [कच् + ऊकञ्, बा०] 1 मुर्गा 2 चकवा ।

काजलम् [ईषत् कुत्सितं जलम् का कादेश] 1 थोड़ा पानी 2 स्वादहीन पानी ।

काञ्चन (वि०) (स्त्री० नी) [काञ्च् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] सुनहरी, सोने का बना हुआ — तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टिः — मेघ० ७९ काञ्चनवलयम् श० ६, मनु० ५।११२, —नम् 1 सोना — (प्राणम्) अमेध्यादपि काञ्चनम् मनु० २।२३९ 2 प्रभा, दीप्ति 3 सम्पत्ति, धन-दौलत 4 कमल-तन्तु, —नः 1 धतूरे का पौधा 2 नागकेसर का पौधा । सम० —अङ्गी सुनहरी रंगरूप की स्त्री, —आदिः, —गिरिः सोने का पहाड़, मेरु नामक पहाड़, —भूः (स्त्री०) 1 सुनहरी (पीली) भूमि 2 स्वर्ण रज, —सन्धिः शर्तों के आधार पर की गई सुलह । तु० हि० ४।११३ ।

काञ्चनारः (रः) [काञ्चन + ऋ + अण्] कचनार का पेड़ ।

काञ्चि, —ची (स्त्री०) [काञ्च् + इन्, काञ्चि ङीप्] स्त्री की (छोटे २ घुंघरुओं युक्त) मेखला या करधनी — पर्याप्तपुष्पस्तबकस्तनाभ्यः… काञ्चीगुणस्थानमनिन्दितायाः कु० १।३७, ३।५५, मेघ० २८, शि० ९।३०, रघु० ६।४३ 2 दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जो हिन्दुओं का एक पावन नगर समझा जाता है (सात नगरों के नामों के लिए दे० अवन्ति) । सम० —पुरी, —नगरी 1 कांची (नगर) 2 —पदम् कूल्हा, नितम्ब ।

काञ्जिकम्, काञ्जिका [कुत्सिका अञ्जिका प्रकाशो यस्य — कु + अञ्ज + ण्वुल् + टाप् कुशब्द को कादेश] खटास से युक्त एक प्रकार का पेय, काँजी ।

काटुकम् [कटुकस्य भावः अण्] खटास, अम्लता ।

काठ [कठ् + घञ्] चट्टान, पत्थर ।

काठिन्यम्, —न्यम् [कठिन + ष्यञ् बा०] 1 कठोरता, कड़ापन — काठिन्यमुक्तस्तनम् श० ३।११ 2 निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता ।

काण (वि०) [कण् + घञ्] 1 एक आँख वाला, काणा — काणेन चक्षुषा किं वा हि० प्र० १२, मनु० ३।१५५ 2 छिद्रवाला, फटा हुआ (जैसे कि कौड़ी) — प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम् भर्तृ० ३।४, फूटी कौड़ी ।

काणेय, —र [काणा + ढक्, ढ्रक् वा] कानी स्त्री का पुत्र ।

काणेली [काण + इल् + अच् + ङीप्] 1 असती या व्यभिचारिणी स्त्री 2 अविवाहिता स्त्री । सम० —मातृ (पुं०) अविवाहिता माता का पुत्र, हरामी (तिरस्कारसूचक शब्द जो केवल सम्बोधन में प्रयुक्त होता है) — काणेलीमातः अपि किंचिच्चिन्तयसि मदुपकारम् — मृच्छ० १ ।

काण्ड, —ण्डम् [कण् + ड दीर्घः] 1 अनुभाग, अंश, भाग 2 पौधे का एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक का भाग, पोरी 3 डंठल, तना, शाखा — नीलाम्भोजसमूहाभकाण्डकदलकाण्डेषु कुमार० ३।१६, अमरु ९५, मनु० १।४६, ४८ 4 ग्रन्थ का भाग, जैसे कि किसी पुस्तक का अध्याय, जैसे रामायण के सात काण्ड 5 एक पृथक् विभाग या विषय, उदा० ज्ञान°, कर्म° आदि 6 गुच्छ, समूह, समुदाय 7 बाण 8 लम्बी हड्डी, भुजाओं या पैरों की हड्डी 9 बेंत, सरकण्डा 10 लकड़ी, लाठी 11 पानी 12 अवसर, मौका 13 निजी जगह 14 अवसर का बुरा उपाय । (केवल समास के अन्त में) सम० —कारः बाणों का निर्माता, —गोचरः लोहे का बाण, —पटः, —पटकः कनात, परदा शि० ५।२२, —पातः तीर की मार, बाण का परास, —पृष्ठः 1 शस्त्रजीवी सैनिक 2 वेश्या स्त्री का पति 3 दत्तक पुत्र, औरस से भिन्न कोई अन्य पुत्र 4 तिरस्कार सूचक शब्द, अपने कुल धर्म को त्याग कर अपने व्यवसाय को कलङ्क लगाने वाला कमीना मनुष्य, महावी० ३ में रामानन्द ने ब्राह्मणत्व को 'काण्डपृष्ठ' नाम से सम्बोधित किया है (स्वकुलं पृष्ठतः कृत्वा यो वै परकुलं व्रजेत्, तेन दुश्चरिताचारी काण्डपृष्ठः स उच्यते) —भङ्गः किसी अंग या हड्डी का टूटना, —वीणा बांसुरी की बीणा, —सन्धिः ग्रन्थि, जोड़ (जैसे कि पौधे की कलम लगाना) —स्पृष्टः शस्त्रजीवी योद्धा सैनिक ।

काण्डवत् (पुं०) [काण्ड + मतुप् मस्य वः] धनुर्धारी ।

काण्डीर [काण्ड + ईरन्] धनुर्धारी (कई अवसरों पर यह शब्द काण्डपृष्ठ शब्द की तरह तिरस्कार सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है तु० महावी० ३) ।

काण्डोल [काण्ड + ओल + अच्] नरकुल की बनी टोकरी दे० कण्डोल ।

कात् (अव्य०) [कुत्सितम् अतति अनेन कु + अत् + क्विप् कु० कादेश] तिरस्कार सूचक उद्गार, —कृ के साथ कात्कृ अपमानित करना, तिरस्कार करना — अस्मदैश्वर्यमत्तेन गुरुः सदसि कात्कृतः भाग० ।

कातर (वि०) [ईषत् तरति स्वकार्यसिद्धिं गच्छति तृ + अच् को कादेश, तारा०] 1 कायर, डरपोक, हतोत्साह — धर्मपत्नि च कातरान् मनु० ४।४२, अमरु ७ १०, ७५, रघु० ११।७८, मेघ० ७७ 2 दुःखी, शोकान्वित, भयभीत — किमेवं कातरासि श० ४

3 विक्षुब्ध, विस्मित, उद्विग्न—भर्तृ० १।६० 4 भय के कारण कांपने वाला (जैसे आँख का फरकना) रघु० २।५२, अमरु ७९।

कातर्यम् [कातर+ष्यञ्] कायरता, कातर्यं केवला नीतिः शौर्यं श्वापदचेष्टितम्—रघु० १७।४७।

कात्यायन [कतस्य गोत्रापत्यम् कत+यञ्+फक्] 1 एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिसने पाणिनि के सूत्रों पर अनुपूरक वार्तिक लिखे हैं 2 एक ऋषि जिसने श्रौतसूत्र व गृह्य सूत्र की रचना की है—याज्ञ० १।४।

कात्यायनी [कात्यायन+ङीप्] 1 एक प्रौढ़ा या अधेड़ विधवा (जिसने लाल वस्त्र पहने हुए हों) 2 पार्वती। सम०—सुत,—पुत्र कार्तिकेय।

काथञ्चित्क (वि०) (स्त्री०—की) [कथंचित्+ठक्] किसी न किसी प्रकार (कठिनाइयों के साथ) सम्पन्न।

काथिक [कथा+ठञ्] कहानी सुनाने वाला, कहानी-लेखक कहानीकार।

कादम्ब [कदम्ब+अण्] 1 कलहंस,—रघु० १३।५५ ऋतु० ४।९ 2 बाण—शि० १८।२९ 3 ईख गन्ना 4 कदम्ब वृक्ष,—म्बम् कदम्ब वृक्ष का फूल—रघु० १३।२७।

कादम्बरम् [कादम्ब+ला+क लस्य र] कदम्ब के फूलों से खींची हुई शराब—निषेव्य मधु माधवः सरसमत्र कादम्बरम्—शि० ४।६६,—री 1 कदम्ब वृक्ष के फूलों से खींची हुई शराब 2 शराब—कादम्बरीसाक्षिकं प्रथमं सौहृदमिष्यते—श० ६ या कादम्बरीमदविघूर्णितलोचनस्य युक्तं हि लाङ्गलभृतः पतनं पृथिव्याम् उद्भट 3 मदमाते हाथी की कनपटियों से बहने वाला मद 4 सरस्वती की उपाधि विद्यादेवी 5 मादा कोयल।

कादम्बिनी (स्त्री०) [कादम्ब+इनि+ङीप्] बादलों की पंक्ति—मदीयमतिचुम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी—रस० भामि० ४।९।

कादाचित्क (वि०) (स्त्री०—त्की) [कदाचित्+ठञ्] सामयिक आकस्मिक।

काद्रवेय [कद्रोः अपत्यम्—कद्रू+ढक्] एक प्रकार का सांप।

काननम् [कन्+णिच्+ल्युट्] 1 जङ्गल बाग—रघु० १२।२०, १३।१८ मेघ० १८, ४४ काननस्थलीन जङ्गल की भूमि 2 घर मकान। सम०—अग्निः जंगली आग दावानल—ओकस् (पुं०) 1 जंगलवासी 2. बन्दर।

कानिष्ठिकम् [कनिष्ठिका+अण्] हाथ की सबसे छोटी (कानी) अंगुली।

कानिष्ठिनेय, —यी [कनिष्ठा+अपत्यार्थे ढक् इनङ् च] सबसे छोटी लड़की की सन्तान।

कानीन [कन्याया जातः—कन्या+अण् कानीन आदेश] अविवाहिता स्त्री का पुत्र कानीनः कन्यकाजातो मातामहसुतो मतः—याज्ञ० २।१२९, मनु० ९।१७२ में दी गई परिभाषा भी देखिए 2 व्यास 3 कर्ण।

कान्त (वि०) [कन् (म्)+क्त] 1 इष्ट, प्रिय, अभीष्ट, अभिमत—कान्तं वपुः वाजुषं मालवि० १, ४ 2 सुखकर, रुचिकर—भीमकान्तैर्नृपगुणैः रघु० १।१६ 3 मनोहर सुन्दर—सर्वं कान्तमात्मीयं पश्यति—श० २,—न्तः 1 प्रेमी 2 पति—कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात्किंचिदूनः—मेघ० १०० शि० १०।३, २९ 3 प्रभाकर 4 चन्द्रमा 5 वसन्त ऋतु 6 एक प्रकार का लोहा 7 रत्न (समास में सूर्य चन्द्र और अयस् के साथ), 8 कार्तिकेय की उपाधि,—न्तम् केसर, जाफ़रान। सम०—आयसम् चुम्बक अयस्कान्त।

कान्ता [कम्+क्त+टाप्] 1 प्रेमिका या लावण्यमयी स्त्री 2 गृह स्वामिनी पत्नी—कान्तासम्मितत्तया उपदेशयुजे—काव्य० १, ...—कुमार० ७।२१ मेघ० १४ शि० १०, ७३ 3 प्रियङ्गु लता 4 बड़ी इलायची 5 पृथ्वी। सम०—अङ्घ्रिदोहद अशोक वृक्ष—दे० अशोक।

कान्तार, —रम् [कान्त+ऋ+अण्] 1 विशाल बियाबान जङ्गल—गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते—पञ्च० ४।८१ भर्तृ० २।८६ याज्ञ० २।३८ 2 खराब सड़क 3 ... [illegible] ... 1 लाल रंग की ईख का गन्ना 2 ... [illegible]

कान्ति (स्त्री०) [कम्+क्तिन्] 1 मनोहरता सौन्दर्य—मेघ० १५ अक्लिष्टकान्ति—श० ... 2 चमक प्रभा दीप्ति—मेघ० ... 3 ... मनोहर ... शृङ्गार 4 कामना इच्छा ... प्रभारहीनं सौन्दर्य (सा० द० शोभा और दीप्ति से कान्ति को इस प्रकार भिन्न बताता है ... [illegible] ...) 6 मनोहर या कमनीय स्त्री 7 दुर्गा की उपाधि। सम०—कर (वि०) सौन्दर्य बढ़ाने वाला शोभा बढ़ाने वाला,—द (वि०) सौन्दर्य देने वाला आकर्षण करने वाला (—दम्) 1 ... 2 ... —दायक, —दायिन् (वि०) ... —भृत् (पुं०) चन्द्रमा।

कान्तिमत् (वि०) [कान्ति+मतुप्] मनोहर सुन्दर, प्रभायुक्त ... (पुं०) चन्द्रमा।

कान्दव [कन्दु+अण्] लोहे की कड़ाही या चूल्हे में पकी हुई कोई वस्तु।

कान्दविक (पुं०) [कान्दव+ठक्] नानबाई हलवाई।

कान्दिशीक (वि०) [का दिशं यामि इति आह—कान्दिश+ठक्] 1 डर के मारे भागने वाला, भगोड़ा—... कान्दिशीक ... रघु० ११।१२ ... भयभीत—भामि० २।१७८।

कान्यकुब्जः [कन्या कुब्जा यत्र कन्याकुब्ज + अण् पृषो० साधु] एक देश का नाम दे० 'कन्याकुब्ज'।

कापटिक (वि०) (स्त्री० की) [कपट + ठक्] 1 जाल-साज, बेईमान 2 दुष्ट, कुटिल, —कः चापलूस, चाटु-कार, पिछलग्गू।

कापटचम् [कपट + ष्यञ्] दुष्टता, जालसाजी, धोखा-देही।

कापथ [कुत्सित पन्था] खराब सड़क (शा० और आल०)

कापाल, कापालिक [कपाल + अण्, ठक् वा] शैव सम्प्र-दाय के अन्तर्गत विशिष्ट सम्प्रदाय का अनुयायी (वामाचारी) जो मनुष्य की खोपड़ियों की माला धारण करते हैं और उन्हीं में खाते पीते हैं, प्रब० ३।१२।

कापालिन् (पुं०) [कपाल + अण् + इनि] शिव।

कापिक (वि०) (स्त्री० की) [कपि + ठक्] बन्दर जैसी शक्ल सूरत का या बन्दरों की भांति व्यवहार करने वाला।

कापिल (वि०) (स्त्री० —ली) [कपिल + अण्] 1 कपिल से सम्बन्ध रखने वाला या कपिल का 2 कपिल द्वारा निर्मित या कपिल से व्युत्पन्न —लः कपिल मुनि द्वारा प्रवर्तित सांख्यदर्शन का अनुयायी 2 भूरा रंग।

कापुरुषः [कुत्सित पुरुष —को: कदादेशः] नीच, घृणित व्यक्ति, कायर, नराधम पाजी— सुसन्तुष्टः कापुरुषः स्वल्पकेनापि तुष्यति पंच० १।२५, ३६१।

कापेयम् [कपि + ढक्] 1 बन्दर की जाति का 2 बन्दर जैसा व्यवहार बन्दर जैसे दांव पेंच।

कापोत (वि०) (स्त्री० —ती) [कपोत + अण्] भूरे रंग का धूसर रंग का —तम् 1 कबूतरों का समूह 2 सुर्मे का भूरा रंग। सम० —अञ्जनम् आंखों में आंजने का सुर्मा।

काम (अव्य०) आराम देकर सुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय

कामः [कम् + घञ्] 1 कामना इच्छा —संतानकामाय रघु० २।६५, ३।६७ (प्राय: तुमुन्नन्त के साथ प्रयुक्त) गन्तुकाम जाने का इच्छुक भग० २।६२, मनु० २।९४ 2 अभीष्ट पदार्थ सर्वान् कामान् समश्नुते मनु० २।५ 3 स्नेह अनुराग 4 प्रेम या विषय भोग की इच्छा जो जीवन के चार उद्देश्यों (पुरुषार्थ) में से एक है —तु० अर्थ और धर्म काम 5 विषयों से तृप्ति की इच्छा कामुकता मनु० २।२१४ 6 कामदेव — प्रद्युम्न 8 बलराम 9 एक प्रकार का आम। —मम् 1 अभिलषित इच्छित पदार्थ 2 वीर्य धातु (हिन्दू पौराणिकता के अनुसार काम ही कामदेव है यही कृष्ण व रुक्मिणी का पुत्र है। उसकी पत्नी रति है, जिस समय देवताओं को तारक के विरुद्ध युद्ध करने के निमित्त अपनी सेनाओं के लिए सेनापति की आवश्यकता हुई तो उन्होंने कामदेव से सहायता मांगी जिससे कि शिव का ध्यान पार्वती की ओर आकृष्ट हो, यही एक बात थी जो राक्षसों का काम तमाम कर सकती थी। कामदेव ने इस बात का बीड़ा उठा लिया परन्तु शिव ने अपनी तपस्या के विघ्न से क्रुद्ध हो अपने तृतीय नेत्र की अग्नि से काम को भस्म कर दिया। उसके पश्चात् रति की प्रार्थना पर शिव ने कामदेव को प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेने की अनुमति दे दी। उसका घनिष्ठ मित्र वसन्त ऋतु और पुत्र अनिरुद्ध है, वह धनुर्बाण से सुसज्जित है—भ्रमरपंक्ति ही उसके धनुष की डोरी है—और पांच विविध पौधों के फूल ही उसके बाण हैं)। सम० —अग्निः 1. प्रेम की आग प्रबल प्रेम 2 उत्कट इच्छा, कामोन्माद, —संदीपनम् 1 कामाग्नि को प्रज्वलित करना 2 कोई कामोद्दीपक पदार्थ —अङ्कुशः 1 अंगुली का नाखून 2 पुरुष की जननेन्द्रिय लिंग —अङ्गः आम का वृक्ष, —अधिकारः प्रेम या इच्छा का प्रभाव —अधिष्ठित (वि०) प्रेम के वशीभूत, —अनलः देखो 'कामाग्नि' —अन्ध (वि०) प्रेम या कामोन्माद के कारण अन्धा, (—धः) 'कोयल', —धा कस्तूरी,— अशिन् (वि०) जब इच्छा हो तभी भोजन पाने वाला, —अधिकाम (वि०) कामुक, कामासक्त —अरण्यम् प्रमोद वन या सुहावना उद्यान, —अरिः शिव की उपाधि —अर्थिन् (वि०) प्रेमा- तुर विषयी, कामासक्त —अवतारः प्रद्युम्न —अवसायः कामोन्माद या काम का दमन वैराग्य, —अशनम् 1 जब चाहे तब भोजन करना, इच्छानुकूल खाना 2 अनियन्त्रित सुखोपभोग — आतुर (वि०) प्रेम का रोगी काम वेग के कारण रुग्ण —कामातुराणां न भयं न लज्जा —सुभा० —आत्मजः प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का विशेषण—आत्मन् (वि०) विषयी कामुक आसक्त —मनु० ७।२७ — आयुधम् 1 कामदेव का बाण 2 जननेन्द्रिय (—धः) आम का वृक्ष, —आयुः (पुं०) 1. गिद्ध 2 गरुड़,—आर्त (वि०) प्रेम का रोगी, कामाभिभूत —कामार्ता हि प्रकृति-कृपणाश्चेतनाचेतनेषु मेघ० ५,—आविष्ट (वि०) प्रेम या इच्छा के वशीभूत कामोन्मत्त कामासक्त —ईप्सु (वि०) अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करने के लिए सचेष्ट —ईश्वरः 1 कुबेर का विशेषण 2 परमात्मा —उदकम् 1 जल का ऐच्छिक तर्पण 2 विधि द्वारा विहित अधिकारियों को छोड़ कर दिवंगत मित्रों का जल से ऐच्छिक तर्पण याज्ञ० ३।४ —उन्मत्त (वि०) कामोन्माद के वशीभूत, या प्रणय रोगी - —कला काम की पत्नी रति,—कलिन् (वि०) प्रेम या

कामोन्माद के अविवेकों का अनुयायी, - कार (वि०) इच्छानुकूल काम करने वाला, अपनी कामनाओं में लिप्त रहने वाला (—रः) 1 ऐच्छिक कार्य, स्वतःस्फूर्त कर्म —मनु० ११।४१, ४५ 2 इच्छा, इच्छा का प्रभाव — मनु० ५।११,—कूटः 1 वेश्या का प्रेमी 2 वेश्यावृत्ति,—कृत् (वि०) 1 इच्छानुसार समय पर कार्य करने वाला, इच्छानुकूल कार्य करने वाला 2 इच्छा को पूरी करने वाला, (पुं०) परमात्मा —केलि (वि०) कामासक्त (लिः) 1 प्रेमी 2 संभोग —क्रीडा 1 प्रेम की रंगरेली, शृंगारी खेल 2. संभोग —ग (वि०) इच्छानुकूल जाने वाला इच्छानुसार आने जाने या कार्य करने के योग्य (—गा) असती तथा कामुक स्त्री —याज्ञ० ३।६, - गति (वि०) अभीष्ट स्थान पर जाने के योग्य — रघु० १३।७६,— गुणः 1. प्रणयोन्माद का गुण, स्नेह 2. संतृप्ति, भरपूर सुखोपभोग 3 विषय, इन्द्रियों को आकृष्ट करने वाले पदार्थ,—चर—चार (वि०) बिना किसी प्रतिबंध के स्वतंत्र रूप से घूमने वाला, इच्छानुकूल भ्रमण करने वाला—कु० १।५०, चार (वि०) अनियंत्रित प्रतिबंधरहित (—रः) 1 अनियन्त्रित गति 2 स्वतंत्र या स्वेच्छापूर्वक कार्य, स्वेच्छाचारिता - न कामचारो मयि शङ्कनीयः —रघु० १४।६२ 3 अपनी इच्छा या अभिलाषा, स्वतंत्र इच्छा, कामचारानुज्ञा सिद्धा० मनु०, २।२२० 4 विषयासक्ति 5 स्वार्थ,—चारिन् (वि०) 1 बिना किसी प्रतिबंध के घूमने वाला —मेघ० ६३ 2. कामासक्त, विषयी 3 स्वेच्छाचारी (पुं०) 1 गरुड़ 2 चिड़िया, —ज (वि०) इच्छा या कामोन्माद से उत्पन्न—मनु० ७।४६, ४७, ५० —जित् (वि०) कामोन्माद या प्रेम को जीतने वाला —रघु० ९।३३, (पुं०) 1 स्कन्द की उपाधि 2 शिव, —तालः कोयल,- द (वि०) इच्छा पूरी करने वाला प्रार्थना स्वीकार करने वाला, -दा = कामधेनु, —दर्शन (वि०) मनोहर दिखाई देने वाला —दुघ (वि०) अपनी इच्छाओं को दोहने वाला, अभीष्ट पदार्थों को देने वाला —प्रीता कामदुघा हि सा रघु० १।८० २।६३, मा० ३।११, -दुघा दुह्, (स्त्री० सब इच्छाओं को पूरा करने वाली काल्पनिक गाय भग० १०।२८, - दूती मादा कोयल, —देव प्रेम का देवता —धेनु (स्त्री०) समृद्धि की गौ, सब इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय —ध्वंसिन् (पुं०) शिव की उपाधि, --पत्नि, —पत्नी (स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति,—पाल बलराम, —प्रवेदनम् अपनी इच्छा, कामना या आशा को अभिव्यक्त करना कच्चिन्न कामप्रवेदनम् अमर०,—प्रश्न अनियन्त्रित या मुक्त प्रश्न —फल आम के वृक्ष की एक जाति,—बोधा (ब० व०) विषयोपभोग में तृप्ति,— भूः चैत्रपूर्णिमा को मनाया जाने वाला कामदेव का पर्व —मूढ - मोहित (वि०) प्रेमप्रभावित या प्रेमाकृष्ट—उत्तर० २।५, —रसः वीर्यपात,—रसिक (वि०) कामासक्त, कामार्त क्षणमपि युवा कामरसिक भर्तृ० ३।११२,—रूप (वि०) 1 इच्छानुकूल रूप धारण करने वाला, जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः मेघ० ६ 2 सुन्दर, सुहावना (—पाः) (ब० व०) बंगाल के पूर्व में स्थित एक जिला (आसाम का पश्चिमी भाग) —रघु० ४।८३, ८४,— रेखा —लेखा वेश्या, रंडी, —लता पुरुष की जननेंद्रिय, लिंग,- लोल (वि०) कामोन्मत्त, प्रेम का रोगी, - वर इच्छानुकूल चुना हुआ उपहार, —वल्लभ 1 वसन्त ऋतु 2 आम का वृक्ष (—भा) ज्योत्स्ना चाँदनी - —वश (वि०) प्रेम मुग्ध (—शः) प्रेम के वशीभूत होना, —वश्य (वि०) प्रेमासक्त —वाद (वि०) इच्छानुसार कुछ भी कहना, मनमाना कहना, —विहन्तृ (वि०) इच्छाओं का दमन करने वाला —वृत्त (वि०) विषय वासना में लिप्त, स्वेच्छाचारी व्यसनासक्त मनु० ५।१५४ —वृत्ति (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, स्वेच्छाचारी, स्वतंत्र —न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२ (स्त्री० —त्तिः) 1 मुक्त अनियंत्रित कार्य 2 मन की स्वतंत्रता —वृद्धि (स्त्री०) कामेच्छा में वृद्धि, —वृन्तम् शृंगवल्ली का फूल, —शर 1 प्रेम का बाण 2 आम का वृक्ष,—शास्त्रम् प्रेमविज्ञान रतिशास्त्र, —संयोग अभीष्ट पदार्थों की प्राप्ति —सख वसन्त ऋतु,—सू (वि०) इच्छा को पूरा करने वाला— रघु० ५।३३, —सूत्रम् वात्स्यायनमुनिकृत रतिशास्त्र, —हैतुक (वि०) बिना वास्तविक कारण के केवल इच्छामात्र से उत्पन्न भग० १६।८

कामतः (अव्य०) [काम + तसिल्] 1 स्वेच्छा से, इच्छापूर्वक 2 अपनी इच्छा से, ज्ञानपूर्वक, इरादतन, जानबूझ कर मनु० ४।१३०,—यथास्पृष्टं न कामतः याज्ञ० ३।१६८ 3 प्रेमावेश में, भावनावश, कामुकतावश मनु० ३।१७३ 4 इच्छापूर्वक, स्वतन्त्रता से, बिना किसी नियन्त्रण के।

कामन (वि०) [कम् + णिङ्+ल्युट्] कामासक्त, कामातुर, —नम् —ना कामना, —ना कामना, इच्छा।

कामनीयकम् [कमनीयस्य भावः अण्] सौन्दर्य आकर्षकता।

कामन्धमिन् (पुं०) [कामं यथेष्टं धमति - काम + ध्मा + णिनि, धमादेश मम् च निo] कसेरा, ठठेरा।

कामम् (अव्य०) [कम् + णिङ् + अम्] 1 कामना या रुचि के अनुसार, इच्छानुसार, कामकारमी 2 सहर्षतापूर्वक चाहना मुद्रा० १।२५ 3 मन भर कर उत्तर०

११६ 4 इच्छापूर्वक, प्रसन्नता के साथ — शा० ४।४ 5 अच्छा बहुत अच्छा (स्वीकृतिबोधक अव्यय) ऐसा हो सकता है कि मनागनभ्यावृत्त्या वा काम क्षाम्यतु य क्षमी शि० २।४३ 6 मान लिया (कि) यह सच है कि निःसन्देह (प्राय इसके पश्चात् तु तथापि का प्रयोग होता है) काम न तिष्ठति मदाननसम्मुखी सा भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्या: श० १।३१, ४।१, रघु० ३।७३ ६।४४ ९।३५ मा० ९।३४ 7 यद्यपि यद्यपि के अर्थ में रघु० २।४३ (बहुधा अनिच्छा या विराग निर्दिष्ट करता है) 8 अधिक अच्छा चाहे न न के साथ) — काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् - मनु० ९।८९

कामयमान, कामयान, कामयितृ (वि०) [कम् णिङ् शानच् [illegible] कामुक रघु० [illegible] श० [illegible]

कामल (वि०) [कम णिङ् - कलच्] कामासक्त कामुक [illegible] 1 वसन्त ऋतु 2 मरुस्थल ।

कामलिका [कमल + क + टाप् इत्वम्] मादक मदिरा ।

कामवत् (वि०) [काम मतुप् मस्य वत्वम्] 1 इच्छुक चाहने वाला 2. कामासक्त ।

कामिन् (वि०) (स्त्री० नी) [कम + णिनि] 1 कामासक्त 2 इच्छुक 3 प्रेमी प्रिय (पुं०) 1 प्रेम करने वाला कामुक (स्त्रियों की ओर विशेष ध्यान देने वाला) त्वया चन्द्रमसा चातिसंधीयते कामिजनसार्थः श० 3 [illegible] कामिनी मदनदुर्मिमद [illegible] विक्रम० ४।११ [illegible] मालवि० ३।१० 2 मोर का गुप्तनाम 3 चकवा 4 चिड़िया 5 शिव की उपाधि 6 कबूतर 7 कबूतर नी 1 प्रेम करने वाली स्नेहमयी प्रिय स्त्री मनु० ८।११२ 2 मनोहर और सुन्दर स्त्री उदयति हि शशांकः कामिनीगण्डपाण्डुः मृच्छ० १।५७ कथा नैवा ज्वलन कीर्त्या कामिनी [illegible] प्रश० ९।४२ 3 सामान्य स्त्री मृगया ब्रह्म [illegible] कामिनी रघु० ९।६९ मेघ० ६२ ६३ ऋतु० १।११ 4 भीरु स्त्री 5 मादक मदिरा ।

कामुक (वि०) (स्त्री० का, की) [कम उकञ्] 1 कामना करता हुआ इच्छुक 2 काम मद कामातुर क 1 प्रेमी कामातुर कामुकं कुलायमैस्व [illegible] इतथा भगिनिका माल्वि० 4 रघु० १९ ३३ ऋतु० ६।२ 2 चिड़िया 3 अशोकवृक्ष का। धन की इच्छुक स्त्री (की) कामातुर या कामासक्त स्त्री

काम्पिल्ल, काम्पील [कम्पिल्ला नदी विशेष तस्या अदूर भव कम्पिल्ला + अण् काम्पिल्ल + अरम् नि० साधु कम्पिल्ला + अण् नि० दीर्घ] एक वृक्ष का नाम मा० ९।३१ ।

काम्बल [कम्बलेन आवृत कम्बल + अण्] ऊनी कपड़े या कम्बल से ढकी हुई गाड़ी ।

काम्बविक [कम्बु + ठक्] शंख या सीपी के बने आभूषणों का विक्रेता शंख या सीपी का व्यापारी ।

काम्बोज [कम्बोज + अण्] 1 कम्बोज देश का निवासी मनु० १०।४४ 2. कम्बोज का राजा 3 पुन्नाग वृक्ष 4 कम्बोज देश के घोड़ों की एक जाति ।

काम्य (वि०) [कम् + णिङ् + यत्] वाञ्छनीय इच्छा के उपयुक्त — मुधा विण्डा स काम्यासनम् श० ३।८ 2 ऐच्छिक किसी विशेष उद्देश्य से किया गया विप० नित्य) अग्न काम्यस्य कर्मणः - रघु० १०।५० मनु० २।२ १२।८९ भग० १८।२ 3 सुन्दर मनोहर — वसुन्धराम्य स्वत्वमुत्सृज्य तासी न काम्य रघु० ६ ३० उत्तर० ४।१० म्या कामना इच्छा इरादा, प्रार्थना काम्याभिकामस्यार्थ—मृच्छ० 3 रघु० १।३५ भग० १८।२ सम० अभिप्राय स्वार्थजनित प्रयोजन कर्मन् (नपुं०) किसी विशेष उद्देश्य तथा भावी फल की दृष्टि से किया गया धर्मानुष्ठान गिर् (स्त्री०) किसी के अनुकूल मनोरथ दानम् 1 स्वीकार करने योग्य उपहार 2 स्वेच्छा से दिया गया उपहार ऐच्छिक भेंट मरणम् स्वेच्छापूर्वक मरना आत्महत्या व्रतम् ऐच्छिक व्रत ।

काम्ल (वि०) [कु ईषत् अम्ल - को कादेश] कुछ थोड़ा खट्टा ईषदम्ल

काय: [चि + घञ् आदेश: कः] अस्थ्यादिकनिर्मित काय चि अस्मा अन्य प्रकार 1 शरीर निर्मित काय का भाग्यलया परोपका [illegible] न चन्दनेन भर्तृ० २।७१ कायेन मनसा बुद्ध्या भग० ५।११ इसी प्रकार कायत्र वाचा मनसा आदि 2 वृक्ष का तना 3 वीणा का ढांचा (तारों को छोड़कर वीणा का ढांचा) 4 समुदाय समवाय समूह 5 मलधन पूंजी 6 घर आवास बस्ती 7 कुण्ड चिह्न 8 नैसर्गिक स्वभाव यम (मोक्ष के मार्ग या तीर्थ के बिना) [illegible] लिया से ऊपर का हाथ का भाग विशेषकर कनी अंगुली (यह अंगुली प्रजापति के लिए पावन मानी जाती है और प्रजापति तीर्थ कहलाती है — तु० मनु० २।५९ [illegible] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसे प्राजापत्य कहते हैं याज्ञ० १।६० मनु० ३।३८ सम० अग्नि [illegible] क्लेश शरीर का कष्ट या पीड़ा चिकित्सा आयुर्वेद के आठ विभागों में से तीसरा समस्त शरीर में व्याप्त रोगों की चिकित्सा — मानम् शरीर की माप [illegible] कवच, स्थ 1 लेखक जाति (क्षत्रियपिता और शूद्र माता की सन्तान) 2 इस जाति का पुरुष — कायस्थ इति लघ्वी मात्रा — मुद्रा० १, याज्ञ० १।३३६ मृच्छ० ९

(स्त्री० —स्था) 1 कायस्थ जाति की स्त्री 2 आंवले का वृक्ष (स्त्री० —स्थी) कायस्थ की पत्नी, —स्थित (वि०) शरीरगत, शारीरिक।

कायक (स्त्री०, -यिका), **कायिक** (स्त्री० —की) (वि०) [काय+वुञ्, स्त्रियां टाप्, इत्वम् काय+ठक् स्त्रियां ङीप्] शरीर संबंधी, शारीरिक, शरीर विषयक —कायिकत्व —मनु० १२।८, —का ब्याज (धन के उपयोग के बदले में जो कुछ दिया जाय)। सम० —वृद्धि (स्त्री०) धरोहर रक्खे हुए किसी पशु या शारीरिक-सामग्री के उपयोग के बदले में प्राप्त किया गया ब्याज 2 एक ब्याज जिसकी अदायगी से मूलधन पर कोई प्रभाव न पड़े धरोहर रक्खे हुए पशु को उपयोग में लाना।

कार (वि०) (स्त्री०—री) [कृ+अण्, घञ् वा] (समास के अन्त में) बनाने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, कार्य करने वाला, निर्माता, कर्ता, रचयिता —ग्रन्थकार =रचयिता, कुम्भकार, स्वर्णकार आदि —रः 1 कृत्य, कार्य जैसा कि 'पुरुषकार' में 2 किसी एक ध्वनि या शब्द को प्रकट करने वाला पद जो विभक्ति चिह्न से युक्त न हो जैसा कि अकार, —मनु० २।७६, १२५, ककार, फूत्कार आदि 3 प्रयास, चेष्टा —शि० १९।७७ 4 धार्मिक व्रत 5 स्वामी, मालिक 6 संकल्प 7 शक्ति, सामर्थ्य 8 कर या चुंगी 9 हिम का ढेर 10 हिमालय पर्वत। सम० —अवर एक निम्न या नीच जाति का पुरुष जो निषाद पिता व वैदेही माता से उत्पन्न हुआ —मनु० १०।३६ —कर (वि०) कार्य करने वाला, अभिकर्ता —भू कुटीघर।

कारक (वि०) (स्त्री० —रिका) [कृ+ण्वुल्] (प्राय समास के अन्त में) 1 बनाने वाला, अभिनय करने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, रचने वाला आदि —स्वर्गस्य कारक —भाग० ३।१५०, ५।१५६, वर्णसंकरकारकैः —भग० १।४२ मनु० ७।२०४ पञ्च० ५।३६ 2 अभिकर्ता —कम् (व्या० में) संज्ञा और क्रिया के मध्य रहने वाला संबंध (या संज्ञा और उससे संबद्ध अन्य शब्द) इस प्रकार के कारक गिनती में छ हैं जो 'संबंधकारक' को छोड़कर शेष विभक्तियों से संबद्ध हैं १ कर्ता २ कर्म ३ करण ४ सम्प्रदान ५ अपादान और ६ अधिकरण 2 व्याकरण का वह भाग जो इनके व्यवहार को बतलाता है अर्थात् वाक्य रचना या कारक प्रकरण। सम० —दीपकम् (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें एक ही कारक उत्तरोत्तर अनेक क्रियाओं से संयुक्त हो उदा० —स्विद्यति कूणति वेल्लति विचलति निमिषति विलोकयति तिर्यक्, अन्तर्नन्दति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणया वधू शयने —काव्य० १०, —हेतु क्रियात्मक या क्रियापरक कारण (विप० ज्ञापक हेतु)।

कारणम् [कृ+णिच्+ल्युट्] 1 हेतु, तर्क —कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः —मालवि० १।१८, रघु० १।७४, भग० ६।३, २१ 2 आधार, प्रयोजन, उद्देश्य —किं पुनः कारणम् —महा० याज्ञ० २।२०३ मनु० ८।३४७, कारणमानुषीं तनुम् —रघु० १६।२२ 3 उपकरण, साधन —याज्ञ० २।२०३ ६१ 4 (न्या० द० में) वह कारक जो निश्चित रूप से किसी फल का पूर्ववर्ती कारण हो, या 'मिल' के मतानुसार पूर्ववर्ती कारण या उनका समूह जिन पर कार्य निर्भर करता है, बिना किसी बाधा के निर्भर करता है, नैयायिकों के मतानुसार इसके तीन भेद हैं (क) समवायि (घनिष्ठ और अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े का कारण तन्तु धागे (ख) असमवायि (न तो घनिष्ठ हो न अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े के लिए तन्तुओं का संयोग (ग) निमित्त (उपकरणात्मक), जैसा कि कपड़े के लिए जुलाहे की खड्डी 5 जननात्मक कारण, सृष्टिकर्ता, पिता —कु० ६।८१ 6 तत्त्व, तत्त्व सामग्री —याज्ञ० ३।१४८, भग० १८।१३ 7 किसी नाटक या काव्य का मूल या कथावस्तु आदि 8 इन्द्रिय 9 शरीर 10 चिह्न, दस्तावेज, प्रमाण या अधिकार पत्र —मनु० ८।५४ 11 वह जो कार्य का या व्यवस्था निर्धारित करती है। सम० —उत्तरम् विरोध एवं अभियोग के कारण का मुकरना (स्वीकार न करना), आरोप को सामान्यतः मान लेना परन्तु आन्तरिक (विशेष) तथ्य को अस्वीकृत कर देना, —कारणम् पारमार्थिक या प्राथमिक कारण अणु, —गुणः कारण का गुण, —भूत (वि०) 1 जो कारण बना हो 2 कारण बनने वाला —माला एक अलंकार कारणों की शृंखला —यथोत्तरं चेत्पूर्वस्य पूर्वस्यार्थस्य हेतुता, तदा कारणमाला स्यात् —काव्य० १० —उदा० भग० २।६२, ६३ —मा० द० ७२८ —वादिन् (पुं०) अभियोक्ता, वादी —वारि (नपुं०) सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न मूल जल —विहीन (वि०) बिना कारण के, —शरीरम् (वेदान्त द०) शरीर का आन्तरिक बीजारोपण, मूल सूक्ष्म या कारणों का कलेवर।

कारणा [कृ+णिच्+युच्+टाप्] 1 पीड़ा, वेदना 2 नरक में डालना।

कारणिक (वि०) [कारण+ठक्] 1 परीक्षक, निर्णायक 2 कारण परक, नैमित्तिक।

कारण्डव [रम्+ड=रण्ड, ईषत् रण्ड =कारण्ड तं वाति —वा+क] एक प्रकार की बत्तख —मत्तं वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते —विक्रम० २।२३।

कारन्धमिन् (पुं०) [करं एव कारं, तं धमति, कार+ध्मा

+इनि पृषो०] 1 कसेरा 2 काँसे का काम करने वाला।

कारव [का इति रवो यस्य ब० स०] कौवा।

कारस्कर [कारं करोति—कार+कृ+ट, सुट्] किंपाक वृक्ष।

कारा [कीर्यते क्षिप्यते दण्डार्हो यस्याम्—कृ+अङ्, गुण दीर्घ नि०] 1 कारावास, बन्दीकरण 2 जेलखाना, बन्दीगृह 3 वीणा का गर्दन के नीचे का भाग, तूंबी 4 पीड़ा, कष्ट 5 दूती 6 सोने का काम करने वाली स्त्री। सम० —अगारम्, —गृहम्, —वेश्मन् बन्दीघर, जेलखाना—कारागृहे निर्जितवासवेन लङ्केश्वरेणोषितमाप्रसादात्—रघु० ६।४०, शि० ४।१०, भर्तृ० ३।२९ —गुप्त बन्दी कैदी, —पाल बन्दीगृह का रखवाला, कारागार का अधीक्षक।

कारि (स्त्री०) [कृ+इञ्] कार्य कर्म (पु०—स्त्री०) कलाकार शिल्पकार।

कारिका [कृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 नर्तकी 2 व्यवसाय, धंधा 3 व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से संबद्ध काव्य, या पद्य संग्रह—उदा०, (व्या० पर) भर्तृहरि की कारिका, सांख्यकारिका 4 यन्त्रणा, यातना 5 ब्याज।

कारीषम् [करीष+अण्] सूखे गोबर की करसियों का ढेर।

कारु (वि०) (स्त्री०—रु) [कृ+उण्] 1 निर्माता, कर्ता, अभिकर्ता, नौकर 2 कारीगर, शिल्पकार, कलाकार—कारुभिः कारितं तेन कृत्रिमं स्पन्दहेतवे—विक्रमां० १।१३ इति स्म सा कारुतरेण लेखितम् नलस्य च स्वस्य च सख्यमीक्षते नै० १।३८, याज्ञ० २।२४९, १।१८७, मनु० ५।१२८, १०।१२ (ये पांच हैं—तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः।)—रुः देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा 2 कला, विज्ञान। सम० —चौरः सेंध मारने वाला, डाकू, —जः 1 शिल्प से बनी कोई वस्तु, शिल्पकर्म द्वारा निर्मित वस्तु 2 युवा हाथी या हाथी का बच्चा 3 पहाड़ी, बांबी 4 फेन, झाग।

कारुणिक (वि०) (स्त्री०—की) [करुणा+ठक्] दयालु, कृपालु, सदय—मालवि० १।१।

कारुण्यम् [करुणा+ष्यञ्] दया, कृपा, रहम—कारुण्यमातन्वते भामि० १ करुण्य कारुण्यमात्मनः भामि० १।१।

कार्कश्यम् [कर्कश+ष्यञ्] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible]

कार्तवीर्य [कृतवीर्य+अण्] कृतवीर्य का पुत्र हैहय वंश का राजा जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी था (पूजा के फलस्वरूप उसने दत्तात्रेय से कई वर प्राप्त किये जैसे कि हजार भुजायें स्वर्णमय रथ जो इच्छानुसार जहाँ चाहे जा सकता था, न्याय द्वारा अनिष्ट निवारण की शक्ति, दिग्विजय, शत्रुओं द्वारा अपराजेयता आदि (रघु० ६।३९)। वायुपुराण के अनुसार धर्म तथा न्याय पूर्वक उसने ८५००० वर्ष तक राज्य किया और १०,००० यज्ञ किए। वह रावण का समकालीन था, उसने रावण को अपनी नगरी के एक कोने में पशु की भांति बन्दीखाने में डाल दिया (रघु० ६।४०)। कार्तवीर्य को परशुराम ने मार डाला क्योंकि वह परशुराम के पूज्य पिता जमदग्नि की कामधेनु को उड़ा कर ले गया था। कार्तवीर्य को सहस्रार्जुन भी कहते हैं।)

कार्तस्वरम् [कृतस्वर+अण्] सोना—स सम्प्रकार्तस्वरभासुराम्बरः शि० १।२० देखें—का० ८२।

कार्तान्तिक [कृतान्त+ठक्] ज्योतिषी भाग्यवक्ता—कार्तान्तिको नाम भूत्वा भूयः बभ्राम—दश० १३०।

कार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [कृत्तिका+अण्] कार्तिक मास से संबंध रखने वाला—रघु० १९।३९—कः 1 वह महीना जब कि पूरा चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के निकट रहता है (अक्तूबर-नवम्बर महीना) 2 स्कन्द का विशेषण, (—की) कार्तिक मास की पूर्णिमा।

कार्तिकेय [कृत्तिकानामपत्यम् ढक्] स्कन्द (क्योंकि उसका पालन-पोषण छः कृत्तिकाओं द्वारा हुआ था) भारतीय पौराणिकता के अनुसार कार्तिकेय युद्ध का देवता है शिव जी का पुत्र है (परन्तु उसके जन्म में किसी स्त्री का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं है) उसके जन्म के विषय में बहुत सी परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है। शिव ने अपना वीर्य अग्नि में फेंका (जो कि कबूतर के रूप में शिव के पास गई जब कि वह पार्वती के साथ सहवास का सुखोपभोग कर रहे थे) जिसने इसे सहन न करने के कारण गंगा में फेंक दिया (इसीलिए स्कन्द को अग्निभू या गंगापुत्र भी कहते हैं)। उसके पश्चात् वह छः कृत्तिकाओं (जब वह गंगा में स्नान करने गईं) में स्थापित कर दिया गया। फलस्वरूप वह सब गर्भवती हुईं और प्रत्येक ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु बाद में इन छः पुत्रों को बड़े रहस्यमय ढंग से जोड़ कर एक कर दिया गया इस प्रकार वह छः सिर, बारह हाथ तथा बारह आंखों वाला असाधारण रूप का व्यक्ति बना [illegible]
[illegible] अनुसार [illegible] ने शिव के [illegible] दिया [illegible]

अग्निभव या शरजन्मा कहते हैं। कहते हैं कि उसने क्रौंच पहाड़ को विदीर्ण कर दिया इसीलिए वह क्रौंचदारण कहलाता है। एक शक्तिशाली राक्षस तारक के विरुद्ध युद्ध में वह देवताओं की सेना का सेनापति था—जिसमें उसने राक्षसों को पराजित करके तारक को मार डाला, इसीलिए उसका नाम सेनानी और तारकजित् है, उसका चित्रण मयूरारोही के रूप में किया जाता है)। सम० - प्रसू (स्त्री०) पार्वती, कार्तिकेय की माता।

कार्त्स्न्यम् [कृत्स्न + ष्यञ्] पूर्णता, समग्रता, समष्टिपन —तानिबोधत कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान् पङ्क्तिपावनान् — मनु० ३।१८३।

कार्दम (वि०) (स्त्री० —मी) [कर्दम + अण्] कीचड़ से भरा हुआ, मिट्टी में सना हुआ या गारे में लथपथ।

कार्पट: [कर्पट + अण्] 1 आवेदक, अभियोक्ता, प्रार्थी 2. चिथड़ा 3. लाक्षा।

कार्पटिक: [कर्पट + ठक्] 1 तीर्थयात्री 2 तीर्थों के जल को ढोकर अपनी आजीविका कमाने वाला 3 तीर्थयात्रियों का दल 4. अनुभवी पुरुष 5 पिछलग्गू।

कार्पण्यम् [कृपण + ष्यञ्] 1. गरीबी, दरिद्रता, गरीबी-कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः—कार्पण्य 2. दया, रहम 3 कंजूसी, बुद्धिदौर्बल्य —भग० २।७ 4. लघुता, हल्कापन।

कार्पास (वि०) (स्त्री० —सी) [कर्पास + अण्] रुई का बना हुआ,- सः,- सम् रुई की बनी हुई कोई वस्तु —मनु० १२।३२६, १२।६४ 2 कागज, —सी रुई का पौधा, बाड़ी। सम० अस्थि (नपुं०) कपास का बीज बिनौला, —नासिका तकुआ, —सौत्रिक (वि०) रुई के सूत से बना हुआ—याज्ञ० २।१७९।

कार्पासिक (वि०) (स्त्री० —की) [कर्पास + ठक्] कपास का या रुई से बना हुआ।

कार्पासिका, कार्पासी [कार्पासी + कन् - टाप् ह्रस्व, कर्पास + ङीष्] रुई या कपास का पौधा, बाड़ी।

कार्मण (वि०) (स्त्री० —णी) [कर्मन् + अण्] 1. काम को पूरा करने वाला 2. कार्य को पूर्ण रूप से भलीभांति करने वाला, —णम् जादू, अभिचार —निखिलनयना कर्षणे कार्मणज्ञा—भामि० १।७९, विक्रमांक० २।१४, ८।२।

कार्मिक (वि०) (स्त्री० —की) [कर्मन् + ठक्] 1 हस्तनिर्मित, हाथ से बना हुआ 2 बेलबूटों से युक्त, रंगीन धागों से अन्तर्मिश्रित 3 रंगबिरंगा या बेलबूटेदार वस्त्र।

कार्मुक (वि०) (स्त्री० —की) [कर्मन् + उकञ्] काम करने योग्य भलीभांति और पूर्णतः काम करने वाला —कम् 1 धनुष —स्थिरा भक्तिर्भवगतकार्मुके श० १।६ 2 बांस।

कार्य (सं० कृ०) [कृ + ण्यत्] जो किया जाना चाहिए, बनना चाहिए, सम्पन्न होना चाहिए, कार्यान्वित किया जाना चाहिए आदि, —कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी श० ६।१६, साक्षिणः कार्याः —मनु० ८।६१, इसी प्रकार दण्ड, विचार आदि, —र्यम् 1 काम, मामला, बात —कार्यं त्वया नः प्रतिपन्नकल्पम् कु० ३।१४, मनु० ५।१५० 2 कर्तव्य कि० २।१ 3 पेशा, जोखिम का काम, आकस्मिक कार्य 4 धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान 5 प्रयोजन, उद्देश्य, अभिप्राय —कि० २।३६, कि० ७।५१ 6 कमी या आवश्यकता, प्रयोजन, मतलब (करण० के साथ) —किं कार्यं भवतो हृतेन दयिता [illegible] कार्यं भवति [illegible] 7 मामला, विवाद 8 कानूनी अभियोग, व्यावहारिक मामला, झगड़ा आदि [illegible] 9 फल, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (विप० कारण) 10 (व्या० में) विधि [illegible] 11 नाटक का उपसंहार —कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयन् मुद्रा० ४।३ 12 स्वास्थ्य (आयु०) 13 मूल। सम० —अक्षम (वि०) अपना कार्य करने में असमर्थ अक्षम - अकार्यविचार किसी वस्तु के औचित्य से सबंध रखने वाली चर्चा, किसी कार्यप्रणाली के अनुकूल या प्रतिकूल विचारविमर्श, —अधिप 1 किसी कार्य या विषय का अधीक्षक 2 वह ग्रह या नक्षत्र जो ज्योतिष में किसी प्रश्न का निर्णायक होता है, —अर्थः किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2 सेवानियुक्ति के लिए आवेदनपत्र 3 उद्देश्य या प्रयोजन, —अर्थिन् (वि०) 1 प्रार्थना करने वाला 2 अपना उद्देश्य या प्रयोजन सिद्ध करने वाला 3 सेवा नियुक्ति की मांग करने वाला 4 न्यायालय में अपने पक्ष का समर्थन करना, न्यायालय में आने वाला मृच्छ० ९, —आसनम् किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए बैठने का स्थान, गद्दी, —ईक्षणम् सरकारी कार्यों की देखभाल मनु० ७।१४१, —उद्धारः कर्तव्य को पूरा करना —कर (वि०) अचूक, गुणकारी, —कारणे (पुं० द्वि०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन, —भाव कारण और कार्य का संबंध - कालः काम करने का समय, मौसम, उपयुक्त समय या अवसर —गौरवम् किसी कार्य की महत्ता, —चिन्तक (वि०) 1 दूरदर्शी, सावधान, सतर्क, (- कः) किसी कामकाज का प्रबन्धकर्ता, कार्यकारी अधिकारी याज्ञ० २।१९१ —च्युत (वि०) कार्यरहित, बेकार, किसी पद से अपदस्थ —दर्शनम् 1 किसी कार्य का निरीक्षण करना 2 सार्वजनिक मामलों की पूछताछ —निर्णयः किसी बात का फैसला —पुटः 1 [illegible]

काम करने वाला आदमी 2 पागल, सनकी विक्षिप्त 3 आलसी व्यक्ति, -**प्रद्वेष:** काम करने में अरुचि, आलस्य, सुस्ती, -**प्रेष्य:** अभिकर्ता, दूत, -**वस्तु** (न०) लक्ष्य और उद्देश्य, -**विपत्ति:** (स्त्री०) असफलता, प्रतिकूलता, दुर्भाग्य, -**शेष:** 1 बचा हुआ कार्य -मनु० ७।१५३ 2 कार्य की पूर्ति 3. किसी कार्य का अंश, -**सिद्धि** (स्त्री०) सफलता, -**स्थानम्** काम करने का जगह, कार्यालय, -**हंतृ** 1 दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला, -हि० १।७७ 2 दूसरे के हितों का विरोधी। -**कार्यतः** (अव्य०) [कार्य + तसिल्] 1 किसी उद्देश्य या प्रयोजन के कारण 2 फलतः, अनिवार्यतः।

कार्श्यम् [कृश + ष्यञ्] 1 पतलापन, दुर्बलता, दुबलापन -मेघ० ८९, 2 छोटापन, अल्पता, कमी -रघु० ५।२१।

कार्ष् [कृष् + ण] किसान, खेतीहर।

कार्षापणः, -**णम्** (या पणक) [कर्ष + अण्, कार्ष + आ + पण् + घञ्ञ् = आपण, कार्षस्य आपण: ष० त०] भिन्न भिन्न मूल्य का सिक्का या बट्टा -मनु० ८।१३६, ९।२८२, (= कर्ष) -**णम्** धन।

कार्षापणिक (वि०) (स्त्री० -की) [कार्षापण + ठन्] एक कार्षापण के मूल्य का।

कार्षिक = कार्षापण।

कार्ष्ण (वि०) (स्त्री० -र्ष्णी) [कृष्ण + अण्] 1 कृष्ण या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला, -रघु० १५।२४ 2 व्यास से सम्बन्ध रखने वाला 3 काले हरिण से सम्बन्ध रखने वाला -मनु० २।४१ 4 काला।

कार्ष्णायस (वि०) (स्त्री० -सी) [कृष्णायस + अण्] काले लोहे से बना हुआ, -**सम्** लोहा।

कार्ष्णि: [कृष्णस्य अपत्यम् - कृष्ण + इञ्] कामदेव की उपाधि -शि० १९।१।

काल (वि०) (स्त्री० -ली) [कु ईषत् कृष्णत्वं लाति ला + क, को कादेश] 1 काला, काले या काले-नीले रंग का 2 समय -विभक्तिकाले काल नियाय स मनोरथ -रघु० १।३६, तस्मिन् काले उस समय काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् हि० १।१, बुद्धिमान् अपना समय बिताते हैं 3 उपयुक्त या समुचित समय (किसी कार्य को करने के लिए) उचित समय या अवसर (सब०, अधि० संप्र० तथा तुमु-न्नन्त के साथ) रघु० ३।१२, ४।६, १२।६९ दुर्लभा कालवर्षी -भग० १०, ६० 4 काल का अंश या अवधि (दिन के चौथे या पहर) षष्ठे काले दिवसस्य [illegible] मनु० ७।१५३ 5 कुछ वैया-करणों के द्वारा भी इस्तेमाल में 'काल' नामक एक द्रव्य 7 परमात्मा जो कि विश्व का संहारक है, क्योंकि वह भगवान् विश्व का संहर्ता है [illegible]

प्रकलकलके कीडनि प्राणिजातं -मनु० ३।३९, 8 मृत्यु का देवता यम, -कः कालस्य न गोचरान्तरगतः -पंच० १।१४६ 9 भाग्य, नियति 10 आँख की पुतली का काला भाग 11 कोयल 12 शनिग्रह 13 शिव 14 काल की माप (संगीत और छन्द शास्त्र में) 15 कलाल, शराब खींचने तथा बेचने वाला 16 अनुभाग, भाग, -**लम्** लोहा 2 एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। सम० -**अक्षरिक** साक्षर, पढ़ा लिखा, -**अगुरु** एक प्रकार का चन्दन का वृक्ष, काला अगर -मालवि० १।१०, रघु० ४।८१ (अगु०), उस वृक्ष की लकड़ी -ऋतु० ४।५, ५।५ -**अग्नि:,** -**अनल:** सृष्टि के अन्त में प्रलयाग्नि -**अङ्ग** (वि०) काले नीले शरीर वाला, (जैसे कि काली नीली धारवाली तलवार) -**अजिनम्** काले हरिण की खाल, -**अञ्जनम्** एक प्रकार का अंजन या सुर्मा कु० ७।२०, ८२ -**अण्डजः** कोयल, -**अतिरेक** समय की हानि विलम्ब, -**अत्यय:** 1 विलम्ब 2 समय का बीतना 3 काल के बीत जाने के कारण हानि, -**अध्यक्ष:** 1 'समय का प्रकाशक' सूर्य की उपाधि 2 परमात्मा, -**अनुनादिन्** (पुं०) 1 मधुमक्खी 2 चिड़िया 3 चातक पक्षी -**अन्तकः** समय जो मृत्यु का देवता माना जाता है सर्वसंहारक, -**अन्तरम्** 1 अन्तराल 2 समय की अवधि 3 दूसरा समय या अवसर, -**आवृत** (वि०) काल के गर्भ में छिपा हुआ, -**क्षम** (वि०) विलम्ब को सहन करने के योग्य -अकालक्षमा देव्या: शरीरावस्था का० ६२, श० ४ -**बिन्दु:** मुहूर्त की गति केवल कोष्ठित किए जाने पर ही अवशिष्ट जन्तु, -**अभ्र:** काला जल से भरा हुआ बादल, -**अयसम्** लोहा -**अवधि:** नियत किया हुआ समय, -**अशुद्धि:** (स्त्री०) शोक मनाना, सूतक, पातक या जन्म-मरण से पैदा होने वाला अशौच दे० अशौच, -**आयसम्** लोहा, -**उप्त** (वि०) ऋतु आने पर बोया हुआ, -**कञ्जम्** नीलकमल, -**कटङ्क:** -**कटु:** शिव की उपाधि -**कण्ठ:** 1 मोर 2 चिड़िया 3 शिव की उपाधि -उत्तर० ६, -**करणम्,** समय का नियत करना -**कर्णिका,** -**कर्णी** दुर्भाग्य, मुसीबत -**कर्मन्** (न०) मृत्यु, -**कील:** कोलाहल -**कूट:** यम -**कूट:** ष्म (क) हलाहल विष (ख) समुद्र मन्थन में प्राप्त तथा शिव द्वारा पिया गया -अद्यापि नोज्झति हर: किल कालकूटम् चौर० ५०, -**कृत्** (पुं०) 1 सूर्य 2 मोर 3 परमात्मा, -**क्रम:** समय का बीतना समय का अनुक्रम -कालक्रमेण जगत: प्रकृते: के अनन्तर तपस्विया में कु० १।१९ -**क्रिया** 1 समय निश्चित करना 2 मृत्यु -**क्षेप:** 1 विलम्ब समय की हानि मेघ० २२, कालक्षेपं मा कुरु पंच० १ 2 समय बिताना -**खञ्जनम्** -**खण्डम्** यकृत, जिगर,

संगायमुनानदी श्रुण्वि एकदा —चक्रम् 1 समय का चक्र (समय सदैव घूमते हुए पहिए के रूप में वर्णित किया जाता है) 2 चक्र 3 (अत:) (अतएव) संपत्ति का चक्र, जीवन की परिस्थितियां —चिह्नम् मृत्यु के निकट आने का समय, —चोदित (वि०) यम दूतों के द्वारा बुलाया हुआ —ज्ञ (वि०) (किसी कार्य के) उचित समय या अवसर को जानने वाला —अन्या ह्यां हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः —रघु० १०।२३ शि० २।८३ —ज्ञः 1 ज्योतिषी 2 मुर्गा —त्रयम् तीन काल, भूत, भविष्य और वर्तमान —त्रयी कु० ४१ —दण्डः मृत्यु —धर्मः, —धर्मन् (पुं०) 1 किसी विशेष समय के लिए उपयुक्त आचरण रेखा 2 निर्दिष्ट काल, मृत्यु —न पुनर्जीवितः कश्चित्कालधर्ममुपागतः —महा०, परीता कालधर्मता—आदि —धारणा समय वृद्धि, —नियोगः भाग्य या नियति का समादेश —अन्यः निर्णय कि० ९।१२ —निरूपणम् समय का निर्धारण करना, कालविज्ञान, —नेमिः 1 समय चक्र का घेरा 2 एक राक्षस जो रावण का चाचा था और जिसे हनुमान् को मारने का काम सौंपा गया था 3 सौ हाथों वाला राक्षस जिसे विष्णु ने मारा था —पक्व (वि०) अपने समय पर पका हुआ —अर्थात् स्वतः स्फूर्त —मनु० ६।१७, २१, याज्ञ० ३।४९, —परिवास थोड़े समय तक पड़े रहने वाला जिससे कि बासी हो जाय, —पाशः यम या मृत्यु का पाश —पाशिकः जल्लाद,— पृष्ठम् 1 काले हरिण की जाति 2 बगला (—ष्ठम्) 1 कर्ण का धनुष —वेणी० ४ 2. सामान्य धनुष,—प्रभातम् शरत्काल (बरसात के पश्चात् आने वाले दो मास का समय सर्वोत्तम समझा जाता है) —भक्षः शिव की उपाधि,—मानम् समय का मापना —मूलः अंगूरों की एक जाति,—मेषी मंजिष्ठा पौधा, —यवनः यवनों का राजा कृष्ण का शत्रु, यादवों के कृष्ण के लिए अपराजेय शत्रु, युद्ध क्षेत्र में उसका मारना असम्भव समझ कर कृष्ण ने उसको कपट से मुचकुन्द की गुफा में प्रवेश दिया जिसने उसको भस्म करके उसका नाश समाप्त कर दिया। —यापः,—यापनम् टालमटोल करना, देर लगाना, स्थगित करना, —योगः भाग्य, नियति,—योगिन् (पुं०) शिव की उपाधि,— रात्रिः,—रात्री (स्त्री०) 1 अन्धेरी रात 2. विश्व की समाप्तिसूचक महाप्रलय की रात (दुर्गा के साथ समरूपता दिखाई गई है),—लोहम् —स्टील, इस्पात,—विप्रकर्षः काल की वृद्धि, —वृद्धिः (स्त्री०) सामयिक ब्याज (मासिक त्रैमासिक या बँधे समय पर देय) —मनु० ८।१५३, —वेला शनिकाल, अर्थात् दिन का विशिष्ट समय (प्रतिदिन आधा पहर) जब कि किसी भी प्रकार के धर्मकृत्य का करना उचित समझा जाता है —संरोधः 1 बहुत देर तक काम में हाथ न डालना —मनु० ८।१४३ 2 किसी लम्बे समय का व्यय होना —सदृश (वि०) उपयुक्त सामयिक —सर्पः काला और अत्यन्त विषैला सांप जो प्राय: सांप काला होता है —सूत्रम्, —सूत्रकम् 1 समय या मृत्यु की डोरी 2 एक विशेष नरक का नाम —याज्ञ० ३।२२२, मनु० —स्कन्धः [illegible] —स्वरूप (वि०) मृत्यु जैसा भयङ्कर —हरः शिव की उपाधि —हरणम् समय को हानि, विलम्ब —हानिः (स्त्री०) विलम्ब —रघु० १३।१६।

कालकम् [काल + कन्] यकृत [illegible] —कः 1 मस्सा [illegible] 2 पनीला सांप 3 आंख की पुतली वाला भाग।

कालञ्जरः [क + अजरति काल [illegible]] 1 एक पहाड़ तथा उसका [illegible] 2 धार्मिक भिक्षुओं या यात्रियों का मेला 3 शिव की उपाधि।

कालशेयम् [कलशि + ढक्, ढस्य एय:] मक्खन के द्वारा जो कलशी में उत्पन्न होता है)।

कालका [काल + अच् + टाप्] दुर्गा की उपाधि।

कलापः [काली मृत्यु आप्यते अस्मात्—काल + आप् + घञ्] 1 सिर के बाल 2 सांप का फण 3 राक्षस पिशाच भूत 4 कलाप व्याकरण का विद्यार्थी 5 कलाप व्याकरण का वेत्ता।

कालापकः [कालाप + वुन्] 1 'कलाप के विद्यार्थियों का समूह 2 कलाप की शिक्षा या उसके सिद्धान्त।

कालिक (वि०) (स्त्री०—की) [काल + ठक्] 1 काल संबंधी 2 कालाश्रित विलम्ब कालिकोऽत्यया —अमर० 3 मौसम के अनुकूल, सामयिक —कः 1 सारस 2 बगला —का 1 कालापन, काला रंग 2 मसी, स्याही काली मसी 3 कई किस्तों में दिया जाने वाला मूल्य 4 निर्दिष्ट समय पर दिया जाने वाला सामयिक ब्याज 5 बादलों का समूह, घनघोर घटा जिसके बरसने का डर हो—कालिकेव निबिडा बलाकिनी —रघु० ११।१५ 6 सोने में मिलाया जाने वाला खोट 7 मादा कौवा 8 कौवी 9 बिच्छू 10 मदिरा 11 दुर्गा,—कम् काले चन्दन की लकड़ी।

कालिङ्ग (वि०) (स्त्री०—ङ्गी) [कलिङ्ग + अण्] कलिंग देश में उत्पन्न या उस देश का, —ङ्गः कलिंग देश का राजा —प्रतिजग्राह कालिङ्गस्तमस्त्रैर्गजसाधनः —रघु० ४।४० 2 कलिंग देश का सांप 3 हाथी 4 एक प्रकार की ककड़ी —गाः (ब० व०) कलिंग देश दे० कलिंग —ङ्गम् तरबूज।

कालिन्द (वि०) (स्त्री०—न्दी) [कलिन्द + अण्] कलिन्द पहाड़ या यमुना नदी से प्राप्त या संबद्ध —कालिन्द्या: पुलिनेषु केलिकुपितास्—वेणी० १।२, रघु० १५।२८

कु० ४।१३। सम० —कर्षणः, —भेदनः बलराम का विशेषण, —सूः (स्त्री०) सूर्य की पत्नी संज्ञा, —सोदरः मृत्यु का देवता यम।

कालिमन् (पुं०) [काल+इमनिच्] कालापन—अमरु ८८ शि० ४, ५३।

कालिय [के जले आलीयते—क+आ+ली+क] एक भयानक विशालकाय सर्प जो कि यमुना नदी की तली में रहता था। यह स्थान सौभरि ऋषि के शाप के कारण सांपों के शत्रु गरुड के लिए निषिद्ध था। कृष्ण ने जब कि अभी वह बालक ही था उस सांप को कुचल दिया रघु० ६।४९। सम० —दमन, —मर्दन कृष्ण के विशेषण।

काली [काल+ङीष्] 1 कालिमा 2 मसी, काली मसी 3 पार्वती ... शिव की पत्नी 4 काले बादलों की पंक्ति 5 काले रंग की स्त्री 6 व्यास की माता सत्यवती 7 रात, —तनयः भैंसा।

कालीक [के जले अलति पर्याप्नोति क+अल्+ईकन् पृषो० दीर्घ] एक प्रकार का बगला, क्रौञ्च पक्षी।

कालीन (वि०) [काल+ख] 1 किसी विशिष्ट समय से सम्बन्ध रखने वाला 2 ऋतु के अनुकूल।

कालीयम्, —कम् [काल+छ, कन् वा] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

कालुष्यम् [कलुष+ष्यञ्] 1 मलिनता, गन्दगी, गन्दलापन, पंकिलता (आलं० से भी) —कालुष्यमुपयाति बुद्धिः —का० १०३ गन्दली या मलिन हो जाती है 2 अनबन 3 असहमति।

कालेय (वि०) [कलि+ढक्] कलि-युग से सम्बन्ध रखने वाला, —यम् 1 जिगर 2 काली चन्दन की लकड़ी —कु० ७।९ 3 केसर, जाफरान।

कालेयक (पुं०) 1 कुत्ता 2 चन्दन की जाति।

काल्पनिक (वि०) (स्त्री० —की) [कल्पना+ठक्] 1 केवल विचारों की, बनावटी—काल्पनिकी व्युत्पत्तिः —2 खोटा बनावटी (किसी वस्तु से)।

काल्य (वि०) [काल+यत्] 1 समय पर, ऋतु के अनुकूल रुचिकर, सुहावना, शुभ, —ल्यम् पौ फटना, प्रभातकाल होना।

काल्याणकम् [कल्याण+वुञ्] मांगल्य, शुभ।

कावचिक (वि०) (स्त्री० —की) [कवच+ठञ्] जिरह बख्तर सम्बन्धी कवचधारी —कम् कवचधारी व्यक्तियों का समूह।

कावृकः [कुत्सितो वृक इव, वा ईषत् वृक इव, को कादेशः] 1 मुर्गा 2 चक्रवाक पक्षी।

कावेरम् [कस्य सूर्यस्य इव, वा ईषत् वेरम् अङ्गं यस्य ज्यो. तिर्मयत्वात्] केसर, जाफरान।

कावेरी [कं जलमेव वेरं शरीरमस्याः क+वेर+अण्+ङीप्] दक्षिणभारत में बहने वाली एक नदी—कावेरीं सरितां पत्युः शङ्कनीयामिवाकरोत् रघु० ४।४५ 2 [कुत्सितं वेरं शरीरमस्याः] वेश्या, रंडी।

काव्य (वि०) [कवि+ष्यञ्] 1 ऋषि या कवि के गुणों से युक्त 2 अंतर्ज्ञानविषयक या पैगम्बरी, प्रेरणा-प्राप्त छन्दोबद्ध, —व्यः राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य, —व्या 1 प्रज्ञा 2 सखी, —व्यम् 1 कविता, महाकाव्य, —मेघदूतं नाम काव्यम् 2 काव्य, कविता, कवितामयी रचना (काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्य की भिन्न भिन्न परिभाषाएँ दी हैं—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि काव्य०, वाक्यं रसात्मकं काव्यम् —सा० द० १, रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् —रस०, शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली —काव्या० १।१० दे० चन्द्रा० १।७ भी 3 प्रसन्नता, कल्याण 4 बुद्धिमत्ता युक्त प्रेरणा। सम० —अर्थः कवितासम्बन्धी चिन्तन या विचार, —चौरः दूसरे कवि के विचारों का चोर, काव्य चोर, —यदृच्छया दैवा इव मूढ्नाय काव्यार्थचौरा प्रगुणीभवन्ति —विक्रम० १।११ —चौरः दूसरे व्यक्तियों की कविताओं को चुराने वाला, —मीमांसकः साहित्यशास्त्री विवेचक, —रसिक (वि०) जो काव्य के सौन्दर्य का सराह सके या काव्यरस रखता हो, —लिङ्गम् एक अलंकार, इसकी परिभाषा—काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता —काव्य० १० उदा० —जितोऽसि मन्द कन्दर्प मच्चित्तेऽस्ति त्रिलोचनः —चन्द्रा० ५।११९।

काश् (भ्वा०, दिवा० आ० —काशते, —श्यते, काशित) 1 चमकना, उज्ज्वल या सुन्दर दिखाई देना—रघु० १०।८६, ७।२४, कु० १।..., भट्टि० २।२५, शि० ९।७४ 2 प्रकट होना दिखाई देना, नैव भूमिर्न च दिशः प्रदिशो वा चकाशिरे महा० 3 प्रकट होने की भांति दिखाई देना, निस् —, (प्रेर०) 1 निकाल देना, निर्वासित करना, ठेल देना, बहिष्कृत करना दे० निस् पूर्वक कस् — 2 खोलना 2 प्रकाशित करना 3 दृष्टि के सामने प्रस्तुत करना, प्र—, चमकना, उज्ज्वल दिखाई देना 2 दिखाई देना, प्रकट होना एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते— कठ० 3 की भांति दिखाई देना या प्रकट होना (प्रेर०) 1 दिखाना, प्रदर्शित करना, आविष्कार करना, उद्घाटित करना, व्यक्त करना—अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्—श० १, सा० का० ५९ 2 प्रकाश में लाना, घोषित करना, उद्घोषणा करना—क्वचित्कुपितमिव सर्वदोष प्रकाशयत्—पञ्च० २० 3 मुद्रित करवाना प्रकाशित करना (पुस्तक आदि)—प्रणीतं न तु प्रकाशितम् उत्तर० ४ 4 रोशनी करना, (दीपक) जलाना यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकम्

मिव रवि:—मच० १३।११, ५।१६, प्रति—, 1. की तरह प्रकट होना 2. विरोध या विषमतास्वरूप चमकना, वि—, 1. खिलना, फूलना (फूल की भांति) 2. चमकना,—सम्—, की भांति दिखाई देना।

काशः,—शम् [काश्+अच्] छत में या चटाइयों के बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का घास —ऋतु० ३।१ २,—शम् 'काश' नामक घास का फूल—कु० ७।११, रघु० ४।१७, ऋतु० ३।२८,—स =काश:।

काशि (पुं० ब० व०) [काश्+इन्] एक देश का नाम।

काशि:,—शी (स्त्री०) [काश्+इन्, काश्+अच्+ङीष्] गंगा के किनारे स्थित एक प्रसिद्ध नगरी, वर्तमान वाराणसी, सात पावन नगरियों में से एक—दे० काञ्ची। सम०—प: शिव की उपाधि,—राज: एक राजा का नाम, अंबा, अंबिका और अंबालिका के पिता।

काशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) (प्राय: समास के अंत में) [काश्+इन्, स्त्रियां ङीप्] दीप्यमान, किसी का रूप धारण किये हुए दिखाई देने वाला या प्रकट होने वाला, उदा० जितकाशिन्— जो काशि के विजेता की भांति व्यवहार करता है—दे०।

काशी—दे० काशि। सम०—नाथ: शिव की उपाधि,—यात्रा वाराणसी की तीर्थयात्रा।

काश्मरी [काश्+वनिप्, र, ङीप्, पृषो० मत्वम्] एक पौधा जिसे लोग बहुधा गांभारी के नाम से पुकारते हैं,—काश्मर्या: कृतमालमुद्गतदलं को यष्टिकष्टीकरे —मा० ९।७।

काश्मीर (वि०) (स्त्री—री) [कश्मीर+अण्] काश्मीर में उत्पन्न, काश्मीर का या काश्मीर से आने वाला, —रा: (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम—दे० कश्मीर भी, —रम् 1. केसर, जाफरान —काश्मीरगन्धमृगनाभिकृताङ्गरागाम् —चौर० ८, मर्तृ० १, ४८, काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणाम् —गीत० ११, १ भी 2 वृक्ष की जड़। सम० —जम्, —जन्मन् (नपुं०) केसर, जाफरान—भामि० १।७१, शि० ११।५३।

काश्यम् [कुत्सितम् अश्यं यस्मात् ब० स०] मदिरा। सम० —मांसम् मांस।

काश्यपः [कश्यप+अण्] 1. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2 कणाद। सम० —नन्दन: 1 गरुड़ की उपाधि 2. अरुण का नाम।

काश्यपि: [कश्यप+इञ्] गरुड़ और अरुण का विशेषण।

काश्यपी [काश्यप+ङीप्] पृथ्वी,—नार्यपि इमानि माग्य काश्यपि काश्यपि च विवेक —भामि० १।६८।

काष: [कष्+घञ्] 1. रगड़ना, खुरचना—पविष्ठ विटपिनां स्कन्धकाषै: स धूम —वेणी० २।१८ 2. जिससे कोई वस्तु रगड़ी जाय (जैसे कि वृक्ष का तना) लीनालि-सुरकरिणां कपोलकाष: —कि० ५।२६, दे० 'कपोलकाष'।

काषाय (वि०) (स्त्री०—यी) [कषाय+अण्] लाल, गेरुए रंग में रंगा हुआ—काषायवसनाधवा—अमर०, —यम् लाल कपड़ा या वस्त्र इमे काषाये गृहीते मालवि० ५, रघु० १५।७७।

काष्ठम् [काश्+क्थन्] 1 लकड़ी का टुकड़ा, विशेषकर ईंधन की लकड़ी मनु० ४।४९, २४१, ५।६० 2 लकड़ी, शहतीर लकड़ी का लट्ठा या टुकड़ा यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ —हि० ४।६९ मनु० ८।४० 3 लकड़ी याज्ञ० २।२१८ 4 लम्बाई मापने का उपकरण। सम०—अगार- अगारम् लकड़ी का घर या घेरा, —अम्बुवाहिनी—लकड़ी का डोल, —कदली जंगली केला, —कीट: घुन, एक छोटा कीड़ा जो सूखी लकड़ी में पाया जाता है,—कुट्ट —कूट: खुटबढ़ई, कठफोड़वा- पंच० १।३१२, (जंगल में पाया जाने वाला जन्तु),—कुद्दाल: लकड़ी की बनी एक कुदाल या किश्ती में से पानी उलीचने या उसकी तलों को खुरचने और साफ करने के काम आती है, —तक्ष् (पुं०) -तक्षक: बढ़ई, —तन्तु: शहतीर में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा,—दारु: दियार या देवदारु का वृक्ष,—द्रु: पलाश (ढाक) का वृक्ष, —पुत्तलिका कठपुतली, काठ की बनी प्रतिमा, —भारिक: लकड़हारा,—मठी (स्त्री०) चिता, —लम्ब: अर्थी, लकड़ी का चौखटा जिस पर मुर्दे को रख कर ले जाते हैं, —लेखक: लकड़ी में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा, काष्ठकूट,—लोहिन् (पुं०) लोहा जड़ा हुआ सोटा, लाठ, —वाटम् लकड़ी की बनी दीवार।

काष्ठकम् [काष्ठ+कन्] अगर की लकड़ी।

काष्ठा [काश् + क्थन् + टाप्] 1 संसार का कोई भाग या प्रदेश दिशा प्रदेश —कि० ३।५५ 2. सीमा, हद —स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपस: —कु० ५।२८ 3 अन्तिम सीमा, चरम सीमा, आधिक्य काष्ठागतस्नेहरसानुविद्धम् —कु० ३।३५ 4 घुड़दौड़ का मैदान, मैदान 5 चिह्न, निर्दिष्ट चिह्न 6 अन्तरिक्ष में बादल और वायु का मार्ग 7 काल की माप —कला।

काष्ठिक: [काष्ठ+ठन्] लकड़हारा।

काष्ठिका [काष्ठिक+टाप्] लकड़ी का छोटा टुकड़ा।

काष्ठीला (स्त्री०) [कुत्सिता ईषत् वा अष्ठीला, को: कादेश:] केले का पेड़।

कास् (भ्वा० आ०—कासते, कासित) 1. चमकना, दे० काश् 2. खांसना, किसी रोग को प्रकट करने वाली आवाज़ करना।

कासः,-सा [कास्+घञ्] 1 खांसी, जुकाम 2. छींक आना, सम०—कुण्ठ (वि०) खांसी से पीड़ित,—घ्न, —हृत् (वि०) खांसी दूर करने वाला, कफ निकालने वाला।

कासरः (स्त्री०—री) [के जले आसरति—क+आ+सृ+अच्] भैंसा।

कासारः,-रम् [कास्+आरन्, कस्य जलस्य आसारो यत्र ब० स०] पोखर, तालाब, सरोवर -भामि० १।४३, भर्तृ० १।६२, गीत० २।

कासू (सू) (स्त्री०) [कास्+ऊ] 1 एक प्रकार का भाला 2. अस्पष्ट भाषण 3. प्रकाश, प्रभा 4 रोग 5. भक्ति।

कासृतिः (स्त्री०) [कुत्सिता सृतिः को: कादेशः] पगडंडी, गुप्त मार्ग।

काहल (वि०) [कुत्सितं हलं वाक्यं यत्र ब० स०] 1 शुष्क, मुर्झाया हुआ 2. शरारती 3. अत्यधिक, प्रशस्त विशाल,—लः 1. बिल्ला 2. मुर्गा 3. कौवा 4. सामान्य ध्वनि,—लम् अस्पष्ट भाषण,—ला बड़ा ढोल (सैनिक), —ली (स्त्री०) तरुण स्त्री

किंवत् (वि०) [किम्+मतुप्, मस्य वः] निर्धन, तुच्छ, नगण्य।

किंशारुः [किम्+शॄ+ञुण्] 1. अनाज की बाल का अग्रभाग, बाल का सूत, शस्यशूक 2. बगला, 3. तीर।

किंशुकः [किंचित् शुकः शुकावयवविशेष इव—] ढाक का पेड़ जिसके फूल बड़े सुन्दर परन्तु निर्गन्ध होते हैं (विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः—चाण० ७, ऋतु० ६।२०, रघु० ९।३१,—कम् ढाक का फूल, टेसू,—किंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्न दग्धम्—ऋतु० ६।२१।

किंशुलुकः [किंशुक पि० साधुः] ढाक का वृक्ष, दे० किंशुक।

किकिः [कक्+इन् पृषो० इत्वम्] 1 नारियल का पेड़ 2 नीलकण्ठ पक्षी 3 चातक, पपीहा (इस पक्षी को किकिन्, किकिदिवि, और किकीदिवि भी कहते हैं)।

किङ्किणी, किङ्किणिका, किङ्किणी, किङ्कणीका [किंचित् कणति कण्+इन्+ङीप्, पृषो० साधु—किङ्किणी+कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] घुंघरूदार आभूषण, करधनी —चलत्कनककिङ्किणीझणझणायितस्यन्दनैः उत्तर० ५।५, ६।१, शि० ९।७४, कु० ७।४९।

किङ्किरः [किम्+कृ+क] 1 घोड़ा 2 कोयल 3 मधुमक्खी, 4. कामदेव 5. लाल रंग,—रम् गजकुंभ, —रा रुधिर।

किङ्किरातः [किङ्किर+अत्+अच्] 1 तोता 2. कोयल, 3 कामदेव 4. अशोक वृक्ष।

किञ्जल्कः,—किञ्जल्कम् [किंचित् जलं यस्य ब० स०, किंचित् जलम् अवधारयति—किम्+जल+क] कमल का सूत या फूल या कोई दूसरा पौधा—आकर्षद्भिः पद्मकिञ्जल्कगन्धान्—उत्तर० ३।२, रघु० १५।५२।

किटिः [किट्+इन्+किच्च] सूअर।

किटिभः [किटि+भा+क] 1 जूं, लीख 2. खटमल।

किट्टम्, किट्टकम् [किट्+क्त, स्वार्थे कन् च] धातु का कीट, विष्ठा, मल, मैल—अन्न°।

किट्टालः [किट्ट+अल्+अच्] 1 तांबे का पात्र 2. लोहे का जंग या मुर्चा।

किणः [कण्+अच् पृषो० इत्वम्] 1 घाव, घट्ठा, चकत्ता, घाव का चिह्न,—आस्थित किणकृतप्रकोष्ठे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति—श० १।१३, मृच्छ० २।११, रघु० १६।८४, १८।४७, गीत० १ 2. घुनकीट, तिल या मस्सा 3 घुन।

किण्वम् [कण्+क्वन्, इत्वम्] पाप—,—ण्वः,—ण्वम् मदिरा के निर्माण में खमीर उठाने वाला बीज, या औषधि मनु० ८।३२६।

कित् (भ्वा० पर०—केतति) 1 चाहना 2. रहना 3. (चिकित्सति) इलाज करना, चिकित्सा करना।

कितवः (स्त्री०—वी) [कि+क्त=कित+वा+क] 1 धूर्त, जुआ, कपटी—अर्हसि किल कितव उपहसितुम्—मालवि० ४, अमरु १७, ४१, मेघ० १११ 2. धतूरे का पौधा 3. एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

किंधिन् (पु०) [किं कुत्सिता धीर्बुद्धिरस्य—किधी+इनि] घोड़ा।

किन्नर=दे० 'किम्' के नीचे।

किम् (अव्य०) [कु+डिमु बा०] 'बुराई', 'ह्रास' 'दोष' 'कलंक' और निन्दा के भाव को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के आदि में केवल 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है उदा०—किंसखा बुरा मित्र, किन्नर—बुरा या विकृत पुरुष आदि, नीचे के समस्त पदों को देखो। सम०—दास बुरा गुलाम या नौकर, —नरः बुरा या विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का—उपोदाहृत बाह्रोर्गीयमानाः किन्नरान्—रघु० ४।७८—कु० १।८, °ईशः °ईश्वरः कुबेर का विशेषण (स्त्री०—री) 1 किन्नरी मेघ० ५६ 2 एक प्रकार की वीणा, —पुरुषः घृणा के योग्य नीच पुरुष, किन्नर—कु० १।१४, °ईश्वरः कुबेर का विशेषण—प्रभुः बुरा स्वामी या राजा हिताश्च यः सम्शृणुते स किंप्रभुः—कि० १।५, —राजन् (वि०) बुरे राजा वाला (पु०) बुरा राजा, —सखि (पुं०) (कर्तृ०, ए० व०,—किंसखा) बुरा

मित्र,—स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम्—कि० १।५।

किम् (सर्व० वि०) (कर्तृ० ए० व०, पुं०—कः) [स्त्री० —का] [नपुं०—किम्] 1. कौन, क्या, कौनसा (प्रश्नवाचक के रूप में)—कथय नु कः केन पथा प्रयातः, तस्याश्चेक्तो येषितुमस्ति शक्तिः—श० ६।२६, कस्मा-त्विमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम्—रघु० ८।६७, का त्वमनेन प्रार्थ्यमानात्मना विकल्पते—विक्रम० २, कः कोऽत्र भोः, सर्वनाम के रूप में यह शब्द कभी कभी 'कार्य करने की शक्ति या अधिकार' को बताने के लिए प्रयुक्त होता है—अया० के आशा परिपातु दुष्यन्तमाक्रन्द—श० १, 'हम कौन हैं ?' अर्थात् 'हममें क्या शक्ति है ?' आदि 2. नपुं० (किम्) संज्ञा शब्दों के करण० के साथ प्रयुक्त होकर बहुधा अर्थ होता है, क्या लाभ है ? - किं स्वामि-सेवयाविवेकेन—हि० १, 'कोऽर्थस्तेन पुत्रेण किम्' आदि भर्तृ० २।५५, 'किं तया दृष्टया' श० १, किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्—मृच्छ० ९।७, प्रायः 'अनिश्चय' अर्थ को प्रकट करने के लिए, 'किम्' के साथ 'अपि' 'चित्' 'चन' 'चिदपि' या 'स्वित्' जोड़ दिया जाता है—विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम्—कु० ५।३० कोई तपस्वी" ; कापि तत्र एवागतवती—मा० १, कोई स्त्री; कस्यापि कोऽपीति निवेदित च— १।३३, किमपि किमपि मन्दमन्दमासत्ति-योगादविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण—उ० १।२७, कस्मिंश्चिदपि महाभागधेयजन्मनि कन्यकाविकारम् उपलक्षितवानस्मि—मा० १, किमपि, किंचित् 'थोड़ा सा' 'कुछ'—याज्ञ० २।११६, उत्तर० ६।३५, 'किमपि' का अर्थ 'अवर्णनीय' भी है, दे० अपि, 'संभावना' के अर्थ को बतलाने के लिए कभी कभी 'किम्' के साथ 'इव' भी जोड़ दिया जाता है (अधिकतर काव्य के साथ दया और सौंदर्य को जोड़ने वाला) —किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—श० १।२०, 'इव' को भी दे०, (अव्य०) 1. प्रश्नवाचक निपात,—जातिमात्रेण किं कश्चिद्धन्यते पूज्यते क्वचित्—हि० १।५८, 'मारा जाता है या पूजा जाता है' आदि, ततः किम्—तो फिर क्या 2. 'क्यों' 'किसलिए' अर्थ को प्रकट करने वाला अव्यय—किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते—कु० ४।७ 3. क्या, प्रश्नवाचक या ('या' की भावना को प्रकट करने वाले सहसंबंधी शब्द—किम्, उत, उताहो, आहोस्विद्, वा, किंवा, अथवा, इन शब्दों को देखो)। सम०—अपि (अव्य०) 1. कुछ अंश तक, कुछ, बहुत अंशों तक 2. कल्पनातीत रूप से, अवर्णनीय रूप से (गुण, परिमाण व प्रकृति आदि) 3. अत्यधिक, बहुत अधिक,—किमपि कमनीयं वपुरिदम्—श० १, किमपि यौवनं किमपि कटाक्षम्—अपि,—अर्थ (वि०) किस उद्देश्य या प्रयोजन वाला किमर्थोऽयं यत्नः,—अर्थम् (अव्य०) क्यों, किसलिए,—आख्य (वि०) किस नाम वाला—किमाख्यस्य राजर्षेः सा पत्नी,—श० ७,—इति (अव्य०) क्यों निस्सन्देह, किस लिए, किस प्रयोजन के लिए (प्रश्न पर बल देने वाला), शकि-निरवधानाद्वरता—श० १, किमिति [illegible] यौवनं धृतं त्वया कार्यकलोपि [illegible]—कु० ५।३४, —उ, —उत 1. क्या, या (सन्देह या अनिश्चय को प्रकट करने वाला); —किमु विषविसर्पः किमु मदः—उत्तर० १।३५, श्लोक १ 2. क्यों (निस्सन्देह), प्रियसुहृत्सार्थं किमु त्यजसि 3. और कितना अधिक, कितना कम,—यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता, एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्। हि० प्र० ११, [illegible] —का० १०३, रघु० १४।६५, कु० ७।१५ -कर नौकर, सेवक, दास - अवैहि मां किंकरमष्ट-मूर्तेः—रघु० २।३५, (रा) सेविका, नौकरानी (री) सेवक की स्त्री,—कर्तव्यता—कर्तव्यता वह अवस्था जब कि मनुष्य अपने मन में सोचता है कि अब क्या करना चाहिए, -किंकर्तव्यतामूढ (वह समझने में असमर्थ या घबराया हुआ कि अब क्या करना चाहिए), —कारण (वि०) क्या कारण या क्या अर्थ रखने वाला,—किल (अव्य०) कैसी दयनीय अवस्था (असंतोष या दुःख, को अभिव्यक्त करने वाला—पा० ३।३।१५१), न संभावयामि न मर्षयामि तत्रभवान् किं किल वृषलं याजयिष्यति—सि० कौ०,—क्षण (वि०) जो कहता है कि 'एक मिनट का है ही क्या', एक आलसी पुरुष जो क्षणों की परवाह नहीं करता है —हि० २।९१,—गोत्र (वि०) किस परिवार से सम्बन्ध रखने वाला,—च (अव्य०) इसके अतिरिक्त और फिर, आगे,—चन (अव्य०) कुछ दर्जे तक, थोड़ा सा, चित् (अव्य०) कुछ दर्जे तक, कुछ, थोड़ा सा किंचिदुत्क्रान्तशैशवौ—रघु० १५।३३, २।४६, १२।२१, °ज्ञ (वि०) थोड़ा सा जानने वाला, सतही-ज्ञान-ग्राही, °कर (वि०) कुछ करने वाला, उपयोगी, —°काल—कुछ समय, थोड़ा सा समय °प्राण थोड़ा सा जीवन रखने वाला, °मात्र (वि०)—थोड़ा सा, —छन्दस् (वि०) किस वेद से परिचित,—तर्हि (अव्य०) तो फिर क्या, परन्तु, तथापि,—तु (अव्य०) परन्तु, तो भी, तथापि, इतना होते हुए भी—अवैमि सैना-मनघेति किन्तु लोकापवादो बलवान्मतो मे—रघु० १४।४०, २।६५,—देवत (वि०) किस देवता से सम्बद्ध,—नामधेय,—नामन् (वि०) किस नाम वाला,

—निमित्त (वि०) किस कारण या हेतु को रखने वाला, किस प्रयोजन वाला, —निमित्तम् (अव्य०) क्यों, किस लिए, —नु (अव्य०) 1 क्या—किंनु मे मरणं सेवा परित्यागो जनस्य वा —मृच्छ० १०।१० 2 और भी अधिक, और भी कम—अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते भग० १।३५ 3 क्या, निस्सन्देह—किन्नु मे राज्येनार्थः, —नु खलु (अव्य०) 1 किस प्रकार से, सम्भवतः, कैसे है कि यथा निस्सन्देह, क्या, सचमुच किन्नु खलु गीतार्थमाकर्ण्य इष्टजनविरहादृतेऽपि बलवदुत्कण्ठितोऽस्मि श० ५ 2 ऐसा न हो कि—किन्नु खलु यथा वयमस्यामेवमियमप्यस्मान् प्रति स्यात् श० १ —पच, —पचान (वि०) कंजूस, कृपण —पराक्रम (वि०) किस शक्ति या स्फूर्ति से युक्त —पुनर् (अव्य०) कितना और अधिक या कितना और कम —स्वयं रोपितेषु तरुषु उत्पद्यते स्नेहः किं पुनरङ्गसंभवेषु अपत्येषु—का० २९१ मच्छ० ३ १७, विक्रम० ३ —प्रकारम् (अव्य०) किस प्रकार से —प्रभाव (वि०) किस शक्ति से सम्पन्न, —भूत (वि०) किस प्रकार का या किस स्वभाव का, —रूप (वि०) किस प्रकार का, किस रूप का, —वदन्ति, —न्ती (स्त्री०) जनश्रुति, अफवाह —मम त्वन्यत्कामपि किंवदन्तीं उत्तर० १।४२, उत्तर० १।४, —वराटकः अमितव्ययी, खर्चीला, —वा (अव्य०) 1 प्रश्नवाचक अव्यय —किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या श० ७ 2 या (किम् —(क्या) का सहसम्बन्धी) —राजपुत्रि कुशली किं वा जामाता पच० १, तत्किं व्याहरामि किं वा किं प्रवच्छामि किं वा पशुपतेष आपादयामि म०, शृङ्गार० ७, —विद् (वि०) क्या जानने वाला, —व्यापार (वि०) किस कार्य का करने वाला, —शील (वि०) किस आदत का, —स्वित् (अव्य०) क्या, किस तरह —अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिः मेघ० १४।

कियत् (वि०) [किं परिमाणमस्य किम् + वतुप् घ किमः कि आदेश:] (कर्तृ०, ए० व० पु० कियान्, स्त्री० —कियती, नपुं० कियत्) 1 कितना बड़ा, कितनी दूर, कितना, कितने, कितने विस्तार का, किन गुणों का (प्रश्नवाचकता का अर्थ रखने वाला) —कियान्कालस्तवैवं स्थितस्य पंच० ५, मै० १।१३०, अयं मुक्तावाला विग्रह कियती वाति न दयाम्— मा० १।२५, आस्वादित कियद्भुवो न रक्षति—श० २।१३, कियदवशिष्टं रजन्याः—श० ४ 2 किस गिनती का अर्थात् किसी अर्थ का नहीं, निकम्मा—राजेति कियती मात्रा—पंच० १।८०, मान कियन्तोऽस्य, वेणी० ५।१९ 3 कुछ, थोड़ा सा, थोड़ी संख्या, अल्प (अनिश्चित अर्थ रखने वाला)—नियतुदि विकसन्तः शक्ति शान्त कियन्त —भर्तृ० २।७८ त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती गीत० ६। सम० —एतिका प्रयास, शक्ति उदासीन वैदेयुक्त चेष्टा, —काल (अव्य०) 1 कितनी देर 2 कुछ थोड़ा समय, —चिरम् (अव्य०) कितनी देर तक—कियच्चिरं श्राम्यसि गौरि कु० ५।५० —दूरम् (अव्य०) 1 कितनी दूर, कितनी दूरी पर कितने फासले पर —कियद्दूरे स जलाशयः पच० १ नै० १।१३७ 2 थोड़ी देर के लिए जरा भी दूर।

किर [कृ + क] सूअर।

किरक [कृ + क्वुन्] 1 लिपिक 2 [किर + कन्] सूअर

किरण [कृ + क्यु] 1 प्रकाश की किरण (सूर्य, चन्द्रमा या किसी दीप्तिमान ज्योति की) किरण —रविकिरणसहिष्णु —श० ४।१४ एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः कु० १।३, श० ४।२, रघु० ५।७४, शि० ९।५४ —मय 1 चमकदार उज्ज्वल 2 रजकण। सम० —मालिन् (पुं) सूर्य।

किरात [किरं पर्यन्तभूमिम् अतति गच्छतीति किरातः] एक जंगली पहाड़ी जाति जो शिकार करके अपनी जीविका चलाती है, पहाड़ी —वैयाकरणकिरातादपशब्दमृगाः क्व यान्तु संत्रस्ताः यदि नटगणकचिकित्सकवैतालिकवदनकन्दरा न स्युः। 1 सुभा०, कु० १।६, १५, रत्न० २।३ 2 वहशी, जंगली 3 बौना 4 साईस, अश्वपाल 5 किरातवेशधारी शिव, —ताः (ब० व०) एक देश का नाम, —सम० —आशिन् (पुं०) गरुड की उपाधि।

किराती [किरात + ङीष्] 1 किरात जाति की स्त्री, 2 चंवर डुलाने वाली स्त्री —रघु० १६।५७ 3 कुट्टिनी, दूती 4 किरात के वेश में पार्वती 5 स्वर्गङ्गा।

किरि [कृ + इ] 1 सूअर, वराह 2 बादल।

किरीट, —टम् [कृ + कीटन्] मुकुट, ताज, चूडा, शिरोवेष्टन—किरीटबद्धाञ्जलय: कु० ७।९२ 2 व्यापारी। सम० —धारिन् (पुं०) राजा। —मालिन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण।

किरीटिन् (वि०) [किरीट + इनि] ताज या मुकुट पहनने वाला,—भग० ११।१७, ४६ पंच० ३ —(पुं०) अर्जुन—भग० ११।३५ (महा० में इस नामकरण की व्याख्या इस प्रकार है—पुरा शक्रेण मे दत्तं युध्यतो दानवर्षभैः, किरीटं मूर्ध्नि सूर्याभं तेनाहुर्मां किरीटिनम्।

किर्मीर (वि०) [कृ + ईरन्, मुट्] चित्रविचित्र रंग का, चितकबरा, चित्तीदार,—रः 1 एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था —वेणी० ६ 2 चितला या बहुरंगी रंग। सम० —जित्,—निषूदन,—सूदन भीम के विशेषण।

किल [किल्+क] खेल, मुक्त, खेलकूद में हो जाने वाला। सम०—**किंचितम्**, प्रेमी-मिलन के अवसर पर शृंगारी उत्तेजन, रुदन, हास, रोष आदि भाव।

किल (अव्य०) [किल्+क] निश्चय ही, बेशक, निस्संदेह, अवश्य—अर्हति किल कितव उपद्रवम् —मालवि० ४, इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः श० १।१८ 2 जैसा कि लोग कहते हैं, जैसा कि बतलाया जाता है (विवरण या परंपरा दर्शाने वाला) बभूव योगी किल कार्तवीर्यः —रघु० ६।३८, जघान कंसं किल वासुदेवः —महा० 3 झूठमूठ का कार्य, प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष रघु० २।२७ कि० ११।२ 4 आशा, प्रत्याशा, संभावना पार्थः किल विजेष्यते कुरून् गण० 5 असंतोष, अरुचि, - एवं किल केचिद्वदन्ति - गण० 6 घृणा—त्वं किल योत्स्यसे - गण० 7 कारण, हेतु - (अत्यंत विरल)—स किलैवमुक्तवान् —गण० 'क्योंकि उसने ऐसा कहा'।

किलकिल,**ला** [किल्+क, प्रकारे वीप्सायां वा द्वित्वम् पक्षे टाप्] किलकारी, हर्ष और प्रसन्नतासूचक चीख।

किलकिलायते (ना० धा० आ०) किलकारी मारना कोलाहल करना —भट्टि० ७।१०२।

किलिञ्जम् [किलि+जन्+ड] 1 चटाई 2 हरी लकड़ी का पतला तख्ता, फलक।

किल्बिन् (पु०) [किल्+विनप्, किल्+विनि] घोड़ा।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, बुक्] 1 पाप, मनु० ४।२४३, १०।११८, भग० ३।१३, ६।४५ 2 त्रुटि, अपराध, क्षति, दोष - मनु० ८।२३५ 3 रोग, बीमारी।

किशलयः,—**यम्** [किंचित् शलति —किम्+शल्+कयन् बा०, पृषो० साधुः] पल्लव, कोंपल, अंकुर, अंखुआ —दे० 'किसलय'।

किशोरः [किम्+शृ+ओरन्] 1 बछेरा, अल्प पशु-शावक, किसी जानवर का बच्चा केसरिकिशोर श० 2 तरुण, बालक, १५ वर्ष से कम आयु का, अवयस्क (विधि में) 3 सूर्य ,री एक नवयुवती, तरुणी।

किष्किन्धः, **न्ध्यः** [किं किं दधाति किं+किं+धा+क, पूर्वस्य किमो मलोप, सुट्, यत्वम्,--किष्किन्ध+यत्] एक देश का नाम 2 उस प्रदेश में स्थित एक पहाड़ का नाम- ,धा,—न्ध्या एक नगरी, किष्किन्धा की राजधानी।

किष्कु (वि०) [कै+कु नि० साधुः] दुष्ट, निन्द्य, बुरा, —**ष्कुः** (पु० स्त्री०) 1 कोहनी से नीचे भुजा 2 एक हस्व परिमाण, हाथ भर की लम्बाई, एक बालिश्त।

किसलः,—**लम्**, } [किञ्चित् सलति—किम्+सल्+क
किसलयः,—**यम्**, } (कयन्) बा०, पृषो० साधु] पल्लव, कोमल अंकुर या कोंपल —अधरः किसलयरागः, श० १।२१, किसलयमकूनं करस्थं —२।१०, किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः —रघु० ९।३५।

कीकट (वि०) (स्त्री०—टी) [की कर्म हुत वा कटति गच्छति—की+कट्+अच्] 1 गरीब, दरिद्र 2 कंजूस, -टः घोड़ा, टा (ब० व०) एक देश का (बिहार) नाम।

कीकस (वि०) [की कुत्सितं यथा स्यात्तथा कसति —की+कस्+अच्] कठोर, दृढ़, - सम् हड्डी।

कीचकः [चीकयति शब्दायते- -चीक्+वुन्, आद्यन्तविपर्ययः] 1 खोखला बांस 2 हवा में खड़खड़ाते या सांय सांय करते हुए बांस—शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः —मेघ० ५६, रघु० २।१२, ४।७३, कु० १।८ 3 एक जाति का नाम 4 विराट राजा का सेनापति (जब द्रौपदी, सैरन्ध्री के वेश में, वेश बदले हुए अपने पांचों पतियों के साथ राजा विराट के दरबार में रह रही थी, उस समय एक बार कीचक ने उसे देखा, द्रौपदी के सौन्दर्य से उसके हृदय में कामाग्नि प्रज्वलित हुई, तब से लेकर उसकी पाप दृष्टि द्रौपदी पर लगी रही और उसने अपनी बहन (राजा विराट की पत्नी) की सहायता से उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा की। द्रौपदी ने अपने प्रति उसके अशिष्ट व्यवहार की शिकायत राजा से की, परन्तु जब राजा ने हस्तक्षेप करने में आनाकानी की तो उसने भीम से सहायता मांगी, और उसके सुझाव को मानकर उसने कीचक के प्रस्ताव के प्रति अनुकूलता दर्शाई। तब यह निश्चय किया गया कि वे दोनों आधी रात के समय महल के नाच घर में मिलें, फलतः कीचक वहाँ गया और उसने द्रौपदी का आलिङ्गन करने का प्रयत्न किया, परन्तु अंधेरा होने के कारण वह दुष्ट द्रौपदी के बजाय भीम के भुजपाश में फंस गया और उसके बलवान् हाथों से वह वहीं कुचला जाकर मौत का शिकार हुआ)। सम०—**जित्** (पु०) द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण।

कीटः [कीट्+अच्] 1 कीड़ा, कृमि —कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः हि० प्र० ४५ 2 तिरस्कार व घृणा को व्यक्त करने वाला शब्द (बहुधा समास के अन्त में) द्विपकीट —अधम हाथी, इसी प्रकार पक्षिकीट आदि। सम०—**घ्नः** - गंधक, - **जम्** रेशम, जा लाख, - **मणिः** जुगनू।

कीटकः [कीट+कन्] 1 कीड़ा 2 मगध जाति का भाट।

कीदृक्ष (स्त्री० क्षी) } [किम्+दृश्+क्स, क्विन्,
कीदृश्, **कीदृश** (स्त्री- शी) } कञ् वा, किम: की आदेश] किस प्रकार का, किस स्वभाव का, - तद्रूपं कीदृशं विवेकविभवं कीदृक् प्रबोधोदयः - प्रबो० १, नै० ११।१७।

कीनाश (वि०) [क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च] 1 भूमिधर 2 गरीब, दरिद्र 3. कृपण 4 लघु, तुच्छ, —शः मृत्यु के देवता यम की उपाधि 2 एक प्रकार का बन्दर।

कीरः [की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति की + ईर् + अच्] 1 तोता—एष कीरवर मनोरथमय पीयूषमास्वादयति—भामि० १।५८, —रा (ब० व०) काश्मीर देश तथा उसके निवासी, —रम् मांस। सम० —**इष्टः** आम का वृक्ष (इसे तोते बहुत पसन्द करते हैं)। —**वर्णकम्** सुगन्धों का शिरोमणि।

कीर्ण (वि०) [कॄ + क्त] 1 छितराया हुआ, फैलाया हुआ, फेंका हुआ, बखेरा हुआ 2 ढका हुआ भरा हुआ 3 रक्खा हुआ धरा हुआ 4 क्षत चोट पहुंचाया गया दे० कॄ।

कीर्णिः (स्त्री०) [कॄ + क्तिन्] 1 बखेरना 2 ढकना छिपाना, चूर्ण कर देना 3 घायल करना।

कीर्तनम् [कॄत् + ल्युट्] 1 कथन वर्णन 2 मन्दिर —ना 1 कीर्तिवर्णन 2 भजन पाठ 3 यश कीर्ति।

कीर्तय कॄत्।

कीर्तिः (स्त्री०) [कॄत् + क्तिन्] 1 यश, प्रसिद्धि, कीर्ति इह कीर्तिमवाप्नोति मनु० २।९, ... अनन्तकीर्तिम् —रघु० २।६३ मेघ० ४५ 2 अनुग्रह अनुमोदन 3 मैल कीचड़ 4 विस्तृति, विस्तार 5 प्रकाश प्रभा 6 ध्वनि। सम० —**भाज्** (वि०) यशस्वी विख्यात प्रसिद्ध (पु०) द्रोण का विशेषण जो कि कौरवों और पांडवों का सैन्य शिक्षाचार्य था, —**शेषः** केवल यश के रूप में जीवित रहना यश के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ना अर्थात् मृत्यु ... आलेख्यशेष।

कील् (भ्वा० पर०) 1 बांधना 2 नत्थी करना 3 कील गाड़ना।

कीलः [कील् + घञ्] 1 फन्नी खूंटी —कीलोत्पाटीव वानरः पञ्च० १।२१ 2 भाला 3 अर्गला ... 4 हथियार, 5 कोहनी 6 कोहनी का प्रहार 7 ज्वाला 8 परमाणु 9 शिव का नाम।

कीलकः [कील + कन्] 1 फन्नी या खूंटी 2 स्तम्भ, स्तम्भ दे० कील।

कीलालः [कील + अल् + अण्] 1 अमृतोपम स्वर्गीय पेय देवताओं का पेय 2 मधु 3. हैवान, —लम् 1 रुधिर 2 जल। सम० —**धिः** समुद्र, —**पः** पिशाच, भूत।

कीलिका [कील + कन् + टाप्, इत्वम्] धुरे की कील।

कीलित (वि०) [कील् + क्त] 1 बंधा हुआ, बद्ध 2 स्थिर कील से गड़ा हुआ, कील ठोक कर जड़ा हुआ —तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितम् गीत० ७, सा मदवेलासि कीलितेव —मा० ५।१०।

कीश (वि०) [क + ईश् + क] नंगा, —शः 1. लंगूर, बन्दर 2 सूर्य 3 पक्षी।

कुः (स्त्री०) [कु + डु] 1 पृथ्वी 2. त्रिभुज का आधार आकृति की आधार-रेखा, सम० —**जः** मंगलग्रह।

कु (अव्य०) 'खराबी', ह्रास, अवमूल्यन, पाप, भर्त्सना ओछापन, अभाव त्रुटि आदि भावों को प्रकट करने वाला उपसर्ग, इसके स्थानापन्न अनेक हैं, उदा० कद् (कदश्व), कव (कवोष्ण), का (कोष्ण), कि (किप्रभु) पञ्च० ५।१७। सम० —**कर्मन्** (नपुं०) बुरा कार्य, नीच कर्म, —**ग्रहः** अमंगल-ग्रह, —**ग्रामः** छोटा गांव या पुरवा (जहाँ राजा का अधिकारी, अग्निहोत्री, डाक्टर या नदी न हो), —**चेल** (वि०) फटे पुराने वस्त्र पहने हुए, —**चर्या** दुष्टता, अशिष्टाचरण अनौचित्य, —**जन्मन्** (वि०) नीच कुल में उत्पन्न —**तनु** (वि०) विकृतकाय, कुरूप (—नुः) कुबेर का विशेषण संज्ञी खराब शीशा, —**तर्कः** 1 कुतर्कात्मक, हेत्वाभासरूप 2. धर्मविरुद्ध सिद्धान्त स्वतन्त्र चिन्तन कुतर्केष्वभ्यासः सततपरपैशुन्यमननम् गङ्गा० ३१ —**पथः** तर्क करने की झूठी रीति —**तीर्थम्** खराब अध्यापक —**दृष्टिः** (स्त्री०) 1 कमजोर नजर 2 पापदृष्टि कुटिल आंख (आल०) 3 वेदविरुद्ध सिद्धान्त, धर्मविरुद्ध सिद्धांत—मनु० १२।९५ —**देशः** 1 बुरा देश या बुरी जगह 2 वह देश जहाँ जीवन की आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो या जो अत्याचार से पीड़ित हो, —**देह** (वि०) कुरूप विकृतकाय (—हः) कुबेर का विशेषण, —**धी** (वि०) 1 मूर्ख, बुद्धू वंचक 2 दुष्ट, —**नटः** बुरा पात्र, —**नदिका** छोटी नदी क्षुद्र नदी, सद्यः जोभ—सुपूरा स्यात्कुनदिका—पञ्च० १।२५ —**नाथः** बुरा स्वामी, —**नामन्** (पु०) कंजूस, —**पथः** 1 कुमार्ग, बुरा रास्ता (आल० भी) 2 धर्मविरुद्ध सिद्धान्त, —**पुत्रः** बुरा या दुष्ट पुत्र —**पुरुषः** नीच या दुष्ट पुरुष, —**पूय** (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय, —**प्रिय** (वि०) अरुचिकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम, —**प्लवाः** बुरी किश्ती कुप्लवैः सन्तरन् जलम्—मनु० ९।१६१, —**ब्रह्मः**, —**ब्राह्मणः** पतित ब्राह्मण, —**मंत्रः** 1 बुरा उपदेश 2 बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मंत्र —**योगः** अशुभ संयोग (ग्रहों का), —**रस** (वि०) बुरे रस या स्वाद वाला, (—सः) एक प्रकार की मदिरा, —**रूप** (वि०) कुरूप, विकृत रूप, पञ्च० ५।१९, —**रूप्यम्** टीन, जस्ता, —**लंकः** सीसा, —**वचस्**, —**वाच** (वि०) गाली देने वाला, अश्लील भाषी, दुर्वचन या कुभाषा बोलने वाला (नपुं०) दुर्वचन, दुर्भाषा, —**वर्षः** आकस्मिक प्रचंड बौछार, —**विवाहः** विवाह का भ्रष्ट या अनुचित रूप—मनु० ३।६३, —**वृत्तिः**

(स्त्री) बुरा व्यवहार वैद्य खोटा वैद्य कठवैद्य, नीम हकीम —शील (वि०) अक्खड़ दुष्ट अशिष्ट दुष्ट स्वभाव —स्थलम् बुरा ग्रगह —सरित (स्त्री०) क्षुद्र नदी छोटा नाला उच्छिद्यन्ते क्रिया सर्वा ग्रीष्मे कुसरितो यथा पञ्च० २।५ —सृति (स्त्री०) 1 दुराचरण दुष्टता 2 जादू दिखाना 3 धूर्तता स्त्री खोटी स्त्री।

कु I (भ्वा० आ० कवते) ध्वनि करना।
II (तुदा० आ० कुवते) 1 बड़बड़ाना कराहना 2 चिल्लाना क्रन्दन करना।
III (अदा० पर० कौति) गुनगुनाना भनभनाना गुंजन करना (मधुमक्खी की भांति)।

कुकभम् [कुकेन आदानेन भानं भाति कुक, भा क] एक प्रकार की पोषक मदिरा।

कुकील [कौ पृथिव्यां कील इव] पहाड़।

कुकु (कू) र [कुक वा कु इत्यव्ययम् अलंकृता कन्या या सत्कृत्य पात्राय ददाति कुकु (कू) + दा + र] समस्त श्रृंगारों से सुभूषित (अलंकृत) कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला।

कुकुन्द (न्दु) र [कं कामिनां कुन्दं निं० मात्] जघन कूप, कूल्हे के दो गर्त जो नितम्ब के ऊपरी भाग में होते हैं दे० ककुन्दर।

कुकुरा (ब० व०) [कु + कुर + क] एक देश का नाम इसे 'दशार्ह' भी कहते हैं।

कुकूल,—लम् [कु + ऊलच् कुगागम] 1 चोकर भूसी —कुकूलानां राशौ तदनु हृदयं पच्यत इव उत्तर० ६।४० 2 भूसी से बनी आग —लम् [कौ कूलम् ष० त०] 1 छिद्र खाइ (खूंटे मुण्डादिको से भरी हुई) 2 कवच बख्तर।

कुक्कुट [कुक + क्विप् तेन कुटति कुक + कुट + क] 1 मुर्गा जंगली मुर्गा 2 जलते हुए भूस का फिलमिलाना जलती हुई लकड़ी 3 आग की चिंगारी।

कुक्कुटि, —टी (स्त्री०) [कुक्कुट + इन् पक्षे ङीप्] दम्भ पाखण्ड, धार्मिक अनुष्ठानों से स्वार्थसिद्धि।

कुक्कुभ [कुक्कु शब्द भाषते कुक्कु + भाष + ड बा०] 1 जंगली मुर्गा 2 मुर्गा 3 वार्निश।

कुक्कुर (स्त्री०—री) [कोकते आदत्ते कुक + क्विप् कुक किंचिदपि गृहीत्वा जनं दृष्ट्वा कुरति शब्दायते कुक + कुर + क] कुत्ता—यमं श्व न कुक्कुरैरहरहर्जंबुगतर वध्यते मृच्छ० ३।१२। सम० —वाच (पुं०) हरिणों की एक जाति।

कुक्ष [कुष् + स] पेट।

कुक्षिः [कुष् + क्सि] 1 पेट जिह्विाम्यातकुक्षि (भुजगपति) मृच्छ० १।१२ 2 गर्भाशय, पेट का वह भाग जिसमें भ्रूण रहता है—कुम्भीनस्यामच कुक्षिज —रघु० १२।१५ सि० १३।४० 3 किसी चीज का भीतरी भाग रघु० १०।६५ (यहाँ शब्द द्वितीय अर्थ को भी प्रकट करता है) 4 गर्त 5 गुफा कन्दरा रघु० २। ३८ ६ ७ खाड़ी का स्थान 7 खाड़ी। सम० —शूल पेट दर्द, उदरशूल।

कुक्षिम्भरि (वि०) [कुक्षि म इन् मुम्] अपना पेट भरने को चिन्ता करने वाला स्वार्थी पेटू बहुभोजी।

कुङ्कुमम् [कु उमक् नि० मुम्] केसर जाफरान कश्मीरी कुङ्कुमकेसराणि मा० ... रघु ४।६७ ऋतु० ४।२ ... —अद्रि एक पहाड़ का नाम

कुच ... 1 (भ्वा० पर०) 1 (पक्षी की भांति) ... 2 ... 3 ... 4 ... 5 ... 6 ... 7 ... 8 ... — ... कुकुच ... 1 ... 3 ... —मृदु ... प्रभा ... मुकुलानाम् ...

II (तुदा० पर०) (कुचति) ... 1 ... 2 ... 3 ... —भ्रावो का ... सिकुड़ना, सिकोड़ना ...

॥ (तुदा० पर० (भ्वा० भी)—कोचति, कुचति, कुचित) 1 टेढ़ा बनाना, झुकाना या टेढ़ा करना 2 टेढ़ी राह से चलना 3 छोटा करना घटाना 4 सिकुड़ना संकुचित होना 5 की ओर जाना ... , सिकोड़ना टेढ़ा करना झुकाना (प्रेर० भी) कु० ५।७ रघु० ६।१५, भट्टि० १।३ वि—, सिकोड़ना टेढ़ा करना।

कुच [कुच + क] स्तन उरोज चूचा अपि वनान्तरमल्पकुचान्तरा—विक्रम० ४।२६। सम० —अग्रम्,—मुखम्, चूचक स्तनाग्र —तटी 1 (स्त्रियो के) स्तन का उभार —फल अनार का वृक्ष।

कुचर (वि०) [स्त्री० —रा —री] 1 इधर उधर आने वाला इधर उधर जाने वाला 2 दुष्ट, नीच, दुश्चरित्र 3 अप मानित करने वाला, छिद्रान्वेषी, स्थिर तारा।

कुचलम् [कु + चल + क] कमल की एक जाति कुमुद।

कुज [कु + जन + ड] 1 वृक्ष 2 मंगल ग्रह 3 एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मार गिराया था (नरक भी इसी का नाम है) —जा सीता।

कुजम्भल कुजम्भिल [कौ पृथिव्यां जम्भनमिव अव०स०, कौ पृथिव्या कौ पृथिवी या जम्भ ष० त० वा स० त०] सेंध लगाकर घर में चोरी करने वाला चोर।

कुज्झटिः, कुज्झटिका, कुज्झटी [कुज् + क्विप् झट + इन्, कुज् चासौ झटिश्च कर्म० स०, कुज्झटि + कन् + टाप्, कुज्झटि + ङीष्] कुहरा, धुन्ध।

कुञ्च् दे० कुच॥

कुञ्चनम् [कुञ्च्+ल्युट्] टेढ़ा करना, झुकाना, सिकोड़ना।

कुञ्चिः [कुञ्च्+इन्] आठ मुट्ठियों या अंजलियों की धारिता का माप अष्टमुष्टिर्भवेत्कुञ्चिः।

कुञ्चिका [कुञ्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. कुंजी, चाबी —भर्तृ० २।६१ 2. बाँस का अंकुर।

कुञ्चित (वि०) [कुञ्च्+क्त] सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ, झुकाया हुआ।

कुञ्जः –,ञ्जम् [कु+जन्+ड, पृषो० साधुः] 1 लताओं तथा पौधों से आच्छादित स्थान, लतावितान, पर्णशाला, –वद प्रिये कुञ्जं सविधमिति पुष्प वीक्ष्य [illegible] –गीत० ५, मधुकरनिकुरम्ब– १२ मेघ० १९, रघु० ९।६४ 2. हाथी का दाँत। सम० कुटीरः लताकुञ्ज लताओं तथा पौधों से परिवेष्टित स्थान–कुञ्जकुटीरकर्णिकाकपटा उत्तर० २।२९, भा० ७।१२, कोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे– गीत० १।

कुञ्जरः [कुञ्जो हनुस्थः सोऽस्यास्ति–कुञ्ज+र] 1 हाथी 2 (समास के अन्त में) कोई सर्वोत्तम या श्रेष्ठ वस्तु अमरकोश इस प्रकार के निम्नांकित शब्दों का उल्लेख करता है –स्युरुत्तरपदे व्याघ्र पुंगवर्षभकुञ्जराः, सिंह शार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थवाचकाः। 3. पीपल का वृक्ष (अश्वत्थ) 4 हस्त नक्षत्र। सम० –अनीकम् सेना का एक प्रभाग जिसमें हाथी हों, हस्ति-सेना, –अशनः अश्वत्थ वृक्ष, –अरातिः 1 शेर 2 शरभ (आठ पैर का एक काल्पनिक जन्तु), –ग्रहः हाथी पकड़ने वाला।

कुट् i (तुदा० पर०—कुटति, कुटित) 1 कुटिल या वक्र होना 2 टेढ़ा करना या झुकाना 3 बेईमानी करना, छल करना, धोखा देना।

ii (चुरा० पर० कुटयति) तोड़ कर टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ देना, विभक्त करना, विघटित करना।

कुटः, –टम् [कुट्+क] जलपात्र, करवा, घड़ा,—टः 1 किला, दुर्ग 2 हथौड़ा 3 वृक्ष 4 घर 5 पहाड़। सम० –जः 1 एक वृक्ष का नाम –मेघ० ४, रघु० १९।३७, ऋतु० ३।१३, चौर० १।४२ 2. अगस्त्य 3 द्रोण –हारिका सेविका, नौकरानी।

कुटकम् [कुट+कन्] बिना हलस का हल।

कुटङ्कः [कु+टङ्क्+घञ्] छत, छप्पर।

कुटङ्गकः [कुटस्य अङ्गम् ष० त०] 1 वृक्ष के ऊपर फैली हुई लताओं से बना लतामण्डप 2. छोटा घर, झोंपड़ी कुटिया।

कुटपः [कुट+पा+क] 1 अनाज की माप (=कुडव) 2. घर के निकट वाटिका 3 ऋषि, संन्यासी, –पम् कमल।

कुटरः [कुट्+करन् बा०] वह खूंटी जिसमें मथने वाली रई की रस्सी लिपटी रहती है।

कुटलम् [कुट्+कलच्] छत, छप्पर।

कुटिः [कुट्+इन्] 1. शरीर 2. वृक्ष (स्त्री०) 1. कुटिया, झोंपड़ी 2 मोड़, झुकाव। सम०—चरः सूंस, शिंशुक।

कुटीरम् [कुट+करन्] कुटिया, झोंपड़ी।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] 1. टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा हुआ, घुंघराले –वेशान्ते कुटिलाः कुटिलको—श० ५।२६, ऋतु० ४।८०, १९।१७ 2. घुमावदार, बलखाती हुई— वसेव कुटिला नदी–सिद्धा० 3 (आलं०) कपटी, जालसाज, बेईमान। सम० —आशय (वि०) दुरात्मा, दुर्वृत्ति,– पक्ष्मन् (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला, –स्वभाव (वि०) कुटिल प्रकृति, बेईमान, दुर्वृत्ति।

कुटिलिका [कुटिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 दबे पाँव आना (जिस प्रकार कि शिकारी अपने शिकार पर आते हैं) झुक कर चलना, 2. लुहार की भट्टी।

कुटी [कुटि+ङीष्] 1 मोड़ 2, कुटिया, झोंपड़ी—आसीदी-यसि कुटीयाम्—सिद्धा०—रघु० ११।७२, मठ°, उटज° आदि 3. कुटनी, दूती। सम०—चरः किसी संघविशेष का संन्यासी—चतुर्विधा भिक्षवस्ते कुटीचक-बहूदको हंस परमहंसश्च यो य पश्चात् स उत्तम। –महा० – चरः एक संन्यासी जो अपने परिवार को अपने पुत्र की देख रेख में छोड़कर अपना सारा समय पूर्णतया तपोनुष्ठान एवं धर्मचर्या में लगा देता है।

कुटीरः, –रम् } [कुटी+र, कुटीर+कन्] झोंपड़ी, कुटिया, कुटीरकः } –अमरु० २।२९, भाम० ४८।

कुट्टनी [कुट्+ल्युट्+ङीप्] कुट्टिनी, दूती—दे० कुट्टनी।

कुटुम्बम्, कुटुम्बकम् [कुटुम्ब्+अच्, कुटुम्ब+कन्] 1 गृहस्थी, परिवार—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् हि० १।७०, याज्ञ० ११८५, मनु० ११।१२, २२, ८।१६६ 2 परिवार के कर्तव्य और चिंताएँ—तद्गुणहित-कुटुम्ब रघु० ७।७१ —म्बः, –म्बम् 1 बंधु, रक्त का सम्बन्ध 2. सन्तान, सन्तति 3. नाम 4 वंश। सम० —व्यापृतः, —भरः —भारः परिवार का भार —अर्थी तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धम्—श० ४।१९ —पोषक (वि०) (वह जो) परिवार का पालन पोषण करता है, तथा परिवार की भलाई का ध्यान रखता है।

कुटुम्बिकः, कुटुम्बिन् (पुं०) [कुटुम्ब+ठन्, इनि वा] गृहस्थ, कुल पिता, जिसे परिवार का भरण पोषण करना पड़ता है या जो देखभाल करता है—श्रोत्रिय कृषिजीविनः कन्यार्थे कुटुम्बिन –कु० ६।८५, विक्रम० ३।१, मनु० ३।८०, याज्ञ० २।४५ 2. परिवार का एक सदस्य, —नी 1 गृहपत्नी गृहिणी (गृह स्वामिनी), अथ कुटुम्बिनीमाहूय पृष्टवान्—मुद्रा० १, प्रयत्नप्रेक्षि-ते हि गर्भ कारणेन कुटुम्बिनी—मालवि० ११।१७, रघु० ८।८६, अमरु ४८ 3. स्त्री।

कुट्ट (चुरा० उभ० – कुट्टयति, कुट्टित) 1 काटना, बांटना 2 पीसना चूर्ण करना 3 दोष देना, निन्दा करना 4 गुणा करना ।

कुट्टकः [कुट्ट्+ण्वुल्] कूटने वाला, पीसने वाला ।

कुट्टनम् [कुट्ट्+ल्युट्] 1 काटना 2 कूटना 3 दुर्वचन कहना, निन्दा करना

कुट्टनी (ट्टि) नी [कुट्टयति नाशयति स्त्रीणां कुलम् – कुट्ट्+णिच्+ल्युट्+ङीप्, कुट्ट+इनि वा] कुटनी दूती, दल्ली ।

कुट्टमितम् [कुट्ट्+घञ्, तेन निर्वृत्तं इत्यर्थे कुट्ट्+इमप्+इतच्] प्रियतम के प्यार का दिखावटी तिरस्कार (झूठमूठ ठुकराना) (नायिका के २८ हावभाव तथा अनुनय में से एक) सा० द० परिभाषा देता है – केशस्तनाधरादीनां ग्रहे हर्षेपि संभ्रमात्, प्राहुः कुट्टमितं नाम शिरःकरविधूननम्, १४२ ।

कुट्टाक (वि०) (स्त्री० –की) [कुट्ट्+षाकन्] जो विभक्त करता है या काटता है सारङ्गकुरङ्गविषाविसकुम्भकूटकुट्टाकपाणिकुलिशस्य हरेः प्रमादः – मा० ५।३२ ।

कुट्टारः [कुट्ट्+आरन्] पहाड़, —रम् 1 मैथुन 2 ऊनी कंबल 3 एकान्त ।

कुट्टिमः,—**मम्** [कुट्ट्+इमप्] 1 फर्श, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्श पक्का फर्श –कान्तेन्दुकान्तोपलकुट्टिमेषु–शि० ३।४०, रघु० १।१९ 2 भवन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि 3 रत्नों की खान 4 अनार 5 झोंपड़ी, कुटिया, छोटा घर ।

कुट्टिहारिका [कुट्टि मत्स्यमांसादिकं हरति हृ –कुट्टि+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी ।

कुट्मल कुड्मल ।

कुठः [कुठ्यते छिद्यते –कुठ्+क] वृक्ष ।

कुठर= दे० 'कुठर' ।

कुठारः (स्त्री०—री) [कुठ्+आरन] कुल्हाड़ा (परशु) कुल्हाड़ी आतुः केवलमेव यौवनवनच्छेदे कुठारा वयम – भर्तृ० ३।११ ।

कुठारिकः [कुठार+ठन्] लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला ।

कुठारिका [कुठार+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] छोटा कुल्हाड़ा, फरसा ।

कुठारुः [कुठ्+आरु] 1 वृक्ष 2 लंगूर, बन्दर ।

कुठिः [कुठ्+इन्+किच्] 1 वृक्ष 2 पहाड़ ।

कुडङ्गः (पुं०) कुंज, लतागृह ।

कुडवः (ब:) [कुड्+कवन्, कपन् वा] एक चौथाई प्रस्थ के बराबर या बारह मुट्ठी (अंजलि) अनाज की तोल ।

कुड्मल (वि०) [कुड्+कल मुट्] खुलता हुआ, पूरा खिला हुआ, लहराता हुआ (जैसे खिला हुआ फूल) रघु० १८।३७ –लः खुलना कली विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु– रघु० १६।४७, उत्तर० ६।१७, शि० २।७ –लम् एक प्रकार का नरक मनु० ४।८९ याज्ञ० ३।२२२ ।

कुड्मलित (वि०) [कुड्मल+इतच्] 1 कलीदार, खिला हुआ 2 प्रसन्न हसमुख ।

कुड्यम् [कु+यक् कुडागम] 1 दीवार भेदे कुड्यपातने–याज्ञ० २।२२३ शि० ३।४५ 2 (दीवार पर) पलस्तर करना लीपना पोतना 3 उत्सुकता दिखाना । सम० **छेदिन्** (पुं०) घर में सेंध लगाने वाला चोर, **छेदक** खोदने वाला (**द्यम्**) खाई गढ़ा (दीवार में) दरार ।

कुण् (तुदा० पर० कुणति कुणित) 1 सहारा देना सहायता देना 2 शब्द करना ।

कुणकः [कुण्+क+कन्] किसी जानवर का अभी पैदा हुआ बच्चा ।

कुणप (वि०) (स्त्री० पी) [कुण+कपन्] 1 मुर्दे जैसा दुर्गंध देने वाला बदबूदार पः, पम् मुर्दा लाश आमनीव कुणपभाजनं विक्रम० ५।मिद्ध) –अमेध्य कुणपाशी च मनु० १२ ७१ जीवित जन्तुओं के प्रति घृणा व तिरस्कार का सूचक शब्द –पः 1 बर्छी 2 दुर्गंध बदबू ।

कुणिः [कुण् इन्] लूला जिसका हाथ सूख गया हो ।

कुण्टक (वि०) (स्त्री० की) [कुण्ट+ण्वुल्] मोटा स्थूल ।

कुण्ठ (भ्वा० पर० कुण्ठति कुण्ठित) 1 कुण्ठित ठुट्ठा या मन्द हो जाना 2 लंगड़ा और विकलांग होना 3 मन्दबुद्धि या मूर्ख होना सुस्त होना 4 ढीला करना (प्रेर० या चुरा० पर०) छिपाना ।

कुण्ठ (वि०) [कुण्ठ अच्] 1 ठुट्ठा मन्द बन्द धारवाला महत्सु कुण्ठम कु० ३।१२ प्रभावरहित हो गया कुण्ठीभवन्त्युपलादिषु क्षुराः शारी० 2 मन्द मूर्ख जड़ 3 आलसी सुस्त 4 दुर्बल ।

कुण्ठकः [कुण्ठ+ण्वुल्] मूर्ख ।

कुण्ठित (भू० क० कृ०) [कुण्ठ क्त] 1 ठुट्ठा, मन्दीकृत (आलं० भी) विभवोऽक्षमक्षमेष्वकुण्ठितम रघु० ११।७४, भामि० २।७८ कु० २।२० शास्त्रेष्वकुण्ठितबुद्धि रघु० १।१९, क्रियापि रही 2 जड़ 3 विकलांग ।

कुण्ड,–**डम्** [कुण+ड] 1 प्याले की शक्ल का बर्तन, चिलमची, कटोरा 2 हौज 3 कुंड, कुंड अग्निकुण्डम 4 पोखर या पल्वल–विशेषतः जो किसी देवता के नाम पर धर्मार्थ समर्पित कर दिया गया हो 5 कमण्डलु या

विवाचाय, -ड: (स्त्री०--डी) पति के जीवित रहते व्यभिचार द्वारा किसी दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान पत्यौ जीवति कुण्डः स्यात् मनु० ३।१७४, याज्ञ० १।२२२। सम० --आशिन् (पुं०) भड़ुवा, विट, अपनी जीविका के लिए जो कुण्ड पर निर्भर करता है अर्थात् वर्णसंकर, जारज,-- मनु० ३।१५८ याज्ञ० १।२२४, ऊधस् (कुण्डोध्नी) 1 वह गाय जिसका ऐन या औड़ी भरी हुई हो 2 भरे पूरे स्तनों वाली स्त्री,--कीट: 1 रखैली स्त्रियाँ रखने वाला 2 चार्वाकमतावलम्बी, नास्तिक, जारज ब्राह्मण, कौल नीच या दुश्चरित्र व्यक्ति, गोलम्--गोलकम् 1 कांजी 2 कुण्ड और गोलक का समुदाय।

कुण्डल:,-लम् [कुण्ड + मत्वर्थे ल] 1 कान की बाली, कान का आभूषण--श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन--भर्तृ० २।७१ चौर० ११ ऋतु० २।२०, ३।१९ रघु० ११।१५ 2 कड़ा 3 रस्सी का गोला।

कुण्डलना [कुण्डल + णिच् + युच् + टाप्] घेरा डालना (शब्द को गोल घेरे में रखना) यह प्रकट करने के लिए कि यह भाग छोड़ देना या इस पर विचार नहीं करना है, तदाज्ञसन्नाशन स्मितार्थिनो कुर्वंति चित्ते कुरुते यथा यथा, तनोति भानो परिवेषकैतवात्तथा विधि कुण्डलना विधोरपि। नै० १।१४, तु० २।९५ से भी।

कुण्डलिन् (वि०) (स्त्री०--नी) [कुण्डल + इनि] 1 कुण्डलों से विभूषित 2 गोलाकार, सर्पिल 3 घुमावदार, कुण्डली मारे हुए (साँप की भांति) --पुं० 1 साँप 2 मोर 3 वरुण की उपाधि।

कुण्डिका [कुण्ड + कन् + टाप्, ह्रस्वम्] 1 घड़ा 2 कमण्डलु।

कुण्डिन् (पुं०) [कुण्ड + इनि] शिव की उपाधि।

कुण्डिनम् [कुण्ड् + इनच्] एक नगर का नाम, विदर्भदेश की राजधानी।

कुण्ठि (री) र (वि०) [कुण्ठ् + इ (ई) रन्] बलवान् --र: मनुष्य।

कुत: (अव्य०) [किम् + तसिल्] 1 कहाँ से, किधर से --कस्य त्वं वा कुत आयातः -मोह० ३ 2 कहाँ और कहाँ, और किस स्थान पर आदि इंद्रियार्थमोह कुत -- श० २।५ 3 क्यों, किस लिए किस कारण से किस प्रयोजन से --कुत इदमुच्यते - श० ५ 4 कैसे, किस प्रकार --स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य--श० १।१५ 5 और अधिक, और कम-- न त्वामभोत्स्यमधिक कुतोऽन्य --भग० ११।४३, ४।३१, न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न स्वैरी स्वैरिणी कुतः --का० 6 क्योंकि, कभी कभी 'कुतः' केवल 'किम्' शब्द के अपादान के रूप में ही प्रयुक्त होता है--कुतः कालात्समुत्पन्नम्--हि० पु० (=कस्मात् कालात्), जब 'कुतः' के आगे 'चिद्' 'चन' या 'अपि' जोड़ दिया जाता है तो यह अनिश्चयबोधक बन जाता है।

कुतप: [कु + तप् + अच्] 1 ब्राह्मण 2 द्विज 3 सूर्य 4 अग्नि 5 अतिथि 6 बैल, सांड 7 दोहता 8 भानजा 9 अनाज 10 दिन का आठवाँ मुहूर्त--अह्नो मुहूर्ता विख्याता दश पंच च सर्वदा, तत्राष्टमो मुहूर्तो यः स कालः कुतपः स्मृतः। --पम् 1 कुश घास 2 एक प्रकार का कम्बल।

कुतस्त्य (वि०) [कुतस् + त्यप्] 1 कहाँ से आया हुआ 2 कैसे हुआ।

कुतुकम् [कुत् + उकञ्] 1 इच्छा, रुचि 2 जिज्ञासा (कौतुक) 3 उत्सुकता, उत्कण्ठा, उत्कटता--केलिकला-कुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले मंजुलवंजुलकुंजगतं विचकर्ष करेण दुकूले गीत० १।

कुतुप:, कुतू (स्त्री०) [कुतू + डुप पृषो०, कु + तन् + कू टिलोप बा०] कुप्पी (तेल डालने के लिए चमड़े की कुप्पी)।

कुतूहल (वि०) [कुतू + हल् + अच्] 1 आश्चर्यजनक 2 श्रेष्ठ सर्वोत्तम 3 प्रशंसाप्राप्त, प्रसिद्ध,--लम् 1 इच्छा, जिज्ञासा--उज्झितशब्देन जनित न कुतूहलम् --श० १, यदि विलासकलासु कुतूहलम्--गीत० १, (परी) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम् रघु० ३।५४ १३।२१, १।६५ 2 उत्सुकता 3 जिज्ञासा को उत्तेजित करने वाला, सुहावना, मनोरंजक कौतुक या जिज्ञासा।

कुत्र (अव्य०) [किम् + त्रल्] 1 कहाँ, किस स्थान में -- कुत्र मे शिशुः पञ्च० १, प्रवृत्तिः कुत्र कर्तव्या --हि० १ 2 किस विषय में नैतावता भद्रे आत्मा वयं कुत्रोपयुज्यते- पञ्च० १। -८ (कभी कभी 'कुत्र' का प्रयोग 'किम्' शब्द अधि० एक० व० के लिए किया जाता है) जब 'कुत्र' के साथ चिद्, चन, या अपि, जोड़ दिया जाता है तो वह अर्थ की दृष्टि से अनिश्चयात्मक बन जाता है, कुत्रापि, कुत्रचित् किसी जगह, कहीं, न कुत्रापि कहीं नहीं कुत्रचित्--कुत्रचित्--एक स्थान पर दूसरे स्थान पर, यहाँ-वहाँ -मनु० ९।३४।

कुत्रत्य (वि०) [कुत्र + त्यप्] कहाँ रहने वाला या कहाँ वास करने वाला।

कुत्स् (चुरा० आ०--कुत्सयते, कुत्सित) गाली देना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना, मनु० २।५४, याज्ञ० १।३१, भा० २।२८।

कुत्सनम्, कुत्सा [कुत्स् + ल्युट्, कुत्स् + अ + टाप्] दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना--देवतानां च कुत्सनम्--मनु० ४।१६३।

कुत्सित (वि०) [कुत्स् + क्त] 1 घृणित, तिरस्करणीय 2 नीच, अधम, दुश्चरित्र।

कुथ: [कु + थक्] कुशा नामक घास।

कुथः,-थम्,-था 1. छींट की बनी हाथी की झूल 2. दरी।

कुद्दारः,-लः,-लकः [कु+दृ+णिच्+अण्, पृषो०, कु+दल्+णिच्+अण् पृषो०, कुद्दाल+कन्] 1. कुदाली, खुर्पा 2. कांचन वृक्ष।

कुद्मलम्=कुड्मलम्।

कुद्रङ्कः [कुद्र+कै+क नि० साधु, कु+उत्+रङ्क+घञ्] 1. चौकी 2. मचान पर बना मकान।

कुनकः [?] कौवा।

कुन्तः [कु+उन्द्+क्त, बा० शक० पररूपम्] 1. भाला, पंखदार बाण, बर्छी—कुन्ताः प्रविशन्ति—काव्य० २ (अर्थात्—कुन्तधारिणः पुरुषाः); विगाहमिह्लन्नकुन्तमुक्ताफलनिकंतकिदन्तुरिताङ्गे—गीत० १ 2 छोटा जन्तु, कीड़ा।

कुन्तलः [कुन्त+ला+क] 1. सिर के बाल, बालों का गुच्छा.—प्रतनुविरलैः प्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलैः—उत्तर० १।२०, चौर० ४, ६, गीत० २ 2. कटोरा 3 हल,—लाः (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम।

कुन्तयः ('कुन्त' का ब० व०, पु०) एक देश और उसके निवासियों का नाम।

कुन्तिः [कम्+झिच्] एक राजा का नाम, क्रथ का पुत्र। सम०—भोजः एक यादव राजकुमार, कुन्तिदेश का राजा, जिसने निस्सन्तान होने के कारण कुन्ती को गोद ले लिया था।

कुन्ती [कुन्ति+ङीष्] 'शूर' नामक यादव की पुत्री पृथा जिसको कुन्तिभोज ने गोद लिया। (यह पाण्डु की पहली पत्नी थी, किसी शाप के कारण पाण्डु से सन्तान न हुई, उसने इसी लिए कुन्ती को अनुमति दे दी कि वह दुर्वासा ऋषि से प्राप्त अपने मन्त्र का प्रयोग करे जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन करके उससे पुत्र प्राप्त कर सकती है। फलतः उसने धर्म, वायु और इन्द्र का आवाहन किया और उनसे क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को प्राप्त किया। वह कर्ण की भी माता थी उसने अपनी कौमार्य—अवस्था में मन्त्र का परीक्षण करने के लिए सूर्य का आवाहन किया और उसके संयोग से उसने कर्ण को प्राप्त किया)

कुन्थ् (भ्वा०-क्रया० पर०—कुन्थति, कुथ्नाति, कुन्थित) 1. कष्ट सहन करना 2. चिपकना 3. आलिंगन करना 4. चोट पहुँचाना।

कुन्द,-दम् [कु+दै (दो)+क, नि० मुम्, या कु+उन्द्+अच्, नुम्] चमेली का एक भेद, मोतिया (सफेद और कोमल) कुन्दावदाताः कलहंसमालाः—भट्टि० २।१८, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः—मेघ० ११३,—दम् इस पौधे का फूल—अलके बालकुन्दानुविद्धम्—मेघ० ६५, ४७,—दः 1. विष्णु की उपाधि 2. खराद। सम०—कर: खरादी।

कुन्दमः [कुन्द+मा+क] बिल्ली।

कुन्दिनी [कुन्द+इनि+ङीप्] कमलों का समूह।

कुन्दुः [कु+दृ+डु बा० मुम्] चूहा, मूसा।

कुप् (दिवा० पर०—कुप्यति, कुपित) 1. क्रुद्ध होना (प्रायः उस व्यक्ति के लिए सम्प्र० जिस पर क्रोध किया जाय, परन्तु कभी कभी कर्म० या संबं० भी प्रयुक्त होते हैं) कुप्यन्ति हितवादिने—का० १०८, मालवि० ३ २१, उत्तर० ७, चकोप तस्मै स भृशम्—रघु० ३।५६ 2. उत्तेजित होना, सामर्थ्य ग्रहण करना प्रचण्ड होना, जैसा कि—दोषाः प्रकुप्यन्ति—सुश्रु० अभि—, क्रुद्ध होना, भट्टि० १५।२५, परि—क्रुद्ध होना, प्र—, 1 क्रुद्ध होना,—निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति—पञ्च० १।२८२, 2 उत्तेजित होना, बल प्राप्त करना, बढ़ना (प्रेर०) उभारना, भड़काना भिड़ाना।

कुपिन्द=दे० कुविन्द।

कुपिनिन् (पु०) [कुपिनी मत्स्यधानी अस्ति अस्य कुपिनी+इनि] मछुवा।

कुपिनी [कुप्+इनि+ङीप्] छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़ने का एक प्रकार का जाल।

कुपूय (वि०) [कु+पूय्+अच्] घृणित, नीच, अधम, तिरस्करणीय।

कुप्यम् [गुप्+क्यप्, कुत्वम्] 1 अपधातु 2. चाँदी और सोने को छोड़ कर और कोई धातु—कि० १।३५, मनु० ७।९६, १०।११३।

कुबेरः (वे) र [कुत्सितम् वे (बे) रं शरीरं यस्य सः] धन दौलत और कोष का स्वामी, उत्तरदिशा का स्वामी—कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ गन्तुं प्रवृत्ते समयं विलंघ्य—कु० ३।२५ (इस पर मल्लि० की टीका के अनुसार) [कुबेर इडविडा से उत्पन्न विश्रवा का पुत्र है, और इसीलिए वह रावण का आधा भाई है। धन और उत्तर दिशा का स्वामी होने के अतिरिक्त यह यक्ष और किन्नरों का राजा तथा रुद्र का मित्र है, इसका वर्णन विकृत शरीर के रूप में पाया जाता है, इसके तीन टाँगें और आठ दाँत थे, और एक आँख के स्थान में एक पीला चिह्न था], सम०—अचलः,—अद्रिः कैलास पर्वत की उपाधि,—दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा।

कुब्ज (वि०) [कु ईषत् उब्जमार्जवं यस्य शक० पररू०] कुबड़ा, कुटिल,—ब्जः 1. मुड़ी हुई तलवार 2. पीठ पर निकला हुआ कुब,—ब्जा कंस की एक सेविका, कहते हैं कि उसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था (कृष्ण और बलराम ने, जब वह मथुरा जा रहे थे राजमार्ग पर कुब्जा को देखा, वह कंस के लिए उबटन ले जा रही थी। उन्होंने उससे से कुछ उबटन माँगा, कुब्जा ने जितना वे चाहते थे, उबटन उनको दे दिया। कृष्ण

उसके इस अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उसने उसका कूब मिटाकर उसे पूरी तरह सीधा कर दिया, तब से वह आकर्षक सुन्दरी स्त्री बनने लगी)।

कुब्जकः [कुब्ज + कन्] एक पौधे का नाम — मनु० ८। २४७, ५।१२ ।

कुब्जिका [कुब्जक + टाप्, इत्वम्] आठवर्ष की अविवाहित लड़की।

कुभृत् (पुं०) [कु + भृ + क्विप्, तुकागम] पहाड़।

कुमारः [कम् + आरन्, उपधाया उत्वम्] 1 पुत्र, बालक, युवा — रघु० ३।४८ 2. पाँच वर्ष से कम आयु का बालक 3 राजकुमार, युवराज (विशेषतः नाटकों में) — चिरात् चित्तकुमार ... — रघु० १७।११ कुमारस्यायुषो बाणः — विक्रम० ५, अथवेन्दुमर्हति कुमारः — मुद्रा० ४ (मलयकेतु ने राक्षस को कहा) 4 युद्ध के देवता कार्तिकेय, — कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् रघु० ५।३६, कुमारोऽपि कुमारविक्रमः — ३।५५ 5 अग्नि 6 तोता 7 सिन्धु नदी। सम० — पालनः 1 बच्चों की देखरेख रखने वाला 2. राजा शालिवाहन — भृत्या 1 छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख 2 गर्भावस्था में स्त्री की देखरेख, प्रसूति विद्या — रघु० ३।१२ — वाहिन्, — वाहन मोर, — सू (स्त्री०) 1 पार्वती का विशेषण 2. गंगा का वि०।

कुमारकः [कुमार + कन्] 1 बच्चा, युवा 2 आँख का तारा।

कुमारयति (ना० धा० पर०) खेलना, क्रीडा करना (बच्चे की तरह)।

कुमारिक (वि०) (स्त्री० — की) } [कुमारी + ठन्,
कुमारिन् (वि०) (स्त्री० — णी) } कुमारी + इनि]
जिसके लड़कियाँ हों जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो।

कुमारिका, कुमारी [कुमारी + ठन् + टाप्, कुमार + ङीप्] 1 दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की 2. अविवाहिता तरुणी, कन्या — त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती मनु० ९।९०, ११।५८, व्यावर्तताम्योपगमात्कुमारी रघु० ६।६९ 3 लड़की, पुत्री 4 दुर्गा 5 कुछ पौधों के नाम। सम० — पुत्रः अविवाहिता स्त्री का पुत्र, — श्वशुरः विवाह से पूर्व भ्रष्ट लड़की का श्वशुर।

कुमुद् (वि०) [कु + मुद् + क्विप्] 1 कृपाशून्य, अमित्र 2. लोभी (नपुं०) 1 सफ़ेद कुमुदिनी 2. लाल कमल।

कुमुदः, — दम् [कौ मोदते इति कुमुदम्] 1 सफ़ेद कुमुदिनी, जो कहते हैं कि चन्द्रोदय के समय खिलती है — नोच्छ्वसिति तपनकिरणैश्चन्द्रस्येवांशुभिः कुमुदम् — विक्रम० ३।१६, इसी प्रकार श० ५।२८, ऋतु० ३।२, २१, ११, मेघ० ४० 2. लाल कमल, — दम् चाँदी, — दः 1. विष्णु का विशेषण 2. दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम 3. कपूर 4. बन्दरों की एक जाति 5. एक नाग जिसने अपनी छोटी बहन कुमुद्वती को राम के पुत्र कुश को प्रदान किया — दे० रघु० १६।७९-८६। सम० — आकरः, — आवासः, — कुमुदों से भरा हुआ सरोवर, — ईशः चन्द्रमा, — खण्डम् कमलों का समूह, — नाथः, — पतिः, — बन्धुः, — बान्धवः, — सुहृद् (पुं०) चन्द्रमा।

कुमुद्वती [कुमुद + ड्मतुप् + ङीप्, वत्वम्] कमल का पौधा।

कुमुदिनी [कुमुद + इनि] 1 सफ़ेद फूलों की कुमुदिनी — अस्तोदयावर्ककलानिधिभ्यां तदन्तर्गतेहि कुमुदिनी — उत्तर० ५।२६, शि० ९।३४ 2 कमलों का समूह 3 कमलों से भरा स्थान। सम० — नायकः, — पतिः चन्द्रमा।

कुमुद्वत् (वि०) [कुमुद + ड्मतुप्, वत्वम्] जहाँ कमलों की बहुतायत हो — कुमुद्वन्ति च वारिणि — रघु० ४।१९, — ती 1 सफ़ेद फूलों की कुमुदिनी (जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है) — अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा — श० ४।२ कुमुद्वती भानुमतीव भावम् (न बबन्ध) — रघु० ६।३६ 2. कमलों का समूह 3 कमलों से भरा स्थान, — ईशः चन्द्रमा।

कुमोदकः [कु + मुद् + णिच् + ण्वुल्] विष्णु का विशेषण।

कुम्बा [कुम्ब् + अच् + टाप्] यज्ञभूमि का अहाता।

कुम्भः [कु भूमिं कुत्सितं वा उम्भति पूरयति — उम्भ् + अण् शक० तारा०] 1 घड़ा, जलपात्र, करवा — इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा — जग०, वर्धनेनायं प्रियां प्रियसुता पयोमुचाम् — हि० १।७७, रघु० २।३४ इसी प्रकार कुच°, स्तन° 2 हाथी के मस्तक का ललाट स्थल — इभकुम्भ — भा० ५।३२, मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः — भर्तृ० १।५९ 3 राशिचक्र में ग्यारहवीं राशि कुम्भ 4 २० द्रोण के बराबर अनाज की तोल — मनु० ८। ३२० 5 (योग दर्शन में) श्वास को स्थगित करने के लिए नाक तथा मुखविवर को बन्द करना 6. वेश्या का प्रेमी। सम० — कर्णः 'घड़े के समान कान वाला' एक महाकाय राक्षस जो रावण का भाई था तथा राम के हाथों मारा गया था (कहते हैं कि इस राक्षस ने हजारों प्राणी, ऋषि तथा स्वर्गीय अप्सराओं को अपने मुंह का ग्रास बना लिया, केवल अनुगामी उस दिन की प्रतीक्षा करते रहे, जब कि इस शक्तिशाली राक्षस से मुक्ति मिले। इन्द्र और उसके हाथी ऐरावत के ईर्ष्याभाव के कारण ब्रह्मा ने इसे शाप दिया। तब से कुम्भकर्ण अत्यन्त घोर तपस्या करने लगा। ब्रह्मा प्रसन्न हुआ, और उसे वरदान देने ही वाला था कि देवों ने सरस्वती से प्रार्थना की कि वह कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर उसे बदल दे। तदनुसार जब वह ब्रह्मा के पास गया तो 'इन्द्रत्व' मांगने के बजाय उसके मुंह से 'निद्रात्व' निकला, जो उसी समय

स्वीकार कर लिया गया। कहते हैं कि वह छः महीने सोता था और फिर केवल एक दिन के लिए जागता था। जब लंका को राम की वानरसेना ने घेर लिया तो रावण ने बड़ी कठिनाई के साथ कुंभकर्ण को जगाया जिससे कि वह उसकी प्रबल शक्ति का उपयोग कर सके। २००० कलश सुरा पीने के पश्चात् कुम्भकर्ण ने हजारों बन्दरों को अपना मुखग्रास बनाने के अतिरिक्त सुग्रीव को बन्दी बना लिया। अन्त में कुंभकर्ण राम के हाथों मारा गया),—कारः 1. कुम्हार—मनु० ३।१४६ 2. वर्ण संकर जाति (वेश्यायां विप्रतश्चौर्यात् कुम्भकारः स उच्यते—उशना, या मालाकारात्कर्मकर्यां कुम्भकारो व्यजायत - पराशर), —कोणः एक नगर का नाम,—घ्राणम् (पु),—योनिः,—संभवः 1. अगस्त्य मुनि के विशेषण—प्रससादोदयादम्भः कुम्भयोनेर्महौजसः —रघु० ४।२१, १५।५५ 2. कौरव और पाण्डवों के शस्त्रविद्याचार्य गुरु द्रोण का विशेषण 3. वसिष्ठ का विशेषण,—दासी कुट्टिनी, कुटनी (कभी कभी यह शब्द गाली के रूप में प्रयुक्त होता है)—लग्नम् दिन का वह समय जब कि राशि चक्र क्षितिज के ऊपर उदय होता है,—मंडूकः 1. (शा०) घड़े का मेंढक 2. (आलं०) अनुभवशून्य मनुष्य—तु० कूपमंडूक, —संधिः हाथी के सिर पर गण्डस्थलियों के बीच का गढ़ा।

कुम्भकः [कुम्भ+कन्+कै+क वा] 1. स्तंभ का आधार 2. (योगदर्शन में) प्राणायाम का एक प्रकार जिसमें दाहिने हाथ की अंगुलियों से दोनों नथुने और मुख बंद करके सांस रोका जाता है।

कुम्भा [कुत्सितम् उम्भति पूरयति इति—उम्भ्+अच्+टाप् शक° पररूपम्] वेश्या, वारांगना।

कुम्भिका [कुम्भ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटा बर्तन 2. वेश्या।

कुम्भिन् [कुम्भ+इनि] 1. हाथी भामि० १।५२ 2. मगरमच्छ। सम०—नरकः एक विशेष प्रकार का नरक,—मदः हाथी के मस्तक से बहने वाला मद।

कुम्भिलः [कुम्भ+इलच्] 1. सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर 2. साहित्य चोर, लेख चोर 3. साला, पत्नी का भाई 4. गर्भ पूरा होने से पहले ही उत्पन्न बालक।

कुम्भी [कुम्भ+ङीप्] पानी का छोटा पात्र, हंडिया। सम०,—नसः एक प्रकार का विषैला सांप उत्तर० २।२९,—पाकः (ए० व० या ब० व०) एक विशेष प्रकार का नरक जिसमें पापी जन कुम्हार के बर्तनों की भांति पकाये जाते हैं—याज्ञ० ३।२२४, मनु० १२।७६।

कुम्भीकः [कुंभी+कै+क] पुंनागवृक्ष। सम०—मक्षिका एक प्रकार की मक्खी।

कुम्भीरः [कुम्भिन्+ईर्+अच्] घड़ियाल।

कुम्भीरकः, कुम्भीलः, कुम्भीलकः [कुम्भीर+कन्, रस्य लः, ततः कन् च] चोर—लोप्त्रेण गृहीतस्य कुम्भीरकस्यास्ति वा प्रतिवचनम्—विक्रम० २, कुम्भीलकैः कामुकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४।

कुर् (तुदा० पर०—कुरति) शब्द करना, ध्वनि करना।

कुरंकरः, कुरंकुरः [कुरम् इति अव्यक्तशब्दं करोति—कुरम्+कृ+ट, कुरम्+कुर्+अच् च] सारस पक्षी।

कुरंगः (स्त्री०—गी) [कु+अङ्गच्] 1. हरिण—तामी सूरि कुरंग मृग जनता कि वाम तब्द तव—का० १।१४, ७१९ कांची कुरंगी मृगशिरशीषु—भग० 2. हरिण की एक जाति (कुरंगः ईषत्ताम्रः स्यात्हरिणाकृतिको महान्)। सम०—अक्षी,—नयना,—नेत्रा हरिण जैसी आँखों वाली स्त्री,—नाभिः कस्तूरी।

कुरंगमः [कुर+गम्+अच्, मुम्] दे० 'कुरंग'।

कुरंटकः [कुर+अंटक+अच्] दे० कुरंटक

कुरटः [कुर्+अटन्+क्विप्] जूता बनाने वाला, मोची।

कुरंटः, कुरंटकः, कुरंटिका [कुर्+अण्टक, कुरण्ट+कन्, स्त्रियां टाप् इत्वम्] पीला सदाबहार, कटसरैया।

कुरंडः [कुर्+अण्डच्] अण्डकोष की वृद्धि, एक रोग जिसमें फोते बढ़ जाते हैं।

कुररः (रः) [कु+क्रुरच्, रलयोरभेदः] क्रौंच पक्षी, समुद्री उकाब।

कुररी [कुरर+ङीष्] 1. मादा क्रौंच,—चकन्द विग्ना कुररीव भूयः—रघु० १४।६८ 2. भेड़। सम०—गणाः क्रौंच पक्षियों का झुंड।

कुरवः (कः), कुरवम् (कम्) [ईषत् रवो यत्र इति, कुरव+कन्] सदाबहार या कटसरैया की जाति, -कुरवकाः रवकोत्कलता वधूः रघु० ९।२९, मेघ० ७८, ऋतु० ६।१८ -कं (कं), -कम् (कम्) सदाबहार का फूल —चूडापाशे नवकुरवकम् - मेघ० ६५, प्रत्याख्यात विशेषकम् कुरवकं श्यामावदातारुणम् - मालवि० ३।५।

कुरीरम् [कृ+ईरन्, उकारादेश] स्त्रियों का एक प्रकार का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा।

कुरुः (ब०व०) [कृ+कु उकारादेश] 1. वर्तमान दिल्ली के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश—स्थिरः कुरूणामधिपस्य पालनीम्—कि० १।१, शिवाय यस्मिन् कुरवश्चकासते १।१७ 2. इस देश के राजा या 1 पुरोहित 2 भात। सम०—क्षेत्रम् दिल्ली के निकट एक विस्तृत क्षेत्र जहाँ कौरव पाण्डवों का युद्ध हुआ था धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः—भग० १।१, मनु० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] भारत का [illegible]।

कुरंटः (पुं०) लालरंग का सदाबहार, —टी काठ की गुड़िया पुत्तलिका।

कुरलः (पुं०) बालों का गुच्छा, विशेषकर माथे पर बिखरी हुई जुल्फ।

कुरवकः=कुरबक।

कुरुविन्दः,—न्दम् [कुरु+विद्+श, मुम्] लालमणि —न्दम् 1 काला नमक 2. दर्पण।

कुर्कुटः [कुर+कुट्+क] 1. मुर्गा 2. कूड़ा-करकट।

कुर्कुरः [कुर्+कुर्+क] कुत्ता, —स्वकर्तुमपि प्राप्त नित्यं मन्यति कुर्कुरम्—पंच० २।९०, अने० पा०।

कुर्चिका=कूर्चिका।

कुर्द्, कुर्दन=दे० कूर्द, कर्दन।

कूर्प (र्प) रः [कुर्+क्विप्, कुर्+पृ+अच्, पक्षे दीर्घ वि०] 1. घुटना 2. कोहनी।

कूर्पा (र्पा) सः, कू (र्पा) सकः [कूर्पर+अस्+अण्, पृषो०, कुर्पास (कूर्पास)+कन्] स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अँगिया या चोली 1. मनाक्-कूर्पासकपीडितस्तनाः—ऋतु० ५।८, ४।१६ अने० पा०।

कुर्वत् (वर्तमान) [कृ+शतृ] करता हुआ (पुं०) 1. नौकर 2. जूते बनाने वाला।

कुलम् [कुल्+क] 1 वंश, परिवार—निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य सन्ततेः—रघु० ३।१ 2. पारिवारिक आवास, आसन, घर, गृह—वसन्मुनिकुलेषु सः—रघु० १२।२५ 3 उत्तम-कुल, उच्च वंश, भला घराना—कुले जन्म—पंच० ५।२, कुलशीलसमन्वित मनु० ७।५४, ६२, इसी प्रकार कुलजा, कुलकन्यका आदि 4 रेवड़, दल, झुंड, संग्रह, समूह—मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।६ अलिकुलसंकुल—गीत० १, शि० ९।७१, इसी प्रकार गो°, कृमि° महिषी° आदि 5 जत्था, टोली, दल (बुरे अर्थ में) 6. शरीर 7 सामने का या अगला भाग 8 किसी निगम या संघ का अध्यक्ष। सम०—अकुल (वि०) 1. मिश्र परिवार का 2. मध्यम श्रेणी का, °तिथिः (पुं०—स्त्री०) चान्द्रमास के पक्ष की द्वितीया, षष्ठी और दशमी, °वारः बुधवार,—अङ्गना आदरणीय तथा उच्च वंश की स्त्री, —अङ्गारः जो अपने कुल को नष्ट करता है, —अचलः, —अद्रिः, —पर्वतः,—शैलः मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं उन सात पहाड़ों में से एक, उनके नाम ये हैं:—महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः। —अभिमत (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न, —अभिमानः कुल का गौरव,—आचारः किसी परिवार या जाति का विशेष कर्तव्य या रिवाज, —आचार्यः 1 कुल-पुरोहित या कुल गुरु 2. वंशावलीप्रणेता, —आलम्बिन् (वि०) परिवार का पालन पोषण करने वाला,—ईश्वरः 1 परिवार का मुखिया 2 शिव का नाम, —उत्कट (वि०) उच्च-कुलोद्भव (टः) अच्छी नस्ल का घोड़ा,—उत्पन्न, —उद्भव, —उद्भूत (वि०) भले कुल में उत्पन्न, उच्च-कुलोद्भव,—उद्वहः कुटुंब का मुखिया या उसे अमर बनाने वाला —दे० उद्वह,—उपदेशः खानदानी नाम,—कलङ्कः कुलकलंक,—कण्टकः जो अपने कुटुंब के लिए कांटे की भांति कष्टदायक हो, —कन्यका, —कन्या उच्चकुल में उत्पन्न लड़की—विशुद्धमुग्धः कुलकन्यकाजनः—मा० ७।१, गृहे-गृहे पुरुषाः कुलकन्यकाः समुद्वहन्ति—मा० ७, —करः कुलप्रवर्तक कुल का आदिपुरुष,—कर्मन् (नपुं०) अपने कुल की विशेष रीति,—कलङ्कः जो अपने कुल के लिए अपमान का कारण हो,—क्षयः 1. कुटुंब का नाश 2. कुल की परिसमाप्ति,—गिरिः, —भूभृत् (पुं०)—पर्वतः दे० 'कुलाचल' ऊपर,—घ्न (वि०) कुल को बर्बाद करने वाला—दोषैरेतैः कुलघ्नानाम्—भग० १।४२,—ज,—जात (वि०) 1. अच्छे कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव 2. कुलक्रमागत, आनुवंशिक —कि० १।३१ (दोनों अर्थों में प्रयुक्त),—जनः उच्च-कुलोद्भव या सम्माननीय पुरुष,—तन्तुः जो अपने कुल को बनाये रखता है,—तिथिः (पुं० स्त्री०) महत्त्वपूर्ण तिथि, चान्द्र. मास के पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी और चतुर्दशी,—दीपकः कुटुंब की कीर्ति, जो अपने कुल को सम्मानित करता है,—दूषण—दूषकः जिससे कुल का नाम बदनाम हो,—दुहितृ (स्त्री०) दे० कुलकन्या,—देवता अभिभावक देवता, कुल का संरक्षक देवता—कु० ७।२७—धर्मः कुल की रीति, अपने कुल का कर्तव्य या विशेष रीति—उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन—भग० १।४४ मनु० १।११८, ८।१४,—धारकः पुत्र,—धुर्यः परिवार का भरणपोषण करने में समर्थ (पुत्र), वयस्क पुत्र—न हि सति कुल-धुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय—रघु० ७।७१—नन्दन (वि०) अपने कुल को प्रसन्न तथा सम्मानित करने वाला,—नायिका वाममार्गी शाक्तों की तान्त्रिकपूजा के उत्सव के अवसर पर जिस लड़की की पूजा की जाय,—नारी उच्चकुलोद्भव सती साध्वी स्त्री,—नाशः 1 कुल का नाश या बरबादी 2 विधर्मी, जातिबहिष्कृत, बहिष्कृत 3 ऊँट —परम्परा वंश को बनाने वाली पीढ़ियों की श्रेणी —पतिः 1 कुटुंब का मुखिया 2 वह ऋषि जो दस सहस्र विद्यार्थियों का भरणपोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है—परिभाषा मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्, अध्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः। अपि नाम कुलपतेरियमसवर्ण-क्षेत्रसंभवा स्यात् श० १, रघु० १।९५, उत्तर० ३।४८—पांसुका कुलटा स्त्री जो अपने कुल को कलंक लगावे, व्यभिचारिणी स्त्री,—पालिः—पालिका,

—पाली (स्त्री०) उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री,—पुत्रः अच्छे कुल में उत्पन्न बेटा—इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः—मृच्छ० ४।१०,—पुरुषः 1. सम्मान के योग्य तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुरुष—कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि—भर्तृ० १।९२ 2. पूर्वज,—पूर्वजः पूर्व पुरुष,—भार्या सती साध्वी पत्नी,—भृत्या गर्भवती स्त्री की परिचर्या,—मर्यादा कुल का सम्मान या प्रतिष्ठा,—मार्गः कुल की रीति, सर्वोत्तमरीति या ईमानदारी का व्यवहार,—मौलिन्,—वधू (स्त्री०) अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री,—वारः मुख्य दिन (अर्थात् मंगलवार और शुक्रवार)—विद्या कुलक्रमागत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान,—विप्रः कुलपुरोहित,—वृद्धः परिवार का बूढ़ा तथा अनुभवी पुरुष, —व्रतः,—तम् कुल का व्रत या प्रतिज्ञा—अजिनवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम्—रघु० ३।७०, विधवस्मिन्नधुनान्य कुलव्रतं पालयिष्यति क.—भामि० १।१३,—श्रेष्ठिन् (पुं०) किसी कुटुंब या श्रमिकसंघ का मुखिया 2. उच्चकुल में उत्पन्न शिल्पकार,—संख्या 1 कुल की प्रतिष्ठा 2. सम्मानित परिवारों में गणना—मनु० ३।६६,—संततिः (स्त्री०) संतान, वंशज, वंशपरम्परा—मनु ५।१५९,—संभव (वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न,—सेवकः श्रेष्ठ नौकर,—स्त्री उच्च कुल की स्त्री, कुललक्ष्मी,—अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः भग० १।४१,—स्थितिः (स्त्री०) कुटुम्ब की प्राचीनता या समृद्धि।

कुलक (वि०) [कुल + कन्] अच्छे कुल का, अच्छे कुल में जन्मा हुआ,—कः 1. शिल्पियों की श्रेणी का मुखिया 2. उच्च कुल में उत्पन्न शिल्पकार 3. बाँबी,—कम् 1 संग्रह, समूह 2. व्याकरण की दृष्टि से सम्बद्ध श्लोकों का समूह, (पाँच से पन्द्रह तक के श्लोकों का समूह जो एक वाक्य बनाते हों) उदा० दे० शि० १।१–१०, रघु० १।५—९, इसी प्रकार कु० १।११—६।

कुलटा [कुल + अट् + अच् + टाप् शक० पररूपम्] व्यभिचारिणी स्त्री—मुद्रा० ६।५, याज्ञ० १।२१५। सम०—पतिः भ्रष्टा या जारिणी स्त्री का स्वामी।

कुलतः (अव्य०) [कुल + तसिल्] जन्म से।

कुलत्थः [कुल + स्था + क पृषो० साधुः] कुलथी, एक प्रकार की दाल।

कुलन्धर (वि०) [कुल + धृ + अच्, मुम्] अपने कुल का सिलसिला चलाने वाला।

कुलम्भरः,—कः [कुल + भृ + खच्, मुम्] चोर।

कुलवत् [कुल + मतुप्, मस्य वत्वम्] कुलीन, अच्छे घराने में उत्पन्न।

कुलायः,—यम् [कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र—कुल + अय + घञ्] पक्षियों का घोंसला,—कूजत्क्लान्तकपोतकुक्कुटकुलाः कूले कुलायद्रुमाः—उत्तर० २।९, नै० १।१४१ 2. शरीर 3. स्थान, जगह 4. बुना हुआ वस्त्र, जाला 5. बक्स या पात्र। सम०—निलायः घोंसले में बैठना, अंडे सेना, अंडों में से बच्चे निकालने के लिए अंडों के ऊपर बैठना।—स्थः पक्षी।

कुलायिका [कुलाय + ठन् + टाप्] पक्षियों का पिंजड़ा, चिड़ियाघर, कबूतरखाना, दड़बा।

कुलालः [कुल् + कालन्] 1. कुम्हार,—ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे—भर्तृ० २।९५ 2. जंगली मुर्गा।

कुलिः [कुल् + इन्, किच्] हाथ।

कुलिक (वि०) [कुल + ठन्] अच्छे कुल का, उत्तम कुल में उत्पन्न,—कः 1 स्वजन—याज्ञ० २।२३३ 2. शिल्पिसंघ का मुखिया 3 उच्चकुलोद्भव कलाकार। सम०—वेला दिन का वह समय जबकि कोई शुभ कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए।

कुलिङ्गः [कु + लिङ्ग + अच्] 1. पक्षी 2 चिड़िया।

कुलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुल + इनि] कुलीन उच्चकुलोद्भव, (पुं०) पहाड़।

कुलिन्दः (ब० व०) [कुल + इन्द] एक देश तथा उसके शासकों का नाम।

कुलिरः,—रम् [कुल + इरन्, किच्] 1 केकड़ा 2 राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि।

कुलिश (शी) शः,—शम् [कुलि + शी + ड, पक्षे पृषो० दीर्घः] इन्द्र का वज्र—वृत्रस्य हन्तुः कुलिशं कुण्ठिताश्रीव लक्ष्यते—कु० २।२०, अवेदनाज्ञं कुलिशक्षतानाम् १।२०, रघु० ३।६८, ४।८८, अमरु ६६ 2. वस्तु का सिरा या किनारा मेघ० ६१। सम०—धरः,—पाणिः इन्द्र का विशेषण,—नायकः मैथुन की विशेष रीति, रतिबंध।

कुली [कुलि + ङीष्] पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साली।

कुलीन (वि०) [कुल + ख] ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का, उत्तम परिवार में जन्म हुआ, दिक्नागोचितमिव कुलीनाम्—का० ११,—नः अच्छी नसल का घोड़ा।

कुलीनसम् [कुलीन भूमिलग्नं सद्यं स्यति—कुलीन + सो + क] पानी।

कुलीरः,—रकः [कुल् + ईरन्, किच्; कुलीर + कन्] 1. केकड़ा 2. राशिचक्र में चौथी राशि, कर्क राशि।

कुलुक्कगुञ्जा [को पृथिव्यां लुक्का, लुक्कायिता गुञ्जा इव] लुकाठी, जलती हुई लकड़ी।

कुलूतः (ब० व०) एक देश और उसके शासकों का नाम।

कुल्माषम् [कुल् + क्विप्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० स०] कांजी,—षः एक प्रकार का अनाज। सम०—अभिषुतम् कांजी।

कुल्य (वि०) [कुल + यत्] 1 कुटुंब, वंश या निगम से संबंध रखने वाला 2 अच्छे कुल का, उच्च, प्रतिष्ठित मनुष्य, **ल्यम्** 1 [illegible] पुष्पाञ्जलि (समवेदना बधाई आदि) 2 हड्डी—महावी० २।१६ 3 मांस 4 छाज **ल्या** 1 [illegible] 2 छोटी नदी, नहर सरिता—कुल्याम्भोभिः [illegible] शालिनो धौतमूला [illegible] रघु० १७।३ [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] [illegible] के बराबर अनाज का नाप।

कुवम् [कु + वा + क] 1 [illegible] 2 कमल।

कुवर दे० तुवर।

कुवलम् [कु [illegible]] 1 कुमुद 2 [illegible] 3 पानी।

कुवलयम् [[illegible]] 1 नीला कुमुद [illegible] 2 कुमुद 3 पृथ्वी (पु०, भी)

कुवलयिनी [[illegible]] 1 [illegible] का पौधा [illegible] 3 [illegible] 4 कमल का पौधा।

कुवाद (वि०) [[illegible]] 1 [illegible] 2 [illegible] अधम।

कुविक (पु० ब०) एक देश का नाम

कुवि (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

कुवेणी [illegible] 2 [illegible] का [illegible]।

कुवेलम् [[illegible]] [illegible] कमल।

कुश [[illegible]] 1 [illegible] पवित्र माना जाता [illegible] जिसका [illegible] कुश [illegible] 2 राम [illegible] राम के जब [illegible] का निष्कासन [illegible] बार सीधे [illegible] बहा था वहां [illegible] और यह बात [illegible] किया उन्हें आदिकवि [illegible] करना सिखाया [illegible] राजा बनाया [illegible] पश्चात् कुछ समय [illegible] की पुरानी राजधानी को [illegible] में दर्शन दिए और कहा कि उसे इस प्रकार देवी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए तब कुश अयोध्या को लौट आया दे० रघु १६।३—४२) **शम्** पानी जैसा कि कुशाग्र में सम० **अग्रम्** कुशघास के पत्ते का नोक किनारा इसीलिए समास में यह शब्द प्राय: [illegible] तेज और तीव्र अर्थ प्रकट करता है जैसाकि **बुद्धि** (वि०) तीव्रबुद्धि, तेजबुद्धि वाला, तीक्ष्णबुद्धि, [illegible] कुशाग्रबुद्धे कुशली गुरुस्ते रघु० ५।४ **अंगीय** (वि० तीक्ष्ण तेज —**अंगुरीयम्** कुशघास की [illegible] धर्मानुष्ठान के अवसर पर पहनी जाती है **आसनम्** कुशा का बना हुआ आसन या चटाई, **स्थलम्** [illegible] में एक स्थान का नाम [illegible]।

कुशल (वि० [illegible] कुशा + ला + क] 1 [illegible] उचित, [illegible] शि० १६।४१ [illegible] 2 [illegible] समृद्ध 3 योग्य दक्ष चतुर, प्रवीण [illegible] के साथ या समास में, —इच्छन्नीश्वर कुशलम् [illegible] मनु० ७।११० [illegible] **लम्** 1 कल्याण प्रसन्न तथा समृद्ध [illegible] कुशलम् [illegible] [illegible] रघु० [illegible] अप्यत्र कुशलमस्य पृच्छामि [illegible] अपि कुशलं भवतः [illegible] 2 गुण 3 चतुराई दक्षता। सम० **काम** (वि०) प्रसन्नता का इच्छुक **प्रश्न** किसी [illegible] कुशलमंगल पूछना (मिलने की भांति) **बुद्धि** (वि०) बुद्धिमान [illegible], समझदार, तीक्ष्णबुद्धि।

कुशालिन (वि०) (स्त्री० [illegible]) [कुशल + इनि] प्रसन्न [illegible] अथ भवतोऽभ्यावान्यहाय कुशली [illegible] रघु० ५।१३ [illegible]।

कुशा [illegible] 1 रस्सी 2 लगाम।

कुशावती [[illegible]] इस नाम की एक नगरी राम के पुत्र कुश की राजधानी दे० कुश।

कुशिक (वि०) [कुश [illegible]] भेंगी आंख वाला **कः** 1 विश्वामित्र के दादा का नाम (कुछ दूसरे लेखकों के अनुसार विश्वामित्र के पिता का नाम) 2 [illegible] 3 तेल की गाद।

कुशी [illegible] की फाली।

कुशीलव [[illegible] कुशील + व] 1 भाट, [illegible] 2 (नाटक का) पात्र [illegible] कुशीलवा [illegible] [illegible] 3 समाचार [illegible] वाल्मीकि का विशेषण।

कुशूल [[illegible]] अनाज का अन्नागार [illegible]।

कुशूल: [कुस्+ऊलच्, पृषो० सस्य शत्वम्] 1 अन्नागार (खत्ती), कोठी, भंडार -को धन्यो बहुभि पुत्रै कुशूलापूरणाढकैः--हि० प्र० २० 2 भूसी से बनाई हुई आग।

कुशेशयम् [कुशे+शी+अच्, अलुक् स०] कुमुद कमल --भूयात्कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः (पन्थाः)--श० ४।१०, रघु० ६।१८,--यः सारस पक्षी।

कुष् (क्या० पर० --कुष्णाति, कुषित) 1 फाड़ना निचोड़ना, खींचना, निकालना शिवाः कुष्णन्ति मांसानि --भट्टि० १८।१२, १७।१०, ७।९५ 2 जाँचना परीक्षा लेना 3 चमकना, निस्--निचोड़ना, फाड़ना, निकालना--उपान्तयोर्निष्कुषितं विहङ्गैः--रघु० ७।५० भट्टि० ९।३०, ५।४२, इसी प्रकार --काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितम्--गंगाष्टक।

कुषाकु: [कुष्+काकु] 1 सूर्य 2 अग्नि 3 लंगूर बंदर।

कुष्ठ:,-ष्ठम् [कुष्+क्थन्] कोढ़ (कोढ़ १८ प्रकार का होता है)--गलत्कुष्ठाभिभूताय च--भर्तृ० ११९०। सम०--अरि: 1 गंधक 2 कुछ पौधों के नाम।

कुष्ठित (वि०) [कुष्ठ+इतच्] कोढ़ से पीड़ित, कोढ़-ग्रस्त।

कुष्ठिन् (वि०) (स्त्री०--नी) [कुष्ठ+इनि] कोढ़ी।

कुष्माण्ड: [कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य-- ब० स० शक° पररूपम्] एक प्रकार की लौकी, तूमड़ी, कुम्हड़ा।

कुस् (दिवा० पर०-- कुस्यति, कुसित) 1. आलिंगन करना 2. घेरना।

कुसित: [कुस्+क्त] 1 आबाद देश 2 जो सूद से जीविका चलाता है, दे० 'कुसीद' नी०।

कुसी (सि) द [कुस्+ईद] (इसे 'कुषीद' या 'कुशीद' भी लिखते हैं) साहूकार, सूदखोर --दम्, 1 वह कर्जा या वस्तु जो ब्याज सहित लौटायी जाय 2. उधार देना, सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय --कुसीदाद् दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमनात्--पंच० १।११, मनु० १।९०, ८।४१०, याज्ञ० १।११९। सम०--पथ: सूदखोरी, सूदखोर (पठान) का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक ब्याज --वृद्धि: (स्त्री०) धन पर मिलने वाला ब्याज,--कुसीदवृद्धिर्द्वैगुण्यं नात्येति सकृदाहृता--मनु० ८।१५१।

कुसीदा [कुसीद+टाप्] सूदखोर स्त्री।

कुसीदायी [कुसीद+ङीप्, ऐ आदेश] सूदखोर की पत्नी।

कुसीदिक:--कुसीदिन् (पु०) [कुसीद+ठन्, इनि वा] सूदखोर।

कुसुमम् [कुष्+उम] 1 फूल,--उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्, श० ७।३० 2 ऋतु-स्राव 3 फल। सम०--अञ्जनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भांति प्रयुक्त होती है,--अञ्जलि: मुट्ठी भर फूल,--अधिप:, --अधिराज् (पु०) चम्पक वृक्ष (इसके फूल पीले रंग के सुगंधयुक्त होते हैं),--अवचाय: फूलों का चुनना --अन्यत्र यूयं कुसुमावचायं कुरुध्वमत्रास्मि करोमि सख्यः काव्य० ३,--अवतंसकम् फूलों का गजरा, --अस्त्र:, --आयुध:,--इषु:,--बाण:,--शर: 1 पुष्पमय बाण 2 कामदेव,--अभिनव कुसुमेषुव्यापार --मा० १ (यहाँ 'कुसुमेषु व्यापार' भी पढ़ा जा सकता है)--तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय--भर्तृ० १।१, ऋतु० ६।३३, चौर० २०, २३, रघु० ७।६१, शि० ८।७०, ३।२ कुसुमशरबाणभावेन--गीत० १०,--आकर: 1 उद्यान 2 फूलों का गुच्छा 3 वसंत ऋतु ऋतूनां कुसुमाकर:--भग० १०।३५, इसी प्रकार भामि० १।४८, --आत्मकम् केसर, जाफरान, --आसवम् 1 शहद 2 एक प्रकार की मादक मदिरा (फूलों से तैयार की गई),--उज्ज्वल (वि०) फूलों से चमकीला, --कार्मुक:, --चाप:,--धन्वन् (पु०) कामदेव के विशेषण कुसुमचापमतेजयदंशुभि--रघु० ९।३९, ऋतु० ६।२७, --चित (वि०) पुष्पों का अम्बार हो गया है जहाँ --पुरम् पाटलीपुत्र (पटना) का नाम कुसुमपुराभियोगं प्रत्युदासीनो राक्षस:--मुद्रा० ४ --लता खिली हुई लता, --शयनम् फूलों की शय्या--विक्रम० ३।१०, --स्तबक: फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनाम्--भर्तृ० २।३३।

कुसुमवती [कुसुम+मतुप्+ङीप्, मस्य व] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।

कुसुमित (वि०) [कुसुम+इतच्] फूलों से युक्त पुष्पों से सुसज्जित।

कुसुमाल: [कुसुमवत् स्पृहणीयानि द्रव्याणि आलाति इति कुसुम+आ+ला+क] चोर।

कुसुम्भ:,-म्भम् [कुस्+उम्भ] 1 कुसुंभ,--कुसुम्भारुणं चारु चेलं वसाना--जग०, रघु० ६।६ 2 केसर 3 संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु,--म्भम् सोना,--म्भ: बाह्य स्नेह (कुसुम्भी रंग से तुलना की गई है)।

कुसूल: [कुस्+ऊलच्] 1 अन्नागार (खत्ती), भण्डार, गृह (अनाज आदि के लिए)।

कुसृति: (स्त्री०) [कुत्सिता सृति] चालबाजी, ठगी, धोखा-देही।

कुस्तुभ: [कु+स्तुभ्+क] 1 विष्णु 2 समुद्र।

कुह: [कुह्+णिच्+अच्] कुबेर, धनपति।

कुहक: [कुह्+क्वुन्] छली, ठग, चालाक (ऐन्द्रजालिक), --कम्,--का चालाकी, धोखा। सम०--कार (वि०) कपटी, छलिया --चकित (वि०) दाँवपेंच से डरा हुआ, शक करने वाला, सावधान, सजग--हि० ४।१०२, --स्वन:,--स्वर: मुर्गा।

कुहनः [कु + हन् + अच्] 1. चूहा 2. साँप—**नम्** 1. छोटा मिट्टी का बर्तन 2. शीशे का बर्तन ।

कुहना, कुहनिका [कुह् + यु, कुहन + क + टाप्, इत्वम्] स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक कड़ी साधनाओं का अनुष्ठान, दंभ ।

कुहरम् [कुह् + क—कुह राति, रा + क] 1 गुफा, गढ़ा —जैसा कि 'नाभिकुहर' या आस्य° में 2 कान 3 गला 4. सामीप्य 5 मैथुन ।

कुहरितम् [कुहर + इतच्] 1 ध्वनि 2. कोयल की कुहू 3. मैथुन के समय सी, सी का शब्द ।

कुहुः, कुहूः (स्त्री०) [कुह् + कु, कुहु + ऊङ्] 1 नया चन्द्र-दिवस अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन—(अमावस्या) जब कि चन्द्रमा अदृश्य होता है कस्यतैव मतो यदिय कुहूः—नै० ४।५७ 2 इस दिन की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ३।८६ 3 कोयल की कूक निकेत रोपाकषायकलया मुहुः कुहूकलाहृयन चन्द्रवैरिणी नै० १।१००, उन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्ताला पिकानां गिरः—गीत० १ । सम०—**कण्ठः**,—**मुखः**,—**रवः**,—**शब्दः** कोयल ।

कू (भ्वा० तुदा० आ०—कवते, कुवते) (क्र्या० उभ० कू कुनाति, कू कुनीते) 1 ध्वनि करना, कल-रव करना 2 कष्टावस्था में क्रन्दन करना—चमाडवत्-विरे ग्रामम्—भट्टि० १४।२०, १।२०, १४।५ १५।२६, १६।२३ ।

कूः (स्त्री०) [कू + क्विप्] पिशाचिनी, चुड़ैल ।

कूचः [कु + चट्] स्त्री का स्तन (विशेष कर जवान या अविवाहिता स्त्री का) दे० 'कुच' ।

कूचिका, कूची [कूच + कन् + टाप्, इत्वम्, कूच + ङीप्] 1. बालों का बना छोटा बुश, कूँची 2 चाबी ।

कूज् (भ्वा० पर०—कूजति, कूजित) अस्पष्ट ध्वनि करना गूँजना, कूकना, कूजना कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्—रामा०, पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज —कु० ३।३२, अनु० ६ । २२ रघु० २।१२, नै० १।१२७ नि , परि , वि , कूजना, कूक की अस्पष्ट ध्वनि करना ।

कूजः, कूजनम्, कूजितम् [कूज् + अच्, कूज् + ल्युट्, कूज् + क्त] 1 कूजना कूक की ध्वनि करना 2 पहियों की चरमराहट ।

कूट (वि०) [कूट् + अच्] 1 मिथ्या, जैसा कि 'कूटा-स्थु पूर्वसाक्षिण' में याज्ञ० २।८० 2 अचल, स्थिर, **टः**, **टम्** 1 जालसाजी, भ्रम, धोखा 2 दाँव, जाल-साजी से भरी हुई योजना 3 अटिल प्रश्न, पहेली या उलझनदार स्थल जैसा कि कूटश्लोक और कूटा-ग्योक्ति 4. मिथ्यात्व, असत्यता (प्राय: समास में विशेषण के बल के साथ प्रयोग) °**कथनम्**, झूठे या धोखे में डालने वाले शब्द °तुला, °मानम् आदि 5 पहाड़ का शिखर या चोटी—वप्रक्रियान्निव तत्कूटाग्रकुटी-वातुरंगुभि—रघु० ४।७१, मेघ० ११३ 6. उभार या उन्नतता 7 अपने उभारों समेत माथे की हड्डी, सिर का शिखा 8 सींग 9 सिरा, किनारा—याज्ञ० ३।९६ 10 प्रधान, मुख्य 11 राशि, ढेर, समूह; अभ्रकूटम् बादलों का समूह, इसी प्रकार अन्नकूटम् —अनाज का ढेर 12 हथौड़ा, घन 13 हल की फाली, कुसी 14 हरिणों को फसाने का जाल 15. गुप्ती, जैसे ऊनी म्यान में बर्छी, या हाथ की यष्टिका में कृपाण 16. जलकलश, **टः** 1. घर, आवास 2 अगस्त्य की उपाधि । सम०—**अक्षः** झूठा या कपट से भरा पासा (सीसा या पारा भरा हुआ जिससे फेंकने पर वह पासा बल पर ही चित हो)—कूटाक्षोपधिदे-विन —याज्ञ० २।२०२,—**अगारम्** छत पर बनी कोठरी, —**अर्थः** अर्थ की संदिग्धता भावित्त कहानी, उपन्यास, —**उपायः** जालसाजी से भरी योजना, कूटचाल, कूटनीति —**कारः** जालसाज, झूठा गवाह —**कृत्** (वि०) ठगनेवाला, धोखा देने वाला 2 जाली दस्तावेज बनानेवाला —याज्ञ० २।७० 3 घूस देने वाला (पुं०) 1. कायस्थ 2 शिव का विशेषण —**कार्षापणः** झूठा कार्षापण,—**खड्गः** गुप्ती, —**छद्मन्** (पुं०) ठग —**तुला** पासंग वाली तराजू, —**धर्म** (वि०) जहाँ कूट (मिथ्यात्व) कर्तव्य कर्म समझा जाय (ऐसा स्थान, घर, और देश आदि), —**पाकलः** पित्तदोषयुक्त ज्वर जिसमें हाथी ग्रस्त होता है, हस्तिवातज्वर अचिरेण वैकृतविवर्तदारुण: कलभ कठोर इव कूटपाकलः (अभिज्ञान)—मा० १।३९, (कभी कभी इसी शब्द को 'कूटपालक' भी लिख देते हैं)—**पालकः** कुम्हार कुम्हार का आवा,—**पाशः**, —**बन्धः** जाल, फंदा,—रघु० १३।३९,—**मानम्** झूठी माप या तोल,—**मोहनः** स्कन्द का विशेषण,—**यन्त्रम्** हरिण एवं पक्षियों को फसाने का जाल या फंदा,—**युद्धम्** छल और धोखे की लड़ाई अधर्मयुद्ध रघु० १७।६९, —**शाल्मलिः** (पुं० स्त्री०) 1 सेमल वृक्ष की एक जाति, 2 नरक में एक कष्टप्रद (यम उपकरण—गदा—जिससे यमराज पापियों को दण्ड देता है)—दे० रघु० १२। ९५ और इस पर मल्लि० की टीका,—**शासनम्** जाली आज्ञापत्र या फरमान —**साक्षिन्** (पुं०) झूठा गवाह, —**स्थ** (वि०) शिखर पर खड़ा हुआ सर्वोच्च पद पर आसीन (वंशानुक्रमिक तालिका में प्रधान पद पर अवस्थित),—**स्थः** परमात्मा (अचल, अपरिवर्तनीय, सदा शाश्वत) भग० ६।८, १२।३,—**स्वर्णम्** खोटा सोना ।

कूटकम् [कूट + कन्] 1 धोखेबाजी, धोखादेही, चालाकी 2 उभार, उन्नतता 3 कुसी, हल की फाली । सम० —**आख्यानम्** गढ़ी हुई कहानी ।

कूटशः (अव्य०) [कूट+शस्] ढेरों या समूहों में ।

कूडनम्=कुडन ।

कूण् (चुरा० उभ०—कूणयति—ते, कूणित) 1. बोलना, बातचीत करना 2. सिकोड़ना, बंद करना (इस अर्थ में आ० माना जाता है) ।

कूणिका [कूण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. किसी पशु का सींग 2. वीणा की खूंटी ।

कूणित (वि०) [कूण्+क्त] बन्द, मुंदा हुआ ।

कूदालः [कु+दल्+अण्, पृषो०] पहाड़ी आबनूस ।

कूपः [कुवन्ति मण्डूका अस्मिन्—कु+पक् दीर्घश्च] 1. कूआं—कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम्—भर्तृ० २।४९, इसी प्रकार—निपीतोऽस्मीति त्वं खेदं कूप मा कथापि कृथाः, अत्यन्तसरलहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९ 2. छिद्र, रन्ध्र, गढ़ा, गर्त जैसा कि 'कचकूप' में 3. चमड़े की बनी तेल रखने की कुप्पी 4. मस्तूल—कोषीणीकूपवद्यः—दश० १ । सम०—अङ्कः,—अङ्गः रोमांच,—कच्छपः,—मण्डूकः—की (शा०) कुएँ का कछुवा या मेंढक, (आलं०) अनुभवशून्य मनुष्य, जो सांसारिक अनुभव नहीं रखता, सीमित जानकारी रखने वाला मनुष्य जो केवल पास पड़ोस को ही जानता है, (प्रायः 'तिरस्कारद्योतक' शब्द),—यन्त्रम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र— °घटिका, °घटी रहट में पानी निकालने के लिए लगी डोलचियाँ । °यन्त्रघटिका न्याय=दे० 'न्याय' के नीचे ।

कूपकः [कूप+कन्] 1. कुआँ (अस्थायी या कच्चा) 2. छिद्र, रंध्र, गर्त 3. कूल्हों के नीचे का गड्ढा 4. खूंटा जिसके सहारे किश्ती का लंगर बाँध दिया जाता है 5. मस्तूल 6. चिता 7. चिता के नीचे का छिद्र 8. चमड़े की बनी तेल-कुप्पी 9. नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष ।

कूपा (पा) रः [कुत्सितः पारः तरणम् अस्मिन्—ब० स०] समुद्र, सागर ।

कूपी [कूप+ङीष्] 1. छोटा कुआँ, कुइया 2. फ्लास्क, बोतल 3. नाभि ।

कूब (व) र (वि०) (स्त्री०—री) [कु+ब (व) रच्] 1. सुन्दर, मनोहर 2. कुबड़ा,—रः,—रम् गाड़ी की बल्ली या खूंटा-जुआ जिसमें जुआ बांधा जाता है,—री 1. कम्बल या किसी दूसरे कपड़े के पर्दे से ढकी हुई गाड़ी 2. गाड़ी की बल्ली जिससे जुआ बांधा जाय—वैजी० ४ ।

कूर-रम् [कै+क्विप्=कः, की भूमौ उरं बलं जाति—जा+क, कर्मधारयः] भोजन, भात—इत्थम् कूरपूर्णमपि पिण्डं दत्त्वा प्रतिग्राहयते ग्रामपूर्वः—मृच्छ० ४ ।

कूर्चः,—र्चम् [कुर्=चट् नि० दीर्घः] 1. गुच्छा, मुट्ठी 2. मुट्ठी भर कुश घास 3. मोरपंख 4. दाढ़ी—आनन्दजलस्रावकारणं अविकलेन कूर्चेन वीर्णकूर्चकोऽपि—उत्तर० ४, या पुरुषाक्तिनालोन विमलाकं कंकपूर्वाणां तपसाशा फलम्ः—श० १ 5. गुड़की 6. नाक का ऊपरी भाग, दोनों भौंहों के बीच का भाग 7. कूँची, बुरश 8. धोखा, चालबाजी 9. शेखी बघारना, डींग मारना 10. हृदय,—र्चः 1. सिर 2. भण्डार । सम०—शीर्षः,—शेखरः नारियल का पेड़ ।

कूर्चिका [कूर्चक+टाप्+इत्वम्] 1. चित्रकारी करने की कूँची, बुश या पेंसिल 2. चाबी 3. कली, फूल 4. जमाया हुआ दूध 5. सुई ।

कूर्द् (भ्वा० उभ०—कूर्दति-ते, कूर्दित) 1. छलांग लगाना, कूदना 2. खेलना, आमोद-प्रमोद करना—जलचयमुपकूर्दन्त्येनुपकूर्दिरे तथा—भट्टि० १४।७७, ७९, १५।२९, उद्—, कूदना, उछलना ।

कूर्दनम् [कूर्द्+ल्युट्] 1. उछलना 2. खेलना, क्रीडा करना,—नी 1. चैत्र की पूर्णिमा को कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला पर्व 2. चैत्रमास की पूर्णिमा ।

कूर्पः [कुर्+पा+क, दीर्घः] दोनों भौंहों के बीच का भाग ।

कूर्परः [कुर्+क्विप्, कुर्—पृ+अच्, दीर्घः नि०] 1. कोहनी—शि० २०।१९ 2. घुटना ।

कूर्मः [को जले ऊर्मिः वेगोऽस्य पृषो० तारा०] 1. कछुवा—गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः—मनु० ७।१०५, भग० २।५८ 2. विष्णु का दूसरा (कूर्मावतार) अवतार । सम०—अवतारः विष्णु का कूर्मावतार—गीत० १—क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे, केशव धृतकच्छपरूप, जय जगदीश हरे ।—पृष्ठम्,—पृष्ठकम् 1 कछुवे की कमर या पीठ 2. तश्तरी का ढकना,—राजः द्वितीय अवतार के समय कछुवे के रूप में विष्णु ।

कूलम् [कूल्+अच्] 1. किनारा, तट—राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः—गीत० १, नदीयोषिदनवकूलभाक्—रघु० १२।३५, ९८ 2. ढलान, उतार 3. छोर, कोर, किनारी, अधिकतता—कुलायकूलेषु विलुठ्य तेषु ते—नै० १।१४१ 4. तालाब 5. सेना का पिछला भाग 6 ढेर, टीला । सम०—चर (वि०) नदी के किनारे चरने वाला, या विचरने (घूमने) वाला,—भूः (स्त्री०) तटस्थित भूमि,—मुद्रजः,—हुण्डकः भंवर ।

कूलंकष (वि०) [कूल+कष्+खच्, मुम्] तट को काटने वाला, या अन्दर ही अन्दर खोखला करने वाला—कूलंकषेव सिन्धुः प्रसन्नमम्भस्तटतरुं च—श० ५।२१, —षः नदी की धारा, या प्रवाह,—षा नदी ।

कूलंकष (वि०) [कूल+कष्+खच्, मुम्] कूलता हुआ अर्थात् नदी के तट को सीमा बनाने वाला।

कूलमुद्रुज (वि०) [कूल+उद्+रुज्+खश्, मुम्] किनारों को तोड़ने वाला (जैसे नदियाँ, हाथी)–रघु० ४।२२।

कूलमुद्वह (वि०) [कूल+उद्+वह+खश्, मुम्] किनारे को फाड़ डालने तथा बहा कर ले जाने वाला मा० ५।१९।

कूश्माण्ड [कु ईषत् ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य] पेठा कुम्हड़ा, कुमड़ी।

कूहा [कु ईषत् उहा] [illegible] कुहरा धुंध

कृ I (स्वादि० उभ०– कृणोति, कृणुते) प्रहार करना, घायल करना [illegible] II (तना० उभ० करोति, कुरुते, कृत) 1 करना [illegible] 2 बनाना [illegible] रघु० [illegible] 3 निर्माण करना गढ़ना तैयार करना [illegible] घट करोति [illegible] 4 बनाना रचना करना–सूत्रं कृत तथा कुरु [illegible] 5 पैदा करना, निमित्तभूत होना उत्पन्न करना [illegible] कुरुते–भ० २।१ 6 बनाना क्रमबद्ध करना [illegible] करोति कपोतहुम्भक कृत्वा 7 लिखना रचना करना [illegible] प्रकार सुमनोहर [illegible] 8 [illegible] करना व्यस्त होना पूजां करोति 9 [illegible] करना,—इति बहुविधा [illegible] आदि 10 [illegible] करना कार्यान्वित करना आज्ञा मानना [illegible] [illegible] मा० १ [illegible] वा शासन मे कुरुष्व आदि 11 प्रकाशित करना पूरा करना, कार्य में परिणत करना [illegible] कि न करोति [illegible] 12 फेंकना निकालना उत्सर्ग करना छोड़ना [illegible] करना, पखाना करना इसी प्रकार [illegible] फिरना 13 धारण करना पहनना ग्रहण करना – [illegible] कृत्वा नानारूपाणि कुर्वाण [illegible] ३।१६२ 14 मुँह से निकालना उच्चारण करना —मानुषीं गिरं कृत्वा [illegible] कृत्वा आदि 15 रखना पहनना (अधि० के साथ) [illegible] २१२ [illegible] कृत्वा आदि 16 मानना (कोई कर्तव्य), नियम करना [illegible] तथ [illegible] मनु० ३। [illegible] 17 पकाना (भोजन) जैसा कि [illegible] 18 सोचना आदर करना [illegible] करना [illegible] —[illegible] १।१९ 19 ग्रहण करना (हाथ में)–कुरु करे [illegible] नै० [illegible] 20 ध्यान करना —[illegible], [illegible] इसी प्रकार वषट् कृ, स्वाहा कृ आदि 21 गुजारना (समय) बिताना – [illegible] विताये, [illegible] 22 की ओर मुड़ना ध्यान देना दृढ़ निश्चय करना (अधि० या सम्प्र० के साथ) – [illegible] मनु० [illegible] —[illegible] 23 दूसरे के लिए कोई काम करना (चाहे लाभ के लिए हो या हानि पहुँचाने के लिए) [illegible] आदि 24 उपयोग करना काम में लगाना उपयोग में लाना—[illegible] 25 विभक्त करना टुकड़े करना (या पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषण [illegible]) [illegible] आदि 26 [illegible] बनाना (धातु पर समाप्त होने वाले [illegible] के साथ), [illegible] आरम्भ करना [illegible] रघु० [illegible] धातु बहुधा संज्ञा विशेषण और अव्ययों के साथ उनको क्रिया बनाने के लिए [illegible] के [illegible] प्रयुक्त होता है और अर्थ होता है किसी व्यक्ति या वस्तु को वह बना देना जो वह पहले नहीं है उदा० कृष्णीकृ उस वस्तु को जो पहले से काली नहीं है काला करना अर्थात् Blacken इसी प्रकार श्वेतीकृ –सफेद करना (whiten) घनीकृ [illegible] (Solidify) विरलीकृ [illegible] करना [illegible] आदि। कभी कभी इस प्रकार की रचना दूसरे अर्थों में भी होती है—उदा० काष्ठ कृ—छाती से लगाना आलिङ्गन करना, भस्मीकृ राख कर देना प्रवणीकृ रुचि पैदा करना झुकाना, तृणीकृ–तिनके की भांति तुच्छ एवं हीन समझना, मन्दीकृ शिथिल करना चाल धीमी करना इसी प्रकार [illegible] आकार [illegible] की तलवारों के सिर पर रख कर [illegible] सुखाकृ– प्रसन्न करना समयाकृ समय बिताना आदि। विशे०—यह धातु उभयपदी है परन्तु निम्नलिखित अर्थों में आत्मने पद ही रहती है - (क) क्षति पहुँचाना (ख) निन्दा करना कलंकित करना (ग) काम देना और (घ) [illegible] करना हिंसात्मक कार्य करना (ङ) तैयारी करना बना [illegible] (च) [illegible] पाठ करना (छ) काम में लगाना प्रयोग में लाना—दे० पा० १।३।३२ विशे० कृ धातु का संस्कृत साहित्य में बहुत प्रयोग मिलता है इसके अर्थ भी नाना प्रकार से अदलते बदलते रहते हैं या सम्बद्ध संज्ञा के अनुसार प्राय अनन्त अर्थ हो जाते हैं—उदा० पद कृ –कदम रखना —आसन पद करिष्यति—श० ४।१९, क्रमेण कृत

मम वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १४१, मनसाकृ—सोचना, मध्यस्थता करना मनसि कृ—सोचना—कृष्ट्वा मनस्येवमकरोत् का० १३६, दृढ़ निश्चय करना संकल्प करना,—सख्य, मैत्रीं कृ मित्रता करना अस्त्राणि कृ—शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास करना, दंड कृ—दंड देना, हृदये कृ—ध्यान देना, काल कृ—मरना मतिं, बुद्धि कृ—सोचना, इरादा करना, अभिप्राय होना —उदकं कृ—पितरों को जल का तर्पण करना, चिरं कृ—देर करना, वर्दुरं कृ—वीणा बजाना, नखानि कृ—नाखून साफ करना, कन्यां कृ सतीत्वभ्रष्ट करना, कौमार्य भंग करना, विना कृ—अलग करना छोड़ा जाना जैसा कि 'मदनेन विनाकृता रतिः' कु० ४।२१ में, मध्ये कृ बीच में रखना, संकेत करना—मध्येकृत्य स्थितं कथं कौशिकान्—मालवि० ५।२. वशे कृ जीतना, वश में करना, दमन करना, चमत्कृ आश्चर्य पैदा करना, प्रदर्शन करना, सत्कृ सम्मान करना, सत्कार करना, तिर्यक् कृ—एक ओर रख देना —प्रेर० (कारयति—ते) करवाना, सम्पन्न करवाना बनवाना, कार्यान्वित करवाना —आज्ञां कारय रक्षोभि —भट्टि० ८।८४, भृत्य भृत्येन वा कटं कारयति—सिद्धा०—, इच्छा० (चिकीर्षति—ते) करने की इच्छा करना, अङ्गी—1. स्वीकार करना, अपनाना—लघ्वङ्गी कुरङ्गी दृगङ्गीकरोतु—जग०, दक्षिणामाशामङ्गीकृत्य—का० १२१ 2 मान लेना स्वीकृति देना, अपनाना मान लेना 3 करने की प्रतिज्ञा करना, जिम्मेवारी लेना—किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन्कृपणवच्छ्लाघ्यो जनो लज्जते—मुद्रा० २।१८ 4. दमन करना, अपना बनाना, अनुग्रह करना—अमरु ५२, अति—बढ़ जाना पीछे छोड़ देना, अधि०, 1 अधिकारी होना, हकदार बनना, अधिकृत बनना, किसी कर्तव्य के लिए पात्रीकरण,—नैवाध्यकारिष्महि वेदवृत्ते—भट्टि० २।३४, कि० ४।२५ 2 लक्ष्य बनाना, उल्लेख करना, ('विषय पर' 'के विषय में' 'के लिए' 'संकेत करके' 'उल्लेख करते हुए' अर्थों के लिए 'अधिकृत्य' शब्द का प्रयोग होता है—ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १, शाकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि— श० २, रघु० ११।६२) 3 धारण करना—अधिचक्रे नय भूरि—भट्टि० ८।२० 4 अभिभूत करना, दबा लेना, श्रेष्ठ बनना 5 रोकना, ढकना, हाथ खींचना। अनु—, सूरत शकल में मिलना, अनुगमन करना विशेषत नकल करना (कर्म व संब० के साथ)—लीलाधिपस्यानुचकार लक्ष्मीम्—भट्टि० २।८, मनु० २।१९९, श्यामतया हरेरिवानुकुर्वतीम्—का० १०, अनुकरोति भगवतो नारायणस्य—६, अप— 1 खींचकर दूर करना, हटाना, दूर खींचकर अनादर करना, योऽपचक्रे वनात्—भट्टि० ८।२० 2. प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, बुरा करना, हानि पहुँचाना, हानि या क्षति पहुँचाना (संब० के साथ) न किञ्चिन्मया तस्यापकर्तुं शक्यम्—पंच० १, अपा 1 दूर करना, त्याग देना, हटाना, मिटाना सवितेव तिमिरमपाकरोति चन्द्र० ५।० ६।२९., न पुनर्वाक्सत्यमपाकरिष्यति कु० ५।१६ 2. फेंक देना, अस्वीकार करना, एक ओर रख देना, छोड़ देना स्त्रिया भुजङ्गमपाचकार रघु० ३।५०, अभ्यन्तरी 1 दीक्षित करना 2 मित्र बनाना (अभ्यन्तर के नी० दे०) अलम् —, विभूषित करना सजाना शोभा बढ़ाना—उभावलञ्चक्रतुरञ्चिताभ्यां तपोवनावृत्तिपथं गताभ्याम्—रघु० ११। १८ कतमो वंशोऽलङ्कृतो जन्मना श० १, आ—, (प्रर०) 1 पुकारना बुलाना, निमन्त्रित करना, आकारयैनमत्र 2 निकट लाना, आविस् प्रकट करना, दर्शनीय बनना, जाहिर करना प्रदर्शन करना (आविस् के नी० दे०) उप (वर्त० —उपकरोति) 1 (क) मित्र बनाना सेवा करना, सहायता करना अनुग्रह करना, उपकृत करना (प्राय संब० कभी-कभी अधि० के साथ)—सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम् भट्टि० ८।१८, आत्मनश्चोपकर्तुम् मेघ० १०१ शि० २०।७४, मनु० ८।३९४ (ख) 1 हाजरी में खड़ा रहना, सेवा करना 2 (वर्त० उपस्करोति) (क) विभूषित करना, शोभा बढ़ाना, सजाना (ख) प्रयत्न करना (संब० के साथ) भट्टि० ८।१९, ११९ (ग) तैयार करना, विस्तार से कार्य करना पूरा करना निर्मल करना—उपा 1 सौंपना, देना 2. प्रारंभिक संस्कार सम्पन्न करना मनु० ४।९५ दे० उपाकर्मन् 3 उठा लाना, लाना 4 आरंभ करना, ऊरी—, उररी—, ऊररी—, ऊरी—, या ऊररी—स्वीकार करना, दे० अङ्गीकृ० ऊरर रघु० १५।७० दे० उरी भी, तिरस्—1 अपशब्द कहना, बुरा भला कहना, अनादर करना, घृणा करना 2 पीछे छोड़ना, आगे बढ़ना, जीतना, दे० तिरस् के नीचे०, त्वम्—कृ, कोई (तिरस्कार सूचक) दक्षिणी—, या प्रदक्षिणी—, किसी वस्तु के चारों ओर घूमना (अपना दक्षिण पार्श्व उसकी ओर करके), प्रदक्षिणीकुरुष्व सद्योहुतानग्नीन् श० ४ प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशमनन्तरं भर्तुररुन्धती च, रघु० २।७१, दुस् —, बुरे ढंग से करना, धिक्—, धिक्कारना, बुरा भला कहना, अनादर करना दे० धिक् के नी०, नमस् —, नमस्कार करना, पूजा करना —मुनित्रयं नमस्कृत्य—सिद्धा० दे० नमस् के नी०, नि—, क्षति पहुँचाना, बुरा करना, निस् 1 हटाना, हाँक कर दूर कर देना मनु० ११।५३ 2 तोड़ देना, निकम्मा कर देना भट्टि० १५।५४, निरा— 1 निकाल देना, परे कर देना, निकाल बाहर करना— भट्टि०

५।१००, रघु० १४।५७ 2 निराकरण करना (मत आदि का) 3 छोड़ना, त्यागना 4 पूर्ण रूप से नष्ट कर देना, ध्वस्त करना 5 बुरा भला कहना, नीच समझना, तुच्छ समझना, तिरस् , अपमान करना, अनादर करना, परा—, (पर०) अस्वीकार करना अवहेलना करना, निरादर करना, ख्याल नहीं करना तां हनूमान् पराकुर्वन्नगमत् पुष्पकम् प्रति भट्टि० ८।१०, परि (परिकरोति) 1 घेरना 2 (परिष्क रोति) विभूषित करना, सजाना यथा हुमपरिष्कृत महा०, (आत्म०) निर्मल करना चमकाना, शुद्ध करना (शब्दों का), पुरस् – सम्मुख रखना राजा शकुन्तला पुरस्कृत्य वक्तव्य श० ४, इमे अरति प्राज्ञेये पुरस्कृत्य विजयिनम् वेणी० २।१८– ई० पुरस् के नीचे 1 करना सम्पन्न करना आरम्भ करना (अधिकतर उसी अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसमें कृ)—आनन्दयि मयी दैवात्पकरोति विगर्हितम पञ्च० ४।३४ भट्टि० ३।३६, ऋतु० १।६ मनु० ८।५४, ६०, ८।२३१, अमरु १३ 2 बलात्कार करना अत्याचार करना, अपमान करना, भट्टि० ।१९ 3 सम्मान करना, पूजा करना, प्रति– 1 बदला देना, वापिस देना, लौटाना पूर्व कृतार्थो मित्राणां नार्थं प्रतिकरोति य रामा० 2 उपचार करना,—व्याधि मिच्छामि ते भ्रातु प्रतिकर्तुं हि तत्त्व वै महा० 3 वापिस देना, ज्यों का त्यों कर देना, पुनः स्थापित करना मनु० ९।२८५ 4 प्रतिशोध करना रघु० १२।९४, प्रमाणी 1 भरोसा करना विश्वास करना 2 प्रमाणयुक्त मानना आज्ञा मानना शासन सद्यिदयि प्रमाणीकृतम् श० ६ 3 औचित्य दिखाना विभरण करना, बर्ताव करना या व्यवहार करना – देवेन प्रभुणा स्वयं जगति यद्य प्रमाणीकृतम् – भर्तृ० २।१२१, प्रादुस् , प्रकट करना प्रदर्शन करना, दिखलाना आविष्कार करना—१० प्रादुस् के नी०, प्रत्युप 1 प्रतिफल देना (आभार) प्रत्युपकार करना, वि बदलना परिवर्तन करना प्रभावित करना विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा कु० १।५९, रघु० १३।४४ 2 विकृति बिगाड़ना, विरूप करना विकृताकृति मनु० ९।५२ 3 उत्पन्न करना, पैदा करना, सम्पन्न करना मनु० १।७५, मात्स्य विघ्न विकुर्वन्ति दानवा – महा० 4 विघ्न डालना, हानि पहुँचाना क्षति पहुँचाना (आ०) —हीनान्यनुपकर्तॄणि प्रवृद्धानि विकुर्वते रघु० १७।५८ 5 उच्चारण करना --विकुर्वाणः स्वरानच्छ —भट्टि० ८।२४ 6 (पत्नी की भाँति) विश्वासघातक होना विनि , प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, विप्र– 1 सताना, कष्ट देना, तंग करना, हानि पहुँचाना —किं सत्वानि विप्रकरोषि श० १ कु० २।१ 2 बुरा करना दुर्व्यवहार करना – श० ६, १७ 3 प्रभावित करना परिवर्तन लाना —कमर-मदन न विप्रकुर्यु कु० ६।९४, व्या-- 1 प्रकट करना साफ करना नामरूपे व्याकरवाणि छा० 2 प्रति पादन करना व्याख्या करना 3 कहना वर्णन करना --तन्मे सर्वं भगवान् व्याकरोतु महा० सम् (संकुरुते) (क) करना (जैसे अपराध)—ये पक्षा गगनअवीर्यमहिता जगतीन सकुर्वत मृच्छ० ९।४ (ख) निर्माण करना तैयार करना (ग) करना सम्पन्न करना 2 (संस्कुरुते) (क) अलंकृत करना शोभा बढ़ाना—अकुम समस्कुरुत माधवनोम्– शि० ५।०० (ख) निर्मल करना चमकना—वाण्येका समलं करोति पुरुष या संस्कृता धार्यते--भर्तृ० २।१९ शि० १४।०० (ग) वेदमन्त्रों के उच्चारण से अभिमन्त्रित करना—मनु० ५।३६ (घ) वेदविहित संस्कारों से (किसीपुरुष को) पवित्र करना, शुद्ध करने वाले शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान करना सस्कार्य भवयोस्तो मैथिलेयौ यथाविधि रघु १५।३१ याज्ञ० २।१०४ साची – एक ओर मुड़ना परोक्ष रूप से मुड़ना—साचीकृता चारुतरेण भाति कु० ३।६८ रघु० ६।१४।

कृक: [कृ + कक्] गला।

कृकणः (र) [कृ + कण] अथवा कृ + कृ – र] एक प्रकार का तीतर।

कृक (क) वाकु [कृक + वच् – अण्] गला और नीचे ।

कृकवाकुः [कृक + वच् + ञुण्, कु आदेश] 1 मुर्गा 2 मोर 3 छिपकली सम०—ध्वज कार्तिकेय का विशेषण

कृकाटिका [कृक + अट् अण् कृकाट + ठन् टाप् ह्रस्वम्] 1 ग्रीवा का मोड़ा उठा हुआ भाग 2 गर्दन का पिछला भाग।

कृच्छ्र (वि०) [कृन्त् + रक छ आदेश] 1 कष्ट देने वाला, पीड़ाकर –मनु० ६।७८ 2 बुरा, विपद्ग्रस्त अनिष्टकर 3 दुष्ट पापी 4 सकटापन्न पीड़ित —च्छ्रम्, –च्छ्रम्, 1 कठिनाई कष्ट दुःख त्रास विपद् सकट, भय कृच्छ्र महतीर्णः —रघु० १।६ १३।७७ 2 शारीरिक तप, तपस्या प्रायश्चित्त मनु० ४।२२२ ५।२१ ११।१०५ च्छ्रम्, कृच्छ्रेण, कृच्छ्रात् बड़ी कठिनाई के साथ दुःख पूर्वक, बड़े कष्ट साथ– लब्ध कृच्छ्रेण रक्ष्यते हि० १।१८५। सम० –प्राण (वि०) 1 जिसका जीवन खतरे में है 2 कष्टपूर्वक सांस लेने वाला 3 कठिनाई से जीवन-यापन करने वाला, –साध्य (वि०) 1 कठिनाई से ठीक हो सके, (रोगी या रोग) 2 कष्टसाध्य।

कृत् (तुदा० पर० कृन्तति कृत्त) 1 काटना, काट कर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ना, धज्जियाँ उड़ाना, टुकड़े २ करना, नष्ट करना—प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्—उत्तर० ३।३१, ३५, भट्टि० ९।८४, १५।९७, १६।१४, म० ७।८।१८—**अव**—,काट फेंकना, विभक्त करना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, **उद्**—1 काटना या काट फेंकना, फाड़ना, रघु० ९।१४, मनु० ११।१०५ 2 खण्ड खण्ड करना, टुकड़े काटना—उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिम्—मा० ५।१६, **वि**—1 काटना, फाड़ना, टुकड़े २ करना—विश्वासमाकृष्य मया मायापि निकर्तितम् पंच० १।३९, निकृत्तमिव मांसानि भट्टि० ३।११, मन्त्रनिकृत्तकण्ठं रघु० १।५५।

॥ (रुधा० पर० कृणत्ति कृत्त) 1 कातना 2 घेरना।

कृत् (वि०) [कृ+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) निष्पादक, कर्ता, निर्माता, अनुष्ठाता, उत्पादक, रच-यिता आदि पाप°, पुण्य°, प्रतिमा° आदि, (पुं०) 1 प्रत्ययों का समूह जिनको धातु के साथ जोड़ने से (संज्ञा, विशेषण आदि) बनते हैं 2 इस प्रकार बना हुआ शब्द।

कृत (वि०) [कृ+क्त] किया हुआ, अनुष्ठित, निर्मित, क्रियान्वित, निष्पन्न, उत्पादित आदि (भू० क० कृ० कृ—तना० उभ०)—तम् 1 कार्य, कृत्य, कर्म—मनु० ७।१९७ 2 सेवा, लाभ 3 फल, परिणाम 4 लक्ष्य, उद्देश्य 5 पासे का वह पहलू जिस पर चार बिन्दु अंकित हैं 6 संसार के चार युगों में पहला युग जो मनुष्यों के १७२८००० वर्षों के बराबर है, दे० मनु० १।६९, और इस पर कुल्लूक की टीका, परन्तु महा-भारत के अनुसार यह युग मनुष्यों के ४८०० वर्षों से अधिक वर्षों का है, चार की संख्या। सम०—**अकृत** (वि०) किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया पूरा नहीं किया गया,—**अङ्क** (वि०) 1 चिह्नित, दागा, मनु० ८।२८१, 2 संख्यांकित, (**क**) पासे का वह भाग जिस पर चार बिन्दु अंकित हों,—**अञ्जलि** (वि०) विनम्रता के कारण दोनों हाथ जोड़े हुए, भग० ११।१४, मनु० ४।१५४, **अनुकर** (वि०) किये हुए कार्य का अनुकरण करने वाला, अनुसेवी, **अनुसारः** प्रथा, परिपाटी, **अन्त** (वि०) समाप्त करने वाला, अन्त लाने वाला (**तः**) 1 मृत्यु का देवता, यम—द्वितीय कृतान्त-मिवाटन्तं व्याधमपश्यत्—हि० १ 2 भाग्य, प्रारब्ध—कृतान्तदुर्वृत्त इवापरोऽयम् 3 प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धि, प्रमाणित सिद्धान्त 4 पापकर्म, अशुभ कर्म 5 शनि ग्रह का विशेषण 6 शनिवार,—**अन्नम्** 1 पकाया हुआ भोजन—कृतान्नमुदक स्त्रियः—मनु० ४।२१९, ११।३ 2 पचा हुआ भोजन 3 मल,—**अपराध** (वि०) अपराधी, दोषी, मुजरिम, **अभय** (वि०) भय या खतरे से सुर-क्षित, **अभिषेक** (वि०) राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ, **अभ्यास** (वि०) अभ्यस्त, **अर्थ** (वि०) 1 जिसने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया है, सफल 2 सन्तुष्ट, प्रसन्न, परितृप्त—कृत कृतार्थोऽस्मि निर्वापितदेहया—शि० १।२९, रघु० ८।३, कि० ४।१० 3 चतुर, **(कृतार्थीकृ)** 1 सफल बनाना 2 संतुष्ट करना, काल प्रत्युपकार यत्नगुरुणा कोपं कृतार्थीकृत—अमरु ११, **अवधान** (वि०) होशियार, सावधान, **अवधि** (वि०) 1 निश्चित, नियत 2 हद बन्दी किया हुआ, सीमित—**अवस्थ** (वि०) 1 बुलाया हुआ, प्रस्तुत कराया हुआ 2 निश्चित, निर्धारित, **अस्त्र** (वि०) 1 शस्त्रास्त्रयुक्त 2 शस्त्र या अस्त्र विज्ञान में प्रवीण, रघु० ९।६२—**आगम** (वि०) प्रगत, प्रवीण (पुं०) परमात्मा, **आगस्** (वि०) दोषी, अपराधी, मुजरिम, पापी, **आत्मन्** (वि०) 1 संयमी, स्वार्थपरित्यागी 2 परिशुद्ध मन वाला, **आयास** (वि०) परिश्रम करने वाला, सहन करने वाला, **आह्वान** (वि०) ललकारा हुआ, **उत्साह** (वि०) परिश्रमी, प्रयत्नशील, उद्यमी, **उद्वाह** (वि०) 1 विवाहित 2 हाथ ऊपर उठा कर तपस्या करने वाला, **उपकार** (वि०) 1 अनुगृहीत, मित्रवत् व्यवहृत, सहायता प्राप्त, कु० ३।७३ 2 मित्रसदृश, **उपभोग** (वि०) बरता हुआ, उपभुक्त, **कर्मन्** (वि०) 1 जिसने अपना काम कर दिया है, रघु० ३।२ 2 दक्ष, चतुर (पुं०) 1 परमात्मा 2 संन्यासी, **काम** (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं, **काल** (वि०) 1 समय की दृष्टि से जो निश्चित है, निर्दिष्ट 2 जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की है (**लः**) नियत समय, याज्ञ० २।१८४, **कृत्य** (वि०) कृतार्थ, भग० १५।२० 2 सन्तुष्ट, परितृप्त, भा० ७।११ 3 जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है, **क्षण** (वि०) 1 निश्चित समय की आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा करने वाला—वयं सर्वे सोत्सुकाः कृतक्षणास्तिष्ठाम—पंच० १ 2 जिसे कोई अवसर उपलब्ध हो गया है, **घ्न** (वि०) 1 अकृतज्ञ, मनु० ४।२१४, ८।८९, 2 जो पहले किये हुए उपकारों को नहीं मानता है, **चूड** 1 जिस बालक का मुण्डनसंस्कार हो गया है, मनु० ५।५८, ६७, **ज्ञ** (वि०) 1 उपकार मानने वाला, आभारी, मनु० ७।२०९, २१०, याज्ञ० १।३०८ 2 स्वामिभक्त (**ज्ञः**) कुत्ता, **तीर्थ** (वि०) 1 जिसने तीर्थों के दर्शन किए हैं 2 जो (अध्यापनवृत्ति के) अध्यापक से अध्ययन करता हो 3 जिसे तरकीबें खूब सूझती हों 4 पथ प्रदर्शक, **दासः** किसी निश्चित समय के लिए रक्खा हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक

वेधक,—धी (वि०) 1 दूरदर्शी, विवेक रखने वाला (दूरदर्शी) 2 विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्—मुद्रा० ५।२०,—निर्णयम पदव्यानापी—निश्चय (वि०) कृतसंकल्प, दृढप्रतिज्ञ,—पुङ्ख (वि०) धनुर्विद्या में निपुण,—पूर्व (वि०) पहले किया हुआ—प्रतिकृतम्, आक्रमण और प्रत्याक्रमण, धावा बोलना और प्रतिरोध करना—रघु० १२।९४—प्रतिज्ञ (वि०) 1 जिसने किसी से कोई करार किया हुआ है 2 जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है—बुद्धि (वि०) विद्वान् शिक्षित बुद्धिमान्—मनु० ?।?३ ७।३०—मुख (वि०) विद्वान् बुद्धिमान्—लक्षण (वि०) 1 मुद्रांकित चिह्नित 2 नामी—मनु० ?।-३० 3 श्रेष्ठ सुशील परिभाषित विवेचित वर्णित (पु०) कृतवर्मन् का ?? पु० जो कृप और अश्वत्थामा के साथ महाभारत के युद्ध में जीवित रहा बाद में वह सात्यकि के हाथों मारा गया—विद्य (वि०) विद्वान् शिक्षित गुरोर्गिरः कृतविद्योऽसि—?? ?।?? गुणवर्णितुमिश्च पूर्वां विचिन्त्यमि यथो यथा गुरवन कृतविद्यस्य ?? भानासि सेवितुम्—पंच० ?।?५—वेतन (वि०) वैतनिक, वेतनभोगी (नौकर आदि)—याज्ञ० ?।१६४,—वेदिन् (वि०) आभारी दे० कृतज्ञ—वेश (वि०) सुवेशवान् विभूषित—वनकलि कुन्तले कलये कुन्दजगन्धाम—गीत० ११—शोभ (वि०) 1 शानदार 2 सुन्दर 3 पटु दक्ष—शौच (वि०) पवित्र किया हुआ—श्रम,—परिश्रम अध्येता, जिसने अध्ययन कर लिया है—कृतपरिश्रमोऽस्मि ज्योतिःशास्त्रे—मुद्रा० १ (मैंने अपना समय ज्योतिःशास्त्र के अध्ययन में लगाया है)—संकल्प (वि०) कृतनिश्चय दृढसंकल्प,—संकेत (वि०) (समय आदि का) नियत करने वाला—नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५—संज्ञ (वि०) 1 पुनः चेतना प्राप्त, होश में आया हुआ 2 उद्बोधित—संनाह (वि०) कवचधारी—सापत्निका वह स्त्री जिस के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विद्यमान हो,—हस्त,—हस्तक (वि०) 1 दक्ष चतुर कुशल, पटु 2 धनुर्विद्या में कुशल—हस्तता 1 कौशल दक्षता 2 धनुर्विद्या या शस्त्रविद्या में कुशल—कौरवे कृतहस्तता पुनरिय देवे यथा सा स्थिता—वेणी० ६।१८ महावी० ६।४१।

कृतक (वि०) [कृत+कन्] 1 किया हुआ, निर्मित सम्पादित (विप० नैसर्गिक)—यत्कृत तत्तदनित्यम्—न्यायसूत्र 2 कृत्रिम, बनावटी ढंग से किया हुआ—कृतकविधिसर्वाङ्गीणमाकल्पजातम्—रघु० १८।५२ 3 झूठा बनावटी या बहाना किया हुआ, मिथ्या, दिखावटी कल्पित—कृतककलहं कृत्वा—मुद्रा० ३, कि० ८।४६ 4 दत्तक (पुत्र) (बहुधा समास के अन्त में भी)—यस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे (दारु मन्दारवृक्षः)—मेघ० ७५, सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते (जहाति)—श० ४।१३।

कृतम् (अव्य०) [कृत्+कम् बा०] पर्याप्त और अधिक नहीं, बस करो अथवा मत करो (करण० के साथ) अथवा कृतं सन्देहेन—श० १, अथवा—गिरा कृतम्—रघु० ११।४१ कृतमदर्शनेन—उत्तर० ४।

कृति (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1 करती, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान 2 कार्य कृत्य कर्म 3 रचना काय, सरचना (कृतियाँ) रघुकुल … कविप्रथमपद्धतिम्—रघु० १५।३३, ६।६९ मै० २२।१५५ 4 जादू इन्द्रजाल 5 क्षति पहुँचाना मार डालना 6 बीस की संख्या। सम०—कर, रावण का विशेषण।

कृतिन् (वि०) [कृत+इनि] कृतकार्य, कृतार्थ, संतुष्ट, परितृप्त, प्रसन्न—कृतकाः—धन्य वीर्येण कृतिनो वयं च गुणमानि च—उत्तर० १।१२ न वत्समिच्छित्य रघुं कृती भवान्—रघु० ३।५१ १२।६४ 2 (अत) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मतवाला, भाग्यवान्—श० १।२४, कु० ७।१९ 3 चतुर, सक्षम, योग्य, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान्, विद्वान्;—स पुरस्सरकीकृतः कृती—रघु० ११।२९, कु० २।१०, कि० २।९ 4 अच्छा, गुणी, पवित्र, पावन—तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः—भर्तृ० १।५६ 5 आज्ञाकारी, आदेशानुसार करने वाला।

कृते कृतेन (अव्य०) [संब० के साथ या समास में] के लिए, के निमित्त, के कारण—अमीषां प्राणानां … कृते—भर्तृ० ३।३६, काव्यं यशसेऽर्थकृते—काव्य० १, नल० १।३५, याज्ञ० १।२१६, श० ६।

कृत्ति (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1 चमड़ा, खाल 2 (विशेषतः) मृगचर्म जिसपर (धर्मशिक्षा का) विद्यार्थी बैठता है 3 (लिखने के लिए) भोजपत्र 4 भोजवृक्ष 5 कृत्तिका नक्षत्र, कृत्तिका मंडल। सम०—वासः—वाससु (पुं०) शिव का विशेषण—स कृत्तिवासास्तपसे यतात्मा—कु० १।५४, मालवि० १।१।

कृत्तिका (ब० व०) [कृत्+तिकन्, कित्] 1. २७ नक्षत्रों में से तीसरा कृत्तिका नक्षत्र (६ तारों का पुंज) 2. छः तारे जो युद्ध के देवता कार्तिकेय की परिचारिका का कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में वर्णित हैं। सम०—तनयः,—पुत्रः,—सुतः कार्तिकेय का विशेषण,—भवः चांद।

कृत्नु (वि०) [कृ+क्त्नु] 1 भली भाँति करने वाला, करने के योग्य शक्तिशाली 2 चतुर, कुशल,—त्नुः कारीगर, कलाकार।

कृत्य (वि०) [कृ+क्यप्, तुक्] 1. जो किया जाना चाहिए

सही, उचित, उपयुक्त 2. युक्तियुक्त, व्यवहार्य 3 जो राजभक्ति से पथभ्रष्ट किया जा सके, विश्वासघाती —राज० ५।२४७,—त्यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य, कार्य - मनु० २।२३७ ७।६७ 2 कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार—बन्धुकृत्यम् मेघ० ११४, अन्योन्यकृत्यैः—श० ७।३४ 3 प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य —कूर्जद्भिरापादितवंशकृत्यम्—रघु० २।१२, कु० ४। १५ 4 मंशा, कारण,—त्याः कर्मवाच्य के कृदन्त के संभावनार्थक प्रत्ययों का समूह नामत —तव्य अनीय य और एलिम,—त्या 1. कार्य, करनी 2 जादू 3 एक देवी जिसकी यज्ञादि के द्वारा पूजा इसलिए की जाती है कि विनाशकारी और जादू टोनों के कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो।

कृत्रिम (वि०) [कृत्या निर्मितम् -कृ+क्त्रि+मप्] 1 बनावटी, काल्पनिक, जो स्वतःस्फूर्त या मनमाना न हो, अर्जित °मित्रम्, °शत्रु आदि, रघु० १३।७५, १४।३७ 2. गोद लिया हुआ (बच्चा)—दे० नी०,—मः, °पुत्रः नकली या गोद लिया हुआ पुत्र, हिन्दूधर्म में माने हुए १२ पुत्रों में से एक, गोद लिया हुआ ऐसा वयस्क पुत्र जिसके पिता की स्वीकृति गोद लेते समय न ली गई हो, तु० कृत्रिमः स्यात्स्वयं दत्तः—याज्ञ० २।१३१, तु० मनु० ९।१६९ से भी,—मम् 1 एक प्रकार का नमक 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम०—धूपः,—धूपकः, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, धूप,—पुत्रः दे० कृत्रिम —पुत्रकः गुड़िया, पुत्तलिका -कु० १।२९,—भूमि (स्त्री) बनाया हुआ फर्श,—वनम् वाटिका, उद्यान।

कृत्वस् (अव्य०) एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के साथ 'तह' और 'गुणा' अर्थ को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है उदा० अष्टकृत्वः आठगुणा आठ तह का इसी प्रकार दश°, पञ्च° आदि।

कृत्तिः [कृत् —स, किन्] 1 जल 2 मकान,—त्ना गाय।

कृत्स्न (वि०) [कृत् + क्स्न] सारे, सम्पूर्ण, समस्त एक कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति श० २।१५ भग० ३।२९, मनु० ११।१०५, ५।४२।

कृन्तत्रम् [कृत्+क्त्रन्, नुमागम] हल।

कृन्तनम् [कृत्+ल्युट्] काटना, काट कर फेंक देना विभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना।

कृपः [कृप्+अच्] अश्वत्थामा का मामा (कृप और कृपी दोनों भाई बहन शरद्वत् ऋषि की सन्तान थे, इनकी माता जानपदी नाम की अप्सरा थी। कृप का पालन पोषण शान्तनु ने किया था। कृप धनुर्विद्या में बड़ा निपुण था, महाभारत के युद्ध में वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा और अन्त में मारा गया। पाण्डवों ने उसे शरण दी। वह सात चिरजीवियों में से एक है)

कृपण (वि०) [कृप्—क्युन् न लत्वम्] 1. गरीब, दयनीय, अभागा, असहाय—राजलपत्य रामस्ते पाल्याश्च कृपणा प्रजा -उत्तर० ४।२५ 2 विवेकशून्य, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के अयोग्य अथवा अनिच्छुक, - कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५, इसी प्रकार पराधीनैस्वर्यप्रसनगहनाक्षेपकृपण भर्तृ० ३।१७ 3 नीच, अधम, दुष्ट—भग० २।४९ मुद्रा० २। १८ भर्तृ० ३।४९ 4 सूम, कंजूस,—णम् दुर्दशा,—णः सूम, कृपणेन समो दाता भुवि कोऽपि न विद्यते, अनश्नन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति—व्यास। सम० —धी, —बुद्धि छोटे दिल का, नीच मन का,—वत्सल (वि०) दीनदयालु।

कृपा [कृप्+भिदा० अङ+टाप्, संप्र०,] रहम, दयालुता, करुणा -चक्रवाकयोः पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती कु० ५।२६, शा० ४।१९, —कृपया कृपा करके।

कृपाण [कृपां नुदति -नुद्+ड संज्ञायां णत्वम् तारा०] 1 तलवार स पातु वः कंसरिपोः कृपाणः - विक्रम० १।१, कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः —मुद्रा० 2 चाकू।

कृपाणिका [कृपाण+कन्+टाप्, इत्वम्] बर्छी, छुरी।

कृपाणी [कृपाण+ङीष्] 1 कैंची 2. बर्छी।

कृपालु (वि०) [कृपां लाति —कृपा+ला आदाने मि० डु] दयालु, करुणापूर्ण, सदय।

कृपी [कृप+ङीष्] कृप की बहन तथा द्रोण की पत्नी,। सम० —पतिः द्रोण का विशेषण,—सुतः अश्वत्थामा का विशेषण।

कृपीटम् [कृप्+कीटन्] 1 लकड़ियाँ, जंगल की लकड़ी 2 वन, जलाने की लकड़ी 3 पानी 4 पेट। सम० —पालः 1 पतवार 2 समुद्र 3 वायु, हवा। सम० —योनि अग्नि।

कृमि (वि०) [क्रम्+इन्, अत इत्वम् संप्र०] 1 कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त कृमिकुलचितम् भर्तृ २।९ 2 कीड़े (रोग) 3 गधा 4 मकड़ी 5 लाख (रंग)। सम० —कोशः —कोषः, रेशम का कोया, °उत्थम् रेशमी कपड़ा, —जम्, —जलजम् अगर की लकड़ी, -जा लाख कीड़ों द्वारा उत्पादित लाल रंग,—जलजः,—वारिरुहः घोंघा सीपी में रहने वाला कीड़ा,—पर्वतः,—शैलः बाँबी,—फलः गूलर का पेड़,—शङ्खः शंख के भीतर रहने वाली मछली,—शुक्तिः (स्त्री०) 1 दोहरी पीठ वाला घोंघा 2. सीपी में रहने वाला कीड़ा 3. घोंघा।

कृमिण, कृमिल (वि०) [कृमि+न, ल वा, णत्वम्] कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त।

कृमिला [कृमि+ला+क+टाप्] बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री।

कृश् (दिवा० पर०—कृश्यति, कृश) 1. दुर्बल या क्षीण होना 2. (चन्द्रमा की भाँति) उत्तरोत्तर ह्रास होना (प्रेर०) दुर्बल करना।

कृश (वि०) (मध्य० क्रशीयस्, उत्त० क्रशिष्ठ) [कृश्+क्त, नि०] 1 दुबला पतला, दुर्बल, शक्तिहीन, क्षीण —कृशतनु, कृशोदरी आदि 2 छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म (आकार या परिमाण में)—गुरुरपि न धाम्य कृशधन भर्तृ० २।२८ 3 दरिद्र, नगण्य—मनु० ७।२०८। सम०—**अक्षः** मकड़ी, —**अङ्ग** (वि०) दुबला, पतला, (—**गी**) 1. सम्भवा 2 प्रियंगु लता, —**उदर** (वि०) पतली कमर वाला —विक्रम० २।१६।

कृशला [कृश+ला+क+टाप्] (सिर के) बाल।

कृशानुः [कृश्+आनुक्] आग—धूरा कृशानुप्रतिमा-द्बिभेषि—रघु० २।४९, ७।२४, १०।७४, कु० १।५१ भर्तृ० २।१०७। सम० —**रेतस्** (पुं०) शिव की उपाधि।

कृशाश्विन् (पुं०) [कृशाश्व+इनि] नाटक का पात्र।

कृष् i (तुदा० उभ० —कृषति—ते कृष्ट) हल चलाना खूड बनाना।

ii (भ्वा० पर० कर्षति, कृष्ट) 1 खींचना, घसीटना चीरना, खींच देना, फाड़ना —प्रमद्य सिंहः किल तां चकर्ष— रघु० २।२७, विक्रम० १।१९, 2 किसी की ओर खींचना, आकृष्ट करना —भट्टि० १५।४७ भग० १५।७ 3 (सेना आदि का) नेतृत्व या संचालन करना —स सेनां महतीं कर्षन्— रघु० ४।३२ 4 झुकाना (धनुष आदि का)—शाप्यानामकृष्टशार्ङ्गः—रघु० ५।५० 5 स्वामी होना, दमन करना, पराजय करना, अभिभूत करना —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५, नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पंच० ३।४६ 6 हल चलाना, खेती करना —अनु लोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षति सिद्धा० 7 प्राप्त करना, हासिल करना —कृषन्तुकस्य च त्वक्षुति कर्षन्ति च महद्धनम्—महा० 8 किसी से ले लेना किसी को वंचित करना (द्विकर्म०) अप—, पीछे खींचना, खींच ले जाना, घसीट कर दूर करना, अलग करना निचोड़ना —अन्तःपश्चिमणकृष्टं निरीक्षते च —ऋतु० ४।१४ रघु० १६।५५ 2 हटाना उत्तर० १। 3 कम करना, घटाना, अव—, खींचना, खींच लेना, आ—, खींचना, समीप पहुँचना, धकेलना, खींच लेना, निचोड़ना (आत्म०)—शैलेनाकृष्य कृष्णानि हि० १।१०९, श० १।३३ दूरमनुना सारङ्गेण वयमाकृष्टा —श० १, अमरु २।७२, कु० २।५९, रघु० १।२१ 2. (धनुष आदि का) झुकाना—श० ३।५, शि० ९।४० 3. निचोड़ना, उधार लेना —हि० प्र० ९।४, 4. छीनना, बलपूर्वक ग्रहण करना—भट्टि० १६।३० 5. किसी दूसरे विषय या वाक्य से शब्द ला देना, उद्—, 1. ऊपर खींचना, उखाड़ना—अङ्कुरकोटिरम्यं ...—ऋतु० ६।१४, शि० १३।६० 2. बढ़ाना, वृद्धि करना नि—, दुबोना, कम करना, घटाना निस्—, 1 बाहर खींचना 2 खींचतान कर निकालना, बलपूर्वक निकालना, छीनना या जबरदस्ती लेना —निष्कष्टुमर्थं चकमे कुबेरात्—रघु० ५।२६, परि—, खींचना, निकालना, घसीटना, प्र—, 1 खींच लेना, खींचना, आकृष्ट करना 2 (सेना का) नेतृत्व करना 3 (धनुष का) झुकाना 4. बढ़ाना, वि—, 1 खींचना 2 (धनुष का) झुकाना —शरासनं तेषु विकृष्यताम्-मिदम् श० ६।२८, विप्र—, हटाना, संनि—, निकट लाना।

कृषकः [कृष्+क्वुन्] 1 हलवाहा, हाली, किसान 2 फाली 3 बैल।

कृषाणः, **कृषिकः** [कृष्+आनक्, किकन् वा] हलवाहा, किसान।

कृषि (स्त्री०) [कृष्+इक्] 1. हल चलाना 2 खेती, काश्तकारी—सीदति वाणिज्यमपि मत्कोषपतिता कृषि —मुद्रा० ३ कृषि किलष्टाजूष्ट्या—पंच० १।११, मनु० १।९० ३।६४ १०।७९ मनु० १८।४४। सम० —**कर्मन्** (नपुं०) खेती का काम, —**जीविन्** (वि०) खेती से निर्वाह करनेवाला किसान, —**फलम्** खेती से होने वाली उपज, या लाभ—पंच० १६, —**सेवा** खेती करना किसानी।

कृषीवल [कृषि+वलच् दीर्घ] जो खेती से अपनी आजीविका करे किसान,—कृषि चापि कृषीवल —याज्ञ० १।२७६ मनु० ९।३८।

कृष्कर [कृष+कृ+टक् पृषो०] शिव की उपाधि।

कृष्ट (वि०) [कृष्+क्त] 1 खींचा हुआ, उखाड़ा हुआ, घसीटा हुआ, आकृष्ट 2 हल चलाया हुआ।

कृष्टिः [कृष्+क्तिन्] विद्वान् पुरुष—(स्त्री) 1 खींचना आकर्षण 2 हल चलाना भूमि मापना।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक्] 1 काला, श्याम, गहरा नीला 2 दुष्ट, अनिष्टकर,—**ष्णः** 1 काला रंग 2. काला हरिण 3 कौआ 4 कोयल 5 चान्द्रमास का कृष्णपक्ष, 6 कलियुग 7 आठवाँ अवतारधारी विष्णु (भारतीय पुराणशास्त्र के अनुसार कृष्ण अत्यन्त प्रसिद्ध नायक है, देवताओं में सर्वप्रिय है। वसुदेव और देवकी का पुत्र होने के कारण कृष्ण कंस का भान्जा है, पर व्यवहारतः वह नन्द और यशोदा का पुत्र है, उन्होंने ही इसका पालन-पोषण किया और यहीं कृष्ण ने अपना बचपन बिताया। जब उसने कंस द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये पूतना और बक आदि क्रूर राक्षसों को मार गिराया तथा शूर-वीरता के अनेक आश्चर्यजनक कर्तव्य किये तो क्रमशः उसका दिव्य स्वभाव प्रकट होने लगा। युवावस्था के उसके मुख्य साथी थे गोकुल के ग्वालों की बहुएं तथा गोपियां जिनमें राधा उसका विशेष

प्रिय थी (तु० जयदेव के गी० की)। कृष्ण ने कंस नरक केशि अरिष्ट तथा अन्य अनेक राक्षसों को मार गिराया। यह अर्जुन का घनिष्ठ मित्र था महाभारत के युद्ध में उसने अर्जुन का रथ हाँका, पाण्डवों के हितार्थ दी गई कृष्ण की सहायता ही कौरवों के नाश का मुख्य कारण थी। संकट के कई अवसर आये परन्तु कृष्ण की सहायता और उनकी कल्याणप्रद मति ने पाण्डवों को कोई आँच न आने दी। यादवों का प्रभासक्षेत्र में सर्वनाश हो जाने के पश्चात् जरा नामक शिकारी के बाण का मृग के धोखे में शिकार हो गये। कहते हैं कृष्ण के १६००० स्त्रियाँ थीं परन्तु रुक्मिणी सत्यभामा (राधा भी) इनकी विशेष प्रिय थी। कहते हैं उसका रंग सांवला या बादल की भाँति काला था ... मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैः नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय। इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः— भविष्यति नूनम्—गीत० ८, उसका पुत्र प्रद्युम्न था)। 8 महाभारत का विख्यात प्रणेता व्यास 9 अर्जुन 10 अगर की लकड़ी —ष्णम् 1 कालिमा कालापन 2 लोहा 3 अंजन 4 काली पुतली 5 काली मिर्च 6 सीसा। सम०—अगुरु (नपुं०) एक प्रकार के चन्दन की लकड़ी,—अचल: रैवतक पर्वत का विशेषण,—अजिनम् काले हरिण का चर्म,—अयस् (नपुं०) —अयसम्,—आमिषम् लोहा कच्चा या काला लोहा,—अध्वन्,—अर्चिस् (पुं०) आग,—अष्टमी भाद्रपद कृष्णपक्ष का आठवाँ दिन, यही कृष्ण का जन्म दिन है, इसे गोकुलाष्टमी भी कहते हैं, —आवास: अश्वत्थ वृक्ष,—उदर: एक प्रकार का साँप,—उत्पलम् नील कमल,—कर्मन् (वि०) काली करतूत वाला, मुजरिम, दुष्ट दुश्चरित्र, दोषी,—काक: पहाड़ी कौवा,—काय: भैंसा,—काष्ठम् एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, काला अगर,—कोहल: जुआरी,—गति: आग, —आयोधने कृष्णगतिं सहायम्—रघु० ६।४२,—ग्रीव: शिव का नाम,—सार: काले हरिणों की एक जाति,—चञ्चु: मधुमक्खी,—धनम् बुरे तरीकों से कमाया हुआ धन, पाप की कमाई,—द्वैपायन: व्यास का नाम,—तमहमरागम-कृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे—वेणी० १।३,—पक्ष: चान्द्रमास का अँधेरा पक्ष,—मृग: काला हरिण—मृगं कृष्णमृगस्य वाजनयनं कण्डूयमानां मृगीम्—श० ६।१६,—मुख:,—वक्त्र:, —वदन: काले मुह का बन्दर,—यजुर्वेद: तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद,—लोह: चुम्बक पत्थर,—वर्ण: 1. कालापन 2. राहु 3. शूद्र,—वर्त्मन् (पुं०) 1. आग,—रघु० ११। ४२, मनु० २।९४ 2. राहु का नाम 3. नीच पुरुष, दुराचारी, लुच्चा,—वेणा नदी का नाम,—शकुनि: कौवा, —सार: चितकबरा कालामृग—कृष्णसारे ददच्चक्षुस्त्वयि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६,—शृङ्ग: भैंसा,—सख:, —सारथि: अर्जुन का विशेषण।

कृष्णकम् [कृष्ण + कन्] काले मृग का चमड़ा।

कृष्णल: [कृष्ण + ला + क] घुँघची का पौधा गुंजा-पौधा, —लम् घुँघची, रत्ती।

कृष्णा [कृष्ण + टाप्] 1 द्रौपदी का नाम, पाण्डवों की पत्नी कि० १।२६ 2 दक्षिण भारत की एक नदी जो मसूलीपट्टम् में समुद्र में गिरती है।

कृष्णिका [कृष्ण + ठन् + टाप्] काली सरसों।

कृष्णिमन् (पुं०) [कृष्ण + इमनिच्] कालिमा, कालापन।

कृष्णी [कृष्ण + ङीष्] अँधेरी रात।

कृ (तुदा० पर०—किरति कीर्ण) 1 बखेरना इधर उधर फेंकना उंडेलना डालना तितर-बितर करना —अमरैः शाखिनि पाण्डवमदनुष्वानमुपेत्य ... कोऽन्यस्य ... किरति—उत्तर० ... किरति ... —शा० ४ ... कुमार० ... 2 छितराना ढकना भरना भट्टि० ३।५ १९।९८। अप— 1 बखेरना इधर उधर डालना, अपकिरति कुसुमम्—सिद्धा० 2 पैरों से कुरेदना (भोजन या आवास आदि के लिए) पूरा हर्ष, (चौपायों और पक्षियों में। इस अर्थ में क्रिया का रूप अपस्किरते बनता है) अपस्किरते वृषो हृष्ट: कुक्कुटो भक्षार्थी श्वा आश्रयार्थी च—सिद्धा० अपा—उभार फेंकना अस्वीकार करना, निराकरण करना अव— बखेरना फेंकना अवाकिरन्बाललता: प्रसूनै: —रघु० २।१०, आ—, 1 चारों ओर फैलाना 2 खोदना, उद्— 1 ऊपर को बखेरना, ऊपर को फेंकना रघु० १।८५ 2 खोदना, खोदकर खोखला करना 3 उत्कीर्ण करना खुदाई करना, मूर्ति बनाना उत्कीर्णा इव वासयष्टिषु निशानिद्रालसा बर्हिण: विक्रम० ३।२, रघु० ४।५९ उप— (उपस्किरति) काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, परि—, 1 घेरना—परिकीर्णा परिवादिनी मुनेः रघु० ८। ३५ 2 सौंपना, देना, बाँटना महीं महेच्छ: परिकीर्य सूनौ—रघु० १८।३३, प्र— 1 बखेरना, फेंकना उछालना प्रकीर्णं पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम् वेणी० १।२ 2 (बीज आदि) बोना, प्रति—, (प्रतिस्किरति) चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, फाड़ना उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः—शि० १।४७ वि—, बखेरना, इधर-उधर फेंकना, छितराना, फैलाना —कु० ३।६१, कि० २।५९, भट्टि० १३।१४, २५, विनिर्—, कहना, छोड़ना, उतार फेंकना—कु० ४।६, सम्—, मिलाना, सम्मिश्रण करना, एक स्थान पर गड़बड़ करना, समुद्—, छेदना, सुराख करना, बींधना—रघु० १।४।

II (क्र्या० उभ०—कृणाति, कृणीते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

कृत् (चुरा० उभ०—कीर्तयति-ते, कीर्तित) 1 उल्लेख-

करना, दोहराना, उच्चारण करना—शासिन कीर्तिन एव—रघु० १।८७, मनु० ७।१६७ २।१२४ 2 कहना, सस्वर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना —मनु० ३।३६, ९।४२ 3 नाम लेना, पुकार करना 4 स्तुति करना, यशोगान करना, स्मरणार्थ उत्सव मनाना—अप्रयन् गुणान् भ्रातुरविकीर्णस्य विक्रम —भट्टि० १५।७२, पंच० १।४।

क्लृप् (भ्वा० आ०—कल्पते, क्लृप्त) 1 योग्य होना, पर्याप्त होना पकना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा करना, फूलना फलना (सप्र० के साथ)—कल्पते रक्षणाय—श० ५।५, पथ्यान्युभौ रपहृतस्य कल्पते विभ्रमाय—विक्रम० ३।१, निशाचरी भक्षणाय कल्पते कु० ५।४४, ६।२९ ५।७९, नैष० २९ रघु० ५।१३, ३।४०, श० ६।२२ भट्टि० २२।२१ 2 सुप्रबद्ध तथा विनियमित होना, सफल होना 3 होना, घटित होना, घटना—कल्पिष्यते हरे प्रीति—भट्टि० १६।१२, ९।४४, ४५ 4 तैयार होना सज्जित होना—चक्लृपे वानरकुञ्जरम्—भट्टि० १४।८९, 5 अनुकूल होना, किसी के काम आना, अनुसेवन करना 6 भाग लेना, (प्रेर०) 1 तैयार करना क्रम से रखना, सवारना 2 निश्चित करना स्थिर करना 3 बाँटना 4 सामान जुटाना, उपस्कृत करना 5 विचार करना, अव—, फलना, प्रकना, सम्पन्न करना (सप्र० के साथ) आ—, (प्रेर०) अलंकृत करना, सजाना, उप—, 1 फलना, परिणाम निकालना, (सप्र० के साथ) मनु० ३।२०२ 2 तैयार होना, तत्पर होना—मनु० ३।२०८, ८।३३१, परि—, (प्रेर०) 1 फैसला करना, निर्धारण करना, निश्चित करना 2 तैयार करना, तैयार होना 3 सुसज्जित करना—श० २।९ प्र—, होना, घटित होना 2 सफल होना (प्रेर०) 1 आविष्कार करना, उपाय निकालना, (योजनाएँ) बनाना 2 तैयार होना, तैयार करना. वि—, संदेह करना, संदिग्ध होना (प्रेर०) संदेह करना, सम्—, (प्रेर०) 1 दृढ़ निश्चय करना, दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना 2 इरादा करना, प्रस्ताव रखना, समुप—, तैयार होना।

क्लृप्त (भू० क० कृ०) [क्लृप्+क्त] 1 तैयार किया हुआ, किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित—क्लृप्तविवाहवेषा —रघु० ६।१० विवाहवेष में सुभूषित 2 काटा हुआ, छीला हुआ—क्लृप्तकेशनखश्मश्रु—मनु० ४।३५ 3. उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ 4 स्थिर किया हुआ, निश्चित 5 सोचा हुआ, आविष्कृत। सम०—कीलः अधिकार पत्र, दस्तावेज, धूप: लोबान।

क्लृप्तिः (स्त्री०) [क्लृप्+क्तिन्] 1 निष्पत्ति, सफलता 2. आविष्कार, बनावट 3 क्रमबद्ध करना।

क्लृप्तिक (वि०) [क्लृप्त+ठन्] खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ।

केकयः (ब० व०) एक देश और उसके निवासी मगध-कोसलकेकयशासिनां दुहितरः—रघु० ९।१७।

केकर (वि०) (स्त्री०—री) के मूर्ध्नि नेत्रतारा कर्म यस्य —के+कृ+अच् अलुक्, तारा०] भेंगी आँख वाला, —रम् भेंगी आँख, तु० आकेकर। सम०—अक्ष (वि०) वक्रदृष्टि, भेंगी आँख वाला।

केका [के+कै+ड—टाप् अलुक् स०] मोर की बोली केकाभिर्नीलकण्ठस्तिरयति वचनं ताण्डवादुच्छिखण्डः मा० ९।३० षड्जसंवादिनी केका—रघु० १।३९, ३।६९ १३।२७ १६।६४ मेघ० २२, भर्तृ० १।३५।

केकावलः, केकिकः, केकिन् (पुं०) [केका+वलच्, केका+ठन् केका+इनि] मोर इव केकिकीडाकलकल-रव पक्ष्मलक्ष्मा—भर्तृ० ३।२३।

केणिका [के मूर्ध्नि कुत्सितं अणक+टाप्] तम्बू।

केतः [कित्+घञ्] 1 घर, आवास 2 रहना, बस्ती 3 झंडा 4 इच्छा शक्ति, इरादा चाह।

केतकः [कित्+ण्वुल्] एक पौधा प्रतिमास्यत्र वनानि केतकानाम्—घट० १५ 2 झंडा,—कम् केवड़े का फूल केतकैः सूचिभिन्नैः मेघ० २४, २३, रघु० ९।१७, १३।१६,—की एक पौधा—केवड़ा (=केतक)—सूचिभिः किमपि केतकीनाम्—ऋतु० २।२३ 2 केतकी का फूल—ऋतु० २, २०, २४।

केतनम् [कित्+ल्युट्] 1 घर, आवास—अकलितमहिमानं केतनं मङ्गलानाम्—मा० २।९, मम मरणमेव वरमति-वितथकेतना—गीत० ७ 2 निमंत्रण, बुलावा 3 स्थान, जगह 4 पताका, झंडा—कर्णं भीमेन सहसा सध्वजो रथकेतनम्—वेणी० ३।२३, कि० १४।२८, रघु० ९।३९ 5 चिह्न प्रतीक जैसा कि मकरकेतन 6 अनिवार्य कर्म (धार्मिक भी)—निवापाञ्जलिदानेन केतनैः श्राद्धकर्मभिः, तस्योपकारे शक्तस्त्वं कि जीवन् किमुतान्यथा—वेणी० ३।१६।

केतित (वि०) [केत+इतच्] 1 बुलाया गया, आमंत्रित 2 आबाद, बसा हुआ।

केतुः [चाय्+तु की आदेश] 1 पताका, झंडा चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य—श० १।३४ 2 मुख्य, प्रधान, नेता, प्रमुख, विशिष्ट व्यक्ति (बहुधा समास के अन्त में)—कुलकेतुः मनुवंशकेतुम्—रघु० २।३३, कुलस्य केतुं स्फीतस्य (राघव)—रामा० 3 धूमकेतु, धूमकेतु—मनु० १।३८ 4 चिह्न, अंक 5 उज्ज्वलता, स्वच्छता 6 प्रकाश की किरण 7 सौर-मंडल का नवां ग्रह जो पुराणों के अनुसार सैंहिकेय राक्षस का कबन्ध है तथा जिसका सिर राहु है—क्रूर-ग्रह सकेतुश्चन्द्रमसं पूर्णमण्डलमिदानीम्—मुद्रा० १।६।

सम० ग्रहः अवरोही शिरोबिन्दु (जहाँ ग्रहमार्ग व रविमार्ग एक दूसरे को काटते हैं),—ध्वजः (स्त्री०) ध्वज का चिह्न रघु० १२।१०३ रत्नम् नीलम वैदूर्य वसनम् ध्वजा, पताका।

केदारः [के शिरसि दारोऽस्य ब० स०] 1 पानी भरा हुआ खेत, चरागाह 2 थाँवला आलवाल 3 पहाड़ 4 केदार नामक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है 5 शिव का नाम। सम० खण्डः मिट्टी का बना एक छोटा सा बांध जो पानी को रोकता है, शिव का विशेष रूप।

केनारः [के मूर्ध्नि नार अलु० स०] 1 सिर 2 खोपड़ी 3 गाल 4 जोड़।

केनिपातः [के जले निपात्यतेऽसौ के+नि+पत्+णिच्+अच्] पतवार, डांड, चप्पू।

केन्द्रम् (नपुं०) 1 वृत्त का मध्य बिंदु 2 वृत्त का परमाण 3 जन्मकुंडली में लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान।

केयूरः,—रम् [के बाहौ शिरसि वा याति, या+ऊर किच्च अलु० स० तारा०] टाड, बिजायठ, बाजूबंद केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः—भर्तृ० २।१९, रघु० ६।६८, कु० ७।६९, रः एक रतिबंध।

केरलः (ब० व०) दक्षिण भारत का एक देश (वर्तमान मलाबार) और उसके निवासी मा० ६।१९, रघु० ४।५४,—ली (स्त्री०) 1 केरल देश की स्त्री 2 ज्योतिर्विज्ञान।

केल् (भ्वा० पर०—केलति, केलित) 1 हिलाना 2 खेलना खिलाड़ी होना, क्रीडा परायण या केलिप्रिय होना।

केलकः [केल्+ण्वुल्] नर्तक, कलाबाजी करने वाला नट।

केलासः [केला विलासः सौदर्य्यमस्मिन् केला+अस्+घ] स्फटिक।

केलिः (पुं०—स्त्री०) [केल्+इन्] 1 खेल क्रीडा 2 आमोद-प्रमोद, मनोविनोद—केलिचलन्मणिकुण्डल आदि गीत० १, इतीह मृगदृशामिको विलासिनि विलासानि केलिपरे—न० गाढाभावययोगेमानि यमुनाकूले रहः केलयः—गी०, आदि ३, मा० ८।३५० रघु० ४।१३ 3 परिहास, मजाक, हंसी ठट्ठा —किः (स्त्री०) पृथ्वी 1 नं०—कला क्रीडा प्रिय कला विलासिता भूगारप्रिय सरस्वती 2 सरस्वती की वीणा —किलः नाटक में नायक का विश्वस्त सहचर (एक प्रकार का विदूषक),—किलावती रति, कामदेव की पत्नी,—कोषः ऊँट,—कुञ्चिका पत्नी की छोटी बहन,—कुपित (वि०) खेल में रुष्ट —वेणी० १।२ —कोषः नाटक का पात्र नर्तक, नचैया, गृहम्, निकेतनम् मन्दिरम् सद सद्म आमोदभवन, निजी कमरा, अमरु ८ आगारः रागासक्त,—पर (वि०) क्रीडापर, विलासी, आमोद प्रिय मुखः परिहास, क्रीडा मनोरंजन,—मुखः वनवृक्ष का नाम, शयनम् शिला शय्या, सुखशय्या काव्य —शालनामयमम् मा० ११,—शचिः (स्त्री०) पत्नी सचिव मनोविनोदप्रिय सखा, विश्वस्त मित्र।

केलिः केलि ... अशोक वृक्ष।

केली [केलि+ङीप्] 1 खेल क्रीडा 2 आमोद-क्रीडा। सम० —किल ... लक्ष्मी हुई कोयल,—वनी प्रमोद वाटिका ... —शुक मनोरंजनार्थ पाला हुआ तोता।

केवल (वि०) [केव सेवने वृषा० कल] 1 विशिष्ट एकाकी, असाधारण 2 अकेला, मात्र, एकमात्र ... अनुज्ञा नहिलव न केवला ... स्थान गुणेष्वपि रघु० ८।४ न केवलानां पयसां प्रसूतिं अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम् २।६३ ३।१८ कु० ३।१४ 3 पूर्ण, समस्त, परम पूर्ण 4 नग्न, अनावृत (भूमि० आदि) कु० ५।१२ 5 खालिस, सरल, अमिश्रित, विशुद्ध अनयं केवला गति —रघु० १७।४७ —लम् (अव्य०) केवल, सिर्फ, एकमात्र पूर्ण रूप से, नितान्त, सर्वथा केवलमिदमेव पृच्छामि-का० १४५ न केवलम् अपि न सिर्फ बल्कि, तन्तु ... केवल वृत्तवन्तादि ... रघु० ८।३१ कु० ३।१९, २०।३१। सम०—आत्मन् (वि०) परम एकत्व ही जिसका सार है कु० २।४, —वैयाकरणः सिर्फ नाविक (जो ज्ञान को किसी और शाखा में प्रवीण न हो) इसी प्रकार "वैयाकरण।

केवलतः (अव्य०) [केवल+तसिल्] केवल, निरा, सर्वथा, निपट, सिर्फ।

केवलिन् (पुं०) (स्त्री०—नी) [केवल+इनि] 1 अकेला एकमात्र 2 आत्मा की एकता के परम सिद्धान्त का पक्षपाती।

केशः [क्लिश्यते क्लिश्नाति वा ...] 1 बाल, विशेषकर सिर के बाल कु० ५।६४ 2 सिर के बाल—केशेषु गृहीत्वा—या—कचग्रहं गृ० ... 3 घोड़े या शेर की अयाल 4 प्रकाश की किरण 5 वरुण का विशेषण 6 एक प्रकार का गन्ध द्रव्य। सम०—अन्तः 1 बाल का सिरा 2 नीचे लटकने वाले बाल, बालों का गुच्छा 3 मुण्डन संस्कार मनु० २।६५ उत्कर्षः अधिक या सुन्दर बाल, कर्मन् (नपुं०) (सिर के) बालों का सजाना,—कलापः बालों का ढेर,—कीटः जूँ, गर्भः बालों की चोटी, गृहीत (वि०) बालों से पकड़ा हुआ ग्रह —ग्रहणम् बालों का पकड़ना, बालों से पकड़ना केशग्रहः खलु तदा द्रुपदात्मजायाः —वेणी० ३।११,२९, मेघ० ५०, इसी प्रकार ... केशग्रह —शा० ८

—कोशम् दूषित गंजापन, —छिद्र् (पुं०) नाई, हज्जाम, —जाहः बालों की जड़,—पक्षः, —पाशः, —हस्तः बहुत अधिक अथवा सवारे हुए बाल —न केशपाशं प्रसमीक्ष्य कुर्वुर्बालप्रियत्वं शिथिलं चमर्यः कु० १।४८,३।५७, तु० कचपक्ष कचहस्त आदि अन्य जूड़ा भूः—भूमिः सिर या शरीर का अन्य भाग जहाँ बाल उगते हैं —प्रसाधनी, —मार्जकम्, मार्जनम् कंघी, रचना बालों को संवारना, वेश: केशविन्यास।

केशट: [केश + अट् + अच्, शक पररूपम्] 1 बकरा 2 विष्णु का नाम 3 खटमल 4 भाई।

केशव (वि०) [केशाः प्रशस्ताः सन्त्यस्य, केश + व] बहुत या सुन्दर बालों वाला, —वः विष्णु का विशेषण—केशव जय जगदीश हरे गीत० १, केशव पतित दृष्टवा पाण्डवा हर्षनिर्भरा —सुभा०। सम० —आयुधः आम का वृक्ष (—धम्) विष्णु का शस्त्र, —आलयः,—आवासः अश्वत्थ वृक्ष।

केशाकेशि (अव्य०) [केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तं युद्धम् —पूर्वपदस्य आकार इत्वम् च] एक दूसरे के बाल खींच कर, नोच कर की जाने वाली लड़ाई झोटा-झोंटी —केशाकेश्यभवद्युद्धं रक्षसां वानरैः सह— महा०, वाल्मी० २।२८३।

केशिक (वि०) (स्त्री०—की) [केश + ठन्] सुन्दर या अलंकृत बालों वाला।

केशिन् (पुं०) [केश + इनि] 1 सिंह 2 एक राक्षस जिसको कृष्ण ने मार गिराया था 3 एक और राक्षस जो देव सेना को उठा कर ले गया और बाद में इन्द्र द्वारा मारा गया था 4 कृष्ण का विशेषण 5 सुन्दर बालों वाला। सम० —निषूदनः, —मथनः कृष्ण के विशेषण भग० १८।१।

केशिनी [केशिन् + ङीप्] सुन्दर जूड़े वाली स्त्री 2 विश्रवा की पत्नी, रावण और कुम्भकर्ण की माता।

केस (श) र,—रम् [के + सृ (शृ) + अच अलुक् स०] 1 (सिंह आदि की) अयाल —न हुस्तपूरोऽपि गजान्मृगेन्द्रो विमोकजिह्वस्यन्दिताग्रकेसरः रघु० १।१४, श० ७।१४ 2 फूल का रेशा या तन्तु—नीप दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढैः—मेघ० २१, रघु० ६।१७, मालवि० २।११, रघु० ४।६७ शि० १।६७ 3 बकुल का पेड़ 4 (आम आदि का) रेशा या सूत्र, —रम् बकुल वृक्ष का फूल —रघु० ९।३६। सम० —अचलः मेरु पहाड़ का विशेषण,—वरम् केसर, जाफ़रान।

केस (श) रिन् (पुं०) [केसर + इनि] 1 सिंह —अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी शि० १६। २५ धनुर्धरः केसरिणं ददर्श — रघु० २।२९, श० ७।३ 2 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अपने वर्ग का प्रमुख (समास के अन्त में—पुं० कुंजर, सिंह आदि) 3 घोड़ा 4 नींबू या नागकेसर का पेड़ 5 पुन्नाग वृक्ष 6 हनुमान् के पिता का नाम। सम० —सुतः हनुमान् का विशेषण।

कै (भ्वा० पर० —कायति) शब्द करना, ध्वनि करना।

कैंशुकम् [किंशुक + अण्] किंशुक वृक्ष का फूल।

कैकयः [केकय + अण्] केकय देश का राजा, दे० 'केकय'।

कैकसः [कीकस + अण्] राक्षस, पिशाच।

कैकेयः [केकयानां राजा अण्] केकय देश का राजा या राजकुमार, —यी केकय देश के राजा की बेटी, राजा दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता (जब राम का राजगद्दी मिलने वाली थी, तो कैकेयी को कौशल्या से कम प्रसन्नता न थी, परन्तु उसकी दासी मन्थरा बड़ी दुष्ट थी, उसे राम से पुराना द्वेष था, इस समय उसने बदला लेने का अच्छा अवसर समझकर मन्थरा ने कैकेयी के मन में इतना अधिक पलट दिया कि वह मन्थरा के सुझाव के अनुसार राजा दशरथ से वे दो वरदान मांगने के लिए उद्यत हो गई जो उन्होंने पहले कभी देने की प्रतिज्ञा की थी। एक वर से उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी तथा दूसरे वर से राम के लिए १४ वर्ष का निर्वासन मांगा। रोषान्ध दशरथ ने कैकेयी को उसके दूषित प्रस्तावों के लिए बहुत बुरा भला कहा परन्तु अन्ततः उन्हें उसकी हठ के आगे झुकना पड़ा। इस दुष्कृत्य के कारण कैकेयी का नाम बदनाम हो गया)।

कैटभः [कीट + भा + क अण्] राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मार गिराया (— ऐसा कहा जाता है कि वह और मधु ये दोनों राक्षस विष्णु के कान से निकले जब कि वे सोये हुए थे, परन्तु जब राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिए दौड़े तो विष्णु ने उनको मार गिराया)। सम० —अरिः, —जित् (पुं०)—रिपुः—हन् विष्णु के विशेषण।

कैतकम् [केतकी + अण्] केवड़े का फूल।

कैतवम् [कितव + अण्] 1 जूए में लगाया गया दांव 2 जूआ खेलना 3 झूठ, धोखा, चालबाजी, चालबाजी चालाकी हृदये वसतीति मत्प्रियं यदवोचस्तदवैमि कैतवम्—कु० ४।९, —वः 1 ठग, चालबाज 2 जुआरी 3 धतूरे का पौधा। सम० —प्रयोगः चालाकी, दांव, —वादः झूठ, चालबाजी।

कैदारः [केदार + अण्] चावल, अनाज,—रम् खेतों का समूह, 'कैदार्य' भी इसी अर्थ में।

कैमुतिकः [किमुत + ठक्] (न्याय) 'और कितना अधिक' न्याय, एक प्रकार का तर्क (किमुत 'और कितना अधिक' से व्युत्पन्न)।

कैरवः [के जले रौति —केरव: हंसः तस्य प्रियं —केरव + अण्] 1 जुआरी धोखा देने वाला, चालबाज 2 शत्रु —वम् श्वेत कुमुद जो चन्द्रोदय के समय खिलता है

—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७१। सम०—बन्धुः चन्द्रमा का विशेषण।

कैरविन् (पुं०) [कैरव+इनि] चन्द्रमा।

कैरविणी [कैरविन्+ङीप्] 1 श्वेत फूल वाला कुमुद का पौधा 2 वह सरोवर जिसमें श्वेत कमल खिले हों 3 श्वेत कमलों का समूह।

कैरवी [कैरव+ङीष्] चांदनी, ज्योत्स्ना।

कैलासः [के जले लासो दीप्तिरस्य - केलास+अण्] पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान—मेघ० ११, ५८ रघु० २।३५। सम० —नाथः 1 शिव का विशेषण 2 कुबेर का विशेषण —कैलासनाथं तरसा जिगीषु — रघु० ५।२८, कैलासनाथमुपसृत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।२।

कैवर्तः [के जले वर्तते—वृत्+अच्, केवर्त तत स्वार्थे अण् तारा०] मछुवा - मनोभू कैवर्त. क्षिपति परितस्त्वां प्रति मुहु (तनूजाली जालम्)—सा० ३।१६, मनु० ८।२६०, (इसके जन्म के विषय में दे० मनु० १०।३४)।

कैवल्यम् [केवल+ष्यञ्] 1 पूर्ण पृथकता, अकेलापन एकान्तिकता 2 व्यक्तित्व 3 प्रकृति से आत्मा का पार्थक्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता 4 मुक्ति, मोक्ष।

कैशिक (वि०) (स्त्री० की) [केश+ठक्] बालों के समान, बालों की भांति सुन्दर, कः शृंगार रस, विलासिता,—कम् बालों का गुच्छा,—की नाट्य शैली का एक प्रकार (अधिक शुद्ध 'कौशिकी' शब्द है)।

कैशोरम् [किशोर+अण्] किशोरावस्था बाल्यकाल कौमार आयु (पन्द्रह वर्ष से नीचे की)—कैशोरमापञ्चदशात्।

कैश्यम् [केश+ष्यञ्] सारे बाल, बालों का गुच्छा।

कोकः [कुक् आदाने अच् तारा०] 1 भेड़िया— वनभूपरिभ्रष्टा मृगी कोकैरिवार्दिता रामा० 2 मुर्खाबी रंग का हंस (चक्रवाक),—कोकानां करुणस्वरेण सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना—गीत० ५ 3 कोयल 4 मेंढक 5. विष्णु का नाम। सम० —देवः 1 कबूतर, 2 सूर्य का विशेषण।

कोकनदम् [कोकान् चक्रवाकान् नदति नादयति नद्+अच्] लाल कमल किंचित्कोकनदच्छदस्य सदृशे नेत्रे स्वयं रज्यतः उत्तर० ५।३६, नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनदरूपम् —गीत० १०, शि० ४।४६।

कोकाहः [कोक+आ+हन्+ड] सफेद घोड़ा।

कोकिलः [कुक्+इलच्] 1 कोयल—पुंस्कोकिलो मधुरं चुकूज—कु० ३।३२, ४।१६, रघु० १२।३९ 2 जलती हुई लकड़ी। सम०—आवासः,—उत्सवः आम का वृक्ष।

कोङ्कः, कोङ्कणः (ब०व०) एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखंड।

कोङ्कणा [कोङ्कण+टाप्] रेणुका, जमदग्नि की पत्नी। सम०—सुतः परशुराम का विशेषण।

कोजागरः [को जागर्ति इति कथया उक्तिरत्र काले पृषो० तारा०] आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जानेवाला आमोदपूर्ण उत्सव।

कोटः [कुट्+घञ्] 1 किला 2 झोंपड़ा, छप्पर 3 कुटिलता 4 दाढ़ी।

कोटरः—रम्, [कोटं कौटिल्यं राति रा+क ता०] वृक्ष की खोखर नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः श० १।१४, कोटरमकालवृष्ट्या प्रबलपुरोवातया गमिते—मालवि० ४।२ ऋतु० १।२६।

कोटरी, कोटवी [कोट + री(वी) + ङीष्] 1 नग्न स्त्री 2 दुर्गादेवी का विशेषण (नग्न रूप में वर्णन)।

कोटिः,—टी (स्त्री) [कुट+इञ्, कोटि+ङीष्] 1 धनुष का मुड़ा हुआ सिरा—भूमिनिहितैककोटिकार्मुकम्—रघु० ११।८१ उत्तर० ४।२९ 2 चरमसीमा का किनारा नोक या धार—सहचरी हस्तस्य कोटचा स्थितम्—मा० १।३२, वज्रस्य कोटिक्षतम् रघु० ६।१४, ७।४९, ८।३६ 3 शस्त्र की धार या नोक 4 उच्चतम बिन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष—परां कोटिमानन्दस्याध्यगच्छत्—का० ३६९, इसी प्रकार कोपकोटिमापन्ना—पंच० ४, अत्यंत कुपित 5 चन्द्रमा की कलाएँ —कु० २।२६ 6 एक करोड़ की संख्या—रघु० ५।२१, १२।८२, मनु० ६।६३ 7 (गणित) ९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा 8 समकोण त्रिभुज की एक भुजा (गणित) 9 श्रेणी, विभाग, राज्य—मनुष्य०, प्राणि० आदि 10 विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प। सम०—ईश्वरः करोड़पति,—जित् (पुं०) कालिदास का विशेषण —ज्या (गणित) समकोण त्रिभुज में एक कोण की कोज्या,—द्वयम् दो विकल्प,—पात्रम् पतवार,—पालः दुर्ग रक्षक,—वेधिन् (वि०) (शा०) नियत बिन्दु पर प्रहार करने वाला, (आलं०) अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला।

कोटिक (वि०) [कोटि+कै+क] किसी वस्तु का उच्चतम सिरा।

कोटिरः [कोटिं राति रा+क ता०] संन्यासियों द्वारा मस्तक पर बनी सींग के रूप की बालों की चोटी 2 नेवला 3 इन्द्र का विशेषण।

कोटि (टी) शः [कोटि(टी)+शो+क] ढेला, पटेला।

कोटिशः (अव्य०) [कोटि+शस्] करोड़ों, असंख्य।

कोटीरः [कोटिमीरयति ईर्+अण्] 1 मुकुट, ताज 2 शिखा 3 संन्यासियों द्वारा मस्तक पर बांधी गई बालों की चोटी जो सींग जैसी दिखाई देती है, जटा

—कोटीरबन्धनधनुर्गुणयोगपट्टव्यापारपारणमम् भज भूतभर्तुः —नै० ११।१८।

कोट्टः [कुट्ट्+घञ्, नि० गुण] दुर्ग, किला।

कोटवी [कोटं वाति वा+क, गौरा० ङीष् तारा०] 1 नग्न स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों 2 दुर्गादेवी 3 बाण की माता का नाम।

कोट्टार [कुट्ट+आरक पृषो०] 1 किलेबन्दी वाला नगर दुर्ग 2 तालाब की सीढ़ियां 3 कुआं, तालाब 4 लम्पट दुराचारी।

कोणः [कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा०] 1 किनारा कोना—अपेत कोण क्वचन स्थितस्य—विक्रमांक० ९ १० ... पुनः कोण ... 1 ७३ 2 वृत्त का अन्तर्वर्ती बिन्दु 3 वीणा की कमानी सारंगी ... 5 लकड़ी लाठी, गदा 6 ढोल बजाने का लकड़ी 7 मंगल ग्रह 8 शनिग्रह। सम०—**आघातः** ढोल आदि बजाना (विविध वाद्ययन्त्रों की मिश्रित ध्वनि) —कोणाघातेषु गर्जत्प्रलयघटघनान्योन्यसंघट्टचण्डः वेणी० १।२२ (भरत द्वारा दी गई परिभाषा—ढक्काशत सहस्राणि भेरीशतशतानि च एकदा यत्र हन्यन्ते कोणाघातः स उच्यते।), **कुणः** खटमल।

कोणप दे० कौणप।

कोणाकोणि (अव्य०) एक कोण से दूसरे कोण तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, तिरछे आड़े।

कोदण्डः,-डम् [कु+विच्, को शब्दायमानो दण्डो यस्य ब० स०] धनुष — ... कोदण्ड ... —रघु० ... कोदण्डा... कानाम् मा० ... भौं।

कोद्रवः [कु+विच् का द्रु अच् ...] कोदों का अनाज जिसे गरीब लोग खाते हैं ... बर्थ ... कोद्रवाणां ... —भा० २।१००।

कोपः [कुप्+घञ्] 1 क्रोध, गुस्सा —न—कोपं न गच्छति नितान्तबलोऽपि नागः—पञ्च० १।१०३ न त्वया कोपः कार्यः कोप मत करो 2 (आयु०) शारीरिक त्रिदोष विकार—अर्थात् पित्त, वात और कफ कोप। सम०—**आकुल,—आविष्ट** (वि०) क्रुद्ध, प्रकुपित, —**क्रमः** 1. क्रोधी या रुष्ट पुरुष 2 क्रोध का मार्ग,—**पदम्** 1 क्रोध का कारण 2 बनावटी क्रोध —**वेगः** क्रोध की प्रचण्डता, —**वेगः** क्रोध की प्रचण्डता तीव्रता।

कोपन (वि०) [कुप्+ल्युट्] 1 रोषशील चिड़चिड़ा क्रोधी 2 क्रोध पैदा करने वाला 3 प्रकोपक, त्रिदोष के विकारों में प्रबल विकार उत्पन्न करने वाला —ना रोषशील या क्रोधी स्त्री—अकारि कोपिन् दुरतापरा-

धात् पादानत कोपनयावधूत —कु० ३।८, अमरु ६५।

कोपिन् (वि०) [कोप+इनि] 1 क्रोधी, चिड़चिड़ा —सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी —गीत० १० 2 क्रोध उत्पन्न करने वाला 3 चिड़चिड़ा शरीर में त्रिदोष विकारों को उत्पन्न करने वाला।

कोमल (वि०) [कु+कलच्, मुट् च नि० गुण] 1 सुकुमार मृदु नाजुक (आलं० से भी)—अनुगृहकाम ... (करम्)—श० ६।१२ ... कोमलविटपानुकारिणौ बाहू १।२१, ... 2 ... मृदु मन्द ... कोमल ... (ला) रुचिकर मधुर ... मधुर ... कोमल ... कि ... 3 मनोहर सुन्दर।

कोमलकम् ... 1 कमल ... के रेशे।

कोयष्टिः, कोयष्टिकः ... परि ... क्र० ... कोयष्टि ... टिटहिरी ... —पत्रैः ... कोयष्टिकाना ... मा० ... उत्तर० ... ।

कोरकः,-कम् [कुर्+वुन्] 1 कली अनखिली पुष्प—... कोरक ... —श० ६।३ 2 (आलं०) कली के समान कोई वस्तु—अर्धनि... अर्ध विकसित फूल ... गात्राणां ... कोरक ... —भामि० १।९ 3 कमल डंडी के रेशे 4 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

कोरदूषः कोदव।

कोरित (वि०) [कोर+इत] 1 कलीयुक्त अंकुरित 2 पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

कोल [कुल्+अच्] 1 सूअर, वराह —शि० १४।४३ 2 लकड़ी का बना बेड़ा, नाव 3 स्त्री की छाती 4 ... गोद 5 आलिंगन 6 शनिग्रह 7 ... असभ्य व्यक्ति 8 जंगली ... —लम् 1 ... 2 काली मिर्च 3 एक प्रकार का बेर। सम०—**अञ्चः** कलिंग देश का नाम —**पुच्छः** बगला।

कोलम्बकः [कुल्+अम्बच्+कन्] वीणा का ढांचा।

कोला,-लि,-ली (स्त्री०) [कुल्+ण+टाप्, कुल्+इन्, कुल्+अच् ङीप् वा] दे० बदरी।

कोलाहलः,-लम् [कोल+आ+हल्+अच्] एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा।

कोविद (वि०) [कु+विद्+क वेत्ति विद्+क] अनुभवी विद्वान कुशल बुद्धिमान प्रवीण (सब० या अधि० के साथ परन्तु बहुधा समास में)। गुणदोषको विद —शि० १४।८३ ६९, पाण्डावस्त्रीमुखवचनकथा-कोविदग्रामवृद्धान् —मेघ० ३० मनु० ७।२६।

कोविदार:,-रम् [कु+वि+दृ+अण्] एक वृक्ष का नाम, कचनार - चित्तं विदारयति कस्य न कोविदार: —ऋतु० ३।६।

कोश:(ष)-शम् [कुश् (ष्)+घञ्, अच् वा] 1 तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी 2. डोल, कटोरा 3 पात्र 4 सन्दूक, डोली, दराज, ट्रंक 5 म्यान, आवरण 6 पेटी, ढकना, ढक्कन 7. भाण्डार, ढेर—मनु० १।१९ 8 भाण्डारगृह 9 खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान मनु० ८।४१९ 10 निधि, रुपया, दौलत निःशेषविश्राणितकोषजातम् रघु० ५।१ (आलं०) कोशस्तपस: का० ४५ 11 सोना, चांदी 12 शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह शब्दावली 13 अनखिला फूल, कली सुजातयो: पङ्कजकोशयो: श्रियम् - रघु० ३।८, १३।२९, हर्षं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार—सुभा० 14 किसी फली की गिरी 15 फली 16 जायफल, कठोरत्वचा 17 रेशम का कोया या० ३।१४७ 18 झिल्ली, गर्भाशय 19 अण्डा 20 अण्डकोष, फोते 21 लिङ्ग 22 गेंद, गोला 23 (वेदान्त० में) पांच कोष जो साथ मिलकर शरीर रचना करते हैं— जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि 24 (विधि में) एक प्रकार की अपराधियों की अग्नि परीक्षा दे० याज्ञ० २।११४। सम०—अधिपति:,—अध्यक्ष: 1 खजानची, कोषाध्यक्ष (तु० आधुनिक वित्तमंत्री) 2. कुबेर, —अगार: खजाना, भाण्डारगृह, -कार: 1 म्यान बनाने वाला 2 शब्दकोश का निर्माता 3 कोये के रूप में रेशम का कीड़ा 4 कोशशायी,- कारक: रेशम का कीड़ा,- कृत् (पुं०) एक प्रकार का ईख,—गृहम् खजाना, भाण्डागार- रघु० ५।२९,- चञ्चु: सारस, -नायक:- पाल: खजानची, कोषाध्यक्ष,—पेटक:,-कम् धन रखने का संदूक, तिजोरी— वासिन् (पुं०) सीपी में रहने वाला कीड़ा, कोशवासी, -वृद्धि: 1 धन की वृद्धि 2 फोतों का बढ़ जाना,— शायिका म्यान में रखा हुआ चाकू, बन्द किया हुआ चाकू,—स्थ (वि०) पेटी में बन्द, म्यान में बंद (स्थ:) कोशकीट, कोशवासी,—हीन (वि०) धनहीन, निर्धन।

कोशलिकम् [कुशल+ठञ्] रिश्वत, घूस (अधिक शुद्ध रूप =कौशलिक)।

कोशातकिन् (पुं०) [कोश+अत्+ण्वुल्=कोशातक+इनि] 1 वाणिज्य, व्यापार 2. व्यापारी, सौदागर 3. बड़वानल।

कोशि (षि) न् (पुं०) [कोश(ष)+इनि] आम का वृक्ष।

कोष्ठ: [कुष्+थन्] 1 हृदय, फेफड़ा आदि शरीर के भीतरी अंग या आशय 2 पेट, उदर 3. आभ्यन्तर कक्ष 4. अन्नभाण्डार, अन्न का कोठा,—ष्ठम् 1. चहारदीवारी 2. किसी वस्तु का कड़ा छिलका। सम०— अगारम् भाण्डार, भाण्डारघर —पर्याप्तभरितकोष्ठागारं भाण्डागोपितैर्मे गृहं भविष्यति - वेणी० १, मनु० ९।२८०, —अग्नि: पाचन शक्ति, आमाशय का रस ,पाल: 1 कोषाध्यक्ष, भण्डारी 2 चौकीदार, पहरेदार 3. सिपाही (आधुनिक नगरपालिकाधिकारी से मिलता-जुलता), —शुद्धि: मलोत्सर्ग।

कोष्ठक: [कोष्ठ+कन्] 1 अन्नभांडार 2 चहारदीवारी, —कम् ईंट चूने से बनाया गया पशुओं के पानी पीने का स्थान (बोलचाल की भाषा में 'खेल' कहते हैं)।

कोष्ण (वि०) [ईषदुष्ण - को' कादेश:] 1 थोड़ा गरम, गुनगुना रघु० १।८४ —ष्णम् गरमी।

कोस (श) ल (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम—पितुरनन्तरमुत्तरकोसलान्—रघु० ९।१, ३।५, ६।७१, मगधकोसलकेकयशासिनां दुहितर: ९।१७।

कोसला (शा) का अयोध्या नगर।

कोहल: [को हलति स्पर्धते अच् पृषो° तारा०] 1 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 2 एक प्रकार की मदिरा।

कौक्कुटिक: [कुक्कुट+ठक्] 1 मुर्गे पालने वाला, या मुर्गों का व्यवसाय करने वाला 2 वह साधु जो चलते समय अपना ध्यान नीचे जमीन पर रखता है जिससे कि कोई कीड़ा आदि पैरों के नीचे न दब जाय 3. (अत:) दम्भी।

कौक्ष (वि०) (स्त्री० -क्षी) [कुक्षि+अण्] 1 कोख से बँधा हुआ, या कोख पर होने वाला 2 पेट से सम्बन्ध रखने वाला।

कौक्षेय (वि०) (स्त्री० यी) [कुक्षि+ढञ्] 1 पेट में होने वाला 2. म्यान में स्थित असि कौक्षेयमुद्यम्य चकारावनतम् मुखम् —भट्टि० ४।११।

कौक्षेयक: [कुक्षौ कोशे असि:—ढकञ्] तलवार, खड्ग —वामपार्श्वविलम्बिना कौक्षेयकेण का० ८, विक्रमाङ्क० १।९०।

कौङ्क:, कौङ्कण: (ब० व०) [कुङ्क+अण्, कोङ्कण+अण्] एक देश तथा उसके निवासी शासकों का नाम (दे० कोङ्कण)।

कौट (वि०) (स्त्री० -टी) [कूट+अण्] 1. अपने निजी घर में रहने वाला, (अत:) स्वतन्त्र, मुक्त 2 पालतू, घरेलू, घर में पला हुआ 3 जालसाज, बेईमान 4. जाल में फँसा हुआ, —ट: 1 जालसाजी, बेईमानी 2. झूठी गवाही देने वाला। सम०—ज: कुटज वृक्ष,—तक्ष: (विप० ग्रामतक्ष.) स्वतन्त्र बढ़ई जो अपनी इच्छानुसार अपना कार्य करता है, गांव का कार्य नहीं,—साक्षिन् (पुं०) झूठा गवाह,— साक्ष्यम् झूठी गवाही।

कौटकिक:, कौटिक: [कूट+कन्, कूटक+ठञ्, कूट+ठञ्] 1. बहेलिया, जिसका व्यवसाय पक्षियों को पकड़ कर बेचने

में बन्द कर बेचता है 2. पक्षियों के मांस का विक्रेता, कसाई, शिकारखोर।

कौटिकिकः [कुटिलिकया हरति मृगान् अङ्गारान् वा—कुटिलिका+अण्] 1. शिकारी 2. लुहार।

कौटिल्यम् [कुटिल+ष्यञ्] 1 कुटिलपना (शा० तथा आल०) 2 दुष्टता 3. बेईमानी, चालबाजी,—ल्यः 'चाणक्य नीति' नामक नीतिशास्त्र का प्रख्यात प्रणेता चाणक्य, चन्द्रगुप्त का मित्र और मन्त्रकार, मुद्राराक्षस नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र—कौटिल्यः कुटिलमतिः स एष येन क्रोधाग्नौ प्रसभमदाहि नन्दवंशः—मुद्रा० १।७ स्पृशति मां भृत्यभावेन कौटिल्यशिष्य—मुद्रा० ७।

कौटुम्ब (वि०) (स्त्री०—म्बी) [कुटुम्ब तद्भरणे व्यापृतस्य कुटुम्ब+अण्] किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक,—म्बम् पारिवारिक सम्बन्ध।

कौटुम्बिक (वि०) (स्त्री—की) [कुटुम्बं तद्भरणे प्रसृत कुटुम्ब+ठक्] परिवार का भरण करने वाला,—कः किसी परिवार का पिता या स्वामी।

कौणपः [कुणप+अण्] पिशाच, राक्षस। सम०—दन्तः भीष्म का विशेषण।

कौतुकम् [कुतुक+अण्] 1 इच्छा, कुतूहल, वासना 2 उत्सुकता, आवेश, आतुरता 3 आश्चर्यजनक वस्तु 4 वैवाहिक कामना—रघु० ८।१ 5 विवाह से पूर्व वैवाहिक कंगना बांधने की प्रथा 6 पर्व, उत्सव 7 विशेषकर विवाह आदि शुभ उत्सव—कु० ७।२५ 8 खुशी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता—भर्तृ० ३।१४० 9 खेल, मनोविनोद 10 गीत, नृत्य तमाशा 11 हँसी, मजाक 12 बधाई अभिवादन। सम०—आगार, रम्, —गृहम् आमोद-भवन—कौतुकागारमागात्—कु० ७। ९४, —क्रिया मङ्गलम् 1 महान् उत्सव 2 विशेषत विवाह-संस्कार—रघु० ११।५३—तोरणः—णम् उत्सव के अवसरों पर बनाये गये मंगलसूचक विजय द्वार।

कौतूहलम् (—ल्यम्) [कुतूहल+अण्, ष्यञ् वा] 1 इच्छा, जिज्ञासा, रुचि—विग्रहकृतावनकौतूहलम्—विक्रम० १।९, मा० १ 2 उत्सुकता, उत्कण्ठा 3 कुतूहलवर्धक, आश्चर्यजनक।

कौन्तिकः [कुन्तः प्रहरणमस्य—ठक्] भाला चलाने वाला, नेजाबरदार।

कौन्तेयः [कुन्त्याः अपत्यं ढक्] कुन्ती का पुत्र, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण।

कौप (वि०) (स्त्री०—पी) [कूप+अण्] कुएँ से सम्बन्ध रखने वाला या कुएँ से आता हुआ (जल आदि)।

कौपीनम् [कूप+खञ्] 1. पाप, दुष्कर्म 2. गुप्ताङ्ग, गुह्येन्द्रिय 3. लंगोटी—कौपीनं शतखण्डजर्जरतरं कन्था पुनस्तादृशी—भर्तृ० ३।१०१ 4. चिथड़ा 5. पाप, अनुचित कर्म।

कौब्जम् [कुब्ज+ष्यञ्] 1. टेढ़ापन, कुटिलता 2. कुबड़ापन।

कौमार (वि०) (स्त्री०—री) [कुमार+अण्] 1. तरुण, युवा, कन्या, कुँवारी (स्त्री और पुरुष दोनों) कौमारः पतिः, कौमारी भार्या 2. मृदु, कोमल,—रम् 1 बचपन (पाँच वर्ष तक की अवस्था) कुँवारीपना (१६ वर्ष की आयु तक) कुमारीपन—पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने—मनु० ९।३, देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा—भग० २।१३। सम०—भृत्यम् बच्चों का पालनपोषण व चिकित्सा,—हर (वि०) विवाह करने वाला, कन्या को पत्नी रूप में ग्रहण करने वाला, यः कौमारहरः स एव हि वरः—काव्य० १।

कौमारकम् [कौमार+कन्] बचपन, तारुण्य, किशोरावस्था—कौमारकेऽपि गिरिवद्गुरुतां दधानः—उत्तर० ६। १९।

कौमारिकः [कुमारी+ठक्] वह पिता जिसकी सन्तान लड़कियाँ ही हों।

कौमारिकेयः [कुमारिका+ढक्] अविवाहिता स्त्री का पुत्र।

कौमुदः [कुमुद+अण्] कार्तिक का महीना।

कौमुदी [कौमुद+ङीप्] 1 चाँदनी—शशिना सह याति कौमुदी—कु० ४।३३, शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्—रघु० ६।८५, (शब्द की व्युत्पत्ति—कौ मोदन्ते जना यस्यां तेनासौ कौमुदी मता) 2 चाँदनी का काम देने वाली कोई चीज अर्थात् प्रसन्नता देने वाली तथा ठण्डक पहुँचाने वाली—त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी—कु० ५।७१, या कौमुदी नयनयोर्भवतः सुजन्मा—मा० १।३४, ७० चन्द्रिका 3 कार्तिक मास की पूर्णिमा 4 आश्विन मास की पूर्णिमा 5 उत्सव 6 विशेषत वह उत्सव जब घरों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है 7 (पुस्तकों के नामों के अन्त में) व्याख्या, स्पष्टीकरण—प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालने वाली—उदा० तर्ककौमुदी, साख्यतत्त्वकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी आदि। सम०—पतिः चन्द्रमा,—वृक्षः दीवट।

कौमोदकी, कौमोदी [कौ पृथिव्यां मोदक.=कुमोदक+अण्+ङीप् कु पृथिवीं मोदयति=कुमोद+अण्+ङीप्] विष्णु की गदा।

कौरव (वि०) (स्त्री० वी) [कुरु+अण्] कुरुओं से संबंध रखने वाला—क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः—मेघ० ४८,—वः 1. कुरु की सन्तान—अप्यामि कौरवशतं समरे न कोपात्—वेणी० १।१५ 2 कुरुओं का राजा।

कौरव्यः [कुरु+ण्य] 1 कुरु की सन्तान—कौरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते—वेणी० १।१९, २५, कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यथा सीरिणि—६।१२ 2 कुरुओं का शासक।

कौर्प्यः [ग्रीक भाषा का शब्द] वृश्चिक राशि।

कौल (वि०) (स्त्री०—ली) [कुल+अण्] 1. परिवार से संबंध रखने वाला, पैतृक, आनुवंशिक 2. अच्छे घराने का, कुलीन,—लः वाममार्गी सिद्धांतों के अनुसार 'शक्ति' की पूजा करने वाला,—लम् वाममार्गी शाक्तों के सिद्धान्त और व्यवहार।

कौलटेयः [कुल+ढक्, कुक्] व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र, हरामी, वर्णसंकर।

कौलटिनेयः [कुलटा+ढक्, इनङादेशः] 1 सती भिखारिणी का पुत्र 2 वर्णसंकर।

कौलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+ठक्] 1 किसी वंश से संबंध रखने वाला 2 कुल में प्रचलित, पैतृक, वंशपरंपरागत,—कः 1 जुलाहा—कौलिको विष्णुरूपेण राजकन्यां निषेवते—पंच० १।२०२ 2 विधर्मी 3. वाममार्गी, शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी।

कौलीन (वि०) [कुल+खञ्] खानदानी, कुलीन, -नः 1 भिखारिणी स्त्री का पुत्र 2. वाममार्गी शाक्त सिद्धांतों का अनुयायी,—नम् लोकापवाद, कुत्सा—मत्कविकागत किमपि कौलीनं श्रुतो—मालवि० १, तदेव कौलीन-मिव प्रतिभाति—विक्रम० २, मेघ० ११२, कौलीन-मात्माश्रयमाचचक्षे—रघु० १४।३६, ८४ 2 अनुचित कर्म, दुराचरण—ख्याते नास्मिन् वितमसि कुले जन्म कौलीनमेतत्—वेणी० २।१० 3 पशुओं की लड़ाई 4. मुर्गों की लड़ाई 5. संग्राम, युद्ध 6. उच्च कुल में जन्म 7 गुप्तांग, योनि।

कौलीन्यम् [कुलीन+ष्यञ्] 1 कुलीनता 2 वंश की कुत्सा।

कौलूतः [कुलूत+अण्] कुलूतों का राजा —कौलूतश्चित्र-वर्मा—मुद्रा० १।२०।

कौलेयकः [कुल+ढकञ्] कुत्ता, शिकारी कुत्ता।

कौल्य (वि०) [कुल+ष्यञ्] उच्च कुल में उत्पन्न, खानदानी।

कौबे (बे) र (वि०) (स्त्री०—री) [कुबे (बे) र+अण्] कुबेर से संबंध रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला—धान सस्मार कौबेरम् रघु० १५।४५,—री उत्तरदिशा,—तत. प्रतस्थे कौबेरीं भास्वानिव रघुर्दिशम्—रघु० ४।६६।

कौश (वि०) (स्त्री०—शी) [कुश+अण्] 1 रेशमी 2 कुश घास का बना हुआ।

कौशलम् (ल्यम्) [कुशल+अण्, ष्यञ् वा] 1. कुशल-क्षेम, प्रसन्नता, समृद्धि 2. कुशलता, चतुरता, चतुराई—किमकौशलादुत प्रजाविनापेक्षितया—मुद्रा० ३, हाव-हारि हसित वचनानां कौशलं दृशि विकारविशेषा—शि० १०।१३।

कौशलिकम् [कुशल+ठक्] घूस, रिश्वत।

कौशलिका, कौशली [कौशलिक+टाप्, कुशल+अण्+ङीप्] 1. उपहार, चढ़ावा 2. कुशल प्रश्न पूछना, अभिवादन।

कौशल्येयः [कौशल्या+ढक्, बलोप.] राम का विशेषण, कौशल्या का पुत्र।

कौशल्या [कोशलदेशे भवा—ष्यञ्] दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता।

कौसल्यायनिः [कौसल्या+फिञ्] कौसल्या का पुत्र राम, भट्टि० ७।९०।

कौशाम्बी [कुशाम्ब+अण्+ङीप्] गंगा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर (जिसे कुश के पुत्र कुशाम्ब ने बसाया था—यह नगर ही वत्स देश की राजधानी थी)।

कौशिक (वि०) (स्त्री० —की) [कुशिक+अण्] 1 कोशों में बन्द, म्यान में रक्खा हुआ 2 रेशमी,—कः 1 विश्वा-मित्र का विशेषण 2 उल्लू—अमर० २।२९ 3. कोशकार 4 गूदा 5 गुग्गुल 6 नेवला 7 सपेरा 8 शृंगार रस 9 जो मूलधन को जानता है 10 इन्द्र का विशेषण,—का प्याला, पानपात्र,—की 1 बिहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम 2 दुर्गादेवी का नाम 3. चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक—सुकुमारार्थसन्दर्भा कौशिकी तासु कथ्यते दे० सा० द०, ४११, तथा आगे पीछे। सम०—अरातिः,—अरिः कौआ,—फल नारियल का वृक्ष,—प्रियः राम का विशेषण।

कौशे (षे) यम् [कोशस्य विकार —ढञ्] 1 रेशम रघु० १।९४ 2 रेशमी कपड़ा—मनु० ५।१२० 3 रेशम का बना स्त्री का पेटी कोट—नितांत कौशेय-मुपात्तबाणमभ्यङ्गनेपथ्यमलंचकार कु० ७।९, विभू-षणं कौशेय ऋतु० ५।३, ऋतु० ५।९।

कौसीद्यम् [कुसीद+ष्यञ्] 1 ब्याज लेने का व्यवसाय 2 आलस्य अकर्मण्यता।

कौसृतिकः [कुसृति+ठक] 1 ठग, बदमाश 2 बाजीगर।

कौस्तुभ [कुस्तुभो जलधिस्तत्र भवः—अण्] एक विख्यात रत्न जो समुद्रमन्थन के फलस्वरूप १३ अन्य रत्नों के साथ समुद्र से प्राप्त हुआ तथा जिसको विष्णु ने अपनी वक्षःस्थल पर धारण किया हुआ है सकौस्तुभं ह्रेपय-तीव कृष्णम् रघु० ६।४९, १०।१०। सम० —लक्षणः,—वक्षस् (पुं०)—हृदयः विष्णु के विशेषण।

क्नूय् (भ्वा० आ० क्नूयते) 1. चूं चूं शब्द करना 2 बूबना 3 गीला होना।

क्रकच [क्र इति कचति शब्दायते क्र+कच्+अच्] आरा। सम० —छदः केतक वृक्ष, —पत्रः शाकोन वृक्ष,—पाद् (पुं०)—पादः छिपकली।

क्रकरः [क इति शब्दं करोति कीलमस्य—क+कृ+अच्] 1. एक प्रकार का तीतर 2 आरा 3. निर्धन व्यक्ति 4. रोग।

क्रतुः [कृ+कतु] 1. यज्ञ—अथोरोमेण करेण पुरुहूतम् - रघु० ३।६५, ततं क्रतूनामनपविघ्नमाप सः—३।३८,

मालवि० १।४, मनु० ७।७९ 2 विष्णु का विशेषण 3 दस प्रजापतियों में एक —मालवि० १।३५ 4 प्रज्ञा बुद्धि 5 शक्ति, योग्यता। सम० —उत्तमः राजसूय यज्ञ, —द्रुह्, —द्विष् (पुं०) राक्षस पिशाच, —ध्वंसिन् (पुं०) शिव का विशेषण (शिव ने ही दक्ष के यज्ञ का नष्ट किया था) —पतिः यज्ञ का अनुष्ठाता —पशु यज्ञीय बकरा —पुरुषः विष्णु का विशेषण —भुज् (पुं०) देवता, देव —राज् (पुं०) 1 यज्ञ का स्वामी यथा-अश्वमेध क्रतुराट् मनु० ९।२६० 2 राजसूय यज्ञ।

क्रथ् (भ्वा० पर० —क्रथति, क्रथित) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

क्रथकैशिकाः (ब० व०) एक देश का नाम —अथेश्वरेण क्रथकैशिकानाम् रघु० ५।३९ मनु० ५।२।

क्रथनम् [क्रथ् + ल्युट्] वध, हत्या।

क्रमेलकः [क्रमेल + कन्] ऊँट।

क्रन्द् (भ्वा० पर० —क्रन्दति, क्रन्दित) 1 चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना —किं क्रन्दसि दुराक्रन्द स्वपक्षक्षयकारक पञ्च० ४।२९ क्रन्दन्त्यः करुणमपरतो याः —विक्रम० १।२, चक्रन्द विग्ना कुररीव भूयः —रघु० १४।६८, १५।४२ भट्टि० ३।२८ ५।५ 2 पुकारना, दया की पुकार करना (कर्म० के साथ) क्रन्दत्यविरत साऽथ भ्रातृमातृसुतानथ भाग० (चुरा० पर० या प्रेर०) 1 लगातार चिल्लाना 2 रुलाना। आ—, चिल्लाना, चीखना, चरमराना, चीत्कार करना—सा हलायुमुहिते यस्मिन्न्राक्रन्दतीवाणिमि सौनिकागारे —कुमार० ४।७ भट्टि० १५।९० 2 पुकार करना (प्रेर०) गत्वोद्धीति मिलत्पिता पद्मनी क्राभिराक्रन्द्य —मृच्छ० ५।२३।

क्रन्दनम्, क्रन्दितम् [क्रन्द् + ल्युट्, क्त वा] 1 आर्तनाद रोना, विलाप करना —शत्रावति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्ण —रघु० ९।७५ 2 पारस्परिक ललकार चुनौती।

क्रम् (भ्वा० उभ० दिवा० पर० —क्रामति—क्रमते, क्राम्यति, क्रान्त) 1 चलना, पदार्पण करना, जाना —क्राममन्यमुदिते सूर्ये बाली व्यपगतक्लम —रामा० नम्यमान न समारोढ-मत्र क्रामतां पुर —भट्टि० ८।२५ 2 पग जाना, पहुँचना (कर्म० के साथ) —इमा इमान् लोकानक्रमन्त —शत० 3 जाना, पार करना, पार जाना —मुख योजनविस्तारमक्रमत्—रामा० 4 कूदना, छलांग मारना —क्रम बलस्य कपिर् सकाश (हरिः) —भट्टि० ९।९ ५।५१ 5 ऊपर जाना, बढ़ना 6 अधिकार में रखना, वश में करना, अधिकार में लेना, भरना —कान्ता यथा चेतसि विस्मयेन —रघु० १४।१७ 7 आगे बढ़ना, आगे निकल जाना—शिवम् मयोन्नतनाम्नो कामन्त मेकश्चिदास्मना —रघु० १।१४ 8 उत्तरदायित्व लेना, प्रयास करना, योग्य या समर्थ होना, शक्ति दिखलाना (सम० या तुमुन्नन्त के साथ) —व्याकरणाध्ययनाय क्रमते —सिद्धा०, वर्माय क्रमते साधु —वोप० अनुत्पतिरलंसविकल्पोविकाधि न कल्पनाय क्रमते सनाताम्—विक्रमांक० १।१६, कृत्वा दशासि लवितुमकमीन्माकिन पुन, अशोकवनिकामेव —भट्टि० ९।२८ 9 बढ़ना या विकसित होना, पूरा जोर मिलना, स्वच्छ होना (अधि० के साथ) —कृत्स्नेषु क्रमन्ते—वज्र० १७०, क्रमन्तेऽस्मिञ्छास्त्राणि—सा—क्रमते बुद्धिः —सिद्धा०, क्रममाणोऽरिसंसदि —भट्टि० ८।२२ 10 पूरा करना, निष्पन्न करना 11 मैथुन करना, (पा० १।३।३८ क्रम्—आ० में मानत्व 'विघ्नों का अभाव' शक्ति या प्रकाश' 'विकास वृद्धि' तथा 'जीतना, पार पहुँचना आदि अर्थ का प्रकट करती है) अति—, 1 पार करना, पार जाना—कामक्रान्तो राज्यम्-निकम्य—का० ९२ 2 परे जाना, लाँघना—मेघ० ५७, ६० 3 गुज़र जाना, बीत निकल जाना —मनु० ८।१५१ 4 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, आगे कदम रखना—अतिक्रम्य सदाचारम् —का० १६० 5 अवहेलना करना, पृथक् करना, उपेक्षा करना—प्रथितयशसां प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, किं वा परिजनमतिक्रम्य भवान्सन्दिष्ट —मालवि० ४, या कथ कांप्ठमतिक्रम्य यवीयान् राज्यमर्हति—महा० 6 गुज़रना, (समय का) बीतना—अतिक्रान्त दशाहे—मनु० ५।७६, यथा यथा यौवनमतिचक्राम—का० ५९ अधि—, चढ़ना अनु—, अधिकार करना, भरना ग्रहण करना—अध्याक्रम्य वसतिमुनाथाश्रमं सर्वभोग्ये —श० २।१४ अनु—, 1 अनुसरण करना 2 आरम्भ करना 3 अन्तर्वस्तु देना, अ वा—, एक के पश्चात् दूसरे के दर्शन करना, अप—, छोड़ जाना, चले जाना, अभि— 1 जाना, पहुँचना प्रविष्ट होना—अभिचक्राम काकुत्स्थ शरभङ्गाश्रमं प्रति-रामा० 2 घूमना भ्रमण करना 3. आक्रमण करना अव—, वापिस हटना आ—, 1 पहुँचना, की ओर जाना 2 आक्रमण करना, दमन करना, जीतना, परास्त करना—अधिकारमाक्रम्य—हि० १, वीरस्त्वामेवमाक्रमन् —रघु० ४।३४, भर्तृ० १।७० 3 भरना, प्रविष्ट होना, अधिकार में करना—न कथाक्रोऽयं दवाग्निमतु प्रवृत्त —मृच्छ० ५।३।१२ 4 आरम्भ करना, शुरू करना 5 उन्नत होना, उदय होना (आ०) व्यापन्नामर्षिचिराक्रमते न भानु —रघु० ५।७१ 6 चढ़ना, सवारी करना, अधिकार में करना उद्—, 1 ऊपर जाना, परे जाना, उपर जाना—ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति —मनु० २।१२० 2 अवहेलना करना, उपेक्षा करना —आर्षं प्रमाणमुत्क्रम्य धर्मं न प्रतिपालयन्—महा०, धर्ममुत्क्रम्य 3 पर कदम रखना—रघु० १५।३३, उप—, 1 की ओर जाना पहुँचना 2 धावा बोलना, आक्रमण करना 3 बर्ताव करना, उपचार करना, (वैद्य

की भांति) चिकित्सा करना, स्वस्थ करना, 4. प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना—सर्वस्वार्पणेनोपक्रम्य सीताम् —राजा० 5. अनुष्ठान करना, प्रस्थान करना 6 (आ) आरम्भ करना, शुरू करना प्रसभमनुमुपक्रमेत क —कि० २।२८, रघु० १७।३३, निस्–, 1. चले आना, चल देना, विदा होना 2. निकलना, प्रकाशित होना —भट्टि० ७।७१, परा–, (आ०) 1 साहस प्रदर्शित करना, शक्ति या शूरवीरता दिखाना, बहादुरी के साथ करना—अक्रमश्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत् —मनु० ७।१०६, भट्टि ८।२२.९३ 2 वापिस मुड़ना 3. चढ़ाई करना, आक्रमण करना, परि–, 1 इधर उधर घूमना, चक्कर लगाना—परिक्रम्यावलोक्य च (नाटकों में) 2 पकड़ लेना, प्र–(आ०) 1 आरम्भ करना, शुरू करना—प्रचक्रमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम् -रघु० ३।४७, २।१५, कु० ३।२ 2 कुचलना, ऊपर पैर रख कर चलना—भट्टि० १५।२३ 3 जाना, प्रस्थान करना, प्रति—, वापिस आना वि–(आ०) 1. मे से चलना, विष्णुस्त्रेधा विचक्रमे—तीन पग रक्खे—भट्टि० ८।२४ 2. छापा मारना, पराजित करना जीतना 3 फाड़ना, खोलना (पर०), व्यति–, 1 उल्लंघन करना 2 समय बिताना, व्युत्–दे० उत्–, सम्–, 1 आना या एकत्र होना 2. पार जाना, पार करना, में से जाना 3 पहुँचना, जाना 4 पार चले जाना, स्थानान्तरित होना 5. दाखिल होना, प्रविष्ट होना कौत्सो प्रपद्य समर्कमित् द्वितीय सर्वोपकारक्षममाश्रमं ते रघु० ५।१०, समा–, 1. अधिकार करना, कब्जे में लेना, भरना समभेव समाक्रान्तं द्वय द्विरदगामिना, तेन सिंहासनं पित्र्य-मखिलं चारिमण्डलम् - रघु० ४।४ 2 छापा मारना, जीतना, दमन करना

क्रमः [क्रम् + घञ्] 1 कदम, पग त्रिविक्रम, सागर —क्रमणोद्गेन क्रमेणैकेन लङ्घित—महा० 2 पैर 3 गति प्रगमन, मार्ग, क्रमात् क्रमेण दौरान में, क्रमशः, काल-क्रमेण उत्तरोत्तर, समय पाकर, भाग्यक्रमः, भाग्य का उलट जाना - रघु० ३।७, ३०, ३२ 4 प्रवर्तन, आरम्भ —इत्यमत्र विततक्रमे कृतौ शि० १४।५३ 5 नियमित मार्ग, क्रम, श्रेणी, उत्तराधिकारिता, निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः - श० ७।३० मनु० ७।२४ ९।८५ २।१७३, ३।६९ 6. प्रणाली रीति -नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम्— रघु० ७।३९ 7 थामना, पकड़ क्रमगता पशोः कन्यका - मा० ३।१६ 8. (दूसरे जन्तु पर आक्रमण करने से पूर्व की जानवर की) स्थिति 9. तैयारी, तत्परता - भट्टि० २।९ 10 व्यवसाय, साहसिक कार्य 11. कर्म या कार्य, कार्यविधि—कोऽप्येष कान्तः क्रमः—अनर्घ ४३।१३ 12. वेदमंत्रों को सस्वर उच्चारण करने की विशेष रीति—क्रमपाठ 13. शक्ति, सामर्थ्य,- सम् घारा। सम० अनुसारः,- अन्वयः, नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था, - आगत,- आयात (वि०) यथापरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक, ज्या वृत्त की ज्यारेखा, ज्य, - भंगः अनियमितता।

क्रमकः (वि०) [क्रम् + वुन्] क्रमबद्ध, प्रणाली के अनुसार, —कः वह विद्यार्थी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है।

क्रमणः [क्रम + ल्युट्] 1 पैर 2. घोड़ा, —णम् 1 कदम 2 पग रखना 3 आगे बढ़ना 4 उल्लंघन

क्रमतः (अव्य०) [क्रम् + तसिल्] क्रमश, उत्तरोत्तर।

क्रमशः (अव्य०) [क्रम + शस्] 1 ठीक क्रम में, नियमित रूप से उत्तरोत्तर, क्रमानुसार 2 क्रम से, मात्रा के अनुसार रघु० १२।५७, मनु० १।६८, ३।१२।

क्रमिक (वि०) [क्रम + ठन्] 1 उत्तरोत्तर, सिलसिलेवार 2 यथापरम्परागत, पैतृक, आनुवंशिक।

क्रमुः, क्रमुकः [क्रम् + उ, कन् च] सुपारी का पेड़—आस्वादितार्द्रक्रमुक समुद्रात् शि० ३।८१, विक्रमांक० १८।९८।

क्रमेलः, क्रमेलकः [क्रम् + एल् + अच्, कन् च] ऊँट —निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टक-जालमेव विक्रमांक० १।२९, शि० १२।१८, नै० ६।१०४।

क्रयः [क्री + अच्] खरीदना, मोल लेना। सम०—आरोहः मंडी, मेला,—क्रीत (वि०) मोल लिया हुआ,—लेख्यम् बैनामा, विक्रयनामा दानपत्र (गृह क्षेत्रादिक क्रीत्वा तुल्यमूल्याक्षरान्वितम्, पत्रं कारयते यत्तु क्रय-लेख्यं तदुच्यते बृहस्पति), विक्रयौ (द्वि० व०) व्यापार, व्यवसाय, खरीद-फरोख्त मनु० ८।५ ७।१२७ —विक्रयिकः व्यापारी सौदागर।

क्रयणम् [क्री + ल्युट्] खरीदना, मोल लेना।

क्रयिकः [क्रय + ठन्] 1 व्यापारी, सौदागर 2 क्रेता, माल लेने वाला।

क्रय्य (वि०) [क्री + यत्, नि०] मण्डी में विक्रय के लिए रक्खी हुई वस्तु, बिकाऊ (विप० 'क्रय', जिसका अर्थ है 'मोल लिये जाने के उपयुक्त'।

क्रव्यम् [क्लव् + यत्, रस्य लः] कच्चा मांस, मुरदार (शव या लाश) खपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति- मा० ५।१६। सम०—अद्,- अद, भुज् (वि०) कच्चा मांस खाने वाला, मनु० ५।१३१, (पु०) 1 शेर, चीता आदि मांसभक्षी जन्तु,—उत्तर० १।४९, 2 राक्षस, पिशाच—रघु० १५।१६।

क्रशिमन् (पु०) [कृश + इमनिच्] पतलापन, कृशता, दुबलापतलापन।

क्राकचिकः [क्रकच + ठक्] आराकश।

क्रान्त (वि०) [क्रम् + क्त] गया हुआ, आरपार गया हुआ

(पु० क० कृ०),—तः 1 घोड़ा 2. पैर, पग । सम० —वर्जित (वि०) सर्वज्ञ ।

क्रान्तिः (स्त्री०) [क्रम्+क्तिन्] 1 गति, प्रगमन 2. कदम, पग 3 आगे बढ़ने वाला 4 आक्रमण करने वाला, अभिभूत करने वाला 5 नक्षत्र की कोणीय दूरी 6 क्रांतिवलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग । सम० —कक्षः, —मण्डलम्, —वृत्तम्, सूर्य का भ्रमण मार्ग, —पातः वह बिंदु जहाँ क्रांतिवलय विषुवत् रेखा से मिलता है, —वलयम् 1 सूर्य का भ्रमण मार्ग 2 उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र, उष्ण कटिबंध ।

क्रायक (वि) कः [क्री+ण्वुल् क्रय+ठक्] 1 क्रेता, खरीददार 2 व्यापारी, सौदागर ।

क्रिमिः [क्रम्+इन् इत्वम्] 1 कीड़ा 2 कीट—दे० कृमि । सम० —कोश अंगः की मकड़ी, —शैलः बांबी ।

क्रिया [कृ+श, रिङ् आदेश, इयङ्] 1 करना, कार्यान्विति, कार्य सम्पादन, निष्पादन करना, उपचार कर्म —प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव मेघ० ११४ 2 कर्म कृत्य, व्यवसाय जिम्मेदारी प्रणयिक्रिया—विक्रम० ४।१५, मनु० २।४ 3 चेष्टा शारीरिक चेष्टा, श्रम 4 अध्यापन, शिक्षण क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति —रघु० ३।२९ 5 (नृत्य गायन आदि) किसी कला पर आभिजात्य ज्ञान शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था मालवि० १।१६ 6 आचरण (विप० शास्त्र-सिद्धान्त) 7 साहित्यिक रचना शृणुत मनोभिरवहितैः क्रियामिमां कालिदासकृत विक्रम० १।२ कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमान मालवि० १ 8 शुद्धि संस्कार धार्मिक संस्कार 9 प्रायश्चित्तस्वरूप संस्कार प्रायश्चित्त 10 (क) श्राद्ध (ख) और्ध्वदैहिक संस्कार 11 पूजन 12 औषधोपचार चिकित्सा प्रयोग इलाज शारीरिक मालवि० ४ चौतन्य उपचार 13 (व्या० में) क्रिया के द्वारा अभिहित अर्थ 14 चेष्टा या कर्म 15 विशेषतः वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित सात द्रव्यों में से एक दे० कर्मन् 16 (विधि में) साक्ष्यादिक मानवप्रमाणों से तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा अभियोग की जानकारी, करना 17 प्रमाण भार । सम० —अन्वित (वि०) शास्त्रोक्त कर्मों को करने वाला, —अपवर्गः 1 किसी कार्य की समाप्ति या इतिश्री, कार्यसम्पादन—क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात् कृता कि० १।१४ 2 कर्मकाण्ड से मुक्ति, छुटकारा, —अभ्युपगम विशेष प्रकार का करार या प्रतिज्ञा-पत्र क्रियाभ्युपगमात्त्वेतत् बीजार्थं यत्प्रदीयते मनु० ९।५३, —अवसन्न (वि०) गवाहों के बयान के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति, —इन्द्रियम् दे० 'कर्मेन्द्रिय', —कलापः 1 हिन्दू धर्मशास्त्र द्वारा विहित समस्त कार्य 2 किसी व्यवसाय के समस्त विवरण, —कारः 1 अभिकर्ता, कार्यकर्ता 2 शिक्षारम्भ करने वाला, नौसिखिया, नवच्छात्र 3 इकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र, —द्वेषिन् (पु०) (पाँच प्रकार के साक्षियों में से एक) वह साक्षी जिसका साक्ष्य पक्षपातपूर्ण हो, —निर्देशः गवाही साक्ष्य, —पटु (वि०) कार्यदक्ष, —पथः औषधोपचार की रीति, —पदम् क्रियावाचक शब्द, —पर (वि०) अपने कर्तव्य-पालन में परिश्रमशील, —पादः अभियोक्ता या वादी के द्वारा अपने दावे की पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियाँ आदि जो कानूनी अभियोग का तीसरा अंग है, —योगः 1 क्रिया के साथ संबंध 2 तरकीब और साधनों का प्रयोग, —लोपः आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परित्याग, क्रियालोपात् वृषलत्वं गताः मनु० १०।४३, —वशः आवश्यकता क्रियाओं का अवश्यंभावी प्रभाव, —वाचक, —वाचिन् (वि०) कर्म को प्रकट करने वाला, क्रिया से बना संज्ञा शब्द, —वादिन् (पु०) वादी अभियोक्ता, —विधिः कार्य करने का नियम, किसी धर्मकृत्य को सम्पन्न करने की रीति—मनु० ७।७० —विशेषणम् 1 क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द 2 विधेय विशेषण, —संक्रान्ति (स्त्री०) दूसरों को ज्ञान देना अध्यापन— मालवि० १।१९, —समभिहारः किसी कार्य की आवृत्ति ।

क्रियावत् (वि०) [क्रिया+मतुप्] कर्म में व्यस्त किसी कार्य के व्यवहार को जानने वाला यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् हि० १।१६३ ।

क्री (क्र्या० उभ० क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीत) 1 खरीदना मोल लेना महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया शा० ३।१ क्रीणीष्व मज्जीवितमेव पण्यमन्यन्न चेदस्ति तदस्तु पुण्यम् नै० ३।८७, ८८ पञ्च० १।१३, मनु० ९।१७४ 2 विनिमय अदला-बदली—कश्चिन्महर्षिर्मर्षणात्मक आत्मानं परिक्रयम् महा०, आ—, खरीदना, निस्— कुछ देकर पिंड छुड़ाना, दाम देकर फिर से वापिस लेना, निस्तार करना, परि— (आ०) 1 मोल लेना—सम्भोगाय परिक्रीतः कर्तास्मि तव नाप्रियम् भट्टि० ८।७८ 2 किराये पर लेना, कुछ समय के लिए मोल लेना (निर्धारित मूल्य से करण० तथा सम्प्र० के साथ), इतने वेतन या परिक्रीत सिद्धा० 3 वापिस करना, बदला देना, चुकाना कृतेनोपकृतं वायो परिक्रीणानमुत्थितम् भट्टि० ८।८ वि—, बेचना (इस अर्थ में आ०) तथा धनमहत्वेन विक्रीणीषे सुतं यदि— रामा० विक्रीणीत तिलान् शुद्धान् मनु० १०।९०, ८।१९७, २२२, शा० १।१२ 2 विनिमय, अदलाबदली—आकस्माच्छाण्डिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्—पंच० २।६५ ।

क्रीड् (भ्वा० पर० क्रीडति क्रीडित) 1 खेलना मनोरंजन करना बाजरा क्रीडितुमारब्धा यक्ष० १ एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधि - मृच्छ० १०।५९ 2 जुआ खेलना पासों से खेलना अक्षैर्वा द्यूत क्रीडन—मृच्छ० नाक्षैः क्रीडेत्कदाचिद्धि मनु० ४।७४ याज्ञ० १।१३८ 3 हँसी दिल्लगी करना मजाक करना खिल्ली उड़ाना—मदनुलम्भनमण्डलमन्त्र कथ आर्णमम क्रीडति—गाथा० ३ क्रीडिष्यामि राजदेनया विक्रम० ३ एवमन्यापमृयस्तं क्रीडन्ति परिनार्या'म रि० । ३ यक्ष० १।१८० मृच्छ० ३ अनु (आ०) मलना किलोल करना जी बहलाना साध्वनुक्रीडमानानि पश्य वृन्दानि पक्षिणाम्— भट्टि० ८।१० आ परि सम (आ०) खेलना कौतुक करना—सक्रीडन्ते मणिभिरमरप्र क दा मेघ० ७० परन्तु सम पूर्वक क्रीड (पर०) कोलाहल करने के अर्थ को प्रकट करता है सक्रीडन्ति शकटानि महा० गाड़ियाँ चूँ चूँ करती है।

क्रीड [क्रीड + घञ्] 1 किलोल मनबहलाव खेल आमोद 2 हँसी दिल्लगी मजाक।

क्रीडनम् [क्रीड + ल्युट्] 1 खेलना किलोल करना 2 खेलने की चीज खिलौना।

क्रीडनकः,-कम्, क्रीडनीयम्,-यकम् [क्रीडन + कन् क्रीड + अनीयर् क्रीडनीय + कन्] खेलने की चीज खिलौना।

क्रीडा [क्रीड + अ + टाप्] 1 किलोल जी बहलाना खेलना आमोद—तायक्रीडानिरतयुवनिस्नानतिक्तैर्मरुद्भि:—मेघ० ३३।६१ 2 हँसी दिल्लगी। सम० गृहम् आमोद भवन शैल आमोद निवास का काम देने वाला एक बनावटी पहाड़ आमोदगिरि—क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीय मेघ० ७५, नारी वेश्या—कोप झूठमूठ का क्रोध अमरु ११ मयूर मनोरंजन के लिए पाला गया मोर रघु० १६।१४ रत्नम् कामकेलि मैथुन।

क्रीत (वि०) [क्री + क्त] मोल लिया हुआ दे० क्री—स हिन्दूधर्मशास्त्र में प्रतिपादित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक अपने नैसर्गिक माता पिता से मोल लिया हुआ पुत्र क्रीतश्च ताभ्यां विक्रीत याज्ञ० २।१३१ मनु० १७४। सम० अनुशय किसी वस्तु को मोल लेकर पछताना क्रिया का निराकरण करना खरीदी हुई वस्तु को वापिस करना (कुछ बातों में धर्मशास्त्रों से अनुमोदित)।

कुञ्चः (पु०) **कुङ्कः** [कुञ्च + क्विन् अच् वा] क्रुङ्कुक्रुञ्च बगला।

क्रुध् (दिवा० पर० क्रुध्यति क्रुद्ध) गुस्से होना (क्रोध के साथ में सम्प्र०) हरये क्रुध्यति कभी कभी उपरि प्रति आदि शब्दों के भी साथ—ममोपरि स क्रुद्धः, न मां प्रति क्रुद्धो गुरु प्रति बदल में कुपित होना क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येत् मनु० ६।४८ सम् कुपित होना सक्रुध्यसि मृषा किं त्वं दिदृक्षुं मां मृगेक्षणे भट्टि० ८।७६।

क्रुध् (स्त्री०) [क्रुध् । क्विप्] क्रोध कोप।

क्रुश (भ्वा० पर० क्रोशति क्रुष्ट) 1 चिल्लाना रोना विलाप करना शोक मनाना क्रोशन्त्यस्य कर्णाविव भट्टि० ६।११८ 2 बुलाना किलकिलाना कूकना हुआ बोलना करना पुकारना—अ गत वृक्षेण भीवनाश मनात क अट्टि० १६। १ अनु दया करना करुणा करना अभि विलाप करना आ 1 चिल्लाना जोर से पुकारना अपगोनीनाय विश्रु म गरुडः निनदा प्रसाद राक्षस्य अर्थ ११३ 2 कठोरवाणी सुनाना गालियाँ देना क्रीयाश्च दृष्टमर्दन्ति मनु० ८ ७३ भट्टि० ११ १२ परि विलाप करना प्रत्या गालों के बदले में गाली देना वि 1 चीखना चिल्लाना आक्रोश विक्रोश त्यापयिष्यन्त मृच्छ० १।८१ भट्टि० १६। ४ १६।३ 2 उच्चारण करना (कर्म० के साथ) 3 पुकारना (कर्म० के साथ) 4 गूजना आ विलाप करना शोक मनाना।

क्रुष्ट (वि०) [क्रुश् क्त] 1 चिल्लाया हुआ 2 पुकारा हुआ ष्टम् चिल्लाना चीखना रोना।

क्रूर (वि०) [कृत + रक धातो क्रू] 1 निर्दय निष्ठुर कठोर हृदय निष्करुण—तस्याभिषेकसम्भारं कल्पितं क्रूरनिश्चया रघु० १२।४ मेघ० १०५ मनु० १०।८ 2 कठोर कड़ा 3 दारुण भयंकर भीषण 4 नाशक या अनिष्टकर 5 धारदार घाव लगा हुआ 6 खूनी 7 कच्चा 8 अजेय 9 गरम तेज अरुचिकर—मनु० ४।३३—र बाज बगला रम् 1 घाव 2 हत्या कूरता 3 भीषण कृत्य। सम० आकृति (वि०) डरावनी सूरत वाला (ति) रावण का विशेषण आचार (वि०) क्रूर और बर्बर आचरण करने वाला, आशय (वि०) 1 भयानक जलजन्तुओं से भरा हुआ (जैसे कि कोई नदी) 2 क्रूर स्वभाव का कर्मन् (नपुं०) 1 रक्तरंजित कानून 2 कठोर श्रम -कृत् (वि०) भीषण क्रूर निर्मम कोष्ठ (वि०) कब्ज वाला जिस पर मृदु विरेचन का असर न हो गन्ध गन्धक दृश् (वि०) 1 क्रूर दृष्टि वाला कुदृष्टि डालने वाला 2 चाल दुष्ट शनिम् (पुं०) पहाड़ी कौवा लोचन शनिग्रह का विशेषण।

क्रेतृ (पु०) [क्री + तृच्] क्रेता, खरीददार याज्ञ० २।१६८।

क्रौञ्च [क्रुञ्च + अच्, बा० गुण] एक पहाड़ का नाम दे० 'क्रौञ्च'।

क्रोडः [कुड्+घञ्] 1 सूअर 2 वृक्ष की खोखर, गढ़ा —हा हा हन्त तथापि जन्मविटपिक्रोडे मनो धावति—उद्भट 3 सीना, वक्ष स्थल, छाती, क्रोडीकृ छाती से लगाना —मनु० २।३५ 4 किसी वस्तु का मध्यभाग - शिशु० ११।३५—डम् 'क्रोड' (नपुं०) 5 शनिग्रह का विशेषण, —डम् —डा 1 छाती, सीना, कन्धों के बीच का भाग 2 किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गढ़ा, कोटर। सम०—अङ्कः,—अङ्घ्रिः,—पादः कछुवा,—पत्रम् 1 प्रान्तवर्ती लेख 2 पत्र का पश्चलेख 3 सम्पूरक 4 वसीयतनामे का परवर्ती उत्तराधिकार-पत्र।

क्रोडीकरणम् [क्रोड+च्वि+कृ+ल्युट्] आलिंगन करना, छाती से लगाना।

क्रोडीमुखः [क्रोडस्य मुखमिव मुखमस्य ब० स०] गेंडा।

क्रोधः [क्रुध्+घञ्] 1 क्रोध, गुस्सा कामात्क्रोधोऽभिजायते भग० २।६२, इसी प्रकार क्रोधान्ध क्रोधाकुल 2 (सा० शा० में) क्रोध एक प्रकार की भावना है जिससे रौद्ररस का उदय होता है। सम० —उज्झित (वि०) क्रोध से मुक्त, शान्त, स्वस्थ, —मूर्छित (वि०) क्रोध से अभिभूत या क्रोधोन्मत्त।

क्रोधन (वि०) [क्रुध्+ल्युट्] गुस्से से भरा हुआ, क्रोधाविष्ट, क्रुद्ध, चिड़चिड़ा—यद्यसेन कृतं तदेव कुरुते स्त्रीणामपि क्रोधना—वेणी० १।३१,—नम् क्रुद्ध होना, क्रोध।

क्रोधालु (वि०) [क्रुध्+आलुच्] क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा, गुस्सैल।

क्रोशः [क्रुश्+घञ्] 1 चिल्लाना, चीख, चीत्कार, कूका देना, कोलाहल 2. चौथाई योजन, एक कोस—क्रोशार्धं प्रकृतिपुरःसरेण गत्वा —रघु० १३।७९, समुद्रात्पुरी क्रोशी या—क्रोशयो। सम०—तालः, —ध्वनिः एक बड़ा ढोल।

क्रोशन (वि०) [क्रुश्+ल्युट्] चिल्लाने वाला, —नम् चीख चिल्लाहट।

क्रोष्टु (पुं०) (स्त्री० ष्ट्री) [क्रुश्+तुन्] गीदड़ (इस शब्द की रूप रचना में यह शब्द सर्वनाम स्थान में अनिवार्यतः क्रोष्टृ बन जाता है, तथा अन्यत्र क्रोष्टु, एव 'करादि' में द्वि० तथा षष्ठी ए० व० को छोड़कर सर्वत्र विकल्प से)।

क्रौञ्चः [क्रुञ्च्+अण्] बककुक्कुटी, कुररी, बगला—मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि सीमान्तराण्युत्सुकयन्ति चेतः —ऋतु० ४।८, मनु० १२।६४ 2 एक पर्वत का नाम (कहते हैं कि यह पहाड़ हिमालय का पोता है, तथा कार्तिकेय एवं परशुराम ने इसे बींध दिया है)—हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम् मेघ० ५७। सम० —अदनम् कमलडंडी के रेशे, —अरातिः,—अरिः,—रिपुः 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण

दारणः,—सूदनः 1 कार्तिकेय और 2. परशुराम के विशेषण।

क्रौर्यम् [क्रूर+ष्यञ्] क्रूरता, कठोरहृदयता।

क्लन्द् (भ्वा० पर०—क्लन्दति, क्लन्दित) 1 पुकारना, चिल्लाना 2 रोना, विलाप करना, (भ्वा० आ० क्लन्दते या क्लदते) घबड़ा जाना।

क्लम् (भ्वा०—दिवा० पर०—क्लामति, क्लाम्यति, क्लान्त) थक जाना, थक कर चूर होना, अवसन्न होना न चक्लाम न विव्यथे- भट्टि० ५।१०२, १४।१०९, वि—, थक जाना।

क्लमः, क्लमथः [क्लम्+घञ्, अथच् वा] थकावट क्लान्ति अवसाद विनोदितदिनक्लमाः कृतरुचश्च जाम्बूनदैः - कि० ४।६६ मनु० ७।१५१, श० ३।२१।

क्लान्त (वि०) [क्लम्+क्त] 1 थका हुआ, थक कर चूर हुआ, तमातपक्लान्तम्—रघु० २।१३, मेघ० १८, ३६, विक्रम० २।२२ 2 मुर्झाया हुआ, म्लान—क्लान्तो मन्मथलेख एष नलिनीपत्रे नखैरर्पित —श० ३।२६, रघु० १०।४८ 3 दुबला-पतला।

क्लान्तिः (स्त्री०) [क्लम्+क्तिन्] थकावट। सम०—छिद् (वि०) थकावट दूर करने वाला, बलदायक।

क्लिद् (दिवा० पर०—क्लिद्यति, क्लिन्न) गीला होना, आर्द्र होना, तर होना—प्रेर० तर करना, गीला करना —न चैनं क्लेदयन्त्यापः—भग० २।२३, भट्टि० १८।११।

क्लिन्न (वि०) [क्लिद्+क्त] गीला, तर। सम०—अक्ष (वि०) चौंधियाई आंखों वाला।

क्लिश् i (दिवा० आ०—(कुछ के मत में) पर०, क्लिश्यते क्लिष्ट, क्लिशित) 1 दुःखी होना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना—अप्युपदेशग्रहणे नातिक्लिश्यते मे शिष्या —मालवि० १ भय परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिणः प्रतिभूः कुलम् मनु० ८।१६९ 2. दुःख देना, सताना, ii (क्र्या० पर०—क्लिश्नाति, क्लिष्ट, क्लिशित) दुःख देना, पीड़ित करना, सताना, कष्ट देना,—क्लिश्नाति लब्धपरिपालनवृत्तिरेव श० ५।६, एवमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्—कु० २।४०, रघु० ११।५८।

क्लिशित, क्लिष्ट (वि०) [क्लिश्+क्त] 1 दुःखी, पीड़ित, संकट ग्रस्त 2. कष्टग्रस्त, सताया हुआ 3 मुर्झाया हुआ 4 असंगत, विरोधी 5 (सा० शा० में) अस्पष्ट परिष्कृत, कृत्रिम (रचना आदि) 6 लज्जित।

क्लिष्टिः (स्त्री०) [क्लिश्+क्तिन्] 1. कष्ट वेदना, दुःख, पीडा 2 सेवा।

क्लीब (व) (वि०) [क्लीब् (व्)+क] 1. हिजड़ा नपुंसक, बधिया किया हुआ—मनु० ३।१५०, ४।२०५, याज्ञ० १।२२३ 2. पुरुषार्थहीन, भीरु, दुर्बल, दुर्बलमना

—रघु० ८।८४, क्लीबान् पालयिता —मृच्छ० ९।५ 3. कायर 4 नीच अधम 5 सुस्त 6 नपुंसक लिंग का, —बः, —बम् (—बः, —बम्) 1 नामर्द, हिजड़ा,—न मूत्रं फेनिलं यस्य विष्ठा चाप्सु निमज्जति मेढ्रं चोन्माद-शुक्राभ्यां हीनं क्लीबः स उच्यते दायभाग में उद्धृत कात्यायन 2 नपुंसक लिंग ।

क्लेदः [क्लिद्+घञ्] गीलापन, आर्द्रता, तरी, नमी —श० १।२९ रघु० ७।२१ 2 बहने वाला, घाव से निकलने वाला मवाद 3. दुःख, कष्ट रघु० १५।३२, (=उपद्रव मल्लि०) ।

क्लेशः [क्लिश्+घञ्] पीड़ा, वेदना, कष्ट दुःख तक-लीफ —किमात्मा क्लेशस्य पदमुपनीत —श० १, क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते कु० ५।८६, भग० १२।५ 2. गुस्सा, क्रोध 3 सांसारिक कामकाज । सम० —क्षम (वि०) कष्ट सहने में समर्थ ।

क्लैब्यम् (क्लैव्यम्) [क्लीब (व)+ष्यञ्] 1 नामर्दी (शा०) —वरं क्लैब्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम् —पंच० १ 2. पुरुषार्थहीनता, भीरुता, कायरता—क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ भग० २।३ 3 अनुपयुक्तता नामर्दी शक्ति-हीनता - २।१।८६

क्लोमन् [क्लु+मनिन्] फेफड़े ।

क्व (अव्य०) [किम्+अत्, कु आदेश] 1 किधर, कहाँ —क्व तेऽन्योन्यं यत्ता क्व च नु महुना कौतुकरसा —उत्तर० ६।३३, क्व—क्व (जब किसी समास वाक्य खंड में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है 'भारी अंतर' 'असंगति'—क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी क्व च ते विश्वसनीयमायुधम् —मालवि० ३।२, क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः —रघु० १।२, कि० १।६, श० २।१८ 2. कभी कभी 'क्व' का प्रयोग 'किम्' शब्द के अधि० का होता है क्व प्रदेशे अर्थात् कस्मिन् प्रदेशे (क)—अपि 1 कहीं, किसी जगह 2 कभी कभी (ख), —चित् 1 कुछ स्थानों पर —प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः श० १।१४, ऋतु० १।२, रघु० १।४१ 2 कुछ बातों में क्वचित् गोचर क्वचिन्न गोचरोऽर्थः, क्वचित् क्वचित् (क) एक जगह—दूसरी जगह यहाँ-वहाँ क्वचिद्वीणावाद्यं क्वचिदपि च हा हेति रुदितम् भर्तृ० ३।१२५ १।८ (ख) कभी-कभी (समय सूचक) क्वचित्पथा संचरते सुराणाम् क्वचित् घनानां पततां क्वचिच्च— रघु० १३।१९ ।

क्वण् (भ्वा० पर० —क्वणति, क्वणित) 1 अस्पष्ट शब्द करना, झनझन शब्द, टनटन शब्द— इति घोषयतीव डिण्डिमः करिणो हस्तिपकाहतः क्वणन्—हि० २।८६, क्वणत्कनकनूपुरी—अम० २८, ऋतु० ३।२६, मेघ० ३६ 2. भिनभिनाना, (भौंरों का) गुंजन, अस्पष्ट गायन —कु० १।५४, उत्तर० ३।२४, भट्टि० ६।८४ ।

क्वणः, क्वणनम्, क्वणितं, क्वाणः [क्वण्+अप्, ल्युट् क्त, घञ् वा] 1 सामान्य शब्द 2. किसी भी वाद्ययंत्र की ध्वनि ।

क्वत्य (वि०) [क्व+त्यप्] किस स्थान से संबंध रखने वाला, कहाँ पर होने वाला ।

क्वथ् (भ्वा० पर०—क्वथति, क्वथित) 1 उबालना, काढ़ा बनाना 2. पचाना ।

क्वाथः [क्वथ्+अच्, घञ् वा] काढ़ा, लगातार मंदी आँच में तैयार किया गया घोल ।

क्वाचित्क (वि०) [स्त्री०—त्की] अकस्मात् घटित, विरल, असाधारण, इति क्वाचित्कः पाठः ।

क्ष [क्षि+ड] 1 नाश 2 अन्तर्धान, हानि 3. बिजली 4 खेत 5 किसान 6 विष्णु का नरसिंहावतार 7 राक्षस ।

क्षण् (नु) (तना० उभ० क्षणोति क्षणुते, क्षत) 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना - इमां हृदि व्यायतपातमक्षणोत्—कु० ५।५४ 2 तोड़ना, टुकड़े २ करना—(धनुः) त्वं किलानमितपूर्वमक्षणोः —रघु० ११।७२, अप—, परि-वि उसी अर्थ में प्रयोग जो क्षण् का मूल अर्थ है ।

क्षणः, —णम् [क्षण्+अच्] 1 लमहा, निमेष, एक सैकंड के ४।५ भाग के बराबर समय की माप क्षणमात्र-मृषिस्तस्थौ सुप्तमीन इव ह्रदः रघु० १।७३, ७।१० मेघ० २१, क्षणमवतिष्ठस्व कुछ देर ठहरो 2. अव-काश—अहमपि लब्धक्षणः स्वगेहं गच्छामि मालवि० १, गृहीतः क्षणः श० २ मेरा अवकाश आपके सुपुर्द है अर्थात् आपका कार्य कर देने का मैं आपको वचन देता हूँ 3 उपयुक्त क्षण या अवसर—रहो नास्ति क्षणो नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः —पंच० १।१४८ मेघ० १२, अधिगतक्षण —दश० १४३ 4 उत्सव, हर्ष, खुशी 5 आश्रय दासता 6 केन्द्र मध्यभाग । सम० —अन्तरे (अव्य०) दूसरे क्षण, कुछ देर के पश्चात् —क्षेपः क्षणिक विलंब, —द ज्योतिषी (—दम्) पानी (—दा) 1 रात—क्षणादथैष क्षणदापतिप्रभः नै० १।६७ रघु० ८।७४, १६।४५, शि० ३।५३ 2 हल्दी °करः चाँद, शि० ९।७०, °चरः रात में घूमने वाला, राक्षस, —सामुपैत प्रभुरपि क्षणदाचराणाम्—रघु० ११।७५, °आन्ध्यम् रात्रि में अन्धापन रतौंधी, —द्युतिः (स्त्री०) —प्रकाशा,—प्रभा बिजली,—निश्वासः शिशुक,—भंगुर (वि०) क्षणस्थायी, चंचल, नश्वर हि० ४।११० —मात्रम् (अव्य०) क्षणभर के लिए, —रामिन् (पुं०) कबूतर —विध्वंसिन् (वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला (पुं०) नास्तिक दार्शनिकों का सम्प्रदाय जो यह मानता है कि प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होकर नया बनता रहता है ।

क्षणुः [क्षण्+उ] घाव, फोड़ा ।

क्षणनम् [क्षण् + ल्युट्] क्षति पहुँचाना, मार डालना, घायल करना।

क्षणिक (वि०) [क्षण + ठन्] क्षणस्थायी, अचिरस्थायी -- स्वप्नेषु क्षणिकसमागमोत्सवैश्च—रघु० ८।९२, एकस्य क्षणिका प्रीतिः हि० १।६६, -का बिजली।

क्षणिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [क्षण + इनि] 1 अवकाश रखने वाला 2 क्षणस्थायी, -नी बिजली।

क्षत (वि०) [क्षण् + क्त] घायल, चोट लगा हुआ, क्षतिग्रस्त, काटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, तोड़ा हुआ, दे० क्षण् - रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाश्च—वेणी० १।७, रघु० १।२८, २।५६, ३।५३, --तम् 1 खरोंच 2 घाव, चोट, क्षति - क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम् उत्तर० ४।७, क्षारं क्षते प्रक्षिपन् -मृच्छ० ५।१८ 3 भय, विनाश, खतरा -क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः -रघु० २।५३। सम० -अरि (वि०) विजयी,- उदरम् पेचिश, -कासः आघात से उत्पन्न खांसी -जम् 1. रुधिर -स छिन्नमूलः क्षतजेन रेणु -रघु० ७।४३, वेणी० २।२७ 2 पीप, मवाद,—योनिः (स्त्री०) भ्रष्ट स्त्री वह स्त्री जिसका कौमार्य भंग हो चुका हो, -विक्षत (वि०) विक्षतांग, जिसका शरीर बहुत अंगत से कट गया हो, तथा घावों से भरा हो, -वृत्तिः (स्त्री०) दरिद्रता, जीविका के साधनों से वंचित, -व्रतः वह विद्यार्थी जिसने अपनी धार्मिक प्रतिज्ञा या व्रत भंग कर दिया हो।

क्षतिः (स्त्री०) [क्षण् + क्तिन्] 1 चोट, घाव 2 नाश, काट, फाड़—विक्षय्य क्षिप्यता वराहततिभिः मुस्ताक्षतिः पल्वले - श० २।६ 3 (आल०) बर्बादी, हानि, नुकसान - सुखं सञ्जायते तेभ्यः सर्वेभ्योऽपीति का क्षतिः सा० द० १ 4 ह्रास, क्षय, न्यूनता—प्रताप-क्षतिशीतला कु० २।२४, हि० १।११४।

क्षत्तृ (पुं०) [क्षद् + तृच्] 1 जो काटने और रूपरेखा खोदने का काम करता है—(मूर्तिकार या संगतराश) 2 परिचारक द्वारपाल 3 कोचवान सारथि 4 शूद्र पिता तथा क्षत्रिय माता से उत्पन्न संतान—पु० मनु० १०।१२ 5 दासी का पुत्र (उदा० विदुर) 6 ब्रह्मा, 7 मछली।

क्षत्रः, -त्रम् [क्षण् + क्विप्, क्षत्, ततः त्रायते त्रै + क] 1 अधिराज्य शक्ति प्रभुता सामर्थ्य 2 क्षत्रिय जाति का पुरुष -क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः -रघु० २।५३, ११।६९, ७१—अमन्त्रं क्षत्रपरिग्रहक्षमा श० १।२१, मनु० ९।३२२। सम० -अन्तकः परशुराम का विशेषण, -कर्मः 1 बहादुरी, सैनिक शूरवीरता 2 क्षत्रिय के कर्तव्य, -पः राज्यपाल, उपशासक, -बन्धुः 1 क्षत्रिय जाति का पुरुष - मनु० २।३८ 2 क्षत्रिय मात्र, अपक्षत्रिय, घृणित या निकम्मा क्षत्रिय, तु० ब्रह्मबन्धु।

क्षत्रियः [क्षत्रे राष्ट्रे साधु तस्यापत्यं जातौ वा घः तारा०] दूसरे वर्ण या सैनिक जाति का पुरुष - ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः - मनु० १०।४। सम० -हणः परशुराम का विशेषण।

क्षत्रियका, **क्षत्रिया**, **क्षत्रियिका** [क्षत्रिया + कन् + टाप्, ह्रस्व क्षत्रिय + टाप् - क्षत्रिया + कन् + टाप् इत्वम् वा] क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्रियाणी [क्षत्रिय + ङीष्, आनुक्] 1 क्षत्रिय जाति की स्त्री 2. क्षत्रिय की पत्नी।

क्षत्रियी [क्षत्रिय + ङीष्] क्षत्रिय की पत्नी।

क्षन्तृ (वि०) (स्त्री० -त्री) [क्षम् + तृच्] प्रशान्त, सहिष्णु, विनम्र।

क्षप् (भ्वा० -क्षपति -ते, क्षपित) उपवास करना, संयमी होना– मनु० ५।६९, (प्रेर० या चुरा० उभ०—क्षपयति -ते क्षपित) 1 फेंकना, भेजना, डालना 2. चूक जाना।

क्षपणः [क्षप् + ल्युट्] बौद्धभिक्षु —णम् 1 अपवित्रता, अशौच 2. नाश करना, दबाना, निकाल देना।

क्षपणकः [क्षपण + कन्] बौद्ध या जैनसाधु—नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति चाण० ११०, कथं प्रथममेव क्षपणकः -- मुद्रा० ४।

क्षपणी [क्षप् + ल्युट् + ङीप्] 1. चप्पू 2. जाल।

क्षपण्युः [क्षप् + कन्यु, गत्वम्] अपराध।

क्षपा [क्षप् + अच् + टाप्] 1 रात—विषमयत्पुरिव एव क्षपा श० ६।४ रघु० २।२०, मेघ० ११० 2 हल्दी। सम०—चरः 1 रात में घूमने वाला 2 राक्षस, पिशाच —तत. क्षपाटैः पृथिपग्मार्गैः --भट्टि० २।१०, -करः, -नाथः 1 चन्द्रमा 2 कपूर —घनः काला बादल, -चरः राक्षस, पिशाच।

क्षम् (भ्वा०, आ०—क्षमते, क्षाम्यति क्षान्त या क्षमित) 1 अनुमति देना इजाजत देना, सहने देना—अतो नृपाश्चक्षमिरे समेताः स्त्रीरत्नलाभं न तदात्मजस्य रघु० ७।३४, १२।४६ 2 क्षमा करना माफ कर देना (अपराध आदि)—क्षान्तं न क्षमया भर्तृ० ३।११, क्षमस्व परमेश्वर - तिष्ठस्व मे भर्तृनिदेशरौक्ष्यं देवि क्षमस्वेति बभूव नम्रः रघु० १४।५८ 3 धैर्यवान् होना, चुप होना, प्रतीक्षा करना रघु० १५।४५ 4 सहन करना गम खा जाना, भुगतना - अपि क्षमस्तेऽस्मदुपजापं प्रकृतय.—मुद्रा० २, नाजाकृकरान् राजा क्षमेत स्वसुतानपि -हि० २।१०७ 5 विरोध करना, रोकना 6. सक्षम या योग्य होना —चूते रवे: क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः—शि० १।३८, ९।६५।

क्षम (वि०) [क्षम् + अच्] 1. धैर्यवान् 2. सहनशील, विनम्र 3. पर्याप्त सक्षम, योग्य (समास में या संबं०,

अधि० अथवा तुमुन्नंत के साथ)—शक्तिमो हि बलवत्सु क्षमालोकस्य न क्षम —माल० ३।४१, सा हि रक्षण-विधौ तयोः क्षमा —रघु० १।३५, हृदयं न त्वयवलंबितुं क्षमा —रघु० ८।५९—नयनक्षम, निर्मूलनक्षम आदि 4 समुपयुक्त, योग्य उचित, उपयुक्त—क्षमो यमुक्त-मशिवं न हि तत्क्षमं ते —उत्तर० १।१४, आत्मकर्म-क्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः —रघु० १।१३, श० ५।२९ 5 योग्य, समर्थ, अनुरूप—उपभोगक्षमे देशे —विक्रम० २, तप क्षमं साधयितुं य इच्छति —श० १।१८ 6 सहने योग्य, सह्य 7 अनुकूल, मित्रवत् ।

क्षमा [क्षम्+अङ+टाप्] 1. धैर्य, सहिष्णुता, माफी —क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम् —हि० २, रघु० १।२२, १८।९, तेजः क्षमा वा नैकान्तं कालज्ञस्य महीपतेः —शि० २।८३ 2. पृथ्वी 3. दुर्गा का विशेषण । सम०—भुज् भगवान्,—भुज्—भृत् राजा ।

क्षमितृ (वि०) (स्त्री०—त्री), क्षमिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [क्षम्+तृच्, क्षम्+घिनुण्, क्रियते डीप् च,] धैर्यवान्, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव वाला—शक्तं क्षाम्यन्तु च क्षमी —शि० २।४३, भाम० २।१००, १।१३३ ।

क्षयः [क्षि+अच्] 1 घर, निवास, आवास—वातलायन मनक्षये—भनु० ९।११, निर्जगाम पुनस्तस्मात्सक्षयादाजा-रावणस्य तु—महा०, 2 हानि, ह्रास, छीजन, घटाव, पतन, न्यूनता—आयुःक्षय —रघु० ३।६९, धनक्षये वर्धति जाठराग्निः —पंच० २।१७८ इसी प्रकार धनक्षय, बलक्षय आदि 3. विनाश, अंत, समाप्ति—निशाक्षये याति ह्रियेव पाण्डुताम्—ऋतु० ११९, अमरु १० 4 आर्थिक क्षति—मनु० ८।४०१ 5. (मूल्य आदि का) गिरना 6 हटाना 7. प्रलय 8. तपेदिक 9. रोग 10. निर्धनता, (बीजगणित में) ऋण । सम०—कर (क्षयंकर भी) (वि०) नाश या तबाही करने वाला, बर्बादी करने वाला,—काल 1. प्रलयकाल 2. अवनति का समय,—कासः तपेदिक की खांसी,—पक्ष कृष्णपक्ष, अंधेरापक्ष,—युक्ति (स्त्री०),— नाश करने का अवसर,—रोगः तपेदिक, राजयक्ष्मा,—वायु प्रलयकाल की हवा,—संपद् (स्त्री०) सर्वनाश, बर्बादी ।

क्षयथुः [क्षि+अथुच्] तपेदिक के रोगी की खांसी, तपेदिक ।

क्षयिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [क्षय+इनि] 1. ह्रास-मान, मुर्झाने वाला—आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण —भर्तृ० २।६०, ह्रासोन्मुख, क्षीयमाण—न चाभूत्क्षयिष्णुः शशी—रघु० १०।७१, मनु० ९।३१४ 2 क्षयरोगग्रस्त 3. नश्वर, भंगुर—(पु०) चन्द्रमा ।

क्षयिष्णु (वि०) [क्षि+इष्णुच्] 1. बरबाद करने वाला, नाश करने 2. नश्वर, भंगुर ।

क्षर् (भ्वा० पर०—क्षरति, क्षरित) (इसका प्रयोग अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार से होता है) 1. बहना, सरकना 2. भेंट देना, जाड़ी की कांति बहाना, उडेलना, निकालना—रघु० १६।६७, भट्टि० १।८ 3. बूंद-बूंद करके गिरना, टपकना, रिसना 4 नष्ट होना, घटना, मिटना 5 व्यर्थ होना, प्रभाव न होना - सर्वाः क्रियाः क्षरन्ति ... क्षरति विक्षयात् —मनु० ४।१३७ 6. खिसकना, वञ्चित होना (अपा० के साथ) (प्रेर० —क्षारयति) आरोप लगाना; कलंक लगाना (प्राय 'आ' उपसर्ग के साथ), वि—, पिघलना, घुल जाना ।

क्षर (वि०) [क्षर्+अच्] 1 पिघलने वाला 2. चंचल 3 नश्वर —क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते —भग० १५।१६ —रः बादल,—रम् 1 पानी 2 शरीर ।

क्षरणम् [क्षर्+ल्युट्] 1 बहने, टपकने, बूंद-बूंद गिरने और रिसने की क्रिया 2 पसीना आ जाना —अङ्गुलिक्षरणसन्नवर्तिकः—रघु० १९।१८ ।

क्षरिन् (पु०) [क्षर+इनि] बरसात का मौसम ।

क्षल् (चुरा० उभ० क्षालयति- ते क्षालित) 1 धोना, धो देना, पवित्र करना, साफ करना —चूते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः —शि० १।३८, हि० ४।९० 2 मिटा देना-(अवध) तिथायनुतहेनाथ राजन् प्रक्षालयात्मन —महा०, वि —, धोकर साफ करना —रघु० — ५।४४ ।

क्षवः क्षवथुः [क्षु+अप्, अथुच् वा] 1 छींक 2 खांसी ।

क्षात्र (वि०) (स्त्री०-त्री) [क्षत्र+अण्] क्षत्रिय जाति से संबंध रखने वाला क्षात्रो धर्म श्रित इव तनुं ब्रह्मकोषस्य गुप्त्यै उत्तर० ६।९, रघु० १।१३, -त्रम् 1 क्षत्रिय जाति 2 क्षत्रिय के गुण जैसा इस प्रकार बतलाती है शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्, दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभाव-जम् भग० १८।४३ ।

क्षान्त (भू० क० कृ०) [क्षम्+क्त] 1 धैर्यवान्, सहन-शील, सहिष्णु 2 क्षमा किया गया, —ता पृथ्वी ।

क्षान्ति (स्त्री०) [क्षम्+क्तिन्] 1 धैर्य, सहनशीलता, क्षमा- क्षान्तिश्चेद्वचनेन किम् —भर्तृ० २।२१, भग० १८।४२ ।

क्षान्तु (वि०) [क्षम्+तुन्, वृद्धि] धैर्यवान्, सहनशील, —न्तुः पिता ।

क्षाम (वि०) [क्षै+क्त] 1 दग्ध, झुलसा हुआ 2. क्षीण, पतला, परिक्षीण, कृश, दुबला-पतला क्षामक्षाम कपोलमाननम् —श० ३।१०, क्षामं क्षामा मेघ० ८२, क्षामच्छाया भवनमधुना मद्वियोगेन नूनम् -८०, ८९ 3. क्षुद्र, तुच्छ, अल्प 4 दुर्बल, निःशक्त ।

क्षार (वि०) [क्षर्+ण वा०] संक्षारणशील, क्षारक या

दाहक, तिक्त, चरपरा, कटु, खारी, –रः 1 रस, अर्क 2. शीरा, राब 3 कोई क्षारीय या खट्टा पदार्थ– क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम् —उत्तर० ४।७ क्षारं क्षते प्रक्षिपन्– –मृच्छ० ५।१८ (क्षार क्षते क्षिप् —एक लोकोक्ति बन गया है इसका अर्थ है पीड़ा को जो पहले से ही असह्य है और बढ़ा देना 'बुरे को और अधिक बुरा कर देना' 'जले पर नमक छिड़कना' 4 शीशा 5 बदमाश ठग –रम् 1 काला नमक 2 पानी। सम० –अष्टकम् समुद्री नमक –अञ्जनम् सज्जी का क्षार –अम्बु खारी रस या खारा पानी—उदः, उदकः, उदधिः, समुद्र खारा समुद्र, –द्रः, –त्रितयम् सज्जी क्षार सुहागा –नदी नरक में खारे पानी की नदी –भूमिः (स्त्री०) –मृत्तिका (स्त्री) भूमि–क्षिमाहवर्यं क्षारभूमौ प्र गता –मेलक, –मृत्तिका उत्कट, –मेलक क्षार पदार्थ –रस खारा रस।

क्षारक. [क्षार+कन्] 1 क्षार, रेह 2 रस अर्क 3 पिंजरा पक्षियों के रखने की टोकरी या जाल 4 धोबी 5 मंजरी, कलिका।

क्षारणम्,–णा [क्षर्+णिच्+ल्युट् दुष्ट था, दोषारोपण विशेषकर व्यभिचार का।

क्षारिका [क्षर्+ण्वुल्+टाप् इत्वम] भूख।

क्षारित (वि०) 1 खारे पानी में से टपकाया हुआ 2. जिस पर (व्यभिचार) का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो।

क्षालनम् [क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 धोना (पानी से धोकर) साफ करना 2 छिड़कना।

क्षालित (वि०) [क्षल्+णिच्+क्त] 1 धोया हुआ साफ किया हुआ, पवित्र किया हुआ 2 पोंछा हुआ प्रतिदत्त (बदला चुकाया हुआ) –उत्तर० ४।८।

क्षि i (भ्वा० पर० क्षयति क्षित या क्षीण 1 मुर्झाना छीजना 2 राज्य करना, शासन करना स्वामी होना।

ii (भ्वा०, स्वा०, क्र्या० पर० क्षयति क्षिणोति क्षिणाति) 1 नष्ट करना ग्रस्त कर लेना, बर्बाद करना, भ्रष्ट करना न तथा शस्त्रभृतां क्षिणोति –रघु० २।४० 2 न्यून करना बर्बाद करना –रघु० ११।४८ 3 मार डालना, क्षति पहुँचाना —(कर्मवाच्य –क्षीयते) 1 बर्बाद होना, घटना नष्ट होना, न्यून होना (आलं० भी) प्रतिक्षणमयं कायः क्षीयमाणो न लक्ष्यते हि० ४।६६ प्रत्यासन्न–विपत्तिमूढमनसां प्रायो मतिः क्षीयते पंच० २।४ अमरु ९१, भर्तृ० २।११, (प्रेर० –क्षययति या क्षपयति) 1 नष्ट करना, दूर हटा देना, समाप्त कर देना —अपि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगत–शक्तिरात्मभूः–श० ७।३५, रघु० ८।४७, मेघ० ५३। 2 समय बिताना, अव—, घटना, क्षीण होना, न्यून होना, परि–, प्र–, सम्—, 1 कम होना, क्षीण होना 2 कृश होना, दुबला-पतला होना।

क्षितिः (स्त्री०) [क्षि+क्तिन्] 1 पृथ्वी 2 निवास, आवास घर 3 हानि, विनाश 4 प्रलय। सम०—ईशः, –ईश्वरः राजा रघु० १।७ ३।३ ११।१, –कणः धूल –कम्पः भूचाल,–क्षित् (पुं०) राजा, राजकुमार, –ज 1 वृक्ष 2 गड़ोआ, केंचुआ 3 मंगल ग्रह 4 विष्णु के द्वारा मारा गया नरक नाम का राक्षस (–जम्) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं (–जा) सीता का विशेषण,—तलम् पृथ्वी की सतह –देव ब्राह्मण –धरः पहाड़ कु० ७।९४ –नाथ —पः,—पति –पालः –भुज् (पुं०) –रक्षिन् (पुं०) राजा प्रभु—रघु० २।५१, ५।३९, ६।८६ ७।३ ९।३७ –पुत्र मंगल ग्रह –प्रतिष्ठ (वि०) पृथ्वी पर रहने वाला –भृत् (पुं०) 1 पहाड़ —सर्वक्षितिभृतां नाथ विक्रम० ४।२७ (यहाँ इस शब्द का अर्थ राजा भी है।) कि० ५।२०, महा० १।२६ 2 राजा —मण्डलम् भूमण्डल —रन्ध्रम् खाई, कोटर –रुह् (पुं०) वृक्ष –वर्धन (पुं०) लाश मुर्दा शरीर, –वृत्तिः (स्त्री०) पृथ्वी की गति धैर्यपूर्ण व्यवहार अनुकूल गुणशील।

क्षिद्र [क्षिद्+रक] 1 रोग 2 सूर्य 3 सींग।

क्षिप् (तुदा० उभ० – अभि प्रति या अति पूर्व होने पर पर० – दिवा० पर० क्षिपति –ते क्षिप्यति, क्षिप्त) 1 फेंकना डालना भेजना प्रक्षित करना, विसर्जन, डाल देना (अधि० या कभी कभी सम्प्र० के साथ) भस्मकूटे इति तु द्वारि अवदग्धवत्कूप इवापि—मनु० ३।१८८ क्षिप्ता वा अप्सु ते मति– महा०, का० १२, १४ प्रीतपूर्वक या भर्तृ० ३।६७ 2 रखना पहनना, लगाना कण्ठभागे क्षिप्त्वा पुनोत्थितशाखा —श० ७।१४ पञ्च० १।४३० भग० १६।१९ 3 आरोपित करना, लगाना (कलंक आदि)—मृत्ये दोषान् क्षिपन्ति हि० २ 4 फेंक देना डाल देना, उतार देना मुक्त होना–के ममैस्य मरव्यथा न वपुषि क्षमा न क्षिपत्येष मन मुद्रा० ७।१८ 5 दूर करना, नष्ट करना– मा० १।१ 6 अस्वीकार करना घृणा करना 7 अपमान करना भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, धमकाना—मनु० ८।३१२ २७०, मा० ३।१०, अधि – 1 निन्दा करना कलंक लगाना 2 नाराज करना अपवाद करना 3 आगे बढ़ जाना, अप– , 1 उतार फेंकना छोड़ना त्यागना 2 तिरस्कार करना भर्त्सना करना आ– , 1 फेंकना, डाल देना, प्रहार करना 2 खींचना 3 वापिस लेना, छीनना, खींचना, ले लेना—कर्णपाशमाक्षिप्य—रघु० ७।७,

कु० १।४३, मेघ० ६८ 4 संकेत करना, इशारा करना 5. परिस्थितियों से अनुमान लगाना -आत्मा व्यक्तिराक्षिप्यते 6 (तर्क के रूप में) आक्षेप करना 7 अवहेलना करना, उपेक्षा करना 8 तिरस्कार करना, उद्—, उछालना ऋतु० १।८२ उप—, 1. डालना, फेंकना वपुषि वधाय तत्र तव शस्त्रमुप क्षिपत —मा० ५।३१ 2 संकेत करना, इशारा करना निष्कर्ष निकालना छन्न कार्यमुपक्षिपन्ति मृच्छ० १।३ 3 आरम्भ करना शुरू करना 4 अपमान करना, डांटना-फटकारना नि—, 1 नीचे रखना, स्थापित करना, धर देना याज्ञ० ११०२ अमरु० ८० 2 सौंपना, देख रेख में सुपुर्द करना मनु० ६। ३, ३।१७९ १८० 3 निक्षिप्त रखना 4 फेंक देना अस्वीकार करना 5 प्रदान करना परि— 1 घेरना गङ्गास्रोतः परिक्षिप्तम् कु० ६।३८ 2 आलिङ्गन करना, पर्या— बांधना (बालों को) एकत्र करना (केशान्त) पर्याक्षिपत् काचिदुदारबन्धम् कु० ७।१४, प्र—, 1 रखना डालना नामैनं प्रक्षिपेदग्नौ —मनु० ६।५३ ... 2 बीच में डालना अन्तर्हित करना—इति सूत्र में ... संक्षिप्त कैयट वि— 1 पकड़ना बाधना 2 मन मोड़ना 3 ध्यान हटाना, सम— 1 संचय करना ढेर लगाना आत्मन्यात्मानं संक्षिप्य निषादिभि —रघु० १।५४ भट्टि० ५।८६ 2 पीछे हटना, नष्ट करना 3 छोटा करना कमी करना, संक्षिप्त करना संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा मेघ० १०८, मनु० ७।४६।

क्षपणम् [क्षिप् + ल्युट् वा०] 1 भेजना फेंकना, डालना 2 छिड़कना, दुर्वचन कहना।

क्षिपणि, —णी (स्त्री०) [क्षिप् + अनि, क्षिपणि + ङीष्] 1 चप्पू 2 जाल 3 हथियार, —णि प्रहार।

क्षिपण्युः [क्षिप् + कन्युच्] 1 शरीर 2 वसंत ऋतु।

क्षिपा [क्षिप् + अङ् + टाप्] 1 भेजना, फेंकना, डालना 2. रात्रि।

क्षिप्त (भू० क० कृ०) [क्षिप् + क्त] 1 फेंका हुआ, बिखेरा हुआ, उछाला हुआ, डाला हुआ 2. त्यागा हुआ 3. अवज्ञात, उपेक्षित, अनादृत 4 स्थापित 5 ध्यान हटाया हुआ, ... (दे० क्षिप्), —तम् गोली लगने से बना घाव। सम० —कुक्कुर पागल कुत्ता, —चित्त (वि०) उचाट मन, विमना,— देह (वि०) प्रसृतशरीर लेटा हुआ।

क्षिप्तिः (स्त्री०) [क्षिप् + क्तिन्] 1 फेंकना भेज देना 2 (पहेलियाँ आदि के) गूढ़ अर्थ को प्रकट करना।

क्षिप्र (वि०) [क्षिप् + रक्] (म० अ०—क्षेपीयस्, उ० अ० क्षेपिष्ठ) सजीव, आशुगामी,— प्रम् (अव्य०) जल्दी, फुर्ती से, तुरन्त—विनाशं व्रजति क्षिप्रमामपात्रमिवाम्भसि मनु० ३।१७९ शा० ३।६ भट्टि० ७।६४। सम० —कारिन् (वि०) आशुकारी अविलम्बी।

क्षिया [क्षि + अङ् + टाप्] 1 हानि, विनाश, बर्बादी, ह्रास 2 अनौचित्य सर्वसम्मत आचार का उल्लंघन उदा० ... सिद्धा०।

क्षीजनम् [क्षीज् + ल्युट्] बांस के रन्ध्रों में से निकली हुई सरसराहट की ध्वनि।

क्षीण (वि०) [क्षि + क्त तस्य नः] 1 पतला, कृश, क्षय प्राप्त ... 2 ... 3 ... 4 ... सम० —चन्द्र घटता हुआ चन्द्र, कृष्णपक्ष का चन्द्रमा —धन (वि०) जिसके पास पैसा न रहा हो, निर्धन —पाप (वि०) जो अपने पापों का ... —पुण्य (वि०) जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो ... —मध्य (वि०) जिसकी कमर पतली हो —वासिन् (वि०) ... —विक्रान्त (वि०) साहसहीन, तेजोहीन —वृत्ति (वि०) जीविका के साधनों से वञ्चित बेरोजगार।

क्षीबू, क्षीव दे० क्षीव, क्षीव।

क्षीर —रम् [घस् + ईरन् उपधालोप, घस्य ककार] 1 दूध ... क्षीरभाजनम् ... 2 वृक्षों का दूधिया रस ... क्षीरमिवस्रुतमया दक्षिणेन ... १०७ कु० १।९ 3 जल। सम० —अद शिशु, दूध-पीता बच्चा —अब्धि दुग्धसागर °ज 1 चन्द्रमा 2 मोती, °जम् समुद्री नमक °जा लक्ष्मी का विशेषण — आह्व मनोकर का वृक्ष —उद दुग्धसागर क्षीरोदवेलेव सफेनपुञ्जा —कु० ७।२६, —तनय चन्द्रमा, —तनया सुता लक्ष्मी का विशेषण, —उदधि क्षीरोद —ऊर्मि दुग्धसागर की लहर रघु० ४।२७ —ओदन दूध में उबाले हुए चावल, —कण्ठ दूधपीता बच्चा (कण्ठ में दूध रखने वाला) ... क्षीरकण्ठेन ... महावी० ... —ज जमा हुआ दूध —द्रुमः अश्वत्थवृक्ष, —धात्री दूध पिलाने वाली नौकरानी, धाय, —धि, —निधि दुग्धसागर ... क्षीरनिधाविव—रघु० ११।२ —धेनु (स्त्री०) दूध देने वाली गाय, —नीरम् 1 पानी और दूध 2 दूध जैसा पानी 3 आलिंगन, —पः बच्चा

—आदि:,—आरिधि:, दुग्ध सागर, विकृति: अमा। हुआ दूध, —वृक्ष 1 बड़, गूलर, पीपल और मधूक नाम के वृक्ष 2 अंजीर, —सार मलाई, दूध की मलाई —समुद्र दुग्धसागर —सार मक्खन —हिंडीर दूध के झाग या फेन।

क्षीरिका [क्षीर + ठन् + टाप्] दूध से बना भोज्य पदार्थ।

क्षीरिन् (वि०) [क्षीर + इनि] दूधिया, दुधार, दूध देने वाला।

क्षीव् (भ्वा० दिवा० पर० —क्षीवति क्षीव्यति) 1 मत वाला होना, मदोन्मत्त होना, नशे में होना 2 थूकना, मुंह से निकालना।

क्षीव (वि०) [क्षीव् + क्त नि०] उन्मत्त, मतवाला, मदोन्मत्त ... भ्रुव ... क्षीव ... वेणी० ५।२७।

क्षु (अदा० पर० ...) 1 छींकना ... 2 खांसना।

क्षुण्ण (भू० क० कृ०) [क्षुद् + क्त] 1 कुचला हुआ, कुचला हुआ रघु० १।१७ 2 (आल०) अभ्यस्त ... क्षुण्णः एष मार्गः का० १४६ 3 पीसा हुआ ... क्षुद्र। सम० —मनस (वि०) पश्चात्तापी, पछताने वाला।

क्षुत् (स्त्री०) **क्षुतम्**, —ता [क्षु + क्विप् तुगागम , क्षु + क्त ... टाप्] छींकने वाला, छींक।

क्षुद् (रुधा० उभ० —क्षुणत्ति, क्षुन्ते, क्षुण्ण) 1 कुचलना, पिसना (पैरों से) कुचल डालना, रगड़ना, पीस देना ... भट्टि० ... ... 2 उत्तेजित करना, क्षुब्ध होना (आ० ...) ... सना, खरोंचना, पीसना ... भट्टि० १४।३३।

क्षुद्र (वि०) [क्षुद् + रक्] (म० अ० क्षोदीयस् ... —क्षोदिष्ठ) 1 सूक्ष्म, अल्प, छोटा सा, तुच्छ, हल्का 2 कमीना, नीच, दुष्ट, अधम ... कु० १।१२ 3 दुष्ट 4 क्रूर 5 गरीब, दरिद्र 6 कृपण, कंजूस, —द्रा 1 मधुमक्खी 2 झगड़ालू स्त्री 3 अपाहज या विकलांग स्त्री 4 वेश्या —उपसृष्टा इव ... का० १०३। सम० —अञ्जनम् कुछ रोगों में आंखों में लगाया जाने वाला अंजन या लेप —अन्त्रम् हृदय के भीतर का छोटा सा खाना, —कम्बु छोटा शंख —कुष्ठम् एक प्रकार का हल्का कोढ़ —घण्टिका 1 घुंघरू 2 घुंघरू वाली करधनी, —चन्दनम् लाल चन्दन की लकड़ी —जन्तु कोई भी छोटा जीव, —घण्टिका ... —बुद्धि (वि०) ओछे मन का, कमीना, —रस शहद, —रोग मामूली बीमारी (सुश्रुत में ४४ रोगों का उल्लेख है) —शङ्ख छोटा शंख या घोंघा (सीपी), —सुवर्णम् हल्का या खोटा सोना अर्थात् पीतल।

क्षुद्रक (वि०) [क्षुद्र + कन्] सूक्ष्म, हल्का (विशेष कर ... के लिए प्रयुक्त)।

क्षुध् (दिवा० पर० क्षुध्यति क्षुधित) भूखा होना, भूख लगना भट्टि० ... ।

क्षुध् (स्त्री०), **क्षुधा** [क्षुध् + क्विप्, क्षुध् + टाप्] भूख ... सम० —आर्त, —आविष्ट ... —क्षाम (वि०) ... —पिपासित (वि०) भूखा प्यासा —निवृत्ति (स्त्री०) भूख शान्त होना।

क्षुधालु (वि०) ... भूखा

क्षुधित (वि०) ... भूखा

क्षुप ... झाड़ झाड़ी।

क्षुभ् ... —क्षुभ्यति, ... 1 ... कंपित करना ... महाह्रद इव क्षुभ्यन् भट्टि० ... रघु० ... शि० ... 2 अस्थिर होना ... प्र— वि ...

क्षुभित (वि०) [क्षुभ् + क्त] 1 हिलाया हुआ, आंदोलित ... 2 डरा हुआ 3 क्रुद्ध

क्षुब्ध (वि०) [क्षुभ् + क्त] 1 आन्दोलित, चंचल, अस्थिर 2 ... 3 ... —ब्ध० मन्थन करने का ... —२ रति क्रिया का विशेष आसन, रतिबन्ध।

क्षुमा [क्षु + मक्] अलसी, एक प्रकार का सन।

क्षुर् (तुदा० पर० —क्षुरति) 1 काटना, खुरचना 2 रेखाएं खींचना, हल से खेत में खूड बनाना।

क्षुर [क्षुर् + क] 1 उस्तरा रघु० ३।३१, मनु० ९। २९२ 2 ... जैसा नोक जो तीर में लगाई जाय 3 गाय या घोड़े का सुम 4 बाण। सम० —कर्मन् (नपुं०) —क्रिया हजामत बनाना —चतुष्टयम् हजामत करने के ... चार चीजें —धानम् —भाण्डम् उस्तरे का ... —धार (वि०) उस्तरे जैसा तेज, —प्र बाण जिसकी नोक धार की नाल जैसी हो ... रघु० ११।२९, ९।६२ 2 खुर्पी, घास खोदने का खुर्पा —मर्दिन्, —मुण्डिन् (पुं०) नाई।

क्षुरिका, **क्षुरी** [क्षुर + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्व, क्षुर + ङीष्] 1 चाकू, छुरा 2 छोटा उस्तरा।

क्षुरिणी [क्षुर + इनि + ङीप्] नाई की पत्नी।

क्षुरिन् (पुं०) [क्षुर+इनि] नाई।

क्षुल्ल (वि०) [क्षुद्रं लाति गृह्णाति—क्षुद्+ला+क] छोटा, स्वल्प। सम०—तात: पिता का छोटा भाई —तु० क्षुल्ल।

क्षुल्लक (वि०) [क्षुल्ल+कन्] 1. स्वल्प, सूक्ष्म 2 नीच, दुष्ट 3. नगण्य 4. निर्धन 5 दुष्ट, द्वेषयुक्त 6. बच्चा।

क्षेत्रम् [क्षि+ष्ट्रन्] 1. खेत, मैदान भूमि—बीजमेव शालि-कस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषि—मुद्रा० १।३ 2 भूसम्पत्ति भूमि 3 स्थान, आवास, भूखण्ड, गोदाम—कपटशतमय क्षेत्रमप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१, भर्तृ० १।७७, मेघ० ११ 4 पुण्यस्थान, तीर्थस्थान—क्षेत्र क्षत्रप्रधन-पिशुनं कौरवं तद्भजेथा—मेघ० ४८ भग० १।१ 5 बाड़ा 6. उर्वरा भूमि 7. जन्मस्थान 8 पत्नी—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्—श० १, मनु० ३।१८५ 9. कायक्षेत्र शरीर (आत्मा का कर्म क्षेत्र)—योगिनो यं विचिन्वन्ति क्षेत्राभ्यन्तरवर्तिनम् —कु० ६।७७, भग० १३।१,२,३ 10 मन 11 घर, नगर 12 सपाट आकृति जैसे कि त्रिभुज 13. रेखा-चित्र। सम०—अधिदेवता किसी पुण्य भूस्थल की अधिष्ठात्री देवता,—आजीव, —कर, कृषक, खेतिहर, —गणितम् ज्यामिति, रेखागणित, —गत (वि०) ज्यामितीय °उपपत्ति (स्त्री०) ज्यामितीय प्रमाण, —ज (वि०) 1 खेत में उत्पन्न 2 शरीर से उत्पन्न (ज.) हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक अपने पति के निमित्त सन्तानोत्पत्ति करने के लिए विधिवत् नियत किए गए किसी सबन्धी द्वारा उसकी पत्नी में उत्पादित सन्तान—मनु० ९।१६७ १८० याज्ञ० १।६८, ६९, २।१२८, —जात (वि०) दूसरे पुरुष की पत्नी में उत्पादित सन्तान, —ज्ञ (वि०) 1. स्वाधीनता को जानने वाला 2 चतुर, दक्ष (ज्ञः) 1. आत्मा—तु० भग० १३।१-३, मनु० १२।१२ 2. परमात्मा 3. व्यभिचारी 4. किसान,—पति भूस्वामी भूमिधर,—पदम् देवता के लिए पवित्र स्थान, —पाल. 1. खेत का रखवाला 2. क्षेत्र की रक्षा करने वाला देवता 3. शिव का विशेषण,—फलम् (गणित में) आकृति की लम्बाई चौड़ाई का गुणनफल, —भक्ति (स्त्री०) खेत का बँटवारा,—भूमि (स्त्री०) भूमि जिसमें खेती की जाय,—राशि ज्यामितीय आकृतियों द्वारा प्रकट किया गया परिमाण, —विद् (वि०) =क्षेत्रज्ञ (पुं०) 1 किसान 2 ऋषि, जिसे आध्यात्मिक ज्ञान हो —कु० ३।५० 3 आत्मा, —स्थ (वि०) पुण्य भूमि में रहने वाला।

क्षेत्रिक (वि०) (स्त्री० —की) [क्षेत्र+ठन्] खेत से सम्बन्ध रखने वाला, —कः 1. एक किसान—मनु० ८।२४१, ९।५३ 2. पति—मनु० ९।१४५।

क्षेत्रिन् (पुं०) [क्षेत्र+इनि] कृषक, काश्तकार, खेतिहर —याज्ञ० २।१६१ 2. नाममात्र का पति—मनु० ५ 3. आत्मा 4. परमात्मा भग० १३।३३।

क्षेत्रिय (वि०) [क्षेत्र+घ] 1 खेत से सबंध रखने वाला 2. असाध्य रोग, जिसका उपचार देहान्तर प्राप्ति पर ही हो अथवा इस जीवन में जिसका उपचार न हो सके —यक्ष्मोऽस्य क्षेत्रियो येन मय्यपालीति माऽऽत्रवीत्—भट्टि० ८।३२, —यम् 1 आंगिक रोग 2 चरागाह, गोचरभूमि, —यः व्यभिचारी, परदाररत।

क्षेप [क्षिप्+घञ्] 1 फेंकना, उछालना, डालना, इधर उधर हिलाना (अंगों की) गति—कन्दुकक्षेपानुगम मेघ० ४१, भूक्षेपमात्रानुमतप्रवेशाम् कु० ३।६० 2 फेंकना, डालना 3 भेजना, प्रेषित करना 4 आघात 5 उल्लंघन 6. समय बिताना कालक्षेप 7 विलम्ब, देरी 8 अपमान, दुर्वचन क्षेप करोति चेद्दण्ड्य —याज्ञ० २।२०४, किंक्षेपे 9 अनादर, घृणा 10 घमंड, अहंकार 11 फूलों का गुच्छा, कुसुमस्तबक।

क्षेपक (वि०) [क्षिप्+ण्वुल्] 1 फेंकने वाला, भेजने वाला 2 मिलाया हुआ, बीच में घुसाया हुआ 3 गालियों से युक्त, अनादरपूर्ण,—कः बनावटी या बीच में मिलाया हुआ।

क्षेपणम् [क्षिप्+ल्युट्] 1 फेंकना, डालना, भेजना, निदेश आदि देना 2 (समय) बिताना 3 चूकना 4 गाली देना 5 गोफन, —णिः, —णी (स्त्री०) 1 चप्पू 2 मछली पकड़ने का जाल 3. गोफन या ऐसा उपकरण जिसमें रखकर कंकड़ फेंके जायें।

क्षेम (वि०) [क्षि+मन्] 1 प्रसन्नता सुख और आराम देने वाला, शुभ, उदार, राज्ञोक्तमेवं शार्ङ्गराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् भग० १।४६ 2 समृद्ध, आराम में, सुखी 3 सुरक्षित, प्रसन्न, —मः, —मम् 1 शान्ति, प्रसन्नता, आराम, कल्याण, कुशलता निष्पन्ति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते—कि० १।१७, वैश्यं क्षेमं समागम्य (पृच्छेत्) मनु० २।१२७, अधुना सर्वजनपदानां क्षेमं भविष्यति—पंच० १।२ 2 सुरक्षा, बचाव,—क्षेमेण व्रज बान्धवान्—मृच्छ० ७।७, सकुशल—पंच० १।१४६ 3 संरक्षण करने वाला, प्ररक्षा करने वाला—रघु० १५।६ 4. प्राप्त को सुरक्षित रखना—तु० योगक्षेम 5. मुक्ति, शाश्वत आनन्द,—मः एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम० —कर ('क्षेमंकर' भी) (वि०) मंगलप्रद शान्ति और सुरक्षा करने वाला।

क्षेमिन् (वि०) (—णी) [क्षेम+इनि] सुरक्षित, आक्रमण से रक्षित, प्रसन्न।

क्षै (भ्वा० पर० क्षायति, क्षाम) क्षीण होना, नष्ट होना, कृश होना, ह्रास होना, मुर्झाना।

क्षैण्यम् [क्षीण+ष्यञ्] 1. विनाश 2. दुबलापन, सुकुमारता ।
क्षैत्रम् [क्षेत्र+अण्] 1. खेतों का समूह 2. खेत ।
क्षैरेय (वि०) (स्त्री०—यी) [क्षीर+ढञ्] दूधिया, दूध जैसा ।
क्षोडः [क्षोड्+घञ्] हाथी बांधने का खंभा ।
क्षोणिः,क्षोणी (स्त्री) [क्षै+डोनि, क्षोणि+ङीष्] 1. पृथ्वी 2. एक (गणित में) ।
क्षोत्तृ (पुं०) [क्षुद्+तृच्] मूसली, बट्टा ।
क्षोदः [क्षुद्+घञ्] 1. चूरा करना, पीसना 2. सिल (जिस पर रखकर कोई चीज पीसी जाती है) 2. चूर्ण, कण कोई छोटा या सूक्ष्मकण—उत्तर० ३।२ । सम०—(वि०) जो जांच पड़ताल या अनुसन्धान में ठहर सके ।
क्षोदिमन् (पुं०) [क्षुद्र+इमनिच्] सूक्ष्मता ।
क्षोभः [क्षुभ्+घञ्] 1. डोलना, हिलना, लोटपोट होना—मेघ० २८, ९९, इसी प्रकार काननक्षोभः 2. हुचकोले खाना—रघु० १।५८, शिशु० ३।११ 3. (क) आन्दोलन, डांवाडोल होना, उत्तेजना, संवेग—स्वयंवरक्षोभकृतामभावः—रघु० ७।३, [illegible]—कु० ११५९, (ख) उकसाहट, चिढ़—याव: स्वमाहितार्थं क्षोभात्स्तोत्सिषावे बन्धु: —ब० ५।३१
क्षोभणम् [क्षुभ्+णिच्+ल्युट्] क्षुब्ध करना, व्याकुल करना—णः कामदेव के पांच बाणों में से एक ।
क्षोमः,-मम् [क्षु+मन्] घर की छत पर बना कमरा, चौबारा ।
क्षौणिः,-णी (स्त्री०) दे० क्षोणि । सम०—प्राचीर समुद्र, —भुज् (पुं०) राजा,—भृत् (पुं०) पहाड़ ।
क्षौद्रः [क्षुद्र+अण्] चम्पक वृक्ष,—द्रम् 1. हल्कापन 2. कमीनापन, ओछापन 3. शहद—सक्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३ 4. जल 5. धूलकण । सम०—जम् मोम ।
क्षौद्रेयम् [क्षौद्र+ढञ्] मोम ।

क्षौमः,-मम् [क्षु+मन्+अण्] 1. रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा—क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम् —श० ४।५—क्षौमान्तरितमेखले (अङ्के) रघु० १०।८ 2. चौबारा 3. मकान का पिछला भाग,—मम् 1. अस्तर 2. अलसी,—मी सन ।
क्षौरम् [क्षुर+अण्] हजामत ।
क्षौरिकः [क्षौर+ठन्] नाई ।
क्ष्णु (अदा० पर०—क्ष्णौति, क्ष्णुत) पैना करना, तेज करना । सम्—,(आ०) तेज करना (शस्त्र० भी) भट्टि० ८।४० ।
क्ष्मा [क्षम+अच् उपधालोपः] 1. पृथ्वी, (दुर्ग) क्ष्मां लङ्घयित्वा ...—रघु० १८।९, किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत् मुद्रा० २।१८ 2. (गणित में) एक की संख्या । सम०—जः मंगलग्रह, —पः,—पतिः,—भुज् (पुं०) राजा,—... —कौर० १, ... —पंच० १।१९९, —भृत् (पुं०) राजा या पहाड़ ।
क्ष्माय् (भ्वा० आ०—क्ष्मायते, क्ष्मायित) हिलना, कांपना —चक्ष्माये च मही—भट्टि० १४।२१, १४।३१ ।
क्ष्विड् (भ्वा० उभ०—क्ष्वेडति—ते, क्ष्विष्ट या क्ष्वेडित) भिनभिनाना, दहाड़ना, चहचहाना, गुर्राना, गुनगुनाना, अस्पष्ट ध्वनि करना—भट्टि० ४।६४ ।
क्ष्विद् (भ्वा० आ०) क्ष्विद् (दिवा० पर०—क्ष्विद्यति, क्ष्वेदित, क्ष्विण्ण), 1. चीकना होना, चिपचिपा होना 2. (वृक्ष का दूध या) रस निकलना, रस छोड़ना, मवाद बहना, पसीजना, प्र—, गुनगुनाना, भिनभिनाना -भट्टि० ७।१०३ ।
क्ष्वेडः [क्ष्विद्+घञ्, अच् वा] 1. शब्द, शोर, कोलाहल 2. विष, जहर—गुणदोषौ बुधो गृह्णन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वरः, शिरसा श्लाघते पूर्वं परं कण्ठे नियच्छति—सुभा० 3. आर्द्र या तर करना 4. त्याग,—डा 1. शेर की दहाड़ 2. युद्ध के लिए ललकार, रणहुंकार 3. बांस ।
क्ष्वेडितम् [क्ष्विड+क्त] सिंह गर्जना ।
क्ष्वेला [क्ष्वेल्+अ+टाप्] खेल, हंसी, मजाक ।

ख

खः [खर्व्+ड] सूर्य,—खम् 1. आकाश—खं केशवोऽपर इवाक्रमितुं प्रवृत्तः—मृच्छ० ५।२, वायुर्गिरः खे भवतां चरन्ति—कु० ३।७२, मेघ० ९ 2. स्वर्ग, 3. ज्ञानेन्द्रिय 4. एक नगर 5. खेत 6. शून्य 7. शून्य बिन्दु, अनुस्वार 8. सूराख, छिद्र, विवर, रन्ध्र—मनु० ९।४३ 9. शरीर के छिद्र (जो गिनती में ९ हैं अर्थात् मुंह, दो कान, दो आंखें, दो नथुने, गुदा तथा जननेन्द्रिय)—खानि चैव स्पृशेदद्भिः—मनु० २।६०, ५३, ५।१३८, याज्ञ० १।२० कु० ३।५० 10. घाव 11. प्रसन्नता, आनन्द 12. अभ्रक 13. कर्म 14. ज्ञान 15. ब्रह्मा । सम०

—ग (खेऽट) 1 ग्रह, 2 राहु, आरोही शिरोबिन्दु आपना मघा का विशेषण,—उल्क 1 धूमकेतु 2 ग्रह, उल्मुक मंगल ग्रह,—कामिनी दुर्गा —कुन्तल शिव, —ग 1 पक्षी —अपनीत खग स मैकया तनुम् नै० २।२, मनु० १२।६३ 2. वायु हवा —तमांसीव यथा सूर्यो वृक्षानग्निर्घनान्खगः महा० 3 सूर्य 4 ग्रह —उदा० आपोक्लिमे यदि भवा स किमेन्दुकार —तारा० 5 टिड्डा, 6 देवता 7 बाण, °अधिप गरुड़ का विशेषण °अंतक बाज श्येन, °अभिराम शिव का विशेषण °आसन 1 उदयाचल 2. विष्णु का विशेषण, °इन्द्र, °ईश्वर °पति गरुड़ के विशेषण °वती (स्त्री०) पृथ्वी, °स्थानम् 1 वृक्ष की खोखर 2 पक्षी का घोंसला —यथा आक स-गता —गति (स्त्री०) हवा में उड़ान —चर पक्षी,—(खे) चलम एक प्रकार का जलकुक्कुट —गोल आकाशमंडल °विद्या ज्योतिष विद्या,—चमस चाँद, —चर (खेचर भी) 1 पक्षी 2 बादल 3 सूर्य 4 हवा 5 राक्षस (—री अर्थात् खेचरी) 1 उड़ने वाली अप्सरा 2 दुर्गा की उपाधि, —जल 'आकाशीय जल' ओस, वर्षा, कोहरा आदि —ज्योतिस् (पुं०) जुगनू,—तमाल 1 बादल 2 धूआँ,—द्योत 1 जुगनू —खद्योताली विलसति निभा विद्युदुन्मेषदृष्टिम् मेघ० ८१ 2. सूर्य,—धौतम सूर्य —धूप अग्निबाण धूपधूपनामपुष्पम्—भट्टि० ३।५, —पराग अंधकार, —पुष्पम् आकाश का फूल, असम्भवता को प्रकट करने की आल० अभिव्यक्ति — इस प्रकार की ४ असम्भवताएं इस श्लोक में बतलाई गई हैं मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृंग धनुर्धरः, एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः सुभा०, —भ्रम् ग्रह, —भ्रान्ति श्येन,—मणि 'आकाश की मणि' सूर्य,—मीलनम् निद्रालुता, थकावट, —मूर्ति शिव का विशेषण,—वारि (नपुं०) वर्षा का पानी ओस आदि —वाष्प बर्फ, पाला,—शय (खेशय भी) (वि०) आकाश में निवास करने वाला या रहने वाला, —शरीरम् आकाशीय शरीर,—श्वास हवा, वायु, —सम्भव (वि०) आकाश में उत्पन्न —सिन्धु चाँद, —स्तनी पृथ्वी, —स्फटिकम् सूर्यकान्त या चन्द्रकान्त मणि— हर (वि०) जिस (राशि) का हर शून्य हो।

खक्खट (वि०) [खक्ख् अटन्] कठोर, ठोस —टः खड़िया।

खङ्कुट [ख+कु+अच्, मुम्] अलक, बालों की लट।

खच् (भ्वा०+क्र्या० पर० खचति-खच्नाति, खचित) 1. बाहर आना, प्रकट होना 2. पुनर्जन्म होना 3 पवित्र करना, (चुरा० उभ०- खचयति, खचित) जकड़ना, बांधना, कसना,—अनु—,मिलाना, गड़बड़ करना, जड़ना —रघु० ८।५३, १३।५४, मुद्रा० ४।१२।

खचित (वि०) [खच्+क्त] 1 जकड़ा हुआ, संयुक्त, भरा हुआ, अन्तर्मिश्रित, मुक्ताजालखचितं विप्रकच्छत्रमण्डलम्—श० ७।११ 2 मिश्रित, सम्मिश्रित 3 जड़ा हुआ, खचित, भरा हुआ (समासगत) °मणि, °रत्न।

खज् [भ्वा० पर० खजति, खजित] मथन करना, बिलोना, आंदोलित करना।

खज —खक [खज्+अच्, कन् च] मथानी, रई का डंडा।

खजपम् [खज्+कपन्] घी।

खजाक [खज्+आक] पक्षी।

खजाजिका [खज्+अ+टाप् खजा अज+घञ्, खजायै आजो यस्याः ब० स० खजाज+ङीप्+कन् +टाप् ह्रस्व] कड़छी चम्मच।

खञ्ज् (भ्वा० पर०— खञ्जति) लंगड़ाना ठहर-ठहर कर चलना खञ्जन् प्रभञ्जनजवं पथिक पिपासुः नै० ११।१०३।

खञ्ज (वि०) [खञ्ज्+अच्] लंगड़ा, विकलांग, पंगु —पादेन खञ्जः मिताक्षरा० मनु० ८।२४२ भर्तृ० १।९४। सम०—खेट, —खेल खञ्जनपक्षी।

खञ्जनः [खञ्ज्+ल्युट्] खञ्जन पक्षी स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् गीत० ११ नेत्र खञ्जनखञ्जने—सा० द० एको हि खञ्जनवरो नलिनी दलस्थ — शृंगार० ४,७ —रतम् सन्यासियों का गुप्त मैथुन।

खञ्जना, खञ्जनिका [खञ्जन+टाप्, खञ्जन+ठन्+टाप्] खञ्जन पक्षियों की जाति।

खञ्जरीटः, —टकः, खञ्जखेलः [खञ्ज+ऋ+कीटन् कन् च, खञ्ज+खिल्+घञ्] खञ्जन पक्षी— मालवि० ३।७८ चौर० ८, मनु० ५।१४, माघ० ११।७४ अमरु ०१।

खटः [खट्+अच्] 1 कफ 2 अन्धा कूआँ 3 कुल्हाड़ी 4 हल 5 घास सम०—खटाकू पीकदान, —खादक 1 गीदड़ 2 कौवा 3 जानवर 4 शीशे का बर्तन।

खटकः [खट्+वुन्] 1 सगाई-विवाह तय करने का व्यवसाय करने वाला—तु० घटक 2. अधमुंदा हाथ।

खटकामुखम् बाण चलाते समय हाथ की विशेष अवस्थिति।

खटिका [खट्+अच्+कन्+टाप् इत्वम्] 1 खड़िया 2 कान का बाहरी विवर।

खट (ड) क्किका पार्श्वद्वार, खिड़की।

खटिनी, खटी [खट+इनि+ङीप, खट+अच्+ङीप्] खड़िया।

खट्टन (वि०) [खट्ट+ल्युट्] ठिगना, —नः ठिगना आदमी।

खट्टा [खट्ट्+अच्+टाप्] 1 खाट 2 एक प्रकार का घास।

खट्टिः (पुं०, स्त्री०) [खट्ट+इन्] अर्थी।

खट्टिकः [खट्ट+अच्+ठन्] 1 कसाई 2 शिकारी, बहेलिया।

खट्टेरक (वि०) [खट्ट+एरक] ठिगना।

खट्वा [खट्+क्वन्+टाप्] 1. खाट, सोफा, खटोला 2 झूला, पालना। सम० —**अंगः** सोटा या लकड़ी जिसके सिरे पर खोपड़ी जड़ी हो (यह शिव जी का हथियार समझा जाता है तथा सन्यासी और योगी इसे धारण करते हैं) —मा० ५।४, २३ 2 दिलीप, —**धर**, —**भृत्** (पुं०) शिव की उपाधियाँ, —**अंगिन्** (पुं०) शिव का विशेषण, —**आप्लुत**, —**आरूढ** (वि०) 1 नीच, दुष्ट परित्यक्त, बदमाश 3. मूर्ख, बेवकूफ।

खट्वका, खट्विका [खट्वा+कन्+टाप्, इत्वम् वा] खटोला, छोटी खाट।

खड् दे० खल्।

खडः [खड्+अच्] तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना।

खडिका खड़ी [खड्+अच्+ङीप्, कन्, ह्रस्व, खड+ङीष्] खड़िया।

खड्गः [खड्+गन्] 1 तलवार —न हि खड्गो विजानाति कर्मकारं स्वकारणम् उद्भट, खड्गं परामृश्य आदि 2. गैंडे के सींग 3 गैंडा—रघु० ९।६२, मनु० ३।२७२, ५।१८, —**ड्गम्** लोहा। सम० —**आघातः** तलवार का घाव, —**आधारः** म्यान, कोश, —**आमिषम्** भैंस का मांस, —**आह्वः** गैंडा, —**कोशः** म्यान, —**धर** खड्गधारी योद्धा, —**धेनुः**, **धेनुका** 1 छोटी तलवार 2 गैंडे की मादा, —**पत्रम्** तलवार की धार, —**पाणि** (वि०) हाथ में तलवार लिये हुए, —**पात्रम्** भैंस के सींगों का बना पात्र, —**पिधानम्**, —**पिधानकम्** म्यान,—**पुत्रिका** चाकू, छोटी तलवार, —**प्रहारः** तलवार का आघात, —**फलम्** तलवार का फलक (मूठ को छोड़ कर शेष तलवार)।

खड्गवत् (वि०) [खड्ग+मतुप्] तलवार से सुसज्जित।

खड्गिक [खड्ग+ठन्] 1 खड्गधारी योद्धा 2 कसाई।

खड्गिन् (वि०)(स्त्री० —नी) [खड्ग+इनि] तलवार से सुसज्जित (पुं०) गैंडा।

खड्गीकम् [खड्ग+ईक बा०] दराती।

खण्ड् (चुरा० पर० खण्डयति, खण्डित) 1 तोड़ना, काटना टुकड़े २ करना, कुचलना भट्टि० १५।५४ 2 पूरी तरह हराना, नष्ट करना, मिटाना —रजनीचरनाथेन खण्डिते तिमिरे निशि हि० ३।१११ 3 निराश करना, मायूस करना, (प्रणय में) हताश करना —स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः पंच० १।१४६ 4 विघ्न डालना 5 धोखा देना।

खण्डः, —**डम्** [खण्ड्+घञ्] 1 दरार, खाई, विच्छेद, कटाव, अविभक्त 2 टुकड़ा, भाग, खंड, अंश —दिवः कान्तिमत्खंडमेकम् मेघ० ३० काष्ठ'' मास'' आदि 3 ग्रंथ का अनुभाग, अध्याय 4. समुच्चय, संघात, समूह—तरुखण्डस्य का० २३,—**डः** 1 चीनी, खांड 2. रत्न का एक दोष,—**डम्** 1. एक प्रकार का नमक 2 एक प्रकार का ईख, गन्ना। सम० —**अभ्रम्** 1. बिखरे हुए बादल 2 कामकेलि में दाँतों का चिह्न, —**आलि** (स्त्री०) 1 तेल की एक माप 2 सरोवर या झील 3 वह स्त्री जिसका पति व्यभिचारी हो,—**कथा** छोटी कहानी, —**काव्यम्** मेघदूत जैसा छोटा काव्य—परिभाषा —खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च सा० द० ५६४, —**ज** एक प्रकार की खाँड, —**धारा** कैंची,—**परशुः** शिव का विशेषण— महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खण्डपरशो —गंगा० १, धनानेन जगत्सु खण्डपरशुर्देवो हरः ख्याप्यते महावी० २।३३ 2 जमदग्नि का पुत्र, परशुराम का विशेषण,—**पर्शुः** 1 शिव 2 परशुराम 3 राहु 4 टूटे दाँत वाला हाथी, —**पालः** हलवाई, —**प्रलयः** विश्व का आंशिक प्रलय जिसमें स्वर्ग से नीचे के सब लोकों का नाश हो जाता है, —**मण्डलम्** वृत्त का अंश, —**मोदकः** खांड के लड्डू, —**लवणम्** एक प्रकार का नमक,—**विकारः** चीनी, —**शर्करा** मिसरी,—**शीला** असती, व्यभिचारिणी स्त्री।

खण्डक, —**कम्** [खण्ड+कन्] टुकड़ा, भाग, अंश,—**कः** 1 चीनी, खांड 2 जिसके नाखून न हों।

खण्डन (वि०) [खण्ड्+ल्युट्] 1 तोड़ने वाला, काटने वाला, टुकड़े २ करने वाला 2 नष्ट करने वाला, मारने वाला स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनम् गीत० १०, भवज्वरखण्डनम्—१२, —**नम्** 1 तोड़ना काटना 2 काट लेना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना —अधरोष्ठखण्डनम्—पंच० १, घटय भुजबन्धनं जनय रदखण्डनं गीत० १०, चौर० १३ 3 हताश करना, (प्रणय में) निराश करना 4 विघ्न डालना रसखण्डनवर्जितम्—रघु० ९।३६ 5 ठगना, धोखा देना 6 (तर्क का) निराकरण करना नै० ६।११० 7. विद्रोह विरोध 8 बर्खास्तगी।

खण्डल, —**लम्** [खण्ड+लच् नि०] टुकड़ा।

खण्डशः (अव्य०) [खण्ड+शस्] 1 अंशों में, टुकड़ों में, —**कृ** काट कर टुकड़े २ करना 2 थोड़ा २ करके, टुकड़ा २ कर के, टुकड़े २ कर के।

खण्डित (भू० क० कृ०) [खण्ड्+क्त] 1 काटा हुआ, तोड़ कर टुकड़े २ किया हुआ 2 नष्ट किया हुआ, ध्वस्त किया हुआ 3 (तर्क का) निराकरण किया हुआ 4 विद्रोह किया हुआ 5 निराश किया हुआ, धोखा दिया हुआ, परित्यक्त —खण्डितयुवतिविलापम्— गीत० ८, —**ता** वह स्त्री जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति अविश्वास का अपराधी रहा हो और इसलिए उसकी पत्नी उससे क्रुद्ध हो, संस्कृत साहित्य में वर्णित १० प्रकार की नायिकाओं में से एक—रघु० ५।६७, मेघ० ३९, परिभाषा इस प्रकार की है—पार्श्वमेति प्रियो

यस्या अन्यसंभोगचिह्नितः, सा खण्डितेति कथिता धीरै- रीर्ष्याकषायिता—सा० द० ११४। सम०—विग्रह (वि०) अंगहीन, विकलांग —वृत्त (वि०) आचार- हीन, दुश्चरित्र।

खण्डिनी [खण्ड्+इनि+ङीप्] पृथ्वी।

खदिकाः (ब० व०) खील, लाजा, तला हुआ या भुना हुआ अनाज।

खदिरः [खद्+किरच्] 1. खैर का पेड़,—याज्ञ० १।३०२ 2. इन्द्र का विशेषण 3. चाँद।

खन् (भ्वा० उभ०—खनति-ते, खात, कर्म० खन्यते-खायते) खोदना, खनना, खोखला करना—खनन्नाखुर्बिलं सिंह —पंच० ३।१७, मनु० २।२१८ भट्टि० १।१७, अभि—, खोदना, अव—, खुदाई करना, जड़ निकालना उन्मूलन करना, उखाड़ना (आल० भी)—वप्रानुत्खाय तरसा—रघु० ४।३६, ३३, १४।७३, मेघ० ५२, भट्टि० १२।५, १५।५५, मा० ९।३४, नि—, 1. खनना, खोदना 2. धसाना, गाड़ना—खनित्रिबर्ध निखनेत् —याज्ञ० ३।१, वसुधायां निचखनतु—रघु० १२।३०, भट्टि० ४।३, १६।२२ 3. (स्तम्भ के रूप में) उठाना —निचखान जयस्तम्भान्—रघु० ४।३६ 4. जमाना, स्थिर करना, घुसेड़ना—निचखान शरं भुजे—रघु० ३।५५, १२।९०, भट्टि० ३।८, हि० ४।७२, परि—, (खाई आदि) खोदना।

खनकः [खन्+वुन्] 1 खनिक 2. सेंध लगाने वाला 3. चूहा 4. कान।

खननम् [खन्+ल्युट्] 1. खोदना, खोखला करना, पोला करना 2. गाड़ना।

खनिः,—नी (स्त्री०) [खन्+इ, स्त्रियां ङीप्] 1. खान —रघु० १७।६६, १८।२२, मुद्रा० ७।३१ 2. गुफा।

खनित्रम् [खन्+इत्र] कुदाल, खुर्पा, गैंती।

खपुरः [खं पिपर्ति उच्चतया—ख+पृ+क] सुपारी का पेड़।

खर (वि०) [खं मुखबिलमतिशयेन अस्ति अस्य—ख+र अथवा खमिन्द्रियं राति—ख+रा+क] (विप० —मृदु०, श्लक्ष्ण, द्रव) 1 कठोर, खुर्दरा, ठोस 2. अमृदु, तेज, सख्त—रघु० ८।९, स्पर्शः खरः शक्तः कंतुः—काव्या० ११५१ 3. तीखा, चरपरा 4. घना, सघन 5. पीडाकर, हानिकर, कर्कश 6. तेज धार वाला —देहि खरनयनशरघातम्—गीत० 7. गरम —खरांशु —आदि 8. क्रूर, निष्ठुर,—रः 1. गधा—मनु० २। २०१, ४।११५, १२०, ८।३७०, याज्ञ० २।१६० 2. खच्चर 3. बगला 4. कौवा 5. एक राक्षस का नाम जो रावण का चचेरा भाई था और जो राम के द्वारा मारा गया था—रघु० १२।४२। सम०—अंशु, —करः,—रश्मिः सूर्य,—कुटी 1. गधों का अस्तबल 2. नाई की दुकान, —कोणः, —क्वाणः चकोर, तीतर, —कोमलः ज्येष्ठ मास,—गृहम्,—गेहम् गधों का अस्तबल,—णस्,—णस (वि०) नुकीली नाक वाला, —दण्डम् कमल,—ध्वंसिन् (पुं०) खरहन्ता राम का विशेषण,—नादः गधे का रेंकना,—नालः कमल,—पात्रम् लोहे का बर्तन,—दारु लकड़ी का बर्तन,—प्रियः कबूतर,—यानम् गधों से खींची जाने वाली गाड़ी, —रावः 1 गधे का रेंकना 2 समुद्री बाज,—शाला गधों का अस्तबल,—स्वरा जंगली चमेली।

खरिका [खर+कन्+टाप्, इत्वम्] पिसी हुई कस्तूरी।

खरिन्धम, य (वि०) [खरी+ध्मा (धमादेश) पक्षे धे +खश्, मुम्] गधी का दूध पीने वाला।

खरी [खर+ङीष्] गधी। सम०—जङ्घः शिव का विशेषण,—वृषः गधा।

खल (वि०) [स्खल्+अच्, पृषो० साधुः] 1. दुष्ट 2. मूर्ख, मूढ 3 क्रूर 4. निचले वस्तुओं का इच्छुक—लः 1. चोरी 2. हानि 3 चमड़ 4. कामदेव 5 शिव, —ला (स्त्री०) लड़की जो अपना पति स्वयं चुने।

खर्ज् (भ्वा० पर०—खर्जति, खर्जित) 1 पीड़ा देना, बेचैन करना 2. कड़कड़ शब्द करना।

खर्जनम् [खर्ज्+ल्युट्] खराचना।

खर्जिका [खर्ज्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. उपदंश रोग 2. गजक।

खर्जुः (स्त्री०) [खर्ज्+उन्] 1 खरोंच 2 खजूर का वृक्ष 3. धतूरे का पेड़।

खर्जूरम् [खर्ज्+ऊरच्] चाँदी।

खर्जूः (स्त्री०) [खर्ज्+ऊ] खाज, खुजली।

खर्जूरः [खर्ज्+ऊर] 1. खजूर का पेड़ 2 बिच्छू,—रम् चाँदी 2 हरताल,—री खजूर का पेड़—रघु० ४।५७।

खर्परः [—कर्पर पृषो० कस्य खः] 1 चोर 2 बदमाश, ठग 3 भिखारी का कटोरा 4 खोपड़ी 5 मिट्टी का फूटा हुआ बर्तन ठीकरा 6 छाता।

खर्परिका, खर्परी [खर्पर+अच्+ङीप्, +कन्+टाप्, ह्रस्व, खर्पर+ङीष्] एक प्रकार का सुर्मा।

खर्व् (र्ब्) (भ्वा० पर० खर्वति खर्वित) 1. जाना, फिरना, चलना 2 घमंड करना।

खर्व—(र्ब) (वि०) [खर्व् (र्ब्)+अच्] 1. विकलांग, अपाहज, अपूर्ण (अंगहीन) 2 ठिगना, बौना, कद में छोटा, —र्वम्,—र्वम् दस खरब की संख्या। सम० —शाख (वि०) ठिगना, बौना, छोटा।

खर्वटः,—टम् [खर्व्+अटन्] 1. नगर जिसमें पैंठ भरती हो, मंडी 2 पहाड़ की तराई का गाँव।

खल् (भ्वा० पर०—खलति, खलित) 1. चलना-फिरना, हिलना-जुलना 2. एकत्र करना, संग्रह करना।

खलः—लम् [खल्+अच्] 1. खलिहान—मनु० ११।१७, ११४

भाग० २।२८२ 2 पृथ्वी, भूमि 3 स्थान, जगह 4. धूल का ढेर 5 तलछट, गाद, तेल आदि के नीचे जमा हुआ मैल, —कः दुष्ट या शरारती आदमी —सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः, मन्त्रौषधिवशः सर्पः, खलः केन निवार्यते— चाण० २६, विषधरतोऽप्यतिविषमः खल इति न मृषा वदन्ति विद्वांसः, यदयं नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुनः पिशुनः — वासव० [खलीकृ 1 कुचलना 2 घायल करना या क्षति पहुँचाना 3 दुर्व्यवहार करना, घृणा करना—परोक्षे खलीकृतोऽयं सूत्रकारः — मृच्छ० २] सम० —उक्तिः (स्त्री०) दुर्वचन दुर्भाषण, —धान्यम् खलिहान,—पू (पुं० स्त्री०) झाड़ देने वाला, साफ करने वाला, —मूर्तिः पारा —संसर्गः दुष्टों की संगति।

खलक [ख+ला+क —कन्] घड़ा।

खलति (वि०) [स्खलन्ति केशा अस्मात् स्खल् + अतच् नि० साधुः] गंजे सिर वाला गंजा —युक्तकल्पतरु।

खलतिक [खलति + कै + क] पहाड़।

खलि, —ली (स्त्री०) [खल् + इन्] तेल की तलछट, खली स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति तिलखलीमिन्धनैश्चन्दनाद्यैः भर्तृ० २।१००।

खलिन (नो) नः, —नम् [खे अश्वमुखछिद्रे लीनम् —पृषो० वा ह्रस्वः] लगाम का दहाना, लगाम की रास।

खलिनी [खल् + इनि + ङीप्] खलिहानों का समूह।

खलीकार, —कृति (स्त्री०) [खल + च्वि + कृ + घञ्, क्तिन् वा] 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 दुर्व्यवहार —मा० १।२९ 3 अनिष्ट, उत्पात।

खलु (अव्य०) [खल + उन बा०] यह अव्यय निम्नांकित अर्थों को प्रकट करता है 1 निस्सन्देह निश्चय ही अवश्य, सचमुच —मार्गं पश्यति खलु ते विषमीभवन्ति —श० ४।१९ अनुत्सेकः खलु विक्रमालंकारः —विक्रम० १, न खल्वनिर्जित्य रघुं कृती भवान् —रघु० ३।५१ 2 अनुरोध, अनुनय-विनय प्रार्थना —न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन् —श० १।१०, न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत् —नागा० ३ 3 पूछताछ —न खलु तामभिक्रुद्धो गुरुः —विक्रम० ३ (= किमभिक्रुद्धो गुरुः), न खलु विदितास्ते तत्र निवसन्तश्चाणक्यहतकेन —मुद्रा० २, न खलूग्ररुषा पिनाकिना गमितः सोऽपि सुहृद्गतां गतिम् —कु० ४।२४ 4 प्रतिषेध (क्त्वान्त संज्ञाओं के साथ) निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम् —शि० २।७० 5 तर्क —न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः —कु० ४।५, (मल्लि० कार इसे विषाद के निदर्शन के रूप में उद्धृत करता है) विधिना जन एष वञ्चितस्त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम् —४।१० 6. कभी कभी 'खलु' पूरक की भाँति भर्ती कर दिया जाता है 7. कभी कभी वाक्यालंकार की तरह प्रयुक्त होता है।

खलूरः (पुं०) [खम् इन्द्रियं कुरयति हन्ति इति—ख + कुर + क्विप्] अन्धकार।

खलूरिका परेड का मैदान जहाँ सैनिक लोग कवायद करें।

खल्या [खल + यत् —टाप्] खलिहानों का समूह।

खल्लः [खल् + क्विप्, लं लाति—खल् + ला + क] 1 खरल जिसमें डाल कर औषधियाँ पीसी जायँ, चक्की 2 गढ़ा 3 चमड़ा 4 चातक पक्षी 5 मशक।

खल्लिका [खल्ल + कन् + टाप्, इत्वम्] कड़ाई।

खल्लिट (खी) ट (वि०) [खल्ल + इन् + टक् + ट, खल्लि + ङीष् + टक् + ट] गंजे सिर वाला।

खल्वाट (वि०) [खल + वाट उप० स०] गंजा, गंजे सिर वाला —खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके—भर्तृ० २।९० विक्रमांक० १८।९९।

खश (ब० व०) भारत के उत्तर में स्थित एक पहाड़ी प्रदेश तथा उसके अधिवासी —मनु० १०।४४।

खशीर (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम।

खष्प [खन् + प नि० नस्य षः] 1 क्रोध 2 हिंसा, निष्ठुरता।

खस [खानि इन्द्रियाणि स्यति निश्चलीकरोति—ख + सो + क] 1 खाज, खुजली 2. एक देश का नाम दे० खश।

खसूचि (पुं०, स्त्री०) [ख + सूच् + इ] 1 अपमानसूचक अभिव्यक्ति (समास के अन्त में)—वैयाकरणखसूचिः जो व्याकरण अच्छी तरह न जानता हो या भूल गया हो।

खस्खस [खस प्रकारे द्वित्वम् पृषो० अकारलोप] पोस्त। सम० —रसः अफीम।

खाजिक [खाज + ठन्] तला हुआ या भुना हुआ अनाज।

खात् (त्) (अव्य०) गला साफ करते समय होने वाली ध्वनि खखारना, खकारना।

खाट, —टा, —टिका, —टी (स्त्री०) [ख + अट् + घञ्, स्त्रियां टाप्—खाट + कन् + टाप्, इत्वम्, खाट + ङीष्] अर्थी टिकटी जिस पर मुर्दे को रख कर चिता तक ले जाते हैं।

खाण्डव [खण्ड + अण् + वा + क] खांड, मिश्री, —वम् कुरुक्षेत्र प्रदेश में विद्यमान इन्द्र का प्रिय वन जिसे अर्जुन और कृष्ण की सहायता से अग्नि ने जला दिया था। सम० —प्रस्थम् एक नगर का नाम।

खाण्डविकः, खाण्डिकः [खाण्डव + ठन्, खण्ड + ठन्] हलवाई।

खात (वि०) [खन् + क्त] 1 खुदा हुआ, खोखला किया हुआ 2. फाड़ा हुआ, चीरा हुआ,—तम् 1 खुदाई 2. सुराख 3. खाई, परिखा 4 आयताकार तालाब। सम० —भूः (स्त्री०) खाई, परिखा।

खातकः [खात+कन्] 1. खोदने वाला 2 कर्जदार,—**कम्** खाई, परिखा।

खाता [खात+टाप्] बनाया हुआ तालाब।

खातिः (स्त्री०) [खन्+क्तिन्] खुदाई, खोदना करना।

खात्रम् [खन्+ष्ट्रन् कित्] 1 कुदाली 2 आयताकार तालाब 3 धागा 4 वन, जंगल 5 विस्मयोत्पादक भय।

खाद् (भ्वा० पर० खादति, खादित) खाना निगल लेना, खिलाना शिकार करना, काट लेना—प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसम्—हि० १।८१, खादन्मांस न लुप्यति—मनु० ५।३२, ५३, भट्टि० ६।९, ९।७८ १४।८७, १०१, १५।३५।

खादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [खाद्+ण्वुल्] खाने वाला उपभोग करने वाला,—**कः** कर्जदार।

खादनः [खाद्+ल्युट्] दाँत,—**नम्** 1 खाना चबाना 2 भोजन।

खादिर (वि०) (स्त्री०—री) [खदिर+अण्] खैर वृक्ष का, या खैर वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ—खादिरं यूपं कुर्वीत—मनु० २।४५।

खादुक (वि०) (स्त्री०—की) [खाद्+उन्+कन्] उत्पाती हानिकर द्वेषपूर्ण।

खाद्यम् [खाद्+ण्यत्] भोजन, भोज्य पदार्थ।

खानम् [खन्+ल्युट्] 1 खुदाई 2 क्षति। सम०—**उदकः** नारियल का पेड़।

खानक (वि०) (स्त्री०—निका) [खन्+ण्वुल्] खोदने वाला, खनिक।

खानि (स्त्री०) [खनिरेव पृषो० वृद्धि] खान।

खानिकः—**कम्** [खान+ठञ्] दीवार में किया हुआ छेद दरार, तरेड़।

खानिलः [खान+इलच् बा०] घर में सेंध लगाने वाला।

खार,—**रिः**, (स्त्री०—री) [खम् आकाशम् आधिक्येन ऋच्छति—ख+ऋ+अण्, ख+आ+रा+क+ङीष् वा ह्रस्व] १६ द्रोण के बराबर अनाज का माप।

खारिंपच (वि०) [खारिम्+पच्+खश्] एक खारी-भर अनाज पकाने वाला।

खार्वा (स्त्री०) त्रेतायुग, दूसरा युग।

खिङ्कुरः (स्त्री०—री) [खिम् इति शब्दं किरति—खिम+कॄ+क पृषो०] 1 लोमड़ी 2 खाट या चारपाई का पाया।

खिद् i (भ्वा०, तुदा० पर०—खिन्दति, खिन्न) प्रहार करना, खींचना, कष्ट देना ii (दिवा० रुधा०, आ०—खिद्यते, खिन्ते, खिन्न) 1 पीड़ित होना, कष्ट सहना, कष्टग्रस्त होना, क्लान्त होना, थकान अनुभव करना, अवसाद या ग्लानि अनुभव करना—श० ५।७, किं नाम मयि खिद्यते गुरुः—वेणी० १, न दुःख्यो न खिद्यते नेन्द्रियैः —कि० २।४१, पराभूत—मा० ३।७, भट्टि० १४।१०८, १७।१० 2 डरना, ग्रस्त करना, (प्रेर०)। **परि** पीड़ित होना, कष्ट सहना, दुःखी या क्लान्त होना।

खिदिर [खिद्+किरच्] 1 संन्यासी, 2 दरिद्र 3 चन्द्रमा।

खिन्न (भू० क० कृ०) [खिद्+क्त] 1 अवसाद प्राप्त, कष्ट ग्रस्त, उदास दुःखी, पीड़ित—गुरु खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु—वेणी० १।११, अलघुबाण-व्रणखिन्नमानसः—गीत० ३ 2 क्लान्त, थका हुआ —श्रान्तं खिन्नं खिन्नं शिरीषपुष्पं पदं न्यस्य गन्तासि यत्र—मेघ० १३ ४८, तपोपधाराऽऽर्जितखिन्नमध्यया —रघु० ३।११, चौर० ३।२०, शि० ९।११।

खिल—**लम्** [खिल्+क] 1 ऊसर भूमि या परती जमीन का टुकड़ा मरुभूमि वृक्षहीन भूमि 2 अतिरिक्त सूक्त जो किसी मूलसंग्रह में जोड़ा गया हो—मनु० ३।२३२ 3 परिशिष्ट 4 संग्रह या संकलित ग्रंथ 5 खालीपन शून्यता (खिल का प्रयोग भू या कृ के साथ भी होता है) **खिलीभू** अगम्य होना बन्द होना अनभ्यस्त रहना—खिलीभूते विमानानां तदापातभयात्पथि—कु० २।४५ **खिलीकृ** (क) रोकना बाधा डालना अगम्य बनाना, रोकना—रघु० ११।१४ ८७ (ख) परती छोड़ना उजाड़ना पूर्णतः नष्ट कर देना—खिलमर्पित लोकाय प्रतिष्ठा भज कुंभ—शि० २।३४।

खुङ्गाहः [खुम इत्यव्यक्तशब्दं कृत्वा गाहते—खुम+गाह+अच्] काला टट्टू या घोड़ा।

खुरः [खुर्+क] 1 सुम—रघु० १।८५ २।२, मनु० ४।६७ 2 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3 उस्तरा 4 खाट का पाया। सम०—**आघातः**, **क्षेपः** लात मारना,—**णस्**,—**णस** (वि०) चिपटी नाक वाला, —**पदवी** घोड़े के पदचिह्न, **—प्र** अर्धचन्द्राकार नोक का बाण—दे० क्षुरप्र।

खुरली [खुरं लाति पीनः पुन्येन यत्र—खुर+ला+क +ङीष्] (शस्त्र तथा धनुष आदि का) सैनिक अभ्यास—अस्त्रप्रयोगखुरलीकलहे गणानाम्—महावी० २।३४, खुरोत्पतनखुरलीकेलिजनितान्—५।१५।

खुरालक [खुर इव अलति पर्याप्नोति—खुर+अल्+ण्वुल्] लोहे का बाण।

खुरालिकः [खुराणाम् आलिभिः कायति प्रकाशते—खुरालि+कै+क] 1 उस्तरा रखने का घर 2 लोहे का तीर 3 तकिया।

खुल्ल (वि०) [=क्षुल्ल, पृषो०] छोटा, ओछा, अधम, नीच—दे० क्षुद्र। सम०—**तातः** चाचा।

खेचर दे० 'खचर'।

खेट [खे अटति—अट्+अच्, खिट्+अच् वा] 1 गाँव, छोटा नगर, पुरवा 2. कफ 3. बलराम की गदा 4. घोड़ा (दि० समासान्त 'खेट' सदोषता तथा ह्रास

को प्रकट करता है जो 'कवाणा' या 'कच्छा' आदि शब्दों से पुकारा जा सकता है, कच्छेदन् अमावा नगर) 'खेड्र' के लिए देखो ख के नीचे।

खेटितालः, -कः [खिट्+इन् खेटि, खेटि तालोऽस्य, तालोऽस्य वा] वैतालिक, स्तुतिपाठक जो गृहस्वामी को गा बजा कर जगाता है।

खेदिन् (पुं०) [खिद् + णिनि] दुराचारी, दुश्चरित्र।

खेद [खिद् + घञ्] 1 अवसाद, आलस्य, उदासी 2 थकान, श्रान्ति- अलसलुलितमुग्धान्यध्वसंजातखेदात् उत्तर० १।२४, अध्वखेदं नयेथाः मेघ० ३२, रघु० १८।१५ 3 पीड़ा, यन्त्रणा अमरु ३ 4 दुःख, शोक गुरु खेद खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु वेणी० १।११, अमरु ५३।

खेयम् [खन् + क्यप् इत्व देश] खाई, परिखा, या पुल।

खेल् (भ्वा० पर० खेलति, खेलित) 1 हिलाना, इधर-उधर आना जाना 2 कांपना 3 खेलना।

खेल (वि०) [खेल् + अच्] क्रीडा करने वाला, रसिया क्रीडापूर्ण रघु० ४।२२ विक्रम० ४।१९, ४८।

खेलनम् [खेल् + ल्युट्] 1 हिलाना 2 खेल, मनोरंजन 3 तमाशा।

खेला [खेल् + अ टाप्] क्रीडा, खेल।

खेलिः (स्त्री०) [खे आकाशे अलति पर्याप्नोति खे अल् + इन्] 1. क्रीडा, खेल 2. तीर।

खोटिः (स्त्री०) [खोट् + इन्] चालाक और चतुर स्त्री।

खोड (वि०) [खोड् + अच्] विकलांग, लंगड़ा, पंगु।

खोर (ल) (वि०) [खोर् (ल्)+अच्] पंगु, लंगड़ा।

खोलकः [खोल+कन्] 1. पुरवा 2 बांबी 3 सुपारी का छिलका 4 देगची।

खोलिः [खोल्+इन्] तरकस।

ख्या (अदा० पर० (आर्धधातुक लकारों में वा० भी) - ख्याति, ख्यात) कहना, घोषणा करना, समाचार देना (सम्प्र० के साथ) कर्म० ख्यायते 1 कहलाना —भट्टि० ६।९७ 2. प्रसिद्ध या परिचित होना, प्रेर० —ख्यापयति- ते 1 ज्ञात कराना, प्रकथन करना —मनु० ७।२०१ 2. कहना, घोषणा करना, वर्णन करना— भट्टि० २।५९, मनु० ११।९९ 3. स्तुति करना, प्रख्यात करना, प्रशंसा करना। अभि —,(कर्म०) ज्ञात होना, प्रेर० घोषणा करना, प्रकथन करना, आ 1 कहना, घोषणा करना, समाचार देना (प्राय सम्प्र० के साथ),—ते गमाय यथागायमाचख्युर्विबुधद्विष रघु० १५।५, ४१, ७१, ९३, १२।४२, ९१, भग० ११।३१, १८।६३,(कभी कभी सब० के साथ—आख्याहि मह्यं प्रियदर्शनस्य) पंच० ४।१५ 2 घोषणा करना, व्यक्त करना 3 पुकारना, नाम लेना—रघु० १०।५७, मनु० ४।६ परि—,सुपरिचित होना, परिसम् —,गिनती करना, प्र —,सुपरिचित होना, प्रत्या—, 1 मुकर जाना 2 इंकार करना, मना करना, अस्वीकार करना 3 मना करना, प्रतिषेध करना 4 वर्जित करना 5 पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना मालवि० ३।५, वि – सुपरिचित या प्रसिद्ध होना, व्या—, 1 कहना समाचार देना, घोषणा करना— भट्टि० १४।११३ 2 व्याख्या करना, वर्णन करना रावणस्यापि ते जन्म व्याख्यास्यामि महा० 3 नाम लेना पुकारना विद्युन्देवीनामवाणी व्याख्याता सा विद्युन्माला श्रुत० १५, सम् - ,गिनना, गणना करना, हिसाब लगाना, जोड़ना तावन्त्येव च तत्त्वानि सांख्यैः संख्यायन्ते— शारी०।

ख्यात (भू० क० कृ०) [ख्या + क्त] 1 ज्ञात- रघु० १८।६ 2 नाम लिया गया, पुकारा गया 3 कहा गया 4. विश्रुत, प्रसिद्ध, बदनाम। सम० —गर्हण (वि०) कुख्यात, दुष्ट, बदनाम।

ख्याति [ख्या + क्तिन्] विख्याति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा - मनु० १२।३६, रघु० १।३७ 2 नाम, शीर्षक, अभिधान 3 वर्णन 4 प्रशंसा 5. (दर्शन० में) ज्ञान, उपयुक्त पद द्वारा वस्तुओं का विवेचन करने की शक्ति— शि० ४।५५।

ख्यापनम् [ख्या+णिच्+ल्युट्] 1 घोषणा करना, (रहस्य का) उद्घाटन करना 2 अपराध स्वीकार करना, नाम लेना, सार्वजनिक घोषणा करना—मनु० ११।२२७ 3 विख्यात करना, प्रसिद्ध करना।

ग

ग (वि०) [गै+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) जो जाता है, जाने वाला, गतिमान् होने वाला, ठहरने वाला, लेट रहने वाला, मैथुन करने वाला, —ग 1. गन्धर्व 2. गणेश का विशेषण 3 दीर्घ मात्रा ('गुरु' शब्द का संक्षिप्त रूप, छन्द शास्त्र में), —गम् गायन।

गगनम् —नम् [गच्छन्त्यस्मिन् — गम्+ल्युट्, ग आदेश] (कुछ लोग 'गमन' को अशुद्ध समझते हैं जैसा कि एक

लेखक का कथन है —फाल्गुने गगने फेने नत्वमिच्छन्ति बर्बरा') 1 आकाश, अन्तरिक्ष—अवोधवेन गगनस्पृशा रघुः स्वरेण—रघु० ३।४३, गगनमिव नष्टतारम् पंच० ५।१६, सोऽयं चन्द्रः पतति गगनात् श० ४, अमे० पा०, शि० ९।२७ 2 (गण० में) शून्य 3 स्वर्ग। सम० —अग्रम् उच्चतम आकाश —अङ्गना स्वर्गीय परी अप्सरा —अध्वगः 1 सूर्य 2 ग्रह 3 स्वर्गीय प्राणी, —अम्बु (नपु०) वर्षा का पानी, —उल्मुक मङ्गलग्रह —कुसुमम्, —पुष्पम् आकाश का फूल अर्थात् अवास्तविक वस्तु, असंभावना दे० 'खपुष्प', —गति 1 देवता 2 स्वर्गीय प्राणी पंच० ४६ 3 ग्रह —चर ('गगनचर भी) (वि०) आकाश में घूमने वाला (—रः) 1 पक्षी 2 ग्रह 3 स्वर्गीय आत्मा, —ध्वज 1 सूर्य 2 बादल —सद् (वि०) अन्तरिक्ष में रहने वाला (पुं०) स्वर्गीय जीव शि० ४।५३ —सिन्धु (स्त्री०) गंगा की उपाधि —स्थ, —स्थित (वि०) आकाश में विद्यमान, —स्पर्शन 1 वायु, हवा 2 आठ मरुतों में से एक।

गङ्गा [गम्+गन् + टाप्] 1 गंगा नदी भारत की पवित्रतम नदी, अधोऽधो गङ्गेव पदमुपगता स्तोकमथवा भर्तृ० ३।१०, रघु० २।२६ १३।५७ (इसका उल्लेख ऋग्वेद० १०।७५।५ में दूसरी नदियों के साथ २ मिलता है) (इसके अतिरिक्त और दूसरी नदियों के लिए भी जो भारत में पावन समझी जाती हैं यह शब्द कभी २ प्रयुक्त किया जाता है) 2 गंगा देवी के रूप में मूर्त गंगा (हिमवान् पर्वत की ज्येष्ठ पुत्री गंगा है, कहते हैं ब्रह्मा के किसी शाप के कारण गंगा को इस धरती पर आना पड़ा जहाँ वह शान्तनु राजा की पत्नी बनी, गंगा के आठ पुत्र हुए जिनमें भीष्म सब से छोटा था भीष्म अपने आजीवन ब्रह्मचर्य तथा शौर्य के कारण विख्यात हो गया था। दूसरे मतानुसार वह भगीरथ की आराधना पर इस पृथ्वी पर आई दे० भगीरथ और जह्नु और तु० भर्तृ० ३।१०। सम० —अम्बु, —अम्भस् (नपु०) 1 गंगाजल 2 वर्षा का विशुद्ध जल (जैसा कि आश्विन मास में बरसता है), —अवतार 1 गंगा का इस पृथ्वी पर पदार्पण भगीरथ इव दृष्टगङ्गावतार —का० ४२ (यहाँ इस शब्द का अर्थ स्नान के लिए गंगा में उतरना भी है) 2 पुण्य स्थान का नाम —उद्भेद गंगा का उद्गम स्थान —क्षेत्रम् गंगा तथा उसके दोनों किनारों का दो २ कोस तक का प्रदेश, —चिल्ली एक जलपक्षी, —ज 1 भीष्म 2 कार्तिकेय, —दत्त भीष्म का विशेषण —द्वारम् समतल भूमि का वह स्थान जहाँ गंगा प्रविष्ट होती है ('हरिद्वार' भी उसी स्थान को कहते हैं), —धर 1. शिव का विशेषण 2. समुद्र, °पुरम् एक नगर का नाम, —पुत्र 1 भीष्म 2 कार्तिकेय 3 एक संकर जाति जिसका व्यवसाय मुर्दे ढोना है 4 गंगा के घाट पर बैठने वाला पंडा जो तीर्थयात्रियों का पथप्रदर्शन करता है, —भृत् (पुं०) 1 शिव 2 समुद्र,—मध्यम् गंगा का तल भाग, —यात्रा 1 गंगा नदी पर यात्रा 2 रोगी को गंगातट पर इसलिए ले जाना कि वहीं उसकी मृत्यु हो, —सागर वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है, —सुत 1 भीष्म का विशेषण 2 कार्तिकेय का विशेषण —ह्रद एक तीर्थ स्थान का नाम।

गङ्गाका, **गङ्गिका**, **गङ्गिका** [गङ्गा + कन् + टाप्, ह्रस्वः वा, पक्षे इत्वम् अपि] गंगा।

गङ्गोल एक रत्न जिसे गोमेद भी कहते हैं।

गच्छ [गम् + श] 1 वृक्ष 2 (गण० में) प्रक्रम का समय (अर्थात् राशियों की संख्या)।

गज् (भ्वा० पर० —गजति गजित) 1 चिंघाड़ना दहाड़ना गरजना —भट्टि० १४।५ 2 मदिरा पीकर मस्त होना व्याकुल होना, मदोन्मत्त होना।

गज [गज् + अच्] 1 हाथी —कर्णाचलो विश्वग्विभान्गजो गजः कि० १।३६ 2 आठ की संख्या 3 लम्बाई की माप गज (परिभाषा-बाहुरत्नरामुखा विजातंगुलको गजः) 4 एक राक्षस जिसे शिव ने मारा था। सम० —अग्रणी (पुं०) 1 सर्वोत्कृष्ट हाथी 2 इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण —अधिपति हाथियों का स्वामी उत्तम हाथी —अध्यक्ष हाथियों का अधीक्षक —अपसद दुष्ट या बदमाश हाथी, सामान्य या नीच नसल का हाथी —अशन अश्वत्थ वृक्ष (—नम्) कमल की जड़ —अरि 1 सिंह 2 शिव जिसने गज नामक राक्षस को मारा था —आजीव हाथियों से जो अपनी जीविकोपार्जन करता है महावत —आनन —आस्य गणेश का विशेषण —आयुर्वेद हाथियों की चिकित्सा का विज्ञान —आरोह महावत —आह्वयम् —आह्वयम् हस्तिनापुर —इन्द्र 1 उत्तम हाथी गजेन्द्र कि रम्भोरु गजेन्द्रमन्दगमने भामि० ७ 2 इन्द्र का हाथी ऐरावत °कर्ण शिव का विशेषण —कन्द खाने के योग्य एक बड़ी जड़ —कर्णाशिन् (पुं०) गरुड़ —गति (स्त्री०) 1 हाथी जैसी मद चाल हाथी की सी चाल वाली स्त्री, गजगामिनी हाथी की सी मन्द तथा गौरवभरी चालवाली स्त्री —छाया, —दघ्न (वि०) हाथी जैसा ऊँचा —दन्त 1 हाथी का दांत 2 गणेश का विशेषण 3 हाथीदांत 4 खूंटी या ब्रैकेट जो दीवार में लगा हो, °मय (वि०) हाथीदांत से बना हुआ, —दानम् 1 हाथी के गण्डस्थल से बहने वाला मद 2 हाथी का दान, —नासा हाथी का गंडस्थल, —पति 1 हाथियों का स्वामी 2 विशालकाय हाथी शि० ६।५५ 3 सर्वश्रेष्ठ हाथी,—पुङ्गव

एक विशालकाय श्रेष्ठ हाथी—गजपुङ्गवस्तु, धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते—भर्तृ० २।३१, —पुरम् हस्तिनापुर, —बन्धनी, —बन्धिनी, हाथियों का अस्तबल, —भक्षकः अश्वत्थ वृक्ष, —मण्डनम् हाथी को सजाने का आभूषण, विशेषकर हाथी के मस्तक की रंगीन रेखाएँ, —मण्डलिका, —मण्डली हाथियों की मंडली, —माचल सिंह, —मुक्ता, —मौक्तिकम् मोती जो हाथी के मस्तक से निकला हुआ माना जाता है, —मुख, —वक्त्र, —वदन गणेश का विशेषण, —मोचन सिंह, —यूथम् हाथियों का झुंड रघु० ९।७१, —योधिन् (वि०) हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाला, —राज उत्तम या श्रेष्ठ हाथी, —व्रज हाथियों का दल, —शिक्षा हस्तिविज्ञान, —साह्वयम् हस्तिनापुर, —स्नानम् (शा०) हाथी का स्नान करना, (आल०) हाथी के स्नान के समान और निष्फल प्रयत्न (हाथी स्नान करके अपने ऊपर धूल डाल लेता है) तु० —अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया हि० १।१८।

गजता [गज + तल्] हाथियों का समूह।

गजवत् (वि०) [गज + मतुप्] हाथियों को रखने वाला रघु० ६।५।

गञ्ज् (भ्वा० पर० - गञ्जति) विशेष ढंग से ध्वनि करना, शब्द करना।

गञ्ज [गञ्ज् + घञ्] 1. खान 2 खजाना 3 गोशाला 4 मंडी, अनाज की मण्डी 5 अनादर, तिरस्कार, —जा 1 झोंपड़ी, पर्णशाला 2. मधुशाला 3. मदिरापात्र।

गञ्जन (वि०) [गञ्ज् + ल्युट्] तुच्छ समझना, लज्जित करना आगे बढ़ जाना, सर्वश्रेष्ठ होना स्थलकमलगञ्जनं मम हृदयरञ्जनम् (चरणद्वयम्) गीत० १०, अलिकुलगञ्जनमञ्जनकम् १२—नेत्रे खञ्जनगञ्जने सा० द० 2 पराजित करना, जीतना कान्तिविलासगञ्जन—गीत० १।

गञ्जिका [गञ्जा + कन् + टाप्, इत्वम्] मधुशाला, मदिरालय।

गड् (भ्वा० पर० - गडति, गडित) 1 खींचना, निकालना 2 (तरल पदार्थ की भाँति) बहना।

गड [गड् + अच्] 1 पर्दा 2 बाड़ 3 खाई, परिखा 4 रुकावट 5 एक प्रकार की सुनहरी मछली। सम० —उत्थम्, —देशजम्, —लवणम् पहाड़ी नमक, विशेषत वह जो गड प्रदेश में पाया जाता है।

गडयित्नु, गडयिन्तुः [गड् + णिच् + इत्नुच्, इत्नुच् वा] बादल।

गडि: [गड् + इन्] 1 बछड़ा 2. मट्ठा बैल —गुणानामेव दौरात्म्याद्धुरि धुर्यो नियुज्यते, असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गडि:—काव्य० १०।

४२

गडु (वि०) [गड् + उन्] बेडौल, कुबड़ा, —डु 1 पीठ पर कूबड़ 2 गेंडा 3 जलपात्र 4 केंचुआ 5 अनावश्यक निरर्थक वस्तु—दे० अन्तर्गडु।

गडुक [गडु + कै + क] 1. जलपात्र 2 अंगूठी।

गडुर, गडुल (वि०) [गडु + र वा० र] कुबड़ा, बेडौल, मुड़ा हुआ।

गडेर [गड् + एरक्] बादल।

गडोल [गड् + ओलच्] 1 मुँह भर 2 कच्ची खांड।

गड्डर, गड्डल [गड् + डर, डल वा] भेड़।

गड्डरिका [गड्डर मेषमनुधावति + ठन्] 1 भेड़ों की पंक्ति 2 अविच्छिन्न पंक्ति नदी, धारा, 'प्रवाह 'भेड़िया धसान' इसका तात्पर्य है भेड़ों के रेवड़ की भांति अंधानुसरण करना तु० इति गड्डरिकाप्रवाहेणैव भेद काव्य० ८।

गडूक [गडूक पृषो०] सोने का बर्तन।

गण् (चुरा० उभ० - गणयति—ते, गणित) 1 गिनना, गिनती करना, गणना करना—लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती—कु० ६।८४, नाभाक्षर गणय गच्छामि यावदन्तम्—श० ६।११ 2 हिसाब लगाना, गणना या संख्या करना 3 जोड़ना, संपूर्ण जोड़ लगाना 4 अन्दाज लगाना, मूल्य निर्धारित करना (करण० के साथ)—न तृणेनापि गणयामि 5 श्रेणी में रखना, कोटि में गिनना—अगण्यतामरेषु—दश० १५४ 6 हिसाब में लगाना, विचारना—वाणीं काणभुजीमजीगणत्—मल्लि० 7 ध्यान देना, विचार करना, सोचना—त्वया विना सुखमेतावदजस्य गण्यताम्—रघु० ८।६९, ५।२०, ११।७४, जातस्तु गण्यते सोऽत्र यः स्फुरत्यन्वयाधिकम्—पञ्च० १।२७, किसलयतल्पं गणयति विहितहुताशविकल्पम्—गीत० ४ 8 लगाना, आरोपण करना, मत्थे मढ़ना (अधि० के साथ) आढ्ये हुत्मर्धान गण्यते भर्तृ० २।५४ 9 ध्यान देना, ख्याल करना, मन लगाना प्रणयमगणयित्वा यन्ममापद्गतस्य विक्रम० ४।१३ 10 (निषेधात्मक अव्यय के साथ) उपेक्षा करना, ध्यान न देना न महान्तमपि क्लेशमजीगणत् —का० ६४ मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् भर्तृ० २।८१ ९, का० १।१० भट्टि० २।५३, १५।५ ४१, हि० २।१४२ अव—, 1 घृणा करना 2 गणना करना गिनना, अव, अवहेलना करना, परि—, 1 गणना करना, गिनना 2 विचार करना, ध्यान देना सोचना —अपरिगणयन् मेघ० ५, प्र—, हिसाब लगाना, वि—, 1 गणना करना, भाग० ३।१०४ 2 ख्याल करना, विचार करना मेघ० १०९, रघु० ११।८७ 3. अवहेलना करना —ध्यान न देना 4. विचार विमर्श करना, चिंतन करना पंच० ३।४३।

गण [गण्+अच्] 1 रेवड़, झुंड, समूह, दल, संग्रह —गुणिगणगणनारम्भे, गगण – आदि 2 माला, श्रेणी 3 अनुयायी या अनुचर वर्ग 4 विशेषतः अर्धदेवों का गण जो शिव के सेवक माने जाते हैं और गणेश के अधीनस्थ में रहते हैं इस गण का कोई अर्धदेव—गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनाम्, आदि गणा नमेरुप्रसवावतंसा - कु० १।५५, ७।६०, ७१, मेघ० ३३, ५५, कि० ५।१३ 5 समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बना मनुष्यों का समाज या सभा 6 सम्प्रदाय (दर्शन या धर्म में) 7 २७ रथ, २७ हाथी ८१ घोड़े और १३५ पदाति सैनिकों की छोटी टोली ('अक्षौहिणी' का उपविभाग) 8 (गण०) संख्या 9 पाद चरण (छन्द शास्त्र में) 10 (व्या० में) धातुओं या शब्दों का समूह जो एक ही नियम के अधीन हों तथा उस श्रेणी के पहले शब्द पर जिसका नाम रक्खा गया हो उदा० भ्वादिगण अर्थात् 'भू' से आरम्भ होने वाली धातुओं की श्रेणी 11 गणेश का विशेषण । सम० —अग्रणी (पुं०) गणेश, —अचलः कैलास पहाड़ जिस पर शिव के गण रहते हैं, —अधिप, —अधिपति 1 शिव—शि० ९।२७ 2 गणेश 3 सैन्य दल का मुखिया सेनापति, शिल्पियों के समूह का मुखिया गुरु, मनुष्यों या जानवरों की टोली का मुखिया, यूथपति, —अन्नम् सहभोजशाला भोज्यपदार्थ जो बहुत से समान व्यक्तियों के लिए बनाया जाय—मनु० ४।२०९, २१९ —अभ्यन्तर (वि०) दल या टोली का एक व्यक्ति (र:) किसी धार्मिक संस्था का सदस्य या नेता, मनु० ३।१५४, —ईश: शिव का पुत्र गणपति (दे० नी० गण पति), °जननी पार्वती का विशेषण, °भूषणम् सिन्दूर —ईशान:, —ईश्वर: 1 गणेश का विशेषण 2 शिव का विशेषण, —उत्साह: गैंडा, —कार: 1 वर्गीकरण करने वाला 2 भीमसेन का विशेषण,—कृत्वस् (अव्य०) सब कामों में कई बार,—गति: एक विशेष ऊँची संख्या —चक्रकम् गुणीजन का सहभोज ज्योनार, —छन्दस् (नपुं०) पादों द्वारा मापा गया तथा विनियमित छन्द, —तिथ (वि०) दल या टोली बनाने वाला, —दीक्षा 1 बहुतों की एक साथ दीक्षा, सामूहिक दीक्षा 2 बहुत से व्यक्तियों का एक साथ दीक्षा-संस्कार, —देवता (ब० व०) उन देवताओं का समूह जो प्राय: टोली या श्रेणियों में प्रकट होते हैं —अमर० परिभाषा देता है—आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः, महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः । —द्रव्यम् सार्वजनिक संपत्ति, पंचायती माल,— नाथ: 1 किसी वर्ग या समूह का मुखिया 2. विद्यालय का अध्यापक, —नाथ:, —नायक: 1. शिव की उपाधि 2 गणेश का विशेषण —नायिका दुर्गा की उपाधि, —प:,—पति: 1 शिव 2. गणेश (गणेश, शिव और पार्वती का पुत्र है, एक आख्यायिका के अनुसार वह केवल पार्वती का ही पुत्र है क्योंकि उसका जन्म पार्वती के शरीर के मैल से हुआ । यह बुद्धिमत्ता का देवता और बाधाओं को हटाने वाला है, और इसीलिए प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने पर उसकी पूजा होती है तथा आवाहन किया जाता है उसका चित्रण प्राय: बैठी हुई अवस्था में किया जाता है, उसकी तोंद निकली हुई है, चार हाथ हैं चूहे पर सवार है तथा सिर हाथी का है, इसके सिर में दांत केवल एक है दूसरा दांत शिव जी के अन्तःपुर में प्रविष्ट होते हुए परशुराम को रोकने के लिए युद्ध करते समय टूट गया (इसी लिए गणेश को एकदन्त या एकदशन भी कहते हैं उसका हाथी का सिर है इस बात पर प्रकाश डालने वाली अनेक कहानियाँ हैं । कहते हैं कि गणेश ने व्यास से सुनकर महाभारत लिखा। व्यास ने ब्रह्मा से लिपिकार के रूप में गणेश की सेवाएँ प्राप्त कर ली थी) – पर्वत: दे० गणाचल —पीठकम् छाती वक्षस्थल, —पुंगव: किसी वर्ग या जाति का मुखिया (ब० व०), —पूर्व: किसी जाति या वर्ग का नेता, —भर्तृ (पुं०) 1 शिव का विशेषण, गणभर्तृकथा कि० ५।४२ 2 गणेश का विशेषण 3 किसी वर्ग का नेता, —भोजनम् सहभोज, मिलकर भोजन करना, —यज्ञ: सामूहिक संस्कार, —राज्यम् दक्षिण का एक साम्राज्य, —रात्रम् रातों का समूह, —वृत्तम् दे० गणच्छन्दस्, —हास:, —हासक: सुगन्ध द्रव्य की एक जाति ।

गणक (वि०) (स्त्री० —णिका) [गण्+ण्वुल्] बहुत धन देकर खरीदा हुआ, —क: 1 अंकगणित का ज्ञाता 2 ज्योतिषी —रे पान्थ पुस्तकधर क्षणमत्र तिष्ठ वैद्योऽसि किं गणकशास्त्रविशारदोऽसि, केनौषधेन मम पश्यति भर्तुरम्बा किं वागमिष्यति पति: सुचिरप्रवासी सुभा०, —की ज्योतिषी की पत्नी ।

गणनम् [गण्+णिच्+ल्युट्] 1 गिनना, हिसाब लगाना 2 जोड़ना, गणना करना 3 विचार करना, ख्याल करना, ध्यान रखना 4 विश्वास करना, विश्वास करना ।

गणना [गण्+णिच्+युच्] हिसाब लगाना, शुमार करना, अवाक करना, गिनती करना, —का वा गणना सचेतनेषु अपगतचेतनमप्यपि संघट्टयितुमलम् (मदन)- का० १५७ (हमें क्या आवश्यकता है ··· इ० कथा) मेघ० १०, ८७, रघु० ११।६४, शि० १६।५९, अमरु ६४। सम० - पति: (स्त्री०) = गणपति, —गति: अंकगणित को जानने वाला, —महामात्य: वित्तमंत्री ।

गणशस् (अव्य०) [गण+शस्] दलों में, जोड़ों में, वर्गों के क्रम से ।

गणि (स्त्री०) [गण् + इन्] गिनना।

गणिका [गण + ठन् + टाप्] 1 रण्डी, वेश्या गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना —मृच्छ० १।६, गणिका नाम पादुकान्तरप्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुनर्निराक्रियते मृच्छ० ५, निरकाशय इविसपेतमय्, प्रियदाकवादारादिर्गणिका शि० ९।१० 2. हथिनी 3 एक प्रकार का फूल।

गणित (वि०) [गण् + क्त] 1 गिना हुआ सख्यात, हिसाब लगाया हुआ 2 खयाल किया हुआ, ध्यान किया हुआ—दे० गण् —तम् 1 गिनना हिसाब लगाना 2 गणना विज्ञान गणित (इसमें अंकगणित [पाटीगणित या व्यक्तगणित] बीजगणित और रेखागणित सम्मिलित है)—गणितमथ कला वैणिकी हन्त्रिणिकां ज्ञात्वा ... 3 श्रेणी का योग 4 जोड़।

गणितिन् (पु०) [गणित + इनि] 1 जिसने हिसाब लगाया है 2 गणितज्ञ।

गणिन (वि०) (स्त्री० नी) [गण + इनि] (किन्हीं वस्तुओं की) टोली या झुंड को रखने वाला, प्रमथ-गिन्, कुत्तों के झुंड को रखने वाला, रघु० ९।५३ (पु०) अध्यापक (शिष्यों की श्रेणी को रखने वाला)।

गणेय (वि०) [गण + एय] गिनती किये जाने के योग्य, जो गिना जा सके।

गणेरु [गण् + एरु] कर्णिकार वृक्ष (स्त्री०) 1 रण्डी 2 हथिनी।

गणेरुका [गणेरु + कै + क] 1 कुटनी दूती 2 सेविका।

गण्ड [गण्ड् + अच्] 1 गाल, कनपटी समेत मुख का समस्त पार्श्व—गण्डाभोगे पुलकपटल—मा० २।५ नवीनमार्द्रीकृतगण्डलेखम् कु० ७।८२, मेघ० २६, ९२, अमरु ८१, ऋतु० ४।६, ६।१०, श० ६।१७, शि० १२।५४ 2 हाथी की कनपटी मा० १।१ 3 बुलबुला 4 फोड़ा, रसौली, सूजन, फुंसी—अयमपरो गण्डस्योपरि विस्फोट—मुद्रा० ५, तदा गण्डस्योपरि पिटिका संवृत्ता—श० २ 5 गलमाला या गर्दन के अन्य फोड़ा फुंसी 6 जोड़, गांठ 7. चिह्न, धब्बा 8 गैंडा 9 मूत्राशय 10. नायक, योद्धा 11 घोड़े के साज का एक भाग, आभूषण के रूप में घोड़े के जीन पर लगा हुआ बटन। सम०—अङ्गः गैंडा, उपधानम् तकिया —मृदुगण्डोपधानानि शयनानि सुखानि च—सुभ०—कूपः हाथी की कनपटी से झरने वाला मद, —कूपः पहाड़ की चोटी पर बना कुआं, —ग्रामः बड़ा गाँव, ...—फलकम् चौड़ा गाल —मृतमृग-गण्डफलकोविमर्दविकसन्द्विरास्यकमलो प्रमथा —शि० १।४७,—भित्ति (स्त्री०) 1 हाथी के गण्डस्थल का छिद्र जिससे मद झरता है 2. 'भित्ति की भांति गाल' अर्थात् चौड़े, श्रेष्ठ और प्रशस्त गाल- भित्तीं तदाना- गलन्मदभित्ति (मद) रघु० ५।४३, (यहाँ मल्लिनाथ कहता है—प्रशस्तौ गण्डौ गण्डभित्ती) १२।१०२, —माला—माला कण्ठमाला रोग (जिसमें गर्दन की गिल्टियों में सूजन हो जाती है),—मूर्ख (वि०) अत्यन्त मूर्ख, बिल्कुल मूढ —शिला बड़ी चट्टान, —शैलः 1 भूचाल या आंधी से नीचे गिराई गई विशाल चट्टान कि० ७।३७ 2 मस्तक, —साह्वया नदी का नाम, (इसे 'गण्डकी' भी कहते हैं),—स्थलम्, —स्थली 1 गाल गण्डस्थलेषु मदवारिषु पञ्च० १।१२३ शृङ्गार० ७, गण्डस्थली प्रोषितपत्रलेखा रघु० ६।१८ अमरु ७७ 2 हाथी की कनपटियाँ।

गण्डक [गण्ड + कन्] 1 गैंडा 2 रुकावट बाधा 3 जोड़ गांठ 4 चिह्न धब्बा 5 फोड़ा, रसौली फुंसी 6 वियोजन वियोग 7 चार कौड़ी के मूल्य का सिक्का। सम० —वती दे० गण्डकी।

गण्डका [गण्डक + टाप्] लौंदा, पिण्ड या डली।

गण्डकी [गण्डक + ङीप्] 1 एक नदी का नाम जो गंगा में मिल जाती है 2 मादा गैंडा। सम० —पुत्र, —शिला शालिग्राम (पत्थर का)।

गण्डकिन् (पु०) [गण्डक + इनि] शिव।

गण्डि [गण्ड + इनि] वृक्ष का तना जड़ से लेकर उस स्थान तक जहां से शाखाएँ आरम्भ होती हैं।

गण्डिका [गण्डक + टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार का कंकड़ 2 एक प्रकार का पेय।

गण्डीर [गण्ड् + ईरन्] नायक शूरवीर।

गण्डु (पु०, स्त्री०) [गण्ड् + उ] 1 तकिया 2. जोड़ गाँठ।

गण्डू (स्त्री०) 1 जोड़, गांठ 2 हड्डी 3 तकिया 4 तेल। सम०— पदः एक प्रकार का कीड़ा, केंचुआ °भवम् सीसा,—पदी छोटा केंचुआ।

गण्डूष— षा [गण्ड् + ऊषन्] (पानी का) मुहभर, मुट्ठी पर —गजाय गण्डूषजलं करेणु (ददौ) —कु० ३।३७ उत्तर० ३।१६, मा० ९।३४, गण्डूषजलमात्रेण शफरी-फर्फरायते —उद्भट 2. हाथी के सूंड की नोक।

गण्डोल [गड् + ओलच्] 1 कच्ची खांड 2. मुँहभर।

गत (भू० क० कृ) [गम + क्त] 1 गया हुआ व्यतीत, सदा के लिए गया हुआ मुद्रा० १।२५ 2 गुजरा हुआ, बीता हुआ, विछला—मनाया रात्री 3 मृत मुर्दा दिवंगत—कु० ४।३० 4 गया हुआ पहुँचा हुआ पहुँचने वाला 5 अन्तर्गत अन्तःस्थित, बैठा हुआ विश्राम करता हुआ सम्मिलित (बहुधा समासों में— प्रासाद-प्रान्तगत —पंच० १, बैठा हुआ, सदोगत —रघु० ३।६६, सभा में बैठा हुआ, इसी प्रकार सर्वगत सर्वत्र विद्यमान 6 फैला हुआ, बढ़ाया गया आपद्गत 7 संकेत करते हुए, संबंध रखते हुए, के

विषय में, की बाबत, विषयक, संबद्ध (बहुधा समास में) —रामा शकुन्तलागतमेव चित्तयति—श० ५, कर्णागतकथा चित्तवा—श० ४. वयमपि भवत्यौ सखी-गतं किमपि पृच्छामः—श० १, इसी प्रकार 'पुत्रगत स्नेहः' आदि, —तम् 1. गति, जाना—मतमुपरि घनानां ज्योतिषां वर्त्मनाम्—श० ७।७, वि० ११२ 2. चाल, चलने की रीति—कु० ११३४, विक्रम० ४।११ 3. घटना 4. यदि समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त हो तो इसका 'मुक्त' 'विरहित' 'वंचित' और 'बिना' शब्दों में अनुवाद करते हैं। सम०—अक्ष (वि०) दृष्टिहीन, अन्धा,—अध्वन् (वि०) 1 जिसने अपनी यात्रा समाप्त कर ली है 2 अभिज्ञ, परिचित, (स्त्री०) चतुर्दशी से युक्त अमावस्या,—अनुगतम् दूसरों के उदाहरण या प्रथा का अनुयायी होना,—अनुगतिक (वि०) दूसरों की नकल करने वाला, अन्धानुयायी —गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः—पंच० १।३४२, छोटा मोटा काम करने वाले या केवल अनु-करण करने वाले होते हैं - मुद्रा० ६।५, —अन्त (वि०) जिसका अन्त समय आ गया है —अर्थ (वि०) 1 निर्धन 2 अर्थ हीन (क्योंकि अर्थ का विचार पहले ही किया जा चुका है), —असु,—जीवित,—प्राण (वि०) अचेतन, मृत—रघु० २।११,—आगतम् 1. आना जाना, बार २ विचरना—भर्तृ० ३।७, पंच० ९।२१, मुद्रा० ४।१ 2. (ज्योतिष में) तारों का अनियमित मार्ग,—आधि (वि०) चिन्ताओं से मुक्त, प्रसन्न,—आयुस् (वि०) जीर्ण, निर्बल, अतिवृद्ध, —आर्तवा जो ऋतुमती होने की आयु को पार कर चुकी हो, बुढ़िया,—उत्साह वि० उत्साहहीन, उदास, - ओजस् (वि०) शक्ति या सामर्थ्य से विरहित, —कल्मष (वि०) पाप या जुर्म से मुक्त, पवित्रीकृत, —क्लम (वि०) खूब तरोताजा,—चेतन (वि०) बेहोश, मूर्छित, चेतनाहीन, —दिवसम् (अव्य०) बीता हुआ कल, —प्रत्यागत (वि०) जाकर वापिस आया हुआ मनु० ७।१४६,—प्रभ (वि०) दीप्तिरहित, धुंधला, मलिन, मद्धम या म्लान, - प्राण (वि०) जीवरहित, मृत, —प्राय (वि०) लगभग गया हुआ, तकरीबन बीता हुआ—गतप्राया रजनी, —भर्तृका 1 विधवा स्त्री 2 (विरल प्रयोग) वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो (=प्रोषितभर्तृका) —लक्ष्मीक (वि०) 1 कान्ति हीन, शोभा से रहित, —वयस् (वि०) बहुत आयु का, वृद्ध, बूढ़ा, वर्षा, - वर्ष बीता हुआ वर्ष,—वैर (वि०) मेल मिलाप से रहने वाला, पुनर्मिलित,—व्यथ (वि०) पीड़ा से मुक्त, —शैशव (वि०) जिसका बचपन बीत गया है,—सत्त्व (वि०) 1 मृत, ध्वस्त, जीवनरहित 2. नीच, —सन्नकः हाथी जिसका मद न झरता हो,—स्पृह (वि०) सांसारिक विषयवासनाओं से उदासीन।

गतिः (स्त्री०) [गम्+क्तिन्] 1 गति, गमन, जाना, चाल—गतिर्विगलिता पंच० ४।७८, अविरललयगमन —श० १।१४, (अ) नितम्बिन्यो गतिमन्दा नितम्बमुत्क्ष - कु० १।११, उनकी धीमी चाल को मत सुधारो इसी प्रकार गजगति पंच० १, लघुगति मेघ० १६, १०, ४६, उत्तर० ६।२३ 2. पहुँच, प्रवेश—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः रघु० १।४ 3 कार्यक्षेत्र, पहुँच—अस्त्रगति कु० ३।१९, मनो रथानामगतिर्न विद्यते—कु० ५।६४, नास्त्यगतिर्मनोरथानाम् विक्रम० २ 4 मार्ग, चर्या दैवगतिर्हि विचित्रा 5 जाना, पहुँचना, प्राप्त करना वैकुण्ठीया गति - पंच० १ स्वर्ग प्राप्ति 6 भाग्य, फल- भर्तृ नैतिर्यस्या दश० १०३ 7 अवस्था, दशा दान भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य—भर्तृ० २।४३, पंच० १।१०६ 8. प्रस्थापना सम्मान, स्थिति, अवस्थिति —पराभ्यंवते पिथु: रघु० ८।२७ कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विना- भर्तृ० २।१०४ पंच० १।४१, ४२० 9 साधन, तरकीब, प्रणाली, दूसरा उपाय —अनुपेक्षणे इयी गतिः मुद्रा० ३, का गतिः - क्या हो सकता है ? कुछ नहीं हो सकता (प्रायः नाटकों में प्रयुक्त होता है) पंच० १।३१९, अन्या गतिर्नास्ति —भा० १५८ 10 आश्रय, रक्षास्थल, शरण, अवलम्ब-धार, अवलम्ब विद्यमाना गतिर्येषाम् पंच० १।३२०, ३२२ आसयन् सकिले पृथ्वी य स मे श्रीहरिर्गतिः मिश्रा० 11 स्रोत, उद्गम, प्राप्तिस्थान मनु० २।४३, मनु० १।१० 12 मार्ग पथ 13 प्रणाली (जख्म) 14 घटना, फल, परिणाम 15 भाग्य, किस्मत 16 नक्षत्र पथ 17 ग्रह की अपनी ही कक्षा में दैनिक गति 18 हिलने जुलने का भाव, नासूर 19 ज्ञान, बुद्धिमत्ता 20 पुनर्जन्म, आवागमन मनु० ६।७३ 21 जीवन की अवस्थाएँ (शैशव, यौवन, वार्धक्य आदि) 22. (व्या० में) उपसर्ग तथा क्रियाविशेषण परक अव्यय (अलम्, तिरस् आदि) जब कि यह किसी क्रिया या कृदन्तक से पूर्व लगाये जाय। सम० —अनुसारः दूसरे के मार्ग का अनुगमन करने वाला, —भङ्ग ठहरना, —हीन (वि०) अनाथ, निस्सहाय परित्यक्त।

गत्वर (वि०) (स्त्री० —री) [गम्+क्वरप्, अनुनासिक लोप, तुक्] 1 गतिशील, चर, जंगम 2. अस्थायी, विनश्वर—गत्वरैरसुभिः कि० २।१९, गत्वरी यौवन-श्रियः - ११।१२।

गद् (भ्वा० पर०—गदति, गदित) 1. स्पष्ट कहना, कथन

करना, बोलना, वर्णन करना– अगाधसत्वे गदायजम् —शि० २।६९, बहु जगाद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाहम् -११।३९, सुवान्तरज्ञा जगदे कुमारी—रघु० ६।४५ 2 गणना करना, नि—, घोषणा करना, बोलना कहना —रघु० २।३३ ।

गदः [गद् + अप्] 1 बोलना, भाषण 2 वाक्य 3 रोग, बीमारी असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा शि० २।८४, वनगदे न गद पदमादधी रघु० ९।४, १७।८१ 4. गर्जन, गड़गड़ाहट, —दम् एक प्रकार का विष । सम० —अगदौ (द्वि० व०) दो अश्विनी कुमार देवताओं के वैद्य,—अग्रणीः सब रोगों का राजा अर्थात् तपेदिक,—अम्बरः बादल, —अरातिः औषधि दवा ।

गदयित्नु (वि०) [गद् + णिच् + इत्नुच्] 1 मुखर वाचाल, बातूनी 2 कामुक, विषयी —त्नुः कामदेव ।

गदा [गद् + अच् + टाप्] 1 लौहयष्टि या गदा मुग्दर —सचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू –वेणी० १।१५ । सम० —अग्रजः कृष्ण शि० २।८४, —अग्रपाणि(वि०) दाहिने हाथ में गदा लिए हुए,—धरः विष्णु की उपाधि, —भृत् (वि०) गदाधारी, गदा से युद्ध करने वाला (पुं०) विष्णु की उपाधि, —युद्धम् गदा से लड़ा जाने वाला युद्ध,—हस्त (वि०) गदा से सुसज्जित ।

गदिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [गदा + इनि] 1 गदाधारी– भग० ११।१७ 2 रोगग्रस्त, —(पुं०) विष्णु की उपाधि ।

गद्गद (वि०) [गद् इत्यव्यक्तं वदति गद् + गद् + अच्] हकलाने वाला, हकला कर बोलने वाला—नीतिः रोदिषि गद्गदेन वचसा अमरु ५३, गद्गदगलत्त्रुट्यद्विलीनाक्षरं को देहीति वदेत् भर्तृ० ३।८, सानन्दगद्गदपदं हरिरित्युवाच—गीत० १०,—दम् (अव्य०) अटक-अटक कर बोलने या हकलाने का स्वर विललाप स बाष्पगद्गदम् रघु० ८।४३, —दः, —दम् हकलाना, अस्पष्ट या उलट-पुलट भाषण । सम० –ध्वनि हर्ष या शोक सूचक मन्द अस्पष्ट ध्वनि —वाच् (स्त्री०) सुबकी आदि से अन्तर्हित अस्पष्ट या उलट-पुलट वाणी, —स्वर (वि०) हकलाने वाले स्वर से उच्चारण करने वाला (रः) 1 अस्पष्ट तथा हकलाने का उच्चारण 2 भैंसा ।

गद्य (सं० कृ०) [गद् + यत्] बोले जाने या उच्चारण किए जाने के योग्य–गद्यमेतत्त्वया मम—भट्टि० ६।४७ –द्यम् गद्य, गद्य रचना छन्दविरहितरचना, तीन प्रकार (गद्य, पद्य, चम्पू) की रचनाओं में से एक दे० काव्या० १।११ ।

गद्याण (म, –ल) क ४१ घुँघचियों के समान भार, ४१ रत्तियों का वजन ।

गन्तृ (वि०) (स्त्री० —त्री) [गम् + तृच्] 1. जो जाता है, घूमता है 2 किसी स्त्री से मैथुन करने वाला ।

गन्त्री [गम् + ष्ट्रन् + ङीष्] बैलगाड़ी । सम० रथः बैलगाड़ी ।

गन्ध् (चुरा० आ०—गन्धयते) 1 क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2 पूछना, मांगना 3 चलना फिरना, जाना ।

गन्धः [गन्ध् + अच्] 1 बू, वास गन्धमाघ्राय चोर्व्याः —मेघ० २१, अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धैः श० ४।७, रघु० १२।२७, (ब० स० के उत्तरपद के रूप में प्रयुक्त होने पर यह शब्द बदलकर 'गन्धि' हो जाता है यदि इससे पूर्व उद्, पूति, सु या सुरभि में से कुछ जोड़ दिया गया है, या समास तुलनार्थक है अथवा 'गन्ध' का अर्थ 'जरा सा', 'थोड़ा सा' है–उदा० —सुगन्धि, सुरभिगन्धि, कमलगन्धि मुखम् 2 वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित २४ गुणों में से एक गुण, यहाँ यह पृथ्वी का गुणात्मक लक्षण है, पृथ्वी को 'गन्धवती' कहा गया है तर्क० स० 3 वस्तु की केवल गन्धमात्र जरा सा, बहुत ही थोड़े परिमाण में सूपगन्धि भोजनम्– सिद्धा० 4 सुगन्ध, कोई सुगन्धित सामग्री—एषा मया सेविता गन्धयुक्तिः मृच्छ० ८, याज्ञ० १।२३१ 5 गन्धक 6 पिसा हुआ चन्दन चूरा 7 सम्बन्ध, सम्पर्क, पड़ौस 8 घमण्ड, अहंकार—जैसा कि 'आत्मगन्ध' में,—न्धम् 1 गन्ध, बू 2. काली अगर-लकड़ी । सम० – अधिकम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—अपकर्षणम् गन्ध दूर करना,— अम्बु (नपुं०) सुवासित जल,—अम्ला जंगली नींबू का वृक्ष, —अश्मन् (पुं०) गन्धक, —अष्टकम् आठ सुगन्ध द्रव्यों का मिश्रण जो देवताओं पर चढ़ाया जाय, देवताओं की प्रकृति के अनुसार यह भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, —आखुः छछून्दर, —आजीवः सुगन्धों का विक्रेता, —आढ्य (वि०) गन्धसमृद्ध, बहुत सुगन्धित —गजश्चोत्तमगन्धाढ्या महा०, (—ढ्यः) नारंगी का पेड़ (—ढ्यम्) चन्दन की लकड़ी—,इन्द्रियम् नाक, घ्राणेन्द्रिय, —इभ, —गजः, —द्विपः, —हस्तिन् (पुं०) 'सुवास—हाथी' सर्वोत्तम हाथी— शमयति गजानन्यान्गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्–विक्रम० ५।१८, रघु० ६।७, १७।७०, कि० १७।१७ —उत्तमा मदिरा, शराब,—उदम् सुगन्धित जल, – उपजीविन् (पुं०) गन्धद्रव्यों से आजीविका कमाने वाला, गन्धी, —ओतुः (गन्धोतुः या गन्धौतुः) गन्धबिलाव,—कारिका 1 सुगन्ध द्रव्य बनाने वाली सेविका शिल्पकार स्त्री जो दूसरे के घर उसके नियन्त्रण में रहती है - —कालिका - —काली (स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती —काष्ठम् अगर की लकड़ी —कुटी एक प्रकार का गन्धद्रव्य —केलिका, —चेलिका कस्तूरी,—गुण (वि०) गन्धगुण वाला गन्धयुक्त,– घ्राणम्

गंध का सूंघना, –जलम् सुवासित, सुगन्धित जल, –ज्ञा नासिका, –तूर्यम् बिगुल तथा दुन्दुभि आदि रणवाद्य –तैलम् खुशबूदार तेल, सुगन्धित द्रव्यों से तैयार किया गया तेल, –दारु (नपुं०) अगर की लकड़ी, –द्रव्यम् सुगन्धित द्रव्य, –धूलिः (स्त्री०) कस्तूरी –नकुलः छछून्दर, –नालिका, –नाली नासिका, –निलया एक प्रकार की चमेली, –पः एक पितृवर्ग, –पलाशिका हल्दी, –पलाशी आमा हल्दी की जाति, –पाषाणः गन्धक, –पिशाचिका धूने का धूआं, (अपनी गंध से पिशाचों को आकृष्ट करने के कारण तथा कालेरंग का होने के कारण सम्भवतः इसका यह नाम पड़ा है), –पुष्पः 1 बेंत का पौधा 2 केवड़े का पौधा, (–ष्पम्) खुशबूदार फूल –पुष्पा नील का पौधा, –पूतना भूतनी, प्रेतनी, –फली 1 प्रियंगुलता 2 चम्पककली, –बन्धुः आम का वृक्ष, –भूः (स्त्री०) पृथ्वी, –मादनः 1 भौंरा 2. गन्धक (–नः, –नम्) मेरु पहाड़ के पूर्व में स्थित एक पहाड़ जिसमें चन्दन के अनेक जंगल हैं, –मादनी मदिरा, शराब, –मादिनी लाख, –मार्जारः गन्धबिलाव –मुखा, –मूषिकः, –मूषी (स्त्री०) छछून्दर, –मृगः 1. गन्धबिलाव 2 कस्तूरीमृग, –मैथुनः सांड, –मोदनः गन्धक, –मोहिनी चम्पक की कली, –युक्तिः (स्त्री०) सुगन्धद्रव्यों के तैयार करने की कला, –राजः एक प्रकार की चमेली (–जम्) 1. एक प्रकार का गन्धद्रव्य 2. चंदन की लकड़ी, –लता प्रियंगुलता, °लोलुपा मधुमक्खी, –वहः वायु–रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति–श० ५।४, शिवताति गन्धवहमुखेन कु० ३।२५, –वहा नासिका, –वाहः 1. वायु 2. कस्तूरीमृग, –वाही नासिका, –विह्वलः गेहूँ, –वृक्षः साल का पेड़, –व्याकुलम् कंकोल का पेड़, –शुण्डिनी छछूंदर, –शेखरः कस्तूरी, –सारः चन्दन, –सोमम् सफेद कुमुदिनी, –हारिका गन्धकारिका, स्वामिनी के पीछे-पीछे सुगन्ध लेकर चलने वाली सेविका।

गन्धकः [गन्ध+कन्] गन्धक।

गन्धनम् [गन्ध्+ल्युट्] 1 अध्यवसाय, अविराम प्रयत्न 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 3. प्रकाशन 4. सूचना, संसूचन, संकेत।

गन्धवती [गन्ध+मतुप्+ङीप्, मस्य वत्वम्] 1. पृथ्वी, 2. शराब 3. व्यास की माता सत्यवती 4. चमेली का एक भेद।

गन्धर्वः [गन्ध+अर्व्+अच्] स्वर्गीय गायक, अर्ध देवों का वर्ग जो देवताओं के भोजों में तथा संगीतमय गाने गाते हैं, कहते हैं कि यह कन्याओं के स्वर को मधुर बना देते हैं–सोमः शौचं ददावासां गन्धर्वश्च शुभां गिरम् याज्ञ० १।७१ 2 गवैया 3 घोड़ा 4 कस्तूरीमृग 5 मृत्यु के बाद तथा पुनर्जन्म से पूर्व की आत्मा 6. कोयल। सम० –नगरम्, –पुरम् गन्धर्वों का नगर, आकाश में एक काल्पनिक नगर, संभवतः मरीचिका आदि किसी नैसर्गिक घटना का परिणाम, –राजः चित्ररथ, गन्धर्वों का स्वामी, –विद्या संगीत कला, –विवाहः मनु० ३।२७ में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से एक, इस प्रकार का विवाह युवक और युवती की पारस्परिक रुचि और पूर्ण प्रेम का परिणाम है, इसमें न किसी प्रकार की रीतिरस्म की आवश्यकता है और न किसी सगे संबंधियों की अनुमति की, कालिदास के कथनानुसार यह है कथमप्यबान्धवकृता स्नेहप्रवृत्तिः–श० ४।१६, –वेदः चार उपवेदों में से एक, जिसमें संगीत कला का विवेचन है, –हस्तः, –हस्तकः एरंड का पौधा।

गन्धारः (ब० व०) [गन्ध+ऋ+अण्] एक देश और उसके शासकों का नाम।

गन्धाली (स्त्री०) 1 भिड़ 2 सतत सुगंध। सम० –गर्भः छोटी इलायची।

गन्धालु (वि०) [गन्ध+आलुच्] सुगन्धित, सुवासित, खुशबूदार।

गन्धिक (वि०) [गन्ध+ठन्] (केवल समास के अन्त में प्रयोग) 1 गन्धवाला जैसा कि 'उत्पलगन्धिक' 2. लेश मात्र रखने वाला–भ्रातृगन्धिक (नाममात्र का भाई), –कः 1 सुगन्धों का विक्रेता 2 गन्धक।

गभस्ति (पुं०, स्त्री०) [गम्यते ज्ञायते गम्+ड = ग विषयं न बिभस्ति, भस्+क्तिच्] प्रकाश की किरण, सूर्यकिरण या चन्द्रकिरण, –स्तिः (पुं०) सूर्य (स्त्री०) अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण। सम० –करः, –पाणिः, –हस्तः सूर्य।

गभस्तिमत् (पुं०) [गभस्ति+मतुप्] सूर्य–घनव्यपायेन गभस्तिमानिव रघु० ३।३७, (नपुं०) पाताल के सात प्रभागों में से एक।

गभीर (वि०) [गच्छति जलमत्र, गम्+ईरन्, नि० भुगागम] = [गम्भीर] 1 गहरा–उत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्संगमाः–उत्तर० २।३०, भामि० २।१०५ 2 गहरी आवाज वाला (ढोल की भांति) 3 घना, सटा हुआ, (जंगल की भांति) दुर्गम 4 अगाध, अथाह 5 गंभीर, संजीदा, महत्त्वपूर्ण, उदात्त 6 गूढ़, रहस्यपूर्ण 7 गहन, दुर्बोध, दुर्ग्राह्य। सम० –आत्मन् परमात्मा, –वेध (वि०) अत्यन्त भेदक या गहन प्रवेशी।

गभीरिका [गभीर+कन्+टाप्, इत्वम्] गहरी आवाज वाला बड़ा ढोल।

गभोलिकः [?] छोटा गोल तकिया।

गम् (भ्वा० पर० सकर्मक गच्छति– प्रेर० गमयति, इच्छा० –जिगमिषति, जिगांसते आ०) जाना, चलना

फिरना—गच्छतु आर्या पुनर्दर्शनाय—विक्रम० ५, —गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः श० १।३४, क्वाधुना गम्यते —अब आप कहाँ जा रहे हैं? 2. विदा होना, चले जाना, दूर जाना, जाना होना प्रस्थान करना—उत्तिष्ठंतीं ज्योतिरेकं जगाम —श० ५।२० 3. जाना, पहुँचना, सहारा लेना, आ जाना, समीप जाना —वदनम्योऽपि गम्यते - पञ्च० १।७, एनो गच्छति कर्तारम् मनु० ८।१९, पाप पापी पर मंडराता है—४।१९, इसी प्रकार —वर्णान् मूर्धा गम् आदि 4. गुजरना, बीतना, (समय का) व्यतीत होना —काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् हि० १।१, गच्छता कालेन अनन्त 5 अवस्था या दशा को प्राप्त होना, होना, अनुभव करना, भुगतना, भोगना गम् तान्त और त्वान्त समासों के साथ अथवा कर्म० की संज्ञा के साथ जुड़ता है) —वनिताम्युपहास्यताम् —रघु० १।३ पञ्चादुमाख्या सुमुखी जगाम कु० १।२६, उमा नामवाली हुई, इसी प्रकार—तृप्तिं गच्छति-तृप्त हो जाता है, विषाद गत —उदास हो गया, कोपं न गच्छति - क्रुद्ध नहीं होता है, आनृण्य गत —ऋण से मुक्त हो गया 6 सहवास करना, मैथुन करना—गुरो सुतां यो गच्छति मूढात्—पंच० २।१०७, याज्ञ० १।८०, प्रेर०—1 भिजवाना, पहुँचाना, (दशा को) प्राप्त होना 2. उपयोग करना, (समय की भांति) बिताना 3 स्पष्ट करना, व्याख्या करना, विवरण देना 4 अर्थ बतलाना, संकेत करना, विचार व्यक्त करना —द्वौ नञौ प्रकृतार्थं गमयतः—'दो नकार एक नकारात्मक अर्थ को प्रकट करते हैं' अति—, दूर जाना, बीत जाना, अधि—, 1 अधिग्रहण करना, अवाप्त करना, ले लेना —अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोऽपि निशापरिगृहीत —मालवि० १।१३, अनन्यार्थमधिगच्छति—मनु० २।२१८, ७।३३ भग० २।६४, रघु० २।६६, ५।३४ 2. निष्पन्न करना, पूरित करना, पूरा करना—अर्थं सप्रतिबन्धं प्रभुरधिगन्तुं सहायवानेव—मालवि० १।९ 3 समीप जाना, की ओर जाना, पहुँचना, पैठ रखना —गुणाढ्यबोऽप्यकलमन्त्री नृपतिमधिगम्यते —पंच० १।१८४ 4 जानना, सीखना, अध्ययन करना, समझना, —तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्त विद्याम् उत्तर० २।३ कि० २।४१, मनु० ७।३९, याज्ञ० १।९९ 5 विवाह करना, (पति के रूप में) ग्रहण करना—मनु० ९।९१, अभ्या , प्राप्त करना, होना, घटित होना, अनु , 1 मिलना-जुलना, पीछे चलना, साथ चलना—ओदकान्तात् स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य - श० ४, मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् रघु० २।२, ९, कि० ५।२, मनु० १२।११५, पंच० १।७३ 2 नकल करना, समरूप होना उत्तर देना - आस्फालितं यत्प्रमदाकराग्रैर्मृदङ्गधीरध्वनिमन्वगच्छत् रघु० १६।१३, कि० ४।३६ अन्तर—, बीच में आना, सम्मिलित होना, अन्तर्हित होना दे० अन्तर्गत, अप , 1 दूर चले जाना, जुदा हो जाना, (समय आदि की भांति) बीत जाना—पंच० २।८ 2 ओझल होना, अन्तर्धान होना, से चल जाना अभि , निकट जाना, समीप होना दर्शन करना—तान् सभिजग्मुर्महर्षयः रघु० १५।५९, कि० १०।-१ मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः मनु० १।१ 2 मिलना, (अकस्मात् या संयोग से) घटित होना 3 सहवास करना, मैथुन करना याज्ञ० २।०४ अभ्या , 1. समीप आना, पहुँचना, निकट आना—गृहमाभ्यागतो गुरु -हि० १।१०८ 2 प्राप्त करना होम करना, अभ्युद् -, 1 उठना, ऊपर जाना 2. की ओर जाना, मिलने के लिए आगे बढ़ना, अभ्युप , सहमत होना, स्वीकार करना, जिम्मेवारी लेना, मानना, मंजूर करना, अपनाना, अव -, 1 जानना, सीखना, विचारना, समझना, विश्वास करना —परस्तादवगम्यत एव —श० १, कथं शान्ताविधर्माभिहिते वाम्ना इत्यवगच्छति मूर्ख —मृच्छ० १, भग० १०।४१, रघु० ८।८८, भट्टि० ५।८१ 2. विचार करना, मानना, समझना (प्रेर०) ग्रहण करना, प्रकट करना, संकेत करना, जाहिर करना, कहना भट्टि० १०।६२, आ—, 1 आना, पहुँचना 2. आ जाना, प्राप्त करना, (विशेष दशा को) पहुँच जाना (प्रेर०) 1 ले जाना, लाना, ग्रहण करना आगमिताप्यविदूरम् शीघ्र० १२ 2. सीखना, अध्ययन करना - रघु० १०।७१, 3 प्रतीक्षा करना (आ०), उद् -, उठना, ऊपर जाना- अथाग्रहाटोद्गतरेणुमण्डला - ऋतु० १।१० अने० पा० 2 अङ्कुर फूटना, दिखाई देना विक्रम० ४।२३ 3 उदय होना, निकलना, पैदा होना, जन्म लेना इक्ष्वाकुवंशभूत पौरवमुख्येभ्य श्रुत्वम् कथा. रघु० ७।१६, समह ११ 4 प्रसिद्ध या विख्यात होना—रघु० १८।२०, उप—, 1 जाना, निकट जाना, प्राप्त करना, पहुँचना—रघु० ६।८५ 2. पैठना, अन्दर घुसना शि० ९।३९ 3 अनुभव करना, भुगतना —तपो घोरमुपागमत्—रामा० 4 अवस्था को प्राप्त होना, प्राप्त करना, अधिग्रहण करना —अनिकमतामुपगमे हि विपी—शि० ९।६, तानश्रदातस्मादुपगम्य—कु० १।८ 5. मान लेना, स्वीकृति देना, सहमत होना 6 संभोग के लिए स्त्री के निकट जाना सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति—मनु० ३।३४, ४।४० उपा—, 1 आ जाना, पहुँचना (स्थान पर या व्यक्ति के पास) 2 पहुँच जाना अवस्था को चले जाना प्राप्त करना तृप्तिमुपागत, पञ्चत्वमुपागत आदि 3. लेना, प्राप्त करना —याज्ञ० ३।१४३ नि— 1 पहुँच

आना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, हासिल करना — यत्र तु स्वाम्य च निगच्छति— मनु० १८।३६, ९।३१ 2 ज्ञान प्राप्त करना, सीखना, निस् (निर्), 1 बाहर जाना, जुदा होना—प्रकाशं निर्गत—श० ४, हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षात्—ऋतु० १।२७, मनु० ९।८३, श० ६।३ अमरु ६१ 2 हटाना, जैसा कि - 'निर्गतविशङ्कु' में 3 (किसी रोग से चिकित्सा द्वारा) मुक्त होना परा—, 1 वापिस आना, तदय परागत एवास्मि —उत्तर० ५ 2. घेरना लपेटना, व्याप्त करना—स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्—शि० ६।२, परि—, 1 जाना, चक्कर लगाना,—न हय तम परिगम्य - रामा०, यथा हि मेरु सूर्येण नित्यशः परिगम्यते—महा० 2 घेरना, शि० ९।२६, भट्टि० १०।१, सेनापरिगत—आदि 3 सर्वत्र फैलना सब दिशाओं में व्याप्त होना 4 प्राप्त करना पृथक्ताम् आदि 5 जानना, समझना, सीखना रघु० ७।१७१ 6 मरना, (इस संसार से) चले जाना —यस्य येभ्यो ज्ञातापित्वरपरिगता एव खलु ते—भर्तृ० ३।३८ 7 प्रभावित करना, ग्रस्त करना, जैसा कि —क्षुधया परिगत—में, पर्या—, 1 निकट जाना, की ओर जाना 2. पूरा करना, समाप्त करना 3 जीतना, अभिभूत करना, प्रति—, 1 वापिस आना 2. बढ़ना, की ओर जाना प्रत्या—, वापिस आना, लौट आना प्रत्युद्—, (सत्कार करने के लिए) आगे जाना, बढ़ना या मिलना प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेय रघु० ५।२, प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रिय —गीत० ११, भामि० ३।३, वि—, (समय आदि का) 1. बीत जाना,—सन्ध्यापि सपदि व्यगमि—शि० ९।१७ 2 ओझल होना, अन्तर्धान होना— मलज्जाया कक्वापि व्यगमदिव दूरं मृगदृश —गीत० ११ मग० ११।१, मनु० ३।२, ५१, (प्रेर०) व्यतीत करना, बिताना - विगमयत्युन्निद्र एव क्षपा श० ६।५, विनिस्, 1 बाहर आना 2 अन्तर्धान होना, ओझल होना भिन्न अलग होना सम्—,(आ० में प्रयुक्त) 1 मिल जाना, इकट्ठे चलना, मिलना, मुकाबला करना अलपूर्व समगसि—दश०, एते भगवत्यौ कलिन्दकन्यामन्दाकिन्यौ संगच्छेते—अनर्घ० ७ 2. सहवास करना, संभोग करना भार्यां च परसंगता—याज्ञ० १।२०८, मनु० ८।३७८, (प्रेर०) इकट्ठा करना, मिलाना या एकत्र करना —रघु० ७।१७, समधि—, 1 निकट पहुँचना 2 अध्ययन करना 3 प्राप्त करना, अभिग्रहण करना यं समधिगच्छन्ति यस्यैते तस्य तद्धनम्—मनु० ८।४१६ समव , पूरी तरह से जान लेना, समुपा— 1 पास पहुँचना 2 आ पड़ना।

गम (वि०) [गम् + अप्] (समास के अन्त में) जाने वाला, हिलने-जुलने वाला पास जाने वाला, पहुँचाने वाला, प्राप्त करने वाला, हासिल करने वाला आदि खगम, पुरोगम, हृदयगम आदि, —मः 1 जाना, हिलना-जुलना 2 प्रयाण करना अवध्यैकाहगम 3 आक्रमणकारी का कूच करना 4 सड़क 5 अविचारिता, विचारशून्यता 6 ऊपरीपन, अटकलपच्चू निरीक्षण 7 स्त्री-संभोग, सहवास —गुर्वङ्गनागम — मनु० ११।५५, याज्ञ० २।२९३ 8 पासे आदि का खेल। सम० —आगमः आना-जाना।

गमक (वि०) (स्त्री०—मिका) [गम् + ण्वुल्] 1 संकेतक सुझाव देने वाला, प्रमाण, अनुकरणी—गदेव गमक पाण्डित्यवैदग्ध्ययो — मा० १।७ 2 विश्वासोत्पादक।

गमनम् [गम् + ल्युट्] 1 जाना, गति, चाल ओणीभारादलसगमना मेघ० ८२, इसी प्रकार गजेन्द्रगमने—शृंगार० ७ 2 जाना, गति (वैशेषिक इसे पाँच कर्मों में से एक कर्म समझते हैं) 3 निकट पहुँचना, पहुँचना 4 अभियान 5 अनुभव करना, भुगतना 6 प्राप्त करना, पहुँचना 7 सहवास।

गमिन् (वि०) [गम् + इनि] जाने के विचार वाला —जैसा कि 'ग्रामगमी' (पु०) यात्री।

गमनीय, गम्य (सं० कृ०) [गम् + अनीयर्, यत् वा] 1 सुगम, उपायम्य विकारस्य गमनीयास्मि संवृत्ता - श० १ 2 सुबोध, आसानी से समझ में आने योग्य 3 अभिप्रेत, निहित, अर्थयुक्त 4 उपयुक्त, मांफिक, योग्य —याज्ञ० १।१८ 5 सहवास के योग्य, — दुर्जनगम्या नार्य. पञ्च० १।२७८, अभिकामां स्त्रियं यश्च गम्यां रहसि याचित, नोपैति महा० 6 (औषधि आदि के) उपचार योग्य—न गम्यो मन्त्राणाम्— भर्तृ० १।८९।

गम्भारिका, गम्भारी [गम् + विच् = गम्, तं गम = निम्नगतिं बिभर्ति — गम् + भृ + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्, गम् + भृ + अण् ङीष्] एक वृक्ष का नाम।

गम्भीर (वि०) [= गभीर] —रघु० १।३६, मेघ० ६४, ६६,—रः 1 कमल 2 जबीर, नीबू। सम० —वेदिन् (वि०) (हाथी की भाँति) दुर्दान्त, अविनत।

गम्भीरा, गम्भीरिका [गम्भीर + टाप्, गम्भीर + कन् + टाप्, इत्वम्] एक नदी का नाम गम्भीरायाः पयसि - मेघ० ४०।

गयः 1 गया प्रदेश तथा उसके आस पास रहने वाले लोग 2 एक राक्षस का नाम,—या बिहार में एक नगर जो एक तीर्थ स्थान है।

गर (वि०) (स्त्री०—री) [गीर्यते गृ + अप्] निगलने वाला, —रः 1 पेय, अर्क 2 बीमारी, रोग 3 निगलना (गरण का भी यही अर्थ है) —रः, —रम् 1 जहर 2 विषनाशक औषधि, —रम् छिड़कना, गी

करना। सम० —अधिका 1 लाख नामक कीड़ा 2 इस कीड़े से प्राप्त लाल रंग —अब्धी एक प्रकार की मछली, —द (वि०) विष देने वाला, ज़हर देने वाला (—दम्) विष, —व्रतः मोर।

गरणम् [गृ+ल्युट्] 1 निगलने की क्रिया 2 छिड़कना 3 विष।

गरभः [गृ+अभच्] भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा दे० गर्भ।

गरलः,—लम् [गिरति जीवनम्, गृ+अलच् तारा०] विष, ज़हर, कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः —गीत० ३, गरलमिव कलयति मलयसमीरम् ४, स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनम्—१० 2 साँप का विष —लम् घास का गट्ठर। सम० —अरिः पन्ना, मरकतमणि।

गरित (वि०) [गर+इतच्] विषयुक्त, जिसे ज़हर दिया गया हो।

गरिमन् (पुं०) [गुरु+इमनिच् गरादेश] 1 बोझ, भारीपन शि० ९।४९ 2 महत्त्व, बड़प्पन, महिमा, पञ्च० १।३० 3 उत्तमता, श्रेष्ठता 4 आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसके द्वारा अपने आपको इच्छानुसार भारी या हल्का कर सकता है—दे० सिद्धि।

गरिष्ठ (वि०) [गुरु+इष्ठन् गरादेश] 1 सबसे भारी 2 अत्यन्त महत्त्वपूर्ण (गुरु शब्द की उत्तमावस्था)।

गरीयस् (वि०) [गुरु+ईयसुन् गरादेश] अधिक भारी, अपेक्षाकृत वजनदार, अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण (गुरु की मध्यमावस्था) —अतीव प्रकाशाद्गरीयसा कि० ४।१९, बृहत्या लक्ष्मी मायां प्राक्स्थार्ऽपि गरीयसा रघु० १।१०, शि० २।२८, ३७।

गरुड [गरुद्भ्यां डयते डी+ड पृषो० तारा०, गृ+उडच्] 1 पक्षियों का राजा (यह 'विनता' नाम की पत्नी से उत्पन्न कश्यप का पुत्र है, यह पक्षियों का राजा, साँपों का नैसर्गिक शत्रु और अरुण का बड़ा भाई है। एक बार इसकी माता और उसकी सौत कद्रू में 'उच्चैःश्रवा' के रंग के विषय में झगड़ा हुआ जिसमें वह हार गई और शर्त के अनुसार उसे कद्रू की दासी बनना पड़ा। गरुड माता की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र के पास गया वहाँ से साँपों के लिए अमृत का घड़ा लाने में गरुड को उसके साथ जूझना पड़ा, अन्त में वह अमृत प्राप्त करने में सफल हुआ और फलतः विनता को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। परन्तु इन्द्र अमृत का घड़ा साँपों के पास से ले गया। गरुड का चित्र की सवारी चित्रित किया गया है। इसका चेहरा श्वेत, नाक तोते जैसी, पंख लाल और शरीर सुनहरी है) 2 गरुड की शक्ल का बना भवन 3 विशेष सैनिक व्यूह रचना। सम० —अग्रजः सूर्य के सारथि अरुण का विशेषण, —अङ्क

विष्णु का विशेषण —अङ्कितम्—अश्मन् (पुं०) —उत्तीर्णम् पन्ना —ध्वजः विष्णु की उपाधि —व्यूह एक प्रकार की विशेष सैनिक व्यवस्था दे० (3) ऊपर।

गरुत् (पुं०) [गृ (गॄ)+उति] 1 पक्षी के पर, बाज़ 2 खाना, निगलना। सम० —योधिन् (पुं०) बटेर।

गरुत्मत् (वि०) [गरुत्+मतुप्] पक्षी —गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः —रघु० ३।५७ (पुं०) 1 गरुड 2 पक्षी।

गरुल [=गरुड, डस्य लः] गरुड पक्षियों का राजा।

गर्गः [गृ+ग] 1 एक प्राचीन ऋषि, ब्रह्मा का एक पुत्र 2 साँड 3 केंचुआ (ब० व०) गर्ग की सन्तान। सम० —स्रोतस् (नपुं०) एक तीर्थ।

गर्गरः [गर्ग इति शब्दं रति —गर्ग+रा+क] 1 भँवर, जलावर्त 2 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 3 एक प्रकार की मछली 4 मथानी, दही बिलोने का मटका, दही मथानी मटकी की गागर।

गर्दिः [गर्द+इन्] ... एक प्रकार की अङ्गुली।

गर्ज् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० —गर्जति, गर्जयति—ते, गर्जित) 1 दहाड़ना, गरजना, गर्जन करना, उग्रशब्द करना —कोऽर्थः सिंहस्य ... भट्टि० १४।४, गर्जति शरदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः —पृथु० ... हि दृष्टा —रामा० मुद्रा० गर्जन्ति ... दुर्योधनो वा शिखी, मृच्छ० ५।६ 2 गरजना, गड़गड़ाना, गर्जना करना —यदि गर्जति वारिधरो गर्जतु —उदात्त निष्ठुरा पुरुषाः —मृच्छ० ५।३२ (और इस अर्थ के दूसरे कई उदाहरण में, गर्जति शारदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः —उद्भट) अनु— बदले में गड़गड़ाना, गूंजना, कु० ६।४० प्रति— 1 चिंघाड़ना, दहाड़ना (आ०) 2 मुकाबला करना, विरोध करना —अथाहृदयं प्रतिगर्जतामिव —रघु० ९।९।

गर्जः [गर्ज्+घञ्] 1 हाथियों की चिंघाड़ 2 बादलों की गरज या गड़गड़ाहट।

गर्जनम् [गर्ज्+ल्युट्] 1 दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, गड़गड़ाना 2 (अत) आवाज, कोलाहल 3 आवेश, क्रोध 4 संग्राम, युद्ध 5 झिड़की।

गर्जा, गर्जिः [गर्ज्+टाप्, गर्ज्+इन्] बादलों की गड़गड़ाहट, गरज।

गर्जित (वि०) [गर्ज्+क्त] गरजा हुआ, चिंघाड़ा हुआ —तः गरजता की गरज या गड़गड़ाहट —तः विष ... हुआ जिसके मस्तक से मद झरता है।

गर्त,—र्तम् [गृ+तन्] कोटर, छिद्र, गुफा—सतत्त्वेषु ... मनु० ४।४७, २०३ (इस अर्थ में गर्ता भी) —र्तः 1 कटिस्थान 2 एक प्रकार का रोग 3 एक देश का नाम, त्रिगर्त का एक अंश। सम० —आश्रयः चूहे की भाँति छिद्र में रहने वाला जानवर।

गर्तिका [गर्तः अस्त्यस्याः—गर्त+ठन्,] जुलाहे का कारखाना, खड्डी, (क्योंकि जुलाहा अपनी खड्डी पर बैठते समय पैर भूमि के नीचे गड्ढे में रखता है)।

गर्द् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—गर्दति, गर्दयति,—ते) शब्द करना, दहाड़ना।

गर्दभः (स्त्री०—भी) [गर्द्+अभच्] 1 गधा—न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, प्राप्ते तु षोडशे वर्षे गर्दभी ह्यप्सरायते—सुभा०, गधे की तीन बड़ी विशेषताएँ हैं:—अविश्रान्त वहेद्भारं शीतोष्णं च न विन्दति, ससंतोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात् —चाण० ७० 2. गंध, बू,—भम् सफेद कुमुदिनी। सम०—अण्ड,—ण्डः 1. एक वृक्षविशेष 2 पुक्ष,—आह्वयम् सफेद कमल,—भः चर्मरोगविशेष।

गर्धः [गृध्+घञ्, अच् वा] 1. इच्छा, उत्कंठा 2. लालच।

गर्धन, गर्धित (वि०) [गृध्+ल्युट्, क्त वा] लोभी, लालची।

गर्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गर्ध+इनि] 1 इच्छुक, लालची, लोभी—नवान्नाभिषगर्धिन.—मनु० ४।२८ 2. उत्सुकतापूर्वक किसी कार्य का पीछा करने वाला।

गर्भः [गॄ+भन्] 1. गर्भाशय, पेट—गर्भेषु वसति - पञ्च० १, पुनर्गर्भे च संभवम्—मनु० ६।६३ 2 भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, गर्भाधान—नरपतिकुलभूत्यै गर्भमाधत्त राज्ञी—रघु० २।७५, गर्भोऽभवद्भूधरराजपत्न्याः कु० १।१९ 3. गर्भाधान काल-गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्—मनु० २।३६ 4 (गर्भस्थ) बच्चा श० ६ 5. बच्चा, बच्चसावक 6. किसी वस्तु का अभ्यन्तर, मध्य या भीतरी भाग (इस अर्थ में समस्त पद)—हिमगर्भैर्मयूखैः—श० ३।३, अग्निगर्भां शमीमिव ४।१, रघु० ३।९, ५।१७, ९।५५, शि० ९।६२ मा० ३।१२, मुद्रा० ३।१२ 7 आकाश-प्रसूति अर्थात् सूर्य किरणों द्वारा आठ मासतक शोषित और आकाश में संचित बाष्पराशि जो बरसात में फिर इस धरती पर बरसती है, तु० मनु० ९।३०५ 8. भीतरी कमरा, प्रसूतिकागृह, जच्चा खाना 9 अभ्यन्तरीण प्रकोष्ठ 10 छिद्र 11 अग्नि 12 आहार 13 कटहल का कटीला छिलका 14. नदी का पाट, विशेषतः भाद्रपद चतुर्दशी को गंगा का जब कि वर्षाऋतु अपने यौवन पर होती है तथा नदिया उमड़ कर बहती है। सम०—अङ्कः (गर्भाङ्क भी) अंक के बीच में विष्कम्भक जैसा कि उत्तर रामचरित के सातवें अंक में कुश और लव के जन्म का दृश्य, या बालरामायण में सीतास्वयंवर, सा० द० परिभाषा देता है—अङ्कोदर प्रविष्टो यो रङ्गद्वारामुखादिमान् अङ्कोऽपरः स गर्भाङ्कः सबीजः फलवानपि। २७९,—अवक्रान्ति: (स्त्री०) आत्मा का गर्भ में प्रविष्ट होना,—आगारम् 1. बच्चेदानी 2. भीतरी कमरा, निजी कमरा, अन्तःपुर 3. प्रसूतिकागृह 4. मन्दिर का पूजाकक्ष, जहाँ देवता की मूर्ति स्थापित रहती है, —आधानम् 1. गर्भ रहना, गर्भधारण—गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः (बलाकाः)—मेघ० ९ 2. एक संस्कार, ऋतु-स्नान के पश्चात् एक शुद्धि संस्कार (यह संस्कार ही धार्मिक पक्ष में विवाह की पूर्णता को वैध ठहराता है) याज्ञ० १।११,—आलय योनि, बच्चेदानी, —आस्रावः गर्भ का कच्चा गिरना, गर्भपात, —ईश्वरः जन्म से ही धनी, जन्मजात धनी, पैदायशी राजा या रईस,—उत्पत्तिः भ्रूण की रचना, —उपघातः कच्चे गर्भ का गिर जाना, —उपघातिनी वह गाय या स्त्री जिसे बिना ऋतु के गर्भ का स्राव हो जाय,—कर (वि०) गर्भ धारण करने वाला, —कालः ऋतु काल, गर्भधारण का समय, - कोशः,—षः गर्भाशय, बच्चेदानी, - क्लेशः गर्भधारण करने का कष्ट, प्रसव की पीड़ा, —क्षय. गर्भ की कच्ची अवस्था में गिर जाना,—ग्रहणम्, —भवनम् वेश्मन् (नपुं०) 1 घर के भीतर का कमरा, घर का मध्यभाग 2. प्रसूतिकागृह 3. मन्दिर का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित हो -निर्गत्य गर्भभवनात्—मा० १,—ग्रहणम् गर्भधारण, गर्भ होना —घातिन् (वि०) गर्भपात कराने वाला, —चलनम्, गर्भस्पन्दन, गर्भाशय में बच्चे का हिलना-डोलना,—च्युतिः (स्त्री०) 1 जन्म, प्रसूति 2 गर्भस्राव —दासः,—सी जन्म से हो गुलाम (तिरस्कार सूचक शब्द), —द्रुह् (वि०) (कर्तृ० ए० व० ध्रुक्) गर्भपात करने वाला,—धरा गर्भवती,—धारणं- धारणा गर्भस्थिति, गर्भ में सन्तान को रखना, —ध्वंसः गर्भपात, —पाकिन् (पुं०) साठ दिन में पकने वाला धान, साठी चावल,—पातः चौथे महीने के बाद गर्भ का गिर जाना,—पोषणम्,- भर्मन् (नपुं०) गर्भस्थ बालक का पालन-पोषण—अनुष्ठितैः शिवगिमिराप्तैश्च गर्भभर्मणि —रघु० ३।४२—मन्दिरं शयनागार, प्रसूतिकागृह, —मासः वह महीना जिस में गर्भ रहे,—मोचनम् प्रसव, बच्चे का जन्म,—मोक्षा गर्भवती स्त्री (आश०) चढ़ी हुई गंगा जब कि उसका पानी किनारों से बाहर बहता हो,—रक्षणम् गर्भस्थ बालक की रक्षा करना,—रूपः,—रूपकः बच्चा, शिशु, तरुण, —लक्षणम् गर्भ हो जाने का चिह्न —लम्भनम् गर्भ की रक्षा और उसके विकास के लिए किया जाने वाला एक संस्कार, -वसतिः (स्त्री०)—वासः 1 गर्भाशय—मनु० १२।७८ 2. गर्भाशय में रहना,—विच्युतिः (स्त्री०) गर्भाधान के आरम्भ ही में गर्भस्राव हो जाना, —वेदना प्रसवपीड़ा, —व्याकरणम् गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि,—शङ्कुः एक प्रकार का औजार जिससे मरे हुए बच्चे को पेट से निकाला जाता है,—शय्या गर्भाशय,—संभवः—संभूतिः

(स्त्री०) गर्भवती होना,—स्थ (वि०) 1. गर्भाशय में विद्यमान 2 अभ्यन्तर, आन्तरिक, —स्राव: गर्भ गिर जाना, गर्भ का कच्ची अवस्था में बह जाना—वर गर्भस्राव— पंच० १, याज्ञ० ३।२० मनु० ५।६६।

गर्भक [गर्भ+कन्] बालों के बीच धारण की हुई पुष्पमाला,—कम् दो रातों और उनके बीच के दिन का समय।

गर्भण्डः [गर्भस्य अण्ड इव ष० त०] नाभि का बढ़ जाना।

गर्भवती [गर्भ+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] गर्भिणी स्त्री।

गर्भिणी [गर्भ+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री (चाहे मनुष्य की हो या पशु की)—गोगर्भिणीप्रियनवोलपमालभारिसेव्योपकण्ठविपिनावलयो भवन्ति मा० ९।२, याज्ञ० १।१०५, मनु० ३।११४। सम० —अवेक्षणम् दाईपना, गर्भवती स्त्री और नवजात बच्चे की सेवा और परिचर्या,—दौहृदम् गर्भवती स्त्री की प्रबल इच्छाएँ या रुचि, —व्याकरणम्,—व्याकृति (स्त्री०) (आयुर्वेद शास्त्र का एक विशेष अङ्ग) गर्भ के विकास का विज्ञान।

गर्भित (वि०) [गर्भ+इतच्] गर्भयुक्त भरा हुआ।

गर्भेतृप्त (वि०) [अलुक् स० त०] 1 बालक की भाँति गर्भ में ही संतुष्ट 2 आहार और सम्मान के विषय में संतुष्ट 3 आलसी।

गर्मुत् (स्त्री०) [गृ+उति, मुट्] 1 एक प्रकार का घास 2 एक प्रकार का सरकुल 3 सोना।

गर्व (भ्वा० पर० गर्वति, गर्वित) घमंडी या अहंकारी होना, (केवल भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त जो कि विशेषण ही समझा जाता है और गर्व से बना है) कोऽर्थान्प्राप्य न गर्वित: पंच० १।१४६।

गर्वः [गर्व+घञ्] 1 घमंड, अहंकार मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्काल: सर्वम् मोह० ४, मुग्धे मानी यौवनगर्वं वहसि मालवि० ४ 2 अल० शास्त्र में ३३ व्यभिचारिभावों में से एक रूपधनविद्यादिप्रयुक्तात्मोत्कर्षज्ञानाधीनपरावहेलनं गर्व: रस०, या सा० द० के अनुसार—गर्वो मद: प्रभावश्रीविद्यासत्कुलतादिज:, अवज्ञासविलासाङ्गदर्शनाविनयादिकृत्।

गर्वाट: [गर्व+अट्+अच्] चौकीदार, द्वारपाल।

गर्ह् (भ्वा०, चुरा० आ० (कभी कभी पर० भी) गर्हते, गर्हयते, गर्हित 1 कलंक लगाना, निन्दा करना, झिड़की देना विषमा हि दशा प्राप्य दैवं गर्हयते नर: हि० ४।३, मनु० ४।१९९ 2 दोषी ठहराना आरोप लगाना 3 खेद प्रकट करना, वि—, कलंकित करना निन्दा करना, झिड़की देना—न विगर्हेत साधव:—मनु० ९।६८, ३।४६, ११।५२।

गर्हणम्,—णा [गर्ह्+ल्युट्, गर्ह्+युच्+टाप्] निन्दा कलंक, झिड़की, दुर्वचन।

गर्हा [गर्ह्+अ+टाप्] दुर्वचन, निन्दा।

गर्ह्य (वि०) [गर्ह्+ण्यत्] निन्दनीय, निन्दा के योग्य, कलंक दिये जाने के योग्य—गर्ह्ये कुर्यात्पुनः कुले— मनु० ५।१४९। सम० —वादिन् (वि०) अपशब्द कहने वाला, दुर्वचन बोलने वाला।

गल् (भ्वा० पर०— गलति, गलित) 1 टपकाना, चुआना, पसीजना,—चुना—गलदिव गलत्सूपविष्टम्—का० १०३, अच्छकपोलमूलगलितै: (अश्रुभि:)—अमरु० २६।९।१, मालवि० २।२१, रघु० १९।२२ 2 टपकना, या निम्ना सरदमच्छगलन्मनोगम्या शि० ६।४२, ९।७५, प्रतोदा अगलु भट्टि० १४।९९ १७।८७, गलदश्रुसिक्त गीत० २, रघु० ७।१० मेघ० ४४ 3 ओझल होना, अन्तर्धान होना गुजर जाना, हट जाना —सुखेन सह गलति मुक्तमस्नेह — का० २८९ विद्या प्रमादगलितामिव चिन्तयामि चौर०, भर्तृ० ७।४४, भट्टि० ५।४३, रघु० ३।७० 4 जाना, निकलना (गृ से मबद्ध) प्रेर० या चुरा० उभ० (भू० क० कृ० —गलित) 1 उंडेलना 2 निथारना निचोड़ना 3 बहना (आ०) निस् टपकना, रिसना चूना—रघु० ५।१७ वर्षा— , टपकाना, भट्टि० २।४ वि—, 1 टपकाना विक्रम० ४।१० 2 टपकना, चूना 3 ओझल होना, अन्तर्धान होना।

गल: [गल्+अच्] 1 कंठ, गर्दन न गरलं गले कस्तूरीय नु० अजागलस्तन — भर्तृ० ११९६, अमरु ८८ 2 साल वृक्ष की लाख 3 एक प्रकार का बाद्ययन्त्र। सम० —अङ्कुर: गले का एक विशेष रोग (सूजन), —अम्बुः घोड़े की गर्दन के बाल, अयाल, —ओघः गले की रसौली, —कम्बलः गाय बैल की गर्दन का नीचे लटकने वाला चमड़ा झालर —गण्डः गलमाला, गले का एक रोग जिसमें गांठ सी निकल आती है,—ग्रहः, —ग्रहणम् 1 गला पकड़ना गला घोटना श्वासावरोध करना 2 एक प्रकार का रोग 3 मास में कृष्णपक्ष के कुछ दिन अर्थात् चौथ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी और तीन इससे आगे के —चर्मन् (नपुं०) अन्ननाली, गला, द्वार, मुंह, —तोणका हार,—वार्त (वि०) 1 गले की क्रिया में निपुण, खूब खाने और हजम करने वाला तन्दुरुस्त स्वस्थ—बुभुक्षते चैव तीर्थेषु गलवातास्तपस्विन —पंच० ३ अने० पा० 2 पिछलग्गू, चाटुकार —स्तः मोर —शुण्डिका उपजिह्वा, —शुण्डी गर्दन की ग्रन्थियों की सूजन, —स्तनी ('गलेस्तनी' भी) बकरी —हस्त: 1 गले से पकड़ना गला घोटना, अर्धचन्द्र या गरदनिया 2 अर्धचन्द्राकार बाण तु० अर्धचन्द्र —हस्तित (वि०) गले से पकड़ा हुआ, गर्दनिया देकर निकाला हुआ, गला घोटा हुआ।

गलकः [गल्+वुन्] 1. कण्ठ, गर्दन 2 एक प्रकार की मछली।

गलनम् [गल्+ल्युट्] 1. रिसना, चूना, टपकना 2. चूना, पिघल जाना ।

गलन्तिका, गलन्ती [गल्—शतृ+ङीप्, नुम्,+कन्+टाप् ह्रस्वम्,—गल्+शतृ+ङीप्, नुम्] 1. छोटा घड़ा 2. छोटा घड़ा जिसकी पेंदी में छेद करके देव मूर्ति पर टांग देते हैं, जिससे कि उस छेद से बराबर जल टपकता रहता है ।

गलि: [गडि, डस्य ल:, गल्+इन वा] हृष्ट पुष्ट परन्तु मट्ठा बैल । दे० गडि ।

गलित (भू० क० कृ०) [गल्+क्त] 1 टपका हुआ, नीचे गिरा हुआ 2. पिघला हुआ 3 रिसा हुआ, बहता हुआ 4. नष्ट, ओझल, वञ्चित 5. बंधन-रहित, ढीला 6. खाली हुआ, चू चू कर जो खाली हो गया हो 7. छाना हुआ 8 क्षीण, निर्बल किया हुआ । सम० —कुष्ठम् बढ़ा हुआ या असाध्य कोढ़ जब कि हाथ पैर की अङ्गुलियाँ भी गल कर गिर जाती हैं —दन्त (वि०) दन्तहीन,—नयन जिसकी आँखों में देखने की शक्ति न रहे, अंधा ।

गलितक: [गलित इव कायति—कै+क] एक प्रकार का नृत्य ।

गलेगण्ड: [अलुक् स० त०] एक पक्षी जिसके गले से मांस की थैली सी लटकती रहती है ।

गल्भ् (भ्वा० आ०—गल्भते, गल्भित) साहसी या विश्वस्त होना, प्र—, साहसी या आत्म विश्वासी होना —या कथंचन सखीवचनेन प्रगल्भिप्रियतमं प्रजगल्भे— शि० १०।१८, न मौक्तिकच्छिद्रकरी शलाका प्रगल्भते कर्मणि टङ्किकाया:—विक्रमांक १।१६, टांकी का काम करने में सक्षम या साहसी नहीं हो सकता ।

गल्भ (वि०) [गल्भ्+अच्] साहसी आत्मविश्वासी, ढीवट का ।

गल्या [गलानां कण्ठानां समूह:—गल्+यत्+टाप्] कण्ठों का समूह ।

गल्ल: [गल्+ल] गाल, विशेषकर मुख के दोनों किनारों का पार्श्ववर्ती गाल (कल० शास्त्री इस शब्द को 'ग्राम्य' अर्थात् गंवारू मानते हैं—तु०, काव्य० ७ में दिए गए उदाहरण का—ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भल्लं जल्पति मानुष, परन्तु तु० भवभूति के प्रयोग की —पातालप्रतिमल्लगल्लविवरप्रक्षिप्तसप्तार्णवम्— मा० ५।२२ । सम०—चातुरी गाल के नीचे रखा जाने वाला छोटा गोल तकिया ।

गल्लक: [गल्+क्विप्,=गल्, तं लाति ला+क, तत: स्वार्थे कन्] 1. शराब का गिलास 2. पुखराज, नीलमणि, दे० नी० 'गल्वर्क' ।

गल्लर्क: मदिरा पीने का प्याला ।

गल्वर्क: [गलुर्मणिभेद: तस्य अर्क इव दीप्तिरिव—ब० स०] 1. स्फटिक 2. वैदूर्यमणि 3. कटोरा, शराब पीने का गिलास ।

गल्ह् (भ्वा०—आ०—गल्हते, गल्हित) कलंक लगाना, निन्दा करना ।

गव [कुछ समासों, विशेष कर स्वरों से आरंभ होने वाले शब्दों के आरम्भ में 'गो' शब्द का स्थानापन्न पर्याय] सम०—अक्ष: रोशनदान, झरोखा—विलोकनेनाक्षगवाक्षमालाः सहस्रपत्राभरणा इवासन्—रघु० ७।११, कुब-जयितपाली: लोचनैरङ्गनानाम्—७।११, कु० ७।५८, मेघ० ९८, °जालम्—जाली, झिलमिली,—अक्षित (वि०) खिड़कियों वाला, -अग्रम् गौओं का झुंड (गोऽग्रम्, गोअग्रम् या गवाग्रम् लिखा जाता है), —अदनम् चरागाह, गोचरभूमि,—अदनी 1. चरागाह 2. खोर, नांद जिसमें पशुओं के खाने के लिए चारा रक्खा जाता है,—अविका लाख, —अर्ह (वि०) गाय के मूल्य का,—अविकम् गाय और भेड़ें,—अशन 1 मोची 2 जाति से बहिष्कृत,—अश्वम् बैल और घोड़े, —आकृति (वि०) गाय की शक्ल वाला,—आह्निकम् प्रतिदिन गाय को चारा देने की नाप,—इन्द्र 1 गौओं का स्वामी 2 बढ़िया बैल,—ईश,—ईश्वर गौओं का स्वामी,—उद्व सर्वोत्तम गाय या बैल ।

गवय: [गो+अय्+अच्] बैल की जाति—गौसदृशो गवय:—तर्क०—दृष्ट: कर्णविदूरणकर्णेविकिर्णी—कु० १।५६, ऋतु० १।२३ ।

गवाल्लूक [गवाय शब्दाय अलति- गव+अल्+ऊकञ्] =गवय ।

गविनी [गो+इनि+ङीप्] गौओं का झुंड या लहंडा ।

गवेडु,—डु,—धुका [?] पशुओं को खिलाने का चारा, घास ।

गवेधुकम् गेरू ।

गवेष् (भ्वा० आ०—चुरा० पर०—गवेषते, गवेषयति, गवेषित) 1 ढूंढना, खोजना, तलाश करना, पूछ ताछ करना—तस्मादेव मत्त प्राप्तस्तदेवाभ्यो गवेष्यताम —कथा० ५५, १७६ 2 प्रयत्न करना, उत्कट इच्छा करना, प्रबल उद्योग करना— गवेषमाणं महिषीकुलं जलम्— ऋतु० १।२१ ।

गवेष (वि०) [गवेष्+अच्] खोजने वाला,—ष: खोज, पूछताछ ।

गवेषणम्,—णा [गवेष्+ल्युट्, युच्+टाप् वा] किसी वस्तु की खोज, या तलाश ।

गवेषित (वि०) [गवेष्+क्त] खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ ।

गव्य (वि०) [गो+यत्] 1. गौ आदि पशुओं के योग्य 2. गौओं से प्राप्त दूध, दही आदि 3. पशुओं के लिए उपयुक्त,—व्यम् 1. गौओं की हेड़, लहंडा 2. चरागाह-

भूमि 3 गाय का खुर 4 धनुष की डोरी 5 रंगीन बनाने की सामग्री, पीला रंग, —तम् 1 गौओं की हेड़ 2 दो कोस के बराबर दूरी 3 धनुष की डोरी 4 रंग देने की सामग्री, पीला रंग।

गव्यूतम्,—ति (स्त्री०) [गो यूति पृषो०] 1 एक कोस या दो मील की दूरी की माप 2 दो कोस के बराबर दूरी का माप।

गह् (चुरा० उभ०— गहयति—ते) 1 (जंगल की भांति) सघन या गाढ़ होना 2 गहराई तक पहुँचना।

गहन (वि०) [गह् + ल्युट्] 1 गहरा, सघन, गाढ़ 2 अभेद्य, अप्रवेश्य, अलभ्य, दुर्गम 3 दुर्बोध अथवा अज्ञेय, रहस्यपूर्ण —नैवाश्यम परमगहना योगिनामप्यगम्या पंच० १।२८५, भर्तृ० २।५८, गहना कर्मणो गतिः — भग० ४।१७ श० १।८ 4 कठोर, कठिन, पीड़ाकर, कष्टकर गहनं संसार — श० ३।१५ 5 गहरा किया हुआ, पीड़ित किया हुआ — मा० १।३० —नम् 1 गहराई, गहराई 2 जंगल, झाड़ी या झुरमुट, घना या अप्रवेश्य जंगल यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम् गीत० ७ भामि० १।४४ 3 छिपने का स्थान 4 गुफा 5 पीड़ा, दुःख।

गह्वर (वि०) (स्त्री०—रा—री) [गह् + वरच्] गहरा, दुर्गम, —रम् 1 रसातल अथाह खाई 2 झाड़ी या झुरमुट, जंगल 3 गुफा, कन्दरा गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश — रघु० २।२६, ४६, ऋतु० १।२३ 4 दुर्गम स्थान 5 छिपने की जगह 6 पहेली 7 पाखंड 8 रोना, चिल्लाना, —रः लतामण्डप, निकुंज, —री 1 गुफा, कन्दरा, खोह।

गा [गै + डा] गाथा, श्लोक।

गाङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [गङ्गा + अण्] 1 गंगा में या गंगा पर होने वाला 2 गंगा से प्राप्त या गंगा से आया हुआ —गाङ्गमम्बु सितमम्बु यामुनं कज्जलाभमुभयत्र मज्जतः काव्य० १०, कु० २।३७ —ङ्गः 1 भीष्म का विशेषण 2 कार्तिकेय की उपाधि —ङ्गम् 1 विशेष प्रकार का वर्षा का जल (जो स्वर्गीय गंगा से आने वाला माना जाता है) 2 सोना।

गाङ्गट,—टेय [गाङ्ग + अट् अण्, ढक्० पररूप, पृषो०] झींगा मछली, या जलवृश्चिक।

गाङ्गायनि [गङ्गा + फिञ्] भीष्म या कार्तिकेय का नाम।

गाङ्गेय (वि०) (स्त्री०—यी) [गङ्गा + ढक्] गंगा पर या गंगा में होने वाला, —यः भीष्म या कार्तिकेय का नाम, —यम् सोना।

गाजरम् [गाज इव राति, गाज + रा + क] गाजर।

गाञ्जिकायः—बतख।

गाढ (भू० क० कृ०) [गाह् + क्त] 1 डुबकी लगाया हुआ, गोता लगाया हुआ, स्नान किया हुआ, गहरा घुसा हुआ 2 बार २ डुबकी लगाया हुआ, व्याप्त, सघन या घना बसा हुआ—तपस्विगाढां तमसां प्राप नदीं तुरङ्गमेण — रघु० ९।७२ 3 अत्यंत दबाया हुआ, कस कर बाँधा हुआ, पक्का मुंदा हुआ, कसा हुआ —गाढाङ्गदैर्बाहुभिः — रघु० १६।६०, —गाढालिङ्गन —अमरु ३६ छूट कर छाती से लगाना — चौर० ६ 4 सघन, गाढ़ 5 गहरा, दुस्तर 6 बलवान्, प्रचण्ड, अत्यधिक, तीव्र—गाढोत्कण्ठाललितलुलितैरङ्गकैस्ताम्यतीति —मा० १।१५ मेघ० ८३, प्राप्यगाढव्रणत्वम् —शृंगार० १२, अमरु ७२, गाढतप्तेन तपनम्— मेघ० १०४ —ढम् (अव्य०) ध्यानपूर्वक, जोर से, अत्यधिकता के साथ, भरपूर, प्रचण्डता से, दृढ़तापूर्वक सम० —मुष्टि (वि०) बन्द मुट्ठी वाला, लोलुप कंजूस, (—ष्टिः) तलवार।

गाणपत (वि०) (स्त्री०—ती) [गणपति + अण्] 1 किसी दल के नेता से संबंध रखने वाला 2 गणेश से संबंध रखने वाला।

गाणपत्य [गणपति + यक्] गणेश की पूजा करने वाला —त्यम् 1 गणेश की पूजा 2 किसी दल का नेतृत्व चौधराहट, नेतृत्व।

गाणिक्यम् [गणिकानां समूहः — यञ्] रंडियों का समूह।

गाणेश [गणेश + अण्] गणेश की पूजा करने वाला।

गाण्डि (डी) वः,—वम् [गाण्डिरस्त्यस्य गाण्डि + व पूर्वपददीर्घो विकल्पेन] अर्जुन का धनुष (यह ब्रह्मा ने सोम को, सोम ने वरुण को दिया, वरुण ने अग्नि को और अग्नि ने अर्जुन को, जबकि खांडव वन को जलाने में उसने अग्नि की सहायता की), गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।२९ 2 धनुष। सम० —धन्वन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण—वेणी० ४८।

गाण्डीविन् (पुं०) [गाण्डीव + इनि] अर्जुन का विशेषण, तृतीय पाण्डव राजकुमार—वेणी० ४।

गातागतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतागत + ठक्] आने जाने के कारण उत्पन्न।

गातानुगतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतानुगत + ठक्] अंधानुकरण से अथवा पुरानी लकीर का फकीर बनने से उत्पन्न।

गातु [गै + तुन्] 1 गीत 2 गाने वाला 3 गंधर्व 4 कोयल 5 भौंरा।

गातृ (पुं०) (स्त्री०—त्री) 1 गवैया 2 गंधर्व।

गात्रम् [गै + त्रन् आतुरिह वा अन्] 1 शरीर, अपांशुल- २ गात्रं व्यायतगात्रमस्य श० २।४ तपति तनुगात्रि मदनः श० ३।१७ 2 शरीर का अंग या अवयव— गुरुपरिरम्भणं न ते गात्राण्यालिङ्गितुमर्हन्ति श० ३।१८, मनु० ३।२०९, ५।१०९ 3 हाथी के अगले पैर का ऊपरी भाग। सम० —अनुलेपनी

उबटन,—आवरणम् ढाल,—उत्सादनम् सुगन्धित पदार्थों से शरीर को साफ करना, —कर्षण (वि०) शरीर को कृश या दुर्बल बनाने वाला —कार्श्यम् लौलिया,—यष्टि दुबला पतला शरीर —रघु० ६।८१ - रुहम् रोंगटे, बाल,—लता दुबला-पतला और सुकुमार शरीर इकहरा बदन,- -संकोचिन् (पु०) झाऊ चूहा सांडी (डराते या सुलाते समय यह अपने शरीर को सिकोड़ लेता है इसीलिए यह नाम पड़ा) —संप्लव छोटा पक्षी, गोताखोर।

गाथ [गै + थन्] गीत, भजन।

गाथक,—थिक [गै + थकन्, गाथ + ठन] 1 संगीतज्ञ गवैया 2 पुराणों अथवा धार्मिक काव्यों का लय के साथ गायन करने वाला।

गाथा [गाथ + टाप्] 1 छन्द 2 धार्मिक श्लोक या छन्द जो वेदों से संबद्ध न रखता हो 3 श्लोक गीत 4 एक प्राकृत बोली। सम० —कार प्राकृत काव्यकार।

गाथिका [गाथा + कन् + टाप् इत्वम्] गीत श्लोक —याज्ञ० १।४५।

गाध् (भ्वा० आ०—गाधते, गाधित) 1 खड़ा होना ठहरना, रहना 2 कूद करना गोता लगाना डुबकी लगाना—गाधिताासे नभो भूय भट्टि० २२।२८।१ 3 खोजना, तलाश करना पूछ-ताछ करना 4 सकलित करना, गूथना या धागे में पिरोना।

गाध (वि०) [गाध् + घञ्] तरणीय जो बहुत गहरा न हो, उथला- -सरित कुर्वती गाधाः पथश्चाश्यानकर्दमान्—रघु० ४।२४, तु० अगाध, —धम् 1 उथली या छिछली जगह, घाट 2 स्थान, जगह 3 लालसा, अतितृष्णा 4 पेंदी।

गाधि:,—धिन् (पु०) [गाध् + इन् गाध + इनि] विश्वामित्र के पिता का नाम (यह इन्द्र का अवतार तथा राजा कौशाम्ब के पुत्र के रूप में उत्पन्न माना जाता है)। —ज:,—नन्दन:—पुत्र: विश्वामित्र का विशेषण, —नगरम्—पुरम् कान्यकुब्ज (वर्तमान कन्नौज) का विशेषण।

गाधेय: [गाधि + ढक्] विश्वामित्र की उपाधि।

गानम् [गै + ल्युट्] गाना भजन गीत।

गान्त्री [गन्त्री + अण् + ङीप] बैलगाड़ी।

गान्दिनी [गो + दा + णिनि पृषो०] 1 गंगा का विशेषण 2 काशी की एक राजकुमारी श्वफल्क की पत्नी तथा अक्रूर की माता। सम० —सुत: 1 भीष्म 2 कार्तिकेय तथा 3 अक्रूर का विशेषण।

गान्धर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [गन्धर्वस्येदम् अण्] गंधर्वों से संबंध रखनेवाला,—र्व: 1 गायक, दिव्य गवैया 2 आठ प्रकार के विवाहों में से एक—गान्धर्व: समयान्मिथ:—याज्ञ० १।६१, (व्याख्या के लिए दे० 'गान्धर्वविवाह') 3 सामवेद का उपवेद जो संगीत से संबंध रखता है 4 घोड़ा - र्वम् गन्धर्वों की कला अर्थात् गाना-बजाना, -कापि वेला चारुदत्तस्य गान्धर्वं श्रोतुं गतस्य मृच्छ० ३। सम० —चित्त (वि०) जिसके मन पर गन्धर्व ने अधिकार कर लिया है,—शाला संगीतभवन, गायनालय।

गान्धर्विक (वि) क [गान्धर्व + कन् गन्धर्व + ठक्] गवैया।

गान्धार [गन्ध + अण् गान्ध + ऋ + अण्] भारतीय सरगम के सात प्रधान स्वरों में तीसरा (संगीत के संकेतों में बहुधा 'ग' से प्रकट किया जाता है) 2 सिंदूर 3 भारत और पर्शिया के बीच का देश, वर्तमान कंधार 4 उस देश का नागरिक या शासक।

गान्धारि [गान्ध + ऋ + इन्] शकुनि का विशेषण, दुर्योधन का मामा।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यम्—ङीप] गान्धार के राजा सुबल की पुत्री तथा धृतराष्ट्र की पत्नी (गान्धारी के १०० पुत्र—एक दुर्योधन तथा ९९ उसके भाई—हुए। उसके पति धृतराष्ट्र अंधे थे इसलिए वह सदैव अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे रखती थी (संभवत: अपने आप को अपने पति की स्थिति में लाने के लिए), जब कौरव सबके सब मर गए तो गान्धारी और धृतराष्ट्र अपने भतीजे युधिष्ठिर के साथ रहे)।

गान्धारेय [गान्धार्या अपत्यम्—ढक्] दुर्योधन का विशेषण।

गान्धिक [गन्ध + ठक्] 1 सुगंधित द्रव्य (इतर तेल फुलेल आदि) का विक्रेता तथा 2 लिपिकार कार्मिक —कम् सुगंधित द्रव्य (इतर तेल फुलेल आदि) —पश्यामि गान्धिकपण्ये किमन्यै: काञ्चनादिकै: —पंच० १।१३।

गामिन् (वि०) [गम् + णिनि] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 जाने वाला घूमने वाला, सैर करने वाला —वैहायसगामी—मालवि० ५ मृगेन्द्रगामी—रघु० २।३० शेर की चाल चलने वाला—कुमा० —रघु० ३।४, अलम अमरु ५९ 2 सवारी करने वाला —द्विरद—रघु० ३।४ 3 जाने वाला, पहुँचने वाला, लागू करने वाला सबंध रखने वाला——ननु सर्वगामी दाग —श० ४ द्वितीयगामी न हि शब्द एष न —रघु० ३।४९ 4 नेतृत्व करने वाला, पहुँचने वाला, बटने वाला—चित्रकूटगामी मार्ग:, कर्तृगामि क्रियाफलम 5 सयुक्त सदृशभर्तृगामिनी मालवि० ५ 6 देनेवाला सौंपने वाला—श० ६, याज्ञ० २।१६५।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर + ष्यञ्] 1 गहराई, थाह (जल या ध्वनि आदि की) 2 गहराई, अगाधता (अर्थ या चरित्र आदि की)—समुद्र इव गाम्भीर्ये—रामा०, शि० १।५५, रघु० ३।३२।

गाय [गै + घञ्] गाना, भजन, गीत—याज्ञ० ३।११२।

गायक [गै + ण्वुल्] गवैया, संगीतवेत्ता — न नटा न विटा न गायका — भर्तृ० ३।२३।

गायत्र,-त्रम् [गायत्री + अण्] गीत, सूक्त।

गायत्री [गायन्तं त्रायते—गायत् + त्रै + क + ङीप्] 1 [illegible] मात्राओं का एक वैदिक छंद—गायत्री छन्दसामहम् —भग० १०।३५ 2 सन्ध्या (प्रातः और सायम्) के समय प्रत्येक ब्राह्मण के द्वारा बोला जाने वाला गुरु मंत्र [illegible] इसके जप से बहुत से पापों का प्रायश्चित्त होता है वह मंत्र यह है — तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् — ऋक्० [illegible] [illegible] गायत्री छंद में रचित [illegible] सूक्त

गायत्रिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [गायत्र + इनि] वह पुरुष जो गायक [illegible] सामवेद के [illegible] करने वाला।

गायन (स्त्री०—नी) [गै + ल्युट्] गवैया —अथैव [illegible] गायनाकुला [illegible] [illegible] —नम् 1 गाना [illegible] 2 [illegible] शिकार [illegible] ने वाला

गारुड (वि०) (स्त्री० —डी) [गरुड + अण्] 1 गरुड़ की शक्ल का बना हुआ [illegible] [illegible] 3 2 सोना [illegible] [illegible] 3 [illegible] 4 सोना।

गारुडिक [गारुड + ठक्] जादू मंत्र करने वाला [illegible] विशेषज्ञ।

गारुत्मत (वि०) (स्त्री० —ती) [गरुत्मत् + अण्] 1 गरुड़ की आकृति का बना हुआ 2 [illegible] भाँति [illegible] —तम् [illegible]

गार्दभ (वि०) (स्त्री० —भी) [गर्दभ + अण्] [illegible] से प्राप्त या गधे से सम्बद्ध [illegible]

गार्ध्य [गृध् + ष्यञ्] [illegible]

गार्ध्र (वि०) (स्त्री० —ध्री) [गृध्र + अण्] [illegible] उत्पन्न [illegible] 1 लालच [illegible] 2 बाण [illegible] गिद्ध के पंखों से युक्त बाण।

गार्भ (वि०) (स्त्री० —र्भी) } [गर्भ + अण्, गर्भ + ठक् वा]
गार्भिक (स्त्री०—की) (वि०) } 1 गर्भाशयसंबंधी [illegible] 2 गर्भावस्थासंबंधी मनु० २।२७।

गार्भिणम्,-ण्यम् [गर्भिणीनां समूहः भिक्षा अण्] गर्भवती स्त्रियों का समूह।

गार्हपतम् [गृहपतेर्भावः अण्] गृहपति का पद व प्रतिष्ठा।

गार्हपत्य [गृहपतिना नित्यं संयुक्तः संज्ञायां ञ्य] 1 गृहपति के द्वारा स्थायी रूप से रक्खी जाने वाली तीन यज्ञ अग्नियों में से एक [illegible] पिता से प्राप्त की जाती है तथा [illegible] को सौंप दी जाती है, इसी से यज्ञ [illegible] आधान किया जाता है [illegible] मनु० [illegible] 2 वह स्थान जहाँ यह अग्नि रक्खी जाती है —त्यम् [illegible] परिवार का प्रधान गृहपति का पद और प्रतिष्ठा

गार्हमेध (वि० (स्त्री० —धी) [गृहमेध + अण्] [illegible] [illegible] गृहस्थ के [illegible] अनुष्ठान [illegible] [illegible] जाता है

गार्हस्थ्य [गृहस्थ + ष्यञ्] 1 गृहस्थ [illegible] के जीवन के [illegible] अवस्था या [illegible] गृहस्थी 2 [illegible] [illegible] नित्य अनुष्ठेय [illegible] पञ्चयज्ञ

गालनम् [गल् + णिच् + ल्युट्] 1 [illegible] पदार्थ का [illegible] 2 [illegible] [illegible] जाना [illegible]

गालव [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] एक ऋषि [illegible] [illegible]

गालि [गल् + इन्] [illegible] दुर्वचन [illegible] [illegible] दुर्वचनदान [illegible]

गालित (वि०) [गल् + णिच् + क्त] 1 छना हुआ 2 [illegible] भीगा हुआ 3 पिघलाया हुआ ताप से गलाया हुआ।

गाल्योदनम् [illegible] [illegible] अण् [illegible] कमल का बीज।

गावल्गणि [गवल्गण + इञ्] संजय का विशेषण [illegible] [illegible] का पुत्र

गाह् [illegible] [illegible] स्नान करना (पानी में [illegible] [illegible] महिषा निपानसलिलं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुष्कर [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करना [illegible] [illegible] (अ [illegible] 1 [illegible] [illegible] करना [illegible] [illegible] 2 घुसना पैठना पूरी तरह व्याप्त होना पूर्वापरो

दीर्घिकाम्बी क्वचित् स्थित: पृथिव्या इव मानदंड:—कु० १।१. ७।४०, उप—, घुसना, प्रविष्ट होना, वि —, 1 गोता लगाना, डुबकी लगाना, स्नान करना (दीर्घिका) स व्यगाहत विगाढमन्मथ -रघु० १९।९ 2. प्रविष्ट होना पैठना, व्याप्त होना (आत्म० भी) —विषमोऽपि विगाह्यते नय: कृततीर्थ: पयसामिवाशय: —कि० २।३, रघु० १३।१ 3 आन्दोलित करना विक्षुब्ध करना —विगाह्यमाना सरयू च नौभि: - रघु० १४।३०, सम् —, घुसना, अन्दर जाना पैठना -सम गाहिष्ट चाम्बरम् भट्टि० १५।९९।

गाह [गाह् + घञ्] 1 डुबकी लगाना गोता लगाना स्नान करना 2 गहराई अभ्यन्तर प्रदेश।

गाहनम् [गाह् + ल्युट्] डुबकी लगाना गोता लगाना, स्नान करना —आदि।

गाहित (वि०) [गाह् + क्त] 1 स्नान किया हुआ गोता लगाया 2. पैठा हुआ, घुसा हुआ दे० गाह्।

गिन्दुक [=गेन्दुक पृषो०] 1 गेंद 2 एक वृक्ष का नाम है 'गेंदुक'।

गिर् (स्त्री०) [गृ + क्विप्] (कर्तृ०, ए० व० - गी: करण० द्वि० व०—गीर्भ्याम् आदि) 1 भाषण, शब्द वाणी—वचस्यवसिते तस्मिन् ससर्ज गिरमात्मभू: —कु० २।५३, नवनीतां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम् श० १, प्रवृत्तिसारा: खलु मादृशां गिर: - कि० १।२५, शि० २।१५ याज्ञ० १।७१ 2 सरस्वती का आवाहन, स्तुति, गीत 3 विद्या और वाणी की देवी सरस्वती। सम० देवी (गीर्देवी) वाणी की देवी सरस्वती, —पति (गी पति:, गोष्पति, गीर्पति) 1. देवताओं के गुरु बृहस्पति 2 विद्वान् पुरुष, —रथ (गीरथ:) बृहस्पति, —वा (वा) ण (गीर्वाण:) देव देवता—परिमलो गीर्वाणचेतोहर: -भामि० १।६३, ७४।

गिरा [गिर् + क्विप् + टाप्] वाणी बोलना, भाषण, आवाज।

गिरि (वि०) [गृ + इ किच्च] श्रद्धेय, आदरणीय, पूजनीय, —रि: 1 पहाड़, पर्वत, उत्पापन पवमान कमने मूढ गिरयो न पतन्ति किम् -श्रृंगार० १९ मनु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरय: श० ६ 2 विशाल चट्टान 3 आँख का रोग 4 सन्यासियों की सम्मानसूचक उपाधि - उदा० आनन्दगिरि 5 (गणि० में) आठ की संख्या 6 गेंद (जिससे बच्चे खेलते हैं), —रि: (स्त्री०) 1 निगलना 2 चूहा, मूसा (इस अर्थ में 'गिरी' भी लिखा जाता है)। सम० —इन्द्र: 1 ऊँचा पहाड़ 2 शिव का विशेषण 3 हिमालय पहाड़, —ईश: 1 हिमालय पर्वत का विशेषण 2. शिव का विशेषण —सुतां गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्—कु० ५।३,—कच्छप: पहाड़ी कछुआ,—कण्टक: इन्द्र का वज्र,—कदम्ब:, —कद म्ब: कदम्ब वृक्ष की जाति—कन्दर: गुफा कन्दरा - कर्णिका पृथ्वी,—काण: एक आँख से अन्धा या एक आँख वाला व्यक्ति,—कानन्म् पहाड़ी निकुंज, —कूटम् पहाड़ की चोटी, —गंगा एक नदी का नाम, —गुड: गेंद —गुहा पहाड़ की गुफा,—चर (वि०) पहाड़ पर घूमने वाला गिरिचर इव नाग: प्राणसार बिभर्षि श० ६।७ (र) चोर, —ज (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न (जम्) 1 अबरक 2 गेरू 3 गुग्गुल 4 शिलाजीत 5 लोहा (जा) 1 (हिमालय की पुत्री) पार्वती 2 पहाड़ी केला 3 मल्लिका लता 4 गंगा का विशेषण सम० —अमल: 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, —पति शिव का विशेषण, —जलम् अबरक, —जालम् पर्वतमाला, —ज्वर: इन्द्र का वज्र, —दुर्गम् पहाड़ी किला, पहाड़ पर स्थित दुर्ग धनुर्दुर्गं महीदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरम् मनु० ७।७० ७१ —द्वारम् पहाड़ी मार्ग, —धातु: गेरू —ध्वज: इन्द्र का वज्र,—नगरम् दक्षिणापथ में विद्यमान एक जिला, —नदी (नदी) पहाड़ी नदी झरना या नाली, —नद्ध (वि०) पहाड़ों से घिरा हुआ —नन्दिनी 1 पार्वती 2 गंगा नदी 3 सरिता (पहाड़ से निकलकर बहने वाली) —अन्तर्गिरिनन्दिनीनिर्दयसुरकुसुमालङ्किनी—भामि० —नितम्ब: पहाड़ का ढलान, —निम्ब: एक प्रकार का नीम वृक्ष, —पृष्ठम् शिखा पहाड़ की चोटी —प्रपात: पहाड़ का ढलान, —प्रस्थ: पहाड़ की समतल भूमि, —भिद् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—भू (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न (भू: स्त्री) 1 गंगा का विशेषण 2 पार्वती का विशेषण —मल्लिका कुटज वृक्ष, —मान: हाथी एक विशालकाय हाथी, —मृद्, —मृद्भवम् गेरू —राज: (पुं०) 1 ऊँचा पहाड़ 2 हिमालय का विशेषण, —राजः हिमालय पहाड़,—व्रजम् मगध में विद्यमान (राजगृह) एक नगर का नाम,— शालः एक प्रकार का पक्षी,—सानु गणेश का विशेषण,—(शृंगम्) पहाड़ की चोटी, —षद् (सद्) (पुं०) शिव का विशेषण,—सानु (नपुं०) पठार अधित्यका,—सार: 1. लोहा 2 टीन 3 मलय पहाड़ का विशेषण - सुतः मैनाक पहाड़,—सुता पार्वती का विशेषण,—स्रवा पहाड़ी नदी।

गिरिक: गिरियक:, गिरियाक: [गिरि + कै + क, गिरि + या + क + कन्, गिरि + आ + क्विप् + कन्] गेंद।

गिरिका [गिरि + कन् + टाप्] छोटा चूहा।

गिरिश: [गिरौ कैलासपर्वते शेते—गिरि + शी + ड वा] शिव का विशेषण प्रत्याहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात् —रघु० २।४१, गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी —कु० १।६०, ३७।

गिल् (तुदा० पर० — गिलति, गिलित) निगलना (वस्तुतः यह कोई स्वतंत्र धातु नहीं बल्कि 'गृ' से सम्बद्ध है)।

गिल (वि०) [गिल् + क] जो निगलता है, उदरस्थ कर लेता है — उदा० तिमिंगिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघव — (पुं०) तिमिंगिल [illegible] नीबू का वृक्ष। सम० — गिल ग्राह मगरमच्छ घड़ियाल।

गिलनम्, गिलि (स्त्री०) [गिल् + ल्युट्, गिल् + इन्] निगलना या खाना।

गिलायु गले के भीतर एक कड़ी गांठ या रसौली।

गिलित (भू० क० कृ०) [गिल् + क्त] खाया हुआ, निगला हुआ।

गिष्णु (पुं०) [गै + इष्णुच्, आत्वाभावः] 1 गवैया 2 'वषट्कार' का ब्राह्मण जो सामवेद के मन्त्रों का [illegible] में चतुर हो, सामगायक।

गीत (भू० क० कृ०) [गै + क्त] 1 गाया हुआ, उच्चारण किया हुआ — अथ मधुरं गीतम् [illegible] 2 कहा हुआ, वर्णन किया हुआ — [illegible] — तम् (न०) गाना, गान — तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः — श० १।५, [illegible] — श० ६।२। सम० — अयनम् गान का साधन या उपकरण अर्थात् वीणा, बांसुरी आदि, — क्रमः गीत का तालक्रम, — ज्ञ (वि०) [illegible], — प्रिय (वि०) गाने बजाने का शौकीन (–यः) शिव का विशेषण, — मोदिन् (पुं०) किन्नर, — शास्त्रम् संगीत विद्या।

गीतकम् [गीत + कन्] गीत भजन।

गीता [गै + क्त + टाप्] 1 बहुधा गुरु शिष्य संवाद के रूप में, संस्कृत पद्य में लिखे गये कुछ धार्मिक ग्रन्थ जो विशेष रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं — उदा० शिवगीता, रामगीता, भगवद्गीता आदि — परन्तु इनमें से केवल अन्तिम ग्रन्थ, भगवद्गीता, सब से अधिक प्रमाणभूत है — गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥ श्रीधर स्वामी द्वारा उद्धृत।

गीतिः (स्त्री०) [गै + क्तिन्] 1 गीत गाना — अहो राग परिवाहिणी गीतिः — श० ५, [illegible] — कु० ३।४० 2 एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट।

गीतिका [गीति + कन् + टाप्] 1 छोटा गीत 2 गाना।

गीतिन् (पुं०) (स्त्री० — नी) [गीत + इनि] जो गाकर सस्वर पाठ करता है — गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः — शिक्षा ३२।

गीर्ण (भू० क० कृ०) [गृ + क्त] 1 निगला हुआ, खाया हुआ 2 वर्णन किया गया स्तुति किया गया (दे० गृ)।

गीर्णि (स्त्री०) [गृ + क्तिन्] 1 प्रशंसा 2 यश 3 खा लेना, निगल जाना।

गु (तुदा० पर० गुवति, गुत) विष्ठा उत्सर्ग करना, मलोत्सर्ग करना, पाखाना करना।

गुग्गुलः —लुः [गुज् + क्विप् = गुक् रोगः तस्मात् गुडति रक्षति — गुक् + गुड् + क (कु) ह्रस्व लकार] एक प्रकार का सुगन्धित गोंद राल गूगल।

गुच्छः [गु + क्विप् = गुत् तं श्यति — गुत् + शो + क] 1 झुंड, गुच्छा 2 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता (घास का) [illegible] — मनु० १।४८, शि० ६।५० 3 मयूरपुच्छ 4 मोतियों का हार 5 बत्तीस लड़ियों का हार [illegible] 30 लड़ियों)। सम० — अर्धः चौबीस लड़ियों का मोतियों का हार, — [illegible] गुच्छा, — कणिशः एक प्रकार का अनाज, — फलः [illegible] 1 [illegible] 2 केले का वृक्ष।

गुच्छकः [गुच्छ + कन्] दे० गुच्छ।

गुञ्ज् (भ्वा० पर० [illegible] गुञ्जति, [illegible]) गुंजार करना, गूंजना, भनभनाना [illegible] — ऋतु० १।१०, ६।२३, ६।२७, कुमार० ३।२९ — अयि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः — भामि० १।५।

गुञ्जः [गुञ्ज् + क] 1 भिनभिनाना, गूंजना 2 पुष्पस्तबक, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, तु० पुञ्ज। सम० — कृत् भौंरा।

गुञ्जनम् [गुञ्ज् + ल्युट्] मन्द-मन्द शब्द करना, भिनभिनाना, गूंजना।

गुञ्जा [गुञ्ज् + अच् — टाप्] घुंघची नाम की एक छोटी झाड़ी जिसके लाल बेर जैसे फल लगते हैं, घुंघची — [illegible] यथा [illegible] मनोरमा, गुञ्जाफलानामाकारा [illegible] — पंच० १।१६९, किं जातु गुञ्जाफलभूषणानां सुवर्णकारेण वनेचराणाम् — विक्रमांक० १।२५ 2 इस झाड़ी का फल, घुंघची जो [illegible] ग्रेन के बराबर वजन की होती है, या कृत्रिम रूप से जिसका तोल २ 5/16 ग्रेन की माप का समझा जाता है 3. गुंजार भन-भन गुंजन का शब्द 4. ढपका, ढोल — महावि० १४।२ 5 मधुशाला 6 चिंतन, मनन।

गुञ्जिका [गुञ्जा + कन् + टाप्, इत्वम्] घुंघची।

गुञ्जितम् [गुञ्ज् + क्त] भनभनाना, गुनगुनाना — स्वच्छन्दं दलदरविन्द ते मरन्दं विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः — भामि० १।१५, न गुञ्जितं तन्न जहार मनः — भट्टि० २।१९।

गुटिका [गुड् + टिक् — गुटि + कन् + टाप्] 1 गोली 2 मोती

कंकड़, कोई छोटा गोला या पिंड—श्रोक्तगुटिका ! विपत्ति—मृच्छ० ५ 3 रेशम के कीड़े का कोया 4 मोती—स्थिति हारगुटिकाविशदं हिमाम्भ रघु० ५।७० । सम०—अञ्जनम् एक प्रकार का सुर्मा ।

गुटी [गुटि+ङीप्] दे० 'गुटिका' ।

गुड [गुड्+क] 1 शीरा, राब, ईख के रस से तैयार किया हुआ गुड—गुडधाना—सिद्धा०, गुडौदन याज्ञ० १।३०३, गुडद्वितीयां हरीतकीं भक्षयेत् सुश्रु० 2. गेंद, पिंड 3 खेलने की गेंद 4 मुंहभर, ग्रास 5. हाथी का जिरहबख्तर, कवच । सम०—आसवम् गुड का शरबत,—उदकः गुड का शर्बत,—ओदनम् गुड डाल कर उबाले हुए मीठे चावल,—तृणम्,—दारु,—म (नपुं०) गन्ना ईख —धेनु (स्त्री०) दूध देने वाली गाय, जो प्रतीक रूप से गुड की बना कर ब्राह्मणों को उपहार में दी जाय,—पिष्टम् गुड के लड्डू,—फल पीलू का पेड़,—शर्करा खांड,—शृङ्गम् — गुड-ब्रावली कलश,—हरीतकी गुड में रक्खी हुई हर्रें, मुरब्बे की हर्रें ।

गुडक [गुड+कन्] 1 पिण्ड, गोली 2 ग्रास 3 गुड से तैयार की हुई औषधि ।

गुडकम् [गुड+का+क] गुड से तैयार की हुई शराब ।

गुडा [गुड+टाप्] 1 कपास का पौधा 2. बटी, गोली ।

गुडाका [गुडयति सकोचयति देहेन्द्रियादीनि इति गुडः तमा-कति प्रकाशयति गुड+आ+कै+क+टाप्] 1 तन्द्रा 2 निद्रा । सम०—ईशः 1 अर्जुन का विशेषण —यच्चे देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि—भग० ११।७, (गीता में और कई स्थानों पर) 2 शिव का विशेषण ।

गुडगुडायनम् [गुडगुड इत्येवमयनं यस्य —ब० स०] खांसी आदि के कारण कण्ठ से गुडगुड की आवाज निकलना ।

गुडेर [गड्+एरक्] 1 पिण्ड, गोली 2. कौर, टुकड़ा ।

गुण् (चुरा० उभ०—गुणयति-ते गुणित) 1 गुणा करना 2 उपदेश देना 3 निमंत्रित करना ।

गुण [गुण्+अच्] 1 धर्म, स्वभाव (बुरा या अच्छा) दुर्गुण, सुगुण 2. (क) अच्छी विशेषता, विशिष्टता उत्कर्ष, श्रेष्ठता—क्वासौ ते गुणा —मा० १ रघु० ११९, २२, वाग्गुणैः तस्य को गुण —पंच० ४।१०८, (ख) गौरव 3 उपयोग, लाभ, भलाई (करण० के साथ) मुद्रा० १।१५ 4 प्रभाव परिणाम फल, गुण परिणाम 5 धागा, डोरी, रस्सी, डोर—मैखलागुणैः —कु०४।८, ५।१०, यत्र वरैवा गुणमाहितासि- मालवि० ११९ (यहाँ 'गुण' का अर्थ विशिष्टता भी है) 6. धनुष की डोरी —गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता —कु० ४।१५, २९, कनकपिङ्गतडिद्गुणसंयुतम्—रघु० ९।५४ 7. वाद्ययंत्र के तार शि० ४।५७ 8 स्नायु 9 सूची, विशेषण, धर्म—मनु० १।२२ 10 विशेषता, सब पदार्थों का धर्म या लक्षण, वैशेषिक के सात पदार्थों में से एक (गुणों की संख्या २४ है) 11 प्रकृति का अवयव या उपादान, समस्त रचित वस्तुओं के सबद्ध तीन गुणों में से कोई एक (यह है —सत्त्व, रजस् और तमस्)—गुणत्रयविभागाय कु० २।४ भग० १४।५ रघु० ३।२७ 12 बत्ती, सूत का धागा 13 इन्द्रियजन्य विषय (यह पांच हैं - रूप रस गन्ध, स्पर्श और शब्द) 14 आवृत्ति गुणा (संख्याओं के बाद समास के अन्त में लगकर प्राय 'तह' या 'गुना या बार' को प्रकट करता है) — आहारो द्विगुणः स्त्रीणां बुद्धिस्तासां चतुर्गुणा षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुणः स्मृत चाण० ७८ इसी प्रकार त्रिगुण,- शतगुणो भवति सौगुना हो जाता है 15 गौण तत्त्व आश्रित अंश (विप० मुख्य) 16 आधिक्य, बहुतायत बहुलता 17 विशेषण, वाक्य में अप्रधान शब्द 18 इ उ ऋ तथा लृ के स्थान में ए, ओ अर और अल अथवा अ, ए ओ अर् और अल स्वर का आदेश 19 (अलं० शा० में) रस का अन्तर्निहित गुण मम्मट के अनुसार ये रसस्याङ्गिनो धर्मा शौर्यादय इवात्मन उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणा काव्य० ८ (अल० शा० के प्रणेता वामन पंडित जगन्नाथ दण्डी तथा अन्य विद्वान् गुणों को शब्द और अर्थ दोनों का धर्म समझते हैं तथा प्रत्येक के दस दस प्रकार बतलाते हैं । परन्तु मम्मट केवल तीन गुण मानता है और दूसरों के विचारों की समालोचना करने के पश्चात् कहता है -माधुर्योज प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश —काव्य० ८) 20 (व्या० और मी० में, शब्द समूह का अर्थ, धर्म या गुण माना जाता है —व्या० वैयाकरण शब्दार्थ के चार प्रकार मानते हैं जाति गुण क्रिया और द्रव्य, इन अर्थों को समझाने के लिए क्रमश उदाहरण गौ, शुक्ल चल और डित्थ देते हैं 21 (राजनीतिशास्त्र में) कार्य करने का समुचित प्रक्रम सही रीति (विदेशराजनीति विषयक छ रीतियां राजाओं के द्वारा व्यवहार्य बतलाई गई है 1 सन्धि शान्ति सुलह 2 विग्रह युद्ध 3 यान चढ़ाई करना 4 स्थान या आसन अर्थात् पड़ाव 5 संश्रय अर्थात् शरणस्थल ढूंढ़ना 6 द्वैध या द्वैधीभाव अर्थात् विग्रह सानयामान द्वैधमाश्रय अमर० दे० याज्ञ० १।३४६ मनु० ७।१६० शि० २।२६ रघु० ८।२१ 22 तीन गुणों से व्युत्पन्न तीन की संख्या 23 (ज्या० में) सम्पर्क जीवा 24 ज्ञानेन्द्रिय 25 निचले दर्जे का विशिष्ट भोजन मनु० ३।२२४ २३३ 26 रसोइया 27 भीम का विशेषण 28 परित्याग उत्सर्ग । सम० —अतीत (वि०) सब प्रकार के गुणों से मुक्त गुण।

से परे —अविषयगामकम् सत्कार्य का वह प्रदेश जहाँ ... पेटी बाँधी जाती है अनुराग· दूसरों के सद्गुणों की सराहना करना कि० १।२१ अनुरोध अच्छे गुणों की अनुरूपता या उपयुक्तता अन्वित (वि०) अच्छे गुणों से युक्त श्रेष्ठ मूल्यवान अच्छा सर्वोत्तम अप वाद गुणों का तिरस्कार गुणों का अपकर्षण गुण निन्दा आकर गुणों की खान सद्गुणसंपन्न आढ्य (वि०) गुणों से समृद्ध आत्मन् (वि०) गुणी आधार गुणों का पात्र सद्गुणी गुणवान [illegible] आश्रय (वि०) गुणी श्रेष्ठ उत्कर्ष गुण की श्रेष्ठता उत्तम गुणों का स्वामित्व उत्कीर्तनम् [illegible] प्रशंसा —उत्कृष्ट (वि०) गुणों में श्रेष्ठ —कर्मन् (नपुं०) 1 अनावश्यक या गौण कार्य 2 [illegible] गौण या कर्म [illegible] अप्रधान [illegible] कर्म उदा० [illegible] [illegible] गुणकर्म है —कार (वि०) अच्छे गुणों का [illegible] [illegible]सहायक हितकर (र) 1 वह [illegible] [illegible] विशिष्ट भोजन तैयार करता है 2 भीम का विशेषण —गान गुणों का गान करना स्तुति प्रशंसा

—गृध्नु (वि०) 1 अच्छे गुणों का इच्छुक 2 अच्छे गुणों वाला —गृह्य (वि०) गुणों की सराहना करने वाला गुणों में संलग्न गुणों का प्रशंसक ननु वक्तृ [illegible] स्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः कि० २५ —ग्राहिन्, —ग्राहक —ग्राहिन् (वि०) (दूसरों के) गुणों का प्रशंसक— [illegible] १६ भामि० १।९ —ग्राम गुणों का समूह [illegible] शि० ३।११६ गणयति गुणग्रामम् [illegible] भामि० १।१०३ —ज्ञ (वि०) गुणों की सराहना करने वाला प्रशंसक [illegible] मुद्रा० ४ गुणागुणज्ञेषु गुणा भवन्ति [illegible] ८३ —त्रयम् —त्रितयम् प्रकृति के तीन गुण अर्थात् सत्त्व रजस और तमस —धर्म कुछ गुणों पर आधिपत्य करने से आनुषंगिक गुण या धर्म —निधि गुणों का भण्डार —प्रकर्ष गुणों की श्रेष्ठता बड़ा गुण —बचनम् आन्तरिक गुण का सांकेतिक चिह्न —बच- निका, —वाची शब्द —वचनम्, —वाचक विशेषण गुण बतलाने वाला शब्द सत्ता शब्द जो विशेषण की भाँति प्रयुक्त हो जैसे श्वेतोऽश्व में श्वेत शब्द —विवेचना दूसरों के गुणों की सराहना करने में विवेकबुद्धि —वृक्ष,—वृक्षक एक मस्तूल या स्तंभ जिससे नौका या जहाज बाँधा जाय —वृत्ति गौण या अप्रधान संबंध (विप० मुख्यवृत्ति) —वैशेष्यम् गुण की प्रमुखता —श्रब्द विशेषण —संख्यानम् तीन अनिवार्य गुणों की गणना, —सागर —सम्पन्न (शीलसम्पन्न सहित) —संग 1 गुणों का आधिक्य 2. सांसारिक विषयवासनाओं में आसक्ति —सम्पद् (स्त्री०) गुणों की श्रेष्ठता या समृद्धि, बड़ा गुण पूर्णता —सागर 1 गुणों का समुद्र, एक बहुत गुणी पुरुष 2 ब्रह्मा का विशेषण।

गुणक [गुण + ण्वुल्] 1 हिसाब करने वाला या हिसाब लगाने वाला 2 (गणित में) वह अंक जिससे गुणा किया जाय।

गुणनम् [गुण + ल्युट्] 1 गुणा करना 2 गणना 3 गुणों का वर्णन करना गुणों को बतलाना या गिनना [illegible] [illegible] 3 [illegible] की पुस्तक का पाठ करना अध्ययन करना [illegible] करने के लिए [illegible]

गुणनिका [गुण + क्त + कन् + टाप्] 1 अध्ययन [illegible] [illegible] 2 नाच नाटक का [illegible] 3 नाटक की प्रस्तावना 4 माला [illegible] [illegible] 5 शून्य अंकगणित में शून्य चिह्न जो [illegible] प्रकट करता है

गुणनीय (वि०) [गुण् + अनीयर्] 1 वह राशि जिसे गुणा किया जाय 2 जिसकी गिनती की जाय 3 जिसे उप- देश दिया जाय —य अध्ययन अभ्यास

गुणवत् (वि०) [गुण + मतुप्] गुणों से युक्त गुणी श्रेष्ठ।

गुणिका [गुण + ठन् + कन् + टाप्] रसौली सिल्ली सूजन।

गुणित (भू० क० कृ०) [गुण + क्त] 1 गुणा किया हुआ 2 एक स्थान पर ढेर लगाया हुआ संगृहीत 3 गिना हुआ।

गुणिन् (वि०) [गुण + इनि] 1 गुणों से युक्त गुणवाला गुणी [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] 3 [illegible] 4 गुणों का धारण करने वाला (कम० [illegible] अप्रधान) [illegible] मुख्य [illegible]

गुणीभूत (वि०) [अगुणो गुणो भवति गुण + च्वि + भू + क्त] 1 मुख्य महत्त्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित 2 गौण या अप्रधान बनाया हुआ 3 [illegible] से आवेष्टित सम० —व्यङ्ग्यम् (अलं० में) काव्य के तीन भेदों में से दूसरा मध्यम [illegible] अभिव्यक्त अर्थ की [illegible] व्यञ्जना द्वारा [illegible] अर्थ अधिक आकर्षक नहीं होता है [illegible] परिभाषा देता है [illegible] गुणीभूतव्यङ्ग्यम् वाच्यादनुत्तमे व्यङ्ग्ये २६५ काव्य का यह भेद इसके आगे आठ भागों में विभक्त किया गया है दे० सा० द० २६६ काव्य० ५।

गुण्ठ् (चुरा० उभ०—गुण्ठयति-ते, गुण्ठित) 1 परिवृत करना, घेरना, लपेटना, परिवेष्टित करना; 2 छिपाना, ढक लेना, अव - ढकना, परदा डालना छिपाना, अवगुण्ठित करना।

गुण्ठनम् [गुण्ठ्+ल्युट्] 1 छिपाना, ढकना, गोपन 2 मलना —यथा भस्मगुण्ठनम्।

गुण्ठित (वि०) [गुण्ठ्+क्त] 1 घिरा हुआ, ढका हुआ 2 चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ चूरा किया हुआ।

गुण्ड् (चुरा० उभ०—गुण्डयति, गुण्डित) 1 ढकना, छिपना पीसना, चूरा करना।

गुण्डक [गुण्ड्+अच्+कन्] 1 धूल चूर्ण 2 तेल का बर्तन 3 मन्द मधुर स्वर।

गुण्डिक [गुण्ड+ठन्] आटा, भोजन चूर्ण।

गुण्डित (वि०) [गुण्ड्+क्त] 1 चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ 2 धूल से ढका हुआ।

गुण्य (वि०) [गुण+यत्] 1 गुणों से युक्त 2 गिने जाने के योग्य 3 वर्णन किये जाने के योग्य, प्रशस्य, 4 गुणा करने के योग्य वह राशि जिसे गुणा किया जाय।

गुत्स=गुच्छ।

गुत्सक [गुत्स्+अ+कन्] 1 गट्ठर गुच्छा 2 गुलदस्ता 3. चँवर 4 पुस्तक का अनुभाग या अध्याय।

गुद् (भ्वा० आ० गोदते, गुदित) क्रीडा करना, खेलना

गुदम् [गुद्+क] गुदा —याज्ञ० ३।२१९ मनु० ५।१३६, ८।२८२। सम० —अङ्कुरः बवासीर, —आवर्तः कोष्ठबद्धता, —कीलकः बवासीर, —ओष्ठः गुदा का मुख, —कीलः, —कीलकः बवासीर - वह क्रम, मलावरोध —पाकः गुदा की सूजन (मलद्वार का पक जाना) —भ्रंशः काँच निकलना, - वर्त्मन् (नपु०) गुदा, मलद्वार, स्तम्भः कब्ज।

गुध् I (दिवा० पर० - गुध्यति, गुधित) लपेटना ढकना, आवेष्टित करना, ढाँपना, II (क्र्या० पर० गुध्नाति), क्रुद्ध होना, III (भ्वा० आ०—गोधते) क्रीडा करना, खेलना।

गुन्द्रः [गुम् इति शब्देन द्रवति असौ गुम्+द्रु+ड] एक छोटे आयताकार द्वीप का वाचक

गुन्द्रा (द्रा) स्त्री. [पु०] एक पक्षी।

गुप् I (भ्वा० पर० — गोपायति, गोपायित या गुप्त) 1 रक्षा करना, बचाना, आत्मरक्षा करना, रखवाली करना।—गोपायन्ति कुलस्त्रिय आत्मानम् - महा० कुतोपाययमयन्तं रघु० १ ५१, गुणान् गोपायन्- शिखावर्तिम् ... 2 छिपाना, ढकना —कि कलावता ... गोपायते-अमरु ७२, दे 'गुप्त'। II (भ्वा० आ० जुगुप्सते गुप् का सन्नन्त रूप) 1 घृणा समझना, कतराना, घिन करना अवधि करना, निन्दा करना (अपा० के साथ, कभी कभी कर्म० के साथ भी) पापाज्जुगुप्सते—सिद्धा०, किं त्वं मामजुगुप्सिष्ठा -भट्टि० १५।१९, याज्ञ० ३।२९६ 2 छिपाना, ढकना (इस अर्थ में—गोपते) III (दिवा० पर०—गुप्यति) घबराना, विक्षुब्ध हो जाना, IV (चुरा० उभ० गोपयति—ते) 1. चमकना 2 बोलना 3 छिपाना (कविरहस्य में प्रयुक्त निम्नांकित श्लोक धातु के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है— गोपायति क्षितिमिमां ... पापाज्जुगुप्सत उदास्मति सर्वदा, चित्तं न गोपयति ... वर्णीयकेभ्यो धीरो न गुप्यति बहुस्वपि कार्यजाते।

गुपिलः [गुप्+इलच्] 1 राजा 2. रक्षक।

गुप्त (भू० क० कृ०) [गुप्+क्त] 1 रक्षित, सुरक्षित रघु० १०।६० 2 छिपाया हुआ, ढका हुआ रहस्यमय - अम० ... 3. अदृश्य आँख से ओझल 4 संयुक्त, जब वैश्यों के नाम के साथ जुड़ने वाली वर्ण सूचक उपाधि - चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त आदि (ब्राह्मणों के नामों के साथ प्राय: देव या 'शर्मन्' क्षत्रियों के नामों के साथ 'वर्मन्' या 'पाल', वैश्यों के नामों के साथ गुप्त, 'भूति' अथवा 'दत्त' और शूद्रों के नामों के साथ दास जोड़ा जाता है मु०, शर्मा देवश्च विप्रस्य, वर्मा त्राता च भूभुजः, भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत्) - प्तम् (अव्य०) गुप्त रूप से निजी तौर पर, अपने ढंग पर ... काव्यग्रन्थों में वर्णित गुप्त स्त्रियाओं में से एक परकीया नायिका भूमि छिपाने वाली नायिका—भूतसुरतगोपना ... और वर्तमानसुरतगोपना दे० रस० - २४। सम० —कथा गुप्त या गोपनीय समाचार, रहस्य — चरः गुप्तचर, जासूस चर जासूस, छिप कर घूमने वाला (र) 1 बलराम का विशेषण 2 गुप्तचर, जासूस, —दानम् छिपा कर दिया जाने वाला दान, गुप्त उपहार, - वेशः बदला हुआ वेश।

गुप्तकः [गुप्त+कन्] संधारक, प्ररक्षक।

गुप्तिः (स्त्री०) [गुप्+क्तिन्] 1 संधारण, प्ररक्षा, —सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थम्—मनु० १।८७, ९४, ९९, याज्ञ० १।११८ 2. छिपाना, मुकाना 3 ढकना, म्यान में रखना—अविद्यानां कोशगुप्तिः —का० ११ 4. बिल, कन्दरा कूप, भूगर्भगृह 5 भूमि में किया छिद्र 6 प्ररक्षा का उपाय, दुर्ग, दुर्गप्राचीर 7 कारागार, जेल—कारागार इव गुप्तिस्थितान्यपि करोति—कि० ११।५० 8. नाव का रिसना 9. रोक, दमन।

गुफ्, गुम्फ् (तुदा० पर०—गुफति, गुम्फति, गुफित) गूंथना, गुच्छा करना, बांधना, लपेटना—भट्टि० ७।१०५ 2. (आलं०) लिखना, रचना करना।

गु (गुं) फित (भू० क० कृ०) [गु (गुं) फ्+क्त], इकट्ठा गुँथा हुआ, बाँधा हुआ, बुना हुआ।

गुम्फ [गुम्फ्+घञ्] 1 बाँधना, गूँथना गुम्फो वाणीनाम् — बालरा० १।१ 2 एक स्थान पर रखना रचना, करना, क्रम पूर्वक रखना 3 कंकण 4 गल-मुच्छ, मूँछ।

गुम्फना [गुम्फ् + युच् + टाप्] 1 एक जगह गूँथना, नत्थी करना 2 क्रम पूर्वक रखना, रचना करना 3 सुसम्बद्ध (शब्द और अर्थ का), अच्छी रचना वाक्ये शब्दार्थयोः सम्यग्रचना गुम्फना मता।

गुर् i (तुदा० आ० — गुरते गूर्ण, गूर्ण) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, ii (दिवा० आ० भू० क० कृ० गूर्ण), 1 चोट पहुँचाना, मार डालना, क्षति पहुँचाना 2 जाना।

गुरणम् [गुर्+ल्युट्] प्रयत्न, धैर्य।

गुरु (वि० — रु, र्वी) [गृ+कु उत्वम्] (म० अ० — गरीयस्, उ० अ० — गरिष्ठ) 1 भारी, वजनदार (विप० लघु०) (आल० से भी) तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे — रघु० १।३४ ३।३५ १२।१०२ ऋतु० १।७ 2 प्रशस्त बड़ा लम्बा विस्तृत 3 लंबा (काल मात्रा या लंबाई में) आरम्भगुर्वी — भर्तृ० २।६०, गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु — मेघ० ८३ 4 महत्त्वपूर्ण, आवश्यक, बड़ा — त्रिभवगुरोरपि कृत्यै — श० ४।१८ स्वार्थात्सतां गुरुतरा प्रणयिक्रियैव विक्रम० ४।१५ 5 दुःसाध्य, असह्य — कान्ताविरहगुरुणा शापेन — मेघ० १ 6 बड़ा, अत्यधिक, प्रचण्ड, तीव्र गुरु प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि — रघु० ३।१७, गुर्वपि विरहदुःखम् — श० ४।१५, भग० ६।२२ 7 श्रद्धेय आदरणीय 8 भारी, दुष्पाच्य 9 अभीष्ट, प्रिय 10 अहंकारी घमंडी, दर्पोक्त 11 (छन्द शास्त्र में) दीर्घमात्रा (या तो स्वयं दीर्घ, अथवा संयुक्त व्यंजन से पूर्व होने के कारण दीर्घ) उदा० 'ईश' में ई, तथा 'नस्कार' में न, (यह छं० में प्राय 'ग' लिखा जाता है मालती मो वेदलोकाच्छिन्नैः — आदि), — रु पिता — न केवलं तद्गुरुरेकपार्थिवः क्षितावभूदेकधनुर्धरोऽपि सः — रघु० ३।३१, ४८, ४।१, ८।२९ 2 कोई भी श्रद्धेय या आदरणीय पुरुष, वृद्ध पुरुष या संबंधी, बुजुर्ग (ब० व०) शुश्रूषस्व गुरून् — श० ४।१४, भग० २।५, भामि० २।७, १८, १९, ४९, आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया — रघु० १४।४६ 3 अध्यापक, शिक्षक गुर्वधीनो 4 विशेषतया धार्मिकगुरु, आध्यात्मिक गुरु सो गुरुर्गुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिननन्दतुः — रघु० १।५७ (पारिभाषिक रूप से गुरु वह है जो गायत्री मंत्र का उपदेश करे और शिष्य को वेदाध्यापन करे — स गुरुर्यः क्रियाः कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति — याज्ञ० १।३४) 5 स्वामी, प्रधान, अधीक्षक शासक — वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी — रघु० ५।१९ वर्ण और आश्रमों का प्रधान गुरुर्नृपाणां गुरवे निवेद्य २।६८ 6 बृहस्पति देवगुरु गुरु नेत्रसहस्रेण चोदयामास वासवः — कु० २।२९ 7 बृहस्पति नक्षत्र — गुरुकाव्यानुगां बिभ्रच्चान्द्रीमभिनभः श्रियम् शि० २।२ 8 नये सिद्धान्त का व्याख्याता 9 पुष्य नक्षत्र 10 कौरव और पांडवों के गुरु 11 मीमांसकों के एक सम्प्रदाय का नेता प्रभाकर (उसके नाम पर प्राभाकर या प्रभाकरीय कहलाता है) सम० — अर्थः शिष्य को शिक्षा देने के उपलक्ष्य में गुरुदक्षिणा — गुर्वर्थमाहर्तुमहं यतिष्ये — रघु० ५।१७ — उत्तम (वि०) अत्यन्त सम्माननीय (— मः) परमात्मा — कार पूजा उपासना — क्रम उपदेश परम्पराप्राप्त शिक्षा — जन श्रद्धेय पुरुष बड़ा संबंधी बुजुर्ग तपस्विनो गुरुजन श० १५८ भामि० १।७ — तल्प 1 अध्यापक की शय्या भार्या 2 अध्यापक की शय्या का उल्लंघन अर्थात् गुरुपत्नी के साथ अनुचित संबंध — तल्पग, — तल्पिन् गुरु-पत्नी से अनुचित संबंध रखने वाला (हिन्दूधर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा व्यक्ति महापातकियों में गिना जाता है अभिपातकी गु० मनु० ११।१०३) 2 जो अपनी सौतेली माता के साथ व्यभिचार करता है — दक्षिणा आध्यात्मिक गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा — रघु० ५।१, — दैवत पुष्य नक्षत्र — पाक (वि०) पचने में कठिन — भम् 1 पुष्यनक्षत्र 2 = गुरु, — मर्दल एक प्रकार की ढोलक या मृदंग — लाघवम् तुलनात्मक — सापेक्ष महत्त्व या मूल्य — वासिन्, — वासिन् (पुं०) गुरु के घर रह कर पढ़ने वाला ब्रह्मचारी, — वासर बृहस्पति वार, — वृत्ति (स्त्री०) ब्रह्मचारी का अपने गुरु के प्रति आचरण।

गुरुक (वि०) (स्त्री० — की) [गुरु + कन्] 1 जरा भारी 2 (छन्द० में) दीर्घ।

गुर्जर (पुं) (ब० व०) [गुरु+जॄ+णिच् , अच्-पृषो०] 1 गुजरात का प्रदेश या जिला तेषां मार्गे परिचयवशादर्जितं गुर्जराणा यः संतापं शिथिलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य — विक्रमांक० १८।९७।

गुर्विणी, गुर्वी [गुरु + इनि + ङीप् गुरु + ङीप्] गर्भवती स्त्री — उदा० गुर्विणी मानुगच्छन्ति न स्पृशन्ति रजस्वलाम्।

गुल [= गुड, डस्य लः] गुड़ दे० गुड़।

गुलुञ्छ, गुलुञ्छ [— गुच्छ पृषो० गुत्स विपन् इस्व च गुत्स् + उञ्छ् — अच्] गुच्छा, गुच्छ दे० गुच्छ।

गुल्फ [गल् + फक् अकारस्य उकार] टखना — आगुल्फकीर्णापणमार्गपुष्पं कु० ७।५५ गुल्फावलम्बिना का० १०।

गुल्म, ल्मम् [गुड्+मक्, डस्य ल:] 1 झुंड का गुच्छ झुरमुट बन झाड़ी मनु० १।४८, ७।१९२, १२।५८ याज्ञ० २।२२९ 2 सिपाहियों का दल सैन्य दल जिसमें ४५ पदाति २७ अश्वारोही ९ रथारोही और ९ गजारोही होते हैं 3 दुर्ग 4 तिल्ली 5 तिल्ली का बढ़ जाना 6 गाँव की पुलिस चौकी 7 घाट।

गुल्मिन् (वि०) (स्त्री० –नी) [गुल्म+इनि] झरमुट या झाड़झंखाड़ में उगनेवाला, बढ़ी हुई तिल्ली वाला, तिल्ली के रोग से ग्रस्त।

गुल्मी [गुल्म+अच्+ङीष्] तंबू।

गु (गू) वाक [गु+आक] सुपारी का पेड़।

गुह् (भ्वा० उभ० गूहति-ते) ढकना, छिपाना [illegible] डालना, गुप्त रखना, गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटी करोति भर्तृ० २।७३, गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि मनु० ७।१०५ रघु० १०।८४ भट्टि० [illegible] उप–, आलिंगन करना [illegible] रघु० [illegible] १८।४७ भट्टि० [illegible] शि० [illegible] नि–, छिपाना, गुप्त रखना।

गुह [गुह्+क] 1 कार्तिकेय का विशेषण, गुह इवाप्रतिहतशक्ति का० ८ कु० ५।१४ 2 घोड़ा 3 निषाद या चांडाल का नाम जो शृंगवेर का राजा तथा भगवान् राम का मित्र था।

गुहा [गुह्+टाप्] 1 गुफा, कंदरा, छिपने का स्थान —गुहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम् रघु० [illegible] [illegible] निहितं गुहायाम् महा० 2 छिपाना, ढकना 3 गड्ढा, बिल 4 हृदय। सम० –आहित (वि०) हृदय में रक्खा हुआ, –चरम् ब्रह्म, –मुख (वि०) गुफा जैसे मुँह वाला, चौड़े मुँह का, –शय 1 चूहा 2 शेर 3 परमात्मा।

गुहिलम् [गुह्+इलच्] बन, जंगल।

गुहेर [गुह्+एरक्] 1 अभिभावक, रक्षक 2 लुहार।

गुह्य (सं० कृ०) [गुह्+क्यप्] 1 छिपाने के योग्य, गोपनीय, गुप्त रखने के योग्य, निजी, गुह्यं च गूहति —भर्तृ० २।७३ 2 गुप्त, एकान्त, रहस्य [illegible] (सर्वनिगूढ) 3 रहस्यपूर्ण [illegible] –ह्यः 1 पाखंड 2 कछुआ, –ह्यम् 1 भेद, रहस्य, गोपनीयं गुह्यानां [illegible] भग० [illegible] मनु० [illegible] 2 गुप्त इन्द्रिय, पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय। सम० [illegible] –दीपक जुगनूं, –निष्यन्द मूत्र, –भाषितम् 1 गुप्तमंत्रणा 2 भेद, रहस्य की बात, –मय [illegible] का विशेषण।

गुह्यक [गुह्य+कन्] [illegible] यक्ष जैसा एक अर्धदेवता की श्रेणी जो कुबेर के सेवक तथा उसके कोष के संरक्षक हैं, गुह्यकस्तं ययाचे मेघ० [illegible] मनु० १२।४७।

गू (स्त्री०) [गम्+कू] विष्ठा [illegible] 1 कूड़ा करकट 2 मल विष्ठा।

गूढ (भू० क० कृ०) [गुह्+क्त] 1 छिपा हुआ, गुप्त, गुप्त रक्खा हुआ 2 ढका हुआ। सम० –अङ्गः कछुवा, –आत्मन् [illegible] समास होकर गूढात्मन् बनता है [illegible] इस प्रकार समाधान किया है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उत्पन्न [illegible] [illegible] के पुत्रों में से [illegible] पुत्र है जिसका पति परदेश गया हुआ है तथा वास्तविक पिता अज्ञात है, यह [illegible] [illegible] –नीड खञ्जन पक्षी, –पथ 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] –पाद, –पाद् सांप, –पुरुष [illegible] [illegible] –पुष्पक बकुल वृक्ष, –मार्गः [illegible] –मैथुन कौवा, –वचस् [illegible] –साक्षिन् [illegible] [illegible] [illegible]।

गूथ, –थम् [illegible] विष्ठा।

गूथ (वि०) [गु+थक्] [illegible]।

गूरणम् [illegible]।

गूवका [illegible] [illegible] [illegible]।

गृ (भ्वा० पर० गरति) छिड़कना, तर करना, गीला करना।

गृञ्ज, गृञ्ज (भ्वा० पर० गृञ्जति) [illegible] [illegible] दहाड़ना, गर्जना आदि।

गृञ्जन [गृञ्ज्+ल्युट्] 1 [illegible] 2 [illegible] (गाजर की किस्म की एक [illegible] विषैले [illegible]) नम्म विशेष [illegible] [illegible]।

गृण्ठ [illegible] [illegible] की एक जाति।

गृध (दिवा० पर० गृध्यति, गृद्ध) लालायित, इच्छुक होना, लालसा करना, उत्सुक होना, अभिलाषा होना।

गृधु (वि०) [गृध्+कु] कामातुर, लम्पट, –धुः कामदेव।

गृध्नु (वि०) [गृध्+क्नु] 1 लालची, लालसा –आगृध्नुरादरे मा [illegible] रघु० १।२१ 2 उत्सुक, इच्छुक।

गृध्यम्, –ध्या [गृध्+क्यप्] इच्छा, लोभ।

गृध्र (वि०) [गृध्+क्रन्] 1 लालची, लालसावाला, –ध्रः गिद्ध, मांसादन्य [illegible] गृध्रः [illegible] [illegible] रघु० १२।५० ५१। सम० –कूट राजगृह के निकट विद्यमान एक पहाड़, –पति, –राज गिद्धों का राजा जटायु, –कर्मवासीममहीति [illegible] [illegible] उत्तर० २।२५, –वाज,–वाजित (वि०) गिद्ध के परों से युक्त (बाण आदि)।

गृष्टिः (स्त्री०) [गृह्णाति सकृत् गर्भम्, ग्रह्+क्तिच्

पृषो० तारा०] 1 एक बार ब्याई हुई गौ, पहलौठी गाय (सकृत्प्रसूता गौ) —आपीनभारोद्वहनप्रयत्नाद्गृष्टि —रघु० २।१८, स्त्री नामवत्सककृतं पठन्ती स्तनवत्सा इव गृष्टिः सुसूशब्दं करोति मृच्छ० ३ 2 (दूसरे पशुओं के नामों के साथ जुड़कर) किसी भी पशु का (मादा) बच्चा, बालतृणगृष्टि : हथिनी का (मादा) बच्चा।

गृहम् [ग्रह् + क] 1 घर, निवास, आवास भवन —न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते —पंच० ४।८१, पश्य वानर मूर्खेण सुगृही निर्गृहीकृता० पंच० १।३९० 2 पत्नी (उपर्युक्त उद्धरण कई बार निदर्शन के रूप में प्रयुक्त होता है) 3 गृहस्थ-जीवन 4 मेषादि राशि 5 नाम या अभिधान —हाः (पु० ब० व०) 1 घर निवास —इमे नो गृहाः —मुद्रा० १, स्फटिक...गृहाः ...नै० २।३६ ...गृहान्... मेघ० ३५ 2 पत्नी 3 घर के निवासी, कुटुंब। सम० **—अक्षः** झरोखा, मोखा, गोल या आयताकार खिड़की, **—अधिपः**, **—ईशः**, **—ईश्वरः** 1 गृहस्थ 2 किसी राशि का स्वामी, **—अयनिकः** गृहस्थ, **—अर्थः** घरेलू मामला, घरेलू बातें —गृहार्थोऽग्निपरिष्क्रिया —मनु० २।६७, **—अम्लम्** एक प्रकार की कांजी, **—अवग्रहणी** देहली, **—अश्मन्** (पु०) सिल, (एक आयताकार पत्थर जिस पर मसाले पीसे जाते हैं), **—आरामः** गृहवाटिका, **—आश्रमः** गृहस्थ का आश्रम, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की दूसरी अवस्था दे० आश्रम, **—उत्पातः** कोई घरेलू बाधा, **—उपकरणम्** घरेलू बरतन, गृहस्थ के उपयोग की सामग्री, **—कच्छपः** —गृहाश्मन् दे०, **—कपोतः**, **—तकः** पालतू कबूतर, **—कर्मन्** 1 घरेलू मामला 2 घर की इमारत, **—कर्मन्** (न०) गृहस्थ के लिए विहित कर्म, **—दासः** चाकर, घरेलू नौकर —तन्मुखस्य गुहयोः ...हरिणेक्षणानां ...नामन्य... गृहकर्मदासाः —भर्तृ० १।१, **—कलहः** घरेलू झगड़ा, भाई भाई की लड़ाई, **—कारकः** घर बनाने वाला, राज —याज्ञ० ३।१४६, **—कुक्कुटः** पालतू मुर्गा, **—कार्यम्** घर का कामकाज —मनु० ५।१५०, **—चुल्ली** साथ लगे हुए दो कमरों का घर जिनमें से एक का मुख पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर हो, **—छिद्रम्** 1 घर की गुप्त बातें या कमजोरियाँ 2 कौटुम्बिक अनबन, **—जः**, **—जातः** घर में ही पैदा हुआ नौकर, **—जालिका** धोखा, कपटवेष, **—जानिन्** ('गृहेजानिन्' भी) 'घर में ही शौर्यमारता', अनुभवशून्य, जड़, मूर्ख, **—तटी** घर के सामने बना चबूतरा, **—दासः** घरेलू सेवक, **—देवता** घर की अधिष्ठात्री देवता, (ब० व०) कुल देवताओं का समूह, **—देहली** घर की दहलीज —यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनाम् मृच्छ० १।९, **—नम**नम् हवा, **—नाशनः** जंगली कबूतर, **—नीडः** चिड़िया, गौरैया, **—पतिः** 1 गृहस्थ ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् विवाहित जीवन बिताने वाला घर का मालिक 2 यजमान 3 गृहस्थ के उपयुक्त कर्म अर्थात् आतिथ्य आदि, **—पालः** 1 घर का सरंक्षक 2 घर का कुत्ता, **—पोतकः** घर की जगह, वह भूभाग जिस पर घर की इमारत बनी हुई है और जो घर को घेरती है, **—प्रवेशः** नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना, **—बभ्रुः** पालतू नेवला, **—बलिः** वैश्वदेव यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, अवशिष्ट अन्न सब जीवजन्तुओं को वितरण करना, मनु० ३।२६५, **—भुज्** (पु०) 1 कौवा 2 चिड़िया —नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः —मेघ० २३, **—देवता** घर का देवता जिसे आहुति दी जाती है, **—भङ्गः** 1 घर से निर्वासित व्यक्ति, प्रवासी 2 घर का नाश करना 3 घर में सेंध लगाना 4 असफलता किसी दुकान या घर की बर्बादी या नाश, **—भूमिः** (स्त्री०) वास्तु स्थान, वह जमीन जिस पर कोई मकान बना हो, **—भेदिन्** (वि०) 1 घर के कामों में ताक झांक करने वाला 2 घर में कलह कराने वाला, **—मणिः** दीपक, **—माचिका** चमगादड़, **—मृगः** कुत्ता, **—मेधः** 1 गृहस्थ 2 पंचयज्ञ, **—मेधिन्** (पु०) गृहस्थ —गृहैर्दारैर्मेधन्ते सङ्गच्छन्ते —मल्लि०) प्रजायै गृहमेधिनाम् —रघु० १।७ दे० गृहपति, **—यन्त्रम्** उत्सव आदि के अवसर पर झंडा फहराने का डंडा या कोई और उपकरण —गृहयन्त्रपताकाश्रीरपौरादरनिर्मिता —कु० ६।४१, **—वाटिका**, **—वाटी** घर से मिली हुई बगीची, **—वित्तः** घर का स्वामी, **—शुकः** पालतू तोता, आमोद के लिए पाला हुआ तोता —अमरु १३, **—संवेशकः** व्यावसायिक भवननिर्माता, स्थपति, **—स्थः** गृही, दूसरे आश्रम में प्रवेश करके रहने वाला —सकृत्... गृहस्थता —उत्तर० ११, दे० 'गृहपति' और मनु० ३।३८, ६।९०, **—आश्रमः** गृहस्थ का जीवन दे० गृहाश्रम, **—धर्मः** गृहस्थ के कर्तव्य।

गृहयाय्य [गृह् + णिच् + आय्य] 1 गृहस्थ, घरबार वाला (तारा० के अनुसार शब्दकल्पद्रुम में दिया गया 'गृहयाय्य' रूप शुद्ध नहीं है)।

गृहयालु (वि०) [गृह् + णिच् + आलु] पकड़ने वाला ग्रहण करने वाला।

गृहिणी [गृह + इनि + ङीप्] गृहस्वामिनी, पत्नी, गृहपत्नी (घर का कार्यभार संभालने वाली स्त्री) —न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते पंच० ४।८१। सम० **—पदम्** गृहस्वामिनी का पद या प्रतिष्ठा —यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः श० ४।१७, स्थिता गृहिणीपदे १८।

गृहिन् (वि०) [गृह+इनि] घर का स्वामी, गृहस्थ, ब्रह्मचारी—पीडयन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः—श० ४।५, उत्तर० २।२२ भा० २।२४।

गृहीत (भू० क० कृ०) [ग्रह्+क्त] 1 लिया हुआ, पकड़ा हुआ—केशेषु गृहीतः 2 स्वीकृत 3 प्राप्त, अवाप्त 4 परिज्ञित, पहना हुआ 5 लूटा हुआ 6 अधिगत, ज्ञात दे० ग्रह्। सम०—गर्भा गर्भवती स्त्री —दिश् (वि०) 1 भागा हुआ, भगोड़ा, तितरबितर हुआ 2 तिरोभूत, लापता।

गृहीतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गृहीत+इनि] जिसने कोई बात समझ ली है (अधि० के साथ) गृहीती षट्स्वङ्गेषु—दश० १२०।

गृह्य (वि०) [ग्रह्+क्यप्] 1 आकृष्ट या प्रसन्न होने के योग्य जैसा कि गुणगृह्य 2 घरेलू 3 जो अपना स्वामी न हो, परतन्त्र 4 पालतू, घर में सधाया हुआ 5 बाहर स्थित—ग्रामगृह्या सेना (गाँव के बाहर स्थित सेना)—ह्यः 1 घर में रहने वाला 2 पालतू जानवर, ह्यम् गुदा। सम०—अग्निः अग्निहोत्र की आग जिसका स्थापित रखना प्रत्येक ब्राह्मण का विहित कर्म है।

गृह्या [गृह्य+टाप्] नगर के निकट बसा हुआ गाँव।

गॄ 1 (क्रया० पर० गृणाति गूर्ण) 1 शब्द करना, पुकारना, आवाहन करना 2 घोषणा करना, बोलना, उच्चारण करना, प्रकाशन करना—रघु० १०।१३ 3 बयान करना, प्रदर्शित करना 4 प्रशंसा करना, स्तुति करना—केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति—भग० ११।२१, भट्टि० ८।७७, अनु—प्रोत्साहित करना—भट्टि० ८।७७। (तुदा० पर० गिरति या गिलति) 1 निगलना, हड़प करना, खा जाना 2 निकालना, उड़ेलना, फेंक देना, मुख से फेंकना, अव— (आ०) खा जाना, निगलना—नवार्यात्मानमेव [illegible] भट्टि० ८।३० उद्—1 फेंकना, थूक देना, वमन करना—उद्गिरता यद् गरलं फणिनः पुष्णासि परिमलोद्गारैः—भामि० १।११ शि० १४।१ 2 उत्सर्जन करना, निकाल बाहर करना, उगल देना—कु० १।३३, रघु० १४।७३ वेणी० ५।१४ पञ्च० ५।६३ नि—निगलना, खा जाना—भामि० १।३८ सम्— 1 निगलना 2 प्रतिज्ञा करना, वचन करना (आ०) समुद्— 1 बाहर फेंक देना, निकाल देना 2 जोर से चिल्लाना। ii (चुरा० आ० गारयते) 1 ज्ञात करना, वर्णन करना 2 अध्यापन करना।

गेंडु (डु) कः [गच्छति गो [illegible] गेड्+कन्, गेडुक पृषो०] गेंद, कन्दुक (गेंदा भी)।

गेय (वि०) [गै+यत्] 1 गायक, गाने वाला—गेयो माणवकः साम्नाम्—पा० ३।४।६८, सिद्धा० 2 गाये जाने के योग्य, —यम् 1 गीत, गायन, गाने की कला—गेये केन विनीतौ वाम्—रघु० १५।६९, मेघ० ८६, अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्येव विचित्रता—शि० २।७२।

गेव् (भ्वा० आ० गेवते गेव्य) ढूँढना, खोजना, तलाश करना—तु० गवेष।

गेहम् [गो गणेशो गन्धर्वो वा ईह ईप्सितो यत्र तारा०] घर, आवास—सा नारी विधवा जाता गेहे रोदिति तत्पतिः (सुभा०, वि० इस शब्द का अधि० का रूप अलुक् त० स० बनाने के लिए कई शब्दों के साथ प्रयोग होता है, उदा० गेहेक्ष्वेडिन् (वि०) घर पर गोलमाल करने वाला अर्थात् कायर भीरु, गेहेदाहिन् (वि०) घर पर ही तेज अर्थात् कायर, गेहेनर्दिन् (वि०) घर पर ही गरजने वाला अर्थात् कायर, घर का मुर्गा या डरपोक, गेहेमेहिन् (वि०) घर में ही मूतने वाला अर्थात् आलसी, गेहेव्याड़ डींग मारने वाला, डरपोक, शेखीबाज, गेहेशूर अपने घोंसले में कुत्ता भी शेर होता है, चहारदीवारी के भीतर ही बहादुर, डींग मारने वाला कायर।

गेहिन् (वि०, स्त्री०—नी) [गेह+इनि] गृहिन्।

गेहिनी [गेहिन्+ङीप्] पत्नी, घर की स्वामिनी—धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी—शा० १० [illegible] सत्यं सुहृद् [illegible] कामं मे [illegible]—सुभा० ७७।

गै (भ्वा० पर० गायति गीत) 1 गाना, गीत गाना—[illegible] मृच्छ० ३, [illegible] गायन्ति—श० १, मनु० ४।६४ ९।४२ 2 गाने के स्वर में बोलना या पाठ करना 3 वर्णन करना, कथन करना (छन्दोमयी भाषा में) [illegible] भा० १ 4 गान के स्वर में उच्चारण करना, प्रशंसा करना, बखान करना—चारणद्वन्द्वगीतः [illegible] कु० [illegible] अनु—गाने में अनुकरण करना—अनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम्—गीत० १, कि० ३।६० अव— निन्दा करना, कलंकित करना, उद्— ऊँचे स्वर में गाना, ऊँचे स्वर में गाना—उद्गास्यताम् [illegible] कु० १।८ गेयमुद्गातुकामा मेघ० ८६, उद्गीयमानं वनदेवताभिः—रघु० २।१२ उप— गाना, निकट गाना—[illegible] कि० १४।१७ परि— [illegible] करना, वर्णन करना, वि— 1 उपहास करना, भिड़कना, कलंकित करना—[illegible] नै० ९।३७ 2 विषम स्वर (अधम स्वर) में गाना।

गैर (वि०) (स्त्री०—री) [गिरि+अण्] पहाड़ से आया हुआ, पहाड़ी, पहाड़ पर उत्पन्न।

गैरिक (वि०) (स्त्री०—की) [गिरि + ठञ्] पहाड़ पर उत्पन्न,—**कः**—**कम्** गेरू, —**कम्** सोना।
गैरेयम् [गिरि + ढक्] शिलाजीत।
गो (पुं०, स्त्री०) कर्तृ० गौः [गच्छत्यनेन गम् करणे डो तारा०] 1 मवेशी गाय (ब० व०) 2 गौ से उपलब्ध वस्तु—दूध, मांस चमड़ा आदि 3 तारे 4 आकाश 5 इन्द्र का वज्र 6 प्रकाश की किरण 7 हीरा 8 स्वर्ग 9 बाण, (स्त्री०) 1 गाय [illegible] रघु० १।३ [illegible] मृच्छ० १०।६० 2 पृथ्वी दुदोह गां स यज्ञाय रघु० १।२६ [illegible] रघु० ५।२६ ११।३६ भाग० १५।१३, मेघ० ३० 3 वाणी शब्द [illegible] गां निशाम्य रघु० ५।१२ २।५९ कि० ६।४० 4 वाणी की देवता—सरस्वती 5 माता 6 दिशा 7 जल (ब० व०), **पुं०** 1 सांड बैल —[illegible] शुभ स्वर्यामि गौरिति [illegible] १०, मनु० ४।७२ मृ० [illegible] 2 शरीर के [illegible] रोंगटे 3 इन्द्रिय 4 वृषराशि 5 सूर्य 6 (गणित में) नौ की संख्या 7 चन्द्रमा 8 धाता। सम०—**कण्टकः**, —**कम्** बैलों द्वारा खुदा हुआ कच्चा जाने के अयोग्य स्थान या सड़क 2 गाय के खुर 3 गाय के खुर का नाक, —**कर्णः** 1 गाय का कान 2 खच्चर 3 [illegible] 4 बालिश्त (अंगूठे के सिरे से कनिष्ठा की अनामिका तक की दूरी) 5 दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान का नाम शिव का प्रियस्थान [illegible] ८।३३ 6 एक प्रकार का बाण —**किराटा** —**किराटिका** मैना पक्षी, —**कीलः** 1 हल 2 मूसल —**कुलम्** 1 गौओं का समूह [illegible] दधुर्य गोवर्धनम्—गीत० ४ गोकुलस्य तृषार्तस्य—महा० 2 गोशाला 3 गोकुल एक गांव (जहाँ कृष्ण का लालन पोषण हुआ) —**कुशिक** (वि०) 1 दलदल में फंसी गाय का उद्धार करने में [illegible] 2 भैंगा [illegible] —**कृतम्** गाय का गोबर —**क्षीरम्** गाय का दूध —[illegible] —**गृष्टिः** [illegible] गाय —**गोष्ठी** —**गोचरम्** [illegible] —**गोष्ठम्** गोशाला पशुशाला —**ग्रन्थिः** 1 [illegible] 2 गोठ [illegible] —[illegible] पशुओं को पकड़ना —**ग्रासः** प्रायश्चित्त के रूप में गाय को घास का कौर देना या भोजन का वह भाग जो गाय को देने के लिए अलग कर दिया जाय —**घृतम्** 1 वारिश का पानी 2 गाय का घी —**चन्दनम्** एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी —**चर** (वि०) 1 चरागाह 2 बार बार आने वाला, [illegible] लेने वाला बारबार घूमने वाला पितृवनगोचर कु० ५।७७ 3 क्षेत्र शक्ति या परास के अन्तर्गत—अवाङ्मनसगोचरम् रघु० १०।१५, इसी प्रकार बुद्धि, दृष्टि, श्रवण आदि 4 पृथ्वी पर घूमने वाला (रः) 1 पशुओं का क्षेत्र चरागाह [illegible] कि० ४।१८ 2 मण्डल विभाग प्रान्त क्षेत्र 3 इन्द्रियों का परास इन्द्रियों का विषय [illegible] (जहाँ तक कानों से सुना जा सके नहीं ठहरा) नयनगोचर या दिखाई देना 4 क्षेत्र परास पहुँच [illegible] भर्तृ० २।१६ 5 (ज्यो०) चक्कर द्वारा शक्ति प्रभाव नियन्त्रण के [illegible] —पञ्च० १।१४६ [illegible] मा० १ 6 क्षितिज —**चर्मन्** (नपुं०) 1 गोचम 2 विशेष माप (भूमि नापने का) वशिष्ठ के अनुसार परिभाषा [illegible] दशहस्तेन वंशेन दशवंशान् समन्ततः पञ्च चाभ्यधिकान् दद्यादेतद् गोचर्म चोच्यते —**जम्** शिव का विशेषण —**जल** गोमूत्र —[illegible] बूढ़ा बैल या सांड —**जलम्** गोमूत्र —**तीर्थम्** [illegible] बैल या सांड —**तीर्थम्** [illegible] —**त्रम्** 1 गोशाला 2 पशुशाला 3 परिवार वंश कुल [illegible] मिट्टी० [illegible] आदि मन० [illegible] 4 [illegible] नै० १।२० [illegible] महताकात्र [illegible] मेघ० ४६ 5 समुच्चय 6 [illegible] 7 वन 8 खेत 9 सड़क 10 [illegible] 11 छतरी छाता 12 भविष्य का ज्ञान 13 जाति श्रेणी वर्ग (—त्रः) पहाड़ —**कर** [illegible] —**ज** (वि०) समान [illegible] उत्पन्न एक ही जाति का सम्बन्धी [illegible] —[illegible] —**भिद्** (पुं०) इन्द्र का विशेषण —[illegible] रघु० ३।४३ ६।७३ कु० ७।४८ —**स्खलनम्** —**स्खलितम्** नाम लेकर पुकारना गलत नाम से पुकारना [illegible] —कु० ४।८ —[illegible] 1 गौओं का समूह 2 पहाड़ —**दावरी** [illegible] या गोदावरी नामक नदी —**दानम्** 1 बाल काटने की दक्षिणा [illegible] —रघु० ३।३३ 2 केशान्त संस्कार (द० मनु० की व्याख्या) [illegible] —[illegible] (रामा० में भिन्न प्रकार की व्याख्या है) —**दारणम्** 1 हल 2 फावड़ा कुदाल, —**दावरी** दक्षिण देश की एक नदी का नाम,—**दुह्** (पुं०) दूध ग्वाला —**दोहः** 1 गौ का दूध निकालना 2 गाय का दूध 3 गौओं को दोहने का समय, —**दोहनम्** 1 गौओं को दोहने का समय 2 गौओं को दोहना —**दोहनी** वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाय —**ध्न**

गोमूत्र,—कुलम् गौओं का समूह, मवेशी,—कूटः पहाड़—कृतम्,—धूमः 1. गेहूँ 2. संतरा,—धूलिः पृथ्वी की धूल, सन्ध्या का समय (सन्ध्या समय ही गौएँ जंगलों से घर लौटती हैं, उनके चलने से धूल के बादल एकत्र हो जाते हैं, इसी लिए इस काल का नाम 'गोधूलि' पड़ा),—धेनुः दूध देने वाली गाय जिसके नीचे बछड़ा हो,—ध्रः पहाड़,—नन्दी मादा सारस (पक्षी),—नर्दः 1. सारस पक्षी 2. एक देश का नाम,—नर्दीयः महाभाष्य के कर्ता पतंजलि मुनि,—नसः,—नासः 1 एक प्रकार का साँप 2. एक प्रकार का रत्न,—नाथः 1. साँड़ 2. भूमिधर 3. ग्वाला 4. गौओं का स्वामी,—नायः ग्वाला,—निष्यन्दः गोमूत्र,—पः ग्वाला (एक वर्णसंकर जाति)—गोपवेशस्य विष्णोः—मेघ० १५ 2. गोशाला का प्रधान 3. गाँव का अधीक्षक 4 राजा 5. प्ररक्षक, अभिभावक, (पी) 1. ग्वाले की पत्नी—गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली—गीत० ५, °अध्यक्षः, °इन्द्रः °ईशः ग्वालों का मुखिया, कृष्ण का विशेषण, °दलः सुपारी का पेड़ °वधूः (स्त्री०) ग्वाले की पत्नी °वधूटी गोपी, ग्वाले की तरुण पत्नी—गोपवधूटीदुकूलचौराय—माधा० १,—पतिः 1 गौओं का स्वामी 2. साँड 3. नेता, मुखिया 4. सूर्य 5. इन्द्र 6. कृष्ण का नाम 7 शिव का नाम 8. वरुण का नाम 9. राजा,—पशुः यज्ञीय गाय,—पानसी छप्पर को सम्भालने के लिए उसके नीचे लगी टेढ़ी लकड़ी, बल्ली,—पालः 1 ग्वाला 2. राजा 3. कृष्ण का विशेषण °धानी गोशाला, गोचर,—पालकः 1. ग्वाला 2 शिव का विशेषण,—पालिका,—पाली ग्वाले की पत्नी, गोपी,—पीतः खंजन पक्षी का एक प्रकार,—पुच्छम् गाय की पूँछ (च्छः) 1. एक प्रकार का बन्दर 2 दो, चार या चौंतीस लड़ी का एक हार,—पुटिकम् शिव के बैल (नान्दिया) का सिर,—पुत्रः जवान बछड़ा,—पुरम् 1. नगरद्वार 2. मुख्य दरवाजा—शि० ५।५ 3. मन्दिर का बना हुआ तोरणद्वार,—पुरीषम् गाय का गोबर,—प्रकाण्डम् बढ़िया गाय का साँड़,—प्रचारः गोचरभूमि, पशुओं का चरागाह—याज्ञ० २।१६६,—प्रवेशः गौओं का जंगल से लौटने का समय, सायंकाल या संध्या समय, भृत् (पु०) पहाड़,—भक्षित (वि०) चंचल, घुमक्कड़ी, मंडलम् 1 भूगोल 2. गौओं का समूह,—मतल्लिका नै० सब्भूमि,—मतल्लिका सीधी गाय, श्रेष्ठ गौ,—मतः ग्वाला,—मांसम् गौ का मांस,—मायुः 1. एक प्रकार का मेढक 2 गीदड़—अनुपकुर्वन् चलन्नपि न हि गोमायुरुतानि केसरी ।—शि० १६।२५ 3. गाय का पित्ताशय 4. एक गन्धर्व का नाम,—मुख,—मुखम् एक प्रकार का वाद्य ।—भग० १।१३ (खः) 1. मगरमच्छ, घड़ियाल 2. एक तरह की (चोर के द्वारा लगाई गई) सेंध,—(खम्) टेढ़ामेढ़ा बना हुआ मकान, (—खम्,—खी) जपमाला रखने की गायमुख के आकार की थैली जिसमें हाथ डाल कर माला के दानों को गिनते रहते हैं,—मूढ (वि०) बैल की भाँति बुद्धू,—मूत्रम् गाय का मूत्र,—मृगः नीलगाय, गवय, एक प्रकार का बैल,—मेदः 'गोमेद' नाम का एक रत्न (यह रत्न हिमालय पहाड़ और सिन्धु नदी से प्राप्य है तथा श्वेत, पीला, लाल और गहरे नीले रंग का होता है), यानम् बैलगाड़ी, रक्षः 1 ग्वाला 2 गोपाल 3 सन्तरा, रङ्कुः 1 मुर्गाबी 2. बन्दी 3 नग्नपुरुष, दिगम्बर साधु, रसः 1 गाय का दूध 2 दही 3 छाछ, °जम् मट्ठा—,राजः बढ़िया साँड,—रुतम् दो कोस के बराबर दूरी का माप,—राटिका, रटी मैना पक्षी रोचना एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गोमूत्र, गोपित्त से मानी जाती है अथवा जो गाय के सिर से उपलब्ध होता है, लवणम् नमक की मात्रा जो गाय को दी जाती है—लाङ्गूलः लंगूर, एक तरह का बन्दर—रघु० १।३०,—वत्सः बछड़ा,—वत्सः बछड़ा, °आदिन् (पु०) भेड़िया, वर्धनः मथुरा के निकट वृन्दावन प्रदेश में स्थित एक विख्यात पहाड़ °धरः, °धारिन् (पु०) कृष्ण का विशेषण, वशा बाँझ गाय, वाटम्,—वाटः गोशाला, विदः 1 गोपालक, गोशाला का अध्यक्ष 2 कृष्ण 3. बृहस्पति,—विष् (स्त्री०), विष्ठा गोबर, विसर्गः भोर, तड़के (जब गौएँ जंगल में चरने के लिए खोली जाती हैं), वीर्यम् दूध का मूल्य,—वृन्दम् गौओं का लहड़ा,—वृन्दारक बढ़िया साँड या गाय,—वृषः बढ़िया साँड, °ध्वजः शिव का विशेषण, व्रजः 1 गोशाला 2. गौओं का समूह, गोचर भूमि, शकृत् (नपु०) गोबर,—शालम्,—ला गौओं को रखने का स्थान, शृङ्गम् गौओं की सींग जोड़ी, ष्ठः गौओं का स्थान, गोठ,—संख्यः ग्वाला,—सदृक्षः नीलगाय, गवय की एक जाति,—सर्गः भोर, तड़के (वह समय जब गौएँ प्रातःकाल चरने के लिए खोल दी जाती हैं), स्तनिका गाय बाँधने की रस्सी, स्तनः 1. गाय का ऐन, औड़ी 2 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता आदि 3 चार लड़ की मोतियों की माला, स्तना, नी अंगूरों का गुच्छा, स्थानम् गोशाला,—स्वामिन् (पु०) गौओं का स्वामी 2 धार्मिक साधु 3 महात्माओं के साथ लगने वाली सम्मानसूचक पदवी (उदा० गोपदेव गोस्वामिन्),—हत्या गोवध,—हनम् (हृन्नम्) गोबर, हित (वि०) गौओं की रक्षा करने वाला ।

गोकुम [?] तरबूज ।

गोणी [गुण्+घञ्+ङीप्] 1. बोरा, बोरा 2 'द्रोण' के बराबर माप 3 चीथड़े, फटेपुराने कपड़े।

गोण्डः [गो. अण्ड इव] 1. मांसल नाभि 2. निम्न जाति का पुरुष, पहाड़ी नर्मदा तथा कृष्णा नदी के मध्यवर्ती दक्षिण प्रदेश के पूर्वी भाग का निवासी।

गोतमः [गाभि ध्वस्तं तमो यस्य ब० स० पृषो०] अङ्गिराकुल से संबन्ध रखने वाला एक ऋषि, शतानन्द का पिता तथा अहल्या का पति।

गोतमी [गोतम, ङीप्] गोतम की पत्नी अहल्या। सम० -पुत्रः शतानन्द का विशेषण।

गोधा [गुध्यते, वेष्टयते बाहुरनया गुध्+घञ्+टाप्] 1 धनुष की डोरी की चोट से बचने के लिए बाएँ हाथ में बांधी जाने वाली चमड़े की पट्टी 2 घड़ियाल, मगरमच्छ 3 स्नायु, नाड़ी।

गोधिः (पु०) [गोधेव चौराभेऽस्मिन् आधारे इन] 1 मस्तक 2 गंगा में रहने वाला घड़ियाल।

गोधिका [गुध्यति -गुध्+ण्वुल्+टाप्] एक प्रकार की छिपकली, गोह।

गोपः (स्त्री०-पी) [गुप्+अच्, घञ् वा] 1 रक्षक, रक्षा करने वाला गोरक्षकों का मुखिया रघु० ४।२० 2 छिपाना, गुप्त रखना 3 दर्शन, गाली 4 झड़बेरी, गोंद 5 प्रकाश, प्रभा, दीप्ति।

गोपायन [गुप्, आय, ल्युट्] रक्षण, रक्षा करना।

गोपायित (वि०) [गुप्, आय्+क्त] प्ररक्षित, बचाया हुआ।

गोप्तृ (स्त्री० -त्री) [गुप्+तृच्] 1 प्ररक्षक, संरक्षक, अभिभावक—गोप्तारं गोप्तारं नागानां --रघु० २।२४, ११५५, मालवि० ५।२० मनु० १२।११ 2 छिपाने वाला, गुप्त रखने वाला—(पु०) विष्णु का विशेषण।

गोमत् (वि०) [गो+मतुप्] 1 गौओं से सम्पन्न, —ती एक नदी का नाम।

गोमयः - यम् [गो+मयट्] गोबर, -छत्रम् छिलक कुकुर मुत्ता, खुम्बी।

गोमिन् (पु०) [गो+मिनि] 1 मवेशियों का स्वामी 2. गीदड़ 3 पूजा करने वाला 4 बुद्ध का भक्त।

गोरक्षम् [गुर्...] स्फूर्ति, अध्यवसाय, धैर्य।

गोरदं [गुर्, दल, नि०] ('गोर्द' भी) मस्तिष्क, दिमाग।

गोलः [गुड् ...] 1 गोल, ... 2 ... अर्धांश, 3 आकाश मण्डल 4 विधवा का जारज पुत्र, (० पु०) 5 एक प्रकार का ... (इसका ... से ...) 2 ... 3 ... 4 सर्वी, मटकी 5 नदी ... 6 ... 7. गोदावरी नदी।

गोलकः [गुड्, ण्वुल्, ...] 1 पिंड, भूगोल 2 बच्चों के खेलने के लिए काठ की गेंद 3 पानी का मटका 4 विधवा का जारज पुत्र 5 पाँच या पाँच से अधिक ग्रहों का सम्मिलन 6 गुड़ की गिरियाँ 7 बुदबुदार गोल।

गोष्ठ् (भ्वा० आ० गोष्ठते) एकत्र होना, इकट्ठे होना, ढेर लगना।

गोष्ठः, -ष्ठम् [गोष्ठ+अच्] (प्रायः 'गोष्ठम्') 1 व्रज, गोशाला, गो-घर 2 ग्वालों का स्थान, -ष्ठः सभा या समाज - ष्ठः व्रज का कुत्ता जो दरक का भौंकता है, (आल०) वह आलसी पुरुष जो अपने पड़ोसियों की निंदा करता है। **गोष्ठेपण्डितः** व्रज में निपुण छिद्रान्वेषी, मिथ्या डींग हांकने वाला।

गोष्ठिः, -ष्ठी (स्त्री०) [गोष्ठ+इन, गोष्ठ+ङीप्] 1 सभा सम्मेलन 2 जनसमुदाय, समाज 3 वार्ता वार्तालाप प्रवचन गोष्ठी सर्वाङ्गिति मनम् शकुं० १।२८ मा० १०।२५, निनैव सह सबला गोष्ठीमनुभवति पञ्च० - 4 समुदाय, जमाव 5 पारिवारिक सदस्य परिवार (विशेषतः वह जिसके संबंध बनाये रखने की आवश्यकता है) 6 एक प्रकार का एकांकी नाटक -पतिः सभा का प्रधान, सभापति।

गोष्पदम् [गो, पदम्, ष० त० -गो+पद+अच, नि० सुट् च] 1 गाय का पैर 2 धरती पर बना गाय के पैर का चिह्न 3 पैर के चिह्न में समा जाने वाले जल की मात्रा, अर्थात् बहुत ही छोटा गढ़ा 4 गाय के पैर चिह्न में समाने के योग्य मात्रा 5. वह स्थान जहाँ गौओं का आना-जाना बहुतायत से हो।

गोह्य (वि०) [गुह्+ण्यत्] गोपनीय, छिपाने के योग्य।

गौञ्जिकः [गुञ्जा+ठक्] सुनार।

गौडः (पु०) एक देश का नाम स्कन्दपुराण इसकी स्थिति इस प्रकार बतलाता है—वङ्गदेशं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे, गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः। 2 ब्राह्मणों का एक भेद, -डाः (ब० व०) गौड़ देश के निवासी, -डी 1 गुड़ से बनाई हुई शराब गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा—मनु० ११।९४ 2 एक रागिनी 3 (अलं० शा० में) रीति अर्थात् काव्य रचना की एक शैली - सा० द० कार इस रीति का वर्णन करता है, काव्य० में केवल तीन रीति उल्लेख है, उस 'पद्या' का ही दूसरा नाम गौड़ी है और प्रकाशकर्ता (वर्ग) ... (अर्थात् गौड़ी) काव्य० ९ ओज प्रकाशकैस्तैः ... समासबहुला गौडी—सा० द० ६२३।

गौडिकः [गुड+ठक्] ईख, गन्ना।

गौण (वि०) (स्त्री० -णी) [गुण+अण्] 1 मातहत, द्वितीय कोटि का, अप्रधान 2. (व्या० में) अप्रत्यक्ष

या अप्रधान-सहित (विप० मुख्य या प्रधान)—गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्—सिद्धा० 3. आलं-कारिक, लाक्षणिक, अप्रधान अर्थ में प्रयुक्त (शब्द या अर्थ आदि) 4. प्रधान और अप्रधान अर्थ की समानता पर स्थापित जैसा कि 'गौणी लक्षणा' में 5. गुणों की गणना से संबद्ध 6. विशेषण।

गौण्यम् [गुण+ष्यञ्] मातहती स्थिति या घटिया अव-स्थिति।

गौतमः [गोतम+अण्] 1. भारद्वाज ऋषि का नाम 2. गोतम का पुत्र, शतानन्द 3. द्रोण का साला, कृपाचार्य 4. बुद्ध 5. न्यायशास्त्र का प्रणेता। सम०—गंगा गोदावरी नदी।

गौतमी [गौतम+ङीप्] 1. द्रोण की पत्नी, कृपी 2. गोदा-वरी का विशेषण 3. बुद्ध की शिक्षा 4. गौतम द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र 5. हल्दी 6. गोरोचन।

गौधूमीनम् [गोधूम+खञ्] गेहूँ का खेत।

गौनर्दः [गोनर्द+अण्] महाभाष्य के प्रणेता पतंजलि मुनि का विशेषण।

गौपिकः [गोपिका+अण्] गोपी या ग्वाले की स्त्री का पुत्र।

गौप्तेयः [गुप्ता+ढक्] वैश्य स्त्री का पुत्र।

गौर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [गु+र, नि०] 1. श्वेत —कैलासगौरं वृषमारुरुक्षोः—रघु० २।३५, हिरण्य-[illegible]गौरस्य तस्य—मेघ० ५१,५२, ऋतु० १।९ 2. पीला सा, पीत—रक्त-गोरोचनालक्षितान्तगौरम् —कु० ७।१७, रघु० ६।६५, गौराङ्गि वदं न कदापि कुर्याः—रस० 3. लालरंग का 4. चमकता हुआ, उज्ज्वल 5. विशुद्ध, स्वच्छ, सुन्दर,—रः 1. सफेद रंग 2. पीला रंग 3. लाल रंग 4. सफेद सरसों 5. चन्द्रमा 6. एक प्रकार का भैंसा 7. एक प्रकार का हरिण,—रम् 1. पद्मकेसर 2. जाफरान 3. सोना। सम०—आस्यः एक प्रकार का काला बंदर जिसका मुंह सफेद हो, —सर्षपः सफेद सरसों।

गौरक्ष्यम् [गोरक्षा+ष्यञ्] ग्वाले का कार्य, गोपालन।

गौरवम् [गुरु+अण्] 1. बोझ, भार (आ०)—सुरेन्द्रमा-त्राश्रितगर्भगौरवात्—रघु० ३।११ 2. महत्त्व, ऊँचा मूल्य या मूल्यांकन—स्वनिकषो गौरवमादधानम्—रघु० —१४।१८, १८।३९, कार्यगौरवेण—मुद्रा० ५, गुरुता या महत्त्व 3. सम्मान, आदर, विचार—तथापि यन्म-य्यपि ते गुरुरित्यस्ति गौरवम्—शि० २।७१, प्रयोजना-पेक्षितया प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु—कु० ३।१, अमरु १९ 4. सम्मान, मर्यादा, श्रद्धा—कोऽर्थी गतो गौरवम्—पंच० १।१४६, मनु० २।१४५ 5. दुष्करता 6. (छं० में) दीर्घता (दीर्घ की मात्रा की) 7. (अर्था-दिक की) गहराई—[illegible] गौरवम्—ना० १।७।

सम०—आसनम् सम्मान का पद,—शालिन् (वि०) प्रशस्त, यशस्वी, विख्यात।

गौरवित (वि०) [गौरव+इतच्] अत्यंत सम्मानित, गौरव युक्त।

गौरिका [गौरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] कुमारी कन्या, अवि-वाहिता लड़की।

गौरिलः [गौर+इलच्] 1. सफेद सरसों 2. इस्पात या लोहे का चूरा।

गौरी [गौर+ङीष्] 1. पार्वती—जैसा कि 'गौरीनाथ' में 2. आठवर्ष की आयु की कन्या—अष्टवर्षा भवेद्गौरी 3. वह लड़की जो अभी रजस्वला नहीं हुई, कुमारी कन्या 4. गोरे या पीले रंग की स्त्री 5. पृथ्वी 6. हल्दी 7. गोरोचन 8. वरुण की पत्नी 9. मल्लिका लता 10. तुलसी का पौधा 11. मजीठ का पौधा। सम० —कान्तः,—नाथः शिव का विशेषण,—गुरुः हिमालय पहाड़ —गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश—रघु० २।२६, कि० ५।२१, —जः कार्तिकेय (जम्) अभ्रक,—पट्टः योनिरूपी अर्घा जिसमें शिवलिंग (की मूर्ति) स्थापित किया जाता है, —पुत्रः कार्तिकेय,—ललितम् हरताल,—सुतः 1. कार्तिकेय 2 गणेश 3 ऐसी स्त्री का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में हुआ था।

गौरुतल्पिकः [गुरुतल्प+ठक्] गुरुपत्नी से साथ व्यभिचार करने वाला।

गौलक्षणिकः [गोलक्षण+ठक्] जो गाय के शुभ या अशुभ चिह्नों को पहचानता है।

गौल्मिकः [गुल्म+ठक्] किसी सेना की टोली का एक सिपाही।

गौशतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गोशत+ठञ्] सौ गौओं का स्वामी।

ग्मा [गम्+मा, डित्, डित्वात् अमो लोपः] पृथ्वी।

ग्रथ्, ग्रन्थ् (भ्वा० आ०—ग्रथते, ग्रन्थते) 1. टेढ़ा होना 2. दुष्ट होना 3. झुकना।

ग्रथनम् [ग्रन्थ्+ल्युट्, नलोपः] 1. जमाना, गाढ़ा करना, जम हो जाना 2. एक जगह नत्थी करना 3. रचना करना, लिखना (इस अर्थ में—'ग्रन्थन' शब्द भी है)।

ग्रथ्नः [ग्रन्थ्+नक्] झुंड, गुच्छा, लच्छा।

ग्रथित (भू० क० कृ०) [ग्रन्थ्+क्त, नलोपः] 1. एक जगह नत्थी किया हुआ या बांधा हुआ 2 रचित—वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव—शि० २।७२ 3. क्रम-बद्ध, श्रेणीबद्ध 4. गाढ़ा किया हुआ 5. गांठवाला।

ग्रन्थ् (भ्वा०, क्या० पर०; चुरा० उभ०, भ्वा० आ० —ग्रन्थति, ग्रथ्नाति; ग्रन्थयति-ते, ग्रन्थति, ग्रन्थते) 1. गूंथना, बांधना, नत्थी करना—भट्टि० ७।१०५ [illegible] 2. क्रम से रखना, श्रेणीबद्ध करना, नियमित सिलसिले में जोड़ना 3. रचना, [illegible]

4 लिखना, रचना करना — ग्रथ्नामि काव्यशशिनं विततार्थरश्मिम् —काव्य० १० 5 बनाना, निर्माण करना, पैदा करना — ग्रथ्नन्ति बाष्पबिन्दुनिकरं पक्ष्मपङ्क्तयः — का० ९०, भट्टि० १७।६९, उद् —, बांधना, गांठ करना, मुद्रा० १।४, अन्तर्ग्रथित करना — लताप्रतानोद्ग्रथितैः स केशैः — रघु० २।८ 2 खोलना, ढीला करना।

ग्रन्थः [ग्रन्थ् + घञ्] 1 बांधना, गूंथना (आल० से भी) 2 कृति, प्रबन्ध रचना, साहित्यिक कृति पुस्तक — ग्रन्थारम्भे, ग्रन्थकृत, ग्रन्थसमाप्ति आदि 3 दौलत सम्पत्ति 4 ३२ मात्राओं का श्लोक, अनुष्टुप् छंद। सम० -कारः, -कृत् (पुं०) लेखक रचयिता — ग्रन्थारम्भे समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत्परामृशति काव्य० १ —कुटी, -कुटिः 1 पुस्तकालय 2 कलामन्दिर —विस्तरः, -विस्तारः ग्रन्थ का कई भागों में विभाजन, विस्तारमयी शैली, -सन्धिः किसी पुस्तक का अनुभाग या अध्याय (संस्कृत में 'अनुभाग' आदि के पर्याय 'अध्याय' शब्द के अन्तर्गत देखें)।

ग्रन्थनम्-ना [ग्रन्थ् + ल्युट्] दे० 'ग्रथन'।

ग्रन्थिः [ग्रन्थ् + इन्] 1 गांठ, गुच्छा, उभार — स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ — भर्तृ० ३।२०, इसी प्रकार 'मेदोग्रन्थि' 2 रस्सी का बन्धन या गांठ, रस्सी की गांठ — इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८, मृच्छ० १।१, मनु० २।४३, भर्तृ० १।५७ 3. रुपया पैसा रखने के लिए कपड़े के अंचल में गांठ, अतएव बटुआ, धन, सम्पत्ति — कुसीदाद्दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमनात् पंच० १।११ 4 सरकंडे की गांठ, बांस आदि की पोरों की गांठ या जोड़ 5 शरीर के अवयवों का जोड़ 6 टेढ़ापन, तोड़ना-मरोड़ना, मिथ्यात्व, सचाई में उलट फेर 7 शरीर की वाहिकाओं में सूजन, कठोरता। सम० -छेदकः, -भेदः, -मोचकः गिरहकट, जेबकतरा — अङ्गुलीग्रन्थिभेदस्य छेदयेत् प्रथमे ग्रहे — मनु० ९।२७७, याज्ञ० २।२७४, -पर्णः, -पर्णम् 1 एक सुगन्धयुक्त वृक्ष — विक्रमांक० १।१३ 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, -बन्धनम् 1 विवाह के अवसर पर दूल्हे और दुलहिन का गठजोड़ा करना 2 बन्धन, -हरः मन्त्री।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि + कै + क] 1 ज्योतिषी, दैवज्ञ 2 राजा विराट के यहां अज्ञातवास के अवसर पर नकुल का नाम।

ग्रन्थित दे० ग्रथित।

ग्रन्थिन् (पुं०) [ग्रन्थ + इनि] 1 जो बहुत सी पुस्तकें पढ़ता हो, किताबी — अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः मनु० १२।१०३ 2 विद्वान्, पण्डित।

ग्रन्थिल (वि०) [ग्रन्थिर्विद्यतेऽस्य — लच्] गांठदार, जटिल।

ग्रस् I (भ्वा० आ० — ग्रसते, ग्रस्त) 1 निगलना, सटकना, खा जाना, समाप्त कर देना — स इमां पृथिवीं कृत्स्नां संक्षिप्य ग्रसते पुनः महा०, भाग० ११।१० 2 पकड़ना 3 ग्रहण लगना — राहोरेव ग्रसते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौ भास्वरौ भर्तृ० २।३४, हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम् शि० २।४९ 4 शब्दों को मिला जुला कर अस्पष्ट बोलना 5 नष्ट करना, सम् नष्ट करना भट्टि० १२।८, II (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० ग्रसति, ग्रासयति-ते) खाना निगलना।

ग्रसनम् [ग्रस् + ल्युट्] 1 निगलना, खा लेना 2 पकड़ना सूर्य या चन्द्रमा का आंशिक ग्रास।

ग्रस्त (भू० क० कृ०) [ग्रस् + क्त] 1 खाया हुआ, निगला हुआ 2 पकड़ा हुआ पीड़ित, ग्रस्त, अधिकृत, -राहु°, विपद् आदि 3 ग्रहण-ग्रस्त, -स्तम् अधोच्चारित शब्द या वाक्य। सम० -अस्तम् ग्रहणग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना, -उदयः ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का उगना।

ग्रह् (क्र्या० उभ० (वेद में 'ग्रभ्') — गृह्णाति, गृहीत; प्रे० ग्राहयति सन्नन्त — जिघृक्षति) 1 पकड़ना, लेना, ग्रहण करना पकड़ रखना, थामना लपक लेना, कस कर पकड़ना — तयाऽगृह्णत् पादान् राजा राज्ञी च मागधी — रघु० १।५७ आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते मृच्छ० १।५०, स कण्ठे जग्राह — का० ३६३ पाणिं गृहीत्वा, करं गृहीत्वा 2 प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, बलपूर्वक वसूल करना — प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् — रघु० १।१८, मनु० ७।१२४, ९।१६२ 3 हिरासत में लेना गिरफ्तार करना बन्दी बनाना — कारागृहे गृहीत्वा विक्रम० १, चोरान् गृह्णीयात् — मनु० ८।३४ 4 गिरफ्तार करना, रोकना, पकड़ना — भग० ६।३५ 5 मोह लेना, आकृष्ट करना — महाराजगृहीतहृदयया मया विक्रम० ४, हृदये गृह्यते नारी मृच्छ० १।५०, मातुर्यथेष्टं हरिणान् ग्रहीतुम् — रघु० १८।१३ 6. जीत लेना, फुसलाना, अपनी ओर करने के लिए फुसलाना — लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् चाण० ३३ 7 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, अनुकूल करना — गृहीतानुवर्तनि परिचयेन मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः — कि० १।१७, ३३ 8 ग्रस्त करना, पकड़ना, चिपटना (भूत प्रेतादिक का) जैसे कि 'पिशाचगृहीत' या 'वेतालगृहीत' में 9 धारण करना, लेना — धृतिमग्रहीत् शि० ९।२३ भट्टि० १९।२९ 10 सोचना, जानना, पहचानना, समझना कि० १०।८ 11 ध्यान देना, विचार करना, विश्वास करना, मान लेना — यथापि मुक्तिक्रमगृहीता तथैव गृहीतम् — श० १, परिगृहीतमिव कस्मिंश्चित् शब्दे परजातेन य

गृह्णाति वच - श० २।१८ एव मनो गृह्णाति मालवि० १ मुद्रा० ३ 12 (इन्द्रियों द्वारा) ग्रहण करना या प्राप्त करना [illegible] गृह्णाती तथा —रघु० ११।९० 13 [illegible] होना, मस्तिष्क से पकड़ना [illegible] रघु० ९।४६ 14 अनुमान लगाना [illegible] नेपथ्य विकारैरेव गृह्यते [illegible] मनु० [illegible] 15 उच्चारण [illegible] करना (नाम आदि का) यदि [illegible] मनु० [illegible] [illegible] मनु० [illegible] किया मन्यते [illegible] मनु० [illegible] 17 किसी का [illegible] करना, लूट लेना बलपूर्वक [illegible] भट्टि० [illegible] 18 पहनना, धारण करना (वस्त्रादिक) [illegible] नवानि गृह्णाति [illegible] 19 [illegible] 20 (उपाय) रखना 21 [illegible] 22 [illegible] धातु के अर्थ [illegible] परिवर्तित [illegible] जाय, प्रेर० 1 ग्रहण करवाना, पकड़वाना [illegible] 2 विवाह में उपहार देना 3 [illegible] [illegible] सन [illegible] अनुगृह्णाति, [illegible] 'हम बड़े आभारी हैं' अनुसम् [illegible] नमस्कार करना अप [illegible] अभि बलपूर्वक पकड़ना अव 1 [illegible] 2 दण्ड देना 3 [illegible] आ [illegible] उद् 1 [illegible] [illegible] 2 [illegible] निकालना उप 1 [illegible] 2 पकड़ लेना अधिकार में कर लेना मनु० [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] नि 1 [illegible] 2 दमन करना रोकना [illegible] 3 [illegible] 4 दण्ड देना, सजा देना मनु० ८।३१०, ९।३०८ 5 पकड़ना [illegible] निगृह्योत्सव्येन [illegible] 6 (आँख आदि) बंद करना [illegible] निपरि [illegible] परि 1 [illegible] 2 घेरना 3 [illegible] पकड़ना 4 लेना धारण करना 5 स्वीकार करना 6 सहायता करना, संरक्षण देना, प्र—, 1 लेना, पकड़ना 2 दमन करना, रोकना 3 फैलाना, विस्तार करना, प्रति—, 1 थामना, पकड़ना, सहायता देना [illegible] प्रतिगृहीत मनम् मालवि० ४, मनु० २।४८ 2 लेना, स्वीकार करना प्राप्त करना ददाति प्रतिगृह्णाति—पञ्च० ४, अमोघाः प्रतिगृह्णन्त्यावर्ध्यानुपदमाशिषः—रघु० १।४४ [illegible] 3 उपहार स्वरूप लेना या स्वीकार करना 4 [illegible] व्यवहार करना, विरोध करना, मुकाबला करना [illegible] [illegible] रघु० [illegible] 5 [illegible] मनु० [illegible] 6 आज्ञा मानना [illegible] 7 आश्रय लेना, अवलंबित होना, वि—, 1 थामना या पकड़ना 2 कलह करना [illegible] [illegible] सम्—, 1 संग्रह करना [illegible] संग्रह करना जोड़ना [illegible] 2 [illegible] प्राप्त करना 3 दमन करना रोकना (घोड़ों को) लगाम देना 4 (मनुष्य आदि [illegible]) [illegible]

ग्रह: [illegible] 1 पकड़ना ग्रहण करना अधिकार जमाना [illegible] रघु० [illegible] 2 पकड़ ग्रहण, प्रभाव [illegible] 3 लेना, प्राप्त करना, स्वीकार करना, प्राप्ति 4 चुराना, लूटना—[illegible] —मनु० [illegible] इसी प्रकार [illegible] 5 लूट का माल, बटमारी 6 ग्रहण लगना द० ग्रहण 7 ग्रह (यह गिनती में नौ हैं —सूर्यश्चन्द्रो मंगलश्च बुधश्चापि बृहस्पतिः, शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा नव ।) [illegible] 8 [illegible] उच्चारण दुहराना (नाम आदि का) [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] करना 11 [illegible] 12 (विचारों [illegible]) [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible] 15 प्रयास, आक्रमण 16 अनुग्रह [illegible] सम०

—अधीन (वि०) ग्रहों के प्रभाव पर निर्भर, —अव-मर्दनः राहु का विशेषण, (नम्) ग्रहों की टक्कर —अधीशः सूर्य, —आधारः —आश्रयः ध्रुव नक्षत्र (नक्षत्रों का स्थिर केन्द्र), —आमयः 1. [illegible] 2. भूत-

बैठ, **आस्कन्दनम्** अपने शिकार पर झपटना और उसे फाड़ डालना [illegible] **मृच्छ०** ३ —**दैत्य सूर्य** [illegible] राहु का विशेषण — **शनि.** ग्रहों की [illegible] [illegible] अथवा अन्यराशि के दृष्टि से ग्रहों की स्थिति वह समय जब कि [illegible] शुभाशुभ फल होता है [illegible] [illegible] अधिष्ठान् [illegible] [illegible] 1 सूर्य 2 शनि [illegible] [illegible] [illegible] चन्द्रमा [illegible] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा

पीडनम् पीड़ा 1 [illegible] पीड़ा [illegible] 2 [illegible] अथवा [illegible]

अभ्यासम्, जो ग्रहों का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ग्रहों का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ग्रहणम् [illegible] [illegible] 1 पकड़ना [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 3 [illegible] [illegible] 4 [illegible] धारण करना [illegible] 5 [illegible] 6 [illegible] समझ [illegible] 7 [illegible] [illegible] 8 [illegible] पकड़ना [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible]

ग्रहणि —णी (स्त्री०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ग्रहिल (वि०) [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible]

ग्रहीतृ (वि०) (स्त्री० —त्री) [ग्रह् + तृच्] 1 प्राप्तकर्ता लेने वाला [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

ग्राम [ग्रस् + मन्] [illegible] 1 गाँव पुरवा, [illegible] विद्यालयेऽपि ग्राम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] समूह (किन्हीं वस्तुओं का) उदा० [illegible]

[illegible] 4 [illegible] (संगीत में) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 गाँव [illegible] 2 [illegible] [illegible] कुक्कुट [illegible] कुमार 1 [illegible] सुन्दर [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

ग्रामटिका [illegible] [illegible] [illegible]

ग्रामिक (वि०) [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 सूअर।

ग्रा (वि०) [illegible] [illegible] [illegible]

ग्रा (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] सुन्दरि [illegible] [illegible] [illegible] १।२ १ पालेय

पालतू (पशु आदि), 4 आविर्भत (विप० 'वन्य') 5 नीच अशिष्ट (शब्द की तरह) केवल ओछे व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त —चुम्बन देहि मे भार्ये कामचाण्डालतृप्तये —रस० या कटिस्ते हरते मन —सा० द० ५७४, यह ग्राम्य उक्तियों के उदाहरण है 6. अभद्र, अश्लील, —श्वः पालतू सूअर —श्वम् 1 गवार भाषण 2 देहात में तैयार किया हुआ भोजन 3. मैथुन। सम० अश्वः गधा, - कर्मन् ग्रामीण का व्यवसाय, —कुक्कुटम् कुमुभ —धर्मः 1 ग्रामीण का कर्तव्य 2 स्त्रीसंभोग, मैथुन, —पशुः पालतू जानवर, —बुद्धि (वि०) उजड्ड मजा किया, अनाड़ी, —वल्लभा वेश्या रंडी, —सुखम् स्त्री सम्भोग, मैथुन।

ग्रावन् (पुं०) [ग्रस् + क्वनिप्, ग्र + आ, वन् + ङि०] 1 पत्थर चट्टान कि हि नामैतदमुष्य मन्दमते (मञ्जनजला-पूर्तिर्) ग्रावाण: सन्तु तु सन्त इति महावी० १ अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्—उत्तर० १।२८ शि० ४।२३ 2 पहाड़ 3 बादल।

ग्रासः [ग्रस् + घञ्] 1 कौर कौर के बराबर कोई वस्तु मनु० ३।१३३, ६।२८ याज्ञ० ३।५५ 2 भोजन पोषण 3 सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहणग्रस्त भाग। सम० आच्छादनम् भोजन वस्त्र अर्थात् परिवार जीवन साधन, —शल्यम् गले में अटकने वाला (मछली का काँटा) आदि कोई पदार्थ।

ग्राह (वि०) (स्त्री० —ही) [ग्रह + घञ्] पकड़ने वाला मुट्ठी में जकड़ने वाला, लेने वाला थामने वाला प्राप्त करने वाला, —हः 1 पकड़ना जकड़ना 2 घड़ि याल, मगरमच्छ—रागग्राहवती—भर्तृ० ३।४५ 3 बन्दी 4 स्वीकरण 5 समझना, ज्ञान 6 हठ, दुराग्रह 7 निर्धारण, दृढ़ निश्चय —भग० १७।१९ 8 रोग।

ग्राहक (वि०) (स्त्री० —हिका) [ग्रह् + ण्वुल्] प्राप्त करने वाला, लेने वाला —कः 1 बाज, श्येन 2 विष चिकित्सक 3 क्रेता, खरीदार 4 पुलिस अधिकारी।

ग्रीवा [गिरत्यनया —गृ + वनिप्, निपा०] गर्दन, गर्दन का पिछला भाग ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टि: श० १।७। सम० —घण्टा घोड़े के गले में लटकता हुआ घंटा।

ग्रीवालिका दे० ग्रीवा।

ग्रीविन् (पुं०) [ग्रीवा + इनि] ऊँट।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रसते रसान् —ग्रस् + मनिन्] गरम, उष्ण, —ष्मः 1 गर्मी का मौसम, गरम ऋतु (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने) ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम् श० १ रघु० १६।५४, भामि० १।३५ 2 गर्मी, उष्णता। सम० —कालीन (वि०) गर्मी के मौसम से संबंध रखने वाला, —कुसुमम्, —जा, —भवा नव-मल्लिका लता, नेवारी।

ग्रैव (स्त्री—वी), ग्रैवेय (स्त्री०—यी) (वि०) [ग्रीवा + अण्, ढञ् वा] गर्दन पर होने वाला या गर्दनसंबंधी, —वम्, —यम् 1 गले का पट्टा, या हार 2. हाथी की गर्दन में पहनी जाने वाली जंजीर —भावसम् करिणां ग्रैवं विपदीकृतिमापि रघु० ४।४८, ७५।

ग्रैवेयकम् [ग्रीवा + ढकञ्] 1 गले का आभूषण —उदा० अस्माकं सखि वाससी न रुचिरे ग्रैवेयकं नोज्ज्वलम्—सा० द० ३ 2 हाथी के गले में पहने जानेवाली जंजीर।

ग्रैष्मक (वि०) (स्त्री० —ष्मिका) [ग्रीष्म + वुञ्] 1 गरमी के मौसम में बोया हुआ 2 गरमी के ऋतु में दिया जाने वाला (ऋण आदि)।

ग्लपनम् [ग्लै + णिच् + ल्युट् पुक् ह्रस्व] 1 मुर्झाना सूख जाना 2 थकावट।

ग्लस (भ्वा० आ० —ग्लसते, ग्लस्त) खाना, निगलना।

ग्लह् (भ्वा० उभ०, चुरा० आ०—ग्लहति—ते, ग्लाहयति—ते) 1 जुआ खेलना, जुए में जीतना 2 लेना प्राप्त करना।

ग्लहः [ग्लह् + अप्] 1 पासे से खेलने वाला 2. दाव, बाजी लगाना, शर्त लगाना 3 पासा 4 जुआ खेलना 5 डिमात।

ग्लान (भू० क० कृ०) [ग्लै + क्त] 1 क्लान्त श्रान्त, थका हुआ, म्लान, अवसन्न 2 रोगी, बीमार।

ग्लानिः (स्त्री०) [ग्लै + नि] 1 अवसाद, क्लान्ति, थका-वट मनश्च ग्लानिमृच्छति—मनु० ११।५३, अङ्गग्लानिं सुरतजनितां मेघ० ३०, ३१, ऋतु० ४।८ 2 ह्रास क्षय आत्मोदय: परग्लानिर्द्वयं नीतिरितीयती —शि० २।३०, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत भग० ४।७ 3 दुर्बलता, निर्बलता 4 बीमारी।

ग्लास्नु (वि०) [ग्लै + स्नु] क्लान्त, श्रान्त।

ग्लुच् (भ्वा० पर० —ग्लोचति, ग्लुक्त) 1 जाना चलना-फिरना 2 चुराना, लूटना 3 छीन लेना, वञ्चित करना बहुतामस्लुचत् प्राणान् अग्लोचीच्चरणे बत — भट्टि० १५।३०।

ग्लै (भ्वा० पर० —ग्लायति, ग्लान) 1 विरक्ति या अरुचि अनुभव करना, काम करने को जी न करना, (तुमुन्नन्त के साथ) 2. क्लान्ति का भासित होना, थका हुआ या अवसन्न अनुभव करना 3. आहत होना, हतो-त्साह होना उदास होना —भट्टि० १९।१७, ६।१२ 4 क्षीण होना, मूर्छित होना —प्रेर० —ग्लपयति —ग्लापयति 1 मुर्झा देना, शुष्क कर देना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 थका देना।

ग्लौ (पुं०) [ग्लै + डौ] 1 चन्द्रमा 2. कपूर।

घ (वि०) [हन् + टक्, टिलोप, घत्व च] (यह केवल समास में उत्तर पद के रूप में प्रयुक्त होता है) प्रहार करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला — जैसा कि पाणिघ और राजघ आदि में, **—कः** 1. घण्टी 2. खड़खड़ाना, गरगराहट, टिनटिनाना।

घट् I (भ्वा० आ० घटते, घटित) व्यस्त होना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, जानबूझ कर किसी काम में लगना (तुमुन्नन्त, अधि० या सम्प्र० के साथ) - [illegible] भट्टि० १०।१० [illegible] 2 [illegible] प्रबं० [illegible] 3 आना पहुँचना। प्रेर०—घटयति 1 एकत्र करना, मिलाना, एक जगह करना [illegible] कथा [illegible] भट्टि० [illegible] 2 निकट लाना या रखना, सम्पर्क में लाना, धारण करना [illegible] घटय जघने काञ्चीम् — गीत० १२ 3 निष्पन्न करना, प्रकाशित करना, कार्यान्वित करना [illegible] घटयति च मौनं च भजते —मा० १।१४, (अभिमतम्) आनाय घटितं घटयति— रत्न० १।६ 4 रूप देना, गढ़ना, आकार देना, निर्माण करना, बनाना — [illegible] अघटयत् [illegible] श्रृंगार० 3, घटय भुजबन्धनम् गीत० १० 5 प्रभावित करना, उकसाना स्नेहोऽपि घटयति मां तथापि वक्तुम् भट्टि० १०।३२ 6 मलना, स्पर्श करना, प्र—, 1 व्यस्त होना, काम में लगना भट्टि० २१।१३ 2 आरम्भ करना, शुरू करना भट्टि० १४।७७ **वि—**1 वियुक्त होना, अलग होना 2 बिगड़ना, बर्बाद होना, रुक जाना, ठहर जाना, बन्द कर देना प्रेर० [illegible] करना, तोड़ना, सम् मिलाना II (चुरा० उभ० घाटयति, घाटित) 1 चोट मारना, क्षति पहुँचाना, चोट डालना 2 मिलाना, जोड़ना, इकट्ठा करना, संग्रह करना **उद्—** खोलना, तोड़ कर खोलना [illegible] मृच्छ० ३, [illegible] घाटयन्ती भर्तृ० १।६३।

घटः [घट् + अच्] 1 मिट्टी का घड़ा, घड़ा, जलकलश, पानी रखने का पात्र [illegible] तुल्यं जलम् भर्तृ० २।४९ 2 कुम्भ राशि 3 हाथी का मस्तक 4 कुंभक प्राणायाम 5 २० द्रोण के बराबर माप 6 स्तम्भ का एक भाग। सम० **—आटोपः** रथ या कुर्सी आदि को पूरा ढकने का कपड़ा, **—उद्भवः**, **—जः**, **—योनिः** अगस्त्य मुनि के विशेषण **—ऊधस्** (स्त्री०) गाय जिसकी औड़ी घड़े के बराबर हो —आ कारिका स्ताभ्यां घटोध्नी — रघु० २।४९, **—कर्परः** 1 कवि का नाम 2 ठीकरा, बर्तन का टुकड़ा — [illegible] घट० २२, **—कारः**, **—कृत्** (पुं०) कुम्हार [illegible] कुम्हार, **—पर्यसनम्** पतित व्यक्ति का अन्त्येष्टि संस्कार करना (जो अपने इस जीवन में अपनी जाति में फिर सम्मिलित होना न चाहता हो), **—भेदनकम्** बर्तन बनाने का एक उपकरण [illegible] पक्की मिट्टी का [illegible] दुर्गा के रूप में जल-कलश की स्थापना।

घटक (वि०) [घट् + णिच् + ण्वुल्] 1 प्रयास करने वाला प्रयत्नशील — एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये भर्तृ० २।७४ 2 प्रकाशित करने वाला निष्पन्न करने वाला 3 भागभूत अंश बनाने वाला, अवयव, उपादान, **—कः** 1 वह वृक्ष जिसके फूल दिखाई न देकर फल ही लगें 2 धमाई, विवाह तै कराने वाला, एक अभिकर्ता जो वंशावली लिखा कर विवाह-सम्बन्ध तै कराये 3 वंशावली का जानने वाला।

घटनम् —ना [घट् + ल्युट्] 1. प्रयास प्रयत्न 2. होना, घटित होना 3 निष्पन्नता, प्रकाशन, कार्यान्वयन जैसा कि 'अघटितघटना' में 4 मिलाना, एकत्र, एक स्थान पर मिलाना, जोड़ — [illegible] घटनाय योग्यम् विक्रम० ४।१६, [illegible] —का० २३९, 5 बनाना, रूप देना, आकार देना।

घटा [घट् + अङ् + टाप्] 1. चेष्टा, प्रयत्न, प्रयास 2. समूह, टोली, जमाव — प्रलयघनघटा — का० १११, कौशिकघटा — उत्तर० २।२९, ५।६, मातंगघटा — शि० १।६४ 3 सैनिक कार्य के लिए एकत्र हुई हाथियों की टोली 4 सभा।

घटिकः [घट + ठन्] घड़नई के सहारे नदी पार करने वाला, **—कम्** नितम्ब, चूतड़।

घटिका [घटी + कन् + टाप् ह्रस्व] 1 एक छोटा घड़ा, करवा, छोटा मिट्टी का बर्तन — [illegible] इव वर्तनीया पंच० १।१९९, एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः मृच्छ० १०।५९ 2 २४ मिनट का समय, एक घड़ी 3 एक जल घट जिससे दिन की घड़ियाँ गिनी जाती थीं 4 टखने के ऊपर का टांग पिंडली से नीचे का पतला भाग।

घटिन् (पुं०) [घट + इनि] कुंभ राशि।

घटिन्धम (वि०) [घटी + ध्मा + खश् + मुम्, धमादेश.] बर्तन में फूंक मारने वाला, —मः कुम्हार।

घटिन्धय (वि०) [घटी + धेट् + खश्, मुम्, ह्रस्व] जो घड़ा भर (पानी) पीता है।

घटी [घट + ङीप्] 1 छोटा घड़ा 2 २४ मिनट के बराबर समय की माप 3 छोटा जल-घड़ा जिससे दिन की घड़ियाँ गिनने का कार्य लिया जाय। सम० —कारः कुम्हार, —ग्रहः, —ग्राहः (वि०) दे० 'घटग्रह', —यन्त्रम् 1 पानी ऊपर उठाने वाली रहट का घड़िया, कुएँ पर पड़ा हुआ रस्सी-डोल दे० घटयन्त्र 2 दिन का समय जानने का एक साधन।

घटोत्कचः [?] हिडिम्बा नाम की राक्षसी से उत्पन्न भीम का एक पुत्र (यह बहुत बलवान् पुरुष था, कौरव और पाण्डवों के युद्ध में यह बहुत वीरतापूर्वक पाण्डवों की ओर से लड़ा परन्तु इन्द्र से प्राप्त शक्ति द्वारा कर्ण के हाथों मारा गया तु० मुद्रा० २।१५)।

घट्ट (भ्वा० आ० —घट्टते, बहुधा चुरा० उभ० घट्टयति ते, घट्टित) 1 हिलाना, हरकत देना जैसे 'वायुघट्टिता लता' में 2 स्पर्श करना मलना, हाथों से मलना विटजनहस्तघट्टितेव वीणा मृच्छ० १।२७ भट्टि० १४।२ 3 चिकनाना, सहलाना 4 ईर्ष्या द्वेष की भावना से बोलना 5 बाधा पहुँचाना, प्र—, खोलना, परि— प्रहार करना शि० ९।६४ वि—, 1 छिन्न-भिन्न कर देना, तितर-बितर करना बखेरना उड़ा देना शि० १।६४, भर्तृ० ३।५४ 2 मलना घिसना, रगड़ना कारण्डवाननविघट्टितवीचिमाला ऋतु० ३।८, ४।९ कु० २।१, कि० ८।४१ शि० ६।७४, १३।४१, सम्— 1 थपथपाना 2 इकट्ठा करना मिलाना 3 एकत्र करना, संचय करना 4 रगड़ना घिसना, दबाना — रघु० ६।७३।

घट्टः [घट्ट् + घञ्] 1 घाट नदी के तट से पानी तक बनी सीढ़ियाँ 2 हिलना डुलना, आन्दोलन 3 चुंगी घर। सम० —कुटी चुंगी घर, °प्रभातन्याय न्याय के नी० दे०, —जीविन् (पुं०) घाट से प्राप्त महसूल से अपना निर्वाह करने वाला 2 वर्णसंकर (वैश्यायां रजकाज्जातः)।

घट्टना [घट्ट् + युच् + टाप्] 1 हिलाना, डुलाना, हरकत देना, आन्दोलन करना 2 रगड़ना 3 जीविका वृत्ति, अभ्यास, व्यवसाय, पेशा।

घण्टः [घण्ट् + अच्] एक प्रकार का व्यंजन, चटनी।

घण्टा [घण्ट् + अच् + टाप्] 1 घंटी, 2 लोहे का या कांसे का गोल पट्ट जिसे समय की सूचना के लिए मुंगरी से पीट कर बजाते हैं। सम० —अगारम् घण्टा घर, —कर्णः,— ताम्रम् पत्तियों से बना कोट, —ताडः घण्टा बजाने वाला, —नादः घण्टे की आवाज, —पथः गाँव की मुख्य सड़क, राजमार्ग, मुख्य मार्ग (दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः कौटि०), —रवः 1 कांसा 2 घंटे की आवाज।

घण्टिका [घण्टा + ङीप् + कन् ह्रस्व] छोटी घंटियाँ, घुंघरु।

घण्टुः [घण्ट् + उण्] 1 हाथी की छाती पर बंधी एक पट्टी जिसमें घुंघरु लगे होते हैं 2 ताप, प्रकाश।

घण्डः [घण् इति शब्दं कुर्वन् डीयते घण् + डी + ड] मधुमक्खी।

घन (वि०) [हन् मूर्तौ अप् घनादेशश्च —पा०] 1 सघन, दृढ़, कठोर, ठोस—सान्द्रस्पर्श घनाघन— मा० ९।३९, नासा घनास्थिका आश्व० ३।२०, रघु० १२।१८ 2 सघन धनिष्ठ जिनका घनीभूतभाव —कुमार० २।२७, रघु० ८।१ अमरु० ७३ 3 गहरा हुआ, पूर्ण, पूर्णविकसित (जैसे कि कुच) घटयति सुघने कुच युगगगने मृगमदरुचिरुषिते गीत० ७ 4 अनवरत, सबके गुरू सो धनकुचयुग्ये शशिमप्रभासी मृच्छ० ८, भर्तृ० १।८ अमरु ८४ (शब्द की भांति) गम्भीर मा० २।१२ 5 नित्य स्थायी 6 अभेद्य 7 बड़ा अत्यधिक, प्रचंड 8 पूर्ण 9 शुभ भाग्यशाली —नः बादल घनोदय प्राक् तदनन्तर पयः श० ७।३० घनरुचिरकलापो निःसपत्नोऽस्य जातः विक्रम० ४।१० 2 लोहे का मुद्गर गदा 3 शरीर 4 (गणित में) सम्पूर्णत्मक घन (किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से उपलब्ध गुणनफल) 5 विस्तार, प्रसार 6 संग्रह, समुच्चय परिमाण राशि, समाज या समवाय 7 अभ्रक, —नम् 1 झांझ घण्टी, घण्टा 2 लोहा 3 टीन 4 चमड़ी तथा अस्कन। सम० —अत्ययः, —अन्तः बादलों का नाश वर्षा ऋतु के पश्चात् आने वाली ऋतु शरद —अम्बु (नपुं०) वर्षा —आकरः वर्षा ऋतु, —आगमः बादलों का आगमन वर्षा ऋतु—घनागम कामिजनप्रिय प्रिये ऋतु० २।१, —आमयः खजूरे का वृक्ष, —आवरण पर्यावरण, अन्तरिक्ष, —उपलः ओले, —ओघः बादलों का एकत्र होना, —कफः ओले, —कालः वर्षा ऋतु, —गर्जितम् 1 मेघध्वनि, बादलों की गड़गड़ाहट या गरज, बिजली की कड़क 2 गंभीर और ऊँची दहाड़ या गरज, —गोलकः चांदी सोने की मिलावट, —जम्बालः गाढ़ी दलदल, —तालः एक प्रकार का पक्षी, चातक, सारंग, —तोलः चातक पक्षी, —नाभिः धूआँ (यह बादलों का मुख्य अवयव समझा जाता है— मेघ० ५), —नीहारः गाढ़ा कोहरा, सघन तुषार, —पदवी 'बादलों का मार्ग' अन्तरिक्ष, आकाश — सार्धं कथंचिदुचितैः पिचुमर्दपत्रैरास्यान्तरालगतमाम्रदलं म्रदीयः —कि० ५।३४, —पाषण्डः मोर, —फलम् (गणि० में) किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल

अथवा ठोसघन,—मूलम् (गणित में) घन-राशि का मूल अंक,—रसः 1 गाढ़ा रस 2 अर्क गाढ़ा 3 कपूर 4 जल,—वर्गः घन का वर्ग, (गणित में) छठा घात, —वर्त्मन् (नपुं०) आकाश —घनवर्त्म सहस्रधेव कुर्वन् —कि० ५।१७, —वल्लिका,—वल्ली बिजली —वासः एक प्रकार का कद्दू, कुम्हड़ा, —वाहनः 1 शिव 2 इन्द्र, —श्याम (वि०) 'बादल की भांति काला' गहरा काला, पक्का रंग, (—मः) 1 राम और कृष्ण का विशेषण, —समयः वर्षाऋतु,—सारः 1 कपूर —घनसारनीहारहार — दश० १, (श्वेत पदार्थों में उपमान) 2 पारा 3 जल, —स्वनः मेघगर्जन, —हस्तसंख्या (गणित में) खुदाई की मिट्टी आदि नापने का माप (एक हाथ लंबा, एक हाथ मोटा या चौड़ा और एक हाथ ऊँचा ढेर)।

घनाघनः [हन्+अच्, हन्तेर्घत्वम् द्वित्वमभ्यासस्य आक् च] 1 इन्द्र 2. चिड़चिड़ा, या मदमस्त हाथी 3 पानी से भरा हुआ या बरसाने वाला बादल।

घरट्टः [घरं सेकम् अट्टति अतिक्रामति घर+अट्ट्+अच्, शक० पररूपम्] खराद, चक्की।

घर्घर (वि०) [घर्घ+रा+क] 1 अस्पष्ट, घर्घराहट करने वाला, घरघर शब्द करने वाला —घर्घरध्वना वारणमाल कलित — मा० ५।१९ 2 कलकल ध्वनि करने वाला, (बादलों की भांति) गड़गड़ शब्द करने वाला, —रः 1 अस्पष्ट कलकल ध्वनि, मन्द गड़गड़ या घरघर की ध्वनि 2 कोलाहल, शोर 3 दरवाजा, द्वार 4 उल्लू, अट्टहास 5 उल्लू 6 तुषाग्नि।

घर्घरा,—री [घर्घर+टाप्, ङीप् वा] 1 घुंघरू जो आभूषण की भांति काम आये 2 घुंघरुओं की घर्घर ध्वनि 3 गंगा 4 एक प्रकार की वीणा।

घर्घरिका [घर्घर+ठन्+टाप्] 1 आभूषण की भांति प्रयुक्त होने वाले घुंघरू 2 एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

घर्घरितम् [घर्घर+इतच्] सूअर के घुरघुराने का शब्द।

घर्मः [घरति अङ्गात्—घृ+मक् नि० गुणः] 1 ताप, गर्मी —हि० १।९७ 2 गर्मी की ऋतु, निदाघ — निश्वासहार्यांशुकमाजगाम घर्मः प्रियावेशमिवोपदेष्टुम् रघु० १६।४३ 3 स्वेद, पसीना — शि० १।५८ 4 कड़ाह, उबालने का पात्र। सम० —अंशुः सूर्य —श० ५।१४, —अन्तः वर्षाऋतु आरम्भ,—अम्बु, —अम्भस् (नपुं०) स्वेद, पसीना, श० १।१०, मा० १।३७,—चर्चिका दाद, खाज, खसोटी, (दबे हुए पसीने और गर्मी से शरीर पर पैदा होने वाले छोटे-छोटे दाने),—दीधितिः सूर्य —रघु० ११।६४, —द्युतिः —सूर्य—कि० ५।४१,—पयस् (नपुं०) स्वेद, पसीना कि० ९।६६।

घर्षः, घर्षणम् [घृष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 रगड़, घिसाई 2 पीसना, चूरा करना।

घस् (भ्वा० पर० —घसति, घस्त) खाना, निगलना, (यह अपूर्ण धातु है —'अद्' धातु के कुछ लकारों में ही इसके रूप बनते हैं)।

घस्मर (वि०) [घस्+क्मरच्] 1 खाऊ, पेटू — घासानको घस्मर भामि० १।३४ 2. निगल जाने वाला, हड़प करने वाला —भूपालकुलपयूघस्मरो शौचिरास्मि — वेणी० ५।३६।

घस्र (वि०) [घस्+रक्] पीड़ाकर, क्षतिकर,— स्रः 1 दिन —घस्रो गमिष्यति भविष्यति सुप्रदोषम् — सुभा० 2 सूर्य —महावी० ६।८, —स्रम् केसर, जाफरान।

घाट, —टा [घट्+अच्, स्त्रियां टाप्] गर्दन का पिछला भाग।

घाण्टिक [घण्टा+ठक्] 1 घंटी बजाने वाला 2. भाट या चारण 3 धतूरे का पौधा।

घात [हन्+णिच्+घञ्] 1 प्रहार, आघात, खरोंच, चोट —व्याघात —श० ३।१३, मदनशरघात —गीत० १० इसी प्रकार पार्ष्णिघात, शिरोघात आदि 2 मार डालना चोट पहुँचाना प्रहार करना, वध करना —प्रियासो मृगयाक्या ह शत्रु रिपुघातावधिरभून्—उत्तर० ३.४४ पशुघात —गीत० १, याज्ञ० २।१५९, ३।२५२ 3 बाण 4 गुणनफल। सम० —चन्द्रः अशुभ राशि पर स्थित चन्द्रमा —तिथिः अशुभ चान्द्र दिन,—नक्षत्रम् अशुभ नक्षत्र, —वारः अशुभ दिन —स्थानम् बूचड़खाना, वधस्थान।

घातक (वि०) [हन्+ण्वुल्] मारनेवाला, प्रहार करने वाला, हत्यारा, प्रहारक क्रातिल वध करने वाला।

घातन (वि०) [हन्+णिच्+ल्युट्] हत्यारा क्रातिल, —नम् 1 प्रहार करना, मार डालना, हत्या करना वध करना (यज्ञ में) पशु बलि देना।

घातिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हन्+णिच्+णिनि] 1 प्रहार करने वाला, मारने वाला 2 (पक्षियों को) पकड़ने वाला या मारने वाला 3 विनाशकारी। सम० —पक्षिन्, —विहग बाज श्येन।

घातुक (वि०) (स्त्री०—की) [हन्+णिच्+उकञ्] 1 मारने वाला, संहारकारी अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला 2. क्रूर नृशंस हिंस्र।

घात्य (वि०) [हन्+णिच्+ण्यत्] मारे जाने के योग्य, वह व्यक्ति जिसे मार देना चाहिए।

घारः [घृ+घञ्] छिड़कना, तर करना।

घार्तिकः [घृतेन निर्वृत्त —ठञ्] घी में तले हुए पूड़े (विशेषतः जिनमें छिद्र होते हैं) (इन्हीं को देखकर पंचतंत्र में मूर्ख पंडितों ने कहा था—छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति)।

घासः [घस्+घञ्] 1. आहार 2. गोचरभूमि का चरागाह का घास—घासाद्घासात् पंच० ५, घासमुष्टि परस्मै

रक्षात् संवत्सर तु यः —महा० । सम० —कुण्डम्, —स्थानम् चरागाह ।

घु (भ्वा० आ० —घवते, घुत) शब्द करना, हल्ला मचाना ।

घुः [घु+क्विप्] कबूतर की गुटर गू ।

घुट् i (तुदा० पर० घुटति, घुटित) 1 फिर प्रहार करना, बदला लेने के लिए प्रहार करना, मुकाबला करना 2 विरोध करना, ii (भ्वा० आ०—घोटते) 1. वापिस आना, लौटना 2 वस्तु विनिमय करना, अदला-बदली करना ।

घुटः, घुटिः, -टी, (स्त्री०) घुटिकः,—का [घुट्+अच, इन् वा, घुटि+ङीष, कन् स्त्रियां टाप् वा] टखना ।

घुण् i (भ्वा० आ०, तुदा० पर० घोणते, घुणति घुणित) लुढ़कना, चक्कर खाना, लड़खड़ाना, अटेरना, ii (भ्वा० आ०) लेना, प्राप्त करना ।

घुणः [घुण+क] लकड़ी में पाया जाने वाला विशेष प्रकार का कीड़ा । सम० अक्षरम्, - लिपि (स्त्री०) लकड़ी या पुस्तक के पन्नों में कीड़ों के द्वारा बनाई हुई रेखाएँ जो कुछ-कुछ अक्षरों जैसी प्रतीत होती हैं । 'न्याय' दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ।

घुण्टः, घुण्टकः, घुण्टिका [घुण्ट्+क, घुण्ट+कन्, घुण्टक+टाप् इत्वम्] टखना ।

घुण्डः [घुण्+ड, नि०] भौंरा ।

घुर् (तुदा० पर०—घुरति, घुरित) 1 शब्द करना, कोलाहल करना, खर्राटे भरना, फुफकारना, (सूअर कुत्ते आदि का) घुरघुराना - क क कुच न घुर्घुरायित घुरीघोरो घुरेच्छुकर —का० ७ 2. डरावना बनना, भयंकर होना 3. दुःख में चिल्लाना ।

घुरी [घुर्+कि+ङीष्] नथुना, (विशेषकर सूअर की थूथन) —घुर्घुरायितघुरीघोरो घुरेच्छुकर काव्य० ७ ।

घुर्घुरः [घुर् इत्यव्यक्तं घुरति घुर्+घुर्+क] 1 झींगुर, पिस्सू (एक प्रकार का कीड़ा) 2. खुर्राटे भरना घुर्राना, सूअर आदि जानवर के गले से निकलने वाली आवाज ।

घुर्घुर [घुर्घुर+अच्+ङीष्] सूअर की आवाज ।

घुलघुलारवः ['घुलघुल' इत्यव्यक्तमारौति - घुलघुल+आ+रु+अप्] एक प्रकार का कबूतर ।

घुष् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० घोषति घोषयति ते, घुषित, घुष्ट, घोषित) 1 शब्द करना, कोलाहल करना 2. ऊँचे स्वर से चिल्लाना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना—स स पापादृते तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम् —श० ६।२२, घोषयतु मन्मथनिदेशम्—गीत० १०, इति घोषयतीव डिण्डिमः करिणो हस्तिपकाहतः क्वणन् —हि० २।८६, रघु० ९।१०, उद्—, उच्च स्वर से घोषणा करना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना—भट्टि० ३।२ । उद्—, उच्च स्वर से घोषणा करना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना, ii (भ्वा०—आ०—घुषते) सुन्दर या उज्ज्वल होना ।

घुसृणम् [घुस्+ऋणक्, पृषो०] केसर, जाफ़रान—मध्ये स्त्रीणां मसृणघुसृणालेपलोभ्या कृपाणी - विक्रम० १८।३१ ।

घूकः [घू इत्यव्यक्तं कायति- घू+कै+क] उल्लू । सम० अरिः कौवा ।

घूर्ण् (भ्वा० आ० तुदा० पर० —घूर्णते, घूर्णति, घूर्णित) इधर-उधर लुढ़कना, इधर-उधर घूमना, चक्कर काटना मुड़ना, हिलाना, लिपटना, लड़खड़ाना योषितामतिमदेन जुघूर्णुर्विभ्रमातिशयपुष्पि वपूंषि —शि० १०।३२, मधास्कैरिवघूर्णितु भट्टि० १५।३२ ११४, शि० ११।१८ अद्यापि तां सुरतजागर घूर्णमानां चौर० ५, प्रेर० घूर्णति—ते हिलाना, अटेरना या लपेटना नयनान्यरुणानि घूर्णयन् - कु० ४।१२ शि० २।१६, भर्तृ० १।८९, (आ, तथा वि उपसर्ग के लग जाने पर भी धातु का वही अर्थ रहता है) ।

घूर्ण (वि०) [घूर्ण+अच्] हिलाने वाला, इधर उधर चलने-फिरने वाला । सम० —वायुः बवण्डर ।

घूर्णनम्, —ना [घूर्ण+ल्युट्] हिलाना-डुलाना, लपेटना, चक्कर खाना, मुड़ना, घूमना मौलिघूर्णनचलत् —गीत० ९. घूर्णनामात्रपतनभ्रमणादर्शनाधिकृत् सा० द० ।

घृ i (भ्वा० पर० घरति, घृत) छिड़कना । ii (चुरा० उभ० —घारयति —ते, घारित) छिड़काव करना, गीला करना, तर करना, अभि—, छिड़कना आ , छिड़काव करना ।

घृण् (तना० पर० घृणोति, घृण्ण) चमकना, जलना ।

घृणा [घृ+नक्+टाप्] दया, तरस, सुकुमारता—तां विलोक्य वनितावधे घृणां पत्रिणा सह मुमोच राघव. —रघु० ११।१७, ९।८१, कि० १५।१३ 2. जुगुप्सा, अरुचि, चिन्ता त्यक्त्वा तीर्थे परपुष्टघुष्टे घृणां च वीणाक्वणिते वितेने नै० ३।६०, १।२०, रघु० ११।६५ 3. झिड़की, निन्दा ।

घृणालु (वि०) [घृणा+आलुच्] सदय, दयापूर्ण, मृदु-हृदय ।

घृणि [घृ+नि, नि०] 1. गर्मी, धूप 2 प्रकाश की किरण 3. सूर्य 4 लहर (नपुं०) जल । सम०—निधिः सूर्य ।

घृतम् [घृ+क्त] 1 घी, ताया हुआ मक्खन—(सर्पिर्विलीनमाज्यं स्यात् घनीभूतं घृतं भवेत्— आ०) 2. मक्खन 3. जल । सम०—अक्तः—अर्चिः (पुं०) भड़कती हुई आग, आहुतिः (स्त्री०) घी की आहुति,—आह्वः

करञ्ज नामक वृक्षविशेष,—अब्धिः 'घी का समुद्र' सात समुद्रों में से एक, —ओदनः घी से युक्त उबले हुए चावल,—कुल्या घी की नदी, —दीधितिः अग्नि,—धारा घी की अविच्छिन्न धार, —पूरः,—वरः एक प्रकार की मिठाई,—लेखनी घी का चम्मच।

घृताची [घृत+अञ्च्+क्विप्+ङीप्] 1 रात 2 सरस्वती 3 एक अप्सरा (इन्द्र के स्वर्ग की मुख्य अप्सराएँ निम्नांकित हैं— घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा, सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः)। सम०—गर्भसंभवा बड़ी इलायची।

घृष् (भ्वा० पर०—घर्षति, घृष्ट) 1 रगड़ना, घिसना —अद्यापि तत्कनककुण्डलघृष्टमास्यम् —चौर० ११, पञ्च० १।१४४ 2. कूची करना, परिष्कृत करना (माँजना) चमकाना 3. कुचलना, पीसना, चूरा करना —द्रौपद्या ननु मत्स्यराजभवने घृष्टं न किं चन्दनम् —पञ्च० ३।१३५ 4 होड़ करना, प्रतिद्वन्द्वी होना (जैसा कि संघृष्' में) अव—, रगड़ना,— घृष्टामर्षविमर्दघृष्टपादपीठम् महीक्षिताम् —रघु० १७।२८, सम्— प्रतिद्वन्द्विता करना, होड़ाहोड़ी करना, प्रतिस्पर्धा करना —स प्रयाणमिपुर्णं पयोधितुमिव संजघर्ष सह मित्रसन्निधौ —रघु० १९।३६ 2 रगड़ना, खुरचना।

घृष्टिः [घृष्+क्तिन्] सूअर (स्त्री०) 1 पीसना, चूरा करना, खुरचना 2. होड़ाहोड़ी, प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता।

घोटः, घोटकः [घुट्+अच्, ण्वुल् वा] घोड़ा। सम०—अरिः भैंसा।

घोटी, घोटिका [घोट+ङीष्, घुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] घोड़ी, सामान्य अश्व —आटोकसेऽङ्क करिघोटि पदाति-जुषि वाटिभुवि क्षितिभुजाम् —अश्व० ५।

घोण (न) स [—घोनस, पृषो०] एक प्रकार रेंगने वाला जन्तु।

घोणा [घुण्+अच्+टाप्] 1. नाक, घोणोन्नत मुखम् —मृच्छ० ९।१६ 2. घोड़े की नथुना, (सूअर की) थूथन —घूर्णरायमाणघोरघोणेन —का० ७८।

घोणिन् (पुं०) [घोणा+इनि] सूअर।

घोण्टा [घुण्+ट+टाप्] उन्नाव का वृक्ष।

घोर (वि०) [घुर्+अच्] 1 भयंकर, डरावना, भीषण, भयानक,—शिवाघोरस्वनाः पश्चाद् बुबुधे विकृतेति ताम् —रघु० १२।३९, तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव —भग०, घोर लोके विततमयश —उत्तर० ७।१, मनु० १।५० १२।५४ 2. हिंस्र, प्रचण्ड,—रः शिव, —रा रात,—रम् 1 भयानक, भीषणता 2. विष। सम० —आकृति, —दर्शन (वि०) देखने में डरावना, भयंकर विकराल,—पुष्पम् काँसा,—रासनः, —रासिन्,—वासनः, —वाशिन् (पुं०) गीदड़, —रूपः शिव का विशेषण।

घोलः,—लम् [घुर्+घञ्, रस्य लः] मट्ठा, घुला हुआ दही जिसमें पानी न हो (तक्रं स्नेहमयस्य मथितं घोल-मुच्यते —सुश्रु०)

घोषः [घुष्+घञ्] 1 कोलाहल, हल्ला, हंगामा —स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् —भग० १।१९, इसी प्रकार रथ°, तूर्य°, शङ्ख° आदि 2. बादलों की गरज —स्निग्धगम्भीरघोषम् —मेघ० ६४ 3 घोषणा 4. अफवाह, जनश्रुति 5 ग्वाला —हैयंगवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् —रघु० १।४५ 6. झोंपड़ी, ग्वालों की बस्ती —गङ्गायां घोषः —काव्य० २, घोषादागीय —मुच्छ० ७ 7 (व्या० में) घोषव्यंजनों के उच्चारण में प्रयुक्त घोषध्वनि 8 कायस्थ, —षम् काँसा।

घोषणम्,—णा [घुष्+ल्युट्] प्रख्यापन, प्रकथन, उच्च-स्वर से बोलना, सार्वजनिक एलान —आज्ञाघोषणावाक्यैः —मुद्रा० ३।२९, रघु० १२।७२।

घोषयित्नुः [घुष्+णिच्+इत्नुच्] 1 ढिंढोरची भाट, हरकारा 2 ब्राह्मण 3 कोयल।

घ्न (वि०) (स्त्री०—घ्नी) [केवल समास के अन्त में प्रयोज्य] [हन्+क, स्त्रियां ङीप्] वध करने वाला विनाशक, दूर करने वाला, चिकित्सक —ब्रह्मघ्न, बालघ्न, वातघ्न, पित्तघ्न, बहिष्कार करने वाला, दूर करने वाला, पुण्यघ्न, धर्मघ्न आदि।

घ्रा (भ्वा० पर० जिघ्रति, घ्रात —घ्राण) 1 सूँघना, पता लगाना, गंध का प्रत्यक्ष ज्ञान करना —स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः —हि० ३।१४, भामि० १।९९, चुम्बन करना प्रेर०— (घ्रापयति) सुँघवाना —भट्टि० १५।१०९, (अव, आ, उप, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर भी इस धातु के अर्थों में विशेष अन्तर नहीं आता —गन्धमाघ्राय चोर्व्याः —मेघ० २१, वाजोपमनुप-जिघ्रतो —रघु० १।४३, दे० भट्टि० २।१० १४।१२, रघु० ३।३, १३।७०, मनु० ४।२०९ भी)।

घ्रात (भू० क० कृ०) [घ्रा+क्त] सूँघा,—तम् सूँघने की क्रिया, —घ्राणेन सूकरो हन्ति —मनु० ३।२४१ 2. गंध, बू 3 नाक —चूडामणिमिव वदुः श्वास घ्राणरन्ध्रात्व-नाम्नाति —शा० का० २१, ऋतु० ६।२७, मनु० ५। १३५। सम०—इन्द्रियम् सूँघने की इन्द्रिय, नाक —नासा-वर्ति घ्राणम् —तर्क स०, —चक्षुस् (वि०) जो आँखों का काम नाक से लेता है अर्थात् अंधा (जो गंध कर अपने मार्ग का ज्ञान प्राप्त करता है),—तर्पण (वि०) नाक को सुहावना, या सुखकर खुशबूदार, सुगन्धयुक्त (—णम्) खुशबू, सुगन्ध।

घ्रातिः (स्त्री०) [घ्रा+क्तिन्] 1 सूँघने की क्रिया —घ्राति-रघ्रेयमद्ययोः —मनु० ११।६८ 2. नाक।

च

च: [चण् (चि) + ड] 1. चन्द्रमा 2. कछुवा 3. चोर (अव्य०) निम्नांकित अर्थों को बतलाने वाला अव्यय — 1. संयोजन (और, भी, तथा, इसके अतिरिक्त) — शब्द या उक्तियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है; (इस अर्थ में यह उस प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है जिसे मिलाता है या इस प्रकार मिले हुए अन्तिम शब्द या उक्ति के पश्चात् रक्खा जाता है, परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है) मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च — मा० १।३१, तौ गुरुर्गुरुपत्नी च — रघु० १।५७, मनु० १।६४, ३।५ कुलेन कान्त्या वयसा नवेन गुणैश्च तैस्तैर्विनयप्रधानैः — रघु० ६।७९, मनु० ११।०५, ३।११६ 2. विरोधन (परन्तु, तथापि, तो भी) — शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः — श० १।१६ 3. निश्चय, निर्धारण (निस्सन्देह, निश्चय ही, ठीक, बिल्कुल, सर्वथा) अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः — भर्तृ०, ते तु यावंत एवाजौ तावांश्च ददृशे स तैः — रघु० १२।४५ 4. शर्त (यदि = चेत्) जीवितुं चेच्छसे (= इच्छसे चेत्) मूढ हेतुं मे गदतः शृणु — महा०, लोमश्चास्ति (अस्ति चेत्) गुणेन किम् — भर्तृ० २।४५, प्रश्नो० प० 5. यह प्राय पादपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है — भीमः पार्थस्तथैव च — भग० (कोशकार उपर्युक्त अर्थों के साथ 'च' के निम्नांकित अर्थ और बतलाते हैं जो कि संयोजन या समुच्चय के सामान्य अर्थों के अन्तर्गत हैं — 1. अन्वाचय — अर्थात् मुख्य तथ्य को किसी गौण तथ्य से मिलाना — दो मिलावट का नाम, दे० अन्वाचय 2. समाहार अर्थात् समुच्चयार्थक संबंध — यथा पाणी च पादौ च पाणिपादम् 3. इतरेतरयोग — अर्थात् पारस्परिक संयोग — यथा प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च प्लक्षन्यग्रोधौ 4. समुच्चय — अर्थात् सब मिलाकर यथा पचति च पठति च); दो उक्तियों के साथ च की बार२ आवृत्ति होती है 1. 'एक ओर — दूसरी ओर' 'यद्यपि — तथापि' अर्थ — विरोध को प्रकट करने के लिए — न सुलभा सकलेन्दुमुखी च सा किमपि चेदमनङ्ग विचेष्टितम् — विक्रम० २।९, ४।३, रघु० १६।७ या 2. दो बातों का एक साथ होना — या अव्यवहित घटना को प्रकट करने के लिए (ज्योंही — त्योंही) — ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः — रघु० १०।६, ३।४०, कु० ३।५८, ६६, श० ६।७, मा० ९।३९।

चक् (भ्वा० उभ० — चकति — ते, चकित) 1. तृप्त होना, सन्तुष्ट होना 2. प्रतिरोध करना, मुकाबला करना।

चकास् (अदा० पर० (विरल: — आ०) चकास्ति — स्ते, चकासित) 1. चमकना, उज्ज्वल होना नभश्चकासि चकास्ति शीतलकिरणचौम्बोचले लोचनम् — गीत० १०, चकासतं चारुचमूरुचर्मणा — शि० १।८, भट्टि० ३।१७ 2. (आलं०) प्रसन्न होना, समृद्ध होना — चित्तन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते — कि० १।१७, प्रेर० चमकाना, प्रकाशित करना — भि० ३।६, वि० चमकना, उज्ज्वल होना।

चकित (वि०) [चक् + क्त] (डर के कारण) 1 थरथराता हुआ, कांपता हुआ, भय°, साध्वस° — मेघ० २७ 2. डरा हुआ, प्रकम्पित, भौंचक्का व्याधानुसारचकिता हरिणीव यासि — मृच्छ० १।१७ अमरु ४६, मेघ० ११ 3 भयभीत, भीरु, सशंक — चकितविलोकितसकलदिशा० — गीत० २, चौलस्य चकितोच्चरा (दिश) — रघु० १०।७३, तम् (अव्य०) भय से, भौंचक्का होकर, सन्त्रस्त होकर, विस्मय के साथ — चकितमुपैति तथापि पार्श्वमस्य मालवि० ११११, समयचकितम् — गीत० ५, श० ४।४।

चकोर: [चक + ओरन्] पक्षीविशेष, तीतर की जाति का पक्षी (कहते हैं कि चन्द्रमा की किरणें ही इसका आहार है) — ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मत्ताश्चकोराङ्गना — विद्धशा०, १।११, हलचकोराक्षि विलोकयेति — रघु० ६।५९, ७।२५, स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम् — गीत० १०।

चक्रम् [क्रियते अनेन, कृ घञर्थे क नि० द्वित्वम् — तारा०] — गाड़ी का पहिया — चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च हि० १।१७३ 2 कुम्हार का चाक 3 एक तीक्ष्ण गोल अस्त्र, चक्र (विष्णु का) 4 तेल पेरने का कोल्हू 5 वृत्त, मण्डल कलापचक्रेषु निवेशिताननम् — ऋतु० २।१४ 6 दल, समुच्चय, समूह — शि० २०।१६ 7 राज्य, एकाधिपत्य 8 प्रांत, जिला, ग्रामसमूह 9 वर्तुलाकार सैनिक व्यूह 10. देह के भीतर के 'षट्चक्र', मूलाधार आदि 11. कालचक्र, वर्ष समूह 12. क्षितिज 13 सेना, समूह 14. जल का बहाव या जलप्रवाह 15. भँवर 16. नदी का मोड़, — क्र: 1 हंस, चकवा 2. समूह, दल, वर्ग। सम० — अङ्ग: 1. टेढ़ी गर्दन वाला हंस 2. गाड़ी 3. चकवा, — अट: 1. बाजीगर, सपेरा 2. दुष्ट, धूर्त, ठग 3 स्वर्णमुद्रा, दीनार, — आकार, — आकृति (वि०) वर्तुलाकार, गोल, — आयुध: विष्णु का विशेषण, — आवर्त: भँवर वाली या चक्करदार गति, — आह्व:, — आह्वय: चकवा — चक्राह्व हंसकुक्कुटम् — मनु० ५।१२, — ईश्वर: 1. 'चक्रस्वामी' विष्णु का नाम 2. जिले का सर्वोच्च अधिकारी, उपजीविन् (पुं०) तेली, — कारकम् 1. नाखून, 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, — गण्डु: गावतुम तकिया, — गति: (स्त्री०) चक्र-

कार गति, गोलाई में घूमना,—गुच्छः अशोक वृक्ष, -गुल्मम्, —गोप्तृ,—ग्रहणम्, —णी (स्त्री०) दुर्गप्राचीर, परकोटा, खाई,—चर (वि०) वृत्त में घूमने वाला,—चूडामणिः मुकुट में लगी गोलमणि, -जीवकः, -जीविन् (पुं०) कुम्हार,—तीर्थम्— एक पुण्य स्थान का नाम, —दंष्ट्रः सूअर,—धर 1 विष्णु का विशेषण- चक्रधरप्रभाव -रघु० १६।५५ 2 प्रभु, प्रान्त का राज्य पाल या शासक 3 गाँव का कलाबाज या बाजीगर,— धारा पहिए का घेरा - नाभिः पहिए की नाह नामन् (पुं०) 1 चकवा 2 लोहे की माक्षिक धातु, नायकः 1 दल का नेता 2. एक प्रकार का सुगंध-द्रव्य, - नेमिः पहिए की परिधि या घेरा नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण मेघ० १०९,—पाणि विष्णु का विशेषण,—पादः पादकः 1 गाड़ी 2 हाथी, पाल. 1 राज्यपाल 2 सेना के एक प्रभाग का अधिकारी 3 क्षितिज, -बन्धुः, -बान्धवः सूर्य, - बालः क., —बालः -लम्, -डम् 1 वृत्त, मण्डल 2 समूह, वर्ग, समुच्चय, राशि - कैरवचक्रवालम् भर्तृ० २।७४ 3. क्षितिज, (-लः) 1 पुराणों में वर्णित एक पर्वत-शृंखला जो भूमण्डल को दीवार की भाँति घेरे हुए तथा प्रकाश व अंधकार की सीमा समझी जाती है 2 चकवा, -भृत् (पुं०) 1 चक्रधारी 2 विष्णु का नाम, - भेदिनी रात, -भ्रमः,—भ्रमिः (स्त्री०) खराद यान आरोप्य चक्रभ्रमिमुष्णतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति रघु० ६।३२, —मण्डलिन् (पुं०) सांप की एक जाति,—मुखः सूअर, -यानम् पहिये से चलने वाला वाहन, -रदः सूअर,—वर्तिन् (पुं०) 1 सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, ससागर का प्रभु, समुद्र तक फैले राज्य का स्वामी (आसमुद्रक्षितीश अमर०) पुत्रमेव गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि श० १।१२, तव तन्वि कुचावेतौ नियतं चक्रवर्तिनौ, आसमुद्रक्षितीशोऽपि भवान् यत्र करप्रदः. उद्भट, (यहाँ 'चक्रवर्तिन्' शब्द में श्लेष है, यहाँ दूसरा अर्थ है 'आकार प्रकार में चकवे से मिलता जुलता' 'गोल'),—वाकः (स्त्री० —की) चकवा—दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्— मेघ० ८३,—वाटः 1. सीमा, हद 2. दीवट 3. कार्य में प्रवृत्त होना, -वातः बवंडर, तूफान-आँधी, —वृद्धिः ब्याज पर ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज- मनु० ८। १५३, १५६,— व्यूहः सैन्यदल की मंडलाकार स्थापना, —संज्ञम् रांग, (-ज्ञः) चकवा,—साह्वयः चकवा,—हस्तः विष्णु का विशेषण ।

चक्रक (वि०) [चक्रमिव कायति -कै+क] पहिये के आकार का, मंडलाकार, -कः (तर्क०) मंडल में तर्क करना ।

चक्रवत् (वि०) [चक्र+मतुप्; मस्य वः] 1. पहियों वाला 2. मंडलाकार, (पुं०) 1. तेली 2. प्रभु, सम्राट् 3 विष्णु का नाम ।

चक्राङ्गी, चक्राङ्कगी [ब० स०] हंसिनी ।

चक्रिका [चक्र+ठन् टाप् 1. ढेर, दल 2. दुरभिसंधि 3. घुटना ।

चक्रिन् (पुं०) [चक्र+इनि] 1 विष्णु का विशेषण— शि० १३।२२ 2 कुम्हार 3 तेली 4. सम्राट्, चक्रवर्ती राजा. निरंकुश शासक 5 राज्यपाल 6 गधा 7. चकवा 8 गुप्तचर, मुखबिर 9. सांप 10 कौवा 11 एक प्रकार का कलाबाज या बाजीगर ।

चक्रिय (वि०) [चक्र घ] गाड़ी में बैठ कर जाने वाला, यात्रा करने वाला ।

चक्रीवत् (पुं०) [चक्र+मतुप्, मस्य व, नि० चक्रस्य चक्रीभाव] गधा—शि० ५।८ ।

चक्ष् (अदा० आ०—चष्टे) [आर्धधातुक लकारों में अनियमित] 1 देखना, पर्यवेक्षण करना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 बोलना, कहना, बतलाना (प्रायः के साथ), आ . बोलना, घोषणा करना, वर्णन करना, बयान करना, बतलाना, पढ़ाना, समाचार देना (संप्र० के साथ) रघु० ५।१९, १२।५५, मनु० ४।५९, ८०, इत्याख्यानविद आचक्षते मा० २।२, कहना, संबोधित करना भामि० २।६३ 3 नाम लेना, पुकारना परि , 1 घोषणा करना, वर्णन करना 2. गिनना 3 उल्लेख करना 4 नाम लेना, पुकारना -वेदप्रदानादाचार्यं पितरं परिचक्षते, मनु० २।१७१, भग० १७।१३, १७, प्र . 1 कहना, बोलना, नियम बनाना —स्वजनाश्रु किलातिसंततं दहति प्रेतमिति प्रचक्षते—रघु० ८।८६ 2. नाम लेना, पुकारना योऽस्यात्मनः कारयिता तं क्षेत्रज्ञं प्रचक्षते मनु० १२।१२, २।१७, ३।२८, १०।१४, प्रत्या -त्याग देना, छोड़ देना, पीछे हटा देना, व्या- -, व्याख्या करना, टीका टिप्पण करना ।

चक्षस् (पुं०) [चक्ष्+असि] 1. अध्यापक, धर्म-विज्ञान का शिक्षक, दीक्षागुरु, आध्यात्मिक गुरु 2. बृहस्पति का विशेषण ।

चक्षुष्य (वि०) [चक्षुषे हितं स्यात् चक्षुस्+यत्] 1. मनोहर, प्रियदर्शन, सुहावना, सुन्दर 2. आँखों के लिए हितकर, -ष्या प्रियदर्शन या सुन्दरी स्त्री ।

चक्षुस् (नपुं०) [चक्ष्+उसि] 1 आँख, दृश्यं तमसि न पश्यति दीपेन विना सचक्षुरपि—भामि० १।९, कृष्णसारे ददच्चक्षुः श० १।६, तु० प्रज्ञाचक्षुस्, ज्ञानचक्षुस्, नयचक्षुस्, चारचक्षुस् आदि शब्दों को 2 दृष्टि, दर्शन, नजर, देखने की शक्ति —चक्षुरायुश्चैव प्रहीयते— मनु० ४।४१, ४२। सम० —गोचर (वि०) दृश्य, दृष्टिगोचर, दृष्टि-परास के अन्तर्गत होने वाला,

—दानम् प्राण प्रतिष्ठा के समय मूर्ति की आँखों में रंग भरना,—पथः दृष्टि-परास, क्षितिज, —मलम् आँखों की कीच, मल,—रागः (चक्षूरागः) 1 आँखों में लाली 2 'आँख का प्रेम' आँख लड़ाने से उत्पन्न प्रेम या अनुराग —पुरश्चक्षूरागमथालम्ब्य मनसोऽनन्यपरता—मा० ६।१५, चक्षूराग कोकिलेषु न परकलत्रेषु - का० ४१ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'आँख लाल आना' भी है), —रोगः (चक्षूरोग) आँख की बीमारी,—विषय 1. दृष्टि-परास, निगाह, उपस्थिति, दृश्यता—चक्षुर्विषयातिक्रान्तेषु कपोतेषु— हि० १, मनु० २।१९८ 2 दृष्टि का विषय, कोई भी दृश्य पदार्थ 3 क्षितिज, —श्रवस् (पुं०) साँप, कि० १६।४२, नै० १।२८।

चक्षुष्मत् (वि०) [चक्षुस्+मतुप्] 1 देखने वाला, आँखों वाला, देखने की शक्ति वाला,—यथा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्तमरसा द्वयो—रघु० ४।१८ °ता ४।११, 2. अच्छी दृष्टि रखने वाला।

चङ्कुरः, -र [चङ्क्+उलच्, उरच् वा] 1 वृक्ष 2 गाड़ी 3 वाहन (नपुं० भी)।

चङ्क्रमणम् [क्रम्+यङ्+ल्युट्, यङो लुक् नाग०] 1. इधर उधर घूमना, आना-जाना, सैर करना विष चङ्क्रमणं रात्रौ —चाण० ९७, चङ्के न चङ्क्रमितमचङ्क्रमणव्रतेन —नै० १।१४४, 2. धीरे २ या टेढ़ा-मेढ़ा जाना।

चञ्च् (भ्वा०पर०चञ्चति, चञ्चित) 1 चलायमान करना, लहराना, हिलाना—समरशिरसि चञ्चत्पञ्चचूडश्चमूनां —उत्तर०५।२, मा०५।२३, चञ्चच्चञ्चल् —गीत०४, चञ्चत्पराग—गीत० १ 2. विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम् —गीत० ४।

चञ्चः [चञ्च्+अच्] 1 टोकरी 2. पाँच अंगुलियों से मापा जाने वाला मापदण्ड, पञ्चाङ्गुल मान।

चञ्चरिन् (पुं०) [चर्+यङ्, णिनि, पृषोदर०] भौंरा, —करी करीकरीति चेद् चिरं करीकरीति कार्, स्थिरी करीकरीति केन चञ्चरीतिचञ्चरी— उद्भट।

चञ्चरीक [चर्+ईकन्, नि० द्वित्वम्] भौंरा, —मुकुलयति मदीया चेतना चञ्चरीक – रस०, कुन्द लतायामिमुक्तमकरन्द रसाया अपि चञ्चरीक, प्रणयप्रसङ्गप्रेमभरमञ्जनकालरवाकलीतः - विद्धशा० १।४, विक्रमांक० १।२, भामि० १।४८।

चञ्चल (वि०) [चञ्च्+अलच्, चञ्चं गतिं लाति ला+क वा तारा०] 1. चलायमान, हिलता हुआ, कंपमान, थरथराता हुआ पूर्वेव नीलहरिणीविलुचञ्चलाक्षी —चौर० २७, चञ्चलकुण्डल—गीत० ७, अमरु ७९ 2. (आलं०) चलचित्त, चपल, अस्थिर लोला मेघवितानमध्यविलसत्सौदामिनीचञ्चला भर्तृ० ३५४, कि०२।१९, मनश्चञ्चलमस्थिरम्—भग०६।२६,—ल 1 वायु 2 प्रेमी 3 स्वेच्छाचारी, —ला 1 बिजली, 2. धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी।

चञ्चा [चञ्च्+अच्+टाप्] 1 बेंत से बनी कोई वस्तु 2 पुआल का बना पुतला, गुड्डा, गुड़िया।

चञ्चु [चञ्च्+उन्] 1 प्रसिद्ध, विख्यात, विदित 2 चतुर (जैसे कि अक्षर चञ्चु) दे० चुञ्चु, —चु हरिण, —चुः, —चू (स्त्री०) चोंच, चूँच सम० —पुटः, —टम् पक्षी की बन्द चोंच -चञ्चुपुटं चपलयन्ति चकोरपोताः रस० भामि० २।९९, अमोचि चञ्चुपुटमौनमुद्रा विहायसा तेन विहस्य भूप —नै० ३।९९, व्यविलक्ष्यचञ्चुपुटेन पक्षती—२।२, ४, अमरु ११,—प्रहारः चोंच से ठूंग मारना,—भृत्, —मत् (पुं०) पक्षी,—सूचिः बया, सौचिक पक्षी।

चञ्चुर (वि०) [चञ्च्+उरच्] चतुर, विशेषज्ञ।

चट् I (भ्वा० पर० -चटति, चटित) टूटना, गिरना, अलग होना II (चुरा० उभ० चाटयति —ते) 1 मार डालना, क्षति पहुँचाना 2 तोड़ना, मोड़ना, उद्—, 1 भयभीत करना, भगाना, डराना 2 उखेड़ना, हटाना, नाश करना, नै० ३।७ 3 मार डालना, क्षति पहुँचाना।

चटकः [चट्+क्वुन्] चिड़िया, गौरैया।

चटका, चटिका, [चटक+टाप्, आदेशश्च] चिड़िया।

चटु, -टू (नपुं०) [चट्+कु] कृपा तथा चापलूसी से पूर्ण शब्द, दे० चाटु, —टु पेट।

चटुल (वि०) [चट्+उलच्] 1 कम्पमान, थरथराता हुआ, अस्थिर, घुमक्कड़, डोलायमान —आयस्तमैक्षत जनश्चटुलाक्षपादम्- शि० ५।६ नासातिमात्रचटुलैः स्मरत सुनेत्री —रघु० ९।५८, चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि मेघ० ४० 2 चंचल, चपल (जैसा कि प्रेम) —किमन्य चटुल त्वयेह नयना सौभाग्यमेतादृशम् अमरु १४, चटुलप्रेम्णा दयितेन ७१, 3 बढ़िया, सुन्दर, रुचिकर इति चटुलचाटुपटु चारुमुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम् गीत० १०, —ला बिजली।

चटुलोल, चटूल्लोल (वि०) [कर्म० स०, नि० साधु] 1 कंपनशील 2 प्रिय, सुन्दर 3 मधुरभाषी।

चण (वि०) [चण्+अच्] (समास के अन्त में) विख्यात, प्रसिद्ध, कुशल, कीर्तिकर अक्षरचण, —णः चना।

चणक [चण्+क्वुन्] चना —अपलितोऽपि हि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रकं भङ्क्तुम् -पंच० १।१३२।

चण्ड (वि०) [चण्ड्+अच्] 1 (क) तिग्म, प्रचण्ड, उग्र, आवेशयुक्त क्रोधी, दुष्ट अवैकमेनोऽपराधचण्डात् गुरोः कृशानुप्रतिमाद् बिभेषि—रघु० २।४९, मालवि० ३।२०, वे०नी०—चण्डी 2 उष्ण, गरम जैसा कि 'चण्डांशु' में 3 सक्रिय, फुर्तीला 4 तीखा, तीक्ष्ण,—डम् 1 उष्णता गर्मी 2 आवेश, क्रोध। सम० —अंशु, —दीधिति.

—तनुः सूर्य —ईश्वर शिव का एकरूप, —मुंडा दुर्गा का ही एक रूप (=चामुंडा), —मृग जंगली जानवर —विक्रम (वि०) तीव्र शक्ति का, अपनी शक्ति में भीषण।

चण्डा,—डी (स्त्री०) 1 दुर्गा का विशेषण 2 आवेशयुक्त, या क्रोधी स्त्री—चण्डी चण्डं हन्तुमभ्युद्यता माम्—मालवि० ३।२१, चण्डी मामवधूय पादपतितं जातानुतापेव सा विक्रम० ४।२८, रघु० १२।५, मेघ० १०५। सम० —ईश्वर,—पति शिव का विशेषण—पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य मेघ० ३३।

चण्डात [चण्ड+अत्+अण्] सुगन्धयुक्त करवीर।

चण्डातक,—कम् [चण्ड+अत्+ण्वुल्] लहंगा, साया।

चण्डाल (वि०) [चण्ड्+आलच्] दुष्कर्मा, क्रूर कर्मा, तु० कर्मचाण्डाल, —लः 1 अत्यन्त नीच और घृणित वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता व ब्राह्मण माता से हुई मानी जाती है 2 इस जाति का पुरुष जातिबहिष्कृत चण्डाल किमत्र द्विजातिरथवा मनु० ३।५६, मनु० ५।१३१, १०।१२ १६, ११।१७५। सम० —वल्लकी चण्डाल की वीणा, एक सामान्य या देहाती वीणा।

चण्डालिका [चण्डाल+ठन्+टाप्] चण्डाल की वीणा।

चण्डिका [चण्डी+कन्+टाप्, ह्रस्व] दुर्गा देवी।

चण्डिमन् (पुं०) [चण्ड+इमनिच्] 1 आवेश उग्रता, तीक्ष्णता, क्रोध, 2 गर्मी, ताप।

चण्डिल [चंड्+इलच्] नाई।

चतुर (सं० वि०) [चत्+उरन्] (नित्य बहुवचनांत, पुं० चत्वारः, स्त्री० चतस्रः, नपुं० चत्वारि) चार —चत्वारो वयमृत्विजः —वेणी० १।२२, चतस्रोऽवस्था बाल्यं कौमारं यौवनं वार्धकं चेति, चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽस्य पादा आदि —शेषान् मासान् गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा —मेघ० ११०, समास में चतुर् का र् विसर्ग बन जाता है और विसर्ग कई स्थानों पर स् या ष् में परिणत हो जाता है अथवा अपरिवर्तित रहता है। सम० —अंशः चतुर्थ भाग, —अङ्ग (वि०) चार अवयवों, चार दल युक्त, (—ङ्गम्) 1 हाथी, रथ, घोड़े और पदाति इन चार अंगों से सुसज्जित सेना—एको हि खञ्जनवरो नलिनीदलस्थो दृष्टः करोति चतुरङ्गबलाधिपत्यम् —शृङ्गार० ४, चतुरङ्गबलो राजा जगतीं वशमानयेत्, अहं पञ्चाङ्गबलवानाकाशं वशमानये —सुभा० 2. एक प्रकार की शतरंज, —अन्त (वि०) चारों ओर सीमायुक्त भुक्त्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी— श० ४।१९, —अन्ता पृथ्वी, —अशीत (वि०) चौरासिवाँ, —अशीति (वि० स्त्री०) चौरासी, —अस्र,—अस्र (वि०) (अश्रि,—स्रि के स्थान पर) 1. चार किनारों वाला, चतुष्कोण रघु० ६।१० 2. समचित, नियमित या सुन्दर, सुडौल—बभूव तस्याश्चतुरस्रशोभि वपुः —कु० १।३२, (स्रः,—स्रः) वर्गाकार,—अहम् चार दिन का समय—आननः ब्रह्मा का विशेषण—इतरतापशतानि यथेच्छया वितर तानि सहे चतुरानन—उद्भट, —आश्रमम् ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ, —उत्तर (वि०) चार बढ़ा कर —कर्ण (चतुष्कर्ण) (वि०) केवल दो व्यक्तियों द्वारा ही सुना गया, —कोण (चतुष्कोण) (वि०) वर्ग, चार कोनों वाला, (णः) वर्ग, चतुर्भुज, चार पार्श्व वाली आकृति —गति 1. परमात्मा 2. कछुवा,—गुण (वि०) चारगुणा, चौगुना, चौकड़ा, —चत्वारिंशत् (चतुश्चत्वारिंशत्) (वि०) चवालीस °रिंश चवालीसवाँ,—नवत (चतुर्नवत) (वि०) चौरानवेवाँ या चौरानवे जोड़ कर—चतुर्नवतं शतम् एक सौ चौरानवे,—दंतः इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण —दश (वि०) चौदहवाँ —दशन् (वि०) चौदह, °रत्नानि (ब० व०) समुद्र मंथन के परिणामस्वरूप समुद्र से प्राप्त १४ रत्न (इनके नाम निम्नांकित श्लोक में गिनाये गये हैं —लक्ष्मी कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा गावः कामदुघा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः, अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्युः सदा मङ्गलम्, °विद्याः (ब० व०) चौदह विद्याएँ (वे यह हैं —षडङ्गमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकम्, मीमांसा तर्कमपि च एता विद्याश्चतुर्दश),—दशी चांद्रपक्ष का चौदहवाँ दिन,—दिशम् सामूहिक रूप से चारों दिशाएँ,—दिशम् (अव्य०) चारों दिशाओं में, सब दिशाओं में,—दोलः,—लम् राजकीय पालकी,—द्वारम् 1 चारों दिशाओं में चार द्वारों वाला भवन 2 सामूहिक रूप से चारों द्वार, —नवति (वि०-स्त्री०) चौरानवे,—पञ्च (वि०) (चतुः पञ्च या चतुष्पञ्च) चार या पाँच, —पञ्चाशत् (स्त्री०) (चतुःपञ्चाशत्, चतुष्पञ्चाशत्) चव्वन, —पथ (चतुः पथः, चतुष्पथः) (थम्—थी) वह स्थान जहाँ चार सड़कें मिलें, चौराहा,—मनु० ४।३९ ९।२६४, (थः) ब्राह्मण,—पद (वि०) (चतुष्पदः) 1 चार पैरों वाला 2. चार अंशों वाला (दः) चौपाया (दी) चार चरण का श्लोक—सा चतुष्पदी छन्दः पूर्णं वाक्येतीति स्थिता—छ० १,—पाठी (चतुष्पाठी) ब्राह्मणों का विद्यालय जिसमें चारों वेदों का पठन-पाठन होता हो। —पाणिः (चतुष्पाणिः) विष्णु का विशेषण,—पाद्-द (चतुष्पाद्-द) (वि०) 1, चौपाया 2. चार अवयवों या चार भागों वाला, (पुं०) 1. चौपाया 2 (विधि में) व्यवहार की एक कार्यविधि (अभियोगों की चार पद्धतियाँ) जिसमें चार प्रकार की प्रक्रियाएँ हों अर्थात् तर्क, पक्षसमर्थ-

अस्पृष्टित, निर्णय, —बाहु विष्णु की उपाधि (कु-नपुं०) वर्ग,—भद्रम् चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष) की समष्टि, —भाग चौथाभाग चौथाई,—भुज (वि०) 1 चतुष्कोण 2. चार भुजाओं वाला—मनु० ११।४६, (पुं०) विष्णु की उपाधि रघु० १६।३, (नपुं०) वर्ग,—मास्यम् चातुर्मास्य, चौमासा (आषाढ़ सुदी एकादशी से कार्तिक सुदी दशमी तक), —मुख (वि०) चार मुँह वाला (—खः) ब्रह्मा का विशेषण त्वत्तः सर्वं चतुर्मुखात्—रघु० १०।२२, (—खम्) 1. चार मुँह—कु० २।१७ 2. चार द्वार वाला मकान, —युगम् चार युगों की समष्टि,— रात्रम् (चतुरात्रम्) चार रात्रियों का समूह, —वक्त्रः ब्रह्मा का विशेषण —वर्गः मानव जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म अर्थ काम और मोक्ष) का समूह—रघु० १०।२२, —वर्णः हिन्दुओं की चार श्रेणियां या जातियां अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—चतुर्वर्णमयो लोकः रघु० १०।२२,—वार्षिकी चार वर्ष की आयु की गाय, —विंश (वि०) 1 चौबीस 2. चौबीस जोड़कर जैसे कि चतुर्विंशशतम्— (१२४),—विंशति (वि० या स्त्री०) चौबीस,—विंशतिक (वि०) २४ से युक्त —विद्य (वि०) जिसने चारों वेदों का अध्ययन किया है —विध (वि०) चार प्रकार का चौतही, —वेद (वि०) चारों वेदों से परिचित (—दः) परमात्मा —व्यूह विष्णु का नाम (—हम्) आयुर्वेदविज्ञान —शालम् (चतुःशालम् चतुश्शालम् चतुःशाली, चतुश्शाली) चार मकानों का समूह चारों ओर चार भवनों से घिरा हुआ चतुष्कोण, —षष्टि (वि० या स्त्री०) चौसठ —कला (स्त्री० ब० व०) चौसठ कलाएँ —सप्तति (वि० या स्त्री०) चौहत्तर —हायन, —न (वि०) चार वर्ष की आयु का (इस शब्द का स्त्रीलिङ्ग रूप आकारान्त है यदि निर्जीव पदार्थों का ही संकेत है, और यदि सजीव जन्तुओं से अभिप्राय है तो यह शब्द 'ईकारान्त' बन जाता है), —होतृकम् चारों ऋत्विजों (पुरोहितों) का समूह।

चतुर (वि०) [चत्+उरच्] 1. होशियार कुशल मेधावी, तीक्ष्णबुद्धि—सर्वेषिता परिवन्धानुरोध चतुरी—मुद्रा० ३।१९ अमरु १५।१४ ... काभिनी—रघु० ९।३९, २०।११, 2 फुर्तीला, द्रुतगामी या तेज 3 मनोहर सुन्दर, प्रिय, ...—कुमारेति ... चतुर ...—मेघ० ९,४७, कु० ...।४७ ५।१६, —रः 1. हाथीखाना, ... 2 हस्तिशाला।

चतुर्थ (वि०) (स्त्री०—र्थी) [चतुर्णां पूरणः डट् थुक् च] चौथा,—र्थः चौथा भाग। सम० —आश्रमः ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चौथी अवस्था संन्यास, —भाज् (वि०) अपनी प्रजा से आय का चतुर्थांश ग्रहण करने वाला, राजा, (अर्थ संकट के अवसर पर ही चतुर्थांश लेना विहित है अन्यथा प्रचलित केवल छठा भाग है)।

चतुर्थक (वि०) [चतुर्थ+कन्] चौथा —कः चौथैया ज्वर (जो हर चार दिन के बाद आता है) चौथिया।

चतुर्थी [चतुर्थ+ङीप्] 1 चान्द्र पक्ष का चौथा दिन 2 (व्या० में) संप्रदान कारक। सम० —कर्मन् (नपुं०) विवाह के चौथे दिन किया जाने वाला संस्कार।

चतुर्धा (अव्य०) [चतुर्+धा] चार प्रकार से चारगुणा।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयवा चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1 चार से युक्त 2, चार बढ़ा कर द्विकं त्रिकं चतुष्कं च पञ्चकं च शतं समम् मनु० ८।१४२ (अर्थात् १०२ १०३, १०४ या १०५ या दो से पाँच प्रतिशत का ब्याज) —कम् 1 चार का समूह 2 चौराहा 3 चौकोर आंगन 4 चार स्तम्भों पर अवस्थित भवन कमरा या मुकाम कु० ५।६९, ७।९ —ष्की 1 एक चौकोर बड़ा तालाब 2 मच्छरदानी मसहरी।

चतुष्टय (वि०) (स्त्री० —यी) [चत्वारोऽवयवा विधा अस्य तयप्] चारगुणा चार से युक्त पुराणस्य कवेस्तस्य चतुर्मुखसमीरिता प्रवृत्तिरासीच्छब्दानां चरितार्था चतुष्टयी। कु० २।१७, —यम् चार का समूह एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् हि० प्र० ११ कु० ७।१८, मासचतुष्टयस्य भोजनम्—हि० १ 2 वर्ग।

चत्वरम् [चत्—ष्वरच्] 1 चौकोर जगह या आंगन 2 चौराहा (जहाँ कई सड़कें मिलें) स खलु श्रेष्ठिचत्वरं निवसति मृच्छ० २ 3 यज्ञ के लिए तैयार की गई समतल भूमि।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) [चत्वारो दशतः परिमाणमस्य ब० स०, नि०] चालीस।

चत्वाल [चत्+वालञ्] 1 यज्ञाग्नि रखने के लिए या आहुति देने के लिए भूमि खोद कर बनाया गया हवनकुंड 2 कुशाग्रास 3 गर्भाशय।

चद् (भ्वा० उभ० चदति ते) मांगना, प्रार्थना करना।

चदिर [चद्+किरच्, नि०] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हाथी 4 सांप।

चन (अव्य०) नहीं, न केवल, भी नहीं (अकेला कभी प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि ... 'किम्' शब्द तथा उससे व्युत्पन्न शब्दों (कद्, कथम्, क्व, कदा कुत आदि) के साथ संयुक्त होकर अनिश्चयात्मक अर्थ को प्रकट करता है—दे० 'किम्' के नी०) [कई विद्वान् 'चन' को पृथक् शब्द न मान कर केवल (च) और (न) का संयोग मानते हैं]।

चन्द् (भ्वा० पर०—चन्दति, चन्दित) 1 चमकना, प्रसन्न होना, खुश होना।

चन्द [चन्द्+णिच्+अच्] 1 चन्द्रमा, कपूर।

चन्दन, —नम् [चन्द्+णिच्+ल्युट्] चंदन (चंदन का वृक्ष, इसकी लकड़ी या इससे तैयार किया गया कोई स्निग्ध पदार्थ—सुगंध और शीतलता की दृष्टि से अत्युत्तम समझा जाता है)। अनलायागुरुचन्दनैधसे रघु० ८।७१ मणिप्रकाराः सरसं च चन्दनं शुचौ प्रिये यान्ति जनस्य सेव्यताम् ऋतु० १।२, गच्छ चापत लोकश्चन्दनं किल शीतलम्, पुत्रगात्रस्य संस्पर्शश्चन्दनादतिरिच्यते पंच० ५।२०, विना मलयमन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति -१।४१। सम० अचलः—अद्रिः गिरि, मलय पर्वत, —उदकम् चन्दन का पानी, —पुष्पम् लौंग, —सारः अत्यन्त श्रेष्ठ चन्दन की लकड़ी।

चन्दिर [चन्द्+किरच्] 1 हाथी 2 चन्द्रमा—अनिशं मानसमम्बुनिधियंशो विमलं शारदचान्द्रचन्द्रिका —भामि० १।११२ मुकुन्दमुखचन्दिरे चिरमिदं चकोरायताम् -४।१।

चन्द्र [चन्द्+णिच्+रक्] 1 चन्द्रमा, यथा प्रह्लादनाच्चन्द्रः रघु० ४।१२, हृतचन्द्रा तमसेव कौमुदी —८।३७, न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनि -हि० १।६१, मुख° वदन° आदि, पर्याप्तचन्द्रेव शरत्त्रियामा - कु० ७।२६ (पौराणिक वृत्त के लिए दे० सोम) 2 चन्द्र ग्रह 3 कपूर विलेपनस्याधिकचन्द्रभागताविभावनाच्चापललाप पाण्डुताम् नै० १।५१ 4 मयूर पंखों में आँख का चिह्न 5 जल 6 सोना (जब 'चन्द्र' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'श्रेष्ठ, प्रमुख, श्रीमान्' यथा पुरुषचन्द्र 'मनुष्यों में चन्द्रमा' अर्थात् एक श्रेष्ठ या महानुभाव व्यक्ति), —द्रा 1 इलायची 2 खुला कमरा (जिस पर केवल छत हो दा)। सम० —अंशुः चन्द्रमा की किरण, —अर्धः आधा चन्द्रमा, °चूडामणि, °मौलि, °शेखर शिव के विशेषण, —आतपः 1 चाँदनी 2 चंदोवा 3 प्रशस्त कक्ष (जिसमें केवल छत हो) —आत्मजः, —औरसः—जः—जातः,—तनयः—नन्दनः,—पुत्रः बुधग्रह,- आननः (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला (नः) कार्तिकेय का विशेषण —आपीडः शिव का विशेषण, —आभासः 'झूठा चन्द्रमा' वास्तविक चन्द्रमा से मिलती जुलती आकाश में दिखाई देने वाली आकृति —आह्वयः कपूर, —इष्टा कमल का पौधा कमलों का समूह, रात को कुमुदिनी का खिलना, —उदयः चन्द्रमा का उगना, —उपलः चन्द्रकान्तमणि—कान्तः चंद्रकांतमणि (चन्द्रमा के प्रभाव से, कहते हैं इस मणि से रस झरता है) -द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः —उत्तर० ६।१२, शि० ४।५८, अमरु ५७, भर्तृ० १।२१, मा० १।२४ (तः,—तम्) रात को खिलने वाला श्वेत कुमुद (तम्) चन्दन की लकड़ी—कला चन्द्रमा की रेखा —राहोश्चन्द्रकलामिवाननचरीं दैवात्समासाद्य मे—मा० ५।२८,—कान्ता 1 रात 2. चाँदनी,—कान्ति चाँदनी (नपुं०) चाँदी, —क्षयः चान्द्रमास का अंतिम दिन (अमावस्या) या नूतनचन्द्रदिवस जब कि चन्द्रमा दिखाई नहीं देता,—गृहम् कर्कराशि, राशिचक्र में चौथी राशि, —गोलः चन्द्रलोक, चन्द्रमण्डल,—गोलिका चाँदनी —ग्रहणम् चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना,—चञ्चला छोटी मछली, —चूडः —चूडामणि, —मौलि,— शेखर शिव के विशेषण —रहस्युपस्पृश्य वनाय चन्द्रशेखर —कु० ५।५८, ८६, रघु० ६।३४ —दाराः (पुं०, ब० व०) 'चन्द्रमा की पत्नियाँ' २७ नक्षत्र (पुराणों की दृष्टि से यह दक्ष की पुत्रियाँ थीं और चन्द्रमा को ब्याही गई थीं —द्युतिः चन्दन की लकड़ी (स्त्री०) चाँदनी, —पादः (पुं०) चन्द्रकिरण —पादाः चन्द्रकिरण—मेघ० ७०, मा० ७।१०, —प्रभा चन्द्रमा का प्रकाश, —बाला 1 बड़ी इलायची 2 चाँदनी —बिन्दुः अनुस्वार (ँ) का चिह्न —भस्मन् (नपुं०) कपूर —भागा दक्षिणभारत की एक नदी —भासः तलवार दे० चन्द्रहास,—भूतिः (नपुं०) चाँदी —मणिः चन्द्रकान्त मणि,—रेखा,—लेखा चन्द्रमा की कला, —रेणुः साहित्यचोर,—लोहः चन्द्रलोक —लोहकम्, —लौहम् —लौहकम् चाँदी,—वंशः राजाओं का चन्द्रवंश, भारत के राजकुलों में दूसरी बड़ी पंक्ति —वदन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला,—व्रतम् एक प्रकार की प्रतिज्ञा या तपस्या=चान्द्रायण,—शाला 1 चौबारा (घर में सबसे ऊपर की मंजिल का कमरा) रघु० १३।४० 2 चाँदनी,—शालिका चौबारा, —शिला चन्द्रकान्तमणि - भट्टि० ११।१५,- संज्ञः कपूर, —संज्ञः वृक्ष (का) छोटी इलायची,—सालोक्यम् चाँद स्वर्ग की प्राप्ति, —हन् (नपुं०) राहु का विशेषण —हासः 1 चमकीली तलवार 2 रावण की तलवार -हे पाणय किमिति शासकं चन्द्रहासम् —बालरा० १।५६, ६१ 3 केरल का एक राजा, सुधार्मिक का पुत्र (यह मूलनक्षत्र में पैदा हुआ था, और इसके बायें पैर में छः अंगुलियाँ थी, इसी कारण इसका पिता शत्रुओं द्वारा मारा गया और यह अनाथ और दरिद्र हो गया। बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् उसका राज्य उसे फिर मिल गया। जिस समय अश्वमेध के घोड़े के साथ घूमते हुए कृष्ण और अर्जुन कौन्तल में आये तो इसने उनसे मित्रता कर ली)।

चन्द्रक [चन्द्र+कन्] 1. चाँद 2. मोर के पंखों में आँख का चिह्न 3. नाखून 4 चन्द्रमा के आकार का वृत्त (पानी में तेल की बूंद गिरने से बन जाता है)।

चन्द्रकिन् (पुं०) [चन्द्रक+इनि] मोर,—शि० ३।४९।

चन्द्रमस् (पुं०) [चन्द्र+मि+असुन्, मादेशः] चाँद,—नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२।

चन्द्रिका [चन्द्र+ठन्+टाप्] 1. चाँदनी, ज्योत्स्ना—इत: स्तुतिः का खलु चन्द्रिकाया यदब्धिमप्युत्तरलीकरोति—नै० ३।११६, रघु० १९।३९, कामुकैः कुम्भीलकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४ 2. (समास के अन्त में) विशदीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालना। अलंकारचन्द्रिका, काव्यचन्द्रिका—तु०—कौमुदी 3. जगमगाहट 4. बड़ी इलायची 5. चन्द्रभागा नामक नदी 6. मल्लिका लता। सम०—अम्बुजम् चन्द्रोदय होने पर खिलने वाला कुमुद,—द्रावः चन्द्रकांतमणि,—पायिन् (पुं०) चकोर पक्षी।

चन्द्रिलः [चन्द्र+इलच्] 1. शिव का विशेषण।

चप् i (भ्वा० पर०—चपति) सांत्वना देना, ढाढस देना। ii (चुरा० उभ०—चपयति—ते) पीसना, चूरा करना, मांडना।

चपटः=चपेटः

चपल (वि०) [चुप्+कल, उपधोकारस्याकार] 1. हिलने-डुलने वाला, कंपमान, थरथराने वाला—कुम्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूला—श० १।१५, चपलायताक्षी—चौर० ८ 2. अस्थिर, चंचल, चलचित्त, दोलायमान—भा० २।११, चपलमति आदि 3. भंगुर, अनित्य, क्षणिक—नलिनीदलगतजलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्—मोह० ५ 4 फुर्तीला, चपल, चुस्त—(वलम्) दीर्घाक्षं यच्चपलमप्यचोक्षते—का० ११८ 5. विचारशून्य, अविवेकी—तु० चापल,—लः 1. मछली 2. पारा 3. चातक पक्षी 4 अंग 5. सुगंध द्रव्य।

चपला [चपल+टाप्] 1. बिजली—कुरबककुसुमं चपलासुषमं रतिपतिमृगकानने—गीत० ७ 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. मदिरा 4. धन की देवी लक्ष्मी 5 जिह्वा। सम०—जनः चंचल तथा अस्थिरमन स्त्री। शि० ९।१६।

चपेटः [चप्+इट्+अच्] 1. थप्पड़ 2. चाटा।

चपेटा, चपेटिका [चपेट्+टाप्, चपेट+कन्+टाप्, इत्वम्] चाँटा—बालकोपाध्यायः शिष्याय चपेटिकां ददाति—महा० ।

चम् (भ्वा० पर०—चमति, चान्त) 1. पीना, आचमन करना, चढ़ा जाना,—चचाम मधु माध्वीकम्—भट्टि० १४।९४ 2. खाना, आ—,(आ—चामति) 1. आचमन करना, एक सांस में पी जाना, चाटना—नाचेमे हिममपि वारि वारणेन—कि० ७।३४, भामि० ४।३८, उत्तर० ४।१ 2. चाट लेना, पी जाना, सोख लेना—आचामति स्वेदलवान्मुखे ते—रघु० १३।२०, ९।६८।

चमत्करणम्, चमत्कारः, चमत्कृतिः (स्त्री०) 1. विस्मय, आश्चर्य 2 खेल, तमाशा 3 काव्य सौन्दर्य (जिससे काव्यरस की अनुभूति होती है)—चेतश्चमत्कृतिपदं कवितेव रम्या—भामि० ३।१, तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्—काव्य० १।

चमरः [चम्+अरच्] एक प्रकार का हरिण,—रः,—रम् चौरी (प्राय. चमर मृग की पूंछ से बनी),—री, चमर की मादा—यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्यः कु० १।१, ४८, शि० ४।६०, मेघ० ५३। सम०—पुच्छम् चमर की पूंछ जो पंखे का काम देती है, (—च्छः) गिलहरी।

चमरिकः [चमर+ठन्] कोविदार वृक्ष, कचनार का पेड़।

चमसः,—सम् [चमत्यस्मिन् चम+असच् नाग०] सोमपान करने का लकड़ी का चमचे के आकार का यज्ञ पात्र,—याज्ञ० १।१८३, ('चमसो भी)।

चमू (स्त्री०) [चम्+ऊ] सेना पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्—भग० १।३, वासवीनां चमूनाम्—मेघ० ४३, गजवती जवनीयहया चमूः रघु० ९।१० 2 सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी ७२९ रथ, २१८७ सवार तथा ३६४५ पदाति हों। सम०—चरः सैनिक, योद्धा,—नाथः,—पः,—पति सेनापति, कमांडर, सेना नायक—रघु० १३।७४—हरः शिव की उपाधि।

चमूरुः [चम्+ऊरु, उत्वम्] एक प्रकार का हरिण—चकासतं चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८।

चम्प् (चुरा० उभ०—चम्पयति—ते) जाना, चलना-फिरना।

चम्पकः [चम्प्+ण्वुल्] 1 चम्पा नामक पौधा जिसके पीले, सुगंधयुक्त फूल लगते हैं 2 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य,—कम् इस वृक्ष का फूल—अद्यापि तां कनकचम्पकदामगौरीम्—चौर० १। 1. सम०—माला चम्पाकली, स्त्रियों का एक आभूषण जो गले में पहना जाता है 2. चम्पा के फूलों की माला 3. एक प्रकार का छंद, दे० परिशिष्ट,—रम्भा केले की एक जाति।

चम्पकालुः [चम्पकेन पनसावयवविशेषेण अलति, चम्पक+अल्+उण्] कटहल का पेड़।

चम्पकावती, चम्पा, चंपावती [चम्पक+मतुप्+ङीप्, वत्व दीर्घश्च, चम्प्+अच्+टाप्, चम्पा+मतुप्+ङीप् वत्व] गंगा के किनारे एक प्राचीन नगर, अंगदेश की राजधानी, वर्तमान भागलपुर।

चम्पालुः=चम्पकालुः।

चम्पूः (स्त्री०) [चम्प्+ऊ] एक प्रकार का काव्य जो गद्य और पद्य दोनों रचनाओं से युक्त होता है तथा जिसमें एक ही विषय की चर्चा होती है—गद्यपद्यमय

काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते —सा० द० ५६९, उदा० नीलचंपू, नलचंपू और भारतचंपू आदि ।

चय् (भ्वा० आ० —चयते) किसी जगह जाना, हिलना-जुलना ।

चय [चि+अच्] 1 समाज, संग्रह, समुच्चय, ढेर, राशि —चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा —शि० १।३, मृदां चयः —उत्तर० २।९, मिट्टी का ढेर, कचानां चय —भर्तृ० १।५, बालों का मींडी (गुच्छा), इसी प्रकार चमरीचय, —शि० ४।६० कुसुमचय तुषारचय आदि 2. किसी भवन की नींव की मिट्टी का टीला 3 किले की खाई की मिट्टी का टीला 4. दुर्गप्राचीर 5 किले का द्वार 6. तिपाई, चौकी 7 भवनों का समूह, विशाल भवन 8. लकड़ियों का चट्टा ।

चयनम् [चि+ल्युट्] 1 चुनना, बीनना (फूल आदि का) 2 ढेर लगाना, चट्टा लगाना ।

चर् (भ्वा० पर० —चरति, चरित) 1 चलना, घूमना, इधर-उधर जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना —नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति —श० १।१५, (यहाँ 'चर्' का अर्थ 'घास चरना' भी है) —इन्द्रियाणां हि चरताम् भग० २।६७, कच्चिन्मृगीणामनघा चरन्ति —रघु० ५।७, मनोरथा —रघु० १२।५९, मनु० २।२३, ६।६८, ८।२३६, ९।३०६, १०।५५ 2 अभ्यास करना, अनुष्ठान करना, पर्यवेक्षण करना —चरतः किल दुश्चरं तपः —रघु० ८।७९, याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३०, 3 करना, व्यवहार करना, आचरण करना (प्रायः 'अधि०' के साथ) —चरन्तीनां च कामतः —मनु० ५।९० ९।२८७, आत्मवत्सर्वभूतेषु यश्चरेत् —महा०, तस्या स्व माधु माचर —रघु० १।७६, (यहाँ पर धातु 'आचर' भी हो सकती है) 4 वास करना —मुखेन ह्रि चरन् दास्ये —हि० ३।९ 5. खाना, उपभोग करना 6 काम में लगना, व्यस्त होना 7 जाना, बने रहना, किसी न किसी अवस्था में विद्यमान रहना । प्रेर०—चारयति 1. चलाना, हिलाना-जुलाना 2. भेजना, निदेश देना, हिलाना 3. दूर करना 4 अनुष्ठान करना, आरम्भ कराना 5 संभोग कराना, —अति 1 अतिक्रमण करना उल्लंघन करना, अवज्ञा करना 2 अत्याचार करना, अनु —, अनुकरण करना, अथवा नकल करना, पीछे चलना, अप —, 1 अतिक्रमण करना, अत्याचार करना 2. अवज्ञा करना, अभि —, 1 अपराध करना, उल्लंघन करना 2. (पति के रूप में) विश्वास भंग देना, धोखा देना —मनु० ५।१६२, ९।१०२ 3. जादू करना, मंत्र फूंकना —संवननमभिचरन्नपि —याज्ञ० १।२९५, ३।२८९, आ —, 1. कर्म करना, अभ्यास करना, करना, अनुष्ठान करना —तपस्विकन्यास्वविनयमाचरति —श० १।२५, त्वं च तस्येष्टमाचरेः —विक्रम० ५।२०, रघु० १।८९, मनु० ५।१५६, न त्वाचरितः पूर्वैरयं धर्मः —महा० 2. बर्ताव करना, व्यवहार करना, आचरण करना —पुत्रमिवाचरेत् शिष्यम् —सिद्धा०, पुत्र मित्रवदाचरेत् चाण० ११ 3 घूमना, इधर-उधर फिरना 4. आश्रय लेना, अनुसरण करना —रघु० ४।४४, उद् —, 1 ऊपर जाना, उठना, निकलना, आगे बढ़ना —शि० १७।५२, 2 उठना, प्रकट होना, (शब्द) निकलना उच्चचार निनदोऽम्भसि तस्याः रघु० ९।७३, १५।४६, १६।८७, कोलाहलध्वनिरुदचरत् —का० २७ 3. बोलना, उच्चारण करना —शब्द उच्चरित एव मामगात् —रघु० ११।७३ 4. मलोत्सर्ग करना, पुरीषोत्सर्ग करना —तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रतृणादिना —मनु० ४।४९ 5 (आ० में प्रयोग) (क) उत्क्रमण करना, विचलित होना —भट्टि० ८।३१, (ख) उठना, बढ़ना नै० ५।४८, प्रेर० बुलवाना, उच्चारण करवाना, उप—, 1 सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में प्रस्तुत रहना —गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी —कु० १।६०, सममुपचर भद्रे सुप्रियं चाप्रियं च —मृच्छ० १।३१, रघु० ५।६२, मनु० ३।१९३ 2 (रोगी की) सेवा करना, चिकित्सा करना, परिचर्या करना 3 व्यवहार करना 4 निकट जाना, दुस्—, ठगना, धोखा देना, परि, 1 जाना, इधर उधर घूमना 2 सेवा-शुश्रूषा करना, सेवा करना या सेवा में उपस्थित रहना —मनु० २।२४३, भर्तृ० ३।४० 3 [illegible] [illegible] करना, परिचर्या करना, सेवा करना, प्र, 1 इधर उधर चलना, ऐंठ कर चलना 2. फैलना, प्रचलित होना, वर्तमान होना 3 (प्रथा का) प्रचलन होना 4 कार्य आरम्भ करना, मार्ग अपनाना, कार्य करने लगना —मनु० ९।२८४, (प्रेर०) इधर उधर फिराना, वि, —1 इधर उधर घूमना, भ्रमण करना, —रघु० २।८, मेघ० ११५ 2. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 3 कर्म करना, बर्ताव करना, व्यवहार करना, (प्रेर०) 1 सोचना, विचारना, मनन करना 2 चर्चा करना, वादविवाद करना —रघु० १४।४६ 3 हिसाब लगाना, अनुमान लगाना, हिसाब में गिनना, विचार करना —परेषामात्मनश्चैव यो विचार्य बलाबलम् —पंच० ३, सुविचार्य यत्कृतम् —कि० १।२२, व्यभि, —1 पथभ्रष्ट होना, विचलित होना 2 उल्लंघन करना, विश्वासघात करना कपटपूर्ण व्यवहार करना, सम् — (आ० जब कि करण० के साथ प्रयोग हो) चलना, घूमना, जाना, गुजरना, इधर उधर फिरना —मार्गे संचरमाणस्तम्भे —भट्टि० ८।३२, क्वचित्पथा संचरते सुराणाम् —रघु० १३।१९, नै० ६।५७, संचर्या बनाओ —कु० १।९ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3 दे देना, हस्तान्तरित होना । (प्रेर०) 1 इधर

इधर उधर भेजना, नेतृत्व करना, संचालन करना,—भ० ५।१५ 2 फैलाना, इधर उधर घुमाना 3 पहुँचाना, समाचार देना, दे देना, सौंप देना 4. चरने के लिए छोड़ना।

चर (वि०) (स्त्री० —री) [चर्+अच्] 1. हिलने-जुलने वाला, जाने वाला, चलने वाला (समास के अन्त में) 2 कांपता हुआ, हिलता हुआ 3 जंगम दे० 'चराचर' —मनु० ३।२०१, भग० १३।१५ 4 सजीव मनु० ५।२९, ७।१५ 5 (प्रत्यय की भांति प्रयुक्त) पूर्व-कालीन, भूतपूर्व आढ्यचर: जो पहले धनवान् था, इसी प्रकार देवदत्तचर: "भूतपूर्व देवदत्त" (भूतपूर्व ...), —रः 1 दूत 2 खञ्जन पक्षी 3 जूआ खेलना 4 कौड़ी 5 मंगलग्रह 6 मंगलवार। सम० —अचर (वि०) जंगम और स्थावर चराचराणां भूतानां कुक्षिराधारतां गतः कु० ६।६७, २।५, भग० ११।४३, (रम्) 1 सृष्टि की समस्त रचना, संसार मनु० १।५७, ६३, ३।७५, भग० ९।१०, 2 आकाश अन्तरिक्ष,—द्रव्यम् जंगम वस्तु - मूर्ति: वह मूर्ति जिसका जलूस या सवारी निकाली जाय।

चरक [चर्+कन्] 1 दूत 2 रमता साधु, भिक्षुक।

चरट [चर्+अटच्] खञ्जन पक्षी।

चरणः,—णम् [चर्+ल्युट्] 1 पैर शिरसि चरण एष न्यस्यते वारयैनम्—वेणी० ३।३८, त्वया कामममव्यो-ऽसि चरणं लिलयमुद्गतम् – ३९ 2 सहारा, स्तम्भ, थूणी 3 वृक्ष की जड़ 4. श्लोक की एक पंक्ति या पाद 5 चौथाई 6 वेद की शाखा या सम्प्रदाय 7 वंश —णम् 1 हिलना-जुलना, भ्रमण करना घूमना 2. अनुष्ठान, अभ्यास मनु० ६।७५ 3 जीवनचर्या, चालचलन, (नैतिक) व्यवहार 4 निष्पन्नता 5 खाना, उपभोग करना। सम० —अमृतम्, —उदकम् वह पानी जिसमें किसी श्रद्धेय ब्राह्मण या आध्यात्मिक उपदेष्टा के पैर धोये जा चुके हैं,- अरविन्दम्, —कमलम्, —पद्मम् कमल जैसे पैर,—आयुधः मुर्गा, —आस्कन्दनम् पैरों के नीचे रौंदना, कुचलना, पद दलित करना —ग्रन्थि (पुं०) —पर्वन् (नपुं०) टखना, —न्यासः पग, कदम, —पः वृक्ष,—पतनम् (दूसरे के चरणों में) गिरना, साष्टांग प्रणाम करना अमरु १३, —पतित (वि०) चरणों में दण्डवत् प्रणाम करता - मेघ० १०५, —शुश्रूषा, सेवा 1 दण्डप्रणाम 2 सेवा, भक्ति।

चरम (वि०) [चर्+अमच्] 1. अन्तिम, अन्त्य, आखरी —चरमा क्रिया 'अन्त्येष्टिक्रिया या अन्त्येष्टि संस्कार' 2. पश्चवर्ती, बाद का—पूर्वं तु चरम गतो - अमरु० 3. (आयु की दृष्टि से) बूढ़ा 4 बिल्कुल बाहर का 5. पश्चिमी, पच्छमी 6. सबसे नीच, सबसे कम,—मम् (अव्य०) आखिरकार, अन्त में। सम०—अचल: —अद्रि:,—क्ष्माभृत् (पुं०) पश्चिमी पर्वत (सूर्य और चन्द्रमा इसके पीछे ही अस्त हो जाने वाले माने जाते हैं),—अवस्था अन्तिम दशा (बुढ़ापा),—कालः मृत्यु की घड़ी।

चरि [चर्+इन्] जीव, जन्तु।

चरित (भू० क० कृ०) [चर्+क्त] 1. घूमा हुआ या फिरा हुआ, गया हुआ 2 अनुष्ठित, अभ्यस्त 3 अवाप्त 4 ज्ञात 5 प्रस्तुत —तम् 1 जाना, हिलना-जुलना, मार्ग काम करना करना, अभ्यास, व्यवहार, कृत्य, कर्म उदात्तचरितानाम् कि० १।१०, सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति १।८१ 4 जीवनी, आत्मजीवनी साहसकथाएँ इतिहास कहानी उत्तर रामचरितं रचयति प्रयुक्ते- उत्तर० १।२ इसी प्रकार 'दशकुमारचरितम्' आदि। सम०—अर्थ (वि०) 1 जिसने अपना अभीष्ट ध्येय पूरा कर लिया है, सफल रामस्तथा वृद्ध चरितार्थमिवात्मनम् रघु० १२।८७, १०।३९, २।१७ कि० १३।६२ 2 संतुष्ट, तृप्त 3 कार्यान्वित, संपन्न।

चरित्रम् [चर्+इत्र] 1 व्यवहार, आचरण चालचलन अभ्यास, कृत्य, कर्म 2 अनुष्ठान पर्यवेक्षण 3 इतिहास, जीवनचरित आत्मकथा, वृत्तान्त, साहसकथा 4 प्रकृति, स्वभाव 5 कर्तव्य अनुमोदित नियमों का पालन मनु० २।२०, ९।७।

चरिष्णु (वि०) [चर्+इष्णुच्] जंगम, सक्रिय, इधर उधर घूमने वाला।

चरुः [चर्+उन्] उबले चावल, आदि से, देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई आहुति - रघु० १०।५२, ५४, ५६। सम० —स्थाली देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए चावलों को उबालने का बर्तन।

चर्च् I (चुरा० उभ०–चर्चयति- ते, चर्चित) पढ़ना, ध्यान पूर्वक पढ़ना, अनुशीलन करना, अध्ययन करना। II (तुदा० पर० चर्चति, चर्चित) 1 गाली देना, धिक्कारना निन्दा करना, बुराभला कहना, चर्चा करना, विचार करना।

चर्चनम् [चर्च्+ल्युट्] 1 अध्ययन, आवृत्ति, बार२ पढ़ना 2 शरीर में उबटन लगाना।

चर्चरिका, चर्चरी [चर्चरी+कन्+टाप्, ह्रस्व, चर्च्+अरन्+ङीप्] 1 एक प्रकार का गान 2 (संगी० में) तालियाँ बजाना 3 विद्वानों का सस्वर पाठ 4 आमोद प्रमोद, हर्षध्वनि 5 उत्सव 6 घुंघराले 7 घुंघराले बाल।

चर्चा, चर्चिका [चर्च्+अङ्+टाप्, चर्चा+कन्+टाप् इत्वम्] 1 आवृत्ति, स्वर पाठ, अध्ययन, बार२ पढ़ना 2 बहस, पूछ-ताछ, अनुसंधान 3. विचार विमर्श

4. शरीर में उबटन का लेप करना---अङ्गचर्चामिवाम्बरम् का० १५७, श्रीखण्डचर्चाविषम्---गीत० ९ ।

चर्चिक्यम् [चर्चिका+ष्यञ्] 1 शरीर में लेप (मालिश) करना 2 उबटन ।

चर्चित (भू० क० कृ०) [चर्च्+क्त] 1 मालिश किया हुआ, लेप किया हुआ, सुगंधित, सुवासित आदि -चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली गीत० १, ऋतु० २।२१ 2 चर्चा किया गया, विचार किया गया, खोज किया गया ।

चर्पटः [चृप्+अटन्] थप्पड़, थप्पड़ मु० 'चपेट' ।

चर्पटी [चर्पट+ङीष्] चपाती, बिस्कुट ।

चर्भटः [चर्, क्विप्, भट+अच्, ... कर्म० स०] एक प्रकार की ककड़ी ।

चर्भटी [चर्भट+ङीष्] 1 हर्ष का कोलाहल 2 ककड़ी

चर्मणम् [चर्मन्+अच्, टिलोप] ... ।

चर्मण्वती [चर्मन्+मतुप्, ङीप्, मस्य वः] गंगा में इ.कर मिलने वाली एक नदी, वर्तमान चम्बल नदी ।

चर्मन् (नपुं०) [चर्+मनिन्] 1 (शरीर की) त्वचा 2 चमड़ा, खाल मनु० २।४१ १७४ 3 स्पर्शेन्द्रिय 4 ढाल शि० १८।२१ । सम० -अम्भस् (नपुं०) लसीका, -अवकर्तनम् चमड़े का काम करना, -अवकर्तिन्,-अवकर्तृ (पुं) मोची,- कारः, -कारिन् (पुं०) मोची चमड़ा कमाने या रंगने वाला -कीलः, -कीलम् मस्सा, अधिमांस, -चित्रकम् सफेद कोढ़, -जम् 1 बाल 2 रुधिर, तरल पूरी, -दण्डः, -नासिका हण्टर, -द्रुमः, -वृक्षः भूर्ज नाम का पेड़, -पट्टिका चमड़े का चौरस टुकड़ा जिस पर पासे डाल कर खेला जाय, -पत्रा चमगादड़, छोटा घरों में पाया जाने वाला चमगादड़,-पादुका चमड़े का जूता, -प्रभेदिका मोची की रांपी -प्रसेवकः, -प्रसेविका धौंकनी, -बन्धः चमड़े का फीता, -मुण्डा दुर्गा का विशेषण -यष्टिः (स्त्री०) हण्टर, -वसनः चर्मावृत शिव -वाद्यम् ढोल, तबला, अथवा कोई दूसरा बाजा -सारः लसिका, रक्तोदक ।

चर्ममय (वि०) [चर्मन्+मयट्] चमड़े का, चमड़े का बना हुआ ।

चर्मकः, -**चर्मारः** [चर्मन्+रा+कु, चर्मन्+ऋ+अण्] मोची, चमार, चमड़ा रंगने वाला ।

चर्मिक (वि०) [चर्मन्+ठन्] ढाल से सुसज्जित ।

चर्मिन् (वि०) (स्त्री०---णी) [चर्मन्+इनि, टिलोप] 1 ढाल से सुसज्जित 2 चमड़े का, (पुं०) 1 ढालधारी सैनिक 2 केला 3 भूर्ज वृक्ष ।

चर्या [चर्+यत्+टाप्] 1 इधर-उधर जाना, हिलना-जुलना, इधर-उधर सैर करना 2 मार्ग, चाल (जैसा कि 'रात्रिचर्या' में) 3 व्यवहार, चालचलन, आचरण-विधि 4 अभ्यास, अनुष्ठान, पालन---मनु० १।१११, व्रतचर्या, तपश्चर्या 5 सब प्रकार के रीति-रिवाज व संस्कारों का नियमित अनुष्ठान 6 खाना 7 प्रथा, रिवाज---मनु० ६।३२ ।

चर्व् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० चर्वति, चर्वयति-ते, चर्वित) 1 चबाना, कुतरना, खाना, कोपल काटना- ... पंच० ४, ... मृच्छ० २।११ 2 चूस लेना 3 स्वाद लेना, चखना ।

चर्वणम्, -**णा** [चर्व्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1 चबाना, खाना 2 आचमन करना 3 (आल०) चखना, स्वाद लेना आनन्द लेना प्रमाणं चर्वणैवात्र स्वाभिन्ने विदुषां मतम् सा० द० ५७, (टी० चर्वणा आस्वादनम् स च स्वादः काव्यार्थसंभेदादात्मानन्दसमुद्भव इत्युक्तप्रकारम्) इसी प्रकार 'निष्पन्नया चर्वणस्यास्य निष्पत्तिरुपचारतः' ५८ ।

चर्वा [चर्व्+अङ] तमाचा, थप्पड़ का प्रहार (चर्वन् (पुं०) भी) ।

चर्वित (भू० क० कृ०) [चर्व्+क्त] 1 चबाया गया काटा हुआ, खाया हुआ 2 चखा गया । सम० -चर्वणम् (शा०) चबाये हुए को चबाना, (आल०) पुनरुक्ति निरर्थक आवृत्ति, -पात्रम् पीकदान ।

चल् I (भ्वा० पर० चलति, (विरल प्रयोग---चलते) चलित) 1 हिलाना, कांपना, धड़कना, थरथराना स्पंदित होना, -छिन्नापि चेलू- ... भट्टि० १४।४०, ... -१५।२४, ६।८४ 2 (क) जाना, चलते रहना, सैर करना स्थगित होना, हिलना-जुलना (एक स्थान से) पदात्पदमपि चलितुं न शक्नोति - पंच० ४, चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् - चाण० ३२, चचाल बाला स्तनभिन्नवल्कला -कु० ५।८४, मृच्छ० १।५६ । (ख) (अपने मार्ग पर) आगे बढ़ना, विदा होना, कूच करना, चल देना -चेलुश्चीरपरिग्रहाः -कु० ६।९३ 3 क्षुब्ध होना, सवाध होना, घबराया हुआ या अव्यवस्थितचित्त होना, क्षुब्ध होना, व्याकुल होना मुनेरपि चलत्यस्य दर्शनात्कलत्रे मनः -पंच० १।४०, लोभेन बुद्धिश्चलति---हि० १।१४० 4 विचलित होना या भटकना (अपा० के साथ) -चलति नयान्न जिगीषतां हि चेतः -कि० १०।२९, अलग होना, छोड़ देना---मनु० ७।१५, याज्ञ० १।३६०, (प्रेर०) चलयति (चालयति) 1 हिलाना-जुलाना, झुलाना, हरकत देना 2. दूर करना हटाना, निकाल देना 3 दूर ले जाना 4 आनन्द लेना पालना-पोसना (केवल चालयति), अप---1 चल देना, प्रस्थान करना,- स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयाताम्---रघु० २।६, उच्चचाल वलभित्सखो वशी

—११।५१, नगरायोद्वचलत्—रघु० 2. चले जाना, चल देना, (किसी के स्थान को) छोड़ चलना —स्थानादनुच्चलन्नपि—श० १।२९, पुष्पोच्चलितषट्पदम् —रघु० १२।२७, प्र—, 1. हिलाना, जाना, कांपना —भर्तृ० २।४ 2. जाना, सैर करना, चलते जाना, प्रस्थान करना, कूच करना 3. त्रस्त होना, बाधायुक्त या क्षुब्ध होना 4. भटकना, विचलित होना, वि—, 1. हिलना-जुलना, चलना पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम्—गीत० ५ 2. जाना, आगे बढ़ना, चल देना 3 क्षुब्ध होना, बाधायुक्त होना, (समुद्र की भांति) क्षुब्ध होना—अचलाविचलन्मत्ता पति. —भट्टि० १५।७० 4. विचलित होना, भटकना —याज्ञ० १।३५८, ii (तुदा० पर०—चलति चलित) खेलना, क्रीडा करना, केलि करना।

चल (वि०) [चल्+अच्] 1. (क) हिलने-जुलने वाला कांपने वाला, डोलने वाला, थरथराने वाला, (आंख आदि को) घुमाने वाला—चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि —श० १।२४, चलकाकपक्षकैरमात्यपुत्रैः —रघु० ३।२८, लहराने वाले—भर्तृ० १।६, (ख) जंगम (विप० स्थिर)—चञ्चलचले लक्ष्ये—श० २।५ 2. अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, शिथिल, डांवाडोल—दयितास्वनवस्थितं नृणां न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने—कु० ४।२८, प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु —३।१ 3. अस्थायी, अनित्य, नश्वर—चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं जीवितयौवनं 4. अव्यवस्थित,—लः 1. कपकंपी, वेपथु, क्षोभ 2 वायु 3. पारा—ला 1 धन की देवी लक्ष्मी 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य। सम०—अचल चलायमान (=अतिचल); —चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः —भर्तृ० ३।१२८, लक्ष्मीमिव चलाचलाम् कि० ११।३० (चलाचला=चंचला—मल्लि०) मै० १।६०, (लः) कौवा,—आतङ्कः गठिया वाय, वात रोग, —आत्मन् (वि०) चलचित्त, चंचलमना,—इन्द्रिय (वि०) 1. भावुक 2 विषयी,—इषुः वह धनुर्धर जिसका तीर लक्ष्यच्युत हो इधर उधर गिर जाता है, अयोग्य धनुर्धर,—कर्णः पृथ्वी से ग्रह तक की वास्तविक दूरी,—चञ्चुः चकोर पक्षी,—दलः,—पत्रः अश्वत्थ वृक्ष।

चलन (वि०) [चल्+ल्युट्] गतिशील, थरथराने वाला, कंपमान, डांवाडोल,—नः 1. पैर 2. हरिण,—नम् 1. कांपना हिलना, डांवाडोल होना—चलनात्मकं कर्म —तर्क सं०, हस्त°, जानु° आदि —तरल पृथक्चलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम् —गीत० ११ 2. घूमना, भटकना,—नी 1. सामान्य स्त्रियों के पहनने के लिए लहंगा, पेटीकोट 2. हाथी को बांधने की रस्सी।

चलनकम् [चलन+कन्] एक छोटा लहंगा या पेटीकोट जिसे नीच जाति की स्त्रियां पहनती हैं।

चलिः [चल्+इन्] आवरण, चादर।

चलित (भू० क० कृ०) [चल्+क्त] 1. हिला हुआ, चला हुआ, आन्दोलित, क्षुब्ध 2. गया हुआ, विदा किया —एवमुक्त्वा स चलितः 3. अवाप्त 4 ज्ञात, अभिप्रेत (दे० चल्),—तम् 1 हिलाना, स्पंदित करना 2 जाना, चलना 3 एक प्रकार का नृत्य—चलितं नाम नाट्यमन्तरेण माल्वि० १।

चलुः [चल्+उन्] (पानी का) एक घूंट, चुल्लूभर।

चलुकः [चलु+कन्] 1 चुल्लूभर (पानी) 2. अंजलिभर या एक घूंट (पानी) तु० 'चुलुक'।

चष् i (भ्वा० उभ०—चषति—ते) खाना; ii (भ्वा० पर०—चषति) मार डालना, क्षति पहुंचाना, चोट पहुंचाना।

चषकः,—कम् [चष्+क्वुन्] सुरापात्र, प्याला, मदिरा पीने का गिलास —सिरस्त्वैश्चषकोत्तरेव —रघु० ७।४९, मुखं लालाक्लिन्नं पिबति चषकं सासवमिव —भा० १।२९, कि० ९।५६, ५७,—कम् 1 एक प्रकार की मदिरा 2 मधु, शहद।

चषतिः [चष्+अति] 1 खाना 2 मार डालना 3 ह्रास, निर्बलता, क्षय।

चषालः [चष्+आलच्] 1 यज्ञ के खंभे में लगी लकड़ी की फिरकी 2 छत्ता।

चह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—चहति, चहयति-ते) 1 दुष्ट होना 2 ठगना, धोखा देना 3 अहंकार करना, घमंडी बनाना।

चाकचक्यम् [चक्+अच्, द्वित्वम्, चकचक—तस्य भाव —ष्यञ्] जगमगाना, प्रभा, चमक-दमक।

चाक्र (वि०) (स्त्री०—क्री) [चक्र+अण्] 1 चक्र से किया जाने वाला (युद्ध) 2 मंडलाकार 3 चक्र या पहिए से संबंध रखने वाला।

चाक्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [चक्र+ठक्] दे० ऊ० चाक्र,—कः 1 कुम्हार 2 तेली —याज्ञ० १।१६५, (तैलिक —मिता०, दूसरों के मत में शाकटिक=गाड़ीवान) 3 कोचवान, चालक।

चाक्रिणः [चक्रिन्+अण्] कुम्हार या तेली का पुत्र।

चाक्षुष (वि० स्त्री०—षी) [चक्षुस्+अण्] 1 दृष्टि पर निर्भर, दृष्टि से उत्पन्न, 2. आंख से संबंध रखने वाला, आंख का विषय, दार्ष्टिक 3 दृश्य, जो दिखाई दे, —षम् दृष्टि पर निर्भर ज्ञान। सम०—ज्ञानम् आंखों देखी गवाही, या प्रमाण।

चाङ्गः [चि+ड चम् अङ्गम् यस्य ब० स०] 1 अम्ललोणिका शाक 2 दांतों की सफेदी या सौंदर्य।

चाञ्चल्यम् [चंचल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता, द्रुतगति,

चिलोकना, (आँख आदि का) कम्पन, फरकना—शाकि० २।६० 2. चंचलता 3 नश्वरता।

चाटः [चट्+अच्] बदमाश, ठग (जो पहले उसमें पूरा विश्वास जमा लेता है जिसे वह ठगना चाहता है) —याज्ञ० १।३३६ —(चाटा = प्रतारका विश्वास्य ये परधनमपहरन्ति—मिता०)।

चाटुः-टु (नपुं०) [चट्+उण्] 1 मधुर तथा प्रिय वचन, मीठी बात, चापलूसी, ठकुरसुहाती (विशेषकर किसी प्रेमी के द्वारा अपनी प्रेमिका के प्रति) —प्रियः प्रियाया प्रकरोति चाटुम्—ऋतु० ६।१४, विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणिपातम्—गीत० ११, अमरु ८३, पंच० १, शि० ८।१४, चौर० २० (गीतगोविंद के दसवें सर्ग का अधिकांश भाग इसी प्रकार की चाटूक्तियों से भरा हुआ है) 2 स्पष्ट भाषण। सम० —उक्तिः (स्त्री०) खुशामद और झूठी प्रशंसा के वचन, —उल्लोल, —कार (वि०) प्रिय तथा मधुर बोलने वाला, चापलूस —प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः —मेघ० ३१, —पटु (वि०) झूठी प्रशंसा करने में कुशल, पूरा चापलूस —बटुः मसखरा, भांड, —लोल (वि०) सुंदरतापूर्वक हिलने वाला, —शतम् सैकड़ों अनुरोध, बार-बार की जाने वाली खुशामद —पटुचाटुशतैरनुकूलम्—गीत० २, नवपुरुषस्तु चीर विलोकयति चाटुशतैश्च युक्तो —भर्तृ० २।११।

चाणक्यः [चणक+यञ्] महान् राजनीति के प्रख्यात प्रणेता विष्णुगुप्त, 'कौटिल्य' भी इन्हीं का नाम है दे० कौटिल्य।

चाणूरः (पुं०) कंस का सेवक जो प्रसिद्ध मल्लयोद्धा था, जिस समय अक्रूर कृष्ण को मथुरा ले गया तो इस दुर्दांत योद्धा को कृष्ण से लड़ने के लिए भेजा गया। मल्लयुद्ध में कृष्ण ने इसे पछाड़ दिया और पृथ्वी पर गेर डाला तथा इसके सिर को चूर्ण कर दिया।

चाण्डालः (स्त्री०—ली) [चण्डाल+अण्] पतित, अधम —दे० चंडाल, —चाण्डालः किमयं द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६ मनु० ३।२३९, ४।२९, याज्ञ० १।९३।

चातालिका = चंडालिका।

चातकः (स्त्री०—की) [चत्+ण्वुल्] चातक, पपीहा, (कवि समय के अनुसार यह केवल वर्षाऋतु में ही रहता है) —कतिपया एव पतन्ति चातकमुखे द्वित्रा पयो-बिन्दव —भर्तृ० २।१२१, दे० २।५१ और रघु० ५।१७। सम० —आनन्दनः 1 वर्षाऋतु 2 बादल।

चातनम् [चत्+णिच्+ल्युट्] 1 हटाना 2. क्षति पहुँचाना।

चातुर (वि०) (स्त्री०—री) 1 चार की संख्या से संबद्ध 2. होशियार, चौकस, बुद्धिमान् 3 मधुरभाषी, चापलूस 4. दृष्टिविषयक, प्रत्यक्षज्ञानात्मक —रः चार पहियों की गाड़ी, —री कुशलता, दक्षता, योग्यता तत्कूटचातुरीतुरी—नै० १।१२।

चातुरक्षम् [चतुरक्ष+अण्] चौपड़ या चार पासों के खेल में चार का दांव, —क्षः छोटा गोल तकिया।

चातुरर्थिकः [चतुर्षु अर्थेषु विहितः—ठक्] (व्या० में) एक ऐसा प्रत्यय जो चार भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द में जोड़ा जाता है।

चातुराश्रमिक (वि०) (स्त्री०—की), चातुराश्रमिन् (वि०) (स्त्री०—णी) ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार कालों में से किसी एक में रहने वाला। दे० 'आश्रम'।

चातुराश्रम्यम् [चतुराश्रम+ष्यञ्] ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार काल। दे० 'आश्रम'।

चातुरिक, चातुर्थक, चातुर्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [चातुर+ठक्, चतुर्थ+अण्, ठक् वा] 1 चौथे या, हर चौथे दिन होने वाला, —कः चौथैया बुखार, जूड़ीताप।

चातुर्थाह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [चतुर्थाह्न+ठक्] चौथे दिन होने वाला।

चातुर्दशम् [चतुर्दश्यां दृश्यते इति] राक्षस-सिद्धा०।

चातुर्दशिकः [चतुर्दशी+ठक्] जो चांद्रपक्ष की चतुर्दशी के दिन भी पढ़ता है (वह 'अनध्याय' का दिन है)।

चातुर्मासिक (वि०) (स्त्री०—सिकी) [चतुर्षु मासेषु भवः —अण्+कन्, चतुर्मास+ठक्+टाप्, ह्रस्वत्वम्] जो चातुर्मास्य यज्ञ का अनुष्ठान करता है।

चातुर्मास्यम् [चतुर्मास+ण्य] हर चार महीने के पश्चात् अनुष्ठेय यज्ञ अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरम्भ में।

चातुर्यम् [चतुर+ष्यञ्] 1 कुशलता, होशियारी, दक्षता, बुद्धिमत्ता 2. आकर्षक रमणीयता, सौन्दर्य —भूषाचातुर्यम्—भर्तृ० १।३।

चातुर्वर्ण्यम् [चतुर्वर्ण+ष्यञ्] 1 हिन्दुजाति के मूल चार वर्णों की समष्टि — एष सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः —मनु० १०।६३, भग० ४।१३ 2. इन चार वर्णों का धर्म या कर्तव्य।

चातुर्विध्यम् [चतुर्विध+ष्यञ्] चार प्रकार (समूहिक रूप से), चार प्रकार का प्रभाग।

चात्वालः [चत्+वालञ् - चत्वाल+अण्] 1 भूमि में खोद कर बनाया हुआ हवनकुण्ड 2. कुशा, दर्भ।

चान्दनिक (वि०) (स्त्री०—की) [चन्दन+ठक्] चन्दन से बनाया हुआ या उत्पन्न 2 चन्दनरस से सुगन्धित।

चान्द्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [चन्द्र+अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चन्द्रसंबंधी - पुष्पकाण्डगुणो विस्त्र-ष्पामिहीमणिमयः प्रियम्—शि० २।२, —द्रः 1. चांद्रमास

४८

2. शुक्लपक्ष 3. चन्द्रकान्तमणि,—णम् 1 चान्द्रायण नामक व्रत 2 ताजा अदरक 3 मृगशीर्ष नक्षत्र,—णी चांदनी। सम०—भागा चन्द्रभागा नाम नदी,—मासः चन्द्रमा की तिथियों के अनुसार गिना जाने वाला महीना,—व्रतिकः चान्द्रायण व्रत रखने वाला।

चान्द्रकम् [चान्द्र + कै + क] सूखा अदरक, सोंठ।

चान्द्रमस (वि०) (स्त्री०—सी) [चन्द्रमस् + अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चांद-संबंधी—लक्ष्मीर्यथा चान्द्रमसीव लेखा कु० १।२५, चन्द्रं गता पद्मगुणान्न भुंक्ते पद्माश्रिता चान्द्रमसीमभिख्याम्—१।४३, रघु० २।३९, भग० ८।२५, —सम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज।

चान्द्रमसायनः, —निः [चन्द्रमसोऽपत्यम् फिञ्] बुधग्रह।

चान्द्रायणम् [चन्द्रस्यायनमिवायनमत्र, पूर्वपदात् संज्ञायां णत्वं, संज्ञायां दीर्घं स्वार्थे अण् वा—तारा०] एक धार्मिक व्रत या प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या जो चन्द्रमा की वृद्धि व क्षय से विनियमित है। इस व्रत में दैनिक आहार (जो १५ ग्रास या कौर का होता है) पूर्णिमा से प्रतिदिन एक-एक ग्रास घटता रहता है यहाँ तक कि अमावस्या के दिन नितान्त निराहार व्रत रक्खा जाता है, उसके पश्चात् फिर शुक्लपक्ष में एक कौर से आरम्भ करके पूर्णिमा तक बढ़ाकर फिर १५ ग्रास तक खाया जाता है) तु० याज्ञ० ३।३२४, मनु० ११।२१७।

चान्द्रायणिक (वि०) (स्त्री०—की) [चान्द्रायण + ठञ्] चान्द्रायण व्रत का पालन करने वाला।

चापम् (चप + अण्) 1 धनुष,—तातं चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्यावकाशः—वेणी० ३।५, इसी प्रकार 'चापपाणि' 2 हाथ में धनुष लिये हुए 3 इन्द्र धनुष 4 (ज्यामिति) वृत्त की तोरणाकार रेखा 5 धनुराशि।

चापलम्,—ल्यम् [चपल + अण्, ष्यञ् वा] 1 द्रुतगति, स्फूर्ति 2 चंचलता, अस्थिरता, सक्रमणशीलता कि० २।४१ 3 विचारशून्य या आवेशपूर्ण आचरण, उतावलापन, उद्दण्ड कृत्य धिक् चापलम्—उत्तर० ४, तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः, रघु० १।९, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया —का० १०१ 4 (घोड़े आदि का) अस्थिरपन—पुनः पुनः सूतनिषिद्धचापलम् —रघु० ३।४२।

चामरः,—रम् [चमर्या विकारः तत्पुच्छनिर्मितत्वात् चमरी + अण्] (कभी-२ —रा, —री) चौरी, चंवर या चमरी की पूँछ, (यह मारछल या पंखे की भाँति प्रयुक्त की जाती है, और एक राजकीय चिह्न समझा जाता है—कभी-कभी यह कलगी की भाँति घोड़े के सिर पर फहराया जाता है)—व्याधूयन्ते निचुलतरुभिर्मञ्जरीचामराणि—विक्रम० ४।४, अवेक्ष्यमाणौ चमरेव भूपतेः सितेतरच्छत्रयुगे च चामरे—रघु० ३।१६, कु० ७।४२, शि० २।२९, मेघ० ३५, चिरमवस्थितमिवाचलैर्युवतिरस्याश्चामरव्याजेन—विक्रम० ३।४, श० ११८। सम०—ग्राहः,—ग्राहिन् (पुं०) चंवर डुलाने वाला, चंवर बरदार,—ग्राहिणी चंवर डुलाने वाली राजा की सेविका पृष्ठे लीलावलयरणितं चामरग्राहिणीनाम् भर्तृ० ३।६१, —पुष्पः,—पुष्पकः 1 सुपारी का पेड़ 2 केतकी का पौधा 3 आम का वृक्ष।

चामरिन् (पुं०) [चामर + इनि] घोड़ा।

चामीकरम् [चमीकर + अण्] 1 सोना—सप्तचामीकरामः—विक्रम० १।१४, रघु० ७।५, शि० ४।२४, कु० ७।२४ 2 धतूरे का पौधा। सम०—प्रख्य (वि०) सोने की तरह का।

चामुण्डा [चम् + क्त + क, पृषो० साधु] दुर्गा का रौद्ररूप —मा० ५।२५

चाम्पिला [चम्प् + इलच्—टाप्—चम्पा + अण् + इलच्] चंपा नाम की नदी (संभवतः वर्तमान 'चंबल' नदी)।

चाम्पेयः [चम्पा + ढक्] 1 चम्पक वृक्ष 2 नागकेसर का पेड़ —यम् 1 तन्तु, विशेषकर कमल फूल का 2 सोना 3 धतूरे का पौधा (अन्तिम दो अर्थों में पुं० भी)।

चाय् (भ्वा० उभ० चायति—ते) 1 निरीक्षण करना, अच्छा बुरा पहचानना, देख लेना—भट्टि० १२।५१ 2 पूजा करना।

चारः [चर् + घञ्] 1 जाना, घूमना, चाल, भ्रमण—भवनकचारसौख्यं—विक्रम० ५।२ क्रीडार्थमद्रौ यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी मेघ० ६०, पैदल चलना 2 गति, मार्ग प्रगति मंगलचार, शनिचार आदि 3 भेदिया, चर, गुप्तचर, दूत—मनु० ७।१८८, ९।२६१, दे० चारचक्षुस् नी० 4 अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 5 बंदी 6 बंधन, बेड़ी,—रम् कृत्रिम विष। सम०—अन्तरितः भेदिया —ईक्षणः —चक्षुस् (पुं) गुप्तचरों को आँख के स्थान में प्रयुक्त करने वाला राजा (या राजनीतिज्ञ) जो गुप्तचर या भेदिया रखता है और उन्हीं के माध्यम से देखता है, चारचक्षुर्महीपतिः—मनु० ९।२५६, तु० कामन्दक—गावः पश्यन्ति गन्धेन, वेदैः पश्यन्ति च द्विजाः, चारैः पश्यन्ति राजानः चक्षुर्भ्यामितरे जनाः। रामा० भी—यस्मात्पश्यन्ति दूरस्थान् सर्वानर्थान्नराधिपाः, चारेण तस्मादुच्यन्ते राजानश्चारचक्षुषः। —चञ्चु,—चण (वि०) ललित चाल वाला, सजीला। —पथः चौराहा,—भटः वीर योद्धा, —वायुः ग्रीष्मकालीन मृदु मन्द पवन, वसन्त वायु।

चारकः [चर् + णिच् + ण्वुल्] 1 भेदिया 2 ग्वाला 3 नेता चालक 4 साथी 5 अश्वारोही, सवार 6 कारागार निगडितचरणा चारके निरोद्धव्या—दश० ६२।

चारणः [चर् + णिच् + ल्युट्] 1 भ्रमणशील, तीर्थयात्री

2 घूमने-फिरने वाला नट या गवैया, नर्तक भाँड भाट—मनु० १२।४४ 3 स्वर्गीय गवैया गन्धर्व—रघु० २।१४ 4 वेद या अन्य धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करने वाला 5 भेदिया।

चारिका [चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] सेविका दासी।

चारितार्थ्यम् [चरितार्थ+ष्यञ्] उद्देश्यसिद्धि सफलता।

चारित्रम्, त्र्यम् [चरित्र+अण्, ष्यञ् वा] 1 शील, व्यवहार, काम करने की रीति 2 पैतृक प्रथा, सच्चरित्रता, ख्याति, सचाई, ईमानदारी, अच्छा चालचलन, ...अन्तःकरणम्—मृच्छ० ... ३।१४३ 3 सतीत्व (स्त्रियों का) ... 4 सद्भाव ... आचार ... 5 कुलागत आचार। सम०—कवच (वि०) सदाचार रूपी कवच से सुरक्षित।

चारु (वि०) (स्त्री० रु,—र्वी) [चरति चित्ते चर्+उण्] 1 रुचिकर, सत्कृत, प्रिय, अभिलषित, अभीष्ट (सप्त० या संप्र० के साथ)—भक्तानां या हरेः चारु 2 सुन्दर, रमणीय, मनोहर, मनोज्ञ—प्रचलकपोलम् ... मुखचन्द्रमिदम्—गीत० १०, सर्वं प्रियं चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, चकासतं चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८, ६।४९, —रुः बृहस्पति का विशेषण, —रु (नपुं०) केसर, जाफरान। सम०—अङ्गी सुन्दर अंगों वाली स्त्री,—घोण (वि०) सुन्दर नाक वाला पुरुष,—दर्शन (वि०) प्रियदर्शन लावण्यमय,—धारा शची, इन्द्राणी, इन्द्र की पत्नी,—नेत्र, —लोचन (वि०) सुन्दर आँखों वाला (—त्रः,—नः) हरिण,—फला, अंगूरों की बेल, द्राक्षा,—लोचना सुन्दर आँखों वाली,—वक्त्र (वि०) सुन्दर मुख वाला,—वर्धना स्त्री,—व्रता एक मास तक उपवास करने वाली स्त्री,—शिला 1 जवाहर, रत्न 2 पत्थर की सुन्दर शिला—शील (वि०) कान्त स्वभाव या चरित्र,—हासिन् (वि०) मधुर मुस्कान वाला।

चार्चिक्यम् [चर्चिका+ष्यञ्] 1 शरीर को सुगन्धित करना, चन्दन आदि लगाना 2 उबटन।

चार्म (वि०) (स्त्री० र्मी) [चर्मन्+अण्, टिलोपः] 1 चमड़े का बना हुआ 2 (गाड़ी आदि) चमड़े से ढका हुआ 3 ढाल धारी, ढाल से युक्त।

चार्मण (वि०) (स्त्री० णी) [चर्मन्+अण्, स्त्रियां ङीप् च] चमड़े या खाल से ढका हुआ, —णम् खालों या ढालों का ढेर।

चार्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [चर्मन्+ठक्] चमड़े का बना हुआ—मनु० ८।२८९।

चार्मिणम् [चर्मिन्+अण्] ढालधारी मनुष्यों का समूह।

चार्वाकः [चारुः लोकसम्मतो वाको वाक्यं यस्य—ब० स०] 1 नास्तिक दार्शनिक जो बृहस्पति का शिष्य बताया जाता है और जिसने भौतिकवाद एवं नास्तिकता के स्थूल रूप का प्रवर्तन किया (चार्वाकमत के सिद्धान्तों के सारांश के लिए दे० सर्व० १) 2 महाभारत में वर्णित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पाण्डवों का शत्रु था [जब युधिष्ठिर अपनी विजयपताका के साथ हस्तिनापुर में प्रविष्ट हुआ तो उस राक्षस ने एक ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया तथा उसने युधिष्ठिर को एकत्रित ब्राह्मणों का क्रूर मत्ता कहा। परन्तु शीघ्र ही उसका पता लग गया और क्रोध से भर कर असली ब्राह्मणों ने उसको वहीं काम तमाम कर दिया। उस राक्षस ने महादेव की समर्पित पर भी युधिष्ठिर को... प्रार्थना का प्रयत्न किया था कि भीम ... दुर्योधन को मार डाला। दे० वेणी० ६]।

चार्वी [चारु+ङीष्] 1 सुन्दर स्त्री 2 चाँदनी 3 बुद्धि, प्रज्ञा 4 प्रभा, कान्ति, दीप्ति 5 कुबेर की पत्नी।

चाल [चल्+ण] 1 घर का छप्पर या छत 2 नीलकण्ठ पक्षी 3 (चलना) हिलना, चलना फिरना 4 अस्थिर होना।

चालकः [चल्+ण्वुल्] दुर्दान्त हाथी।

चालनम् [चल्+णिच्+ल्युट्] 1 चलाना-फिराना, हिलाना डुलाना (पूँछ की भाँति) हिलाना 2 छलनी से छानना, छलनी, भी छलनी करना।

चाष, षः [चष्+णिच्, अच्, पृषो० साधुः] नीलकण्ठ पक्षी—या० ३।१८ याज्ञ० १।१७५।

चि (स्वा० उभ० चिनोति चिनुते, चित, प्रेर०—चाय-यति, चापयति ...,...चययति भी सन्नन्त—चिचीषति, चिकीषति) 1 चुनना, बीनना, इकट्ठा करना (द्विकर्मक धातु होने के कारण दो कर्मों के साथ अन्वय परन्तु लौकिकसाहित्य में इसका प्रयोग विरल)—वृक्षं पुष्पाणि चिन्वती 2 ढेर लगाना, टाल लगा देना, अंबार लगा देना—पर्वतानिव ते भूमावचैषुर्वानरोत्तमान् भट्टि० १५।३६ 3 जड़ना, खचित करना, भरना दे० चित कर्म वा०, फल उत्पन्न होना, उगना, बढ़ना, फलना फूलना, समृद्ध होना—सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा पञ्च० १।२२, फल लगता है, चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः मुद्रा० १।३ राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १०, अप- कम होना, विहीन होना, अर्जन होना (मुख्यत कर्मवा० में) 1 घटना, क्षीण होना, कम होना—राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १० 2 शरीर में घटना, क्षीण होना आ—, 1 एकत्र करना, ढेर लगाना 2 भरना, ढकना, मढ़ना—भट्टि० १०।१९, १४।४९, ४७ उद्, एकत्र करना, बीनना—भट्टि० ३।३७ उप—, जोड़ना, बढ़ाना—उपचिन्वनप्रभां तन्वीं

प्रत्यहं परमेश्वरः—कु० ६।२६ (कर्मवा०) जमना, बढ़ना—अबोध: पचत: कस्य महिमा नोपचीयते —हि० २।२ भट्टि० ६।३३ शि० ४।१०, वि—, इकट्ठा करना, फैलाना, बिखेरना (मुख्यतः क्तांत प्रयोग) —निचितं समुपेत्य नीरदैः—घट० १, शकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलम्—श० ७।११, भट्टि० १०।४२, निस् —, निर्धारित करना, संकल्प करना, निश्चय करना परि—, 1. अभ्यास करना 2. प्राप्त करना, लेना (कर्मवा०) बढ़ना—रघु० ३।२४ प्र—, 1. इकट्ठा करना, चुनना 2. जोड़ना 3. बढ़ाना, विकसित करना —प्राचीयमानावयवा रराज सा—रघु० ३।७, वि—, 1. एकत्र करना, चुनना 2. खोजना, ढूंढना- विचितश्चैव समन्तात् श्मशानवाटः—मा० ५, विनिस् –, निर्धारित करना, संकल्प करना, निश्चय करना—विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा—उत्तर० १।३५, सम्—, 1. एकत्र करना, संग्रह करना, संचय करना—रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति—श० २।१४, रघु० १९।२, मनु० ६।१५ 2. क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना, ठीक से रखना— भट्टि० ३।३५, समुद्—, संग्रह करना, जोड़ना।

चिकित्सकः [कित्+सन्+ण्वुल्] वैद्य, हकीम, डाक्टर —उचितवेलातिक्रमे चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—माल-वि० २, मर्तृ० ११८७, याज्ञ० ११६२।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ+टाप्] औषध सेवन करना, औषधोपचार, इलाज करना, स्वस्थ करना।

चिक्लिदः [चि+इलच्, कुक्] कीचड़, महापंक, कर्दम, दलदल।

चिकीर्षा [कृ+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] (कोई काम) करने की इच्छा, कामना, अभिलाषा, इच्छा।

चिकीर्षित (वि०) [कृ+सन्+क्त, द्वित्वम्] अभिलषित, इच्छित, साभिप्राय,—तम् अभिकल्प, आशय, अभिप्राय।

चिकीर्षु (वि०) [कृ+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] कुछ करने की इच्छा वाला, इच्छुक,—मनु० ११२१, ३।२५।

चिकुर (वि०) [चि इत्यव्यक्तं शब्दं करोति - चि+कुर् +क] 1. हिलने-जुलने वाला, कम्पमान, चंचल, अस्थिर 2. अविचार पूर्ण, आवेशयुक्त—,रः 1 सिर के बाल—मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद ···कुसुमानि —गीत० १२, इसी प्रकार—जलधररुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने ७ 2. पहाड़ 3 रेंगने वाला, साँप सम०—उच्चयः,—कलापः,—निकरः, —पक्षः,—पाशः,—भारः—हस्तः बालों का गुच्छा या ढेर—चञ्चच्चोरचिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूर. —प्रस० १।२२।

चिकूरः [चिकुर पि० दीर्घ:] बाल।

चिक्कः [चिक् इति अव्यक्त शब्देन कायति शब्दायते—चिक् +कै+क] छछूंदर।

चिक्कण (वि०) (स्त्री०- णा,—णी) [चिक्कण, चिक्कन् चिक् तं कणति-कण शब्दे+अच् तारा०] 1. चिकना, चमकदार 2 फिसलनी 3 स्निग्ध 4. मसृण, चर्बीला—ततु परिणायतामेनां भवान् मा कस्यापि तपस्विन इंगुदीतैलचिक्कणशीर्षस्य हस्ते पतिष्यति —श० २,—णः सुपारी का पेड़,—णम् चिक्कणवृक्ष का फल, सुपारी।

चिक्कणा,—णी 1 सुपारी का पेड़ 2. सुपारी।

चिक्कसः [चिक्क्+असच्] जौ का आटा।

चिक्का=चिक्कणा।

चिक्किरः [चिक्क्+इरच्, ता०] चूहा, मूसा।

चिक्लिदम् [क्लिद् + यङ्+अच्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] तरी, तरावट, तरी।

चिचिण्डः [?] एक प्रकार का कद्दू।

चिचिल्लकाः [पु० ब० व०] एक देश तथा उसके निवासी।

चिञ्चा [चिम्+चि+ड+टाप्] 1. इमली का पेड़, या उसका फल 2 घुंघची का पौधा।

चिट् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०—चेटति, चेटयति—ते) भेजना, बाहर भेजना (जैसे कि किसी सेवक को भेजा जाता है)।

चित् (भ्वा० पर०, चुरा० आ०—चेतति, चेतयते, चेतित) 1 प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, देखना, नजर डालना, दृष्टिगोचर करना—नेषूनचेतत्प्रत्यन्तम्—भट्टि० १७।१६, चिचेत रामस्तत्कृच्छ्रम्—१४।६२ १५।३८, २।२९ 2 जानना, समझना, चौकस होना, सतर्क होना—परैरध्यारुह्यमाणमात्मानं न चेतयते—दश० १५४ चैतन्य प्राप्त करना 4 प्रकट होना, चमकना।

चित् (स्त्री०) [चित्+क्विप्] 1 विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान 2 प्रज्ञा. बुद्धि, समझ—भर्तृ० २।१, ३।१ 3 हृदय, मन 4. आत्मा, जीव, जीवन में सजीवता-सिद्धांत 5 ब्रह्म। सम०—आत्मन् (पु०) 1 चितनसिद्धांत या शक्ति 2 केवल प्रज्ञा, परमात्मा,—आनन्दम् चैतन्य,—आभासः जीव (जो सांसारिक वासनाओं में लिप्त है),—उल्लासः जीवों के हृदय का हर्ष,—घनः परमात्मा या ब्रह्म, प्रवृत्तिः (स्त्री०) विचारविमर्श, चिन्तन, शक्तिः (स्त्री०) मानसिक शक्ति, बौद्धिक चारिता,- स्वरूपम् परमात्मा, (अव्य०) 1 'किम्' और 'किम्' से व्युत्पन्न अन्य शब्दों के साथ जुड़नेवाला अव्यय (जैसे कि -कद्, कथम्, क्व, कदा, कुत, कुत आदि) जिससे कि अर्थों में अनिश्चयात्मकता आती है - यथा क्वचित्=कहीं, कश्चित्=कोई 2 'चित्' ध्वनि।

चित (भू० क० कृ०) [चि+क्त] 1. संग्रह किया हुआ,

ढेर लगाया हुआ, अबार लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2 जमा किया हुआ, संचित 3 प्राप्त, गृहीत 4 ढका हुआ—कृमिकुलचितम्—भर्तृ० २।११ 5 जमाया हुआ, जड़ा हुआ, - तम् भवन।

चिता [चित + टाप्] मुर्दे को जलाने के लिए चुनकर रक्खी हुई लकड़ियों का ढेर, चितिका —कुड्‌ सम्प्रति तावताद्यु में प्रणिपाताञ्जलियाचितांच्यताम् -कु० ४।३५, चिताभस्मन् कु० ५।६९। सम० -अग्निः शव को जलाने वाली आग, -चूडकम् चिता।

चितिः (स्त्री०) [चि + क्तिन्] 1 संग्रह करना, इकट्ठा करना 2 ढेर समुच्चय, पुंज 3 अम्बार टाल, चट्टा 4 चिता 5 चौकोर आयताकार स्थान 6 समाज।

चितिका [चिता + कन् + टाप्, इत्वम्] 1 टाल चट्टा 2 चिता 3 करधनी।

चित्त (वि०) [चित् + क्त] 1 देखा हुआ, प्रत्यक्षज्ञात 2 सोचा हुआ, विचारविमर्श किया हुआ मनन किया हुआ 3 संकल्प किया हुआ 4 अभिप्रेत अभिलषित इच्छित —त्तम् 1 देखना ध्यान देना 2 विचार चिन्तन, अवधान, इच्छा अभिप्राय उद्देश्य भक्तिरस मतम भव–भग० १८।५७ अनेकचित्तविभ्रान्त १६।१६ 3 मन—यदासी दुर्वार प्रसरति मदश्चित्तकरिण –शा० १।२२, इसी प्रकार 'चलचित्त' आदि समस्त शब्द 4 हृदय (बुद्धि का स्थान माना जाता है) 5 तर्क, बुद्धि, तर्कनाशक्ति। सम० -अनुवर्तिन् (वि०) मन के अनुकूल कार्य करने वाला अनुरंजनकारी,—अपहारक,—अपहारिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक, मोहक, -आभोग भावनाओं के प्रति मन की आसक्ति, किसी एक वस्तु में अनन्य अनुराग, -आसङ्गः आसक्ति अनुराग, -उद्रेकः घमंड, गर्व, -ऐक्यम् सहमति, मतैक्य,—उन्नतिः,—समुन्नतिः (स्त्री०) 1. महानुभावता 2 घमंड, दर्प, -चारिन् (वि०) दूसरे की इच्छा के अनुसार काम करने वाला, -जः -जन्मन् (पुं०),—भूः—योनिः 1 प्रेम, आवेश 2 प्रेम का देवता कामदेव चित्तयोनिरभवत्पुनर्नव रघु० १९। ४६, सौऽय प्रसिद्धविभव खलु चित्तजन्मा मा० १।२०, —ज्ञ (वि०) दूसरे के मन की बात जानने वाला,—नाशः बेहोशी,—निर्वृतिः (स्त्री०) संतोष, प्रसन्नता, प्रशम (वि०) स्वस्थ, शान्त, (—मः) मन की शान्ति, प्रसन्नता हर्ष, खुशी,—भेदः 1. विचारभेद 2 असंगति, अस्थिरता, —मोहः मनोमुग्धता, - विक्षेपः मन का उचाटपन विभ्रमः—विभ्रमः चित्तभ्रम, बुद्धिभ्रम, उन्मत्तता पागलपन,—विश्लेषः मैत्री-भंग,—वृत्तिः (स्त्री०) 1 मन की अवस्था या स्वभाव, रुचि, भावना —एवमात्माभिप्रायसंभावितेष्टजनचित्तवृत्ति प्रार्थयिता विडम्ब्यते—श० २ 2 आन्तरिक अभिप्राय, संवेग 3. (योग—द० में) मन की आन्तरिक क्रिया, मानसिक दृष्टि—योगश्चित्तवृत्तिनिरोध योग० - वैकल्यम् कष्ट, चिन्ता - वैकल्यम् मन की व्यग्रता, परेशानी—हारिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक रुचिकर।

चित्तवत् (वि०) [चित्त + मतुप्, मस्य व] 1 तर्कसंगत, तर्कयुक्त 2 सकरुण, मदय।

चित्यम् [चि + क्यप्] शव-दाह करने का स्थान,—त्या 1 चिता 2 काष्ठचयन, (वेदी का) निर्माण।

चित्र (वि०) [चित्र् + अच् चि + ष्ट्रन् वा] 1 उज्ज्वल, स्पष्ट 2 चितकबरा, धब्बेदार शबलीकृत 3 दिलचस्प, रुचिकर मा० -१।४ 4. विविध, विभिन्न प्रकार का, भांति २ का पंच० १।१३६, मनु० ९।२४८, याज्ञ० १।२८८ 5 आश्चर्यजनक, अद्भुत, अजीब,—त्रः 1 रंगबिरंगा वर्ण रंग 2 अशोक वृक्ष,—त्रम् 1 तसवीर, चित्रकारी आलेखन—चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा श० २।९ पुनरपि चित्रीकृता कांता श० ६।२०, १३ २१ आदि 2 चमकीला आभूषण 3 असाधारण छवि आश्चर्य 4 साम्प्रदायिक तिलक 5 आकाश गगन 6 धब्बा 7 सफेद कोढ़, फुलबहरी 8. (सा० शा० में) काव्य के तीन भेदों में अन्तिम काव्यभेद (यह 'शब्दचित्र' और 'अर्थवाच्यचित्र' दो प्रकार का है, काव्यसौन्दर्य मुख्यरूप से अलंकारों के प्रयोग पर निर्भर करता है, जो शब्दों की ध्वनि और अर्थ पर आश्रित है मम्मट परिभाषा देता है—शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम् काव्य० १) 'शब्दचित्र' का उदाहरण रसगंगाधर से उद्धृत किया जाता है—मित्रात्रिपुत्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे, गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्रात्रे ते नमो नम।—त्रम् (अव्य०) अहा! कैसा विस्मय है! क्या अद्भुत बात है - चित्र बधिरो नाम व्याकरणमध्येष्यते सिद्धा०। सम० -अक्षी,—मैना, —कोकिला एक पक्षिविशेष, मैना,—अङ्ग (वि०) धारीदार, चित्तीदार, धारीदार (—ङ्गम्) सिंदूर,—अन्नम् रंगदार मसालों से प्रभावित चावल—याज्ञ० १।३०४, —अपूपः एक प्रकार का पूड़ा,—अर्पित (वि०) तसवीर में उतारा हुआ, चित्रित, °आरम्भ (वि०) चित्रित —रघु० २।३१, कु० ३।४२—आकृतिः (स्त्री०) चित्रित प्रतिकृति, आलोकचित्र,—आरम्भः तस्वीर —आरम्भ चित्रित रूप, चित्र की रूपरेखा - विक्रम० १।४,—उक्तिः (स्त्री०) 1 रुचिकर या वाक्चातुर्य से पूर्ण प्रवचन वयमपि ते पञ्चमनादचित्रचित्रोक्तिसदर्भविभूषणेषु विक्रम० १।१० 2. आकाशवाणी 3 अद्भुतकहानी, —ओदनः हल्दी से रंगा पीला भात —कण्ठः कबूतर,—कथालापः रोचक तथा मनोरंजक कहानियाँ सुनाना,—कम्बलः 1 छींट की बनी हाथी की झूल 2. रंग बिरंगा कालीन,—करः 1 चित्रकार

2. नाटक का पात्र या अभिनेता,—**कर्मन्** (नपुं०) 1. असाधारण कार्य 2. विभूषित करना, सजाना 3 तस्वीर 4 जादू, (पुं०) 1 आश्चर्यजनक करतब करने वाला जादूगर 2 चित्रकार, °**विद्** (पुं०) 1 चित्रकार 2. जादूगर,—**कायः** साधारण चीता 2 चीता, **कारः** 1. चित्रकारी करने वाला 2 एक वर्णसंकर जाति (स्थपतेरपि गान्धिक्यां चित्रकारो व्यजायत—पराशर०), —**कूटः** एक पहाड़ का नाम, इलाहाबाद के निकट एक जिले का नाम रघु० १२।१५, १३।४७ उत्तर० १, —**कृत्** (पुं०) चित्रकार, **क्रिया** चित्रकारी,—**ग** —**गत** (वि०) चित्रित किया हुआ, **गन्धम्** हरताल, —**गुप्तः** यमराज के कार्यालय में मनुष्यों के गुण तथा अवगुणों को लिखने वाला—मुद्रा० १।२० **गृहम्** चित्रित घर,—**जल्पः** अटकलपच्चू और असबद्ध बात, विभिन्न विषयों पर बातचीत,—**त्वच्** (पुं०) भूर्ज वृक्ष, —**तण्डुलः** कपास का पौधा, **न्यस्त** (वि०) चित्रित तस्वीर में उतारा हुआ कु० ५।२४, **पक्षः** चकोर-सदृश तीतर,—**पदः**,—**टः** 1. आलम्ब, तस्वीर 2 रंगीन या चारखानेदार कपड़ा,—**पद** (वि०) 1 भिन्न २ भागों में विभक्त 2 ललित पदावली से युक्त, **पादा** मैना, सारिका,—**पिच्छकः** मोर,—**पुङ्खः** एक प्रकार का बाण —**पृष्ठः** चिड़िया, **फलकम्** चित्र-पटल, चित्र रखने का तख्ता,—**बर्हः** मोर,—**भानुः** 1 आग 2 सूर्य (चित्रभानुर्विभातीति दिने रवौ रात्रौ वह्नौ—काव्य० ?, अंकन विधि का निदर्शन दिया गया है) 3 भैरव 4. मदार का पौधा,—**मण्डलः** एक प्रकार का सांप, —**मृगः** चित्तीदार हरिण, —**मेखलः** मोर, **योधिन्** (पुं०) अर्जुन का विशेषण,—**रथः** 1 सूर्य 2 गन्धर्वों के एक राजा का नाम, मुनि नामक पत्नी से कश्यप के १६ पुत्र हुए चित्ररथ उनमें से एक है—अथ मुनेर्म्न मयचित्ररथसेनादीनां पञ्चदशानां भ्रातृणामधिको गुणैः षोडशश्चित्ररथो नाम समुत्पन्न—काव्य० १३६, विक्रम० १,—**लेख** (वि०) सुन्दर रूपरेखा वाला, अत्यन्त मङ्गलकार—स्फुरितस्तव कलावती कलावश्चित्रलेखे भुवो गीत० १०, (**खा**) बाणासुर की पुत्री, उषा की एक सहेली (जब उषा ने अपना स्वप्न अपनी सहेली चित्रलेखा को सुनाया, तो उसने यह सुझाव दिया कि इस चित्र को आस-पास के राज्यों में घुमाया जाय, इस प्रकार जब उषा ने अनिरुद्ध को पहचान लिया तो चित्रलेखा ने अपने जादू के द्वारा अनिरुद्ध को उषा के महल में बुलवा दिया),—**लेखकः** चित्रकार —**लेखिका** चित्रकार की तूलिका, कूची, **विचित्र** (वि०) 1 रंगबिरंगा चितकबरा 2 बेलबूटेदार, **शाला** चित्रकला—शाला चित्रकार का कार्यालय,—**शिखण्डिन्** (पुं०) सात ऋषियों (मरीचि, अंगिरस्, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह क्रतु, और वसिष्ठ) का विशेषण, °**ज** बृहस्पति का विशेषण —**संस्थ** (वि०) चित्रित,—**हस्त** युद्ध के अवसर पर हाथों की विशिष्ट अवस्थिति ।

चित्रकः [चित्र + कन्] 1 चित्रकार 2. साधारण चीता 3 छोटा शिकारी चीता 4 एक वृक्ष का नाम,—**कम्** मस्तक पर साम्प्रदायिक तिलक ।

चित्रल (वि०) [चित्र + कल] चितकबरा, चित्तीदार, **लः** रंगबिरंगा रंग ।

चित्रा [चित्र + अच + टाप्] चाह्र मास का चौदहवाँ नक्षत्र हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव— रघु० १।४६ । नम० अटीरः, **ईशः** चांद ।

चित्रिकः [चैत्र + क पृषो० साधु] चैत्र का महीना ।

चित्रिणी [चित्र + इनि, चित्र अस्त्यर्थे इनि वा] भांति २ के गुणों और श्रेष्ठताओं से युक्त स्त्री, रतिशास्त्र में वर्णित चार प्रकार (पद्मिनी चित्रिणी शंखिनी और हस्तिनी या करिणी) की स्त्रियों में एक । रतिमंजरी में चित्रिणी की परिभाषा इस प्रकार दी गई है भवति रतिरसज्ञा नातिखर्वा न दीर्घा तिलकुसुमसुनासा स्निग्धनीलोत्पलाक्षी—घन कठिनकुचाढ्या सुन्दरी बद्धशीला, सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा ॥ ॥

चित्रित (वि०) [चित्र + क्त] 1 रंगबिरंगा, चित्तीदार 2 चित्रकारी से युक्त ।

चित्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [चित्र + इनि] 1 आश्चर्यकारी 2 रंगबिरंगा ।

चित्रीयते (ना० धा० आ०— 1 आश्चर्य पैदा करना, आश्चर्यजनक होना—एवमुक्तरीतस्यमावश्चित्रीयते जीवलोक महावी० ५, भट्टि० १३।६४, १८।२३ 2 आश्चर्य करना ।

चिन्त (चुरा० उभ० चिन्तयति—ते, चिन्तित) 1 सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना—तच्छ्रुत्वा दिग्भूर्ध्वश्चिन्तयामास—पंच० 1 चिन्तय तावत्केनापदेशेन पुनराश्रमपदं गच्छाम — श० 2 सोचना, विचार करना मन में लाना तस्माद्रेतन् (वि०) न चिन्तयेत् हि० १, नरमप्यल्प वक्र राजा मनसापि न चिन्तयेत् मनु० ८।३८१, ८।२५८, पंच० १।१३५, चौर० १ 3 ध्यान करना, देखभाल करना, इसारोप रखना —रघु० १।६४ 4 प्रत्यास्मरण करना, याद करना, 5 मालूम करना, उपाय करना, ख्याल करना, सोच कर उपाय निकालना कारणमुपायचिन्त्यताम् हि० १ 6 सम्मान रखना सम्मान करना 7 तोलना, विवेचना करना 8 चर्चा करना, निरूपण करना, प्रतिपादन करना, अनु , बार,बार चिन्तन करना, पिछला याद करना, मन में सोचना श० ३।५, अम० ८।८, परि , 1 सोचना, विचारना, कल्पना स्वप्नेष

तावत्परिचिन्तय स्वयं कदाचिदेते यदि योगमर्हत —कु० ५।६७, भग० १०।१७ 2. चिन्तन करना, याद करना, ध्यान में लाना 3. तरकीब निकालना, मालूम करना, वि —, 1 सोचना, विचारना 2 चिन्तन करना, आकलन करना, ध्यानमग्न होना —श० ४।१ 3. विचारकोटि में रखना, ध्यान रखना, ख्याल करना —अस्मान्साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः —श० ४।१६ 4 इरादा करना, निश्चय करना, निर्णय करना —5 उपाय ढूंढना, मालूम करना, खोज निकालना, सम् —, 1 सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तनरत होना —याज्ञ० १।३५९, भीर० ३२ 2. (मन में) मानना, (रुपरेखा) बनाना।

चिन्तनम्, —ना [चिन्त् + ल्युट्] 1 सोचना, विचारना चिन्तनरत होना —मनसा चिन्तनम् मनु० १२।५ 2 आतुर चिन्तन।

चिन्ता [चिन्त् + णिच् + अङ् + टाप्] 1 चिन्तन, विचार 2 दुःखद या शोकपूर्ण विचार, परवाह, फ़िकर —चिन्ताजड़ं दर्शनम् —श० ४।५ इसी प्रकार 'शोक-चिन्ता' १७ 3 विचारविमर्श, विचारणा 4 (अल० शा० में) चिन्ता—३३ संचारी भावों में से एक —ध्यानं चिन्ता हितानाप्तेः शून्यता श्वासतापकृत् —सा० द० २०१। सम० आकुल (वि०) चिन्ता-मग्न, व्याकुल, आतुर —कर्मन् (नपुं०) चिन्ता करना —पर (वि०) चिन्तनशील, चिन्तातुर, —मणिः काल्पनिक रत्न — (यह जिसके पास रहता है, कहते हैं, उसकी सब कामनाएँ पूर्ण कर देता है) दार्शनिकों की मणि —काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया —शा० १।१२, तदेव हन्तं हृदि मेऽस्ति लब्धं चिन्तां न चिन्तामणिमप्यनर्घ्यम् —नै० ३।८१ ११।६५, —वेश्मन्, (नपुं०) परिषद् भवन, मन्त्रणागृह।

चिन्तिडी [—तिन्तिडी, पृषो० तस्य चत्वम्] इमली का पेड़।

चिन्तित (वि०) [चिन्त् + क्त] 1 सोचा हुआ, विमृष्ट 2 उपेत, विचार किया हुआ।

चिन्तितिः (स्त्री०) **चिन्तिया** [चिन्त् + क्तिन् च वा] सोच विमर्श, विचार।

चिन्त्य (सं० कृ०) [चिन्त् + यत्] 1 सोचने-विचारने के योग्य 2 सोचने के योग्य, मालूम किये जाने या उपाय ढूंढ लिये जाने के योग्य 3 विचारसापेक्ष, संदिग्ध, प्रश्नात्मक ... उदा-हरणम् (स ...) ... सा० द० १।

चिन्मय (वि०) [चित् + मयट्] विशुद्ध बौद्धिकता से युक्त, आत्मिक (जैसे कि परमात्मा), —यम् 1 विशुद्ध ज्ञान-मय 2. परमात्मा।

चिपट (वि०) [नि नताः नासिका यस्य तेन नि + पटच्, चि आदेश] चपटी नाक वाला, —टः चिउड़ा, चपटा किया हुआ चावल या अनाज, पोहे।

चिपिट [नि + पिटच् चि आदेश] दे० 'चिपट'। सम० —ग्रीव (वि०) छोटी गर्दन वाला, —नास, —नासिक (वि०) चपटी नाक वाला।

चिपिटकः, **चिपुटः** [चिपिट + कन्, =चिपिट पृषो० साधु] चिउड़ा, पोहे।

चिबु (बु) कम् [चिव् (ब्) + उ + कन्, पृषो० ह्रस्व] ठोडी, चिबुकं मुहुरस्य स्पृशामि यावत् —भामि० २।२४ याज्ञ० ३।९८।

चिमिः [चि + मिक् बा०] तोता।

चिर (वि०) [चि + रक्] दीर्घ, दीर्घकाल तक रहने वाला, दीर्घकाल से चला आया, पुराना —चिरविरह, चिर-काल, चिरनिद्रम् —आदि, —रम् दीर्घकाल (विशे० 'चिर' शब्द का अप्रधान कारकों में एक वचन क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त होता है और निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है —'दीर्घकाल' 'दीर्घकाल तक' 'दीर्घकाल के पश्चात्' 'दीर्घकाल से' 'आखिरकार' 'अन्त में' आदि —न चिरं पर्वते वसेत् मनु० ४।६०, तस्य प्रजानां चिरमात्मना धृताम् —रघु० ३।३५, ६२, अमरु ७९, कियच्चिरेणार्यपुत्रः प्रतिपत्तिं दास्यति —श० ६, रघु० ५।६४, प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव —रघु० १४।५९, कु० ५।४७, अमरु ३, चिरान्सुत-स्पर्शरसज्ञतां ययौ —रघु० ३।२६, ११।६३, १२।६७, चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः —कु० ५।१५, चिरे कुर्यात् —मन०। सम० —आयुस् (वि०) दीर्घ आयु वाला (पुं०) देवता, —आरोधः विरकालिक घेरा नाके-बन्दी, —उत्थ (वि०) दीर्घ काल तक रहने वाला, —कार, —कारिक, —कारिन्, —क्रिय (वि०) मन्थर, विलम्बी, ढीला, दीर्घसूत्री, —कालः दीर्घकाल, —कालिक, —कालीन (वि०) दीर्घकाल से चला आता हुआ, पुराना, दीर्घकाल से चालू, (रोग के विषय में) जीर्ण या दीर्घकालानुबन्धी, —जात (वि०) बहुत समय पहले उत्पन्न, पुराना, —जीविन् (वि०) दीर्घजीवी (पुं०) उन सात चिरजीवियों का विशेषण जो 'अमर' समझे जाते हैं (अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः, कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः) —पाकिन् (वि०) देर से पकने वाला, —पुष्पः बकुल वृक्ष, —मित्रम् पुराना मित्र, —मेहिन् (पुं०) गधा, —रात्रम् बहुत रातें, दीर्घ-काल, —उषित (वि०) जो दीर्घकाल तक रह चुका हो, —प्रोषित (वि०) दीर्घकाल से निर्वासित, प्रवासी, —सूता, सूतिका वह गाय जो कई बछड़े दे चुकी हो —सेवकः पुराना नौकर, —स्थ, —स्थायिन्, —स्थित (वि०) दिकाऊ, देर तक चलने वाला, चालू रहने वाला, पायेदार।

चिरजीव (वि०) [चिरम्+जीव्+अच्] दीर्घायु या लम्बी उम्र वाला,—वः काम का विशेषण।

चिरण्टी, चिरिण्टी [चिरे अटति पितृगृहात् भर्तृगेहम् अट्+अच्, पृषो० तारा०] 1 विवाहित या अविवाहित लड़की जो सयानी होने पर भी अपने पिता के घर ही रहे 2. तरुणी, जवान स्त्री।

चिरत्न (वि०) (स्त्री०—त्नी) [चिरे भव चिर+त्न] चिरकालीन, पुराना, प्राचीन।

चिरन्तन (वि०) (स्त्री० —नी) [चिरम्+ट्युल्, तुट् च] चिरागत, पुराना, प्राचीन—स्वहस्तदत्ते मुनिमासनं मुनिश्चिरन्तनस्तावदभिन्यवीविशत्—शि० १।१५ चिरन्तन सुहृद्—आदि।

चिरायति (ना० धा० पर० (चिरायते भी)) विलम्ब करना, ढील देना—कथं चिरयति पाञ्चाली—वेणी० १ किं चिरायित भवता सकेतके चिरयति प्रवरा विनोद—मृच्छ० ३।३।

चिरिः [चिनोति मनुष्यवत् वाक्यानि चि+रिक्] तोता।

चिल [चि+लक्] कपड़े का जोड़।

चिर्भटी [चिर+भट्+अच्, ङीप् पृषो०] एक प्रकार की ककड़ी।

चिल् (तुदा० पर० —चिलति) कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना।

चिलमी (लि) लिका [चिल+मी (लि) ल्+ण्वुल्+टाप् ह्रस्वम्] 1 एक प्रकार का हार 2 जुगनू 3 बिजली।

चिल्ल् (भ्वा० पर०—चिल्लति चिल्लित) 1 ढीला होना शिथिल होना, पिलपिला होना 2 आराम से काम करना, क्रीड़ासक्त होना।

चिल्लः,—ल्ला [चिल्ल्+अच्, स्त्रियां टाप्] चील। सम० —आभः गठकतरा, जेबकतरा।

चिल्लिका, चिल्ली [चिल्ल्+इन्+कन्+टाप्, चिल्लि+ङीप्] झींगुर—तु० झिल्लिका।

चिविः [चीव्+इन् पृषो०] ठोडी।

चिह्नम् [चिह्न्+अच्] 1 निशान, धब्बा, छाप प्रतीक कुलचिह्न, बिल्ला, कलङ्क—ग्रामेषु यूपचिह्नेषु रघु० १।४४, ३।५५, शनिपातस्य चिह्नानि—पंच० १।१७७ 2. संकेत, इंगित—प्रजार्थचिह्नानि पुर फलानि रघु० २।२१,—ग्रहर्षचिह्न २।६८ 3 राशिचिह्न 4 लक्ष्य दिशा। सम० —कारिन् (वि०) 1 चिह्न लगाने वाला दाग लगाने वाला 2. प्रहार करने वाला, घायल करने वाला, हत्या करने वाला 3 डरावना, विकराल।

चिह्नित (भू०क०कृ०) [चिह्न्+क्त], 1 निशान लगा हुआ, मुद्रित, मुद्रांकित, किसी पद का बिल्ला लगाये हुए—याज्ञ० २।८६, १।३१८, दिवा चरेयुः कार्यार्थं चिह्निता राजशासनैः—मनु० १०।५५, २।१७० 2 दागी 3. ज्ञात, अभिहित।

चीत्कारः [चीत्+कृ+घञ्] अनुकरणमूलक शब्द, कुछ जानवरों की क्रन्दन विशेषकर गधे की रेंक या हाथी की चिंघाड़,—स विधीदति चीत्काराद्गर्दभस्ताडितो यथा—हि० २।३१ वैनायकमपि चरं वो वदनविधुतय पान्तु चीत्कारवत्य मा० १।१।

चीनः [चि+नक् दीर्घ] 1 एक देश का नाम वर्तमान चीनदेश 2 हरिण का एक प्रकार 3 एक प्रकार का कपड़ा —नाः (पु० ब० व०) चीन देश के निवासी या शासक—नम् 1 झंडा 2 आँखों के किनारों पर बाँधने के लिए पट्टी 3 सीसा। सम० —अंशुकम्,—वासस् (नपु०) चीन का कपड़ा रेशम, रेशमी कपड़ा चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवात नीयमानस्य—श० १।३४ कु० ७।३ अमरु ७४ —कर्पूरः एक प्रकार का कपूर, —जम् इस्पात —पिष्टम् 1 सिन्दूर 2 सीसा —वङ्गम् सीसा।

चीनाकः [चीन+अक अण्] एक प्रकार का कपूर।

चीरम् [चि+क्रन् दीर्घश्च] 1 चिथड़ा फटा पुराना कपड़ा धज्जी मनु० ६।६ 2 वल्कल 3 वस्त्र या पोशाक 4 चार लड़ियों का मोतियों का हार 5 चौड़ी धारी रेखा लकीर 6 रेखाएँ बनाकर लिखना 7 सीसा। सम० —परिग्रह, —वासस् (वि०) 1 वल्कलधारी कु० ६।९२ मनु० ११।१०१ 2 चिथड़े या फटे पुराने कपड़े पहने हुए।

चीरिः (स्त्री०) [चि+क्रि दीर्घ०] 1 आँखों को ढकने का पर्दा 2 झींगुर 3 नीचे पहनने वाले कपड़े की झालर या गोट।

चीरि(रु)का [चीरि+कै+क+टाप्] [चीरिका पृषो० साधुः] झींगुर।

चीर्ण (वि) [चर्+क्त पृषो० अत ईत्वम्] 1 किया हुआ, अनुष्ठित पालित 2 अधीत, दोहराया हुआ 3 विदीर्ण किया हुआ विभाजित। सम० —पर्णः खजूर का पेड़।

चीलिका [ची+ला+क+टाप् ह्रस्वम्] झींगुर।

चीव(भ्वा० उभ०—चीवति-ते) 1 पहनना, ओढ़ना 2 लेना ग्रहण करना 3 पकड़ना।

चीवरम् [चि+ष्वरच् नि० दीर्घ, चीव्+अरच् वा] 1 पोशाक, फटा पुराना, चिथड़ा प्रेतचीवरवसा स्वनोग्रया रघु० ११।१६ 2 भिक्षुक का परिधान, विशेषकर बौद्ध भिक्षु के वस्त्र, चीवराणि परिधत्ते—सिद्धा०, चीरचीवरपरिच्छदा मा० १, प्रक्षालित मेतन्मया चीवरखण्डम् मृच्छ० ८।

चीवरिन् (पु०) [चीवर+इनि] 1. बौद्ध या जैन भिक्षुक 2 भिक्षुक।

चुक्कारः [चुक्क्+अच्=चुक्क+आ+रा+क] सिंह की गर्जन या दहाड़।

चुक्र [चक् + रक्, अत उत्वं च] 1. एक प्रकार की अम्लवेत या अम्ललोणिका 2 खटास, —म् खटास, अम्लता। सम॰ —फलम् इमली का फल, —वास्तूकम् खटमिट्ठा चौका, अम्ललोणिका।

चुक्रा [चुक्र + टाप्] इमली का पेड़।

चुक्रिमन् (पुं॰) [चुक्र + इमनिच्] खटास, खट्टापन।

चुचुकः, —कम्, चूचुकम् [चुच् इति अव्यक्तशब्दं कायति —कै + क, पृषो॰ दीर्घ] चूची का सिटकना या चूची।

चुञ्चु (वि॰) [कुछ समासों के अन्त में प्रयुक्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत, कुशल —अक्षर°, वाग्° आदि।

चुण्ढी, —ढा [चुट् (ड्) + अच् + टाप्] छोटा कुआँ या जलाशय।

चुत् (भ्वा॰ पर॰ —चोतति) चूना, टपकना, दे॰ च्युत्।

चुतः [चुत् + क] गुदा।

चुद् (चुरा॰ उभ॰ चोदयति —ते चोदित) 1 भेजना, निदेश देना, आगे फेंकना प्रेरित करना, हांकना, धकेलना चोदयाश्वान् श॰ १ 2 प्रणोदित करना स्फूर्ति देना, ठेलना, सजीव बनाना उकसाना —रघु॰ ४।२४, मार्गप्रदर्शन करना, फुसलाना रघु॰ १०।६७ 3 शीघ्रता करना, त्वरित करना 4 प्रश्न करना, पूछना 5 साग्रह निवेदन करना 6 प्रस्तुत करना, तर्क या आक्षेप के रूप में सामने लाना, परि 1. धकेलना, निदेश देना, भेजना 2 उकसाना, प्रोत्साहित करना, प्र—, 1 ठेलना, प्रणोदित करना, स्फूर्ति देना उकसाना—चापलाय प्रचोदित —रघु॰ १।९ 2 हांकना हुंकारना, स्फूर्ति देना, धकेलना 3 निदेश देना सम् —, 1 निदेश देना, उकसाना, ठेलना 2 फेंकना, आगे बढ़ाना।

चुन्दी (चुन्द् + अच् स्त्रि॰ ङीप्) दूती, कुटनी।

चुप् (भ्वा॰ पर॰ —चोपति) धर्म धर्म चलना, दबे पाँव चलना, चुपचाप खिसकना।

चुबुक [= चिबुक, पृषो॰] ठोडी।

चुम्ब् (भ्वा॰ —चुरा॰ उभ॰ चुम्बति —ते, चुम्बयति —ते, चुम्बित) 1 चुंबन करना, (आलं॰ से भी) विलम्बयति चुम्बति जलधरकल्पं हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् —गीत॰ ६, प्रियामुखं किंपुरुषश्चुचुम्बे—कु॰ ३।३८ अमरु ११, हि॰ ४।११२ 2 सुकुमारता पूर्वक स्पर्श करना, छूते हुए चलना—उत्तर॰ ४।१६, परि —, चूमना — ऋतु॰ ६।१७, अमरु ७७।

चुम्बः, —बा [चुम्ब् + अच्, घञ् वा, स्त्रियां टाप्] चुंबन, चूमना।

चुम्बकः [चुम्ब् + ण्वुल्] 1. चूमने वाला 2 कामी, कामासक्त, कामुक 3. बदमाश, ठग 4 जिसने चूम लिया, जिसने अनेक विषयों को छू लिया, पल्लवग्राही विद्वान् 5 चुंबक पत्थर (चकमक)।

चुम्बनम् [चुम्ब् + ल्युट्] चूमना, चुंबन—चुम्बनं देहि मे भार्ये कामचाण्डालतृप्तये —रस॰।

चुर् (चुरा॰ उभ॰ —चोरयति —ते, चोरित) 1. चुराना, लूटना — मनु॰ ८।३३३ विक्रम॰ ३।१७ 2. (आलं॰) ग्रहण करना, रखना, अधिकार में करना, लेना, धारण करना—अचूचुरच्चन्द्रमसोऽभिरामताम् शि॰ १।१६।

चुरा [चुर् + अ + टाप्] चोरी।

चुरि: —री (स्त्री॰) [चुर् + कि, चुरि + ङीष्] छोटा कुआँ।

चुलुकः [चुल् + उकञ्] 1 गहरा कीचड़ 2. एक घूंट या हथेली भर पानी, चुल्लू, —अमी स यद चुलुके समुद्रः —नै॰ ८।४५, शात्वा विषादुवचलुकात् प्रसृतिम्—विक्रमाङ्क॰ १।३७ 3 छोटा बर्तन।

चुलुकिन् (पुं॰) [चुलुक + इनि] सूंस, उलूपी।

चुलुम्प् (भ्वा॰ पर॰ —चुलुम्पति) 1. झूलना, डोलना, इधर उधर हिलना डोलायमान होना, उद्—1. छोटे लेना 2 आन्दोलित होना —अम्भोलोलविलोकेलीरचित चुलुकेक्चक्षुलुम्पत्यपो मे—महावी॰ ५।८।

चुलुम्पः [चुलुम्प् + घञ्] बच्चों को लाड प्यार करना।

चुलुम्पा [चुलुम्प + टाप्] बकरी।

चुल्ल् (भ्वा॰ पर॰ —चुल्लति) खेलना, क्रीडा करना, प्रेमोन्माद में प्रीतिसूचक संकेत करना।

चुल्लि [चुल्ल् + इन्] चूल्हा।

चुल्ली [चुल्लि + ङीष्] 1 चूल्हा 2 चिता।

चूचुकम्, चूचूकम् [चूष् + ऊकण्, षकारस्य चकार, पृषो॰] चूची का सिटकना — चूची—शि॰ ७।१९।

चूडकः [चूडा + कन्, ह्रस्व] कुआँ।

चूडा [चुल् + अङ्, लस्य डः दीर्घ॰ नि॰] 1 बालों की चोटी चुटिया (मुण्डन संस्कार के अवसर पर रक्खी हुई शिखा) रघु॰ १८।५१ 2. मुण्डन संस्कार 3 मुर्गे की या मोर की कलगी 4. ताज, मुकुट, उष्णीष 5. सिर 6. शिखर, चोटी 7. चौबारा अटारी 8. कुआँ 9 (कलाई में पहना जाने वाला) आभूषण। सम॰ —करणम्, —कर्मन् (नपुं॰) मुण्डन संस्कार—मनु॰ २।३५, —पाशः बालों का गुच्छा, केश समूह—चूडापाशे नवकुरवकम् —मेघ॰ ६५ —मणिः, —रत्नम् 1 सिर पर धारण किया जाने वाला आभूषण, चूडामणि, शीर्षभूषा (आलं॰ से भी) 2. बढ़िया वस्तु (प्रायः समास के अन्त में)।

चूडार, —ल (वि॰) [चूडा + ऋ + अण्, चूडा + लच्] 1. सिर पर चुटिया रखने वाला, शिखाधारक 2. कलगीदार।

चूतः [चूष् + क्त पृषो॰] 1. आम का पेड़,—ईषद्बद्धरजःकणाग्रकपिशा चूते नवा मञ्जरी—मालवि॰ ३।७, चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः—कु॰ ३।३२ 2. कामदेव

के पाँच बाणों में से एक, दे० पंचबाण, —लम् चुवा, मलद्वार ।

चूर्ण् (चुरा० उभ० —चूर्णयति–ते, चूर्णित) चूरा२ करना, कुचलना, पीस देना 2 चकनाचूर करना, कुचल देना, —सम्,—रगड़ देना, कुचल देना—संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू—वेणी० १।१५ ।

चूर्णः,—र्णम् [चूर्ण+अच्] 1 चूरा 2 आटा 3 धूल 4. सुगन्धित चूरा, पिसा हुआ चन्दन, कपूर आदि —भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः—मेघ० ६८ र्णः 1. खड़िया 2. चूना । सम० —कारः चूना फूंकने वाला,—कुन्तलः घूंघर, घूंघराले बाल, अलकें—सम केरलकान्तानां चूर्णकुन्तलवल्लिभिः—विक्रमांक० ४।२, —खण्डम् कंकड़, बजरी, —पारदः शिंगरफ़, सिन्दूर, —योगः गन्ध द्रव्यों का चूर्ण ।

चूर्णकः [चूर्ण+कन्] भून कर पीसा हुआ अनाज, सत्तू —कम् 1. सुगन्धित चूरा 2. गद्य रचना की एक शैली जो कर्णकटु शब्दों से रहित तथा अल्प समास वाली हो—अकठोराक्षरं स्वल्पसमासं चूर्णकं विदुः—छ० ६ ।

चूर्णनम् [चूर्ण+ल्युट्] कुचलना, पीसना ।

चूर्णिः,—र्णी (स्त्री०) [चूर्ण+इन्, चूर्णि+ङीष्] 1. पीसा हुआ, चूरा 2 सौ कौड़ियों का समूह ।

चूर्णिका [चूर्ण+ठन्+टाप्] 1 भुना हुआ और पिसा हुआ अनाज, सत्तू 2 सरल गद्यरचना की एक शैली ।

चूर्णित (वि०) [चूर्ण्+क्त] 1 पीसा हुआ, चूरा किया हुआ 2 कुचला हुआ, रगड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ, टुकड़े २ किया हुआ—कु० ५।२४ ।

चूडः [चूड्+क पृषो० दीर्घ] बाल, केश, —डा 1 ऊपर का कमरा 2. शिखर 3. धूमकेतु की शिखा ।

चूलिका [चूल्+ण्वुल् पृषो० दीर्घ] 1. मुर्गे की कलगी 2. हाथी की कनपटी 3 (नाटकों में) नेपथ्य में पात्रों द्वारा किसी घटना का संकेत—अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका—सा० द० ३१०, उदा० महावीर चरित के चौथे अंक के आरंभ में ।

चूष् (भ्वा० पर०—चूषति, चूषित) पीना, चूसना, चूस लेना ।

चूषा [चूष्+क+टाप्] 1. (हाथी का) चमड़े का तंग 2. चूसना 3. मेखला ।

चूष्यम् [चूष्+ण्यत्] चूस कर खाने योग्य पदार्थ ।

चृत् I (तुदा० पर० चृतति) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 जोड़ना, एक जगह जोड़ना, II (भ्वा० पर० चुरा० उभ०—चर्तति, चर्तयति—ते) जलाना, प्रज्वलित करना ।

चेकितानः [कि० … यङ्‌ … शानच्, यङो लुक्, चात्तोऽहित्वम्] 1. शिव का विशेषण 2. यदुवंशी राजा जो पांडवों की ओर से महाभारत के युद्ध में लड़ा ।

चेटः,—टकः [चिट्+अच्, वा टस्य कः] 1. नौकर 2. विट, उपपति ।

चेटि (टि) का, चेटिः (टी) (टी) —[चिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्व, पक्षे ह्रस्वम्, ङीष्, ह्रस्वम् वा] सेविका, दासी ।

चेतन (वि०) (स्त्री० —नी) [चित्+ल्युट्] 1 सजीव, जीवित, जीवधारी, सचेत, संवेदनशील—चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५, सजीव और निर्जीव 2 दृश्यमान, —नः 1 सचेत प्राणी, मनुष्य 2 आत्मा, मन 3 परमात्मा, —ना 1 ज्ञान, संज्ञा, प्रतिबोध—चुम्बकयति मदीया चेतना चञ्चरीकः—रस०, रघु० १२।१४, चेतना प्रतिपद्यते संज्ञा फिर प्राप्त कर लेता है 2 समझ, प्रज्ञा —पश्चिमाद्यामिनीयामात्प्रसादमिव चेतना—रघु० १७।१ 3 जीवन, प्राण, सजीवता—भग० १३।६ 4 बुद्धिमत्ता, विचारविमर्श ।

चेतस् (नपुं०) [चित्+असुन्] 1 चमकना, ज्ञान 2. चिंतनशक्ति, आत्मा, सर्जना, शक्ति 3 मन, हृदय, आत्मा —चेतः प्रसादयति—भर्तृ० २।२३, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः—श० १।३४ । सम० —जन्मन्, —भव, —भू (पुं०) 1 प्रेम, आवेश 2 कामदेव, —विकारः मन का विकार, संवेग, क्षोभ ।

चेतोमत् (वि०) [चेतस्+मतुप्] जिन्दा, जीवित ।

चेद् (अव्य०) यदि, बशर्ते कि, यद्यपि (वाक्य के आरम्भ में कभी भी प्रयोग नहीं होता) —अयं दाशरथीकरोति नार्दर्शकर्माटन्या प्रतिभाति धाम—भामि० १।६४, कु० ६।९—इति चेद् न, यदि ऐसा कहा गया (हम उत्तर देते हैं) तो ऐसा नहीं (विवादास्पद विषयों में बहुधा प्रयोग होता है), सन्निधानमांत्रेण रत्नवन्मनोज्ञदृष्टेः कर्तृत्वमिति चेन्न—शत०, अथ चेद्—परन्तु यदि ।

चेदि (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम—नवांगिनार चेदीनां भवस्वजनमानव भा—शि० २।९५, ६३ । सम० —पतिः, —भूभृत् (पुं०), —राज् (पुं०)—राजः शिशुपाल, दमघोष का पुत्र, चेदिदेश का राजा—शि० २।९६, दे० 'शिशुपाल' ।

चेय (वि०) [चि+यत्] 1 ढेर लगाने के योग्य 2 एकत्र करने योग्य, संग्रह किये जाने के योग्य ।

चेल् (भ्वा० पर० चेलति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 हिलना, क्षुब्ध होना, कांपना ।

चेलम् [चिल्+घञ्] 1 वस्त्र, पोशाक—क्षुम्-मायण चार्य चेल समाना—भग० 2 (समास के अन्त में) बुरा, दुष्ट, कमीना—भार्याचेलम् बुरी पत्नी । सम० —प्रक्षालकः धोबी ।

चेलिका [चेल+कन्+टाप्, इत्वम्] चोली, अंगिया ।

चेष्ट् (भ्वा० आ० चेष्टते, चेष्टित) 1 हिलना-जुलना,

हिलना-डुलना, सक्रिय होना, जीवन के चिह्न दिखलाना -यदा स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत् -मनु० १।५२ 2. प्रयत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, संघर्ष करना 3 अनुष्ठान करना, (कुछ कार्य) करना 4. व्यवहार करना —वि , 1. हिलना-डुलना, चलना-फिरना, गतिशील होना, इधर-उधर फिरना 2 कार्य करना, व्यवहार करना।

ष्टकः [चेष्ट्+ण्वुल्] संभोग का आसन विशेष, रतिबंध।

ष्टनम् [चेष्ट्+ल्युट्] 1 गति 2 प्रयत्न, प्रयास।

ष्टा [चेष्ट्+अङ्+टाप्] 1 चाल, गति किमस्माक स्वामिचेष्टानिरूपणेन हि० ३ 2 संकेत, कर्म-चेष्टया भाषणेन च नेत्रवक्त्रवि० ।र्गृह्यतेऽन्तर्गतं मन: —मनु० ८।२६ 3 प्रयत्न, प्रयास 4 व्यवहार। सम०—नाश सृष्टि का नाश, प्रलय —निरूपणम् किसी व्यक्ति की गतिविधि पर आँख रखना।

ष्टित (भू० क० कृ०) [चेष्ट्+क्त] हिला, चला, हिला-डुला,—तम् 1 चाल, अंगभंगिमा, कर्म 2 क्रिया कर्म, व्यवहार कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम् रघु० ४।६८, तत्तत्कामस्य चेष्टितम् मनु० २।४ काम करना।

तन्यम् [चेतन+ष्यञ्] 1 जीव जीवन प्रज्ञा, प्राण संवेदन 2 (वेदान्त द० में) परमात्मा जो सभी प्रकार की संवेदनाओं का स्रोत और सब प्राणियों का मूल-तत्त्व समझा जाता है।

तसिक (वि०) [चित्त+ठक्] मानसिक, बौद्धिक।

त्य,—त्यम् [चित्य+अण्] 1 सीमा चिह्न बनानेवाला पत्थरों का ढेर 2 स्मारक, समाधि-प्रस्तर 3 यज्ञ मण्डप 4 धार्मिक पूजा का स्थान, वेदी, वह स्थान जहाँ देवमूर्ति प्रस्थापित रहती है 5 देवालय 6 बौद्ध और जैन मन्दिर 7 गूलर का वृक्ष, या सड़क के किनारे उगने वाला गूलर का पेड़-मेघ० २३ (रथ्या-वृक्ष -मल्लि०)। सम०—तरु,—द्रुमः,—वृक्षः किसी पवित्र स्थान पर उगा हुआ उदुम्बर अर्थात् गूलर का पेड़,—पालः देवालय का संरक्षक,—मुखः साधु-संन्यासी का जलपात्र या कमण्डलु।

त्रः [चित्रा+अण्] एक चान्द्र मास का नाम जिसमें कि चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र पुंज में स्थित रहता है, (यह महीना मार्च और अप्रैल के अंग्रेजी महीनों में आता है) 2 बौद्ध भिक्षु,—त्रम् मन्दिर, मृतक की समाधि। सम० -आवलि (स्त्री०) चैत्र की पूर्णिमा, —सखः कामदेव का विशेषण।

त्ररथम्,—रथ्यम् [चित्ररथ+अण्, ष्यञ् वा] कुबेर के उद्यान का नाम —एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्य-रम्यानपरो विदर्भान् -रघु० ५।६०,५०।

त्रः, चैत्रिकः, चैत्रिन् (पुं०) [चैत्री विद्यतेऽस्मिन् चैत्री +इनि, चित्रा+ठक्, इनि वा] चैत्रमास, चैत का महीना।

चैत्री [चित्रा+अण्+ङीप्] चैत्र मास की पूर्णिमा।

चैद्यः [चेदि+ष्यञ्] शिशुपाल,—अभिधित्सु प्रतिष्ठासुः शि० २।१।

चैलम् [चेल्+अण्] कपड़े का टुकड़ा, वस्त्र। सम० —धावः धोबी।

चोक्ष (वि०) [चक्ष्+घञ्, पृषो० साधु०] 1 पवित्र, स्वच्छ 2 ईमानदार 3 होशियार, दक्ष, कुशल 4 सुखकर, रुचिकर, प्रसन्नता देने वाला।

चोचम् [कोचति आवृणोति—कुच्+अच् पृषो०] 1 वल्कल, छाल 2 चमड़ा, खाल 3 नारियल।

चोटी [चुट्+अण्+ङीप्] छोटा लहंगा, साया पेटी-कोट।

चोडः [चोडति संवृणोति शरीरम्—चुड्+अच्+ङीप्] चोली अंगिया।

चोदना [चुद्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 भेजना, निर्देश देना, फेंकना 2 स्फूर्ति देना, आगे हाँकना 3. प्रोत्साहन देना, उकसाना, उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना प्रदान करना 4 उपदेश, पुनीत आदेश, वेदविहित विधि। सम० -गुडः खेलने के लिए गेंद।

चोदित (भू० क० कृ०) [चुद्+णिच्+क्त] 1 भेजा, निर्दिष्ट 2 स्फूर्ति दिया गया, हाँका गया 3 उकसाया गया, प्रोत्साहित किया गया उत्तेजित किया गया 4 तर्क के रूप में सामने प्रस्तुत किया गया।

चोद्यम् [चुद्+ण्यत्] 1 आक्षेप करना, प्रश्न पूछना 2 आक्षेप 3 आश्चर्य।

चो(चौ)रः [चुर्+णिच्+अच् चुरा+ण] चोर, लुटेरा —सकलं चोर गत त्वया गृहीतम् विक्रम० ४।१६, दूर्वाङ्कुरतलप्रभाचोरं चक्षुः —भर्तृ० ३।६७।

चो (चौ) रिका [चोर+ठन्+टाप्] चोरी, लूट।

चोरित (वि०) [चुर्+णिच्+क्त] चुराया गया, लूटा गया।

चोरितकम् [चोरित+कन्] 1. चोरी, चौर्य, स्तेय 2 चुराई हुई वस्तु।

चोल (पुं०, ब० व०) [चुल्+घञ्] दक्षिण भारत में एक देश का नाम, वर्तमान तंजौर,—लः,—ली, अंगिया चोली।

चोलकः [चोल+कै+क] 1 कवचत्राण 2 छाल या वल्कल 3 चोली।

चोलकिन् (पुं०) [चोलक+इनि] 1 कवचत्राण से सुसज्जित सैनिक 2 सतरे का पेड़ 3 कलाई।

चोल(लो)ण्डुकः [चोलस्य ब (उ) ण्डुक इव, ब० स०, शक० पर०] साफा, पगड़ी, किरीट, मुकुट।

चोषः [चुष्+घञ्] 1 चूसना, (आयु० में) सूजन।

चोष्यम्=चूष्यम् ।

चौड(ल) (वि०) (स्त्री—डी (ली)) [चूडा+अण्—डलयोरभेदः] 1. शिखायुक्त, कलगीदार 2. मुण्डन सम्बन्धी—डम्,—लम् मुण्डन संस्कार ।

चौर्यम् [चोर+ष्यञ्] 1. चोरी, लूट 2. रहस्य, छिपाव सम०—रतम् छिपे छिपे स्त्री संभोग,—वृत्तिः (स्त्री०) लूटने की आदत ।

च्यवनम् [च्यु+ल्युट्] 1. चलना-फिरना, गति 2. वञ्चित होना, हानि, वञ्चना 3 मरना, नष्ट होना 4 बहना टपकना ।

च्यु (भ्वा० आ०—च्यवते, च्युत) 1 गिरना, नीचे गिर पड़ना, फिसलना, डूबना (आल० भी) -श० २।८ 2. बाहर निकलना, बहना, बूंद २ करके टपकना, धार निकालना—स्तनच्युत वह्निमिवाद्रिरम्बुद—रघु० ३।५८, भट्टि० ९।७४ 3 विचलित होना, भटकना, अलग हो जाना, (कर्तव्य आदि) छोड़ देना (अपा० के साथ), अस्माद्धर्मान्न च्यवेत्—मनु० ७।९८, १२।७१,७२ 4. खो देना, वञ्चित होना अच्योष्ट सत्त्वान्नृपतिः—भट्टि० ३।२०, ७।९२ 5 अदृश्य होना, ओझल होना, नष्ट होना, गायब होना -रघु० ८।६५, मनु० १२।९६ 6. घटना, कम होना; परि —, 1 चले जाना, उड़ जाना, बच जाना 2. प्रयाण करना 3. भटकना, अलग हो जाना, छोड़ देना 4. खोना, वञ्चित होना 5 गिर पड़ना, नीचे गिरना, प्र,— अलग हो जाना, नीचे गिर पड़ना आदि (लगभग वह सब अर्थ जो परि पूर्वक 'च्यु' के होते हैं) ।

च्युत् (भ्वा० पर०—च्योतति 1. बूंद २ गिर कर बहना, रिसना, चूना, झरना—इव शोणितमभ्यत्र सम्प्रहारेऽच्युतत्तयो.—भट्टि० ६।२८ 2. गिरपड़ना, नीचे गिरना, फिसलना—इव कवचमच्योतीत्—भट्टि० ६।२९ 3 गिराना, बहाना ।

च्युत (भू० क० कृ०) [च्यु+क्त, च्युत्+क वा] 1 नीचे गिरा हुआ खिसका हुआ, गिरा हुआ 2 दूर किया गया, बाहर निकाला गया 3 विचलित, भूला हुआ 4 खोया गया । सम० अधिकार (वि०) पदच्युत किया गया,—आत्मन् (वि०) दूषित आत्मा वाला, दुरात्मा कु० ५।८१ ।

च्युतिः (स्त्री०) [च्यु+क्तिन्] 1 अधः पतन, अवपतन 2 विचलन 3 बूंद २ गिरना, रिसना 4 खोना, वञ्चित होना—धर्मच्युतिं कुर्याम् ३।१० 5 अदृश्य होना नष्ट होना 6 योनिच्छिद्र 7 गुदा ।

च्यूतः [च्युत पृषो० ऊकारस्य दीर्घः] आम का वृक्ष ।

छ

छः [छो+ड, क वा], अंश, खंड ।

छगः (स्त्री०—गी) [छ यथावत् छेदनं गच्छति—छ+गम्+ड] बकरा ।

छगलः (स्त्री० ली) [छो+कल, गुक्, ह्रस्व] बकरा, —लम्—नीला कपड़ा ।

छगलकः [छगल+कन्] बकरा ।

छटा [छो+अटन्+टाप्] 1. ढेर, पुंज, राशि, संघात —सटाच्छटा भिन्नघनेन—शि० १।४७ 2. प्रकाश किरण-समूह, कान्ति, दीप्ति, प्रकाश—शि० ८।३८ 3. अविच्छिन्न रेखा, लकीर—[illegible]—काव्य०। सम०—आभा बिजली,—फलः सुपारी का वृक्ष ।

छत्रः [छादयति अनेन इति—छद्+णिच्+ष्ट्रन्, ह्रस्वः] कुकुरमुत्ता, खुंभी,—त्रम् छाता, छतरी—अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६ मनु० ७।९६। सम०—धरः,—धारः छत्र पकड़ कर चलने वाला,—धारणम् 1. छाता लेकर चलना, या छाता रखना—मनु० २।१७८ 2. राजकीय अधिकार के रूप में छत्र धारण करना,—पतिः 1 राजा जिसके ऊपर राज्य की मर्यादा के चिह्नस्वरूप छत्र किया जाय, प्रभुसत्तासम्पन्न सम्राट् 2. जंबुद्वीप के प्राचीन राजा का नाम,—भङ्गः 1. राजकीय छत्र का विनाश, राज्य का नाश, राजगद्दी से उतारा जाना, सिंहासनच्युति 2. पराधीनता 3. [illegible] 4. [illegible] अवस्था, वैधव्य ।

छत्रकः [छत्र+कै+क] शिव की पूजा के लिए मन्दिर, —कम् कुकुरमुत्ता, खुंभी ।

छत्रा, छत्राकः [छद्+ष्ट्रन्+टाप्, छत्रा+कन्] कुकुरमुत्ता, खुम्भी—मनु० ५।१९—याज्ञ० १।१७६ ।

छत्रिकः [छत्र+ठन्] छाता लेकर चलने वाला ।

छत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [छत्र+इनि] छाता रखने वाला या लेकर चलने वाला—(पुं०) नाई ।

छत्वरः [छद्+ष्वरच्] 1. घर 2. कुंज, पर्णशाला ।

छद् (भ्वा०—चुरा० उभ०—छदति—ते, छादयति—ते, छन्न, छादित) 1. ढकना, ऊपर से ढांप देना, पर्दा करना

—हेमैरछन्ना—मेघ० ७६, धनु: श्रोत्रसलिलमुखरित पक्षमिच्छादयन्तीम्—मेघ० ९०; छन्नोपान्त : .... काननाम्रैः —१८ 2 (चादर की भांति) बिछाना, ढापना 3 छिपाना, ढक लेना, ग्रहण लगना (आल०), गुप्त रखना — ज्ञानपूर्वं कृत कर्म छादयन्ते ह्यसाधव —महा०, छन्न दोषमुदाहरन्ती—मृच्छ० ९।१४, —अव, छिपाना, ढकना, ढापना, आ , 1 ढापना नाच्छादयति कौपीनम् - पंच० ३।९७ 2. छिपाना, ढकना भानोराच्छादयत्प्रभाम् महा० 3. वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना —मनु० ३।२७, वस्त्रमाच्छादयानि, उद् उघाड़ना, कपड़े उतारना, उप , 1 आच्छादित करना 2 छिपाना, ढकना, परि 1 ढांपना, पहनना दर्भैस्त परिच्छाद्य पंच० २, द्वीपिचर्मपरिच्छन्न (गर्दभ) हि० ३।९ 2 छिपाना ढापना, प्र , 1 ... ...पेटना, पर्दा डालना, अव गुंठित करना—(बन) प्राच्छादयदमेयात्मा नीहार मेव चन्द्रमा महा० 2 छिपाना, ढकना, भेस बद लना प्रच्छादय स्वान् गुणान् मनु० २।७३ प्रदान प्रच्छन्नम् २।६४, मनु० ४।१९८, १०।४०, मीर० ८ 3 कपड़े पहनना वस्त्र धारण करना 4 रुकावट डालना, रोड़ा अटकाना, प्रति , 1 छिपाना, ढकना 2 ढापना, लपेटना सम् -,1 छिपाना 2 अवगुंठित करना, लपेटना।

छदः, छदनम् [छद् + अच्, ल्युट् वा] 1 आवरण, चादर बल्यच्छद, उरश्छद आदि 2. स्कन्ध, पक्ष छदहेम कषन्निवाल्पमत् नै० २।६९ 3 पत्र, पर्ण 4 म्यान, खोल, गिलाफ, पेटी, बक्स ।

छदिः (स्त्री०) छदिस (नपुं०) [छद् + कि इस वा] 1 गाड़ी की छत 2 घर की छत या छप्पर ।

छद्मन् (नपुं०) [छद् + मनिन्] 1 धोखा देने वाले वस्त्र, कपटवेश 2 ढकोसला, बहाना ब्याज—ब्रह्मच्छद्मा सम्मर्थं सार महावी० २।४५ पलितच्छद्मना जरा रघु० १२।२, शि० २।२१ 3 जालसाजी, बेईमानी चालाकी —छद्मना परिददामि मृत्यवे उत्तर० १।४५ मनु० ४।१९९, ९।७२। सम० तापस बना हुआ तपस्वी पाखंडी, रूपेण (अव्य०) अज्ञात रूप में, भेस बदल कर, -वेशिन् (पुं०) खिलाड़ी, ठग, भेस बदले हुए।

छद्मिन् (वि०) (स्त्री० नी) [छद्मन् + इनि] 1 जाल साज, धोखेबाज 2 भेस बदलते हुए (समास के अन्त में) उदा० ब्राह्मण छद्मिन् = ब्राह्मण का रूप धारण किये हुए ।

छन्द् (चुरा० उभ०—छन्दयति ते, छन्दित) 1 प्रसन्न करना, तुष्ट करना 2 फुसलाना, बहकाना 3 ढांपना 4 प्रसन्न होना, उप -1 चापलूसी करना, फुसलाना, आमन्त्रित करना- रवयोपच्छन्दित उदकेन—श० ५, पानी पीने के लिए फुसलाया गया 2. प्रार्थना करना, निवेदन करना 3 अनुनय करना 4 कुछ देना।

छन्दः [छन्द् + घञ्] 1 कामना, इच्छा, कल्पना, चाह, अभिलाषा,— विज्ञापयामि देवि यस्ते छन्द इति— विक्रम० ३, जैसा आप चाहें 2. स्वतन्त्र इच्छा, अपनी छांट, मन की मौज, कामचार, स्वतन्त्र या इच्छानुकूल आचरण षष्ठे काले त्वमपि दिवसस्यात्मनश्छन्दवर्ती — विक्रम० २।१, गीत० १, याज्ञ० २।१९५, स्वच्छन्दम् अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार, निरपेक्ष रूप से 3 (अत) वश्यता, नियन्त्रण 4 मतलब, इरादा आशय 5 जहर।

छन्दस् (नपुं०) [छन्द् + असुन्] 1 कामना, चाह, कल्पना, इच्छा मर्जी —(गृह्णीयात्) मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन यथातथ्येन पण्डितम् चाण० ३३ 2 स्वतन्त्र इच्छा, स्वेच्छाचरण 3 मतलब, इरादा. 4 जालसाजी, चालाकी, धोखा 5 वेद, वैदिक सूक्तों का पावन पाठ स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता— उत्तर० ३।४८, बहुलं छन्दसि पाणिनि के द्वारा बहुधा प्रयुक्त, प्रणवश्छन्दसामिव - रघु० १।११, याज्ञ० १।१४३, मनु० ४।९५ 6 वृत्त, छन्द ऋक् छन्दसा आशास्ते -श० ४, गायत्री छन्दसामहम्- भग० १०।३५, १३।१४ 7 छन्दों का ज्ञान, छन्द शास्त्र (छ. वेदाङ्गों में से छन्द शास्त्र भी एक वेदाङ्ग माना जाता है अन्य वेदाङ्ग हैं - शिक्षा, व्याकरण कल्प निरुक्त और ज्योतिष)। सम० —कृतम् वेद का पद्यात्मक भाग या कोई दूसरी पावन रचना- यथादितेन विधिना नित्यं छन्दस्कृतं पठेत् —मनु० ४।१०० —गः (छन्दोग) 1 श्लोकों का सस्वर पाठ करने वाला 2 सामगायक या सामगान का विद्यार्थी—मनु० ३।१४५ (छन्दोग सामवेदाध्यायी) —भङ्गः छन्द शास्त्र के नियमों का उल्लंघन,—विचितिः (स्त्री०) छन्द परीक्षा छन्द शास्त्र का एक ग्रन्थ कभी कभी इसे दण्डिरचित माना जाता है — छन्दोविचित्या सकलस्तत्प्रपञ्चो निदर्शित —काव्या० १।१२।

छन्न (वि०) [छद् + क्त] 1 ढका हुआ 2 छिपा हुआ गुप्त रहस्य आदि दे० छद् ।

छमण्डः [छम + अण्डच्] अनाथ मातृपितृहीन जिसका कोई सम्बन्धी न हो।

छर्द् (चुरा० उभ० छर्दयति, छर्दित) वमन करना, कै करना।

छर्दः, छर्दनं छर्दिः (स्त्री०), छर्दिका छर्दिस् (स्त्री०) [छर्द् + घञ्, ल्युट् इन्, छर्दि + कन्] टाप् छर्द् + इसि वा] वमन, कै करना अस्वस्थता।

छलः,—लम् [छल् + अच्] 1 जालसाजी, चालाकी, धोखा, दगाबाजी—विषहे शठपलायनच्छलानि—रघु० १९।३१, छलमत्र न गृह्यते —मृच्छ० ९।१८, याज्ञ० १।६१,

मनु० ८।४९, १८७, अमरु १६, शि० १३।११ 2 बदमाशी, धूर्तता 3 ढकोसला, बहाना, व्याज, बाह्यरूप, (इस अर्थ में बहुधा उत्प्रेक्षा बतलाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है), परिक्षामवलयच्छलेन या न परेषा ग्रहणस्य गोचरा —नै० २।९५, प्रणयपं पूजामुपदाच्छलेन—रघु० ७।३० ५४, १६।२८, भट्टि० १।१, अमरु १५, मा० ९।१ 4 इरादा 5 दुष्टता 6 हेत्वाभास 7 योजना उपाय तरकीब।

छलनम्, —ना [छल् + ल्युट् स्त्रियां टाप् च] धोखा देना, ठगना, बुद्धि में दूसरे को पराजित करना।

छलयति (ना० धा० पर०) अपनी चतुराई से बुद्धि में दूसरे को पराजित करना, धोखा देना, ठगना —बलि छलयसे —गीत० १ तैवाम्भोलावछलयन्ति मीनान् —रघु० १६। ६१, भग० १० ।३६ अमरु ४१।

छलिकम् [छल + ठन्] एक प्रकार का नाटक या नृत्य —छलिकं दुष्प्रयोज्यमुदाहरन्ति —मालवि० २।

छलिन् (पुं०) [छल + इनि] ठग, उचक्का, शठ।

छल्लि, —ल्ली (स्त्री) [छद् + क्विप्, तां लाति —ला + क गौरा० ङीष्] 1 वल्कल, छाल 2 फैलने वाली लता 3 सन्तान, प्रजा, सन्तति, औलाद।

छविः (स्त्री०) [छयति अन्धकारं छिनत्ति छो वा —छो + वि किच्च वा ङीप्] 1 आभा, चेहरे की सुर्खी, चेहरे का रंगरूप —हिमकरोदयपाण्डुमुखच्छविः—रघु० ९।३८, छवि पाण्डुरा —श० ३।१०, विक्रम० ११ 2 सामान्य रंगरूप 3 सौन्दर्य, आभा, कान्ति —छविकर मुखचूर्णं मृतुश्रियः —रघु० ९।४५ 4 प्रकाश, दीप्ति 5 त्वचा खाल।

छाग (वि०) (स्त्री० —गी) [छो + गन्] बकरे या बकरी से सम्बन्ध रखने वाला —याज्ञ० १।२५८, —गः (स्त्री० गी) 1 बकरा बकरी, ब्राह्मणश्छागतां यथा (अर्जन) हि० ४।५३ मनु० ३।२६९ 2 मेष राशि —गम् बकरी का दूध। सम० —भोजन (पुं०) भेड़िया, —मुख कार्तिकेय का विशेषण —रथः, —वाहनः आग की देवता अग्नि की उपाधि।

छागण [छगण + अण्] सूखे कण्डों की आग।

छागल (वि०) (स्त्री० —ली) [छगल + अण्] बकरी से प्राप्त होने वाला या उससे सम्बद्ध, —लः बकरा।

छात (वि०) [छो + क्त] 1 कटा हुआ, विभक्त 2 निर्बल दुबलापतला कृश।

छात्रः [छत्रं गुरोर्दोषाणामावरणं शीलमस्य —सिद्धा० छत्र + ण] विद्यार्थी, शिष्य, —त्रम् एक प्रकार का मधु। सम० —गण्डः काव्य का अल्पज्ञ विद्यार्थी जिसे श्लोकों का केवल आरम्भिक पद याद हो, —दर्शनम् एक दिन रक्खे हुए दूध से निकाला हुआ मक्खन, —व्यंसकः मन्दबुद्धि या धूर्त विद्यार्थी।

छादनम् [छद् + णिच् + घञ्] छप्पर, छत।

छादनम् [छद् + णिच् + ल्युट्] 1 आवरण, पर्दा (आल० भी) विनिर्मितं छादनमज्ञताया —भर्तृ० २।७ 2 छिपाना 3 पत्र 4 परिधान।

छादित (वि०) दे० छन्न।

छाद्मिक [छद्मन् + ठक्] धूर्त, कपटी —मनु० ४।१९५।

छान्दस (वि०) (स्त्री० —सी) [छन्दस् + अण्] 1 वैदिक, वेदों के लिए विशेष शब्द जैसा कि 'छान्दस प्रयोग' 2 वेदाध्यायी वेदज्ञ 3 पद्यमय छन्दोबद्ध —सः वेदज्ञाता ब्राह्मण।

छाया [छो + य + टाप्] 1 छाँह, साँय (त० समास के अन्त में छाया हो जाता है जब कि छाँह का बहुलता का बोध अपेक्षित हो —उदा० इक्षुच्छायानिषादिन्य —रघु० ४।२० इसी प्रकार ७।४ ४० मुद्रा० ४।२१) छाया मध्य सानुगता निषण्णा —कु० १।५ ५।४५, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् —श० ५।७ रघु० १।३० ।२६ १।७० मेघ० ६७ 2 प्रतिबिम्ब, प्रति बिम्ब छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा —श० ७।३२ 3 समरूपता समानता 4 अभद्र कल्पना दृष्टिभ्रम 5 रंगों का मेलमिलाप 6 दीप्ति प्रकाश छायामण्डललक्ष्येण —रघु० ४।५ रत्नच्छाया व्यतिकर —मेघ० ।३६ 7 रंग—मा० ६।५ 8 चेहरे का रंग स्वाभाविक रंगरूप —केवल लावण्यमयी छाया त्वां न मुञ्चति —श० ३ मर्येऽन्तर्गत प्रियं तव मुखच्छायानुकारी शशी —मा० द० 9 सौन्दर्य —छाया भ्रश्यद्भवनम् —मेघ० ८०।१०४ 10 रक्षा 11 पंक्ति रेखा 12 अन्धकार 13 रिश्वत 14 दुर्गा 15 सूर्य की पत्नी (यह सूर्य की पत्नी संज्ञा की प्रकृति या छाया ही था, फलतः जिस समय संज्ञा अपने पति को बिना बताये अपने पिता के घर चली गई तो छाया से सूर्य के तीन सन्तान हुई दो पुत्र —सावर्णि और शनि एक कन्या तपती)। सम० —अङ्कः चन्द्रमा, —करः छाता लेकर चलने वाला, —ग्रहः शीशा, दर्पण, —तनय, —सुत सूर्यपुत्र शनि —तरुः वह वृक्ष जिसकी छाया घनी हो छायादार पेड़ —मेघ० १ —द्वितीय (वि०) वह जिसका साथ एक मात्र छाया हो अकेला, —पथः पर्यावरण —रघु० १३।२, —भृत् (पुं०) चन्द्रमा, —मानः चन्द्रमा —मम् छाया का मापना, —मित्रम् छतरी —मृगधरः चन्द्रमा, —यन्त्रम् छाया द्वारा काल का ज्ञान कराने वाला यन्त्र, धूपघड़ी।

छायामय (वि०) [छाया + मयट्] प्रतिबिम्बित, छायादार।

छि. (स्त्री) [छो + कि बा०] गाली, अपशब्द।

छिक्का [छिक् + कै + क टाप्] छींकना, छींक।

छित (वि०) दे० 'छात'।

छित्तिः (स्त्री०) [छिद्+क्तिन्] काटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

छित्वर (वि०) (स्त्री० री) [छिद् + ष्वरप् पृषो० दस्य त.] 1 काटना, काट देना, चीरना, कटाई करना फाड़ना, छेदना, टुकड़े २ करना, विदीर्ण करना, खण्ड खण्ड करना विभक्त करना नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि- भग० २।२३, रघु० १२।८०, मनु० ४।६९, ७० याज्ञ० २।३०२ 2 बाधा डालना, विघ्न डालना 3 हटाना दूर करना, नष्ट करना, शान्त करना, मारना तृष्णां छिन्धि भर्तृ० २।७७, एतस्य मदाय छिन्धि मानमं सत्रमुद्यान महा० राघवो रथमप्राप्तां तामाशां च मुरद्विषाम्, अर्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीसुखम् रघु० १२।९६, कु० ७।१५ **अव** काट डालना, टुकड़े २ कर देना, अलग २ करना, विभक्त करना 2 भेद करना, पृथक् करना 3 सुधारना परिभाषा देना, सीमित करना (इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग न्याय में बहुमत से होता है), दे० अवच्छिन्न **आ**, 1 काट डालना, फाड़ना, टुकड़े २ करना 2 छीनना खसोटना, ले लेना कु० २।४६, मा० ५।२८ 3 काट डालना, अलग कर देना—मनु० ८।२१९ 4 हटाना खींचकर दूर करना 5 खींचना, खींचकर दूर करना, उद्धृत करना निकालना 6 अवहेलना करना, ध्यान न देना, **उद्**, 1 काट डालना नष्ट करना, उन्मूलन करना, उखाड़ देना नोच्छिन्द्यादात्मनो मूलं परेषां चातितृष्णया म०भा०, किं या निपुणतया गुरु स्वयमुच्छिन्नतीन रघु० ५।७१ ५।२३, पंच० १।४७ 2 हस्तक्षेप करना, विघ्न डालना रोकना अर्थेन तु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधसः, उच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वा ग्रीष्मे कुसरितो यथा—पंच० २।८४, मनु० ३।१०१ **परि** 1 फाड़ना, काट डालना टुकड़े-टुकड़े करना 2 घायल करना, अंग भंग करना 3 अलग करना विभक्त करना, जुदा करना— शरेण परिच्छिन्न—सिद्धा० 4 सही-सही निश्चित करना, सीमा बनाना, परिभाषा करना, निश्चय करना, भेद बताना विवेचन करना —मध्यस्था भगवती नौ गुणदोषतः परिच्छेत्तुमर्हति - मालवि० १, (म)यश परिच्छेत्तुमियत्तयालम् रघु० ६।७७, १३।५९, कु० ३।२८ **प्र**, 1 काट डालना टुकड़े २ करना 2 ले जाना, छीन लेना **वि**, 1 काट डालना, फाड़ना, फाड़ना विभक्त करना—यदर्धं विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत् श० १।९, रघु० ११।२०, भर्तृ० १।९६ 2 बाधा डालना, तोड़ देना, समाप्त करना नाश करना, नष्ट करना, (कुल का दीपक) बुझा देना—विच्छिद्यमानेऽपि कुले परस्य—भट्टि० ३।५२, अमरु ३४, **सम्**, 1 काटना, काट डालना, विभक्त करना 2 दूर करना, साफ कर देना, निवारण करना, हटाना (सन्देह आदि)।

छिद् (वि०) [छिद् + क्विप] (समास के अन्त में) काटने वाला, विभक्त करने वाला, नष्ट करने वाला, हटाने वाला, खण्ड-खण्ड करने वाला— धर्मच्छिदामाश्रमपाद-पानाय् रघु० ५।६ पक्षच्छिद फलस्य —मालवि० ७।८।

छिदकम [छिद् + क्वुन] 1 इन्द्र का वज्र, 2 हीरा।

छिदा [छिद् + अङ् + टाप्] काटना विभाजन।

छिदि (स्त्री०) [छिद + इन्] 1 कुल्हाड़ा 2 इन्द्र का वज्र।

छिदिरः [छिद + किरच्] 1 कुल्हाड़ा 2 खड्ग 3 अग्नि 4 रस्सा डोरी।

छिदुर (वि०) [छिद् + कुरच्] 1 काटने वाला, विभक्त करने वाला 2 आसानी से टूटने वाला 3 टूटा हुआ, अव्यवस्थित, अस्त्रव्यस्त स गच्छन्ने न छिदुरादपि हार रघु० १६।६२ 4 शत्रु 5 धूर्त बदमाश, शठ।

छिद्र (वि०) [छिद् + रक्, छिद्र + अच् वा] छिदा हुआ, छिद्रों से युक्त, —**द्रम्** 1 छिद्र, दरार, फाँट कटाव, रन्ध्र गर्त विवर, दरज नवच्छिद्राणि तान्येव प्राण- स्यायतनानि तु याज्ञ० ३।९९, मनु० ८।२३९ अथ पटच्छिद्रशतैरलङ्कृत —मृच्छ० २।१, इसी प्रकार काच° वपि० 2 दोष, त्रुटि, दूषण—त्वं हि सर्षपमात्राणि पर- च्छिद्राणि पश्यसि आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यसि—महा० 3 भेद्य या क्षीण अंश, दुर्बल पक्ष, दोष न्यूनता नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः —मनु० ७।१०५, १०६, छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्कः —हि० १।८१ (यहाँ 'छिद्र' का अर्थ 'सुराख' भी है), पञ्च० ३।३९ सम० **अनुजीविन्**, **अनुसन्धानिन्**, **अनुसारिन्**,— **अन्वेषिन्** (वि०) 1 दोष या त्रुटियाँ ढूंढ़ने वाला 2 दूसरों की दूषित बातों को खोजने वाला, दूसरों में दोष निकालने वाला छिद्रान्वेषी—सर्पाणां दुर्जनानां च परच्छिद्रानुजीविनाम्—पञ्च० १,—**अन्तरः** बेंत, नर- कुल सरकण्डा **आत्मन्** (वि०) जो अपनी त्रुटियाँ दूसरों पर प्रकट कर देता है **कर्ण** (वि०) जिसने कान बिंधवा लिये हैं **दर्शन** (वि०) 1 दोषों का प्रदर्शन करने वाला 2 दोषदर्शी।

छिद्रित (वि०) [छिद्र + इतच्] 1 छिद्रों से युक्त 2 बिंधा हुआ, छिदा हुआ।

छिन्न (भू० क० कृ०) [छिद् + क्त] कटा हुआ, विभक्त किया हुआ, विदीर्ण किया हुआ खण्डित, फाड़ा हुआ, टूटा हुआ 2 नष्ट हुआ, दूर किया हुआ दे० छिद्, —**न्ना** बाराङ्गना, वेश्या। सम० **केश** (वि०) जिसके बाल काट लिये गये हैं, जिसका क्षौर या मुण्डन हो

चुका है,—द्रुमः कर्तित वृक्ष,—द्वैध (वि०) जिसका सन्देह मिट गया है,—नासिक (वि०) जिसकी नाक कट गई है,—भिन्न (वि०) जो पूरी तरह काट दिया गया है, जिसका अंग भंग हो गया है, क्षतविक्षत, काटा हुआ,—मस्त,—मस्तक (वि०) कटे हुए सिर वाला, —मूल (वि०) जिसे जड़ से काट दिया गया है – रघु० ७।४३,—श्वासः एक प्रकार का दमा,—संशय (वि०) जिसके सन्देह दूर हो गये हैं, सन्देहमुक्त, पुष्ट।

छुच्छुन्दरः (स्त्री० – री) [छुच्छुम् इत्यव्यक्तशब्दो दीर्घतो निर्गच्छति अस्मात् छुच्छुम् + दृ + अप्] छुछुन्दर नाम का जन्तु, गन्धाखु—याज्ञ० ३।२१३, मनु० १२।६५।

छुप् (तुदा० पर० – छुपति) स्पर्श करना, छूना।

छुपः [छुप् + क] 1 स्पर्श 2 झाड़ी, झंखाड़ 3 संघर्ष, युद्ध।

छुर् i (भ्वा० पर० – छोरति, छुरित) 1 काटना, विभक्त करना 2 उत्कीर्ण करना, ii (तुदा० पर० – छुरति, छुरित) 1. ढांपना, सानना, लीपना, जड़ना, पोतना, अवगुंठित करना 2 मिलाना, – वि– सानना, लीपना, ढकना, पोतना—मनःशिलाविच्छुरिता निषेदुः कु० १।५५, चौर० ११, विक्रम० ४।४५।

छुरणम् [छुर् + ल्युट्] सानना, लीपना—ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला रात्रिकापालिकीयम्—काव्य० १०।

छुरा [छुर् + क + टाप्] चूना।

छुरिका [छुर् + क्वुन् + टाप्, इत्वम्] चाकू, छुरी।

छुरित (भू० क० कृ०) [छुर् + क्त] 1. जटित, जड़ित 2. ऊपर फैलाया हुआ, पोता हुआ, आच्छादित किया हुआ—अनेकधातुच्छुरिताश्मराशेः –शि० ३।४, ७ इन्दु किरणच्छुरितनभसीम् काव्य० १० 3 सम्मिश्रित, अन्तर्मिश्रित—परभागेन छुरितामलच्छवी–शि० १।२२।

छुरी, छुरिका, छूरी [छुर् + ङीप्, छुरी + कन् + टाप् ह्रस्वः, छुरी पृषो० दीर्घः] चाकू, छुरी।

छृद् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० छर्दति, छर्दयति –ते) जलाना ii (रुधा० उभ० छृणत्ति, छृन्ते) 1. खेलना 2 चमकना 3 वमन करना।

छेक (वि०) [छो + डेकन् बा० नारा०] 1 पालतू, घरेलू (जैसे कि हिरनजन्तु) 2 नागरिक, शहरी 3 बुद्धिमान्, चतुर। सम०— अनुप्रासः अनुप्रास के पाँच भेदों में से एक, 'एक बार वर्णावृत्ति' जो कि व्यंजन समूहों में अनेक प्रकार से तथा एक ही बार घटने वाली समानता है—उदा०—आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन्पदे पदे भ्रमरान्, अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः—सा० द० ६३४,—अपह्नुतिः (स्त्री०) अपह्नुति अलंकार का एक भेद जबकि सोदाहरण निरूपण करता है –छेकापह्नुतिरन्यस्य शङ्कातस्तस्य निह्नवे, प्रजल्पन्मत्पदे लग्नः कान्तः किं न हि नूपुरः–५।२७,—उक्तिः (स्त्री०) वक्रोक्ति, व्यंग्यात्मक वक्रोक्ति, द्वयर्थक मुहाविरा।

छेदः [छिद् + घञ्] 1 काटना, गिराना, तोड़ डालना, खण्ड-खण्ड करना—अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः –कु० २।४१, छेदो दंशस्य दाहो वा—मालवि० ४।४, रघु० १४।१, मनु० ८।२७०, ३७०, याज्ञ० २।२२३ २४० 2 निराकरण करना, हटाना, छिन्नभिन्न करना, लोप करना, जैसा कि 'संशयच्छेद' में 3 नाश, बाधा—निद्राच्छेदाभिताम्रा मुद्रा० ३।२१ 4 विराम, अवसान, समाप्ति, लोप होना जैसा कि 'धर्मच्छेद' में 5 टुकड़ा, ग्रास, कतरन, खण्ड, अनुभाग – बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः – मेघ० ११, ५९, अभिनवकरिदन्तच्छेदपाण्डुः कपोलः –मा० १।२२, कु० १।४ श० ३।७, रघु० १२।१००, 6 (गणित में) भाजक, हर (भिन्नराशि का)।

छेदनम् [छिद् + ल्युट्] 1 काटना, फाड़ना, काट डालना, टुकड़े २ करना, खण्ड-खण्ड विभक्त करना—मनु० ८।२८०, २९२, ३२२ 2 अनुभाग, अंश, टुकड़ा, भाग 3 नाश, हटाना।

छेदिः [छिद् + इन्] बढ़ई।

छेमण्डः [छम् + अण्डन्, एत्वम्] मातृपितृहीन, अनाथ।

छेलकः [छो + डेलक] बकरा।

छैदिकः [छेद + ठक्] बेंत।

छो (दिवा० पर०—छ्यति, छात या छित—प्रेर० छाययति) काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना, कटाई करना, लवनी करना, भट्टि० १४।१०१, १५।४०।

छोटिका [छुट् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] चुटकी।

छोरणम् [छुर् + ल्युट्] त्याग करना, छोड़ देना।

ज

ज (वि०) [जि–जन्–जु + ड] (समास के अन्त में) से या में उत्पन्न, पैदा हुआ, जात, अवतीर्ण, उद्भूत, आदि—अग्निनेत्रज, कुलज, जलज, अद्रिज, अण्डज, उद्भिज्ज आदि,—जः 1. पिता 2. उत्पत्ति, जन्म 3. विष 4 भूतना, प्रेत या पिशाच 5 विजेता 6. कान्ति, प्रभा 7. विष्णु।

जकुटः (पुं०) 1. मलय पर्वत 2. कुत्ता।
जक्ष् (अदा० पर०—जक्षिति, जक्षित या जग्ध) खाना, खा लेना, नष्ट करना, उपभोग करना—भट्टि० ४।३९, १३।२८, १५।४६, १८।१९।
जक्षणम्, जक्षिः [जक्ष्+ल्युट्, इन् वा] खाना, उपभोग करना।
जगत् (वि०) (स्त्री०—ती) [गम्+क्विप् नि० द्वित्व तुगागमः] हिलने-जुलने वाला, जङ्गम सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च—ऋक् १।११५।१, इदं विश्वं जगत्सर्वमजगच्चापि यद्भवेत्—महा०, (पुं०), वायु, हवा (नपुं०) संसार—जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ—रघु० १।१। सम०—अम्बा,—अम्बिका दुर्गा,—आत्मन् (पुं०) परमात्मा,—आदिजः शिव का विशेषण,—आधारः 1 समय 2. वायु, हवा,—आयुः,—आयुस् (पुं०) हवा,—ईशः,—ईशः विश्व का स्वामी, परमदेव,—उद्धारः संसार की मुक्ति,—कर्तृ,—धातृ (पुं०) सृष्टि का बनाने वाला,—चक्षुस् (पुं०) सूर्य,—नाथः विश्व का स्वामी,—निवासः 1 परमात्मा 2 विष्णु का विशेषण—जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि—शि० १।१ 3 सांसारिक अस्तित्व,—प्राणः,—बलः हवा,—योनिः 1 परमपुरुष 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव की उपाधि 4. ब्रह्मा का विशेषण (नि—स्त्री०) पृथ्वी,—वहा पृथ्वी,—साक्षिन् (पुं०) 1. परमात्मा 2 सूर्य।
जगती [गम्+अति नि० साधु] पृथ्वी, (समीहते) नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः—कि० १।७, समतीत्य भाति जगती जगती—५।२० 2 लोग मनुष्य 3 गाय 4. छन्दो भेद (दे० परिशिष्ट)। सम०—अधीश्वरः,—ईश्वरः राजा—नै० २।१,—रुह् (पुं०) वृक्ष।
जगन्नुः (नुः)—1 अग्नि 2 कीड़ा 3. जन्तु।
जगरः [जागर्ति युद्धेऽनेन—जागृ+अच् पृषो० साधु०] कवच।
जगल (वि०) [जन्+ड = ज आत्मानं गलति गल्+अच्] बदमाश, चालाक, धूर्त,—लम् 1 गोबर 2. कवच 3 एक प्रकार की मदिरा (पुं०) (अन्तिम दो अर्थों में भी)।
जग्ध (वि०) [अद्+क्त जग्धादेश] खाया हुआ।
जग्धिः (स्त्री०) [अद्+क्तिन् जग्धादेश] 1 खाना 2. भोजन।
जग्मिः [गम्+कि, द्वित्वम्] हवा।
जघनम् [हन्+अच्, द्वित्वम्] 1 पुट्ठा, कूल्हा, चूतड़, पदयं जघने काञ्चीमञ्च स्रजा कबरीभरम्—गीत० १२ 2. स्त्रियों का पेड़ू 3 सेना का पिछला भाग, सेना का सुरक्षित भाग। सम०—कूपकौ (द्वि० व०) किसी सुन्दरी के कूल्हे के ऊपर के गड्ढे,—चपला व्यभिचारिणी स्त्री, कामुका—पस्तुविदेशगमने परमसुख जघनचपलायाः—काव्य० १।१३१।

जघन्य (वि०) [जघने भवः यत्] 1. सबसे पिछला, अन्तिम—भग० १४।१८ मनु० ८।२७० 2. सबसे बुरा अत्यन्त दुष्ट, कमीना, अधम, निम्न 3. नीच कुल में उत्पन्न,—न्यः शूद्र। सम०—जः 1 छोटा भाई 2. शूद्र।
जघ्निः [हन्+क्रिन्, द्वित्वम्] (आक्रमणकारी) शस्त्र, हथियार।
जघ्नु (वि०) [हन्+कु, द्वित्वम्] प्रहार करने वाला, वध करने वाला।
जङ्गम (वि०) [गम्+यङ्+अच्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] हिलने-जुलने वाला जीवित, चर—चिताग्निरिव जङ्गम—रघु० १५।१६, शोकाग्निरिव जङ्गमः—महावी० ५।२०, मनु० १।४१,—मम् चर या हिलने-डुलने वाला पदार्थ रघु० २।४४। सम०—इतर (वि०) अचर, स्थावर,—कुटी छाता, छतरी।
जङ्गलम् [गल्+यङ्+अच् पृषो०] 1. मरुस्थल, सुनसान जगह, ऊसर भूमि 2 झुरमुट वन 3 एकान्त निर्जन स्थान।
जङ्गालः [=जङ्गल, पृषो० साधु] मेंड, बाँध, सीमा चिह्न।
जङ्गुलम् [गम्+यङ्+कुल्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] विष, जहर।
जङ्घा [जङ्घन्यते कुटिलं गच्छति—हन्+यङ्+अच्, यङो लुक् पृषो०] टांग, टखने से लेकर घुटने तक का भाग, पिण्डली। सम०—करः,—कारिकः धावक, हरकारा, दूत, सन्देशहर,—त्राणम् टांगों के लिए कवच।
जङ्घाल (वि०) [जङ्घा+लच्] शीघ्रधावक, प्रजवी,—लः 1 हरकारा 2 हरिण, बारहसिंगा।
जङ्घिल (वि०) [जङ्घा+इलच्] प्रधावक, प्रजवी, फुर्तीला।
जज्, जञ्ज् (भ्वा० पर० जजति, जञ्जति) लड़ना युद्ध करना।
जट् (भ्वा० पर० जटति) जुड़ जाना, (बालों का) उलझ जाकर जटाजूट होना।
जटा [जट्+अच्+टाप्] 1 बटे हुए बाल, आपस में उलझ जाकर चिपके हुए बाल असकलानि सकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलम्—श० ७।११, जटाश्च बिभृयान्नित्यम् मनु० ६।६, भा० १।२ 2 तन्तुमय जड़ 3 सामान्य जड़ 4 शाखा 5 शतावरी का पौधा। सम०—चीर,—जूटः,—टीर,—धर शिव के विशेषण,—जूटः 1 जटाओं के रूप में बटे हुए बालों का समूह 2. शिव की जटाएँ जटाजूटग्रन्थौ यदसि विनिबद्धा पुरभिदा—गङ्गा० १४,—ज्वालः दीप, लैंप,—धर (वि०) जटाधारी।
जटायुः [जटा संहतम् आयुः यस्य ब० स०] श्येनी और अरुण,

का पुत्र, अर्ध दिव्य पक्षी [यह दशरथ का घनिष्ठ मित्र था, जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था तो जटायु ने सीता का रुदन और करुण-क्रन्दन सुना, फलतः वह बेधड़क हो रावण से भिड़ गया, घमासान युद्ध हुआ, परन्तु वह सीता को रावण के पञ्जे से न छुड़ा सका और स्वयं घायल हो प्राणान्तक पीड़ा से तड़पता रहा। अन्त में सीता की खोज करते हुए राम उसके पास से निकले तो उस दयालु जटायु ने राम को यह बतला कर कि सीता को रावण उठा कर ले गया है, अन्तिम श्वास लिया। राम और लक्ष्मण ने उसका विधिपूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार किया]।

जटाल (वि०) [जटा + लच्] 1 जटाजूटधारी 2 (चिपके हुए बालों की भांति) एक स्थान पर इकट्ठे किये हुए —भामि० ११३६ —लः गूलर का पेड़।

जटिः (टी) (स्त्री०) [जट् + इन्, जटि + ङीष्] 1 गूलर का पेड़ 2 उलझ पुलझ कर चिपके हुए 3 सघात समुच्चय।

जटिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जटा + इनि] जटाधारी (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 प्लक्ष का वृक्ष, पाकड़ का पेड़।

जटिल (वि०) [जटा + इलच्] 1 (सन्यासियों की भांति) जटाधारी,—विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम् कु० ५।३०, (यहाँ 'जटिल' शब्द 'संज्ञा' भी है और इसका अर्थ है 'सन्यासी') 2 पेचीदा, अव्यवस्थित, अन्तर्मिश्रित, गड़बड़ किया हुआ —विज्ञानन्तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान् न मुञ्चामः कामानहह गहनो मोहमहिमा— भर्तृ० ३।२१ 3 सघन, अभेद्य, —लः 1 सिंह 2 बकरा।

जठर (वि०) [जायते जन्तुर्गर्भो वास्मिन्—जन् + अर ठान्तादेशः तारा०] कठोर मजबूत, दृढ़, —रः, —रम् पेट, उदर जठर को न बिभर्ति केवलम् पंच० १।२२ 2 गर्भाशय 3 किसी वस्तु का भीतरी भाग। सम० —अग्निः पेट में स्थित अग्नि जो आहार को पचाने का काम करती है, आमाशय की गिल्टियों से निकलने वाला रस, —आमयः जलोदर रोग,—ज्वाला, —व्यथा उदर-ज्वाला, भूख का कष्ट, शूल —यंत्रणा, —यातना गर्भवास का कष्ट।

जड (वि०) [जलति घनीभवति जल् + अच्, लस्य डः] 1 शीतल, जमा हुआ या ठंडा, शीत या ठिठुरा देने वाला 2 मन्द, लूला-लंगड़ा, गतिहीन, जड़ीभूत —विस्मयजड दर्शनम् श० ४।५, परामृशन् हर्षजडेन पाणिना —रघु० ३।६८, २।४२ 3 निश्चेतन चेतनारहित, विवेकशून्य, मन्दबुद्धि—जवानन्वान् पङ्गुम् ···यातुम्—गगा० १५, इसी प्रकार जडधी, जडमति —याज्ञ० २।२५, मनु० २।११० 4 मन्दीकृत, उदासीन या चेतनाशून्य किया हुआ, गुणविवेचनशून्य अरसिक वेदाभ्यासजडः कथं नु विषयव्यावृत्तकौतूहल —विक्रम० १।९ 5 हृदयहीन देने वाला, जड़ बना देने वाला, संज्ञाशून्य करने वाला 6 गूंगा 7 वेद (वाग्माम) पढ़ने के अयोग्य —डम् 1 पानी 2 सीसा। सम० —क्रिय (वि०) मन्थर, दीर्घसूत्री।

जडता,—त्वम् [जड + तल् + टाप्, जड + त्व वा] 1 मन्दता, कार्य में अरुचि, आलस्य 2 अज्ञान, बुद्धूपन 3 (अल० शा० में) ३३ संचारी भावों में एक—मन्दता, सा० द० १७५।

जडिमन् (पु०) [जड + इमनिच्] 1 ठण्डक 2 जड़ता 3 मन्दता, उदासीनता 4 मूर्छा, संज्ञाहीनता।

जतु (नपु०) [जायते वृक्षादिभ्यः जन् + उ त आदेशः] लाख। सम० —अश्मकम् शिलाजीत, —पुत्रकः शतरंज का मोहरा —रसः लाल महावर।

जतुकम् [जतु + कन्] लाख, महावर।

जतुका [जतुक + टाप्] 1 लाख 2 चमगादड़।

जतुकी, जतूका [जतुक + ङीष्, जतुका नि० दीर्घ] चमगादड़।

जत्रु (नपु०) [जन् + रु तोऽन्तादेश] ग्रीवास्थि हंसुली।

जन् (दिवा० आ० जायते, जात —क० वा० जन्यते या जायते) पैदा होना, उत्पन्न होना (अपा० के साथ), अजनि ते वै पुत्र ऐत०, मनु० १।९, ३।३९, ४१ प्राणाद्वायुरजायत ऋग्० १०।९०।१२, मनु० १०।८, ३।३६, १।७५ 2 उठना फूटना (पौधे की भांति) उगना 3 होना, बन जाना, आ पड़ना, घटित होना, घटना अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा हि० १।६, रक्तनेत्राऽजनि क्षणात् भट्टि० ६।४२ याज्ञ० ३।२२६, मनु० १।९०, प्रेर० जनयति जन्म देना, पैदा करना, उत्पन्न करना अनु -1 बाद में पैदा होना —पुत्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रोऽनुजायते मनु० ९।१३४ 2 समरूप पैदा होना— असौ कुमारस्तमजोऽनुजातः —रघु० ६।७८ (तस्माज्जात —मल्लि०), अभि—, 1 पैदा होना, उत्पन्न होना, उदय होना, फूटना कामात्क्रोधोऽभिजायते भग० २।६२० हि० १।७०५ 2 होना, घटित होना 3 परिणत होना 4 उच्चकुल में जन्म होना 5 उत्पन्न होना भग० १६।३ उप—, 1 पैदा होना उत्पन्न होना, निकलना, उगना अप्रमाणवशापयामसे मनु० १।८५ —तत्रस्यैवोपजायते भग० २।६२, १४।११ 2 फिर जन्म लेना, याज्ञ० ३।२५६, भग० १४।२, 3 होना घटित होना। प्र—, वि—, सम्—, 1 उगना, निकलना, फूटना 2 पैदा होना, उत्पन्न होना।

जनः [जन् + अच्] 1 जीवजन्तु, जीवित प्राणी, मनुष्य

2. व्यक्ति, पुरुष (चाहे मनुष्य हो या स्त्री)- अयं स जनः परोक्षमन्मथो मृगयार्थी समवेक्षितो जनः श० २।१८, तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जनः —उत्तर० २।१९, इसी प्रकार 'सखीजन' सहेली, 'दासजन' सेवक, 'अबलाजन' आदि (इस अर्थ में 'जन' या 'अयंजन' का प्रयोग बहुधा वक्ता के द्वारा स्त्री या पुरुष दोनों के लिए एकवचन या बहुवचन में किया जाता है और उत्तम पुरुष भी प्रथम पुरुष के रूप में प्रयुक्त होता है) अयं जनः प्रष्टुमनास्तपोधने कु० ५।४० (मनुष्य), भगवन्परवानयं जनः प्रतिकूलाचरितं क्षमस्व मे रघु० ८।८१ (स्त्री), पश्यानङ्ग शरातुरं जनमिमं त्रातापि नो रक्षसि- नागा० १।१ (स्त्री, ब० व०) 2 सामूहिक रूप में मनुष्य, लोग, संसार (ए० व० या ब० व० में) --एवं जना गृह्णाति - मालवि० १, सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते - श० ५।१७ 3 वंश, राष्ट्र, कबीला 4 महर्लोक से परे का संसार, देवत्व को प्राप्त मनुष्यों का स्वर्ग। सम० अतिग (वि०) असाधारण, असामान्य, अतिमानव, —अधिपः, -अधिनाथः राजा, —अन्तः 1 वह स्थान जहाँ मनुष्य नहीं रहते वह स्थान जो बसा हुआ नहीं है 2 प्रदेश 3 यम का विशेषण, —अन्तिकम् गुप्त संवाद, कान में कहना या एक ओर होकर कहना (अव्य०) एक ओर को (नाटकों में) सा० द० रंगमंच के निदेश की परिभाषा इस प्रकार बतलाता है —त्रिपताककरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम्, अन्योन्यामन्त्रणं यत् स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्, ४२५, —अर्दनः विष्णु या कृष्ण का विशेषण, —अशनः भेड़िया, —आकीर्ण (वि०) लोगों से ठसाठस भरा हुआ, जनसंकुल, —आचारः लोकाचार, लोकरीति, —आश्रमः धर्मशाला, सराय, पथिकाश्रम, —आश्रयः मण्डप, शामियाना, —इन्द्रः, —ईशः, —ईश्वरः राजा, —इष्ट (वि०) लोकप्रिय (-ष्टः) एक प्रकार की चमेली, —उदाहरणम् यश, कीर्ति, —ओघः जनसमर्द, भीड़, जमघट, —कारिन् (पुं०) अलक्तक, —चक्षुस् (नपुं०) 'लोकलोचन' सूर्य, —त्रा छाता, छतरी, —देवः राजा, —पदः 1 जनसमुदाय, वंश, राष्ट्र पञ्च० १।३१० 2 राजधानी, साम्राज्य, बसा हुआ देश —जनपदे न गदः पदमादधौ रघु० ९।४, दाक्षिणात्ये जनपदे —पंच० १, मेघ० ४८ 3 देश (विप० पुर नगर) जनपदवधूलोचनैः पीयमानः मेघ० १६ 4. जनसाधारण, प्रजा (विप० प्रभु) 5 मनुष्यजाति, —अधिन् (पुं०) किसी जनसमुदाय या देश का राजा —प्रवादः 1 अफवाह, किंवदन्ती, जनश्रुति 2. लोकापवाद, बदनामी, —प्रिय (वि०) 1 लोक हितैषी 2. सर्वप्रिय, —प्रिया सर्वसम्मत प्रथा, —रञ्जनम् लोगों को सुख देना, लोकप्रियता का प्रसाद प्राप्त करना, —रवः 1 किंवदन्ती 2 बदनामी, लोकापवाद, —लोकः ऊपर के सात लोकों में से पाँचवाँ, महर्लोक के ऊपर स्थित लोक, —वादः ('जनेवाद' भी) 1 समाचार, जनश्रुति 2 लोकापवाद, —व्यवहारः लोकप्रिय चलन, —श्रुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, —श्रुतिः (स्त्री०) किंवदन्ती, अफवाह, —संबाध (वि०) घना बसा हुआ, —स्थानम् दण्डक वन के एक भाग का नाम - रघु० १२।४२, १३।२४, उत्तर० १।२८, २।१७।

जनक (वि०) (स्त्री० —निका) [जन् + णिच् + ण्वुल्] जन्म देने वाला, पैदा करने वाला, कारण बनने वाला या उत्पन्न करने वाला, क्लेशजनक, दुःखजनक आदि, —कः 1 पिता, जन्म देने वाला 2 विदेह या मिथिला के प्रसिद्ध राजा, सीता का धर्मपिता। वह अपने प्रभूत ज्ञान, अच्छे कार्य और पवित्रता के कारण प्रसिद्ध था। राम के द्वारा सीता का परित्याग किये जाने पर उन्होंने वैराग्य ले लिया, सुख और दुःख के प्रति उदासीन हो गये और अपना समय दार्शनिक चर्चा में बिताया। याज्ञवल्क्य मुनि जनक के पुरोहित और परामर्शदाता थे। सम० —आत्मजा, —तनया, —नन्दिनी, —सुता जनक की पुत्री सीता के विशेषण।

जनङ्गमः [जनेभ्यो गच्छति बहिः जन + गम् + खच्, मुमागमः] चाण्डाल।

जनता [जनानां समूहः तल्] 1 जन्म 2 लोगों का समूह, मनुष्य जाति, समुदाय - पश्यन्ति स्म जनता दिनात्यये पार्वणौ शशिदिवाकराविव रघु० ११।८२, १५।६७, शि० ९।१४।

जनन (वि०) [जन् + ल्युट्] पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला, —नम् 1 जन्म, पैदा होना, —यावज्जननम् तावन्मरणम् मोह० १३ 2 पैदा करना, उत्पादन करना, सृजन करना, आभाजननात् —कु० १।४४ 3 साक्षात्कार, प्रत्यक्षीकरण, उदय 4 जीवन, अस्तित्व, यदैव पूर्वे जनने शरीरं सा दक्षरोषात्सुदती ससर्ज—कु० १।५३, श० ५।२ 5 वंश, कुल, वंशपरंपरा।

जननिः (स्त्री०) [जन + अनि] 1 माता 2 जन्म।

जननी [जन् + णिच् + अनि + ङीप्] 1 माता 2 दया, दयालुता, करुणा 3 जमगादड़ 4 लाख।

जनमेजयः [जनान् एजयति इति जन + एज् + णिच् + खश् मुमागमः] हस्तिनापुर का एक प्रसिद्ध राजा, परीक्षित का पुत्र और अर्जुन का पोता (जनमेजय का पिता साँप के काटे जाने से मरा, इसलिए जनमेजय ने उस क्षति का प्रतिशोध करने के लिए संसार से सर्पजाति का समूल विनाश करने के लिए दृढ़ संकल्प किया। तदनुसार एक सर्पयज्ञ का आरंभ किया गया जिसमें तक्षक को छोड़ कर और सब सर्प जला दिये गये।

नास्तिक ऋषि के बीच में पड़ने से तक्षक के प्राण बचे और सर्पयज्ञ बन्द कर दिया गया। इस यज्ञ के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई, राजा ने भी ब्रह्महत्या के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उस कथा को ध्यानपूर्वक सुना)।

जनयितृ (वि०) (स्त्री—त्री) [जन्+णिच्+तृच्] पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता—(पु०) पिता।

जनयित्री [जनयितृ+ङीप्] माता।

जनस् (नपुं०) [जन्+णिच्+असुन्] दे० जन ३।

जनिः, जनिका, जनी (स्त्री०) [जन्+इन्, जनि+कन्+टाप्, जनि+ङीष्] 1 जन्म, सृजन, उत्पादन 2 स्त्री 3 माता 4 पत्नी 5 स्नुषा, पुत्रवधू।

जनित (वि०) [जन्+णिच्+क्त] 1 जिसे जन्म दिया गया है 2 पैदा किया हुआ, सृजन किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ।

जनितृ (पु०) [जन्+णिच्+तृच्] पिता।

जनित्री [जनितृ+ङीप्] माता।

जनु (नु) (स्त्री०) [जन्+उ, जनु+ऊङ्] जन्म, उत्पत्ति।

जनुस् (नपुं०) [जन्+उसि] 1. जन्म चिरकांक्षितीनां जनुः—मालवि० १।१६ 2 सृष्टि, उत्पादन 3 जीवन, अस्तित्व—जनुः सर्वश्लाघ्यं जयति ललितोत्तंस भवत—मालवि० २।५५। सम०—अन्ध जन्म से अन्धा जन्मान्ध।

जन्तुः [जन्+तुन्] 1 जानवर, जीवित प्राणी, मनुष्य —श० ५।२, मनु० ३।७१ 2 आत्मा, व्यक्ति 3 निम्न जाति का जानवर। सम०—कम्बुः 1 घोंघे की सीपी 2 घोंघा, —फलः गूलर का वृक्ष।

जन्तुका [जन्तु+कै+क+टाप्] लाख।

जन्तुमती [जन्तु+मत्+ङीप्] पृथ्वी।

जन्मन् [जन्+मन्] उत्पत्ति।

जन्मन् [जन्+मनिन्] 1 जन्म—सा जन्मने शब्दवष् प्रपेदे—कु० १।२१ 2 मूल, उद्गम उत्पत्ति, सृष्टि —आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः हि० प्र० ४४, कु० ५।६० (समास के अन्त में) से उत्पन्न या उद्भव—सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा दवाग्निः—मेघ० ५३ 3 जीवन, अस्तित्व—पूर्वेष्वपि हि जन्मसु —मनु० ९।१००, ५।३८, भग० ४।५ 4 जन्म-स्थान 5. उत्पत्ति। सम० —अधिपः 1 शिव का विशेषण 2. (ज्योतिष में) जन्म लग्न का स्वामी,—अन्तरम् दूसरा जन्म,—अन्तरीय (वि०) दूसरे जन्म से सम्बद्ध या किसी दूसरे जन्म में किया हुआ,—अन्ध (वि०) जन्म से ही अन्धा, —अष्टमी भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण का जन्म दिन,—ईशः विष्णु का विशेषण, —कुण्डली जन्म-पत्रिका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय की ग्रहों की स्थिति दर्शायी गई हो, —कृत् (पुं०) पिता,—क्षेत्रम् जन्म स्थान,—तिथिः (पुं०, स्त्री०)—दिनम्,—दिवसः जन्मदिन,—द (वि०) पिता,—नक्षत्रम्,—भम् जन्म के समय का नक्षत्र, —नामन् (नपुं०) जन्म से बारहवें दिन रक्खा गया नाम,—पत्रम्,—पत्रिका वह पत्र या पत्रिका जिसमें जन्म लेने वाले बालक के जन्म काल के नक्षत्र या ग्रह आदि बतलाये गये हों, —प्रतिष्ठा 1 जन्म स्थान 2 माता—श० ६,—भाज् (पु०) जानवर, जीवित प्राणी —मोदन्तां जन्मभाजः सततम्—नागा० १।०६०, जन्मा मातृभाषा —यत्र स्त्रीणामपि किमपरं जन्मभाषावदेव प्रत्यावासं विलसति वचः संस्कृतं प्राकृतं च विक्रम० १८।६, —भूमिः (स्त्री०) जन्म स्थान, स्वदेश, —वीथः जन्मपथ,—रोगिन् (वि०) जन्म का रोगी, जिसे जन्मसे ही रोग लगा हो, —लग्नम् वह लग्न जो जन्म के समय हो,—वर्त्मन् (नपुं०) योनि,—व्रीपालनम् जन्म से प्राप्त कर्तव्यों का परिपालन,—साफल्यम् जीवन के उद्देश्यों की सिद्धि,—स्थानम् 1 जन्मभूमि, स्वदेश, वह घर जहाँ जन्म लिया है 2 गर्भाशय।

जन्मिन् (पु०) [जन्मन्+इनि] जानवर, जीवधारी प्राणी।

जन्य (वि०) [जन्+ण्यत्, जन्+णिच्+यत् वा] 1 जन्म लेने वाला, पैदा होने वाला 2 जात, उत्पन्न, 3 (समास के अन्त में) से उत्पन्न, जनित 4 किसी वंश या कुल से संबद्ध 5 गवार, सामान्य 6 राष्ट्रीय, —न्यः 1 पिता 2 मित्र, दूल्हे का सम्बन्धी या सेवक 3 साधारण जन 4 अफवाह, किंवदन्ती,—न्यम् 1 जन्म, उत्पत्ति, सृष्टि 2 जात, सृष्ट, उत्पादित वस्तु, (विप० जनक)—जन्यानां जनक कालः—भाषा० ४५, जनकस्य स्वभावो हि जन्ये तिष्ठति निश्चितम्—शब्द०, 3 शरीर 4 जन्म के समय होने वाला अपशकुन 5 बाज़ार, मण्डी, मेला 6 संग्राम, युद्ध—तत्र जन्य रघो-र्घोरं पार्वतीयैर्गणैरभूत् —रघु० ४।७७ 7 निन्दा, अपवाद —न्या 1 माता की सहेली 2 वधू का सम्बन्धी वधू की सेविका—याहीति जन्यामवदत्कुमारी रघु० ६।३० 3 सुख, आनन्द 4 स्नेह।

जन्युः [जन्+युच् बा० न अनादेशः] 1 जन्म 2 जानवर जीवधारी, प्राणी 3 आग 4 सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

जप् (भ्वा० पर०—जपति, जपित या जप्त) 1 मन्द स्वर में उच्चारण करना, मन ही मन में बार २ कहना, गुन-गुनाना —जपन्नपि तवैवालापमन्त्राक्षरम् गीत० ५, हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ४, मै० ११।२६ 2 मन्त्रों का गुनगुनाना, मन ही मन प्रार्थना करना —मनु० ११।१९४, २५१, २५९, उप—, कान में कहना कानाफूसी करके अपने अनुकूल कर लेना, विद्रोह के लिए भड़काना या उकसाना—उपजप्यानुपजपेत्—मनु० ७।१९७।

जपः [जप्+अच्] 1. मन ही मन प्रार्थना करना, धीमे स्वर से किसी मन्त्र को बार २ दुहराना 2 वेदपाठ करना, देवताओं के नाम बार २ दुहराना—मनु० ३।७४, याज्ञ० १।२२ 3 मन्द स्वर में उच्चरित प्रार्थना। सम० - परायण (वि०) प्रार्थना मन्त्रों को धीमे स्वर में उच्चारण करने में व्यस्त, —माला जप करने की माला।

जप्यः, -प्यम् [जप्+यत्] 1 मन्द स्वर में या मन ही मन में बोली जाने वाली प्रार्थना 2 जपने योग्य प्रार्थना 3 जपी हुई प्रार्थना।

जभ्, जम्भ् I (भ्वा० पर० - जभति, जम्भति) संभोग करना तु० यभ् II (भ्वा० आ० जभते जम्भते) जम्हाई लेना, उबासी लेना।

जम् (भ्वा० पर० जमति) खाना।

जमदग्नि (पुं०) भृगुवंश में उत्पन्न एक ब्राह्मण परशुराम का पिता, (जमदग्नि सत्यवती और ऋचीक का पुत्र था, वह बड़ा ही पुण्यात्मा ऋषि था, कहते हैं कि उसने वेदों का पूर्ण स्वाध्याय किया था, उसकी पत्नी रेणुका थी जिससे पाँच पुत्र हुए। एक दिन रेणुका स्नान करने के लिए नदी पर गई तो वहाँ उसने किसी गन्धर्व दम्पती (कुछ के मतानुसार वह चित्ररथ और उसकी पत्नी थे) को जल में क्रीडा करते देखा। उस मनोहर दृश्य को देखकर उसके मन में ईर्ष्या जागी और वह उन दूषित विचारों से कलुषित हो गई, नदी में स्नान करने पर भी वह पवित्र न हो सकी जब वह वापिस घर आई तो क्रोध के अवतार जमदग्नि ने उस सतीत्व की कान्ति से हीन देखकर बड़ा धमकाया और अपने पुत्रों को उसका सिर काट देने की आज्ञा दी। परन्तु पहले चारों पुत्रों ने ऐसा क्रूर दुष्कृत्य करने में आनाकानी की। परशुराम उनका सबसे छोटा पुत्र था। उसने तुरत पिता की आज्ञा का पालन किया फलत एक कुल्हाड़े से अपनी माता का सिर काट डाला। इससे जमदग्नि का क्रोध शांत हो गया और उसने परशुराम से वरदान मांगने के लिए कहा। दयालु परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की जो तुरन्त ही स्वीकार की गई)।

जमनम् जेमनम्।

जम्पती (पुं० द्वि० व०) [जाया च पतिश्च] पति और पत्नी—तु० दम्पती और जायापती।

जम्बालः [जम्+बलच् नि० यस्य व.=जम्ब+आ+ला+क] 1. गारा कीचड़ 2. काई, सेवार 3 केवड़े का पौधा।

जम्बालिनी [जम्बाल+इनि+ङीप्] एक नदी।

जम्बीरः [जम्+ईरन्, ब आदेश] चकोतरे का (नींबू की जाति का) पेड़,—रम् चकोतरा।

जम्बु, —बू (स्त्री०) [जम्+कु पृषो० वुकागम, जम्बु+ऊङ्] जामुन का पेड़, जामुन (सम० -खण्डः, -द्वीपः मेरु पहाड़ के चारों ओर फैले हुए सात द्वीपों में से एक।

जम्बु (बू) कः (स्त्री० की) [जम्बु (बू)+कै+क] 1 गीदड़ 2 नीच मनुष्य।

जम्बूलः [जम्बु (बू) तन्नाम फल जाति का+क] एक प्रकार का वृक्ष, केवड़ा,—लम् दूल्हे के मित्रों एवं दुल्हन की सखियों द्वारा किया गया परिहास या परिहासात्मक अभिनन्दन।

जम्भः [जम्भ्+घञ्] 1 जबाड़ा (प्राय ब० व०) 2 दांत 3 खाना 4 कुतर-कुतर कर टुकड़े करना 5 भाग, अंश 6 तरकस 7 ठोडी 8 जम्हाई, उबासी 9 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था 10. चकोतरे का पेड़। सम०—अराति, -द्विष्, —भेदिन्—रिपुः इन्द्र का विशेषण, —अरिः 1 आग 2. इन्द्र का वज्र 3 इन्द्र।

जम्भका, जम्भा, जम्भिका [जम्भ+कन्+टाप्, जम्भ्+णिच्+अ+टाप्, जम्भा+कन्+टाप्, इत्वम्] जमुहाई, उबासी।

जम्भ (म्भी) रः [जम्भं भक्षणरुचिं राति ददाति जम्भ+रा+क, जम्भ्+ईरन्] नीबू या चकोतरे का पेड़।

जय [जि+अच्] 1 जीत, विजयोत्सव विजय, सफलता, जीतना (युद्ध में खेल में या मुकदमे में) 2 दमन दमन जीतना - जैसा कि इन्द्रियजय में 3 सूर्य का नाम 4 इन्द्र का पुत्र जयन्त 5 पाण्डव राजकुमार युधिष्ठिर 6. विष्णु का सेवक 7 अर्जुन का विशेषण, —या 1. दुर्गा 2 दुर्गा का सेवक 3. एक प्रकार का झण्डा। सम० —आवह (वि०) विजय दिलाने वाला, —उद्धुर (वि०) विजयोल्लास मनाने वाला,—कोलाहलः 1. जयघोष 2 पासों से खेलना,—घोषः,—घोषणम्, —णा विजय का ढिंढोरा, —ढक्का जीत का डंका, एक प्रकार का ढोल जिसे विजय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है —पत्रम् विजय का अभिलेख, -पालः 1 राजा 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण, —पुत्रकः एक प्रकार का पासा,—मङ्गलः 1 राजकीय हाथी 2 ज्वरनाशक उपचार,—वाहिनी शची (इन्द्राणी) का विशेषण,—शब्दः 1 जयध्वनि 2. चारणों द्वारा उच्चरित जयजयकार,—स्तम्भः विजय मनाने के लिए बनाया गया स्तम्भ, विजयसूचक स्तम्भ—निचखान जयस्तम्भान् गङ्गास्रोतोऽन्तरेषु स —रघु० ४।३६, ५९,

जयद्रथः [जयत् रथो यस्य -ब० स०] सिन्धु प्रदेश का राजा, दुर्योधन का बहनोई, (क्योंकि धृतराष्ट्र की पुत्री दुःशला जयद्रथ को ब्याही थी) (एक बार जयद्रथ शिकार के लिए गया वहाँ जङ्गल में उसे द्रौपदी दिखाई दी। उसने द्रौपदी से अपने लिए और अपने

साथियों के लिए भोजन माँगा। अपनी थाली की बाकी से द्रौपदी ने उनको पर्याप्त मात्रा में प्रातराश परोस दिया। उसके इस कार्य से तथा उसके सौन्दर्य से वह इतना अधिक मुग्ध हुआ कि उसने द्रौपदी को अपने साथ भाग चलने के लिए कहा। उसने क्रोध के साथ उसकी बात को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह उसे बलपूर्वक उठा कर ले जाने में सफल हो गया —क्योंकि द्रौपदी के पति उस समय बाहर शिकार के लिए गये हुए थे। जब वह वापस आये तो उन्होंने उस अपहर्ता का पीछा किया, उसे पकड़ कर द्रौपदी को मुक्त कराया —तथा बहुत तिरस्कृत हो जाने पर उसे भी छोड़ दिया। उसने अभिमन्यु को मारने के उपाय ढूँढ़ने में बड़ा भाग लिया। अन्त में वह अर्जुन के द्वारा महाभारत की लड़ाई में मारा गया]।

जयनम् [जि+ल्युट्] 1. जीतना, दमन करना 2. हाथी और घोड़ों आदि का कवच। सम० —युज् (वि०) 1. जीनपोश से सुसज्जित 2. विजयी।

जयन्तः [जि+झच्, अन्तादेशः] 1 इन्द्र के पुत्र का नाम, —पौलोमीसम्भवेनेव जयन्तेन पुरन्दरः —विक्रम० ५।१४, श० ७।२, रघु० ३।२३ ६। ८ 2. शिव का नाम 3. चन्द्रमा, —ती 1 झण्डा या पताका 2 इन्द्र की पुत्री 3. दुर्गा। सम० —पत्रम् (विधि में) न्यायाधीश द्वारा दी गई लिखित व्यवस्था (दोनों दलों में से किसी एक के पक्ष में) 2. अश्वमेध यज्ञ के लिए छोड़े हुए घोड़े के मस्तक पर लगा नामपट्ट।

जयिन् (वि०) [जेतुं शीलमस्य —जि+इनि] 1 विजेता, पराजेता —विकल्पाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुवे वामलोचनाः —विक्रम० 2. सफल (मुकदमा) जीतने वाला —याज्ञ० २।७९ 3. मनोहर, आकर्षक हृदय को दमन करने वाला —जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः —मा० १।३६, (पुं०) विजेता, जयशील—पौरस्त्यानेवमाक्रामंस्तांस्ताञ्जनपदाञ्जयी — रघु० ४।३४।

जय्य (वि०) [जि+यत्] जीतने के योग्य, प्रक्षार्य, जो जीता जा सके (विप० जेय)।

जरठ (वि०) [जॄ+अठच्] 1. कठोर, ठोस 2. पुराना, अधिक आयु का —अयमतिजरठाः प्रकामगुर्वीः परिणतदिक्करिकास्तटीर्बिभर्ति —शि० ४।२९ (यहाँ 'जरठ' का अर्थ 'कठोर' भी है) 3 क्षीण, जीर्ण, निर्बल 4. पूर्णविकसित, पक्का, परिपक्व, जरठकमल —शि० ११।१४ 5. कठोर हृदय, क्रूर, —ठः पाण्डु, पाँचों पाण्डवों के पिता।

जरण (वि०) [जॄ+ल्युट्] बूढ़ा, क्षीण, निर्बल।

जरत् (वि०) [जॄ+शतृ] 1. बूढ़ा अधिक आयु का 2. निर्बल जीर्ण। सम० —कारुः एक ऋषि जिसने वासुकि सर्प की बहन से विवाह किया था [एक दिन वह अपना सिर अपनी पत्नी की गोद में रक्खे सो रहे थे, सूर्य डूबने को था। पत्नी ने यह देख कर कि सन्ध्याकालीन प्रार्थना का समय बीता जा रहा है, आहिस्ता से जगा दिया। परन्तु नींद में बाधा पहुँचने के कारण जरत्कारु को क्रोध आ गया और वह अपनी पत्नी को छोड़ कर सदा के लिए वहाँ से चल दिया। जाते समय वह अपनी पत्नी को बता गया कि तुम गर्भवती हो और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हें सम्भालने वाला होगा —साथ ही साथ वह सर्प वंश के क्षय को बचावेगा। यह पुत्र ही 'आस्तीक' था], —गवः बूढ़ा बैल—दारिद्र्यस्य परा मूर्तिर्यन्मानद्रविणाल्पता, जरद्गवधनः शर्वस्तथापि परमेश्वरः —पञ्च० २।१५९।

जरती [जॄ+शतृ+ङीप्] एक बूढ़ी नारी।

जरन्तः [जॄ+झच्, अन्तादेश] 1 बूढ़ा आदमी 2 भैंसा।

जरा [जॄ+अङ्+टाप्] ('जरा' शब्द के स्थान पर कर्म० द्वि० ब० के आगे अजादि विभक्ति परे होने पर विकल्प से 'जरस्' आदेश हो जाता है) 1 बुढ़ापा —कैकेयीशङ्कयेवाह पलितच्छद्मना जरा रघु० १२।२, नष्टधर्मरतेरामोद् वृद्धत्व जरया (जरसा) विना ११२३ 2 क्षीणता, निर्बलता, बुढ़ापे के कारण दुर्बलता 3 पाचनशक्ति 4 एक राक्षसी का नाम—दे० 'जरासंध' नी०। सम० —अवस्था क्षीणता, —जीर्ण (वि०) वयोवृद्ध, निर्बलीकृत, दुर्बल — भर्तृ० ३।१७, —सन्धः एक प्रसिद्ध राजा और योद्धा, बृहद्रथ का पुत्र (एक पौराणिक कथा के अनुसार यह अलग अलग दो टुकड़ों के रूप में पैदा हुआ, 'जरा' नामक राक्षसी ने इन दोनों टुकड़ों को जोड़ दिया —इसीलिए यह 'जरासन्ध' के नाम से विख्यात हुआ। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यह मगध और चेदि देश का राजा बना। जब इसने सुना कि कृष्ण ने मेरे जामाता कंस को मार डाला तो इसने बड़ी भारी सेना लेकर १८ बार मथुरा को घेरा परन्तु हर बार मुँहकी खानी पड़ी। जब युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया तो अर्जुन, कृष्ण और भीम ब्राह्मण का रूप धारण करके केवल अपने शत्रु को मार कर बन्दी राजाओं को कैद से छुड़ाने के लिए जरासन्ध की राजधानी में गये परन्तु जरासन्ध ने बन्दी राजाओं को छोड़ने से इंकार किया, तब भीम ने उसे द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध बाहर निकल कर आया —दोनों में घोर युद्ध हुआ —पर अन्त में जरासन्ध भीम के हाथों मारा गया]।

जरायणिः [जराया अपत्यम्—फिञ्] जरासन्ध का नाम।

जरायु (नपुं०) [जरामेति—इ+ञुण्] 1. साँप की केंचुली 2. भ्रूण की ऊपरी झिल्ली 3. योनि, गर्भाशय।

समं० –ज (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न, पिण्डज –मनु० १।४३, कु० ३।४२ पर मल्लि० ।

जरित (वि०) [जरा + इतच्] 1 बूढ़ा, वयोवृद्ध 2 क्षीण, निर्बल ।

जरिन् (वि०) (स्त्री० –णी) [जरा + इनि] बूढ़ा, वयोवृद्ध ।

जरूथम् [जृ + ऊथन्] मांस ।

जर्जर (वि०) [जर्ज + अर] 1. बूढ़ा, निर्बल, क्षीण 2 जीर्ण, फटा पुराना, टूटा फूटा, तोड़कर टुकड़े २ किया हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ, छोटे २ टुकड़ों में विभक्त –जगाम जर्जरीकृतविषाणकोटयो मृगाः –का० २१, गात्रम् जगाज्जर्जरितं विहाय –महावी० ७।१८ बिभर्ति ... निर्लुठति ... रत्न० १।२०, शि० ४।२३ 3 घायल, क्षतविक्षत 4 खोखला, खोखला (जैसे कि टूटे घड़े की आवाज़), –रम् इन्द्र का झण्डा ।

जर्जरित (वि०) [जर्जर + णिच् + क्त] 1 बूढ़ा, क्षीण, निर्बल 2. घिसा पिसा, जीर्ण शीर्ण, फटा-पुराना, चिथड़े चिथड़े हुआ 3 पूरी तरह पराभूत, अपाय ... स्मरशरजर्जरितापि मा प्रभाते –गीत० ८ ।

जर्जरीक (वि०) [जर्जर + ईक नि० साधु] 1 बूढ़ा क्षीण 2 छोटे-छोटे छेदों से भरा हुआ, सछिद्र ।

जर्तुः [जन् + तु, र आदेश] 1. योनि 2 हाथी ।

जल (वि०) [जल् + अच्] स्फूर्तिहीन, ठण्डा, शीतल, जड़, –लम् पानी –जलस्य ... क्षामा, ... जल ... निर्यान्ति ... १।३।२४ 2 एक सुगन्धित औषधि का पौधा, खस 3 शीतलता 4 पूर्वाषाढ़ नक्षत्र । सम० –**अञ्चलम्** 1. झरना 2. निर्झर 3 काई, –**अञ्जलि** 1 चुल्लू भर पानी 2 मृतक के पितरों को जल तर्पण ... कुमुदमलान्यभाग्य ... जलाञ्जलि ... का० ९४ ... जलाञ्जलि ... लोके न ... अमरु ९७ (यहाँ जलाञ्जलि दा का अर्थ है छोड़ देना, त्यागना), –**अटनः** सारस, –**अटनी** जोंक, –**अण्टकः** घड़ियाल, मगरमच्छ, –**अत्ययः** शरद्, पतझड़, –**अधिदैवतः** –तम् वरुण का विशेषण, (तम्) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पुञ्ज, –**अधिप** वरुण का विशेषण, –**अम्बिका** कुआँ, –**अर्कः** जल में पड़ने वाला सूर्य का प्रतिबिम्ब –**अर्णवः** 1 वर्षा ऋतु 2 मीठे पानी का समुद्र –**अर्थिन्** (वि०) प्यासा, –**अवतारः** नदी के किनारे नाव पर उतरने का घाट, –**अष्ठीला** बड़ा चौकोर तालाब –**असुका** जोंक, –**आकरः** झरना, फौवारा, कुआँ, –**आकाङ्क्ष**, –**काङ्क्षः**, –**काङ्क्षिन्** (पुं०) हाथी, –**आखुः** ऊदबिलाव, –**आत्मिका** जोंक, –**आधारः** तालाब, झील या सरोवर, जलाशय, –**आयुका** जोंक, –**आर्द्र** (वि०) गीला (र्द्रम्) गीले कपड़े (र्द्रा) पानी से तर पङ्खा, –**आलोका** जोंक, –**आवर्तः** भँवर, जल-गुल्म, –**आशयः** 1 तालाब, सरोवर, जलाशय 2 मछली 3. समुद्र, –**आश्रयः** 1 तालाब, जलाशय, –**आह्वयम्** कमल, –**इन्द्रः** 1 वरुण का विशेषण 2. समुद्र, –**इन्धनः** वाडवाग्नि, –**इभः** जलहस्ती, –**ईशः**, –**ईश्वरः** 1 वरुण का विशेषण 2 समुद्र, –**उच्छ्वासः** नाली, परीवाह 2 छलक कर बहना, –**उदरम्** जलोदर नाम का रोग जिसमें पेट की त्वचा के नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है, –**उद्भव** (वि०) जलचर, –**उरगा**, –**ओकस्** (पुं०) –**ओकसः** जोंक, –**कण्टकः** मगरमच्छ, –**कपिः** सूँस, –**कपोत** जलकबूतर, –**करङ्कः** 1 एक शंख 2. नारियल 3 बादल 4 तरङ्ग, कमल, –**कल्कः** कीचड़, –**काकः** जलकौआ, –**कान्तः** हवा, –**कान्तारः** वरुण का विशेषण, –**किराटः** मगरमच्छ, घड़ियाल, –**कुक्कुटः** जलमुर्गी मुर्गाबी, –**कुन्तलः** –**कोशः** काई, सेवार, –**कूपी** 1 झरना, कुआँ 2 तालाब 3 भँवर, –**कूर्मः** सूँस, –**केलिः** (पुं०, स्त्री०) –**क्रीडा** (स्त्री०) जल में विहार करना एक दूसरे पर पानी उछालना, –**क्रिया** मृतकों का पितरों को जलतर्पण देना, –**गुल्मः** 1. कछुवा 2 चौकोर तालाब 3 भँवर, –**चर** (वि०) ('जलेचर' भी) जल में रहने वाले जीव-जन्तु –**आजीवः** °**जीवः** मछुवा, –**चारिन्** 1 जलजन्तु 2. मछली, –**ज** वि० जल में उत्पन्न या पैदा, (जः) 1 जलजन्तु 2 मछली 3 काई 4 चन्द्रमा (जः, –जम्) 1 सीप 2 शङ्ख –... निवेश्य शङ्खौ जलजं कुमारः –रघु० ७।६३, ११,६०, (जम्) कमल –**आजीवः** मछुवा, °**आसनः** ब्रह्मा का विशेषण –... पाणौ रचयाम्बेद प्राञ्जलिर्जल-जासनम् –कु० २।३०, –**जन्तुः** 1 मछली 2 कोई जल का जन्तु –**जन्तुका** जोंक, –**जन्मन्** कमल, –**जिह्वः** मगरमच्छ, –**जीविन्** (पुं०) मछवाहा । –**तरङ्गः** 1. लहर 2 एक बाजा विशेष जिसमें जल से भरा हुआ कटोरा (छड़ी के आघात से) मधुर स्वर पैदा करता है। –**ताडनम्** (शा०) पानी पीटना (आल०) व्यर्थ काम –**त्रा** छाता, –**त्रासः** जलातङ्क रोग, पागल कुत्ते के काटने से जलकातरपन, –**दः** 1 बादल –... विरलालोके ... इव सज्जना –पञ्च० १।२९ 2 कपूर, °**अशनः** साल का वृक्ष, °**आगमः** वर्षाऋतु, °**कालः** वर्षाऋतु ... –**दर्दुरः** एक प्रकार का बाजा ..., –**देवता** जलदेवी जलपरी, –**द्रोणी** डोंगची, –**धरः** 1 बादल 2 समुद्र, –**धारा** पानी की धार, –**धिः** 1 समुद्र 2 दसनील 3 चार की संख्या °**गा** नदी, °**जः** चाँद °**जा** लक्ष्मी धन की देवी °**रशना** पृथ्वी, –**नकुलः** ऊदबिलाव, –**नरः** जलपुरुष (इसके शरीर का निचला आधा भाग मछली के आकार का होता है), –**निधिः** 1. समुद्र 2. चार की संख्या, –**निर्गमः** 1 नाली, पानी का निकास 2 जलप्रपात, झरने के

पानी का नदी में गिरना, —नीलिः काई, सेवार, —पट-लम् बादल, —पतिः 1 समुद्र 2 वरुण का विशेषण, —पथः जलयात्रा —रघु० १७।८१, —पारावतः जल-कपोत, —पुष्पम् आय पुष्पम् पानी में होने वाला फूल, कमल आदि, —पूरः 1 जल की बाढ़ 2 पानी की नदी, —पृष्ठजा काई सेवार, —प्रदानम् मृतक पितरों को जल तर्पण, —प्रलयः जल के द्वारा विनाश —प्रान्तः नदी का किनारा, —प्रायम् जलबहुलप्रदेश जलप्रायम नूपं स्यात् अमर० —प्रियः 1 चातक पक्षी 2 मछली —मार्जारः ऊदबिलाव —प्लावनम् जलप्रलय, बाढ़ —बन्धुः मछली, —बालकः ,बालकः विन्ध्य पहाड़ —बालिका बिजली —बिडालः ऊदबिलाव —बिम्बः, —बिम्बम् बुल-बुला, —बिल्वः 1 एक (चौकोर) तालाब सरोवर 2 कछुवा 3 केंकड़ी —भू (वि०) जल में उत्पन्न —भू (पु०) 1 बादल 2 पानी जमा करके रखने का स्थान 3 एक प्रकार का कपूर, —मक्षिका पानी में रहने वाला एक कीड़ा, —मण्डूकम् एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, जल दर्दुर, —मार्गः नाली जलप्रणाली, —मुच् (पु०) बादल—मेघ० ६९ 2 एक प्रकार का कपूर, —मूर्तिः शिव का विशेषण —मूर्तिका ओला, —यन्त्रम् 1 पानी निकालने का यन्त्र — रहट 2 फव्वारा °गृहम्, °निकेतनम्, °मन्दिरम् जल के मध्य बना भवन (ग्रीष्म भवन) या मकान जिसके आस पास फुहारे हों—क्वचि-द्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम —ऋतु० १।२, —यात्रा जल मार्ग से नाव आदि के द्वारा यात्रा, —यानम् पानी की सवारी—जहाज —रङ्कुः जलकुक्कुट —रण्डः, —रुण्ड 1 भंवर 2 पानी की बूंद, बूंदाबांदी, जलकण 3 सांप, —रसः समुद्री या सामर नमक —राशिः समुद्र, —रुह्, —रुहम् कमल, —रूपः मगरमच्छ, —लता लहर, झाल —लोहलः कौडिल्ला पक्षी —वासः जल में बसना, —वाहः बादल, —वाहनी पानी की मोरी, —विषुवम् शारदीय विषुवत् (२२ या २३ सितम्बर) —वृश्चिकः झींगा मछली, —व्यालः पनियल साँप, —शय, —शयन, —शायिन् (पु०) विष्णु का विशेषण, —शूकम् काई सेवार, —शूकरः मगरमच्छ, —शोषः सोखा अनावृष्टि —शूकिनी जोंक, —शुक्तिः (स्त्री०) 1 घोंघा सीप 2 एक प्रकार की मछली 3 कीड़ा 4 जोंक, —स्थानम्, —स्थायः तालाब, सरोवर, जलाशय, —हम् छोटा जलमन्दिर (ग्रीष्म भवन) जो पानी के मध्य बना हो या जिसमें फौव्वारे लगे हों। —हस्तिन् (पु०) जल-हाथी, —हारिणी नाली, —हासः 1 झाग 2 समुद्रफेन (कटलफिश नामक जलचर का भीतरी कवच)।

जलङ्गमः [जल + गम् + खच्, मुमागम] चाण्डाल।

जलन्धरः [जलेन धरति परिणमति —जल + धृ + इन्] 1. बादल 2. एक प्रकार का कपूर।

जलाका, जलालुका, जलिका, जलुका, जलूका [जले आका-यति प्रकाशते —जल + आ + कै + क + टाप्, जले अलति गच्छति—जल + अल् + उक + टाप्, जल + ऊक् टाप् जलम् ओको यस्य पृषो०] जोंक।

जलेजम्, जलेजातम् [जले + जन् + ड, क्त वा सप्तम्या अलुक्] कमल।

जलेशयः [जले + शी + अच् सप्तम्या अलुक] 1 मछली 2 विष्णु का नाम।

जल्प् (भ्वा० पर० जल्पति जल्पित) बोलना, बातें करना, सलाप करना—अविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण—उत्तर० १।२१ एकेन जल्पत्यनल्पाक्षरम् पञ्च० १।११६, भर्तृ० १।८२ 2 गुनगुनाना अस्पष्ट उच्चारण करना 3 प्रलाप करना किच किच करना बालकलरव करना कलकलध्वनि करना अभि , बोलना बातें करना, प्र , 1 बोलना कहना बातें करना कु० ११५५ 2 पुकारना सम् , बोलना सलाप करना।

जल्पः [जल्प् + घञ्] 1 बकवास भाषण 2 परवचन बातचीत 3 बालकलरव प्रलाप, गप-शप 4 वादविवाद वाग्युद्ध।

जल्प (पा) क (वि०) (स्त्री —ल्पिका) [जल्प् + ण्वुल् पाकन् वा] बातूनी गप्पी।

जव (वि०) [जु + अप्] फुर्तीला, चुस्त —व (क) वेग, फुर्ती, तेजी द्रुतता जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् भर्तृ० ३।१२१, श० १।८, (ख) त्वरा क्षिप्रता जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युत शि० १।१२ 2 वेग। सम०—अधिकः वेगवान् घोड़ा, द्रुतगामी घोड़ा, —अनिलः तेज हवा आंधी।

जवन (वि०) (स्त्री० —नी) [जु + ल्युट्] तेज फुर्तीला, वेगवान् रघु० ९।५६ —नः द्रुतगामी घोड़ा तेज घोड़ा —नम् चाल, द्रुतगति वेग।

जवनिका, जवनी [जूयते आच्छाद्यते अनया —जु + ल्युट् + ङीप् जवनी + कन् + टाप् ह्रस्व = जवनिका] 1 कनात 2 चिक, पर्दा —मरं ससारान्ते विकृति यमघामीजवनिकाम्— भर्तृ० ३।११२।

जवसः [जु + असच्] पशुओं के चरने योग्य घास।

जवा [जव + टाप्] जवाकुल, जपा।

जष् (भ्वा० उभ० - जषति —ते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मारना।

जस् I (दिवा० पर०—जस्यति) स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, II (भ्वा० चुरा० पर०— जसति, जासयति) 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना 2 अवज्ञा करना, अपमान करना, उद् –, मारना निजौजसोज्जास-यितुं जगद्द्रुहाम् शि० १।३७, भट्टि० ८। १२०।

जहकः [हा + कन्, द्वित्वम्] 1 समय 2. बालक 3 सांप की केंचुली।

जहत् (वि०) (स्त्री०—ती) [हा + शतृ] छोड़ने वाला, त्यागने वाला। सम० लक्षणा, –स्वार्था लक्षणा का एक प्रकार (इसे 'जहल्लक्षणा' भी कहते हैं) जिसमें शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ देता है परन्तु एक ऐसे अर्थ में प्रयुक्त होता है जो किसी न किसी प्रकार उस मुख्यार्थ से सम्बद्ध है, उदा० 'गंगायां घोष' (गंगा में घर) में 'गंगा' शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ कर 'गंगातट' को प्रकट करता है तु० 'अजहत्स्वार्था' भी भी।

जहानक [हा + शानच् + कन्] महाप्रलय।

जहु [हा + उण् द्वित्वम्] पशु का बच्चा।

जह्नु [हा + नु द्वित्वमाकारलोपश्च] सुहोत्र का पुत्र, एक प्राचीन राजा जिसने गंगा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। [जब भगीरथ की तपस्या के द्वारा स्वर्ग से इस धरा पर लाई गई तो मैदान में आकर उसने राजा जह्नु की यज्ञभूमि को पानी में डुबो दिया। जह्नु ने क्रुद्ध हो कर गंगा को पी डाला। देवता ऋषि और विशेष कर भगीरथ ने उसके क्रोध को शान्त किया। जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा को अपने कानों के द्वारा बाहर निकालने की स्वीकृति दी। इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री समझी गई और उसे जाह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुतनया, जह्नुनन्दिनी या जह्नुसुता आदि नामों से पुकारा गया –तु० रघु० ६।८५, ८।९५)]।

जागर [जागृ + घञ् गुण] जागरण, जागना, जागते रहना, रात्रिजागरपरो दिवाशयः रघु० १९।३४ 2 जाग्रत अवस्था की मन सृष्टि 3 कवच, जिरह-बख्तर।

जागरणम् [जागृ + ल्युट्] 1 जागना, प्रबुद्ध रहना 2. खबरदारी, सतर्कता।

जागरा [जागृ + अ + टाप्] दे० जागरण।

जागरित (वि०) [जागृ + क्त] जागा हुआ, –तम् जागना।

जागरितृ (वि) (स्त्री० - त्री) जागरूक (वि०) [जागृ + तृच्, स्त्रियां ङीप् च जागृ + ऊक्] 1 जागरणशील, जागता हुआ, निद्राशून्य स्वपतो जागरूकस्य याथार्थ्यं वेद कस्तव रघु० १०।३४ 2 खबरदार, सतर्क --वर्णाश्रमाणामजागरूक - रघु० १४।८५, शि० २०।३६।

जागर्तिः, जागर्या, जागरिया [जागृ + क्तिन्, जागृ + श + यक् + टाप्, गुण, जागृ + श, निपातन] जागरण, जागते रहना।

जागुडम् [जगुड + अण्] केसर, जाफ़रान।

जागृ (अदा० पर० —जागर्ति, जागरित) जागते रहना, खबरदार या सावधान रहना (आल० भी)—जीअर्थं-जैजागार यथाकालं स्वपन्नपि—रघु० १७।५१, मुरी षाड्गुण्यचिन्तासमये जार्ये च जागर्ति – मुद्रा० ७।१३, रात को बैठ रहना या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी —भग० २।६९ 2 निद्रा से जगाया जाना, जागते रहना, आगे को देखना, दूरदर्शी होना।

जाघनी [जघन + अण् + ङीप्] 1 पूँछ 2 जंघा।

जाङ्गल (वि०) (स्त्री० -ली) [जङ्गल + अण्] 1 देहाती, चित्रोपम 2 जङ्गली 3. बर्बर, असभ्य 4 बंजर, ऊसर –लः चकोर, तीतर –लम् 1 मांस 2. हरिण का मांस।

जाङ्गुलम् [जङ्गुल + अण्] जहर, विष।

जाङ्गुलिः, जाङ्गुलिकः [जङ्गुल + इञ्, ठक् वा] सांप के काटे का चिकित्सक, विषवैद्य।

जाङ्घिक [जङ्घा + ठञ्] 1 हरकारा दूत 2 ऊँट।

जाजिन् (पु०) [जज + णिनि] योद्धा, लड़ने वाला —जजौ-जोजाजिजिजाजी शि० १९।३।

जाठर (वि०) (स्त्री० –री) [जठर + अण्] पेट से सम्बन्ध रखने वाला या पेट में होने वाला, उदरवर्ती औदर –रः पाचनशक्ति, जाठर रस।

जाड्यम् [जड + ष्यञ्] 1 ठंडक शीतलता 2 अनासक्ति आलस्य निष्क्रियता 3 बुद्धि की मन्दता, बेवकूफ़ी, मूढता –जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्–भर्तृ० २।२३, जाड्यं ह्रीमति गण्यते–भर्तृ० २।५४ 4 जिह्वा की नीरसता।

जात (भू० क० कृ०) [जन् + क्त] 1 अस्तित्व में लाया गया, जन्म दिया गया पैदा किया गया 2 उगा हुआ, निकला हुआ 3 उद्भूत, उत्पन्न 4 अनुभूत, वस्तुतः (प्राय समास में) दे० 'जन्', —तः पुत्र, बेटा (नाटकों में प्राय 'स्नेह या प्रेम द्योतक' के अर्थ में प्रयुक्त – जात जात कथयितव्यं कथय उत्तर० ४, प्यारे बच्चे' 'मेरे लाल, दुलारे'), —तम् 1 जन्तु, जीवधारी, प्राणी 2 उत्पादन, उद्गम 3 भेद, प्रकार, श्रेणी, जाति 4 श्रेणी बनाने वाली वस्तुओं का समूह— नि-शेषविश्राणितकोशजातम् रघु० ५।१, संपत्ति का समूह अर्थात् हर प्रकार की सम्पत्ति, इसी प्रकार कर्मजातम् (सब कर्मों का समूह)—सुख° वह सब कुछ जो सुख में सम्मिलित है 5 बालक, बच्चा। सम० अपत्या माता, —अमर्ष (वि०) नाराज, क्रुद्ध, –अश्रु (वि०) आँसू बहाने वाला,—इष्टिः (स्त्री०) जातकर्मसंस्कार, – उक्षः थोड़ी आयु का बैल,—कर्मन् बच्चे के जन्मते ही अनुष्ठेय संस्कार - रघु० ३।१८। –कलाप (वि०) (मोर की भांति) पूंछ वाला,—काम (वि०) आसक्त,– पक्ष (वि०) जिसके डैने या पंख निकल आये हों, पक्षयुक्त, अनुपितपक्ष,—पाश (वि०)

जन्मना युक्त, बेड़ी पड़ा हुआ। जातप्रत्यय (वि०) जिसके मन में विश्वास उत्पन्न हो गया हो। जातमन्मथ (वि०) प्रेम में आसक्त, जातरूप (वि०) [illegible] जातरूप (वि०) सुन्दर [illegible] — अध्याकल्पसमुत्पथाः [illegible] — [illegible] कल्याण ... हि [illegible] [illegible] १,१२९, जातवेद (पु० [illegible]) कि० २।५९ [illegible]

जातक (वि०) [जात + कन्, [illegible]] 1 नवजात शिशु 2 भिक्षु [illegible] 2 जन्म विषयक कलित [illegible] जैसी वस्तुओं का संग्रह।

जाति (स्त्री०) [जन् + क्तिन्] 1 जन्म [illegible] २।१६८ 2 जन्म के अनुसार [illegible] 3 वंश, परिवार, वंश 4 [illegible] (जनसमुदाय) — [illegible] ता जाति [illegible] — [illegible] (हिन्दुओं की [illegible] जातियाँ केवल चार ब्राह्मण [illegible] शूद्र — हैं) 5 श्रेणी, वर्ग [illegible] पुष्पजाति आदि 6 किसी एक वर्ग के [illegible] उसे और दूसरे वर्गों से पृथक [illegible] के लक्षण [illegible] और दोनों का [illegible] द्रव्य — सि० [illegible] 7 [illegible] 8 जायफल 9 चमेली का फूल, पौधा [illegible] प्रकार [illegible] १०, (कुछ दो अर्थों में [illegible] है) 10 (न्या० में) व्यर्थ उत्तर 11 (संगीत में) भारतीय स्वरग्राम के [illegible] 12 छन्दों की एक श्रेणी — दे० परिशिष्ट। सम० — अन्ध (वि०) जन्मान्ध — मनु० ११०, [illegible] आयकम — कोशी, — जाति [illegible] 1 किसी जाति के [illegible] 2 किसी जाति की सामान्य [illegible] — [illegible] जाति या उसके विशेषाधिकारों की हानि — [illegible] आदमी का [illegible] — ब्राह्मण केवल जन्म से ब्राह्मण [illegible] तप और स्वाध्याय से हीन, [illegible] ब्राह्मण [illegible] [illegible] २१ [illegible] — मनु० २।६७, [illegible] (वि०) [illegible] बहिष्कृत, — [illegible] 1 [illegible] जन्म [illegible] के कारण जीवन में प्राप्त पद 2 [illegible] (जन्मसम्बन्धी [illegible] के [illegible]) म० ८।२०, १२।११६, [illegible], आनुवंशिक भेद, [illegible] कुलक विशेषताएँ, — [illegible] (पु०) [illegible] को [illegible]

वाला (शब्द) [illegible] [illegible] आलिंगन [illegible] स्वाभाविक शत्रुता। जातिक (पु०) स्वाभाविक [illegible] [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जातिमत् [illegible] [illegible]

जातु (अव्य०) [जन् [illegible]] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] प्रकट करता है [illegible] [illegible]

जातुधान [illegible] राक्षस [illegible] [illegible]

जातुष (वि०) (स्त्री० — षी) [जतु + अण् वुक्] 1 लाख से बना हुआ [illegible] 2 चिपचिपा [illegible] वाला।

जात्य (वि०) [जाति — यत्] 1 एक ही परिवार का [illegible] 2 उत्तम [illegible] [illegible] कुल — रघु० १८।१ 3 मनोहर, सुन्दर, सुखद।

जानकी [जनक + अण् + ङीप्] जनक की पुत्री सीता, राम की भार्या।

जानपद [जनपद + अण्] 1 देहाती, गंवार [illegible] (वि० भी) 2 देश 3 [illegible], [illegible]

जानि [illegible] के स्थान में आदेश)

जानु (पुं०) [जन् + ञुण्] घुटना [illegible] [illegible] घुटनों के [illegible] सम० — दघ्न (वि०) घुटनों तक ऊँचा, घुटने तक गहरा, [illegible], [illegible] घुटने की पाली, [illegible] घुटने का जोड़।

जाप [जप् + घञ्] 1 पाठ करना, जपना, कान में कहना, गुनगुनाना 2 जप की हुई प्रार्थना या मन्त्र।

जापक [illegible]

जामदग्न्य [illegible] पुत्र।

जामा [illegible] पुत्रवधू।

जामातृ (पुं०) [illegible]
1 दामाद [illegible]
[illegible] 2 [illegible]
3 [illegible]

जामि [illegible]

जामित्रम् [illegible]

जाम्ब [illegible]

जाम्बवम् [जम्बू फलम् अण् तस्य वा० [illegible]] 1 सोना 2 जम्बूवृक्ष का फल [illegible]

जाम्बवत् (पुं०) [जाम्ब + मतुप्] रीछों का राजा जिसने लंका पर आक्रमण के समय राम की सहायता की। यह अपनी चिकित्सासंबन्धी कुशलता के लिए भी प्रसिद्ध था (यह जाम्बवान् संभवतः कृष्ण के समय तक जीवित रहा क्योंकि उस समय स्यमन्तक मणि के लिए कृष्ण और जाम्बवान् में युद्ध हुआ। इस स्यमन्तक मणि को जाम्बवान ने सत्राजित् के भाई प्रसेन से प्राप्त किया था। युद्ध में कृष्ण ने जाम्बवान् को पछाड़ दिया। पराजित होकर जाम्बवान् ने स्यमन्तक मणि के साथ अपनी पुत्री जाम्बवती को भी कृष्ण के अर्पण कर दिया)

जाम्बीरम् (रम्) [जंबीर + अण्, पक्षे रलयोरभेदः] चकोतरा।

जाम्बूनदम् [जम्बूनद + अण्] 1 सोना – रघु० १८।४४ 2 एक सोने का आभूषण – कृतउत्तमा जाम्बूनदैः —शि० ४।६६ 3 धतूरे का पौधा।

जाया [जन् + यक् + टाप्, आत्व] पत्नी, (शब्द की व्युत्पत्ति मनु० ९।८ के अनुसार पतिर्भार्यां संप्रविश्य [illegible] [illegible]

[illegible]

जाल [illegible]

[illegible] जालकम् [illegible]

जालक [illegible]

जालिनी [illegible] 5 समूह, संग्रह, ढेर – विलासमन्ति-[illegible] [illegible] 6 जादू 7 भ्रम, धोखा 8 अनखिला फूल [illegible] झरोखा, खिड़की।
कर्मन् (नपुं०) मछ[illegible] पकड़ने का धंधा, मछली पकड़ना,–**कारकः** 1 जाल निर्माता 2 मकड़ी,–**गोणिका** एक प्रकार की मथानी [illegible] –**पादः** कलहंस,–**प्राय** कवच, जिरहबख्तर।

जालकम् [जालमिव कायति + कै + क] 1 जाला 2 समुच्चय, समूह –यत्र कर्णाधिरोपि वदने घर्माम्भसां जालकम्—श० १।३०, रघु० ९।६८ 3 जंगला, खिड़की 4 कली, अनखिला फूल — अभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम् मेघ० ९८ इसी प्रकार – यूथिकाजालकानि – २६ 5 (बालों में पहना जाने वाला) एक प्रकार का आभूषण [illegible] —रघु० ९।४४ (आभरणविशेष) 6 घोंसला 7 भ्रम, धोखा। सम० [illegible] (वि०) अवगुण्ठित।

जालकि[illegible] (पुं०) [जालक + इनि] बादल।

जालकिनी [जालकिन् + ङीप्] भेड़।

जालिक [जाल + ठन्] 1 मछवाहा 2 बहेलिया, चिड़ीमार 3 मकड़ी 4 प्रान्त का राज्यपाल या मुख्य-शासक 5 बदमाश, ठग, [illegible] 1 जाली 2 जंजीरों का बना

कवच 3 मकड़ी 4. जोंक 5 विधवा 6 लोहा 7. घूंघट, मुख पर डालने का ऊनी कपड़ा।

जालकिनी [जाल+इनि+ङीप्] भेड़ों से सुभूषित कमरा।

जाल्म (वि०) (स्त्री०—ल्मी) [जल्+णिच् बा० म] 1. क्रूर, निष्ठुर, कठोर 2 उतावला, अविवेकी, —ल्मः (स्त्री—ल्मी) 1 बदमाश, शठ, लुच्चा, पाजी, कुकर्मी —अपि ज्ञायते कतमेन दिग्भागेन गतः स जाल्म इति —विक्रम० १ 2 निर्धन आदमी, नीच, अधम।

जाल्मक (वि०) (स्त्री० ल्मिका) [जाल्म+कन्] घृणित, नीच, कमीना, तिरस्करणीय।

जावन्यम् [जवन+ष्यञ्] 1 चाल, तेजी 2 शीघ्रता, त्वरा।

जाहम् एक प्रत्यय जो शरीर के अङ्गों के अभिधायक संज्ञा शब्दों के अन्त में 'मूल' को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है—कर्णजाहम्—कान की जड़, इसी प्रकार अक्षि°, ओष्ठ° आदि।

जाह्नवी [जह्नु+अण्+ङीप्] गङ्गा नदी का विशेषण।

जि (भ्वा० पर० (परा और वि पूर्व होने पर आ०) जयति, जित) 1 जीतना हराना विजय प्राप्त करना दमन करना —जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलद पटलानि—पञ्च० १।३३०, भट्टि० १५।७६ ९०, 2 मात कर देना, आगे बढ़ जाना —यदि ज्ञानमत्स्य वृष्टि सौभाग्येन जिगाय मा —कु० २।५३ रघु० ३।३४ घट० २२, शि० १।१९ 3. जीतना (दिग्विजय करना या जूए में जीतना), दिग्विजय करके हस्तगत करना —प्रसभोद्धृतारिः कृत्स्नामिमां महीं —रघु० ११।६५ (यहाँ 'जि' का अर्थ विजय प्राप्त करना भी है) - मनु० ७।९६ 4 दमन करना, दबाना, नियन्त्रण रखना (कामावेग आदि पर) विजय प्राप्त करना 5 विजयी होना, प्रमुख या सर्वोत्तम बनना (प्रायः नान्दी श्लोकों या अभिवादन आदि में प्रयुक्त)—जयतु जयतु महाराज (नाटकों में), स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः —मा० ५।१, जितमुडुपतिना नमः सुरेभ्यः —रत्न० १।४, भर्तृ० २।२ गीत० १।१, प्रेर० जापयति, जित जाना, विजय दिलाना, सन्नन्त — जिगीषति जीतने की इच्छा करने की, आगे बढ़ जाने की, जीत करने की होड़ लगाने की इच्छा करना, अधि—,जीतना, हराना पछाड़ना—भर्तृ० १९।२, निस् 1 जीतना, हराना —रघु० ३।५१, भट्टि० २।५२, ७।९४ याज्ञ० १।२९२ 2. जीत लेना, दिग्विजय द्वारा हस्तगत करना मनु० ८।१५४, परा—(आ०) 1 हराना, जीतना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—स पराजयते नृपान्—याज्ञ० २।७९, भट्टि० ८।९ 2. खोना, वञ्चित होना 3 जीत लिया जाना या वशीभूत किया जाना, (कुछ) असह्य लगना—अध्ययनात्पराजयते —सिद्धा०, अध्ययन करना कठिन या असह्य लगता है—भट्टि० ८।७१, वि—(आ०) 1 जीतना 2 हराना, वशीभूत करना, दमन करना व्यजेष्ट षड्वर्गम्—भट्टि० १।२, प्रायस्त्वमङ्कवशेषयथा विजयते विश्वं स पुष्पायुधः —गीत० १०, भट्टि० २।३९ १५।३९ 3 मात कर देना, आगे बढ़ जाना —चक्षुर्गेचकमम्बुजं विजयते —विद्धशा० १।३३ 4 जीत लेना, दिग्विजय करके हस्तगत करना भुजविजितविमान —रघु० १२।१०४, १।५९ शा० २।१३ 5 विजयी होना, श्रेष्ठ या सर्वोत्तम होना —विजयतां देवः —श० ५,

जि [जि+डि] पिशाच।

जिगत्नु [गम+क्नु सन्वद्भावात् द्वित्वम्] प्राण, जीवन।

जिगीषा [जि+सन्+अ+टाप्] 1 जीतने की, दमन करने का या वशीभूत करने की इच्छा —यात मत्स्मर कौरव वैश्रवणं जिगीषया— रघु० १५।४५ 2 स्पर्धा प्रतिद्वंद्विता 3 प्रमुखता 4 चेष्टा व्यवसाय जीवनचर्या।

जिगीषु (वि०) [जि+सन्+उ] जीतने का इच्छुक।

जिघत्सा [अद्+सन्+अ घसादेश] 1 खाने की इच्छा बुभुक्षा 2 स्पर्धा करना 3 प्रयत्न उद्योग करना।

जिघत्सु (वि०) [अद्+सन्+उ घसादेश] बुभुक्षु, भूखा।

जिघांसा [हन्+सन्+अ+टाप्] मार डालने की इच्छा —रघु० १५।१९।

जिघांसु [हन्+सन्+उ] मार डालने का इच्छुक घातक, शत्रु वैरी।

जिघृक्षा [ग्रह्+सन्+अ+टाप्] ग्रहण करने की या लेने की इच्छा।

जिघ्र (वि०) [घ्रा+श जिघ्रादेश] 1 सूंघने वाला 2 अन्दाजा अनुमान लगाने वाला, निरीक्षण करने वाला उदा० मनोजिघ्र सपत्नीजन —सा० द०।

जिज्ञासा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा कुतूहल, कौतुक या ज्ञानेप्सा।

जिज्ञासु (वि०) [ज्ञा+सन्+उ] 1 जानने का इच्छुक ज्ञानेप्सु प्रश्नशील —भग० ६।४४ 2 मुमुक्षु।

जित् (वि०) [जि+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जीतने वाला पराजित करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला —शत्रुजित् कंसजित्, बहुजित् आदि।

जित (भू० क० कृ०) [जि+क्त] जीता हुआ, अभिभूत, दमन किया हुआ, (काम या आवेग आदि) संयत, 2 हस्तगत हासिल, (दिग्विजय द्वारा) प्राप्त 3 मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4 वशीभूत, वशीकृत या प्रभावित कामजित स्त्रीजित आदि। सम—आहार (वि०) भलीभाँति या तुरन्त पकने वाला,—अमित्र (वि०) जिसने अपने शत्रुओं को जीत लिया है, जेता विजयी, —अरि (वि०) जिसने अपने शत्रुओं पर विजय

प्राप्त कर ली है (दि:) बुद्ध का विशेषण, —आत्मन् (वि०) जितेन्द्रिय, आवेशशून्य, —आहव (वि०) विजयी,—इन्द्रिय (वि०) जिसने अपनी वासना पर विजय प्राप्त कर ली है या जिसने अपनी ज्ञानेन्द्रियाँ—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द—को वश में कर लिया है—श्रुत्वा स्पृष्ट्वाऽथ दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः, न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः मनु० २।९८, —काशिन् (वि०) विजयी दिखाई देने वाला, विजय का अहंकार करने वाला [illegible] विजय की शान दिखाने वाला —बाणक्शोऽपि [illegible] काशितया मुद्रा० [illegible] —कोप, —क्रोध (वि०) [illegible] अनुत्तेजनीयता —अमि [illegible] के वृक्ष का [illegible] परिश्रम [illegible] स्वर्ग प्राप्त कर लिया है।

जिति (स्त्री०) [जि + क्तिन्] विजय दिग्विजय।

जित्नुकः, जितम [जि + [illegible] [illegible] साधु] मिथुन राशि [illegible] (ग्रीक शब्द)।

जित्वर (वि०, स्त्री० —री) [जि + क्वरप्] विजयी [illegible] [illegible] भट्टि० [illegible] [illegible]

जिन (वि०) [जि + नक्] 1 विजयी विजेता 2 [illegible] 1 [illegible] बौद्ध या जैन [illegible] जैनी अर्हत् या तीर्थंकर 3 विष्णु का [illegible] —इन्द्र, —ईश्वर 1 प्रमुख बौद्ध संत 2 जैन [illegible] —सद्मन् (नपुं०) जैनमन्दिर या विहार।

जिनाविथ [illegible] पृषो० साधु] [illegible]

जिष्णु (वि०) [जि + ग्स्नु] 1 विजयी [illegible] ४।८५ १०।१८ 2 विजय प्राप्त करने [illegible] [illegible] वाला 3 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भट्टि० १।५, शि० १।७१ —ष्णुः 1 सूर्य 2 इन्द्र 3 विष्णु 4 अर्जुन।

जिह्म (वि०) [जहाति सरलमार्गं हा + मन् [illegible] [illegible]] 1 तिरछा कुटिल [illegible] 2 टेढ़ा वक्र [illegible] वक्रदृष्टि ऋतु० १।१२ 3 धुमावदार वक्र टेढ़ामेढ़ा 4 नैतिकता की दृष्टि से कुटिल [illegible] बेईमान, दुष्ट अनीतिपूर्ण धूर्ततापूर्ण —[illegible] —कि० ६।२४ मुहुरवलोकितमण्डलजिह्मताम्—शि० ९।१२ 5 धुंधला निष्प्रभ फीका विजिह्ममविनया-[illegible]—कि० १।४६ 6 मन्थर, आलसी —ह्मम्—बेईमानी, झूठा व्यवहार। सम० —अक्ष (वि०) भैंगा, ऐंचाताना,—ग सांप, —गति (वि०) टेढ़ामेढ़ा चलने वाला, तिर्यग्गति से चलने वाला ऋतु० १।१३,—मेहन मेंढक,—योधिन् (वि०) अधर्मी योद्धा —शल्यः खैर का वृक्ष।

जिह्व [ह्वे + ड द्वित्वादि] जीभ।

जिह्वल (वि०) [जिह्व + ला + क] जिभला, चटोरा।

जिह्वा [लिहन्ति अनया —लिह् + वन् नि०] 1 जीभ 2 आग की जीभ अर्थात् लौ। सम० —आस्वाद चाटना लपलपाना —उल्लेखनी, —उल्लेखनिका, —निर्लेखनम् जीभ खुरचने वाला —पः 1 कुत्ता 2 बिल्ली 3 व्याघ्र 4 चीता 5 रीछ —मूलम् जिह्वा [illegible] मूलीय [illegible]) क और ख् से पूर्व विसर्ग का स्थान तथा कण्ठ्य व्यञ्जनों की ध्वनि का वाचक [illegible] [illegible] —रद पक्षी —लिह् (पुं०) कुत्ता, —लौल्यम् [illegible] —शल्यः खैर का पेड़।

जीन (वि०) [ज्या + क्त] बूढ़ा वयोवृद्ध क्षीण, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पृथग्दशाद्विगुणक मनु० ९।१३।

जीमूत [जीवन [illegible] जीयते अनेन जीवनस्योदकस्य मूत [illegible] आवन्[illegible] मूत बद्धम् [illegible], जीवन [illegible] पृषो० तारा०] 1 बादल —जीमूतेन [illegible] प्रवृत्ति मेघ० ४ 2 इन्द्र [illegible] [illegible] कूट एक पहाड़ —[illegible] 1 [illegible] 2 नागानन्द नाटक में नायक विद्याधरों का [illegible] जीमूतवाहन [illegible] का पुत्र था, अपनी दानशीलता तथा [illegible] के [illegible] प्रख्यात था। जब उसके [illegible] राजधानी पर [illegible] किया [illegible] तब अपने पिता जी को कहा [illegible] आक्रमणकारी बन्धुबान्धवों [illegible] मलयपर्वत पर रह कर [illegible] एक दिन कहा जाता है कि जीमूतवाहन ने उस सांप का स्थान ग्रहण किया था कि अपने समझौते के अनुसार गरुड़ को उसके दैनिक भोजन के रूप में प्रस्तुत किया जाना था। अन्त में अपने [illegible] हृदयस्पर्शी व्यवहार के द्वारा जीमूतवाहन ने गरुड़ को इस बात के लिए अभिप्रेरित किया कि वह सांपों का खाना की आदत छोड़ दे। नाटक में इस [illegible] को बड़े ही कारुण्यपूर्ण ढंग से कहा गया है), —वाहिन् (पुं०) धुआँ।

जीर [ज्या + रक् सम्प्रसारण दीर्घश्च] 1 तलवार 2 जीरा।

जीरक, जीरण [जीर + कन् पृषो० कस्य णः] जीरा।

जीर्ण (वि०) [जॄ + क्त] 1 पुराना, प्राचीन 2 घिसा-पिसा, क्षीण, बरबाद, ध्वस्त, फटा-पुराना (वस्त्रादिक) —वासांसि जीर्णानि यथा विहाय—भग० २।२२,

3. पचा हुआ,—सुजीर्णमन्नं सुविचक्षण सुत—हि० १।२२, —र्णः 1 बूढ़ा आदमी 2 वृक्ष, —र्णम् 1 गुग्गुल 2 बुढ़ापा, क्षीणता। सम०—उद्धारः पुराने को नया बनाना, मरम्मत विशेषकर किसी मन्दिर धर्मार्थ संस्था या धार्मिक स्थान की, —उद्यानम् उजड़ा हुआ तथा उपेक्षित बाग, —ज्वरः पुराना बुखार अधिक दिनों से रहने वाला मन्द ज्वर, —पर्णः कदम्ब वृक्ष, —वाटिका उजड़ी हुई वाटिका, —वज्रम् वैक्रान्तमणि।

जीर्णक (वि०) [जीर्ण + कन्] [illegible] मुरझाया हुआ।

जीर्णि (स्त्री०) [जॄ + क्तिन्] 1 बुढ़ापा, [illegible] दुर्बलता 2 पाचन शक्ति।

जीव् (भ्वा० पर० जीवति, जीवित) 1 जीना, जीवित [illegible] [illegible] पञ्च० १।२३ [illegible] [illegible] जीवित [illegible] [illegible] [illegible] पुनर्जीवित करना, जीवित होना [illegible] [illegible] करना आजीविका [illegible] [illegible] वाणिज्य के [illegible] [illegible] निर्वाह व जीवन [illegible] [illegible] १।२६ [illegible] सजातीय कर्म के साथ [illegible] [illegible] अधिका वृक्षा जीवेद [illegible] [illegible] 4 (आल०) [illegible] [illegible] जीवित रहने के [illegible] किसी पर निर्भर करना (अधि० के साथ) [illegible] प्रमत्ते जीवन्ति [illegible] [illegible] यानेषु यज्ञमानेषु [illegible], [illegible] विद्यमानेषु [illegible] मूर्खेषु पण्डिता महा० प्रेर० 1 फिर जान डालना 2 पालन पोषण करना (भोजन द्वारा), पालना [illegible] शिक्षित करना, सिखाना [illegible] अति— 1 जीवित रह जाना 2 जीवन प्रणाली में दूसरों से आगे बढ़ जाना (अधिक शान से रहना) अत्यजीवदमरालक केश्वरी रघु० १९।१९, अनु— 1 लटकना, सहारे निर्भर रहना जीवित रहना सेवा करना [illegible] पाणिग्राहकमनुजीविष्यति—दश० १७२ 2 बिना ईर्ष्या के देखना [illegible] [illegible] पुरा दृष्ट्वा दीर्घ [illegible], अद्य तामनुजीवाम महा० 3 किसी के लिए जीवित रहना 4 जीवनचर्या में दूसरों के पीछे चलना रघु० १९।१५ अन० पा० (अन्वजीवत या अन्व जीवत्) 5 जीवित रहना, बचा रहना, उद्—, पुनर्जी वित करना फिर जीवित होना उदजीवत् सुमित्रभू —भट्टि० १७।९५, उप—, 1 किसी आधार पर जीवित रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना —का वृत्ति- मुपजीवत्यार्य, तवाहमवृत्तिमुपजीवामि— मृच्छ० २, जीवास्तमुपजीवेयुर्यथैव पितरं तथा- मनु० ९।१०५, याज्ञ० २।१०१ 2 सेवा करना, आश्रित रहना —शि० ९।३२।

जीव (वि०) [जीव् + क] जीवित विद्यमान, —वः 1 जीवन का सिद्धान्त श्वास, प्राण, आत्मा — गतजीव, जीवन्यास जीवाशा आदि 2 वैयक्तिक या व्यक्तिगत रूप से मानव शरीर में रहने वाला आत्मा जो कि इस शरीर को जीवन गति तथा संवेदना देता है (जीवा- त्मन् कहलाता है विप० 'परमात्मन' शब्द है) याज्ञ० ३।१३१ मनु० १२।२२, २३ 3 जीवन अस्तित्व 4 जानवर जीवधारी प्राणी 5 आजीविका व्यवसाय 6 कर्ण का नाम 7 [illegible] [illegible] का नाम 8 'पुष्य' [illegible]। सम० —अन्तकः 1 शिकारी बहेलिया 2 कातिल हत्यारा —आत्मन् (पुं०, मानव शरीर में रहने वाला आत्मा (विप० परमात्मन्) —आदानम् [illegible] [illegible] (आयु० में) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आधार हृदय [illegible] [illegible] [illegible] हुई [illegible] [illegible] हुआ काठ —उत्सर्गः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —कर्मन् [illegible] [illegible] [illegible] अविद्यमान आत्मा का [illegible] [illegible] —ग्राह जीवित पकड़ा हुआ कैदी —जीवः [illegible] [illegible] की [illegible] पक्षी —दः 1 वैद्य 2 शत्रु [illegible] [illegible] अस्तित्व —धनम् जीवन तोकम् जीव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —धानी पृथ्वी [illegible] —पत्नी वह स्त्री जिसका पति जीवित है —पुत्रा, —वत्सा वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित है —मातृका मातृ मातृकाएँ या देवियाँ जो प्राणियों का पालन पोषण करने वाली मानी जाती हैं (कुमारी [illegible] [illegible] विमला मंगला बला पद्मा [illegible] व विख्याता [illegible] जीवमातृका) —रक्तम् स्त्री का रज आर्तव, —लोकः जीवधारी प्राणियों का संसार मर्त्यलोक, प्राणिजगत् [illegible] [illegible] सर्वतो जीव- लोकः मा० ९।३७ जीवलोकतिलक प्रलीयसे [illegible], इसी प्रकार [illegible] [illegible] जीवलोक शा० [illegible] मा० ९।१७ उत्तर० ४।१७, 2 जीवधारी प्राणी, मनुष्य [illegible] [illegible] जीवलोकस्य—श० ३।१ [illegible] जीवलोक रघु० ५।५५, —वृत्ति (स्त्री०) पशुपालन, गायभैंस आदि पालने का रोजगार —शेष (वि०) जिसकी केवल जान बची हो, जो सब कुछ छोड़ कर केवल जान लेकर भाग आया हो —संक्रमणम् जीव का एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में जाना, —साधनम् धान्य, अनाज,—साफल्यम् जीवनधारण करने के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति, —सू जीव- धारी प्राणियों की माता, वह स्त्री जिसके बच्चे जीवित हों, —स्थानम् 1 जोड़, अस्थिसन्धि 2 मर्म, हृदय।

जीवक [जीव् + णिच् + ण्वुल्] 1 जीवधारी प्राणी

2. सेवक 3. बौद्धभिक्षु, भिक्षा के सहारे ही जीवित रहने वाला भिखारी 4. सूदखोर 5 सपेरा 6 वृक्ष।

जीवत् (वि०) (स्त्री० -न्ती) [जीव्+शतृ] जीवित सजीव। सम० -तोका वह स्त्री जिसके बच्चे जिन्दा हों, -पति (स्त्री०)-पत्नी (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित है, -मुक्त (वि०) जीवन्मुक्त, जिसने परमात्मा के सम्यग्ज्ञान से पवित्र होकर भावी जीवन से मुक्ति पा ली है, सांसारिक बन्धनों से मुक्त, -मुक्ति (स्त्री०) इसी जीवन में परममोक्ष की प्राप्ति, -मृत (वि०) जीता हुआ ही मृतक, जो जीता हुआ भी मृत के समान बेकार है, (निकम्मा आदमी या बहिष्कृत व्यक्ति)।

जीवथ [जीव्+अथ] 1 जीवन अस्तित्व 2 कछुवा 3 मोर 4 [illegible]।

जीवन (वि०) (स्त्री० -नी) [जीव्+णिच्+ल्युट्] जीवनदायक, स्फूर्तिप्रद -नः 1 जीवित प्राणी 2 हवा 3 पुत्र, -नम् जिन्दा रहना, जीवन (आलं०) त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम् गीत० १० 2 जीवन का सिद्धान्त [illegible] 3 जल [illegible] १८।३९ [illegible] ३।८९ 4 आजीविका, वृत्ति, अस्तित्व के साधन (आलं० से भी) मनु० ११।७६ हि० ३।१३ 5 पिछले दिन के रक्खे दूध से बनाया गया मक्खन 6 मज्जा। सम० -अन्तः मृत्यु, -आघातम् विष, -आवासः 1 जल में रहना, वरुण का विशेषण, जल की अधिष्ठात्री देवता 2 शरीर, -उपायः आजीविका, -औषधम् 1 अमृत 2 संजीवनी औषध।

जीवनकम् [जीवन+कन्] आहार भोजन।

जीवनीयम् [जीव्+अनीयर्] 1 जल 2 ताजा दूध।

जीवन्त [जीव्+झच्] 1 जीवन अस्तित्व 2 दवाई, औषधि।

जीवान्तक [=जीवान्तक, पृषो०] बहेलिया चिड़ीमार।

जीवा [जीव्+अच्+टाप्] 1 जल 2 पृथ्वी 3 धनुष की डोरी -मुहुर्जीवाघातैर्बधिरयन्—महावी० ६।३० 4 चाप के दो सिरों को मिलाने वाली रेखा 5 जीवन के साधन 6 धातु से बने आभूषणों की झंकार 7 एक पौधा, वच।

जीवातु (पुं०, नपुं०) [जीवत्यनेन—जीव्+आतु] 1 भोजन, आहार 2. प्राण, अस्तित्व 3 पुनर्जीवन, फिर जीवित करना—रे हस्त दक्षिण मृतस्य शिशोर्द्विजस्य जीवातवे विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्—उत्तर० २।१०, पुनर्जीवन दाता औषधि।

जीविका [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] जीने का साधन, रोजगार।

जीवित (वि०) [जीव्+क्त] 1. जीता हुआ, विद्यमान, सजीव —रघु० १२।७५ 2 पुनः जीवनप्राप्त 3. जीवन युक्त, अनुप्राणित 4 (काल) जिसमें रहा जा चुका है, -तम् 1 जीवन, अस्तित्व—त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम् उत्तर० ३।२६, कन्येव कुलजीवितम् कु० ६।६३, मेघ० ८३, नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्—मनु० ६।४५, ७।१११ 2 जीवन की अवधि 3 आजीविका 4 जीवधारी प्राणी। सम० -अन्तकः शिव का विशेषण,-आशा जीने की उम्मीद, जीवन से प्रेम,—ईशः 1 प्रेमी, पति 2 यम का विशेषण जीवितेशवसतिं जगाम सा—रघु० ११।२० (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3 सूर्य 4 चन्द्रमा, -कालः जीवन की अवधि,—ज्ञा धमनी, -त्यागः प्राणों का त्याग, -संशयः जीवन की जोखिम प्राणसंकट, जीवन का भय न आतुरो जीवितसंशये वर्तते [illegible] इसके प्राण संकट में हैं [illegible]।

जीविन् (वि०) (स्त्री० -नी) [जीव्+इनि] (सामान्यतः समास के अन्त में) 1 जिन्दा, सजीव विद्यमान रघु० [illegible] 2 किसी के सहारे जिन्दा रहने वाला [illegible] [illegible], आयुधजीविन् (पुं०) जीवधारी प्राणी।

जीव्या [जीव्+यत्+टाप्] आजीविका के साधन।

जुगुप्सनम्, **जुगुप्सा** [गुप्+सन्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1 निन्दा, झिड़की 2 नापसन्दगी, अभिरुचि, घृणा, बीभत्सा 3 (अलं० शा०) बीभत्स रस का स्थायीभाव परिभाषा इस प्रकार है दोषेक्षणादिभिर्गर्हा जुगुप्सा विषयोद्भवा सा० द० २०७।

जुष् I (तुदा० आ० —जुषते, जुष्ट) 1 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना 2 अनुकूल होना, मङ्गलप्रद होना 3. पसन्द करना, अत्यन्त चाहना, प्रसन्नता या खुशी मनाना, सुखोपभोग करना सत्त्वं जुषाणस्य भवाय देहिनाम् भाग० 4 भक्त होना, अनुरक्त होना, अभ्यास करना, भुगतना, भोगना पौलस्त्योऽजुषत सुखं विपक्षबन्धु भट्टि० १७।११२ 5 प्राय जाना दर्शन करना, बसना - जुषस्व पर्वतश्रेष्ठमृषय पर्वसन्धिषु महा० 6 प्रविष्ट होना बिठाना, आश्रय लेना— रथं च जुजुषे शुभम् भट्टि० १४।९५ 7 चुनना।

II (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० जोषति, जोषयति से) 1 तर्क करना, चिन्तन करना 2. जाँचपड़ताल करना, परीक्षा करना 3 चोट पहुँचाना 4 सन्तुष्ट होना।

जुष् (वि०) [जुष्+क्विप्] (समास के अन्त में) पसन्द करने वाला, उपभोग करने वाला, आनन्द लेने वाला भर्तृ० ३।१०३ 2. दर्शन करने वाला, निकट जाने वाला, पहुँचने वाला, लेने वाला, धारण करने वाला

आश्रय लेने वाला आदि —परलोकजुषाम् —रघु० ८।८५, रजोजुषे जन्मनि का० १।

जुष्ट (भू० क० कृ०) [जुष्+क्त] 1. प्रसन्न, सन्तुष्ट 2. अभ्यस्त, आश्रित, देखा हुआ, चखता हुआ भग० २।२ 3. सज्जित, सम्पन्न, युक्त।

जुहू: (स्त्री०) [हु+क्विप् नि० द्वित्व दीर्घश्च तारा०] अग्नि में घी की आहुति देने के लिए काठ का बना अर्धचन्द्राकार चम्मच, स्रुवा।

जुहोतिः [जु+श्तिप्] 'जुहोति' क्रिया से सम्पन्न होने वाले यज्ञानुष्ठानों का पारिभाषिक नाम, इससे भिन्न अनुष्ठानों के लिए दूसरा नाम 'यजति' है —जन्ति सर्वा वैदिक्यो जुहोतियजतिक्रियाः मनु० २।८४ (दे० मेधातिथि तथा दूसरे भाष्यकार सर्वज्ञ नारायण जुहोति यज्ञानुष्ठानों को 'उपविष्ट होम' तथा यजति यज्ञानुष्ठानों को 'तिष्ठद्धोम' का नाम देते हैं—दे० आश्वलायन —१।२।५ भी)।

जू: (स्त्री०) [जू+क्विप्] 1 चाल 2 पर्यावरण 3 राक्षसी 4 सरस्वती का विशेषण।

जूक: [ग्रीक शब्द] तुला राशि।

जूट: [जुट्+अच्, नि० ऊत्वम] चिपटे हुए तथा गांठ बनाये हुए केशों का समूह —भजगुरुकुंडलिकबालमृगाङ्कलप जटा मा० १।२।

जूटकम् [जूट+कन्] बट कर मोटी बनाये हुए बाल जटा।

जूतिः स्त्री० [जू+क्तिन्] चाल वेग।

जूर् (दिवा० आ० जूर्यते जूर्ण) 1 चोट पहुँचाना हानि पहुँचाना मारना 2 क्रुद्ध होना (सम्प्र० के साथ) भग नक्तंचरेभ्यो जूर्यते भट्टि० १४।८ 3 पुराना होना।

जूर्तिः (स्त्री०) [ज्वर+क्तिन् ऊठ्] बुखार ज्वर।

जूष् (भ्वा० पर० जूषति) 1 क्षत बनाना चोट पहुँचाना 2 मार डालना।

जृभ्, जृम्भ् (भ्वा० आ० जृम्भते जृम्भित, जृम्भित, जृब्ध) 1 जंभाई लेना जमुहाई लेना मनु० ४।४३ 2. खोलना, विस्तार करना खिलना (फूल आदि का) —सरसुवर्णसुवासबकुल कुम्भ उज्जृम्भ ऋतु० ३।४४ 3 बढ़ाना, फैलाना, सर्वत्र प्रसार करना जृम्भता जृम्भमाणप्रतिद्वन्द्वभास्वर कावदार्थान वेणी० १ तन्वे जृम्भति (पा० भ्रंशयति) —भर्तृ० ३।५ माया काहीय स एक एव परमा निष्क्रान्ता जृम्भते ३।८० 4 प्रकट होना, उदय होना अपनी शान दिखाना दर्शनीय होना व्यक्त होना सकल्पमानंरतिमानभूतमात्मानमापाय जृम्भते कु० २।२४ 5. आराम में होना 6. (धनुष की भांति) पीछे मुड़ना, पलटा जाना प्रेर० जमुहाई दिलवाना, प्रसार करवाना, अभि, प्रकट होना, उदय होना, फूटना—मै० २।१०५, वि, जमुहाई लेना, उबासी लेना, मुंह खोलना—व्यजृम्भिषत चापरे—भट्टि० १५।१०८ विजृम्भितकिंशुकस्तविशेष— मृच्छ० ५ 2 खुलना, खिलना (फूल आदि का) 3 सर्वत्र फैल जाना, व्याप्त करना, भर देना मुखवका समलङ्कुर्यन्ति स्वना न केवल सघनि मागधीपते यदि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि रघु० ३।१९, १२।७२, रजोभिकाकस्य विजृम्भितस्य ७।४२ 4 उदय होना प्रकट होना, सम्, प्रयत्न करना, हाथपैर मारना, कोशिश करना—व्याल बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धु समुज्जृम्भते —भर्तृ० २।६।

जृम्भ, भम्, जृम्भणम्, जृम्भा, जृम्भिका [जृम्भ्+घञ् ल्युट् वा जृम्भ अ+टाप् जृम्भा+कन् इत्वम्] 1 जमुहाई लेना उबासी लेना 2 खुलना खिलना विस्तृत होना कालेनाभ्यधो जृम्भा समवाति का० २५७ जृम्भारम्भप्रविततदलोपान्तजालप्रविष्टे —वेणी० २।७ मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी भर्तृ० १।८५ 1 अंगड़ाई लेना (आलसवश) मुहुर्मुहुर्जृम्भणसम्भवानि ऋतु० ६।१०।

जृ (भ्वा० दिवा० क्रया० पर० चुरा० उभ० जरति जीर्यति जृणाति जारयति जरयति अपे ग्राफि) 1 बूढ़ा होना जीर्ण शीर्ण होना मुरझा जाना मर जाना [illegible] करना होता जीर्यन्ते जीर्यतः दन्ता जीर्यन्ति चक्षुषी श्रोत्रे तृष्णैका तरुणायते पंच० ५।८३ भट्टि० ४।१४ 2 नष्ट होना क्षय हो जाना (आलं०) आमनोरथ जरा अब भी ऐसा लगता जरत नहि० ६ [illegible] १४।१०२ 3 पच जाना हजम हो जाना [illegible] प्रजनियोजक [illegible] ७१ [illegible] भट्टि० १८।८०।

ज्ञ (पु०) [ज्ञा+क] 1 जानने वाला विद्वान 2 विष्णु का विशेषण।

जेन्ताक (पु०) गरम कमरा जिसमें बैठने पर शरीर से पसीना बह सूखा उष्ण स्नान।

जेमनम् [जिम्+ल्युट्] 1 खाना 2 भोजन।

जैत्र (वि०) (स्त्री०) [जेतृ+अण् स्त्रियां ङीप् च] 1 विजयी सफल विजय प्राप्त कराने वाला दर्शितह मदनस्य जैत्रमस्त्र विफलप्रयाणतिक्रम भविष्यतीति—मा० ७।० धनुर्जैत्र रघुर्दधौ रघु० ४।४६, १६।७२ 2 श्रेष्ठ त्र 1 विजयी विजेता 2 पारा त्रम् 1 विजय जीत 2 औषधि।

जैन [जिन+अण्] जैन सिद्धान्तों का अनुयायी, जैन मत को मानने वाला।

जैमिनि (पु०) प्रख्यात ऋषि और दार्शनिक जिन्होंने दर्शन सम्प्रदाय में पूर्वमीमांसा का प्रचलन किया मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनि जैमिनिम्—पंच० २।३३।

जैवातृक (वि०) (स्त्री०—की) [जीव्+णिच्+आतृकन्] 1. दीर्घजीवी, जिसके लिए दीर्घायु की इच्छा की जाय—जैवातृक ननु सूचके पतिरस्या —दश० 2 दुबला-पतला, कृशकाय, —कः 1 चन्द्रमा राजान जगदाप्यायन सहृदा जैवातृक त्वां तु म —मालवि० २।७८ 2 कपूर 3 पुत्र 4 दवाई, औषधि 5 किसान।

जैवेय [जीवस्य गुरो अपत्यम् जीव+ढक] बृहस्पति के पुत्र कच की उपाधि।

जैह्म्यम् [जिह्म+ष्यञ्] टेढ़ापन धोखा झूठा व्यवहार।

जोङ्गट [जुङ्गति अरोचकत्वं परित्यजति अनेन जुङ्ग+अटन् नि० गुण] गर्भवती स्त्री का प्रबल रुचि, दोहद।

जोटिङ्गः [जुट्+इन् जोटि+गम्+ड निकलत्वात् मुम] शिव की उपाधि।

जोषः [जुष्+घञ्] 1 सन्तोष सुखोपभोग प्रसन्नता आनन्द 2. चुप्पी —जोषम् (अव्य०) 1 इच्छानुसार आराम से 2 चुपचाप किमिति जोषमास्यते श० ५, शिशु० २।१७।

जोषा, जोषित् (स्त्री०) [जुष्यते उपभुज्यते जुष्+घञ्+टाप् जुष्+इति] स्त्री, नारी —तु० योषा योषित्।

जोषिका [जुष्+ण्वुल्+टाप् इत्वम] 1 नई कलियों का समूह 2 स्त्री, नारी।

ज्ञ (वि०) [ज्ञा+क] (समास के अन्त में) 1 जानने वाला परिचित कार्यज्ञ निमित्तज्ञ शास्त्रज्ञ, सर्वज्ञ 2 बुद्धिमान् जैसा कि ज्ञम्मन्य में (अपने आपको बुद्धिमान समझता हुआ) —ज्ञः 1 बुद्धिमान और विद्वान् पुरुष 2 चैतन्य विशिष्ट आत्मा 3 बुध ग्रह 4 मङ्गल नक्षत्र 5 ब्रह्मा का विशेषण।

ज्ञपित, ज्ञप्त (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] जताया गया समुत्तेजित स्पष्ट किया गया सिखाया गया।

ज्ञप्तिः (स्त्री०) [ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1 समझ 2 बुद्धि 3 सोचना।

ज्ञा (क्रया० उभ० जानाति, जानीते, ज्ञात) 1 जानना (सब अर्थों में) सीखना, परिचित होना मा ज्ञासी त्वं सुखी रामो यदकार्षीत् स रक्षसाम् —भट्टि० १५।० 2 जानना, जानकार होना परिचित या विज्ञ होना जाने तपसो वीर्यम् —श० ३।१ जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत् —मनु० २।११० १२३ ७।१४८ 3 मालूम करना निश्चय करना खोज करना—ज्ञायता क क कार्यार्थीति —मृच्छ० ९ 4 समझना, जानना अवबोध करना, महसूस करना, अनुभव करना — जैसा कि दुःखज्ञ, सुखज्ञ आदि में 5 परीक्षण करना, जाँच करना, वास्तविक चरित्र जानना —आपत्सु मित्रं जानीयात् —हि० १।७२, पञ्च० २१ 6 पहचानना न त्वं वृद्धया न पुनरलका ज्ञास्यसे कामचारिन् —मेघ० ६३ 7 लिहाज करना, ख्याल करना, मान करना — जानामि त्वां प्रकृतिपुरुष कामरूपं मघोन —मेघ० ६ 8 काम करना, व्यस्त करना (करण० के साथ) सर्पिषो जानीते —सिद्धा० —वह घी से अपने आपको यज्ञ में व्यस्त करता है (सर्पिषा-सर्पिषः) प्रेर० (ज्ञापयति, ज्ञपयति) 1 घोषणा करना सूचित करना जतलाना, ज्ञात करना, अधिसूचित करना 2 निवेदन करना कहना (आ०) इच्छा० जिज्ञासते, जानने की इच्छा करना खोजना निश्चय करना—रघु० ३।२६ भट्टि० ८।३३ ४।१९ अनु 1 अनुमति देना इजाजत देना स्वीकृति देना 'हाँ' करना सहमत होना स्वीकार कर लेना अनुजानीहि मा गमनाय उत्तर० ३ 2 सगाई करना विवाह में वचनबद्ध होना, वचन देना (विवाह में) यां जानपाहा धर्मेणाज्ञाप्नोऽन्य जनाद्भार्या मे भिला दश० ५० 3 क्षमा करना माफ करना 4 प्रार्थना करना 5 अपनाना अप—, छिपाना सूचना रखना, इनकार करना मुकरना (आ०) शतमपजानीते —सिद्धा० आत्मानमपजानान शशमात्रोऽपहि्नुतम् भट्टि० ८।२१ अभि० 1 पहचानना आत्मज्ञानात्मनो नूनम् —महा० 2 जानना समझना परिचित होना जानकार होना अव० ४।१४ ५।१३ १८ ५५ 3 ध्यान रखना ख्याल रखना मानना 4 मान लेना स्वीकार कर लेना अव—, तुच्छ समझना घृणा करना तिरस्कार करना अपमान करना अवजानासि मां यस्मात् रघु० १।७७ भट्टि० ५, भग० ९।११ आ— 1 जानना, समझना, खोजना निश्चय करना (प्रेर०) आज्ञा देना आदेश देना, निदेश देना 2 विश्वास दिलाना 3 ढाढस देना, जाने के लिए छुट्टी देना परि— 1 जानकार होना जानना परिचित होना —कुलभाऽर्योऽसि परिज्ञाय —पञ्च० १ मनु० ८।१२६ 2 खोजना, निश्चय करना—सम्यक् परिज्ञाय —पञ्च० १ 3 पहचानना तपस्विभिः कैश्चित् परिज्ञातोऽस्मि —श० २ प्रति (आ०) 1 प्रतिज्ञा करना शुल्काधारेणैव कन्याप्रदान प्रतिजानीम कुम० ४ भट्टि० ८।२९ ६४, मनु० ९।९९ 2 पुष्ट करना 3 बताना अभिपुष्टि करना, दावा करना वि—, 1 जानना जानकार होना भर्तृ० ३।७१ 2 सीखना समझना, जान लेना 3 निश्चय करना मालूम करना 4 लिहाज करना मान लेना, ख्याल करना (प्रेर०) 1 निवेदन करना, प्रार्थना करना (विप० आज्ञापयति) —कार्यपुत्र अस्ति मे विज्ञाप्यम् —(राम) ननु आज्ञापय उत्तर० १, रघु० ५।२० 2 समाचार देना, सूचना देना 3 कहना, बतलाना, सम् ,(आ०) जानना, समझना, जानकार होना 2 पहचानना 3. मेलजोल से रहना, परस्पर सहमत

होना (कर्म० या करण० के साथ) — पित्रा पितर वा संजानीते — सिद्धा० 4. रखवाली करना, खबरदार रहना — भट्टि० ८।२७ 5 राजी होना, सहमत होना 6 (पर०) याद करना, सोचना — मातुः मातरं वा संजानाति — सिद्धा० (प्रेर०) सूचना देना।

ज्ञात (वि०) [ज्ञा + क्त] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सीखा हुआ, समवधारित दे० 'ज्ञा' ऊपर। सम० — सिद्धान्त पूर्णरूप से शास्त्रों में निष्णात।

ज्ञाति [ज्ञा + क्तिन्] 1 पैतृक संबंध, पिता, भाई आदि, एक ही गोत्र के व्यक्ति (समष्टि रूप से) 2. बन्धु, बांधव 3 पिता। सम० — भावः संबंध, रिश्तेदारी — भेदः संबंधियों में फूट, — विद् (वि०) जो निकटस्थ व्यक्तियों से संबंध जोड़ता है।

ज्ञातेयम् [ज्ञाति + ढक्] संबंध, रिश्तेदारी।

ज्ञातृ (पुं०) [ज्ञा + तृच्] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 परिचित व्यक्ति 3 जमानतदार, प्रतिभू।

ज्ञानम् [ज्ञा + ल्युट्] 1 जानना, समझना, परिचित होना प्रवीणता — सांख्यस्य योगस्य च ज्ञानम् भा० २।७ 2 विद्या, शिक्षण — बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति — मनु० ५।१०९, ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ — रघु० १।२२ 3 चेतना, अज्ञान, जानकारी ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि मनु० ८।२८८, जाने अनजाने, जानबूझकर, अनजाने में 4 परम ज्ञान, विशेषकर उस धर्म और दर्शन की ऊँची सच्चाइयों पर मनन से उत्पन्न ज्ञान जो मनुष्य को अपनी प्रकृति या वास्तविकता को जानना, तथा आत्मसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलन की बात सिखलाता है (विप० कर्म) तु० ज्ञानयोग और कर्मयोग भग० ३।३ 5 बुद्धि ज्ञान और प्रज्ञा की इन्द्रिय। सम० — अनुत्पादः अज्ञान, मूर्खता, — आत्मन् (वि०) सर्वविद्, बुद्धिमान्, — इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय (यह पाँच हैं — त्वचा, रसना, चक्षु, कर्ण, और घ्राण 'बुद्धीन्द्रिय' शब्द को देखो 'इन्द्रिय' के नीचे), — काण्डम् वेद का आंतरिक या रहस्यवाद विषयक ज्ञान जिसमें वास्तविक आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान का उल्लेख है इसके विपरीत संस्कारों का ज्ञान (कर्मकांड) भी वेद में निहित है, — कृत (वि०) जानबूझ कर या इरादतन किया हुआ, — गम्य (वि०) समझ के द्वारा जानने योग्य, — चक्षुस् (नपुं०) बुद्धि की आँख, मन की आँख, बौद्धिक स्वप्न (विप० चर्म चक्षुस्) — सर्वं तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा मनु० २।८, ४।२४, (पुं०) बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष, — तत्त्वम् वास्तविक ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, — तपस् (नपुं०) सत्यज्ञान की प्राप्ति रूप तपस्या, — दः गुरु, — दा सरस्वती का विशेषण, — दुर्बल (वि०) जिसमें ज्ञान की कमी है, — निश्चयः

निश्चिति, निश्चयीकरण, — निष्ठ (वि०) सच्चे आत्मज्ञान को प्राप्त करने पर तुला हुआ, — वादः आत्मज्ञानी, दार्शनिक — योगः सच्चा आत्मज्ञान प्राप्त करने या परमात्मानुभूति प्राप्त करने का मुख्यसाधन, — विचारः, विचारणा, — शास्त्रम् भविष्य कथन का शास्त्र, — साधनम् 1 सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त करने का साधन 2. प्रत्यक्ष ज्ञान की इन्द्रिय।

ज्ञानतः (अव्य०) [ज्ञान + तसिल्] ज्ञान पूर्वक, जानबूझकर, इरादतन।

ज्ञानमय (वि०) [ज्ञान + मयट्] 1 ज्ञानयुक्त, चिन्मय — इतरो दहने स्वकर्मणां ववृते ज्ञानमयेन वह्निना रघु० ८।२० 2 ज्ञान से भरा हुआ, — यः 1 परमात्मा 2 शिव की उपाधि।

ज्ञानिन् (वि०) (स्त्री० — नी) [ज्ञान + इनि] 1 प्रतिभाशाली, बुद्धिमान् (पुं०) 1 ज्योतिषी भविष्यवक्ता 2 ऋषि या मनीषी।

ज्ञापक (वि०) [ज्ञा + णिच् + ण्वुल्] जतलाने वाला, सिखाने वाला, सूचना देने वाला, संकेतक, — कः 1 अध्यापक 2 समादेशक स्वामी — कम् (दर्शन० में) सार्थक इंगित या व्याख्यात्मक नियम (यहाँ उस भाषा से अभिप्राय है जो अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा भी नियमों के संबंध में कुछ अधिक व्यक्त करते हैं)।

ज्ञापनम् [ज्ञा + णिच् + ल्युट्] जतलाना सूचना देना सिखलाना, घोषणा करना, संकेत देना।

ज्ञापित (वि०) [ज्ञा + णिच् + क्त] जतलाया गया, सूचित किया गया, घोषित किया गया, प्रकाशित।

ज्ञीप्सा [ज्ञा + सन् + अ + टाप्] जानने की इच्छा।

ज्या [ज्या + अङ् + टाप्] 1 धनुष की डोरी — विश्राम लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः — श० २।६, रघु० ३।५९, ११।१५, १२।१०४ 2 चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा 3 पृथ्वी 4 माता।

ज्यानिः (स्त्री०) [ज्या + नि] 1 बुढ़ापा, क्षय 2 छोड़ना, त्यागना 3. दरिया, नदी।

ज्यायस् (स्त्री० — सी) [अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः वृद्धो वा + ईयसुन् ज्यादेश] 1. आयु में बड़ा, अधिकतर वयस्क प्रसवक्रमेण स किल ज्यायान् — उत्तर० ६ 2 दो में बढ़िया श्रेष्ठतर, योग्यतर — मनु० ४।८, ३।१३७, भग० ३।१, ८ 3. महत्तर, वृहत्तर 4. (विधि में) जो अवयस्क न हो अर्थात् वयस्क या अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी।

ज्येष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वृद्धः प्रशस्यो वा + इष्ठन्, ज्यादेश] 1 आयु में सब से बड़ा, जेठा 2. श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम 3 प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतम, — ष्ठः 1. बड़ा भाई, रघु० १२।१९, ३५ 2. चान्द्रमास (ज्येष्ठ का महीना), — ष्ठा 1. सबसे बड़ी बहन 2. १८

यी-ब्राह्मण पुरुष (तीन भाइयों वाला) 3. बिचली अंगुली 4. छोटी छिपकली 5. गंगा नदी का विशेषण। सम०—अंश: 1 सबसे बड़े भाई का भाग 2. सबसे बड़े भाई का पैतृक संपत्ति में वह भाग जो सबसे बड़ा होने के कारण उसे मिले 3 सर्वोत्तमभाग,—अम्बु (नपुं०) 1. अनाज का धोवन 2. मांड (चावलों का), —आश्रम: 1. ब्राह्मण अथवा गृहस्थ के धार्मिक जीवन में उच्चतम या सर्वोत्तम आश्रम 2. गृहस्थ —तात: पिता का बड़ा भाई, ताऊ, —वर्ण: सर्वोच्च जाति ब्राह्मण जाति —वृत्ति: बड़ों का कर्तव्य, —श्वश्रू: (स्त्री०) बड़ी साली।

ज्यैष्ठ: [ज्येष्ठा+अण्] वह चान्द्रमास (जबकि पूर्ण चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में स्थित होता है), जेठ का महीना (मई-जून), —ष्ठी 1 ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा 2. छिपकली।

ज्यो (भ्वा० आ० ज्यवते) 1. परामर्श देना, सन्दिष्ट करना 2. (व्रत आदि) धार्मिक कर्तव्य का पालन करना।

ज्योतिर्मय (वि०) [ज्योतिस्+मयट्] तारों से युक्त ज्योति से भरा हुआ, दीप्तिमय —रघु० १५।५९, कु० ६।०।

ज्योतिष (वि०) (स्त्री० —षी) [ज्योतिस्+अच्] 1. गणित या फलित ज्योतिष, —ष: 1 ज्योतिष, दैवज्ञ 2. छ: वेदाङ्गों में से एक (गणित ज्योतिष पर एक ग्रन्थ)। सम० —विद्या गणित अथवा फलित ज्योतिर्विज्ञान

ज्योतिषी, ज्योतिष्क: [ज्योतिस्+ङीप्, ज्योतिः इव कायति —कै+क] ग्रह, तारा नक्षत्र।

ज्योतिष्मत् (वि०) [ज्योतिस्+मतुप्] 1 आलोकमय तेजस्वी देदीप्यमान, ज्योतिर्मय —नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रि —रघु० ६।२२ 2. स्वर्गीय —(पुं०) सूर्य, —ती 1. रात्रि (तारों से प्रकाशमान) 2. (दर्शन० में) मन की सात्त्विक अवस्था अर्थात् शान्त अवस्था।

ज्योतिस् (नपुं०) [द्योतते द्युत्यते वा —द्युत्+इसुन् दस्य जादेश:] प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति —ज्योतिरेकं जगाम —श० ५।३०, रघु० २।७५, मेघ० ५, 2. ब्रह्म ज्योति, वह ज्योति जो ब्रह्म का रूप है —भग० ५।२४, १३।१७ 3 बिजली 4 स्वर्गीय पिण्ड, ज्योति (ग्रह नक्षत्र आदि) —ज्योतिर्भिरुद्यद्भिरिव त्रियामा —कु० ७।२१, भग० १०।२१, हि० १।२१ 5 देखने की शक्ति 6. नक्षत्रीय संसार—(पुं०) 1 सूर्य 2 अग्नि। सम०—इङ्ग:,—इङ्गण:, जुगनू, —कण: अग्नि की चिनगारी,—चक्र: राशिचक्र में ज्योतिष पिण्ड,—चक्रम् राशिचक्र,—ज्ञ: ज्योतिषी, दैवज्ञ,—मण्डलम् तारकीय मण्डल,—रथ: (ज्योतीरथ:) ध्रुव तारा,— विद् (पुं०) ज्योतिषी या दैवज्ञ,—विद्या,—शास्त्रम् (ज्योतिश्शास्त्रम्) गणितज्योतिष या नक्षत्रविद्या, फलितज्योतिष।

ज्योत्स्ना [ज्योतिरस्ति अस्याम्—ज्योतिस्+न, उपधालोप:] 1 चन्द्रमा का प्रकाश —स्फुरत्स्फारज्योत्स्नाधवलिततले क्वापि पुलिने —भर्तृ० ३।४२, ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान् —रघु० ६।३४ 2. प्रकाश। सम० —ईश: चाँद, —प्रिय: चकोर पक्षी, —वृक्ष: दीवट दीपाधार।

ज्योत्स्नी [ज्योत्स्ना अस्ति अस्य ज्योत्स्ना+अण्+ङीप्] चाँदनी रात।

ज्यौ: [ग्रीक शब्द] बृहस्पति नक्षत्र।

ज्यौतिषिक: [ज्योतिष+ठक्] नक्षत्रवेत्ता, गणक, दैवज्ञ या ज्योतिषी।

ज्यौत्स्न: [ज्योत्स्ना+अण्] शुक्ल पक्ष।

ज्वर् (भ्वा० प० ज्वरति ज्वरित) बुखार या आवेश से गर्म होना, ज्वरग्रस्त होना 2 रुग्ण होना।

ज्वर: [ज्वर्+घञ्] 1 बुखार ताप, (आयु० में) बुखार की गर्मी —स्वल्पनागज्वर प्राज्ञ —अथवा परिविन्दति —शि० २।५४ (आगे० भी) दर्पज्वर, मदनज्वर, मदज्वर, आदि 2 आत्मा का बुखार, मानसिक पीड़ा कष्ट दुःख, रंज, शोक—व्यपनेतुमनसो ज्वरं —रामा०, मनसस्तदुपस्थिते ज्वरे —रघु० ८।८८, भग० ३।३०। सम० —अग्नि: बुखार का वेग या तेजी,—अङ्कुश: ज्वरप्रशामक, बुखार कम करने वाला, —प्रतीकार:, बुखार का इलाज, ज्वर प्रशामक औषधि।

ज्वरित, ज्वरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [ज्वर+इतच्, इनि वा] ज्वराक्रान्त ज्वरग्रस्त।

ज्वल् (भ्वा० पर० ज्वलति ज्वलित) 1. तेजी से जलना, दहकना, दीप्त होना, चमकना, —ज्वलति चलितेन्धनोऽग्नि —श० ६।३० कु० ५।३० 2 जल जाना, जल कर भस्म हो जाना (आग से) कष्टग्रस्त होना —अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ज्वलति न सा मलयजपवनेन —गीत० ७ 3. उत्सुक होना, —ज्वलाम कोपस्थितये स राजा— भर्तृ० १।४, प्रेर० ज्वलयति—ते, ज्वालयति-ते 1 आग लगाना, आग जलाना 2. देदीप्यमान करना, रोशनी करना प्रकाश करना —ककुभां मुखानि सहसोज्ज्वलयन् —शि० ९।४२, स्तबकरुचिरचम्पकलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने —गीत० १२, प्र—, तेजी से जलना प्रज्वलमान होना—रक्षांसि प्रजज्वलु —भट्टि० १४।९८ (प्रेर०)—1. जलाना, आग सुलगाना 2. चमकाना, रोशन करना।

ज्वलन (वि०) [ज्वल्+ल्युट्] 1 दहकता हुआ, चमकता हुआ 2 ज्वलनशील, दहनशील, —न: 1 आग —तमनु ज्वलन मदपिन स्वरयेद्वक्षिणवातवीजनै: —कु० ४।३६, ३२, भग० ११।२९ 2 तीन की संख्या,—नम् जलना, दहकना, चमकना। सम० अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

ज्वलित (वि०) [ज्वल्+क्त] 1. जला हुआ, जलता हुआ, प्रकाशित 2. प्रदीप्त, प्रज्वलित।

ज्वालः [ज्वल्+ण] 1 प्रकाश, दीप्ति 2. मशाल।

ज्वाला [ज्वाल+टाप्] 1 अग्निशिखा, लौ, लपट — रघु० १५।१६ भर्तृ० १।९९। सम० —जिह्वः, —मुखः आग —मुखी लावा निकलने का स्थान, —लिङ्गः शिव का विशेषण।

ज्वालिन् (पुं०) [ज्वल्+णिनि] शिव का विशेषण।

झ

झः [झट्+ड] 1 समय का बिताना 2 झन झन, भनभन या इसी प्रकार की कोई और ध्वनि 3 झंझावात 4 बृहस्पति।

झगझगायति (ना० धा० पर०) चमक उठना, दमकना, जगमगाना, चमचमाना।

झग (टि) ति (अव्य०) [= झटिति] जल्दी से, तुरन्त — साऽप्यप्सरा झगित्यासीत्स्वरूपाकृष्टलोचना — महा०।

झङ्कारः, झङ्कृतम् [झमिति अव्यक्तशब्दस्य कारः कृ+घञ्, कृ+क्त वा] झनझनाहट, भिनभिनाना — (अथ) दिगन्तानानैने मधुपकुलझङ्कारभरितान् — भामि० १।३३, ४।२९, भर्तृ० १।१९, अमरु ४८, पंच० ५।५३।

झङ्कारिणी [झङ्कार+इनि+ङीप्] गङ्गा नदी।

झङ्कृतिः [सम्+कृ+क्तिन्] झनझनाहट या खनखनाहट (धातु के बने आभूषणों की ध्वनि जैसी ध्वनि)।

झञ्झनम् [झञ्झ+ल्युट्] 1 आभूषणों की झनझन या खनखनन 2 झनझनाहट या टनटन की ध्वनि।

झञ्झा [झमिति अव्यक्तशब्दं कृत्वा झटिति वेगेन वहति — झम्+झट्+ड+टाप्] 1 हवा के चलने या वर्षा के होने का शब्द 2 हवा और पानी, तूफान आंधी 3 झनझन की ध्वनि, झनझन। सम० —अनिलः, —मरुत्, —वातः वर्षा के साथ आँधी, तूफान, प्रभञ्जन, अन्धड़ — झञ्झावात सवृष्टिक — अमर०, झञ्झामरुच्छ[illegible] निलविलुलितस्य (रथस्य) — भामि० २।६१ अमरु ८८ मा० ९।१७।

झटिति (अव्य०) [झट्+क्विप्, इ+क्तिन्] जल्दी से तुरन्त — मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रश्यद्दृशो दृश्यताम् — भर्तृ० ३।१०६ [illegible]।

झणझणम्, —णा [झणत्+झणत् द्वित्व, पूर्वपदटिलोप] झनझनाहट।

झणझणायित (वि०) [झणझण+क्यङ्+क्त] टनटन, झनझन टनटन करना — उत्तर० ५।५।

झण(न)त्कारः [झण(न)त्+कृ+घञ्] झनझन, टनटन, (धातु से बने आभूषण आदि का) झुनझुनाना, खनखनाना, — झणत्कारक्रूरस्खलितगुणगुञ्जद्गुरुधनुर्धृतप्रेमा बाहुः — उत्तर० ५।२६, उद्वेजयति हरिरिं परमुद्रा-[illegible]त्कारः — उद्भट।

झम्पः, झम्पा [झम्+पत्+ड स्त्रियां टाप् च] उछाल, कूद, छलांग — महावी० ५।६०।

झम्पाकः, झम्पारुः, झम्पिन् (पुं०) [झम्पेन अकति गच्छति — झम्प+अक्+अण्, झम्प+आ+रा+कु, झम्पा+इनि वा] बन्दर, लङ्गूर।

झरः, झरा, झरी [झॄ+अच् स्त्रियां टाप् ङीष् च] प्रपातिका, झरना निर्झर, नदी — [illegible] निपुणगाह — महावी० ५।१४, भामि० ४।१७।

झर्झरः [झर्झ्+अरच्] 1 एक प्रकार का ढोल 2 कलियुग 3 बेंत की छड़ी 4 झांझ मजीरा [illegible]।

झर्झरिन् (पुं०) [झर्झर+इनि] शिव का विशेषण।

झलज्झला [झलज्झल इत्यव्यक्तशब्दं [illegible]] बूंदों के गिरने का शब्द जैसी हाथी के कान की फड़फड़ाहट।

झला [[illegible] पृषो०] 1 लड़की पुत्री 2 धूप, चिलचिलाती धूप चमक।

झल्लकः [झर्झ+क्विप्, [illegible]+क] 1 मल्लयोद्धा 2 एक नीच जाति — मनु० १०।२२, १२।४५, —की ढोलकी।

झल्लकम्, —की [झल्ल+कन् स्त्रियां ङीप् च] झाँझ, मजीरा।

झल्लकण्ठः [ब० स०] कबूतर।

झल्लरी [झर्झ+अरन्+ङीष् पृषो०] झाँझ, मजीरा।

झल्लिका [झल्ली+कै+क पृषो०] 1 उबटन आदि के लगाने से शरीर से छूटा हुआ मैल 2 प्रकाश, चमक दमक।

झषः [झष्+अच्] 1 मछली — झषाणां मकरश्चास्मि — भग० १०।३१, तु० नी० दिये गये 'झषकेतन' आदि शब्दों से 2 बड़ी मछली, मगरमच्छ 3 मीन राशि 4 गर्मी, ताप, —षम् जंगल, सुनसान जंगल। सम० —अङ्कः, —केतनः, —केतुः, —ध्वजः कामदेव — इयं मुग्धा झषकेतनस्य — पंच० ४।१४, —अशनः सूँस, —उदरी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।

झाङ्कृतम् [झङ्कृत+अण्] 1 झांझन, पायजेब 2 (जल के गिरने की) आवाज, छपछप का शब्द — स्थाने स्थाने मुखरककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम् — उत्तर० २।१४।

झाटः [झट् + घञ्] 1 पर्णशाला, लतामण्डप 2. कान्तार, वृक्षों का झुरमुट।

झिझिः—री (स्त्री०) [झिम् + रट् + अच् + ङीष् पृषो०] एक प्रकार की झाड़ी।

झिरिका [झिरि + कै + क + टाप्] झींगुर।

झिल्लिः (स्त्री०) [झिरिति अव्यक्त शब्द लिशति —झिर् + लिश् + डि] 1 झींगुर 2. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

झिल्लिका [झिल्लि + कन् + टाप्] 1 झींगुर 2 धूप का प्रकाश, चमक, दीप्ति।

झिल्ली (स्त्री०) [झिल्लि + ङीष्] 1. झींगुर 2 दीवे की बत्ती 3 प्रकाश, चमक। सम०—कण्ठः पालतू कबूतर।

झीरुका (स्त्री०) झींगुर।

झुण्ड [झुट् + अच्, पृषो०] 1 वृक्ष, जिस तने का पेड़ 2 झाड़ी, झाड़-झंखाड़।

झोड (पु०) सुपारी का पेड़।

ट

टङ्क् (चुरा० उभ० टङ्कयति ते, टङ्कित) 1 बांधना, कसना, अकल्‍न ढकना उद् 1 खोलना मुरझाना 2 छिद्र करना सुराख करना।

टङ्क,—कम् [टङ्क् + घञ् अच् वा] 1 कुल्हाड़ी कुठार टांकी (पत्थर काटने या गढ़ने की छेनी) टङ्कैमनःशिलगुहेव विदार्यमाणा मृच्छ० १।२० रघु० १२।८० 2 तलवार 3 म्यान 4 कुल्हाड़ी की धार के आकार की चोटी पहाड़ी की ढाल या झुकाव भट्टि० १।८ 5 क्रोध 6 घमंड 7 पैर का पैर लाम।

टङ्कक [टङ्क + कन्] चांदी का सिक्का। सम० —पतिः टकसाल का अध्यक्ष —शाला टकसाल।

टङ्कणम् (नपु०) [टङ्क् + ल्युट्] सोहागा —णः (ब०) 1 घोड़े की एक जाति 2. एक देश विशेष के निवासी। सम०—क्षारः सोहागा।

टङ्कारः [टम् + कृ + अण्] 1 धनुष की डोर खींचने से होने वाली ध्वनि 2 गर्जना, चिल्लाना चीत्कार, चीख।

टङ्कारिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [टङ्कार + इनि] टकार करने वाला फूत्कार या सीत्कार करने वाला, झंकार करने वाला टङ्कारिचापमनु लक्षणाभतक्षणकृत्र-कचितशरम् अस्व० १।

टङ्किका [टङ्क + कन् + टाप् इत्वम्] टांकी कुल्हाड़ी —विद्धशाल० १।१५।

टंगः, —गम् [टङ्क पृषो०] कुदाल, भूपर्ण कुल्हाड़ी।

टङ्कणः,—णम् [= टङ्कण पृषो०] सोहागा।

टङ्गा [टङ्ग + टाप्] टांग, लात, पैर।

टट्टरी [टट्टेति शब्द गति —गा + क + ङीष्] 1 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 2 परिहास, ठट्ठा।

टाङ्कार [टङ्कार + अण्] झंकार टङ्कार।

टिक् (भ्वा० —आ० टेकते) जाना, चलना-फिरना।

टिटि(ट्टि)भ (स्त्री० —भी) [टिटि(ट्टि) इत्यव्यक्तशब्द भणति टिटि(ट्टि) + भण् —ड] टिटिहरी पक्षी, उत्क्षिप्य टिट्टिभः पादावास्ते भङ्गभयाद्दिवः पञ्च० १।३१८ मनु० ५।११, याज्ञ० १।१७२, (टिट्टिभक भी)।

टिप्पणी (णी) [टिप् + क्विप्, टिपा पत्यते ल्युपते टिप् + पत् + अच् + ङीष् पृषो० पात्व वा] भाष्य, टीका। (कभी कभी 'भाष्य' पर लिखी गई 'व्याख्या' के लिए भी उदा० महाभाष्य पर कैयट की व्याख्या या टीका या कैयट के भाष्य पर नागोजी भट्ट की टीका या भाष्य)।

टीक् (भ्वा० आ० टीकते) चलना-फिरना, जाना, सहारा देना—कपमर्षा कनमालमृदुगतदल कोयष्टिकटीकते मा० ९।७ —आ—, जाना, चलना-फिरना इधर-उधर घूमना आटीकसेऽङ्ग करिपोटोपदाङ्गियुपि वाटीभुवि सिनिभुजाभ् अस्व० ५।

टीका [टीक्यते गम्यते, ग्रन्थार्थोऽनया —टीक् + क + टाप्] व्याख्या, भाष्य काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीका तथाप्येष तथैव दुर्गमः।

टुण्टुक (वि०) [टुण्टु इति अव्यक्तशब्द कायति—टुण्टु + कै + क] 1 छोटा थोड़ा 2 दुष्ट, क्रूर, नृशंस 3 कठोर।

ठ

ठः (पु०) (धातु के बने बर्तन के सीढ़ियों में से गिरते हुए ध्वनि जैसी) अनुकरणात्मक ध्वनि —रामाभिषेके मदविह्वलाया कक्षाच्च्युतो हेमघटस्तरुण्या, सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं ठठं ठठठं ठठठं ठठठं सुभा०।

ठक्कुरः (पु०) 1 मूर्ति, देवमूर्ति 2 पूज्य व्यक्ति के नाम के साथ लगने वाली सम्मानसूचक उपाधि—उदा० गोविन्द ठक्कुर (काव्य प्रदीप के रचयिता)।

ठालिनी (स्त्री०) तगड़ी, करधनी।

ड

डक्का: [ड + का + क] एक युगल और विविध जाति, ढोल।

डमर: [ड+अम् ... मरञ्, ...] 1 ... 2 ... की ... से ... [illegible] कारण भाग जाना ... [illegible]

डमरु: [अविज्ञातप्रकल्पशब्दाय ...] एक प्रकार का छोटा ढुगडुगी ... कापालिक साधु ... [illegible] भी माना जाता है।

डम्ब् (चुरा० उभ० ...) 1 फेंकना, भेजना 2 आदेश देना 3 देखना ... , अनुकरण करना, नकल करना, तुलना करना। ... न पुन ... विडम्बितेयम् — ... 2 ईर्ष्या करना, अवज्ञा करना, जिसकी ... विडम्बयन्ति निर्मलसलिलानि रमणानि ... यथा न विडम्बयसे ... 3 धोखा देना — ... प्रार्थयिता विडम्ब्यते — ... 4 कष्ट देना, पीड़ा देना।

डम्बर (वि०) [डम्ब् + अरन्] प्रसिद्ध, विख्यात, — र 1 समवाय, समूह, ढेर — मा० ५।१६ 2 दिखावा, दिम्भ ... 3 सादृश्य, समानता, आभास 4 घमण्ड, अहंकार।

डम्ब् (चुरा० उभ० — डम्बयति — ते) इकट्ठा करना।

डयनम् [डी + ल्युट्] 1 उड़ान 2 डोली, पालकी।

डवित्थ: (पुं०) काठ का बारहसिंहा।

डाकिनी [डाय भयत्रासाय अकति अजति ड + अक + इनि + ङीप्] पिशाचिनी, भुतनी।

डाङ्कृति: (स्त्री०) [डाम् + कृ + क्तिन्] घण्टी के बजने की ध्वनि, टिन्न-टाङ्ग आदि।

डामर (वि०) [डमर + अण्] 1 डरावना, भयानक, भयावह — ... संवत्तं गगन ... मा० ५।३ 2 दंगा करने वाला, हुल्लड़बाज़ 3. सुरत कलह में निकलता-चूकता, अनुकूल (अनोखा, मनोहर, सुन्दर) — रतिविलसिते ललिते कुसुमानि शिखण्डकडामरे (चिकुरे) — गीत० १२, — र: 1 हो-हल्ला, हंगामा, दंगा, फसाद 2 उत्सव के अवसर पर बहुत पहुंच, ... के अवसर पर ... [illegible]।

डालिम: [= दाडिम, पृषो०] अनार।

डाहल: (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासी — कीर्ति ... डाहलोर्वीम् — विक्रमाङ्क० १।१०३।

डिङ्गर: (पुं०) 1 सेवक 2 बदमाश, ठग, धूर्त 3 पतित या नीच आदमी।

डिण्डिम: [डिम् इति ... डिण्डि + मा + क] एक प्रकार का छोटा ढोल (आज० भी) ... [illegible] ... सविडिण्डिमम् ... [illegible]।

डिण्डी ... [illegible] 1 ... [illegible]

डिम [डिम् + क] ... एक ... [illegible]

डिम्ब: [डिम्ब् + अच्] 1 दंगा, फसाद 2 कोलाहल ... 3 अण्डा, अण्डे का छोटा जानवर 4 ... [illegible] ...

डिम्बिका [डिम्ब + ण्वुल् ... टाप्] 1 कामुकी स्त्री 2 बुलबुला।

डिम्भ [डिम्भ् + अच्] 1 छोटा बच्चा 2 कोई छोटा जानवर, छोटे बच्चे ... — ... डिम्भ ... गर्भाविर्भावि ... [illegible]।

डिम्भक (स्त्री० — भिका) [डिम्भ् + ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्वं च] 1 छोटा बच्चा 2 जानवर का छोटा बच्चा।

डी (भ्वा० दिवा० आ० — डयते, डीयते, डीन) 1 उड़ना, हवा में ... 2 जाना, उद् —, हवा में उड़ना, ऊपर उड़ना — सर्वैरुड्डीयताम् हि० १ (हमें) उड्डायन ... विकल्पास्त्वादि ... नै० १।५, प्र —, ऊपर उड़ना — प्रडीनैरिव ... ५।१५, सम् —, ऊपर उड़ जाना — ... बलाकया ... २३।

डीन (भू० क० कृ०) [डी + क्त] उड़ा हुआ, — नम् पक्षी की उड़ान पक्षियों की उड़ान १०१ प्रकार की बताई गई है। किसी भी विशेष उड़ान का प्रकट करने के लिए डीन से पूर्व उपयुक्त उपसर्ग लगा दिया जाता है — उदा० अवडीनम्, उड्डीनम्, प्रडीनम्, अभिडीनम्, विडीनम्, परिडीनम्, पराडीनम् आदि।

डुण्डुभ: [डुण्डु + भा + क] सांपों का एक प्रकार जिसमें ज़हर नहीं होता (निर्विषा डुण्डुभा स्मृता:)।

डुलि: (स्त्री०) [= दुलि, पृषो०] एक छोटी कछवी।

डोम (पुं०) अत्यन्त नीच जाति का पुरुष।

ढ

ढक्का [ढक् इति शब्देन कायति [illegible] + टाप्] [illegible]
[illegible]

ढामरा (स्त्री०) हंसनी।

ढालम् (नपुं०) ढाल।

ढालिन् (पुं०) [ढाल + इनि] ढाल रखने वाला योद्धा।

ढुण्ढिः [ढुण्ढ् + इन्] गणपति का विशेषण।

ढोलः (पुं० [illegible]) मृदङ्ग, ढोल।

ढौक् (भ्वा० आ० ढौकते ढौकित) जाना, पहुँचना, [illegible] [illegible] अर्चिष्मती [illegible] — भट्टि० [illegible] [illegible] ढौकयति — 1 निकट लाना, पहुँचाना [illegible] [illegible] — भट्टि० १७।१०३ 2 उपस्थित करना, प्रस्तुत करना।

ढौकनम् [ढौक् + ल्युट्] 1 भेंट 2 उपहार रिश्वत।

ण

[illegible] कोई शब्द नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया जाता है जिससे कि यह [illegible] नहीं [illegible], यदि [illegible] अथवा उपसर्ग [illegible] 'ण' में परिवर्तित हो जाय।

त

तक्षक (वि०) [तक्ष् + इलच्] आत्मनिर्भर, स्वावलंबी।

तक्रम् [तञ्च् + रक्] छाछ, मट्ठा। सम० — [illegible] का मट्ठा, आरम्भ [illegible] मक्खन।

तक्ष् (भ्वा० स्वा० पर० — तक्षति तक्ष्णोति तष्ट) चीरना, काटना, छीलना, छेनी से काटना, टुकड़े-टुकड़े करना, तक्षण करना — आत्मानं तक्षति ह्येष वनं परशुना यथा — महा०, [illegible] तक्ष्णते [illegible] काष्ठे काष्ठं [illegible] — भट्टि० 2 गढ़ना, बनाना, निर्माण करना (लकड़ी में से) 3 बनाना, रचना करना 4 घायल करना, चोट पहुँचाना 5 आविष्कार करना, मन में बनाना, - निस्, — टुकड़े-टुकड़े करना, सम्, छीलना, छेनी से काटना, चीरना 2 घायल करना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना — [illegible] शुकीडाभ्यामन्योन्यं समतक्षताम् — महा०, वराह० ४२।११।

तक्षकः [तक्ष् + ण्वुल्] 1 बढ़ई, लकड़ी का काम करने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का धंधा करने के कारण) 2 सूत्रधार 3 देवताओं का वास्तुकार, विश्वकर्मा 4 पाताल के मुख्य नागों अर्थात् सर्पों में से एक, कद्रू और कश्यप का पुत्र (आस्तीक ऋषि के बीच में पड़ने से जनमेजय के सर्पयज्ञ में जल जाने से बचा हुआ इसी सर्पयज्ञ में अनेक सर्प जल कर नष्ट हो गये थे)

तक्षणम् [तक्ष् + ल्युट्] छीलना, काटना [illegible] च तक्षणम् — मनु० ५।११५ याज्ञ० १।१८५।

तक्षन् (पुं०) [तक्ष् + कनिन्] बढ़ई, लकड़ी काटने वाला (जाति से अथवा बढ़ई का काम करने के कारण) अतक्षा तक्षा — काव्य०, जो जाति से तक्षा नहीं है वह तक्षा कहलाता है जब कि वह तक्षा की भांति तक्षा के काम को करने लगता है, बढ़ई — शि० १२।२५ 2 देवताओं का शिल्पी — विश्वकर्मा।

तगरः [तस्य क्रोडस्य गरः, ष० त०] एक प्रकार का पौधा।

तङ्क् (भ्वा० पर० — तङ्कति, तङ्कित) 1. सहन करना, बर्दाश्त करना 2 हँसना 3 कष्टग्रस्त रहना।

तङ्कः [तङ्क् + घञ्, अच् वा] 1. कष्टमय जीवन, आपद्-ग्रस्त जीवन 2. किसी प्रिय वस्तु के वियोग से उत्पन्न शोक 3 भय, डर 4 [illegible] की छेनी।

तङ्कनम् [तङ्क् + ल्युट्] कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जिंदगी।

तङ्ग् (भ्वा० पर० — तङ्गति, तङ्गित) 1 [illegible], चलना-फिरना 2. हि[illegible]ना-जुलाना, कष्ट देना 3 लड़खड़ाना।

तञ्च् (रुधा० पर० — तनक्ति, तञ्चित) सिकोड़ना, सिकुड़ना — [illegible] व्योम विस्तृतम् — भट्टि० ६।३८।

तट [तट् + अच्] 1 ढाल, उतार, कगार 2 आकाश या क्षितिज, — टः, — टा, — टी, — टम् 1 किनारा, कूल,

उतार, ढाल —शीर्णं शैलतटात्पततु —भर्तृ० २।३९, श्रोतुमभिलाषतटी —३।४५, सिन्धोस्तटावोघ इव प्रवृद्ध —कु० ३।६, रुद्धारणात्यमिवभास्तटीस्थम् —शि० ४।१८ 2. शरीर के अवयव (जिनमें स्वभावतः कुछ ढलान है) —स्तनकोमलतटीपरिरम्भसुखम —गीत० १ मौ कुच सखि चन्दन स्तनतटे—शृंगार० ७, इसी प्रकार जघनतट, कटितट, श्रोणीतट, कुचतट, कण्ठतट ललाटतट आदि, इसू भेत। सम०—आघातः सींगो की टक्कर से मिट्टी उखाड़ना, तट या ढलान पर सिर से टक्कर मारना अभ्यस्यन्ति तटाघातं निर्जितैरावतं गजा —कु० २।५०, —स्थ (वि०) (शा०) किनारे पर विद्यमान कूलस्थित 2 (आल०) अलग खड़ा हुआ, अलग-अलग, उदासीन, तटस्थ निष्क्रिय —तटस्थ स्वानर्थान् घटयति मौनं च भजते —मा० १।१४, तटस्थ नैराश्यात् —उत्तर० ३।१३, मया तटस्थस्त्वमुपद्रुतोऽसि —नै० ३।५५, (यहाँ 'तटस्थ' का अर्थ 'कूलस्थित' भी है)।

तटाकः, —कम् [तट् + आकन्] तालाब (जो कमल तथा अन्य जलीय पौधों के लिए पर्याप्त गहरा हो) दे० तडाग।

तटिनी [तटमस्त्यस्या इनि ङीप्] नदी—[illegible] स्तटिनीरोधसि वसन् भर्तृ० ३।[illegible] भामि० [illegible]

तड् (चुरा० उभ० ताडयति—ते, ताडित) 1 पीटना मारना, टकराना —[illegible] —नृत्यभूमेर्मुहुस्ताडितम् —[illegible] २।५, (नी) ताडितस्य तैर्यथा —[illegible] रघु० ३।६१, कु० ५।२८, भर्तृ० १। ५० 2 पीटना मारना, दण्डस्वरूप पीटना, आघात पहुँचाना —ताडयेन्नत्वचयर्णि —[illegible] ताडयेत् —याज्ञ० ११।१२, न ताडयेत्तृणेनापि मनु० ४, १६९, पादेन यस्ताड्यते—अमरु ५२ 3 प्रहार करना (ढोल आदि का) पीटना —ताड्यमानासु भेरीषु —महा० अताडयन् मृदङ्गांश्च —भट्टि० १३।३ वेणी० १।[illegible] 4 बजाना, (वीणा के तारों का) आहनन करना —श्रोणीविलम्बीनीरिव ताड्यमाना —कु० १।४७ 5 चमकना 6 बोलना।

तडगः दे० तडाग।

तडागः [तड् + आग] तालाब, गहरा जोहड़, जलाशय —स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् —गीत० ११, मनु० ४।२०३, याज्ञ० २।२३७।

तडाघातः दे० 'तटाघात' (उच्चैः करिकराणैर्मे तडाघात विमुञ्चितः प्रकर)।

तडित् (स्त्री०) [ताडयति अभ्रम् - तड् + इति] बिजली, घन घनान्ते तडितां गुणैरिव —शि० १।७, मेघ० ७९, रघु० ६।६५। सम० —गर्भः बादल, —लता बिजली की कौंध जिसमें लहरें हों, —लेखा बिजली की रेखा।

तडित्वत् (वि०) [तडित् + मतुप्, वत्वम्] बिजली वाला अवरोहति शैलाग्रं तडित्वानिव तोयदः —विक्रम० १।१४, कि० ५।४, (पुं०) बादल —शि० १।१२।

तडिन्मय (वि०) [तडित् + मयट्] बिजली से युक्त —कु० ५।२५।

तण्ड् (भ्वा० आ० तण्डते, तण्डित) प्रहार करना।

तण्डकः [तण्ड् + ण्वुल्] खञ्जन पक्षी।

तण्डुलः [तण्ड् + उलच्] कूटने, छड़ने और पिछोड़ने के पश्चात् प्राप्त अन्न (विशेषतः चावल) [धान्य, धान्य, तण्डुल और अन्न यह चार प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं —सस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तं सतुषं धान्यमुच्यते, निस्तुषस्तण्डुलः प्रोक्तः स्विन्नमन्नमुदाहृतम्]

तत (भू० क० कृ०) [तन् + क्त] फैलाया हुआ, विस्तारित, घेरा हुआ —(दे० तन) —स तपो तमोभिरभिगम्य —शि० ९।२४, ६।५० कि० ५।११ —तम् तारों वाला बाजा।

ततस् (तत्) [अव्य० तद् + तसिल्] 1 (उस स्थान या व्यक्ति) से, वहाँ से —[illegible] हृदयं सिवर्णित —[illegible] हृदयम् —श० ३।१, मा० ११।१०, मनु० ६।३ १[illegible] 2 वहाँ —[illegible] 3 तब, उसके बाद —तत कान्यचादिवसागमः —का० १७०, अमरु १६, शि० १।[illegible] मनु० २।९३, ७।५९, 4 इसलिए, फलतः, इस कारण 5 तब, उस अवस्था में तो ('यदि' का सह सम्बन्धी) यदि गृहीतमिदं ततः किम् —का० १४०, असमाप्य यदि स्वयं प्रमोचनं —रघु० ३।६५ 6 उससे परे, उसके बाद, और आगे, इसके अतिरिक्त ततः परतो निर्गन्तुमरण्यम् —का० १०१ 7 उससे, उसकी अपेक्षा, उसके अतिरिक्त —[illegible] भगवद्गीता —भग० ६।२२, ३६ 8 कई बार 'तत्' शब्द के अपा० के रूप की भाँति प्रयुक्त होता है —यथा तस्मात्, तस्याः, ततोऽपि नापि दृश्यते —सिद्धा०। ततः ततः (क) जहाँ—वहाँ —यतः कृष्णस्ततः धर्मो यतः कृष्णस्ततो जयः —महा०, मनु० ७।१८८ (ख) क्योंकि—इसलिए, यतो यतः —ततस्ततः जहाँ कहीं—वहीं यतो यतः षट्चरणोऽभिवर्तते ततस्ततः प्रेरितवामलोचना —श० १।२३, ततः किम् तो फिर क्या, इससे क्या लाभ, क्या फायदा—प्राप्ताः श्रियः सकलकामदुघास्ततः किम् —भर्तृ० ३।७३, ७४, मा० ४।२, ततस्ततः (क) यहाँ-वहाँ, इधर-उधर—ततो दिव्यानि माल्यानि प्रादुरासंस्ततस्ततः —महा० (ख) 'फिर क्या' 'इसके आगे' 'अच्छा तो फिर' (नाटकों में प्रयुक्त) ततः प्रभृति तब से लेकर ('यत प्रभृति' का सह सम्बन्धी) —तृष्णा ततः प्रभृति मे द्विगुणत्वमेति —अमरु ९८, मनु० ९।६८।

ततस्त्य (वि०) [ततस् + त्यप्] वहाँ से आने वाला, वहाँ से चलने वाला —शि० ११२७।

ततिः (सर्व० वि०) (नित्य बहुवचनांत, कर्तृ० कर्म० तति) [तद्+डति] इतने अधिक, उदा०—तति पुरुषाः सन्ति —आदि,—**तिः** (स्त्री०—तन्+क्तिन्) 1 श्रेणी, पंक्ति, रेखा—विरचय्य कियता बलाहकततिर्भिर्मुनस्थाकृति पताकेः—मा० २।५, बलाहकततीः शि० ४।५४, १।५ 2. गण, दल, समूह 3. यज्ञकृत्य।

तत्त्वम् [तन्+क्विप्, तुक्, तस्य० भावः त्व] (कभी कभी 'तत्वम्' भी लिखा जाता है) 1 वास्तविक स्थिति या दशा 2. तथ्य,—वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती —श० १।२४ 3. यथार्थ या मूल प्रकृति—संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्—भग० १८।१, ३।२८ मनु० १।३, ३।९६, ५।४२ 4 मानव आत्मा की वास्तविक प्रकृति ... परमात्मा के समनुरूप विराट् सृष्टि या भौतिक संसार 5 प्रथम या यथार्थ सिद्धान्त 6 मूलतत्त्व या प्रकृति 7 मन 8 सूर्य 9 वाद्य का भेद विशेष, विलम्बित 10 एक प्रकार का नृत्य। सम०—**अभियोगः** असन्दिग्ध दोषारोप या घोषणा, —**अर्थः** सचाई, वास्तविकता, यथार्थता वास्तविक प्रकृति, —**ज्ञ**, —**विद्** (वि०) दार्शनिक, ब्रह्मज्ञान का वेत्ता, —**न्यासः** विष्णु की तत्रोक्त पूजा में विहित एक अंगन्यास (इसमें शरीर के विभिन्न अंगों पर गुप्त अक्षर या अन्य चिह्न बनाने के साथ कुछ प्रार्थनाएँ बोली जाती हैं)

तत्त्वतः (अव्य०) [तत्त्व+तस्] वस्तुतः, सचमुच, ठीक ठीक—तत्त्वत एनामुपलप्स्ये—श० १, मनु० ७।१०।

तत्र (अव्य०) [तद्+त्रल्] 1 उस स्थान पर, वहाँ, सामने, उस ओर 2 उस अवसर पर, उन परिस्थितियों में, तब, उस अवस्था में 3 उसके लिए, इसमें—निरानय यमनदोषाः प्रजास्तत्र हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम् रघु० १।६३ 4 प्राय 'तद्' के अधि० के रूप के अर्थ में प्रयुक्त—मनु० २।११२, ३।६०, ८।१८६, याज्ञ० १।२६३, **तत्रापि** 'तब भी' 'तो भी' (यद्यपि का सहसंबंधी) **तत्र तत्र** 'बहुत से स्थानों पर' या 'विभिन्न विषयों में' 'यहाँ-वहाँ' 'प्रत्येक स्थान पर'—अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात् तत्र तत्र विपश्चितः मनु० ७।८१। सम०—**भवत्** (वि०) (स्त्री०—ती) श्रीमान्, महोदय, श्रद्धेय, आदरणीय, महानुभाव, (सम्मानपूर्ण उपाधि जो नाटकों में उन व्यक्तियों को दी जाती है जो वक्ता के समीप उपस्थित न हों)—पूज्ये तत्रभवानत्रभवाश्च भगवानपि; आदिष्टोऽस्मि तत्रभवता काश्यपेन श० ४, तत्रभवान् काश्यपः श० १, आदि, —**स्थ** (वि०) उस स्थान पर खड़ा हुआ या वर्तमान, उस स्थान से संबद्ध।

तत्रत्य (वि०) [तत्र+त्यप्] वहाँ उत्पन्न या जन्मा हुआ, उस स्थान से संबद्ध।

तथा (अव्य०) [तद् प्रकारे थाल् विभक्तित्वात्] 1 वैसे, इस प्रकार, उस रीति से—तथा मां वञ्चयित्वा—श० ५, भूतस्तथा करोति—विक्रम० १ 2. और भी, इस प्रकार भी, भी—अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा—पंच० १।३१५, रघु० ३।२१ 3. सच, ठीक इसी प्रकार, सचमुच वैसा ही—यदात्थ राजन्यकुमार तत्तथा—रघु० ३।४८, मनु० १।४२ 4. (अनुरोध के रूप में) ऐसा निश्चित जैसा कि ('यथा' को पहले रख कर) दे० यथा ('यथा' के सहसंबंधी के रूप में 'तथा' के कुछ अर्थों के लिए 'यथा' के नी० दे०) **तथापि** (प्राय 'यद्यपि' का सहसंबंधी) 'तो भी' 'तब भी' 'फिर भी' 'इस पर भी'—प्रथितं दुष्यन्तस्य चरितं तथापीदं न लक्षये श० ५, वरं महत्याञ्चियते पिपासया तथापि नान्यस्य करोम्युपासनाम्—चात० २।६, वपुःप्रकर्षादिजयद्गुरुं रघुस्तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत—रघु० ३।३४, ६२, **तथेति** 'सहमति', 'प्रतिज्ञा' को प्रकट करना है,—तथेति शेषामिव भर्तुराज्ञामादाय मूर्ध्ना मदनः प्रतस्थे—कु० ३।२२, रघु० १।९२, ३।६७, तथेति निश्च, त (नाटकों में) **तथैव** 'उसी प्रकार' 'ठीक उसी भाँति' **तथैव च** 'उसी ढंग से' **तथाच** 'और इसी प्रकार', 'इसी ढंग से', 'इसी प्रकार कहा गया है कि' **तथाहि** 'इसी लिए' उदाहरणार्थ', इसी कारण (यह कहा गया है कि) न तथा विदधे नून महाभूतसमाधिना, तथाहि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणाः—रघु० १।२९, १।३१। सम०—**कृत** (वि०) इस प्रकार किया ..., —**गत** (वि०) 1 ऐसी स्थिति या दशा में होने वाला—तथागतायां परिहासपूर्वम् रघु० ६।८२ 2 इस गुण का, (**तः**) 1. बुद्ध —काले मित वाक्यमुदारसत्त्व तथागतस्येव जनः सुचेताः शि० २०।८१ 2. जिन, —**गुण** (वि०) 1 ऐसे गुणों से युक्त या सपन्न 2. ऐसी अवस्था को प्राप्त, ऐसी अवस्था में—तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयाम् वेणी० १।११, —**राजः** बुद्ध का विशेषण, —**रूप**, —**रूपिन्** (वि०) इस आकार प्रकार का, इस प्रकार दिखाई देने वाला,—**विध** (वि०) इस प्रकार का, ऐसे गुणों का, इस स्वभाव का—तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः—कु० ५।८२, रघु० ३।४,—**विधम्** (अव्य०) 1 इस प्रकार, इस रीति से 2. इसी भाँति, समान रूप से।

तथात्वम् [तथा+त्व] 1 ऐसी अवस्था, ऐसा होना 2 वस्तुस्थिति या मूल बात, सचाई।

तथ्य (वि०) [तथा+यत्] यथार्थ, वास्तविक, असली —प्रियमपि तथ्यमाह प्रियंवदा—श० १,—**थ्यम्** सचाई, वास्तविकता—सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन कु० ३।६३, मनु० ८।२७४।

तद् (सर्व० वि०) [कर्तृ० ए० व०—स (पु०), सा (स्त्री०), तत् (नपुं०)] 1 वह, अविद्यमान वस्तु का उल्लेख (तदिति परोक्षे विजानीयात्) 2 वह (प्राय 'यद्' का सहसम्बन्धी) —यस्य बुद्धिर्बलं तस्य—पंच० १ 3 वह अर्थात् प्रख्यात—सा रम्या नगरी महान्स नृपतिः सामन्तचक्रं च तत्—भर्तृ० ३।३७ कु० ५।७१ 4 वह (किसी देखे हुए या अनुभूतार्थ का उल्लेख) उत्कम्पिनी भयपरिस्खलितांशुकान्ता ते लोचने प्रतिदिशं विधुरे क्षिपन्ती—काव्य० ७, भामि० २।५ 5 वही, समरूप, वह, बिल्कुल वही, (प्राय 'एव' के साथ) —तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव नाम—भर्तृ० २।४०, कभी कभी 'तद्' के रूप उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होते हैं, साथ ही बल देने के लिए निर्देशक तथा सम्बन्धबोधक सर्वनामों के साथ भी (इसका अनुवाद प्राय 'इसलिए' 'तो' करते हैं)—सोऽहमिज्याविशुद्धात्मा—रघु० १।६८, (मैं वही व्यक्ति, अत मैं, मैं अमुक व्यक्ति), स त्वं निवर्तस्व विहाय लज्जाम् २।४०, 'अत तुम्हें वापिस आ जाना चाहिए', जब 'तद्' की आवृत्ति की जाय तो इसका अर्थ होता है "कई' 'भिन्न २'—तेषु तेषु स्थानेषु—का० ३६९, भग० ७।२०, मा० १।३६, तेन—तद् का करण० रूप, क्रिया विशेषण केवल के साथ 'इसलिए' 'इस कारण' 'इस विषय में' 'इसी कारण' अर्थों को प्रकट करता है,—तेन हि यदि ऐसा है तो फिर (अव्य०) 1 वहाँ, उधर 2 तब, उस अवस्था में उस समय 3 इसी कारण, इसीलिए, फलस्वरूप—तदेहि विमर्दक्षमां भूमिमवतराव—उत्तर० ५, मेघ० ७।११०, रघु० ३।४६ 4 तब ('यदि' का सहसम्बन्धी) यद्यपि —यदि महत्कुतूहलं तत्कथयामि—का० १३६, भग० १।४५। सम०—अनन्तरम् (अव्य०) उसके पश्चात् तुरन्त, तो फिर,—अनु (अव्य०) उसके पश्चात्, बाद में—सन्देशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम् मेघ० १३, रघु० १६।८७, मा० ९।२६,—अन्त (वि०) उसी में नष्ट होने वाला, इस प्रकार समाप्त होने वाला—अर्थ,—अर्थीय (वि०) 1 उसके निमित्त अभिप्रेत 2 उस अर्थ से युक्त, -अर्ह (वि०) उस योग्यता से युक्त,—अवधि (अव्य०) 1 वहाँ तक, उस समय तक, तब तक तदवधि कुशली पुराणशास्त्रस्मृति शतचारुविचारजो विवेक —भामि० २।१४ 2 उस समय से लेकर, तब से—श्वासो दीर्घस्तदवधि मुखे पाण्डिमा—भामि० २।६९, —एकचित्त (वि०) उस पर ही मन को स्थिर करने वाला —काल. विद्यमान क्षण, वर्तमान समय, °धी (वि०) समाहित, प्रत्युत्पन्नमति - कालम् (अव्य०) अविलम्ब, तुरन्त, —क्षण 1 इस क्षण, फिलहाल 2 विद्यमान या वर्तमान समय रघु० १।५१, क्षणम्, क्षणात् (अव्य०) तुरन्त, अत्यकाल, फौरन—रघु० ३।१४, शि० ९।५, याज्ञ० २।१४, अमरु ८३, क्रिया (वि०) बिना मजदूरी के काम करने वाला —गत (वि०) उस ओर गया हुआ या निर्देशित, तुला हुआ, उसका भक्त, तत्सम्बन्धी, —गुणः एक अलङ्कार (अलं०) स्वमुत्सृज्य गुणं योगादत्युज्ज्वल-गुणस्य यत्, वस्तु तद्गुणतामेति भण्यते स तु तद्गुण —काव्य० १०, दे० चन्द्रा० ५।१४१, -ज (वि०) व्यवधानशून्य, तात्कालिक,—ज्ञः जानने वाला, प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान्, दार्शनिक, तृतीय (वि०) उसी कार्य का तीसरी बार करने वाला,—धन (वि०) कंजूस, दरिद्र, -पर (वि०) 1 उसका अनुसरण करने वाला पश्चवर्ती घटिया 2 उसी को सर्वोत्तम पदार्थ मानने वाला बिल्कुल तुला हुआ नितान्त संलग्न, उत्सुकतापूर्वक व्यस्त (प्राय समास में प्रयोग) सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत् रघु० २।५, १।६६ मेघ० १०, याज्ञ० १।८३ मनु० ३।२६२, —परायण (वि०) पूर्णत संलग्न या आसक्त —पुरुष 1 मूल पुरुष, परमात्मा 2 एक समास का नाम जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है या जिसका उत्तरपद पूर्वपद द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया जाता है, शब्द की मूल भावना भी स्थिर रहती है यथा, तत्पुरुष, तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहि—उद्भट,—पूर्व (वि०) पहली बार घटने वाला, या होने वाला, —अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया कु० ५।१०, ७।३०, रघु० २।४२, १४।३८ 2 पूर्व का, पहला, -प्रथम (वि०) पहली बार ही उस कार्य को करने वाला, —बल एक प्रकार का बाण, —भाव उसके अनुरूप, —मात्रम् 1 केवल वह सिर्फ मामूली, अत्यन्त तुच्छ मात्रा युक्त 2 (दर्शन०) सूक्ष्म तथा मूलतत्त्व (उदा० शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध) - वाचक (वि०) उसी को संकेतित या प्रकट करने वाला, —विद् (वि०) 1 उसको जानने वाला 2 सचाई को जानने वाला, - विध (वि०) उस प्रकार का, रघु० २।२२, कु० ५।७३, मनु० २।११२,- हित (वि०) उसके लिए अच्छा (त) एक प्रत्यय जो प्रातिपदिक शब्दों के आगे व्युत्पन्न शब्द बनाने के लिए लगाया जाता है।

तदा (अव्य०) [तस्मिन् काले तद्+दा] 1 तब, उस समय 2 फिर, उस मामले में (यदा का सहसंबंधी) भग० २।५२, ५३, मेघ० १।५२, ५४५६, यदा यदा तदा तदा 'जब कभी' तदा प्रभृति तब से, उस समय से लेकर कु० १।५३। सम० —मुख (वि०) आरब्ध उपक्रान्त या शुरू किया हुआ, (खम्) आरम्भ।

तदात्वम् [तदा + त्व] मौजूदा समय, वर्तमान काल।

तदानीम् (अव्य०) [तद् + दानीम्] तब, उस समय।

तदानीन्तन (वि०) [तदानीम्+ट्युल्, तुट्] उस समय से संबंध रखने वाला, उस समय का समकालीन, -एषो-ऽस्मि कार्यवशादायोध्यिकस्तदानीन्तनश्च संवृत्तः—उत्तर० १ ।

तदीय (वि०) [तद्+छ] उससे संबंध रखने वाला, उसका, उसकी, उनके, उनकी—रघु० १।८१, २।२८, ३।८, २५ ।

तद्वत् (वि०) [तद्+मतुप्] उससे युक्त, उसको रखने वाला, जैसा कि 'तद्वानपोहः' में—काव्य० २. (अव्य०) 1. उसके समान, उस रीति से 2. समान रूप से, समान रीति से, इसलिए साथ ही ।

तन् I (तना० उभ०—तनोति, तनुते, तत—कर्म० वा० —तन्यते, तायते, सन्नन्त—तितंसति, तितांसति, तितनिषति) 1. फैलाना, विस्तार करना, लंबा करना, तानना —बाहू, सकरयोस्ततयो —अमर० 2. फैलाना, बिछाना, पसारना -भट्टि० २।३०, १०।३२, १५।९१ 3. ढकना, भरना—स तमीं तमोभिरभिगम्य तताम् —शि० ९।२३, कि० ५।११ 4. उत्पन्न करना, पैदा करना, रूप देना, देना, भेंट देना, प्रदान करना, त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् —गीत० ४, पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः—रघु० ३।२५, ७।७, यो दुर्जनं वशयितुं तनुते मनीषां—भामि० १।९५, १० 5. अनुष्ठान करना, पूरा करना, संपन्न करना—(यज्ञादिक) – इति क्षितीशो नवतिं नवाधिकां महाक्रतूनां महनीयशासनः, समारुरुक्षुर्दिवमायुषः क्षये ततान सोपानपरंपरामिव—रघु० ३।६९, मनु० ४।२०५ 6. रचना, करना, (ग्रन्थादिक) लिखना, यथा—नाम्नां मालां तनोम्यहं, या—तनुते टीकाम् 7. फैलाना, झुकाना (धनुष आदि का) 8. कातना, बुनना 9. प्रचार करना, प्रचारित होना 10. चालू रहना, टिका रहना । सम०—अव—,1. ढकना, फैलाना 2. उतरना आ—,विस्तृत करना, बिछाना, ढकना, ऊपर फैलाना- कि० १६।१५ 2 फैलाना, पसारना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, बनाना —कि० ५।१८ 4. (धनुष या धनुष की डोरी) तानना —मौर्वीं धनुषि चातता - रघु० १।१९, ११।४५, उद्—,फैलाना प्र ,1. फैलाना, पसारना व्यातस्थे दिवसैर्महांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वन्ति न – भर्तृ० ३।२४ 2. ढकना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना दिखावा करना, प्रवर्तन करना, प्रस्तुत करना—तद्दूरीकृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते—शि० २।३० 5. अनुष्ठान करना (यज्ञादिक का), वि—,1 फैलाना, बिछाना —स्फुरितविततजिह्व मृच्छ० ९।१२ 2. ढकना, भरना –प्रस्वेदबिन्दुविततं वदनं प्रियायाः चौर० ९, यो वितत्य स्थितः खम्—मेघ० ५८ 3 रूप देना, बनाना वेणीभूतप्रतनुसलिलामसौ तोरणाबद्धमालाम्—रघु० ११४१ 4. (धनुष का) तानना—धनुर्विततश्च किरतोः शरान् —उत्तर० ६।१, भट्टि० ३।४७ 5. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, देना, प्रदान करना 6. (ग्रंथ का) रचना या लिखना—विरचयन्त्यमोघी भावदीपो वितन्यते 7. करना, अनुष्ठान करना (यज्ञादिक या किसी संस्कार का) कु० २।४६ 8. दिखावा करना, प्रस्तुत करना, सम्—,चालू करना, ii (भ्वा० पर० —चुरा० उभ०—तनति, तानयति—ते) 1. भरोसा करना, विश्वास करना, विश्वास रखना 2. सहायता करना, हाथ बँटाना, मदद करना 3. पीड़ित करना, रोगग्रस्त करना 4. ध्वनियुक्त होना ।

तनयः [तनोति विस्तारयति कुलम्—तन्+कयन्] 1. पुत्र 2. सन्तान—लड़का या पुत्री, गिरि°, कलिन्द° आदि ।

तनिमन् (पुं०) [तनु+इमनिच्] पतलापन, सुकुमारता, सूक्ष्मता ।

तनु (वि०) (स्त्री० नु, न्वी) [तन्+उ] 1. पतला, दुबला, कृश 2. सुकुमार, नाजुक, मृदु (अङ्गादिक, सौन्दर्य के चिह्नस्वरूप—रघु० ६।३२, कु० तन्वङ्गी 3. बढ़िया कोमल (वस्त्रादिक) ऋतु० १।७ 4. छोटा, थोड़ा, नन्हा, कम, क्षुद्र, सीमित—तनुत्यागिन्यपोऽपि सन्—रघु० १।९, ३।२, तनुत्यागो बहुग्रहः—हि० २।९१, थोड़ा देने वाला 5. तुच्छ, महत्त्वहीन, छोटा —अमर २७ 6. (नदी की भांति) उथला हुआ, (स्त्री०) 1. शरीर, व्यक्ति 2. (बाहरी) रूप, प्रकटीकरण—प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः श० १।१ मालवि० १।१, मेघ० १९ 3 प्रकृति, किसी वस्तु का रूप और चरित्र 4. खाल । सम०—अङ्ग (वि०) सुकुमार अङ्ग वाला, कोमलाङ्गी (—गी) कोमलाङ्गी स्त्री,—रूहः रोमकूप,—छदः कवच, रघु० ९।५१, १२।८६,—जः पुत्र,—जा पुत्री,—त्यज (वि०) 1. अपने जीवन को जोखिम में डालने वाला 2. अपने व्यक्तित्व को छोड़ने वाला, मरने वाला, —त्याग (वि०) थोड़ा व्यय करने वाला, कम देने वाला, दरिद्र,- त्र,—त्राणम् कवच,—भवः पुत्र । व पुत्री—भस्त्रा—नाक—भृत् (पुं०) शरीरधारी जीवधारी जन्तु, विशेष कर मनुष्य—कश्च स्थितं न भूता तनुभिरसत: किम् भर्तृ० ३।७३,—मध्य (वि०) पतली कमर, कमर वाला,—रसः पसीना,— रुह्, —रुहम् शरीर का बाल,—वारम् कवच,—वा: पुत्री,—वृत्ता-त्रिका छोटी स्त्री, या दस वर्ष का लड़का,—ह्रदः, पसीना,—ह्रदः गुदा, मलद्वार ।

तनुत (वि०) [तन्+उतच्] फैलाया हुआ, विस्तारित ।

तनुस् (नपुं०) [तन्+उसि] शरीर ।

तनू (स्त्री०) [तन्+ऊ] शरीर । सम०—उद्भव,—जः पुत्र,—उद्भवा- या पुत्री,—नपात् घी,—नपात् (पुं०)

माघ—तनूनपाद्धूमवितानमाधिजै —शि० १।६२, अथ-कृतस्यापि तनूनपातो म्लाना शिखा याति कदाचिदेव —हि० २।६७,—रुहम् 1 शरीर पर उगे हुए बाल (पुं० भी) 2 पक्षी के पंख वायु (हुः) पुत्र ।

तन्तिः (स्त्री०) [तन्+क्तिच्] 1 रस्सी डोर, सूत्र 2. पंक्ति, श्रेणी । सम० —पालः 1 गोरक्षक 2 विराट के घर रहते समय का सहदेव का नाम ।

तन्तुः [तन्+तुन्] 1 धागा, रस्सी तार डोर, सूत्र—छिन्ना सन्ततितन्तु—मा० ५।१० मेघ० ७० 2 मकड़ी का जाला—रघु० १६।२० 3 रेशा—बिसतन्तुगुणस्य कारितम्—कु० ४।२९ 4 सन्तान बच्चा, सन्तति 5 मगरमच्छ 6 परमात्मा । सम० —काष्ठम् जुलाहों का एक औजार जिससे ताना साफ किया जाता है —कीटः रेशम का कीड़ा,—नागः बड़ा मगरमच्छ, —निर्यासः ताड़ का वृक्ष,—नाभः मकड़ी —भः 1 सरसों 2. बछड़ा,—वाद्यम् ऐसा बाजा जिसमें तार कसे हुए हों,—वानम् बुनना,—वायः 1 जुलाहा 2. करघा 3. बुनाई,—विग्रहा केले का वृक्ष,—शाला जुलाहे का कारखाना,—संतत (वि०) बुना हुआ, सिला हुआ —सारः सुपारी का पेड़ ।

तन्तुकः [तन्तु+कन्] सरसों के दाने ।

तन्तुनः,—नः [तन्+तुनन्, पक्षे नि० णत्वम्] घड़ियाल ।

तन्तुरम्,—लम् [तन्तु+र, लच् वा] मृणाल, कमल की नाल ।

तन्त्र् (चुरा० उभ०—तन्त्रयति—ते नन्त्रित) 1 हुकूमत करना, नियन्त्रण रखना, प्रशासन करना—प्रजा प्रजा स्वा इव तन्त्रयित्वा—श० ५।५ 2 (आ०) पालन पोषण करना, निर्वाह करना ।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1 करघा 2 धागा 3 ताना 4 वंशज 5 अविच्छिन्न वंश परम्परा 6 कर्मकाण्ड पद्धति, रूप-रेखा, संस्कार —कर्मणां युगपद्भावस्तन्त्रम्— कात्या० 7 मुख्य विषय 8 मुख्य सिद्धान्त, नियम, वाद शास्त्र —जितमनसिजतन्त्रविचारम्—गीत० २ 9 पराधीनता, पराश्रयता—जैसा कि 'स्वतन्त्र' 'परतन्त्र', दैवतन्त्र दुःखम्—दश० ५ 10 वैज्ञानिक कृति 11 अध्याय अनुभाग (किसी ग्रन्थादिक के)—तन्त्रैः पञ्चभिरेतच्च-कार शास्त्रम्—पंच० १ 12. तन्त्र-संहिता (जिसमें देवताओं की पूजा के लिए अथवा अतिमानव शक्ति प्राप्त करने के लिए जादू-टोना या मन्त्रतन्त्र का वर्णन है) 13. एक से अधिक कार्यों का कारण 14 जादू-टोना 15. मुख्योपचार, नक्शा, तावीज 16. दवाई, औषधि 17 शपथ, शपथ 18. वेशभूषा, 19 कार्य करने की सही रीति 20 राजकीय परिजन, अनुचर-वर्ग, भृत्यवर्ग 21. राज्य, देश, प्रभुता 22 सरकार, हुकूमत, प्रशासन—लोकतन्त्राधिकार—श० ५ 23 सेना 24 ढेर, अम्बार 25 घर 26 सजावट 27 दौलत 28 प्रसन्नता । सम०—काष्ठम्=तन्तुकाष्ठ, वाय, —वापम् 1 बुनाई 2. करघा,—वाय 1 मकड़ी 2 जुलाहा ।

तन्त्रकः [तन्त्र+कन्] नई वेशभूषा (कोरा कपड़ा) ।

तन्त्रणम् [तन्त्र्+ल्युट्] शान्ति बनाये रखना अनुशासन, व्यवस्था, प्रशासन रखना ।

तन्त्रि,—त्री (स्त्री०) [तन्त्र्+इ, तन्त्रि+ङीष्] 1 डोरी रस्सी —मनु० ४।३८ 2. धनुष की डोरी 3 वीणा का तार तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचित् मेघ० ८६ 4 स्नायु तांत 5 पूंछ ।

तन्द्रा [तन्द्+रक्+टाप्] 1 आलस्य थकावट, थकान क्लान्ति 2 ऊंघ शैथिल्य तन्द्रालस्यविवर्जनम याज्ञ० ३।१५८, महावी० ७।४२ हि० १।३४ ।

तन्द्रालु (वि०) [तन्द्रा+आलुच्] 1 थका हुआ परि-श्रांत 2 निद्रालु, आलसी ।

तन्द्रि,—न्द्री (स्त्री०) [तन्द्+क्रिन् तन्द्रि+ङीष्] निद्रा लुता ऊंघ ।

तन्मय (वि०) (स्त्री० यी) [तत्+मयट्] 1 उसका बना हुआ 2 तल्लीन मा० १।४१, श० ६।२१ 3 तद्रूप, तदेकरूप ।

तन्वी [तनु+ङीष्] सुकुमार या कोमलाङ्गी स्त्री इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी श० १।२० तव तन्वि कुचावेतौ नियतं चक्रवर्तिनौ उद्भट ।

तप् (भ्वा० पर० (आ० विरल) तपति तप्त) (अक० प्रयोग) (क) चमकना, (आग या सूर्य की भांति) प्रज्वलित होना तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति —श० ५।१४, रघु० ५।१३ उत्तर० ६।१४, भग० ९।१९ (ख) गर्म होना, उष्ण होना, गर्मी फैलाना (ग) पीड़ा सहन करना तपति न सा किसलयशयनेन गीत० ७ (घ) शरीर को कृश करना, तपस्या करना अर्जितततनुतापं तप्त्वा तपांसि भगीरथ उत्तर० १।२३ 2. (सक० प्रयोग) (क) गर्म करना, उष्ण करना, तपाना भट्टि० ९।२ भग० ११।१९ (ख) जलाना, दग्ध करना, जला कर समाप्त कर देना —तपति तनुगात्रि मदनस्त्वामनिशं मां पुनर्दहत्येव—श० ३।१७, अङ्गैरनङ्गतप्तैः — ३।७, (ग) चोट पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना, खराब करना— —यास्यत्युत्सन्नतां न स्वस्तप्यति मां समन्यु— भट्टि० १।२३, मनु० ७।६ (घ) पीड़ा देना, दुःख देना —कर्मवा०—तप्यते, (कुछ लोग इसे दिवा० की धातु मानते हैं) 1 गर्म किया जाना, पीड़ा सहन करना 2. घोर तपस्या करना, (प्राय 'तपस्' के साथ) प्रेर०—तापयति —ते, तापित, 1 गर्म करना, तापना, गगनं तापितपायितासिलक्ष्मी —शि० २०।७५, न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया—हि० १।८९,

2. यन्त्रणा देना, पीड़ित करना, सताना—भृशं तापित कन्दर्पेण गीत० ११, भट्टि० ८।१३, अनु, 1 पश्चात्ताप करना, अफसोस करना, खिन्न होना, 2 पछताना उद्,- 1 तापना, गर्म करना झुलसाना, (सोना आदि) पिघलाना (जिस समय अक० के रूप में 'गर्म करना' अर्थ प्रकट करने के लिए यह धातु प्रयुक्त की जाती है या जब इसका कर्म स्वयं शरीर का ही कोई अंग होता है तो उस समय आत्मनेपद में प्रयुक्त होती है) उत्तपते सुवर्णं सुवर्णकारः महा० परन्तु उत्तपमान आतपः—भट्टि० ८।१ शि० २०।८० उत्तपते पाणिं महा० 2 सता दी जाना यन्त्रणा देना पीड़ित करना तपाना शि० १५ उप—,1 गर्म करना तपाना 2 पीड़ित करना दुःख देना शि० ९।६। नि,, 1 गर्म करना 2 पीड़ित करना 3 परिष्कृत करना परि—,1 गर्म करना जलाना नष्ट करना 2 प्रज्वलित करना आग लगाना पश्चात्ताप, पछताना खेद प्रकट करना वि—,1 चमकना उदयपूर्वक की भांति आचरण करना मनु० ८।१ 2 तपाना गर्म करना सम्—, 1 गर्म करना तपाना —सन्तापयामास भट्टि० ३।३ सन्तापयामि सखि तस्य पयसा नाम भर्तृ० ५।६७ 2 दुःखी होना पीड़ा सहन करना खिन्न होना सन्तप्त होना त्वमसि शरणार्थम् मेघ० ७ दुःखियों का ..... मनि निष्क्रान्तः सन्तप्त गृह भरा महा० भर्तृ० ८७ 3 पछताना।

तप (वि०) [तप् + अच्] 1 जलाने वाला तपाने वाला तपा कर समाप्त करने वाला 2 पीड़ाकर कष्टकर दुःखद,—पः 1 गर्मी आग और 2 सूर्य 3 ग्रीष्म ऋतु शि० १।६६ 4 तपस्या धार्मिक कड़ी साधना। सम०—अत्ययः, —अन्तः ग्रीष्म ऋतु का अन्त और वर्षा ऋतु का आरम्भ तपात्ययजला तपात्यये पुनराधेन हि युज्यते नदः कु० ४।४४ ५।२३।

तपती [तप् + शतृ + ङीप्] ताप्ती नदी

तपनः [तप् + ल्युट्] 1 सूर्य प्रतापात्तपनो यथा रघु० ४।१२, ललाटन्तपस्तपति तपनः उत्तर० ६ मा० १ 2 ग्रीष्मऋतु 3 सूर्यकान्तमणि 4 एक नरक का नाम 5 शिव का विशेषण 6 मदार का पौधा। सम० —आत्मजः, तनयः यम कर्ण और सुग्रीव के विशेषण — आत्मजा, तनया, यमुना और गोदावरी का विशेषण, —इष्टम् तांबा, —उपलः —मणिः सूर्यकान्त मणि, —छदः सूर्यमुखी फूल।

तपनी [तपन + ङीप्] गोदावरी नदी या ताप्ती नदी।

तपनीयम् [तप् + अनीयर्] सोना विशेषतः वह जो आग में तपाया जा चुका है —तपनीयाशोक मालवि० ३, तपनीयोपानयुगलमर्पयं प्रसादीकरोतु—महावी० ४, असस्पृशन्ती तपनीयपीठम् —रघु० १८।४१।

तपस् (नपुं०) [तप् + असुन्] 1 ताप गर्मी आग 2 पीड़ा कष्ट 3 तपश्चर्या धार्मिक कड़ी साधना, आत्मनियन्त्रण —तपः किमेवं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४ 4 आत्मदमन और आत्मोत्सर्ग के अभ्यास से सम्बद्ध ध्यान 5 नैतिक गुण मूर्त 6 किसी विशेष वर्ण का विशेष कर्तव्यपालन 7 सात लोकों में से एक लोक अर्थात् जन-लोक के ऊपर का लोक (—पुं०) माघ का महीना—नमसि मन्दर .....शि० ६।६३ (पुं० नपुं०) 1 शिशिर ऋतु 2 हेमन्त 3 ग्रीष्म ऋतु। सम० अनुभावः धार्मिक तपश्चर्या का प्रभाव अवट ..... —क्लेशः धार्मिक कड़ी साधना का कष्ट —क्षयः, —कठोर साधना —तक्षः इन्द्र का विशेषण —धनः साधना का धनी तपस्वी भक्त ..... शा० १।१३ प्रशान्तेषु ..... शि० १।२३ रघु० १४।१० मनु० ११ ८४ —निधिः उच्चप्राण व्यक्ति स पार्थे—रघु० १।५६ —प्रभावः,—बलम् कड़ी साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति तप द्वारा प्राप्त सामर्थ्य या अमोघता —राशिः सन्यासी —लोकः जनलोक के ऊपर का लोक —वनम् तपोभूमि पवित्र वन जहाँ सन्यासी कठोर साधना में लिप्त हों —कृत स्वपोवन न्यावर्तमान ..... श० १ रघु० १।९० २।१८ ३।८, —वृद्ध (वि०) जो बहुत तप कर चुका हो, विशेष ..... —श्रेष्ठता ..... —अत्यन्त कठोर साधना —स्थली 1 धार्मिक कठोर साधना की भूमि 2 बनारस।

तपसः [तप + असच्] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 पक्षी।

तपस्यः [तपस् + यत्] 1 फाल्गुन का महीना 2 अर्जुन का विशेषण —स्या धार्मिक कड़ी साधना तपश्चरण।

तपस्यति (ना० धा० पर०) तपस्या करना सुरासुरगुरु ..... शा० ७।९ १२ रघु० १३।४१ १५।४९ भट्टि० १८।२१।

तपस्विन् (वि०) [तपस् + विनि] 1 तपस्वी भक्तिनिष्ठ 2 गरीब दयनीय असहाय दीन सा तपस्विनी निवृता भवतु श० ४ मा० ३ नै० १।१३५, (पुं०) सन्यासी तपस्विसामान्यमवेक्षणीया—रघु० १४।६७। सम० —पत्रम् सूर्यमुखी फूल।

तप्त (भू० क० कृ०) [तप् + क्त] 1 गर्म किया हुआ, जला हुआ 2 रक्तोष्ण गरम 3 पिघला हुआ, गला हुआ 4 दुःखी, पीड़ित, कष्टग्रस्त 5 (तप का) किया गया अनुष्ठान। सम० —काञ्चनम् आग में तपाया हुआ सोना,—कृच्छ्रम् एक प्रकार की कठोरसाधना, —रूपकम् साफ़ की हुई चाँदी।

तम् (दिवा० पर०—ताम्यति, तान्त) 1. दम घुटना, बदहवास होना 2. परिश्रान्त होना, थक जाना—कलितशिरीषपुष्पहृदयैरपि ताम्यति यत्—मा० ५।११ 3. (मन या शरीर से) दुःखी होना, बेचैन या पीडित होना, पीडा देना, कष्ट करना—अविचलति मृदु कुञ्जपुञ्जमञ्जुलं ताम्यति—गीत० ५, गाढोत्कण्ठा ललितलुलितैरङ्गकैस्ताम्यतीति—मा० १।१५ ९।३१, अमरु ७, उद्—, उतावला होना - हृदय किमेवमुत्ताम्यसि श० १।

तमम् [तम्+घ] 1 अन्धकार 2. पैर की नोक,—मः 1 राहु का विशेषण 2. तमाल वृक्ष।

तमस् (नपुं०) [तम्+असुन्] अन्धकार—किं वाऽभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्—श० ७।४, विक्रम० १।७, मेघ० ३७ 2 नरक का अन्धकार—मनु० ४।२४२ 3 मानसिक अन्धेरा, भ्रम, भ्रान्ति—मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः—श० ६।९ 4 (सां० द० में) अन्धकार या अज्ञान, प्रकृति के संघटक ३ गुणों में से एक (दूसरे दो हैं—सत्त्व, रजस्)—कु० ६।६१, मनु० १२।२४ 5 रंज, शोक 6. पाप (पुं० नपुं०) राहु का विशेषण। सम०—अपह (वि०) अज्ञान या अन्धकार को दूर करने वाला, ज्ञान देने वाला, प्रकाशित करने वाला—कि० ५।२२, (हः) 1 सूर्य 2. चन्द्रमा 3 आग,—काण्डः,—डम् घोर अन्धकार—गुणः दे० 'तमस्' ऊपर(४),—घ्नः 1 सूर्य 2 चांद 3 आग 4 विष्णु 5 शिव 6 ज्ञान 7 बुद्धदेव—ज्योतिस् (पुं०) जुगनू,—ततिः व्यापक अन्धकार,—नुद् (पुं०) 1 उज्ज्वल शरीर 2 सूर्य 3 चांद 4 आग 5 लैम्प, प्रकाश,—नुदः 1 सूर्य 2 चन्द्रमा—भिद्,—मणिः जुगनू,—विकारः रोग, बीमारी—हन्, हर (वि०) अन्धकार को दूर करने वाला (पुं०) 1. सूर्य 2 चन्द्रमा।

तमसः [तम्+असच्] 1 अन्धकार 2. कुआँ।

तमस्विनी, तमा [तमस्+विनि+ङीप्, तम+टाप्] रात।

तमालः [तम्+कालन्] 1 एक वृक्ष का नाम (इसकी छाल काली होती है)—तरुणतमालनीलबहलोन्नमदम्बुधराः—मा० ९।१९, रघु० १३।१५, ४९, गीत० ११ 2 मस्तक पर चन्दन का सांप्रदायिक तिलक (चिह्न) 3. तलवार, खड्ग। सम०—पत्रम् 1 मस्तक पर सांप्रदायिक चिह्न 2. तमाल का पत्ता।

तमिः,—मी (स्त्री) [तम्+इन्, तमि+ङीप्] 1 रात—विशेषकर, काली अंधियारी रात—स तमी तमोभिरभिगम्य तताम्—शि० ९।२३ 2. मूर्छा, बेहोशी 3. हल्दी।

तमिस्र (वि०) [तमिस्रा+अच्] काला,—स्रम् 1. अंधकार,—एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रम्—गीत० ११, करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम्—२, कि० ५।२ 2 मानसिक अन्धकार (अज्ञान) भ्रम 3 क्रोध, कोप। सम०—पक्षः कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का) रघु० ६।३४।

तमिस्रा [तमिस्र+टाप्] 1 (अंधियारी) रात—सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा—रघु० ५।१३, शि० ६।४३ 2. व्यापक अन्धकार।

तमोमयः [तमस्+मयट्] राहु।

तम्पा, तम्बिका [तम्यति ग्लायति—तम्+पन्+टाप्, तम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] गाय, गौ।

तय् (भ्वा० आ०—तयते) 1 जाना, हिलना-जुलना—अभ्युद्याय तेषे पुरात् भट्टि० १४।७५, १०८ 2 रखवाली करना, रक्षा करना।

तरः [तृ+अप्] 1 पार जाना, पार करना, पार्थ—भट्टि० ७।५५ 2 भाड़ा—दीर्घाध्वनि यथादेशं यथाकालं तरो भवेत्—मनु० ८।४०६ 3 सड़क 4 घाटवाली नाव। सम०—पण्यम् नाव का भाड़ा, —स्थानम् घाट, वह स्थान जहाँ नाव आकर ठहरती है।

तरक्षः, तरक्षुः [तरं बलं मार्गं वा क्षिणोति—तर+क्षि+डु, पक्षे पृषो० उलोप] बिज्जू, लकड़बग्घा।

तरङ्गः [तृ+अङ्गच्] 1 लहर उत्तर० ३।४७, भर्तृ० १।८१, रघु० १३।६३, श० ३।७ 2 किसी ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग (जैसे कथासरित्सागर का) 3 कूद, छलांग, सरपट चौकड़ी, (घोड़े आदि की) छलांग लगाने की क्रिया 4 कपड़ा, वस्त्र।

तरङ्गिणी [तरङ्ग+इनि+ङीप्] नदी।

तरङ्गित (वि०) [तरङ्ग+इतच्] 1 लहराता हुआ, लहरों के साथ उछलने वाला 2 छलकता हुआ 3 थरथराता हुआ—तम् कपायमान - अपाङ्गतरङ्गितानि बाणाः - गीत० ३।

तरणः [तृ+ल्युट्] 1 नाव, बेड़ा 2 स्वर्ग,—णम् 1 पार करना 2 जीतना, पराजित करना 3 चप्पू, डांड।

तरणिः [तृ+अनि] 1 सूर्य 2 प्रकाश किरण,—णिः,—णी (स्त्री०) बेड़ा, बजरा नाव। सम०—रत्नम् लाल।

तरण्डः,—डम् [तृ+अण्डच्] 1 सामान्य नाव 2 बजरा (जो उल्टे हुए कद्दू या घड़ों को बांसों से बांध कर बनाई जाती है) 3 चप्पू या डांड। सम०—पादा एक प्रकार की नाव।

तरण्डी, तरन्तु, तरन्ती (स्त्री०) [तरण्ड+ङीप्, तृ+अति, तरन्त+ङीप्] नाव, बड़ा, बजरा।

तरन्तः [तृ+झच्] 1 समुद्र 2 प्रचण्ड बौछार 3 मेंढक 4. राक्षस।

तरल (वि०) [तृ+अलच्] 1. कंपमान, लहराता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ—तारापतिस्तरलविद्यु-

विवाभवृन्दम रघु० १३।३६ घन इव तरलबलाके —गीत० ५ शि० १०।४० शा० १।२९ 2 चंचल अस्थिर चपल वैराग्यनिरास्तरला स्वय मर्मणि प[illegible]रे शि० २।११८ अमर ७७ 3 शानदार चमक दार चमकीला 4 द्रवरूप 5 कामुक स्वेच्छाचारी —ल: 1 हार की मध्यवर्ती मणि —मुक्तामयोऽप्यमरल मध्य वासव० ३५ हारान्तारस्तरलगुटिकान् (मल्लि नाथ के मतानुसार यह मेघदूत का प्रक्षेप है) 2 हार 3 समतल सतह 4 नली गहराई 5 हीरा 6 लोहा का मण्ड।

तरलयति (ना० धा० पर०) कंपन उत्पन्न करना लहराना इधर उधर हिलना जुलना अमरु ८७

तरलायते (ना० धा० आ०) काँपना हिलना इधर उधर डोलना फिरना

तरलोमिल [[illegible]] बड़ी लहर कल्लोल

तरलित (वि०) [तरल इतच्] हिलता हुआ थरथराता हुआ आदोलित होता हुआ °मुक्ताहार गीत० ११ °हारा ११।

तरवारि [तर समागत विरक्षक वारयति तर + वृ + णिच् इन्] तलवार।

तरस् (नपुं०) [तृ असुन्] 1 चाल वेग 2 वीर्य शक्ति ऊर्जा कैलासनाथ तरसा जिगीषु —रघु० ५।२८ ११।७७ शि० १७ 3 नदी पार करने का स्थान 4 घड़नई बेड़ा।

तरसम् [तृ असच्] आमिष मांस।

तरस्थानम् [स० त०] घाट।

तरस्विन् (वि०) (स्त्री० नी) 1 तेज फुर्तीला 2 मज बूत शक्तिशाली साहसी शक्तिवान रघु० [illegible] ११।८४ १६।७७ (पुं०) हरकारा सन्देशवाहक दूत 2 शूरवीर 3 [illegible] गरुड का विशेषण।

तराधु, तराल [illegible] अग्रदीप्त प्रभामंडित [illegible] की तरह।

तरि [illegible] नौका 1 [illegible] नदी [illegible] उडुप शि० ३।७६ 2 कपड़े रखने का सन्दूक 3 कपड़े का छोर या गोट (किनारा) 1 समा० —रथ चप्पू डांड।

तरिक, तरिकिन् (पुं०) [तर + ठन्, तरिक + इनि] मल्लाह।

तरिका, तरिणी, तरिण्डम्, तरिडी, [तरिक + टाप् तर + इनि, ङीप् तृ + ष्ट्रन् तरिण्ड + ङीप्] नाव किश्ती।

तरीष [तृ + ईषन्] 1 बेड़ा नाव 2 समुद्र 3 सक्षम व्यक्ति 4 स्वर्ग 5 कार्य धन्धा व्यवसाय पेशा।

तरु [तृ + उन्] वृक्ष — नवसरोहणशिथिलस्तरुरिव सुकर समुद्धरण मालवि० १।८। सम० —खण्ड, —षण्डम्, —खण्ड, —षण्डम् वृक्षों का झुण्ड या समूह —तलम् वृक्ष की जड़ —तलम् वृक्ष के तने के पास का स्थान वृक्ष की जड़ —मृग [illegible] मृग बन्दर —राग 1 कली या फूल 2 कोमल अंकुर अंखुआ —राज ताड़ का पेड़ —रुहा पेड़ पर ही उत्पन्न होने वाला पौधा —विलासिनी नव मल्लिका लता —शायिन् (पुं०) पक्षी।

तरुण (वि०) [तृ + उनन्] 1 चढ़ती जवानी वाला जवान पुरुष युवक 2 (क) बच्चा नवजात सुकुमार कोमल भर्तृ० ३।४९ (ख) नवोदित, (सूर्य की भांति) जो आकाश में ऊँचा न हो कु० ३।५४ 3 नूतन, ताज़ा तरुणं दधि काव्य० ६४ तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति छन्द० १ 4 जिन्दादिल विशद —णः युवा पुरुष जवान—पञ्च० १।१११ भामि० २।६७ —णी युवती या जवान स्त्री— वृद्धस्य तरुणी विषम् चाण० ९८। सम० —ज्वर एक सप्ताह रहने वाला बुखार —दधि (नपुं०) पाँच दिन का जमाया हुआ दूध —पीतिका मैनसिल।

तरुश (वि०) [तरु शः] वृक्षों से भरा हुआ।

तर्क (चुरा० उभ० तर्कयति —ते तर्कित) 1 कल्पना करना अटकल करना शंका करना विश्वास करना अन्दाज़ लगाना अनुमान करना— स्व तावच्छतया [illegible] शा० ६ [illegible] 2 तर्क करना विचा रना विमर्श करना 3 ख्याल करना मान लेना (किसी को) 4 सोचना इरादा करना अभिप्राय रखना विचार में रखना (धातु [illegible] वेदच्छस्फटिक विशद तर्कयिष्यन्ति [illegible] —मेघ० ५२ 5 निश्चय करना 6 चमकना 7 बोलना प्र 1 तर्क करना विचार विमर्श करना 2 सोचना निश्चय करना अनुमान करना कल्पना करना भट्टि० [illegible] वि० 1 अट कल करना अन्दाज़ करना 2 सोचना कल्पना विवरण करना 3 [illegible] विमर्श करना तर्क करना।

तर्क [तर्क अच्] 1 कल्पना अन्दाज़ अटकल प्रमयस्ते तर्क विक्रम० २ 2 तर्कना अटकलबाज़ी चर्चा दुस्सह तर्कना कुन पुनरस्मिन्नवसरे आगमार्थे तर्क [illegible] तस्याक्षेपस्यावकाश इदानीं तर्कनिमित्त आक्षेप परिह्रियते— शारी० तर्कोऽप्रतिष्ठः स्मृतयो विभिन्ना —महा० मनु० १२।१०६ 3 सन्देह 4 न्याय, तर्कशास्त्र —यत्काव्य मधुवर्षि धर्षितपरास्तर्केषु यस्योक्तय —नै० २२।१५५ तर्कशास्त्रम् तर्क दीपिका 5 (न्याय० में) उपहासास्पद होना, वह परिणाम जो पूर्व कथित तथ्यों

(पक्ष) के विपरीत हो 6. कामना, इच्छा 7. कारण, प्रयोजन। सम० —विद्या न्यायशास्त्र।

तर्कक: [तर्क् + ण्वुल्] 1. वादी, पूछताछ करने वाला, प्रार्थी 2. तर्कशास्त्री।

तर्कु: (पुं० स्त्री०) [कृत् + उ नि०] तकवा, लोहे की तकली जिस पर सूत लिपटता जाता है—तर्कु कर्तनसाधनम्। सम० —पिण्ड: —पीठी: घींगली (तकुवे के किनारे पर लिपटा हुआ सूत का गोला)।

तर्क्षु: [=तरक्षु, पृषो०] लकड़बग्घा, बिज्जू।

तर्क्ष्य: [तृक्ष् + ण्यत्] यवक्षार, जवाखार, शोरा।

तर्ज् (भ्वा० पर०, चुरा० आ० पर० भी, तर्जति, तर्जयति—ते, तर्जित) 1. धमकाना, भड़कना, डराना —सभ्रूभङ्गमङ्गुल्या तर्जयति —श० १, अहितानिलोद्धूतैस्तर्जयन्निव केतुभि: —रघु० ४।२८ ११।७८, १२।४१, भट्टि० १४।८० 2. झिड़कना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना —भट्टि० ६।३, ८।१०१, १७।१०३ 3. खिल्ली उड़ाना, उपहास करना।

तर्जनम्,—ना [तर्ज् + ल्युट्] 1. धमकाना, डराना 2. निन्दा करना —रघु० १९।१७ कु० ६।४५।

तर्जनी [तर्जन + ङीप्] अंगूठे के पास वाली अंगुली।

तर्ण:, तर्णक: [तृण् + अच्, तर्ण + कन्] बछड़ा —शि० १२।४१।

तर्णि: [तृ + नि] 1. बेड़ा 2. सूर्य।

तर्द् (भ्वा० पर० तर्दति) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. मार डालना, काट डालना —भट्टि० १४।१०८, 'तृद्' भी दे०।

तर्पणम् [तृप् + ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, तृप्त करना 2. तृप्ति प्रसन्नता 3. (प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले) पाँच यज्ञों में से एक, पितृयज्ञ (दिवंगत पूर्वजों के पितरों के निमित्त जल-तर्पण) 4. समिधा, (यज्ञीय अग्नि के लिए ईंधन)। सम० —इच्छु: भीष्म का विशेषण।

तर्मन् (नपुं०) [तृ + मनिन्] यज्ञीय स्तंभ का शिखर।

तर्ष: [तृष् + घञ्] 1. प्यास 2. कामना, इच्छा 3. समुद्र 4. नाव 5. सूर्य।

तर्षणम् [तृष् + ल्युट्] प्यास, पिपासा।

तर्षित, तर्षुल (वि०) [तर्ष + इतच् तृष् + उलच्] 1. प्यासा 2. अभिलाषी, इच्छुक।

तर्हि (अव्य०) [तद् + र्हिल्] 1. उस समय, तब 2. उस विषय में, यदा—तर्हि 'जब—तब' यदि—तर्हि 'अगर—तो' कथं—तर्हि 'तो फिर किस प्रकार'।

तल:,—लम् [तल् + अच्] 1. सतह —भूतलमिव व्योम कुर्वन् व्योमेव भूतलम् —रघु० ४।२९, (कभी कभी अर्थों में बहुत परिवर्तन न कर, समास के अन्त में प्रयोग) —महीतलम् भूमि की सतह अर्थात् पृथ्वी —शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा —श० ७।१२, नभस्तलम् 2. हाथ की हथेली —रघु० ६।१८ 3. पैर का तला 4. बाहु 5. थप्पड़ 6. नीचपन, पद का घटियापन 7. निम्न भाग, नीचे का भाग, आधार, पैर, पेंदी —रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेत: समुत्कण्ठते —काव्य० १ 8. (अत:) वृक्ष या किसी दूसरी वस्तु की नीचे की भूमि, किसी भी वस्तु से प्राप्त शरण —फणी मयूरस्य तले निषीदति —ऋतु० १।१३ 9. छिद्र, गड्ढा। —ल: 1. तलवार की मूठ 2. तालवृक्ष, —लम् 1. तालाब 2. जङ्गल, वन 3. कारण, मूल, प्रयोजन 4. बायीं बाहु पर पहना जाने वाला चमड़े का फीता (इसी अर्थ में 'तला' भी)। सम० —अङ्गुलि: (स्त्री०) पैर की उंगली, —अतलम् सात अधोलोकों में चौथा, —ईक्षण: सूअर, —उदा नदी, —घात: थप्पड़, —ताल: एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, —त्रम्, —त्राणम्, —वारणम् धनुर्धर का चमड़े का दस्ताना, —प्रहार: थप्पड़, —सारकम् अधोबन्धन, तङ्ग।

तलकम् [तल + कन्] बड़ा तालाब।

तलत: (अव्य०) [तल + तसिल्] पेंदी से।

तलाची [तल + अञ्च् + क्विप् + ङीप्] चटाई।

तलिका [तल + ठन्] तंग, अधोबन्धन।

तलितम् [तल् + क्त] तला हुआ मांस।

तलिन (वि०) [तल् + इनन्] 1. पतला, दुर्बल, कृश 2. थोड़ा, कम 3. स्पष्ट, स्वच्छ 4. निम्न भाग में या निचली जगह पर स्थित 5. पृथक्, —नम् बिस्तरा, गद्दीदार लम्बी चौकी।

तलिमम् [तल् + इमन्] 1. फ़र्श लगी हुई भूमि, खड़ंजा 2. बिस्तरा, खटिया, सोफ़ा 3. चंदोवा 4. बड़ी तलवार या चाकू।

तलुन: [तल् + उनन्] हवा।

तल्कम् [तल् + कन्] जङ्गल।

तल्प:,—ल्पम् [तल् + पक्] 1. गद्देदार लम्बी चौकी, बिस्तरा, सोफ़ा —सपदि विगतनिद्रस्तल्पमुज्झाञ्चकार —रघु० ५।७५, 'बिस्तरा छोड़ा' उठा 2. (आलं०) पत्नी (जैसा कि 'गुरुतल्पग' में) 3. गाड़ी में बैठने का स्थान 4. ऊपर की मंजिल, बुर्ज, कंगूरा, अटारी।

तल्पक: [तल्प + कन्] (नौकर आदि) जिसका कार्य बिस्तरे बिछाने या तैयार करने का है।

तल्लज: [तत् + लज् + अच्] 1. श्रेष्ठता, सर्वोत्तमता, प्रसन्नता 2. (समास के अन्त में) श्रेष्ठ (इस अर्थ में यह शब्द सदैव पुं० होता है। समास के पूर्व पद का चाहे कोई लिंग हो), —गोतल्लज: श्रेष्ठ गाय, इसी प्रकार 'कुमारीतल्लज:' श्रेष्ठ कन्या।

तल्लिका [तस्मिन् लीयते तत् + ली + ड + कन्, इत्वम्] ताली, कुंजी।

तलुनी [तल् लसति—लत्+लस्+ड+ङीप्] तरुणी, जवान स्त्री।

तष्ट (वि०) [तक्ष्+क्त] 1 छीला हुआ, काटा हुआ, तराशा हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ 2 गढ़ा हुआ दे० 'तक्ष्'।

तष्ट (पुं०) [तक्ष्+तृच्] 1 बढ़ई 2 विश्वकर्मा।

तस्कर [तद्+कृ+अच्, सुट्, दलोप] 1 चोर, लुटेरा या मक्कार मन यान्ति तस्कर स्मरतस्कर नर्म० १।८६, मनु० ८।६७, ९।६१ 2 (समास के अन्त में) अधम घृणित —ही कामुक स्त्री।

तस्थु (वि०) [स्था+कु द्वित्वम्] स्थावर अचर स्थिर

ताक्षण्य, **ताक्षण** [तक्षन्+ण्य, तक्षन्+अण्] बढ़ई का पुत्र

ताच्छीलिक [तच्छील+ठञ्] स्वभाव प्रवृत्ति आदि के अर्थ को प्रकट करने वाला प्रत्यय।

ताटङ्क [ताडयते पृषो० डस्य टः, ताट् अङ्क ब० स०] कान का आभूषण, बड़ी बाली।

ताटस्थ्यम् [तटस्थ+ष्यञ्] 1 सामीप्य 2 उदासीनता अनवधानता उपेक्षा, शून्यता दे० तटस्थ।

ताड. [तड्+घञ्] 1 प्रहार, ठोकर, घूसा या थप्पड़ 2 कोलाहल 3 पूला गट्ठर 4 पहाड़।

ताडका [तड्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] एक राक्षसी, सुकेतु की पुत्री सुन्द की पत्नी और मारीच की माता [अगस्त्य की समाधि भंग करने के कारण वह राक्षसी बना दी गई। जब उसने विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डाला तो राम के द्वारा वह मारी गई। राम पहले तो स्त्री के लिए धनुष तानने के विरुद्ध थे, परन्तु ऋषि ने उनकी शंकाओं को दूर कर दिया था] दे० रघु० ११।१४-२०।

ताडकेय [ताडका+ढक्] ताडका के पुत्र मारीच राक्षस का विशेषण।

ताडङ्क, **ताडपत्रम्** [ताल्यम् अङ्क्यते लक्ष्यते—अङ्क्+घञ्, लक्ष्य इत्यम् तक० तरुकपम् तालस्य पत्रमिव ष० त० लस्य डः] दे० ताटङ्क।

ताडनम् [तड्+णिच्+ल्युट्] मारना-पीटना, हण्टर लगाना, बेंत लगाना—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः चाण० १२ अवतंसोत्पलताडनानि वा कु० ४।८ शृङ्गार० ९, —नी हण्टर।

ताडि, —**डी** (स्त्री०) [तड्+णिच्+इन्, ताडि+ङीप्] 1 एक प्रकार का पाड 2 एक प्रकार का आभूषण।

ताड्यमान (वि०) [तड्+णिच्+शानच्] पीटा जाता हुआ, प्रहार किया जाता हुआ,—नः (ढोल आदि) वाद्ययन्त्र (जो किसी यष्टिका से बजाया जाय)।

ताण्डव., —**वम्** [तण्डु+अण्] 1 नाच, नृत्य भवताण्डवोत्सवान्ते—उत्तर० ३।१८ 2. विशेष कर शिव का उन्माद-नृत्य या प्रचण्ड नाच—ध्यम्बकामन्द्र वस्ताण्डवं देवि भूयादभीष्ट्यै च हृष्ट्यै च नः—मा० ५।१३, १।१ 3 नृत्यकला 4 एक प्रकार का घास। सम० —प्रियः शिव जी।

तात: [तनोति विस्तारयति गोत्रादिकम्- तन्+क्त, दीर्घ] 1 पिता,—मृष्यन्तु लवस्य बालिशता तातपादाः—उत्तर० ६ हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्ण - रघु० ९।७५ 2 स्नेह दया या प्रेम को प्रकट करने वाला शब्द (प्राय अपने से आयु में छोटों के प्रति विद्यार्थियों के प्रति या बच्चों के प्रति प्रयुक्त)—तात चन्द्रापीड—का० रक्षसा भक्षितेनात न ब तातो वनान्तरे—महा० 3 सम्मान द्योतक शब्द (जो अपने से बड़े और श्रद्धेय व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है)—हेपिता हि बहवो नरेश्वरास्तेन तात धनुषा धनुर्भृतः—रघु० ११।४० तस्मान्मुच्ये यथा तात संविधातुं तथार्हसि—१।७२। सम० —तु (वि०) पिता के अनुकूल,—(तुः) ताऊ।

तातल [तात+तल्+ड] ... पक्षी।

तातक [ताप+ला+क पृषो० पस्य तः] 1 एक रोग 2 लोहे का डण्डा, या सलाख 3 पकाना, परिपक्व करना 4 गर्मी।

तातिः [तायृ+क्तिच्] सन्तान—तिः (स्त्री०) सातत्य, उत्तराधिकार जैसा कि अरिष्टताति या शिवताति में।

तात्कालिक (वि०) (स्त्री०—की) [तत्काल+ठञ्] 1 उसी समय में होने वाला 2 अव्यवहित।

तात्पर्यम् [तत्पर+ष्यञ्] 1 आशय अर्थ, अभिप्राय —अत्रेद तात्पर्यम्- आदि 2 प्रस्तुत योजना का आशय काव्य० २ 3 उद्देश्य, अभिप्रेत पदार्थ, किसी पदार्थ का उल्लेख प्रयोजन इरादा (अधि० के साथ) इह यथार्थकथने तात्पर्यम्—पा० २।३।४३, भाष्य 4 वक्ता का आशय (वाक्य में विशेष शब्दों के प्रयोग में)—वक्तुरिच्छा तु तात्पर्यं परिकीर्तितम्—भाषा० ८४, तात्पर्यानुपपत्तितः—८२।

तात्त्विक (वि०) [तत्त्व+ठक्] यथार्थ वास्तविक, परमावश्यक कि वासोदन्तस्य भेदविगमे तात्त्विकमिते तात्त्विक भामि० २।८१ तात्त्विक सम्बन्ध- आदि।

तादात्म्यम् [तदात्मन्+ष्यञ्] प्रकृति की अभिन्नता, समरूपता, एकता, —नयनयोस्तादात्म्यमम्भोरुहाम् भामि० २।८१, भगवत्यात्मनस्तादात्म्यम्- आदि।

तादृक्ष (वि०) (स्त्री० —क्षी) तादृश्, तादृश (वि०) (स्त्री०—शी) वैसा उस जैसा उसकी भांति—तादृग्गुणा मनु० ९।२२ ३२, अमरु० ७६, यादृशास्तादृशा—कोई जो कोई, सामान्य मनुष्य—उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने पंच० १।३९०।

तानः [तन्+घञ्] 1. धागा, रेशा 2 (संगीत० में)

विलम्बित स्वर प्रधान टेक—यथा तानं विना राग —भामि० १।११९, तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम् - कु० १।८,—नम् 1 विस्तार, प्रसार 2 ज्ञानेन्द्रियों का विषय ।

तानवम् [तनु + अण्] पतलापन, छोटापन- ह्रस्वप्रभा तानवमासमाद---विक्रमांक० ११।०६ ।

तानूरः [तन् + ऊरच्] भँवर, जलावर्त ।

तान्त (वि०) [तम् + क्त] 1 थका हुआ, निढाल क्लान्त 2. परेशान, कष्टग्रस्त 3 म्लान, मुर्झाया हुआ - दे० 'तम्' ।

तान्तवम् [तन्तु + अण्] 1 कातना, बुनना 2 जाला 3 बुना हुआ कपड़ा ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री० - की) [तन्त्र + ठक्] किसी शास्त्र या सिद्धान्त में सुविज्ञ 2 तन्त्रों से सम्बद्ध 3 तन्त्रों से प्राप्त शिक्षा,—कः तन्त्र सिद्धान्तों का अनुयायी ।

तापः [तप् + घञ्] 1 गर्मी, चमक-दमक—अर्कमयूखताप —श० ४।१०, मा० ३।१३, मनु० १२।७६, कु० ७। ८४ 2. सताना, पीडित करना, कष्ट, सन्ताप वेदना —इतरतापशतानि तवेच्छया वितरितानि सहे चतुरानन —उद्भट, समस्तार काम मनसिजनिदाघप्रसरयो — श० ३।८, भर्तृ० १।११ 3 खेद, दुःख । सम० —त्रयम् तीन प्रकार के सताप जो मनुष्य को इस संसार में सहन करने पड़ते हैं—अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक, —हर (वि०) शीतलता देने वाला, गर्मी दूर करने वाला ।

तापनः [तप् + णिच् + ल्युट्] 1. सूर्य 2 ग्रीष्म ऋतु 3. सूर्यकान्तमणि, कामदेव के बाणों में से एक —नम् 1. जलाना 2 कष्ट देना 3 ठोकना-पीटना ।

तापस (वि०) (स्त्री० - सी) 1 सन्यास से सम्बद्ध, कड़ी साधना से सम्बन्ध रखने वाला 2 भक्त, —सः (स्त्री० —सी) वानप्रस्थ, भक्त, सन्यासी । सम० —इष्टा अंगूर, —तरुः,—द्रुमः हिंगोट का वृक्ष, इंगुदी ।

तापस्यम् [तापस + ष्यञ्] तपस्या ।

तापिच्छः [तापिनं छादयति तापिन + छद् + ड पृषो०] तमाल का वृक्ष या फूल (नपुं०) प्रफुल्लतापिच्छ निभैरभीषुभिः शि० १।२२, व्याकोशकोकनदतां दधते नलिन्यः... बलिभिरिव तमोवल्लरीभिर्व्रियते मा० ५।६ (इसी अर्थ में 'तापिञ्ज' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

तापी [तप् + णिच् + अच् + ङीप्] 1 ताप्ती नदी जो सूरत के निकट समुद्र में गिर जाती है 2 यमुना नदी ।

तामः [तम् + घञ्] 1 भय का विषय 2 दोष, कमी, 3. चिन्ता, दुःख 4 इच्छा ।

तामरम् [ताम + ऋ + क] 1 पानी 2 घी ।

तामरसम् [तामरे जले सस्ति - सस् + ड] 1 लाल कमल —पंच० १।९४, रघु० ६।३७, ९।१२, ३७, अमरु ७०,८८ 2 सोना, तांबा, —सी कमलों वाला सरोवर ।

तामस (वि०) (स्त्री० - सी) [तमोऽस्त्यस्य अण्] 1 काला, अन्धकारग्रस्त, अन्धकार सम्बन्धी, अन्धेरा 2 प्रकृति के तीन गुणों में से एक) - भग० ७।१२, १४।१२, मालवि० १।१ मनु० १२।३३-४ 3 अज्ञानी 4 दुर्व्यसनी, —सः 1 दुष्ट दाहक दुर्जन 2 साँप 3 उल्लू —सम् अन्धेरा —सी 1 रात काली रात 2 नींद 3 दुर्गा का विशेषण ।

तामसिक (वि०) (स्त्री० —की) [तमस् + ठञ्] 1 काला, अन्धकारयुक्त 2 तम से सम्बन्ध रखने वाला, तम से उत्पन्न या तमोमय ।

तामिस्र [तमिस्रा + अण्] नरक का एक प्रभाग ।

ताम्बूलम् [तम् + ऊलच् बुक दीर्घ] 1 सुपारी 2 पान (जिसमें कत्था चूना लगाकर सुपारी के साथ लगा भोजन के पश्चात् चबाते हैं) ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भल्लं जल्पति मानुषः काव्य० ७, रागो न स्खलित-स्तवाधरपुटे ताम्बूलसंवर्धितः —शृंगार० ३ । सम० —करङ्कः,- पेटिका पानदान —दः,—धरः वाहकः पान-दान लेकर अमीरों के पीछे चलने वाला नौकर —वल्ली पान की बेल रघु० ६।६४ ।

ताम्बूलिकः [ताम्बूल + ठन्] तमोली पान बेचने वाला ।

ताम्बूली [ताम्बू + ङीप्] पान की बेल ताम्बूलीनां दलैस्तत्र रचिता पानभूमयः रघु० ४।४२ ।

ताम्र (वि०) [तम् + रक् दीर्घः] तांबे के रंग का लाल उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च, —म्रम् तांबा । सम० —अक्षः 1 कौवा 2 कोयल —अर्धः कांसा —अश्मन् (पुं०) पद्मरागमणि —उपजीविन् (पुं०) कसेरा तांबे की चीजें बनाकर जीवन निर्वाह करने वाला —ओष्ठः (ताम्रौष्ठ या ताम्रोष्ठ) लाल होंठ कु० १।४४, —कारः कसेरा तांबे का काम करने वाला —कृमिः इन्द्रगोप एक प्रकार का लाल कीड़ा —चूडः मुर्गा —त्रपुजम् पीतल,—द्रुः लाल चन्दन की लकड़ी —पट्टः,—पत्रम् ताम्रपट्टिका जिस पर प्राय भूदान के दाता तथा ग्रहीता के नाम खुदे रहते थे —याज्ञ० १।३१९, —पर्णी मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम, (कहते हैं कि यह नदी मोतियों के कारण प्रसिद्ध है), रघु० ४।५०, —पल्लवः अशोकवृक्ष, —लिप्ताः एक देश का नाम (ब० व०) इस देश की प्रजा या शासक, —वृक्षः चन्दन के वृक्षों का एक भेद ।

ताम्रिक (वि०) (स्त्री० —की) [ताम्र + ठक्] तांबे का बना हुआ ताम्रमय,—कः कसेरा, तांबे का कार्य करने वाला ।

ताय् (भ्वा० आ०—तायते, तायित) 1. किसी समान

रेखा में प्रगति करना, फैलाना, विस्तार करना 2. रक्षा करना, संरक्षण में रखना,—वि -फैलाना रचना करना —भट्टि० १६।१०५।

तार (वि०) [तृ+णिच्+अच्] 1 (स्वरात्मक) ऊँचा 2 (शब्दात्मक) उत्ताल, कर्कश —मा० ५।२० 3 चमकीला, उज्ज्वल, स्पष्ट -हारांस्तारांस्तरलगुटिकान् (मल्लि० इसको मेघदूत का प्रक्षेपक मानते हैं), उरसि निहितस्तारो हारः -अमरु २८ 4 अच्छा, श्रेष्ठ, सुरस, -रः 1 नदी का किनारा 2 मोती की चमक 3, सुन्दर और बड़ा मोती -हारममलतरतारमुरसि दधतम्-गीत० ११ 4 उच्चस्वर, रं -रम् 1 तारा या ग्रह 2 कपूर, -रम् । चाँदी 2 आँख की पुतली (पु० भी माना जाता है)। सम० -अभ्रः कपूर, -अरिः लोहचुम्बक, -पतनम् तारे का गिरना या उल्कापतन, -पुष्पः कुन्द या चमेली की बेल, -वायुः सायँ सायँ करती हुई या सनसनाती हुई हवा, -शुद्धिकरम्-सीसा, -स्वर (वि०) ऊँचे स्वर का या उत्ताल ध्वनि का —हारः 1 सुन्दर मोतियों की माला 2 एक चमकीला हार।

तारक (वि०) (स्त्री० —रिका) [तृ+णिच्+ण्वुल्] 1 आगे ले जाने वाला 2 रक्षा करने वाला, बचाकर रखने वाला बचाने वाला,—कः 1 चालक, खिवैया कर्णधार 2 छुड़ाने वाला, बचाने वाला 3 एक राक्षस जिसे कार्तिकेय ने मार गिराया था (यह वज्रांग और वरांगी का पुत्र था पारियात्र पहाड़ पर तपस्या करके इसने ब्रह्मदेव को प्रसन्न किया और वरदान मांगा कि मुझे संसार में, ७ दिन के बच्चे को छोड़ कर और कोई न मार सके। इस वरदान को बदौलत यह देवताओं को सताने लगा। दुःखी होकर देवता ब्रह्मा के पास गए और इस राक्षस को मारने के लिए उनकी सहायता मांगी (दे० कु० २) ब्रह्मा ने उन देवताओं को उत्तर दिया कि केवल शिव का पुत्र ही उन्हें परास्त कर सकता है उसके पश्चात् कार्तिकेय का जन्म हुआ और उसने अपने जन्म से सातवें दिन उस राक्षस का काम तमाम कर दिया)। -कः, -कम् घड़नई बेड़ा -कम् 1 आँख की पुतली 2 आँख। सम० -अरिः -जित् (पु०) कार्तिकेय का विशेषण।

तारका [तारक+टाप्] 1 तारा 2 उल्का धूमकेतु 3 आँख की पुतली सदृशे वृशमुदयतारकाम् -रघु० ११। ६९, वीर० ५ भर्तृ० १.११।

तारकिणी [तारक+इनि+ङीप्] तारों भरी रात, वह रात जिसमें तारे खिले हुए हों।

तारकित (वि०) [तारक+इतच्] तारों वाला, सितारों भरा, ताराखचित।

तारणः [तृ+णिच्+ल्युट्] नाव, घड़नई,—णम् 1 पार उतारना 2. बचाना, छुड़ाना, मुक्त करना।

तारणि,—णी (स्त्री०) [तृ+णिच्+अनि, तारणि+ङीष्] घड़नई, बेड़ा।

तारतम्यम् [तरतम+ष्यञ्] 1 क्रमांकन, अनुपात, सापेक्ष महत्त्व, तुलनात्मक मूल्य 2 अन्तर, भेद—निर्वन्ध निधनमेतयोर्द्वयोस्तारतम्यविनिमुक्तचेतसो, बोधच— विविना विनिर्मिता रेफ एव सर्वविधसिका—उ—

तारलः [तरल+अण्] कामुक, लम्पट, विषयी।

तारा [तार+टाप्] 1 तारा या ग्रह—कुसुमैः ... —रघु० ४।१९, भर्तृ० ११।१५ 2 स्थिर तारा—रघु० ६।२२ 3 आँख की पुतली, आँख का डेला—कान्ताऽमन्त प्रमोदादभिसरति मदभ्रान्ततारश्चकोरः—मा० ९।३०, विस्मयस्मेरतारैः—१।२८, कु० ३।४७ 4. मोती 5 (क) वानरराज बाली की पत्नी, अंगद की माता, इसने अपने पति को राम और सुग्रीव के साथ युद्ध न करने के लिए बहुत समझाया। राम द्वारा बाली के मारे जाने पर इसने सुग्रीव से विवाह कर लिया (ख) देवगुरु बृहस्पति की पत्नी, एक बार चन्द्रमा इसको उठा कर ले गया और याचना करने पर भी वापिस नहीं किया। घोर युद्ध हुआ, अन्त में ब्रह्मा ने सोम को इस बात के लिए विवश कर दिया कि तारा बृहस्पति को वापिस दे दी जाय। तारा के बुध नामक एक पुत्र का जन्म हुआ। यह बुध ही चन्द्रवंशी राजाओं का पूर्वज कहलाया (ग) राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी तथा रोहिताश्व की माता—इसीको तारामती भी कहते हैं)। सम०—अधिपः,—आपीडः, —पतिः चाँद—रघु० (३।७६, कु० ७।४८, भर्तृ० १।७१, —पथः पर्यावरण वातावरण —प्रमाणम्—नक्षत्रमान नक्षत्रकाल भुवा रात,—मण्डलम् 1 तारालोक, राशिचक्र 2 आँख की पुतली —मृगः मृगशिरा नाम का नक्षत्र।

तारिकम् [तार+ठन्] किराया भाड़ा।

तारुण्यम् [तरुण+ष्यञ्] 1 युवावस्था, जवानी 2 ताजगी (आलं०)।

तारेयः [तारा+ढक्] 1 बुधग्रह 2 बालि के पुत्र अंगद का विशेषण।

तार्किकः [तर्क+ठक्] 1 नैयायिक तार्किक 2 दार्शनिक।

तार्क्ष्यः [तृक्ष+अण् तार्क्ष+ष्यञ्] 1 गरुड का विशेषण —वसतेन तार्क्ष्यात् किल कालियेन—रघु० ६।४९ 2 गरुड का बड़ा भाई अरुण 3 गाड़ी 4 घोड़ा 5 साँप 6 पक्षी। सम० —ध्वजः विष्णु का विशेषण,—नायकः गरुड का विशेषण।

तार्तीय (वि०) [तृतीय+अण्] तीसरा।

तार्तीयीक (वि०) [तृतीय+ईकक्] 1. तीसरा—तार्तीयी-

कतया मिलोऽप्यमममतस्य प्रबन्धे—नै० ३।१३६, तालीं- वीर्के पुरारेस्तवतु मदनप्लोषणं लोचन व —मा० १, अने० पा० ।

तालः [तल+अण्] 1 ताड का वृक्ष —भर्तृ० २।९०, रघु० १५।२३ 2. ताड का बना हुआ झण्डा 3 तालियाँ बजाना 4 फटफटाना 5. हाथी के कानों का फड़फड़ाना 6. (संगी० में) टेक देना नियत मात्राओं पर ताली बजाना—करकिसलयतालैर्मुग्धया नर्त्यमानम्—उत्तर० ३।१९, मेघ० ७९ 7 कांसे का बना एक वाद्ययन्त्र —रघु० ९।७१ 8 हथेली 9 ताला कुण्डी 10 तलवार की मूठ.—लम् 1 ताड वृक्ष का फल 2 हरताल । सम०—अङ्कः 1 बलराम 2 ताड का पत्ता जो लिखने के काम आता है 3 पुस्तक 4 आरा, —अवचरः नाचने वाला, नट —केतुः भीष्म का विशेषण, क्षीरकम्, —गर्भः ताड का निःस्रवण, —ध्वजः—भृत (पुं०) बलराम का विशेषण,—पत्रम् 1 ताड का पत्ता जिस पर लिखा जाता है 2 कान का आभूषण विशेष बद्ध— वृद्ध (वि०) तालों के द्वारा मापा गया, लयात्मक संगीत में मात्राकाल से विनियमित, —मर्दलः एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, झांझ करताल,—यन्त्रम् जर्राह का एक उपकरण,—रेचनकः नर्तक, अभिनेता,—लक्षणः बलराम का विशेषण,—वनम् वृक्षों का समूह,—वृन्तम् पंखा—श० ३।२१, कु० २।३५ ।

तालकम् [ताल+कन्] 1 हरताल 2 कुण्डी, चटखनी । सम०—आभ (वि०) हरा, (—भः) हरा रंग ।

तालङ्कः [=ताटङ्क] कान का आभूषण विशेष ।

तालव्य (वि०) [तालु+यत्] तालु से सम्बन्ध रखनेवाला तालु स्थानीय । सम०—वर्णः तालु स्थानीय अक्षर अर्थात् इ, ई, च् छ् ज् झ् ञ् और य् तथा श्, —स्वर तालु स्थानीय स्वर— अर्थात् इ ई ।

तालिकः [तल+ठञ्] 1 खुली हथेली 2 तालो बजाना —पर्यंकेण स हस्तेन तालिका सप्रपद्यते—पंच० २।१२८, उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीभिरेष —नै० ३।७ ।

तालितम् [तड्+णिच्+क्त, अस्य+णत्वम्] 1 रंगदार कपड़ा 2. रस्सी, डोरी ।

ताली [तल्+णिच्+अच्+ङीष्] 1 पहाड़ी ताड़ का पेड़, ताड़ का वृक्ष 2. ताड़ी 3. सुगंध युक्त मिट्टी 4. एक प्रकार की कुंजी । सम०—वनम् ताड़ के वृक्षों का समूह—रघु० ४।३४, ६।५७ ।

तालु (नपुं०) [तरन्त्यनेन वर्णाः—तृ+ञुण्, रस्य लः] ऊपर के दांतों और कौवे के बीच का भाग, तृषा महत्या परिशुष्कतालव —ऋतु० १।११ । सम० —जिह्वः मगरमच्छ,—स्थान (वि०) तालु स्थानीय —(नम्) तालु ।

तालूरः [तल्+णिच्+ऊर] जलावर्त, भंवर ।

तालूषकम् [तल्+णिच्+ऊषक] तालु ।

तावक (वि०) (स्त्री०—की) तावकीन (वि०) [युष्मद् +अण्, तवक आदेशः तवक+खञ्] तेरा, तेरी —क्व वयं क्व वसं क्व च तावकं वपुः—कु० ५।४, कि० ३।१२, भामि० १।३६, ९६ ।

तावत् (वि०) ('यावत्' का सह संबंधी) [तद्+डावतु] 1 इतना उतना इतने —ते तु यावन्त एवाजौ तावांश्च ददृशे स तैः—रघु० १२।४५, हि० ४।७२ कु० २।३३ 2 इतना विशाल इतना बड़ा, इतना विस्तृत —यावती संभवेद् वृत्तिस्तावतीं दातुमर्हसि—मनु० ८।१५५ ९।२४९ भग० २।४६ 3 उतना समस्त, सारा याव इत्तं तावद्भुक्तम् गण० (अव्य०) 1 पहले (बिना और कुछ काम किये)—आर्ये इतस्तावदागम्यताम् श० १, आह्लादयस्व तावच्चन्द्रकरचन्द्रकान्तमिव विक्रम० ५।११ मेघ० १३ 2 किसी की ओर से इसी बीच में—सर्वे स्थिरप्रतिबन्धो भव, अहं तावत स्वामिनश्चित्तवृत्तिमनुवर्तिष्ये श० २ रघु० ३।१२ 3 अब—गच्छ तावत् 4 निस्सन्देह (किसी उक्ति पर बल देने के लिए)—त्वमेव तावत्प्रथमो राजद्रोही—मुद्रा० १, मम त्वयम् त्वमेव तावत्परिचिन्तय स्वयम् कु० ५।६७ 5 सचमुच, वस्तुत (स्वाकृतिसूचक)—बहुरत्ना-वसुन्धरा कि० १ 6 के विषय में के संबंध में—विग्रह स्तावदुपस्थित हि० ३, एवं कृते मम तावत्क्लेशं बिना प्राणयात्रा भविष्यति पंच० १ 7 पूर्णरूप से—तावत्प्र-कीर्णाभिनवोपचाराम्—रघु० ७।४ (तावत्प्रकीर्ण - कार्त्स्येन प्रसारित—मल्लि०) 8 आश्चर्य (ओह ! कितना आश्चर्य है ।) ('यावत्' के सहसंबंधी के रूप में तावत् का अर्थ देखो—'यावत्' के नीचे) सम०—कृत्वः (अव्य०) इतनी बार, मात्रम् केवल इतना —वर्ष (वि०) इतने वर्ष पुराना ।

तावतिक (वि०) तावत्क (वि०) [तावत्+क, इट्] इतने से मोल लिया हुआ, इतने मूल्य का, इतनी कीमत का ।

ताबुरिः [पुं० ग्रीक शब्द] वृष राशि ।

तिक्त (वि०) [तिज्+क्त] 1 कडवा, तीखा (छः रसों में से एक) मेघ० २० 2 सुगंधित —मेघ० १३, —क्तः 1 कडवा स्वाद, (कटु के नीचे दे०) 2 कुटज वृक्ष 3 तीखापन 4 सुगंध। सम०—गन्धा सरसों,—धातुः पित्त,—फलः,—मरिचः कतक का पौधा,—सारः खैर का वृक्ष ।

तिग्म (वि०) [तिज्+मक् जस्य गः] 1 पैना, नुकीला (शस्त्रों की भांति) 2 प्रचण्ड 3 गरम, दाहक 4 तीखा, चरपरा 5 उत्तेजक जोशीला, —ग्मम् 1 गर्मी 2 तीखा-पन। सम०—अंशुः 1 सूर्य—तिग्मांशुरस्तगतः—गीत० ५ 2 आग 3 शिव,—करः,—दीधितिः,—रश्मिः सूर्य ।

तिज् I (भ्वा० आ० (तिज् का नितांत इच्छार्थक) तितिक्षते, तितिक्षित) 1 सहन करना, बर्दाश्त करना, माफ करना, निर्वाह करना, साहस के साथ भुगतना —तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम् —मालवि० १।१७, तांस्तितिक्षस्व भारत —भग० २।१४ महावी० २।१२ कि० १३।६८ मनु० ६।४७, II (चुरा० उभ० या प्रेर० तेजयति —ते, तेजित) 1 पैना करना, पनाना —कुसुमचापमतेजयदंशुभिः रघु० ९।३९ 2 उकसाना, उत्तेजित करना, भड़काना।

तितउः [तन्+डउ, द्वित्वम्, इत्वम्] चलनी (नपुं०) छाता।

तितिक्षा [तिज्+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] सहनशीलता, सहिष्णुता, क्षमा, धैर्य।

तितिक्षु (वि०) [तिज्+सन्+उ, द्वित्वम्] सहिष्णु, सहन करने वाला, सहनशील।

तितिभः [तितीतिशब्देन भासते इति भण्+ड] 1 जुगनू 2 एक प्रकार का कीड़ा, इन्द्रवधू, बीरबहौटी।

तित्तिरः, तित्तिरि [तित्ति इति शब्दं गौति ददाति रा+क] चकोर, तीतर।

तित्तिरिः [तित्तीति शब्दं रौति रु+डि, वा० ...] 1 तीतर 2 एक ऋषि जो कृष्णयजुर्वेद का प्रथम अध्यापक था।

तिथ [तिज्+थक्, जलोप] 1 अग्नि 2 प्रेम 3 समय 4 वर्षा ऋतु या शरद।

तिथि (पुं० या स्त्री०) [अत्+इथिन् पृषो० वा ङीप्] 1 चान्द्र दिवस —तिथिरेव तावन्न शुध्यति मुद्रा० ५ कु० ६।९३, ७।१ 2 '१५' की संख्या। सम० —क्षयः 1 अमावस्या 2 वह तिथि जो आरम्भ होकर सूर्योदय से पूर्व ही या दो सूर्योदयों के बीच में ही समाप्त हो जाती है, —पत्री पञ्चाङ्ग —प्रणी चाँद, —वृद्धिः वह दिन जिसमें तिथि दो सूर्योदयों के अन्दर पूरी होती है।

तिनिशः (पुं०) एक वृक्ष विशेष —ग्राम्यैर्हंसैस्तिनिशस्य कोटरं पति स्कन्धे निलीय स्थितम् —मा० ९।७।

तिन्तिडः,—डी, तिन्तिडिका, तिन्तिडीक [तिन्तिडी पृषो० तिन्तिडी+कन्+टाप्, ह्रस्व, तिम्+ईकन् नि०] इमली का वृक्ष।

तिन्दु, तिन्दुक-तिन्दुक [तिम्+कु० नि० तिन्दु+कन पक्षे ... क.] तेन्दू का पेड़।

तिम् (भ्वा० पर० तेमति, तिमित) आर्द्र करना, गीला करना, तर करना।

तिमि [तिम्+इन्] 1 समुद्र 2 एक बड़ी विशालकाय मछली, ह्वेल मछली रघु० १३।१०। सम० —कोशः समुद्र, —ध्वजः एक राक्षस जिसे इन्द्र ने दशरथ की सहायता से मारा था (इसी युद्ध में कैकेयी ने मूर्छित दशरथ के प्राणों की रक्षा की और उनसे दो वर प्राप्त किये, इन्हीं वरों से कैकेयी ने बाद में राम को १४ वर्ष का वनवास दिलाया)।

तिमिङ्गिलः [तिमि+गिल्+खश्, मुम्] एक प्रकार की मछली जो तिमि मछली को निगल जाती है —भामि० १।५५ 'अजगर' 'गिल' एक ऐसी बड़ी मछली जो तिमिङ्गिल को भी निगल जाती है —तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघव।

तिमित (वि०) [तिम्+क्त] 1 गतिहीन, स्थिर, निश्चल 2 आर्द्र, गीला, तर।

तिमिर (वि०) [तिम्+किरच्] अन्धकारमय, —रम् 1 अन्धकार —... तिमिरे ... गीत० ५ ... महा० ... अन्धकार ... तिमिरमपाकरोति चन्द्रः श० ६।१९ कु० ४।११ शि० ९।१७ 2 अन्धापन 3 ... मूर्छा। सम० —अरि, —नुद् (पुं०) रिपु सूर्य।

तिरश्ची [तिर्यक् जाति ... ङीष्] जानवर, पशु या पक्षी (स्त्री०)।

तिरश्चीन (वि०) [तिर्यक्+ख] 1 टेढ़ा, पार्श्वस्थ, तिरछा —गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः शि० १।२ यथा तिरश्चीनमलातशल्यम् उत्तर० ३।३५ 2 अनियमित।

तिरस् (अव्य०) [तरति दृष्टिपथम् तॄ+असुन्] आक्षेपक, टेढ़ेपन से, तिरछेपन से —स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति —अमर० 2 के बिना, के अतिरिक्त 3 चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से, बिना दिखाई दिये (श्रेण्य साहित्य में तिरस् शब्द का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं मिलता—यह मुख्यतः प्रयुक्त होता है (क) कृ के साथ—ढकना, घृणा करना, आगे बढ़ जाना (रघु० ३।८ १६।२० मनु० ४।४९, अमरु ८१ भट्टि० ९।६२ हि० ३।८) (ख) धा के साथ—ढकना, छिपाना, अभिभूत करना, अन्तर्धान होना (रघु० १०।४८ ११।९१) और (ग) भू के साथ—अन्तर्धान होना (रघु० १६।२०, भट्टि० ६।७१, १४।७४)। सम०—करिणी —कारिणी 1 परदा, घूंघट —तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति —कु० १।१४, मालवि० २।१ 2 कनात, कपड़े का पर्दा, —कार —क्रिया 1 छिपाना, अन्तर्धान करना, घृणा —कृत (वि०) 1 जिसकी अवहेलना की गई हो, अपमानित, निराकृत 2 गर्हित 3 गुप्त, ढका हुआ, —धानम् 1 अन्तर्धान होना, दूर हटाना —अथ सा तिरोधानमभियाम् —गङ्गा० १८ 2 आच्छादन, अवगुण्ठन, म्यान, —भाव ओझल होना —हित (वि०) 1 ओझल हुआ, अन्तर्हित 2 ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त।

तिरस्यति (ना० धा० पर०) 1 छिपाना, गुप्त रखना

2 बाधा डालना, रोकना, रुकावट डालना, दृष्टि से ओझल करना – तिरयति करणानां ग्राहकत्वं प्रमोह —मा० १।४० बारम्बार तिरयति दृशोरुद्गमं बाष्पपूर —३५ 3 जीतना ।

तिर्यक् (अव्य०) [तिरस् + अञ्च् + क्विप्, तिरस तिरि आदेश, अञ्चेर्नलोप] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से तिरछा या टेढ़ी दिशा में – विलोकयति तिर्यक्—काव्य० १० मेघ० ५१, कु० ५।७४ ।

तिर्यञ्च् (वि०) (स्त्री० – तिरश्ची विरल – तिर्यञ्ची) [तिरस् + अञ्च् + क्विप् तिरस तिरि आदेश, अञ्चेर्नलोप] 1 टेढ़ा, आड़ा, अनुप्रस्थ, तिरछा 2 मुड़ा हुआ, वक्र (पु० नपुं०) जानवर (जो मनुष्य की भांति सीधा न चल कर, टेढ़ा चलता है) निम्न जाति का या बुद्धिहीन जानवर अन्याय दिव्ये न तिरश्चि कश्चित् पाजाविरामादितपीडन स्यात् – नै० ३।२०, कु० १।४८ । सम० अन्तरम् आरपार मापा हुआ मध्यवर्ती स्थान, चौड़ाई,—अयनम् सूर्य द्वारा वार्षिक परिक्रमण,—ईक्ष (वि०) तिरछा देखने वाला, —जातिः (स्त्री०) पशु-पक्षी की जाति (विप० मनुष्य जाति), —प्रमाणम् चौड़ाई,—प्रेक्षणम् तिरछी आंख करके देखना,—योनिः (स्त्री०) पशु-पक्षी की सृष्टि या वंश —तिर्यग्योनौ च जायते—मनु० ४।२००,—लोकम् (पु०) जानवरों की दुनिया, पशु सृष्टि ।

तिलः [तिल् + क] 1 तिल का पौधा—नालाम्येति तिलप्रसूनपदवीम्—गीत० १० 2 तिल के पौधे का बीज —नाकस्मान्छाण्डिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्, लुञ्चितानितरैर्येन कार्यमत्र भविष्यति । पञ्च० २।५५ 3. मस्सा, धब्बा 4 छोटा कण, इतना बड़ा जितना कि तिल — । सम० —अम्बु,—उदकम् तिल और जल (दोनों को मिला कर मृतकों का तर्पण किया जाता है) अ० ३, मनु० ३।२२३,—उत्तमा एक अप्सरा का नाम, —ओदनः,—नम् तिल और दूध मिश्रित भात, —कल्कः तिल को पीस कर बनाई गई पीठी, तिलों की खली,—कालकः मस्सा, तिल के बराबर शरीर पर होने वाला काला दाग—चित्रम्, —खलिः (स्त्री०) —खली,—चूर्णम् तेल के निकालने के पश्चात् बची हुई तिलों की खल—तण्डुलकम् आलिङ्गन (जिस प्रकार तिल चावल मिलते हैं, इसी प्रकार आलिङ्गन में दो शरीर मिलते हैं), —तैलम् तिलों का तेल —पर्णं तारपीन, (—र्णम्) चन्दन की लकड़ी, —पर्णी 1 चन्दन का पेड़ 2. धूप देवदार 3 तारपीन, – रसः तिलों का तेल, – स्नेहः तिलों का तेल, —होमः वह होम जिसमें तिलों की आहुति दी जाय ।

तिलकः [तिल + कन्] 1 सुन्दर फूलों का एक वृक्ष, —आक्रान्ता तिलकक्रियापि तिलकैर्लीनद्विरेफाञ्जनैः —मालवि० ३।५ न खलु शोभयति स्म वनस्थलीं न तिलकस्तिलकः प्रमदामिव – रघु० ९।४१ 2 शरीर पर पड़ी तिलों या खाल पर हुआ कोई नैसर्गिक चिह्न, —कः,—कम् 1 चन्दन की लकड़ी या उबटन आदि से किया गया चिह्न मुखे मधुश्रीस्तिलकं प्रकाश्य – कु० ३।३० कस्तूरिकातिलकमालि विधाय सायं भामि० २।४, १।१२१ 2 किसी वस्तु का अलङ्कार (पूज्य' 'प्रमुख' 'श्रेष्ठ अर्थ में समास के अन्त में प्रयुक्त), —कम् एक प्रकार का हार —कम् 1 मूत्राशय 2 फेफड़े 3 एक प्रकार का नमक । सम० आश्रयः मस्तक ।

तिलन्तुदः [तिल + तुद् + खश् मुम्] तेली ।

तिलशः (अव्य०) [तिल + शस्] तिल तिल करके, कण कण करके अत्यन्त अल्प परिमाण में ।

तिलित्सः (पु०) एक बड़ा सांप ।

तिल्वः [तिल + वन्] लोध का पेड़ ।

तिष्ठद्गु (अव्य०) [तिष्ठन्त्यो गावो यस्मिन् काले तिष्ठत् + गो नि०] गौओं के दोहने का समय (अर्थात् सायंकाल का समय डेढ़ घण्टा बीतने पर)—इतिष्ठद्गु जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४।१४, (तिष्ठद्गु - रात्रे प्रथमनाडिका) ।

तिष्यः [तुष् + क्यप् नि०] 1 २७ नक्षत्रों में आठवाँ नक्षत्र, इसे पुष्य भी कहते हैं 2. पौष मास (चान्द्र), —ष्यम् कलियुग ।

तीक् (भ्वा० आ० तीकते) जाना, हिलना जुलना, तु० 'टीक्' ।

तीक्ष्ण (वि०) [तिज् + क्स्न, दीर्घ] 1 पैना (सभी अर्थों में) तीखा शि० २।१०९ 2 गरम उष्ण (किरणों की भांति) ऋतु० १।१८ 3 उत्तेजक उग्रशीला 4 कठोर प्रबल, मजबूत (उपाय आदि), 5 कष्टदायक चिड़चिड़ा 6 कठोर, कटु कड़ा, रूक्ष,— मनु० ७।१४० 7 अनिष्टकर, अहितकर, अशुभ 8 उत्सुक 9 बुद्धिमान चतुर 10 उत्साही, उत्कट, ऊर्जस्वी 11 भक्त, आत्मत्याग करने वाला,— क्ष्णः 1 जवाखार 2 काली मिर्च 3 काली मिर्च 4 काली सरसों या राई,— क्ष्णम् 1 लोहा 2 इस्पात 3 गर्मी, तीखापन 4 युद्ध, लड़ाई 5 विष 6 मृत्यु 7 शस्त्र 8 समुद्री नमक 9 जिगरा । सम० —अंशु 1 सूर्य 2 आग, आयसम् इस्पात, उपायः प्रबल साधन सशक्त तदबीर,—कन्दः प्याज, —कर्मन् (वि०) उद्यमी, उत्साही ऊर्जस्वी, —दंष्ट्रः व्याघ्र —धार तलवार —पुष्पम् लौंग —पुष्पा 1 लौंग का पौधा 2 केवड़े का पौधा —बुद्धि (वि०) तीक्ष्णबुद्धि तेज चतुर धाघ कुशाग्रबुद्धि —रश्मि सूर्य —रसः 1 जवाखार 2 उग्र या धातक, उग्र आनु प्रयुक्तानां तीक्ष्णरसदायिनाम् मुद्रा० १।२ —लौहम् इस्पात, —शूकः जौ ।

तीव् (दिवा० पर० तीव्यति) मोटा होना, तर होना।

तीरम् [तीर् + अच्] 1 तट, किनारा — नदीतीर सागरतीर आदि 2 उपान्त, कगर, कोर या धार, —रः 1 एक प्रकार का बाण 2 सीसा 3 टीन।

तीरित (वि०) [तीर् + क्त] मुलझाया हुआ समझित, साक्ष्य के अनुसार निर्णीत,—तम् किसी बात का सोच विचार।

तीर्ण (वि०) [तॄ + क्त] 1 पार किया हुआ पार पहुँचा हुआ 2 फैलाया हुआ प्रसारित 3 पीछे छोड़ाहुआ आगे बढ़ा हुआ।

तीर्थम् [तॄ + थक्] 1 मार्ग सड़क रास्ता, घाट 2 नदी में उतरने का स्थान घाट (नदी के किनारे बनी हुई सीढ़ियाँ) विगमाऽपि विगाढ़ल नय कृततीर्थ पयसा मिवाशय —कि० २।३ (यहाँ तीर्थ का अर्थ 'उपचार या साधन' भी है) तीर्थं सर्वविद्यावतारणाम् —का० ४४ 3 जलस्थान 4 पवित्रस्थान तीर्थयात्रा का उपयुक्त स्थान मन्दिर आदि जो किसी पुण्यकार्य के लिए अर्पित कर दिया गया हो (विशेष कर वह जो किसी पावननदी के किनारे स्थित हो) शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् भर्तृ० २।५५ रघु० १।८५ 5 मार्ग, माध्यम साधन —तदनेन तीर्थेन घटेत—आदि मा० १ 6 उपचार, तरकीब 7 पुण्यात्मा, योग्यव्यक्ति श्रद्धा का पात्र, उपयुक्त आदाता क्व पुनस्तादृशस्य तीर्थस्य साधो संभव उत्तर० १, मनु० ३।१०३ 8 धर्मोपदेष्टा, अध्यापक यथा तीर्थादभिनयविद्या शिक्षिता —मालवि० १ 9 स्रोत, मूल 10 यज्ञ 11 मन्त्री 12 उपदेश शिक्षा 13 उपयुक्त स्थान या क्षण 14 उपयुक्त या यथापूर्व रीति 15 हाथ के कुछ भाग जो देवताओं और पितरों के लिए पवित्र होते हैं 16 दर्शनशास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त वादी 17 स्त्रियों का रजस्राव 18 रजोरज 19 ब्राह्मण 20 अग्नि एक सम्मान सूचक प्रत्यय जो सन्तों और सन्यासियों के नामों के साथ जोड़ा जाय - उदा० आनन्दतीर्थ आदि। सम० —उदकम् पवित्र जल —तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः उत्तर० १।१३, —कर 1 जैन अर्हत्, धर्मशास्त्रोपदेष्टा, जैन सन्त (इस अर्थ में 'तीर्थंकर' भी) 2 संन्यासी 3 अभिनव दार्शनिक सिद्धान्त या धर्मशास्त्र का प्रवर्तक 4 विष्णु,—काक,—ध्वांक्ष, —वायस तीर्थ का कौवा अर्थात् लोलुप तीर्थोपजीवी —भूत (वि०) पावन, पवित्र, —यात्रा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ जाना, पावनस्थानों की यात्रा, —राजः प्रयाग, इलाहाबाद, —राजिः —जी (स्त्री०) बनारस का विशेषण, —वाक सिर के बाल,—विधि (तीर्थ आदि) संस्कार जो किसी तीर्थ स्थान पर किये जायें, —सेविन् (वि०) तीर्थ में वास करने वाला (पुं०) सारस।

तीर्थिक [तीर्थ + ठन्] तीर्थ यात्री, वह सन्यासी ब्राह्मण जो तीर्थों के दर्शनार्थ निकला हुआ चला।

तीवर [तॄ + ष्वरच्] 1 समुद्र 2 शिकारी 3 राजपूती की किसी क्षत्रिय (वर्णसंकर) के संयोग से उत्पन्न वर्णसंकर सन्तान।

तीव्र (वि०) [तीव् + रक्] 1 कठोर, गहन, पैना, तेज, प्रचण्ड कड़वा तीखा उग्र—विलङ्घिताधोरणतीव्रयत्ना रघु० ५।४८, धार या प्रचण्ड प्रयत्न उत्तर० ३। ३५ 2 गरम उष्ण 3 चमकीला 4 व्यापक 5 अनन्त, असीम 6 भयानक डरावना - व्रम् 1 गरमी तीखापन 2 किनारा 3 लोहा इस्पात 4 टीन, रांगा,—व्रम् (अव्य०) प्रचण्ड रूप से तेजी से, अत्यन्त। सम० आनन्द शिव का विशेषण - गति (वि०) शीघ्रगामी फुर्तीला पौरुषम् 1 साहसपूर्ण कार्य 2 शूरवीरता संवेग (वि०) 1 दृढ आवेगयुक्त, दृढनिश्चयी 2 अत्युग्र अत्यन्त तेज।

तु (अव्य०) [तुद् + डु] (वाक्य के आरम्भ में नितान्त प्रयोगाभाव प्राय प्रथम शब्द के पश्चात् प्रयोग) 1 विरोध सूचक अव्यय अर्थ 'परन्तु' 'इसके विपरीत' 'दूसरी ओर' 'तो भी' —स सर्वेषां सुखानामन्तं ययौ, एकं तु सुतमुखदर्शनसुखं न लेभे का० ५९, विरमये तु पितुरस्या समीपनयनमवस्थितमेव - श० ५ (इस अर्थ में 'तु बहुधा 'कि' और 'पर' के साथ जोड़ दिया जाता है और 'किन्तु' तथा 'परन्तु' तु के विपरीत वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं) 2 और अब तो और एकदा तु प्रनिहारी समुपसृत्याब्रवीत् का० ८, राजा तु तामार्यां श्रुत्वाऽब्रवीत् — १२ 3 के सम्बन्ध में के विषय में, की बाबत —प्रवर्तयामि ब्राह्मणानुद्दिश्य पाकं, चन्द्रोपराग प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि —मुद्रा० १ 4 कभी कभी इससे 'भेद' या 'श्रेष्ठ गुण' का पता लगाता है—मृष्टं पयो मृष्टतरं तु दुग्धम् —गण० 5 कभी कभी यह 'बलात्मक' अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है भीमस्तु पाण्डवानां रौद्र, गण० 6 कभी कभी केवल यह पद पूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है — निरर्थकं तुहीत्यादि पूरणैकप्रयोजनम् चन्द्रा० २।६।

तुक्खार, तुखार, तुषार (पुं०) विन्ध्याचल पर रहने वाली एक जाति के लोग —तु० विक्रमांक० १८।९३।

तुङ्ग (वि०) [तुञ्ज् + घञ्, कुत्वम्] 1 ऊँचा, उन्नत, लम्बा, उत्तुंग, प्रमुख—वल्कनिर्भिन्नमिव विधुमण्डलदर्शनतरलिततुङ्गतरङ्गम् — गीत० ११, तुङ्ग नगोत्सङ्गमिवारुरोह रघु० ६।३ ४।७०, शि० २।४८, मेघ० १२।६४ 2 दीर्घ 3 गुरु भारदार 4 मुख्य, प्रधान 5 उग्र, जोशीला, —ङ्गः 1 ऊँचाई उन्नतता 2 पहाड़ 3 चोटी, शिखर 4 बुधग्रह 5 गैंडा 6 नारियल का पेड़। सम०

—**बीज** पारा —**ज** दुर्दान्त हाथी, मदमत्त हाथी —**भद्रा** एक नदी जो कृष्णा नदी में गिरती है, —**वेणा** एक नदी का नाम —**शेखर** पहाड़ ।

तुङ्गी [तुङ्ग+ङीष्] 1 रात 2 हल्दी । सम० —**ईश** 1 चन्द्रमा 2 सूर्य 3 शिव की उपाधि 4 कृष्ण की एक उपाधि, —**पति** चन्द्रमा ।

तुच्छ (वि०) [तुद्+क्विप्=तुत्+छो+क] 1 खाली शून्य असार, मन्द 2 अल्प क्षुद्र नगण्य 3 परित्यक्त सम्परित्यक्त 4 नीच कमीना, नगण्य तिरस्करणीय निकम्मा 5 गरीब, दीन दुःखी —**च्छम्** तुष भूसी । सम० —**द्रु** एरण्ड का वृक्ष —**धान्य**, —**धान्यक** भूसी तूर ।

तुञ्ज [तुञ्ज्+अच्] इन्द्र का वज्र ।

तुटुम [तुट्+उम] मूसा चूहा ।

तुण् (तुदा० पर० —तुणति) 1 टेढ़ा करना मोड़ना झुकाना 2 चालबाजी करना ठगना धोखा देना ।

तुण्डम् [तुण्ड+अच्] 1 मुँह चेहरा चोंच (सूअर की) —चूतनतुण्डैराताम्रकुटिलैः (शुका) —काव्या० २।९ 2 हाथी की सूंड 3 उपकरण की नोक ।

तुण्डिः [तुण्ड्+इन्] 1 चेहरा, मुँह 2 चोंच —**ण्डि** (स्त्री०) नाभि, तुण्डी ।

तुण्डिभ् (पु०) [तुण्ड+इनि] शिव के बैल का नाम ।

तुण्डिभ (वि०) [तुण्ड्+भ] दे० 'तुन्दिभ' ।

तुण्डिल (वि०) [तुण्ड्+भ पिच्छा० लत्वं वा] 1 बातूनी वाचाल 2 उभरी हुई नाभि वाला 3 गप्पी— तु० 'तुन्दिल' ।

तुत्थः [तुद्+थक्] 1 आग 2 पत्थर —**त्थम्** एक प्रकार का नीला थोथा या तूतिया जो सुर्मे की भाँति आँख में डाला जाय —**त्था** 1 छोटी इलायची 2 नील का पौधा । सम० —**अञ्जनम्** तूतिया या कासीस जो आँखों में दवा की भाँति लगाया जाय ।

तुद् (तुदा० पर० —तुदति, तुन्न) 1 प्रहार करना घायल करना, आघात करना तुतोद गदया चारिम् भट्टि० १४।८१, १५।३७, शि० २०।७७ 2 चुभोना अंकुश चुभोना 3 खरोंचना, चोट पहुँचाना 4 पीड़ा देना तंग करना, सताना, कष्ट देना —सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम् —ऋतु० २।४, ६।२८, **आ—**, प्रहार करना, ताड़ना देना, मनु० ४। ६८, **प्र—**, मारना चोट पहुँचाना घायल करना (प्रेर०) प्रेरित करना, आगे ढकेलना (आल०), जोर डालना, बार २ आग्रह करना (किसी काम को करने के लिए) —प्रोत्सा गुहुर्मिर्नि प्रतोद्यमाना न चलन्ति भाग्यकृतो दशामवेक्ष्य मृच्छ० १।५६ ।

तुन्दम् [तुन्द्+अच् पृषो०] पेट, तोंद । सम० —**कूपिका**, —**कूपी** नाभि का गर्त —**परिमार्ज**, **परिमृज्** —**मृज** (वि०) सुस्त, आलसी ।

तुन्दवत् (वि०) [तुन्द+मतुप् मस्य वत्वम्] तोंदवाला मोटा ।

तुन्दिक, **तुन्दिन्**, **तुन्दिभ**, **तुन्दिल** (वि०) [तुन्द+ठन्, तुन्द+इनि तुन्दि+भ, तुन्द+इलच्] 1 मोटे पेट वाला 2 जिसकी तोंद बढ़ गई है 3 भरा हुआ, लदा हुआ —मकरन्दतुन्दिलानामरविन्दानामयं महामान्य —भामि० १।६ ।

तुन्न (वि०) [तुद्+क्त] 1 प्रहृत चोट किया हुआ घायल 2 सताया हुआ । सम० —**वाय** दर्जी ।

तुप् (दिवा० क्र्या० पर०— तुप्यति तुप्नाति) चोट मारना क्षति पहुँचाना प्रहार करना भट्टि० १७। ७९ ९० ।

तुमुल (वि०) [तु+मुलक] 1 जहाँ पर शोरगुल मच रहा हो कोलाहलमय भग० १।१३ १९ 2 भीषण क्रोधी रघु० ३।५७ 3 उत्तेजित 4 उद्विग्न घबराया हुआ व्याकुल अव्यवस्थित रघु० ५।४९ (पु० नपुं०) 1 हो-हल्ला हंगामा 2 अव्यवस्थित द्वन्द्व युद्ध रण संकुल ।

तुम्ब [तुम्ब्+अच] एक प्रकार की लौकी ।

तुम्बरु [तुम्ब+रा+कु] एक गन्धर्व का नाम दे० तुम्बुरु —**रम्** एक प्रकार का बाजा —**र** नाम पूरा ।

तुम्बा [तुम्ब+टाप्] 1 एक प्रकार की लम्बी लौकी दुधार गाय ।

तुम्बि, **बी** (स्त्री०) [तुम्ब्+इन् तुम्बि+ङीष्] एक प्रकार की लौकी कड़वी तूम्बी —न हि तुम्बीफलविकलो वीणादण्डः प्रयाति महिमानम् —भामि० १।८० ।

तुम्बु (म्बु) रु [तुम्ब+उरु] एक गन्धर्व का नाम ।

तुरङ्ग [तुरेण वेगेन गच्छति तुर+गम्+ड] 1 घोड़ा —तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः श० १।३१ रघु० १।४२ ३।५१ 2 मन विचार —**ङ्गी** घोड़ी । सम० —**आरोह** घुड़सवार अश्वारोह सादल —**प्रिय**, —**यम्** जौ —**ब्रह्मचर्यम्** स्थान-कुल या अनिवार्य ब्रह्मचर्य स्त्रीसंग के अभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य जीवन बिताना ।

तुरङ्गिन् (पु) [तुरङ्ग+इनि] घुड़सवार ।

तुरङ्ग [तुर+गम+खच् मुम् वा डिच्च] घोड़ा —मानुषमाहुतुरङ्ग एव —श० ५।५ रघु० ३।३८, १३।३ —**गम्** मन विचार —**गी** घोड़ी । सम० —**अरि** भैंसा —**द्विषणी** भैंस —**प्रिय**, —**यम्** जौ —**मेध** अश्वमेध यज्ञ रघु० १३।६१ —**सादिन्**, **सादिन्** (पु०) सवार,— **वदन** किन्नर —**शाला**, —**स्थानम्** अस्तबल अश्वशाला —**स्कन्ध** घोड़ों का दल ।

तुरङ्गम [तुर+गम+अच मुम्] घोड़ा रघु० ३।६३ ९।७० ।

तुरायणम् [तुर+फक] 1. अनासक्ति 2 एक प्रकार का यज्ञ ।

तुरासाह् (पुं०) [तुर + सह् + णिच् + क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तुराषाट्-ड्) इन्द्र, कु० २।१, रघु० १५।४० ।

तुरी [तुर्+इन्+ङीप्] 1. एक रेशेदार उपकरण जिससे जुलाहे धागे के तारों को साफ़ करके अलग अलग करते हैं 2. नली, जुलाहे की नाल—तन्तुदण्डतुरीतुरी—नै० १।१२ 3. चित्रकार की कूची ।

तुरीय (वि०) [चतुर्+छ, आद्यलोप] चौथा,—यम् चौथाई, चौथा भाग, चौथा (वेदा० द० में) 2 आत्मा की चतुर्थ अवस्था जिसमें वह ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के साथ तदाकार हो जाती है । सम०—वर्णः चौथे वर्ण का मनुष्य, शूद्र ।

तुरुष्काः (ब० व०) तुर्क लोग ।

तुर्य (वि०) [चतुर्+यत्, आद्यलोपः] चौथा, नै० ४।१२३, —र्यम् 1 एक चौथाई, चौथा भाग 2 (वेदा० द० में) आत्मा की चौथी अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्म के साथ तदाकार हो जाती है ।

तुल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—तोलति, तोलयति—ते, (तुलयति-ते भी जिसे कुछ लोग 'तुला' की नामधातु मानते हैं) 1. तोलना, मापना 2. मन में तोलना, विचार करना, सोचना 3 उठाना, ऊपर करना —कैलासे तुलिते—महावी० ५।३७, पौलस्त्यतुलितस्याद्रेरादधान इव ह्रियम्—रघु० ४।८०, १२।८९, शि० १५।३० 4 सम्भालना, पकड़ना सहारा देना—पृथिवीतले तुलितभूभृद्भुजौ—शि० १५।३०, ६१ 5. तुलना करना, उपमा देना (करण० के साथ)—मुखं श्लेष्मागारं तदपि च शशाङ्केन तुलितम्—भर्तृ० ३।२०, शि० ८।१२ 6 तुल्य होना, समकक्ष होना (कर्म० के साथ) प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः—मेघ० ६४ 7. हल्का करना, गर्हण करना, तिरस्कार करना—अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वाम्—मेघ० २०, (यहाँ 'तु' का अर्थ है 'सम्भालना या बहा ले जाना') शि० १५।३० 8. सन्देह करना, अविश्वास पूर्वक परीक्षण करना—क श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति—मृच्छ० ३।२४, ५।४३ (यहाँ कुछ संस्करणों में 'तूलयिष्यति' भी पाठ है) 9 जाँच करना, परीक्षण करना, दुर्दशा करना—हा अवस्थे ! तुलयसि—मृच्छ० १, (तूलयसि),—उद्,—सम्भालना, सहारा देना, थामे रहना ।

तुलनम् [तुल्+ल्युट्] 1 तोलना 2 उठाना 3. तुलना करना उपमा देना आदि,—ना 1 तुलना 2. तोलना 3. उठाना उन्नयन 4 निर्धारण करना, आंकना, प्राक्कलन करना 5. परीक्षा करना ।

तुलसी [तुलां सादृश्यं स्यति नाशयति—तुला+सो+क +ङीप्] एक पवित्र पौधा जिसकी हिन्दू विशेषकर विष्णु के उपासक पूजा करते हैं । सम०—पत्रम् (शा०) तुलसी का पत्ता, (आलं०) बहुत तुच्छ उपहार,—विवाहः कार्तिक शुक्ला द्वादशी को, बालकृष्ण की प्रतिमा के साथ तुलसी का विवाह ।

तुला [तोल्यतेऽनया—तुल्+अङ+टाप्] तराजू, तराजू की डंडी ।

तुलना 1. तराजू में रखना, तोलना 2. माप तोल 3. तोलना 4. मिलाना—तुलना, समानता, समकक्षता, समता (संब०, करण० या समास में प्रयोग)—कि धूर्जटेरिव तुलामुपयाति संयत्ये—वेणी० ३।८, तुलां यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।३४, रघु० ८।१५, अतः परस्पर-तुलामधिरोहतां द्वे—रघु० ५।६८, १९।८, ५० 5. तुला राशि, सातवीं राशि—व्रजति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलदपटलानि—पंच० १।३३० 6. घर की छत पर लगा ढालू शहतीर 7 सोना चाँदी तोलने का १०० पल बट्टा । सम०—कूटः कम तोलना,—कोटिः,—टी नूपुर (पैरों में पहनने का स्त्रियों का आभूषण)—लीला-चलत्स्त्रीचरणारुणोत्पलस्खलत्तुलाकोटिनिनादकोमलः—शि० १२।४४,—कोशः—षः तोल द्वारा कठिन परीक्षा,—दानम् शरीर के बराबर तोल कर सोने या चाँदी का किसी ब्राह्मण के लिए दान,—धटः तराजू का पलड़ा,—धरः 1. व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर 2. राशि-चक्र में तुलाराशि,—धारः व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर,—परीक्षा तुला द्वारा तोलने की कठिन परीक्षा,—पुरुषः सोना, जवाहरात तथा अन्य मूल्यवान् वस्तुएँ जो एक मनुष्य के भार के बराबर हों (तथा दान में किसी ब्राह्मण के लिए दी जायँ) तु० तुलादान,—प्रग्रहः,—प्रग्राहः तराजू की डंडी या डोरी,—मानम्,—यष्टिः तराजू की डंडी,—बीजम् घुंघची, गुंजा,—सूत्रम् तराजू की डोरी ।

तुलित (भू० क० कृ०) [तुल्+क्त] 1 तोला हुआ, प्रतितुलित 2 तुलना किया हुआ, उपमित, बराबर किया हुआ—भर्तृ० ३।२६, दे० 'तुल्' ।

तुल्य (वि०) [तुलया संमितं यत्] 1. समान प्रकार या श्रेणी का, सन्तुलित, समान, सदृश, अनुरूप (संबं० या करण० के साथ अथवा समास में) मनु० ४।८६, याज्ञ० २।७७, रघु० २।३५, १२।८०, १८।३८ 2. योग्य 3. समरूप, वही 4 समवर्ती । सम०—दर्शन समदर्शी, सबको समदृष्टि से देखने वाला, पानम् मिलकर मद्यपान करना, सहपान,—योगिता (अलं० शा० में) एक अलंकार, एक ही विशेषण रखने वाले कई पदार्थों का एकत्र प्रयोग, पदार्थ चाहे प्रसंगानुकूल हों अथवा असंबद्ध—नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता—काव्य० १०, तु० चन्द्रा० ५।४१,—रूप (वि०) अनुरूप, समरूप, समान, सदृश ।

तुवर (वि०) [तु+ष्वरच्] 1 कषाय, कसैला 2. बिना दाढ़ी का (तूवर भी) ।

तुष् (दिवा० पर०—तुष्यति, तुष्ट), प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, परितृप्त होना, खुश होना (प्रायः करण० के साथ)—रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा—भर्तृ० २।८० मनु० ३।२०७, भग० २।५५ भट्टि० २।११, १५।८, रघु० ३।६२, प्रेर० —तोषयति ते, प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, सन्तुष्ट करना, परि—,परितृप्त होना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या—भर्तृ० ३।५०, अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या २।२, सम् ,प्रसन्न होना, परितृप्त होना सन्तुष्ट होना—सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च मनु० ३।६०, भर्तृ० ३।५, भग० ३।१७ ।

तुषः [तुष्+क] अनाज की भूसी, अवाग्नताय तत्सर्व (अध्ययनम्) तुषाणां कण्डनं यथा—मनु० ४।७८ । सम०—अग्निः—अनलः अनाज की भूसी या तूर की आग,—अम्बु (नपुं०),—उदकम् चावल या जौ की कांजी,—ग्रहः, —सारः आग ।

तुषार (वि०)[तुष+आरक्] ठण्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (पाले के कारण शीतल), ओस से युक्त—कि० ९।७, बर्हो हि तृष्णाय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा—नै० ३।९३, —रः 1 कोहरा, पाला 2 बर्फ, हिम—कु० ११६, ऋतु० ४।१ 3 ओस—रघु० १४।८४ श० ५।१९ 4. फुहार, शीकवर्षा, फुहार, ठण्डे पानी की बौछार,—पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम् रघु० २।१३, ५।५८ 5. एक प्रकार का कपूर । सम०—अद्रिः, —गिरिः,—पर्वतः हिमालय पहाड़—तुषाराद्रिवात: —मेघ० १०७, —कणः ओस के कण, हिमकण, कुहरा पाला,—कालः सरदी का मौसम,—किरणः, रश्मिः चन्द्रमा,—अमरु ४९, शि० ९।२७,—गौर (वि०) 1. हिम की भांति श्वेत 2. हिम के कारण श्वेत,—रः कपूर ।

तुषिताः (ब० व०)[तुष्+कितच्] उपदेवताओं का समूह जो गिनती में १२ या ३६ कहे जाते हैं ।

तुष्ट (भू० क० कृ०) [तुष्+क्त] 1 प्रसन्न, तुष्ट, खुश, परितृप्त, परितुष्ट 2. जो कुछ अपने पास है उसी से सन्तुष्ट, तथा अन्य के प्रति उदासीन ।

तुष्टिः (स्त्री०) [तुष्+क्तिन्] 1. सन्तोष, परितृप्ति, प्रसन्नता, परितोष 2. (सां० द० में) मौन स्वीकृति, प्राप्त वस्तु से अधिक की कामना न होना ।

तुस्तुः [तुष्+तुक्] कर्णमणि कानों में पहनने की मणि

तुह्=तुद् ।

तुहिन (वि०) [तुह्+इनन्, तुहत्यर्थ] ठण्डा, शीतल, —नम् 1. हिम, बर्फ 2. ओस, कुहरा तुषारकणो-न्मुखीभिः पर्यायुः—ऋतु० ३।७, ३।१५ 3 चांदनी 4 कपूर । सम०—अंशुः,—करः,—किरणः,—द्युतिः, —रश्मि 1 चन्द्रमा,—शि० ९।३० 2 कपूर, —अचलः —अद्रिः,—शैलः हिमालय पहाड़, —रघु० ८।५४,—कणः ओस की बूंद—अमरु ५४, —शर्करा बर्फ ।

तूण् i (चुरा० उभ०—तूणयति—ते) सिकोड़ना, ii (चुरा० आ०—तूणयते) भरना, भर देना ।

तूणः [तूण्+घञ्] तरकस मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे गीत० १, रघु० ७।५७ । सम० —धारः धनुर्धर ।

तूणी, तूणीर [तूण+ङीप्, तूण्+ईरन्] तरकस —रघु० ९।५६ ।

तूबरः [तु+क्विप्, तु+वृ पृषो०] 1 बिना दाढ़ी का मनुष्य 2 बिना सींग का बैल 3 कषाय, कसैला 4 हिजड़ा ।

तूर् (दिवा० आ०—तूर्यते, तूर्ण)1 जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2 चोट पहुँचाना, मारना ।

तूरम् [तूर्+घञ्] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र ।

तूर्ण (वि०) [त्वर्+क्त ऊठ तस्य नत्वम्] फुर्तीला तेज, शीघ्रकारी 2 द्रुतगामी वेग, —र्णं फुर्ती, शीघ्रता, —र्णम् (अव्य०) फुर्ती से, जल्दी से तूर्णमानीयतां तूर्णं पूर्णचन्द्रनिभाननं—सुभाष० ।

तूर्यः,—र्यम् [तूर्यते ताड्यते तूर्+यत्] एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, तुरही—मनु० ७।२२५, कु० ७।१० । सम० —ओघः उपकरणों का समूह ।

तूलः, —लम् [तूल्+क] रुई,—लम् 1 पर्यावरण, आकाश वायु 2 घास का गुच्छा 3 शहतूत का पेड़,—ला 1 कपास का पेड़ 2. लैम्प की बत्ती,—ली 1 रुई 2 दीवे की बत्ती 3 जुलाहे का बुश या कूची 4 चित्रकार की कूची या तूलिका 5 नील का पौधा । सम०—कार्मुकम् —धनुस् धुनकी, अर्थात् रुई पीनने की धनुही, —पिचुः रुई, —शर्करा बिनौला रुई के पौधे का बीज ।

तूलकम् [तूल+कन्] रुई ।

तूलिः (स्त्री०) [तूल्+इन्] चितेरे की कूची ।

तूलिका [तूलि+कन्+टाप] चित्रकार की कूची, लेखनी, —उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रम्—कु० १।३२ 2 रुई की बत्ती (दीपक के लिए अथवा उबटन आदि लगाने के लिए) 3 रुई भरा गद्दा 4. बर्मा, छेद करने की सलाख ।

तूष्णीक (वि०) [तूष्णीम्+क, मलोप] चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी ।

तूष्णीम् (अव्य०)[तूष्+नीम् बा०] नीरवता में चुपचाप, चुपके से, बिना बोले या बिना किसी कोलाहल के किं वयांस्तूष्णीमास्ते—विक्रम० २, न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह भग० २।९ । सम०—भावः नीरवता, निस्तब्धता, —शीलः खामोश, स्वल्पभाषी या मौनी ।

तूलकम् [तूल्+तम्, दीर्घ] 1 बटा 2 धूल 3 पाप 4 कण, सूक्ष्म अणु ।

तृंह् (तुदा० पर० —तृंहति) मारना, चोट पहुँचाना—दे० तृह् ।

तृणम् [तृह्+नक्, हलोपश्च] 1 घास - किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी भर्तृ० २।२९ 2 घास की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3 तिनकों की बनी कोई चीज (जैसे बैठने की चटाई), तुच्छता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त - तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि—भर्तृ० २।१७, दे० 'तृणीकृ' भी । सम० —अग्निः 1 घुस या तिनकों की आग - मनु० ३।१६८ 2 जल्दी बुझ जाने वाली आग —अञ्जनः गिरगिट, —अटवी ऐसा जङ्गल जिसमें घास की बहुतायत हो,—आवर्तः हवा का बवण्डर, भ..., —कुङ्कुमम् (नपुं०), —कुङ्कुमम्, —गौरम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य —द्रुमः ताड़ का वृक्ष, —उल्का तिनकों की मशाल, फूँस की आग की लौ —ओकम् (नपुं०) फूँस की झोपड़ी, —काण्डः, —कम् घास का ढेर, —कुटी —कुटीरकम् घास फूँस की कुटिया —केतुः ताड़ का वृक्ष, —गोधा एक प्रकार की गिरगिट, गोह, —ग्राहिन् (पुं०) नीलम नीलकान्त मणि —चरः गोमेद, एक प्रकार का रत्न —जलायुका, —जलूका तिनकों का लार्वा, —द्रुमः 1 ताड़ का वृक्ष, खजूर 2 नारियल का पेड़ 3 सुपारी का पेड़ 4 केतकी का पौधा 5 छुहारे का वृक्ष, —धान्यम् जङ्गली अनाज जो बिना बोये उगे, —ध्वजः 1 ताड़ का वृक्ष 2 बांस, —पीडम् दस्त ब-दस्त लड़ाई, —पूली चटाई, सरकण्डों का बना मूढ़ा —प्राय (वि०) तिनके के मूल्य का निकम्मा, नगण्य, —बिन्दुः एक ऋषि का नाम— रघु० ८।७९,—मणिः एक प्रकार का रत्न (अम्बर, राल), —मत्कुणः जमानत या जामिन प्रतिभू (सम्भवत 'ऋणमत्कुण' का अशुद्ध पाठ), —राजः 1 नारियल का पेड़ 2 बांस 3 ईख गन्ना 4 ताड़ का पेड़ —वृक्षः 1. ताड़ का पेड़, खजूर का वृक्ष 2 छुहारे का वृक्ष 3 नारियल का पेड़ 4 सुपारी का पेड़ —शीतम् एक प्रकार का सुगन्धित घास, —सारा केले का पेड़, —सिंहः कुल्हाड़ा, —हर्म्यम् घास फूँस का बना घर ।

तृण्या [तृण+य+टाप्] घास का ढेर ।

तृतीय (वि०) [त्रि+तीय सम्प्र०] तीसरा —यम् तीसरा भाग । सम० —प्रकृतिः (पुं०, स्त्री०) हीजड़ा ।

तृतीयक (वि०) [तृतीय+कन्] प्रति तीसरे दिन होने वाला, (बुखार) तैया ।

तृतीया [तृतीय+टाप्] 1 चान्द्र पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2 (व्या० में) करण कारक या उसके विभक्ति-चिह्न । सम० —कृत (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता गया,—तत्पुरुषः करणकारक का समास,—प्रकृतिः (पुं० स्त्री०) हीजड़ा ।

तृतीयिन् (वि०) [तृतीय+इनि] तीसरे अंश का अधिकारी (दाय का) ।

तृद् (रुधा० पर०, रुधा० उभ० तर्दति, तृणत्ति, तृन्दे, तृण्ण) 1 फाड़ना, खण्ड-खण्ड करना, चीरना 2 मार डालना, नष्ट करना, संहार करना—भट्टि० ६।३८, १४।३३, १०८, १५।१६, ४४ 3 मुक्त करना 4. अवज्ञा करना ।

तृप् I (दिवा०, स्वा०, तुदा० पर० तृप्यति, तृप्नोति, तृपति, तृप्त) 1 सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना —अथ तप्स्यन्ति मांसादाः भट्टि० १६।२९, प्राशीन्न चातृपत् क्रूरः—१५।२९, (प्रायः करण० के साथ, परन्तु कभी-कभी सम्ब० या अधि० के साथ भी)—को न तृप्यति वित्तेन हि० २।१७४ तृप्तस्तामिविविके(?)—भर्तृ० २।३४, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः, नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचना—पञ्च० १।१३७, तस्मिन्ह तत्पुर्देवास्तदे यज्ञे - महा० 2 प्रसन्न करना, परितृप्त करना, —प्रेर० परितृप्त करना, प्रसन्न करना - इच्छा० तितृप्सति, तितर्पिषति, II (स्वा० पर० चुरा० उभ०— तर्पति, तर्पयति—ते) 1 जलाना, प्रज्वलित करना 2 (आ०) सन्तुष्ट होना ।

तृप्त (वि०) [तृप्+क्त] सतृप्त, संतुष्ट, परितुष्ट ।

तृप्तिः (स्त्री०) [तृप्+क्तिन्] संतोष, परितोष, रघु० २।३९ ७३, ३।३ मनु० ३।२७१ भग० १०।१८ 2 अतितृप्ति, ऊब 3 प्रसन्नता, परितुष्टि ।

तृष् (दिवा० पर० तृष्यति तृषित) 1 प्यासा होना,—भट्टि० ७।१०६, १४।३०, १५।५१ 2 कामना करना, लालायित होना, उत्सुक या उत्कंठित होना ।

तृष् (स्त्री०) [तृष्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तृट्—ड्) 1 प्यास —तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि—भर्तृ० ३।९२ ऋतु० १।११ 2 लालसा, उत्सुकता ।

तृषा दे० तृष् । सम० —आर्त (वि०) प्यास से व्याकुल, प्यासा, —हम् पानी ।

तृषित (भू० क० कृ०) [तृष्+क्त] 1 प्यासा—घट० ९, ऋतु० १।१८ 2 लालची, प्यासा, लाभ का इच्छुक ।

तृष्णज् (वि०) [तृष्+नजिङ्] लोभी, लालची, प्यासा ।

तृष्णा [तृष्+न+टाप् किच्च] 1 प्यास (आ० और आर्द्र०) तृष्णा छिन्नस्वाम्भसा हि० १।१७१, ऋतु० १।१५ 2 इच्छा, लालसा, लालच, लोभ, लिप्सा —तृष्णां छिन्धि भर्तृ० २।७७ ३।५, रघु० ८।२ । सम० —क्षयः इच्छा का नाश, मन की शान्ति, संतोष ।

तृष्णालु (वि०) [तृष्णा+आलु] बहुत प्यासा ।

तृह् (रुधा० पर०, तुदा० उभ० —तृणेढि, तर्हयति–ते, तृढ, इच्छा० तितृक्षति, तितृंहिषति) क्षति पहुँचाना, आघात पहुँचाना, मार डालना, प्रहार करना—न तृणेढ्मीति कोकोऽयं चित्ते मां निम्नराकरम्—भट्टि० ६।३९ (तानि) तृणेढु राम सह लक्ष्मणेन १।११ ।

तॄ (भ्वा० पर०—तरति, तीर्ण) 1 पार पहुँच जाना, पार करना—केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३, स तीर्त्वा कपिशाम्—रघु० ४।३८,मनु० ४।७७ 2 पार पहुँचाना, (मार्ग) तय करना, कु० ७।४८ मेघ० १८ 3 बहना, तैरना—शिला तरिष्यत्युदके न पर्णम्—भट्टि० १२।७७ 4. पूर्ण करना, जीत लेना, पार करना, विजयी हो जाना धीरा—हि तरन्त्यापदम्—का० १७५, कृच्छ्रम् महत्तीर्ण—रघु० १४।६, भग० १८।५८, मनु० ११।३४ 5 किनारे तक जाना, पारंगत होना – रघु० ३।३० 6. पूरा करना, सम्पन्न करना (प्रतिज्ञा का) पालन करना—दैवात्तीर्णप्रतिज्ञ --मुद्रा० ७।१२ 7 बचाया जाना, बच निकलना,—नावो वर्षभयात्तीर्णा वय तीर्णा महाभयात्—हरि०, कर्मवा०–तीर्यते, पार किया जाना, (प्रेर० तारयति–ते 1 ले जाना, आगे बढ़ाना 2 पहुँचाना 3 बचाना, उद्धार करना, मुक्त करना, इच्छा० —तितीर्षति, तितरिषति तितरीषति) पार करने की इच्छा करना—दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्गवतीभुजङ्गम् —जग० १०, अति—1 पार पहुँचना, जीत लेना, विजयी होना —भग० १३।२५, हि० ४, अव—1 उतरना, अवतरित होना —रथादवततार च—रघु० १।५४ १३।६८, मेघ० ५० 2 बहना, में गिरना—सागर वर्जयित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति —श० ३ 3 प्रविष्ट होना, घुसना, जाना—भामि० १।२२, शि० ९।३२ 4 पूर्ण करना, दमन करना, पार करना 5 (किसी देवता का) मनुष्य के रूप में इस धरती पर अवतार लेना—तु० अवतार, प्रेर०—लाना, लाकर लाना, बनाना—रघु० १।३४, उद्— 1 (पानी में से) बाहर निकलना, (जहाज से) उतरना, निकलना—रघु० ९।१७, शि० ८।६१ 2. पार जाना, पार पहुँचना उदतारिषुरम्भोधिम्—भट्टि० १५।३३, १०, रघु० १२।७१, १६।३३, मेघ० ४७ 3 दमन करना, जीतना, पार करना—व्यसनमहार्णवादुत्तीर्णम्—मृच्छ० १०।४९ इसी प्रकार—रोगोत्तीर्ण, निस्—,1 पार पहुँचना —मधु० ३।४ 2. पूरा करना, सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 3. पार करना, पूरा करना, जीतना—रघु० ३।७ 4 पूरा करना, अन्त तक जाना – रघु० १४।२१, प्र—पार पहुँचना, प्रेर० ठगना, धोखा देना—मा तथा प्रतार्य– श० ५, किरणैः कथितं प्रतारितमना-स्तत्त्वं विभावन्नपि—मधु० १।७८, वि—1 पार जाना, पार करना, पूरे जाना—रघु० ६।७७ 2. देना, स्वीकृत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, अर्पित करना, कृपा करना, अनुग्रह करना—भगवान्मारीचस्ते दर्शनं वितरति—श० ७, वितरति गुरु प्राज्ञे विद्या यथैव तथा जडे—उत्तर० २।४, निवासहेतोरुटजं वितेरु —रघु० १४।८१, मा० १।३ 3 पैदा करना, उत्पादन करना—ज्योत्स्नाभङ्गानिह वितरति हंसश्रेणी—वि० ५।११, गीत० १ 4. ले जाना, व्यति—,पार करना, पूरा करना, जीत लेना, सम् ,1 पार करना 2 तैरना, बहना 3 पूरा करना, जीत लेना, अन्त तक जाना ।

तेजनम् [तिज्+ल्युट्] 1 बाँस 2 पैना करना, तेज करना 3 जलाना 4 प्रदीप्त करना 5 चमकाना 6 सरकंडा, नरकुल 7 बाण की नोक, शस्त्र की धार ।

तेजनकः [तिज् + णिच् + क्वुन्] एक प्रकार का तीतर ।

तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1 तेजी 2 (चाकू की) पैनी धार 3 अग्नि शिखा की चोटी, आग की लपट की नोक 4 गर्मी, चमक, दीप्ति 5 प्रभा, प्रकाश, ख्याति, कांति—रघु० ४।१, भग० ७।९, १०।३० 6 गर्मी या प्रकाश, सृष्टि के पाँच मूलतत्त्वों में से एक—अग्नि (अन्य चार ये हैं पृथिवी, अप्, वायु और आकाश) 7 शरीर की कांति, सौंदर्य—रघु० ३।१५ 8 तेजस्विता—श० २।१४, उत्तर० ६।१४ 9 ताकत, शक्ति, सामर्थ्य, साहस बल शौर्य, तेज— तेजस्तेजसि शाम्यतु—उत्तर० ५ 10 तेजस्वी – तेजसा हि न वयः समीक्ष्यते—रघु० ११।१ 11 आत्मबल, ओज या ऊर्जा 12. चरित्रबल, ओजस्विता 13 तेजोयुक्त कान्ति महिमा, प्रतिष्ठा प्रभुता, गौरव —तेजोविशेषानुमिताम् (राजलक्ष्मीं) दधान—रघु० २।७ 14. वीर्य बीज, शुक्र—स्याद्रक्षणीय यदि मे न तेज—रघु० १४।६५, रघु० २।७५, दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुव —श० ४।१ 15 वस्तु की मूल-प्रकृति 16 अर्क, सत 17 आत्मिकशक्ति, नैतिक शक्ति, जादू की शक्ति 18 आग 19 मज्जा 20 पित्त 21 घोड़े का वेग 22 ताजा मक्खन 23 सोना । सम०—कर (वि०) 1 कान्तिवर्धक 2 वीर्यवर्धक, शक्तिप्रद—भङ्गः 1 अपमान, प्रतिष्ठा का नाश 2 अवसाद, हतोत्साहता,—मण्डलम् प्रकाश का परिवेश,—मूर्तिः सूर्य,—रूपः परमात्मा ब्रह्म ।

तेजस्वत् तेजोवत् (वि०) [तेजस्+मतुप्, मस्य व] 1 उज्ज्वल, चमकीला, शानदार 2 तेज, तीखा 3 वीर, वीर्यशाली 4 ऊर्जस्वी ।

तेजस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [तेजस्+विनि] 1 चमकदार, उज्ज्वल 2 शक्तिशाली, वीर्यसम्पन्न, बलवान्—कि० १६।१६ 3. गौरवशाली, महानुभाव 4 प्रसिद्ध, विख्यात 5 प्रचण्ड 6 अभिमानी 7 विधिसम्मत ।

तैजित (वि०) [तिज्+णिच्+क्त] 1 पनाया हुआ, तेज किया हुआ 2 उत्तेजित, उद्दीप्त, प्रणोदित।

तेजोमय (वि०) [तेजस्+मयट्] 1 यशस्वी 2 उज्ज्वल, चमकदार प्रकाशमान—भग० ११।४७।

तेमः [तिम्+घञ्] गीला या तर होना, आर्द्रता।

तेमनम् [तिम्+ल्युट्] 1 गीला करना, तर करना 2. आर्द्रता 3 चटनी, मिर्च मसाला (जो भोजन को रुचिकर बनाये)।

तेवनम् [तेव्+ल्युट्] 1 खेल, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद 2 विहारभूमि, क्रीडास्थल।

तैजस (वि०) (स्त्री०—सी) [तेजस्+अण्] 1 उज्ज्वल, शानदार, प्रकाशमान 2 प्रकाशयुक्त—तैजसस्य धनुषः प्रवृत्तये रघु० ११।४३ 3 धातुमय 4 ओजस्वी 5 आवेशी, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली, प्रबल, —सम् घी। सम०—आवर्तनी कुठाली।

तैतिक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [तितिक्षा+अण्] सहनशील, सहिष्णु।

तैतिरः [तित्तिर पृषो०] तीतर।

तैतिलः (पुं०) 1 गैंडा 2 देवता।

तैत्तिरः [तित्तिर+अण्] 1 तीतर 2 गैंडा, —रम् तीतरों का समूह।

तैत्तिरीय (पुं० ब० व०) [तित्तिरिणा प्रोक्तम् अधीयते—तित्तिरि+छ] यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अनुयायी, —यः यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद)।

तैमिरः [तिमिर+अण्] आँखों का एक रोग, धुंधलापन।

तैर्थिक (वि०) [तीर्थ+ठञ्] पवित्र, पावन, —कः 1 एक संन्यासी 2 किसी नवीन धार्मिक या दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला, —कम् पवित्र जल (जैसा कि किसी पुण्यतीर्थ से लाया हुआ हो)।

तैलम् [तिलस्य तत्सदृशस्य वा विकारः अण्] 1 तेल—लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् भर्तृ० २।५ याज्ञ० १।२८३, रघु० ८।३८ 2 धूप। सम०—अटी भिरं बरैया, —अभ्यङ्गः शरीर में तेल की मालिश करना, —कल्कजः खली, —पायिका, —पर्णी 1 चन्दन 2 धूप 3 तारपीन, —पिञ्जः सफेद तिल, —पिपीलिका छोटी लाल रंग की चिऊँटी, —फलः हिंगोट का वृक्ष, —भाविनी चमेली, —माली दीवे की बत्ती, —यन्त्रम् तेली का कोल्हू, —स्फटिकः एक प्रकार की मणि।

तैलङ्गः एक देश का नाम, वर्तमान कर्नाटक प्रदेश, —गाः (ब० व०) इस देश के लोग।

तैलिकः, तैलिन् (पुं०) [तैल+ठन्, तैल+इनि] तेली, तेल पेरने वाला।

तैलिनी [तैलिन्+ङीप्] दीवे की बत्ती।

तैलीनम् [तिलानां भवनं क्षेत्रम्—खञ्] तिलों का खेत।

तैषः [तिष्येण नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी तिष्य+अण्+ङीप्—तैषी, सा अस्ति अस्मिन् मासे—तैषी+अण्] पौष का महीना।

तोकम् [तु+क] सन्तान, बच्चा।

तोक्कः [तोक+कन्] चातक पक्षी।

तोडनम् [तुड्+ल्युट्] 1 टुकड़े २ करना, खण्ड करना 2 फाड़ना 3 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

तोत्त्रम् [तुद्+ष्ट्रन्] पशुओं को या हाथी को हाँकने का अंकुश।

तोदः [तुद्+घञ्] पीडा, वेदना, संताप।

तोदनम् [तुद्+ल्युट्] 1 पीडा वेदना 2. अंकुश 3 चेहरा मुँह।

तोमरः,—रम् [तुम्यति हिनस्ति—तुम्+अर्, नि०] 1. लोहे का डण्डा 2 भाला, बर्छा। सम०—धरः अग्निदेव।

तोयम् [तु+विच्, तवे पूर्त्यै याति—या+क नि० साधु.] पानी—श० ७।१२। सम०—अधिवासिनी पाटल वृक्ष, —आधारः, —आशयः सरोवर, कूआँ, जलाशय—तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किता—श० १।१४, —आलयः समुद्र, सागर, —ईशः वरुण का विशेषण (—शम्) पूर्वाषाढ़ नक्षत्रपुञ्ज, —उत्सर्गः जलोन्मोचन वर्षा—मेघ० ३७, —कर्मन् (नपुं०) 1 जलमार्जन 2. दिवंगत पितरों को जलतर्पण, —कृच्छ्रः, —कृच्छ्रम् एक प्रकार की तपश्चर्या जिसमें कुछ निश्चित समय तक जल पीकर ही रहना पड़ता है, —क्रीडा जलविहार—मेघ० ३३, —गर्भः नारियल, —चरः एक जलजन्तु, —डिम्बः, —म्भः ओला, —दः बादल—रघु० ६।६५, विक्रम० १।१४, —अत्ययः शरद् ऋतु, —धरः बादल —धिः, —निधिः समुद्र, —नीवी पृथ्वी, —प्रसादनम् कतकफल, निर्मली, —मलम् समुद्रफेन, —मुच् (पुं०) बादल, —यन्त्रम् 1 जल-घड़ी 2 फौवारा, —राज्, —राशिः समुद्र, —वेला जल का किनारा, समुद्रतट, —व्यतिकरः (नदियों का) संगम—रघु० ८।९५, —शुक्तिका सीपी —सर्पिका, —सूचकः मेंढक।

तोरण,—णम् [तुर्+युच् आधारे ल्युट् वा तारा०] 1 मेहराबदार बनाया हुआ द्वार, सिंह द्वार 2. बहिर्द्वार, प्रवेशद्वार—गणानुपाकामत तोरणाद् बहिः—कि० १२।१, दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन—मेघ० ७५ 3. अस्थायी रूप से बनाया हुआ शोभाद्वार—कु० ७।३ रघु० १।४१, ७।४, ११।५ 4 स्नानागार के निकट का चबूतरा, —णम् गर्दन, कण्ठ।

तोलः [तुल्+अच्, तुल्+घञ्] 1 तोल या भार जो तराजू में तोल लिया गया हो 2 सोने चाँदी का एक तोला या १२ माशे का भार।

तोषः [तुष्+घञ्] सन्तोष, परितोष, प्रसन्नता, खुशी।

तोषणम् [तुष्+ल्युट्] 1 सन्तोष, परितोष 2 सन्तोषप्रद परितृप्ति।

तौक्षकम् [तोक्ष + क + ड] मूसल, सोटा ।

तौलिकः (ग्रीक शब्द) तुला राशि ।

तौलिकः (पु०) वह सीपी जिसमें से मोती निकलती है, —कम् मोती ।

तौर्यम् [तूर्य + अण्] तुरही का शब्द । सम० —त्रिकम् नृत्य, गान और बाजे की समेकता, तेहरी स्वरसंगति —तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः —मनु० ७।४७, उत्तर० ४ ।

तौलम् [तुला + अण्] तराजू ।

तौलिकः, -तौलिकिकः [तुलि + ठक्, तुलिका + ठक्] चित्रकार ।

त्यक्त (भू० क० कृ०) [त्यज् + क्त] 1 छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त, उन्मुक्त 2 उत्सृष्ट, जिसने आत्मसमर्पण कर दिया है 3 कतराया हुआ, टाला हुआ —दे० त्यज् । सम० —अग्निः वह ब्राह्मण जिसने अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है —जीवित,—प्राण (वि०) प्राण देने के लिए तैयार, कोई भी जोखिम उठाने को तैयार—मदर्थे त्यक्तजीविताः भग० १।९, —लज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म ।

त्यज् (भ्वा० पर० त्यजति, त्यक्त) 1 छोड़ना (सब अर्थों में) त्यागना, उत्सर्ग करना, चले जाना —कर्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९, मनु० ६।७७, ९।१७७, श० ५।२६ 2 जाने देना, बरखास्त करना, सेवामुक्त करना, —भट्टि० ६।१२२ 3. छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना, आत्मसमर्पण करना— भर्तृ० ३।१६, मनु० २।९५, ६।३३, भग० ६।२४, १६।२१ 4 कतराना, टालना 5 छुटकारा पाना, मुक्त करना —भग० १।३ 6 अवहेलना करना, उपेक्षा करना त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च —भग० १।३३ 7. उद्धृत करना 8 वितरण करना, प्रदान कर देना, कृत (संचय) मासवयुजे त्यजेत् याज्ञ० ३।४७, मनु० ६।१५, प्रेर०—छुड़वाना, इच्छा०—तित्यक्षति छोड़ने की इच्छा करना, परि —1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्याग करना 2. सब त्याग करना, छोड़ देना, रद्द कर देना, तिलाञ्जलि देना — प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति —मुद्रा० २।१७ 3. उद्धृत करना— तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम्, सम् —1 त्यागना, आयामवोषामुत सन्त्यजामि —रघु० १४।३४ 2. टालना, कतराना —भर्तृ० १।८१ 3. छोड़ देना, तिलांजलि देना —मनु० ४।१८१ 4. उद्धृत करना—उदा०—सन्त्यज्य विक्रमादित्य धैर्यमन्यत्र दुर्लभम्— राजत० ३।३४३ ।

त्यागः [त्यज् + घञ्] 1 छोड़ना, परित्याग, छोड़ देना, छोड़ कर चले जाना, वियोग —न माता न पिता न स्त्री न पुत्रस्त्यागमर्हति—मनु० ८।३८९, ९।७८ 2. छोड़ देना, परित्याग कर देना, तिलांजलि देना मनु० ११।१९२, भग० १७।४१ 3 उपहार, दान, धर्मार्थ दान, करे श्लाघ्यस्त्यागः भर्तृ० २।६५, हि० १।१५४, त्यागाय सम्भृतार्थानाम् —रघु० १।७ 4 मुक्तहस्तता, उदारता रघु० १।२२ 5 स्राव, मलोत्सर्ग । सम०—युत, —शील (वि०) मुक्त हस्त, उदार, दानशील ।

त्यागिन् (वि०) [त्यज् + घिनुण्] 1 छोड़ने वाला, परित्याग करने वाला, छोड़ देने वाला 2 प्रदाता, दाता 3 शौर्यशाली, शूरवीर 4 वह जो धार्मिक अनुष्ठानों के फलस्वरूप किसी पारितोषिक या पुरस्कार की अपेक्षा नहीं करता है —यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते —भग० १८।११ ।

त्रप् (भ्वा० आ० —त्रपते, त्रपित) शर्माना, लजाना, संकट में फँस जाना—त्रपन्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ गङ्गा० २८, अप ,मुड़ना, शर्म के कारण कार्यनिवृत्त होना तस्मादपत्रपे भट्टि० १४।८४ पुनरापत्रपन साधुस्माधर्मेण मृर्धानि— महा० ।

त्रपा [त्रप् + अङ् + टाप्] 1 शर्म, लाज मन्दत्रपाभर गीत० १२ 2 हया, शर्म (अच्छे और बुरे अर्थ में) 3 कामुक या व्यभिचारिणी स्त्री 4 प्रसिद्धि, ख्याति । सम० —निरस्त,—हीन (वि०) निर्लज्ज बेशर्म,—रण्डा वेश्या ।

त्रपिष्ठ (वि०) [अयम् एषाम् अतिशयेन तृप्र तृप्र + इष्ठन्, तृप्रशब्दस्य त्रपादेशः] अत्यन्त सन्तुष्ट ।

त्रपीयस् (वि०) (स्त्री० —सी) [तृप्र + ईयसुन्, तृप्र शब्दस्य त्रपादेशः] अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट ।

त्रपु (नपुं०) [अग्नि दृष्ट्वा त्रपते लज्जते इव त्रप् + उन् तारा०] टीन, रांगा —मणि मणित्रपुणि प्रतिबध्नते— पञ्च० १।७५ ।

त्रपुलम्,— सम्, त्रपुस् (नपुं०),—सम् [त्रप् + उल, त्रप् + उस, त्रप् + उस्, त्रप् + उस] टीन, रांगा ।

त्रप्सम् (नपुं०) मट्ठा, पतला हुआ दही ।

त्रय (वि०) (स्त्री—यी) [त्रि + अयच्] तेहरा, तिगुना, तीन भागों में विभक्त, तीन प्रकार का— त्रयी में लिखा ऋचो यजूंषि सामानि— श०, मनु० १।२३,—यम् तिगड्डा, तीन का समूह — अवेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, लोकत्रयम्— मन० ११।२०, ४३, मनु० २।७६ ।

त्रयस् ('त्रिशब्द' पु०, कर्तृ० ब० व०, समास में प्रयोग, अथवा संख्यावाचक शब्दों के साथ) तीन । सम० —त्रयश्चत्वारिंश (वि०) तैंतालीसवाँ,— त्रयश्चत्वारिंशत् (वि० या स्त्री०) तैंतालीस, —त्रिंश (वि०) तेंतीसवाँ—त्रिंशत् (वि० या स्त्री०) तेतीस, —दश (वि०) 1. तेरहवाँ 2. तेरह जोड़ कर —'त्रयोदश शतम्' एक सौ तेरह, —दशन् (वि०, ब० व०) तेरह, —दश (वि०)

तेरहवाँ, —शी चान्द्र पक्ष की तेरहवीं तिथि, —नवति (स्त्री०) तिरानवे —पञ्चाशत् (स्त्री०) तिरेपन —विंश (वि०) 1 तेइसवाँ 2 तेईस से युक्त —विंशति (स्त्री०) तेईस —षष्टि (स्त्री०) तरेसठ, —सप्तति (स्त्री०) तिहत्तर।

त्रयी [त्रय+ङीप्] 1 तीनों वेदों की समष्टि (ऋग्यजुः सामानि) —त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः —का० १, सा त्रयीवर्जमितरा विद्या परिपाठिता —उत्तर० २, मनु० ४।१२५ 2 तिगड्डा, त्रिक, त्रिसमूह —व्यवसायिनीष्ट समावेशायसौ नरसिंहवित्रयी —कि० २।३ 3 गृहिणी या विवाहिता नारी जिसका पति तथा बालबच्चे जीवित हों 4 बुद्धि, समझ। सम० —तनुः 1 सूर्य का विशेषण इसी प्रकार 'त्रयीमय' 2 शिव का एक विशेषण —धर्मः तीनों वेदों में वर्णित धर्म —भग० ९।२१, —मुखः ब्राह्मण।

त्रस् I (भ्वा०, दिवा० पर० त्रसति, त्रस्यति, त्रस्त) 1 थरथराना, कांपना, हिलना, भय के कारण विचलित होना 2 डरना, भयभीत होना, डर जाना (अपा० के साथ, कभी-कभी सम्ब० या करण० के साथ) —प्रमदवनात् त्रस्यति —का० २५५, कपेरत्रासिषुर्नादात् —भट्टि० ९।११, ५।७५, १४।४८, १५।५८, शि० ८।२४, कि० ८।७, प्रेर०—डराना, भयभीत करना, —वि—, भयभीत या त्रस्त होना —वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः —भर्तृ० १।९, सम् —, डरना, भयभीत होना, त्रस्त होना —भट्टि० १४।३९।
II (चुरा० उभ० त्रासयति —ते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 थामना 3 लेना, पकड़ना 4 विरोध करना, रोकना।

त्रस (वि०) [त्रस्+अच्] चर, जंगम, —सः हृदय, —सम् 1. वन जंगल 2 जानवर। सम० —रेणुः अणु, धूल का कण या अणु जो सूर्यकिरण में हिलता हुआ दिखाई देता है —तु० जालान्तरगते भानौ सूक्ष्मं यद् दृश्यते रजः, प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते —मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६१।

त्रसरः [त्रस्+अरन् बा०] ढरकी (जुलाहों का एक उपकरण जिसमें धागों की नली रख कर बुनते हैं)।

त्रसुर, त्रस्नु (वि०) [त्रस्+उरच्, त्रस्+क्नु] भीरु, कांपने वाला, डरपोक —अपत्रपिष्णुर्विर्भुत्रसुर गुरुर्[?] —रघु० १४।७०, सीता सौमित्रिणा त्यक्ता त्रस्नोभीं[?] त्रस्नुमैथिलिकाम् —भट्टि० ६।७।

त्रस्त (भू० क० कृ०) [त्रस्+क्त] 1 भयभीत, डरा हुआ, आतंकित —त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टि —मा० ४।८ 2. डरपोक, भीरु 3 फुर्तीला, चपल।

त्राण (भू० क० कृ०) [त्रै+क्त तस्य नत्वम्] रक्षा किया गया, अभिरक्षित, प्ररक्षित, बचाया गया, —णम् 1. रक्षा प्ररिरक्षा, शरण —आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि —श० १।११, रघु० १५।३ 2 शरण, सहारा, आश्रय —भट्टि० ३।५०।

त्रात (भू० क० कृ०) [त्रै+क्त] 1 प्ररक्षित, बचाया गया, रक्षा किया गया।

त्रापुष (वि०) (स्त्री० —षी) [त्रपुष+अण्] रांगे का बना हुआ।

त्रास (वि०) [त्रस्+घञ्] 1 चर, चलनशील 2 डराने वाला, —सः डर, भय, आतंक —अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः —रत्ना० २।३, रघु० २।३८, ९।५८ 2 चौकन्ना करने वाला, भयभीत करने वाला 3 मणिगत दोष।

त्रासन (वि०) [त्रस्+णिच्+ल्युट्] खौफनाक, डरावना, भयङ्कर —नम् डराने की क्रिया, डराना।

त्रासित (वि०) [त्रस्+णिच्+क्त] डराया हुआ, आतंकित, भयभीत।

त्रि (सं० वि० —केवल ब० व०, कर्तृ० पु० त्रयः, स्त्री० तिस्रः, नपुं० त्रीणि) तीन —त एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः —मनु० २।२२९, प्रियतमाभिरसौ तिसृभिर्बभौ —रघु० ९।१८, त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती —मनु० ९।९०। सम० —अंशः 1 तिहाई भाग 2 तीसरा अंश, —अक्षः —अम्बकः शिव का एक विशेषण —अक्षरः 1 ईश्वर वाचक अक्षर 'ओम्' जो तीन अक्षरों से मिल कर बना है दे० 'अ' के 2 जोड़ी मिलाने वाला घटक (यह शब्द तीन वर्णों से मिल कर बना है) —अङ्कुशम्, —अङ्कुटम् 1 वह तीन रस्सियाँ जिनके सहारे बहँगी के दोनों पलड़े दोनों किनारों पर लटकते रहते हैं 2 एक प्रकार का बन्धन, पुर्गा —अञ्जलम् —लिम् तीन अंजलि (मिला कर), —अधिष्ठान आत्मा —अध्वगा, —मार्गगा, —वर्त्मगा गंगा नदी (तीनों लोकों में बहने वाली) के विशेषण, —अम्बकः ('त्र्यम्बक' भी यद्यपि लौकिक साहित्य में प्रयोग विरल है) 'तीन आंखों वाला, शिव —त्र्यम्बकं संयमिनं ददर्श —कु० ३।४४, अङ्कीकृतस्त्र्यम्बककीलकेन[?] —रघु० २।४२, ३।४९, °सखः कुबेर का विशेषण —अम्बका पार्वती का विशेषण —अब्द (वि०) तीन वर्ष पुराना (—ब्दम्) तीन वर्ष —अशीत (वि०) तिरासिवां, —अशीतिः (स्त्री०) तिरासी, —अष्टम् (वि०) चौबीस, —अस्र —अश्र त्रिकोण त्रिभुजाकार (—स्रम्) त्रिकोण, त्रिभुज —अहः तीन दिन का काल, —अहिक (वि०) 1 तीन दिन में उत्पादित या अनुष्ठित 2 हर तीसरे दिन चढ़ने वाला (जैसा बुखार) तेया, —ऋचम् ('तृचम्' भी) तीन ऋचाओं की समष्टि —मनु० ८।१०६, —ककुद् (पु०) 1 त्रिकूट पहाड़ 2 विष्णु या कृष्ण, —कर्मन् (नपुं०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्तव्य

अर्थात् यज्ञ करना, वेद का अध्ययन करना, तथा दान देना (—पुं०) जो इन तीन कर्मों को सम्पन्न करने में व्यस्त हो, ब्राह्मण,—कायः बुद्ध का नाम,—कालम् तीन काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्यत् या तीन समय - प्रातः, मध्याह्न तथा सायम् 2. क्रिया के तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) °ज्ञ, °दर्शिन् (वि०) सर्वज्ञ,—कूटः सीलोन का एक पहाड़ जिस पर रावण की राजधानी लंका स्थित थी - शि० २।५,—कूर्चकम् तीन फलों का चाकू,—कोण (वि०) त्रिभुजाकार, त्रिकोण बनाने वाला (—णः) 1 तीन कोन वाली आकृति 2 योनि,—खट्वम्,—खट्वी तीन खाटों का समूह,—गणः सांसारिक जीवन के तीन पदार्थों की समष्टि अर्थात् धर्म, अर्थ और काम,—न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्—कि० १।११, दे० नी० 'त्रिवर्ग',—गत (वि०) 1. तिगुना 2. तीन दिन में सम्पन्न,—गर्ताः (ब० व०) 1. भारत के उत्तरपश्चिम में एक देश, इसका नाम 'जलधर' भी है 2 इस देश के निवासी या शासक,—गर्ता कामासक्त स्त्री, स्वैरिणी,—गुण (वि०) 1 तीन डोरों से युक्त तगड़ी —अताय मौर्वी त्रिगुणां बभार या—कु० ५।१० 2. तीन बार आवृत्ति किया हुआ, तीन बार, त्रिविध, तेहरा, तिगुना —सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य (दिनानि)—रघु० २।२५ 3. सत्त्व, रजस् तथा तमस् नाम के तीन गुणों से युक्त, (—णम्) (सां० द० में) प्रधान (—णा) (वेदा० द० में) 1. माया 2. दुर्गा का विशेषण —णाकृत् (पुं०) शिव का एक विशेषण,—चतुर (वि०) (ब० व०) तीन या चार - गत्वा अथान् त्रिचतुराणि पदानि सीता - भामरा० ६।३४,—चत्वारिंश (वि०) तैंतालीसवाँ,—चत्वारिंशत् (स्त्री०) तैंतालीस,—जगत् (नपुं०),—जगती तीन लोक 1. स्वर्गलोक, अन्तरिक्षलोक तथा भूलोक या (२) स्वर्गलोक, भूलोक, पाताललोक,—जटः शिव का एक विशेषण,—जटा एक राक्षसी, जिसको रावण ने अशोकवाटिका में सीता की देखरेख के लिए नियत किया था, जब सीता वहाँ बन्दी के रूप में रक्खी गई। उस समय त्रिजटा ने स्वयं सीता के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, तथा अपनी दूसरी सहचरियों को भी प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही करें,—जीवा,—ज्या तीन चिह्नों की त्रिज्या, या ९० कोटि, अर्धव्यास,—णता, धनुष,—णव,—णवन् (वि० ब० व०) ३×९, नौ का तिगुना अर्थात् सत्ताइस, —तक्षम्,—तक्षी तीन बढ़इयों का समूह,—दण्डम् 1 (संसार से विरक्त) संन्यासी के तीन डंडों को बांधकर एक किया हुआ 2. तिगुना संयम —अर्थात् मन, वाणी और कर्म का, (—डः) एक धर्मनिष्ठ संन्यासी की अवस्था—दण्डिन् (पुं०) धर्मनिष्ठ साधु या संन्यासी जिसने सांसारिक विषय वासनाओं का त्याग कर दिया है, और जो अपने दाहिने हाथ में तीन-दंड (एक जगह मिला कर बंधे हुए) रखता है 2 जिसने अपने मन, वाणी और शरीर को वश में कर लिया है—तु० वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः कायदण्डस्तथैव च,यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते—मनु० १२।१०,—दशाः (ब० व०) 1 तीस 2. तैंतीस देवता, (—शः) देवता, अमर—कु० ३।१, °अंकुशः °आयुधम् इन्द्र का वज्र - रघु० ९।५४, °अधिपः, °ईश्वरः °पतिः इन्द्र के विशेषण, °अध्यक्षः विष्णु का एक विशेषण, °अरिः राक्षस, °आचार्यः बृहस्पति का विशेषण, °आलयः, °आवासः 1 स्वर्ग 2. मेरु पर्वत, °आहारः देवताओं का भोजन,°गुरुः बृहस्पति का विशेषण, °गोपः एक प्रकार का कीड़ा, बीरबहूटी (इन्द्रगोप) अद्यो त्रिदशगोपमात्रके दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि - रघु० ११।४२, °मंजरी तुलसी का पौधा, °वधू, °वनिता अप्सरा या स्वर्ग की देवी —कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्याः - मेघ० ५८, °वर्त्मन् आकाश, —दिनम् तीन दिनों की समष्टि,—दिवम् 1. स्वर्ग, त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः—कु० १।२८, श० ७।३ 2 आकाश, पर्यावरण 3 प्रसन्नता, °अधीशः °ईशः 1. इन्द्र का विशेषण 2 देवता, °उद्भवा गंगा, °ओकस् (पुं०) देवता —धा (पुं०) शिव का एक विशेषण —दोषम् शरीर में होने वाले तीनों दोष अर्थात् वात, पित्त और कफ,—धारा गंगा,—नयनः (नयनः)—नेत्रः —लोचनः शिव के विशेषण रघु० ३।६६, कु० ३।६६, ५।७२, —नवत (वि०) तिरानवेवाँ, —नवतिः (स्त्री०) तिरानवे, —पञ्च (वि०) तीन गुना पाँच अर्थात् पन्द्रह, —पञ्चाश (वि०) तरेपनवाँ —पञ्चाशत् (स्त्री०) तरेपन, —पट्, काच,—पताकः 1 हाथ जिसकी तीन अंगुलियाँ फैली हुई हों 2 त्रिपुण्ड्र तिलक लगा हुआ मस्तक —पत्रकम् ढाक, —पथम् तिराहा, अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष तथा भूलोक, या आकाश, भूलोक तथा पाताल 2 वह स्थान जहाँ तीन सड़कें मिलती हों, °गा गंगा का विशेषण - धृतसत्पथस्त्रिपथगामभितः स तमारुरोह पुरुहूतसुतः—कि० ६।१, अमरु ९९, —पदम्, —पदिका तीन पैर वाला, —पदी 1 हाथी का तंग —नासक्तरिपोरिव त्रिपदीच्छेदिनामपि - रघु० ४।४८ 2. गायत्री छन्द 3. तिपाई 4 गोधापदी नाम का पौधा, —पर्णः ढाक का पेड़ —पाद (वि०) 1. तीन पैरों वाला 2 तीन चरणों से युक्त, तीन चौथाई,—रघु० १५।९६ 3. विनाम (पुं०) वामनावतार भगवान् विष्णु का विशेषण,—पुट(वि०) त्रिभुजाकार (—टः) 1 बाण 2. हथेली 3. एक हाथ परिमाण 4. तट या किनारा,—पुटकः त्रिकोण, त्रिभुज,

—पुष्कर पुरी का विशेषण,—पुण्ड्रम्,—पुण्ड्रकम् चन्दन, राख या गोबर से बनाई हुई तीन रेखाएँ,—पुरं 1 तीन नगरों का समूह 2. द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक में मय राक्षस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लोहे के 3 नगर (देवताओं की प्रार्थना पर यह तीनों नगर—उनमें रहने वाले राक्षसों समेत शिव जी द्वारा जला दिये गये) - कु० ७।४८, अमरु २ मेघ० ५६ भर्तृ० २।१२३, (रः) इन नगरों का अधिपति राक्षस °अन्तकः °अरिः, °घ्नः, °दहनः °द्विष्, (पुं०) °हरः शिव के विशेषण—भर्तृ० २।१२३, रघु० १७।१४, °दाह तीन नगरों का जलाया जाना—कि० ५।१४, (—री) जबलपुर के निकट एक नगर जो पहले चेदिराज के राजाओं की राजधानी था 2 एक देश का नाम —पौरुष (वि०) तीन पीढ़ियों से सम्बन्ध रखने वाला, या तीन पीढ़ियों तक चलने वाला, —प्रस्रुतः वह हाथी जिसमें मद का स्राव हो रहा हो, -फला तीन फलों (हरड़ बहेड़ा और आँवला) का समाहार —बलिः,—बली, —वलिः,—वली स्त्री की नाभि के ऊपर पड़ने वाले तीन बल (जो सौन्दर्य का चिह्न समझे जाते हैं) —क्षामोदरोपरिलसत्त्रिवलीलतानाम् - भर्तृ० १।९३ ८१, तु० कु० १।३९ —भम् स्त्रीसहवास मैथुन, स्त्रीसम्भोग,—भुजम् त्रिकोण, —भुवनम् तीन लोक —पुण्यं या यान्ति भुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य - मेघ० ३३, भर्तृ० १।९९, —भूम तिमंजिला महल —मार्गा गंगा कु० १।२८,—मुकुटः त्रिकूट पहाड़ —मुख बुद्ध का एक विशेषण, -मूर्तिः हिन्दुओं के त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु और महेश का संयुक्त रूप कु० २।४,—यष्टिः तीन लड़ों का हार,—यामा रात्रि (तीन पहर वाली - आरम्भ और अन्त का आधा आधा पहर इसमें पृथक् है)—सद्यःपातिः क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा —मेघ० १०८ कु० ७।२१, २६ रघु० ९।७० विक्रम० ३।२२,—योनिः तीन कारणों (क्रोध लोभ और मोह) से होने वाला अभियोग -रात्रम् तीन रातों (तथा दिनों) का समय,—रेखः शंख, —लिंग (वि०) तीनों लिंगों में प्रयुक्त अर्थात् विशेष, (गः) एक देश जिसे तैलंग कहते हैं, (गी) तीनों लिंगों की समष्टि,—लोकम् तीनों संसार, °ईशः सूर्य °नाथः तीनों लोकों का स्वामी इन्द्र का विशेषण रघु० ३।४५ 2 शिव का विशेषण - कु० ५।७७ (—की) तीनों लोकों की समष्टि विश्व —सत्यामेव त्रिलोकी सरिति हरशिरश्चुम्बिनी विच्छटायाम्—भर्तृ० ३।९५, शा० ४।२२,—वर्गः 1. सांसारिक जीवन के तीन पदार्थ - अर्थात् धर्म, अर्थ और काम - कु० ५।३८ 2 तीन स्थितियाँ हानि, स्थिरता और वृद्धि— क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्—अमर०,—वर्णकम् पहले तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) का समाहार,—वारम् (अव्य०) तीन बार, तीन मर्तबा,—विक्रमः वामनावतार विष्णु,—विद्यः तीनों वेदों में व्युत्पन्न ब्राह्मण —विध (वि०) तीन प्रकार का, तेहरा —विष्टपम्,—पिष्टपम् इन्द्रलोक, स्वर्ग —त्रिविष्टपस्येव पतिं जयन्त रघु० ६।७८, °सद् (पुं०) देवता - वेणिः,—णी (स्त्री) प्रयाग के निकट त्रिवेणी संगम जहाँ गंगा यमुना और सरस्वती मिलती हैं -—वेदः तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण, —शंकुः अयोध्या का विख्यात सूर्य वंशी राजा हरिश्चन्द्र का पिता (त्रिशंकु बुद्धिमान् धर्मात्मा और न्याय परायण राजा था, परन्तु उसमें यह एक बड़ा दोष था कि वह अपने व्यक्तित्व को बहुत प्रेम करता था। उसने इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा से यज्ञ करना चाहा, फलतः उसने अपने कुलगुरु वसिष्ठ से यज्ञ कराने की प्रार्थना की, परन्तु जब उन्होंने इस प्रार्थना को स्वीकार न किया तो उसने उनके १०० पुत्रों से प्रार्थना की, परन्तु उन्होंने भी इसके प्रस्ताव को बेहूदा बता कर ठुकरा दिया। त्रिशंकु ने उन सबको कायर और नपुंसक कहा और इसके बदले उन्होंने उसे चाण्डाल बनने का शाप दे दिया। जब त्रिशंकु की ऐसी दुर्दशा हुई तो विश्वामित्र ने जिसका परिवार एक दुर्भिक्ष के समय त्रिशंकु का आभारग्रस्त हो गया था उसका यज्ञ सम्पन्न कराना स्वीकार कर लिया। उसने यज्ञ में देवताओं का आवाहन किया जब देवता यज्ञ में न आये तो विश्वामित्र ने क्रुद्ध हो अपनी शक्ति से त्रिशंकु को इसी शरीर से ऊपर स्वर्ग में भेजा। त्रिशंकु ऊपर ही ऊपर उड़ता चला गया और आकाशमण्डल से जा टकराया। वहाँ इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने उसे सिर के बल धकेल दिया। तो भी तेजस्वी विश्वामित्र ने गिरते हुए त्रिशंकु को बीच ही में 'त्रिशंकु वहीं ठहरो' कह कर रोक दिया। फलतः भाग्यहीन राजा सिर के बल वहीं दक्षिणाकाश में नक्षत्रपुंज के रूप में अटक गया। इसीलिए यह लोकोक्ति (त्रिशंकुरिवान्तरा तिष्ठ शा० २ प्रसिद्ध हो गई) 2 चातक पक्षी 3 बिल्ली 4 टिड्डा 5 जुगनू °जः हरिश्चन्द्र का विशेषण °याजिन् (पुं०) विश्वामित्र का विशेषण —शत (वि०) तीन सौ (तम्) 1 एक सौ तीन 2 तीन सौ —शिखम् 1 त्रिशूल 2 (त्रिशाख) किरीट व. मुकुट —शिरस् (पुं०) एक राक्षस जिसको राम ने मारा था, —शूलम् त्रिशूल, °अंकः °धारिन् (पुं०) शिव का विशेषण —शूलिन् (पुं०) शिव का विशेषण, —शृंगः त्रिकूट नाम का पहाड़, —षष्टिः (स्त्री०) तरेसठ, —सन्ध्यम्, —सन्ध्यी दिन के तीन काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायम्,—सन्ध्यम् (अव्य०) तीनों

मात्राओं के समय —सप्तत (वि०) तिहत्तरवाँ,—सप्ततिः तिहत्तर,—सप्तन्—सप्त (वि० ब० व०) तीन बार सात अर्थात् २१ [illegible] साम्यम् अंगों (गणों) का साम्य,—स्थली तीन पवित्र स्थान [illegible] [illegible] [illegible] —स्रोतस् (स्त्री०) गंगा का विशेषण—त्रिस्रोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठाम्—श० ७।६, रघु० १०।६३, कु० ७।१६ —सीत्य,—हल्य (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता हुआ,—हायण (वि०) तीन वर्ष का।

त्रिंश (वि०) (स्त्री०—शी) [त्रिंशत्+डट्] 1 तीसवाँ 2 तीस से जुड़ा हुआ, उदा० त्रिंश शत—'एक सौ तीस' 3. तीस से युक्त।

त्रिंशक (वि०) [त्रिंश+कन्] 1. तीस से युक्त 2. तीस के मूल्य का या तीस में खरीदा हुआ।

त्रिंशत् (स्त्री०) [त्रयो दशतः परिमाणमस्य नि०] तीस, —पत्रम् सूर्योदय के साथ खिलने वाला कमल।

त्रिंशत्कम् [त्रिंशत्+कन्] तीस की समष्टि, तीस का समाहार।

त्रिक (वि०) [त्रयाणां संघः—कन्] 1. तिगुना तेहरा 2. तिगड्डा बनाने वाला 3 तीन प्रतिशत,—कम् 1. तिगड्डा 2 तिराहा 3 रीढ़ की हड्डी का निचला भाग, कूल्हे के पास का भाग —त्रिके स्थूलता—पंच० १।१९०, कश्चिद्विवृत्तत्रिकभिन्नहारः रघु० ६।१६ 4, कन्धे की हड्डियों के बीच का भाग 5. तीन मसाले—(त्रिफला, त्रिकटु, त्रिमद),—कः रस्सी के जाने आने के लिए कुएँ पर लगाई हुई लकड़ी की घिर्री।

त्रितय (वि०) (स्त्री०—यी) [त्रयोऽवयवा अस्य—त्रि+तयप्] तीन भागों वाला, तिगुना, तीन तह का,—यम् तिगड्डा, तीन का समूह—श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्—श० ७।२९, रघु० ८।७८, याज्ञ० ३।२६६।

त्रिधा (अव्य०) [त्रि+धाच्] तीन प्रकार से या तीन भागों में, कु० ७।४४, मनु० १८।१९।

त्रिस् (अव्य०) [त्रि+सुच्] तीसरी बार, तीन बार।

त्रुट् (दिवा० तुदा० पर० त्रुट्यति, त्रुटति, त्रुटित) फाड़ना, तोड़ना, टुकड़े २ करना, तड़कना, छिन्न जाना (आलं०)—अनुवनजटमुत्पतिलीनाक्षरम्—भर्तृ० ३।८, ११९६, वर्धं ते बाष्पौघत्रुटित इव मुक्तामणि-सरः—उत्तर० १।२९।

त्रुटिः,—टी (स्त्री०) [त्रुट्+इन् कित्, त्रुटि+ङीप्] 1. काटना, तोड़ना, फाड़ना 2. छोटा हिस्सा, अणु 3. समय का अत्यन्त सूक्ष्म अन्तर, १/४ क्षण या हे क्षण 4. सन्देह, अनिश्चितता 5. हानि, नाश 6. छोटी इलायची (पौधा)।

त्रेता [त्रीन् भेदान् एति प्राप्नोति—पृषो० साधुः] 1. तिकड़ी 2. तीन यज्ञाग्नियों का समाहार मनु० २।२३१, रघु० १३।३७ 3 पासे को विशेष ढंग से फेंकना, तीन का [illegible] [illegible] त्रेतायुगसदृशस्य मृच्छ० ११८ 4 हिन्दुओं के चार युगों में दूसरा दे० 'युग'।

त्रेधा (अव्य०) [त्रि+एधाच्] तिगुनेपन से, तीन प्रकार से, तीन भागों में—त्रेधा समभवत्—श०, (नमः) तुभ्यं त्रेधा स्थितात्मने—रघु० १०।१६।

त्रै (भ्वा० आ० त्रायते, त्रात या त्राण) रक्षा करना, प्ररक्षित रखना, बचाना, प्रतिरक्षा करना (प्रायः अपा० के साथ) क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः—रघु० २।५३, भग० २।४०, मनु० ९। १३८, भट्टि० ५।५४, १५।१२०, परि—, बचाना, परित्रायस्व परित्रायस्व (नाटकों में)।

त्रैकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिकाल+ठञ्] तीन कालों से (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) सम्बद्ध।

त्रैकाल्यम् [त्रिकाल+ष्यञ्] तीन काल अर्थात्—भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्।

त्रैगुणिक (वि०) [त्रिगुण+ठक्] तिगुना, तेहरा।

त्रैगुण्यम् [त्रिगुण+ष्यञ्] 1. तिगुनापन, तीन भागों या गुणों का एकत्र होने का भाव 2. तीन गुणों का समाहार 3. तीन गुणों (सत्त्व, रजस्, तमस्) की समष्टि —त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते—मालवि० १।४।

त्रैपुरः [त्रिपुर+अण्] 1. त्रिपुर नाम का देश 2. उस देश का निवासी या शासक।

त्रैमातुरः [त्रिमातृ+अण्, उत्वम्] लक्ष्मण का विशेषण।

त्रैमासिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिमास+ठञ्] 1. तीन मास पुराना 2. तीन महीने तक रहने वाला या हर तीन महीने में आने वाला 3. तिमाही।

त्रैराशिकम् [त्रिराशि+ठञ्] (गणित) तीन ज्ञात राशियों के द्वारा चौथी अज्ञात राशि निकालने की रीति।

त्रैलोक्यम् [त्रिलोकी+ष्यञ्] तीन लोकों का समाहार —रघु० १०।५३।

त्रैवर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिवर्ण+ठञ्] पहले तीन वर्णों से संबंध रखने वाला।

त्रैविक्रम (वि०) [त्रिविक्रम+अण्] त्रिविक्रम या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला।—रघु० ७।३५।

त्रैविद्यम् [त्रिविद्या+अण्] 1. तीनों वेद 2. तीनों वेदों का अध्ययन 3. तीन व्यक्ति—मां त्रैविद्या: (तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण)—भग० ९।२०।

त्रैविष्टपः, त्रैविष्टपेयः [त्रिविष्टप+अण्, ढक् वा] देवता।

त्रैशङ्कवः [त्रिशङ्कु+अण्] त्रिशङ्कु के पुत्र हरिश्चन्द्र का विशेषण।

त्रोटकम् [त्रुट्+णिच्+ण्वुल्] नाटक का एक भेद—सप्ताष्टनवपञ्चाङ्कं दिव्यमानुषसंश्रयम्, त्रोटकं नाम तत्प्राहुः

प्रत्येक सविभ्रमकम् - मा० ह० २।... का विक्रमोर्वशी ।

त्रोटिः (स्त्री०) [त्रुट् + इ] चोंच, चञ्चु । सम० हस्त पक्षी ।

त्रोत्रम् [त्रै + उत्र] पशुओं को हांकने की छड़ी ।

त्वक्ष् (भ्वा० पर० त्वक्षति, त्वष्ट) कतरना, बक्कल उतारना, छीलना ।

त्वङ्कार [त्वम् + कृ + अण्] तिरस्कार सूचक 'तू' शब्द से संबोधन करना ।

त्वङ्ग् (भ्वा० पर० त्वङ्गति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 कूदना, सरपट दौड़ना 3 कांपना ।

त्वच् (स्त्री०) [त्वच् + क्विप्] 1 खाल (मनुष्य, सांप आदि की) 2 (गौ, हरिण आदि का) चमड़ा रघु० ३।३१ 3 छाल, बक्कल –कु० १।७, रघु० ७।३७ १७।१२ 4 ढकना, आवरण 5 स्पर्शज्ञान । सम०—अङ्कुरः रोमांच होना,—इन्द्रियम् स्पर्शेन्द्रिय, —कण्डुरः फोड़ा, —गन्धः सन्तरा, —छेदः चमड़ी में घाव, खरोंच, —जम् 1 रुधिर 2 बाल (शरीर पर के), —तरङ्गकः झुर्री —त्रम् कवच, त्वक्त्रं बाधकं वरम् भट्टि० १४।९४,—दोषः चर्मरोग, कोढ़,—पारुष्यम् चमड़ी का रूखापन,—पुष्पः रोमांच,—सारः (त्वचि सारः) बांस त्वक्सारस्रग्रपरिपूरणलब्धगीति शि० ४।६१ सुगन्धित तरा ।

त्वचा [त्वच् + टाप्] दे० त्वच् ।

त्वदीय (वि०) [युष्मद् + छ, त्वत् आदेश] तेरा, तुम्हारा —रघु० ३।५० ।

त्वद् [युष्मद् त्वद् आदेश समासे] (मध्यम पुरुष का रूप जो कि बहुधा समास में प्रथम पद के रूप में पाया जाता है —उदा० त्वदधीन, त्वत्सादृश्यम् - आदि ।

त्वादृश (वि०) [त्व इव दृश्यते प्रकारो यस्य] तेरी तरह, तुम्हारी भांति ।

त्वर् (भ्वा० आ० त्वरते, त्वरित) शीघ्रता करना, जल्दी करना, वेग से चलना, फुर्ती से कार्य करना- भवान्पुरः प्रयातुं त्वरताम् - मालवि० २, मामुत्सुकयति स त्वरयति —रघु० १९।३८,—प्रेर० त्वरयति जल्दी कराना, जल्दी करने और बढ़ने के लिए प्रेरित करना ।

त्वरा, त्वरिः (स्त्री०) [त्वर् + अ, + टाप्, त्वर् + इन्] शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग - औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया —रत्ना० १।२ ।

त्वरित (वि०) [त्वर् + क्त] शीघ्रगामी, फुर्तीला, वेगवान —तम् शीघ्रता करना, जल्दी करना (अव्य०) जल्दी से, तेजी से, वेग से, शीघ्रता से ।

त्वष्टृ (पुं०) [त्वक्ष् + तृच्] 1 बढ़ई, निर्माता, कारीगर 2 देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा [पौराणिक कथा के अनुसार त्वष्टृ अग्निदेवता माना जाता है उसके त्रिशिरा नाम का पुत्र तथा संज्ञा नाम की पुत्री थी । संज्ञा का विवाह सूर्य के साथ हो गया परन्तु संज्ञा अपने पति के दारुण तेज को सहन न कर सकी फलतः त्वष्टा ने सूर्य को खराद पर रख कर उसके प्रभा-मण्डल को सावधानी से काट छांट कर परिष्कृत कर दिया (तु० रघु० ६।३२ आरोप्य चक्रभ्रममुष्णतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति उस बची हुई कतरन से विष्णु का चक्र तथा शिव जी का त्रिशूल तथा देवताओं के अन्य शस्त्र बनाये गये) ।

त्वादृक्, त्वादृश (स्त्री० शी) [त्वमिव दृश्यते —युष्मद् + दृश् + क्विन् कञ् वा, स्त्रियां ङीप्] तुम सरीखा, तेरी तरह का मेघ० ९१ ।

त्विष् (भ्वा० उभ० त्वेषति —ते) चमकना, जगमगाना, दमकना, दहकना

त्विष् (स्त्री०) [त्विष् + क्विप्] 1 प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, चमक-दमक चर्मस्थितामित्यवधारित पुरा शि० १।३ १।१३, रघु० ४।७५ रत्ना० १।१८ 2 सौन्दर्य 3 अधिकार भार 4 अभिलाष इच्छा 5 प्रथा, प्रचलन 6 हिंसा 7 वक्तृता । सम० —ईशः (त्विषां पतिः) सूर्य ।

त्विषिः [त्विष् + इन्] प्रकाश की किरण ।

त्सरु [त्सर् + उ] 1 रेंगने वाला जानवर 2 तलवार या किसी अन्य हथियार की मूठ —सुप्रग्रहविमलकलधौतत्सरुणा खड्गेन वेणी० ३, त्सरुप्रदेशादपवर्जिताङ्गुलि —कि० १७।५८, रघु० १८।४८ ।

थ

थः [थुड् + ड] पहाड़,— थम् 1 रक्षा, प्ररक्षा 2 भय 3 मांगलिकता ।

थुड् (तुदा० पर०—थुडति) 1 ढकना, पर्दा डालना 2 छिपाना गुप्त रखना ।

थुडनम् [थुड् + ल्युट्] ढकना, लपेटना ।

थुत्कारः [थुत् + कृ + अण्] 'थुत्' ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है

थुर्व् (भ्वा० पर० थूर्वति) चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना।

थूत्कार, थूत्कृतम् [थूत् + कृ + अण्, क्त वा] 'थूत्' की ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है ।

थैथै (अव्य०) किसी संगीत-वाद्य-यंत्र की अनुकरणात्मक ध्वनि ।

द

द (वि०) [दै—दो या दा+क] (प्राय: समासान्त प्रयोग) देने वाला, स्वीकार करने वाला, उत्पादन करने वाला, पैदा करने वाला, काट कर फेंकने वाला, नष्ट करने वाला, दूर करने वाला यथा धनद, अभय, गरद, तोयद, अनलद आदि, —द: 1 उपहार, दान 2 पहाड़, —दम् पत्नी,—दा 1. गर्मी 2 पश्चात्ताप।

दंश् (भ्वा० पर० —दशति, दष्ट इच्छा० दिदङ्क्षति) काटना, डंक मारना—भट्टि० १५।४४ १६।१९, मृणालिका अदशत् —श० ३२. खा लिया, कुतर लिया, उप—, चटनी, अचार आदि खाना —मूलकेनोपदश्य भुङ्क्ते—सिद्धा०, सम्—,1. काटना, डंक मारना —संदष्टाधरपल्लवा —अमरु ३२ 2. चिपटना, संलग्न रहना, या चिपके रहना —उरसा संदष्टसर्पस्त्वचा —श० ७।११, ३।१८. संदष्टवस्त्रेष्वबलानितम्बेषु —रघु० १६।६५, ४८।

दंश: [दंश्+घञ्] 1. काटना, डंक मारना —मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदन्तदंशम् —गीत० १० 2. सांप का डंक 3. काटना, काटा हुआ स्थान —छेदो दंशस्य दाहो वा —मालवि० ४।४ 4. काटना, फाड़ना 5. डांस, एक प्रकार की बड़ी मक्खी —रघु० २।५, मनु० १।४०, याज्ञ० ३।२१५ 6 त्रुटि, दोष, कमी (मणि आदि की) 7. दांत 8 तीखापन 9 कवच 10 जोड़, अंग। सम० —भीरु: भैंसा।

दंशक: [दंश्+ण्वुल्] 1 कुत्ता 2. बड़ी मक्खी 3. मक्खी।

दंशनम् [दंश्+ल्युट्] 1. काटने या डंक मारने की क्रिया —उदा० दष्टाश्च दंशने कान्त दासीकुर्वन्ति योषित —मा० ८० 2 कवच, जिरहबख्तर —शि० १३।२१।

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] 1 काटा हुआ 2. धृतकवच, कवच से सुसज्जित।

दंशिन् (पुं०) [दंश्+णिनि] दे० 'दंशक'।

दंशी [दंश+ङीष्] छोटा डांस या वनमाखी।

दंष्ट्रा [दंश्+ष्ट्रन्+टाप्] बड़ा दांत, हाथी का दांत, विषैला दांत, प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात् —भर्तृ० २।४, रघु० २।४६, दंष्ट्राभङ्गं मृगाणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपा, नाज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशा: सार्वभौमा: —मुद्रा० ३।२२। सम० —अस्त्र:,—आयुध: जंगली सूअर, —कराल (वि०) भयंकर दांतों वाला, —विष: एक प्रकार का सांप।

दंष्ट्राल (वि०) [दंष्ट्रा+ल] बड़े बड़े दांतों वाला।

दंष्ट्रिन् (पुं०) [दंष्ट्रा+इनि] 1. जंगली सूअर 2. सांप 3. लकड़बग्घा।

दक्ष (वि०) [दक्ष्+अच्] योग्य, सक्षम, विशेषज्ञ, चतुर, कुशल,—नाट्ये च दक्षा वयम् —रत्ना० १।६, मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे —कु० १।२, रघु० १२।११ 2. उचित उपयुक्त 3 तैयार, खबरदार, सावधान, उद्यत —याज्ञ० १।७६ 4 खरा ईमानदार,—क्ष: 1. विख्यात प्रजापति का नाम [दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के उन दस पुत्रों में से एक था जो उसके दाहिने अंगूठे से पैदा हुआ था। मानव समाज के पितृपरक कुलों का वह प्रधान था, कहते हैं उसके बहुत सी कन्याएँ थी, जिनमें से २७ तो नक्षत्रों के रूप में चन्द्रमा की पत्नी थी और १३ कश्यप की पत्नियाँ थी। एक बार दक्ष ने एक महायज्ञ का आयोजन किया, परन्तु उसमें उसने न अपनी पुत्री सती को आमन्त्रण दिया और न अपने जामाता शिव को बुलाया। फिर भी सती यज्ञ में गई, परन्तु वहाँ अपमानित होने के कारण वह जलती आग में कूद कर भस्म हो गई। जब शिव ने यह सुना तो वह बड़े उत्तेजित होकर उसके यज्ञ में गये, और यज्ञ का पूर्णत: विनाश कर दिया। कहते हैं, कि फिर भी शिव ने दक्ष (जिसने मृग का रूप धारण कर लिया था) का पीछा किया और उसका सिर काट डाला। बाद में शिव ने उसे पुन: जिला दिया। तब से लेकर दक्ष देवताओं की प्रभुता स्वीकार करने लगा। दूसरे मतानुसार जब शिव बहुत उत्तेजित हुए तो उन्होंने अपनी जटा में से एक बाल तोड़ा और बलपूर्वक उसे जमीन पर पटक दिया, वहाँ से तुरन्त एक राक्षस निकला और शिव के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। उसे दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके यज्ञ को नष्ट करने को कहा गया—तब वह बलवान् राक्षस कुछ गणों को (उपदेवों को) साथ लेकर यज्ञ में गया और वहाँ उपस्थित देवों तथा पुरोहितों का काम तमाम कर दिया। एक और मतानुसार दक्ष का सिर स्वयं शिव ने काटा था] 2 मुर्गा 3 आग 4. शिव का बैल 5. बहुत सी प्रेमिकाओं में आसक्त प्रेमी 6. शिव का विशेषण 7. मानसिक शक्ति, योग्यता, कारिता। सम० —अध्वरध्वंसक: —क्रतुध्वंसिन् (पुं०) शिव के विशेषण, —कन्या, —जा,—तनया 1. दुर्गा का विशेषण 2 अश्विनी आदि नक्षत्र,—सुत: देवता।

दक्षाय्य: [दक्ष+आय्य] 1 गिद्ध 2 गरुड़ का विशेषण।

दक्षिण (वि०) [दक्ष्+इनन्] 1. योग्य, कुशल, निपुण, सक्षम, चतुर 2 दायाँ, दाहिना (विप० वाम) 3. दक्षिण पार्श्व में स्थित 4· दक्षिणी, दक्खिनी जैसा कि दक्षिणवायु, दक्षिणदिक् में 5. दक्षिण में स्थित 6 निष्कपट, खरा, ईमानदार, विश्वस्त 7. सुहावना सुखकर, रोचक 8. शिष्ट, नागर 9. आज्ञानुवर्ती, वशवर्ती 10. पराश्रित,—ण: 1. दायाँ हाथ या बाजू 2. शिष्ट व्यक्ति, एसा प्रेमी (नायक) जिसका मन अन्य नायिका द्वारा हर लिया गया है परन्तु फिर भी

वह केवल एक ही प्रेयसी में अनुरक्त है 3 शिव या विष्णु का विशेषण। सम० अग्नि दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि इसको 'अन्वाहार्यपचन' भी कहते हैं —अग्र (वि०) दक्षिण की ओर संकेत करता हुआ —अचल दक्षिणी पहाड़ अर्थात् मलयपर्वत —अभिमुख (वि०) दक्षिण की ओर मुँह किये हुए दक्षिणोन्मुख —अयनम् भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर सूर्य की प्रगति, वह आधा वर्ष जब कि सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है शरद् की दक्षिणी अयन सीमा —अर्ध 1 बायाँ हाथ 2 दाहिना या दक्षिणी पार्श्व —आचार (वि०) 1 ईमानदार आचरणशील 2 पावन अनुष्ठान के अनुसार शक्ति का उपासक —आशा दक्षिण दिशा —पति यम का विशेषण —इतर (वि०) 1 बायाँ (हाथ ...) 2 —इतरी (—रा) उत्तर दिशा —उत्तर (वि०) दक्षिण उत्तर की ओर मुड़ा हुआ —वृत्तम् मध्याह्न रेखा —पश्चात् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम की ओर —पश्चिम (वि०) दक्षिण पश्चिमी (—मा) दक्षिण पश्चिम दिशा —पूर्व, —प्राच् (वि०) दक्षिण पूर्वी —पूर्वा, —प्राची दक्षिण पूर्व दिशा —समुद्र दक्षिणी सागर —स्थ सारथि।

दक्षिणतः (अव्य०) [दक्षिण + तसिल्] 1 दाईं ओर से या दक्षिण दिशा से 2 दाईं ओर का 3 दक्षिण दिशा की ओर (सम्ब० के साथ)।

दक्षिणा (अव्य०) [दक्षिण + आच्] 1 दाईं ओर दक्षिण की ओर 2 दक्षिण दिशा में (अपा० के साथ) [दक्षिण + टाप्] —णा 1 (यज्ञादिक धार्मिक कृत्यों की पूर्णाहुति पर) ब्राह्मणों को उपहार 2 दक्षिणा (...) पति की पुत्री तथा मूर्तरूप यज्ञ की पत्नी समझी जाती है—पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा—रघु० १। ३१ 3 भेंट उपहार दान सूचक पारिश्रमिक प्राप्त दक्षिणा गुरुदक्षिणा आदि 4 अच्छी दुधार गाय बहु प्रसवा गाय 5 दक्षिण दिशा 6 दक्षिण देश अर्थात् दक्षिणभारत। सम० —अर्ह (वि०) उपहार प्राप्त करने के योग्य या अधिकारी —आवर्त (वि०) 1 दाईं ओर मुड़ा हुआ 2 दक्षिण की ओर मुड़ हुआ —काल दक्षिणा प्राप्त करने का समय —पथ भारत का दक्षिणी प्रदेश —अस्ति दक्षिणापथे विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम् —मा० १ —प्रवण (वि०) दक्षिणाभिमुख।

दक्षिणाहि (अव्य०) [दक्षिण + आहि] 1 दूर दाईं ओर 2 दूर दक्षिण में के दक्षिण की ओर (अपा० के साथ दक्षिणाहि ग्रामात् सिद्धा०।

दक्षिणीय, दक्षिण्य (वि०) [दक्षिणामर्हति ... छ यत् वा] यज्ञीय उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण।

दक्षिणेन (अव्य०) [दक्षिण + एनप्] की दाईं ओर (कर्म० या सम्ब० के साथ) दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते श० १ दक्षिणेन ग्रामस्य।

दग्ध (भू० क० कृ०) [दह् + क्त] 1 जला हुआ आग में भस्म हुआ 2 (आल०) शोकसंतप्त सताया हुआ दुःखी 3 दुर्भिक्षग्रस्त 4 अशुभ 5 शुष्क नीरस स्वादहीन 6 दुर्वृत्त अभिशप्त दुष्ट (दुर्वचन सूचक शब्द समास का प्रथम पद) नासापि मे दग्धदेह पन्ति ... उत्तर० ४ अस्य दग्धोदरस्यार्थे क कुर्यात्पातकं महत् हि० १।१६८ इसी प्रकार दग्धजठरस्यार्थे अनर्घ० ३।८।

दग्धिका [दग्ध + कन् + टाप् इत्वम्] भुने हुए चावल।

दघ्न (वि०) (स्त्री० —घ्नी) ऊँचाई गहराई या पहुँच की भावना को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय ...ऊरुदघ्न पयसालीय—का० १९० कालाकुक्षा ...दघ्नपङ्कः (मार्ग) मा० ३।१३ ... शाङ्ग० ४।१०८।

दण्ड् (चुरा० उभ० दण्डयति ते ...) सजा देना जुर्माना करना मुकदमा करना —द्विकर्मक धातुओं ... —शतं सहस्र च दण्डयन् मनु० ९।२३४ ... याज्ञ० २।२४१ ... दण्ड्यान् दण्डयन् रघु० १।२५।

दण्ड —डम् —दण्ड —डम् 1 छड़ी डंडा सोटा गदा ... यमदण्ड ब्रह्मदण्ड ... 2 राजचिह्न राजसत्ता का प्रतीकरूप ... 3 ... दिया गया डंडा—कु० मनु० २।४८ ... 4 संन्यासी का डण्डा 5 हाथी की सूंड 6 कमल आदि का डण्ठल या वृन्त छतरी आदि की मूठ ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः दश० १ (आरम्भिक ...) ... कु० ... इसी प्रकार कमलदण्ड आदि 7 पतवार ... 8 रई का डंडा 9 जुर्माना मनु० ८।३४१ ... याज्ञ० ... 10 दण्ड शारीरिक दण्ड सामान्य दण्ड ... दण्ड्यानाम रघु० १।६ एव राजाप्यपकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा मुद्रा० १ दण्ड ... मनु० ... कृतदण्डः स्वयं राज्ञा लेभे शूद्रः सतां गतिम् रघु० १५।५३ 11 कैद 12 आक्रमण हमला ... चार उपायों में से अन्तिम दे० उपाय मनु० ७।१०९ शि० २।५४ 13 सेना ... दण्डनायक ... रघु० १३।६६ मनु० ७।६५ ९।२९४ कि० २।१२ 14 सैन्यव्यवस्था का एक रूप व्यूह 15 वश करना नियन्त्रण ... वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः कायदण्डस्तथैव च यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स

उच्यते—मनु० १२।१० 16. चार हाथ के परिमाण का माप 17 चिह्न 18 भवन 19 शरीर 20 यम का विशेषण 21 विष्णु का नाम 22 शिव का नाम 23. सूर्य का सेवक 24 घोड़ा (अन्तिम पाँच अर्थों में 'पुंल्लिंग' है)। सम०—अजिनम् 1 (भक्ति के बाह्य-सूचक) डण्डा और मृगछाला 2. (आलं०) पाखण्ड, छल,-अधिपः मुख्य दण्डाधिकरण, अनीकम् सेना की एक टुकड़ी,—तव हृतवतो दण्डानीकैर्विदर्भपतेः श्रियम्—मालवि० ५।२,—अपूपन्याय 'न्याय' के अन्तर्गत दे०,—अर्ह (वि०) दण्ड दिये जाने के योग्य, दण्ड का भागी,—अलसिका हैजा,—आज्ञा दण्डित करने के लिए न्यायाधीश का वाक्य -आहतम् मट्ठा, छाछ,—कर्मन् (नपुं०) दण्ड देना, ताड़ना करना, काकः पहाड़ी कौवा, -काष्ठं लकड़ी का डण्डा या सोटा,—ग्रहणम् संन्यासी का दण्ड ग्रहण करना, तीर्थयात्री का डण्डा लेना, साधु हो जाना -भवनम् बरतन रखने का कमरा, -ढक्का एक प्रकार का ढोल -दासः ऋण-परिशोध न करने के कारण बना हुआ सेवक, देव-कुलम् न्यायालय, धर,—धार (वि०) 1 डण्डा रखने वाला, दण्डधारी 2. दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला—उत्तर० २।१०, (-रः) 1 राजा -सममन्युरेव मनुदण्डधरान्वयम् रघु० ९।३ 2. यम 3 न्यायाधीश सर्वोच्च दण्डाधिकरण,—नायकः 1 न्यायाधीश, पुलिस का मुख्य अधिकारी, दण्डाधिकरण 2 सेना का सेनापति, सेनापति, -नीतिः (स्त्री०) 1 न्याय प्रशासन, न्याय-करण 2 नागरिक तथा सैनिक प्रशासन, राजनीति राज्यशासनविधि, राजधर्म रघु० १८।४६, नेतृ (पुं०) राजा,—पः राजा -पांशुलः दरबान, द्वारपाल,—पाणिः यम का विशेषण, —पातः 1 डण्डे का गिरना 2. दण्ड देना, पातनम् दण्ड देना, ताड़ना करना—पारुष्यम् 1 सप्रहार प्रघात 2 कठोर तथा दारुण दण्ड देना -पालः,—पालकः 1 मुख्य दण्डाधिकरण 2 द्वारपाल, ड्योढ़ीवान पोष मुठ्ठार बकरी —प्रणामः 1 शरीर को बिना झुकाये नमस्कार करना (डण्डे की भाँति सीधे खड़े रह कर) 2 भूमि पर लेट कर प्रणाम करना,—बालधिः हाथी,—भङ्गः दण्डाज्ञा पर अमल न करना,—भृत् (पुं०) 1 कुम्हार 2. यम का विशेषण, -माणवः 1 दण्डधारी 2 दण्डधारी संन्यासी, मार्गः राजमार्ग, मुख्यमार्ग,—यात्रा 1 बरात का जलूस 2 युद्ध के लिए कूच दिग्विजय के लिए प्रस्थान,—वासः 1 यम का विशेषण 2 अगस्त्य मुनि की उपाधि 3 दिन, वासिन्,—वासिन् द्वारपाल सन्तरी, पहरेदार, वाहिन् (पुं०) पुलिस अधिकारी —विधिः 1 दण्ड देने का नियम 2 दण्डविधान —विष्कम्भः मथानी की रस्सी बाँधने का खम्भा,—व्यूह एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सैनिक पास २ कतारों में खड़े किये जाते हैं -शासनम् दण्ड निर्णय का शासन, दण्डविधान, -हस्तः 1 द्वारपाल, पहरेदार सन्तरी 2 यम का विशेषण।

दण्डकः [दण्ड+कन्] 1 छड़ी, डण्डा आदि 2 पङ्क्ति, कतार 3 एक छन्द—दे० परिशिष्ट, -कः, -का, —कम् दक्षिण में एक विख्यात प्रदेश जो नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित है (यह एक बड़ा प्रदेश है कहते हैं राम के समय यहाँ जङ्गल था) -प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेष्वपि रघु० १४।२५, किं नाम दण्डकेयम् उत्तर० २, स्थानान्याया पुनरुपगमो दण्डकायां वने व: उत्तर० २।१३-१५।

दण्डनम् [दण्ड्+ल्युट्] दण्ड देना ताड़ना करना जुर्माना करना।

दण्डादण्डि (अव्य०) [दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम् इच् द्वित्व, पूर्वपददीर्घ] लाठियों की लड़ाई वह मारपीट जिसमें दोनों ओर से लाठी चलती हों डण्डों की लाठों की लड़ाई।

दण्डारः [दण्ड+ऋ+अण्] 1 गाड़ी 2 कुम्हार का चाक 3 बेड़ा, नाव 4 मदमस्त हाथी।

दण्डिकः [दण्ड+ठन्] दण्डधारी, छड़ीबरदार।

दण्डिका [दण्डिक+टाप्] 1 लकड़ी 2 पङ्क्ति कतार श्रेणी 3 मोतियों की लड़ी हार 4 रस्सी।

दण्डिन् (पुं०) [दण्ड+इनि] 1 चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, संन्यासी 2 द्वारपाल, ड्योढ़ीवान 3 डाँड चलाने वाला 4 जैन संन्यासी 5 यम का विशेषण 6 राजा 7 दशकुमार चरित और काव्यादर्श का रचयिता, दण्डी कवि जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्, कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि उद्भट।

दत् (पुं०) [सर्वनाम स्थान को छोड़ कर सर्वत्र 'दन्त' के स्थान में 'दत्' आदेश विकल्प से] दाँत। सम० -छद (दच्छद) होंठ ओष्ठ।

दत्त (भू० क० कृ०) [दा+क्त] 1 दिया हुआ, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हुआ 2 सौंपा हुआ, वितरित, समर्पित 3 रक्खा हुआ फैलाया हुआ—दे० दा', -त्तः 1 हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ('दत्त्रिम' भी कहते हैं) माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः मनु० ९।१६८ 2 वैश्यों के नामों के साथ लगने वाला उपाधि सू० 'गुप्त' के अन्तर्गत उद्धरण दे० 3 अत्रि और अनसूया का पुत्र दे० 'दत्तात्रेय' नी०, तत् उपहार दान। सम०—अनपाकर्मन् अप्रदानिकम् दी हुई वस्तु का न देना, या दान की हुई वस्तु का वापिस लेना, हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १८ व्यावि-

कारों में से एक,—अवधान (वि०) सावधान,—आत्रेयः एक ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र जो ब्रह्मा विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है,—आदर (वि०) 1 आदर प्रदर्शित करने वाला सम्मानपूर्ण 2 सम्मान प्राप्त, —कन्या कुलहीन जिसको दहेज दिया गया है 1, —हस्त (वि०) जिसने दूसरे की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, हाथ का सहारा पाये हुए —कज्जभुजा दत्तहस्ता मेघ० ६०, शम्भु की भुजा पर टेक लगाये हुए—स कामक्लेश्वरदत्तहस्त —रघु० ३।१७ (आलं०) साहाय्यवान्, समर्थित साहाय्येन सहा सत्ता-प्राप्त दैवेनेत्थं दत्तहस्तावलम्बे रत्ना० १।८, यात्या खेद कृशाङ्ग्या सुचिरमवयवैर्दत्तहस्ता करोति वेणी० २।२१।

दत्तकः [दत्त + कन्] गोद लिया हुआ पुत्र — याज्ञ० २। १३०, दे० दत्त ऊपर।

दद् (भ्वा० आ० ददते) देना, प्रदान करना।

दद (वि०) [दा० + श] देने वाला प्रदान करने वाला।

ददनम् [दद् + ल्युट्] उपहार, दान।

दध् (भ्वा० आ० दधते) 1 पकड़ना 2 धारण करना, पास रखना 3 उपहार देना।

दधि (नपुं०) [धा + इन्] 1 जमा हुआ दूध दही क्षीर दधिभावेन परिणमते—शारी० दध्योदन आदि 2 तार-पीन 3 वस्त्र। सम० —अन्नम्, —ओदनम् दही मिला हुआ भात, —उत्तरम्, —उत्तरकम्, —गम् दही की मलाई, तोड़, —उद:,—उदकः जमे हुए दूध का सागर —कूर्चिका जमे हुए और उबले हुए दूध का मिश्रण —क्षार: रई, —ज् ताजा मक्खन, —फल: कैथ, —मण्ड:, —वारि (नपुं०) दही का तोड़, —मन्थनम् दही का मथना, —मुख: बन्दर —सक्तु (पुं० ब० व०) दही मिला हुआ सत्तू,—सार:, —स्नेह: ताजा मक्खन —स्वेद अर्धरिक्त दही।

दधित्थ: [दधि + स्था + क पृषो०] कैथ, कपित्थ।

दधीचः (पुं०) एक विख्यात ऋषि, जिसने अपने शरीर की हड्डियाँ देवताओं को दे दी थीं और स्वयं मरने के लिए उद्यत हो गया था। इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी ने एक वज्र बनाया और इन्द्र ने इसी वज्र के द्वारा वृत्र तथा अन्यान्य राक्षसों को परास्त किया। सम० —अस्थि (नपुं०) 1 इन्द्र का वज्र 2 हीरा।

दनुः (स्त्री०) दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही गई थी। यही दानवों की माता थी। सम० —ज:, —पुत्र:, —संभव:,—सूनुः, एक राक्षस, °अरि °द्विष् (पुं०) देवता।

दन्त: [दम् + तन्] 1 दांत, हाथी का दांत विपदन (सांप या अन्य विषैले जन्तुओं का) यदसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम् —गीत० १०, सर्पदंत, वराह° आदि 2 हाथी का दांत, गजदन्त °पाञ्चालिका—मा० १।०।५ 3 बाण की नोक 4 पर्वत की चोटी 5 लताकुंज, पर्णशाला। सम० —अग्रम् दांत की नोक,—अन्तरं दांतों के बीच का स्थान, —उद्भेद दांतों का निकलना,—उलूखलिक —उलूखलिन् (पुं०) जो अपने दांतों को ऊखल की भांति प्रयुक्त करते हैं, (खाने वाले धान्य को अपने दांतों के बीच में रखकर पीसने वाले), एक प्रकार के साधु सन्यासी, तु० मनु० ६।१७, —कर्षण नींबू का वृक्ष,—कार: हाथीदांत का काम करने वाला कलाकार, —काष्ठम् दतौन —कूर लड़ाई —क्षतिन्(वि० नीतों को क्षति पहुँचाने वाला, दांतों को खराब करने वाला —खर्ष दांतों का किच-किचाना दांत पीसना —चाल दांतों का ढीलापन, —छद होठ वारंवारमुदारसीत्कृतकृतो दन्तच्छदान् पीडयन् भर्तृ० १।४३, ऋतु० ४।१२ —जात(वि०) (शहू बच्चा) जिसके दांत निकल आये हों, दांत निकलने का समय —जाहम् दांत की जड़, —धावनम् 1 दांतों का धोना साफ करना 2 दतौन (—नः) खैर का वृक्ष मौलसिरी का पेड़ —पत्रम् एक प्रकार का कर्णाभूषण रघु० ६।१७ कु० ७।२३ (प्राय: कादम्बरी में प्रयुक्त) —पत्रकम् 1 कान का आभूषण 2 कुन्द फूल —पत्रिका 1 कान का आभूषण शि० १।६० 2 कुन्द —पवनम् 1 दतौन 2 दांतों का धोना साफ करना —पात दांतों का गिरना —पाली 1 दांत की नोक 2 मसूड़ा, —पुष्पम् 1. कुन्द फूल 2. कतक तरु निर्मली, —प्रक्षालनम् दांतों का धोना, —भाग हाथी के सिर का अगला भाग (जहाँ दांत बाहर निकले होते हैं) —मलम् दांतों का मैल —मांस,—मूलम् —मूलकम् मसूड़ा, —मूलीया (ब० व०) दन्त्य वर्ण अर्थात् लृ त् थ् द् ध् न्, ल् और स्, —रोग दांत की पीड़ा —लेखम्— —वास (नपुं० होठ तुला यदारोहति दन्तवाससा कु० ५।३४, शि० १०।८६, —वीज, —वीजः,—वीजक, —बीजक अनार का पेड़,—वीणा 1 एक प्रकार का बाजा, सारंगी 2 दांत कटकटाना —दन्तवीणां वादयन् पञ्च० १, —वैदर्भ आघात के द्वारा दांतों का टूटना, —व्यसनम् दांत का टूटना —शठ (वि०) खट्टा, चरपरा (—ठः) नींबू का पेड़, —शर्करा दांतों के ऊपर मैल की पपड़ी, —शाण दांतों पर लगाने का दन्तमंजन दन्तशोधन मिस्सी,—शूल,—शूलम् दांत की पीड़ा,—शोधनि (स्त्री०) दांत कुरेदनी, —शोफ मसूड़ों की सूजन —संघर्ष दांतों का रगड़ना, —हर्ष दांतों में (ठंडा पानी) लगना —हर्षक नींबू का पेड़।

दन्तकः [दन्त + कन्] 1 चोटी शिखर 2 खूंटी पलहण्डी।

दन्तादन्ति (अव्य०) [दन्तैश्च दन्तैश्च प्रहृत्य प्रवृत्त युद्धम्

समासान्त इच्, पूर्वपददीर्घ] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को दाँतों से काटा जाय।

दन्तावल, दन्तिन् (पुं०) [अतिशायिनो दन्तौ यस्य दन्त + वलच्, दीर्घ दन्त + इनि] हाथी, भामि० १।६० तुर्येर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिन हि० १।३५, रघु० १।७१, कु० १६।२।

दन्तुर (वि०) [दन्त + उरच] बड़े २ या आगे निकले हुए दाँतों वाला —शूकरे निहते चैव दन्तुरा आयते नर —तारा०, शि० ६।५४ 2. दाँतेदार, दन्तुरित दरार दार, दन्दानेदार, उन्नतावनत विषम (आल०) अखर्व-गर्वोन्मिलद्दन्तुरेण विक्रमांक० १।५० 3. उर्मिल 4. उठना (बालों का) खड़ा होना। सम०—छद नीबू का पेड़।

दन्तुरित (वि०) [दन्तुर + इतच्] बड़े या आगे निकले हुए दाँतों वाला 2. दाँतेदार, उन्नतावनत, खड़े रोंगटों वाला केतकिदन्तुरिताशे —गीत० १ पुलकभर° ११, का० २८६।

दन्त्य (वि०) [दन्त + यत्] दाँतों से सम्बद्ध, —त्य (अर्थात् वर्ण) दन्तस्थानीय वर्ण, दे० 'दन्तमूलीय' ऊपर।

दन्दश (पुं०) दाँत।

दन्दशूक (वि०) [दंश् + यङ् + ऊक] 1. काटने वाला, विषैला 2. उत्पाती, —क 1. साँप सर्प 2. रेंगने वाला जन्तु 3. राक्षस इयुमति रघुसिंहे दन्दशूकाञ्जिघांसौ —भट्टि० १।२६।

दभ्, दम्भ् I. (स्वा० स्वा० पर० दभ्नोति, दम्नोति दब्ध —इच्छा० धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. धोखा देना ठगना 3. जाना, II. (चुरा० उभ० दम्भयति —ते) ठेलना, उकसाना, धकेलना।

दभ्र (वि०) [दम्भ् + रक] थोड़ा, स्वल्प, अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीम् कि० १।३८ दे० अदभ्र —भ्र समुद्र, —भ्रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा, किसी अंश तक।

दम् (दिवा० पर० दाम्यति, दमित, दान्त प्रेर० दमयति) 1. पालतू जाना 2. शान्त होना मनु० ४।३५, ६।८, ७।१४१ 3. पालना, वश में करना, जीतना, रोकना —दमो दाम्यति राक्षसान् —भट्टि० १८।२०, दमित्वा-प्यरिसङ्घातान्—९।४२, १९, १५।३० 4. शान्त करना।

दम: [दम् + घञ्] 1. पालना, दमन करना (वश में करना) 2. आत्मनियन्त्रण, अपनी उग्र भावनाओं को वश में करना, आत्मसंयम —मनु० १०।६३,—(निग्रहो बाह्यवृत्तीनां दम इत्यभिधीयते) 3. बुराई की ओर से मन को हटाना, बुरी वृत्तियों का दमन करना (कुत्सिता-त्कर्मणो विप्र यच्च चित्तनिवारणं, स कीर्तितो दमः) 4. मन की दृढ़ता 5. दण्ड, जुर्माना मनु० ९।२८४ २९०, याज्ञ० २।४ 6. दलदल, कीचड़।

दमथ, —थु [दम् + अथच्, अथुच् वा] 1. अपनी उग्र वृत्तियों को रोकना, या वश में करना आत्मनियन्त्रण 2. दण्ड।

दमन (वि०) (स्त्री०—नी) [दम् + ल्युट्] 1. पालने वाला, दबाने वाला, वश में करने वाला, जीतने वाला हराने वाला—जामदग्न्यस्य दमने नैव निर्बन्धमर्हसि—उत्तर० ५।३२, भर्तृ० ३।८९ इसी प्रकार 'सर्वदमन' 'अरिदमन' 2. शान्त निरावेश, —नम् 1. पालना, वश में करना, दबाना नियन्त्रित करना 2. दण्ड देना, ताड़ना करना दुर्दान्तानां दमनविधयः क्षत्रियेष्वायतन्ते महावी० ३।३४ 3. आत्मसंयम।

दमयन्ती [दमयति नाशयति असमञ्जसादिकम् दम + णिच् + शतृ + ङीप्] विदर्भ के राजा भीम की पुत्री (इसका नाम 'दमयन्ती' इस लिए पड़ा था कि इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से सभी सुन्दर महिलाओं का दर्प चूर चूर कर दिया था नै० २।१८ भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम् उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ। एक स्वर्णहंस ने पहले दमयन्ती के सामने नल के गुण और सौन्दर्य की प्रशंसा की फिर उसी के द्वारा दमयन्ती ने अपने प्रेम का समाचार उसको भिजवाया। उसके पश्चात् स्वयंवर में दमयन्ती ने नल का उन बहुत से प्रतियोगियों में से जिनमें कि इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण यह चारों देव भी स्वयं उपस्थित थे, पति के रूप में चुन लिया और फिर दोनों प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्यजीवन बिताने लगे। परन्तु उनका यह सुखमय जीवन अधिक देर तक नहीं रहना था। नल के सौभाग्य से ईर्ष्या करने वाला कलि नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया और उसने नल को अपने भाई पुष्कर के साथ जुआ खेलने के लिए उकसाया। खेल की गर्मी में ही मूढ़ राजा ने अपना सबकुछ दाँव पर लगा दिया और स्वयं तथा पत्नी को छोड़ सब कुछ हार गया। फलतः नल और दमयन्ती को केवल एक वस्त्र पहने राजधानी से निकाल दिया गया। दमयन्ती को बहुत से कष्ट उठाने पड़े, परन्तु उसकी पति-भक्ति में कोई अन्तर न आया। एक दिन जब दमयन्ती पड़ी सो रही थी, हताश होकर नल उसे छोड़ कर चल दिया। तब दमयन्ती को विवश होकर अपने पिता के घर जाना पड़ा। कुछ समय के पश्चात् वह फिर अपने पति से मिली और फिर शेष जीवन उन्होंने निर्बाधसुख में बिताया दे० 'नल' और 'ऋतुपर्ण')।

दमयितृ (वि०) [दम् + णिच् + तृच्] 1. पालने वाला, दमन करने वाला 2. दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला 3. विष्णु का विशेषण।

दमित (वि०) [दम् + क्त] 1. पाला हुआ, शान्त, शासित

किया हुआ 2 विजित, दमन किया हुआ, वशीभूत, परास्त ।

दंशु (शू) दंश् (पुं०) [दम्+उनस्, पक्षे दीर्घ] आग ।

दम्पती [जाया च पतिश्च द्व० स० जायाशब्दस्य दमादेश द्विवचन] पति और पत्नी, रघु० १।३५, २।७०, मनु० ३।११६ ।

दम्भ [दम्भ्+घञ्] 1 धोखा, जालसाजी, दांवपेच 2 धार्मिक, पाखण्ड--भग० १६।४ 3 अहङ्कार घमण्ड, आत्मश्लाघा 4 पाप, दुष्टता 5 इन्द्र का वज्र ।

दम्भनम् [दम्भ्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना, छल ।

दम्भिन् (पुं०) [दम्भ्+णिनि] पाखण्डी, धूर्त मनु० ४।१९५ भग० १३।७ ।

दम्भोलि [दम्भ्+अनुन्, दम्भम् पश्मिन् अरणे अलंम् पर्याप्नोति--अल्+इन्] इन्द्र का वज्र ।

दम्य (वि०) [दम्+यत्] 1 पालने के योग्य, वश में लाने के लायक 2 दण्ड दिये जाने योग्य,—म्यः 1 नया बछड़ा (जिसे प्रशिक्षण तथा अनुभव की अपेक्षा है), —आरूढ़ नाम पुरुषवाहिनाधुरि दम्य नियोजयितुम् —विक्रम० ५, गुर्वीं धुरं यो भुवनस्य पित्रा धुर्येण दम्यः सदृशं बिभर्ति—रघु० ६।७८ मुद्रा० ३।३ 2 वह बछड़ा जिसे अभी सधाना है ।

दय् (भ्वा० आ० दयते,दयित) दया आना, करुणा का भाव होना, तरस खाना, सहानुभूति प्रदर्शन करना (संबं० के साथ) रामस्य दयमानोऽसावध्येति तव लक्ष्मण भट्टि० ८।११९, तेषां दयसे न कस्मात्—१।३४ १५।६३ 2 प्यार करना, अच्छा लगना, रुचिकर होना दयमाना प्रमदा —ज० १।३, भट्टि० १०।९ 3 रक्षा करना नगजा न गजा दयिता दयिता भट्टि० १०।९ 4 जाना, हिलना-जुलना 5 स्वीकार करना, देना, वितरण करना नियत करना 6 चोट पहुँचाना ।

दया [दय्+अङ्+टाप्] तरस, सुकुमारता, करुणा, अनुकम्पा, सहानुभूति— निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वंति साधवः—हि० १।६०, रघु० २।११, इसी प्रकार 'भूतदया' । सम०—कूट,कूर्च बुद्ध के विशेषण, -वीर (अलं० शा०) वीरतापूर्ण करुणा की भावना, करुणा के फलस्वरूप उदय होने वाला वीररस—उदा० जीमूतवाहन (नागानन्द में) गरुड से कहता है— शिरामुखैः स्यन्दत एव रक्तमद्यापि देहे मम मांसमस्ति, तृप्तिं न पश्यामि तवापि तावत् किं भक्षणात्त्वं विरतो गरुत्मन्, तु० 'दयावीर' के अन्तर्गत रस० में ।

दयालु (वि०) [दय्+आलुच्] कृपालु, सुकुमार, सदय, करुणापूर्ण —एकशरीरे भव मे दयालुः—रघु० २।५७, २।५२ ।

दयित (भू० क० कृ०) [दय्+क्त] प्रिय, चाहा हुआ, इष्ट--भट्टि० १०।९, —तः पति, प्रेमी, प्रिय व्यक्ति -विक्रम० ३।५, भामि० २।१८२,--ता पत्नी, प्रेयसी --दयिताजीविताम्बनार्थी —मेघ० ४, रघु० ३।३, भामि० २।१८२, कि० ६।१३, दयितायितः शोक का भूकाव, पत्नीभक्त पति ।

दर (वि०) [दृ+अप्] फाड़ने वाला, चीरने वाला (प्रायः समासान्त में), रः, -रम् 1 गुफा, कन्दरा छिद्र 2 शङ्ख, —रः 1 भय, त्रास, डर,—सा दर पुनना निर्ये हीयमाना रसादरम्— शि० १९।२३, न त्रास हार्देन विद्विषादरं कि० १।३३,—रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा (समास में) दरमीलनयना निर्गाक्षिन भामि० २।१८२, ७, दरविगलितमल्लीवल्लिचञ्चत्-पराग -गीत० गीत० १ इसी प्रकार -दरदलित -विकसित—उत्तर० ४ मा० ३, सम० -तिमिरम् भय का अन्धकार, हरति दरतिमिरमतिघोरम्—गीत० १० ।

दरणम् [दृ+ल्युट्] तोड़ना, टुकड़े २ करना ।

दरणि (पुं०, स्त्री०) दरणी [दृ+अनि, दरणि+ङीष्] 1 भंवर 2 धारा 3 हिलोर ।

दरद् (स्त्री०) [दृ+अदि] 1 हृदय 2 त्रास, भय 3 पहाड़ 4 चट्टान किनारा, टीला ।

दरदा (पुं० ब० व०) [दर, दै+क] कश्मीर की सीमा को छूता हुआ एक देश —दः भय त्रास, दम् सिंदूर ।

दरि —री (स्त्री०) [दृ+इ, दरि+ङीष्] गुफा, कन्दरा घाटी दरीगृह कु० १।१०, एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा भर्तृ० १२० ।

दरिद्रा (अदा० पर० दरिद्राति, दरिद्रित प्रेर० दरिद्र-यति, इच्छा दिदरिद्रासति दिदरिद्रिषति) 1 निर्धन होना गरीब होना, —अद्यापि पश्यत कस्य महिमा सोऽरवीयते उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति हि० २।२, भट्टि० १८।३१ 2 कष्टग्रस्त होना,—पुष्प ममैव किं गच्छ दरिद्राति यथा हरिं —भट्टि० ५।८६ 3 दुबला पतला होना, दरिद्राति विपद्गुमे कुसुम-कान्तसस्तारका —विक्रमांक० ११।७४ ।

दरिद्र (वि०) [दरिद्रा+क] निर्धन, गरीब अभावग्रस्त, दुर्दशाग्रस्त स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला, मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः—भर्तृ० २।५०, —द्र्य गरीबी शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता ।। मृच्छ० ३।२४ ।

दरोदरः [दरो भयं तज्जनकमुदरं यस्य] 1 जुआरी 2 जूए पर लगा दाँव, -रम् 1 जूआ खेलना 2 पाँसा, अक्ष, दे० 'दुरोदर' ।

दर्दरः [दृ+यङ्+अच्] 1 पहाड़ 2 कुछ टूटा हुआ मर्तबान ।

दर्दरीक: [दृ+यङ्+ईकन्] 1 मेंढक 2 बादल 3 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, –कम् एक वाद्ययन्त्र ।

दर्दुर: [दृ+यङ्+उरच्] 1 मेंढक—पङ्कक्लिन्नमुखा पिबन्ति सलिलं धाराहता दर्दुरा – मृच्छ० ५।१४ 2 बादल 3. बन्सरी जैसा एक वाद्ययन्त्र 4 पहाड़ 5 दक्षिण में स्थित एक पहाड़ का नाम ('मलय' सम्मिलित) –स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१ ।

दर्दू: (द्रू:) (स्त्री०) [दरिद्रा+उ नि० साधु] दाद एक प्रकार का चर्मरोग ।

दर्प: [दृप्+घञ्, अच् वा] 1 घमण्ड अहङ्कार धृष्टता अभिमान —मनु० ८।२१३, भग० १६।४' 2 उतावलापन 3. गर्व, दम्भ 4 रोष विक्षोभ 5 गर्मी 6 कस्तूरी । सम०—आध्मात (वि०) अभिमान से फूला हुआ —छिद्,–हर (वि०) घमण्ड तोड़ने वाला नीचा दिखाने वाला ।

दर्पक: [दृप्+णिच्+ण्वुल्] प्रेम के देवता कामदेव

दर्पण: [दृप्+णिच्+ल्युट्] मुँह देखने का [illegible] —लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति [illegible] १०९, कु० ७।२६, रघु० १०।१०, १६।[illegible]७, –णम् 1 आँख 2 जलना प्रज्वलित करना ।

दर्पित, दर्पिन् (वि०) (स्त्री०–णी) [दृप्+क्त, दृप्+णिनि] घमण्डी, अहङ्कारी, अभिमानी ।

दर्भ: [दृ+भ] एक प्रकार का पवित्र (कुशा) घास जो यज्ञानुष्ठानों के अवसर पर प्रयुक्त किया जाता है —श० १।७, रघु० १९।३१, मनु० २।४[illegible], ३।[illegible] ४।३६ । सम०—अङ्कुर कुश घास का नुकीला [illegible] – श० २।१२, –अनूप: दर्भ घास से परिपूर्ण दलदली भूमि, –आह्वय मूज घास ।

दर्भटम् [दृभ्+अटन्] निजी कमरा आराम [illegible] एकान्त कमरा ।

दर्व: [दृ+व] 1 एक उत्पातकारी [illegible] 2 राक्षस, पिशाच 3 चमचा ।

दर्वट: [दर्व+अट्+अच् शक० पररूपम्] 1 गाँव का पहरेदार, पुलिस अधिकारी 2 द्वारपाल ।

दर्वरीक: [दृ+ईकन्, नि० साधु] 1 इन्द्र का विशेषण 2. एक प्रकार का वाद्य यन्त्र 3 हवा वायु ।

दर्विका [दर्वि+कन्+टाप्] कड़छी चमचा ।

दर्वी (वि०) (स्त्री०) [दृ+विन वा ङीष्] 1 कड़छी चमचा 2 साँप का फैलाया हुआ फण–शि० [illegible] सम—कर: साँप, सर्प ।

दर्श: [दृश्+घञ्] 1 दृष्टि दृश्य, दर्शन (प्रायः समास में) दुर्दर्श, प्रियदर्श 2 अमावस्या 3 पाक्षिक यज्ञ अमावस्या के दिन होने वाला यज्ञीय कृत्य । सम०—ज्ञ देवता, –यामिनी अमावस्या की रात्रि, –विपद् (पुं०) चाँद

दर्शक (वि०) [दृश्+ण्वुल्] 1 देखने वाला, अनुष्ठान करने वाला 2 दिखलाने वाला बतलाने वाला कु० ६।५२, –क: 1 प्रदर्शन करने वाला 2 द्वारपाल, पहरेदार 3 कुशल व्यक्ति, किसी कला में प्रवीण व्यक्ति ।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] देखना, दर्शन करना निरीक्षण करना रघु० ३।[illegible] 2 जानना समझना प्रत्यक्ष जानना परिदर्शन करना रघु० ८।७२ 3 दृष्टि, दर्शन –[illegible]—श० ३।५ 4 आँख 5 निरीक्षण [illegible] 6 दिखलाना प्रदर्शन करना प्रदर्शनी [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] भग० ११।१० [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible] 19 [illegible] 20 यज्ञ [illegible] दर्शन करने का अभिलाषी [illegible] दर्शन [illegible] उपासना [illegible]

दर्शनीय [illegible] 1 देखने के योग्य [illegible] 2 देखने [illegible] सुहावना, मनोहर, सुन्दर 3 [illegible]

दर्शयितृ [illegible] 1 दौवारिक [illegible]

दर्शित [illegible] 1 दिखाया गया, प्रद- [illegible] प्रदर्शित हो गई 2 देखा गया समझा [illegible] 3 व्याख्यात, सिद्ध 4 प्रतीयमान ।

दल् [illegible] 1 फट पड़ना, टुकड़े-टुकड़े होना [illegible] तरेड़ आ जाना—दलति हृदयं गाढोद्वेगं द्विधा न तु भिद्यते – उत्तर० ३।३१, अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् – १।२८, मा० ९।१२, २० [illegible] हृदि विरहभरेण – गीत० ७, अमरु ३[illegible] 2 प्रसार करना विकसित होना, (पुष्प की भाँति) खिलना [illegible] –उत्तर० १ [illegible] विदधतु [illegible] –भामि० ११११, शि० ९।४३, कि० १०।३९, –प्रेर० द (ला) यति 1 फाड़ना फाड़ना 2 काटना बाँटना टुकड़े टुकड़े करना, अक, (प्रेर०) फाड़ डालना, (वि) 1 फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, दरेड़ आ जाना –[illegible] – नै० ४।८८ 2 खोदना ।

दल –लम् [दल्+अच्] 1 टुकड़ा, अर्ध भाग, खण्ड

—शि० ४।४४ 2. उपाधि 3. दो भागों में से एक जैसे दाल, आधा भाग 4. म्यान, कोष 5. छोटा अंकुर या कोमल फूल की पखड़ी पत्ता रघु० ४।४२, श० ३।२१, २२ 6. शस्त्र का फलक 7. पुंज, राशि, ढेर 8. सेना की टुकड़ी, सैनिकों की टोली। सम०—आढक 1. झाग 2. मर्मीकेपी मत्स्य का भीतरी कवच 3. काई परिखा 4. बवंडर आँधी 5. गेरू, —कोष कुन्दलता, —निर्मोक भोजपत्र का वृक्ष, —पुष्पा केवड़े का पौधा, —सूचि, —ची (स्त्री०) काँटा, —स्नसा पत्ते का रेशा या नस।

दलनम् [दल् + ल्युट्] फाड़ना, तोड़ना, काटना, बाँटना, कुचलना, पीसना, टुकड़े-टुकड़े करना — मनःकुमुददलने मुखि भामि [illegible] भर्तृ० १।५९।

दलनी (स्त्री०) **दलि** (पुं०) [दलन + ङीप्, दल् + इन्] मिट्टी का ढेला, मिट्टी का लोंदा।

दलप [दल + पा + क] 1. शस्त्र 2. सोना 3. [illegible]।

दलशः (अव्य०) [दल + शस्] टुकड़े-टुकड़े करके, खण्ड-खण्ड करके।

दलित (भू० क० कृ०) [दल् + क्त] 1. टूटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, कटा हुआ, टुकड़े-टुकड़े हुआ [illegible]।

दल्भः [illegible] 1. पहिया 2. जालसाजी, बेईमानी 3. पाप।

दवः [दु + अप्] 1. वन, जंगल 2. जंगल की आग [illegible] 3. आग 4. गर्मी [illegible]। सम०—अग्नि, —दहन जंगल की आग, दावाग्नि [illegible] [illegible] ५३ [illegible] रघु० [illegible]।

दवथुः [दु + अथुच्] 1. आग, गर्मी 2. पीड़ा, चिन्ता, दुःख 3. आँख की सूजन।

दविष्ठ (वि०) [दूर + इष्ठन्, दवादेश] 1. अत्यन्त दूर का, बहुत दूर का।

दवीयस् (वि०) [दूर + ईयसुन्, दवादेश] 1. अपेक्षाकृत दूर का 2. कहीं परे का, दूर स्थित — विद्यावता सकलमेव गिरां दवीयः — भामि० १।६९।

दशक (वि०) [दशन् + कन्] दस से युक्त, दशगुना — कामजो दशको गणः — मनु० ७।४७, —कम् दस का समाहार।

दशत्, दशति (स्त्री०) [दशन् + अति] दस का समाहार, दशक।

दशन् (सं० वि० ब० व०) [दंश् + कनिन्] दस, स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् — ऋग्० १०।९०।१। सम०—अङ्गुल (वि०) दस अङ्गुल लम्बा, —अर्ध (वि०) पाँच (५) बुद्ध का विशेषण, —अवताराः (पुं०, ब० व०) विष्णु के दस अवतार, दे० 'अवतार' के अन्तर्गत —आननः चन्द्रमा, —आननः, —आस्यः रावण के विशेषण —रघु० १०।७५, —आस्य [illegible] का विशेषण —ईशः दस ग्रामों का अधीक्षक, —एकादशिक (वि०) जो दस रुपये देकर ग्यारह लेता है, अर्थात् जो १० प्रतिशत पर उधार देता है, —कण्ठ, —कन्धरः रावण के विशेषण —सप्तलोकैकवीरस्य दशकण्ठकुलद्विषः — उत्तर० ४।२७, —अरिः, —जित् (पुं०), —रिपुः राम के विशेषण — रघु० ८।२९, —गुण (वि०) दस गुना, दस गुणा बड़ा, —ग्रामिन् (पुं०) —पः दस ग्रामों का अधीक्षक, —ग्रीवः —दशकण्ठ, —बलः 'दस सिद्धियों का स्वामी' बुद्ध का विशेषण, —पुरम् एक प्राचीन नगर का नाम, राजा रन्तिदेव की राजधानी —मेघ० ४७ —बल, —भूमिग बुद्ध के विशेषण, —अर्णाः (ब० व०) 1. एक देश का नाम 2. इस देश के निवासी या शासक, —मास्य (वि०) 1. दस महीने का 2. गर्भ में दस मास (जन्म से पूर्व का बच्चा), —मुख रावण का विशेषण, —रिपु राम का विशेषण — रघु० १२।८७, —रथ अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा, अज का पुत्र, राम और उनके तीन भाइयों का पिता (दशरथ की तीन पत्नियाँ थी कौसल्या, सुमित्रा और कैकेयी परन्तु कई वर्ष तक उनके कोई सन्तान न हुई। वसिष्ठ ने दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिए कहा, ऋष्यशृङ्ग की सहायता से यह यज्ञ संपन्न हुआ। इस यज्ञ के पूरा होने पर कौसल्या से राम, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का तथा कैकेयी से भरत का जन्म हुआ। दशरथ को अपने सभी पुत्र प्यारे थे परन्तु राम तो उनका 'प्राण' था। इसके पश्चात् जब कैकेयी ने मन्थरा के द्वारा उकसाये जाने पर अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वर मांगे तो दशरथ ने उसके गर्हित प्रस्तावों से उसका मन हटाने के लिए कैकेयी को धमकाया, जब वह न मानी तो खुशामद अनुनय विनय के द्वारा उसे समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु कैकेयी बराबर निश्चय बनी रही। फलतः बेचारे राजा को अपने पुत्र राम को निर्वासित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। और उसके पश्चात् उन्होंने इसी दुःख में अपने प्राण त्याग दिए), —रश्मिशतः सूर्य — रघु० ८।२९ —रात्रम् दस रातों (बीच के दिनों समेत) का समय, (त्र) दस दिन तक चलने वाला एक विशेष यज्ञ —रूपभृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण, —वक्त्र, —वदन दे० दशमुख —वाजिन् (पुं०) चन्द्रमा —वार्षिक (वि०) हर दस वर्ष के पश्चात् होने वाला या दस वर्ष तक टिकने वाला।

—विध (वि०) दस प्रकार का, —शतम् 1 एक हजार,

2. एक सौ दस, °रश्मिः सूर्य,—शती एक हजार, —साहस्रम् दस हजार,—हरा 1 गङ्गा का विशेषण 2 गङ्गा के सम्मान के उपलक्ष्य में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को मनाया जाने वाला पर्व 3 दुर्गा के सम्मान में आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला पर्व (विजया दशमी)।

दशतय (वि०) (स्त्री०-यी) [दशन्+तयप्] दस भागों से युक्त, दस गुना।

दशधा (अव्य०) [दशन्+धा] 1 दस प्रकार से 2 दस भागों में।

दशन, —नम् [दंश्+ल्युट नि० नलोप] 1 दांत,—मुहुर्मुहुर्दशनविखण्डितोष्ठया - शि० १५।२. शिखरिदशना —मेघ० ८० मनु० १०।२७ 2 काटना,—नः पहाड़ की चोटी,—नम् कवच। सम०—अंशुः दांतों की चमक —कु० ६।२५, - अङ्कः दांत से काटने का चिह्न काटना, —उच्छिष्टः 1 होठ 2 चुम्बन 3 आह,—छदः, —वासस् (नपुं०) 1 होठ 2 चुम्बन,—पदम् कुतरना, दांत का चिह्न दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् —गीत० ८,- बीजः अनार का पेड़।

दशम (वि०) (स्त्री०मी) [दशन्+डट् मट्] दसवाँ।

दशमिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दशमी+इनि] बहुत पुराना।

दशमी (स्त्री०) 1 चान्द्र मास के पक्ष का दसवाँ दिन 2. मानव जीवन की दसवीं दशाब्दी 3 शताब्दी के अन्तिम दस वर्ष। सम०—स्थ, (दशमीं गतः) (वि०) ९० वर्ष से अधिक आयु।

दष्ट (वि०) [दंश्+क्त] काटा गया, डंक मारा गया आदि।

दशा [दंश्+अङ् नि० टाप्] वस्त्र के छोर पर रहने वाले धागे, कपड़े पर लगी झालर, मगजी,—रक्तांशुकं पवनलोलदशं वहन्ती मृच्छ० १।२०, छिन्ना इवाम्बरपटस्य दशा: पतन्ति ५।४ 2. दीवे की बत्ती —मर्तृ० ३।१२९. कु० ४।३० 3 आयु, या जीवन की अवस्था—दे० गी० 'दशान्त' 4 जीवन की एक अवस्था या काल—जैसा कि बाल्य, यौवन आदि—रघु० ५।४० 5. काल 6 स्थिति, अवस्था, परिस्थिति—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, विषमां हि दशां प्राप्य दैवं गर्हयते नरः—हि० ४।३ 7. मन की स्थिति या अवस्था 8. कर्मों का फल —भाग्य 9. ग्रहों की स्थिति (जन्म के समय) 10 मन समझ। सम०—अन्त. 1. बत्ती का छोर 2. जीवन का अन्त—निर्दिष्टविषयस्नेहः स दशान्तमुपेयिवान् -रघु० १२।१ (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है), —कर्षः: लैंप, दीपक,—कर्षः 1. वस्त्र का किनारा 2 लैंप, दीपक,—पाकः —विपाकः 1 भाग्य की परिपक्वावस्था भाग्य के अनुसार फल प्राप्ति 2 जीवन की परिवर्तित दशा।

दशार्णा (ब० व०) [दश० ऋणानि दुर्गभूमयो वा यत्र ब० स०] 1. एक देश का नाम सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः —मेघ० २३ 2 इस देश के निवासी।

दशिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [दशन्+इनि] दस रखने वाला (पुं०) दस ग्रामों का अधीक्षक।

दशेर (वि०) [दंश्+एरक्] काटनेवाला, उपद्रवी, अनिष्टकर, पीड़ाकर- रः हानिकारी या विषैला जन्तु।

दशेरकः [दशेर+कन्] ऊँट का बच्चा।

दस्यु [दस्+युच्] 1 दुष्कर्मियों या राक्षसों का समूह जो कि देवताओं के विद्रोही तथा मानव जाति के शत्रु थे और इन्द्र के द्वारा मारे गये (इस अर्थ में प्रायः वैदिक) 2 जातिबहिष्कृत, अपने कर्तव्यकर्मों से च्युत हो जाने के कारण जाति से बहिष्कृत तु० मनु० ५।१३१ १०।४५ 3 चोर लुटेरा, स्वत्वकारी दस्युर्निवासि येन श० ५।२०, रघु० ९।५३, मनु० ७।१४३ 4 दुष्ट, उत्पातशील मा० ५।२८ 5 आततायी, उद्धत, अत्याचारी।

दस्र (वि०) [दस्यति पांसून् दस् + रक्] बर्बर, भीषण, विनाशकारी —स्रौ (पुं० द्वि० व०) दोनों अश्विनीकुमार, देवों के वैद्य, —स्रः 1 गधा 2 अश्विनी नक्षत्र। सम० —सू (स्त्री०) सूर्य की पत्नी और अश्विनीकुमारों की माता संज्ञा।

दह् (म्वा० पर० दहति, दग्ध - इच्छा० दिधक्षति) जलाना, झुलसाना (आलं० में भी) -दग्धं विश्वं दहनकिरणैर्नोदिता द्वादशार्का वेणी० ३।६, ५।२०, मनसिजदनातनो दहति मम मानसं देहि मुखकमलमधुपानम् गीत० १०, श० ३।१७ 2 उड़ा देना, पूर्ण रूप से नष्ट कर देना 3 पीड़ा देना, सताना, कष्ट देना, दुःखी करना इदमसमञ्जसमप्रतिहतं चापल्यं दहति श० ५, तलमिवविषमिव शल्यं दहति माम् ६।८, एतत् मां दहति यद्गृहमस्मदीयं क्षीणार्थमित्यतिथयः परिवर्जयन्ति —मृच्छ० १।१२, रघु० ८।८६ 4 (आयु० में) गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना, निस्,—1. जलाना, जलाकर समाप्त कर देना 2. सताना, दुःखी देना, पीड़ित करना, परि —,जलाना, झुलसाना - विधिं विधिज्ञ परिगृह्य भूमयः पावकेन—भट्टि० १।२४ मनु० ११।१०, प्र 1 जलाना 2 पूरी तरह से जला देना 3. पीड़ा देना, सताना 4. कष्ट देना, चिढ़ाना, सम्—,जलाना —अभिजनः सन्दहता बह्निना - भट्टि० ७।३९।

दहन (वि०) (स्त्री०—नी) [दह्+ल्युट्] 1 जलाना,

आग में जलाकर समाप्त कर देना भर्तृ० १।७१ 2. विनाशकारी, क्षतिकर, न. 1 आग 2. कबूतर 3. 'तीन' की संख्या 4. बुरा आदमी 5 'भल्लातक' का पौधा, दम् 1. जलाना, आग में जलाकर समाप्त कर देना (आल० से भी)—रघु० ८।२० 2 गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना। सम० - अराति पानी,—उपल. सूर्यकांतमणि,—उल्का, जलती हुई लकड़ी, —केतन धूआँ, प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा - सारथि. हवा।

दहर (वि०) [दह् + अर] 1 स्वल्प, सूक्ष्म, बारीक लघु 2 छोटा, र. 1 बच्चा, शिशु 2 जानवर का बच्चा 3 छोटा भाई 4 हृदयरन्ध्र हृदय 5 चूहा मूसा।

दहू [दह् + रक्] 1 ... 2 दावाग्नि, जंगल की आग।

दा I (भ्वा० पर० - यच्छति, दत्त) देना, स्वीकार करना प्रति - विनिमय करना—तिलेभ्यः प्रतियच्छन्ति माषान् —सिद्धा० II (अदा० पर० दाति) काटना—ददाति ... इति दातिरूपाभ्यसिनाम् कवि० III (जुहो० उभ० ददाति, दत्ते दत्त—परन्तु आ पूर्व होने पर 'आत्त', उप पूर्व होने पर उपात्त नि पूर्व होने पर निदत्त या नीत्त तथा प्र पूर्व होने पर प्रदत्त या प्रत्त) 1 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना, सौंपना, समर्पित करना, भेंट देना (प्राय. कर्म० के साथ वस्तु के पक्ष में, व्यक्ति के पक्ष में सम्प्र०, कभी सं० अथवा अधि० भी) ... ... —रघु० ४।५८, ... —श० १, मनु० ३।३१, ९।७१, ... हि० 2 (ऋण, जुर्माना आदि) देना 3 सौंपना, दे देना 4 लौटाना, वापिस करना 5 छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना, प्राणान् दा प्राण दे देना, इसी प्रकार आत्मानं दा जान दे देना 6. रखना, रख देना, लगाना, जमाना—... आदि 7 विवाह में देना ... ... —मनु० ५।१५१, याज्ञ० १।६५ ३।२४ 8 अनुमति देना, अनुज्ञा देना (प्राय तुमुन्नन्त के साथ)—... ... ... (इस धातु के अर्थ उस संज्ञा के अनुसार जिसके साथ जाय नाना प्रकार से अदल-बदल किये जा सकते हैं या फैलाये जा सकते हैं, उदा०, अग्निं (पावकं) दा आग लगाना, अर्गलं दा कुंडी लगाना, चटखनी लगाना, अवकाशं दा स्थान देना, जगह देना दे० 'अवकाश', आज्ञां (निदेशं) दा आज्ञा देना, आदेश देना, आतपे दा धूप में रहना, आत्मानं खेदाय दा, अपने आपको कष्ट में फंसाना, आशिषं दा आशीर्वाद देना, कर्णं दा कान देना, ध्यान से सुनना, चक्षुः (दृष्टिं) दा नजर डालना, देखना, तालं दा तालियाँ बजाना, दर्शनं दा अपने आपको दिखलाना, दूसरों की बात सुनना, निगडं दा हथकड़ी डालना, शृंखला में बांधना, प्रतिवचः (वचनं) दा प्रत्युत्तरं दा उत्तर देना, मनो दा किसी बात में मन लगाना, मार्गं दा रास्ता देना, जाने की अनुमति देना, रास्ते से अलग हो जाना, वरं दा वर देना वाचं दा भाषण देना, वृत्तिं दा घेरना, बाड़ लगाना, शब्दं दा शोर मचाना, शापं दा शाप देना, शोकं दा रंज पैदा करना, श्राद्धं दा श्राद्ध का अनुष्ठान करना, संकेतं दा निर्धारित करना, संग्रामं दा लड़ना, आदि)। प्रेर० - दापयति - दिलवाना, स्वीकार करवाना आदि - इच्छा० दित्सति - ते, देने की इच्छा करना आ - (आ०) लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, सहारा लेना ... ... —रघु० ८।१८, १०।४० ... ... —३।६१, ९।४५ 2 अपहरण करना कि० १।३, शि० २।१३ 3 पकड़ना थामना—कु० ७।२४ 4 उगाहना वसूल करना (कर आदि)—अगृध्नुराददे सोऽर्थान् —रघु० १।२१ मनु० ८।३४१ 5 ले जाना, लेना वहन करना —... ... मेघ० २०, ६१, कुशानादाय ... श० ३ 6. प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, समझना ... ... आदि—महा० ... बन्दी बनाना, कैद करना—उपा (आ) 1 ग्रहण करना, स्वीकार करना 2 अवाप्त करना, प्राप्त करना—... ... —रघु० ५।१. ... —याज्ञ० ३।१२१ 3. लेना, धारण करना 4 अनुभव करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 5 पकड़ना, आक्रमण करना, परि— सौंपना समर्पण करना, दे देना ... ... उत्तर० १।४५, मनु० ५।१५० प्र—स्वीकार करना, देना, प्रदान करना ... ... नामगोत्र ... नाम ... ... नै० ५।१४, मनु० ३।९९, १०८, २५३, याज्ञ० ... 2 शिक्षा देना, सिखाना, मनु० २।१२५ प्रति अदलाबदली करना विनिमय करना 2 लौटाना वापिस देना—चौर० ५३ 3. बदला देना, क्षतिपूर्ति करना, व्या—(पर० आ०) खोलना, तोड़ कर खोलना ... ... कि० ... १६, नदी कूलं ... ... व्याददते पिपीलिका ... ... —महा०, सम्— 1 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना,—... संप्रदास्यामि 2 परम्परा से प्राप्त होना—दे० सम्प्रदाय 3 दानपत्र लिखना, उत्तराधिकार में सौंपना।

दाक्षायणी [दक्ष + फिञ् + ङीप्] 1 २७ नक्षत्रों में (जो

कि पुराणानुसार दक्ष की पुत्रियाँ मानी जाती हैं) के जोड़े का एक नक्षत्र 2 दिति, कश्यप की पत्नी, देवताओं की माता 3 पार्वती 4. रेवती नक्षत्र 5 कद्रू, या विनता 6 बल्ली का पौधा। सम०—पति 1 शिव का एक विशेषण 2 चन्द्रमा,—सुत देवता।

दाक्षाय्य [दक्ष्+आय+अण्] गिद्ध।

दाक्षिण (वि०) (स्त्री०—णी) [दक्षिणा+अण्] 1 यज्ञीय दक्षिणा से सम्बद्ध अथवा उपहार से सम्बद्ध 2 दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखने वाला,—णम् यज्ञीय दक्षिणाओं का समूह या सञ्चय।

दाक्षिणात्य (वि०) [दक्षिणा+त्यक्] दक्षिण से सम्बन्ध रखने वाला या दक्षिण में रहने वाला, दक्षिणी—अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम्—पंच० १,—त्य: 1 दक्षिण देश का निवासी—भारवभयूरा बहु दाक्षिणात्या: 2 नारियल।

दाक्षिणिक (वि०) (स्त्री०—की) [दक्षि+ठक्] यज्ञीय दक्षिणा सम्बन्धी।

दाक्षिण्यम् [दक्षिण+ष्यञ्] 1 (क) नम्रता, शिष्टता, सुजनता—तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा—रघु० १।३१ (ख) कृपालुता—विक्रम० १।२, भर्तृ० २।२१, मा० १।८ 2 किसी प्रेमी का (अपनी प्रेमिका के प्रति) बनावटी तथा अतिकालीन शिष्टाचार, श० ६।५ 3 दक्षिण से आने की या सम्बन्ध रखने की स्थिति—स्नेहदाक्षिण्ययोर्योगात् कामीव प्रतिभाति मे—विक्रम० २।४, (यहाँ इस शब्द के दोनों ही अर्थ हैं—प्रथम तथा द्वितीय) 4 तालमेल, सामञ्जस्य, मध्यमति 5 नैपुण्य, चतुराई।

दाक्षी [दक्ष+इञ्+ङीष्] 1 दक्ष की पुत्री 2 पाणिनि की माता। सम०—पुत्र: पाणिनि।

दाक्षेय [दाक्षी+ढक्] पाणिनि का मातृपक्षीय नाम।

दाक्ष्यम् [दक्ष+ष्यञ्] 1 चतुराई, कुशलता, उपयुक्तता, दक्षता, योग्यता—भग० १८।४३ 2 सचाई, अखण्डता, ईमानदारी।

दाघ: [दह्+घञ्, कुत्वम्] जलाना, ताप।

दाडक [दल्+णिच्+ण्वुल्, लस्य ड:] दाँत, हाथी का दाँत।

दाडि (डि) **म:**,—**मा** [दल्+घञ्+इमच्, डलयोरभेद:] अनार का पेड़—पाकारुणस्फुटदाडिमकान्ति वक्त्रम्—मा० ९।३१, अमरु १३ 2 छोटी इलायची,—मम् अनार का फल। सम०—प्रिय:,—भक्षण: तोता।

दाडिम्ब [दा+डिम्ब बा०] अनार का पेड़।

दाढा [दा+क्विप्=दा+ढौक्+ड+टाप्] 1 बड़ा दाँत, दाढ़ 2 समुच्चय 3 कामना, इच्छा।

दाढिका [दाढ+कन्+टाप्, ह्रस्व:] दाढ़ी,—मनु० ८।२८३, (कुल्लू० समझ)।

दाण्डाजिनिक (वि०) (स्त्री०—की) [दण्डाजिन+ठञ्] (धर्म भक्ति के बाह्य चिह्न) डण्डा और मृगछाला लिए हुए, कपटी, पाखण्डी, धूर्त।

दाण्डिक [दण्ड+ठञ्] ताड़ना देने वाला, दण्ड देने वाला।

दात (वि०) [दा+क्त] 1 बाँटा हुआ, काटा हुआ 2 धोया हुआ, पवित्रीकृत 3 काटी हुई (फसल)।

दाति (स्त्री०) [दा+क्तिन्] 1 देना 2 काटना, नष्ट करना 3 वितरण।

दातृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [दा+तृच्] 1 देने वाला, स्वीकार करने वाला 2 उदार (पुं०—ता) 1 दाता कु० ६।१ 2 दानी—भामि० १।६६ 3 महाजन, उधार देने वाला 4 अध्यापक।

दात्यूह [दाति+ऊह+अण्] जलकुक्कुट—दात्यूहैरिव निशस्य कोटरवति स्कन्धे निलीय स्थितम्—मा० ९।७ 2 चातक पक्षी 3 बादल 4 जलकौवा (दात्यौह भी लिखा जाता है)।

दात्रम् [दा+ष्ट्रन्] काटने का एक उपकरण, एक प्रकार की दराँती या चाकू।

दाद [दद्+घञ्] उपहार, दान। सम०—द दानी।

दान् (भ्वा० उभ०—दीदांसति—ते), काटना, बाँटना, इच्छा० दीदांसति—ते सीधा करना (यहाँ सन्नन्त केवल रूप की दृष्टि से है अर्थ की दृष्टि से नहीं)।

दानम् [दा+ल्युट्] 1 देना, स्वीकार करना, अध्यापन 2 सौंपना, समर्पण करना 3 उपहार, दान, पुरस्कार—मनु० २।१५८, भग० १७।२०, याज्ञ० ३।०३४ 4 उदारता, धर्मार्थ, धर्मार्थ पुरस्कार, दानशीलता रघु० १।६९, भर्तृ० २।४३ 5 मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस, मद—सवानतोयेन विषाणि नाग—शि० ५।६३ कि० ५।९ विक्रम० ४।२५ पंच० २।७५ (यहाँ शब्द का पूर्व अर्थ भी घटता है) रघु० २।७, ४।४५, ५।४३ 6 रिश्वत, घूस, अपने शत्रु के ऊपर विजय प्राप्त करने के चार उपायों में से एक, दे० उपाय 7 काटना, बाँटना 8 पवित्रीकरण, स्वच्छ करना 9 रक्षा 10 आमन्द, अनुरक्ति। सम०—कुल्या हाथी की पुटपुटी से बहने वाले मद जल का प्रवाह,—धर्म: दान देने का धर्म, दानरूपी धर्म,—पति: 1 अत्यन्त उदार पुरुष 2 अक्रूर, कृष्ण का एक मित्र,—पत्रम् दान-लेख,—पात्रम् दान लेने के योग्य व्यक्ति, ब्राह्मण,—प्रातिभाव्यम् ऋण परिशोध करने की जमानत,—भिन्न (वि०) रिश्वत देकर फोड़ा हुआ,—वीर: 1 बहुत दानी व्यक्ति 2 दान शीलता के फलस्वरूप वीररस, वीरतापूर्ण दान शीलता का रस, उदा० परशुराम जिसने सात द्वीपों वाली इस पृथ्वी को दान कर दिया—मु० रस० में दी गई ('दानवीर' के अन्तर्गत) उक्ति—त्रिभुवनविजयप्रियेऽपि द्विजातीयवितीर्णकृत्स्न-

रमणीयं कुण्डलं धारयामि, अकरुणमवकृत्य द्रावकृपाणेन निर्वद् बहुलरुधिरधारं मौलिमावेदयामि, —शील, —सार, —शौण्ड (वि०) अत्यन्त उदार या दानशील।

दानकम् [दान + कन्] तुच्छ दान।

दानवः [दनोः अपत्यम् — दनु + अण्] राक्षस, पिशाच —त्रिदिवमुद्धतदानवकण्टकम् —श० ७।३। सम० —अरिः 1 देवता 2. विष्णु का विशेषण, —गुरुः शुक्र का विशेषण।

दानवेयः [दनु + ढक् + ढक्] = दानव।

दान्त (भू० क० कृ०) [दम् + क्त] 1 पालतू, वश में किया हुआ, दमन किया हुआ, नियन्त्रित, लगाम द्वारा रोका हुआ, दे० दम् 2 पालतू, मृदु 3 [illegible] 4 उदार, —न्तः 1 [illegible] 3 दमन का वृक्ष।

दान्तिः (स्त्री०) [दम् + क्तिन्] आत्म संयम, वश में करना, आत्मनियन्त्रण।

दान्तिक (वि०) [दन्त + ठञ्] हाथी दांत का बना हुआ।

दापित (वि०) [दा + णिच् + क्त] 1. दिलाया गया 2 जो दिये जाने के लिए बाध्य किया गया हो, जिस पर अर्थ दण्ड लगाया गया हो 3 जिसका निर्णय किया गया हो 4 अभिग्रस्त प्रश्न।

दामन् (नपुं०) [दो + मनिन्] 1 डोरी, माला, फीता, रस्सी, 2 फूलों का गजरा, हार —अंसे बद्धा [illegible] जिसमें दो निगलता दाम [illegible] —मेघ० ९९ भ्रान्तकभ्रान्तदामगौरी —गीत० १ [illegible] 2 कौंध धारी (जैसे बिजली की) विद्युद्दाम्ना हेमराजीव विन्ध्यम् —मालवि० ३।२० मेघ० ३७ 4 बड़ी पट्टी। सम० —अञ्चलम्, —अञ्चनम् घोड़े की पिछाड़ी बांधने की रस्सी —शि० ५।६१, —उदरः कृष्ण का विशेषण।

दामनी [दामन् + अण् + ङीप्] वह रस्सी जिसके सहारे पशुओं के पैर बांध दिए जाते हैं।

दामिनी [दामन् + इनि + ङीप्] बिजली।

दाम्पत्यम् [दम्पती + यत्] विवाह, स्त्री पुरुष का पति-पत्नी सम्बन्ध।

दाम्भिक (वि०) (स्त्री० —की) [दम्भ + ठक्] 1 धोखेबाज, पाखण्डी 2 घमण्डी, अभिमानी 3 आडम्बर प्रिय, ढोंगी।

दायः [दा + घञ्] 1 उपहार, पुरस्कार, दान —रश्मिरमते प्रीत्या दाय दत्तास्यनुवर्तते—मा० ३।२, प्रीतिदाय मा० ४, मालवि० ८।१९९ 2. वैवाहिक उपहार (जो वर या वधू को दिया जाय 3. भाग, अंश, उत्तराधिकार, पैतृक सम्पत्ति —अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात् —मनु० ९।२१७, ७७, २०३, १६४ 4 भाग, हिस्सा 5. सौंपना, समर्पण करना 6. बांटना, वितरण करना 7. हानि, विनाश 8. वैदग्ध्यपाक 9. स्थान,

जगह। सम० —अपवर्तनम् उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति को जब्त करना —मनु० ९।७९,—अर्ह (वि०) पैतृकसम्पत्ति को पाने का दावेदार —आदः 1 जो पैतृक सम्पत्ति के एक भाग का अधिकारी हो, उत्तराधिकारी —पुमान् दायादोऽदायादा स्त्री—निरु०, याज्ञ० २।११८, मनु० ८।१६० 2 पुत्र 3. बन्धु, बान्धव, निकट या दूर का सम्बन्धी 4 दावेदार या दावेदार होने का बहाना करने वाला —यथा गोत्र या दायादः —सिद्धा०—आदा, —आदी 1 उत्तराधिकारिणी 2. पुत्री, —आद्यम् 1 उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति 2. उत्तराधिकारी बनने की स्थिति —कालः पैतृक सम्पत्ति को बांटने का समय, —बन्धुः 1 पैतृक सम्पत्ति का भागीदार 2 भाई, —भागः उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति की बांट (सम्पत्ति का विभाजन)।

दायक (वि०) (स्त्री० —यिका) [दा + ण्वुल्, युक्] देने वाला, स्वीकार करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्तर [illegible] आदि।

दारः [दॄ + घञ्] 1 दरार, विवर, फटन छिद्र 2 जुता हुआ खेत —राः (ब० व०) पत्नी, —एते वयममी दाराः कन्येयं कुलजीवितम् —कु० ६।६३ दारान्दारार्थीविद्ध्याय [illegible] प्राप्त —उत्तर० ४ पञ्च० १।१००, मनु० १।११२, २।२१७, श० ५।२६ ५।२९। सम० —अधीन (वि०) भार्या पर आश्रित, —उपसंग्रहः, —ग्रहः, —परिग्रहः, —ग्रहणम् विवाह,—नवे दारपरिग्रहे —उत्तर० १।१९, —कर्मन् (नपुं०) —क्रिया विवाह —मनु० ५।१६८।

दारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [दॄ + णिच् + ण्वुल्] तोड़ने वाला फाड़ने वाला टुकड़े २ करने वाला —दारिका हृदयदारिका पितुः, —कः 1 लड़का पुत्र 2. बच्चा, शिशु 3 जानवर का बच्चा 4 गांव।

दारणम् [दॄ — णिच् + ल्युट्] टुकड़े २ करना, फाड़ना, चीरना, खोलना, दो कर देना।

दारदः [दरद् + अण्] 1. पारा 2. समुद्र, —दः, —दम् सिन्दूर।

दारिका [दारक + टाप्, इत्वम्] 1 पुत्री 2. वेश्या।

दारित (वि०) [दॄ + णिच् + क्त] फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, खण्ड २ किया हुआ, चीरा हुआ।

दारिद्र्यम् [दरिद्र + ष्यञ्] गरीबी, निर्धनता —दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी —सुभा०।

दारी [दॄ + णिच् + इन् + ङीष्] 1 दरार 2. एक प्रकार का रोग।

दारु (वि०) [दीर्यते दॄ + उण्] फाड़ने वाला, चीरने वाला, : 1. उदार या दानशील व्यक्ति 2. कलाकार,—रु (नपुं०) (पुं० भी) 1. लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, शहतीर 2. गुटका 3. उत्तोलन दण्ड 4. चटखनी

5. देवदारु वृक्ष 6. कच्चा लोहा 7. पीतल। सम० —अण्डः मोर, —आघाटः कठफोड़ा, —गर्भा काठ की पुतली, —जः एक प्रकार का ढोल, —पात्रम् कठरा, काठ का बर्तन, —पुत्रिका, —पुत्री लकड़ी की गुड़िया, —मुख्याह्वया, —मुख्याह्वा छिपकिली, —यन्त्रम् 1 कठपुतली 2 लकड़ी का यन्त्र, —वधूः लकड़ी की गुड़िया, —सारः चन्दन, —हस्तकः लकड़ी का चम्मच।

दारुकः [दारु+कन्] 1. देवदारु का पेड़ 2 कृष्ण के सारथि का नाम —उत्कन्धरं दारुक इत्युवाच—शि० ४।१८, —का 1. कठपुतली 2. लकड़ी की मूर्ति।

दारुण (वि०) [दृ+णिच्+उनन्] 1 कड़ा, सख्त—उत्तर० ३।३४ 2 कठोर, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर, —मय्येव विस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ —श० ५।२३, पशुमारणकर्मदारुण ६।१, मनु० ८।२७० 3 भीषण, भयानक, भयंकर —श० ६।२९ 4 घोर, प्रचण्ड, उग्र, तीव्र, अत्यन्त पीड़ाकर (शोक, पीड़ा आदि), —हृदयकुसुमशोषी दारुणो दीर्घशोकः —उत्तर० ५, 5 बहुत तेज़, कर्कश (शब्द आदि) 6. नृशंस, रोमाञ्चकारी, —णः भयानक रस, —णम् उग्रता, निर्दयता, बीभत्सता आदि।

दार्ढ्यम् [दृढ+ष्यञ्] 1 कड़ापन, सख्ती, दृढ़ता 2. पुष्टि, समर्थन।

दार्दुरः,—रम् [दर्दुर+अण्] 1 दक्षिणावर्ती (दाईं ओर खुलने वाला) शंख 2. जल।

दार्भ (वि०) (स्त्री०—र्भी) [दर्भ+अण्] कुश घास का बना हुआ—दार्भं मुञ्जत्पृष्ठमपटलं वीतनिद्रो मयूरः —श० ४, (अने० पा०)।

दार्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [दारु+अण्] काठ का बना हुआ।

दार्वटम् [पशियन शब्द —दारु+अट्+क] मन्त्रणागृह, न्यायालय।

दार्शनिकः [दर्शन+ठञ्] दर्शन शास्त्रों से परिचित।

दार्षद (वि०) (स्त्री०—दी) [दृषद्+अण्] 1 पत्थर का बना हुआ, खनिज 2 सिल पर पिसा हुआ (मसाले आदि)।

दार्ष्टान्त (वि०) (स्त्री०—न्ती) [दृष्टान्त+अण्] दृष्टान्त देकर समझाया गया या व्याख्या किया गया, तथ्य वर्णन का विषय अर्थात् उपमेय— स्वापक्ष दार्ष्टान्तिकत्वेन विवक्षितः —शाकर।

दाल्भिः [दालयति असुरान्—दल्+णिच्+भि] इन्द्र।

दावः [दुनोति दु+ण]=दव। सम० —अग्निः, —अनलः, —दहनः, जङ्गल की आग, दावाग्नि —आनन्दयन्दावाग्निः शीलशाखिमदद्विपः, ज्ञानदीपमहावायुरयं खलसमागमः —भामि० १।९०, ३४।

दाशः [दशति हिनस्ति मत्स्यान्—दंश्+ट, नस्य लोपश्च] मछुवा, मनु० ८।४०८, ४०९, १०।३४। सम०—ग्रामः मछुवों का गाँव, —नन्दिनी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।

दाशरथः,—दाशरथिः [दशरथ+अण्, इञ् वा]—दशरथ का पुत्र, —रघु० १०।४४ 2. राम और उसके तीनों भाई, विशेषकर राम —रघु० १२।४५।

दाशार्हाः (ब० व०) [दशार्ह+अण्] दशार्ह के वंशज, यादव —शि० २।६४।

दाशेरः [दाशी+ढ्रक्] 1. मछुवे का बेटा 2. मछुवा 3 ऊँट।

दाशेरक. [दाशेर+कन्] मालव देश, —काः (ब० व०) मालव देश के निवासी या शासक, दे० 'दासेर' भी।

दासः [दास्+अच्] 1. गुलाम, सेवक —गृहकर्मदासाः —भर्तृ० ३।१, शूद्र, कर्म, आदि 2 मछुवा 3 शूद्र, चौथे वर्ण का पुरुष, दे० 'शूद्र'। सम० —अनुदासः —गुलाम का सेवक (अत्यन्त विनम्र सेवक) (कभी कभी वक्ता के द्वारा यह शब्द 'विनम्रता' का सूचक समझा जाता है), —जनः सेवक या गुलाम —कमपराधलवं मयि पश्यसि त्यजसि मानिनि दासजने यतः —विक्रम० ४।२९, (नौकर या सामान्य जनसमूह के लिए 'दासकुलम्' समस्त शब्द प्रयुक्त किया जाता है)

दासी [दास+ङीप्] 1 सेविका, नौकरानी 2 मछुवे की पत्नी 3 शूद्र की पत्नी 4 वेश्या। सम० —पुत्रः, —सुतः सेविका या गुलाम स्त्री का पुत्र, —सभम् दासियों का समूह, (जिस समय 'सब०' ए० व० 'दास्या' शब्द समास में प्रयुक्त होता है तो उसका शाब्दिक अर्थ नष्ट हो जाता है, उदा० दास्याः पुत्रः, —सुतः छिनाल का बेटा (हराम का बच्चा —एक प्रकार का अपशब्द) दास्याः पुत्रैः शकुनिलुब्धकैः —श० २, परन्तु 'दास्याः सदृश' सेविका के समान।

दासेरः,—रकः [दासी+ढ्रक्, दासेर+कन्] 1 दासी या सेविका का पुत्र 2 शूद्र 3 मछुवा 4 ऊँट —शि० १२।३८ ५।६६, (इस अर्थ में 'दासेय' शब्द भी है)।

दास्यम् [दास+ष्यञ्] दासता, गुलामी, सेवा, अधीनता —परिकुपिते तव दासमपि क्षमः —श० ५।२७, मनु० ८।४१०।

दाहः [दह्+घञ्] 1 जलन, दावाग्नि, —दाहमन्तरमिव कुलगतो मूर्च्छितं —रघु० ११।८२, छेदो दंशस्य दाहो वा —मालवि० ४।४, कि० ५।१२ 2. (आकाश की भांति) दहकती हुई लाली 3 जलन की उत्तेजना 4 ताप, संताप। सम० —अगुरु (नपुं०) —काष्ठम् एक प्रकार का सुगन्ध, अगर, —आत्मक (वि०) जल उठने वाला, —ज्वरः जलन वाला बुखार, —सरः, —सरस् (नपुं०), —स्थलम् मुर्दों के जलाने का स्थान, श्मशानभूमि, —हर (वि०) गर्मी को दूर हटाने वाला (—रम्) उशीर पौधा, खस।

दाहक (वि०) (स्त्री० -हिका) [दह्+ण्वुल्] 1 जलाने वाला, सुलगाने वाला 2 आग लगाने वाला, दहनशील 3 दागने वाला, -कः आग।

दाहनम् [दह्+ल्युट्] 1 जलाना, भस्म करना 2 दागना।

दाह्यम् [दह्+ण्यत्] 1 जलाने के योग्य 2 जल उठने के योग्य।

दिक्कः [दिक्+कै+क] बीस वर्ष का जवान हाथी, करभ।

दिग्ध (वि०) [दिह्+क्त] 1 सना हुआ, लिपा हुआ, पोता हुआ—रक्तावसिक्तदिग्धाङ्गी —कु० ७।३२, रघु० १६।१५, निशातघनतेन च विषेण च दिग्धशायका गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्षः—मा० १।२९, 2 मिट्टी से सना हुआ, कलंकित 3 विषाक्त—कु० ४।४० —ग्धः 1 तेल, चर्बी 2 चिकना पदार्थ, उबटन आदि 3 आग 4 विष में बुझा तीर 5 कहानी (वास्तविक हो या काल्पनिक)।

दिण्डिर, दिण्डिरः [दिण्डि+र, हिंडीर पृषो० साधुः] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

दित (वि०) [दो+क्त, इत्वम्] कटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, विभक्त।

दितिः (स्त्री०) [दो+क्तिन्] 1 काटना, टुकड़े २ करना, विभक्त करना 2 उदारता 3 दक्ष की एक कन्या कश्यप की पत्नी, राक्षसों और दैत्यों की माता। सम० -जः, -तनयः पिशाच, राक्षस।

दितिज [दिति+जन्+ड] राक्षस।

दित्सा [दातुमिच्छा—दा+सन्+अ+टाप्] देने की इच्छा —भामि० १।१२५।

दिदृक्षा [द्रष्टुमिच्छा—दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा—एकत्रसौन्दर्यदिदृक्षयेव—कु० १।४९।

दिधिषुः [दिधं धैर्यं स्यति—सो+कु, दिधिषुमात्मन इच्छति—दिधिषू+क्यच्+क्विप्] पुनर्विवाहित स्त्री का दूसरा पति (स्त्री०), अक्षतयोनि विधवा जिसका दूसरा विवाह हुआ हो।

दिधिषू (षी) पु० (स्त्री०), [दिधिषु+ऊ, पृषो० साधुः] 1 दूसरी बार ब्याही हुई स्त्री 2 अविवाहित बड़ी बहन जिसकी छोटी बहन का विवाह हो गया हो —ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा, सा चाग्रे दिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा च दिधिषूः स्मृता। सम० -पतिः वह पुरुष जिसने अपने भाई की विधवा से मैथुन किया हो (केवल वासना की तृप्ति के लिए न कि पवित्र कर्तव्य की दृष्टि से)—भ्रातुर्मृतस्य भार्यायां योऽनुरज्येत कामतः, धर्मेणापि नियुक्तायां स ज्ञेयो दिधिषूपतिः—मनु० ३।१७३।

दिधीर्षा [धृ+सन्+अ+टाप्] जीवित रखने की इच्छा सहारा देने की इच्छा—दिवकुञ्जरा कुरुत तत् त्रितय दिधीर्षा—बालरा० १।४८।

दिनम् [द्युति तमः, दो (दी)+नक्, ह्रस्व] 1 दिन (विप० रात्रि) दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव हुताशनः—रघु० ४।१, यामिनयन्ति दिनानि च सुखदुःखवशीकृते मनसि—काव्य० १० दिनान्ते निलयाय गन्तुम्—२।१५ 2 दिन (रात्रि समेत, २४ घण्टे का समय)—दिने दिने सा परिवर्धमाना—कु० १।२५, मान्ति कतीनि दिनानि—रघु० ३।२७। सम० -अण्डम्—अन्धकार -अत्यय -अन्त,—अवसानम् सायंकाल सूर्यास्त का समय —रघु० २।१५, ४५ —अधीशः—सूर्य —अर्धं मध्याह्न दोपहर —आगमः,—आदिः,—आरम्भः, प्रभात, प्रातःकाल —ईशः, —ईश्वरः—सूर्य —आत्मजः 1 शनि का विशेषण 2 कर्ण का विशेषण 3 सुग्रीव का विशेषण —करः —कर्तृ,—कृत (पुं०) सूरज—तुल्यो दिनकरवंशोद्भवो न—विक्रम० ३।१, दिनकरकुलचन्द्र चन्द्रकेतो—उत्तर० ६, रघु० ९।२३, —केशरः,—केसरः अंधकार —क्षयः सायंकाल —चर्या दैनिक आचरण, प्रतिदिन का कार्यक्रम —ज्योतिस् (नपुं०) धूप,—दुःखितः चकवाक पक्षी —पः,—पतिः सूर्य, —मणिः,—मयूखः,—रत्नम् सूर्य —मुखम् प्रातःकाल—रघु० ५।२७, —मूर्धन् (पुं०) प्राची दिशा का पर्वत (उदयाचल), जिसके पीछे से सूर्य उदय होता हुआ माना जाता है —यौवनम् मध्याह्न, दोपहर (दिन की जवानी)।

दिनिका [दिन+ठन्+टाप्] दिन की मजदूरी।

दिन्दिक (पुं०) खेलने की गेंद।

दिलीपः (पुं०) एक सूर्यवंशी राजा, अंशुमान् का पुत्र भगीरथ का पिता (परन्तु कालिदास के अनुसार रघु का पिता), [कालिदास ने दिलीप को एक आदर्श राजा बताया है, उसकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा था जो सब प्रकार से अपने पति के अनुरूप थी। उसके कोई सन्तान न थी। फलतः वे अपने कुलगुरु वसिष्ठ के पास गये, गुरु ने उनको नन्दिनी नाम की कामधेनु की सेवा करने के लिए कहा। उन्होंने २१ दिन तक गाय की सेवा की और २२वें दिन गौ ने उनपर कृपा की। फलतः उनके यहाँ एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ जिसने बड़े होकर समस्त विश्व पर विजय प्राप्त की और फिर वही रघुवंश का प्रवर्तक बना]।

दिव् I (दिवा० पर०— दीव्यति, द्यून या द्यूत- इच्छा० दुद्यूषति, दिदेविषति) 1 चमकना, उज्ज्वल होना 2 फेंकना (अस्त्र की भाँति), क्षेपण करना—भट्टि० १७।८७, ५।८१ 3 जुआ खेलना, पासे से खेलना ('पासे' से कर्म० या करण०)—अक्षैरक्षान्वा दीव्यति सिद्धा० वेणी० १।१३ 4 खेलना, क्रीडा करना 5 हँसी दिल्लगी करना, चुटकियों में उड़ा देना, खेल करना, मजाक करना (कर्म० के साथ) 6. दाँव पर

रखना, शर्त लगाना 7 बेचना, व्यापार करना (सम्बन्ध० के साथ)—अदेवीद्बन्धुभोगानाम् – भट्टि० ८।१२२, (उपसर्ग पूर्व होने पर कर्म० या सम्बन्ध० के साथ,—शत शतस्य वा परिदीव्यति सिद्धा०) 8 उड़ाना, अपव्यय करना 9 प्रशंसा करना 10 प्रसन्न होना, हर्ष मनाना 11 पागल होना पीकर मस्त होना 12 नींद आना 13 कामना करना, ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० देवति देवयति-ते) विलाप कराना पीड़ा दिलाना प्रकुपित कराना, सताना, iii (चुरा० आ० – देवयते) पीड़ा सहन करना विलाप करना आर्तनाद करना परि,—विलाप करना क्रन्दन करना पीड़ा सहन करना। भट्टि० ४।३४।

दिव् (स्त्री०) [दीव्यन्त्यत्र दिव्+बा आधारे डिवि—तारा०] (कर्तृ० ए० व० द्यौ) 1 स्वर्ग, रघु० ३।४, १२ मेघ० ३० 2 आकाश 3 दिन 4 प्रकाश उजाला। विशे० वह समस्त शब्द जिनका पूर्वपद दिव है, अधिकांश अनियमित हैं उदा० **दिवस्पति** इन्द्र का विशेषण—अनतिक्रमणीया दिवस्पतेराज्ञा श० ६ —**दिवस्पृथिव्यौ** स्वर्ग और पृथिवी,—**दिविज**,—**दिविषद्** – **दिविस्थ**, **दिविस(ष)द्** (पुं०) **दिवोकस्** (पुं०) **दिवौकस्**,—स: स्वर्ग का रहने वाला देवता श० ७ रघु० ३।१९ ४७ दिविषदुद्वन्द्वे गीत० ७।

दिवम् (नपुं०) [दिव्+क] 1 स्वर्ग 2 आकाश 3 दिन 4 वन जङ्गल अरण्य।

दिवसः,—**सम्** [दीव्यतेऽत्र दिव्+असच् किच्च] दिन—दिवस इवाभ्यामलग्नयं जीवलोकस्य-श० ३।१७। सम० —**ईश्वरः**, —**करः** सूर्य, ऋतु० ३।२२ —**मुखम्** प्रातःकाल, प्रभात —**विगमः** सायंकाल सूर्यास्त—मेघ० ९९।

दिवा (अव्य०) [दिव्+का] दिन में दिन के समय दिवाभूत्—दिन निकलना। सम०—**अटनः** कौवा —**अन्धः** उल्लू, —**अन्धकी**,—**अन्धिका** छछून्दर, —**करः** 1 सूर्य कु० १।१२, ४।४८ 2 कौवा 3 सूरजमुखी फूल, —**कीर्तिः** 1 चाण्डाल, नीच जाति का पुरुष 2 नाई 3 उल्लू, **दिवसम्** (अव्य०) दिन रात, —**प्रदीपः** दिन का दीपक या लैम्प, अप्रसिद्ध पुरुष,—**भीतः**, —**भीतिः** 1 उल्लू – दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्—कु० १।१२ 2 चोर सेंध लगानेवाला —**मध्यम्** मध्याह्न,—**रात्रम्** (क्रि० वि०) दिनरात,—**वसुः** सूर्य,—**शय** (वि०) दिन में सोने वाला—रघु० १९।३४, —**स्वप्नः**,—**स्वापः** दिन के समय सोना।

दिवातन (वि०) (स्त्री०—नी) [दिवाभव —ट्यु, तुट् च] दिन का या दिन से सम्बन्ध रखने वाला—कु० ६।४९, भट्टि० ५।६५।

दिविः [दिव्+इन्] चाष पक्षी, नीलकण्ठ ('किविः' भी)।

दिव्य (वि०) [दिव्+यत्] 1 दैवी, स्वर्गीय, आकाशीय 2 अतिप्राकृतिक, अलौकिक —ददामि ते दिव्यं चक्षुः —गी० ११।८, भग० ११।८ 3 उज्ज्वल, चमकदार 4 मनोहर, सुन्दर, —व्यः 1 अलौकिक या स्वर्गीय प्राणी – दिव्यानामपि कृतविस्मयां पुरस्तात्—कि० ८।६४ 2 जौ 3 यम का विशेषण 4 दार्शनिक,—व्यम् 1 दैवी प्रकृति दिव्यता 2 आकाश 3 दैवी परीक्षा (यह दस प्रकार की गिनाई गई है), तु० याज्ञ० २।२२ ९५ 4 शपथ सत्योक्ति 5 लौंग 6 एक प्रकार का चन्दन। सम० —**अंशुः** सूर्य,—**अङ्गना**—**नारी**, स्त्री स्वर्गीय अप्सरा दिव्य कन्या, अप्सरा —**अदिव्य** (वि०) कुछ लौकिक तथा कुछ अलौकिक (जैसा कि अर्जुन) —**उदकम्** वर्षा का जल —**कारिन्** (वि०) 1 शपथ उठाने वाला 2 अग्नि परीक्षा देने वाला —**गायनः** गन्धर्व —**चक्षुस्** (वि०) 1 अलौकिक दृष्टि रखने वाला दिव्य आँखों से युक्त रघु० ३।४५ 2 अन्धा (पुं०) बन्दर (नपुं०) स्वर्गीय आँख अलौकिक दृष्टि मानव आँखों द्वारा अदृष्ट पदार्थों को देखने की शक्ति —**ज्ञानम्** अलौकिक जानकारी – **दृश्** (पुं०) ज्योतिषी —**प्रश्नः** दिव्यलोकान्तर्गत तत्त्वों की पूछताछ भावी घटना क्रम की पूछ ताछ शकुन विचार —**मानुषः** उपदेवता —**रत्नम्** काल्पनिक रत्न जो स्वामी की सब इच्छाओं को पूरा करने वाला कहा जाता है दार्शनिकों का मणि —तु० चिन्तामणि —**रथः** स्वर्गीय रथ जो आकाश में चलता है —**रसः** पारा, —**वस्त्र** (वि०) दिव्य वस्त्रों को धारण करने वाला (—स्त्रः) 1 धूप 2 सूरजमुखी का फूल —**सरित्** (स्त्री०) आकाशगङ्गा —**सारः** साल का वृक्ष।

दिश् (तुदा० उभ०—दिशति—ते दिष्ट, प्रेर० देशयति—ते इच्छा० दिदिक्षति—ते) 1 संकेत करना, दिखलाना प्रदर्शन करना (साक्षी के रूप में) प्रस्तुत करना —सक्षिणं सन्ति मेत्युक्त्वा दिशो दुक्तो दिशेच्च यः —मनु० ८।५७ ५३ 2 अभिन्यस्त करना, नियत करना —दृष्टां गतिं तस्य पुरा दिशन्ति—महा० 3. देना, स्वीकार करना प्रदान करना, अर्पण करना, सौंपना —वाणमक्ष भवते निजं दिशन्—कि० १३।६८, रघु० ५।३०, ११।२ १६।७२ 4 (वर के रूप में) देना 5 स्वीकृति देना —रघु० ११।४६ 6 निदेश देना, आदेश देना, हुक्म देना 7 अनुज्ञा देना, इजाज़त देना —स्मर्तुं दिशन्ति न दिवः सुरसुन्दरीभ्यः—कि० ५।२८, अति—, 1 अभिन्यस्त करना, सौंपना 2 प्रयोग का विस्तार करना, सादृश्य के आधार पर बढ़ाना— इति वे प्रत्यया उक्तास्तेऽत्रातिदिश्यन्ते—सिद्धा०, या प्रदानवत्कर्मिर्बहूनम्यावेनातिदिशति—शारी०, अप—, 1 संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना 2. बहाना करना,

प्रस्तुत करना, कहना, घोषणा करना, बतलाना, चेतावनी देना —मनु० ८।५४ 3 ढोंग रचना, बहाना करना—मिषकुरंगमपदिश्य—रघु० ११।३१, १२, ५४, शिर: शूलस्पर्शनमपदिशन्—दश० ५०, सिरदर्द के बहाने की युक्ति देते हुए 4. उल्लेख करना, निर्देश करना—रघूणि भर्त्रा प्रयुगोपापदिष्टा—दश० १०२, आ—, 1 करना, दिखलाना 2 आदेश देना, आज्ञा देना, निर्देश देना—पुनरप्यादिश तावदुत्थित —कु० ४।१६, आदिशद्वस्वाभिगम वनाय—भट्टि० ३।१, ७।२८, रघु० १।५४, २।६५, मनु० ११।१९३ 3 उद्दिष्ट करना, अलग करना, अभिन्यस्त करना —भट्टि० ३।३ 4 अध्यापन करना, उपदेश देना, शिक्षा देना, अंकित करना, निश्चित करना रघु० १२।६८ 5 भविष्यवाणी करना 6 आगे होने वाली बात बताना, उद्—, 1 संकेत करना ज्ञापन करना, घोषित करना, उल्लेख करना —प्रयमोद्दिष्टमासनम् —कु० ६।३५ यथोद्दिष्टव्यापारा—श० ३, अनेकमूक उद्दिष्ट —मेघ० 2 उल्लेख करना, निर्देश करना, संकेत करना —स्मरमुद्दिश्य—कु० ४।३८ 3 अभिप्राय रखना उद्देश्य रखना, निर्देश करना, अभिन्यस्त करना, अर्पित करना—फलमुद्दिश्य—भग० १७।२१, उद्दिष्टामुपनिहिता मवन्त्र पूजाम्—मा० ५।२५, सर्वाभिलाषमुद्दिश्य प्रस्थित —पंच० १ 4 सिखाना, उपदेश देना —सता केनापदिष्ट विषमसिधाराव्रतमिदम्—भर्तृ० २।२८, उप—, 1 अध्यापन करना, उपदेश देना, सिखाना —मुखमुपदिश्यते परस्य —का० १५६, मालवि० १।५, रघु० १६।४३, भग० ४।३४ 2. संकेत करना, इशारा करना, उल्लेख करना—मृगवधामुपदिश्य—रघु० ८।७३ 3 कथन करना, बतलाना, घोषणा करना—किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्—मृच्छ० ९।७ 4 निर्दिष्ट करना, अंकित करना, स्वीकृति देना, निश्चित करना—न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद्भर्तोपदिश्यते—मनु० ५।१६२, २।१९० 5 नाम लेना, पुकारना, निस्—, 1 संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना —एकैकं निर्दिशन् —श० ७, अङ्गुल्या निर्दिशति—आदि 2 अभिन्यस्त कर देना, दे देना —निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य —रघु० १।९५ 3 बुलाना, निर्देश करना, संकेत करना 4. भविष्यवाणी करना 5. उपदेश देना 6 बतलाना, समाचार देना, प्र—, 1 संकेत करना, इशारा करना, दिखाना, निर्देश करना —सम्यगधिकारपूर्वी. प्रमते: प्रदिष्टाम् —रघु० ५।६३, २।१९ 2. बतलाना, कथन करना—मनु० ८।२८, भट्टि० ४।५ 3. देना, स्वीकार करना, उपहार देना, प्रदान करना—दिशत्वो: पथि मुनिप्रदिष्टयो:—रघु० ११।१९, ७।१५, नि वत्सोऽपि प्रदिशति वक्त वाचितमवधकेभ्य —मेघ० ११४, मनु० ८।२६५, प्रत्या—, (क) अस्वीकार करना, दूर फेंकना, कतराना—प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधि—श० ६।५, (ख) पीछे धकेलना,—रघु० ६।२५ 2 पछाड़ देना, प्रत्याख्यान करना (व्यक्ति का)—काम प्रत्यादिष्टा स्मरामि न परिग्रह मुनेस्तनयाम् —श० ५।३१ 3 तुच्छ बनाना, निस्तेज करना, परास्त करना, पृष्ठभूमि में फेंक देना रघु० १।६१, १०।६८ 4 विपरीत आज्ञा देना, वापिस बुलाना, व्यप—, 1 नाम लेना, पुकारना,—व्यपदिश्यते जगति विक्रमीत्यत —शि० १५।२८ 2. मिथ्या नाम लेना, मिथ्या पुकारना —किं च मां व्यपदिशस्यपरं च यामि —मृच्छ० ४।९ 3. बोलना, गर्व से कहना—जन्मेन्दोर्विमले कुले व्यपदिशसि—वेणी० ६।७ 4 बहाना करना, ढोंग रचना—महावी० २।११, सम्—, 1 देना, स्वीकृति देना, अभिन्यस्त करना, सौंपना—भट्टि० ६।१४१, याज्ञ० २।२३२ 2 आज्ञा देना निर्देश देना, शिक्षा देना उपदेश देना सन्देश भेजना —किन्नु खलु दुष्यन्तस्य युक्तरूपमस्माभि सन्देष्टव्यम्—श० ४, शि० ९।५६, ६१ 3 सन्देश के रूप में भेजना, सन्देश सौंपना —अथ विदधात्मने गौरी सन्दिदेश मिथ सखीम्—कु० ६।१।

दिश् (स्त्री०) [दिशन्ति ददात्यवकाशम् दिश्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—दिक्—ग्) 1 दिशा दिग्बिन्दु, चार दिशाएँ, परिधि का बिन्दु आकाश का चौथाई दिश: प्रसेदुर्मरुतो ववु सुखा: —रघु० ३।१४, दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् —गीत० ४ 2 (क) वस्तु का केवल निर्देश, इंगित, (सामान्य रूप रेखा का) संकेत इतिदिक् (भाष्यकारों द्वारा बहुल प्रयोग), (ख) (अत) रीति, रूप, प्रणाली —अनेन पाठोक्तदिशा —मा० द०, दिग्विगन्धुवकृता प्रदर्शिता, दासीसभं नृपसभं रक्ष सभमिमा दिश —अमर० 3 प्रदेश, अन्तराल स्थान 4 विदेश या दूरस्थ प्रदेश 5 दृष्टिकोण, विषय को सोचने की रीति 6 उपदेश आदेश 7 'दस' की संख्या 8 पक्ष दल 9 काटने का चिह्न (विशे० समास में स्वरादि, सघोष तथा ऊष्म व्यञ्जनादि शब्दों से पूर्व 'दिग्' तथा अघोष व्यञ्जनादि शब्दों से पूर्व 'दिक्' हो जाता है उदा० दिगम्बर, दिग्गज दिक्पथ, दिक्करिन् आदि)। सम० —अन्त: दिशाओं का किनारा या क्षितिज दूर का अंतर, दूरस्थ स्थान —भामि० १।२, रघु० ३।४ ,।६७, १६।८७ नानादिगन्तागता राजान आदि, —अन्तरम् 1 दूसरी दिशा 2. मध्यवर्ती स्थान, अन्तरिक्ष, अन्तराल 3. दूरवर्ती दिशा, अन्य प्रदेश, विदेश, —अम्बर (वि०) दिशाएँ ही जिसका वस्त्र हो, बिल्कुल नग्न, विवस्त्र—दिगम्बरत्वेन निवेदितं वसु—कु० ५।७२, (—र:) 1. नग्न भिक्षु (जैन या बौद्ध सम्प्रदाय का) 2 साधु, संन्यासी

3 शिव का विशेषण 4 अधेरा, **ईश:,—ईश्वर:** दिशा का अधिष्ठात्री देवता कु० ५।५३, दे० 'अष्टदिक्पाल, **-कर:** 1 युवा, जवान आदमी 2 शिव का विशेषण, **कारिका—करी,** जवान लड़की या स्त्री, **करिन्,—गज —दन्तिन्—वारण.** (पु०) वह हाथी जो पृथ्वी को सभालने के लिए किसी दिशा में स्थित कहा जाता है (यह आठों दिशाओं में स्थित होने के कारण अष्ट दिग्गज कहलाते हैं) दिग्दन्तिशोभा —कु० भस्चकार–विक्रम० ७।१ **ग्रहणम्** पृथ्वी का दिशाओं का अवलोकन **चक्रम्** 1 क्षितिज 2 समस्त विश्व **जय:, विजय:** दिग्विजय सब दिशाओं में भिन्न २ देशों को जीतना विश्व का विजय करना स दिग्विजयमव्याजवीर: स्मर इवाकरोत् विक्रमांक० ४।१ **दर्शनम्** कुछ दिशाएँ दिखाना अर्थात् सामान्य रूप रेखा की ओर संकेत करना **-नाग** 1 पृथ्वी की दिशा का हाथी दे० दिग्गज 2. कालिदास के समसामयिक एक कवि (मेघदूत के १४ में मल्लि० की व्याख्या पर जो बात सन्दिग्ध है आधारित है), **मण्डलम्** =दिक्चक्रम् **मात्रम्** केवल दिशा का संकेत **—मुखम्** आकाश की कोई सी दिशा या भाग ध्वनिभिरवाहनदिङ्मुखम् विक्रम० ३।६ अमरु० **मोह** मार्ग या दिशा भूल जाना **वस्त्र** (वि०) बिल्कुल नंगा **विग्रम्बर** (**स्त्र**) 1 दिगम्बर सम्प्रदाय का जैन या बौद्ध भिक्षु 2 शिव का विशेषण **विभावित** (वि०) विश्रुत विख्यात या सब दिशाओं में प्रसिद्ध।

दिशा [दिश्+अङ्+टाप्] पृथ्वी का चौथाई ओर तरफ, प्रदेश। सम० **-गज, पाल,** दे० दिग्गज दिक्पाल।

दिश्य (वि०) [दिशि भव दिश्+यत्] पृथ्वी की किसी दिशा से सम्बन्ध रखने वाला, या किसी दिशा में स्थित।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1 दिखलाया हुआ, सकेतित निर्दिष्ट किया हुआ, इशारे से बताया हुआ 2 वर्णित उल्लिखित 3 स्थिर, निश्चित 4 निर्देशित, आदेश दिया हुआ, **—ष्टम्** 1 अधिन्यास नियतीकरण 2 भाग्य, नियति, सौभाग्य या दुर्भाग्य भी दिष्टम्—मा० २ 3. आदेश, निदेश 4 उद्देश्य ध्येय। सम०— **अन्त** नियत किए हुए समय की समाप्ति, मृत्यु दिष्टान्तमाप्स्यति भवानपि पुत्रशोकात् रघु० ९।७९।

दिष्टि: (स्त्री०) [दिश्+क्तिन्] 1 अधिन्यास, नियतीकरण 2 निदेश, आज्ञा, शिक्षा, शिक्षण, उपदेश 3 भाग्य, किस्मत, नियति 4 अच्छी। **प्रसन्नता, प्रसन्नता,** शुभ कार्य (जैसा कि पुत्रजन्म)–दिष्टिर्दृष्टिप्रदानमिव प्रभाव —का० ५५, दिष्टिवृद्धिमुदग्रकम्पो महामभूत्—का० ७३।

दिष्ट्या (अव्य०) [दिष्टि का करण० ए० व०] भाग्य से, सौभाग्य से, ईश्वर का धन्यवाद, मैं कितना प्रसन्न हूँ, कितना सौभाग्यशाली, शाबाश (हर्ष या बधाई का उद्‌गार) -दिष्ट्या प्रतिहतं दुर्जातम्—मा० ४, दिष्ट्या सोऽयं महाबाहुरञ्जनानन्दवर्धनः –उत्तर० १।३७, वेणी० ३।१२, दिष्ट्या वृध बधाई देना, दिष्ट्या धर्मपत्नी समागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान्वर्धते- श० ७।

दिह् (अदा० उभ० देग्धि, दिग्धे, दिग्ध -इच्छा० दिधिक्षति) 1 लीपना सानना पोतना, बिछाना –भट्टि० ३।२१ ७।१४ 2 मैला करना, भ्रष्ट करना, अपवित्र करना रघु० १६।१५, **सम्-** , 1 सन्देह करना अनिश्चित रहना याज्ञ० २।१६, संदिग्धो विजयो युधि पञ्च० ३।१२ 2 भूल करना हतबुद्धि होना (कर्मवा०)—ग्राम्यस्त्वामकठोरकेतकशिखासंदिह्य मरोधन्वन (उत्तर)—मा० १।२ या- धूपैर्जालविनिःसृतैर्वलभयः संदिग्धपारावताः - विक्रम० ३।२, कु० ६।४० 3 आक्षेप आरम्भ करना।

दी (दिवा० आ० दीयते दीन) नष्ट होना, मरना।

दीक्ष् (भ्वा० आ० दीक्षते दीक्षित) 1 किसी धर्म संस्कार के अनुष्ठान के लिए अपने आपको तैयार करना दे० नी० दीक्षित 2 अपने आपको समर्पित करना 3 शिष्य बनाना 4 उपनयन संस्कार करना 5 यज्ञ करना 6 आत्म संयम करना।

दीक्षक (दीक्ष्+ण्वुल्) आध्यात्मिक मार्गदर्शक।

दीक्षणम् [दीक्ष्+ल्युट्] दीक्षा देना समर्पित।

दीक्षा [दीक्ष्+अ+टाप्] 1 किसी धर्म-संस्कार के लिए समारोह पवित्रीकरण रघु० ३।४४, ६५ 2 यज्ञ से पूर्व किया जाने वाला प्रारम्भिक संस्कार 3 धर्मसंस्कार विवाह दीक्षा —रघु० ३।३३, कु० ७।१, ८।२४ 4 यज्ञोपवीत संस्कार करना, किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपको समर्पण करना। सम० **अन्त** पूर्वकृत यज्ञादि कर्म की त्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाने वाला पूरक यज्ञ।

दीक्षित (भू० क० कृ०) [दीक्ष्+क्त] संस्कारित, (किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए) दीक्षा-प्राप्त - एते विवाहदीक्षिताः पुत्र —उत्तर० १ अपत्याभयेनैव दीक्षिता भाग्य धीरता– श० २।१६ रघु० ८।७५, ११।२४ वेणी० १२।७ 2 यज्ञ के लिए तैयार 3 व्रत लेकर (किसी पुण्य कार्य के लिए) तैयार– रघु० ११।६० 4 अभिषिक्त रघु० ४।५, **—त:** 1 दीक्षाकार्य में व्यस्त पुरोहित 2 शिष्य 3 वह पुरुष जिसने या जिसके पूर्व-पुरुषों ने ज्योतिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञों का अनुष्ठान किया हो।

दीधिति: [दिव्+क्तिन्, द्वित्व, दीर्घत्व] 1. उजले हुए चावल 2 स्वर्ग।

दीधितिः (स्त्री०) [दीधी [illegible]-क्तिन्, इट्, ईकारलोपश्च] 1 प्रकाश की किरण —रघु० ३।२२ १३।४८ नै० २।६९ 2 आभा, उजाला 3 शारीरिक कान्ति स्फूर्ति —भर्तृ० ७।२९।

दीधितिमत् (वि०) [दीधिति + मतुप्] उज्ज्वल (पुं०) सूर्य —कु० २।२ ३।७०।

दीधी (अदा० आ० दीधीते) 1 चमकना 2 दिखाई देना, प्रतीत होना।

दीन (वि०) [दी + क्त तस्य नः] 1 गरीब [illegible] 2 दुःखी नष्ट-भ्रष्ट [illegible] दयनीय [illegible] 3 [illegible] उदास [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दीन० ६ 4 भीरु [illegible] हुआ 5 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दीनाद्धरणोचितस्य [illegible] [illegible] [illegible] दयालु, —वत्सल (वि०) दीन दुखियों [illegible] [illegible] [illegible] दीन दुखियों का मित्र।

दीनार [दी + आरक् तुट्] 1 [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दीनार [illegible] 2 [illegible] [illegible] का [illegible]।

दीप् (दिवा० आ० दीप्यते [illegible] [illegible] [illegible]) 1 चमकना, जगमगाना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्वपित नृपगुणैर्यस्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इव दीप्यते [illegible] [illegible] —नै० [illegible] भट्टि० ३।२ रघु० १४।१४ [illegible] ४६ 2 जलना, प्रकाशित होना, यथा यथा [illegible] दीप्यते का० १०५ 3 दहकना, प्रज्वलित होना, भड़कना (आत्म० भी) रघु० [illegible] भट्टि० [illegible] शि० २०।७१ 4 काम में आसक्त होना [illegible] ३।५५ 5 चमकदार होना —प्रेर० दीपयति—ते [illegible] सुलगाना, प्रज्वलित करना, रोशनी करना, प्रकाश करना [illegible] [illegible] [illegible] ७, उद्— प्रेर० 1 आग सुलगाना 2 उद्बोधित करना, उत्तेजित करना, उद्दीपित करना, प्र—, सम्— चमकना, जगमगाना।

दीपः [दीप् + णिच् + अच्], लैंप, दीवा, प्रकाश [illegible] [illegible] सहस्राणि [illegible] [illegible] नैव कश्चित् —पंच० १।२२१ न हि दीपौ परस्परं [illegible] —शारी० इसी प्रकार ज्ञानदीप। सम० —अन्विता 1 अमावस्या 2 —दीपावली, आराधनम् दीप थाल में रख कर देवमूर्ति की आरती उतारना, —आलिः, —ली, —आवली —उत्सवः 1 दीपपंक्ति रात के समय रोशनी करना 2 विशेषकर से दिवाली का उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या में मनाया जाता है, —कलिका दीपक की लौ, —किट्टम् दीपक का फूल, दीये का गुल —कूपी, —वर्ती दीये की बत्ती —ध्वजः [illegible] —पादपः, —वृक्षः दीपाधार, दीवट, पुष्प [illegible] का वृक्ष —भाजनम् दीपक रघु० १९।५१, [illegible] माला प्रकाश करना, रोशनी करना —शत्रुः पतंग, —शिखा दीपक की लौ —शृंखला दीयों की पंक्ति, रोशनी।

दीपक (वि०) (स्त्री०—पिका) [दीप् + णिच् + ण्वुल्] 1 आग सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला 2 रोशनी करने वाला, उज्ज्वल बनाने वाला 3 सचित्र [illegible] [illegible] सुन्दर [illegible] वाला, विख्यात करने वाला 4 [illegible] [illegible] करने वाला शि० [illegible] 5 [illegible] [illegible] का उद्दीपन करने वाला [illegible] [illegible] 1 प्रकाश [illegible] [illegible] स्फुरत्येव [illegible] [illegible] [illegible] 2 बाज 3 कामदेव [illegible] [illegible] —कम् 1 [illegible] केसर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विशेषण [illegible] [illegible] अधिक [illegible] प्रकृत और अप्रकृत [illegible] [illegible] जायँ [illegible] [illegible] [illegible] (प्रकृत और अप्रकृत) एक ही कर्म के [illegible] महीपति [illegible]

दीपन (वि०) [दीप् + णिच् + ल्युट्] 1 आग सुलगाने वाला, प्रकाश करने वाला 2 पुष्टिकारक, पाचनशक्ति को [illegible] करने वाला 3 उत्तेजक, उद्दीपक 4 केसर [illegible]

दीपिका [दीप + णिच् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] 1 प्रकाश, मशाल रघु० [illegible] [illegible] 2 (समास के अन्त में) [illegible] वर्णन करने वाला, स्पष्टकर्ता, तर्कदीपिका।

दीपित (वि०) [दीप + णिच् + क्त] 1 जिसको आग लगा दी गई हो 2 प्रज्वलित 3 [illegible] प्रकाशमय 4 प्रकट, प्रकाशित।

दीप्त (भू० क० कृ०) [दीप् + क्त] 1 जलाया हुआ, प्रज्वलित, सुलगाया हुआ 2 दहकता हुआ, गरम [illegible] उत्पन्न करने वाला [illegible] करने वाला 3 प्रकाश[illegible] 4 उत्तेजित, उद्दीपित —प्तः 1 सिंह 2 नींबू का पेड़ —प्तम् सोना। सम० —अंशुः सूर्य, —अक्षः बिल्ली, —अग्नि (वि०) (आग की भांति) सुलगाया हुआ (—ग्निः) 1 धधकती हुई आग 2 अगस्त्य का नाम, —अङ्गः मोर —आत्मन् (वि०) जोशीले स्वभाव का, —उपलः सूर्यकान्तमणि, —किरणः सूर्य, —कीर्तिः कार्तिकेय का विशेषण, —जिह्वा लोमड़ी (आलंकारिक

रूप से झगड़ालू और दुष्टस्वभाव वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है), तपस् (वि०) उज्ज्वल धर्मनिष्ठा से युक्त, उत्कट भक्ति वाला,– पिङ्गलकः सिंह, –रसः कैचुवा,–लोचनः बिल्ली,–लोहम् पीतल, काँसा।

दीप्ति (स्त्री०) [दीप्+क्तिन्] 1 उजाला चमक, प्रभा आभा 2 सौंदर्य की उज्ज्वलता, अत्यन्त मनोरमता (दीप्ति और कान्ति के अन्तर के लिए दे० कान्ति) 3 लाख 4 पीतल।

दीप्र (वि०) [दीप्+र] चमकीला, जगमगाता हुआ चमकदार, प्र: आग।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ्] (म० अ० द्राघीयस् उ० अ० –द्राघिष्ठ) 1 (समय और स्थान की दृष्टि से) लम्बा दूर तक पहुँचने वाला दीर्घाक्षं शरदिन्दुकान्तिवदनम् मालवि० २।३ दीर्घान् कटाक्षान् मच० ३५ दीर्घापाङ्ग आदि 2 लम्बा अवधि का टिकाऊ [illegible] दीर्घदामा [illegible] [illegible] विक्रम० ३।४ श० ३।९१ 3 (आह की भांति) गहरा [illegible] [illegible] 4 (स्वर की भांति) लम्बा [illegible] 5 ऊँचा उन्नत [illegible] [illegible] चिरकाल तक 2 अत्यन्त [illegible] अधिक [illegible] 2 दीर्घस्वर [illegible] [illegible] (पुं०) ऊँट [illegible] [illegible] –आयु, आयुस् (वि०) [illegible] लम्बी आयु वाला [illegible] 1 [illegible] कोई लम्बा [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सर्प, [illegible] [illegible] [illegible] गौतम का [illegible] रघु० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], कुएँ [illegible] –दर्शिन (वि०) जिसको [illegible] दूरदर्शी दूर तक की बात सोचने वाला पञ्च० ३।१६ 2 मेधावी बुद्धिमान (पुं०) 1 रीछ 2 [illegible], –नाद (वि०) [illegible] [illegible] जोर मचाने वाला (पुं०) 1 कुत्ता 2 मुर्गा 3 शंख [illegible] 1 लम्बी [illegible] 2 [illegible], [illegible] रघु० [illegible], [illegible] का वृक्ष –पाद [illegible] [illegible] 1 नारियल का पेड़ 2 सुपारी का पेड़ 3 ताड़ का वृक्ष, पृष्ठः साँप –[illegible] एक प्रकार का हरिण चमरी, (इसकी पूँछ से चौरी बनता है) [illegible] [illegible] –[illegible] कुत्ता [illegible] [illegible], [illegible] साँप, [illegible] (पुं०) भालू, [illegible] [illegible], [illegible] (वि०) लम्बी [illegible] वाला [illegible] चिरकाल तक [illegible] [illegible] (अ०) [illegible] रघु० १।८० [illegible] [illegible] (वि०) [illegible] [illegible]

कार्य करने वाला, मन्थर, प्रत्येक कार्य को देर में करने वाला, टालने वाला, देर लगाने वाला दीर्घसूत्री विनश्यति—पञ्च० ४।

दीर्घिका [दीर्घ+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] 1 एक लम्बा सरोवर जलाशय—मालवि० २।१३, रघु० १६।१३ 2 कुआँ या बावड़ी।

दीर्ण (वि०) [दॄ+क्त] 1 चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2 डरा हुआ, भयभीत।

दु (स्वा० पर० दुनोति दुत, या दून) 1 जलाना, आग में भस्म करना भट्टि० १४।८९ 2 सताना, कष्ट देना दुःख देना उद्घूर्णितेन [illegible] [illegible] भट्टि० २।७० [illegible], १७।२८ (मुख) [illegible] विश्रान्तकथं दुनोति नाम रघु० ८।८९ 3 पीड़ा [illegible] [illegible] पैदा करना [illegible] [illegible] [illegible] दुनोति [illegible] [illegible] [illegible] 4 (अक०) [illegible] १० १०।११।

दुःख (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 कठिन [illegible] [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] दुःख [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १।१। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विक्रम० [illegible] इसी प्रकार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कठिनाई से [illegible] मुश्किल से कष्ट से [illegible] को प्रकट करने के लिए दुःखम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं श० ७।१३ [illegible] १।१५ रघु० १९।४९ [illegible] [illegible] समा० —अतीत (वि०) दुःखों से मुक्त [illegible] मोक्ष, –कर (वि०) पीड़ाकर कष्टदायक —[illegible] दुःखों का पुञ्ज सांसारिक अस्तित्व [illegible] –छिन्न (वि०) 1. [illegible] [illegible] 2. पीड़ित दुःखी [illegible] –[illegible] (वि०) कष्ट और दुःखों से पूर्ण, –[illegible] (वि०) दुःखी, [illegible] [illegible]. सांसारिक जीवन [illegible] यातना का [illegible] [illegible], –शील (वि०) जो दूसरों को प्रसन्न न कर सके बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा रघु० ३।६।

दुःखित दुःखिन् (वि०) (स्त्री०–नी) [दुःख+इतच्, इनि वा] दुःखी, कष्टग्रस्त, पीड़ित 2. बेचारा [illegible] दयनीय।

दुकूलम् [दु+ऊलच्, कुक्] बुना हुआ रेशम, रेशमीवस्त्र अत्यन्त महीन वस्त्र –श्यामलमृदुकलेवरमण्डनमधि-

गतगोरसुकूलम्--गीत० ११, कु० ५।६७, ७८, भट्टि० ३।३४, १०।१, रघु० १७।२५।

दुग्ध (वि०) [दुह् + क्त] 1. दुहा हुआ 2. जिसका दूध दुह लिया गया है, चूस लिया गया है या निकाल लिया गया है --दे० 'दुह्',--**ग्धम्** 1. दूध, 2. पौधों का दूधिया रस। सम०--**अग्रम्**--**तालीयम्** दूध का फेन, मलाई,--**पाचनम्** वह बर्तन जिसमें दूध डाल कर औटाया जाय, --**पोष्य** (वि०) अपनी माँ के दूध पर रहने वाला बच्चा, दूध पीता (बच्चा) [illegible],--**समुद्रः** दूध का सागर, सात समुद्रों में से एक।

दुघ (वि०) [दुह् + क] (प्रायः समास के अन्त में) 1. दूध देने वाला 2. प्रदान करने वाला, देने वाला, जैसा कि 'कामदुघः' में।

दुघा [दुघ + टाप्] दूध देने वाली गाय, दुधार गौ।

दुण्डुक (वि०) [दुण्डुभ इव स्वभावेन दुड्भ + कै + क, पृषो० सलोप] बेईमान, दुष्ट हृदय वाला, [illegible]।

दुण्डुभ --डुण्डुभ।

दुन्दुमः [दुन् दुन्दु इत्यादि--पृषो० सलोप] [illegible]।

दुन्दुमः (पुं०) [दुन् इति शब्दं उदीर्य अभिनन्दति--दुन्द् + अच् + ड] एक प्रकार का ढोल, दे० दुन्दुभि।

दुन्दुः (पुं०) 1. एक प्रकार का ढोल 2. कृष्ण के पिता वसुदेव का नाम।

दुन्दुभः [दुन्दु + भण् + ड] 1. एक प्रकार का बड़ा ढोल, नगाड़ा 2. एक प्रकार का [illegible] साँप।

दुन्दुभिः (पुं०, स्त्री०) [दुन् इत्यव्यक्तशब्देन उभति पूरयति--उम्भ् + कि] एक प्रकार का बड़ा ढोल, नगाड़ा, [illegible] दुन्दुभिना [illegible] [illegible] १।१६, १२।० 1. विष्णु की उपाधि 2. कृष्ण का विशेषण 3. [illegible] विष 4. एक राक्षस जिसे बालि ने मारा था, [illegible] सुग्रीव ने इस राक्षस का अस्थिपञ्जर [illegible] राम को यह बतलाने के लिए कि बालि कितना बलवान् था, दिखलाया था, राम ने इसे मामूली सा ठोकर मारी और वह आश्चर्यजनक मीलों दूर जाकर पड़ा।

दुर् (अव्य०) [दु + रुक्] ('दुस्' के स्थान में प्रयुक्त किया जाने वाला उपसर्ग जो 'बुराई' 'कठिनाई' का अर्थ प्रकट करने के लिए स्वरादि तथा कोमलवर्णादि से आरम्भ होने वाले शब्दों से पूर्व लगाया जाता है, दुस् पूर्वक समासों के लिए दे० 'दुस्')। सम०--**अक्ष** (वि०) 1. दुर्बल आँख वाला 2. खोटी दृष्टि वाला (--**क्षः**) कपट का पासा,--**अतिक्रम** (वि०) 1. दुर्लंघ्य, दुस्तर, अर्जेय--स्वजातिर्दुरतिक्रमा--पञ्च० १ 2. दुर्भेद्य 3. अनिवार्य,--**अत्यय** (वि०) 1 जो कठिनाई से जीता जा सके,--रघु० ११।८८ 2. दुर्लंघ्य, अगाध,--**अदृष्टम्** दुर्भाग्य, विपत्ति--अशिव,--**अधिगम** (वि०) 1. दुष्प्राप्य, जिसे प्राप्त करना कठिन हो, पञ्च० १।१३० 2. दुस्तर 3. दुर्बोध, जिसे अध्ययन करना बहुत कठिन हो--कि० ५।१८,--**अधिष्ठित** (वि०) बुरी तरह से सम्पन्न, प्रबद्ध या क्रियान्वित किया गया --**अध्यय** (वि०) 1 दुर्लभ 2 दुर्बोध,--**अध्यवसायः**, मूर्खतापूर्ण व्यवसाय, --अथवा कुमार्ग,--**अन्त** (वि०) 1. जिसके किनारे पर पहुँचना कठिन हो, अनन्त, अन्तहीन--[illegible]--भामि० 2 परिणाम में दुःखदायी, विपद्ग्रस्त--अहह दुरन्ता बलवद्विरोधिता--कि० १।२३, [illegible] [illegible] (ग्रन्थे) --भामि० १,--**अन्वय** (वि०) 1. दुर्गम 2. जिसका पालन करना या अनुसरण करना कठिन हो 3. दुर्बोध (--**यः**) अशुद्ध निष्कर्ष, दिये हुए [illegible] का गलत अनुमान,--**अभि-मानिन्** (वि०) मिथ्या अहंकार करने वाला, [illegible] --**अवगम** (वि०) दुर्बोध --**अवग्रह** (वि०) जिसे रोकना या वश में रखना कठिन हो, जिसका [illegible],--**अवस्थ** (वि०) दुर्दशाग्रस्त [illegible]--**अवस्था** दुर्दशा, दयनीय स्थिति,--**आकृति** (वि०) कुरूप, भद्दा,--**आक्रम** (वि०) 1. अजय, [illegible] 2. दुर्गम, --**आक्रमणम्** 1. [illegible] 2. [illegible],--**आचार** [illegible],--**आग्रह** मूर्खतापूर्ण हठ, जिद, [illegible] --**आचर** (वि०) [illegible]--**आचार** (वि०) 1. बुरे आचरण का, [illegible] 2. [illegible] [illegible]--भामि० १।[illegible] [illegible] दुरध्ववसिता--**आत्मन्** (पुं०) दुर्जन, दुष्ट, [illegible],--**आधर्ष** (वि०) 1. जिस पर आक्रमण करना कठिन है 2. जिसका [illegible] 3. [illegible],--**आराध** (वि०) जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो, रघु० १।[illegible],--**आप**(वि०) [illegible] [illegible] [illegible],--**आराध्य** (वि०) जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो, जिसको जीत लेना [illegible] हो,--**आरोह** (वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो (--**हः**) 1. नारियल का पेड़ 2. ताड़ का पेड़ 3. खजूर का पेड़,--**आलाप** 1. दुर्वचन, [illegible] 2. बुरी या अश्लील, अपशब्दयुक्त भाषा, --**आलोक** (वि०) 1. जो कठिनाई से देखा जा सके 1. जिसको [illegible] आँख [illegible] चकाचौंध करने वाला [illegible],--**आवाप** [illegible] 1. जिसे [illegible] कठिन हो 2. जिसे [illegible] कठिन हो, --**आशय** (वि०) दुर्भावक, कुत्सित विचारों वाला व्यक्ति [illegible] नीयत खराब हो, नीच हृदय का,

—आशा 1. बुरी इच्छा 2 ऐसी आशा करना जो पूरी न हो सके, —आसद (वि०) 1 जिसके पास पहुँचना कठिन हो, दुर्गम, दुर्धर्ष, दुर्जय रघु० ३।६६, ८।१८, महावी० ५।५, ६।१५ 2 दुर्लभ, दुष्प्राप्य 3 अद्वितीय, अनुपम, —इत (वि०) 1 कठिन 2 पापी, (तम्) 1 कुमार्ग, बुराई, पाप—दरिद्रता, दैन्य, दुरितमय दुःखा सनहृदा दुरितं दूरीकुर्वन् गगा० २ रघु० ८।१ [illegible] महावी० ३।४३ 2 कठिनाई, भय 3 [illegible] —इष्टम दुर्वचन, गाली 2 दूसरे व्यक्ति को हानि पहुँचाने के लिए किया जाने वाला जादूटोना या यज्ञानुष्ठान, —ईश बुरा स्वामी, कुप्रभु, —ईषणा एषणा, अभिशाप, —उक्त वचन, उक्तम् उक्ति, दुर्वचन, झिड़की, गाली, बुरा भला कहना, —उत्तर (वि०) जिसका उत्तर न दिया जा सके, —उदाहर (वि०) जिसका उच्चारण किया जाना कठिन हो, [illegible] दुरुदाहर शि० २।७३, —उद्वह (वि०) [illegible] —ऊह (वि०) बहुत माथा पच्ची करने पर [illegible] समझ में न आने वाला, कठिन, —ग (वि०) 1 [illegible] पहुँचना कठिन हो, अगम्य, दुर्गम 2 [illegible] (—ग, —गम्) कठिन या तंग रास्ता [illegible] नदी या पहाड़ों में से) संकीर्ण [illegible] 2. गढ़, किला, कोट 3 [illegible] कठिनाई, विपत्ति, संकट, दुःख, भय, [illegible] —मनु० ७।९८, ११।८३, भग० १८।५८, —अध्यक्ष, —पति पालः किले का समादेष्टा या प्रशासक, —कर्मन् (नपुं०) किलाबन्दी, —मार्ग घाटी का मार्ग [illegible] घाटी, —लङ्घनम् कठिनाइयों को पार करना, (—म) ऊँट, —संचर 1 (घाटी के ऊपर से [illegible] किले का) कठिन मार्ग, —गा शिव की पत्नी पार्वती की उपाधि, —गत (वि०) 1 दुर्भाग्यग्रस्त, दुःखग्रस्त —भट्टि० १८।१० 2. दरिद्र, गरीब 3 बुरा काम [illegible] ग्रस्त, —गति (स्त्री०) 1 दुर्भाग्य, गरीबी, कमी, कष्ट, दरिद्रता— भग० ६।४० 2 कठिन स्थिति या मार्ग 3. नरक, —गन्ध (वि०) बुरी गन्ध वाला, (—न्धः) 1 बुरी गन्ध, सड़ांध 2 दुर्गंधयुक्त पदार्थ 3 प्याज 4 आम का वृक्ष, —गन्धि, —गन्धिन् (वि०) जिसमें से बुरी गन्ध आवे, —गम (वि०) 1 जिसमें से न गुजरा न जा सके, जहाँ पहुँचना कठिन हो, अप्रवेश्य, [illegible] नौकायकानारे कुचपर्वतदुर्गमे भर्तृ० १।८६ शि० १२।४९ 2. अप्राप्य, दुष्प्राप्य 3 दुर्बोध, —गाढ़, —गाध —गाह्य जिसका अवगाहन करना या अनुसंधान करना कठिन हो, अनवगाह्य, —ग्रह (वि०) 1 कष्टसाध्य 2. जिसका जीतना या वश में करना कठिन हो—रघु० १७।५२ 3. दुर्बोध, (—ह) मरोड़, ऐंठन, —घट (वि०) 1 कठिन 2 असम्भव, —घोष 1 कर्कश ध्वनि 2 रीछ, —जन (वि०) 1 दुष्ट, बुरा, खल 2 उद्दण्ड, दुर्गुण, उपद्रवी, (—नः) बुरा या दुष्ट आदमी, दुष्ट स्वभाव वाला या उपद्रव करने वाला व्यक्ति, दुर्मुख, दुर्जन, चुगलखोर, विश्वासघाती [illegible] भाग० [illegible] [illegible] जेय (वि०) अजेय जिसको जीता न जा सके, —जर (वि०) 1 [illegible] 2 [illegible] 3 जिसका उपभोग करना कठिन हो, —जात (वि०) 1 दुर्भाग्य, अभागा 2 बुरे स्वभाव का, बुरा, दुष्ट 3 मिथ्या, अवास्तविक, (—तम्) दुर्भाग्य [illegible] —जाति [illegible] [illegible] 2 [illegible] —ज्ञान [illegible] —ज्ञेय [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] —दम, —दमन [illegible] —दम्य [illegible] [illegible] —दर्श (वि०) 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] 1 [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 [illegible] [illegible] —दृष्ट (वि०) [illegible] से विचार किया गया हो, जिसका फ़ैसला ठीक न हुआ हो, —देवम् बुरे दिन, दुर्भाग्य, —द्यूतम् बेईमानी का खेल, —द्रुम प्याज, —धर (वि०) 1 जिसका मुक़ाबला न किया जा सके, जो रोका न जा सके 2 दुःसह, दुर्धर्षा मदनेन पाडिता घट० ११, मनु० ७।२८ (—र) पारा, —धर्ष (वि०) 1 अनुल्लङ्घनीय, अनतिक्रम्य 2 [illegible] 3. भयंकर, डरावना 4 उद्धत, —धी (वि०) मूर्ख, बेवकूफ़, नासमझ, जड़, —धीर, —निग्रह (वि०) जिसको दबाया न जा सके, जिस पर शासन न किया जा सके, जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, उच्छृंखल, मनो दुर्निग्रहं चलम् भग० ६।३५, —निमित्त (वि०) असावधानी से जमीन पर रक्खा हुआ, पद दुर्निमित्ते गतस्मी रघु० ७।१०, —निमित्तम् 1 अपशकुन, रघु० १४।५० 2. बुरा बहाना, —निवार, —निवार्य (वि०) जिसको

हटाना या दूर करना कठिन हो, जिसका मुकाबला करना कठिन हो, अजेय —नीतम् कदाचरण दुर्नीति दुर्व्यवहार,—नीतिः (स्त्री०) बुरा प्रशासन भामि० ४।३६, —बल (वि०) 1. कमजोर बलहीन 2 क्षीणकाय, शक्तिहीन —उत्तर० १।२४ 3 स्वल्प थोड़ा कम —रघु० ५।१२, —बाल (वि०) गंजे सिर वाला —बुद्धि (वि०) 1 बेवकूफ, मूर्ख, बुद्धू 2 कुमार्गी दुष्ट मन का, दुष्ट—भग० १।२३ —बोध (वि०) जो शीघ्र समझ में न आये, जिसकी तह तक न पहुँचा जाय, दुर्ग्राह्य निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः —कि० १।६ —भग (वि०) भाग्यहीन अभागा —भगा 1. वह पत्नी जिसे उसका पति न चाहता हो 2. बुरे स्वभाव की स्त्री कलहप्रिय स्त्री, —भर (वि०) जिसे निभाना कठिन हो, भारी भार, —भाग्य (वि०) भाग्यहीन अभागा, (—ग्यम्) बुरी किस्मत —भक्षम् 1 खाद्य सामग्री की कमी अभाव, अकाल पञ्च० २।१४७, मनु० ८।२२, हि० १।७३ 2 कमी, —भृत्य बुरा सेवक, —भ्रातृ (पु०) बुरा भाई —मति (वि०) 1 मूर्ख, दुर्बुद्धि बेवकूफ अज्ञानी, 2 दुष्ट, खोटे हृदय का मनु० ११।३० —मद (वि०) शराबखोर खुमार या हिज, मदोन्मत्त दीवाना, —मनस् (वि०) खिन्नमनस्क हतोत्साह दुःखी उदास, —मनुष्य दुर्जन दुष्ट पुरुष —मन्त्र —मन्त्रितम् बुरी नसीहत, बुरा परामर्श, —मरणम् बुरी मौत अप्राकृतिक मृत्यु, —मर्ष (वि०) निर्लज्ज अशिष्ट —मल्लिका, —मल्ली एक प्रकार का उपरूपक मुख्यतः प्रहसन सा० द० ५५३ —मित्र 1 बुरा दोस्त 2 शत्रु, —मुख (वि०) बुरे चेहरे वाला विकराल बदसूरत भर्तृ० १।९० 2 कटुभाषी अश्लीलभाषी बदजबान —भर्तृ० २।६९ —मूल्य (वि०) बहुत अधिक मूल्य का महँगा —मेधस् (वि०) मूर्ख बेवकूफ मन्दबुद्धि, —मेधस् (पु०) मूढमति मन्दबुद्धि मनुष्य मूढ —अभ्यासयोगेन अशाकनुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम् शि० २।२६,—योध —योधन (वि०) अजेय, जो जीता न जा सके, (—नः) धृतराष्ट्र और गान्धारी का ज्येष्ठ पुत्र (दुर्योधन बचपन से ही अपने चचेरे भाई पाण्डवों से घृणा करता था, विशेष कर भीम से। इसलिए पाण्डवों का विनाश करने के लिए उसने यथाशक्ति प्रयत्न किये। जब उसके पिता धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाने का प्रस्ताव रक्खा, तो दुर्योधन को अच्छा न लगा, क्योंकि धृतराष्ट्र ही उस समय राजा थे, इसलिए दुर्योधन ने अपने अन्धे पिता को इस बात पर राजी कर लिया कि पाण्डवों का निर्वासन कर दिया जाय। वारणावत उनका भावी निवासस्थल चुना गया—और उनके रहने के लिए एक विशाल महल बनवाने के बहाने दुर्योधन ने लाख, देवदारु आदि दहनशील सामग्री से एक भवन इस आशा से बनवाया कि पाण्डव सब उसमें जल कर मर जायेंगे। परन्तु पाण्डवों को दुर्योधन की इस चाल का पता लग गया था अत वह सुरक्षित उस भवन से निकल भागे। फिर पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहने लगे यहाँ रहते हुए उन्होंने बड़े ठाट बाट के साथ एक राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। इस घटना ने दुर्योधन की ईर्ष्या और क्रोधाग्नि को और भी अधिक भड़का दिया—क्योंकि दुर्योधन का पाण्डवों को वारणावत में जला कर मारने का षड्यन्त्र पहले ही निष्फल हो चुका था। फलतः दुर्योधन ने अपने पिता को उकसाया कि पाण्डवों को हस्तिनापुर में आकर जूआ खेलने के लिए निमन्त्रण दिया जाय क्योंकि युधिष्ठिर विशेष रूप से जुए का शौकीन था। इस जुए के खेल में दुर्योधन को अपने मामा शकुनि की सहायता प्राप्त था। युधिष्ठिर ने जो कुछ भी दाँव पर लगाया वही हार गया यहाँ तक कि इस हार से अन्धे होकर उसने अपने आप को, अपने भाइयों को और अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया। और इस प्रकार जुए में सब कुछ हार जाने पर शर्त के अनुसार युधिष्ठिर को १२ वर्ष का वनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास बिताने के लिए अपनी पत्नी तथा भाइयों सहित जंगल की ओर जाना पड़ा। परन्तु यह दीर्घकाल भी समाप्त हो गया। वन से आकर पाण्डव और कौरवों ने भारती नाम के महायुद्ध की तैयारी की यह युद्ध १८ दिन रहा और सारे कौरव अपने अधिकांश बन्धुबान्धवों सहित इसी युद्ध में मारे गये। युद्ध के अन्तिम दिन भीम का दुर्योधन से द्वन्द्व युद्ध हुआ और भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन की जंघा तोड़ कर उसे मौत के घाट पहुँचाया), —योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न, अधम कुल का —लक्ष्य (वि०) जो कठिनाई से देखा जा सके जो दिखाई न दे —लभ (वि०) 1 जिसका प्राप्त करना कठिन हो दुष्प्राप्य दुस्साध्य रघु० १।६७ १३।३०, कु० ४।१० ५।४६, ६१ 2 जिसका ढूँढना कठिन हो जिसका मिलना दुष्कर हो, विरल —मुक्तानुदुर्लभम् श० १।१६ 3 सर्वोत्तम श्रेष्ठ प्रमुख 4 प्रिय, प्यारा 5 मूल्यवान —ललित (वि०) लाड प्यार से बिगड़ा हुआ, अत्यधिक लाड प्यार में पला हुआ जिसे प्रसन्न करना कठिन है —हा मदकुदुर्ललित वेणी० ४ विक्रम० २।८ मा० ९ 2 (अत) स्वेच्छाचारी, नटखट अशिष्ट उच्छृङ्खल स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै श० ७, (—तम्) स्वेच्छाचारिता, अक्खड़पन, —लेख्यम् जाली दस्तावेज —वच (वि०) 1 जिसका वर्णन करना कठिन हो

अवर्णनीय 2. वह बात जिसका बतलाना उचित न हो 3 अनुचित बोलने वाला, गाली देने वाला, (—चम्) गाली, फटकार, दुर्वचन, —वचस्(नपुं०) गाली, झिड़क, —वर्ण (वि०) बुरे रंग का, (—र्णम्) चांदी,—वसति (स्त्री०) पीड़ाजनक निवासस्थान— रघु० ८।९४, —वह (वि०) भारी, जिसे ढोना कठिन हो—उत्तर० २।१०, कु० १।१०,—वाच्य (वि०) 1 जिसका कहना या उच्चारण करना कठिन हो 2. कुभाषी, बदजबान 3 कठोर, क्रूर, (च्यम्) 1 झिड़की, दुर्वचन 2 बदनामी, लोकापवाद,— वादः अपवाद, अपयश कुख्याति, —वार,—वारण (वि०) जिसका मुकाबला न किया जा सके, असह्य –रघु० १४।८७, कु०२।२१, —वासना 1 ओछी कामना, बुरी इच्छा—भामि० १।८६ 2 कपोलकल्पना, —वासस् (वि०) 1 बुरा वस्त्र धारण किये हुए 2 नगा (पुं०) 3 एक बड़ा क्रोधी ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र इसे प्रसन्न करना अत्यन्त कठिन था, बहुत से स्त्री पुरुषों को उसने अपमान तथा मुसीबत सहन करने के लिए शाप दिया। जमदग्नि के क्रोध की भांति, इसका क्रोध भी प्राय एक लोकोक्ति बन गया, –विगाह –विगाह्य (वि०) जिसमें प्रवेश करना कठिन, हो, जिसका अवगाहन मुश्किल हो, अगाध, —विचिन्त्य (वि०) अचिन्तनीय, अतर्क्य,—विदग्ध अकुशल, नौसिखुवा बेवकूफ, मन्द बुद्धि, मूर्ख 2. बिल्कुल अनाड़ी 3 थोड़े से ज्ञान से ही फूला हुआ, गर्वित, झूठा घमण्ड करने वाला—ज्ञानलव-दुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति—भर्तृ० २।३,—विध (वि०) 1 कमीना, अधम, नीच 2 दुष्ट, दुश्चरित्र 3 गरीब, दरिद्र —विदधाने हविर्मर्दुर्विध—नं० २।३३ 4 मन्दबुद्धि, मूर्ख, बेवकूफ,— विनय औद्धत्य, उद्दण्डता, —विनीत (वि०) 1 (क) बुरी तरह से शिक्षित अशिष्ट, असभ्य, दुष्ट -शासितरि दुर्विनीतानाम् श० १।२५ (ख) अक्खड़, नटखट, उपद्रवी 2 हठीला, दुराग्रही —विपाकः 1 दुष्परिणाम, बुरा नतीजा उत्तर० १।४०, महावी० ६।७ 2 पूर्व जन्म के या इस जन्म के किये हुए कर्मों का बुरा परिणाम, —विलसितम् स्वेच्छाचार, अक्खड़पन, नटखटपना, —वृत्त (वि०) 1 दुश्चरित्र, दुष्ट, असभ्य 2. बदमाश, (त्तम्) दुराचरण, अशिष्ट व्यवहार, —वृष्टिः (स्त्री०) थोड़ी बारिश, अनावृष्टि,—व्यवहारः गलत निर्णय (विधि में) —व्रत (वि०) नियमों का पालन न करने वाला, जो आज्ञाकारी न हो, —हुतम् वह यज्ञ जो बुरी रीति से किया गया है,—हृद् (वि०) दुष्ट हृदय का, दुष्ट विचारों वाला, —हृद् (पुं०) वैरी,- हृदय (वि०) दुरात्मा, दिल का खोटा, दुष्ट।

दुरोदरः [दुष्टमाममस्मात् उदरं यस्य ब० स०] 1 जुआरी, जूआकार 2. पासा, जूआ 3 बाजी, दाँव, -रम् जूआ खेलना, पासे से खेलना दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधन —कि० १।७, रघु० ९।७।

दुल् (चुरा० उभ०- दोलयति ते दोलित) झूलना इधर-उधर हिलना जुलना, इधर उधर घूमाना, झुलाना —बीटं बेह्रोलयंदाशु—रत्न० दोलयन् द्राविवालो—भर्तृ० ३।३९ 2 हिलाकर ऊपर को करना ऊपर फेंकना दोलयति धलि वायुः शब्द०।

दुलिः (स्त्री०) [दुल् +कि] छोटा कछुआ या कछुवी।

दुष् (दिवा० पर० दुष्यति दुष्ट) 1 बुरा या भ्रष्ट हो जाना, दूषित होना घाटा उठाना 2 मलिन होना असती होना (स्त्री का), कलङ्कित होना अपवित्र होना बिगड़ना रघु० १।६६, मनु० ७।२४ ९।३१८ १०।१०२ 3 पाप करना गलती करना गलती होना 4 असती होना भ्रष्ट या श्रद्धाहीन होना (पुं०) दूषयति (परन्तु दूषयति दोषयति भी अर्थ है दूषित करना भ्रष्ट करना) 1 भ्रष्ट करना बिगाड़ना नष्ट करना दुनियम्न करना विनष्ट करना दूषित करना धब्बा लगाना कलङ्कित करना विषाक्त करना, अपवित्र करना (शा० तथा आल० में) न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः मृच्छ० १०।२५ पुरा दूषयति स्थलीम् रघु० १२।३० ८।६८ १०।४७, १४।१४ मनु० ५।१ ९ ४ ७।१९५ याज्ञ० १।१८९, अमरु ७० न स्वेन दूषयिष्यामि शस्त्रग्रहमहाव्रतम् महावीर० ३।२८ दूषित नहीं करूँगा उल्लंघन नहीं करूँगा तोड़ूंगा नहीं आदि 2 चरित्र भ्रष्ट करना, उत्साह भंग करना 3 उल्लंघन करना अवज्ञा करना मनु० ८।३६४ ३६८ 4 निराकरण करना हटा देना, रद्द कर देना 5 दोष लगाना निन्दा करना, दोष निकालना, किसी के विषय में बुरा कहना दोषारोपण करना दूषित सबलाकेषु निगादस्य गमिष्यति गाथा०, याज्ञ० १।६६ 6 मिलावट करना 7 मिथ्या या बनावटी करना 8 निराकरण करना, खण्डन करना, प्र , 1 भ्रष्ट होना, बिगड़ना, विषाक्त होना याज्ञ० ३।१९ 2 पाप करना, गलती करना, श्रद्धाहीन या असती (अभक्त) होना—भग० १।४०, मनु० ९।७४ (प्रेर०)1 बिगाड़ना, भ्रष्ट करना गन्दा करना, धब्बे लगाना 2 दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना सम् दूषित या कलंकित होना —(प्रेर०) 1 दूषित करना भ्रष्ट करना, गन्दा करना, धब्बे लगाना 2. उल्लंघन करना 3 दोषारोपण करना, निन्दा करना, दोष निकालना।

दुष्ट (भू० क० कृ०) [दुष्+क्त] 1 बिगड़ा हुआ, खराब हुआ, क्षतिग्रस्त, बर्बाद 2 दूषित, धब्बे लगा हुआ

उल्लंघन किया हुआ, कलुषित 3 मलिन, भ्रष्ट 4 पापासक्त, बदमाश—दुष्टवृष 5 दोषी, अपराधी 6. नीच, अधम 7 दोषयुक्त, सदोष—जैसा कि तर्क० में हेतु 8. पीड़ाकर, निकम्मा। सम०—आत्मन्, —आशय (वि०) खोटे मन वाला, दुष्ट हृदय वाला, —गजः बदमाश हाथी,—चेतस्, —धी, —बुद्धि (वि०) खोटे मन का, दुर्भावनापूर्ण, कुशील, —वृष मजबूत परन्तु अड़ियल बैल, (जो गाड़ी न खींचे) बदमाश बैल।

दुष्टिः (स्त्री०) [दुष् + क्तिन्] भ्रष्टाचार, खोट।

दुष्टु (अव्य०) [दुर् + स्था + कु] 1 खराब, बुरा 2 अनुचित रूप से, अशुद्ध रूप से, गलती से।

दुष्यन्तः (पुं०) चन्द्रवंश में उत्पन्न एक राजा, पुरु की सन्तान, शकुन्तला का पति, भरत का पिता (जंगल में शिकार खेलता हुआ, एक बार दुष्यन्त हरिण का पीछा करता हुआ कण्व के आश्रम की ओर निकल गया। वहाँ कण्व की गोद ली हुई पुत्री शकुन्तला ने उसका स्वागत-सत्कार किया। शकुन्तला के अलौकिक सौन्दर्य से राजा दुष्यन्त उस पर मोहित हो गया उसने उसको अपनी रानी बनाने के लिए राजी कर लिया और फलतः गान्धर्व विवाह कर लिया। कुछ समय शकुन्तला के साथ बिता कर राजा अपनी राजधानी को लौटा। कुछ महीनों के पश्चात् शकुन्तला ने एक पुत्र को जन्म दिया। कण्व ने यह उचित समझा कि शकुन्तला को उसके पति के घर भेज दिया जाय। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास गई और उसके सामने खड़ी हुई तो दुष्यन्त ने लोकनिन्दा के डर से कहा कि विवाह करने की बात तो दूर रही मैंने तो तुम्हें कभी देखा तक नहीं, परन्तु उसी समय उसे स्वर्गीय वाणी ने बतलाया कि शकुन्तला उसकी वैध पत्नी है। फलतः उसने शकुन्तला को पुत्र समेत स्वीकार कर उसे अपनी पटरानी बनाया। वह राजा रानी वृद्धावस्था तक सुखपूर्वक रहे, और फिर अपने पुत्र भरत को राज्य देकर जंगल की ओर चल दिये। दुष्यन्त और शकुन्तला का उपर्युक्त वर्णन महाभारत में दिया हुआ है, कालिदास द्वारा वर्णित कहानी कई महत्त्वपूर्ण बातों में इससे भिन्न है दे० 'शकुन्तला')।

दुस् [दु + सुक्] 'बुरा, खराब, दुष्ट, घटिया, कठिन या मुश्किल आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व (कभी २ धातुओं के पूर्व भी) लगाया जाने वाला उपसर्ग। (विशे० स्वर और व्यंजनों से पूर्व दुस् का स् बदल कर र् हो जाता है, ऊष्म वर्णों के पूर्व विसर्ग, च् और छ् से पूर्व श् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है)। सम०—कर (वि०) 1. दुष्ट, बुरी तरह से करने वाला 2. करने में कठिन, कठोर या मुश्किल—वक्तुं सुकरं कर्तुं दुष्करम्—करने की अपेक्षा कहना आसान है,—अमरु ४१, मृच्छ० ३।१, मनु० ७।५५, (—रम्) 1. कठिन या पीड़ाकर कार्य, कठिनाई 2 पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—कर्मन् (पुं०) कोई भी बुरा काम, पाप, जुर्म, —कालः 1. बुरा समय —मुद्रा० ७।५ 2. प्रलयकाल 3. शिव का विशेषण, —कुलम् बुरा या नीच घराना—(आदद्यात्) स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि मनु० २।२३८, —कुलीन (वि०) नीच जाति में उत्पन्न,—कृत् (पुं०) दुष्टपुरुष, —कृतम्,—कृतिः (स्त्री०) पाप दुष्कृत्य उभे सुकृतदुष्कृते—भग० २।५० —क्रम (वि०) क्रमहीन, अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित, —चर (वि०) 1 जिसका पूरा करना कठिन हो मुश्किल —रघु० ८।७९, कु० ३।६५ 2 अगम्य दुर्गम 3 बुरा करने वाला, दुराचरण करने वाला, (—रः) 1. रीछ 2 द्विकायीय शल्य या सीपी, —चारिन् (वि०) कठोर तपस्या करने वाला, —चरित (वि०) दुष्ट दुराचरण करने वाला, परित्यक्त (तम्) दुराचरण, बुरा चालचलन —चिकित्स्य (वि०) जिसका इलाज करना कठिन हो असाध्य,—च्यवनः इन्द्र का विशेषण, —च्यावः शिव का विशेषण,—तर (वि०) (दुष्टर या दुस्तर) 1. जिसका पार करना कठिन हो—रघु० १।२, मनु० ४।२४२, पंच० १।१११ 2 जिसका दमन करना कठिन हो, अपराजेय अजेय, —तर्कः मिथ्या तर्कना० —पच (दुष्पच) (वि०) जिसका हजम होना कठिन हो,—पतनम् 1 बुरी तरह से गिरना 2 दुर्वचन, अपशब्द —परिग्रह (वि०) जिसका पकड़ना ग्रहण करना या लेना कठिन हो, (—हः) बुरी पत्नी —पूर (वि०) जिसका पूरा करना, या जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो,—प्रकाश (वि०) अप्रसिद्ध अन्धकारमय, धूमिल, —प्रकृति (वि०) बुरे स्वभाव का, नीच प्रकृति का, —प्रज (वि०) बुरी सन्तान वाला,—प्रज्ञ (दुष्प्रज्ञ) (वि०) कमजोर मन का, दुर्बुद्धि —प्रधर्ष,—प्रधृष्य (वि०) जिस पर प्रहार न किया जा सके, दे० 'दुर्धर्ष' —रघु० २।२७, —प्रवादः बदनामी, कलंक, अपकीर्ति, —प्रवृत्तिः (स्त्री०) बुरा समाचार, कुख्याति —रघु० १२।५१, —प्रसह (दुष्प्रसह) (वि०) 1. जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, भयानक 2 असह्य—मालवि० ५ —प्राप, —प्रापण (वि०) अप्राप्य, दुष्प्राप्य —रघु० १।४८, भग० ६।३६, —शकुनम् बुरा शगुन, अपशकुन,—शला धृतराष्ट्र की इकलौती पुत्री जो जयद्रथ को ब्याही गई थी, —शासन (वि०) जिसका प्रबन्ध करना या शासन करना कठिन हो, अविनेय, (—नः) धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक (यह बहादुर योद्धा था, परन्तु दुष्ट और दुर्दान्त। जब युधिष्ठिर द्रौपदी को दांव पर लगा कर हार गया तो दुःशासन

उसकी चोटी पकड़ कर उसे भरी सभा में खींच लाया, वहाँ उसने उसे विवस्त्र करना चाहा, परन्तु दीन दुःखियों के सहायक श्रीकृष्ण ने उसका चीर बढ़ा कर उसकी लज्जा की रक्षा की। दुःशासन के इस जघन्य कृत्य से भीम इतना उत्तेजित हो गया कि उसने भरी सभा में प्रतिज्ञा की 'कि मैं तब तक सुख की नींद न सोऊँगा जब तक इस दुष्ट दुःशासन का खून न पी लूं। महाभारत युद्ध के १६ वें दिन भीम का दुःशासन से सामना हुआ। भीम ने एक ही पछाड़ में दुःशासन का काम तमाम कर दिया और उसका खून पीकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की),—शील (दुश्शील) (वि०) दुष्ट, दुराचारी, बदमाश,—सम (दुःसम या दुस्सम) (वि०) 1 असम, असमान असदृश 2 प्रतिकूल दुर्भाग्यपूर्ण 3 अनिष्टकर अनुचित, बुरा,—समम् (अव्य०) बुरी तरह से दुष्टतापूर्वक,—सत्त्वम् दुष्ट प्राणी,—सन्धान,—सन्धेय (वि०) जिनका मिलना या जिनमें सुलह कराना कठिन हो,—सह (दुस्सह) (वि० असह्य, अप्रतिरोध्य, असमर्थनीय,—साक्षिन् (पुं०) झूठा गवाह,—साध,—साध्य (वि०) 1 जिसका पूरा होना कठिन हो 2. जिसका इलाज करना कठिन हो 3. जिसपर विजय न प्राप्त की जा सके,—स्थ,—स्थित (वि०) ['दुस्थ' या 'दुस्थित' भी लिखा जाता है] 1. दुर्दशाग्रस्त, ग़रीब, दयनीय 2 पीड़ित विषण्ण दुःखी 3 अस्वस्थ, रुग्ण 4 अस्थिर अशान्त 5 मूर्ख बुद्धिहीन, अज्ञानी, (अव्य०—स्थम्) बुरी तरह से अधूरे ढंग से, अपूर्ण रूप से,—स्थिति (स्त्री०) 1 दुर्दशा खिन्नता, दयनीयता 2 अस्थिरता,—स्पृष्टम् (दुस्पृष्टम्) 1. ईषत्स्पर्श या सम्पर्क 2 जिह्वा का ईषत् स्पर्श या प्रयत्न जिससे य्, र्, ल्, तथा व् की ध्वनि निकलती है,—स्मर (वि०) जिसका याद रखना कठिन या पीड़ाकर हो—उत्तर० ६।३४,—स्वप्न बुरा स्वप्न।

दुह् (अदा० उभ०—दोग्धि, दुग्धे, दुग्ध) दोहना निचोड़ना उद्धृत करना (द्विक० के साथ) भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्—कु० १।२ य यो दोग्धि पाषाणं स रामाद्भूतिमाप्नुयात्—भट्टि० ८।८२, यो वत्सेनैव गां दुहन्ति—१२।७३, रघु० ५।३३ 2. किसी वस्तु में से कोई दूसरी चीज निकालना,—(द्विक० के साथ)—आज्ञां दुदुहन्निवात्मानं सार्क पितृवचनवत्—भट्टि० ८।९ 3 छान कर निकाल लेना, लाभ उठाना—दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्—रघु० १।२६ 4 (अपेक्षित पदार्थ) प्रदान करना—कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीम्—उत्तर० ५।३१ 5. उपभोग करना—प्रेर० दोहयति—दुहाना, इच्छा०—दुधुक्षति, दुहने की इच्छा करना—राजन्। दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्—भर्तृ० २।५६।

दुहितृ (स्त्री०) [दुह्+तृच्] बेटी, पुत्री। सम०—पतिः ('दुहितुः पति' भी) जामाता, दामाद।

दू (दिवा० आ० दूयते, दून) 1 कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना खिन्न होना न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मह्यमपराध्यति—शि० २।११ कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् गीत० ८, कष्टग्रस्त, दुःखी—दे० 'दू' (कर्मवा०) 2 पीड़ा देना।

दूत, दूतक [दु+क्त, दीर्घश्च दूत+कन्] सन्देशहर, सन्देशवाहक राजदूत चाण० १०६। सम०—मुख (वि०) राजदूत के द्वारा बात करने वाला।

दूतिका, दूती [दू+ति+कन्+टाप्, दूति+ङीष्] 1 सन्देशवाहिका रहस्य की (गुप्त) बातें जानने वाली 2 प्रेमी और प्रेमिका में बातचीत कराने वाली, कुटनी (विशे० दूती का ती कभी कभी ह्रस्व हो जाता है दे० रघु० १८।५३ १९।१८ कु० ४।१६ और इनके ऊपर मल्लि०)।

दूत्यम् [दूतस्य भावः दूत (ती)+यत्] 1 किसी दूत का नियुक्त करना 2 दूतावास 3 सन्देश।

दून (वि०) [दू+क्त नत्वम्] पीड़ित कष्टग्रस्त—आदि दे० दु और दू के नीचे

दूर (वि०) [दुःखेन ईयते दुर+इण्+रक् धातो लोपः] (म० अ० दवीयस् उ० अ० दविष्ठ) दूरस्थ दूरवर्ती फ़ासले पर दूरस्थित विप्रकृष्ट किं दूरं व्यवसायिनाम् चाण० ७३ न योजनशतं दूरं बाध्यमानस्य तृष्णया हि० १।१४६ ४९, रम्, दूरी फासला। दूर शब्द के अप्रधान कारक के कुछ रूप निम्नलिखित रूप से क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं—(क) दूरम् 1 फ़ासले पर विप्रकृष्ट दूरी पर (अपा० या सब० के साथ) ग्रामात् वा ग्रामस्य दूरम् सिद्धा० 2 ऊपर ऊँचाई पर 3 नीचे गहराई में 4 अत्यन्त अत्यधिक बहुत ज्यादह जैसे दूरमवनम्ने सा० द० 5 पूर्णरूप से पूरीतरह से,—निमग्ना दूरमम्भसि—कथा० १०।२९, दूरमुद्धृतलापा—मेघ० ५५ (ख) दूरेण 1 दूर दूरवर्ती स्थान से, दूर से,—छलकापटयदोषेण दूरेणैव विसृज्यते—भामि० १।७८ 2 कहीं अधिक अत्यधिक ऊँचाई पर—दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय—भग० २।४९, रघु० १०।३० अभे० पा० (ग) दूरात् 1 फ़ासले से, दूरी से,—प्रत्यासन्नौ पक्षकुस्य दूरादभ्यर्थनं वरम्, दूरागत—दूर से आया हुआ (यह समस्त पद समझा जाता है)—मदीयमभिगम्य दूरात्परित्यक्ष्यताम्—भर्तृ० १।८१, रघु० १।६१ 2. सूक्ष्म दृष्टि से 3 सुदूर पूर्व काल से (घ) दूरे, दूर, फ़ासले पर, दूरवर्ती स्थान पर—न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्—श० १।९, यो ऽवधिम् शिरसि वयमतिदूरे तत्प्रतीकारः—मुद्रा०

१, मनु० १।८८, दूरीकृ—1 फासले पर हटा देना, हटाना, दूर करना, —आश्रमे दूरीकृतश्रमे – दश० ५, भामि० १।१२२ 2 वंचित करना, अलग करना —मृच्छ० ९।४ 3 रोकना, परे करना 4 आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ जाना, दूर रखना श० १।१९ इसी प्रकार दूरीभू दूर रहना, परे रहना, अलग रहना, फ़ासले पर रहना दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्। सम० अन्तरित (वि०) लम्बी दूरी होने से वियुक्त —आपातः दूर से निशाना लगाना —आपातिन् (वि०) दूर तक कूदने वाला, लम्बी छलांग लगाने वाला —आरूढ (वि०) 1 ऊँचाई पर चढ़ा हुआ, दूर तक आगे बढ़ा हुआ 2 गहरा, उग्र —दूरारूढः खलु प्रणयोऽसहनः विक्रम० ४ —ईरितेक्षण (वि०) भेंगी दृष्टि वाला —गत (वि०) दूर हटा हुआ —दूरस्थ दूर गया हुआ, आगे तक बढ़ा हुआ, गहराई [illegible] —दूरस्थ [illegible] —दर्शन [illegible] गृध्र —दर्शिन् (वि०) दूर तक देखने वाला [illegible] दूरदर्शी, बुद्धिमान (पुं०) 1 गिद्ध 2 विद्वान् पुरुष 3 द्रष्टा, पैगम्बर, ऋषि —दृष्टि दूर तक देखने की शक्ति 2 बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता —पात 1 दूर से गिरना 2 दूर का [illegible] 3 बहुत ऊँचाई से गिरना —पात्र (वि०) विस्तृत पाट वाला [illegible] —पार (वि०) 1 बहुत चौड़ा (दरिया) 2 जो कठिनाई से पार किया जा सके —बन्धु (वि०) [illegible] तथा अन्य भाई बन्धुओं से निर्वासित मेघ० ६ —भाज् (वि०), दूरवर्ती, [illegible] विद्यमान —भिन्न (वि०) दूरी पर विद्यमान, दूर हटाया हुआ, दूर फ़ासले पर, —वस्त्रक (वि०) नंगा —विलम्बिन् (वि०) नीचे दूर तक लटकने वाला —वेधिन् (वि०) दूर से ही बींधने वाला —संस्थ (वि०) दूर [illegible] फ़ासले पर, दूरवर्ती कण्ठादेलग्नप्रणयिनि [illegible] पुनर्दूरसंस्थे मेघ० ३।

दूरतः (अव्य०) [दूर + तस्] 1 दूर से फ़ासले से [illegible] दूरतस्त्यजेत् पंच० ५।६९ वहति च [illegible] विमुञ्चति दूरतः गीत० ७ 2 दूर फ़ासले पर — पंच० १।९।

दूरेत्य (वि०) [दूरे भव: दूर + एत्य] दूरी पर मौजूद दूर से आया हुआ।

दूर्यम् [दूरे उत्सार्यम्, दूर + यत्] विष्ठा, मैला।

दूर्वा [दुर्व् + अ + टाप्, दीर्घ] भूमि पर फैलने वाली एक घास, दूब (यह घास देव पूजा के लिए पवित्र समझी जाती है)। सम०— अङ्कुर दूब के कोमल पत्ते —विक्रम० ३।१२।

दूलिका, दूली [दूली + कन् + टाप्, ह्रस्व:, दूर + अच् + ङीष्, रस्य ल:] नील का पौधा।

दूष (वि०) [दुष् + णिच् + अच्] (समासान्त में प्रयुक्त) दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला—उदा० 'पङ्क्तिदूष'।

दूषक (वि०) (स्त्री०—षिका) [दुष् + णिच् + ण्वुल्] 1 भ्रष्टाचार करने वाला, अपवित्र करने वाला, विचारने करने वाला, दूषित करने वाला, बिगाड़ने वाला 2 उल्लंघन करने वाला, अवज्ञा करने वाला, गुमराह करने वाला 3 अपराध करने वाला, अतिक्रमण करने वाला, अपराधी 4 प्रकृति बिगाड़ने वाला 5 पापी, दुष्कृत [illegible] कुपथ पर चलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला, बदनाम या दुष्ट [illegible]

दूषणम् [दुष् + णिच् + ल्युट्] 1 बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, विचारने करना, बर्बाद करना, अपवित्र करना आदि 2. उल्लंघन करना, तोड़ना (समझौता आदि) 3 पथभ्रष्ट करना, बलात्कार करना, सतीत्व नष्ट करना 4 गाली देना, निन्दा करना, कलंकित करना रघु० १२।४९ 5 बदनामी, अप्रतिष्ठा 6 विपरीत आलोचना, आक्षेप 7 निराकरण 8 दोष, अपराध, त्रुटि, पाप [illegible] [illegible]वलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् भर्तृ० २।९३ हा हा धिक् परगृहवासदूषणम्—उत्तर० १।४० मनु० ७।२१ हि० १९८, १९५, २।१८० [illegible] एक राक्षस, रावण की सेना का एक नायक जिसे भगवान् राम ने मार गिराया था। सम० —अरि राम का विशेषण —आवह (वि०) कलङ्क में किसी को फँसाने वाला

दूषिः, —षी (स्त्री०) [दुष् + णिच् + इन्, दूषि + ङीष्] छीड़, आँख का कीचड़

दूषिका [दूषि + कन् + टाप्] 1 लेखनी, चित्रकार की कूँची 2 एक प्रकार का चावल 3 छीड़, आँखों का कीचड़।

दूषित (भू० क० कृ०) [दुष् + णिच् + क्त] 1 भ्रष्ट, दूषित, विकृत 2 क्षतिग्रस्त, अभिग्रस्त 3 अपहृत, हतोत्साहित 4 कलंकित, बदनाम 5 मिथ्यादोषारोपित, बदनाम, निन्दित।

दूष्य (वि०) [दुष् + णिच् + यत्] 1 भ्रष्ट होने के योग्य 2 गर्हणीय, दण्डनीय, दूषणीय —ष्यम् 1 मवाद, राद 2 विष 3 कपास 4 पोशाक, वस्त्र 5 तम्बू शि० १२।६५ —ष्या हाथी का चमड़े का तंग।

दृ (तुदा० आ० द्रियते, दृत —इच्छा० दिदरिषते) (इसका स्वतन्त्र प्रयोग विरल है—प्रायः आ उपसर्ग लगा कर प्रयुक्त होता है) आदर करना, सम्मान करना, पूजा करना, प्रतिष्ठा करना—द्वितीयाद्रियते सदा —हि० प्र० ७, मुद्रा० ७।३, भट्टि० ९।५५ 2. रखवाली करना, मन लगाना (प्रायः —'न' के साथ) 3 अपने आप को अच्छी तरह लगाना, यत्न करना,

ध्यान रखना—भूरि श्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते—मा० १।५ 4. इच्छा करना।

दृंह् i (भ्वा० पर०—दृंहति, दृंहित) 1. पुष्ट करना, 2. समर्थन करना।
ii (भ्वा० आ०) 1. दृढ होना 2. विकसित होना या बढ़ना।

दृंहित (भू० क० कृ०) [दृह् + क्त] 1 पुष्ट किया गया समर्थित, 2. विकसित, वर्धित।

दृकम् [दृ + कक्] छिद्र, सूराख।

दृढ (वि०) [दृह् + क्त] 1 स्थिर, दृढ, मजबूत, अचल, अटल—भग० १५।३, कि० १।१५, रघु० १४।३८ 2. ठोस, पिण्डाकार 3. संपुष्ट, स्थापित 4. स्थिर, धैर्यशाली—भग० ७।२८ 5. दृढता पूर्वक बाँधा हुआ, कस कर बन्द किया हुआ 6. सुरक्षित 7. घना हुआ, घनिष्ठ, सघन 8. मजबूत, बहुत, बड़ा, अत्यधिक, ताकतवर, कठोर, शक्तिशाली—तस्मात् करिष्यामि दृढानुतापम्—कु० ३।८, रघु० ११।४६ 9. कड़ा 10. (धनुष की भांति) झुकाने या तानने में कठिन 11. टिकाऊ 12. विश्वासपात्र 13. निश्चित, अचूक, —ढम् 1. लोहा 2. दृढ, स्थिर 3. अधिकता, बहुतायत, ऊँचा दर्जा, —ढम् (अव्य०) 1. दृढतापूर्वक, कस कर 2. अत्यधिक, अत्यन्त, बेहद से 3. पूरी तरह से। सम० —अङ्ग (वि०) मजबूत अंगों वाला, हृष्टपुष्ट (—गम्) हीरा—आयुध (वि०) मजबूत हथियार रखने वाला, —कण्टकः —अग्निः ?, —ग्राहिन् (वि०) मजबूती से पकड़ने वाला अर्थात् लक्ष्य के पीछे पड़ने वाला, —दंशकः मगरमच्छ, —द्वार (वि०) बिल्कुल सुरक्षित दरवाजों वाला, —धनः बुद्ध का विशेषण —धन्वन्, —धन्विन् (पुं०) अच्छा धनुर्धारी, —निश्चय (वि०) 1. दृढ संकल्प वाला, अविचल, अटल 2. पुष्ट, —नीरः, —फलः नारियल का पेड़, —प्रतिज्ञ (वि०) प्रण का पक्का, बात का धनी, प्रतिज्ञा का निर्वाह, —प्ररोहः गूलर का पेड़, —प्रहारिन् (वि०) 1. कड़ा प्रहार करने वाला 2. कस कर मारने वाला, अचूक लक्ष्यवेध करने वाला, —भक्ति (वि०) निष्ठावान्, श्रद्धालु, —मति (वि०) कृतसंकल्प, स्थिरबुद्धि, अडिग, —मुष्टि (वि०) बन्दमुट्ठी वाला, कृपण, कंजूस, (—ष्टिः) तलवार, —मूलः नारियल का पेड़, —लोमन् (पुं०) जंगली सूअर, —वैरिन् (पुं०) निर्दय शत्रु, निष्करुण दुश्मन, —व्रत (वि०) 1. धर्म साधना में अटल 2. अविचल भक्त 3. धैर्यवान्, आग्रही, —सन्धि (वि०) 1. कस कर जुड़ा हुआ, सघनता पूर्वक मिला हुआ 2. सघन, संहत 3. डटा हुआ, —सौहृद (वि०) अटल मित्रता वाला।

दृतिः (पुं० स्त्री०) [दृ + ति, ह्रस्वः] मशक,—मनु० २।९९, याज्ञ० ३।२६८ 2. मछली 3. खाल, चमड़ा 4. धौंकनी। सम०—हरिः कुत्ता।

दृन्फूः (स्त्री०) [दृम्फ् + कू नि०] साँप, वज्र।

दृन्भूः [दृम्भ् + कू नि०] 1 इन्द्र का वज्र 2. सूर्य 3. राजा यम, मृत्यु का देवता, अन्तक।

दृप् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—दर्पति, दर्पयति—ते) प्रकाशित करना, प्रज्वलित करना, सुलगाना।
ii (दिवा० पर०—दृप्यति, दृप्त) 1. घमण्ड करना, अहंकार करना, ढीठ होना,—स किल नात्मना दृप्यति—उत्तर०, दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदाम्—गीत० ९ 2. अत्यन्त प्रसन्न होना, 3. असभ्य या दुर्दान्त होना।

दृप्त (वि०) [दृप् + क्त] 1 घमण्डी, अहंकारी 2. मदोन्मत्त असभ्य, पागल।

दृप्र (वि०) [दृप् + रक्] घमण्डी, अहंकारी, बलवान् शक्तिशाली।

दृश् (भ्वा० पर०—पश्यति, दृष्ट) 1 देखना, नजर डालना, अवलोकन करना, समीक्षा करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना—प्रपश्यसि भानुजायाम्—मेघ० १।१०, १९, रघु० ३।४२ 2 निरीक्षण करना, सम्मान करना, विचार करना—आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः—बाण० ५ 3 दर्शन करना, प्रतीक्षा करना, दर्शनार्थ जाना—प्रत्युद्ययौ मुनिं द्रष्टुं ब्रह्माणमिव वासवः—रामा० 4. मन से दृष्टिगोचर करना, सीखना, जानना, समझना—मनु० १।११०, १२।२३ 5. निरीक्षण करना, खोज करना 6. ढूँढना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, निश्चय करना—याज्ञ० ११३२७, २।३०५ 7. अन्तर्ज्ञान की दिव्य दृष्टि से देखना—ऋषि-र्दर्शनात्स्तोमान् ददर्श—नि० 8. विवश होकर देखते रहना—कर्मवा० दृश्यते 1. दिखलाई देना, दृष्टिगोचर होना, दर्शनीय होना, प्रकट होना—तव तन्वाङ्ग वपुर्न दृश्यते—कु० ४।११ १, रघु० ३।४०, भट्टि० ३।१९, मेघ० ११२ 2. प्रतीत होना, दृश्यमान होना, दिखाई देना, मालूम होना—रघु० १।३४ 3. मिलना, दिखाई देना, घटित होना (पुस्तक आदि में)—द्वितीयाद्येविवा-न्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते—सिद्धा०—इति प्रयोगो भाष्ये दृश्यते 4. ख्याल किया जाना, माना जाना,—आत्मा-न्यप्रतिपत्तिपूर्वकमिदं दारेषु दृश्या त्वया—श० ४।१९, प्रेर०—दर्शयति—ते 1. किसी को (कर्म०, संप्र० या संब०) कोई चीज (कर्म०) देखने के लिए प्रेरित करना, दिखलाना, संकेत करना—दर्शय तं चौरसिंहम्—पंच० १, दर्शयति भक्तान् हरिम्—सिद्धा० प्रत्य-भिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्कृती—रघु० १२।६४, ११।४७, १३।२४, मनु० ४।५७ 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना,—भट्टि० १५।१२ 3. दिखलाना, प्रदर्शन

करना, दर्शनीय बनना—तदेव मे दर्शय देव रूपम् —भग० ११।४५ 4 (न्यायालय आदि में) प्रस्तुत करना -मनु० ८।१५८ 5 (साक्षी के रूप में) उपस्थित करना अत्र श्रुतिं दर्शयति 6 (आ०) अपने आप को दिखलाना, प्रकट होना, अपनी कोई वस्तु दिखलाना भवो भक्तान् दर्शयते सिद्धा० (अर्थात् स्वयमेव), स्वा गृहेऽपि वनिता कथमास्य ह्रीनिमीलि खलु दर्शयिताहे नै० ५।७१, स सन्तत दर्शयते गतस्मयं कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम् कि० १।१० इच्छा० दिदृक्षते देखने की इच्छा करना अनु— मार्गदृश्य के रूप में देखना प्रेर० 1 दिखलाना प्रदर्शन करना 2 स्पष्ट करना, व्याख्या करना आ , प्रेर० दिखलाना, संकेत करना—उत्कण्ठादर्शितपथ वल्मिकाभिमुखा ययौ रघु० ४।२८ उत , प्रत्याशा करना, मुँह ... आगे की देखना मनचाहा भाव देखना उत्पश्यत सिंहनिपातमुग्रम् रघु० २।६० उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासो: कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते—मेघ० २२ उप—, देखना अवलोकन करना—प्रेर० सामने रखना, समाचार देना परीक्षण करना राज्ञः पुरा मामुपदर्शय हि० ३, नयविद्भिर्नवे राज्ञि सदसच्चोपदर्शितम् रघु० ४। १०, नि , प्रेर० 1 दिखलाना संकेत करना—रघु० ६।३१ 2 सिद्ध करना करके दिखलाना 3 विचार करना, बातचीत करना चर्चा करना (जैसे पुस्तकादिक में) 4 अध्यापन करना 5 उदाहरण देकर समझाना दे० निदर्शना प्र—, प्रेर० 1 दिखलाना संकेत करना भाव लेना, प्रदर्शित करना 2 सिद्ध करना, करके दिखलाना, सम् , 1 देखना, अवलोकन करना—भट्टि० १६।१९ 2 भलीभाँति देखना, समीक्षा करना—प्रेर० दिखलाना प्रदर्शित करना, खोज निकालना—आत्मानं मृतवत्संदर्श्य हि० ?, भट्टि० ४।३३ मालवि० ४।१९।

दृश् (वि०) [दृश् + क्विप्] (समासान्त में) 1 देखने वाला, अवीक्षण करने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा करने वाला 2 विवेचन करने वाला जानने वाला 3 (के समान) दिखलाई देने वाला, प्रतीत होने वाला (स्त्री०) 1 देखना, समीक्षा, दृष्टिगोचर करना 2 आँख, दृष्टि- मदर्थे दृशामुदकमाददाम् रघु० ११। १९ 3 ज्ञान 4 'दो' की संख्या 5 ग्रहदशा। सम० —**अध्यक्षः** सूर्य, —**कर्णः** साँप —**क्षयः** दृष्टि की क्षीणता या हानि, धुंधला दिखाई देना। गोचर दृष्टि परास —**जलम्** आँसू, **क्षेपः** ज्या पराकोटि की दूरी की लम्बरेखा, **पथः** दृष्टिपरास, **पातः** दृष्टि, झलक, - **प्रिया** सौन्दर्य, प्रभा, **भक्तिः** (स्त्री०) प्रेमदृष्टि, अनुरागभरी चितवन,- **लम्बनम्** ऊर्ध्वाधर दिग्भेद, —**विषः** साँप,—**श्रुतिः** सर्प, साँप।

दृशद् (स्त्री०) [दृषद्, पृषो०] पत्थर, दे० दृषद्।

दृशा [दृश् + टाप्] आँख। सम०—**आकांक्ष्यम्**—कमल, अथवा श्वेत कमल।

दृशानः [दृश् + आनच्] 1 आध्यात्मिक गुरु 2. ब्राह्मण 3 लोकपाल —**नम्** प्रकाश, उजाला।

दृशिः, - **शी** (स्त्री०) [दृश् + इन, दृशि + ङीष्] 1 आँख शास्त्र।

दृश्य (सं० कृ०) 1 देखे जाने योग्य, दर्शनीय 2 देखने के 3 सुन्दर, दृष्टिसुखद प्रिय—रघु० ६।३१ कु० ७।६४, श्यम् दिखाई देने वाला पदार्थ -मार्कण्डे० १।९।

दृश्वन् (वि०) [दृश् + क्वनिप्] (समासान्त में) 1 देखने वाला, दृष्टिगोचर करने वाला 2 (आल०) परिचित, जानकार जैसा कि ... दृश्वा रघु० ५।२४ तथा 'वचानां पारदृश्वन् १।२३ में।

दृषद् (स्त्री०) [दृ + अदि धुक्, ह्रस्वश्च] 1 चट्टान, बड़ा पत्थर—मेघ० ५४ रघु० ४।३४ भर्तृ० १।३८ 2 चक्की का पत्थर शिला (जिस पर मसाला आदि पीसा जाय)। —**उपलः**, मसाला आदि पीसने के लिए सिल—(**दृषदिमाषक** ... से लिया जाने वाला कर)।

दृषद्वत् (वि०) [दृषद् + वत्] पथरीला, चट्टान से बना हुआ —**ती** एक नदी का नाम जो आर्यावर्त की पूर्वी सीमा बनाती है तथा सरस्वती नदी में मिलती है। तु० मनु० २।१७।

दृष्ट (भू० क० कृ०) [दृश् + क्त] 1 देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ, दृष्टिगोचर किया हुआ, पर्यवेक्षित निहारा हुआ 2. दर्शनीय, पर्यवेक्षणीय 3 माना गया, ख्याल किया गया 4 ... होने वाला, मिला हुआ 5 प्रकट होने वाला ... 6 जाना हुआ, मालूम किया हुआ 7 निर्धारित निर्णीत, निश्चित 8 वैध 9 नियत किया गया. दे० दृश् —**ष्टम्** डाकुओं से डर। सम० **अन्तः**,—**न्तः** 1 उदाहरण, निदर्शन, दृष्टांत-कथा—पूर्णश्चन्द्रोदयाकांक्षी दृष्टान्तोऽत्र महार्णवः शि० २।३१ 2 (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें कोई उक्ति उदाहरण देकर समझाई जाय (उपमा और प्रतिवस्तूपमा से भिन्न- दे० काव्य० १०, और रस०) 3 शास्त्र या विज्ञान 4 मृत्यु (तु० दृष्टांत) —**अर्थ** (वि०) 1 जिसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट तथा व्यक्त हो 2 व्यावहारिक, -**कष्ट**,—**दुःख** जिसने मुसीबत झेली हो, कष्ट सहन करने का अभ्यस्त हो गया हो **कूटम्** पहेली, गूढ प्रश्न—**दोष** (वि०) 1 जिसमें दोष देखा गया हो, जिसे अपराधी समझा गया हो 2 दुर्व्यसनी 3 जिसका भंडाफोड़ हो गया हो, जिसका पता लगा लिया गया हो,—**प्रत्यय** (वि०) 1 विश्वास रखने वाला 2. विश्वस्त —**रजस्** (स्त्री०)

वह कन्या जो रजस्वला हो गई हो,—आदिनव (वि०) 1 जिसने कष्ट और मुसीबतें झेली हों 2 जो आने वाले अनिष्ट का पहले ही से भाप लेता है।

दृष्टिः (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1 देखना, समीक्षण 2 मन की आँख से देखना 3 जानना, ज्ञान 4 आँख, देखने की शक्ति नजर केनेदानीं दृष्टं विलोभयामि —विक्रम० २, चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि—श० १।२४, —दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा उत्तर० ६।१९, रघु० ७।८, श० ४।२ देव दृष्टिप्रसादं कुरु हि० १ 5 नजर, चितवन 6 विचार, भाव शुद्धदृष्टिरसा का० १७३ एतां दृष्टिमवष्टभ्य—भग० १६।९ 7 विचार आदर 8 बुद्धि बुद्धिमत्ता ज्ञान। सम० —कृत—कृतम् स्थलपद्म कुमुद, —क्षेप, निगाह डालना अवलोकन करना —गुण तीर का निशाना चाँदमारी लक्ष्य, —गोचर (वि०) दृष्टि-परास के अन्तर्गत जो दिखाई दे दृश्य —पथ —दृष्टि-परास —पात 1 निहारना, निगाह डालना— मार्गे मृगप्रेक्षिणि दृष्टिपातं कुरुष्व रघु० १३।१८ भर्तृ० १।११ ९४ ३।६६ 2 देखने की क्रिया, आँख का कार्य—रज कर्णोविच्छिन्नदृष्टिपाता —कु० २।३१ (मल्लि० पात का अर्थ प्रभा दर्शाते हैं जो हमारी समझ में अनावश्यक है) —पूत (वि०) दृष्टिमात्र से पवित्र किया हुआ अर्थात् देख लिया कि किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं है, दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम् —मनु० ६।४६ —बन्धु जुगनू —विक्षेप कनखियों से देखना, कटाक्ष, तिरछी नजर —विभ्रम नेत्र-विभ्रम —विभ्रम अनुराग भरी दृष्टि, हाव-भाव से युक्त नजर, —विष साँप।

दृह्, दृंह्, (भ्वा० पर० दृंहति दृंहति) 1 स्थिर या दृढ़ होना 2 विकसित होना बढ़ना 3 समृद्ध होना 4. कसना।

दॄ (दिवा० क्र्या० पर०—दीर्यति दृणाति दीर्ण) 1 फट जाना टूट जाना टुकड़े २ होना 2 फाड़ना, चीरना, विभक्त करना विदीर्ण करना खण्ड २ करना, टुकड़े २ करना। कर्मवा० दीर्यते 1 फटना टूटना खण्ड २ होना,—कथमेवं प्रलपतां व सहस्रधा न दीर्णमनया जिह्वया—वेणी० ३ 2 अलग करना, प्रेर०—द —रयति—ते 1 टुकड़े २ करना, चीर डालना खोदकर विभक्त करना 2 तितर-बितर करना, बखेरना, वि, टुकड़े २ करना, फाड़ डालना, विभक्त करना, काट कर टुकड़े २ करना—ऐन्द्रि किल नखैस्तस्या विददार स्तनौ द्विज —रघु० १२।२२, न विदीर्णे कठिना खलु स्त्रियः कु० ४।५, रघु० १४।३३ 2 फाड़ना (आल०)—यस्य विदारयति कस्य न कोविदार —ऋतु० ३।६, भग० १।१९, (अव, आ तथा प्र आदि उपसर्ग लगने पर धातु का अर्थ नहीं बदलता है)।

दे (भ्वा० आ० दयते, दात—इच्छा० दित्सते) रक्षा करना, पालना, पोसना।

देदीप्यमान (वि०) [दीप्+यङ+शानच्] अत्यन्त चमकने वाला, ज्योतिष्मान्, जगमगाता हुआ।

देय (वि०) [दा+यत्] 1 दिये जाने के लिए, उपहृत किये जाने के लिए रघु० ३।१६ 2 दिये जाने के योग्य, भेंट के लिए उपयुक्त 3 वस्तु जो वापिस करने के लिए है विभावितैकदेशेन देयं यदभियुज्यते—विक्र मार्क० ४।१७, मनु० ८।१३९, १८९।

देव् (भ्वा० आ०—देवते) 1 क्रीडा करना खेलना, जूआ खेलना 2 विलाप करना 3 चमकना, परि—, विलाप करना, शोक मनाना।

देव (वि०) (स्त्री० वी) [दिव्+अच्] दिव्य, स्वर्गीय —भग० ९।२१, मनु० १२।११७ —वः 1 देव, देवता एको देवः केशवो वा शिवो वा भर्तृ० ३।१२० 2 वर्षा का देवता इन्द्र का विशेषण यथा 'द्वादश वर्षाणि देवो न ववर्ष' में 3 दिव्य पुरुष, ब्राह्मण 4. राजा शासक जैसा कि मनुष्यदेव' में 5 ब्राह्मणों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि जैसा कि गोविन्द देव पुरुषोत्तमदेव में 6 (नाटकों में) राजा को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि —ततश्च देव वेणी० ४ यथाज्ञापयति देव आदि 7 (समासान्त में) अपने देवता के रूप में— यथा मातृ°, पितृ°। सम०—अंश भगवान् का अंशावतार —अगार,—रम् मन्दिर, —अङ्गना स्वर्गीय देवी, अप्सरा —अतिदेव, अधिदेव 1 उच्चतम देवता 2 शिव का विशेषण —अधिपः इन्द्र का विशेषण —अंधस् (नपुं०) अन्नम् 1 देवताओं का आहार, दिव्य भोजन, अमृत 2. वह भोजन जो पहले भगवान् की मूर्ति के आगे प्रस्तुत किया गया है —दे० मनु० ५।७ तथा इस पर कुल्लू० भाष्य —अभीष्ट (वि०) 1. देवताओं को प्रिय 2. देवता पर चढ़ाया हुआ, (—ष्टा) ताम्बूली, पान सुपारी, —अरण्यम् बाग रघु० १०।८०,—अरिः राक्षस —अर्चनम्, —ना देवपूजा,—अलयः मन्दिर, —अश्वः उच्चैःश्रवा का विशेषण, इन्द्र का घोड़ा, —आक्रीडः देवोद्यान, नन्दन वन,— आजीवः, आजीविन् (पुं०) 1. भगवान् की मूर्ति का सेवक 2. एक नीचकोटि का ब्राह्मण जो मूर्ति की सेवा द्वारा, तथा मूर्ति पर आये हुए चढ़ावे से अपना जीवन-निर्वाह करता है, —आत्मन् (पुं०) गूलर का वृक्ष—,आयतनम् मन्दिर —मनु० ४।४६, —आयुधम् 1. दिव्य हथियार 2. इन्द्रधनुष,—आलयः 1 स्वर्ग 2 मन्दिर,—आवासः 1. स्वर्ग 2. अश्वत्थवृक्ष 3. मन्दिर 4. सुमेरु पहाड़, —आहारः अमृत, पीयूष,—इज् (वि०) (कर्तृ० ए० व० देवेट्, ड्) देवताओं की पूजा करने वाला,— इज्यः

देवगुरु बृहस्पति का विशेषण,—**इज्यः**,—**ईशः** 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—**उद्यानम्** 1. दिव्य बाग 2. नन्दन वन 3. मन्दिर का निकटवर्ती बाग, —**ऋषिः** (देवर्षि) 1. सन्त जिसने देवत्व प्राप्त कर लिया है, दिव्य ऋषि, यथा, अत्रि, भृगु, पुलस्त्य, अंगिरस आदि —एवं वादिनि देवर्षौ —कु० ६।८४ (अर्थात् अंगिरस्) 2. नारद का विशेषण—भग० १०।१३, २६, —**ओकस्** (नपुं०) सुमेरु पर्वत,—**कन्या** स्वर्गीय देवी, अप्सरा,—**कर्मन्** (नपुं०) **कार्यम्** 1. धार्मिक कृत्य या संस्कार 2. देवों की पूजा,—**काष्ठम्** देवदारु का वृक्ष,—**कुसुम** प्राकृतिक झरना,—**कुलम्** 1. मन्दिर 2. देवों का समूह,—**कुल्या** स्वर्गीय गंगा,—**कुसुमम्** लौंग, —**खातम्**,—**खातकम्** 1 पर्वतों में बनी एक प्राकृतिक गुफा 2 एक प्राकृतिक तालाब या जलाशय मनु० ४।२०३ [illegible] निकटवर्ती तालाब,—**बिलम्** एक गुफा, कन्दरा,—**गणः** देवों की एक श्रेणी,—**गणिका** अप्सरा,—**गर्जनम्** बादल की गड़गड़ाहट,—**गायनः** स्वर्गीय गायक गन्धर्व,—**गिरिः** एक पहाड़ का नाम—मेघ० ४२,—**गुरुः** 1. (देवों के पिता) कश्यप का विशेषण 2. (देवों के गुरु) बृहस्पति का विशेषण,—**गुही** सरस्वती या उसके किनारे पर स्थित स्थान का विशेषण —**गृहम्** 1 मन्दिर 2 राज-प्रासाद,—**चर्या** देवों की पूजा या सेवा,—**चिकित्सकौ** (द्वि० व०) देवों के वैद्य अश्विनीकुमार,—**छन्दः** १०० लड़ की मोतियों की माला,—**तरुः** 1 गूलर का वृक्ष 2 स्वर्गीय वृक्षों (मंदार, पारिजात, सन्तान, कल्प और हरिचन्दन) में से एक, —**ताडः** 1 आग 2. राहु का विशेषण,—**दत्तः** 1 अर्जुन के शंख का नाम भग० १।१५ 2 कोई व्यक्ति (अनिश्चित रूप से किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त) देवदत्तः पचति पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते आदि, —**दारु** (पुं०, नपुं०) देवदारु की जाति का पेड़—कु० १।५४, रघु० २।३६,—**दासः** मन्दिर का सेवक (—**सी**) 1. मन्दिर या देवों की सेविका 2. वेश्या (जिसे मन्दिर में नाचने के लिए लगाया गया हो),—**दीपः** आँख, —**दूतः** दिव्य सन्देशवाहक, देवदूत,—**दुन्दुभिः** 1. दिव्य ढोल 2. लाल फूलों वाला तुलसी का पौधा,—**देवः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. शिव—कु० १।५२ 3 विष्णु, —**द्रोणी** देवमूर्ति का जलूस,—**धर्मः** धार्मिक कर्तव्य या पद,—**नदी** 1 गंगा 2. कोई भी पावन नदी—मनु० २।१७,—**नन्दिन्** (पुं०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम, —**नागरी** एक लिपि का नाम जिसमें प्रायः संस्कृत भाषा लिखी जाती है,—**निकायः** देवावास, स्वर्ग, —**निन्दकः** देवताओं की निन्दा करने वाला, नास्तिक, —**निर्मित** (वि०) देवता द्वारा रचित, प्राकृतिक, —**पतिः** इन्द्र का विशेषण,—**पथः** 1. स्वर्गीय मार्ग आकाश, अन्तरिक्ष 2. छायापथ,—**पशुः** देवता के नाम पर स्वच्छन्द छोड़ा हुआ पशु,—**पुर**, —**पुरी** (स्त्री०) अमरावती का विशेषण, इन्द्र की नगरी,—**पूज्यः** बृहस्पति का विशेषण,—**प्रतिकृतिः** (स्त्री०),—**प्रतिमा** देवमूर्ति, देवता की प्रतिमा,—**प्रश्नः** ग्रहादिसम्बन्धी जिज्ञासा, भविष्य सम्बन्धी प्रश्न, भविष्य की बातें बतलाना, —**प्रिय**, देवों का प्रिय, शिव का विशेषण (**देवानांप्रियः**) एक अनियमित समास, इसका अर्थ है 1. बकरा 2. मूर्ख, (पशु की भांति जड़—यैसाकि तेऽप्यतात्पर्यज्ञा देवानां प्रिया:' काव्य०)—**बलिः** देवताओं को दी जाने वाली आहुति,—**ब्रह्मन्** (पुं०) नारद का विशेषण,—**ब्राह्मणः** 1 वह ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मन्दिर से प्राप्त आय से कर लेता है 2 आदरणीय ब्राह्मण,—**भवनम्** 1 स्वर्ग 2 मन्दिर 3 पीपल का वृक्ष,—**भूमिः** (स्त्री०) स्वर्ग,—**भूति** (स्त्री०) गंगा का विशेषण,—**भूयम्** देवत्व दिव्यप्रकृति,—**भृत** (पुं०) 1 विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण,—**मणिः** 1 विष्णु की मणि, कौस्तुभ 2. सूर्य,—**मातृक** (वि०) वृष्टि के देवता अर्थात् बादल ही जिसकी प्रतिपालिका माता हो जिसे केवल वर्षा का जल ही लभ्य हो जो सिंचाई को छोड़कर केवल वर्षा के जल पर ही निर्भर हो, (वह देश) जो और प्रकार की जलव्यवस्था से वंचित हो—देशो नद्यम्बुवृष्टयम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः, स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्—अमर०, तु०—वितन्वति क्षेममदेवमातृका (अर्थात् नदीमातृका) चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते —कि० १।१७,—**मानकः** विष्णु की मणि जिसे कौस्तुभ कहते हैं,—**मुनिः** दिव्य ऋषि,—**यजनम्** यज्ञभूमि, यज्ञस्थली—देवयजनसंभवे सीते—उत्तर० ४,—**याजिन्** (वि०) देवताओं को आहुति देने वाला,—**यज्ञः** वह हवन जिसमें वरिष्ठ देवताओं के निमित्त अग्नि में आहुति दी जाती है, (गृहस्थों के पाँच नैत्यिक यज्ञों में से एक—मनु० ३।८१ ८५ —दे० पंचयज्ञ),—**यात्रा** किसी देवप्रतिमा का जलूस, या सवारी निकालने का उत्सव,—**यानम्**, —**रथः** दिव्यरथ,—**युगम्** चार युगों में से एक, कृतयुग, सतयुग,—**योनि** अतिमानव प्राणी, उपदेव 2. दिव्य उत्पत्ति वाला,—**योषा** अप्सरा,—**रहस्यम्** दैवी रहस्य या रहस्य—**राज्**,—**राजः** इन्द्र का विशेषण,—**लता** नवमल्लिका लता, सेवती—**लिङ्गम्** देवता की मूर्ति या प्रतिमा,—**लोकः** स्वर्गलोक, दिव्य-लोक मनु० ४।१८२, —**वक्त्रम्** आग का विशेषण,—**वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश, —**वर्धकिः**,—**शिल्पिन्** (पुं०) विश्वकर्मा, देवताओं का शिल्पी,—**वाणी** दिव्य वाणी, आकाशवाणी,—**वाहनः** अग्नि का विशेषण,—**व्रतम्** धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक व्रत (तः) 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,—**शत्रुः** राक्षस,—**शुनी** देवों की कुतिया सरमा

का विशेषण,—**शेषम्** देवनिमित्त किये गये यज्ञ का बचा हुआ अंश —**सुतः** 1 विष्णु का विशेषण 2. नारद का विशेषण 3. पावन शास्त्र 4 देव —**सभा** 1 देवताओं की सभा, सुधर्मा 2. जुए का घर —**सभ्य** 1. जुआरी 2 जुआघरों में प्रायः जाने वाला 3 देवसेवक —**सायुज्यम्** किसी देवता से मिलकर एक हो जाना, देवसमायोजन, देवत्वप्राप्ति —**सेना** 1 देवों की सेना 2. स्कन्द की पत्नी,—स्कन्देन साक्षादिव देवसेनाम् रघु० ७।१ (मल्लि०—देवसेना —स्कन्दपत्नी सम्भवत यहाँ देवों की सेना का ही मूर्त रूप में वर्णन है) —**पतिः** कार्तिकेय का विशेषण —**स्वम्** देवों की संपत्ति (धर्म कार्यों के निमित्त) देवार्पित संपत्ति यद्धनं यज्ञशीलानां देवस्वं तद्विदुर्बुधाः मनु० ११।२०, २६ —**हविस्** (नपुं०) बलिपशु।

देवकी [देवक+ङीष्] देवक की एक पुत्री, वसुदेव की पत्नी, कृष्ण की माता। सम०—**नन्दनः**, **पुत्रः**, **मातृ** (पुं०) —**सूनुः** श्रीकृष्ण के विशेषण।

देवटः [दिव्+अटन्] कारीगर, दस्तकार।

देवता [देव+तल्+टाप्] 1 दिव्य प्रतिष्ठा या शक्ति, देवत्व 2 देव, सुर कु० १।१ 3 देव की प्रतिमा 4 मूर्ति 5 ज्ञानेन्द्रिय। सम०—**अगारः**, —**रम्**, —**आगारः**, —**रम्**, —**गृहम्** मन्दिर —**अधिपः** इन्द्र का विशेषण —**अभ्यर्चनम्** देवपूजन —**आयतनम्** —**आलयः**, —**वेश्मन्** (नपुं०) मन्दिर, देवालय —**प्रतिमा** देवमूर्ति, प्रतिमा —**स्नानम्** देवमूर्ति का स्नान।

देवद्र्यञ्च् (वि०) [देवम् अञ्चति पूजयति इव। अञ्च्+क्विन्, अद्रि आदेश] देवोपासक।

देवन् (पुं०) [दिव्+कनिन्] पति का छोटा भाई, देवर।

देवनः [दिव्+ल्युट्] पासा —**नम्** 1 सौन्दर्य, दीप्ति, कान्ति 2 जूआ खेलना, पासे का खेल 3 खेल, क्रीडा, विनोद 4 प्रमोद-स्थल, प्रमद-वाटिका 5 कमल 6 स्पर्धा, आगे बढ़ जाने की इच्छा 7 मामला, व्यवसाय 8 प्रशंसा —**ना** जूआ खेलना, पासे का खेल।

देवयानी (स्त्री०) असुरगुरु शुक्राचार्य की पुत्री [एक बार देवयानी अपने पिता के शिष्य कच पर मोहित हो गई परन्तु कच ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया। देवयानी ने उसे शाप दे दिया, बदले में कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि वह एक क्षत्रिय की पत्नी बनेगी। दे० 'कच'। एक बार देवयानी दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री अपनी सखी शर्मिष्ठा के साथ स्नान करने गई, अपने वस्त्र उतार कर तट पर रख दिया। हवा से उनके वस्त्र बदल गये, अब उन्होंने बदले हुए वस्त्र पहने तो दोनों आपस में झगड़ने लगी, यहाँ तक कि क्रोध में आकर शर्मिष्ठा ने देवयानी के मुँह पर तमाचा मारा और उसे एक कुएँ में फेंक दिया। सौभाग्य से ययाति ने उसे कुएँ से निकाल कर उसके प्राणों की रक्षा की। उसके पश्चात् देवयानी के पिता की स्वीकृति से ययाति का देवयानी के साथ विवाह हो गया और शर्मिष्ठा को देवयानी के प्रति अपने दुर्व्यवहार के कारण उसकी दासी बनना पड़ा। देवयानी ने ययाति के साथ कई वर्ष सुखपूर्वक बिताये, यदु और तुर्वसु नामक उसके दो पुत्र हुए। उसके पश्चात् ययाति शर्मिष्ठा पर आसक्त हो गया। इस बात से दुःखी होकर देवयानी ने अपने पति को छोड़ दिया तथा अपने पिता के घर चली आई। शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के कहने पर ययाति को बुढ़ापे की असामर्थ्यता का शाप दिया। दे० ययाति]।

देवरः, **देवृ** (पुं०) [दीव्यति अनेन—दिव्+ऋ] पति का भाई (चाहे छोटा हो या बड़ा) मनु० ३।५५, ९।५९, याज्ञ० १।३८।

देवलः [देव+ला+क] देवमूर्ति का सेवक, एक नीच कोटि का ब्राह्मण जिसका अपना निर्वाह देव-प्रतिमा पर प्राप्त चढ़ावे के ऊपर निर्भर है।

देवसात् (अव्य०) [देव+साति] देवताओं की प्रकृति के समान, रूप बदल कर देवता बनना।

देविक (वि०) (स्त्री०—की), **दैविक** (वि०) [देव+ठञ्, दिव+इकन्] 1 दिव्य, देवगुणों से युक्त 2 देव से प्राप्त।

देवी [दिव्+अच्+ङीप्] 1 देवता, देवी 2 दुर्गा 3 सरस्वती 4 रानी, विशेषतः राज्याभिषिक्त रानी (अग्रमहिषी जिसने राज्याभिषेक के अवसर पर राजा के साथ सब राज-संस्कारों में पत्नी के नाते भाग लिया हो) देवीभावं गमिता परिवारपदं कथं भजत्येषा—काव्य० १० 5 सम्मानमूलक उपाधि जो सर्वश्रेष्ठ महिलाओं के साथ प्रयुक्त होती है।

देशः [दिश्+अच्] 1 स्थान, जगह—देशः कोऽनु जलावसेकशिथिलः मृच्छ० ३।१२ इसी प्रकार स्कन्धदेशः श० १।१९, द्वारदेश, कण्ठदेश आदि 2 प्रदेश, मुल्क, प्रान्त य देश श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्—हि० ११।७१ 3 विभाग, भाग, पक्ष, अंश (किसी 'पूर्ण' के) जैसा कि एक देश, एकदेशीय 4 संस्था, अध्यादेश। सम०—**अतिथि** (पुं०) विदेशी, —**अन्तरम्** दूसरा देश, विदेशी भाग मनु० ५।७८, —**अन्तरिन्** (पुं०) विदेशी,—**आचारः**, —**धर्मः** स्थानीय कानून या प्रथा, किसी देश के रीति-रिवाज— मनु० १।११८, —**कालज्ञ** (वि०) उपयुक्त स्थान और समय को जानने वाला —**ज**, —**जात** (वि०) 1 स्वदेशीय, स्वदेशोत्पन्न 2. ठीक देश में उत्पन्न 3. असली, खरा,

निर्मलवंशोद्भूत,—भाषा किसी देश की बोली,—रूपम् औचित्य, उपयुक्तता - व्यवहारः स्थानीय, प्रचलन, देशविशेष की प्रथा।

देशकः [दिश् + ण्वुल्] 1. शासक, राज्यपाल 2. शिक्षक, गुरु 3. पथ-प्रदर्शक।

देशना [दिश् + णिच् + युच् + टाप्] निर्देशन, अनुदेश।

देशिक (वि०) [देश + ठन्] स्थानीय, किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, देशी —कः 1. आध्यात्मिक गुरु 2. यात्री 3. पथ-दर्शक 4 स्थानों से परिचित।

देशिनी [दिश् + णिनि + ङीप्] तर्जनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली।

देशी [देश + ङीष्] किसी देशविशेष की बोली, प्राकृत का एक भेद—दे० काव्या० १।३३।

देशीय (वि०) [देश + छ] 1. किसी प्रान्त से सम्बन्ध रखने वाला, प्रान्तीय 2. स्वदेशीय, स्थानीय 3. किसी देश का निवासी (समासान्त में) जैसा कि मगधदेशीय, तद्देशीय, बंगदेशीय आदि में 4 अदूर, लगभग, सीमान्तवर्ती (शब्दों के अन्त में प्रत्यय की भांति प्रयुक्त) —अष्टादशवर्षदेशीयां कन्यां ददर्श—का० १३१, लगभग १८ वर्ष की लड़की (जिसकी आयुसीमा १८ हो) —रघु० १८।३९, इसी प्रकार 'परदेशीय' आदि।

देश्य (वि०) [दिश् + ण्यत्] 1 जिसकी ओर संकेत करना हो, या जिसे प्रमाणित करना हो 2. स्थानीय, प्रान्तीय 3. देशी, स्वदेशी 4. असली, खरा, निर्मल वंशोद्भूत 5. अदूर, लगभग—दे० ऊपर 'देशीय',—श्यः 1. चश्मदीद गवाह,—अभियोक्ता दिशेद्देश्यम् - मनु० ८।५२, ५३, किसी देशविशेष का निवासी,—श्यम् प्रश्नोक्ति, तर्कोक्ति, पूर्वपक्ष।

देहः—हम् [दिह् + घञ्] शरीर, - देह वहन्ति वहना इव मन्यवाहा —भामि० १।१०४, दे० नी० समस्त शब्द। सम०—अन्तरम् अन्य (दूसरे का) शरीर, °प्राप्तिः (स्त्री०) दूसरा जन्म लेना,—आत्मवादः भौतिकता, चार्वाकों के सिद्धान्त,—आवरणम् कवच, पोशाक,—ईश्वरः आत्मा, जीव,—उद्भव,—उद्भूत (वि०) शरीरज, सहज, जन्मजात —कर्तृ (पुं०) 1 सूर्य 2. परमात्मा 3. पिता, —कोषः 1. शरीर का आवरण 2 पर, बाजू 3. त्वचा, चमड़ा, —क्षयः 1. शरीर का ह्रास 2. रोग, बीमारी,—गत (वि०) शरीर में प्राप्त, मूर्तरूप,—जः पुत्र,—जा पुत्री,—त्यागः 1. मृत्यु 2. इच्छामृत्यु, शरीर को छोड़ना,—तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वोर्देहत्यागात्—रघु० ८।९५,—दः पारा,—दीपः आँख, —धर्मः शरीर के अंगों की क्रिया,—धारकम् हड्डी, —धारणम्, जीना, जीवन,—धिः बाजू, पक्ष,—धृत् (पुं०) वायु, हवा,—बद्ध (वि०) मूर्त, सशरीर—रघु० ११।३५,—भाज् (पुं०) शरीरधारी, जीवधारी, विशेषतः मनुष्य,—भुज् (पुं०) 1. जीव, आत्मा 2. सूर्य, —भृत् (पुं०) जीवधारी, मनुष्य—विभिमां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५१, भग० ८।४, १४।१४ 2. शिव का विशेषण 3. जीवन, जीवनशक्ति,—यात्रा 1. मरण, मृत्यु 2. पौषक पदार्थ, आहार,—लक्षणम् मस्सा, त्वचा के ऊपर काला तिल,—वायुः पाँच जीवनवायु में से एक, प्राणवायु,—सारः मज्जा,—स्वभावः शरीर का स्वभाव या गुण।

देहंभर (वि०) [देह + भृ + खच्, मुम्] पेटू, उदरंभरि।

देहवत् [देह + मतुप्] शरीरधारी, (पुं०) 1. मनुष्य 2. जीव।

देहला [देह + ला + क] मदिरा, शराब।

देहलिः,—ली (स्त्री०) [देह् + ला + कि, देहलि + ङीष्] दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लांघ कर घर में घुसते निकलते हैं,—विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः —मेघ० ८७, मृच्छ० १।९। सम०—दीपः देहलीपर रक्खा हुआ दीपक, °न्याय, दे० 'न्याय के अन्तर्गत।

देहिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [देह + इनि] शरीरधारी, शरीरी (पुं०) 1. जीवधारी प्राणी—विशेषतः मनुष्य —स्वरसीन वल् देहिनां सुखम्—कु० ६।१०, शि० २।८६ भग० २।१३, १७।२, मनु० ११३० ५।४९ 2. आत्मा, जीव (शरीर में प्रतिष्ठापित)—तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही — भग० २।२२, १३, ५।१४,—नी पृथ्वी।

दै (भ्वा० — पर० दायति, दात) 1. पवित्र करना, शुद्ध करना 2 पवित्र होना, 3 रक्षा करना, अव—, 1. स्वच्छ करना, उज्ज्वल करना 2 पवित्र करना।

दैतेयः [दिति + ढक्] दिति का पुत्र, राक्षस, दैत्य। सम० —इज्यः, —गुरुः,—पुरोधस् (पुं०) —पूज्यः असुरों के गुरु शुक्राचार्य के विशेषण,—निषूदनः विष्णु का विशेषण, —मातृ (स्त्री०) दिति दैत्यों की माता,—मेदजा पृथ्वी।

दैत्यः [दिति + ण्य] दे० 'दैतेय'। सम०—अरिः 1. देवता 2. विष्णु का विशेषण,—देवः 1. विष्णु का विशेषण 2. वायु,—पतिः हिरण्यकशिपु का विशेषण।

दैत्या [दैत्य + टाप्] 1 औषधि 2. मदिरा।

दैन (स्त्री —नी), दैनंदिन (स्त्री०—नी), दैनिक (स्त्री० —की) (वि०) [दिन + अण्, दिन दिन भवः दिनंदिन + अण्, दिन + ठञ्] आह्निक, प्रति दिन का, —भामि० १।१०३।

दैन्यम् [दीन + अण्, ष्यञ् वा] 1. गरीबी, दरिद्रावस्था, दयनीय अवस्था, दुर्दशा—दरिद्राणां दैन्यम् —गंगा० २, इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति —मेघ० ७४ 2. कष्ट, खेद, विषाद, शोक, उत्साहहीनता 3. दुर्बलता 4. कमीनापन।

दैनिकी [दैनिक+ङीप्] प्रतिदिन की मजदूरी, दिनभर की उजरत, ध्याड़ी।

दैर्घ्यम्,—र्ध्यम् [दीर्घ+अण्, ष्यञ् वा] लम्बाई, लम्बापन।

दैव (वि०) (स्त्री—वी) [देव+अण्] देवों से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, स्वर्गीय संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः —काव्या० १।३३, रघु० १।६० याज्ञ० २।२३५, भग० ४।२५, ९।१३, १६।३, मनु० ३।७५ 2. राजकीय, —वः (अर्थात् विवाहः) आठ प्रकार के विवाहों में से एक (इसमें कन्या यज्ञ कराने वाले ऋत्विज् को ही दे दी जाती है)—यज्ञस्य ऋत्विजे दैव —याज्ञ० १।५९, (विवाह के आठ प्रकारों के लिए दे० 'उद्वाह' या मनु० ३।२१), —वम् 1 भाग्य, नियति भवितव्यता, किस्मत दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति —मुद्रा० ३, विना पुरुषकारेण दैवमत्र न सिध्यति —'भगवान् उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं,'—दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पञ्च० १।३६१ दैवात् 1 संयोग से भाग्यवश अकस्मात् 2. देव, देवता 3 धार्मिक संस्कार, देवों को आहुति। सम०—अत्ययः दैवी उत्पात, आकस्मिक अनर्थ, —अधीन,—आयत्त (वि०) भाग्य पर निर्भर —दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् —वेणी० ३।३३, —अहोरात्रः देवताओं का एक दिन अर्थात् मनुष्यों का एक वर्ष, —उपहत (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त अभागा — मुद्रा० ६।८ - कर्मन् (नपुं०) देवताओं को आहुति देना, —कोविद, चिन्तक, ज्ञ ज्योतिषी भविष्य वक्ता, याज्ञ० १।३१३, काम० ९।२४ —गति. (स्त्री०) भाग्य का फेर —मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या—मेघ० ९६, तन्त्र (वि०) भाग्य पर आश्रित,—दीपः आँख, —दुर्विपाकः भाग्य की निष्ठुरता भाग्य का बुरा फेर या प्रतिकूलता उत्तर० १।४०, —दोषः भाग्य की कठोरता, पर (वि०) 1 भाग्य पर भरोसा करने वाला, भाग्यवादी 2 भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध—प्रश्नः भविष्यकथन, ज्योतिष युगम् देवों का एक युग' (१२००० दैववर्षों का एक युग माना जाता है, इस विषय में दे० मनु० १।७१ पर कुल्लू०),—योगः संयोग, इत्तिफाक भाग्य, मौका —दैवयोगेन दैवयोगात् भाग्य से, अकस्मात्, - लेखकः भविष्यवक्ता, ज्योतिषी,— वश,—सम् नियति का बल, भाग्य की अधीनता, —वाणी 1 आकाशवाणी 2. संस्कृत भाषा —कु० काव्या० १।३३ ऊपर उद्धृत, —हीन (वि०) भाग्यहीन, किस्मत का मारा, अभागा।

दैवकः [दैव+कन्] देवता।

दैवत (वि०) (स्त्री०—ती) [देवता+अण्] दिव्य,—तम् देव, देवता, दिव्यता—मृदं गां दैवतं विप्रं घृतं मधु चतुष्पथं, प्रदक्षिणानि कुर्वीत— मनु० ४।३९, ११५३, अमरु ३ 2 देवों का समूह, देवताओं का पूरा समूह 3. देवमूर्ति (यह शब्द पु० भी बतलाया जाता है परन्तु विरल प्रयोग है, मम्मट इस बात को शब्द का 'अप्रयुक्तत्व' दोष बतलाते हैं— दे० 'अप्रयुक्त')।

दैवतस् (अव्य०) [दैव+तस्] संयोगवश, किस्मत से, भाग्य से।

दैवत्य (वि०) [देवता+ष्यञ्] किसी देवता को संबोधित, या मान्य—याज्ञ० १।९९, मनु० २।१८९, ४।१२४।

दैवल, —लकः [देव+ला+क, देवल+अण् दैवल+कन्] प्रेतपूजक, किसी दुष्ट आत्मा (भूत प्रेतादिक) का उपासक।

दैवारिप [देवारीन् असुरान् पाति आश्रयदानेन देवारिपः समुद्रः, तत्र भवः देवारिप अण्] शंख।

दैवासुरम् [देवासुरस्य वैरम् अण्] देवताओं और राक्षसों के मध्य रहने वाला स्वाभाविक शत्रुता।

दैविक (वि०) (स्त्री० की) [देव+ठक्] देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य मनु० ११५५ ८।१०९ —कम् अवश्यभावी घटना।

दैविन् (पु०) [दैव+इनि] ज्योतिषी।

दैव्य (वि०) (स्त्री० व्या व्यी) [देव+यञ्] दिव्य —व्यम् किस्मत, भाग्य 2 दिव्य शक्ति।

दैशिक (वि०) (स्त्री० की) [देश+ठञ्] 1 स्थानीय प्रांतीय 2. राष्ट्रीय समस्त देश से सम्बन्ध रखने वाला 3 स्थान सम्बन्धी 4. किसी स्थान से परिचित 5 अध्यापन करने वाला सकेतक निदेशक, दिखलाने वाला —कः 1 अध्यापक, गुरु 2 पथ दर्शक।

दैष्टिक (वि०) (स्त्री० की) [दिष्ट+ठक्] भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध —कः भाग्यवादी।

दैहिक (वि०) (स्त्री०—की) [देह+ठक्] शारीरिक देहसम्बन्धी।

दैह्य (वि०) [देह भव ष्यञ्] शारीरिक, - ह्यः आत्मा (शरीरगत)।

दो (दिवा० पर० —द्यति, दित प्रेर० दापयति, इच्छा० दित्सति) 1. काटना, बांटना 2. फसल काटना, अनाज काटना, अव —,काट डालना -मदस्यास्मत्पदं सूक्ष्मवद्यति —भट्टि०।

दोग्धृ (पु०) [दुह्+तृच्] 1 ग्वाला, दूध दोहने वाला, दुग्धवा मेरो स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे— कु० १।२ 2 बछड़ा 3. चारण या भाट (वह भाड़े का कवि जो पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कविता की रचना करता है) 4. जो स्वार्थवश कोई कार्य करता है (अपने आप को लाभ पहुंचाने के लिए)।

दोग्ध्री [दोग्धृ+ङीप्] 1 दुधारु गाय 2. दूध पिलाने वाली माय।

दोघः [दुह् + अच्, नि०] बछड़ा ।

दोरः [=डोर, नि० ह्रस्व द] रस्सी, रज्जु ।

दोलः [दुल् + घञ्] 1 झूलना, डोलना, (घड़ी के लंगर की भांति इधर-उधर) हिलना 2. हिंडोला, डोली 3. फाल्गुनपूर्णिमा के दिन होने वाला उत्सव जब कि बालकृष्ण की मूर्तियां को हिंडोले में झुलाया जाता है ।

दोला, दोलिका [दोल + टाप्, दोल + कन् + टाप्, इत्वम्] 1. डोली, पालकी 2 हिंडोला, पालना (आलं० भी) आसीत्स दोलाचलचित्तवृत्तिः रघु० १४।३४, ९।४६, १९।४४, सन्देहदोलामारोप्य श० [illegible] २८९ 3 झूलना, घट-बढ़ होना 4. सन्देह, अनिश्चितता । सम० —अधिरूढ, —आरूढ (वि०) (शा०) झूले पर सवार (आलं०) अनिश्चित, अस्थिर, चंचल —**युद्धम्** सफलता की अनिश्चितता, वह युद्ध जिसमें हार-जीत का कुछ निश्चय न हो ।

दोलायते (ना० धा० आ०) 1 झूलना, इधर-उधर डोलना, [illegible] हिलना [illegible] आगे-पीछे होना (आलं० भी) 2 सन्देह [illegible] होना

दोष [दुष् + घञ्] 1 (क) त्रुटि, धब्बा, निन्दा, कमी [illegible] — पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् भर्तृ० २।९३, नाम कुलशीलदोष प्रदा [illegible] श० ३ [illegible] हम [illegible] नहीं मानते मा पुनरुक्तदोषा—रघु० १४।[illegible] (ख) भूल (अशुद्धि) गलती 2 जुर्म, पाप, [illegible] अपराध [illegible] अपराधमुपगच्छामि रघु० १४।६२ मनु० ८।२८९, याज्ञ० ३।५९ 3 अनिष्टकारी गुण अथवा [illegible] प्रवृत्ति या गुण जैसा कि [illegible] 4 हानि अनिष्ट भय [illegible] मालवि० १।[illegible] का दोष (इसमें क्या हानि है) 5 बुरा फल, अनिष्ट कारी फल [illegible] तदिदमारब्धं [illegible] श० 3 अदाता [illegible] कर्मदोषाद् दरिद्रता चाण० ४८ मनु० १०।१४ 6 विकार, व्याधि, रोग 7 शरीर के तीनों दोषों का कुपित होना, विशेषकर 8 (न्या० में) परिभाषा का दोष (अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव) 9 (अलं० में) रचना का एक दोष (पददोष, पदांशदोष, वाक्यदोष, रसदोष और अर्थदोष जिनका वर्णन काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में किया गया है) 10. बछड़ा 11. निराकरण । सम० —आरोप, दोष लगाना, [illegible] लगाना, —**एकदृश्** (वि०) दोष ढूंढने वाला, दोषदर्शी छिद्रान्वेषी —कर, —**कृत्** (वि०) बुराई करने वाला, अनिष्टकर —**ग्रस्त** (वि०) 1 सिद्धदोष, अपराधी 2. दोषपूर्ण, त्रुटिपूर्ण, —**ग्राहिन्** (वि०) 1. विद्वेषी, दुर्भावनापूर्ण 2. छिद्रान्वेषी, —**ज्ञ** (वि०) दोषों का ज्ञाता (ज्ञ) 1. बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष—रघु० १।९३ 2. वैद्य, —**त्रयम्** शरीर के तीन दोष (अर्थात् वात, पित्त और कफ), —**दृष्टि** (वि०) दोषदर्शी, —**प्रसङ्गः** कलंक लगाना, बदनामी, निन्दा, —**भाज्** (वि०) दोषी, अपराधी, सदोष ।

दोषणम् [दुष् + णिच् + ल्युट्] इलजाम लगाना, दोष मढ़ना ।

दोषन् (पुं०, नपुं०) (इस शब्द के सर्वनामस्थान (पहले पांच वचन) में रूप नहीं होते) भुजा, बाहु ।

दोषल (वि०) [दोष + लच्] दोषी, सदोष, भ्रष्ट ।

दोषस् (स्त्री०) [दुष् + असुन्] रात (नपुं०) अंधेरा ।

दोषा (अव्य०) [दुष्यते अन्धकारेण दुष् + घञ् + टाप्] रात को [illegible] शि० ६।६२, (स्त्री०) 1 भुजा 2 रात्रि का अंधेरा, रात [illegible] कि० ३।३, (यहां शब्द का अर्थ दोष या पाप भी है) । सम० —आस्य, —तिलक दीपक लैम्प, —कर चांद ।

दोषातन (वि०) (स्त्री० —नी) [दोषा + ट्यु, तुट्] रात का, रात्रि विषयक रघु० १८।३६ ।

दौषिक (वि०) (स्त्री० —की) [दोष + ठन्] दोषी, बुरा, सदोष —**कः** रोग ।

दोषिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [दुष् + णिनि] 1 अपवित्र, दूषित, कलुषित 2 अपराधी, सदोष, मुजरिम, दुष्ट, बुरा ।

दोस् (पुं० नपुं०) [दम्यते अनेन दम् + डोसि] (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् इस शब्द को विकल्प से दोषन् आदेश हो जाता है) 1 भुजा, बाहु—अमुनाद्य-दलतः दोष्णा [illegible] —रघु० १०।२३ हेमपात्र-गतं दोर्भ्यामादधानः पयश्चरुम् १०।५१, कु० ३।७६ 2 भुजा का वह [illegible] का निर्माण करना है । सम० —**दण्ड** (वि०) (दोर्दण्ड) डंडे जैसी भुजाओं वाला —**दण्ड** (दोर्दण्ड) (वि०) सबल, शक्तिशाली, [illegible] भुजा में रहने वाला पराक्रम —**ज्या** (दोर्ज्या) आधार की लम्बरेखा —**दण्ड** (दोर्दण्ड) डंडे जैसी भुजा, मजबूत भुजा—महावी० ७८, भर्तृ० १।१२८, —**मूलम्** (दोर्मूलम्) कांख, बगल, —**युद्धम्** (दोर्युद्धम्) द्वन्द्वयुद्ध, कुश्ती, महावी० ५।३७ —**शालिन्** (वि०) (दोःशालिन्) प्रबल भुजाओं वाला, रणोत्सुक, वीर — वेणी० २।३२ —**शिखरम्** (दोःशिखरम्) कंधा, —**सहस्रभृत्** (दोःसहस्रभृत्) (पुं०) 1 बाणासुर का विशेषण 2 सहस्रार्जुन का विशेषण, —**स्थः** (दोःस्थ) 1 सेवक 2 सेवा 3 खिलाड़ी 4 खेल, क्रीड़ा ।

दोहः [दुह् + घञ्] 1 दोहना — तावद्गौश्च यथा दोहोऽ-र्पितेन मिल्ला० कु० १।२, रघु० ३।२२, १७।१९ 2 दूध 3 दूध की बाल्टी । सम० —अपनयः, —**जम्** दूध ।

दोहदः, —दम् [दोहमाकर्षं ददाति—दा+क] गर्भवती स्त्री की प्रबल रुचि प्रजावती दोहदशंसिनी ते -रघु० १४।४५, उपेत्य का दोहददुःखशीलता यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम्—३।६, ७ 2 गर्भावस्था 3 कली आने के समय पौधों की इच्छा (उदाहरणतः अशोक चाहता है कि तरुणियाँ उसे ठोकर मारें, बकुल चाहता है कि उसके ऊपर मदिरा के कुल्ले किये जायें) —महीरुहा दोहदसेकशक्तेराकालिकं कोरकमुद्गिरन्ति—नै० ३।२१, रघु० ८।६२, मेघ० ७८ दे० प्रियंगु 4 उत्कट अभिलाष—प्रवर्तितमहासमरदोहदा नरपतयः —वेणी० ४ 5 सामान्यतः कामना, इच्छा। सम० —लक्षणम् 1 भ्रूण, गर्भ (दौहृदलक्षण) 2 जीवन की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश।

दोहदवती [दोहद+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] गर्भवती स्त्री जिसे किसी वस्तु की इच्छा हो।

दोहन (वि०) [दुह्+ल्युट्] 1 दोहने वाला 2 अभीष्ट पदार्थों को देनेवाला —नम् 1 दोहना 2 दूध की बाल्टी, —नी दूध की बाल्टी।

दोहलः [दोह+ला+क] दे० दोहद यथा बहुभिर्दोहलम् (अने० पा०) लक्षितकामिसाधारणम्—मालवि० ३।१६।

दोहली [दोहल+ङीप्] अशोकवृक्ष।

दोह्य (वि०) [दुह्+ण्यत्] दुहने योग्य, दुहे जाने योग्य, —ह्यम् दूध।

दौःशील्यम् [दुःशील+ष्यञ्] बुरा स्वभाव, दुष्टता, दुर्भावना।

दौःसाधिकः [दुःसाध+ठक्] 1 द्वारपाल, ड्योढ़ीवान 2 गाँव का अधीक्षक।

दौकू (गू) लः [दुकूल+अण्] रेशमी आवरण से ढका हुआ रथ, —लम् बढ़िया रेशमी वस्त्र।

दौत्यम् [दूत+ष्यञ्] सन्देश, दूत का कार्य।

दौरात्म्यम् [दुरात्मन्+ष्यञ्] 1 दुष्टता, दुष्ट स्वभाव, दुर्भावना रघु० १५।७२ 2 दुर्जनता—गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते—काव्य० १०।

दौर्गत्यम् [दुर्गत+ष्यञ्] 1 गरीबी, कमी, अभाव—पंच० २।९२ 2 दरिद्रता, दुःख

दौर्गन्ध्यम् [दुर्गन्ध+ष्यञ्] बुरी या अरुचिकर गंध।

दौर्जन्यम् [दुर्जन+ष्यञ्] दुष्टता, दुर्भावना।

दौर्जीवित्यम् [दुर्जीवित+ष्यञ्] कष्टमय जीवन, विपद्ग्रस्त जीवन।

दौर्बल्यम् [दुर्बल+ष्यञ्] नपुंसकता, दुर्बलता, कमजोरी, निर्बलता—मनु० ८।१७१, श० २।३।

दौर्भागिनेयः [दुर्भगा+ढक्, इनङ्] अभागी स्त्री (जिसे उसका पति न चाहे) का पुत्र।

दौर्मनस्यम् [दुर्मनस्+ष्यञ्, उभयपदवृद्धि] दुर्भाग्य, बदकिस्मती, —याज्ञ० १।२८९।

दौर्भ्रात्रम् [दुर्भ्रातृ+अण्] भाइयों का आपसी कलह।

दौर्मनस्यम् [दुर्मनस्+ष्यञ्] 1 बुरा स्वभाव, 2. मानसिक पीड़ा, कष्ट, खेद, विषाद 3 निराशा।

दौर्मन्त्र्यम् [दुर्मन्त्र+ष्यञ्] अनिष्टकारी उपदेश, बुरी सलाह —दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति भर्तृ० २।४२।

दौर्वचस्यम् [दुर्वचस्+ष्यञ्] दुर्वचन, अपभाषण।

दौर्हृदम्, दौहृदम् [दुर्हृद्+अण्] 1 मन की दुरवस्था, शत्रुता (इस अर्थ में 'दौर्हृद' भी) 2 गर्भावस्था —सुदक्षिणा दौर्हृदलक्षणं दधौ रघु० ३।१ 3 गर्भवती की प्रबल लालसा 4 इच्छा।

दौर्हृदयम् [दुर्हृदय+अण्] मन की दुरवस्था, शत्रुता।

दौल्मिः [दुल्म+इञ्] इन्द्र का विशेषण।

दौवारिकः (स्त्री० —की) [द्वार+ठक्, औ आगम] द्वारपाल, पहरेदार रघु० ६।५९।

दौश्चर्म्यम् [दुश्चर+ष्यञ्] 1 दुराचरण दुष्टता, दुष्कृत्य।

दौष्कुल (वि०) (स्त्री० —ली), दौष्कुलेय (वि०) (स्त्री० —यी) [दुष्कुल अस्य ष० स०, स्वार्थे अण्, दुष्टं कुलम् प्रा० स०—दुष्कुल+ढक्] नीच कुल में उत्पन्न, नीच घराने में उत्पन्न।

दौष्ठवम् [दु+स्था+कु—दुष्ठु तस्य भावः अण्] बुराई, दुष्टता।

दौष्य (ष्म) न्तिः [दुष्य (ष्म) न्त+इञ्] दुष्यन्त का पुत्र दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य श० ४।२०।

दौहित्रः [दुहितृ+अञ्] दोहता, पुत्री का पुत्र मनु० ३।१४८ ९।१३१, —त्रम् तिल।

दौहित्रायणः [दौहित्र+फक्] दोहते का पुत्र।

दौहित्री [दौहित्र+ङीप्] दोहती, पुत्री की पुत्री।

दौहृदिनी [दौहृद+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री।

द्यु (अदा० पर०—द्यौति) अग्रसर होना, मुकाबला करना हमला करना, आक्रमण करना—भट्टि० ६।११८, १४।१०४।

द्यु (नपुं०) [दिव्+उन्, नित्] 1 दिन 2 आकाश 3 उजाला 4 स्वर्ग (—पुं०) आग (पद अर्थात् व्यंजनादि विभक्तियों के आगे पर 'दिव्' (स्त्री०) के स्थान में 'द्यु' आदेश होता है, या समासों में द्यु का प्रयोग होता है)। सम० —गः पक्षी, —गणः 1 ग्रह, 2 पक्षी, —गम् स्वर्ग प्राप्त करना, —धुनि (स्त्री०), —नदी स्वर्गंगा, —निवासः देवता, सुर लोकाभिगामात् द्युनिवासभूयम्—भट्टि० २।२१, —पतिः 1 सूर्य 2 इन्द्र का विशेषण, —मणिः सूर्य, —लोकः स्वर्ग, —षद्, —सद् (पुं०) 1. सुर, देवता,—शि० १।४३ 2. ग्रह, —सरित् (स्त्री०) गंगा।

घुकः [घु + कन्] उल्लू। सम० **अरिः** कौवा।

द्युत् (भ्वा० आ० —द्योतते, द्युतित या द्योतित—इच्छा० दिद्युतिषते, दिद्योतिषते) चमकना, उजला होना, जगमगाना —दिद्युते च यथा रविः भट्टि० १४।१०४, ६।२६ ७।१०७, ८।८९, प्रेर० द्योतयति 1 प्रकाश करना, देदीप्यमान करना—भट्टि० ८।८९ कु० ६।४ 2 स्पष्ट करना, व्याख्या करना, समझाना 3 अभिव्यक्त करना अर्थ प्रकट करना, **अभि** , प्रेर० प्रकाश करना—रघु० ६।३४, **उद्** —, प्रकाश करना दीपक जलाना, सजाना, सुभूषित करना—रघु० १०। ८० **वि** चमकना उज्ज्वल होना—अथ द्यावाविष्ट समावेशामसौ न्यर्ग्गलिमथयी शि० २।३, १।२०।

द्युतिः (स्त्री०) [द्युत् + इन्] 1 दीप्ति उजाला कान्ति सौन्दर्य—काच काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकती द्युतिम्—हि० प्र० ४१ मा० २।१० रघु० ३।६। 2 प्रकाश प्रकाश की किरण भर्तृ० १।६१ 3 महिमा, गौरव मनु० १।८७।

द्युतित (वि०) [द्युत् + क्त] प्रकाशित, चमकदार, उजाला।

द्युम्नम् [द्यु + म्ना + क] 1 आभा, यश कान्ति 2 बल, सामर्थ्य, शक्ति 3 वैभव सम्पत्ति 4 प्रोत्साहन।

द्युवन् (पुं०) [द्यु + कनिन्] सूर्य।

द्यूत, —**तम्** [दिव् + क्त, ऊठ्] 1 खेलना, जुआ खेलना पासे से खेलना द्यूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम् मृच्छ० २, द्रव्यं लब्धं द्यूतेनैव, दारा मित्रं द्यूतेनैव दत्तं भुक्तं द्यूतेनैव सर्वं नष्टं द्यूतेनैव —२।७, अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते —मनु० ९। २२३ 2 जीता हुआ पुरस्कार। सम० —**अधिकारिन्** (पुं०) द्यूतगृह का स्वामी, जुआ खिलाने वाला **कर** —**कृत्** जुआ खेलने वाला, जुआरी —अयं द्यूतकर सभिकेन खलीक्रियते मृच्छ० २,— **कारः**, —**कारकः** 1 जुआघर का रखने वाला 2 जुआरी,— **क्रीडा** पासों से खेलना, जुआ खेलना,—**पूर्णिमा**, पौर्णिमा आश्विन मास की पूर्णिमा, (इस समय जन साधारण लक्ष्मी देवी के सम्मान में खेलों का उत्सव मनाते हैं) — **बीजम्** कौड़ी (खेलने के काम आने वाली), **वृत्तिः** 1 पेशेवर जुआरी 2 जुआघर का रखवाला,—**सभा**,—**समाजः** 1 जुआखाना 2 जुआरियों का समूह।

द्यै (भ्वा० पर० द्यायति) 1 घृणा करना, तिरस्कार युक्त व्यवहार करना 2 तिरस्कार करना।

द्यो (स्त्री०) [कर्तृ० ए० व० द्यौः] [द्युत् + डो] स्वर्ग, बैकुण्ठ, आकाश —द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च —पंच० १।१८२, श० २।१४, (द्वन्द्व समास में 'द्यो' को बदल कर 'द्यावा' हो जाता है—उदा० द्यावापृथिव्यौ, द्यावाभूमी (—द्युलोक और भूलोक)। सम० —**भूमिः** पक्षी, —**सद्** (द्योसद्) देवता।

द्योतः [द्युत् + घञ्] 1 प्रकाश, ज्योति, उजाला जैसा कि 'खद्योत' में 2 धूप 3 गर्मी।

द्योतक (वि०) [द्युत् + ण्वुल्] 1 चमकने वाला 2 प्रकाशमय 3 व्याख्या करने वाला, व्यक्त करने वाला, बतलाने वाला।

द्योतिस् (नपुं०) [द्युत् + इसुन्] 1 प्रकाश, उजाला, चमक 2 तारा। सम० —**इङ्गणः** (द्योतिरिङ्गणः) जुगनू।

द्रक्षणम् [द्राक्षन्ति अनेन—द्राक्ष्—ल्युट् पृषो० ह्रस्व] भार का माप या बट्टा, एक तोला।

द्रढयति (ना० धा० पर०) 1 दृढ़ करना, जकड़ना, कसना (शा०) यथा— जटाजूटं ग्रन्थिं द्रढयति 2 समर्थन करना पुष्ट करना अनुमोदन करना—निदेश वैकाशा नदिदर्मी र बुद्धिं द्रढयति – उत्तर० २।२७ विसृष्टैक स्वर्गस्थवपि नु मम भक्ति द्रढयति ४।११।

द्रढिमन् (पुं०) [दृढ इमनिच्] 1 कसाव दृढ़ता ध्यानं द्रागेव द्रढिमरमणीयं परिकरम् गंगा० ४७ 2 पुष्टि समर्थन उक्तस्यार्थस्य द्रढिम्ने —शंकर 3 प्रकथन, पुष्टीकरण 4 गुरुता।

द्रप्सम् ('द्रप्स्यम्') [दृप्यन्ति अनेन दृप् + स, र् आदेश] जमे हुए दूध का घोल पतला दही।

द्रम् (भ्वा० पर० द्रमति) इधर-उधर जाना, दौड़ना, इधर उधर भागना—भट्टि० १४।७०।

द्रम्मः [ग्रीक शब्द से व्युत्पन्न] 'द्रम' नाम एक प्रकार का सिक्का।

द्रव (वि०) [द्रु + अप्] 1 (घोड़े की भांति) दौड़ने वाला 2 चूने वाला, रिसने वाला गीला टपकने वाला आर्लिप्य काचिद् द्रवरागमेव (पादम्)—रघु० ७।७ 3 बहने वाला, गीला 4 तरल (विप० कठिन) कु० २।११ 5 पिघला हुआ, तरल बनाया हुआ —**वः** 1 जाना, इधर उधर घूमना गमन 2 गिरना, टपकना, रिसना, निःस्रवण 3 भगदड़, प्रत्यावर्तन 4 खेल, विनोद, क्रीडा 5 तरलता, द्रवीकरण 6 तरल पदार्थ, प्रवाही 7 रस सत 8 काढ़ा 9 वाष्प, वेग (**द्रवीकृ** पिघलाना तरल करना **द्रवीभू** —पिघलना, पसीजना जैसे दया से द्रवीभवति मे मनः, महावी० ७।३४, द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव—उत्तर० ३।१३, द्रवीभूत मन्ये पतति जलरूपेण गगनम्—मृच्छ० ५।२५)। सम० **आधारः** 1 छोटा बर्तन या पात्र 2 चुल्लू, —**जः** राब, **द्रव्यम्** तरल पदार्थ, —**रसा** 1 लाख 2 गोंद।

द्रवन्ती [द्रु + शतृ + ङीप्] नदी, दरिया।

द्रविडः (पुं०) 1 दक्षिण के घाट पर स्थित एक देश—अस्ति द्रविडेषु काञ्ची नाम नगरी—दश० १३० 2 उस देश का निवासी अस्मद्द्राविडधार्मिकस्येकल्पा निसृष्ट का० २२९ 3 एक नीच जाति— तु० मनु० १०।२२।

द्रविणम् [द्रु + इनन्] 1 दौलतमन्दी, धन, सम्पत्ति, द्रव्य —वेणी० ३।२०, भामि० ४।२९ 2 सोना रघु० ४।७० 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 वीरता, विक्रम 5 बात सामग्री सामान। सम० अधिपतिः, ईश्वरः कुबेर का विशेषण।

द्रव्यम् [द्रु + यत्] 1 वस्तु सामग्री, पदार्थ, सामान 2 अवयव, उपादान 3 सामग्री 4 उपयुक्त पात्र (शिक्षादि ग्रहण करने के लिए) मुद्रा० ७।१८ दे० 'अद्रव्य' भी 5 मूल तत्त्व गुणों का आधार वैशेषिकों के सात प्रवर्गों में से एक (द्रव्य नौ हैं पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि) 6 ... कोई पदार्थ दौलत, सामग्री, सम्पत्ति धन ... किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जनः उत्तर० ।१९ 7 औषधि दवाई 8 लज्जा ... 9 ... 10 मदिरा 11 ... । सम० अर्जनम्,-वृद्धि —सिद्धि (स्त्री०) धन की ... —प्रकृति (स्त्री०) ... —संस्कार यज्ञ के पदार्थों का शुद्धीकरण ... सूचक।

द्रव्यवत् (वि०) [द्रव्य + मतुप्] 1 ... 2 सामग्री से ...।

द्रष्टव्य (सं० कृ० वि०) 1 देखे जाने के योग्य, जो दिखाई दे सके 2 प्रत्यक्षज्ञानगोचर 3 इसके अनुसन्धान करने या परीक्षा करने के योग्य 4 प्रिय दर्शनीय सुन्दर ... पर दृष्टम् श० ... भर्तृ० १।८।

द्रष्टृ (पुं०) [दृश् + तृच्] 1 ... धार्मिक ... देखने वाला जैसा कि ... मन्त्रद्रष्टार ... 2 न्यायाधीश।

द्रहः [ह्रद पृषो० साधुः] गहरी झील।

द्रा (अदा० दिवा० द्राति द्रायति) 1 भागना 2 ... शीघ्रता करना 3 उड़ना, भाग जाना, ... नींद आना, सोना, सो जाना प्रयातकलकं ... सदा ... नै० १।२१ ... रहस्यमधुना निद्राति ... भर्तृ० ३।९३ भामि० १।४१, भट्टि० १०।३४, ... १९, वि०-, ... करना, भाग जाना उड़ना।

द्राक् (अव्य०) [द्रा + कु] जल्दी से, तुरन्त उसी समय तत्काल। सम० -भूमकम् कुएँ से अभी ... निकाला हुआ जल।

द्राक्षा [द्राक्ष् + अ + टाप् नि० नलोप] अंगूर दाख (अंगूर की बेल या फल) द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाम् गीत० १२, रघु० ४।६५, भामि० १।१४, ४।३८।

सम०—रसः अंगूर का रस, मदिरा।

द्राघयति (ना० धा० पर०) 1 लम्बा करना, फैलाना, विस्तार करना 2 बढ़ाना, गाढ़ा करना —द्राघयति हि ये शोक स्मर्यमाणा गुणास्तव भट्टि० १८।३३ 3 ठहरना, देर करना।

द्राघिमन् (पुं०) [दीर्घ + इमनिच्, द्राघ् आदेश] 1 लम्बाई 2 अक्षांश रेखा का दर्जा।

द्राघिष्ठ (वि०) [अतिशयेन दीर्घः दीर्घ + इष्ठन् द्राघ् आदेश] 1 सबसे अधिक लम्बा 2 अत्यन्त लम्बा (दीर्घ की उ० अ०)।

द्राघीयस् (वि०) (स्त्री० सी) [दीर्घ + ईयसुन्, द्राघ् आदेश] अपेक्षाकृत लम्बा बहुत लम्बा (दीर्घ का म० अ०)।

द्राण (वि०) [द्रा + क्त तस्य नत्वम्] 1 उड़ा हुआ भागा हुआ 2 सोया हुआ निद्रालु —णम् 1 नींद ... प्रत्यावर्तन 2 निद्रा।

द्राप [द्रा ...] 1 ... 2 ... 3 ... 4 ... का विशे... ।

द्रामिड [...] ... ।

द्राव [द्रु + घञ्] 1 ... प्रत्यावर्तन 2 ... 3 ... 4 गर्मी ... पिघलना।

द्रावक [द्रु + ण्वुल्] 1 ... 2 ... 3 ... 4 ... 5 बुद्धिमान् पुरुष ... विदूषक 6 ... कम् मोम।

द्रावणम् [द्रु + णिच् + ल्युट्] 1 भगा जाना 2 पिघलना ... 3 अर्क निकालना ... ।

द्राविड [द्रविड + अण्] 1 द्राविड देश ... द्रविड का 2 ... (द्राविड ... गुर्जर महाराष्ट्र और ...) ... द्रविड देश तथा उसके निवासी —डी इलायची।

द्राविडक [द्राविड + कन्] आमाहल्दी —कम् ... नमक।

द्रु I (भ्वा० पर० द्रवति द्रुत इच्छा० दुद्रूषति) 1 दौड़ना, बहना भाग जाना प्रत्यावर्तन करना (प्रायः कर्म० के साथ) ... नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति भग० ११।२८, ... दिशो द्रवन्ति ... द्रव ... मृच्छ० 2 धावा बोलना ... आक्रमण करना भट्टि० ९।५१, 3 ... पिघलना, ... (आलं० भी) द्रवन्ति ... हिमवद्भावा... काव्य मा० १।४८, द्रवति हृदयमेतम् —वेणी० ५।२२ ... ७।१९ भट्टि० ७।१२ 4 जाना ... प्रेर० द्रावयति ते 1 भगा देना ... पीछे भगा देना 2 पिघलना, गलाना, ...

1. पीछे भागना, अनुसरण करना, साथ जाना - रघु० ९।३८, १२।६७, १६।२५, शि० १।५२ 2. पीछा करना, पैरवी करना, **अभि** —, 1 हमला करना, धावा बोलना, (शत्रु के सामने) जाना—गजा इवान्योन्यमभिद्रवन्त मृच्छ० ५।२१ 2. आ पड़ना 3. ऊपर से चले जाना, **उप** —, 1 हमला करना, आक्रमण करना - रघु० १५।२३ 2. की ओर भागना, **प्र** —, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, दौड़ जाना (कर्म० या अपा० के साथ) - [illegible] - वेणी० ४, कु० १५।७९, **प्रति** —, भागना, उड़ना, चले जाना - भट्टि० ६।१३, **वि** —, भागना, भाग जाना [illegible] [illegible] भगा देना, बिदका देना, तितर बितर कर देना शि० [illegible] मा० ३।

II (भ्वा० पर० द्रवति), 1 क्षति पहुँचाना, चोट करना - न द्रुह्याज्जीवरी [illegible] - भट्टि० [illegible] 2 जाना 3 [illegible]।

द्रु (पुं० नपुं०) [द्रु + कु] 1. लकड़ी 2. लकड़ी का बना उपकरण (पुं०) 1 वृक्ष मनु० ९।१२६ 2 [illegible]। सम०—**किलिम्** देवदारु वृक्ष, —**घ्नः**, 1 कुल्हाड़ी, गदा या घारी 2 बढ़ई की हथौड़ी जैसा लकड़ी का उपकरण 3 कुठार कुल्हाड़ी 4 ब्रह्मा का विशेषण —**घ्नी** कुल्हाड़ी —**नख** काँटा —**नस** (नासा) (वि०) बड़ी नाक वाला —**(नख)**, [illegible] —**सल्लकः**: एक वृक्ष, चिरौंजी।

द्रुणः [द्रुण् + क] 1 बिच्छू 2 मधुमक्खी 3 [illegible] —**णम्** 1 धनुष 2 तलवार। सम० —**ह्वः** असि-कोश, म्यान।

द्रुणा [द्रुण + टाप्] धनुष की डोरी।

द्रुणिः, —**णी** (स्त्री०) [द्रुण् + इन्, द्रुणि + ङीष्] 1 एक छोटा कछुआ या कछुवी 2 डोल 3 कान खजूरा।

द्रुत (भू० क० कृ०) [द्रु + क्त] 1 आशुगामी फुर्तीला, द्रुतगामी 2. बहा हुआ, भागा हुआ, पलायित 3 पिघला हुआ, तरल घुला हुआ दे० द्रु', —**तः** 1. बिच्छू 2 वृक्ष 3 बिल्ली —**तम्** (अव्य०) जल्दी से, फुर्ती से, वेग से तुरन्त। सम० —**पद** (वि०) आशुगामी, —**विलम्बितम्** एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट।

द्रुतिः (स्त्री०) [द्रु + क्तिन्] 1 पिघलना, घुलना, 2. चले जाना, भाग जाना।

द्रुपदः (पुं०) पांचाल देश के एक राजा का नाम (द्रुपद के पिता का नाम पृषत था। द्रुपद और द्रोण दोनों ने द्रोण के पिता भरद्वाज से धनुर्विद्या सीखी। जब द्रुपद को राजगद्दी मिल गई तो एक बार अधिक कठिनाइयों में ग्रस्त होने के कारण द्रोण अपनी छात्रावस्था की मित्रता के आधार पर द्रुपद के पास गया। परन्तु उसने घमंड के कारण द्रोण का अपमान किया। इस कारण द्रोण ने उसे अपने शिष्यों (पाण्डव) द्वारा पकड़वा कर बन्दी बनाया—फिर उसका आधा राज्य उसे वापस कर दिया। परन्तु यह हार द्रुपद के मन में सदैव करकती रही, और एक ऐसा पुत्र पाने की इच्छा से जो उस हार का बदला ले सके, उसने एक यज्ञ किया। उस यज्ञाग्नि से धृष्टद्युम्न नामक पुत्र तथा द्रौपदी नाम की पुत्री ने जन्म लिया। बाद में इसी पुत्र ने धोखे से द्रोण का सिर काट लिया [illegible] द्रोण भी)।

द्रुमः [द्रुः [illegible] —म] 1 वृक्ष, —यथा द्रुमा [illegible] [illegible] कल्पवृक्षः [illegible] [illegible] ३।८ 2 पारिजात वृक्ष। सम० —**अरिः** हाथी, **आमय** लाख [illegible] —**आश्रय** छिपकली, **ईश्वरः**, 1. ताड़ का [illegible] 2 चन्द्रमा 3 [illegible], —**उत्पलः** कर्णिकार वृक्ष —**नखः** काँटा —**व्याधिः** लाख, गोंद —**षण्ड** —**षण्डम्** वृक्षोद्यान, वृक्षों का समूह।

द्रुमिणी [द्रुम + इनि + ङीप्] वृक्षों का समूह।

द्रुवयः [द्रु + वय] माप, नाप।

द्रुह् (दिवा० पर० द्रुह्यति, द्रुग्ध) 1 ईर्ष्या द्वेष करना और हानि पहुँचाने की चेष्टा करना, द्वेषपूर्वक हत्या करने की इच्छा से षड्यन्त्र रचना (सम्प्र०) [illegible] का द्रुह्येव [illegible] [illegible] [illegible] ३।३, भट्टि० ४।३९, **अभि**— हानि पहुँचाना, हत्या करने का प्रयत्न करना, षड्यन्त्र रचना (कर्म० के साथ) - मक्षद्रोरमभिद्रोग्धुं [illegible] मुद्रा० १।

द्रुह्, (वि०) [द्रुह् + क्विप्] (समास के अन्त में प्रयोग) (कर्तृ० ए० व० —ध्रुक् या ध्रुट्—ड्) क्षति पहुँचाने वाला, चोट पहुँचाने वाला षड्यन्त्रकारी, शत्रुवत् व्यवहार करने वाला शि० २।३५, मनु० ४।१० (स्त्री०) —क्षति, हानि।

द्रुहः [द्रुह् + क] 1 पुत्र 2. सरोवर, झील।

द्रुहण, **द्रुहिणः** [द्रु सत्यारणानि द्रुहिण— द्रु + हन् + अच्, द्रुहिन द्रुह्येत्य द्रुह् + इनन् पाश्चम्] ब्रह्मा या शिव का नाम।

द्रूः [द्रु + क्विप्, दीर्घः] सोना।

द्रूघणः [द्रुघण, पृषो० साधुः] हथौड़ा, लोहे का हथौड़ा दे० द्रुघण।

द्रूणः [द्रुण, पृषो० साधुः] बिच्छू।

द्रोणः [द्रुण + अच्, वा द्रु + न] 1 चार सौ कोस लम्बी झील, या सरोवर 2 बादल (विशेष प्रकार का बादल) जल से भरा बादल (जिसमें से वर्षा इस प्रकार निकले जैसे डोल में से पानी) - काकमेघोपाधे काले काकपातादिधुते अपि, अनावृष्टिहते सस्ये द्रोणमेघ इवोदितः,

मृच्छ० १०।२६ 3. पहाड़ी कौवा, मुरदारखोर कौवा 4. बिच्छू० 5. वृक्ष 6. सफेद फूलों वाला वृक्ष 7. कौरव पाण्डवों का गुरु (द्रोण भरद्वाज ऋषि का पुत्र था, इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि घृताची नामक अप्सरा को देखते ही जब उनका वीर्यपात हुआ तो उन्होंने उसको एक द्रोण में सुरक्षित रक्खा। जन्म से ब्राह्मण होने पर भी द्रोण ने परशुराम से अस्त्रशस्त्र विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। बाद में धनुर्विद्या और शस्त्र चालन द्रोण ने कौरव पाण्डवों को सिखलाया। जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा, और जब भीष्म घायल होकर 'शरशय्या पर' लेट गये तो कौरवसेना की बागडोर द्रोण ने संभाली तथा चार दिन तक युद्ध करके पाण्डव पक्ष के हजारों योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। युद्ध के पन्द्रहवें दिन रात को भी संग्राम होता रहा और फिर सोलहवें दिन प्रातःकाल कृष्ण के सुझाव पर भीम ने द्रोण को सुना कर कहा कि अश्वत्थामा मारा गया (तथ्य यह था कि अश्वत्थामा नाम का हाथी युद्ध में काम आया था) इस पर विश्वास न कर इस खबर की यथार्थता जानने के लिए उसने सत्यवादी युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर ने भी, कृष्ण के परामर्शानुसार, बात को छलपूर्वक टाल दिया। उन्होंने 'अश्वत्थामा' शब्द को ऊँचे स्वर से उच्चारण किया तथा 'गज' शब्द को धीमे स्वर से—दे० वेणी० ३।९, अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु का समाचार सच समझ कर अत्यन्त शोकग्रस्त हो बूढ़ा पिता मूर्छित हो गया। उसी समय धृष्टद्युम्न ने (जिसने द्रोण को मारने की प्रतिज्ञा की थी) उस अवसर से लाभ उठाकर द्रोण का सिर काट डाला।—णः,—णम् एक विशेष माप का बट्टा, या तो एक आढक या चार आढक, अथवा खारी का १/१६ भाग, या ३२ अथवा ६४ सेर,—णम् 1. काष्ठ पात्र, प्याला, कठौती 2. लकड़ी की कूण्ड या खोर। सम०—आचार्यः दे० ऊ० द्रोण,—काकः पहाड़ी कौवा,—क्षीरा,—घा,—दुग्धा,—दुघा एक द्रोण दूध देने वाली गाय,—मुखम् ४०० गाँव की राजधानी, मुख्य नगर।

द्रोणिः,—णी (स्त्री०) [द्रु+नि, द्रोणि+ङीष्] 1. लकड़ी का बना एक लम्बाकार पात्र जिसमें पानी रखते हैं, अथवा पानी जिससे बाहर निकालते हैं, डोंक, किलमची कुप्पी 2. जलाधार 3. काठ की खोर 4 दो शूर्प या १२८ सेर के बराबर धारिता की माप 5 दो पहाड़ों के बीच की घाटी, बहु—द्रोणीशैलकान्तारप्रदेशमधिनिवसतो माधवस्यान्तिके प्रयामि—मा० ९, हिमवद् द्रोणी। सम०—दलः केतक का पौधा।

द्रोहः [द्रुह्+घञ्] 1. किसी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना, आघात या आक्रमण करने की चेष्टा, क्षति, उपद्रव, ईर्ष्या—अद्रोहसमयं कृत्वा—पंच० २।३५, भग० १।३७, मनु० २।१६१ ७।४८, ९।१७ 2. धोखा, विश्वासघात 3 अन्याय, दोष 4 विद्रोह। सम०—अटः 1. पाखंडी, धूर्त, छद्मवेषी 2 शिकारी 3 झूठा मनुष्य,—चिन्तनम् ईर्ष्यायुक्त विचार, अपकार चिन्ता, हानि पहुँचाने का इरादा,—बुद्धि (वि०) उपद्रव करने पर उतारू या दूषित व्यवहार पर तुला हुआ (स्त्री० द्धि) दुष्ट प्रयोजन, दुराशय।

द्रौणायनः,—निः, द्रौणिः [द्रोण+फक्, फिञ् वा, द्रोण+इञ्] अश्वत्थामा का विशेषण—यशोमेण कृतं नदेव कुरुते द्रौणायनिः क्रोधनः वेणी० ३।३१।

द्रौपदी [द्रुपद+अण्+ङीप्] पाञ्चालराज द्रुपद की पुत्री का नाम (स्वयम्वर में अर्जुन ने इसे प्राप्त किया। जब उन्होंने घर आकर अपनी माता कुन्ती को कहा कि आज हमने बड़ी अच्छी वस्तु प्राप्त की है। तब माता ने कहा कि सब आपस में बाँट लो, क्योंकि कुन्ती के मुख से निकला वचन कभी झूठा नहीं हो सकता अतः वह पाँचों भाइयों की पत्नी बनी। जब युधिष्ठिर जुए में अपने राज्य को हार गया, द्रौपदी को हार गया, यहाँ तक कि अपने आप को भी हार गया तो दुःशासन ने और दुर्योधन की पत्नी ने उसका बड़ा अपमान किया। परन्तु इस प्रकार के अपमान को द्रौपदी ने असाधारण सहिष्णुता के साथ सहन किया। और जब कभी कई अवसरों पर उसकी तथा उसके पतियों की परीक्षा ली गई तो उसने उनके मान की रक्षा की (जैसा कि उस समय जब दुर्वासा ऋषि ने अपने साठ हजार शिष्यों के लिए रात को भोजन माँगा)। अन्त में एक दिन उसकी सहिष्णुता समाप्त हो गई और उसने अपने पतियों को बड़े ताने के साथ उन्हीं शब्दों में कहा जिससे कि वह अपने शत्रुओं से प्राप्त क्षति और अपमान का कड़वा घूँट पी रहे थे दे० कि० १।२९-४६, इसी के फलस्वरूप पाण्डवों ने युद्ध करने का दृढ़ संकल्प किया। यह उन पाँच सती स्त्रियों में से है जो प्रातःस्मरणीय समझी जाती हैं—दे० अहल्या)।

द्रौपदेयः [द्रौपदी+ढक्] द्रौपदी का पुत्र—भाग० १।६।१८।

द्वन्द्वः [द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्तौ 'द्वि' शब्दस्य द्वित्वम्, पूर्वपदस्य अम्भावः, उत्तरपदस्य नपुंसकत्वम्, नि०] चडियाल जिस पर प्रहार करके घंटों की सूचना दी जाती है,—द्वम् 1 जोड़ा, जन्तु युगल, (मनुष्ययुगल भी) 2. स्त्री-पुरुष, नर-मादा द्वन्द्वानि भाव क्रियया विवव्रुः कु० ३।३५, मेघ० ४६, न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत्—कु० ७।६६, रघु० १।४०, श० २।१४, ७।२७ 3. दो वस्तुओं का जोड़ा, दो विरोधी अवस्थाओं या गुणों का

जोड़ा, (जैसे कि सुख-दुःख, शीत और उष्ण) —द्वन्द्वैरयोजयच्चेमा सुखदुःखादिभिः प्रजाः —मनु० १।२६, ६।८१, मर्मरैर्गुरुनिर्वृतिकरैः निवसन्नपि न द्वन्द्वदुःखमिह किंचिदकिंचनोऽपि —शि० ४।६४ 4 झगड़ा, लड़ाई, कलह, टण्टा, युद्ध 5 कुश्ती 6 संदेह, अनिश्चितता 7 किला, गढ़ 8 रहस्य, —द्वः (व्या० में) समास के चार मुख्य भेदों में से एक जिसमें दो या दो से अधिक शब्द एक साथ जोड़ दिये जाते हैं, जो कि असमस्त होने की अवस्था में एक ही विभक्ति के रूप और (समुच्चय बोधक अव्य०) अव्यय से जोड़े जाते —चार्थे द्वन्द्वः पा० २।२।२९ द्वन्द्वः सामासिकस्य च —भग० १०।३३। सम० —चर, —चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में रहने वाले (पु०) चकवा —दयितादन्द्वचरं पतत्रिणम् —रघु० ८।५६, ६३ —भाव वैराग्य अनबन, —भिन्नम् स्त्री और पुरुष (नर या मादा) का वियोग, —भूत (वि०) 1 एक जोड़ा बनाये हुए 2 संदिग्ध अनिश्चित, —युद्धम् मल्लयुद्ध, अकेले (दो) की लड़ाई।

द्वन्द्वशः (अव्य०) [द्वन्द्व+शस्] दो दो करके, जोड़े में।

द्वय (वि०) (स्त्री० —यी) [द्वि+अयट्] दोहरा, दुगना, दो प्रकार का, दो तरह का —अनुरक्षण द्वयी गतिः मुद्रा० ३, भर्तृ० २।१०४ अत्र० ११० कभी कभी ब० व० में भी प्रयुक्त दे० शि० ३।५७, —यम् 1 जोड़ा, युगल, युग्म (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) द्विनयनं द्वयमेव मृगाः —रघु० ८।१६, १।१९ ३।८ ४।४ 2 दो प्रकार की प्रकृति, द्वैधता 3 मिथ्यात्व —यी जोड़ी, युगल। सम० —अतिग (वि०) जिसका मन रजस् और तमस् इन दो गुणों के प्रभाव से मुक्त हो गया है, संत महात्मा, —आत्मक द्वैधप्रकृति से युक्त —वादिन् द्विजिह्व, कपटी।

द्वयस (वि०) (स्त्री० —सी) जहाँ तक हो सके इतना ऊँचा, जितना कि 'इतना गहरा जितना कि पहुँच जाना' अर्थ को बतलाने वाला प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के साथ लग जाता है —ऊरुद्वयसं सरः —सि० ११४ —नारीनितम्बद्वयसं बभूव (अम्भः) —रघु० १६।४६, शि० ६।५५

द्वापर, —रम् [द्वाभ्यां सत्यत्रेतायुगाभ्यां परः पृषो०—तारा०] 1 विश्व का तृतीय युग —मनु० ९।३०१ 2 पासे का वह पार्श्व जिस पर दो की संख्या अंकित है 3 संदेह, संशयज, अनिश्चितता।

द्वामुष्यायण (वि०) [अदस्+फक्, आमुष्यायण ब० स०] दे० 'द्व्यामुष्यायण'।

द्वार् (स्त्री०) [द्वृ+णिच्+क्विप्] 1 दरवाजा, फाटक —याज्ञ० ३।१२, मनु० ३।३८ 2 उपाय, तरकीब, द्वारा 'के उपाय से' की मार्फत। सम० —स्थ, —स्थित (द्वास्थ, द्वास्थ, द्वास्थित, द्वास्थित) द्वारपाल, ड्योढ़ीवान्।

द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1 दरवाजा, तोरण, प्रवेशद्वार, फाटक 2 मार्ग, प्रवेश, घुसना, मुख, —अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् —रघु० १।४, ११।१८ 3 शरीर के द्वार या छिद्र (ये गिनती में नौ हैं दे० खम्) कु० ३।५०, भग० ८।१२ मनु० ६।४८ 4 मार्ग, माध्यम, साधन या उपाय द्वारेण 'में से' के साधन से'। सम० —अधिप. ड्योढ़ीवान्, द्वारपाल —कण्टक दरवाजे की कुंडी —कपाट, —टम् दरवाजे का पल्ला या किवाड़, —गोप —नायक, —प —पाल, —पालक, द्वारपाल, ड्योढ़ीवान्, पहरेदार, —दारु सागवान की लकड़ी —पट्ट 1 दरवाजे का किवाड़ 2 दरवाजे का पर्दा —पिण्डी दरवाजे का देहली —पिधान दरवाजे की कुंडी —बलिभुज (पु०) 1 कौआ 2 चिड़िया —बाहु दरवाजे की बाजू, द्वार का पाखा —यन्त्रम् ताला, कुंडी —स्थ द्वारपाल।

द्वारका [द्वार+क+टाप्] गुजरात के पश्चिमी किनारे पर स्थित कृष्ण की राजधानी। द्वारका के वर्णन के लिए दे० शि० ३।३३-६०। सम० —ईशः कृष्ण का विशेषण।

द्वारवती, द्वारावती = द्वारका।

द्वारिक, द्वारिन् (पु०) ड्योढ़ीवान्, द्वारपाल।

द्वि (संख्या० वि०) (कर्तृ० द्वि० व० पु० द्वौ स्त्री० नपुं० द्वे) दो, दोनों —द्वावपि सद्रश्वरपतिजनोद्धर्तारौ द्वौ —रघु० ५।६८ (विशे० ... विंशति और त्रिंशत् से पूर्व द्वि का द्वा हो जाता है —चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि सप्तति और नवति से पूर्व द्वि का द्वा होता है परन्तु विकल्प से और अशीति से द्वि में कोई परिवर्तन नहीं होता)। सम० —अक्ष (वि०) दो आँखों वाला, —अक्षर (वि०) द्व्यक्षरी दो अक्षरों से सम्बद्ध —अङ्गुल (वि०) दो अंगुल लम्बा (—लम्) दो अंगुल की लम्बाई, —अणुकम् दो अणुओं का संघात, —अर्थ (वि०) 1 दो अर्थ रखने वाला 2 संदिग्ध अस्पष्ट या द्व्यर्थक 3 दो बातों का ध्यान रखने वाला —अशीत (वि०) बयासीवाँ —अशीति (स्त्री०) बयासी, —अष्टम् तांबा —अहः दो दिन का समय, —आत्मक (वि०) 1 दो प्रकार के स्वभाव वाला 2 दो होने वाला, —आमुष्यायणः दो पिताओं का पुत्र गोद लिया हुआ बेटा, जो अपने मूल पिता की सम्पत्ति का भी साथ ही साथ उत्तराधिकारी हो। —ऋचम् (द्वृचम्, द्व्यर्चम्) ऋचाओं का संग्रह, —क, —ककार 1 कौवा (क्योंकि 'काक' शब्द में दो 'क' होते हैं) 2 चकवा (क्योंकि कोक शब्द में भी दो 'क' हैं), —ककुद् (पु०) ऊँट,

—क्रीत (वि०) जो गौओं से विनिमय किया हुआ, (—गुः) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक होता है - द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहम् – उद्भट, —गुण (वि०) दुगुना दोहरा, (द्विगुणीकृ—दो बार हल चलाना, दुगुना करना, बढ़ाना), —गुणित (वि०) 1 दुगुना किया हुआ, – कि० ५।४६ 2 दो तह किया हुआ 3 लपेटा हुआ 4 दुगुना बढ़ाया हुआ, —चरण (वि०) दो टाँगों वाला, दो पैरों वाला —द्विचरणपशूना क्षितिभुजाम् शा० ४।१५, —चत्वारिंश (वि०) [द्वि–चत्वारिंश:] बयालीसवाँ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) (द्वि-द्वाचत्वारिंशत्) बयालीस, —ज द्विजन्मा, 1 हिंदुओं के प्रथम तीन वर्णों में (ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य) कोई एक, दे० याज्ञ० १।३९ 2 ब्राह्मण (जिसपर पवित्रीकारक कृत्य या संस्कारों का अनुष्ठान किया जा चुका है)—जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते 3 अंडज जन्तु जैसे कि पक्षी साँप मछली आदि स समानदर्पविवत द्विज – पं० २।११ श० ५।२१ रघु० १२।२२ मुद्रा० १।११ मनु० २।१७ 4 दाँत कीर्ण द्विजाना गर्णे भर्तृ० १।१३ (यहाँ द्विज शब्द का अर्थ ब्राह्मण भी है) °अयन ब्राह्मण अपनी यज्ञोपवीत जिसे हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं आलय द्विज का घर इन्द्र०, °ईश 1 चन्द्रमा शि० १२।३ 2 गरुड का विशेषण 3 कपूर °दास शूद्र °पति, राज 1 चन्द्रमा का विशेषण रघु० ५।२३ 2 गरुड 3 कपूर, °प्रपा 1 आलवाल थावला 2 जलकुंड (जहाँ पशु पक्षी पानी पीयें), बन्धु, ब्रुव 1 जो ब्राह्मण बनने का बहाना करता है 2 जो जन्म से ब्राह्मण हो, कर्म से न हो तु० ब्रह्मबन्धु लिङ्गिन् (पु०) 1 क्षत्रिय 2 झूठा ब्राह्मण ब्राह्मण वेश धारी °वाहन विष्णु की उपाधि (गरुडारोही) °सेवक शूद्र, —जन्मन्, जाति (पु०) 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों म से किसी एक वर्ण का मनु० २।२६ 2 ब्राह्मण - कि० १।३९, कु० ५।४० 3 पक्षी पंछी 4 दाँत जातीय (वि०) हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का —जिह्वः 1 साँप - शि० १।६३, रघु० ११।६४ १४।४१, भामि० १।२० 2 सप्त्रक, मिथ्यानिन्दक चुगलखोर 3 कपटी पुरुष, —त्र (वि०) (ब० व०), दो तीन रघु० ५।२५, भर्तृ० २।१२१, —त्रिंश (द्वात्रिंश) 1. बत्तीसवाँ 2 बत्तीस से युक्त, – त्रिंशत् (द्वात्रिंशत्) बत्तीस, °लक्षण ३२ शुभलक्षणों से युक्त —दण्डि (अव्य०) 1 डंडे से डंडा, —दत् (वि०) दो दाँत रखने वाला, - दश (वि०) (ब० व०) बीस —दश (वि०) (द्वादश) 1. बीसवाँ, मनु० २।१६

2 बारह से युक्त, – दशन् (द्वादशन्) (वि०, ब० व०) बारह, °अंशु. 1 बृहस्पति ग्रह तथा 2. देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण °अक्ष °कर °लोचनः कार्तिकेय का विशेषण °अंगुल १२ अंगुल का माप, °अह 1 बारह दिन का समय मनु० ५।८३, ११।६८ 2. १२ दिन तक चलने वाला या १२ दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ °आत्मन् (पु०) सूर्य, °आदित्याः (ब० व०) बारह सूर्य दे० आदित्य आयुस् (पु०) कुत्ता सहस्र (वि०) १२००० से युक्त दशी (द्वादशी) चांद्र मास के पक्ष की १२वीं तिथि, देवतम् विशाखानाम नक्षत्र —देह गणेश का विशेषण, धातु गणेश का विशेषण - नग्नक वह मनुष्य जिसकी सुन्नत हो चुकी हो – नवत (द्वि-द्वानवत) बानवेवाँ नवति द्वि-द्वानवति) बानवे प हाथी आस्य गणेश का विशेषण पक्ष 1 पक्षी 2 महीना पञ्चाश (द्वि-द्वापञ्चाश) (वि०) बावनवें पञ्चाशत् (द्वि-द्वापञ्चाशत्) (स्त्री०) बावन पथम् दो मार्ग पद्, दुपाया मनुष्य पदिका, पदी 1 दुपाया मनुष्य 2 पक्षी देवता पाद, पादम् दूसरा जुर्माना पायिन् (पु०) हाथी बिन्दु विसर्ग (:) भुज कोण भुम (वि०) (महल का भवन) दो मंजिला मातृ, मातृज 1 गणेश तथा 2 जरासंध का विशेषण मात्र दीर्घ स्वर (दो मात्राओं वाला) आनी गायत्री मुख्य जोंक र 1 भौंरा कु० द्विरेफ 2 बबर रद हाथी—रघु० ६।४ मेघ० ५० अन्तक, अराति अशन सिंह रसन साँप रागम् दो रात रूप (वि०) 1 दो रूपों वा 2 दो रंग का द्विरर्णित रेतस (पु०) खच्चर, रेफ भौंरा (भ्रमर इसमे दो र हैं) कु० १।२७ ३।२७ ३६ वचनम (व्या० में) द्विवचन वजक १६ कोणों का खोखा या गावदों का घर वाहिका बहंगी, विंश (द्वाविंश) (वि०) बाईसवाँ, विंशति (द्वाविंशति) (स्त्री०) बाईस, विध (वि०) दो प्रकार का, दो तरह का मनु० ७।१६२ वेसरा अश्वतरों या खच्चरों से खींची जाने वाली हल्की गाड़ी शतम् 1 दो सौ 2 एक सौ दो –शत्य (वि०) दो सौ में खरीदा हुआ या दो सौ के मूल्य का -शफ (वि०) दो फटे खुर वाला (फ) कोई भी फटे दो खुर वाला जानवर —शीर्षः अग्नि का विशेषण षष् (वि०) (ब० व०) दो बार छः, बारह षष्ट (द्विषष्ट, द्वाषष्ट) बासठवाँ, षष्टि (स्त्री०) (द्विषष्टि, द्वाषष्टि) बासठ, – सप्तत (द्वि-द्वासप्तत) (वि०) बहत्तरवाँ—सप्तति (स्त्री०) (द्वि + द्वासप्ततिः) बहत्तर, —सप्ताह:

पक्ष, पखवाड़ा, **—सहस्र, साहस्र** (वि०) २००० से युक्त (**—म्**) दो हजार, **—सीत्य, —हल्य** (वि०) दोनों ओर से हल चला हुआ अर्थात् पहले लम्बाई की ओर से और फिर चौड़ाई की ओर से **—सुवर्ण** (वि०) दो सोने की मुद्राओं से खरीदा हुआ या दो स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य का **—हन्** (पुं०) हाथी **—हायन्**, **—वर्ष** (वि०) दो वर्ष की आयु का, **—हीन** (वि०) नपुंसक लिंग (दुबया गर्भवत्। स्त्री) **—होतृ** (पुं०) अग्नि का विशेषण।

द्विक (वि०) [द्वाभ्यां कायति –द्वि + कै + क] 1 दोहरा जोड़ी बनाने वाला। दो से युक्त 2 दूसरा 3 बारबार होने वाला 4 दो अधिक बढ़ा हुआ दो प्रतिशत —द्विकं शतं वर्द्धेत मनु० ८।१४१—२।

द्वितय (वि०) (स्त्री० —यी) [द्वौ अवयवौ यस्य द्वि तयप्] दो से युक्त, दो से मिलकर बना हुआ, दोहरा (कई बार ब० व० में प्रयुक्त)। दुमसानुमतां किमन्तरं यदि वायौ द्वितयेऽपि ते चलाः रघु० ८।९० **—यम्** जोड़ी, युगल रघु० ८।६

द्वितीय (वि०) [द्वयोः पूरणम् द्वि + तीय] दूसरा त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम् उत्तर० ३।२६ मेघ० ८३ रघु० २।३९, **—य** 1 परिवार में दूसरा पुत्र 2 साथी, साझीदार मित्र, (प्राय समास के अन्त में) प्रयतपरिग्रहद्वितीयः रघु० १।९५ इसी प्रकार छाया, दुःख **—या** चान्द्रमास के पक्ष की द्वितीया, पत्नी, साथी सहचारिणी। सम० **—आश्रम** ब्राह्मण या गृहस्थ के जीवन का दूसरा अवस्था अर्थात् गार्हस्थ्य।

द्वितीयक (वि०) [द्वितीय + कन्] दूसरा।

द्वितीयाकृत (वि०) [द्वितीय शब्द + डाच् + कृ + क्त] (खेत आदि) जिसमें दो बार हल चलाया जा चुका हो।

द्वितीयिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [द्वितीय + इनि] दूसरे स्थान पर अधिकार किये हुए।

द्वित्र (वि०) [द्विधा + र] दो भागों में विभक्त, दो टुकड़ों में कटा हुआ।

द्विधा (अव्य०) [द्वि + धाच्] दो भागों में द्विधाभिन्ना शिखण्डिभिः रघु० १।३९, मनु० १।१२,३२, द्विधेव हृदयं तस्य दुःखितस्याभवत्तदा महा० 2 दो प्रकार से। सम० **—करणम्** दो भागों में विभाजन टुकड़े-टुकड़े करना, **—गति** 1 उभयचर जन्तु जल स्थल-चर 2 केंकड़ा 3 मगरमच्छ।

द्विशस् (अव्य०) [द्वि + शस्] दो दो करके दो के हिसाब से, जोड़े में।

द्विष् (अदा० उभ० —द्वेष्टि, द्विष्टे, द्विष्ट) घृणा करना, पसंद न करना, विरोधी होना न द्वेक्षि यज्जनमतः स्वमजातशत्रुः—वेणी० ३।१५, भग० २।५७, १८।१०, भट्टि० १७।६१, १८।९, रघु० द्वेष्टि—श० ६।५, (प्र, वि सम् आदि उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई परिवर्तन नहीं होता)।

द्विष् (वि०) [द्विष् + क्विप्] विरोधी, घृणा करने वाला, शत्रुवत् (पुं०) शत्रु —रुद्धापाङ्गप्रसरणदृशां द्विषामि-मिषता ययौ —रघु० १२।११, ३।४५ पञ्च० १।७० ।

द्विषत् [द्विष् + क] शत्रु (द्विषन्तप) वि० शत्रु को सताप करने वाला प्रतिशोध लेने वाला।

द्विषत् (पुं०) [द्विष् + शतृ] शत्रु (कर्म० या सम्ब० के साथ) नत. पर दुःखाय द्विषन्ति —रघु० ६।३१, ११। २१ भट्टि० ५।९७

द्विष्ट (वि०) [द्विष् + क्त] 1 विरोधी 2 घृणित अप्रिय —ष्टम् तांबा।

द्विस् (अव्य०) [द्वि + सुच्] दो बार द्विरिव प्रतिशब्देन व्याजहार हिमालयः कु० ६।६४ मनु० २।६० । सम० **—आगमनम्** (द्विरागमनम्) गौना मुकलावा, दुल्हन का अपने पति के घर दूसरी बार आना **—आप** (द्विराप) हाथी **—उक्त** (द्विरुक्त) (वि०) 1 दुबारा पुनर्कथित 2 अतिरिक्त अनुपयोग,**—उक्ति** (द्विरुक्ति) पुनर्विचारित स्त्री, भाव **—वचनम्** द्विरावृत्ति।

द्वीपः —**पम्** [द्विर्गता द्वयोर्दिशयोर्वा गता आपो यत्र द्वि + अप् अत ईत्] 1 टापू 2 शरणस्थान, आश्रयगृह उपायन स्थान 3 भूलोक का एक भाग (भिन्न २ मतानुसार इन भागों की संख्या भी भिन्न २ है, चार, सात नौ या तेरह, कमल की पंखड़ियों की भांति सब के सब मेरु के चारों ओर स्थित हैं, इनमें से प्रत्येक को समुद्र एक दूसरे से वियुक्त करता है। सं० १।२ में अठारह द्वीपों का वर्णन है, परन्तु सात की संख्या सामान्य प्रतीत होती है —तु० रघु० १।६५, और श० ७।३३, केन्द्रीय भाग जम्बूद्वीप का है जिसमें भारतवर्ष विद्यमान है)। सम० **—कर्पूर**: चीन में प्राप्त कपूर।

द्वीपवत् (वि०) [द्वीप + मतुप्] टापुओं से भरा हुआ (पुं०) समुद्र **—ती** पृथ्वी।

द्वीपिन् (पुं०) [द्वीप + इनि] 1 शेर वर्मणि द्वीपिन हन्ति सिद्धा० 2 चीता, व्याघ्र। सम० **—नख**: **—खम्** 1 शेर की पूंछ 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

द्वेधा (अव्य०) [द्वि + धा] दो भागों में, दो तरह से, दो बार।

द्वेष [द्विष् + घञ्] 1 घृणा अरुचि वीभत्सा, अनिच्छा, जुगुप्सा श० ५।१८ भग० ३।३४ ७।२७ इसी प्रकार अन्नद्वेष, भक्तद्वेष 2 शत्रुता विरोध, ईर्ष्या मनु० ८।२२५।

द्वेषण (वि०) [द्विष् + ल्युट्] घृणा करने वाला, नापसन्द

करने वाला, —षः शत्रु —षम् घृणा, जुगुप्सा, शत्रुता, अरुचि।

द्वेषिन्, द्वेष्टृ (वि) [द्वेष+इनि, द्विष्+तृच्] घृणा करने वाला, (पुं०) शत्रु।

द्वेष्य (सं० कृ०) [द्विष्+ण्यत्] 1 घृणा के योग्य 2 घिनौना, घृणित, अरुचिकर —रघु० १।२८, —ष्यः शत्रु भग० ६।९ ९।२९ मनु० ९।३०७।

द्वैगुणिक [द्विगुण+ठक्] सूदखोर जो शत प्रतिशत ब्याज लेता है।

द्वैगुण्यम् [द्विगुण+ष्यञ्] 1 दुगुनी राशि मूल्य या माप 2 द्वित्व, द्वैतावस्था 3 तीन गुणों (अर्थात् सत्त्व रजस् और तमस्) में से दो पर अधिकार रखना।

द्वैतम् [द्विधा इतम् द्वितम् तस्य भावः स्वार्थे अण्] 1 द्वित्व 2 द्वैतवाद (दर्श०) दो विशद नियमों का प्रकथन, जैसे कि जीव और प्रकृति ब्रह्म और विश्व, आत्मा और परमात्मा एक दूसरे से भिन्न हैं तु० अद्वैत कि शास्त्रश्रवणेन यस्य गलति द्वैतान्धकारो त्करः —भामि० १।८६ 3 एक जंगल का नाम। सम०—वनम् एक जंगल का नाम कि० १।१ —वादिन् (पुं०) वह दार्शनिक जो द्वैतसिद्धान्त को मानता है।

द्वैतिन् (पुं०) [द्वैत+इनि] द्वैतवादी दार्शनिक।

द्वैतीयीक (वि०) (स्त्री० —की) [द्वितीय+ईकक्] दूसरा — द्वैतीयीकतया मितोऽयमगमत्तस्य प्रबन्धे महाकाव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वलः — नै० २।११० तु० तार्तीयीक।

द्वैध (वि०) (स्त्री० —धी) [द्वि+धमुञ्] दोहरा, दुगुना (द्वैधीभू दो भागों में विभक्त होना खण्ड-खण्ड होना, दुविधा में पड़ना मन में अनिश्चित होना) —धम् 1 द्वैतावस्था दोहरी प्रकृति या अवस्था 2 दो भागों में विभक्ति 3 दुगुन सावन गौण और अज 4 विविधता भिन्नता संघर्ष विवाद विभेद —श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्यात् तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ—मनु० २।१४, ९।३२ याज्ञ० २।७८ 5 संदेह अनिश्चितता भग० ५।२५ वेणी० ६।४४ 6 दो प्रकार का व्यवहार, दुरंगीनीति विदेशनीति के छः प्रकारों में से एक, दे० नी० द्वैधीभाव और गुण।

द्वैधीभावः [द्वैध+च्वि+भू+घञ्] 1 द्वैतता, दो प्रकार की अवस्था या प्रकृति 2 दो खण्ड, विभिन्नता, द्विधाभाव 3 संदेह, अनिश्चितता डाँवाडोल होना निकम्मापन —धृतद्वैधीभावकातरं मे मनः —श० १ 4 दुविधा 5 विदेश नीति के छः गुणों में से एक (कुछ के मतानुसार इसका अर्थ है—दो तरह का व्यवहार, दुरंगापन, बाहर से शत्रु के साथ मित्र जैसे संबंध रखना — बलिनोर्द्विषतोर्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन् द्वैधीभावेन तिष्ठेत् काकाक्षिवदलक्षितः दूसरों के मतानुसार शत्रु की सेना में फूट डालना और अपने से बलवान् शत्रु का छोटी२ टुकड़ियों में मुकाबला करना तथा आक्रमण द्वारा उसे दुःखी करना द्वैधीभावः स्वबलस्य द्विधा करणम् याज्ञ० १।३४७ पर मिता० तु० मनु० ७।१७३ व १६० से।

द्वैप्यम् [द्विधा+ष्यञ्] 1 दुरंगी चाल 2 विविधता विभिन्नता।

द्वैप (वि०) (स्त्री० —पी) [द्वीप+अण्] 1 टापू से संबंध या टापू पर रहने वाला 2 शेर से संबंध रखने वाला शेर की खाल का बना हुआ या व्याघ्र की खाल से ढका हुआ —पः शेर की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

द्वैपक्षम् [द्विपक्ष+अण्] दो दल या टोलियाँ।

द्वैपायन [द्वीपायन+अण्] टापू में उत्पन्न वेदव्यास।

द्वैप्य (वि०) (स्त्री० —प्या, —प्यी) [द्वीप+ष्यञ्] टापू निवासी या टापू से संबन्ध शि० ३।७६।

द्वैमातुर (वि०) [द्विमातृ+अण्] दो माताओं वाला अर्थात् जन्मदात्री माता तथा सौतेली माता —रः 1 गणेश का नाम 2 जरासंध का नाम —हृते हिडिम्बारिणा नाऽिभ द्वैमातुरं युधि शि० २।६०

द्वैमातृक (वि०) (स्त्री० —की) [द्विमातृक+अण्] (वह देश) जहाँ वर्षा तथा नदी दोनों का जल खेती के काम आता हो (तु० देवमातृक)।

द्वैरथम् [द्विरथ+अण्] 1 दो रथारोहियों का एकाकी युद्ध 2 एकल युद्ध —थः शत्रु।

द्वैराज्यम् [द्विराज्य+ष्यञ्] दो राजाओं में बँटा हुआ उपनिवेश।

द्वैवार्षिक (वि०) [द्विवर्ष+ठक्] प्रति दूसरे वर्ष होने वाला।

द्वैविध्यम् [द्विविध+ष्यञ्] 1 द्वैतता, दुरंगी प्रकृति 2 विभिन्नता विविधता, भिन्नता।

ध

ध (वि०) [धा + ड] (समास के अन्त में) रखने वाला, संभालने वाला —**धः** 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 कुबेर 3 भलाई, नेकी आचार गुण —**धम्** धन दौलत, संपत्ति।

धक् कोधोद्गार उत्तर० ४।२८।

धक्क् (चुरा० उभ० धक्कयति-ते) ध्वस्त करना नष्ट करना।

धट [ध + अट् + अच् शक० पररूपम] 1 तराजू तराजू के पलड़े 2 तराजू द्वारा कराई परीक्षा 3 तुला राशि।

धटक [धट + कै + क] ४२ गुंजा या रत्ती के समान एक प्रकार का तोल।

धटिका धटी [धटी + कन्, धट् + अच् + ङीष्] 1 पुराना कपड़ा या चिथड़ा 2 लंगोटी।

धटिन् (पुं०) [धट + इनि] 1 शिव का विशेषण 2 तुला राशि —नी —धटी।

धण् (भ्वा० पर०—धणति) शब्द करना।

धत्तूर धत्तूरक —का [धयति धातून् ध + तुरच् पृषो० धत्तूर + कन्] धतूरे का पौधा।

धम् (भ्वा० पर०—धमति) शब्द करना।

धनम् [धन् + अच्] 1 संपत्ति दौलत धन निधि रुपया (सोना आदि माल संपत्ति) —धन नाम्नागुलभम् हि० १ (आलं० भी) जैसा कि तपोधन विद्याधन आदि में 2 (क) मूल्यवान् संपत्ति कोई प्रियतम या स्निग्धतम पदार्थ प्रियतम निधि—कृत धन कुलवनीरनुरक्षणीय कुमार० १।१४ गुरोरपाद धन माहिताग्नेः रघु० २।४४ मानधनम अभिमान० आदि (ख) मूल्यवान् वस्तु मनु० ८।०१ 3 पूंजी (विप० वृद्धि या ब्याज) 4 लूट का माल अपहृत वस्तु ऊपरी आय 5 मल्लयुद्ध में विजेता को प्राप्त होने वाला पुरस्कार खेल में जीता हुआ पारितोषिक 6 पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता प्रतिद्वन्द्विता 7 धनिष्ठा नक्षत्र 8 फालतू अवशिष्ट 9 (गणि० में) जोड़ की राशि (विप० ऋण)। सम० —अधिकारः संपत्ति में अधिकार, उत्तराधिकार में संपत्ति पाने का हक —अधिकारिन्, —अधिकृतः 1 कोषाध्यक्ष 2 उत्तराधिकारी —अधिगोप्तृ, —अधिप —अधिपतिः, —अध्यक्षः 1 कुबेर का विशेषण कि० ५।१६ 2 कोषाध्यक्ष, —अपहारः 1 अर्थदंड 2 लूट खसोट का माल —अर्चित (वि०) धन के उपहारों से सम्मानित मूल्यवान् उपहारों से संतुष्ट किया गया, मालवता धनवत्ता कि० १।१९ 2 मालदार, धनाढ्य, —अर्थिन् (वि०) धनेच्छुक लालची कंजूस, —आढ्य (वि०) मालदार धनी दौलतमंद —आधारः खजाना, —ईशः, —ईश्वरः 1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण —उष्मन् (पुं०) धन की गर्मी —दु० अर्थोष्मन —एषिन् (पुं०) साहूकार जो अपना रुपया मांगे —केलिः कुबेर का विशेषण —क्षयः धन की हानि धनक्षये वर्धति जाठराग्निः — पंच० २।१७८ —गर्व, —गर्वित (वि०) रुपये का घमंडी —जातम् हर प्रकार की मूल्यवान् संपत्ति समस्त द्रव्य —दः 1 उदार या दानशील व्यक्ति 2 कुबेर का विशेषण रघु० ९।२५, १७।८० 3 अग्नि का नाम —अनुजः रावण का विशेषण—रघु० १२।५२ —८२ —दण्डः अर्थदंड, जुर्माना —दायिन् (पुं०) आग —पतिः कुबेर का विशेषण—धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम मेघ० ७५ —पालः 1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण —पिशाचिका, —पिशाची धन का राक्षस धन की तृष्णा लालच —प्रयोगः सूद ख्वारी —मद (वि०) धन का घमंडी —मूलम् मूलधन पूंजी —लोभः तृष्णा लिप्सा, —व्ययः 1 खर्च 2 अपव्यय —स्थानम् खजाना —हरः 1 उत्तराधिकारी 2 चोर 3 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य।

धनकः धनाया [धनस्य काम धन + क्यच्] तृष्णा, लालच लालसा।

धनञ्जय [धन + जि + खच्, मुम्] 1 अर्जुन का नाम (नाम की व्युत्पत्ति सर्वान् जनपदान् जित्वा वित्तमादाय केवलम् मध्ये धनस्य तिष्ठामि तेनाहुर्मां धनञ्जयम्—महा० 2 अग्नि का विशेषण।

धनवत् (वि०) [धन + मतुप्] धनी दौलतमंद।

धनिक [धनमादेयत्वेनास्ति अस्य ठन्] 1 धनवान् या दौलतमंद पुरुष 2 महाजन साहूकार दापयेद्धनिकस्यार्थम् मनु० ८।४७ याज्ञ० २।५५ 3 पति 4 ईमानदार व्यापारी 5 प्रियंगु वृक्ष।

धनिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन + इनि] धनी मालदार, दौलतमंद (पुं०) 1 दौलतमंद 2 साहूकार याज्ञ० २।१८४१ मनु० ८।६१।

धनिष्ठ (वि०) [धन + इष्ठन् धनिन् की उ० अ०] अत्यंत धनी —ष्ठा तेईसवाँ नक्षत्र (इसमें चार नक्षत्रों का पुंज है)।

धनी धनीका [धनमस्ति अस्य —धन + अच् + ङीष्] तरुणी, जवान स्त्री।

धनु [धन् + उ] धनुष, (संभवतः 'धनुस्' का ही रूप)

धनुस् (वि०) [धन् + उसि] 1 धनुष से सुसज्जित (धनु०)।

धनुष, —[illegible] सममन बाणम् कु० ३।६६ इसी प्रकार इन्द्रधनु और (बहुव्रीहि समास के अन्त में धनुस् के स्थान में धन्वन् आदेश हो जाता है रघु० [illegible]) 2 चार हाथ के बराबर लंबाई की माप याज्ञ० २।१६७ मनु० [illegible] 3 धृत की [illegible] 4 धन राशि 5 [illegible] पु० धन्वन्। सम० **—कर** (वि०—धनुष्कर) धनुष से सुसज्जित (र) धनुष बनाने वाला,—**काण्डम्** (धनु: काण्डम्) धनुष और बाण **—खण्डम्** (धनु: खण्डम्) धनुष का [illegible] —**गुण** (धनुर्गुण) धनुष की डोरी—**ग्रह** (धनुर्ग्रह) धनुर्धारी **ज्या** (धनुर्ज्या) धनुष की डोरी अनवरतधनुर्ज्या[illegible]म्—श० २।४—**द्रुम** (धनुर्द्रुम) बाँस —**धर** —**भृत्** (पु०) (धनुर्धर आदि) धनुर्धारी—रघु० [illegible] ३।३१ [illegible] २।११ [illegible] —**पाणि** (वि०) धनुष्पाणि धनुष से सुसज्जित हाथ में धनुष लिए हुए —**मार्ग** (धनुर्मार्ग) धनुष की भांति टेढ़ी रेखा वक्र,— **विद्या** (धनुर्विद्या) धनुर्विज्ञान —**वृक्ष** (धनुर्वृक्ष) 1 बाँस 2 अश्वत्थ का वृक्ष **वेद** (धनुर्वेद) चार उपवेदों में से एक धनुर्वेद, धनुर्विज्ञान।

धनू (स्त्री०) [धन्+ऊ] अनाज [illegible]।

धन्य (वि०) [धन्+यत्] 1 धन प्रदान करने वाला —मनु० ३।१०६ ४।१९ 2 दौलतमंद धनी माल दार 3 सौभाग्यशाली भाग्यवान महाभाग [illegible] शाली—धन्य जीवनमस्य [illegible]—भामि० [illegible] धन्या केय स्थिता ते शिरसि—मुद्रा० १।१ 4 श्रेष्ठ उत्तम, गुणवान —**न्य** भाग्यवान या सौभाग्यशाली किस्मत वाला व्यक्ति—[illegible] भवति—श० ७।१७ मनु० [illegible] धन्य [illegible] विक्रियां कलयते प्राप्ते [illegible] यौवन १।३४ 2 काफ़िर नास्तिक 3 जादू,—**न्या** 1 धात्री 2 धनिया **न्यम** दौलत, कोष। सम०—**वाद** 1 साधुवाद देने के लिए बोला जाने वाला शब्द साधुवाद 2 प्रशंसा स्तुति वाहवाह।

धन्यंमन्य (वि०) [धन्य+मन+खश् मुम्] अपने आपको भाग्यशाली मानने वाला।

धन्याकम् [धन्य+आकन् नि०] 1 धनिये का पौधा 2 धनिया।

धन्वम् [धन्+वन] धनुष (वेद साहित्य में [illegible] प्रयोग)। सम०—**च्छि** धनुष बनाने की लकड़ी।

धन्वन् (पुं० नपुं०) [धन्+कनिन्] 1 सूखी जमीन मरुभूमि रेत की भांति [illegible] मरुस्थले[illegible]—भामि० १।२१ 2 समुद्रतट कड़ी भूमि। सम० **दुर्गम्** मरु (जो चारों ओर फैली मरुभूमि के कारण अगम्य हो) —मनु० ७।७०।

धन्वन्तरम् (नपुं०) चार हाथ के बराबर दूरी की माप, तु० दण्ड।

धन्वन्तरि [धनु: चिकित्साशास्त्रम् [illegible]—धनु [illegible]] देवताओं के वैद्य का नाम, (कहते हैं कि धन्वन्तरि समुद्रमंथन के [illegible] अमृत हाथ में लिए हुए समुद्र से [illegible] [illegible]।

धन्विन (वि०) (स्त्री० —नी) [illegible] धनुष से सुसज्जित [illegible] 1 धनुर्धारी [illegible] [illegible] कु० [illegible] च धन्विना [illegible] 2 अर्जुन 3 [illegible]।

धन्विन [illegible]

धम [illegible] 1 चन्द्रमा 2 [illegible] देवता [illegible]

धमक [illegible]

धमधमा [illegible]

धमन (वि०) [illegible] 1 धौंकने वाला 2 क्रूर, [illegible]

धमनि [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

धमि [illegible]

धम्मल धम्मिल धम्मिल्ल [illegible] स्त्रियों के सिर का मोतीदार अलंकृत जूड़ा [illegible] दुर्लभ [illegible] धम्मिल्ल[illegible] [illegible] १।४४ [illegible] १।

धय (वि०) [धे+श] (प्रायः समास के अन्त में) पीने वाला चूसने वाला जैसा कि स्तनंधय में।

धर (वि०) (स्त्री० —रा) [धृ+अच्] (प्राय: समास के अन्त में) पकड़ने वाला, ले जाने वाला, संभालने वाला पहनने वाला, रखने वाला, रक्षा में करने वाला, सहारा प्रदान करने वाला निरीक्षण करने वाला जैसा कि अक्षधर, अंशुधर, गदाधर, गंगाधर, महीधर, जलधर, दिव्यांबरधर आदि, —**र** 1 पहाड़ [illegible] दौरिम- [illegible] —कु० [illegible] शि० ४।१६ 2 रुई का [illegible] 3 ओला, विटप 4 कच्छपराज अर्थात् कछवा बनाकर भगवान विष्णु 5 एक [illegible]।

धरण (वि०) (स्त्री० —णी) [धृ+ल्युट्] पकड़ने वाला, धारण करने वाला संभालने वाला आदि **—णः** 1 टीला (जो पुल का काम दे रहा हो), पर्वतमालाएँ

2 संसार 3 सूर्य 4 स्त्री की छाती 5 चावल, अनाज हिमालय (पहाड़ों का राजा), —भृत् 1 सहारा देना, निर्वाह कराना, संभालना -सारधरित्रा धरणक्षम च कु० १।१७, धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे गीत० ? 2 कब्जे में करना, लाना, उपलब्ध करना 3 थूणी, टेक, सहारा 4 सुरक्षा 5 दस पल के वजन का बट्टा।

धरणि, —णी (स्त्री) [धृ अनि धरणि + ङीष्] पृथ्वी—सुरभि धरणिशयने बहु विलपति तव नाम गीत० ५ 2 भूमि, मिट्टी 3 छत का शहतीर 4 धमनी, शिरा। सम० —ईश्वरः 1 राजा 2 विष्णु का नाम 3 शिव का विशेषण, —कीलकः पहाड़, —पुत्रः, —सुतः 1 मंगल के विशेषण 2 नरक राक्षस के विशेषण, —सुता पृथ्वी की पुत्री सीता (पृथ्वी से उत्पन्न होने के कारण), का विशेषण, —धरः 1 शेष नाग 2 विष्णु का विशेषण 3 पहाड़ 4 कछुवा 5 राजा 6 हाथी (जो, कहते हैं कि पृथ्वी को संभाले हुए हैं), —भृत् (पुं०) 1 पहाड़ 2 विष्णु या 3 शेष का विशेषण।

धरा [धृ + अच् + टाप्] 1 पृथ्वी धरा धारापातैर्मणिमयशरैर्भिद्यते इव मृच्छ० ५ २२ 2 शिरा 3 गूदा 4 गर्भाशय या योनि। सम० —अधिप, राजा, —अमरः, —देवः, —सुरः ब्राह्मण, —आत्मजः, —पुत्रः, —सूनुः 1 मंगल ग्रह के विशेषण 2 नरक राक्षस के विशेषण, —आत्मजा सीता का विशेषण —उद्धारः पृथ्वी का छुटकारा —धरः 1 पहाड़ 2 विष्णु या कृष्ण का विशेषण 3 शेष का विशेषण —पतिः 1 राजा 2. विष्णु का विशेषण,—भुज् (पुं०) राजा —भृत् (पुं०) पहाड़।

धरित्री [धृ + इत्र + ङीप्] 1 पृथ्वी श० ७ ३२ रघु० १४।५४ कु० १।२, १७ 2 भूमि मिट्टी।

धरिमन् (पुं०) [धृ + इमनिच्] तराजू तराजू के पलड़े।

धत्तूरः [धुस्तुर पृषो० साधु] धतूरे का पौधा।

धर्मम् [धृ + म] 1 घर 2 थूणी, टेक 3 यज्ञ, 4 सद्गुण, भलाई, नैतिक गुण।

धर्मः [ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा धृ + मन्] 1 कर्तव्य जाति, सम्प्रदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन 2 कानून, प्रचलन, दस्तूर प्रथा, आध्यादेश, अनुविधि 3 धार्मिक या नैतिक गुण भलाई नेकी, अच्छे काम (मानव अस्तित्व के चार पुरुषार्थों में से एक) कु० ५।३८ दे० 'त्रिवर्ग' भी एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः - हि० १।६५ 4 कर्तव्य शास्त्र विहित आचरण क्रम —पाण्डवानपि धर्म एव श० ५।४, मनु० १।११४ 5 अधिकार, न्याय औचित्य या न्यायसाम्य, निष्पक्षता, 6 पवित्रता, औचित्य, शालीनता 7 नैतिकता, नीतिशास्त्र, 8 प्रकृति, स्वभाव, चरित्र—मा० १।६, प्राणि°, जीव° 9 मूल गुण, विशेषता, लाक्षणिक गुण (विशिष्ट) विलक्षणता -वदन्ति वर्ण्यावर्ण्यानां धर्मैक्यं दीपकं बुधाः -चन्द्रा० ५।४५ 10 रीति, समरूपता, समानता 11 यज्ञ 12 सत्संग, भद्रपुरुषों की संगति 13 भक्ति, धार्मिक भावमग्नता 14 रीति प्रणाली 15 उपनिषद् 16 ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर 17 मृत्यु का देवता यम। सम० —अंकुशः, धार्मिक, —अधर्मौ (पुं० द्वि० व०) सत्य और असत्य कर्तव्य और अकर्तव्य —विद् (पुं०) मीमांसक जो कर्म के सही या गलत मार्ग को जानता है —अधिकरणम् 1 विधि का प्रशासन 2 न्यायालय —अधिकरणिन् (पुं०) न्यायाधीश दण्डनायक —अधिकारः 1 धार्मिक कृत्यों का अधीक्षण श० १ 2 न्याय-प्रशासन 3 न्यायाधीश का पद —अधिष्ठानम् न्यायालय, —अध्यक्षः 1 न्यायाधीश 2 विष्णु का विशेषण, —अनुष्ठानम् धर्म के अनुसार आचरण अच्छा आचरण, नैतिक आचरण —अपेत (वि०) जो धर्म से दूर हो दुराचारी अनैतिक, अधार्मिक (—तम्) दुराचरण अनैतिकता अन्याय —अरण्यम् तपोवन, वन जिसमें संन्यासी रहते हों धर्मारण्यं प्रविशन्ति श० १ —अलीक (वि०) झूठे चरित्र वाला —आगमः धर्मशास्त्र धर्म-ग्रन्थ —आचार्यः धर्मशिक्षक 2 धर्म तथा विधि का अध्यापक, —आत्मजः युधिष्ठिर का विशेषण —आत्मन् (वि०) न्यायशील भक्त पुण्यात्मा सद्गुणी —आसनम् न्याय का सिंहासन न्याय की गद्दी न्यायाधिकरण - न संभाविता धर्मासनमध्यासितुम् - श० ६ धर्मासनाद्विशति वासगृहं नरेन्द्रः रघु० १ ३ —पुत्रः युधिष्ठिर का विशेषण —इशः यम का विशेषण —उत्तर (वि०) अत्यधिक धार्मिक जो न्याय धर्म का पक्ष लेता है न्यायशील और न्यायपरायण-- धर्मोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते रघु० १३।७ —उपदेशः 1 धर्म या कर्तव्य की शिक्षा, धार्मिक या नैतिक शिक्षण 2 धर्मशास्त्र —कर्मन् (नपुं०) —कार्यम्, —क्रिया, —कृत्यम् कर्म नीति का आचरण धर्मानुष्ठान धार्मिक-कृत्य या समारोह 2 सदाचरण —कालियुग, —कायः बुद्ध का विशेषण —कीलः अनुदान, राजकीय लेख या शासन —केतुः बुद्ध का विशेषण —कोशः —धर्मसंहिता धर्मशास्त्र -धर्मकोशस्य गुप्तये — मनु० १।९९ —क्षेत्रम् 1 भारतवर्ष (धर्म की भूमि) 2 दिल्ली के निकट का मैदान, कुरुक्षेत्र (यहां ही कौरव पांडवों का महायुद्ध हुआ था) —धर्मक्षेत्रे कुरु-

क्षेत्रे समवेता युयुत्सवः—भग० १।१, —**घटः** वैशाख के महीने में ब्राह्मण को प्रतिदिन दिये जाने वाले सुगन्धित जल का घड़ा, —**चक्रभृत्** (पुं०) बौद्ध या जैन, —**चरणम्**, —**चर्या** कानून का पालन, धार्मिक कर्तव्यों का सम्पादन कु० ७।८३, —**चारिन्** (वि०) सद्व्यवहार करने वाला, कानून का पालन करने वाला, सद्गुणी, नेक —रघु० ३।४५, (पुं०) संन्यासी —**चारिणी** 1 पत्नी 2 पतिव्रता सती साध्वी पत्नी, —**चिन्तनम्**, —**चिन्ता** भलाई या सद्गुणों का अध्ययन, नैतिक कर्तव्यों का विचार, नीति-विमर्श, —**ज** 1. धर्म से उत्पन्न, वैध, पुत्र, असली बेटा तु० मनु० ९।१०७ 2. युधिष्ठिर का नाम, —**जन्मन्** (पुं०) युधिष्ठिर का नाम, —**जिज्ञासा** धर्म सम्बन्धी पूछताछ, सदाचरण विषयक पृच्छा—अथातोधर्मजिज्ञासा —जै०, —**जीवन** (वि०) जो अपने वर्ण के नियमानुसार निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करता है, (नः) वह ब्राह्मण जो दूसरों के धर्मानुष्ठान में साहाय्य प्रदान कर अपनी जीविका चलाता है, —**ज्ञ** (वि०) सही बात को जानने वाला, नागरिक तथा धार्मिक कानूनों का जानकार—मनु० ७।१४१, ८।१७९, १०।१२७ 2. न्यायशील, नेक, पुण्यात्मा, —**त्याग** अपने धर्म का त्याग करने वाला, धर्मच्युत, —**दाराः** (पुं०, ब० व०) वैध पत्नी—स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसां—मा० ६।१८, —**द्रोहिन्** (पुं०) राक्षस —**धातु** बुद्ध का विशेषण, —**ध्वज**, —**ध्वजिन्** (पुं०) धर्म के नाम पर पाखंड रचने वाला, छद्मवेशी, —**नन्दन** युधिष्ठिर का विशेषण—**नाथ** कानूनी अभिभावक वैध स्वामी, —**नाभः** विष्णु का विशेषण, —**निवेशः** धार्मिक भक्ति, —**निष्पत्तिः** (स्त्री०) कर्तव्य का पालन, नीति-पालन, धार्मिक अनुष्ठान,—**पत्नी** वैध पत्नी धर्मपत्नी—रघु० २।२,२०,७२,८।७, याज्ञ० २।१२८, —**पथः** भलाई का मार्ग, चाल चलन का सन्मार्ग, —**पर** (वि०) धर्मपरायण, पुण्यात्मा, नेक, भला, —**पाठकः** नागरिक या धार्मिक कानूनों का अध्यापक, —**पालः** कानून का रक्षक (आल० से इसे 'दंड' कहते हैं), दण्ड, सजा, तलवार,—**पीडा** कानून का उल्लंघन करना, कानून के प्रति अपराध, —**पुत्र** 1. धर्मसम्मत पुत्र, (जो कर्तव्य ज्ञान की दृष्टि से उत्पन्न किया या माना गया हो, केवल कामवासना का परिणाम न हो) 2. युधिष्ठिर का विशेषण, —**प्रवक्तृ** (पुं०) 1. धर्म का व्याख्याता, कानूनी सलाहकार, 2 धार्मिक शिक्षक, धर्म-प्रचारक, —**प्रवचनम्** 1. कर्तव्य-विज्ञान— उत्तर० ५।२३ 2. धर्म की व्याख्या करना, (नः) बुद्ध का विशेषण, —**वा (बा) णिजिकः** 1 जो अपने सद्गुणों से व्यापारी की भांति लाभ उठाने का प्रयत्न करता है 2. लाभदायक व्यवसाय को करने वाले व्यापारी की भांति जो पुरस्कार पाने की इच्छा से धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करता है,—**भगिनी** 1 वैधभगिनी 2 धर्मगुरु की पुत्री 3. धर्मबहन, अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए जिसको बहन मान लिया जाता है, —**भागिनी** साध्वी पत्नी, —**भाणकः** व्याख्यानदाता जो महाभारत तथा भागवत आदि ग्रन्थों की व्याख्या सार्वजनिक रूप से अपने श्रोताओं के सामने रखता है, —**भ्रातृ** (पुं०) 1 धर्म-शिक्षा का सहपाठी, धर्म का भाई 2 वह व्यक्ति जिसको अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए, भाई मान लिया जाता है, —**महामात्रः** धर्ममंत्री, धार्मिक मामलों का मंत्री, —**मूलम्** नागरिक या धार्मिक कानूनों की नींव, वेद, —**युगम्** सतयुग, कृतयुग, —**यूप** विष्णु का विशेषण, —**रति** (वि०) भलाई और न्याय में प्रसन्नता प्राप्त करने वाला, नेक, पुण्यात्मा, न्यायशील रघु० १।२३ —**राज्** (पुं०) यम का विशेषण, —**राजः** 1. यम 2 जिन 3 युधिष्ठिर, और 4 राजा का विशेषण, —**रोधिन्** (वि०) 1. कानून के विरुद्ध, अवैध, अन्याय्य 2 अनैतिक, —**लक्षणम्** 1 धर्म का मूल चिह्न 2 वेद, (णा) मीमांसा दर्शन —**लोपः** 1 धर्माभाव, अनैतिकता, कर्तव्य का उल्लंघन—रघु० १।७६, —**वत्सल** (वि०) कर्तव्यशील, धर्मनिष्ठ, —**वर्तिन्** (वि०) न्याय परायण, नेक, —**वासरः** पूर्णिमा का दिन —**वाहनः** 1. शिव का विशेषण 2 भैसा (यम की सवारी), —**विद्** (वि०) (नागरिक तथा धर्म विषयक) कर्तव्य का ज्ञाता, —**विधिः** वैध उपदेश, या आदेश, —**विप्लवः** कर्तव्य का उल्लंघन, अनैतिकता, —**वीरः** (अलं० शा० में) भलाई या पवित्रता के कारण उत्पन्न वीर रस, शौर्यसहित पवित्रता का रस, रस० में निम्नांकित उदाहरण दिया गया है—सपदि विलयमेतु राज्यलक्ष्मीरुपरि पतन्त्वथवा कृपाणधाराः, अपहरतुतरां शिरः कृतान्तो मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात्।

—**वृद्ध** (वि०) सद्गुण व पवित्रता की दृष्टि से आगे बढ़ा हुआ (बूढ़ा) —कु० ५।१६, —**वैतंसिकः** वह जो अपने आपको उदार प्रकट करने की आशा में, अवैधरूप से कमाये हुए धन को दान कर देता है, —**शाला** 1 न्यायालय, न्यायाधिकरण 2. धर्मार्थ-संस्था, —**शासनम्**, —**शास्त्रम्** धर्मसंहिता न्यायशास्त्र शि० १।१७, याज्ञ० १।५, —**शील** (वि०) न्यायशील, पुण्यात्मा, सदाचारी या सद्गुणी, —**संहिता** धर्मशास्त्र (विशेष रूप से मनु, याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों द्वारा प्रणीत स्मृतियाँ), —**सक्तः** 1. सद्गुण या न्याय से अनुराग या आसक्ति 2. पाखंड, —**सभा** न्यायालय,

—सहायः धार्मिक कर्तव्यों के पालन करने में सहायक, साथी या साझीदार।

धर्मतः (अव्य०) [धर्म + तसिल्] 1 धर्म के अनुसार, नियमानुकूल, सही तरीके से, धर्म पूर्वक, न्याय के अनुरूप 2 भलाई से, नेकी के साथ 3 भलाई या नेकी के उद्देश्य से।

धर्मयु (वि०) [धर्म + यु] 1 सद्गुणसम्पन्न न्यायशील पुण्यात्मा नेक।

धर्मिन् (वि०) [धर्म + इनि] 1 सद्गुणों से युक्त न्यायशील पुण्यात्मा 2 अपने कर्तव्य को जानने वाला 3 कानून का पालन करने वाला 4 (समास के अन्त में) किसी वस्तु के गुणों से युक्त प्रकृति का विशिष्ट गुणों से युक्त अनमुत द्विजर्मिणः मनु० १० १४ [illegible] (पु०) विष्णु का विशेषण।

धर्मीपुत्र (पु०) अभिनेता नाटक का पात्र, [illegible]

धर्म्य (वि०) [धर्म + यत्] 1 धर्मसम्मत [illegible] कानूनी रूप से सही वैध मनु० [illegible] 2 धर्मयुक्त (कार्य) कु० ६।१३ 3 न्यायोचित [illegible] उपयुक्त धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते भग० २।३१ [illegible] याज्ञ० २।६६ 4 वैध यथा [illegible] 5 विशेष गुणों से युक्त यथा [illegible]

धर्षः [धृष् + घञ्] 1 धृष्टता अविनय अहंकार ढिठाई 2 घमंड, अभिमान 3 असहिष्णुता 4 मदद 5 बलात्कार (स्त्री का) सतीत्व हरण 6 क्षति बुराई अवज्ञा 7 हीजड़ा। सम० —कारिणी बलात्कार द्वारा जिसका सतीत्वहरण हो चुका हो।

धर्षक (वि०) [धृष् + ण्वुल्] 1 हमला करने वाला आक्रमणकारी, प्रहार करने वाला 2 बलात्कार करने वाला, सतीत्वहरण करनेवाला 3 अधीर —कः 1 सती-त्वहर्ता, व्यभिचारी बलात्कारी 2 अभिनेता नर्तक।

धर्षणम् —णा [धृष् + ल्युट्] 1 धृष्टता अविनय 2 अवज्ञा मानहानि 3 आक्रमण अत्याचार सतीत्वहरण बलात्कार नारी 4 स्त्रीसंभोग 5 तिरस्कार निरादर 6 दुर्वचन।

धर्षणिः, —णी [धृष् + अनि, धर्षणि + ङीष्] असती स्वैरिणी कुलटा स्त्री।

धर्षित (वि०) [धृष् + क्त] 1 जिसका चरित्र भ्रष्ट किया गया है, अत्याचार पीड़ित, जिसके साथ बलात्कार हो चुका है 2 विजित, पराभूत, परास्त भ० २२।१५५ 3 जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, जिसे गाली दी गई है, तिरस्कृत, —तम् 1. औद्धत्य, घमंड 2. सहवास, मैथुन, —ता कुलटा, असती स्त्री।

धर्षिन् (वि०) [धृष् + णिनि] 1 घमंडी, उद्धत, उद्दंड 2. आक्रमण करने वाला, सतीत्वहरण करने वाला, बलात्कार करने वाला 3 तिरस्कार करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला 4. बेधड़क, दिलेर 5 स्त्री सहवास करने वाला, —णी कुलटा, या असती नारी।

धवः [धु + अप्] 1 हिलना-जुलना, कम्पन 2 मनुष्य 3 पति-यथा 'विधवा' में 4 मालिक, स्वामी 5 बदमाश, ठग 6 एक प्रकार का वृक्ष 'धौ'।

धवल: [धव इव लाति — ला + क तारा०] 1 श्वेत, धवलातपत्रम् धवल गृहम् 2. सुन्दर 3 स्वच्छ, विशुद्ध —लः 1 श्वेत रंग 2 सर्वोत्तम बैल 3 चीनी कपूर 4 'धव' नाम का वृक्ष,—लम् सफेद कागज —ला सफेद गाय धौली गाय। सम० —उत्पलम् श्वेत कुमुद (चन्द्रोदय होने पर इस का खिलना प्रसिद्ध है) —गिरि हिमालय पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी —गृहम् चूने से पुता घर महल —पक्षः 1 हंस 2 चान्द्रमास का शुक्लपक्ष —मृत्तिका खड़िया—मिट्टी।

धवलित (वि०) [धवल + इतच्] सफ़ेद किया हुआ श्वेत बना हुआ।

धवलिमन् (पु०) [धवल + इमनिच्] 1 सफेदी, सफेद रंग 2 पाण्डुता पीलापन इव भूमिर्नाड्ं त्रिधावीरह-ज मा धवलिमा सुभा०।

धाविकम् [धु + ठन्] मृगचर्म से बना पंखा।

धा (जुहो० उभ० दधाति धत्ते हित कर्मवा० धीयते, प्रेर० धापयति—ते इच्छा० धित्सति—ते) 1 रखना, धरना जड़ना, लिटा देना भर्ती करना सहजमाना विशालदाशेतु [illegible] महा० निःक्षेप धीयते 'क्रन० पा० [illegible] के स्थान पर। लोके पदम् भस्मधाते पदम् —कि० २।१३ 2 जमाना (मन और विचारों को) लगाना (सप्र० या अधि० के साथ) धत्ते चक्षुर्मुकुल्वति रसत्कोकिले बालचूते—मा० ३।१२ दधुः कुमारानुगमे मनांसि भट्टि० ३।११ —७ मनु० १२।२३ 3 प्रदान करना अनुदान देना, देना अर्पण करना उपहार देना (सप्र० सब० या अधि० के साथ) भूयो लक्ष्मीमथ मयि भृश धेहि देव प्रसीद मा० १।३ धत्स्व सेऽध्यात्मवसं तरसस्य स्वयं माविशाम् मनु० १।२१ 4 पकड़ना रखना—तामपि दधासि मान —भामि० १।६८, श० ४।१ 5 पकड़ना, हस्तगत करना भट्टि० १।२६ ४।२६, कि० १३।५४ 6 पहनना धारण करना ग्रहण करना मूर्ध्नि बालामि विहाय मूर्ध्न तनूनि धत्ते जन कामसदा-साङ्ग ऋतु० ६।१३, १६ धत्ते भर कुसुमपत्र कर्णावलीनाम् भामि० १।६४, दधतो मङ्गलक्षौमे— रघु० १२।८, ९।४०, भट्टि० १८।५४ 7 धारण करना, लेना रखना दिखलाना, प्रदर्शन करना, कब्जे में करना (प्राय आ०)—धाय काञ्चनसर्वाञ्जते धारयती द्युतिम्—हि० प्र० ४१, वित्रति मणीपरले

दधाति दीपः—मालवि० १।७४, रघु० २।७, अमरु २३।६७, मेघ० ३६, भर्तृ० ३।४६, रघु० ३।१, भट्टि० २।१,४।१६–१८ शि० ९।३,१०।८६, कि० ५।५ 8. सम्भालना, निबाहना थाम रखना,—धाम-धास्वस्त्कथं नागो मृणालमृदुभिः फणैः कु० ६।६८ 9 सहारा देना स्थापित रखना सपदि निमग्नेनोर्मी दधनुर्भुवनद्वयं रघु० १।२६ 10 पैदा करना रचना करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना अनंग— मुग्धा कुड्मलितानननं दधती वायु स्थिता तस्य सा अमरु ७० 11 सहना, भोगना ग्रस्त होना -शि० ९। ३२ ५६ 12 सम्पन्न करना (धा को भांति इस धातु के अर्थ भी दूसरे शब्दों के साथ जुड़ने से विविध प्रकार के हो जाते हैं, उदा० मनः धा, मतिधा, चित्तं धा, मन को लगाना विचारों को लगाना दृढ़ संकल्प करना पदं धा पग रखना प्रविष्ट होना, कर्णे कर धा, कान पर हाथ रखना) अतिसम् ठगना, धोखा देना भगवन् कुसुमायुध त्वया चन्द्रमसा च विश्वसनीयाभ्यामतिसंधीयते कामि जनसार्थः – श० ३ विक्रम० २ अन्तर् , 1 मन में रखना, मानना ग्रहण रखना तथा विश्वम्भरे देवि मामन्तर्धातुमर्हसि रघु० १५।८१ 2 अपने आपको छिपाना, गुप्त रखना ओझल होना (मनु० ६।०४) —भट्टि० ५।३२, ८।७१ 3 ढकना, छिपाना, दृष्टि से ओझल करना लपेटना, ढांपना (आ० प०), तेनु रन्तर्दधे कोटि शीम्वृत्तसमाधिभिः – महा० अनुसम् 1 ढूंढना, पूछताछ करना अन्वेषण करना जांच पड़ताल करना 2 सचेत होना, अपने आपको ज्ञान करना 3 उल्लेख करना संकेत करना लक्ष्य बनाना 4 योजना बनाना, क्रमबद्ध करना क्रम में रखना अपि—(कभी कभी 'अपि' का अ लुप्त हो जाता है) । (क) बन्द करना, भेजना ध्वनति मधुप-समूहे श्रवणमपिदधाति—गीत० ५, इसी प्रकार—कर्णौ नयने-पिदधाति (ख) ढकना छिपाना गुप्त रखना —प्रायो मूर्खः परिभवविधौ नाभिमानं पिधत्ते —भृंगार० १७, प्रभापिहिता विक्रम० ४।२ शि० ९।७६, भट्टि० ७।६९ 2 रोकना, बाधा डालना प्रतिबंध लगाना भुजङ्गपिहितद्वारं पातालमधितिष्ठति— रघु० १।८० अभि (क) कहना, बोलना बताना कु० ३।६३ मनु० १।४२, भट्टि० ७।३८, भग० १८।६८, (ख) 1. संकेत करना, व्यक्त करना, सुव्यक्त बतलाना प्रस्तुत करना—साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः काव्य० 2 तस्मात् येनाभि-दधाति सत्यम् 2 अभिधान होना, पुकारना, अभिसम्—, 1. किसी पर फेंकना, निशाना लगाना, (तीर आदि का) लक्ष्य बनाना 2 ध्यान में रखना, (मन में) निशाना बनाना, सोचना—लक्ष्यमुक्तमभिसंधाय – महावी० ५, अभिसंधाय तु फलम् भग० १७।१२, २५ विक्रम० ४।२८ 3 धोखा देना, ठगना अभ्विद्वानेक सकलमभिसन्धाय मा० १।१४ 4 अपने पक्ष में कर लेना मित्र बना लेना दूसरों का मित्र बन जाना तान्सर्वानभिसंदध्यात् सामादिभिरुपक्रमैः मनु० ७।१५९ (वशीकुर्यात्) 5 प्रतिज्ञा करना, प्रस्थापन करना 6 जोड़ना, अव्या नीचे रखना, नीचे फेंकना, अव सावधान होना ध्यान देना कान देना सुना अवधत्तां देवराज महावी० ६ आ (प्रायः आ० प०) 1 रखना धरना पकड़ना जनपदे न गदः पदमादधौ रघु० ९।४ भग० ५।१० ग० ८।३ 2 प्रयोग करना लगाना किसी की ओर संकेत करना प्रीतिमावमाधी... यत्न श० १ मय्येव मन आधत्स्व भग० १२।८ आ[illegible] धर्म च धी — [illegible] 3 जमा, अधिकार में करना ग्रहण रखना गर्भमाधत्त राज्ञी रघु० २।७५ (गर्भ ग्रहण किया) आधत्त कनकमयातपत्रलक्ष्मीं कि० ५।३९ (शोभा धारण करती है) कु० ७।४६, 4 बोझा लादना थामना सहारा देना घोर मतिर्वाहितम् शीमदाद्य—[illegible] 5 पैदा करना, उत्पादन करना, सृजन करना उत्तेजित करना (भय या आश्चर्य) ज्ञानाश्चर्यान्ति बुधा भयमादधाना श० ३।२७, कि० ४।१२ 6 देना समर्पित करना रघु० ११।८२ 7 नियुक्त करना स्थिर करना तमेव चाधाय विवाहसाक्ष्ये रघु० ७।२० 8 सम्पन्न करना कु० १।५७ 9 अनुष्ठान करना (अग्नि आदिका) पालन करना आविस्, भेद खोलना प्रकट करना (श्रेष्ठ-साहित्य में बहुत प्रयोग नहीं) उप 1 रखना, उठाना नीचे रखना अन्दर रखना अधिज्यामु बाहु-मुपधाय शि० ९।५४ भूमि यैनामुपधातुमर्हसि रघु० ८।७७, (हृदयस्थित करने के लिए) उपहित शिशिरागमभिया मकुलजालमशोभत किंशुके—रघु० ९।३१, कु० १।४४ 2 निकट रखना, (घोड़े आदि का) जोतना महावी० ६।२६ 3 पैदा करना, निर्माण करना, उत्पादन करना मृच्छ० १।५३ 4 ऊपर डालना सींचना सभालना, बैठा रेल में करना –मद्गुरा रघुद्वह —रघु० ७।७१, 5 तकिये के स्थान में प्रयुक्त करना—वाममुजमुपधाय दश० १११ 6 काम में लगाना, अभ्यर्थना करना, प्रदान करना – क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति रघु० ३।२९ 7 ढकना, छिपाना 8 देना, बताना, समाचार देना, उपा, 1 निकट रखना, ऊपर रखना 2 पहुंचना 3 पैदा करना, सर्जन करना, उत्पादन करना —भर्तृ० ३।८५, तिरस्—, 1 छिपाना, गुप्त रखना,

2. (आ०) कृश होना, ओझल होना --अभिमुख्य-मस्तस्यं कृष्णमेघस्तिरोदधे --रघु० १०।४८, ११।९१, तिरस् के नी० भी देखिये नि०, 1 रखना, धरना, जड़ देना--शिरसि निदधानोऽञ्जलिपुटम् भर्तृ० ३।१२१, रघु० ३।५०, ६२, १२।५२ शि० १।१३ 2. भरोसा करना, सौंपना, देख रेख मे रखना--निदधे विजयाशंसां चापे सीतां च लक्ष्मणे--रघु० १२।४४ १४।३६ 3. देना, समर्पित करना, जमा कर देना--दिनान्ते निहितं तेज: सवित्रेव हुताशन:--रघु० ४।१ 4 दबा देना, शान्त करना, रोक देना --[illegible] निहित [illegible] भट्ट० १ 5. दफ़न करना, (भूमि के अन्दर) गाड़ देना, छिपाना-- मनु० ८।६८, परि-, 1 (वस्त्रादिक) पहनना, धारण करना--वल्कं स [illegible] परिदधौ--रघु० ३।२१ 2. [illegible] 3. किसी की ओर संकेत करना, पुरस्-- सिर पर रखना या धारण करना --पुरस्कार [illegible] धाम स्वायंभुवं ययुः--कु० ६।१, रघु० [illegible] 2. कुलपुरोहित बनाना प्रणि, --रखना नीचे करना या झुका देना, साष्टांग प्रणत होना --प्रणिहितशिरसं वा कान्तमार्द्रापराधम् --गीत० २।१२ तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम् भग० ११।४४ 2. जड़ना, अन्दर रखना, अन्दर छिपाना, पेटी में बन्द करना --यदि मणिस्त्रपुणि प्रणिधीयते --पञ्च० १।७५, अने० पा० 3. प्रयोग करना, स्थिर करना, किसी की ओर संकेत करना --मत्प्रणिहितेक्षणाम् --रघु० १९।२८, भट्टि० ६।१४२ 4 फैलाना, विस्तार करना [illegible] प्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेषहेतो: मेघ० १०६, नीवीं प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण सख्य: शपामि यदि किंचिदपि स्मरामि--[illegible] 5 (चर के रूप में) बाहर भेजना, प्रतिवि--, 1 प्रतीकार करना संशोधन करना, मरम्मत करना, [illegible], उपाय करना, विरुद्ध पग उठाना --अर्थवाद एष [illegible] ते कर्तव्यं येन स प्रतिविधीयते --उत्तर० १ किमेवं कस्मादप्रतिविहितमार्येण मुद्रा० ३ 2 व्यवस्था करना, क्रम से रखना, सजाना 3 प्रेषित करना, भेजना, प्रवि--, 1. बाँटना 2. करना, बनाना, वि--, 1. करना, बनाना, घटित करना, प्रभावित करना, सम्पन्न करना, अनुष्ठान करना, पैदा करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना यथाक्रमं पुंसवनादिका: क्रिया: धृतेश्च धीर: सदृशीर्व्यधत्त स:--रघु० ३।१०, तपोदेवा विदधामु: भट्टि० १९।२, किंवाऽसुरेवा परमरमणीयां परिणतिम् मा० ९।७, प्रायः शुभं च विदधात्यशुभं च जन्तो: सर्वंकषा भगवती भवितव्यतैव १।२३, मैं हूँ कार्न विधत्ते शा० १।१, पैदा करना, उत्पादन करना, समय का विनियमित करना

--तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् भग० ७।२१ रघु० २।३८, ३।६६, (यह अर्थ 'विधा' के साथ जुड़ने वाले शब्द के अनुसार और भी अधिक अदल-बदल किए जा सकते हैं, तु० 'कृ') 2. निर्धारित करना, विधान बनाना, निर्दिष्ट करना, नियत करना, स्थिर करना, आदेश देना, आज्ञा देना--प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते मनु० २।२९, ३।१९, याज्ञ० १।७२, शूद्रस्य तु सवर्णैव नान्या भार्या विधीयते ९।१५७, ३।११८ 3. रूप बनाना, शक्ल देना, सर्जन करना, निर्माण करना--न वेधा विदधे नूनं [illegible] रघु० १।२९, अङ्गानि चम्पकदलै: स विधाय नूनं कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेत: [illegible] 4 नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना (मन्त्री आदि का) 5 पहनना, धारण करना पञ्च० [illegible] 6 स्थिर करना, (मन आदि का) लगाना भग० [illegible] भर्तृ० ३।५८ 7 कार्यबद्ध करना, व्यवस्थित करना 8 तैयार करना, [illegible] करना, व्यव--, 1 बीच में रखना, बीच मे डालना, हस्तक्षेप करना --[illegible] रघु० [illegible] 2 छिपाना, ढकना, पर्दा डालना [illegible] --श्रद्-- भरोसा करना, विश्वास रखना (कर्म० के साथ)--न श्रद्दधाति भूतार्थम्--मृच्छ० ३।२४ [illegible] --रघु० ११।४८, सम्-- 1 मिलाना, एकत्र करना, संयुक्त करना, मिला देना [illegible] कुल्लूक० 2 [illegible] करना, मित्रता करना, संधि करना--[illegible] कि० १।४८, [illegible] १९, काम० ९।४४ 3 स्थिर करना, संकेत करना [illegible] रघु० ११।६९ 4 (किसी अस्त्र या तीर आदि को) धनुष पर ठीक-ठीक बैठाना, या ठीक से लगाना --धनुष्यमोघं समधत्त बाणम्--कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।५७ 5 उत्पादन करना, पैदा करना --[illegible] गा० ५।३, सधत्ते भृशमरतिं हि सद्वियोग: कि० ५।५१ 6 मुकाबला करना, मुकाबले में सामने आना: [illegible] प्राकारस्थो धनुर्धरं --पञ्च० १।२९ 7 सुधारना, [illegible] करना, स्वस्थ करना 8 कष्ट देना 9. ग्रहण करना, सहारा देना, कार्यभार संभालना 10 अनुदान देना, संनि--, 1. रखना, एकत्र रखना,--मनु० २।१८६ 2. निकट रखना--श० ३।१२, 3. स्थिर करना, निर्दिष्ट करना--रघु० १३।१४ 4. निकट जाना पहुँचना- प्रेर० निकट लाना, एकत्र संग्रह करना, समा--, 1 एकत्र रखना या धरना, मिलाना, संयुक्त

करना 2. रखना, धरना, स्थापित करना, लागू करना —पद मूर्ध्नि समाधत्ते केसरी मत्तदन्तिन पंच० १। ३२७ 3 जमाना, अभिषेक करना, राजगद्दी पर बिठाना रघु० १७।८ 4 समाश्वस्त होना (मन को) शान्त करना मन समाधाय निवृत्तशोक —रामा०, न शशाक समाधातु मनो मदनवेपितम् भाग० 5 संकेन्द्रित करना, (आँख या मन आदि को) एकाग्र करना,- भग० १२।९, भर्तृ० ३।४८ 6 संतुष्ट करना, (शंका का) समाधान करना आक्षेप का उत्तर देना इति समाधत्ते (टीकाओं में) 7 मरम्मत करना सुधारना ठीक करना हटा देना —न ते शक्या समाधातुम् हि० ३।३७, उत्पन्नामापदं यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान् ४।७ 8 विचार करना भट्टि० १२।६ 9 सौंपना अर्पण करना हस्तान्तरित करना 10 पैदा करना, कार्यान्वित करना सम्पन्न करना (निम्नांकित श्लोक में सोमवंश या धातु के प्रयोगों का चित्रण किया गया है अधित्यकापि मुख्ये सलिलं सखी ध्यधित कापि सरोजदलै स्तनौ व्यधित कापि हृदि व्यजनानिलं न्यधित कापि मृणालमयं स्तनौ नै० ४।१११ इससे भी अच्छा निम्नांकित जगन्नाथ का श्लोक निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदां प्रधानं तीर्थानाममलपरिधानं त्रिजगतः, समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियां श्रियामाधानं नः परिहरतु तापं तव वपुः गंगा० १८)।

धाकः [धा+क उणा० तस्य नेत्वम्] 1 बैल 2 आधार आशय 3 आहार, भात 4 स्तूणा खंभा स्तंभ।

धाटी [धट्+घञ्+ङीप्] धावा आक्रमण

धाणकः [धा+आणक] एक सोने का सिक्का (दीनार का अंश)

धातुः [धा+तुन्] संघटक या मूल भाग अवयव 2 मूल तत्त्व, मूल या तत्त्व मूलक सामग्री अर्थात् पृथिवी, आप्, तेजस्, वायु और आकाश 3 रस मुख्य द्रव्य या रस, शरीर का अनिवार्य उपादान (यह गिनती में सात माने जाते हैं रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः कई बार केश, त्वच् और स्नायु को मिला कर दस मान लिये जाते हैं) 4 शरीर के स्थितिविधायक तत्त्व (अर्थात् वात, पित्त, कफ त्रिदोष) 5 खनिज पदार्थ धातु, कच्ची धातु—न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र, कु० १।७, त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलायां मेघ० १०५, -रघु० ४।७१, कु० ६।५१ 6 क्रिया का मूल, भूवादयो धातवः पा० १।३।१, पश्चादध्ययनार्थस्य धातोरधिरिवाभवत्—रघु० १५।९ 7 आत्मा 8 परमात्मा 9 ज्ञानेन्द्रिय 10 पाँच महाभूतों का गुण अर्थात् रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द 11 हड्डी। सम० उपलः खड़िया, —काक् काशीस,म् -कासीसम् -कसीस, —कुशल—(वि०) धातु के कार्यों में दक्ष—क्रिया धातुकार्मिकी, धातुकर्म, कानिगरी, धातुविज्ञान—क्षयः शरीर के तत्त्वों का नाश, क्षयरोग, —जम् शिलाजीत, शैलज तेल—द्रावकः सुहागा,—प: मांस पौष्टिक रस, शरीर के सात मूल उपादानों में मुख्य उपादान—पाठ पाणिनि की व्याकरण पद्धति के अनुसार बनी धातुओं की सूची (पाणिनि के सूत्रों के परिशिष्ट के रूप में धातु पाठ, पाणिनि निर्मित एक आवश्यक सूची है) —भृत् (पुं०) पहाड़ —मलम् 1 शरीरस्थ धातुओं के मल के अपवित्र रूपान्तर 2 सीसा —माक्षिकम् 1 एक उपधातु सोनामक्खी 2 खनिज पदार्थ —मारिन् (पुं०) गंधक —राजकः वीर्य,— वल्लभम् सुहागा —वादः खनिज विज्ञान धातुविज्ञान —वादिन् (पुं०) खनिज विज्ञानी —वैरिन् (पुं०) गंधक —शेखरम् कासीस गंधक का तेजाब शाम्यम्, —सत्वम् सीसा —साम्यम् अच्छा स्वास्थ्य (त्रिदोष समता)।

धातुमत् (वि०) [धातु+मतुप्] धातुओं से भरा हुआ धातु सम्पन्न। सम० —ता धातुओं का बाहुल्य, कु० १।४।

धातृ (पुं०) [धा+तृच्] 1 निर्माता स्रष्टा, उत्पादक प्रणेता 2 धारण करने वाला सधारक सहारा देने वाला 3 सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का विशेषण —अन्य दुर्नयपनयविर्मिनिर्हरणं धातापि यन्नाशक—हि० ०।१६५ रघु० १३।६ शि० १।१२ कु० ७।४४ वि० १०।०३ 4 विष्णु का विशेषण 5. आत्मा 6 ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि होने के कारण सप्तर्षियों के नाम, तु० कु० ६।९ 7 विवाहित स्त्री का प्रेमी व्यभिचारी।

धात्रम् [धा+ष्ट्रन्] बर्तन, पात्र।

धात्री [धात्र+ङीप्] 1 दाई धाय उपमाता उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः रघु० ३।२५ कु० ७।२५ 2 माता—याज्ञ० ३।८२, 3 पृथ्वी 4 आंवले का वृक्ष। सम० —पुत्रः धाय का पुत्र, धर्म भाई 2 अभिनेता, —फलम् आँवला।

धात्रेयिका, धात्रेयी [धात्रेयी+कन्+टाप्, ह्रस्व, धात्री+ढक्+ङीप्] धात्रीपुत्री धात्रेयिकायाश्चतुरं वचश्च मा० १।३२, कथितमत्र मा मालतीधात्रेय्या लवङ्गिकया मा०। 2 धाय, दूध पिलाने वाली धाय।

धानम्,—नी [धा+ल्युट् धान+ङीप्] आधार, पात्र, गड्वी, स्थान जैसा कि मर्मधानी, राजधानी, यमधानी।

धाना (स्त्री० ब० व०) [धान+टाप्] भुने हुए जौ या चावल, खील 2 सत्तू 3 अनाज, अन्न 4 कली, अंकुर।

धानुर्दंडिकः, धानुष्कः [धनुर्दण्ड+ठक्, धनुष्+टक्+क] तीरंदाज, (धनुष के द्वारा अपनी जीविका कमाने वाला) धनुर्धर—निमितादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२७।

धानुष्यः [धनुष्+ष्यञ्] बाँस।

धान्या (स्त्री०) इलायची।

धान्यम् [धान+यत्] 1. अनाज, अन्न, चावल 2. धनिया (सस्य और धान्य, तथा तण्डुल और अन्न की भिन्नता के लिए दे० तण्डुल)। सम०—**अम्लम्** मांड से तैयार की हुई कांजी, **अर्थः** चावल या अनाज के रूप में धन, **अस्थि** (नपुं०) तुस या भूसी, बूर या चोकर,—**उत्तमः** बढ़िया अन्न अर्थात् चावल,—**कल्कम्** 1. छिल्का (अन्न का), धान्यत्वचा 2. भूसी, चोकर, पुआल,—**कोशः,—कोष्ठकम्** अनाज की खत्ती,—**क्षेत्रम्** अनाज का खेत,—**चमसः** चौला, चिड़वा,—**त्वच्** (स्त्री०) अनाज का छिल्का,—**मायः** अनाज का व्यापारी,—**राजः** जौ,—**वर्धनम्** ब्याज के लिए अनाज उधार देना, अनाज की सूदखोरी,—**बीजम् (वीजम्)** धनिया,—**वीरः** उड़द (माष) की दाल, **शीर्षकम्** अनाज की बाल,—**शूकम्** अनाज का सिर्टा, टूंड,—**सारः** कूट पीट कर निकाला हुआ अन्न।

धान्या, धान्याकम् [धान्य+टाप्, स्वार्थे कन् च] धनिया।

धान्वन् (वि०) (स्त्री०—न्वी) [धन्वन्+अण्] मरुभूमि का, मरुस्थल में विद्यमान।

धान्वकः [=धानक पृषो०] एक माशे की तोल।

धामन् (नपुं०) [धा+मनिन्] 1. आवास—स्थान, गृह, निवासस्थान, घर—तुरासाहं पुरोधाय धाम स्वायंभुवं ययुः कु० २।१, पुण्य यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३, भग० ८।२१, भर्तृ० १।२३ 2. जगह, स्थान, आश्रय—श्रियोधाम 3. घर के निवासी, परिवार के सदस्य 4. प्रकाश किरण, सहस्रधामन्—मुद्रा० ३।१७, हिमधामन् शि० १।५३ 5. प्रकाश, कान्ति, दीप्ति मुद्रा० ३।१७, कि० २।२०, ५४, ५९, १०।६, अमरु ८६, रघु० ६।६, १८। २२, 6. राजयोग्य कांति, यश, प्रतिष्ठा—रघु० ११। ८५ 7. शक्ति, सामर्थ्य, प्रताप—कि० २।४७ 8 जन्म 9. शरीर 10. टोली, दल 11. अवस्था, दशा। सम०—**केशिन्,—निधिः** सूर्य।

धामनिका, धामनी [धामनी+कन्+टाप् ह्रस्व, धमनी+अण्+ङीप्] दे० धमनी।

धार (वि०) [धृ+णिच्+अच्] 1. संभालने वाला, थामने वाला, सहारा देने वाला, 2. नदी की भांति प्रवाहित होने वाला, टपकने वाला, बहने वाला,—**रः** 1. विष्णु का विशेषण 2. वर्षा का आकस्मिक तथा तीक्ष्ण बौछार, तेजी से उड़ा ले जाने वाली झड़ी 3 हिम, ओला 4 गहरी जगह 5. ऋण 6. हद, सीमा।

धारकः [धृ+ण्वुल्] 1. किसी प्रकार का बर्तन (बक्स ट्रंक आदि), जलपात्र 2 कर्जदार।

धारण (वि०) (स्त्री०—णी) [धृ+णिच्+ल्युट्] संभालने वाला, थामने वाला, ले जाने वाला, सधारण करने वाला, निबाहने वाला, रक्षा करने वाला, रखने वाला, धारण करने वाला,—**णम्** 1. संभालने, थामने, सहारा देने, सधारण करने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2 कब्जे में करना, सपत्ति 3 पालन करना, दृढ़ता पूर्वक पकड़ना, 4 याद रखना—ग्रहणधारणपटुबालक 5 (किसी का) कर्जदार होना,—**णी** 1 पंक्ति या रेखा 2 शिरा, नलाकार वाहिका।

धारणक [धारण+कन्] कर्जदार।

धारणा [धारण+टाप्] 1 संभालने, थामने, सहारा देने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2 मन में धारण करने की शक्ति, अच्छी धारणात्मकस्मरण शक्ति धीर्धारणावती मेधा अमर 3 स्मरण शक्ति 4 मन को शान्त रखना श्वास को रोके रखना मन की दृढ़ आत्मसंयमता परिचेतुमुपांशु धारणां रघु० ८।१८, मनु० ६।७२, याज्ञ० ३।२०१ धारणैपृथग्न्यान्येव धार्यन्ते यन्मनस्विना। 5 धैर्य दृढ़ता स्थिरता 6 निश्चित विधि या नियम निश्चित नियम उपसहार, इति धर्मस्य धारणा—मनु० ८।१८४, ४।३८, ९।१२४ 7 समझ बुद्धि 8 न्याय्यता औचित्य, शालीनता 9 आस्था विश्वास। सम०—**योगः** गहरी भक्ति, मनोयोग,—**शक्तिः** (स्त्री०) धारणात्मक स्मरण शक्ति।

धारयित्री [धृ+णिच्+तृच्+ङीप्] पृथ्वी।

धारा [धार+टाप्] 1 पानी की सरिता या धार गिरते हुए जल की रेखा, सरिता धार भर्तृ० २।९३, मेघ० ५५, रघु० १६।६६, आबद्धधारमश्रु प्रावर्तत—दश० ७४ 2 बौछार, वर्षा की तेज झड़ी 3 अनवरत रेखा—भामि० २।९० 4 घड़े का छिद्र 5 घोड़े का कदम—धारा, प्रसार्यमितुमक्ष्यनिकोञ्जकता शि० ५।६० 6 हाशिया, किनारा, किसी वस्तु की किनारी या सीमा—ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—श० १।१८ 7. तलवार, कुल्हाड़ा या किसी काटने वाले उपकरण का तेज किनारा या धार—र्जित परशुधारया मम—रघु० ११।७८, ६।४२, १०।८६, ४१, भर्तृ० २।२८ 8. किसी पहाड़ या चट्टान का किनारा 9 पहिया या पहिये का परिणाह या परिधि रघु० १३।१५ 10 उद्यान की दीवार, बाड़, झाड़बंदी 11 सेना की अग्रिम पंक्ति 12. उच्चतम बिन्दु, सर्वोपरिता 13. समुच्चय

14. यश, 15. रात 16. हल्दी 17. समानता, 18. सेना का अग्रभाग। सम॰ —अङ्गम् बाण का चौड़ा फलका, —अङ्कुरः 1. वर्षा की बूंद 2. ओला 3. (शत्रु का मुकाबला करने के लिए) सेना के आगे २ बढ़ते जाना, —अंगः तलवार, —अटः 1. चातक पक्षी 2. घोड़ा 3. बादल 4. मदमाता हाथी, —अधिरूढ (वि॰) उच्चतम स्वर तक उठाया हुआ, —अनिलः (स्त्री॰) हवा, —अम्बु (नपुं॰) अम्बु प्रवाह —अमरु ९०, —आसारः भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा —धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव —हि॰ ३, विक्रम॰ ४।१, —उष्ण (वि॰) (गौ के स्तन से निकला हुआ) गरम (दूध), —गृहम् स्नानागार जिसमें फौवारा लगा हो, घर जिसमें फौवारों से सुसज्जित स्नानागार हो —रघु॰ १६।४९, रत्न॰ १।१३, —धरः 1. बादल 2. तलवार, —निपातः —पातः 1 बारिश का होना, बौछार का टपटप गिरना —मेघ॰ ४८ 2. जल की धारा गिरना, —यन्त्रम् फौवारा, झरना (पानी का) अमरु ५१, रत्न॰ १।१२, —वर्षः, —र्षम्, —संपातः लगातार जोर मूसलाधार वृष्टि रघु॰ ४।८२, —वाहिन् (वि॰) अनवरत, लगातार —रत्ना॰ ४।२, —विषः टेढ़ी तलवार।

धारिणी [धृ+णिनि+ङीप्] पृथ्वी।

धारिन् (वि॰) (स्त्री॰—णी) [धृ+णिनि] 1. ले जाने वाला, वहन करने वाला, निबाहने वाला, सुरक्षित रखने वाला, रखने वाला, सम्भालने वाला, सहारा देने वाला —पादाम्भोरुहधारि— गीत॰ १२, कर आदि 2. स्मृति में रखने वाला, धारणात्मक स्मरण शक्ति रखने वाला, अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः मनु॰ १२।१०३।

धार्तराष्ट्रः [धृतराष्ट्र+अण्] 1 धृतराष्ट्र का पुत्र 2 एक प्रकार का हंस जिसके पैर और चोंच काली होती है —निपतन्ति धार्तराष्ट्राः कालवशान्मेदिनीपृष्ठे वेणी॰ १।६, (यहाँ शब्द उपर्युक्त दोनों अर्थों में प्रयुक्त है)।

धार्मिक (वि॰) (स्त्री॰—की) [धर्म+ठक्] 1 नेक, पुण्यात्मा, न्यायशील, सद्गुणसम्पन्न 2 सत्याश्रित, न्याय्य, न्यायोचित 3. धर्म से युक्त।

धार्मिणम् [धर्मिन्+अण्] सद्गुणियों का समाज।

धार्ष्ट्यम् [धृष्ट+ष्यञ्] अहंकार, अविनय, औद्धत्य, ढिठाई, अक्खड़पन।

धाव् (भ्वा॰ पर॰ —धावति, धावित) 1 दौड़ना, आगे बढ़ना —अद्यापि धावति मनः —चौर॰ ३६, धावन्त्यमी मृगजलाशयेव रथ्याः —श॰ १।८, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः १।३४, 2. किसी की ओर दौड़ना, किसी के मुकाबले में आगे बढ़ना, आक्रमण करना, मुकाबला करना —भट्टि॰ १६।१७ 3. बहना, नदी की भांति प्रवाहित होना —धावत्यम्भसि तैलवत् —सुश्रु॰ 4 दौड़ना, उड़ जाना ii (भ्वा॰ उभ॰ —धावति-ते, धौत, धावित) 1 धोना, साफ करना, मांजना, निर्मल करना, रगड़ना —यथावाग्निरूपस्तस्य स्तनश्मश्रु सुग्रीवस्य विभीषण, विद्रावकार धौताक्ष. स रिपुं स नवदं च —भट्टि॰ १४।५०, श॰ ६।२५, शि॰ १।३८ 2 उज्ज्वल करना, चमकाना 3. किसी व्यक्ति से टकराना (आ॰) निस्, धो डालना —निर्धौतं सति हरिचन्दनं जलौघैः —शि॰ ८।५१, निर्धौतदाना मलगण्डभित्तिः रघु॰ ५।४३, ७०।

धावकः [धाव्+ण्वुल्] 1 धोबी, 2 एक कवि (कहा जाता है कि इसने श्रीहर्ष राजा के लिए रत्नावली की रचना की थी —श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम् काव्य॰ १, अने॰ पा॰ —प्रथितयशसां धावकसौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य —मालवि॰ १ अने॰ पा॰।

धावनम् [धाव्+ल्युट्] 1 दौड़ना, सरपट भागना 2 बहना 3 आक्रमण करना 4 मांजना, परिष्कार करना, रगड़ना, बहा देना 5 (किसी चीज से) रगड़ना।

धावल्यम् [धवल+ष्यञ्] 1 सफेदी 2 पाण्डुरता।

धि i (तुदा॰ पर॰ —धियति) थामना, रखना, अधिकार में करना, सम्— सुलह करना ii (या धिन्व् स्वा॰ पर॰ धिनोति) प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना —पश्यन्ती बालजन विलोलनयनमत्वरया धिनोति गीत॰ १२, धिनोति नास्माञ्जलजेन पूजा त्वय्यन्वहं संप्रति विश्वनाथा भट्टि॰ ८।९३, उत्तर॰ ५।२३, कि॰ १।२६।

धिः (समास के अन्त में प्रयुक्त) आधार, आगार, आशय आदि —उदधि, पयोधि, वारिधि, जलधि आदि।

धिक् (अव्य॰) [धा+डिकन्] निन्दा, बुराई, विषाद की भावना का प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय —(धिक्कार, फटे मुँह, शर्म, दुःख, हाय —कर्म॰ साथ) धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च —भर्तृ॰ २।२, धिगिमां देहभृतामसारताम् —रघु॰ ८।५० धिक्कृतान् धिक्कृतान् धिक्कृतान् कथयति सततं कीर्तनस्थो मृदङ्गः, धिक् सानुजं कुरुपतिं धिगजातशत्रुम् वेणी॰ ३।११, कभी कभी कर्तृ॰ संबो॰ और संब॰ के साथ —धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः पंच॰ १, धिङ्मूर्ख, धिगस्तु हृदयस्यास्य (धिक्कृ तिरस्कार करना) अवज्ञा करना, रद्द करना, बुरा भला कहना)। सम॰ —कारः —क्रिया झिड़कना, फटकारना, तिरस्कार करना अवज्ञा करना, —दण्डः डांटफटकार बताना, निंदा —मनु॰ ८।१२९, —पारुष्यम् अपशब्द, डांट फटकार, भर्त्सना।

धिप्सु (वि०) [दम्भ् + सन् + उ] धोखा देने का इच्छुक, धोखा देने वाला – भट्टि० ९।३३।

धिष् दे० धि० ॥

धिषणः [धृष् + क्यु, धिष् आदेश] देवों के गुरु बृहस्पति का नाम, –णम् निवासस्थान, आवास, घर –णा 1 भाषण 2 स्तुति, सूक्त 3 बुद्धि समझ महावी० ६।७ 4 पृथ्वी 5 प्याला, कटोरा।

धिष्ण्यः [धृष् + ण्य नि० ऋकारस्य इकारः] 1 यज्ञाग्नि के लिए स्थान (यज्ञकुण्ड) अमात्यैरिव रचित कुर्वाण ... –श० ४।७ 2 असुरों के गुरु शुक्राचार्य का नाम 3 शुक्र ग्रह 4 शक्ति, सामर्थ्य –ण्यम् 1 आसन, आवास स्थान, जगह, घर ... न भौमान्येव धिष्ण्यानि हित्वा ज्योतिर्मयान्यपि – रघु० १५।३१ 2 केतु ... [illegible] 4 तारा, नक्षत्र।

धी (स्त्री०) [ध्यै + क्विप् सम्प्रसारण] 1 (क) बुद्धि, समझ धियः समग्रैः स गुणैरुदारधीः – रघु० ३।३० कु० कुधी सुधी आदि (ग) मन, दुर्बुद्धि दुष्ट बुद्धि वाला भग० २।५४ रघु० १।३० 2 विचार, कल्पना, उत्प्रेक्षा ... न धियः पथि वर्तसे कु० ६।२२ 3 विचार आशय, प्रयोजन, नैसर्गिक प्रवृत्ति कि० १।३७ 4 भक्ति, प्रार्थना 5 यज्ञ। सम० —इन्द्रियम् प्रत्यक्षज्ञान का अंग (ज्ञानेन्द्रिय), मन कर्णस्त्वचा नेत्र रसना च नासिका सह मानसिक। धीनि ... नामि ज्ञानेन्द्रियाणि प्रचक्षते —गुणः (ब० व०) बौद्धिक गुण, (शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः काम-न्दक), —पतिः (धियां पतिः) देवों के गुरु बृहस्पति —शक्तिन् (पु०), —सचिवः 1 मन्त्रणाकार मन्त्री (कि० ... कार्यान्वयोमर्षी) 2 बुद्धिमान और दूरदर्शी सलाहकार —शक्तिः (स्त्री०) बौद्धिक शक्ति –सखः सलाहकार, परामर्शदाता मन्त्री।

धीत (वि०) [धे + क्त] 1 चूसा गया, पीया गया 2 ... [illegible]

धीतिः (स्त्री०) [धे + क्तिन्] 1 पीना, चूसना, 2 प्यास।

धीमत् (वि०) [धी + मतुप्] बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, विद्वान् (पु०) बृहस्पति का विशेषण।

धीर (वि०) [धी + रा + क] 1 बहादुर, दृढ़, साहसी, धीरोद्धता गति – उत्तर० ६।१९ 2 स्थिर, सुदृढ़, अटल, टिकाऊ, अचल, स्थायी – रघु० २।६ 3 दृढ़-मानस, धैर्यवान्, अव्याकुल, अडिग, दृढ़ निश्चय वाला – धीरान्तरस्थापय ... [illegible] १७५ विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः – कु० १।५९ 4 स्वस्थचित्त, शान्त, सावधान 5 गंभीर, स्थिरबुद्धि, प्रशान्त, गम्भीर – रघु० १।१४ 6 मज-बूत, बलवान 7 बुद्धिमान्, दूरदर्शी, प्रतिभाशाली, समझदार, विद्वान्, चतुर – धृतेश्च धीरः सदृशीर्व्यधत्त सः – रघु० ३।१०, ५।३८, १६।७४ उत्तर० ५।३१ 8 गहरा, गंभीर, ऊँचा स्वर, कोलाहलपूर्ण – स्वरेण धीरेण निवर्तयन्निव – रघु० ३।४३, ५२, उत्तर० ६।१७ 9 आचरणशील, आचारवान् 10 (वायु आदि) मन्द, मृदु, सुहावना, सुखकर—धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली – गीत० ५ 11 मुग्ध, आलसी 12 साहसी 13 हेकड़, –रः 1 समुद्र 2 राजा बलि का विशेषण, —रम् केसर, जाफरान, —रम् (अव्य०) साहसपूर्वक, दृढ़ता के साथ, अडिग होकर, धीरज के साथ – भर्तृ० ७।३२ अमरु ११। सम० —उदात्तः अच्छे विचारों का शूरवीर व्यक्ति (काव्य नाटक में) नायक, अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रतः कथितः —सा० द० ६६ —उद्धतः शूरवीर परन्तु अभिमानी (काव्य-नाटक में) नायक, मायापरः प्रचण्डश्चपलोऽहंकार-दर्पभूयिष्ठः आत्मश्लाघानिरतो धीरैर्धीरोद्धतः कथितः —सा० द० ६३ —चेतस् (वि०) दृढ़, अडिग, दृढ़ मन वाला, साहसी, —प्रशान्तः (काव्य नाटक में) नायक जो शूरवीर और शान्त व्यक्ति हो—सामान्यगुणैर्भूयान् द्विजादिको धीरप्रशान्तः स्यात् —सा० द० ६९, —ललितः (काव्य नाटक में) नायक जो दृढ़ और शूरवीर होने के साथ-साथ क्रीडाप्रिय और असावधान हो निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीर-ललितः स्यात् सा० द० ६८, —स्कन्धः भैंसा।

धीरता [धीर + तल् + टाप्] 1 धैर्य, साहस, मनोबल, विपत्तौ च महत्त्वे – धीरतामनुगच्छति हि० ... 2 ईर्ष्या का दमन 3 गम्भीरता, शान्तचित्तता ... भवतो धीरतां कल्पयामि – मेघ० १०४ (दूसरे अर्थों के लिए दे० धैर्य)।

धीरा [धीर + टाप्] काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई भी उसकी उपस्थिति में अपनी बाह्य भावमुद्रा से अपना रोष प्रकट नहीं होने देती, रसमञ्जरी की उक्ति – व्यङ्ग्य-कोपप्रकाशिका धीरा, दे० सा० द० १०२–५ भी। सम० —अधीरा काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई अपने रोष को अभिव्यक्त भी कर देती है और अपनी ईर्ष्या को छिपा भी लेती है —व्यङ्ग्याव्यङ्ग्यकोपप्रकाशिका धीराधीरा, रसमञ्जरी।

धीलटिः, **टी** (स्त्री०) [धी + लट् + इन्, धीलटि + ङीष्] पुत्री, बेटी।

धीवर [दधाति मत्स्यान्, धा + ष्वरच्] मछुआ, मृग-मीनसज्जनानां तृणजलसन्तोषविहितवृत्तीनां लुब्धक-धीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति – भर्तृ० २।६१,

१।८९,—रम् बोझा,—री 1. मखुवे की स्त्री 2. मछलियाँ रखने की टोकरी।

धु (स्वा० उभ०—धुनोति, धुनुते, धुत) दे० 'धू'।

धुक्ष् (भ्वा० आ० धुक्षते, धुक्षित) 1. सुलगना 2. जीना 3. कष्ट भोगना—प्रेर० धुक्षयति—सुलगाना, प्रज्वलित करना, सम्—सुलगाना, उत्तेजित होना (आलं० भी) संधुधुक्षे तयो: कोप—भट्टि० १४।१०९, प्रेर० सुलगाना, प्रज्वलित करना, उत्तेजित करना—निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं संधुक्षयन्तीव वपुर्गुणेन—कु० ३।५२।

धुत (वि०) [धु+क्त] 1. हिला हुआ,—रघु० ११।११ 2. छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

धुनि:,—नी (स्त्री०) [धु+नि, धुनि+ङीष्] नदी, सरिता—पुराणां संहर्तुः सुरधुनि कपर्दोऽधिरुरुहे—गंगा० २२। सम०—नाथ: समुद्र।

धुर् [धुर्व्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—धू:) 1. (आ०) जूआ, न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, अमन्तुभिर्धूर्गतपूर्वं धुरन्धरैः—रघु० १४।४७, 2. जूए का वह भाग जो कंधों पर रक्खा रहता है, 3. पहिए की नाभि को धुरी के साथ स्थिर करने के लिए धुरी के दोनों किनारों पर लगी कील 4. गाड़ी का बम 5. बोझा, भार (आलं० भी) उत्तरदायित्व, कर्तव्य, कार्य—तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे—रघु० १।३४, २।७४, ३।३५, ९९, कु० ६।३० वाप्तैरत्यन्त-मप्रतीकारकर्त्री कार्यस्य धूरन्तरिता—मुद्रा० ६।५, ४।१, कि० ३।५०, १४।१ 6. प्रमुखतम या उच्चतम स्थान, हरावल, अग्रभाग, शिखर, सिर अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया—रघु० २।२, धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानाम्, १४।७४, अविघ्नमस्तु ते स्थेया: पितेव धुरि पुत्रिणाम्—१।९१, धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६, ५।११, (धुरि कृ सिरे पर रखना या आगे रखना - श० ७।४)। सम०—गत (धूर्गत) (वि०) 1. रथ के अग्र पर खड़ा हुआ 2. सिर पर खड़ा हुआ मुख्य, प्रधान, प्रमुख,—जटि: शिव का विशेषण,—धर (धूर्धर, 'धुरंधर' भी) (वि०) 1. जूआ सँभालने वाला 2. जोते जाने के योग्य 3. अच्छे गुणों से युक्त या महत्त्वपूर्ण कर्तव्यों से लदा हुआ 4. मुख्य, प्रधान, अग्रगण्य प्रमुख,—कुलधूर्धरो भव—विक्रम० ५, (र:), 1. बोझा ढोने वाला जानवर 2. जिसके ऊपर किसी कार्य का भार हो 3. मुख्य, प्रधान, अग्रणी,—वह् (धूर्वह्) (वि०) भार वहन करने वाला 2. काम का प्रबंधक, (हः) बोझा ढोने वाला पशु, इसी प्रकार 'धूर्वोढृ'।

धुरा (स्त्री०) बोझा, भार—रथधुरा वेणी० ३।५।

धुरीण, धुरीय (वि०) [धुर वहति, अर्हति वा, धुर्+ख, छ वा] 1 बोझा ढोने या सँभालने के योग्य 2. जोते जाने के योग्य 3. महत्त्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त (ण:,—य:) 1. बोझा ढोने वाला पशु 2. आवश्यक कार्यों में नियुक्त 3 मुख्य, प्रधान, अग्रणी।

धुर्य (वि०) [धुर्+यत्] 1 बोझा सँभालने के योग्य 2. महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे जाने के योग्य 3 चोटी पर स्थित, मुख्य, प्रमुख,—र्य: 1. बोझा ढोने का पशु 2. घोड़ा या बैल जो गाड़ी में जुता हुआ हो नाविनीतैर्व्रजेद् धुर्यैः—मनु० ४।६७, येनेदं ध्रियते विश्वं धुर्यैर्यानमिवाध्वनि—कु० ६।७६, धुर्यान् विश्रामयेति—रघु० १।५४, ९।७८, १७।१२. 3 (उत्तरदायित्व के) भार को सँभालने वाला - रघु० ५।६६, 4 मुख्य अग्रणी, प्रधान—न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय—रघु० ७।७१ 5. मन्त्री, महत्त्वपूर्ण कार्यों पर नियुक्त व्यक्ति।

धुस्तुर (स्तू) र: [धु+उर्, स्तुट्] धतूरे का पौधा।

धू (तुदा० पर०, भ्वा०, स्वा०, क्रया०, चुरा०—उभ० धुवति, धवति—ते, धूनोति, धूनुते, धुनाति, धुनीते धूनयति—ते) 1 हिलाना, क्षुब्ध करना, कंपाना - धुन्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाका—ऋतु० ३।१२ धुन्वन् कल्पद्रुमकिसलयानि—मेघ० ६२, कु० ७।४९, रघु० ४।६७, भट्टि० ५।१०१, ९।७, १०।२२ 2 उतार देना, हटाना, फेंक देना—अजमपि शिरस्यन्ध: क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया—श० ७।२४ 3 फूंक मार कर उड़ा देना नष्ट करना 4 सुलगाना, उत्तेजित करना (आग को) पंखा करना—वायुना धूयमानो हि वनं दहति पावक:—महा०, `पवनधूत. अग्नि' ऋतु० १।२६ 5 अशिष्ट व्यवहार करना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना—मा भवन्तमनलः पवनो वा वारणो मदकलः परशुर्वा। वज्रमिन्द्रकरविप्रसृतं वा स्वस्ति तेऽस्तु लतया सह वृक्ष॥—मा धवानीरिति रघे—भट्टि० ९।५०, १५।६१ 6. अपने ऊपर से उतार फेंकना, अपने आपको मुक्त करना—(मेनका) आरोहन्ति शनैः पश्चाद्धुन्वन्तमपि पार्थिवम्—पंच० १।३६, (कवि रहस्य के निम्नलिखित श्लोक में इस धातु के विभिन्न गणों के रूप में दिए गये हैं—धूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं चूतं धुनाति धुवति स्फुटितातिमुक्तम्, वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्कानने धवति चन्दनमञ्जरीश्च)। अव—, हिलाना, इधर-उधर करना, कम्पाना, लहराना,—रेणु: पवनावधूत:—रघु० ७।४३, लोलावधूतै-श्चामरै:—मेघ० ३५, कि० ६।३, शि० १३।३६ 2. उतार फेंकना, हटाना, पराभूत करना, राजसत्त्व-मवधूय मातृकम्—रघु० ११।९०, धुरवधूरवधूतभया—वरै. -९।१६, ३।६१, कि० १।४२ 3 अवहेलना करना, अस्वीकृति करना, उपेक्षा करना, तिरस्कार-युक्त व्यवहार करना—यन्मां सामवधूय पादपतितं—विक्रम० ४।१८, पादानतः कोपनयावधूत:—कु०

३।८, विक्रम० ३।५, उद्—हिला डालना, उठाना, ऊपर को उछालना, लहराना—कैर्लोद्धूतानि चामराणि—का० ११७, रघु० १।८५, ९।५०, उद्धूनीयात् सत्केतून् भट्टि० १९।८, कि० ५।३९, मारुतभरो-द्धूतोऽपिधूलिव्रज—घम० 2. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, नष्ट करना (आलं० भी)—उद्धूतपापा—मेघ० ५५, शि० १८।८ 3. बाधा पहुँचाना, उत्तेजित करना, भड़काना, निस्—, 1 उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, निकाल देना, नष्ट करना—निर्धूतोऽवरकोपिमा—गीत० १२, ज्ञाननिर्धूतकल्मषा—भग० ५।१६, रघु० १२।५७ 2 उपेक्षा करना, तिरस्कार-युक्त व्यवहार करना अवज्ञा करना 3 त्याग देना, छोड़ देना, फेंक देना, वि—, 1 हिलाना, इधर-उधर करना, कंपाना, मृदुपवनविधूतान्—ऋतु० ६।२९, ३।१० दीर्घां वेणी विधुन्वाना महा० 2 उतार देना नष्ट करना, निकाल देना, दूर भगा देना कर्पेविध-विनु धुनिम्—भट्टि० ९।२८, रघु० ९।७२ अव० पा० उपेक्षा करना, घृणा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना रघु० ११।८० 4 छोड़ना, छोड़ देना, त्याग देना नै० १।३५।

धूः (स्त्री०) [धू+क्विप्] हिलना कांपना, क्षुब्ध होना।

धूत (भू० क० कृ०) [धू+क्त] 1 हिला हुआ 2. उतार फेंका हुआ, हटाया हुआ 3 भड़काया हुआ 4 परित्यक्त, उजड़ा हुआ 5 फटकारा हुआ 6 परीक्षित 7 अपज्ञात, तिरस्कारपूर्वक व्यवहार किया गया 8 अनुमानित। सम०—कल्मष, —पाप (वि०) जिसने अपने पाप उतार फेंके हैं, पापमुक्त।

धूति (स्त्री०) [धू+क्तिन्] 1. हिलाना, इधर उधर करना 2 भड़काना।

धून (भू० क० कृ०) [धू+क्त, तस्य न] हिला हुआ क्षुब्ध।

धूनिः (स्त्री०) हिलाना, क्षुब्ध करना।

धूप् I (भ्वा० पर० धूपायति, धूपायित) गरम करना, गरम होना, II (चुरा० उभ० धूपयति-ते) 1 धूनी देना, सुवासित करना, धुपाना, सुगंधित करना 2 चमकना 3 बोलना।

धूपः [धूप्+अच्] 1 धूप, लोबान, गन्धद्रव्य, कोई सुगंधयुक्त पदार्थ 2 (गोंद बिरोजा आदि सुगंधित पदार्थों से उठने वाली बाष्प, सुगंधित बाष्प या धुआँ—धूपोष्मणा त्याजितमार्द्रभावम्—कु० ७।१४ मेघ० ३३, विक्रम० ३।२, रघु० १६।५० 3 सुगंधित चूर्ण। सम०—अगुरु (नपुं०) एक प्रकार की गुग्गुल जो धुपाने के काम आती है,—अङ्गः 1 तार्पीन 2 सरल वृक्ष,—अर्हम् गुग्गुल, —पात्रम् धूपदान अगर-दान, धूप जलाने का पात्र,—वासः गन्धद्रव्य के धुएँ से वासना, धुपाना,—वृक्षः एक पेड़ जिससे गुग्गुल निकलता है, सरल वृक्ष।

धूमः [धू+मक्] 1. धुआँ, बाष्प—धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः—मेघ० ५ 2. धुंध, कोहरा 3. उल्का, केतु 4. बादल 5. (नस्य, छींक लाने वाला) धुआँ 6 डकार, उद्गार। सम०—आभ (वि०) धुएँ जैसा प्रतीत होने वाला, धुमैले रंगका, —आवलिः धुएँ का बादल या धूममाला,—उत्थम् नौसादर,—उद्गारः 1 धुआँ या बाष्प उठना,—ऊर्णा यम की पत्नी का नाम, °पतिः यम का विशेषण, —केतनः, —केतुः 1. आग,—कोपस्य नंदकुलकाननधूम-केतोः—मुद्रा० १।१०, रघु० ११।८१ 2. उल्का, पुच्छल तारा, गिरता हुआ तारा—धूमकेतुमिव किमपि करालम्—गीत० १, धूमकेतुरिवोत्थित—कु० २।३२ 3 केतु —जः बादल,—ध्वजः अग्नि,—पानम् धुआँ या बाष्प पीना,—महिषी कोहरा, धुंध,—योनिः बादल तु० मेघ० ५।

धूमल (वि०) [धूम+ला+क] धुमैला, भूरा-लाल, मटमैला।

धूमायति-ते (ना० धा० पर०) धुएँ से भर देना, बाष्प से ढक देना, अँधेरा करना—धूमायिता दश दिशो दलितारविन्दा—भामि० १।१०४, मृच्छ० ५।५७।

धूमिका [धूम+ठन्+टा] बाष्प, कोहरा, धुंध।

धूमित (वि०) [धूम+इतच्] धुएँ से ढका हुआ, अन्धकार-युक्त—कु० ४।३०।

धूम्या [धूम+यत्+टाप्] धुएँ का बादल, प्रगाढ़ धुआँ।

धूम्र (वि०) [धूम+रा+क] 1 धुमैला, धुएँ वाला, भर्तृ० ३।५५, रघु० १५।१६ २. गहरा लाल 3 काला, अन्धकारावृत 4. मटमैला,—म्रः 1. काले और लाल रंग का मिश्रण 2 लोबान,—म्रम् पाप, दुर्व्यसन दुष्टता। सम०—अटः एक प्रकार की शिकारी चिड़िया,—वर्ण (वि०) मटमैले रंग का, —लोचनः कबूतर, —लोहित (वि०) गहरा लाल, गाढ़ा मटमैला, (तः) शिव का विशेषण,—शूकः ऊँट।

धूम्रकः [धूम्र+कै+क] ऊँट।

धूर्त (वि०) [धूर्व(धुर्)+क्त] 1 चालाक, शठ, बदमाश, मक्कार, जालसाज, 2 उपद्रवी, क्षति पहुँचाने वाला, —र्तः 1 ठग, बदमाश, उचक्का, 2. जुआरी 3. प्रेमी, रसिया, विनोदप्रिय धूर्त—तस्ते धूर्त हृदि स्थिता प्रिय-तमा काचिन्ममेवापरा—अम० ४।६, धूर्तोऽपरां चुंबति अमरु १६, इसी प्रकार—धूर्तानामभिसारसत्वर-हृदाम्—गीत० ११ 4 धतूरा। सम०—कृत् (वि०) मक्कार, बेइमान, (पुं०) धतूरे का पौधा,—जन्तुः मनुष्य, —रचना धूर्त क्रिया, बदमाशी।

धूर्तकः [धूर्त+कन्] 1 गीदड़ 2. बदमाश।

धूर्वी [धुर्+अच्+क्विप्, अच् ह्रस्वस्य दी आदेश] गाड़ी का बम, या अगला भाग !

धूलकम् [धू+लक+बा०] विष, ज़हर !

धूलिः,—ली (पुं०, स्त्री०) [धू+लि बा०, धूलि+ङीप्] 1 धूल, कनीत्यापत्कृतां धूलिमूर्धकं नावतिष्ठते—शि० २।४६ 2. चूर्ण । सम० धूलिध्वजः,—केदारः 1 टीला, प्राचीर 2. जोता हुआ खेत, ध्वजः वायु,—पटलः धूल का ढेर,—पुष्पिका,—पुष्पी केतकी का पौधा !

धूलिका [धूलि+कन्+टाप्] कोहरा, धुंध !

धूसर (वि०) [धू+सर, किच्च न षत्वम्] धूल के रंग का भूरा सा, धुमैला—सफेद रंग का, मटमैला—गाढी दिवसधूसर—भग० २।५६, कु० ४।४, ४६, रघु० ५।४२, १६।१७, शि० १७।४१,—रः 1 भूरारंग 2. गधा 3 ऊँट 4. कबूतर 5 तेली !

धृ 1 (तुदा० आ०—कइयों के मतानुसार धृ का कर्मवा० रूप—ध्रियते, धृत) 1 होना, विद्यमान होना रहना रहते रहना, जीवित रहना—आर्यपुत्र ध्रिये एषा ध्रिये—उत्तर० ३, ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुतः सुखम्—शि० २।३५, १५।८९ 2 स्थापित या सुरक्षित रहना, रहना, चलते रहना—भुजतश्रमसमृतो मुखे ध्रियते स्वेदलवोद्गमोऽपिते—रघु० ८।५१, कु० ४।१८ 3 संकल्प करना, 1' (भ्वा० चुरा० उभ० धरति-ते, धारयति-ते धृत, धारित) 1 थामना, सभालना, ले जाना—भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्—भर्तृ० २।४, वैणवीं धारयेद्यष्टिम् सोदकं च कमण्डलुम्—मनु० ४।३६ भट्टि० १७।५४, विक्रम० ४।३६ 2 थामना, सभालना स्थापित रखना, सहारा देना, जीवित रखना भूतभृत् गीत० १, यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् मनु० ९।३११, पंच० १।११६, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः—मेघ० ११३, चिरमात्मना धृताम् रघु० ३।३५ 3 अपने अधिकार में थामे रखना अधिकार में करना, पास रखना रखना—या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९ 4 धारण करना, (रूप, छद्मवेश), लेना—केशव धृतशूकररूप—गीत० १, धारयति कोकनदरूपम्—१०, 5 पहनना, धारण करना, (वस्त्रालंकारादिक) उपयोग में लाना, श्रित कमलाकुचमण्डल धृत कुण्डल ए —गीत० १ 6 रोकना, दमन करना, नियन्त्रण करना, ठहराना, स्थगित करना 7. जमाना, सकेत करना (सम्प्र० या अधि० के साथ)—ब्राह्मण्ये धृतमानसः, मनो दध्रे राजसूयाय आदि 8 भुगतना, भोगना 9 किसी व्यक्ति के लिए कोई वस्तु निर्धारित करना, नियत करना, निर्दिष्ट करना 10 किसी का ऋणी होना (संप्र०, सब० विरल०),—धृतसेवनं हि धारयसि मे, श० १, तस्मै तस्य वा धनं धारयति आदि 11 थामना, रखना 12 पालन करना, अभ्यास करना 13 हवाला देना, उद्धृत करना (इस धातु के अर्थ उन सज्ञा शब्दों के अनुसार, जिनसे यह जुड़े, विविध प्रकार के हो जाते हैं—उदा० मनसा धृ मन में धारण करना, याद रखना, शिरसा धृ, मूर्ध्नि धृ सिर पर रखना अत्यंत आदर करना अतरे धृ धरोहर रखना, अमानत के रूप में जमा करना, समये धृ सहमत करना, दण्डं धृ दण्ड देना, सजा देना, बल का उपयोग करना, जीवितं, प्राणान् शरीरं, गात्रं देहम् धृ जीवित रहना, आत्मा को स्थापित रखना, प्राणों का सुरक्षित रखना, व्रतं धृ व्रत का पालन करना तुलया धृ तराजू में रखना, तोलना, मनः, मतिम्, चित्तम्, बुद्धिम् धृ किसी वस्तु में मन लगाना, मन जमाना, सोचना, दृढ संकल्प करना गर्भं धृ, गर्भवती होना धारणां धृ (एकाग्रता संयम का) पालन करना 1 अव 1 स्थिर करना, निर्धारित करना निश्चित करना, शि० १।३ 2 जानना निश्चय करना समझना सही सही जानना न विश्वमूर्तेरवधार्यते वपु—कु० ५।७८, रघु० १३।५, उद्,—1 ऊपर उठाना उन्नत करना 2 बचाना, परित्राण करना 3 बाहर निकालना, उद्धृत करना 4 उन्मूलन करना, उखाड़ना (उद् पूर्वक धृ के वही हैं रूप जो उद् पूर्वक हृ के हैं) निस्, निर्धारण करना निश्चित करना, नियत करना,—निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्ता खलु वाचिकम् शि० २।७० ९।२० वि—,1 धर पकड़ना, पकड़ लेना, ग्रहण करना धारण कर लेना अधूक पल्लवेन विधत अमरु ७९ ५५ 2 पहनना, धारण करना, उपयोग में लाना—रघु० १२।४० 3 स्थापित रखना, वहन करना, सहारा देना थामलेना, पंच० १।८२ भर्तृ० ३।२३ 4 टकटकी लगाना, निदेश देना, सम्—1 थामना, सभालना ले जाना 2 थाम लेना, सहारा देना—अरे सधार्यते नाभि पंच० १।८१ 3 दबाना, नियन्त्रण में रखना, रोकना 4 मन में रखना याद रखना, समुद्—,1. जड़ से उखाड़ लेना उन्मूलन करना दे० उद् पूर्वक 'हृ' 2 बचाना, परित्राण करना, सप्र, 1 जानना, निर्धारण करना, निश्चय करना शि० ९।६० 2 विचार विमर्श करना, चिन्तन करना, सोचना, विचार करना—मनु० १०।७३, एव सप्रधार्य पंच० १ ।

धृत (भू० क० कृ०) [धृ+क्त] 1 थामा गया, ले जाया गया, वहन किया गया, सहारा दिया गया 2 अधिकृत किया गया 3 रखा गया, स्थापित, धारण किया गया 4. पकड़ा गया, आत्मसात् किया गया,

संभाला गया, पहना गया, उपयोग में लाया गया 6. रख दिया गया, जमा किया गया 7 अभ्यास किया गया, पालन किया गया 8 तोला गया 9 (कर्तृवा०) धारण किया हुआ, संभाला हुआ 10 तुला हुआ दे० ऊपर 'धृ'। सम० —आत्मन् (वि०) पक्के मन वाला, स्थिर, शान्त, स्वस्थचित्त —दण्ड (वि०) 1 दण्ड देने वाला 2 वह जिसको दण्ड दिया जाता है —पट (वि०) कपड़े से ढका हुआ —राजन् (वि०) (देश आदि) अच्छे राजा द्वारा शासित —राष्ट्रः विचित्रवीर्य की विधवा पत्नी से उत्पन्न व्यास का ज्येष्ठ पुत्र (ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण धृतराष्ट्र राज्य का अधिकारी था, परन्तु जन्मांध होने के कारण उसने प्रभुसत्ता पाण्डु को सौंप दी। जिस समय पाण्डु वानप्रस्थ लेकर जंगल की ओर गया तो राज्य का कारोबार फिर धृतराष्ट्र ने स्वयं संभाल ली, और अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को युवराज बनाया। जब युद्ध में भीम ने दुर्योधन का काम तमाम कर दिया तो धृतराष्ट्र को बदला लेने की इच्छा हुई, फलतः उसने युधिष्ठिर और भीम को आलिंगन करना चाहा। श्रीकृष्ण उसकी इस बात को तुरन्त ताड़ गये, उन्हें विश्वास हो गया कि धृतराष्ट्र ने भीम को अपना शिकार समझ लिया है। इस लिए श्रीकृष्ण ने लोहे की एक भीम की मूर्ति बनवाई। जिस समय धृतराष्ट्र भीम का आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ा तो श्रीकृष्ण ने भीम की लौहमूर्ति आगे करवा दी जिसको कि बदला लेने के प्रबल इच्छुक धृतराष्ट्र ने इस प्रकार इतना बल लगा कर दबाया कि वह लौह मूर्ति टुकड़े २ हो गई। इस प्रकार असफल प्रयत्न हो धृतराष्ट्र अपनी पत्नी गांधारी समेत हिमालय पर्वत की ओर चला गया जहाँ कुछ वर्षों के पश्चात् वह स्वर्ग सिधार गया। —वर्मन् (वि०) कवच पहने हुए कवचित।

धृतिः (स्त्री०) [धृ + क्तिन्] 1 लेना, पकड़ना, हस्तगत करना 2 रखना, अधिकृत करना 3 स्थापित रखना, सहारा देना 4 दृढ़ता, स्थिरता, धैर्य 5 धैर्य स्फूर्ति, दृढ़संकल्प, साहस —प्रशम-सदृशं भज धृतिं त्यज भीतिमन्तेतुकाम् नै० ४।१०४, कि० ६।१९, रघु० ८।६६ 6 संतोष, तृप्ति, सुख, प्रसन्नता खुशी, हर्ष —धृतेश्च धीरः सदृशीर्व्यधत्त सः —रघु० ३।१०, १९। ८२, प्रभुर्बुभुक्षन्नाति न धृतिम् —विक्रम० २।८, शि० ७।१० १४ 7 साहित्यशास्त्र में वर्णित ३३ व्यभिचारीभावों में सन्तोष की गिनती की गई है —ज्ञानाभीष्टागमाद्यैस्तु संपूर्णस्पृहता धृतिः, सौहित्यवचनोल्लाससहासप्रतिभादिकृत् —सा० द० १९८, १९८ 8 यज्ञ।

धृतिमत् (वि०) [धृति + मतुप्] 1 पक्का, स्थिर, दृढ़ अडिग 2. संतुष्ट, प्रसन्न, प्रहृष्ट, तृप्त —रघु० १३।७७।

धृत्वन् (पुं०) [धृ + क्वनिप्] 1. विष्णु का विशेषण 2 ब्रह्मा की उपाधि 3 सद्गुण, नैतिकता 4 आकाश 5 समुद्र 6 चतुर व्यक्ति।

धृष् 1 (भ्वा० पर० धर्षति धर्षित) 1 एकत्र होना, सहन होना, चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, II (भ्वा० पर० चुरा० उभ० धर्षति, धर्षयति-ते) 1 नाराज करना, चोट पहुंचाना क्षति पहुंचाना 2 अपमानित करना, मर्यादा से हीन व्यवहार करना 3 बाधा डालना जीतना, पराभूत करना, विजय प्राप्त करना नष्ट करना 4 आक्रमण करने का साहस करना, ललकारना चुनौती देना 5 (किसी स्त्री के साथ) बलात्कार करना सतीत्व हरण करना III (स्वा० पर० धृष्णोति धृष्ट) 1 दिलेर या साहसी होना 2 विश्वस्त होना 3 घमंडी होना, उद्धत होना, 4 ढीठ होना उतावला होना 5 साहस करना निडर होना (तुमुन्नन्त के साथ) 6 ललकारना, चुनौती देना भट्टि० १४।१०२ 7 (चुरा० आ० —धर्षयते) हमला करना, आक्रमण करना, बलात्कार करना।

धृष्ट (वि०) [धृष् + क्त] 1 दिलेर, साहसी, विश्वस्त, 2 ढीठ, अक्खड़ निर्लज्ज, उच्छृंखल, अविनीत —धृष्टः पार्श्वे वसति हि० २।२६ 3 प्रगल्भ, दुःसाहसी 4 दुश्चरित्र, लुच्चा, —ष्टः विश्वासघातक पति या प्रेमी —कृतागा अपि निःशङ्कस्तर्जितोऽपि न लज्जितः, दृष्टदोषोऽपि मिथ्यावाक् कथितो धृष्टनायकः। सा० द० ७२। सम० —द्युम्नः द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई (धृष्टद्युम्न और उसका पिता द्रुपद दोनों महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़े। धृष्टद्युम्न ने कई दिन तक पांडवों की सेना के मुख्य सेनापतित्व का पद संभाला। जब द्रोण ने घोर संघर्ष के पश्चात् द्रुपद को मार डाला तो धृष्टद्युम्न ने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने पिता की मृत्यु का बदला लूंगा। आखिर युद्ध के सोलहवें दिन प्रातःकाल धृष्टद्युम्न को अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का अवसर मिला जब कि उसने अन्यायपूर्वक द्रोण का सिर काट डाला दे० द्रोण। उसके पश्चात् एक दिन यह पाण्डवशिविर में सो रहा था कि अचानक अश्वत्थामा ने आ दबाया और मौत के घाट उतार दिया गया)।

धृष्णज् (वि०) [धृष् + नजिङ्] 1 साहसी, विश्वस्त 2 ढीठ, निर्लज्ज।

धृष्णिः [धृष् + नि] प्रकाश की किरण।

धृष्णु (वि०) [धृष् + क्नु] 1 दिलेर, विश्वस्त, साहसी, बहादुर, बलशाली (अच्छे अर्थ में) 2 निर्लज्ज, ढीठ।

धे (भ्वा० पर० धयति, धीत—प्रेर० धापयति, इच्छा० धित्सति) 1 चूसना पीना, घूंट भरना, निगल जाना (आल० भी) अधावुस्तामवयासोष्णं रुधिरं वनवासिनाम् भट्टि० १४।२९, ६।१८, मनु० ४।५९, याज्ञ० १।१४० 2 चूम... -धयन्तो वयस्याननम्—गीत० १२ 3 चूस लेना, खींच लेना, ले लेना।

धेनः [धे+नन्] 1 समुद्र 2 नद,

धेनुः (स्त्री०) [धयति सुतान्, धीयते वत्सैर्वा धे+नु इच्च तारा०] गाय दुधार गाय धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः उत्तर० ५।३१ 2 किसी जाति की स्त्री (इस अर्थ में किसी भी पुरुषवाचक नाम के आगे लग कर उसे स्त्रीवाचक शब्द बना देता है यथा खड्गधेनु, वडवधेनु आदि 3 पृथ्वी (कई बार समास के अन्त में लग कर इससे अल्पार्थवाची शब्द बनता है, जैसे असिधेनु, खड्गधेनु)।

धेनुकः [धेनु+कन्] एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार गिराया था। सम० सूदनः बलराम का विशेषण।

धेनुका [धेनुक+टाप्] 1 हथिनी 2 दूध देने वाली गाय।

धेनुष्या [धेनु+यत्, षुक्] वह गाय जिसका दूध बंधक रूप में सुरक्षित हो।

धैनुकम् [धेनु+ठक्] 1 गौओं का समूह 2 रतिबंध।

धैर्यम् [धीर+ष्यञ्] दृढ़ता, टिकाऊपन, सामर्थ्य, ठोसपन, स्थिरता, स्थायिता, धीरज, साहस धैर्यमवष्टभ्य —पंच० १, विपदि धैर्यम्—भर्तृ० २।६३, इसी प्रकार 'धैर्यवृत्ति' शि० ९।५९ 2 शान्ति, स्वस्थता 3. गुरुत्वाकर्षण शक्ति, सहिष्णुता 4 अनम्यता 5 हिम्मत, दिलेरी मेघ० ८०।

धैवतः [धीमत्+अण् पृषो० मस्य वत्वम्] भारतीय सरगम स्वरग्राम के सात स्वरों में छठा स्वर।

धैवत्यम् [धीवन्+ष्यञ्] चतुराई।

धोड = डुडुभ।

धोर् (भ्वा० पर० धोरति) 1 जल्दी जाना, अच्छे कदम रखना, दौड़ना, दुल्की चलना 2 कुशल होना।

धोरणम् [धोर्+ल्युट्] 1 (घोड़ा, हाथी आदि) वाहन सवारी 2. जल्दी जाना 3 घोड़े की दुल्की चाल।

धोरणिः,-णी (स्त्री०) [धोर्+अनि, धोरणि+ङीप्] 1, अनवच्छिन्न श्रेणी या नैरन्तर्य - धैर्याकन्दवने मनोज्ञपवने सद्य स्खलन्माधुरीधाराधोरणिधौतधामनि धरा धौतत्वमाकम्प्यते, तेषां नित्यविनोदिनां सुकृतिनां माध्वीकपानां पुन काल: किं न करोति केतकि यतस्त्व चापि केलिस्थली —उद्भट, परम्परा।

धोरितम् [धोर्+क्त] 1 क्षति पहुंचाना, चोट पहुंचाना, प्रहार करना, 2. गमन, गति 3. घोड़े की दुल्की चाल।

धौत (भू० क० कृ०) [धाव्+क्त] 1. धोया हुआ, नहाया गया, साफ किया गया, पवित्र किया गया, प्रक्षालन किया गया कुल्याम्भोभि पवनचपलैः शाखिनो धौतमूलाः श० १।१५, शिशु० ५८, कु० १।६,६।५७ रघु० १६।४९,१९।१० 2 चमकाया हुआ, उजला किया हुआ 3 उजला, सफेद, चमकदार चमकीला चमचमाता हुआ, हर्म्यशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या—मेघ० ७।६४ विकसदमलांशुधौताधरम् गीत० १२, सम० कौषी, सम० कौशम् धोरे कपड़े का थैला कौशेयम् धुली हुई रेशम शिलम् स्फटिक।

धौमः [धूम+अण्] 1 भूगामन 2 (विशेष रूप से तैयार किया गया) मकान बनाने के लिए स्थान।

धौरितकम् [धोरित+अण्+कन्] घोड़े की दुल्की चाल।

धौरेय (वि०) (स्त्री० यी) [धुरं वहति ढक्] बोझा ले जाने के योग्य य 1 बोझा ढोने का पशु 2 घोड़ा।

धौर्तकम्, धौर्तिकम्, धौर्त्यम् [धूर्तता भाव कर्म वा धूर्त+वुञ्, ठञ्, ष्यञ् वा] बदमाशी बेईमानी बदमाशी।

ध्मा (भ्वा० पर० धमति, ध्मात प्रेर० ध्मापयति) 1 फूंक मारना श्वास बाहर निकालना नि:श्वसन 2 (हवा के उपकरण की भांति) धौंकना फूंक मार कर बजाना—शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् भग० १।१२,१८ रघु० ७।६३, भट्टि० ३।३४ १३।७ 3 आग को फूंकना फूंक मारकर आग को उद्दीप्त करना, चिंगारियाँ उठाना को धमेच्छान्त च पावकम् महा० 4 फूंक द्वारा निर्माण करना 5 फेंकना फूंक से उड़ाना फेंक देना आ— 1 हवा भरना फुलाना 2 फूंक मारना या हवा से भरना, (शंख आदि को) उप , फूंक मारकर तेज करना, पक्का करना नाग्निं मुखेनोपधमेत् मनु० ४।५३ निस् , फूंक मारकर बाहर निकालना, प्र -, (शंख आदि) बजाना शङ्खौ प्रदध्मतु भग० १।१४ वि , बखेरना तितर बितर करना, नष्ट करना।

ध्माकारः [ध्मा+कृ+अण्] लुहार, लोहकार।

ध्मांक्षः अने० पा० ध्वांक्ष।

ध्मात (भू० क० कृ०) [ध्मा+क्त] 1 (वायुवाद्य की भांति) बजाया हुआ, पंखा किया हुआ, भड़काया हुआ 2. हवा भरा हुआ, फूला हुआ, फुलाया हुआ।

ध्यात (वि०) [ध्यै+क्त] सोचा हुआ, विचार किया हुआ, दे० 'ध्यै'।

ध्यानम् [ध्यै+ल्युट्] 1 मनन, विमर्श, विचार, चिन्तन ज्ञानात् ध्यानं विशिष्यते भग० १२।१२, मनु० १। १२, ६।७२ 2 विशेष रूप से सूक्ष्मचिन्तन, धार्मिक मनन—तदेव ध्यानादवगतोऽस्मि—श० ७, रघु० १।

ता 3. दिव्य अन्तर्ज्ञान या अन्तर्विवेक 4. किसी देवता की व्यक्तिगत उपाधियों का मानसिक चिन्तन — इति ध्यानम् । सम० —गम्य (वि०) केवल मनन द्वारा प्राप्य, —तत्पर, —निष्ठ —पर (वि०) विचारों में खोया हुआ, मनन में लीन, चिन्तनशील, —स्थ (वि०) मनन में लीन, विचारों में खोया हुआ ।

ध्यानिक (वि०) [ध्यान + ठक्] सूक्ष्म मनन और पवित्र चिन्तन के द्वारा अनुमदित या प्राप्त ।

ध्याम (वि०) [ध्यै + मक्] अस्वच्छ, मैला, काला, मलिन —भट्टि० ८।७१ —मम् एक प्रकार का घास ।

ध्यामन् (पुं०) [ध्यै + मनिन्] माप, प्रकाश (नपुं०) मनन ('ध्यामन्' कम शुद्ध) ।

ध्यै (भ्वा० पर० ध्यायति, ध्यात, इच्छा० दिध्यासति, कर्मवा० ध्यायते) सोचना, मनन करना, विचार करना, चिन्तन करना, विचार विमर्श करना, कल्पना करना, याद करना — ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते भग० २।६२, न ध्यातं पदमीश्वरस्य भर्तृ० ३।११, पितॄन् ध्यायन् मनु० ३।२२४ ध्यायन्ति चान्यं धिया पंच० १।१३६, मेघ० 3 मनु० ५।४७ ९।२१, अनु —, 1 सोचना, ध्यान लगाना 2 याद करना 3 मंगलकामना करना, आशीर्वाद देना, अनुग्रह करना, रघु० १४।६०,१७।३६, अप —, बुरा सोचना, मन से शाप देना, अभि —, 1 कामना करना, इच्छा करना, लालच करना — याज्ञ० ३।१३४ 2. सोचना अव —, अवहेलना करना, निस् — सोचना, मनन करना, वि —, 1 सोचना, मनन करना, याद करना—भट्टि० १४।६५ 2. गहन मनन करना, टकटकी लगाकर देखना—अंगुलीयकं निध्यायन्ती — मालवि० १, शि० ८।६९,१२।४, कि० १०।४६ ।

ध्राडिः [ध्राड् + इन्] फूल चुनना ।

ध्रुव (वि०) [ध्रु + क] (क) स्थिर, दृढ़ अचल स्थावर, स्थायी, अटल, अपरिवर्तनीय — इति ध्रुवेच्छामनुशासती सुताम् — कु० ५।५, (ख) शाश्वत, सदैव रहने वाला, नित्य — ध्रुवेण भर्त्रा — कु० ७।८५, मनु० ७।२०८ 2 स्थिर (ज्योतिष में) 3 निश्चित, अचूक, अनिवार्य — जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च — भग० २।२७ यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते — चाण० ६३ 4 मेधावी, धारणशील — जैसा कि 'ध्रुवा स्मृति' में 5 मजबूत, स्थिर, (दिन की भांति) निश्चित, — वः 1. ध्रुव तारा, रघु० १७।३५, १८।३४, कु० ७।८५ 2. किसी बड़े वृत्त के दोनों सिरे 3 नाक्षत्र राशिचक्र के आरंभ से ग्रह की दूरी, ध्रुवीय देशान्तर रेखा 4 वटवृक्ष 5 स्थाणु ठूंठा 6 (कटे हुए वृक्ष का) तना 7 गीत का आरंभिक पाद, टेक (समवेत गान की भांति दोहराया गया दे० नीचे) 8 समय, काल, युग 9. ब्रह्मा का विशेषण, 10 विष्णु और 11 शिव की उपाधि 12 उत्तानपाद के पुत्र और मनु के पौत्र का नाम [ध्रुव उत्तर दिशा में स्थित एक तारा है, परन्तु पुराणों में उत्तानपाद के पुत्र के रूप में इसका वर्णन उपलब्ध है। सामान्य मर्त्य का ध्रुव तारे के उच्च पद को प्राप्त करने का वर्णन इस प्रकार है उत्तानपाद के सुरुचि और सुनीति नाम की दो पत्नियां थीं, सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था तथा ध्रुव का जन्म सुनीति से हुआ था। एक दिन ध्रुव ने अपने बड़े भाई उत्तम की भांति पिता की गोद में बैठना चाहा, परन्तु उसे राजा और सुरुचि दोनों ने दुत्कार दिया। 1 ध्रुव सुबकता हुआ अपनी माता सुनीति के पास गया, उसने बच्चे को सान्त्वना दी और समझाया, कि संपत्ति और सम्मान कठोर परिश्रम के बिना नहीं मिलते। इन वचनों को सुन कर ध्रुव ने अपने पिता के घर को छोड़ कर जंगल की राह ली। यद्यपि वह अभी बच्चा ही था तो भी उसने घोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप विष्णु ने उसको ध्रुव तारे का पद प्रदान किया] — वम् 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2. स्वर्ग, —वा 1 (लकड़ी का बना) यज्ञ का स्रुवा 2 साध्वी स्त्री, — वम् (अव्य०) अवश्य, निश्चित रूप से, यकीनन — रघु० ८।४९, श० १।१८। सम० — अक्षरः विष्णु की उपाधि — आवर्तः सिर पर रक्खे मुकुट का वह स्थान जहां से बाल चमकते हैं, — तारकम्, — तारा ध्रुव तारा।

ध्रुवकः [ध्रुव + कन्] 1 गीत का आरम्भिक पद (जो समवेत गान की भांति दोहराया जाय, टेक 2. तना, ठूंठ 3 स्तूणा।

ध्रौव्यम् [ध्रुव + ष्यञ्] 1 स्थिरता, दृढ़ता, स्थावरता 2 अवधि 3 निश्चय।

ध्वंस् (भ्वा० आ० ध्वंसते, ध्वस्त) 1 नीचे गिरना, गिर कर टुकड़े २ होना, चूर २ हो जाना — भट्टि० १५।९३ १४।५५ 2 गिरना, डूबना, हताश होना - मा० ९।४४ 3 नष्ट होना बर्बाद होना 4. ध्वस्त होना — मुद्रा० ३।८, प्रेर० — नष्ट करना, प्र —, नष्ट होना, मिट जाना, वि —, 1 गिरकर टुकड़े २ होना 2 तितर-बितर हो जाना बिखर जाना 3. नष्ट होना, मिट जाना बर्बाद होना।

ध्वंसः ध्वंसनम् [ध्वंस् + घञ्, ल्युट् वा] 1 नीचे गिर जाना डूबना गिर कर टुकड़े २ हो जाना 2 हानि, नाश, बर्बादी — सौ सूर्य की किरण में धूलिकण।

ध्वंसिः [ध्वंस् + इन्] मुहूर्त का शतांश।

ध्वजः [ध्वज् + अच्] 1 ध्वज, झण्डा, पताका, वैजयन्ती, रघु० ७।४०, १७।३२, पंच० १।१२९ 2. पुरुष का

प्रमुख व्यक्ति, झंडा या भूषण (समास के अन्त में) जैसा कि 'कुलध्वज' (कुल का भूषण या पूज्य व्यक्ति) में 3 वह बांस जिसमें झण्डा लहराता है, 4 चिह्न, निशान, लक्षण, प्रतीक —वृषभ, मकर आदि 5 देवता की उपाधि 6 मदिरालय का चिह्न 7 व्यवसाय का चिह्न —व्यवसाय लक्षण 8 जननेन्द्रिय (किसी जानवर की, चाहे नर हो या मादा) 9 कलाल 10 किसी वस्तु से पूर्व की ओर स्थित घर 11 घमंड 12 पाखंड, (ध्वजीकृ झंडा लहराना आल० बहाने के रूप में प्रयुक्त करना)। सम० —अंशुकम् —पटः, —वस्त्रम् झंडा —रघु० १२।८५ —आहृत (वि०) युद्धभूमि में पकड़े हुए, —गृहम् वह कमरा जहाँ झंडे रक्खे जाते हैं —द्रुम: ताड़ का वृक्ष —प्रहरणः वायु, हवा, —यन्त्रम् झंडा खड़ा करने की कूटयुक्ति, —यष्टिः (स्त्री०) झंडे का डंडा या बांस मनु० ९।२८५।

ध्वजवत् (वि०) [ध्वज+मतुप्+मस्य व] 1 झंडों से सजा हुआ 2 चिह्न से युक्त 3 अपराधी के लक्षण से युक्त, दागी, (पुं०) 1 झंडा-वाहक 2 मद्य विक्रेता कलाल।

ध्वजिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [ध्वज+इनि] 1 झण्डा बरदार झण्डा ले जाने वाला 2 चिह्नधारी 3 सुरा पात्र के चिह्न वाला—मनु० ११।९३, (पुं०) 1 पताका वाहक 2 कलाल, मद्य विक्रेता—याज्ञ० १।१४१ 3 गाड़ी, शकट, रथ 4 पहाड़ 5 साँप 6 मोर 7 घोड़ा 8 ब्राह्मण —नी सेना रघु० ७।४०, शि० १२।६६ कि० १३।९।

ध्वजीकरणम् [ध्वज+च्वि+कृ+ल्युट्] 1 झंडोत्तोलन झंडे को फहराना 2 दावा स्थापित करना किसी बात को हेतु बनाने वाला।

ध्वन् (भ्वा० पर० ध्वनति ध्वनित) शब्द करना, ध्वनि पैदा करना गुनगुनाना भिनभिनाना, गूँजना, प्रतिध्वनि करना, गरजना दहाड़ना शिंजित होना इव प्रध्वनुदिता —कि० १४।४६, अयं धीरं धारं ध्वनति नवनीलो जलधरः —भामि० १।६०, कपिद्ध्वान मेघवत् —भट्टि० ९।५, १४।३, ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति—गीत० ५ प्रेर०—ध्वनयति शब्द करवाना, (घंटी की भाँति) बजवाना, परन्तु 'ध्वानयति' अस्पष्ट उच्चारण करवाना।

ध्वनः [ध्वन्+अप्] 1 शब्द, स्वर 2 भिनभिनाना, गुनगुनाना।

ध्वननम् [ध्वन्+ल्युट्] 1 ध्वनि निकालना 2 संकेत करना, सुझाव देना, या (अर्थ) लगाना 3 (सा० शा० में) व्यंजना शक्ति, शब्द या वाक्य की वह शक्ति जिसके कारण वह मुख्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ को प्रकट करे सुझाव शक्ति —दे० अंजन भी।

ध्वनिः [ध्वन्+इ] 1 शब्द प्रतिध्वनि, कोलाहल या शोर मृदङ्गधीर ध्वनिमन्वगच्छत् रघु० १६।१३ ७।३२ उत्तर० ६।१७ 2 लय, तान स्वर शि० ६।४८ 3 वाद्ययंत्र की ध्वनि रघु० १।३९ 4 बादल गरज या गड़गड़ाहट 5 केवल रिक्तध्वनि 6 शब्द 7 (सा० शा० में) काव्य के तीन मुख्य भेदों में से सर्वोत्तम काव्य जिसमें कि शब्दों का व्यंग्यार्थ, अभिहित अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारक हो या जहाँ मुख्यार्थ, व्यंग्यार्थ के अधीन हो इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः काव्य० १ (रस गंगाधर में ध्वनि के पाँच भेद बताये गये हैं, दे० 'ध्वनि के नीचे')। सम० —ग्रहः 1. कान 2 श्रवण, या श्रुति 3 श्रवणेन्द्रिय —नाला 1 एक प्रकार का बिगुल 2. बांसुरी 3 मुरली वंशी —विकारः भय या शोक के कारण वाणी का विकार दे० काकु।

ध्वनित (भू० क० कृ०) [ध्वन्+क्त] 1 निनादित 2 निहित ध्वनित संकेतित —तम् 1 शब्द 2 बादल की गरज या गड़गड़ाहट कि० ५।१२।

ध्वस्तिः (स्त्री०) [ध्वंस्+क्तिन्] नाश बर्बादी।

ध्वाङ्क्षः [ध्वाङ्क्ष्+अच्] 1 कौवा (कभी कभी तिरस्कार प्रकट करने के लिए समास के अन्त में प्रयुक्त किया जाता है, उदा० तीर्थध्वाङ्क्षः) 2 भिक्षुक 3 ढीठ व्यक्ति 4 मुर्गाबी सारस। सम० —अरातिः उल्लू —पुष्टः कोयल।

ध्वाणः [ध्वण्+घञ्] 1 शब्द 2 गुनगुनाना भिनभिनाना बड़बड़ाना।

ध्वान्तम् [ध्वन्+क्त] अंधकार ध्वान्ते नीलनिचोलचारु सुदृशः प्रत्यङ्गमालिङ्गति गीत० ११, नै० १९।४४ शि० ४।६२। सम० —उन्मेषः, —चित्तः जुगनू, —शात्रवः 1 सूर्य 2 अग्नि 3 चाँद 4 श्वेतवर्ण।

ध्वृ (भ्वा० पर० ध्वरति) 1 झुकाना 2 हत्या करना।

न

न (वि०) [नह् (नश्) + ड] 1 पतला, फालतू 2 खाली, रिक्त 3 वही, समरूप 4 अविभक्त, — **नः** 1 मोती, 2. गणेश का नाम, 3 दौलत, सम्पन्नता 4 युद्ध, 5 [illegible] —(अव्य०) (क) निषेधात्मक अव्यय, 'नहीं' 'न तो' 'न' का समानार्थक, लोट् लकार में प्रतिषेधात्मक न होकर, अपितु प्रार्थना या कामना के लिए प्रयुक्त, (ख) लिङ् की क्रिया के साथ संयुक्त किये जाने पर कई बार इसका अर्थ होता है — 'ऐसा न हो कि' 'इस डर से कि कहीं ऐसा न हो' —[illegible] — [illegible] (ग) तर्कपूर्ण लेखों में 'न' [illegible] के पश्चात् रखा जाता है [illegible] अर्थ होता है [illegible] नहीं (घ) जब भिन्न भिन्न शब्दों में [illegible] वाक्य के [illegible] में निषेधक की पुनरावृत्ति करनी होती है तो केवल न की आवृत्ति की जा सकती है अथवा [illegible] च, अपि, चापि और वा अपि अव्ययों के साथ 'न' को रखा जा सकता है [illegible] न वृक्ष न च [illegible] न [illegible] न [illegible] नोष्ट्र [illegible] न [illegible] मनु० ४।१२०, [illegible] महा० मनु० २।१९५ [illegible] कई बार 'न' द्वितीय तथा अन्य [illegible] में न रखकर केवल च वा, अपि [illegible] करता है [illegible] कि० १।३३ (ङ) किसी [illegible] के लिए बहुधा न को एक और 'न' के साथ [illegible] जाता है [illegible] रघु० ११।८९ [illegible] मनु० [illegible] मेघ० ६३, [illegible] कि० [illegible] (च) [illegible] गा० ६।१७५ (छ) [illegible] बहुधा दूसरे शब्दों के साथ भी [illegible] जाता है [illegible] नचिर, नैक, [illegible] आदि। सम० **असत्यौ** (पु० द्वि० व०) अश्विनी कुमार देवों के वैद्ययुगल, **एक** (वि०) 'एक नहीं' अर्थात् एक से अधिक, कुछ कई, **आत्मन्** (वि०) विविध भांति का विभिन्न प्रकृति का, **चर** (वि०) 'न रहने वाला' यायावरी, [illegible], समाज में रहने वाला, सामाजिक, **भेद**, **रूप** (वि०) विविध प्रकार का, नाना प्रकार के रूपों का, **धा** (अव्य०) बार बार, बहुधा, —**किंचन** (वि०) अत्यन्त गरीब, भिखारी के समान।

नकुटम् [कुट् + क, न शब्देन समासः] नाक, नासिका।

नकुलः [नास्ति कुलं यस्य, नञो न लोपः प्रकृतिभावात्] नेवला [illegible] नकुल [illegible] नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुनः पिशुनः वास० 2 चौथा पाण्डव राजकुमार [illegible] नकुलस्य दर्शने-[illegible] वेणी० ३, (यहाँ नकुल का प्रथम अर्थ है परन्तु दुर्योधन ने दूसरा अर्थ ग्रहण किया)।

नक्तम् [नज् + क्त] 1 रात 2 केवल रात्रि के समय खाना एक प्रकार का धार्मिक व्रत या तपश्चर्या। सम० **अन्ध** (वि०) [illegible] जिसे रात में दिखाई नहीं देता **चर्या** रात को घूमना, **चारिन्** (पु०) 1. उल्लू 2 बिलाव 3 चोर 4 राक्षस, पिशाच भूत प्रेत —**भोजनम्** रात का भोजन [illegible] एक वृक्ष का नाम — रघु० [illegible] **मुखा** सन्ध्या, सायंकाल **व्रतम्** 1 दिन भर व्रत रखना तथा रात को भोजन करना 2 कोई भी साधना या धार्मिक व्रत जो रात में किया जाय।

नक्तम् (अव्य०) रात के समय, रात को [illegible] मेघ० ३७, मनु० ६।१९। सम० —**चरः** रात को घूमने वाला प्राणी 2 चोर **चारिन्** (पु०) नक्तचारिन् —**दिनम्** रात दिन —**दिनम्**—**दिवम्** (अव्य०) रात और दिन।

नक्तकः [नक्त के + क] मैला कुचैला फटा पुराना कपड़ा

नक्रः [न क्रामति जलं, क्रम् + ड नञो न लोपः] घड़ियाल, मगरमच्छ [illegible] गजेन्द्रमपि [illegible] पञ्च० ३।४६, रघु० ७।३० १६।५५, **क्रम्** 1 दरवाजे की चौखट की ऊपर की लकड़ी 2. नाक **का** 1 नाक 2 मक्खियों या भिड़ों का छत्ता।

नक्षत्रम् [नक्ष् + अत्रन्] 1 तारा 2 तारक पुञ्ज चन्द्रपथ में तारावली नक्षत्र — नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि रघु० ६।२२। सम० **ईशः**, **ईश्वरः**, — **नाथः**, —**पतिः** **राजः** चन्द्रमा, — रघु० ६।६६ **चक्रम्** 1 स्थिर तारापुंज 2 नक्षत्रों का समूह —**दर्शः** ज्योतिर्विद्, ज्योतिषी — **नेमिः** 1 चन्द्रमा 2 ध्रुवतारा 3 विष्णु की उपाधि (मि स्त्री०) अन्तिम नक्षत्र रेवती। **पथः** आकाश जिसमें तारे निकले हों, —**पाठकः** ज्योतिषी **माला** 1 तारापुञ्ज 2 २७ मोतियों की माला 3 चन्द्रपथ में तारामण्डल 4 हाथियों के कण्ठ का आभूषण —[illegible] कु० ११, —**योगः** चन्द्रमा का नक्षत्रों से मिलन, —**वर्त्मन्** (पु०) आकाश, —**विद्या** गणित

ज्योतिष- -वृष्टिः (स्त्री०) टूटने वाले तारे,- सूचकः अयोग्य ज्योतिषी--तिथ्युत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैव साधनम्, परवाक्येन वर्तते ते वै नक्षत्रसूचकाः। या--अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते, स पंक्ति-दूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः, वराह० २।१७, १८।

नक्षत्रिन् (पुं०) [नक्षत्र+इनि] 1 चन्द्रमा 2. विष्णु का विशेषण।

नखः, नखम् [नह् +ख, हकारस्यलोप] हाथ या पैर की अंगुली का नाखून, पंजा, नखर नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन्मृगपतिः—भामि० १।२, ६१, १२। १२ 2 बीस की संख्या,—खः भाग, अंश। सम० —अङ्कः खरोंच, नखचिह्न—भामि० २।३२, —आघातः खरोंच, नख द्वारा किया गया घाव मा० ५।२१, —आयुधः 1 व्याघ्र 2. सिंह 3 मुर्गा, —आशिन् (पुं०) उल्लू —कुट्टः नाई,—मूलम् नाखून की जड़ —दारणः बाज, श्येन (णम्) नहरनी, नाखून काटने की कैंची निकृन्तनम्, -रजनी नाखून काटने की कैंची, नहरना,—पदम्,—व्रणः नखचिह्न, खरोंच, नखपदसुखान् प्राप्य वर्षाग्रबिन्दून्—मेघ० ३५,—मुचः धनुष —लेखा 1 नखचिह्न, 2 नाखून रंगना, —विष्किरः (अपने पंजों से फाड़ने वाला) शिकारी पक्षी, —वृक्षः छोटा शंख।

नखंपच (वि०) [नख+पच्+खश्, मुम्] नाखून झुलसाने वाला, शि० ९।८५।

नखरः,—रम् [नख+रा+क] अंगुली का नाखून, पंजा नख। सम० —आयुधः 1 व्याघ्र 2. सिंह 3 मुर्गा —आह्वः करवीर।

नखानखि (अव्य०) [नखैश्च नखैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम् ब० स०] परस्पर नखाघात द्वारा होने वाला युद्ध, नाखूनों की लड़ाई।

नखिन् (वि०) [नख+इनि] 1 बड़े 2. नाखूनों वाला, तेज पंजों वाला 2 कटीला, कांटेदार (पुं०) व्याघ्र या शेर जैसा नखधारी जन्तु।

नगः [न गच्छति —न+गम्+ड] 1 पहाड़—कु० १। १७, ७२ शि० ९।७९ 2 वृक्ष 3 पौधा 4. सूर्य 5. सांप 6. सात की संख्या। सम० —अटनः बंदर —अधिपः,—अधिराजः, -इन्द्रः 1 (पहाड़ों का स्वामी) हिमालय पर्वत 2 सुमेरु पर्वत,—अरिः इन्द्र का विशेषण,—उच्छ्रायः पहाड़ की ऊंचाई, —ओकस् (पुं०) 1 पक्षी 2 कौवा 3 सिंह 4 शरभ नाम का काल्पनिक पक्षी,—ज (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, पहाड़ी —भट्टि० १०।९, (जः) हाथी, —जा,—नन्दिनी पार्वती का विशेषण,—पतिः 1. हिमालय पहाड़ 2 (वनस्पतियों का स्वामी) चन्द्रमा,—भिद् (पुं०) 1. कुल्हाड़ा 2. इन्द्र का विशेषण, -मूर्धन् (पुं०) पहाड़ की चोटी —रन्ध्रकरः कार्तिकेय का विशेषण - रघु० ९।२।

नगरम् [नग इव प्रासादाः सन्त्यत्र बा० र] कस्बा, शहर (विप० ग्राम)—नगरगमनाय मतिं न करोति - श० २। सम० —अधिकृतः, —अधिपः, —अध्यक्षः नगर का मुख्य दण्डनायक, मुख्य आरक्षाधिकारी 2 नगर पाल, नगर का अधीक्षक,- —उपान्तः उपनगर नगर के आसपास की आबादी,—ओकस् (पुं०) नागरिक, - काकः शहर का 'कौवा' एक तिरस्कारयुक्त उक्ति —घातः हाथी,- —जनः 1 नगर के लोग, नागर 2. नागरिक, —प्रदक्षिणं जलूस में मूर्ति को नगर के चारों ओर घुमाना,- प्रान्तः उपनगर,—मार्गः प्रधान सड़क, राजपथ —रक्षा नगर का अधीक्षण या शासन, —स्थ नगरवासी, नागरिक।

नगरी [नगर+ङीप्] नगर। सम० —काकः सारस —बकः कौवा।

नग्न (वि०) [नज्+क्त, नस्य न] नंगा विवस्त्र, वस्त्रहीन न नग्नः स्नानमाचरेत् मनु० ४।४५ नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति—चाण० ११० 2 बिना जोता हुआ, बिना बसा सुनसान —ग्नः 1 नंगा भिक्षु 2 क्षपणक 3 पाखंडी 4 सेना के साथ रहने वाला भाट, घूमने वाला भाट —ग्ना 1 नंगी० निर्लज्ज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2 रजस्वला होने के पूर्व की आयु वाली लड़की दस बारह वर्ष की आयु से कम की (अर्थात् जो इधर उधर नंगी आ जा सके)। सम० —अटः, —अटकः 1 जो इधर उधर नंगा घूम सके 2 विशेष रूप से (दिगंबर सम्प्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु।

नग्नक (वि०) (स्त्री-ग्निका) [नग्न+कन्] नंगा, विवस्त्र, —कः 1 नंगा भिक्षु 2 दिगंबर सम्प्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु 3 भाट।

नग्नका, नग्निका [नग्नक टाप्, पक्षे इत्वम्] 1 नंगी, निर्लज्ज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2 रजोधर्म होने से पूर्व की अवस्था की लड़की।

नग्नंकरणम् [अनग्न नग्न क्रियते नग्न+च्वि+कृ+ल्युट्, मुम्] नंगा करना।

नग्नंभविष्णु,—भावुक (वि०) [नग्न+भू+इष्णुच्, उकञ्] नंगा होने वाला।

नंगः [न अंगं गच्छति न+गम्+ड] प्रेमी, यार।

नचिकेतस् (पुं०) अग्नि का विशेषण।

नचिर (वि०) [न चिरम्, न शब्देन समासः] दे० अचिर, भग० ५।६, १२।७।

नञ् (अव्य०) निषेधात्मक अव्यय 'न' के लिए पारिभाषिक शब्द।

नट् i (भ्वा० पर० नटति 'चोट पहुंचाने' के अर्थ में

'प्र' के पश्चात् 'न' को 'ण' हो जाता है) 1 नाचना, यदि मनसा नटनीयम् -गीत० ४ 2. अभिनय करना 3 (घोड़े से चालाकी से) क्षति पहुँचाना, प्रेर० - नाटयति-ते 1. अभिनय करना, हाव भाव व्यक्त करना, (नाटकों में) नाटक के रूप में वर्णन करना, शरमधानं नाटयति -श० १ 2. अनुकरण करना, नकल करना—स्फटिककटकभूमिर्नाटयत्येष शैल अभिगतचर्वलिम्ब शूलपाणेरभिख्याम् श० ४।६५, (टिप्पणी० 'नचाना' अर्थ को प्रकट करने के लिए नट् धातु का 'नटयति' रूप बनता है - भर्तृ० ३।१२६), II (चुरा० उभ० नाटयति-ते 1 गिर पड़ना, गिरना 2 चमकना 3 क्षति पहुँचाना।

नटः [नट् + अच्] 1 नाचने वाला - न नटा न विटा न गायका भर्तृ० ३।२० 2 अभिनेता कुर्वन्नयं प्रहसनस्य नटः कृतार्थः-भर्तृ० ३।१२६, ११२, 3 पतित क्षत्रिय का पुत्र 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार का नरकुल। सम० -अंतिका लज्जा, ह्री ईश्वरः शिव का विशेषण—चर्या नाटक के पात्र का अभिनय, भूषणः,—मंडनम् हरताल रंगः नाट्य रंगमंच,- वरः 'प्रधान नट' सूत्रधार संडकम् हरताल (क) अभिनेता, नट।

नटनम् [नट +ल्युट्] 1 नाचना, नाच 2 अभिनय करना, हावभाव प्रकट करना, नाटकीय चित्रण।

नटी [नट+ङीष्] 1 अभिनेत्री 2. मुख्य नटी (सूत्रधार की पत्नी) 3. वेश्या, रंडी। सम०- सुतः नर्तकी का पुत्र।

नटया [नट + य + टाप्] अभिनेताओं की मंडली।

नडः,-डम् [नल्+अच्, लस्य डत्वम्] नरकुल का एक भेद। सम०-अगारम्, आगारम् नरकुलों का बना झोंपड़ा प्राय (वि०) जहाँ नरकुल बहुत होते हों वनम् नरकुलों का जंगल -संहतिः (स्त्री०) नरकुलों का समूह।

नडश (वि०) (स्त्री०-शी) [नड+श] सरकंडों से ढका हुआ।

नडिनी [नड+इनि+ङीप्] 1 सरकंडों का ढेर 1 सरकंडों का बना हुआ मूढ़ा या चटाई, वह नदी जहाँ सरकंडों के पौधे बहुतायत से हों।

नडिल, (वि०), नड्वत् (वि०) (स्त्री०-ती) [नड+इलच्, ड्वतुप् वा] सरकंडे जहाँ पर बहुतायत से हों, या जो सरकंडों से ढका हुआ हो, सरकंडों से युक्त स्थान।

नड्या [नड्+य+टाप्] सरकंडों का ढेर।

नड्वल (वि०) [नड+ड्वलच्] सरकंडों से व्याप्त—लम् सरकंडों का ढेर या झब्बा, यो नड्वलानीव गज परेषां बलान्यमृद्नान्नलिनाभवक्त्रः—रघु० १८।५।

नत (भू०क०कृ०) [नम्+क्त] झुका हुआ, प्रणत, झुकने वाला, प्रणाम वाला 2 डूबा हुआ, अवसन्न 3 कुटिल, टेढ़ा- तम् याम्योत्तर रेखा (मध्य दिन रेखा) से किसी ग्रह की दूरी। सम० —अंशः शिरोबिंदु की दूरी अंग (वि०) 1. झुके हुए शरीर वाला 2. झुकने वाला 3 प्रणत (गी) 1 झुके हुए अंगों वाली स्त्री 2 स्त्री —नासिक (वि०) चपटी नाक वाला,—भ्रू: टेढ़ी भौहों वाली स्त्री।

नतिः (स्त्री०) [नम्+क्तिन्] 1. झुकाव, झुकना, प्रणमन 2 वक्रता कुटिलता 3. अभिवादन करने के लिए शरीर का झुकाना, प्रणति, शालीनता 4. (ज्यो० में) लंबाश में लंबनक्रम।

नद् (भ्वा० पर० नदति, नदित) 1 शब्द करना, कलकल ध्वनि करना, (बादल की भाँति) गरजना —वामश्चाय नदति मधुर चातकस्ते सगन्ध —मेघ० ९, नदत्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे - रघु० १।७८, शि० ५।६१, भट्टि० २।४ 2 बोलना, चिल्लाना, पुकारना, दहाड़ना (प्राय शब्द, स्वन आदि कर्म के साथ) ननाद बलवन्नादं, शब्द घोरतर नदन्ति—महा० 3 थरथराना - भट्टि० नादयति—ते 1 कोलाहल से भर देना, कोलाहलमय करना 2. शब्द करवाना, उद्—दहाड़ना, जोर से पुकारना, (बैल की भाँति) रांभना, कु० १।५६, नि—, शब्द करना, चिल्लाना—रघु० ५।७५, मालवि० ५।१०, भट्टि० ६।११७, प्र (प्रणदति) ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना कण्वाय प्राणदन् घोरा महा० शिवाः प्रणदंति आदि प्रति—, गूंजना, प्रतिध्वनि करना, प्रेर०—कोलाहल से भरना, गुंजायमान करना श० २।२६, ऋतु० ३।१४, वि , ध्वनि करना, गूंजना—भट० १।१२, प्रेर०—रुदन करवाना या बीन बजाना—अबूवं. विशिखनादो विनादयते—भट० १०।

नदः [नद्+अच्] 1. दरिया, बड़ी नदी (जैसी कि सिंधु) शि० ६६, (यहाँ मल्लि० की टिप्पण—प्राक्स्रोतसो नद्यः प्रत्यक्स्रोतसो नदा नर्मदां विनेत्याहु) 2 नदी, प्रवाहणी, नाला—कि० ५।२७ 3. समुद्र। सम०—राजः समुद्र।

नदथुः [नद्+अथुच्] 1 शोर, दहाड़ 2. बैल की दहाड़।

नदी [नद+ङीप्] दरिया, प्रवाहणी, सरिता—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी - कु० ४।४४। स० —ईनः—ईशः, कान्तः समुद्र,- कूलप्रियः एक प्रकार का नरकुल -ज (वि०) जलोत्पन्न (जः) भीष्म का विशेषण (जम्) कमल—तरस्थानम् उतरने का स्थान, घाट -दोहः भाड़ा, उतराई, किराया, —धरः शिव का विशेषण, पतिः 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण,—पूरः उमड़ा हुआ दरिया,—भल्लूकः

नदीलवण,—मातृक (वि०) (देश आदि) जहां नदी के पानी से सिचाई होती हो, सिंचित नदी या नहर द्वारा सिंचाई पर जो निर्भर करता हो, नै० ३।३८ तु० देवमातृक,—रय नदी की धार,- वक्रः नदी का मोड़, —ष्ण (वि०) (स्न) 1 नदी में स्नान करने वाला 2 नदियों के भयानक स्थानों उनकी गहराइयों और प्रवाहों को जानने वाला तत समाज्ञापयदाशु सर्वानानायिनस्तद्विचये नदीष्णान रघु० १६।७५ अत 3 अनुभवी, चतुर, —सर्ज अर्जुन वृक्ष।

नद्ध (भू० क० कृ०) [नह् + क्त] 1 बंधा हुआ बांधा हुआ, जकड़ा हुआ, चारों ओर से बद्ध धारण किया हुआ 2 ढका हुआ जड़ा हुआ अन्तर्ग्रथित 3 संयुक्त, संयोजित दे० 'नह्', —द्धम् गांठ बंधन बंध गिरह।

नद्ध्री [नह् + ष्ट्रन् + ङीप्] चमड़े का फीता।

ननंदृ, ननांदृ (स्त्री०) [ननन्दति सेवयापि न तुष्यति न + नन्द् + ऋन्] पति की बहन ननान्दुः पत्या च देव्या संदिष्टमृष्यशृङ्गेण—उत्तर० १। सम० ननांदृपति (ननांदृपति) ननदोई, पति की बहन का पति।

ननु (अव्य०) (मूल रूप से न और नु का संयुक्त रूप जिसे आज कल पृथक् शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है) यह अव्यय निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है —1 पूछताछ प्रश्न, ननु समाप्तकृत्यो गौतम — मालवि० ४ 2 निश्चय ही, अवश्य, निस्संदेह, क्या यह असन्दिग्ध नहीं (प्रश्न सूचक बल के साथ) यथा ऽमेधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तथाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १ 3 निस्सन्देह, बेशक [illegible] उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु—रघु० १।६० त्रिलोकनाथेन सदा मखद्विषस्त्वया नियम्या ननु दिव्यचक्षुषा—३।४५ 4 संबोधन सूचक अव्यय (ओ 'अरी'), ननु मानव—मालवि०, ननु मूर्खाः पठितमेव युष्माभिरस्मिन्नाई उत्तर० ४ 5 कृपा करके अनुग्रह करके अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रतिषेधात्मक कथन के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम् कु० ४।३२ 6 कभी-कभी संबोधनशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु पदे परिवृत्य भण मृच्छ० [illegible] ननु भवानग्रतो मे वर्तते—श० २, ननु विजितवानु भवान्—विक्रम० २ 7 तर्कानुबद्ध चर्चा के समय आक्षेप करने या विरोधी प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है (इसके पश्चात् प्रायः उच्यते आता है) नन्वेवं नाम्नैव बुद्धिकादिशरीराणि अचेतनानां च गोमयादीनां कार्याणीति उच्यते—शारी०।

नन्द् (भ्वा० पर० नदति, नंदित) प्रसन्न होना, हर्षित होना, खुश होना संतुष्ट होना, (किसी बात पर) हर्ष प्रकट करना —ननन्दुस्तत्सदृशेन तत्समी—रघु० ३।२३, ११, २।२२, ६।३, भट्टि० १५।२८, प्रेर० नन्दयति ते—प्रसन्न करना, खुश करना, हर्षित करना, आनन्दित करना—अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा श० ४।२ भट्टि० २।१९, रघु० ९।५२ अभि 1 हर्ष प्रकट करना प्रसन्न होना संतुष्ट होना आत्मविक्रयनाम-भिनदति—का० १०८ नाभिनंदति न द्वेष्टि भग० २।५७ 2 बधाई देना, जय जयकार करना स्वागत करना, नमस्कार करना—तापसीभिरभिनन्द्यमाना तिष्ठति श० ४ तमभ्यनन्दत्प्रथमं प्रबोधितः रघु० ३।६८, २।७४ ७।६९, ११।३० १६।६४ 3 प्रशंसा करना तारीफ करना श्लाघा करना, अच्छा समझना नाभ्यनन्दत्प्रतिग्रहं शिशुपाल... कि० ११।३३ श० ३।२४ रघु० १२।३५ न ते वचोऽभिनन्दामि ... ० ... 4 कामना करना, चाहना पसन्द करना, अपेक्षा करना (प्रायः न के साथ) नाभिनंदति केलिकला मा० ३ नाभिनंदेत मरणं नाभिनंदेत जीवितम् मनु० ६।४५ हि० ४ ४ आ प्रसन्न होना खुश होना आनंदितास्तत्र वृष्ट्या भट्टि० २२।१४ प्रेर० प्रसन्न करना खुश करना उत्तर० ३।१४ याज्ञ० १।३५६ प्रति 1 आशीर्वाद देना रघु० १।४७ मनु० ३।१४६ कु० ३।८७ 2 स्वागत करना बधाई देना, जयजयकार करना, हर्ष पूर्वक सत्कार करना प्रतिनन्द्य स तां पूजाम्—मुद्रा० मनु० २।५४।

नन्द [नन्द् + अच्] 1 आनन्द खुशी हर्ष 2 (११ इंच लम्बी) एक प्रकार की बांसुरी 3 मेंढक 4 विष्णु 5 गोकुल के एक ग्वाला का नाम जो यशोदा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसकी देख रेख में कृष्ण को रक्खा गया था जब कि कंस उन्हें मारना चाहता था), 6 नंद वंश का प्रतिष्ठाता (यह बड़ा समृद्ध था जिसके नौ भाई पाटलिपुत्र में राज्य करते थे तथा जिन्हें चन्द्रगुप्त के मंत्री चाणक्य की नीति के द्वारा समाप्त कर दिया गया था) समुत्खाता नन्दा नव हृदयरोगा इव भुवः—मुद्रा० १।१३ अगृहीते राक्षसे किमुत्खातं नन्दवंशस्य मुद्रा० १।३ [illegible] सम०—आत्मज नन्दन कृष्ण का विशेषण—पाल. कृष्ण का विशेषण।

नन्दक (वि०) [नन्द् + णिच् + ण्वुल्] 1 हर्षित करने वाला आनन्दित करने वाला प्रसन्न करने वाला 2 खुश होने वाला हर्ष मनाने वाला 3 परिवार को प्रसन्न करने वाला, —कः 1 मेंढक 2 कृष्ण की तलवार 3 तलवार 4 आनन्द।

नन्दकिन् (पुं०) [नन्दक + इनि] विष्णु का विशेषण।

नन्दथु [नन्द् + अथुच्] आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

नन्दन (वि०) [नन्द् + णिच् + ल्युट्] 1 खुश करने वाला सुहावना, प्रसन्न करने वाला—नः 1 पुत्र —याज्ञ० १।२७८, रघु० ३।४१ 2. मेंढक 3 विष्णु

का विशेषण 4 शिव —नम् इन्द्र का उद्यान, आनन्द धाम—अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियते नन्दनद्रुमाः कु० २।४१, रघु० ८।९५ 2 हर्ष मनाने वाला, प्रसन्न करने वाला, 3 हर्ष, सम० —जम् पीले चन्दन की लकड़ी हरिचंदन।

नन्दन्त, नन्दयन्त [नन्द् + झच्, अन्त आदेश; नन्द् + णिच् + झच् (अन्त)] पुत्र, बेटा।

नन्दा [नन्द् + टाप्] 1 खुशी, हर्ष, आनन्द 2 सम्पन्नता, समृद्धि 3 छोटा मिट्टी का जलपात्र 4 ननद, पति की बहन 5 प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी, चान्द्रमास की तीन तिथियाँ (यह शुभ तिथि समझी जाती है)।

नन्दि (पुं० स्त्री) [नन्द् + इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी —कौशल्यानन्दिवर्धन —दि (पुं०) 1 विष्णु का विशेषण 2 शिव 3 शिव का अनुचर 4 जुआ खेलना (इस अर्थ में नपुं० भी)। सम० —ईश:, —ईश्वर: 1 शिव का विशेषण 2 शिव का प्रधान अनुचर —ग्राम: वह गाँव जहाँ राम के वनवासकाल में भरत रहा, रघु० १५।१८ —घोष: अर्जुन का रथ —वर्धन: 1 शिव का विशेषण 2 मित्र 3 चान्द्र पक्ष का अन्त अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा।

नन्दिक [नन्दि + कन्] 1 हर्ष, प्रसन्नता 2 छोटा जलपात्र 3 शिव का अनुचर। सम० —ईश:, —ईश्वर: 1 शिव का एक मुख्य अनुचर 2 शिव।

नन्दिन् (वि०) [नन्द् + णिनि, नन्द + णिच् + णिनि वा] 1 आनन्दित, हृष्ट, प्रसन्न, खुश 2 आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला —(पुं०) 1 पुत्र 2 नाटक में नान्दीपाठ या आशीर्वचन कहने वाला व्यक्ति 3 शिव का मुख्य अनुचर, द्वारपाल या वह बैल जिस पर शिव सवारी करता है —लतागृहद्वारगतोऽथ नन्दी कु० ३।४१, मा० १।१ —नी 1 पुत्री, उत्तर० १।९ 2 ननद, पति की बहन 3 कामधेनु की पुत्री, कामधेनु (जो सब इच्छाओं को पूरा करती है) जिसका स्वामी कुलगुरु वसिष्ठ है, —अनिन्द्या नन्दिनी नाम धेनुराववृते वनात् रघु० १।८२, ।८४ 4 गंगा का विशेषण 5 पवित्र काली तुलसी।

नपात् (पुं०) [न पाति धर्म पा + शतृ, न० तत्पु० समास प्रकृतिभाव] (केवल वेद में प्रयुक्त) पोता, प्रपौत्र, सन्तान।

नपुंस् (पुं०) [नपुंस — न० त० समास प्रकृतिभाव] जो पुरुष न हो, हिजड़ा।

नपुंसक —कम् [न पुमान् न स्त्री, नि० स्त्रीपुंसयो: पुंसक आदेश:] 1 उभयलिंगी (न स्त्री न पुरुष) 2 नामर्द, हिजड़ा 3 भीरु, डरपोक —कम् 1 नपुंसक लिंग का शब्द 2 नपुंसक लिंग।

नप्तृ (पुं०) [न पतन्ति पितरो यस्मात् —न + पत् + तृच्, नि०] पोता, नाती (लड़के का पुत्र या लड़की का पुत्र)।

नभ [नभ् + अच्] श्रावण मास —भम् आकाश, अन्तरिक्ष।

नभस् (नपुं०) [नह्यते मेघै: नह् + असुन्, भश्चान्तादेश:] 1 आकाश, अन्तरिक्ष —रघु० ५।२९, भग० १।१९, ऋतु० १।११ 2 बादल 3 कोहरा, वाष्प 4 पानी 5 जीवन की अवधि, आयु (पुं०) 1 वर्षा ऋतु 2 नासिका, घ्राण 3 (जुलाई—अगस्त के अनुरूप इस अर्थ में नपुं० भी) श्रावण मास —प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी —मेघ० ४, रघु० १२।२९, १७।४१, १८।५ 4 पीकदान। सम० —अम्बुप: चातक पक्षी —ओकस् (पुं०) सिद्ध —कान्तारे —गज: बादल —चक्षुस् (पुं०) सूर्य —चमस: 1 चन्द्रमा 2 जादू —चर (वि०) गगन विहारी कु० ५।२३, (र:) 1 स्वर्ग, उपदेवता रघु० १८।६ 2 पक्षी 3 बादल —दृष्टि (वि०) 1 अंधा 2 आकाश की ओर देखने वाला —दीप:, —धूम: बादल —नदी आकाश गंगा —प्राण: हवा —मणि: सूर्य —मण्डलम् [illegible] अन्तरिक्ष [illegible] — मा० ८० १० —दीप: चन्द्रमा —रजस् (पुं०) अन्धकार —रेणु: (स्त्री०) कोहरा, धुंध —लिह् (वि०) आकाश को चाटने वाला, उन्नत, बहुत ऊँचा मृ० —सद् (पुं०) देवता शि० १।११ —सरित् (स्त्री०) 1 छायापथ 2 आकाशगंगा —स्थली आकाश —स्पृश् (वि०) गगनचुम्बी, उन्नत।

नभस [नभ् + असच्] 1 आकाश 2 वर्षा ऋतु 3 समुद्र।

नभसंगम: [नभस् + गम् + खच्, मुम्] पक्षी।

नभस्य: [नभस् + यत्] (अगस्त—सितम्बर के अनुरूप) भाद्र मास का महीना रघु० ९।५४, १२।२९, १७।४१।

नभस्वत् (वि०) [नभस् + मतुप्, मस्य व:] वाष्पयुक्त, मेघाच्छन्न —(पुं०) हवा, वायु नै० १।९७, रघु० ४।८, १०।७३, शि० १।१०।

नभाक: [नभ् + आक] 1 अन्धकार 2 राहु का विशेषण।

नभ्राज् (पुं०) [भ्राज् + क्विप्, न० त० समास में प्रकृतिभाव] काला बादल, काली घटा।

नम् (भ्वा० पर० कभी कभी आ०, नमति-ते, नत प्रेर० नमयति-ते परन्तु उपसर्ग पूर्व होने पर केवल नमयति, इच्छा० निनंसति) 1 झुकना, नमस्कार करना, अभिवादन करना (आदरसूचक चिह्न) (कर्म० या सं० के साथ) इयं नमति वः सर्वान् त्रिलोचनवधूरिति कु० ६।८९, भग० ११।३७

भट्टि० ९।५१, १०।३१, १२।३९, शि० ४।५७, अधीन होना, पराभव स्वीकार करना झुक जाना —अशक्तः सन्धिमान् नमेत् काम० ८।५५ 3 झुकना, दबाना नीचा होना—ननामीद्भूर्भरेणास्य —भट्टि० १५।२५ नेमुः सर्वदिशः - का० ५५ उन्नमति नमति वर्षति मेघ —मृच्छ० ५।२६ 4 ठहरना, झुकाव होना 5 झुका हुआ होना वक्र होना 6 ध्वनि निकालना। अभ्युद् उठाना उन्नत होना अव—, 1 झुकना नम्र होना नीचे को ढलना —शि० ९।७४ 2 झुकाना लटकाना - त्वय्यादातुं जलमवनते—मेघ० ४५ उद् — 1 (क) उदय होना, प्रकट होना, उगना —उन्नम्योन्नम्य लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः —पंच० २।९१ (ख) 1 लटकना, समीप होना - उन्नमत्यकालदुर्दिनम् —मृच्छ० ५ 2 उदय होना, चढ़ना, ऊपर उठना (आलं० भी) उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघ मृच्छ० ५।२१ नम्रत्वेनोन्नमन्तः -भर्तृ० २।६९ ३।२४ शि० ९।७९ 3 उठाना, उन्नति करना—कि० १६।३५ प्रेर० ऊपर उठाना, सीधा खड़ा करना—उप — जाना या आना, पहुँचना 2 होना भाग्य में होना घटित होना सामने आना (संप्र० के साथ या अकेला) कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९ मत्संभोगः कथमुपनयेत् स्वप्नजोऽपि—मेघ० ९१ यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् —विक्रम० ३।२१ भर्तृ० २।१२१ मेघ० १० रघु० १०।३९ 3 उपस्थित करना देना, प्रस्तुत करना —स्वर्लोकोपनतं जलाञ्जलिम्—रघु० ८।६८ परि — 1 नीचे को ढलना, झुकना (जैसे कि कोई हाथी अपने दांतों से प्रहार करने के लिए) वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श—मेघ० २ तिर्यक् नाग पयणसोत् २४ एव —शि० १८।२७ 2 झुकना नमस्कार करना झुकाव होना - लक्ष्मणमपरिणते (वदनकमले) भट्टि० १।८, 3 परिवर्तित होना रूपान्तरित होना रूप धारण करना (करण० के साथ) लताभावेन परिणतमस्या रूपम्—विक्रम० ४।२८ क्षीरं जलं वा स्वयमेव दधिहिमभावेन परिणमते —शारी०, मेघ० ४५ 4 विकसित या परिपक्व होना पकना, परिणतप्रज्ञस्य वाणीम् उत्तर० ७।२० मेघ० १८ कि० ५।३७, मालवि० ३।८ ऋतु० १।२६ 5 (आयु में) बढ़ना, बड़ा होना, बूढ़ा होना, क्षीण होना, परिणत शरच्चन्द्रिकासु क्षपासु - मेघ० ११०, इसी प्रकार 'जरापरिणत' आदि 6 डूबना (सूर्य आदि का) पश्चिम में छिपना अनेन समयेन परिणतो दिवस —का० ४७ 7 पच जाना, हजम परिणमेच्च यत्—महा०, प्र (प्रणमति) नमस्कार करना, अभिवादन करना, विनम्र प्रणति करना (कर्म० या संप्र० के साथ) न प्रणमति देवताभ्य का० १०८, ता प्रणनाम का० २१९ भग० ११।४४ रघु० २।२१ (साष्टांग प्रणम् आठ अंगों से झुक कर प्रणाम करना दे० साष्टांग' दण्डवत् प्रणम् डंडे की भांति पूर्ण रूप से भूमि पर लेट कर नमस्कार करना सब अंगों से भूमि को स्पर्श करते हुए तु० दण्डप्रणाम) वि , 1 अपने आपको झुकाना नम्र करना विनीत होना विनमति चास्य तरव प्रचये कि० ६।३४ भर्तृ० १।६७ भट्टि० ७।५२ दे० विनत विपरि -1 बदलना 2 बदल कर खराब होना सम् 1 झुकना नीचे को होना झुकाव होना —सन्नतांगी कु० १।३४ भट्टि० २।३१ पश्य मनता विक्रम० ४।२६ 2 नम्र होना विनीत होना सन्नमतामरीणाम् —रघु० १८।३४।

नमत (वि०) [नम+अतच्] झुका हुआ विनीत कुटिल वक्र —तः 1 अभिनेता 2 धुआँ 3 स्वामी प्रभु 4 बादल।

नमनम् [नम्+ल्युट्] 1 विनीत होना, झुकना नम्र होना 2 दबना 3 विनति नमस्कार अभिवादन।

नमस् (अव्य०) [नम्+असुन्] प्रणति अभिवादन प्रणाम पूजा (यह शब्द स्वयं सदैव संप्र० के साथ प्रयुक्त होता है नमो वदान्यगुरवे नारदे नमोऽस्तु भामि० १।९८, नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यम् कु० २।४ परन्तु कृ के योग में कर्म० के साथ मुनित्रयं नमस्कृत्य सिद्धा० परन्तु कभी कभी संप्र० के साथ भी नमस्कुर्मो नृसिंहाय सिद्धा० यह शब्द संज्ञा शब्द का अर्थ रखता परन्तु समझा जाता है अव्य०)। सम० कार, कृति (स्त्री०) कारणम् प्रणति सादर प्रणाम सादर अभिवादन (नमस् शब्द के उच्चारण के साथ) कृत (वि०) 1 जिसे प्रणति दी गई है जिसको प्रणाम किया गया है 2 सम्मानित अर्चित, पूजित —गुरु आध्यात्मिक गुरु वाकम् (अव्य०) 'नमस्' शब्द का उच्चारण करना अर्थात् विनम्र अभिवादन करना - इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे उत्तर० १।१।

नमस (वि०) [नम्+असच्] अनुकूल सानुग्रह अवलम्बित।

नमसित, नमस्यित (वि०) [नमस्+क्यच् नमस्य+क्त विकल्पेन यलोप] जिसे नमस्कार किया गया हो सम्मानित जिसे प्रणाम किया गया हो।

नमस्यति (ना० धा० पर०) नमस्कार करना श्रद्धांजलि अर्पित करना, पूजा करना भर्तृ० २।९४।

नमस्य (वि०) [नमस्+यत्] 1 अभिवादन प्राप्त करने का अधिकारी सम्मानित, आदरणीय, वन्दनीय 2 आदरयुक्त, विनीत, —स्या पूजा, अर्चना, श्रद्धा, भक्ति।

नमुचि. [न + मुच् + इन्] 1 एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मार गिराया था। वज्रमुपैति नमुचेररये शिर: रघु० ९।२२, (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की तो नमुचि नामक एक असुर ने इन्द्र का डटकर मुकाबला किया और अन्त में इन्द्र को बन्दी बना लिया। उस दैत्य ने इन्द्र से कहा कि यदि तुम यह प्रतिज्ञा करो कि न मैं तुम्हें दिन में मारूँगा न रात को, न पानी में न सूखे में तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। इन्द्र ने प्रतिज्ञा की और फलत: उसे छोड़ दिया गया। फिर इन्द्र ने सन्ध्या समय पानी के झाग के साथ (जो न पानी था न सूखा) नमुचि का सिर काट डाला। दूसरे एक कथन के अनुसार नमुचि इन्द्र का मित्र था उसने एक बार इन्द्र की शक्ति को पी लिया और उसे निर्बल एवं अशक्त बना दिया, फिर अश्विनीकुमारों (सरस्वती ने भी) ने इन्द्र का वज्र दिया, जिससे उसने नमुचि का सिर काट डाला) 2 कामदेव।

नमेरु: [नम् + एरु] एक वृक्ष का नाम, रुद्राक्ष या सुरपुन्नाग गणा नमेरुप्रसवावतंसा कु० १।५५ ३।४३, रघु० ४।७४।

नम्र (वि०) [नम् + र] 1 विनीत प्रणतिशील, झुका हुआ विनत नीचे लटकने वाला भवन्ति नम्रास्तरव: फलागमै: श० ५।१२ स्तोकनम्रा स्तनाभ्याम् — मेघ० ८२ पंच० १।१०६, रघु० १।१९ 2 प्रणतिशील सादर अभिवादनशील, अमुष्य नम्र प्रणिपात शिक्षया रघु० ३।२५ इत्युच्यते ताभिरुमा स्म नम्रा कु० ७।२८ 3 सुशील, विनयी, विनयशील, श्रद्धालु — अम० ५५ 4 कुटिल वक्र 5 पूजा करने वाला 6 भक्त, उपासक।

नय् (भ्वा० आ० — नयते) 1 जाना 2 रक्षा करना।

नय. [नी + अच्] 1 निर्देशन मार्गदर्शन प्रबन्धन 2 व्यवहार, निश्चयात्मक आचरण, दिनचर्या — जैसा कि दुर्नय में 3 दूरदर्शिता, अग्रदृष्टि 4 नीति, शासन विषयक बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता नागरिक प्रशासन राज्य की नीति नयप्रचार व्यवहार दुष्टताम् — मृच्छ० १।७, नयगुणोपचितामिव भूपते: सदुपकार फलां श्रियमर्थिन: — रघु० ९।२७ 5 नैतिकता, न्याय, न्यायपरता, न्याय्यता चलति नयान्न जिगीषतां हि चेत: कि० १०।२९, २।३, ६।३८, १६।४२ 6 रूपरेखा, ढांचा, योजना — मुद्रा० ६।११ ७।९ 7 सिद्धान्त वाक्य, नियम 8 क्रम, प्रणाली, रीति 9 पद्धति वाद सम्मति 10 दार्शनिक पद्धति नैयायिक नये भामा०, १०५। सम० — कोविद, — ज्ञ (वि०) नीति कुशल, दूरदर्शी — चक्षुस् (वि०) ज्ञ मा।१२ अग्रदृष्टि रखने वाला, बुद्धिमान्, दूरदर्शी रघु० १।५५ — नेतृ (पुं०) राजनीतिशास्त्र पारगत — विद् (पुं०) विचारक: राजनयिक, राजनीतिज्ञ — शास्त्रम् 1 राजनीतिशास्त्र, 2 राजनीति का या राजनीतिक अर्थशास्त्र या कोई ग्रन्थ 3 नीतिशास्त्र — शालिन् (वि०) न्यायपूर्ण, न्यायपरायण कि० ५।२४।

नयनम् [नी + ल्युट्] 1 मार्ग दर्शन, निर्देशन, संचालन, प्रबन्धन 2 लेना, निकट लाना, खींचना 3 हुकूमत करना शासन करना 4 प्रापण 5 आँख। सम० — अभिराम (वि०) आँखों को प्रसन्न करने वाला, प्रियदर्शन (— म:) चाँद — उत्सव: 1 दीपक, लैंप 2 आँख का प्रसन्नता 3 कोई प्रिय वस्तु — उपान्त: आँख का कोना कु० ४।२३ — गोचर (वि०) दृश्यमान दृष्टि-पराम के अन्तर्गत — छद: पलक, — पथ: दृष्टि परास — पुटम् अक्षिकोषक — विषय: 1 कोई दृश्यमान पदार्थ 2 क्षितिज — सलिलम् आँसू मेघ० ३९।

नर: [नृ + अच्] 1 मनुष्य पुमान् पुरुष संयोजयति विधेव नीरन्ध्रगति नरं स्त्रिया समन्वितं दुर्वर्षं नृप भाग्यसम् परम कि० ३८ — मनु० १।९६, २।२१३ 2 शतरंज का मोहरा 3 धूपघड़ी की कील, शंकु 4 परमात्मा विश्वपुरुष 5 दोनों हाथों को दोनों ओर सीधा फैलाकर हाथ के एक सिरे से दूसरे हाथ के सिरे तक की लम्बाई 6 एक प्राचीन ऋषि का नाम 7 अर्जुन का नाम दे० नी० नरनारायण। सम० — अधिप., — अधिपति, — ईश, — ईश्वर: देव पति पाल: १।२ भग० १०।२७, मनु० ७।१३, रघु० २।२५, ३।४२ ७।६२, रघु० ३।७, याज्ञ० १।३१०, — अन्तक: मृत्यु — अयन: विष्णु का विशेषण, — अश: राक्षस पिशाच — इन्द्र: 1 राजा रघु० २।१८ ३।३५ ६।८० मनु० ९।२५३ 2 वैद्य, विषनाशक औषधियों का विक्रेता विषवैद्य तद्-कविनरेन्द्राभिमानी मा निर्वेव्य — दश० ५१, सुनिग्रहा नरेन्द्रेण फणीन्द्रा इव शत्रव: — शि० २।८८, (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है)। — उत्तम: विष्णु का विशेषण, — ऋषभ: मनुष्यों में श्रेष्ठ राज कुमार राजा, — कपाल: मनुष्य की खोपड़ी — कीलक: आध्यात्मिक गुरु की हत्या करने वाला — केसरिन् (पुं०) विष्णु का चौथा अवतार दे० 'नृसिंह' नीचे० — द्विष (पुं०) राक्षस पिशाच भट्टि० १५।९४ — ना: राजा कृष्ण का नाम (द्वि० व० — नौ) मूल रूप से दोनों एक ही माने जाते थे परन्तु पुराणों और महाकाव्यों में दो स्वतन्त्र माने जाने लगे — नर को अर्जुन का समरूप तथा कृष्ण को नारायण का रूप (कुछ स्थानों पर इन्हें देवी पुत्रों ऋषि या ऋषिसत्तमौ कहते हैं) कहा जाता है कि इन दोनों हिमालय पर्वत पर साधना और तपस्या किया

करते थे, इनकी इस तपस्या से इन्द्र भयभीत हुआ, फलत उसने इनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए कई देव कन्याओं को भेजा। परन्तु नारायण ने अपनी जंघा पर रक्खे एक फूल से सौंदर्य में इनसे बढ़ चढ़कर 'उर्वशी' नाम की एक अप्सरा को उत्पन्न करके इन स्वर्गदेवियों को लज्जित कर दिया तु० स्थाने खलु नारायणमृषिं विलोभयन्त्यस्तदूरुसंभवामिमां दृष्ट्वा व्रीडिताः सर्वा अप्सरस इति विक्रम० १) —पशु पशु जैसा मनुष्य, मानव रूप में पशु —पुंगव मनुष्यों में श्रेष्ठ उत्तमपुरुष —मानिका —मानिनी —मालिनी मनुष्य जैसी स्त्री जिसके दाढ़ी हो मर्दानी औरत, —मेध नरयज्ञ —यंत्रम् धूपघड़ी —यानम् —रथ —वाहनम् मनुष्य द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी —लोक 1 मनुष्यों का संसार पृथ्वी पार्थिव संसार 2 मानवता, —वाहन कुबेर का विशेषण रघु० ९।११ —वीर पराक्रमी मनुष्य शूरवीर, —व्याघ्र —शार्दूल प्रमुख पुरुष, —शृंगम् मनुष्य का सींग असंभावना, —सिंह शेर के मुंह बकरे के धड़ और सांप की पूंछ वाला बकरा अर्थात् भगवान् का चतुर्थ अवतार मनाहीनता —सिंहः मानव-सिंह —सिंह हरि नरसिंह विष्णु का चौथा अवतार तु० तव करकमलवरे नखमद्भुतशृंगं दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् केशव धृत नरहरिरूप जय जगदीश हरे गीत० १ —स्कंध मनुष्यों की टोली।

नरक —कम् [नृणाति क्लेशं प्रापयति नृ+वुन्, ...] दोज़ख पाताल प्रदेश (मनु के ग्रन्थ में अनुक्रम से नरक गिनाये गये हैं 21 जहां पापी जाते हैं जहां उनको विभिन्न प्रकार की यातनाएं दी जाती हैं। —कः एक राक्षस का नाम प्राग्ज्योतिष का राजा (एक वृत्त के अनुसार नरक एक बार अदिति के कर्णभूषण उठाकर भाग गया, तब देवताओं की प्रार्थना सुनकर कृष्ण ने उसका एक ही लड़ाई में मार गिराया और कर्णाभूषण प्राप्त किया। एक दूसरे वृत्त के अनुसार नरक ने इन्द्र का छत्र चुरा लिया और वह विश्वकर्मा की पुत्री को उठा कर ले गया तथा उसके साथ बलात्कार किया। उसने गन्धर्वों, देवों और मनुष्यों की बहुत सारी कन्याओं को उठा लिया और इस प्रकार पकड़ कर उनमें से अनेक पुत्रियों को अपने अन्तःपुर में रखा। कृष्ण ने जब नरक का नाश किया तो यह सब कन्याएं कृष्ण के अन्तःपुर में प्रविष्ट हो गई। यह राक्षस भूमि का पुत्र था इसी कारण भौम कहलाता है)। सम० —अंतक —अरि —जित् (पुं०) कृष्ण के विशेषण —आमयः 1 मृत्यु के पश्चात् आत्मा 2 भूत प्रेत —कुंडम् नरक का वह गड्ढा जहां पापियों को यातना दी

जाती है (इस प्रकार के ८६ स्थान गिनाये गये हैं), —स्था वैतरणी नदी।

नरंगम्, नरांगः [नृ, अंगम् मध्य० अग्+अच्] पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न।

नरधि [नरा धीयन्तेऽस्मिन् नर+धा+कि पृषो० मुम्] सांसारिक जीवन का अस्तित्व।

नरी [नर+ङीप्] नारी स्त्री भाग० ३।११।

नरकुटकम् [नरस्य कुटकमिव पृषो०] नाक नासिका।

नर्त [नृत्+अच्] नाचना नाच।

नर्तक. [नृत्+ण्वुल्] 1 नाचने वाला, नृत्यशिक्षक 2 अभिनेता नट मूकनाटक का पात्र 3. भाट चारण 4 हाथी 5 राजा 6 नरसल —की 1 नाचने वाली स्त्री, नटी, अभिनेत्री रंगस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात् सां० का० ५९ कि० १०।४१ रघु० १९।१० १९ 2 हथिनी 3 गणिका।

नर्तन [नृत्+ल्युट्] नाचने वाला —नम् नाचना नाच प्रदर्शित करना नाचना नाच। सम० —गृहम् —शाला नाचघर —प्रिय शिव का विशेषण।

नर्तित (वि०) [नृत्+णिच्+क्त] नाचा हुआ नचाया हुआ।

नर्द् (भ्वा० पर० नर्दति नर्दित) गरजना दहाड़ना शब्द करना भर्तृहरि कर्णिकाक्रान्ता भट्टि० १४।३० १४।६० १५।२८ १।६० 2 जाना गतिशील होना।

नर्द (वि०) [नर्द्+अच्] गरज दहाड़।

नर्दनम् [नर्द्+ल्युट्] 1 गरजना दहाड़ना 2 ... का प्रचार करना ऊँचे स्वर में कीर्तिगान करना।

नर्दित [नर्द्+क्त] एक प्रकार का पासा ... नर्दितदर्शितमार्गा कटेन विनिपातिता यामि मृच्छ० 2। —तम् शब्द दहाड़ गरज।

नर्मट [नर्म+अटन् पृषो०] 1 ठीकरा खपड़े का टुकड़ा 2 सूर्य।

नर्मठ [नर्म+अठच्] 1 भाट 2 लम्पट दुराचारी स्त्रीगामी 3 क्रीडा मनोरंजन विलास 4 चूचुक स्तनाग्र 5 ठोडी 6 चूचक।

नर्मन् (नपुं०) [नृ+मनिन्] 1 क्रीडा, विनोद विलास आमोद प्रमोद केलिकौतुक नर्मविहार विदग्धनेविव्रते परिकरबद्ध नर्मकलाकल्पनक कृते गीत० ७ (कौतुकवक) रघु० १९।२८ 2 हंसी-मजाक ठट्ठा विनोदपूर्ण बातचीत, परिहास नर्मप्रायाणि कथांतराणि का० ७७ परिहासपूर्ण, मजाक। सम० —कील —द —दः (वि०) हँसोड़ ठिठोलिया विनोदी (—दः) मुसाहिब —दा (स्त्री०) आनन्ददायक (—दा) विन्ध्याचल (—नर्मदिग्रि) का अमरकंटक पर्वत से निकलने वाली एक नदी जो खंभात की खाड़ी

में आकर गिरती है — °भूति (वि०) हर्षोत्फुल्ल, हंसमुख, प्रसन्नवदन (स्त्री० — ति) परिहास का मजा लेना — °सचिव: — सुहृद् (पुं०) विदूषक, राजा या किसी रईस का मनोविनोद करने वाला साथी — इत स्वैरपर्वं यदुत नृपतेर्नर्मसचिव: सुनासाकार्यं मन्ये भवतु [illegible] मुखेन [illegible] शि० [illegible]।

नर्मरा [नर्मन् + र + टाप्] 1 घाटी, कंदरा 2 [illegible] 3 बूढ़ी स्त्री (जिसे अब रजोधर्म न होता हो) 4 [illegible] नाम का पौधा।

नल [नल् + अच्] 1 एक प्रकार का नरकुल 2 [illegible] [illegible] राजा था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और उसी पर यह [illegible] [illegible] और उसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और वे आनन्दपूर्वक रहने लगे। दे० [illegible] और [illegible] 3 एक प्रमुख वानर जो [illegible] का पुत्र था तथा जिसने 'नलसेतु' नामक एक [illegible] पुल बनवाया जिसके ऊपर से होकर राम ने अपनी सेना [illegible] लंका में प्रवेश किया — °कम्… कमल — °कील: घुटना — °कूबर: कुबेर के एक पुत्र का नाम — °द: एक सुगन्धित जड़ — उशीर कि० [illegible] नै० [illegible] — °पट्टिका नरकुलों की बनी हुई एक प्रकार की चटाई — °मीन: एक प्रकार की मछली, झींगा मछली।

नलकम् [नल + कै + क] 1 शरीर की कोई भी लंबी हड्डी — महावी० [illegible] 2 कुहनी की हड्डी।

नलकिनी [नलक + इनि + ङीप्] 1 घुटने की चपनी 2 टांग।

नलिन: [नल् + इनच्] सारस — नम् 1 कमल, कुमुद 2 जल 3 नील का पौधा — °नेशय: विष्णु का विशेषण।

नलिनी [नल + इनि + ङीप्] 1 कमल का पौधा — [illegible] नलिनी [illegible] पुष्प० [illegible] नलिनी [illegible] — माल० [illegible] कु० [illegible] 2 कमलों का समूह 3 कमलों से भरा हुआ सरोवर। [illegible] — °रुह (पुं०) कमलडंडी, कमल का रेशा।

नल्व: [नल् + व] दूरी मापने का नाप जो ४०० हाथ लम्बा हो।

नव (वि०) [नु + अप्] 1 नया, ताज़ा, हाल का [illegible] रघु० [illegible] [illegible] कु० [illegible] [illegible] रघु० [illegible] कि० [illegible] 2 आधुनिक — व: कौवा — वम् (अव्य०) आधुनिक ढंग से, नये सिरे से, हाल ही में [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — °उद्धृतम् [illegible] — °कालिका, °कलिका 1 नवविवाहिता [illegible] 2 [illegible] — °अवस्था नई [illegible] (स्त्री०) [illegible] [illegible] — °नीतम् 1 परिष्कृत मक्खन 2 [illegible] — °पाठक: नया अध्यापक — °मल्लिका, °मालिका चमेली का एक भेद — °यज्ञ: [illegible] — °यौवनम् नई जवानी, यौवन का नया विकास — °रजस् (स्त्री०) लड़की जिसे हाल ही में रजोदर्शन हुआ हो — °वधू:, —°वरिका नवविवाहिता लड़की — °वस्त्रम् एक प्रकार का [illegible] — °शशिभृत् (पुं०) शिव [illegible] मेघ० ४३ — °सूति: (स्त्री०) — °सूतिका 1 नई सूई हुई या ब्यायी गाय 2 जच्चा स्त्री।

नवकम् [नवन् + कन् स्वार्थे] नौ वस्तुओं का समूह, नौ का समूह।

नवत (वि० — स्त्री० — ती) [नवति + अट्] नब्बेवां — त: 1 हाथी की बनी हुई हाथी की झूल 2 ऊनी कपड़ा, कम्बल 3 चादर, आवरण।

नवति: (स्त्री०) [नि०] 1 नब्बे नवतनवतिशतद्रव्य-कोटीश्वरास्ते — मुद्रा० 3।२७ रघु० 3।६९।

नवतिका [नवति + कन् + टाप्] 1 नब्बे 2 चित्रकार की कूची (कहा जाता है कि इस कूची में नब्बे बाल होते हैं)।

नवन् (सं० वि०) [नु+कनिन् बा० गुण] (नित्यबहु०) नौ—नवति नवाधिका—रघु० ३।६९, दे० नीचे दिए गये समस्त शब्द (आरम्भ में प्रयुक्त होनेपर 'नवन्' के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम०—**अशीतिः** (स्त्री०) नवासी,—**अंशिन्** (पुं०), **दीधितिः** मंगलग्रह,—**कृत्वस्** (अव्य०) नौ गुणा,—**ग्रहाः** (पुं०,ब०व०) नौ ग्रह, दे० 'ग्रह' के अन्तर्गत,—**चत्वारिंश** (वि०) उनचासवाँ, -**चत्वारिंशत्** (स्त्री०) उनचास, —**छिद्रम्**,—**द्वारम्** शरीर (नौ दरवाजों वाला, दे० 'ख'),—**त्रिंश** (वि०) उनतालीसवाँ,—**त्रिंशत्** (स्त्री०) उनतालीस—**दश** (वि०) उन्नीसवाँ,—**दशन्** (ब०व०) उन्नीस,—**नवतिः** (स्त्री०) निन्यानवे,—**निधिः** (पुं०, ब०व०) कुबेर के नौ खजाने—अर्थात्—महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ, मुकुंदकुंदनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव,—**पंचाश** (वि०) उनसठवाँ—**पंचाशत्** (स्त्री०) उनसठ,—**रत्नम्** 1. नौ अमूल्य रत्न—अर्थात्—मुक्ता माणिक्यवैदूर्यगोमेदान् वज्रविद्रुमौ, पद्मराग मरकतं नीलं चेति यथाक्रमम् 2 राजा विक्रमादित्य के दरबार के नौ कवि, कविरत्न—धन्वन्तरिक्षपणकामर सिंहशंकु वेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः ख्यातो वराह मिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य, -**रसाः** (पुं०, ब०व०) काव्य के नौ रस दे० 'अष्टरस' और 'रस',—**रात्रम्** 1 नौ दिन का समय 2 आश्विन मास के प्रथम नौ दिन जो दुर्गा पूजा के दिन माने जाते हैं,—**विंश** (वि०) उन्नीसवाँ —**विंशतिः** (स्त्री०) उन्नीस, **विध** (वि०) नौ तरह का, नौ प्रकार का, **शतम्** 1 एक सौ नौ 2 नौ सौ, —**षष्टि** (स्त्री०) उनहत्तर,—**सप्तति** उनासी।

नवधा (अव्य०) [नव+धा] नौ प्रकार से, नौगुणा।

नवम (वि०) (स्त्री०—मी) [नवन्+डट्, डट्स्थाने मट्] नवां—**मी** चान्द्रमास के पक्ष का नवीं दिन।

नवशः (अव्य०) [नवन्+शस्] नौ नौ करके।

नवीन, नव्य (वि०) [नव+ख, यत् वा] 1 नया, ताजा, हाल का 2 आधुनिक।

नश् (दिवा० पर०—नश्यति, नष्ट, प्रेर०—नाशयति —इच्छा० निनशति, निनंक्षति) 1 खोया जाना अन्तर्धान होना, लुप्त होना, अदृश्य होना—प्रभवाणि तस्य नश्यति—हि० १, तथा सीमा न नश्यति—मनु० ८।२४७, याज्ञ० २।५८,—क्षणनष्टदृष्टतिमिरम् मृच्छ० ५।१४ 2 नष्ट होना, ध्वस्त होना, मरना, बर्बाद होना—जीवनाशं ननाश च—भट्टि० १४।३१, मनु० ८।१६ ७।४०, मुद्रा० ७।८ 3 भाग जाना, उड़ जाना, बच निकलना नश्यन्ति वृन्दानि ददर्श कपीन्द्रः —भट्टि० १०।१२,नष्टुमिच्छा निशाचरा—१४।११२, रत्न० २।३ 4 असमर्थ होना, असफल होना—प्रेर० 1. अन्तर्धान करना 2 नष्ट करना, हटा देना, मिटा देना, भगा देना, उड़ा देना, प्र—, (प्रणश्यति) वि—, ध्वस्त होना, मरना—भट्टि० ३।१४, मनु० ८।२०।

नश् (स्त्री०) **नशः, नशनम्** [नश्+क्विप्, क, ल्युट् वा] नाश, ध्वंस हानि, अन्तर्धान।

नश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [नश्+क्वरप्] 1. नष्ट होने वाला, अनवस्थायी, क्षणभंगुर, अनित्य, अस्थायी —निखिलं जगदेव नश्वरम्—रस० 2. विनाशकारी, उत्पातकारी।

नष्ट (भू० क० कृ०) [नश्+क्त] 1 खोया हुआ, अन्तर्हित लुप्त, अदृश्य 2 मृत ध्वस्त, उच्छिन्न 3 भ्रष्ट, क्षीण 4 भागा हुआ 5 वञ्चित, मुक्त (समास में)। सम०—**अर्थ** (वि०) निर्धनीकृत (जिसका धन नष्ट हो गया हो) —**आतंकम्** (अव्य०) निश्चिन्तता से मन्थ निर्भय होकर —नष्टातंक हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१३, अनं० पा०,—**आत्मन्** (वि०) ज्ञान से वञ्चित बेहोश —**आप्तिसूत्रम्** लूट का माल लूट-खसोट,-**आशंक** (वि०) निडर, सुरक्षित भयरहित —**इन्दुकला** पूर्णिमा का दिन, **इन्द्रिय** (वि०) इन्द्रियरहित **चेतन**—**चेष्ट**,—**संज्ञ** (वि०) जिसकी चेतना जाती रही है अचेतन बेहोश, मूर्छित **चेष्टता** विश्वविनाश।

नस् (स्त्री०) [नस्+क्विप्] (दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् 'नासिका' के स्थान में होने वाला आदेश) नाक, नासिका। सम० **क्षुद्र** (वि०) छोटी नाक वाला।

नस्तस् (अव्य०) [नस्+तसिल्] नाक से याज्ञ० ३।१२७।

नसा [नस+टाप्] नाक, नासिका।

नस्त [नस्+क्त] नाक,-**स्तम्** नस्य सूंघनी **स्ता** नाक के नथुने में किया गया छिद्र। सम०—**ओतः** नकेल द्वारा चलाया गया बैल।

नस्तित (वि०) [नस्त+इतच्] नाथा हुआ (नाक में रस्सी डालकर)।

नस्य (वि०) [नासिक+यत् नसादेश] अनुनासिक, —**स्यम्** 1 नाक का बाल 2 सूंघनी,—**स्या** 1 नाक 2 पशु के नाक में से निकली हुई रस्सी, नकेल —शि० १२।१०।

नह् (दिवा० उभ० —नह्यति—ते, नद्ध, इच्छा० निनत्सति —ते) बांधना, बंधनयुक्त करना, ऊपर से चारों ओर से या एक जगह बांधना, कमर कसना—नीलेमनद्धानि शिरान्तराणि कु० १।५६, रघु० ४।५७, ११।४१ 2 पहनना, वस्त्र धारण करना, सुसज्जित करना (आ०), प्रेर०—पहनना, अप—खोलना अपि

—(कभी-कभी अकार का लोप होकर केवल 'पि' रह जाता है) 1. बांधना, कमर कसना, बंधन में डालना—अतिपिनद्धेन वल्कलेन—श० 1, मदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२ 2 पहनना, कपड़े धारण करना—भट्टि० ३।४७ 3. ढकना, (लिफाफे में) बंद करना—श० १।१९, उद् बांधना, जकड़ना, गूंथना—रघु० १७।३०, १८।५०, परि—घेरना, अन्तर्जटित करना, परिवृत करना—सजपति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथ मा० ५।१, रघु० ६।६४, मालवि० ५।१०, ऋतु० ६।२५, सम्—1 कसना, बांधना, जकड़ना 2 वस्त्र पहनना, धारण करना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना, सवारना, लिबास पहनना—समनात्सीत्तत सैन्यम् —भट्टि० १५।११, १४।७, १७।४ 4 (किसी कार्य के लिए) अपने आपको तैयार करना, (आ० इस अर्थ में) युद्धाय सन्नह्यते महा० छेत्तुं वज्रमणीन् शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते भर्तृ० २।६, दे० सन्नद्ध भी।

नहि (अव्य०) निश्चय ही नहीं, निश्चित रूप से नहीं, किसी भी अवस्था में नहीं, बिल्कुल नहीं—आशसा न हि न प्रेते जीवेम दशमूर्धनि भट्टि० १९।५।

नहुषः [नह् + उषच्] एक चन्द्रवंशी राजा, ययाति का पिता, पुरूरवा का पोता और आयुस् का पुत्र (यह बहुत बुद्धिमान्, और बलवान राजा था। जब इन्द्र ने वृत्र को मार दिया, और उस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करने के लिए वह एक सरोवर में जा छिपा, तो उस समय नहुष राजा को इन्द्र के आसन पर बिठाया गया। वहाँ रहते हुए नहुष इन्द्राणी के प्रेम को जीतने के विचार से सप्तर्षियों को पालकी में जोत कर उसके भवन की ओर चला। मार्ग में उसने सप्तर्षियों को 'सर्प' 'सर्प' (तेज चलो, तेज चलो) कह कर फुर्ती से चलने के लिए कहा। उस समय अगस्त्य मुनि ने नहुष को सांप बन जाने का शाप दिया। वह आकाश से इस पृथ्वी पर गिरा और तब तक इसी दुरवस्था में पड़ा रहा जब तक कि युधिष्ठिर ने आकर उद्धार न किया हो)।

ना [नह् + डा] नहीं, न (= न)।

नाकः [न कम् अकम् दुःखम्, तद् नास्ति अत्र इति नि० प्रकृतिभाव] 1 स्वर्ग—आनाकरथवर्त्मनाम् रघु० १।५, १५।९६ 2 आकाश मंडल, ऊर्ध्वांतर गगन, अन्तरिक्ष। सम०—चरः 1 देव 2. उपदेव—नाथः,—नायकः इन्द्र का विशेषण,—वनिता अप्सरा—सद् (पुं०) देव,—भट्टि० १।४।

नाकिन् (पुं०) [नाक + इनि] देवता, सुर—शि० १।४५।

नाकुः [नम् + उ नाक आदेश] 1 वल्मीक 2 पहाड़।

नाक्षत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [नक्षत्र + अण्] तारा-सम्बन्धी, नक्षत्रविषयक,—त्रम् २७ नक्षत्रों में से चन्द्रमा की गति के आधार पर गिना गया महीना, ६० घड़ी वाले तीस दिनों का एक मास—नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम् —सूर्य०।

नाक्षत्रिकः [नक्षत्र + ठञ्] २७ दिनों का महीना (जिसमें प्रत्येक दिन—चन्द्रमा की नक्षत्रान्तर्गति पर आधारित है)।

नागः [नग + अण्] 1 सांप, विशेष कर काला सांप 2 एक काल्पनिक नागदैत्य जिसका मुख मनुष्य जैसा और पूंछ सांप जैसी होती है तथा जो पाताल में रहता है—भग० १०।२९, रघु० १५।८३ 3 हाथी—मेघ० ११, ३६ शि० ४।६३ विक्रम० ४।२५ 4 मगरमच्छ 5 क्रूर, अत्याचारी व्यक्ति 6. (समास के अन्त में), सम्मान्य और पूज्य व्यक्ति—उदा० पुरुषनाग 7 बादल 8 खूंटी (दीवार में गड़ी हुई) 9 नागकेसर, नागरमोथा 10 शरीरस्थ पांच प्राणों में वह वायु जो डकार के द्वारा बाहर निकलती है 11 सात की संख्या—गम् 1 रांग 2 सीसा। सम०—अङ्गना 1 हथिनी 2. हाथी की सूंड,—अञ्जना हथिनी,—अधिपः शेष का विशेषण, —अन्तकः,—अरातिः,—अरिः 1 गरुड़ का विशेषण 2. मोर 3. सिंह,—अशनः 1 मोर—पंच० १।१५९ 2 गरुड़ का विशेषण, —आननः गणेश का विशेषण,—आह्वः हस्तिनापुर,—इन्द्रः 1 बड़ा या श्रेष्ठ हाथी—कु० १।३६ 2 इन्द्र का हाथी ऐरावत 3 शेष का विशेषण,—ईशः 1. शेष की उपाधि 2 परिभाषेन्दुशेखर तथा कई अन्य पुस्तकों का प्रणेता 3 पतञ्जलि,—उदरम् 1. लोहे का तवा (जो सैनिक छाती के बांधते हैं), वक्षस्त्राण 2. गर्भावस्था का एक रोग विशेष, गर्भोपद्रवभेद,—केसरः सुगन्धित फूलों का एक वृक्ष,—गर्भम् सिन्दूर,—चूडः शिव की उपाधि,—जम् 1 सिन्दूर 2 रांग,—जिह्विका मैनसिल, —जीवनम् रांगा—दन्तः,—दन्तकः 1 हाथी दांत 2 दीवार में लगी खूंटी या दीवारगीरी,—दन्ती 1 एक प्रकार का सूरजमुखी फूल 2 वेश्या,—नक्षत्रम्,—नायकम् आश्लेषा नक्षत्र, (—कः) सांपों का स्वामी,—नासा हाथी की सूंड,—निर्यूहः दीवार में लगी खूंटी या दीवारगीरी,—पंचमी श्रावणशुक्ला पंचमी को मनाया जाने वाला उत्सव,—बन्धः एक प्रकार का रतिबंध,—पाशः 1 युद्ध में शत्रुओं को फंसाने के लिए प्रयुक्त एक प्रकार का जादू का जाल 2 वरुण का शस्त्र या जाल,—पुष्पः 1 चम्पक का पौधा 2 पुन्नाग वृक्ष, —बन्धकः हाथी पकड़ने वाला,—बन्धुः गूलर का पेड़, पीपल का पेड़,—भिद् भीम की उपाधि—भूषणः शिव की उपाधि—मण्डलिकः 1 सपेरा 2 सांप पकड़ने वाला,—मल्लः ऐरावत का विशेषण,—यष्टिः (स्त्री०)

—यष्टिका 1. नये खुदे तालाब में पानी की गहराई नापने के लिए अंकांकित बांस विशेष 2. धरती में छेद करने का बर्मा,—रक्तम्, रेणु सिंदूर,—रंग संतरा — राज शेष की उपाधि,—लता,—वल्लरी, —वल्ली नागकेसर, पान की बेल,—लोकः सांपों की दुनिया, सांपों का कुल, भूलोक के नीचे अवस्थित पाताल लोक, —वारिकः 1 राजकीय हाथी 2 महावत 3. मोर 4. गरुड की उपाधि 5 हाथियों का यूथपति 6 किसी समाज का प्रधान व्यक्ति,—संभवम्, संभूतम् सिन्दूर, —साह्वयम् हस्तिनापुर ।

नागर (वि०) (स्त्री०— री) [नगर+अण्] 1 नगर में उत्पन्न, नगर में पला 2 नगर से संबंध रखने वाला, नगरीय 3. नगर में बोला जाने वाला 4 नम्र, शिष्ट 5. चतुर, चालाक 6 बुरा, दुष्ट, दुर्व्यसनी (जिसने नगर की बुराइयाँ ग्रहण करली हैं),—रः 1 नागरिक —मेघ० २५, शा० ४।१९ 2. देवर, पति का भाई 3 व्याख्यान 4 नारंगी 5 थकावट, कठिनाई, श्रम 6. मुकरना, जानकारी का खण्डन —री 1 लिपि वर्णमाला जिसमें प्रायः संस्कृत लिखी जाती है- तु० देवनागरी 2. चालाक और बुद्धिमती स्त्री— हन्ता- चौरी स्मरतु सकथ सवृतो नागरीभिः उ० द्रू० १६ 3. स्नुही नाम का पौधा ।

नागरक, नागरिक (वि०) नगरेभव [वुञ्, नगर + ठक्] 1. नगर में पला नगर में उत्पन्न 2 नम्र, शिष्ट, शालीन—नागरिकवृत्त्या संज्ञापयैनाम्—श० ५ 3 चतुर, बुद्धिमान्, चालाक,—कः 1 नागरिक 2 नम्र या शिष्ट व्यक्ति, वीर बहादुर, वह प्रेमी जो अपनी पहली प्रेमिका को अतिशय प्रेम प्रदर्शित करता है, परन्तु किसी अन्य से अपनी प्रणय प्रार्थना करता है 3 जो नगर के दुर्व्यसनों में फंस गया है 4 चोर 5 कलाकार 6 पुलिस का मुख्य अधिकारी—विक्रम० ५, श० ६ ।

नागरिकः, नागरी [नागरी+इट्+क, नाग इव श्येटति नाग+वि+इट्+क] 1 लम्पट, दुश्चरित्र 2 जार 3. संबंध बिगाड़ने वाला ।

नागरंगः [नाग+रं+क] संतरा, नारंगी ।

नागर्यम् [नागर+ष्यञ्] बुद्धिमत्ता, चतुराई ।

नाचिकेतः [नाचिकेता+अण्] अग्नि ।

नाटः [नट्+घञ्] 1 नाचना, अभिनय करना 2 कर्णाटक प्रदेश ।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1. स्वांग, रूपक 2 रूपक के दस मुख्य भेदों में से पहला, परिभाषा आदि के लिए दे० सा० द० २७७,—कः अभिनेता, नाचने वाला ।

नाटकीय (वि०) [नाटक+छ] नाटकसंबंधी, नाटक- विषयक—पूर्वरंगः प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः —शि० २।८ ।

नाटारः [नट्या अपत्यम् आरक्] अभिनेत्री का पुत्र ।

नाटिका [नाट+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] एक छोटा सा लघु प्रहसन, एक रूपक, उदा० रत्नावली, प्रियदर्शिका, या विद्धशालभंजिका, सा० द० परिभाषित करता है - नाटिका क्लृप्तवृत्ता स्यात् स्त्रीप्राया चतुरंकिका, प्रख्यातो धीरललितस्तत्र स्यान्नायको नृपः, स्यादन्तःपुरसंबद्धा संगीतव्यापृताऽथवा, नवानुरागा कन्याऽत्र नायिका नृपवंशजा, संप्रवर्तेत नेताऽस्यां देव्यास्त्रासेन शंकितः, देवी पुनर्भवेज्ज्येष्ठा प्रगल्भा नृपवंशजा, पदे पदे मानवती तद्वशः संगमो द्वयोः वृत्तिः स्यात्कौशिकी स्वल्पविमर्शा संधयः पुनः ५३९ ।

नाटितकम् [नट्+णिच्, क्त+कन्] अनुकृति किसी की चेष्टादि का अनुकरण, संकेत हावभाव प्रदर्शन - भीतिनाटितकेन -श० ५ ।

नाटेय,-रः [नटी+ढक्, ढक् वा] किसी अभिनेत्री या नर्तकी का पुत्र ।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1 नाचना 2 अनुकरणात्मक चित्रण स्वांग, हावभाव प्रदर्शन, अभिनय करना नाट्ये च दक्षा वयम् रत्न० १।६, नूत नाट्ये मर्वाथ च स्थिर नार्वतीपर्वतीकं विक्रमांक० १८।२० 3 नृत्यकला, अभिनय कला नाट्यकला नाट्य भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् मालवि० १।४, —धरः अभिनेता। सम० आचार्यः नृत्यकला का गुरु, —उक्तिः (स्त्री०) नाटकीय वाक्यविन्यास —धर्मिका वर्णी अभिनयसंबंधी नियमावली —प्रियः शिव की उपाधि —शाला 1 नाचघर 2 नाटक खेलने का घर या स्थान, —शास्त्रम् 1 नाट्य विज्ञान नृत्य गीत तथा अभिनय संबंधी विद्या 2 नाट्यशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ ।

नाडि-डी (स्त्री०) [नड+णिच्+इन्, नाडि+ङीष्] 1 किसी पौधे का पोला डंठल 2 कमल की खोखली डंडी 3 (धमनी या शिरा की भांति) नलियों के आकार का शरीर का अंग— सवधिकदवनाडीचक्रम व्यवस्थितनात्मा मा० ५।१,२ 4 बांसुरी, मुरली 5 नासूर वाला घाव, नासूर, नाडीव्रण 6 हाथ या पैर की नब्ज 7 चौबीस मिनट के समय के बराबर माप, घड़ी 8 आधे मुहूर्त का कालमान 9 ऐन्द्रजालिक जाल । सम० —चरणः एक पक्षी, —चीरम् एक छोटा नरकुल, —जंघः कौवा, —परीक्षा नब्ज देखना, —मंडलम् आकाशीय विषुवत् रेखा,—यंत्रम् नली के आकार का एक उपकरण,—व्रणः नासूर, पूयव्रण, रिसने वाला फोड़ा ।

नाडिका [नाडि+कन्+टाप्] 1 नली के आकार का अंग 2 २४ मिनट का समय, घड़ी—नाडिका विच्छेद पटहः—मा० ७, का० १३,७० ।

नाडिं (डी) धम (वि०) [नाडीं धमति—नाडी+ध्मा+खश्, धमादेश, ह्रस्व, मुम् च, पक्षे ह्रस्वाभाव] (भय आदि) नलिकाकार अंगों को गति देने वाला, नाडिंधमेन श्वासेन —का० ३५३,—मः सुनार।

नाणकम् [न आणकम्, इति] सिक्का, मोहर लगी हुई कोई वस्तु, तुला नाणकमोषिका मकशिका —मृच्छ० १।२३, याज्ञ० २।२४०।

नातिचर (वि०) [न अतिचर] जो बहुत लंबी अवधि का न हो, जो दीर्घकालीन न हो।

नातिदूर (वि०) [न अतिदूर] जो बहुत दूर न हो अधिक दूरी पर न स्थित हो।

नातिवाद [न अतिवाद] दुर्वचन तथा अपशब्दों का परिहार करना।

नाथ् (भ्वा० पर० नाथति - कभी-कभी आ० भी) 1 निवेदन करना प्रार्थना करना, किसी बात की याचना करना (सम्प्र० अथवा द्विकर्म० के साथ), मोक्षाय नाथते मुनिः —बोप० नाथसे किमु पतिं न भूभृतः —कि० १३।५९, सन्तुष्टमिष्टानि तमिष्टदेवं नाथन्ति के नाम न लोकनाथम् —नै० ३।२५ 2 शक्ति रखना, स्वामी होना, छा जाना 3 तंग करना, कष्ट देना 4 आशीर्वाद देना मंगल कामना करना शुभाशीष देना (केवल इस अर्थ में आ०), नाथितस्तम् महावी० १।११, (मम्मट निम्नांकित पंक्ति में बतलाता है कि यहाँ 'नाथते' स्थान पर 'नाथति' होना चाहिए, क्योंकि यहाँ अर्थ केवल 'निवेदन या प्रार्थना करना' है —दीनं त्वामनुनाथते कुचयुगं पत्रावृतं मा कृथाः), सर्पिषो नाथते - सिद्धा०।

नाथः [नाथ्+अच्] 1 प्रभु, स्वामी, रक्षक अथ नाथं कृतलक्षणाशुभम् प्रजानाम् रघु० ५।१३, ३।५५, त्रिलोक°, कैलास° आदि 2 पति 3 भारवाही बैल की नाक में डाला हुआ रस्सा। सम० हरि पशु।

नाथवत् (वि०) [नाथ+मतुप्, वत्वम्] 1 सनाथ जिसका कोई स्वामी या रक्षक हो—नाथवन्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे उत्तर० १।४३ 2 पराश्रयी पराधीन।

नाद [नद्+घञ्] 1 ऊँची दहाड़ चिल्लाहट, चीख गरजना, दहाड़ना सिंहनाद, घन° आदि 2 ध्वनि —भा० ५।२० 3 (योगशास्त्र में) अनुनासिक ध्वनि जिसे हम चन्द्रबिन्दु (ँ) के द्वारा प्रकट करते हैं।

नादिन् (वि०) [नद्+णिनि] ध्वनि या शब्द करने वाला, अनुनादी अंबुदवृन्दनादी रथ —रघु० ३।५९, १९।५ 2 दहाड़ने वाला, गरजने वाला —घन°, सिंह° आदि।

नादेय (वि०) (स्त्री —यी) [नदी+ढक्] नदी में उत्पन्न, जलीय, समुद्रीय, —यम् सेंधानमक।

नाना (अव्य०) [न+नाञ्] 1 अनेक स्थानों पर, विभिन्न रीति से, विविध प्रकार से, तरह तरह से 2. स्पष्ट रूप से, अलग, पृथक् रूप से, 3 बिना (कर्म० करण० या अपा० के साथ) नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा —बोप०, (विकल्प) न नाना शम्भुना रामात् वर्षेणार्जुनतो वर - सदैव 4 (समास के आरंभ में विशेषण के रूप में प्रयोग) विविध प्रकार का, तरह तरह का, नाना प्रकार का, विभिन्न, विविध नाना फलैः फलति कल्पलतेव भूमिः भर्तृ० २।४६, भग० १।९, मनु० ९।१४८। सम० अत्यय (वि०) विभिन्न प्रकार का, बहुपक्षी —अर्थ (वि०) 1 विविध उद्देश्य या लक्ष्यों वाला 2 विविध अर्थों वाला, (शब्द के रूप में) अनेकार्थक —कारम् (अव्य०) विविध प्रकार से करके,—गन्ध (वि०) विविध गंध से युक्त—मालवि० १।४ —रूप (वि०) विभिन्न रूपों वाला विविध प्रकार का, बहुरूपी, नाना प्रकार का, —वर्ण (वि०) भिन्न २ रंगों का, —विध (वि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का, बहुविध, -विधम् (अव्य०) विविध रीति से।

नानान्द्रः [ननान्दृ —अण्] ननद का पुत्र।

नान्त (वि०) [न० ब०] अन्तरहित, अनन्त।

नान्तरीयक (वि०) [न अन्तरा विनाभव —अन्तरा+छ, +कन्] जो अलग न किया जा सके अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ।

नान्त्रम् [नम्+ष्ट्रन्] प्रशंसा स्तुति।

नान्दीकरः, नान्दिन् (पुं०) [नान्दीं करोति—कृ+ट, ह्रस्व, नन्द्+णिनि] नान्दी पाठ करने वाला (नाटक के आरम्भ में मांगलिक वचन बोलने वाला)।

नान्दी [नन्दन्ति देवा अत्र नन्द्+घञ्, पृषो० वृद्धि ङीप्] 1 हर्ष, संतोष, खुशी 2 समृद्धि 3 धर्मानुष्ठान के आरम्भ में देवस्तुति 4 विशेषकर, नाटक के आरम्भ में मंगलाचरण के रूप में आशीर्वादात्मक श्लोक या श्लोकों का पाठ स्वस्त्ययन—आशीर्वचनसंयुक्ता नित्यं यस्मात्प्रयुज्यते, देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता या—देवद्विजनृपादीनामाशीर्वचनपूर्विका, नन्दन्ति देवता यस्यां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता। सम०—कर दे० नान्दिन् —निनाद हर्षनाद महावी० २।४, —पटः कुएँ का ढक्कन —मुख (वि०) (दिवंगत पूर्वज या पितर) जिनके लिए नान्दीमुख श्राद्ध किया जाय (—खम्) °श्राद्धम् पितरों की पुण्यस्मृति में किया जाने वाला श्राद्ध, विवाह आदि शुभ उत्सवों से पूर्व की जाने वाली आरंभिक स्मृति (—खः) कुएँ का ढक्कन, -वादिन् (पुं०) 1 नाटक में मंगलाचरण के रूप में नान्दी पाठ करने वाला 2 ढोल बजाने वाला, —श्राद्धम् दे० ऊपर 'नान्दीमुखम्'।

नापित [न आप्नोति सरलताम्—न+आप्+तन्, इट्] नाई, हजामत बनाने वाला—पंच० ५।१ । सम० —शाला नाई की दुकान, क्षौरगृह, वह स्थान जहाँ हजामत होती हो ।

नापित्यम् [नापित+ष्यञ्] नाई का व्यवसाय ।

नाभि (पु०, स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तादेश] धुरी —गभीरावर्तसनाभिर्नाभि--दश० २, निम्ननाभि —मेघ० ८३, रघु० ६।५२, मेघ० २८ 2 नाभि के समान गर्त —(पु०) 1 पहिए की नाह पंच० १।८१ 2 केन्द्र, किरणबिन्दु, मुख्य बिंदु 3 मुख्य अधनी, प्रधान —कृत्स्नस्य नाभिर्नृपमण्डलस्य रघु० १८।२० 4 निकट की रिश्तेदारी बिरादरी, (जाति आदि) का समुदाय जैसा कि 'सनाभि' में 5 सर्वोपरि प्रभु —रघु० १।१६ 6 निकटसबंधी 7 क्षत्रिय 8 जन्मभूमि,—भिः (स्त्री०) कस्तूरी (अर्थात् मृगनाभि) (विशे० बहु० समास के अन्त में प्रयुक्त 'नाभि' शब्द बदल कर 'नाभ' बन जाता है) जैसा कि 'पद्मनाभ' में) । सम० —आवर्त नाभि का गर्त, —ज,—जन्मन् (पु०)—भू ब्रह्मा के विशेषण,—नाडी, —नालम् 1 नाभिरज्जु अमरज्जु, नाल 2 नाभि का विदारण ।

नाभिल (वि०) [नाभिरस्त्यस्य —लच्] नाभि से संबद्ध, या नाभि से आने वाला ।

नाभीलम् [नाभि+शीङ्+ला+क] 1 नाभि का गर्त 2 पीड़ा, 3 विशीर्ण नाभि ।

नाभ्य (वि०) [नाभि+यत्] नाभि से संबंध रखने वाला, नाभि से आने वाला, नाभि में रहने वाला नाल से जुड़ा हुआ,—भ्य शिव का विशेषण ।

नाम (अव्य०) [नम+णिच्+ड] निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होने वाला अव्यय—1 नामधारी नामक, नाम से—हिमालयो नाम नगाधिराज कु० १, नन्दिनी सुचरुता नाम—दश० ७ 2 निस्सन्देह, निश्चय ही, सचमुच, वास्तव में यथार्थ में अवश्य, वस्तुतः—मया नाम जितम्—वेणी० २।१७ विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम—श० १, आश्वासितस्य मम नाम —विक्रम० ५।१६, जब कि मैं जरा आश्वस्त हुआ 3. संभवत, कदाचित् —प्राय 'मा' के साथ अये पद्शब्द इव मा नाम रक्षिण—मृच्छ० ३, कदाचित् (परन्तु मुझे आशा नहीं) रक्षकों का —मा नाम अकार्यं कुर्यात्—मृच्छ० ४ 4 संभावना —तर्कैव नामास्त्वमति कु० ३।१०, त्वया नाम मुनि विमान्य —श० ५।१९, क्या यह संभव है (निंदात्मक ढंग से), इसका प्रयोग 'अपि' के साथ बहुधा निम्नांकित अर्थ में होता है—'मेरी इच्छा है' 'क्या ही अच्छा हो' 'क्या यह संभव है कि' आदि, दे० 'अपि' के अन्तर्गत 5. झूठमूठ का कार्य, बहाना (अलीक), कातरीसिको नाम भूत्वा—दश० ११०, इसी प्रकार 'भीतो नामाव-प्लुत्य' १०४, मानों भयभीत होकर—परिश्रम नाम विनीय च क्षणम्—कु० ५।३२ 6 (लोट् लकार के साथ) माना कि, यद्यपि, हो सकता है, अच्छा— तत्करोतु नाम शोकावेगाय—का० ३०८ करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः हि० २।१४, यद्यपि वह स्वयं प्रयत्न कर सकता है, इसी प्रकार—मा० १०।७, श० ५।८ 7 आश्चर्य—अन्धो नाम पर्वत-मारोहति—गण० 8 रोष या निंदा —ममापि नाम दशाननस्य परैः परिभव—गण०, (यह वाक्य निंदा-सूचक भी हो सकता है), किं नाम विस्फुर शस्त्राणि—उत्तर० ४, ममापि नाम सत्त्वैरभिभूयंते गृहाः श० ६, नाम शब्द प्राय प्रश्न वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न 'कथम्' 'कदा' आदि अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त होकर निम्नलिखित अर्थ प्रकट करता है संभवत 'निस्सन्देह', 'मैं जानना चाहूँगा' अपि कथं नामैतत् उत्तर० ६ का नाम राज्ञां प्रिय पंच० १।१४६, का नाम पाकाभिमुखस्य जन्तुर्द्वाराणि दैवस्य पिधातुमीष्टे उत्तर० ७।४ ।

नामन् (नपुं०) [म्नायते अभ्यस्यते नम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन वा म्ना+मनिन् नि० साधु] 1 नाम अभिधान, वैयक्तिक नाम (विप० गोत्रम्) किं नु नामैतदस्या—मुद्रा० १ नाम ग्रह संबोधित करना या नाम लेकर बुलाना नामग्राहमरोदीत्सा भट्टि० ५।५ नाम कृ या दा, नाम्ना या नामतः कृ नाम रखना, पुकारना नाम लेकर बुलाना चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम् रघु० ३।२१ ५।३६, नौ कुशलवौ चकार किल नामतः १५।३२ चन्द्रापीड इति नाम चक्रे—का० ७४, मातर नाम्ना पृच्छेयम् श० ७ 2 केवल नाम संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते भर्तृ० २।६७ 'नाम भी नहीं' अर्थात 'कोई चिह्न दिखाई नहीं देता है' आदि 3 (व्या० में) संज्ञा नाम (विप० आख्यात) तन्नाम येनाभिदधाति सत्त्वं—या—सत्त्वप्रधानानि नामानि निरु० 4 शब्द नाम समानार्थक शब्द—इति भूत नामानि 5 सामग्री (विप० गुण) । सम० —अंक (वि०) नाम से चिह्नित—रघु० १२।१०३,—अनु-शासनम्, —अभिधानम् 1 किसी के नाम की घोषणा करना 2 शब्द संग्रह, शब्दकोष,—अपराध (किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को) नाम लेकर गाली देना, नाम लेकर बुलाना अर्थात् तिरस्कार करना,—आवली किसी देवता की) नामसूची,—करणम्,—कर्मन् (नपुं०) 1 नाम रखना, जन्म होने के पश्चात् बालक का नामकरण करना 2 नाम धाम का अनु-बंध,—ग्रहः नामोल्लेख करना, नाम लेकर संबोधित

करना, नामोच्चारण, नाम याद करना पुण्यानि नामग्रहणान्यपि महामुनीनाम् ४३, मनु० ८।२७१, रघु० ७।४१,—त्याग नाम छोड़ना, —स्वनामत्यागं करोमि पंच० १, 'मैं अपना नाम छोड़ दूंगा' —धातु नाम क्रिया, नाम धातु (जैसे पार्वायते, वृषस्यति आदि), —धारक,—धारिन् (वि०) नाम मात्र रखने वाला, नाम मात्र का, नाममात्र पंच० ३।८८, —धेयम् नाम, अभिधान, —वनज्योत्स्नेति कृतनामधेया श० १, किं नामधेया सा—मालवि० ४, रघु० १।४५, १०।६७, ११।८, मनु० २।३० —निर्देश नाम से संकेत —मात्र (वि०) केवल नामधारी, नाममात्र का, नाम के लिए, पंच० १।३३ ४।८६ —माला सग्रह नामों की सूची, (अभिधा० का) शब्दमाला —मुद्रा मोहर लगाने की अंगूठी, नामांकित .... उभे नाममुद्रे .... [illegible] श० १, —लिंगम् संज्ञाओं का लिंग अनुशासन संज्ञा शब्दों के लिंगों की नियमावली —वर्जित (वि०) 1 नाम रहित 2 मूर्ख —वाचक (वि०) नाम बतलाने वाला (कम्) व्यक्ति वाचक संज्ञा —शेष (वि०) जिसका केवल नाम ही बाकी रह गया हो, जिसका नाम ही जीवित हो, स्वर्गीय — [illegible]

नामि [नम् + इञ्] विष्णु की उपाधि

नामित (वि०) [नम् + णिच् + क्त] झुका हुआ, विनम्र, विनीत।

नाम्य (वि०) [नम् + णिच् + यत्] लचकदार, झुकने या लचकीला।

नाय [नी + घञ्] 1 नेता, मार्ग दर्शक 2 मार्ग दिखाने वाला, निर्देशक 3 नीति 4 उपाय, तरकीब।

नायक [नी + ण्वुल्] 1 मार्गदर्शक, अग्रणी सवालक 2 मुख्य, स्वामी, प्रधान, प्रभु 3 लब्धप्रतिष्ठ या प्रमुख पुरुष, पूज्य व्यक्ति मेघ० [illegible] एक मर्द 4 सेनानायक, सेनापति 5 (अलं० शा० में) नाटक या काव्य का नायक (सा० द० के अनुसार नायक चार प्रकार के हैं धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित और धीर प्रशान्त इन चारों के कुछ अवान्तर भेद होने के कारण नायक के भेद संख्या में ४० होते हैं सा० द० ६४-७५ रसमंजरी केवल तीन भेदों का (पति, उपपति और वैशिक १५।११०) उल्लेख करती है) 6 हार के बीच का मुख्य मणि 7 निदर्शन या मुख्य उदाहरण—दर्शितेऽ स्मिन् नायका। सम० —अधिप राजा, प्रभु।

नायिका [नायक + टाप्, इत्वम्] 1 स्वामिनी 2 पत्नी 3 किसी काव्य या नाटक की नायिका (सा० द० के अनुसार नायिका के तीन भेद हैं स्वा या स्वीया अन्या या परकीया तथा साधारण स्त्री आगे वर्गीकरण के लिए दे० सा० द० ९७—११२, और रसमं० ३—९४, तु० 'अभ्यन्ती' भी)

नार [नर + अण्] अण (स्त्री० री—तु० मनु० १। १०)—रम् मनुष्यों की भीड़ या सम्मर्द। सम० —जीवनम् सोना।

नारक (वि०) (स्त्री० की) [नरक + अण्] नारकीय, नरकसंबंधी दोजखी, —कः 1 नारकीय प्रदेश, दोजख नरकवासी।

नारकिक, नारकिन्, नारकीय (वि०) [नरक + ठक इनि छ वा] 1 नरक का दोजखी 2 नरक या दोजख में रहने वाला।

नारंग [नृ + अङ्गच् वृ० (?)] 1 संतरे का पेड़ 2 [illegible] 3 [illegible] 4 युगल —गम् [illegible] 1 [illegible] 2 गाजर

नारद [नारम् (?) ददाति दा + क] प्रसिद्ध देवर्षि का नाम दिव्य ऋषि [illegible] जिसने [illegible] किया [देवर्षि नारद ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक हैं जो उनकी जंघा से उत्पन्न हुए [illegible] रूप में चित्रित किया [illegible] है जो [illegible] का [illegible] सदेश [illegible] पहुंचाते थे। यह देवता और [illegible] के कारण कलि-[illegible] है कि [illegible] का [illegible] यह एक आचार-संहिता के भी प्रणेता हैं [illegible] नाम इन्हीं के नाम [illegible]

नारसिंह [illegible]

नाराच [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

नाराचिका [illegible]

नारायण [illegible] 1 विष्णु की उपाधि (मनु० १।१० में इसकी व्युत्पत्ति दी है [illegible] नारायणः स्मृतः 2 एक प्राचीन ऋषि का नाम [illegible] जिन्होंने [illegible] उर्वशी को पैदा किया तु० उरूद्भवा नरसखस्य मुनेः सुरस्त्री विक्रम० १।३ दे० नर-नारायण भी [illegible] 1 धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2 दुर्गा का विशेषण।

नारीकेरः,—लः [किल्+घञ्=केलः, नार्याः केलः —ष० त०, पृषो० ह्रस्वः, अथवा नल्+इण् लस्य रः=नारि, केन जलेन इलति—इल्+क कर्म० स०] नारियल—नारिकेलसमाकारा दृश्यन्ते हि सुहृज्जनाः—हि० १।९४ (यह शब्द इस प्रकार (नारिकेलि—ली, नारिकेर—ल, नालि (ली) केर, नालिकेर, नालिकेलि—ली) भी लिखा जाता है ।

नारी [नृ—नर वा जातौ ङीष् नि०] 1 स्त्री, अथेन पुरुषो नारी या नारी सार्थतः पुमान्—मृच्छ० ३।२७। सम०—**तरंगकः** 1. जार, उपपति 2 लम्पट, —**दूषणम्** स्त्री का दुर्व्यसन (ये हैं—पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम्, स्वप्नोऽन्यगृहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्—मनु० ९।१३, —**प्रसंगः** कामासक्ति, लम्पटता —**रत्नम्** स्त्रीरत्न, श्रेष्ठ स्त्री ।

नारंगः [नारीणामङ्गमिव शोभनमगं यस्य] नारंगी का पेड़ ।

नाल (वि०) [नलस्येदम्—अण्] नरकुल का बना हुआ —**लम्** 1 पोला डंठल, विशेष कर कमल की डंडी, विकचकमलैः स्निग्धवैडूर्यनालैः—मेघ० ७९, रघु० ६।१३, कु० ७।८९, (पुं० भी इस अर्थ में) 2. शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 3. हरताल 4 मूठ, दस्ता—**लः** नहर, नाली ।

नालंबी (स्त्री०) शिव की वीणा ।

नाला [नल्+ण+टाप्] पोला डंठल, विशेषकर कमल नाल ।

नालिः, —ली (स्त्री०) [नल्+णिच्+इन्, नालि+ङीष्] 1 शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 2 पोलाडंठल, विशेषकर कमलनाल, 3. २४ घंटे का समय, घड़ी 4. हाथी के कानों को बींधने का उपकरण 5. नहर, नाली 6 कमलफूल ।

नालिक [नलमेव नालमस्त्यस्य ठन्] भैंसा—**का** 1 कमल की डंडी 2. नली 3 हाथी का कान बींधने का उपकरण, —**कम्** 1. कमल का फूल 2. एक प्रकार का फूंक से बजने वाला वाद्ययंत्र, बांसुरी ।

नालिकेर, नालिकेलि—ली दे० नारिकेर आदि ।

नालीक [नाल्यां कायति—कै+क तारा०] 1. बाण 2. भाला, नेजा 3. कमल 4. कमल की रेशेदार डंडी 5. कमल के फूलों का रेशेदार डंठल ।

नालीकिनी [नालीक+इनि+ङीप्] 1. कमल फूलों का गुच्छा, समूह 2. कमलों का सरोवर ।

नाविक [नावा तरति—ठन्] जहाज का कर्मचारी, चालक —अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव, नाविकपुरुषे न विश्वासः—महा० 2 पोतवाहक, मल्लाह 3. नौयात्री ।

नाविन् (पुं०) [नौ+इनि] केवट, मल्लाह ।

नाव्य (वि०) [नावा तार्यं नौ+यत्] 1. जहाँ किश्ती या जहाज से जाया जा सके, (नदी आदि) जिसमें जहाज चलाया जा सके नाव्याः सुप्रतरा नदीः—रघु० ४।३१, नाव्य पयः केचिदतारिषुर्भुजैः—शि० १२।७६ 2 प्रशंसा के योग्य—**व्यम्** नयापन, नूतनता ।

नाश [नश्+घञ्] 1. ओझल होना—गता नाशं तारा उपकृतमसाधाविव जने—मृच्छ० ५।२५ 2. भग्नाशा, ध्वंस, बर्बादी, हानि—भग० २।४० रघु० ८।८८, १२।६७, इसी प्रकार वित्त° बुद्धि° 3. मृत्यु 4. मुसीबत, संकट 5. परिहार, परित्याग 6 भगदड़, पलायन ।

नाशक (वि०) [नश्+णिच्+ण्वुल्] विध्वंसक, नाश करने वाला ।

नाशन (वि०) (स्त्री०—नी) [नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, नाश करने वाला, हटाने वाला (समास में) —**नम्** 1. विध्वंस, बर्बादी 2 दूर हटाना, दूर कर देना, बाहर निकाल देना 4. नष्ट होना, मृत्यु ।

नाशिन् (वि०) (स्त्री—नी) [नश्+णिनि] 1 विध्वंसक, नाश करने वाला, हटाने वाला 2. नष्ट करने वाला, नष्ट होने योग्य—भग० २।१८ मनु० ८।१८५ ।

नाष्टिक [नष्ट+ठञ्] खोई हुई वस्तु का स्वामी ।

नासा [नास्+अ+टाप्] 1. नाक—स्फुरदधरनासापुटतया—उत्तर० १।२९, भग० ५।२७ 2. हाथी की सूँड 3. दरवाजे की चौखट के ऊपर की लकड़ी । सम०—**अग्रम्** नाक का अग्रभाग भा० १।१, —**छिद्रम्**, **रन्ध्रम्**, **विवरम्** नथुना, **दारु** (नपुं०) दरवाजे की चौखट की ऊपर वाली लकड़ी, —**परिस्रावः** नाक का बहना सर्दी लगना, —**पुटः,—पुटम्** नथुना, **वंशः** नाक की हड्डी, —**स्रावः** सर्दी से नाक का बहना ।

नासिकंधय (वि०) [नासिका+धे+खश्, मुम्, ह्रस्वश्च] नाक के द्वारा पीने वाला ।

नासिका [नास्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] नाक, दे० 'नासा' । सम०—**मलः** नाक से निकलने वाला श्लेष्मा ।

नासिक्य (वि०) [नासिका+ष्यञ्] 1. अनुनासिक 2. नाक में होने वाला, —**क्यः** अनुनासिक ध्वनि,—**क्यम्** नाक ।

नासीरम् [नासाय ईर्ते—ईर्+क तारा०] सेना के सामने आगे बढ़ना या लड़ना —**रः** 1. (सेना का) अग्रभाग —नासीरचरयोर्भटयोः महावी० ९, नै० १।६८ 2. सेना की पंक्ति के आगे चलने वाला योद्धा ।

नास्ति (अव्य०) [न+अस्ति] 'यह नहीं है' अनस्तित्व, जैसा कि 'नास्तिक्षीरा' में । सम०—**वादः** 'सर्वोपरि शासक या परमात्मा का अनस्तित्व' सिद्धांत, नास्तिकता, अनास्था—बौद्धैरेव प्रथमं नास्तिवादपरेः —का० ४९ ।

नास्तिक (वि०) [नास्ति परलोकः तत्साक्षीश्वरो वा इति मतिरस्य—ठन्] या—**कः** अनीश्वरवादी, अविश्वासी, जो वेदों की प्रामाणिकता, पुनर्जन्म और परमात्मा या विश्व के विधाता के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है—शि० १६।७ मनु० ३।६१, ११२२।

नास्तिक्यम् [नास्तिक + ष्यञ्] नास्तिकता, अनास्था, पाखण्डधर्म।

नास्तिकः (पुं०) आम का वृक्ष।

नास्यम् [नासा + यत्] नाक की रस्सी जो बैल की नकेल।

नाहः [नह् + घञ्] 1 बन्धन, निग्रह 2 फंदा, जाल 3 मलावरोध कोष्ठबद्धता।

नाहुषः, षि [नहुषस्यापत्यम् नहुष + अण् इञ् वा] ययाति राजा की उपाधि।

नि (अव्य०) [नी + डि] (प्राय संज्ञा या क्रिया के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है किया विशेषण या मनोभावबोधक अव्यय के रूप में विरल प्रयोग), गण० के अनुसार, इस शब्द के निम्नांकित अर्थ हैं - 1 निपात, नीचे की ओर गति निपत निषद् 2 समूह या संग्रह, निकर, निकाय 3 तीव्रता निकाम, निगृहीत 4 हुक्म, आदेश, निदेश 5 सातत्य, स्थायित्व निविशते 6 कुशलतानिपुण 7 नियन्त्रण, निग्रह, निबंध 8 सम्मिलन (में अन्तर्गत) निपीतमुदकम् 9 सान्निध्य सामीप्य निकट 10 अपमान, बुराई हानि निकृति, निकार 11 दिखलावा, निदर्शन 12 विश्राम निर्वृति 13 आश्रय, शरण 14 सन्देह 15 निश्चय 16 पुष्टीकरण 17 (दुर्गादास के अनुसार) फेंकना देना आदि।

निःक्षेपः [निर् + क्षिप् + घञ्] 1 फेंकना, भेज देना 2 व्यय करना।

निःश्रयणी, निःश्रेणिः (स्त्री०) [निःश्रितम् श्रीयते आ रोहते अनया निर् + श्रि + ल्युट्, ङीप्; निश्चिता श्रेणिः सोपानपंक्तिः यत्र ब० स०] सीढ़ी, जीना रघु० १५।१००।

निःश्वासः, निश्वासः [निर् + श्वस् + घञ्] 1 सांस बाहर निकालना, बहिःश्वसन 2 आह भरना लम्बा सांस लेना, श्वास लेना।

निःसरणम् [निर् + सृ + ल्युट्] 1 बाहर जाना बहिर्गमन 2 निकास, द्वार दरवाजा 3 महाप्रयाण मृत्यु 4 उपाय, तरकीब, उपचार 5 मोक्ष।

निःसह (वि०) [निर् + सह् + अच्] सहन करने या रोकने के अयोग्य, असह्य 2 निःशक्त, बलहीन, हतोत्साह, म्लान, श्रान्त, अपि विरम निःसहानि आसन् मा० २, इसी प्रकार मा० २, ७, उत्तर० ३ 3 असहनीय, जो सहा न जा सके, अनिवार्य।

निःसारणम् [निर् + सृ + णिच् + ल्युट्] 1 निष्कासन, निकाल बाहर करना 2 घर से निकलने का मार्ग, द्वार, दरवाजा।

निःस्रवः [निर् + स्रु + अप्] शेष, बचत, फालतू।

निःस्रावः [निर् + स्रु] 1 व्यय, खर्च करना, अर्थव्यय 2 चावलों का मांड।

निकट (वि०) [नि समीपे कटति नि + कट् + अच्] नजदीकी, समीपस्थ, अदूरस्थ, आसन्न, —टः, —टम् समीप्य ('नजदीक' 'पास' 'समीप' अर्थों को क्रिया विशेषण के रूप में प्रकट करने के लिए 'निकटे' प्रयुक्त होता है—तवापि निकटे कालकाल ममस्त्वथा बहम्—शा० ३।२)

निकरः [नि + कृ + अच् अप् वा] 1 ढेर, चट्टा 2 मुण्ड, समुच्चय, संग्रह … स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकर गीत० ११, शि० १।१८, ऋतु० ६।१८ 3 गठरी 4 रस, सार, मज्जा 5 उपयुक्त उपहार, दक्षिणा 6 निधि, खजाना।

निकर्तनम् [नि + कृत् + ल्युट्] काट डालना।

निकर्षणम् [नि + कृष् + ल्युट्] विश्राम या विहार के लिए खुला स्थान, नगर में या नगर के निकट खेल का मैदान 2 दालान 3 पड़ोस 4 जमीन का टुकड़ा जो अभी जोता न गया हो।

निकषः [नि + कष् + घ, अच् वा] 1 कसौटी, निकष-प्रस्तर, निकषे हेमरेखेव रघु० १७।४६ महावी० १।४ 2 (आल०) कसौटी का काम देने वाली कोई वस्तु, परीक्षण—अन्वेत दर्पनिकषस्तव चन्द्रकेतु उत्तर० ५।१०, आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः मृच्छ० १।४८, दश० १, का० ४४ 3 कसौटी पर बनी सोने की रेखा कनकनिकषस्निग्धविद्युत्प्रियेण स्वासितेन न सा हरिजनहसनेन गीत ७, कनकनिकषस्निग्धा विद्युत्प्रिया न ममोर्वशी—विक्रम० ४।१, ५।१९। सम० —उपलः, —पाषाणः (पुं०), —ग्रावन् कसौटी निकष-प्रस्तर सत्त्वेमहेमनिकषोपलता तनोति—नीति० ११, सत्त्वनिकषग्रावा नु तेषां विपद्—हि० १।२१०, २।८०।

निकषा [नि + कष् + अच् + टाप्] 1 रावण आदि राक्षसों की माता, (अव्य०) 2 निकट, अदूर, समीप, पास (कर्म० के साथ—निकषा सौधभित्तिम् दश०, विलक्ष्य लक्ष्मीं निकषा हरिमियमि—शि० १।६८। सम० —आत्मजः राक्षस।

निकाम (वि०) [नि + कम् + घञ्] 1 पुष्कल, विपुल, बहुल—निकामजला स्रोतोवहा—श० ६।१६, 2 इच्छुक —मः, —मम् कामना, चाह,—मम् (अव्य०) 1 यथेच्छ, इच्छा के अनुसार 2 आत्मसंतोषार्थ, मन भर कर, रात्रौ निकामं शयितव्यमपि नास्ति—श० २, 'मैं रात्रि को भी आराम से नहीं सो पाता' 3 अत्यंत, अत्यधिक —निकामं क्षामाङ्गी—श० ३।९, (इसके

अन्तिम 'म्' का लोप करके, इसे समास के प्रथमखण्ड के रूप में भी बहुधा प्रयुक्त किया जाता है निकाम-निरंकुशा—गीत० ७, कु० ५।२३, शि० ४।५४।

निकायः [नि+चि+घञ्, कुत्वम्] 1 ढेर, संघटन, श्रेणी, समुच्चय, झुण्ड, समूह, महावी० १।५० 2 सत्संग या विद्वत्सभा, विद्यालय धार्मिक परिषद् 3. घर, आवास, निवास-स्थल-कपोतनिकाय आदि 4. शरीर 5 उद्देश्य, चांदमारी, निशाना 6 परमात्मा।

निकाय्यः [नि+चि+ण्यत्, नि०] निवास, आवास, घर—न प्रजाय्यो अन कश्चिन्निकाय्यं तेऽधितिष्ठति—भट्टि० ६।६६।

निकारः [नि+कृ+घञ्] 1 अनाज फटकना 2 ऊपर उठाना 3 वध हत्या 4 अनादर तावेदारी 5 अवज्ञा, क्षति, अनिष्ट, अपराध, तीव्रो निकारा-र्दन—वेणी० ६।४३, ४४।६ 6 गाली, बुरा भला कहना, अपमान 7 दुष्टता, द्वेष 8 विरोध, वचन विरोध।

निकारणम् [नि+कृ+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

निकाश,—स [नि+काश् (स्)+घञ्] 1 दर्शन, दृष्टि 2 क्षितिज 3 सामीप्य, पड़ौस 4 समानता, समरूपता (समास के अन्त में) मा० ५।१३।

निकाषः [नि+कष्+घञ्] खुरचना रगड़ना—कि० ७।६।

निकुंचकः [नि+कुच्+ल्युट्] एक तोल जो १।४ कुडव के बराबर है (आठ तोले के बराबर तोल)।

निकुंजः,—जम् [नि+कु+जन्+ड, पृषो०] लतामण्डप लतागृह, कुंज पर्णशाला यमुनातीरवानीरनिकुंजे मन्दमास्थितम्—गीत० ४।२,११, ऋतु० १।२३।

निकुम्भः [नि+कुम्भ्+अच्] 1 शिव के एक अनुचर का नाम रघु० २।३५ 2 सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम।

निकुरं (रु) बम् [नि+कुर्+अम्बच् उम्बच् वा] झुंड, समूह, पुंज, समुच्चय—लतानिकुरुंबम्—गीत० ११, किरण° आन० २०, चिकुर° ४३।

निकुलीनिका [नि+कुलीन+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] अपने कुल की विशेष कला, खानदानी हुनर, जो जन्म से मनुष्य को उत्तराधिकार में प्राप्त होती है, किसी घराने की परंपरागत विशेष कला या दस्तकारी।

निकृत (भू० क० कृ०) [नि+कृ+क्त] 1 विजित, निरुत्साहित, दीन 2. तिरस्कृत भुजग—उत्तर० ६।१४ 3. प्रवंचित, धोखा खाया हुआ 4 हटाया हुआ 5. कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त 6. दुष्ट, बेईमान 7 अधम, नीच, कमीना।

निकृति (वि०) [नि+कृ+क्तिन्] अधम, बेईमान, दुष्ट (स्त्री०—ति) 1 अधमपना, दुष्टता 2. बेईमानी, जालसाजी, धोखा—अनिकृतिनिपुणं ते चेष्टितं मानशौण्ड—वेणी० ५।२१, कि० १।४५ 3. तिरस्कार, अपराध, अपमान—मुद्रा० ४।११ 4. गाली, झिड़की 5. अस्वीकृति, निराकरण 6 गरीबी, दरिद्रता। सम०—प्रज्ञ (वि०) दुष्ट, दुर्मना।

निकृन्तन (वि०) (—नी) [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना, नष्ट करना, विरहिनिकृन्तन कुन्तमुखाकृतिकेतकिदन्तुरिताशे (वसते) गीत० ११—नम् काटना, काट डालना, नष्ट करना 2 काटने का उपकरण, एकेन नखकृन्तनेन सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञातं स्यात्—शारी०।

निकृष्ट (वि०) [नि+कृष्+क्त] 1 नीच, अधम, कमीना 2 जातिबहिष्कृत घृणित 3. गवांरू देहाती।

निकेतः [निकेतति निवसति अस्मिन् नि+कित्+घञ्] घर, आवास, भवन, आलय त्रिलोकनाथनिकेतमथो स्वगम्—रघु० ८।३३ १४।५८ भग० १२।१९ कु० ५।२५, मनु० ६।२३ शि० ५।२६।

निकेतनम् [नि+कित्+ल्युट्] प्रासाद भवन, घर, आलय, निजालयं मधुमतीर प्रविवेश निकेतनम्—गीत० ११ मनु० ६।२६,११।१२८ कि० १।१६।

निकोचनम् [नि+कुच्+ल्युट्] सिकुड़न सिमटन।

निक्वण, निक्वाण [नि+क्वण्+अप् घञ् वा] 1 संगीतस्वर 2 ध्वनि स्वर।

निक्षा [निक्ष्+अ+टाप्] जूं का अंडा, लीख ('लिक्षा' का अशुद्ध रूप)।

निक्षिप्त (भू० क० कृ०) [नि+क्षिप्+क्त] 1 फेंका हुआ, डाला हुआ, रक्खा हुआ 2 जमा किया हुआ न्यस्त, धरोहर के रूप में रक्खा हुआ 3 भेजा हुआ, पहुंचाया हुआ 4 अस्वीकृत परित्यक्त।

निक्षेपः [नि+क्षिप्+घञ्] 1 फेंकना, डालना (कर्म० के साथ), अत मात्यान? श्याक्यानेषु कटाक्षनिक्षेपेण—मा० द० २ 2 धरोहर, न्यास, अमानत—पंच० १।१४, मनु० ८।४ 3 किसी के भरोसे पर या क्षतिपूर्ति के निमित्त, बिना मोहर लगाये रक्खी हुई जमा, खुली धरोहर—समक्षं तु निक्षेपणं निक्षेप—याज्ञ० २।६६ पर मिता० 4 भेजना 5 फेंक देना, परित्याग करना 6 मिटाना, सुखाना।

निक्षेपणम् [नि+क्षिप्+ल्युट्] 1 डालना, पैरों के नीचे रखना कु० १।३३ 2 किसी वस्तु को रखने का उपाय।

निखननम् [नि+खन्+ल्युट्] खोदना, गाड़ना—यथा कि स्थूणानिखननन्याय।

निखर्व (वि०) [निगर्तं खर्वं प्रा० स०] ठिगना—र्वम् दस हजार करोड़।

निखात (भू० क० कृ०) [नि+खन्+क्त] 1. खोदा हुआ, खोदकर निकाला हुआ 2. जमाया हुआ, (खूंटे

की भांति) खोदकर गाड़ा हुआ, अन्दर धकाया हुआ—खातं निखातमिवहारवतामुरस्तः —रघु० ९।७८ अष्टादशद्वीपनिखातयूप ६।३८, गाढ निखात इव मे हृदये कटाक्ष —मा० १।२९ 3 गाड़ा हुआ, धकेलाया हुआ।

निखिल (वि०) [निवृत्तं खिलं शेषो यस्मात् ब० स०] संपूर्ण, पूरा, समस्त, सब—प्रत्यक्ष ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्तं मया यत् मेघ० ९४।

निगड (वि०) [नि+गल्+अच्, लस्य ड] बेड़ी से बधा हुआ, शृंखलित, बद्धस्य निगडस्य च—मनु० ४।२१०, डः, डम् 1 हाथी के पैरों के लिए लोहे की जंजीर, बद्धापराणि परितो निगडान्यलावीत् शि० ५।४८, मालवि० ४।२० 2 हथकड़ी, बेड़ी।

निगडित (वि०) [निगड+इतच्] हथकड़ी से बधा हुआ, बेड़ी से जकड़ा हुआ, शृंखलित बाधा हुआ।

निगण: [निगरण, पृषो० साधु] यज्ञाग्नि का धूआँ।

निगद:, निगाद [नि+गद्+अप्, घञ् वा] 1 सस्वर पाठ, स्तुति पाठ 2 ऊँचे स्वर से बोली गई प्रार्थना 3 भाषण, प्रवचन 4 अर्थ सीखना यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते—निरु० 5. उल्लेख, उल्लेखीकरण इति निगदेनैव व्याख्यातम्।

निगदितम् [नि+गद्+क्त] प्रवचन, भाषण।

निगम: [नि+गम्+घञ्] वेद, वेद का मूल पाठ—सप्तर्षिं साहचर्यात् शब्देति निगमे पा० ६।३।११३, ७।२।६४ वैदिक उद्धरण, वेद का वाक्य नथापि च निगमो भवति (निरुक्त में बहुधा प्रयुक्त) 3. सहायक ग्रंथ उपवेद, वेद भाष्य, मनु० ४।१९ तथा उसका कुल्लू० भाष्य 4 वेद का विधि वाक्य, ऋषियों के वचन 5 (शब्द का मूल स्रोत) धातु 6 निश्चय, विश्वास 7 तर्क 8 व्यवसाय, व्यापार 9 मंडी, मेला 10 चलते फिरते सौदागरों की मण्डली 11 मार्ग मण्डी का मार्ग 12 नगर।

निगमनम् [नि+गम्+ल्युट्] 1 वेद का उद्धरण, या उद्धृत शब्द 2. (तर्क० में) अनुमान-प्रक्रिया में उपसंहार, (पंचावयवी भारतीय अनुमान-प्रक्रिया में पाँचवाँ अवयव), घटाना।

निगर, निगार [नि+गृ+अप्, घञ् वा] निगलना, डकारना।

निगरणम् [नि+गृ+ल्युट्] 1 निगलना, डकारना 2. (आलं०) ग्रहण कर लेना, पूर्ण रूप से लय कर लेना—णः 1. गला 2. यज्ञाग्नि का धूआँ।

निगल (वा) क [=निगर, निगार, रलयोरभेद] 1 निगलना, डकारना 2. घोड़े का गला या गर्दन लम् (पुं०) घोड़ा।

निगीर्ण (भू०क०कृ०) [नि+गृ+क्त] 1. निगला हुआ, डकारा हुआ 2. पूर्ण रूप से निगला हुआ, या लय किया हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, अतएव आपूरणीय उपमानेनान्तर्निगीर्णस्योपमेयस्य यदध्यवसानं सैका—काव्य० १०।

निगूढ (वि०) [नि+गुह्+क्त] 1 छिपाया हुआ, गुप्त —शि० १३।४०, 1 रहस्य, निजी—ढम् (अव्य०) चुपचाप, निजी ढंग से।

निगूहनम् [नि+गुह्+ल्युट्] दुराना, छिपाना।

निग्रंथनम् [नि+ग्रन्थ्+ल्युट्] वध, हत्या।

निग्रह [नि+ग्रह्+अप्] 1 रोक रखना, नियन्त्रित करना, दमन करना, वश में करना—जैसा कि 'इन्द्रियनिग्रह' में मनु० ६।९२, याज्ञ० १।२२२ भर्तृ० १।६६, भग० ६।३४ 2 दबाना, रोकना, कुचलना मनु० ६।७१ 3 दौड़ कर पकड़ लेना, अधिकार में कर लेना, गिरफ्तार करना—त्वमिन्निग्रहे नु करणीय न मे प्रयत्न —मृच्छ० १।२२, शि० २।८८ 4 कैद करना, कारागार में डालना 5 पराजय, पछाड़ देना, परास्त करना 6 हटा देना, नष्ट करना, दूर करना रघु० ९।२५, १५।६, कु० ५।५३ 7 रोगों की रोकथाम, चिकित्सा 8 दण्ड, सजा (विप० अनुग्रह) निग्रहानुग्रहस्य कर्ता—पंच० १, निग्रहोऽप्ययमनुग्रहीकृत —रघु० ११।९०, ५५, १२।५२, ६३ 9 डांट, फटकार, निन्दा 10 अरुचि, नापसन्दगी, जुगुप्सा 11 (न्या० में) तर्कसंगत दोष, त्रुटि अनुमान-प्रक्रिया में भूल (जिसके कारण हेतुवादी पराजित हो जाता है) तु० मुद्रा० ५।१० 12 मूठ 13 सीमा, हद।

निग्रहण (वि०) [नि+ग्रह्+ल्युट्] पीछे कर देने वाला दबाने वाला—णम् 1 दमन करना, दबाना 2. पकड़ना, कैद करना 3 सजा, दण्ड 4 पराजय।

निग्राह [नि+ग्रह्+घञ्] 1 दण्ड 2 कोसना जैसा कि 'निग्राहस्ते भूयात्' (भगवान्, तुम्हें शापग्रस्त करे) भट्टि० ७।४३ में।

निघ (वि०) [नि+हन्, नि०] जितना चौड़ा उतना ही लम्बा, घः 1 गेंद 2 पाप।

निघण्टु [नि+घण्ट्+कु] 1 शब्दावली 2 विशेष रूप से वैदिक शब्दावली जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त में की है।

निघर्ष:, निघर्षणम् [नि+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना घर्षण करना, कि० २।५१।

निघस: [नि+अद्+अप्, घसादेशः] 1 खाना, भोजन करना 2 भोजन।

निघात: [नि+हन्+घञ्] 1 अभिघात, प्रहार—रघु० ११।७८ 2. स्वर का दमन करना या अभाव।

निघाति: (स्त्री०) [नि+हन्+इञ्, कुत्वम्] लोहे की गदा।

निघुष्टकम् [नि+घुष्+क्त] ध्वनि, शब्द।

निघ्न (वि०) [नि+हन्+क] 1. आश्रित, अनुसेवी, आज्ञाकारी (नौकर की भांति), तथापि निघ्नं नृप तावकीनैः प्रह्वीकृतं मे हृदयं गुणौघैः—कि० ३।१३, निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौक्ष्यं देवि क्षमस्वेति बभूव नम्रः—रघु० १४।५८ 2. शिष्य, विधेय 3. पराश्रित (अर्थात् विशेष्य के लिंगादि का अनुसरण करने वाला—इति विशेष्यनिघ्नवर्गः 4. (संख्या वाचक शब्द के पश्चात्) गुणित।

निचय: [नि+चि+अच्] 1. संग्रह, ढेर, समुच्चय —कि० ४।३७ 2. अवयवों का समाहार जिससे पूर्णता आ जाय—जैसा 'शरीरनिचय' में 3. निश्चितता।

निचाय: [नि+चि+घञ्] ढेर।

निचिकि: दे० नैचिकी।

निचित (भू० क० कृ०) [नि+चि+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित, फैला हुआ, निचितं खमुपेत्य नीरदैः —घट० १ शि० १७।१४ 2. भरा हुआ, पूरित 3 उठाया हुआ।

निचुल: [नि+चुल्+क] 1 एक प्रकार का नरकुल 2 एक कवि, कालिदास का मित्र—स्थानादस्मात् सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुखः खम् —मेघ० १४, (यहाँ मल्लि०—निचुलो नाम महाकविः कालिदासस्य सहाध्याय, परन्तु यह व्याख्या बड़ी संदिग्ध है) 3 ऊपर से शरीर ढकने का कपड़ा, चादर, तु० निचोल।

निचुलकम् [निचुल+कन्] वक्षस्त्राण, चोली, अंगिया।

निचोल: [नि+चुल्+घञ्] 1. अवगुण्ठन, घूंघट, पर्दा ध्वांतं नीलनिचोलचारु—गीत० ११, शीलय नीलनिचोलम्—५ 2. बिस्तरे की चादर 3. डोली का आवरण।

निचोलक: [निचोल+कै+क] 1. बनियान, चोली 2. सिपाही की जाकट जो उरस्त्राण का काम दे।

निच्छवि: [प्रा० ब०] एक प्रदेश जिसे आज कल तिरहुत कहते हैं।

निच्छिवि: (पुं०) एक व्रात्य जाति, पतित जाति (व्रात्य क्षत्रिय की सन्तान) दे० मनु० १०।२२।

निज् (जुहो० उभ०—नेनेक्ति, नेनिक्ते, प्रणेनेक्ति, निक्त) धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना—सस्नुः पयः पपुरनेनिजुरम्बराणि—शि० ५।२८ 2 अपने आपको धोना, निर्मल करना, स्वच्छ होना (आ०) 3. पोषण करना, अव—, प्रक्षालन करना, पानी छिड़कना, निस्—, धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना —रघु० १७।२२, याज्ञ० १।१९१, मनु० ५।१२७।

निज (वि०) [नि+जन्+ड] 1. अन्तर्जात, स्वदेशजात, सहज, अन्तर्भव, जन्मजात 2. अपना, स्वकीय, आत्मीय अपने दल का या अपने देश का—निजं वपुः पुनरनयन्निजां रुचिम्—शि० १७।४, रघु० ३।१५, १८, मनु० २।५० 3. विशिष्ट 4. निरन्तर रहने वाला, चिरस्थायी।

निञ्ज् (अदा० आ०—निङ्क्ते) धोना, प्र—, धोना प्रणिङ्क्ते।

निटलम् ('निटिल' भी लिखा जाता है) [नि+टल्+अच्] मस्तक, निटिलतटबिल—दश० ४, १५। सम०—अक्ष: शिव का नाम।

निडीनम् [नीचैः डीनं पतनमस्ति] पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना, या झपट्टा मारना, दे० 'डीन'।

नितंब: [निभृतं तम्यते कामुकैः, तम् काङ्क्षायाम्] 1. चूतड़, (स्त्री का) पिछला उभरा हुआ भाग, श्रोणिप्रदेश, कूल्हा,—यातं यच्च नितंबयोर्गुरुतया मंदं विलासादिव—श० २।१, रघु० ४।५२, ६।१७, मेघ० ४१, भर्तृ० १।५, मालवि० २।७ 2. (पर्वत का) ढलान, पर्वतश्रेणी, पार्श्व या पहलू—सनाकवनितं नितंबरुचिरं (गिरम्) कि० ५।२७, सेव्या नितंबाः किमु भूधराणां किं वा स्मरस्मेरविलासिनीनाम् भर्तृ० १।१९, विक्रम० ४।२६, भट्टि० २।८, ७।५८ 3 खड़ी चट्टान 4 नदी का ढलवा किनारा 5 कंधा। सम०—बिम्बम् गोलाकार कूल्हा, ऋतु० १।४।

नितंबवत् (वि०) [नितंब+मतुप्] सुन्दर कूल्हों वाला —ती स्त्री चारु चुचुंब नितंबवती दयितम्—गीत० १, विक्रम० ४।२६।

नितंबिन् (वि०) [नितंब+इनि] सुन्दर कूल्हों वाला, सुडौल चूतड़ वाला (बहुधा 'जघन' के लिए प्रयुक्त) तु० मालवि० २।३, कि० ८।१६, रघु० १९।२६, 2. अच्छे पाखों वाला (पहाड़ आदि)—नी 1 बड़े और सुन्दर कूल्हों वाली स्त्री—कि० ८।३, शि० ७।६८, कु० ३।७ 2 स्त्री।

नितराम् (अव्य०) [नि+तरप्+आमु] 1. पूर्णरूप से, सर्वथा, पूरी तरह से—प्राणास्त्यजामि नितरां तदवाप्तिहेतोः—चौर० ४१, भर्तृ० १।९६ 2. अत्यन्त, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—सुदति चेतो नितरां प्रवासिना—ऋतु० २।४, अमरु १०, शोणितसरसि निखाते नितरामेवाप्लुतः सिंधु—पंच० १।१०४, नितरां नीचोऽस्मीति—भामि० १।९ 3. निरंतर, सदा, लगातार 4. सर्वथा 5 निश्चय ही।

नितलम् [नितरां तलम् अधोभागः अस्मिन्] पाताल के सात प्रभागों में से एक, दे० पाताल।

नितांत (वि०) [नि+तम्+क्त+दीर्घः] असाधारण, अत्यधिक, बहुत अधिक, तीव्र—नितांतकठिनां रुजं मम न वेद सा मानसीम्—विक्रम० ३।१,—तम् (अव्य०)

अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अत्यंत, अतिशय ।

नित्य (वि०) [नियमेन नियतं वा भव—नि + त्यप्] 1 निरंतर रहने वाला, चिरस्थायी, लगातार देर तक टिकने वाला, शाश्वत, निर्बाध यदि नित्यमनित्येन लभ्येत हि० १।४८ नित्यज्योत्स्ना प्रतिहततमोवृत्तिरम्या प्रदोषा मेघ० (मल्लि० इसे प्रक्षिप्त मानता है) मनु० २।२०६ 2 अटल नियमित निश्चित अनैच्छिक नियमित [illegible] (विप० काम्य) 3 आवश्यक अवश्यकरणीय [illegible] सामान्य प्रचलित (विप० नैमित्तिक) (समास के अन्त में) निरंतर निवास करने वाला लगातार किसी काम में लगा हुआ [illegible] आदान ध्यान आदि का समूह [illegible] प्रतिदिन लगातार सदा हमेशा [illegible] सदैव मनु० —अनध्याय—ऐसा अवसर जब [illegible] सर्वथा त्याग किया जाय मनु० ४।१०७ —अनित्य (वि०) शाश्वत तथा नश्वर —ऋतु (वि० [illegible] आने पर नियमित रूप से होने वाला [illegible] —कृत्यम् किसी प्रतिदिन किया जाने वाला आवश्यक कार्य लगातार किया जाने [illegible] कि दैनिक पंचयज्ञ [illegible] —दानम् प्रति दिन दान देने का कर्म —नियम [illegible] —नैमित्तिक किसी निमित्त विशेष से नियमित [illegible] वाला या किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए निरन्तर किया जाने वाला अनुष्ठान, उदा० [illegible] —प्रलय [illegible] —मुक्त [illegible] —यौवना सदा युवती बनी रहने वाली, द्रौपदी का [illegible] —शंकित (वि०) सदैव चौकन्ना सदैव सतर्क —समास [illegible] ऐसा समास जिसके अर्थ का [illegible] शब्दों द्वारा अभिव्यक्त न किया जा सके उदा० अमदन्ति [illegible] आदि, इसे [illegible] आदि ।

नित्यता, **त्वम्** [नित्य + तल् + टाप् त्व वा] 1 [illegible] रता, अनश्वरता, चैरन्तर्य शाश्वतता निरन्तरता 2 आवश्यकता ।

नित्यदा (अव्य०) [नित्य + दाच्] लगातार हमेशा प्रतिदिन, सदैव ।

नित्यशस् (अव्य०) [नित्य + शस्] लगातार हमेशा सदैव भग० ८।१४, मनु० २।०६ ४।१५० ।

निदाघु [निदाघात् विघात् द्राति पलायते नि + द्रा + कु] मनुष्य ।

निदर्शक (वि०) [नि + दृश् + ण्वुल्] 1 देखने वाला 2 अन्दर देखने वाला, प्रत्यक्ष करने वाला 3 संकेत करने वाला, प्रकथन करने वाला, घोषित करने वाला ।

निदर्शनम् [नि + दृश् + ल्युट्] 1. दृश्य, अन्तर्दृष्टि, अन्तरीक्षण, नजर, दर्शनशक्ति 2 इशारा करना, बतलाना 3 प्रमाण, साक्ष्य —बलिना सह योद्धव्यमिति नास्ति निदर्शनम् पञ्च० ३।२३ 4 दृष्टान्त उदाहरण मिसाल—ननु प्रभुरेव निदर्शनम् श० २ निदर्शनमसाराणां लघुर्बहुतृणं नरः शि० २।५० रघु० ८। ४५ 5 शकुन 6 चिह्न शकुन 7 योजना पद्धति 8 विधि, वेदविहित प्रमाण निदेश —ना अलंकारशास्त्र में एक अलंकार निदर्शना अभवन्वस्तुसंबंध उपमापरिकल्पक काव्य० १० उदा० रघु० १।२ ।

निदाघ [निदह्यते [illegible] नि—दह् [illegible]] 1 ताप गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु गर्मी का मौसम (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने) निदाघमिहिरज्वालाशतैः भामि० १।१९, निदाघकालः समुपागतः प्रिये —ऋतु० १।१ पञ्च० १।१०५ कु० [illegible] स्वेद पसीना । सम० —कर सूर्य —काल गर्मी की ऋतु ।

निदानम् [illegible] नि + दा + ल्युट्] 1 [illegible] बछड़े को बांधने का [illegible] 3 प्राथमिक कारण प्रथम [illegible] [illegible] [illegible] रघु० १।७१ [illegible] निदानं आयमपदं शि० २।०६ 4 [illegible] मूल पर्व [illegible] [illegible] [illegible] 6 किसी रोग का निदान [illegible] समर्पित [illegible] शुद्धता

निदिग्ध [illegible] 1 [illegible] किया हुआ चुपड़ा हुआ 2 [illegible] हुआ [illegible] [illegible]

निदिध्यासः निदिध्यासनम् [नि + ध्यै + सन् + घञ् ल्युट् वा] [illegible] निरन्तर चिन्तन ।

निदेश [नि + दिश् + घञ्] 1 आज्ञा हुक्म हिदायत [illegible] स्थापित [illegible] निदेश मालवि० १० [illegible] निदेश [illegible] रघु० १४।१४ 2 कथन [illegible] समाचार 3 सामीप्य पड़ौस 4 पात्र बर्तन ।

निदेशिन् (वि०) [निदेश + इनि] संकेत करने वाला —नी 1 दिशा पृथ्वी का एक बिन्दु 2 प्रदेश ।

निद्रा [निन्द + रक् + टाप् नलोपः] 1 सुप्तावस्था नींद प्रत्यक्षमसुलभनिद्रा दिवसाः [illegible] १।३ 2 [illegible] 3 अंग सुन्न होने की अवस्था । सम० [illegible] जागरण नींद टूट जाना —वृक्ष अंधकार —संजननम् श्लेष्मा, कफात्मक धातु ।

निद्राण (वि०) [नि + द्रा + क्त तस्य न ततो णत्वम्] सोया हुआ शयान ।

निद्रालु (वि०) [नि + द्रा + आलुच्] शयान निद्रित —लु विष्णु की उपाधि ।

निद्रित (वि०) [निद्रा + इतच्] सोया हुआ, सुप्त ।

निधन (वि०) [निवृत्तं धनं यस्मात्—ब० स०] गरीब, दरिद्र —अहो निधनता सर्वापदामास्पदम् —मृच्छ० १।१४, —नः—नम् 1. ध्वंस, सर्वनाश, मरण, हानि —स्वधर्मे निधनं श्रेयः —भग० ३।३५, म्लेच्छनिवह निधने कलयसि करवालम् —गीत० १, कल्पांतेऽप्यपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमंतर्धनम् —भर्तृ० २।१६ 2. उपसंहार, अन्त, परिसमाप्ति.—नम् परिवार, वंश।

निधानम् [नि+धा+ल्युट्] 1. नीचे रखना, निर्धारित करना, जमा करना 2. संभाल कर रखना, सुरक्षित रखना 3. गोदाम, आधार, आशय—निधानं धर्माणाम् —गंगा० १८ 4. खजाना— निधानगर्भामिव सागराम्बराम् —रघु० ३।९, भग० ९।१८, विद्यैव लोकस्य परं निधानम् 5. कोष, भंडार, संपत्ति, दौलत।

निधि [नि+धा+कि] 1. घर, आधार, आशय —जल°, तोय°, तपोनिधि आदि 2. भंडारगृह, कोषागार 3. खजाना, भंडार, संचय (कुबेर के नौ खजानों के के लिए दे० 'नवनिधि') 2 समुद्र 5 विष्णु का विशेषण 6. सद्गुणसंपन्न व्यक्ति। सम०—ईशः, —नाथः कुबेर का विशेषण।

निधुवनम् [नितरां धुवनं हस्तपादादि चालनमत्र] 1 क्षोभ, कम्पन 2 संभोग, मैथुन —अतिशयमर्घ्यगुणनिधुवन-शीलम् —गीत० 3. शि० ११।१८, चौर० ८, ९, २५ 3. आनन्द, उपभोग, केलि।

निध्यानम् [नि+ध्यै+ल्युट्] दर्शन, अवलोकन, दृष्टि।

निध्वानः [नि+ध्वन्+घञ्] ध्वनि, शब्द।

निनंक्षु (वि०) [नंष्टुमिच्छुः—नश्+सन्+उ] 1. मरने की इच्छा वाला 2. भाग जाने या बच निकलने का इच्छुक —भट्टि० ४।३३।

निन (ना) दः [नि+नद्+अप्, घञ् वा] 1. ध्वनि, शोर-उच्चस्वार निनदोऽम्भसि तस्याः —रघु० ९।७३, ११।१५, ऋतु० १, १५ 2. (मक्खियों का) भिन-भिनाना, गुंजन करना।

निनयनम् [नि+नी+ल्युट्] 1. अनुष्ठान 2. किसी कार्य को पूर्ण करना, सम्पन्न करना 3. उंडेलना।

निन्द् (भ्वा० पर० निंदति, निंदित, प्रणिंदति) दोष देना, निंदा करना, छिद्रान्वेषण करना, बुरा भला कहना, डांटना, फटकारना, धिक्कारना —निनिंद रूपं हृदयेन पार्वती —कु० ५।१, का निंदती स्वामिनि चाम्पानि वाचा —श० ५।३०, भग० २।३६, मनु० ३।४२।

निंदक (वि०) [निंद्+ण्वुल्] कलंक लगाने वाला, निंदा करने वाला, गाली देने वाला, बदनाम करने वाला।

निंदनम्, निंदा [निंद्+ल्युट्, निंद+अ+टाप् वा] 1. कलंक, दोषारोप, डांट, फटकार, गाली, बुरा-भला कहना, बदनामी-व्याजस्तुतिर्मुखे निंदा —काव्य० १०, पर°, देव° 2. क्षति, दुष्टता। सम०—स्तुतिः (स्त्री०) 1. व्याजस्तुति, स्तुति के रूप में निन्दा 2. प्रच्छन्नस्तुति।

निंदित (भू० क० कृ०) [निंद+क्त] कलंकित, दोषारोपित, गाली दिया हुआ, बदनाम किया हुआ।

निंदुः (स्त्री०) [निन्द्+उ] मरा बच्चा पैदा करने वाली स्त्री, मृतवत्सा।

निंद्य (वि०) [निंद+ण्यत्] 1. कलंक के योग्य, दोषारोपण के लायक, निर्भर्त्स्य, गर्हित, अवाच्य 2. वर्जित, प्रतिषिद्ध।

निप, —पम् [नियतं पिबति अनेन नि+पा+क] जल का घड़ा —पः कदम्ब का पेड़।

निप (पा) ठः [नि+पठ्+अप्, घञ् वा] पढ़ना, सस्वर पाठ करना, अध्ययन करना।

निपतनम् [नि+पत्+ल्युट्] 1. नीचे गिरना, नीचे उतरना, उतरना 2 नीचे की ओर उड़ना।

निपत्या [निपतंत्यस्याम् नि+पत्+क्यप्+टाप्] 1 फिसलन वाली भूमि 2 रणक्षेत्र।

निपाकः [नि+पच्+घञ्] परिपक्व करना, पकाना।

निपातः [नि+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना, नीचे आना, नीचे उतरना —पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिताः —कु० ५।२४, ऋतु० ५।४ 2. आक्रमण करना, टूट पड़ना, झपटना, कूदना —रघु० ७।६० 3. फेंकना, फेंक कर मारना, दागना —कु० ३।१५ 4. उतार, प्रपात, निक्षिप्तनिपाताः शराः —श० १।१० 5 मरण, मृत्यु—मनु० ६।३१ 6. आकस्मिक घटना 7. अनियमित रूप, अनियमितता, अनियमित या अपवाद मानना, एते निपात्यन्ते, निपातोऽयम् —आदि 8 अव्यय, वह शब्द जिसके और रूप न बनें —पा० १।४।५६।

निपातनम् [नि+पत्+णिच्+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देना, पछाड़ देना, मारना —मनु० ११।२०८, 2 पराजित करना, बर्बाद करना, वध करना 3. मर्म स्पर्श करना 4. अनियमित या अपवाद मानना 5. शब्द का अनियमित रूप, अनियमितता, अपवाद।

निपानम् [नि+पा+ल्युट्] 1 पीना 2. जलाशय, जोहड़, पोखर, गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृंगै-र्मुहुस्ताडितम् —श० २।६, शि० १।१७२, रघु० १। ५३ 3. चौबच्चा, कुएँ के समीप पानी का हौज जिसमें पशुओं के पीने का पानी भरा हो 4. कूआँ 5. दूध की बाल्टी।

निपीडनम् [नि+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, दबाना, भींचना —शि० १।७४, ११।११ 2. चोट पहुँचाना, घायल करना, —का अत्याचार करना, घायल करना, क्षति पहुँचाना।

निपुण (वि०) [नि+पुण्+क] 1. चतुर, चालाक, बुद्धिमान्, कुशल वयस्य निरूपितनिपुणाः तैनाव:—

मालवि० ३ 2. प्रवीण, कुशल, जानकार, परिचित (अधि० या करण० के साथ) वाचि निपुण, बाचा निपुण 3. अनुभवशील 4. कृपालु, मित्रवत् 5. सूक्ष्म, बढ़िया, कोमल 6. सम्पूर्ण, पूरा, सही — णम् (अव्य०), निपुणेन, 1. कौशल से, चतुराई से 2. पूरी तरह से, पूर्णरूप से, सर्वथा 3 ठीक, सावधानी से, यथार्थतः, सूक्ष्मरूप से—निपुणमन्विष्यन्नुपलब्धवान् दश० ५९ 4. मृदुता के साथ।

निबद्ध (भू० क० कृ०) [नि+बन्ध्+क्त] 1 बाँधा हुआ, कसा हुआ, हथकड़ी पहनाया हुआ, रोका हुआ बंद किया हुआ 2. जुड़ा हुआ, सबद्ध 3. निर्मित 4 खचित, जड़ा हुआ 5 गवाह के रूप में बुलाया हुआ।

निबन्ध [नि+बन्ध्+घञ्] 1 बाँधना, कसना, जकड़ना 2. आसक्ति गन्धवती भग० १६।५ 3 रचना करना लिखना 4 साहित्यिक रचना या कृति प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबन्धं चक्रे वास० 5 मूत्रकृच्छ्र 6 नियन्त्रण, अवरोध, बन्धन 7. मूत्रावरोध 8 बेड़ी, हथकड़ी 9 सम्पत्ति का अनुदान, पशु, रुपया आदि सम्पत्ति के रूप में देना भूर्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा याज्ञ० २।१२१ स्थिर सम्पत्ति 10 बुनियाद, मूल 11 हेतु, कारण।

निबन्धनम् [नि+बन्ध्+ल्युट्] 1. एक जगह जकड़ना मिलाकर बाँधना 2 संरचना करना, निर्माण करना 3. नियन्त्रण करना रोकना कैद करना 4 बन्ध, हथकड़ी 5 गांठ, बंध सहारा, टेक आशानिबन्धनं जाता जीवलोकस्य उत्तर० ३, यस्त्वमिव मामकीनस्य मनसो द्वितीयं निबन्धनम् मा० ३ 6 परायत्तता संबंध पञ्च० १।३९ अन्योन्याश्रय 7 कारण, मूल, हेतु प्रयोजन, आधार बुनियाद—वाक्प्रतिष्ठानिबन्धनानि देहिनां व्यवहारतन्त्राणि मा० ४ अर्थात् आदि, प्रस्तावना ३ अनिबन्धन निष्कारण, आकस्मिक उत्तर० ५।७ 8 आगार, गद्दी, आधार मा० २।६ 9 रचना करना, क्रमबद्ध करना कु० ७।९० 10 साहित्यिक रचना या कृति पुस्तक 11 (भूमि का) अनुदान, नियोजन या हस्तांतरण-प्रलेख—सद्वृत्ति, सन्निबन्धना शि० २।११२, (यहाँ 'निबन्धन' का अर्थ 'पुस्तक' भी है) 12 वीणा की खूँटी 13 (व्या० में) कारक प्रकरण 14 भाष्य।

निबन्धनी [निबन्धन+ङीप्] बंध, हथकड़ी, डोरी या रस्सी।

निब (व) र्हण (वि०) [नि+ब (व) र्ह्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, विनाशक, (समास में) शत्रु कि० २।४३, महावी० ३।३५ —णम् वध, हत्या, विनाश, हत्या —मै० ३।१२१।

निबिड (वि०) [नि+बिड्+क] सघन, तिनका, दे० 'निविड'।

निभ (वि०) [नि+भा+क] (केवल समास के अन्त में) सदृश, समान, अनुरूप उद्बुद्धमुग्धकनकाब्जनिभं वहन्ति मा० १।४० इसी प्रकार 'चन्द्रनिभानना' आदि,—भः,—भम् 1 दर्शन, प्रकाश प्रकटीकरण 2. बहाना, छद्मवेश, व्याज 3 चाल, चालबाजी।

निभालनम् [नि+भल्+णिच्+ल्युट्] देखना, दृष्टि, प्रत्यक्षीकरण।

निभृत (वि०) [नि+भी+क्त] 1 अत्यन्त भीत 2. गया हुआ, बीता हुआ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1 रक्खा हुआ, जमा किया हुआ, नीचा किया हुआ 2 भरा हुआ, आपूरित स्थिर या निभृत भाग० 3 छिपाया हुआ, गुप्त, दृष्टि से ओझल, अलक्षित, अनवलोकित—निभृतो भूत्वा पञ्च० १, नभसा निभृतेन्दुना रघु० ८।१५, चन्द्रमा के अन्तर्हित होने पर, जब चाँद अस्त होने को था शि० ६।३० 4 मूक, प्रच्छन्न, शि० १३।४२ 5 (क) धुर शान्त निभृतद्विरेफ (काननं) कु० ३।४२, ६।२, (ख) स्थिर, निश्चल, अचल गतिहीन श० १।८ 6 मृदु सौम्य अनिभृता कायव —कि० १३।६६ जो कायर न हो प्रचण्ड, दुर्— मा० २।१२ 7 विनीत नम्र अनिभृतकरेषु प्रियेषु— मेघ० ६८, प्रजासु निभृता कुलवधूरिव मुद्रा० १ 8 दृढ़ अटल 9 एकाकी, अकेला निभृतनिकुञ्जगृहं गतया -गीत० २ 10 बंद, (दरवाजा) भिड़ा हुआ, —तम् (अव्य०) 1, गुप्त रूप से, प्रच्छन्न रूप से, निजी तौर पर, बिना किसी के देखे श० ३, शि० ३।७५, मनु० ९।२६३ 2 चुपचाप, शान्ति से कि० १३४।

निमग्न (भू० क० कृ०) [नि+मस्ज्+क्त] 1 डूबा हुआ, डुबाया हुआ, गोता लगा हुआ, आप्लावित अन्तर्मग्न हुआ (आल० भी) निमग्नस्य पयोराशौ, चिन्तानिमग्न आदि 2 नीचे गया हुआ, (सूर्य की भांति) अस्त 3 अभिभूत, आच्छादित 4 अवसन्न अवमुक्त।

निमज्जथुः [नि+मस्ज्+अथुच्] 1 डुबकी लगाना, गोता लगाना 2. बिस्तरे में घुसना, शयन करना, सो जाना —तस्मै कालात्तते सार्धं मस्येअ पिक् निमज्जथुम् भट्टि० ५।२०।

निमज्जनम् [नि+मस्ज्+ल्युट्] स्नान करना, डुबकी लगाना, गोता लगाना, डूबना (शा० और आल०) दृढ़ निमज्जनमुपैति सुधायाम् नै० ५।९४, एवं संसार-गहने उन्मज्जननिमज्जने महा०।

निमन्त्रणम् [नि+मन्त्र्+ल्युट्] 1. न्योता 2 आमन्त्रण, बुलावा 3 आह्वान, सम्मन।

निमय [नि+मि+अच्] वस्तु-विनिमय अदला-बदली।

निमानम् [नि+मा+ल्युट्] 1. माप 2. मूल्य (निमानम् =मूल्यम्–सिद्धा०)।

निमि: (पुं०) 1. आँख का झपकना, निमेष 2. इक्ष्वाकु की एक सन्तान, मिथिला में राज्य करने वाले राजाओं के कुल का पूर्वज।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1. कारण, प्रयोजन, आधार हेतु—निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम:—श० ७।३० 2. कार्यात्मक या कौशलदर्शी कारण (विप० उपादान) 3. प्रतीयमान कारण, व्याज, निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्—भग० ११।३३, निमित्तमात्रेण पांडवक्रोधेन भवितव्यम्—वेणी० १ 4. चिह्न, संकेत, निशानी 5. ठूंठ, लक्ष्य, निशाना—निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२७ 6. भविष्यसूचक (शुभाशुभ) शकुन,—निमित्तं सूचयित्वा, श० १, निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव—भग० १।३०, रघु० १।८६, मनु० ६।५०, याज्ञ० १।२०३, ३।१७१ ('निमित्त' शब्द समास के अन्त में 'कारण या उत्पत्ति' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है —किंनिमित्तोऽयमातङ्क:—श० ३, निमित्तम्, निमित्तेन, निमित्तात् के कारण, क्योंकि, इस कारण कि)। सम० —अर्थ: (व्या० में) अकर्तृक क्रिया की अवस्था, तुमुन्नंत प्रयोग,—आवृत्ति: (स्त्री०) किसी विशेष कारण पर आश्रय,—कारणम्,—हेतु कार्यात्मक या कौशलदर्शी कारण,—कृत् (पुं०) कौवा,—कर्म 1. प्रायश्चित्त 2. सामयिक संस्कार,—विद् (वि०) अच्छे और शकुनों का ज्ञाता—(पुं०) ज्योतिषी।

निमिष: [नि+मिष्+क] 1. आँख झपकना, आँख बन्द करना, पलक झपकाना 2. पलकमात्र समय, पलभर 3. फूलों का बन्द होना 4. आँख की पलक का बन्द होना 5. विष्णु। सम०—अंतरम् क्षण भर का अन्तराल।

निमीलनम् [नि+मील्+ल्युट्] 1. पलकें बन्द करना, झपकना,—नयननिमीलनखिन्नया यया ते—गीत० ४, अमरु ३३ 2. मरणसमय आँखें मूंदना, मृत्यु 3. (ज्यो० में) पूर्णग्रास।

निमीला, निमीलिका [नि+मील्+अ+टाप्, निमिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. आँखें बन्द करना 2. आँख झपकाना, पलक मारना, किसी की ओर आँख मिचकाना 3. चालबाजी, बहाना, चालाकी।

निमूलम् (अव्य०) [निकरां मूलम्, प्रा० स०] नीचे जड़ तक—निमूलकाषं कषति।

निमेष: [नि+मिष्+घञ्] आँख का झपकना, क्षण, दे० 'निमिष'—'हरति निमेषात् काल: सर्वम्'—मोह० ४, अनिमेषेण चक्षुषा—टकटकी लगाकर, एकटक दृष्टि से—रघु० २।१९, ३।४३, ६१। सम०—कृत् (स्त्री०) बिजली—रुच् (पुं०) जुगनू।

निम्न (वि०) [नि+म्ना+क] गहरा (शा० और आलं०) चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभि:—मेघ० ८२, ऋतु० ५।१२, शि० १०।५७ 2. नीच, अवसन्न, —म्नम् 1. गहराई, नीची भूमि, निम्न देश (क:) पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्—कु० ५।५, न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्—श० ३।२, याज्ञ० २।१५१, ऋतु० २।१३ 2 ढलान, ढाल 3 अवधान, भूगर्भ, 4 अवसाद, निचला भाग—जलनिधिरिति ... निम्नोन्नताभि:—मा० ९।१०। सम०—उन्नत (वि०) ऊँचा नीचा, अवनत उन्नत, ऊबड़खाबड़,—गतम् निम्नस्थान,—गा नदी, पहाड़ी नदी—रघु० ८।८।

निम्ब: [निम्ब्+अच्] नीम का पेड़, आम्रं छित्त्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत्तु य:, यश्चैनं पयसा सिंचेन्नैवास्य मधुरो भवेत्—रामा०।

निम्लोच: [नि+म्लुच्+अच्] सूर्यास्त।

नियत (भू०क०कृ०) [नि+यम्+क्त] 1 दमन किया हुआ, नियंत्रित 2. अभिभूत, नियंत्रण में किया हुआ, स्वस्थ, स्वशासित 3 संयमी, मिताहारी 4 सावधान 5 जमा हुआ, स्थायी, अनवरत, स्थिर 6 अवश्यंभावी, निश्चित, अचूक 7 अनिवार्य 8 ध्रुव, निश्चित 9 विचारणीय विषय (प्रसंगानुकूल हो चाहे असंबद्ध) दे० 'तुल्ययोगिता', —तम् (अव्य०) 1 हमेशा, लगातार 2 निश्चयात्मक रूप से, अवश्य, अनिवार्यत:, निश्चय ही।

नियति: (स्त्री०) [नि+यम्+क्तिन्] 1. नियंत्रण, प्रतिबन्ध 2. भाग्य, प्रारब्ध, भवितव्यता, किस्मत (बुरी हो या अच्छी हो) नियतिबलात्—दश०, नियतेर्नियोगात्—शि० ४।३४, कि० २।१२, ४।२१ 3 धार्मिक कर्तव्य 4 आत्म नियंत्रण, आत्म संयम।

नियंतृ (पुं०) [नि+यम्+तृच्] 1. सारथि, चालक शि० १२।२४ 2. राज्यपाल, शासक, स्वामी, विनियंता—रघु० १।१७, १५।५१ 3. दण्ड देने वाला, सजा देने वाला।

नियंत्रणम्,—णा [नि+यंत्र+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. रोक, आरक्षण, प्रतिबंध—अनियन्त्रणानुयोगो नाम तपस्विजन:—श० १ 2 प्रतिबंध लगाना, सीमित करना (किसी विशेष अर्थ में) अनेकार्थस्य शब्दस्यैकार्थनियंत्रणम्—सा० द० २ 3. निर्देशन, शासन 4. परिभाषा बनाना।

नियंत्रित (भू०क०कृ०) [नि+यंत्र्+क्त] 1. दमन किया हुआ, रोका हुआ 2. प्रतिबद्ध, सीमित (किसी विशेष अर्थ में, शब्द के रूप में)।

नियम: [नि+यम्+अप्] 1. नियंत्रण, रोक 2. दबाना, वशीभूत करना 3. सीमित करना, रोक लगाना

4. निग्रह, निरोध—मनु० ८।१२२ 5. सीमाबंधन, हदबंदी 6 नियम या विधि कानून, प्रचलन—नायं एकान्ततो नियमः—शारी० 7. निश्चितता —रत्न० १।२० 8. निश्चितता, निश्चय 9. संविदा, प्रतिज्ञा, व्रत, वादा 10. आवश्यकता, अनिवार्यता, 11. कोई ऐच्छिक या स्वेच्छा से गृहीत धार्मिक अनुष्ठान (बाह्य अवस्थाओं पर निर्भर) —रघु० १।९४, (दे० मल्लि०, शि० १३।२३ तथा कि० ५।४२ पर) 12. कोई छोटा अनुष्ठान या छोटा व्रत, विहित कर्तव्य जो यम की भांति अनिवार्य न हो —शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहः व्रतमौनोपवासं च स्नानं च नियमा दश —अत्रि 13. तपस्या, भक्ति, धार्मिक साधना —नियमविघ्नकारिणी श० १, रघु० १५।७४ 14 (मीमां० में) इस प्रकार का नियम या विधि जिसमें उस बात का विधान किया जाता है, जो, यदि यह नियम न होता तो ऐच्छिक होती—विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति 15. (योग० में) मन का निग्रह, योग में समाधि के आठ मुख्य अंगों में दूसरा 16 (अल० में) कविसमय, जैसा कि वसन्त ऋतु में कोयल का वर्णन, वर्षा ऋतु में मोरों का वर्णन, नियमेन नियम पूर्वक, अनिवार्यतः । सम० —निष्ठा विहित संस्कारों का दृढ़ता पूर्वक पालन, —पत्रम् लिखित संविदा पत्र, —स्थितिः (स्त्री०) धार्मिक कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन, साधना ।

नियमनम् [नि+यम्+ल्युट्] 1 अवरोध करना, शासन में रखना, नियन्त्रण करना, दमन करना—नियमनादसतां च नराधिप —रघु० ९।६ 2 प्रतिबन्ध, सीमानिर्धारण 3 दीनता, 4 विधि स्थिर नियम ।

नियमवती [नियम+मतुप्+ङीप्] स्त्री जिसे मासिक धर्म नियमित रूप से होता हो ।

नियमित (भू० क० कृ०) [नि+यम्+णिच्+क्त] 1 अवरुद्ध, दमन किया नियन्त्रित 2 शासित, निर्देशित 3 विनियमित, विहित, निर्धारित 4 स्थिर, संकेतित प्रतिज्ञात ।

नियामः [नि+यम्+घञ्] 1. नियन्त्रण 2. धार्मिक व्रत

नियामक (वि०) (स्त्री —मिका) [नि+यम्+णिच्+ण्वुल्] 1 नियंत्रण करने वाला, अवरुद्ध करने वाला 2 दमन करने वाला, पछाड़ने वाला 3 सीमित करने वाला, प्रतिबन्ध लगाने वाला, व्याख्यापूर्वक परिभाषा बनाने वाला 4 निर्देश करने वाला, शासन करने वाला, —कः 1 स्वामी, शासक 2 सारथि 3 नाविक, मल्लाह 4 कर्णधार, जलयानचालक ।

नियुक्त (भू० क० कृ०) [नि+युज्+क्त] 1 निदेशित, आज्ञप्त, अनुदिष्ट, आदिष्ट 2. अधिकृत, निर्धारित 3. विवादास्पद विषय को सुलझाने के लिए अनुज्ञात 4. संलग्न 5 उपबद्ध 6. निर्णीत ।

नियुक्तिः (स्त्री०) [नि+युज्+क्तिन्] 1 निदेशाज्ञा, आदेश, हुक्म 2 नियोजन, आयोग, पद, कार्यभार ।

नियुतम् [नि+यु+क्त] 1. दस लाख 2 सौ हजार 3 दस हजार करोड़ या १०० अयुत ।

नियुद्धम् [नि+युध्+क्त] पैदल युद्ध करना, समाघात युद्ध, व्यक्तिगत लड़ाई ।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1. किसी काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग 2. निदेशाज्ञा, आदेश, हुक्म, निदेश, आयोग, कार्यभार, निर्धारित कर्तव्य, किसी की देख रेख में आयुक्त कार्य— [illegible] माधव श्रीनियोगे —मालवि० ५।८, मनोनियोगक्रिययोत्सुकं मे —रघु० ५।११ अथवा नियोगः खल्वीदृशो मन्दभाग्यस्य —उत्तर० १, आज्ञापयतु को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति श० १, त्वमपि स्वनियोगमशून्यं कुरु (अपना काम करो—अपने निर्धारित कार्य में लगो) (नौकरों को दूर हट जाने के लिए कहने की एक शिष्ट रीति जिसका प्राय नाटकों में अधिक प्रचलन है) 3 किसी के साथ संलग्न करना 4 आवश्यकता, अनिवार्यता [illegible] नियोगेन स विकल्पपराङ्मुखः रघु० १९।४९ 5 प्रयत्न चेष्टा 6, निश्चितता, निश्चयन 7 प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निस्संतान विधवा को अपने देवर या और किसी निकट संबंधी के द्वारा सन्तान पैदा कराने की अनुमति है, इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'क्षेत्रज' कहलाता है, तु० मनु० ९।५९—देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियुक्तया, प्रजेप्सिताधिगन्तव्या संतानस्य परिक्षये—दे० ९०, ६५ भी । (व्यास ने इसी रीति से विचित्रवीर्य की विधवाओं से पांडु और धृतराष्ट्र को पैदा किया) ।

नियोगिन् (पुं०) [नियोग+इनि] अधिकारी, आश्रित, मंत्री, कार्यनिर्वाहक ।

नियोजकः [नि+युज्+ण्वुल्] प्रभु, स्वामी ।

नियोजनम् [नि+युज्+ल्युट्] 1 जकड़ना, संलग्न करना 2. आदेश देना, निदेश करना 3. उकसाना प्रेरित करना 4. नियत करना ।

नियोज्यः [नि+युज्+ण्यत्] किसी कर्तव्य का कार्यभार सम्भालने वाला, कार्यनिर्वाहक, अधिकारी, सेवक, नौकर —सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः —श० ७।४ ।

नियोद्धृ (पुं०) [नि+युध्+तृच्] 1 योद्धा, पहलवान 2. मुर्गा ।

निर् (अव्य०) [नृ+क्विप्, ह्रस्वः] ('से मुक्त' 'बिना', 'से रहित' 'से दूर' 'से बाहर' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए अघोष व्यञ्जनों और स्वरों से पूर्व 'निस्'

का स्थानापन्न; संज्ञा से पूर्व 'अ' या 'अन्' लगा कर भी इस अर्थ को प्राय: व्यक्त किया जा सकता है, दे० नी० दिए गये समस्त शब्द, दे० 'निस्' और तु० 'अ' से)। सम०—अंश (वि०) 1. पूर्ण, समस्त 2. पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति में भाग लेने का अनधिकारी—अक्ष (ज्यो० में) अक्षांश से मुक्त स्थान—अग्नि (वि०) जिसने अग्निहोत्र करना त्याग दिया हो—अंकुश (वि०) 'जिस पर किसी प्रकार का दबाव न हो', कोई रोक टोक न हो, नियन्त्रण से मुक्त, उद्दंड, स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी, उच्छृंखल—निरंकुश इव द्विप—भाग०, कामो निकामनिरंकुश:—गीत० ७, निरंकुशा: कवय: सिद्धा०, भर्तृ० ३।१०६, महावी० ३।३९,—अंग (वि०) 1 अंगहीन 2 साधनहीन, अजिन (वि०) त्वचारहित,—अंजन (वि०) 1. 'बिना अंजन का' 2 निष्कलंक, निर्दोष 3. मिथ्यात्व से रहित 4. सीधा-सादा, जिसमें बनावट न हो (न:) शिव का विशेषण (ना) पूर्णिमा,—अतिशय (वि०) जिससे बढ़कर दूसरा न हो, अद्वितीय,—अत्यय (वि०) 1. निर्भय, निरापद, सुरक्षित—रघु० १७।५३ 2. निरपराध, निष्कलंक, निर्दोष, नि:स्पृह—कि० १।१२, १३।६१, पूर्णत: सफल,—अध्व (वि०) जो रास्ता भूल गया हो, —अनुक्रोश (वि०) निर्मम, निर्दय कठोरहृदय, (श:) निर्दयता, निष्ठुरता—अनुग (वि०) जिसका कोई अनुयायी न हो,—अनुनासिक (वि०) अनुनासिक से भिन्न, जिसके उच्चारण में नाक का योग न हो, —अनुरोध (वि०) 1. अननुकूल, अमैत्रीपूर्ण 2. निष्करुण, सद्भावशून्य—मा १०—अंतर (वि०) 1 सदा बना रहने वाला, लगातार होने वाला, अव्यवहित, अविच्छिन्न—निरंतराविपटलै:—भामि० १।१६, निरंतरास्वंतरवातवृष्टिषु—कु० ५।२५ 2. अवकाशरहित, निरंतराल, सटा हुआ—मृद्ध निरन्तरपयोधरया भवैव मृच्छ० ५।१५, हृदय निरन्तरबृहत्कठिनस्तनमंडलावरणमप्यभिदन्—शि० ९।६६ 3. [illegible], सघन—शि० १६।७६ 4. मोटा, स्थूल 5. विश्वसनीय, (मित्र की भांति) ईमानदार, सच्चा 6. सदा आंखों के सामने रहने वाला 7. अभिन्न, समान, सदृश (अव्य०—रम्) 1. निर्बाध, लगातार, सतत, अनवरत 2 बिना किसी मध्यवर्ती अन्तराल के 3. पक्की तरह से, कसकर, दृढ़तापूर्वक—(परिष्वजस्व) कान्तैरिव मम निरन्तरमंगै:—वेणी० ३।२७, परिष्वजेते शयने निरंतरम्—ऋतु० २।११ 4 तुरन्त, °अभ्यास: अनवरत अध्ययन, अपरिश्रम अभ्यास,—अन्तराल (वि०) जिसके बीच में स्थान न हो, सटा हुआ 2. तंग, भीड़ा, —अन्वय (वि०) 1 निस्संतान, संतानरहित 2. असंबद्ध, संबंधरहित (वाक्य में शब्द की भांति) 3.

अप्रासंगिक 4. असंगत, व्यक्तिरहित, अव्यवस्थित 5. अदृश्य, आंख ओझल—मनु० ८।३३२ 6. बिना नौकर-चाकरों के, अनुचरवर्ग जिसके साथ न हो—दे० 'अन्वय',—अपत्रप (वि०) 1. निर्लज्ज, ढीठ 2 साहसी, —अपराध (वि०) निर्दोष, निरीह, दोषरहित, कलंकरहित (-ध:) भोलापन,—अपाय (वि०) 1. दुष्टता से रहित 2 क्षयरहित, अनश्वर 3. अमोघ, अचूक, —अपेक्ष (वि०) 1. जो किसी दूसरे पर निर्भर न हो, स्वतन्त्र, किसी और की अपेक्षा न रखने वाला (अधि० के साथ) न्यायनिर्णीतसारत्वान्निरपेक्षमिवागमे—कि० ११।३९ 2. अवहेलना करने वाला ध्यान न देने वाला 3 तृष्णा से मुक्त, निर्भय—हि० १।८३ 4. लापरवाह, असावधान, उदासीन 5. सांसारिक विषयवासनाओं से विरक्त—मनु० ६।४१ 6 नि:स्पृह, दूसरे से किसी पुरस्कार की इच्छा न रखने वाला —भामि० १।५ 7. निष्प्रयोजन, (क्षा) उदासीनता, अवहेलना,—अभिभव (वि०) जो हीनता या तिरस्कार का पात्र न हो,—अभिमान (वि०) 1. जो अहंमन्यता से मुक्त हो, घमंड या अहंकार रहित 2 स्वाभिमानशून्य,—अभिलाष (वि०) जिसे किसी वस्तु की चाह न हो, उदासीन—स्वसुखनिरभिलाष: खिद्यसे लोकहेतो:—श० ५।५,—अभ्र (वि०) मेघरहित, —अमर्ष (वि०) 1 क्रोधशून्य, धैर्यवान् 2 निरीह, —अम्बु (वि०) 1 जल से परहेज करने वाला 2. निर्जल, जलरहित,—अर्गल (वि०) अर्गलारहित, प्रतिबन्धरहित, निर्बाध, अनियंत्रित, निर्विघ्न, पूर्णत: मुक्त—मालती० ५ (अव्य०—लम्) मुक्त रूप से, —अर्थ (वि०) 1 निर्धन, गरीब, दरिद्र 2 अर्थहीन, (शब्द या वाक्य) निरर्थक 3 अनर्थक 4. व्यर्थ, बेकार, निष्प्रयोजन—अर्थक (वि०) 1 बेकार व्यर्थ, अलाभकर 2 अर्थहीन, असंगत, जिसका कोई तर्कयुक्त अर्थ न हो (-कम्) पूरक—निरर्थकं तु हीत्यादि पूरणैकप्रयोजनम्—चन्द्रा० २।६,—अवकाश (वि०) 1. मुक्त स्थान से रहित 2. जिसके पास फुर्सत का समय न हो,—अवग्रह (वि०) 1 नियन्त्रण से मुक्त, अनियन्त्रित, अनवरुद्ध, नियन्त्रणरहित, दुर्निवार 2. मुक्त, स्वतन्त्र 3 स्वेच्छाचारी, दुराग्रही,—अवद्य (वि०) निष्कलंक, निर्दोष, अकलंकनीय, जिसमें कोई आपत्ति न हो सके—हृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव—दश० १, —अवधि (वि०) जिसका कोई अन्त न हो, असीम —उत्तर० ३।४८,—अवयव (वि०) 1 अवयवरहित 2. अविभाज्य 3. अंगरहित,—अवलंब (वि०) 1. असहाय, निराश्रय—श० ६ 2 जो सहारा न दे —अवशेष (वि०) पूर्ण, पूरा, समस्त, —अवशेषेण (अव्य०) पूरी तरह से, सर्वथा, पूर्णरूप से, बिल्कुल

—अशन (वि०) भोजन से परहेज करने वाला (—नम्) उपवास,—अस्त्र (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निहत्था,—अस्थि (वि०) बिना हड्डी का,—अहंकार, —अहंकृति (वि०) घमंडरहित, अभिमानशून्य, विनीत नम्र,—अहम् (वि०) अहंमन्यता से मुक्त,—आकांक्ष (वि०) 1. जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से मुक्त 2. (वाक्य या शब्द के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो,—आकार (वि०) 1. आकृतिशून्य, आकाररहित, बिना रूप का 2. कुरूप, विरूप 3. छद्मवेषी 4. विनम्र, सुशील (रः) 1. परमात्मा, सर्वशक्तिमान् 2. शिव की उपाधि 3. विष्णु का विशेषण,—आकुल (वि०) 1. जो घबराया न हो, अनुद्विग्न, जो हतबुद्धि न हुआ हो 2. स्थिर, शांत 3 स्वच्छ, निर्मल,

—आकृति (वि०) 1. आकाररहित, रूपरहित 2 विरूप (तिः) 1. वह ब्रह्मचारी जिसने विधिपूर्वक वेदाध्ययन न किया हो 2 विशेषकर वह ब्राह्मण जिसने अपने वर्ण के लिए निर्धारित वेदाध्ययन के कर्तव्य को पूरा न किया हो,—आक्रोश (वि०) जिस पर दोषारोपण न किया गया हो, जिसका तिरस्कार न हुआ हो,—आगस् (वि०) निर्दोष, निरीह, निष्पाप —रघु० ८।४८, आचार (वि०) आचारहीन, धर्मभ्रष्ट,—आडंबर (वि०) बिना ढोंग का, ढोंगरहित, —आतंक (वि०) 1 भय से मुक्त—रघु० १।६३, 2 नीरोग, सुखद, स्वस्थ,—आतप (वि०) जिसमें धूप या गर्मी न हो, छायादार, (पा) रात, —आदर (वि०) अपमानजनक, -आधार (वि०) 1. आधाररहित 2. निराश्रय, आश्रयहीन (आलं० भी) निराधारो हा रोदिमि कथय केषामिह पुरः—गंगा० ४।३९ —आधि (वि०) निर्भय, चिन्तामुक्त,—आपद् (वि०) आपत्तिरहित, संकटमुक्त, —आबाध (वि०) असन्तापित, उत्पीडनरहित, बाधारहित, बाधामुक्त, 2. निर्बाध 3. जो बाधक न हो, जो पीडा न पहुँचाता हो 4. (विधि में) (मुकदमा या अभियोग का कारण आदि) मूर्खतापूर्वक प्रवादी—उदा० अस्मद्गृहप्रदीपप्रकाशेनायं स्वगृहे व्यवहरति-मिता०, —आमय (वि०) 1. रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग, भला-चंगा 2. निष्कलंक, विशुद्ध 3 निष्कपट 4. दोषों से मुक्त, निर्दोष 5. भरा हुआ, संपूर्ण 6. अमोघ (यः,-यम्) नीरोगता, स्वास्थ्य, कल्याण, मंगल, आनन्द (यः) 1. जंगली बकरी 2 सूअर, —आमिष (वि०) 1. बिना मांस का, मांस न खाने वाला 2. वासनारहित, लालच से मुक्त 3. पारिश्रमिक आदि न पाने वाला,—आय (वि०) जिससे कोई आमदनी या राजस्व प्राप्त न हो, लाभरहित,

—आयास (वि०) जिसमें परिश्रम न लगे, सुकर, आसान, —आयुध (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था,—आलंब (वि०) जिसे कोई सहारा न हो, (आलं० भी) महावी० ४।५१ 2. जो दूसरे पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3. जो अपना आश्रय आप ही हो, असहाय, अकेला—निरालंबो लंबोदरजननि कं यामि शरणम्—जग०,—आलोक (वि०) 1. इधर उधर न देखने वाला 2. दृष्टिहीन 3. प्रकाशरहित, अंधकारयुक्त भा० ५।३०,—आश (वि०) आशाशून्य, निराश, नाउम्मीद—मनो बभूवेंदुमती-निराशम्—रघु० ६।२,—आशंक (वि०) निर्भय, —आशिस् (वि०) 1 आशीर्वाद या वरदान से वञ्चित 2. निरिच्छ, इच्छारहित, निराश, उदासीन —अमच्छरण्यस्य निराशिषः सतः—कु० ५।७६,

—आश्रय (वि०) 1. आश्रयहीन, जिसे कोई सहारा न हो, आश्रयरहित 2. मित्रहीन, दरिद्र, अकेला, शरणरहित — निराश्रयाधुना वत्सलता ,—आस्वाद (वि०) स्वादरहित, फीका, बेमजा,—आहार (वि०) जिसे भोजन न मिले, उपवास करने वाला, भोजन से परहेज करने वाला (—रः) उपवास करना ,—इच्छ (वि०) बिना इच्छा के, चाहरहित, उदासीन,—इन्द्रिय (वि०) 1 जिसका कोई अंग नष्ट हो गया हो या काम न दे 2. विकलांग, अपांग 3. दुर्बल, अशक्त, कमजोर 4. ज्ञान के साधन से हीन, जिसकी कोई इन्द्रिय बेकाम हो गई हो—मनु० ९।१८,—इंधन (वि०) इंधनरहित,—ईति ऋतुओं के संकट (अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि) से मुक्त—रघु० १।६३, दे० इति,—ईश्वर (वि०) ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक,—ईशम् हल का फाल,—ईह (वि०) 1. तृष्णा से रहित, उदासीन,—रघु० १०।२१ 2. उद्यमहीन,—उच्छ्वास (वि०) 1. जो श्वास न लेता हो, श्वासरहित (—सः) श्वास-क्रिया का अभाव,—उत्तर (वि०) 1 उत्तर रहित, बिना उत्तर के 2. जो कुछ उत्तर न दे सके, चुप 3. जिससे बड़ा कोई और न हो,—उत्सव (वि०) बिना उत्सव का—विरतं गेयमृतुर्निरुत्सवः —रघु० ८।६६,—उत्साह (वि०) जिसमें उत्साह न हो, उत्साह रहित, स्फूर्ति शून्य (हः) उत्साह का अभाव, आलस्य—उत्सुक (वि०) 1. उदासीन 2 शान्त, चुपचाप,—उदक (वि०) जलरहित, —उद्यम, —उद्योग (वि०) निश्चेष्ट, निकम्मा, आलसी, सुस्त,—उद्वेग (वि०) उत्तेजना रहित, जिसमें घबराहट न हो, गम्भीर, शांत, —उपक्रम (वि०) जिसका आरम्भ न हुआ हो,—उपद्रव (वि०) 1. संकट या कष्ट से मुक्त, जिसमें या जहाँ कोई भय या उत्पात न हो, भाग्यशाली, सुखद, निर्बाध,

सन्ताप-विपत्तियों के आक्रमण से सुरक्षित 2. राष्ट्रीय दुःखों या अत्याचारों से मुक्त 3 जो किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचावे 4. सुरक्षित, शांतिमय, —उपधि (वि०) निष्कपट, ईमानदार – उत्तर० २।२, —उपपत्ति (वि०) अनुपयुक्त, —उपपद (वि०) 1. जिसकी कोई उपाधि या पद न हो – मुद्रा० ३ 2. गौण शब्द से असंबद्ध, —उपप्लव (वि०) बाधारहित, जहाँ कोई रुकावट या संकट न हो, जहाँ किसी प्रकार की हानि न हो—निरुपप्लवानि न कर्माणि संवृत्तानि – श० ३, —उपम (वि०) अनुपम, बेजोड़, अतुलनीय,—उपसर्ग (वि०) जहाँ उत्पात न होते हों, उपद्रव से रहित, —उपाख्य (वि०) 1 अवास्तविक, मिथ्या, (वन्ध्यापुत्र की भाँति) जिसका कोई अस्तित्व न हो 2. अभौतिक 3 नीरूप,—उपाय (वि०) उपायरहित, असहाय,—उपेक्ष (वि०) 1 जालसाजी या चालाकी से मुक्त 2 जिसकी उपेक्षा न की गई हो,—उष्मन् (वि०) तापशून्य, शीतल —गंध (वि०) गंधशून्य, गंधरहित, जिसमें गंध न हो, बिना गंध के —निर्गंधा इव किंशुकाः, °पुष्पिः (स्त्री०) सेमर का पेड़,—गर्व (वि०) अभिमानरहित,—गवाक्ष (वि०) जहाँ कोई खिड़की न हो,—गुण (वि०) 1 (धनुष की भाँति) बिना डोरी का 2. सद्गुणशून्य 3. गुणरहित, बुरा, निकम्मा—निर्गुणः शोभते नैव विपुलाडंबरोऽपि ना – भामि० १।११५ 4. जिसका कोई विशेषण न हो 5 जिसकी कोई उपाधि न हो (णः), परमात्मा,—गृह (वि०) जिसका कोई घर न हो, घररहित – सुगृही निर्गृही कृता – पंच० १।३९०, —गौरव (वि०) 1. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, प्रतिष्ठारहित,—ग्रंथ (वि०) 1. बंधनमुक्त, बाधारहित 2. गरीब, संपत्तिरहित, भिखारी 3. अकेला, असहाय (थः) 1. जड़, मूर्ख 2. जुआरी 3. सन्त महात्मा जो सब प्रकार की सांसारिक विषय वासनाओं को त्याग कर नग्न होकर विचरता है, और विरक्त संन्यासी की भाँति रहता है,—ग्रंथक (वि०) 1. निपुण, विशेषज्ञ 2. असहाय, अकेला 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4. निष्फल (कः) धार्मिक साधु, क्षपणक 2. दिगंबर साधु 3. जुआरी,—ग्रंथिकः नंगा रहने वाला साधु, दिगंबर संप्रदाय का जैन-साधु, क्षपणक,—घटम् 1. वह बाजार जहाँ दुकानदारों से किसी प्रकार का कर न लिया जाता हो 2. बड़ा बाजार जहाँ बहुत भीड़ भड़क्का हो,—घृण (वि०) 1. क्रूर, निष्ठुर, निर्दय 2. निर्लज्ज, बेहाया,—जन (वि०) जहाँ कोई न रहता हो, जो आबाद न हो, जहाँ कोई आता-जाता न हो, एकान्त, सुनसान (नम्) मरुभूमि, एकांत सुनसान जगह,—जर (वि०) 1. जो कभी बूढ़ा न हो, सदा युवा रहने वाला 2 अनश्वर, जिसकी कभी मृत्यु न हो, (रः) देवता, सुर (कर्तृ० ब० व०—निर्जराः - निर्जरसः) (रम्) अमृत, सुधा,—जल (वि०) 1. जलरहित, मरुभूमि, जलशून्य 2 जिसमें पानी न मिला हो (लः) ऊसर, बंजर, वीरान उजाड़, —जिह्वः मेंढक, —जीव (वि०) 1. प्राणरहित 2 मृतक, —ज्वर (वि०) जिसे बुखार न हो, स्वस्थ, —दंशः सूअर, —दय (वि०) 1 निर्दय, क्रूर, निर्मम बेरहम, करुणारहित 2 उग्र 3 घनिष्ठ दृढ़, मजबूत, अत्यधिक, प्रचंड– मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदंतदंशम् —गीत० १०, निर्दयरतिश्रमालसा – रघु० १९।३२, निर्दयाश्लेषहेतोः मेघ० १०६, —दयम् (अव्य०) 1 निष्ठुरता के साथ, क्रूरतापूर्वक 2 प्रचंडता के साथ, कठोरतापूर्वक - रघु० ११।८४, —दश (वि०) दस से अधिक दिनों का,—दशन (वि०) बिना दाँतों का, —दुःख (वि०) 1 पीड़ा से मुक्त, पीडारहित 2. जो पीड़ा न दे, —दोष (वि०) 1 निरपराध दोषरहित—न निर्दोषं न निर्गुणम् 2 अपराधशून्य, निरीह, —द्रव्य (वि०) संपत्तिरहित, गरीब, —द्रोह (वि०) जो शत्रु न हो, मित्रवत्, कृपापूर्ण, जो द्वेषपूर्ण न हो,—द्वन्द्व (वि०) जो सुख-दुःख के द्वंद्वों से रहित हो, हर्ष और विषाद से परे हो,—निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् —भग० २।४५ 2 जो औरों पर आश्रित न हो, स्वतन्त्र 3. ईर्ष्या द्वेष से मुक्त हो 4 जो दो से परे हो 5 जिसमें मुकाबला न हो, जिसमें किसी प्रकार का झगड़ा न हो 6 जो दो सिद्धान्तों को न मानता हो,—धन (वि०) संपत्तिहीन, गरीब, दरिद्र—अभिजनवंशोऽपि निर्धनः परिभूयते—काव्य० ८२, (नः) बूढ़ा बैल,—धर्म (वि०) धर्महीन, अधर्मी,—धूम (वि०) जहाँ धूआँ न हो—नर (वि०) मनुष्यों द्वारा परित्यक्त, उजाड़,—नाथ (वि०) जिसका कोई अभिभावक या स्वामी न हो,—निद्र (वि०) जिसे नींद न आई हो, जागरूक,—निमित्त (वि०) अकारण बिना कारण का,—निमेष (वि०) बिना पलक झपकाये टकटकी लगाने वाला,—बंधु (वि०) बंधुरहित, मित्रहीन,—बल (वि०) शक्तिरहित, कमजोर, बलहीन,—बाध (वि०) 1. बाधारहित 2. जहाँ प्रायः आना-जाना न हो, एकांत, निर्जन 3. निरुपद्रव,—बुद्धि (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, बेवकूफ,—बुस,—बुष (वि०) जिसकी भूसी न निकाली गई हो, जिसमें से भूसा निकाल दिया गया है,—भय (वि०) 1. निडर, निधड़क 2 भय से मुक्त, सुरक्षित निरापद्—मनु० ९।२५५,—भर (वि०) अत्यधिक, तीव्र, उग्र, बहुत मजबूत—बपाभर निर्भर स्मरशर—गीत० १२,

समस ४२ 2 उत्सुक 3 दृढ़, प्रगाढ़ (आलिंगन आदि) कुचकुम्भनिर्भरपरीरम्भामृतं वाञ्छति गीत० ५, परिरभ्य निर्भरम् गीत० १ 4 गाढ़ गहरा (नींद आदि) 5, (समास के अन्त में) भरा हुआ आनन्द०, गर्व० आदि (रम्) अधिकता (अव्य०—रम्) 1 अत्यधिक अत्यन्त बहुत 2 गाढ़ चैन से—भाग्य (वि०) भाग्यहीन दुर्भाग्यपूर्ण भृति (वि०) बेगार में काम करने वाला मक्षिक (वि०) मक्खियों से मुक्त निर्बाध निर्जन एकान्त (अ०—कम्) बिना मक्खियों के अर्थात् एकान्त निर्जन कृतं भवतेदानीं निर्मक्षिकम् श० २।६ मत्सर (वि०) ईर्ष्यारहित ईर्ष्या न करने वाला मत्स्य (वि०) जहाँ मछलियाँ न हों मद (वि०, 1 जो नशे में न हो मदोद्धत शान्त 2 अभिमान रहित, विनीत 3 (हाथी की भांति) मदजल से रहित मनुज,-मनुष्य (वि०) मनुष्यों से रहित गैर-आबाद मनुष्यों द्वारा परित्यक्त मम (वि०) सांसारिक संसार के सब प्रकार के संबंधों से मुक्त जिसने सब सांसारिक वासना को तिलांजलि दे दी है [illegible] निर्मम (संसार) रघु० १२।८० भग० २।७१ ३।३० 2 उदासीन (अधि० के साथ) निर्मम निर्ममाऽर्थेषु [illegible] प्राप्यार्थेषु निर्मम —महा० मर्याद (वि०) 1 सीमा रहित असीमित 2 औचित्य की सीमा का उल्लंघन करने वाला अनियंत्रित उद्दंड पापमय, अन्यायी [illegible] कथा० १०३ मल (वि०) 1 मैल और गन्दगी से मुक्त, स्वच्छ शुद्ध अकलंक निष्कलंक (आल० भी) [illegible] जल भर्तृ० १।६२ 3 निष्पाप [illegible] मनु० ८।६१ (लम्) 1 कलाई 2 देवता के चढ़ावे का अवशेष उपल स्फटिक मशक (वि०) मच्छर से मुक्त, मांस (वि०) मांसहीन मानुष (वि०) [illegible] मान (वि०) मान रहित [illegible] मूल 1 [illegible] 2 [illegible] (कम्) [illegible] मूल, मूल 1 (पेड़ आदि) बिना जड़ का 2 निरा[illegible] 3 उन्मूलित मेघ (वि०) निर्मेघ बादलों से रहित —मेध (वि०) जिसमें समझ न हो निर्बुद्धि जड़ मूर्ख, मन्दबुद्धि मोह (वि०) माया या भ्रम से मुक्त, यत्न (वि०) निश्चेष्ट उद्यमहीन यन्त्रण (वि०) 1 जहाँ कोई नियन्त्रण न हो निर्बाध नियन्त्रणरहित अनियन्त्रित 2 उद्दंड स्वेच्छाचारी स्वतन्त्र (णम्) अनियन्त्रणता, स्वतन्त्रता यशस्क (वि०) जिसकी कीर्ति न हो, अकीर्तिकर, लज्जा-जनक यूथ (वि०) जो अपने दल से बिछुड़ गया हो (हाथी की भांति) पथभ्रष्ट [illegible] नीरक्त (वि०) [illegible] रज रजस्क (वि०) (नीरज नीरजस्क) 1 धूल से मुक्त 2 [illegible] अंधकार शून्य रजस (वि०) (नीरजस [illegible]) नीरज [illegible] न होने वाला [illegible] समस्त राग [illegible] रंध्र (वि०) (नीरंध्र) 1 जिसमें छिद्र न हो अत्यन्त सटा हुआ समस्त साथ लगा हुआ उत्तर० ७।३ 2 [illegible] सघन 3 मोटा स्थूल रव (वि०) (नीरव) शब्द रहित [illegible] रघु० [illegible] रस (वि०) (नीरस) 1 स्वादरहित बेमजा स्वादहीन 2 (आल०) फीका काव्य सौन्दर्य से विहीन—नीरसानां पद्यानां सा० द० [illegible] 3 सूखा [illegible] 4 व्यर्थ बेकार, निष्फल [illegible] विक्रम० [illegible] 5 [illegible] 6 क्रूर निष्ठुर (सः) अनार, रसन (वि०) (नीरसन) बिना मेखला या करधनी के (रसना) [illegible] ५।[illegible], रुच (वि०) (नीरुच) कान्तिहीन म्लान धूमिल रुज, रुज (वि०) (नीरुज, नीरुज) रोग से मुक्त स्वस्थ अरोगी नीरुजस्य किमौषधैः—हि० १ रूप (वि०) (न रूप) रूपरहित निराकार—रोग (वि०) (नीरोग) रोग या बीमारी से मुक्त स्वस्थ अरोगी लक्षण (वि०) 1 अशुभ चिह्नों से युक्त अमंगलकारी (लक्षणम्) [illegible] 2 जिसका प्रसिद्ध न हो 3 अप्रामाणिक निरर्थक 4 कुरूप —लज्ज (वि०) बेशरम ढीठ लिंग (वि०) जिसमें कोई पारिभाषिक चिह्न न हो लेप (वि०) 1 जो लिपा हुआ न हो जिस पर [illegible] की गई हो—मनु० ५।[illegible] 2 निष्कलंक निष्पाप लोभ (वि०) [illegible] से मुक्त [illegible] —लोमन् (वि०) जिसके बाल न हों [illegible] वंश (वि०) [illegible] वन (वि०) [illegible] 2 [illegible] वसु (वि०) धनहीन गरीब वात (वि०) [illegible] मुक्त [illegible] रघु० [illegible]।६६ [illegible] प्रकार से मुक्त स्थान —वानर (वि०) [illegible] वायस (वि०) कौओं से [illegible] विकल्प,-विकल्पक, (वि०) 1 [illegible] 2 जिसमें दृढ़ संकल्प या निश्चय का अभाव हो 3 पारस्परिक संबंध से विहीन 4 प्रतिबंधयुक्त ५ [illegible] मन या आत्मा तथा ज्ञेय के विवेक से रहित एक प्रकार का प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें किसी विषय का केवल इसी रूप में ज्ञान होता है कि यह कुछ है, जिस प्रकार कि समाधि की

अवस्था में केवल एक ही अभिन्न तत्त्व (ब्रह्म) पर एकमात्र ध्यान केन्द्रित होता है, और ज्ञाता, ज्ञेय, तथा ज्ञान के विभेद का बोध नहीं रहता यहाँ तक कि आत्मचेतना का भी भास नहीं होता—निर्विकल्पक ज्ञातृज्ञानादिविकल्पभेदलयापेक्ष, नोचेत् चेत प्रविश सहसा निर्विकल्पे समाधौ—भर्तृ० ३।६१, वेणी० १।२३, (अव्य०—ल्पम्) बिना किसी सकोच या हिचक के, —**विकार** (वि०) 1 अपरिवर्तित, अपरिवर्त्य, निश्चल 2 विकार रहित—मालवि० ५।१४ 3 उदासीन स्वार्थहीन—ऋतु० २।२८—**विकाश** (वि०) जो खिला न हो, अविकसित,—**विघ्न** (वि०) बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप के, जिसमें कोई बाधा न हो, विघ्न-बाधाओं से मुक्त (घ्नम्) विघ्नों का अभाव,—**विचार** (वि०) अविमर्शी, विचार शून्य, अविवेकी रे रे स्वैरिणि निर्विचारकविते मास्मत्प्रकाशीभव—चन्द्रा० १ 2, (अव्य—रम्) बिना विचारे निस्संकोच **विचिकित्स** (वि०) सन्देह या शंका से मुक्त,—**विचेष्ट** (वि०) गतिहीन, संज्ञाहीन,—**वितर्क** (वि०) जिस पर तर्क या सोच विचार न किया जा सके, **विनोद** (वि०) आमोद प्रमोद से रहित, मनोरञ्जनशून्य—मेघ० ८६,—**विन्ध्या** विन्ध्य पहाड़ियों में बहने वाली एक नदी—मेघ० २८,—**विमर्श** (वि०) विचारशून्य, अविवेकी, सोचविचार न करने वाला, **विवर** (वि०) 1. बिना किसी विवर या मुंह के 2 जिसमें कोई छिद्र या अन्तराल न हो, सटा हुआ, शि० ९।४५,—**विवाद** (वि०) 1 विवाद रहित 2 जिसमें कोई झगड़ा न हो, कोई विरोध न हो, विश्वसम्मत,—**विवेक** (वि०) ना समझ, विवेकशून्य, अदूरदर्शी, मूर्ख,—**विशङ्क** (वि०) निडर, निश्शङ्क, विश्वस्त—मनु० ७।१७६, पंच० १।८५,—**विशेष** (वि०) कोई अन्तर न मानने वाला, बिना भेद-भाव के, किसी प्रकार का भेदभाव न रखने वाला—निर्विशेषा वयं त्वयि—महा०, निर्विशेषो विशेषः—भर्तृ० ३।५०, 'भेद-भावका अभाव ही अन्तर' 2. जहाँ भिन्नता का अभाव हो, समान, तुल्य (प्राय समास में) अभिन्न प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषम्—कु० १।४६, स प्रतिपत्तिनिर्विशेषप्रतिपत्तिरासीत्—रघु० १४।२२ 3. अभेदकारी, भद्र-भद्र (क:) अन्तर का अभाव (निर्विशेषम् और निर्विशेषेण शब्द 'बिना किसी भेद-भाव के', 'समान रूप से' 'बिना किसी अन्तर के' अर्थों को प्रकट करने के लिए क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, स्वगृहनिर्विशेषमत्र स्थीयताम्—हि० १, रघु० ५।६), —**विशेषण** (वि०) बिना किसी विशेषण के,—**विष** (वि०) (साँप आदि) जिसमें जहर न हो—निर्विषा डुण्डुभाः स्मृताः—**विषय** (वि०) 1. अपनी जन्मभूमि या निवास स्थान से निर्वासित किया हुआ—मनो निर्विषयार्थकामया—कु० ५।३८, रघु० ९।२८ 2 जिसे कार्य-क्षेत्र का अभाव हो किन्च एव काव्य प्रविरलविषयं निर्विषयं वा स्यात्—सा० द० १ 3 (मन की भांति) विषय-वासनाओं में अनासक्त **विषाण** (वि०) बिना सींगों का—**विहार** (वि०) जिसके लिए आनन्द का अभाव हो,—**वीज** (बीज) (वि०) 1 बिना बीज का 2 नपुंसक 3 निष्कारण, —**वीर** (वि०) वीर विहीन—निर्वीरमुर्वीतलम्—प्रस० १।३१ 2 कायर **वीरा** वह स्त्री जिसका पति व पुत्र मर गये हों **वीर्य** (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, पुरुषार्थहीन, नपुंसक—निर्वीर्यं गुरुशापभाषितवशात् किं मे तवेवायुधम्—वेणी० ३।३४,—**वृक्ष** (वि०) जहाँ पेड़ न हों,—**वृष** (वि०) जहाँ अच्छे बैल न हों, **वेग** (वि०) निश्चेष्ट, गतिहीन शान्त, वेगरहित, —**वेतन** (वि०) अवैतनिक, बिना वेतन का,—**वेमन** जुलाहे की भरी, ढरकी, **वैर** (वि०) वैरभाव से रहित, स्नेही शान्तिप्रिय (रम्) शत्रुता का अभाव, **व्यञ्जन** (वि०) सीधा सादा, खरा 2 बिना मसाले का (अव्य०—नम्) सीधा-सादे ढंग से, बेलाग, ईमानदारी से, **व्यथ** (वि०) 1 पीड़ा से मुक्त 2 शान्त, स्वस्थ,—**व्यपेक्ष** (वि०) उदासीन, निरपेक्ष रघु० ११।२५, १४।१९, —**व्यलीक** (वि०) जो किसी प्रकार की चोट न पहुँचावे 2 पीड़ारहित 3 प्रसन्न, मन से कार्य करने वाला 4 निष्कपट, सच्चा, पाखण्डहीन,—**व्याघ्र** (वि०) जहाँ चीतों का उत्पात न हो,—**व्याज** (वि०) 1. स्पष्ट का, खरा, ईमानदार, सरल 2. पाखण्डरहित—भर्तृ० २।८२, (अव्य०—जम्) सरलता से, ईमानदारी से, स्पष्ट रूप से, अमरु ७९,—**व्यापार** (वि०) जिसे कोई काम न हो, बेकार, रघु० १५।५६, —**व्रण** (वि०) 1 जिसे चोट न लगी हो, व्रणरहित 2. जिसमें दरार न पड़ी हो,—**व्रत** (वि०) जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा का पालन न करे,—**हिमम्** जाड़े की समाप्ति, हिमशून्य, —**हेति** (वि०) निरस्त्र, जिसके पास कोई हथियार न हो,—**हेतु** (वि०) निष्कारण, बिना किसी तर्क, या कारण के,—**ह्रीक** (वि०) 1. निर्लज्ज, बेहया, ढीठ 2. साहसी, निर्भीक।

निरत (वि०) [नि+रम्+क्त] 1 किसी कार्य में लगा हुआ या रुचि रखने वाला 2 भक्त अनुरक्त, संलग्न, आसक्त—वनवासनिरतः—का० १५७ 3. प्रसन्न, खुश 4. विश्रान्त, विरत।

निरतिः (स्त्री०) [नि+रम्+क्तिन्] दृढ आसक्ति, अनुरक्ति, भक्ति।

निरयः [निर्+इ+अच्] नरक—निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती—भर्तृ० १।६३, मनु० ६।६१।

निरवहालिका (लि) का [निर्+अव+हल् (ड्)+ण्वुल् +टाप्, इत्वम्] बाड़ा, चाहारदीवारी ।

निरस (वि०) [निवृत्तो रसो यस्मात् प्रा० ब०] स्वादरहित, फीका, सूखा —सः 1 रस की कमी, फीकापन, स्वादहीनता 2 रसहीनता, सूखापन 3 उत्कण्ठा का अभाव, भावना की कमी ।

निरसन (वि०) (स्त्री० नी०) [निर्+अस्+ल्युट्] निकालने वाला, हटाने वाला, दूर भगाने वाला, शि० ६।४७ 2 उद्वमन या कै करने वाला —नम् 1 निकालना, प्रक्षेपण, निष्कासन, हटाना 2 मुकरना, वचन विरोध, अस्वीकृति, इंकार 3 कै करना, थूक देना 4 रोकना, दबाना 5 विनाश, वध, उन्मूलन ।

निरस्त (भू० क० कृ०) [निर्+अस्+क्त] 1 दूर डाला हुआ, दूर फेंका हुआ, प्रत्याख्यात, हांका हुआ, निष्कासित, निर्वासित कौलीनभीतेन गृहान्निरस्ता रघु० १४।८४ 2 दूर भगाया गया, नष्ट किया गया भग्नाय तावद्धनुषेन नमो निरस्तम् —रघु० ५।७१ 3 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4 दूर हटाया गया, वञ्चित, शून्य निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते हि० १।६९ 5 (बाण आदि) चलाया हुआ 6 निराकृत 7 उगला हुआ, थूका हुआ 8 शीघ्रतापूर्वक उच्चरित 9 मारा हुआ, विनष्ट 10 दबाया हुआ, रोका हुआ 11 (करार, प्रतिज्ञा आदि) तोड़ा हुआ, —स्तम् 1 अस्वीकृति, इंकार 2 छोड़ देना, द्रुतोच्चारण । सम० —भेद (वि०) सब प्रकार के भेदभाव हटाये हुए, सही, समरूप, —राग (वि०) जिसने समस्त सांसारिक अनुरागों का त्याग कर दिया है ।

निराकः [निर्+अक्+घञ्] 1 पकाना 2 स्वेद, पसीना 3 कुकर्मों का विपाक (निपाक भी) ।

निराकरणम् [निर्+आ+कृ+ल्युट्] 1 प्रत्याख्यान करना, निकाल बाहर करना, रद्द कर देना निराकरणविक्लवा श० ६ 2 निर्वासन 3 अवबाधा, विरोध, प्रतिरोध, अस्वीकृति 4 खण्डन, उत्तर 5 तिरस्कार 6 यज्ञ के मुख्य कर्तव्यों की उपेक्षा 7 विस्मृति ।

निराकरिष्णु (वि०) [निर्+आ+कृ+इष्णुच्] 1 प्रत्याख्यान करने वाला, बाहर निकालने वाला, निकाल बाहर करने वाला —रघु० १४।५७ 2 विघ्न डालने वाला, बाधक 3 ठुकराने वाला, तिरस्कर्ता 4 किसी को किसी वस्तु से वञ्चित करने की चेष्टा करने वाला ।

निराकुल (वि०) [निर्+आ+कुल्+क] 1 भरा हुआ, व्याप्त, ढका हुआ अलिकुलसङ्कुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे गीत० १ 2 दुःखी दे० 'निर्' के अन्तर्गत भी ।

निराकृतिः (स्त्री०) निराक्रिया [निर्+आ+कृ+क्तिन्, निर्+आ+कृ+श+टाप्] 1 प्रत्याख्यान, निष्कासन, अस्वीकरण 2 इंकार 3 अवबाधा, विघ्न, रुकावट, हस्तक्षेप, विरोध, प्रतिरोध ।

निराग (वि०) [निवृत्त रागो यस्मात् प्रा० ब०] उत्कण्ठारहित, जिसमें जोश न रहे ।

निराविष्ट (वि०) [निर्+आ+विश्+क्त] जो ऋण वापिस कर दिया गया हो ।

निरालुः [नि+रम्+आलु] कैथ का वृक्ष ।

निरासः [निर्+अस्+घञ्] 1. प्रक्षेपण, निर्वासन, बाहर फैंक देना, हटाना 2 उगलना 3 निराकरण 4 विरोध ।

निरिङ्गिणी —णी [नि निभृत इङ्गनमिङ्गति प्राप्नोति— निर्+इंग+इनि+ङीप्] पर्दा, घूंघट ।

निरीक्षणम्, **निरीक्षा** [निर्+ईक्ष्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1 दृष्टि 2 देखना, ध्यान देना, नज़र डालना, अवलोकन करना 3 ढूंढना, खोजना 4 विचार, ख्याल — निरीक्षण की बाबत, के विषय 5 आशा, प्रत्याशा 6 ग्रहदशा ।

निरीषं, **षम्** [निर्+ईष्+(ष्)+क] हल का फाल ।

निरुक्त (वि०) [निर्+वच्+क्त] 1 अभिहित, उच्चरित, अभिव्यक्त, परिभाषित 2 उच्चस्वर से बोला हुआ, स्पष्ट, —क्तम् 1 व्याख्या, निर्वचन, व्युत्पत्तिसहित व्याख्या 2 छः वेदांगों में एक जिसमें अप्रचलित शब्दों की व्याख्या की गई है विशेषकर वैदिक शब्दों की —नाम च धातुजमाह निरुक्ते नि० 3 यास्क द्वारा निघण्टु पर किया गया भाष्य ।

निरुक्तिः (स्त्री०) [निर्+वच्+क्तिन्] 1 व्युत्पत्ति, शब्दों की व्युत्पत्तिसहित व्याख्या 2 (अल० शा० में) एक काव्यालंकार जिसमें शब्द की व्युत्पत्ति की मनमानी व्याख्या की जाय, परिभाषा इस प्रकार है— निरुक्तिर्योगतो नाम्नामन्यार्थत्वप्रकल्पनम् ईदृशैश्चरितैर्जाने सत्यं दोषाकरो भवान् चन्द्रा० ५।१६८, (दोषाकर दोषाणामाकर)।

निरुत्सुक (वि०) [निर्+उद्+सू+क्विप्+कन्, ह्रस्व] 1 अन्यत्र आतुर 2 उत्सुकतारहित, उदासीन ।

निरुद्ध (भू० क० कृ०) [नि+रुध्+क्त] 1 अवबाधित, प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, नियन्त्रित, स्थगन किया गया- श० १।२७ 2 अवगुण्ठित, बंद किया हुआ । सम० —कंठ (वि०) जिसका सांस रुक गया हो, दम घुट गया हो — गुदः मलद्वार का अवरोध ।

निरूढ (वि०) [नि+रुह्+क्त] परंपरागत, प्रचलित, रूढ़ (शब्द का अर्थ विप० यौगिक अर्थात् व्युत्पत्त्यर्थ) कौर्ने कार्यवदवार्ऽस्ति निरूढा सैव सा चलति यन्न हि चित्तम् —नै० ५।५७ 2 अविवाहित, —ढः

! अन्तर्निधान, न्यास (जैसा कि "लाल' में 'लालिमा)। सम०—लक्षणा शब्द का वह गौण प्रयोग जो वक्ता के विशेष आशय या विवक्षा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके स्वीकृत या लोकरूढ प्रचलन पर आधारित है।

निरूढि (स्त्री०) [नि+रुह्+क्तिन्] 1 प्रसिद्धि ख्याति 2 जानकारी, परिचय, प्रवीणता नृपविद्यासु निरूढिमागता कि० २।६ 2 सपुष्टि।

निरूपणम्–णा [नि+रूप्+णिच्+ल्युट् स्त्रियां टाप् च] 1 रूप आकृति 2 दृष्टि, दर्शन 3 ढूंढना खोजना 4 निश्चयन अन्वेषण निर्धारण 5 परिभाषा।

निरूपित (भू० क० कृ०) [नि+रूप्+णिच्+क्त] 1. देखा गया खोजा गया चिह्नित, अवलोकित 2 नियत, चुना हुआ निर्वाचित 3 विवेचन किया गया, विचार किया गया 4 निश्चय किया गया, निर्धारित।

निरूह. [नि+रुह्+घञ्] 1 वस्तिकर्म का एक प्रकार 2 तर्क, युक्ति 3 निश्चितता, निश्चय 4 वाक्य जिसमें न्यूनपद न हो सपूर्ण वाक्य।

निर्ऋतिः [निर्+ऋ+क्तिन्] 1 क्षय, नाश, विघटन 2 संकट, अनिष्ट, विपदा, विपत्ति—सा हि लोकस्य निर्ऋतिः—उत्तर० ५।३० 3 अभिशाप आक्रोश 4 मृत्यु, मूर्तिमान् विनाश, मृत्यु या विनाश की देवी दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ११।११९।

निरोधः, निरोधनम् [नि+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 क़ैद करना, रोधागार में रखना हवालात में रखना—मनु० ८।३१०,३७५ 2. घेरना ढक देना अमर ८७ 3 प्रतिबंध, रोक दमन, नियंत्रण योगश्चित्तवृत्तिनिरोध —योग० सू० ३।४८ 4 रुकावट, अवबाधा विरोध 5 चोट पहुँचाना इन्द्र देव' क्षति पहुँचाना 6 ध्वंस विनाश 7 अरुचि, नापसन्दगी 8 निराशा भग्नाशा।

निर्गः [निर्+गम्+ड] देश प्रदेश, स्थान।

निर्गन्धनम् [निर्+गन्ध्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्गमः [निर्+गम्+अप्] 1 बाहर जाना, चले जाना —रघु० ११।३ 2 विदायगी, ओझल होना—रघु० १९।४६ 3 द्वार, मार्ग, निकास कथमप्यवाप्तनिर्गम प्रययौ—का० १५९ 4 निष्क्रमण, बाहर जाने का द्वार।

निर्गमनम् [निर्+गम्+ल्युट्] बाहर निकलना या चले जाना।

निर्गुडः [निर्+गुड्+क] वृक्ष का कोटर।

निर्ग्रन्थनम् [निर्+ग्रन्थ्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्घंटः, ण्टम् [निर्+घट्+घञ्] 1 शब्दावली, शब्द संग्रह 2. सूचीपत्र।

निर्घर्षणम् [निर्+घृष्+ल्युट्] रगड़ टक्कर।

निर्घातः [निर्+हन्+घञ्] 1 विनाश 2 बवंडर हवा का प्रचंड झोंका, आँधी 3 हवा की सनसनाहट, आकाश में हवा के झोंकों के टकराने का शब्द निर्घातोग्रैः कुञ्जलीनाञ्जिघांसुर्ज्यानिर्घोषैः क्षोभयामास सिंहान् रघु० ९।६४, मनु० १।३८, ४।१०५, ७ याज्ञ० १।१४५ (वायुना निहतो वायुर्गगनाच्च पतत्यध, प्रचण्डघोरनिर्घोषो निर्घात इति कथ्यते) 4 भूकंप 5 वज्रपात—अहह दारुणो दैवनिर्घातः उत्तर० २।

निर्घातनम् [निर्+हन्+णिच्+ल्युट्] बलपूर्वक बाहर निकालना प्रकाशित करना।

निर्घोषः [निर्+घुष्+घञ्] 1 ध्वनि—रघु० ४ रघु० १।३६ 2 निनाद मर्मरध्वनि टंकार ज्यानिर्घोषैः क्षोभयामास सिंहान् रघु० ९।६४ मालती निर्घोष उत्तर० ३।

निर्जय, निर्जितिः (स्त्री०) [निर्+जि+अच् क्तिन् वा] पूरी विजय, वशीकरण पराजित करना।

निर्झर, —रम् [निर्+झृ+अप्] झरना, जल प्रपात, घनधारवृष्टि वारिप्रवाह पहाड़ी झरना शीर्णं निर्झरवारिरोदनम्—नागा० रघु० २।१३, का० २।१७ २१, ४।६ र 1 भूसी जलाना 2 हाथी 3 सूर्य का घोड़ा।

निर्झरिन् (पुं०) [निर्झर+इनि] पहाड़।

निर्झरिणी, निर्झरी [निर्झरिन्+ङीप् निर्झर+ङीष्] नदी पहाड़ी झरना स्रवन्नमुखपुंगिरिस्थलस्य निर्झरिण्य उत्तर० २।२०।

निर्णयः [निर्+नी+अच्] 1 दूरीकरण हटाना 2 पूर्ण निश्चय फैसला प्रकथन निर्धारण स्थिरीकरण सदसन्निश्चया आर मा० १।२ ३ मनु० ८।३०१, ४०९ ९।२५० याज्ञ० २।१० सूत्र्य निर्णयमेव वाञ्छति कि० २।२० 3 घटना आदेश उपसंहार, (तर्क० में) प्रदमन 4 विचारविमर्श, मनन विचारण 5 किसी विवादास्पद द्वारा किसी बात के विषय में स्थिर किया गया मत व्यवस्था फैसला—सर्वज्ञस्याप्येकाकिनो निर्णयाभ्युपगमो दोषाय मालवि० १। सम० —पाद निर्णय या आज्ञा फरमान व्यवस्था (विधि में)।

निर्णायक (वि०) [निर्+नी+ण्वुल्] निर्णय देने वाला अन्तिम फैसला करने वाला।

निर्णायनम् [निर्+नी+ल्युट्] 1 निश्चय करना 2 हाथी के कान का बाहरी कोण।

निर्णिक्त (भू० क० कृ०) [निर्+निज्+क्त] धुला हुआ, साफ किया गया स्वच्छ किया हुआ रघु० १७।२२।

निर्णिक्तिः (स्त्री०) [निर्+निज्+क्तिन्] 1 धुलाई 2. प्रायश्चित्त, परिशोधन महावी० ४।२५ ।

निर्णेकः [निर्+निज्+घञ्] 1 धुलाई, सफाई 2 प्रक्षालन 3 परिशोधन, प्रायश्चित्त ।

निर्णेजकः [निर्+निज्+ण्वुल्] धोबी ।

निर्णेजनम् [निर्+निज्+ल्युट्] 1 प्रक्षालन 3 प्रायश्चित्त परिशोधन (किसी अपराध के लिए) ।

निर्णोद [निर्+नुद्+घञ्] दूर करना निर्वासन ।

निर्दंड,—श (वि०) [= निर्दय पृषो० साधु] 1 निष्करुण नृशंस निर्मम 2 दूसरों की त्रुटियों पर हर्ष मनाने वाला 3 ईर्ष्यालु 4 गालीगलौज करने वाला, पिशुन 5 व्यर्थ, अनावश्यक 6 प्रचंड 7 पागल उन्मत्त ।

निर्दरः, -रि [निर्+दृ+अप्, इन्+वा] कन्दरा गुफा ।

निर्दलनम् [निर्+दल्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, तोड़ना नष्ट करना ।

निर्दहनम् [निर्+दह्+ल्युट्] जलाना दग्ध करना ।

निर्दातृ (पुं०) [निर्+दा (दो)+तृच्] 1 निराने वाला 2. दाता 3 किसान, खेती काटने वाला ।

निर्दारित (वि०) [निर्+दृ+णिच्+क्त] 1 फाड़ा हुआ विदीर्ण 2. खोला हुआ, काट कर खोला हुआ —शि० १८।२८ ।

निर्दिग्ध (भू० क० कृ०) [निर्+दिह्+क्त] 1 लेप किया हुआ, मालिश की हुई 2 सुपोषित, स्थूलकाय हृष्ट पुष्ट ।

निर्दिष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+दिश्+क्त] 1 इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ संकेतित 2 विशिष्ट विशिष्टीकृत 3 वर्णित 4 अभिव्यक्त, नियत 5 दृढ़तापूर्वक कहा हुआ प्रकथित 6 निश्चय किया हुआ निर्धारित 7 आदिष्ट ।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] 1 इशारा करना दिखलाना, संकेत करना 2 आदेश, हुक्म निदेश रघु० १४।६७ 3 उपदेश अनुदेश 4 बतलाना कहना घोषणा करना 5 विशेषण करना विशिष्टीकरण विशिष्टता विशिष्टोल्लेख अमुकनाम निर्देश —महा० भग० १७।२३ 6 निश्चय 7 पड़ौस सामीप्य ।

निर्धार, निर्धारणम् [निर्+धृ+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1 बहुतों में से एक को विशिष्ट करना, या पृथक् करना यतश्च निर्धारणम् पा० २।३।४१, सिद्धा० ३।९२ 2 निश्चय करना, फैसला करना, निर्णय करना 3 निश्चितता, निश्चय ।

निर्धारित (भू० क० कृ०) [निर्+धृ+णिच्+क्त] निर्धारित किया गया, निश्चय किया गया, स्थिर किया गया, निश्चित किया गया, दे० 'निर्' पूर्वक धृ ।

निर्धूत (भू० क० कृ०) [निर्+धू+क्त] 1 हिलाया गया हटाया गया रघु० १२।५७ 2 परित्यक्त अस्वीकृत 3 वंचित, रहित 4 टाला गया ५ निराकृत 6 नष्ट किया गया, (दे० 'निस्' पूर्वक 'धू') ।

निर्धौत (भू० क० कृ०) [निर्+धाव्+क्त] 1 धो दिया गया रघु० ५।४३ 2 चमकाया गया, उज्ज्वल ।

निर्बन्ध [निर् —बन्ध्+घञ्] 1 आग्रह, हठ, जिद, दुराग्रह निर्बन्धसंजातरुषा (गुरुणा) — रघु० ५।२१, कु० ५।६६ 2 दुराग्रह, जारी माग, अत्यावश्यकता [निर्बन्धपृष्टः स जगाद —रघु० १४।३२, अत एव अलम् निर्बन्ध —श० ३ 3 झिड़की 4 दोषारोपण 5 कलह, झगड़ा ।

निर्बर्हण—दे० निबर्हण ।

निर्भट (वि०) [निर्+भट्+अच्] कठोर, दृढ़ ।

निर्भर्त्सनम्, —ना [निर् +भर्त्स् +ल्युट् स्त्रियां टाप् च] 1 धमकी, घुड़की शि० ६।६२ 2 गाली झिड़की बुरा-भला कहना दोषारोपण 3 दुर्भावना 4 लाल रंग लाख ।

निर्भेद, [निर्+भिद्+घञ्] 1 फट जाना विभक्त करना टुकड़े २ करना 2 फटन, दरार 3 स्पष्ट उल्लेख या घोषणा —मालवि० ४ 4 नदी का तल 5 किसी बात का निर्धारण ।

निर्मथ, निर्मथन निमथ निमंथन [निर्+मथ्+घञ्, ल्युट् वा निर+मथ्+घञ् ल्युट् वा] रगड़ना मथना हिलाना 2 [illegible] अरणियों (लकड़ी के टुकड़ों) को आग पैदा करने के लिए आपस में रगड़ना घर्षण ।

निर्मथ्य (वि०) [निर् +मथ +ण्यत्] 1 हिलाये जाने या मथे जाने के योग्य 2 (आग की भांति) रगड़ से पैदा करने के योग्य —दारु अरणि (वह लकड़ी जिसे रगड़ कर आग पैदा की जाती है) ।

निर्माणम् [निर् +मा +ल्युट्] 1 मापना, माप [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पूर्ण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रचना [illegible] [illegible] [illegible] 4 [illegible] [illegible] निर्माणमेवहि [illegible] लालनीयम् मा० ९।४९ 5 रूप बनावट आकृति शरीरनिर्माणसदृशो नन्वस्यानुभाव —मालवी० १ 6 रचना कृति) [illegible] उपयुक्तता औचित्य सुनीति ।

निर्माल्यम् [निर् मल ष्यञ्] 1 शुद्धता स्वच्छता [illegible] किसी देवता के चढ़ावे का अवशेष, फूल आदि—निर्माल्योज्झितपुष्पदामनिकरे का षट्पदानां रति —भामि० १० 3 देवता पर समर्पित

करने के पश्चात् मुर्झाये हुए फूल—निर्माल्यैरथ ननृतेऽप्यधीरितानाम्—शि० ८।६० 4 अवशेष।

निर्मितिः (स्त्री०) [निर्+मा+क्तिन्] उत्पादन, सृजन, निर्माण, कलात्मक वस्तु की रचना—नवरसरुचिरा निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।

निर्मुक्त (भू० क० कृ०) [निर्+मुच्+क्त] 1 छोड़ा हुआ मुक्त किया हुआ स्वतन्त्र किया हुआ—रघु० १।४६ 2 सांसारिक अनुरागों से मुक्त 3 वियुक्त अलग किया हुआ —क्त सांप जिसने हाल ही में अपनी केंचुली छोड़ी हो।

निर्मूलनम् [निर्+मूल्+णिच्+ल्युट्] उच्छेदन जड़ से उखाड़ फेंकना, उन्मूलन (आल० भी) कर्मनिर्मूलनक्षम—भर्तृ० ३।७२।

निर्मृष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+मृज्+क्त] पोंछा गया, धोया गया, रगड़ा गया निर्मृष्टरागोऽधर—सा० द० १।

निर्मोकः [निर्+मुच्+घञ्] 1 मुक्त करना स्वतन्त्र करना 2 खाल, चमड़ी, विशेष रूप से केंचुली रघु० १६।१७, शि० २०।४७ 3 कवच जिरहबख्तर 4 आकाश, अन्तरिक्ष।

निर्मोक्षः [निर्+मोक्ष्+घञ्] मुक्ति छुटकारा- रघु० १०।२।

निर्मोचनम् [निर्+मुच्+ल्युट्] मुक्ति, छुटकारा।

निर्याणम् [निर्+या+ल्युट्] 1 निष्क्रमण बाहर जाना प्रस्थान करना, विदायगी 2 अन्तर्धान ओझल 3 मरण, मृत्यु 4 चिरन्तन मुक्ति, परमानन्द 5 हाथी की आँख का बाहरी किनारा वारण निर्याणभागप्रभिन्नम् —दश० ९७ निर्याणनिर्यदसृजं चलितं निषादी शि० ५।४१ 6 पशुओं के पैर बांधने की रस्सी पैकड़ा —निर्याणहस्तस्य पुरो दुधुक्षतः शि० १२।४१।

निर्यातनम् [निर्+यत्+णिच्+ल्युट्] 1 वापस करना, लौटाना, अर्पण करना, (धरोहर) प्रत्यर्पण करना 2 ऋणपरिशोध 3 उपहार, दान 4 प्रतिहिंसा बदला (जैसा कि वैर निर्यातन) 5 वध, हत्या।

निर्यातिः (स्त्री०) [निर्+या+क्तिन्] 1 निकलना प्रस्थान 2 इस जीवन से विदा लेना, मरण, मृत्यु।

निर्यामः [निर्+यम्+णिच्+घञ्] मल्लाह, कर्णधार का चालक, नाविक, नाव खेने वाला।

निर्यासः,—सम् [निर्+यस्+घञ्] वृक्षों या पौधों का निःस्राव, गोंद, रस, राल—शालनिर्यासगन्धिभिः —रघु० १।३८, मनु० ५।६ 2 अर्क, सार, काढ़ा 3. कोई गाढ़ा तरल पदार्थ।

निर्यूहः [निर्+ऊह्+क; पृषो० साधु] 1 कंगूरा, मीनार, बुर्ज या कलश (जो स्तम्भ या दरवाजों पर बनाया जाता है) वितर्दिनिर्यूहविटंकनीड —शि० ३। ५५, (यहाँ मल्लिनाथ इसका अर्थ लिखते हैं—"मत्त वारणाख्य उपाश्रय" और वैजयन्ती का उद्धरण देते हैं, सम्भवतः इसका नाम इसके हाथी के रूप की समानता के कारण पड़ा है) चारुतोरणनिर्यूहा —रामा० 2 शिरोभूषण, चूड़ामणि, मुकुट 3 दीवार में लगी खूंटी 4 दरवाजा, फाटक 5 सत्त्व, काढ़ा।

निर्लुञ्चनम् [निर्+लुञ्च्+ल्युट्] उखाड़ना, फाड़ना, छीलना।

निर्लुण्ठनम् [निर्+लुण्ठ्+ल्युट्] 1 लूटना, लूटखसोट 2 फाड़ डालना।

निर्लेखनम् [निर्+लिख्+ल्युट्] 1 खुरचना, खरोंचना, नोचना 2 खुरचनी रापी।

निर्लयनी [निर्+ली+ल्युट् पृषो० साधु] सांप की केंचुली।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] 1 उक्ति, उच्चारण 2 लोकप्रसिद्ध उक्ति लोकोक्ति 3 व्युत्पत्तिसहित, व्युत्पत्ति 4 शब्दावली, शब्दसूची।

निर्वपणम् [निर्+वप्+ल्युट्] 1 उंडेल देना भेंट करना 2 विशेष रूप से पितरों को पिंडदान तर्पण—मनु० ३।२४८, २६० 3 उपहार प्रदान करना 4 पुरस्कार, दान।

निर्वर्णनम् [निर्+वर्ण्+ल्युट्] 1 नजर डालना, देखना दृष्टि 2 चिह्न लगाना ध्यान पूर्वक अवलोकन करना।

निर्वर्तक (वि०) (स्त्री० र्तिका) [निर्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] पूरा करने वाला निष्पन्न करने वाला समाप्त करने वाला कार्यान्वित करने वाला, सम्पन्न करने वाला।

निर्वर्तनम् [निर्+वृत्+णिच्+ल्युट्] निष्पत्ति पूर्ति, कार्यान्वित।

निर्वहणम् [निर्+वह्+ल्युट्] 1 अन्त, पूर्ति शि० १४।६३ 2 निर्वाह करना अन्त तक निबाहना, जीवित रखना—मानस्य निर्वहणम् अमरु 3 ध्वंस, सर्वनाश। (नाटकों में) उपसंहृति, वह अन्तिम अवस्था जब कि महान् परिवर्तन का अन्तिम अंश हो, नाटक या उपन्यास आदि का उपसंहार—तरिक निमित्त कुतः—विचित्रनाटकस्येव अन्यमुखेऽप्यनिर्वहणे —मुद्रा० ६।

निर्वाण (भू० क० कृ०) [निर्+वा+क्त] 1 फूंक मार कर बुझाया हुआ, (आग या दीपक की भांति) बुझाया गया—निर्वाणवैरदहनाः प्रशमादरीणाम् —वेणी० १।७, कु० २।५३ 2 खोया हुआ, लुप्त 3 मृत मरा हुआ; जीवन से मुक्त 5 (सूर्य की भांति) अस्त 6 शान्त, चुपचाप 7 डूबा हुआ, —णम् 1 बुझाना—१।१३१, धर्मनिर्वाणमाप्नोति निरिन्धन इवानल —महा० 2 दृष्टि से ओझल होना, लोप

होना 3. विघटन, मृत्यु 4. माया या प्रकृति से मुक्ति पाकर परमात्मा से मिलन, शाश्वत आनन्द—निर्वाणमपि मन्येऽहमन्तरायं जयश्रियः—कि० ११।१९, रघु० १२।१ 5. (बौद्ध-विषयक) सांसारिक जीवन से व्यक्ति का पूर्ण निर्वाण, बौद्धों की मोक्षप्राप्ति 6. पूर्ण और शाश्वत शान्ति, सदा के लिए विश्राम—कि० १८।३९ 7. पूर्ण संतोष या आनन्द, ब्रह्मानन्द, परमानन्द—अये लब्धं नेत्रनिर्वाणम्—श० ३, मालवि० ३।१, वि० ४।२३, विक्रम० ३।२१ 8. विश्राम, विराम 9. शून्यता 10. सम्मिलन, साहचर्य, संगम 11. हस्तिस्नान—दे० 'अनिर्वाण' रघु० १।७१ में 12. विज्ञान में शिक्षण। सम० —भूयिष्ठ (वि०) प्रायः आत्मों से ओझल या लुप्त—निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं संधुक्षयन्तीव वपुर्गुणेन—कु० ३।५२,—मस्तक मुक्ति, मोक्ष।

निर्वादः [निर्+वद्+घञ्] 1. लोक-निन्दा, दुर्वचन 2. बदनामी, लोकापवाद, परिवाद—रघु० १४।३४ 3. शास्त्रार्थ का निर्णय 4. वाद का अभाव।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] दे० 'निर्वपणम्'।

निर्वापणम् [निर्+वप्+णिच्+ल्युट्] 1. चढ़ावा, आहुति, पिण्डदान या श्राद्ध 2. भेंट, दान 3. बुझाना, गुल करना 4 उंडेलना, बखेरना, (बीज का) बोना 5. पुरस्करण, प्रदान 6 निराकरण, उपशमन, शान्ति—कर्तव्यानि दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि—उत्तर० ३ 7 विनाश 8. वध, हत्या 9 ठण्डा करना, विश्रान्ति करना—शरीरनिर्वापणाय—श० ३ 10 प्रशीतक और ठंडा उपचार।

निर्वासः, निर्वासनम् [निर्+वस्+घञ्, निर्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 निकालना, निर्वासन करना, देश-निकाला देना 2. वध, हत्या।

निर्वाहः [निर्+वह्+घञ्] 1. निबाहना, निष्पन्न करना, संपन्न करना 2. सम्पूर्ति, अन्त 3. अन्ततक निबाहना, सहारा देना, दृढतापूर्वक डटे रहना, धैर्य—निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८ 4. जीवित रहना 5. पर्याप्ति, यथेष्ट अवस्था, प्रचुरता 6. वर्णन करना, बयान करना।

निर्वाहणम् [निर्+वह्+णिच्+ल्युट्] दे० 'निर्वहण'।

निर्विण्ण (भू० क० कृ०) [निर्+विद्+क्त] 1. निर्वेदयुक्त, खिन्न, मृच्छ० १।१४ 2. भय या शोक से अभिभूत 3. शोक से क्षुब्ध 4. दुःखद, पतित 5. किसी वस्तु से घृणा—अस्त्यावसक्त निर्विण्णः—पंच० १ 6. दीन, कुण्ठित हुआ 7. विनत, विनीत।

निर्विद्ध (भू० क० कृ०) [निर्+विध्+क्त] 1. अलगाया, बचाया, बंधुहृत 2. पृथक्, पृथक्—रघु० १२।१, 3. पारिभाषिक के रूप में प्राप्त—निर्विष्टं वैरवधूयोः—भी० 4. विवाहित 5. व्यस्त।

निर्वृत (भू० क० कृ०) [निर्+वृ+क्त] 1. संतुष्ट, संतुष्ट, प्रसन्न, निर्वृतो स्वः—श० २।४ 2. निश्चिन्त, बेफिक्र, आराम में 3. विश्रान्त, समाप्त।

निर्वृतिः (स्त्री०) [निर्+वृ+क्तिन्] 1. संतृप्ति, प्रसन्नता, सुख, आनन्द, व्रजति निर्वृतिमेकपदे मनः—विक्रम० २।९, रघु० ९।३८, १२।६५, श० ७।१९ शि० ४।६४, १०।२८, कि० ३।८ 2. शान्ति, विश्राम, विश्रान्ति 3. मुक्ति, निर्वाण—द्वारं निर्वृतिसद्मनो विजयते कृष्णेतिवर्णद्वयम्—भामि० ४।१४ 4. संपूर्ति, निष्पत्ति 5. स्वतंत्रता 6. अन्तर्धान होना, मृत्यु, विनाश।

निर्वृत्त (भू० क० कृ०) [निर्+वृत्+क्त] निष्पन्न, अवाप्त, सम्पन्न।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) [निर्+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पन्नता—मनु० १२।१।

निर्वेदः [निर्+विद्+घञ्] 1. घृणा, जुगुप्सा 2. अतितृप्ति, थक जाना 3. विषाद, निराशा, अवसाद—परिभवान्निर्वेदमापद्यते—मृच्छ० १।१४ 4. दीनता 5 शोक 6. विरक्ति—भग० २।५२, (एक प्रकार की भावना जिससे शान्तरस का उदय होता है—काव्य०—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः 7. स्वावमान, दीनता (तैंतीस व्यभिचारिभावों में से एक), सा० दर्प० में दी गई परिभाषा से, निम्नांकित दृष्टांत दिया गया है—यदि लक्ष्मण सा मृगेक्षणा न मदीक्षासरणिं समेष्यति, अमुना जडजीवितेन मे जगता वा विफलेन किं फलम्।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1. लाभ, प्राप्ति 2. मज़दूरी, भाड़ा, नौकरी 3 भोजन, उपभोग, सेवन 4. भुगतान की अदायगी 5 प्रायश्चित्त, परिशोधन 6. विवाह 7. मूर्छित होना, बेहोश होना 8. छिद्र, रंध्र।

निर्व्यूढ (भू० क० कृ०) [निर्+वि+वह्+क्त] 1. पूरा किया गया, समाप्त किया गया 2. उत्पन्न, अर्जित, वर्धित, विकसित—मुहुर्निर्व्यूढविस्मय—मा० ७, निर्व्यूढसौहृदभरेति—६।१७, (व्यथित—जगद्धर) 3. प्रतिसमर्पित, पूर्णतः पर्याप्त, सत्यप्रमाणित, यज्ञपूर्वक या अन्त तक पालन किया गया—द्वा तात भद्राभो निर्व्यूढस्तेऽपत्यस्नेहः—उत्तर० 3. निर्व्यूढः संभावनाभारो गुरुजनस्य—मा० ८, निर्व्यूढं तातस्य कापालिकत्वम्—मा० ७।९, १०, महावी० ७।८ 4. परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

निर्व्यूढिः (स्त्री०) [निर्+वि+वह्+क्तिन्] 1. अन्त, पूर्ति 2. शिखर, उच्चतम बिंदु।

निर्व्यूहः [निर्+वि+वह्+घञ्] दे० 'निर्यूह' 1 कंगूरा 2 शिरस्त्राण, कलगी 3 दरवाजा फाटक 4 दीवार में लगी खूँटी या ब्रैकेट 5 काढ़ा।

निर्हरणम् [निर्+हृ+ल्युट्] 1 शव का दाहसंस्कार के लिए ले जाना, शव को चिता पर रखना 2 ले जाना बाहर निकालना, निचोड़ना हटाना 3 जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना।

निर्हाद [निर्+हद्+घञ्] मलोत्सर्ग, मलत्याग।

निर्हार [निर्+हृ+घञ्] 1 ले जाना, दूर करना, हटाना 2 बाहर खींचना, उखाड़ना 3 जड़ से उखाड़ना, विनाश 4 मृतक शरीर का दाह संस्कार के लिए ले जाना 5 निजी धन संचय निजी जमा —मनु० ९।१९९ 6 मलत्याग, (वि० आहार)।

निर्हारिन् (वि०) [निर्+हृ+णिनि] 1 पालन करने वाला 2 व्याप्त, (गंधादिक) विस्तारशील 3 गंधयुक्त।

निर्हृति (स्त्री०) [निर्+हृ+क्तिन्] मार्ग से हटाना, दूर करना।

निर्ह्राद [निर्+ह्राद्+घञ्] ध्वनि,—रघु० १।०१।

निलयः [नि+ली+अच्] 1 छिपने का स्थान, (जानवरों का) मट या माँद, (पक्षियों का) घोंसला—शि० ९।४ 2 आवास, निवास घर गृह (प्रायः समास के अन्त में) रहने वाला, वास करने वाली 3 अस्त होना छिपना- दिनान्ते निलयाय गन्तुम् रघु० २।१५ (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' का भी प्रकट करता है।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] 1 किसी स्थान पर बसना उतरना 2 शरणगृह घर, गृह आवास।

निलिंपः [नि+लिप्+श, नुम्] 1 देवता निलिम्पैर्मुक्तापि च निरयान्निर्गतवान् गंगा० १५ 2 मरुतों का दल। सम० -निर्झरी स्वर्गीय गंगा।

निलिंपा, निलिंपिका [निलिम्प+टाप्, कन्+टाप्, इत्व च] गाय।

निलीन (भू० क० कृ०) [नि+ली+क्त] 1 पिघला हुआ या गला हुआ 2 बन्द या छिपा हुआ, गुप्त 3 अन्तर्ग्रस्त, घिरा हुआ परिवलयित 4 नष्ट 5 परिवर्तित, रूपान्तरित (दे० नि पूर्वक ली)।

निवचने (अव्य०) [प्रा० स०] न बोलना बोलना बन्द करके, जिह्वा को रोक कर ('कृ' के साथ प्रयुक्त होने पर गति' के रूप में या उपसर्ग के रूप में अथवा स्वतंत्र शब्द समझा जाता है—उदा० निवचनेकृत्य, निवचने कृत्वा—पा० १।४।७६)।

निवपनम् [नि+वप्+ल्युट्] 1 बिखेरना उंडेलना, नीचे फेंकना 2 बोना 3 पितरों के नाम पर चढ़ावा, मृतपूर्वजों को लक्ष्य करके दी गई आहुति —को न कुले निवपनानि नियच्छतीति - द० ६।२४।

निवरा [नि+वृ+अप्+टाप्] अक्षतयोनि, अविवाहित कन्या।

निवर्तक (वि०) [नि+वृत्+ण्वुल्] 1 वापिस देने वाला, आने वाला या पीछे मुड़ने वाला 2 ठहरने वाला पकड़ने वाला 3 उन्मूलक, निष्कासित करने वाला मिटाने वाला 4 वापिस लाने वाला।

निवर्तन (वि०) [नि+वृत्+ल्युट्] 1 लौटाने वाला 2 पीछे मुड़ने वाला ठहरने वाला नम् वापिस होना, मुड़ना, या वापिस आना लौटना –वह हि पततो नास्त्यालम्बो न चापि निवर्तनम् श० ३।२ 2 न घटने वाला बन्द होने वाला 3 रुकने वाला, परहेज करने वाला (अपा० के साथ) 4 काम से हाथ खींचना निष्क्रियता (विप० प्रवर्तन)- काम० १।२८ 5 वापिस लाना अमरु ८८ 6 पश्चात्ताप करना, सुधार करने की इच्छा 7 बीस बांस लम्बी भूमि।

निवसतिः (स्त्री०) [नि+वस्+अतिच्] घर आवास, आवासस्थान वासगृह निवासस्थान।

निवसथः [नि+वस्+अथच्] गाँव ग्राम।

निवसनम् [नि+वस्+ल्युट्] 1 गृह, आवास निवासस्थान 2 परिधान, वस्त्र अधोवस्त्र शि० १०।६०, रघु० १९।४१।

निवह मनु० ३।३७, इसी प्रकार घन वैश्य कपोत आदि 2 सात पवनों में से एक पवन का नाम।

निवात (वि०) [निवृत्त वातो यस्मिन् ब० स०] 1 सुरक्षित जहाँ वायु न हो शान्त रघु० १९।४२ 2 जिस पर वार न लगा हो क्षति न पहुँची हो, बाधा रहित 3 सुरक्षित अभय 4 सुरक्षित दृढ़ कवच धारण किए हुए तः 1 शरणगृह, निवासस्थान आश्रयगृह 2 अकाट्य कवच तम् 1 वायु से सुरक्षित स्थान निवातनिष्कम्पमिव प्रदीपम् कु० ३।४८ कि० १४।३७, रघु० १३।५२, ३।१७, भग० ६।१९ 2 वायु का अभाव शान्ति, निस्तब्धता रघु० ९।३१, 3 निरापद स्थान 4 दृढ़ कवच।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1 बीज, अनाज, बीज के कण हुए दाने 2 मृतक पूर्वजों के पितरों को या दूसरे बन्धुओं को भेंट, जलतर्पण (श्राद्ध के अवसर पर) एका निवापसलिलं पिबतीत्ययुक्तम् - श० ६।४० निवापदत्तिभि —रघु० ८।८६, निवापाञ्जलयः पितॄणाम् ५।८ १५।९१, मुद्रा० ४।५ 3 भेंट या उपहार।

निवार, निवारणम् [नि+वृ+णिच्+अप्, ल्युट् वा] 1 दूर रखना, रोकना, हटाना—दैवनिवारयैव —रघु० ०।५ 2 प्रतिषेध, बाधा।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1 रहना, बसना, निवास

करना 2. घर, आवास, वासगृह, विश्राम-स्थान —निवासविरचितायां — मृच्छ० १।१५, शि० ४।६३, ५।२१, भग० ९।१८, मृच्छ० ३।२३ 3. रात बिताना 4. पोशाक, वस्त्र ।

निवासनम् [नि+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 निवासस्थान 2 पड़ाव, डेरा 3 समय बिताना ।

निवासिन् (वि०) [नि+वस्+णिनि] 1 निवास करने वाला, रहने वाला 2 पहनने वाला, वस्त्रों से ढका हुआ कु० ७।२६, (पुं०) निवासी, आवासी ।

निवि (बि) ड (वि०) [नि+विड्+क] 1 निरन्तराल, सघन, सटा हुआ 2 दृढ़, कसा हुआ, पक्का, निविडो मुष्टिः रघु० ९।५८, १९।४४ 3 मोटा अप्रवेश्य, घना, अभेद्य –रघु० ११।१९ 4 स्थूल मोटा 5 [illegible], विशाल 6 ठेंठी नाक वाला ।

निर्विशेष (वि०) [निवृत्तो विशेषो कस्मात् ब० स०] अभिन्न, समान, —षः अन्तर का अभाव ।

निविष्ट (भू० क० कृ०) [नि+विश्+क्त] 1 स्थित, ऊपर बैठा हुआ 2 पड़ाव डाला हुआ –रघु० १०।६८ 3 स्थिर, तुला हुआ 4 सकेन्द्रित दमन किया हुआ, नियन्त्रित -कु० ५।३१ 5 दीक्षित 6 व्यवस्थित ।

निवीतम् [नि+व्ये+क्त सम्प्रसारणम्] 1 यज्ञोपवीत पहनना (माला की भांति गले में धारण करना) निवीतं मनुष्याणां प्राचीनावीतं पितॄणामुपवीतं देवानाम् —जै० न्या० 2 धारण किया हुआ जनेऊ —तः, —तम् परदा, अवगुण्ठन, आवरण' दुपट्टा ।

निवृत (भू० क० कृ०) [नि+वृ+क्त] घिरा हुआ लपेटा हुआ, —तः, -तम् -अवगुण्ठन, परदा आवरण ।

निवृति (स्त्री०) [नि+वृ+क्तिन्] आवरण घेरा ।

निवृत्त (भू० क० कृ०) [नि+वृत्+क्त] 1 लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2 गया हुआ, विदा हुआ 3 रुका हुआ, परहेजगार, ठहरा हुआ, विरत 4 सांसारिक कार्यों से परहेज करने वाला, इस संसार से विरक्त, शान्त 5 असदाचरण के लिए पश्चात्ताप 6 समाप्त पूरा, समस्त, दे० नि पूर्वक वृत्, —त्तम् लौटना । सम० —आत्मन् (पुं०) 1 ऋषि 2 विष्णु की उपाधि, —कारण (वि०) बिना किसी अन्य कारण या प्रयोजन के (—णः) धर्मात्मा मनुष्य, सांसारिक इच्छाओं से अप्रभावित, —मांस (वि०) जो मांस खाने से परहेज करता है, निवृत्तमांसस्तु जनकः —उत्तर० ४, —राग (वि०) जितेन्द्रिय —वृत्ति (वि०) किसी व्यवसाय से उपरत होनेवाला, —हृदय (वि०) हृदय में पछताने वाला ।

निवृत्तिः (स्त्री०) [नि+वृत्+क्तिन्] 1 लौटना वापिस आना, लौट आना शि० १४।६४, रघु० ४।८७ 2 अन्तर्धान, विराम, उपरति स्थगन — पापनिवृत्ती —श० ७, रघु० ८।८२ 3 काम से दूर रहना, निष्क्रियता (विप० प्रवृत्ति) 4 परहेज करना, अरुचि —प्राणाघातान्निवृत्तिः — भर्तृ० ३।६३ 5 छोड़ना, रुकना 6 वैराग्य, सांसारिक कार्यों से उपराम, शान्ति, संसार से विमुक्ति 7. विश्राम, आराम 8 आनन्द, कैवल्य 9 मुकरना, अस्वीकार करना 10 उन्मूलन, प्रतिरोध ।

निवेदनम् [नि+विद्+णिच्+ल्युट्] 1 बतलाना, कहना, प्रकथन करना समाचार, उद्घोषणा 2. अर्पण करना, सौंपना 3 समर्पण 4 प्रतिनिधान 5. चढ़ावा या आहुति ।

निवेद्यम् [नि+विद्+ण्यत्] किसी देवमूर्ति को भोग लगाना तु० 'नैवेद्य' ।

निवेशः [नि+विश्+घञ्] 1 प्रवेश, दाखला 2 पड़ाव डालना, ठहरना 3 ठहरने का स्थान, शिविर, खेमा सेनानिवेशं तुमुलं चकार रघु० ५।४९, ७।२, शि० १७।४०, कि० ७।२७ 4 घर आवास, निवास कि० ४।१९ 5 विस्तार, (छाती को) सुडौलपना—कि० ४।८ 6 जमा करना, अर्पण करना 7 विवाह करना, विवाह जीवन में स्थिर होना 8 छाप, नकल 9. सैन्यव्यवस्था 10 आभूषण, सजावट ।

निवेशनम् [नि+विश्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रवेश, दाखला 2 ठहरना, पड़ाव डालना 3 विवाह करना, विवाह 4 लेखबद्ध करना, [illegible] लेखन 5 आवास, निवास, घर आवास-स्थान 6 शिविर 7 कस्बा या नगर 8 घोंसला ।

निवेष्टः [नि+वेष्ट्+घञ्] आवरण, लिफाफा ।

निवेष्टनम् [नि+वेष्ट्+ल्युट्] ढकना, लिफाफे में बन्द करना ।

निश् (स्त्री०) (यह शब्द, कारक की दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात सारी विभक्तियों में 'निशा' शब्द के स्थान में विकल्प से आदेश हो जाता है, पहले पांच वचनों में इसका कोई रूप नहीं होता) 1 रात 2 हल्दी ।

निशमनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1 देखना, अवलोकन करना 2 दर्शन, दृष्टि 3 सुनना 4. जानकार होना ।

निश (शा) रणम् [नि+शॄ+(णिच्)+ल्युट्] वध, हत्या ।

निशा [नितरां श्यति तनूकरोति व्यापारान्—शो+क नि०] 1 रात—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी- भग० २।६९ 2 हल्दी । सम० —अटः, —अटनः 1 उल्लू 2 राक्षस, भूत, पिशाच, अभि-

-कालः, -क्षयः, -अन्तः, -अवसानम्, 1. रात बिताना 2. पौ फटना **—अटः** निशाचर, **—अन्ध** (वि०) जिसे रतौंधा आता हो, रात का अंधा, **—अरविन्दम्,** **—ईशः, —नाथः, —पतिः, —मणिः, —रत्नम्** चन्द्रमा, चाँद **—अर्धकालः** रात का पूर्व भाग, **—आख्या, —आह्वा** हल्दी, **—आदिः** सांध्यकालीन प्रकाश, **—उत्सर्गः** रात्रि का अवसान, पौ फटना **—करः** 1 चाँद—कु० ४।१३ 2 मुर्गा 3 कपूर, **कुसुम्** शय-नागार, **—चर** (वि०) (स्त्री० रा, —री) रात में घूमने फिरने वाला, रात को चुपचाप पीछा करने वाला (**—रः**) 1 राक्षस पिशाच, भूत, प्रेत रघु० १२।६९ 2 शिव का विशेषण 3 गीदड़, 4 उल्लू 5 सांप 6 चक्रवाक 7 चोर **°पतिः** 1 शिव और 2 रावण का विशेषण (**—री**) 1 राक्षसी 2 रात को निश्चित किये हुए समय पर अपने प्रेमी से मिलने के लिए जाने वाली स्त्री रामसन्मथशरेण ताडिता दुःस-हेन हृदये निशाचरी—रघु० ११।२० (यहां पर यह शब्द 'प्रथम अर्थ' के लिए भी प्रयुक्त है) 3 वेश्या, **—चर्मन्** (पुं०) अंधकार, **—जलम्** ओस, कोहरा, **—दर्शिन्** (पुं०) उल्लू, **—निशम्** (अव्य०) पर रात, सदैव **—पुष्पम्,** सफेद कमलिनी (रात को खिलने वाली) 2 पाला, ओस, **—मुखम्** रात्रि का आरम्भ, **—मृगः** गीदड़ **—वनः** सण, **—विहारः** पिशाच, राक्षस **—प्रचक्रमु** रात्रनिशाविहारी—भट्टि० २।३६, **—वेदिन्** (पुं०) मुर्गा, **—हासः** श्वेत कमल, कुमुद (रात को खिलने वाला)।

निशात (भू० क० कृ०) [नि+शो+क्त] 1 पहनाया हुआ, शान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ, तेज कि० १४।३० 2 चमकाया हुआ, झलकाया हुआ उज्ज्वल।

निशानम् [नि+शो+ल्युट्] पहनाना, शान पर चढ़ाकर तेज करना।

निशान्त (भू० क० कृ०) [नि+शम्+क्त] शान्तियुक्त, शांत, चुपचाप, सहनशील, **—तम्** घर, आवास, निवास —रघु० १६।४०।

निशामः [नि+शम्+घञ्] निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, दर्शन करना।

निशामनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1 दर्शन करना, अवलोकन करना 2. दृष्टि 3 सुनना 4 बार २ निरी-क्षण करना 5 छाया, प्रतिबिंब।

निशित (वि०) [नि+शो+क्त] पैना किया हुआ, शान पर तेज किया हुआ —निशितनिपाता शराः कु० १।१० 2. उद्दीप्त, **—तम्** लोहा।

निशीथः [निशेरते जना अस्मिन्—निर्शी अधारे थक —तारा०] 1 आधीरात —निशीथदीपाः सहसा हत-त्विषः—रघु० ३।१५, मेघ० ८८ 2. सोने का समय, रात—कुर्वी निशीथेऽनुसर्पति कामिनः—ऋतु० १।३, अमरु० ११।

निशीथिनी, निशीथ्या [निशीथ+इनि+ङीप्, निशीथ +यत्+टाप्] रात।

निशुम्भः [नि+शुम्भ्+घञ्] 1. वध, हत्या—मा० ५।२२ 2 तोड़ना, (धनुष आदि का) झुकाना —महावी० २।३३ 3. एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मार दिया था। सम० **—मथनी, —मर्दिनी** दुर्गा का विशेषण।

निशुम्भनम् [नि+शुम्भ्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना।

निश्चयः [निस्+चि+अच्] 1 जांचपड़ताल, खोज, पूछताछ 2 स्थिर मत, दृढ़ विश्वास, पक्का भरोसा 3 निर्धारण, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता—एष मे स्थिरः निश्चयः मुद्रा० १ 4 निश्चिति स्पष्टता, असं-दिग्ध, परिणाम 5 पक्का इरादा, योजना, प्रयोजन, उद्देश्य—कैकेयी कृतनिश्चया—रघु० १२।४, कु० ५।५।

निश्चल (वि०) [निस्+चल्+अच्] 1 अचर, स्थिर, अटल, अविचल 2 अपरिवर्त्य अपरिवर्तनीय —भग० २।५३, **—ला** पृथ्वी। सम० **—अंग** (वि०) दृढ़ शरीरवाला, मजबूत (**—गः**) 1 सारस की एक जाति 2. चट्टान, पहाड़।

निश्चायक (वि०) [निस्+चि+ण्वुल्] निर्धारक, निर्णयात्मक, अन्तिम या निश्चयात्मक।

निश्चारकम् [निस्+चर्+ण्वुल्] 1 मलोत्सर्ग करना 2 हवा, वायु 3 हठ, स्वेच्छाचारिता।

निश्चित (भू० क० कृ०) [निस्+चि+क्त] निश्चित किया हुआ, निर्धारित किया हुआ, फैसला किया गया किया हुआ, समापन किया हुआ (कर्तृवा० में भी प्रयुक्त) अगाधसत्त्वाम वा जगदत्ति निश्चितम् रघु० १२।८३, **—तम्** निश्चय, निर्णय, **—तम्** (अव्य०) निःसन्देह निश्चित रूप से अवश्यमेव।

निश्चितिः (स्त्री०) [निस्+चि+क्तिन्] 1 निश्चय करना, निर्णय करना 2 निर्धारण, दृढ़ संकल्प।

निश्रमः [नि+श्रम्+घञ्] किसी कार्य पर किया गया परिश्रम, अध्यवसाय, अनवरत परिश्रम।

निश्रयणी, निश्रेणि, निश्रेणी [नि+श्रि+ल्युट्+ङीप्, नि, श्रि+नि, ङीप् वा] सीढ़ी, जीना, तु० 'नि-श्रयणी'।

निश्वासः [नि+श्वस्+घञ्] सांस खींचना, सांस लेना आह भरना—तु० 'निःश्वास'।

निषङ्गः [नि+सञ्ज्+घञ्] 1 आसक्ति, संलग्नता 2. सम्मिलन साहचर्य 3 तरकस—कि० १०।१४, कि० १७।३६ रघु० ७।३०, ३।३४।

निषङ्गिः [नि+सञ्ज्+इन्] 1 आलिङ्गन 2. धनु-र्धर 3 सारथि 4 रथ, गाड़ी।

निषङ्गिन् (अव्य०) [निषङ्ग+इनि] 1 आसक्त, संलग्न —शि० १२।२१ 2 तरकसधारी—पुं० 1 धानुष्क, धनुर्धर 2 तरकस 3 खड्गधारी ।

निषण्ण (भू० क० कृ०) [नि+सद्+क्त] 1 बैठा हुआ, आसीन, विश्रान्त, आश्रित,—रघु० १।७६, १३।७५ 2 सहारा दिया हुआ 3 गया हुआ 4 खिन्न कष्टग्रस्त शतमुख—तु० विषण्ण ।

निषण्णकम् [निषण्ण+कन्] आसन ।

निषद्या [नि+सद्+क्यप्+टाप्] 1 खटोला पीढ़ा 2 व्यापारी का कार्यालय, दुकान 3 मंडी, हाट —शि० १८।१५ ।

निषद्वरः [नि+सद्+ष्वरच्] 1 गारा दलदल 2 कामदेव,—री रात ।

निषधः (ब० व०) [नि+सद्+अच् पृषो०] नल द्वारा शासित एक देश तथा उसके निवासियों का नाम —धः 1 निषध देश का शासक 2 पहाड़ का नाम ।

निषादः [नि+सद्+घञ्] 1 भारत की एक जंगली आदिम जाति, जैसे शिकारी, मछुवे आदि पहाड़ी —मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः —रामा० रघु० १४।७० ७० 2 पतित जाति का मनुष्य, चाण्डाल एक वर्णसंकर जाति 3 विशेषकर शूद्रा स्त्री से ब्राह्मण का पुत्र—मनु० १०।८ 4 (संगीत में) हिन्दूस्वरग्राम का पहला (यदि स्वर-सप्तक के अधिक निकट हो तो—अन्तिम या सप्तम) स्वर—गीतकलाविन्यासमिव निषादानुगतम्- का० २१, (यहाँ यह प्रथम भी रखती है) ।

निषादित [नि+सद्+णिच्+क्त] 1 बैठाया हुआ 2 कष्टग्रस्त, दुःखी ।

निषादिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [निषाद+इनि] बैठने वाला या लेटने वाला विश्राम करने वाला आराम करने वाला—रघु० १।५२ ४।२, (पुं०) महावत,—शि० ५।४१ ।

निषिद्ध (वि०) [नि+सिध्+क्त] 1 मना किया हुआ प्रतिषिद्ध, दूर हटाया हुआ रोका हुआ १० नि पूर्वक सिध् ।

निषिक्त (भू० क० कृ०) [नि+सिच्+क्त] 1 छिड़का हुआ 2. भरा हुआ, टपकाया हुआ उँडेला हुआ, व्याप्त किया हुआ।

निषिद्धिः [नि+सिध्+क्तिन्] 1 प्रतिषेध दूर रखना, दूर हटाना 2. प्रतिरक्षा ।

निषूदनम् [नि+सूद्+णिच्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना—नः वधिक जैसा कि मधुसूदन में ।

निषेकः [नि+सिच्+घञ्] 1 छिड़कना तर करना मुक्ताफलनिषेक —ऋतु० १।२८ 2 बूंद २ टपकना, रिसना, झरना, तैलनिषेकबिन्दुना—रघु० ८।३८, टपकते हुए तेल की एक बूंद 3 स्राव, प्रस्राव 4 वीर्यपात, वीर्यसिंचन गर्भवती करना, वीर्य—कु० ७।१६ रघु० १४।६० 5 सिंचाई, 6 प्रक्षालन के लिए जल 7 वीर्य की अपवित्रता 8 मैला पानी ।

निषेधः [नि+सिध्+घञ्] 1 प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना, रोकना, प्रतिरोध 2 प्रत्याख्यान, मुकरना 3 नकारात्मक अव्यय—द्वौ निषेधौ प्रकृतार्थं गमयतः 4 प्रतिषेधक नियम (विप० विधि) 5. नियम से व्यतिक्रम करना अपवाद ।

निषेवक [नि+सेव्+ण्वुल्] 1 अभ्यास करने वाला, अनुगमन करने वाला, भक्त, अनुरक्त 2 बार २ जाने वाला बसने वाला आश्रयग्रहण करने वाला 3 उपभोग करने वाला ।

निषेवणम् **निषेवा** [नि+सेव्+ल्युट् अ+टाप् वा] 1 सेवा करना नौकरी हाजरी में खड़े रहना 2 पूजा आराधना 3 अभ्यास, अनुष्ठान 4 आसक्ति, लगाव 5 रहना बसना उपभोग करना, उपयोग में लाना 6 परिचय, उपचार ।

निष्क् (चुरा० आ०—निष्कयते) तोलना, मापना ।

निष्कः,—**कम्** [निष्क+अच्] 1 स्वर्णमुद्रा (भिन्न-भिन्न मूल्य की परन्तु सामान्यरूप १६ माशे या एक कर्ष के तोल के मान के बराबर) 2 १०८ से १५० कर्ष के तोल का मान 3 छाती या कण्ठ में पहनने का स्वर्णाभूषण 4 सोना —ष्कः चाण्डाल ।

निष्कर्षः [निस्+कृष्+घञ्] 1 बाहर निकालना, निचोड़ना 2 सत्त सारभूत अर्थ, तत्त्व—इति निष्कर्षः (भाष्यकारों द्वारा बहुधा प्रयुक्त)—मनु० ५।१२५, भाग० १३८ 3 मापना 4 निश्चय अधिपत्रस्थापन ।

निष्कर्षणम् [निस्+कृष्+ल्युट्] 1 बाहर निकालना, निचोड़ना, खींचना—रघु० १२।९७, 2 घटाना ।

निष्कालनम् [निस्+कल्+णिच्+ल्युट्] (पशु जैसा का) हाँक कर दूर करना 2 वध, हत्या ।

निष्कासः (स) [निस्+काश् (स्) +घञ्] 1 बाहर निकलना निर्गम निकास 2 प्रासाद आदि का द्वार-मण्डप 3 प्रभात 4 अन्तर्धान ।

निष्कासित (भू० क० कृ०) [निस्+कस्+णिच्+क्त] 1 निर्वासित बाहर निकाला हुआ हाँक कर बाहर किया हुआ 2 बाहर गया हुआ, बाहर निकाला हुआ, 3 रखा हुआ जमा किया हुआ 4 ठहराया हुआ, नियत किया हुआ, 5 खोला हुआ खिला हुआ, फैलाया हुआ 6 बुराभला कहा हुआ झिड़का हुआ ।

निष्कासिनी [निस्+कस्+णिनि+ङीप्] वह दासी जो अपने स्वामी के नियन्त्रण में न हो ।

निष्कुट [निस्+कुट्+क] 1 घर से लगा हुआ प्रमद-

वन, क्रीडोद्यान 2. खेत 3. स्त्रियों का रनवास, राजा का अन्तःपुर 4 दरवाजा 5. वृक्ष की कोटर ।

निष्कुटिः,-टी (स्त्री०) [निस्+कुट्+इन्, स्त्रियां ङीप्] बड़ी इलायची ।

निष्कुषित (भू० क० कृ०) [निस्+कुष्+क्त] 1 फाड़ा हुआ, बलात् बाहर खींचा हुआ, विदीर्ण—रघु० ७।५० 2. निकाला हुआ, निर्वासित—दे० निस् पूर्वक 'कुष्' ।

निष्कुहः [निस्+कुह्+अच्] वृक्ष की कोटर—तु० 'निष्कुट' ।

निष्कृत (भू० क० कृ०) [निस्+कृ+क्त] 1 ले जाया गया, हटाया गया 2. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है, दोषमुक्त, क्षमा किया गया,—तम् प्रायश्चित्त या परिशोधन ।

निष्कृतिः (स्त्री०) [निस्+कृ+क्तिन्] 1 प्रायश्चित्त, परिशोधन पंच० ३।१५७ 2 निस्तार, प्रतिदान, ऋणशोधन, कर्तव्यसम्पादनेन तस्य निष्कृति शक्या कर्तुं वर्ष शतैरपि—मनु० २।२२७, ३।१९, ८।१०५ ९। १९, ११।२७ 3 हटाना 4 आरोग्यलाभ, चिकित्सा, प्रतीकार 5 टालना, बचना 6 उपेक्षा करना 7 बुरा चालचलन, बदमाशी ।

निष्कृष्ट (भू० क० कृ०) [निस्+कृष्+क्त] 1 उखाड़ा हुआ, खींच कर बाहर निकाला हुआ, उद्धृत 2. संक्षिप्तावृत्ति ।

निष्कोषः, निष्कोषणम् [निस्+कुष्+घञ् ल्युट् वा] 1 फाड़ना, खींचकर बाहर निकालना, उखाड़ना, उन्मूलन करना 2 भूसी निकालना, छिलका उतारना ।

निष्कोषणकम् [निष्कोषण+कन्] दांत कुरेदनी पंच० १।७१ ।

निष्क्रमः [निर्+क्रम्+घञ्] 1 बाहर जाना, निकलना 2 विदा होना, निर्गमन करना 3 एक संस्कार (चौथे मास में शिशु को) पहली बार खुली हवा में निकालना, चतुर्थे मासि निष्क्रमः—याज्ञ० १।१२ तु० 'उपनिष्क्रमण' के भी 4 पतित होना, जाति भ्रष्टता, जाति-हीनता 5 बौद्धिक शक्ति ।

निष्क्रमणम् [निस्+क्रम्+ल्युट्] 1 आगे या बाहर जाना 2. एक संस्कार (इसमें नवजात बालक को चौथे मास में पहली बार खुली हवा में निकाला जाता है) चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात् —मनु० २।३४ ।

निष्क्रमणिका [निष्क्रमण+कन्+टाप् इत्वम्] दे० निष्क्रम (3) ।

निष्क्रयः [निस्+क्री+अच्] निस्तार छुटकारा किसी का उद्धार-मूल्य—दत्वा धनं तत्सदृशं पीतेनैवास्तनिष्क्रयम् —रघु० १०।५५, २।५५, ५।२२, मुद्रा० ६।२० 2 पुरस्कार 3 भाड़ा, मजदूरी 4 अदलाबदली, चुकौती —शि० १।५० 5 अदला-बदली, विनिमय ।

निष्क्रयणम् [निस्+क्री+ल्युट्] निस्तार, छुटकारा, किसी का उद्धार-मूल्य ।

निष्क्वाथः [निस्+क्वथ्+घञ्] 1 काढ़ा 2 रसा शोरबा ।

निष्टपनम् [निस्+तप्+ल्युट्] जलन, ।

निष्टानकः [निस्+तानक] घनध्वनि, कलकल ध्वनि, मरमरध्वनि ।

निष्ठ (वि०) [नितरां तिष्ठति नि+स्था+क] (प्राय समास के अन्त में) 1 अन्दर रहने वाला, स्थित —तन्निष्ठे फेने 2 निर्भर आश्रित, संकेत करने वाला या संबंध रखने वाला तमोनिष्ठा मनु० १२।९५ 3 भक्त, अनुरक्त, अभ्यास करने वाला, इरादा —सत्यनिष्ठ 4 कुशल 5 आस्था रखने वाला धर्मनिष्ठ, —ष्ठा 1 अवस्था दशा 2 स्थैर्य दृढ़ता, स्थिरता नमो निष्ठा-शून्य भ्रमति च किमप्यालिखति च—भा० १।३१ 3 भक्ति श्रद्धा घनिष्ठ अनुराग 4 विश्वास, दृढ़ भक्ति आस्था—शास्त्रेषु निष्ठा भा० ३।११, भग० ३।३ 5 श्रेष्ठता कुशलता, प्रवीणता पूर्णता 6 उपसंहार, अन्त, अवसान अस्याकस्मिकमभवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा श० ४ 7 उत्क्रान्ति या नाटक का अन्त 8 निष्पत्ति, संपूर्ति —मनु० ८।२२७ 9 चरम बिन्दु 10 मृत्यु, विनाश, अन्त 11 स्थिर या निश्चित ज्ञान निश्चिति 12 भिक्षा मांगना 13 भोगना कष्ट उठाना, दुःख, चिन्ता 14 (व्या०) क्त क्तवतु (त और तवत्) के लिए पारिभाषिक शब्द ।

निष्ठानम् [नि+स्था+ल्युट्] चटनी, मसाला ।

निष्ठीव (प्ठे) व,—वम्, निष्ठीव (ष्ठे) वनम् निष्ठीवितम् [नि+ष्ठिव्+घञ्, दीर्घ, दीर्घाभावे गुण, ल्युट् वा, दीर्घ पक्षे गुण, क्त, दीर्घश्च] थूक देना थूकना —अर्थ० १।९२ ।

निष्ठुर (वि०) [नि+स्था+उरच्] 1 कठोर, कर्कश, उजड्ड, रूखा 2 कड़ा गज (हवा के झोंके की भांति) तीक्ष्ण शि० ५।४९ 3 क्रूर, कठोर, पाषाणहृदय (पुरुष के विषय में) अवजानासि मां यस्मादतस्ते न भविष्यति प्रसूतिर्मदनुपमहृष्टा त्वां विनावा रघु० ८।६५, ३।६२ । उद्धत ।

निष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [नि+ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] थूका, थूका हुआ, फेंका हुआ—निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्—श० ४।५, रघु०२।७५, शि०३।१०।

निष्ठ्यूतिः (स्त्री०) [नि+ष्ठिव्+क्तिन्, ऊठ्] थूक, खखार ।

निष्ण,निष्णात (वि०) [नि+स्ना+क, क्त वा] चतुर, कुशल, विज्ञ, दक्ष, सुपरिचित, विशेषज्ञ निष्णातोऽपि च वेदान्ते साधुत्वं नैति दुर्जनः —शाङ्ग० १।८७,

भट्टि० २।२६, कि० ८।११, मनु० २।६६, ५।३० 2 प्रकाशित, प्रसन्न, निष्पन्न—भा० १०।२४ (निःसंक विहितः—अनहर 3. बढ़िया, पूर्ण ।

निष्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] 1. काढ़ा बनाया हुआ, जल में भिगोया हुआ 2. भली प्रकार पकाया हुआ ।

निष्पतनम् [निस्+पत्+ल्युट्] 1. झपट कर निकलना, शीघ्रता से बाहर जाना ।

निष्पत्तिः (स्त्री०) [निस्+पद्+क्तिन्] 1 जन्म, उत्पादन—अस्त्यनिष्पत्ति 2 परिपक्वावस्था, परिपाक—कु० २।३७ 3 पूर्णता, समापन 4 सपूर्ति, सपन्नता, समाप्ति ।

निष्पन्न (भू० क० कृ०) [निस्+पद्+क्त] 1 जन्मा हुआ, उदित, उद्भूत, पैदा हुआ 2 कार्यान्वित हुआ पूरा हुआ, सपन्न 3 तत्पर ।

निष्पवनम् [निस्+पू+ल्युट्] फटकना ।

निष्पादनम् [निस्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1 कार्यान्वयन, निष्पत्ति 2. टपसहरण 3 उत्पादन, पैदा करना ।

निष्पावः [निस्+पू+घञ्] 1 फटकना, अनाज साफ करना 2. छाज से उत्पन्न होने वाली वायु 3 हवा ।

निष्पीडित (भू० क० कृ०) [निस्+पीड्+णिच्+क्त] निचोड़ा हुआ, भींचा हुआ -निष्पीडितेंदुकरकंदलजो नु सेक —उत्तर० ३।११ ।

निष्पेषः, निष्पेषणम् [निस्+पिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 मिलाकर रगड़ना, पीसना चूर-चूर करना, कुचलना—भुजांतरनिष्पेष -वेणी० ३ 2 काटना या कूटना आघात करना रगड़ देना -रघु० ४।७७, महावी० १।३४ का० ५६ ।

निष्प्रवाणम्-णि (नपुं०) [निस्+प्र+वे+ल्युट्, निर्गता प्रवाणी तन्तुवाप शलाका अस्मात् अस्य वा नि० साधु] नया कोरा कपड़ा °युगलम् -दश० ।

निस् (अव्य०) [निस+क्विप्] 1 उपसर्ग के रूप में यह धातुओं के पूर्व लग कर वियोग (से दूर, के बाहर), निश्चिति, पूर्णता, उपभोग, पार करना अतिक्रमण आदि अर्थों को बतलाता है, उदाहरण दे० पीछे 'निर्' के अन्तर्गत 2 सज्ञा शब्दों के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त, होकर बहुत से नाम और विशेषण बनाता है तथा निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) 'में से' 'से दूर' जैसा कि 'निर्वन्, निष्कौशाम्बि' या (ख) अधिक प्रचलित 'नहीं' 'के बिना' 'से शून्य' (अभावात्मकता पर बल देने वाला), निःशेष—बिना शेष के, निष्फल, निर्जल आदि (विशे० समासों में निस् का स् स्वरों के, अथवा वर्ग के तीसरे, चौथे या पांचवें वर्ण, या य र ल व ह में से कोई वर्ण, परे होने पर, बदल कर र हो जाता है, दे० निर्, अन्य वर्णों के परे होने पर विसर्ग, च् छ् के पूर्व श् तथा क् और प् के पूर्व ष् हो जाता है, दे० दुस्) । सम०—**कंटक** (निष्कंटक) (वि०) 1 बिना काटों का 2. कांटों से या शत्रुओं से मुक्त, भय तथा उत्पातों से मुक्त,—**कंद** (निष्कंद) (वि०) भक्ष्य मूलों के बिना,—**कपट** (निष्कपट) (वि०) निश्छल, शुद्ध हृदय,—**कंप** (निष्कंप) (वि०) गतिहीन, स्थिर, अचर—निष्कंपचामरशिखा—श० १।८, कु० ३।४८,—**करुण** (निष्करुण (वि०) निर्दय, निर्मम, क्रूर,—**कल** (निष्कल) (वि०) 1 अखंड, अविभक्त, समस्त 2 ह्रासप्राप्त, क्षीण, न्यून 3 पुंस्त्वहीन, असार 4. विकलांग—(लः) 1 आधार 2 योनि, भग 3. ब्रह्मा (—ला,—ली) एक बूढ़ी स्त्री जिसके बच्चे होने बन्द हो गये हों, या जिसे अब रजोधर्म न होता हो,—**कलंक** (निष्कलंक) (वि०) निर्दोष कलंक से रहित,—**कषाय** (निष्कषाय) (वि०) मैल तथा दुर्वासनाओं से मुक्त,—**काम** (निष्काम) (वि०) 1 कामना या अभिलाषरहित, निरिच्छ, निस्वार्थ, स्वार्थरहित 2. संसार की सब प्रकार की इच्छाओं से मुक्त (अव्य०—मम्) 1. बिना इच्छा के 2 अनिच्छा पूर्वक,—**कारण** (निष्कारण) (वि०) 1 बिना कारण के, अनावश्यक 2. निस्स्वार्थ, निष्प्रयोजन—निष्कारणो बन्धु 3 निराधार, हेतुरहित (अव्य० णम्) बिना किसी कारण या हेतु के कारण के अभाव में, अनावश्यक रूप से,—**कालक:** (निष्कालक) पश्चात्ताप में रत (अपराधी) जिसके बाल रोएँ सब मूंड कर घी लगाया गया हो,—**कालिक** (निष्कालिक) (वि०) 1 जिसकी जीवनचर्या समाप्त हो गई जिसके दिन इने गिने हों 2 जिसे कोई जीत न सके, अजेय -**किंचन** (निष्किंचन) (वि०) जिसके पास एक पैसा भी न हो, धनहीन, दरिद्र,—**कुल** (निष्कुल) (वि०) जिसका कोई बन्धुबान्धव न रहा हो ससार में अकेला रह गया हो (निष्कुलं कृ पूर्ण रूप से सबध विच्छेद करना, निर्मूल कर देना, निष्कुला कृ 1 किसी के परिवार को तहस-नहस कर देना 2 छिल्का उतारना, भूसी अलग करना—निष्कुलाकरोति दाडिमम्—सिद्धा०),—**कुलीन** (निष्कुलीन) (वि०) नीच कुल का,—**कूट** (निष्कूट) (वि०) छलरहित, ईमानदार, निर्दोष,—**कृप** (निष्कृप) (वि०) निर्मम, निर्दय, क्रूर,—**कैवल्य** (निष्कैवल्य) (वि०) 1. केवल, विशुद्ध, निरपेक्ष 2. मोक्ष से वञ्चित, मोक्षहीन,—**कौशांबि** (निष्कौशांबि) (वि०) जो कौशांबि से बाहर चला गया है, -**क्रिय** (निष्क्रिय) (वि०) 1 क्रियाहीन 2. जो धार्मिक संस्कारों का अनुष्ठान न करता हो,—**क्षत्र** (निःक्षत्र),—**क्षत्रिय** (निःक्षत्रिय) (वि०) क्षैत्रियजाति

से रहित,—क्षेप: (निःक्षेप.) = निक्षेप,—चक्षुस् (निश्चक्षुस्) (अव्य०) पूर्ण रूप से,—चक्षुस् (निश्चक्षुस्) (वि०) अन्धा, बिना आँखों का,—चत्वारिंश (निश्चत्वारिंश) (वि०) जिसने चालीस पार किये हों,—चिन्त (निश्चिन्त) (वि०) 1 चिन्ताओं से मुक्त, बेफ़िक्र, सुरक्षित 2. विचारहीन चिन्तन शून्य —चैतन्य (निश्चैतन्य) चेतनारहित,—चेतस् (निश्चेतस्) (वि०) जो अपने ठीक होश में न हो —चेष्ट (निश्चेष्ट) (वि०) गतिहीन, निःशक्त, —चेष्टाकरण (निश्चेष्टाकरण) (वि०) किसी को गति से वञ्चित करना, गतिहीनता का उत्पादक (कामदेव के एक बाण का विशेषण),—छन्दस् (निश्छन्दस्) (वि०) जो वेदों का अध्ययन न करता हो, —छिद्र (निश्छिद्र) (वि०) 1 जिसमें सूराख न हो 2 निर्दोष 3 निर्बाध, क्षतिरहित,—तंतु (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, निस्सन्तान, —तन्द्र (वि०) जो आलसी न हो, फुर्तीला, स्वस्थ,—तमस्क,—तिमिर (वि०) अंधकार मुक्त, प्रकाशमान् 2 पाप और नैतिक मलिनताओं से मुक्त,—तर्क्य (वि०) कल्पनातीत, अचिन्तनीय,—तल (वि०) 1 गोल, वर्तुलाकार — मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य—कु० १।४२ 2. हिलने वाला, कांपने वाला, डोलने वाला 3 तलीरहित, —तुष (वि०) 1 भूसी से वियुक्त 2 विशुद्ध, स्वच्छ °क्षीरोकृत,° °गिर: मेहू,° °रत्नम् स्फटिक,—तेजस् वि०) निस्तेज, ताप या शक्ति रहित, निःशक्त पुंस्त्व हीन 2. उत्साहित, मन्द 3 मूढ़,—त्रप (वि०) ढीठ, निर्लज्ज,—त्रिंश (वि०) 1 तीस से अधिक —निस्त्रिंशानि वर्षाणि चैत्रस्य पा० ५।४।७३ सिद्धा० 2 निर्मम, निर्दय, क्रूर—अमर ५ (—श) तलवार °भृत् (पुं०) कृपाणधारी,—त्रैगुण्य (वि०) तीन गुणों सत्त्व, रजस् तथा तमस्) से शून्य, —पंक (निष्पंक) (वि०) कीचड़ से मुक्त, स्वच्छ, शुद्ध, —पताक (निष्पताक) (वि०) बिना किसी झंडे के,—पतिसुता (निष्पतिसुता) वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति, —पत्र (निष्पत्र) (वि०) 1. जिसमें कोई पत्ता न हो 2 जिसके पंख न हों, बिना पंखों का (निष्पत्रा कृ बाण से इस प्रकार बींधना जिससे कि पंख सिद्ध जन्तु के आर पार निकल जाय, अत्यन्त पीड़ा पहुँचाना (आलं०) निष्पत्राकरोति (मृगं व्याध.) (सपुंखस्य शरस्य अपरपार्श्वे निर्गमनात्पत्ररहितं करोति—सिद्धा०), एकश्च मृग सपत्राकृतोऽपरश्च निष्पत्राकृतोऽपतत्—दश० १६५, इसी प्रकार—आंधी भुवनैः सार्धं स्वस्यमानाभ्वानुका, तिर्यगीर्षं मत्प्राणीतनिष्पत्राकरोज्जगत्—भट्टि० २।६।१६,—पद (निष्पद) (वि०) बिना पैरों का (दम्) एक गाड़ी जो बिना पैरों या बिना पहियों के चले,—परिकर (निष्परिकर) (वि०) बिना तैयारी के,—परिग्रह (निष्परिग्रह) जिसके पास किसी प्रकार की संपत्ति न हो,—मुद्रा० 2 (ह:) वह सन्यासी जिसने न तो विवाह किया हो, न जिसका कोई आश्रित हो और न जिसके पास कुछ सामान हो, —परिच्छद (निष्परिच्छद) (वि०) जिसका कोई अनुचर या पिछलगुआ न हो —परीक्ष (निष्परीक्ष) (वि०) जो यथार्थ या सही सही परख न करे —परीहार (निष्परीहार) (वि०) जो सावधानी न रक्खे —पर्यंत (निष्पर्यंत) —पार (निष्पार) (वि०) सीमा रहित, असीमित० —पाप (निष्पाप) (वि०) पापरहित निर्दोष पवित्र, —पुत्र (निष्पुत्र) (वि०) पुत्र रहित निस्सन्तान —पुरुष (निष्पुरुष) (वि०) 1 निर्जन बिना किसी असामी के उजाड़ 2 पुंस्त्व हीन 3 जो पुंलिंग न हो स्त्रीलिंग नपुंसक लिंग (षः) 1 हीजड़ा 2 कायर —पुलाक (निष्पुलाक) बिना पुराली का बिना भूसी का —पौरुष (निष्पौरुष) (वि०) पौरुषहीन —प्रकंप (निष्प्रकंप) (वि०) स्थिर अचल गतिहीन —प्रकारक (निष्प्रकारक) (वि०) आनिश्चित, वैशिष्ट्यरहित, पूर्ण निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पम् तर्क० —प्रकाश (निष्प्रकाश) (वि०) पारदर्शक अस्पष्ट, अंधकारमय —प्रचार (निष्प्रचार) (वि०) 1 न हिलने डुलने वाला 2 एक ही स्थान पर स्थिर रहने वाला 2 मनोन्दित जमाया हुआ स्थिर किया हुआ,—प्रति (ती) कार (निष्प्रति (ती) कार) प्रतिक्रिय (निष्प्रतिक्रिय) (वि०) 1 जिसकी चिकित्सा न हो सके, जिसका कोई प्रतिकार न हो सके सर्वथा निष्प्रतिकारेयमापदुपस्थिता—का० १५१ 2 निर्बाध, बाधारहित (अव्य०रम्) बिना किसी विघ्न के, —प्रतिघ (निष्प्रतिघ) (वि०) विघ्नरहित, निर्बाध, बाधाशून्य—रघु० ८।७१ —प्रतिद्वन्द्व (निष्प्रतिद्वन्द्व) (वि०) 1 शत्रुरहित निर्विरोध 2. बेजोड़, अप्रतिम अनुपम,—प्रतिभ (निष्प्रतिभ) (वि०) 1 कान्तिशून्य 2 प्रज्ञाहीन जो प्रत्युत्पन्नमति न हो, मन्द बुद्धि, जड़ 3 उदासीन, —प्रतिभान (निष्प्रतिभान) (वि०) कायर, भीरु, —प्रतीप (निष्प्रतीप) (वि०) 1 सीधा सामने देखने वाला, पीछे मुड़कर न देखने वाला 2 (दृष्टि) अचंचल,—प्रत्यूह (निष्प्रत्यूह) (वि०) निर्विघ्न, अबाध,—प्रपंच (निष्प्रपंच) 1. विस्तारहीन 2. छल कपट से रहित, ईमानदार,—प्रभ (निष्प्रभ या निष्प्रभ) (वि०) 1. कान्तिविहीन, विवर्ण दिखाई देने वाला—रघु० ११।८१ 2. शक्तिरहित 3. निस्तेज, द्युतिहीन, अन्धकारमय,—प्रमाणक (निष्प्रमाणक)

(वि०) बिना अधिकार का,—प्रयोजन (निष्प्रयोजन) (वि०) 1 निरुद्देश्य, जो किसी प्रयोजन से प्रभावित न हो 2 निष्कारण, निराधार 3 व्यर्थ 4 अनुपयोगी, अनावश्यक (अव्य०—नम्) बिना कारण या हेतु के बिना किसी मतलब के—मुद्रा० ३ —प्राण (निष्प्राण) (वि०) प्राणहीन निर्जीव मृतक,—फल (निष्फल) (वि०) 1 जिसका कोई फल न निकले फलहीन, (आल० भी) असफल—निष्फलारम्भयत्ना —मेघ० ५४ 2 अनुपयोगी बिना लाभ का निरर्थक—कु० ४।१३ 3 बांझ ऊसर 4 (शब्द) निरर्थक 5 बिना बीज का, निर्वीर्य (—ला,—ली) स्त्री जिसके सन्तान होना बन्द हो गई हो, —फेन (निष्फेन) (वि०) बिना झागों का,—शब्द (निःशब्द) (वि०) जो शब्दों में व्यक्त न किया गया हो शब्दरहित नि:शब्द रोदितुमारेभे—का० १६३ —शलाक (निःशलाक) (वि०) अकेला एकान्तमय निर्जन—(कम्) निर्जन स्थान एकान्तस्थान—अरण्ये निःशलाके वा मन्त्रयेदविभावित —मनु० ७।१४७ —शेष (निःशेष) (वि०) बिना कुछ शेष रहे पूर्ण समस्त पूरा निःशेषविश्राणितकोशजातम् रघु० ५।१ —शोध्य (निःशोध्य) (वि०) धोया हुआ, स्वच्छ —संशय (निःसंशय) (वि०) 1 असंदिग्ध निश्चित 2 सन्देह रहित, आशंकारहित संदेहशून्य रघु० १४।७२ (अव्य०—यम्) निस्सन्देह असंदिग्ध रूप से निश्चित रूप से, अवश्य —सङ्ग (निःसङ्ग) (वि०) 1 अनासक्त, भक्तिरहित अनपेक्ष उदासीन निःसङ्गत्वं फलस्यानपेक्ष्य —कि० १।२४ 2 सांसारिक आसक्तियों से मुक्त 3 निःस्वार्थ वियुक्त अनुरागशून्य 4 अबाध (अव्य०—ङ्गम्) निस्स्वार्थ भाव से —संज्ञ (निःसंज्ञ) (वि०) बेहोश —सत्त्व (निःसत्त्व) (वि०) 1 सत्त्वरहित दुर्बल पुरुषत्वहीन 2 नीच नगण्य अधम 3 सत्ताहीन असार 4 जीवित प्राणियों से वंचित (—त्वम्) 1 शक्ति या ऊर्जा का अभाव 2 सत्ताहीनता 3 नगण्यता —संतति (निस्संतति) —संतान (निस्सन्तान) (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, सन्ततिरहित —संदिग्ध (निस्संदिग्ध),—संदेह (निस्सन्देह) (वि०) दे० निःसंशय —संधि (निस्संधि निःसन्धि) (वि०) जिसमें दिखाई देने वाली कोई गांठ न हो सघन सघन सटा हुआ —सपत्न (निःसपत्न) (वि०) 1 जिसका कोई शत्रु न हो —वन रुचिरकलापो निःसपत्नोऽद्य जातः —विक्रम० ४।१० 2 जिसका कोई और दावेदार न हो जो सर्वथा एक ही का हो 3 अजातशत्रु —समम् (निस्समम्) (अव्य०) 1 बिना ऋतु के अनुचित समय पर 2 दुष्टता के साथ,—संपात (निःसंपात) (वि०) जहाँ मार्ग उपलब्ध न हो, जहाँ मार्ग अवरुद्ध हो (—तः) आधीरात का अँधेरा, घुप अँधेरा, घना अंधकार,—संबाध (निःसंबाध) (वि०) जो संकीर्ण न हो, प्रशस्त, विस्तृत —संभार (निःसंभार) (वि०) 1 नीरस, सारहीन, बिना गूदे का 2 निकम्मा असार, —सीम (निःसीम),—सीमन् (निःसीमन्) (वि०) अपरिमेय, सीमारहित—महद् महता निःसीमानश्चरित्रविभूतयः भर्तृ० २।३५, निःसीमशर्मप्रदम् ३।०७ —स्नेह (निःस्नेह) (वि०) जो चिकना न हो, बिना चिकनाई का, शुष्क 2 स्नेह रहित भावनाशून्य कृपाहीन उदासीन 3 जिसमें कोई प्यार न करता हो जिसकी कोई देखभाल न करता हो पंच० १।८४ —स्पंद (निःस्पंद या निस्स्पंद) (वि०) गतिहीन स्थिर —रघु० ६।४० —स्पृह (निःस्पृह) (वि०) 1 कामनाशून्य 2 लापरवाह उदासीन नम्र वक्तुर्विवक्षितनिःस्पृहा कि० १५, रघु० ८।१० 3 सन्तुष्ट, चाह न करने वाला 4 सांसारिक बन्धनों से मुक्त —स्व (निःस्व) (वि०) निर्धन, दरिद्र—निःस्वा वष्टि शतम् —शा० २।६, —स्वादु (निःस्वादु) (वि०) स्वादरहित, बिना स्वाद का, बदमजा।

निसपात दे० निःसंपात।

निसर्गः [नि+सृज्+घञ्] 1 प्रदान करना अनुदान देना उपहार देना पुरस्कार देना —मनु० ८।१४३ 2 अनुदान 3 मलोत्सर्ग शून्योत्सर्ग, मलत्याग 4 त्याग तिलाञ्जलि देना 5 सृष्टि 6 प्रकृति निसर्गदुर्बोधम्—कि० १। ६ १८।३१ रघु० ३।३५ कु० ४।१६ —निसर्गेण, निसर्गात् प्रकृति से स्वभावतः 7 अदला-बदली विनिमय। सम०—ज, —सिद्ध (वि०) सहज अन्तर्जात स्वाभाविक,—भिन्न (वि०) स्वभावतः और प्रकार का निसर्गभिन्नास्पदमेकसंस्थम् —रघु० ६।२९ —विनीत (वि०) 1 स्वभावतः विवेकी 2 स्वभावतः विनम्र।

निसारः [नि+सृ+घञ्] समुच्चय समूह।

निसूदनम् (वि०) [नि+सूद्+ल्युट्] मारने वाला नष्ट करने वाला —नम् वध हत्या।

निसृष्ट (भू० क० कृ०) [नि+सृज्+क्त] 1 सौंपा गया दिया गया अर्पित 2 छोड़ा गया, त्यक्त 3 विसर्जित 4 अनुज्ञात अनुमत 5 केन्द्रवर्ती मध्यस्थ। सम०—अर्थः (वि०) जिसे किसी कार्य का प्रबन्ध सौंपा गया हो 2 दूत अभिकर्ता दे० सा० द० ८६, ८७ दूती वह स्त्री जो नायक और नायिका के प्रेम को जान कर स्वयं उनको मिलाती है —तस्मिन्नपि निसृष्टार्थदूतीकल्प सूचयितव्य —मा० १ (यहाँ जगद्धर निसृष्टार्थदूती शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है

—नायिकाया नायकस्य वा मनोरथं ज्ञात्वा स्वयत्नात् कार्यं साधयति या) ।

निस्तरणम् [निस्+तृ+ल्युट्] 1. बाहर जाना, बाहर आना 2. पार करना 3. बचाना, मुक्ति, छुटकारा 4. तरकीब, उपाय, योजना ।

निस्तर्हणम् [निस्+तृह्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निस्तारः [निस्+तृ+घञ्] 1. पार करना—संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी—भर्तृ० ३।६९ 2 छुटकारा पाना, छुट्टी, बचाव, उद्धार 3 मोक्ष 4 ऋणपरिशोधन, चुकौती, अदायगी—वेतनस्य निस्तार कृतः—हि० १ 5. उपाय, तरकीब ।

निस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [निस्+तृ+क्त] 1. उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, बचाया हुआ 2 पार किया हुआ (आलं०) वेणी० ६।३६ ।

निस्तोदः [निस्+तुद्+घञ्] चुभना, डंक मारना ।

निस्पंदः [नि+स्पन्द्+घञ्] कंपकंपी, धड़कन गति ।

निस्यंदः (ष्यंदः) [नि+स्यन्द्+घञ्, षत्वं विकल्पेन] 1. आगे, या नीचे की ओर बहना, चूना, टपकना, बूंद २ करके गिरना, झरना, रिसना—बल्कलशिखा निस्यंदरेखांकिताः—श० १।१४ 2. झरण, स्राव, रसीलापदार्थ, रस—उत्तर० २।२४ मा० ९।६ 3 प्रवाह, स्रोत, पानी की धार—हिमाद्रिनिस्यन्द इवाव-तीर्णः—रघु० १४।३,४१, १६।७०, मदनिस्यंदरेखयो —१०।५८, मेघ० ४२ ।

निस्यंदिन् (वि०) [नि+स्यन्द्+णिनि] टपकने वाला बहने वाला, रिसने वाला ।

निस्रवः, निस्रावः [नि+स्रु+अप्, घञ् वा] 1 सरिता, धारा 2. चावलों का मांड ।

निस्वनः, निस्वानः [नि+स्वन्+अप्, घञ् वा] शब्द, आवाज, रघु० ३।१९, ऋतु० १।८, कि० ५।६ ।

निहत (भू० क० कृ०) [नि+हन्+क्त] 1 पटकी दिया हुआ, आघात किया हुआ, वध किया हुआ मारा हुआ 2. प्रहार किया हुआ, चोट जमाया हुआ 3. अनुरक्त, भक्त ।

निहननम् [नि+हन्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निहवः [नि+ह्वे+अप्, सम्प्रसारण] आवाहन, बुलावा ।

निहारः [नि+हृ+घञ्] दे० 'नीहार' ।

निहिंसनम् [नि+हिंस्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निहित (भू० क० कृ०) [नि+धा+क्त] 1 रक्खा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ, स्थापित, जमा किया हुआ 2. सौंपा हुआ, समर्पित 3 प्रदत्त, प्रयुक्त 4 अन्तर्हित, अंदर रक्खा हुआ 5. कोषगत किया हुआ 6. संभाला हुआ 7. (भूक आदि) पड़ी हुई 8 गंभीर स्वर में उच्चरित ।

निहीन (वि०) [नितरां हीनः प्रा० स०] अधम, नीच, —नः नीच आदमी, अधम कुल में उत्पन्न ।

निह्नवः [नि+ह्नु+अप्] 1 मुकर जाना, जानकारी का छिपाना—कार्यः स्वमतिनिह्नवः—मा० १।१२, चन्द्रा० ५।२७ 2. गोपनीयता, छिपाव—याज्ञ० २।११ २६७ 3 रहस्य 4 अविश्वास, सन्देह, शंका 5 दुष्टता 6. परिशोधन, प्रायश्चित्त 7. बहाना ।

निह्नुतिः (स्त्री०) [नि+ह्नु+क्तिन्] 1 मुकरना, जानकारी का छिपाव, अमरु ८ 2 पाखंड, मक्कारी, मनोगुप्ति 3 गोपनीयता, छिपाना, गुप्त रखना ।

नी (भ्वा० उभ० नयति-ते, नीत) [द्विकर्मक धातु, उदा-हरण नी० दे०] 1 ले जाना नेतृत्व करना, लाना, पहुँचाना, लेना संचालन करना - अजां ग्रामं नयति -सिद्धा०, नय मां नवेन वसतिं पयोमुचा -विक्रम० ४।४३ 2 निर्देश करना, निदेश देना, शासन करना —मालवि० १।२ 3 दूर ले जाना, वहां ले जाना -- नीता लंकां नीता सुरारिणा—भट्टि० ६।४९, रघु० १२।१०३, मनु० ६।८८ ४ उठा ले जाना श० ३। ५ 5 किसी के लिए ले जाना (आ०) 6 व्यय करना, (समय) बिताना—येनामन्दमरन्दे दलदरविन्दे दिनान्य-नायिषत—भामि० १।१०, नीत्वा मासान् कतिचित् —मेघ० २, सविष्टः कुशशयने निशां निनाय—रघु० १।९५ 7 किसी अवस्था तक कम करना—तमपि तरलतामनयदनंगः—का० १४३, नीतस्त्वया पंचताम् रत्न० ३।३, रघु० ८।१९ (इस अर्थ में यह धातु नामों के साथ उसी प्रकार प्रयुक्त होती है जिस प्रकार कृ --उदा० 1 अस्तं नी छिपाना 2 दंडम् नी दण्ड देना, सजा देना 3 दासत्वं नी दास बनाना 4 दुःखं नी संकटग्रस्त करना 5 परितोषं नी तृप्त करना, प्रसन्न करना 6 पुनरुक्ततां नी फालतू करना 7 भस्मतां नी 8 भस्मसात् नी जलाकर राख करना 9 वशं नी अधीन करना, जीत लेना 10. विक्रयं नी 11 विनाशं नी नष्ट करना 12 शूद्रतां नी शूद्र बनाना 13 साक्ष्यं नी गवाही मानना 8 निश्चय करना, गवेषणा करना, पूछताछ करना, निर्णय करना, फैसला करना—छलं निरस्य भूतेन व्यवहारान्नयेन्नृप —याज्ञ० २।१९, एव शास्त्रेषु भिन्नेषु बहुधा नीयते क्रिया—महा० 9. पता लगाना, लीक के सहारे पीछा करना, खोज निकालना—एतैर्लिंगैर्नयेत् सीमां—मनु० ८।२५२, २५६, यथा नयत्यसृक्पातैर्मृगस्य मृगयुः पदम् —८।४४, याज्ञ० २।१५१ 10 विवाह करना 11 बहिष्कृत करना 12 (आ०) शिक्षा देना, अनुदेश देना—शास्त्रे नयते—सिद्धा०, प्रेर०—नाययति -ते, मार्गदर्शन करना, पहुंचवाना (करण० के साथ) तेन मां सरस्वतीमनाययत्—का० ३८, इच्छा० निनीषति

ले, ले जाने की कामना करना, अनु—मानना, अपने पक्ष का बना लेना प्रवृत्त करना फुसलाना प्रार्थना करना राजी करना, बहलाना, (क्रोधादिक) शान्त करना, प्रसन्न करना, लुभाना—स चानुनीत प्रणतेन पश्चात् रघु० ५।५४ विवराक्ष शयने परा क्षमुर्वीमनुनेतुमबला म तान्वरे ११।३८, कि० १३। ६७, भट्टि० ५।४६ ६।१३७ 2 स्नेह करना मनु० २।७७ 3 साधना अनुशासन में रखना अप 1 दूर ले जाना दूर बहा ले जाना निवृत्त करना—मनु० ३।२४२ 2 (क) हटाना नष्ट करना ले जाना ... ६।२६ ... भट्टि० १६।३० (ख) लूटना चुराना लूटमार करना छीनना ले जाना रघु० १३।२४ 2 उद्धृत निकाल ... श ... विक्रम० ... दूर करना (वस्त्रादिक) ... उतारना ... मृच्छ० ६ अपनयतु भवतो ... श० २ रघु० ४।८४ अभि — 1 निकट ... सम्पादन करना ... ले जाना कि० ... मुद्रा० १ ५ १ ... अभिनय करना नाटकीय ... अभिनीयमाना ... (बहुधा रंगमंच के निदेश में प्रयुक्त) प्रदर्शित करना ... श० ३ ... मुद्रा० ... उद्धृत करना ... शिक्षा देना सधाना आ— 1 ... लाना ... —श ... 2 प्रकाशित करना पैदा करना ... रघु० १० ... 3 किसी अवस्था में पहुँचाना ... निकट ... 2 उठाना उपर करना सीधा खड़ा करना ... मुद्राल ... सुभीम ... अटकल लगाना ... अ लगाना ... ले जाना ... मृच्छ० ... मनु ... मालवि० ... कु० ... उप— 1 निकट ले जाना शि० ९।७२ 2 प्रस्तुत करना उपस्थित करना रघु० ४।२९ कु० ३।६० 3 प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना—उपनय-सर्गान् भग० ३।१८०, उपनयन्नंगैरनयोः ... —गीत० १ 5 किसी अवस्था में लाना, अवस्था विशेष तक पहुँचाना पुरापनीतं नृप रामणीयकम् —कि० १।३९ 6 यज्ञोपवीत धारण कराना (आ०) माणवकमुपनयते सिद्धा०, भट्टि० १।१५ रघु० ३।२९, मनु० २।४९ 7 भाड़े पर रखना, भाड़े के नौकर रखना—कर्मकरानुपनयते—सिद्धा०, उपा—, अवस्था विशेष में लाना घटाना, नि—, 1 निकट ले जाना, समीप पहुँचाना माघ० ३।२९५ 2 झुकना विनत होना, वक्त्र निनीय— 3 उंडेलना 4 घटित करना, निष्पन्न करना, निस्, 1 ले उड़ना 2 निश्चय करना तय करना, फैसला करना, सङ्कल्प करना दृढ़ करना कथमप्युपायमात्मनैव निर्णीय दशा० कि० ११।३९ परि 1 (अग्नि की) प्रदक्षिणा करना—नौ दर्पणं ... परिणीय वह्निं (पुरोधा) कु० ७।८०—अग्नि पयपय ... रामा० 2 विवाह करना ब्याहना—परिणेष्यति पार्वती यदा तपसा तत्प्रवणीकृतो हरः कु० ४।४२ 2 निश्चय करना ... मनु० ७।१२२ प्र 1 (सेना आदि का) नेतृत्व करना ... प्रणीतेन (बलेन) रामा० 2 प्रस्तुत करना देना उपस्थित करना—अर्घ्य प्रणीय ... भट्टि० ४।७६ 3 बनाना (आग) ... मनु० ३।१ 4 वेदमन्त्रों के पाठ से अभिमन्त्रित करना पूजना अर्चना करना विधा प्रणावी ज्वलनं ... 5 (दण्ड आदि) देना—मनु० ७। ... 6 निर्धारित करना शिक्षा प्रदान करना प्रस्थापन करना प्रतिष्ठापित करना विहित करना स ... धर्मो मनुना प्रणीतः रघु० १४।६७ भवत्प्रणीतं ... हि सावध कु० ६।३१ 7 ... रचना करना प्रणीत न तु प्रकाशित उत्तर० ४ उत्तर ... तत्प्रणीत ... उत्तर० १ ३ 8 निष्पन्न करना कार्यान्वित करना अनुष्ठान करना प्रक ... करना नै० १।२ ... मनु० ३।८० 9 (अवस्था विशेष तक) पहुँचाना निम्न अवस्था में ... प्रति ,वापिस ले जाना वि— 1 हटाना ... नष्ट करना (आ ... शरीर का कोई भाग ...) ... रघु० ... १३।३९ ४६ १५।४ कु० ९ ... रघु० ४।६० ६३ 2 अध्यापन करना, शिक्षण देना शिक्षा देना प्रशिक्षित करना—विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम् रघु० ३।२९,१५।६९,१८।५१, माघ० १।३११ 3 पालना वशीभूत करना प्रशासित करना नियन्त्रित करना—अन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान् रघु० २।८, १४।७५ कि० २।४१ 4 प्रसन्न करना (क्रोध आदि) शा० करना (आ०) 5 व्यतीत हो जाना (समय का) बिताना—कथमपि यामिनी विनीय—गीत० ८ 6. पार ले जाना, सम्पन्न करना, पूरा करना 7 व्यय करना, प्रयुक्त करना उपयोग में (आ०) लाना,

रतं विनयते—सिद्धा० 8. देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, (श्रद्धांजलि) अर्पित करना (आ०), कर विनयते—सिद्धा० 9. नेतृत्व करना, संचालन करना —कु० ७।९, सम्—, 1 एकत्र करना 2 हकूमत करना, प्रशासन करना, पथप्रदर्शन करना 3 वापिस प्राप्त, लौटाना 4 निकट लाना, समा—, 1 मिलाना, एकता में आबद्ध करना, एकत्र करना रघु० २।६४, श० ५।१५ 2 ला कर लाना लाना रघु० १२।७८।

नी (पुं०) [नी+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) नेता, पथप्रदर्शक, जैसा कि ग्रामणी, सेनानी और अग्रणी में।

नीका (स्त्री०) कुल्या, गूल, खेत की सिंचाई के लिए बनी नहर।

नीकार दे० 'निकार'।

नीकाश (वि०) [नि+काश्+अच्, दीर्घ] दे० 'निकाश' —शि० ५।३५।

नीच (वि०) [निकृष्टतमी शोभा चिनोति—चि+ड, तारा०] 1 नीच, छोटा, स्वल्प, थोड़ा, बौना 2 निम्नस्थित, निकृष्ट भग० ६।११, मनु० २।१९८, याज्ञ० १।१३१ 3 नीची, गहरी (आवाज) 4 नीच कमीना, अधम, दुष्ट, अत्यन्त खोटा—प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः—भर्तृ० २।२७, नीचस्य गोचरगतैः सुखमास्यते कैः—५९, भामि० १।४८ 5 निकम्मा निरर्थक,—चा श्रेष्ठगाय। सम०—गा नदी —भोज्यम् प्याज,—योनिन् (वि०) नीच कुलोत्पन्न, नीच घराने में जन्मा हुआ, इसी प्रकार 'नीचजाति'—वज्र, —वज्रम्, वैक्रान्तमणि।

नीच (वि) का [नीच+कन्, टाप्, पक्षे इत्व वा] बढ़िया या श्रेष्ठ गाय, ('नीचिकी' भी)।

नीचकिन् (पुं०) [नीचक+इनि] 1 किसी वस्तु का शिखर 2 बैल का सिर 3 अच्छी गाय का स्वामी।

नीचैस् (अव्य०) [नीचैस् इत्यस्य ट प्रागकच्] (प्राय विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त) 1 नीचा, नीचे, अधः, के नीचे, तले, नीचे की ओर (विप० उपरि)—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९ 2 नीचे झुककर, विनम्र हो कर, विनयपूर्वक—रघु० ५।६२ 3. आहिस्ता २, कोमलता से—नीचैर्वास्यति—मेघ० ४२ 4 मन्द स्वर में—धीमी आवाज से —नीचैः शंस हृदिस्थितो ननु स मे प्राणेश्वरः श्रोष्यति—अमरु ६७, नीचैरनुदात्त—पा० १।२।३०, 5 छोटा, ठिगना, बौना—तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत—रघु० ३।२४, (पुं०) पहाड़ का नाम—नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः—मेघ० २६। सम०—गतिः (स्त्री०) शिथिलगति,—मुख (वि०) नीचे को मुँह किये हुए।

नीडः,—डम् [नितरां विलीयते अत्र—नि+इल्+क, लस्य डः तारा०] 1. पक्षी का घोंसला—कु० ७।११ 2 बिस्तरा, गद्दा 3 मांद, भट 4 रथ का भीतरी भाग 5 स्थान, आवास, विश्रामस्थल। सम० —उद्भवः,—जः पक्षी।

नीडकः [नीड+कन्] 1 पक्षी 2. घोंसला।

नीत (भू० क० कृ०) [नी+क्त] 1 ले जाया गया, संचालित नेतृत्व किया गया 2 लब्ध, प्राप्त 3 निम्न अवस्था को पहुंचाया हुआ 4 व्यतीत, बिताया गया 5 भली भांति व्यवहृत सही—दे० 'नी',—तम् 1 धन 2 धान्य अनाज।

नीतिः (स्त्री०) [नी+क्तिन्] 1 निर्देशन, दिग्दर्शन, प्रबंध 2 आचरण चालचलन, व्यवहार कार्यक्रम 3 औचित्य, शालीनता 4 नीतिकौशल, नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता, व्यवहारकुशलता आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः—नै० ५।१०३, रघु० १२।६९, कु० १।२२ 5 योजना उपाय, कूटयुक्ति मा० ६।३ 6 राजनय, राजनीति विज्ञान, राजनीतिज्ञता राजनीतिक बुद्धिमत्ता आत्मोदयः परज्यानिर्द्वयं नीतिरितीयती—शि० २।३० भग० १०।३८ 7 आचारशास्त्र, आचार, नीतिशास्त्र आचारदर्शन 8 अवाप्ति, अधिग्रहण 9 देना प्रदान करना प्रस्तुत करना 10 संबंध, सहारा। सम० कुशल,—ज्ञ,—निपुण,—विद् (वि०) 1 राजनीतिविशारद, राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ 2 दूरदर्शी, बुद्धिमान्—घोष:—बृहस्पति की गाड़ी, दोषः आचार, नीतिविषयक भूल,—बीजम् षड्यन्त्र का स्रोत,—निर्वापण कुलम् पंच० १, विषयः नैतिकता या दूरदर्शी व्यापार का क्षेत्र,—व्यतिक्रमः 1 नीतिशास्त्र या राजनीति-विज्ञान के नियमों का उल्लंघन 2 चालचलन की त्रुटि, नीतिविषयक भूल,—शास्त्रम् नीतिशास्त्र या राजनय नैतिकता।

नीध्रम् (नपुं०) [नितरां ध्रियते धृ भूमवि क दीर्घ —तारा०] 1 छत का किनारा 2 जंगल 3 पहिए की परिधि या घेरा 3 चन्द्रमा 5 रेवती नक्षत्र।

नीपः [नी+प वा० गुणाभाव] 1 पहाड़ की तलहटी 2. कदंब वृक्ष (बरसात में फूल देने वाला) नीपः प्रदीपायते—मृच्छ० ५।१४, सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् मेघ० ६५, ६ 3 अशोक जाति का वृक्ष 4 राजाओं का एक कुल—रघु० ६।४६,—पम् कदंब वृक्ष का फूल—मेघ० २१, रघु० १९।३७।

नीरम् [नी+रक्] 1 पानी—नीरान्निर्मलतो जनि भामि० १।६३ 2 रस, आसव। सम०—जम् 1. कमल 2 मोती,—जः मालुल—नीरजानिभिरलं है नीरज में मासिकी गर्भः—भामि० २।६१, शि० ४।५२, —धिः,—निधिः, समुद्र,—रुहम् कमल।

नीराजनम्,—ना [निर्+राज्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1.

शस्त्रास्त्रों को चमकाना, एक प्रकार का सैनिक व धार्मिक पर्व जिसको राजा या सेनापति आश्विन मास में संग्राम क्षेत्र में जाने से पूर्व मनाते थे (अर्थात् राजा के पुरोहित, मंत्री, तथा सेना के अधिकारी अपने विविध शस्त्रास्त्रों सहित वेद मंत्रों द्वारा) ४।४५, १७।१२, नै० ४।१४४ 2. अर्चना के रूप में देवमूर्ति के सामने प्रज्वलित दीपक घुमाना।

नील (वि०) (स्त्री० –ला (वस्त्रादिक)—ली (जीव जन्तु आदि) [नील्+अच्] 1 नीला, गहरा नीला — नीलस्निग्ध श्रयति शिखरं नूतनस्तोयवाहः —उत्तर० १।३३ 2 नील से रंगा हुआ, —लः 1 गहरा नीला या काला रंग 2 नीलमणि 3 गूलर का पेड़, बड़ का पेड़ 4 राम की सेना में एक वानर मुख्य 5 नीलगिरि, पर्वत की एक शृंखला, —लम् 1 काला नमक 2 नीला थोथा ... 3 सुरमा 4 विष। सम० —अंगः सारस पक्षी, —अंजनम् सुरमा, —अंजना, —अंजसा बिजली, —अब्जम्— अंबुजम्, अम्बुजन्मन् (नपुं०) उत्पलम् नील कमल —अभ्रः काला बादल —अंबर (वि०) गहरे नीले वस्त्रों से सुसज्जित (—रः) 1 राक्षस पिशाच 2 शनि ग्रह 3 बलराम का विशेषण, —अम्लः प्रभात-काल, पौ फटना, —अश्मन् (पुं०) नीलमणि—कंठः 1 मोर, मा० ९।३० मेघ० ७९, 2 शिव का विशेषण 3 एक प्रकार का जलकुक्कुट 4 नीलकंठ पक्षी 5 खंजन पक्षी 6 चिड़िया 7 मधुमक्खी,—केशी नील का पौधा, —ग्रीवः शिव का विशेषण, —छदः 1 छुहारे का पेड़ 2 गरुड़ का विशेषण, —तरुः नारियल का वृक्ष —तालः तमाल का वृक्ष, —पंकः, —पंकम् अंधेरा, —पटलम् 1 काला आवरण, काली तह 2 अंधे आदमी की आँख का जाला —पंच० ५, —पिच्छः बाज पक्षी, —पुष्पिका 1 नील का पौधा 2 अलसी —भः 1. चाँद 2 बादल 3 मधुमक्खी —मणिः रत्नम् नीलम नीलकान्तमणि—नेपथ्योचितनीलरत्नम्—गीत० ५, भामि० २।४२, —मीलिकः जुगनू, —मृत्तिका 1 लौह-माक्षिक 2 काली मिट्टी, —राजिः (स्त्री०) अंधकार की रेखा, घुप अंधेरा, घोर अंधकार—निशाशशांक-क्षतनीलराजय —ऋतु० १।२, —लोहितः शिव का विशेषण, कु० ७।३७ कु० २।५७।

नीलकम् [नील+कन्] 1 काला नमक 2. नीला इस्पात 3 तूतिया, —कः काले रंग का घोड़ा।

नीलंगु (गु) गुः [नि+लङ्ग्+कु, पूर्वदीर्घः] एक प्रकार का कीड़ा।

नीलका दे० नीलंगु।

नीलिका [नील०+क+टाप्, इत्वम्] नील का पौधा ('नीलिनी' भी।

नीलिमन् (पुं०) [नील+इमनिच्] नीलापन, कालापन, नीलापन।

नीली [नील+अच्+ङीष्] 1 नील का पौधा—तत्र नीलीरसपरिपूर्ण महाभांडमासीत्—पंच० १ एकों गृहस्य नीलाना नीलीजलपयोधरा—पंच० १।२६० 2 नीलमक्खियों की एक जाति 3 एक प्रकार का रोग। सम० —राग (वि०) अनुराग में दृढ़ (गः) 1. नील के रंग की भांति अपरिवर्तनीय स्नेह, दृढ़ानु-रक्ति 2 पक्का मित्र, —संधानम् नील का खमीर उठाना नील का बर्तन।

नीवरः [नी+ष्वरच्] 1 व्यवसाय, व्यापार 2. व्याव-सायिक 3 धर्मभिक्षु, संन्यासी 4 कीचड़, —रम् जल।

नीवाकः [नि+वच्+घञ्, कुत्व, दीर्घ] 1. कमी के समय अनाज की बड़ी मांग 2 दुर्भिक्ष, अकाल।

नीवारः [नि+वृ+घञ्, दीर्घ] जंगली चावल जो बिना जोते बोये उत्पन्न हों—नीवाराः शुकगर्भकोटरमुख-भ्रष्टास्तरूणामधः —श० १।१४, रघु० १।५०,५।९,१५।

नीविः, —वी (स्त्री०) [निव्ययति निवीयते वा नि+व्ये +इञ्, नीवि+ङीष्] कमर में लपेटी हुई धोती, साड़ी के दोनों किनारों की गांठ जो सामने पेट पर बांधी जाय स्त्रियों की गांठ नाड़ा, कमरबन्ध—वस्त्राम-भिन्ना न बबन्ध नीविम् —रघु० ७।९, नीवीसंश्लेषशिथिल-मम् —मा० २।५ कु० १।३८, नीविं प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण —काव्य० ४, मेघ० ६८, शि० १०।६४ 2 पूंजी, मूलधन 3 दांव, बाजी, शर्त।

नीवृत् (पुं०) [नि+वृ+क्विप्, पूर्वदीर्घ] कोई भी आबाद देश, राज्य, राजधानी।

नीव दे० नीध्र।

नीशारः [नि+शृ+घञ्, पूर्वदीर्घ] 1 गरम कपड़ा, कंबल 2 मसहरी, मच्छरदानी 3 कनात।

नीहारः [नि+हृ+घञ्, पूर्वदीर्घ] 1, कुहरा, धुंध—रघु० ७।६०, याज्ञ० १।१५०, मनु० ४।११३ 2 पाला, भारी ओस 3 मलमूत्र त्याग।

नु (अव्य०) [नुद्+डु] प्रश्नवाचकता का द्योतक तथा 'सन्देह' एवं 'अनिश्चयात्मकता' प्रकट करने वाला अव्य०—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु —श०, अस्त-शैलगहनं नु विवस्वानाविवेश जलधिं नु महीं नु— कि० ९।७, ५।१, ८।५३, ९।१५, ५४, १३।४, कु० १।४७, शि० १०।१४, श० २८ २ 'संभावना' व 'अवश्य' के अर्थों को बतलाने के लिए इसे प्रश्न-वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न शब्दों के साथ जोड़ दिया जाता है—कि नोऽयत्स्यादिकमन्यद्वितोऽन्यथा मा० १।१७, कथं नु गुणवद्विन्देयं कलत्रम्—दश०, दे० किम् भी।

नु (अदा० पर० नौति, प्रणौति, नुत—प्रेर० नावयति, इच्छा० नुनूषति) । प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना—सरस्वती तन्मिथुनं नुनाव—कु० ७।९०, भट्टि० १४।११२, दे० नू० ।

नुतिः (स्त्री०) [नु+क्तिन्] 1. प्रशंसा, संस्तुति, प्रशस्ति परगुणनुतिभिः (अन्य० पा०) स्वान् गुणान् ख्यापयता भर्तृ० २।६९ 2. पूजा, समादर ।

नुद् (तुद० उभय० नुदति—ते, नुत्त या नुन्न, प्रणुदति) 1. धकेलना, धक्का देना, हांकना, ठेलना, प्रोत्साहित करना—मंदं मंदं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्—मेघ० ९ 2 प्रोत्साहित करना, उकसाना, आगे बढ़ाना—शि० ११।२६ 3 हटाना, भगा देना, फेंक देना, मिटाना—अवसरपवा नुनुदे नुनुदे तम—शि० १।२७, केयूरकोटिक्षतसिंधुरेण नुनोद—रघु० ६।६८, ८।४०, १६।८५, कि० ३।३३, ५।२८ 4 फेंकना, डालना, भेजना—प्रेर० 1 हटाना, दूर करना 2. प्रोत्साहित करना, उकसाना, धकेलना, ठेलना, आगे बढ़ाना,—अप—, भगाना, हटाना—भट्टि० १०।१३, उप, —धकेलना, आगे चलाना—शि० ४।११, निस्—1. अस्वीकार करना, इंकार करना—नाना मत्स्याल्ययो मांसं शाकं चैव न निर्णुदेत्—मनु० ४।२५० 2 हटाना, मिटाना, प्र—, मिटाना, दूर करना, हटाना—शि० ९।७१, वि—, 1 आघात करना, खींचना 2 (वीणा आदि) वाद्ययंत्र बजाना—प्रेर० 1. हटाना, दूर करना मिटाना, फेंक देना—नाप विनोदय दृष्टिभिः—गीत० १०, शि० ४।६६ 2 आगे बढ़ना, (काल) बिताना 3 भावना, बहलाना, मनोरंजन करना—लतासु दृष्टिं विनोदयामि -श० ३, रघु० १४।७७ 4. दिल बहलाना रघु० ९।६७, सम्—, 1. एकत्र करना, संग्रह करना 2 प्राप्त करना, मिलना ।

नूतन, नूत्न (वि०) [नव+तनप् (त्नप्) नू आदेश] । 1. नया—नूतनो राजा समाज्ञापयति—उत्तर० १, रघु० ८।१५ 2 ताजा, कच्चा 3 भेंट, उपहार 4. तात्कालिक 5 हाल का, आधुनिक 6. कुतूहलपूर्ण, अजीब ।

नूनम् (अव्य०) [नु+ऊन्+अम्] असंदिग्ध रूप से, निश्चित रूप से, निश्चय ही, अवश्य, निस्सन्देह—अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वयि ज्वलत्यौर्व इवाम्बुराशौ श० ३।३, मेघ० ९।१८ ४६, भर्तृ० १।१०, कु० १।१२, ५।७५, रघु० १।२९, 2. अत्यधिक संभावना के साथ, पूरी संभावना है कि—उत्तर० ४।२३ ।

नूपुर—रम् [नू+क्विप्=नू+पुर्+क] पायल, पैरों का आभूषण—नहि चूडामणिः पादे नूपुरं मूर्ध्नि धार्यते—हि० २।७१ ।

नृ (पुं०) [नी+ऋन् डिच्च] (कर्तृ० ए० व०—ना, संबं०, ब० व०, नृणां या नृणाम्) 1. मनुष्य, एक व्यक्ति—स्त्री हो, चाहे पुरुष, मनु० ३।८१, ४।६१, ७।६१, १०।३३ 2 मनुष्यजाति 3 शतरंज का मोहरा 4 धूपघड़ी की कील 5 पुल्लिंग शब्द—सर्विनां विग्रहो मानम्—अमर० । सम०—अस्थि-मालिन् (पुं०) शिव का विशेषण, —कपालम् मनुष्य की खोपड़ी,—केसरिन् (पुं) 'नर-शेर,' नृसिंहावतार में विष्णु भगवान्—तु० 'नरसिंह', —जलम् मनुष्य का मूत्र, —देवः एक राजा, —धर्मन् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—पः मनुष्यों का राजा, राजा, प्रभु °अध्वरः राजसूय यज्ञ जिसे सम्राट् सम्पन्न करता है और जिसमें सभी यज्ञों का कार्य सहायक राजाओं द्वारा किया जाता है, —°आत्मजः राजकुमार, युवराज,—°आभीरम्—मानम् राजभोज में होने वाला संगीत, °आश्रयः नपंदिक, क्षय,—°आसनम् राजगद्दी, सिंहासन, राज्य की कुर्सी, —°गृहम् राजमहल, —°नीतिः (स्त्री०) राजनय राजा की नीति, राजनीति—वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा—भर्तृ० २।४७—°प्रियः आम का पेड़, °लक्ष्मन् (नपुं०), °लिंगम् राजचिह्न राजत्व का लक्षण, राजकीय अधिकार चिह्न, विशेषकर श्वेत छत्र—°शासनम् राजाज्ञप्ति, °सभम् °सभा राजाओं की सभा, पतिः, —पालः राजा,—पशुः मनुष्य की शक्ल का जानवर, हिंसक पशु, नृपशु, —मिथुनम् मिथुन राशि, —मेधः नरमेध यज्ञ, —यज्ञः 'मनुष्यों के लिए किया जाने वाला यज्ञ', आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार (दैनिक पंच यज्ञों में से एक यज्ञ—दे० पंचयज्ञ), —लोकः मरण-धर्मा लोगों का संसार, मर्त्यलोक, वराहः 'सूअर' के अवतार में विष्णु भगवान्,—वाहनः कुबेर का विशेषण,—वेष्टनः शिव का नाम, —शृंगम् 'मनुष्य का सींग' अर्थात् असंभावना,—सिंहः 1 सिंह जैसा मनुष्य, शेरेनर, प्रमुख मनुष्य, पूज्य व्यक्ति 2 विष्णु भगवान् का चौथा अवतार, 'नृसिंहावतार', तु० नरसिंह 3 एक प्रकार का रतिबंध, —सेनम्, सेना मनुष्यों की फ़ौज,—सोमः वैभव शाली मनुष्य, बड़ा आदमी—रघु० ५।५९ ।

नृगः (पुं०) वैवस्वत मनु का पुत्र, जो एक ब्राह्मण के शापवश छिपकली बना ।

नृत् (दिवा० पर० नृत्यति, प्रनृत्यति, नृत्त) नाचना, इधर उधर हिलना—नृत्यति युवतिजनेन समं सखि—गीत० १, शोणोर्मौ पर्यस्ति महोत्पलौ ननर्त—शि० ८।२३, भट्टि० ३।४१ 2. रंगमंच पर अभिनय करना 3. हाव भाव दिखाना, नाटक करना, प्रेर०—नर्तयति-ते 1. नचवाना—त्वयात्ते वीणायै शिखण्डिनी नर्तयति माम्—मर्तृ० ३।६, तालैः शिंजावलयसुभगै

नर्तित कांतया मे—मेघ० ७९, उत्तर० ३।१९ 2 हिलजुल पैदा करना,—आ , (प्रेर०) 1. नाच कराना 2. नचवाना, फुर्ती के साथ हिलाना —मन्द्रिरुरार्नोतितमत्तमाले—रघु० ५।४२, अमरु ३२, ऋतु० ३।१०, उप—, 1 नाचना 2. किसी दूसरे के आगे नाचना—उपानृत्यंत देवेशम् , प्र- , नाचना, प्रति—, नाच की नकल करके हंसी उड़ाना ।

नृत्तिः (स्त्री०) [नृत्+इन्] नाचना, नाच ।

नृत्तम्, नृत्यम् [नृत्+क्त, क्यप् वा] नाचना, अभिनय करना, नाच, मूक अभिनय, हावभाव—नृत्तावस्था स्थितमतितरा कान्तम् मालवि० २।३ नृत्य मयूरा विजहु - रघु०१४।६९ मेघ० ३२ ३६ रघु० ३।१९। सम० —प्रियः शिव का विशेषण,—शाला नाचघर —स्थानम् रंगमञ्च, नाचने का कमरा ।

नृपः, नृपतिः, नृपालः [नरान् पाति रक्षति —नृ+पा+क नृणां पतिः, ष० त० नृ+पाल्+ई० 'नृ' के नीचे । शिव+अण्]

नृशंस (वि०) [नृ+शस्+अण्] दुष्ट, द्वेषपूर्ण क्रूर, उपद्रवी, कमीना,—मृच्छ० ३।२५ मनु० ३।४१, याज्ञ० १।६४।

नेजकः [निज् + ण्वुल्] धोबी ।

नेजनम् [निज्+ल्युट्] धोना, साफ करना, माजना ।

नेतृ (पुं०) [नी+तृच्] 1 जो नेतृत्व या पथप्रदर्शन करे अग्रेसर, संचालक, प्रवर्तक, (हाथियों तथा और जानवरों का] पथप्रदर्शक,—रघु० ४।७५, १४।२२, १६। २० मेघ० ६९, नेतारस्तस्य सूक्ष्मं सुक्ष्मस्य वा—सिद्धा०, मुद्रा० ७।१४ 2 निदेशक, गुरु—भर्तृ० २।८८ 3 मुख्य, स्वामी प्रधान 4 (दण्ड आदि) देने वाला मनु० ७।२५ 5 मालिक 6 नाटक का नायक ।

नेत्रम् [नयति नीयते वा अनेन—नी+ष्ट्रन्] 1 नेतृत्व करना, संचालन 2 आँख प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुंबिनः - कु० ६।८५, ७।२९ ३०, ७।१३ 3 रई के डंडे की रस्सी 4 बुनी हुई रेशम, महीन रेशमी वस्त्र नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम् रघु० ७।३९, (यहाँ कुछ भाष्यकार 'नेत्र' शब्द का सामान्य अर्थ 'आँख' ही मानते हैं) 5 वृक्ष की जड़ 6 वस्तिक्रिया की नली 7 गाड़ी, वाहन 8 दो की संख्या 9 नेता, अगुआ 10 नक्षत्र पुष्य नाग (इन दो अर्थों में पुंलिंग) । सम० -अंजनम् आँखों के लिए सुरमा—भूषार० ७, —अंतः आँख का बाहरी किनारा, —अंबु, -अम्भस् (नपुं०) आँसू, —आमयः आँख का रोग, नेत्र-प्रदाह,—उत्सवः सुन्दर तथा सुन्दर पदार्थ, —उपमम् बादाम,—कनीनिका आँख की पुतली,—कोषः 1. अक्षिगोलक 2. फूल की कली, —गोचर (वि०) दृष्टि-परास के भीतर, प्रत्यक्षगोचर, दृश्य,—छदः पलक, —जम्,—जलम्,—वारि आँसू,—पर्यन्तः आँख का बाहरी किनारा,—पिंडः 1. अक्षिगोलक 2. बिल्ली, —मलम् कीड, आँख का मैल,—योनिः, 1. इन्द्र का विशेषण (जिसके शरीर पर, गौतम द्वारा दिये गये शाप के फलस्वरूप, स्त्री-योनि के चिह्नों से मिलते जुलते हजार चिह्न हो) 2 चन्द्रमा,—रंजनम् अंजन, सुरमा,—रोमन् (नपुं०) आँख की बरौनी,—वस्त्रम् आँख का पर्दा, पलक, —स्तंभः आँखों का पथरा जाना ।

नेत्रिकम् [नेत्र+ठन्] 1 नली 2. चम्मच ।

नेत्री [नेत्र+ङीप्] 1. नदी 2. धमनी 3. स्त्री नेता 4 लक्ष्मी का विशेषण ।

नेदिष्ठ (अयम् एषाम् अतिशयेन अन्तिक — + इष्ठन्, अन्तिकस्य नेदादेशः] निकटतम, दूसरा, अत्यंत निकट ('अंतिक' की उत्तमावस्था) ।

नेदीयस् (वि०) (स्त्री०-सी) [अनयोः अतिशयेन अन्तिक + ईयसुन् अन्तिकस्य नेदादेशः] निकटतर, अधिक पास (अंतिक की मध्यमावस्था)—नेदीयसी भूत्वा -मा० १, निकट आकर, पहुँचकर ।

नेप [नी+प गुण] कुल-पुरोहित ।

नेपथ्यम् [नी + विच्, ने नेता तस्य पथ्यम्] 1. सजावट, आभूषण 2. परिधान, पोशाक, वेशभूषा, वस्त्र —उदार नेपथ्यभृत्—रघु० ६।६, राजेन्द्रनेपथ्यविधानशोभा—१४।९, उज्ज्वलनेपथ्यविरचना—मा० १, कु० ७।७, विक्रम० ५ 3 विशेषकर नाटक के पात्र की वेशभूषा विगलितनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु—मालवि० १ 4 परिधान कक्ष (जहाँ नाटक के पात्र अपनी वेशभूषा धारण करते हैं, यह सदैव परदे के पीछे होता) रंगमंच पृष्ठ अथवा परदे के पीछे । सम०— विधानम् परिधान-कक्ष की व्यवस्था—श० १ ।

नेपालः (पुं०) भारत के उत्तर में स्थित एक देश का नाम ला:—(ब० व०) इस देश के निवासी,—जम् तांबा, —ली जंगली खजूरे का वृक्ष या इसका फल । सम० —जाता मैनसिल ।

नेपालिका [नेपाल+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] मैनसिल ।

नेम (वि०) (कर्तृ० ब० व० -नेमे—नेमाः) [नी+मन्] आधा,—मः 1 भाग 2. समय, काल, ऋतु 3. हद, सीमा 4 घेरा, बाड़ा 5 दीवार की नींव 6. जालसाजी, धोखा 7 सायंकाल 8 विवर, खाई 9 जड़ ।

नेमि ,—मी (स्त्री०) [नी+मि, नेमि+ङीष्] 1. परिधि, पहिये का घेरा, उपोद्घाता न रथांगनेमयः—श० ७।१०, चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, रघु० १।१७, ९ 2. किनारा, घेरा 3. कुएँ की चर्खी, चरखी 4. वृत्त, परिधि—उदधिनेमि—रघु० ९।१० 5. वज्र 6. पृथ्वी, —मिः तिनिश का वृक्ष ।

नेष्टृ (पुं०) [नेष्+तृच्] सोमयाग के प्रधान ऋत्विजों (जिनकी संख्या १६ होती है) में से एक ।

नैचुः [निचु + तुण्] मिट्टी का सीसा ।

नैःश्रेयस (वि०) (स्त्री०—सी), **नैःश्रेयसिक** (वि०) (स्त्री०—की) [निःश्रेयस + अण्, ठक् वा] मोक्ष या आनन्द की ओर ले जाने वाला ।

नैःस्वम्, नैःस्व्यम् [निःस्व + अण्, ष्यञ् वा] धनहीनता, गरीबी, दरिद्रता ।

नैक (वि०) [न + एक] जो अकेला न हो (प्राय समास में प्रयुक्त) °आत्मन् (पुं०) °रूपः °भुजः परमपुरुष परमात्मा के विशेषण ।

नैकटिक (वि०) (स्त्री०—की) [निकट + ठक्] पार्श्ववर्ती, निकट का, सटा हुआ,—कः संन्यासी या भिक्षु —भट्टि० ५।१२ ।

नैकट्यम् [निकट + ष्यञ्] सामीप्य, पड़ोस ।

नैकषेयः [निकषा + ढक्] राक्षस (निकषा की सन्तान) ।

नैकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [निकृत्या परापकारेण जीवति— निकृति + ठक्] 1 बेईमान, झूठा, क्रूर मनु० ४।१९६ 2 नीच, दुष्ट, दुरात्मा 3 दुःशील, रूखे मिजाज का ।

नैगम (वि०) (स्त्री०—मी) [निगम + अण्] वेद से सबद्ध, वेद में पाया जाने वाला, दे० °काण्डम् —मः 1. वेद का व्याख्याता -इति नैगमाः 2 उपनिषद् 3 उपाय, तरकीब 4 विवेकपूर्ण आचरण 5 नागरिक, 6 व्यापारी, सौदागर - धाराङ्कुरोत्पन्नयनगरात् नैगमा सानुयान —विक्रम० ४।४ ।

नैघण्टुकम् [निघण्टु + ठक्] वैदिक शब्दों का संग्रहग्रन्थ (पाँच अध्यायों में) जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्त में की है ।

नैचिकम् [नीचा + ठक्] बैल का सिर ।

नैचिकी [निचि + गोकर्णशिरोदेश, तत स्वार्थे कन्—निचिक + अण् + ङीप्] बढ़िया गाय ।

नैतलम् [नितल + अण्] पाताल, नरक । सम०—सद्मन् (पुं०) यम,—महावी० ५।१८ ।

नैत्यम् [नित्य + अण्] नित्यता, शाश्वतता ।

नैत्यक (वि०) (स्त्री० की), **नैत्यिक** (वि०) (स्त्री०—की) [नित्य + कन्, नित्य + ठक्] 1 नियमित रूप से घटने वाला, बार २ दोहराया गया 2. नियमित रूप से अनुष्ठेय (विशेष अवसरों पर नहीं) 3 अपरिहार्य, अनवरत, अवश्यकरणीय ।

नैदाघः [निदाघ + अण्] ग्रीष्म ऋतु ।

नैदानः [निदान + अण्] शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र का वेत्ता ।

नैदानिकः [निदान + ठक्] निदानशास्त्र का ज्ञाता, व्याधिकोविद ।

नैदेशिकः [निदेश + ठक्] आदेशों और निदेशों का पालन करने वाला, सेवक ।

नैपातिक (वि०) (स्त्री०—की) [निपात + ठक्] अकस्मात् या दैवयोग से होने वाला उल्लेख ।

नैपुण्यम् [निपुण + अण्, ष्यञ् वा] 1 दक्षता, कौशल, चतुराई, प्रवीणता - नैपुणोन्नेयमस्ति— उत्तर० ६।२६, शि० १६।३० 3 कोई कार्य जिसमें कौशल की आवश्यकता हो सूक्ष्म बात 4 समग्रता, पूर्णता —मनु० १०।८५ ।

नैभृत्यम् [निभृत + ष्यञ्] 1 लज्जाशीलता, विनम्रता 2 गोपनीयता—नैभृत्यमवलम्बितम् - मालवि० ५ ।

नैमन्त्रणकम् [निमन्त्रण + अण् + कन्] भोज, दावत ।

नैमयः [निमय + अण्] व्यापारी, सौदागर ।

नैमित्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [निमित्त + ठक्] 1 किसी विशेष कारण के फलस्वरूप उत्पन्न सबद्ध या निर्भर 2 असाधारण, कभी कभी होने वाला, सांयोगिक, किसी विशेष निमित्त से किया गया (विप०—नित्य), - कः ज्योतिषी भविष्यवक्ता —कम् 1 कार्य (विप० —कारण) निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम श० ७।३० 2 किसी विशेष अवसर पर होने वाला संस्कार, सामयिक पर्व ।

नैमिष (वि०) (स्त्री०—षी) [निमिष + अण्] निमिषमात्र या क्षणभर रहने वाला, क्षणिक, अस्थायी—षम् पवित्र वनस्थली जहाँ कुछ ऋषि मुनि रहते थे जिनको कि सौति ने महाभारत सुना० षा—रघु० १९।१ (नाम करण इस प्रकार हुआ—यतस्तु निमिषेणेद निहत दानव बलम्, अरण्येऽस्मिन् ततस्तेन नैमिषारण्यमभितम्) ।

नैमेयः [नि + मि + यत् + अण्] विनिमय अदलाबदली ।

नैयग्रोधम् [न्यग्रोध + अण्] बड़ या बरगद का फल, बरगद का पेड़ ।

नैयत्यम् [नियत + ष्यञ्] नियन्त्रण आत्मसंयम ।

नैयमिक (वि०) (स्त्री०—की) [नियम + ठक्] नियम या विधि के अनुरूपी, नियमित,—कम् नियमितता ।

नैयायिक [न्याय + ठक्] तार्किक, न्यायदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी ।

नैरंतर्यं [निरंतर + ष्यञ्] 1 निर्बाधता, निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता 2 सान्निध्य, ससक्ति ।

नैरपेक्ष्यम् [निरपेक्ष + ष्यञ्] अवहेलना, निरपेक्षता, उदासीनता ।

नैरयिकः [निरय + ठक्] नरकवासी, नरक भोगने वाला ।

नैरर्थ्यम् [निरर्थ + ष्यञ्] निरर्थकता, बेहूदगी, बकवास ।

नैराश्यम् [निराश + ष्यञ्] 1 आशा का अभाव, नाउम्मीदी, निराशा तदस्य नैराश्यात्— उत्तर० ३।१३ 2. कामना या प्रत्याशा का अभाव—नैराश्यं पुष्ठत कृत्वा नैराश्यमवलंबितम्—हि० १, १४४, शान्ति० ४ ।

नैरुक्तः [निरुक्त+अण्] जो शब्दों की व्युत्पत्ति जानता है, शब्दव्युत्पत्तिशास्त्रवित् ।

नैरुज्यम् [नीरुज+ष्यञ्] स्वास्थ्य, आरोग्य ।

नैर्ऋतः [निर्ऋति+अण्] एक राक्षस—अथमथनक्योद्वेगा दाचरत्पुनर्नैर्ऋतावधे —रघु० १०।३६, ११।२१, १२।४३, १४।४, १५।२० ।

नैर्ऋती [नैर्ऋत + ङीप्] 1 दुर्गा का विशेषण 2 दक्षिण पश्चिमी दिशा ।

नैर्गुण्यम् [निर्गुण+ष्यञ्] गुणों या धर्मों का अभाव, 2 श्रेष्ठता की कमी अच्छे गुणों का अभाव—नैर्गुण्यमेव साधीयो धिगस्तु गुणगौरवम्—भामि० १।८८ ।

नैर्घृण्यम् [निर्घृण+ष्यञ्] निर्ममता, क्रूरता—वैषम्य-नैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथा हि दर्शयति—ब्रह्म० २।१।३४ ।

नैर्मल्यम् [निर्मल+ष्यञ्] स्वच्छता शुद्धता निष्कलङ्कता

नैर्लज्ज्यम् [निर्लज्ज+ष्यञ्] निर्लज्जता, बेहयाई ढीठपना ।

नैल्यम् [नील+ष्यञ्] नीलापन गहरा नीला रंग ।

नैबि(वि)डयम् [निबि(वि)ड+ष्यञ्] सघनता सटा हुआ होने का भाव घनापन सघनता ।

नैवेद्यम् [निवेद+ष्यञ्] किसी देवता या देवमूर्ति को भेंट देने के लिए भोज्य पदार्थ ।

नैश (वि०) (स्त्री० शी) नैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [निशा+अण्, ठञ् वा] रात से संबंध रखने वाला रात्रि विषयक रात को होने वाला—नैशं तिमिरमपाकरोति चन्द्रः—श० ६।२९, नैशस्यार्चिर्हुतभुज इवच्छिन्नभूयिष्ठधूमा —विक्रम० १।८ कि० ५।२ 2 रात को मनाया जाने वाला ।

नैश्चल्यम् [निश्चल+ष्यञ्] स्थिरता, अचलता, दृढ़ता ।

नैश्चित्यम् [निश्चित+ष्यञ्] 1 निर्धारण, निश्चिति 2 निश्चित समय पर होने वाला संस्कार ।

नैषधः [निषध+अण्] 1 निषध देश का राजा 2 विशेषत, राजा नल का विशेषण 3 निषध देश का वासी, या जो निषध देश में उत्पन्न हुआ है ।

नैष्कर्म्यम् [निष्कर्म+ष्यञ्] 1 अकर्मण्यता, क्रियाहीनता 2 कर्म और उनके फलों से मुक्ति—भग० ३।४ १८।४९ 3 वह मुक्ति जो कर्म न कर केवल ध्यान, ध्यान आदि से प्राप्त की जाय (विप० कर्म मार्ग द्वारा प्राप्त मुक्ति) ।

नैष्किक (वि०) (स्त्री—की) [निष्क+ठक्] निष्क देकर मोल लिया हुआ, या निष्क से बना हुआ—कः टकसाल का अध्यक्ष ।

नैष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [निष्ठा+ठक्] 1 अन्तिम, आखीर का, उपसंहारक—विवेशे विधिमस्य नैष्ठिकम्—रघु० ८।२५ 2 निर्णीत, निश्चायक, निर्णायक (उत्तर आदि) 3 स्थिर, दृढ़, अचल 4 उच्चतम, पूरा 5 पूर्ण रूप से जानकार, या विज्ञ 6 निरन्तर त्यागमय शुद्ध पवित्र जीवन बिताने की प्रतिज्ञा करने वाला,—कः वह शाश्वत छात्र जो आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निर्धारित काल के पश्चात् भी सदैव गुरु की सेवा में रहे, और जिसने आजन्म ब्रह्मचारी तथा जितेन्द्रिय रहने की प्रतिज्ञा कर ली है—कु० ५।६२ तु० याज्ञ० १।४९ ।

नैष्ठुर्यम् [निष्ठुर+ष्यञ्] क्रूरता, कर्कशता, कठोरता ।

नैष्ठ्यम् [निष्ठ+ष्यञ्] स्थायित्व, दृढ़ता ।

नैसर्गिक (वि०) (स्त्री० की) [निसर्ग+ठक्] स्वाभाविक अन्तर्जात, सहज अन्तर्हित—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न मुसलैरवताडनानि मा० ९।४९ रघु० ५।३७, ६।४६ ।

नैस्त्रिंशिक [निस्त्रिंश+ठक्] कृपाणधारी, तलवार रखने वाला ।

नो (अव्य०) [न+उ] नहीं, न, मत (प्रायः 'न' की भांति प्रयुक्त) भग० १७।२८, पंच० ५।२४, अमरु ५३, १०६२ ।

नोचेत् (अव्य०) [नो+चेत्—द्व० स०] अन्यथा, वरना ।

नोदनम् [नुद्+ल्युट्] 1 ठेलना, हांकना, आगे बढ़ाना 2 हटाना दूर करना, मिटाना ।

नोधा (अव्य०) [नो+धा] नौ प्रकार, नौ गुना ।

नौः (स्त्री०) [नुद्यते अनया नुद्+डौ] जहाज, नौका, पोत महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया—शा० ३।१ 2 एक नक्षत्रपुंज का नाम । सम०—आरोहः (नावारोहः) 1 जहाज का यात्री 2 मल्लाह—कर्णधार, नाविक, पोतवाहक - कर्मन् (नपुं०) मल्लाह की वृत्ति—मनु० १०।३४,—चरः,—जीविकः मल्लाह मांझी रघु० १।८१,—तार्य (वि०) जिसमें नाव चल सके जो नाव से पार किया जा सके,—दंडः डांड, चप्पू,—यानम् पोत-कौशल नौकायन,—यायिन् (वि०) नाव या जहाज से जाने वाला, नौयात्री—मनु० ८।४०९, —वाहः कर्णधार, कर्मी, पोतवाहक केवट,—व्यसनम् पोतभंग नौका का टूट जाना—नौव्यसने विपन्न —श० ६, साधनम् जहाजी बेड़ा, नौसमूह, पोतावली —वंगानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान् —रघु० ४।३६ ।

नौका [नौ+कन्+टाप्] एक छोटी नाव, किश्ती—क्षणमिह सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका —मोह० ५ । सम० —दंडः चप्पू, पतवार ।

न्यक् (अव्य०) [नि+अञ्च्+क्विन्] क्रियाविशेषण, घृणा अपमान एवं हीनता को द्योतन करने के लिए 'कृ' और 'भू' से पूर्व लगने वाला उपसर्ग । सम०—करणम्

—कारः 1. दीनता, अवमानना 2. अनादर, घृणा, अपमान—न्यक्कारो हृदि वज्रकील इव मे तीव्रं परिस्पन्दते—महावी० ५।२२, ३।४०, गंगा० ३२,—भावः 1. दीनता, अवमानना 2. घटिया करने वाला, मातहती, अधीनता,—भावित (वि०) 1. दीन, अपमानित, अपमानित 2. आगे बढ़ा हुआ, श्रेष्ठता को प्राप्त, अप्रधानीकृत—न्यग्भावितवाच्यव्यङ्ग्यव्यञ्जनक्षमस्य शब्दार्थयुगलस्य—काव्य० १।

न्यक्ष (वि०) [नियते निकृते वा अक्षिणी यस्य—ब० स०, षच् प्रत्ययः] नीच, अधम, दुष्ट, कमीना,—क्षः 1. भैंस 2. परशुराम का विशेषण,—क्षम् सूराख, छिद्र।

न्यग्रोधः [न्यक् रुणद्धि—न्यक्+रुध्+अच्] 1. बरगद का पेड़ 2. पुरस, लंबाई का एक नाप जिसकी लंबाई उतनी होती है जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से होवे। सम०—परिमंडला श्रेष्ठ स्त्री (श्रेष्ठ स्त्री की परिभाषा यह है—स्तनौ सुकठिनौ यस्या नितंबे च विशालता, मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यग्रोधपरिमंडला (शब्द०), दूर्वाकांडमिव श्यामा न्यग्रोधपरिमंडला—भट्टि० ४।१८।

न्यंकुः [नि+अञ्च्+उ] एक प्रकार का बारहसिंगा—रघु० १३।१५।

न्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—नीची) [नि+अञ्च्+क्विन्] नीचे की ओर मुड़ा या झुका हुआ, या नीचे की ओर जाता हुआ 2. मुंह के बल लेटा हुआ 3. नीच, घृणा के योग्य, अधम, कमीना, दुष्ट—शि० १५।२१, (यहाँ इसका अर्थ 'निम्न' या 'नीचे की ओर' भी है) 4. मन्थर, आलसी 5. पूर्ण, समस्त।

न्यञ्चनम् [नि+अञ्च्+ल्युट्] 1. मोड़ 2. छिपने का स्थान 3. कोटर।

न्ययः [नि+इ+अच्] 1. हानि, नाश 2. बरबादी, क्षय।

न्यसनम् [नि+अस्+ल्युट्] 1. जमा करना, लेटना 2. सौंपना, छोड़ना।

न्यस्त (भू० क० कृ०) [नि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ, लिटाया हुआ, जमा किया हुआ 2. अन्दर रक्खा हुआ, अन्तर्हित, प्रयुक्त—न्यस्ताक्षरा—कु० १।७ 3. चित्रित, चित्रित—चित्रन्यस्त 4. सुपुर्द किया हुआ, सौंपा हुआ, स्थानान्तरित—विक्रम० ५।१७, रत्न० १।१० 5. रहना, टिकना 6. छोड़ा हुआ, एक ओर डाला हुआ, उत्सृष्ट। सम—दंड (वि०) दंड छोड़ने वाला,—देह (वि०) मरा हुआ, मृत,—शस्त्र (वि०) 1. जिसने हथियार डाल दिये हों—आचार्यस्य त्रिभुवनगुरोर्न्यस्तशस्त्रस्य शोकात्—वेणी० ३।१८ 2, निरस्त्र, अरक्षित 3. जो हानि कारक न हो।

न्याक्यम् [नि+अञ्+ण्यत्] तले हुए चावल, मुर्मुरे।

न्यादः [नि+अद्+ण] खाना, खिलाना।

न्यायः [नियन्ति अनेन—नि+इ+घञ्] 1. प्रणाली, तरीका, रीति, नियम, पद्धति, योजना—अधार्मिकं त्रिभिर्न्यायैर्निगृह्णीयात् प्रयत्नतः—मनु० ८।३१० 2. उपयुक्तता, औचित्य, सुरीति—कि० ११।३० 3. कानून, न्याय या इंसाफ़, नैतिक विशालता, न्याय्यता, सचाई, ईमानदारी—यांति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यंचोऽपि सहायताम्—अनर्घ० १।४ 4. क़ानूनी मुक़दमा, क़ानूनी कार्रवाई 5. क़ानून के अनुसार दण्ड, निर्णय 6. राजनीति, अच्छा शासन 7 समानता, सादृश्य 8 लोकरूढ़ नीतिवाक्य, उपयुक्त दृष्टांत, निदर्शना जैसे कि 'दंडापूप न्याय' 'काकतालीय न्याय' 'घुणाक्षर न्याय' आदि दे० नी० 9. वैदिक स्वर—न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्—कु० २।१२ (मल्लि० 'न्याय' शब्द का अर्थ 'स्वर' करते हैं, परन्तु हमारी सम्मति में यहाँ 'पद्धति' 'रीति' है जो कि तीन 'पद्धतियों' अर्थात् ऋक्, यजुस् और सामन् में प्रकट किया गया है) भर्तृ० ३।५५ 10 (क्या० में) विश्वव्यापी नियम 11 गौतम ऋषि प्रणीत न्यायशास्त्र 12 तर्क शास्त्र, न्यायदर्शन 13 अनुमान की पूरी प्रक्रिया (जिसमें पाँचों अंग अर्थात् प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण, उपनय और निगमन सम्मिलित हैं)। सम०—पथः मीमांसा दर्शन, -वर्तिन् (वि०) आचरणशील, न्यायानुसार आचरण करने वाला, -वादिन् (वि०) न्याय्य और धर्मानुमोदित बात कहनेवाला, -शास्त्रम् तर्क विज्ञान, तर्कशास्त्र,—सारिणी उचित तथा उपयुक्त व्यवहार—सूत्रम् गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के सूत्र।

विशे० कुछ सिद्धान्त-वाक्य या लोकरूढ़ नीतिवाक्यों को पाठकों के उपयोग के लिए संग्रह करके नीचे अकारादि-क्रम से रख दिया गया है।

1. अंधचटकन्यायः [अन्धे के हाथ बटेर लगना] अर्थ में 'घुणाक्षर न्याय' के समान।
2. अंधपरंपरान्यायः [अंधानुकरण जब लोग बिना विचारे दूसरों का अंधानुकरण करते हैं और यह नहीं कि इस प्रकार का अनुकरण उन्हें अन्धकार में फँसा देगा]।
3. अरुंधती दर्शनन्यायः [अरुन्धती तारादर्शन का सिद्धांत, ज्ञात से अज्ञात का पता लगाना; शंकराचार्य की निम्नांकित व्याख्या से इसका प्रयोग स्पष्ट हो जायगा—अरुंधतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थां स्थूलां ताराममुख्यां प्रथममरुंधतीति ग्राहयित्वा तां प्रत्याख्याय पश्चादरुंधतीमेव ग्राहयति।
4. अशोकवनिकान्यायः [अशोकवृक्षों के उद्यान का न्याय] रावण ने सीता को अशोकवाटिका में रक्खा था, परन्तु उसने और स्थानों को छोड़ कर इसी वाटिका में क्यों रक्खा, इसका कोई विशेष कारण नहीं बताया

जा सकता। सारांश यह हुआ कि जब मनुष्य के पास किसी कार्य को सम्पन्न करने के अनेक साधन प्राप्त हों, तो यह उसकी अपनी इच्छा है कि वह चाहे किसी साधन को अपना ले। ऐसी अवस्था में किसी भी साधन को अपनाने का कोई विशेष कारण नहीं दिया जा सकता।

5 अश्मलोष्टन्यायः [पत्थर और मिट्टी के लौंदे का न्याय] मिट्टी का ढला रूई की अपेक्षा कठोर है परन्तु वही कठोरता मृदुता में बदल जाती है जब हम उसकी तुलना पत्थर से करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है जब उसकी तुलना उसकी अपेक्षा निचले दर्जे के व्यक्तियों से की जाती है, परन्तु यदि उसकी अपेक्षा श्रेष्ठतर व्यक्तियों से तुलना की जाय तो वही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नगण्य बन जाता है। 'पाषाणेष्टकन्याय' भी इसी प्रकार प्रयुक्त किया जाता है।

6 कदम्बकोरक (गोलक) न्यायः [कदम्ब वृक्ष का कलि का न्याय] कदम्ब वृक्ष की कलियाँ साथ ही खिल जाती हैं, अतः जहाँ उदय के साथ ही कार्य भी होने लगे, वहाँ इस न्याय का उपयोग करते हैं।

7. काकतालीयन्यायः [कौवे और ताड़ के फल का न्याय] एक कौवा एक वृक्ष की शाखा पर जाकर बैठा ही था कि अचानक ऊपर से एक फल गिरा और कौवे के प्राण पखेरू उड़ गये—अतः जब कभी कोई घटना शुभ हो या अशुभ अप्रत्याशित रूप से अकस्मात् घटती है, तब इसका उपयोग होता है—तु० चन्द्रा०—यथाया मेलनं तव कामो मे पश्य सुभ्रु, तदेतत्काकतालीयमवितर्कितसम्भवम्। कुवलयानन्द में भी—पतत् तालफलं यथा काकेनोपभुक्तमेव रहोदर्शने-क्षुभितहृदया तन्वी मया भुक्ता। दे० 'काकतालीय' भी।

8. काकदन्तगवेषणन्यायः [कौवे के दाँत ढूँढना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति व्यर्थ, अकामकारी या असम्भव कार्य करता है।

9. काकाक्षिगोलकन्यायः [कौवे की आँख गोलक का न्याय] एकदृष्टि, एकाक्ष आदि शब्दों से यह कल्पना की जाती है कि कौवे की आँख तो एक ही होती है, परन्तु वह आवश्यकता के अनुसार उसे एक गोलक से दूसरे गोलक में ले जा सकता है। इसका उपयोग उस समय होता है जब वाक्य में किसी शब्द या पदोच्चय का जो केवल एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, आवश्यकता होने पर दूसरे स्थान पर भी अध्याहार कर लें—अर्थात्—द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपः इत्यत्र अस्त्रियामित्यस्य काकाक्षिगोलकन्यायेन अंतरीपशब्देनाप्यन्वयः।

10 कूपयन्त्रघटिका न्यायः [रहटटिंडर न्याय] इसका उपयोग सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है—जैसे रहट के चलते समय कुछ टिंडर तो पानी से भरे हुए ऊपर को जाते हैं, कुछ खाली हो रहे हैं, और कुछ बिल्कुल खाली होकर नीचे को जा रहे हैं—कांश्चित्तुच्छयति प्रपूरयति वा कांश्चिन्नयत्युन्नतिं कांश्चित्पातविधौ करोति च पुनः कांश्चिन्नयत्याकुलान्, अन्योन्यप्रतिपक्षसंहतिमिमां लोकस्थितिं बोधयन्नेष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः। मृच्छ० १०।५९।

11. घट्टकुटीप्रभातन्यायः [चुंगी घर के निकट पौफटी का न्याय] कहते हैं एक गाड़ीवान चुंगी देना नहीं चाहता था, अतः वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते से रात को ही चल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश रात भर इधर-उधर घूमता रहा, जब पौफटी तो देखता क्या है कि वह ठीक चुंगीघर के पास ही खड़ा है, विवश हो उसे चुंगी देनी पड़ी इसलिए जब कोई किसी कार्य को जानबूझ कर टालना चाहता है, परन्तु फिर उसी को करने के लिए विवश होना पड़ता है तो उस समय इस न्याय का प्रयोग होता है दे० श्रीधर—अपि घट्टकुटीप्रभातन्यायमनुवर्तते।

12. घुणाक्षरन्यायः [लकड़ी में घुणकीटों द्वारा निर्मित अक्षर का न्याय] किसी लकड़ी में घुन लग जाने से अथवा किसी पुस्तक में दीमक लग जाने से कुछ अक्षरों की आकृति से मिलते-जुलते चिह्न अपने आप बन जाते हैं, अतः जब कोई कार्य अनायास व अकस्मात् हो जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

13. दण्डापूपन्यायः [डंडे और पूड़े का न्याय] जब डंडा और पूड़ा एक ही स्थान पर रक्खे गये—और एक व्यक्ति ने कहा कि डंडे को तो चूहे घसीट कर ले गये और खा लिया, तो दूसरा व्यक्ति स्वभावतः यह समझ लेता है कि पूड़ा तो खा ही लिया गया होगा—क्योंकि वह उसके पास ही रक्खा था। इसलिए जब कोई वस्तु दूसरी के साथ विशेष रूप से अत्यंत सबद्ध होती है और एक वस्तु के सबंध में हम कुछ कहते हैं तो वही बात दूसरी के साथ भी अपने आप लागू हो जाती है, तु० मूषिकेण दंडो भक्षितः इत्यनेन तत्सहचरितमपूपभक्षणमर्थादायातं भवतीति नियतसमानन्यायादर्थान्तरमापततीत्येष न्यायो दंडापूपिका—सा० द० १०।

14. देहलीदीपन्यायः [देहली पर स्थापित दीपक का न्याय] जब दीपक को देहली पर रख दिया जाता है तो इसका प्रकाश देहली के दोनों ओर होता है अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब एक ही वस्तु दो स्थानों पर काम आवे।

15. **नृपनापितपुत्रन्यायः** [राजा और नाई के पुत्र का न्याय] कहते हैं कि एक नाई किसी राजा के यहाँ नौकर था, एक बार राजा ने उसे कहा कि मेरे राज्य में जो लड़का सब से सुन्दर हो उसे लाओ। नाई बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक न मिला जैसा राजा चाहता था। अन्त में थककर और निराश होकर वह घर लौट आया—तब उसे अपना काला-कलूटा लड़का ही अत्यंत सुन्दर लगा। वह उसी को लेकर राजा के पास गया पहले तो उस काले कलूटे बालक को देख कर राजा को बड़ा क्रोध आया परन्तु यह विचार कर कि मानव मात्र अपनी वस्तु को ही सर्वोत्तम समझता है, उसे छोड़ दिया तु० सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति—हिन्दी—अपनी छाछ को कौन खट्टा बताता है।

16. **पंकप्रक्षालनन्यायः** [कीचड़ धोकर नहाने का न्याय] कीचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि मनुष्य कीचड़ लगने ही न देवे। इसी प्रकार भयग्रस्त स्थिति में फँस कर उससे निकलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा यह ज्यादह अच्छा है कि उस भयग्रस्त स्थिति में कदम ही न रक्खे—तु०—'प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्'—'सौ दवा से एक परहेज अच्छा'।

17. **पिष्टपेषणन्यायः** [पिसे को पीसना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिसे को पीसना फालतू और व्यर्थ कार्य है तु० कृतस्य करणं वृथा।

18 **बीजांकुरन्यायः** [बीज और अङ्कुर का न्याय] कार्य कारण जहाँ अन्योन्याश्रित होते हैं वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है (बीज से अङ्कुर निकला और फिर समय पाकर अंकुर से ही बीज की उत्पत्ति हुई) अतः न बीज के बिना अङ्कुर हो सकता है और न अंकुर के बिना बीज।

19. **लोहचुम्बकन्यायः** [लोहे और चुंबक का आकर्षण न्याय] यह प्रकृति सिद्ध बात है कि लोहा चुंबक की ओर आकृष्ट होता है इसी प्रकार प्राकृतिक घनिष्ट संबंध या निसर्गवृत्ति की बदौलत सभी वस्तुएँ एक दूसरे की ओर आकृष्ट होती हैं।

20. **वह्निधूमन्यायः** [धूएँ से अग्नि का अनुमान] धूएँ और अग्नि की अवश्यंभावी सहवर्तिता नैसर्गिक है, अतः (जहाँ धूआँ होगा वहाँ आग अवश्य होगी)। यह न्याय उसी समय प्रयुक्त होता है जहाँ दो पदार्थ कारण-कार्य या दो व्यक्तियों का अनिवार्य संबंध बतलाया जाय।

21. **वृद्धकुमारीवाक्य (वर) न्यायः** [बूढ़ी कुमारी को वरदान न्याय] इस प्रकार का वरदान माँगना जिसमें वह सभी बातें आ जाय जो एक व्यक्ति चाहता है। महाभाष्य में कथा आती है कि एक बुढ़िया कुमारी को इन्द्र ने कहा कि एक ही वाक्य में जो वरदान चाहो माँगो, तब बुढ़िया बोली पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं कांचनपात्र्यां भुंजीरन् (अर्थात् मेरे पुत्र सोने की थाली में घी दूध युक्त भात खायें)। इस एक ही वरदान में बुढ़िया ने पति पुत्र धन धान्य पशु सोना चाँदी सब कुछ माँग लिया। अतः जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।

22 **शाखाचन्द्रन्यायः** [शाखा पर वर्तमान चन्द्रमा का न्याय] जब किसी को चन्द्रमा का दर्शन कराना है तो चन्द्रमा के दूर स्थित होने पर भी हम यही कहते हैं देखो सामने वृक्ष की शाखा के ऊपर चाँद दिखाई देता है। अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई वस्तु चाहे दूर ही हो, निकटवर्ती किसी पदार्थ से संसक्त होती है।

23 **सिंहावलोकनन्यायः** [सिंह का पीछे मुड़ कर देखना] यह उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति आगे चलने के साथ २ अपने पूर्वकृत कार्य पर भी दृष्टि डालता रहता है जिस प्रकार सिंह शिकार की तलाश में आगे भी बढ़ता जाता है परन्तु साथ ही पीछे मुड़कर भी देखता रहता है।

24 **सूचीकटाहन्यायः** [सूई और कड़ाही का न्याय] यह उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब दो बातें एक कठिन और एक अपेक्षाकृत आसान करने को हों तो उस समय आसान कार्य को पहले किया जाता है जैसे कि जब किसी व्यक्ति को सुई और कड़ाही दो वस्तुएँ बनानी हैं तो वह सुई को पहले बनावेगा क्योंकि कड़ाही की अपेक्षा सुई का बनाना आसान या अल्पश्रमसाध्य है।

25 **स्थूणानिखननन्यायः** [गढ़ा खोदकर उसमें थूणी लगाना] जब किसी मनुष्य को कोई थूणी अपने घर में लगानी होती है तो मिट्टी कंकड़ आदि बार बार डाल कर और कूटकर वह उस थूणी को दृढ़ बनाता है, इसी प्रकार वादी भी अपने अभियोग की पुष्टि में नाना प्रकार के तर्क, और दृष्टान्त उपस्थित करके अपनी बात का और भी अधिक समर्थन करता है।

26 **स्वामिभृत्यन्यायः** [स्वामी और सेवक का न्याय] इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब पालक और पाल्य पोषक और पोष्य के संबंध को बतलाना होता है या ऐसे ही किन्हीं दो पदार्थों का संबंध बतलाया जाता है।

न्याय्य (वि०) [न्याय+यत्] 1 ठीक, उचित, सही, न्यायसंगत, उपयुक्त, योग्य—न्याय्यात्पथः प्रविचलंति

पद न धौरा.—भर्तृ० २।८३, भग० १८।१५, मनु० २।१५२, ९।२०२, रघु० २।५५, कि० १।७, कु० ६।८७ 2 सामान्य, प्रचलित।

न्यासः [नि+अस्+घञ्] 1 रखना, स्थापित करना आरोपण करना—तस्या खुरन्यासपवित्रपांसुम्—रघु० २।२, कु० ६।५०, चरणन्यास, अंगन्यास आदि 2 अतः कोई भी छाप, चिह्न, मोहर, ठप्पा अतिशस्त्र-नखन्यास—रघु० १२।७३, जहाँ नखचिह्न शस्त्र-चिह्नों से भी बढ़ गये, क्षतन्यास 3 जमा करना 4 धरोहर, अमानत प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा—श० ४।२२, रघु० १२।१८ याज्ञ० २।६७ 5. सौंपना, बचन बद्ध होना, सिपुर्द करना, हवाले करना 6 चित्रित करना लिख देना 7 छोड़ना, उसर्ग करना त्यागना, तिलांजलि देना—शस्त्र भग० १८।२ 8 सम्मुख रखना, घटाना 9 मोड़ कर निकालना (पर्ज आदि से) पकड़ना 10 शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में भिन्न भिन्न देवताओं का ध्यान जो सामान्य रूप से मंत्र पाठ के साथ २ तदनुरूप हावभाव सहित सम्पन्न किया जाता है। सम०—अपह्नवः किसी धरोहर का प्रत्याख्यान करना,—धारिन् (पुं०) धरोहर रखने वाला, रहन रखने वाला।

न्यासिन् (पुं०) [न्यास+इनि] जिसने अपने समस्त सांसारिक बन्धनों को काट डाला है, संन्यासी।

न्यु (न्यू) ङ्ख (वि०) [नि+उङ्ख्+घञ्] 1. मनोहर, सुन्दर, प्रिय 2 उचित, ठीक।

न्युब्ज (वि०) [नि+उब्ज+अच्] 1 नीचे की ओर झुका हुआ, या मुड़ा हुआ, मुँह के बल लेटा हुआ —ऊर्ध्वार्पित न्युब्जकटाहकल्पे (व्योम्नि)—नै० २२।३२ 2 झुका हुआ टेढ़ा 3 उन्नतोदर 4 कुबड़ा, —ब्जः बड़ या बरगद का पेड़। सम०—खड्गः खांडा, वक्र खड्ग।

न्यून (वि०) [नि+ऊन्+अच्] 1 कम किया हुआ, घटाया हुआ क्षीण किया हुआ 2 सदोष घटिया, हीन अभावग्रस्त रहित या विहीन—जैसा कि अर्ध-न्यून में 3 कम (विप० अधिक) -याज्ञ० २।११६ 4 सदोष (किसी अंग में) पापी 5 नीच, दुष्ट, दुर्जन निंद्य—नम् (अव्य०) कम, कम मात्रा में। सम०—अंग (वि०) अपांग विकलांग,—अधिक (वि०) कम या ज्यादह, असमान,—धी निर्बुद्धि अज्ञानी, मूर्ख।

न्यूनयति (ना० धा० पर०) घटाना, कम करना।

प

प (वि०) [पा+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 पीने वाला, जैसा कि 'द्विप' 'अनेकप' में 2 चौकसी करने वाला, रक्षा करने वाला हुकूमत करने वाला जैसा कि 'गोप' 'नृप' और 'क्षितिप' में —पः 1 वायु हवा 2. पत्ता 3 अंडा।

पक्कणः [पचति स्वार्थानिकृष्टनासमिति पच्+क्विप् =पक्—तस्य कण कोलाहलशब्दो यत्र] 1 चांडाल का घर बर्बर या जंगली आदमी का घर।

पक्तिः (स्त्री०) [पच्+क्तिन्] 1 पकाना 2 पचना, हाजमा या पाचन शक्ति 3. पक जाना, परिपक्व होना, परिपक्वावस्था विकास 4 प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा। सम०-शूलम् अजीर्ण के कारण पेट में होने वाला दर्द, उदर पीड़ा।

पक्तृ (वि०) [पच्+तृच्] 1. रसोइया पाचक 2. पकाने वाला 3. उद्दीपक, पचाने वाला—(पुं०) जठराग्नि।

पक्त्रम् [पच्+ष्ट्रन्] 1 यज्ञाग्नि को स्थापित रखने वाले गृहस्थ की दशा 2 इस प्रकार स्थापित यज्ञाग्नि।

पक्त्रिम (वि०) [पच्+क्त्रि, मम्] 1 पक्का, पका हुआ 2. परिपक्व, 3. पकाया हुआ।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1 पकाया हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ—जैसा कि 'पक्वान्न' में 2 पचा हुआ 3 सेका हुआ, गरम किया हुआ, तपाया हुआ (विप० आम) पक्वेष्टकानामाकर्षम्—मृच्छ० ३ 4 परिपक्व, पक्का, पक्वबिम्बाधरोष्ठी—मेघ० ८२ 5 सुविकसित, सुपूरित, परिपक्व जैसा कि 'पक्वधी' में 6 अनुभवशील, बुद्धिमान् 7 (फोड़े की भांति) पका हुआ जिसमें पीप पड़ने वाली हो 8 सफेद (बाल) 9 नष्ट, क्षीयमाण विनाश के अन्त पर, अपनी मृत्यु का स्वागत करने के लिए पक्का। सम०—अतिसारः पुरानी पेचिश,—अन्नम् मसाला आदि डालकर बनाया गया भोजन,—आशयः पेट, उदर,—इष्टका पकी हुई ईंट,—इष्टकाचितम् पक्की ईंटों से निर्मित भवन,—कृत् (वि०) 1 पकाने वाला, 2 ५ ,पक्व होने वाला,—रसः शराब, मदिरा—वारि (नपुं०) कांजी का पानी।

पक्षणः (पुं०) एक बर्बर जाति का नाम, चाण्डाल।

पक्ष् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ, पक्षति, पक्षयति-ते) 1. लेना, ग्रहण करना 2. स्वीकार करना 3. पक्ष लेना, तरफदारी करना।

पक्षः [पक्ष्+अच्] बाजू, डैना, अद्यापि पक्षावपि नोद्भि-

बंधे—का० ३४७, इसी प्रकार 'उच्छ्रितपक्षाः' निकल आये हैं पंख जिसके, पक्षयुक्त, पक्षच्छेदोद्यतं शक्रम् —रघु० ४।१०, ३।४० 2. बाण के दोनों ओर लगे पंख 3. किसी मनुष्य या वस्तु का पार्श्व, कक्षा—स्तं-बेरमा उभयपक्षविनीतनिद्राः—रघु० ५।७२ 4. किसी भी वस्तु का पार्श्व, बगल 5. सेना का एक कक्ष या पार्श्व 6. किसी वस्तु का अर्धभाग 7. चान्द्र मास का अर्धभाग, पखवारा (१५ दिनों का) (इस प्रकार के दो पक्ष होते हैं—शुक्लपक्ष—जिन दिनों चन्द्रमा निकला रहता है, कृष्ण या तमिस्रपक्ष—अंधियारा पाख) तमिस्रपक्षेऽपि सह प्रियाभिर्ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४, मनु० १।६६, याज्ञ० ३।५०, सीमा वृद्धिं समायाति शुक्लपक्ष इवोडुराट्—पंच० १।९२ 8. दल, गुट, पहलू—प्रमुदित-वरपक्षम्—रघु० ६।८६, शि० २।११७, भग० १४।२५, रघु० ६।५३,१८ 9. किसी एक दल से संबद्ध, अनु-यायी, साझीदार—अनुपक्षोभवान्—हि० १ 10. श्रेणी, समुदाय, समूह, अनुयायियों की संख्या —शत्रु°, मित्र° 11. किसी तर्क का एक पहलू, विकल्प, दो में से कोई सा एक पक्ष,—पक्षे दूसरा पहलू, इसके विप-रीत पूर्व एवाभवत्पक्षस्तस्मिन्नाभवदुत्तरः —रघु० ४।१०, १४।३४, तु० पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष 12 एक सामान्य विचार जैसा कि 'पक्षान्तरे' में 13. चर्चा का विषय, प्रस्ताव 14 अनुमान-प्रक्रिया का विषय (वह वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति संदिग्ध हो) संदिग्ध-साध्यवान् पक्षः—तर्क०, दधद्विरुद्धबुद्धिपूतो गृहीतपक्षा —शि० २०।११ (यहां इसका अर्थ 'पंखयुक्त' भी है) 15. दो की संख्या की प्रतीकात्मक उक्ति 16 पक्षी 17 अवस्था, दशा 18 शरीर 19. शरीर का अंग 20. राजा का हाथी 21. सेना 22. दीवार 23. विरोध 24 प्रति-वचन, उत्तर 25. राशि, समुच्चय (समासमें 'बाल'का अर्थ देने वाले शब्दों के साथ), केशपक्षः, तु० हस्त । सम० —अंतः कोई से भी पक्ष का पन्द्रहवां दिन अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा का दिन —अंतरम् 1. दूसरा पार्श्व 2. किसी तर्क का दूसरा पहलू 3. और विचार या कल्पना,—आघातः 1.शरीर के एक अंग का मारा जाना, अधरंग—आभासः 1. भ्रामक तर्क 2. मिथ्या परिवाद या फ़रियाद,—आहारः पखवारे में केवल एक बार भोजन करना,—ग्रहणम् किसी भी पक्ष का हो जाना,—चरः 1. यूथभ्रष्ट हाथी 2. चन्द्रमा, —छिद् (पुं०) इन्द्र का विशेषण (पहाड़ के पंखों या भुजाओं को काटने वाला), कु० १।२०,—जः चांद —द्वयम् 1. किसी विवाद के दोनों पहलू 2. दो पखवारे अर्थात् एक मास,—द्वारम् चोरदरवाज़ा, निजी द्वार,—धर (वि०) 1. पंखधारी 2. एक का पक्ष लेने वाला, किसी एक की तरफ़दारी करने वाला (रः) 1. पक्षी 2. चन्द्रमा 3. हिमायती 4. यूथभ्रष्ट हाथी,—नाडी पक्षों का मोटा पर जिसे कलमकी भांति प्रयुक्त करते हैं,—पातः 1. किसी एक की तरफ़दारी करना 2. (किसी वस्तु के लिए) स्नेह, प्रेम, चाह, रुचि—भवंति अव्यवेषु हि पक्षपाताः—कि० ३।१२, वेणी० ३।१०, उत्तर० ५।१७, रिपुपक्षे बद्धःपक्षपातः —मुद्रा० १।१३ 3. किसी दल विशेष की ओर अनु-राग, हिमायत, तरफ़दारी—पक्षपातमत्र देवी मन्यते —मालवि० १, सत्यं जना वच्मि न पक्षपातात् —भर्तृ० १।४७ 4. पंखों का गिरना, पक्षमोचन 5. हिमायती—पातिन् (वि०) 1. पक्षपात करने वाला, किसी एक दल का अनुयायी, (किसी एक विशिष्ट बात का) तरफ़दार—पक्षपातिनो देवा अपि पांडवा-नाम् वेणी० ३ 2. सहानुभूति करने वाला—वेणी० ३ 3. अनुयायी, हिमायती, मित्र—अ सुरपक्षपाती —विक्रम० १, (नै० २।५२ में 'पक्षपातिता' शब्द का अर्थ है 'पंखों की गति' भी),—पालिः चोर दरवाज़ा, —पिंडः कंक पक्षी,—भागः 1. पार्श्व, बगल 2. विशेषतः हाथी का पार्श्व,—भुक्तिः उतनी दूरी जितनी सूर्य एक पखवारे में तय करता है,—मूलम् पंख की जड़, —वादः 1. एकतरफ़ा बयान 2. एक पक्ष की उक्ति, मताभिव्यक्ति, —वाहनः पक्षी,—हत (वि०) जिसका एक पार्श्व लकवे से बेकाम हो गया हो, —हरः पक्षी,—होम 1. पन्द्रह दिन तक होने वाला यज्ञ 2. पाक्षिक यज्ञ ।

पक्षकः [पक्ष+कन्] 1. चोर दरवाज़ा 2. पक्ष, पार्श्व 3. साथी, हिमायती (समास के अन्त में प्रयुक्त) ।

पक्षता [पक्ष+तल्+टाप्] 1. मित्रता, हिमायत 2. दल विशेष का अनुगमन 3. किसी एक पक्ष का होना ।

पक्षतिः (स्त्री०) [पक्षस्य मूलम्-पक्ष+ति] 1. पंख की जड़ अविरलकुचपुटेन पक्षती—नै० २।२,—कर्तुं च्छिन्न जटायुपक्षतिः—उत्तर० ३।४३, शि० ११।२६ 2. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा ।

पक्षालुः [पक्ष+आलुच्] पंछी ।

पक्षिणी [पक्ष+इनि+ङीप्] 1. मादा पक्षी 2. दो दिनों के बीच की रात (द्वावह्नावेक रात्रिश्च पक्षिणीत्य-भिधीयते) 3. पूर्णिमा ।

पक्षिन् (वि०) (स्त्री—णी) [पक्ष+इनि] 1. पंखयुक्त 2. बाजूवाला 3. तरफ़दार, दल विशेष का अनुयायी —(पुं०) 1. पक्षी 2. तीर 3. शिव का विशेषण । सम०—इन्द्रः,—प्रवरः,—राज् (पुं०)—राजः,—सिंहः,—स्वामिन् (पुं०) गरुड का विशेषण,—कीटः छोटी चिड़िया,—शाला 1. घोंसला 2. चिड़ियाघर ।

पक्ष्मन् (नपुं०) [पक्ष् + मनिन्] 1. बरौनी — मञ्जिगुरुभिः पक्ष्मभिः—मेघ० ९०।४७, रघु० २।१९, ११।३६, 2. फूल की पंखड़ी 3. धागे का सिरा, पतला धागा 4. बाजू।

पक्ष्मल (वि०) [पक्ष्मन् + लच्] 1. दृढ़, लम्बी और सुन्दर बरौनी वाला — पक्ष्मलाक्ष्या श० ३।२४ 2 बालों वाला, लोमश, रोएंदार [illegible] —शि० ४।६१।

पक्ष्य (वि०) [पक्ष + यत्] 1. पखवाड़े में होने वाला, पाक्षिक 2. तरफदार, पक्षपाती, [illegible] अनुयायी मित्र, साथी [illegible] दक्षिण एव [illegible] पक्षे दिवसो [illegible] विक्रम० ११६।

पंकः, —कम् [पच् विस्तारे कर्मणि करणे वा घञ् कुत्वम्] गारा, कीचड़, मिट्टी, दलदल [illegible] मृदक नालनिष्ठ्यतै [illegible] १५।३० 2. ढेर, मोटी परत, [illegible] 3. [illegible] पाप। सम०— **कीर**: [illegible] **क्रीडः** सूअर —**ग्राहः** मगरमच्छ, घड़ियाल — **छिद्** (पुं०) रीठे का वृक्ष (जिसका फल मसलने से गदला पानी साफ हो जाता है) [illegible] —**जम्** कमल, **—ज**, **—जन्मन्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, सारस, विष्णु का विशेषण [illegible] —**जन्मन्** (नपुं०) कमल (पुं०) सारस पक्षी, **—मण्डूकः** द्विकोष घोंघा, **—रुह्** (नपुं०) —**रुहम्** कमल —**वासः** केकड़ा।

पंकजिनी [पंकज + इनि] 1. कमल का पौधा [illegible] 2. कमलों का समूह 3. कमलों से भरा हुआ स्थान 4. कुमुद कली।

पंकणः [पृषो० सा०] चाण्डाल की झोंपड़ी दे० 'पक्कण'

पंकारः [पङ्क + ऋ + अण्] 1. सिवार 2. बाँध, मेंड़ 3. जीना, सीढ़ी, पौड़ियाँ।

पंकिल (वि०) [पंक + इलच्] गारे से भरा हुआ, गदला, मैला, मलिन — शि० १२।३८।

पंकेजम् [पंके जायते — पंके + जन् + ड] कमल।

पंकेरुह्, (नपुं०), —**हम्** [पंके + रुह् + क्विप् क वा] कमल, —**हः** सारस पक्षी।

पंकेशय (वि०) [पंके + शी + अच्] दलदल में रहने वाला।

पंक्तिः (स्त्री०) [पञ्च् + क्तिन्] लाइन, कतार, श्रेणी, सिलसिला—द्रुमेषु लाक्षारुणिताम्बुकाका—विक्रम० ४।४, पक्ष्म पंक्ति—रघु० २।१९, अलिपंक्ति—कु० ४।१५, रघु० ६।५ 2. समूह, समष्टि, रेवड़, दल 3. (एक ही जाति के) लोगों का जाकर [illegible] बैठना, एक ही जाति के सहभोजियों का समुदाय तु० पंक्तिपावन 4. जीवित पीढ़ी 5. पृथ्वी 6. यश, प्रसिद्धि 7. पाँच का समूह, पाँच की संख्या 8. दस की संख्या जैसा कि 'पंक्तिरथ' और 'पंक्तिग्रीव' में है। सम०—**ग्रीवः** रावण का विशेषण, —**चरः** समुद्री उकाब, कुरर पक्षी, —**दूषः**, —**दूषकः**, जिसके साथ बैठकर भोजन करने में दूषण लगे, ऐसा समाज को दूषित करने वाला व्यक्ति, —**पावनः** आदरणीय या सम्मानित व्यक्ति, एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण या विद्वान् होने के साथ [illegible] अपनी उपस्थिति से भोज की पंक्ति को पवित्र कर देता है [illegible] पंक्तिपावन [illegible] [illegible] पंक्तिपावन [illegible] [illegible]

पच् [illegible] [illegible] [illegible] 1. [illegible] 2. [illegible] सम० [illegible] 1. [illegible] 2. [illegible]

पचम्पच [illegible] [illegible] विकसना।

पच् (भ्वा० उभ० पचति-ते पक्व) 1. पकाना, भूनना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इस प्रकार [illegible] [illegible] [illegible] मनु० ३।११८ [illegible] [illegible] —४।२० भर्तृ० ११५४ 2. पकाना (ईंट आदि), पकाना दे० पक्व 3. (भोजन आदिक) पचाना—[illegible] —भाग० १५।१४ 4. पकना, परिपक्व होना 5. पूर्णता को पहुँचाना, (मनस आदि का) विकास करना 6 (धातु आदि का) गलाना 7. (अपने लिए) पकाना (आ०)—कर्मo, पच्यते, 1. पकाया जाना 2. पक्का होना, परिपक्व या विकसित होना पकना (आल०) फल देना, पूर्णता को प्राप्त करना—रघु० ११।५० —प्रेर०-पाचयति-ते पकवाना पक्का कराना, विकसित कराना, पूर्णता को पहुँचाना—इच्छा० पिपक्षति—पकाने की इच्छा करना—**परि**— पकना परिपक्व होना, विकसित होना, **वि**— 1 परिपक्व होना विकसित होना पकना, फल देना —रघु० १७।५३ 2 पचाना 3. भलीभांति पकाना।

ii (भ्वा० आ०—पचते) स्पष्ट करना, विशद करना।
पचतः [पच्+अत] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. इन्द्र का नाम।
पचन (वि०) [पच्+ल्युट्] पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना —नः अग्नि—नम् 1. पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना 2. पकाने के उपकरण, बर्तन, इन्धन आदि।
पचपचः [प्रकारे पच इत्यस्य द्वित्वम्] शिव जी की उपाधी।
पचा [पच्+अङ्+टाप्] पकाने की क्रिया।
पचिः [पच्+इन्] अग्नि।
पचेलिम (वि०) [पच्+एलिमच्] 1. शीघ्र ही पकने वाला 2. परिपक्व होने के योग्य 3. स्वतः या नैसर्गिक रूप से पकने वाला ददर्श मालूरफलं पचेलिमम् —नै० १।९४,—मः 1 अग्नि 2. सूर्य।
पचेलुकः [पच्+एलुक] रसोइया।
पञ्चटिका (स्त्री०) एक छोटी घंटी।
पंचक (वि०) [पञ्च+कन्] 1. पाँच से युक्त 2. पाँच से सबद्ध 3. पाँच से निर्मित 4 पाँच में खरीदा हुआ 5. पाँच प्रतिशत लेने वाला, - कः,—कम् पाँच वस्तुओं का समूह, 'अम्लपंचक'।
पंचत् (स्त्री०) पच, पचसमुदाय, पचायत।
पंचता,—त्वम् [पंचन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. पाँचगना स्थिति 2. पाँच का समूह 3. पाँच तत्त्वों की समष्टि —अनः पंच—तां—त्वं—गम्—या उन पाँच तत्त्वों में घुलमिल जाना जिनसे शरीर बना है, मरना, नष्ट होना, पंचतां—त्वं नी मार डालना, नष्ट करना - पंचभिर्निर्मिते देहे पंचत्व च पुनर्गते, स्वां स्वां योनिमनुप्राप्ते तत्र का परिदेवना। रत्न० ३।३।
पंचथुः [पञ्चन्+अथुच्] 1. समय 2. कोयल।
पंचधा (अव्य०) [पंचन्+धा] 1. पाँच भागों में 2. पाँच प्रकार से।
पंचन् (सं० वि०) [पंच्+कनिन्] (सदैव बहुवचनात, कर्तृ० कर्म० —पंच) पाँच (समास में पूर्वपद होने के स्थिति में पचन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम० अंशः पाँचवाँ भाग, पाँचवाँ —अग्निः 1. पाँच यज्ञाग्नियों का समूह (अर्थात्—अन्वाहार्य पचन या दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य) 2. पंचाग्नियों को स्थापित रखने वाला गृहस्थ पंचाग्नयो धृतव्रताः—मा० १, मनु० ३।१८५ —अंग (वि०) पाँच सदस्यीय, पाँच अंगों वाला, जैसा कि पंचांगः प्रणामः (अर्थात् बाहुभ्यां चैव जानुभ्यां शिरसा वक्षसा दृशा), कृतपंचांगविनिर्णयो नय कि० २।१२, (दे० मल्लि० और काडंवक) (गः) 1. कछुवा 2. एक प्रकार का घोड़ा जिसके शरीर के विभिन्न भागों पर पाँच चिह्न हों (गी) लगाम का दहाना, मुखरी (गम्) 1. पाँच भागों का संग्रह या समष्टि 2. भक्ति के पाँच प्रकार 3. पंचांग, तिथिपत्र, जंत्री —तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च, चतुरंगबलो राजा जगतीं वशमानयेत्, अहं पंचांग बलवानाकाशं वशमानये —सुभा० °गुप्तः एक प्रकार का समुद्री कछुवा °शुद्धिः (स्त्री०) तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण (ज्योतिष), इन पाँच आवश्यक अंगों की अनुकूल स्थिति, अंगुल (वि०) (स्त्री० ला,—ली) पाँच अंगुल की माप, —अ (आ) जम् बकरी से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थ, अप्सरम् (नपुं०) मंडकर्णी ऋषि द्वारा निर्मित कहा जाने वाला सरोवर—तु० १३।३८ अमृतम् देवपूजा के लिए पाँच मिष्ट पदार्थों का संग्रह (दूध व शर्करा जैसे घृत दधि तथा मधु) अर्चिस् (पुं०) बुधग्रह —अवयव (वि०) पाँच अंगों वाला (जैसे कि अनुमान प्रक्रिया इसके प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन, यह पाँच अंग हैं) अवस्थ शव (क्योंकि यह पाँचों तत्त्वों में घुल मिल जाता है) तु० 'पचत्व' में, —अविकम् भेड़ से प्राप्त पाँच प्रकार के पदार्थ —अशीतिः (स्त्री०) पचासी, अहः पाँच दिन का समय, —आतप (वि०) पचाग्नियाँ (चारों ओर चार अग्नि, तथा ऊपर सूर्य) से तपस्या करने वाला तु० रघु० १३।४१, आनन,—आस्यः, मुख—वक्त्रः 1 शिव का विशेषण 2 सिंह (क्योंकि इस का मुख प्राय खुब खुला होता है, चार पंजे भी मुख जैसा काम करते हैं —पंचम आननं यस्य) (अत्यधिक विद्वत्ता तथा दक्षता को प्रकट के लिए प्रायः विद्वानों के नामों के अन्त में लगाया जाता है न्याय°, तर्क° आदि उदा० जगन्नाथ तर्कपंचानन),—इंद्रियम् पाँच अंगों की समष्टि (ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेन्द्रिय दे० इन्द्रियम्), इषु, —बाण शर कामदेव का विशेषण (क्योंकि इसके पाँच बाण हैं—अरविंदमशोकं च चूतं च नवमल्लिका, नीलोत्पलं च पंचैते पंचबाणस्य सायका),—उष्मन् (पुं०, ब० व०) शरीर में रहने वाली पाँच अग्नियाँ,—कर्मन् (नपुं०—आयु० में) पाँच प्रकार की चिकित्साएँ अर्थात् 1. वमन —'उल्टी कराने वाली औषधियाँ देना' 2. रेचन—दस्त लाने वाली औषधियों का सेवन 3. नस्य—छींक लाने वाली औषधियाँ—नसवार—देना 4 अनुवासन —तैलयुक्त बस्तिकर्म 5. निरूह—बिना तेल का बस्तिकर्म, —कृत्वस् (अव्य०) पाँच बार,—कोणम् पाँच कोण की आकृति,—कोलम् पाँच मसालों (पीपल, पिप्परामूल, चई, चित्रकमूल और सोंठ) का चूर्ण, —कोशाः (पुं० ब० व०) पाँच प्रकार का परिधान 1. अन्नमय कोष या स्थूल शरीर 2. प्राणमय कोष 3 मनोमय कोष 4. विज्ञानमय कोष (२, ३, व ४ से

मिल कर लिंग शरीर बनता है 5 आनन्दमय कोष —अर्थात् मोक्ष) जिसमें आत्मा लिप्त समझा जाता है,—**क्रोशी** पाँच कोस की दूरी,—**खट्वम्**—**खट्वी** पाँच खाटों का समूह,—**गवम्** पाँच गौओं का समूह —**गव्यम्** गौ से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थों (अर्थात् दूध, दही घी मूत्र और गोबर—क्षीरं दधि तथा चाज्यं मूत्रं गोमयमेव च) का समूह,—**गु** (वि०) पाँच गौओं के बदले खरीदा हुआ,—**गुण** (वि०) पाँच गुणा,—**गुप्त** 1 कछुवा 2 दर्शनशास्त्र में वर्णित भौतिकवाद की पद्धति चार्वाकों का सिद्धांत —**चत्वारिंश** (वि०) पैंतालीसवाँ,—**चत्वारिंशत्** पैंतालीस,—**जन** 1 मनुष्य मनुष्य जाति 2 एक राक्षस जिसने शंखमूर्ति का रूप धारण कर लिया था तथा जिसको श्रीकृष्ण ने मार गिराया था 3 आत्मा 4 पाँच प्राणियों अर्थात् देवता मनुष्य गंधर्व नाग और पितर 5 हिन्दुओं की चार मुख्य जातियाँ (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र तथा पाँचवें निषाद या अन्त्यज (इस दो अर्थों में ब० व०) (पूरे विवरण के लिए दे० शारी० 1 4।11 13 पर शांकरभाष्य।—**जनीन** (वि०) पञ्चजनों का भक्त (न) अभिनेता बहुरूपिया विदूषक,—**ज्ञान** 1 बुद्ध का विशेषण क्योंकि वह पाँच प्रकार के ज्ञान से युक्त है 2 पाशुपत सिद्धांतों में पारंगत मनुष्य —**तक्षम्**, —**क्षी** पाँच रथकारों का समूह —**तत्त्वम्** 1 पाँच तत्त्वों की समष्टि अर्थात् पृथ्वी जल अग्नि वायु और आकाश 2 (तन्त्र में) तांत्रिकों के पाँच तत्त्व या पञ्चमकार—अर्थात् मद्य मांस मत्स्य मुद्रा और मैथुन—भी कहलाते हैं,—**तपस्** (पुं०) एक संन्यासी जो ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की प्रखर किरणों के नीचे चारों ओर आग जला कर बैठा हुआ तपस्या करता है,—उ० —हविरर्जयामेधवता चतुर्णां मध्य ललाटंतपसप्तसप्तिः —रघु० १३।४१, कु० ५।२३ मनु० ६।२३ और शि० २।५१ भी,—**तय** (वि०) पाँच गुना (—यः) पञ्चायत —**त्रिंश** (वि०) पैंतीसवाँ,—**त्रिंशत्**,—**त्रिंशति** (स्त्री०) पैंतीस,—**दश** (वि०) 1 पन्द्रहवाँ 2 जिसमें पन्द्रह बढ़ गए हैं —यथा पञ्चदशशतम्—एक सौ पन्द्रह,—**दशाहः** (पुं० ब० व०) पन्द्रह,—**अह** पन्द्रह दिन की अवधि,—**दशिन्** (वि०) पन्द्रह से युक्त या निर्मित,—**दशी** पूर्णिमा —**दीर्घम्** शरीर के पाँच लंबे अंग—बाहू नेत्रद्वय कुक्षिर्द्वे तु नासे तथैव च स्तनयोरन्तरं चैव पञ्चदीर्घं प्रचक्षते,—**नख** 1 पाँच पंजों से युक्त कोई जानवर —पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या ये प्रोक्ताः कृतजैर्द्विजैः—भट्टि० ६।१३१, मनु० ५।१७ १८, याज्ञ० १।१७७ 2 हाथी 3 कछुवा 4 सिंह या व्याघ्र —**नद** पाँच नदियों

का देश, वर्तमान पञ्जाब (पाँच नदियों के नाम—शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता या क्रमशः सतलुज व्यास रावी, चेनाब, और झेलम) (—दाः—ब० व०) इस देश के निवासी—पञ्जाबी —**नवति** (स्त्री०) पिचानवें —**नीराजनम्** देवमूर्ति के सामने पाँच पदार्थों को हिलाना और फिर उसके सामने लंबा लेट जाना (पाँच पदार्थों के नाम दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान का पत्ता), —**पञ्चाश** (वि०) पचपनवाँ, —**पञ्चाशत्** पचपन, —**पदी** पाँच कदम पञ्च० ५।११५ —**पात्रम्** 1 पाँच पात्रों का समूह 2 एक श्राद्ध जिसमें पाँच पात्रों में रखकर भेंट दी जाती है —**प्राणाः** (पुं० ब० व०) पाँच जीवन प्रद वायु प्राण अपान व्यान, उदान और समान, —**प्रासाद** विशिष्ट आकार का मन्दिर (जिसमें चार कंगूरे और एक मीनार या शिखर हो) —**बाण** —**बाणः**, —**शरः** कामदेव के विशेषण दे० 'पञ्चेषु' —**भुज** (वि०) पाँच भुजाओं का (—जः) पञ्चभुज या पञ्चकोना द्रु० पञ्चकोण —**भूतम्** पाँच मूलतत्त्व पृथ्वी जल, अग्नि वायु और आकाश —**मकारम्** वाममार्गी तन्त्राचार के पाँच मूलतत्त्व जिनके नाम का प्रथम अक्षर म है (मद्य मांस मत्स्य मुद्रा और मैथुन, दे० पञ्चतत्त्व (2) —**महापातकम्** पाँच बड़े पाप दे० महापातक —**महायज्ञाः** (पुं० ब० व०) पाँच दैनिक यज्ञ जो एक ब्राह्मण के लिए अनुष्ठेय हैं दे० महायज्ञ —**माष** दे० —**रत्नम्** पाँच रत्नों का समूह (वे कई प्रकार से गिने जाते हैं (1) नीलकं वज्रकं चेति पद्मरागश्च मौक्तिकम् प्रवालं चेति विज्ञेयं पञ्चरत्नं मनीषिभिः (2) सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम् रत्नपञ्चकमाख्यातम् (3) कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम् पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिः —**रात्रम्** पाँच रात्रियों का समय —**राशिकम्** (गणि० में) गणित की एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं राशि निकाली जाती है —**लक्षणम्** एक पुराण (क्योंकि इसमें पाँच महत्त्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् दे० 'पुराण' भी —**लवणम्** नमक के पाँच प्रकार—अर्थात् काचक सैन्धव सामुद्र, बिड और सौवर्चल —**वटी** 1 अंजीर की जाति के पाँच वृक्ष—अर्थात् पीपल बेल बड़, हरड़ और अशोक 2. दण्डकारण्य का एक भाग जहाँ से गोदावरी निकलती है और जहाँ राम ने सीता समेत बहुत दिन बिताये थे यह स्थान नासिक से दो मील की दूरी पर है —उत्तर० २।२८, रघु० १३।३१,—**वर्षदेशीय** (वि०) लगभग पाँच वर्ष की आयु का —**वर्षीय** (वि०) पाँच

वर्ष का,— **वल्कलम्** पाँच प्रकार के वृक्षों (अर्थात् बड़, गूलर, पीपल, प्लक्ष और बेंतस) की छाल —**विंश** (वि०) पच्चीसवाँ,— **विंशतिः** (स्त्री०) पच्चीस —**विंशतिका** पच्चीस का संग्रह जैसा कि 'वेतालपंच विंशतिका' में,—**विध** (वि०) पाँच गुणा या पाँच प्रकार का,—**शत** (वि०) 1 जिसका जोड़ पाँच सौ हो 2 पाँच सौ (—**तम्**) 1 एक सौ पाँच 2 पाँच सौ —**शाख** 1 हाथ 2 हाथी, **शिखः** सिंह —**ष** (वि०) (ब० व०) पाँच छः सन्त्यन्येऽपि बृहस्पतिप्रभृतयः संभाविताः पञ्चषाः भर्तृ० २।३४ **षष्ट** (वि०) पैंसठवाँ,—**षष्टि** (स्त्री०) पैंसठ **सप्तत** पचहत्तरवाँ —**सप्तति** (स्त्री०) पचहत्तर **सूना** (स्त्री०) घर में रहने वाली पाँच वस्तुएँ जिनके द्वारा छोटे २ जीवों की हिंसा हो जाया करती है वे ये हैं पंच सूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः कण्डनी चोदकुम्भश्च —मनु० ३।६८ (चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और पानी का घड़ा) —**हायन** (वि०) पाँच वर्ष की आयु का।

पंचनी [पचन् + ल्युट् — ङीप्] शतरंज जैसे खेल की कपड़े की बनी हुई बिसात।

पंचम (वि०) (स्त्री० —मी) [पंचन् + मट्] 1 पाँचवाँ 2 पाँचवाँ भाग बनानेवाला 3 दक्ष, चतुर 4 सुन्दर, उज्ज्वल,—**मः** 1 भारतीय स्वरग्राम का पाँचवाँ (बाद के समय में सातवाँ) स्वर कोयल कोकिलारव (कोकिला रौति पंचमम् —नारद) शरीर के पाँच अंगों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम पंचम है —वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कंठमूर्धसु, विचरन् पंचमस्थानप्राप्त्या पंचम उच्यते 2 संगीत स्वर या राग का नाम —व्यवधत्त दिवा मौन नन्वि प्रपंचम पंचमम् —शि० ६०, इसी प्रकार उदश्चित पंचम रागम —गीत० १ **मम्** 1 पाँचवाँ 2 मैथुन तान्त्रिकों का पाँचवाँ मकार —**मी** 1 चान्द्रमास के पक्ष की पाँचवीं तिथि 2 (व्या० में) अपादान कारक द्रौपदी का विशेषण 4 शतरंज की कपड़े की बिसात। सम०—**आस्य** कोयल।

पंचालाः (पुं०, ब० व०) [पच् + कालन] एक देश तथा उसके निवासियों का नाम **—लः** पंचालों का राजा।

पंचालिका [पंचाय प्रपंचाय अलति —अल् + ण्वुल् + टाप् इत्वम्] गुड़िया, पुतली तु० 'पाञ्चालिका'।

पंचाली [पंचाल + ङीप्] 1 गुड़िया, पुतली 2 एक प्रकार का राग 3 शतरंज आदि खेल की कपड़े की बनी बिसात।

पंचाशत् (वि०) (स्त्री० शी) [पंचाशत् + डट्] पचासवाँ।

पंचाशत्, **पंचाशति** (स्त्री०) पचास।

पंचाशिका [पंचाश + क + टाप् इत्वम्] पचास श्लोकों का संग्रह—अर्थात् 'चौर पंचाशिका'।

पंजरम् [पंज् + अरन्] पिंजरा, चिड़ियाघर —पञ्जरशुकः, भुजपंजर रः —**रम्** 1 पसलियाँ 2 कंकाल, ठठरी **रः** 1 शरीर 2. कलियुग। सम० —**आखेटः** मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी **शुकः** पिंजरे का तोता, पिंजड़े में बंद तोता। विक्रम० २।२३।

पंजि, **जी** (स्त्री०) [पञ् + इन, पंजि + ङीप्] 1 रुई का गट्ठा जिससे धागा काता जाय पूनी 2 अभिलेख, पत्रिका बही पत्रिका 3 लिपिमाला, जन्त्री, पत्रा या पंचांग। सम० **कारः** **कारकः** लेखक लिपिकार।

पट् I (भ्वा० पर० पटति) जाना हिलना-जुलना— प्रेर० या चुरा० उभ० —पाटयति ते 1 टुकड़े करना विदीर्ण करना फाड़ना फाड़ कर अलग २ करना फाड़ कर खोलना विभक्त करना इति प्रथमपाटित-पाषाण दरी शि० १८।६१ स्वर्ण गात्रपर्यन्तम ... पुरम्मृच्छ० २ 2 चीरना तोड़ कर खोलना अन्तराल ... मृच्छ० ३।१० 3 छेदना चुभाना घुसेड़ना ... रघु० ११।३१ 4 दूर करना हटाना 5 तोड़ डालना **उद्** 1 फाड़ डालना निकालना जैसा दंष्ट्रोत्पाटनम ... मनु० ८।६९ ... 2 जड़ से उखाड़ना उन्मूलन करना कु० २।४३ रघु० १५।४९ 3 उद्घाटन करना **वि** 1 फाड़ डालना (...) विपाटयामास युवा नखाग्रैः —रघु० ६।१३ 2 खींचना बाहर निकालना उखाड़ना।

II (चुरा० उभ० पटयति ते) 1 गूँथना बुनना कुविन्दस्त्वं तावत्पटयसि गुणग्राममभितः काव्य० ७ 2 वस्त्र पहनाना लपेटना 2 घेरना घेरा बनाना।

पट **टम्** [पट् वेष्टने करणे घञर्थे क] 1 वस्त्र पहनावा कपड़ा चिथड़ा अयं पटः सूत्रदरिद्रतां गतो ... पटच्छिद्रशतैरलंकृतः मृच्छ० २।९, मेघा ... बलदेवाम्बर प्रकाशाः ५।४५ 2 महीन कपड़ा 3 घूँघट परदा 4 कपड़े का टुकड़ा जिस पर चित्र बनाये जायें **टः** छप्पर, छत। सम० —**उटजम्** तम्बू **कारः** 1 जुलाहा 2 चित्रकार —**कुटी** (स्त्री०), **—वापः**, **—वासः**, **—वेश्मन्** (नपुं०) तम्बू शि० ५।२६३, **वासः** 1 तम्बू 2 पेटीकोट 3 सुगंधित चूर्ण रत्न० १, **वासकः** सुगंधित चूर्ण।

पटकः [पट + कै + क] 1 शिविर, पड़ाव 2 रुई का कपड़ा

पटच्चर [पटत् इति अव्यक्तशब्दं चरति पटत् + चर् + अच्] चोर, तु० पाटच्चर, **रम्** चिथड़ा, फटे पुराने कपड़ा।

पटलः [पटत् + कै + क] चोर।

पटपट (अव्य०) अनुकरण मूलक ध्वनि।

पटलम् [पट् + कलच्] 1. छत, छप्पर—विगलितपटलांत

वृषमते जीर्णकुथपम्—मुद्रा० ३।१५ 2. ढकना, आवरण, अवगुण्ठन, लेपन—शिरसि मसीपटलं दधाति दीपः—भामि० १।७४ 3. आँखों का जाला 4. ढेर, समुच्चय, राशि, परिमाण—ध्वान्तपाशे पटलेन रोचिषाम्—शि० १।२१, जलदपटलानि पञ्च० १।३६१, आइपटलैं रघु० ६।६३, मुक्तापटलम्—१३।१७, तारकपटलम्—गीत० ७ 5. टोकरी 6. अनुचरवर्ग, नौकर चाकर [illegible], —ली 1. वृक्ष 2. छप्पर [illegible] —लम् पुस्तक का अध्याय। सम० [illegible] छत का किनारा।

पटहः [पटेन हन्यते [illegible] हन्+ड] 1. धौंसा, नगाड़ा, ढोल, तबला कुर्वन् [illegible] पटहता [illegible] —मेघ० ३६, [illegible] रघु० ९।७१ 2. आरम्भ, उपक्रम 3. [illegible] मारना। सम० [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] ढोल पीटकर [illegible] घूमना

पटाकुका [illegible]

पटि, [illegible] (स्त्री०) [पट् [illegible] पटि+ङीष्] 1. [illegible] 2. [illegible] 3. [illegible] 4. कनात। सम० [illegible] यह एक प्रकार का रंगमंच का निदर्शन है जो किसी पात्र के सोचना पूर्वक रंगमंच पर आने का प्रकट करता है [illegible]।

पटिमन् (पुं०) [पटु+इमनिच्] 1. चतुराई 2. निपुणता 3. [illegible] 4. [illegible] [illegible] बोलना आदि।

पटीर [पट्+ईरन्] 1. [illegible] 3. कामदेव —रम् 1. [illegible] 2. [illegible] 3. [illegible] 4. खेत 5. [illegible] 6. ऊँचाई। सम० [illegible] (पुं०) चन्दन का पेड़ [illegible] —भामि० १।७४।

पटु (वि०) (स्त्री० [illegible] —तर, [illegible] उ० अ० पटिष्ठ) [पट् [illegible] उ [illegible]] 1. चतुर, कुशल, दक्ष, प्रवीण (प्रायः अधि० के साथ) [illegible] पटुः 2. तीक्ष्ण, तीखा, चरपरा 3. प्रखर [illegible] 4. प्रचण्ड, मजबूत, तीव्र, गहन [illegible] 5. कर्कश [illegible] तेजध्वनियुक्त—[illegible] [illegible] —मुद्रा० ६, पटुपटहध्वनिभिर्विनीतनिद्र: —रघु० ९।७१, ७३ 6. प्रबल, स्वस्थ—शि० १५।४२ 7. कठोर, क्रूर, पाषाणहृदय 8. मक्कार, धूर्त, चालाक, शठ 9. नीरोग, स्वस्थ 10. सक्रिय, व्यस्त 11. वाक्पटु, वाग्मी 12. खिला हुआ, फूला हुआ—टु:,—टु (नपुं०) कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी—टु (नपुं०) नमक। सम० —[illegible],—[illegible] (वि०) चालाक, चतुर, तीक्ष्णबुद्धि।

पटोल: [पट्+ओलच्] परवल, ककड़ी की जाति का, —लम् एक प्रकार का कपड़ा।

पटोलक: [पटोल+कै+क] सुक्ति घोंघा।

पट्ट: [illegible] [पट् [illegible]] 1. शिला, तख्ती (लिखने के लिए) पट्टिका शिलापट्टमधिशयाना—श० ३ इसी प्रकार भालपट्ट आदि 2. राजकीय अनुदान राजाज्ञा—याज्ञ० १।३१७ 3. किरीट, मुकुट—रघु० [illegible] 4. [illegible] निर्मोकपट्टा फणिभिर्विमुक्ता —रघु० १६।१७ 5. रेशम—पट्टोपधानम् का० १७ [illegible] इसी प्रकार पट्टांशुक 6. महीन या रंगीन कपड़ा [illegible] / [illegible] का वस्त्र—भट्टि० १०।६० 8. [illegible] रंगीन रेशमी साफा [illegible] १।४ 9. सिंहासन 10. कुर्सी [illegible] 11. ढाल 12. [illegible] पाट 13. चौराहा 14. नगर, कस्बा 15. पट्टी [illegible]। सम० —[illegible] पट्टरानी—[illegible] राजाज्ञा [illegible] अन्य प्रलेखों या दस्तावेजों के लिखने वाला [illegible] —[illegible] एक प्रकार का कपड़ा—देवी, —महिषी, —राज्ञी पटरानी —[illegible], —[illegible] (वि०) [illegible] या रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित।

पट्टनम् [illegible] [illegible] पट्टन—[illegible]] नगर।

पट्टिका [पट्ट+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. तख्ती, फलक जैसा कि हस्तपट्टिका में 2. प्रलेख या दस्तावेज 3. [illegible] कपड़े का टुकड़ा—[illegible] पट्टिकम्—का० १४९ 4. रेशमी कपड़े का टुकड़ा 5. [illegible] या [illegible]। सम०—[illegible] रेशम की बुनावट।

पट्टिश (टी) श (स) [[illegible] टिश (स) [illegible] पट्टी +शी (सी) +क] एक तेज धार की बर्छी [illegible] प्रासपट्टिश आदि [illegible] (पट्टिशो [illegible] [illegible])

पट्टोलिका [पट्ट+[illegible]+[illegible]+टाप् [illegible]] एक प्रकार का [illegible] या पट्टा (भूमि [illegible] पत्रभेद —[illegible])।

पठ् (भ्वा० पर०—पठति, पठित) 1. जोर से पढ़ना या दोहराना, सस्वर पाठ करना, पूर्वाभ्यास करना—[illegible] 2. पाठ करना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना—[illegible] [illegible] मनुप्रोक्तं पठन् द्विजः मनु० १२।१२६ [illegible] 3. (देवता का) आवाहन करना 4. हवाला देना, उद्धृत करना (किसी पुस्तक का) उल्लेख करना—[illegible] [illegible] पुराणे [illegible] पठ्यते—महा० 5. घोषणा करना, अभिव्यक्त करना—[illegible] परमो [illegible] पुरुषस्येह पठ्यते महा० 6. (अपा० के साथ) ... से पढ़ना, प्रेर०—

पाठयति-ते 1 जोर से पढ़वाना 2 अध्यापन करना, शिक्षा देना—सम्मत—पिपठिषति—पाठ करने की इच्छा करना,—परि—, उल्लेख करना घोषणा करना (प्रेर०) शिक्षा देना—तौ सर्वं विद्या परिपाठितौ—उत्तर० २, सम् , पढ़ना सीखना—मनु० ४।९८।

पठकः [पठ्+ण्वुल्] पढ़ने वाला।

पठनम् [पठ्+ल्युट्] 1 पढ़ना पाठ करना 2 उल्लेख करना 3 अध्ययन करना अनुशीलन करना।

पठिः (स्त्री०) [पठ्+इन्] पढ़ना अध्ययन करना अनुशीलन करना।

पण् I (भ्वा० आ०—पणते पणित) 1 व्यापार करना लेन-देन करना खरीदना मोल लेना नै० [illegible] 2 सौदा करना वाणिज्य करना 3 शर्त लगाना या दांव पर लगाना (शर्त की वस्तु में प्राय संब० परन्तु कभी कर्म० भी)—प्राणानामपणिष्यासौ—भ० ८।१२१ पणस्व कृष्णां पाञ्चालीम् महा० 4 जोखिम उठाना, II (भ्वा० आ० चुरा० उभ० पणते पणायति-ते) 1 प्रशंसा करना 2 सम्मान करना वि—, बेचना अदल बदल करना आभीक्ष्ण्य [illegible] चन्द्रकांत त्रिभिर्वसारैर्विपणन्ति गोपाः—सुभा०

पणः [पण+अप्] 1 पासा से या दांव [illegible] 2 जूआ, जो दांव या शर्त [illegible] याज्ञ० २।१८ दमयन्त्या पण साधय [illegible] महा० 3 दांव पर लगाई हुई वस्तु 4 शर्त [illegible] सौदा संधि करार भवता नृपाणि [illegible] ११२५ ठहराव सुनह हि० ४।११८ ११० 5 मजदूरी, भाड़ा 6 पारितोषिक 7 रकम [illegible] सिक्कों में हो या कौड़िया म 8 ८० कौड़ी [illegible] का सिक्का—अशीतिभिर्वराटकैः पण इत्यभिधीयते 8. मूल्य 10 धन दौलत सम्पत्ति 11 [illegible] 12. व्यापार लेनदेन 13 दुकान 14 बिक्री [illegible] वाला 15 शराब खींचने वाला 16 मकान। सम० —अंगना —स्त्री वेश्या रंडी, —ग्रंथि मंडी, मेला या पैंठ, —बंध 1 संधि या सुलह करना पणबन्धमुखान् गुणानजः षडुपायुङ्क्त समीक्ष्य तत्फलम् रघु० ८।२१ १०।८६ 2. समझौता, ठहराव (यदि भवानिदं कुर्वीत तर्हीमह भवते दास्यामीति समयकरण पणबन्ध—मनोरमा)।

पणनम् [पण्+ल्युट्] 1 अदल-बदल करना, खरीदना 2 शर्त लगाना 3 बिक्री।

पणवः [पणं स्तुतिं वाति—पण+वा+क] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—अम० ११९३, शि० १३।५।

पणाया [पण्+आय+अप्+टाप्] 1 लेनदेन, व्यवसाय, व्यापार 2. मंडी 3 वाणिज्य से प्राप्त होने वाला लाभ 4. जूआ खेलना 5. प्रशंसा।

पणिः (स्त्री०) [पण्+इन्] बाजार (पुं०) 1 कंजूस, लोभी 2 अपावन मनुष्य या पापी।

पणित (भू० क० कृ०) [पण्+क्त] 1 (व्यापार में) किया गया लेन-देन 2 शर्त पर रक्खा हुआ दे० पण् I।

पंड् I (भ्वा० आ०—पंडते पंडित) जाना हिलना जुलना II (चुरा० उभ०—पंडयति-ते) संग्रह करना ढेर लगाना ढेर लगाना।

पंड [पंड्+अच् ड वा] हिजड़ा नपुंसक।

पंडा [illegible] 1 बुद्धिमत्ता समझ 2 ज्ञान विज्ञान।

पंडावत् (पुं०) [पंडा+मतुप्] बुद्धिमान विद्वान।

पंडित (वि०) [पंडा+इतच्] 1 विद्वान बुद्धिमान [illegible] 2 कुशल चतुर 3 दक्ष प्रवीण [illegible] [illegible] विद्वान 2 [illegible] सम० —जातीय (वि०) कुछ चतुर —मानिक, —मानिन् पंडितमन्य (वि०) [illegible] विद्वान समझने वाला अपने आपको [illegible] पंडित मानने वाला

पंडितिमन् [illegible] विद्वत्ता बुद्धिमत्ता

पण्य (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] 1 वस्तु [illegible] पण्यानां गांधिकं पण्यम् [illegible] याज्ञ० [illegible] अथवा मौखिक [illegible] —विलासिनी —स्त्री [illegible] [illegible] सम० —अजिरम् मंडी —आजीव [illegible] —आजीवकम् मंडी [illegible] —पतिः बड़ा व्यापारी —भूमि (स्त्री०) मालगोदाम —वीथिका —वीथी —शाला 1 मंडी 2 [illegible] दुकान

पत् (भ्वा० पर० पतति पतित) 1 गिरना गिर पड़ना नीचे आना उतरना अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात विद्याधरहस्तमुक्ता—रघु० २।६० वृष्टिभवने चाम्बु वेणी० १०।३३, (रघु०) पतति परिजनाराम प्रकाश तत्समसमूह इवाश्रमद्रुमेषु—श० १।३२, मेघ० १०५, भट्टि० ७।९, २।१६ 2 उड़ना वायु में आना जाना, उड़ान भरना हतु कलहकारोऽसौ शब्दकारः पपात खम्—भट्टि० ५।१०० दे० नी० 'पतत्' 3 छिपाना, डूबना (क्षितिज के नीचे) सोऽस्य चन्द्र पतति गगनादल्पशेषैर्मयूखैः—श० ४, अने० पा०

पतत्पतगप्रतिमस्तपोनिधि —शि० १।१२ 4 अपने आप को डालना, नीचे फेंकना—मयि ते पादपतिते किंकरत्वमुपागते— पञ्च० ४।७ इसी प्रकार चरणपतितम् मघ० १०५ 5 (नैतिक दृष्टि से) गिरना जाति से पतित होना प्रतिष्ठा का नष्ट होना भ्रष्ट होना – परधर्मेण जीवन् हि सद्यः पतति जातितः मनु० १०।९७ ३।१६ ५।१९ ९।२०० याज्ञ० ३।२८ 6 (स्वर्ग से) नीचे आना पतन्ति पितरो ह्येषा लुप्तपिण्डोदकक्रियाः भग० १।४१ 7 घटना आपद् ग्रस्त या मुसीबत में होना–पाप [illegible] [illegible] भर्तृ० [illegible] 8 नरक में जाना नारकीय यातना सहन करना मनु० [illegible] भग० [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible]

[illegible] 1 नीचे गिरना [illegible] 2 [illegible] 3 बर्बाद करना [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] [illegible] अनु 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] शि० [illegible] अभि 1 [illegible] प्रासादे [illegible] [illegible] कि० [illegible] 2 [illegible] करना [illegible] पहुंचना रघु० [illegible] 3 उड़ कर [illegible] 4 [illegible] आना [illegible] पीछे करना अभ्युद् [illegible] पड़ना [illegible] आ 1 [illegible] आक्रमण करना [illegible] – रघु० [illegible] 2 [illegible] [illegible]

[illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] पड़ना कथमिदम् [illegible] [illegible] –पञ्च० [illegible] (मन में) आना [illegible] हृदय [illegible] का० [illegible] उद् [illegible] कूदना [illegible] शि० ५। ३७ (प्रायः कर्म० या सम्प्र० के साथ) उत्पतितदक्मुखम् मेघ० १४ भट्टि० ५।३० स्वर्गायोत्पतिता भवेत् विक्रम० ४।२ कु० ६।३६ घूमना विचार में आना रघु० १।२११ 3 (ये, या आदि) उछल कर जाना भर्तृ० २।८५ 4 उदय होना जन्म लेना, फूटना, उत्पन्न होना –निक्षेपोत्पतितानल– रघु० ४।७७ [illegible] उत्पेतु रामा० नि– 1 नीचे गिरना या आना अवरोहण करना उतरना [illegible]–निपतन्ती परिमप्यपातयत्–रघु० ८।३८ भट्टि० १५।२७ 2 फेंका जाना निर्दिष्ट होना रघु० ६।११ 3 (पैरों में) डालना साष्टांग करना– [illegible] [illegible] [illegible] कु० [illegible] [illegible] 4 गिरना [illegible] मिल जाना रघु० [illegible] 5 [illegible] आक्रमण करना [illegible] [illegible] [illegible] 6 [illegible] 7 [illegible] करना—[illegible] पूर्व [illegible] –1 [illegible] गिराना फेंकना पटक देना 2 [illegible] बर्बाद करना निस्— [illegible] निकलना निकल पड़ना

[illegible] उषा [illegible] [illegible] [illegible] याज्ञ० [illegible] कु० [illegible] [illegible] 1 पहुंचना निकट आना [illegible] 2 [illegible] इधर उधर [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] आक्रमण करना [illegible] 3 सब दिशाओं में दौड़ना— [illegible] —महा० 4 चले जाना [illegible]—[illegible] प्र— 1 नीचे आना [illegible] 3 [illegible] प्रणि प्रणाम [illegible] अभिवादन करना (कर्म० या सम्प्र० के साथ) [illegible] रघु० [illegible] वागीशं वाग्भिर [illegible] कु० २।३ प्रोद्–ऊपर [illegible] विनि– उड़ना गिरना उतरना [illegible] (प्रेर०) गिराना बर्बाद करना नष्ट करना [illegible] सम् 1 मिल कर [illegible] होना 2 इधर उधर जाना या घूमना 3 [illegible] धावा बोलना 4 होना, घटित होना (प्रेर० –1 [illegible] 2 सम्पन्न करना [illegible] करना [illegible] रघु० १४।[illegible], १५।७५।

पत [illegible] 1 उड़ना उड़ान 2 जाना गिरना उतरना। सम० [illegible] पक्षी [illegible]।

पतगः पतन् उत्प्लवन गच्छति [illegible] 1 पक्षी [illegible] पाणिना रै० १।१२४ भामि० १।१७ 2 सूर्य [illegible] विकसति हि पतगस्योदये पुण्डरीकम् उत्तर० ६।१२ मा० १।१२ शि० १।१२ रघु० २।

१५ 3. शलभ, टिड्डी-दल, टिड्डा—पतंगवद्वह्निमुखं विविक्षुः—कु० ३।६४,४।२०, पंच ३।१२६ 4. मधुमक्खी,—गम् 1. पारा 2. एक प्रकार की चंदन की लकड़ी।

पतंगमः [पत+गम्+खच्, मुम्] 1. पक्षी 2. शलभ।

पतंगिका [पतंग+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटी चिड़िया 2 एक छोटी मधुमक्खी।

पतंगिन् (पुं०) [पतंग+इनि] पक्षी।

पतंचिका [पतं शत्रुं चिक्कयति पीडयति—पृषो०] धनुष की डोरी।

पतंजलि: (पुं०) पाणिनि के सूत्रों पर लिखे गये—महाभाष्य के प्रसिद्ध निर्माता, दार्शनिक, योगदर्शन के प्रवर्तक।

पतत् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [पत्+शतृ] उड़ने वाला, अवरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे आने वाला (पुं०) पक्षी—परमं पुमानिव पतिं पतताम्—कि० ६।१, क्वचित्पथा संचरते सुराणां क्वचिद्घनानां पततां क्वचिच्च—रघु० १३।१९, शि० ९।१५। सम०—ग्रहः 1. पार्श्वरक्षित सेना 2. थूकने का बर्तन, पीकदान—नमेकमाणिक्यमयं महोन्नतं पतद्ग्रहं पाणिगतं दधानेन स—नै० १६।२७,—भीरुः बाज श्येन।

पतत्रम् [पत्—करणे अत्रन्] 1. बाजू, डैना 2. पर, पंख 3. सवारी।

पतत्रि: [पत्+अत्रिन्] पक्षी।

पतत्रिन् (पुं०) [पतत्र+इनि] 1. पक्षी—इतिनादेन्द्र-वर पतत्रिणः (पुनरेति) रघु० ८।५६,९।२७,११।११, १२।४८, कु० १।४ 2. बाण 3. घोड़ा। सम० —केतनः विष्णु का विशेषण।

पतनम् [पत्+ल्युट्] 1. उड़ने या नीचे आने की क्रिया, उतरना, अवरोहण करना, अपने आपको नीचे पटकना 2. (सूर्यादिका) अस्त होना 3. नरक में जाना 4. धर्मभ्रष्ट 5. मर्यादा या प्रतिष्ठा से गिरना 6 अवपात, ह्रास, नाश, विपत्ति (विप० उदय या उत्थान)—बुद्धाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्राया पतनानि च—याज्ञ० १।३०७ 7. मृत्यु 8. नीचे लटकना, (छाती का) ढरकना 9. गर्भस्राव होना।

पतनीय (वि०) [पत्+अनीयर्] गिराने वाला, जाति-भ्रष्ट करने वाला,—यम् पतित करने वाला पाप या जुर्म—याज्ञ० ३।४०, २९८।

पतमः, पतसः [पत्+अम, असच् वा] 1. चाँद 2. पक्षी 3. टिड्डा।

पतयालु (वि०) [पत्+णिच्+आलुच्] पतनोन्मुख, पतनशील।

पताका [पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया—पत्+आक+टाप्] झण्डा, ध्वज (आलं० से भी) यं कामयते स हरतु सुभगपताकाम्—दश० ४७, (सर्वोपरि सौन्दर्य या सौभाग्य का आनंद लेने दो उसे) 2. ध्वजदण्ड 3. संकेत, लक्षण, चिह्न, प्रतीक 4. उपाख्यान या नाटकों में आई हुई प्रासंगिक कथा, दे० नी०—'पताकास्थानक' 5. मांगलिकता, सौभाग्य। सम०—अंशुकम्—झंडा—स्थानकम् (नाट्य० में) प्रासंगिक कथा की सूचना जब कि अप्रत्याशित रूप से, किसी परिस्थितिवश उसी लक्षण वाली कोई दूसरी आकस्मिक अविचारित वस्तु प्रदर्शित की जाती है (यत्रार्थे चिन्तितेऽन्यस्मिंस्तल्लिङ्गोऽन्यः प्रयुज्यते, आगन्तुकेन भावेन पताकास्थानकं तु तत्, सा० द० २९९ (इसके अन्य प्रकारों की जानकारी के लिए दे० ३००-३०४ तक)।

पताकिक (वि०) [पताका+ठन्] झंडा उठाने वाला, ध्वजवाहक।

पताकिन् (वि०) [पताका+इनि] झंडा ले जाने वाला, पताकाओं से अलंकृत (पुं०) 1 झंडाबरदार, ध्वजवाहक 2. ध्वजा—नी सेना (अपनी) रथवर्ग्योत्कटोज्ज्वलं कृत पुत्र पताकिनीम् रघु० ४।८२, कि० १४।२७।

पति: [पाति रक्षति—पा+डति] 1 स्वामी, प्रभु जैसा कि 'गृहपति' में 2 मालिक, अधिपति, स्वामी—ओषधि 3 राज्यपाल, शासक, प्रधान०, करने वाला, औषधीपतिः, वनस्पतिः, कुलपतिः आदि 4 भर्ता, प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि—कु० ४।३३। सम—घातिनी, —घ्नी वह स्त्री जो अपने पति का वध कर देती है, —देवता,—देवा वह स्त्री जो अपने पति को देवता समझती है पतिव्रता, सती स्त्री—कः पतिदेवतामन्यः परिमार्ष्टुमुत्सहेत—श० ६, तमलभन्त पतिं पतिदेवताः शिखरिणामिव सागरमापगाः—रघु० ९।१७ भूरि स्थिता स्य पतिदेवतानाम्—१०।७४,—धर्मः अपने पति के प्रति (पत्नी का) कर्तव्य,—प्राणा सती स्त्री—लोकः वह लोक जहाँ मृत्यु हो जाने के पश्चात् पति पहुँचता है,—व्रता भक्त, श्रद्धालु, निष्ठावती स्त्री, सती स्त्री —व्रत्यम् पति के प्रति निष्ठा, स्वामिभक्ति,—सेवा पति के प्रति भक्ति।

पतिंवरा [पति+वृ+खच्, मुम्] अपना वर चुनने के लिए तत्पर स्त्री— रघु० ६।१०, ६७।

पतित: (भू० क० कृ०) [पत्+क्त] 1. गिरा हुआ, अवरूढ़, उतरा हुआ 2. नीचे गिरा हुआ 3. (नैतिक दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुश्चरित 4. स्वधर्मभ्रष्ट 5. अपमानित, जातिबहिष्कृत 6. युद्ध में हारा हुआ, पराजित, परास्त 7. ग्रस्त, फंसा हुआ जैसा कि 'अवधपतित' में।

पतेर: [पत्+एरच्] 1. पक्षी 2. छिद्र या विवर।

पत्तनम् [पतंति गच्छंति जना यस्मिन्, पत्+तनन्] कस्बा, नगर (विप० ग्राम)—पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्न परीक्षा—मालवि० १।

पत्तिः [पद्+ति] 1. पैदल, पैदल सैनिक—रघु० ७।३७ 2. पैदल चलने वाला यात्री 3. वीर—(स्त्री०) 1. सेना का छोटे से छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल सैनिक हों 2. जाने वाला, चलने वाला। सम०—**कायः** पैदल सेना,—**गणकः** सेना का अधिकारी जिसका काम पैदल सेना की गिनती करना है,—**संहतिः** (स्त्री०) पैदल सिपाहियों की टुकड़ी, पैदल सेना।

पत्तिन् (पुं०) [पद्भ्यां तेजति, पाद+तिज्+डिन्, पदा-देश:] पैदल सिपाही।

पत्नी [पति+ङीप्, नुक्] सहधर्मिणी, भार्या। सम०—**आटः** रनिवास, अन्तःपुर,—**सन्नहनम्** धर्मपत्नी का कटिसूत्र या करधनी।

पत्रम् [पत्+ष्ट्रन्] 1 (वृक्ष का) पत्ता—पत्रे भरं कुसु-मपत्रफलावलीनाम्—भामि० १।९४ 2 फूल की पत्ती, कमल का पत्ता—नीलोत्पलपत्रधारया—श० १।१७ 3 पत्ता जिसके ऊपर लिखा जाय, कागज, लिखा हुआ पत्र—पत्रमारोप्य दीयताम्—श० ६, पत्र पर लिख कर विक्रम० २।१४ 4 पत्र, दस्तावेज 5 किसी धातु का पतला पत्रा, स्वर्ण-पत्र 6 पक्षी का बाजू, पंख, पर 7 बाण का पंख—रघु० २।३१ 8 सामान्य सवारी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि)—दिशः पपात पत्रेण वेगनिष्कंपकेतुना—रघु० १५।४८ नै० ३।१६ 9 शरीर पर (विशेष कर मुख पर) चन्दन आदि सुगंधित द्रव्य का लेप करना—रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपो-लयोः—गीत० १२, रघु० १३।५५ 10 तलवार या चाकू का फल 11 चाकू, छुरी। सम०—**अंगम्** 1 भूर्ज वृक्ष 2 लाल चन्दन—**अंगुलिः** शरीर (गर्दन, मस्तक आदि) पर अंगुलियों से केसर मिश्रित चन्दन या अन्य किसी सुगंधित पदार्थ से चित्रण करना, —**अंजनम्** मसी,—**आवलिः** (स्त्री०) 1. गेरु 2. पत्तों का समाहार 3. शरीर पर सजावट की दृष्टि से चन्द-नादि से रेखाचित्रण करना,—**आवली** 1 पत्तों की पंक्ति 2—°आवली (3),—**आहारः** पत्ते खाकर निर्वाह करना,—**ऊर्णम्** बुनने वाली रेशम, रेशमी वस्त्र—स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रोर्णं वोपयुज्यते—मालवि० ५।१२,—**काहला** परों की फड़फड़ाहट, पत्तों की खड़-खड़ाहट,—**दारकः** आरा,—**नाडिका** पत्ते के रेशे,—**परशुः** रेती,—**पालः** लंबी छुरी, बड़ा चाकू (ली) 1. बाण का पंख वाला भाग 2 कैंची,—**पाश्या** मस्तक का सोने का आभूषण, टीका,—**पुटम्** पत्तों से बना पात्र, दोना —रघु० २।६५,—**बा** (**वा**) **कः** पप्पू—**भंगः**, —**भंगिः**,—**गी** (स्त्री०) शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, मेहंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना—कस्तूरीवरपत्रभंगनिकरो मृष्टो न गंडस्थले—शृंगार० ७ (कादंबरी में बहुलता से प्रयुक्त)—**यौवनम्** नया पत्ता या कोंपल,—**रथः** पक्षी—स्वर्गीकृतं पत्ररथेन तेन—नै० ३।६, °इन्द्रः गरुड़ का नाम, °इन्द्रकेतुः विष्णु का नाम रघु० १८।१०,—**रे** (**ले**) **खा**, —**वल्लरी**,—**वल्लिः**,—**वल्ली** (स्त्री०) दे० ऊ० 'पत्र भंग'—रघु० ६।७२, १६।६७, ऋतु० ६।७, शि० ८। ५६, ५९—**वाह** (वि०) (बाण आदि) पंखों से युक्त, —**वाहः** 1. पक्षी शि० १८।७३ 2 बाण 3. हरकारा, चिट्ठीरसाँ,—**विशेषकः** चित्रकारी की रेखाएँ—दे० 'पत्रभंग'—कु० ३।३३, रघु० ३।५५, ९।२९,—**वेष्टः** एक प्रकार का कानों का आभूषण,—**शाकः** शाकभाजी जिसमें मुख्यतया से पत्ते हों,—**श्रेष्ठः** बेल का पेड़, —**सूचिः** (स्त्री०) कांटा,—**हिमम्** जाड़े की ऋतु जब पाला या बर्फ पड़े।

पत्रकम् [पत्र+कन्] 1 पत्ता 2 सौन्दर्य बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी।

पत्रणा [पत्र+णिच्+युच्+टाप्] 1. सौन्दर्यवृद्धि के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी 2 बाण में पंख लगाना।

पत्रिका [पत्री+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. लिखने के लिए कागज 2. चिट्ठी, लेख, प्रलेख।

पत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [पत्रम् अस्त्यर्थे इनि] 1 पंखों से युक्त, परों वाला—मयूर°—रघु० ३।५६ 2. जिसमें पत्ते या पृष्ठ हों (पुं०) 1 बाण—ता विलोक्य वनितावधे घृणां पत्रिणा सह मुमोच राघवः—रघु० ११।१७, ३।५३, ९।६१ 2 पक्षी—रघु० १२।२९ 3 बाज 4 पहाड़ 5 रथ 6 वृक्ष। सम०—**वाहः** पक्षी।

पत्सलः [पद्+सल्, रस्य लः] रास्ता, मार्ग।

पथः [पथ्+क (घञर्थे)] रास्ता, मार्ग, प्रसार, (समास के अन्त में) किनारा। सम०—**कल्पना** जादू के खेल,—**दर्शकः** मार्ग बतलाने वाला।

पथिकः [पथिन्+ष्कन्] 1 यात्री, मुसाफिर, बटोही —पथिकवनिता मेघ० ८, अमरु ९३ 2. पथप्रद-र्शक। सम० **संततिः**,—**संहतिः** (स्त्री०),—**सार्थः** यात्रियों का समूह, काफला।

पथिन् (पुं०) [पथ् आधारे इनि] (कर्तृ० पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः, कर्म० ब० व०—पथः, करण० ब० व०—पथिभिः आदि, समास के अन्त में यह शब्द बदल कर 'पथ' हो जाता है—तोयाधारपथाः, दृष्टिपथः, नष्टपथः, सत्पथः, प्रतिपथम् आदि) 1. मार्ग, रास्ता,

पथ श्रेयसामेव पंथाः—भर्तृ० २।२६, वक्रः पंथा—मेघ० २७ 2. यात्रा, राहगीरी या पर्यटन—जैसा कि 'शिवास्ते सन्तु पन्थानः' में (मैं आपकी सुखद यात्रा की कामना करता हूं, भगवान् आपकी यात्रा सफल करें) 3. परास, पहुंच जैसा कि—'कर्णपथ, श्रुति°, और दर्शन°' में 4. कार्यपद्धति, आचरण की रेखा, व्यवहारक्रम—पथः शुचेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्—रघु० ३।४६ 5. सम्प्रदाय, सिद्धांत 6. नरक का प्रभाग। सम०—**देयम्** सार्वजनिक मार्गों पर लगाया गया राजकर,—**द्रुमः** खैर का पेड़,—**प्रज्ञ** (वि०) मार्गों का जानकार,—**वाहक** (वि०) क्रूर (कः) 1 शिकारी, चिड़ीमार 2 बोझा ढोने वाला, कुली।

पथिकः [पथ्+इकन्] यात्री, राहगीर, बटोही।

पथ्य (वि०) [पथिन्+यत्+इनो लोप] 1. स्वास्थ्यप्रद स्वास्थ्यवर्धक, कल्याणकारी, उपयोगी (औषधि आहार, सम्मति आदि) अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः—रामा०, पञ्च० ३।१६५ पथ्यमन्नम् 2. योग्य उचित, उपयुक्त,—**थ्यम्** 1 स्वास्थ्यवर्धक या पौष्टिक आहार जैसा कि 'पथ्याशी स्वामी वर्तते' में 2. कल्याण, कुशलक्षेम—उन्निद्रभानन्नु यतो नांपेक्ष्य पथ्यमिच्छता—शि० २।१०। सम०—**अपथ्यम्** उन पदार्थों का समूह जो किसी रोग में स्वास्थ्यवर्धक या हानिकर समझे जाते हैं।

पद् i (चुरा० आ० पदयते) जाना हिलना-जुलना।

ii (दिवा० आ० पद्यते, पन्न—प्रेर०—पादयति-ते, इच्छा० पित्सते) 1 जाना, चलना-फिरना 2 पास जाना, पहुंचना (कर्म० के साथ) 3 हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना—स्वर्गं ... च पद्यते—महा० 4 पालन करना, अनुसरण करना—स्वधर्मं पद्यमानानां—महा० **अनु**—,1 पीछे चलना, अनुगमन करना, सेवा करना 2 स्नेहशील होना, अनुरक्त होना 3 प्रविष्ट होना, अन्दर जाना 4 अपनाना 5. मालूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना, **अभि**—पास जाना, नजदीक होना, पहुंचना—रावणावरजा तत्र राघवं मदनातुरा अभिपेदे निदाघार्ता व्यालीव मलयद्रुमम्—रघु० १२।३२, १९।११ 2. सम्मिलित होना—शि० ३।२५ 3. अवलोकन करना, विचार करना, ख्याल करना, समझना—अगाधसत्त्व... जनैर्न मृत्या गगनं गणाधिपतिं मूर्तिरिति शि० १।२७ 4. सहायता करना, मदद करना, सर्वाभिपन्नम्—महा० 5. पकड़ना, ग्रस्त करना, आक्रमण करना, दबोच लेना, अधिकार में कर लेना, ग्रस्त करना सर्वेनथाभिपन्नैषा बाले राष्ट्री महापथम्, चन्द्रवाताभिपन्नानामुदधीनामिव स्वनः—महा०, दे० 'अभिपन्न'

6. लेना, धारण करना—मनु० १।३ 7. स्वीकार करना, प्राप्त करना, **अभ्युप**—, 1. दया करना, सान्त्वना देना, आराम पहुँचाना, तरस खाना, अनुग्रह करना (कष्ट से) मुक्त करना—कु० ४।२५, ५।६१ 2. सहायता मांगना, दीनता प्रकट करना 3. सहमत होना, स्वीकृति देना **आ**—, 1. निकट आना, की ओर चलना, पहुँचना—भट्टि० १५।८९ 2. प्रविष्ट होना, (किसी स्थान या स्थिति को) चले आना या प्राप्त करना—निर्वेदमापद्यते मृच्छ० १।१४, (ऊब जाता हूँ) आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गाः—भामि० १।१७, इसी प्रकार 'हरिः दीर्घभावमापद्यते'—सारि० 3. कष्ट फँसना, कुमतिग्रस्त होना—अर्थधर्मौ परित्यज्य यः काममनुवर्तते, एवमापद्यते क्षिप्रं राजा दशरथो यथा रामा० 4. होना, घटित होना—भट्टि० ६।३१, प्रेर०—1. प्रकाशित करना, सामने लाना, कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना रघु० २।१४ 2. निकालना जन्म देना, पैदा करना—गतिमानमापादयति—का० १८५ 3. घटाना, कष्टग्रस्त करना, ले जाना—रघु० ५।१५ 4. बदलना 5. नियन्त्रण में लाना **उद्**—, 1. जन्म लेना, पैदा होना उदय होना, उत्पन्न होना उगना—उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा—मा० १।६, मनु० १।७७ 2. होना, घटित होना—प्रेर०—1. पैदा करना, सर्जन करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, कार्यान्वित करना प्रकाशित करना—बहलाश्रुतामुत्पादयति—पञ्च० २ 2. सामने लाना **उप**—, 1. पहुँचना, निकट आना, पास जाना, पधारना—अथ कालात्ययमुपपद्यत पञ्च० १ 2. हासिल होना, प्राप्त होना, किसी आना—भग० ६।३६, १३।१८ 3. होना, घटित होना, आ पड़ना पैदा हो जाना—दैवि प्रभावसम्पन्ने—मा० ... १, उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी—श० ५।२६—रघु० १।६० 4. सम्भव होना, संभाव्य होना—नेदमद्भुतं कारणसम्भवे—सारि० कु० ६।६१, ३।१२ 5. उपयुक्त होना योग्य होना, पर्याप्त होना, अनुरूप समुचित—(अधि० के साथ) मा क्लैब्यं गच्छ कौन्तेय नैतत्त्वय्युपपद्यते—भग० २।३, १८।७ 6. आक्रमण करना, प्रेर० 1. किसी स्थिति में लाना, पहुँचाना, प्राप्त कराना—विश्वासमुपपादयति 2. नेतृत्व करना, ले जाना 3. तैयार होना—रथमुपपादयति—वेणी० २ 4. किसी को कोई वस्तु प्रदान करना, प्रस्तुत करना, उपहार देना—रघु० १।५८, १५।१८, १६।३२, याज्ञ० १।३१५ 5. प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, उपार्जन करना, कार्यान्वित करना, काम में लाना, अनुष्ठान करना यावत्तु मातुरनके शक्यमुपपादयितुम्—का० ६२, देवकार्यमुपपादयिष्यतः रघु० ११।९१, १७।५५ 6. न्याय्य ठहराना, तर्क देना, प्रदर्शित करना, प्रमा-

मिल करना 7. संपन्न करना, युक्त करना, निस्—, 1. निकलना, उगना 2 पैदा होना, प्रकाशित होना, उदय होना, कार्यान्वित होना,–निष्पद्यते च सस्यानि– मनु० ९।२४७, प्रेर० –पैदा करना, प्रकाशित करना, जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना त्व नित्यमेकमेव पट निष्पादयसि —पञ्च० ५ —, 1 (क) की ओर आना पहुँचना, आश्रय लेना चले आना पहुँच जाना तां जग्मने शैलवधू प्रपेदे कु० १।२१ (क्षितीश) कौत्स प्रपेदे वरतन्तुशिष्य — रघु० ५।१ भट्टि० ४।१ कि० १।१ ११।६ रघु० ८।११ (ख) आश्रय ग्रहण करना शरणार्थमन्यां कथ प्रपत्स्ये त्वयि दीप्यमाने रघु० १४।६४ 2 किसी विशिष्ट अवस्था को जाना पहुँचना या किसी विशिष्ट दशा में होना– रेणु प्रपेदे पथि पङ्कभावम रघु० १६।३० मुहूर्त कर्णोत्पलता प्रपेदे कु० ७।८१ इत्युग्रामवस्था प्रपन्ना. गिम श० ५ ... प्रपेदे भामि० ... [illegible] ... प्रपेदे मधुपेन ... भामि० ... [illegible] ... (वह करने के लिए ...) ... अमरु० ... स्वीकार करना अनुमति देना सहमत होना स्वीकार करना ... 6 निकट सिमकना आना (समय आदि का) पहुँचना ... प्राप्त करना 8 प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना प्रति 1 कदम रखना जाना पहुँचना ... (किसी व्यक्ति का) आश्रय लेना ... प्रतिपद्य ... कु० ... 2 ग्रहण करना कदम रखना लेना अनुसरण करना (मार्ग आदि) ... कु० ६।१० 3 प्राप्त करना पहुँचना प्राप्त करना ... ६।१६ 4 हासिल करना उपलब्ध करना प्राप्त करना भाग लेना ... न केवला श्रिय प्रतिपेदे सकलान् गुणानपि रघु० ८।५, १३।४१ १४ ११।३४ १२।७ १९।५५ भाग० ... १०।६३ 5 स्वीकार करना मान लेना शि० १५।२२, १६।२४, 6 वसूल करना, फिर प्राप्त करना, पुन उपलब्ध करना, ग्रहण करना श० ६।३१ कु० ४।१६, ७।९२ 7 मान लेना, स्वीकार करना—न मासे प्रतिपत्तासे मा चेन्मर्तासि मैथिलि भट्टि० ८।७५, श० ५।२२, प्रमदा पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्न हि विचेतनैरपि—कु० ४।३३ 8 थामना, ग्रहण करना, पकड़ना—सुमन्त्रप्रतिपन्नरश्मिभिः —रघु० १४। ४७ 9 विचार करना, ख्याल करना, सोचना, अवलोकन करना– मद्वनुग्रहकमेव राघव प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम्—रघु० ११।७९ 10 अपने जिम्मे लेना, करने की प्रतिज्ञा करना, हाथ में लेना निर्वाह प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम् - मुद्रा० २।१८, कार्य त्वया न प्रतिपन्नवत्ताम् कु० ३।१४, रघु० १०।४० 11 हामी भरना सहमत होना स्वीकृति देना— तथेति प्रतिपन्नाय रघु० १५।९३ 12 करना अनुष्ठान करना, अभ्यास करना पालन करना –आचार प्रतिपद्यस्व श० ४ विक्रम० २, 'औपचारिक आचार (अभिवादन आदि) का पालन करो', शासनमर्हेता प्रतिपद्यध्वम् मुद्रा० ४।१८, आज्ञा पालन करो 13 व्यवहार करना बर्ताव करना किसी का कोई कार्य करना (सब० या अधि० के साथ) स कथ [illegible] ... प्रत्यपद्यत हरि० स भवान् ... प्रतिपत्तुमर्हति ... महा० कथमहं प्रति- [illegible] ... प्रतिपत्स्यमानम ... 14 (उत्तर) देना (प्रत्युत्तर) देना कथ प्रतिवचनमपि न प्रयच्छसि — मुद्रा० ६ 15 प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना जानकार होना 16 मानना समझना ... मालूम करना 17 घूमना, भ्रमण करना 18 ... होना (प्रेर०) 1 देना प्रस्तुत करना प्रदान करना अभिदान करना समर्पित करना ... प्रतिपादनीय ... भर्तृ० २।१८ मनु० ११।४ गुणवते कन्या प्रतिपादनीया–श० ४ 2 सिद्ध करना प्रमाणित करना प्रमाण देकर पक्का करना उक्तमेवार्थमुदाहरण प्रतिपादयति 3 व्याख्या करना स्पष्ट करना 4 लाना या वापिस लाना (किसी स्थान पर) ले जाना 5 ख्याल करना विचार करना 6 उपस्थिति की घोषणा करना पुन प्रस्तुत करना 7 उपार्जन करना 8 कार्यान्वित करना निष्पन्न करना वि— बुरी तरह विफल होना असफल होना उपक्रमादि आदि) का विफल होना 2 दुर्भाग्यग्रस्त या दुर्दशाग्रस्त होना म बभूव विपन्नानामापदुद्धरणक्षम — हि० १।२१ 3 विकलांग होना असफल होना 4 मरना नष्ट होना नाथवन्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे– उत्तर० १।४४ मृच्छ० १।३८ व्या 1 (पृथ्वी पर) उतरना नीचे आना 2 मरना नष्ट होना—वे० व्यापन्न–(प्रेर०)—मारना, कत्ल करना सम्– 1 (तैयार माल) बाहर निकलना सफलता प्राप्त करना, समृद्ध होना, सम्पन्न होना पूरा होना, — – संपत्स्यते व कामोऽस्य काल कतिपयप्रतीक्ष्यताम् —कु० २।५४, रघु० १४।७६, मनु० ३।२५४, ६।६९ 2 पूरा होना, (संख्या आदि) जुड़ कर होना

व्याहृताः पंच पंचदश संपद्यंते 3. बन आना, होना संपत्स्यंते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः—मेघ० ११, २३, संपेदे श्रमसलिलोद्गमो विभूषाम्—कि० ७।५ 4 उदय होना, जन्म लेना, पैदा होना 5. एक जगह पड़ना, एकत्र होना 6. सुसज्जित होना, संपन्न होना, स्वामी होना—अशोक यदि सद्य एव कुसुमैर्न संपत्स्यसे—मालवि० ३।१६, दे० 'संपन्न' 7 (किसी ओर) प्रवृत्त होना, करवाना, पैदा करना (संप्र० के साथ) साधोः शिक्षा गुणाय संपद्यते नासाधोः—पंच० १, मुद्रा० ३।३२ 8 प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना 9 समान होना, लीन होना (अधि० के साथ)—(प्रेर०) 1. करवाना, होना, पैदा करना, संपन्न करना पूरा करना, कार्यान्वित करना इति स्वसुर्भोजकुलप्रदीपः संपाद्य पाणिग्रहणं स राजा—रघु० ७।२९ 2 उपार्जन करना, प्राप्त करना, सज्जित करना, तैयार करना अधिग्रहण करना, हासिल करना 4 सज्जित करना, संपन्न करना युक्त करना 5 बदलना, रूपान्तरित करना 6. करार या वादा करना, संप्रति—,1 की ओर जाना पहुँचना 2 विचार करना, सवाल करना—कु० ५।३९ सम्-ना 1. घटित होना, होना घटना होना 2 हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

पद् (पुं०) [पद्+क्विप्] (इस शब्द का पहले पांच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से यह पद के स्थान में आदेश हो जाता है) 1 पैर 2 चरण, चौथाई भाग (किसी कविता या श्लोक का)। सम०—**काषिन्** (पुं०) पैदल चलने वाला,—**हतिः,** **—ती** (स्त्री०) (पद्धतिः, —ती) रास्ता पथ, मार्ग, बटिया (आलं० भी) इत इह रघु सिंहानां वीरचारित्रपद्धतिः—उत्तर० ५।२२, रघु० ४।४६, ६।५९, ११।८७, कविप्रथमपद्धतिम्—१५।३३, 'कवियों को दिखाया गया पहला मार्ग' 2 रेखा, पंक्ति, शृंखला 3 उपनाम, कुलनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्ति-वाचक संज्ञा शब्दों के समास में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो —उदा० गुप्त, दास, दत्त आदि 4 विवाहादि विधि को सूचित करने वाली पुस्तक,—**हिमम्** (पद्धिमम्) पैरों का ठंडापन।

पदम् [पद्+अच्] 1 पैर (इस अर्थ में पुं० भी होता है) पदेन पैदल—शिखरिषु पदं न्यस्य—मेघ० १३, अयथे पदमर्पयन्ति हि—रघु० ९।७४, 'कुमार्ग पर कदम रखना'—३।५०, १२।५२, पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते—३।६२, 'गुणों के द्वारा सर्वत्र कदम रक्खा जाता है—अर्थात् गुणों की ही कद्र होती है, जनपदे न गदः पदमादधौ—९।४ 'देश में किसी भी रोग ने कदम नहीं रक्खा' पदमपि न पदं दधाति चित्ते—भामि० २।१४, पदं कृ (क) कदम रखना (शा०)—जाते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्—श० ४।२५, (ख) प्रवृत्त होना, अधि-कार करना, कब्जा करना, (आलं०) कृतं वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १३७, कृतं हि मे कुतूहलेन प्रश्नावकाशाया बुद्धि पदम्—१३३, इसी प्रकार कु० ५।२१, पंच० २४०, कृत्वा पदं नो गले—मुद्रा० ३।२९. 'हमारे विरुद्ध' (शा०—अपना कदम हमारी गर्दन पर रखकर), मूर्ध्नि पदं कृ किसी के सिर पर चढ़ना, दीन बनाना—पंच० १।३२७, आकृति विशेषेष्वादरः पदं करोति—मालवि० १, सुन्दर रूप ध्यान आकृष्ट करता है (आदर प्राप्त करता है)—जने सखीपदं कारिता—श० ४, (मित्रता या विश्वास का) पात्र बनाया गया, अर्थेन शर्वं पार्वती प्रति पदं कारिते—कु० ६।१४ 2 कदम, पग, डग—तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा श० २।१२, पदे पदे हर कदम पर—अक्षमाला-मदत्त्वा पदात्पदमपि न गन्तव्यम्—का० 'बिलकुल एक कदम भी मत चलो' त्रिषु पद मध्यमपुरुषनतीत विक्रम० १।१९ 'विष्णु का तिगुना कदम' अर्थात् अन्तरिक्ष (पौराणिक मतानुसार पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल यह तीनों लोक ही वामनावतार (पंचम अवतार) विष्णु के तीन कदम माने जाते हैं) इसी प्रकार—अथात्मनः शब्दगुणं गुणज्ञः पदं विमानेन विगाहमानः—रघु० १३।१ 3 पदचिह्न पद-छाप, पदांक—पद-पंक्तिः—श० ३।८, या पदावली—पगडंडी, पदमनु-विधेय च महतां—भर्तृ० २।२८, महात्माओं के पदचिह्नों पर ही चलना चाहिए' 4 चिह्न, अंक, छाप, निशान—रतिवलयपदांके चापमासज्य कंठे—कु० २।६४, मेघ० ३५, ९५ मालवि० ३ 5 स्थान, अवस्था, स्थिति—अयोग्य पदम् भर्तृ० २।१० आपदां परिभ्रमस्य पदमुपनीतः श० १ 'कष्ट की अवस्था तक पहुँचाया'—नदलब्धपदं हृदि शोकघने—रघु० ८।९१. 'हृदय में स्थान न पाया' (अर्थात् हृदय पर छाप न छोड़ी), अपदे शंकितोऽस्मि—मालवि० १, 'मेरे सन्देह स्थान से बाहर थे' अर्थात् निराधार—कुशांकुरदंतेषु स्खलितपदमधस्तात्—दश० १६२, कु० ६।७२, ३।४, रघु० २।५० ९।८२, कृतपदं स्तनयुगलम्—उत्तर० ६।३५, 'स्तनयुगल विकासोन्मुख था' 6 मर्यादा, दर्जा, पद, स्थिति या अवस्था—भगवत्या प्राश्निकपदमध्यासित-व्यम्—मालवि० १, यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयः—श० ४।१८, 'पदवी को प्राप्त करती हैं' सचिव°, राज° आदि 7 कारण, विषय, अवसर, वस्तु, मामला या बात—व्यवहारपदं हि तत्—याज्ञ० २।५, झगड़े की बात या अवसर, कानूनी दृष्टि से स्वामित्व अधिकार, अदालती कार्रवाई—सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाण-

मन्न.कारणप्रवृत्तय —श० ११२२, वांछितफलप्राप्ते पदम् —रत्न० १।६ 8 आवास, पदार्थ, आश्रय—पद दृष्ट. स्या कममीश मादृशाम्—शि० १।३७, २४।४४, अगर्हीयान्न पद नृपश्रिय -कि० २।१४, अविवेक परमापदां पदम् २।३०, के वा न स्यु परिभवपद निष्फलारम्भयत्ना - मेघ० ५४ हि० ४।६९ 9 श्लोक का एक चरण, एक ज्याइन विशेषपद (संयम) मेघ० ८६, १३३ मालवि० ५।२ सा० ३।१६ 10 विभक्तिचिह्न से युक्त पूरा शब्द—सुप्तिङन्त पदम् पा० १।४।१४, वर्णा पद प्रयोगार्हानन्विकार्थबोधक

सा० द० ९ रघु० ११७३ 11 कर्मि... को छोड़ कर नाम धर्मी व्यवहार... विभक्तिनामा का प्रातिक नाम 12 वैदिक शब्दों का सन्धि विच्छेद करके पृथक् २ रखना वैदिक मन्त्रों का पद पाठ निर्धारित करना 13 बहाना शि० ७।४६ 14 वर्गमूल 15 (वाक्य का) प्रभाग या खंड 16 ... के पांव 17 रक्षा सभापण या प्रश्रय 18 ... की शिला ... पर बना वर्गाकार घर, ... प्रकाश की किरण, सम० - अंक - चिह्नम् पदछाप, अंगुष्ठ पैर का अंगूठा अनुग अनुगामी, ... अनुशासनम् शब्द विज्ञान व्याकरण - अन्त शब्द का अन्त, अन्तरम् दूसरा पग एक पग का अन्तराल ... से भिन्न या ... १, आसनम् -अम्भोजम् अरविन्द, कमलम् पङ्कजम्, पद्मम् चरणकमल कमल जैसे पग —अर्थ 1. शब्द का अर्थ 2 वस्तु या पदार्थ 3 शीर्षक या विषय (नैयायिक इनको ... १६ पदार्थ गिनाते हैं) 4. अभिधेय, वह वस्तु जिसको कुछ नाम रक्खा जा सके प्रवर्ग, वैशे० के अनुसार इन प्रवर्गों या पदार्थों की संख्या सात सांख्य के अनुसार ... (या पतञ्जलि के अनुयायियों के अनुसार ...), और वेदान्तियों के अनुसार केवल दो हैं आघात पैर का प्रहार या ठोकर, आलि पैदलसिपाही आवली शब्दों का समूह शब्दों या पंक्तियों का अविच्छिन्न क्रम (काव्यस्य शरीरं ... पदावली काव्या० १।१०, मधुरकोमलकान्त पदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् गीत० १ आसनम् पादपीठ, पैर रखने की चौकी, क्रम चलना, कदम रखना, गः पैदल सिपाही, च्युत (वि०) पद से हटाया गया, गद्दी से उतारा हुआ —छेद:-—विच्छेद:, विग्रह शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का समस्त पद पृथक्करण,—न्यास: 1. कदम रखना, डग भरना, पग रखना 2. पदचिह्न 3. पैरों की एक मुद्रा विशेष 4. गोखरू का पौधा, पंक्ति: (स्त्री०) 1. पदचिह्नों की कतार—श० ३।९, विक्रम० ४ ९ 2. शब्दों का क्रम- -कि० १०।३० 3. ईंट, पवित्र इष्टका,—पाठः वैदिक मन्त्रों का एक विशेषक्रम जिसमें मन्त्र का प्रत्येक शब्द उच्चारणविकारों से निरपेक्ष होकर अपने मूलरूप में ही लिखा जाता है और इसी मूलरूप में उच्चारण किया जाता है (दे० मार्कण्डेय०),—पात, विक्षेप कदम (चार का ...) कदम - भञ्जनम् शब्दों का विग्रह निर्वचन, —भञ्जिका एक टीका जिसमें किसी सदन के शब्द, पृथक् २ किये जाते हैं तथा समासों का विग्रह कर दिया जाता है, -माला आद्य ... गु... वृत्ति (स्त्री०) दो शब्दों के बीच अन्तर या विराम

पदकम ... पदम विधान पदवी—दे० पद ... 2 पद पाठ का जानना।

पदवि: वी (स्त्री०) पद + अवि वा ङीष् 1 रास्ता, ... पथ, ... मेघ० ... रघु० ... 2 अवस्था ... इसी प्रकार ... पञ्च० १ ... (अर्थात् पूरा मनुष्य बन गया) 2 अवस्था स्थिति इसी मर्यादा पदवी, पद 3 जगह स्थान

पदात पदाति पद + अत् + इन् वा 1 पदल सिपाही रघु ७।३७ 2 पैदल यात्री (पैदल चलने वाला) ... ४।१५।

पदातिक (पुं०) (पदात + ठन्) 1. सेना जिसमें पैदल सिपाही हों 2 पैदल चलने वाला पु० पैदल सिपाही।

पदिक (वि०) (पादेन चरति - पद + ष्ठन्) पादस्य पदादेश) पैदल चलने वाला (पुं०) पैदल आदमी।

पद्मम् [पद् + मन्] 1 कमल (इस अर्थ में पुं० भी) तपपत्रस्थितम् ... पद्मरागश्रियम् -2 कमल जैसा आभूषण 3 कमल के रूप या आकृति 4. कमल की जड़ 5 हाथी सूंड और चेहरे पर रंगीन निशान 6 कमल के आकार खड़ी की हुई सेना 7 विशेषरूप से बड़ी संख्या (१००००००००००००००००) 8 सीसा —द्म: 1 एक प्रकार का मंदिर 2. हाथी ... की एक जाति 4 राम का विशेषण 5 कुबेर के नौ खजानों में से एक—दे० नवनिधि 6. एक प्रकार का रतिबन्ध मैथुन,—द्मा सौभाग्य की देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी (त) पद्मा पद्मातपत्रेण भेजे साम्राज्यदीक्षितम् —रघु० ४। सम० —अक्ष (वि०) कमल जैसी सुन्दर आंखों वाला (—क्ष:) विष्णु या सूर्य का विशेषण, (—क्षम्) कमल गट्टा,—आकर: 1. एक विशाल सरोवर जिसमें कमल खिले हों

2. पोखर, पल्वल 3. कमलों का समूह —भर्तृ० २।७३, —आलयः जगत्स्रष्टा ब्रह्मा का विशेषण, (—या) लक्ष्मी का विशेषण,—आसनम् 1. कमल पीठ—कु० ७।८६, 2. एक प्रकार का योगासन—ऊरुमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदं, वामोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम्, (नः) जगत्स्रष्टा ब्रह्माका विशेषण,—आह्वम् लौंग,—उद्भवः ब्रह्मा का विशेषण—करः,—हस्त विष्णु का विशेषण (रा,— स्ता) लक्ष्मी का नाम,—कर्णिका पद्म का बीजकोश,—कलिका कमल का अनखिला फूल, कली, —केशरः—रम् कमलफूल का रेशा—कोशः,—कोषः 1 कमल का संपुट 2 संपुटित कमल के आकार की उंगलियों की एक मुद्रा,—खंडम्,—षण्डम् कमलों का समूह,—गंध,—गंधि (वि०) कमल की गंधवाला या कमल की सी गंधवाला,—गर्भ 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 सूर्य का विशेषण, —गृहा—गृहा धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण —जः,—जात,—भवः,—भूः—योनिः,—संभव, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण, —तंतु कमल का रेशेदार डंठल—नाभ,—भि विष्णु का विशेषण—नालम् कमल का डंठल—पाणि 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण,—पुष्प कर्णिकार का पौधा —बंधः एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिसमें शब्दों को कमल-फूल के रूप में अवस्थित किया हो—दे० काव्य० ९,—बंधुः 1. सूर्य 2 मधुमक्खी,—रागः,—गम् लाल माणिक्य, रघु० १३।५३ १७।२३ कु० ३।५३,—रेखा हथेली में (कमल फूल के आकार की) रेखायें जो अत्यन्त धनवान् होने का लक्षण है,—लाञ्छन 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 कुबेर का विशेषण 3 सूर्य और 4. राजा का विशेषण (ना) 1 धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2. या विद्या की देवी सरस्वती का विशेषण—वासा लक्ष्मी का विशेषण।

पद्मकम् [पद्म+कन्] 1 कमलफूल के आकार की व्यूह-रचना में स्थित सेना 2 हाथी की सूंड और चेहरे पर रंगीन स्थान 3. बैठने की विशेष मुद्रा।

पद्मकिन् (पुं०) [पद्मक+इनि] 1 हाथी 2 भोजपत्र का वृक्ष।

पद्मावती [पद्म+मतुप्, वत्वम्, दीर्घश्च] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. एक नदी का नाम—मा० ९।१।

पद्मिन् (वि०) [पद्म+इनि] 1 कमल रखने वाला 2 चितकबरा (पुं०) हाथी—नी 1. कमल का पौधा —सुरगज इव बिभ्रत् पद्मिनीं दन्तलग्नाम्—कु० ३।३७, रघु० १६।६८, मेघ० ३३, मालवि० २।१३ 2. कमलफूलों का समूह 3. सरोवर या झील जिसमें कमल लगे हुए हों 4 कमल का रेशेदार डंठल 5 हथिनी 6 रतिशास्त्र के लेखकों ने स्त्रियों के चार भेद किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री, इसका लक्षण रतिमंजरी में इस प्रकार दिया है—भवति कमलनेत्रा नासिकाक्षुद्ररंध्रा अविरलकुचयुग्मा चारुकेशी कृशांगी मृदुवचनसुशीला गीतवाद्यानुरक्ता सकलतनुसुवेशा पद्मिनी पद्मगंधा।

पद्मेशयः [पद्मे शेते—शी+अच्, अलु० स०] विष्णु का विशेषण।

पद्य (वि०) [पद्+यत्] 1. पद या पंक्तियों वाला 2 चरण या पद को मापने वाला,—द्यः 1 शूद्र 2 शब्द का एक भाग,—द्या पगडंडी, पथ, बटिया, —द्यम् (चार चरणों से युक्त) श्लोक, कविता —पदीयपद्यरत्नाना मञ्जूषैषा मया कृता—भामि० ४।४५, पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा —छं० २ 2 प्रशंसा स्तुति।

पद्र [पद्यतेऽस्मिन् पद्+रक्] गाँव।

पद्व [पद्+वन्] 1 भूलोक मर्त्य लोक 2 रथ 3 मार्ग।

पन् (भ्वा० उभ०—पनायति—ते पनायित या पनित) प्रशंसा करना स्तुति करना—भ० पणं।

पनस [पनाय्यते स्तूयतेऽनेन इव —पन्+अतच्] 1 कटहल का वृक्ष 2 कांटा,—सम् कटहल का फल।

पन्थक (वि०) [पथि जात —पथिन्+कन्, पन्थादेश] मार्ग में उत्पन्न।

पन्न (भू० क० कृ०) [पद्+क्त] 1 गिरा हुआ, ढला हुआ, नीचे गया हुआ, अवनतिग्रस्त 2 गया हुआ—दे० पद्। सम०—गः साँप, सर्प—विपन्न पन्नग फणा कुलम्—श० ६।१७ (—गम्) सीसा, —अरिः, —अशनः, —नाशनः गरुड के विशेषण।

पपिः [पाति जनान् पिबति वा, पा+कि, द्वित्वम्] चन्द्रमा।

पपी [पा+ई द्वित्व कित्वं च] 1 चन्द्रमा 2. सूर्य।

पपु (वि०) [पा+कु, द्वित्वम्] पालन-पोषण करने वाला, रक्षा करने वाला,—पुः (स्त्री०) धाय माता, प्रतिपालिका।

पंपा [पाति रक्षति, मत्स्यादीन्—पा० द्वित्वम् मुडागमश्च, नि०] दण्डकारण्य का एक सरोवर—ह्रद च पंपाभिधान सर —उत्तर० १, रघु० १३।३०, भट्टि० ३।७३ 2. भारत के दक्षिण में एक नदी का नाम।

पयस् (नपुं०) [पय्+असुन्, पी+असुन्, इकारादेश] 1 पानी 2 दूध पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् —हि० ३।४, रघु० २।३६, ६३, १४।७८, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) 3. वीर्य (कुछ वर्णों से पूर्व पयस् को बदल कर 'पयो' हो जाता है)। सम०—अग्रः, —घः 1 ओला 2. टापू,—घनम् ओला,—चयः जलाशय या सरोवर,—जन्मन् (पुं०) बादल—दः बादल —मेघ० ७, रघु० १४।३७,—धरः (पुं०) मोर

—**धरः** 1. बादल 2. स्त्री की छाती—पथ्यपयोधरतटी —गीत० १, विपाण्डुभिर्म्लानतया पयोधरैः—कि० ४।२४, (यहाँ शब्द का अर्थ 'बादल' भी है)—रघु० १४।२२ 3 ऐन औड़ी—रघु० २।३ 4 नारियल का पेड़ 5. रीढ़ की हड्डी,—**धस्** (पुं०) 1 समुद्र 2. तालाब, सरोवर, जलाशय,—**धिः**,—**निधिः** समुद्र, मनु० २।७, नै० ४।५०,—**मुच्** (पुं०) बादल—रघु० ३।३, ६।५,—**वाह** बादल,—रघु० १।३६।

पयस्य (वि०) [पयसो विकारः पयस इदं वा—पयस् +यत्] 1 दूध से युक्त, दूध से बना हुआ 2 पानी से युक्त,—**स्यः** बिल्ली,—**स्या** दही।

पयस्वल (वि०) [पयस् +वलच्] दूध से भरा हुआ, यथेष्ट दूध देने वाला,—**लः** बकरा।

पयस्विन् (वि०) [पयस् +विनि] दूधिया, जल से युक्त,—**नी** 1 दूध देने वाली गाय—रघु० २।२१, ५४, ६५, 2 नदी 3 बकरी 4 रात।

पयोष्णिकम् [पयोष्णि+कै+क] समुद्रझाग।

पयोष्णी (स्त्री०) विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी (कुछ विद्वान् इसे वर्तमान 'ताप्ती' मानते हैं परन्तु ताप्ती का एक सहायक नदी 'पूर्णा' है जिसकी 'पयोष्णी' के साथ अभिन्नता अधिक न्याय प्रतीत होती है)।

पर (वि०) [पृ० +अप् कर्तरि अच् वा] (जब सापेक्ष स्थिति बतलाई जाती है इस शब्द के रूप विकल्प से कर्तृ० सर्व० अपा०, और अधि० में सर्वनाम की भाँति होते हैं) 1 दूसरा, भिन्न, अन्य दे० 'पर' पुं० भी 2. दूरस्थित, हटा हुआ, दूर का 3 परे, आगे, के दूसरी ओर—नदीपारे भवन्ति पर —मनु० २।२३, ७।१५८ 4 बाद का, पीछे का, आगे का (प्रायः अपा० के साथ) बालात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास—रघु० ५।६३ कु० १।३१ 5 उच्चतर श्रेष्ठ, सिकतात्वादपि परां प्रपेदे परमाणुताम्—रघु० १५।२२, इन्द्रियाणि पराण्याहु—रिन्द्रियेभ्यः परं मनः, मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः—भग० ३।४२ 6. उच्चतम, महत्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रधान—न त्वया द्रष्टव्यानां परं दृष्टम्—श० २, कि० ५।२८ 7. (समास में) आगे का वर्ण या ध्वनि रखने वाला, पीछे का 8 विदेशी, अपरिचित अजनबी 9 विरोधी शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल 10. अधिक, अतिरिक्त, बचा हुआ—जैसा कि परं शतम्—एक सौ से अधिक 11 अन्तिम, आखीर का 12 (समास के अन्त में) किसी वस्तु को उच्चतम पदार्थ समझने वाला, लीन, तुला हुआ, अनन्यभक्त, पूर्णतः ग्रस्त —परिचर्यापर—रघु० १।९१, इसी प्रकार 'ध्यानपर' शोकपर, दैवपर, चिन्तापर आदि—**रः** 1 दूसरा, व्यक्ति, अपरिचित, विदेशी (इस अर्थ में बहुधा ब० व०) यत परेषा गुणग्रहीतासि—भामि० १।९, शि० २०।७४, दे० 'एक' 'अन्य' भी 2 शत्रु, दुश्मन, रिपु उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता—शि० २।१०, पंच० २।१५८, रघु० ३।२१,—**रम्** उच्चतम स्तर या बिन्दु, चरम बिन्दु 2 परमात्मा 3. मोक्ष विशे०—कर्म०, करण०, और अधि० के एक वचन के 'पर' शब्द के रूप क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त किये जाते हैं—अर्थात् (क) **परम्** 1. परे, अधिक मैं से (अपा०), वत्मैन, परम्—रघु० १।१७, 2 के पश्चात् (अपा०) अस्मात् परं—श० ४।१६, तत परम् 3 इस पर उसके बाद 4 परन्तु, लेकिन 5 अन्यथा 6 ऊँची मात्रा में, अधिकता के साथ, अत्यधिक पूरी तरह से, सर्वथा पर दुःखितोऽस्मि —आदि 7 अन्यन (ख) **परेण** 1 आगे, परे अपेक्षाकृत अधिक किवा पृथ्वी परेण विधाश्यति—मा० ९।२ 2 इसके पश्चात्, मासि नु क्लान्तिपाने कि विदशतः परेण—महावी० ७।४९ 3 के बाद (अपा० के साथ) स्तन्य त्यागात्परेण—उत्तर० ७।७ (ग) **परे** 1 बाद में इसके पश्चात्—अथ ते दशाहन परे—रघु० ८।७३ 2 भविष्य में। सम०—**अंगम्** शरीर का पिछला भाग,—**अंगदः** शिव का विशेषण,—**अद्नः** अरब या फारिस के देशों में पाया जाने वाला घोड़ा, —**अधीन** (वि०) पराधीन पराश्रित, परवश, मनु० १०।५४—५३,—**अंता** (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—**अंतकः** शिव का विशेषण,—**अन्न** (वि०) दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला (**न्नम्**) दूसरे का भोजन, **परिपुष्टता** दूसरों के भोजन से लालन-पोषण याज्ञ० ३।२४१ **भोजिन्** (वि०) दूसरों के भोजन पर निर्वाह करने वाला शि० १।१२९, **अपर** (वि०) 1. दूर और निकट, दूर और समीप 2. पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती 3 पहले और बाद में, पहले और पीछे 4. ऊंचा और नीचा, सबसे उत्तम और सबसे खराब (—**रम्**) (तर्क० में) महत्तम और लघुतम संख्याओं के बीच की वस्तु, जाति (जो श्रेणी और व्यक्ति दोनों के मध्य विद्यमान हो),—**अमृतम्** वृष्टि, **अयण** (अयन) (वि०) 1. अनुरक्त, भक्त, समक्त 2. आश्रित, वशीभूत 3. तुला हुआ, अनन्यभक्त, सर्वथा लीन (समास के अन्त में) —प्रभुर्भजनपरायण—भर्तृ० २।५६, इसी प्रकार —शोक° कु० ४।१, अग्निहोत्र आदि (—**णम्**) प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या अन्तिम सहारा,—**अर्थ** (वि०) दूसरा ही उद्देश्य या अर्थ रखने वाला, 2. दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य के लिए किया हुआ (—**र्थः**) 1. सर्वोच्च हित या

काम 2. किसी दूसरे का हित (विप० स्वार्थ)— स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणी— सुभा०, रघु० १।२९ 3. मुख्य अर्थ 4 सर्वोच्च उद्देश्य (अर्थात् मैथुन) (—र्थम्,—र्थे) (अव्य०) दूसरे के लिए,—अर्धम् 1. दूसरा भाग (विप० पूर्वार्ध) उत्तरार्ध—दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्—भर्तृ० २।६० 2 विशेष रूप से बड़ी संख्या अर्थात् १००,०००,०००,०००,०००,००० एकत्वादि परार्धपर्यंता संख्या —तर्क०,- अर्ध्य (वि०) दूसरे किनारे पर होने वाला 2. संख्या में अत्यंत दूर का—हेमंतो वसन्तात्परार्ध्यः —शत० 3. अत्यंत श्रेष्ठ सर्वोत्तम, परम श्रेष्ठ अत्यंत मूल्यवान्, सर्वोच्च परम—रघु० ३।२७, ८।२७, १०।३४, १६।३९, शि० ८।४५ 4. अत्यंत कीमती—शि० ४।११ 5 अत्यंत सुन्दर, प्रियतम मनोरमतम—रघु० ६।४ शि० ३।५८, (—र्ध्यम्) 1 अधिकतम 2 अनन्त या असीम संख्या —अवर (वि०) 1 दूर और निकट 2 सबेरी और अबेरी 3 पहले का और बाद का या आगामी 4 उच्चतर और निम्नतर 5 परंपराप्राप्त—मनु० १।१०५ 6 सर्वसम्मिलित, —अहः दूसरे दिन, —अह्णः तीसरा पहर, दिन का उत्तरार्ध भाग, —आचित (वि०) दूसरे द्वारा पाला-पोसा हुआ (—तः) दास, —आत्मन् (पुं०) परमात्मा, —आयत्त (वि०) दूसरे के अधीन, पराश्रित, पराधीन —परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्तु पुरुषः —मुद्रा० ३।४ —आयुस् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, —आर्धिः 1 कुबेर का विशेषण 2. विष्णु की उपाधि,—आश्रयः —आसंगः पराश्रयता दूसरे की अधीनता,—आस्कन्दिन् (पुं०) चोर लुटेरा, —इतर (वि०) 1 शत्रुता से भिन्न अर्थात् मैत्रीपूर्ण, कृपालु 2 अपना, निजी—कि० १।१४, —ईशः ब्रह्मा का विशेषण,—उत्कर्षः दूसरे की समृद्धि —उपकारः दूसरों की भलाई करना, अनहितैषिता, उदारता, —परार्थ—परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्, —उप-जापः शत्रुओं में फूट डालना, —उपरुद्धः (वि०) शत्रु के द्वारा घेरा हुआ,—ऊढा दूसरे की पत्नी,—एधित (वि०) दूसरे द्वारा पालित-पोषित (—तः) 1 सेवक 2. कोयल,—कलत्रम् दूसरे की पत्नी, —अभिगमनम् व्यभिचार—हि० १।१३५,—कार्यम् दूसरे का व्यवसाय या काम,—क्षेत्रम् 1 दूसरे का शरीर 2. दूसरे का खेत—मनु० ९।४९ 3. दूसरे की पत्नी—मनु० ३। १७५,—गामिन् (वि०) 1 दूसरे के साथ रहने वाला 2. दूसरे से संबंध रखने वाला, 3 दूसरे के लिए लाभदायक,—ग्रन्थिः (अंगुली आदि का) जोड़, गांठ,—चक्रम् 1. शत्रु की सेना, 2. शत्रु के द्वारा आक्रमण ६ ईतियों में से एक,—छंदः दूसरे की इच्छा —अनुवर्तनम् दूसरे की इच्छा का अनुगमन करना, —छिद्रम् दूसरे की कमजोरी, दूसरे की त्रुटि —जात (वि०) 1 दूसरे से उत्पन्न 2. जीविका के लिए दूसरे पर आश्रित (—तः) सेवक,—जित (वि०) दूसरे से जीता हुआ (—तः) कोयल, —तन्त्र (वि०) दूसरे पर आश्रित, पराधीन, अनुसेवी, —दाराः (पुं०, ब० व०) दूसरे की पत्नी, —दारिन् (पुं०) व्यभिचारी परस्त्री-गामी —दुःखम् दूसरे का कष्ट या दुःख —विरलः परदुःखदुःखितो जनः, महदपि परदुःखं शीतलं सम्यगाहुः —विक्रम० ४।१३ —देशः विदेश, —देशिन् (पुं०) विदेशी —द्रोहिन् —द्वेषिन् (वि०) दूसरों से घृणा करने वाला, विरोधी [illegible] —धनम् दूसरे की संपत्ति —धर्मः 1 दूसरे का धर्म स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः —भग० ३।३५ 2. दूसरे का कर्तव्य या कार्य 3 दूसरी जाति का कर्तव्य —मनु० १०। ९७, —निपातः [illegible] —पक्षः [illegible] प्रकार [illegible] —पदम् 1 उच्चतम स्थिति प्रमुखता 2. मोक्ष—पिंडः दूसरे का भोजन, दूसरा [illegible] भोजन —अद् (वि०) वह जो दूसरों का भोजन करता है जो दूसरे के खर्च पर भोजन निर्वाह करे, —पु[illegible] —रत (वि०) दूसरे के भोजन पर [illegible] —पुरुषः 1 दूसरा मनुष्य, अपरिचित 2 परमात्मा विष्णु 3. दूसरी स्त्री का पति —पुष्ट (वि०) दूसरे के द्वारा पाला पोसा हुआ (—ष्टः) कोयल —महोत्सवः आम का वृक्ष, —पुष्टा 1 कोयल 2 वेश्या रंडी —पूर्वा 1. स्त्री जिसका दूसरा पति हो —प्रेष्यः सेवक, चाकर नौकर —ब्रह्मन् (नपुं०) परमात्मा —भागः दूसरे का हिस्सा 2 श्रेष्ठ गुण 3 सौभाग्य समृद्धि 4 (क) सर्वोत्तमता श्रेष्ठता सर्वोपरिता दुर्भिगम-परभागो यावत्पुरुषेण पौरुषं न कृतम् —पंच० १।३३० ५।३४, (ख) अधिकता, बाहुल्य ऊँचाई —नवकमल-गजनं [illegible] —शिश० १०, आभाति लब्धपरभागतयाधरोष्ठे —रघु० ५।७० कु० ७।१७, कि० ५।३०, ८।४२ शि० ७।३३, ८।५१ १०।८६, —भाषा विदेशी भाषा,—भृत (वि०) दूसरे के द्वारा पाला हुआ —भृत् (पुं०) कौवा (क्योंकि वह दूसरे का - अर्थात् कोयल का पालन-पोषण करता है) —भृतः —ता कोयल (क्योंकि यह दूसरे के द्वारा अर्थात् कौवे से पाली पोसी जाती है) कु० श० ५।२२, कु० ६।२ रघु० ९।४३ श० ४।९, —भृत्यः कौवा —रमणः [illegible] का यार या जार - पंच० १।१८०, —लोकः दूसरा (आगामी) दुनिया—कु० ४।१० कु० ४।१० —विधिः अन्त्येष्टि

सत्कार, —वश —वशग (वि०) दूसरे के अधीन परा श्रित, —वाच्यम् दोष या त्रुटि, —वाणि 1 न्यायकर्ता 2 वर्ष 3 कार्तिकेय के मोर का नाम —वाद 1 अफवाह, जनश्रुति 2 आपत्ति विवाद —वादिन् (पु०) झगड़ालू, विवादी —व्रत धृतराष्ट्र का विशेषण —श्वस् (अव्य०) परसों (आगामी) —सवर्ण (वि०) (व्या० में) अगवर्ती वर्ण का सजातीय —सेवा दूसरे की सेवा —स्त्री दूसरे की स्त्री —स्वम् दूसरे की सम्पत्ति रघु० १.७ मनु० ७.१२३ —हरणम् दूसरे की सम्पत्ति ले लेना —हन् (वि०) शत्रुओं को मारने वाला —हितम् दूसरे का भला।

परकीय (वि०) [पर + छ कुक्] दूसरे से संबंध रखने वाला ... भार्या ... मनु० ४.२०१ ... दूसरे की ... जो अपनी नहीं ... दूसरे ...

परञ्ज (पुं०) 1 तेल कोल्हू 2 तलवार का फल

परञ्जन ... परस्मा ... विशेषण ...

परत (अ ०) ... 1 दूसरे से ... 2 शत्रु से रघु० ... 3 बाद ... अधिक ... बाद ऊपर ... विपरीत ... भिन्न प्रकार से।

परत्र (अव्य०) [पर + त्रल्] 1 दूसरे लोक में ... में परलोक ... रघु० ... कु० ... मनु० ... 2 ... 3 ... —भीरु परलोक के भय से ... पुरुष।

परंतप (वि०) [परान् शत्रून् तापयति ...] ... दूसरों को ... अपने शत्रुओं का दमन करने वाला ... रघु० १५.७ ... विजेता।

परम (वि०) [पर + मा + क] 1 दूरतम अन्तिम 2 उच्चतम सर्वोत्तम ... श्रेष्ठ ... —प्राप्नोति परमां गतिम् मनु० ४.१४ ... 3 मुख्य प्रधान प्राथमिक सर्वोपरि ... 4 अत्यधिक ... पर्याप्त, —मम् सर्वोच्च या ... मुख्य ... आम (समास के अन्त में) ... पुनीत ... मनु० ... मम् (अव्य०) स्वीकृतिवाचक ... स्वीकार या सहमति बोधक अव्यय (अच्छा बहुत अच्छा हाँ, ऐसा ही) —तत परम मित्युक्ता प्रतस्थे मुनिमण्डलम् — कु० ६.३५ 2 अत्यधिक अत्यन्त परमक्रुद्ध आदि०। सम० आत्मन् श्रेष्ठ ... —अणु अत्यणु अत्यल्पमात्रा का अणु — रघु० १५.२ परगुण परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम् भर्तृ० २.७८ पृथ्वी नित्या परमाणुरूपा — तर्क० (परमाणु की परिभाषा ... सूक्ष्म ... परमाणु ... उच्यते। —अर्हतम् 1 परमात्मा 2 विशुद्ध ... —अन्नम् खीर, दूध में पके हुए चावल, —अर्थ 1 सर्वोत्तम या ... सत्य, वास्तविक ... ज्ञान ... रघु० ८.२२ ... 2 सचाई वास्तविकता ... न पृथक् ... सर्वोत्तम ... महावी० ... 3 कोई श्रेष्ठ ... महत्त्वपूर्ण पदार्थ 4 सर्वोत्तम अर्थ —अर्थम् (अव्य०) सचमुच ... ... कु० ५.३४ ... —आत्मन् (पु०) सर्वोपरि आत्मा या ब्रह्म ... —ईशः विष्णु का विशेषण 2 ... —ईश्वरः ... सर्वशक्तिमान ... —गति ... मोक्ष —पदम् सर्वोच्च ... उच्चतम ... 2 मोक्ष —पुरुष, —पूरुष ... —ब्रह्म (नपुं०) ... ब्रह्मन् ... —हंस ... उच्चतम ... समाधि के द्वारा अपनी ... का दमन करके उनको वश में कर लिया है — मु० कूटीचक।

परमेष्ठ (परम ... ब्रह्मा का विशेषण

परमेष्ठिन (पुं०) [परमे ...] 1 ब्रह्मा की 2 शिव की 3 विष्णु की ... 5 ... और अग्नि की उपाधि 6 कोई भी आध्यात्मिक गुरु।

परम्पर (वि०) [परम्परं ...] 1 एक के बाद दूसरा 2 पुनरागत उत्तरोत्तर —रा 1 अविच्छिन्न ... नियमित सिलसिला ... —रया एक कान से दूसरे कान में सुन सुन कर परंपरया आगतम् नियमित परम्परा के क्रम से

प्राप्त होना' 2. (नियमित वस्तुओं की) पंक्ति, कतार, सतत समूह—तोयान्तर्भास्करालीव रेजे मुनिपरंपरा—कु० ६।४९, रघु० ६।५, ३५,४०, १२।५० 3 प्रणाली, क्रम, सुव्यवस्था 4 वंश, कुटुंब, कुल 5 क्षति, चोट, मार डालना।

परंपराक (वि०) [परंपरया कायते प्रकाशते कै+क] यज्ञ में पशु का वध करना।

परंपरीण (वि०) [परंपर+ख] उत्तराधिकार में प्राप्त आनुवंशिक—लक्ष्मीं परंपरीणां त्वं पुत्रपौत्रीणतां नय—भट्टि० ५।१५ 2 परंपराप्राप्त।

परवत् (वि०) [पर+मतुप् मस्य व] 1 पराधीन दूसरे के वश में, आज्ञापालन के लिए तत्पर—सा बाला परवतीति मे विदितम्—श० ३।२ भगवन्परवानयं जनः—रघु० ८।८१, २।५६, (प्रायः करण० या अधि० के साथ) भाषा यदित्थं परवानसि त्वं रघु० १४।५९ 2. शक्ति से वंचित, निःशक्त परवानिव शरीरोपतापेन—मा० ३ 3. पूर्णरूप से (दूसरे के) अधीन जो स्वयं अपना स्वामी न हो, विजित, पराभूत—विस्मयेन परवानस्मि—उत्तर० ५ आनंदेन परवानस्मि—उत्तर० ३, साध्वसेन—मा० ६।

परवत्ता [परवत्+तल्+टाप्] दूसरे की अधीनता पराधीनता, विक्रम० ५।१७।

परशः [स्पृशति इति पृषो०] पारसमणि, जिसके स्पर्श से, कहा जाता है कि लोहा आदि दूसरी धातु सोना बन जाती है, संभवतः ५० दार्शनिकों का पारसपत्थर है।

परशुः [परं शृणाति—शृ+कु डिच्च] कुल्हाड़ा, कुल्हाड़ी कुठार फरसा—तपित परशुधारया मम—रघु० ११।७८ 2. शस्त्र, हथियार 3. वज्र। सम०—धरः 1. परशुराम का विशेषण 2. गणेश की उपाधि 3. कुठारधारी सैनिक,—रामः 'कुठारधारी राम' एक विख्यात ब्राह्मणयोद्धा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छठा अवतार था (इसने अपनी बाल्यावस्था में ही अपने पिता की आज्ञा से जब कि उसके भाइयों में से कोई भी तैयार न हुआ, अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला—दे० जमदग्नि। इसके पश्चात् एक बार राजा कार्तवीर्य, जमदग्नि के आश्रम में आये और उसकी गौ को छीनकर ले गये। परन्तु घर आने पर जिस समय परशुराम को पता लगा तो वह कार्तवीर्य से लड़ा और उसे यमलोक पहुँचा दिया। जब कार्तवीर्य के पुत्रों ने सुना तो वह बड़े क्रुद्ध हुए—फलतः वे आश्रम में आये और जमदग्नि को अकेला पाकर उसे मार डाला। जब परशुराम—जो कि इस घटना के समय आश्रम में नहीं था, वापिस आया, तो अपने पिता के वध का समाचार सुन अत्यंत क्षुब्ध हुआ, उसी समय उसने समस्त क्षत्रिय जाति का उन्मूलन करने की भीषण प्रतिज्ञा की। वह अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने में सफल हुआ, कहते हैं कि उसने इस पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय जाति से मुक्त किया। वह क्षत्रिय जाति का नाशकर्ता बाद में दशरथ के पुत्र राम के द्वारा जब कि वह केवल सोलह ही वर्ष के थे (दे० रघु० ११।६८,९१) परास्त किया गया। कहते हैं कि कार्तिकेय की शक्ति से ईर्ष्या होने के कारण उसने क्रौंच पर्वत को भी एक बार तीरों से बींध दिया—तु० मेघ० ५७ सात चिरजीवियों में इसकी भी गिनती है, विश्वास किया जाता है कि परशुराम अब भी महेन्द्र-पर्वत पर बैठ तपस्या कर रहे हैं—तु० गीत० १ क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्, केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥

परश्वधः (म्वः) [पर+श्वि+ड परं श्व तद्धाति—धा+क नि० शस्य सत्वम्] कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा—तिला रामपरश्वधस्य संभावितपुष्पदयम्—रघु० ६।४२।

परस् (अव्य०) [पर+असि] (श्रेण्य साहित्य में इसका स्वतंत्र प्रयोग विरल है) 1 परे, आगे और भी 2 इसके दूसरी ओर 3 दूर, दूरी पर 4 अपवाद रूप से। सम०—कृष्ण (वि०) अत्यन्त काला,—पुरुष (वि०) मनुष्य से लंबा या ऊँचा—शत (वि०) सौ से अधिक—कि० १३।२६ शि० १२।५०,—श्वस् (अव्य) आगामी परसों—सहस्र (वि०) एक हजार से अधिक—परः सहस्राः शरदस्तपांसि तप्त्वा—उत्तर० १।१५, परः सहस्रं पिशाचं—महावी० ५।१७।

परस्तात् (अव्य०) [पर+अस्ताति] 1 परे, के दूसरी ओर, और आगे (संब० के साथ)—आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्—भग० ८।९ 2 इसके पश्चात्, बाद में 3 अपेक्षाकृत ऊँचा।

परस्पर (वि०) [पर पर इति विग्रहे समासवद्भावे पूर्वपदस्य सु] आपस में—परस्परा विस्मयवन्ति लक्ष्मीमालोकयांचक्रुरिवादरेण—भट्टि० २।५, (सर्व० वि०) अन्योन्य, एक दूसरा (केवल ए० व०, में प्रयुक्त—प्रायः समास में) परस्परस्योपरि पर्यचीयत—रघु० ३।२४, ७।१५, अविज्ञातपरस्परैः अपसर्पैः—१७।५१, परस्पराक्षिसादृश्यम्—१।४०, ३।२४, विशे० 'एक दूसरे के विरुद्ध' 'आपस में' 'एक दूसरे से' 'एक दूसरे के द्वारा' 'इतरेतर के रूप में' 'आपस में' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए इस शब्द के कर्म० करण० और अपा० के एक वचन के रूप क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त होते हैं—दे० भग० ३।११, १०।९ रघु० ४।७९, ६।४६, ७।१७, ५१, १२।१४।

परस्मैपदम्, परस्मैभाषा [परस्मै परार्थं पदं भाषा वा] दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य, क्रिया के दो रूपों में से (परस्मै तथा आत्मने) एक जिसमें कि संस्कृत की धातुओं के रूप चलते हैं।

परा (अव्य०) [पृ+अच्+टाप्] 'दूर' 'पीछे' 'उल्टे क्रम से' 'एक ओर' 'की ओर' अर्थों को प्रकट करने के लिए धातु या संज्ञा से पूर्व लगने वाला उपसर्ग। गण० के अनुसार 'परा' के अर्थ निम्नलिखित हैं —1. मार डालना, आघात करना आदि (पराहत) 2 जाना (परागत) 3 देखना, सामना करना (परा-वृष्ट) 4 पराक्रम (पराक्रान्त) 5 की ओर निदेश, (परावृत) 6 अभिभव (पराजित) 7 पराधीनता (पराधीन) 8 उद्धार, मुक्ति (पराकृत) 9 प्रतीपक्रम पीछे की ओर (पराङ्मुख) 10 एक ओर रख देना, अवहेलना करना।

पराकरणम् [परा+कृ+ल्युट्] एक ओर रख देने की क्रिया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, तिरस्कृत करना।

पराक्रमः [परा+क्रम्+घञ्] 1 शूरवीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य पराक्रम परिभवे—शि० २।४४ 2 विरोधी अभियान करना, आक्रमण करना 3 प्रयत्न, कोशिश, उद्योग 4 विष्णु का नाम।

परागः [परा+गम्+ड] 1 पुष्पराज,—स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्—शि० ६।२, अमरु ५४ 2 धूलि—रघु० ४।३० 3 स्नान के पश्चात् सेवन किया जाने वाला सुगंधित चूर्ण 4 चन्दन 5 सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 6. ख्याति प्रसिद्धि 7. स्वाधीनता।

पराङ्गवः [परांग प्रचुरशरीर याति प्राप्नोति—या+क] समुद्र।

परा(रां)च् (वि०) (स्त्री० ची) [परा+अञ्च्+क्विन्] 1. परे या दूसरी ओर स्थित, ये चामुष्मात्पराञ्चो लोकाः छां० 2. मुँह मोड़ कर (पराङ्मुख) शि० १८।१८ 3 जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल—दैवे पराचि भामि ?।१०५ का—दैवे पराग्वदनशालिनि हंत जाते—भा०, 4 दूरस्थ 5. बाहर की ओर निदेशित। सम —मुख (वि०) (पराङ्मुखीभिर्नृनितुमबलाः शतत्वरे—रघु० १९।१८, अमरु ९० मनु० २।१९५, १०।११९ 2. (क) विमुख, उलट—मार्गे केवलं त्वस्या भियोऽभ्यागीत् पराङ्मुखः—रघु० १२।११, (ख) उदासीन, कतराने वाला, टालने वाला—प्रवृत्तिपराङ्मुखो भाव—विक्रम० ४।२०, कु० ५।२८ 3 प्रातकूल, अननुकूल—तनुरपि न ते दोषोऽस्माकं विधिस्तु पराङ्मुखः—अमरु २७ 1. उपेक्षा करने वाला—मर्त्येष्वास्थापराङ्मुख—रघु० १०।४३।

पराचीन (वि०) [पराच्+ख] विरुद्ध दिशा में मुड़ा हुआ, विमुख 2. पराङ्मुख, अरुचि रखने वाला 3. परवाह न करने वाला, उपेक्षा करने वाला 4. बाद में होने वाला, उत्तरकालभव 5. दूसरी ओर स्थित, परे होने वाला।

पराजयः [परा+जि+अच्] 1. पराजित करना, विजय, जीतना, अधीनीकरण, हार—रघु० ११।१९, मनु० ७।१९, 2. पराजित होना, सहन करने के योग्य न होना (अपा० के साथ) अध्ययनात्पराजयः 3. हारना, हार, असफलता (मुकदमे आदि में) अन्यवादाविनो (साक्षिण) यस्य ध्रुवस्तस्य पराजयः—याज्ञ० २।७९ 4. पदच्युति, बचना 5 परित्याग।

पराजित (भू० क० कृ०) [परा+जि+क्त] जीता हुआ, वश में किया हुआ, हराया हुआ 2. कानून द्वारा दण्डित, (मुकदमे में) हारा हुआ, पछाड़ा हुआ।

परान्न (न) सा [परा+अन् (न्)+अस+टाप्] औषधीय चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज, वैद्य का व्यवसाय।

पराभव [परा+भू+अप्] 1 (क) हार, असफलता, पराजय—पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्—कि० १।४१ (ख) मानभंग, मानमर्दन, प्रतिष्ठाभंग—कुबेरस्य मनः शल्यं शंसतीव पराभवम्—कु० २।२२, तव पदपल्लववैरिपराभवमिदमनु भवतु सुवेशम्—गीत० १२ 2. घृणा, अवहेलना तिरस्कार 3 विनाश 4 लोप, वियोग (कभी-कभी 'पराभाव' भी लिखा जाता है)।

पराभूतिः (स्त्री०) [परा+भू+क्तिन्] दे० 'पराभव'।

परामर्शः [परा+मृश्+घञ्] 1. पकड़ लेना, खींचना —जैसा कि 'केशपरामर्श' में 2. झुकाना या (धनुष) का तानना 3. हिंसा, आक्रमण, हमला—शत्रुदेह्याः परामर्शः—महा० 4. बाधा विघ्न—तप: परामर्शविवृद्धमन्यो:—कु० ३।७१ 5. ध्यान करना, प्रत्यास्मरण 6. विचार, विमर्श, चिन्तन 7. निर्णय 8. (तर्क० में) बताना, निश्चय करना कि अपना पक्ष या विषय सहेतुक है—व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः—तर्क० या—व्याप्तस्य पक्षधर्मता परामर्श उच्यते भाषा० ६६।

परामृष्ट (भू० क० कृ०) [परा+मृश्+क्त] 1. छुआ गया, हाथ लगाया गया, दबोचा गया, पकड़ा गया 2 बुरा व्यवहार किया गया, दुर्व्यवहार किया गया 3. तोला गया, विचार किया गया, कूता गया 4. सहन किया गया 5. संबद्ध 6. (रोग से) ग्रस्त—दे० परा पूर्वक 'मृश्'।

परारि (अव्य०) [पूर्वतरे वत्सरे इत्यर्थे परभावः आरि च संवत्सरे] पूर्वतर वर्ष में, पिछले वर्ष में, परिवार साल। पराचक्र दे० 'परं' (पर+अन्न) के नीचे।

परावर्तः, परावृत्ति [परा+वृत्+घञ्, क्तिन् वा] 1 पीछे मुड़ना, वापसी, प्रत्यावर्तन 2 अदल-बदल विनिमय 3 पुनः प्राप्ति 4 (कानून में) दण्ड या सजा की उलट-पलट ।

पराशर: [परान् आशृणाति शृ+अच्] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो व्यास के पिता तथा एक स्मृतिकार थे ।

परासः [परा+अस्+घञ्] रांगा, टीन ।

परासनम् [परा+अस्+ल्युट्] वध, हत्या ।

परासु (वि०) [परागता असवो यस्य प्रा० ब० स०] निर्जीव मृतक प्राक् परासुद्विजात्मजः रघु० १५। ५६ ९।७८ ।

परास्त (भू० क० कृ०) [परा+अस्+क्त] 1 फेंका हुआ डाला हुआ 2 निष्कासित निकाला हुआ 3 अस्वीकृत 4 तिरस्कृत त्यक्त 5 हराया हुआ ।

पराहत (भू० क० कृ०) [परा+हन्+क्त] 1 टक्कर खाया हुआ, पछाड़ा हुआ 2 पीछे हटाया हुआ पीछे ढकेला हुआ, सम्प्रहार आघात ।

परि (अव्य०) [पृ+इन्] (कभी कभी बदलकर 'री' भी हो जाता है जैसे कि परिवाह या परीवाह परिहास या परीहास में) यह उपसर्ग के रूप में धातु या संज्ञाओं से पूर्व लगकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 1 (क) चारों ओर इधर उधर इर्दगिर्द (ख) बहुत, अत्यन्त 2 पृथक्कारणीय अव्यय (कर्म० योग०) के रूप में निम्नांकित अर्थ हैं (क) की ओर की दिशा में, की तरफ के सामने (कर्म० के साथ) वृक्षं परि विद्योतते विद्युत (ख) क्रमशः अलग अलग करके (कर्म० के साथ) वृक्षं वृक्षं परि सिञ्चति यत्र एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष को सींचता है' (ग) हिस्से में, भाग्य में (कर्म० के साथ) यदत्र मां परि स्यात् 'जो मेरे भाग्य में बदा हो', लक्ष्मीर्हरिं परि—सिद्धा० (घ) से में से (ङ) सिवाय (अपा० के साथ) परि त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः या- पर्यनन्तात् भवस्तापा —बोप० (च) बीत जाने के बाद (छ) फलस्वरूप 3 क्रिया विशेषण उपसर्ग के रूप में संज्ञाओं से पूर्व लग कर जब कि क्रिया से सीधा सम्बन्ध न हो। 'बहुत' 'अति' 'अत्यधिक' 'अत्यन्त' आदि अर्थ प्रकट करता है जैसा कि पर्यश्रु (अश्रु बहाना) में इसी प्रकार परिक्षनुर्दशन् परिदौर्बल्य 4 अव्ययीभाव समासों में पूर्व 'परि' का निम्नांकित अर्थ होता है (क) बिना सिवाय के बाहर इसको छोड़ कर जैसा कि परित्रिगर्तं वृष्टो देवः—पा० २।१।१२ ६।२।३३, पा० २।१।१० के अनुसार 'परि' अक्ष, शलाका या संख्या वाचक शब्द के पश्चात् अव्ययीभाव समास के अन्त में प्रयुक्त होता है यदि पासा उल्टा आने के कारण या दुर्भाग्यवश हार या पराजय हो जाय (द्यूतव्यवहारे पराजये एवायं समासः)—उदा० अक्षपरि शलाकापरि एकपरि—सु० अक्षपरि (ख) इर्द गिर्द, चारों ओर, घिरा हुआ जैसा कि 'पर्यग्नि' में (ज्वालाओं के बीच में) 5 कर्मधारय समास के रूप में 'परि' का अर्थ है 'क्लान्त' 'म्लान' 'ऊबा हुआ' जैसा कि 'पर्यध्ययन' परिग्लानोऽध्ययनाय में ।

परिकथा [प्रा० स०] आख्यानात्मक व्यक्ति के इतिवृत्त तथा उसके साहसिक कार्यों का बखान वाली रचना काल्पनिक कथा ।

परिकंप [प्रा० स०] 1 भारी त्रास 2 प्रचंड कंपकंपी या थरथराहट महावी० २।४५ ।

परिकर [प्रा० स०] 1 परिजन, अनुचर गण, नौकर चाकर अनुयायिवर्ग 2 समुच्चय संग्रह, समूह रत्न० ३।२ 3 आरम्भ उपक्रम प्रारम्भ 4 परिवेष्टन कटिबंध कमरबंद आदि- शि० १।१० परिकरं बंध (कृ) कमर कसना तैयार होना किसी कार्य के लिए उद्यत होना कटिबद्ध होना बद्धः परिकर: वेणी० ३।४ परिकर: ...

... 5 मापक (आ० शा० में) ... परिकरांकुरं ... 7 (नाट्य० में) नाटक के बीज ... कथा में आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास ...

परिकर्म (पुं०) [प्रा० स०] वह पुरोहित जो बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह संस्कार करता है—परिकर्ता याजकः—हारीत, तु० 'परिवेत्तृ' ।

परिकर्मन् (पुं०) [परि+कृ+मनिन्] सेवक—नपुं० —शरीर को चिकित्सा या सुगंधित करना, वैयक्तिक सजावट, अलंकृत करना प्रसाधन—कृताकार परि-कर्माणम्—दश० ? 2 पैरों में महावर लगाना—कु० ४।१९ 3 सज्जा तैयारी 4 पूजा अर्चना 5 (याग० में) शुद्ध करना, पवित्रीकरण मन को शुद्ध करने के साधन—शि० ४।५५, (इसके ऊपर दे० मल्लि०) 6 गणित की प्रक्रिया (इसके आठ भेद हैं) ।

परिकर्ष,—**कर्षणम्** [परि+कृष्+घञ्, ल्युट् वा] खींच कर बाहर निकालना उखाड़ना ।

परिकल्कनम् [परि+कल्क्+ल्युट्] धोखा, ठगी छल कपट ।

परिकल्पनम्—**ना** [परि+कृप्+ल्युट्] 1 निर्णय करना, स्थिर करना फैसला करना, निर्धारित करना 2 उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप देना, कल्पना

बद्ध करना—मुद्रा० ७।१५ 3. जुटाना, सम्पन्न करना। 4 वितरण करना।

परिकांक्षित: [परि+काङ्क्ष्+क्त] धर्मपरायण साधु या संन्यासी, भक्त।

परिकीर्ण (भू० क० कृ०) [परि+कॄ+क्त] 1 फैलाया हुआ, प्रसृत, इधर उधर बखेरा हुआ 2. घिरा हुआ, भीड़भड़क्का से युक्त, भरा हुआ—शि० १६।१०, रघु० ८।८५।

परिकूटम् [प्रा० स०] अवरोध, खाई, नगर के फाटक के सामने की खाई।

परिकोप: [परि+कुप्+घञ्] प्रचण्ड क्रोध, भीषणता।

परिक्रम: [परि+क्रम्+घञ्] 1 इधर उधर भ्रमण करना, टहलते हुए घूमना—शि० १०।८ 2 भ्रमण, घूमना, टहलना 3 प्रदक्षिणा करना 4 इच्छानुसार टहलना 5 सिलसिला, क्रम 6 तथाक्रम, रमणीय 7 घुसना। सम०—सह बकरी

परिक्रय:,—क्रयणम् [परि+क्री+अच्, ल्युट् वा] 1 मजदूरी, भाड़ा 2 मजदूरी पर काम में लगाना 3 मोल लेना, खरीद डालना 4 विनिमय, अदल-बदल 5 रुपया देकर की गई संधि—शु० हि० ४।१२२।

परिक्रिया [परि+क्रिया प्रा० स०] 1 बाड़ लगाना, चारों ओर खाई खोदना 2 घेरना 3 (नाटय० में) परिकर (७)।

परिक्लान्त (भू० क० कृ०) [परि+क्लम्+क्त] थका हुआ, परिश्रान्त, थकाया हुआ।

परिक्लेद: [परि+क्लिद्+घञ्] गीलापन, नमी, आर्द्रता।

परिक्लेश: [परि+क्लिश्+घञ्] कठिनाई, थकावट, कष्ट।

परिक्षय: [परि+क्षि+अच्] 1. ह्रास, बर्बादी, विनाश—परिक्षयोऽपि अधिकतरं रमणीय: मृच्छ० १, कि०, कु० ४।४६ 2. अन्तर्धान होना, समाप्त होना 3. बर्बादी, नाश, असफलता कि० १६।५७ मनु० ९।५९।

परिक्षाम [परि+क्षै+क्त, मकारादेश] कृश, क्षीण, दुर्बल।

परिक्षालनम् [परि+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 धोना, मांजना 2. धोने के लिए पानी।

परिक्षिप्त (भू०क०कृ०) [परि+क्षिप्+क्त] 1. बखेरा हुआ, प्रसृत 2. परिवेष्टित, घेरा हुआ—वनसम्परिक्षिप्ते मत्स्ये श० ३, कु० ६।३८ 3. खाई से घेरा हुआ 4. ऊपर से फैलाया हुआ, ऊपर डाला हुआ 5. छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

परिक्षीण (भू०क०कृ०) [परि+क्षि+क्त] 1. अन्तर्हित, लुप्त, 2. बर्बाद हुआ, ह्रासित 3. कृश, घिसा हुआ, थका हुआ 4. दरिद्र किया हुआ, सर्वथा बर्बाद किया हुआ मनु० ७।८५ 5. खोया हुआ, नाश किया हुआ 6. कम किया हुआ, घटाया हुआ 7. (कानून में) दिवालिया।

परिक्षीव (वि०) [परि+क्षीव्+क्त, नस्य लोप] बिल्कुल नशे में चूर।

परिक्षेप: [परि+क्षिप्+घञ्] 1. इधर उधर टहलना 2. बखेरना, फैलाना 3. घेरना, परिवेष्टन, चारों ओर बहना 4 घेरे की सीमा, हद जिससे कोई चीज घेरी जाय—रघु० १२।६६।

परिखा [परित: खन्यते—खन्+ड+टाप्] प्रतिकूप, खाई, नगर या किले के चारों ओर बनी नाली या खात—रघु० १।३०, १२।६६।

परिखातम् [परि+खन्+क्त] 1. प्रतिकूप, खाई 2. लीक, खूड़ 3 चारों ओर से खोदना।

परिखेद: [परित: खेद: प्रा० स०] थकावट, परिश्रान्ति, थकान कु० १।६०, ऋतु० १।२७।

परिख्याति: (स्त्री०) [परि+ख्या+क्तिन्] यश, प्रसिद्धि।

परिगणनम्,—ना [परि+गण्+ल्युट्] पूर्ण गिनती, सही गणना या हिसाब, श्रेणीभूता: परिगणनया निर्दिशन्तो बलाका: मेघ० (मल्लि० इसको क्षेपक समझते हैं)।

परिगत (भू०क०कृ०) [परि+गम्+क्त] 1. घेरा हुआ, आवेष्टित, अहाता बनाया हुआ 2. प्रसृत, चारों ओर फैलाया हुआ 3. ज्ञात, समझा हुआ रघु० ७।७१, परिगतपरिगतव्य एव भवान् वेणी० ३, महावी० ३।४३ 4. भरा हुआ, ढका हुआ, सम्पन्न (प्राय: समास में) शि० ९।२६ 5. प्राप्त, प्राप्त भर्तृ० २।५२ 6. याद किया हुआ

परिगलित (भू०क०कृ०) [परि+गल्+क्त] 1. डूबा हुआ 2. उतरा हुआ 3 लुप्त 4. पिघला हुआ 5 बहता हुआ।

परिगर्हणम् [परि+गर्ह्+ल्युट्] भारी कलङ्क।

परिगूढ (भू०क०कृ०) [परि+गुह्+क्त] 1. बिल्कुल गुप्त 2 अबोध्य, जो समझने में अत्यन्त कठिन हो।

परिगृहीत (भू०क०कृ०) [परि+ग्रह्+क्त] 1. अपनाया हुआ, पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2. आलिंगन किया हुआ, घेरा हुआ 3. स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ 4 हामी भरा हुआ, स्वीकृत किया हुआ, माना हुआ 5. आश्रय दिया हुआ, अनुग्रह किया हुआ 6 अनुसरण किया हुआ, आज्ञा माना हुआ 7. विरोध किया हुआ दे० परि-पूर्वक 'ग्रह्'।

परिगृहीता [परि+ग्रह्+क्त+टाप्] विवाहिता स्त्री।

परिग्रह: [परि+ग्रह्+अप्] 1 पकड़ना, थामना, लेना, ग्रहण करना, आसनपरिग्रहं करोतु रघु० ९।४६, शाकपरिग्रह मुद्रा० १, धक्का करना 2. घेरना,

बन्द करना, चारों ओर से घेरा डालना, बाड़ लगाना 3 पहनना, (वेषभूषा की भांति) लपेटना मौलिपरिग्रह -रघु० १८।३८ 4 धारण करना लेना—मानपरिग्रह—अमरु ९२, विवाह भी उत्तर० ४ 5. प्राप्त करना लेना स्वीकार करना, अंगीकार करना—भौमो मुने स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३।३६, अर्घ्यपरिग्रहांते ७० १२।१६, कु० ६।५३ विद्यापरिग्रहाय -मा० १ इसी प्रकार आसनपरिग्रह करोतु देव उत्तर० ३ 'आसन-ग्रहण कीजिए महाराजाधिराज' 6 वैभव संपत्ति सामान त्यक्त सर्वपरिग्रह —भग० ४।२१ रघु० १५।५५, विक्रम० ४।२६ 7 आवाह विवाह नवे दारपरिग्रहे उत्तर० १।१९ — मा० ५।२७ श० ७।२२ 8 पत्नी रानी—प्रथतपा [illegible] —रघु० १।५५ ९२ ९।१४, ११।३३, १८।८, श० ५।२७ ३०, परिग्रह बहुत्वेऽपि - श० ३।२१ 9 अपने संरक्षण में लेना, अनुग्रह करना —उत्तर० ७।११, मालवि० १।१३ 10 अनुचर, अनुसेवी, नौकर-चाकर, परिजन सेवक समूह 11 गृहस्थ, परिवार, परिवार के सदस्य 12. राजा का अन्तःपुर, रनिवास 13. जड़ मूल 14. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 15. शपथ 16 सेना का पिछला भाग 17. विष्णु का नाम 18 संक्षेप, उपसंहार।

परिग्रहीतृ (पुं०) [परि+ग्रह्+तृच्] पति— श० ४।२२।

परिग्लान (भू० क० कृ०) [परि+ग्लै+क्त] 1 शिथिल थका हुआ 2 विमुख पराङ्मुख।

परिघ [परि+हन्+अप्, घादेश] 1 लोहे की छड़ या लकड़ी का मूसल जो द्वार को बंद रखने के लिए प्रयुक्त की जाय, अर्गला—एकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति श० २।१५, रघु० १६।८४ शि० ३२, मालवि० ५।२ 2. (अतः) रोक अवरोध विघ्न, बाधा भ्रामंडस्य सुकृतोऽपि सोऽभवत्स्वर्गमार्गपरिघो दुरत्ययः—रघु० ११।८८ 3 लोहे की स्याम लगी हुई लाठी, मुद्गर जिसमें लोहे की स्याम जड़ दी गई हो रघु० १२।७३ 4 लोहे की गदा 5 जलपात्र, घड़ा 6 शीशे की झारी 7 घर 8 मारना, नष्ट करना 9 प्रहार करना —आघात या चपेट।

परिघट्टनम् [परि+घट्ट्+ल्युट्] घोटना, कड़छी चलाना।

परिघातः, —घातनम् [परि+हन्+णिच् घञ्, नस्य त ल्युट् वा] 1 मारना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा पाना 2 मुद्गर, मोटे सिरे की छड़ी।

परिघोष [परि+घुष्+घञ्] 1 कोलाहल 2 अनुचित भाषण 3 गर्जन।

परिचतुर्दशन् (वि०) [प्रा० स०] पूरे चौदह।

परिचयः [परि+चि+अच्] 1 ढेर लगाना, एकत्र करना 2. जान पहचान, परिचिति, घनिष्ठता, सरकारी सरक्षण—पुरुषपरिचयेन—रघु० १।५९, अतिपरिचयादवज्ञा 'अतिपरिचय से होता है, अवज्ञा अनादर भाव' परिचय चलकक्ष्यनिपातेन - रघु० ९।४९, सकलकलापरिचय का० ७६ 3 जांच, अध्ययन, अभ्यास, मुहुर्मुहु- आवृत्ति, हेतुपरिचयस्थैर्ये वक्तुर्गुणनिकैव सा शि० २।७५ १।१५, वर्णपरिचयं करोति श० ५ 4 जान महावीर ५।१० 5 पहचान नैष० ९।

परिचरः [परि+चर्+अच्] 1 सेवक अनुचर, टहलुवा 2 शरीर रक्षक 3 रक्षक पहरेदार 4 श्रद्धांजलि, सेवा।

परिचरणम् [परि+चर्+ल्युट्] सेवक टहलुवा सहायक, —णम् 1 सेवा टहल 2 इधर उधर जाना।

परिचर्या [परि+चर्+यत्+टाप्] 1 सेवा टहल रघु० १।९१ मनु० १८।४४ 2 अर्चना पूजा —शि० ११।३।

परिचाय्य [परि+चि+ण्यत्] यज्ञाग्नि (कुण्ड में स्थापित)।

परिचारः [परि+चर्+घञ्] 1 सेवा, टहल 2 सेवक 3 टहलने का स्थान।

परिचारक, परिचारिक [परि+चर्+ण्वुल्, परिचार+ठन्] सेवक टहलुवा।

परिचित (भू० क० कृ०) [परि+चि+क्त] 1 ढेर लगाया हुआ इकट्ठा किया हुआ 2 जानकार घनिष्ठ जान पहचान का 3 सीखा गया अभ्यस्त।

परिचिति (स्त्री०) [परि+चि+क्तिन्] जान पहचान परिचय घनिष्ठता।

परिच्छद् (स्त्री०) [परि+छद्+क्विप्] 1 परिजन, अनुचरवर्ग 2 साज-सामान।

परिच्छदः [परि+छद्+णिच्+घ] 1 आवरण चादर पोशाक 2. वस्त्र, वेशभूषा सामाग्रकालकमनीयपरिच्छदानाम् कि० ७।४० 3 नौकरचाकर परिजन टहलुए आश्रितमंडली रघु० ९।७० 4 साज-सामान, (छत्र चामर आदि) ऊपरी सामान सेना परिच्छदस्तस्य रघु० १।१९ 5 सामान असबाब, व्यक्तिगत सामान निजी चीज़ें व सामान (वर्तनभांडे, तथा अन्य उपकरण आदि) विवास्यो वा भवेद्राष्ट्रात्सद्रव्यः सपरिच्छदः - मनु० ९।२४१, ७।४०, ८।४०५, ९।७८ ११।७६ 6 यात्रा का आवश्यक सामान।

परिच्छंदः [परि+छन्द्+क] नौकर-चाकर, परिजन।

परिच्छन्न (भू० क० कृ०) [परि+छद्+क्त] 1 वेष्टित, ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, जिसने वस्त्र पहने हुए हों 2 ऊपर फैलाया हुआ, या बिछाया हुआ 3 घिरा हुआ (परिजनों से) 4 छिपा हुआ।

परिच्छित्तिः (स्त्री॰) [परि + छिद् + क्तिन्] 1 यथार्थ परिभाषा, सीमित करना 2 विभाजन, अलग अलग करना।

परिच्छिन्न (भू॰ क॰ कृ॰) [परि + छिद् + क्त] 1 काटा हुआ, विभक्त 2 यथार्थ परिभाषा से युक्त, निर्धारित, निश्चयीकृत, कु॰ २।५८ 3 सीमित, सीमाबद्ध, परिसीमित दे॰ परिपूर्वक 'छिद्'।

परिच्छेदः [परि + छिद् + घञ्] 1 काटना, वियुक्त करना, विभक्त करना, (उचित और अनुचित में) विवेचन 2 यथार्थ परिभाषा, फ़ैसला, यथार्थ निर्धारण, निश्चय करना—परिच्छेदव्यक्तिर्भवति न पुरःस्थेऽपि विषये—मा॰ १।३१, परिच्छेदातीतः सकलवचनानामविषयः १।३० सब प्रकार की परिभाषा और निर्धारण से परे—कृत्याकृत्यपरिच्छेदव्याकुलं मे मनः श॰ ५।१९ 3 विवेक, निर्णय, सूक्ष्मदृष्टि—परिच्छेदो हि पाण्डित्यं यदापन्ना विपत्तयः अपरिच्छेदकर्तृणां विपदः स्युः पदे पदे हि॰ १।१४८, कि पाण्डित्य परिच्छेद १।१७ 4 सीमा, हद, सीमा स्थिर करना, इयत्ता—अलमलं परिच्छेदेन मा॰ २ 5 अनुभाग, या पुस्तक का काण्ड, अनु भाग के अन्य नामों के लिए दे॰ 'अध्याय' के अन्तर्गत)।

परिच्छेद्य (वि॰) [परि + छिद् + ण्यत्] 1 यथार्थता से परिभाषा के योग्य परिमापणीय अनु॰ ८।१९, रघु॰ १०।२८ 2 तोलने या अनुमान लगाने के योग्य।

परिजन [प्रा॰ स॰] 1. सदा साथ रहने वाले नौकर-चाकर अनुयायिवर्ग, अनुचरवर्ग—परिजनो राजानमविरतं सिषेवे—मालवि॰ १ 2 आश्रित लोग सेवकसमूह, सेविकाओं का समूह, बांदियां दासियां—रघु॰ १९।२३ 3 सेवक दास।

परिजल्पितम् [परि + जल्प् + क्त] नौकर या सेवक का गुप्त संकेत जिसमें अपनी कुशलता खोलना तथा स्वामी की क्रूरता एवं धूर्तता तथा और दूसरे इसी प्रकार के दोष प्रकट हों, उज्ज्वलनीलमणि इस प्रकार परिभाषा बनाता है—प्रभोर्निर्दयताशाठ्यचापलाद्युपपादनात्, स्वविचक्षणताव्यक्तिर्भङ्ग्या स्यात्परिजल्पितम्। (विश्वास के अनुसार अपने प्रिय से उपेक्षित किसी रमणी के द्वारा प्रयुक्त गुप्त झिड़कियाँ ही 'परिजल्पित' हैं)।

परिजप्तिः [परि + जप् + क्तिन्] 1 संलाप बकवाद 2 गुप्त बात।

परिज्ञानम् [परि + ज्ञा + ल्युट्] पूरा ज्ञान पूरी जानकारी।

परिडीनम् [परि + डी + क्त] पक्षियों का चारों तरफ़ उड़ना या पक्षियों के वृत्त की उड़ान—दे॰ डीन।

परिणत (भू॰ क॰ कृ॰) [परि + नम् + क्त] 1. झुका हुआ, विनत, लटका हुआ—मेघ॰ २ 2. (आयु में) वृद्ध, ढलता हुआ—परिणते वयसि—का॰ ३५,६२, ६३ 3 पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित—शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम् उत्तर॰ ७।२१, मेघ॰ २३—परिणतमदनफलरसाभिरामे—कादं॰ १।८, शि॰ ११।४९, 4. पूर्णरूप से बढ़ा हुआ, प्रौढ़, पूर्णविकसित परिणतशरच्चन्द्रकिरणैः—भर्तृ॰ ३।४९, मेघ॰ १०० 5 (भोजन आदि) पचा हुआ 6 रूपान्तरित या परिवर्तित (करण॰ के साथ) विक्रम॰ ४।२८ 7 समाप्त, पर्यवसित, अवसायी, अनेन समयेन परिणतो दिवसः—का॰ ४७ 8 (सूर्य आदि) अस्त,—तः अपने दांत से प्रहार करने के लिए झुका हुआ या पार्श्वाघात देने वाला हाथी (तिर्यग्दन्तप्रहारस्तु गजः परिणतो मतः—हला॰) शि॰ २।२९, कि॰ ६।७।

परिणतिः (स्त्री॰) [परि + नम् + क्तिन्] 1 झुकना ढलना, नत होना 2 पककापन, परिपक्वता, विकास—महावी॰ २।१४ 3. परिवर्तन रूपान्तरण, कायापलट 4 पूर्णता 5 नतीजा, परिणाम फल—परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन—भर्तृ॰ २।९४, १।२०, ३।१७, महावी॰ ६।२८ 6 अन्त, उपसंहार समाप्ति अवसान—परिणतिरमणीयाः प्रीतयस्त्वद्विधानाम् मा॰ ६।७,१६ शि॰ ११।१ 7 जीवन की अन्तिम झांकी, बुढ़ापा—शैशवात्प्रभृति पोषितां प्रियां सौहृदादपृथगाश्रयामिमाम्... परिणतिमलिनं—विक्रम॰ ३।१, अभ्युद्यत परिणति शिथिल परिणतवपुषो दिवस—शि॰ ९।३ (यहाँ प॰ का अर्थ है 'अन्त या उपसंहार' भी) 8 (जीवन का) ढलना।

परिणद्ध (भू॰ क॰ कृ॰) [परि + नह् + क्त] 1 बंधा हुआ, लिपटा हुआ 2 विस्तृत, विशाल—परिणद्धकंधरः—रघु॰ ३।३४।

परिणयः,—यनम् [परि + नी + अप्, ल्युट् वा] विवाह—नवपरिणया वधूः शयने—काव्य॰ १०।

परिणहनम् [परि + नह् + ल्युट्] कमर बांधना, कमर पर कपड़ा लपेटना।

परि (री) णामः [परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 बदलना परिवर्तन, रूपान्तरण 2 पाचन—अन्नं न सम्यक् परिणाममेति—सुश्रुत, भुक्तस्य परिणामहेतुरौदर्यम् तर्क॰ 3 नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव—अप्रियस्यापि पथ्यस्य परिणामः सुखावहः—हि॰ २।१३५ मृच्छ॰ ३।१ परिणामसुखे गरीयसि व्यथितेऽस्मिन्नौषधे—कि॰ २।४, भग॰ १८।३७, ३८ 4 पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास—उपैतिशस्य परिणामरम्यताम्—कि॰ ४।२२, कमलपरिणामकोमलसंपूर्णं...उत्तर॰ २।२०, मा॰ ९।२४ 5. अन्त, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, ह्रास—दिवसाः परिणामरमणीयाः

—श० १।३, वय. परिणामपाण्डुरशिरस—का० १०, परिणाममुपैति दिवसः—का० २५४, 'दिन समाप्त होने वाला है' 6 बुढ़ापा—परिणामे हि दिलीप-वंशजाः—रघु० ८।११ 7 (समय का) बीतना 8. (अलं० शा० में) रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं (चन्द्रालोक में दी गई परिभाषा और उदाहरण—परिणामः क्रियार्थश्चेद्विषयी विषया-त्मना, प्रसन्नेन दृगब्जेन वीक्षते मदिरेक्षणा—५।१८, दे० रसगंगाधर में 'परिणाम' के नीचे), सम० —दर्शिन् (वि०) बुद्धिमान्, दूरदर्शी, —दृष्टि (वि०) बुद्धिमान् (—ष्टिः—स्त्री०) बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, —पथ्य (वि०) जिसका फल स्वास्थ्यप्रद हो —शूलम् पीडायुक्त अजीर्ण या मन्दाग्नि, उदरपीडा, पीड़ा के साथ उदरवायु, वायगोले का दर्द।

परि (री) णाय: [परि+नी+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. शतरंज की गोट का चलाना 2 (शतरंज की) चाल।

परिणायक: [परि+नी+ण्वुल्] 1 नेता 2 पति —शि० ९।७३।

परि (री) णाह: [परि+नह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्ज—स्तनयुगपरिणाहाच्छादिना वल्कलेन—श० १।१९, स्तनपरिणाहविलासवैजयन्ती मा० ३।१५, विशाल वक्षःस्थल,—अमुष्य वृषस्य कुरुवाहुकल्प परिणाहशालिनी कि० १२।२०, मृच्छ० ३।९, रत्न० २।१३, महावी० ७।२४ 2. वृत्त की परिधि।

परिणाहवत् (वि०) [परिणाह+मतुप्, मस्य वत्वम्] विशाल, बड़ा, विस्तृत।

परिणाहिन् (वि०) [परिणाह+इनि] विशाल, बड़ा —कु० १।२६।

परिणिंसक (वि०) [परि+निंस्+ण्वुल्] स्वाद चखने वाला, खाने वाला-पलालं परिणिंसक —भट्टि० ९।१०९ 2 चुम्बन।

परिणिष्ठा [परि+निष्ठा प्रा० स०] पूरा कौशल।

परिणीत (भू० क० कृ०) [परि+नी+क्त] विवाहित —ता विवाहित स्त्री

परिणेतृ (पुं०) [परि+नी+तृच्] पति—श० ५।१७, रघु० १।२५, १४।२६, कु० ७।११।

परितर्पणम् [परि+तृप्+ल्युट्] तृप्त करना, सन्तुष्ट करना।

परितस् (अव्य०) [परि+तस्] (सदा के साथ प्राय कर्म० में, कभी-कभी स्वतंत्र रूप से प्रयोग) 1 इर्दगिर्द, सब ओर, घुमा फिराकर, सब दिशाओं में, सर्वत्र, चारों ओर—रक्षांसि वेदिं परितो निरास्थत्—भट्टि० १।१२, शि० ५।२६, ९।३६, कि० १।१४, मलिन गहन परितो दृष्टाश्च विटपिन सर्वे भामि० १।२१, २९ 2 की ओर, की दिशा में आर्येहरेऽत्र-रणस्य परित पतगा भामि० १।१७, रघु० ९।६६।

परितापः [परि+तप्+घञ्] 1 अत्यंत या झुलसा देने वाली गर्मी—(पादपः) शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्—श० ५।७ मृदुपरितापानि गात्राणि —३।१८, ऋतु० १।२२ 2 पीड़ा, वेदना, व्यथा शोक शमयन्ति निर्वाणे हृदयपरितापं अर्हसि किम - मालवि० ३।१ 3 विलाप, मातम, शोक चिर-विलपितविषविलाप सा परितापं चकाराच्चैः गीत० ७ 4 कांपना, भय।

परितुष्ट (भू० क० कृ०) [परि+तुष्+क्त] 1 पूर्ण रूप से सन्तुष्ट—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या भर्तृ० ३।५० इसी प्रकार मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र — भर्तृ० ३।५० 2 प्रसन्न, खुश।

परितुष्टिः (स्त्री०) [परि+तुष्+क्तिन्] 1 सन्तुष्टि पूर्ण सन्तोष 2 खुशी, हर्ष।

परितोषः [परि+तुष्+घञ्] 1 सन्तोष, इच्छा का अभाव (विप० लोभ) सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेष भर्तृ० ३।५० 2 पूर्ण सन्तोष, तृप्ति आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् श० १।२ 3 प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, प्रसन्नता (अधि० के साथ) कु० ६।५९, रघु० ११।९२, गुणिनि परितोष।

परितोषण (वि०) [परि+तुष्+णिच्+ल्युट्] सन्तुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला, —णम् सन्तुष्ट करना।

परित्यक्त (भू० क० कृ०) [परि+त्यज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, उज्झित, सर्वथा त्यागा हुआ 2 वञ्चित, रहित (करण० के साथ) 3 (तीर आदि) छोड़ा हुआ 4 अभावग्रस्त।

परित्यागः [परि+त्यज्+घञ्] 1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर चले जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद अपरित्यागमयाचतात्मजम् —रघु० १२, कृतसीतापरित्यागः—१५।१ 2. छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, विरक्त होना, नहीं छोड़ देना, स्वनाम परित्यागं करोमि पंच० १, 'मैं अपना नाम छोड़ दूंगा' मनु० २।२५ 3. अवहेलना, भूल-चूक—मोहात्तस्य (कर्मण) परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः भग० १८।७ 4 वदान्यता, उदारता 5 हानि, कमी।

परित्राणम् [परि+त्रै+ल्युट्] बचाव, रक्षण, बचाना प्रतिरक्षा, मुक्ति, छुटकारा—परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्—भग० ४।८, रामापरित्राणविहस्तयोधं सेनानिवेशं तुमुलं चकार—रघु० ५।४९।

परित्रासः [परि+त्रस्+घञ्] त्रास, भय, डर ।

परिदंशित (वि०) [परि+दंश्+क्त] कवच से ढका हुआ, आपादमस्तक शस्त्रों से सुसज्जित (पूर्णतया जिरहबख्तर से युक्त) ।

परिदानम् [परि+दा+ल्युट्] 1 विनिमय, अदला-बदली 2 भक्ति 3 धरोहर का वापिस मिलना ।

परिदायिन् (पुं०) [परि+दा+णिनि] वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवाहित है—तु० परिवेत्तृ ।

परि (री) दाहः [परि+दह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 जलन 2 व्यथा, पीड़ा, दुःख, शोक ।

परिदेवः [परि+दिव्+घञ्] शोक मनाना, मातम विलाप ।

परिदेवनम् —ना [illegible] [परि+दिव्+ल्युट्, परि+दिव्+क्त] 1 विलाप विलपना रोना-धोना—अथ तैः परिदेविताक्षरैः—कु० ४।२५ रघु० १४।८, भग० २।२८ तत्र का परिदेवना—याज्ञ० ३।९ शि० ८।६१ 2 पश्चात्ताप, खेद ।

परिदेवन (वि०) [परि+दिव्+ल्युट्] शोकसन्तप्त अत्यन्त दुःखी ।

परिद्वढ (पुं०) [परि+दृह्+क्त] समाजहीन व्यक्ति ।

परिधर्षणम् [परि+धृष्+ल्युट्] 1 हमला आक्रमण बलात्कार 2 अपमान निरादर तिरस्कार 3 दुर्व्यवहार बुरा व्यवहार ।

परि (री) धानम् [परि+धा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 कपड़े पहनना वस्त्र धारण करना 2 पोशाक अधोवस्त्र कपड़ा आपाण्डुवर्णाः धात्रविभूता कि० २।१ शि० १।५१ ६१ ४।६१ ।

परिधानीयम् [परि+धा+अनीयर्] अधोवस्त्र, नाभि से नीचे का पहरावा ।

परिधायः [परि+धा+घञ्] 1 नौकर चाकर अनुचर टहलुए 2 आधार, आशय 3 नितंब चूतड़ ।

परिधिः [परि+धा+कि] 1 दीवार, मेंड़ बाड़ घेरा 2. सूर्य या चन्द्रमा का परिवेश परिधिमत्त इवोष्ण दीधितिः रघु० ८।३०, सवितुः परिधिर्मिषेण रश्मिरवलम्ब्य [illegible] शि० २।१०८ 3. प्रकाशमण्डल 4 क्षितिज 5. परिधि या वृत्त 6. वृत्त की परिधि 7. पहिये का घेरा 8 ('पलाश' आदि पवित्र वृक्ष की) समिधा या लकड़ी जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर रक्खी रहती है कृष्णाङ्गस्यासन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः—ऋक् १०।९०।१५ । सम० —परिधिस्थः शिव का विशेषण —स्थः 1. चौकीदार 2. किसी राजा या सेनापति का सहायक अधिकारी) ।

परिधूपित (वि०) [परि+धूप्+क्त] धूप द्वारा सुवासित या सुगंधित किया हुआ ।

परिधूसर (वि०) [परितः सर्वतो भावेन धूसरः—प्रा० स०] बिल्कुल भूरा वपुर्ने परिधूसरं बसाना—श० ७।२१, रघु० ११।६० ।

परिधेयम् [परि+धा+यत्] अधोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा ।

परिध्वंसः [परि+ध्वंस्+घञ्] 1. दुःख, विनाश, बरबादी कष्ट 2 असफलता विध्वंस, ग्रहण 4 जाति-च्युति ।

परिध्वंसिन् (वि०) [परि+ध्वंस्+णिनि] 1 गिर कर अलग होने वाला 2. बरबाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला कि० ७।१३८ ।

परिनिर्वाण (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल बुझा हुआ, णम् (व्यक्ति की) अन्तिम विलुप्ति, परिमुक्ति ।

परिनिर्वृत्ति (स्त्री०) [परि+निर्+वृत्+क्तिन्] आत्मा की शरीर से पूर्णमुक्ति पुनर्जन्म से छुटकारा, पूर्ण मोक्ष ।

परिनिष्ठा [प्रा० स०] 1 (किसी वस्तु का) पूरा ज्ञान या परिचय 2 पूर्ण निष्पत्ति 3 चरम सीमा ।

परिनिष्ठित (भू० क० कृ०) [परि+नि+स्था+क्त] 1 पूर्ण कुशल 2. सुनिश्चित अपरिनिष्ठितस्योपदेश-स्यान्याय्यं प्रकाशनम् मालवि० १ ।

परिपक्व (भू० क० कृ०) [परि+पच्+क्त] 1 पूरी तरह पका हुआ, 2 भलीभाँति सेका हुआ, 3 बिल्कुल पक्का प्रौढ, सिद्ध, पूर्णता को प्राप्त (बाल० भी) प्रकृत्योऽप्रे परिपक्वकषायाणि —कुमु० ४।१, इसी प्रकार परिपक्वबुद्धि 4 सुविकसित समझदार, काइयाँ 5 पूरी तरह पचा हुआ 6 मुर्झाने वाला, मृत्यु के निकट ।

परिपण (नम्) [परि+पण्+घ प्रा०स०] पूंजी, मूलधन बारदाना ।

परिपणनम् [परि+पण्+ल्युट्] वादा करना, प्रतिज्ञा करना ।

परिपणित (भू०क०कृ०) [परि+पण्+क्त] वादा किया हुआ वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई— शि० ७।१९ ।

परिपन्थकः [परि+पन्थ्+ण्वुल्] शत्रु विरोधी, दुश्मन ।

परिपन्थिन् (वि०) [परि+पथ्+णिनि] रास्ता रोकने वाला रोड़ा अटकाने वाला, विरोध करने वाला, विघ्न डालने वाला (पाणिनि के मतानुसार केवल वेद में मान्य, परन्तु तु० नीचे दिए हुए उद्धरणों से)—अत्र पथी महामतागसि —मुद्रा० ५, नावधिष्ण्यमह तन्त्र यदि तत्परिपन्थिनी मा० ९।५०, इसी प्रकार भामि० १।६२, भग० ३।३४, मनु० ७।१०८, ११० (पुं०) रिपु, शत्रु प्रतिद्वन्द्वी, दुश्मन 2. लुटेरा, चोर डाकू ।

परि (री) पाकः [परि+पच्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य

दीर्घः] 1. पूरी तरह से पक जाना या सवारा जाना 2. पचना, जैसा कि 'अन्नपरिपाक' में 3. पक जाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता —शि० ४।४८, कु० ६।१० 4. फल, नतीजा, परिणाम —प्रपन्नानां मुनसुकृतपरिपाको जनिभृताम् —महावी० ७।३१, रघु० २।१३२, ३।१३५ 5. चतुराई, दूरदर्शिता, कुशलता।

परिपाटल (वि०) [प्रा०स०] पीला लाल —रघु० ११।१०, शिशु० १३।४२।

परिपाटिः,—टी (स्त्री०) [परि भागेन पाटि गच्छति गतिमस्याः प्रा०ब०स०, परिपाटि + ङीष्] 1. प्रणाली, रीति, प्रक्रम —पाटीर तव पटीयान्कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम् —भामि० १।१२, कदलानां वाटी रसिकपरिपाटी स्फुटयति —हंस० ७४ 2. व्यवस्था, क्रम, उत्तराधिकार।

परिपाठः [प्रा०स०] परिगणना, पूर्ण निर्देशन, पूरा विवरण।

परिपार्श्वं (वि०) [अव्य०स०] निकट, पार्श्व में, पास, नजदीक ही।

परिपालनम् [परि+पल्+णिच्+ल्युट्] 1 भली-भांति पालना, रक्षा करना, संधारण करना, संभाले रखना, जीवित रखना —किसलयानिकल्पपरिपालनवृत्तिरेव —श० ५।६ 2 भरण पोषण, संवर्धन —बालस्य परिपालनम् —मनु० ९।२७।

परिपिष्टकम् [परि+पिष्+क्त+कन्] सीसा।

परिपीडनम् [परि+पीड्+ल्युट्] 1 निचोड़ना, भींचना 3. क्षति पहुँचाना, चोट लगाना, नुकसान पहुँचाना।

परिपुटनम् [परि+पुट्+ल्युट्] 1 हटाकर अलग करना 2. वल्कल या खाल उतारना।

परिपूजनम्, परिपूजा [परि+पूज्+ल्युट्, प्रा०स०] सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना।

परिपूत (भू०क०कृ०) [परि+पू+क्त] 1 विशुद्ध किया गया, विशुद्ध —उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः —उत्तर० १।१३, शि० ७।८६ 2 भूसी तरह फटका हुआ, पिछोड़ा हुआ, भूसी से पृथक् किया हुआ।

परिपूरणम् [परि+पूर्+ल्युट्] 1 भरना —शि० ४।६१ 2. पूर्णता को पहुँचाना, पूरा करना।

परिपूर्ण (भू०क०कृ०) [परि+पूर्+क्त] 1 पूरी तरह भरा हुआ, इंदुः पूरा चाँद, समस्त, सारा, भली भांति भरा हुआ 2 स्वयंतुष्ट, संतृप्त।

परिपूर्तिः (स्त्री०) [परि+पूर्+क्तिन्] पूर्णता, पर्याप्तता।

परिपृच्छा [परि+प्रच्छ्+अङ्+टाप्] पूछताछ, प्रश्न।

परिपेलव (वि०) [प्रा०स०] अति कोमल, सूक्ष्म, अत्यन्त मृदु।

परिपोटः,—पोटकः [परि+पुट्+घञ्, परिपोट+कन्] (आयु० में) एक प्रकार का कर्ण रोग (जिसमें कान की खाल गलने लगती है)।

परिपोषणम् [परि+पुष्+ल्युट्] 1 खिलाना-पिलाना, भरण-पोषण 2 आगे बढ़ाना, उन्नति करना।

परिप्रश्नः [प्रा०स०] पूछताछ, प्रश्नयाचना, सवाल, —नरकतमो जाति परिप्रश्ने —मा० २।१।६३, ३।२।११० तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया —भग० ४।३४।

परिप्राप्तिः (स्त्री०) [प्रा०स०] अधिग्रहण, उपलब्धि।

परिप्रेष्यः [प्रा०स०] सेवक।

परिप्लव (वि०) [परि+प्लु+अच्] 1 बहता हुआ 2. थरथराता हुआ, कांपता हुआ, डोलता हुआ, हिलोरे लेता हुआ, कम्पायमान 3 अस्थिर, चञ्चल —शि० १४।६८,—वः 1 जलप्लावन 2 जल में डुबाना, गीला करना 3 किश्ती, नाव 4 उत्पीडन अत्याचार।

परिप्लुत (भू०क०कृ०) [परि+प्लु+क्त] 1 आप्लुत, जलप्लावित 2 घबड़ाया हुआ, व्याकुल जैसा कि शोक में 3 आर्द्रीकृत, क्लिन्न, तर —तम् उछल कूदना, छलांग।

परिप्लुष्ट (भू०क०कृ०) [परि+प्लुष्+क्त] जला हुआ झुलसा हुआ भसमसाया हुआ।

परिब(व)र्हः [परि+बृ(वृ)ह्+घञ्] अनुचर नौकर चाकर, टहलुए —इष प्रभुर्नाधिरवहुमा अमात्या सवर्ध्यताम —दश० १०८ 2 उपस्कर, घर के अन्दर का सामान —परिबर्हवत्ति वेश्मानि —रघु० १६।४५ "उपयुक्त सामान से सुसज्जित कमरे" 3 राजचिह्न 3 संपत्ति, धनदौलत।

परिब(व)र्हणम् [परि+बृ(वृ)ह्+ल्युट्] 1 अनुचर नौकर चाकर 2 साज-सामान, उपकरण 3 वृद्धि 4 पूजा।

परिबाधा [प्रा०स०] 1 कष्ट, पीड़ा, संताप 2. थकावट, श्रम, व्यथा

परिबृं(वृं)हणम् [परि+बृं(वृं)ह्+ल्युट्] 1 समृद्धि, कल्याण 2 परिशिष्ट, संपूरक।

परिबृं(वृं)हित (भू०क०कृ०) 1 बढ़ा हुआ, आवर्धित 2 फलाफूला, समृद्ध हुआ 3 संयुक्त, सम्पन्न —हाथी की चिंघाड़।

परिभंगः [प्रा०स०] छिन्नभिन्न होना, टूट कर टुकड़े-टुकड़े होना।

परिभर्त्सनम् [परि+भर्त्स्+ल्युट्] धमकाना, फटकना।

परिभ(भा)वः [परि+भू+अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 अपमान, क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भंग, तिरस्कार, निरादर, मानहानि —पराभवः परिभवो वैधात्यं सुरनिकर (भूपणाग)—शि० २।४४, रघु० १२।२३, वेणी० १।२५, महावी० १।४०, ३।१७ 2 लज्जा, अपमान। सम०—आस्पदम्,—पदम् 1. घृणा का पात्र, कि० ३।५१ 2. अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति,—विधि

प्रतिच्छायांश — प्रायो मूर्खः परिभवविधौ नाभिमानं तनोति—शृंगार १६ ।

परिभविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि + भू + इनि] 1 मानहर, तुच्छ, अनादर या घृणायुक्त व्यवहार करने वाला 2. अपमानग्रस्त, तिरस्कृत, पीड़ित ।

परिभावः [परि + भू + घञ्] दे० 'परिभव' ।

परिभाविन् (वि०) (स्त्री० नी [परि + भू + णिनि] 1. मानमर्दन करने वाला, घृणा करने वाला, तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करने वाला श० ४ 2 पराजित करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला 3 तुच्छ समझने वाला, उपेक्षा करने वाला — वैद्यस्त परिभाविन गदम् रघु० १९।५३, 'औषधोपचार की उपेक्षा करने वाला' ।

परिभाषणम् [परि + भाष् + ल्युट्] 1 वार्तालाप, प्रवचन, बातचीत करना, गपशप लगाना, गप्पें हांकना 2 निन्दाभिव्यक्ति, धिक्कारना, झिड़की, उपालम्भ 3 नियम, विधि ।

परिभाषा [परि + भाष् + अ + टाप्] 1 व्याख्यान, प्रवचन 2 निन्दा, झिड़की, कटु गाली 3 पारिभाषिक शब्दावली, पारिभाषिक पदावली, (किसी ग्रंथ में प्रयुक्त) तकनीकी शब्दावली — इति परिभाषा प्रकरणम् सिद्धा०, इको गुणवृद्धी इत्यादिका परिभाषा महा० 4 (अत:) कोई सामान्य नियम, विधि या परिभाषा जो सर्वत्र लग सके (अनियमनिवारको न्याय विशेषः) — परित्र प्रतिसंशाहानि सर्व विषय प्राप्नुवती सदा परिष्ठाम्, न खलु प्रतिहन्यते कदाचित् परिभाषेव गरीयसी यदाज्ञा — शि० १६।८० 5 किसी भी पुस्तक में प्रयुक्त संकेत या संक्षेपकों की सूची 6 (व्या० में) पाणिनि के अन्य सूत्रों में मिला हुआ व्याख्यात्मक सूत्र जो उन सूत्रों के प्रयोग की रीति बतलाता है ।

परिभुक्त (भू० क० कृ०) [परि + भुज् + क्त] 1 खाया हुआ, प्रयोग में लाया हुआ 2 उपभुक्त 3 अधिकृत ।

परिभुग्न (वि०) [परि + भुज् + क्त] विनत, वक्रीकृत, झुका हुआ ।

परिभूतिः (स्त्री०) [परि + भू + क्तिन्] तिरस्कार, अपमान, अनादर, अवमानना — मुद्रा० ४।११ ।

परिभूषणः [परि + भूष् + ल्युट्] किसी भूमि का समस्त राजस्व छोड़ कर जो संधि की गई हो ।

परिभोगः [परि + भुज् + घञ्] 1. उपभोग — रघु० ४।४५ 2 विशेष कर मैथुन,— रघु० ११।५२, १९।२१, २८।३० 3 दूसरे के सामान का अवैध प्रयोग ।

परिभ्रंशः [परि + भ्रंश् + घञ्] 1. बच निकलना 2. गिरना ।

परिभ्रमः [परि + भ्रम् + घञ्] 1 घूमना, इधर उधर टहलना 2. घुमा-फिरा कर बात कहना, वाग्जाल, वक्रोक्ति 3. भूल, भ्रम ।

परिभ्रमणम् [परि + भ्रम् + ल्युट्] 1. घूमना, इधर उधर टहलना, पर्यटन 2. चारों ओर घूमना, चक्कर काटना, परिधि ।

परिभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [परि + भ्रंश् + क्त] 1. गिरा हुआ, स्खलित 2 बच कर निकला हुआ 3 फेंका हुआ, अधःपतित 4 वञ्चित, शून्य (अपा० या करण० के साथ) 5 अवहेलना करने वाला ।

परिमंडल (वि०) [प्रा० ब० स०] गोलाकार, गोल, वर्तुलाकार, — लम् पिंड, गोलक 2 गेंद 3 वृत्त ।

परिमत्सर (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त मद, शि० १।७८ ।

परिमंद (वि०) [प्रा० स०] 1. अत्यन्त मंद, धुंधला, बिल्कुल फीका परिमंद सूर्यनयनो दिवसः — शि० ९।३ 2. अत्यन्त मंद 3 बहुत थका हुआ शि० ९।१२ 4 बहुत थोड़ा शि० ९।८७ ।

परिमरः [परि + मृ + अप्] विनाश — विनाश् [illegible] पवन इव और परिमर — महावी० ३.४१ ।

परिमर्दः, परिमर्दनम् [परि + मृद् + घञ्, ल्युट् वा] 1 रगड़ना, पीसना 2 कुचलना, पैरों के नीचे रौंदना 3 विनाश 4 कष्ट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5 आलिंगन, परिरम्भ ।

परिमर्षः [परि + मृष् + घञ्] 1 ईर्ष्या, अरुचि 2. क्रोध ।

परिमलः [परि + मल् + अच्] 1 सुगंध, सुवास, सौरभ, महक — परिमलो गीर्वाणचेतोहरः भामि० १।६३, ६६,७०,७१, मेघ० २५ 2 गंधयुक्त पदार्थों का पीसना 3 सुगंधद्रव्य 4. मैथुन — [illegible] शि० १०।१ 5. विद्वन्मंडली 6. कलंक, धब्बा ।

परिमलित (वि०) [परि + मल् + क्त] 1 सुवासित 2 कलुषित, सौन्दर्य भ्रष्ट ।

परि(री)मापम् [परि + मा + ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 मापना, (अंकित या नापने की) माप — नव [illegible] विवेकमूढ मुद्रा० १।१०, कु० २।८, मनु० ८।१३३ 2 तोल, मात्रा, मूल्य याज्ञ० २।६२, ११३१९ ।

परिमार्गः, परिमार्गणम् [परि + मार्ग् + घञ्, ल्युट् वा] 1 ढूंढना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना, पदचिह्न देखते हुए खोज निकालना 2. स्पर्श, सम्पर्क — शि० ७।७५ 3. साफ करना, पोंछना ।

परिमार्जनम् [परि + मृज् + णिच् + ल्युट्] 1. मांजना, साफ करना, झाड़-पोंछ करना 2 घी और शहद से बनी मिठाई ।

परिमित (भू० क० कृ०) [परि + मा + क्त] 1. मापा गया,

मितव्ययी 2. सीमित 3. मापा हुआ, नपातुला 4 विनियमित, समर्जित । सम०—आभरण (वि०) थोड़े आभूषण धारण करने वाला, मध्यमरूप से अलंकृत, -आयुस् (वि०) अल्पायु, थोड़ी उम्र जीने वाला,—आहार, भोजन (वि०) परहेजगार, मिताहारी, कमभोजन करने वाला, -कथ (वि०) थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी, नपे तुले शब्द बोलने वाला —मेघ० ८३ ।

परिमितिः (स्त्री०) [परि+मा+क्तिन्] 1. माप, परिमाण 2. सीमाबंधन ।

परिमिलनम् [परि+मिल्+ल्युट्] 1 स्पर्श, मस्क रत्न० २।१२ 2. सम्मिश्रण, मेल ।

परिमुखम् (अव्य०) [अव्य० स०] मुँह के सामने, (किसी के) इर्द गिर्द, चारों ओर ।

परिमुग्ध (वि०) [परि+मुह्+क्त] 1 भोला भाला, प्रिय, सरल, मनोहर 2. आकर्षक परन्तु मूर्ख ।

परिमृदित (भू० क० कृ०) [परि+मृद्+क्त] 1 पैरों तले रौंदा हुआ, कुचला हुआ, पददलित, दुर्व्यवहारग्रस्त —परिमृदितमृणालीम्लानमङ्गम्—मा० १।२२, उत्तर० १।२४ 2. आलिंगित, परिरंभण किया हुआ 3. मसला हुआ, पीसा हुआ ।

परिमृष्ट (भू० क० कृ०) [परि+मृज्+क्त] 1 धोया हुआ, मांजा हुआ, शुद्ध किया हुआ 2. मसला हुआ, स्पर्श किया हुआ, थपथपाया हुआ वेणी० ३ 3 आलिंगन 4 फैला हुआ, व्याप्त, भरा हुआ —कि० ६।२३ ।

परिमेय (वि०) [परि+मा+यत्] 1 थोड़े सीमित परिमेयपुरःसरौ—रघु० १।३७ 2 जो मापा जा सके, गिना जा सके 3 सान्त, जिसकी सीमा हो समापिका ।

परिमोक्षः [परि+मोक्ष्+घञ्] 1 हटाना, मुक्त करना—अथो विधातुं परिमोक्षलघुत्ववागात् यक्ष्ण्रोऽथकार नृपतिर्निदिते कुण्ठी —रघु० ९।६२, सीसों को हटाना अर्थात् सींग तोड़ डालना 2 मुक्त करना, स्वतंत्र करना, छुटकारा 3 खाली करना मलत्याग 4 बच निकलना 5. मोक्ष, निर्वाण ।

परिमोक्षणम् [परि+मोक्ष्+ल्युट्] 1 मुक्ति, छुटकारा 2. खोल देना ।

परिमोषः [परि+मुष्+घञ्] चुराना, लूटना, चोरी ।

परिमोषिन् (पुं०) [परि+मुष्+णिनि] चोर, लुटेरा ।

परिमोहनम् [प्रा० स०] 1. बहकाना, प्रलोभन देना, फुसलाना, वशमुग्ध करना 2 व्यामोहित करना, प्रेम में अन्धा करना ।

परिम्लान (भू० क० कृ०) [परि+म्लै+क्त] 1 मुर्झाया हुआ, मूर्छित, कुम्हलाया हुआ, कु० २।२ 2. श्रान्त, शिथिल 3 क्षीण, निस्तेज, हतप्रभ 4 मलिन, कलंकित ।

परिरक्षकः [परि+रक्ष्+ण्वुल्] रक्षा करनेवाला, अभिभावक ।

परिरक्षणम्, परिरक्षा [परि+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् च] 1 रक्षा, सतर्कता से देखभाल करना मनु० ९। ५४ ७।२ 2 ध्यान रखना, बचाये रखना, पालनपोषण न समः परिरक्षणक्षमः ते कि० १।४५ 3 छुटकारा, बचाव ।

परिरथ्या [प्रा० स०] गली, सड़क ।

परि(री)रम्भः, परिरम्भणम् [परि+रभ्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः, परि+रभ्+ल्युट्] आलिंगन करना अंक में भर लेना —स्तनपरिरम्भनिपीडनक्षममङ्गम् शि० ११।७४, १०।५२, उत्तर० १।२४ २७ कि पुरेव मम भव परिरम्भणं न ददासि—मीत० ३ ।

परिराटिन् (वि०) [परि+रट्+णिनि] जोर से चिल्लाने वाला चीखने वाला रट लगाने वाला ।

परिलघु (वि०) [प्रा० स०] 1 बहुत हल्का (आ०) (कपड़ा आदि) 2 बहुत हल्का या जल्दी पचने वाला —क्षीण क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य —मेघ० १३ 3 बहुत छोटा उत्तर० ४।२१ ।

परिलुप्त (भू० क० कृ०) [परि+लुप्+क्त] 1 अन्तर्बाधित, सबाध घटाया हुआ 2 नष्ट, लुप्त ।

परिलेखः [परि+लिख्+घञ्] 1 रूपरेखा आलेखन, चित्रण खाका 2 चित्र ।

परिलोपः [परि+लुप्+घञ्] 1 क्षति 2 उपेक्षा भूलचूक ।

परिवत्सरः [प्रा० स०] वर्ष एक समूचा वर्ष वर्ष का आवर्तन देखो सूत्य० र संगता प्रादता परिवत्सर —उत्तर० ३।३३ ।

परिवर्जनम् [परि+वृज्+ल्युट्] 1 छोड़ना त्यागना, तजना 2 छोड़ देना, तिलांजलि देना 3 वध हत्या ।

परि(री)वर्तः [परि+वृत्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 परिभ्रमण, (ग्रह आदि का) घूमना 2 कालचक्र, कालक्रम, कालगति युगशतपरिवर्तान् श० ७।३४ 3 युग का अन्त शि० १७।१० 4 आवृत्ति, पुनरावर्तन परिवर्तन, अदल बदल —दशा जीवलोकस्य परिवर्तः, उत्तर० ३, 'जीवन की परिवर्तित अवस्था' 'परिस्थितियों में अदल बदल' इसी प्रकार जीवलोकपरिवर्तमनुभवामि —मा० ७, इसी परिवर्त मृच्छ० १ 6 प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण 7 वर्ष 8 पुनर्जन्म, आवागमन 9 विनिमय अदला बदली - शि० ५।३९ 10 पुनरागमन, वापसी 11 आवास 12 किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद 13 कूर्मावतार, विष्णु का दूसरा अवतार ।

परिवर्तक (वि०) [परि + वृत् + णिच् + ण्वुल्] 1 घुमाने वाला, चक्कर देने वाला 2 बदला चुकाने वाला, वापिस करने वाला।

परिवर्तनम् [परि + वृत् + ल्युट्] 1 इधर उधर घूमना, इधर उधर मुड़ना (बिस्तर आदि पर) करवटें बदलना — कु० ५।१२, रघु० ९।१३ [illegible] 2 इधर उधर मंडराना, चक्कर काटना, चक्कर लगाना 3 [illegible] [illegible] विनाश [illegible] विनिमय 6 [illegible]

परिवर्तिका [illegible] [illegible] अवस्था [illegible]

परिवर्तित [illegible]

[illegible]

परिवर्धनम् [illegible]

परिवसथ [illegible]

परिवह [illegible] परिवह [illegible] वायु [illegible] [illegible]

परि [illegible] परिवादः [illegible] 2 [illegible] [illegible] संगीत का उपकरण।

परिवादक [परि + वद् + णिच् + ण्वुल्] 1 वादी, अभियोक्ता 2 [illegible]

परिवादिन् (वि०) [परि + वद् + णिनि] [illegible] बोलने वाला, निन्दा करने वाला, बुरा-भला कहने वाला 2 दोषारोपण करने वाला 3 कोलाहल करने वाला 4 निन्दित [illegible] — (पुं) दोषारोपण करने वाला वादी, अभियोक्ता — (स्त्री) सात तारों की वीणा — शि० ६।९, रघु० ८।३५।

परि (री) वापः [परि + वप् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 मुंडन या हजामत करना, मूंडना या बाल काटना 2 बोना 3 जलाशय, तालाब, पोखर 4 सामान (घर का) 5 नौकर चाकर, अनुचर वर्ग।

परिवापित (वि०) [परि + वप् + णिच् + क्त] मुंडा हुआ, जिसके बाल कटे हुए हों या जिसने हजामत करवा ली हो।

परि (री) वारः [परिव्रियते अनेन परि + वृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 नौकर चाकर, अनुचर वर्ग [illegible] [illegible] परिवार [illegible] [illegible] 2 चक्कर [illegible]

परिवारणम् [परि + वृ + णिच् + ल्युट्] 1 ढक्कन [illegible] 2 नौकर चाकर, अनुचर [illegible] दूर हटाना।

परिवारित [illegible] [परि + वृ + णिच् + क्त] 1 [illegible] घेरा हुआ 2 [illegible] [illegible]

परिवासः [illegible] निवासस्थान, ठहरना [illegible]

परि [illegible] पक्षे उपसर्गस्य [illegible]

परिवासित [illegible] हुआ [illegible]

[illegible] परिविष्ट, परिवेष्टित [illegible]

[illegible]

परिविद्ध [illegible]

परिविन्दकः, परिविन्दत् [illegible]

परिविहार [illegible]

परिविह्वल [illegible] हुआ।

परिवृढ [illegible]

परिवृत [illegible] हुआ [illegible] हुआ 4 [illegible]

परिवृत्त (भू०क०कृ०) [परि+वृत्+क्त] 1 घूमा हुआ मोड़ा हुआ अर्धमुखी विक्रम० १।१७ 2. प्रत्यावर्तित पीछे मुड़ा हुआ 3. अदला-बदली किया हुआ विनिमय किया हुआ 4. समाप्त किया हुआ अन्त किया हुआ, —त्तम् आलिंगन।

परिवृत्तिः (स्त्री०) [परि+वृत्+क्तिन्] 1 आवर्तन कि० १०।९१ 2. वापसी लौटना 3 विनिमय अदला-बदली 4 अन्त, समाप्ति 5 घेरा 6 किसी स्थान पर टिकना, बसना 7 (अलं० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी समान या असमान वस्तु से विनिमय हो परिवृत्तिर्विनिमयो योऽर्थानां स्यात्समासमैः—काव्य० १०—उदा०—दत्त्वा कटाक्षमेणाक्षी जग्राह हृदयं मम, मया तु हृदयं दत्त्वा गृहीतो मदन ज्वरः। सा० द० ७३४ 8 अर्थ को बिना बदले एक शब्द के स्थान में दूसरा शब्द रखना जैसा कि जलध्वजगद्धर्पिताहसम्मान्य काव्य० १० उदा० वृषध्वज में ध्वज के स्थान में लाञ्छन या वाहन लगाया जा सकता है।

परिवृद्धि (स्त्री०) [प्रा०स०] संवर्धन बढ़ती उन्नति।

परिवेत्तृ (पुं०) **परिवेदक** [प्रा०स०] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो रघु० १२।१६, ज्येष्ठे अनिर्विष्टे कनीयान् निर्विशन् परिवेत्ता भवति, परिविन्नो ज्येष्ठ परिवेदनीया कन्या परिदायी दाता परिकर्ता याजक सर्वे ते पतिता इति।

परिवेदनम् [परि+विद्+ल्युट्] 1 बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह 2 विवाह 3 पूरा या सही ज्ञान 4 उपलब्धि अधिग्रहण 5 अध्यात्म ११।६० 6 सर्वव्याप्ति विश्वव्यापी या विश्व सत्ता, —ना 1 समझदारी बुद्धिमानी 2 बुद्धिमत्ता दूरदर्शिता।

परिवेदनीया, **परिवेदिनी** [परि+विद्+अनीयर्+टाप् परि+विद्+णिनि+ङीप्] उस छोटे भाई की पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परि (री) वेषः (प) [परि+विष् (प्)+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 भोजन के समय सेवा करना भोजन बांटना, भोजन परोसना 2 वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल —रघु० ५।७४, ६।१३, शि० ९।५२ १३।१ 3 (विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमंडल जलमते स्म तमनन्तरं रविर्बद्धभीम परिवेषमंडल रघु० ११।५९ 4. वृत्त की परिधि 5 सूर्यबिंब चन्द्रबिंब 6. कोई वस्तु जो घरती है या रक्षा करती है।

परिवेषकः [परि+विष्+ण्वुल्] भोजन परोसने वाला।

परिवेषणम् [परि+विष्+ल्युट्] 1 भोजन परोसना (सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना भोजन वितरण करना 2 लपेटना, घेरना 3 सूर्यमंडल, चन्द्रमंडल 4 परिधि।

परिवेष्टनम् [परि+वेष्ट्+ल्युट्] 1 घेरना, लपेटना 2 परिधि 3 ढक्कन आवरण।

परिवेष्टृ (पुं०) [परि+वेष्ट्+तृच्] भोजन के समय सेवा करने वाला भोजन परोसने वाला मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ऐत०।

परिव्ययः [प्रा० स०] 1 मसाला मूल्य 2 मिर्चमसाला।

परिव्याधः [परि+व्यध्+ण] नरकुल या सरकंडे की एक जाति।

परिव्रज्या [परि+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1 भ्रमणशील जगह जगह घूमना फिरना 2 संसार को छोड़कर साधु महात्माओं का जीवन बिताना 3 सांसारिक मोहमाया का त्याग और तप में अनुरक्त धार्मिक साधना।

परिव्राज् (पुं०) **परिव्राजः, जकः** [परित्यज्य सर्वान् विषयान् व्रजति परि+व्रज्+क्विप्, घञ्, ण्वुल् वा] भ्रमणशील साधु भ्रमणशील संन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो।

परिशयथः (वि०) [स्था० तो] [प्रा० स०] सदा एक ही स्थान में बना रहने वाला।

परिशिष्ट (वि०) [परि+शिष्+क्त] छोड़ा हुआ बचा हुआ, —ष्टम् संपूरक अतिरिक्त जैसा कि गृह्य परिशिष्ट।

परिशीलनम् [परि+शील्+ल्युट्] 1 स्पर्श सम्पर्क (आ०)—लीलालवकनकावलीमिव मलयजसमीरे गीत० १ इसी प्रकार मदनमलयानिलशीलन सिद्धान्त ११ 2 अनवरत सम्पर्क आत्मीयता मेल जोल व्यवहार 3 अध्ययन (किसी वस्तु में) आसक्ति स्थिर या निश्चित चाव काव्यार्थ० सा० द०।

परिशुद्धि (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 पूर्ण शुद्धि अभि० उत्तर० ४ 2 दोष मुक्ति रिहाई।

परिशुष्क (भू० क० कृ०) [परि+शुष्+क्त] 1 पूरी तरह सूखा हुआ सुखाया हुआ तपाया हुआ, तृषा महत्या परिशुष्कतालवः कुमा० ११।१ 2 मुर्झाया हुआ कुम्हलाया हुआ, (गालों की भांति) पिचका हुआ —ष्कम् एक प्रकार का तला हुआ मांस।

परिशून्य (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल खाली रघु० ८।६६ 2 सर्वथा स्वतंत्र, निर्मुक्त शून्य १९।६।

परिशृत [परि+श्रु+क्त] मदिरा आदि।

परि (री) शेष [परि+शिष्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 बचा हुआ बाकी 2 निष्कर्ष 3 समाप्ति उपसंहार पूर्ति।

परिशोध **परिशोधनम्** [परि+शुध्+घञ्, ल्युट्] 1 शुद्ध करना मांजना 2 छुटकारा अदायगी (ऋण आदि का) भुगतान।

परिशोषः [परि+शुष्+घञ्] बिल्कुल सूख जाना, पूरी तरह सूख जाना।

परिश्रमः [परि+श्रम्+घञ्] 1 थकान, थक कर चूर २ होना कष्ट, पीड़ा आत्मा परिश्रमस्य पदमुपनीत: श० १, कु० ११५८, ११११० 2 चेष्टा, उद्योग, गहन अध्ययन लगातार व्यस्त रहना अर्थान्तरन्यासोऽयं तस्मात् परिश्रमो [illegible] –मुद्रा० १।

परिश्रय [परि+श्रि+अच्] 1 सम्मिलन सभा 2 शरण आश्रय।

परिश्रान्ति (स्त्री०) [परि+श्रम्+क्तिन्] 1 थकान, थक कर चूर चूर होना 2 उद्योग चेष्टा।

परिश्लेष [परि+श्लिष्+घञ्] आलिङ्गन।

परिषद् (स्त्री०) [[illegible] परि+सद् [illegible]] 1 सभा सम्मिलन [illegible] अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम् श० १ 2 धर्मसभा [illegible]।

परिषद, परिषद्य [[illegible] परि+सद्+अच् [illegible]] किसी सभा का सदस्य या मेंबर।

परिषेक, परिषेचनम् [परि+सिच्+घञ्, ल्युट्] पानी छिड़कना या उड़ेलना, [illegible]।

परिष्कण्ण (स्त्र) (वि०) [परि+स्कन्द्+क्त [illegible]] दूसरे से पालित [illegible] पालित किसी [illegible] [illegible]।

परिष्कन्द (स्कन्द) द (वि०) [परि+स्कन्द्+घञ्] दूसरे के द्वारा पाला गया द 1 पालित पुत्र 2 भृत्य सेवक।

परिष्कार [परि+कृ+घञ् सुट् पत्वम्] सजावट, अलङ्कृत करना।

परिष्कार [परि+कृ+घञ्, सुट् पत्वम्] 1 सजावट आभूषण अलंकरण 2 पाकक्रिया खाना पकाना 3 दीक्षा आरंभिक संस्कारों द्वारा पवित्रीकरण 4 (घर का) सामान (परिस्कार भी इस अर्थ में)।

परिष्कृत (भू० क० कृ०) [परि+कृ+क्त सुट् षत्वम्] 1 अलङ्कृत सजाया हुआ –कि० ७।४० 2 पकाया गया प्रसाधित किया गया 3 आरंभिक संस्कारों द्वारा अभिमन्त्रित (दे० परि पूर्वक 'कृ') (परिस्कृत भी इस अर्थ में)।

परिष्क्रिया [परि+कृ+श+टाप्, सुट्] अलंकरण सजावट, शृंगार।

परिष्टोम (स्तोम) [परि+स्तु+मन् षत्व वा] 1 हाथी की रंगीन झूल 2 आच्छादन, आवरण।

परिष्वन्द (स्प) [परि+स्पन्द्+घञ् षत्व वा] 1 [illegible] 2 (स्त्री के) केश शृंगार 3 शृंगार, सजावट 4 धड़कन थरथराहट धकधक [illegible] 5 साजसामग्री, संवर्धन 6 कुचलना।

परिष्वक्त (भू० क० कृ०) [परि+ष्वञ्ज्+क्त] परिरब्ध आलिंगित या आलिंगनबद्ध।

परिष्वङ्गः [परि+ष्वञ्ज्+घञ्] 1 आलिंगन कि० १८।१९ हि० ३।६७ 2 स्पर्श, सम्पर्क मेल-मिलाप मनु० ३।१७।

परिसंवत्सर (वि०) [ऊर्ध्वं संवत्सरात् अव्य० स०] पूरा एक वर्ष का, –र: पूरा वर्ष, परिसंवत्सरात् पूरे एक वर्ष से ऊपर मनु० ३।११९।

परिसंख्या [परि+सम्+ख्या+अङ्+टाप्] 1 गिनती गणना 2 योगफल, जोड़, पूर्ण संख्या – [illegible] विद्यार्थिसमकस्य [illegible] रघु० ५।२१ 3 (मीमांसा० में) अपाकरण विशेष विव., स्पष्ट रूप से बताई गई ऐसी मात्रा जिससे कि विहित वस्तुओं से भिन्न सभी वस्तुओं का निषेध हो जाय परिसंख्या–[illegible] (जो पहले बार विधान किया जाय) तथा नियम (विकल्प में से किसी विशेष विकल्प का चुनाव) का विपरीतार्थक शब्द विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियम: पाक्षिके सति, तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते। उदा० पंच पंचनखा भक्ष्या मीमांसकों द्वारा बहुधा उद्धृत) मनु० ३।४५ पर कुल्लू०–अत्र नियमविधिर्न तु परिसंख्या 4 (अलं० में) विशेष उल्लेख या एकान्तिक विशेष विवरण, अर्थात् जहाँ पूछ करके या बिना किसी पूछताछ के किसी बात की पुष्टि की जाय जिससे कि किसी अन्य वैसी ही वस्तु का अभिहित या अध्याहृत खंडन हो (श्लेष पर आधारित होने की स्थिति में यह अलंकार विशेष प्रभावोत्पादक होता है) यस्मिंश्च महीं शासति चित्रकर्मसु वर्णसंकरा: चापेषु गुणच्छेदा: आदि या–यत्र नूपुरेषु मुखरता विवाहेषु करग्रहणं तुरंगेषु कशाभिघात: क०, अन्य उदाहरणों के लिए देखो–सा० द० ७३५।

परिसंख्यात (भू० क० कृ०) 1 गिना हुआ, हिसाब लगाया हुआ 2. एकान्तिकरूप से विशिष्ट या निर्दिष्ट।

परिसंख्यानम् [परि+संख्या+ल्युट्] 1 गिनती जोड़ पूर्णसंख्या 2 एकान्तिक विशेष निर्देश 3 सही अनुमान, ठीक अंदाजा।

परिसंचर: [परि+सम्+चर्+अप्] विश्वप्रलय का समय।

परिसमापनम्, परिसमाप्ति (स्त्री०) [परि+सम्+आप्+ल्युट्, क्तिन्] समाप्त करना पूरा करना।

परिसमूहनम् [परि+सम्+ऊह्+ल्युट्] 1 एकत्र करना, ढेर लगाना 2 (अग्नें समन्तात् मार्जनम्) यज्ञाग्नि के चारों ओर (विशेष रीति से) जल छिड़कना।

परिसर: [परि+सृ+अ] 1 तट, किनारा सामीप्य,

आसपास, पड़ोस, पर्यावरण (किसी नदी, पहाड़ या नगर का)—गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि —उत्तर० ३।८, परिसरविषयेषु लीढमुक्ता: —कि० ५।३८, 2. स्थिति, स्थान 3. चौड़ाई, अर्ज 4 मृत्यु 5 नियम, विधि ।

परिसरणम् [परि+सृ+ल्युट्] इधर उधर दौड़ना ।

परिसर्पः [परि+सृप्+घञ्] 1 इधर-उधर घूमना, 2 खोज में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 घेरना, मण्डलाकार करना ।

परिसर्पणम् [परि+सृप्+ल्युट्] 1 चलना, रेंगना 2 इधर-उधर दौड़ना, उड़ना, भागना —पतगपते परिसर्पणे च तुल्य: —मृच्छ० ३।२१ ।

परि (री) सर्या, परि (री) सार: [परि+सृ+श+यक्+टाप्, घञ् वा पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] इधर उधर घूमना फिरना प्रदक्षिणा, फेरी ।

परिस्तरणम् [परि+स्तृ+ल्युट्] 1 बिछाना, फैलाना इधर उधर बखेरना 2 आवरण, ढक्कन ।

परिस्फुट (वि०) [प्रा० स०] 1. सर्वथा स्पष्ट, व्यक्त स्पष्टगोचर 2 पूर्णविकसित, फूला हुआ, बढ़ा हुआ ।

परिस्फुरणम् [परि+स्फुर्+ल्युट्] 1 कांपती, थरथरी 2. कली का खिलना ।

परिस्यंद: [परि+स्यन्द्+घञ्] 1. रसना, बूंद बूंद टपकना, चूना 2 बहाव, धारा 3 अनुचरवर्ग दे० 'परिस्पंद' ।

परिस्रव: [परि+स्रु+अप्] 1 बहना, बहाव 2 नीचे सरकना 3 नदी, निर्झर ।

परिस्रावः [परि+स्रु+णिच्+अच्] निकास, निस्राव ।

परिस्रुत् (स्त्री०) [परि+स्रु+क्विप्+तुक्] 1 एक प्रकार की नशीली शराब 2 रिसना, टपकना, बहना ।

परिस्रुता [परिस्रुत+टाप्] 1 एक प्रकार की मादक शराब 2. रिसना, टपकना, बहना ।

परिहत (वि०) [परि+हन्+क्त] ढीला किया हुआ ।

परिहरणम् [परि+हृ+ल्युट्] 1 छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना 2. टालना, कतराना 3 निराकरण करना 4. पकड़ना, ले जाना ।

परि (री) हार: [परि+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना, त्याग देना 2. हटाना, दूर करना जैसा कि 'विरोधपरिहार' में 4 निराकरण करना, निवारण करना 5. उल्लेख न करना, भूल, चूक 6 आरक्षण, गुप्त रखना 7 गांव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड —धनुःशतं परीहारो ग्रामस्य स्यात्समन्तत:—मनु० ८।२३७ 8. विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, शुल्क से माफी या छुटकारा मनु० ७।२०१ 9. तिरस्कार, अनादर 10. आपत्ति ।

परिहाणि: (नि) (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 घटी, कमी, नुकसान 2. मुर्झाना, क्षीण होना —रघु० १९।५० ।

परिहार्य (वि०) [परि+हृ+ण्यत्] कतराये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य जिससे बचा जाय, जिसे ले जाया जाय या दूर किया जा —र्य: कंकण ।

परि (री) हास: [परि+हस्+घञ्] 1 मजाक, मखौल, हँसी, ठट्ठा —स्मराप्रकाशोऽपि न खलु परिहासस्य विषय: —मा० ३।१४ परिहासपूर्वम् —मखौल में, हँसी दिल्लगी में —रघु० ६।८२ परिहासविजल्पितम् —श० २।१८, मखौल में कहा हुआ—परीहासाविचित्रा सततमभवन् येन भवत: वेणी० ३।१६, कु० ७।१९, रघु० ९।८ शि० १०।१२ 2 हँसी उड़ाना उपहास करना । सम० —वेदिन् (पुं०) विदूषक हास्यकृत रसिक व्यक्ति ।

परिहृत (भू० क० कृ०) [परि+हृ+क्त] 1 कतराया हुआ टाला हुआ 2 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 3 निराकृत बाधित (आरोप या आपत्ति आदि) 4 लिया हुआ पकड़ा हुआ दे० परिपूर्वक हृ ।

परीक्षक: [परि+ईक्ष्+ण्वुल्] परीक्षा लेने वाला, जाँच करने वाला, न्याय करने वाला ।

परीक्षणम् [परि+ईक्ष्+ल्युट्] जाँच पड़ताल करना, परखना, इम्तहान लेना —मनु० १।११७ ।

परीक्षा [परि+ईक्ष्+अ+टाप्] 1. इम्तहान, जाँच, परख —तमसं विशुद्धानेऽपि प्राज्ञे रत्नपरीक्षा —मालवि० १, मनु० ९।१९, 2 (विधि में) जाँच-पड़ताल के विविध प्रकार ।

परीक्षित् (पुं०) [परि+क्षि+क्विप्, तुक्, उपसर्गस्य दीर्घ:] अर्जुन का पौत्र अभिमन्यु का पुत्र युधिष्ठिर के पश्चात् यही हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठा, सांप द्वारा काटे जाने पर इसकी मृत्यु हुई। कहते हैं, इसी के राज्य से कलियुग का आरंभ हुआ ।

परीक्षित (भू० क० कृ०) [परि+ईक्ष्+क्त] परखा किया, जाँच पड़ताल की गई—परीक्षितं काव्यसुवर्णमेतत्—विक्रम० १।२४ ।

परीत (भू० क० कृ०) [परि+इ+क्त] 1 घिरा हुआ, पर्यावृत 2 समाप्त हुआ, बीता हुआ 3. विगत, व्यतीत 4 पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भरा हुआ —कोपपरीतमानसम् कि० ३।३५, मुद्रा० ३।३० ।

परीताप, परीपाक, परीवार, परीवाह, परीहास आदि —दे० 'परिताप' आदि ।

परीप्सा [परि+आप्+सन्+अ+टाप्] 1 प्राप्त करने की इच्छा 2 जल्दी, शीघ्रता ।

परीरम् [पृ+ईरन्] एक फल ।

परीरणम् [परि+ईर्+ल्युट्] 1 कछुवा 2. छड़ी 3 पोशाक, वेशभूषा ।

परीष्टिः (स्त्री०) [परि + इष् + क्तिन्] 1 अनुसंधान, पूछताछ, गवेषणा 2 सेवा, परिचर्या 3 आदर, पूजा, श्रद्धांजलि।

परुः [पृ + उ] 1 जोड़ गांठ 2 अवयव, अंग 3 समुद्र 4 स्वर्ग, बैकुण्ठ, 5 पहाड़।

परुत् (अव्य०) [पूर्वस्मिन् वत्सरे इति पूर्वस्य परभाव उत् च] गत वर्ष, पिछला साल।

परुद्वार (पुं० स०) घोड़ा।

परुष (वि०) [पृ + उषन्] 1 कठोर, कड़ा, सख्त, कड़ा (विप० मृदु या श्लक्ष्ण) परुष चर्म, परुषा माला आदि 2 (शब्द आदि) कटु, अपमानित, निष्ठुर, निर्दय, क्रूर, निर्मम (वाक्) प्रायेण सामान्यगुणेषु रागः रघु० ६। ८, रघु० १।०३, अरुन्तुद — शि० २। ३७ 3 (हवा) कर्कश, तेज, निष्ठुर, येन शुष्कायतनेन सह — रघु० ११।६४, मेघ० 4 भयंकर, तगड़ा, भयानक — (राक्षस) भीषण कुटिल सुदुःसहानामस्वनयस्त्रचक — मेघ० ६१ 5 तीक्ष्ण, प्रबल, प्रचण्ड, उग्र (वायु आदि) देवक परुषपवन... ऋतु० १।२२, २।२८ 6 ठोस, गाढ़ा 7 मलिन, मैला, धब्बेदार या धूसरवर्ण वाला, अप्रकाशमान। सम० —इतर (वि०) जो कठोर न हो, कोमल, मृदु — रघु० ५।६८, —उक्तिः —वचन्, —वाक् अपवादित।

परुस् (नपुं०) [पृ + उस्] 1 ग्रन्थि, संधि, जोड़, गांठ 2 अवयव, शरीर का अंग।

परेत (भू० क० कृ०) [परा + इ + क्त] दिवंगत, मृत, मृत्युप्राप्त, मृत —तः प्रेत, भूत। सम० —भर्तृ, —राज् (पुं०) मृत्यु का देवता, यमराज शि० १।५७, —भूमिः (स्त्री०), —वासः कब्रिस्तान कु० ५।८।

परेद्यवि, परेद्युः (अव्य०) [परस्मिन् अहनि, नि० साधु०] दूसरे दिन, और दिन।

परेष्टुः (स्त्री०), **परेष्टुका** [पर + इष् + तु, परेष्टु + कन् + टाप्] वह गाय जो कई बार ब्या चुकी हो।

परोक्ष (वि०) [अक्ष्णः परम् — ब० स०] 1 दृष्टिपरास से परे, जो बाहर, जो दिखाई न दे, अगोचर 2 अनुपस्थित—स्वाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः — रघु० ७।१३ 3. गुप्त, अज्ञात, अपरिचित परोक्षमन्मथो जनः — श० २।१८, 'काम के प्रभाव से अपरिचित' — हि० प्र० १०, —क्षः संन्यासी, —क्षम् 1. अनुपस्थिति, अगोचरता 2. (व्या० में) भूतकाल (जो वक्ता ने न देखा हो) परोक्षे लिट् — पा० ३।२।११५, 'परोक्ष' के कर्म०, तथा अधि० के ए० व० — (अर्थात् परोक्षम्, परोक्षे) अव्ययों में 'दृष्टि से परे' 'पीठ पीछे' अर्थ को प्रकट करने के लिए क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं (संब० के बिना, या साथ) —परोक्षे सकोकार्य वक्तव्ये न प्रमादतः — मालवि० ?, परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् — चाण० १८, मोक्षाद्वेदस्य साम परोक्षमपि केवलम् मनु० २।११९। सम० —भोगः स्वामी की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपभोग, —वृत्ति (वि०) आंखों से दूर रहने वाला (त्ति — स्त्री०) अदृष्ट और अज्ञात जीवन।

परोष्णिः, परोष्णी [पर + उष् + क्तिन्, परः सन् उष्णो यस्याः ब० स०] तेलचट्टा (झींगुर के आकार वाले रंग का एक कीड़ा)।

पर्जन्य [पृष् + अन्य, नि० षकारस्य जकार] 1 बरसने वाला मेघ, गरजने वाला बादल, बादल या मेघ प्रववृषे तदा पर्जन्यः सुरभीरभिनर्दयन् — रघु० १७।१७ पशुमेघः प्रकाशः पर्जन्या — मै० स०, मृच्छ० १०।६० 2 वृष्टि अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः भग० ३।१४ 3 वृष्टि का देवता अर्थात् इन्द्र।

पर्ण् (चुरा० उभ० —पर्णयति—ते) हरा भरा करना, सब्ज हरियाली करना।

पर्णम् [पर्ण् + अच्] 1. पंख, बाजू जैसा कि 'सुपर्ण' में 2 बाण का पंख 3 पत्ता 4 पान का पत्ता —र्णः ढाक का पेड़। सम० —अशनम् पत्ते खाकर जीना, (—नः) बादल, —असिः काली तुलसी, —आहार (वि०) पत्ते खाकर निर्वाह करने वाला, —उटजम् पत्तों की कुटिया, साधुओं की झोंपड़ी, आश्रम, —कार पनवाड़ी, तम्बोली, पान बेचने वाला, —कुटिका, —कुटी पत्तों की बनी कुटिया, —कृच्छ्रः प्रायश्चित्त संबंधी तपस्या जिसमें प्रायश्चित्तकर्ता को पांच दिन तक पत्ते और कुशाओं का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है, दे० याज्ञ० ३।३१७, इसके ऊपर मिताक्षरा भी, —खण्डः फूलों के बिना वृक्ष (—ण्डम्) पत्तों का ढेर, —चीरपटः शिव का विशेषण, —चोरकः एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, —नरः पत्तों से बनाया गया पुतला जो खोये हुए शव की जगह रखकर जलाया जाता है, —भेदिनी प्रियंगुलता, —भोजनः बकरी, —मृग् (पुं०) जाड़े की मौसम, शिशिर ऋतु, —मृगः वृक्षों की शाखाओं पर रहने वाला जंगली जानवर, —रुह् (पुं०) वसंत ऋतु, —लता पान की बेल, —शयः पान का कीड़ा, —शाला पत्तों की बेल, अथवा पत्तों की बनी कुटिया, साधुओं का—आवास परिक्रम्य पर्णशालामथासाद्य — रघु० १।९५, १२।४०।

पर्णल (वि०) [पर्ण + लच्] पत्तों से भरा हुआ, पत्तों वाला — भट्टि० ९।१४३।

पर्णसिः [पृ + असि, नुट्] 1 पानी के मध्य बना भवन, ग्रीष्म भवन 2. कमल 3. शाक सब्जी 4. सजावट, प्रसाधन, श्रृंगार।

पर्णिन् (पुं०) [पर्ण + इनि] वृक्ष।

पर्णिल (वि॰) [पर्ण + इलच्] दे॰ 'पर्णल'।
पर्द् (भ्वा॰ आ॰-पर्दते) पाद मारना, अपानवायु छोड़ना।
पर्दः [पर्द्+अच्] 1. केश समूह, घना बाल 2 पाद, अपान वायु।
पर्पः [पृ+प] 1 नया उगा घास 2 पंगु-पीठ, पंगुगाड़ी —येन पीठेन पंगवश्चरन्ति ६ पर्प — पा॰ ४।४।१० पर सिद्धा॰ 3 घर।
पर्परीकः [पृ+ईकन्] 1 सूर्य 2 आग 3 जलाशय, तालाब।
पर्यक् (अव्य॰) [परि+अञ्च् + क्विप्] चारों ओर, सब दिशाओं में।
पर्यङ्कः [परिगता अङ्कम्-अत्या॰ स॰] 1 खाट, पलंग, सोफा 2. पालकी 3 समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अंगस्थिति - योगासन 4 वीरासन —वसिष्ठ द्वारा दी गई परिभाषा—एकं पादमथैकस्मिन् विन्यस्योरौ तु संस्थितम्, इतरस्मिंस्तथैवोरुं वीरासनमुदाहृतम्। पर्यङ्कग्रन्थिबन्ध आदि—मृच्छ॰ १।१। सम॰—बंधः जांघ के सहारे बैठने की स्थिति जिसे 'पर्यंक' कहते हैं, पर्यंकबन्धस्थिरपूर्वकायम् —कु॰ ३।४५,५९, —भोगिन् (पुं॰) एक प्रकार का सांप।
पर्यटनम्, पर्यटितम् [परि+अट् +ल्युट्, क्त वा] घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, यात्रा करना।
पर्यनुयोगः [परि+अनु+युज्+घञ्] किसी उक्ति का खंडन करने के उद्देश्य से पूछताछ (दूषणार्थं जिज्ञासा —हला॰) एतेनास्मादपि पर्यनुयोगस्यानवकाशः—शास॰।
पर्यन्त (वि॰) [प्रा॰ स॰] से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ —समुद्रपर्यन्ता पृथिवी—समुद्र की सीमा से आबद्ध पृथ्वी, —तः 1 आवर्त, परिधि 2. गोट, किनारा, मगजी, चरमसीमा, हद —तटवनपर्यन्तचारिणी—श॰ ४, पर्यन्तकाननम् —रघु॰ ११।३८ ऋतु॰ ३।१ 3 पार्श्व, कक्ष —रत्न॰ २।३, रघु॰ १८।४३ 4 अन्त, उपसंहार, समाप्ति—पंच॰ १।१२५। सम॰ देशः —भूः, —भूमिः मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश, —पर्वतः संलग्न पहाड़।
पर्यन्तिका [प्रा॰ स॰] अच्छे गुणों की हानि, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन।
पर्ययः [परि+इ+अच्] क्रान्ति, पतन, निःशेष—काल-पर्ययात्—याज्ञ॰ ३।२१७, मनु॰ १।३०, ११।२० 2 (समय की) बर्बादी, या खोना 3 परिवर्तन, अदल-बदल 4. उलट-पुलट, अव्यवस्था, अनियमितता 5. शास्त्रीय मर्यादा का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना 6. विरोध।
पर्ययणम् [परि+अय्+ल्युट्] 1 चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा 2. घोड़े की जीन।
पर्यवदात (वि॰) [प्रा॰ स॰] पूरी तरह शुद्ध और पवित्र।
पर्यवरोधः [प्रा॰ स॰] बाधा, विघ्न।
पर्यवसानम् [प्रा॰ स॰] 1 अन्त, समाप्ति, उपसंहार 2. निर्धारण, निश्चयन।
पर्यवसित (भू॰ क॰ कृ॰) [परि+अव+सो+क्त] 1 समाप्त किया गया, अन्त तक किया हुआ, पूरा किया हुआ 2 नष्ट, लुप्त 3 निर्धारित।
पर्यवस्था, पर्यवस्थानम् [परि+अव+स्था+अङ्+टाप्, ल्युट् वा] 1 विरोध, मुकाबला, बाधा 2 वैपरीत्य।
पर्यश्रु (वि॰) [प्रा॰ ब॰ स॰] आंसुओं से भरा हुआ, अश्रुपरिप्लावित, आंसू बहाने वाला, अश्रुयुक्त पर्यश्रुणी मङ्गलभङ्गभीरुर्न लोचने मीलयितुं विषेहे - कि॰ ३।३६, पर्यश्रुरस्वजत मूर्धनि चोपजघ्रौ - रघु॰ १३।७०।
पर्यसनम् [परि+अस्+ल्युट्] 1 फेंकना इधर उधर डालना 2 भेजना धकेलना 3 भेज देना 4. स्थगित करना।
पर्यस्त (भू॰ क॰ कृ॰) [परि+अस्+क्त] 1 इधर उधर फेंका गया, बखेरा गया पर्यस्तो धनजलयोरुपरि शिलीमुखासार वेणी॰ ४, शि॰ १०।११ 2 घेरा हुआ, मण्डलाकृत 3. उलटाया गया, उथला हुआ 4 पदच्युत, एक ओर रक्खा हुआ 5 प्रहार किया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ, मारा हुआ।
पर्यस्तिः (स्त्री॰) पर्यस्तिका [परि+अस्+क्तिन्, पर्यस्ति+कन्+टाप्] वीरासन पलंग।
पर्याकुल (वि॰) [प्रा॰ स॰] 1. मैला, गंदा (पानी आदि) 2 अव्यवस्थित, उद्विग्न, भयभीत—श॰ १ 3. क्रमहीन, अव्यवस्थित, उथल-पुथल—श॰ १।३० 4. उत्तेजित, क्षुब्ध, घबराया हुआ—पर्याकुलोऽस्मि श॰ ६, ऋतु॰ ६।२२ 5. भरा हुआ, पूरा—स्नेह°, कोप° आदि।
पर्याणम् [परि+या+ल्युट्, पृषो॰] जीन, काठी -बल-पर्याणम्—का॰ १२६, जीन कसा हुआ।
पर्याप्त (भू॰ क॰ कृ॰) [परि+आप्+क्त] 1 प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध 2. समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ 3. भरा हुआ, पूर्ण, समस्त, सारा, समग्र पर्याप्तचन्द्रेव शरत्त्रियामा —कु॰ ७।२६, रघु॰ ६।४४ 4 योग्य, सक्षम, यथेष्ट रघु॰ १०।५५ 5. काफी, यथोचित—रघु॰ १५।१८, १७।१७ मनु॰ ११।७, —प्तम् (अव्य॰) 1. स्वेच्छा-पूर्वक, तत्परता के साथ 2. सन्तोष, काफी, यथेष्ट रूप से पर्याप्तमाचामति उत्तर॰ ४।१, यथेच्छ पी लेता है 3 पूरी तरह से, योग्यतापूर्वक, सक्षमता के साथ।

पर्याप्तिः (स्त्री०) [परि+आप्+क्तिन्] 1 प्राप्त करना, अभिग्रहण 2. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 3. काफ़ी, पूर्णता, यथेष्टता 4. तृप्ति, संतोष 5 निवारण, प्रहार को रोकना 6 उपयुक्तता, सक्षमता।

पर्याय [परि+इ+घञ्] 1 चक्कर लगाना क्रान्ति 2 (समय की) समाप्ति, व्यतीत होना बीतना 3 नियमित परावर्तन, या आवृत्ति 4 बारी, उत्तराधिकार, उचित या नियमित क्रम -पर्याय सेवामुत्सृज्य —कु० २।३६, मनु० ४।८७, मुद्रा० ३।२७ 5. प्रणाली, व्यवस्था 6. तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रणाली 7 समानार्थक पर्यायवाची पर्यायाः निकषस्याथ निकषग्रावा शाणः—अमर०, पर्वतस्य पर्यायाः इमे—आदि 8 बनाना, निर्माण, तैयारी रचना 9 धर्म गुण 10 (अलं० में) एक अलंकार दे० काव्य० १० चन्द्रा० ५।१०८, १०९, सा० द० ७३३ (विशे० पर्यायेण क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ बताता है 1. बारी बारी से, उत्तरोत्तर नम्बरवार, नियमित क्रम से 2. यथावसर, कभी कभी —पर्यायेण हि दृश्यते स्वप्नाः कामं शुभाशुभाः—वेणी० २।१३। सम० —उक्तम् एक अलंकार, घुमाफिरा कर कहना वक्रोक्ति या वाक्प्रपंच से कहने की रीति जब बात को घुमा फिरा कर या वाग्जाल के साथ कहा जाय उदा० दे० चन्द्रा० ५।६६, या सा० द० ७०३ —च्युत (वि०) गुप्त रूप से उखाड़ा हुआ, जिसका स्थान छलपूर्वक ले लिया गया है - वचनम् —शब्दः समानार्थक, —शयनम् बारी २ सोना और चौकसी रखना।

पर्याली (अव्य०) [परि+आ+अल्+ई] हानि या क्षति का (हिंसन) अभिव्यक्त करने वाला अव्यय जो प्रायः कृ, भू या अस् से पूर्व लगाया जाता है यथा पर्यालीकृत्य = हिंसित्वा।

पर्यालोचनम् —ना [परि+आ+लोच्+ल्युट्] 1 सावधानता, समीक्षा विचार परिपक्व विमर्श 2. जानना, पहचानना।

पर्यावर्त, पर्यावर्तनम् [परि+आ+वृत्+घञ्, ल्युट् वा] वापिस आना, प्रत्यागमन।

पर्याविल (वि०) [प्रा० स०] बड़ा गदला, मैला, मिट्टी में भरा हुआ —रघु० ७।४०।

पर्यासः [परि+अस्+घञ्] 1 अन्त, उपसंहार, समाप्ति 2 परावर्तन क्रान्ति 3 उलटा क्रम या स्थिति।

पर्याहारः [परि+आ+हृ+घञ्] 1 बोझा ढोने के लिए कंधों पर रक्खा गया जूआ 2 ले जाना 3 बोझा, भार 4 घड़ा 5 अनाज को भंडार में रखना।

पर्युक्षणम् [परि+उक्ष्+ल्युट्] बिना किसी मन्त्रोच्चारण के चारों ओर चुपचाप जल के छींटे देना।

पर्युत्थानम् [परि+उद्+स्था+ल्युट्] खड़ा होना।

पर्युत्सुक (वि०) [प्रा० स०] 1 शोक पूर्ण, खेद युक्त, खिन्न, दुःखद स्मृति शोक, रघु० ५।६७ 2 अत्यन्त इच्छुक, आतुर, लोलुप, प्रबल इच्छा रखने वाला—स्मर पर्युत्सुक एष माधवः—कु० ४।२८, विक्रम० २।११।

पर्युदञ्चनम् [परि+उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1 ऋण, उधार 2 उधार लेना, उठाना, उद्धार करना।

पर्युदस्त (भू० क० कृ०) [परि+उद्+अस्+क्त] 1 बहिष्कृत किया हुआ, निकाला हुआ 2. रोका गया (निषिद्ध) आपत्ति उठाई गई।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] अपवाद, निषेध सूचक नियम या विधि।

पर्युपस्थानम् [परि+उप+स्था+ल्युट्] सेवा, टहल, उपस्थिति।

पर्युपासनम् [परि+उप+आस्+ल्युट्] 1 पूजा सम्मान, सेवा 2 मित्रता, शिष्टता 3 पास पास बैठाना।

पर्युप्तिः (स्त्री०) [परि+वप्+क्तिन्] बोना, बीजना।

पर्यूषणम् [परि+उष्+ल्युट्] पूजा, अर्चा सेवा।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी, जो ताजा न हो तु० 'अपर्युषित' 2. फीका 3. मूर्ख 4 घमंडी।

पर्येषणम् —णा [परि+इष्+ल्युट्] 1 तर्क द्वारा गवेषणा 2 खोज सामान्य पूछ-ताछ 3 श्रद्धांजलि, पूजा।

पर्येष्टिः (स्त्री०) [परि+इष्+क्तिन्] खोज, पूछताछ।

पर्वकम् [पर्वणा सन्धिना कायति पर्वन्+कै+क] घुटने का जोड़।

पर्वणी [पर्व्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] 1. पूर्णिमा, या शुक्ल-प्रतिपदा 2 उत्सव 3 (आयु० में) आंख की संधि का विशेष रोग।

पर्वत [पर्व्+अतच्] 1 पहाड़, गिरि—परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यम् भर्तृ० २।७८, न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति 2. चट्टान 3 कृत्रिम पहाड़ या ढेर 4. 'सात' की संख्या 5. वृक्ष। सम० —अरिः इन्द्र का विशेषण, —आत्मजः मैनाक पर्वत का विशेषण, —आत्मजा पार्वती का विशेषण, —आधारा पृथ्वी, —आशयः बादल, —आश्रयः शरभ नामक काल्पनिक जन्तु —काकः पहाड़ी कौवा, —जा नदी, —पतिः हिमालय पहाड़ का विशेषण —मोचाः एक प्रकार का केला, —राज् (पुं०), —राजः 1. विशाल पहाड़, 2. पर्वतों का स्वामी हिमालय, —स्थ (वि०) पहाड़ी, पर्वत पर स्थित।

पर्वन् (नपुं०) [पृ+वनिप्] 1 गाठ, जोड़ (बहुव्रीहि समास के अन्त में कभी कभी बदल कर 'पर्व' हो जाता है जैसा कि कर्कशाङ्गुलिपर्वणा—रघु० १२।४१' में 2. अवयव, अंग 3. अंश' भाग, खण्ड 4. पुस्तक,

अध्याय (जैसा कि महाभारत में 5. जीने की सीढ़ी —रघु० १६।४६ 6 अवधि निश्चित समय 7. विशेषकर, चन्द्रमा के चार परिवर्तन अर्थात् दोनों पक्ष की अष्टमी पूर्णिमा तथा अमावस्या 8. चन्द्रमा के परिवर्तन काल के अवसर पर अनुष्ठित यज्ञ 9 पूर्णिमा या अमावस्या,—अदर्शयि ग्रहकम्पेन्दुमधस्था विभावरी कथय कथं भविष्यति मालवि० ४।१५ रघु० ७।३३ मनु० ४।१५०, भर्तृ० ३।३४ 10. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 11 उत्सव, त्योहार हर्ष का अवसर 12. सामान्य अवसर। सम० —कालः 1 चन्द्रमा का आवर्तिक परिवर्तन 2 वह काल जब चन्द्रमा पर्वसन्धि में से गुजरता है (मिलते या निकलते समय)

—कारिन् (पुं०) वह ब्राह्मण जो अमावस्या आदि के आवर्तिक अनुष्ठान या संस्कारों को अपने लाभ के कारण सामान्य दिनों में करता है —गामिन् (पुं०) पर्व आदि शास्त्र निषिद्ध अवसरों पर भी अपनी पत्नी से मैथुन करने वाला व्यक्ति —धिः चन्द्रमा —योनिः बेत, नरकुल, —रुह् (पुं०) अनार का वृक्ष —सन्धिः पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के मध्य का समय अर्थात् पूर्णिमा या अमावस्या की समाप्ति पर प्रतिपदा आरम्भ।

पर्शुः [परं शत्रुं शृणाति पर+शॄ+कु डित् च किन् वा स्पृशति वपुः स्पृश्+शुन, पृ आदेश] 1. कुठार, कुल्हाड़ी—कु० परशु 2. शस्त्र, हथियार। सम० —पाणिः 1. गणेश का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण।

पर्शुका [पर्शु+कन्+टाप्+] पसली।

पर्षदः [=परशव+दा+क, पृषो०] दे० 'परश्वध'।

पर्षद् (स्त्री०) [पृष्+अदि] 1 सभा, सम्मिलन, सम्मर्द 2. विशेषकर धर्मसभा —याज्ञ० १.९।

पलः [पल्+अच्] पुआल, भूसी,—लम् 1 मांस, आमिष 2. वजन का तोल 3 तरल पदार्थों को मापने का मान 4. समय मापने का मान। सम० —अग्निः पित्त, —गंडः कछुआ,—अदः,—अशनः पिशाच, राक्षस, —क्षारः रुधिर,—गंडः पलस्तर करने वाला, राज —प्रियः 1. राक्षस 2 पहाड़ी कौवा,—भा मध्याह्न की विषुवीय छाया —अर्थात् मध्याह्न के समय धूपघड़ी के कील की तत्कालीन छाया।

पलंकट (वि०)[पल मांस कटति—पल्+कट्+अच्, मुम्] भीरु, बुजदिल।

पलंकरः [पलं मांस करोति—पलम्+कृ+अच्, द्वितीया या अलुक्] पित्त।

पलंकषः [पलं कषति —पलम्+कष्+अच्, द्वितीयाया अलुक्] 1. राक्षस, पिशाच, दानव, —षम् 1 मांस 2. कीचड़, दलदल 3. पिसे हुए तिल व चीनी मिलाकर बनाई गई मिठाई, गजक। सम० —ज्वर. पित्त —प्रियः 1 पहाड़ी कौवा 2. राक्षस।

पलवः [पल+वा+क] मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी।

पलाण्डु (पुं०, नपुं०) [पलस्य मांसस्य अण्डमिव—पल+अण्ड्+कु] प्याज मनु० ५।५, याज्ञ० १।१७६।

पलायः [पलं मांसम् आप्यते बाहुल्येन अत्र पल+आप+घञ्] 1 हाथी की पुटपुड़ी 2 पगहा, रस्सी।

पलायनम् [परा+अय्+ल्युट् रस्य लः] भागना लौटना उड़ान कर निकलना भग० १८।४३, रघु० १९।३१

पलायित (भू० क० कृ०) [परा+अय्+क्त] भागा हुआ लौटा हुआ दौड़ा हुआ बच निकला हुआ।

पलालः —लम् [पल+कालन्] पुआल, भूसी —वि० ८ सम० —दोहदः आम का वृक्ष।

पलाशिः [पल+अश्+इन्] मांस का वृक्ष।

पलाशः [पल+अश्+अण्] एक वृक्ष ढाक या टेस किंशुकतरुस्तवकनाराशुभ्रनव गुरु ... ६.४ —शम् 1 इस वृक्ष का फूल ... पलाशान्यग्निशोभितानि कु० ३।२९ 2. पत्ता पत्ती ... शि० ९।२१ ६।२ 3 हरा रंग।

पलाशिन् (पुं०) [पलाश+इन्] ढाक का पेड़।

पलिक्नी [पलित+अच्, तस्य क्न, ङीप्] 1 बूढ़ी स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों 2 पहली बार ही ब्याई हुई गौ, बालगर्भिणी।

परिघः [परि+हन्+अप्, घादेश, रस्य लः] 1 शीशे का कलश, घड़ा 2. फसील परकोटा 3 लोहे की गदा —कु० परिघ 4. गोशाला, गोगृह।

पलित (वि०) [पल्+क्त] भूरा, धवल, सफेद बालों वाला, वृद्ध, बूढ़ा, आलस्य के पलितमतिविभिरवृत्तकाले (विरति) वेणी० ३।१९—तम् 1 सफेद बाल या बालों की सफेदी जो बुढ़ापे के कारण हुई हो—कैकेयीशंकयेवाह पलितच्छद्मना जरा रघु० १२।२, मनु० ६।२ 2 अधिक या अलङ्कृत केश।

पलितंकरण (वि०) [अपलितं पलितं क्रियतेऽनेन पलित+कृ+ख्युन्, मुम्] सफेद करने वाला।

पलितंभविष्णु (वि०) [अपलितः पलितो भवति—पलित+भू+खिष्णुच्, मुम्] सफेद होने वाला।

पल्यंकः [परित अंच्यतेऽत्र, परि+अंक्+घञ्, रस्य लः] पलंग खाट— दे० पर्यंक।

पल्ययनम् [परि+अय्+ल्युट्, रस्य लः] 1. जीन, काठी 2 रास, लगाम।

पल्लः [पल्ल्+अच्] अनाज का बड़ा भंडार, खत्ती।

पल्लवः—वम् [पल्+क्विप्=पल्, लू+अप्=लव, पल् चासौ लवश्च कर्म० स०] 1 अंकुर, कोंपल, टहनी

—करपल्लव., लतेव संनद्धमनोज्ञपल्लवा —रघु० ३।७ 2 कली, मञ्जरी 3 विस्तार, फैलाव, अभिस्तृति 4 लालरंग, महावर, अलक्तक 5 सामर्थ्य, शक्ति 6 घास की पत्ती 7 कंकण, बाजूबंद 8 प्रेम केलि 9 चञ्चलता, —वः स्वेच्छाचारी। सम० —अंकुर, —आधारः शाखा, —अस्त्रः कामदेव का विशेषण —द्रुः अशोक वृक्ष।

पल्लवकः [पल्लव + कै + क] 1 स्वेच्छाचारी 2 लौंडा गाण्डू 3 रंडी का प्रेमी 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार की मछली 6 अंकुर।

पल्लविकः [पल्लव इवाचरति इति अर्थे पल्लव + ठन्] 1 स्वेच्छाचारी, रसिया 2 लौंडा, बांका छैल।

पल्लवित (वि०) [पल्लव + इतच्] 1 अंकुरित, जिस पर नई नई कोंपलें आ गई हों, कोंपलों से युक्त 2 फैला हुआ, विस्तृत —अलं पल्लवितेन बस रहने दो और अधिक विस्तार 3 लाख से लाल रंग हुआ —तः लाख का रंग।

पल्लविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पल्लव + इनि] 1 नई नई कोंपलों से युक्त नये किसलयों वाला —कु० ३।५४, (पुं०) वृक्ष।

पल्लिः, —ल्ली (स्त्री०) [पल्ल् + इन्, पल्लि + ङीष्] 1 छोटा गाँव 2 झोंपड़ी 3 घर, पड़ाव 4 एक नगर या कस्बा (नगरों के नामों के अन्त में प्रयुक्त जैसे कि त्रिशिरःपल्लि) 5 छिपकली।

पल्लिका [पल्लि + कन् + टाप्] 1 छोटा गाँव, पड़ाव 2 छिपकली।

पल्वलम् [पल् + वलच्] छोटा तालाब, जोहड़, ताल, सरोवर (अल्प सर) —म पल्वलजलेऽधुना बकः वर्ततान् —भामि० १।३ —रघु० २।१७, ३।३, । सम० —आवासः कछुवा —पंकः जोहड़ का गारा कीचड़।

पवः [पू + अप्] 1 वायु 2 पवित्रीकरण 3 अनाज फटकना —वम् गोबर।

पवनः [पू + ल्युट्] हवा, वायु —सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते —सुभा० पवनपदवी, पवनसुत आदि—नम् 1 पवित्रीकरण 2 फटकना 3 छलनी, झरना 4 पानी 5 कुम्हार का आवा (पुं० भी) —नी झाड़ू। सम०—अशनः,—भुज् (पुं०) साँप,—आत्मजः 1 हनुमान का विशेषण 2 भीम का विशेषण 3 आग, —आशः साँप, सर्प, —आशनः 1 गरुड का विशेषण 2 मोर —तनयः,—सुतः 1 हनुमान् का 2 भीम का विशेषण —व्याधिः 1 कृष्ण के सलाहकार और मित्र उद्धव का विशेषण 2 गठिया।

पवमानः [पू + शानच्, मुक्] 1 हवा, वायु—पवमानः पृथिवीरुहानिव —रघु० ८।९ 2. एक प्रकार की यज्ञाग्नि जिसे गार्हपत्य कहते हैं।

पवाका [पू + आक्, नि० साधु] बवंडर, आँधी, झंझावात।

पविः [पू + इ] इन्द्र का वज्र।

पवित (वि०) [पू + क्त] पवित्र किया हुआ, छाना हुआ —तम् काली मिर्च।

पवित्र (वि०) [पू + इत्र] 1 पुनीत, पावन, निष्पाप, पवित्रीकृत (व्यक्ति या वस्तुएँ) —त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः मनु० ३।२३५, पवित्रो नरः, पवित्रं स्थानम् आदि 2 शुद्ध, छना हुआ 3 यज्ञादि के अनुष्ठानों द्वारा पवित्र किया गया 4 पवित्र करना, पाप धोना, —त्रम् 1. छानने या शुद्ध करने का उपकरण चलनी, झरना 2 कुश की दो पत्तियाँ जो यज्ञ में घी को पवित्र करने तथा छींटे देने के काम आती हैं 3 कुशा की बनी अंगूठी जो कई धार्मिक अवसरों पर चौथी अँगुली में पहनी जाती है 4 जनेऊ जो हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्ण पहनते हैं 5 तांबा 6 वृष्टि 7 जल 8 रगड़ना मांजना 9 अर्घ्य देने का पात्र 10. घी 11 शहद मधु। सम० —आरोपणम् —आरोहणम् यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, उपनयन संस्कार, —पाणि (वि०) दर्भघास को हाथ में धारण करने वाला —वायनम् जौ।

पवित्रकम् [पवित्र + कै + क] सन या सुतली का बना जाल या रस्सा।

पशव्य (वि०) [पशु + यत्] 1 मवेशियों (गाय भैंसों आदि) के लिए उचित या उपयुक्त —याज्ञ० १।३२१ 2 पशुओं से या रेवड़ या लहड़े से संबंध रखने वाला 3 पशुओं का स्वामी 4 पशुसम्पूर्ण।

पशु [सर्वमविशेषेण पश्यति —दृश् + कु, पशादेश] 1 मवेशी (एक या समष्टि) मनु० ३।२७, ३।३१ 2 जानवर 3. बलिपशु जैसे कि बकरा 4. मूर्ख, जंगली तिरस्कार प्रकट करने के लिए नर वाचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है पुरुषपशुः, वषपशोश्च को विशेष हि० १ तु० नृपशु, नरपशु 5 एक उप-देवता, शिव का एक अनुचर। सम०—अवदानम् पशुबलि —क्रिया 1 बलियज्ञ की प्रक्रिया 2. स्त्रीप्रसंग,—गायत्री वह मन्त्र जो कि बलि के पशु के कान में बोला जाता है. यह प्रसिद्ध गायत्रीमंत्र हास्यमय अनुकृति है — पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय (विश्वकर्मणे) धीमहि, तन्नो जीव प्रचोदयात्, —घातः यज्ञ के लिए पशुओं का वध,—चर्या सहवास स्त्री प्रसंग —धर्मः 1 पशुओं की प्रकृति या लक्षण 2 पशुओं की चिकित्सा 3 स्वच्छन्द मैथुन मनु० ९।६६ 4. विधवाविवाह, —नाथः शिव का विशेषण,—पः ग्वाला —पतिः 1 शिव का विशेषण मेघ० ३६, ५६, कु० ६।९५ 2 ग्वाला, पशुओं का स्वामी 3 'पाशुपत' नामक दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला दर्शन शास्त्र

—ई० सर्व, —पालः - पालकः ग्वाला, पशुओं का पालन करने वाला,—पालनम्,—रक्षणम् पशुओं को पालना रखना, पालक एक प्रकार का रतिबन्ध या मैथुन प्रकार,—प्रेरणम् पशुओं को हांकना, मारम् (अव्य०) पशुवध की रीति के अनुसार—इष्टिपशुमार मारितः श० ६, यज्ञः,—यागः,- इज्यम् पशुयज्ञ,- रज्जुः (स्त्री०) पशुओं को संभालने के लिए रस्सी —राजः सिंह केसरी ।

पश्चात् (अव्य०) [अपर + आति, पश्चभाव] 1 पीछे से, पिछली ओर से पश्चादुच्चैर्भवति हरिणः स्वाममायच्छमान - श० ४, (पाठान्तर) 2 पीछे पीछे की ओर, पीछे की तरफ (क्रिया० पुर) गच्छति पुरः शरीर धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः - श० १।३३, ३।७ 3 (समय और स्थान की दृष्टि से) बाद में, तब, इसके बाद, उसके अनन्तर —लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्—भर्तृ० २।६०, तस्य पश्चात् – उसके बाद—रघु० ४।३०, १२।७ १७।३९, १६।२९, मेघ० ३६, ४४ 4 आखिरकार अन्त में, अन्ततोगत्वा 5 पश्चिम से 6 पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ। सम० कृत (वि०) पीछे छोड़ा हुआ आगे बढ़ा हुआ, पृष्ठभूमि में फेंका हुआ —पश्चात्कृताः स्निग्धजनाशिषोऽपि कु० ७।२८ रघु० १७।१८, तापः पछतावा, ग्लानि, पछतावा —पश्चात्तापः पछतावा ।

पश्चार्धः [अपरस्यामी अर्ध कु० स०, अपरस्य पश्चभाव] (शरीर का) पिछला भाग या पार्श्व पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2 (समय और देश की दृष्टि से) अन्तिम —पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य का० ७५ रघु० १९।१ ५६, पश्चिमाद्यामिनीयामात् प्रसादमिव चेतना रघु० १७।१ स्यन्त पश्चिमामाज्ञां १७।८, तत पश्चिममयो मित्र पादयो मुद्रा० ७ 3 पश्चिमी, पश्चिमी ढंग का मनु० २।२२, ५।९२ (पश्चिमेन) क्रियाविशेषण के रूप में 'पश्चिम में' बाद में' पीछे' अर्थों को प्रकट करने लिए, कर्म० या सम्बन्ध के साथ प्रयुक्त, इसी प्रकार पश्चिम में। सम० - अर्धः 1 उत्तरार्ध 2 रात का पिछला पहर 3 रात्रि का पिछला भाग उपास्था पश्चिमरात्रगोचरात् कि० ४।१०, (पाठान्तर) ।

पश्चिमा [पश्चिम + टाप्] पश्चिम दिशा । सम० —उत्तरा उत्तर पश्चिम ।

पश्यत् (वि०) (स्त्री०-न्ती) [दृश् + शतृ, पश्यादेश] देखने वाला, प्रत्यक्ष ज्ञान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिपात करने वाला, निरीक्षण करने वाला आदि ।

पश्यतोहर [पश्यन्तं जनम् अनादृत्य हरति-हृ + अच्, ष० त० अलुक् समास] चोर लुटेरा डाकू (वह व्यक्ति जो दूसरों की आँखों के सामने ही या स्वामी के देखते रहने पर भी चोरी कर लेता है, जैसे सुनार) ।

पश्यन्ती [दृश् + शतृ पश्यादेश नुम्] 1 वेश्या रंडी 2 विशेष प्रकार की ध्वनि ।

पस्त्यम् [अपस्त्यायन्ति सङ्घीभूय तिष्ठन्ति यत्र अप + स्त्यै + क नि० अकारलोप] घर निवास आवास पस्त्य प्रशान्तुमश तं प्रभुरागपृच्छे कीर्ति० ९।३६ ।

पस्पशा (पुं०) पतञ्जलिप्रणीत महाभाष्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आह्निक शब्दविशेष जो भक्ति राजनीति रूपस्पाश शि० २।११२ (यहाँ 'पस्पश' का अर्थ है [illegible]) 2 प्रस्तावना उपोद्घात ।

पह्लु (ह्रू) वाः, पह्लिक (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम, संभवतः पारसी देशवासी ।

पा (भ्वा० पर० पिबति पीत कर्मवा० पीयते) 1 पीना, एक साम में बढ़ा जाना पिब स्तन्य पोत भामि० १।६० दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्त —वेणी० १।१५ रघु० ३।५४ कु० ३।३६ भट्टि० १४।९२ १५।६ 2 चूमना पिबत्यसौ पाययते च सिन्धू - रघु० १३।९, श० १।२४ 3 चिन्तन करना (आँख और कान से पीना) उत्सुक बनाना, ध्यान पूर्वक सुनना—निवातपद्मस्तिमितेन चक्षुषा नृपस्य कान्तं पिबतः सुताननम् रघु० ३।१७ २।१९,७३ ११।३६ १३।३० मेघ० १६, कु० ७।६४ 4 अवशोषण करना, पी जाना (वाष्प) भायुर्देहातिगैः पीतं रुधिरं तु पतत्रिभिः रघु० १२।४८, प्रेर०—पाययति —ते, 1 पिलाना पीने के लिए देना रघु० १३।९ भट्टि० ८।८२ ६।२ 2 सींचना - इच्छा० पिपासति पीने की इच्छा करना हालाहलं खलु पिपासति कौतुकेन भामि० १।९५ अनु बाद में पीना अनुसरण करना - अनुपास्यसि बाष्पदूषितं परलोकोपनतं जलाञ्जलिम्—रघु० ८।६८ आ 1 पीना - रघु० १४। ७२ 2 पी जाना अवशोषण करना चूस लेना आपीतसूर्यं नभः मृच्छ० ५।२० उपेति सविता ह्यस्तं रसमापीय पार्थिवम् महा०, १ (आँख कान से) पीने का उत्सुक बनाना तौ राघवं दृष्टिभिरापिबन्त्यः रघु० ७।१२ नि—, 1 पीना, चूमना—अन एव निपीय॰॰॰र पंच० १।१८९, तस्यञ्जन प्रियतमं निपीतताम्रम्—मनु० ४।१३ 2 (आँख या कान से) पीना सौन्दर्यावलोकन करना परि आस्वादन् करना —उपनिषदः परिपीता भामि० २।४०, ।। (अदा० पर०—पाति, पात) 1 रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, बचाना, संधारण करना —(प्रायः अपा० के साथ) पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुम्

—रघु० १०।२५, पांतु त्वां" भूतेशस्य भुजगवल्लिवलयस्रङ्नद्ध—जूटाजटा — मा० १।२ जीवन् पुनः शश्वदुपप्लवेभ्यः प्रजाः प्रजानाथ पितेव पासि — रघु० २।४८ 2 हुकूमत करना, शासन करना—पातु पृथ्वीम् भूपा: मृच्छ० १०।६०, प्रेर० पालयति —ते 1 रक्षा करना देखभाल करना चौकसी रखना सधारण करना कथं दुष्टः स्वयं धर्मं प्रजास्त्वं पालयिष्यसि भट्टि० ६।१३४ मनु० ९।१०८ रघु० ९।२ 2 हुकूमत करना शासन करना सा पुरीं पालयामास राम० 3 पालन करना स्थिर रखना अनुपालन करना पूरा करना (प्रतिज्ञा व्रत आदि) पालितसंगराय रघु० १२।१४ 4 पालन पोषण करना संवर्धन करना धारित रखना 5 प्रतीक्षा करना [illegible] अभि—, 1 बचाना 1 बचाना सधारण करना देखभाल करना रक्षा करना मनु० ८।२७ परि 1 बचाना सधारण करना देखभाल करना रक्षा करना याज्ञ० १।३३४ मनु० ९।२५१ 2 हुकूमत करना शासन करना भा० १०।२४ 3 पालन पोषण करना संवर्धन करना सहारा देना 4 स्थिर रखना पालन करना जमे रहना धैर्य रखना—प्रतीक्षण मुकुन्दः परिपालयति [illegible] ५० 5 प्रतीक्षा करना इन्तजार करना अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं व्यसनकृशा परिपालयांबभूव कु० ४।४६ प्रति— 1 बचाना सधारण करना 2 प्रतीक्षा करना इन्तजार करना 3 अमल करना आज्ञा मानना।

पा (वि०) (समास के अन्त में) [पा+विच्] 1 पीने वाला चूसने वाला जैसा कि सोमपा अग्रेपा में 2 बचाने वाला देखभाल करने वाला स्थिर रखने वाला गोपा।

पांस (श) न (वि०) (स्त्री० —ना, —नी) [प्रायः समास के अन्त में] [पंस् (श्)+ल्युट्] कलंकित करने वाला अपमानित करने वाला दूषित करने वाला—गोत्रकुलपांसन महावी० ५ 2 विनाश करने वाला भ्रष्ट करने वाला 3 दुष्ट तिरस्करणीय 4 बदनाम कुख्यात।

पांस (श) व (वि०) [पांसु (शु)+अच्] धूल से भरा हुआ।

पांसुः (शु) [पंस् (श्)+कु दीर्घः] 1 धूल गर्द चूरा (औंधे झुककर गिरने वाला) रघु० २।२ श० १।१३ याज्ञ० १।१५० 2 धूलकण 3 गोबर खाद 4 एक प्रकार का कपूर। सम० —कासीसम् कसीस —कुली प्रधान पथ राजमार्ग —कूलम् 1 धूल का ढेर 2 ऐसा कानूनी दस्तावेज जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम न हो, निक्षेपपत्रशासन, —कृत (वि०) धूल से भरा हुआ —क्षारम्, —जम् एक प्रकार का नमक —चत्वरम् ओला —चंदन शिव का विशेषण —चामरः 1 धूल का ढेर 2 तम्बू 3 दूब से ढका नदीतट 4 प्रशंसा —जालिक विष्णु का विशेषण —पटलम् धूल की परत या तह —बंधः पेड़ की जड़ों के पास चारों ओर से खोद कर पानी सींचने का स्थान आलवाल थावला।

पांसु (शु) र [पांसु (शु)+र+क] 1 डांस मच्छर 2 विकलांग लूला जो गाड़ी में बैठकर इधर उधर घूमे।

पांसु (शु) ल (वि०) [पांसु (शु)+लच्] 1 धूल से भरा हुआ धूलिधूसरित मा० २।४ 2 अपवित्र दूषित कलुषित कलंकित दारत्यागी भवाम्यहो परस्त्रीस्पर्शपांसुलः श० ५।२८ 3 दूषित करने वाला कलंकित करने वाला अपमानित करने वाला जैसा कि 'कुलपांसुल' में —लः 1 दुश्चरित्र व्यभिचारी पुरुष 2 शिव का विशेषण —ला 1 रजस्वला स्त्री 2 असती या दुश्चरित्रा स्त्री [illegible] रघु० [illegible] 3 पृथ्वी।

पाकः [पच्+घञ्] 1 पकाना प्रकाशन सेकना उबालना 2 (ईंट आदि) आंच में पकाना सेकना मन० ५।१२२ याज्ञ० १।१८७ 3 (भोजन का) पचना 4 पका हुआ आधान्य फलपाककाला मनु० १।४६ फलमभिमुखपाकं राजजम्बूद्रुमस्य—विक्रम० ४।१३, मा० ९।३१ 5 परिपक्वता पूर्ण विकास [illegible], भट्टि० 6 सम्पूर्ति निष्पन्नता पूरा करना पूर्वोक्त पाका सुमेभूयात् विक्रमतां कर्मे —रघु० १०।४० 7 नतीजा, परिणाम, फल परिपक्वन (काल० भी) आशाभिः पर्यासानु पुर पाकाभिरवकाम् —कु० ६।९० पाकाभिमुखस्य दैवस्य उत्तर० ७।४, १४ 8 बुद्धि क्षमता व कला का विकास 9 अनाज अन्न—नीवारपाकादि—रघु० ५।९ (पच्यते इति पाक धान्यम्) 10 पकने की क्रिया (फोड़े आदि का) पकना पीप पड़ना 11 बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद हो जाना 12 गार्हपत्याग्नि 13 उल्लू 14 बच्चा शिशु 15 एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था। सम० —आगार, —स्थ आगार, —स्थ शाला, —स्थानम् रसोई —अतीसार पुराना पेचिश —अभिमुख (वि०) 1 पकने के लिए तैयार विकासोन्मुख 2 कृपापरायण —जम् 1 काला नमक 2 उदरवायु, —पात्रम् पकाने का बर्तन —पुटी कुम्हार का आवा —यज्ञ गृह्ययज्ञ (इसके भेदों के लिए दे० मनु० २।१४३ पर कुल्लू०) —शुक्ला खड़िया —शासनः इन्द्र का विशेषण कु० २।६३, —शासनिः 1 इन्द्र के पुत्र जयन्त का विशेषण 2 बालि तथा 3 अर्जुन का विशेषण।

पाकलः [पाक + ला + क] 1. आग 2 हवा 3. हाथी का ज्वर - तु० कूटपाकल ।

पाकिम (वि०) [पाकेन निर्वृत्तम् पाक + इमप्] 1. पका हुआ, प्रसाधित 2 (प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ 3. नमक आदि) उबाल कर प्राप्त किया हुआ ।

पाकुः, पाकुकः [पच् + उण्, क आदेश] रसोइया ।

पाक्य (वि०) [पच् + ण्यत्, क आदेश] पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लायक, परिपक्व होने के योग्य —क्यः यवाक्षार शोरा ।

पाक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [पक्ष + अण्] 1 (कृष्ण या शुक्ल) पक्ष से संबंध रखने वाला, पाक्षिक 2. किसी दल या पार्टी से संबद्ध ।

पाक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [पक्ष + ठक्] 1. पक्ष से संबद्ध, अर्धमासिक 2. पक्षी से संबद्ध 3. किसी दल या पार्टी का पक्ष लेने वाला 4 तर्क विषयक 5. ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विशेष रूप से निर्धारित न हो —नियम पाक्षिके सति,—कः बहेलिया चिड़ीमार ।

पाखण्डः [पालनात् —पा + क्विप्, पा त्रयीधर्मः, तं खण्डयति पा + खण्ड् + अच्] विधर्मी नास्तिक पाखंड चंडालयो, पापारंभकयोर्मुनीव वृकयोर्भीरुत्वनां गोचरम् —मा० ५।२४, दुरात्मन् पाखंड चंडाल मा० ५ ।

पागल (वि०) [पाकं ज्ञानम्, तस्मात् गलति विच्युतो भवति —पा + गल् + अच्] विक्षिप्त, जिसका दिमाग खराब हो ।

पाङ्क्तेय, पाङ्क्त्य (वि०) [पंक्ति + ढक्, यत् वा] 1 भोजन पंक्ति में एक साथ बैठने के योग्य 2 साहचर्य के उपयुक्त ।

पाचक (वि०) [पच् + ण्वुल्] 1 पकाना, सेकना 2. पचाने वाला, पौष्टिक —कः 1 रसोइया 2 आग, —कम् पित्त । सम० —स्त्री महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री ।

पाचन (वि०) (स्त्री०—नी) [पच् + णिच् + ल्युट्] 1. पकाने वाला 2 पकने वाला 3 पचाने वाला, हाजिम, —नः 1. आग 2. खटास अम्लता, —नम् 1 पकाने की क्रिया 2 पकने की क्रिया 3. घुलनशील, भोजन पचाने वाली औषधि 4 घाव भरना 5. तपस्या, प्रायश्चित्त ।

पाचलः [पच् + णिच् + कलच्] 1. रसोइया 2. आग 3. हवा, —लम् पकाना, परिपक्व करना ।

पाचा [पच् + णिच् + अङ् + टाप्] पकाना ।

पाञ्चकपाल (वि०) (स्त्री०—ली) [पंचकपाल + अण्] पाँच कपालों में भर कर दी गई आहुति से संबंध रखने वाला ।

पाञ्चजन्यः [पञ्चजन + ञ्य] कृष्ण के शंख का नाम—(दध्मौ) पाञ्चजन्यं हृषीकेशः भग० १।१५ । सम० —धरः कृष्ण का विशेषण ।

पाञ्चदश (वि०) (स्त्री०—शी) [पंचदशी + अण्] मास की पन्द्रहवीं तिथि से संबंध रखने वाला ।

पाञ्चदश्यम् [पञ्चदशन् + ष्यञ्] पन्द्रह का समुच्चय ।

पाञ्चनद (वि०) [पञ्चनद + अण्] पञ्चनद या पंजाब में प्रचलित ।

पाञ्चभौतिक (वि०) (स्त्री—की) [पञ्चभूत + ठक्, द्विपद-वृद्धि] पाँच तत्त्वों के समूह से बना हुआ, या पाँच तत्त्वों वाला, पाञ्चभौतिकी सृष्टिः महावी० ६ याज्ञ० ३।१७१ ।

पाञ्चवर्षिक (वि०) [पञ्चवर्ष + ठञ्] पाँच वर्ष का ।

पाञ्चशब्दिकम् [पञ्चशब्द + ठक्] 1 पाँच प्रकार का संगीत 2 गायन संबंधी वाद्ययंत्र ।

पाञ्चाल (वि०) (स्त्री० —ली) [पञ्चाल + अण्] पञ्चाल से संबद्ध या पञ्चालों के शासक —लः 1 पञ्चालों का देश 2 पञ्चालों का राजकुमार —लाः (ब०व०) पञ्चाल देश के लोग ।

पाञ्चालिका [पाञ्चाली + कन् + टाप्, ह्रस्व] गुड़िया, पुतली स्तन्यत्यागात्प्रभृति सुमुखी दन्तपाञ्चालिकेव क्रीडा-योगं तदनु विनयं प्रापिता वर्धिता च मा० १०।५ ।

पाञ्चाली [पाञ्चाल + अण् + ङीप्] 1 पञ्चाल देश की राजकुमारी या स्त्री 2. पाण्डवों की पत्नी, द्रौपदी 3. गुड़िया पुतली 4. (अलं०) रचना की चार शैलियों में से एक सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा —वर्णैः शेषैः (अर्थात् माधुर्यव्यञ्जकौजःप्रकाशकाभ्यां भिन्नैः) पुनर्द्वयोः, समस्तपञ्चषपदो बन्धः पाञ्चालिको मतः ६२८ ।

पाट् (अव्य०) [पट् + णिच् + क्विप्] एक अव्यय जो बुलाने के लिए—अर्थात् संबोधन के रूप में प्रयुक्त हो जाता है ।

पाटकः [पट् + णिच् + ण्वुल्] 1 विदारक, विभाजक 2 गाँव का एक भाग 3 गाँव का आधा हिस्सा 4 एक प्रकार का संगीत-उपकरण 5. तट, किनारा 6. घाट की सीढ़ियाँ 7 मूलधन या पूँजी की हानि 8 विशाल या बाहुल्य 9 पासे फेंकना ।

पाटच्चरः [पाटयन् छिन्दन् चरति चर + अच्, पृषो०] चोर, लुटेरा, पाड़ लगाने वाला, कुसुमरसपाटच्चर —वा० ६, पद्मिनीपरिमलालिपाटच्चरैः भामि० २।७५ ।

पाटनम् [पट् + णिच् + ल्युट्] विदीर्ण करना, तोड़ना, फाड़ना, नष्ट करना ।

पाटल (वि०) [पट् + णिच् + कलच्] पीतरक्त वर्ण, गुलाबी रंग, अधरे स्त्री मधुपाटलं गुरुपाटलम् —विक्रम०

२।७, पाटलपाणिजां क्लिनधुर —मीन० १२. ङ: पीतरक्त, प्याजी या गुलाबी रंग —कपोलपाटलादेशि बभूव रघुवेष्टितम् रघु० ४।६८ 2 पाडर का फूल पाटलसंसर्ग सुरभिवनवाता —श० १।३, —लम् 1 पाटल वृक्ष का फूल रघु० १६।५९, १९।४६ 2 एक प्रकार का चावल जो बरसात में तैयार होता है 3 केसर जाफरान। सम० —उपलः लाल, —द्रुमः पाडर वृक्ष।

पाटला [पाटल + अच् + टाप्] 1 लाल लोध्र 2 पाडर का वृक्ष तथा उसका फूल 3 दुर्गा का विशेषण।

पाटलिः (स्त्री०) [पाटल + इनि] पाडर का फूल। सम० —पुत्रम् एक प्राचीन नगर मगध की राजधानी जो शोण और गंगा के संगम पर स्थित है जिसे कुछ लोग वर्तमान पटना मानते हैं इसका 'पुष्पपुर' या 'कुसुमपुर' भी कहते हैं दे० मुद्रा० २।१ ४।१६, रघु० ६।२४।

पाटलिकः [पाटलि + कन्] छात्र विद्यार्थी

पाटलिमन् (पुं०) [पाटल + इमनिच्] पीतरक्त वर्ण

पाटल्या [पाटल + यत् + टाप्] पाटल के फूलों का गुच्छा।

पाटवम् [पटु + अण्] 1 तीक्ष्णता, पैनापन 2 चतुराई कौशल, दक्षता, प्रवीणता — पाटवं संस्कृतकारिषु कि० १ कि० १।५४ 3 ऊर्जा 4 फुर्ती उतावलापन।

पाटविक (वि०) (स्त्री० —की) [पाटव + ठन्] 1 चतुर, तीक्ष्ण कुशल 2 धूर्त चालबाज मक्कार।

पाटित (भू० क० कृ०) [पट् + णिच् + क्त] 1 फाड़ा हुआ चीरा हुआ टुकड़े टुकड़े किया हुआ तोड़ा हुआ 2 बिद्ध छिद्रित रघु० ११।३१।

पाटी [पट् + णिच् + इन् + ङीप्] अंकगणित। सम० —गणितम् अंकगणित।

पाटीरः [पटीर + अण्] 1 चन्दन पाटीर तव पटीयान् कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम् भामि० १।१२ 2 खेत 3 टीन 4 बादल 5 चलनी।

पाठः [पठ् + घञ्] 1 सस्वर पठन, सस्वर पाठ आवृत्ति करना 2 पढ़ना, वाचन अध्ययन 3 वेदाध्ययन, वेदपाठ, ब्रह्मयज्ञ, गृहस्थों के द्वारा पाँच दैनिक यज्ञों में से एक 4 पुस्तक का मूलपाठ स्वाध्याय पाठभेद अत्र पचयतूर्णवरसातम इति आगन्तुक पाठ, प्राचीनतमपाठस्तु कूर्णविर्णवनातन इति पुलिनान मल्लि० कु० ६।७ पर। सम० —अन्तरम् दूसरा पाठ पाठभेद —छेदः विराम, यति, —दोषः दूषित पाठ पाठ की अशुद्धियाँ, —निश्चयः किसी संदर्भ का पाठ निर्धारित करना, —मंजरी, —शालिनी मैना, सारिका, —शाला विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामंदिर।

पाठकः [पठ् + णिच् + ण्वुल्] 1 अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु 2 पुराण या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का सार्वजनिक पाठ करने वाला 3 आध्यात्मिक गुरु 4 छात्र, विद्यार्थी, विद्वान्।

पाठनम् [पठ् + णिच् + ल्युट्] अध्यापन, व्याख्यान देना।

पाठित (भू० क० कृ०) [पठ् + णिच् + क्त] पढ़ाया हुआ, शिक्षा दिया हुआ।

पाठिन् (वि०) [पठ् + णिनि पाठ + इनि वा] 1 जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो 2 जानकार, परिचित।

पाठीनः [पठ् + ईनच्] 1 पुराण या अन्य धार्मिक ग्रन्थों की कथा करने वाला 2. एक प्रकार की मछली —विवृत्त पाठीन पराग्रुम्न पय कि० ४।५।

पाणः [पण् + घञ्] 1 व्यापार, व्यवसाय 2 व्यापारी 3. खेल 4 खेल पर लगा या बदा दाँव 5. करार, 6 प्रशंसा 7 हाथ।

पाणिः [पण् + इण्] हाथ दानेन पाणिर्न तु कंकणेन (विभाति) भर्तृ० २।७१, —णिः (स्त्री०) मंडी (पाणी कृ हाथ में थामना विवाह करना, —पाणीकरणम् विवाह)। सम० —गृहीती, हाथ से ग्रहण की गई ब्याही गई पत्नी —ग्रहः ग्रहणम् विवाह करना शादी रघु० ७।२९, ८।७ कु० ७।४, —ग्राहः (पुं०) — ब्याह करने वाला पति व्यावर्त्यमिष्ट बलिकर्मणि पाणिग्राहस्य चनमा मनु० ९।२१ बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने ५।१४८, —घः 1 ढोल बजाने वाला 2. कारीगर, शिल्पकार —घातः हाथ का प्रहार घूँसा, —जः नाखून—नखैः पाटलपाणिजांकितम् —शीत० १२ —तलम् हथेली, —धर्मः विवाह की विधि, —पीडनम् विवाह, पाणिपीडनमह दमयन्त्याः कामयेमहि महीमिहिकांशो— नै० ५।९९ पाणिपीडनविधेरनन्तरम् कु० ८।१ —प्रणयिनी पत्नी —बंधः 'हाथों का मिलना' विवाह, —मुक् (पुं०) बड़ का वृक्ष, गूलर का वृक्ष, —मुक्तम् हाथ से फेंक कर मारा जाने वाला आयुध, अस्त्र, —रुह् (पुं०) —रुहः अंगुली का नाखून —वादः 1. तालियाँ बजाना 2. ढोल बजाना —सर्गा रस्सी।

पाणिनि (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम, यह अन्तःस्फूर्त मुनि समझे जाते हैं कहते हैं कि व्याकरण का ज्ञान इन्होंने शिव से प्राप्त किया था। 'अष्टाध्यायी' नाम का व्याकरण इन्होंने ही रचा।

पाणिनीय (वि०) [पाणिनि + छ] पाणिनि से संबद्ध रखने वाला, या उसके द्वारा बनाया गया—शि० १९।७५ —यः पाणिनि का अनुयायी —अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः, —यम् पाणिनि द्वारा प्रणीत व्याकरण।

पाणिन्धम—य (वि०) [पाणि + ध्मा (धे) + खश्, मुम्] हाथ से धौंकने वाला, हाथ से फूंकने वाला, हाथ से पीने वाला।

पांडर (वि०) [पाण्डर+अच्] 1. धवल, पीतधवल, सफ़ेद 2. गेरु 3. चमेली का फूल।

पांडव [पाण्डोः अपत्यम् पाण्डु+अण्] पाण्डु का पुत्र या सन्तान, पांडु के पांचों पुत्रों में से कोई सा एक — युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—श्रुताः संप्रति पांडवा इव वनाज्ञातचर्या गताः—मृच्छ० ५।६। सम० —आभीलः कृष्ण का नाम, —श्रेष्ठः युधिष्ठिर का नाम।

पांडवीय (वि०) [पांडव+छ] पांडवों से संबंध रखने वाला।

पांडवेय=पांडव।

पांडित्यम् [पंडित+ष्यञ्] 1. विद्वत्ता, गहन अधिगम—विद्या सवेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययो:—मा० १।७ 2. चतुराई कुशलता, दक्षता, शिक्षणा नवानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः भामि० १।२।

पांडु (वि०) [पण्ड्+कु, नि० दीर्घः] पीत-धवल, सफ़ेद सा, पीला पीताभविकलकरणैः पांडुच्छायैः शुचा परिदुर्बलः—उत्तर० ३।२२, —डुः 1. पीत-धवल, या पीताभ श्वेत रंग 2. पीलिया, यरकान 3. सफ़ेद हाथी 4. पांडवों के पिता का नाम [विचित्रवीर्य की विधवा अंबिका से व्यास के द्वारा पांडु का जन्म हुआ था। पांडु रंग का पैदा होने के कारण उसका नाम पांडु पड़ा, क्योंकि व्यास के साथ सहवास के अवसर पर उसकी माता पांडु रंग की हो गई थी—(यस्मात्पांडुत्वमापन्ना विरूपं प्रेक्ष्य मामिह, तस्मादेष सुतस्ते वै पाण्डुरेव भविष्यति —महा०,)—किसी शाप के कारण पाण्डु को स्वयं सन्तानोत्पत्ति करने से रोक दिया गया था। इसीलिए उसने कुन्ती को दुर्वासाऋषि से प्राप्त मंत्र का उपयोग करके सन्तान प्राप्त करने की अनुमति दे दी थी, फलतः कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को जन्म दिया, इसी मंत्र के उपयोग से माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया। एक दिन पाण्डु अपने शाप को भूलकर जिसके कारण वह सावधान था, उसने माद्री का आलिंगन करने का दुस्साहस किया, परन्तु वह उसके भुजपाश में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया]। सम० —आमयः पीलिया यरकान, —कंबलः 1. सफ़ेद कंबल 2. गरम चादर 3. राजकीय हाथी की झूल —पुत्रः पांडु का पुत्र, पांचों में से कोई एक, —मृत्तिका, सफ़ेद या पीली मिट्टी, —रागः सफ़ेदी, पीलापन, —लेखः खड़िया से बनाई रूपरेखा, भूमि या किसी फलक पर खड़िया से बनाई गई कोई रूपरेखा —पाण्डुलेखेन फलके भूमौ वा प्रथमं लिखेत्, न्यूनाधिकं तु संशोध्य पश्चात्पत्रे निवेशयेत् · व्यास०,—सोपाका द्रौपदी का विशेषण —सोपाकः एक वर्णसंकर जाति—चांडालात्पांडुसोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान् —मनु० १०।३७।

पांडुर (वि०) [पाण्डुवर्णोऽस्त्यस्य पाण्डु+र] सफ़ेद सा पीत-धवल, पीताभ-श्वेत, पीला—छविः पाण्डुरा —श० ३।१०, रघु० १४।२६, कु० ३।३३, —रम् श्वेत कुष्ठ। सम० —इक्षुः एक प्रकार की ईख, पौण्ड्रा।

पांडुरिमन् (पुं०) [पाण्डुर+इमनिच्] पीलापन, सफ़ेदी या पीला रंग।

पांड्याः (पुं०, ब० व०) [पाण्डु देश, अभिजनोऽस्य राजा वा —पाण्डु+ड्यन] एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम —तस्यामेव रघोः पाण्ड्याः प्रतापं न विषेहिरे—रघु० ४।४९, —ड्य उस देश का राजा रघु० ६।६०।

पात (वि०) [पा+क्त] रक्षित, देखभाल किया गया, संधारित—तः [पत्+घञ्] 1. उड़ना, उड़ान 2. उतरना, अवतरण करना, उतार 3. नीचे गिरना, पतन, पराजय (आल० भी) दुम०, गृह०, चरणपातः पैरों में गिरना—रघु० ११।९२, पातोत्पातौ उदय और अस्त 4 नाश, विघटन, बर्बादी—कु० ३।४४ 5. आघात प्रहार जैसा कि 'खड्गपात' में 6 बहना, छूटना, निकलना—असृक्पाते मनु० ८।४४ 7 डालना फेंकना, निशाना बनाना—दृष्टि० रघु० १३।१८, 8. आक्रमण, हमला 9 घटना, होना, घटित होना 10. दोष, त्रुटि 11. राहु का विशेषण।

पातकः, **कम्** [पत्+णिच्+ण्वुल्] पाप, अपराध (हिन्दू-धर्मशास्त्र में पाँच महापातक गिनाये गये हैं—ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः, महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह—मनु० ११।५४।

पातंगिः [पतङ्ग+इञ्] 1. शनि 2. यम 3. कर्ण और सुग्रीव का विशेषण।

पातंजल (वि०) (स्त्री० —ली) [पतञ्जलि+अण्] पतञ्जलि द्वारा रचित,—पातञ्जले महाभाष्ये कृतभूरि परिश्रमः—परिभाषेन्दुशेखर, —लम् पतंजलि द्वारा प्रणीत योगदर्शन, (ऐसा विश्वास किया जाता है कि महाभाष्यकार पतंजलि ही योगदर्शन के प्रणेता थे, परंतु यह विचार संदेह से परे नहीं है)।

पातनम् [पत्+णिच्+ल्युट्] 1 गिरने का कारण बनना, गिराना, नीचे लाना या फेंक देना, पछाड़ देना, नीचे पटक देना 2 फेंकना, डालना 3 हीन करना, नीचा दिखाना। (विशे०—उन संज्ञा शब्दों के अनुसार जिनके साथ 'पातन' शब्द प्रयुक्त होता है, 'पातन' के भिन्न२ अर्थ हैं—उदा० दंडस्य पातनम्—'डंडा गिराना' दण्ड देना, गर्भस्य पातनम्—गर्भ का गिराना, गर्भपात कराना)।

पातालम् [पतन्त्यस्मिन्नधर्मेण · पत्+आलञ्] 1. पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से अंतिम लोक—नागलोक,

यह सात लोकों में है —अतल, वितल, सुतल, रसातल तलातल, महातल और पाताल 2 निम्नप्रदेश या नीचे का लोक —रघु० १५।८४ १।८० 3 गढ़ा छिद्र 4 बड़वानल। सम० [illegible] नीचे के [illegible] [illegible] गया, ओकस् (पुं०) निलय निवास वासिन् (पुं०) 1 राक्षस 2 नाग [illegible] सर्पदैत्य।

पात्क [illegible] नदी में [illegible]

पातित (भू० क० कृ०) [illegible] 2 [illegible] 3 नीचे [illegible] गया।

पातित्यम् [illegible] [illegible]

पातिन् (वि०) (स्त्री० [illegible]) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 5 [illegible] निकालने वाला।

पातिली [illegible] 2 छोटा मिट्टी का बर्तन हांडी।

पातुक (वि०) (स्त्री० [illegible]) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 2 [illegible]

पात्रम् [illegible] 1 पीने का बर्तन [illegible] 2 [illegible] [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] —[illegible] याज्ञ० १।२०१ [illegible] [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] औचित्य 10 आज्ञा हुक्म। सम० उपकरणम् [illegible] —पाल 1 [illegible] 2 तराजू की डंडी संस्कार 1 [illegible] साफ करना 2 नदी का प्रवाह।

पात्रिक (वि०) (स्त्री० [illegible]) [illegible] 2 [illegible] बर्तन का नाप [illegible] कम् बर्तन प्याला [illegible]।

पात्रिय पात्र्य (वि०) [पात्रमर्हति [illegible]] भोजन में [illegible] के योग्य।

पात्रीयम् [पात्र [illegible]] यज्ञीय पात्र [illegible] आदि।

पात्रीर,–**रम्** [पात्री रचि—याति [illegible]] आहुति।

पात्रेबहुल, पात्रेसमित [पात्रे [illegible] एव बहुल [illegible] न तु कार्ये [illegible]] 1 केवल भोजन का साथी [illegible] 2 धोखेबाज कपटी पाखंडी।

पाथ [illegible] 1 अग्नि 2 सूर्य [illegible] जल।

पाथस् (नपुं०) [illegible] 1 जल [illegible] 2 हवा वायु 3 आहार। सम० [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] बादल [illegible], निधि, [illegible] समुद्र नै० [illegible]।

पाथेयम् [illegible] [illegible] जो [illegible] जाता है मार्गव्यय [illegible] [illegible] कि० [illegible] बिसकिसलयच्छेद[illegible] मेघ० ११ विक्रम० ४।१५ 2 कन्या —[illegible]।

पाद [illegible] 1 पैर (चाहे मनुष्य का हो या किसी जानवर का), तयोर्जगृहतुः पादान् रघु० १। [illegible] पादपतित समास के अन्त में [illegible] का बदल कर पाद् हो जाता है यदि इससे [illegible] हो या संख्यावाचक शब्द उदा० सुपाद् [illegible] जिस समय पूर्वपद तुलना-मान के रूप में प्रयुक्त किया जाय उस समय भी पाद् [illegible] यदि पूर्वपद 'हस्ति' से भिन्न हो दे० पा० ५।४।१३८ [illegible] उदा० व्याघ्रपाद् अतिशय आदर तथा सम्मान व्यक्त करने के लिए कर्तृ० का बहुवचनान्त रूप व्यक्तियों की उपाधियों या नामों के साथ [illegible] दिया जाता है मूर्ध्ना [illegible] देवपादानां [illegible] प्रयोजनम् पंच० १ इसी प्रकार एवमा[illegible] आज्ञापयन्ति प्रबो० १ एवं कुमारि[illegible] 2 प्रकाश की किरण बालस्यापि [illegible] पंच० ३२८, शि० [illegible] रघु० १६।५३ यहाँ 'पाद' का अर्थ 'पैर' भी है 3 [illegible] (जड़ पदार्थों का खाट आदि का) 4 वृक्ष की जड़ या पैर जैसा कि पादप में 5 [illegible] (जैसा प्रत्यन्तपर्वता) मेघ० [illegible] 6 चौथाई चौथाभाग जैसा कि [illegible] मनु० ८।२४१, याज्ञ० [illegible] श्लोक का एक चरण पंक्ति 8 किसी पुस्तक के अध्याय का चौथा भाग जैसा कि सूत्र का या पाणिनि की अष्टाध्यायी का 9 आंश 10 [illegible]। सम० [illegible] पैर का आगे का भाग [illegible] अंक पदचिह्न अंगदम्, [illegible] पैर का आभूषण नूपुर पायल अंगुष्ठः पैर का अंगूठा अंत पैरों का अन्तिम भाग —अंतरम् एक पग के बीच का अन्तराल एक पग की दूरी

[illegible]

पादाङ्गदम् [illegible] पैर का [illegible], [illegible]

[illegible] **आघातः** [illegible], **आङ्कुलनम्** 1 [illegible] 2 पैर धाने के लिए [illegible] आघात [illegible] [illegible] भुगतान पैर, पैर [illegible] हुआ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वाला [illegible] [illegible] **आवलम्** [illegible]

आस्फालनम् पैर से [illegible] [illegible] आगे बढ़ने की चेष्टा, **आकुल** (वि०) [illegible] हुआ, [illegible] हुआ, **उदकम्** [illegible] 1 पैर धोने के लिए पानी 2 वह पानी जिसमें [illegible] सम्मानित व्यक्तियों के पैर धाये हैं और इसलिए जो पवित्र समझा जाता है **उदर** [illegible] **कटक** -कम्, कोलिका नूपुर, पायल **क्षेप** कदम [illegible]

--**ग्रन्थिः** टखना, - **ग्रहणम्** (आदरयुक्त अभिवादन के रूप में) पैर पकड़ना [illegible] **चतुर**

चत्वरः 1 मिथ्यानिन्दक 2 बकरा 3 [illegible] 4 ओला, **चारः** पैदल चलना टहलना [illegible] विचरेत् पादचारेण गौरी [illegible] पैदल चले' रघु० ११।१० **चारिन्** (वि०) पैदल चलने वाला, पैदल यात्री (पुं०) 1. [illegible] 2 पैदल सैनिक **जः** शूद्र **जाहम्** पपोटा टखने की हड्डी,—**तलम्** पैर का तलवा **त्र**, **त्रा**, **त्राणम्** जूता बूट,—**पः** वृक्ष [illegible] पादपच्छायामिव [illegible] कुमारसं० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] **पाश**, [illegible] का घूंघट **पाशिका** नूपुर, पायल **पाश** [illegible] पशुओं के पैरों को बांधने की रस्सी (शी) 1 [illegible] 2 चटाई 3 लता **पीठः**, **ठम्** पैर रखने का पीढ़ा - रघु० [illegible], कु० ३।११ **पूरणम्** 1 [illegible] पूर्ति करना 2 पादपूरक [illegible] पादपूरणे भेदे समुच्चये [illegible] **प्रक्षालनम्** पैर धोना --**प्रतिष्ठा** **नम्** पैर रखने का पीढ़ा **प्रहार** ठोकर, **बन्धनम्** बेड़ी **मुद्रा** पदचिह्न **मूलम्** 1 पपोटा 2 पैर का तलवा 3 एड़ी 4 पहाड़ की तलहटी 5 [illegible] करने की विनम्र रीति देवपाद[illegible] [illegible] [illegible] -**रक्षक** (नपुं०) पैरों की धूल, **रज्जु**, (स्त्री०) हाथी के पैर बांधने की चमड़े की रस्सी **रथी** [illegible] बूट, -**रोहः**, -**रोहणः** बड़ का पेड़ **वंदनम्** चरण वंदना, चरणों में प्रणाम **विरजम्** (नपुं०) [illegible] बूटा (पुं०) देवता,- -**शाखा** पैर की अंगुली - **शैल** छिरियार, पहाड़ की तलहटी में विद्यमान पहाड़ी

[illegible] हुआ।

पादविक [illegible]

पादात [illegible]

[illegible]

पादाति, **पादातिक** [illegible]

पादिक [illegible]

पादिन (वि०) [illegible] 2 [illegible]

पादिन (पुं०) [illegible]

पादुक (वि०) [illegible]

पादू (स्त्री०) [illegible] जूता [illegible] बनाने वाला।

पाद्य (वि०) [illegible] पैर [illegible] पाद्य [illegible] पाद्य [illegible]

पानम् [illegible] 1 [illegible] 2 मुंह लगाना [illegible] 3 पान के पात्र [illegible] 4 पान पात्र 5 तेज करना पैनाना 6 [illegible] म शराब पीकर बाला [illegible] **अगार** **आगार** [illegible] **अत्यय** अत्यधिक पीना **गोष्ठिका**, **गोष्ठी** 1 शराबियों की मण्डली 2 [illegible] - **प** (वि०) मुरापान [illegible] **पात्रम्** **भाजनम्** - **भाण्डम्** पान पात्र [illegible] **भू**, **भूमि** **भूमी** (स्त्री०) शराब पीने का स्थान [illegible] **मण्डलम्** शराबियों की मण्डली **रत** (वि०) सुरापान की लतवाला **वणिज** (पुं०) [illegible] **विभ्रम**, नशा -**शौंड** पियक्कड़, अत्यधिक पीने वाला।

पानकम् [पान + कन्] पानीय पेय, घूंट।

पानिक [पान + ठन्] शराब विक्रेता, कलाल।

पानिलम् [पान + इलच्] पान पात्र, प्याला

पानीयम् [पा + अनीयर्] 1 जल 2 पेय, घूंट पानीय- पीने के योग्य शर्बत आदि। सम० —नकुलः ऊद बिलाव —वर्णिका रेत, बालू —शाला —शालिका प्याऊ, जहाँ यात्रियों को पानी पिलाया जाय —पृ० प्रपा।

पान्थ [पन्थानं नित्यं गच्छति पथिन् + अण् पन्थादेश] यात्री बटोही —न पान्थ [illegible] मनसि [illegible] —[illegible] ७।

पाप (वि०) [illegible] 1 [illegible] पाप [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] अशुभ [illegible] [illegible] [illegible] नरक में प्रवृत्त, 2 [illegible] दुराचार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पापी दुष्ट दुरा [illegible] अधम (पु०) अधम दुष्ट अधम अधमूलिक (स्त्री०) [illegible] दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति आचार (वि०) पापमय आचरण वाला पापपूर्ण जीवन बिताने वाला दुष्टात्मा दुष्ट —आत्मन् दुष्टमना पापपूर्ण दुष्ट —(पु) पापी, —आशय, —चेतस् (वि०) दुष्ट इरादे वाला, दुष्ट हृदय, क्रूर, —कारिन्, —कृत् (वि०) पापपूर्ण, पापी अधम, —क्षय पापों का दूर करना, पाप का नाश —ग्रह दुष्ट ग्रह, ग्रहों (जैसे मंगल, शनि, राहु या केतु) —घ्न (वि०) पाप को दूर करने वाला प्रायश्चित्तकारी —चर्य 1 पापी 2 राक्षस —दृष्टि (वि०) बुरी निगाह वाला खोटी आँख वाला, —धी (वि०) दुष्ट हृदय, दुर्बुद्धि —नापित चालाक या दुष्ट नाई, —नाशन (वि०) पापनाशक या प्रायश्चित्तकारी —पतिः जार, उपपति, —पुरुषः दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य —फल (वि०) अनिष्टकर, अशुभ,— बुद्धि, —भाव —मति (वि०) दुष्टहृदय, दुष्ट दुश्चरित्र, —मय (वि०) पापपूर्ण, पापी— कु० ५।८३ —मुक्त (वि०) पाप से छूटा हुआ, पवित्र —मोचनम्, —विनाशनम् पाप का नाश —योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न (स्त्री० नि) नीच कुल में जन्म, —रोगः 1 कोई बुरा रोग 2 शीतला चेचक, —शील (वि०) दुष्ट कार्यों में प्रवृत्त होने वाला दुष्टप्रकृति, दुष्टहृदय, —संकल्प (वि०) दुष्टहृदय, दुरात्मा (ल्पः) दुष्ट विचार।

पापर्द्धिः [पापाय ऋद्धिर्यत्र —ब० स०] शिकार, आखेट।

पापल (वि०) [पाप + ला + क] पाप कमाने वाला पाप कर।

पापिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [पाप + इनि] पापपूर्ण दुष्ट बुरा (पु०) पाप करने वाला।

पापिष्ठ (वि०) [अतिशयेन पापी पाप + इष्ठन्] अत्यन्त पापपूर्ण, अधम दुष्टतम (पाप की अतिशयावस्था)।

पापीयस् (वि०) (स्त्री० —सी) [पाप + ईयसुन् अयमनयोः अतिशयेन पापी, तुलना अपेक्षाकृत पापी अपेक्षाकृत दुष्ट या अनिष्टकर

पाप्मन् (पुं०, [पा + मनिन् पुगागम] पाप, जुर्म दुष्टता अपराध [illegible] मनु० ६।८५

पामन् (पुं०) [पा + मनिन्] एक प्रकार का चर्मरोग खुजली। सम० —घ्न गंधक

पामन (वि०) [पामन् + न] खुजली रोग से ग्रस्त।

पामर (वि०) (स्त्री० —रा —री) [पामन् + र] 1 खुजली रोग से ग्रस्त 2 खुजली वाला अनिष्टकर दुष्ट 3 नीच गंवार अधम 4 मूर्ख जड़ 5 निर्धन असहाय —उ० पु० ४, —र मूढ, जड़बुद्धि —जल्पसि हेमाम्भसा —भामि० १।६२ 2 दुष्ट या नीच पुरुष 3 अधम नीच कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति।

पामा [पामन् + डाप् विकल्पेन दीर्घ] दे० ऊपर 'पामन्'। सम० —अरि: गंधक।

पायना [पा + णिच् + युच् + टाप्] 1 पीलाना 2 सींचना, तर करना 3 तेज करना, पैनाना।

पायस (वि०) (स्त्री० —सी) [पयस् + अण्] दूध या पानी से बना हुआ —सः —सम् 1 खीर, दूध में उबले हुए चावल मनु० ३।२७१, ५।७, याज्ञ० १।१७३, 2 तारपीन, —सम् दूध।

पायिकः (पु) पैदल सिपाही।

पायुः [पा + उण्, युक्] गुदा, मलद्वार —पायूपस्थम् मनु० २।९०, ९१ याज्ञ० ३।९२।

पाय्यम् [मा + ण्यत्, नि० पत्वम् युगागम] 1. जल 2. पेय पदार्थ 3 प्रवाह 4 परिमाण।

पारः —रम् [पर तीरं पर्यते अण्, पृ + घञ्, वा] 1 या नदी का परला —सामने वाला दूसरा किनारा — तत्र दु लोकवेलम्तु तर पारमस्त्र विज्ञ। —श० ३।१, विरहजलधेः पारमासादयिष्ये पञ्च० ११, हि० १। २०४ 2 किसी भी वस्तु का विरोधी पक्ष —कु० २।५८ 3. किसी वस्तु का अन्तिम किनारा, अन्तिम सीमा—वेणी० ३।२५ 4 किसी वस्तु का अधिकतम परिमाण, समष्टि—स पूर्वजन्मान्तरदृष्टपारा स्मरन्निव —रघु० १८।५०, (पारं गम्, —इ, या 1 पार जाना, ऊपर चढ़ना 2. निष्पन्न करना, पूरा करना,

जैसा कि 'प्रतिज्ञाया पारं गतः', पूर्ण रूप से आत्मसात् करना, प्रवीण होना — सकलशास्त्रपारगतः,—रः पारा (पारं दूसरी ओर परे कई बार समास में प्रयुक्त होता है — उदा० पारेगङ्गम् पारेसमुद्रम् गंगा के पार या समुद्र के पार)। सम०—अपारम् अवारम् दोनों तट, पास का और दूर का (रः) समुद्र, सागर —लोकपारावारमुत्तर्तुमलमनुवती दश० ४, भामि० ४।११ —अयनम् 1 पार जाना 2 पूरा पढ़ना, अनुशीलन, आद्योपान्त अध्ययन 3 समझना, सम्पूर्णता या किसी वस्तु की समष्टि जैसा कि 'ब्रह्मपारायण या मन्त्रपारायण' में, —अयणी सरस्वती देवी 2 चिन्तन मनन 3 कृत्य कर्म 4 प्रकाश, —काम (वि०) दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक —ग (वि०) 1 पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला 2 जो पार पहुंच चुका है जिसने किसी ग्रंथ का पूरा अध्ययन कर लिया है, पूर्णपरिचित पूरा ज्ञाता (संब० के साथ, या समास में) — मनु० २।१४८ याज्ञ० १।१११ 3 प्रकाण्ड विद्वान् —गत, —गामिन् (वि०) जो तट के दूसरी ओर पहुंच गया है, —दर्शक (वि०) 1 सामने के तट को दिखलाने वाला 2 जिसके आर पार दिखाई दे —दृश्वन् (वि०) 1 दूरदर्शी, बुद्धिमान्, समझदार 2 जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है जिसने किसी बात का पूर्ण रूप से जान लिया है — श्रुतिपारदृश्वा रघु० ५।२४।

पारक (वि०) (स्त्री० —की) [पॄ + ण्वुल्] 1 पार करने की योग्यता रखने वाला 2 आगे ले जाने वाला, बचाने वाला, सौंपने वाला 3 प्रसन्न करने वाला, संतुष्ट करने वाला।

पारक्य (वि०) [परस्मै कार्याय हितम् पर + ष्यञ्, कुक्] 1 पराया दूसरे का 2 दूसरों के लिए उद्दिष्ट 3 विरोधी शत्रुतापूर्ण —क्यम् परलोक साधन पवित्र आचरण।

पारग्रामिक (वि०) (स्त्री० —की) [परग्राम + ठञ्] पराया विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

पारञ्च् (पुं०) [पारं विच् + अञ्च्] सोना, स्वर्ण।

पारजायिक [परजायां गच्छति - परजाया + ठक्] व्यभिचारी पुरुष।

पारटीटः, —नः (पुं०) पत्थर, चट्टान।

पारण (वि०) [पॄ + ल्युट्] 1 पार ले जाने वाला, उद्धार करने वाला 2 बचाने वाला, उद्धार करने वाला — णः 1 बादल 2 संतोष, —णम् 1 निष्पन्न करना, पूरा करना 2 पाठ करना बांचना 3 व्रत (उपवास) के पश्चात् भोजन करना, व्रत खोलना — कारय पारणम् — विक्रम० १, २०।३९, १५ ३० भोजन करना — कु० ५।२२, (अध्यवहारकर्म महि०)।

पारतः [पारं तनोति पार + तन् + ड] पारा।

पारतन्त्र्यम् [परतन्त्र + ष्यञ्] पराश्रयता, अधीनता, अनुसेवा।

पारत्रिक (वि०) (स्त्री० —की) [परत्र + ठञ्] 1 परलोक सम्बन्धी 2 भावी जीवन के लिए उपयोगी।

पारत्र्यम् [परत्र ष्यञ्] भावी जीवन में प्राप्य फल परलोक फल मनु० ३।२३६।

पारद [पारं ददाति पार दा + क] पारा — निश्चल पारदाभ रम भामि० १।८२।

पारदारिक [परदार + ठञ्] व्यभिचारी परदारगामी याज्ञ० २।२९५।

पारदार्यम् [परदार + ष्यञ्] व्यभिचार परदारगमन मनु० ११।५९ याज्ञ० ३।२३५।

पारदेशिक (वि०) (स्त्री० —की) [परदेश + ठक्] विदेशी, बाहर के देश का —कः 1 विदेश का रहने वाला 2 यात्री।

पारदेश्य (वि०) (स्त्री० —श्यी) [परदेश + ष्यञ्] 1 विदेश से सम्बद्ध रखने वाला, विदेशी —श्यः 1 अन्य देश का रहने वाला 2 यात्री।

पारभूतम् [इसका शुद्ध रूप समझो 'प्राभृत' है] उपहार, भेंट।

पारमहंस्यम् [परमहंस + ष्यञ्] सर्वोत्कृष्ट संन्यास तथा मनन। सम० —परि (अध्या०), इस प्रकार के संन्यासी से सम्बन्ध रखने वाला।

पारमार्थिक (वि०) (स्त्री० —की) [परमार्थ + ठक्] 1 'परमार्थ' अर्थात् सर्वोपरि सत्य अथवा आध्यात्मिक ज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला 2 वास्तविक आवश्यक यथार्थ में विद्यमान सत्य, पारमार्थिक व्यावहारिकी प्रातीतिकी च —तत्त्व 3 परम का ध्यान रखने वाला —परमार्थ ... पारमार्थिक रघु० ११।३१, 3 सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम।

पारमिक (वि०) (स्त्री० —की) [परम + ठक्] सर्वोपरि, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान।

पारमित (वि०) [पारमित शब्द —अलुक् स०] 1 दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ 2 पार पहुंचा हुआ आर-पार गया गया हुआ 3 सर्वोत्कृष्ट।

पारमेष्ठ्यम् [परमेष्ठिन् + ष्यञ्] 1. सर्वोपरिता उच्चतम पद 2 राजचिह्न।

पारम्परीण (वि०) (स्त्री० —णी) [परम्परा + खञ्] परम्परा प्राप्त आनुवंशिक, वंशक्रमागत।

पारंपरीय (वि०) [परम्परा + छ] परम्पराप्राप्त, आनुवंशिक।

पारंपर्यम् [परम्परा + ष्यञ्] 1 आनुवंशिक क्रम अविच्छिन्न क्रम 2 परम्परा से प्राप्त शिक्षा, परम्परा 3 अन्तर्वर्तिता, मध्यस्थता। सम० —उपदेश परंपरा

प्राप्त शिक्षा, परम्परा (इस परम्परा को पौराणिक लोग प्रमाण मानते हैं)।

पारयिष्णु (वि०) [पार् + णिच् + इष्णुच्] 1. सुहावना, तृप्तिकारक 2. किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ।

पारलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [परलोकाय हितम् पर लोक + ठक् द्विपदवृद्धि] परलोक से संबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी,—धर्म एको मनुष्याणां सहाय पारलौकिक महा०, ५।९२।

पारवतः [=पारापत (पार + आ + पत् + अच्)] कबूतर।

पारवश्यम् [परवश + ष्यञ्] पराश्रयता, पराधीनता, अधीनता।

पारशव (वि०) (स्त्री०—वी) [परशु + अण्] 1. लोहे का बना हुआ 2. कुठार से संबंध रखने वाला, —वः 1. लोहा 2. शूद्र स्त्री में उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र —य ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामादुत्पादयेत्सुतम्, स पारयन्नेव शवस्तस्मात्पारशवः स्मृतः —मनु० ९।१७८ या परं शवात् ब्राह्मणस्यैव पुत्रः शूद्रापुत्रं पारशवं तमाहुः —महा० 3. दोगला, हरामी।

पारश्वधः, पारश्वधिकः [परश्वधः प्रहरणमस्य—अण्, परश्वध + ठक्] फरसा धारण करने वाला, कुठारधारी।

पारस (वि०) (स्त्री०—सी) [पारस्यदेशे भवः अण् वा० यलोपः] पारसी फारस देश का रहने वाला।

पारसिकः 1. फारस देश 2. फारस देश का, पारसीक।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा।

पारसीकः [पृषो० साधुः] 1. फारस देश 2. फारस देश का घोड़ा, —काः (पु०, ब०) फारस देश के रहने वाले —पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना रघु० ४।६०।

पारस्त्रैणेयः [परस्त्री + ढक्, इनङ्, उभय पदवृद्धि] दोगला, हरामी ('परस्त्री' से उत्पन्न)।

पारहंस्य (वि०) [परहंस + ष्यञ्] उस संन्यासी से संबंध रखने वाला जिसने सब इन्द्रियों का दमन कर लिया है।

पारा [पार + अच् + टाप्] एक नदी का नाम —तटुतिष्ठ पारासिंधुसंभेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशाव मा० ४।९।११।

पारापतः [पार + आ + पत् + अच्] कबूतर।

पारायणिकः [पारायण + ठञ्] 1. व्याख्यानदाता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला 2. शिष्य, विद्यार्थी।

पारावतः [पार + अव् + अच्] पत्थर, चट्टान।

पारावतः [=पारापत, पृषो० पस्य वः] 1. कबूतर, फाख्ता, पैंकी-पारावत अरसिलाकमनामकथाओं कामी भवत्यभुदित वद कोऽत्रहेतुः —भर्तृ० ३।१५४ मय० ३८ 2. बन्दर 3. पहाड़। सम० —अंघ्रिः,—पिच्छः एक प्रकार का कबूतर।

पारावारीण (वि०) [पारावार + ख] 1. दोनों ओर तक जाने वाला 2. पूर्ण रूप से जानकार।

पाराशरः, पाराशर्यः [पराशर + अण्, यञ् वा] पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण।

पाराशरिः [पराशर + इञ्] 1. शुकदेव का विशेषण 2. व्यास का नाम।

पाराशरिन् (पु०) [पाराशर + इनि] 1. साधु, संन्यासी 2. विशेषकर वह जो व्यास के शारीर सूत्रों के अध्येता हो।

पारिकांक्षिन् (पु०) [पारयति समापयति पारिः ब्रह्मज्ञानम् तत्कांक्षति पारि + कांक्ष् + णिनि] ध्यानमग्न या चिन्तनशील सन्त, सन्यासी जो आध्यात्मिक समाधि का भक्त हो।

पारिक्षितः [परिक्षित् + अण्] जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित् का पुत्र।

पारिखेय (वि०) (स्त्री०—यी) [परिखा + ढ] चारों ओर परिखा या खाई से घिरा हुआ।

पारिजातः, पारिजातकः [पारमस्य अस्ति इति पारी समुद्रः तस्माज्जात पारिजात कन्] 1. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक (कहते हैं कि समुद्र मन्थन से 'पारिजात' की उपलब्धि हुई, जिसे इन्द्र ने अपने नन्दन-कानन में लगाया, कृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे अपनी प्रिया सत्यभामा के बाग में लगाया) —कल्पद्रुमाणामिव पारिजातः रघु० ६।६, १०।११ १७।७, 2. मूंगे का पेड़ 3. सुगन्ध।

पारिणाय्य (वि०) (स्त्री०—य्यी) [परिणय + ष्यञ्] 1 विवाह से संबंध रखने वाला 2 विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ, —य्यम् 1 विवाह के अवसर पर स्त्री को मिली हुई सम्पत्ति —यातु पारिणाय्यं स्त्रियो विभजेरन् - वसिष्ठ 2 विवाह व्यवस्था।

पारितथ्या [परितथ्य + ष्यञ्] बालों को बांधने के लिए मोतियों की लड़ी।

पारितोषिक (वि०) (स्त्री०—की) [परितोष + ठञ्] सुखकर, तृप्तिकर, सान्त्वनाप्रद, —कम् उपहार, पुरस्कार —गृह्यतां पारितोषिकमिदमङ्गुलीयकम् —मृच्छ० ५।

पारिध्वजिकः [परितः ध्वजाः परिध्वजा + ठक्] झंडा बरदार, झंडा ले चलने वाला।

पारीन्द्रः [=पारीन्द्र, पृषो० ह्रस्व] सिंह, केसरी।

पारिपन्थिकः [परिपन्थ + ठक्] लुटेरा, डाकू।

पारिपाट्यम् [परिपाटी + ष्यञ्] 1 क्रम, प्रणाली, रीति (परिपाटी) 2. नियमितता।

पारिपार्श्वम् [पारिपार्श्व + अण्] अनुचरवर्ग, सेवक अनुयायी।

पारिपार्श्वक, पारिपार्श्विक [परिपार्श्व + कन्, परिपार्श्व + ठक्] 1 सेवक, टहलुआ 2 नाटक में सूत्रधार का सहायक, नान्दीपाठ के अवसर पर एक अन्तर्वर्ती — प्रविश्य पारिपार्श्वक — रतिकमिति पारिपार्श्विक नारभयसि कुशीलवैः सह गीतिनम् वेणी० १।

पारिपार्श्विका [पारिपार्श्विक + टाप्] दासी, सेविका, निजी नौकरानी।

पारिप्लव (वि०) [परिप्लव + अण्] 1 इधर उधर घूमने वाला, डावांडोल, चंचल, अस्थिर — [illegible] पारिप्लवनेत्रया नृप रघु० ३।११ 2 तैरता, बहता रघु० १३।३०, १६।६१ 3 क्षुब्ध, उद्विग्न, परेशान, घबराया हुआ उत्तर० ४।२? [illegible] बेचैनी [illegible]।

पारिप्लाव्यम् [परिप्लव + ष्यञ्] 1 [illegible] कांपनी, बेचैनी, क्षोभ 2 कपकपी, थरथराहट।

पारिबर्हः [परिबर्ह + अण्] वैवाहिक उपहार।

पारिभद्रः [परिभद्र + अण्] 1 मूंगे का वृक्ष 2 देवदारु वृक्ष 3 सरल वृक्ष 4 नीम का पेड़।

पारिभाव्यम् [परिभू + ष्यञ्] जमानत, प्रतिभूति, जमानत के रूप में रक्खी गई वस्तु।

पारिभाषिक (वि०) (स्त्री०—की) [परिभाषा + ठक्] 1. चालू, सामान्य प्रचलित 2. (शब्द आदि) तकनीकी, किसी विशेषार्थ का संकेतक।

पारिमाण्डल्यम् [परिमण्डल + ष्यञ्] अणु, सूर्य की किरण में विद्यमान रजकण भाषा० १५।

पारिमुखिक (वि०) (स्त्री०—की) [परिमुख + ठक्] मुंह के सामने का, निकटवर्ती, पास का।

पारिमुख्यम् [परिमुख + ष्यञ्] उपस्थिति, समीप होना।

पारियात्र (त्र) कः (पुं०) सात मुख्य पर्वत शृंखलाओं में से एक रघु० १८।१६, दे० 'कुलाचल'।

पारियात्रि (त्रि) कः [पारियात्र + ठक्] 1 पारियात्र पहाड़ का निवासी 2. पारियात्र पहाड़।

पारियानिकः [परियान + ठक्] यात्रा पर जाने के लिए गाड़ी।

पारिरक्षकः [परिरक्षति आत्मानम् - परि + रक्ष् + ण्वुल् + अण्] साधु, संन्यासी।

पारिवित्त्यम्, पारिवेत्र्यम् [परिवित्ति + ष्यञ्, परिवेत्तृ + ष्यञ्] छोटे भाई का विवाह हो जाने पर भी बड़े भाई का अविवाहित रहना।

पारिव्राजकम्, पारिव्राज्यम् [परिव्राजक + अण्, परिव्राज् + ष्यञ्] साधु संन्यासी का भ्रमणशील जीवन, संन्यास।

पारिशीलः [परिशील + अण्] रोटी, पूड़ा, मालपुआ (दे० अपूप)।

पारिशेष्यम् [परिशेष + ष्यञ्] बचा हुआ, शेष बाकी।

पारिषद (वि०) (स्त्री०—दी) [परिषद् + अण्] सभा या परिषद् से संबंध रखने वाला, —दः 1 सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का सदस्य, परामर्शक 2 राजा का सहचर, —दाः (पुं०, ब० व०) देव का अनुचरवर्ग।

पारिषद्यः [परिषद् + ण्य] सभा में विद्यमान व्यक्ति, दर्शक।

पारिहारिकी [परिहार + ठक् + ङीप्] एक प्रकार की बुझौवल, पहेली।

पारिहार्यः [परि + हृ + ण्यत्, अण्] कड़ा, कंगन, लेना, ग्रहण करना।

पारिहास्यम् [परिहास + ष्यञ्] हंसी ठिठोली, ठट्ठा, हंसी मज़ाक।

पारी [पृ + णिच् + घञ्, ङीप्] 1 हाथी के पैर को बांधने का रस्सा 2 जल का परिमाण 3 जलपात्र, सुराही, प्याला 4 दूध की बाल्टी शि० १२।४०

पारीक्षित पारिक्षित।

पारीण (वि०) [पार + ख] 1 दूसरी ओर रहने या जाने वाला 2 (समास के अन्त में) सुविज्ञ, सुपरिचित — त्रिवर्गपारीणमसौ भवन्तमध्यासयन्नासनमेकमिन्द्रः भट्टि० २।४६।

पारीणह्यम् [परिणह् + ष्यञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] घर का सामान, घर वर्तन आदि।

पारीन्द्रः [पारि [illegible]] 1 सिंह, 2 अजगर, बड़ा सांप।

पारीरणः [पारी जलपूरे रण शब्द] 1 कछुवा 2 छड़ी, लाठी।

पारुः [पिबति रसान्—पा + रु] 1. सूर्य 2 अग्नि।

पारुष्यम् [परुष + ष्यञ्] 1 खुरदरापन, ऊबड़खाबड़पन, कड़ापन 2 कठोरता, क्रूरता, (स्वभाव की) निर्दयता 3 गालीगलौज, गाली देना, बुराभला कहना, अश्लील भाषा, अपमान — मनु० १।६?, याज्ञ० २।१२,७२ 4 (वाणी से या कर्म से) हिंसा मनु० ८।६,७२, ७।४८,५१ 5 इन्द्र का उद्यान 6 अगर, —ष्यः बृहस्पति का विशेषण।

पारोवर्यम् [परावर + ष्यञ्] परंपरा।

पार्कटम् [पार्के पटति इति अच्, पृषो० साधुः] कुश, घास।

पार्जन्य (वि०) [पर्जन्य + अण्] वृष्टि से संबंध रखने वाला।

पार्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी) [पर्ण + अण्] 1 पत्तों से संबंध रखने वाला या पत्तों का बना हुआ 2. पत्तों से उठाया हुआ (जैसे कि कर)।

पार्थः [पृथा + अण्] 1 युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का मातृकुलसूचक नाम, परन्तु अर्जुन का विशेषकर स — भग० १।२५, और दूसरे अनेक स्थल 2 राजा। सम० —सारथिः कृष्ण का विशेषण।

पार्थक्यम् [पृथक् + ष्यञ्] पृथकता, अलगाव, अलग २ होने का भाव, अकेलापन, अनेकता।

पार्थवम् [पृथु + अण्] विशालता, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।

पार्थिव (वि०) (स्त्री०—वी) [पृथिवी + अण्] 1 मिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी संबंधी, भूमि-संबंधी, पृथ्वी से संबंध रखने वाला —पार्थिवं शरीरम् —रघु० १३।६८ 2 पृथ्वी पर शासन करने वाला 3 राजसी, राजकीय, —वः 1 पृथ्वी पर रहने वाला 2 राजा, प्रभु —रघु० ८।१ 3 मिट्टी का बर्तन। सम० —आत्मजः —सुतः राजकुमार, —आत्मजा —कन्या —नन्दिनी —सुता राजा की पुत्री, राजकुमारी।

पार्थिवी [पार्थिव + ङीप्] 1 सीता का विशेषण, पृथ्वी की पुत्री —पार्थिवीमुद्वहद्रघूद्वहः —रघु० ११।५४ 2 लक्ष्मी का विशेषण।

पार्दरः (पुं०) 1 मुर्दों का खाना 2 दलदल, गारा।

पार्यन्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [पर्यन्त + ठक्] अंतिम, आखिरी, निर्णायक।

पार्वण (वि०) (स्त्री०—णी) [पर्वन् + अण्] 1 पर्वसंबंधी —रघु० ११।८२ 2 वृद्धि को प्राप्त होता हुआ, बढ़ता (जैसे कि चन्द्रमा का), —णः पर्व के अवसर पर (अमावस्या के दिन) सभी पितरों के निमित्त आहुति देने का सामान्य संस्कार।

पार्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [पर्वत + अण्] 1 पहाड़ पर रहने या उगने वाला 2 पहाड़ पर रहने वाला, पहाड़ से प्राप्त होने वाला 3 पहाड़ी।

पार्वतिकम् [पर्वत + ठञ्] पहाड़ों का समुच्चय, पहाड़ श्रृंखला।

पार्वती [पार्वत + ङीप्] 1 दुर्गा का नाम, हिमालय की पुत्री के रूप में उत्पन्न (आगे चलकर शिव से ब्याह गई) —कु० १।२१, तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रियां बन्धुजनो जुहाव —कु० १।२६ 2 ग्वालिन 3 द्रौपदी का विशेषण 4 पहाड़ी नदी 5 एक प्रकार की सुगंधयुक्त मिट्टी। सम० —नन्दनः 1 कार्तिकेय की उपाधि 2 गणेश का विशेषण।

पार्वतीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पर्वत + छ] पहाड़ में रहने वाला, —यः 1 पहाड़ी 2 एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम (ब० व०) —तत्र जन्यं रघोर्घोरं पार्वतीयैर्गणैरभूत् —रघु० ४।७७।

पार्शव (वि०) (स्त्री०—वी) [पर्शु + अण्] फरसे पर उत्पन्न, —वः फरसे से लड़ने वाला योद्धा।

पार्शुक [पर्शु + अण्] कुठार से सुसज्जित योद्धा।

पार्श्वम् ,—र्श्वः [पर्शूनां समूहः] 1 कांख से नीचे का शरीर का भाग, स्थान जहाँ पसलियाँ हैं —शयने सन्निषण्णैकपार्श्वाम् —मेघ० ८९ 2 पास, कोख, (सजीव और निर्जीव पदार्थों का) पार्श्वम् —पिठरं क्वथदतिमात्रं निजपार्श्वानेव दहतितराम् —पंच० १।३२८ 3 आस-पास —र्श्वः शिव का विशेषण, —र्श्वम् 1 पसलियों का समूह 2 चालबाजी से भरी हुई तरकीब, असम्मानजनक उपाय (पार्श्वम् क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है 'निकट' 'के पास से' 'की ओर' —श० ३।८ इसी प्रकार पार्श्वात् 'की ओर से' 'से दूर' पार्श्वे 'निकट' नजदीक, पास में —न स्थिरे किंचिदालक्ष्यमपि न पार्श्वे स्थमास्त —श० १।९, भर्तृ० २।३७)। सम० —अनुचरः टहलुआ सेवक —रघु० ९।९, —अस्थि (नपुं०) पसली, —आगत (वि०) जो बहुत निकट आ गया है, —आसन्न (वि०) पास ही विद्यमान —उदरप्रियः केकड़ा, —गः टहलुआ, सेवक —रघु० ९।७२, —ग (वि०) पार्श्ववर्ती, पास ही स्थित सेवा करने वाला 2 परिचारक, —चरः सेवक, टहलुआ —रघु० ५।२९, १६।२९ —दः टहलुआ सेवक —देशः (शरीर का) कोख, पांसू, —परिवर्तनम् 1 करवट बदलना 2 भाद्रपदशुक्ल ११ में होने वाला पर्व (आज के दिन समझा जाता है कि विष्णु करवट बदलते हैं), भाग, कोख, पासू —वर्तिन् (वि०) 1 पास रहने वाला, उपस्थित, सेवा में लगा हुआ 2 पास ही लगा हुआ, —शय (वि०) पास ही सोने वाला, बगल में सोने वाला —शूल —लम् कोख में होने वाला शूल, एक रोग का आक्रमण —स्थ (वि०) पार्श्ववर्ती, नजदीक, निकटवर्ती, समीपस्थ, —स्थः 1 सहचर 2 सूत्रधार का सहायक —तु० पारिपार्श्वक।

पार्श्वक (स्त्री० —की) [पार्श्व + कन्] ठग, प्रवंचक, चोर।

पार्श्वतः (अव्य०) [पार्श्व + तस्] निकट, नजदीक, समीप, पास —रघु० १०।३१।

पार्श्विक (वि०) (स्त्री० —की) [पार्श्व + ठक्] पसलियों से संबंध रखने वाला, —कः 1 पक्ष लेने वाला आदमी, साझेदार 2 साथी, सहचर 3 जादूगर।

पार्षत (वि०) (स्त्री०—ती) [पृषत + अण्] चित्तकबरे हरिण से संबंध रखने वाला —मनु० ३।२६९, याज्ञ० १।२५८, —तः राजा द्रुपद और उसके पुत्र धृष्टद्युम्न का पितृकुलसूचक नाम।

पार्षती [पार्षत + ङीप्] 1 द्रौपदी का विशेषण 2 दुर्गा की उपाधि।

पार्षद (स्त्री०) [परिषद् पृषो०] सभा।

पार्षदः [पार्षद महति अण्] 1. साथी, सहचर 2. टहलुआ अनुचरवर्ग 3. सभा में उपस्थित, दर्शक, सभासद् ।

पार्षद्यः [पर्षद्+ण्य] सभासद्, सदस्य ।

पार्ष्णिः (पुं०, स्त्री०) [पृष् + नि, नि० वृद्धि] 1 एड़ी —उद्वेजयत्यंगुलिपार्ष्णिभागान् - कु० १।११, पार्ष्णिप्रहार—का० ११९ 2. सेना की पिछाड़ी 3. पिछाड़ी, पिछला भाग—शुद्धपार्ष्णिरयान्वित रघु० ४।२६, 'जिसकी पिछाड़ी शत्रुरहित हो गई है' 4 ठोकर (स्त्री०) 1. व्यभिचारिणी स्त्री 2. कुन्ती का विशेषण । सम०—ग्रहः अनुयायी,- ग्रहणम् शत्रु की पीठ पर आक्रमण करना,- ग्राहः पृष्ठवर्ती शत्रु 2 पृष्ठवर्ती सेना का सेनापति 3. मित्रराजा जो किसी राजा की सहायता करे—मनु० ७।२०७, घातः ठोकर कि० १७।५०,—त्रम् पृष्ठरक्षक, पीछे रहने वाली सेना की टुकड़ी, प्रारक्षित,—वाहः बाह्यवर्ती घोड़ा ।

पालः [पाल्+अच्] 1. प्ररक्षक, अभिभावक, संरक्षक —यथा गोपाल, वृष्णिपाल आदि 2. ग्वाला—विवादः स्वामिपालयोः - मनु० ८।५, २२९, २४० 3 राजा 4. पीकदान । सम०—घ्नः कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी ।

पालकः [पाल्+ण्वुल्] 1. अभिभावक, प्ररक्षक 2. राजकुमार, राजा, शासक, प्रभु 3. साईस, घोड़े का रखवाला 4. घोड़ा 5. चित्रक वृक्ष 6. पालक पिता ।

पालकाप्यः (पुं०) 1. एक ऋषि करेणु का पुत्र, (इन्होंने ही सर्वप्रथम हस्तिविज्ञान की शिक्षा दी) 2. हस्तिविज्ञान ।

पालंकः [पाल्+क्विप्=पाल्+अंक्+अच्] 1. पालक का साग 2. बाजपक्षी,—की एक गंधद्रव्य ।

पालंक्यः,—क्या [पालंक+ष्यञ्, स्त्रियां टाप् च] एक सुगंध द्रव्य ।

पालन (वि०) [पाल्+ल्युट्] रक्षा करने वाला, संरक्षण देने वाला, कि० ११९,—नम् 1 प्ररक्षण, संरक्षण पालना, पोसना, लालन-पालन करना—लक्ष्य° रघु० १९।३, इसी प्रकार प्रजा° शिश्° आदि 2 बनाये रखना, अनुपालन करना, (वचन, प्रतिज्ञा, आदि को) पूरा करना 3 ताजी ब्याई हुई गौ का दूध खीस ।

पालयितृ (पुं०) [पाल्+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, संरक्षक, परवरिश करने वाला—रघु० २।६९।

पालाश (वि०) (स्त्री०—शी) [पलाश+अण्] 1 ढाक का, ढाक से उत्पन्न 2 ढाक की लकड़ी का बना हुआ, मनु० २।४५ 3 हरा, —शः हरा रंग । सम०—खंडः, —षण्डः मगध देश का विशेषण ।

पालिः, —ली (स्त्री०) [पाल्+इन्] कान का सिरा

पालिः,—ली [स्त्री०] [पाल्+इन्] 1 कान का सिरा —श्रवणपालि- गीत० ३ 2. किनारा, गोट, मगजी —शि० ३।५५ 3. तेज सिरा, धार या नोक —भामि० २।३ 4. हद, सीमा 5. श्रेणी, पंक्ति, —विपुलपुलकपाली—गीत० ६, शि० ३।५९ 6. धब्बा, चिह्न 7. बाँध, पुल 8. गोद, अंक 9. आयताकार तालाब 10. अध्ययनकाल में गुरु द्वारा छात्र का भरण-पोषण 11 जूं 12 प्रशंसा, स्तुति 13 वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मूछें हों ।

पालिका [पालि+कन्+टाप्] 1 कान का सिरा 2 तलवार या किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की तेज धार 3 पनीर या मक्खन आदि काटने की छुरी ।

पालित (भू० क० कृ०) [पाल्+क्त] 1 प्ररक्षित, संरक्षित, आरक्षित 2. पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ ।

पालित्यम् [पलित+ष्यञ्] वृद्धावस्था के कारण बालों की सफेदी, धवलता ।

पाल्वल (वि०) (स्त्री—ली) [पल्वल+अण्] पोखर में उत्पन्न, तलैया से प्राप्त ।

पावकः [पू+ण्वुल्] 1. आग- पावकस्य महिमा स गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि यः रघु० ११।७५, ३।९, १६।८७ 2 अग्नि देवता 3. बिजली की आग 4. चित्रक वृक्ष 5 तीन की संख्या । सम० आत्मजः कार्तिकेय का विशेषण 2 सुदर्शन नामक ऋषि ।

पावकिः [पावक+इञ्] कार्तिकेय का विशेषण ।

पावन (वि०) (स्त्री०—नी) [पू+णिच्+ल्युट्] 1 निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, शुद्ध करने वाला, पवित्र बनाने वाला -पावनस्तामभितो निवसन्महरिणा गौरीगुरो, पावना — श० ६।१७, रघु० १५।१०१ १९।५३, भग० १८।५, मनु० २।२६, याज्ञ० ३।३०७ 2. पवित्र, पुनीत, विशुद्ध, परिष्कृत — कु० ५।१७,—नः 1 आग 2 गंध द्रव्य 3. सिद्ध 4 व्यास कवि,—नम् 1. पवित्री करण, विशुद्धीकरण—पदनखनीरजनितजनपावन—गीत० १ 2 तप 3. जल 4. गोबर 5 सम्प्रदायसूचक तिलक । सम०—ध्वनिः शंखनाद ।

पावनी [पावन+ङीप्] 1 पवित्र तुलसी 2 गाय 3 गंगा नदी ।

पावमानी [पवमानम् अधिकृत्य प्रवृत्तम्-पव०+अण्+ङीप्] विशिष्ट वैदिक ऋचाओं का विशेषण ।

पावरः (पुं०) पासे का वह पहलू जिस पर 'दो' की संख्या अंकित हो, पासे को विशेष ढंग से फेंकना, पावरपतनाच्च शोधित शरीरः मृच्छ० २।८ ।

पाशः [पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्] 1 डोरी, शृंखला, बेड़ी फंदा -पाशाकृष्टश्च निवसन्नगजात पाद- म० १।३२, बाहुपाशेन व्यापादिता मृच्छ० ९, रघु० ६।८४ 2 जाल, गुदकैदार शिकंजा, या फंदा 3. वरुण का (वरुण के द्वारा) शस्त्र की भांति प्रयुक्त होता है—कु० २।२१ 4 पाँसा—रघु०

६।१८ पर मल्लि० 5 किसी बुनी हुई वस्तु की किनारी 6. (समास के अन्त में) 'पाश' का अर्थ होता है (क) तिरस्कार, अपमान - यथा 'छात्रपाश' (निकम्मा विद्यार्थी) में, वैयाकरण०, भिषक्० आदि (ख) सौन्दर्य, मनोहरता यथा लैलाक्षमुद्रा म च कर्णपाश उत्तर० ६।२३, (ग) बहुतायत, ढेर, राशि ('केश' अर्थ द्योतक शब्द के पश्चात्) केशपाश (केशकलाप)। सम० -अंत: कपडे का पृष्ठभाग, -क्रीडा जूआ खेलना, पासे के साथ खेलना, -धर:, -पाणि: वरुण का विशेषण,- बद्ध (वि०) पिंजड़े में फंसा हुआ, जाल में पकड़ा हुआ, फंदे में पड़ा हुआ, -बंध: बंधन, जाल, फांसी की डोरी,- बंधक: बहेलिया, पक्षी पकड़ने वाला, -बंधनम् जाल, -भृत् (पु०) वरुण का विशेषण—रघु० २।९,—रज्जु: (स्त्री०) बेड़ी रस्सी, -हस्त: 'हाथ में जाल पकड़े हुए' वरुण का विशेषण।

पाशक: [पाशयति पीडयति—पश्+णिच्+ण्वुल्] अक्ष, पांसा। सम० -पीठम् जूआ खेलने की चौकी।

पाशनम् [पश्+णिच्+ल्युट्] 1 बंधन, फंदा, जाल पुलिन्दा या मोफिया 2 डोरी, चाबुक या कोटे में लगी चमड़े की डोरी या तस्मा 3 जाल में फंसाना, पिंजरे में बन्द करना।

पाशव (वि०) (स्त्री०—वी) [पशु+अण्] जानवरों से प्राप्त, या संबंध रखने वाला, —वम् रेवड़, लहड़ा। सम० पालनम् पशुचारण या चरागाह, गोचरभूमि

पाशित (वि) [पश्+णिच्+क्त] बद्ध, जाल में फंसा, बेड़ियों से जकड़ा हुआ।

पाशिन् (पु०) [पाश+इनि] 1 वरुण का विशेषण 2 यम का विशेषण 3 हिरणों को पकड़ने वाला बहेलिया, जाल में फंसाने वाला।

पाशुपत (वि०) (स्त्री० —ती) [पशुपति+अण्] 1 पशुपति से प्राप्त, या पशुपति से सम्बद्ध अथवा पशुपति के लिए पावन —त: 1. शिव का अनुयायी और पूजक 2 पशुपति के सिद्धान्तों का पालन करने वाला, —तम् पाशुपत सिद्धान्त (दे० सर्व०)। सम० —अस्त्रम् पशुपति या शिव द्वारा अधिष्ठित एक अस्त्र का नाम (जिसे अर्जुन ने शिव से प्राप्त किया था)।

पाशुपाल्यम् [पशुपाल+ष्यञ्] पशुओं का पालना, ग्वाले की वृत्ति या धंधा।

पाश्चात्य (वि०) [पश्चात्+त्यक] 1 पिछला 2 पश्चिमी —रघु० ४।६२ 3 बाद वाला 4 बाद में होने वाला —त्यम् पिछला भाग।

पाश्या [पाश+य+टाप्] 1 [illegible] 2 रस्सियों या बेड़ियों का समूह।

पाषंड [पा त्रयीधर्म त षण्डयति-पा+षण्ड्+अच्]—पाखण्ड मनु० ५।९०, ९।२२५।

पाषंडक:, पाषंडिन् (पु०) [पाषंड+कन्, पा+षंड्+णिनि] नास्तिक, धर्मभ्रष्ट, धर्म के नाम पर झूठा आडंबर रचने वाला धूर्त व्यक्ति,—याज्ञ० १।१३० २।७०।

पाषाण: [पिनष्टि पिष् मयूर्स से आनच् पृषो० साधु०] पत्थर, —णी बाट का काम देने वाला छोटा पत्थर। सम० —दारक:, —दारण: टांकी, —संधि: चट्टान के अन्दर गुफा या दरार, —हृदय (वि०) पत्थर की भांति कठोरहृदय, क्रूर, निष्ठुर।

पि (तुदा० पर० पियति) जाना, हिलना-जुलना।

पिक: [अपि कायति शब्दायते—अपि+कै+क, अकार-लोप] कोयल —कुसुमशरासनशासनवंदिनि पिकनिकरे भज भावम्—गीत० ११ या—उन्मीलति कुहू कुहूरिति कलोत्ताला पिकानां गिर: गीत० १। सम० —आनन्द:,—बांधव: वसन्तऋतु,—बंधु:, —राग:, —वल्लभ: आम का पेड़।

पिच्छक: [पिक इत्यव्यक्तशब्देन कायति पिक+कै+क] 1 २० वर्ष की आयु का हाथी 2 हाथी का बच्चा।

पिंग (वि०) [पिञ्ज् वर्णे अच् कुत्वम्] लालिमा लिये भूरा रंग, खाकी, पीला-लाल रंग, अन्तर्निविष्टा-मलपिंगतारम् (विलोचनम्) कु० ७।३३, —ग: 1 खाकी या भूरा रंग 2 भैंसा 3 चूहा, —गा 1 हल्दी 2 केसर 3 एक प्रकार का पीला रोचन 4. चंडिका की उपाधि। सम० —अक्ष (वि०) ललाई लिये भूरे रंग की आंखों वाला, लाल आंखों वाला, (—क्ष:) 1 लंगूर 2 शिव का विशेषण, —ईश: शिव की उपाधि, —ईश: अग्नि का विशेषण, —कपिशा तेल चट्टा, —कपिश (पु०) केकड़ा, —जट: शिव का विशेषण, —सार: हरताल,- स्फटिक: 'पीला बिल्लौर', गोमेद रत्न।

पिंगल (वि०) [पिङ्ग० - सिध्मा० लच्, पिंगलाति ला+क वा तारा०] ललाई लिये भूरे रंग का पीताभ, भूरा खाकी रघु० १२।७१, मनु० ३।८—ल: 1 खाकी रंग 2 अग्नि 3 बंदर 4 एक प्रकार का नेवला 5 छोटा उल्लू 6 एक प्रकार का नाग 7 सूर्य के एक अनुचर का नाम 8 कुबेर के एक कोष का नाम 9 एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम [illegible] उसकी कृति [illegible] [illegible] पिंगलम् पंच० १।३३, —ला 1 [illegible] 2 [illegible] रंग का [illegible] —ला 1 एक प्रकार [illegible] पाक्षस का वृक्ष 3 एक प्रकार [illegible] [illegible] वर्तिका 4 [illegible]

गणिका जो अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध है (भागवत में उल्लेख है कि किस प्रकार उस गणिका ने तथा अजामिल ने इस लोक के बंधनों से मुक्ति पाई)। सम० - अक्षः शिव का विशेषण।

पिङ्गलिका [पिङ्गल + ठन् + टाप्] 1 एक प्रकार का सारस 2 एक प्रकार का उल्लू।

पिङ्गाशः [पिङ्ग + अश् + अण्] 1 गाँव का मुखिया या मालिक 2 एक प्रकार की मछली, —शम् प्राकृत स्वर्ण, —शी नील का पौधा।

पिचण्डः, —ण्डम्, पिचिण्डः, —ण्डम् [अपि + चण्ड् + घञ्, अकारलोप., पृषो०] पेट, उदर।

पिचण्डकः [पिचण्ड + कन्] पेटू, औदरिक।

पिचिण्डिका [पिचिण्ड + ठन् + टाप्] पिछली टांग की पिण्डली।

पिचिण्डिल (वि०) [पिचिण्ड + इलच्] मोटे पेट वाला, स्थूलकाय।

पिचुः [पच् + उ पृषो० तारा०] 1 रुई 2 एक प्रकार का बाट, (दो तोले के बराबर) कर्ष 3 एक प्रकार का कोढ़। सम० — तूलम् रुई, —मंदः, —मर्दः नाम का पेड़ — शि० ५।६६।

पिचुलः [पिचु + ला + क] 1 रुई 2 एक प्रकार का जल काक या समुद्री कौवा।

पिच्चट (वि०) [पिच्च् + अटन्] दबाकर, चपटा किया हुआ, —टः आँखों की सूजन नेत्र-प्रदाह, —टम् 1. रांगा, जस्ता 2. सीसा।

पिच्छा [पिच्छ् + अच् + टाप्] १६ मोतियों की एक लड़ जिसका वजन एक धरण (मोतियों की विशेष तोल) हो।

पिच्छम् [पिच्छ् + अच्] 1 पूँछ का पर (जैसे मोर का) 2. मोर की पूंछ शि० ४।५० 3 बाण के पंख 4 बाजू 5 कलगी, शिखा, —च्छः, पूंछ —च्छा 1 ग्यास, शिलाफ, कोष 2 चावल का मांड 3 पंक्ति, श्रेणी 4 ढेर, समुच्चय 5 शाल्मलीवृक्ष के पौधे का गोंद या रस 6. केला 7 कवच 8 टांग की पिंडली 9 सांप का विषमय दांत 10 सुपारी। सम० - बाणः बाज, श्येन।

पिच्छल (वि०) [पिच्छ + लच्] 1 चिपचिपा, चिकना फिसलनवाला, लसलसा तदनु मदनशाक नवोद्गम पिच्छलानि च दधीनि — कुमार० ? 2. पूंछवाला —लः, —ला, —लम्, 1 चावलों का मांड, भुक्तमंड 2. चावल की कांजी में पका भात 3 मलाई मक्खन आदि। सम० — त्वच् (पुं०) नारंगी का पेड़ या छिलका।

पिञ्ज् i (अदा० आ० — पिङ्क्ते) 1. हल्के रंग की पुट देना, रंगना 2 स्पर्श करना 3 सजाना ii (चुरा० उभ० पिञ्जयति—ते) 1. देना 2 लेना 3. चमकना 4. शक्तिशाली होना 5 रहना, बसना 6 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना।

पिञ्जः [पिञ्ज् + घञ्, अच् वा] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3 हत्या, वध 4 ढेर, —ञ्जम् सामर्थ्य, शक्ति, —ञ्जा 1 क्षति, चोट 2 हल्दी 3 कपास।

पिञ्जटः [पिञ्ज् + अटन्] कीट, आँख की कीच।

पिञ्जनम् [पिञ्ज् + ल्युट्] धुनकी, रूई धुनने का धनुषाकार उपकरण।

पिञ्जर (वि०) [पिञ्ज् + अरच्] ललाई लिये पीले रंग का खाकी, सुनहरी रंग का, —जिसका प्रदीपस्य सुवर्णपिञ्जरा —मृच्छ० ३।१७, रघु० १८।४०, —रः ललाई लिये पीला या खाकी भूरा रंग 2. पीला रंग —रम् 1 सोना 2 हरताल 3 अस्थिपंजर 4 पिंजरा।

पिञ्जरकम् [पिञ्जर + कन्] हरताल।

पिञ्जरित (वि०) [पिञ्जर + इतच्] पीले रंग का, हल्के भूरे रंग का।

पिञ्जल (वि०) [पिञ्ज् + कलच्] 1. भौंचक्का, भयभीत, व्याकुल, विस्मित 2 (सेना आदि) आलोड़ित, —लम् 1 हरताल 2 कुश का पत्ता।

पिञ्जालम् [पिञ्ज् + आलच्] सोना, सुवर्ण।

पिञ्जिका [पिञ्ज + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] पूनी, रूई का बना गल्हा जिससे कातने पर सूत निकलता है।

पिञ्जूषः [पिञ्ज् + ऊषण्] कान का मैल।

पिञ्जेटः [= पिञ्जट, पृषो०] आंखों की कीच, ढीड़।

पिञ्जोला [पिञ्ज् + ओल + टाप्] पत्तों की खड़खड़ाहट, पत्तों का खड़-खड़ शब्द करना।

पिटः [पिट् + क] सन्दूक, टोकरी —टम् 1. घर, कुटीर 2. छप्पर, छत।

पिटकः, —कम् [पिट + कन्] 1 सन्दूक, टोकरी 2 खाती 3 फुंसी फफोला, छोटा फोड़ा नासूर (इस अर्थ में 'पिटका' तथा 'पिटिका' भी) —अन्न गण्डस्योपरि पिटका संवृत्ता — श० २ 4 इन्द्र के ध्वज पर एक प्रकार का आभूषण।

पिटकया [पिटक + य + टाप्] सन्दूकों का ढेर।

पिटाकः [पिट + काक बा०] पिटारी, सन्दूक।

पिट्टकम् [= किट्टक, पृषो० कस्य पः] दांतों का जमा हुआ मैल।

पिठरः, —रम् [पिठ् + करन्] बर्तन, तसला, कड़ाही ('पिठरी' भी इसी अर्थ में) —पिठर क्वथदतिमात्र निजपार्श्वानिव दहतितरां — पञ्च० १।३२४, जठरपिठरी दुष्पूरेयं करोति विडम्बनाम् — भर्तृ० ३।११६, —रम् रई का डंडा।

पिठरकः, —कम् [पिठर + कन्] बर्तन, तसला। सम० — कपालः, —लम् ठीकरा, खपड़ी, खप्पर।

पिटक:,—का [पीड्+ण्वुल्, नि० साधु] छोटा फोड़ा, फुंसी; फफोला।

पिंड् (भ्वा० आ०, चुरा० उभ० पिंडते, पिंडयति-ते, पिंडित) 1 इकट्ठा करके पिंडी या गोला बनाना 2 जोड़ना, मिलाना 3 ढेर लगाना, इकट्ठा करना।

पिंड (वि०) (स्त्री० —डी) [पिण्ड्+अच्] 1 ठोस, घन 2 मिला हुआ सघन सटा हुआ, —डः, —डम् 1 गिंदौड़ा, गोला, गलफड़ (अय पिंड, लौह पिंड आदि) 2 लोंदा, ढेला (मिट्टी का) 3 कौर ग्रास मुट्ठीभर भोजन रघु० २।५९ 4 श्राद्ध में पितरों को दिया जाने वाला चावलों का पिंड रघु० १।६६, १।८६, मनु० ३।२१६, ९।१३२ १३६, १४०, याज्ञ० १।१६० 5 भोजन, जीविका आहार ५, समन इन्धन' 6 आजीविका वृत्ति, निर्वाह ... पिंडपातवेला मा० ८ 8 मांस, आमिष ... ... भ्रूण की आरंभिक अवस्था का गर्भ 10 शरीर शारीरिक ढांचा ... ... पिंडस्य नारब्धा मनु भौतिकम् रघु० ... 11 ढेर समूह समुच्चय 12 गर्दन का पिछला भाग मा० ५।१६ 13 हाथी का कुंभस्थल 14 मकान के आगे का निकाला हुआ छज्जा 15 धूप या गंध द्रव्य 16 (अक ग० में) जोड़, कुलयोग 17 (ज्या० में) घनत्व, —डम् 1 शक्ति सामर्थ्य ताकत 2 लोहा 3 ताजा मक्खन 4 सेना (पिंडं कृ गोले बनाना निर्धारित करना, ढेर लगाना विशेष मांस या लौंदे बनाना)। सम० —अभ्याहार्यं पितरों का पिंड दान के पश्चात् खाने के योग्य मनु० ३।१२३ —अभ्याहार्यकम् पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन, —अभ्रम् ओला, —अयसम् इस्पात, —अलक्तकः महावर, लाख रंग, —आलुः, —आसः, —आसकः, —आसिन् (पु०) भिक्षुक,—उदकक्रिया मृतव्यक्तियों के निमित्त पिण्डदान तथा जलदान, श्राद्ध और तर्पण,—उद्धरणम् पिंडदान में भाग लेना, —गोसः रसगंध, लोबान की तरह का सुगंधित गोंद, —तैलम्, —तैलकः गंधद्रव्य विशेष, लोबान,—द (वि०) 1 जो भोजन देता है, जीवन निर्वाह के लिए आहार देने वाला यथा पिंडदस्य कुर्वते गजपुंगवस्तु धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते भर्तृ० २।३१ 2 मृत पितरों को पिंड देने का अधिकारी याज्ञ० २।१३२ (—दः) पिंडदान करने वाला निकटतम संबंधी पुरुष 2 स्वामी, अभिरक्षक, —दानम् 1 अन्त्येष्टि क्रिया के समय पिंड देना 2. अमावस्या की संध्या के समय पितरों को पिंडदान देना,—निर्वपणम् पितरों को पिंडदान देना, —पातः भिक्षा देना, श० १, —पातिकः भिक्षा से जीविका चलाने वाला, —पादः —पाद्यः हाथी,—पुष्पः 1. अशोक वृक्ष 2 चीन का गुलाब 3. अनार (—ष्पम्) 1. अशोक वृक्ष पर फूल आना, मंजरी 2 चीनी गुलाब का फूल 3 कमल फूल,— भाज् (वि०) पिंड प्राप्त करने का अधिकारी (पु० ब० व०) स्वर्गीय मृत पुरुष या पितर श० ६।२५ —भृति (स्त्री०) जीविका, जीवन निर्वाह का साधन, —मूलम्, —मूलकम् गाजर, —यज्ञः श्राद्ध करके पितरों का पिंडदान देना—याज्ञ० ३।१६, —लेपः पिंड का वह अंश जो हाथ में चिपका रह जाता है (यह अंश प्रपितामह से ठीक पूर्ववर्ती तीन पितरों को दिया जाता है), —लोपः (संतान न होने के कारण) पिंडदान का अभाव, —संबंधः जीवित तथा मृत व्यक्ति के बीच का संबंध जिससे कि पिंडदाता की पिंडभोक्ता के प्रति पात्रता का निर्धारण किया जाय।

पिंडक —कम् [पिंड+कै+क] 1 लौंदा, गोला, बाल्क 2 गूमड़ा या सूजन 3 भोजन का ग्रास 4 टांग की पिंडली 5 गंधद्रव्य लोबान 6 गाजर —कः वैताल, पिशाच।

पिंडनम् [पिंड+ल्युट्] गोले या पिण्ड बनाना।

पिंडलः [पिंड+कलच्] 1 पुल, बांध 2 टीला ऊर्ध्वभूमि या शैलशिखर।

पिंडसः [पिंड+सन्+ड] भिक्षुक, भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला साधु।

पिंडातः [पिंड+अत्+अच्] लोबान, गंधद्रव्य।

पिंडारः [पिंड+ऋ+अण्] 1 ग्वाला भिक्षुक 2 ग्वाला 3 भैंसों का चराने वाला 4 ... वृक्ष 5 निन्दा की अभिव्यक्ति।

पिंडिः —डी (स्त्री०) [पिंड+इन्, पिंडि+ङीष्] 1. पिंडी, गोला 2 पहिये की नाभि 3 टांग की पिंडली 5 नौका, डोंगा 6 घर 7. खजूर की जाति का वृक्ष। सम० —पुष्पः अशोक, वृक्ष, —लेपः एक प्रकार का लेप या उबटन, —शूरः 'घरघुसरू' पेटू, डींग हांकने वाला, कायर, आत्मश्लाघी भीरु, बेहूदा तु० गेहेनर्दिन् आदि।

पिंडिका [पिण्ड+ण्वुल्, इत्वम्] 1 गूमड़, गोलाकार सूजन 2 टांग की पिंडली —दे० ऊ० पिंडि।

पिंडित (वि०) [पिण्ड्+क्त] 1 इकट्ठा करके बनाया गया गोला या पिण्डा 2 पिंडाकार बनाया हुआ, गोले जैसा 3 ढेर किया हुआ, बटोरा 4 ... 5. जोड़ा हुआ, गुणा किया हुआ 6. गिना हुआ, संख्यात।

पिंडिन् (वि०) [पिंड+इनि] 1 पिंड प्राप्त करने वाला (पितर) (पु०) भिखारी 2 पितरों को पिण्डदान देने वाला।

पिंडीतकः [पिण्ड+इतच्] 1. पुल, बांध 2. ज्योतिषी, गणक।

पिच्छिल (वि०) [पिच्छ + इलच् - पिच्छ्] फीका, रसहीन, नीरस सूखा, -ल: 1. अनार का वृक्ष 2 ससीशेमी का ... 3 समुद्रफेन दे० 'पिच्छिल'।

पिच्छोलि: (स्त्री०) [पिच्छ + आलि] खाते समय मुंह से गिरा कण, जूठन, उच्छिष्ट।

पिण्याक: -कम् [पिष् आक नि० साधु] 1 खल (तिल या सरसों की) 2 गन्ध द्रव्य लोबान 3 केसर 4 हींग।

पितामह: (स्त्री०—ही) [पितृ + डामहच्] 1 दादा बाबा 2 ब्रह्मा का विशेषण।

पितृ (पुं०) [पाति रक्षति पा + तृच्] पिता, तेनास्य लोक: पितृमान् विनेत्रा—रघु० १४।२३, १।२४ ११।६७, —री (द्वि०व०) पिता-माता माता-पिता—जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ रघु० १।१, याज्ञ० २।११७, —र: (ब०व०) 1 पूर्वपुरुष, पूर्वज, पिता, —श० ६।२४ 2 पितृकुल के पितर, पितृवर्ग—मनु० २।१५१ 3 पितर रघु० २।१६, ४।२० भग० १०।२९, मनु० ३।८१ १९२। सम० **अजित** (वि०) पितरों द्वारा कमाई हुई पैतृक (संपत्ति), —**कर्मन्** (न०), **कार्यम्**, **कृत्यम्**,—**क्रिया** मृत पूर्व पुरुषाओं को के निमित्त किया जाने वाला याग या श्राद्धकर्म **काननम्** कब्रिस्तान, रघु० ११।१६, **कुल्या** मलय पर्वत से निकलने वाली नदी, **गण**: 1 पूर्वपुरुषाओं के समस्त वर्ग 2 पितर, वंश प्रवर्तक जो प्रजापति के पुत्र थे—दे० मनु० ३।१९४—५, **गृहम्** 1 पिता का घर 2 कब्रिस्तान, जहाँ दफन किये जायें, **घातक:**, **घातिन्** (पुं०) पिता की हत्या करने वाला, **तर्पणम्** 1 पितरों को दी जाने वाली आहुति या जलदान 2 (माजंन व अवसर पर) पितर तथा अन्य दिवगत पूर्वजों के निमित्त दायें हाथ से जल छोड़ना मनु० २।१७६ 3 तिल, **तिथि:** (स्त्री०) अमावस्या, **तीर्थम्** गया तीर्थ जहाँ जाकर पितरों के निमित्त श्राद्ध करना विशेष रूप से फल दायक विहित है 2 अंगूठे और तर्जनी के मध्य का भाग (इसके द्वारा तर्पण आदि करना पवित्र माना जाता है) **दानम्** पितरों के निमित्त किया जाने वाला दान, **दाय:** पिता से प्राप्त संपत्ति, **दिनम्** अमावस्या,—**देव** (वि०) 1 पिता की पूजा करने वाला 2 पितरों की पूजा से संबद्ध (-वा:) अग्निष्वात्त आदि दिव्य पितर, **दैवतम्** (वि०) पितरों द्वारा अधिष्ठित (**म्**) दसवाँ (मघा) नक्षत्र, **द्रव्यम्** पिता से प्राप्त संपत्ति, याज्ञ० २।११८, -**पक्ष:** 1 पितृकुल, पैतृक संबंध 2 पितृकुल के संबंधी 3 पितृ पक्ष आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितरों का श्राद्ध करना अत्यन्त आवश्यक माना गया है, —**पति:** यम का विशेषण, **पदम्** पितरों का लोक, **पितृ** (पुं०) दादा, बाबा, पितामह, **पुत्रौ** (द्वि० व० पितापुत्रौ) पिता और पुत्र, (**पितु: पुत्र:** प्रसिद्ध और लोक विश्रुत पिता का पुत्र, **पूजनम्** पितरों की पूजा, -**पैतामह** (वि०) (स्त्री० ही) पूर्व पुरुषाओं से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक (ब०व०—हा) पूर्व पुरुष, **प्रसू** (स्त्री०) 1 दादी 2 सायंकालीन झुटपुटा **प्राप्त** (वि०) 1 पिता से प्राप्त 2 पितृकुल क्रमागत से प्राप्त, **बंधु** पितृकुल के रिश्तेदार (नपुं०—न्धु) पिता के संबंध से रिश्तेदारी, **भक्त** (वि०) पिता का कर्तव्य परायण भक्त,—**भक्ति** (स्त्री०) पिता के प्रति कर्तव्य, **भोजनम्** पितरों को दिया गया भोजन - **भ्रातृ** (पुं०) पिता का भाई, चाचा या ताऊ, **मंदिरम्** 1 पितृगृह 2 कब्रिस्तान, **मेध** पितरों के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ श्राद्ध **यज्ञ** 1 मृत पूर्व पुरुषाओं को प्रतिदिन तर्पण या जलदान, ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पंच यज्ञों में से एक पितृ यज्ञस्तु तर्पणम् मनु० ३।७०, १२२, २८३, **राज्** (पुं०), **राज**, **राजन्** (पुं०) यम का विशेषण **रूप** शिव का विशेषण, **लोक** पितरों का लोक **वंश** पिता का कुल, **वनम्** श्मशान, कब्रिस्तान (**पितृ वनेचर** 1 राक्षस, पिशाच शिव का विशेषण),—**वसति** (स्त्री०), **सद्मन्** (नपुं०) श्मशान, कब्रिस्तान कु० ५।७७, **श्राद्ध** श्राद्ध, पितृकर्म, **श्राद्धम्** पिता या मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध **ष्वसृ** (स्त्री०) (पितृष्वसृ) पितृ ष्वसृ - भी) बुआ, फूफी मनु० २।१३१, **ष्वस्रीय:** फुफेरा भाई **सन्निभ** (वि०) पितृतुल्य, पितृवत्, **सू:** 1 पितामह दादा, बाबा 2 सायंकालीन झुटपुटा—**स्थान:**, **स्थानीय:** अभिभावक (जो पिता के स्थान में है), **हत्या** पिता का वध, **हन्** (पुं०) पिता की हत्या करने वाला।

पितृक (वि०) [पितृ आगतम् पितृ + कन्] 1 पैतृक, कुलक्रमागत, आनुवंशिक 2 और्ध्वदैहिक।

पितृव्य: [पितृ + व्यत्] 1 पिता का भाई, चाचा 2 कोई भी वयोवृद्ध पुरुष-रिश्तेदार —मनु० २।१३०।

पित्तम् [अपि + दा + क्त अपे अकारलोप] पित्तदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक (शेष दो हैं वात और कफ) पित्त यदि शर्करया शाम्यति कोऽर्थ पटोलेन पंच० १।३७८। सम० **अतीसार:** पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग, **उपहत:** (वि०) पित्त से ग्रस्त पश्यति पित्तोपहत: शशिशुभ्रं शंखमपि पीतम् काव्य० १०. **कोष:** पित्ताशय,—**क्षोभ** पित्त-दोष की अधिकता, पित्तप्रकोप,—**ज्वर:** पित्त के प्रकोप से होने वाला ज्वर या बुखार, —**प्रकृति** (वि०)

जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो, या जो क्रोधी स्वभाव का हो, **प्रकोप** पित्त का आधिक्य या पित्त का कुपित हो जाना **रक्तम्** रक्तपित्त नामक रोग **वायुः** पित्त के प्रकोप से पेट में वायु का पैदा होना अफारा, **विदग्ध (वि०)** पित्त के प्रकोप से आक्रान्त -शमन, **हर (वि०)** पित्त के प्रकोप को शान्त करने वाला।

पित्तल (वि०) [पित्त ला+क] पित्त बहुल, जिसमें पित्त की अधिकता हो, **लम्** 1 पीतल 2 भोजपत्र का वृक्ष विशेष।

पित्र्य (वि०) [पितृ इदम्—पितृ+यत् रीङ् आदेश] 1 पैतृक, पितरों का पुश्तैनी 2 (क) मृत पितरों से संबंध रखने वाला मनु० ३।१०० (ख) औध्वदैहिक क्रियासंबंधी -**त्र्य** 1 ज्येष्ठ भाई 2 माघमास **त्र्या** 1 मघा नक्षत्र 2 पूर्णिमा और अमावस्या का दिन, **त्र्यम्** 1 मघा नाम का नक्षत्र 2 अंगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का भाग (पितरों के लिए पुण्य)।

पित्सत् (पुं०) [पत्+सन् शतृ अभ्यासलोप पित्स+शतृ] पक्षी।

पित्सल [पत्+सन् इच्] मार्ग पथ।

पिधानम् [अपि+धा+ल्युट् अप अकारलोप] 1 ढकना छिपाना 2 म्यान 3 चादर लबादा 4 ढक्कन, चोला।

पिधायक (वि०) [अपि+धा ण्वुल्, अपे अकारलोप] ढकने वाला छिपाने वाला प्रच्छन्न रखने वाला।

पिनद्ध (भू० क० कृ०) [अपि+नह्+क्त अप अकारलोप] 1 जकड़ा हुआ बंधा हुआ या धारण किया हुआ 2 सुसज्जित 3 छिपाया हुआ प्रच्छन्न 4 पहनाया हुआ लिपटा हुआ 5 लगा हुआ ढका हुआ, आवेष्टित।

पिनाक,—कम् [पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरित्वम्] 1 शिव का धनुष 2 त्रिशूल 3 सामान्य धनुष 4 लाठी या छड़ी 5 धूल की बौछार। सम०—गोप्तृ, धृक्, धृत्, **पाणिः (पुं०)** शिव की उपाधियाँ कु० ३।७०।

पिनाकिन् (पुं०) [पिनाक+इनि] शिव का विशेषण कु० ५।७७ श० ७।६।

पिपतिषत् (पुं०) [पत्+सन्+शतृ] पक्षी।

पिपतिषु (वि०) [पत् सन्+उ] गिरने की इच्छा वाला पतनशील —**षुः** पक्षी।

पिपासा [पा+सन्+अ+टाप्] प्यास।

पिपासित, पिपासिन्, पिपासु (वि०) [पा सन् क्त पिपासा+इनि पा+सन् उ] प्यासा।

पिपीतः, पिपीती [अपि पीङ्+क्त अप अकारलोप, पिपीत+ङीष्] प्यासा चीड़ा।

पिपीतक [पिपीत+कन्] सकोरा।

पिपीलिक [अपि+पील्+इकन् अपे अकारलोप] चींटा **कम्** एक प्रकार का सोना (चीटों द्वारा एकत्र किया हुआ सोना माना जाता है)।

पिपीलिका [पिपीलक+टाप्, इत्वम्] चींटी। सम० परिसर्पणम् चीटियों का इधर उधर दौड़ना।

पिप्पल [पा+अलच् पृषो०] 1 पीपल का पेड़—याज्ञ० १।३०२ 2 चूचक 3 जाकेट या कोट की आस्तीन **लम्** 1 जलकण 2 पीपल का जलकण 3 मैथुन 4 जल।

पिप्पलि,—ली (स्त्री०) [पृ+अलच्+ङीष् पृषो० पक्षे ह्रस्वाभाव] पिप्पलामूल पीपल नाम की औषध।

पिप्पिका (स्त्री०) दांतों पर जमी हुई मैल की पपड़ी।

पिप्लु [अपि प्लु+डु अप अकारलोप] तिल, मस्सा तिल्ली।

पियाल [पीय+कालन् ह्रस्व] एक वृक्षविशेष (चिरौंजी) कु० ३।३१ **लम्** इस वृक्ष (चिरौंजी) का फल।

पिल [भ्वा० उभ०—पेलयति-ते] 1 फेंकना डालना 2 भेजना चलता करना 3 उत्तेजित करना उकसाना।

पिलु (पुं०) दे० पीलु।

पिल्ल (वि०) [क्लिन्ने चक्षुषी अस्य क्लिन्नस्य चल पिल्लादेश] चौंधियाई आँखों वाला — **ल्लम्** चुँधियाने वाली आँख।

पिल्लका [पिल्ल कै+क+टाप्] हथिनी।

पिश् (तुदा० उभ० पिंशति-ते) 1 रूप देना, बनाना निर्माण करना 2 आलोकित होना 3 प्रकाश करना, उजागर करना।

पिशंग (वि०) [पिश् अंगच् किच्च] ललाई लिये भूरे रंग का, लाल सा भूरे रंग का मध्ये समुद्रं ककुभः पिशङ्गी शि० ३।३३ १।६, कि० ४।३६ **गः** भूरा रंग।

पिशंगक [पिशंग+कन्] विष्णु अथवा उसके अनुचर का विशेषण।

पिशाच [पिशितमाचमति—आ+चम्, बा० ड पृषो०] भूत बैताल, शैतान प्रेत दुष्ट प्राणी नक्तञ्चरान् पिशाचादीन् भाजनेन विक्रम० २, मनु० १।३७, १२।४४। सम० **आलयः** वह स्थान जहाँ फास्फोरस के कारण अंधेरे में प्रकाश होता हो, **द्रुः** एक प्रकार का वृक्ष (सिहोर) **बाधा, संचारः** पिशाच द्वारा आविष्ट होना **भाषा** बैतालों की भाषा, एक भी प्राकृत जिसका प्रयोग नाटकों में मिलता है, मनगढ़न्त का आभास **सभम्** 1 शैतानों की सभा 2 भूतों का घर प्रेतावास।

पिशाचकिन् (पुं०) [पिशाच+इनि, कुक्] धन के स्वामी कुबेर का विशेषण।

पिशाचिका [पिशाच + ङीष + कन् + टाप्, ह्रस्व] 1 पिशाचिनी, भुतनी स्त्री पिशाच 2 (समास के अन्त में) किसी पदार्थ के लिए शैतानी या पैशाचिकी आसक्ति [illegible] आयुधपिशाचिकया महावी० 3 युद्ध के लिए घोर अनुरक्ति पिशाची भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है,—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शानी अनघ० ४।

पिशितम् [पिश् + क्त] मांस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सम० अशन, आश आशिन भुज् [illegible] 1 मांसभक्षी, पिशाच [illegible] [illegible] दरूपिता [illegible] [illegible] श० [illegible] 2 मनुष्यभक्षी नरभक्षी।

पिशुन (वि०) [पिश् + उनन् किच्च] [illegible] करने वाला बतलाने वाला प्रकट करने वाला [illegible] गान करने वाला [illegible] [illegible] [illegible] पिशुन शि० १।३८ [illegible] [illegible] २।१४ रघु० १।५३ अमरू ९७ (ख) स्मरणीय स्मारक द्योत [illegible] [illegible] [illegible] ८८ 2 मिथ्यानिन्दक चुगलखोर [illegible] [illegible] पिशुनजन [illegible] [illegible] [illegible] 3 दुष्ट, क्रूर द्वेषी 4 अधम कमीना [illegible] 5 मूर्ख मन्दबुद्धि —न: 1 मिथ्या निन्दा करने वाला चुगलखोर, ढिंढोरची अधम भेदिया [illegible] करने वाला हि० [illegible] पंच० [illegible] ३।१६१ 2 कई 3 नारद का विशेषण 4 कौआ सम० वचनम्, वाक्यम् [illegible] [illegible] बदनामी।

पिष् (रुधा० पर०—पिनष्टि पिष्ट) 1 कूटना [illegible] चूरा करना कुचलना —अथवा भवन प्रचरतो [illegible] पिष्टमिव पिनष्टि न — [illegible] [illegible] पेष पिपेष महावी० ६।८५, भट्टि० [illegible] भामि० १।१२ 2 चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना [illegible] करना, मार डालना (सं० के साथ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पीस डालना, निस् — [illegible] चूर्ण करना, [illegible] करना, (ख) निक्षिपेश [illegible] [illegible] महा०, [illegible] रघु० [illegible] 2 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना [illegible] भट्टि० ६।१२०।

पिष्ट (भू० क० कृ०) [पिष् + क्त] पिसा हुआ चूर्ण किया हुआ, कुचला हुआ भामि० १।१४,५२ 2 रगड़ा हुआ, भींचा हुआ, (हाथ) मिलाया हुआ, —ष्टम् पिसी हुई कोई चीज पिसा हुआ मसाला 2 आटा, बेसन पिष्टं पिनष्टि पिसे हुए को पीसता है' अर्थात् व्यर्थ काम करना है या बिना किसी लाभ के दोह [illegible] [illegible] [illegible] सम० उदकम् आटे से मिला हुआ जल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पिष्ट [illegible] [illegible] पूर [illegible] पेष, पेषणम् [illegible] पीसना, अथ [illegible] बिना किसी लाभ के [illegible] न्याय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सौरभम् (पिसा हुआ) चन्दन।

पिष्टक, —कम् [पिष्ट + कन्] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पिष्टप [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पिष्टात [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुगन्धयुक्त या सुवासयुक्त चूर्ण।

पिष्टिक [illegible] [illegible] [illegible] बनी [illegible]

पिस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] या जैना।

पिहित (भू० क० कृ०) [अपि + धा + क्त अपे आकार [illegible]] 1 ढका हुआ [illegible] बन्द किया हुआ [illegible] 2 छिपा हुआ, छिपाया हुआ गुप्त [illegible] [illegible] भरा हुआ, [illegible] हुआ।

पी (दिवा० आ० पीयते, पीना —[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

पीयम (नपुं०) ठाठी।

पीठम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 आसन (सिंहासन चौकी कुर्सी आदि) अबैर पीठादुत्तिष्ठद्यत —कि० [illegible] रघु० [illegible] ६।१५ 2 ब्रह्मचारी के बैठने के लिए कुशासन 3 देवासन बेदी 4 [illegible] आधार 5 बैठने की विशेष मुद्रा। सम० केलि [illegible] [illegible] [illegible] गर्भ: मूर्ति के आधार में वह गड्ढा जिसमें वह समाई जाती है, नायिका वह चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-पूजा के अवसर पर दुर्गा मान कर पूजी जाती है —भू आधार, नींव [illegible] मर्द 1 [illegible] [illegible] जो नाटक में बड़े कार्यों में नायक की सहायता करता है जैसे कि नायिका की प्राप्ति में, इसी प्रकार 'पीठ

[illegible] यह स्त्री है जो नायिका के प्रेमी नायक को प्राप्त कराने में उसकी सहायता करती है 2 [illegible] ... [illegible] की [illegible] का [illegible] देता है

[illegible] (वि०) [illegible]

पीठिका [illegible] ... [illegible] (थोकी [illegible]) [illegible] पीठा [illegible] 3 पुस्तक का [illegible] ... [illegible] जैसा कि [illegible] ... [illegible]

पीड़ [illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible] 2 [illegible] ... [illegible] दबाना, कम करना [illegible] ... [illegible] — [illegible] देना [illegible] करना 2 दबाना [illegible] ... [illegible] पीड़ित करना; [illegible] ... [illegible] — पीड़ना [illegible] ... [illegible]

पीडक [पीड् + ण्वुल्] अत्याचारी।

पीडनम् [पीड् + ल्युट्] 1 [illegible] करना [illegible] ... [illegible] अत्याचार करना, पीड़ा पहुँचाना [illegible] 2 [illegible] ... [illegible] 3 दबाने का [illegible] ... [illegible] दबाना, पकड़ना जैसा कि [illegible] और [illegible]

[illegible] में [illegible] करना [illegible] 6 [illegible] 7 [illegible] जैसा कि [illegible] में 8 [illegible] ... [illegible]

पीड़ा [illegible] ... [illegible] बाधा [illegible] ... [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 6 [illegible] करुणा 7 [illegible] ... [illegible]

पीडित [illegible] ... [illegible]

पीत [illegible] ... [illegible] 2 [illegible] ... [illegible] 3 [illegible] ... [illegible] — [illegible] ... [illegible] कालेयम् [illegible] ... [illegible] काष्ठम् [illegible] ... [illegible] — [illegible] ... [illegible] — [illegible] ... [illegible] माक्षिकम् [illegible] ... [illegible] (कमल) [illegible] ... [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] ... [illegible] (पुं०) [illegible] का विशेषण [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] (रक्त) [illegible] ... [illegible] मारि (पुं०) [illegible] ... [illegible] हरित (वि०) पीलापन लिये हुए हरा।

पीतकम् [पीत+कन्] 1 हरताल 2. पीतल 3. केसर 4. शहद 5. अगर की लकड़ी 6 चदन की लकड़ी ।

पीतनः [पीत करोति इति—पीत+णिच्+ल्युट् या पीत नयति इति पीत+नी+ड] मूलर की जाति का वृक्ष —नम् 1 हरताल 2 केसर ।

पीतल (वि०) [पीत+ला क] पीले रंग का,—लः पीला रंग,— लम् पीतल ।

पीतिः [पा+क्तिच्] घोड़ा (स्त्री०) 1 घूंट, पीना 2 मदिरालय 3 हाथी की सूंड ।

पीतिका [पीत+ठन्+टाप् ह्रस्वम्] 1 केसर 2 हल्दी 3 पीली चमेली, या सोनजूही ।

पीतुः [पा+क्तुन्] 1. सूर्य 2 अग्नि 3 हाथियों के झुंड का मुख्य हाथी, यूथपति ।

पीथः [पा+थक्] 1 सूर्य 2 काल 3 अग्नि 4 घेय 5 जल ।

पीथिः [-पीतिः, पृषो० तस्य थ] घोड़ा ।

पीन (वि०) [प्याय्+क्त, सम्प्रसारणे दीर्घ] 1 स्थूल, मांसल, हृष्टपुष्ट 2 भरापूरा, विशाल, मोटा - जैसा कि 'पीनस्तनी' में 3 पूर्ण, गोलमटोल 4. प्रभूत, अधिक । सम० -ऊधस् स्त्री (पीनोध्नी) भरे पूरे ऐन (औडी) वाली गाय, वक्षस् (वि०) विशाल-वक्षःस्थल वाला, भरी पूरी छाती वाला ।

पीनसः [पीनं स्थूलमपि जनं स्यति नाशयति—पीन+सो+क] 1 नाक पर दुष्प्रभाव डालने वाला जुकाम 2 खांसी, जुकाम ।

पीलुः [पा+कु नि० मुक्, ह्रस्वम्] 1 कौवा 2 सूर्य 3 अग्नि 4. उल्लू 5 काल 6 सोना ।

पीयूषः,—षम् [पीय्+ऊषन्] 1 सुधा, अमृत मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः भर्तृ० २।७८, इमां पीयूषलहरीम् समा० ५३ 2 दूध 3 ब्याने के बाद पहले सात दिन का गाय का दूध । सम० महस् (पुं०), रुचिः 1 चन्द्रमा 2 कपूर,—वर्षः 1 अमृतवर्षा 2 चन्द्रमा 3 कपूर ।

पीलकः [पील्+ण्वुल्] मकौड़ा ।

पीलुः [पील्+उ] 1 बाण 2 अणु 3 कीड़ा 4 हाथी 5 ताड़ का तना 6 फूल 7 ताड़ के वृक्षों का समूह 8 'पीलु' नाम का एक वृक्ष ।

पीलुकः [पीलु+कन्] चींटा ।

पीव् (भ्वा० पर० पीवति) मोटा-ताजा या हृष्ट पुष्ट होना ।

पीवन् (वि०) (स्त्री०—पीवरी) [प्यै+क्वनिप्, सप्र० दीर्घ] 1. भरा पूरा, स्थूल, मोटा 2. हृष्ट पुष्ट, बलवान् (पुं०) पवन ।

पीवर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [प्यै+ष्वरच्, स प्र० दीर्घ] 1 स्थूल, विशाल, हृष्टपुष्ट, मांसल, मोटा-ताजा रघु० ३।८, ५।६५ १९।३२ 2. कूबड़ा हुआ मोटा, —रः कछुवा, —री 1 तरुणी 2. गाय ।

पीवा [पीयते पी+व+टाप्] जल ।

पुंस् (चुरा० उभ० पुंसयति—ते) 1 कुचलना, पीसना 2 पीड़ा देना, कष्ट देना, दण्ड देना ।

पुंस् (पुं०) [पा+डुम्सुन्] (कर्तृ०—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः, करण द्वि० व० पुंभ्याम्, सम्बो० ए० व० पुमन्) 1 पुरुष 2 नर पुंसि विश्वसिति कुत्र कुमारी नै० ५।११० 2 इन्सान, मानव अस्त्यर्थो न पुमांल्लोके हि० १ 3 मनुष्य, मनुष्य जाति, कौम, राष्ट्र वयं पुंसां रघुपतिपदैः मेघ० १२ 4 टहलुआ, सेवक 5 पुल्लिंग शब्द 6 पुल्लिंग पुंसि वा हरिचन्दनम् अमर० 7 आत्मा । सम० -अनुज (वि०) (पुंसानुज) [पुंसः अनुजः, समासे तृतीयाया अलुक्] वह जिसका बड़ा भाई भी हो अनुजा (पुमनुजा) लड़का होने के बाद जन्म लेने वाली लड़की अर्थात् बड़े भाई वाली लड़की, अपत्यम् (पुमपत्यम्) लड़का, अर्थः (पुमर्थः) 1 पुरुष या मनुष्य का उद्देश्य 2 मानव-जीवन के चार ध्येयों में से कोई सा एक, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष, दे० पुरुषार्थ, आख्या (पुमाख्या) नर की संज्ञा, आचारः (पुमाचार) पुरुष का आचार, चालचलन, कटिः (स्त्री०) पुरुष की कमर -कामा (पुंस्कामा) पति की कामना करने वाली स्त्री, -कोकिलः (पुंस्कोकिल) नर-कोयल कु० ३।३२, -कीटः (पुंस्कीट) नर-ग्रह, -गवः (पुंगव) 1 बैल, सांड 2 (समास के अन्त में) मुख्य, सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, पूज्य या किसी भी श्रेणी का प्रमुख व्यक्ति—वाल्मीकिमुनिपुंगव - रामा०, इसी प्रकार 'गजपुंगव' भर्तृ० २।३१, नरपुंगव—आदि, -केतुः शिव का विशेषण- कु० ७।७७, -चली (पुंश्चलीय) रंडी का बेटा, चिह्नम् (पुंश्चिह्नम्) शिश्न, पुरुष की जननेन्द्रिय, जन्मन् (पुंजन्मन्) (नपुं) लड़के का पैदा होना, नर-सन्तान का जन्म लेना, -योगः वह नक्षत्रपुंज जिसमें कि लड़कों या नरसन्तान का जन्म होता है, दासः (पुंदास) पुरुष-दास,- ध्वजः (पुंध्वज) 1 प्राणिमात्र में किसी भी जाति का नर 2 चूहा, नक्षत्रम् (पुंनक्षत्रम्) नर जाति का नक्षत्र नागः (पुंनाग) 1 पुरुषों में हाथी, पूज्य या आदरणीय पुरुष 2. सफ़ेद हाथी 3 सफ़ेद कमल 4 जायफल 5 नाग केसर नाम का वृक्ष रघु० ६।६७, नाटः,—टः (पुंनाट—ड) इस नाम का वृक्ष, -नामधेयः (पुंनामधेय) नर, पुल्लवाची, नामन् (पुंनामन्) (वि०) पुल्लिंग नामधारी, (पुं) पुंनाग नामक वृक्ष, पुत्रः नरसन्तान, लड़का, प्रजननम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग, -भूमन् (पुंभूमन्) (पुं)

वह शब्द जो केवल पुंल्लिंग बहुवचनांत ही होता है -दारा पुंभूम्नि चाक्षता—अमर०, —योगः (पुंयोग) पुरुष के साथ सहवास या संबंध 2 किसी पुरुष या पति का संकेत—पुंयोगे अभिधा,—रत्नम् (पुंरत्नम्) श्रेष्ठ राशिः (पुंराशि) नर-राशि,—रूपम् (पुंरूपम्) नर का रूप,—लिंग (पुंलिंग) (वि०) पुरुषवाचक (शब्द), पुरुष वाचक (गम्) 1 पुरुष वाचक चिह्न 2 वीर्य, पौरुष 3 पुरुष की जननेन्द्रिय,—वत्सः (पुंवत्स) बछड़ा, —वृषः (पुंवृषः) छछूंदर,—वेष (पुंवेष) (वि०) पुरुष की वेश भूषा में, मर्दानी पोशाक पहने हुए, —सवन (पुंसवन) (वि०) पुंसोत्पत्ति करने वाला (नम्) सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है—रघु० ३।१० 2 भ्रूण, गर्भ 3. दूध।

पुंस्त्वम् [पुंस् + त्व] 1 पुरुष का लक्षण, वीर्य, पुरुषत्व, मर्दानगी अन्यान् पुंस्त्वे परीक्षित —याज्ञ० १।५५, 2 शुक्र, वीर्य 3. पुंलिंग।

पुंवत् (अव्य०) [पुम् + वति] 1 पुरुष की भांति -रघु० ६।२० 2 पुंलिंग में।

पुक्कश (वि०) (स्त्री—शी), पुक्कस (वि०) (स्त्री०—सी) [पुक् कुत्सितं कर्माणि गच्छति —पुक् + कश् (स्) + अच्] अधम, नीच, —शः —सः एक पतित वर्णसंकर जाति, शूद्र स्त्री से उत्पन्न निषाद की सन्तान —जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कसः —मनु० १०।१८, —शी,—सी 1 काली नील का पौधा 3 पुक्कस जाति की स्त्री।

पुंखः,—खम् [पुमांसं खनति —पुम् + खन् + ड] 1 बाण का पंख वाला भाग —रघु० २।३१, ३।६४, ९।६१ 2 बाज, श्येन।

पुंखितः (वि०) [पुंख + इतच्] पंखों से युक्त (यथा—बाण)।

पुंगः,—गम् [=पुञ्ज, पृषो०] ढेर, समूह, समुच्चय।

पुंगवः [पुम् + गो + क] आत्मा।

पुच्छः,—च्छम् [पुच्छ् + अच्] 1 पूंछ —रथचारणपुच्छे वहति विपुलं —उत्तर० ४।२७ 2. बालों वाली पूंछ 3 मोर की पूंछ 4 पिछला भाग 5 किसी वस्तु का किनारा। सम० —अग्रम्, —मूलम् पूंछ का सिरा,—कंटकः बिच्छू, —जाहम् पूंछ की जड़।

पुच्छटिः,—टी (स्त्री०) [पुच्छ् + अट् + इन्, पुच्छटि + ङीप्] अंगुलियां चटकाना।

पुच्छिन्म् (पुं०) [पुच्छ + इनि] मुर्गा।

पुंजः [पुम् + जि + ड] ढेर, समुच्चय, मात्रा, राशि, समूह—ज्योतिश्चयेनेव सकेनपुञ्जा —कु० ७।२६, प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुंजे प्रिये —गीत० ११।

पुंजि (स्त्री०) [पिञ्ज् + इन्, पृषो०] ढेर मात्रा, राशि।

पुंजिकः [पुंजि + कन्] ओला।

पुंजित (वि०) [पुंज + इतच्] 1. ढेरी, संगृहीत, एक जगह लगाया हुआ ढेर 2 मिलाकर भींचा हुआ, दबाया हुआ।

पुट् I (तुदा० पर०—पुटति) 1 आलिंगन करना, लिपटना 2 अन्तर्वेष्टित करना, बटना, गूथना II (चुरा० उभ० पुटयति—ते) 1 मिलना 2 बांधना, जकड़ना 3 पोटयति—ते (क) पीसना, चूर्ण करना (ख) बोलना (ग) चमकना III (भ्वा० पर० पोटति) 1. पीसना 2. मलना।

पुटः, —टम् [पुट् + क] 1 तह 2 खोखली जगह, विवर, खोखला पन—भिन्नपत्रलपुटो वनानिलः —रघु० ९।६८, ११।२३, १७।१२, मालवि० ३।९, अंजलिपुट, कर्णपुट आदि 3 दोना, पत्तों को तहकरके बनाया गया, पुड़का—दुग्ध्वा पयः पत्रपुटे मदीयम् —रघु० २।६५, मनु० ६।२८ 4 कोई उथला पात्र 5 फली, छीमी 6. म्यान, ढकना, आच्छादन 7. पलक (पुटों की इन्हीं अर्थों में) 8 घोड़े का सुम, —टः रत्नपेटी, —टम् जायफल। सम० —उटजम् सफेद छतरी, —उदकः नारियल,—ग्रीवः 1. कलश, कलसा, घड़ा 2 तांबे का पात्र,—पाकः औषधियां तैयार करने की विशेष पद्धति, (इसमें औषधियों को पत्तों में लपेट कर ऊपर से मुलतानी मिट्टी पोत देते हैं और फिर आग में भूना जाता है)— अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः, पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः —उत्तर० ३।१, —भेदः 1 पुर, नगर 2. एक प्रकार का बाजा, आतोद्य 3. जलावर्त या भंवर, —भेदनम् कस्बा या नगर—शि० १३।२६।

पुटकम् [पुट + कन्] 1 तह 2. उथला या कम गहरा प्याला 3 दोना या पुड़का 4 कमल 5 जायफल।

पुटकिनी [पुटक + इनि + ङीप्] 1 कमल 2. कमल समूह।

पुटिका [पुट् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] इलायची।

पुटित (वि०) [पुट् + क्त] 1 रगड़ा हुआ पीसा हुआ 2 सिकुड़ा हुआ 3 टांका लगाया हुआ, सीया हुआ 4 कम्पित।

पुटी [पुट + ङीप्] दे० 'पुट'।

पुड् (तुदा० पर०) 1 छोड़ना, त्याग देना, तिलांजलि दे देना 2 पदच्युत करना 3 निकालना, विदा करना, भेजना।

पुंड् (भ्वा० पर०—पुंडति) पीसना, चूरा करना, चूर्ण बना देना या पीस डालना।

पुंड्रः [पुण्ड् + रक्] चिह्न, निशान।

पुंडरीकम् [पुण्ड् + ईकन् नि०] 1. श्वेतकमल, -उत्तर० ६।२७, मा० ९।७४ 2 सफेद छाता, —कः 1. सफेद

रग 2 दक्षिणपूर्व या आग्नेयी दिशा का अधिष्ठातृ-दिक्पाल रघु० १८।८ 3 व्याघ्र 4 एक प्रकार का सांप 5 एक प्रकार का चावल 6 एक प्रकार का कोढ़ 7 हाथी का [illegible] 8 एक प्रकार का [illegible] का [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] 11 मस्तक पर [illegible] । सम० [illegible] विष्णु का विशेषण रघु० १८।८ [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] ।

पुञ्ज [illegible] [illegible] (पौधे आदि का) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (आंख का) 5 [illegible]

[illegible] (पुं० व०) [illegible] तथा [illegible] निवासियों का नाम । सम० [illegible] ।

पुण्ड्रक [illegible] (ईख का) पौधा 2 [illegible] [illegible] ।

पुण्य (वि०) [पू० [illegible] [illegible]] 1 [illegible] पुनातु शुचि [illegible] [illegible] मेघ० १, पुण्य धाम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 अच्छा, भला, गुणी, सच्चा न्याय 3 [illegible] [illegible] वाला, अनुकूल (दिन आदि) मनु० [illegible] [illegible] मुख्यमा [illegible] सुन्दर प्रकृत्या [illegible] [illegible] [illegible] इसी प्रकार पुण्यदर्शन 5 मधुर, सुगन्धित (जैसे सुगन्ध परिमल) 6 [illegible] उत्सव या संस्कार [illegible]

—**ण्यम्** 1 सद्गुण धार्मिक या नैतिक गुण [illegible] [illegible] पापपुण्यैरिहैव [illegible] [illegible] [illegible] पुण्यप्रभावेन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 सद्गुणसम्पन्न [illegible] [illegible] कार्य 3 पवित्रता, पवित्रीकरण [illegible] [illegible] पानी पिलाने के लिए कुंड, [illegible] । सम०

[illegible] [illegible] या शुभ दिवस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रधानतया [illegible] [illegible], [illegible] धार्मिक संस्कारों के आरंभ में तीन बार [illegible] करना [illegible] शुभदिवस है [illegible] [illegible] का प्रभाव —उद्यान (वि०) सुन्दर उद्यान [illegible] वाला, [illegible] (पुं०) [illegible] या गुणवान् पुरुष [illegible] (वि०) [illegible] कार्य के करने वाला [illegible], ईमानदार (नपुं०) [illegible] [illegible] —काल: शुभ समय, —कीर्ति (वि०) अच्छे नाम वाला, यशस्वी, विख्यात भट्टि० १।५, —कृत् (वि०) सद्गुणसम्पन्न प्रशंसनीय, [illegible], [illegible] [illegible], ऐसा काम जिसके करने से पुण्य हो, —क्षेत्रम् 1 पवित्र-स्थान, तीर्थस्थान 2 'पुण्यभूमि' अर्थात् आर्यावर्त, —गंध (वि०) मधुर गंध से युक्त, —गृहम् 1 वह स्थान जहाँ अन्न आदि खैरात बाँटी जाय, 2 देवालय, —जन: 1 सद्गुणी 2 राक्षस, पिशाच 3 यक्ष रघु० १३।६०, —जनेश्वर: कुबेर का विशेषण [illegible] [illegible] रघु० [illegible] —जित (वि०) पुण्य द्वारा प्राप्त किया हुआ —तीर्थम् तीर्थयात्रा का शुभ स्थान —दर्शन (वि०) सुन्दर (न:) नीलकंठपक्षी (नम्) पवित्रस्थान मन्दिर आदि का दर्शन, —पुरुष: [illegible] [illegible] —प्रताप: अच्छे गुणों या नैतिक कार्यों का प्रभाव, —फलम् [illegible] का पुरस्कार (लः) वह उद्यान जहाँ पुण्यरूपी फलों की प्राप्ति होती है —भाज् (वि०) सौभाग्यशाली [illegible] अच्छे गुणों वाला [illegible] [illegible] [illegible] —भूमि: (स्त्री०) पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त [illegible] [illegible], —लोक: स्वर्ग बैकुंठ —लक्षम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —शील (वि०) अच्छे [illegible] वाला [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —श्लोक (वि०) [illegible] जिसका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का विशेषण [illegible] [illegible] [illegible] युधिष्ठिर [illegible] [illegible] पुण्यश्लोका [illegible] [illegible] (का) [illegible] [illegible] [illegible] —स्थानम् [illegible], पवित्रस्थान [illegible] ।

पुण्यवत् (वि०) [पुण्य [illegible] [illegible]] 1 [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

पुत् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । सम० —नामन् (वि०) पुत् नाम वाला ।

पुत्तल: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] 2 गुड़िया कठपुतली । सम० —दहनम्, —विधि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

पुत्तलक:, **पुत्तलिका** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुड़िया पुतली आदि ।

पुत्तिका [पुत्त [illegible]] 1 एक प्रकार की मधुमक्खी 2 दीमक ।

पुत्र: [illegible] [illegible] [illegible] (इस शब्द की व्युत्पत्ति—पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् त्रायते पितरं सुत:, तस्मात्पुत्र इति प्रोक्त: [illegible] [illegible] मनु० ९।१३८, [illegible] [illegible] इस शब्द का [illegible] [illegible] [illegible] है) 2 बच्चा किसी जानवर का बच्चा 3 प्रिय वत्स (छोटे बच्चों को प्यार से संबोधित करने का शब्द) 4 (समास के

अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु यथा अग्निपुत्र, शिलापुत्र आदि, —त्रौ (द्वि० व०) पुत्र और पुत्री (पुत्रीकृ पुत्र के रूप में गोद लेना - रघु० २।३६)। सम० —अन्नादः 1. जो पुत्र की कमाई पर निर्वाह करता है, या जिसके निर्वाह की व्यवस्था पुत्र द्वारा की जाय 2. एक विशेष प्रकार का साधु — दे० कुटीचक, —अर्थिन् (वि०) पुत्र चाहने वाला, —इष्टिः, —इष्टिका (स्त्री०) पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष, —काम (वि०) पुत्र की कामना करने वाला, —कार्यम् पुत्र संबंधी संस्कारादि, —कृतकः जो पुत्र की भांति माना गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र —श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते श० ४।१३, —जात (वि०) जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो, —दारम् पुत्र और पत्नी, —धर्मः पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य, —पौत्रम् —त्राः बेटे और पोते, —पौत्रीण (वि०) पुत्र से पौत्र को प्राप्त होने वाला, आनुवंशिक — भट्टि० ५।१५, —प्रतिनिधिः पुत्र के स्थान पर अपनाया हुआ, (उदा० दत्तक पुत्र), —लाभः पुत्र की प्राप्ति —वधू (स्त्री०) पुत्र की स्त्री, —पुत्रवधू, —वत्सल (वि०) बच्चों से प्रेम करने वाला, बच्चों का प्रेमी —हीन (वि०) जिसके पुत्र न हो, निस्सन्तान।

पुत्रकः [पुत्र + कन्] 1 छोटा पुत्र, बालक, बच्चा, लाल, वत्स (वात्सल्य को प्रकट करने वाला शब्द) 2 गुड़िया, कठपुतली कु० १।२९, 3 धूर्त ठग 4 टिड्डी, टिड्डा 5 शरभ या उल्लू(?) [illegible]।

पुत्रका, पुत्रिका, पुत्री [पुत्रक + टाप्, पुत्री + कन् + टाप्, पुत्र + ङीप्] 1 बेटी 2 गुड़िया, पुतली 3 (समास के अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु यथा असिपुत्रिका, खड्गपुत्रिका आदि। सम० —पुत्रः, —सुतः 1. बेटी का बेटा, दौहित्र, जो नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना [illegible] मनु० ९।१२७ 2 बेटी जो पुत्रवत् मानी जाती है [illegible] [illegible] पुत्रिकेव पुत्र अथवा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —भर्तृ (पुं०) बेटी [illegible] [illegible] जामाता, —पुत्रिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [illegible] पुत्र वाला, बेटे वाला रघु० १०।२ । सम० (पुत्र) पुत्र का पिता।

पुत्रिय, पुत्रीय, पुत्र्य (वि०) [पुत्र + घ, छ, यत् वा] पुत्र संबंधी, पुत्र विषयक।

पुत्रीया [पुत्र + क्यच् + अ + टाप्] पुत्र प्राप्ति की इच्छा।

पुद्गल (वि०) [[illegible] कुत्सितं गलति गलन् पृषो० गल०] सुन्दर, प्रिय, आकार का, परमाणु, पुद्गल परमाणुवत् — शरीर 2 शरीर, भूतद्रव्य 3. आत्मा 4 शिव का विशेषण।

पुनर् (अव्य०) [पन् + अर् + उत्वम्] 1 फिर, एक बार फिर, नये सिरे से —न पुनरेवं प्रवर्तितव्यम् श० ६, किमयमयं प्रवर्तितं महिम्नोत्तरगतं — कु० ५।४२, इसी प्रकार पुनर्भू फिर पत्नी बनना 2 वापिस, विपरीत दिशा में (अधिकतर क्रियाओं के साथ), पुनर्दा वापिस देना, लौटाना, पुनर्या, इ —गम् आदि वापिस आना, लौटना आदि 3 इसके विपरीत, उल्टे, परन्तु, तो भी, तथापि इतना होते हुए भी (विरोध सूचक अर्थ के साथ) —प्रसादइव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः, अद्याप्यानन्दयति मां त्वं पुनः क्वासि नन्दिनि उत्तर० ३।१४ मम पुनः सर्वमेव तन्नास्ति उत्तर० ३ पुनः पुनः फिर फिर, बार बार, बहुधा पुनः पुनः सूतनिषिद्धचापलम् रघु० ३।४२, किं पुनः कितना अधिक, कितना कम —दे० किम् के नीचे पुनरपि फिर, एक बार और, इसके विपरीत। सम० —अर्थिता बार बार की हुई प्रार्थना, —आगत (वि०) फिर आया हुआ, लौटा हुआ —अस्मीतिमत्स्य दर्शनं पुनरागमनं कुतः महा०, —आगमनम्, —आधेयम् अग्निसंचित अग्नि का पुनः स्थापन, —आवर्तः 1 वापसी 2 बार बार जन्म होना, —आवर्तिन् (वि०) फिर से संसार में जन्म लेने वाला, —आवृत् स्त्री०, —आवृत्तिः (स्त्री०) 1 दोहराना 2 फिर से संसार में आना, बार बार जन्म [illegible] याज्ञ० ३।१९४ —दोहराना (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण —उक्त (वि०) 1 फिर कहा हुआ, दोहराया गया, दुबारा कहा गया 2 फालतू अनावश्यक —शमम वाचा पुनरुक्तयेव रघु० २।३८, शि० ९।६४ (क्तम्) —पुनरुक्तता 1 दोहराना 2 बाहुल्य, आधिक्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति या पुनरुक्ति उत्तर० ०।१९ नैषध० ३।५४ —उक्तवत् (पुं०) द्विरुक्ति का आभास पुनरुक्तवदाभासः, पदोंके मध्य पुनरुक्ति पुनरुक्ति का आभास होता एक अलंकार उदा० भुजङ्गकुण्डलीव्यक्तशशिशुभ्रांशुशीतगुः जगन्त्यपि सदापायादव्याच्चेतोहरः शिवः। [illegible] [illegible] [illegible] पुनरुक्ति की प्रतीति तुरन्त दूर हो जाती है जब कि शब्दों का सही अर्थ समझ लिया जाता है, तु० काव्य० ९, — पुनरुक्तवदाभास नीचे), —उक्तिः (स्त्री०) 1 दोहराना 2 बाहुल्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति, —उत्थानम् फिर उठना, पुनर्जीवित करना —उत्पत्तिः (स्त्री०) 1 पुनरुत्पादन 2 फिर जन्म होना, देहान्तरगमन, —उपगमः वापसी —त्वत्प्रत्याख्याना पुनरुपगमाय इतिवाद बने उत्तर० ०।१३ —उपोढा —ऊढा दुबारा व्याही हुई स्त्री,

—आगमनम् वापसी, फिर आना —जन्मन् (नपुं०) बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन, —जात (वि०) फिर उत्पन्न हुआ, —णवः, —नवः 'बार २ उगना', नाखून, —दारक्रिया पुनर्विवाह करना (पुरुष का), दूसरी पत्नी लाना, —प्रत्युपकारः किसी के उपकार का बदला चुकाना, बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन —ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः —श० ७।३५, कु० ३।५ 2 नाखून, —भावः नया जन्म, पुनर्जन्म, —भूः 1 विधवा जिसका पुनर्विवाह हो गया हो 2 पुनर्जन्म, —वचनम् 1 फिर आना 2. बार २ प्रवृत्ति करना (अकुर निकलना), —वचनम् फिर कहना, —वसुः (प्रायः द्वि० व०) 1 सातवाँ नक्षत्र (दो या तीन तारों का पुंज) —गां गताविव दिवः पुनर्वसू —रघु० ११।३६ 2 विष्णु और 3 शिव का विशेषण, —विवाहः फिर विवाह होना, —संस्कारः (पुनः संस्कार) किसी संस्कार या शुद्धिकारक कृत्य को दोहराना, —संगमः, —संधानम् (पुनः संधानम्) फिर से मिलना, —संभवः (पुनः—संभव) (संसार में) फिर जन्म लेना, देहान्तरागमन।

पुप्फुसः [=फुप्फुस, पृषो० सस्य लत्वम्] उदरवायु, अफारा।

पुप्फुलः [पुप्फुल+अच्] 1 फेफड़ा 2. कमल का बीज कोष।

पुर् (स्त्री०) (कर्तृ०, ए० व०—पू:, करण०, द्वि० व० पूर्भ्याम्) [पृ+क्विप्] 1 नगर, शहर जिसके चारों ओर सुरक्षा-दीवार हो —पूरभिव्यक्तमुखप्रसादा —रघु० १६।२३ 2. दुर्ग, किला, गढ़ 3 दीवार दुर्गप्राचीर 4 शरीर 5 बुद्धि। सम० —द्वार् (स्त्री०), —द्वारम् नगर का फाटक।

पुरम् [पृ+क] 1 नगर, शहर (बड़े २ विशाल भवनों से युक्त, चारों ओर परिखा से घिरा हुआ, तथा विस्तार में अ. एक कोस से कम न हो) —पुरे तावन्तमेवास्य तनोति रविरातपम् —कु० २।३३, रघु० १।५९ 2. किला, दुर्ग, गढ़ 3 घर निवास, आवास 4 शरीर 5 अन्तःपुर, रनिवास 6 पाटलिपुत्र 7 पुन्नाग के पत्तों की बनी फूलदानी 8 चमड़ा 10 गुग्गुल। सम० —अट्टः नगरभित्ति पर बना कंगूरा या मीनार, —अधिपः, —अध्यक्षः नगर का राज्यपाल, —अरातिः, —अरिः, —असुहृद् (पुं०), शिव के विशेषण —पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर त्रि... —गङ्गा० ८० त्रिपुर, —उत्सवः नगर में ... होने वाला उत्सव —उद्यानम् नगरोद्यान, उपवन, —ओकस् (पुं०) नगर में रहने वाला, —कोट्टम् नगरदुर्ग, —ग ... (वि०) 1 नगर को जाने वाला ... अनुकूल ... —जित्, —द्विष्, —भिद् (पुं०) शिव के विशेषण, —ज्योतिस् (पुं०) 1 अग्नि का विशाल 2 अग्निलोक, —ग्राम ...

पेंठ, छोटा गाँव जहाँ पेंठ लगती हो, —तोरणम् नगर का बाहरी फाटक, —द्वारम् नगर का फाटक, —निवेशः नगर की नींव डालना, —पालः नगरपालक, दुर्ग का सेनापति, —मथनः शिव का विशेषण, —मार्गः नगर की गली, कु० ७।११, रघु० ११।३,— रक्षः,— रक्षकः, —रक्षिन् (पुं०) कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी, —रोधः दुर्ग का घेरा — वासिन् (पुं०) नागरिक, नगर का रहने वाला, —शासनः 1 विष्णु का विशेषण 2. शिव की उपाधि।

पुरटम् [पुर्+अटन्] सोना, स्वर्ण।

पुरणः [पृ+क्यु, उत्वम्, रपरः] समुद्र, महासागर।

पुरतः (अव्य०) [पुर+तस्] सामने, आगे (विप० पश्चात्), पश्यामि तामित इतः पुरतश्च पश्चात् —मा० १।४०, की उपस्थिति में —यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनम् वचः —भर्तृ० २।५१ 2 बाद में —इदं च तेऽन्यत् पुरतो विडम्बना —कु० ५।७० अमरु ४३।

पुरंदरः [पुरः दारयति इति दृ+णिच्+खच्, मुम्] 1 इन्द्र —रघु० २।७४ 2 शिव का विशेषण 3 अग्नि की उपाधि 4 चोर, सेंध लगाने वाला, —रा गंगा का विशेषण।

पुरंध्रिः, —ध्री (स्त्री०) [पुरं गेहस्थजनं धारयति धृ+खच् +ङीष्, पृषो० वा ह्रस्व: —तारा०] 1 प्रौढ़ विवाहिता स्त्री, मातृका, विवाहिता स्त्री —पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति —उत्तर० ४।१२, मुद्रा० २।७, कु० ६।३२, ७।२ 2 वह स्त्री जिसका पति व बच्चे जीवित हों।

पुरला [पुर+ला+क+टाप्] दुर्गा का विशेषण।

पुरस् (अव्य०) [पूर्व+असि, पुर् आदेश] 1 सामने, आगे, उपस्थिति में, आँखों के सामने (स्वतंत्र रूप से या संबंध के साथ) —अमुं पुरः पश्यसि देवदारुम् —रघु० २।३६, तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः —मेघ० ३ कु० ४।३, अमरु ४३, प्रायः कृ, गम् या और भू धातुओं के साथ प्रयोग (दे० धातु०) 2 पूर्व में पूर्व से 3 पूर्व की ओर। सम० —करणम्, —कारः 1 सामने या आगे रखना 2 अधिमान, सम्मान करना, आदर प्रदर्शन, 3 अनुगमन 4 पूजा, —सहचारिता, ... देना 6 तैयारी 7 ... 8 पूर्ण करना 9 आक्रमण करना 10 ... करना, —कृत (वि०) 1 सामने रखा हुआ —रघु० ...१८० 2 सम्मानित आदर से बर्ताव किया गया, पूजित 3 प्यारा चुना गया, माना गया, अनुगमन किया गया —... रघु० ८।१९, 4 आरोपित ... 5 ... 6 तैयार ... 7 अभिशप्त 8 ... 9 ...

किया हुआ 10. प्रत्याशित,—क्रिया 1 आदर प्रदर्शित करना, सम्मानित बर्ताव, 2 आरम्भिक या दीक्षासंबंधी कृत्य,—ग,—गम (पुरोग,—गम) (वि०) 1 मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्राय संज्ञा के बल सहित —स किंवदन्तीं वदतां पुरोग रघु० १४।३, ६।५५, कु० ७।४० 2. समास में प्रयुक्त) अधिष्ठित- इन्द्र-पुरोगमा देवा 'इन्द्र के नेतृत्व में देवता',—गति: (स्त्री०) 1 पूर्वगमिता, (तिः) कुत्ता, —गंतृ,—गामिन् (वि०) 1 पहले या आगे जाने वाला 2. मुख्य, नेतृत्व करने वाला, नेता (पुं०) कुत्ता, —चरणम् 1, आरंभिक या दीक्षा विषयक कृत्य 2 तैयारी, दीक्षा 3 किसी देवता के नाम का जप तथा हवन में आहुति,—जन्मन् (पुरोजन्मन्) (वि०) पहले पैदा हुआ, —डाश् (पुं०),—डाश: (पुरोडाश्,—डाश) चावलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति मनु० ७।२१, —धस् (पुरोधस्) (पुं०) कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का, —धानम् (पुरोधानम्) 1 सामने रखना, पुरोहित द्वारा कराया गया उपचार, —धिका (पुरोधिका) (और अब अन्य स्त्रियों की अपेक्षा) मनचहेती पत्नी, —भाग (वि०) पूरा होने के निकट, पूरा होने वाला—कु० ६।९०, —मर्त्य (पुं०) पहली पंक्ति में आकर लड़ने वाला सैनिक रघु० १३।७२, —फल (वि०) जिसका फल निकट ही हो, (निकट भविष्य में) फल देने वाला रघु० २।२२,—भाग (पुरोभाग) (वि०) 1 बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी 2. छिद्रान्वेषण करने वाला 3 स्पृहाशील, ईर्ष्यालु प्राय समानविद्या परस्परयश पुरोभागा मालवि० १।२० (यहाँ 'पुरोभाग' शब्द का अर्थ 'ईर्ष्या' भी है) (—गः) 1 आगे का भाग, अगला भाग, माडी 2. बलात् प्रवेश, अनधिकार प्रवेश 3 डाह, स्पर्धा,—भागिन् (वि०) आगे रहने वाला, स्वेच्छा-वान्, नटखट —श० ५ ? बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी विक्रम० ३।३, छिद्रान्वेषी, —मारुतः, —वात (पुरोमारुत, —वात) आगे की हवा सामने चलने वाली हवा मालवि० ४।३, रघु० १८।३८, —सर (वि०) अग्रेसर, (—रः) आगे चलने वाला, अग्रदूत श० ६।२ 2 अनुचर, टहलुआ, सेवक —रश्मिय पुरःसरी रघु० १।३७ 3 नेता, जो नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख कु० ६।४९ 4 (समास के अन्त में) अनुचरों सहित, परिचरों सहित, के साथ मान पुरःसरम्, प्रमाणपुरःसरम्, वृकपुरःसरा आदि —स्थायिन् (वि०) सामने खड़े रहने वाला,—हित (वि०) 1 सामने रखा हुआ 2 नियुक्त, दूत, आयुक्त (—तः) 1 कारोबार संभालने वाला, अभिकर्ता, दूत 2 कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्म-काण्ड या संस्कारों का संचालन करता है।

पुरस्तात् (अव्य०) [पूर्व + अस्ताति, पुर् आदेश.] 1 आगे, सामने (प्राय: संब० या अपा० के साथ) —रघु० २।४४, कु० ७।३०, मेघ० १५, या स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त—अभ्युन्नता पुरस्तात्—श० ३।८ 2 सिर पर, सर्व प्रथम मालवि० १।१ 3 पहले स्थान पर, आरम्भ में 4 पहले, पूर्वतः 5 पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ 6 बाद में, आगे, अन्त में।

पुरा (अव्य०) [पुर् + का] 1 पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में पुरा शक्रमुपस्थाय- रघु० १।७५, पुरा सरसि मानसे यस्य यातं वय: भामि० १।३, मनु० १।११९, ५।३२ 2 पहले अब तक, इस समय तक 3 पहले पहले, सबसे पहले 4 थोड़े समय में, शीघ्र अचिरात् थोड़ी देर में (इस अर्थ में प्राय वर्तमान काल के साथ, जहाँ कि भविष्यत् काल का अर्थ प्रकट हो) पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधामप्रति-रथ —श० ७।३३, पुरा दूषयति स्थलीम्- रघु० १२।३०, आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा मेघ ८५, नै० १।१८, शि० १५।९६, कि० १०।५०, ११।३६। सम० —उपनीत (वि०) जिस पर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले आधि-पत्य में था,—कथा पुराना उपाख्यान,—कल्पः 1 पूर्व सृष्टि 2. अतीत की कहानी 3 पहला युग पुराकल्पे दृष्टं वैरम्. अहन् —मनु० २।२२७,—कृत (वि०) पहले किया हुआ,—योनि (वि०) प्राचीन मूल (उत्पत्ति),—वसु. भीष्म का विशेषण, —विद् (वि०) अतीत से परिचित, पूर्व काल की घटनाओं का ज्ञाता, पहले जमाने या पूर्व घटित बातों का जानकार —वस्त्वपर्यैति च तां पुराविद:. कु० ५।२८, ६।९, रघु० ११।१०,—वृत्त (वि०) प्राचीन काल में होने वाला या उससे संबद्ध 2 पुराना, प्राचीन —कथा पुराना उपाख्यान (—त्तम्) 1 इतिहास 2 पुरानी या काल्पनिक घटना पुरावृत्तोद्गारैरपि च कथिता कार्य पदवी —मा० २।१२।

पुरा [पुर + टाप्] 1 गंगा का विशेषण 2 एक प्रकार का गन्धद्रव्य 3 पूर्व दिशा 4 किला।

पुराण (स्त्री० —णा, —णी) [पुरा नवम् निरु०] 1 पुराना, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्—मालवि० १।२ पुराणपत्रापगमादनन्तरम् रघु० ३।७ 2 वयोवृद्ध पुरातन—अजो नित्य शाश्वतोऽयं पुराण —भग० २।२० 3 क्षीण जिसका जीर्ण, —णम् 1 अतीत घटना या वृत्तान्त 2 अतीत की कहानी, उपाख्यान प्राचीन या पौराणिक इतिहास 3 कुछ विख्यात

धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं तथा व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाती हैं, यह पुस्तकें ही हिन्दू-पुराण कथा शास्त्र का भंडार हैं, पुराणों में पाँच विषयों का वर्णन है और इसी लिए 'पुराण' को 'पञ्चलक्षण' भी कहते हैं—'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्'। पुराण के अठारह नामों के लिए दे० अष्टादशन् के नीचे, —णः ८० कौड़ियों के बराबर मूल्य का एक सिक्का। सम० —अन्तः यम का विशेषण, —उक्त (वि०) पुराणों में निर्दिष्ट या विहित, —गः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2. पुराण पाठक, पुराण की कथा करने वाला, —पुरुषः विष्णु का विशेषण।

पुरातन (वि०) (स्त्री० —नी) [पुरा+ट्यु, तुट्] 1 पुराना, प्राचीन, शि० १२।६०, भग० ८।२ 2. वयोवृद्ध, प्राक्कालीन, —रघु० ११।८५, कु० ६।९ 3 घिसाघिसाया, क्षीण, —नः विष्णु का विशेषण।

पुरिः (स्त्री०) [पृ+इ] 1 नगर, शहर 2 नदी।

पुरिशय (वि०) [पुरि+शी+अच्] शरीर में विश्राम करने वाला।

पुरी [पुरि+ङीष्] 1 शहर, नगर —शशासैकपुरीमिव रघु० १।३० 2 गढ़ 3 शरीर। सम० —मोहः धतूरे का पौधा।

पुरीतत् (पुं०, नपुं०) [पुरी तनोति—तन्+क्विप्] 1 हृदय के पास की एक विशेष अंतड़ी 2 अंतड़ियाँ —('पुरितत्' भी, परन्तु यह रूप अशुद्ध प्रतीत होता है)।

पुरीषम् [पृ+ईषन्, किच्च] मल, विष्ठा, गू (गोबर), मनु० ३।२५०, ४।१५२, ६।७६, ४।५६ 2 कूड़ा-करकट, गंदगी। सम० —उत्सर्गः मल-त्याग, —निग्रहणम् कब्ज़।

पुरीषण [पुरीष+णिच्+ल्युट्] मल, विष्ठा, —णम् मल त्याग करना, मलत्याग करना।

पुरीषमः [पुरीषं मिमीते —पुरीष+मा+क] उड़द, माष।

पुरु (वि०) (स्त्री० —रु, —र्वी) [पृ+कु] बहुत, प्रचुर, अधिक, बहुत से (सीमित रूप से इस विशेषण के साथ पुरु शब्द प्राय व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है)। —रुः 1 फूलों का पराग 2 स्वर्ग, देवलोक 3 एक राजकुमार का नाम, चन्द्रवंशी राजाओं में छठा राजा। वह शर्मिष्ठा और ययाति का सब से छोटा पुत्र था। जब ययाति ने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा कि क्या कोई उनमें से ऐसा है जो उस बुढ़ापे और दुर्बलता के बदले में अपना यौवन व सौंदर्य दे दे, तो यह केवल पुरु ही था जिसने विनिमय स्वीकार किया, एक हजार वर्ष के पश्चात् ययाति ने पुरु का यौवन और सौंदर्य उसे लौटा दिया तथा उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। कौरव और पाण्डवों का पूर्व पुरुष पुरु ही था)। सम० —जित् (पुं०) 1 विष्णु का विशेषण 2 राजा कुन्तिभोज या उसके भाई का नाम, —दम् सोना, स्वर्ण, —दंशकः हंस, —दंशक (वि०) बहुत विषयी, या कामातुर, —हू, —हु बहुत, बहुत से, —हूत (वि०) बहुतों से आवाहन किया गया (—तः) इन्द्र का विशेषण —रघु० ४।३, १६।५, कु० ७।४५, मनु० ११।२२, —द्विष् (पुं०) इन्द्रजित् का विशेषण।

पुरुषः [पुरि देहे शेते —शी+ड पृषो० तारा०, पुर्+कुषन्] 1 नर, मनुष्य, मर्द, अर्थात् पुरुषो नारी या नारी सार्धेन पुमान् कुमा० २।७, मनु० १।३२, ७।१७, ९।१२, रघु० २।४१ 2 मनुष्य, मनुष्य जाति 3 किसी पीढ़ी का प्रतिनिधि या सदस्य 4 अधिकारी, कार्यकर्ता, अभिकर्ता, अनुचर, सेवक 5 मनुष्य की ऊँचाई या माप (दोनों हाथ फैला कर लम्बाई की माप) द्वौ पुरुषौ प्रमाणमस्याः सा द्विपुरुषा-षी परिखा—सिद्धा० 6 आत्मा —द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च—भग० १५।१६ आदि० 7 परमात्मा ईश्वर (विश्व की आत्मा) शि० १।३३, रघु० १३।६ 8 पुरुष (व्या० में) प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष (सि० कौ० में यही क्रम है) 9 आँख की पुतली 10 (सांख्य० में) आत्मा (विप० प्रकृति) सांख्यमतानुसार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, यह निष्क्रिय है, तथा प्रकृति का दर्शक है, तु० कु० २।१३, 'सांख्य' शब्द भी, —षम् मेरु पर्वत का विशेषण। सम० —अंगम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग, —अदः नरभक्षक, मनुष्य का मांस खाने वाला, पिशाच, —अधमः अत्यन्त नीच पुरुष, बहुत ही अधम और घृणित व्यक्ति, —अधिकारः 1 पुरुष का पद या कर्तव्य 2 मनुष्य का मूल्यांकन या प्राक्कलन कि० ३।१?, —अन्तरम् दूसरा मनुष्य, —अर्थः 1 मानव-जीवन के चार मुख्य पदार्थों (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक 2 मानवप्रयत्न या चेष्टा, पुरुषार्थ, हि० प्र० ३५, —अस्थिमालिन् (पुं०) शिव का विशेषण, —आद्यः विष्णु का विशेषण, —आयुषम्, —आयुस्, मानव-जीवन की अवधि [illegible] पुरुषायुषम्—विक्रम० ५।१४, पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः रघु० १।६३, —आशिन् (पुं०) नरभक्षी, राक्षस, पिशाच, —इन्द्रः राजा, —उत्तमः 1 श्रेष्ठ पुरुष 2 परमात्मा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः, अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८, —कारः 1 मानवप्रयत्न, मनुष्यचेष्टा, मर्दाना काम, मर्दानगी,

पराक्रम (विप० दैव) एव पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति हि० प्र० ३२, दैवे पुरुषकारे च कर्मसिद्धि र्व्यवस्थिता याज्ञ० १।३४९ तु० 'भगवान उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं' पञ्च० ५।३०, कि० २।५२ 2 पौरुष वीर्य —कुणप,—पम् मानवशव —केसरिन् (पु०) नर-सिंह विष्णु का चौथा अवतार —पुरुषकेसरिणश्च पुरा नखैः शि० १।३ —ज्ञानम् मानवजाति का ज्ञान —दघ्न, —द्वयस (वि०) मनुष्य की ऊँचाई के बराबर गहरा —द्विष् (पु०) विष्णु का शत्रु —नाथ 1 सेनापति सेनापति 2 राजा —पशुः नर पशु क्रूर व्यक्ति [illegible] —पुङ्गव, —पुण्डरीक श्रेष्ठ पुरुष प्रमुख व्यक्ति —बहुमान मनुष्यजाति की प्रतिष्ठा —भर्तृ० ३।४ —मेध [illegible] —वाह 1 [illegible] 2 कुबेर [illegible] —व्याघ्र, —शार्दूल, —सिंह 1 मनुष्यों में शेर [illegible] 2 शूर और बहादुर आदमी —समवाय मनुष्यों का समूह —सूक्तम् ऋग्वेद के [illegible] सूक्त (यह बहुत [illegible] माना जाता है)

पुरुषक —कम् [illegible] मनुष्य का शरीर [illegible] पुरुषकार्यमिवाचरन् [illegible] ५।४६।

पुरुषता —त्वम् [पुरुष [illegible]] 1 पुरुषत्व मर्दानगी पराक्रम 2 वीर्य।

पुरुषायित (वि०) [पुरुष + क्यङ् + क्त] मनुष्य की भाँति आचरण करने वाला —तम् 1 मनुष्य का अभिनय करना मनुष्योचित [illegible] 2 [illegible] प्रकार का रतिबंध जिसमें स्त्री पुरुषवत् आचरण करती है [illegible] कृतार्थं [illegible] [illegible] ४०।

पुरूरवस् (पु०) [पुरु प्रचुरं रौति [illegible] पृषो० साधुः] बुध और इला का पुत्र, चन्द्रवंशी राजकुल का प्रवर्तक (मित्र और वरुण के शाप के कारण इस पृथ्वी पर उतरती हुई उर्वशी को पुरूरवा ने देखा और उस पर आसक्त हो गया। उर्वशी भी उस राजा को देख कर उस के लोकविश्रुत सौन्दर्य तथा सचाई भक्ति, उदारता आदि गुणों के कारण उस पर मुग्ध हो गई फलतः उसकी पत्नी बन गई। बहुत दिनों तक वह सुख पूर्वक रही, एक पुत्र को जन्म देने के पश्चात् उर्वशी फिर स्वर्ग चली गई। राजा ने उसके वियोग के शोक में बड़ा विलाप किया। उर्वशी प्रसन्न हो दोबारा उसके पास आकर फिर रहने लगी और एक पुत्र को जन्म देकर फिर स्वर्ग चली गई। इस प्रकार उर्वशी ने क्रमशः पांच पुत्रों को जन्म दिया। परन्तु पुरूरवा उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाना चाहता था अतः उसने गन्धर्वों के निर्देशानुसार यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसके फल-स्वरूप उसका मनोरथ पूरा हुआ। विक्रमोर्वशीय में दी गई कहानी कई अंशों में भिन्न प्रकार से बताई गई है इसी प्रकार ऋग्वेद के आधार पर शतपथ ब्राह्मण में दिया गया वृत्तान्त भी भिन्न प्रकार का है अर्थात् कि यह बतलाया गया है कि उर्वशी ने दो शर्तों पर पुरूरवा के साथ रहना स्वीकार किया। पहली शर्त यह कि उसके दो मेंढे जिनको वह पुत्रवत् प्यार करती है सदैव उसके पास ही बंधेंगे तथा उससे कभी दूर नहीं ले जाये जायंगे और दूसरे यह कि वह उर्वशी को कभी भी नंगा दिखाई न दे। [illegible] पश्चात् एक बार गन्धर्व मेंढों को उठा कर ले गए अतः उर्वशी भी अन्तर्धान हो गई।)

पुरोटि [illegible] 1 नदी का प्रवाह 2 पत्तों की सरसराहट [illegible] ध्वनि पत्र शब्द।

पुरोडाश पुरोधस् आदि दे० 'पुरस्' के अन्तर्गत।

पुर्व् (भ्वा० पर०—पूर्वति) 1 भरना 2 बसना रहना 3 निमन्त्रित करना (अन्तिम दो अर्थों में चुरा० पर० [illegible])।

पुल (वि०) [पुल् + क] महान विशाल व्यापक विस्तृत [illegible]

पुलक [पुल् + क्वुन्] 1 शरीर के रोंगटों का सीधा खड़ा होना [illegible] शिहरन, रोमांच —बाष्प [illegible] पुलकैरनुकूल— गीत० १, [illegible] मुलक [illegible] रजनीकरे— [illegible] 2 एक प्रकार का पत्थर या रत्न [illegible] 4 एक प्रकार का खनिज पदार्थ 5 [illegible] जिसमें हाथी पलते हैं 6 हरताल 7 [illegible] 8 एक प्रकार की सरसों, राई। सम० —अङ्गः वरुण के जाल, —आलयः कुबेर का विशेषण —उद्गमः शरीर के रोंगटों का खड़ा होना, रोमांच होना।

पुलकित (वि०) [पुलक + इतच्] जिसके रोंगटे खड़े हो गये हैं, रोमांचित, गद्‌गद आनन्दित, हर्षोत्फुल्ल।

पुलकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पुलक + इनि] रोमांचित, जिसके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये हैं,—पु० कदम्ब वृक्ष का एक प्रकार।

पुलस्ति, पुलस्त्य [पुल् + क्विप् - पुल् + अस् + ति, पुल-स्ति + यत्] एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का एक मानस पुत्र मनु० १।३५।

पुला [पुल् + टाप्] मृदु तालु, गले का कौआ, तालु जिह्वा।

पुलाकः,—कम् [पुल्+आक् नि०] 1 थोथा या मुरझाया हुआ अन्न, कदन्न 2 भात का पिंड 3 संक्षेप संग्रह 4 संक्षिप्तता अहृति 5 चावलों का मांड 6 क्षिप्रता तुरंतता, त्वरा।

पुलाकिन् (पुं०) [पुलाक+इनि] वृक्ष।

पुलायितम् [– पलायित पृषो०] घोड़े की सरपट चाल।

पुलिनः—नम् [पुल्+इनन् किच्च] 1 रेतीला किनारा रेतीला समुद्रतट—रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारि रधुना— गीत० ७, रघु० १४।५२ कभी-कभी ब० व० में प्रयुक्त – कालिंद्याः पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रासे रसम् वेणी० १।२ 2 नदी का प्रवाह कम होने से तट पर बना छोटा टापू, लघुद्वीप 3 नदीतट।

पुलिनवती [पुलिन+मतुप् वत्वम् ङीप्] नदी।

पुलिन्दः [पुल्+किंदच् कन्] 1 (प्राय: ब० व० में) एक असभ्य जाति का नाम 2 इस जाति का एक मनुष्य, बर्बर अशिष्ट जंगली पहाड़ी रघु० १६। १९,३२।

पुलिरिकः (पुं०) साँप।

पुलोमन् (पुं०) एक राक्षस का नाम इन्द्र का श्वसुर। सम०—अरि: —द्विष्, —भिद् —द्विष् (पुं०) इन्द्र के विशेषण —जा पुत्री शची पुलोमा की पुत्री तथा इन्द्र की पत्नी।

पुष् (भ्वा० दिवा० क्र्या० पर० पोषति पुष्यति पुष्णाति) 1 पोषण करना, (छाती से लगाकर) दूध पिलाना, पालना पोसना, शिक्षित करना—तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण भर्तृ० २।४६, मग० १५। १३, भट्टि० ३।१३, १७।३२ 2 सहारा देना भरण पोषण करना परवरिश करना 3 बढ़ने देना खिलना विकसित होना, रंगत निखरना —पुपोष लावण्यमयान् विशेषान्—कु० १।२५ रघु० ३।३२ न निरोधीयते स्थायी गौरमी पुष्यते परम् सा० द० ३ 4 बढ़ाना वृद्धि करना, आगे बढ़ाना वर्धन (मुख्यादि) पंथा मानमपि भुतानामुत्कर्ष पुपुषुर्गुणाः रघु० ४।११ १।५ 5. प्राप्त करना अधिकार में करना रखना उपभोग करना भर्तृ० ३।३४ 6 बतलाना दिखलाना धारण करना, प्रदर्शन करना —अपूर्वमिनवमस्याः पुष्यति न्वो न शोभा श० १।१९ कु० ७।१८,७८ रघु० ६।५८ १८।३२ न ह्रीमिरथ्याहृत्य कदाचित्पुष्यति लोके विपरीतमर्थम्—कु० ३।६३, मेघ० ८० 7 बढ़ना, पुष्ट होना, फलना-फूलना समृद्ध होना 8 प्रशंसा करना, स्तुति करना, —प्रेर० या चुरा० उभ० पोषयति—ते 1 पालन पोषण करना परवरिश करना भरणपोषण करना आदि 2 बढ़ाना, उन्नति करना।

पुष्करम् [पुष्कं पुष्टिं राति—रा+क] 1 नीला कमल 2 हाथी की जिह्वा की नोक शि० ५।३० 3 ढोल का चमड़ा अर्थात् वह स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है पुष्करेष्वाहतेषु मेघ० ६६ रघु० १७।११ 4 तलवार का फल 5 तलवार का म्यान 6 बाण 7 वायु आकाश अन्तरिक्ष 8 पिंजड़ा 9 जल 10 मादकता 11 नृत्यकला 12 युद्ध संग्राम 13 एकता 14 अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान —रः 1 सरोवर तालाब 2 एक प्रकार का ढोल [illegible] 4 सूर्य 5 अनावृष्टि या दुर्भिक्ष पैदा करने वाले बादलों का समूह मेघ० ६ कु० २।५० 6 शिव का विशेषण —रः [illegible] के [illegible] प्रभागों में से एक। सम०— अक्षः विष्णु का विशेषण —आख्यः —आह्नः सारस —तीर्थम् [illegible] [illegible] प्रसिद्ध [illegible] —नाभः विष्णु का [illegible] —प्रिय: मोम, —बीजम् कमलगट्टा —व्याघ्रः घड़ियाल —शिखा कमल की जड़ —स्थपति: शिव का विशेषण —सज: [illegible]

पुष्करिणी [पुष्कर+इनि ङीप्] 1 हथिनी 2 कमलसरोवर 3 सरोवर जलाशय 4 कमल का पौधा।

पुष्करिन् (पुं०) [पुष्कर+इनि] हाथी [illegible] कमलों से भरा स्थान (पुं०) हाथी

पुष्कल (वि०) [पुष्+कलच् निपा०पृषोदरादि० साधुः] 1 बहुत अधिक प्रचुर ओजस्वी भरता भरपूर भरा हुआ श्रेष्ठ पुष्कल कि० १। ४ मनु० ३।२७७ 2 पूर्ण समस्त भग० ११।२१ 3 समृद्ध उज्ज्वल शानदार 4 श्रेष्ठ सर्वोत्तम प्रमुख 5 निकट वर्ती 6 निर्घोषमय गूँजने वाला प्रतिध्वनि करने वाला —लः 1 एक प्रकार का ढोल 2 मेरु पर्वत का विशेषण —लम् 1 ६४ मुट्ठियों के बराबर एक विशेष माप या भार 2 चार ग्रास की भिक्षा।

पुष्कलकः [पुष्कल+कन्] 1 कस्तूरी मृग कीलित पुष्कलको हत: मिद्धा० 2 कुछ अर्गला कुंजी।

पुष्ट (भू० क० कृ०) [पुष्+क्त] 1 पाला-पोसा, खिलाया पिलाया परवरिश किया गया, शिक्षित किया गया 2 फलता-फूलता हुआ बढ़ता हुआ, बलवान हृष्टपुष्ट 3 रक्षा किया गया, देखभाल किया हुआ 4 समृद्ध पूरी तरह सम्पन्न 5 पूर्ण पूरा 6 पूरी ध्वनि वाला ऊँची आवाज वाला 7 प्रमुख।

पुष्टिः (स्त्री०) [पुष्+क्तिन्] 1 पालन-पोषण करना पालना परवरिश, करना, 2 पालन पोषण, संवर्धन, वृद्धि, उन्नति वलितवतामपि वृत्तां मित्रेऽपि तमोऽपि परिमार्ष्टि पुष्टिम् भामि० १।१२ 3 परिपाक आधिक्य, स्थूलता – अन्यस्य पुष्टिरिव पुष्टिरिवातुरस्य मृच्छ० १।४९, 4 धन-दौलत, सम्पत्ति, सुख का साधन,—रघु० १८।१२ 5 समृद्धि, सम्पन्नता 6

विकास, पूर्णता। सम० **कर** (वि०) पौष्टिक पुष्टि कारक, **कर्मन्** (नपुं०) सांसारिक सफलता प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान **द** (वि०) समृद्धिकारी समृद्धिकर **वर्धन** (वि०) कल्याणकारी समृद्धि करने वाला [illegible]

पुष्प (दिवा० पर० [illegible]) खुलना, खिलना या फलना [illegible]

पुष्पम् [पुष्प + अच्] 1 फूल कुसुम 2 [illegible] रजोधर्म [illegible] 3 [illegible] 4 कुबेर का रथ [illegible] सम० **अञ्जलि** [illegible] **अवचय** [illegible] **आकर** [illegible] **आगम** वसन्त ऋतु **आजीव** [illegible] माली **आयुध** [illegible] कामदेव **आसव** मधु **आसार** [illegible] **उद्गम** [illegible] **उद्यानम्** [illegible] **उपजीविन्** [illegible] माली [illegible] **काल** 1 फूलों का समय वसन्त ऋतु 2 [illegible] रजोधर्म का समय **कासीसम्** एक प्रकार का कसीस **कीट** भौरा **केतन** [illegible] **केतु** कामदेव (नपुं०) 1 पुष्परस मकरन्द 2 [illegible] **गृहम्** [illegible] **घातक** बाँस **चय** 1 फूल चुनना 2 फूलों का ढेर **चाप** कामदेव **चामर** एक प्रकार की बेंत [illegible] **द** वृक्ष **द्रवः** 1 [illegible] 2 [illegible] **द्रावः** [illegible] के रस [illegible] **द्रुमः** [illegible] **धनुस्** (पुं०) कामदेव का **ध्वज** 1 फूलों का रस मकरन्द 2 फूलों का आसव **द्रुमः** पुष्पप्रधान वृक्ष **—ध** [illegible] मनु० १०।२१ **धनुस्** धन्वन् (पुं०) कामदेव [illegible] कु० २।६४ **—धारण** विष्णु का विशेषण **ध्वज** कामदेव **लिह्** भौरा **निर्यासः, निर्यासकः** पुष्प रस मकरन्द फूलों का रस **नेत्रम्** [illegible] **पथिन्** (पुं०) [illegible] **पुरम्** पाटलिपुत्र—रघु० ६।२४ **प्रचय** **प्रचाय** फूल तोड़ना या चुनना **प्रस्तारः** [illegible] फूलों का बिछौना **बलि** फूलों की भेंट या चढ़ावा **बाण, बाणः** कामदेव **भव** पुष्परस, मकरन्द

मञ्जरिका नीला कमल **—माला** पुष्पमाला **मास** 1 चैत्र का महीना 2 वसन्त ऋतु **रजस्** (नपुं०) [illegible] **—रथ** [illegible] के काम आने वाला रथ [illegible] **रस** फूलों का रस मकरन्द [illegible] मधु **राग, राज** पुखराज **रेणु** पराग [illegible] कु० ३।[illegible] **रोचन** नागकेसर का वृक्ष, **लाव** फूल चुनने वाला (वा०) फूल चुनने वाली, मालिन **लिह्** [illegible] **लिह** भौरा **वटुक** [illegible] **वर्षणम्** फूलों की बौछार रघु० १२।१०२ **वाटिका, वाटी** फुलवाड़ी **वृक्ष** पुष्पप्रधान वृक्ष रघु० ९।२६ **वेणी** [illegible] गूँथा हुआ फूलों का गजरा [illegible] **शकटी** आकाशवाणी **शय्या,** फूलों की सेज [illegible] **—सार** **समयः** वसन्त ऋतु **सार,** [illegible] **—हासा** रजस्वला स्त्री **—हीना** [illegible] जिसको बच्चा पैदा करने का मासिक धर्म बंद हो गया हो।

पुष्पकम् [पुष्प + कन्] 1 फूल 2 पीतल की [illegible] 3 [illegible] 4 कुबेर का रथ जिसे कुबेर से रावण ने छीन लिया था [illegible] रघु० १०।४६ [illegible] 6 एक प्रकार का पुरञ्जन 7 आखों का एक विशेष रोग।

पुष्पंधयः [illegible] भौरा।

पुष्पलकः [illegible] खूँटा [illegible]

पुष्पवत् (वि०) [पुष्प + मतुप्, वत्व] 1 फूलदार, [illegible] 2 [illegible] (द्वि० व०), सूर्य और चन्द्रमा [illegible] रजस्वला स्त्री [illegible] रघु० [illegible]

पुष्पा [पुष्प + अच् + टाप्] चम्पा नाम की नगरी।

पुष्पिका [पुष्प + कन् + टाप्, इत्वम्] 1 दाँतों पर जमी हुई मैल 2 [illegible] में जमी मैल 3 अध्याय के अन्तिम शब्द जिसमें वर्णित विषय की सूचना दी जाती है इति श्री महाभारते वनपर्वणि [illegible] अध्यायः।

पुष्पिणी [पुष्पिन् + ङीप्] रजस्वला स्त्री।

पुष्पित (वि०) [पुष्प + इतच्] 1 फूलों से युक्त, विकसित फूलों से भरा हुआ, खिला हुआ [illegible] 2 [illegible] पुष्पितारपा [illegible] छंद का भी नाम है 2 फूलों से अलंकृत (भाषण) [illegible] 3 फूलों से लदा हुआ, फूलों से सम्पन्न [illegible] पृथ्वी पञ्च० १।१४५ 4 पूर्ण विकसित पूरी तरह खिला हुआ [illegible] रजस्वला स्त्री।

पुष्पिन् (वि०) [पुष्प + इनि] 1 फूल धारण करने वाला प्रफुल्ल 2 फूलों से भरा हुआ, फूलों से सम्पन्न।

पुष्यः [पुष्+क्यप्] 1. कलियुग 2. पौष का महीना 3. आठवाँ नक्षत्र (तीन तारों का पुंज), इसे 'तिष्य' नाम से भी पुकारा जाता है। सम०—रथः—पुष्य रथ।

पुष्यलकः [पुष्य+लक्+अच्] दे० 'पुष्पलक'।

पुस्तम् [पुस्त्+घञ्] 1. पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना 2. मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के खिलौना बनाना 3. मिट्टी, काष्ठ या किसी धातु की बनी कोई वस्तु 4. पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक। सम०—कर्मन् (नपुं०) लीपना पोतना, चित्रकारी करना।

पुस्तकः,—कम्, पुस्ती [पुस्त+कन्, ङीप् वा] पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक।

पू (भ्वा० दिवा० आ०, क्या० उभ०—पवते पुनाति, पुनीते पूत) प्रेर०—पावयति—इच्छा० पुपूषति, पिपविषते, पवित्र करना, छानना, शुद्ध करना (दा० और [illegible]) अवश्यपाव्य पवसे भट्टि० ६।६४, ३।१८, पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे—श० १ मनु० १।१०५, २।६२, याज्ञ० १।५८, रघु० १।५३ भग० १०।३१ 2. निथारना 3. भूसी साफ करना, फटकना 4. प्रायश्चित्त करना, परिमार्जन करना 5. पहचानना, विवेक करना 6. सोचना, उपाय ढूंढना आविष्कार करना।

पूगः [पू+गन् किन्] 1. समुच्चय, ढेर, संग्रह, मात्रा शि० ९।६४ 2. समाज, निगम संघ—याज्ञ० २।३०, मनु० ३।१५१ 3. सुपारी, पुगी रघु० ४।४४ ६।६३, १३।१७ 4. प्रकृति, गुण, स्वभाव,—गम् सुपारी। सम०—पात्रम् 1. थूकने का बर्तन पीकदान 2. पानदान,—पीठम्, पीठम् थूकने का बर्तन —फलम् सुपारी,—वैरम् अनेक लोगों से शत्रुता।

पूज् (चुरा० उभ०—पूजयति—ते, पूजित) 1. आराधना करना, पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, सादर स्वागत करना—तदपूपुजन्मुनिमिह पार्थं मुरजितम् पूजितं महताम् शि० १५।१४ मनु० ४।३१, भट्टि० २।४६, याज्ञ० ३।१४ 2. उपहार देना, भेंट चढ़ाना, —मनु० ७।२०३, सम्—1 पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना 2. उपहार देना, (दक्षिणादि से) सम्मानित करना।

पूजक (वि०) (स्त्री०—जिका) [पूज्+ण्वुल्] सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आदर करने वाला आदि।

पूजनम् [पूज्+ल्युट्] पूजना, सम्मान करना, आराधना करना मनु० १।३१४।

पूजा [पूज्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, श्रद्धांजलि—रघु० १।७९। सम०—अर्ह (वि०) श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, श्रद्धास्पद।

पूजित (भू० क० कृ०) [पूज्+क्त] 1. सम्मानित, आदृत 2. आराधित, प्रतिष्ठित 3. स्वीकृत 4. सपन्न 5. अनुशंसित, सिफारिश किया हुआ।

पूजिल (वि०) [पूज्+इलच्] श्रद्धेय, आदरणीय,—लः देव।

पूज्य (वि०) [पूज्+ण्यत्] आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय, श्रद्धेय,—ज्यः 1. ससुर।

पूण् (चुरा० उभ० पूणयति—ते) एक जगह ढेर लगाना, संचय करना, राशि लगाना।

पूत् (अव्य०) फूंक मारने की अनुकृति का सूचक शब्द।

पूत (भू० क० कृ०) [पू+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, धोया हुआ (आल० भी) दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्। सत्यपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत् मनु० ६।४६ 2. निथारा हुआ फटका हुआ 3. प्रायश्चित्त किया हुआ 4. उपजाया हुआ 5. सड़ा गला [illegible] दुर्गन्धयुक्त, बदबूदार,—तः 1. शंख 2. सफेद कुश घास —तम् सचाई। सम०—आत्मन् (वि०) पवित्र मन वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण,—क्रतायी इन्द्र की पत्नी शची,—क्रतुः इन्द्र का विशेषण भट्टि० ८।०९ —तृणम् सफेद कुश घास,—द्रुः पलाश वृक्ष,—धान्यम् तिल,—पापः, पाप्मन् निष्पाप, पाप से रहित,—फलः कटहल का वृक्ष।

पूतना [पू+तनच्, पृष्ठ०+टाप्] एक राक्षसी जो कृष्ण को जब वह अबोध बालक था, मारने का प्रयत्न करती हुई स्वयं उनके द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुई 2. राक्षसी —मा पूतनात्वमुपगा शिवतातिरेधि मा० ९।४९। सम०—अरिः, सूदनः, हन् (पुं०) कृष्ण के विशेषण।

पूति (वि०) [पूय्+क्तिच्, बहुव्रीहि] सड़ा हुआ, दुर्गन्धयुक्त, दुर्गन्ध देनेवाला—अम० ३।७।० —ति (स्त्री०) 1. पवित्रीकरण 2. दुर्गंध, सड़ांध 3. बदबू मनु० 1. सड़ा पानी 2. पीप, मवाद। सम०—अण्ड: कस्तूरी मृग,—काष्ठम् देवदारु वृक्ष,—काष्ठकः सरल वृक्ष —गन्ध (वि०) बदबूदार, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देने वाला सड़ा हुआ (—न्धः) 1. सड़ांद, दुर्गंध, बदबू 2. गंधक (—न्धम्) 1. जस्ता रांगा 2. गंधक —नस्य (वि०) बदबूदार, दुर्गंध देनेवाला—नासिक (वि०) दुर्गंधमय नाक वाला—वक्त्र (वि०) जिसके मुँह से बदबू आती हो,—व्रणम् दूषित फोड़ा (जिसमें से पीप निकले)।

पूतिक (वि०) [पूति+कै+क] सड़ा हुआ, बदबूदार,—कः सड़ाध,—कम् लीद, मल, विष्ठा।

पूतिका [पूतिक+टाप्] एक प्रकार की जड़ी। सम०—मुख: दो कोष वाला घोंघा।

पून (वि०) [पू+क्त तस्य न] नष्ट किया गया।

पूप [पू + क्विप्, पा + क] पूआ, दे 'अपूप'।

पूपला, स्त्री, **पूपालिका**, **पूपाली**, **पूपिका** [पूप + ला क + टाप् ङीप् वा, पूपाय अलति पूप + अल + अच् + ङीप् कन् + टाप् ह्रस्व पूप + अल + पच् डाप पूप + ठन् + टाप्] एक प्रकार का मीठा पुआ मालपुआ।

पूय [illegible] **यम** [पूय अच्] पीप फोड़े या घाव से निकलने वाला मवाद [illegible] मवाद निकलना मनु० ३।१८० [illegible] ... **रक्त** [illegible] नाक का एक रोग विशेष (इसमें [illegible] रक्त या मवाद नाक से बहता [illegible]) [illegible] 2 [illegible]।

पूयनम् [illegible]

पूर् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]
[illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 6 [illegible] ... [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] ... **प्र** 1 [illegible] करना [illegible] **सम्** [illegible]।

पूर [पूर् + क] 1 भरना [illegible] 2 [illegible] प्रसन्न करना [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] भरना समुद्र में [illegible] 5 धारा या [illegible] 6 [illegible] 7 घाव का [illegible] एक प्रकार की रोटी या पूरी — [illegible] **उत्पीड** बाढ़ या जलप्लावन।

पूरक (वि०) [पूर् + ण्वुल्] 1 भरने वाला, पूरा करने वाला 2 संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला — **कः** 1 नींबू का पौधा 2 [illegible] की समाप्ति पर पितरों को दिया जाने वाला पिंड 3 (अंकगणित में) गुणक।

पूरण (वि०) (स्त्री० —णी) [पूर् + ल्युट्] 1 भरना, पूरा करना 2 **कम सूचक** (अंकों के साथ प्रयुक्त) जैसे द्वितीय, तृतीय आदि [illegible] पूरणी [illegible] संख्या कि० ३।५१ 3 संतुष्ट करने वाला [illegible] 1 पुल बांध सेतु 2 समुद्र — **णम्** 1 भरना 2 [illegible] भरना पूरा करना रघु० ९।७३ 3 [illegible] 4 पूरा करना सम्पन्न करना 5 एक प्रकार की पूरी या रोटी 6 मृतक कार्य में प्रयुक्त [illegible] 7 वृष्टि बरसना [illegible] 9 [illegible] गुणा [illegible] — **प्रत्यय** क्रम सूचक संख्या [illegible]।

पूरिका [illegible] ङीष् + कन् [illegible] ह्रस्व [illegible]

पूरित (भू० क० कृ०) [पूर् + क्त] 1 भरा हुआ, पूर्ण 2 [illegible] हुआ [illegible] गुणा किया हुआ।

पूरुष [illegible] पुरुष [illegible]

पूर्ण (भू० क० कृ०) [पूर् + क्त नि०] 1 भरा हुआ [illegible] 2 [illegible] 3 पूरा किया हुआ [illegible] 4 [illegible] पूरा 5 [illegible] 6 [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] **स्वार्थीन** [illegible] **अभिलाष** (वि०) संतुष्ट, तृप्त — **आनकम्** 1 ढोल 2 [illegible] की आवाज़ 3 बर्तन 4 [illegible] 5 [illegible] कभी **पूर्णालक** भी [illegible] **उपमा** पूरी [illegible] जिसमें उपमान उपमेय [illegible] और [illegible] 4 [illegible] **ककुद्** (वि०) [illegible] **काम** (वि०) जिसकी [illegible] — **कुम्भः** 1 पूरा [illegible] 2 पानी से भरा घड़ा 3 युद्ध करने की विशेष रीति 4 (दीवार में) कलश के आकार का [illegible] शोभते—मृच्छ० ३ — **पात्रम्** 1 जल से भरा [illegible] 2 **कलशपूर** [illegible] 3 [illegible] (अनाज का) [illegible] 4 [illegible] वस्तुओं से भरा हुआ [illegible] किसी उत्सवादि के अवसर पर [illegible] अतः इसका सामान्य अर्थ है [illegible] जो किसी सुखद समाचार के लाने वाले व्यक्ति को दिया जाता है, कहा भी [illegible] हरिष्यति पूर्णपात्र [illegible] का० ६२ ७३ १६५ सखीजनेनाहियमाणपूर्णपात्राम् [illegible]

तत्कामं प्रभवति पूर्णपात्रवृत्त्या स्वीकर्तुं मम हृदयं च जीवितं च मा० ४।१. (पूर्णपात्र की परिभाषा —हर्षादुत्सवकाले यदलंकारांशुकादिकम्, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं स्यात्पूर्णकं च तत्। या—वर्धापक यदानंदादलंकारादिकं पुन., आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् हारावली), **—मी (मी)** अ० नीव —**मासी** पूर्णिमा, पूनो।

पूर्णकः [पूर्ण + कन्] 1 एक प्रकार का वृक्ष 2 रमाइया 3 नीलकंठ।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी [पृ + निक्—पूर्णि, मा + क + टाप्, पूर्णि—मास + ङीप्] वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है, पूनो मे० २।७५।

पूर्त (वि०) [पूर् + क्त नि०] 1 पूर्ण, पूरा 2 छिपाया हुआ, ढका हुआ 3. पालन-पोषण किया गया, रक्षा किया गया, —**र्तम्** 1 पूर्ति 2 पोषण, पालन 3 पुरस्कार, पावना 4. पावन, उदारता का कृत्य-परिभाषा—वापीकूपतडागादिदेवतायतनानि च अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते मनु० ४।२२६ (वि० इष्ट, अत्रि द्वारा इसकी परिभाषा अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पालनम्, आतिथ्यं वैश्वदेवश्च इष्टमित्यभिधीयते) तु० 'इष्टापूर्त'।

पूर्तिः (स्त्री०) [पूर् + क्तिन्] 1 भरना 2 पूरा करना, पूर्णता, समग्रता 3 तृप्ति, संतुष्टि।

पूर्व (वि०) [पूर्व + अच्] (जब काल और दिशा की दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है तो इस शब्द के रूप सर्वनाम की भांति होते हैं परन्तु कर्तृ० ब० व०, तथा अपादान० व अधिकरण० एक० व० में विकल्प से) 1 सामने होने वाला, प्रथम, प्रमुख 2 पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में, ग्रामात् पर्वतः पूर्वः 3. पहले का, से पहला 4 पुराना, प्राचीन —पूर्वसूरिभिः रघु० १।४ 5. पूर्वोक्त, विगत, पिछला पहला, पूर्वगामी (विप० उत्तर), इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त यथा 'श्रुतपूर्व' 6 उपर्युक्त, पूर्वोक्त 7 (समास के अन्त में) पूर्ववर्ती, से युक्त, अनुसेवित सबहुमानमनुपूर्वमाह रघु० २।६८, पुष्प शब्दा मुनिरित्ति मूढ केवलं राजपूर्वः श० २।१४, तान् स्मितपूर्वमाह कु० ३।६२ ५।३१, दशपूर्वरथं यमाख्यया दशकंठारिगुरुं विदुर्बुधाः रघु० ८।२९, इसी प्रकार मतिपूर्वं मनु० ११।१४७ 'इरादतन' 'जानबूझकर' ११।१३२,—अबोधपूर्वम् अनजाने श० ५।३, —**र्वः** पूर्वज, पूर्व पुरुष, बाप दादा पूर्वैः किलायं परिवर्धितो नः रघु० १३।३, नः पूर्वैः सञ्चितां कवोष्णमुपभुज्यते १।६७ ५।१४ —**र्वम्** अगला भाग, —**र्वम्** (अव्य०) 1 से पहले (अपा० के साथ) मासात्पूर्वम् 2. विगत काल में पहले, प्रारम्भ में, पूर्वतः, पहले ही न पूर्वमभिवादयेत् मनु० २।११७, ३।९४, ८।२०५, रघु० १२।३५ **पूर्वेण** से पूर्व में (अपा० या कर्म० के साथ) **अद्य पूर्वम्** 'अब तक' इससे पहले' **पूर्व—ततः—पश्चात्, उपरि** पहले तब, पहले बाद में, विगत काल में **पूर्वम्, अधुना** या **अद्य** पहले आज। सम० —**अचल:, —अद्रिः** उदयाचल (पूर्व दिशा का पहाड़ जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है) —**अंतः** पूर्ववर्ती शब्द की समाप्ति, —**अपर** (वि०) 1 पूर्वी और पश्चिमी पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य कु० १।१ 2 पहला और अन्तिम 3 पहले का और बाद का, पूर्ववर्ती और परवर्ती 4 किसी दूसरे से युक्त, (—**रम्**) 1. जो पहले और बाद में हो 2 संबंध 3 प्रमाण और प्रमेय, —**विरोधः** असंगति, असंबद्धता, —**अभिमुख** (वि०) (वि०) पूर्व दिशा की ओर मुंह किए हुए, पूर्व मुंह वाला, —**अम्बुधिः** पूर्वी समुद्र, —**अजित** (वि०) पूर्वकाल में प्राप्त, —(**तम्**) पैतृक संपत्ति, —**अर्थः, —र्धम्** 1 पहला आधा भाग दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् भर्तृ० २।६० समास पूर्वार्धम् आदि 2 (शरीर का) ऊपर का भाग श० २, रघु० १६।६, 3 श्लोकार्ध का प्रथम भाग, —**अह्नः** मध्याह्न से पूर्व, दोपहर से पूर्व—मनु० ४।९६, ७।८७ (पूर्वाह्णतन, पूर्वाह्णेतन (वि०) मध्याह्न से पूर्वकाल संबंधी), —**आषाढः** बीसवाँ, पूर्वी आषाढ़ा नामक नक्षत्र, (जो नक्षत्रों का पुंज), —**इतर** (वि०) पश्चिमी —**उक्त, —उदित** (वि०) पहले कहा हुआ, उपर्युक्त —**उत्तर** (वि०) उत्तरपूर्वी (द्वि० व० में) पूर्ववर्ती पहले का और बाद का, —**कर्मन्** (नपुं०) 1 पहला काम या कार्य 2 प्रथम कार्य, पहले किया जाने वाला कार्य 3 पूर्व जन्म में किया गया कार्य, —**कल्पः** विगत काल, —**कायः** 1 जानवरों के शरीर का अगला भाग, शरोत्पतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2 मनुष्यों के शरीर का ऊपरी भाग, —**नाभिं** करेणार्पितपूर्वकायम् रघु० ५।३२, पर्यंकबन्धस्थिर पूर्वकायम् कु० ३।४५, —**कालः** विगत काल, प्राचीन समय, —**कालिक, —कालीन** (वि०) प्राचीन, —**काष्ठा** पूर्व, पूर्व दिशा, —**कृतम्** पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य, —**कोटिः** (स्त्री०) वाक्प्रतियोगिता की प्रारम्भिक उक्ति, विचारविषय, पूर्वपक्ष, —**गंगा** नर्मदा नदी, —**कथित** (वि०) 1 उपर्युक्त, ऊपर बताया गया 2 पहले से कहा हुआ, या पूर्व प्रस्तुत (आशीर आदि), —**ज** (वि०) 1. जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जन्मा हुआ 2 प्राचीन, पुराना 3 पूर्वी (—**जः**) 1 बड़ा भाई शि० १६।४४, रघु० १५।३६

2. बड़ी पत्नी का लड़का 3 पूर्वपुरुष, बापदादा, **-जन्मन्** (नपुं०) पहला जन्म, (पुं०) बड़ा भाई —रघु० १४।४४, १५।९५,—**जा** बड़ी बहन, **-जातिः** (स्त्री०) पूर्वजन्म,—**ज्ञानम्** पूर्वजन्म का ज्ञान, **-दक्षिण** (वि०) दक्षिणपूर्वी (—णा) दक्षिण पूर्व दिशा, **-दिक्पतिः** पूर्वदिशा का अधिपति इन्द्र,—**दिनम्** दिन का पूर्वभाग दोपहर से पूर्व का समय,—**दिश्** (स्त्री०) पूर्व दिशा, **-दिष्टम्** भाग्य में लिखा, **-देवः** 1 प्राचीन देवता 2 राक्षस या असुर 3 प्रजनक, पिता, **-देशः** पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग, **-निपातः** समास में शब्द की अनियमित प्राथमिकता तु० परनिपात, **-पक्षः** 1 अगला हिस्सा या पार्श्व 2 कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का प्रथमपक्ष) 3 विवाद का पूर्वपक्ष प्रथमदर्शनाधारित तर्क या प्रश्न का दृष्टिकोण 3 किसी तर्क का प्रथम अंश 5 वादी की प्रतिज्ञा 5 अभियोग, नालिश, **-पदम्** किसी समास या वाक्य का प्रथम पद **-पर्वतः** उदयाचल जिसके पीछे सूर्य का उदय होना माना जाता है **-पाञ्चालक** (वि०) पूर्वी पंचालों से संबंध रखने वाला **-पाणिनीयाः** (पुं०, ब० व०) पूर्व देश के रहनेवाले पाणिनि के शिष्य, **-पितामहः** बापदादा, पूर्वज, **-पुरुषः** 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 पिता, पितामह या प्रपितामह में से कोई एक 3 पूर्वपुरुष,—**पूर्व** (वि०) प्रत्येक पूर्ववर्ती **-फाल्गुनी** ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं °**भवः** बृहस्पति ग्रह का विशेषण **-भागः** अगला हिस्सा, —**भाद्रपदा** पच्चीसवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं,—**भुक्तिः** (स्त्री०) पहले से किया हुआ अधिकार, **-भूत** (वि०) पूर्ववर्ती पहले का, **-मीमांसा** प्रथम मीमांसा वेद के अंतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृच्छा (विप० उत्तरमीमांसा या वेदान्त दे० मीमांसा —**रंगः** नाटक का उपक्रम या आरंभ, आमुख या प्रस्तावना, —पूर्वरंग विधायैव सूत्रधारो निवर्तते सा० द० २८३, पूर्वरंग प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः शि० २।८ (दे० इस पर मल्लि०), **-रागः** आरंभिक प्रेम, दो व्यक्तियों के मिलन से पूर्व (श्रवण दर्शन आदि के कारण) उनमें उत्पन्न होनेवाला प्रेम **-रात्रः** 1 रात का पहला भाग, **-रूपम्** 1 होने वाले परिवर्तन का संकेत 2 रोग होने का लक्षण 3 दो महवर्ती स्वर या व्यंजनों में से पहला जो स्थिर रहे **-वयस्** (वि०) तरुण **-वर्तिन्** (वि०) पहले से विद्यमान पहले का, पहले होने वाला **-वादः** वादी द्वारा प्रस्तुत अभियोग मुद्दई द्वारा की गई नालिश **-वादिन्** (पुं०) अभियोक्ता या मुद्दई, **-वृत्तम्** 1 पहली घटना, रघु० ११।१० 2 पहला आचरण, **-शारद** (वि०) शरद् ऋतु के पूर्वार्ध से संबंध रखने वाला, **-शैलः** दे० पूर्वपर्वत, **-सक्थम्** जंघा का ऊपरी भाग,—**संध्या** प्रभातकाल, पौ फटना,—शि० ११।४०, **-सर** (वि०) अग्रेसर, **-सागरः** पूर्वी समुद्र रघु० ४।३२, **-साहसः** पहला या सबसे भारी अर्थदण्ड, **-स्थितिः** (स्त्री०) पहली या प्रथम अवस्था।

पूर्वक (वि०) [पूर्व+कन्] (समास के अन्त में) 1 पूर्ववर्ती, अनुसेवित—अनामयप्रश्नपूर्वकमाह—श० ५ 2 पूर्ववर्ती पिछला, **-कः** पूर्वज, बापदादा।

पूर्वंगम (वि०) [पूर्व+गम्+खच्] पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती।

पूर्वतः (अव्य०) [पूर्व+तस्] 1 पूर्व में, पूर्व की ओर, रघु० ३।४२ 2 पहले सामने।

पूर्वत्र (अव्य०) [पूर्व+त्रल्] पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह।

पूर्ववत् (अव्य०) [पूर्व+वति] पहले की भांति।

पूर्विन् (वि०) (स्त्री०—णी) **पूर्वीण** (वि०) [पूर्व+इनि, पूर्व+ख] 1 प्राचीन 2. पैतृक।

पूर्वेद्युः (अव्य०) [पूर्वस्मिन् अहनि—पूर्व+एद्युस् नि० साधु] 1 पहले दिन 2 गत दिवस, बीते हुए कल —मनु० ३।१८७ 3 दिन के प्रथम भाग में, पौ फटने पर 4 भोर में, सवेरे।

पूल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—पूलति, पूलयति-ते) ढेर लगाना संचय करना, एकत्र करना।

पूलः, पूलक [पूल्+अच्, ण्वुल् वा] गठरी, पूली।

पूलाक =पुलाक—दे०।

पूलिका [=पूरिका, रस्य लः] एक प्रकार की रोटी, पूरी।

पूषः, पूषक [पूष्+क, पूष्+कन्] शहतूत का वृक्ष।

पूषन् (पुं०) (कर्तृ०—पूषा षष्ठी,—ष्णः) [पूष्+कनिन्] सूर्य,—सदा पान्थः पूषा गगनपरिमाणं कलयति —भर्तृ० २।११४, इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्—शि० २।२३। सम०—**असुहृद्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**आत्मजः** 1 बादल 2 इन्द्र का विशेषण, **-भासा** इन्द्र का नगर (अमरावती)।

पृ I (तुदा० आ०—प्रियते, पृत)—व्यस्त होना, सक्रिय होना (बहुधा 'व्या' उपसर्ग के साथ)—कार्ये व्याप्रियते —दे० व्यापृत —प्रेर० (पारयति ते) 1. काम कराना, काम पर लगाना सौंपना, नियत करना (बहुधा अधि० के साथ) व्यापारित शूलभृता विधाय सिंहत्वमंकागतसत्त्ववृत्ति—रघु० २।३८ 2. रखना, जड़ देना, निश्चित करना निदेश देना, डालना—°व्यापारयामास कर किरीटे रघु० ६।१९ उमामुखे व्यापारयामास विलोचनानि कु० ३।६७, व्यापारित शिरसि शस्त्रमशस्त्रपाणे—वेणी० ३।१९, रघु० १३।२५।

II (जुहो० पर०—पिपर्ति, पूर्ण) 1. पालने के काबिल 2.

से मुक्त करना, प्रकाशित करना 3. भरना 4. रक्षा करना, जीवित रखना, जीवित रहना 5. उन्नति करना, प्रगति करना।

iii (क्र्या० पर० पृणाति) रक्षा करना।

iv (चुरा० उभ० —पारयति-ते, कभी-कभी 'पार' स्वतन्त्र धातु मानी जाती है) 1. पार ले जाना, नाव से पार उतारना 2. किसी वस्तु के दूसरे पार्श्व पर पहुँचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (व्रत का) पूरा करना 3. योग्य या समर्थ होना —अधिकं न हि पारयामि वक्तुम् —भामि० २।२९, श० ४ 4. सौंपना, बचाना, उद्धार करना, निस्तार करना।

v (स्वा० पर० — पृणोति) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, तृप्त करना 2. प्रसन्न होना, खुश होना।

पृक्त (भू० क० कृ०) [पृच्+क्त] 1. मिश्रित, संपृक्त —रघु० २।१२ 2. स्पृष्ट, संपर्क में लाया गया, स्पर्श करने वाला, संयुक्त,—क्तम् संपत्ति, दौलत।

पृक्तिः (स्त्री०) [पृच्+क्तिन्] स्पर्श, संपर्क, संयोग।

पृक्थम् [पृच्+थन्] संपत्ति, धन दौलत, वैभव।

पृच् i (अदा० आ० पृक्ते, पृक्ण) संपर्क में आना।

ii (रुधा० पर० पृणक्ति, पृक्त) संपर्क में लाना, सम्मिलित होना, मिल जाना —रथ वदन ... पृणग्धनुषा शरम —भट्टि० ६।३९ 2. मिश्रण करना, मिलाना 3. संपर्क में होना, स्पर्श करना 4. सन्तुष्ट करना, भरना, सन्तुष्ट करना 5. बढ़ाना, वृद्धि करना, सम्—,मिश्रण करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना —वागर्थाविव संपृक्तौ —रघु० १।१, भट्टि० १३।१०६, दे० संपृक्त iii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० पर्चति, पर्चयति-ते) 1. स्पर्श करना, संपर्क में आना 2. रोकना, विरोध करना।

पृच्छक [प्रच्छ्+ण्वुल्] पूछताछ करने वाला, गवेषणा करने वाला —पृच्छकेन सदा भाव्यं पुरुषेण विजानता —पञ्च० ५।९३, याज्ञ० २।२६८।

पृच्छनम् [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछना, पूछ-ताछ करना।

पृच्छा [प्रच्छ्+अङ्+टाप्] 1. प्रश्न करना, पूछना, पूछ-ताछ करना 2. भविष्य विषयक पूछ-ताछ।

पृज् (अदा० आ० —पृक्ते) संपर्क में आना, स्पर्श करना।

पृत् (स्त्री०) [पृ+क्विप्, तुक्] सेना (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि०, द्वि० व० के पश्चात् 'पृतना' के स्थान में विकल्प से 'पृत्' आदेश हो जाता है)।

पृतना [पृ+तनन्+टाप्] 1. सेना 2. सेना का एक प्रभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं 3. युद्ध, संग्राम, मुठभेड़। सम० —षाह् इन्द्र का विशेषण।

पृथ् (चुरा० उभ० —पर्थयति-ते) 1. विस्तार करना 2. फेंकना, डालना 3. भेजना, निदेश देना।

पृथक् (अव्य०) [प्रथ्+अज्, कित्, संप्रसारण] 1. अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके —शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक् —भग० १।१८, मनु० ६।२६, ७।५७ 2. भिन्न, अलग, भिन्नतापूर्वक —भट्टि० ५।४, १३।४, गच्छता पृथगर्थता गिराम —कि० २।२७ 3. जुदा, एक ओर, एकाकी —विक्रम० ४।२० 4. छोड़ कर, सिवाय, अपवाद के साथ, बिना (कर्म० करण० या अपा० के साथ) पृथग्रामेण, रामात्, रामं वा —सिद्धा० भट्टि० ८।१०९ (पृथक् कृ अलग २ करना, बाँटना, जुदा-जुदा करना, विश्लेषण करना)। सम० —आत्मता 1. अलग-अलग होना, पृथक्ता 2. भेद, भिन्नता 3. विवेक निर्णय, —आत्मन् (वि०) भिन्न, अलग, —आत्मिका व्यक्तिगत सत्ता, वैयक्तिकता, —करणम्, —क्रिया 1. अलग-अलग करना, भेद करना 2. विश्लेषण करना, —कुल (वि०) भिन्न कुल से संबंध रखने वाला, —क्षेत्र (पु० ब० व०) एक पिता की विभिन्न पत्नियों से सन्तान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पत्नियों से सन्तान, —चर (वि०) एकाकी जाने वाला, अकेला जाने वाला, —जन नीच पुरुष, अज्ञ, मूर्ख, गँवार आदमी, साधारण जन, नीच लोग —न पृथग्जनवच्छुचो वशं वशिनामुत्तम गन्तुमर्हसि —रघु० ८।९०, कि० १४।२४ 2. मूर्ख बुद्धू अज्ञानी —शि० १५।३९ 3. दुष्ट आदमी, पापी, —भावः पृथक्ता, वैयक्तिकता (इसी प्रकार 'पृथक्त्वम्'), —रूप (वि०) भिन्न-भिन्न रूपों या प्रकारों का, —विध (वि०) भिन्न-भिन्न प्रकार का, नाना प्रकार विविध, —शय्या अलग सोना, —स्थिति (स्त्री०) अलग सत्ता।

पृथवी [प्रथ्+षवन्, संप्रसारण] दे० पृथिवी।

पृथा (स्त्री०) पाण्डु की दो पत्नियों में से एक, कुन्ती का नाम। सम० —ज, —तनय, —सुत, —सूनुः पहले तीन पाण्डवों का विशेषण परन्तु प्रायः अर्जुन के लिए प्रयुक्त —अश्वत्थामा रणे हतेन पृथासूनुना स्पष्टमुक्ता —वेणी० ३।९, अभिवस्य पृथासूनुः स्पष्टैव परिसंस्तरे —कि० ११।८, —पतिः पाण्डु का विशेषण।

पृथिका [प्रथ्+क+क+टाप्, संप्रसारणम्, इत्वम्] कनखजूरा।

पृथिवी [प्रथ्+षिवन्, संप्रसारणम्] पृथ्वी (कई 'पृथिवी' भी लिखा जाता है)। सम० —इन्द्रः, —ईशः, —क्षित् (पु०), —पालः, —पालकः, —भुज् (पु०), —भुजः, —शकः, राजा, —तलम् धरातल, —पतिः 1. राजा 2. मृत्यु का देवता यम, —मण्डलः, —लम् भूमण्डल, —रुहः वृक्ष —पवमान पृथिवीरुहानिव —रघु० ८।९, —लोकः मर्त्यलोक भूलोक।

पृथु (वि०) (स्त्री०—थु—थ्वी) तुल० प्रथीयस् उत्त० अ० प्रथिष्ठ) [प्रथ् + कु, सम्प्रसारणम्] 1 चौड़ा विस्तृत प्रशस्त, फैलावदार पृथुनितम्ब द० नीचे, सिन्धोः पृथुमपि तनुम् मेघ० ४६ 2 प्रचुर बहुत पर्याप्त विक्रम० ४।२५ 3 विस्तीर्ण बड़ा दृग पृथुतरीकृता रत्न० २।१५ शि० १२।४८ रघु० ११।२५ 4 [illegible] 5 बहुप्रकार 6 [illegible] 7 [illegible] [illegible]

[illegible]

यशस्वी —रोमन् (पुं०) मछली —पुच्छ —श्री —ओणी (वि०) बड़े [illegible] —सम्पद् (वि०) धनवान दौलत [illegible]।

पृथुक, —कम् [पृथु + कै + क] चौड़ा, चिवड़े— [illegible] पृथुकान् [illegible] शि० ३।३९ —का [illegible]।

पृथुल (वि०) [illegible] चौड़ा प्रशस्त विस्तृत [illegible] पृथुलाम् [illegible] शि० १०।६४।

पृथ्वी [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 बड़ी इलायची 4 [illegible] (दे० [illegible]) सम० —ईश, —पति —पाल [illegible] —गर्भ [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

[illegible] 1 [illegible] 2 छोटी [illegible]

[illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible]

[illegible]

पूर्वति [illegible] दानों की बूढ [illegible]

स्पृष्ट्वा वांति वाताः शनैः शनैः—अमरकोश पर भरत।

पृषभाषा—पृषभासा।

पृषाकरा [पृष्+क्विप्, पृषे सेचनाय आकीर्यते—पृष्+आ+कृ+अप्+टाप्] छोटा पत्थर (जो बाट की भांति प्रयुक्त किया जाय)।

पृषातकम् [पृषत्+आ+तक्+अच्] दही और घी का सम्मिश्रण।

पृषोदरः [पृषत् उदरं यस्य, पृषो० तलोप] (यह शब्द पृषत् और उदर से मिल कर बना है, पृषत् के त् का अनियमित कारक के रूप में लोप हो गया। इस प्रकार यह शब्द अनियमित समासों की एक पूरी श्रेणी है—पृषोदरादित्वात् साधु, दे० 'गण' पा० ६।३।१०९।

पृष्ट (भू०क०कृ०) [प्रच्छ्+क्त] 1 पूछा हुआ, पता लगाया हुआ, प्रश्न किया हुआ, सवाल किया हुआ, 2. छिड़का हुआ। सम०—**हायनः** 1. धान्य विशेष, अनाज 2. हाथी।

पृष्टिः (स्त्री०) [प्रच्छ्+क्तिन्] पूछ-ताछ, प्रश्न वाचकता।

पृष्ठम् [पृष् स्पृश् वा थक्, नि० साधु] 1. पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाड़ी 2. जानवर की पीठ अश्वपृष्ठमारूढः—आदि 3. सतह या ऊपर का पार्श्व रघु० ४।३१, १२।६७, कु० ७।५१, इसी प्रकार अवनिपृष्ठचारिणीम् उत्तर० ३ 4. (किसी पत्र या दस्तावेज की) पीठ या दूसरी तरफ याज्ञ० २।९३ 5. घर की चपटी छत 6. पुस्तक का पृष्ठ। सम०—**अस्थि** (नपुं०) रीढ़ की हड्डी, **गोपः**, **रक्षः** जो किसी लड़ते हुए योद्धा की पीठ की रक्षा करे,—**ग्रंथि** (वि०) ककुद्मान्, कूबड़ युक्त,—**चक्षुस्** (पुं०) केकड़ा,—**तल्पनम्** हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियां,—**दृष्टिः** 1. केकड़ा 2. रीछ, —**फलम्** किसी आकृति का फाल्तू भाग,—**भागः** पीठ, —**मांसम्** 1. पीठ का मास 2 पीठ पर की गूमड़ी °**अद** °**अदन** (वि०) चुगलखोर, बदनाम करने वाला, कलंकित करने वाला (—**दम्**, —**दनम्**) चुगली, पृष्ठमांसादनं तद्यत् परोक्षे दोषकीर्तनम् हेमचन्द्र तु० प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसम् हि० १।८१, —**यानम्** सवारी, **वंशः** रीढ़ की हड्डी —**वास्तु** (नपुं०) मकान की ऊपर की मंजिल, —**वाह्,** (पुं०), —**वाहः** लद्दू बैल, —**शय** (वि०) पीठके बल सोने वाला, —**शृंगः** जंगली बकरी, —**शृंगिन्** (पुं०) 1. मेंढा 2. भैंसा 3 हिजड़ा 4 भीम का विशेषण।

पृष्ठकम् [पृष्ठ+कन्] पीठ।

पृष्ठतस् (अव्य०) [पृष्ठ+तसिल्] 1. पीछे, पीठ पीछे, पीछे से —गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात् मनु० ४।१५४, ८।३००, मन० ११।४० 2. पीठ की ओर, पीछे की ओर—गच्छ पृष्ठतः 3. पीठ पर 4. पीठ पीछे चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से (**पृष्ठतः कृ**) 1. पीठ पर रखना, पीछे छोड़ना 2. उपेक्षा करना, तिलाञ्जलि देना, छोड़ देना 3 विरक्त होना, हाथ खींचना, त्याग देना, तिलाञ्जलि देना, **पृष्ठतो गम्** अनुसरण करना, **पृष्ठतो भू**— 1. पीछे खड़े होना 2 उपेक्षित होना।

पृष्ठ्य (वि०) [पृष्ठ+यत्] पीठ से संबंध रखने वाला, —**ष्ठ्यः** लद्दू घोड़ा।

पृष्णिः (स्त्री०) [=पृश्नि पृषो०] एड़ी।

पृ (जुहो०, क्र्या० पर० पिपर्ति, पृणाति, पूर्ण कर्म० पूर्यते, प्रेर० पूरयति —ते इच्छा० पिपरि (री) षति, पुपूर्षति) 1. भरना, भर देना, पूरा करना 2. पूरा करना, (आशा आदि) पूरी करना, तृप्त करना 3. हवा भरना, (शंख, बंसरी आदि) बजाना 4 संतुष्ट करना, थकावट दूर करना, प्रसन्न करना पिपूर्तारोत् — भट्टि० १।२ 5 पालना, परवरिश करना, पुष्ट करना, पालनपोषण करना, पालन करना।

पेचकः [पच्+वुन्, इत्वम्] 1. उल्लू 2 हाथी की पूंछ की जड़ 3. पलंग, शय्या 4. बादल 5 जूं।

पेचकिन् (पुं०) पेचिल [पेचक+इनि, पच्+इलच्, इत्वम्] हाथी।

पेचुकः (पुं०) कान का मैल, भग, दे० पिजूष।

पेटः,—टम् [पिट्+अच्] 1. थैला, टोकरी 2. पेटी, सन्दूक, —टः खुला हाथ जिसकी अंगुलियां फैलाई हुई हों।

पेटकः,—कम् [पेट+कन्] 1 टोकरी, सन्दूक, थैला 2. समुच्चय, गठरी।

पेटाकः [=पेटक, पृषो०] थैला, टोकरी सन्दूक।

पेटिका, पेटी [पिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, पेट+ङीष्] छोटा थैला, टोकरी।

पेडा [=पेट, पृषो०] बड़ा थैला।

पेय (वि०) [पा+यत्] 1. पीने के योग्य, पान करने के लायक 2 स्वादिष्ट —**यम्** पानीय, मद्य या शर्बत आदि, —**या** भात का मांड, चावलों की लपसी।

पेरुः (पुं०) 1. समुद्र 2. अग्नि 3. सूर्य।

पेयूषः,—षम् [पीय्+ऊषन्, बा० गुण] 1 अमृत 2. उस गाय का दूध जिसे ब्याये अभी एक सप्ताह से अधिक नहीं हुआ सप्तरात्रप्रसूतायाः क्षीरं पेयूषमुच्यते— हारावली, मनु० ५।६ 3. ताजा घी।

पेला (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र भट्टि० १७।७।

पेल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० —पेलति, पेलयति—ते) 1. जाना, चलना-फिरना 2. हिलना, कांपना।

पेलम्, पेलकः [पेल्+अच्, पेल+कन्] अण्डकोष।

पेलव (वि०) [पेल+वा+क] 1 सुकुमार, सुकोमल, मृदु, मुलायम,—अल्प पेलवपुष्पपत्रिणः कु० ४।२९, ५।४, ७।६५ 2. दुर्बल, पतला, क्षीण—कु० ३।२२।

पेलिः, पेलिन् (पुं०) [पेल् + इन्, पेल + इनि] घोड़ा।

पेश (ष, स) ल (वि०) [पिश् (ष्, स्) + अलच्] 1 मृदु, मुलायम, सुकुमार रघु० ९।४०, ११।४५, मेघ० ९३ 2 दुबला-पतला क्षीण (कमर आदि) रघु० १३।३४ 3 मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त अच्छा भामि० २।८ 4 विशेषज्ञ, चतुर, कुशल भर्तृ० ३।५६ 5 चालाक, छली।

पेशिः,-शी [पिश् + इन्, पेशि + ङीष्] 1 मांस का पिंड 2 मांस राशि 3 अंडा 4 पुट्ठा याज्ञ० ३।१००, 5 गर्भाधान के पश्चात् शीघ्र बाद का कच्चा गर्भ पिण्ड 6 खिलने के लिए तैयार कली 7 इन्द्र का वज्र (पुंल्लिंग भी) 8 एक प्रकार का बाद्ययंत्र। सम० **कोश:** (ष) पक्षी का अण्डा

पेष [पिष् + घञ्] पीसना, चूरा करना, कुचलना शि० ११।४.

पेषणम् [पिष् + ल्युट्] 1 चूर्ण बनाना, पीसना 2 खलिहान का वह स्थान जहाँ अनाज की बालों पर दायें चलाई जाती है 3 सिल और लोढ़ा, पीसने का कोई भी उपकरण।

पेषणि (स्त्री०) पत्थर [पिष् + अनि पेषणि + ङीष् पिष् आ कन्] चक्की, सिल बट्टा।

पेस्वर (वि०) [पेस् + वरच्] 1 जाने वाला, चलने वाला 2 नाशकारी।

पै (भ्वा० पर० पायति) मुरझाना, मुरझाना।

पैङ्गि [पिङ्ग + इञ्] यास्क का पैतृकनाम।

पैजूष [पिजूष + अण्] कान।

पैठर (वि०) (स्त्री०-री) [पिठर + अण्] किसी पात्र में उबाला हुआ।

पैठीनसि (पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो एक धर्मशास्त्र का प्रणेता है।

पैण्डिक्यम्, पैण्डिन्यम् [पिंड ठन् + ष्यञ्, पिण्ड + इन् + ष्यञ्] भिक्षा पर जीवन निर्वाह करना, भिक्षावृत्ति।

पैतामह (वि०) (स्त्री०-ही) [पितामह + अण्] 1 दादा या पितामह से संबंध रखने वाला 2 उत्तराधिकार में पितामह से प्राप्त 3 ब्रह्मा से गृहीत, ब्रह्मा से अधिष्ठित, या ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला रघु० १५।६०, **हा:** (ब० व०) पूर्वपुरुषा, बाप दादा।

पैतामहिक (वि०) (स्त्री०-की) [पितामह + ठक्] पितामह से संबंध रखने वाला।

पैतृक (वि०) (स्त्री०-की) [पितृ + ठञ्] 1 पिता से सम्बन्ध रखने वाला 2 पिता से प्राप्त या आगत पुरखाओं से संबद्ध पिता की परंपरा से प्राप्त—रघु० ८।६, १८।४०, मनु० ९।१०४, याज्ञ० २।४७ 3 पितरों के लिए पुनीत,—**कम्** मृत पुरखाओं या पितरों के सम्मान में अनुष्ठित श्राद्ध।

पैतृमत्य: [पितृमती + ण्य] 1 अविवाहिता स्त्री का पुत्र 2 किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र (पितृमत पुत्र)।

पैतृष्वसेय:, पैतृष्वस्रीय: [पितृष्वसृ + ढक्, छण् वा] फूफी या बुआ का बेटा।

पैत्त (वि०) (स्त्री०-त्ती) **पैत्तिक** (वि०) (स्त्री०-की) [पित्त + अण्, ठञ् वा] पित्तीय, पित्तसंबंधी।

पैत्र (वि०) (स्त्री०-त्री) [पितृ + अण्] 1 पिता या पुरखाओं से संबन्ध रखने वाला, पैतृक, पुश्तैनी 2 पितरों के लिए पुनीत, —**त्रम्** तर्जनी और अंगूठे का मध्यवर्ती हाथ का भाग (इस अर्थ में 'पैत्र्यम्' भी)।

पैलव (वि०) (स्त्री०-वी) [पीलु + अण्] पीलु वृक्ष की लकड़ी से बना हुआ – मनु० २।४५।

पैशल्यम् [पेशल + ष्यञ्] मृदुता, सुशीलता, सुकुमारता।

पैशाच (वि०) (स्त्री०-ची) [पिशाच + अण्] राक्षसी, नारकीय —**च:** हिन्दु धर्मशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से आठवाँ या निम्नतम श्रेणी का विवाह (इसमें किसी सोई हुई प्रमत्त या पागल कन्या का, उसकी स्वीकृति के बिना उसका कौमारहरण किया जाता है) सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः - मनु० ३।३४ याज्ञ० १।६१ 2 एक प्रकार का राक्षस या पिशाच —**चो** किसी धार्मिक संस्कार के अवसर पर तैयार किया गया नैवेद्य 2 रात 3 एक प्रकार की अबबड भाषा जो रंगमंच पर पिशाचों द्वारा बोली जाय प्राकृत भाषा का एक निम्नतम रूप।

पैशाचिक (वि०) (स्त्री० की) [पिशाच + ठक्] नारकीय राक्षसी।

पैशुनम्, न्यम् [पिशुन य भाव कर्म वा, पिशुन + ष्यञ् वा] 1 चुगली बदनामी, इधर की उधर लगाना, कलंक मनु० ७।४८ ११।५५, भग० १६।२ 2 बदमाशी, ठगी 3 दुष्टता, दुर्भावना।

पैष्ट (वि०) (स्त्री०-ष्टी) [पिष्ट + अण्] आटे का या पीठी का बना हुआ।

पैष्टिक (वि०) (स्त्री०-की) [पिष्ट + ठञ्] आटे या पीठी का बना हुआ **कम्** 1 कचौड़ियों का ढेर 2 अनाज से खींची हुई मदिरा।

पैष्टी [पैष्ट + ङीप्] अनाज को सड़ाकर उससे तैयार की हुई मदिरा - तु० गौड़ी

पो. (वि०) [पौ शुद्धो गड एकदेशो यस्य-तारा०] 1 बच्चा अवयस्क अपूर्ण विकसित 2 कम या विकृत अंग वाला 3 विकृत, विरूप, - **ड:** बालक जिसकी आयु ५ से सोलह वर्ष के भीतर की हो, तु० 'अपोगंड'।

पोटः [पुट्+घञ्] घर की नींव। सम०—**गलः** 1 एक प्रकार का नरकुल 2 कास 3 एक प्रकार की मछली।

पोटकः [पुट्+ण्वुल्] नौकर।

पोटा [पुट्+अच्+टाप्] 1 मरदानी स्त्री, पुरुषों की भांति दाढ़ी वाली स्त्री 2 हिजड़ा, उभयलिंगी 3 नौकरानी।

पोटी [पोट+ङीष्] स्थूलकाय मगरमच्छ।

पोट्टलिका, पोट्टली [पोट्टली+कन्+टाप्, ह्रस्व पोट्टली+ह ङीप्, पृषो०] पोटली, पुलिन्दा, गठरी।

पोतः [पू+तन्] 1 किसी भी जानवर का बच्चा, पशुशावक, बछेड़ा, अश्वशावक आदि—[illegible] —भामि० १।६० मृगपोत, करिपोत आदि, **कोरपोत** नया पोदा—उत्तर० ५।३ 2 दस बरस का हाथी 3 जहाज, बेड़ा, किश्ती, पोता—दुस्तरयानपात्रशिनारण हि० २।६५, मनु० ७।२२ 4 वस्त्र, कपड़ा 5 पौधे का अंकुर 6 घर बनाने की जगह। सम०—**आच्छादनम्** तम्बू,—**आधानम्** छोटी छोटी मछलियों का झुण्ड,—**धारिन्** (पुं०) जहाज का स्वामी,—**भंग** जहाज का टूट जाना,—**रक्ष** किश्ती या नाव का चप्पू या डांड,—**वणिज्** (पुं०) व्यापारी जो समुद्र में आ जाकर व्यापार करे,—**वाह** खिवैया, नाविक।

पोतकः [पोत+कन्] 1 पशुशावक 2 छोटा पौधा 3 घर बनाने के निमित्त भूखण्ड।

पोतासः [पोत+अस्+अच्] एक प्रकार का कपूर।

पोतृ (पुं०) [पू+तृच्] यज्ञ में कार्य कराने वाले सोलह ऋत्विजों में से एक (ब्रह्मा नामक ऋत्विज का सहायक)।

पोत्या [पोत+य+टाप्] नौकाओं का बेड़ा।

पोत्रम् [पू+ष्ट्रन्] 1 सूअर की थूथन 2 नौका, जहाज 3 हल का फलका 4 वज्र 5 वस्त्र 6 पोतृ का पद। सम०—**आयुधः** सूअर, वराह।

पोत्रिन् (पुं०) [पोत्र+इनि] सूअर, वराह।

पोलः [पुल्+ण] 1 ढेर 2 राशि, विस्तार।

पोलिका, पोली [पोली+कन्+टाप्, ह्रस्व, पोल+ङीष्] एक प्रकार की पूरी (गेहूं की बनी हुई)।

पोलिन्दः [पोतस्य अलिन्द इव पृषो०] जहाज का मस्तूल।

पोषः [पुष्+घञ्] 1 पोषण, संपालन, संधारण 2 पुष्टि, वृद्धि, संवर्धन, प्रगति 3 समृद्धि, प्राचुर्य, बाहुल्य।

पोषणम् [पुष्+णिच्+ल्युट्] पोसना, (छाती का) दूध पिलाना, पालना, संधारण करना।

पोषयित्नुः [पुष्+णिच्+इत्नुच्] कोयल।

पोषयितृ (वि०) [पुष्+णिच्+तृच्] दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला (पुं०) परवरिश करने वाला, दूध पिलाने वाला।

पोषिन्, पोष्टृ (वि०) [पुष्+णिनि, तृच् च] दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला (पुं०) पालक, पोषक, रक्षक।

पोष्य (वि०) [पुष्+ण्यत्] 1 खिलाये जाने के योग्य, पालन-पोषण किये जाने योग्य, संपालनीय 2 सुपालित, फलता फूलता, समृद्ध। सम०—**पुत्रः**, —**सुतः** गोद लिया हुआ पुत्र,—**वर्गः** ऐसे संबंधियों का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने के योग्य हों।

पौंश्चलीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुंश्चली+छण्] वेश्याओं से संबंध रखने वाला।

पौंश्चल्यम् [पुंश्चली+ष्यञ्] वेश्यापन, कुलटापन, मनु० ९।१५।

पौंसवनम् [पुंसवन+अण्] दे० पुंसवन।

पौंस्न (वि०) (स्त्री०—स्नी) [पुंस्+स्नञ्] 1 पुरुषोचित, भट्टि० ५।१ 2 मर्दाना,—**स्नम्** मर्दानगी, पौरुष।

पौगण्ड (वि०) (स्त्री०—डी) [पोगण्ड+अण्] बालोचित,—**ण्डम्** बचपन, बाल्यावस्था (५ से १६ वर्ष तक की आयु)।

पौण्ड्रः [पुण्ड्र+अण्] 1 एक देश का नाम 2 उस देश का राजा या निवासी 3 एक प्रकार का गन्ना 4 सफ़ेद शकरकन्द 5 भीम के शंख का नाम—पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः—भग० १।१५।

पौण्ड्रकः [पुण्ड्र+कन्] 1 गन्ने (ईख) का एक भेद 2 (उस देश का) रेशम के कीड़े पालने वाला जाति, [illegible] मनु० १०।४४।

पौण्ड्रकः [पुण्ड्र+ठक्] एक प्रकार का गन्ना (ईख), पौंडा।

पौतवम् [पोतव पृषो०] एक माप।

पौतिकम् [पूतिक+अण्] (शहद का) एक प्रकार का शहद।

पौत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [पुत्रस्यापत्यम्—अण्] पुत्र से प्राप्त या संबद्ध,—**त्रः** पोता, पुत्र का बेटा,—**त्री** पोती, पुत्र की बेटी।

पौत्रिकेय [पुत्रिका+ढक्] लड़की का पुत्र जो अपने नाना का वंश चलाये।

पौनः पुनिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुनः पुनः+ठञ्, टिलोप] बार बार दोहराया गया, बार बार होने वाला।

पौनः पुन्यम् [पुनः पुनः+ष्यञ्] बार बार आवृत्ति, लगातार दोहराया जाना।

पौनरुक्तम्, पौनरुक्त्यम् [पुनरुक्त+अण्, ष्यञ् च] 1 आवृत्ति—अतिप्रियत्वात् पौनरुक्त्यम् का० २१३, रघु० १०।६० 2 आधिक्य, अनावश्यकता, निरर्थकता अभिव्यक्तायां चन्द्रिकायां किं दीपिका-पौनरुक्त्येन—विक्रम० ३।

पौनर्भव (वि०) [पुनर्भू+अञ्] 1 विधवा दूसरे पति

से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से संबंध रखने वाला 2 दोहगया हुआ [illegible] व 1 पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र, प्राचीन हिन्दु धर्मशास्त्र में स्वीकृत बारह पुत्रों में से एक—याज्ञ० २।१३० मनु० ३।१५० 2 [illegible] का दूसरा पति मनु० ९।१७६।

पौर (वि०) (स्त्री०—री) [पुर अण्] किसी नगर या शहर से संबंध रखने वाला [illegible] नागरिक (विप० जानपद) कु० ६।४१ मेघ० ४७ रघु० २।१० ७४ १४।२, १६।९। सम० [illegible] पार्थिव (स्त्री०) स्त्री नगर में रहने वाली स्त्री जानपद (वि०) शहर या गांव में संबंध रखने [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वद्ध प्रमुख नागरिक [illegible]।

पौरकम् [illegible] 1 [illegible] 2 नगर के निकट उद्यान

पौरदर (वि०) (स्त्री० री) [illegible] प्राप्त इंद्र संबंधी [illegible] नक्षत्र।

पौरव (वि०) (स्त्री० री) [illegible] उत्पन्न [illegible] 2 [illegible] नागरिक 3 [illegible] निवास [illegible]

पौरवीय (वि०) [illegible] भक्त

पौरस्त्य (वि०) [illegible] पूर्वी [illegible] [illegible] पौरस्त्य [illegible] रघु० [illegible] 2 पहला प्रथम पूर्ववर्ती।

पौराण (वि०) (स्त्री० णी) [illegible] 1 [illegible] काल का प्राचीन [illegible] 2 [illegible] 3 पुराणों से संबंध रखने वाला या उनसे प्राप्त।

पौराणिक (वि०) (स्त्री० की) [पुराण ठक्] 1 [illegible] काल का प्राचीन 2 पुराणों से संबद्ध या उनसे प्राप्त 3 अतीत काल के उपाख्यानों का ज्ञाता [illegible] का सुविज्ञ ब्राह्मण पुराणों का पाठक (जनसाधारण में बैठ कर) 2 पुराणविद् पौराणिक कथा जानने वाला व्यक्ति।

पौरुष (वि०) (स्त्री०—षी) [पुरुष अण्] 1 पुरुष संबंधी मानवी 2 मर्दाना पुरुषोचित —ष एक मनुष्य के द्वारा ढोया जाने योग्य बोझा [illegible] षम् 1 मानवी कृत्य मनुष्य का काम चेष्टा प्रयत्न —विधिविहिता पौरुषम् भर्तृ० २।८८ दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या पंच० १ 2 शौर्य विक्रम वीरता, मर्दानगी साहस पौरुषभूषण —रघु० १५।२८ ८।८८ 3 पुरुषत्व —अम० ७।८ 4 वीर्य शुक्र 5 पुरुष का जननेन्द्रिय लिंग 6 मनुष्य की पूरी ऊँचाई खुली हुई अंगुलियों समेत अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर जितनी ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचे 7 धूपघड़ी।

पौरुषेय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुरुष ढञ्] 1 मनुष्य से प्राप्त मनुष्य कृत मनुष्य द्वारा स्थापित या प्रवर्तित [illegible] अपौरुषेय [illegible] 2 मर्दाना पुरुषोचित 3 आध्यात्मिक [illegible] 1 मनुष्यवध 2 मनुष्यों की भीड़ 3 [illegible] पर काम करने वाला श्रमिक [illegible] 4 मानवी काम मनुष्य का काम।

पौरुष्यम् [पुरुष [illegible]] मर्दानगी साहस शौर्य।

पौरोगव [पुरो [illegible] [illegible] [illegible] अण्] राज भवन का अधीक्षक [illegible] रसोई का।

पौरोभाग्यम् [illegible] [illegible] 1 [illegible] पौरो- [illegible] 2 [illegible]

पौरोहित्यम् [illegible] [illegible] [illegible] का पद [illegible]।

पौर्णमास [illegible] [illegible] पूर्णिमा [illegible] पूर्णिमा के [illegible]

पौर्णमासी पौर्णमी [illegible] पूर्णमासी

पौर्णमास्यम् [illegible] [illegible]

पौर्णिमा [illegible] [illegible]

पौर्तिक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पौर्व [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

पौर्वदेहिक [illegible] [illegible] पूर्वदेह ठक् [illegible] पूर्वजन्म [illegible]

पौर्वपदिक (वि०) (स्त्री० की) [पूर्वपद ठञ्] समास के प्रथम पद से संबंध रखने वाला।

पौर्वापर्यम् [पूर्वापर ष्यञ्] 1 [illegible] और बाद का संबंध पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती का संबंध 2 उचित क्रम अनुक्रम [illegible]।

पौर्वाह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वाह्ण [illegible]] दोपहर के पूर्वकाल से संबंध रखने वाला पूर्वाह्न से संबंधी।

पौर्विक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्व ठञ्] 1 पहला पूर्वकालीन पहले का 2 पैतृक 3 पुराना प्राचीन।

पौलस्त्य [पुलस्ते अपत्यम् पुलस्ति [illegible]] रावण का

विशेषण—पौलस्त्यः कथमन्यदाराहरणे दोषं न विज्ञातवान्– पंच० २।४, रघु० ४।८०, १०।५, १२।७२ 2. कुबेर का विशेषण 3 विभीषण का विशेषण 4 चन्द्रमा।

पौलिः (पु०, स्त्री०) पौली (स्त्री०) [पुल्+ण, पोलेन निर्वृत्त—पोल+इञ्, पौलि+ङीप्] एक प्रकार की पूरी।

पौलोमी [पुलोमन्+अण् अनो लोप, पौलोम+ङीप्] शची, पुलोमा की पुत्री, इन्द्र की पत्नी—आशीरन्या न ते युक्ता पौलोम्याः सदृशी भव श० ७।२८। सम० —संभवः जयन्त का विशेषण।

पौषः [पौषी+अण्] एक चान्द्रमास का नाम जिसमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है (दिसम्बर जनवरी में आने वाला मास), —षी पौष मास में आने वाली पूर्णिमा, रघु० १८।३५।

पौष्कर,—रक, (स्त्री०—री,—की) [पुष्कर+अण्, पौष्कर+कन्] नील कमल से संबंध रखने वाला।

पौष्करिणी [पुष्कराणां समूहः—पौष्कर+इनि+ङीप्] कमलों से भरा हुआ सरोवर, सरोवर।

पौष्कलः [पुष्कल+अण्] अनाज का एक भेद।

पौष्कल्यम् [पुष्कल+ष्यञ्] 1 परिपक्वता, पूर्ण विकास, पूरी वृद्धि 2 बाहुल्य।

पौष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुष्टि+ठञ्] 1 वृद्धि करने वाला, कल्याणकारक 2 पोषण करने वाला, पोषक, पुष्टिकारक, बलवर्धक।

पौष्णम् [पूषा देवता अस्य—पूषन्+अण्, उपधालोप] रेवती नक्षत्र।

पौष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पी) [पुष्प+अण्] फूल संबंधी या फूलों से प्राप्त, पुष्पमय, पुष्पित, —ष्पी 1 पाटलिपुत्र नगर, पटना 2. (फूलों से तैयार की गई एक प्रकार की) शराब।

प्याट् (अव्य०) [प्याय+डाटि (बा०)] हो, अहो आदि अव्यय जो बुलाने या पुकारने के लिए व्यवहृत होते हैं।

प्याय् (भ्वा० आ० प्यायते प्यान या पीन) फूलना, मोटा होना, बढ़ना, दे० नीचे 'प्यै'।

प्यायनम् [प्याय्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

प्यायित (वि०) [प्याय्+क्त] 1 वर्धित, वृद्धि को प्राप्त 2 जो मोटा हो गया हो 3 विश्रान्त, सशक्त किया हुआ।

(भ्वा० आ०—प्यायते, पीन), 1 बढ़ना, वृद्धि को प्राप्त होना, मोटा होना —भट्टि० ६।३३ 2 पुष्कल होना, समृद्ध, प्रेर०—प्याययति—ते 1 बढ़ाना 2 बड़ा करना, मोटा बनाना, पुष्टि करना मनु० ९।३१४ 2 तृप्त करना, इच्छानुसार संतुष्ट करना।

प्र (अव्य०) [प्रथ्+ड] 1 धातुओं के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका अर्थ है 'आगे' 'आगे का' 'सामने' 'आगे की ओर' 'पहले' 'दूर' यथा प्रगम्, प्रस्था, प्रचुर, प्रया आदि 2 विशेषणों के पूर्व लग कर इसका अर्थ है—'बहुत' 'बहुत अधिक' 'अत्यन्त' आदि प्रकृष्ट, प्रमत्त आदि, दे० आगे 3 संज्ञाओं (चाहे धातुओं से बने हों) के पूर्व लग कर गण० के अनुसार इसके निम्नांकित अर्थ होते हैं (क) आरंभ, उपक्रम यथा प्रयाणम्, प्रस्थानम् प्राह्न (ख) लंबाई यथा प्रबालमूषिक (ग) शक्ति यथा प्रभु (घ) तीव्रता, आधिक्य यथा प्रवाद, प्रकर्ष, प्रच्छाय प्रगुण (ङ) स्रोत या मूल यथा प्रभव, प्रपौत्र (च) पूर्ति, पूर्णता, तृप्ति यथा प्रभुक्तमन्नम् (छ) अभाव, वियोग, अन्तर्धान यथा प्रोषिता, प्रपर्णो वृक्षः (ज) आन्तरिक यथा प्रज्ञ (झ) श्रेष्ठता यथा प्राचार्य (ञ) पवित्रता यथा प्रसन्नं जलम् (ट) अभिलाषा यथा प्रार्थना (ठ) विराम यथा प्रशम (ड) सम्मान, आदर यथा प्राञ्जलि (जो सादर हाथ जोड़ता है) (ढ) प्रमुखता यथा प्रणम प्रताल।

प्रकट (वि०) [प्र+कट्+अच्] 1 स्पष्ट, साफ, जाहिर, प्रतीयमान, प्रत्यक्ष 2 बेपरदा, खुला हुआ 3 दृश्यमान —टम् (अव्य०) साफ तौर से, प्रत्यक्षतः, सार्वजनिक रूप से, स्पष्ट रूप से (प्रकटी कृ व्यक्त करना, खोलना, प्रदर्शन करना, प्रकटी भू व्यक्त होना, जाहिर होना)। सम० —प्रीतिवर्धन शिव का विशेषण।

प्रकटनम् [प्र+कट्+ल्युट्] व्यक्त होने की क्रिया, खोलना, उघाड़ देना।

प्रकटित (भू० क० कृ०) [प्रकट+क्त] 1 व्यक्त, प्रदर्शित, अनावृत 2 सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित 3 जाहिर।

प्रकंपः [प्र+कम्प्+घञ्] कांपना, हिलना, थरथराना, प्रचंड थरथरी या (भूकम्प के) धक्के —बाला बाह्वसितप्रकंपा प्राप्नुयात्प्रकम्पा सुभा०, सशिरःप्रकम्पम् —शि० १३।४२।

प्रकम्पन (वि०) [प्र+कम्प्+ल्युट्] हिलाने वाला, —नः 1 हवा, प्रचंड वायु, आंधी का झोंका —प्रकम्पनेनानुचकम्पिरे सुराः शि० १।६१, १४।४३ 2 नरक का नाम, —नम् अत्यधिक या प्रचंड कंपकंपी, ज़ोरदार थरथरी।

प्रकरः [प्र+कृ (कॄ)+अप्] ढेर, समुच्चय, मात्रा, संग्रह —मुक्ताफलप्रकरभाञ्जि गुहागृहाणि शि० ५।१२, बाष्पप्रकर कलुषां दृष्टिम् —श० ६।८, रघु० ९।५६, कु० ५।६८ 2 गुलदस्ता, पुष्पचय 3 मदद, सहायता, मित्रता 4 रिवाज, प्रचलन 5 आदर 6. स्त्रीत्वहरण, अपहरण, —रम् अगर की लकड़ी।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] 1 निरूपण करना, व्याख्या

करना, विचारविमर्श करना 2 विषय, प्रसंग, विभाग, (विग्रह का) विषय कतमत्प्रकरणमाश्रित्य —श० १ 3 अनुभाग, पाठ, परिच्छेद आदि किसी कृति का छोटा प्रभाग 4 भीका, अवसर 5 मामला, बात 6 प्रस्तावना, आमुख 7 नाटक का एक भेद जिसकी कथावस्तु कृत्रिम हो जैसा कि मृच्छकटिक मालती-माधव, पुष्पभूषित आदि। सा० द० कार द्वारा दी गई परिभाषा— भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्, शृंगारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्, सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः ५११।

प्रकरणिका, प्रकरणी [प्रकरणी + कन् + टाप्, ह्रस्व, प्रकरण + ङीप्] नाटक जो प्रकरण के लक्षणों से ही युक्त हो। सा० द० कार उस परिभाषा इस प्रकार करता है—नाटिकैव प्रकरणिका सार्थवाहादिनायिका समानवंशजा नेतुर्भवेद्यत्र च नायिका ५५४।

प्रकरिका [प्रकरी + कन् + टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय।

प्रकरी [प्रकर + ङीष्] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय 2 नटों की पोशाक 3 रंगस्थली 4 चौराहा 5 एक प्रकार का गीत।

प्रकर्षः [प्र + कृष् + घञ्] 1 श्रेष्ठता, प्रमुखता सर्वोपरिता —वपुः प्रकर्षादजयद्गुरुं रघुः रघु० ३।३४ वर्ण प्रकर्षे सति कु० ३।२८ 2 तीव्रता, प्रबलता आधिक्य —प्रकर्षगतेन शोकसंतानेन — उत्तर० ३ 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 निरपेक्षता 5 लम्बाई विस्तार प्रकर्षेण प्रकर्षात् (क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'अत्यंत' 'अधिकता के साथ' या 'उत्कृष्टता के साथ' अर्थ प्रकट करते हैं)।

प्रकर्षणम् [प्र + कृष् + ल्युट्] 1 खींचने की क्रिया, आकर्षण 2. हल चलाना 3 अवधि लंबाई, विस्तार 4 श्रेष्ठता, सर्वोपरिता 5 ध्यान हटाना।

प्रकला [प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म अंश।

प्रकल्पना [प्र + क्लृप् + णिच् + युच् + टाप्] स्थिर करना, निश्चयन, नियत करना—मनु० ८।२११।

प्रकल्पित (भू० क० कृ०) [प्र + क्लृप् + णिच् + क्त] 1 बनाया हुआ, कृत, निर्मित 2 निश्चित किया हुआ, नियत किया हुआ, —ता एक प्रकार की पहेली।

प्रकांडः, —डम् [प्रकृष्टं काण्डं —प्रा० स०] 1. वृक्ष का तना जड़ से शाखाओं तक—शि० ९।४५ 2 शाखा किसलय 3. (समास के अंत में) कोई भी श्रेष्ठ या प्रमुख प्रकार का पदार्थ—अकमकाण्डहितमेन तस्याः —नै० ७।९ 3 भुज प्रकांड —महावी० ६।३५ ५।४८ 4. वृक्ष का ऊपरी भाग।

प्रकांडकः [प्रकाण्ड + कन्] दे० 'प्रकाण्ड'।

प्रकांडरः [प्रकाण्ड + रा + क] वृक्ष पेड़।

प्रकाम (वि०) [प्रा० स०] 1 शृंगारप्रिय 2 अत्यन्त, अति, मनभर कर सानन्द प्रकाम विस्तर —रघु० ७।११, प्रकामालोकनीयताम् कु० २।२४ —मः इच्छा, आनन्द मनोद —मम् (अव्य०) 1 अत्यधिक, अत्यंत —जातो ममायं विशदः प्रकामम् (अन्तरात्मा), श० ४।२१, रघु० ६।६८ मृच्छ० ५।२५ 2 पर्याप्तरूप से, मन भर कर, इच्छानुकूल 3 स्वेच्छापूर्वक, मन से। सम०—भुज् (वि०) क्षुधा का खाने वाला, मन भर कर खाने वाला— रघु० १।६६।

प्रकार [प्र + कृ + घञ्] 1 ढंग, रीति, तरीका, शैली क प्रकारं किमेतत् —मा० ५।२० 2 किस्म, जिन्स भेद, जाति (प्रायः समास में प्रयुक्त) बहुप्रकार विविध प्रकार का, त्रिप्रकार, नाना आदि 3 समरूपता 4 विशेषता, विशिष्ट गुण।

प्रकाश (वि०) [प्र + काश् + अच्] 1 चमकीला चमकने वाला उज्ज्वल प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः रघु० १।६८, ५।१२ 2 साफ, स्पष्ट, प्रत्यक्ष शि० १२।५६, मन० ७।२५ 3 विशद, प्रांजल कि० १४।४ 4 विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, माना हुआ रघु० ३।४८ 5 खुला, सार्वजनिक 6 वृक्षादि काट कर साफ किया हुआ स्थान, खुली जगह रघु० ४।३१ 7 खिला हुआ, विस्तारित 8 (समास के अन्त में) (क) समान दिखाई देने वाला, सदृश, निर्मला-तुलना, शः 1 दीप्ति, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता 2 (आल०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, व्याख्या करना (प्रायः पुस्तकों के नामों के अन्त में) काव्य प्रकाश, भाव प्रकाश, तर्क प्रकाश आदि 3 धूप 4 प्रदर्शन, स्पष्टीकरण शि० ९।५ 5 कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्ध यश 6 विस्तार, प्रसार 7. खुली जगह, खुली हवा प्रकाश निर्गतोऽवलोकयामि — श० ४ 8 सुनहरी झीला 9 (पुस्तक का) अध्याय, परिच्छेद या अनुभाग —शम् (अव्य०) 1 खुले रूप से, सार्वजनिक रूप से —प्रतिभूर्दापितो यत्र प्रकाशं धनिनो धनम्—याज्ञ० २।५६, मनु० ८।१९३ ९।२२८ 2 ऊँचे स्वर से, प्रकट होकर, (रंगमंच के अनुदेश के रूप में नाटकों में प्रयु० —विप० आत्मगतम्)। सम०—आत्मक (वि०) चमकीला, उजला, —आत्मन् (वि०) उज्ज्वल, चमकदार (पु०) शिव का विशेषण 2 सूर्य—इतर (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य, —नारी सुलभललना कारीगना, —नारी वारांगना रंडी, वेश्या—अर्थ चतुःशाल मिव प्रवेश्य प्रकाशनारीधृत एव यस्मात्—मृच्छ० ३।७।

प्रकाशक (वि०) (स्त्री०—शिका) [प्र + काश् + णिच्

ण्वुल्] 1. प्रकट करने वाला, खोजने वाला, उघाड़ने वाला, सूचित करने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शित करने वाला 2. अभिव्यक्त करने वाला, संकेत करने वाला 3. व्याख्या करने वाला 4. उजला, चमकीला, उज्ज्वल 5. माना हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात,—कः 1 सूर्य 2. खोजी 3. प्रकाशित करने वाला। सम०—आत्मन् (पुं०) मुर्गा।

प्रकाशन (वि०) [प्र+काश्+णिच्+ल्युट्] रोशनी करने वाला, विख्यात करने वाला,—नम् 1. बतलाना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, उघाड़ना 2. प्रदर्शन, स्पष्टीकरण 3. रोशनी करना, चमकाना, उजला करना,—नः विष्णु।

प्रकाशित (भू०क०कृ०) [प्र+काश्+णिच्+क्त] 1 प्रकट किया गया, स्पष्ट किया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत 2. छापा गया—प्रणीतो न तु प्रकाशितः—उत्तर० ४ 3 रोशन किया गया, चमकाया गया, ज्योतिर्मान किया गया 4. जो दिखलाई दे, दृश्य, स्पष्ट, प्रकट।

प्रकाशिन् (वि०) [प्रकाश+इनि] साफ, उजला, चमकदार आदि।

प्रकिरणम् [प्र+कॄ+ल्युट्] इधर उधर बिखेरना, छितराना।

प्रकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+कॄ+क्त] 1 इधर उधर बिखरा हुआ, छितराया हुआ, बिछाया हुआ, तितर बितर किया हुआ—प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम्—वेणी० १।१ 2. फैलाया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित 3. लहराया हुआ—लहराता हुआ—शि० १२।१७ 4 विपर्यस्त, शिथिल, अस्तव्यस्त 5 अव्यवस्थित, असंबद्ध—बहूनपि स्वेच्छया कामं प्रकीर्णमभिधीयते—शि० २।६३ 6 क्षुब्ध, उत्तेजित 7. विविध, मिश्रित—जैसा कि भट्टिकाव्य का प्रकीर्णकांड,—र्णम् 1. नाना-संग्रह, फुटकर संग्रह 2. फुटकर नियमों के संग्रह का एक अध्याय।

प्रकीर्णक (वि०) [प्रकीर्ण+कन्] इधर उधर बिखरे हुए, छितरे हुए, कः,—कम् चमर, मोरछल—शि० १२।१७,—कः घोड़ा,—कम् 1. नाना संग्रह, फुटकर वस्तुओं का संग्रह 2. विविध विषयों का अध्याय।

प्रकीर्तनम् [प्र+कॄत्+ल्युट्] 1. उद्घोषण, घोषणा 2. प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना।

प्रकीर्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. प्रसिद्धि, प्रशंसा 2. यश, ख्याति 3. घोषणा।

प्रकुंचः [प्र+कुञ्च्+घञ्] मात्रा का विशेष माप।

प्रकुपित (भू० क० कृ०) [प्र+कुप्+क्त] 1. अतिक्रुद्ध, कोपाविष्ट, रुष्ट 2. उत्तेजित।

प्रकृलम् [प्र+कुल्+क] सुन्दर शरीर, सुडौल काया।

प्रकूष्माण्डी [प्रा० स०—ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

प्रकृत (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2. आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 3. नियुक्त किया हुआ, जिसे कार्य भार सौंपा जा चुका 4. असली, वास्तविक 5 चर्चा का विषय, विचारणीय विषय, प्रस्तुत विषय (अलंकारग्रंथों में 'उपमेय' के लिए बहुधा प्रयुक्त) संभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्—काव्य० १० 6 महत्त्वपूर्ण, मनोरंजक,—तम् मूलविषय, प्रस्तुत विषय, यानु किमनेन प्रकृतमेव अनुसराम। सम०—अर्थ (वि०) मूल अर्थ को रखने वाला (—र्थः) मूल अर्थ।

प्रकृतिः (स्त्री०) [प्र+कृ+क्तिन्] 1 किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, माया, जड़जगत्, स्वाभाविक रूप (विप० विकृति जो या तो परिवर्तन है या कार्य) प्रकृत्या गुरुकम्—श० ३।१७ उष्णत्वमग्न्यातपसंप्रयोगात् शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य—रघु० ५।५४, मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः—रघु० ८।८७, अपि हि ते भगवान् प्रकृतिमापन्नः—श० ७ (उन्होंने फिर अपना सामान्य स्वभाव धारण कर लिया है) प्रकृतिमापद्, प्रकृतिप्रतिपद् प्रकृतौ स्था होश में आना, अपना स्वास्थ्य फिर प्राप्त करना 2 नैसर्गिक स्वभाव, मिजाज, स्वभाव, आदत, (मानसिक) रचना, वृत्ति—प्रकृतिकृपण, प्रकृतिसिद्ध—पं० नी० 3 बनावट, रूप, आकृति—महानुभावप्रकृतिः मा० १ 4 यथानुक्रम, यथापरंपरा—मृच्छ० ७ 5 मूल, स्रोत, मौलिक या भौतिक कारण, उपादान-कारण—प्रकृतिश्चोपादानकारणं च ब्रह्माभ्युपगन्तव्यम् शारी० (ब्रह्म० १।४।२३ पर की गई चर्चा का पूरा विवरण देखिये) यमाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति—श० १।१ 6 (सांख्य० में) प्रकृति (पुरुष से विभिन्न) —भौतिक सृष्टि का मूलस्रोत जिसमें तीन (सत्त्व, रजस् और तमस्) प्रधान गुण सन्निविष्ट हैं 7. (व्या० में०) मूलधातु या शब्द (प्रातिपदिक) जिसमें लकार और कारकों के प्रत्यय लगाए जाते हैं 8. आदर्श, नमूना, मानक (विशेषतः कर्मकाण्ड की पुस्तकों में 9. स्त्री 10. सृष्टि रचना में परमात्मा की मूर्त इच्छा (इसी को 'माया' या मरीचिका कहते हैं) भग० ९।१० 11 स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय, योनि, लिङ्ग 12. माता, (ब० व०) 1 राजा के मन्त्री, मन्त्रिपरिषद्, अमात्यवर्ग—रघु० १२।१२, पंच० १।४८, १०१ 2 (राजा की) प्रजा—प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः —श० ७।३५, नृपतिः प्रकृतीरवेक्षितुम्—रघु० ८।१८, १० 3. राज्य के संविधायी सात तत्त्व या अंग अर्थात् १. राजा २. मन्त्री ३. मित्रराष्ट्र ४.कोष ५. सेना, ६. प्रदेश ७. गढ़ आदि ८. नगरपालिका या निगम (यह भी कभी-कभी उपर्युक्त सातों के साथ

जोड़ दिया जाता है) —स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च —अमर 4 अनेक राजा जो युद्ध के समय विचारणीय होते हैं (पूरे विवरण के लिए दे० मनु० ७।१५५, और १५७ पर कुल्लू०) 5 आठ प्रधान तत्त्व जिनसे सांख्यशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है, दे० सां० का० ३ 6 सृष्टि के पाँच प्रधान तत्त्व, पंच महाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। सम०—ईशः राजा या दण्डाधिकारी, —कृपण (वि०) स्वभाव से मूर्ख, या विवेकहीन —मेघ० ५, —तरल (वि०) चंचल स्वभाव का, अस्थिर, ढुलमुल— अमरु २७, —पुरुषः मन्त्री, (राज्य का) कार्य निर्वाहक —मेघ० ६, —मण्डलम् समस्त प्रदेश या राजधानी रघु० ९।२, —लयः प्रकृति में लय हो जाना विश्व का विघटन —सिद्ध (वि०) अन्तर्जात, सहज, नैसर्गिक भर्तृ० २।५२, —सुभग (वि०) स्वभाव से प्रिय, रुचिकर, —स्थ (वि०) 1 प्राकृतिक अवस्था में होने वाला, स्वाभाविक, असली 2 अंतर्हित, सहज, प्रकृति के अनुरूप रघु० ८।२१ 3 स्वस्थ, तन्दुरुस्त 4 जिसने आरोग्य प्राप्त कर लिया हो 5 स्वस्थ, आत्मलीन 6 विकल, नंगा।

प्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+कृष्+क्त] 1 खींचकर निकाला हुआ 2 सुदीर्घ, लंबा, अतिविस्तृत 3 सर्वोत्तम पूज्य, श्रेष्ठ प्रमुख, गौरवशाली 4 मुख्य प्रधान 5 विक्षिप्त, अशांत।

प्रकॢप्त (भू० क० कृ०) [प्र+कॢप्+क्त] तैयार किया हुआ, सज्जीकृत, व्यवस्थित।

प्रकोपः [प्र+कुप्+घञ्] नाराज, क्रोध।

प्रकोष्ठः [प्र+कुष्+थन्] 1 कोहनी से नीचे की भुजा, गट्टे से ऊपर का हाथ—आबद्धप्रकोष्ठमणिनहेमवेषे —कु० ३।४१, कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः मेघ० २, रघु० ३।५९ श० ६।६ 2 फाटक के निकट का कमरा मुद्रा० १ 3 घर का आँगन (चारों और मकानों से घिरा हुआ) चौकोर या वर्गाकार आँगन —इम प्रथमं प्रकोष्ठं प्रविश्य श्वार्ये —आदि— मृच्छ० ४।

प्रकोष्ठकः [प्रकोष्ठ+कन्] फाटक के पास का कमरा —[illegible] प्रकोष्ठके कु० १५।६।

प्रक्खरः [=प्रखर पृषो०] 1 हाथी या घोड़े की रक्षा के लिए कवच 2 कुत्ता 3 खच्चर।

प्रक्रमः [प्र+क्रम्+घञ्] 1 पग, कदम 2 दूरी मापने का माप, पग का अन्तर (लगभग ३० इंच) 3 आरंभ शुरू 4 प्रक्रम मार्ग भा० ५।२४ 5 प्रस्तुत बात 6 अवकाश, अवसर 7 नियमितता, क्रम प्रणाली 8 मात्रा, अनुपात, माप। सम०—भंगः नियमितता और समसिति का अभाव, क्रम का टूट जाना, रचना का एक दोष (काव्य० ७ में वर्णित 'भग्न-प्रक्रमता' यही है, समसिति या समरूपता का अभाव चाहे वह अभिव्यक्ति में हो चाहे रचना में—नाथे निशाया नियतेर्नियोगादस्तं गते हन्त निशापि याता —यह अभिव्यक्ति की समरूपता के अभाव का उदाहरण है, यहाँ 'गता निशापि' ने अभिव्यक्ति की अनिवार्यता को शान्त कर दिया है, विश्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले —रचना की अनियमितता का उदाहरण है यहाँ कविता की समरूपता को स्थिर रखने के लिए कर्मवाच्य के बजाय कर्तृवाच्य रचना की आवश्यकता है इसी पंक्ति को बदलकर 'विश्रब्धा रचयतु सूकरवरा मुस्ताक्षतिं पल्वले' पढ़ने से दोष का परिहार हो जाता है—अधिक विवरण के लिए दे० काव्य ७ 'भग्न प्रक्रमता' के नीचे।

प्रक्रान्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्रम्+क्त] 1 आरब्ध किया गया, शुरू किया गया 2 गया, प्रगत 3 प्रस्तुत, विचाराधीन 4 बहादुर।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श+टाप्] 1 रीति, प्रणाली, पद्धति 2 कर्मकांड, संस्कार 3 राजचिह्न का धारण करना 4 उच्च पद, समुन्नति 5 (किसी पुस्तक का) एक अध्याय या अनुभाग—यथा उणादिप्रक्रिया 6 (व्या० में) व्युत्पत्तिजन्य रूपनिर्माण 7 अधिकार।

प्रक्रीडः [प्र+क्रीड्+घञ्] क्रीडा, मनोरंजन, खेल या आमोद-प्रमोद।

प्रक्लिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+क्लिद्+क्त] 1 तर, नमी वाला गीला 2 तृप्त 3 दया से पसीजा हुआ।

प्रक्वणः, प्रक्वाणः [प्र+क्वण्+अप्, घञ् च] वीणा की झनकार।

प्रक्षयः [प्र+क्षि+अच्] नाश, बरबादी।

प्रक्षर दे० प्रक्खर।

प्रक्षरणम् [प्र+क्षर्+ल्युट्] चूना, स्रवित होना, रिसना।

प्रक्षालनम् [प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 धोना, धो डालना —रघु० ६।४८ 2 माँजना साफ करना, स्वच्छ करना 3 धोने के लिए पानी।

प्रक्षालित (भू० क० कृ०) [प्र+क्षल्+णिच्+क्त] 1 धोया गया, माँजा गया 2 स्वच्छ किया गया 3 जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है।

प्रक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्षिप्+क्त] 1 फेंका गया, डाला गया, उछाला गया 2 डाला गया —भा० ५।२२ 3 निकला हुआ 4 बीच में डाला गया, नकली या जाली यथा 'प्रक्षिप्तोऽयं श्लोकः' में।

प्रक्षीण (भू० क० कृ०) [प्र+क्षि+क्त] 1 मुर्झाया हुआ, दुर्बल होने वाला 2 नष्ट किया हुआ 3 जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है 4 लुप्त, ओझल।

प्रक्षुण्ण (भू० क० कृ०) [प्र + क्षुद् + क्त] 1. कुचला हुआ 2. आरपार भेदा हुआ 3 उत्तेजित किया हुआ ।

प्रक्षेप [प्र + क्षिप् + घञ्] 1 आगे फेंकना उभारना फेंकना डालना 3 बखेरना 4 छोट बसाना बीच में मिलाना 5 गाड़ी का बक्स 6 किसी व्यापारिक संघ के प्रत्येक सदस्य द्वारा जमा की गई धनराशि ।

प्रक्षेपणम् [प्र + क्षिप् + णिच् + ल्युट्] फेंकना डालना उछालना ।

प्रक्षोभणम् [प्र + क्षुभ् + ल्युट्] उत्तेजना, क्षोभ ।

प्रक्ष्वेडनः [प्र + क्ष्विड् + ल्युट्] लोहे का तीर 2 हल्ला गुल्ला हुल्लड़बाजी ।

प्रक्ष्वेडित (वि०) [प्र + क्ष्विड् + णिच् + क्त] मुखर चीत्कार से पूर्ण कोलाहलमय ।

प्रखर (वि०) [प्रकृष्ट + खर —प्रा० स०] 1 अत्यन्त गरम यथा प्रखरकिरण 2 तेज धारयुक्त तीक्ष्ण 3 अत्यन्त कठोर, रूखा — दे० 'प्रक्खर' ।

प्रख्य (वि०) [प्र + ख्या + क] 1 साफ प्रत्यक्ष स्पष्ट 2 (के समान) दिखाई देने वाला मिलता-जुलता (समास के अन्त में प्रयुक्त) अमृत° शशांक° आदि ।

प्रख्या [प्र + ख्या + अङ + टाप्] 1 प्रत्यक्षज्ञेयता दृश्यता 2 विभूति, यश प्रसिद्धि —यवमत्प्रख्यस्य मम यव पुरीमिमाम्– रामा० 3 उजाला 4 समरूपता समानता (समास में) याज्ञ० ३।१० ।

प्रख्यात (भू० क० कृ०) [प्र + ख्या + क्त] 1 मशहूर, प्रसिद्ध, विश्रुत माना हुआ 2 पहले से मोल लिया हुआ, पूर्वक्रयाधिकार केवल पर अत्यधिक 3 खुश प्रसन्न । सम० –वप्तृक (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला ।

प्रख्याति (स्त्री० [प्र + ख्या + क्तिन्] 1 कीर्ति विभूति, प्रसिद्धि 2 प्रशंसा स्तुति ।

प्रगंडः [प्रकृष्ट: गंडो यस्य प्रा० ब०] कोहनी से ऊपर कंधे तक की भुजा ।

प्रगंडी [प्रगंड + ङीष्] (नगर का) परकोटा, बाहरी दीवाल ।

प्रगत (भू० क० कृ०) [प्र + गम् + क्त] 1 आगे गया हुआ 2 पृथक्, अलग । सम० –जानु,–जानुक (वि०) धनुष्पदी, मुड़ने पर मुड़ी हुई टांगों वाला ।

प्रगमः [प्र + गम् + अप्] प्रेम की आराधना में प्रथम प्रगति, प्रेम की प्रथम अभिव्यक्ति ।

प्रगमनम् [प्र + गम् + ल्युट्] 1 आगे बढ़ना, प्रगति 2 प्रेम की आराधना में पहला कदम, दे० ऊ० 'प्रगम' ।

प्रगर्जनम् [प्र + गर्ज् + ल्युट्] दहाड़ना, चिंघाड़ना गरजना ।

प्रगल्भ (वि०) [प्र + गल्भ् + अच्] 1 साहसी, भरोसा करने वाला 2 हिम्मती, बहादुर, निडर, उत्साही, साहसी,—रघु० २।४१ 3 वाग्मी, वाक्पटु –रघु० ६।२० 4 हाजिर जवाब, मुस्तैद 5 दृढ़ संकल्पी, ऊर्जस्वी 6 (आयु की दृष्टि से) परिपक्व कु० १। ५१ 7 परिपक्व विकसित, पूरा बढ़ा हुआ बलवान् प्रगल्भवाक् कु० ५।३० (प्रौढ़वाक्) मा० १।२० उत्तर० ६।३९ 8 कुशल का० १२ 9 बेधड़क, उद्धत घमंडी उपकारशील 10 निर्लज्ज ढीठ रघु० १३।२ 11 गौरवशाली प्रमुख —ल्भा 1 साहसी स्त्री 2 कर्कशा, झगड़ालू स्त्री 3 प्रौढ़ या प्रौढ़ स्त्री काव्यनाटक की नायिका का एक भेद (सब प्रकार के लाड़प्यार व चुम्बन आदि में चतुर ऊँचे दर्जे के व्यवहार से युक्त शालीनता-सम्पन्न प्रौढ़ आयु की तथा अपने पति पर शासन करने वाली सा० द० १०१ रस मंजरी उदाहरण) ।

प्रगाढ (भू० क० कृ०) [प्र + गाह् + क्त] 1 डुबाया हुआ तर किया हुआ भिगोया हुआ 2 अति अत्यधिक तीव्र 3 दृढ़ मजबूत 4 कठोर कठिन —ढम् 1 कष्ट 2 तपस्या शारीरिक कष्ट —ढम् (अव्य०) 1 अत्यधिक अत्यन्त 2 दृढ़तापूर्वक ।

प्रगातृ (पुं०) [प्र + गै + तृच्] उत्तम गान वाला ।

प्रगुण (वि०) [प्रकृष्टः गुणो यत्र प्रा० ब०] 1 सीधा ईमानदार खरा (आप० भा० में) सौहृदमर्यादाकारपरगुणरमणीय स्पष्टकरण म० १।१० 2 सुव्यवस्थित उत्तम गुणों से युक्त धर्मकार्यपरगुणा च कराग्रमभी नुमन्त्रणा मार्जनीयः रघु० ९।४९ 3 (क) योग्य उपयुक्त पूर्ण मा० ९।१६ (ख) प्रवीण ९।४९ 4 कुशल चतुर (प्रगुणी कृ 1 सीधा करना, क्रम से रखना व्यवस्थित करना 2 चिकना करना 3 पालन-पोषण करना परवरिश करना) ।

प्रगुणित (वि०) [प्र + गुण् + क्त] 1 सीधा या समतल किया हुआ 2 चिकना किया हुआ ।

प्रगृहीत (भू० क० कृ०) [प्र + ग्रह् + क्त] 1 थामा हुआ सम्भाला हुआ 2 प्राप्त, स्वीकृत 3 सन्धि के नियमों की अधीनता का अभाव दे० नीचे 'प्रगृह्य' ।

प्रगृह्यम् [प्र + ग्रह् + क्यप्] सन्धि के नियमों से मुक्त स्वर जो स्वतन्त्र रूप से बोला या लिखा जाय ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्' पा० १।१।११ ।

प्रगे (अव्य०) [प्रकर्षेण गीयतेऽत्र प्र + गै + के] भोर होते ही भी पहले ही —प्रगे स्वाध्यायमभिवादिनो प्रगे गणाः नृपाणामथ तौरणाद् बहिः शि० १२।१ साथ स्नात्वाप्रगे तथा मनु० ६।९, ४।६२ । सम० –तन (वि०) प्रातः काल अनुष्ठेय कार्य विषय, –शय (वि०) जो दिन निकल आने पर भी सोया पड़ा है ।

प्रगोपनम् [प्र + गुप् + ल्युट्] रक्षण, संधारण ।

प्रग्रसनम् [प्र + ग्रस् + ल्युट्] जल्दी करना, भूखना, चूमना ।

प्रग्रहः [प्र+ग्रह्+अप्] 1 फैलाना, थामना 2 पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, हथियार लेना 3 ग्रहण का आरम्भ 4 रास, लगाम धृता प्रग्रहा अवतरत्यायम्मान —श० १ शि० १२।३१ 5 रोक थाम पाबन्दी 6. बंधन, कैद 7 कैदी, बन्दी 8 पालना (कुत्ते आदि जानवर का) सधाना 9 प्रकाश की किरण 10 तराजू की डोरी 11 संधि के नियमों से मुक्त स्वर दे० 'प्रगृह्य'।

प्रग्रहणम् [प्र+ग्रह्+ल्युट्] 1 लेना पकड़ना धरना 2 ग्रहण का आरम्भ 3 रास लगाम 4 रोक थाम पाबन्दी।

प्रग्राह [प्र+ग्रह् घञ्] 1 पकड़ना लेना 2 ले आना ढोना 3 तराजू की डोरी 4 रास लगाम।

प्रग्रीव, वम् [प्रकृष्टा ग्रीवा यस्य प्रा० ब०] 1 रंगी हुई बुर्जी 2 किसी मकान के चारों ओर लकड़ी की बाड़ 3 तबेला 4 वृक्ष की चोटी।

प्रघटक [प्र+घट्+णिच्+ण्वुल्] नियम सिद्धान्त विधि (आदेश)।

प्रघटा [प्रा० स०] किसी विज्ञान के आरम्भिक सिद्धान्त या मूलतत्त्व। सम० —विद् (पुं०) ऊपर ऊपर का पाठ करने वाला, नौसिखिया।

प्रघण (ण) **प्रघाण** (णः) [प्र+हन्+अप् घत्ववृद्धि णत्वाभावश्च] 1 भवन के द्वार के सामने बनी ड्योढ़ी पौली 2 तांबे का बर्तन 3 लोहे की गदा या घन (लौहदण्ड)।

प्रघस (वि०) [प्र+अद्+अप् घसादेश] खाऊ, पेटू —सः 1 राक्षस खाऊपना, पेटूपन।

प्रघात [प्र+हन्+घञ्] 1 हत्या 2 संघर्ष, युद्ध।

प्रघुण [प्र+घुण्+क] अतिथि (पाठान्तर प्राघुण, या प्राघूर्ण)।

प्रघूर्णः [प्र+घूर्ण्+अच्] अतिथि दे० प्राघूर्ण।

प्रघोषः [प्र+घुष्+घञ्] 1 शोर शब्द कोलाहल 2 हंगामा होहल्ला।

प्रचक्रम् [प्रगततच्चक्रम् प्रा० स०] कूच करने वाली सेना, प्रयाणोन्मुख फौज।

प्रचक्षस् (पुं०) [प्र+चक्ष्+असुन्] 1 बृहस्पति ग्रह 2 बृहस्पति का विशेषण।

प्रचंड (वि०) [प्रकर्षेण चण्ड प्रा० स०] 1 उत्कट अत्यन्त तीव्र, उग्र 2 मजबूत, शक्तिशाली भीषण 3 अत्युष्ण, दम घोटने वाली (गर्मी) 4 क्रुद्ध, कोपाविष्ट 5 साहसी, भरोसा करने वाला 6 भयंकर भयावह 7 असहिष्णु, असह्य। सम० — आतपः भीषण गर्मी,—घोण (वि०) लम्बी नाक वाला, —सूर्य (वि०) उग्र या जलते हुए सूर्य वाला —महा० ११।१०।

प्रच (चा) **य** [प्र+चि+अप्, घञ्, वा] 1 संग्रह करना (फूल आदि) चुनना 2 समुच्चय मात्रा, संचय, राशि महावी० २।१५ 3. वृद्धि, वर्धन 4 साधारण संकलन।

प्रचयनम् [प्र+चि+ल्युट्] संग्रह करना इकट्ठा करना।

प्रचरः [प्र+चर्+अप्] 1 मार्ग पथ रास्ता 2 प्रथा रिवाज।

प्रचल (वि०) [प्र+चल्+अच्] 1 कांपता हुआ हिलता हुआ थरथराता हुआ, कु० ६।३५ मा० १।३ 2 प्रचलित प्रथानुकूल।

प्रचलाक [प्र+चल्+आकन्] 1 धनुर्विद्या 2 मोर की पूंछ 3 सांप।

प्रचलाकिन् (पुं०) [प्रचलाक+इनि] मोर—उत्तर० ४।२९

प्रचलायित (वि०) [प्रचल+आङ्+क्त] इधर उधर करवट बदलता हुआ, उछलने वाला, नमृ सिर हिलाता (नींद में ऊंघने के कारण)।

प्रचायिका [प्र+चि+ण्वुल्+टाप्, इत्व आदि] बारी बारी से चुनना 2 चुनने की रीति।

प्रचार [प्र+चर्+घञ्] 1 विचरण करना भ्रमण करना 2 इधर उधर टहलना घूमना कु० ६।४२ 3 दर्शन प्रादुर्भाव उत्तर० १ मुद्रा० १ 4 प्रचलन प्रसार रिवाज व्यवहार प्रयोग 'वनान्त मेऽत्यधुना प्रचारम्' शिका० 5 आचरण व्यवहार 6 यथा रिवाज 8 चरागाह चरागाह याज्ञ० २।१६६ 9 रास्ता पथ मनु० ९।२६४।

प्रचाल [पर्युष्टदचाल —प्रा० स०] वीणा की गरदन।

प्रचालनम् [प्र+चल्+णिच्+ल्युट्] विलोडन हिलाना हलचल।

प्रचित (भू० क० कृ०) [प्र+चि+क्त] 1 एकत्र किया हुआ संचय किया हुआ तोड़ा हुआ 2 ढेर लिया गया संचित 3 ढका या भरा गया।

प्रचुर (वि०) [प्र+चुर्+क] 1 अति यथेष्ट बहुल, पुष्कल नितम्बया प्रचुरनितम्बयानामया च भर्तृ० ४।४७, शि० १२।७२ 2 बड़ा, विशाल विस्तृत प्रचुर पुरदरधनु गीत० २ 3 (समास के अन्त में) बहुत अधिक भरपूर परिपूर्ण पु० वार। सम० —पुरुष (वि०) जनसंकुल, घना आबाद (—षः) चोर।

प्रचेतस् (पुं०) [प्र+चित्+असुन्] 1 वरुण का विशेषण कु० २।२१ 2 एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार था मनु० १।३५।

प्रचेतृ (पुं०) [प्र+चि+तृच्] रथवान सारथि।

प्रचेलकम् [प्र+चेल्+अच्] चन्दन की पीली लकड़ी।

प्रचेलक [प्र+चेल्+ण्वुल्] घोड़ा।

प्रचोद [प्र+चुद्+घञ्] 1 आगे हांकना बलपूर्वक चलाना आगे बढ़ने के लिए उकसाना 2 भड़काना, प्रेरित करना।

प्रचोदनम् [प्र+चुद्+ल्युट्] 1 हाँक कर आगे बढ़ाना, बलपूर्वक चलाना, उकसाना 2. भड़काना, जमा देना 3 आदेश देना, निर्देश देना 4 नियम, विधि, समादेश।

प्रचोदित (भू० क० कृ०) [प्र+चुद्+क्त] 1 बलपूर्वक बढ़ाया हुआ, उकसाया हुआ 2 भड़काया हुआ 3 निदेशित, आदिष्ट, नियत किया हुआ—मनु० २।१९१ 4. भेजा गया, प्रेषित 5 निर्णीत, निर्धारित।

प्रच्छ् (तुदा० पर०—पृच्छति, पृष्ट - प्रेर० प्रच्छयति, कर्म० पृच्छ्यते इच्छा० पिपृच्छिषति, पूछना, सवाल करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना (द्विकर्मक) पप्रच्छ रामां रमणोऽभिलाषम्—रघु० १४।२७, भट्टि० ६।८, रघु० ३।५, भग० २।७, ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत् —मनु० २।१२७ 2 ढूँढ़ना, तलाश करना, अनु—, पूछताछ करना, इधर उधर के प्रश्न करना, आ—, । पूछना, प्रश्न करना 2 विदा करना 3 विदा होना (आ०) आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुंगमालिंग्य शैलम् —मेघ० १२, रघु० ८।४९, १२।१०३, परि—, पूछना, प्रश्न करना, पूछताछ करना।

प्रच्छदः [प्र+छद्+णिच्+घ] आवरण, आच्छादन लपेटन, चादर, बिछावन बिस्तरे की चादर—रघु० १९।२२। सम०—पटः बिछावन, चादर।

प्रच्छनम्,—ना [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछताछ, परिपृच्छा।

प्रच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्र+छद्+क्त] 1 ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए, लपेटा हुआ, लिफाफे में बन्द किया हुआ 2. निजी, गोपनीय —भर्तृ० २।६४ 3 छिपा हुआ, गुप्त (दे० प्रपूर्वक छद्),—न्नम् 1 निजी द्वार 2 झरोखा, जाली खिड़की,—न्नम् (अव्य०) गुप्त रूप से चुपचाप। सम०—तस्करः गुप्तचर जो चोरी करता हुआ दिखाई न दे, परन्तु चोरी करे अवश्य।

प्रच्छर्दनम् [प्र+छर्द्+ल्युट्] 1 वमन 2 बाहर निकालना, फेंकना 3 उलटी लाने वाली (दवा)।

प्रच्छर्दिका [प्र+छर्द्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] उलटी होना, कै आना।

प्रच्छादनम् [प्र+छद्+णिच्+ल्युट्] 1 ढकना, छिपाना 2. उत्तरीय,ओढ़नी। सम०—पटः लपेटन, ढकना, चादर।

प्रच्छादित (भू० क० कृ०) [प्र+छद्+णिच्+क्त] 1. ढका हुआ, लपेटा हुआ, वस्त्राच्छादित आदि 2. गुप्त, छिपा हुआ।

प्रच्छायम् [प्रकृष्टा छाया यत्र] सघन छाया, छायादार स्थान—प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परिणामरमणीया —श० १।३ मालवि० ३।

प्रच्छिल (वि०) [पच्छ+इलच्] शुष्क, निर्जल।

प्रच्यवः [प्र+च्यु+अप्] 1 पात, बर्बादी 2. सुधार, प्रगति, विकास 3 वापसी।

प्रच्यवनम् [प्र+च्यु+ल्युट्] 1 विदा होना, मुड़ना, वापसी 2. हानि, वंचना 3 रिसना, झरना।

प्रच्युत (भू० क० कृ०) [प्र+च्यु+क्त] 1 टूट कर गिरा हुआ, झड़ा हुआ 2. भटका हुआ, विचलित 3 स्थान भ्रष्ट, विस्थापित, पतित 4 खदेड़ा हुआ, भगाया हुआ।

प्रच्युति (स्त्री०) [प्र+च्यु+क्तिन्] 1 विदा होना, वापसी, 2. हानि, वञ्चना अध पतन—किन्नं प्रच्युति बाधका अनयपि स्वर्गे न मोदामहे-श० ४।२० 3 पात, बर्बादी।

प्रजः [प्रविश्य जायायां जायते जन्+ड] पति, स्वामी।

प्रजनः [प्र+जन्+घञ्] गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पादन—मनु० ३।६१, ९।६१ 2. पशु (नर पशु का मादा पशु से संगम) में गर्भाधान करना 3 उत्पन्न करना,—पैदा करना—मनु० ९।९६।

प्रजननम् [प्र+जन्+ल्युट्] 1 प्रसूजन, जनन योनि में वीर्य-समेचन 2. उत्पादन, जन्म, प्रसव 3 वीर्य 4 पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय (लिंग या भग) 5 सन्तान।

प्रजनिका [प्र+जन्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] माता।

प्रजनुकः [प्र+जन्+उक] शरीर, काया।

प्रजल्प [+जल्प्+घञ्] बालकलरव, गपशप, असार बात या असम्बद्ध शब्द (प्रेमी का अभिवादन करने में प्रयुक्त) असूयेर्ष्यामदयुजा योऽवधीरणमुद्रया, प्रियस्य कौशलोद्गारः प्रजल्पः स तु कथ्यते।

प्रजल्पनम् [प्र+जल्प्+ल्युट्] 1 बातचीत करना, बोलना 2 बालकलरव, गपशप।

प्रजविन् (वि०) स्त्री०—नी) [प्र+जु+इनि] आशु, द्रुतगामी, वेगवान्—पुं० आशुगामी दूत हरकारा।

प्रजा [प्र+जन्+ड+टाप्] (बहु० समास के अन्त में बदल कर 'प्रजस्' हो जाता है जब कि प्रथम पद अ सु या दुस् हो, दे० रघु० ८।३२ १८।२९) 1 प्रसूजन, प्रसूति, जनन, प्रजोत्पत्ति, जन्म, उत्पादन 2 सन्तान, प्रजा, सन्तति बच्चे, परिवारजन,—प्रजार्थव्रतकर्शिताङ्ग- रघु० २।७३ प्रजायै गृहमेधिनाम् —१।७, मनु० ३।४२, याज्ञ० १।२६९, इसी प्रकार अनपत्य प्रजा, सत्प्रजा आदि 3 लोग, मनुष्य मनस्तु जाजा प्रजा—रघु० ४।३, प्रजा प्रजा स्वा इव तंत्रयित्वा श० ५।५, (यहाँ प्रजा का 'सन्तान' अर्थ भी है) रघु० १।७, २।७३, मनु० १।८ 4 वीर्य। सम० अंतकः मृत्यु का देवता यम —रघु० ८।४५,—ईप्सु (वि०) सन्तान की इच्छा वाला, ईशः,. ईश्वर मनुष्यों का राजा, प्रभु—रघु० ३।६८ ५।१२, १८।२९,—उत्पत्तिः,- उत्पादनम्

सन्तान का पैदा करना —काम (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—तन्तुः वंश परम्परा, कुल, -दानम् चाँदी, —नाथः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 राजा, प्रभु, राजकुमार -रघु० 2।४८, १०।८३,—पः राजा, -निषेकः गर्भाधान (गर्भाशय में स्थापित) बीज —रघु० १४।६०, —पतिः 1 सृष्टि की अधिष्ठात्री देवता मनु० १२।१२१ 2 ब्रह्मा का विशेषण —अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रदः विक्रम० १।९, 3 ब्रह्मा के दस वंशप्रवर्तक पुत्र —दे० मनु० १।३४ 4 देवशिल्पी विश्वकर्मा का विशेषण 5 सूर्य 6 राजा 7 आमाता 8 विष्णु का विशेषण 9 पिता जनक 10 लिंग —पालः पालक राजा प्रभु —पालिः शिव का विशेषण, —वृद्धिः (स्त्री०) सन्तान की वृद्धि, —सृज् ब्रह्मा का विशेषण शि० १।२८ —हित (वि०) बच्चों के या लोगों के लिए हितकर (—तम्) पानी।

प्रजागरः [प्र + जागृ + अप्] 1 रात को जागते रहना निद्रा का अभाव प्रजागरात् खिलीभूत तस्याः स्वप्ने समागमः श० ६।२२ 2 चौकसी सावधानी 3 अभिभावक संरक्षक 4 कृष्ण का विशेषण।

प्रजात (भू० क० कृ०) [प्र + जन् + क्त] पैदा हुआ उत्पन्न, —ता प्रसूता स्त्री अथवा जिसके बच्चा पैदा हुआ हो।

प्रजातिः (स्त्री०) [प्र + जन् + क्तिन्] 1 प्रसजन, प्रसूति उत्पादन जन्म देना 2 प्रसव 3 प्रजननात्मक शक्ति 4 प्रसववेदना प्रसवपीडा।

प्रजावत् (वि०) [प्रजा + मतुप्] प्रजा या सन्तान वाला 2 गर्भवती —ती भाई की पत्नी भाभी रघु० १५।१५ १४।२३ 2 [illegible]

प्रजिन [प्र [illegible]] [illegible]

प्रजीवनम् [प्र + [illegible]] [illegible]

प्रजुष्ट (वि०) [illegible]

प्रज्ञ (वि०) [illegible]

प्रज्ञप्तिः [illegible] 2 [illegible]

प्रज्ञा [प्र + ज्ञा + अ + टाप्] 1 समझ समझ बुद्धि प्रज्ञा [illegible] रघु० १।१५ [illegible] 2 विवेक विवेचन निर्णय 3 तरकीब योजना 4 बुद्धिमती और विदुषी स्त्री। सम० —चक्षुस् (वि०) अंधा (शा० बुद्धिरूपी नयनमात्र आँख रखने वाला), (पुं०) धृतराष्ट्र का विशेषण (नपुं०) मन की आँख, मानसिक चक्षु, —मन —मात्रवि० १,—वृद्ध (वि०) समझदारी में बूढ़ा —हीन (वि०) निर्बुद्धि मूर्ख, बेवकूफ।

प्रज्ञात (भू० क० कृ०) [प्र + ज्ञा + क्त] 1 जाना हुआ, समझा हुआ 2 अन्तरयुक्त, विभिन्न 3 स्पष्ट, साफ 4 प्रसिद्ध, सुविख्यात, विश्रुत।

प्रज्ञानम् [प्र + ज्ञा + ल्युट्] 1 बुद्धि, जानकारी, समझ 2 चिह्न, प्रतीक, निशान।

प्रज्ञावत् (वि०) [प्रज्ञा + मतुप्] समझदार बुद्धिमान।

प्रज्ञाल, प्रज्ञिल (स्त्री० —ली), **प्रज्ञिल** (वि०) [प्रज्ञा + लच् इति इलच् च] समझदार, बुद्धिमान्, मनीषी।

प्रज्ञु (वि०) [प्रगते विरले जानुनी यस्य ब० स०, ज्ञु आदेश] धनुष्पदी (जिसकी टाँगें धनुष की भाँति मुड़ी हों) घुटने पर मुड़ी हुई टाँगों वाला। (प्रज्ञ भी)।

प्रज्वलनम् [प्र + ज्वल् + ल्युट्] देदीप्यमान होना, लपटें उठना जलना दहकना।

प्रज्वलित (भू० क० कृ०) [प्र + ज्वल् + क्त] 1 लपटों में होना, जलना लपटें उठना, देदीप्यमान होना 2 चमकीला जगमगाता हुआ।

प्रडीनम् [प्र + डी + क्त] 1 हर दिशा में उड़ना 2 आगे दौड़ना —डीन के अन्दर दे०, 3 भाग जाना।

प्रण (वि०) [पुरा भव प्र + न] पुराना, प्राचीन।

प्रणख [प्रकृष्ट नख —प्रा० स०] कील का सिरा।

प्रणत (भू० क० कृ०) [प्र + नम् + क्त] 1 झुका हुआ, ढलानवाला प्रवण 2 प्रणाम करता नमस्कार करता 3 विनम्र 4 कुशल चतुर —दे० प्र पूर्वक नम्।

प्रणति (स्त्री०) [प्र + नम् + क्तिन्] 1 प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन —तव सवितुर्वरुणेव प्रणतिः विज्ञप्तिः के न [illegible] ११० १६।४ रघु० ४।८८ 2 विनयशीलता [illegible] स ददर्श बेलमवनामरता प्रणति [illegible] —कि० ६।५ निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये रघु० ११।८९।

प्रणदनम् [प्र + नद् + ल्युट्] शब्द करना आवाज करना [illegible]

प्रणय [प्र + नी + अच्] 1 विवाह करना पाणि ग्रहण करना (तथा विवाह स) मा० ६।१४ 2 (क) प्रेम स्नेह चाव अनुरक्ति—अभिव्यक्ति —प्रीतिमायात्यो प्रणय-[illegible] स्मरस्य विक्रम० ।१६ सामान्योऽय [illegible] श० ३, ६।७ ५।२३ मेघ० १०५, रघु० ६।१२ भर्तृ० २।४२ (ख) अभिलाषा, इच्छा लालसा कु० ५।८५ मा० ८।७ श० ७।१६ 3 मित्रता-पूर्ण परिचय प्रीति मैत्री घनिष्ठता —श० १।९ 4 परिचय, भरोसा, विश्वास —श० ६ 5 अनुग्रह, कृपा सौजन्य—अलङ्कृतोऽस्मि स्वयंग्राहप्रणयेन भवता—

मृच्छ० १ १।४५ 6 अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन— तद्भूतनाथानुग नार्हसि त्वं संबन्धिनो मे प्रणयं विहन्तुम् —रघु० २।५८ विक्रम० ४।१३ 7 श्रद्धा भक्ति 8 मोक्ष। सम० —अपराधः प्रेम या मित्रता के विरुद्ध अपचार, —उन्मुख (वि०) 1 प्रेमाधिक्य अपना प्रेम प्रकट करने को उद्यत —मालवि० ४।१३ 2 प्रेमावेश के कारण आतुर —कलहः प्रेमी का झगड़ा कृत्रिम या झूठमूठ का झगड़ा —नाग० यस्मात्प्रणयकलहाद्ध प्रयातोपि शान्ति —मेघ० (मल्लि० [illegible] पठित) —कुपित (वि०) प्रेम के कारण क्रुद्ध —मेघ० १०५ —कोपः किसी नायिका का अपने नायक के प्रति झूठमूठ का क्रोध नखरा से भरा क्रोध, —प्रकर्षः अत्यधिक प्रेम तीव्र अनुराग —भंगः 1 मित्रता का टूट जाना 2 विश्वासघात —वचनम् प्रेमाभिव्यक्ति —विमुख (वि०) 1 प्रेम से पराङ्मुख 2 मित्रता करने में अनिच्छुक —मेघ० २७ —विहतिः, —विघातः प्रार्थना आदि की। अस्वीकृति न मानना।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1 लाना ले आना 2 संचालन करना पहुँचाना 3 पालन करना कार्यान्वित करना अनुष्ठान करना कु० ६।१३ 4 निर्माण अक्षरवाचन करना 5 निर्णायक देना दण्डाज्ञा देना परिनिर्णय या पर्वनिर्णय देना —यथा दण्डस्य प्रणयनम्।

प्रणयवत् (वि०) [प्रणय+मतुप्] 1 प्रेम करने वाला प्रीतिकर, स्नेही— रघु० १०।५७ 2 स्पष्टवक्ता, लाग 3 अत्यन्त उत्कण्ठित आतुर।

प्रणयिन् (वि०) [प्रणय+इनि] 1 प्रेम करने वाला स्नेही, कृपालु, अनुरक्त —मा० ३।९ 2 प्रिय प्यारा 3 इच्छुक लालायित उत्कण्ठित —श० ३।१७ मेघ० ३, रघु० ९।४५ ११।३ 4 सुपरिचित, —पुं० 1 मित्र, साथी कृतानाम —कु० ६।११ 2 पति प्रेमी 3 कृताञ्जलि, विनम्र निवेदक प्रार्थी —स्यात्पीनां मनो मृगयते प्रणयीव —विक्रम० ४।१५ १।४ 4 पूजक, भक्त कु० ३।६६ —नी 1 गृहिणी प्रियतमा पत्नी 2 सखी, सहेली।

प्रणवः [प्र+नु+अप् णत्वम्] 1 पवित्र अक्षर 'ओम्'— आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११ मनु० २।७४ कु० २।१२, भग० ७।८ 2 एक प्रकार का वाद्ययंत्र (ढोल या मृदंग) 3 विष्णु या परम पुरुष परमात्मा का विशेषण।

प्रणस (वि०) [प्रगता नासिका यस्य, नासः आदेशः, अच्, णत्वम्] लम्बी नाक वाला बड़ी नाक वाला।

प्रणाडी [=प्रणाली, डस्य लः] अन्तरायण, अन्तः प्रवेशन माध्यम।

प्रणादः [प्र+नद्+घञ्] 1 ऊँची आवाज, चीत्कार क्रन्दन 2 दहाड़ना, दहाड़ 3 हिनहिनाना, रेंकना 4 हर्षातिरेक की कलकलध्वनि, वाहवा, क्या खूब 5 दुहाई देना 6 कान का विशेष रोग (इस रोग में कानों में भनभनाहट की ध्वनि होती है)।

प्रणामः [प्र+नम्+घञ्] 1 झुकना नमस्कार करना नमन या नति 2 सादर नमस्कार अभिवादन दण्डवत् प्रणाम प्रणति। यथा साष्टांग प्रणाम —कु० ६।९१।

प्रणायकः [प्र+नी+ण्वुल्] 1 नेता सेनापति 2 पथप्रदर्शक प्रधान मुखिया।

प्रणाय्य (वि०) [प्र+नी+ण्यत्] 1 प्रिय प्यारा 2 ईमानदार स्पष्टवादी 3 अप्रिय अनभिमत— भट्टि० ६।६० 4 आवेश शून्य विरक्त।

प्रणाल, —**ली**, **प्रणालिका** [प्र+नल्+णिच्+अच्] [illegible] प्रणाली [illegible] नाली —कुर्वन् पूर्णां नयनपयसां चक्षुषी प्रणाली —उ० म० [illegible] 2 [illegible] परम्परा।

प्रणाशः [प्र+नश्+घञ्] 1 विनाश हानि लोप —कि० १४।१४ 2 मृत्यु विनाश —रघु० ११।१।

प्रणाशन (वि०) [प्र+नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला हटाने वाला —नष्ट समूलोन्मूलन —रघु० ३।६०।

प्रणिक्त (वि०) [प्र+निज्+क्त] धोया हुआ स्वच्छ किया हुआ।

प्रणिधानम् [प्र+नि+धा+ल्युट्] 1 प्रयोग करना नियोजन करना व्यवहार उपयोग 2 महान प्रयत्न शक्ति 3 धार्मिक मनन आराधना —शि० १।३४ ८।१४ विक्रम० ३ 4 सम्मानपूर्ण व्यवहार (अधि० के साथ) 5 कर्मफलत्याग।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] 1 सौंपना रखने वाला ताक झांक करने वाला 2 गुप्तचर भेजना 3 भेदिया गुप्तचर —कु० ३।६ रघु० १७।४८ मनु० ७।१५३ ८।१८२ 4 देखभाल, अनुचर 5 देखभाल ध्यान 6 निवेदन अनुरोध, प्रार्थना।

प्रणिनादः [प्र+नि+नद्+घञ्] गहरी ध्वनि।

प्रणिपतनम्, **प्रणिपातः** [प्र+नि+पत्+ल्युट्, घञ् वा] 1 पैरों में गिरना साष्टांग प्रणाम विनीत —रघु० ४।६४ 2 अभिवादन, नमस्कार सादर प्रणति —कु० ३।६१ ४।३५, रघु० ३।२५। सम० —रसः शस्त्रास्त्रों पर उच्चारण किया जाने वाला जादू का मंत्र।

प्रणिहित (भू० क० कृ०) [प्र+नि+धा+क्त] 1 रक्खा हुआ, व्यवस्थित 2 जमा किया हुआ 3 फैलाया हुआ, लगाया हुआ —मेघ० १०५ 4 न्यस्त, समर्पित, सुपुर्द 5 एकाग्रचित्त, तल्लीन, जुटा हुआ 6 निर्धारित,

निश्चित 7 सावधान, चौकस 8 अवाप्त, उपलब्ध 9 भेद किया हुआ (दे० प्रणि पूर्वक धा)।

प्रणीत (भू० क० कृ०) [प्र+नी+क्त] 1 सामने प्रस्तुत, आगे पेश किया हुआ, उपस्थित 2 सौंपा गया, दिया गया, प्रस्तुत किया गया उपस्थित किया गया 3 लाया गया, कम किया गया 4 कार्यान्वित कार्य में परिणत अनुष्ठित 5 सिखाया गया, नियत किया गया 6 फेंका हुआ भेजा गया (दे० प्र पूर्वक नी) मंत्रों से अभिमन्त्रित की गई यज्ञाग्नि —तम् पकाया हुआ या सवारा हुआ कोई पदार्थ यथा चटनी अचार आदि।

प्रणुत (भू० क० कृ०) [प्र+नु+क्त] प्रशंसा किया गया श्लाघा किया गया।

प्रणुत्त (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त] 1 हाँककर दूर किया हुआ पीछे धकेला हुआ 2 भगाया हुआ

प्रणुन्न (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त नत्वम्] 1 हाँक कर दूर भगाया हुआ 2 प्रतिवादित किया हुआ 3 भगाया हुआ 4 हिलता हुआ काँपता हुआ।

प्रणेतृ (पुं०) [प्र+नी+तृच्] 1 नेता 2 निर्माता स्रष्टा 3 किसी सिद्धान्त का उद्घोषक व्याख्याता अध्यापक 4 पुस्तक का रचयिता।

प्रणेय (वि०) [प्र+नी+यत्] 1 पथप्रदर्शन किए जाने योग्य नेतृत्व किए जाने योग्य शिक्षणीय विनम्र विनीत आज्ञाकारी 2 कार्यान्वित या निष्पन्न किये जाने योग्य 3 निश्चित या स्थिर किये जाने योग्य।

प्रणोद [प्र+नुद्+घञ्] 1 हाँकना 2 निदेश देना।

प्रतत (भू० क० कृ०) [प्र+तन्+क्त] 1 बिछाया हुआ ढका हुआ 2. फैलाया हुआ पसारा हुआ।

प्रतति (स्त्री०) [प्र+तन्+क्तिन्] 1 विस्तार, फैलाव प्रसार 2 लता।

प्रतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+तन्+अच्] पुराना प्राचीन।

प्रतनु (वि०) (स्त्री०—नु—न्वी) [प्रकृष्ट तनु प्रा० स०] 1 पतला, सूक्ष्म, सुकुमार मेघ० ८९ 2. अत्यन्त सीमित, थोड़ा—प्रतनुतनुमाम् —का० ६३, उत्तर० १।२०, मेघ० ४१ 3 दुबला पतला कृश 4 नगण्य मामूली।

प्रतपनम् [प्र+तप्+ल्युट्] गरमाना, गरम करना।

प्रतप्त (भू० क० कृ०) [प्र+तप्+क्त] 1 तपाया हुआ 2. गर्म तप्त 3 सन्तप्त, सताया हुआ, पीड़ित।

प्रतर [प्र+तृ+अप्] पार जाना, पार करना या जाना।

प्रतर्क, **प्रतर्कणम्** [प्र+तर्क्+अप्, ल्युट् वा] 1 अटकल कल्पना, अनुमान 2 विचारविमर्श।

प्रतलम् [प्रकृष्ट तलम् प्रा० स०] निम्नलोक के सात विभागों में एक —दे० पाताल, —लः खुले हाथ की हथेली।

प्रतान [प्र+तन्+घञ्] 1 अंकुर तन्तु— लताप्रतानोद्ग्रथितैः स केशैः – रघु० २।८, श० ७।११ 2 लता, नीचे भूमि पर ही फैलने वाला पौधा 3 शाखा-प्रशाखा, शाखा सन्निभाग 4 धनुर्वात रोग या मिरगी रोग।

प्रतानिन् (वि०) [प्रतान+इनि] 1 फैलाने वाला 2 अंकुर या तन्तु वाला, —नी फैलाने वाली लता।

प्रताप [प्र+तप्+घञ्] 1 ताप, गर्मी—पंच० १।१०७ 2 दीप्ति, दहकती हुई गर्मी कु० २।२४, 3 आभा उज्ज्वलता 4 मर्यादा मान यश महावी० २।८ 5 साहस पराक्रम शौर्य प्रतापस्तस्य भानोश्च युग-पद्व्यानशे दिशः रघु० ४।१५, (यहाँ 'प्रताप' का अर्थ गर्मी भी है) ४।३० 6 शक्ति, बल, ऊर्जा 7 उत्कण्ठा उत्साह।

प्रतापन (वि०) [प्र+तप्+णिच्+ल्युट्] 1 गर्माने वाला 2 सन्ताप देने वाला —नम् 1 जलाना, तपाना गर्माना 2 परिहत करना सताना दण्ड देना —नः एक नरक का नाम।

प्रतापवत् (वि०) [प्रताप+मतुप्, वत्वम्] 1 कान्तिशाली, ओजस्वी 2 पराक्रमी शक्तिमान ताकतवर पुं० शिव का विशेषण।

प्रतार [प्र+तृ+णिच्+घञ्] 1 पार ले जाने वाला, 2 धोखा, जालसाजी।

प्रतारक [प्र+तृ+णिच्+ण्वुल्] ठग छद्मवेषी।

प्रतारणम् [प्र+तृ+णिच्+ल्युट्] 1 पार ले जाना 2 धोखा देना ठगना छल कपट —णा जालसाजी धोखा मक्कारी धूर्तता बदमाशी दगाबाजी, चालाकी यदीक्षणम् वशीकर्तुं जगद्धेतेन कर्मणा, उपास्थता कथी कल्पना प्रेक्षा प्रतारणा, प्रतारणासमर्थस्य विद्या कि प्रयोजनम् उद्भट।

प्रतारित (वि०) [प्र+तृ+णिच्+क्त] छला हुआ, ठगा हुआ।

प्रति (अव्य) [प्रथ्+डति] 1 धातु के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर निम्नांकित अर्थ हैं—(क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, लौट कर, फिर (ग) के विरुद्ध के मुकाबले में विपरीत (घ) ऊपर, पुनः (इस उपसर्ग से युक्त कुछ धातुओं को देखिए) 2 संज्ञाओं (कृदन्त से भिन्न) से पूर्व उपसर्ग के रूप में निम्नांकित अर्थ (क) समरूपता, समकक्षता, सादृश्य (ख) प्रतिस्पर्धा यथा प्रतिचन्द्र (प्रतिस्पर्धीचन्द्रमा), प्रतिपुरुष आदि 3 स्वतन्त्र रूप से सम्बन्धबोधक अव्यय के रूप में प्रयुक्त (कर्म० के साथ) निम्नांकित अर्थ —(क) की ओर, की दिशा में, की तरफ—तौ दम्पती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठः —रघु० २।७०, १।७५, प्रत्यनिलं विचेरु—कु० ३।

११, वृक्षं प्रतिविद्योतते विद्युत्—सिद्धा०, (ख) के विरुद्ध, प्रतिकूल, की विपरीत दिशा में, सम्मुख —तदा यायाद्रिपुं प्रति -मनु० ७।१७१, प्रदुद्रुवुस्ते प्रति राक्षसेन्द्रम्—रामा० यथावच्च प्रत्यरिसैन्यमेव —रघु० ७।५५, (ग) की तुलना में, समतुल्य पर, के अनुपात में, जोड़ का—त्वं सहस्राणि प्रति —ऋक्० २।१।८, (घ) निकट, के आसपास, पास की ओर, में, पर—समासेदुस्ततो गंगां शृंगवेरपुरं प्रति— रामा०, गंगां प्रति (ङ) के समय, लगभग दौरान में—आदित्यस्योदयं प्रति—महा०, फाल्गुनं वाथ चैत्रं वा मासौ प्रति—मनु० ७।१८२, (च) की ओर से, के पक्ष में, के भाग्य में—अर्धं मां प्रति स्यात्—सिद्धा०, हरं प्रति हलाहलं (अभवत्) —वोप०, (छ) प्रत्येक में, हरेक में, अलग-अलग (विभागसूचक), वर्षं प्रति, प्रतिवर्षम् यज्ञं प्रति—याज्ञ० १।११०, वृक्षं वृक्षं प्रति सिंचति —सिद्धा०, (ज) के विषय में, के संबंध में, के बारे में, विषयक, बाबत, विषय में—न हि मे मनीषितस्था विक्लवता प्रति—का० १३२, चन्द्रोपरागं प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि—मुद्रा० १, धर्मं प्रति—श० ५, मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति— श० १, कु० ६।२७, ७।८३, याज्ञ० ९।२१८, रघु० ६।१२, १०।२०, १२।५१, (झ) के अनुसार, के समनुरूप—मां प्रति (मेरी सम्मति में), (ञ) के सामने, की उपस्थिति में (ट) क्योंकि, के कारण 4 स्वतंत्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में (अपा० के साथ) इसका अर्थ है, (क) प्रतिनिधि, के स्थान में, के बजाय —प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति—सिद्धा० संग्रामे यो नारायणतः प्रति— भट्टि० ८।८९ अथवा (ख) की एवज में, के बदले—तिलेभ्यः प्रति यच्छति माषान्—सिद्धा०, भक्तेः प्रत्यमृतं शम्भोः —वोप० 5 अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रायः इसका अर्थ है, (क) प्रत्येक में या पर यथा प्रतिसंवत्सरम् —(प्रतिवर्ष), प्रतिक्षणम्, प्रत्यहम् आदि, (ख) की ओर, की दिशा में—प्रत्यग्नि शलभा डयन्ते 6. 'प्रति' कभी कभी 'अल्पतार्थ' प्रकट करने के लिए अव्ययीभाव समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है सूपप्रति, शाकप्रति (विशे० निम्नांकित समासों में वह सब शब्द जिनका दूसरा पद क्रिया के साथ अव्यवहित रूप से नहीं जुड़ा हुआ है, सम्मिलित कर दिए गए हैं, अन्य शब्द अपने२ स्थानों पर मिलेंगे।

सम०—अक्षरम् (अव्य०) प्रत्येक अक्षर में प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबंध —वास०,—अग्नि (अव्य०) अग्नि की ओर,—अंगम् 1. (शरीर का) गौण या छोटा अंग —जैसे कि नाक 2. प्रभाग, अध्याय, अनुभाग 3. प्रत्येक अंग 4. अस्त्र (अव्य०—अम्) 1. शरीर के प्रत्येक अंग पर—यथा—प्रत्यंगमालिंगित—गीत० १ 2. प्रत्येक उपप्रभाग या उपांग के लिए,—अनन्तर (वि०) 1 सट कर पड़ौस में होने वाला 2 (उत्तराधिकारी के रूप में) निकटतम विद्यमान 3 तुरन्त बाद का, बिल्कुल जुड़ा हुआ —जीवेत् क्षत्रियधर्मेण स ह्यस्य (ब्राह्मणस्य) प्रत्यनन्तरः मनु० १०।८२, ८।१८५, —अनिलम् (अव्य०) हवा की ओर, या हवा के विरुद्ध—अनीक (वि०) 1 विरोधी, विरुद्ध विद्वेषी 2 मुकाबला करने वाला विरोध करने वाला —(कः) शत्रु (—कम्) 1 विरोध शत्रुता (अप्रतीत्य रणं या स्थितिं न सकना) प्रत्यनीकम् स्थातुं मम सुरासुरा—राम० 2 शत्रु की सेना—यस्य शूरा महेष्वासाः प्रत्यनीकगता रणे—महा०, येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः —भग० ११।३२ (यहां 'प्रति' का अर्थ 'अनुगा' भी है) 3 (अलं० शास्त्र) अलंकार इसमें एक व्यक्ति उस शत्रु को जो स्वयं बाधक नहीं हो सकता चोट पहुंचाने का प्रयत्न करता है प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुं तिरस्क्रिया या तदीयस्य तत्स्तुत्यै प्रत्यनीकं तदुच्यते—काव्य० १० —अनुमानम् प्रतिकूल उपसंहार,—अन्त (वि०) संलग्न, लगा हुआ साथ लगा हुआ, सीमावर्ती (तः) 1 सीमा, हद, रघु० ४।२६ 2 सीमावर्ती देश विशेषतः म्लेच्छों द्वारा अधिकृत प्रदेश, ०देशः सीमावर्ती देश, ०पर्वतः साथ लगी हुई पहाड़ी—पादाः प्रत्यन्तपर्वताः —अमर०

—अपकारः प्रतिशोध, बदले में क्षति पहुंचाना—शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४०, —अब्दम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, —अभियोगः बदले में दोषारोपण, प्रत्यारोप, —अमित्रम् (अव्य०) शत्रु की ओर, —अर्क झूठमूठ का सूरज, —अवयवम् (अव्य०) 1 प्रत्येक अंग में 2 प्रत्येक विशेषता के साथ, विवरण सहित,

—अवर (वि०) 1 निम्न पद का, कम सम्मानित 2 अधम पतित अत्यन्त निकृष्ट —अश्मन् (पुं०) गेरू

—अहम् (अव्य०) प्रतिदिन, हररोज रोज —गिरिशमुपचचार प्रत्यहं कु० १।६०, —आकारः कोष, म्यान, —आघातः 1 प्रत्याक्रमण 2 प्रतिक्रिया, —आचारः उपयुक्त आचरण या व्यवहार, —आत्मक अकेला, अलग अलग —आदित्यः झूठमूठ का सूरज, —आरंभः 1 फिर शुरू करना दूसरी बार आरम्भ करना 2 प्रतिषेध —आशा 1 उम्मीद पूर्वधारणा— मा० ९।८ 2 विश्वास, भरोसा, —उत्तरम् प्रत्युत्तर, उत्तर का उत्तर,—उलूकः 1 कौवा 2. उल्लू से मिलता-जुलता पक्षी, —ऋचम् (अव्य०) प्रत्येक ऋचा में, —एक (वि०) प्रत्येक, हरेक हरकोई (अव्य० —कम्) 1 एक एक करके, एक बार में एक, अलग, अकेला, अकेला, हर एक में, हर एक को (बहुधा विशेषणात्मक बल के साथ)—विवेश दण्डकारण्यं प्रत्येकं च सतां मनः—रघु०

१।२।६ (प्रत्येक सज्जन पुरुष के मन में प्रवेश किया) १।२।३, ७।२४, कु० २।३१, कञ्चुक शत्रु,—अङ्गम् (अव्य०) 1 अलग अलग, एक एक करके 2 गात्र के निकट, ,कक्ष (वि०) उद्दण्ड जो हण्टर से भी वश में न आवे काय 1 पुतला प्रतिमा चित्र, समानता 2 शत्रु कि० १३।२८ 3 लक्ष्य, चाँदमारी, निशान कितव जुए में प्रतिद्वन्द्वी, कुञ्जर प्रतिरोधी हाथी कुल परिवार भाई कूल (वि०) अननुकूल विरोधी, प्रतिपक्षी विरुद्ध प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता शि० ९।६ कु० ३।२४ 2 कठोर बेमेल, अप्रिय अरुचिकर —प्रतिकूलशब्दा—कु० १।४५ 3 अशुभ 4 विरोधी 5 उलटा ...ललकार, उत्तर, कठोर आचरितम् कुत्सित या आक्रमणात्मक कार्य अथवा आचरण रघु० ८।८१ ...कूलम्, किल (...) विरोध कारिन् (वि०) विरोध करने वाला ...दर्शन (वि०) अशुभ अथवा अप्रिय दर्शनों वाला, प्रवर्तिन वर्तिन् (अव्य०) विपरीत मार्ग करने वाला उलटा मार्ग ग्रहण करने वाला भाषिन् (वि०) विरोध करने वाला अप्रिय बोलने वाला वचनम् अरुचिकर या अप्रिय भाषण कूलम् (अव्य०) 1 विरोधी ढंग से, विपरीतता के साथ 2 उलटी तरह से, विपर्यस्त क्रम से क्षणम् (अव्य०) प्रत्येक क्षण हर समय, कु० ३।५६ गज आक्रमणकारी हाथी गात्रम् (अव्य०) प्रत्येक अंग में गिरि 1 सामने का पहाड़ 2 छोटा पहाड़ गृहम्, गेहम् (अव्य०) हर घर में ग्रामम् (अव्य०) हर गाँव में ...जूट का ...चरणम् (अव्य०) 1 प्रत्येक (वैदिक) सिद्धान्त ...शाखा में 2 ... छाया 1 प्रतिबिम्ब ... 2 प्रतिमा चित्र, ... जिह्वा जिह्विका ... का भीतर का ... ...तन्त्रम् (अव्य०) प्रत्येक तन्त्र या ... के अनुसार सर्वसिद्धान्त ... जिसको सब ही पक्ष न मानते हों (...) ...व्याघ्रम् (अव्य०) ... दिन दिवसम् (अव्य०) हर रोज दिशम् (अव्य०) हर दिशा में चारों ओर मेघ ५८, देशम् (अव्य०) प्रत्येक देश में देहम् (अव्य०) हरेक शरीर में दैवतम् (अव्य०) प्रत्येक देवता के निमित्त —द्वन्द्व 1 प्रतिस्पर्धी विरोधी शत्रु प्रतिद्वन्द्वी 2 शत्रु (... द्वम् (विरोध शत्रुता द्वन्द्विन् (वि०) 1 विरोधी शत्रुतापूर्ण 2 प्रतिकूल कि० १६।२९ 3 लागडाट रखने वाला प्रतिस्पर्धाशील —कि० ४।४, (—पुं०) विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतिस्पर्धी

—रघु० ७।३७, १५।७५,—द्वारम् (अव्य०) प्रत्येक दरवाजे पर धुर दूसरे घोड़े के साथ जुड़ा हुआ घोड़ा, नप्तृ (पुं०) प्रपौत्र पौत्र का पुत्र,- नव (वि०) 1 नूतन युवा, ताजा 2 हाल का खिला हुआ या जिसमें अभी कलियाँ आई हों मेघ० ३६, नाडी प्रशिरा उपनाडी नायक किसी काव्य का खलनायक जैसे रामायण में रावण तथा माघकाव्य में शिशुपाल पक्ष 1 विरोधी पक्ष, दल या गुटबन्दी शत्रुता 2 प्रतिकूल, शत्रु दुश्मन प्रतिद्वन्द्वी प्रतिपक्ष-कामिनी प्रतिद्वन्द्वी पत्नी ...२।६४ विक्रमाङ्क० १।५० ...प्रतिपक्षमशक्नोत पातकर्तुम् काव्य०१० समास में प्राय 'सम' या 'समान' अर्थ में प्रयुक्त 3 प्रतिवादी मुद्दालेह पक्षित (वि०) 1 विरोध से युक्त 2 विरोधात्मक प्रतिज्ञा से विफल किया हुआ, (जैसे न्याय में हेतु) (वह हेतु) जो सत्प्रतिपक्ष नामक दोष से युक्त हो।) पक्षिन् (वि०) विरोधी शत्रु पथम् (अव्य०) मार्ग के साथ साथ रास्ते की तरफ का ओर ...दीर्घीकृतम् —कु० ३ ५६ पदम् (अव्य०) 1 प्रत्येक पग पर 2 प्रत्येक ...नगर ...3 प्रत्येक शब्द में पादम् (अव्य०) प्रत्येक चरण में पात्रम् (अव्य०) प्रत्येक भाग के विषय में प्रत्येक पात्र के विषय में प्रतिपात्रमाधीयतां यत्न शा० १ (प्रत्येक पात्र की देख रेख की जानी चाहिए) पादपम् (अव्य०) प्रत्येक वृक्ष में पाप (वि०) ...के बदले पा... वाला बुराई के बदले बुराई करने वाला, पु (...) 1 समान या सदृश पु... 2 स्थानापन्न, प्रतिनिधि 3 साथी 4 पुतला आदमी का पुतला जिसे चोर किसी घर में ... यह जानने के लिए फेंका करते ...कि कोई जागता नहीं रहा है 5 पुत्र ... पूर्वाह्णम् (अव्य०) प्रत्येक ...पूर्वं हर दोपहर से पहले प्रभातम् (अव्य०) प्रत्येक सुबह प्राकार बाहरी ...फलन ... प्रतिबिम्ब बदले में जो गई कृपा या ...रघु० ५।५६ ...प्रतिध्वनि से ...बल (वि०) बल में समान ...शत्रु की सेना —अस्त्रैः... ...वेणी० ३।५ बाहु भुजा का अगला भाग कलाई से नीचे का भाग बिम्ब (बिम्ब) ब, बम् 1 परछाईं प्रतिमूर्ति कु० ९।... ...१।१८ 2 प्रतिमा चित्र, भट (वि०) प्रतिस्पर्धी प्रतिद्वन्द्वी भटप्रतिभटस्तानि नै० १।२५ (टः) 1 प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्षी 2 शत्रुपक्ष का योद्धा समालोचकाली त्वा विद्वज्जन विकल्पान् प्रतिभटा काव्य० १०, भय (वि०) 1 भयावह भीषण, भयकर, भयानक 2 खतरनाक पंच०

२।१६६, (**वम्**) भय, खतरा **मण्डलम्** केन्द्रभ्रष्ट परिवेश,—**अविरम्** (अव्य०) प्रत्येक घर में **मल्ल** प्रतिस्पर्धी प्रतिद्वंद्वी नै० १।६३ पातालप्रतिमल्लगल्ल आदि मा० ५।२२ **माया** जवाबी जादू **मासम्** (अव्य०) प्रतिमास मासिक **विवम्** शत्रु विरोधी **मुख** (वि०) 1 मुंह के सामने खड़ा हुआ सामने स्थित प्रतिमुखागत मनु० ८।२९१ 2 निकटवर्ती उपस्थित (**खम्**) नाटक की एक घटना या गौणकथा वस्तु जो नाटक के महान् परिवर्तन या उलट फेर को या तो जल्दी लादे या और भी अधिक देर कर दे दे० सा० द० ३४८ और ३५१ ३६४ **मुद्रा** मुकाबले की मोहर **मुहूर्तम्** (अव्य०) प्रतिक्षण **मूर्ति** (स्त्री०) प्रतिमा, समानता **यूथप** आक्रमणकारी हाथियों के झुंड का अगुआ या नेता **रथ** प्रतिरथी योद्धा (शा० युद्ध रथ में बैठ कर लड़ने वाला) —दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य श० ४।१९ **राज** विरोधी राजा **रात्रम्** (अव्य०) हर रात, **रूप** (वि०) 1 तदनुरूप समान मुकाबले का भाग रखने वाला वेदप्रतिरूपिका समावृत्ति —श० १ 2 उपयुक्त समुचित (**पम्**, चित्र प्रतिमा समानता, **रूपकम्** चित्र प्रतिमा **लक्षणम्** निशान चिह्न, प्रतीक, **लिपि** (स्त्री०) लेख की नकल लिखी हुई प्रति, **लोम** (वि०) 1 नैसर्गिक क्रम के विरुद्ध, व्युत्क्रान्त उलटा 2 जाति विरुद्ध (अपने पति से उच्च वर्ण की स्त्री की सन्तान) 3 विरोधी 4 नीच दुष्ट, अधम 5 वाम (अव्य० **मम्**) बालों के विपरीत अनाज के विरुद्ध स्वभाव विपरीत रूप से, **°ज** (वि०) जाति के विपरीत क्रम से उत्पन्न अर्थात् अपने पति से उच्चवर्ण की स्त्री की सन्तान, **लोमकम्** उलटा क्रम विपरीत क्रम **वत्सरम्** (अव्य०) प्रतिवर्ष हर साल **वनम्** हर जंगल में, —**वर्षम्** (अव्य०) हरसाल **वस्तु** (नपुं०) 1. समान, प्रतिमूर्ति, प्रतिरूप 2 प्रतिदान 3 समानता तुलना उपमा एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने यह दी है—प्रतिवस्तूपमा तु सा सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः काव्य० १० उदा० तापेन भ्राजते सूर्यः शूरश्चापेन राजते चन्द्रा० ५। ४८, **वात** उलटी हवा (अव्य०—**तम्**) हवा के विरुद्ध चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य —श० १।३४,—**वासरम्** (अव्य०) प्रतिदिन —**विटपम्** (अव्य०) 1. प्रत्येक शाखा पर 2 हर एक शाखा पर, **वेलम्** (अव्य०) प्रत्येक वेद में या हरेक वेद के लिए,—**विषम्** विषघ्नीकारक औषधि —**विष्णुकः** मुचकुन्द वृक्ष, **वीर** विपक्षी शत्रु —**वृष** आक्रमणकारी बैल,—**वेलम्** (अव्य०) हर समय, प्रत्येक अवसर पर —**वेश** 1 पड़ोस का घर, आसपास 2 पड़ोसी —**वेशिन्** (अ०) पड़ोसी, —**वेश्मन्** (नपुं०) पड़ोसी का घर **वेश्य** पड़ोसी **वैरम्** वैर प्रतिशोध बदला प्रतिहिंसा **शब्द** 1 प्रतिध्वनि, गूंज,—वसुधाधरकन्दराभिसर्पी प्रतिशब्दोऽपि हरेर्भिनत्ति नागान् विक्रम० १।१६ कु० ६।६४ रघु० २।२८ 2 गरज, दहाड़ **शशिन** (पुं०) कुहासा का चांद —**संवत्सरम्** (अव्य०) प्रतिवर्ष हर साल **सम** (वि०) तुल्य जोड़ का **सव्य** (वि०) विपर्यस्त क्रम में **सायम्** (अव्य०) प्रतिसंध्या हर सांझ **सूर्य** **सूर्यक** 1 अण्डज का सूरज 2 छिपकली गिरगिट उत्तर० २।१६ **सेना**, शत्रु की सेना —**स्थानम्** (अव्य०) हर स्थान में हर स्थान पर **स्रोतस्** (नपुं०) धारा के विपरीत **हस्त**, **हस्तक** प्रतिनिधि अभिकर्ता स्थानापन्न प्रतिपुरुष आविश्य।सा भूनी स्वामिसेवाशा समवेत दुष्प्रसन्ध्योत्पादन चैव न सन्ति प्रतिहस्तका हि० २ ३३।

प्रतिक (वि०) [कार्षापण प्रतिष्ठन कार्षापणस्य प्रायः देय] कार्षापण के मूल्य का या कार्षापण से खरीदा हुआ।

प्रतिकर [प्रति + कृ + अप्] प्रतिशोध क्षतिपूर्ति।

प्रतिकर्तृ (वि० (स्त्री० र्त्री) [प्रति + कृ + तृच्] प्रतिशोध लेने वाला क्षतिपूर्ति करने वाला —(पुं०) विरोधी विपक्षी।

प्रतिकर्मन् (नपुं०) [प्रति + कृ + मनिन्] 1 प्रतिशोध प्रतिक्रिया 2 दुर्भावना उपचार प्रतिकार 3 शारीरिक शृंगार वस्त्रसज्जा प्रसाधन शरीर-सज्जा (अलंकार) प्रतिकर्म कर्तुमुपचक्रमिरे समये हि सर्वमुपकारि कृतम् शि० ९।४३ ४।२३ कु० ७।१३ विरोध सामना।

प्रतिकर्ष [प्रति कृष् + घञ्] 1 एकत्रीकरण संयोजन 2 (किसी आगे आने वाले शब्द का) पूर्व विचार।

प्रतिकश [प्रति + कश् + अच्] 1 नेता 2 सहायक सन्देशहर।

प्रति (ती) कार [प्रति + कृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 प्रतिशोध पुरस्कार, प्रतिदान 2 बदला प्रतिहिंसा, प्रतिफल 3 प्रतिविधान, निवारण, रोकथाम उपचार इलाज या चिकित्सा—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य श० ३, प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः—भर्तृ० ३। ९२ 4 विरोध। सम० —**कर्मन्** (नपुं०) जीर्णोद्धार करना सुधार करना, **विधानम्** इलाज करना, चिकित्सा करना —प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते रघु० ८।४०।

प्रति (ती) काश [प्रति + काश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परछाईं 2. दृष्टि, दर्शन, सादृश्य—(प्राय:

समास के अन्त में —के समान' से मिलता-जुलता अर्थ प्रकट करता है) पुष्पाकप्रतीकाश —उत्तर० ३।१।

प्रतिकुंचित (वि०) [प्रति + कुञ्च् + क्त] झुका हुआ मुड़ा हुआ।

प्रतिकृत (भू० क० कृ०) [प्रति + कृ + क्त] 1 वापिस किया हुआ लौटाया हुआ प्रतिशोधित प्रतिहिंसित 2 प्रतिरोधित उपचार किया हुआ।

प्रतिकृति (स्त्री०) [प्रति + कृ + क्तिन्] 1 बदला प्रतिहिंसा 2 बदला प्रतिशोध 3 प्रतिरूप प्रतिबिंब 4 समानता चित्र मूर्ति प्रतिमा रघु० ८।... १५।८७ ... स्थानापन्न

प्रतिकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति + कृष् + क्त] 1 दो बार ... 2 ... किया हुआ तिरस्कृत अस्वीकृत 3 छिपाया हुआ गुप्त 4 नीच दुष्ट अधम।

प्रतिकोप, प्रतिकोध [प्रति + कुप् (क्रुध्) + घञ्] क्रोध के प्रति होने वाला क्रोध

प्रतिक्रम [प्रति + क्रम् + घञ्] उल्टा क्रम

प्रतिक्रिया [प्रति + कृ + श + इयङ् + टाप्] 1 क्षतिपूर्ति प्रतिकार 2 प्रतिहिंसा बदला प्रतिफल 3 प्रतिविधान प्रतीकार दूरीकरण —अहो रक्षपातो यस्यास्य नास्ति प्रतिक्रिया ... ५।१ रघु० १५।१८ 4 विरोध 5 ... कामसज्जा 6 रक्षा 7 सहारा ... कुमक या मदद।

प्रतिकुष्ट (वि०) [प्रति + कुश् + क्त] 1 दयनीय बेचारा गरीब

प्रतिक्षय [प्रति + क्षि + अच्] संरक्षक टहलुआ।

प्रतिक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्रति + क्षिप् + क्त] 1 रद्द किया हुआ अस्वीकृत हटाया हुआ 2 प्रतिहत प्रति रुद्ध पीछे धकेला हुआ अवरुद्ध किया हुआ 3 अपमानित भर्त्सना किया हुआ बदनाम किया हुआ 4 भेजा हुआ प्रेषित।

प्रतिक्षुतम् [प्रति + क्षु + क्त] छींक।

प्रतिक्षेप [प्रति + क्षिप् + घञ्] 1 प्राप्ति स्वीकार न करना अस्वीकृति 2 विरोध करना खण्डन करना प्रतिवाद करना 3 विवाद।

प्रतिख्याति [प्रति + ख्या + क्तिन्] विश्रुति प्रसिद्धि।

प्रतिगत (भू० क० कृ०) [प्रति + गम् + क्त] आगे या पीछे उड़ान भरना इधर उधर चक्कर काटना।

प्रतिगमनम् [प्रति + गम् + ल्युट्] लौटना वापिस आना वापसी।

प्रतिगर्हित (भू० क० कृ०) [प्रति + गर्ह् + क्त] कलंकित निन्दित।

प्रतिगर्जना [प्रति + गर्ज् + युच् + टाप्] गर्जन के जवाब में गर्जना करना किसी की दहाड़ सुनकर दहाड़ना।

प्रतिगृहीत (भू० क० कृ०) [प्रति + ग्रह् + क्त] 1 लिया ग्रहण किया स्वीकार किया 2 मान लिया, हामी भरी 3 विवाह किया।

प्रतिग्रह [प्रति + ग्रह् + अप] ग्रहण करना स्वीकार करना 2 दान ग्रहण करना या स्वीकार करना 3 दान ग्रहण करने का अधिकार 4 उपहार ग्रहण करने का अधिकार (जो कि ब्राह्मणों का ही विशेषाधिकार है) मनु० १।८८ ४।८६, याज्ञ० १।११८ 4 भेंट उपहार दान—... प्रतिग्रहोऽयम्—श० १ शि० १४।३५ 5 (भेंट का) ग्रहण करने वाला 6 सादर स्वागत 7 अनुग्रह, ... 8 पाणिग्रहण 9 ध्यान पूर्वक सुनना 10 सेना का पिछला भाग 11 पीक दान।

प्रतिग्रहणम् [प्रति + ग्रह् + ल्युट्] 1 उपहार ग्रहण 2 स्वागत 3 पाणिग्रहण।

प्रतिग्राहिन्, प्रतिगृहीतृ (पुं०) [प्रतिग्रह + इनि] प्रति + ग्रह् + तृच् ग्रहण करने वाला ग्रहीता।

प्रतिग्राह [प्रति + ग्रह् + ण] 1 उपहार स्वीकार करना 2 थूकदान पीक दान।

प्रतिघ [प्रति + हन् + क कुत्वम्] 1 विरोध मुकाबला 2 लड़ाई भिड़न्त आपस की मारपीट 3 क्रोध रोष 4 मूर्छा 5 शत्रु।

प्रति(ती)घात [प्रति + हन् + णिच् + अच् पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 दूर हटाना पीछे धकेलना 2 विरोध मुकाबला 3 आघात के बदले आघात जवाबी आघात 4 प्रतिक्षेप प्रतिकार 5 प्रतिबंध।

प्रतिघातनम् [प्रति + हन् + णिच् + ल्युट्] 1 पीछे धकेलना दूर हटाना 2 वध हत्या।

प्रतिघ्नम् [प्रति + हन् + क] शरीर।

प्रतिचिकीर्षा [प्रति + कृ + सन् + टाप्] बदले की इच्छा, प्रतिहिंसा की इच्छा बदला लेने की अभिलाषा।

प्रतिचिन्तनम् [प्रति + चिन्त् + ल्युट्] मनन करना गहन-चिन्तन करना।

प्रतिच्छदनम् [प्रति + छद् + ल्युट्] ढकना चादर।

प्रतिच्छन्द, प्रतिच्छन्दक [प्रति + छन्द् + घञ्, कन् च] 1 समानता चित्र मूर्ति प्रतिमा 2 स्थानापन्न शि० १२।२९

प्रतिच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्रति + छद् + क्त] 1 ढका हुआ आच्छादित लपेटा हुआ 2 छिपाया हुआ गुप्त 3 ... गया हुआ पूर्वसंचित 4 गोट या मगजी लगाया हुआ, जड़ा हुआ।

प्रतिच्छेद [प्रति + छिद् + घञ्] मुकाबला विरोध।

प्रतिजल्प [प्रति + जल्प् + घञ्] उत्तर, जवाब।

प्रतिजल्पक [प्रतिजल्प + कन्] सादर सहमति।

प्रतिजागर [प्रति + जागृ + घञ्] निगरानी, देख-रेख सावधानी।

प्रतिजीवनम् [प्रति + जीव् + ल्युट्] पुनर्जीवन, पुनः सञ्जीवता ।

प्रतिज्ञा [प्रति + ज्ञा + अङ + टाप्] 1 मानना, अंगीकार करना 2 प्रण, वचन, वादा, औपचारिक घोषणा —दैवात्तीर्णप्रतिज्ञः मुद्रा० ४।१२ तीर्त्वा जवेनैव नितान्तदुस्तरां नदीं प्रतिज्ञामिव तां गरीयसीम् शि० १२।७४ 3 उक्ति, दृढोक्ति, घोषणा, प्रकथन 4 (न्या० में) प्रस्थापना, सवाक्य पचांगी अनुमान का प्रथम अंग दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ('पर्वतो वह्निमान्' सामान्य उदाहरण है) 5 अभियोग, आरोपपत्र । सम० —पत्रम् बचपत्र, लिखित संविदापत्र —भंगः प्रतिज्ञा का तोड़ देना,—विरोधः वचन के विरुद्ध आचरण करना —विवाहित (वि०) जिसकी सगाई हो गई हो,—संन्यासः 1 वचन भंग करना 2 (न्या० में) मूल प्रस्ताव का त्याग कर देना (इसी अर्थ में 'प्रतिज्ञाहानि' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

प्रतिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति + ज्ञा + क्त] 1 उद्घोषित, उक्त, दृढ़तापूर्वक कथित 2 वचनबद्ध, सहमत 3 माना हुआ, अंगीकृत, —तम् वचन, वादा ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति + ज्ञा + ल्युट्] 1 दृढोक्ति, प्रकथन 2 करार, वादा 3 मानना, स्वीकार करना ।

प्रतितर [प्रति + तृ + अप्] डांड खेने वाला, मल्लाह या नाविक ।

प्रतिताली [प्रतिगता तालम् — प्रा० स० ङीप्] (दरवाजे की) कुंजी, चाबी ।

प्रतिदर्शनम् [प्रति + दृश् + ल्युट्] देखना, प्रत्यक्ष करना ।

प्रतिदानम् [प्रति + दा + ल्युट्] 1 पलटाना, प्रत्यर्पण, वापिस देना, (धरोहर आदि की) पुनर्प्राप्ति 2 विनिमय, वस्तुओं की अदला-बदली ।

प्रतिदारणम् [प्रति + दॄ + णिच् + ल्युट्] 1 लड़ाई, युद्ध 2 फाड़ना ।

प्रतिदिवन् (पुं०) [प्रति + दिव् + कनिन्] 1 दिन 2 सूर्य ।

प्रतिदृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति + दृश् + क्त] 1 देखा हुआ 2 दृष्टिगोचर, दृश्यमान ।

प्रतिधावनम् [प्रति + धाव् + ल्युट्] धावा बोलना, हमला करना, आक्रमण करना ।

प्रतिध्वनिः, प्रतिध्वानः [प्रति + ध्वन् + इ, घञ् वा] गूँज, प्रतिध्वनन ।

प्रतिध्वस्त [भू० क० कृ०] [प्रति + ध्वंस् + क्त] पछाड़ कर नीचे गिराया हुआ, अधोमुख, खिन्न ।

प्रतिनन्दनम् [प्रति + नन्द् + ल्युट्] 1 बधाई देना, स्वागत करना 2 धन्यवाद देना ।

प्रतिनादः [प्रति + नद् + घञ्] गूँज, प्रतिध्वनि ।

प्रति (ती) नाहः [प्रति + नह् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] झंडा, पताका ।

प्रतिनिधिः [प्रति + नि + धा + कि] 1 स्थानापन्न, एवजी, वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के बदले काम पर लगाया जाय साऽभवत्प्रतिनिधिर्न कर्मणा रघु० ११।१३, १।८१ ४।५८ ५।६३ ९।४० 2 सहायक, प्रतिनिधि 3 स्थानापत्ति 4 जामिन 5 प्रतिमा, समानता, चित्र ।

प्रतिनियमः [प्रा० स०] सामान्य नियम ।

प्रतिनिर्जित (भू० क० कृ०) [प्रति + निर् + जि + क्त] 1 पराजित, परास्त 2 तिरस्कृत, निरस्त ।

प्रतिनिर्देश्य (वि०) [प्रति + निर् + दिश् + ण्यत्] जो पहले कहा हुआ होने पर भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्संबंधी और कुछ भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्संबंधी और कुछ भी कह दिया जाय —सु० काव्य० ७ में दिये गये उदाहरण की उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च (यहाँ 'ताम्र' शब्द की पुनरुक्ति यह बतलाने के लिए की गई कि सूर्य 'लाल' ही निकलता है 'लाल' ही छिपता है)

प्रतिनिर्यातनम् [प्रति + निर् + यत् + णिच् + ल्युट्] प्रतिशोध, प्रतिहिंसा ।

प्रतिनिविष्ट (वि०) [प्रति + नि + विश् + क्त] दुराग्रही, हठी, पक्का जिद्दी । सम० —मूर्खः दुराग्रही मूर्ख, पक्का बुद्धू न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् भर्तृ० २।५ ।

प्रतिनिष्क्रमणम् [प्रति + निः + क्रम् + ल्युट्] 1 लौटाना, वापसी 2 मुड़ना ।

प्रतिनोदः [प्रति + नुद् + घञ्] पीछे धकेलना, पीछे हटाना ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रति + पद् + क्तिन्] 1 प्राप्त करना, प्राप्ति, उपार्जन —अनुभावकप्रतिपत्तिः स्वर्ग आदि 2 प्रत्यक्षज्ञान, लक्षण, चेतना (यथार्थ) ज्ञान —वागर्थप्रतिपत्तये रघु० १।१ नयाग्रमद प्रतिपत्तिरस्य... ५।२०, गुणितामपि निज... —रक्षाद मानस० 3 हामी भरना, अंगीकार, स्वीकार —अनिर्णितमपराङ्मुखी भट्टि० ८।५०, (आज्ञानुपालन के विरुद्ध पक्ष में न आना वाला) : मान लेना, अभिस्वीकृति 5 दृढोक्ति, उक्ति 6 समारंभ, शुरू, उपक्रम 7 कार्यवाही, पद्धति, कार्यविधि, व्यवस्था या प्रतिपत्तिरेव मालवि० ४, कु० ४।४० किमात्मकृत्ये प्रतिपत्तिमूढम् —रघु० २।४० (ऐसा न कि कौन-सी कार्यविधि अपनाई जाय, इस बात का विचार के कारण न जान सकी) 8 अनुष्ठान करना, प्रगमन करना, प्रस्तुत प्रतिपत्तये रघु० १५।७५ 9 दृढ़ संकल्प, निश्चित धारणा —स्तम्भमाय प्रतिपत्तिनिष्ठुर रघु० ८।६५ 10 समाचार, गुप्त वार्ता कथंसिद्धा वा प्रतिपत्तिरानय मुद्रा० ४, स० ६ 11 सम्मान, आदर, पूजनीयता का चिह्न, आदरयुक्त व्यवहार

—सामान्य प्रतिपत्ति पूर्वकमिव यदेषु वृथा त्वया श० ४।१६, ७।१, रघु० १४।२२, १५।१२ 12. प्रणाली, उपाय 13. बुद्धि, प्रज्ञा 14. रिवाज, प्रयोग 15. उन्नति, तरक्की, उच्चपद प्राप्ति 16. यश, प्रसिद्धि, ख्याति 17. साहस, भरोसा, विश्वास 18. सम्प्रत्यय, प्रमाण। सम० - ज्ञ (वि०) कार्य विधि का ज्ञाता,—पटहः एक प्रकार का नगाड़ा, - भेदः मतभेद, दृष्टिकोण में अन्तर, विशारद (वि०) कार्यविधि से परिचित, कुशल, चतुर।

प्रतिपद् (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्विप्] 1 पहुँच, प्रवेश, मार्ग 2. आरम्भ, शुरू 3 प्रज्ञा, बुद्धि 4 शुक्लपक्ष का पहला दिन 5. नगाड़ा। सम०—चन्द्र (प्रतिपदा का) नया चाँद, (विशेष रूप से पूज्य) - प्रतिपच्चन्द्रनिभोऽयमात्मजः रघु० ८।६५, —तूर्यम् एक प्रकार का नगाड़ा।

प्रतिपदा,—दी [प्रतिपद्+टाप्, ङीष् वा] शुक्लपक्ष का पहला दिन।

प्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+क्त] 1. उपलब्ध, प्राप्त 2. किया गया, अनुष्ठित, कार्यान्वित, निष्पन्न 3. हाथ में लिया हुआ, आरब्ध 4. वचन दिया हुआ, लगा हुआ 5. सहमत, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ 6. ज्ञात समझा हुआ 7. जवाब दिया गया, उत्तर दिया गया 8. प्रमाणित, प्रदर्शित (प्रति पूर्वक 'पद्' देखो)।

प्रतिपादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [प्रति+पद्+णिच्+ण्वुल्] 1. देने वाला, स्वीकार करने वाला, प्रदान करने वाला, समर्पित करने वाला 2 प्रदर्शित करने वाला, सहायता करने वाला, प्रमाणित करने वाला, स्थापित करने वाला 3 सोच-विचार करने वाला व्याख्या करने वाला, सोदाहरण निरूपण करने वाला 4. उन्नत करने वाला, आगे बढ़ाने वाला, प्रगति करने वाला 5. प्रभावशाली, निष्पादन करने वाला।

प्रतिपादनम् [प्रति+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना 2. प्रदर्शन, प्रमाणन, स्थापन 3. अनुशीलन, व्याख्यान विस्तृत रूप से प्रस्तुत करना, सोदाहरण निरूपण 4. कार्यान्विति, निष्पन्नता, पूर्णता 5. जन्म देना, पैदा करना 6. आवृत्ति, अभ्यास 7. आरम्भ।

प्रतिपादित (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, स्वीकृत, प्रस्तुत 2 स्थापित, प्रमाणित, प्रदर्शित 3. व्याख्यात, सविवरण प्रस्तुत 4. उद्घोषित, उक्त 5 जन्म दिया, पैदा किया।

प्रतिपालक [प्रति+पाल्+णिच्+ण्वुल्] बचाने वाला, संरक्षक अभिभावक।

प्रतिपालनम् [प्रति+पाल्+णिच्+ल्युट्] संरक्षण, बचाना रक्षा करना, पालन करना, अभ्यास करना।

प्रतिपीडनम् [प्रति+पीड्+णिच्+ल्युट्] अत्याचार करना, सताना।

प्रतिपूजनम्,—जा [प्रति+पूज्+ल्युट्, प्रतिपूज्+अ+टाप्] 1. श्रद्धांजलि अर्पित करना, सम्मान प्रदर्शित करना 2. पारस्परिक अभिवादन, शिष्टाचार का विनिमय।

प्रतिपूरणम् [प्रति+पूर्+ल्युट्] 1. पूरा करना, भरना 2 (सुईदार पिचकारी द्वारा किसी तरल पदार्थ को) अन्तः क्षिप्त करना।

प्रतिप्रणाम [प्रति+प्र+नम्+घञ्] बदले में किया गया अभिवादन।

प्रतिप्रदानम् [प्रति+प्र+दा+ल्युट्] 1. वापिस करना, लौटाना 2 विवाह में देना।

प्रतिप्रयाणम् [प्रति+प्र+या+ल्युट्] वापसी, प्रत्यावर्तन।

प्रति प्रश्न [प्रति+प्रच्छ्+नङ्] के बदले में पूछा गया प्रश्न 2 उत्तर।

प्रति प्रसव [प्रति+प्र+सू+अप्] 1. प्रत्यपवाद, अपवाद का अपवाद (जहाँ अपवाद के अन्तर्गत उदाहरणों में ही सामान्य नियम का विधान प्रदर्शित किया जाय) तृजकाभ्यां कर्तरि इत्यस्य प्रतिप्रसवोऽयम् (याजकादिभिश्च) सिद्धा०।

प्रति प्रहार [प्रति+प्र+हृ+घञ्] बदले में प्रहार करना, थप्पड़ के बदले थप्पड़ लगाना।

प्रतिप्लवनम् [प्रति+प्लु+ल्युट्] पीछे की ओर कूदना।

प्रतिफल प्रतिफलनम् [प्रति+फल+अच्, प्रतिफल+ल्युट्] 1. परछाईं, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, छाया 2. पारिश्रमिक, प्रतिदान 3 प्रतिहिंसा, प्रतिशोध।

प्रतिफुल्लक (वि०) [प्रति+फुल्ल्+ण्वुल्] खिलने वाला, पूरा खिला हुआ।

प्रतिबद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बन्ध्+क्त] 1. बांधा गया, बंधा हुआ, कसा हुआ 2. जोड़ा गया 3. अवरुद्ध, रुकावट डाली गई, बाधित 4. टका हुआ, जड़ा हुआ —शि० ९।८ 5. समायुक्त, अधिकार में करने वाला 6 फँसा हुआ, अन्तर्ग्रस्त 7 दूर रक्खा हुआ 8. निराश 9. (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न रूप से समुक्त (जैसे आग और धुआँ)।

प्रतिबंधः [प्रति+बन्ध्+घञ्] 1. बंधन, बाँधना 2. अवरोध, रुकावट, विघ्न —सतत प्रतिबंधप्रभुणा—रघु० ८।८० महावी० ५।४ 3. विरोध, मुकाबला 4. आवरण, नाकेबंदी, घेरा 5 सबंध 6 (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न सयोग।

प्रतिबंधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्रति+बंध्+ण्वुल्] 1. बांधने वाला, जकड़ने वाला, 2. रुकावट डालने वाला, अवरोध करने वाला, विघ्नकारक 3.

मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला,- क शाखा, अंकुर।

प्रतिबन्धनम् [प्रति+बन्ध्+ल्युट्] 1. बांधना, कसना 2. कैद, बंधन 3 अवरोध रुकावट।

प्रतिबंधि, —धी [प्रतिबन्ध्+इनि, प्रतिबन्ध+ङीष्] 1 आक्षेप 2. ऐसा तर्क जो विपक्ष पर समान रूप से प्रभाव डाले (इस अर्थ में प्रतिबन्दी शब्द भी है)।

प्रतिबाधक (वि०) [प्रति+बाध्+ण्वुल्] 1 हटाने वाला दूर करने वाला 2 रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला।

प्रतिबाधनम् [प्रति+बाध्+ल्युट्] हटाना, दूर करना अस्वीकार करना।

प्रतिबिम्बनम् [प्रतिबिम्ब+णिच्+ल्युट्] 1 परछाईं 2 तुलना, दृष्टान्त [illegible] प्रतिबिम्बनम् — काव्य० १०।

प्रतिबिम्बित (वि०) [प्रतिबिम्ब+णिच्+क्त] जिसकी परछाईं पड़ी हो, दर्पण में प्रतिबिम्बित।

प्रतिबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बुध्+क्त] 1 जागा हुआ, जगाया हुआ 2. पहचाना हुआ, देखा हुआ 3 प्रसिद्ध, विख्यात।

प्रतिबुद्धि (स्त्री०) [प्रति+बुध्+क्तिन्] 1 जागरण 2. विरोधी अभिप्राय या इरादा।

प्रतिबोध [प्रति+बुध्+घञ्] 1 जागना, जागरण, जगाया जाना तदपोहितुमर्हसि प्रिये प्रतिबोधेन विषादमाशु मे — रघु० ८।५४ अप्रतिबोधशायिना —५८ 'सदा के लिए सो जाने वाली' कि० ६।१२ १२।४८ 2 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 3 अनुदेश शिक्षण 4 तर्क, तर्कना मनःशक्ति किमुत या प्रतिबोधवत्या श० ५।२२।

प्रतिबोधनम् [प्रतिबुध्+णिच्+ल्युट्] 1 जगाना 2 शिक्षण, अनुदेश।

प्रतिबोधित (वि०) [प्रति+बुध्+णिच्+क्त] 1 जगाया हुआ 2 अनुदिष्ट, शिक्षित।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] 1 दर्शन, दृष्टि 2 प्रकाश, प्रभा 3 बुद्धि, समझ —कि० १६।४, विक्रम० १।१८, २३ 4. मेधा, प्रखर बुद्धि, विशद कल्पना, प्रज्ञा (प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता) 5 प्रतिबिंब, परछाईं 6 धृष्टता, ढिठाई। सम० —अन्वित (वि०) 1 मेधावी, प्रज्ञावान् 2. बेधड़क, साहसी —मुख (वि०) साहसी, दिलेर, —हानि (स्त्री०) 1 अंधकार 2 प्रज्ञा या मेधा का अभाव।

प्रतिभात (भू० क० कृ०) [प्रति+भा+क्त] 1 प्रकाशित, प्रभायुक्त 2 ज्ञात, अध्याहृत, अवगत।

प्रतिभानम् [प्रति+भा+ल्युट्] 1 प्रकाश, दीप्ति 2 बुद्धि या समझ, ज्ञान की चमक हि० ३।१९ 3 हाजिर जवाबी, —प्रत्युत्पन्नमतित्व —वाक्चातुर्य प्रतिभानवत्त्वम् मा० ३।११, समयोचितसुतेन कथयन प्रतिभिन्न प्रतिभानवानथ शि० १६।१।

प्रतिभाव [प्रति+भू+घञ्] तदनुरूप प्राण।

प्रतिभाषा [प्रति+भाष्+अ+टाप्] उत्तर, जवाब।

प्रतिभास [प्रति+भास्+घञ्] 1 मन में स्फुरित होना, चमकना, झलकना (अकस्मात्) [illegible] 2 दृष्टि [illegible] 3 भ्रम, माया।

प्रतिभासनम् [प्रति+भास्+ल्युट्] [illegible]

प्रतिभिन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+भिद्+क्त] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]।

प्रतिभू [प्रति+भू+क्विप्] 1 [illegible] जमानत [illegible] [illegible] रघु० [illegible]।

प्रतिभेदनम् [प्रति+भिद्+ल्युट्] 1 [illegible] भेदना 2 [illegible] 3 (आँख) निकाल लेना 4 [illegible]।

प्रतिभोग [प्रति+भुज्+घञ्] [illegible]।

प्रतिमा [प्रति+मा+अङ्+टाप्] 1 प्रतिबिम्ब, समानता प्रतिमा आकृति [illegible] रघु० [illegible] मनःकाम्य सादृश्य (प्रायः समास में प्रयुक्त) कृतानुप्रतिमा रघु० [illegible] 3 परछाईं, प्रतिबिम्ब [illegible] [illegible] रघु० ३।६६ १०।१० [illegible] 5 दोनों दांतों के बीच का हाथी के सिर का भाग। सम० —गत (वि०) मूर्ति में वर्तमान, —चन्द्र [illegible] बिम्ब चन्द्रमा, चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब रघु० [illegible] इसी प्रकार प्रतिमेन्दु, प्रतिमशशांक, —परिचारक पुजारी, मूर्ति का सेवक।

प्रतिमानम् [प्रति+मा+ल्युट्] 1 नमूना, प्रतिमूर्ति 2 प्रतिमा, मूर्ति 3 समानता, उपमा, समरूपता 4 बोझ 5 दांतों का मध्यवर्ती सिर का भाग पृथुप्रतिमानभाग — शि० ५।३६ 6 परछाईं।

प्रतिमुक्त (वि०) [प्रति+मुच्+क्त] 1 धारण किया हुआ, पहना हुआ, प्रयुक्त किया हुआ 2 कसा हुआ, बांधा हुआ, जकड़ा हुआ 3 शस्त्र से सज्जित, कवचधारी 4 मुक्त, छोड़ा हुआ 5 लौटाया हुआ, वापिस किया हुआ 6 फेंका हुआ, उछाला हुआ (दे० प्रतिपूर्वक मुच्)।

प्रतिमोक्ष, प्रतिमोक्षणम् [प्रति+मोक्ष्+घञ्, ल्युट् वा] मोक्ष, छुटकारा।

प्रतिमोचनम् [प्रति+मुच्+ल्युट्] 1 शिथिल करना 2 प्रतिबोध, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध —वैरप्रतिमोचनाय रघु० १४।४१ 3 मुक्ति, छुटकारा।

तियत्नः [प्रति+यत्+नङ्] 1 प्रयास, उद्योग, चेष्टा 2. तैयारी, परिश्रम द्वारा सम्पादन—शि० ३।५८ 3 पूर्ण या पूरा करना 4. नया गुण मिलाना—सतो गुणान्तराधानं प्रतियत्नः—पा० २।३।५३ पर काशिका 5 अभिलाषा, इच्छा 6 विरोध, मुकाबला 7 प्रतिक्रिया, प्रतिशोध, बदला 8 बंदी बनाना, कैद करना 9 अनुग्रह।

तियातनम् [प्रति+यत्+णिच्+ल्युट्] प्रतिशोध, प्रतिहिंसा—जैसा कि 'वैरप्रतियातनम्' में।

तियातना [प्रति+यत्+णिच्+युच्+टाप्] चित्र, प्रतिमा, मूर्ति—शि० ३।३४।

तियानम् [प्रति+या+ल्युट्] लौटना, प्रत्यावर्तन, वापसी।

तियोग [प्रति+युज्+घञ्] 1 किसी वस्तु का प्रतिरूप होना या बनाना 2 विरोध, मुकाबला 3 प्रतिक्रिया, प्रतिरोध 4 सहयोग 5 विषनिवारक औषधि, उपचार।

तियोगिन् (वि०) [प्रति+युज्+घिनुण्] 1 विरोध करने वाला, रुकावट डालने वाला, बाधक 2 संबद्ध या संदर्भ का किसी वस्तु का प्रतिरूप बनाने वाला (प्रायः न्यायविषयक रचनाओं में प्रयुक्त) 3 सहयोग करने वाला—(पु०) 1. विरोधी, विपक्षी, शत्रु—इतरेतरयोग प्रतियोगिनमर्दे—विक्रम० १।११ 2 प्रतिरूप, जोड़ का।

तियोद्धृ (पु०) **प्रतियोधः** [प्रति+युध्+तृच्, घञ् वा] शत्रु, विपक्षी।

तिरक्षणम्,—रक्षा [प्रति+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] बचाव, संधारण, रक्षा।

तिरंभः [प्रति+रभ्+घञ्] क्रोध, रोष।

तिरवः [प्रति+रु+अप्] 1 कलह, झगड़ा 2 गूंज, प्रतिध्वनि।

तिरुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+रुध्+क्त] 1 अवरुद्ध, बाधित, विघ्नयुक्त 2 रुका हुआ, अन्तरित 3 क्षतियुक्त 4 विकलीकृत 5 वेष्टित, घेरा डाला हुआ।

तिरोधः [प्रति+रुध्+घञ्] 1 अटकाव, रुकावट विघ्न 2 घेरा, नाकेबंदी 3 विपक्षी 4 छिपाना 5. चोरी, डकैती 6. निन्दा, घृणा।

तिरोधकः, प्रतिरोधिन् (पु०) [प्रति+रुध्+ण्वुल्, णिनि वा] 1 विपक्षी 2 लुटेरा, चोर—मालवि० ५।१० 3 रुकावट।

तिरोधनम् [प्रति+रुध्+ल्युट्] विरोध करना, रुकावट डालना।

तिलंभः [प्रति+लभ्+घञ्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना 2 निन्दा, गाली, खरी-खोटी (सुनाना)।

तिलाभः [प्रति+लभ्+घञ्] वापिस लेना, ग्रहण करना, हासिल करना।

प्रतिवचनम्, प्रतिवचम् (नपुं०) **प्रतिवाच्** (स्त्री०) **प्रतिवाक्यम्** [प्रति+वच्+ल्युट्, वच्+णिच्+क्विप्] उत्तर, जवाब—प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे शि० १६।२५, परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्—रघु० ८।९।

प्रतिवर्तनम् [प्रति+वृत्+ल्युट्] लौटना, वापिस करना।

प्रतिवसथः [प्रति+वस्+अथच्] ग्राम, गाँव।

प्रतिवहनम् [प्रति+वह्+ल्युट्] वापिस ले जाना, वापिस ले जाने में नेतृत्व करना।

प्रतिवादः [प्रति+वद्+घञ्] 1 उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब 2 इंकार करना, अस्वीकृति।

प्रतिवादिन् (पु०) [प्रति+वद्+णिनि] 1 विपक्षी 2 प्रतिवादी (मुकदमे में)।

प्रतिवार, प्रतिवारणम् [प्रति+वृ+घञ्, प्रति+वृ+णिच्+ल्युट्] रोक रखना, दूर रखना।

प्रतिवार्ता [प्र० स०] वर्णन, सूचना, समाचार, संवाद।

प्रतिवासिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति+वस्+णिनि] निकट रहने वाला, पड़ोस में रहने वाला—पु० पड़ौसी।

प्रतिविघातः [प्रति+वि+हन्+घञ्] प्रहार के बदले प्रहार करना, बचाव।

प्रतिविधानम् [प्रति+वि+धा+ल्युट्] 1 प्रतिकार करना, विरोध में काम करना, निष्फल करना, विरुद्ध कार्य करना 2 व्यवस्था, क्रम 3 रोक थाम 4 स्थानापन्न सत्कार, सहकारी सत्कार।

प्रतिविधिः [प्रति+वि+धा+कि] 1 प्रतिशोध 2. उपचार, प्रतिक्रिया के उपाय।

प्रतिविशिष्ट (वि०) [प्रति+वि+शास्+क्त] अत्यन्त श्रेष्ठ।

प्रतिवेशः [प्रति+विश्+घञ्] 1. पड़ौसी 2. पड़ौसी का वासस्थान, पड़ौस। सम०—**वासिन्** (वि०) पड़ोस में रहने वाला (पु०) पड़ौसी।

प्रतिवेशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रतिवेश+इनि] पड़ौसी—दृष्टि हे प्रतिवेशिनि क्षणमिहाप्यस्मद्गृहे दास्यसि—सा० द०, मुच्छ० ३।१४।

प्रतिवेश्यः [प्रति+विश्+ण्यत्] पड़ौसी।

प्रतिवेष्टित (भू० क० कृ०) [प्रति+वेष्ट्+क्त] प्रत्यावृत्त विपर्यस्त, पीछे की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतिव्यूढ (भू० क० कृ०) [प्रति+वि+ऊह्+क्त] समाम व्यूह रचना में परास्त।

प्रतिव्यूहः [प्रति+वि+ऊह्+घञ्] 1 शत्रु के विरुद्ध सेना की व्यूह रचना 2 समुच्चय, समूह।

प्रतिशमः [प्रति+शम्+घञ्] विश्राम, विराम।

प्रतिशयनम् [प्रति+शी+ल्युट्] किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए अनशन करके देवता के सामने पड़े रहना, धरना देना।

प्रतिशयित (वि०) [प्रति+शी+क्त] अपने किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए बिना खाये पीये देवता के सामने धरना देने वाला — अनया च किलास्मै प्रतिशयिताय स्वप्ने समादिष्टम् — दश० १२१।

प्रतिशापः [प्रति+शप्+घञ्] शाप के बदले शाप, बदले में शाप।

प्रतिशासनम् [प्रति+शास्+ल्युट्] 1 आदेश देना, दूत के रूप में भेजना, आज्ञा देना 2 किसी दूत को बाहर से बुला भेजना 3 वापस बुलाना 4 विरोधी आदेश, अधिकृत कथन — अप्रतिशासनं जगत् रघु० ८।२७ (पूर्ण रूप से एक ही शासक के शासन में)।

प्रतिशिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+शास्+क्त] 1 आदिष्ट, प्रेषित शि० १६।१ 2 विसर्जित किया हुआ अस्वीकृत 3 विख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतिश्या, प्रतिश्यानम्, प्रतिश्यायः [प्रति+श्यै+क+टाप्, ल्युट्, ण वा] जुकाम, सर्दी।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] शरणगृह, आश्रम 2 घर, आवासस्थान, निवासस्थल — याज्ञ० १।२१० मनु० १०।५१ 3 सभा 4 यज्ञ भवन 5 मदद, सहायता 6 प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रवः [प्रति+श्रु+अप्] 1 स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा 2 गूंज।

प्रतिश्रवणम् [प्रति+श्रु+ल्युट्] 1 ध्यानपूर्वक सुनना मनु० २।१९५ 2 वचन देना, हामी भरना, सहमत होना 3 प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रुत्, प्रतिश्रुतिः (स्त्री०) [प्रति+श्रु+क्विप्, क्तिन् वा] 1 प्रतिज्ञा 2 गूंज, प्रतिध्वनि रघु० १३।४०, १६।३१, शि० १७।४२।

प्रतिश्रुत (भू० क० कृ०) [प्रति+श्रु+क्त] वचन दिया हुआ, सहमत, हामी भरी हुई।

प्रतिषिद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+सिध्+क्त] 1 निषिद्ध, वर्जित, अननुमत, अस्वीकृत 2 बाधित, प्रत्युक्त।

प्रतिषेधः [प्रति+सिध्+घञ्] 1 दूर रखना परे हटाना, हाँक कर दूर कर देना, निकाल देना विक्रम० १।८ 2 प्रतिषेध यथा 'शास्त्रप्रतिषेध' में 3 मुकरना, अस्वीकृति 4 निषेध करना, विरुद्ध कथन। सम० — अक्षरम्, — उक्तिः (स्त्री०) मुकर जाने के शब्द, अस्वीकृति श० ३।२५, — उपमा दण्डि द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद, इसकी परिभाषा — न जातु शक्तिरिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम्, कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा — काव्या० २।३४।

प्रतिषेधक, प्रतिषेद्धृ (वि०) [प्रति+सिध्+ण्वुल्, तृच् वा] 1 हटाने वाला, निषेध करने वाला, रोकने वाला 2 मना करने वाला (पु०) विघ्नकारक, निवारक।

प्रतिषेधनम् [प्रति+सिध्+ल्युट्] 1 दूर रखना, परे हटाना, रोकना 2. निवारण करना 3 मुकरना, अस्वीकृति।

प्रतिष्कः, प्रतिष्कशः [प्रति+स्कन्द्+ड, प्रति+कश्+अच्, सुट्] जासूस, संदेशवाहक, दूत।

प्रतिष्कशः [प्रति+कश्+अच्, सुट्] 1 भेदिया, दूत 2 चाबुक, हंटर।

प्रतिष्कषः [प्रति+कष्+अच्, सुट्] चाबुक चमड़े का कोड़ा।

प्रतिष्टम्भः [प्रति+स्तम्भ्+घञ्, षत्व] अवरोध, रुकावट, मुकाबला, विरोध विघ्न — बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्युः — रघु० २।३२, ५९।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] 1 ठहरना, रहना, स्थिति, अवस्था — अपौरुषेयप्रतिष्ठम् — मा० ९, श० ७।६ 2 घर निवासस्थान, जन्मभूमि आवास — रघु० ६।२१, १४।५ 3 स्थैर्य स्थिरता, दृढ़ता, स्थायिता, दृढाधार — अप्रतिष्ठे रघुज्येष्ठे का प्रतिष्ठा कुलस्य न — उत्तर० ५।२५ अत्र खलु मे वंशप्रतिष्ठा — श० ७ का प्रतिष्ठा नीम का० २८०, शि० २।३४ 4 आधार नींव, ठिकाना जैसा कि 'गृहप्रतिष्ठा' में 5. सहारा टेक सहारा (अतः) कौलिभाजन विपुल अलंकार — त्वमस्या मया नाम कुलप्रतिष्ठा श० ६।२४ द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य न ३।२१, कु० ७।२७, महावी० ५।४३ 6 उच्चपद प्रमुखता उच्च अधिकार — मुद्रा० ३।४ 7 ख्याति यश कीर्ति प्रसिद्धि — मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः रामा० (उत्तर० २।५) 8 सम्मानना प्रतिष्ठापन मुद्रा० १।१४ 9 अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति निष्पत्ति (इच्छा की) पूर्ति — औत्सुक्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा — श० ५।६ 10 शान्ति विश्राम, विश्रान्ति 11 आधार 12 पृथिवी 13 किसी देवप्रतिमा की स्थापना 14 सीमा, हद।

प्रतिष्ठानम् [प्रति+स्था+ल्युट्] 1 आधार, नींव 2 ठिकाना, स्थिति, अवस्था 3 टांग पैर 4 गंगा यमुना के संगम पर स्थित एक नगर जो चन्द्रवंश के आदिकालीन राजाओं की राजधानी था — तु० विक्रम० २।५ 5 गोदावरी पर स्थित एक नगर का नाम।

प्रतिष्ठित (भू० क० कृ०) [प्रति+स्था+क्त] 1 ठहरा हुआ खड़ा किया हुआ 2 स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ 3 रक्खा हुआ अवस्थित 4 संस्थापित, प्रतिष्ठापित, अभिमंत्रित 5 पूर्ण, कार्यान्वित 6 कीमती मूल्यवान 7 विख्यात प्रसिद्ध (दे० प्रति पूर्वक स्था)।

प्रतिसंविद् (स्त्री०) [प्रति+सम्+विद्+क्विप्] किसी वस्तु के विवरण का यथार्थ ज्ञान।

प्रतिसंहारः [प्रति+सम्+हृ+घञ्] 1 पीछे ले जाना,

वापिस हटाना 2 अल्पता, सपीडन 3 धारणा शक्ति, समावेश 4 परित्यक्त करना, छोड़ना ।

प्रतिसंहृत (भू० क० कृ०) [प्रति+सम्+हृ+क्त] 1 वापिस लिया हुआ, पीछे को खींचा हुआ, एव प्रतिसंहृत —श० १ 2 सम्मिलित करना, अन्तर्गत करना 3. संपीडित ।

प्रतिसंक्रम. [प्रति+सम्+क्रम्+घञ्] 1 पुनश्चूषण 2. प्रतिच्छाया, परछाईं ।

प्रतिसंख्या [प्रति+सम्+ख्या+अङ+टाप्] चेतना ।

प्रतिसंचर [प्रति+सम्+चर्+ट] 1 पीछे मुड़ना 2 पुनश्चूषण 3 विशेषत विराट जगत् का फिर प्रकृति के रूप में लीन हो जाना ।

प्रतिसंदेश [प्रति+सम्+दिश्+घञ्] संदेश का जवाब संदेश के बदले संदेश ।

प्रतिसंधानम् [प्रति+सम्+धा+ल्युट्] 1 एक स्थान पर मिलना, एकत्र होना 2 दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमणकाल 3 उपाय उपचार 4 आत्मनियन्त्रण आत्मदमन 5 प्रशंसा ।

प्रतिसंधि [प्रति+सम्+धा+कि] 1 पुनर्मिलन 2 गर्भाशय में प्रवेशकरण 3 दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमणकाल 4 विराम, उपरम ।

प्रतिसमाधानम् [प्रति+सम्+आ+धा+ल्युट्] चिकित्सा उपचार ।

प्रतिसमासनम् [प्रति+सम्+आ+अस्+ल्युट्] 1 सामना होना, जोड़ का होना 2 मुकाबला करना, विरोध करना टक्कर लेना ।

प्रतिसर, –रम् [प्रति+सृ+अच्] कलाई या गरदन में पहनने का तावीज, –रः 1 सेवक अनुचर 2 कड़ा विवाह-कंकण अन्यानगप्रतिसरेण करेण पाणि (अग्रमन) कि० ५।३३ (कौतुकसूत्र मल्लि०) 3 पुष्पमाला या हार 4 प्रभात काल 5 सेना का पृष्ठभाग 6 एक प्रकार का जादू 7 घाव का पूरा या घाव पर पट्टी बांधना ।

प्रतिसर्गः [प्रति+सृज्+घञ्] 1 गौण रचना (जैसा कि ब्रह्मा के मानस पुत्रों द्वारा) 2 विघटन प्रलय ।

प्रतिसांधानिक [प्रतिसंधान+ठक्] भाट, चारण बंदी ।

प्रतिसारणम् [प्रति+सृ+णिच्+ल्युट्] 1 घाव के किनारों की मरहमपट्टी करना 2 घाव में मरहम लगाने का उपकरण ।

प्रतिसीरा [प्रति+सि+क्रन्+टाप् दीर्घ] परदा चिक कनात ।

प्रतिसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+सृज्+क्त] 1 भेजा गया, प्रेषित 2 प्रसिद्ध 3 पीछे धकेला गया अस्वीकृत 4 नशे में चूर (वर्तनी के अनुसार प्रमत्त) ।

प्रतिस्नात (भू० क० कृ०) [प्रति+स्ना+क्त] स्नान किया हुआ ।

प्रतिस्नेह [प्रा० स०] बदले में प्यार, प्रतिप्रेम या बदले में किया गया प्रेम ।

प्रतिस्पन्दनम् [प्रा० स०] हृदय की धड़कन ।

प्रतिस्वनः, प्रतिस्वरः [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि— शि० १३।३१ ।

प्रतिहत (भू० क० कृ०) [प्रति+हन्+क्त] 1 उलटा मारा हुआ, पछाड़ा हुआ 2 भगाया हुआ, दूर किया हुआ पीछे धकेला हुआ 3 विरोध किया हुआ, अवरुद्ध 4 भेजा हुआ, प्रेषित 5 घृणित, नापसंद 6 हताश, भग्नाश । सम० –धी (वि०) घृणा करने वाला, नापसंद करने वाला ।

प्रतिहति (स्त्री०) [प्रति+हन्+क्तिन्] 1 उलटकर प्रहार करना, पछाड़ना धकेलना 2 पलट पड़ना, परावर्तन प्रतिहति ययुरर्जुनमुष्टयः कि० १८।५, शि० ९।७१ 3 नाउम्मीदी भग्नाशा 4 क्रोध ।

प्रतिहननम् [प्रति+हन्+ल्युट्] उलट कर प्रहार करना, पछाड़ देना पलट कर मारना आघात के बदले आघात करना ।

प्रतिहर्तृ (पुं०) [प्रति+हृ+तृच्] पछाड़ने वाला हटाने वाला पीछे धकेलने वाला दूर करने वाला ।

प्रति (ती) हार [प्रति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 उलट कर प्रहार करना 2 दरवाजा फाटक 3 दरबान, द्वारपाल 4 जादूगर 5 ऐन्द्रजालिक जादूभरी चाल । सम० –भूमि (स्त्री०) (घर की) देहली कु० ३।५८ –रक्षी स्त्री द्वारपाल प्रतिहारी रघु० ६।२० ।

प्रतिहारक [प्रति+हृ+ण्वुल्] ऐन्द्रजालिक जादूगर ।

प्रतिहास [प्रति+हस्+घञ्] हंसी के बदले हंसी ।

प्रतिहिंसा [प्रति+हिंस्+अ+टाप्] प्रतिशोध बदला ।

प्रतिहित (भू० क० कृ०) [प्रति+धा+क्त] साथ जड़ा गया साथ सटा दिया गया ।

प्रतीक (वि०) [प्रति+कन् नि० दीर्घ] 1 की ओर मुड़ा हुआ 2 विपर्यस्त उलटा 3 विरुद्ध प्रतिकूल विपरीत –कः 1 अवयव, अंग—शि० १८।७० 2 अंग, अंश, –कम् 1 प्रतिरूप 2 मुंह चहरा 3 (किसी वस्तु का) अग्रभाग 4 (किसी श्लोक या वाक्य का) प्रथम शब्द ।

प्रतीक्षणम्, प्रतीक्षा [प्रति+ईक्ष्+ल्युट्, प्रति+ईक्ष्+अङ+टाप्] 1 इंतजार करना 2 अपेक्षा, आशा 3 ख्याल विचार ध्यान ।

प्रतीक्षित (भू० क० कृ०) [प्रति+ईक्ष्+क्त] 1 जिसकी इंतजार की गई अपेक्षा की गई 2 विचार किया गया ।

प्रतीक्ष्य (सं० कृ०) [प्रति + ईक्ष् + ण्यत्] 1 प्रतीक्षा किये जाने योग्य 2 ध्यान या विचार के योग्य 3 श्रद्धेय, आदरणीय —कु० ५।१६, शि० २।१०८ 4 अनुसरणीय प्रतिपालनीय परिपूरणीय शि० २।१८० ।

प्रतीची [प्रति + अञ्च् + क्विन् + ङीप्] पश्चिम दिशा ।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च् + ख, समासो दीर्घश्च] 1 पश्चिमी, पाश्चात्य 2 भावी, उत्तरवर्ती अनुवर्ती ।

प्रतीच्छकः [प्रतिगता इच्छा यस्य प्रा० ब० कप्] ग्रहण करने वाला ।

प्रतीच्य (वि०) [प्रतीची + यत्] पश्चिम में रहने वाला पश्चिमी पाश्चात्यदेशवासी

प्रतीत (भू० क० कृ०) [प्रति + इ + क्त] 1 प्रसिद्ध प्रख्यात 2 गुज़रा हुआ बीता हुआ गया हुआ 3 विश्वस्त भरोसे का 4 प्रमाणित [illegible] 5 स्वीकृत माना हुआ 6 प्रकाशित [illegible] —[illegible] प्रतीत रघु० [illegible] 7 विख्यात विश्रुत प्रसिद्ध 8 दृढसंकल्पयुक्त 9 विश्वास करने वाला भरोसा रखने वाला निश्चय 10 प्रसन्न खुश—रघु० ३।१२ ५।२६ १४।४७ १६।० 11 प्रतिष्ठित 12 चतुर, विद्वान् बुद्धिमान

प्रतीतिः (स्त्री०) [प्रति + इ + क्तिन्] 1 ज्ञान [illegible] निश्चित भरोसा —श० ७।३१ 2 विश्वास [illegible] निश्चय, स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान या समझ [illegible] वैशिष्ट्यं प्रतिभासादेव [illegible] [illegible] 4 यश, कीर्ति 5 आदर 6 खुशी ।

प्रतीत्त (वि०) [प्रति + दा + क्त] वापिस दिया हुआ लौटाया हुआ ।

प्रतीनाह (पुं०) विदेह देश का नाम ।

प्रतीप (वि०) [प्रतिगता आपो यत्र प्रति + अप् + अच् अपर्दिण् च] 1 विरुद्ध प्रतिकूल विपरीत विरोधी —[illegible] रघु० ११।६० 2 उल्टा विपर्यस्त बिगड़ा हुआ 3 पिछड़ा हुआ [illegible] 4 अरुचिकर, अप्रिय 5 अड़ियल आज्ञा का उल्लंघन करने वाला हठी दुराग्रही —पंच० १।४२४ 6 विघ्नकारी —पः एक राजा का नाम महाराज शान्तनु के पिता तथा भीष्म के पितामह का नाम —पम् एक अलंकार का नाम जिसमें तुलना के सामान्य क्रम को बदल कर उपमान की उपमेय से तुलना करते हैं — प्रतीपमुपमानस्योपमेयत्वप्रकल्पनम्, त्वल्लोचनसमं पद्मं त्वद्वक्त्रसदृशो विधुः —चन्द्रा० ५।९ (और अधिक विवरण तथा परिभाषा की जानकारी के लिए काव्य० १० में वर्णित 'प्रतीप' के अन्तर्गत दे० —पम् (अव्य०) 1 इसके विपरीत 2 विपरीत क्रमानुसार 3 के विरुद्ध, के विरोध में — भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः श० ४।१८। सम० —ग (वि०) 1 विरुद्ध चलने वाला 2 विपरीत, प्रतिकूल रघु० ११।५८ —गमनम् —गति (स्त्री०) उल्टा चलना कु० ७।२५, —तरणम् धार के विरुद्ध जाना या नाव चलाना शि० १।८, —दर्शिनी स्त्री —वचनम् 1 खण्डन 2 दुराग्रहपूर्ण या [illegible] करने वाला वचन [illegible] —विपाकिन् (वि०) विपरीत फलदायक [illegible] श० ५।२६ ।

प्रतीरम् [प्र + तीर + [illegible]] [illegible] ।

प्रतीवाप [प्रति + वप् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible]

प्रतीवेश [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

प्रतीहार (पुं०) [illegible] ।

प्रतीहारी [illegible] [illegible] [illegible]

प्रतुद [प्र + तुद् + क] 1 [illegible] 2 [illegible] ।

प्रतुष्टि (स्त्री०) [प्र + तुष् + क्तिन्] तुष्टि, सन्तोष

प्रतोद [प्र + तुद् + घञ्] 1 अंकुश 2 [illegible] 3 [illegible] ।

प्रत्त (वि०) [प्र + [illegible] + क्त] [illegible] पूर्णिमा [illegible]

प्रतोली [प्र + तुल् + अच् + ङीष्] गली मुख्य मार्ग नगर की मुख्य सड़क प्राय प्रतोलीमतुलप्रभाम् शि० ३।६४

प्रत्त (भू० क० कृ०) [प्र + दा + क्त] 1 दिया हुआ प्रदत्त प्रदान किया हुआ प्रस्तुत किया हुआ 2 विवाह में दिया हुआ विवाहित ।

प्रत्न (वि०) [प्र + त्नप्] 1 पुराना, प्राचीन 2 पहला 3 परम्परा प्राप्त प्रथागत ।

प्रत्यक् (अव्य०) [प्रति + अञ्च् + क्विन्] 1 विरुद्ध दिशा में पीछे की ओर 2 के विरुद्ध 3 (अपा० के साथ) से पश्चिम में 4 भीतर की ओर, अन्दर की तरफ 5 पहले समय में ।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्णः प्रति] 1 दृष्टिगोचर, दृश्य प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः —श० १।१ 2 उपस्थित दृष्टिगत आँखों के सामने 3 इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियसंवेद्य 4 स्पष्ट, विशद, साफ 5 सीधा व्यवधानशून्य 6 सुस्पष्ट सुव्यक्त 7 शारीरिक, भौतिक, —क्षम् 1 प्रत्यक्षज्ञान, आँखों देखा साक्ष्य, इन्द्रियों द्वारा बोध, एक प्रकार का प्रमाण

इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानम् प्रत्यक्षम् - तर्क० 2. सुव्यक्तता, सुस्पष्टता (प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षेण, प्रत्यक्षात्, या प्रत्यक्षात् का क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त किये जाकर निम्न अर्थ प्रकट करते हैं- 1 सामने की उपस्थिति में, की दृष्टि में 2 खुलकर, सार्वजनिक रूप से 3. सीधे, अव्यवहित रूप से 4 [illegible] रूप से 5 [illegible] 6 स्पष्ट रूप से [illegible] समा० [illegible] आंखों देखी बात, [illegible] -दर्शिन्-ज्ञानिन् (वि०) आंखों देखा [illegible] -दृष्ट (वि०) स्वयं देखा हुआ, - प्रमा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] -वादिन् (पुं०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] -विहित [illegible] [illegible] किया हुआ।

प्रत्यग्दर्शन (पुं०) [illegible] आंखों [illegible] [illegible]

प्रत्यग्र (वि०) [illegible] 1. ताजा, नया, [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] 2. [illegible] [illegible] -विक्रम० [illegible] मेघ० [illegible], रघु० [illegible] [illegible] 2 [illegible] हुआ 3 विशुद्ध · समा० -वयस् (वि०) [illegible] जीवन की [illegible] में, तरुण।

प्रत्यञ्च् (वि०) (स्त्री० प्रतीची कौशिक के [illegible] -प्रत्यची) [प्रति+अञ्च्+क्विन्] 1. [illegible] मुड़ा हुआ 2. पश्चवर्ती 3 अनुवर्ती [illegible] 3 [illegible] [illegible] हुआ, [illegible] हुआ 4 [illegible] पश्चिम दिशा का। समा० -अक्षम् (प्रत्यगक्षम्) आन्तरिक [illegible], -आत्मन् (पुं०) (प्रत्यगात्मन्) वैयक्तिक [illegible] आत्मा, - आशापतिः (प्रत्यगाशापतिः) पश्चिम दिशा का स्वामी, वरुण का विशेषण, -उदच् (स्त्री०) (प्रत्यगुदच्) उत्तर पश्चिमी दक्षिणम् (अव्य० प्रत्यग्दक्षिणम्) दक्षिण-पश्चिम की ओर —दृश् (स्त्री०) (प्रत्यग्दृश्) आन्तरिक [illegible] अन्तर्दृष्टि, - मुख (वि०) (प्रत्यङ्मुख) 1. पश्चिमाभिमुखी 2 मुंह मोड़े हुए, -स्रोतस् (वि०) (प्रत्यक्स्रोतस्) पश्चिम की ओर बहने वाला --कि० ४।१६६ पर मल्लि० (स्त्री०) नर्मदा नदी का विशेषण।

प्रत्यञ्चित (वि०) [प्रति+अञ्च्+क्त] सम्मानित, पूजित, अर्चित।

प्रत्यदनम् [प्रति+अद्+ल्युट्] 1. भोजन करना 2. भोजन।

प्रत्यभिज्ञा [प्रति+अभि+ज्ञा+अङ्+टाप्] [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] मामवबोधय - [illegible]

प्रत्यभिज्ञानम् [प्रति+अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1 पहचानना --प्रत्यभिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्कृती - रघु० १२।६४।

प्रत्यभिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+ज्ञा+क्त] पहचाना हुआ।

प्रत्यभिभूत (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+भू+क्त] [illegible] हुआ।

प्रत्यभियुक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+युज्+क्त] [illegible] प्रतिवादी [illegible] हुआ।

प्रत्यभियोगः [प्रति+अभि+युज्+घञ्] 1. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रत्यभिवादः, प्रत्यभिवादनम् [प्रति+अभि+वद्+णिच्] [illegible] [illegible], नमस्कार के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रत्यभिस्कन्दनम् [प्रति+अभि+स्कन्द्+ल्युट्] [illegible] [illegible]

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] 1 भरोसा, निश्चित विश्वास [illegible] [illegible] मालवि० १।- [illegible] 2. विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, विश्वास कु० ६।२०, शि० १।२३, भर्तृ० ३।६० 3. सबूत [illegible] [illegible] 4. निश्चयता 5 ज्ञान [illegible] 6. [illegible] [illegible] [illegible] 7 [illegible] की दृष्टि में अन्दाजा लगाये हुए [illegible] प्रकार - आकृति [illegible] मालवि० १, मेघ० [illegible] 6. कारण, आधार, [illegible] कु० ३।१८ [illegible] प्रसिद्धि, यश, कीर्ति 8 [illegible] [illegible] शब्द व धातुओं के आगे लगते हैं, कृदन्त व तद्धित के प्रत्यय शि० १०।१८ 9. शपथ 10. परामर्श 11. प्रचलन, अभ्यास, 12 छिद्र 13 बुद्धि समझ। समा० -कारक, -कारिन् (वि०) विश्वास पैदा करने वाला, भरोसा देने वाला [illegible] मुद्रा, सार्वजनिक मुद्रा या अंगूठी

प्रत्ययित (वि० प्रत्यय+इतच्) 1. विश्वस्त, भरोसे का 2. विश्वासी, विश्वास [illegible] या [illegible] हुआ।

प्रत्ययिन् (वि०) [प्रत्यय+इनि] 1 निर्भर करने वाला, विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला 2. विश्वास [illegible], वि० [illegible] या भरोसे के योग्य।

प्रत्यर्थ (वि०) [प्रति+अर्थ+अच्] उपयोगी [illegible] -र्थम् 1 उत्तर, जवाब 2 शत्रुता, विरोध।

प्रत्यर्थकः [प्रति+अर्थ+ण्वुल्] प्रतिपक्षी, विरोधी।

प्रत्यर्थिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [प्रति+अर्थ+णिनि] विपक्षी विरोधी, शत्रुतापूर्ण, --नास्ति भवत्योरीश्वर-नियोगप्रत्यर्थी विक्रम० ५, (पुं०) 1. विपक्षी, विरोधी, शत्रु 2 प्रतिद्वन्द्वी मल्ल, जोड़ का, बराबरी

मुखस्य प्रत्यर्थी 3. (कानून में) प्रतिवादी —स धर्मस्थसखः सवधर्मप्रत्यर्थिनां स्वयम्—रघु० १७।३९, मनु० ८।७९, याज्ञ० २।६। सम०—भूत (वि०) मार्ग में रुकावट, बाधक बना हुआ—कु० १।५९।

प्रत्यर्पणम् [प्रति+ऋ+णिच्+ल्युट्, पुकागम] वापिस देना, लौटा देना—सीताप्रत्यर्पणैषिणः—रघु० १५।८५।

प्रत्यर्पित (भू० क० कृ०) [प्रति+ऋ+णिच्+क्त, पुकागमः] लौटाया हुआ, वापिस दिया हुआ।

प्रत्यवमर्शः,—र्शनम् [प्रति+अव+मृश्+घञ्] 1. गंभीर चिंतन, गहन मनन 2 परामर्श, नसीहत 3. प्रत्युपसंहार।

प्रत्यवरोधनम् [प्रति+अव+रुध्+ल्युट्] रुकावट, विघ्न।

प्रत्यवसानम् [प्रति+अव+सो+ल्युट्] खाना या पीना—पा० १।४।५२।

प्रत्यवसित (वि०) [प्रति+अव+सो+क्त] खाया हुआ, पीया हुआ।

प्रत्यवस्कन्दः,—न्दनम् [प्रति+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] विशेष तर्क जिसको कि प्रतिवादी उत्तर के रूप में प्रस्तुत करता है परन्तु वह आरोप के रूप में नहीं समझा जाता, प्रतिवादी का वह उत्तर जिसमें वह वादी के अभियोग का खंडन करता है।

प्रत्यवस्थानम् [प्रति+अव+स्था+ल्युट्] 1. अपाकरण 2. शत्रुता, विरोध 3. यथास्थिति, पूर्वस्थिति।

प्रत्यवहारः [प्रति+अव+हृ+घञ्] 1. वापिस खींचना 2. विश्व का विनाश, (सृष्टि का) प्रलय—सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः—रघु० २।४४।

प्रत्यवायः [प्रति+अव+अय्+घञ्] 1. ह्रास, न्यूनता 2. अवरोध, रुकावट—उत्तर० १।९ 3 विरुद्ध या विपरीत मार्ग, वैपरीत्य—मनु० ४।२४५ 4. पाप, अपराध, पापमयता—अनुत्पत्ति तथा चान्ये प्रत्यवायस्य मन्यते—आचालि०।

प्रत्यवेक्षणम्, प्रत्यवेक्षा [प्रति+अव+ईक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] ध्यान रखना, ख्याल करना, देखरेख करना—रघु० १७।५३।

प्रत्यस्तमयः [प्रति+अस्तम्+अय्+अच्] 1. (सूर्य का) छिपना 2. अन्त, समाप्ति।

प्रत्याक्षेपक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्रति+आ+क्षिप्+ण्वुल्] ताना मारने वाला, व्यंग्यपूर्ण, उपहासजनक, चिढ़ाने वाला।

प्रत्याख्यात (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+ख्या+क्त] 1. मना किया हुआ, 2. मुकरा हुआ 3. प्रतिषिद्ध, निषिद्ध 4. एक ओर रक्खा हुआ, अस्वीकृत 5 पीछे धकेला हुआ।

प्रत्याख्यानम् [प्रति+आ+ख्या+ल्युट्] 1 पीछे हटाना, अस्वीकार करना 2. मुकरना, मना करना, इनकार 3. अवहेलना 4. भर्त्सना 5. निराकरण।

प्रत्यागतिः (स्त्री०) [प्रति+आ+गम्+क्तिन्] वापिस आना, लौटना।

प्रत्यागमः,—प्रत्यागमनम् [प्रति+आ+गम्+अप्, ल्युट् वा] लौटना, वापिस आना।

प्रत्यादानम् [प्रति+आ+दा+ल्युट्] वापिस लेना, पुनर्ग्रहण, पुनः प्राप्ति।

प्रत्यादिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+दिश्+क्त] 1 नियत 2 सूचित 3. अस्वीकृत, पीछे धकेला हुआ 4. हटाया हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 5 तिरोहित, अंधकार में डाला हुआ—रघु० १०।६८ 6. चेताया हुआ, सावधान किया हुआ।

प्रत्यादेशः [प्रति+आ+दिश्+घञ्] 1 आदेश, हुक्म 2. समुपदेश, घोषणा 3 मना करना, मुकरना, अस्वीकृति, पीछे हटाना, निराकरण—प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि—मेघ० ११४, ९५, स० ६।९ 4 तिरोहित करना, ग्रस्त करना, तिरोधाता, लज्जित करने वाला, अन्धकारावृत करने वाला—या प्रत्यादेशो रूपगर्वितायाः श्रियः—विक्रम० १, का० ५ 5 सावधानी, चेतावनी 6 विशेष रूप से दिव्य सावधानता, अतिप्राकृतिक चेतावनी।

प्रत्यानयनम् [प्रति+आ+नी+ल्युट्] वापिस लाना, लौटा लाना।

प्रत्यापत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+पद्+क्तिन्] 1 वापसी 2 अरुचि, सांसारिक विषयों के प्रति विराग, वैराग्य।

प्रत्याम्नायः [प्रति+आ+म्ना+घञ्] अनुमान प्रक्रिया का पाँचवाँ अंग अर्थात् निगमन (प्रथम प्रतिज्ञा की आवृत्ति)।

प्रत्यायः [प्रति+अय्+घञ्] चुंगी, कर।

प्रत्यायक (वि०) [प्रति+आ+इ+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रमाणित करने वाला, व्याख्या करने वाला 2 विश्वास दिलाने वाला, भरोसा उत्पन्न करने वाला।

प्रत्यायनम् [प्रति+आ+इ+णिच्+ल्युट्] 1 (दुलहन का) घर ले आना, विवाह करना 2 (सूर्य का) छिपना।

प्रत्यालीढम् [प्रति+आ+लिह्+क्त] निशाना लगाते समय का विशेष आसन (विप० आलीढ)।

प्रत्यावर्तनम् [प्रति+आ+वृत्+ल्युट्] लौटना, वापिस आना।

प्रत्याश्वस्त (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+श्वस्+क्त] सान्त्वना दिया हुआ, जिलाया हुआ, ताजा दम किया हुआ, ढाढस बंधाया हुआ।

प्रत्याश्वासः [प्रति+आ+श्वस्+घञ्] फिर से सांस लेना, (सांस का) फिर लौट आना, फिर चलने लगना।

प्रत्याश्वासनम् [प्रति+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] ढाढस बंधाना, सान्त्वना देना ।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] 1 (समय और स्थान की दृष्टि से) अत्यंत सामीप्य, संसक्ति 2. घनिष्ठ संपर्क 3 सादृश्य ।

प्रत्यासन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+सद्+क्त] समीप, निकट, संसक्त, सटा हुआ ।

प्रत्यास (सा) **र:** [प्रति+आ+सृ+अप्, घञ् वा] 1. सेना का पृष्ठभाग 2. एक व्यूह के पीछे दूसरा व्यूह—ऐसी व्यूह रचना या मोर्चा बन्दी ।

प्रत्याहरणम् [प्रति+आ+हृ+ल्युट्] 1. वापिस लेना, पुनः ग्रहण करना, वसूली 2 रोकना 3. ज्ञानेंद्रियों का नियन्त्रण करना ।

प्रत्याहार: [प्रति+आ+हृ+घञ्] 1. पीछे हटाना, वापिस चलना, प्रत्यावर्तन 2 पीछे रखना, रोकना 3 इन्द्रिय दमन करना 4 सृष्टि का विघटन या प्रलय 5 (व्या० में) एक ही ध्वनि के उच्चारण में कई अक्षरों का बोध, सूत्र के प्रथम अक्षर से लेकर अन्तिम सांकेतिक वर्ण तक जोड़ना या कई सूत्रों के स्थान पर अन्तिम सूत्र के अन्तिम वर्ण तक- यथा 'अ इ उ ण्' सूत्र का प्रत्याहार 'अण्' तथा 'अ इ उ ण्, ऋलृक्, ए ओङ्, ऐ औच्' इन चार सूत्रों का प्रत्याहार 'अच्' (स्वर) है प्रत्याहार है, व्यञ्जनों का प्रत्याहार 'हल्' तथा सभी वर्णों का द्योतक 'अल्' प्रत्याहार है ।

प्रत्युक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वच्+क्त] उत्तर दिया गया बदले में कहा गया, जवाब दिया हुआ ।

प्रत्युक्ति (स्त्री०) [प्रति+वच्+क्तिन्] उत्तर, जवाब ।

प्रत्युच्चार:, प्रत्युच्चारणम् [प्रति+उद्+चर्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] आवृत्ति दोहराना ।

प्रत्युज्जीवनम् [प्रति+उद्+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन होना, जीवन का फिर संचार होना, फिर से जी उठना (आलं० भी) ।

प्रत्युत (अव्य०) [प्रति+उत द्व० स०] 1 इसके विपरीत—कृतमपि महोपकारं पय इव पीत्वा निरातङ्कः, प्रत्युत हन्तुं यतते काकोदरसोदरः खलो जगति—भामि० १।७६ 2 बल्कि, भी 3 दूसरी ओर ।

प्रत्युत्क्रम:, -क्रमणम्, -क्रान्ति: (स्त्री०) [प्रति+उद्+क्रम्+घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1 (किसी कार्य का करने का) बीड़ा उठाना 2. युद्ध की तैयारी 3 शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए प्रयाण 4. गौण कार्य जो मुख्य कार्य में सहायक हो 5 किसी व्यवसाय का समारम्भ ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति+उद्+स्था+ल्युट्] 1 किसी के विरुद्ध उठना 2. युद्ध की तैयारी करना 3. किसी अभ्यागत का स्वागत करने के लिए (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए) अपने आसन से उठना—मनु० २।२१० ।

प्रत्युत्थित (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+स्था+क्त] (किसी मित्र या शत्रु आदि को) मिलने के लिए उठा हुआ ।

प्रत्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+पद्+क्त] 1 पुनरुत्पादित, फिर से उत्पन्न 2 उद्यत, तत्पर, फुर्तीला 3. (गणित०) गुणा किया हुआ,—न्नम् गुणा । सम०—मति (वि०) समय पर जिसकी बुद्धि ठीक कार्य करे, हाजिर जवाब 2 साहसी, दिलेर 3 तीव्र, तीक्ष्ण ।

प्रत्युदाहरणम् [प्रति+उद्+आ+हृ+ल्युट्] मुकाबले का उदाहरण, विपक्ष का उदाहरण ।

प्रत्युद्गत (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+गम्+क्त] अतिथि का स्वागत करने के लिए (सादर अभिवादन स्वरूप) अपने आसन से उठा हुआ प्रत्युद्गतो मां भरतः ससैन्यः रघु० १३।६४ १२।६२ 2 किसी के विरुद्ध आगे बढ़ा हुआ ।

प्रत्युद्गति (स्त्री०) **प्रत्युद्गम, प्रत्युद्गमनम्** [प्रति+उद्+गम्+क्तिन्, अप् ल्युट् वा] अतिथि का सत्कार करने के लिए अपने आसन से उठना या बाहर आना ।

प्रत्युद्गमनीयम् [प्रति+उद्+गम्+अनीयर्] स्वच्छ वस्त्र का जोड़ा—गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा-कु० ७।११ (प्रत्युद्गमनीय वस्त्रा' का पाठान्तर) दे० 'उद्गमनीय' ।

प्रत्युद्धरणम् [प्रति+उद्+हृ+ल्युट्] 1 पुन प्राप्त करना, दी हुई वस्तु को वापिस लेना 2 फिर उठाना ।

प्रत्युद्यम: [प्रति+उद्+यम्+अप्] 1 प्रतिसंतुलन, समतोलन 2 रोक थाम, प्रतिक्रिया—भर्तृ० ८।८८, पाठान्तर ।

प्रत्युद्यात (वि०) [प्रति+उद्+या+क्त] दे० 'प्रत्युद्गत' ।

प्रत्युन्नमनम् [प्रति+उद्+नम्+ल्युट्] पुन उठना, फिर उछलना, पलटा खाकर आना ।

प्रत्युपकार: [प्रति+उप+कृ+घञ्] किसी की कृपा या सेवा का बदला चुकाना उपकार का प्रतिदान, बदले में सेवा ।

प्रत्युपक्रिया [प्रति+उप+कृ+श, इयङ्, टाप्] सेवा का प्रतिफल ।

प्रत्युपदेश: [प्रति+उप+दिश्+घञ्] बदले में परामर्श या उपदेश कु० १।५८ ।

प्रत्युपपन्न (वि०) [प्रति+उप+पद्+क्त] दे० 'प्रत्यु. न' ।

प्रत्युपमानम् [प्रति+उप+मा+ल्युट्] 1. समरूपता का प्रतिरूप 2. नमूना, आदर्श 3. मुकाबले की तुलना —विक्रम० २।३ ।

प्रत्युपलब्ध (भू० क० कृ०) [प्रति + उप + लभ् + क्त] वापिस प्राप्त, फिर लिया हुआ।

प्रत्युपवेशः, —वेशनम् [प्रति + उप + विश + णिच् + घञ्, ल्युट् वा] आज्ञा-पालन कराने के लिए किसी को घेरना।

प्रत्युपस्थानम् [प्रति + उप + स्था + ल्युट्] आसपास, पड़ौस।

प्रत्युप्त (भू० क० कृ०) [प्रति + वप् + क्त] 1 जड़ा हुआ या जमाया हुआ, जटित, भरा हुआ 2 बोया हुआ 3 स्थिर किया हुआ, गाड़ा हुआ, कुशलता पूर्वक [illegible] हुआ या जमाया हुआ — मा० ५।१० उत्तर० [illegible]।

प्रत्युषः, —षम् (नपुं०) [प्रत्योषन्ति नाशयन्ति अन्धकारम् प्रति + उष् + क, प्रति उष् + असि] प्रभात, भोर, तड़का।

प्रत्यूषः, —षम् [प्रति + ऊष् + क] भोर, प्रभात, तड़का — प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः मेघ० ३१ 2 सूर्य 3 आठ वसुओं में से एक वसु का नाम।

प्रत्यूषस् (नपुं०) [प्रति + ऊष् + असि] भोर, प्रभात, तड़का।

प्रत्यूहः [प्रति + ऊह् + घञ्] रुकावट, बाधा, विघ्न —विस्मय सर्वथा हेय प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम् — हि० २।१५।

प्रथ् i (भ्वा० आ० —प्रथते, प्रथितम्) 1 (ऐश्वर्य का) बढ़ाना 2 (कीर्ति, अफवाह आदि का) फैलाना —तथा यथाऽस्य प्रथते मनु० ११।१५ 3 सुविख्यात होना, प्रसिद्ध होना —अनस्तवाच्यया नीर्थ पावन भुवि पप्रथे रघु० १५।१०१, असावहमिथ लाके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम — भग० १५।१८ शि० ९।११, १५।२२, कु० ।७ मेघ० २६, रघु० ५।६५ ९।७१ 4 प्रकट होना, उदय होना, प्रकाश में आना —अभो नु नामा अथवा नु पप्रथे — कि० ८।५३ ii (चुरा० उभ० प्रथयति —ते, प्रथित) 1 फैलाना, उद्घोषणा करना — सज्जना एव साधूनां प्रथयन्ति गुणोत्करम् — दृष्टान्त० १२, भट्टि० १७।१०७ 2. दिखलाना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, सूचित करना पराग वपु: प्रथयतीव जयम् — कि० ५।३५ ५।३, शि० १०।२५, रत्न० ४।१३, श० ३।१६ 3 बढ़ाना विस्तृत करना, ऊँचा करना, अधिक करना, बड़ा करना — मनु० २।४५ 4. खोलना।

प्रथनम् [प्रथ् + ल्युट्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2 बखेरना 3 फेंकना, आगे की ओर बढ़ाना 4 दिखलाना, प्रकाशित करना, प्रदर्शन करना 5 वह स्थान जहाँ कोई चीज फैलाई जाय।

प्रथम (वि०) (पुं०, नपुं०, ब० व० —प्रथमे या प्रथमा) [प्रथ् + अमच्] 1. पहला, सबसे आगे का — रघु० ३।६८, हि० २।३६, कि० २।५४ 2 प्रमुख, मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठतम बेजोड़, अनुपम — शि० १५।४२, मनु० ३।१४७ 3 आदि कालीन, अत्यन्त प्राचीन, प्राक्कालीन, प्राथमिक 4. पहले का, पूर्वकालीन, पहला, इससे पूर्व का — प्रथमसुकृतापेक्षया- मेघ० १७, रघु० १०।६७ 5 (व्या० में) प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष या पाश्चात्यव्याकरणविधान के अनुसार तृतीय पुरुष), —मः 1 प्रथम (अन्य) पुरुष 2 वर्ग का प्रथम व्यञ्जन [illegible] —मम् (अव्य०) 1 पहले, प्रथमतः सर्वप्रथम कु० [illegible] रघु० [illegible] 2 पहले ही [illegible] [illegible] [illegible] सम० —आश्रमः [illegible] [illegible] अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम [illegible] [illegible] की अपेक्षा [illegible] अर्थात् [illegible] [illegible] हुआ [illegible] [illegible] रघु० ३।३९, —आसनः [illegible] बढ़िया मार्ग प्रथम [illegible], —कल्पित (वि०) 1 पहला माना हुआ 2 पद [illegible] [illegible] की दृष्टि से सर्वोत्तम —ज (वि०) [illegible] पैदा हुआ, —[illegible] [illegible] — विद्धि [illegible] [illegible] — मेघ० २ —पुरुषः प्रथम पुरुष, अन्य पुरुष (अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार 'तृतीय पुरुष') —[illegible] [illegible] का आरंभ किशोरावस्था, [illegible] (नपुं०) [illegible] यौवन —[illegible] पहली बार [illegible] —[illegible] 1 [illegible] पुरुष वैयाकरण [illegible] में [illegible], —[illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पूर्वरूप का होना।

प्रथा [प्रथ् + अङ् + टाप्] ख्याति, प्रसिद्धि — [illegible] १५।२७।

प्रथित (भू० क० कृ०) [प्रथ् + क्त] 1 बढ़ाया हुआ, विस्तार किया हुआ 2 प्रकाशित उद्घोषित फैलाया हुआ, घोषणा की हुई —प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनाम् मालवि० १ 3 दिखाया गया, प्रदर्शन किया गया, प्रकट किया गया प्रकाशित किया गया 4 विख्यात प्रसिद्ध, विश्रुत (दे० 'प्रथ्' भी)।

प्रथिमन् (पुं०) [पृथोर्भाव —पृथु + इमनिच्] चौड़ाई, विशालता, विस्तार, महत्ता —प्रथिमानं दधानेन जघनेन घनेन सा — भट्टि० ४।१७, (पृथा) प्रारब्धकुम्भा प्रथिमानमाप — रघु० १८।४८।

प्रथिविः (स्त्री०) [= पृथिवी, पृषो०] पृथ्वी, धरती।

प्रथिष्ठ (वि०) [पृथु + इष्ठन्, प्रथादेश] सबसे बड़ा,

सबसे चौड़ा, अत्यन्त विशाल ('पृथु' की अतिशयावस्था)।

प्रथीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [पृथु+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा विशाल 'पृथु' की तुलनावस्था)।

प्रथु (वि०) [प्रथ्+उण्] व्यापक, दूर दूर तक फैला हुआ।

प्रथुक [प्रथ्+उक] चिउड़े चौले (तु० पृथुक)।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] 1 दाईं ओर रक्खा हुआ या खड़ा हुआ दाईं ओर को घूमने वाला 2 सम्मानपूर्ण, श्रद्धालु 3 शुभ, शुभलक्षणयुक्त —णः, —णम्, बाईं ओर से दाईं ओर को घूमना (प्रणाम कि दाहिना पार्श्व सदैव उस व्यक्ति या वस्तु की ओर हो जिसकी परिक्रमा की जा रही है) श्रद्धापूर्ण अभि[illegible] इस प्रकार प्रदक्षिणा द्वारा किया जाना कु० ७।७९ [illegible] —णम् (अव्य०) 1 बाईं ओर से दाईं ओर को 2 दाईं ओर को [illegible] ... प्रदक्षिणी ... बाईं ओर से दाईं ओर को जाना ... प्रदक्षिणी करना के लिए, प्रदक्षिणीकृत्य ... प्रदक्षिणीकृत्य हुतं ... रघु० २।७१। सम० —अर्चिस् (वि०) जिसकी दाईं ओर को ज्वालाएँ बढ़ती हों दाईं ओर को ज्वालाएँ रखने वाला — प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निराददे —रघु० ३।१४ (स्त्री०) दाईं ओर को मुड़ी हुई ज्वालाएँ—रघु० ४।२५ —क्रिया प्रदक्षिणा करना, सम्मान प्रदर्शित करने के लिए सम्माननीय व्यक्ति को दाईं ओर रखना रघु० १।७६, —पट्टिका सहन, आंगन।

प्रदग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दह्+क्त] जलाया गया भस्म किया गया।

प्रदत्त (भू० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] दे० प्रत्त।

प्रदरः [प्र+दॄ+अप्] 1 फाड़ना, खण्ड 2 सेनाओं का तितर बितर होना, दरार पड़ना, फटना छिद्र विवर 3 सेना का तितर बितर होना 4 तीर 5 स्त्रियों का होने वाला एक रोग।

प्रदर्पः [प्रा० स०] घमंड अहंकार।

प्रदर्शः [प्र+दृश्+घञ्] 1 दृष्टि दर्शन 2 निदेश, आज्ञा।

प्रदर्शक (वि०) [प्र+दृश्+ण्वुल्] दिखलाने वाला, प्रकट करने वाला।

प्रदर्शनम् [प्र+दृश्+ल्युट्] 1 दृष्टि, दर्शन जैसा कि 'दारप्रदर्शन' में 2 प्रकट होना प्रदर्शन करना, दिखलाना, प्रदर्शनी नुमायश 3 अध्यापन, व्याख्या करना 4 उदाहरण।

प्रदर्शित (भू०क०कृ०) [प्र+दृश्+णिच्+क्त] दिखलाया हुआ, सामने रक्खा हुआ, प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ, प्रदर्शन किया हुआ 2 जतलाया गया 3 सिखाया हुआ 4 व्याख्या किया गया, उद्घाटित किया गया।

प्रदल: [प्र+दल+अच्] बाण, तीर।

प्रदव: [प्र+दु+अप्] जलना, ज्वालाएँ उठना।

प्रदातृ (पुं०) [प्र+दा+तृच्] 1 देने वाला दानी 2 उदार व्यक्ति 3 (विवाह में) कन्या दान करने वाला 4 इन्द्र का विशेषण।

प्रदानम् [प्र+दा+ल्युट्] 1 देना प्रदान करना अर्पण करना प्रस्तुत करना यथा अग्नि काष्ठ आदि 2 विवाह में, कन्या दान करना कन्या 3 समर्पित करना अध्यापन करना शिक्षा देना, शिक्षा 4 भेंट [illegible] 5 अंकुश, सम० शूर अति दान [illegible] हुआ।

प्रदानकम् [प्रदान+कन्] [illegible] दान उपहार।

प्रदायः [प्र+दा+घञ्] युक् उपहार भेंट।

[illegible] [प्र+दा+णिच्+ण्वुल्] उपहार भेंट।

प्रदिग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दिह्+क्त] चिकनाई लगाया हुआ, पोता हुआ, मालिश किया हुआ —ग्धम् विशेष प्रकार से पका हुआ मांस।

प्रदिश् (स्त्री०) [प्र+दिश्+क्विप्] 1 संकेत करना 2 आदेश निदेश आज्ञा 3 परिधि का अन्तर्वर्ती बिन्दु जैसे कि नैर्ऋती आग्नेयी ऐशानी और वायवी।

प्रदिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दिश्+क्त] 1 दिखलाया हुआ संकेतित 2 निदिष्ट आदिष्ट 3 स्थिर किया हुआ आदेश लागू किया हुआ निर्धारित किया हुआ रघु० २।३९।

प्रदीप [प्र+दीप्+णिच्+क] 1 दीपक चिराग (आलं० से भी) अमेध दूरा सुरतप्रदीपा —कु० १।१० रघु० २।२४ १६।४ कुलप्रदीपो नृपतिर्दिलीप रघु० ६।७४, कुल का दीपक या प्रकाश [illegible] 2 जो प्रकाशकारी करता है, या बात को खोलकर कहता है व्याख्या, विवरण ग्रन्थों के नामों के अन्त में प्रयुक्त, यथा महाभाष्य प्रदीप, काव्यप्रदीप आदि।

प्रदीपन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1 जलाना 2 उद्दीपित करना, उत्तेजित करना, —नम् सुलगाने की क्रिया, जलाना, उद्दीप्त करना —नः एक प्रकार का खनिज विष।

प्रदीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+दीप्+क्त] 1 सुलगाया हुआ, जलाया हुआ प्रज्वलित [illegible] 2 देदीप्यमान, जाज्वल्यमान, प्रकाशमान [illegible] उठाया हुआ, विस्तारित —प्रदीप्तशिरसमाशीविषम्— रघु० ४ उद्दीप्त, उत्तेजित (भूख आदि)।

प्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दुष्+क्त] 1. बिगड़ा

हुआ भ्रष्ट 2 दूषित, मलिन, पापमय 3 लम्पट स्वेच्छाचारी।

प्रदूषित (भू० क० कृ०) [प्र + दूष् + णिच् + क्त] 1 भ्रष्ट बिगाड़ा विकृत पतित 2 अपवित्र मलिन भ्रष्ट।

प्रदेय (सं० कृ०) [प्र + दा + यत्] दिए जाने के योग्य (समाचार आदि) दिये जाने के लायक, सुपुर्द किए जाने के उपयुक्त रघु० ५।१८ ३१।

प्रदेश [प्र + दिश् + घञ्] 1 संकेत करना इशारा करना 2 स्थान क्षेत्र जगह देश प्रदेश मंडल [illegible] प्रदेशान्तर देवभूमय कु० ५।४५ रघु० ५।६० इसी प्रकार कंठ तालु हृदय आदि 3 हिस्सा, अंगविशेष 4 निश्चय निर्धारण 5 दीवार 6. (व्या० में) उदाहरण।

प्रदेशनम् [प्र + दिश् + ल्युट्] 1 संकेत करना 2 उपदेश अनुदेश 3 भेंट उपहार भक्तांश विशेष कर देवताओं को या श्रेष्ठतर व्यक्तियों को।

प्रदेश (शि) नी [प्रदेशन + ङीप् प्र + दिश् + णिनि + ङीप्] तर्जनी अंगुली अभिमुखक अंगुली।

प्रदेहः [प्र + दिह् + घञ्] 1 लेप करना तेल या औषध आदि का मालिश करना 2 लेप पलस्तर।

प्रदोष (वि०) [प्रकृष्टः दोषो यस्य—प्रा० ब०] बुरा भ्रष्ट —षः 1 दोष त्रुटि पाप अपराध 2 अव्यवस्थित स्थिति विद्रोह बगावत 3 सन्ध्याकाल रात्रि का आरम्भ [illegible] स्वभावकान्तिस्यन्त्य प्रदीपमनुयायिन शि० ३।३८ (यहाँ प्रदोष का अर्थ मुख्य रूप से भ्रष्ट और पतित है) —अजमुन्दरावनमस्त्वावाप्रदोष [illegible] कु० ८।४५ रघु० १।९३ ऋतु० १।११ —कालः सन्ध्या समय, रात्रि का आरम्भ —तिमिरम् [illegible] अथवा सांझ का झुटपुटा —काम प्रदर्शितानां [illegible] मृच्छ० १।३४।

प्रदोह [प्र + दुह् + घञ्] दुहना दूध निकालना।

प्रद्युम्नः [प्रकृष्टं द्युम्नं बलं यस्य प्रा० ब०] कामदेव का विशेषण, कामदेव। यह कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र था [illegible] जब [illegible] दिन का [illegible] था तो शंबर नामक दैत्य ने इसका अपहरण कर लिया क्योंकि उस [illegible] को मालूम हो गया था कि प्रद्युम्न के द्वारा उसकी मृत्यु हो जायगी। शंबर ने इस बालक को [illegible] समुद्र में फेंक दिया जहाँ उसे एक मछली निगल गई। एक मछुए ने इस मछली को पकड़ लिया और शंबर के सामने ला रक्खा। जब इस मछली को काटा गया तो इसके पेट से एक सुन्दर बालक मिला। नारद मुनि की इच्छानुसार शंबर की गृहिणी मायावती ने इस बालक का पालनपोषण किया। जब यह बालक जवान हो गया तो स्वयं मायावती का मन इसके सौन्दर्य पर आकृष्ट हो गया। परन्तु प्रद्युम्न ने मायावती का मातृत्व को दूषित करने वाली इस प्रकार की भावनाओं के कारण बुरा भला कहा क्योंकि वह तो उसे माता समझता था। परन्तु जब उसे बतलाया गया कि वह विष्णु का पुत्र है उसे शंबर ने समुद्र में फेंक दिया था तो उसने क्रोध में आगबबूला होकर शंबर को युद्ध के लिए ललकारा तथा अपनी माया के द्वारा उसका वध कर दिया। उसके पश्चात् वह और मायावती कृष्ण के घर गए जहाँ नारद मुनि ने कृष्ण और रुक्मिणी को बतलाया कि यह तो उनका अपना पुत्र है तथा मायावती उसकी पत्नी है।

प्रद्योत [प्रकृष्टो द्योत प्रा० स०] 1 आभा प्रकाश रोशनी 2 आभा प्रकाश कान्ति 3 प्रकाश की किरण 4 उज्जयिनी के एक राजा का नाम जिसकी पुत्री से वत्स के राजा उदयन ने विवाह किया था प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं [illegible] मेघ० ३४ (मल्लि० इस [illegible] समझते हैं) [illegible]

प्रद्योतनम् [प्र + द्युत् + ल्युट्] 1 जगमगाहट चमकना 2 प्रकाश [illegible] सूर्य।

प्रद्रवः [प्र + द्रु + अप्] दौड़ना पलायन।

प्रद्रावः [प्र + द्रु + घञ्] 1 भाग जाना पलायन [illegible] बच निकलना 2 [illegible]

प्रद्वार, प्रद्वारम् [प्रगतं द्वारम् प्रा० स०] दरवाजे या फाटक के सामने का स्थान।

प्रद्वेष, प्रद्वेषणम् [प्र + द्विष् + घञ् ल्युट् वा] नापसन्दगी घृणा अरुचि।

प्रधनम् [प्र + धा + क्यु] 1 युद्ध लड़ाई संग्राम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रधमनम् [प्र + ध्मा + ल्युट्] 1 [illegible] 2 [illegible]

प्रधर्षः [प्र + धृष् + घञ्] आक्रमण बलात्कार।

प्रधर्षणम् [प्र + धृष् + णिच् + ल्युट्] 1 आक्रमण 2 बलात्कार दुर्व्यवहार अपमान।

प्रधर्षित (भू० क० कृ०) [प्र + धृष् + णिच् + क्त] 1 हमला किया गया आक्रान्त 2 अपमानित चोट पहुँचाया हुआ 3 घमंडी अहंकारी।

प्रधान (वि०) [प्र + धा + ल्युट्] 1 मुख्य मूल प्रमुख बड़ा [illegible] जैसा कि [illegible] प्रधान पुरुष आदि में— मनु० ७।२०३ 2 मुख्य रूप से सम्मानित, प्रसिद्ध प्रबल —नम् 1 मुख्य पदार्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वस्तु अधिष्ठाता, मुख्य न

परिचर्या मलिनाम्मना प्रधानम् शि० ७।६१, मना० १८, प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, शमप्रधानेषु तपोधनेषु श० २।७, रघु० ६।७९, 2 प्रथम विकासकर्ता, जन्मदाता, भौतिक सृष्टि का स्रोत, प्रथम जीवाणु जिसमें से यह समस्त भौतिक संसार विकसित हुआ है (सांख्य० के अनुसार)—न पुनरपि प्रधानवादी अशब्दत्व प्रधानस्याप्रसिद्धिमाख्यात —शारी०,दे० प्रकृति भी 3 परमात्मा 4. बुद्धि 5 किसी मिश्रण का मुख्य अंग, —नः,—नम् 1 राजा का मुख्य सेवक या सहचर (उसका मन्त्री या अन्य विश्वस्त पुरुष) 2 महानुभाव, राजसभासद 3 महावत —अङ्गम् 1 किसी वस्तु की मुख्य शाखा 2 शरीर का मुख्य अंग 3 राज्य का प्रधान या प्रमुख व्यक्ति । —अमात्य: प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्री,—आत्मन् (पुं०) विष्णु का विशेषण —धातुः शरीर का मुख्य तत्त्व अर्थात् वीर्य, शुक्र, —पुरुषः 1 प्रमुख व्यक्ति (राज्य का) 2 शिव का विशेषण —मन्त्रिन् (पुं०) राज्य का सबसे बड़ा मन्त्री, —वाक्यम् (नपुं०) मुख्य वाक्य —वृष्टि (स्त्री०) वर्षा की भारी बौछार ।

प्रधावन [प्र+धाव्+ल्युट्] वायु, हवा —नम् रगड़ देना या धो देना ।

प्रधि: [प्र+धा+कि] 1. पहिये की नाभि या परिणाह शि० १२।७९, १७।२३ 2 कुआँ ।

प्रधी (वि०) [प्रकृष्टा धी यस्य प्रा० ब०] कुशाग्रबुद्धि, (स्त्री०) बड़ी बुद्धि प्रज्ञा ।

प्रधूपित (भू० क० कृ०) [प्र+धूप्+क्त] 1 सुवासित, सुगन्धयुक्त [illegible] हुआ तपाया हुआ 3 प्रज्वलित 4 [illegible] —ता 1 [illegible] स्त्री 2 वह दिशा जिस ओर सूर्य [illegible] हो

प्रधृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+क्त] 1. तिरस्कार पूर्वक बर्ताव किया गया 2 घमंडी, अहंकारी, दृप्त या अभिमानी ।

प्रध्यानम् [illegible] गहन विचार या विमर्श 2 विचार या विमर्श ।

प्रध्वंस [प्र+ध्वंस्+घञ्] नाश, विनाश, संहार । सम० —अभाव विनाशजनित अभाव चार प्रकार के अभावों में से एक, जिसमें किसी के अभाव की उत्पत्ति होती है, जैसे कि किसी वस्तु की उत्पत्ति के पश्चात् ।

प्रध्वस्त (भू० क० कृ०) [प्र+ध्वंस्+क्त] संहार किया हुआ पूर्ण रूप से नष्ट किया हुआ ।

प्रनप्तृ (पुं०) [प्रगतो नप्तारं अनन्तरम् प्रा० स०] पौत्र का पुत्र प्रपौत्र ।

प्रनष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+नश्+क्त] 1 अन्तर्धान, लुप्त, अदृश्य 2. खोया हुआ 3 मिटा हुआ, मृत 4. बरबाद, समुच्छिन्न, उन्मूलित ।

प्रनायक (वि०) [प्रगतो नायको यस्मात् प्रा० ब० ब०] 1 जिसका नेता विद्यमान न हो 2 नायक या पथ-प्रदर्शक से रहित ।

प्रनालः,—ली (स्त्री०) [प्रा० स०] दे० प्रणाल और प्रणाली ।

प्रनिघातनम् [प्र+नि+हन्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या ।

प्रनुत्त (वि०) [प्र+नुद्+क्त] नाचने वाला, —त्तम् नाच ।

प्रपक्षः [प्रा० स०] पक्ष का अंतिम सिरा ।

प्रपञ्चः [प्रा० स०] 1 प्रदर्शन प्रकटीकरण, रागप्राप्त-प्रपञ्च का० १४१ 2 विकास, फैलाव, विस्तार शि० २०।४४ 3 विस्तारण, विशद व्याख्या, स्पष्टीकरण विवरण 4 सुविस्तारता प्रसार बाहुल्य —अल प्रपञ्चेन 5 बहुविधता, विविधता 6 ढेर, प्राचुर्य, मात्रा 7 दृश्यमान दृश्यजगत् 8 माया आत्मभ्रांति 9 दृश्यमान जगत् जो केवल माया और नानात्व का प्रदर्शन मात्र है । सम० —बुद्धि (वि०) धूर्त, कपटी —वचनम् विस्तृत प्रवचन, प्रसारयुक्त बातचीत ।

प्रपञ्चयति (नामधातु—पर०) 1 दिखलाना प्रदर्शन करना प्रपञ्चय पञ्चमम् गीत० १०,८ विस्तार करना प्रसार करना ।

प्रपञ्चित (भू० क० कृ०) [प्र+पञ्च्+क्त] 1 प्रदर्शित 2 विस्तारित, प्रसारित 3 फैलाया गया, पूरी व्याख्या की गई विशदीकृत 4 भूल जाने वाला, भटका हुआ 5 धोखे में आया हुआ, छला हुआ ।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] 1 उड़ जाना 2 गिरना अवपात 3 अवतरण 4 मृत्यु, विनाश 5 खड़ी चट्टान दुलवाँ चट्टान ।

प्रपदम् [प्रा० स०] पैर का अग्रभाग ।

प्रपदीन (वि०) [प्रपद+ख] पैर के अग्रभाग से संबद्ध, या अग्रभाग तक विस्तृत ।

प्रपन्न (भू० क० कृ०) [प्र+पद्+क्त] 1 पधारने वाला पहुँचने या जाने वाला 2 आश्रय ग्रहण करने वाला आजाने वाला—कु० ३।५, ५।५९ 3 शरण लेने वाला संरक्षण ढूँढने वाला प्रार्थी, दीन, याचक —शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्—भग० २।७, 4 अनुसरण करने वाला 5 सुसज्जित, युक्त, आधि-पत्य प्राप्त —श० १।[illegible] 6 प्रतिज्ञात 7 हासिल, प्राप्त 8 बेचारा कष्टग्रस्त ।

प्रपन्नाडः [प्रपन्न+अल्+अण्, डलयोरभेदः] दे० प्रपुन्नाड ।

प्रपर्ण (वि०) [प्रपतितानि पर्णानि यस्य प्रा० ब०] पत्तों से रहित (वृक्ष),—र्णम् गिरा हुआ पत्ता ।

प्रपलायनम् [प्र+परा+अय्+ल्युट्, रस्य लः] भाग खड़ा होना, प्रत्यावर्तन ।

प्रपा [प्र+पा+अङ+टाप्] 1 प्याऊ —प्रपाश्च्यातस्नातमम्बु ... कृपा प्रपा इव—विक्रमांक० १८।७८ 2 कुआँ, कुण्ड मनु० ८।३१९ 3 पशुओं को पानी पिलाने का स्थान, खेल 4 पानी का भंडार। सम० —पालिका बटोहियों को जल पिलाने वाली स्त्री —विक्रमांक० १।८९, १३।१०, —वनम् प्रीतोद्यान।

प्रपाठकः [प्रकृष्टः पाठोऽत्र प्रा० ब०] 1 पाठ, व्याख्यान 2 किसी का अध्याय या भाग।

प्रपाणिः [प्रकृष्टः पाणिः प्रा० स०] 1 हाथ का अगला भाग 2 हाथ की हथेली, हथेली।

प्रपातः [प्र+पत्+घञ्] 1 आगे जाना, विदाई 2 नीचे गिरना, अधःपात —प्रपातरुद्ध... श० १० कु० ६।५१ 3 आकस्मिक आक्रमण 4 चट्टान, झरना, ऊंचा खड़ा स्थान (जिसके ऊपर पानी गिरता रहता है) रघु० २।२६ 5 तट, किनारा 6 खड़ी चट्टान 7 निर्झर, झरना —यथा केशप्रपात 8 उल्लंघन, प्रस्थान —जैसा कि वीर्यप्रपात में 9 किसी व्यक्ति के अपने आपको नीचे गिरा देना 10 प्रहार और एक विशेष रीति।

प्रपातनम् [प्र+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना (भूमि पर), गिराना।

प्रपानकः [प्रा० स०] शर्बत।

प्रपानम् [प्र+पा+ल्युट्] पीना, पेय पदार्थ।

प्रपानकम् [प्रपान+कन्] एक प्रकार का पेय।

प्रपितामहः [प्रकर्षेण पितामहः प्रा० स०] 1 पड़ दादा, परदादा 2. कृष्ण का विशेषण—भग० ११।३९ 3 ब्रह्मा की उपाधि, ही परदादी।

प्रपिष्टकः [प्रा० स०] लड्डू।

प्रपीडनम् [प्र+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1 भींचना, निचोड़ना 2 रक्तस्रावावरोधक औषधि।

प्रपीन (न) (वि०) [प्र+प्या (प्यायी)+क्त] मोटा हुआ, फूला हुआ।

प्रपुन्नाड (ट) ड, [प्रकर्षेण पुमांसं नाटयति—प्र+पुम्+नट्+णिच्+अण्] चकवड़ नाम का वृक्ष, चकवंड।

प्रपूरणम् [प्र+पूर्+ल्युट्] 1 पूरा करना, भरना, पूर्ति करना 2 अभिषिक्त करना, सुई लगाना 3 सम्पुष्ट करना, तृप्त करना 4 जोड़ करना।

प्रपूरित (भू० क० कृ०) [प्र+पूर्+क्त] भरा हुआ।

प्रपूर्ण (वि०) [प्रा० स०] निश्चित रीति वाला।

प्रपौत्रः [प्रा० स०] पड़पोता—याज्ञ० १।७८, —त्री पड़पोती।

प्रफुल्त (भू०क०कृ०)[प्र+फुल्+क्त] खिला हुआ, फूला, विकसित—ओष्ठमुद्रे अनुपहतः प्रफुल्तम् – रघु० ३।२२ ('प्रफुल्ल' का पाठान्तर)।

प्रफुल्लिः (स्त्री०) [प्र+फुल्+क्तिन्] खिलना, विस्तरण, पुष्पित होना।

प्रफुल्ल (भू० क० कृ०) [प्र+फल्+क्त, उत्वम् लत्वं च] 1 पूरा खिला हुआ, मुकुलित, मुकुलित —न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली—रघु० ६।६९, ७।२२ कु० ७।४५, ३।११ 2 खिले हुए फूल की भांति फैली हुई या विस्तारयुक्त (आंखें आदि) 3 मुस्कराता हुआ 4 प्रमुदित, उल्लसित, प्रसन्न। सम० —नयन, —नेत्र, —लोचन (वि०) हर्ष के कारण खिली हुई आंखों वाला, —वदन (वि०) हर्षोत्फुल्ल या प्रसन्नमुख, प्रसन्नमुख चेहरे वाला।

प्रबद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बन्ध्+क्त] 1 बांधा हुआ, बंधा हुआ, कसा हुआ 2 रोका हुआ, उत्तरुद्ध, अटकाया हुआ।

प्रबर्ह (पुं०) [प्र+बृह्+घुञ्] प्रत्येक कुलकार।

प्रबन्धः [प्र+बन्ध्+घञ्] 1 बंधन, ग्रंथन या गांठ 2 अविच्छिन्नता, नैरन्तर्य, अविच्छिन्न धारा —[illegible] 3 अविच्छिन्न या सुगठित वर्णन या प्रबन्ध —[illegible] 4 साहित्यिक कृति या रचना, [illegible] —मालवि० [illegible] 5 व्यवस्था, आयोजना, योजना जैसा कि 'कपटप्रबंध' में। सम० —कल्पना कुछ कुछ सच्ची कहानी किसी तथ्य के बहाने पर आधारित रचना [illegible] प्रबन्धकल्पनां स्तोककल्पनां प्राज्ञाः कथा विदुः।

प्रबन्धनम् [प्र+बन्ध्+ल्युट्] बंधन जोड़ या गांठ।

प्रबर्ह (पुं०) दल का सरदार।

प्रब (व) र्ह (वि०) [प्र+ब (व) र्ह्+अच्] सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

प्रबल (वि०) [प्रकृष्टं बलं यस्य —प्रा० ब०] 1 बहुत मज़बूत, शक्तिशाली ताकतवर शूरवीर (पुरुष), रघु० ३।६० ऋतु० ४।२३ 2 प्रचंड, मज़बूत, तीव्र, अत्यधिक, बहुत बड़ा प्रबलपुरोवातया धूलया —मालवि० ४।२, प्रबला वेदनाम् रघु० ८।५० 3 महत्त्वपूर्ण 4 भरपूर 5 भयानक, विनाशकारी।

प्रब (व) ल्हिका [प्र+ब (व) ल्ह्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] दे० 'प्रहेलिका'

प्रबाधनम् [प्र+बाध्+ल्युट्] 1. अत्याचार, अनीयन 2. अस्वीकृति, मुकरना 3. दूर रखना।

प्रबाल (ल) कः, —लम् [प्र+ब (व) ल्+णिच्+अच्] 1. कोंपल, अंकुर, किसलय—अपि ... प्रबालभवनाय

कुबलिव शीलवान् -कु० ५।३४, १।४४, ६।८, रघु० ६।१९, १३।४९ 2 मूँगा 3 वीणा की गरदन, —लः 1 किसलय 2. जन्तु। सम०—अम्लकः 1 लाल अम्लतक वृक्ष 2 मूँगे का वृक्ष, —पद्मम् लाल कमल —फलम् लाल चन्दन की लकड़ी, —भस्मन् (नपुं०) मूँगे की भस्म।

प्रबाहु [प्रकृष्टो बाहु - प्रा० स०] भुजा का अग्रभाग, पहुँचा।

प्रबाहुकम् (अव्य०) [प्रबाहु+कन्] 1 ऊँचाई पर 2 एक ही समय।

प्रबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बुध्+क्त] 1 जागा हुआ, जागा हुआ 2 बुद्धिमान् विद्वान्, चतुर 3 ज्ञाता आत्मज्ञ 4 पूरा खिला हुआ, फैला हुआ 5 कार्यारम्भ करने वाला, या कार्यारम्भ हुआ वाला (जादू मन्त्र आदि)।

प्रबोध [प्र+बुध्+घञ्] 1 जागना (आलं० भी) जागरूक होने में प्रवृत्त, अन्तकाः अप्रबोधाय सुष्वाप रघु० १२।५०, मोहात्प्रबुद्धस्तर प्रबोध १४।५५ 2 (फूलों का) खिलना, फैलना 3 जागरूक नींद का अभाव 4 सतर्कता, सावधानी 5 ज्ञान, समझ, बुद्धिमत्ता, भ्रम का दूर करना, यथार्थ ज्ञान, यथा 'प्रबोधचन्द्रोदय' में 6 सान्त्वना 7 किसी सुगंध द्रव्य में सुगंध का पुनर्जीवन।

प्रबोधन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+बुध्+णिच्+ल्युट्] जागरूक जगाना, —नम् 1 जागते रहना 2 जाग, जगना 3 सचेत होना 4. ज्ञान, बुद्धिमत्ता 5 शिक्षण, उपदेश देना 6. किसी गंधद्रव्य की सुगंध का पुनर्जीवन।

प्रबोधिनी [प्रबोधन+ङीप्, प्र+बुध्+णिच्+णिनि+ङीप्] देव उठनी एकादशी, कार्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान् चार मास की नींद लेने के पश्चात् जागते हैं।

प्रबोधित (भू० क० कृ०) [प्र+बुध्+णिच्+क्त] 1 जगा हुआ, जगाया हुआ 2. शिक्षण प्राप्त, सूचना दिया हुआ।

प्रभञ्जनम् [प्र+भञ्ज्+ल्युट्] टुकड़े टुकड़े करना, —नः हवा, विशेषकर आँधी, झंझावात मे० ११६१ पंच० १।१२२।

प्रभद्रः [प्रगतं भद्रं यस्मात्—प्रा० ब०] नीम का पेड़।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] स्रोत, मूल—अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य -कु० १।३, अकिंचनः सन् प्रभवः स संपदाम् —५।७७, रघु० ५।७५ 2. जन्म, पैदायश 3. नदी का उद्गमस्थान—गंगा एव प्रभवस्थाने ग्राम्य पौरे कुमारि.—मेघ० ५२ 4. उत्पत्ति का कारण, (माता, पिता आदि) जनकत्व—सवत्सः प्रभवत्वच —श० १ 5 प्रणेता, रचयिता—कु० २।५ 6. जन्म स्थान 7 शक्ति, सामर्थ्य, शौर्य, महत्व गरिमा (प्रभाव) 8 विष्णु की उपाधि 9 (समास के अन्त में) उत्पन्न होने वाला, क्षुत्प्रभव सूर्यप्रभवो वंश —रघु० १।२, कु० ३।१५।

प्रभवितृ (पुं०) [प्र+भू+तृच्] शासक, महाप्रभु।

प्रभविष्णु (वि०) [प्र+भू+इष्णुच्] शक्तिशाली, शासन-कर, शक्तिशाली, —ष्णुः 1. प्रभु, स्वामी —प्रभविष्णवे रोचते —श० ५ 2 विष्णु की उपाधि।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] 1 प्रकाश दीप्ति, कान्ति, जगमगाहट, चमक—प्रभामिश्र ... —मेघ० ७८, प्रभा पतङ्गस्य —कु०३।१५ ११,६।२८ ऋतु० १।१९, मेघ० ४७ 2 प्रकाश की किरण 3 सूर्य की पत्नी का नाम 4 दुर्गा की उपाधि 5 कुबेर की नगरी का नाम 6 एक अप्सरा का नाम। सम०—करः 1 सूर्य रघु० १०।७४ 2 चन्द्रमा 3 अग्नि 4 समुद्र 5 शिव का विशेषण 6 एक विद्वान् मनस्वी का नाम मीमांसा दर्शन की दो एक विचारधारा के प्रवर्तक, जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है, —कीटः जुगनू, —तरल (वि०) जगमगाता हुआ न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् -श० १।२५, —मण्डलम् प्रकाश का एक वृत्त, परिवेश— कु० १।२४, ५।४ रघु० ३।६०, १४।१४ —लेपिन् (वि०) कान्तियुक्त, कान्ति का प्रसारक विक्रम० ८।३४।

प्रभाग [प्र+भज्+घञ्] 1 भाग, टुकड़ी 2. (गणित०) भिन्न का भिन्न।

प्रभात (भू० क० कृ०) [प्र+भा+क्त] जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो प्रभाता रजनी—कु० ४, —तम् दिन निकलना, पौ फटना।

प्रभानम् [प्र+भा+ल्युट्] प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, ज्योति, चमक।

प्रभाव [प्र+भू+घञ्] 1 कान्ति, दीप्ति, उजाला 2. गरिमा, यश महिमा तेज, भव्य कान्ति—प्रभाव-शाविव अवधानं रघु० १ 3. सामर्थ्य, शौर्य, शक्ति, समर्थता - पंच० १।७ 4 राजोचित शक्ति (तीन शक्तियों में से एक) 5 अतिमानव शक्ति, अलौकिक शक्ति रघु० २।४१ ६२, ३।४०, विक्रम० १, २, ५, महानुभावता। सम०—ज (वि०) राजशक्ति से उत्पन्न प्रभाव से युक्त।

प्रभाषणम् [प्र+भाष्+ल्युट्] व्याख्या, अर्थकरण।

प्रभासः [प्र+भास्+घञ्] दीप्ति, सौन्दर्य, कान्ति, —सः,—सम् द्वारका के निकट स्थित एक सुविख्यात तीर्थस्थान।

प्रभासनम् [प्र+भास्+ल्युट्] प्रकाशित होना, चमकना होना, चमकना।

प्रभास्वर (वि०) [प्र+भास्+वरच्] उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार।

प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+भिद्+क्त] 1 अलग किया हुआ, खंडित, फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ 2 टुकड़े २ किया हुआ 3 काटा हुआ, वियुक्त किया हुआ 4 मुकुलित, विकसित, खिला हुआ 5 बदला हुआ, परिवर्तित 6 विरूपित, विकृत 7 शिथिलित ढीला 8 नशे में चूर, मदमस्त – कु० ५।८० (दे० प्रपूर्वक भिद्),—न्नः मतवाला हाथी। सम० —अञ्जनम् काजल।

प्रभु (वि०) (स्त्री०—भु,—भ्वी) [प्र+भू+डु] 1 बलवान्, मजबूत, शक्तिशाली – ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुं किमुतान्यहिंस्राः रघु० २।६२ समाधिभेदप्रभवो भवन्ति – कु० ३।४० 3 योग्य या —प्रभुर्मल्लो मल्लाय महा०, —भुः 1 अधिपति स्वामी प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य यः शि० १।४९ 2 राज्यपाल शासक सर्वोच्च अधिकारी 3 स्वामी मालिक 4 पारा 5 विष्णु 6 शिव 7 ब्रह्मा 8 इन्द्र। सम० —भक्त (वि०) अपने स्वामी में अनुरक्त राजभक्त (क्तः) बढ़िया घोड़ा —भक्तिः (स्त्री०) अपने स्वामी की भक्ति, राजभक्ति स्वामिभक्त।

प्रभुता,—त्वम् [प्रभु+तल्+टाप्, प्रभु+त्व] 1 आधिपत्य, सर्वोपरिता स्वामित्व शासन अधिकार श० ५।२५, विक्रम० ४।१२ 2 मिल्कियत।

प्रभूत (भू० क० कृ०) [प्र+भू+क्त] 1 उद्भूत, उत्पन्न 2 प्रचुर विपुल 3 असंख्य अनेक 4 परिपक्व, पूर्ण 5 ऊँचा, उत्तम 6 नपा 7 प्रशासन में। सम० —यवसेन्धन (वि०) जहाँ हरा घास और ईंधन की बहुतायत हो, —वयस् (वि०) वयोवृद्ध, बूढ़ा उमर रसीदा।

प्रभूति (स्त्री०) [प्र+भू+क्तिन्] 1 उद्गम, मूल 2 शक्ति, सामर्थ्य 3 पर्याप्तता।

प्रभृति [प्र+भृ+क्तिन्] 1 आरंभ, शुरू (इस अर्थ में यह बहुधा बहुव्रीहि समास के अन्त में प्रयुक्त इन्द्रप्रभृतयो देवाः आदि) – (अव्य०) 2. से, से लेकर, शुरू करके (अपा० के साथ) शैशवात्प्रभृति पोषितां प्रियाम् उत्तर० १।४५ रघु० ३।३८ —अद्यप्रभृति आज (अब) से लेकर, अतः प्रभृति, ततः प्रभृति आदि।

प्रभेदः [प्र+भिद्+घञ्] 1 फाड़ना, चीरना, खोलना 2 अलगाव, वियोग 3 हाथी के गण्डस्थल से मद का बहना रघु० ३।३७ 4 अन्तर, भेद 5 प्रकार या किस्म।

प्रभ्रंशः [प्र+भ्रंश्+घञ्] गिरना गिरकर अलग हो जाना।

प्रभ्रंशथुः [प्र+भ्रंश्+अथुच्] नाक का एक रोग, पीनस।

प्रभ्रंशित (भू० क० कृ०) [प्र+भ्रंश्+णिच्+क्त] 1 फेंका गया, डाल दिया गया 2 वञ्चित।

प्रभ्रंशिन् (वि०) [प्र+भ्रंश्+णिनि] टूटकर गिरना, झड़ना।

प्रभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+भ्रंश्+क्त] गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ —ष्टम् सिर पर विराजमान मुकुट की शिखापर धारण की गई फूल-माला, शिखावलम्बिनी फूलमाला।

प्रभ्रष्टकम् [प्रभ्रष्ट+कन्] दे० 'प्रभ्रष्ट'।

प्रमग्न (भू० क० कृ०) [प्र+मस्ज्+क्त] डूबा हुआ, गोता दिया हुआ डुबोया हुआ।

प्रमत (भू० क० कृ०) [प्र+मन्+क्त] विचारा हुआ।

प्रमत्त (भू० क० कृ०) [प्र+मद्+क्त] 1 नशे में चूर, मदोन्मत्त श० ४।१ 2 उन्मत्त पागल 3 लापरवाह, उपेक्षक असावधान असावधान अनपेक्ष (प्रायः अधि० के साथ) 4 उन्मार्गगामी, भूल करने वाला (अपा० के साथ) स्वाधिकारात्प्रमत्तः – मेघ० १ 5 चौपट करने वाला 6 स्वेच्छाचारी लम्पट। सम० —गीत (वि०) असावधानतापूर्वक गाया हुआ —चित्त (वि०) लापरवाह असावधान, बेखबर।

प्रमथः [प्र+मथ्+अच्] 1 घोड़ा 2 शिव के गण (जो भूत प्रेत माने जाते हैं) जो उनकी सेवा में रत हैं कु० ७।९५। सम० —अधिपः, —नाथ, —पति शिव की उपाधि।

प्रमथनम् [प्र+मथ्+ल्युट्] 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, यातना देना 2 वध करना 3 मन्थन करना बिलोना।

प्रमथित (भू० क० कृ०) [प्र+मथ्+क्त] 1 प्रपीडित कष्टग्रस्त 2 कुचला हुआ 3 कत्ल किया हुआ, वध किया हुआ भा० ३।१८ 4 अच्छी भांति बिलोया हुआ, —तम् जल रहित छाछ, मट्ठा।

प्रमद (वि०) [प्रकृष्टो मदो यस्य–प्रा० ब०] 1 मतवाला नशे में चूर (अपा० से भी) 2. आवेशपूर्ण 3 लापरवाह 4 स्वेच्छाचारी उच्छृंखल —दः 1 हर्ष प्रसन्नता, खुशी शि० ३।५६ १४।२ 5 धतूरे का पौधा। सम० —काननम्, —वनम् राजकीय अन्तःपुर से जुड़ा हुआ, प्रमोद वन वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रानियों के साथ विहार करता है।

प्रमदक (वि०) [प्रमद+कन्] लम्पट, कामुक।

प्रमदनम् [प्र+मद्+ल्युट्] कामेच्छा।

प्रमदा [प्रमद्+अच्+टाप्] 1. सुन्दरी नवयुवती रघु० ९।३१, श० ५।१७ 2. पत्नी या स्त्री कु० ४।१२, रघु० ८।७२ 3 कन्याराशि। सम० —काननम्, —वनम् राजकीय अन्तःपुर के साथ जुड़ा हुआ प्रमोद

उद्यान (जहाँ रानियाँ विहार करती हैं), °**जन:** 1 नवयुवती तरुणी 2. स्त्री।

प्रमद्वर (वि०) [प्र+मद+ष्वरच्] लापरवाह, अनवधान, असावधान।

प्रमनस् (वि०) [प्रकृष्टं मनो यस्य—प्रा० ब०] 1 खुश, हर्षयुक्त प्रसन्न आनन्दित।

प्रमन्यु (वि०) [प्रकृष्टो मन्युः यस्य प्रा० ब०] 1 क्रोधाविष्ट चिड़चिड़ा चिढ़ा हुआ (अधि० के साथ) रघु० ७।३८ 2 कष्टग्रस्त आकांक्षित शोकसन्तप्त।

प्रमय: [प्र+मी+अच्] 1 मृत्यु 2 बरबादी नाश निधन 3 वध हत्या।

प्रमर्दनम् [प्र+मृद्+ल्युट्] मसल कर या नष्ट करना कुचल देना °न विष्णु का विशेषण।

प्रमा [प्र+मा+अङ्+टाप्] 1 प्रतिबोध प्रत्यक्षज्ञान 2 (तर्क० में) सही भाव विशुद्ध ज्ञान यथार्थ ज्ञान, अर्थात् ठीक ठीक प्रत्यय (यथा रजतं इदं रजतमिति ज्ञानम् तर्क०)।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] 1 (लंबाई चौड़ाई) माप रघु० १८।३८ 2 आकार विस्तार परिमाण (लंबाई चौड़ाई) 3 मान मानक—पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणं परमं स्थितः मुद्रा० ४।२१ 4 सीमा परिमाण 5 साक्ष्य शहादत प्रमाण 6 अधिकारी सम्मादन निर्णेता निश्चायक वह जिसका शब्द प्रमाण माना जाय भूत्वा देव प्रमाणम् पञ्च० १ यह सुनकर श्रीमान् ही निर्णय करेंगे (कि क्या करना चाहिए)—आर्यमिश्राः प्रमाणम्—मालवि० १ मुद्रा० १।१ श० १।२० स्वाकरणे पाणिनिः प्रमाणम् 7 सत्य ज्ञान यथार्थ प्रत्यय या भाव 8 प्रमाण की रीति यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का उपाय। नैयायिक केवल चार प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द मानते हैं वेदान्ती और मीमांसक अनुपलब्धि और अर्थापत्ति दो और मानते हैं। सांख्य केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को ही मानते हैं—दे० 'अनुभव' भी 9 मुख्य, मूल 10 एकता 11 वेद, शास्त्र धर्मग्रन्थ 12 कारण हेतु (**प्रमाणी कृ**) 1 अधिकारी मानना या समझना 2 आज्ञा मानना अनुगत होना 3 साबित करना सिद्ध करना 4 यथोचित भाग बाँटना। सम० °**अधिक** (वि०) सामान्य से अधिक अपरिमित अत्यधिक श० १।३० °**अन्तरम्** प्रमाण की अन्य रीति °**अभाव** प्रमाणशून्यता °**ज्ञ**(-वि०) (तार्किक की भाँति) प्रमाण पद्धति का जानकार (°**ज्ञ:**) शिव का विशेषण °**दृष्ट** (वि०) अधिकारी द्वारा स्वीकृत °**पत्रम्** लिखित अधिकारपत्र, °**पुरुष** विवाचक, निर्णायक, म° °**प**,—°**वचनम्**, °**वाक्यम्** अधिकृत वक्तव्य, °**शास्त्रम्** 1 वेद, धर्मशास्त्र 2 तर्कविज्ञान °**सूत्रम्** मापने की डोरी।

प्रमाणयति (ना० धा० पर०) अधिकृत समझना प्रमाणस्वरूप मानना कि० ११।१०।

प्रमाणिक (वि०) [प्रमाण+ठन्] 1 'माप' का आकार ग्रहण करने वाला 2 प्रमाण या अधिकार का रूप धारण करने वाला।

प्रमातामह: [प्रकृष्टो मातामहः—प्रा० स०] 1 परनाना, ही परनाना।

प्रमाथ: [प्र+मथ्+घञ्] 1 प्रपीडन, सताप देना सताना 2 क्षुब्ध करना, बिलोना 3 वध, हत्या विनाश मंथिकानां प्रमाथेन मत्स्यमार्जायितं त्वया ग्लरा० ५।३१ ४ 4 हिंसा अत्याचार 5 बलात्कार बलपूर्वक अपहरण।

प्रमाथिन (वि०) [प्र मथ+णिनि] 1 यन्त्रणा देने वाला तंग करने वाला सपीडित करने वाला कष्ट देने वाला दुःख पहुँचाने वाला वव इदं हृदय प्रमाथिनी क्व च ते विश्वसनीयमायुधम्—मालवि० ३।२ मा० ७।१ कि० ३।१४ 2 वध करने वाला, विनाशकारी 3 क्षुब्ध करने वाला गतिमान् करने वाला भग० २।६० ६।३४ 4 फाड़ने वाला गिराने वाला पछाड़ने वाला रघु० ११।५८ 5 काट कर गिराने वाला कि० १७।३१।

प्रमाद: [प्र+मद्+घञ्] 1 अवहेलना असावधानी, अनवधान, लापरवाही भूल-चूक °ज्ञातु प्रमादस्खलितं न शक्यम् श० ६।२६ चौर० १ 2 मादकता, पागलपन उन्मत्तता 4 गलती भारी भूल गलत निर्णय ५ दुर्घटना उत्पन्न सकट भय अहो प्रमाद मा० ३ उत्तर० ३।

प्रमापणम् [प्र+मी णिच् ल्युट्, पुक्] वध हत्या।

प्रमार्जनम् [प्र मृज्+णिच्+ल्युट्] मिटा देना रगड़ दना धो देना।

प्रमित (भू० क० कृ०) [प्र मा (मि) क्त] 1 नपा तुला सीमित 2 कुछ थोड़ा °प्रमितविषया शक्तिविद्रुः—महावी० १।५१ शि० १६।८० 3 ज्ञात समझा हुआ 4 प्रमाणित प्रदर्शित।

प्रमिति: (स्त्री०) [प्र मा (मि)+क्तिन्] 1 माप माप 2 सत्य या निश्चित ज्ञान यथार्थ भाव या प्रत्यय 3 किसी प्रमाण या ज्ञान के स्रोत से प्राप्त जानकारी।

प्रमीढ (वि०) [प्र+मिह्+क्त] 1 घना सघन सटा हुआ 2 मूत्र बनकर निकला हुआ।

प्रमीत (भू० क० कृ०) [प्र मी+क्त] मरा हुआ, मृतक, °त: यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ या वध किया हुआ पशु।

प्रमीति: (स्त्री०) [प्र+मी+क्तिन्] मृत्यु विनाश निधन।

प्रमीला [प्र+मील्+अ+टाप्] 1. तन्द्रा, आलस्य, उत्साहहीनता 2. स्त्रियों के राज्य की प्रमुखताप्राप्त स्त्री का नाम, (जब अर्जुन का घोड़ा उस स्त्री के राज्य में पहुँचा तो उसने अर्जुन के साथ युद्ध किया, परन्तु अर्जुन के विजय हो जाने पर प्रमीला, अर्जुन की पत्नी बन गई)।

प्रमीलित (भू० क० कृ०) [प्र+मील्+क्त] मुँदी हुई आँखों वाला।

प्रमुक्त (भू० क० कृ०) [प्र+मुच्+क्त] 1. शिथिलित 2. स्वाधीन किया हुआ, स्वतंत्र छोड़ा हुआ 3 तिलिजित, विरक्त 4 डाला हुआ, फेंका हुआ। सम० -कण्ठम् (अव्य०) फूटफूट कर।

प्रमुख (वि०) [प्रा० ब०] 1. मुँह किये हुए, मुँह मोड़े हुए 2. मुख्य, प्रधान अग्रणी, प्रथम 3. (समास के अन्त में) (क) प्रधानता में, प्रधान या मुख्य बनाकर—वाल्मीकिप्रमुखाः कु० २।३८ (ख) से युक्त, सहित प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार—मेघ० ४, -खः 1 आदरणीय पुरुष 2 ढेर, समुच्चय, -खम् 1 मुंह 2. अध्याय या परिच्छेद का आरम्भ (प्रमुखतः, प्रमुखे क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'के सामने' 'सामने' 'के विरुद्ध' अर्थ को प्रकट करते हैं भग० ११।२५, श० ७।२२)।

प्रमुग्ध (वि०) [प्र+मुह्+क्त] 1. मूर्छित, अचेत, 2. अत्यंत प्रिय।

प्रमुद् (स्त्री०) [प्र+मुद्+क्विप्] अत्यंत हर्ष।

प्रमुदित (भू० क० कृ०) [प्र+मुद्+क्त] उल्लसित आह्लादित, प्रसन्न, आनन्दित। सम०—हृदय (वि०) प्रसन्नमना।

प्रमुषित (भू० क० कृ०) [प्र+मुष्+क्त] चुराया हुआ, अपहृत— शि० १३।७१, —ता एक प्रकार की पहेली।

प्रमूढ (भू० क० कृ०) [प्र+मुह्+क्त] 1 विस्मित, उद्विग्न, व्याकुल 2. मूर्ख, जड़।

प्रमृत (भू० क० कृ०) [प्र+मृ+क्त] मरा हुआ, मृतक, -तम् 1. मृत्यु 2. खेती।

प्रमृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+मृज्+क्त] 1. रगड़ दिया गया, धो दिया गया, मिटा दिया गया, साफ़ किया गया—रघु० ६।४१, ४४ 2 चमकाया हुआ, चमकीला, स्वच्छ।

प्रमेय (वि०) [प्र+मा+यत्] 1. मापे जाने योग्य, निश्चित 2. प्रमाणित किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय, —यम् 1. निश्चित ज्ञान की वस्तु, प्रदर्शित उपसंहार, साध्य 2 सिद्ध करने योग्य बात, जो विषय सिद्ध (प्रमाणित) किया जा सके।

प्रमेहः [प्र+मिह्+घञ्] एक प्रकार का मूत्र रोग (धातु क्षीणता या मधुमेह आदि) जिसमें मूत्र के साथ धातु या शक्कर गिरती हो।

प्रमोक्षः [प्र+मोक्ष्+घञ्] 1. गिराना, गिरने देना 2. मुक्त करना, स्वतंत्र करना।

प्रमोचनम् [प्र+मुच्+ल्युट्] 1. मुक्त करना, स्वतंत्र छोड़ना 2 उगलना, छोड़ना।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] हर्ष, आह्लाद, उल्लास, उत्सव: —प्रमोदनृत्यैः सह वारयोषिताम् रघु० ३।१९, मनु० ३।६१।

प्रमोदनम् [प्र+मुद्+णिच्+ल्युट्] 1 आह्लादित करना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना 2. प्रसन्नता. -नः विष्णु का विशेषण।

प्रमोदित (भू० क० कृ०) [प्र+मुद्+णिच्+क्त] प्रसन्न, आह्लादित, खुश, आनन्दित,—तः कुबेर का विशेषण।

प्रमोहः [प्र+मुह्+घञ्] 1 मूर्छा, बेहोशी, जड़ता —विरचितः कारणानां प्रकृत्या प्रमोहः मा० ४।२६, 2 विकलता, घबराहट।

प्रमोहित (भू० क० कृ०) [प्र+मुह्+णिच्+क्त] आकुलित, उद्विग्न, घबराया हुआ।

प्रयत (भू० क० कृ०) [प्र+यम्+क्त] 1 संयमित, जितेन्द्रिय, शुद्ध, पावन, भक्त, धार्मिक अनुष्ठानों तथा साधनाओं से जिसने अपने आपको पवित्र बना लिया है, आत्मसंयमी,—रघु० १।९५, ८।११, १६।७७ कु० १।५८, ३।१६ 2. सोत्साह अध्यवसायी 3 सुधीर विनम्र।

प्रयत्नः [प्र+यत्+नङ्] 1 प्रयास चेष्टा, उद्योग- रघु० २।५६, मुद्रा० ५।२० 2. अनवरत प्रयास, धैर्य 3 श्रम कठिनाई प्रयत्नप्रेक्षणीय भवेत्—श० १, 'दुर्दर्श' 'दुर्दृश्य' 4 बड़ी सावधानी, चौकसी—प्रयत्नपरिग्रहीत गृहे विनयवति पञ्च० १।२०५ 5 (व्या० में) उच्चारण में प्रयास, मुख का वह व्यापार जिसके सहारे वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयस्त (भू० क० कृ०) [प्र+यस्+क्त] अध्यवसित, सिझाया हुआ, मसाले आदि डाल कर स्वादिष्ट किया हुआ।

प्रयागः [प्रकृष्टो यागफलं यत्र—प्रा० ब०] 1. यज्ञ 2. इन्द्र 3. घोड़ा 4 वर्तमान इलाहाबाद के पास गंगा यमुना के संगम पर बना प्रसिद्ध तीर्थस्थान—मनु० २।२१ (इस अर्थ में शब्द नपुं० भी है)। सम०—भवः इन्द्र का विशेषण।

प्रयाचनम् [प्र+याच्+ल्युट्] माँगना, प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

प्रयाजः [प्र+यज्+घञ्] प्रधानयज्ञ संबंधी एक अनुष्ठान।

प्रयाणम् [प्र+या+ल्युट्] 1 कूच करना, प्रयाण करना, विदा 2. अभियान, यात्रा मार्ग तावत्प्रयाण कथयत-

स्वबलप्रयाणानुरूपम् मेघ० १३ 3 प्रगति, अग्रगमन 4 (शत्रु का) अभियान, हमला, आक्रमण, चढ़ाई कामं पुर शुक्रमिव प्रयाणे कु० ३।४३, रघु० ६।३३ 5 आरम्भ, शुरु 6 मृत्यु (इस संसार से) विदा भग० ७।३० 7 घोड़े की पीठ 8 किसी भी जन्तु का पिछला भाग [illegible] भ० [illegible] तक [illegible] ठहरना [illegible] ।

प्रयाजकम् [प्रयाज + अन्] [illegible] [illegible]

प्रयास [illegible]

प्रयासित [illegible]

प्रयास [illegible]

प्रयाम [illegible]

प्रयुक्त [illegible] 1 [illegible] हुआ [illegible] आदि [illegible] 2 प्रवर्तित [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] किया हुआ [illegible] 6 [illegible] 7 [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] 10 प्रेरित किया हुआ [illegible] (दे० [illegible] पूर्वक [illegible]) ।

प्रयुक्ति (स्त्री०) [प्र + युज् + क्तिन्] 1 [illegible] प्रयोग 2 [illegible] 3 [illegible] 4 परिणाम फल ।

प्रयुतम् [प्र० [illegible] इस संख्या की संख्या [illegible]

प्रयुत्सु [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 हवा [illegible] 4 [illegible] 5 इन्द्र ।

प्रयुद्धम् [प्रा० स०] संग्राम लड़ाई ।

प्रयोक्तृ (वि०) [प्र + युज् + तृच्] 1 (बाण शब्द आदि का) प्रयोग करने वाला 2 अनुष्ठाता निदेशक परिणामक 3 प्रेरक उत्तेजक लगाने वाला 4 प्रणेता अभिकर्ता उत्तर० ३।४८ 5 (नाटक का) अभिनय-कर्ता 6 ब्याज पर रुपया देने वाला साहूकार 7 ऋणदाता ।

प्रयोग [प्र + युज् + घञ्] 1 इस्तेमाल व्यवहार, उपयोग जैसा कि शब्द प्रयोग में अप शब्दों और प्रयोग, अप्रयोग इस शब्द का बहुल प्रयोग या विरल प्रयोग होता है 2 प्रचलित का सामान्य प्रचलन 3 फेंकना, प्रक्षेपण मुक्त करना (विप० संहार) प्रयोगसंहार विभक्तमन्त्रः रघु० ५।५७

4 प्रदर्शनी, अनुष्ठान, (नाटकीय) अभिनयन, नाटक खेलना—इस प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम् मालवि० १ नाटिका न प्रयोगतो दृष्टा—रत्ना० १ मंच पर अभिनीत नहीं देखी गई 5 अभ्यास, (किसी विषय का) प्रायोगिक भाग (विप० शास्त्र या सैद्धान्तिक ज्ञान) [illegible] मालवि० १ 6 कार्यविधि का क्रम [illegible] का 7 कृत्य कार्य 8 [illegible] करना [illegible] 9 आरम्भ शुरू 10 [illegible], साधन युक्ति [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible] परिणाम 13 [illegible] अभिप्राय 14 [illegible] 15 [illegible] अभिप्राय [illegible]

[illegible]

प्रयोजक (वि०) [प्र + युज् + ण्वुल्] [illegible] 1 नियुक्त [illegible] 2 प्रवर्तक 3 [illegible] 4 सहकार [illegible] 5 [illegible] विधायक

प्रयोजनम् [प्र + युज् + ल्युट्] 1 इस्तेमाल काम [illegible] निर्दिष्ट, [illegible] आवश्यकता (आवश्यक [illegible]) [illegible] प्रयोजनम् [illegible] किमपेक्ष्य [illegible] प्रयोजनम् [illegible] उद्देश्य अभिप्राय प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते [illegible] प्रयोजनम् द्वारा [illegible] प्रयोजनम् [illegible] रघु० ८।३१ 3 प्राप्ति का साधन मनु० ७।१०० 4 कारण उद्देश्य निमित्त 6 [illegible] ।

प्रयोज्य (सं० कृ०) [प्र + युज् + ण्यत्] 1 इस्तेमाल करने के योग्य काम में लाने के योग्य 2 अभ्यास करने के लायक 3 उधार या पैसा करने के योग्य 4 नियुक्त करने के योग्य 5 चलाने या फेंकने के योग्य (अस्त्र) 6 कार्य प्रारम्भ करने के योग्य ।

प्ररुदित (भू० क० कृ०) [प्र + रुद् + क्त] फूट फूट कर रोया हुआ मुक्त कंठ से रुदन ।

प्ररूढ (भू० क० कृ०) [प्र + रुह् + क्त] 1 पूरा बढ़ा

हुआ, पूर्ण विकसित 2 उत्पन्न, उद्भूत, पैदा हुआ यस्यावमगात् कृमिनः प्ररूढ ... ७।१९ 3 बढ़ा हुआ 4 गहराई तक गया हुआ यथा 'प्ररूढमूल' में 5 लम्बे बढ़े हुए यथा 'प्ररूढकेश' 'प्ररूढश्मश्रु' में।

प्ररूढिः (स्त्री०) [प्र + रुह् + क्तिन्] वर्धन, वृद्धि।

प्ररोचनम् [प्र + रुच् + णिच् + ल्युट्] 1 उत्तेजना उद्दीपन 2 निदर्शन, व्याख्या 3 (किसी व्यक्ति का) प्रदर्शन जिससे लोग देख सकें और पसंद कर—अलोकसामान्यगुणस्तनूज प्ररोचनार्थं प्रकटीकृतश्च मा० १।१० (यहाँ 'प्ररोचनार्थं' का अर्थ जगद्धर पढ़िए 'प्रवृत्तिपाटवार्थं'—'संसार में पूर्णतः परिचित होने के लिए करते हैं) 4 नाटक में आगे आने वाली बात का रोचक वर्णन 5 ध्येय की पूर्णरूप से प्रतिस्थापना दे० सा० द० २८८ (अन्तिम दोनों अर्थ का बतलाने के लिए 'प्ररोचना' भी)।

प्ररोहः [प्र + रुह् + घञ्] 1 अंकुरित होना, अंखुवा निकलना, बढ़ना, बीजांकुरण यथा यवांकुरप्ररोह 2 अंकुर अंखुवा (आल० से भी)—...प्ररोह इव सौधतल बिभेद —रघु० ८।९३ ...प्ररोहजटिला मिव मन्त्रिवृद्धान् १३।७१, कु० ३।६०, ७।१७ 3 किसलय सम्मान हा राघवकुलप्ररोह वेणी० ४ महावी० ६।२५ 4 प्रकाशांकुर कुर्वन्ति सामनशिखा मणीनां प्रभाप्ररोहास्तमय रजांसि रघु० ६।३३ 5 नवपल्लव या टहनी, शाखा कोंपल।

प्ररोहणम् [प्र + रुह् + ल्युट्] 1 वर्धन अंकुरण स्फुटन 2 कली खिलना, अंकुरण या उगाव 1 टहनी किसलय स्फुटन, कोंपल।

प्रलपनम् [प्र + लप् + ल्युट्] 1 बात चीत करना बात शब्द, संलाप 2 बाचालता, बालकलरव बड़बड़, असंबद्ध बात, बकवास—इव कस्यापि प्रलपितम् 3 विलाप रोना-धोना —उत्तर० ३।२९।

प्रलपित (भू० क० कृ०) [प्र + लप् + क्त] कहा हुआ प्रलाप किया हुआ, —तम् बात—दे० ऊपर प्रलपन।

प्रलब्ध (भू० क० कृ०) [प्र + लभ् + क्त] धोखा दिया हुआ, ठगा हुआ।

प्रलंब (वि०) [प्र + लंब् + अच्, घञ् वा] 1 लटकनशील, नीचे की ओर लटकने वाला जैसा कि 'प्रलंबकेश' में 2 उन्नत—यथा 'प्रलंबनासिक' में 3 मन्थर, विलंबकारी, —बः 1 लटकता हुआ, आश्रित 2. कोई भी नीचे को लटकने वाली वस्तु 3. शाखा 4. कण्ठहार 5 एक प्रकार का हार 6 स्त्री की छाती 7 खीरा या सीसा 8 एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार डाला था। सम० —अंड वह पुरुष जिसके फोते लटकते हों, —घ्नः, —मथनः, —हन् (पुं०) बलराम का विशेषण।

प्रलंबनम् [प्र + लम्ब् + ल्युट्] नीचे लटकना, आश्रित रहना।

प्रलंबित (वि०) [प्र + लंब् + क्त] लटकनशील, लटकने वाला, निलंबित।

प्रलंभः [प्र + लभ् + घञ्, मुमागम] 1 प्राप्त करना, लाभ उठाना, अवाप्ति 2 धोखा देना, छलना, ठगना प्रवंचना।

प्रलयः [प्र + ली + अच्] 1 विनाश संहार विघटन—स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि भर्तृ० ३।७० ६९, प्रलय नीत्वा श० ११।६६, 'निराहित करक' (कल्प के अन्त में) 2 संसार का विनाश विश्वव्यापी विनाश कु० २।६८, भग० ७।६ 3 व्यापक विनाश या बरबादी 4 मृत्यु मरना निधन—प्रारब्धा प्रलयाय मामवहतो विक्रेतुमेते वयम् मुद्रा० ५।२१ १।१८ भग० ११।१४ 5 मूर्छा बेहोशी चेतना का न रहना गतः कु० ६।२६ (पञ्च० शा० ३) चेतना की हानि (३ अभिचारिभाव में से एक—प्रलयः सुख दुःखाभ्यां ... 7 रहस्यवाचि ओम् या प्रणव। सम० —काल विश्वनाश का समय —जलधर सृष्टि विघटन के अवसर की काली घटा,—दहन सृष्टि विघटन के अवसर पर आग —पयोधि सृष्टि के विनाश का समुद्र।

प्रललाट (वि०) [प्रा० स०] उन्नत मस्तक वाला।

प्रलव [प्र + लू + अप्] टुकड़ा, कतरन खंड।

प्रलवित्रम् [प्र + लू + इत्र] काटने का उपकरण

प्रलापः [प्र + लप् + घञ्] 1 बात बातचीत प्रवचन 2 बाचालता बालक रव असंबद्ध बात या बकवाद म० १२।६ 3 विलाप, रोना धोना—उत्तरापलापा पार्जितकृपा भगवान् वासुदेव —का० १३५ वेणी० ५।३० । सम०—हन (पुं०) एक प्रकार का अंजन।

प्रलापिन् (वि०) [प्र + लप् + णिनि] 1 बातूनी बोलने वाला —हा असंबद्धप्रलापिन्—वेणी ३ 2 बाचाल ... बालकलरव।

प्रलीन (भू० क० कृ०) [प्र + ली + क्त] 1 पिघला हुआ घुला हुआ 2 लुप्त, विनष्ट 3 निर्बोध चेतना शून्य।

प्रलून (भू० क० कृ०) [प्र + लू + क्त] काट कर गिराया हुआ।

प्रलेपः [प्र + लिप् + घञ्] लेप, मलहम थोपना।

प्रलेपकः [प्र + लिप् + ण्वुल्] 1. मलने वाला, लेप करने वाला 2 एक प्रकार का मन्दज्वर।

प्रलेहः [प्र + लिह् + घञ्] एक प्रकार का रसा शोरबा।

प्रलोठनम् [प्र + लुठ् + ल्युट्] 1 (भूमि पर) लोटना 2 उन्मोचन, उछालना।

प्रलोभः [प्र + लुभ् + घञ्] 1 प्रलोभन ... 2 ललचाना ...।

प्रलोभनम् [प्र + लुभ् + ल्युट्] 1 आकर्षण 2 ललचाना फुसलाना, लालच देना 3 प्रलोभन की वस्तु, चारा, दाना।

प्रलोभनी [प्रलोभन+ङीप्] रेत, बालू ।

प्रलोल (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत क्षुब्ध, थरथर करने वाला ।

प्रवक्तृ (पुं०) [प्र+वच्+तृच्] 1 वर्णन करने वाला, वक्ता, उद्घोषक 2 अध्यापक, व्याख्याता—मनु० ७।२० 3 सुवक्ता, धाराप्रवाह बोलने वाला ।

प्रवग:, प्रवङ्ग, प्रवङ्गम (पुं०) बंदर, दे० 'प्लवग' और 'प्लवङ्गम' ।

प्रवचनम् [प्र+वच्+ल्युट्] 1 बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना, रघु० १।१९० 2 अध्यापन, व्याख्यान 3 खोलकर समझाना, व्याख्या करना, अर्थ करना महावी० ४।२५ 4 वाग्मिता 5 धर्मशास्त्र, मनु० ३।१८४ । सम० —पटु (वि०) बात करने में कुशल, वाग्मी ।

प्रवट: [प्र+वट्+अच्] गेहूँ ।

प्रवण (वि०) [प्र+वण्+अच्] 1 ढलवाँ, ढलान वाला झुकावदार, नीचे को बहने वाला 2 ढालू, दुरारोह, विप्रपाती, चट्टान जैसा 3 कुटिल, झुका हुआ 4 अनुरक्त, प्रवृत्त संलग्न (प्राय समास के अन्त में) वचनप्रवण—कि० ३।१९ 5 भक्त, अनुरक्त, आसक्त, तुला हुआ, झुका हुआ, भरा हुआ नृपमिं प्रावण्याणप्रवणमतिरपि कैश्चिदधुना भर्तृ० ३।२९, शि० ८।१५, मुद्रा० ५।२१, कि० २।४४ 6 अनुकूल, उत्सुक—कु० ४।४२ 7 आतुर, तत्पर कि० २।८ 8 युक्त, सम्पन्न 9 विनम्र, सुशील, विनीत 10 मुर्झाया हुआ, बर्बाद, क्षीण, —ण: चौराहा, —णम् 1. उतार, ढलवाँ उतार, चट्टान 2 पहाड़ का पार्श्वभाग, ढलान, झुकाव ।

प्रवत्स्यत् (वि०) (स्त्री०—ती, न्ती) [प्र+वस्+स्य (लृट्)+शतृ] यात्रा पर जाने के लिए तैयार । सम० —पतिका उस नायक की पत्नी जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार बैठा है (रीतिकाव्यों में आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक) ।

प्रवयणम् [प्र+वे+ल्युट्] 1. बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग 2 अंकुश शि० १३।१९ ।

प्रवयस् (वि०) [प्रगतं वयो यस्य—प्रा० ब०] बड़ी उम्र का, वृद्ध, बूढ़ा केऽप्येते प्रवयसस्त्वां दिदृक्षवः—उत्तर० ४, रघु० ८।१८ ।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1 मुख्य, प्रधान, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य, सर्वोत्तम, श्रीमान्—सकेतके चिरयति प्रवरो विनोद: मृच्छ० ३।३, मनु० १०।२७, घट० १९ 2 ज्येष्ठ, —र: 1 बुलावा, आह्वान 2 एक विशेष प्रकार का आवाहन जो अग्न्याधान के अवसर पर अग्नि को सबोधित किया जाता है 3 वंश परम्परा 4. कुल, परिवार, वंश 5 पूर्वज 6 गोत्रप्रवर्तक ऋषि 7. सन्तान, वंशज 8. ढकना, चादर, —रम् अगर की लकड़ी । सम०—वाहनौ (द्वि० व०) अश्विनीकुमारों का विशेषण ।

प्रवर्ग: [प्रवृज्यते नि. क्षिप्यते हविरादिकमस्मिन्—प्र+वृज्+घञ्] 1 यज्ञीय अग्नि 2. विष्णु का विशेषण ।

प्रवर्ग्य: [प्र+वृज्+ण्यत्] सोमयाग से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान ।

प्रवर्त: [प्र+वृत्+घञ्] आरंभ, उपक्रम, काम में लगाना ।

प्रवर्तक (वि०) (स्त्री०—र्तिका) [प्र+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. चालू करने वाला, स्थापित करने वाला 2 प्रगतिशील, उन्नेता, आगे बढ़ाने वाला 3. पैदा करने वाला, जन्म देने वाला 4. प्रबोधक, प्रोत्साहक, उकसाने वाला, भड़काने वाला (बुरे अर्थ में), —क: जन्मदाता, प्रवर्तक, प्रणेता 2. प्रबोधक, प्रोत्साहक 3 विवाचक, मध्यस्थ ।

प्रवर्तनम् [प्र+वृत्+ल्युट्] 1 चलते रहना, आगे बढ़ना 2 आरम्भ, शुरु 3 कार्यारम्भ, नींव डालना, संस्थापन, प्रतिष्ठापन 4 प्रोत्साहन, बलपूर्वक चलाना, उद्दीपन 5 व्यस्त होना काम में लगना 6 होना, घटित होना 7. क्रियता, कार्य 8 व्यवहार, आचरण, कार्यविधि, 9 कार्य में प्रेरित करना, प्रोत्साहन देना ।

प्रवर्तयितृ (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+तृच्] संचालन करने वाला, या जो नींव डालता है, संस्थापित करता है और उसे चलाता रहता है या ढकेलता है ।

प्रवर्तित (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+(णिच्)+क्त] 1 मोड़ दिया हुआ, चलाया हुआ, लुढ़काया हुआ, चक्कर खाने वाला रघु० ९।६६ 2. नींव डाला हुआ 3. प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ, भड़काया हुआ 4. सुलगाया हुआ 5. जन्म दिया हुआ, निर्मित 6. पवित्र किया हुआ, जाना हुआ मनु० ११।१९६ ।

प्रवर्तिन् (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+णिनि] 1 प्रगतिशील, आगे बढ़ने वाला 2. सक्रिय रहने वाला 3. जन्म देने वाला, प्रभावी 4. इस्तेमाल करने वाला ।

प्रवर्धनम् [प्र+वृध्+ल्युट्] वृद्धि करना, बढ़ाना ।

प्रवर्ष: [प्र+वृष्+घञ्] भारी वृष्टि, मूसलधार वर्षा ।

प्रवर्षणम् [प्र+वृष्+ल्युट्] 1. बरसना 2. पहली वृष्टि ।

प्रवसनम् [प्र+वस्+ल्युट्] विदेश जाना, विदेश यात्रा, यात्रा पर जाना ।

प्रवह: [प्र+वह्+अच्] 1. बहना, बाहर निकल कर बहना 2. वायु 3. वायु के सात मार्गों में से एक (जो ग्रहों को गतिमान् करता है ।

प्रवहणम् [प्र+वह्+ल्युट्] 1. बन्द गाड़ी या पालकी (स्त्रियों के लिए) 2. गाड़ी, वाहन, सवारी 3. जहाज ।

प्रवह्लिः,—ह्ली [प्र+वह्ल्+इन्, प्रवह्लि+ङीष्] दे० 'प्रहेलिका'।

प्रवाच् (वि०) [प्रा० स०] वाग्मी, वक्ता—(कुर्वते) वचनान्यनुलोमानि प्रवाच कृतिनां गिरः—शि० २।२५ 2. बातूनी, वाचाल—मुद्रा० ३।१६।

प्रवाचनम् [प्र+वच्+णिच्+ल्युट्] घोषणा, उद्घोषणा, प्रकथन।

प्रवाणम् [प्र+वे+ल्युट्] बुने हुए कपड़ों के किनारों के गोट लगाना या छांटना या सम्भालना।

प्रवाणिः,—णी (स्त्री०) [प्रवाण+ङीष्, नि० ह्रस्वो वा] जुलाहे की ढरकी।

प्रवात (भू० क० कृ०) [प्रकृष्टो वातो यस्मिन्—प्रा० ब०] तूफान में पड़ा हुआ—तम् 1 वायु का झोंका, ताजा हवा—प्रवातशयनस्था देवी मालवि० ४ 2 तूफानी हवा, आँधी—ननु प्रवातेऽपि निष्कंपा गिरयः श० ६, 3. हवादार स्थान, कु० १।४६।

प्रवादः [प्र+वद्+घञ्] 1. शब्द या ध्वनि का उच्चारण 2. अभिभाषण करना, उल्लेख करना, प्रकथन करना 3. प्रवचन, वार्तालाप 4. बात, प्रतिवेदन, अफवाह, किंवदन्ती—अनुरागप्रवादस्तु वत्सयो सार्वलौकिक मा० १।११, व्याघ्रो मानुषं खादतीति लोकप्रवादो दुर्निवारः—हि० १, रत्न० ४।५ 5. आख्यायिका, नाम 6. विवाद संबंधी भाषा 7 चुनौती के शब्द, पारस्परिक विरोध—इत्थं प्रवादं युधि संप्रहारं प्रचक्रतू रामनिशाविहारी—भट्टि० २।३६।

प्रवारः, प्रवारकः [प्र+वृ+घञ्, प्रवार+कन्] चादर, आच्छादन।

प्रवारणम् [प्र+वृ+णिच्+ल्युट्] 1 (इच्छा) पूर्ण करना छूट की प्रार्थनिकता 3. निषेध, विरोध 4. काम्यदान।

प्रवालः (पुं०) दे० 'प्रबाल'।

प्रवासः [प्र+वस्+घञ्] 1. विदेशगमन, विदेशयात्रा, घर पर न रहना, परदेशनिवास—रघु० १६।४४। सम०—गत,—स्थ,—स्थित (वि०) विदेश की यात्रा करना, घर पर न रहने वाला।

प्रवासनम् [प्र+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. विदेश निवास, अस्थायी रूप से वास करना 2. निर्वासन, देशनिकाला, वध, हत्या।

प्रवासिन् (पुं०) [प्र+वस्+णिनि] यात्री, बटोही, परदेसी।

प्रवाहः [प्र+वह्+घञ्] 1. बहाव, धार बन कर बहना 2. नदी, वेग या जलमार्ग, धारा—प्रवाहस्ते वारां श्रितजयनवारो विजयतु नः—गंगा० २, रघु० ५।४६, १३।१०, ४८, कु० १।५४, मेघ० ४६ 3. बहाव, बहता हुआ पानी 4. अविच्छिन्न बहाव, अटूट शृंखला, नैरन्तर्य 5. घटना क्रम (नदी की धार की भांति लुढ़कना) 6. क्रियता, सक्रिय व्यस्तता 7. तालाब, झील 8. बढ़िया घोड़ा (प्रवाहे मूत्रितम्) नदी में मूतना (शा०), व्यर्थ कार्य करना (आलं०)।

प्रवाहकः [प्र+वह्+ण्वुल्] भूत प्रेत, पिशाच।

प्रवाहणम् [प्र+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 हांक कर आगे बढ़ना 2 दस्त कराना।

प्रवाहिका [प्र+वह्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] दस्त लग जाना।

प्रवाही [प्रवाह+ङीष्] रेत, बालू।

प्रविकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+कॄ+क्त] 1. बखेरा हुआ, इधर उधर छितराया हुआ 2. तितर बितर किया हुआ, फैलाया हुआ।

प्रविख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+वि०+ख्या+क्त] 1. नामी, बुलाया हुआ 2 प्रसिद्ध, मशहूर, विश्रुत।

प्रविख्यातिः [प्र+वि+ख्या+क्तिन्] मशहूरी, कीर्ति, प्रसिद्धि।

प्रविचयः [प्र+वि+चि+अच्] परीक्षा, खोज, अनुसन्धान।

प्रविचारः [प्रा० स०] विवेचन, विवेक।

प्रविचेतनम् [प्र+वि+चित्+ल्युट्] समझ।

प्रवितत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+तन्+क्त] 1 बिछाया हुआ, फैलाया हुआ 2 बिखरे हुए, अस्तव्यस्त (बाल)।

प्रविदार [प्र+वि+दॄ+घञ्] फट कर टुकड़े टुकड़े होना, खुलना।

प्रविदारणम् [प्र+वि+दॄ+णिच्+ल्युट्] 1 फाड़ना, विदीर्ण करना, तोड़ना, फट कर टुकड़े टुकड़े होना 2 कली खिलना 3 संघर्ष, युद्ध, लड़ाई 4 भीड़भाड़, गड़बड़ी, हल्ला-गुल्ला।

प्रविद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+व्यध्+क्त] डाला हुआ, फेंका हुआ।

प्रविद्रुत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+द्रु+क्त] तितर-बितर किया हुआ, भगाया हुआ, बखेरा हुआ।

प्रविभक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+भज्+क्त] 1. अलग किया गया, वियुक्त 2. हिस्से किया गया, विभाजन किया गया, बाँटा गया, वितरित किया गया—ज्योतींषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मिः—श० ७।६।

प्रविभागः [प्र+वि+भज्+घञ्] भाग, तकसीम, वितरण, वर्गीकरण—रघु० १६।२ 2. हिस्सा, अंश।

प्रविरः (पुं०) पीला चन्दन।

प्रविरल (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत दूर दूर, वियुक्त, अलगाया 2. बहुत कम, बहुत थोड़े, स्वल्प, थोड़ा—प्रविरला इव मुग्धवधूकथा—रघु० ९।३४।

प्रविलयः [प्र+वि+ली+अच्] 1. पिघलकर बह जाना 2. पूरी तरह घुल जाना या अदृश्य हो जाना।

प्रविलुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+लुप्+क्त] काटा हुआ, निकाला हुआ, हटाया हुआ।

प्रविवादः [प्र+वि+वद्+घञ्] झगड़ा कलह, तकरार।

प्रविविक्त (वि०) [प्रा० स०] 1 बिल्कुल अकेला 2. वियुक्त, अलग किया हुआ।

प्रविश्लेषः [प्र+वि+श्लिष्+घञ्] वियोग, जुदाई।

प्रविषण्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+सद्+क्त] खिन्न, उदास, हतोत्साह।

प्रविष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+क्त] 1 अन्दर गया हुआ, घुसा हुआ—पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्—श० १।७ 2 लगा हुआ, व्यस्त 3. आरब्ध।

प्रविष्टकम् [प्रविष्ट+कन्] रंग भूमि का द्वार।

प्रविस्त (स्ता) रः [प्र+वि+स्तृ+अप्, घञ् वा] परिधि, वृत्त।

प्रवीण (वि०) [प्रकृष्टा सम्यगर्पिता वीणा येन प्रा० ब०] चतुर, कुशल, जानकार—आमोदानथ हरिदन्तराणि नेतुं नैवान्यो जगति समीरणात्प्रवीणः—भामि० १।१५, कु० ७।४८,।

प्रवीर (वि०) [प्रा० स०] 1 अग्रणी, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य रघु० १४।२९ १६।१, भग० ११।४८ 2 मजबूत, शक्तिशाली, वीर्यसम्पन्न, —रः 1 बहादुर व्यक्ति, नायक, योद्धा 2 मुख्य, पूज्य व्यक्तित्व।

प्रवृत (भू० क० कृ०) [प्र+वृ+क्त] चुना हुआ, सकल्पित, छांटा हुआ।

प्रवृत्त (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+क्त] 1 आरंभ किया गया, शुरू किया गया, प्रगत 2 स्थिर किया हुआ —अचिरप्रवृत्तं ग्रीष्मसमयमधिकृत्य -श० १ 3 व्यस्त, संलग्न 4. जाने के लिए उद्यत, कटिबद्ध 5. स्थिर, निश्चित, निर्धारित 6 निर्बाध, विवादरहित 7 गोल, —त्तः गोल आभूषण।

प्रवृत्तकम् [प्रवृत्त+कन्] रंग भूमि में अवतरण।

प्रवृत्तिः (स्त्री०) [प्र+वृत्+क्तिन्] 1 निरन्तर प्रगमन, प्रगति, आगे बढ़ना 2 उदय, मूल, स्रोत, (जलों का) प्रवाह—प्रवृत्तिरासीच्छब्दानां चरितार्था चतुष्टयी—कु० २।१७ 3 दर्शन, प्रकटीकरण—कुसुमप्रवृत्तिसमये—श० ४।१७, रघु० ११।४३, १४।३९, १५।४ 4. उदय, आरंभ, शुरू—आकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम्—कु० ३।३४ 5 प्रयोग, व्यसन, झुकाव, रुझान, रुचि, प्रवणता—श० १।२२ 6 आचरण, व्यवहार—रघु० १४।७३ 7. काम में लगाना, व्यवसाय, क्रियाशीलता कु० ६।२६ 8 प्रयोग, नियोजन (शब्द का) प्रचलन 9 अनवरत प्रयत्न, धैर्य 10 सार्थकता, भावार्थ, (शब्द की) स्वीकृति 11 निरन्तरता, स्थायिता, प्राबल्य 12. सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में सक्रिय भाग लेना (विप० निवृत्ति) 13 समाचार, खबर, गुप्त वार्ता—जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, विक्रम० ४।२० 14 नियम की प्रयोजनीयता या वैधता 15. भाग्य, नियति, किस्मत 16. संज्ञान, सीधा प्रत्यक्षज्ञान, समवबोध 17. हाथी का मद (जो मस्ती की अवस्था में उसके गंडस्थल से निकलता है), 18 उज्जयिनी नगरी का नामान्तर। सम० —ज्ञः जासूस, भेदिया, दूत, गुप्तचर,—निमित्तम् किसी शब्द का किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने का कारण, —मार्गः सक्रिय या सांसारिक जीवन, कार्य में अनुरक्ति, संसार में सुख तथा आनन्द।

प्रवृद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+वृध्+क्त] 1 पूरा बढ़ा हुआ 2 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विस्तारित, बढ़ा किया हुआ 3 पूरा, गहरा 4 घमंडी, अहंकारी 5 प्रचण्ड 6 विशाल।

प्रवृद्धिः (स्त्री०) [प्र+वृध्+क्तिन्] 1 बढ़ना, वृद्धि—रघु० १३।७१, १७।७१ 2. उन्नति, समृद्धि, पदोन्नति, तरक्की, उत्कर्ष।

प्रवेक (वि०) [प्र+विच्+घञ्] उत्तम, मुख्य, छाँट का, अत्यंत श्रेष्ठ।

प्रवेगः [प्र+विज्+घञ्] तीव्र चाल, वेग।

प्रवेटः [प्र+वी+ट] जौ, यव।

प्रवेणिः, —णी (स्त्री०) [प्र+वेण्+इन्, प्रवेणि+ङीष्] 1 बालों का जूड़ा—रघु० १५।३० 2. बिखरे हुए या शृंगारहीन बाल (पति की अनुपस्थिति में स्त्रियाँ प्राय: ऐसे बाल धारण करती हैं) 3. हाथी की झूल 4 रंगीन ऊनी कपड़े का टुकड़ा 5. (नदी का) प्रवाह या धार।

प्रवेतृ (पुं०) [प्र+अज्+तृच् अजेः वी आदेशः] सारथि, रथवान्।

प्रवेदनम् [प्र+विद्+णिच्+ल्युट्] जतलाना, ऐलान करना, घोषणा करना।

प्रवेपः, प्रवेपक, प्रवेप थुः, प्रवेपनम् [प्र+वेप्+घञ्, प्रवेप+कन्, प्र+वेप्+अथुच्, प्र+वेप्+ल्युट्] कपकंपी, ठिठुरन, थरथराना, सिहरन।

प्रवेरित (वि०) [प्रवेर+इतच्] इधर उधर डाला हुआ, फेंका हुआ।

प्रवेल्लः [प्र+वेल्ल्+अच्] एक प्रकार की मूंग।

प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1. भीतर जाना, घुसना—पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव—रघु० ७।१, कु० ३।४० 2. अन्तर्गमन, पैठ, पहुँच 3 रंगभूमि में प्रवेश—तेन पात्रप्रवेशश्चेत्—सा० द० ६ 4. (घर का) दरवाजा, घुसने का स्थान 5 आय, राजस्व 6 (किसी काम का) पीछा करना, प्रयोजन की तत्परता।

प्रवेशकः [प्र+विश्+ण्वुल्] परिचायक, निम्नपात्रों (नौकर चाकर) द्वारा अभिनीत विष्कम्भक (इसमें श्रोता को रंगमंच पर अप्रस्तुत घटना का ज्ञान होने वाली बातों की जानकारी के लिए ज्ञान कराना आवश्यक है); (विष्कंभक की भांति यह नाटक की कथा तथा कथावस्तु के अवान्तर भेदों को जो या तो अंकों के अन्तराल में घटित हो चुके हैं या अन्त में होने वाले हैं, जोड़ देता है, यह पहले अंक के आरम्भ या अंतिम अंक के अन्त में कभी प्रयुक्त नहीं होता) साहित्यदर्पणकार इसकी परिभाषा देते हैं–प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः, अंकद्वयान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा –३०८, दे० 'विष्कम्भक'।

प्रवेशनम् [प्र+विश्+ल्युट्] 1 दाखिल होना, घुसना, अन्दर जाना 2. परिचय देना, नेतृत्व करना, संचालन 3 घर का मुख्य द्वार, फाटक 4 मैथुन, स्त्री सगम।

प्रवेशित (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+णिच्+क्त] परिचित कराया हुआ, अन्दर पहुँचाया हुआ, अन्दर ले जाया गया, घुसाया हुआ।

प्रवेष्टः [प्र+वेष्ट्+अच्] 1 भुजा 2 कलाई, पहुँचा 3. हाथी की पीठ का मांसल भाग (जहाँ महावत बैठता है) 4 हाथी के मसूड़े 5 हाथी की झूल।

प्रव्यक्त (भू० क० कृ०) [प्रकर्षेण व्यक्त –प्रा० स०] स्पष्ट, साफ, प्रकट, जाहिर।

प्रव्यक्तिः (स्त्री०) [प्र+वि+अञ्+क्तिन्] प्रकटीकरण, दर्शन।

प्रव्याहारः [प्र+वि+आ+हृ+घञ्] प्रवचन का फैलाव या विस्तार।

प्रव्रजनम् [प्र+व्रज्+ल्युट्] 1 विदेश जाना, अस्थायी रूप से बसना 2 निर्वासित होना 3 वानप्रस्थ हो जाना।

प्रव्रजित (भू० क० कृ०) [प्र+व्रज्+क्त] 1 विदेश गया हुआ या निर्वासित 2. सन्यासी या परिव्राजक बना हुआ,—तः 1. साधु, सन्यासी 2 चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, भिक्षु 3 जैन या बौद्ध भिक्षु का शिष्य, —तम् संन्यासी बन जाना, साधु का जीवन।

प्रव्रज्या [प्र+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1 विदेश जाना, देशान्तरगमन 2 पर्यटन, (साधु के रूप में इतस्ततः) भ्रमण 3. सन्यास आश्रम, सन्यासी का जीवन, ब्राह्मण की जीवनचर्या में चौथा आश्रम (भिक्षु जीवन) —प्रव्रज्यां कल्पवृक्षा इवाश्रिताः कु० ६।६ (यहाँ मल्लि० के अनुसार 'प्रव्रज्या' का तात्पर्य वानप्रस्थ या तृतीय आश्रम है)। सम०—अवसितः वह पुरुष जिसने सन्यास ग्रहण करके उस आश्रम को छोड़ दिया हो।

प्रव्रश्चनः [प्र+व्रश्च्+ल्युट्] लकड़ी काटने का उपकरण।

प्रव्राज् (पुं०), **प्रव्राजकः** [प्र+व्रज्+क्विप्, ण्वुल् वा] साधु, सन्यासी।

प्रव्राजनम् [प्र+व्रज्+णिच्+ल्युट्] निर्वासन, देशनिकाला, निर्वासित करना।

प्रशंसनम् [प्र+शंस्+ल्युट्] प्रशंसा करना, स्तुति करना।

प्रशंसा [प्र+शंस्+अङ्+टाप्] प्रशंसा, स्तुति, प्रशस्ति, गुणगान करना–प्रशंसावचनम्, प्रशंसात्मक या सम्मानसूचक वाणी 2 वर्णन, उल्लेख —जैसा कि 'अप्रस्तुतप्रशंसा' में 3 कीर्ति ख्याति, प्रसिद्धि। सम० उपमा दण्डिद्वारा वर्णित उपमा के अनेक भेदों में से एक — ब्रह्मणोऽप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः, तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमोच्यते काव्या० २।३१, मुखर (वि०) ऊँचे स्वर से प्रशंसा करने वाला।

प्रशंसित (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया गुणगान किया गया तारीफ किया गया।

प्रशस्वन् (पुं०) [प्र+शद्+क्वनिप्, तुट्] समुद्र, सागर।

प्रशस्वरी [प्रशस्वन्+ङीप्, र आदेश] नदी।

प्रशमः [प्र+शम्+घञ्] 1 शमन, शान्ति, स्वस्थचित्तता - प्रशमस्थितपूर्वपार्थिवम् -- रघु० ८।१५ कि० २।३२ 2 शान्ति, विश्राम 3 बुझाना, उपशमन कु० २।२० 4 विराम, अन्त, विनाश शि० २०।७३ 5. सान्त्वना, तुष्टीकरण —शि० १६।५१।

प्रशमन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रश्+णिच्+ल्युट्] शान्त करने वाला, शान्तिस्थापित करने वाला धीरज बंधाने वाला, दूर करने वाला (रोग आदि को),—नम् शान्त करना, शान्ति स्थापित करना, धीरज बंधाना 2 दमन करना, धैर्य बंधाना, दिलासा देना, हलका करना —आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् —मेघ० ५३ 3. चिकित्सा करना, स्वस्थ करना —जैसा कि 'व्याधिप्रशमनम्' में 4 (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, दमन करना, मिटा देना 5. विराम, थामना 6. उपयुक्त रूप से प्रदान करना, सत्पात्र को प्रदान करना मनु० ७।५६, (सत्पात्रे प्रतिपादनम् —कुल्लू०, परन्तु अन्य विद्वान् इसका अलग अर्थ समझते हैं) 7. प्राप्त करना, रक्षा करना, सुरक्षित रखना—अलब्धप्रशमनस्वस्थमथैनं समुपस्थिता रघु० ४।१४ 8 वध, हत्या।

प्रशमित (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1 सान्त्वना दी गई, धीरज बंधाया गया, स्वस्थचित्त, तुष्टीकृत, शान्त किया गया 2. (आग) बुझाई गई, (प्यास) शान्त की गई 3. प्रायश्चित्त किया गया, परिशोधन किया गया —उत्तर० १।४०।

प्रशस्त (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, तारीफ़ किया गया, श्लाघा की गई,

स्तुति की गई 2. प्रशंसनीय, तारीफ़ के योग्य 3. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 4. सौभाग्यशाली, प्रसन्न, आनन्दित, शुभ। सम०—अद्रिः एक पहाड़ का नाम।

प्रशस्तिः (स्त्री०) [प्र+शंस्+क्तिन्] 1. प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़ 2. वर्णन उत्तर० ७ 3 किसी की (उदा० संरक्षक) प्रशंसा में लिखी गई कविता 4. श्रेष्ठता, महत्त्व 5 शुभ कामना 6 निर्देशन, शिक्षण, निर्देश-नियम जैसा कि 'लेखप्रशस्ति' (लिखने का एक प्रकार) में।

प्रशस्य (वि०) (म० अ०—श्रेयस् या ज्यायस्, उ० अ० —श्रेष्ठ या ज्येष्ठ) [प्र+शंस्+क्यप्] प्रशंसा के योग्य, तारीफ के लायक, श्रेष्ठ।

प्रशाख (वि०) [प्रशस्ता शाखा यस्य प्रा० ब०] 1. जिसकी अनेक शाखाएँ इधर उधर फैली हों 2. गर्भस्थित की पाँचवीं अवस्था (कहते हैं कि इस समय गर्भस्थित बालक के हाथ पैर बन जाते हैं), —खा छोटी शाखा या टहनी।

प्रशाखिका प्रशाखा+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी शाखा, टहनी।

प्रशान्त (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1 शांत, शान्तिप्राप्त, स्वस्थचित्त 2. निश्चल, सौम्य, निस्तब्ध धीर, निश्चेष्ट—अहो प्रशान्तरमणीयतोद्यानस्य 3 पालतू, वशीकृत, दबाया हुआ 5 समाप्त, विरत, निवृत्त—तत्सर्वमेकपद एव मम प्रशान्तम्—मा० ९।३६, प्रशान्तमस्त्रम्—उत्तर० ६ 'कार्य करने से रुका हुआ या निवृत्त' 5 मृत, मरा हुआ (दे० प्रपूर्वक-शम्)। सम० आत्मन् (वि०) स्वस्थमना, शान्ति-पूर्ण, अचपल,—ऊर्ज (वि०) क्षीणशक्ति, निस्तेज, विषण्ण,—काम (वि०) सन्तुष्ट, चेष्ट (वि०) आराम करने वाला, विश्रांत, विरत,—बाध (वि०) जिसकी समस्त बाधाएँ व संकट दूर हो गये हैं—कि० १।१८।

प्रशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. धैर्य, शान्ति, मनकी स्थिरता, निःशब्दता, विश्राम 2. आराम, विराम, ठहराव 3. निराकरण करना, (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना।

प्रशमः [प्र+शम्+घञ्] 1. शान्ति, धैर्य, मनकी स्वस्थता 2. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, निराकरण करना 3 विश्राम।

प्रशासनम् [प्र+शास्+ल्युट्] 1. शासन करना, हुकूमत करना 2. आदेश देना, बल पूर्वक वसूल करना 3. राज्य शासन।

प्रशास्तृ (पुं०) [प्र+शास्+तृच्] राजा, शासक, राज्यपाल।

प्रशिथिल (वि०) [प्रा० स०] बहुत ढीला।

प्रशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य, पड़शिष्य—शिष्य प्रशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मंडनमिश्रधाम—शंकर०।

प्रशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] स्वच्छता, पवित्रता।

प्रशोषः [प्र+शुष्+घञ्] सूखना, सूख जाना, सूखापन।

प्रश्चोतनम् [प्र+श्चुत्+ल्युट्] छिड़कना, झरण—उत्तर० ३।११।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1 सवाल, पूछताछ, परिपृच्छा, परिप्रश्न (अविज्ञातप्रवचन प्रश्न इत्यभिधीयते) अनामयप्रश्न पूर्वकम्—श० ५, 'कुशलक्षेम के प्रश्न के साथ' 2. अदालती जाँच पड़ताल या गवेषणा 3 विवादपद, विवादास्पद विषय विवादग्रस्त दृष्टिकोण —इति प्रश्न उपस्थित 4 समस्या, हिसाब का प्रश्न —अद्य ते प्रश्नं दास्यामि मृच्छ० ५ 5. भविष्य संबंधी पूछताछ 6 किसी ग्रन्थ का अनुभाग या परिच्छेद। सम० उपनिषद् (नपुं०) एक उपनिषद् का नाम (इसमें छः प्रश्न तथा उनके छः उत्तर हैं) —दूतिः,-दूती (स्त्री०) पहेली, बुझौवल।

प्रश्रथः [प्र+श्रथ्+अच्] शिथिलता, ढीलापन, शिथिलीकरण।

प्रश्रयः, प्रश्रयणम् [प्र+श्रि+अच्, ल्युट् वा] 1. आदर, शिष्टता, सुजनता, विनम्रता, सम्मानपूर्ण अथवा शिष्टतायुक्त व्यवहार, विनय—समापतः प्रश्रयनम्रमूर्तिभिः—शि० १२।३३, रघु० १०।७०, ८३, उत्तर० ६।२३, सप्रश्रयम् आदरपूर्वक, सविनय 2 प्रेम, स्नेह, आदर—पंच० २।२।

प्रश्रित (भू० क० कृ०) [प्र+श्रि+क्त] सुजन, नम्र, शिष्ट, विनीत, शिष्टाचारयुक्त।

प्रश्लथ (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत ढीला या पिलपिला 2 उत्साह-हीन, निस्तेज।

प्रश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+श्लिष्+क्त] 1. मरोड़ा दिया हुआ, ऐंठा दिया हुआ 2. तर्कसंगत, युक्तियुक्त।

प्रश्लेषः [प्र+श्लिष्+घञ्] घना संपर्क, संहति।

प्रश्वासः [प्र+श्वास्+घञ्] साँस, श्वसन, श्वासप्रश्वासक्रिया।

प्रष्ठ (वि०) [प्र+स्था+क] 1. सामने खड़ा हुआ —रघु० १५।२० 2 मुख्य, प्रधान, अग्रणी, उत्तम, नेता—पुलस्त्यप्रष्ठ. महावी० १।३०, ६।३०, शि० १९।३०। सम०—वाह् (पुं०) हल जोतने के लिए सधाया जाता हुआ जवान बैल।

प्रसू (भ्वा०, आ०—आ० प्रसते, प्रस्यते) 1. बच्चे को जन्म देना 2. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना, बढ़ाना।

प्रसक्त (भू० क० कृ०) [प्र+सञ्ज्+क्त] 1. संलग्न, युक्त 2. अत्यन्त आसक्त या स्नेहशील—पंच० १।१९१

3 अनुगामी, अनुवक्त 4. स्थिर, जुड़ा हुआ, मग्न, व्यस्त, व्यसनग्रस्त, प्रयुक्त—शि० ९।६३, इसी प्रकार द्यूत,° निद्रा° आदि 5 सटा हुआ, निकटस्थ 6. अविच्छिन्न, निरन्तर, अनवरत—कि० ४।१८, रघु० १३।४०, मा० ४।६, मालवि० ३।१ 7 हासिल, प्राप्त, लब्ध,—सक्तम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार—कि० १६।५५।

प्रसक्ति (स्त्री०) [प्र+सञ्ज्+क्तिन्] 1 आसक्ति, भक्ति, व्यसन सलग्नता, अनुरक्ति 2 संबंध, संयोग साहचर्य 3 प्रयोजनीयता, संबंध, प्रयोग जैसा कि 'अति प्रसक्ति' (अतिव्याप्ति) में 4 ऊर्ध्वं धैर्य सताये विघ्नन् शिव शिखा प्रसक्तिम् कि० ५।५० 5. उपसंहार, घटाना 6 विषय प्रवचन का विषय 7 संभावना का घटित होना।

प्रसंख्या [प्रा० स०] 1 कुल योग, राशि 2 विचार विमर्श।

प्रसंख्यानम् [प्र+सम्+ख्या+ल्युट्] 1 गिनना 2 विचारण, मनन, गहन चिन्तन, भाव चिन्तन श्रुताप्सरोगीतिरपि क्षणेऽस्मिन् हर प्रसंख्यानपरो बभूव —कु० ३।४० 3 कीर्ति, प्रसिद्धि विश्रुति, 4 अदायगी, भुगतान।

प्रसंगः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1 आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता—स्वकर्मयोग्ये भुरतप्रसंगे कु० १।१९ तस्यास्त्याक्तकोमलस्य मतत द्यूत प्रसङ्गेन किम्—मृच्छ० २।११, शि० ११।२२ 2 मेल-जोल अन्त संपर्क, साहचर्य संबंध निवर्ततामस्माद् गणिका प्रसंगात् —मृच्छ० ४ 3 अवैध मैथुन 4 व्यस्तता, एकाग्रता, कार्यपरता—भूविक्रियायां विरतप्रसंगैः कु० ३।४७ 5 विषय, शीर्षक (प्रवचन या विवाद का) 6 अवसर, घटना दिग्विजयप्रसंगेन—का० ११९, यात्राप्रसंगेन —मा० १ 7 संयोग समय, अवसर मनु० ९।५ 8 दैवयोग घटना कार्य संभावना का होना—नश्वरी अगत कारणमुपपद्यते कुत दैवमनैपुण्य प्रसंगात मारी०, एवं वानवस्था प्रसंग तदेव, कु० ७।१६ 9 संबद्ध तर्कना, या युक्ति 10 उपसंहार अनुमान 11 संबद्ध भाषा 12 अविभाज्य प्रयोग या संबंध (व्याप्ति) 13 माता पिता का उल्लेख (प्रसंगेन, प्रसंगत, प्रसंगात् यह क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं 1 के संबंध में 2 के फल स्वरूप, के कारण, क्योंकि, के क्रम में 3 अवसरानुसार 4 के क्रम में (यथा कथाप्रसंगेन 'बातचीत के सिलसिले में')। सम०—निवारणम् भविष्य में इस प्रकार की स्थिति का रोकना, —वशात् (अव्य०) समय के अनुसार, परिस्थितिवश,—विनिवृत्ति (स्त्री०) इस प्रकार की अवस्थिति की पुनरावृत्ति का न होना।

प्रसज्जनम् [प्र+सञ्ज्+ल्युट्] 1 जोड़ने की क्रिया, मिलाना, एकत्र करना 2 व्यवहार में लाना, सबल बनाना, उपयोग में लाना।

प्रसत्तिः (स्त्री०) [प्र+सद्+क्तिन्] 1 अनुग्रह, कृपालुता, शिष्टाचार 2 स्वच्छता, पवित्रता, विशदता।

प्रसन्धानम् [प्र+सम्+धा+ल्युट्] मिलान, मेल।

प्रसन्न (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+क्त] 1 पवित्र, स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्मल, विमल पारदर्शी कु० १। २३ ७।७४, श० ५।२० 2 खुश, आनन्दित, प्रतुष्ट, शान्त गगा शरन्नयति सिन्धुपति प्रसन्नाम्—मुद्रा० ३।९ गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने—मेघ० ४० (यहाँ प्रथम अर्थ भी अभिप्रेत है), कु० ५।३५, रघु० ७।६८ 3 दयालु, अनुग्रहशील, कृपालु, मंगलप्रद अवहि मा कामदुघा प्रसन्नाम्—रघु० २।६३ 4 सरल सीधा स्पष्ट, सुबोध (अर्थ) 5 सत्य, सही प्रसन्नस्ते तर्क विक्रम० ? प्रसन्नप्रायस्ते तर्क मा० १ —न्ना 1 प्रसादन अनुरंजन 2 खींची हुई मदिरा। सम०—आत्मन् (वि०) कृपालुमना मंगलप्रद,—ईरा खींची हुई मदिरा, —कल्प (वि०) 1 शान्त प्राय 2 सत्यप्राय,—मुख वदन (वि०) कृपालुदृष्टि वाला, प्रसन्न चेहरे वाला, मुस्कराता हुआ —सलिल (वि०) स्वच्छ पानी वाला।

प्रसभ. [प्रगता सभा सभ्याचारो यस्मात् प्रा० ब०] बल, हिंसा, प्रचण्डता प्रसभमाहृतारि रघु० ४।३० —भम् (अव्य०) 1 बलपूर्वक जबरदस्ती,—इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभ मनः भग० २।६०, मनु० ८। ३३२ 2 बहुत अधिक, अत्यन्त नर्तासि गीतरागेण हारिणा प्रसभ हृत श० १।५ ऋतु० ६।२५ 3 आग्रहपूर्वक—भग० ११।४१। सम०—दमनम् बलपूर्वक दबाना श० ७।३३ —हरणम् बलपूर्वक अपहरण।

प्रसमीक्षणम्, प्रसमीक्षा [प्र+सम्+ईक्ष्+ल्युट्, प्रसम्+ईक्ष+अङ+टाप्] विचारण, विचारविमर्श, निर्धारण।

प्रसयनम् [प्र+सि+ल्युट्] 1 बंधन, कसना 2 जाल।

प्रसरः [प्र+सृ+अप्] 1 आगे जाना, प्रगमन करना —श० १।२९ 2 मुक्त या निर्बाध गति मुक्त क्षेत्र, पहुँच गति—रघु० ८।२३, ११।२०, मुद्रा० ३।५, हि० १।१८६ 3. फैलाव, प्रसार, विस्तार, विस्तार, फैलना —शि० ९।७१ 4 विस्तार, आयाम, बड़ी मात्रा शि० ३।३५ 5 प्रचलन, प्रभाव—शि० ३।१०, 6. सरिता, प्रवाह, धारा, बाढ़—पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकर—गीत० ११ 7. समूह, 8. संयुक्तक युद्ध, लड़ाई 9 लोहे का बाण 10 चाल 11 विनम्र याचना।

प्रसरणम् [प्र+सृ+ल्युट्] 1. आगे जाना, दौड़ना, बहना 2. बच निकलना, भाग जाना 3. दूर तक फैलाना 4. शत्रु को घेरना 5. सौजन्य ।

प्रसरणि:,—णी [प्र+सृ+अनि, प्रसरणि+ङीष्] शत्रु को घेर लेना ।

प्रसर्पणम् [प्र+सृप्+ल्युट्] 1. चलना, सरकना, आगे बढ़ना २. व्याप्त करना, सब दिशाओं में फैलना ।

प्रस (ष) ल [प्र+सल्+अच्, पक्षे पृषो० सस्य ष] हेमन्त ऋतु ।

प्रसव: [प्र+सू+अप्] 1 जन्म देना, जनन, प्रसूति, जन्म, उत्पादन 2 बच्चे का जन्म, गर्भ मोचन, प्रसूति —यथा 'आसन्नप्रसवा' में 3 सन्तान, प्रजा, छोटे बच्चे, बालक केवल लोकप्रसवा मृषा -उत्तर० १, कु० ३।८७ 4 स्रोत मूल जन्मस्थान (आल० से भी) कि० २।४३ 5 फूल, मंजरी—प्रसवविभूतिषु भूरुहां विरक्त —शि० ७।४२, नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुता-माननें श्री: -मेघ०, कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितम्—११३, रघु० ९।२८, कु० १।५५, ४।८, १४, ८।५, ९, मा० ९।२७, ३१, उत्तर० २।२० 6. फल, उत्पादन । सम० – उन्मुख गर्भ से मुक्त होने वाला, उत्पन्न होने वाला पति प्रतीत प्रसवोन्मुखीं प्रियां ददर्श—रघु० ३।१२,—गृहम् प्रसूतिकागृह, जच्चाघर,—धर्मिन् (वि०) उपजाऊ, उर्वर, —बन्धनम् फूल या पत्ते की डंठल, वृन्त – वेदना, व्यथा प्रसव काल की पीड़ा, बच्चा जनने का कष्ट,—स्थली माता,—स्थानम् 1 प्रसूतिका-गृह, 2 जाल ।

प्रसवक: [प्रसवेन पुष्पादिना कायति शोभते प्रसव+कै+क] पियाल वृक्ष चिरौंजी का पेड़ ।

प्रसवनम् [प्र+सू+ल्युट्] 1 पैदा करना 2 बच्चे को जन्म देना, उपजाऊपन ।

प्रसवन्ति: (स्त्री०) [प्र+सू+णिच्, अन्तादेश] जच्चा स्त्री ।

प्रसवन्ती [प्र+सू+शतृ+ङीप्] जच्चा स्त्री न पश्येत् प्रसवन्तीं च तेजस्कामो द्विजोत्तम —मनु० ४।४४ ।

प्रसवितृ (पुं०) [प्र+सू+तृच्] पिता, प्रजनक ।

प्रसवित्री [प्रसवितृ+ङीप्] माता ।

प्रसव्य (वि०) [प्रगत सव्यात् - प्रा० स०] प्रतिकूल, व्युत्क्रान्त, बायाँ, उलटा ।

प्रसह (वि०) [प्र+सह्+अच्] सहनशील, सहिष्णु, सहन करने वाला,—ह: 1. शिकारी जानवर या पक्षी 2. मुकाबला, सहन शक्ति, विरोध ।

प्रसहन: [प्र+सह्+ल्युट्] शिकारी जानवर या पक्षी, —नम् 1. सामना करना, मुकाबला करना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना 3. पराजित करना, विजय प्राप्त करना 4. आलिंगन, परिरम्भण ।

प्रसह्य (अव्य०) [प्र+सह्+(क्त्वा) ल्यप्] 1. बल पूर्वक, प्रचण्डता के साथ, जबरदस्ती - प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकर-वक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात् भर्तृ० २।४, शि० १।२७. 2. अत्यधिक, अत्यंत ।

प्रसातिका [प्रगता साति. (नाश०) सो+क्तिन् - यस्या - प्रा० ब०, कप्+टाप्] एक प्रकार का चावल (छोटे दानों वाला) ।

प्रसाद: [प्र+सद्+घञ्] 1. अनुग्रह, कृपा, दाक्षिण्य, कल्याणकारिता - कुरु दृष्टिप्रसादं 'कृपा दर्शन दीजिए', इत्याप्रसादादस्यास्त्वं परिचर्यापरो भव रघु० १।९१, २।२२ 2. अच्छा स्वभाव, स्वभाव में कल्याणशीलता 3. धीरता, शान्ति, मन की स्वस्थता, सौम्यता, धैर्य, उत्तेजना का अभाव—भग० २।६४ 4. स्वच्छता निर्मलता, उज्ज्वलता, पारदर्शिता, (पानी या मन आदि की) पवित्रता—मञ्जुश्री रोष पदनकलुषा पुष्णतीव प्रसादम् - विक्रम० १।८, श० ७।३२, प्राप्तबुद्धि-प्रसादा —शि० ११।६, रघु० १७।१, कि० ९।२५, 5. प्रसादगुणयुक्तता, शैली की विशदता, मम्मट के अनुसार, तीन गुणों में एक—प्रसाद गुण, परिभाषा:-शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव य:, व्याप्नो-त्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थिति—काव्य० ८, यावदर्थकपदत्वरूपमर्थवैमल्यं प्रसाद, या मुलभाषा वाक्यार्थं करतलबदरमिव निवेदयन्ती घटना प्रसादस्य - रस०, दे० काव्या० १।४५, सा० द० ६११ भी 6. भगवान् की मूर्ति को भोग लगाया हुआ नैवेद्य का अवशिष्ट 7. चढ़ावा, पुरस्कार 8. आशिकर भेंट 9. कुशल, क्षेम । सम० - उन्मुख (वि०) अनुग्रह करने के लिए तत्पर पराङ्मुख (वि०) 1. अनुग्रह को वापिस खींचने वाला 2. जो किसी के अनुग्रह की अपेक्षा न करे,—पात्रम् अनुग्रह का पात्र,—स्थ (वि०) 1. कृपालु, मंगलप्रद 2. शान्त, तुष्ट, आनंदित ।

प्रसादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [प्र+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्फटिक सदृश विशद करने वाला 2. तसल्ली देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3 आनन्दित करने वाला, खुश करने वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

प्रसादन (वि०) (स्त्री० नी) [प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पवित्र करने वाला स्वच्छ करने वाला, निर्मल या विशुद्ध करने वाला—फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादनम् - मनु० ६।६७ 2. सांत्वना देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3. खुश करने वाला, आनन्दित करने वाला, —न: राजकीय तंबू,—नम् 1. निर्मल करना, पवित्र करना 2. सांत्वना देना, ढाढस बंधाना, शान्त करना, मन स्वस्थ करना, 3. प्रसन्न करना, तुष्ट करना 4. कल्याण करना, अनुग्रह करना,—ना 1. सेवा, पूजा 2. मिजाजी करना ।

प्रक्षालित (भू० क० कृ०) [प्र+क्षल्+णिच्+क्त] 1. पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. धुला किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ 3. पूरा किया हुआ 4. धीरज बंधाया हुआ सांत्वना दिया हुआ।

प्रसाधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्र+साध्+ण्वुल्] 1. निष्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला 2. पवित्र करने वाला, छानने वाला 3. सजाने वाला, अलंकृत करने वाला, —कः पार्श्वचर, अपने स्वामी को वस्त्र पहनाने वाला सेवक।

प्रसाधनम् [प्र+साध्+ल्युट्] 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, करवाना 2. व्यवस्थित करना, क्रमबद्ध करना 3. सजाना, अलंकृत करना, विभूषित करना, शरीरसज्जा, वेशभूषा—कु० ४।१८ 4. सजावट, आभूषण, सजाने या विभूषित करने का साधन—कु० ७।१३, १०,—नः,—नम्,—नी, कंघी। सम०—विधिः सजावट, शृंगार,—विशेषः सबसे ऊँचा शृंगार—प्रसाधनविधेः प्रसाधनविशेषः—विक्रम० २।३।

प्रसाधिका [प्रसाधक+टाप्+इत्वम्] सेविका, वह दासी जो अपनी स्वामिनी के शृंगार की देख-रेख करे—प्रसाधिकालम्बितमग्रपादमाक्षिप्य—रघु० ७।७।

प्रसाधित (भू० क० कृ०) [प्र+साध्+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ, पूर्ण किया हुआ 2. विभूषित, सुसज्जित।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2. फैलाव, प्रसृति, विस्तार, प्रसारण 3. बिछावन 4. चारा-ईंधन के लिए देश में इधर उधर फैल जाना।

प्रसारणम् [प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. विदेशों में फैलना, बढ़ना, वृद्धि, प्रसृति, फैलाव 2. फैलाना—यथा 'बाहुप्रसारणम्' में 3. शत्रु को घेरना 4. ईंधन और चारा के लिए समस्त देश में फैल जाना 5. अर्धस्वर वर्णों (य, र, ल, व) का स्वरों (इ, ऋ, लृ, उ) में बदल जाना, संप्रसारण।

प्रसारिणी [प्र+सृ+णिनि+ङीप्] शत्रु को घेरना।

प्रसारित (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+णिच्+क्त] 1. प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ, प्रसृत किया हुआ, बढ़ाया हुआ 2. (हाथों की भांति) फैलाया हुआ 3. प्रदर्शित किया हुआ, रक्खा हुआ, (बिक्री के लिए) रक्खा हुआ।

प्रसाहः [प्र+सह्+घञ्] अपने प्रभाव में लाना, जीत लेना, पराजित करना।

प्रसित (भू० क० कृ०) [प्र+सि+क्त] 1. बांधा हुआ, लगा हुआ 2. संलग्न, व्यस्त, काम में लगा हुआ 3. तुला हुआ, अत्यंत इच्छुक, लालायित (करण० या अधि० के साथ)—अलकया अलकायां वा प्रसितः—सिद्धा०, रघु० ८।२३,—तम् पीब, मवाद।

प्रसितिः (स्त्री०) [प्र+सि+क्तिन्] 1. जाल 2. पट्टी 3. बंधन, चमड़े की पट्टी।

प्रसिद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+सिध्+क्त] 1. विख्यात, विख्यात, मशहूर 2. सजा हुआ, अलंकृत, विभूषित रघु० १८।४१, कु० ५।९, ७।१६।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) [प्र+सिध्+क्तिन्] 1. कीर्ति, ख्याति, मशहूरी, विभूति 2. सफलता, निष्पन्नता, पूर्ति—कि० ३।३९ मनु० ४।३ 3. शृंगार, सजावट।

प्रसीदिका [प्रसादयतेऽनया प्र+सद्+ण्वुल्, इत्वम्, टाप्, सीदादेश] वाटिका, छोटा उद्यान।

प्रसुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+स्वप्+क्त] 1. सोया हुआ, निद्रित 2. प्रगाढ़ निद्रा में।

प्रसुप्तिः (स्त्री०) [प्र+स्वप्+क्तिन्] 1. निद्राकुलता, प्रगाढ़ निद्रा 2. लकवे का रोग।

प्रसू (वि०) [प्र+सू+क्विप्] 1. प्रकाशित करने वाला, पैदा करने वाला, जन्म देने वाला—स्त्रीप्रसूश्चाधिवेत्तव्या—याज्ञ० १।७३—(स्त्री०) 1. माता—मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ—अमर० 'जनक-जननी' 2. घोड़ी 3. फैलने वाली बेल 4. केला।

प्रसूका [प्र+सू+कन्+टाप्] घोड़ी।

प्रसूत (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त] 1. उत्पन्न, जनित 2. पैदा किया हुआ, जन्म दिया हुआ, उत्पादित,—तम् 1 फूल 2 कोई उपजाऊ स्रोत —ता जच्चा स्त्री।

प्रसूतिः (स्त्री०) [प्र+सू+क्तिन्] 1 प्रजनन जनन, प्रसव 2 जन्म देना पैदा करना, गर्भमोचन, बच्चे को जन्म देना—रघु० १४।६६ 3 बछड़े को जन्म देना 4 अंडे देना—नै० १।१३५ 5 जन्म, उत्पादन, जनन —रघु० १०।५३ 6. दर्शन, प्रकट होना, (फूलों का विकसन —रघु० ५।१४, कु० १।४२ 7 फल, पैदावार 8 संतति, प्रजा, अपत्य—रघु० १।२५, ७७, २।४ ५।७, कु० २।७, श० ६।२४ 9 उत्पादक, जनक प्रजाष्टा—रघु० २।६३ 10 माता। सम०—जम् प्रसव से उत्पन्न होने वाली पीड़ा,—वायुः प्रसव के समय गर्भाशय में उत्पन्न होने वाली वायु।

प्रसूतिका [प्रसूत+ठन्+टाप्] जच्चा स्त्री, वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चे को जन्म दिया है।

प्रसून (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त, तस्य नत्वम्] पैदा किया गया, उत्पन्न,—नम् 1. फूल—लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्यागमः कुतः—उत्तर० ५।२०, रघु० २।१० 2. कली, मंजरी 3. फल सम०—इषुः,—बाणः,—बाणः कामदेव का विशेषण,—वर्षः पुष्पवृष्टि।

प्रसूनकम् [प्रसून+कन्] 1. फूल 2. कली, मंजरी।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1. आगे बढ़ा हुआ 2. फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ 3. फैलाया गया, प्रसारित किया गया 4. लंबा, लम्बा किया हुआ

5 व्यस्त, लगा हुआ 6 फुर्तीला तेज 7. सुशील, विनीत —तः हाथ की खुली हथेली, अञ्जलि —तः, -तम् दो पल का माप,—ता टाग। सम०—अः पुत्रों का विशिष्ट वर्ग, व्यभिचार जनित पुत्र, कुण्डगोलककप।

प्रसृति (स्त्री०) [प्र + सृ + क्तिन्] 1 आगे जाना, प्रगति 2 बहना 3 फैलाये हुए हाथ की हथेली, अञ्जलि 4 मुट्ठी भर (यही दो पल की माप समझी जाती है) परिक्षीण, कश्चिस्प्रसृतयति प्रसाना प्रसृतये मनु० २।४५, याज्ञ० २।११२।

प्रसृत्वर (वि०) [प्र + सृ + क्वरप्, तुकागम] इधर उधर फैलने वाला भामि० ४।१

प्रसृमर (वि०) [प्र + सृ + क्मरच] बहता हुआ चूने वाला टपकने वाला।

प्रसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र + सृज् + क्त] 1 एक ओर डाला हुआ, त्यागा हुआ 2 चायल क्षमिप्रस्त —ष्टा फैलाई हुई अंगुली (अङ्गुल्य प्रसृता यास्तु ता प्रसृष्टा उदीरिता)।

प्रसेकः [प्र + सिच् + घञ्] 1 बहना रिसना, टपकना 2 छिड़कना आर्द्र करना 3 उद्गिरण प्रस्रवण - सुश्रु० २।६ 4 उद्वमन कै।

प्रसेदिका [—प्रसीदिका पृषो०] छोटा उद्यान वाटिका।

प्रसेव, प्रसेवक [प्र + सिव् + घञ्, प्रसेव + कन्] 1 थैला, (अनाज के लिए) बोरी 2 चमड़े की बोतल 3 काष्ठ का बना छोटा उपकरण जो वीणा की गर्दन के नीचे लगाया जाता है जिससे कि उसका स्वर अपेक्षाकृत कुछ गहरा हो जाय।

प्रस्कन्दनम् [प्र + स्कन्द् + ल्युट्] 1 कूद जाना, छलांग लगाना 2. विरेचन, भूमाव अतिसार, —नः शिव का विशेषण।

प्रस्कन्न (भू० क० कृ०) [प्र + स्कन्द् + क्त] 1 फलांगा हुआ, छलांग लगाकर पार किया हुआ 2 पतित टपका हुआ 3 परास्त —नः 1 जातिबहिष्कृत 2. पापी, अतिक्रमणकारी।

प्रस्कुम्भ [प्रगत कुम्भ चक्रम् प्रा० स०] गोलाकार वेदी।

प्रस्खलनम् [प्र + स्खल् + ल्युट्] 1 लड़खड़ाना 2 डगमगाना, गिर जाना।

प्रस्तरः [प्र + स्तृ + अच्] 1. पर्णशय्या, पुष्पशय्या 2 पर्यंक, खटिया 3 समतल शिखर, हमवार, समतल 4. पत्थर, चट्टान 5 मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

प्रस्तरणम्,—णा [प्र + स्तृ + ल्युट्] 1 पलंग 2 शय्या 3 बिछौना।

प्रस्तारः [प्र + स्तृ + घञ्] 1. बखेरना, फैलाना, आच्छादित करना 2. पुष्पशय्या, पर्णशय्या 3 पलंग, खाट 4. चपटी सतह, समतल हमवार 5. वनस्थली, जंगल 6 (छन्द० में) समाविष्ट भेदो समेत छन्द की ह्रस्व तथा दीर्घ मात्राओं की द्योतिका तालिका।

प्रस्तावः [प्र + स्तु + घञ्] 1. आरंभ, शुरू 2 आमुख 3 उल्लेख, संकेत, सदर्भ नाममात्रप्रस्ताव श० ३ 4. अवसर, मौका, समय, ऋतु, उपयुक्तकाल स्वराप्रस्तावोऽय न खलु परिहासस्य समय - मा० ९।४८, शिष्याय बृहतां पत्यु प्रस्तावमदिशद्दृशा शि० २८ 5 प्रवचन का प्रयोजन, विषय, शीर्षक 6 नाटक की प्रस्तावना दे० 'प्रस्तावना' नीचे। सम० —यज्ञ ऐसा वार्तालाप जिसमें प्रत्येक अन्तर्वादी भाग ले।

प्रस्तावना [प्र + स्तु + णिच् + युच् + टाप्] 1. प्रचलित या उल्लिखित होने का कारण बनना, प्रशंसा, सराहना 2 शुरू आरम्भ—वायवामचरितप्रस्तावनाडिण्डिम महावी० १।५४ 3 उपोद्घात भूमिका, आमुख—प्रस्तावना इव कारणाम्कस्य मा० ७ 4 नाटक के आरंभ में सूत्रधार तथा किसी एक पात्र के बीच में हुआ परिचयात्मक वार्तालाप (इसमें नाटककार तथा उसकी रचना का परिचय देकर श्रोताओं के सम्मुख नाटक की घटनाओं को रक्खा जाता है) परिभाषा के लिए दे० 'आमुख'।

प्रस्तावित (वि०) [प्र + स्तु + णिच् + क्त] 1 आरब्ध किया हुआ शुरू किया हुआ 2 उल्लिखित, इंगित मा० ३।३।

प्रस्तिरः [=प्रस्तर नि० इत्वम्] पर्णशय्या, पुष्पशय्या।

प्रस्तीत,—म (वि०) [प्र + स्त्यै + क्त, सम्प्र०, पक्षे तस्य म] 1 कोलाहल करने वाला, शब्दायमान 2. भीड़-भड़क्का झुण्ड बनाते हुए।

प्रस्तुत (भू० क० कृ०) [प्र + स्तु + क्त] 1 जिसकी प्रशंसा की गई हो, या स्तुति की गई हो 2. आरब्ध किया हुआ, शुरू किया हुआ 3 निष्पन्न, कृत, कार्यान्वित 4 घटित 5 उपागत 6 प्रस्तुत किया गया, उद्घोषित, विचाराधीन या विचारणीय (दे० प्रपूर्वक स्तु) —तम् 1 उपस्थित विषय, विचाराधीन विषय अधुना प्रस्तुतमनुसिद्धताम् 2. (अलं० शा०) विचार के विषय की रूपरेखा बनाना, उपमेय, दे० 'प्रकृत', अप्रस्तुतप्रशंसा या या तैव प्रस्तुताश्रया काव्य० १०। सम०—अङ्कुरः एक अलंकार जिसमें श्रोता के मन में निहित किसी बात को प्रकाशित करने के लिए सचारी परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है, दे० चन्द्रा० ५।६४, और कुव० (प्रस्तुताङ्कुर के नीचे)।

प्रस्थ (वि०) [प्र + स्था + क] 1 जाने वाला, दर्शन करने वाला, पालन करने वाला—यथा 'वानप्रस्थ' में 2. यात्रा पर जाने वाला 3. फैलाने वाला, विस्तार करने

वाला 4 दृढ़, स्थिर, -स्थः,—स्थम् 1 समतलभूमि, चौरस मैदान, जैसा कि औषधिप्रस्थ या इन्द्रप्रस्थ में 2. पर्वत के शिखर पर समतल या चौरस भूमि,—प्रस्थं हिमाद्रेर्मृगनाभिगन्धि किंचित्क्वणत्किंनरमध्युवास—कु० १।५४, मेघ० ५८ 3 पहाड़ का शिखर या चोटी —शि० ४।११ (यहाँ यह चौथे अर्थ को भी प्रकट करता है) 4 एक विशिष्ट माप जो ३२ पलों के बराबर होता है 5 'प्रस्थ' के तोल के बराबर कोई वस्तु। सम०—पुष्पः तुलसी का एक भेद, दौना मरुआ।

प्रस्थम्पच (वि०) [प्रस्थ+पच्+अच्, मुमागम] प्रस्थमात्र पकाने वाला।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1 प्रयाण करना, कूच करना, विदा, प्रगमन करना -प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनार्थम् —श० ५।३, रघु० ४।८८, मेघ० ४१, अमरु ३१ 2 पहुँचना—कु० ६।६१ 3 कूच करना, किसी सेना का या आक्रामक का कूच करना 4 प्रणाली पद्धति 5 मृत्यु, मरण 6 निकृष्ट श्रेणी का नाटक—दे० सा० द० २७६, ५४४।

प्रस्थापनम् [प्र+स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 भेजना तितर-बितर करना, प्रेषित करना 2 दूतावास में नियुक्ति 3. प्रमाणित करना, प्रदर्शन करना 4 उपयोग करना, काम में लगाना 5. पशुओं का अपहरण।

प्रस्थापित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+णिच्+क्त पुकागम] 1 भेजा गया, प्रेषित 2 स्थापित, सिद्ध।

प्रस्थित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+क्त] प्रयात, आगे बढ़ा हुआ, विदा हुआ, विसर्जित यात्रा पर गया हुआ (दे० प्रपूर्वक 'स्था')।

प्रस्थितिः (स्त्री०) [प्र+स्था+क्तिन्] 1 चले जाना, विदा होना 2 कूच करना, यात्रा।

प्रस्नः [प्र+स्ना+क] स्नान-पात्र।

प्रस्नवः [प्र+स्नु+अप्] 1 उमड़ कर बहना बह निकलना, नि:स्रवण—उत्तर० ६।२२ 2. (दूध की) धार या प्रवाह—रघु० १।८४।

प्रस्नुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्नु+क्त] झरता हुआ रिसता हुआ, बहकर निकलता हुआ। सम०—स्तनी वह स्त्री जिसकी छाती से (मातृस्नेहातिरेक के कारण) दूध टपकता है—उत्तर० ३।

प्रस्नुषा [प्रा० स०] पौत्रवधू।

प्रस्पन्दनम् [प्र+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कन, थरथराहट, कंपकंपी।

प्रस्फुट (वि०) [प्र+स्फुट्+क] 1 खिला हुआ, विकसित, (फूल आदि) फूला, हुआ 2. उद्घोषित, प्रकाशित, (रिपोर्ट आदि) फैलाई हुई 3. सरल, साफ, प्रकट, स्पष्ट।

प्रस्फुरित (भू० क० कृ०) [प्र+स्फुर्+क्त] ठिठुरता हुआ, कांपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान।

प्रस्फोटनम् [प्र+स्फुट्+ल्युट्] 1 फूट निकलना, खिलना, मुकुलित होना 2 स्पष्ट या साफ करना, खोलना, प्रकट करना 3 टुकड़े-टुकड़े करना 4 खिलाना, विकसित करना 5 अनाज फटकना 6 छाज 7 छीनना पीटना।

प्रस्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+स्रंस्+णिनि] समय से पूर्व गिर जाने वाला (गर्भ), कच्चा गिरना।

प्रस्रवः [प्र+स्रु+अप्] 1 बूँद-बूँद गिरना, टपकना, बहना रिसना 2 बहाव, धारा 3 औड़ी या स्तन से टपकने वाला दूध - प्रस्रवेण (पाठान्तर 'प्रस्नवेन') अभिवर्षन्ती वत्सालोकप्रवर्तिना—रघु० १।८४ 4 मूत्र, -वा -(ब० व०) उमड़ते हुए आँसू।

प्रस्रवणम् [प्र+स्रु+ल्युट्] 1 बह निकलना उमड़ना, टपकना, झरना, बूँद बूँद गिरना 2 स्तन या औड़ी से दूध बहना—(वृक्षकान्) घटस्तनप्रस्रवणैर्व्यवर्धयत्—कु० ५।१४ 3 जलप्रपात, प्रपातिका निर्झर 4 झरना, फौवारा—समाविना प्रस्रवणो ममन्तात्—ऋतु० २।१३ मनु० ८।२४८ याज्ञ० १।१५९ 5 नाली टोंटी 6 पहाड़ी सरिताओं से बना पोखर पल्वल 7 स्वेद, पसीना 8 मूत्रोत्सर्ग -णः एक पहाड़ का नाम —अनस्थानमध्यगो गिरिः प्रस्रवणो नाम उत्तर० १।

प्रस्रावः [प्र+स्रु+घञ्] 1 बहाव उमड़न मूत्र।

प्रस्रुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्रु+क्त] उमड़ा हुआ टपका हुआ बूँद-बूँद कर गिरा हुआ, रिसा हुआ।

प्रस्वनः (स्वा) नः [प्र+स्वन्+अप्, घञ् वा] ऊँची आवाज़।

प्रस्वापः [प्र+स्वप्+घञ्] 1 निद्रा 2 स्वप्न 3 निद्रा लाने वाला अस्त्र।

प्रस्वापनम् [प्र+स्वप्+णिच्+ल्युट्] 1 सुलाना निद्रित करना 2 ऐसा अस्त्र जो आक्रान्त व्यक्ति को सुला दे रघु० ७।६१।

प्रस्विन्न (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+क्त] पसीना आया हुआ पसीने से तर।

प्रस्वेदः [प्र+स्विद्+घञ्] बहुत अधिक पसीना।

प्रस्वेदित (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+णिच्+क्त] 1 स्वेदाक्लान्त पसीने से सराबोर, पसीना आया हुआ 2 पसीना लाने वाला, गर्म।

प्रहणनम् [प्र+हन्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रहत [प्र+हन्+क्त] 1 घायल, वध किया हुआ, मारा हुआ 2 पीटा हुआ, (ढोल आदि) बजाना -ढ स्वयं प्रहतपुष्कर. कृती—रघु० १९।१४, मेघ० ६४ 3 पीछे ढकेला हुआ, विजित, पराजित 4. फैलाया हुआ, फुलाया हुआ 5. सटा हुआ 6. (पगडंडी) पिटा-पिटा, बारम्बार पतिक 7. निष्णात, विद्वान्।

प्रहरः [प्र+हृ+अप्] दिन का आठवाँ भाग, प्रहर (तीन घंटे का समय)—प्रहरे प्रहरेऽसकृदोच्चारितानि नामानगे-ऽत्यादिपदानि न प्रमाणम् - तर्क० ।

प्रहरकः [प्रहर+कन्] एक पहर ।

प्रहरणम् [प्र+हृ+ल्युट्] 1. प्रहार करना, मारना 2. डालना, फेंकना 3. धावा करना, आक्रमण करना 4. घायल करना 5. हटाना, बाहर निकालना 6. शस्त्र अस्त्र, धा (उर्वशी) सुकुमारं प्रहरणं महेन्द्रस्य —विक्रम० १, रघु० १३।७३ भग० १।९, मा० ८।९ 7· संग्राम, युद्ध, लड़ाई 8. ढकी हुई पालकी या डोला ।

प्रहरणीयम् [प्र+हृ+ अनीयर्] अस्त्र, शस्त्र ।

प्रहरिन् (पुं०) [प्रहर +इनि] 1. रखवाला 2. पहरेदार, घटी वाला ।

प्रहर्तृ (वि०) [प्र+हृ+तृच्] 1. प्रहार करने वाला, पीटने वाला, हमला करने वाला 2. लड़ने वाला, सयोधी, योद्धा 3. तीरंदाज, निशाने बाज, धनुर्धर ।

प्रहर्षः [प्र+हृष्+घञ्] 1 अत्यधिक हर्ष, अत्यानन्द, उल्लास —गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि —रघु० ३।१७ 2. लिङ्ग का खड़ा होना ।

प्रहर्षणम् [प्र+हृष्+ल्युट्] उल्लसित करना, प्रहृष्ट करना, आनन्दित करना,—णः बुध ग्रह ।

प्रहर्षण (वि) णी [प्र+हृष्+णिच्+ल्युट्+ङीप्+प्र +हृष्+णिच्+णिनि+ङीप्] 1. हल्दी 2 एक छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट ।

प्रहर्षुलः [प्र+हृष्+उलच्] बुध ग्रह ।

प्रहसनम् [प्र+हस्+ल्युट्] 1. जोर की हँसी, अट्टहास, खिलखिलाकर हँसना 2. मजाक, ठिठोली, व्यंग्योक्ति, उपहास—धिक् प्रहसनम् —उत्तर० ४ 3. व्यंग्यलेख, व्यंग्य 4. स्वांग, तमाशा, हँसी का सुखान्त नाटक — सा० द० में दी गई परिभाषा- -भाणवत्सन्धिसन्ध्यं-कलास्याङ्गाङ्कैर्विनिर्मितम्, भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम् — ५५३ तथा आगे, उदा० 'कन्दर्पकेलि' ।

प्रहसन्ती [प्र+हस्+शतृ+ङीप्] 1 एक प्रकार की चमेली, जुही, यूथिका, वासन्ती 2. एक बड़ी अंगीठी ।

प्रहसित (भू० क० कृ०) [प्र+हस्+क्त] हँसता हुआ,—तम् हँसी, हास्य ।

प्रहस्तः [प्रततः प्रसृतो हस्तः —प्रा० स०] 1 खुला हाथ जिसकी अँगुलियाँ फैली हों, (चपेट) 2. रावण के एक सेनापति का नाम) ।

प्रहाणम् [प्र+हा+ल्युट्] त्यागना, छोड़ना, भूल जाना —मनु० ५।५८ ।

प्रहाणिः (स्त्री०) [प्र+हा+नि, णत्वम्] 1. त्यागना 2. कमी, अभाव ।

प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1· वार करना, पीटना, चोट करना—याज्ञ० ३।२४८ 2. घायल करना, मार डालना 3 आघात, मुक्का, चोट, ठोकर, चोल—रघु० ७।४८, मुष्टिप्रहार, तलप्रहार आदि 5. ठोकर— जैसा कि पादप्रहारः और लताप्रहारः में 6. गोली मारना ।

प्रहारणम् [प्र+हृ+णिच्+ल्युट्] वाञ्छनीय उपहार ।

प्रहासः [प्र+हस्+घञ्] 1. जोर की हँसी, अट्टहास 2. मजाक, दिल्लगी, हँसी 3. व्यंग्योक्ति, व्यंग्य 4. नर्तक, नट, पात्र 5. शिव 6. दर्शन, दिखावा —वेणी० २।२८ 7. एक तीर्थ स्थान का नाम—तु० प्रभास ।

प्रहासिन् (पुं०) [प्र+हस्+णिच्+णिनि] विदूषक, मसखरा ।

प्रहिः [प्र+हि+क्विप्] कुआँ ।

प्रहित (भू० क० कृ०) [प्र+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ, फैलाया हुआ 3 भेजा हुआ, प्रेषित, निदेशित— विचारमार्गप्रहितेन चेतसा कु० ५।४२ 4. छोड़ा हुआ, निशाना लगाया हुआ (तीर आदि का) 5. नियुक्त किया गया 6. समुचित, उपयुक्त, -तम् चाट, चटनी ।

प्रहीण (भू० क० कृ०) [प्र+हा+क्त, ईद्, तस्य नः, णत्वम्] छोड़ा गया, बाकी किया गया, त्यागा गया, -णम् विनाश, निराकरण, घाटा ।

प्रहुतः, -तम् [प्र+हु+क्त] भूतयज्ञ, बलिवैश्वदेव, दैनिक पाँच यज्ञों में एक, तु० मनु० ३।७४ ।

प्रहृत (भू० क० कृ०) [प्र+हृ+क्त] पीटा गया, आघात किया गया, चोट किया गया, घायल किया गया । —तम् मुक्का, प्रहार, चोट ।

प्रहृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+हृष्+क्त] 1. खुश, प्रसन्न, आनंदित, आह्लादित 2. पुलकित करना, रोमांचित करना (रोंगटे खड़े होना) । सम०—आत्मन्—चित्त, —मनस् (वि०) मन से खुश, हृदय से आनन्दित ।

प्रहृष्टकः [प्रहृष्ट+कन्] काक, कौवा ।

प्रहेलकः [प्र+हिल्+ण्वुल्] 1. एक प्रकार का पुआल, मीठी रोटी 2. पहेली—दे० नी० 'प्रहेलिका' ।

प्रहेला [प्र+हिल्+अ+टाप्] मुक्त या अनियंत्रित व्यवहार, शिथिल आचरण, रंगरेली, विहार ।

प्रहेलिः (स्त्री०), प्रहेलिका [प्र+हिल्+इन्, प्रहेलि+कन् +टाप्] पहेली, बुझौवल, कूट प्रश्न, विदग्धमुख-मंडन में दी गई परिभाषा—व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्, यत्र बाह्यान्तरावर्थौ कथ्येते सा प्रहेलिका । यह आर्थी और शाब्दी दो प्रकार की है । तरुण्यालिङ्गितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः, गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः । (यहाँ पहेली का उत्तर है - ईषज्जलपूर्णकुम्भः) यह आर्थी का उदाहरण है । सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्त-रक्ताप्यसितैव नित्यं यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती का

नाम कान्तेति निवेदयतु । (यहाँ पहेली का उत्तर है -- सारिका) यह शाब्दी का उदाहरण है। दण्डी ने सोलह प्रकार की पहेलियाँ बतलाई हैं-- काव्या० ३।९६—१२४।

प्रह्लन (भू० क० कृ०) [प्र+ ह्लाद्+ क्त, ह्रस्व] खुश, आनन्दित, प्रसन्न।

प्रह्ला (ह्ला) दः [प्र+ह्लाद्+घञ्, रलयोरैक्यम्] 1. अत्यधिक हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द 2 शब्द, आवाज 3 हिरण्यकशिपु राक्षस के पुत्र का नाम (पद्मपुराण के अनुसार प्रह्लाद अपने पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। जब उसने हिरण्यकशिपु के यहाँ जन्म लिया तो भी उसकी विष्णु के प्रति अनन्यभक्ति बनी रही। उसका पिता यह नहीं चाहता था कि उसका अपना पुत्र ही उसके घोर शत्रु देवों का ऐसा पक्का भक्त बने। अतः उससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से उसने अपने पुत्र प्रह्लाद को नाना प्रकार की यातनाएँ दीं। परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा, उसने और भी अधिक उत्साह से इस बात का उपदेश करना आरम्भ कर दिया कि विष्णु सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् हैं। हिरण्यकशिपु ने क्रोधावेश में प्रह्लाद से पूछा कि बता कि यदि विष्णु सर्वव्यापक है तो इस भवन के स्तंभ में वह मुझे क्यों नहीं दिखाई देता? इस पर प्रह्लाद ने स्तंभ पर मुक्के का आघात किया (दूसरे मतानुसार स्वयं हिरण्यकशिपु ने क्रोध में भरकर अपने पुत्र के विश्वास की मूर्खता का उसे विश्वास दिलाने के लिए स्वयं स्तंभ को ठोकर मारी) फलतः विष्णु नरसिंह (अर्ध मनुष्य तथा अर्ध सिंह) के रूप में प्रकट हुआ और हिरण्यकशिपु के टुकड़े टुकड़े कर दिये। प्रह्लाद अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बुद्धिमत्ता पूर्वक, तथा न्यायपूर्वक राज्य किया)।

प्रह्ला(ह्ला)दन (वि०) [प्र+ह्लाद्+णिच्+ल्युट्, रलयोरैक्यम्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला —रघु० १६।४,—नम् हर्ष या प्रसन्नता पैदा करना, आनन्द देना, खुश करना—यथा प्रह्लादनाच्चन्द्र —रघु० ४।१२।

प्रह्व (वि०) [प्र+ह्व+वन्, नि० साधु] 1 ढलुवाँ, तिरछा, झुका हुआ शि० १२।५६ 2. झुकता हुआ, नीचे को झुका हुआ, विनम्र,— विनीत एव प्रह्वोऽस्मि भवन्तं एवा विज्ञापना च म —मह०वी० १।४७, ६।१७ 3. दीन, विनीत, सुशील, विनयी— प्रह्वेष्वनिर्बन्धरुषो हि सन्तः—रघु० १६।८० 4. अनुरक्त, भक्त, व्यस्त, आसक्त। सम०—अञ्जलि (वि०) सम्मान के चिह्न स्वरूप दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुकाए हुए।

प्रह्वयति (ना० धा०—पर०) विनीत करना, वशवर्ती बनाना।

प्रह्लिका (स्त्री०) दे० प्रहेलिका।

प्रह्वायः [प्र+ह्वे+घञ्] बुलावा, आमन्त्रण, निमन्त्रण।

प्रांशु (वि०) [प्रकृष्टा अंशवो यस्य—प्रा० ब०] 1 ऊँचा, लंबा, कद्दावर, ऊँचे कद का (मनुष्य)—शालप्रांशुर्महाभुज —रघु० १।१३, १५।१९ 2 लंबा, बढ़ाया हुआ —श० २।१५,—शुः लंबा मनुष्य, बड़े कद का आदमी—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामन — रघु० १।३।

प्राक् (अव्य०) [प्राचि सप्तम्यर्थे अस्ति तस्य लुक्] 1 पहले (अपा० के साथ) —सकर्माणि निर्मिमाणि प्राक्प्रभातात्ततो मम भट्टि० ८।१०, ९, प्राक् सृष्टे केवलात्मने कु० २।४, रघु० १४।७८, श० ५।२१ 2 सबसे पहले, पहले ही—प्रमन्यव प्रागपि कोशलेन्द्रे रघु० ७।३४ 3 पहले, पूर्व पूर्व अंश में (पुस्तक के)—इति प्रागेव निर्दिष्टम् मनु० १।७१ 4 पूर्व में, से पूर्व दिशा में ग्रामात्प्राक् पर्वत 5 सामने 6 जहाँ तक हो वहाँ तक, पर्यंत, तक प्राक् कडारात।

प्राकट्यम् [प्रकट+ष्यञ्] प्रकट करना प्रकाशन करना, कुख्याति।

प्राकरणिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकरण+ठक्] विचारणीय विषय से संबंध रखने वाला, प्रस्तुत विषय (अलंकार शास्त्रियों द्वारा प्राय 'उपमेय' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) से संबद्ध —अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुतप्रशंसा—काव्य० १०।

प्राकर्षिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रकर्ष+ठक] श्रेष्ठतर या अधिक अच्छा समझा जाने का अधिकारी।

प्राकाशिकः [प्र+आ+कश्+इकन्] 1 लौंडा, गांडू 2 दूसरे की स्त्री से अपनी जीविका कमाने वाला।

प्राकाम्यम् [प्रकाम+ष्यञ्] 1 इच्छा की स्वतन्त्रता —प्राकाम्य ते विभूतिषु- कु० २।११ 2 स्वेच्छाचारिता 3 अनिवार्य संकल्प, शिव की आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक (जिसकी प्राप्ति से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं) दे० 'सिद्धि'।

प्राकृत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [प्रकृति+अण्] 1 मौलिक, नैसर्गिक, अपरिवर्तित, अविकृत—स्वातामिथो मिथे च सहजप्राकृतावपि —शि० २।३६, (इस पर देखो मल्लि०) 2 प्रचलित, सामान्य, साधारण 3. असंस्कृत, गंवार, असभ्य, अशिक्षित प्राकृत इव परिभूयमानमात्मानं न रुणत्सि—का० १४६, भग० १८।२८ 3. नगण्य, महत्त्वहीन, तुच्छ —मुद्रा० १, 4. प्रकृति से उत्पन्न प्राकृतो लयः 'प्रकृति में ही पुनः लीन होना' 5 प्रान्तीय, देहाती (बोली), दे० नी०,—तः नीचा मनुष्य, साधारण व्यक्ति, देहाती पुरुष,—तम् एक देहाती या प्रान्तीय बोली जो संस्कृत से निकली तथा उससे मिलती-जुलती है—प्रकृतिः

संस्कृतं तद्भवं तत्समं देश्यं च प्राकृतम्—हेम० (इनमें बहुत सी बोलियां संस्कृत नाटकों में निम्न श्रेणी के पात्रों या स्त्री पात्रों द्वारा बोली जाती हैं) तन्मूलस्तत्समो देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः—काव्या० १।३३, ३४, ३५ त्वमप्यस्मादृशजनयोग्ये प्राकृतमार्गे प्रवृत्तोऽसि—विद्ध० १। सम०—अरिः नैसर्गिक शत्रु अर्थात् पड़ौसी देश का शासक दे०, शि० २।२६ पर मल्लि०,—उदासीनः नैसर्गिक तटस्थ अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक मित्र राज्य के परे है,—ज्वरः सामान्य या साधारण बुखार,—प्रलयः विश्व का पूर्ण विघटन,—मित्रम् नैसर्गिक मित्र अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक शत्रु राज्य से मिला हुआ है (अथवा जिसका देश उस देश से पृथक् है जिसके साथ मित्रता का संबंध हो चुका है)।

प्राकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकृति+ठञ्] 1 नैसर्गिक, प्रकृति से उत्पन्न—महावी० ७।२१ 2 भ्रान्तिजनक भ्रमोत्पादक।

प्राक्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राच्+ट्यु, तुडागम] 1 पहला, पूर्व का, पिछला—प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः—कु० १।३० 2 पुराना, प्राचीन, पहले का 3 पूर्वजन्म से संबद्ध, या पूर्वजन्म में किये हुए कार्य—संस्काराः प्राक्तना इव—रघु० १।२०, कु० ६।१०।

प्राखर्यम् [प्रखर+ष्यञ्] 1 पैनापन 2 तीक्ष्णता 3 दुष्टता।

प्रागल्भ्यम् [प्रगल्भ+ष्यञ्] 1 साहस, भरोसा—निःसाध्वसत्वं प्रागल्भ्यम्—सा० द० 2 घमंड अहंकार, 3 प्रवीणता, कुशलता 4 विकास बड़प्पन, परिपक्वता—बुद्धिप्रागल्भ्य, तमःप्रागल्भ्य आदि 5 प्रकटीकरण, प्रतीति—अवाप्य प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये—काव्य० १० 'जो प्रतीत हुआ 6 वाक्पटुता—प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य विद्या शस्त्रं यथा कापुरुषस्य हस्ते (यहाँ 'प्रागल्भ्य' का अर्थ 'साहस' भी है)—मा० ३।११ 7 धूमधाम, मर्यादा 8 धृष्टता, ढिठाई।

प्रागारः [प्रकृष्ट आगार—प्रा० स०] घर, भवन।

प्राग्रम् [प्रा० स०] उच्चतम बिन्दु। सम०—सर (वि०) प्रथम, अग्रणी,—हर (वि०) मुख्य, प्रधान—रघु० १६।२३।

प्रागाटः [प्राग+अट्+अच्] पतला जमा हुआ दूध।

प्राग्र्य (वि०) [प्राग्र+यत्] मुख्य, अग्रणी, उत्तम, अतिश्रेष्ठ।

प्राघातः [प्रकृष्ट आघात—प्रा० स०] युद्ध, लड़ाई।

प्राघारः [प्र+घृ+घञ्] टपकना, बूंद बूंद गिरना, रिसना।

प्राघुणः, प्राघुणकः, प्राघुणिकः, प्राघूर्णः, प्राघूर्णकः, प्राघूर्णिकः [प्र+घुण्+क, प्राघुण+कन्, प्राघुण+ठक् प्र+आ+घूर्ण्+ण्वुल्, प्राघूर्ण+ठन्] अतिथि, पाहुना, अभ्यागत, मेहमान—चिरापराधस्मृतिमांसलोऽपि रोषः क्षणप्राघुणिको बभूव—भामि० २।१६, मदन-प्राघुणिकीकृता जनैः (कथा)—नै० २।५६।

प्राङ्गम् [प्रकृष्टमङ्गं यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार की ढोलक, पणव।

प्राङ्गणम् (नम्) [प्रकर्षेण अंगनं गमनं यत्र—प्रा० ब०] 1 सहन, आंगन 2 (घर का) फर्श 3 एक प्रकार की ढोलक।

प्राच्, प्राञ्च् (वि०) (स्त्री०—ची) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1 सामने की ओर मुड़ा हुआ, सामने बिल्कुल आगे रहने वाला 2 पूर्वदिशा संबंधी, पूर्व का 3 प्राथमिक, पहला, पूर्वकाल का (पुं० ब० व०) 1 पूर्वदेश के लोग 2 पूर्वीय वैयाकरण। सम०—अग्र (वि०) (प्रागग्र) पूर्वदिशा की ओर दृष्टि फेरे हुए,—अभावः (प्रागभाव) पिछला, सत्ता का अभाव, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का अनस्तित्व, उत्पत्ति से पूर्व की अवस्था,—अभिहित (वि०) (प्रागभिहित) पूर्वोक्त,—अवस्था (प्रागवस्था) पहली दशा,—न तर्हि प्रागवस्थाया परिहीयसे—श० ४, 'पहली अवस्था की अपेक्षा कमी पर नहीं हो,'—आयत (वि०) (प्रागायत) पूर्वदिशा की ओर बढ़ा हुआ,—उक्तिः (स्त्री०) (प्रागुक्ति) पूर्वकथित,—उत्तर (वि०) (प्रागुत्तर) पूर्वोत्तर का,—उदीची (स्त्री०) (प्रागुदीची) पूर्वोत्तर दिशा,—कर्मन् (नपुं०) (प्राक्कर्मन्) पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य,—कालः (प्राक्काल) पहला युग,—कालीन (वि०) (प्राक्कालीन) पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, पुराना, प्राचीन,—कूल (वि०) (प्राक्कूल) जिसकी नोक पूर्वदिशा की ओर मुड़ी हुई हो (कुश-घास) मनु० २।७५,—कृतम् (प्राक्कृतम्) पूर्वजन्म में किया गया कार्य,—चरणा (प्राक्चरणा) स्त्री की जननेन्द्रिय, योनि,—चिरम् (अव्य०) (प्राक्चिरम्) समय रहते, देर न करके,—जन्मन् (नपुं०) (प्राग्जन्मन्),—जातिः (स्त्री०) (प्राग्जाति) पूर्वजन्म,—ज्योतिषः (प्राग्ज्योतिष) 1 एक देश का नाम, कामरूप देश का नामांतर 2 (ब० व०) इस देश के रहने वाले लोग, (षम्) एक नगर का नाम, °ज्येष्ठः विष्णु का विशेषण,—दक्षिण (वि०) (प्राग्दक्षिण) दक्षिणपूर्वी,—देशः (प्राग्देश) पूर्वदिशा का देश,—द्वार,—द्वारिक (वि०) (प्राग्द्वार, प्राग्द्वारिक) जिसका दरवाजा पूर्वदिशा की ओर हो,—न्यायः (प्राङ्न्याय) पहली जांचपड़ताल का तर्क, पहले से ही निर्णीत मुकदमा—आचारेणावसन्नोऽपि पुनर्लेखयते यदि, सोऽभिधेयो जितः पूर्वं प्राङ्न्यायस्तु स उच्यते 1. —प्रहारः (प्राक्प्रहार) पहला मुक्का, [illegible]

(प्राक्फल:) कटहल का पेड़,—फ (फा)ल्गुनी (प्राक्फ (फा)ल्गुनी) ग्यारहवाँ नक्षत्र, पूर्वाफाल्गुनी, °भव: 1. बृहस्पतिग्रह 2. बृहस्पति का नाम,—फाल्गुन:, —फाल्गुनेय: (प्राक्फाल्गुन:, प्राक्फाल्गुनेय:) बृहस्पतिग्रह,—भक्तम् (प्राग्भक्तम्) भोजन से पूर्व औषधिसेवन—भाग: (प्राग्भाग:) 1. सामने का भाग 2. अगला भाग,—भार: (प्राग्भार:) 1. पहाड़ का शिखर या चोटी—मा० ९।१५ 2. सामने का भाग, (किसी चीज़का) अगला भाग या किनारा- कन्दस्फोटवपच्छलस्फुरितभृतप्राग्भारभीमैस्तटैः—मा० ९।१५ 3. बड़ा परिमाण, ढेर, समुच्चय, बाढ़—उत्त० ३।१२९, मा० ५।२९,—भाव: (प्राग्भाव:) 1. पूर्वजन्म 2. श्रेष्ठता, उत्तमता,—मुख (वि०) (प्राङ्मुख) 1 पूर्व की ओर को मुड़ा हुआ—कु० ७।१३, मनु० २।५१, ८।८७, 2. झुका हुआ, कामना करता हुआ, इच्छुक,—वंश: (प्राग्वंश:) 1. यज्ञशाला जिसके स्तंभ पूर्व की ओर मुड़े हुए हों—रघु० १६।६१ (प्राचीनस्थूणो यज्ञशालाविशेष:—मल्लि०, परन्तु कुछ लोगों के मतानुसार इस का अर्थ है 'वह कक्ष जहाँ यजमान का परिवार और मित्र इकट्ठे रहते हों') 2. पहला वंश या पीढ़ी,—वृत्तम्=दे० प्राक् न्याय,—वृत्तान्त: (प्राग्वृत्तान्त:) पहली घटना,—शिरस्,—शिरस,—शिरस्क (वि०) (प्राक्शिरस् आदि) पूर्वदिशा की ओर सिर मोड़े हुए, —संध्या (प्राक्संध्या) प्रातःकालीन सन्ध्या,—सेवनम् (प्राक्सेवनम्) प्रातःकालीन अन्नतर्पण या यज्ञ, —स्रोतस् (वि०) (प्राक्स्रोतस्) पूर्व की ओर बहने वाला।

प्राचण्डयम् [प्रचण्ड+ष्यञ्] 1. उत्कटता, उग्रता, 2. भीषणता, विकराल दृष्टि—मा० ३।१७।

प्राचिका [प्र+अञ्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. मच्छर डांस की जाति की एक जंगली मक्खी।

प्राची [प्र+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पूर्व दिशा,—तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनम्—श० ४।१८। सम०—पति: इन्द्र का विशेषण,—मूलम् पूर्वी क्षितिज—प्राचीमूले तनुमिव कलामात्रशेषां हिमांशो:—मेघ० ८९।

प्राचीन (वि०) [प्राच्+ख] 1. सामने की ओर या पूर्व दिशा की ओर मुड़ा हुआ, पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 2. पहला, पूर्वकाल का, पूर्ववर्ती 3. पुराना, पुरातन, —न:,—नम् बाड़, दीवार। सम०—अग्र (वि०) दे० प्रागग्र,—आवीतम् यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो दाहिने कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहना हुआ हो जैसा कि श्राद्ध के अवसर पर),—आवीतिन्, —उपवीत (वि०) जनेऊ को दायें कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहनने वाला—मनु० २।६३,—कल्प: पहला कल्प,—गाथा पुरानी कहानी, —तिलक: चन्द्रमा,—पनस: बेल का वृक्ष,—बर्हिस् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—मतम् पुरानी सम्मति।

प्राचीरम् [प्र+आ+चि+क्रन्, दीर्घ] घेरा, बाड़, दीवार।

प्राचुर्यम् [प्रचुर+ष्यञ्] 1. बहुतायत, पर्याप्तता, बहुलता 2. समुच्चय।

प्राचेतस: [प्रचेतस: अपत्यम्—प्रचेतस्+अण्] 1. मनु का पैतृक नाम 2. दक्ष का कुलसूचक नाम 3. वाल्मीकि का गोत्रीय नाम।

प्राच्य (वि०) [प्राचि भव: यत्] 1. सामने से स्थित या विद्यमान 2. पूर्व दिशा में रहने वाला, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 3. प्राथमिक पूर्ववर्ती, पहला 4. प्राचीन, पुराना—(ब० व०—च्या:) 1 पूर्वी देश, सरस्वती के दक्षिण में या पूर्व में स्थित देश 2 इस देश के निवासी। सम०—भाषा पूर्वी बोली, भारत के पूर्व में बोली जाने वाली भाषा।

प्राच्यक (वि०) [प्राच्य+कन्] पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी।

प्राड् (वि०) [प्रच्छ्+क्विप्, नि० दीर्घ] (कर्तृ०, ए० व०—प्राट्,प्राड्) पूछने वाला, पूछताछ करने वाला, प्रश्न करने वाला, जैसा कि 'शब्द प्राट्' में। सम० —विवाक: (प्राड्विवाक) न्यायाधीश, कचहरी या अदालत में प्रधान पद पर अधिष्ठित अधिकारी —मनु० ८।७९, १८१, ९।२३४।

प्राजक: [प्र+अज्+णिच्+ण्वुल्] सारथि, चालक, रथवान् मनु० ८।२९३।

प्राजन:—नम् [प्र+अज्+ल्युट्] हंटर, चाबुक, अंकुश—त्यक्तप्राजनरश्मिरङ्कितनु: पार्थाङ्कितैर्मार्गणै: —वेणी० ५।१०।

प्राजापत्य (वि०) [प्रजापति+यक्] प्रजापति से संबंध रखने वाला या जो प्रजापति के लिए पुण्यप्रद हो,—त्य: हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें लड़की का पिता वर से बिना किसी प्रकार का उपहार लिए केवल इस लिए कन्यादान करता है जिससे वह आनन्द, श्रद्धा और भक्तिपूर्वक साथ २ रहकर दाम्पत्य जीवन बितायें—सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य च, कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधि: स्मृत:—मनु० ३।३०, या, इत्युक्त्वाचरतां धर्मं सह या दीयतेऽर्थिने, स कायः (अर्थात्—प्राजापत्य:) पावयेत्तज्जः षट् षड् वंश्यान्सहात्मना—याज्ञ० १।६० 2. गंगा और यमुना का संगम, प्रयाग,—त्यम् 1 एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्रहीन पिता अपनी लड़की के पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियत करने से पूर्व करता है 2. सर्वनाशक

ऊर्जा या शक्ति,—त्या संन्यासी बनने से पूर्व अपनी सारी संपत्ति को दान कर देना।

प्राजिकः [प्र+अज्+ठञ्] बाज, पक्षी, श्येन।

प्राजितृ, प्राजिन् (पुं०) [प्र+अज्+तृच्, प्र+अज्+णिनि] सारथि, चालक, रथवान्—शि० १८।७।

प्राजेशम् [प्रजेशो देवताऽस्य-प्रजेश+अण्] रोहिणी नक्षत्र।

प्राज्ञ (वि०) (स्त्री०—ज्ञा, ज्ञी) [प्रकर्षेण जानाति इति—प्र+ज्ञा+क=प्रज्ञ, ततः स्वार्थे-अण्] 1. मनीषी 2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर—किमुच्यते प्राज्ञः खलु कुमारः उत्तर० ४,—ज्ञः 1. बुद्धिमान् पुरुष तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति वेणी० २।१४, मनु० १७।१४ 2. एक प्रकार का तोता,—ज्ञा 1. बुद्धि, समझ 2. चतुर या समझदार स्त्री,—ज्ञी 1. चतुर या विदुषी स्त्री 2 विद्वान् पुरुष की पत्नी 3 सूर्य की पत्नी का नाम।

प्राज्य (वि०) [प्र+अज्+ण्यत्] 1. प्रचुर, पर्याप्त, बहुल, अधिक, बहुत—तव भवतु बिडौजाः प्राज्यवृष्टिः प्रजासु—श० ७।३४, रघु० १३।६२, शि० १४।२५ 2. बड़ा, विशाल, महत्त्वपूर्ण—प्राज्यविक्रमाः—कु० २।१८, अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा—भामि० ५।

प्राञ्जल (वि०) [प्र+अञ्ज्+अलच्] निश्छल, स्पष्टवक्ता, खरा, ईमानदार, निष्कपट।

प्राञ्जलि (वि०) [प्रबद्धः अञ्जलिः येन—प्रा० ब०] विनम्रता और सम्मान के चिह्नस्वरूप जिसने अपने हाथ जोड़े हुए हैं।

प्राञ्जलिक, प्राञ्जलिन् (वि०) [प्राञ्जलि+कन्, इनि वा] दे० 'प्राञ्जलि'।

प्राणः [प्र+अन्+अच्, घञ् वा] 1. सांस, श्वास 2. जीवन का सांस, जीवनशक्ति, जीवन, जीवनदायी वायु, जीवन का मूलतत्त्व (इस अर्थ में प्रायः ब० व०, क्योंकि प्राण गिनती में पाँच हैं—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान)—प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा—रघु० २।५३, १२।५४ 3. जीवन के पाँच प्राणों में से पहला (जिसका स्थान फेफड़े हैं) मनु० ४।२० 4. वायु, अन्दर खींचा हुआ सांस 5. ऊर्जा, बल, सामर्थ्य, शक्ति, जैसा कि 'प्राणसार' में 6. जीव या आत्मा (विप० शरीर) 7. परमात्मा 8. ज्ञानेन्द्रिय,—मनु० ४।१४० 9. प्राणों के समान आवश्यक या प्रिय, प्रिय व्यक्ति या पदार्थ,—कोश—कोष: कोशवतः प्राणाः प्राणाः प्राणा न भूपतेः—हि० २।९२, अर्थपतेर्विमर्दको बहिश्चराः प्राणाः—दश० 10. कविता का रस, काव्यगत प्रतिभा, स्फूर्ति 11. महत्त्वाकांक्षा, श्वासग्रहण—जैसा कि महाप्राण और अल्पप्राण में 12 पाचन 13. समय का मापक काल 14. कोलाज, गोंद। सम० —अतिपातः जीवित प्राणी का, वध, जान लेना, —अत्ययः जीवन की हानि,—अधिक (वि०) 1. प्राणों से भी प्रिय, 2. सामर्थ्य और बल में श्रेष्ठ, —अधिनाथः पति,—अधिपः आत्मा,—अन्तः मृत्यु, —अन्तिक (वि०) 1. घातक, नश्वर 2. जीवन भर रहने वाला, जीवन के साथ ही समाप्त होने वाला 3. फांसी का दण्ड (कम्) वध,—अपहारिन् (वि०) घातक, प्राणनाशक,—अयनम् ज्ञानेन्द्रिय,—आघातः जीवन का नाश, जीवित प्राणी का वध—मनु० ३।६९, —आचार्यः राजा का वैद्य,—आद (वि०) घातक, नश्वर, प्राणघातक,—आबाधः जीवन को क्षति,—आयामः देवमन्त्रों का मानस-पाठ करते हुए साँस रोकना,—ईशः, —ईश्वरः प्रेमी, पति—अमरु ६७, भामि० २।५७, —ईशा,—ईश्वरी पत्नी, प्रिया, गृहस्वामिनी,—उत्क्रमणम्—उत्सर्गः आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ देना, मृत्यु,—उपहारः भोजन,—कृच्छ्रम् जीवन का खतरा, प्राणों को भय,—घातक (वि०) जीवन का नाश करने वाला,—घ्न (वि०) घातक, जीवन-नाशक,—छेदः वध, हत्या,—त्यागः 1. आत्महत्या 2 मृत्यु,—दम् 1. पानी 2. रुधिर,—दक्षिणा प्राणों की भेंट,—दण्डः फांसी का दण्ड,—दयितः पति,—दानम् प्राणों की भेंट, किसी की जान बचाना,—द्रोहः किसी की जान पर आक्रमण,—धारः जीवित प्राणी,—धारणम् 1. भरण-पोषण, जीवन का सहारा 2. जीवनशक्ति,—नाथः 1. प्रेमी, पति 2. यम का विशेषण,—निग्रहः सांस रोकना, श्वासावरोध,—पतिः 1. प्रेमी, पति 2. आत्मा, —परिक्रयः जान जोखिम में डालना,—परिग्रहः जीवन-धारण करना, जीवन या अस्तित्व रखना,—प्रद (वि०) जीवन देने वाला, जीवन बचाने वाला,—प्रयाणम् प्राणों का चला जाना, मृत्यु,—प्रियः 'प्राणों के समान प्यारा' प्रेमी, पति,—भक्ष (वि०) वायुभक्षी,—भास्वत् (पुं०) समुद्र,—भृत् (पुं०) प्राणधारी जन्तु —अन्तर्गतं प्राणभृतां हि वेद—रघु० २।४३,—मोक्षणम् 1. प्राणों का चला जाना, मृत्यु 2. आत्महत्या, —यात्रा जीवन का सहारा, भरण-पोषण, जीविका —पिण्डपातमात्रप्राणयात्रां भगवतीम्—मा० १—योनिः (स्त्री०) जीवन का स्रोत,—रन्ध्रम् 1. मुंह 2. नथना, —रोधः 1. श्वासावरोध 2. जीवन को खतरा, —विनाशः,—विप्लवः जीवन की हानि मृत्यु,—वियोगः शरीर से आत्मा का विच्छेद, मृत्यु,—व्ययः प्राणों का उत्सर्ग,—संयमः सांस का रोकना,—संशयः,—संकटम्—संदेहः जीवन को खतरा, जीवन को भय, जीवन खतरा,—सद्मन् (नपुं०) शरीर,—सार (वि०) जीवन ही जिसका बल है, सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, बलिष्ठ —गिरिचर इव नागः प्राणसारं (चापम्) बिभर्ति श० २।४,—हर (वि०) 1. प्राणघातक, जीवन का अप-

हरण करने वाला, घातक—पुरो मम प्राणहरो भविष्यति, गीत० ७ 2. फांसी, —हारक (वि०) घातक (कम्) भयकर विष ।

प्राणकः [प्राण+कै+क] 1. जीवित प्राणी, जीवधारी जन्तु 2. लोबान ।

प्राणथः [प्र+अन्+अथ] 1. वायु, हवा 2. तीर्थ स्थान 3. प्राणधारियों का स्वामी ।

प्राणनः [प्र+अन्+ल्युट्] गला, —नम् 1. श्वासप्रश्वास, सांस लेना 2. जीवन, जीवित रहना ।

प्राणन्तः [प्र+अन्+झ, अन्तादेश] वायु, हवा ।

प्राणन्ती [प्राणन्त+ङीष्] 1. भूख 2. सुबकना 3 हिचकी ।

प्राणाय्य (वि०) (स्त्री०—य्यी) [प्र+अन्+णिच्+ण्यत्] उचित, योग्य, उपयुक्त ।

प्राणित (वि०) [प्र+अन्+क्त] जीवित, जीवधारी ।

प्राणिन् (वि०) [प्राण+इनि] 1 सांस लेने वाला, जीने वाला, जीवित (पुं०) जीवित या जीवधारी प्राणी, जीवित जंतु यथा—प्राणिन प्राणवन्त: श० १।१, मेघ० ५ 2. मनुष्य । सम० —अङ्गम् किसी जन्तु का अंग, —आसनम् प्राणीवर्ग, —द्यूतम् (मुर्गों की लड़ाई, मेढ़ों की लड़ाई) तीतर बटेर आदि जन्तुओं को लड़ा कर जुआ खेलना, —पीडा जन्तुओं के प्रति क्रूरता, हिंसा जीवन की क्षति, जीवित जन्तुओं को कष्ट देना, हिंसा जुआ, द्यूत ।

प्राणीत्यम् [प्रणीत+ष्यञ्] ऋण ।

प्रातर् (अव्य०) [प्र+अत्+अरन्] 1 तड़के, पौ फटने पर, प्रभात काल में 2. कल तड़के, अगले दिन सुबह, कल प्रात काल । सम० —अह्नः दिन का प्रारम्भिक काल, दोपहर पहले, —आशः प्रात कालीन भोजन, कलेवा—अन्यथा प्रातराशाय कुर्याम त्वामलं वयम् —भट्टि० ८।९८, —आशिन् (पुं०) जिसने कलेवा कर लिया है, या प्रात काल का भोजन कर लिया है, —कर्मन् (नपुं०) —कार्यम् —कृत्यम् (प्रात कर्म —आदि) प्रात कालीन कर्म, —कालः (प्रात काल) प्रात. का समय, —गेयः चारण जिसका कर्तव्य किसी राजा या अन्य महापुरुष को उपयुक्त गान द्वारा प्रात काल जगाना है, —दिवसी (प्रातर्दिवसी) नदी, —दिनम् दोपहर से पहले, —प्रहरः दिन का पहला पहर —भोक्तृ (पुं०) कौवा, —भोजनम् प्रात. काल का भोजन, कलेवा, —संध्या (प्रात संध्या) 1 प्रात काल की संध्या या भजन, —समयः (प्रात समय) सवेरे का समय, प्रभातकाल, —सवः, —सवनम् (प्रात सवः —आदि) सोमयाग द्वारा प्रातःकालीन तर्पण, —स्नानम् (प्रात स्नानम्) सवेरे ही नहाना, —होमः (प्रातर्होमः) प्रातःकाल का यज्ञ ।

प्रातस्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रातर्+ट्यु, तुट्] प्रात काल से संबद्ध, सुबह का ।

प्रातस्तराम् (अव्य०) [प्रातर्+तरप्+आम्] सुबह बहुत सवेरे प्रातस्तरां पतत्रिभ्यः प्रबुद्धः प्रणमन् रविम् —भट्टि० ४।१४ ।

प्रातस्त्य (वि०) [प्रातर्+त्यक्] सुबह का, प्रभात कालीन ।

प्रातिः (स्त्री०) [प्र+अत्+इन्] 1 अंगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2 भरना ।

प्रातिका [प्र+अत्+ण्वुल्+टाप्, ह्रस्वम्] जवा का पौधा ।

प्रातिकूलिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिकूल+ठक्] विरुद्ध, विरोधी, प्रतिकूल रहने वाला ।

प्रातिकूल्यम् [प्रतिकूल+ष्यञ्] प्रतिकूलता, विरोध, शत्रुता, अननुकूलता, अमैत्रीपूर्णता ।

प्रातिजनीन (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिजन+खञ्] शत्रु का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त ।

प्रातिज्ञम् [प्रतिज्ञा+अण्] विचाराधीन विषय ।

प्रातिदैवसिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिदिवस+ठक्] प्रतिदिन होने वाला ।

प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) [प्रतिपक्ष+अण्] 1 विरुद्ध, प्रतिकूल 2 शत्रुतापूर्ण, शत्रुसम्बन्धी ।

प्रातिपक्ष्यम् [प्रतिपक्ष+ष्यञ्] शत्रुता, विरोधिता ।

प्रातिपद (वि०) (स्त्री० दी) [प्रतिपदा+अण्] 1 उपक्रम करने वाला 2 प्रतिपदा के दिन उत्पन्न, प्रतिपदा से संबद्ध ।

प्रातिपदिक [प्रतिपदा+ठञ्] अग्नि, —कम् नाम शब्द का परिष्कृत रूप, विभक्ति चिह्न के जुड़ने से पूर्व संज्ञा शब्द—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५ ।

प्रातिपौरुषिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिपुरुष+ठक्] पौरुषेय मर्दानगी या पराक्रम से संबद्ध ।

प्रातिभ (वि०) (स्त्री०—भी) [प्रतिभा+अण्] प्रतिभा या दिव्यता से संबंध रखने वाला, —भम् प्रतिभा या विचार कल्पना । जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना ।

प्रातिभाव्यम् [प्रतिभू+ष्यञ्] जमानत या प्रतिभूति होना, जामिनपना, किसी कर्जदार को (कचहरी में) उपस्थित करने का उत्तरदायित्व होना (क्योंकि वह विश्वासपात्र है तथा कर्ज का रुपया वापिस कर देगा)।

प्रातिभासिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिभास+ठक्] 1 जो केवल दिखाई तो दे पर वस्तुत. ही उसका अभाव 3 काल्पनिक 2 दिखाई भी देने वाली ।

प्रातिलोमिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिलोम+ठक्] काम के विरुद्ध, विरोधी, शत्रुतापूर्ण, अप्रियकर ।

प्रातिलोम्यम् [प्रतिलोम + ष्यञ्] 1. उलटापन, व्युत्क्रान्त या प्रतिकूल क्रम—मनु० १०।१३ 2. शत्रुता, विरोध, शत्रु जैसी भावना।

प्रातिवेशिकः, प्रातिवेश्यकः, प्रातिवेश्यकः [प्रतिवेश + ठक्, प्रतिवेश्य + अण् + कन्, प्रतिवेश + ष्यञ् + कन्] पड़ौसी।

प्रातिवेश्यः [प्रतिवेश + ष्यञ्] 1. सामान्यतः पड़ौसी 2. बराबर के घर में रहने वाला पड़ौसी (निरंतर-गृहवासी—कुल्लू०।

प्रातिशाख्यम् [प्रतिशाखं भवः—ञ्य] व्याकरण का एक ग्रंथ जिसमें स्वरसंधि तथा अन्य वर्णपरिवर्तनों के नियमों का उल्लेख है जो कि वेद की किसी भी शाखा में पाये जाते हैं तथा जिसमें स्वराघात समेत उच्चारण की पद्धति बतलाई गई है (प्रातिशाख्य चार हैं—एक तो ऋग्वेद की शाकल शाखा का, दो यजुर्वेद की दोनों शाखाओं के लिए, तथा एक अथर्ववेद का)।

प्रातिस्विक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिस्व + ठक्] विशिष्ट, असामान्य, अपना निजी।

प्रातिहन्त्रम् [प्रतिहन्तृ + अण्] बदला, प्रतिशोध।

प्रातिहारः, प्रातिहारकः, प्रातिहारिकः [प्रतिहार + अण्, प्रातिहार + कन्, प्रतिहार + ठक्] जादूगर, ऐन्द्र-जालिक।

प्रातीतिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतीति + ठञ्] मान-सिक, केवल मन में विद्यमान, काल्पनिक।

प्रातीपः [प्रतीप + अण्] शन्तनु का पैतृक नाम।

प्रातीपिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतीप + ठक्] 1 उलटा विरोधी, विपरीत।

प्रात्यन्तिकः [प्रत्यन्त + ठक्] प्रत्यन्त का एक राजकुमार।

प्रात्ययिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यय + ठक्] 1. भरोसे का, विश्वासपात्र 2. किसी ऋणी की विश्वासपात्रता के हेतु जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना।

प्रात्यहिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यह + ठक्] प्रतिदिन होने वाला, नित्य, प्रतिदिन।

प्राथमिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रथम + ठक्] 1. प्रारं-भिक 2. पूर्व जन्म का, पूर्वकाल का पहली बार होने वाला।

प्राथम्यम् [प्रथम + ष्यञ्] प्रथम होना, पहला उदाहरण, प्राथमिकता।

प्रादक्षिण्यम् [प्रदक्षिण + ष्यञ्] किसी व्यक्ति या पदार्थ के चारों ओर बायें से चल कर दायें का आना, और प्रदक्षिणा किये जाने वाले पदार्थ को सदैव अपनी दाईं ओर रखना।

प्रादुस् (अव्य०) [प्र + अद् + उसि] दिखाई देने के साथ, स्पष्टतः, प्रकटरूप से, दृष्टि में (प्रा० भू, कृ और अस् के साथ प्रयोग, - प्रादुः ध्यात्म इव चित्तः पुर परेण —श० ८, १२, कृ, भू और अस् के अन्तर्गत भी देखिए)। सम० — करणम् (प्रादुष्करणं) प्रकटी-करण, दृश्यमान करना,—भावः (प्रादुर्भावः) 1. अस्तित्व में आना, उदय होना—ऋतुः प्रादुर्भावात्—काव्य० १० 2. प्रकट या दृश्यमान होना, प्रकटीकरण, दर्शन 3. सुनने के योग्य होना 4. पृथ्वी पर देवता का प्रकट होना।

प्रादुष्यम् [प्रादुस् + यत्] प्रकटीकरण।

प्रादेशः [प्र + दिश् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. अंगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2. स्थान, जगह, प्रदेश।

प्रादेशनम् [प्र + आ + दिश् + ल्युट्] भेंट, दान।

प्रादेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रदेश + ठक्] 1 पूर्व दृष्टांत वाला 2. सीमित, स्थानीय 3. यथार्थ,—कः एक जिले का स्वामी।

प्रादेशिनी [प्रादेश + इनि + ङीप्] तर्जनी अंगुली।

प्रादोष (वि०) (स्त्री०—षी), **प्रादोषिक** (वि०) (स्त्री० —की) [प्रदोष + अण्] + प्रादोष + ठञ्] संध्या-कालीन, संध्या से संबद्ध।

प्राधनिकम् [प्रधनं संग्रामं, तत्साधनमस्य - प्रधन + ठक्] नाशकारक शस्त्र, कोई भी युद्धोपकरण।

प्राधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रधान + ठक्] 1. अत्यंत श्रेष्ठ या प्रमुख, सर्वोपरि, अत्यन्त पूज्य 2. प्रधान से संबद्ध या उससे उत्पन्न।

प्राधान्यम् [प्रधान + ष्यञ्] 1 प्रमुखता, सर्वोपरिता, प्रमुखत्व, उच्चता 2. प्राबल्य, सर्वोच्चता 3. मुख्य या प्रधान कारण (प्राधान्येन, प्राधान्यात्, प्राधान्यतः 'मुख्य रूप से' 'विशेष रूप से' तथा 'प्रधान रूप से' भग०—१०।१९)।

प्राधीत (वि०) [प्र + अधि + इ + क्त] भली-भांति पढ़ा लिखा, (ब्राह्मण की भांति) अत्यन्त शिक्षित।

प्राध्व (वि०) [प्रगतोऽध्वानम्—प्रा० स०] 1. दूर का, दूरवर्ती, दूर 2. झुका हुआ, रुचि रखता हुआ 3. कसा हुआ, बंधा हुआ 4. अनुकूल,—ध्वः गाड़ी,—ध्वम् (अव्य०) 1 अनुकूलता के साथ, रुचिपूर्वक, सम्नु-रूपता के साथ, उपयुक्तता से युक्त—समाजने मे भुजमूर्ध्नबाहुः सव्येतरं प्राध्वमितः प्रयुङ्क्ते—रघु० १३।७४ 2. टेढ़ेपन से।

प्रान्तः [प्रकृष्ट अन्तः—प्रा० स०] 1. किनारा, हाशिया, झालर, मगजी, छोर—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः—श० ४।७ 2. (ओष्ठ व आंख आदि का) किनारा—मा० ४।२, ओष्ठ०, नयन० 3. हद, सीमा 4 अन्तिम किनारा, सीमा,—यौवनप्रान्त - पंच० ४ 5 बिन्दु, ?, सम०—ग (वि०) पास ही रहने वाला,—दुर्गम् नगर के बाहर का, नगरांचल, किले के निकट होने वाला

उपलभार —विरस (वि०) अन्त में रसहीन,—शून्य (वि०) दे० 'प्रांतरशून्य,'—स्थ (वि०) जो सीमा पर रहता है।

प्रान्तरम् [प्रकृष्टम् अन्तरं व्यवधानं यत्र—प्रा० ब०] 1 लंबा और सुनसान मार्ग, जनशून्य या वीरान सड़क 2 छायारहित सड़क, निर्जन भूखण्ड 3. जंगल उजाड़ 4 वृक्ष की कोटर। सम०—शून्यः लंबी सुनसान सड़क (जिस पर वृक्ष या छाया न हो)।

प्रापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्र+आप्+ण्वुल्] 1 ले आने वाला, पहुँचाने वाला 2. प्राप्त कराने वाला, सामग्री से युक्त कराने वाला 3 स्थापित करने वाला, वैध बनाने वाला।

प्रापणम् [प्र+आप्+ल्युट्] 1 पहुँचना या आना 2 प्राप्त करना, अधिग्रहण, अवाप्ति 3 ले आना पहुँचाना या लाना 4 सामग्री से युक्त करना।

प्रापणिकः [प्र+आ+पण्+ठक्न] सौदागर, व्यापारी —आवर्धयित प्रापणिकावक्रम शि० ४।११।

प्राप्त (भू० क० कृ०) [प्र+आप्+क्त] 1 हासिल अवाप्त, उपलब्ध, अर्जित 2 पहुँचा हुआ, मिला 3 घटित, मिला हुआ 4 (अर्थ) उठाया हुआ, सहन किया हुआ 5 पहुँचा हुआ, आया हुआ, उपस्थित 6. पूरा किया हुआ 7 उचित, सही 8 नियम के अनुसार। सम०—अनुज्ञ (वि०) जाने के लिए अनुमत, विदा होने के लिए जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है —अर्थ (वि०) सफल (र्थ:) लब्ध पदार्थ —अवसर (वि०) जिसे मौका या अवसर मिल चुका है,—उदय (वि०) जो उन्नत हो गया है या जिसने उन्नति अथवा उन्नत पद प्राप्त कर लिया है —कारिन् (वि०) सही कार्य करने वाला,—काल (वि०) 1 समयानुकूल, यथाऋतु, उपयुक्त दे० अप्राप्त काल 2. विवाह के योग्य 3 नियत भाग्य में लिखा (ल:) उचित समय, उपयुक्त या अनुकूल क्षण,—पंचत्व (वि०) पाँचों तत्त्वों में समाविष्ट अर्थात् मृत तु० 'पंचत्व', —प्रसव (वि०) जिसने बच्चे को जन्म दे दिया है —बुद्धि (वि०) शिक्षण प्राप्त किया हुआ, प्रकाश युक्त,—भार: बोझा ढोने वाला पशु,—मनोरथ (वि०) जिसका मनोरथ पूरा हो गया है,—यौवन (वि०) तरुण, वयस्क, जवान,—रूप (वि०) 1 सुन्दर, मनोहर 2. बुद्धिमान्, विद्वान् 3 उपयुक्त, समुचित, सुयोग्य, —व्यवहार (वि०) वयस्क, बालिग जो कानून की दृष्टि से अपने कार्यों को संभालने का अधिकारी हो (विप० अवयस्क) - श्री (वि०) जिसकी उन्नति किसी और के द्वारा हुई हो।

प्राप्तिः (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1 प्राप्त करना अधिग्रहण, उपलब्धि, अवाप्ति, लाभ इष्ट,° धन°, सुख° आदि 2. पहुँचना, प्राप्त करना 3 पहुँच, आगमन 4 देखना, मिलना 5 पराग, पहुँच 6 अनुमान, अटकल 7 हिस्सा, अंश, ढेर 8 भाग्य किस्मत 9 उदय, पैदावार 10 किसी पदार्थ को प्राप्त करने की शक्ति (आठ सिद्धियों में से एक) 11 संघ, समुच्चय, संहति 12 किसी योजना की सफल समाप्ति, सुखागम। सम०—आशा किसी चीज को प्राप्त करने की आशा (नाटकीय कथावस्तु के विकास का ३रा भाग) उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसंभवा—सा० द० ६।

प्राबल्यम् [प्रबल+ष्यञ्] 1 प्रभुता, सर्वोच्चता, बल वाला 2 शक्ति, बल, ताकत।

प्राबा (वा), लिक [प्रबा (वा) ल+ठक्] मूंगे का व्यापार करने वाला।

प्राबोधिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्र+आ+बुध्+णिच्+ण्वुल्, प्रबोध+ठञ्] 1 जगाने वाला 2 प्रभात काल, (क:) प्रातःकाल उठकर भजन गाकर अपने आश्रयदाता राजा को जगाता है।

प्राभञ्जनम् [प्रभञ्जन+अण्] स्वाती नक्षत्र।

प्राभञ्जनिः [प्रभञ्जन+इञ्] 1 हनुमान का विशेषण 2 भीम का विशेषण।

प्राभवम् [प्रभु+अण्] सर्वोच्चता, सर्वोपरिता, प्रभुता।

प्राभवत्यम् [प्रभवत्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, आधिक्य, सत्ता, शक्ति मनु० ८।४१२।

प्राभाकरः [प्रभाकर+अण्] प्रभाकर का अनुयायी मीमांसा के आचार्य प्रभाकर के मत (प्राभाकर) का अनुयायी।

प्राभातिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रभात+ठञ्] प्रातःकाल संबंधी, प्रभातकालीन।

प्राभृतम्, **प्राभृतकम्** [प्र+आ+भृ+क्त, प्राभृत+कन्] 1 उपहार, भेंट, किसी राजा या देवता को भेंट, नजराना 2 रिश्वत।

प्रामाणिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रमाण+ठक्] 1 प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाण पर आधारित या आश्रित 2 शास्त्रसिद्ध 3 अधिकृत, विश्वसनीय 4 प्रमाण संबंधी,—क: 1 जो प्रमाण को मानता है 2 जो नैयायिकों के प्रमाणों का ज्ञाता है, तार्किक 3 किसी व्यवसाय का प्रधान।

प्रामाण्यम् [प्रमाण+ष्यञ्] 1 प्रमाण होना या प्रमाण पर आश्रित होना 2 विश्वसनीयता, प्रामाणिकता 3 प्रमाण, साक्ष्य, अधिकार।

प्रामादिक (वि०) [प्रमाद+ठक्] असावधानताजन्य, गलत दोषयुक्त, अशुद्ध इति प्रामादिक: प्रयोग: या पाठ आदि।

प्रामाद्यम् [प्रमाद+ष्यञ्] 1 त्रुटि, दोष, गलती, अशुद्धि, 2. पागलपन, उन्माद 3 नशा, मादकता।

प्रायः [प्र+अय्+घञ्] 1. अपगमन, विदायगी, जीवन से प्रयाण 2 आमरण अनशन, व्रत रखना, किसी इष्टसिद्धि के लिए खाना पीना छोड़ कर धरना देना, (प्राय 'आस्' 'उपविश्' आदि शब्दों के साथ, दे० नी० प्रायोपवेशन 3 बड़े से बड़ा भाग, अधिकांश अवस्था 4. अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता 5 जीवन की एक दशा, विशे० (समास के अन्त में लग कर 'प्राय' का अनुवाद निम्नांकित होता है (क) अधिकांश में, बहुधा, अधिकतर, लगभग, तकरीबन —मृतप्रायो गिरने वाले मृतप्राय: लगभग मरा हुआ मरने से अरा कम तकरीबन मरा हुआ या (ख) से युक्त, समृद्ध भरा हुआ, अत्यधिक पुष्प कष्टप्राय शरीरम् ... कन्याप्रायो ग्राम ... कमलमोदप्र ... उत्तर० ३।२४ मृत्यु से भरा हुआ ... समान, मिलता-जुलता ... प्राय वचनम् आदि। सम० उपवासनम् उपवेश उपवेशनम् उपवेशनिका बिना खाए पिए ... देना और इस प्रकार मरने का तैयारी करना ... अनशन मरा प्रायोपवेशन ... प्रायोपवेशनमतिर्नृपोऽभूत् रघु० ८।९४ प्रायोप वेशनादृता सन्मार्गस्थितस्य वेणी० ३।१९ उपेत (वि०) बिना खाये रहकर मृत्यु की बाट जोहने वाला उपविष्ट (वि० आमरण अनशन करने वाला वर्णनम् सामान्य वर्णन।

प्रायणम् [प्र+अय्+ल्युट्] 1 प्रवेश आरंभ शुरू 2 जीवनपथ 3 ऐच्छिक मृत्यु मनु० ९।३२३ 4 शरण लेना।

प्रायणीय (वि०) [प्र+अय+अनीयर्] ...त्मक आरंभिक, दीक्षात्मक,—यम् सोमयाग का प्रथम दिन।

प्रायशस् (अव्य०) [प्राय+शस्] बहुधा, अधिकतर अधिकांश में, सर्वथा —आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि मेघ० १०।

प्रायश्चित्तम्, प्रायश्चित्तिः (स्त्री०) [प्रायस्य पापस्य चित्तं विशोधनं यस्मात् ब० स०, नि० सुट्] 1 परिशोध, पापनिष्कृति क्षतिपूर्ति, पाप से निस्तार पाने के लिए धार्मिक साधना मातु पापस्य भरत प्रायश्चित्तमिवाकरोत् रघु० १२।१९ (प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते तपोनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तमितीयते हेमाद्रि) 2 सन्तोष सुधार।

प्रायश्चित्तिन् (वि०) [प्रायश्चित्त+इनि] जो पापों का परिशोध करे।

प्रायस् (अव्य०) [प्र+अय्+असुन्] 1 अधिकतर, बहुधा, साधारणत, अधिकांशत प्राय प्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमादर कु० ६।२०, प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमाना मुद्रा० ४।२१, प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापद भर्तृ० २।९१ 2 सर्वथा, अधिकतर, संभवत, कदाचित् नव प्राज्ञे प्रसादाद्धि प्राय प्राप्स्यामि जीवितम् महा०।

प्रायाणिक, प्रायात्रिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रयाण+ठक्, प्रयात्रा+ठक्] यात्रा के लिए आवश्यक या उपयुक्त।

प्रायिक (वि०) (स्त्री० की) [प्राय+ठक्] प्रचलित सामान्य

प्रायुद्धेषिन् (पु०) [प्रायुधि द्वेषते—प्रायुध्+द्विष्+णिनि] घोड़ा।

प्रायेण (अव्य०) [करण० 1 अधिकतर साधारण नियम के अनुसार प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां ... विराध ... मेघ० प्रायेण ... अनुयायिनो ... ... कि० ... ...

प्रायोगिक (वि०) (स्त्री०—की) प्रयोग ... 1 ... 2 ...

प्रारब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरंभ किया गया शुरू किया गया —ब्धम् 1 जो शुरू किया गया है व्यवसाय 2 भाग्य नियति।

प्रारब्धिः (स्त्री०) [प्र+आ+रभ्+क्तिन्] 1 आरंभ शुरू 2 खूंटा जिससे हाथी बांधा जाय हाथी को बांधने के लिए रस्सी।

प्रारम्भ [प्र+आ+रभ्+घञ् मुम्] आरंभ शुरू प्रारम्भेऽपि स्त्रियाम नी० ... नित्य नीतिमतः ... मा० ५।६ रघु० १०।९ ९।६९ 2 काम ... कार्य ... आगामी ... प्रारम्भसदृशोदय —रघु० १।१५ फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव — २०।

प्रारम्भणम् [प्र+आ+रभ्+ल्युट् मुम्] आरंभ करना शुरू करना।

प्ररोह [प्ररोह+ण] अंकुर अखुवा, किसलय दे० प्ररोह।

प्रार्णम् [प्रकृष्टमृणम्—प्रा० स०] मुख्य ऋण।

प्रार्थक (वि०) (स्त्री० र्थिका) [प्र+अर्थ+ण्वुल्] पूछने वाला मांगने वाला प्रार्थना करने वाला निवेदन करने वाला अनुरोध करने वाला इच्छा करने वाला, कामना करने वाला, क आवेदक, प्रार्थी।

प्रार्थनम्, ना [प्र+अर्थ+ल्युट्] 1 याचना, अनुरोध प्रार्थना, ... मे वत्स्ये वनपतिपुर प्रार्थनाद् ... भाव —श० ... 2 कामना इच्छा— ... काशा मे प्रार्थना, —न दुरवापेषु खलु प्रार्थना— श० १, उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना—श० ७, ७।२

3. मांगना, आवेदन, विनती, प्रणय—प्रार्थना —कदा-चिदस्मत्प्रार्थनामन्तःपुरेभ्यः कथयेत्—श० २। सम० —भङ्गः प्रार्थना अस्वीकार करना, —सिद्धिः इच्छा की पूर्ति प्रार्थनासिद्धिशंसिनः—रघु० १।४२।

प्रार्थनीय (सं० कृ०) [प्र+अर्थ+अनीयर्] 1. प्रार्थना या आवेदन किये जाने के उपयुक्त 2. अभिलषणीय, चाहने के योग्य, —यम् तृतीय या द्वापर युग।

प्रार्थित (भू० क० कृ०) [प्र+अर्थ+क्त] 1. याचना किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, पूछा हुआ, आवेदन किया गया 2. अभिलषित, इच्छित 3. आक्रान्त, शत्रु के द्वारा विरोध किया गया—रघु० ९।५६ 4. मारा गया, चोट की गई (दे० प्र पूर्वक अर्थ)।

प्रार्थिन् (वि०) [प्र+अर्थ+णिनि] 1. मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला 2. कामना करने वाला, इच्छा करने वाला—मन्दः कवियशःप्रार्थी गमिष्याम्युपहास्य-ताम्—रघु० १।३।

प्रालम्ब (वि०) [प्र+आ+लम्ब्+अच्] 1. झूलता लटकता हुआ—प्रालम्बविमुक्तिकामरप्रहास— वेणी० २।२८,—बः 1. मोतियों का बना आभूषण 2. स्त्री का स्तन,—बम् छाती तक लटकने वाला कंठहार —प्रालम्बमुत्कृष्य यथावकाशं निनाय साचीकृतचारुवक्त्र —रघु० ६।१४, मुक्ताप्रालम्बेषु का० ५२।

प्रालम्बिकम् [प्रालम्ब+कन्] दे० 'प्रालम्ब'।

प्रालम्बिका [प्रालम्ब+कन्+टाप्, इत्वम्] सोने का हार।

प्रालेयम् [प्र+ली+यत्=प्रलेय+अण्] हिम, कुहरा, ओस, तुषार—ईषाचलप्रालेयप्लवनेच्छया—गीत० १ प्रालेयशीतमचलेश्वरमीश्वरोऽपि (अभिसंते)—शि० ४।६४, मेघ० ६९। सम० —अद्रिः, —शैलः हिमा-च्छादित पहाड़, हिमालय मेघ० ५७ —अंशुः, —करः, —रश्मि 1. चन्द्रमा 2. कपूर, —लेशः ओला।

प्रावः [प्र+अव+अट्+अच्] जौ।

प्रावणम् [प्र+आ+वन्+घ] फावड़ा, खुरपा, कुदाल।

प्रावरः [प्र+आ+वृ+अप्] 1. बाड़, घेरा 2. (हेम० के मतानुसार) उत्तरीय वस्त्र 3. एक देश का नाम।

प्रावरणम् [प्र+आ+वृ+ल्युट्] ओढ़नी, चादर विशे-षतः कोई उत्तरीय वस्त्र, चोगा, लबादा या दुपट्टा।

प्रावरणीयम् [प्र+आ+वृ+अनीयर्] उत्तरीय वस्त्र।

प्रावारः [प्र+आ+वृ+घञ्] 1. उत्तरीय वस्त्र, चोगा, लबादा 2. एक जिले का नाम। सम० —कीटः दीमक, पतंग।

प्रावारकः [प्रावार+कन्] उत्तरीय वस्त्र, चोगा या लबादा—यदीच्छसि लम्बदशाविशालं प्रावारकं सूत्रश-तैर्हि युक्तम्—मृच्छ० ८।२२, जातीकुसुमवासितः प्रावारकोऽनुप्रेषितः मृच्छ० १।

प्रावारिकः [प्रावार+ठक्] उत्तरीय वस्त्रों का निर्माता।

प्रावास (वि०) (स्त्री० —सी) [प्रवास+अण्] यात्रा संबंधी, यात्रा में करने या दिये जाने के योग्य।

प्रावासिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रवास+ठक्] यात्रा के लिए उपयुक्त।

प्रावीण्यम् [प्रवीण+ष्यञ्] चतुराई, कुशलता, प्रवीणता, दक्षता—आविष्कृतं कथाप्रावीण्यं वत्सेन — उत्तर० ४, १५।६८।

प्रावृत (भू० क० कृ०) [प्र+आ+वृ+क्त] घिरा हुआ, घेरा हुआ, ढका हुआ, परदों वाला,—तः, —तम् घूंघट, बुरका, चादर (स्त्री० —ती)।

प्रावृतिः (स्त्री०) [प्र+आ+वृ+क्तिन्] 1 घेरा, बाड़, आड़ 2 आध्यात्मिक अन्धकार।

प्रावृत्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रवृत्ति+ठक्] गौण, अप्रधान, —कः दूत।

प्रावृष् (स्त्री०) [प्र+आ+वृष्+क्विप्] वर्षा ऋतु, मौसमी हवा, वर्षा काल (आषाढ़ और श्रावण काल का महीना)—कलापिनां प्रावृषि पश्य नृत्यम् रघु० ६।५१, १९।३७, प्रावृट् प्रावृडिति ब्रवीमि शठधी आर आर्ते प्रविशन्—मृच्छ० ५।१८, मेघ० ११५। सम० —अत्ययः (प्रावृडत्ययः) वर्षा ऋतु का अन्त, —कालः (प्रावृट्काल) वर्षा ऋतु।

प्रावृषः, —षा [प्र+आ+वृष्+क, प्रावृष+टाप्] वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

प्रावृषिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रावृष+ठञ्] वर्षा ऋतु में उत्पन्न, —कः मोर।

प्रावृषिज (वि०) [प्रावृषि जायते जन्+ड, अलुक् स०] वर्षा ऋतु में उत्पन्न।

प्रावृषेण्य (वि०) [प्रावृष+एण्य] वर्षा ऋतु में उत्पन्न, वर्षा ऋतु से संबद्ध — या किं शक्या जनयितुमिह प्रावृ-षेण्येन वारिदेन भामि० १।३०, ४।६, रघु० १।३६ 2 वर्षा ऋतु में देय (ऋण आदि) —ण्यः 1 कदम्ब वृक्ष 2 कुटज वृक्ष,—ण्यम् बहुसंख्यकता, बाहुल्य, प्राचुर्य।

प्रावृष्यः [प्रावृष्+यत्] 1 एक प्रकार का कदंब का वृक्ष 2 कुटज वृक्ष, —ष्यम् वैदूर्यमणि, नीलम।

प्रावेण्यम् (नपुं०) बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेशन (वि०) (स्त्री० —नी) [प्रवेशन+अण्] प्रवेश करने पर जो दिया जाय या किया जाय (किसी घर में या रंगमंच पर)।

प्राव्रज्यम्, प्राव्राज्यम् [प्रव्रज्या+ष्यञ्, पक्षे उत्तरपद-वृद्धिश्च] धार्मिक साधु या संन्यासी का जीवन।

प्राशः [प्र+अश्+घञ्] 1 खाना, स्वाद चखना, निर्वाह करना, पुष्ट होना मनु० ११।१४३, घृत॰ आदि 2 आहार, भोजन।

प्राशनम् [प्र+अश्+ल्युट्] खाना, पुष्ट होना, स्वाद

चबाना 2. खिलाना, स्वाद चखाना—मनु० २।२९, 3. आहार, भोजन।

प्राशनीयम् [प्र+अश्+अनीयर्] आहार, भोजन।

प्राशस्त्यम् [प्रशस्त+ष्यञ्] श्रेष्ठता, उत्कृष्टता, प्रमुखता।

प्राशित (भू० क० कृ०) [प्र+अश्+क्त] खाया हुआ, चखा हुआ, उपभुक्त,—तम् मृत पुरखाओं के पितरों को उदकदान और पिण्डदान, पितरों के और्ध्वदेहिक संस्कार—प्राशितम् पितृतर्पणम् मनु० ३।७४।

प्राश्निकः [प्रश्न+ठक्] 1 परीक्षक 2 मध्यस्थ, विवाचक, न्यायाधीश अहो प्रयोगाभ्यन्तरः प्राश्निक —मालवि० १।

प्रासः [प्र+अस्+घञ्] 1 फेंकना, डालना, (तीर) छोड़ना 2 बर्छी, भाला, फलकदार अस्त्र (जिसमें फल लगाया हुआ हो)। मनु० ६।३२, कि० १६।८।

प्रासकः [प्रास+कन्] 1 बर्छी, भाला, या फल लगा हुआ अस्त्र 2 पासा।

प्रासंगः [प्र+सञ्ज्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] बैलों के लिए जूआ।

प्रासङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रसंग+ठक्] 1 घनिष्ठ संयोग से उत्पन्न 2 संयुक्त, सहज 3 प्रसंगानुकूल, आकस्मिक, आगामी, यदाकदा होने वाला —प्रासङ्गिकीनां विषयः कथानाम्—उत्तर० ७।६, संबंधानुकूल, ऋत्वनुकूल, अवसरानुकूल 6 उपाख्यान विषयक।

प्रासङ्ग्यः [प्रासंग+यत्] हल में जुतने वाला बैल।

प्रासादः [प्रसीदन्ति अस्मिन् प्रसद्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 महल, भवन, गगनचुंबी विशाल भवन भिक्षुः कुटीरानि प्रासादं सिद्धा०, मेघ० ६४ 2 राजभवन 3 मंदिर या देवालय। सम०—अङ्गनम् किसी महल या मन्दिर का आंगन, आरोहणम् महल में जाना या प्रविष्ट होना, कुक्कुटः पालतू कबूतर, तलम् महल की समतल चपटी छत, पृष्ठः महल की चोटी पर बना छज्जा, —प्रतिष्ठा मन्दिर की प्रतिष्ठा या अभिमन्त्रण, शायिन् (वि०) महल में सोने वाला, शृङ्गम् किसी महल या मन्दिर का कलश या मीनार कंगूरा।

प्रासिकः [प्रास+ठक्] भाला रखने वाला, बर्छी धारी।

प्रासूतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रसूति+ठक्] प्रसव से संबंध रखने वाला, बच्चे के जन्म से संबद्ध।

प्रास्त (भू० क० कृ०) [प्र+अस्+क्त] 1 फेंका गया, (बर्छी भाला आदि) चलाया गया, डाला गया, छोड़ा गया 2. निर्वासित किया गया, बाहर निकाला गया।

प्रास्ताविक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्ताव+ठक्] प्रस्तावना का काम देने वाला, प्रस्तावना या परिचय, भूमिका विषयक—जैसा कि 'प्रास्ताविक विलास' में (भामिनी-विलास का प्रथम या प्रारंभिक अंश) प्रास्ताविकं वचनम् भूमिका में दिया गया विवरण 2 ऋतु के अनुकूल, अवसरानुसार, सामयिक 3 समत, प्रसंगानुकूल, (प्रस्तुत विषय से) संबद्ध—अप्रास्ताविकी महत्त्वेषा कथा—मा० ७।

प्रास्तुत्यम् [प्रस्तुत+ष्यञ्] विचार विमर्श का विषय होना।

प्रास्थानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्थान+ठञ्] प्रयाण से संबद्ध या विदा के अवसर के उपयुक्त—रघु० २।७० 2 विदा के अनुकूल।

प्रास्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्थ+ठञ्] 1. तोल में एक प्रस्थ 2 एक प्रस्थ में मोल लिया हुआ 3 प्रस्थभर मोल का 4 एक प्रस्थ बीज से बोया गया।

प्रास्रवण (वि०) (स्त्री०—णी) [प्रस्रवण+अण्] झरने से उत्पन्न स्रोत से निकला हुआ।

प्राह [प्रकर्षेण 'आह' शब्दो यत्र - प्रा० ब०] नृत्यकला की शिक्षा।

प्राह्णः [प्रगतं च तदहश्च कर्म० स०, टच्, अह्नादेश णत्वम्] दोपहर से पहले का समय।

प्राह्णेतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राह्ण+टयु तुट् नि० एत्वम्] मध्याह्न से पूर्व होने वाला, या मध्याह्नपूर्व संबंधी।

प्राह्णेतराम्—तमाम् (अव्य०) [प्राह्ण+तरप् (तमप्), आम्, नि० एत्वम्] प्रातःकाल, बहुत सवेरे।

प्रिय (वि०) [प्री+क] (म० अ०—प्रेयस् उ० अ० प्रेष्ठ) 1 प्रिय प्यारा पसन्द आया हुआ, रमणीय अनुकूल बन्धुप्रियाम् कु० १।२६, रघु० ३।२० 2 सुहावना रुचिकर—तामूचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्याम् रघु० १४।६ 3 चाहने वाला, अनुरक्त, भक्त —प्रियमण्डना श० ४।, प्रियारामा वैदेही—उत्तर० २ यः 1 प्रेमी पति—स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु मेघ० २८ 2 एक प्रकार का मृग या प्रिया (पत्नी), पत्नी स्वामिनी—प्रिये चारुशीले प्रिये रम्यशीले प्रिये—गीत० १० 2. स्त्री 3 छोटी इलायची 4 समाचार, समुद्रवन 5 खींची हुई मदिरा 6. एक प्रकार का चमेली (का फल) —यम् 1 प्रेम 2 कृपा, सेवा अनुग्रह प्रियमाचरितं लते त्वया मे विक्रम० ४।१७, मत्प्रियार्थमियं सा —मेघ० २२, प्रिय से प्रिय से, 'मेरी अच्छी सेवा की गई' —भग० १।२३, पञ्च० १।३६५ ९।३ 3 सुखद समाचार —रघु० १२।९१, प्रियनिवेदयितारम् श० ४ 4. आनन्द, सुख,—यम् (अव्य०) बड़े सुहावने या रुचिकर ढंग से। सम०—अतिथि (वि०) आतिथेय, अतिथिसत्कार करने वाला,—अपायः किसी प्रिय वस्तु

का अभाव या हानि,—अप्रिय (वि०) सुखद और दुःखद, रुचिकर और अरुचिकर (भावनाएँ) (यम्) सेवा और अनिष्ट, अनुग्रह और क्षति,—अम्बुः आम का वृक्ष, —अर्ह (वि०) 1 प्रेम या कृपा का अधिकारी उत्तर० ३ 2. मिलनसार (र्हः) विष्णु का नाम,—असु (वि०) जीवन का प्रेमी,—आख्य (वि०) अच्छा समाचार सुनाने वाला —आख्यानम् रुचिकर समाचार —आत्मन् (वि०) मिलनसार सुखद, रुचिकर —उक्ति (स्त्री०) —उदितम् कृपा से युक्त या मैत्रीपूर्ण वक्तृता चापलूसी के वचन— उपपत्ति (स्त्री०) आनन्दप्रद या सुखद घटना —उपभोग किसी प्रेमी या प्रेयसी के साथ रंगरेलियाँ —रघु० १२।२२,—एषिन् (वि०) 1 भला चाहने वाला, सेवा करने का इच्छुक 2 मित्रता से युक्त स्नेही,—कर (वि०) सुख देने वाला या पैदा करने वाला —कर्मन् (वि०) अनुग्रह पूर्वक या मित्रता से युक्त व्यवहार करनेवाला,—कलत्र अपनी पत्नी से प्रेम करनेवाला पति अपनी भार्या को अत्यन्त चाहने वाला, —काम (वि०) मित्रवत् व्यवहार करनेवाला सेवा करने का इच्छुक,—कार —कारिन् (वि०) अनुग्रह करने वाला, भला करने वाला —कृत् (पु०) भला करने वाला, मित्र, हितैषी —जन प्रेमपात्र या प्यारा व्यक्ति,—जानि अपनी पत्नी को अत्यन्त प्यार करने वाला पति,—तोषणः एक प्रकार का रतिबन्ध मैथुन का आसन विशेष, —दर्श (वि०) देखने में सुन्दर, —दर्शन (वि०) देखने में सुहावना, सुन्दर दर्शनों वाला, सुन्दर मनोहर, खूबसूरत—अहो प्रियदर्शनः कुमारः—उत्तर० ५, रघु० १।४७ श० ३।११, (नः) 1 तोता 2 एक प्रकार का छुहारे का वृक्ष 3 गन्धर्वों के राजा का नाम—रघु० ५।५३,—दर्शिन् (वि०) राजा अशोक का विशेषण,—देवन (वि०) जूआ खेलने का शौकीन —धन्व शिव का विशेषण —पुत्रः एक प्रकार का पक्षी,—प्रसादनम् पति को प्रसन्न करना,—प्राय (वि०) अत्यन्त कृपालु या सुशील— उत्तर० २।२, (यम्) भाषा में वाक्पटुता,—प्रायम् (नपुं०) बहुत ही रोचक वक्तृता, जैसा कि एक प्रेमी का अपनी प्रेयसी के प्रति कथन,—प्रेप्सु (वि०) अपने अभीष्ट पदार्थ को प्राप्त करने की इच्छा करने वाला, —भावः प्रेम की भावना उत्तर० ६।३१,—भाषणम् कृपा से युक्त या रुचिकर शब्द, —भाषिन् (वि०) मधुरभाषी,—मण्डन (वि०) अलंकारों का प्रेमी—श० ४।९,—मधु (वि०) मदिरा का शौकीन, (धुः) बलराम का विशेषण,—रण (वि०) बहादुर, शूर वीर,—वचन (वि०) रोचक तथा कृपापूर्ण शब्द बोलने वाला (नम्) कृपा से युक्त, प्रोत्साहक एवं मधुर शब्द —विक्रम० ३।१२, —वयस्य प्रिय मित्र,—वर्णी प्रियंगु नामक पौधा,—वस्तु (नपुं०) प्यारी चीज़, —वाच् (वि०) कृपा से युक्त शब्द बोलने वाला, मीठी बातें करने वाला, (स्त्री०) कृपामय और रोचक शब्द, —वादिका एक प्रकार का वाद्ययंत्र, —वादिन् (वि०) कृपा से युक्त तथा मधुर शब्द बोलने वाला, चापलूस —सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः रामा०, —व्रतः (पु०) कृष्ण का विशेषण, —संवासः प्रिय व्यक्ति का सम्पर्क, —सख प्रिय मित्र, (स्त्री० —खी) सहेली, अन्तरंग सहेली (किसी स्त्री की), —सत्य (वि०) 1 सत्य का प्रेमी 2 सत्य होने पर भी प्रिय —संदेशः 1 प्रिय समाचार प्रेमी का समाचार 2. चंपक नाम का वृक्ष —समागमः अपने प्रिय व्यक्ति (या पदार्थ) से मिलन —सहचरी प्यारी पत्नी —सुहृद् (पु०) प्रिय या प्राणप्रिय मित्र हार्दिक मित्र —स्वप्न (वि०) सोने का प्रेमी रघु० १२।८१।

प्रियंवद (वि०) [प्रियं वदति — प्रिय + वद् + खच्, मुम्] मधुरभाषी, प्रिय बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, मिलनसार श० ५।२८, रघु० ३।६४ —दः 1 एक प्रकार का पक्षी 2 एक गन्धर्व का नाम।

प्रियक [प्रिय + कन्] 1 एक प्रकार का हरिण—शि० ४।३० 2 पिय नामक वृक्ष 3 प्रियंगु नाम की लता 4 मधुमक्खी 5 एक प्रकार का पक्षी 6 जाफरान केसर —कम् असन वृक्ष का फूल शि० ६।४६।

प्रियङ्कर, प्रियङ्करण, प्रियङ्कार (वि०) [प्रिय + कृ + खच्, ख्युन्, अण् वा मुम्] 1 अनुग्रह दर्शाने वाला कृपा करने वाला, स्नेह करने वाला —[illegible] रघु० १४।४८ 2 रुचिकर 3 मिलनसार।

प्रियङ्गु [प्रिय + गम् + कु] एक लता का नाम (कहते हैं कि यह लता स्त्रियों के स्पर्श मात्र से खिल उठती है) प्रियंगुश्यामाङ्गप्रकृतिरपि ... (निम्नांकित श्लोक में उन सभी कविसमयों को एकत्रित कर दिया गया है जहाँ विशिष्ट परिस्थितियों में वृक्षों के फूलों का आना बतलाया गया है — पादाघातादशोकस्तिलककुरबकौ वीक्षणालिङ्गनाभ्यां स्त्रीणां स्पर्शात्प्रियङ्गुर्विकसति बकुलः सीधुगण्डूषसेकात्। मन्दारो नर्मवाक्यात् पटुमृदुहसनाच्चम्पको वक्त्रवातात् चूतो गीतान्नमेरुर्विकसति च पुरो नर्तनात्कर्णिकारः ॥) 2 बड़ी पीपल, —गु (नपुं०) 1 जाफरान, केसर।

प्रियतम (वि०) [प्रिय + तमप्] अत्यन्त प्रिय, सबसे अधिक प्यारा —मः प्रेमी, पति, प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः—मेघ० ३१,—मा पत्नी, स्वामिनी, वल्लभा, प्रेयसी।

प्रियतर (वि०) [प्रिय + तरप्] अधिक प्रिय, अपेक्षाकृत प्यारा।

प्रियता,—त्वम् [प्रिय + तल् + टाप्, प्रिय + त्व] 1. प्रिय होना, प्यार 2 प्रेम, स्नेह।

प्रियम्भविष्णु, प्रियम्भावुक (वि०) [प्रिय + भू + खिष्णुच्, खुकञ्, वा, मुम्] स्नेह का पात्र, अत्यन्त प्रिय।

प्रियालः [प्रिय+अल्+अच्] पियाल नामक वृक्ष, दे० 'पियाल',—ला अंगूरों की बेल।

प्री I (क्या० उभ० प्रीणाति, प्रीणीते प्रीत) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना—प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रः—भर्तृ० २।६८, सस्नुः पितॄन् पिप्रियुरापगासु—भट्टि ३।३८, ५।१०४, ७।६४ 2. प्रसन्न होना, खुश होना—कच्चिन्मनस्ते प्रीणाति वनवासे—महा० 3. कृपामय बर्ताव करना, अनुग्रह दर्शाना 4 प्रसन्न या हँसमुख रहना—प्रेर० (प्रीणयति—ते) प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना।

II (दिवा० आ०) (प्रीयते—'प्री' क्रिया का कर्मवाच्य का रूप) सन्तुष्ट या प्रसन्न होना तृप्त होना प्रकामप्रीयत यज्वना प्रियः शि० १।१७ रघु० १४।३०, १९।३० याज्ञ० १।२४५ 2. स्नेह करना, प्रेम करना 3. सहमति या मंजूरी देना, सन्तुष्ट होना।

प्रीण (वि०) [प्री+क्न, तस्य नः] 1 प्रसन्न, सन्तुष्ट, तृप्त 2 पुराना प्राचीन 3 पहला।

प्रीणनम् [प्रीण्+ल्युट्] 1 प्रसन्न करना सन्तुष्ट करना 2 जो प्रसन्न या सन्तुष्ट करता है।

प्रीत (भू० क० कृ०) [प्री+क्त, नत्वाभावः] प्रसन्न, खुश, प्रहृष्ट, आनन्दित प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व—रघु० २।६३ १।८१, १२।९४ 2 आनन्दयुक्त, आह्लादित, हर्षपूर्ण मेघ० ४ 3 सन्तुष्ट 4 प्रिय प्यारा 5 कृपालु, स्नेही। सम०—आत्मन्,—चित्,—मनस् (वि०) हृदय से खुश, मन से आनन्दित।

प्रीतिः (स्त्री०) [प्री+क्तिन्] 1 प्रसन्नता, आह्लाद, सन्तोष, खुशी, आनन्द हर्ष, तृप्ति मुखमालोकनप्रीति कु० २।४५ ६।२१ रघु० २।५१ मेघ० ६२ 2 अनुग्रह, कृपालुता 3 प्रेम, स्नेह, आदर मेघ० ४।१६, रघु० १।५७, १२।५४ 4 पसन्द, चाह, खुशी, व्यसन—द्यूत° मृगया° 5 मित्रता, सौहार्द 6 कामदेव की एक पत्नी का नाम, रति की सौत (सपत्नी तथास्ता रत्याः प्रीतिरिति श्रुता)। सम०—कर (वि०) प्रेम या अनुराग उत्पन्न करने वाला, रुचिकर,—कर्मन् (नपुं०) मैत्री या प्रेम का बर्ताव, कृपापूर्ण कार्य,—दः नाटक में विदूषक या मसखरा,—दत्त (वि०) स्नेह के कारण दिया हुआ (त्तम्) स्त्री को दी हुई संपत्ति, विशेषकर विवाह के अवसर पर सास या श्वसुर द्वारा,—दानम्,—दायः प्रेमोपहार, मित्रता के नाते दिया गया उपहार—नववसरोऽयं प्रीतिदायस्य—श० ४, रघु० १५।६८,—धनम् प्रेम या सौहार्द के कारण दिया हुआ धन,—पात्रम् प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति, या वस्तु,—पूर्वम्,—पूर्वकम् (अव्य०) कृपा के साथ, स्नेहपूर्वक,—मनस् (वि०) मन में खुश, प्रसन्न, आनंदित,—युज् (वि०) प्रिय, स्नेही, प्यारा—कि० १।१०,—वचस् (नपुं०),—वचनम् मैत्री से भरी हुई या कृपापूर्ण वाणी,—वर्धन (वि०) प्रेम या हर्ष को बढ़ाने वाला (नः) विष्णु का विशेषण,—वाद मित्रवत् विचारविमर्श—विवाहः प्रीति या प्रेम के कारण होने वाला विवाह प्रेम संबंध (जो केवल प्रेम पर आधारित हो),—श्राद्धम् पितरों के सम्मानार्थ किया जाने वाला और्ध्वदैहिक संस्कार या श्राद्ध।

प्रु (भ्वा० आ०—प्रवते) 1 जाना, चलना-फिरना 2. कूदना, उछलना।

प्रुष I (भ्वा० पर०—प्रोषति, प्रुष्ट) 1 जलाना, खा पी जाना 2 भस्म करना II (क्या० पर०—प्रुष्णाति) 1. आर्द्र या तर होना 2 उड़ेलना, छिड़कना 3 भरना।

प्रुष्ट (भू० क० कृ०) [प्रुष्+क्त] जलाया हुआ, खाया-पीया हुआ जला कर राख किया गया।

प्रुष्वः [प्रुष्+क्वन्] 1 वर्षा ऋतु 2. सूर्य 3 पानी की बूंद मिट्टा०।

प्रेक्षक [प्र+ईक्ष्+ण्वुल्] दर्शक तमाशबीन, देखने वाला, दृश्य द्रष्टा।

प्रेक्षणम् [प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1 देखना दृष्टि डालना 2 दृश्य, दृष्टि दर्शन 3 आँख—चकितहरिणी प्रेक्षणा—मेघ० ८२ 4 तमाशा, सार्वजनिक दृश्य दिखावा। सम०—कूटम् आँख का डेला।

प्रेक्षणकम् [प्रेक्षण+कन्] दिखावा, तमाशा।

प्रेक्षणिका [प्र+ईक्ष्+ण्वुल्, इत्वम्] तमाशा देखने की शौकीन स्त्री।

प्रेक्षणीय (वि०) [प्र+ईक्ष्+अनीयर्] 1 दर्शनीय, विचारणीय, निगाह डालने के योग्य 2 देखने के लिए उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर- मेघ० २, रघु० १४।९ 3 विचारणीय, ध्यान देने के योग्य।

प्रेक्षणीयकम् [प्रेक्षणीय+कन्] दिखावा, दृश्य, तमाशा—शि० १०।८३।

प्रेक्षा [प्र+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1 दृष्टि डालना, देखना, तमाशा देखना 2 अवलोकन, दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3 तमाशबीन होना 4 कोई सार्वजनिक तमाशा, दिखावा, दृष्टि 5 विशेष कर थियेटर का तमाशा, नाटकीय प्रदर्शन, अभिनय 6 बुद्धि, समझ 7. विमर्श, विचारणा, पर्यालोचन 8 वृक्ष की शाखा। सम०—अ(आ)गारः,—रम्,—गृहम्,—स्थानम् 1. थियेटर, नाट्यशाला, रंगशाला 2. मन्त्रणा-भवन,—समाजः श्रोता दर्शकों की भीड़, सभा।

प्रेक्षावत् (वि०) [प्रेक्षा+मतुप्] विचारशील, बुद्धिमान्, विद्वान् (पुरुष)।

प्रेक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+ईक्ष्+क्त] देखा हुआ, विचार किया हुआ, नजर डाला हुआ, निगाह में से निकाला हुआ, अवलोकन किया हुआ,—तम्, कन, दृष्टि, झलक।

प्रेङ्खः,—खम् [प्र+इङ्ख्+घञ्] झूलना, पेंग (झोटा) लेना।

प्रेङ्खण (वि०) [प्र+इङ्ख्+ल्युट्] घूमने वाला, इधर उधर फिरने वाला, प्रविष्ट होने वाला—भट्टि० ९।१०१,—णम् 1 झूलना 2. झूला 3. नायक, सूत्रधार आदि पात्रों से शून्य एकांकी नाटक— सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—गर्भावमर्शरहितं प्रेङ्खणं हीननायकम्, असूत्रधारमेकाङ्कमविष्कम्भप्रवेशकम्, नियुद्धसम्फेटयुतं सर्ववृत्तिसमाश्रितम्। ५४७, उदा० 'वालिवध'।

प्रेङ्खा [प्र+इङ्ख्+अङ+टाप्] 1 झूला 2 नृत्य 3 पर्यटन, घूमना, यात्रा करना 4 एक प्रकार का भवन या घर 5. घोड़े का विशेष कदम।

प्रेङ्खित (भू० क० कृ०) [प्र+इङ्ख्+क्त] झूला हुआ, हिलाया हुआ, प्रदोलित या डांवाडोल।

प्रेङ्खोल् (चुरा० उभ०—प्रेङ्खोलयति —ते) झूलना, हिलना डांवाडोल होना।

प्रेङ्खोलनम् [प्रेङ्खोल्+ल्युट्] 1 झूलना, हिलना, इधर से उधर प्रदोलित होना 2. झूला, पेंग।

प्रेत (भू० क० कृ०) [प्र+इ+क्त] इस संसार से गया हुआ, —मृत—स्वजनाश्रु किलातिसन्ततं दहति प्रेतमिति प्रचक्षते—रघु० ८।८६,—तः 1 दिवंगत आत्मा और्ध्वदेहिक क्रिया किए जाने से पूर्व जीव की अवस्था 2. भूत, पिशाच—भग० १७।४, मनु० १२।७१। सम०—अधिपः यम का विशेषण,—अन्नम् पितरों को अर्पित आहार,—अस्थि (नपु) मृतक पुरुष की हड्डी, °धारिन् शिव का विशेषण,—ईशः, —ईश्वरः यम का विशेषण,—उद्देशः पितरों के निमित्त अर्पण, —कर्मन् (नपु०)—कृत्यम्,—कृत्या और्ध्वदेहिक या अन्त्येष्टि संस्कार, —गृहम् कब्रिस्तान, शवस्थान,—चारिन् (पुं०) शिव का विशेषण, —दाहः मुर्दे का जलाना, शवदाह —धूमः चिता से उठता हुआ धुआं —पक्षः पितृपक्ष आश्विन का कृष्णपक्ष जब कि पितरों के सम्मान में श्रद्धांजलियां अर्पित की जाती हैं, तु० 'पितृपक्ष'। —पटहः अर्थी ले जाते समय बजाया जाने वाला ढोल, —पतिः यम का विशेषण, —पुरम् यमराज की नगरी,—भावः मृत्यु, —भूमिः (स्त्री०) कब्रिस्तान शवस्थान,—शरीरम् वियुक्त जीव का शरीर, भूत शरीर, —शुद्धिः (स्त्री) —शौचम् किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर शुद्धि पावन शुद्धि, —श्राद्धम् किसी मृत संबंधी के निमित्त बरसी से पहले २ किये जाने वाली और्ध्वदेहिक (मासिक) क्रियाएँ, —हारः 1 मृत शरीर को (श्मशानभूमि तक) ले जाने वाला 2. निकट संबंधी।

प्रैतिक [प्रकर्षेण इति गमनं यस्य प्रा० ब० प्र+इति +कप्,] भूत, प्रेत।

प्रेत्य (अव्य०) [प्र+इ+क्त्वा+ल्यप्] (इस संसार से) विदा होकर मरने के पश्चात् दूसरे लोक में —न च तत्प्रेत्य नो इह - भग० १७।२८, मनु० २।९,२६। सम०—जातिः (स्त्री०) परलोक की स्थिति,—भावः मरने के पश्चात् आत्मा की अवस्था।

प्रेत्वन् (पुं०) [प्र+इ+क्वनिप्, तुकागम] 1 वायु 2 इन्द्र का विशेषण।

प्रेप्सा [प्र+आप्+सन्+अ+टाप्] 1 प्राप्त करने की इच्छा 2 इच्छा।

प्रेप्सु (वि०) [प्र+आप्+सन्+उ] 1 प्राप्त करने का इच्छुक, कामना करता हुआ, अभिलाषी, प्रबल इच्छुक 2 उद्देश्य रखने वाला।

प्रेमन् (पुं०, नपुं०) [प्रियस्य भावः इमनिच् प्रादेशः एकाच्कत्वात् न टिलोपः तारा०] प्रेम, स्नेह—तत्प्रेम-हेमनिकषोपलतां तनोति— गीत० ११, मेघ० ४४ 2. अनुग्रह, कृपा, कृपापूर्ण या मृदु व्यवहार 3 आमोद-प्रमोद, मनोविनोद 4 हर्ष, खुशी, उल्लास। सम० —अम्बु (नपुं०) हर्षाश्रु, स्नेहाश्रु,—वृद्धिः (स्त्री०) स्नेहवर्धन, उत्कट प्रेम, —पर (वि०) स्नेहशील, प्रिय, —पातनम् 1 (हर्ष के) आंसू 2 (आंसू गिरानेवाली) आंख, —पात्रम् प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति या वस्तु, —बन्धः —बन्धनम् स्नेहबन्धन, प्रेम की फांस।

प्रेमिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [प्रेमन्+इनि] प्रिय, स्नेह-शील।

प्रेयस् (वि०) (स्त्री० —सी) [अयमनयो अतिशयेन प्रियः प्रिय+ईयसुन्, प्रादेशः 'प्रिय' की म० अ०] अधिक प्यारा, अपेक्षाकृत प्रिय या रुचिकर (पुं०) प्रेमी, पति (पुं० नपुं०) चापलूसी, —सी पत्नी, स्वामिनी।

प्रेयोपत्यः [अपत्यानां प्रेयः] बगुला, कंक पक्षी।

प्रेरक (वि०) (स्त्री०—रिका) [प्र+ईर्+णिच्+ण्वुल्] 1 प्रेरित करने वाला उत्तेजक, उद्दीपक 2 भेजने वाला, निदेशक।

प्रेरणम्—णा [प्र+ईर्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रेरित करना उत्तेजित करना, आग बढ़ाना उकसाना भड़काना 2 आवेग, आवेश 3 फेंकना डालना —भवति विफल प्रेरणा चूर्णमुष्टिः—मेघ० ६८ 4. भेजना प्रेषित करना 5 आदेश, निदेश 6 (व्या० में) किसी और से कार्य कराने की क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रेरित (भू० क० कृ०) [प्र+ईर्+णिच्+क्त] 1 आगे बढ़ाया गया, उत्तेजित किया गया, उकसाया गया 2 उत्तेजित, उद्दीपित, प्रणोदित 3 भेजा गया, प्रेषित 4 स्पर्श किया गया, —तः दूत, एलची।

प्रेव् (भ्वा० उभ० प्रेवति—ते) जाना, चलना-फिरना।

प्रेषः [प्र+इष्+घञ्] 1 भेजना, प्रेषण करना 2 दूत के रूप में भेजना, निदेश देना, भार या बोझ डालना, नियुक्त करना।

प्रेषित (भू० क० कृ०) [प्र+इष्+क्त] 1 (संदेशा देकर) भेजा हुआ 2 आदिष्ट, निदेशित 3 मुड़ा हुआ, स्थिर, निविष्ट होकर, (दृष्टि) डाली हुई 4. निर्वासित।

प्रेष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन प्रियः - प्रिय+इष्ठन्, उ० ब०] अत्यंत प्यारा, प्रियतम,—ष्ठः प्रेमी, पति, —ष्ठा पत्नी, स्वामिनी।

प्रेष्य (वि०) [प्र+ईष्+ण्यत्] आदेश दिये जाने के योग्य, भेजे जाने या प्रेषित किये जाने के योग्य, —ष्यः सेवक, भृत्य, दास, —ष्या सेविका, दासी, —ष्यम् 1 दूतमंडली को भेजना 2 सेवा। सम०—जनः सेवकों का समूह, —भावः सेवक की चाकरी, सेवा, बन्धन मालवि० ५।१२, —वधूः 1 सेवक की पत्नी 2 सेविका, दासी, —वर्गः सेवकवृन्द, अनुचरवर्ग।

प्रेहि [प्र पूर्वक इ धातु, लोट्, मध्य० पु०, एक व०]। सम०—कटा विशेष प्रकार की आचारविधि जिसमें चटाइयों का निषेध है,—कर्दमा एक विशेष अनुष्ठान जिसमें सब प्रकार की अपवित्रता वर्जित है,—द्वितीया एक अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी और की उपस्थिति वर्जित है,—वाणिजा एक अनुष्ठानविशेष जिसमें व्यापारियों की उपस्थिति निषिद्ध है (दे० पा० २।१।७२)।

प्रैमम् [प्रिय+अण्] कृपालु होना, अनुग्रह, प्रेम।

प्रैषः [प्र+इष्+घञ्, वृद्धि] 1 भेजना, निदेश देना 2 आदेश, समादेश, आमन्त्रण 3 दुःख, कष्ट 4 पागलपन, उन्माद 5 कुचलना दबाना मर्दन करना भींचना।

प्रैष्यः [प्र+इष्+ण्यत्, वृद्धि] सेवक, भृत्य, दास —ष्या दासी, सेविका —ष्यम् सेवा, दासता। सम०—भावः सेवक की क्षमता, सेवक की भाँति उपयोग करना सेवा—कु० ६।५८।

प्रोक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वच्+क्त] 1. कहा हुआ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ 2. नियत किया हुआ निर्धारित किया हुआ।

प्रोक्षणम् [प्र+उक्ष्+ल्युट्] 1 छिड़काव पानी छिड़कना —मनु० ५।११८, याज्ञ० ११८४ 2 छींटे देकर अभिमंत्रित करना 3. यज्ञ में पशु का वध —णी छिड़कने या अभिमंत्रण के लिए जल, पुण्यजल (ब० व० कभी-कभी यह शब्द 'पवित्र जल से पूरित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है, जिस अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होने वाला शब्द 'प्रोक्षणीपात्र' है)।

प्रोक्षणीयम् [प्र+उक्ष्+अनीयर्] पवित्रीकरण (प्रोक्षण) के लिए उपयुक्त जल।

प्रोक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+उक्ष्+क्त] 1. जलमार्जन से पवित्र किया हुआ 2. यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ।

प्रोच्चण्ड (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त भीषण या भयानक।

प्रोच्चैः (अव्य०) [प्रा० स०] 1 बहुत ऊँचे स्वर से, जोर से 2. बहुत अधिकता से।

प्रोच्छ्रित (भू० क० कृ०) [प्रा० स०] अति ऊँचा, उत्तुंग, उन्नत।

प्रोच्चाटनम् [प्र+उद्+चट्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रोज्झनम् [प्र+उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, जाया कर देना, छोड़ना।

प्रोज्झित (भू० क० कृ०) [प्र+उज्झ्+क्त] त्यागा हुआ, खाली किया हुआ, परित्यक्त, हटाया हुआ।

प्रोञ्छनम् [प्र+उञ्छ्+ल्युट्] 1 मिटा देना, पोंछ देना, छील देना—नै० ५।३६ 2. अवशिष्ट पड़े हुए को चुन लेना।

प्रोड्डीन (वि०) [प्र+उद्+डी+क्त] जो ऊपर उड़ गया हो, या उड़ गया हो।

प्रोढ प्रोढि [प्र+वह्+क्त, क्तिन् वा, सम्प्रसारण] दे० प्रौढ, प्रौढि।

प्रोत (भू० क० कृ०) [प्र+वे+क्त, सम्प्रसारण] 1 मिला हुआ, टाँका लगाया हुआ,—कु० ७।४९ 2 लंबा या सीधा फैलाया हुआ (विप० ओत) 3 बंधा हुआ, बींधा हुआ, कसा हुआ—महावी० ६।३३ 4 बिद्ध किया हुआ, आर-पार किया हुआ —रघु० ९।७५ 5 पारित, आर-पार निकला हुआ —सरन्ध्रिप्रोतान् अर्थात् (चन्द्रकिरणान्) बिसमिति करी सकलयति—काव्य० १० 6 जमाया हुआ, जड़ा हुआ—महावी० १।३५,—तम् वस्त्र, बुना हुआ कपड़ा। सम०—उत्सादनम् 1 छतरी 2. वस्त्र-भवन, तंबू।

प्रोत्कण्ठ (वि०) [प्रकर्षेण उत्कण्ठ—प्रा० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए या फैलाये हुए।

प्रोत्कुष्टम् [प्र+उत्+कुश्+क्त] कोलाहल हल्लागुल्ला।

प्रोत्खात (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+खन+क्त] खोदा हुआ।

प्रोत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] बहुत ऊँचा या उन्नत।

प्रोत्फुल्ल (वि०) [प्रा० स०] पूरा खिला हुआ, फूला हुआ।

प्रोत्सारणम् [प्र+उत्+सृ+णिच्+ल्युट्] छुटकारा करना, साफ कर देना, हटाना, निष्कासित करना।

प्रोत्सारित (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+सृ+णिच्+क्त] 1 हटाया गया, छुटकारा पाया हुआ, निष्कासित 2. आगे बढ़ाया गया, उकसाया 3. परित्यक्त।

प्रोत्साहः [प्र+उत्+सह्+घञ्] 1. अत्यनुरक्ति, उत्कटता 2. बढ़ावा, उद्दीपन।

प्रोत्साहक [प्र+उत्+सह्+णिच्+ण्वुल्] उकसाने वाला भड़काने वाला।

प्रोत्साहनम् [प्र+उत्+सह्+णिच्+ल्युट्] उकसाना उद्दीपन भड़काना प्रणोदन।

प्रोथ् (भ्वा० उभ० प्रोथति-ते) 1 समान होना जोड़ का होना मुकाबला करना (सम्प्र० के साथ) पुप्रोथास्मै न कश्चन भट्टि० १४।८४ १५।८० 2. योग्य होना यथेष्ट होना सक्षम होना 3 भरा हुआ या पूरा होना।

प्रोथ (वि०) [प्रोथ्+अच्] 1 विख्यात सुविश्रुत 2 रक्खा हुआ स्थिर किया हुआ 3 भ्रमण करना यात्रा पर जाना, मार्ग चलना वृक्षान्तमुदकान्तं च प्रियं प्रोथमनुव्रजेत् तारा० थः-थम् 1 घोड़े की नाक या नथुना— नै० ११६० शि० १२।११ १२।७३ 2 सूअर की थूथन थः 1 कूल्हा नितंब 2 खुदाई 3 वस्त्र पुराने कपड़े 4 गर्भ कलल।

प्रोथिन् (पुं०) [प्रोथ+इनि] घोड़ा।

प्रोद्घुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+घुष्+क्त] 1 गूंजना प्रतिध्वनि करना 2 कोलाहल करना।

प्रोद्घोषणम् -णा [प्र+उद्+घुष्+ल्युट्] 1 ऐलान करना घोषणा 2 ऊँचा शब्द करना।

प्रोद्दीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+दीप्+क्त] आग पर रक्खा हुआ जलता हुआ देदीप्यमान — भर्तृ० ३।८८।

प्रोद्भिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+उद् भिद्+क्त] 1 अंकुरित अँखुआ फूटा हुआ 2. फट कर निकला हुआ।

प्रोद्भूत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भू+क्त] फूटा हुआ निकला हुआ।

प्रोद्यत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+यम्+क्त] 1 उठाया हुआ 2 सक्रिय परिश्रमशील।

प्रोद्वाह [प्र+उद्+वह्+घञ्] विवाह।

प्रोन्नत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+नम्+क्त] 1 बहुत ऊँचा या उन्नत 2 उभरा हुआ।

प्रोल्लाघित (वि०) [प्र+उद्+लाघ्+क्त] 1 रोग से मुक्त हो उठा हुआ, स्वास्थ्योन्मुख 2 सुगठित, हट्टाकट्टा।

प्रोल्लेखनम् [प्र+उद्+लिख्+ल्युट्] खुरचना, चिह्न लगाना।

प्रोषित (भू० क० कृ०) [प्र+वस्+क्त] परदेश में गया हुआ, विदेश में रहने वाला, घर से दूर, अनुपस्थित, परदेश में रहने वाला। सम० —भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो, शृंगारकाव्यान्तर्गत आठ नायिकाओं में से एक सा०द० में दी गई परिभाषा —नानाकार्यवशाद्यस्या दूरदेशे गतः पतिः, सा मनोभवदुःखार्ता भवेत् प्रोषितभर्तृका—११९।

प्रौ (प्रो) **ष्ठः** [प्रकृष्टः ओष्ठो यस्य—प्रा० ब०, पररूपम्, पक्षे वृद्धि] 1 बैल, बलीवर्द 2 तिपाई, चौकी 3 एक प्रकार की मछली (ष्ठी—स्त्री)। सम० —पदः भाद्रपद मास (दा) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा नाम का पच्चीसवाँ व छब्बीसवाँ नक्षत्र।

प्रो (प्रौ) **हः** (वि०) [प्र+ऊह्+घञ्, पररूपम्, पक्षे वृद्धि] तार्किक विवादी —हः 1 तर्क, उक्ति 2 हाथी का पैर 3 ग्रंथि जोड़।

प्रौ (प्रो) **ढ** (वि०) [प्र+वह्+क्त सम्प्रसारणम्, पररूपम् पक्षे वृद्धि] 1 पूरा बढ़ा हुआ पूर्णविकसित परिपक्व पका हुआ पूरा बना हुआ, पूर्ण (जैसे कि चन्द्रमा)—प्रौढपुष्पैः कदम्बैः -मेघ० २५ प्रौढतालीविपाण्डु आदि मा० ८।१ ९।२८ 2 वयस्क बूढ़ा वृद्ध जनने हि मन्मथप्रौढसुहृदो निशीथस्य यौवनश्री मा०८ —शि० ११।३९ 3 घना सघन घोर प्रौढतमःकुरुकृतज्ञतयैव भद्रम् मा० ७।३ शि० ४।६४ 4 विशाल बलवान् समर्थ 5 प्रचण्ड उत्कट 6 भरोसा करने वाला साहसी, बेधड़क 7 घमंडी —ढा साहसी और बड़ी उम्र की स्त्री अपने स्वामी के सामने भी निर्भीक और निर्लज्ज काव्यरचनाओं में वर्णित चार प्रकार की मुख्य स्त्रियों में से एक भेद आषोडशाद्भवेद्बाला त्रिंशता तरुणी मता पञ्चपञ्चाशता प्रौढा भवेद्वृद्धा ततः परम्। सम० —अङ्गना साहसी स्त्री दे० ऊपर —उक्ति (स्त्री०) साहसयुक्त या दर्पपूर्ण उक्ति —प्रताप (वि०) बड़ा तेजस्वी बलवान —यौवन (वि०) जवानी में बढ़ा हुआ, ढलती जवानी का।

प्रौ (प्रो) **ढिः** (स्त्री०) [प्र+वह्+क्तिन्] 1 पूर्ण वृद्धि या विकास परिपक्वता पूर्णता 2 वृद्धि वर्धन 3 गौरव वैभव समृद्धि प्रताप—विक्रम० १।१५ 4 साहस, निर्भीकता 5 घमंड अहंकार आत्मविश्वास 6 उत्साह चेष्टा उद्यम। सम० —वाद वाग्विदग्धता से युक्त गर्वीली वाणी 2 साहसपूर्ण उक्ति।

प्रौण (वि०) [प्र+आप्+अच्] चतुर, विद्वान्, कुशल।

प्लक्ष [प्लक्ष्+घञ्] 1 वटवृक्ष गूलर का पेड़ —प्लक्षप्ररोह इव सौधतलं बिभेद— रघु० ८।९३ १३।७१ 2 संसार के सात द्वीपों में से एक 3. पार्श्व द्वार या पिछवाड़े का दरवाजा निजी गुप्त द्वार। सम० —जाता —समुद्रगामिनी सरस्वती नदी का विशेषण, —तीर्थम्,—प्रस्रवणम्, राज् (पुं०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती निकलती है।

प्लव (वि०) [प्लु+अच्] 1 तैरता हुआ, बहता हुआ 2. कूदता हुआ छलांग लगाता हुआ, —वः 1 तैरना, बहना 2 बाढ़, दरिया का बहाव 3 कुलांच, छलांग 4. बेड़ा धड़नई, डोंगी, छोटी नौका—नावश्चेच्च सर्वे पतत्प्लवं सुकिमपूरयत्—पंच० २।३८, सर्वं ज्ञान-

प्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि भग० ४।३६, मनु० ४।१९४, ११।१९, वेणी० ३।२५ 5 मेंढक 6 बन्दर 7 ढलान, ढलवाँ स्थान 8 भेड़ 9 भेड़ 10 नीच जाति का पुरुष, चाण्डाल 11. मछली पकड़ने का जाल 12 अंजीर का पेड़ 13 कारण्डव पक्षी, एक प्रकार की बत्तख 14 पदयोजना की दृष्टि से जुड़ी हुई पाँच या अधिक पंक्तियाँ, कुलक 15 स्वर का दीर्घो-च्चारण । सम० -गः 1 बन्दर—रघु० १२।७८ 2 मेंढक 3 जलीय पक्षी, जलमुर्गी पक्षी 4 शिरीष का वृक्ष 5 सूर्य के सारथि का नाम (-गा) कन्या-राशि, -गतिः मेंढक ।

प्लवकः [प्लु+वुन्, अक] 1 मेंढक 2 कूदने वाला व्यक्ति, कलाबाज, रस्से पर नाचने वाला नट 3 बड़ या पाकड़ का वृक्ष 4 चाण्डाल, जाति-बहिष्कृत 5 बन्दर ।

प्लवंगः [प्लव+गम्+खच्, डित् टिलोप मुम्] 1 लंगूर, बन्दर 2 हरिण 3 वटवृक्ष, पाकड़ का वृक्ष ।

प्लवंगमः [प्लव+गम्+खच् मुम्,] 1 बन्दर शि० १२।५५ 2 मेंढक ।

प्लवनम् [प्लु+ल्युट्] 1 तैरना 2 स्नान करना, गोता लगाना भा० १।१९ 3 छलांग लगाना, कूदना 4 बड़ी भारी बाढ़, प्रलय 5 ढलान ।

प्लवाका [प्लु+आकन्+टाप्] बड़नई, बेड़ा ।

प्लविकः (पुं०) [प्लव+ठन्] नाव में बिठाकर ले जाने वाला, खिवैया ।

प्लाक्षम् [प्लक्ष+अण्] प्लक्ष का फल ।

प्लावः [प्लु+णल्] 1 बह निकलना 2 कूदना, छलांग लगाना 3 इतना भरना कि किनारे से बाहर निकल जाय 4 तरल पदार्थ को छानना (उसका मैल दूर करने के लिए) याज्ञ० १।१९० (दे० इस पर मिता०)

प्लावनम् [प्लु+णिच्+ल्युट्] 1 स्नान, आचमन 2 बाहर निकल कर बहना बाढ़ आ जाना, जलमय हो जाना 3 बाढ़ प्रलय ।

प्लावित (भू० क० कृ०) [प्लु+णिच्+क्त] 1 तैराया गया, बहाया गया, जलमग्न किया गया 2 जलमय किया गया, बाढ़ में डुबोया गया, जल से लबालब भरा गया 3 तर किया गया, गीला किया गया, छिड़का गया -शि० १२।२५, कि० ११।३६ 4 ढका हुआ, आच्छादित ।

प्लिह् (भ्वा० आ० -प्लेहते) जाना, चलना-फिरना ।

प्ली (क्र्या० - पर० प्लीनाति) जाना, चलना-फिरना ।

प्लीहन् (पुं०) [प्लिह्+कनिन्, नि० दीर्घः] तिल्ली, तिल्ली का बढ़ जाना (प्लिहन् भी) । सम०—उदरम् तिल्ली का बढ़ जाना,—उदरिन् वह पुरुष जो तिल्ली की वृद्धि से पीड़ित हो ।

प्लीहा (स्त्री०) तिल्ली ।

प्लु (भ्वा० आ०—प्लवते, प्लुत) बहना, तैरना—कि मामेतत् मज्जन्त्यलाबूनि ग्रावाणः प्लवन्त इति—महावी० १, कलेवरस्तर रागवशात् प्लवन्ते—रघु० १६।६०, प्लवन्ते धर्मलवाो लोकेऽम्भसि यथा प्लवाः सुभा० 2 नाव में बैठ कर पार जाना 3 इधर उधर झूलना, थर-थराना 4 कूदना, छलांग लगाना फलांगना—भट्टि० ५।४८, १४।१३ १५।१६ 5 उड़ना, उड़ान भरना, हवा में मंडराना 6 फुदकना 7 (स्वर का) दीर्घ होना प्रेर० प्लावयति—ते 1 तैराना बहाना 2 हराना बहा ले जाना 3 स्नान कराना 4 जलमग्न कर देना, प्रलय आना बाढ़ आना जल में डुबोना घट बढ़ करना अभि—, 1 बह निकलना 2 हावी हो जाना पराभूत करना (आ०), अव—, कूदना छलांग लगाकर बह जाना उद् – 1 बहना तैरना 2 उछलना फलांगना - मनु० ८।२३, ९३, कूदना उचकना -शि० १२।२२, उप- , 1 बहना, तैरना 2 प्रहार करना, हमला करना, आक्रमण करना 3 अत्याचार करना, कष्ट देना तंग करना सताना निशाचरोपप्लुतभर्तृकाणां (तपस्विनीनाम्)—रघु० १४।६४, १०।५, मनु० ४।११८ परि—, 1 तैरना, बहना 2 स्नान करना, डुबकी लगाना 3 कूदना, उछलना 4 जल प्रलय होना, जलथल होना, बाढ़ आना 5 ढकना 6 हावी हो जाना (आ०), वि—, 1 इधर उधर बहना इधर उधर डावांडोल होना, घटबढ़ होना 2 (समुद्र में) नियंत्रण में उत्तरण करना, तितरबितर होना—हि० ३।२ 3 (मन आदि का) अव्यवस्थित होना 4 बर्बाद होना, नष्ट हो जाना 5 असफल होना, प्रेर०—1 बहाना, तैरना 2 (अयोग्य व्यक्तियों का) अध्यापन करना मनु० ११।१९९ 3. अव्यवस्थित होना, घबराना उद्विग्न होना, सम्,-- 1. घट बढ़ होना, इधर—उधर बहना 2. इकट्ठे बहना, (पानी की भांति) मिलना —भग० २।४६ ।

प्लुत (भू० क० कृ०) [प्लु+क्त] 1 तैरता हुआ, बहता हुआ 2. जलमय हुआ; जल में डूबा हुआ, जल में बहा हुआ 3 कूदा हुआ, फलांगा हुआ 4. (स्वर) दीर्घीकृत, प्रदीर्घ हुआ 5 ढका हुआ (दे० प्लु), -तम् 1, कूद, छलांग, उचक 2 कूद फांद, घोड़े का कदम विशेष । सम० -गतिः खरगोश (स्त्री०) 1. उछल कूद कर चलना 2. सरपट दौड़ना, घोड़े की टप्पेदार चाल ।

प्लुतिः (स्त्री०) [प्लु+क्तिन्] 1. बाढ़, ऊपर से बहना, जलमय होना 2. उछाल, कूद, उचक जैसा कि 'मंडूक-प्लुति' में 3. कूदफांद कर चलना, घोड़े की एक चाल

विशेष 4. स्वर की ध्वनि का लंबा करना, प्रदीर्घ करना।

प्लुष् I (भ्वा०, दिवा० क्र्या० पर० — प्लोषति, प्लुष्यति, प्लुष्णाति, प्लुष्ट) जलाना झुलसना, चकचकाना, गर्म लोहे से दागना — ऋतु० १।२२ भट्टि० २०।३४। II (क्र्या० पर० प्लुष्णाति) 1 छिड़कना, गीला करना 2 लेप करना 3 भरना।

प्लुष्ट (भू० क० कृ०) [प्लुष्+क्त] झुलसाया गया, जलाया गया, दागा गया।

प्लेव् (भ्वा० आ० प्लेवते) सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में उपस्थित रहना।

प्लोषः [प्लुष्+घञ्] जलाना, जलदाह होना ('प्रोष' भी)।

प्लोषण (वि०) (स्त्री० —णी) [प्लुष्+ल्युट्] जलना, झुलसना, जल कर राख हो जाना — तार्तीयीकं पुरारेस्तदवतु मदनप्लोषणं लोचनं वः - मा० १, (पाठान्तर), —णम् जलना, झुलसना ('प्रोषण' भी)।

प्सा (अदा० पर० प्साति, प्सात) खाना, निगल जाना।

प्सात (भू० क० कृ०) [प्सा+क्त] 1 खाया हुआ 2 भूखा।

प्सानम् [प्सा+ल्युट्] 1 खाना 2 भोजन।

— —

फ

फक्क् (भ्वा० पर० — फक्कति, फक्कित) 1 शनै—शनै चलना-फिरना, फुर्ती से जाना, सरकना, धीरे-धीरे चलना 2. गलती करना, दुर्व्यवहार करना 3 फूल उठना।

फक्किका [फक्क्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 एक अवस्था सिद्ध करने के लिए पूर्वपक्ष, उक्ति या प्रतिज्ञा जिसको बनाये रखना है — फणिभाषितभाष्यफक्किका विषमा कुण्डलनामवापिता — नै० २।९५ 2 पक्षपात, पूर्वचिन्तित सम्मति।

फट् (अव्य०) एक अनुकरणमूलक शब्द जिसे जादू मन्त्रादिक के उच्चारण करने में रहस्यमय रीति से प्रयुक्त किया जाता है — अस्त्राय फट्।

फटः [स्फुट्+अच् पृषो०] 1 साँप का प्रसारित किया हुआ फण ('फटा' भी इसी अर्थ में) — निर्विषेणापि सर्पेण कर्तव्या महती फटा (पाठान्तर - फणा) विषं भवतु मा भूद्वा फटाटोपो भयंकरः — पंच० १।२०४ 2. दाँत 3 धूर्त, ठग, कितव।

फडिंगा [फड् इति शब्दमिङ्गति फड्+इङ्ग्+अच् टाप्] झींगुर, टिड्डी, टिड्डा, फतिंगा।

फण् (भ्वा० पर० फणति, फणित) 1 चलना-फिरना, इधर उधर घूमना, —ऊवुर्भेजिरे फेणुर्बभ्रमुर्हरिराक्षसाः — भट्टि० १४।७८ 2 अनायास उत्पन्न करना, बिना किसी परिश्रमके पैदा करना (यह अर्थ कुछ के मतानुसार प्रेरणार्थक क्रिया का है)।

फणः,—णा [फण्+अच्, स्त्रियां टाप्] किसी भी साँप का फैलाया हुआ फण — विप्रकृतः पन्नगः फणां (फणा) कुरुते — श० ६।३०, मणिभिः फणस्थैः — रघु० १३। १२, कु० ६।६८, बहति भुवनश्रेणिं शेषः फणाफलकस्थिताम् — भर्तृ० २।३५। सम० —करः साँप, —धरः 1. साँप 2 शिव का नाम, —भृत् (पुं०) साँप, —मणिः साँप के फण में पाई जाने वाली मणि, —मण्डलम् साँप का कुण्डलीकृत शरीर — करालफणमण्डलम् रघु० १२।९८, तत्फणामण्डलोदर्चिर्मणिद्योतितविग्रहम् — १०।७।

फणिन् (पुं०) [फणा+इनि] 1. फणधारी साँप, सामान्य साँप, सर्प — उद्गिरतो यद्गरलं फणिनः पुष्णासि परिमलोद्गारैः — भामि० १।१२५८ फणी मयूरस्य तले निषीदति — ऋतु० १।१३, रघु० १६।१७, कु० ३।२१ 2 राहु का विशेषण 3 पतञ्जलि का विशेषण, (पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य के प्रणेता) — फणिभाषितभाष्यफक्किका नै० २।९५। सम० —ईश्वरः 1 शेषनाग का विशेषण 2 साँपों के अधिपति अनन्त का विशेषण 3 पतञ्जलि का विशेषण, —तल्पगः [illegible] विष्णु का (शेषनाग जिनकी शय्या है) विशेषण, —पतिः 1 वासुकि या शेषनाग का विशेषण 2 पतञ्जलि का विशेषण — भाष्यम् शेष अर्थात् भाष्यम् (पाणिनि के सूत्रों पर किया गया भाष्य) महाभाष्य, —भुज् (पुं०) 1 मोर 2 गरुड का विशेषण।

फत्कारिन् (पुं०) [फत्कार+इनि] पक्षी।

फरम् [फल्+अच्, रलयोरभेदः] ढाल — तु० फलक।

फरुवकम् (नपुं०) पानदान पान रखने का डब्बा।

फर्वरीकः [स्फुर्+ईकन्, धातोः फर्वरादेशः] खुले हुए हाथ की हथेली। —कम् 1 ताजा अङ्कुर या टहनी का अंखुवा 2. मृदुता, — का [illegible]।

फल् I (भ्वा० पर० फलति, फलित) 1. फल आना, फल पैदा करना — नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः — भर्तृ०

२।४०, परोपकाराय द्रुमाः फलन्ति सुभा०—विधातुर्व्यापारः फलतु च मनोज्ञश्च भवतु—मा० १।१६ (इस अर्थ में प्रायः सकर्मक के रूप में धातु का प्रयोग होता है) —मौर्येऽस्यैव फलन्ति विविधश्रेयांसि मन्नीतयः—मुद्रा० २।१६ 'निष्पन्न या घटित करना' 2 परिणामयुक्त होना, सफल होना, पूरा होना, निष्पन्न होना, कामयाब होना 'कैकेयि कामाः फलितास्तवेति—रघु० १३।५९, १५।७८, यथा न फेलुः क्षणदाचराणां (मनोरथाः)—भट्टि० १४।११३, १२।६६, नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलम्—भर्तृ० २।९६, ११६ 3 फल निकलना, परिणाम या नतीजा पैदा करना—फलितमस्माकं कद्[...]न—हि० १, फलितं नस्तर्हि भगवती पादप्रसादेन—मा० ६, कि० १८।२५, खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु—हि० ३।२१, 'दुष्ट व्यक्ति बुरे कार्य करते हैं और भले पुरुषों को उनका परिणाम भुगतना पड़ता है' 4 पक्का होना, पक जाना। ii (भ्वा० पर०—फलति, फुल्ल या फुल्त (पहले अर्थ में), दूसरे अर्थ में फलित) 1 बलपूर्वक तोड़ना, खंड २ करना, फट जाना, दरार पड़ना—तस्य मूर्धानमासाद्य पफालासिवरो हि सः—महा० 2. प्रतिफलित होना, अक्स पड़ना—कि० ५।३८ 3. जाना।

फलम् [फल्+अच्] 1 फल (आल० से भी) जैसे वृक्ष का—उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—श० ७।३०, रघु० ४।३३, १।४९ 2 फसल, पैदावार—कृषिफल—मेघ० १६ 3 परिणाम, फल, नतीजा, प्रभाव—अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८३, फलेन ज्ञास्यसि—पंच० १, न नवः प्रभुराफलोदयात् स्थिरकर्मा विरराम कर्मणः रघु० ८।२२, १।३३ 4. (अत) पुरस्कार, क्षतिपूर्ति, पारितोषिक (शुभ या अशुभ) प्रतिफल—फलमस्योपहासस्य सद्यः प्राप्स्यसि पश्य माम्—रघु० १२।३७ 5. कृत्य, कर्म (विप० वचन)—ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम्—नै० २।४८, 'भले पुरुष अपनी उपयोगिता कर्मों से सिद्ध करते हैं न कि वचनों से' 6. उद्देश्य, आशय, प्रयोजन—परोक्षज्ञानफला हि बुद्धयः—पंच० १।४३, किमपेक्ष्य फलम्—कि० २।२१ 'किस आशय को विचार में रखकर', मेघ० ५४ 7. उपयोग, भलाई, लाभ, हित—जगतो वा विफलेन किं फलम्—भामि० २।६१ 8. लाभ या मूलराशि का ब्याज 9. प्रजा, सन्तान—रघु० १४।३९ 10. (फल की) गिरी 11. पट्टिका या फलक 12. (तलवार का) फल 13 तीर की नोक या सिरा, बाण, नीलकार—मुद्रा० ७।१० 14. ढाल 15. अण्डकोष 16. उपहार 17 (गणित में) गुणन-फल 18. गुणनफल 19 रज.स्राव 20 जायफल 21. कुल का फल, फली। सम०—अध्यक्षः = फलाध्यक्ष,—अनुबन्धः परिणामक्रम, फलपरम्परा,—अनुमेय (वि०) जिसका अनुमान फल या परिणाम पर निर्भर हो—फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव—रघु० १।२०,—अन्तः बांस,—अन्वेषिन् (वि०) (कर्मों के) पुरस्कार या क्षतिपूर्ति की खोज करने वाला,—अपेक्षा (कर्मों के) फल या परिणामों की आशा, नतीजे का ध्यान,—अशनः तोता,—अम्लम् इमली,—अस्थि (नपुं०) नारियल,—आकांक्षा (अच्छे परिणामों की) आशा—दे० फलापेक्षा,—आगमः 1. फलों की पैदावार, फलों का भार,—भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः—श० ५।१२ 2 फलों का मौसम, पतझड़,—आढ्य (वि०) फलों से भरा हुआ,—आम्लपा एक प्रकार के अंगूर (जिसमें गुठलियाँ या बीज नहीं होते),—उत्पत्तिः (स्त्री०) 1. फलों की पैदावार 2 फायदा, लाभ (त्रि०) आम का वृक्ष (कभी-कभी इसी अर्थ को प्रकट करने के लिए 'फलोत्पत्ति' भी लिखा जाता है), —उदयः 1. फलों का दिखाई देना (आना), फल या परिणाम का निकलना, अभीष्ट पदार्थ या सफलता की प्राप्ति—आफलोदयकर्मणाम्—रघु० १।५,—उद्देशः फलों का ध्यान, दे० फलापेक्षा,—कामना परिणाम या फल की इच्छा,—कालः फलों का समय,—केसरः नारियल का पेड़,—ग्रहः हित या लाभ को ग्रहण करने वाला,—ग्राहि,—ग्राहिन् (वि०) (फलेग्रहि या फलेग्राहिन्) फलों से भरा हुआ, मौसम में फल देने वाला,—[...] कुलमुपैति पैतृकं स्यामनोरथतरुः फलेग्रहिः—कीर्ति० ३।६०, मा० ९।३९,—द (वि०) 1 उपजाऊ, फलदार, फल देने वाला मनु० ११।१४२ 2 [...] फल या फायदा पहुँचाने वाला (दः) वृक्ष,—निवृत्तिः (स्त्री०) परिणामों की समाप्ति,—निष्पत्तिः फलों का उत्पादन,—पाकः ('फलेपाक' भी) 1. फलों का पकना 2. परिणामों की पूर्णता,—पादपः फलवृक्ष,—पूरः,—पूरकः सामान्य नीबू का पेड़,—प्रदानम् 1. फलों का देना 2. विवाह के अवसर पर एक संस्कार विशेष,—बन्धिन् (वि०) फल को विकसित करने वाला या रूप देने वाला,—भूमिः (स्त्री०) वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने [...] का शुभाशुभ फल भोगता है (अर्थात् स्वर्ग या नरक),—भृत् (वि०) फलदायी, फलों से पूर्ण,—भोगः 1 फलों का आनन्द लेना 2. भोगाधिकार,—योगः 1 अभीष्टपदार्थ या फल की प्राप्ति मुद्रा० ७।१० 2. मजदूरी, पारिश्रमिक,—राजन् (पुं०) तरबूजा,—वर्तुलम् तरबूज,—वृक्षः फलदार वृक्ष,—वृक्षकः कटहल का वृक्ष,—षाडवः अनार का पेड़,—श्रेष्ठः आम का पेड़,—संपद् 1. फलों की बहुतायत 2. सफलता,

—साधनम् अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि का उपाय उद्देश्य की पूर्ति, स्नेह: अखरोट का पेड़ हारी काली या दुर्गा का विशेषण।

फलकम् [फल+कन्] 1 पट्ट, तख्ता, शिला पटल या पट्टी — काल काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारैः —भर्तृ० ३।३९ शून चित्र आदि 2 चपटी सतह — घूर्ण्यमानकपाल फलक म का० २१८ घ्राणमुख मण्डफलकैर्विभु ... 3 ढाल 4 पत्र पृष्ठ 5 मिनर ... 6 हाथ की हथेली। सम० —पाणि (वि०) (योद्धा की भांति) हाथ में सुसज्जित यन्त्रम् ... द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिर्विषयक उपकरण।

फलत (अव्य०) [फल ...] ... परिणामतः यथार्थतः।

फलनम् [फल्+ल्युट्] 1 ... 2 फल या परिणाम उत्पन्न ...

फलवत् (वि०) [फल ...] 1 ... 2 फलदायी, परिणामदर्शी ... 'प्रियंगु' नामक लता।

फलिता [फल+इतच्+टाप्] रजस्वला स्त्री।

फलिन् (वि०) [फल इनि] फलों से पूर्ण, फलदायी (आल० भी) पुष्पिता फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयतः स्मृताः —मनु० १।४७ मृच्छ० ४।१० पु० (पुं०) वृक्ष।

फलिन (वि०) [फल्+इनच्] फलों से पूर्ण, फलदायी —नः कटहल का पेड़।

फलिनी,—फली [फलिन्+ङीप्, फल+अच्+ङीष्] प्रियंगु लता (कवियों के द्वारा इसे आम की पत्नी कहा गया है, तु० रघु० ८।६१)।

फल्गु (वि०) [फल्+उ, गुक् च] 1 बिना गूदे का, रसहीन, सत्वरहित, सारविहीन, सार तत्त्व ... पात्रं फल्गु पंच० १।... 2 अयोग्य, निरर्थक, महत्वहीन — शि० ३।३६ 3 अल्प, सूक्ष्म 4 निर्मूल, व्यर्थ 5 दुर्बल, बलहीन, निस्सार, —ल्गु (स्त्री०) 1 वसन्तऋतु 2 गूलर का वृक्ष 3 गया के पास एक नदी। सम० —उत्सवः वसन्तोत्सव होली का त्योहार।

फल्गुन [फल्+उनन्, गुक् च] 1 फाल्गुन का महीना 2 इन्द्र का नामान्तर, —नी एक नक्षत्र का नाम तु० ७।६।

फल्यम् [फल+यत्] फूल।

फाणि, फाणितम् [फण्+णिच्+इञ्, क्त वा] सीरा, राब।

फाण्ट (वि०) [फण्+क्त, नि० साधु] सुगम प्रक्रिया द्वारा निर्मित, आसानी से बनाया हुआ (जैसे काढ़ा) —टः,—टम् अर्क, काढ़ा — फाण्टमनायासमाध्य कषाय-विशेष —सिद्धा० फाण्टविभागरूपाणय —भट्टि० ९।१७ (दे० भाष्य)।

फाल —लम् [फल+अण् फल्, घञ् वा] 1 हल का फल फाली मनु० ६।१६ 2 बालों की मांग निकालना सीमन्तभाग ... १६ —लः 1 बलराम का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3 नींबू का पेड़, —लम् 1 सूती कपड़ा 2 जोता हुआ खेत।

फाल्गुन [फाल्गुनी+अण्] 1 महीने का नाम (जो फरवरी मार्च में आता है) 2 अर्जुन का विशेषण महा० में नाम की व्याख्या इस प्रकार है — उत्तराभ्यां फाल्गुनीभ्यां नक्षत्राभ्यामहं दिवा। जातो हिमवतः पृष्ठे तेन मां फाल्गुनं विदुः। ... वृक्ष का नाम जिसे अर्जुन कहते हैं। सम० —अनुजः 1 चैत्र का महीना 2 वसन्तकाल 3 नकुल और सहदेव का विशेषण।

फाल्गुनी ... फाल्गुनी ... पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी ... पूर्णिमा ...।

फिरङ्गः (पुं०) ... यूरोपीय ...।

फिरङ्गिन् (पुं०) ... फिरंगी ... यूरोपियन।

फुक्क ... पक्षी।

फु (फू) ... अनुकरणात्मक शब्द जो ... के साथ प्रायः होता है ... पदार्थों में ... से ... भी फूं फूं की ध्वनि ... इसमें घृणा सूचित होती है, फु (फू) कृ ... फूंक मारना ... मल्लधारः ... शि० ४।१०३। सम० कारः कृतम् —कृतिः (स्त्री०) 1 फूंक मारना 2 सांप की फुफकार 3 सी सी करना, आग आदि को ... 4 सुबकना 5 चीख मारना, जोर की चीख चीत्कार।

फुप्फुस, —सम् (नपुं०) फेफड़ा।

फुल्ल (भ्वा० पर० फुल्लति, फुल्लित) फलों आना, फूलना, फुलाना (पुष्प का) खिलना।

फुल्ल (भू० क० कृ०) [फल्+क्त, उत्व लत्वम्] 1 फैलाया हुआ, खिला हुआ, पका हुआ, पुष्प व फुल्ल नव मल्लिकाया प्रयाति कान्तिं प्रमदाजनानाम् ऋतु० ६।६ फुल्लारविन्दवदनाम् चौर० १ 2 फूल आना खिला हुआ, रघु० ९।६३ 3 विस्फारित, फैलाया हुआ (आंखों की भांति) खूब खुला हुआ पंच० १।१३६। सम० —लोचन (वि०) (हर्ष से) खिली हुई आंखों वाला (नः) एक प्रकार का मृग।

फेत्कारः [फेत्+कृ+घञ्] चीखना, हुआं (कुत्ते भेड़िये की ध्वनि)।

फेन —नः [स्फाय्+न, फे आदेश, पक्षे अत्वम्] 1 झाग, फेन (कफ आदि) —गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः मेघ० ५० रघु० १३।११, मनु० २।६१

2 मुँह का झाग या बुलबुला 3 थूक। सम० —बिन्दुः 1 बुलबुला 2 खोखला विचार, असत्य, —वाहिन् (पुं०) छानने के काम का कपड़ा।

फेन (न) कः [फेन + कन्] दे० 'फेन'।

फेनिल (वि०) [फेन + इलच्] झागदार, बुलबुले वाला —फेनिलमम्बुराशिम् रघु० १३।२।

फेरः, फेरवः [फे + रा + क, फे + रव् + अच्] गीदड़।

फेरवः [फे इति रवो यस्य ब० स०] 1 गीदड़—कदाचन्द्र... चण्डहासाकृतिं मा० ५।१९, 2 धूर्त बदमाश, ठग 3 राक्षस पिशाच।

फेरुः [फे + रु + डु] गीदड़।

फेलम्, फेला फेलिका फेली [फेल्यते दूरे निक्षिप्यते, फेल् + अच् स्त्रियां टाप्, फेल् + इन् कन् + टाप्, फेलि + ङीप्] उच्छिष्ट भोजन, भोजन का बचा खुचा भाग, जूठन।

ब

बट् [अव्य०] ... [illegible]

बडिशम् [illegible] बाहुल्य

बहिष्ठ (वि०) [अतिशयेन बहुः इष्ठन् बहादेश] अत्यन्त अधिक, अत्यन्त बड़ा, बहुत ही ज़्यादह

बंहीयस् (वि०) [बहु + ईयसुन् बंहादेश] अपेक्षाकृत अधिक, बहुत ज़्यादह, अपेक्षाकृत बहुसंख्यक

बकः [वङ्क् + अच्, पृषो० साधुः] 1 बगला 2 ... धूर्त पाखंडी (बगला बड़ा धूर्त पक्षी है यह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को फांस लेता है) 3 एक राक्षस का नाम जिसे भीम ने मारा था 4 एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मारा था 5. कुबेर का नामान्तर। सम०—चर —वृत्तिः,—व्रतचरः, —व्रतिक —व्रतिन (पुं०) बगले की भाँति आचरण करने वाला, ढोंगी, पाखंडी—अधो दृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः, शठो मिथ्याविनीतश्च बकव्रतचरो द्विजः मनु० ४।१९६, —जित् (पुं०) —निषूदनः 1 भीम का विशेषण 2 कृष्ण का विशेषण, —व्रतम् बगले की भाँति आचरण, पाखंड।

बकुलः [बकत् + उरच्, रेफस्य लत्वम्, नलोपः] एक (मौलसिरी) वृक्ष (कहा जाता है कि कविसमयानुसार तरुणियों द्वारा मदिरा का गंडूष छिड़कने पर इसमें मंजरी फूट आती है)—काङ्क्षत्यन्यो (अर्थात् केसर या बकुल) वदनमदिरां दोहदच्छद्मनाऽस्याः —मेघ० ७८, बकुल सीधुगण्डूषसेकात् (विकसित) (इस प्रकार के अन्य वृक्षों से सबद्ध 'कविसमयों के लिए प्रियंगु के नीचे उद्धरण देखो), —लम् मौलसिरी वृक्ष का सुगंधित फूल—भामि० १।५४।

बकेरुका [बकानां बकसमूहानाम् ईरुक गतिर्यत्र—ब० स०] छोटी बगली।

बकोटः (पुं०) बगला।

बट् ... [illegible] ... (कोष्ठक के) आदि दे० बट्।

बडिश (न), ... मछली पकड़ने का काँटा —भामि० १।२१।

बत (अव्य०) [बन् + क्त पृषो० नलोपः] निम्नांकित अर्थप्रकट करने वाला अव्यय 1 शोक, खेद —अय बत विदूरतः ... कथमगमदसौ ... मा० ५।१... अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् भग० १।४५ 2 दया या करुणा ... बत ... वारिधारा करिष्यति ... कालिकालाम् —श० १।१० 3 सबोधन पुकारना —बत वितरत तोयं तोयवाहा नितान्तम् गणा० रघु० ९।४७ 4 हर्ष या सन्तोष अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः कु० ३।२० 5 आश्चर्य अथवा, अहो बत महच्चित्रम्—का० १९५, 6 निन्दा (अहो के साथ 'बत' के अर्थ 'अहो' के अन्तर्गत दे०)।

बदरः [बद् + अरच्] बेर का पेड़, —रम् बेर का फल —कर-बदरसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः सा जयति सरस्वती देवी—वास० १ भामि० २।८। सम० —पाचनम् एक पुण्यतीर्थ स्थान।

बदरिका [बदरी + कन् + टाप्, ह्रस्व] बेर का पेड़ या फल —अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरा:—हि० १।९४ 2 गंगा का एक स्रोत, जो नर और नारायण के आश्रम के निकट स्थित है, इसे ही बदरीनारायण कहते हैं। सम० आश्रमः बदरिका का आश्रम।

बदरी [बदर + ङीष्] 1 बेर का पेड़, दे० बादरायण 2 —बदरिका (ऊपर 2)। सम० —तपोवनम् बदरी-स्थित तपस्या करने का उद्यान- कि० १२।३३, —फलम् बेर के पेड़ का फल,—वनम् (वणम्) बेर की झाड़ी या जंगल, —शैलः बदरी पर स्थित पहाड़।

बद्ध (भू० क० कृ०) [बन्ध् + क्त] 1. बंधा हुआ, बंधा

हुआ, कसा हुआ 2. शृंखलित, बेड़ियों से जकड़ा हुआ 3. बंदी, पकड़ा हुआ 4. अवरुद्ध, कारावासित 5, कमर कसे हुए 6. संयत, दबाया हुआ, रोका हुआ 7 निर्मित, बनाया हुआ 8. प्यार किया गया, रिझाया गया 9 मिलाया गया, सहित 10 पक्का जमाया गया, दृढ़। सम०—अङ्गुलित्र,—अङ्गुलित्राण (वि०) दस्ताना पहने हुए,—अञ्जलि (वि०) हाथ जोड़े हुए, आदर या सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए, अनुराग (वि०) स्नेह में बंधा हुआ, प्रेम के कारण अनुरक्त, प्रेमबंधन में जकड़ा हुआ, अनुशय (वि०) पश्चात्ताप करने वाला, आशङ्क (वि०) जिसकी आशंकाएँ बढ़ गई हैं, शंकाकुल,—उत्सव (वि०) उत्सव या त्यौहार मनाते हुए,—उद्यम (वि०) मिलकर प्रयत्न करनेवाले, कक्ष,—कक्ष्य (वि०) दे० 'बद्धपरिकर'—क्रोध,—मन्यु,—रोष (वि०) 1. क्रोध अनुभव करते हुए, क्रोध या रोष की भावना रखते हुए 2 अपने क्रोध का दमन करने वाला,—चित्त मनस् (वि०) मन को किसी ओर जमाये हुए, मन को किसी ओर दृढ़तापूर्वक लगाने वाला, जिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा कील दी गई है,—दृष्टि,—नेत्र, लोचन (वि०) आंख को एक ओर जमा कर ताकने वाला टकटकी लगाकर देखने वाला,—धार (वि०) लगातार अविच्छिन्न रूप से बहने वाला, नेपथ्य (वि०) नाटकीय वेशभूषा धारण किये हुए, परिकर (वि०) कमर बांधे हुए, कमर कसे हुए, तैयार सज्जित, प्रतिज्ञ (वि०) 1 जिसने कोई व्रत या प्रतिज्ञा की है 2. दृढ़ संकल्प वाला, भाव (वि०) स्नेहशील दिल लगाये हुए, मुग्ध (अधि० के साथ) दृढ स्वयि बद्धभावोर्वशी विक्रम० २, मुष्टि (वि०) 1 मुट्ठी बांधे हुए 2 मुट्ठी भींचे हुए, कंजूस, मूल (वि०) जिसकी जड़ गहराई तक गई हो जड़ पकड़े हुए —बद्धमूलस्य मूलं हि महद्वैरतरोः स्त्रियः शि० २।३८, मौन (वि०) चुप्पी साधे हुए, मौन रहने वाला, चुप अदृश्यत त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम् रघु० १३।२३,—राग (वि०) आसक्त, मुग्ध, अनुरक्त पंच० १।१२३, वसति (वि०) अपना वास स्थान स्थिर करने वाला, वाच् (वि०) जिह्वा रोके हुए, चुप रहने वाला, वेपथु (वि०) कपकपी से ग्रस्त, वैर (वि०) जिसको किसी से घोर घृणा हो गई हो या पक्की शत्रुता हो गई हो, शिख (वि०) 1 जिसने अपनी चोटी बांध ली है, (चोटी में गांठ दे ली है) 2 जो अभी बच्चा है बालक, स्नेह (वि०) अनुराग करने वाला स्नेहशील।

बध् (भ्वा० आ०—बीभत्सते—मूल अर्थ को बताने वाले बध् धातु का सन्नन्त रूप) घिन करना, घृणा करना, अरुचि रखना, संकोच करना, झिझकना, ऊबना (अपा० के साथ) पापेभ्यो बीभत्समानाः—उत्तर० १।

बधिर (वि०) [बन्ध्+किरच्] बहरा,—अभिनिर्भिन्नस्य बधिरीकृतश्रुते —शि० १३।३, मनु० ७।१४९।

बधिरयति (ना० धा० पर०) बहरा बनाना (आलं० से भी) बधिरिताशेषदिगन्तरालम् का०, महावी० ६।८०।

बधिरित (वि०) [बधिर+इतच्] बहरा किया गया, बहरा बनाया गया।

बधिरिमन् (पु०) [बधिर+इमनिच्] बहरापन।

बन्दिः, —दी (स्त्री०) [बन्द्+इन्, बन्दि+ङीप्] 1 बंधन, कारावास 2 कैदी, बंधुआ—कु० २।६१।

बन्ध् (क्र्या० पर० बध्नाति, बद्ध०, कर्म० बध्यते) 1 बांधना कसना, जकड़ना—बबन्ध न संभावित एव तावत्करेण रुद्धोऽपि च केशपाशः कु० ७।५७, रघु० ७।९, कु० ७।२५, भट्टि० ९।७५ 2 दबोचना, पकड़ना, जेल में डालना, जाल में फंसाना, बंदी बनाना—कर्मभिर्न स बध्यते भग० ४।१४, बलिर्बबन्धे —भट्टि० २।३९, १४।५६ 3 जंजीर में बांधना, बेड़ी में जकड़ना 4 रोकना ठहराना, दमन करना यथा बद्धकोप बद्धकोष्ठ आदि में 5. पहनना, धारण करना न हि चूडामणिः पादे प्रभवामीति बध्यते पंच० १।७२, बबन्धुरङ्गुलित्राणि भट्टि० १४।७, 6 (आंख आदि का) आकृष्ट करना, गिरफ्तार करना—बबन्ध चक्षूंषि यवप्ररोहः कु० ७।१७, या बध्नाति मे चक्षुः (चित्रकूट) रघु० १३।४७ 7 स्थिर करना, जमाना, (आंख या मन आदि) निर्देशित करना, डालना (अधि० के साथ) दृष्टिं लक्ष्येषु बध्नन्—मुद्रा० १।२, रघु० ३।४ ६।३६ भट्टि० २०।२२ 8. (बाल आदि) बांधना, मिलाकर जकड़ना मुद्रा० ७।१७ 9 निर्माण करना, संरचना करना, रूप देना, व्यवस्थित करना बद्धोर्मिनाकवनितापरिभुक्तमुक्तम् —कि० ८।५७, मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु० श० २।६ तस्याञ्जलिं बन्धुमतो बबन्ध रघु० १६।५ ४।३८, ११।३९, ७८, कु० २।४७, ५।३० भट्टि० ७।७७ 10 एकत्र करना, रचना करना (कविता श्लोक आदि) निर्माण करना तुष्टैर्बद्धं तदलघु रघुस्वामिनः सच्चरित्रम् —विक्रम० १८।१०७ श्लोक एव त्वया बद्धः —रामा० 11 बनाना, पैदा करना, (फल आदि) जन्म देना —रघु० १२।६९, श० ६।४ 12. रखना, अधिकार में करना, ग्रहण करना, सजा कर रखना उत्तर० २।८, ('बध्' के अर्थों में उन समासों के अनुसार जिनसे वह

संयुक्त होता है, नाना प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उदा० भ्रुकुटिं बन्ध् भौंहों में बल डालना, त्योरी चढ़ाना, मुष्टिं बन्ध् मुट्ठी बांधना, अञ्जलिं बन्ध् नम्र निवेदन के लिए हाथ जोड़ना चित्तं, धियं, मनः हृदयं, बन्ध् मन लगाना, दिल लगाना प्रीतिं, भावं, रागं बन्ध्, प्रेमपाश में बद्ध होना, मुग्ध होना, सेतुं बन्ध् पुल बनाना सेतु का निर्माण करना, वैरं बन्ध् घृणा पैदा होना शत्रुता सख्यं, सौहृदं बन्ध् मैत्री करना गोलं बन्ध् गोल बांधना मण्डलं बन्ध्, मण्डल बनाना गोल बांध कर बैठना मौनं बन्ध् चुप्पी साधना परिकरं बन्ध् कक्षां बन्ध् कमर कसना, तैयार हो जाना दे० बद्ध के नीचे समस्त शब्द प्रेर० बंधवाना बनवाना रचवाना निर्माण करवाना रघु० १२।७०, अनु , 1 बांधना जकड़ना शि० ८।६० 2 लग जाना चिपकना मुग्ध होना [illegible] मामनु [illegible] 3 अनुस्यूत रखना अनुधावन अनुसरण करना [illegible] पर [illegible] मधुकरकुलैरनुबध्यमानम् का० १३४ [illegible] सम्बो [illegible] 4 दबाव डालना [illegible] अत्यंत आग्रह करना आ 1 बांधना जकड़ना कसना मनु० ९।[illegible] 2 बनाना निर्माण करना व्यवस्थित करना आबद्ध [illegible] कु० ४९ आबद्धमाला मेघ० [illegible] ५।३३,—आबद्धरश्मिमण्डितो [illegible] 3 स्थिर करना जमाना [illegible] रघु० ८।५० उद् , बांधना कसना [illegible] मुद्रा० ६ रघु० १६।६४ नि , बांधना कसना जकड़ना [illegible] निबध्नन्ति [illegible] ९।१९ [illegible] मनु० ६।७४ [illegible] 2 स्थिर करना अधरस्य [illegible] निबद्धराग [illegible] ४।२९ 3 बनाना, निर्माण करना सरचना करना व्यवस्थित करना—हेमनिबद्धं चक्रम् पाषाणचयनिबद्ध कूप आदि 4 लिखना रचना करना [illegible] निबद्धेयं [illegible] कथा—क० ५ निस् [illegible] दबाव डालना प्रेरित करना अत्यन्त आग्रह करना परि 1 कसना बांधना 2 पकड़ना 3 घेरा डालना चारों ओर से बांधना 4 गिरफ्तार करना ठहराना ५ विघ्न डालना रुकावट डालना प्रति , 1 कसना जकड़ना, बांधना पोतप्रतिबद्धवत्साम् (धेनुम्) रघु० २।१ 2 स्थिर करना, निर्देशित करना कु० ७।९१ 3 बाधित करना जकड़ना, गढ़ना—यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते [illegible] १।७५, बहुलानुरागकुलबन्धप्रतिबद्धमधुमिव [illegible] कथम् शि० ९।८ 4 अवरोध करना, विघ्न डालना, पीछे हटाना, निकाल देना, बंद कर देना—प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः रघु० १।७९ 5 रोकना, हस्तक्षेप करना —नैनमन्तरा प्रतिबध्नीत [illegible] श० ६, सम् 1 मिला कर बांधना या कसना, एकत्र करना, संयुक्त करना, साथ लगाना 2 सरचना करना, बनाना दे० संबद्ध।

बन्ध [बन्ध्+घञ्] 1 ग्रन्थि बन्धन (यथा-आबद्धबन्ध) 2 बालों को बांधने की पट्टी, फीता विक्रम० ४।१०, श० १।३० 3. शृङ्खला बेड़ी 4 बेड़ी डालना, कारागार में डालना, जेल में बंद करना मनु० ८।३१० 5 बांधना पकड़ना पकड़ लेना—[illegible] रघु० १६।[illegible] 6 निर्माण, सरचना, व्यवस्थापन सर्गबन्धो महाकाव्यम् —सा० द० ६ 7 धारणा, [illegible] विचारना [illegible] गाढानस्त्यजत सुकविप्रेमबन्धे [illegible]—विक्रमाङ्क० १८।१०७ रघु० ६।८१ 8. सयोग मिलन [illegible] 9 जोड़ना मिलाना, मिश्रण करना रघु० १४।१३, अञ्जलिबन्ध आदि 10 पट्टी, [illegible] 11 [illegible] 12 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, [illegible] रघु० १८।५२ 13 बंधन, भवबंधन (विप० मुक्ति० अर्थात् सांसारिक बंधनों से पूर्ण मोक्ष) बन्ध [illegible] बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी भग० १८ [illegible] बन्धान्मुक्त्यै खलु मखमुखान् कुर्वते कर्म [illegible]—भामि० ४।२१ रघु० १३।५८, १८।७ 14 [illegible] परिणाम 15 स्थिति अंगविन्यास, आसन- [illegible] रघु० २।६ कु० [illegible] ५९, 16 मैथुन करते समय विशेष आसन [illegible], (रतिमंजरी में इस प्रकार के १६ आसन बताये गये हैं जब कि और [illegible] बता देते हैं) 17 गोट किनारी, [illegible] 18 किसी श्लोक का कोई विशिष्ट रूप- [illegible] पद्मबंध मुरजबंध काव्य० ९ 19 स्नायु कण्डरा 20 शरीर 21 अमानत धरोहर। सम० करणम् बेड़ी डालना कारागार में डालना [illegible] पूरी सेना या चतुरंगिणी सेना अर्थात् गजारोही अश्वारोही रथारोही तथा पदाति, [illegible] अन्य भाविक या कृत्रिम शब्दरचना [illegible] पशुओं को बांधने का खूंटा (उदा० हाथी आदि)।

बन्धक. [बन्ध्+ण्वुल्] 1 बांधने वाला पकड़ने वाला 2 रोकने वाला 3 बंध, गांठ [illegible] का रस्सा 4 मेंड़ [illegible] बांध 5 धरोहर अमानत 6. शरीर का अवन्यास 7 अदलाबदली विनिमय 8 भंग करने वाला तोड़ने वाला 9 प्रतिज्ञा 10 नगर 11 भाग या अंश (द्विगु समास के अन्त में)—[illegible] सदशबन्धकम् याज्ञ० २।७६, [illegible] बांधना, सीमित करना, [illegible] 1 असती स्त्री [illegible] कौमारबन्धकया प्रयोजनम् —मा० ७ वेणी० २ 2. वेश्या, वारांगना —[illegible]

कृशोऽसि मयेति बन्धकीपार्ष्टयम् – का० २१७, 3. दूतिनी।

बन्धनम् [बन्ध् + ल्युट्] 1 बाँधने की क्रिया, जकड़ना कसना, कु० ४।८ 2. चारों ओर से बाँधना, लपेटना, आलिंगन —विनयशाखामुजबन्धनानि—कु० ३।३९, घटय भुजबन्धनम्—गीत० १०, रघु० १९।१७ 3 गाँठ, ग्रन्थि (आलं० से भी) रघु० १२।७६, आशाबन्धनम् आदि 4. बेड़ी डालना, जंजीर से बाँधना, कैद करना 5. मुंडका, बेड़ी, पगहा, रज्जु आदि 6 गिरफ्तार करना, पकड़ना 7 बाँधना, कैद, जेल, कारा, जैसा कि 'बन्धनागार' में 8. बन्दीगृह कारागार, जेलखाना —त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम् श० ६।२०, मनु० ९।२८८ 9. बनाना, निर्माण करना,—सेतुबन्धनम्—कु० ४।६ 10 संयुक्त करना, मिलाना, जोड़ना 11 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 12 डंडी डंठल, (फूल का) वृन्त– श० ३।६ ६।१८ कु० ४।१४ 13 स्नायु, पुट्ठा 14 पट्टी। सम० — आ(गा)गार -रम्,-आलय: कारागार जेलखाना —ग्रन्थि: 1 पट्टी की गाँठ 2 जाल 3 पशुओं को बाँधने का रस्सा, —पालक: -रक्षिन् (पुं०) कारागाराध्यक्ष जेल का अधीक्षक,—वेश्मन् (नपुं०) कारागार —स्थ: बंदी, कैदी,—स्तम्भ: खूटा (हाथी आदि पशुओं को बाँधने का) खंभा,—स्थानम् अस्तबल घुड़साल।

बंधित (वि०) [बंध + इतच्] 1 बंधा हुआ जकड़ा हुआ 2 कैदी बंदी।

बन्धित्र: [बन्ध् + इत्र] 1 कामदेव 2 चमड़े का पंखा 3 धब्बा, मस्सा।

बन्धु: [बन्ध् + उ] 1 रिश्तेदार, बंधु बांधव, संबंधी—यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे उत्तर० ३।८ मातृबन्धुनिवासनम् रघु० १४।१७, श० ६।२२, भग० ६।९ 2. किसी प्रकार के संबंध से बंधा हुआ भाई —प्रवासबन्धु: सह यात्री, धर्म बन्धु आध्यात्मिक भ्राता —श० ४।९ 3 (विधि में) सजातीय बंधुजन अपना निजी सगोत्र बंधु (बंधु तीन प्रकार के हैं आत्म,° पितृ° तथा मातृ°) 4 मित्र (जैसा कि नीचे 'बन्धुकृत्य' में) प्राय समास के अन्त में—मकरन्दगन्धबन्धो – मा० १।३६, गाय का मित्र अर्थात् गुणाभिन ९।१३ 5 पति—वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे रघु० १४।३३ 6. पिता 7 माता 8 भ्राता 9 बंधुजीव नाम का वृक्ष 10 वह व्यक्ति जिसका किसी जाति या व्यवसाय से नाममात्र का संबंध हो, अर्थात जो जाति में जन्म लेकर अपनी उस जाति के कर्तव्यों का पालन न करता हो (प्राय तिरस्कारसूचक शब्द) स्त्रमेव ब्रह्मबन्धुनोद्भूतो दुर्नयोग — मालवि० ४, दु० ब्रह्मबंधु। सम० —कृत्यम् 1 मनोनयन का कर्तव्य—त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं प्रजानाम् श० ५।८ 2 मैत्रीपूर्ण कार्य या सेवा कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे – मेघ० ११४, —जन: 1 रिश्तेदार, भाई-बंधु 2 बंधुवर्ग, स्वजन, —जीव:,—जीवक: वृक्ष का नाम—बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम्—गीत० २, रघु० ११।२५, —दत्तम् एक प्रकार का स्त्रीधन या स्त्री की संपत्ति, विवाह के अवसर पर कन्या के संबन्धियों द्वारा कन्या को दिया गया धन याज्ञ० २।१४४, —प्रीति: (स्त्री०) 1. रिश्तेदार का प्रेम—बन्धुप्रीत्या–मेघ० ४९ 2 मित्र के लिए प्रेम —भाव: 1 मित्रता 2 रिश्तेदारी—वर्ग: भाई-बन्धु, स्वजन —हीन (वि०) बंधुबांधवों या मित्रों से रहित।

बन्धुक: 1 बंधुजीव नामक पेड़ 2 हरामी (सन्तान) वर्णसंकर, —की असती स्त्री, (दे० बंधकी)।

बन्धुता [बन्धु + तल् + टाप्] 1 रिश्तेदार भाई-बंधु स्वजन (सामूहिक रूप से), 2 रिश्तेदारी संबंध।

बन्धुदा [बन्धु + दा + क + टाप्] असती स्त्री।

बन्धुर (वि०) [बंध + उरच्] 1 लहरदार, ऊबड़खाबड़ ऊँचा नीचा शि० ३।३०, कु० ५।४ 2 झुका हुआ, ढलान वाला विनत बन्धुरगात्रि रघु० १३।४७ (मल्लि०) 3 टेढ़ा वक्र 4 सुहावना मनोहर सुन्दर प्रिय श० ६।१६ (यहाँ इसका अर्थ 'झाबा' डाल भी है) 5 बहरा 6 हानिकर उत्पाती —र: 1 हंस 2 सारस 3 औषधि 4 खली 5 योनि —रा (ब० व०) कुचले या भुने पदार्थ —रा असती स्त्री, रम मुकुट ताज।

बन्धुल (वि०) [बन्धु + उलच्] 1 झुका हुआ वक्र ढलान वाला 2 सुहावना सुन्दर आकर्षक मनोहर —ल: 1 हरामी (सन्तान)—परगृहललिता पराह्नपुष्टा परपुरुषैर्जनिता पराङ्गनासु परधननिरता गुणेष्ववाच्या गजकलभा इव बन्धुला ललाम मृच्छ० ४।२८ (विदूषक के प्रश्न 'भो के यूय बन्धुला नाम?' का यह उत्तर है जो स्वयं बंधुलों ने दिया) 2 वेश्या का सेवक 3 बंधूक नाम का पेड़।

बन्धूक: [बन्ध् + ऊक] एक वृक्ष का नाम—तव करनिकरेण स्पष्टबन्धूकसूनस्तबकरचितमेते शेखरं बिभ्रतीव—शि० ११।४६, ऋतु० ३।५ —कम् इस वृक्ष का फूल बन्धूकद्युतिबान्धवोऽयमधर:—गीत० १० ऋतु० ३।२५।

बन्धुर (वि०) [बन्ध् + ऊरच्] 1 डांवाडोल, ऊबड़खाबड़ 2 झुका हुआ ढलानवाला, विनत 3 सुहावना, सुन्दर, प्रिय पुं० बधूर, – रम् छिद्र सूराख।

बन्धूलि: [बन्ध् + ऊलि] बन्धुजीव नामक वृक्ष।

बन्ध्य (वि०) [बन्ध् + ण्यत्] 1 बांधे जाने के योग्य, बेड़ी

द्वारा पकड़े जाने योग्य, कैद किये जाने या बन्दी बनाये जाने के योग्य याज्ञ० २।२४३ 2 मिलाकर बाँधने या जोड़ने के योग्य 3 निर्माण किये जाने के योग्य बनाये जाने या मर्यादित किये जाने के योग्य 4 निरुद्ध निगृहीत 5 बाँझ बंजर जो उपजाऊ न हो निष्फल निरर्थक (व्यक्ति या वस्तु) —अवन्ध्ययत्नाश्च —रघु० १८।३१ अवन्ध्यपन्माश्च बभूवन रे [illegible] कि० १।३३ 6 जिसका मासिक रजःस्राव आना बन्द हो गया हो 7 (समास के अन्त में) [illegible] विरहित। सम० —फल (वि०) निरर्थक [illegible] मुक्त।

बन्ध्या [illegible] गाय [illegible] 2 बाँझ [illegible] का गन्धद्रव्य [illegible]। सम० —तनय —पुत्र —सुत या —दुहितृ —सुता बाँझ [illegible] अर्थात् [illegible] असम्भावना [illegible] [illegible] दे० गगनपुष्प

बभ्रम् [illegible]।

बभ्रवी [बभ्रु [illegible] ङीष् [illegible]] [illegible] उपाधि

बभ्रु (वि०) [भृ [illegible] बभ्रु [illegible]] 1 [illegible] भूरा [illegible] [illegible] —रघु० १६ १९।२५ [illegible] बभ्रुवल्कम [illegible] 2 किसी रोग के कारण गंजे सिर वाला —भ्रु 1 आग 2 नेवला 3 [illegible] रंग 4 भूरे बालों वाला 5 एक यादव का नाम—शि० २।४० 6 शिव का विशेषण 7 विष्णु का विशेषण। सम०—धातु 1 सोना 2 गेरु सुवर्णगैरिक —वाहन चित्रांगदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र [युधिष्ठिर द्वारा छोड़े गये अश्वमेध के घोड़े की देखभाल अर्जुन करता था। वह घोड़ा घूमता हुआ मणिपुर देश में चला गया। उस समय वहाँ बभ्रुवाहन राज्य करता था। वह अद्वितीय पराक्रमी था। जब वह घोड़ा उसके पास लाया गया और उसने घोड़े के सिर पर बँधे पट्ट पर 'पाण्डवों' का नाम पढ़ा तथा यह जाना कि उसके पिता अर्जुन राज्य में आ गए हैं तो शीघ्रता से वह उनके पास गया, बड़े सम्मान के साथ अपना राज्य और कोष, अश्वसहित उनके सामने प्रस्तुत किया। अर्जुन ने उस बुरे समय में बभ्रुवाहन के सिर पर प्रहार किया और उसकी कायरता के लिए उसे डाँटा फटकारा और कहा कि यदि वह सच्चा पराक्रमी होता, तथा अर्जुन का सच्चा पुत्र होता तो उसे अपने पिता से डरना नहीं चाहिए था और न इस प्रकार दीनता दिखलानी चाहिए थी। इन शब्दों से उस वीर युवक को अत्यन्त क्रोध आया, क्रोध में भरकर उसने अर्जुन पर एक अर्धचन्द्राकार बाण छोड़ा जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया। सयोगवश उस समय वहाँ चित्रांगदा के पास उलूपी विद्यमान थी, उसने अर्जुन को पुनर्जीवित कर दिया। अर्जुन ने भी बभ्रुवाहन को अपना सच्चा पुत्र मान लिया और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया)।

बम्ब (भ्वा० पर० बम्बति) जाना चलना-फिरना।

बम्भर [भृ + अच्, द्वित्व मुम् च] मधुमक्खी भौंरा

बम्भराली [बम्भर + अल् + अच् + ङीष्] मक्खी।

बरट [वृ + अटच्, [illegible]] एक प्रकार का अन्न।

बर्ब (भ्वा० पर० बर्बति) जाना चलना फिरना।

बर्बट [illegible] एक प्रकार का अनाज राजमाष।

बर्बटी [बर्बट ङीष्] 1 एक प्रकार का अन्न, राजमाष 2 [illegible] रंडी

बर्बणा [illegible] मक्खी

बर्बर [वृ [illegible]] 1 जो आर्य न हो [illegible] 2 मूर्ख बुद्धू [illegible] [illegible]।

बर्बुर [बर्ब् उरच्] एक वृक्ष [illegible] —उत्पन्नेषु अयत्न [illegible] बर्बुर वद वस्तु लाभाः—भामि० १।२४।

बर्ह् (भ्वा० आ० बर्हते) 1 बोलना 2 देना 3 ढकना 4 क्षति पहुँचाना मार डालना, नष्ट करना 5 फैलाना [illegible] मार डालना नष्ट करना—शि० १।४९।

बर्ह [बर्ह + अच्] 1 [illegible] की पूँछ—[illegible] —रघु० १६।१४ (केशपाश) मति कुसुम [illegible] के हरे [illegible] बर्हे विक्रम० ४।१० पाठान्तर 2 पक्षी की पूँछ 3 पूँछ का पंख (विशेषकर मोर की) मेघ० ४४ कु० १।१५ शि० ८।११ 4 पत्ता [illegible] रघु० ६।१७ 5. अनुचरवर्ग नौकर चाकर। सम०—भारः 1 मोर की पूँछ 2 मोरछल, लाठी की मूठ में बंधा मोर के पंखों का गुच्छा।

बर्हण [बर्ह् + ल्युट्] पत्ता।

बर्हि [बर्ह् + इन्] आग —(पु०) कुश नामक घास।

बर्हिण [बर्ह + इनच्] मोर —आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि (वनानि) रघु० २।१७ १६।१४ १९।३७। सम० —वाजः मोर के पंख से युक्त बाण —वाहनः कार्तिकेय विशेषण।

बर्हिन् (पु०) [बर्ह + इनि] मोर—रघु० १६।६४, विक्रम० ३।२,४।१०, ऋतु० २।६। सम०—कुसुमम्, —पुष्पम् एक प्रकार का गंधद्रव्य, —ध्वजा दुर्गा का विशेषण —यानम्,—वाहनम् कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिस् (पुं०, नपुं०) [बर्ह् + (कर्मणि) इसि] कुश नामक घास—कु० १।६० 2. बिस्तरा या कुशघास का

बिछौना—(पु०) 1. आग 2. प्रकाश, दीप्ति (नपु०) 1. जल 2. यज्ञ। सम०—केश,—ज्योतिः (पु०) आग का विशेषण,—मुखः (बर्हिर्मुख) 1 आग का विशेषण 2 देवता (जिसका मुख अग्नि है),—शुष्मन् (पु०) आग का विशेषण, सद् (बर्हिषद्) (वि०) कुशनामक घास के आसन पर बैठा हुआ (पु०) पितर (ब० व०)।

बल् I (भ्वा० पर० बलति) 1 सांस लेना, जीना 2 अनाज संग्रह करना II (भ्वा० उभ० बलति-ते) 1 देना 2 चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, मार डालना 3 बोलना 4 देखना, चिह्न लगाना। प्रेर०—(बालयति-ते) पालना-पोसना, भरणपोषण करना।

बलम् [बल्+अच्] 1 सामर्थ्य शक्ति, ताकत वीर्य, ओज 2. जबरदस्ती, हिंसा जैसा कि 'बलात्' में 3 सेना, चमू, फौज, सैन्यदल भवद्भीष्ममद्रोण धृतराष्ट्रबल कथम् वेणी० ३।२४,४२, भग० १।१०, रघु० १६।३७ 4 मोटापन, पुष्टि (शरीर की) 5 शरीर, आकृति रूप 6 वीर्य, शुक्र 7 रुधिर 8 गोंद, रसगंध (लोबान की तरह का सुगंधित गोंद) 9 अंकुर, अँखुवा, (बलेन 'सामर्थ्य के आधार पर' 'की बदौलत'—बाहुबलेन जित, वीर्यबलेन, बलात् 'बलपूर्वक' 'जबरदस्ती' 'हिंसापूर्वक' 'इच्छा के विरुद्ध' बलान्निद्रा समायाता पंच० १, हृदयमदये नक्षिमन्नेव पुनर्बलते बलात्—गीत० ३), लः 1 कौवा 2 कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी० बलराम 3 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था। सम०—अग्रम् अत्यधिक सामर्थ्य, शक्ति (ग्रः) सेना का प्रधान,—अङ्गकः वसन्त हेम० १५६—अञ्चिता बलराम की वीणा, अटः एक प्रकार का शहतीर—अधिक (वि०) सामर्थ्य में बढ़चढ़ कर, अत्यन्त बलशाली, अध्यक्षः 1 सेनापति मनु० ७।१८२, 2 युद्धमंत्री, अनुजः कृष्ण का विशेषण अन्वित (वि०) सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, शक्तिशाली,—अबलम् 1 तुलनात्मक सामर्थ्य और असमर्थता, आपेक्षिक सामर्थ्य तथा दुर्बलता रघु० १७।५९ 2. आपेक्षिक सार्थकता तथा नगण्यता, तुलनात्मक महत्त्व तथा महत्त्वशून्यता समय एव करोति बलाबलम्—शि० ६।४४, अभ्रः बादल के रूप में सेना,—अरातिः इन्द्र का विशेषण, अवलेपः सामर्थ्य का अभिमान,—आसः,—आसः 1 क्षयरोग, तपेदिक 2 कफ का आधिक्य 3. गले में सूजन (आहार नली का अवरोध), आह्विका एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, हस्तिशुण्डी,—आह्वः पानी,—उपपन्न, उपेत (वि०) सामर्थ्य से युक्त, मजबूत, शक्तिशाली, ओघः सैन्यदल का समूह, असंख्य सेना—शि० ५।२,—ओजः

में अव्यवस्था, गदर, विद्रोह, चक्रम् 1 उपनिवेश, साम्राज्य 2 सेना, समूह, जम् 1 नगर का फाटक, मुख्यद्वार 2 खेत 3 अनाज, अन्न का ढेर, शि० १४।७ 4. युद्ध, लड़ाई 5 वसा, मज्जा (जा) 1 पृथ्वी 2 सुन्दरी स्त्री 3 एक प्रकार की चमेली, दः बैल, बलीवर्द, दर्पः शक्ति का अभिमान, देवः 1 वायु, हवा 2 कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी० 'बलराम', द्विष् (पु०) निषूदन, इन्द्र के विशेषण—बलनिषूदनमर्थपतिं च तम् रघु० ९।३ पतिः 1 सेनापति, सेनानायक 2 इन्द्र का विशेषण, प्रद (वि०) ताकत देने वाला बलवर्धक प्रसूः बलराम की माता रोहिणी, भद्रः 1 बलवान् मनुष्य 2 एक प्रकार का बैल 3 बलराम का नाम दे० नी० 4 लोध्र नामक वृक्ष, भिद् (पु०) इन्द्र का विशेषण श० २, भृत् (वि०) बलवान् शक्तिशाली राम बलवान् राम' कृष्ण के बड़े भाई का नाम (यह वसुदेव और देवकी का सातवाँ पुत्र था कंस की क्रूरता का शिकार होने से बचाने के लिए यह रोहिणी के गर्भाशय में स्थानान्तरित कर दिया गया। यह और कृष्ण दोनों का गोकुल में नन्द द्वारा पालन-पोषण किया गया। जब यह बालक ही था तो इसने शक्तिशाली राक्षस धेनुक और प्रलम्ब को मार गिराया तथा अपने भाई कृष्ण की भाँति अनेक आश्चर्यजनक काम किये। एक बार मदिरा के नशे में (समझा कि वह बहुत शौकीन था) यमुना नदी को निकट आने का आदेश दिया जिससे कि वह स्नान कर सके। जब उसकी आज्ञा पर ध्यान नहीं दिया गया तो उसने अपने हल को फाली से यमुना नदी को खींचा, अन्त में यमुना ने मनुष्य का रूप धारण कर उससे क्षमा माँगी। एक दूसरे अवसर पर उसने दीवारों समेत समस्त हस्तिनापुर को अपनी ओर खींचा। जिस प्रकार कृष्ण पाण्डवों के प्रशंसक थे, उसी प्रकार बलराम कौरवों के प्रशंसक थे जैसा कि उसकी इस बात से प्रकट होता है कि वह अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से करना चाहता था न कि अर्जुन से। इतना होते हुए भी उसने महाभारत के युद्ध में न पाण्डवों का पक्ष लिया और न कौरवों का। इसका वर्णन नीली वेशभूषा धारण किये हुए 'हल' से जो कि उसका अत्यन्त प्रभावशाली शस्त्र था, सुसज्जित किया जाता है। उसकी पत्नी का नाम रेवती था। कई बार इसे शेषनाग का अवतार और कई बार विष्णु का आठवाँ अवतार समझा जाता है—तु० गीत०),—विन्यासः सैन्य दल की व्यूहरचना,—व्यसनम् सेना की हार,—सूदनः इन्द्र का विशेषण,—स्थः योद्धा, सैनिक,—स्थितिः

(स्त्री०) 1 शिविर, पड़ाव 2. राजकीय छावनी, —हन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, हीन (वि०) बलहीन, दुर्बल, अशक्त ।

बलक्ष (वि०) [बल आयत्यस्मात्—क्षै+क] धवल श्वेत, सफेद —बलक्षमलक्ष्यत स्फुरितभृङ्गमृगच्छवि केतकम् —शि० ६।२४ । सम० —गु (गा किरण का रूपान्तर) चन्द्रमा यथानत्यजुनाब्जन्मसदृक्षाङ्को बलक्षगुः काव्या० १,४६ (गौडीयों के प्रसाद गुण का एक उदाहरण) ।

बलल [बल+ला+क] इन्द्र का विशेषण ।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1 मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर- बिभिरहा बलवानिति मे मतिः भर्तृ० २।२१ 2 बलिष्ठ, हट्टा कट्टा 3 सघन, चिकना (अंधकार आदि) 4 ...प्रभावी सबसे प्रबल ...बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति मनु० २।२१५ 5 अधिक महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक रघु० १।२४ (अव्य०) 1 मजबूती से, शक्ति के साथ, पुनः शिखाबद्धलवद्विगृह्य कु० ३।६९ 2 अत्यधिक, अत्यन्त, अतिशय मात्रा में —बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः —श० १।२ शीतार्ति बलवदुपैयुषेव नारी शि० ८।६२ श० ५।२१ ।

बला [बल्+अच्+टाप्] शक्तिमान् ज्ञान या मन्त्रयोग (यह योग विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को बतलाया था) —तौ बलातिबलयोः प्रभावतः रघु० ११।९ ।

बलाक, —का [बल+अक्+अच्, स्त्रियां टाप् च] बगला —सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः मेघ० ९, मृच्छ० ५।२८ १९ 2 प्रिया, कान्ता ।

बलाकिका [बलाका+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटा जाति का बगला ।

बलाकिन् (वि०) [बलाका+इनि] बगलों या सारसों से भरा हुआ —बलाकिनी नीलपयोदराजी रघु० १३।१५, कु० ७।३९ ।

बलात्कार [बल+अत्+विवप्, बलात्+कृ+घञ्] 1 हिंसा का प्रयोग करना, बल लगाना 2 अत्याचार, दमन, विनयभंग, बल अत्याचार, छीनाझपटी ...भृ १०।४७ बलात्कारेण निबंध आदि 3 अन्याय 4 (विधि में) उत्तमर्ण द्वारा अधमर्ण को रोकना तथा ऋण की वापसी के लिए बल का प्रयोग करना ।

बलात्कृत (वि०) [बलात्+कृ+क्त] जिसके साथ जबरदस्ती की गई हो या जो परास्त कर दिया गया हो ।

बलाहकः [बल+आ+हा+क्वुन्] 1 बादल —बलाहकच्छेदविभक्तरागामकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम् कु० १।४ 2 एक प्रकार का बगला या सारस 3 पहाड़ 4. प्रलयकालीन सात बादलों में से एक ।

बलिः [बल्+इन्] 1 आहुति, भेंट, चढ़ावा (धार्मिक) नीवारबलिं विलोकयतः —श० ४।२०, ३।१ 2 दैनिक आहार (चावल, अनाज तथा घी आदि) में से कुछ अन्न का सब जीवों को उपहार (इसे भूतयज्ञ भी कहते हैं) दैनिक पञ्च महायज्ञों में से एक अतिथिवैश्वदेव यज्ञ (दे० मनु० ३।६।९१) इसका अनुष्ठान घर के द्वार के निकट, भोजन करने से पूर्व दैनिक आहार का कुछ अंश बाहर आकाश में फेंक कर किया जाता है —यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनां हंसैश्च सारसगणैश्च विलुप्तपूर्वः मृच्छ० १।९ 3 पूजा, आराधना —कु० १।६० मेघ० ५५, श० ४ 4 उच्छिष्ट 5 देवमूर्ति पर चढ़ाया नैवेद्य 6 शुल्क, कर, चुंगी —प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् रघु० १।१८, मनु० ७।८०, ८।३०७ 7 ... का हत्ता 8 एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम (यह प्रह्लाद के पुत्र विरोचन का पुत्र था, बहुत शक्तिशाली, यह देवताओं को अत्यन्त पीड़ित करता था । फलस्वरूप देवताओं ने विष्णु से सहायता की प्रार्थना की । विष्णु ने कश्यप और अदिति का पुत्र बन कर वामन का अवतार धारण किया । उसने साधु का वेश धारण किया । और बलि के पास जाकर उससे तीन पग पृथ्वी मांगी । स्वभाव से उदार बलि ने निस्संकोच प्रकट रूप में इस सामान्य प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । परन्तु शीघ्र ही वामन ने अपना विराट् रूप दिखलाया और तीन पग मापना शुरू किया । पहले पग में उसने सारी पृथ्वी को आच्छादित कर लिया दूसरे में समस्त अन्तरिक्ष को, और तीसरे पग के लिए स्थान न पाकर उसे बलि के सिर पर रख दिया और राजा बलि को उसकी असंख्य सेना समेत पाताल लोक भेज कर वहाँ का शासक बना दिया । इस प्रकार विश्व एक बार फिर इन्द्र के शासन में आ गया ।) —छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन गीत० १ रघु० ७।३५ मेघ० ५७ ... (स्त्री०) ... झुर्री (प्रायः बली लिखा जाता है) । सम० —कर्मन् (नपुं०) 1 सब जीवजन्तुओं को भोजन देना 2 कर अदायगी, —दानम् 1 देवता को नैवेद्य अर्पण करना 2 सब जीवजन्तुओं को भोजन देना, —ध्वंसिन् (पुं०) विष्णु का नाम —नन्दनः —पुत्रः, —सुतः बलि के पुत्र बाण का विशेषण, —पुष्ट —भोजन कौवा —प्रिय लोध्र वृक्ष, —बन्धन विष्णु का विशेषण, —भुज् (पुं०) 1 कौआ 2 चिड़िया 3 बगला या सारस —मन्दिरम्, —वेश्मन्, —सद्मन् (नपुं०) पाताल लोक, बलि का आवासस्थान —व्याकुल (वि०) पूजा में अथवा सब जीव जन्तुओं को भोजन देने वाला मेघ० ८५ —हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण —हरणम् सब जीव जन्तुओं को भोजन देना ।

बलिन् (वि०) [बल+इनि] मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, रघु० १६।३७, मनु० ७।१७४—(पुं०) 1 भैंसा 2 सूअर 3 ऊँट 4 सांड 5 सैनिक 6 एक प्रकार की चमेली 7 कफात्मक वृत्ति 8 बलराम का विशेषण।

बलिभ, बलिश [बलि+भ या, बवयोरभेद] दे० वलिन भ।

बलिन्दम [बलि+दम्+खच् मुम्] विष्णु का विशेषण।

बलिमत् (वि०) [बलि+मतुप्] 1 पूजा या आहुति की सामग्री तैयार रखने वाला रघु० १६।१० 2 कर उगाहने वाला।

बलिमन् (पुं०) [बल+इमनिच्] सामर्थ्य ताकत शक्ति।

बलिवर्द दे० बलीवर्द।

बलिष्ठ (वि०) [बलवत् (बलिन्)+इष्ठन्] अत्यन्त बलशाली, अत्यन्त मजबूत अतिशय शक्तिशाली —ष्ठः ऊँट।

बलिष्णु (वि०) [बल्+इष्णुच्] अपमानित अनादृत तिरस्कृत।

बलीकः [बल्+ईकन्] छप्पर की मुंडेर।

बलीयस् (वि०) (स्त्री० सी) [बलवत् (बलिन्+ईयसुन्)] 1. अपेक्षाकृत मजबूत, अधिक शक्तिशाली 2 अधिक प्रभावी 3 अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण।

बली (री) वर्द [वृ+क्विप्=वर् ई वस्य—ईवरी गौ ददाति दा+क, ईवर्द, बलो यासौ ईवर्दश्च कर्म० स०] सांड, बैल गोरपत्य पुमान् बलीवर्दः।

बल्य (वि०) [बल+यत] 1 मजबूत शक्तिशाली 2 शक्तिप्रद, —ल्यः बौद्ध भिक्षु —ल्यम् वीर्य शुक्र।

बल्लव [बल्ल्+अच् न वाति वा+क] 1 ग्वाला —कुञ्जेष्वाक्रान्त बीरुल्लितश्यर्परीत्यगा बल्लवा सवल्लव —वेणी० ६।२ शि० ११।८ 2 रसोइया 3 विराट के यहाँ भीम का नाम जब वह रसोइया का काम करता था,—वी ग्वालिन कि० ४।१३। सम० —युवतिः, —ती (स्त्री०) जवान ग्वालिन (गोपी) हरिरिवरहाकुलबल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम गीत० ४।

बल्वज —जा [?] एक प्रकार का मोटा घास—मनु० २।४३।

बल्हिका, बल्हीका (ब० व०) एक (बल्ख) देश का तथा उसके अधिवासियों का नाम।

बष्कय (वि०) [बष्क्+अयन्] बछड़ा (एक वर्ष का बछड़ा)।

बष्कयणी (यि) णी (नी) (स्त्री०) [बष्कय+इनि+ङीप्] 1. वह गाय जिसका बछड़ा पूरा बड़ गया हो नै० १६।९२ 2. बहुप्रसवी गाय (जिसके बहुत बछड़े पैदा हुए हैं)।

बस्त [बस्त्+घञ्] बकरा। सम० —कर्णः साल वृक्ष।

बहल (वि०) [बह्+अलच्] 1 अत्यधिक, यथेष्ट, प्रचुर, पुष्कल, बहुविध महान् मजबूत उत्तर० ११३८, ३।२३, शि० ९।८ भामि० ४।२७ 2 चिकना, सघन 3 कोमल (पूंछ की भांति)—मा० ३ 4 कठोर, दृढ़, सटा हुआ —लः एक प्रकार का इक्षुरस ईख, गन्ना —ला बड़ी इलायची। सम० —गन्ध, एक प्रकार का चंदन।

बहिस (अव्य०) [वह्+इसुन्] 1 में से बाहर (अपा० के साथ)—निवसन्नावसथे पुराद्बहिः रघु० ८।१५, ११।२९ 2 बाहर की ओर दरवाजे के बाहर (विप० अन्तः, बहिर्गच्छ) 3 बाहर बाहर की ओर से अन्तर्बहिः पुरुष एव निवर्तमानम् मा० १।४० १०—हि० १।९४। बहिष्कृ 1 बाहर की ओर रखना से निकालना हांक कर बाहर कर देना मनु० ८।३८० याज्ञ० २।९३ 2 जाति से बाहर करना बहिर्गम्, या, इ बाहर जाना चले जाना। सम० —अङ्ग (वि०) बाहर का बाहर की ओर का (—गम्) 1 बाहरी भाग 2 बाहरी अंग उपाधि बहिरुपाधि, बाहरी द्वार ... —चर (वि०) बाहर का बाहर की ओर का बाहर की तरफ का—बहिश्चराः प्राणाः ... द्वारम् बाहर का दरवाजा दहलीज।

बहु (वि०) (स्त्री० हु —ह्वी) [बंह्+कु नलोप — म० अ०—भूयस् उ० अ०—भूयिष्ठ] 1 अधिक, पुष्कल प्रचुर बहुत ... बहु ... श० ४ 'यह भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितना की उससे अपेक्षा न की जा सके)—बहु प्रष्टव्यमत्र मुद्रा० ३ ... रघु० ... 2 अनेक असंख्य यथा 'बहुवार' और बहु प्रकार' में 3 बार बार किया गया दोहराया गया 4 बड़ा विशाल 5 भरापूरा समृद्ध (समास के प्रथम पद के रूप में) बहुकल्पको देश —आदि (अव्य०) और बहुतायत से, अत्यधिक अत्यन्त अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2 कुछ लगभग, प्राय जैसा कि 'बहुतृण' में (कि बहुना अधिक कहने से क्या लाभ ? मध्ययन में' बहुमन् बहुत सोचना, बहुत मानना, ऊँचा मूल्य लगाना बहुमूल्य मानना कद्र करना त्वत्सम्भावितमात्मानं बहु मन्यामहे वयम् कु० ६।२०, ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव—श० ४।६, ७।१, रघु० १२।८९ भग० २।३५, भट्टि० ३।५३, ५।८४, ८।१२।। सम० —अक्षर (वि०) अनेक अक्षरों वाला (शब्द) बहुत से अक्षरों से बना हुआ, —अच्, —अच्क (वि०) अनेक स्वरों से युक्त, बहुत स्वरों वाला,—अप्,—अप (वि०) जलयुक्त,—अपत्य (वि०) अनेक संतानों से युक्त (त्यः) 1 सूअर 2 मूसा,

—सूहा, (स्त्री) वह गाय जिसके बहुत बछड़े बछड़ियाँ हैं,— अर्थ (वि०) 1 अनेक अर्थों से युक्त 2 बहुत से उद्देश्य रखने वाला 3 महत्त्वपूर्ण, —आशिन् (वि०) बहुभोजी, पेटू,—उदक: एक प्रकार का भिक्षु जो अज्ञात नगर में निवास करता है तथा घर घर भिक्षा मांग कर अपना निर्वाह करता है —तु० कुटीचक, —उपाय (वि०) प्रभावी, क्रियावान्, —ऋच् (वि०) अनेक ऋचाओं से युक्त, (स्त्री०) ऋग्वेद का नामान्तर, —एनस् (वि०) अति पापमय,—कर (वि०) अतिक्रियाशील, व्यस्त, उद्योगी (र.) 1. मक्खी, झाड़ देने वाला 2 ऊँट (री झाड़ू —कालम् (अव्य०) बहुत देर तक —कालीन (वि०) बहुत समय का, पुराना प्राचीन —कूर्च एक प्रकार का नारियल का पेड़, —गन्धदा कस्तूरी मृग —गन्धा 1 यूथिका लता 2 चपाकली —गुण (वि०) 1 अनेक सद्गुणों से युक्त 2 कई प्रकार का, तरह-तरह का 3 अनेक धागों से युक्त —जल्प (वि०) बहुभाषी मुखर वाचाल, —ज्ञ (वि०) बहुत जानकारी रखने वाला, अच्छा जानकार सुविज्ञ, —तृणम् कोई पदार्थ जो बहुधा घास की भाँति हो अतः महत्त्वशून्य या तिरस्करणीय हो निदर्शनमसारताया लघुर्बहुतृणं नरः —शि० २।५०, —त्वक्क,—त्वच् (पु०) एक प्रकार का भोजवृक्ष, —दक्षिण (वि०) 1. जिसमें बहुत दान और उपहार प्रस्तुत किया जाय 2 उदार, दानशील —दायिन् (वि०) उदार, दानशील उदारतापूर्वक दान देने वाला, —दुग्ध (वि०) बहुत दूध देने वाला (ग्ध:) गेहूँ (ग्धा) बहुत दूध देने वाली गाय, —दृश्वन् (वि०) बड़ा अनुभवी जिसने बहुत देखा सुना हो,— दोष (वि०) 1 जिसमें अनेक दोष हों बहुत सी त्रुटियाँ हों अनिष्ट पापपूर्ण 2 अपराधों से युक्त, भयदायी बहुदोषा हि शर्वरी मृच्छ० १।५८ —धन (वि०) बहुत धनी धनाढ्य, —धारम् इन्द्र का वज्र, —धेनुकम् दूध देने वाली गौओं की बड़ी संख्या —नाद: शंख, —पत्र: प्याज (त्रम्) अभ्रक, (त्री) तुलसी का पौधा, —पद्,—पाद् पाद: (पु०) बड़ का वृक्ष, —पुष्प: 1 मूंगे का पेड़ 2 नीम का वृक्ष, —प्रकार (वि०) बहुत प्रकार का, नाना प्रकार का, विविध प्रकार का, —प्रज (वि०) बहुत सन्तान वाला, अनेक बच्चों वाला, (ज.) 1 सूअर 2 मुञ्ज-एक घास,—प्रतिज्ञ (वि०) 1 नाना प्रकार की उक्ति और वाक्यों से युक्त, पेचीदा 2 (विधि में) अभियोग पत्र के रूप में जहाँ कई प्रकार का दोष लगे —प्रद (वि०) अत्यन्त उदार, उदार, दाता —प्रसू: अनेक बच्चों की माँ, —प्रेयसी (वि०) जिसके बहुत से प्रेमी हों, —फल (वि०) फलों से समृद्ध, (ल:) कदम्ब का वृक्ष, —बल: सिंह,

—भाषिन् (वि०) मुखर, वाचाल,—मञ्जरी तुलसी का पौधा, —मत (वि०) बहुत माना हुआ, मूल्यवान्, कीमती, सम्मानित, —मति: (स्त्री०) बड़ा मूल्य, या मूल्यांकन- कि० ७।१५, —मलम् सीसा,—मान: बड़ा सम्मान या आदर, ऊँचा मूल्यांकन,—पुरुषबहुमानो विगलित —भर्तृ० ३।९, वर्तमानकवे: कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमान: —मालवि० १, विक्रम० ११२ कु० ५।३१, (नम्) उपहार जो बड़ों द्वारा छोटों को दिया जाय,—मान्य (वि०) आदरणीय, माननीय, —माय कलामय, छलयुक्त, द्रोही पंच० १।३२१,—मार्गगा गंगा रत्न० १।३,—मार्गी जहाँ बहुत सी सड़कें मिलती हों —मूत्र (वि०) मधुमेह रोग से पीड़ित —मूर्धन् (वि०) विष्णु का विशेषण, —मूल्य (वि०) मूल्यवान् ऊँची कीमत का, —मृग (वि०) जहाँ बहुत से मृग हों —रत्न (वि०) रत्नों से समृद्ध —रूप (वि०) 1 अनेक रूपी, बहुरूपी, विविधरूपी 2 चितकबरा धब्बेदार, रंगबिरंगा या धारीदार, (प:) 1 छिपकली, गिरगिट 2 बाल 3 सूर्य 4 शिव 5 विष्णु 6 ब्रह्मा 7 कामदेव, —रेतस (पु०) ब्रह्मा का विशेषण,—रोमन् (वि०) बहुलोमी, रोएंदार (पु०) भेड़ —लवणम् लूनिया धरती —वचनम् (व्या० में) एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने का प्रकार —वर्ण (वि०) बहुरंगी, रंगबिरंगा,—वार्षिक (वि०) बहुत वर्षों तक रहने वाला,—विघ्न (वि०) अनेक कठिनाइयों से युक्त, नाना विघ्नबाधाओं से भरा हुआ, —विध (वि०) अनेक प्रकार का, तरह-तरह का, विविध प्रकार का, —वी(बी) जम् शरीफा,—व्रीहि (वि०) बहुत चावलों वाला- तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहि: —उद्भट (यहाँ यह समास का नाम भी है), (हि:) संस्कृत के चार मुख्य समासों में एक (इसमें दो पद पास-पास रख दिये जाते हैं विशेषणात्मक पद (चाहे वह संज्ञा हो या विशेषण) को पहले रखते हैं, जो दूसरे पद को विशेषित करता है, परन्तु वह दोनों पद पृथक्-पृथक् अभीष्ट अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते, बल्कि मिलकर एक अन्य अर्थ द्योतक शब्द का निर्माण होता है। यह समास विशेषणपरक होता है। परन्तु कभी-कभी इसका प्रयोग संज्ञाओं की भाँति किया जाता है जहाँ यह किसी विशिष्ट व्यक्ति के अर्थ में सनियन्त्रित होता है उदा० चक्रपाणि, शशिशेखर पीतांबर, चतुर्मुख, त्रिनेत्र, कुसुमशर आदि,—शत्रु: गौरैया चिड़िया,—शल्य: अदिरवृक्ष का एक भेद, —शृङ्ग: विष्णु का विशेषण, —श्रुत (वि०) 1 विज्ञ पुरुष, प्रविद्वान् — हि० १।१, पंच० २।१, रघु० १५।३६ 2 वेदों का जानकार —मनु० ८।३५०,—सन्तति (वि०) अनेक बाल-बच्चों

—शाखा (खिः) एक प्रकार का बांस,—सार (वि०) बहुत अधिक मज्जा या रस से युक्त, सारयुक्त, (रः) खदिरवृक्ष, खैर,—सूः 1 अनेक बच्चों की मां 2. सूकरी, सरी,—सूतिः (स्त्री०) 1 अनेक बच्चों की मां 2. बहुत बार ब्याने वाली गाय,—स्वन (वि०) कोलाहलपूर्ण (नः), उल्लू,—स्वामिक (वि०) जिसके स्वामी अनेक हों।

बहुक (वि०) [बहु+कन्] महंगा खरीदा हुआ, —कः 1. सूर्य 2. मदार का पौधा 3 केकड़ा 4 एक प्रकार का जलकुक्कुट।

बहुतर (वि०) [बहु+तरप्] अपेक्षाकृत असंख्य, अधिक, ज्यादह।

बहुतम (वि०) [बहु+तमप्] अत्यन्त अधिक, अतिशय।

बहुतः (अव्य०) [बहु+तस्] नाना पार्श्वों से, कई तरफ से।

बहुता,—त्वम् [बहु+तल्+टाप्, त्व वा] बहुतायत, प्राचुर्य असंख्यता।

बहुतिथ (वि०) [बहु+तिथुक्] ज्यादह अधिक, अनेक—काले गते बहुतिथे—श० ५।३, नस्य भुवि बहुतिथास्तिथयः कि० १२।२।

बहुधा (अव्य०) [बहु+धाच्] 1 कई प्रकार से, विविध प्रकार से, बहुत तरह से बहुधाप्यागमैर्भिन्नाः रघु० १०।२६, भग० १३।४ 2 भिन्न भिन्न रूप में या रीतियों से 3 बारबार, दोहराकर 4 विविध स्थानों या दिशाओं में।

बहुल (वि०) [बह्+कुलच्, नलोपः] (म० अ०—बंहीयस्, उ० अ० बंहिष्ठ) 1 घिनका, सघन गठा हुआ 2 विशाल, विस्तृत, आयत, विपुल बड़ा 3 प्रचुर, यथेष्ट, पुष्कल, अधिक, असंख्य अविनयबहुलतया का० १४३ 4 अनेक, बहुत प्रकार का, अनगिनत मा० ९।१८ 5 भरपूरा, समृद्ध प्रभूत —जन्मनि क्लेशबहुले किं नु दुःखमतः परम्—हि० १।१८४, भग० २।४३ 6 संयुक्त, सलग्न 7 कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म हुआ है 8 काला, —लः 1 मास का कृष्णपक्ष,—प्रादुरासबहुलक्षपाछविः रघु० ११।१५, करेण भानोर्बहुलावसाने संधुक्ष्यमाणेव शशाङ्करेखा कु० ७।८,४।१३ 2 अग्नि का विशेषण —ला 1. गाय 2. इलायची 3. नील का पौधा 4. (ब० व०) कृत्तिकानक्षत्र —लम् 1 आकाश सफेद मिर्च, (बहुलीकृ) 1 प्रकाशित करना, खोलना, भंडाफोड़ करना 2. सघन या सटाकर बनाना शि० १३।४४ 3. बढ़ाना, विस्तार करना, वृद्धि करना —भूतेषु किं च करुणां बहुलीकरोति—भामि० १।१२२ 4. सटकना, —बहुलीभू 1. फैलाना, विस्तृत करना, पृथु करना—छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति —पंच० २।१७५ 2 दूर तक फैलना, प्रकाशित होना, बदनाम होना, सुविदित होना, दूर दूर तक फैल जाना बहुलीभवन्त "सोऽहं न तत्पूर्वमवर्णमीशे" रघु० १४।३८)। सम० —आलाप (वि०) बातूनी, वाचाल, मुखर, —गन्धा इलायची।

बहुलिका (स्त्री०—ब० व०) कृत्तिकानक्षत्र।

बहुशः (अव्य०) [बहु+शस्] 1 अत्यंत, बहुतायत के साथ, अत्यधिकता के साथ मेघ० १०६ 2. बार बार, दोहरा कर, मुहुर्मुहु. —चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम् श० १।२३, कु० ४।३५ 3 साधारणत, सामान्य रूप से।

बाकुलम् [बकुल+अण्] बकुल वृक्ष का फल।

बाड् (भ्वा० आ० बाडते) 1 स्नान करना 2. गोता लगाना।

बाडवः [बडवा+अण् अश्वयोरभेद] दे० 'वाडव'।

बाडवेय (वि०) [बडवा+ढक्] दे० 'वाडवेय'।

बाडव्यम् [बाडव+यत्] दे० वाडव्यम्।

बाढ (वि०) [बह्+क्त नि० साधु] (म० अ०—साधीयस् उ० अ० साधिष्ठ) 1 दृढ़, मजबूत 2 ऊँचे स्वर का —ढम् (अव्य०) 1 यकीनन निश्चय ही, अवश्य, बहुत, हाँ (प्रश्न के उत्तर के रूप में) —चाणक्यः चन्दनदास, एष ते निश्चयः, चन्दनदासः—बाढम्, एष मे स्थिरो निश्चयः मुद्रा० १ बाढमेषु दिवसेषु पार्थिवः कर्म साधयति पुत्रजन्मने रघु० ११।५२ 2 बहुत अच्छा, तथास्तु, शुभम् 3 अत्यन्त बहुत ज्यादह शि० ९।७७।

बाणः [बण्+घञ्] तीर बाण शर धनुष्यमोघं समधत्त बाणम् कु० ३।६६ 2 तीर का निशाना बाण का लक्ष्य 3 तीर का पक्षयुक्त भाग 4 गाय का ऐन या औड़ी 5 एक प्रकार का पौधा (नीलझिंटी भी)—विकचबाणदलावलयोऽधिकं रुरुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमाः शि० ६।४६ 6 एक राक्षस का नाम बलि का पुत्र —दे० उषा 7 एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राजा हर्षवर्धन के दरबार में विद्यमान था (दे० परिशिष्ट २). उसने कादम्बरी, हर्षचरित तथा और कई पुस्तकें लिखीं (आर्या० के ३७ वें श्लोक में गोवर्धन ने बाण के विषय में निम्नांकित कहा है जाता शिखण्डिनी प्राग्यथा शिखण्डी तथावगच्छामि, प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति। इसी प्रकार—हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः—प्रस० १।२२) 1 'पाँच' की संख्या के लिए प्रतीकात्मक उक्ति। सम० —असनम् धनुष, —आवलिः, —ली (स्त्री०) 1. बाणों की श्रेणी 2 एक वाक्य में अन्वित पाँच श्लोकों का एक कुलक. —आश्रयः तरकस, —गोचरः बाण का परास,—जालम्

बाणों का समूह, -जित् (पुं०) विष्णु का विशेषण, —तूणः, —धिः तरकस, —पथः बाण का परास, —पाणि (वि०) बाणों से सुसज्जित, —पात 1. तीर की मार (दूरी की माप) 2 तीर की परास, —मुक्ति:, —मोक्षणम् बाण मारना, तीर छोड़ना, —योजनम् तरकस, —वृष्टि: (स्त्री०) तीरों की बौछार, —वार: वक्षस्त्राण, कवच, उरस्त्राण तु० वारबाण, —सुता: बाण की पुत्री उषा का विशेषण, दे० उषा, —हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण।

बाणिनी [बाण + इनि + ङीप्] दे० वाणिनी।

बादर (वि०) (स्त्री०—री) [बदर + अण्] 1 बेर के वृक्ष से प्राप्त या संबद्ध 2 रुई का बना हुआ —र: रुई का पौधा, बाड़ी —रम् 1 बेर 2 रेशम 3 पानी 4 रुई का ... दक्षिणावर्त शंख ... का पेड़।

बादरायण: [बदरी + फक्] वेदान्त दर्शन के शारीरिक सूत्रों का प्रणेता बादरायण (जिसे प्रायः व्यास का नामान्तर माना जाता है)। सम० —सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र, —सम्बन्ध कल्पित या दूर का सम्बन्ध (आधुनिक रूप)।

बादरायणि: [बादरायण + इञ्] व्यास का पुत्र शुक।

बादरिक (वि०) (स्त्री०—की) [बदर + ठञ्] बेर एकत्र करने वाला।

बाध् (भ्वा० आ० बाधते, बाधित] 1 तंग करना, उत्पीड़ित करना, सताना, अत्याचार करना, छेड़ना, कष्ट देना, दुःखी करना, परेशान करना, पीड़ा देना —ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे रघु० २।१४ न तथा बाधते स्कन्धो यथा बाधति बाधते सुभा०, मेघ० ५३ मनु० ९।२२९ १०।१२९, भट्टि० १८।५ 2 मुकाबला करना, विरोध करना, निष्फल करना, रोकना, रुकावट डालना, अवरोध करना, हस्तक्षेप करना —कि० १।११, उत्तर० ५।१८ 3 आक्रमण करना, हमला करना, धावा बोलना 4 अनुचित व्यवहार करना, अन्याय करना 5 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 6 हाँक कर दूर करना, पीछे धकेलना, हटाना 7 स्थगित करना, एक ओर रखना, रद्द करना, तोड़ना, मिटाना (नियम आदि) रघु० १७।५७, अभि—, 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 दुःख देना, तंग करना, सताना, आ—, दुःख देना, सताना, क्षति पहुँचाना, परि—, कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना —कु० ७।२५, प्र—, 1 कष्ट देना, सताना, तंग करना, चिढ़ाना, क्षति पहुँचाना —समुच्छ्रितानेव तरून् प्रबाधते (प्रभञ्जन) हि० १, भट्टि० १२।२ 2 हाँक कर दूर हटाना, मिटाना, पार करना —कर्ण नु दैव लक्ष्येन पौरुषेण प्रबाधितुम् —महा०, सम्—, कष्ट देना, सताना।

बाध:, —धा [बाध् + घञ्] 1 पीड़ा, यातना, कष्ट, सन्ताप —रजन्या सह जृम्भते मदनबाधा विक्रम० ३ 2 रुकावट, छेड़छाड़, परेशानी —इति भ्रमरबाधां निरूपयति श० १ 3 हानि, क्षति, घाटा, चोट —चरणस्य बाधा मालवि० ४, याज्ञ० २।१५६ 4 भय, खतरा 5 मुकाबला, विरोध 6 आपत्ति 7 प्रत्याख्यान, निराकरण 8 स्थगन, रद्द करना 9. अनुमान प्रक्रिया में त्रुटि, हेत्वाभास के पाँच रूपों में से, दे० नी० 'बाधित'। सम० —अपवादः अपवाद का खण्डन।

बाधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [बाध् + ण्वुल्] 1 कष्ट देने वाला, सताने वाला, उत्पीडक 2 छेड़छाड़ करने वाला, परेशान करने वाला 3 उन्मूलन 4 बाधा डालने वाला।

बाधनम् [बाध् + ल्युट्] 1 तंग करना, उत्पीडन, परेशान करना, अशान्ति, पीडा श० १ 2 मिटाना 3 हटाना, स्थगन 4 निराकरण, प्रत्याख्यान —ना पीडा, कष्ट, चिन्ता, अशान्ति।

बाधित (भू० क० कृ०) [बाध् + क्त] 1 तंग किया हुआ, उत्पीडित, परेशान 2 पीडित, सन्तप्त, कष्टग्रस्त 3 विरुद्ध, अवरुद्ध 4 रोका हुआ, प्रगृहीत 5 एक ओर रक्खा गया, स्थगित 6 निराकृत 7 (तर्क० में) खण्डित, विरोधग्रस्त, असंगत (फलतः व्यर्थ)।

बाधिर्यम् [बधिर + ष्यञ्] बहरापन।

बान्धकिनेयः [बन्धकी + ढक्, इनङादेश] दोगला, वर्ण-संकर।

बान्धव [बन्धु + अण्] 1 रिश्तेदार, संबंधी —यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः —हि० १, मनु० ५।७४ १०१, ४।१७९ 2 मातृपरक रिश्तेदार 3 मित्र —धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके —सुभा० 4 भाई। सम० —जनः रिश्तेदार, बन्धु-बान्धव —दारिद्र्यात्पुरुषस्य बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते —मृच्छ० १।३६, पंच० ४।७८।

बान्धव्यम् [बान्धव + ष्यञ्] सगोत्रता, रिश्तेदारी।

बाभ्रवी [बभ्रु + अण् + ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

बार्बटीर: [?] 1 आम का गूदा 2 जस्त 3 नया अंकुर 4 वेश्या का पुत्र।

बार्ह (वि०) (स्त्री०—र्ही) [बर्ह + अण्] मोर की पूँछ के परों से बना हुआ।

बार्हद्रथ, बार्हद्रथि: [बृहद्रथ + अण्, इञ् वा] राजा जरासंध का पितृपरक नाम।

बार्हस्पत (वि०) (स्त्री०—ती) [बृहस्पति + अण्] बृहस्पति से संबद्ध, बृहस्पति की सन्तान या बृहस्पति को प्रिय।

बार्हस्पत्य (वि०) [बृहस्पति+यक्] बृहस्पति से संबंध रखने वाला,—स्यः 1 बृहस्पति का शिष्य 2 भौतिकवाद के उग्ररूप के शिक्षक बृहस्पति का अनुयायी, भौतिकवादी,—स्यम् पुष्यनक्षत्र।

बार्हिण (वि०) (स्त्री०—णी) [बर्हिन्+अण्] मोर से संबद्ध या उत्पन्न।

बाल (वि०) [बल्+ण या बाल+अच्] 1 बच्चा, शिशुवत्, अवयस्क, स्याना बालेन स्थविरेण वा मनु० ८।७०, बालाशोकमुपोढरागसुभगं भेदोन्मुखं तिष्ठति —विक्रम० २।७, इसी प्रकार बालमन्दारवृक्ष मेघ० ७५, रघु० २।४५, १३।२४ 2 नया उगा हुआ, बाल (रवि या अर्क)—रघु० १२।१०० 3 नूतन, वर्धमान (चन्द्रमा) पुपोष वृद्धिं हरिदश्वदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमा रघु० ३।२२, कु० ३।२९ 4 बालिश 5. अनजान, अबोध, —लः 1 बालक, शिशु—बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम् मनु० २।२३९ 2 बालक, युवा, तरुण 3 अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)—बाल आषोडशाद्वर्षात्— नारद 4 बछेरा, अश्वक 5 मूर्ख भोंदू 6. पूंछ 7 बाल 8. पाँच वर्ष का हाथी 9 एक प्रकार का गन्धद्रव्य। सम०—अग्रम् बाल की नोक —अध्यापकः बच्चों का शिक्षक,—अभ्यासः बाल्यावस्था में अध्ययन, (अध्ययन में) शीघ्र लगाना, —अरुण (वि०) प्रभातकालीन उषा की भाँति लाल (—णः) प्रभातकालीन उषा —अर्कः नवोदित सूर्य—रघु० १२।१००, —अवबोधः बच्चों की शिक्षा, —अवस्थ (वि०) तरुण, नवयुवक विक्रम० ५।१८ —अवस्था बचपन —आतपः प्रातःकालीन धूप —इन्दुः नया बढ़ता हुआ चन्द्रमा—कु० ३।२९, —इष्टः बेरी बेर का पेड़ —उपचारः (आयु०) बच्चों की चिकित्सा —उपवीतम् लंगोटी, रूमाली, —कदली केले का नया पौधा, —कुन्द —दम् एक प्रकार की नई चमेली (—दम्) चमेली की नई खिली हुई कली अलके बालकुन्दानुविद्धम् —मेघ० ६५, —कृमिः जूं —कृष्णः बालक के रूप में कृष्ण,—क्रीडनम् बच्चे का खिलौना या खेल,—क्रीडनकम् बच्चे का खिलौना, (—कः) 1 गेंद 2 शिव का विशेषण,—क्रीडा बच्चों का खेल, बालकों या लड़कों का खेल,—खिल्यः ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न, अंगूठे के समान आकारवाली दिव्य मूर्तियाँ (जो गिनती में साठ हजार समझी जाती हैं) कु० रघु० १५।१०, —गर्भिणी पहली बार गाभिन हुई गाय,—गोपालः 'तरुण ग्वाला' बालगोपाल के रूप में कृष्ण का विशेषण,—ग्रहः बालकों को पीड़ा पहुँचाने वाला पिशाच (या उपग्रह),—चन्द्रः,—चन्द्रमस् (पुं०) दूज का चाँद, बढ़ता हुआ चाँद —मा० २।१०,—चरितम् 1 तरुणों के खेल 2. बालक्रीडा, बालजीवन के कारनामे—उत्तर० ६,—चर्यः कार्तिकेय का नाम, (—र्या) बच्चे का व्यवहार, —ज (वि०) बालों से उत्पन्न,—तनयः खदिर का वृक्ष, खैर —तन्त्रम् धात्रीकर्म,—तृणम् नई दूब, हरी घास, —तनयः खैर, —धिः बालों वाली पूंछ— शि० १२।७३ कि० १२।४७, —पाश्या 1 बालों की माँग में पहने जाने के योग्य आभूषण 2 बालों की चोटी में धारण की जाने वाली मोतियों की लड़ियाँ,—पुत्रिका, —पुष्पी एक प्रकार की चमेली, —बोधः 1 बच्चों की शिक्षा 2 अनुभवशून्य नये बालकों की शक्ति के अनुसार कोई कार्य —भद्रकः एक प्रकार का विष,—भारः बालों से भरी हुई लम्बी पूंछ—चाधेतात्काक्षिपत्सचमरी बालभारो दवाग्नि —मेघ० ५३,—भावः बचपन, बाल्यावस्था —भैषज्यम् एक प्रकार का अंजन,—भोज्यः मटर, —मृगः मृग छौना —यज्ञोपवीतकम् वक्षस्थल के ऊपर से पहने जाने वाला जनेऊ —राजम् वैदूर्यमणि, नीलम, —रोगः बच्चों का रोग —लता नूतन बेल— रघु० २।१० —लीला बच्चों के खेल, बालकों का मनोविनोद —वत्सः 1 नन्हा बछड़ा 2 कबूतर —वायजम् वैदूर्यमणि नीलम —वासस् (नपुं०) ऊनी वस्त्र —वाह्यः जंगली बकरा —विधवा बाल्यावस्था में ही जिसका पति मर गया हो —व्यजनम् चँवर चौरी (सुरागाय के बालों से बनी चौरी जो एक प्रकार का राजचिह्न है)—रघु० ४।६६, १४।११ १६।३३ ५७ कु० १।१३ —सखि बाल्यावस्था से बना मित्र बचपन का दोस्त, —संध्या झुटपुटा —सुहृद् (पुं०) बचपन का मित्र,—सूर्यः —सूर्यकः वैदूर्यमणि, नीलम —हत्या बच्चे की हत्या —हस्तः बालों वाली पूंछ।

बालक (वि०) (स्त्री०—लिका) [बाल+कन्] 1 बच्चों जैसा, नन्हा, अवयस्क 2 अनजान, —कः 1 बच्चा, बाल 2 अवयस्क (विधि में) 3 अँगूठी 4 मूर्ख या बुद्धू 5 कड़ा कंकण 6 हाथी या घोड़े की पूंछ, —कम् अँगूठी। सम०—हत्या, बच्चे की हत्या।

बाला [बाल+टाप्] 1 लड़की कन्या 2 सोलह वर्ष से कम आयु की युवती 3 तरुणी, युवती —जाने तपसो वीर्यं सा बाला परवतीति मे विदितम्— श० ३।१, इयं बाला मां प्रत्यनवरतमिन्दीवरदलप्रभाचोरं चक्षुः क्षिपति भर्तृ० ३।६७, मेघ० ८३ 4 चमेली का एक भेद 5 नारियल 6 घृतकुमारी का पौधा 7 इलायची 8 हल्दी। सम०—हत्या स्त्रीहत्या।

बालिः [बल्+इन्] एक प्रसिद्ध वानरराज का नाम —दे० 'वालि'। सम०—हन्, हन्तृ (पुं०) राम का विशेषण।

बालिका [बाला+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. लड़की 2. कान की बाली की घुंडी 3 छोटी इलायची 4. रेत 5. पत्तों की सरसराहट।

बालिन् (पुं०) [बाल+इनि] एक वानर का नाम दे० 'वालि'।

बालिनी [बालिन्+ङीप] अश्विनी नक्षत्र।

बालिमन (पुं०) [बाल+इमनिच्] बचपन बाल्यावस्था लड़कपन।

बालिश (वि०) [बाडि शयति बालि+शी+ड डलयोरभेदः] 1 बच्चा जैसा अबोध मूर्ख 2 बच्चा 3 मूर्ख अनजान मनु० ३।१७६ 4 लापरवाह —श 1 मूर्ख मूढ़ 2 बच्चा बालक —शम् तकिया।

बालिश्यम् [बालिश+ष्यञ्] 1 लड़कपन बचपन 2 बचकानापन मूर्खता बेवकूफी।

बाली [बालि+ङीप] एक प्रकार की कान की बाली।

बालीश (पुं०) मूत्रावरोध

बालु —**बालुकम्** [बल्+उण्] एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य।

बालुका दे० 'वालुका'।

बालुकी **बालुङ्की** **बालुङ्गी** [बल्+उण् ...] एक प्रकार की ककड़ी।

बालूक [बल्+ऊक] एक प्रकार का विष।

बालेय (वि०) (स्त्री० —यी) [बलि+ढञ्] 1 बलि देने के लिए उपयुक्त 2 मृदु मुलायम 3 बालक के समान —यः गधा।

बाल्यम् [बाल+ष्यञ्] 1 लड़कपन बचपन बाल्यावस्था —शिशुत्वं ... रघु० ५।६९, कु० १।२९ 2 चन्द्रमा के उदय का अवधि कु० ७।३५ 3 समझ की अपरिपक्वता मूर्खता अबोधता।

बाल्हका **बाल्हिका** **बाल्हीका** (पुं० ब० व०) [बल्हिदेश भवाः बल्हि+वुन्, बल्हि+ठञ्, पृषो० पक्षे दीर्घ च] बल्हि के अधिवासी, —क: 1 बाल्हीकों का राजा 2 बाल्ह का घोड़ा —कम् 1 केसर जाफरान 2 हींग।

बाल्हि (पुं०) एक देश का नाम। सम० —ज (वि०) बल्ख देश में उत्पन्न बल्ख देश की नसल।

बाष्पः —**ष्पम्** [बाध्+प, पृषो० धस्य षः] 1 आंसू अश्रु —स्नेहाद्बाष्पवशीकृतम् ... 2 भाप प्रवाह कुहरा 3 लोहा। सम० —**अम्बु** (न०) आंसू —**आकुल** आंसुओं का आना —**कण्ठ** (वि०) जिसका गला भर आया हो, गद्गद् कंठ वाला —**दुर्दिनम्** आंसुओं की बाढ़, पूरा आंसुओं का फूट पड़ना आंसुओं की बाढ़, —बारबार तिरयति दृशाबुद्गमं बाष्पपूरः मा० १।३५, —**मोक्षः** —**मोक्षणम्** आंसू बहाना, —**बिन्दुः** (पुं) आंसू की बूंद —**संदिग्ध** (वि०) जो आंसुओं के कारण अस्पष्ट हों।

बाष्पायते (ना० धा० आ०) आंसू बहाना, रोना —गलितमिति बाष्पायित भगवत्या - मा० ६, विक्रम० ५।१९।

बास्त (वि०) (स्त्री० —स्ती) [बस्त+अण्] बकरे से उत्पन्न या प्राप्त —मनु० २।४१।

बाह [बाहु पृषो० बह्+णिच्+अच्, बवयोरभेदः] 1 भुजा 2 घोड़ा।

बाहा [दे० बाह] भुजा —मां प्रत्यालिङ्गनोद्यताभि बाहा-बाहाभि —ल० ३ सम० —**बाहवि** (अव्य०) हस्ताहस्ति भुजा से भुजा —तु० बाहूबाहवि।

बाहीका (पुं० ब० व०) [बह्+ईकन् बवयोरभेदः] पंजाब के अधिवासी —कः 1 पंजाबी 2 बैल।

बाहु [बाध्+कु धस्य हः] 1 भुजा— शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य— श० १।१६ इसी प्रकार महाबाहु आदि 2 कन्धे 3 पशु का अगला पैर 4 द्वार की चौखट का बाजू 5 (ज्या० में) समकोण त्रिभुज का आधार —हु (द्वि० व०) आर्द्रा नक्षत्र सम० —**उत्क्षेपम्** (अव्य०) भुजाओं को ऊपर उठा कर बाहूत्क्षेपं क्रन्दितुं प्रवृत्ता श० ६।३०, —**कुण्ठ** **कुब्ज** (वि०) लंजा जिसका हाथ विकृत हो गया हो —**कुन्थ** (पक्षी का) बाजू डैना —**चापः** दोनों हाथों की माप अर्थात् दोनों हाथों को फैलाकर मापी हुई दूरी —**जः** क्षत्रिय वर्ण का व्यक्ति —तु० बाहू राजन्यः कृतः —ऋग्० १०।९०।१२, मनु० १।३१ 2 तोता —**ज्या** (गणि० में) चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा —त्र, —**त्रम्**—**त्राणम्** भुजाओं की रक्षा करने वाला कवचविशेष, —**दण्डः** 1 डंडे की भांति लंबी भुजा 2 भुजा या मुक्के से दण्डित करना —**पाशः** 1 मल्लयुद्ध में एक घेरा बनाना जैसा कि आलिंगन के समय किया जाता है, —**प्रहरणम्** घूंसा की लड़ाई मल्लयुद्ध —**बलम्** भुजा की ताकत मांसपेशियों की शक्ति —**भूषणम्**, **भूषा** भुजा में पहना जाने वाला आभूषण बाजूबंद अनंत, —**भेदिन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण, —**मूलम्** 1 कांख, 2 कंधे और बाहु का जोड़, —**युद्धम्** हाथापाई मल्लयुद्ध घूंसों की लड़ाई —**योधः** —**योधिन्** (पुं०) मुष्टि योद्धा घूंसेबाज —**लता** भुजा की भांति बेल —**अन्तरम्** स्तन वक्षःस्थल —**वीर्यम्** भुजाओं की शक्ति —**व्यायामः** कसरत, —**शालिन्** (पुं०) 1 शिव का विशेषण 2 भीम का विशेषण —**शिखरम्** भुजा का ऊपरी भाग कन्धा —**संभवः** क्षत्रिय जाति का पुरुष —**सहस्रभृत्** (पुं०) कार्तवीर्य राजा का विशेषण (सहस्रार्जुन) भी इसका नामान्तर है।

बाहुक [बाहु+कै+क] 1 बन्दर 2 कर्कोटक के द्वारा बौना बना दिये जाने पर नल का बदला हुआ नाम।

बाहुगुण्यम् [बहुगुण+ष्यञ्] अनेक सद्गुण और श्रेष्ठताओं का स्वामित्व।

बाहुदन्तकम् [बहुदन्तक+अण्] नैतिक कर्तव्यों का स्मृति

के रूप में निरूपण जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं ।

बाहुदन्तेयः [बहुदन्त + ढ] इन्द्र का विशेषण ।

बाहुदा [बाहु + दा + क + टाप्] एक नदी का नाम ।

बाहुभाष्यम् [बहुभाष् + ष्यञ्] मुखरता, वाचालता, बातूनीपन ।

बाहुरूप्यम् [बहुरूप + ष्यञ्] बहुरूपता, विविधता ।

बाहुलः [बहुल + अण्] 1. अग्नि 2. कार्तिक का महीना, —लम् 1. बहुरूपता 2. भुजाओं की रक्षा के लिए कवच विशेष । सम० —ग्रीवः मोर ।

बाहुलकम् [बाहुल + कन्] 1. अनेकरूपता 2. व्याकरण में प्रयुक्त विधिविशेष - बाहुलकाच्छन्दसि. किसी रूप, अर्थ या नियम की विविध या असीम प्रयोजनीयता ।

बाहुलेयः [बहुला + ढक्] कार्तिकेय का विशेषण ।

बाहुल्यम् [बहुल + ष्यञ्] 1. बहुतायत, प्राचुर्य, यथेष्टता 2. बहुरूपता, अनेकता, विविधता 3 वस्तुओं का सामान्य क्रम या प्रचलित व्यवस्था ।

बाहूबाहवि (अव्य०) [बाहुभिर्बाहुभि प्रहृत्येदं प्रवृत्तं युद्धम्] भुजा से भुजा मिला कर, हस्ताहस्ति, घमासान युद्ध ।

बाह्य (वि०) [बहिर्भव ष्यञ्, टिलोप] 1 बाहर का, बाहर की ओर का, बाहरी, बहिर्देश, बाहर स्थित —विरहः किमिवानुतापयेद् वद बाह्यैर्विषयैर्विपश्चितम् —रघु० ८।८९, बाह्योद्याने —मेघ० ७, कु० ६।४६, **बाह्यनामन्** 'बाहरी नाम', अर्थात् पत्र की पीठ पर लिखा हुआ पता या शिरोनाम, सरनामा —मुद्रा० १ 2. विदेशी, अपरिचित —पंच० १ 3. बहिष्कृत, कटघरे से बाहर—आत्मान्तर्बाह्यमानबाधाः— कु० १।३६ 4 समाज से बहिष्कृत, जातिबहिष्कृत, —ह्यः 1. अपरिचित, —ह्यम्, बाह्येन, बाह्ये (अव्य०) बाहर, बाहर की ओर, बाहरी ढंग से ।

बाह्वृच्यम् [बह्वृच + ष्यञ्] ऋग्वेद का परम्परागत अध्यापन ।

बिट् (भ्वा० पर०— बेटति) 1. शपथ लेना 2. अभिशाप देना 3. चिल्लाना, जोर से बोलना ।

बिटकः,—कम्, बिटका [=पिटक, पृषो०] फोड़ा, फुंसी ।

बिडम् [बिड् + क] एक प्रकार का नमक ।

बिडालः [बिड् + कालन्] 1. बिल्ला, बिलाव 2. आँख का ढेला । सम० —पदः,—पदकम् १६ माषे के तोल का बट्टा ।

बिडालकः [बिडाल + कन्] 1. बिलाव 2. आँख के बाहरी भाग पर मरहम लगाना, —कम् पीली मरहम ।

बिडौजस् (पुं०) [वेवेष्टि विट् व्यापकमोजो यस्य बिडौजा., पृषो० वृद्धिः] इन्द्र का विशेषण, —श० ७।३४ ।

बिद्, बिन्द् (भ्वा० पर० बिंदति) 1. खण्ड खण्ड करना 2. बाँटना ।

बिदलम् दे० 'विदल' ।

बिन्दु. [बिन्द् + उ] 1. बूंद, बिंदी जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः "छोटी-छोटी बूंदें मिल कर एक सरोवर बन जाता है", बिन्दोर्यत्ने यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि मनु० ७।३३, अधुना (कुतूहलस्य) बिन्दुरपि नावशेषितः —श० २ 2 बिंदु, बिंदी 3. हाथी के शरीर पर रंगीन बिंदी या चिह्न —कु० १।७ 4 शून्य, सिफर —न सामर्थ्यमपोहितुं क्षमाः क्षितौ निधिज्ञाः शून्यबिन्दवः —नै० १।२१ । सम० **चित्रकः** चित्तीदार हरिण, **जालम्**, **जालकम्** 1. बूंदों का समूह 2 हाथी के मुंह और शरीर पर बनाये गये चित्रण चित्तियाँ, —**तन्त्रः** 1. पासा 2. शतरंज की बिसात —**देवः** शिव का विशेषण, —**पत्रः** एक प्रकार का भोजपत्र —**फलम्** मोती, —**रेखकः** 1 अनुस्वार 2 एक प्रकार का पक्षी, —**रेखा** बिन्दुओं की पंक्ति, —**वासरः** गर्भाधान का दिन ।

बिब्बोकः, (बिव्वोक, विव्वोक) [?] 1 अभिमान के कारण अपने प्रियतम पदार्थ की ओर उदासीनता का प्रदर्शन मनाक् प्रियकथालापे बिब्बोकोऽनादरक्रिया—प्रताप० ८८, या. बिब्बोकमन्यनिरपेक्ष ... —सा० द० १२९, 2 घमंड के कारण उदासीनता 3 रति परक या प्रीतिविषयक संकेत —सव्याज ... निहितकाय कश्चिद्बिब्बोकमेवं ... — शि० ८।१९ (बिब्बोकैः मल्लि०) ।

बिभित्सा [भिद् + सन् + अ + टाप्] भेदन की इच्छा, बींधने की या छेद करने की इच्छा ।

बिभित्सु (वि०) [भिद् + सन् + उ] छेदने या बींधने की इच्छा ।

बिभीषणः [भी + सन् + ल्युट्] एक राक्षस का नाम, रावण का भाई (यद्यपि वह जन्म से राक्षस था परन्तु साध्वी सीता के अपहरण के कारण वह बड़ा खिन्न था, उसने रावण को इस दुष्कृत्य के लिए बहुत बुरा भला कहा । उसने बार-बार रावण को समझाया कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो सीता को राम के पास वापिस पहुँचा दो । परन्तु उसने बिभीषण की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया । अंत में जब उसने देखा कि रावण का विनाश अवश्यभावी है तो वह राम के पास चला गया और उनका पक्का मित्र बन गया । रावण की मृत्यु के पश्चात् राम ने बिभीषण को लंका की राजगद्दी पर बिठा दिया । बिभीषण सात चिरजीवियों में गिना जाता है —दे० 'चिरजीविन्') ।

बिभ्रक्षुः, बिभ्रक्षिषुः [भ्रस्ज् + सन् + उ, बिकल्पेन इट्] आग ।

बिम्बः,—म्बम् [बी+वन् नि० साधुः] सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल—वदनेन निर्जितं तव नीलीयते चन्द्रबिम्बमम्बुधरे—सुभा०, इसी प्रकार सूर्य°, रवि° आदि 2. कोई गोल या मण्डलाकार सतह, मण्डल या गोला जैसे 'नितम्बबिम्ब' गोलाकार कूल्हा, 'श्रोणीबिम्ब' आदि 3. प्रतिमा, छाया, प्रतिबिंब 4 शीशा, दर्पण 5. कलश 6. उपमित पदार्थ (विप० प्रतिबिंब),—म्बम् एक वृक्ष का फल (यह जब पक जाता है तो लाल रंग का हो जाता है, तरुण स्त्रियों के होठों की तुलना इसी से की जाती है)—रक्तशोकरुचा विशेषितगुणो बिम्बाधरालक्तकः—मालवि० ३।५, पक्वबिंबाधरोष्ठी—मेघ० ८२, नै० २४। सम०—ओष्ठ (वि०) (बिंबो(बौ)ष्ठ) बिंब फल के समान लाल-लाल सुन्दर होठों वाला—मालवि० ०।१४,—ष्ठः) बिंब फल की भांति ओष्ठ—उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे—कु० ३।६७।

बिम्बकम् [बिम्ब+कन्] 1 सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल 2 बिंबफल।

बिम्बिका [बिम्ब+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल 2 बिंब का पौधा।

बिम्बित (वि०) [बिम्ब+इतच्] 1 प्रतिबिंबित प्रति छाया पड़ी हुई 2 चित्रित।

बिल् (तु० पर०, चुरा० उभ० बिलति, बेलयति-ते) खंड खण्ड करना फाड़ना, तोड़ना, बांटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

बिलम् [बिल्+क] 1 छिद्र, विवर, खुड्ड (हल चलाने से बनी गहरी सीधी रेखा) अवगाढबिलं सिंहः प्राप्नोति गजभंगं हि—पंच० ३।१५ रघु० १२।५, 2. रिक्तस्थान, गर्त, छिद्र 3. द्वारक, छिद्र सूराख, 4. कंदरा, कोटर 5. इन्द्र के घोड़े 'उच्चैःश्रवा' का नामान्तर। सम०—ओकस् (पुं०) बिल में रहने वाला जानवर, —कारिन् (पुं०) चूहा,—योनि (वि०) बिलजन्तुओं की नस्ल के जानवर यत्रांशुका बिलयोनयः—कु० ६।३९, —वासः गन्धमार्जार,—वासिन् (बिलेवासिन्) (पुं०) सांप।

बिलंगमः [बिल+गम्+खच्, मुम्] सर्प, सांप।

बिलेशयः [बिले शेते—शी+अच् अलुक् स०] 1 सांप 2. मूसा, चूहा 3 मांद में रहने वाला कोई भी जन्तु।

बिल्वः [बिल+ला+क नि० अकार लोपः] 1. गर्त 2. विशेषतः थांवला, आलवाल। सम०—सूः दस बच्चों की मां।

बिल्वः [बिल्+वन्] बेल नामक वृक्ष—ल्वम् 1 बेल का फल 2. एक विशेष तोल, पल भर। सम०—दंडः शिव का विशेषण,—पेशिका,—पेशी बेल का छिल्का (जो लकड़ी के समान कड़ा होता है),—वनम् बेलों का जंगल।

बिल्वकीया [बिल्व+छ, कुक्] वह स्थान जहां बेल के पौधे लगाये गए हों।

बिस् (दिवा० प० बिस्यति) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 उकसाना, प्रेरित करना, भड़काना 3 फेंकना, डाल देना 4 टुकड़े टुकड़े करना।

बिसम् [बिस्+क] 1 कमल तन्तु 2 कमल की तन्तु वाली डंडी—पाथेयमुत्सृज बिसं ग्रहणाय भूय—विक्रम० ४।१५, बिसमलमशनाय स्वादु पानाय तोयम्—भर्तृ० ३।२०, मेघ० ११ कु० ३।३७, ३।२९। सम० —कण्ठिका, कण्ठिन् (पुं०) छोटा सारस —कुसुमम्, पुष्पम्, —प्रसूनम् कमल का फूल,—अर्धबिसं घनविकासिबिसप्रसूना शि० ५।२८,—खादिका कमल तन्तुओं का खाने वाली, —ग्रन्थि कमलडंडी के ऊपर की गांठ, —छेद कमल की तन्तुमय डंडी का टुकड़ा, —जम् कमल का फूल, कमल —तन्तु कमल का रेशा, —नाभि (स्त्री०) कमल का पौधा पद्मिनी,—नासिका एक प्रकार का सारस।

बिसलम् [बिस+ला+क] नया अंकुर, अंखुवा कली।

बिसिनी [बिस+इनि] 1 कमलिनी, कमल का पौधा भर्तृ० १।२६ 2 कमलतन्तु 3 कमलों का समूह।

बिसिल (वि०) [बिस+इलच्] बिस से संबद्ध या प्राप्त।

बिस्तः [बिस्+क्त] (८० रत्तियों के बराबर) सोने का माप।

बिल्हण (पुं०) विक्रमांकदेवचरित नामक काव्य का रचयिता।

बीजम् [वि+जन्+ड उपसर्ग दीर्घ वकारभेद] बीज (आलं० में भी) बीज का दाना, अनाज —अरण्यबीजाञ्जलिदानलालिता कु० ५।१५ बीजाञ्जलि पतति कीटमुखावलीढः—मृच्छ० १।९, रघु० १९।५७ मनु० ९।३३ 2 प्रारम्भ, तत्त्व 3 मूल, ज्ञात कारण, बीजप्रकृति रत्न० १।१, (पाठान्तर) 4 वीर्य शुक्र, कु० २।५, ६० 5 किसी नाटक की कथावस्तु का बीज, कहानी आदि,—दे० सा० द० ३१८ 6 गूदा 7 बीजगणित 8 बीजमन्त्र,—जः नींबू का पेड़। (बीजाकृ 1 बीज बोना—व्योमनि बीजाकुरुते—भामि० १।९८ 2 बीज बोने के बाद हल चलाना)। सम० —अक्षरम् मन्त्र का प्रथम अक्षर —अङ्कुरः बीज का अंकुर—कु० ३।१८, °न्यायः बीज और अंकुर का न्याय, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, —अध्यक्षः शिव का विशेषण, —अश्वः जननाश्व, सांड घोड़ा,—आढ्यः, —पूरः,—पूरकः बिजौरा नींबू, चकोतरा, (रम्,—रकम्) नींबू का फल,—उत्कृष्टम् अच्छा बीज —उदकम् ओला, —कर्तृ (पुं०) शिव का विशेषण —कोशः,—कोष 1. बीज पात्र 2 कमल का बीजपात्र,—गणितम् बीजगणित का विज्ञान,—गुप्तिः (स्त्री०) बीजकोश, फली, सेम,

छीमी,—वर्धकः रंगशाला का व्यवस्थापक,—वाणिज् बनिया,—न्यासः नाटक की कथावस्तु के स्रोत को बतलाना,—पुरुषः कुल प्रवर्तक,—फलकः बीजपूर का पेड़,—मन्त्रः रहस्यमय अक्षर जिससे मंत्र आरम्भ होता है,—मातृका कमल का बीजकोष,—रुहः दाना, अनाज,—वापः 1. बीज बोने वाला 2. बीज का बोना,—वाहनः शिव का विशेषण,—सूः पृथ्वी,—सेक्तृ (पुं०) प्रस्रष्टा, प्रजापति।

बीजकः [बीज+कन्] 1. सामान्य नीबू 2 नीबू या चकोतरा 3 जन्म के समय बच्चे की भुजाओं की स्थिति,—कम् बीज।

बीजल (वि०)[बीज+लच्] बीजों से युक्त, बीजों वाला।

बीजिक (वि०) [बीज+ठन्] बीजों से भरा हुआ, जिसमें बहुल बीज हों।

बीजिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [बीज+इनि] बीजों से युक्त, बीज रखने वाला (पुं०) 1 वास्तविक पिता या प्रजनक (बीज का बोने वाला) (विप० क्षेत्रिन्—खेत या स्त्री का पति या स्वामी) दे०—मनु० ९। ५१ तथा आगे 2. पिता 3. सूर्य।

बीज्य (वि०) [बीज+यत्] 1. बीज से उत्पन्न 2 सम्मानित कुल का, सत्कुलोद्भव।

बीभत्स (वि०) [बध्+सन्+घञ्] 1. घृणोत्पादक, घिनौना, दुर्गंधयुक्त, भीषण, जुगुप्साजनक—कृत्स्नं बीभत्समेवाग्रे वर्तते मा० ५, 'अहो ! यह निश्चित रूप से घिनौना दृश्य है' 2. ईर्ष्यालु, प्रद्वेषी, विद्वेषपूर्ण 3. बर्बर, क्रूर, क्रूरचार 4 मन से विरक्त,—त्सः 1. जुगुप्सा, घिनौनापन, गर्हणा 2 बीभत्सरस, काव्य के आठ या नौ रसों में से एक—जुगुप्सास्थायिभावस्तु बीभत्सः कथ्यते रसः—सा० द० २३६ (उदा० मा० ५।१६) 3. अर्जुन का नामान्तर।

बीभत्सुः [बध्+सन्+उ] अर्जुन का विशेषण। महा० इस प्रकार व्याख्या करता है—न कुर्यात्कर्म बीभत्सं युध्यमानः कथंचन, तेन देवमनुष्येषु बीभत्सुरिति विश्रुतः।

बुक् (अव्य०) [बुक्क्+क्विप् पृषो० उपधालोपः] अनुकरणमूलक शब्द। सम०—कारः सिंह की दहाड़।

बुक्क् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० बुक्कति, बुक्कयति-ते) 1. भौंकना—हि० ३।५२ 2. बोलना, बातें करना।

बुक्कः,—क्कम् [बुक्क्+अच्] 1. हृदय 2. दिल, छाती—बुक्काग्रार्तैर्वतिनिकटे प्रीडवाक्येन राजा—रत्नकूट 3. रुधिर,—क्कः 1 बकरा 2. समय।

बुक्कन् (पुं०) [बुक्क्+कनिन्] हृदय, दिल।

बुक्कनम् [बुक्क्+ल्युट्] भौंकना, भौं भौं करना।

बुक्कसः [=पुक्कस, पृषो० साधुः] चंडाल।

बुक्का,—क्की [बुक्क+टाप्, ङीप् वा] हृदय, दिल।

बुध् (भ्वा० उभ०—बोधति-ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, समझना, पहचानना 2. समझ लेना, जान लेना।

बुद्ध (भू० क० कृ०) [बुध्+क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ, प्रत्यक्ष किया हुआ 2. जगाया हुआ, जागरूक 3 देखा हुआ 4. प्रकाशमान।

बुद्धिमान् (दे० बुध्)—द्धः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि 2. (बौद्धों के साथ) बुद्धिमान् या ज्ञानज्योति से प्रकाशमान पुरुष जो सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञानद्वारा जन्म-मरण से छुटकारा पा चुका है तथा जो स्वयं मुक्त होने से पूर्व संसार की मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करने की रीति बतलाता है 3 शाक्यसिंह का नाम 'बुद्ध' जो बौद्धधर्म का प्रसिद्ध प्रवर्तक था (उसने कपिलवस्तु में जन्म लिया और ईसा से ५४३ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया, कई बार उसे विष्णु का नवाँ अवतार माना जाता है, जयदेव कहता है निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदयहृदय दर्शितपशुघातं केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे—गीत० १) सम०—आगमः बौद्धधर्म के सिद्धान्त और मन्तव्य,—उपासकः बुद्ध की पूजा करने वाला,—गया एक पुण्यतीर्थस्थान का नाम,—मार्गः बुद्ध के सिद्धांत और मत, बुद्धवाद।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1 प्रत्यक्ष ज्ञान, संबोध 2 मति, समझ, प्रज्ञा, प्रतिभा तीक्ष्णा नारुन्तुदा बुद्धिः शि० २।१०९, शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिः—रघु० १।१९ 3 ज्ञान—बुद्धिर्यस्य बलं तस्य हि० २।१२२ 'ज्ञान ही शक्ति है' 4 विवेक, विवेचन, सूक्ष्म विचारणा 5 मन मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः—मालवि० १।२, इसी प्रकार कृपण° पाप° आदि 6. औसान रहना, प्रत्युत्पन्नमतित्व 7 धारणा, सम्मति, विश्वास, विचार, भावना, भाव दूरात्तमवलोक्य व्याघ्रबुद्ध्या पलायन्ते—हि० ३, असया बुद्ध्या मुद्रा० १, 'इस विश्वास में'—अनुक्रोशबुद्ध्या मेघ० ११५ 8. आशय, प्रयोजन, प्रायोजना (बुद्ध्या) 'इरादतन' 'प्रयोजन से' 'जानबूझ कर 9. सचेत होना, मूर्छा से जागना मा० ४ 10. (सां० द० में) सांख्यशास्त्र में वर्णित पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा। सम०—अतीत (वि०) बुद्धि की पहुँच से परे,—अवज्ञानम् किसी की समझ का तिरस्कार करना या निकृष्ट मत रखना—अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, प्राप्नोति बुद्ध्यवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्—पंच० १।६३,—इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय, (विप० कर्मेन्द्रिय) (यह पाँच हैं—कान, त्वचा, आँख जिह्वा और नाक—श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी, इनमें कभी कभी 'मनस्' जोड़ा जाता है)—गम्य-ग्राह्य (वि०) पहुँच के भीतर, उपलब्ध करने योग्य, प्रतिभा,—जीवन् (वि०) 'सर्व' का

व्यवहार करने वाला, तर्कयुक्त बात करने वाला —**पूर्वम्**,-**पूर्वकम्**,**पुरःसरम्** (अव्य०) इरादतन, जानबूझ कर स्वेच्छा से, —**भ्रमः** मन का उचाट, मन की विपथ-गामिता, -**योगः** ब्रह्म से बौद्धिक सायुज्य, —**लक्षणम्** बुद्धिमत्ता या प्रतिभा का चिह्न -प्रारब्धस्यान्तगमनम् द्वितीय बुद्धिलक्षणम्, —**वैभवम्** प्रतिभा की शक्ति, **शस्त्र** (वि०) समझ या बुद्धि से युक्त, —**शालिन्**-**संपन्न** (वि०) बुद्धिमान् समझदार, —**सखः**,-**सहायः** परामर्शदाता,—**हीन** (वि०) प्रतिभाशून्य, मूर्ख, बेवकूफ।

बुद्धिमत् [बुद्धि + मतुप्] 1. समझ से युक्त, प्रज्ञावान्, विवेकपूर्ण 2 समझदार, विद्वान् 3 तेज, चतुर, तीक्ष्ण।

बुद्बुदः (पुं०) बुलबुला, जनाः जातविनष्टाः पयसामिव बुद्बुदाः पानीये —पंच० ५, ५।

बुध् (भ्वा० उभ०, दिवा० आ०—बोधति-ते, बुध्यते, बुद्ध) 1 जानना, समझना, ज्ञात होना—अमादम् नारद इत्य बोधि सः —शि० १।३, ९।६४, नाबुद्ध कल्पद्रुमतां विहाय जातं तमात्मन्यसिपत्रवृक्षम्—रघु० १४।४८, यदि बुध्यते हरिशिशुः स्तनन्धयः—भामि० १।५३ 2 प्रत्यक्ष करना, देखना, पहचानना, ध्यान से देखना -हिरण्मयं हंसमबोधि नैषधः —नै० १।११७, अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः—रघु० १।४७, १२।३९ 3. सोचना, विचार करना, समझना, मानना आदि 4. ध्यान देना, चित्त लगाना 5. सोचना, विमर्श करना 6 जागना, सचेत होना, सोकर उठना—यददपि गिरमन्तर्बुध्यते नो मनुष्यः— शि० ११।४, ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः —रघु० १०।६ 7 फिर से सचेत होना, होश में आना शनैरबोधि सुग्रीवः सोऽलङ्घ्यत्कर्ण-नासिकम्—भट्टि० १५।५७, प्रेर०—बोधयति-ते 1 जत-लाना, ज्ञात करना, सूचित करना, परिचित करना 2. अध्यापन करना, समाचार देना, (शिक्षा आदि) प्रदान करना 3 परामर्श देना, चेताना—बोधयन्त हिताहितम्, भट्टि० ८।८२, भग० १०।९ 4. पुनर्जीवित करना, फिर जान डालना, होश दिलाना, सचेत करना 5. फिर ध्यान दिलाना, याद दिलाना —श० ४।१ 6. जगाना, उठाना, उत्तेजित करना (आल०)—अकाले बोधितो भ्रात्रा—रघु० १२।८१, ५।७५ 7. (गन्ध-द्रव्य को) फिर से सुवासित करना 8 फैलाना, खिलाना—मधुरया मधुबोधितमाधवी—शि० ६।२० 9. द्योतित करना, संबद्ध करना, संकेत करना —इच्छा० बुबु(बो)धिषति-ते, बुभुत्सते—। जानने की इच्छा करना आदि, **अनु**—, 1. जानना, समझना 2. सीखना, जानकार होना, सचेत होना, प्रेर० — 1. परामर्श देना, चेताना—रघु० ८।७५ 2. ध्यान दिलाना—आर्ये सम्यगनुबोधितोऽस्मि—श० १, **अव**—, जानना, ज्ञात करना, समझना —मनु० ८।५३, भट्टि० १५।१०१, प्रेर० —1. ज्ञात कराना, सूचित करना, परिचय देना - ब्रह्मचोदनानुपुरुषमवबोधयत्येव केवलम् —शारी० 2 उठाना, जगाना —रघु० १२।२३, **उद्**—, 1. जगाना, उठाना 2. फैलाना खिलाना—प्रेर० जागरूक करना, उत्तेजित करना, प्रबुद्ध करना, जगाना, **नि**—, 1 जानना, समझना, ज्ञात करना—निबोध साधो तव चेत्कुतूहलम्—कु० ५।५२, ३।१४, मनु० १।६८, याज्ञ० १।२ 2 मानना, विचार करना समझना, **प्र**—, जागना, उठना, आंख खोलना —श० ५।११, शि० ९।३० 2 खिलाना, फैलाना, खिलना सा क्षेऽप्रबोध स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् —मेघ० ९०,—प्रेर० 1 सूचित करना, जतलाना—रघु० ३।६८ 2 जगाना, उठाना —रघु० ५।६५, ६।५६ 3 फैलाना, खिलाना —कु० १।२५ **प्रति**-, जागना, उठना —मनु० १।७४, याज्ञ० १।३३० प्रेर० 1 सूचित करना, जतलाना, परिचित करना समाचार देना —रघु० १।३४, शि० १।८, 2 जगाना, उठाना, - **वि**—,जागना, उठना—कु० ५।५७। प्रेर० 1 जगाना, उठाना 2 फिर से सचेत करना—अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्वि-बोधिता—कु० ४।१ **सम्**,—जानना, समझना, ज्ञात करना, जानकार होना भट्टि०१९।३०, प्रेर० — 1. सूचित करना परिचित कराना, सूचना देना—तवा-गमित्र समबोधयन्मम् —रघु० १३।२५ 2 संबोधित करना।

बुध (वि०) [बुध् + क] बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान्, —**धः** 1 बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष - निपीय यस्य क्षिति-रक्षिणः कथा तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि —नै० १।१ 2. देव, नै० १।१ 3. बुध ग्रह —रक्षत्येनं तु बुधयोगः—मुद्रा० १।६, (यहां 'बुध' का अर्थ 'बुद्धिमान्' भी है) रघु० १।४७, १३।७६। सम०—**जनः** बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, —**तातः** चन्द्रमा, - **दिनम्**, —**वारः** - **वासरः** बुधवार,—**रत्नम्** मरकतमणि, पन्ना, —**सुतः** पुरूरवा का विशेषण।

बुधानः [बुध् + आनच्, किच्च] 1. बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि 2. धर्मोपदेष्टा, अध्यात्मपथदर्शक।

बुधित (वि०) [बुध् + क्त] जाना हुआ, समझा हुआ।

बुधिल (वि०) [बुध् + किलच्] विद्वान्, बुद्धिमान्।

बुध्नः [बन्ध् + नक्, बुधादेशः] 1. बर्तन की तली 2. पेड़ की जड़ 3. निम्नतम भाग 4. शिव का विशेषण (अन्तिम अर्थ में 'बुध्न्य' भी)।

बुन्द्, **बुन्ध्** (भ्वा० उभ० बुन्दति-ते, बुन्धति—ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, भांपना 2. विमर्श करना, समझना।

बुभुक्षा [भुज्+सन्+अ+टाप्] 1. खाने की इच्छा, भूख 2. किसी भी पदार्थ के उपभोग की इच्छा।

बुभुक्षित (वि०) [बुभुक्षा+इतच्] भूखा, भुखमरा, क्षुधा-पीडित —बुभुक्षितः किं न करोति पापम् - पंच० ४। १५, या बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुङ्क्ते - उद्भट।

बुभुक्षु (वि०) [भुज्+सन्+उ] 1 भूखा, सांसारिक उपभोगों का इच्छुक (विप० मुमुक्षु)।

बुभूषा [भू+सन्+अ+टाप्] होने की इच्छा।

बुभूषु (वि०) [भू+सन्+उ] बनने की या होने की इच्छा वाला।

बुल् (चुरा० उभ० बोलयति—ते) 1 डुबना, गोता लगाना बोलयति प्लव पयसि 2. डुबोना।

बुलिः (स्त्री०) [बुल्+इन्, कित्] 1 भय, डर।

बुस् (दिवा० पर० बुस्यति) छोडना, उगलना, उडेलना।

बुसं (सम्) [बुस्+क पक्षे पृषो० पत्वम्] 1 भूसा, 2. कूडा, गदगी 3 गाय का सूखा गोबर 4 धन, दौलत।

बुस्त् (चुरा० उभ० बुस्तयति—ते) 1 सम्मान करना आदर करना 2 अनादर करना, तिरस्कारपूर्वक अर्थात् घृणायुक्त व्यवहार करना।

बुस्तम् [बुस्त्+घञ्] भुने हुए मांस का टुकड़ा।

बूक्कम् - बुक्क।

बूषी, बृषी (सी) [बुवन्तोऽस्यां सीदन्ति - ब्रुवत् + सद् +ड+ङीष् पृषो० साधुः] किसी सन्यासी या साधु महात्मा की गद्दी।

बृंह् (भ्वा० तुदा० पर० बृंहति, बृंहति) 1 बढ़ना, उगना —बृंहितमन्युवेग भट्टि० ३।४१ 2 दहाड़ना, (प्रेर० -) पालन पोषण करना।

बृंहणम् [बृंह्+ल्युट्] (हाथी के) चिंघाड़ने का शब्द —शि० १८।३।

बृंहित (भू० क० कृ०) [बृंह्+क्त] 1. उगा हुआ, बढ़ा हुआ—भामि० २।१०१ 2 चिंघाडा हुआ, —तम् हाथी की चिंघाड—शि० १२।१५, कि० ६।१२।

बृह् (भ्वा० तुदा० पर० बर्हति, बृहति) 1. उगना, बढ़ना, फैलना 2. दहाड़ना, उद् —, 1. उठाना, ऊपर को करना मनु० १।१४, भट्टि० १४।१२ नि — , नष्ट करना, हटाना शि० १।२९।

बृहत् (वि०) (स्त्री०—ती) [बृह्+अति] 1 विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल या० १।५ 2 चौडा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ दिलीपसूनो स बृहद् भुजान्तरम् —रघु० ३।५४ 3. विस्तृत, यथेष्ट, प्रचुर 4. मजबूत, शक्तिशाली 5. लम्बा, ऊँचा देवदारु-बृहद्भुज कु० ६।५१ 6 पूर्णविकसित 7 गटा हुआ सघन—स्त्री० वाणी—शि० २।६८,—तृ० 1. वेद 2. सामवेद का मंत्र (साम)—भग० १०।३५ 3. ब्रह्मा : सम०—अङ्ग,—काय (वि०) स्थूलकाय, विशालकाय (ग) बड़े डीलडौल का हाथी, आरण्यम्,—आरण्य-कम् एक प्रसिद्ध उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्याय,—एला बड़ी इलायची, —कुक्षि (वि०) तुंदिल, बड़े पेट वाला,—केतुः अग्नि का विशेषण, —गृहः एक देश का नाम, —गोलम् तरबूज, —चित्तः नीबू का पेड़, —जघन (वि०) प्रशस्तकूल्हों वाला, —जीवन्तिका, —जीवन्ती एक प्रकार का पौधा, —ढक्का बड़ा ढोल, —नटः, —नलः 1. राजा विराट के दरबार में नृत्य और संगीत शिक्षक के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम, —नेत्र (वि०) दूरदर्शी, मनीषी, —पाटलिः धतूरा, —पालः बड़ या गूलर का वृक्ष —भट्टारिका दुर्गा का विशेषण, —भानुः अग्नि,—रथ. 1 इन्द्र का विशेषण 2 एक राजा का नाम, जरासंध का पिता —राथिन् (पु०) एक प्रकार का छोटा वस्त्र —स्फिच् (वि०) प्रशस्त कूल्हों वाला बड़े नितंबों वाला।

बृहतिका [बृहती+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, ओढ़ना, चादर।

बृहस्पतिः [बृहतां वाचां पतिः—पारस्करादि०] 1 देवों के गुरु, (इनकी पत्नी 'तारा' के चन्द्र द्वारा अपहरण के लिए दे० तारा या सोम के नीचे) 2. बृहस्पति ग्रह बृह-स्पतिनियोगाद्धुन्द्व—रघु० १२।७६ 3 एक स्मृतिकार का नाम याज्ञ० १।४। सम० —पुरोहितः इन्द्र का विशेषण, —वारः, —वासरः गुरुवार।

बेडा [वेड+टाप्] नाव, किश्ती।

बेह् (भ्वा० आ० बेहते) उद्योग करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना।

बैजिक (वि०) (स्त्री०—की) [बीज+ठक्] 1 वीर्यसम्बंधी 2 मौलिक 3 गर्भविषयक 4 मैथुनसम्बंधी, —कः अंकुवा, नया अंकुर, —कम् कारण, स्रोत, मूल।

बैडाल (वि०) (स्त्री०—ली) [बिडाल+अण्] 1 बिलाव से सम्बंध रखने वाला 2 बिलाव की विशिष्टता को रखने वाला। सम० —व्रतम् 'बिलाव जैसा व्रत' अर्थात् बिलाव की भांति अपना द्वेष तथा दुर्भावनाओं को पवित्रता और सज्जनता की आड़ में छिपाये रखना। —व्रतिः जो स्त्री सहवास न मिलने के कारण ही साधु जीवन बिताये (इस लिए नहीं कि उसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है)—व्रतिकः—व्रतिन् (पु०) धर्म का आडंबर करने वाला, पाखंडी, ढोंगी।

बैदल [विदल+अण् बवयोरभेदः] दे० 'वैदल'।

बैम्बिकः [बिम्ब+ठञ्] जो महिलाविषयक कार्यों में मनो-योगपूर्वक लगनेवाला हो, प्रेमनिपुण, प्रेमी दाक्षिण्य नाम बिम्बोष्ठि बैम्बिकानां कुलव्रतम्—मालवि० ४।१४।

बैल्व (वि०) (स्त्री०—ल्वी) [बिल्व+अण्]. 1 बेल के वृक्ष

या लकड़ी से संबद्ध या निर्मित 2 बेल के पेड़ों से ढका हुआ, -ल्वम् बेल के पेड़ का फल।

बोधः [बुध्+घञ्] 1 प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, समझ, आलोचना, विचार - बाल्यानां सुखबोधाय तर्क० 2 विचार, चिन्तन 3 समझ, प्रतिभा, प्रज्ञा, बुद्धिमत्ता 4 जागना, जागरूक होना, जागृति की स्थिति, चेतनता 5 खिलना, फूलना, फैलना 6 शिक्षण, परामर्श, चेतावनी 7 जगाना, उठाना 8 उपाधि, पद। सम० **अतीत** (वि०) अज्ञेय, ज्ञान के परे, **-कर** (वि०) सिखाने वाला, सूचना देने वाला (रः) 1 जागरण या भाट (जो उपयुक्त मंत्र गाकर प्रातःकाल अपने स्वामी को जगाता है) 2 शिक्षक, अध्यापक, **-पूर्वं** [illegible] **-वासरः** (पुं०) अबोधनी, कार्तिक शुक्ला एकादशी जब विष्णु [illegible] चार मास की निद्रा का त्याग कर [illegible] ११, और [illegible]

बोधक (वि०) (स्त्री० **-धिका**) [बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1 सूचना देने वाला, निर्देश देने वाला 2 शिक्षा देने वाला, अध्यापक [illegible] 3 अभिसूचक 4 जगाने वाला, [illegible] का, गुप्तचर, जासूस

बोधन [बुध्+णिच्+ल्युट्] 1 बुद्धि, समझ 2 अध्यापन, शिक्षण, ज्ञान देना [illegible] बोधनम् रघु० ५।४९ 3 ज्ञापन करना, निर्देश करना 4 जगाना, उठाना - समयेन तेन चिरसुप्तमनः प्रबोधनं समबोधि [illegible] शि० ९।२४ 5 धूप देना **-नी** 1 कार्तिकशुक्ला एकादशी जब भगवान् विष्णु अपनी चार मास की नींद त्याग कर उठते हैं, उठनी एकादशी 2 बड़ी पीपल।

बोधानः [बुध्+आनच्] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 बृहस्पति का विशेषण।

बोधिः [बुध्+इन्] 1 पूर्ण मति या ज्ञान का प्रकाश 2 बुद्ध की ज्ञान से प्रकाशित प्रतिभा 3 पावन वट वृक्ष 4 मुर्गा 5 बुद्ध का विशेषण। सम० **-तरुः, -द्रुमः, -वृक्षः** पावन वटवृक्ष, **-सत्त्वः** (जैनियों का) अर्हत्, **-सत्त्वः** बौद्ध संन्यासी या महात्मा जो पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि के मार्ग पर अग्रसर है तथा जिसके केवल कुछ ही जन्म अवशिष्ट हैं जिनको पार करके वह पूर्णबुद्ध की स्थिति को प्राप्त कर लेगा और जन्ममरण के दुःख से छुटकारा पा जायगा (यह स्थिति पावन तथा सत्कृत्यों की दीर्घशृंखला को पार करके प्राप्त की जाती है) - एवंविधैरतिविलसितैरतिबोधिसत्त्वै मा० १०।२१।

बोधित (भू० क० कृ०) [बुध्+णिच्+क्त] 1. बताया गया, सूचित किया गया, अवगत कराया गया 2 फिर ध्यान दिलाया गया 3 परामर्श दिया गया, शिक्षण प्रदान किया गया।

बौद्ध (वि०) (स्त्री०—द्धी) [बुद्धि+अण्] 1 बुद्धि या समझ से संबंध रखने वाला 2 बुद्ध विषयक, **-द्धः** बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म का अनुयायी।

बौध [बुध+अण्] बुध का पुत्र, पुरूरवा का विशेषण।

बौधायन [बोधस्यापत्यं पुमान्—बोध+फक्] एक प्राचीन मुनि का पितृपरक नाम जिसने श्रौतादि सूत्रों की रचना की।

ब्रध्न [बन्ध्+नक् ब्रधादेश] 1 सूर्य 2 वृक्ष की जड़ 3 दिन 4 मदार का पौधा 5 सीसा (पुं० ?) 6 घोड़ा 7 शिव या ब्रह्मा का विशेषण।

ब्रह्मम् [बृह्+मनिन् नकारस्याकारे ऋतो रत्वम्—[illegible] अपि इत्युक्ते अकारान्तोऽयं शब्दः] [illegible]।

ब्रह्मण्य (वि०) [ब्रह्मन्+यत्] 1 ब्रह्म से संबद्ध 2 ब्रह्मा या प्रजापति से संबद्ध 3 पुनीत ज्ञान के अनुरूप या संबद्ध, पवित्र, पावन 4 ब्राह्मण के योग्य 5 ब्राह्मण के प्रति सौहार्दपूर्ण या आतिथ्यकारी, **-ण्यः** 1 वेदों में निष्णात व्यक्ति महावी० ३।२६ 2 शहतूत का वृक्ष 3 ताड़ का पेड़ 4 मूंज नामक घास 5 शनिग्रह 6 विष्णु का विशेषण 7 कार्तिकेय का विशेषण, **-ण्या** दुर्गा का विशेषण। सम० **-देवः** विष्णु का विशेषण।

ब्रह्मण्वत् (पुं०) [ब्रह्मन्+मतुप्, वत्वम्] अग्नि का विशेषण।

ब्रह्मता, -त्वम् [ब्रह्मन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1 परमात्मा में लीन होना 2 दिव्य प्रकृति।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बृह्+मनिन् नकारस्याकारे ऋतो रत्वम्] 1 परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है (वेदान्तियों के मतानुसार ब्रह्म ही इस दृश्यमान संसार का निमित्त और उपादान कारण है, यही सर्वव्यापक आत्मा और विश्व की जीव शक्ति है, यही वह मूलतत्त्व है जिससे संसार की सब वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा जिसमें फिर वह लीन हो जाती हैं— अस्ति तावन्नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं ब्रह्म—शारी०) समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवन[illegible] ब्रह्म मनुते—भर्तृ० ३।८४, कु० ३।१५ 2 स्तुतिपरक सूक्त 3 पुनीत पाठ 4 वेद—कु० ६।१६, उत्तर० १।१५ 5 ईश्वरपरक पावन अक्षर, ॐ —एकाक्षरं परं ब्रह्म मनु० २।८३ 6 पुरोहितवर्ग या ब्राह्मण समुदाय—मनु० ९।३२० 7 ब्राह्मण की शक्ति या ऊर्जा—रघु० ८।४ 8 धार्मिक साधना या तपस्या 9 ब्रह्मचर्य, सतीत्व—शाश्वते ब्रह्मणि वर्तते—श० १ 10 मोक्ष या निर्वाण 11. ब्रह्मज्ञान,

अध्यात्मविद्या 12. वेदों का ब्राह्मणभाग 13. धनदौलत, संपत्ति,—(पुं०) परमात्मा, ब्रह्मा, पावन त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रथम जिनको संसार की रचना का कार्य सौंपा गया है (संसार की रचना का वर्णन बहुत सी बातों में भिन्न २ है, मनुस्मृति के अनुसार यह विश्व अंधकारावृत था, स्वयंभू भगवान् ने अंधकार को हटा कर स्वयं को प्रकट किया। सबसे पहले उसने जल पैदा किया तथा उसमें बीजवपन किया। यह बीज स्वर्णिम अंडे के रूप में हो गया, जिससे ब्रह्मा (संसार का स्रष्टा) के रूप में वह स्वयं उत्पन्न हुआ। फिर ब्रह्मा ने इस अंडे के दो खण्ड किये—जिससे उसने द्युलोक और अंतरिक्ष को जन्म दिया, उसके पश्चात् उसने दस प्रजापतियों (मानस पुत्रों) को जन्म दिया जिन्होंने सृष्टि के कार्य को पूरा किया। दूसरे वर्णन (रामायण) के अनुसार आकाश से ब्रह्मा का आगमन हुआ। उससे फिर मरीचि का जन्म हुआ, मरीचि से कश्यप और कश्यप से फिर विवस्वान् ने जन्म लिया। विवस्वान् से मनु की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार मनु ही मानव संसार का रचयिता है। तीसरे वृत्तान्त के अनुसार स्वयंभू ने सुनहरे अंडे को दो खण्डों (नर और नारी) में विभक्त किया उनसे विराज और मनु का जन्म हुआ—दे० कु० २।७, मनु० १।३२ तथा आगे। पौराणिक कथा के आधार पर ब्रह्मा का जन्म उस कमल से हुआ जो विष्णु की नाभि में उगा था। स्वयं अपनी पुत्री सरस्वती से उसने अवैध संबंध द्वारा सृष्टि रचना की। ब्रह्मा के प्रारम्भ में पाँच सिर थे, परन्तु एक सिर शिव ने अपनी अनामिका से काट दिया या तृतीय नेत्र की आग से भस्म कर दिया। ब्रह्मा की सवारी हंस है। उसके अनंत विशेषण हैं जिनमें से अधिकांश उसकी कमल में उत्पत्ति का संकेत करते हैं) 2. ब्राह्मण —श० ४।४ 3. भक्त 4. सोमयाग में नियुक्त चार ऋत्विजों (पुरोहितों) में से एक 5. धर्मज्ञान का ज्ञाता 6. सूर्य 7. प्रतिभा 8. दस प्रजापतियों (मरीचि, अत्रि, अंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ) का विशेषण 9. बृहस्पति का विशेषण 10. शिव का विशेषण। सम०—अक्षरम् पावन अक्षर 'ॐ',—अङ्कुरः घोड़ा,—अञ्जलिः वेद पाठ करते समय हाथ जोड़ कर सादर अभिवादन 2. आचार्य या गुरु का सम्मान (वेद पाठ के आरम्भ तथा समाप्ति पर),—अण्डम् 'ब्रह्मा' का अंडा, बीजभूत अंडा जिससे यह समस्त संसार या विश्व का उद्भव हुआ—ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः—दश० १. —पुराणम् 1. अठारह पुराणों में से एक पुराण, —अद्रिजाता गोदावरी नदी का एक विशेषण,

—अधिगमः,—अधिगमनम् वेदों का अध्ययन, —अभ्यासः वेदों का अध्ययन,—अम्भस् (नपुं०) गोमूत्र, —अयनः,—नः नारायण का विशेषण,—अर्पणम् 1. ब्रह्मज्ञान का अर्पण 2. परमात्मा में अनुरक्ति 3. एक प्रकार का जादू या मन्त्र,—अस्त्रम् ब्रह्मा से अधिष्ठित एक अस्त्र, —आत्मभूः घोड़ा,—आनन्दः ब्रह्म में लीन होने का आत्यंतिक सुख या आनंद—ब्रह्मानन्द साक्षात्क्रिया—महावीर० ७।३१, —आरम्भः वेदों का पाठ आरंभ करना—मनु० २।७१, —आवर्तः (हस्तिनापुर के पश्चिमोत्तर में) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का मार्ग—सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्, तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते मनु० २।१७, १९, मेघ० ४८,—आसनम् गहन समाधि के लिए विशिष्ट आसन,—आहुतिः (स्त्री०) प्रार्थनापरक मन्त्रों का पाठ, स्वस्तिवाचन, दे० ब्रह्मयज्ञ, —उज्झता वेदों को भूल जाना या उनकी उपेक्षा करना—मनु० ११।५७, (अधीतवेदस्यानभ्यासेन विस्मरणम्—कुल्लू०),—उद्यम् वेद की व्याख्या करना, ब्रह्मज्ञानविषयक समस्याओं पर विचार विमर्श,—उपदेशः ब्रह्मज्ञान या वेद का शिक्षण, °नेतृ (पुं०) ढाक का वृक्ष,—ऋषिः (ब्रह्मर्षि या ब्रह्म ऋषि) ब्राह्मण ऋषि,—देशः मण्डल, जिला (कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः, एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः—मनु० २।१९) —कन्यका सरस्वती का विशेषण,—करः पुरोहित वर्ग को दिया जाने वाला शुल्क,—कर्मन् (नपुं०) 1. ब्राह्मण के धार्मिक कर्तव्य 2. यज्ञ के चार मुख्य पुरोहितों में ब्राह्मण का पद,—कल्पः ब्रह्मा की आयु, —काण्डम् ब्रह्मज्ञान से संबद्ध वेद का भाग,—काष्ठः शहतूत का पेड़,—कूर्चम् एक प्रकार की साधना —अहोरात्रोषितो भूत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः, पञ्चगव्यं पिबेत् प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम्,—कृत् (वि०) स्तुति करने वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण,—गुप्तः एक ज्योतिर्विद् का नाम जो सन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुआ था,—गोलः विश्व,—गौरवम् ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र का सम्मान—भट्टि० ९।७६, (मा भून्मोघो ब्राह्मः पाश इति),—ग्रन्थिः शरीर का विशिष्ट जोड़, ब्रह्मगाँठ,—ग्रहः,—पिशाचः,—पुरुषः,—रक्षस् (नपुं०), —राक्षसः एक प्रकार का भूत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस जो जीवन भर घृणित वृत्ति में संलग्न रहता है दूसरों की पत्नियों का तथा ब्राह्मणों की संपत्ति का अपहरण करता है (परस्य योषितं हृत्वा ब्रह्मस्वमपहृत्य च, अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षसः—याज्ञ० ३।२१२, तु० मनु० १२।६० भी),—घातकः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—घातिनी ऋतु के दूसरे दिन की रजस्वला स्त्री,—घोषः 1. वेद का सस्वर पाठ 2. पावन शब्द,

वेदमयी—उत्तर० ६।९ (पाठांतर), —घ्नः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—चर्यम् 1 धार्मिक शिष्यवृत्ति, वेदाध्ययन के समय ब्राह्मण बालक का ब्रह्मचर्यजीवन, जीवन का प्रथम आश्रम अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाचरेत् - मनु० ३।२, २।२४९, महावीर० १।२४ 2 धार्मिक अध्ययन आत्मसंयम 3 कौमार्य, सतीत्व विरति, इन्द्रियनिग्रह, (र्यः) वेदाध्ययनशील, —दे० ब्रह्मचारिन् ((र्या) सतीत्व, कौमार्य, °व्रतम् सतीत्व रक्षण की प्रतिज्ञा °स्खलनम् सतीत्व या ब्रह्मचर्य से गिर जाना, इन्द्रियनिग्रह का अभाव —चारिकम् वेदों के विद्यार्थी का जीवन, —चारिन् (पुं०) 1 वेद का विद्यार्थी जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण जो यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् दीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गुरु के साथ रहता है तथा वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता रहता है जब तक कि वह गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट नहीं हो जाता है मनु० २।४१ १७० ६।८७ 2 जो आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है —चारिणी 1 दुर्गा का विशेषण 2 वह स्त्री जो सतीत्व व्रत का पालन करती है —जः कार्तिकेय का विशेषण —जार: ब्राह्मण की पत्नी का प्रेमी —जीविन् (पुं०) जो ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही अपनी आजीविका कमाता है —ज्ञ (वि०) जो ब्रह्म को जानता है (ज्ञः) 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण —ज्ञानम् सत्यज्ञान, दिव्यज्ञान विश्व की ब्रह्म के साथ एकरूपता का ज्ञान, —ज्येष्ठः ब्राह्मण का बड़ा भाई —ज्योतिस् (नपुं०) ब्रह्म या परमात्मा की ज्ञानज्योति —तत्त्वम् परमात्मा का यथार्थ ज्ञान, —तेजस् (नपुं०) 1 ब्रह्मा की कीर्ति 2 ब्रह्म की कान्ति, वह कीर्ति या कान्ति जो ब्राह्मण को चारों ओर से घेरे हुए समझी जाती है, —दः वेदज्ञान के प्रदाता गुरु —दण्डः 1 ब्राह्मण का शाप 2. ब्राह्मण का दिया गया उपहार 3. शिव का विशेषण, —दानम् 1 वेद पढ़ाना 2 वेद का ज्ञान जो उत्तराधिकार में या वंशानुक्रम से प्राप्त होता है —दायादः 1 ब्राह्मण, जो वेदों को आनुवंशिक उपहार के रूप में प्राप्त करता है 2 ब्राह्मण का पुत्र, —दारुः शहतूत का पेड़, —दिनम् ब्रह्मा का दिन, —दैत्यः वह ब्राह्मण जो राक्षस बन जाय—तु०, ब्रह्मग्रह, —द्विष्,—द्वेषिन् (वि०) 1. ब्राह्मणों से घृणा करने वाला 2. वेदविहित कृत्यों या भक्ति का विरोधी, अपावन निरीश्वरवादी,—द्वेषः ब्राह्मणों की घृणा,—नदी सरस्वती नदी का विशेषण,—नाभ. विष्णु का विशेषण,—निर्वाणम् परमब्रह्म में लीन होना, —निष्ठ (वि०) परमात्मचिन्तन में लीन, (ष्ठः) शहतूत का पेड़,—पदम् 1. ब्राह्मण का पद या दर्जा 2. परमात्मा का स्थान, —पर्णिनः कुश नामक घास,—परिषद् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा,—पादपः ढाक का पेड़,—पारायणम् वेदों का पूर्ण अध्ययन, सारे वेद—उत्तर० ४।९, महावीर० १।१४,—पाशः ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित अस्त्र विशेष भट्टि० ९।७५,—बिन्दु (पुं०) विष्णु का विशेषण, —पुत्रः 1 ब्राह्मण का बेटा 2 हिमालय की पूर्वी सीमा से निकलने वाला तथा गंगा के साथ मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाला 'ब्रह्मपुत्र' नाम का दरिया, (त्री) सरस्वती नदी का विशेषण —पुरम्,—पुरी 1 (स्वर्ग में) ब्रह्मा का नगर 2 वाराणसी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम, —प्रलयः ब्रह्मा के सौ वर्ष बीतने पर सृष्टि का विनाश जिसमें स्वयं परमात्मा भी विलीन माना जाता है —प्राप्तिः (स्त्री०) परमात्मा में लीन होना —बन्धुः ब्राह्मण के लिए तिरस्कार-सूचक शब्द, अयोग्य ब्राह्मण —मा० ४, विक्रम० २ 2 जो केवल जाति से ब्राह्मण हो, नाम मात्र का ब्राह्मण —बीजम् ईश्वरवाचक अक्षर ॐ, —ब्रुवाण: जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है,—भवनम् ब्राह्मण का आवास —भागः शहतूत का वृक्ष,—भावः परमात्मा में लीन होना, —भूयम् ब्रह्मा की सृष्टि —मग० ८।१६,—भूत (वि०) जो ब्रह्मा के साथ एक रूप हो गया है, परमात्मा में लीन,—भूतिः (स्त्री०) सन्ध्या, —भूयम् 1 ब्रह्म के साथ एकरूपता 2 ब्रह्म में लीनता, मोक्ष, —गतिं—स ब्रह्मभूयं गतिमाजगाम रघु० १८।२८ ब्रह्मभूयाय कल्पते भग० १४।२६, मनु० १।९८ 2. ब्राह्मणत्व, ब्राह्मण का पद या स्थिति,— भूयस् (नपुं०) ब्रह्म में लय, —मङ्गलदेवता लक्ष्मी का विशेषण —मीमांसा, वेदान्त-दर्शन जिसमें ब्रह्म या परमात्माविषयक चर्चा है,—मूर्ति (वि०) ब्रह्म का रूप रखने वाला,— मूर्धभृत् शिव का विशेषण - मेखलः मूंज घास का पौधा,—यज्ञः (गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय) दैनिक पञ्चयज्ञों में से एक, वेद का अध्यापन तथा सस्वर पाठ—अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः मनु० ३।७० (अध्यापनशब्देन अध्ययनमपि गृह्यते- कुल्लू०), - योगः ब्रह्मज्ञान का अनुशीलन या अभिग्रहण,—योनि (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न, —रत्नम् ब्राह्मण को दिया गया मूल्यवान् उपहार,— रन्ध्रम् मूर्धा में एक प्रकार का विवर जहाँ से जीव इस शरीर को छोड़ कर निकल जाता है, —राक्षसः दे० ब्रह्मग्रह, —रातः शुकदेव का विशेषण,- राशिः 1. ब्रह्मज्ञान का मंडल या समस्त राशि संपूर्ण वेद 2. परशुराम का विशेषण,—रीतिः (स्त्री०) एक प्रकार का पीतल - रे(ले) खा,-लिखितम्,-लेखः विधाता के द्वारा मस्तक पर लिखी गई पंक्तियाँ जिनसे मनुष्य का भाग्य प्रकट होता है मनुष्य का प्रारब्ध, - लोकः ब्रह्मा

का कोश,—ब्रू (पुं०) वेदों का व्याख्याता,—भवनम् ब्रह्म का ज्ञान,—वधः,-वध्या,—हत्या ब्राह्मण की हत्या,—वर्चस् (नपुं०),—वर्चसम् 1. दिव्य आभा या कीर्ति, ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मशक्ति या तेज (तस्य हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्—रघु० १।६३, मनु० २।३७, ४।९४ 2 ब्राह्मण की अन्तर्हित पवित्रता या शक्ति, ब्रह्मतेज श० ६, —वर्चसिन्, —वर्चस्विन् (वि०) ब्रह्म तेज से पवित्रीकृत, पूज्यात्मा (पुं०) प्रमुख या श्रद्धेय ब्राह्मण, —वर्तः दे० ब्रह्मावर्त,—वर्धनम् तांबा,—वादिन् (पुं०) 1 जो वेदों का अध्यापन करता है, वेदव्याख्याता उत्तर० १, मा० १ 2. वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—वासः ब्राह्मण का आवासस्थल,—विद्-विद (वि०) परमात्मा को जानने वाला, ब्रह्मज्ञ (पुं०) ऋषि, ब्रह्मवेत्ता वेदान्ती,—विद्या ब्रह्मज्ञान,—बिन्दुः वेद का पाठ करते समय मुंह से निकलने वाला थूक का छींटा —विवर्धनः इन्द्र का विशेषण, —वृक्षः 1 ढाक का पेड़, 2. गूलर का वृक्ष, —वृत्तिः (स्त्री०) ब्राह्मण की आजीविका,—वृन्दम् ब्राह्मणों की समूह,—वेदः 1 वेदों का ज्ञान 2. ब्रह्म का ज्ञान 3 अथर्ववेद का नाम, —वेदिन् (वि०) वेदवेत्ता, तु० ब्रह्मविद्, —वैवर्तम् अठारह पुराणों में से एक,—व्रतम् सतीत्व या शुचिता की प्रतिज्ञा,—शिरस्—शीर्षन् (नपुं०) एक विशिष्ट अस्त्र का नाम, —संसद् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा —सती सरस्वती नदी का विशेषण,—सत्रम् 1 वेद का पढ़ना-पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञ 2 परमात्मा में लय होना —सदनम् (नपुं०) ब्रह्मा का निवासस्थान, सभा ब्रह्मा का दरबार, ब्रह्मा की सभा या भवन,—संभव (वि०) ब्रह्मा से उत्पन्न या प्राप्त (वः) नारद का नामान्तर,—सर्पः एक प्रकार का सांप, —सायुज्यम् परमात्मा के साथ पूर्ण एकरूपता—तु० ब्रह्मभूय, —सार्ष्टिता ब्रह्म के साथ एक रूपता —मनु० ४।२३२, —सावर्णिः दसवें मनु का नामान्तर,—सुतः 1. नारद का नामान्तर, मरीचि आदि 2 एक प्रकार का केतु, —सूः 1. अनिरुद्ध का नामान्तर 2 कामदेव का नामान्तर,—सूत्रम् 1. जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसे ब्राह्मण बायें कंधे के ऊपर से धारण करते हैं 2. बादरायण द्वारा रचित वेदान्तदर्शन के सूत्र, —सूत्रिन् (वि०) जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो, यज्ञोपवीतधारी,—सृज् (पुं०) शिव का विशेषण, —स्तम्बः संसार, विश्व—महावीर० ३।४८,—स्तेयम् अवैध उपायों से उपार्जित वेदज्ञान,—स्वम् ब्राह्मण की संपत्ति या जायदाद,—याज्ञ० ३।२१२, —हरिन् (वि०) ब्राह्मण का धन चुराने वाला,—हन् (वि०) ब्रह्मघातक, ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—हुतम् दैनिक पांच यज्ञों में से एक जिसमें अतिथिसत्कार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं - मनु० ३।७४,—हृदयः,—यम् एक नक्षत्र का नाम जिसे अंग्रेजी में कैपेल्ला कहते हैं।

ब्रह्ममय (वि०) [ब्रह्मन् + मयट्] 1 वेद से युक्त या व्युत्पन्न, वेद या वेदज्ञान से संबद्ध —ज्वलन्निव ब्रह्ममयेन तेजसा कु० ५।३० 2 ब्राह्मण के योग्य, —यम् ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र।

ब्रह्मवत् (वि०) [ब्रह्म + मतुप्] वेदज्ञान रखने वाला।

ब्रह्मसात् (अव्य०) [ब्रह्मन् + साति] 1, ब्रह्म या परमात्मा की स्थिति 2 ब्राह्मणों की देखरेख में।

ब्रह्माणी [ब्रह्मन् + अण् + ङीप्] 1 ब्रह्मा की पत्नी 2 दुर्गा का विशेषण 3 एक प्रकार का गन्धद्रव्य (रेणुका) 4 एक प्रकार का पीतल।

ब्रह्मिन् (वि०) [ब्रह्मन् + इनि, टिलोप] ब्रह्मा से संबद्ध, (पुं०) विष्णु का विशेषण।

ब्रह्मिष्ठ (वि०) [ब्रह्मन् + इष्ठन्, टिलोप] वेदों का पूर्ण पंडित, अतिशय विद्वान् या पुण्यात्मा —ब्रह्मिष्ठमाधाय निजेऽधिकारे ब्रह्मिष्ठमेव स्वतनुप्रसूतम्—रघु० १८।२८, —ष्ठा दुर्गा का विशेषण।

ब्रह्मी [ब्रह्मन् + अण् + ङीप्] हरी बूटी या पौधा।

ब्रह्मेशयः [ब्रह्मणि तपसि शेते शी अच् पृषो० साधुः] 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 विष्णु की उपाधि।

ब्राह्म (वि०) (स्त्री०—ह्मी) [ब्रह्मन् + अण्, टिलोप] ब्रह्मा, विधाता या परमात्मा से संबद्ध —रघु० १३।६०, मनु० २।४०, भग० २।७२ 2 ब्राह्मणों से संबद्ध 3 वेदाध्ययन या ब्रह्मज्ञान से संबद्ध 4 वेदविहित, वैदिक 5 विशुद्ध, पवित्र, दिव्य 6 ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित जैसा कि मुहूर्त (दे० ब्राह्ममुहूर्त) या अस्त्र, —ह्मः हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिसमें आभूषणों से अलंकृत कन्या, वर से बिना कुछ लिये, उसे दान कर दी जाती है (यही आठों भेदों में सर्वश्रेष्ठ प्रकार है)। —ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलंकृता —याज्ञ० १।५८, मनु० ३।२१,२७ 2. नारद का नामान्तर, —ह्मम् हथेली का अंगुष्ठमूल के नीचे का भाग 2 वेदाध्ययन। सम० —अहोरात्रः ब्रह्मा का एक दिन और एक रात, —ऊढा ब्राह्म विवाह की रीति से विवाहित की जाने वाली कन्या,—मुहूर्तः दिन का विशिष्ट भाग, दिन का सवेरा सवेरे का समय (रात्रेश्च पश्चिमे यामे मुहूर्तो ब्राह्म उच्यते) ब्राह्मे मुहूर्ते किल तस्य देवी कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् —रघु० ५।३६।

ब्राह्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [ब्रह्म वेद शुद्धं चैतन्यं वा वेत्त्यधीते वा—अण्] 1. ब्राह्मण का 2. ब्राह्मण के योग्य 3. ब्राह्मण द्वारा दिया गया,—णः 1. हिंदू

धर्म के माने हुए चार वर्णों में सर्वप्रथम वर्ण का, (पुरुष - ब्रह्मा - के मुख से उत्पन्न - ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक्० १०।९०।१२, मालवि० १।११, ९६) ब्राह्मण जन्मना जायते शूद्र संस्कारैर्द्विज उच्यते, विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभि: श्रोत्रिय उच्यते, या —जात्या कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च, एभिर्युक्तो हि यस्तिष्ठेन्नित्यं स द्विज उच्यते) 2 पुरोहित, ब्रह्मज्ञानी या धर्मशास्त्री 3 अग्नि का विशेषण 4 वेद का वह भाग जो विविध यज्ञों के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है साथ ही उनके मूल तथा विवरणात्मक व्याख्या को तत्संबंधी निदर्शनों के साथ जो उपाख्यानों के रूप में विद्यमान हैं प्रस्तुत करता है, वेद के मन्त्रभाग से यह बिल्कुल पृथक् है 5 वैदिक रचनाओं का समूह जिसमें ब्राह्मण भाग सम्मिलित है (वेद के मन्त्रों की भाँति अपौरुषेय या श्रौत माना जाता है) प्रत्येक वेद का अपना पृथक् पृथक् ब्राह्मण है ये हैं ऋग्वेद के ऐतरेय या आश्वलायन, और कौषीतकी या शाङ्खायन ब्राह्मण है यजुर्वेद का शतपथ सामवेद का षड्विंश पञ्चविंश तथा छ: और हैं, अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है) । सम० —अतिक्रम: ब्राह्मणों के प्रति सदोष या तिरस्कार सूचक व्यवहार ब्राह्मणों का अनादर —ब्राह्मणातिक्रमत्यागो भवतामेव भूतये महावीर० २।८० —अपाश्रय: ब्राह्मणों की शरण में जाना —अभ्युपपत्ति: (स्त्री०) ब्राह्मण की रक्षा या पालन पोषण ब्राह्मण के प्रति प्रदर्शित कृपा मनु० ९।८७ —घ्न: ब्राह्मण की हत्या करने वाला —जातम्, —जाति: (स्त्री०) ब्राह्मण की जाति —जीविका ब्राह्मण के लिए विहित वृत्ति के साधन —द्रव्यम् स्वयं ब्राह्मण की संपत्ति, —निन्दक: ब्राह्मणों की निन्दा करने वाला —ब्रुव: जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है नाम मात्र का ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति के विहित कर्तव्यों का पालन नहीं करता है, अथवा ब्राह्मणब्रुवा नियमान्ते दश०, मनु० ७।८५, ८।२० —भूयिष्ठ (वि०) जिसमें अधिकतर ब्राह्मण ही रहते हैं —वध: ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या —संतर्पणम् ब्राह्मणों को खिलाना या तृप्त करना ।

ब्राह्मणक: [ब्राह्मण + कन्] 1 अयोग्य या नीच ब्राह्मण नाम मात्र का ब्राह्मण 2. एक देश का नाम जहाँ थोड़ा ब्राह्मणों का वास हो ।

ब्राह्मणत्रा (अव्य०) [ब्राह्मण + त्राच्] 1 ब्राह्मणों में 2. ब्राह्मण की पदवी को — जैसा कि 'ब्राह्मणात् भवति धनम्' में ।

ब्राह्मणाच्छंसिन् (पुं०) [ब्राह्मणे विहितानि शस्त्राणि शंसति द्वितीयार्थे पञ्चम्युपसंख्यानम्—अलुक् स०, शंस् + णिनि] एक पुरोहित का नामान्तर, ब्रह्मा नामक ऋत्विज् का सहायक ।

ब्राह्मणी [ब्राह्मण + ङीष्] 1 ब्राह्मण जाति की स्त्री 2 ब्राह्मण की पत्नी 3 प्रतिभा (नीलकंठ के मतानुसार 'बुद्धि') 4 एक प्रकार की छिपकली 5 एक प्रकार की भिरड़ 6 एक प्रकार का घास । सम० —गामिन् (पुं०) ब्राह्मण स्त्री का प्रेमी ।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्राह्मण + ष्यञ् वा यत्] ब्राह्मण के योग्य, —ण्य: शनिग्रह का विशेषण —ण्यम् 1 ब्राह्मण की पदवी या दर्जा, पौरोहित्य या याजकीय वृत्ति, सत्य शपे ब्राह्मण्येन —मृच्छ० ५ पञ्च० १।६६, मनु० ३।१७ ७।४२ 2 ब्राह्मणों का समुदाय ।

ब्राह्मी [ब्राह्म + ङीप्] 1 ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति 2. वाणी की देवी सरस्वती 3 वाणी 4 कहानी, कथा 5 धार्मिक प्रथा या रिवाज 6 रोहिणी नक्षत्र 7 दुर्गा का नामान्तर 8 ब्राह्मविवाह की विधि से परिणीता स्त्री 9 ब्राह्मण की पत्नी 10 एक प्रकार की बूटी 11 एक प्रकार का पीतल 12 नदी का नामान्तर । सम० —कन्द: वाराही कंद, —पुत्र: ब्राह्मी का पुत्र—दे० ऊ०, मनु० ३।२७,३७ ।

ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री०—ह्म्यी) [ब्रह्मन् + ष्यञ्] 1 ब्रह्मा अर्थात् विधाता से संबंध रखने वाला 2 परमात्मा से संबद्ध 3 ब्राह्मणों से संबद्ध, —ह्म्यम् आश्चर्य, अचम्भा विस्मय । सम० —मुहूर्त— ब्राह्ममुहूर्त, —हुतम् अतिथिसत्कार दे० ब्रह्मयज्ञ ।

ब्रुव (वि०) [ब्रू + क] कहने वाला, बहाना करने वाला, अपने आपको उस नाम से पुकारने वाला जो उसका वास्तविक नाम न हो (समास के अन्त में) यथा ब्राह्मणब्रुव, क्षत्रियब्रुव में ।

ब्रू (अदा० उभ० ब्रवीति ब्रूते या आह) (आर्धधातुक लकारों में इस धातु में असाधारण परिवर्तन होता है इसके रूप वच् धातु से बनाये जाते हैं) 1 कहना बोलना बात करना (द्विकर्मक धा०) तां ब्रूयाः —मेघ० १०४, राम यथास्थितं सर्वं भ्राता ब्रूते स्म विह्वल भट्टि० ६।८ या माणवक धर्मं ब्रूते - सिद्धा० किं त्वा प्रतिब्रूमहे—भामि० १।४६ 2 कहना बोलना संकेत करना (किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर) अहं तु शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि श० २ 3 घोषणा करना, कथन करना, प्रकाशित करना सिद्ध करना ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् नै० २।४८, रत्न० २।१३ 4 नाम लेना, पुकारना, नाम रखना —क्वचित् दृष्टा ये कवचस्तान्मणिमध्य ते ब्रुवते भुत० १५ 5 उत्तर देना —ब्रूहि मे प्रश्नान्, —अनु— कहना, बोलना, घोषणा करना, —निस्—व्याख्या करना, व्युत्पत्ति बतलाना,

प्र—, कहना बोलना, बात करना—भट्टि० ८।८५, प्रति—, उत्तर में बोलना, उत्तर या जवाब देना —प्रत्यब्रवीच्चैनम्—रघु० २।४२ वि—, 1. कहना, बोलना 2 गलत कहना, मिथ्या बतलाना।

ब्रोडकम् (नपुं०) कदा, जाल, पाश।

भ

भः [भा+ड] 1. शुक्र ग्रह का नामान्तर 2 भ्रम, भ्रान्ति, आभास, —भम् 1 तारा 2. नक्षत्र 3 ग्रह 4 राशि 5 सत्ताइस की संख्या 6. मधुमक्खी। सम० —इनः, —ईशः सूर्य, —गणः, —वर्गः 1 तारापुंज, नक्षत्रपुंज 2. राशिचक्र 3 ग्रहों का राशिचक्र में भ्रमण —गोलः तारामंडल, —चक्रम् - मण्डलम् राशिचक्र, —पतिः चन्द्रमा, —सूचकः ज्योतिषी।

भक्लिका [?] झींगुर।

भक्त (भू० क० कृ०) [भज्+क्त] 1 विभक्त, निपतीकृत, निर्दिष्ट 2. विभाजित 3. सेवित, पूजित 4 व्यस्त, दत्तचित्त 5 अनुरक्त, संलग्न, श्रद्धालु, निष्ठावान् —भग० ९।३४ 6 प्रसाधित, (भोजन आदि) पक्व दे० भज्, —क्तः पूजक, आराधक, उपासक, पुजारी या दास, स्वामिभक्त नौकर—भक्तोऽसि मे सखा चेति —भग० ४।३, ९।३१, ७।२३, —क्तम् 1 हिस्सा, भाग 2 भोजन—भर्तृ० ३।७४ 3 उबाला हुआ चावल, भात उत्तर० ४।१ 4 पानी में डाल कर पकाया हुआ कोई भी अन्न। सम०—अभिलाषः भोजन की इच्छा, भूख, —उपसाधकः रसोइया, —कंसः भोजन की थाली, —करः नाना प्रकार के गंध द्रव्यों से तैयार की गई धूप, —कारः रसोइया, —छन्दम् भूख, —दासः भोजन मात्र पर दूसरों की सेवा करने वाला नौकर, जिसे सेवा के बदले केवल भोजन ही मिलता है—मनु० ८।४१५, —द्वेषः भोजन से अरुचि, मंदाग्नि, —मण्डः भात का मांड, —रोचन (वि०) भूख को उत्तेजित करने वाला, —वत्सल (वि०) अपने पूजक और भक्तों के प्रति कृपालु, —शाला 1 श्रोतृ-कक्ष (प्रार्थियों की बात सुनने का कमरा) 2 भोजन-गृह।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1 वियोजन, पृथक्करण, विभाजन 2. प्रभाग, अंश, हिस्सा 3 उपासना, अनुरक्ति, सेवा, स्वामिभक्ति—कु० ७।३७, रघु० २।६३, मुद्रा० १।१५ 4. सम्मान, सेवा, पूजा, श्रद्धा 5 विन्यास, व्यवस्था—रघु० ५।७४ 6. सजावट, अलंकार, शृंगार —आबद्धमुक्ताफलभक्तिचित्रे—कु० ७।१०, ९४, रघु० १३।५९, ७५, १६।३० 7. विशेषण। सम०—नम्र (वि०) विनम्र अभिवादन करने वाला, —पूर्वम्, —पूर्वकम् (अव्य०) भक्तिपूर्वक, सम्मानपूर्वक, —भाज् (वि०) 1 धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु 2 दृढ़ अनुराग रखने वाला, निष्ठावान्, श्रद्धालु, —मार्गः भक्ति की रीति अर्थात् परमात्मा की उपासना (शाश्वत शान्ति और मोक्ष प्राप्ति की रीति 'भक्ति या उपासना' ही समझी जाती है), —योगः सानुराग निष्ठा, श्रद्धापूर्वक उपासना, —रागः अनुराग का विश्वास।

भक्तिमत् (वि०) [भक्ति+मतुप्] 1 उपासक, श्रद्धालु 2 निष्ठावान्, स्वामिभक्त अनुरागी।

भक्तिल (वि०) [भक्ति+ला+क] स्वामिभक्त, विश्वासपात्र (जैसे कि घोड़ा)।

भक्ष् (चुरा० उभ०-भक्षयति—ते भक्षित) 1 खाना, निगलना—यथामिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि —पंच० १ 2 उपयोग में लाना, उपभोग करना 3. बर्बाद करना नष्ट करना 4 काटना।

भक्षः [भक्ष्+घञ्] 1 खाना 2 भोजन।

भक्षक (वि०) (स्त्री०—क्षिका) [भक्ष्+ण्वुल्] 1 खाने वाला, निर्वाह करने वाला 2 पेटू, भोजनभट्ट।

भक्षण (वि०) (स्त्री०—णी) [भक्ष्+ल्युट्] खाने वाला निगलने वाला, —णम् खाना, खिलाना जीविका चलाना।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लायक, —क्ष्यम् कोई भी भोज्य पदार्थ खाद्य पदार्थ, आहार, (आलं० भी)—भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम् हि० १।५५, मनु० १।११३। सम० —कारः ('भक्ष्यकार' भी) नानबाई रसोइया।

भग [भज्+घ] 1 सूर्य के बारह रूपों में एक, सूर्य 2 चन्द्रमा 3. शिव का रूप 4. अच्छी किस्मत, भाग्य, सुखद नियति, प्रसन्नता आइर्ने भग आसीनस्य—ऐ० ब्रा०, भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः महा० १।२८२ 5 सम्पन्नता, समृद्धि 6. मर्यादा, श्रेष्ठता 7 प्रसिद्धि, कीर्ति 8. लावण्य, सौन्दर्य 9 उत्कर्ष, श्रेष्ठता 10 प्रेम, स्नेह 11. प्रेमक्रम रंगरेलियाँ, केलि, आमोद 12. स्त्री की योनि—याज्ञ० ३।८८, मनु० ९।२३७ 13. सद्गुण, नैतिकता, धर्म की भावना 14 प्रयत्न, चेष्टा 15. इच्छा का अभाव, सांसारिक

विषयों में विरति 16. मोक्ष 17. सामर्थ्य 18. सर्वशक्तिमत्ता (नपुं० भी अन्तिम १५ अर्थों में),—गम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र। सम० —अङ्कुरः (आयु० में) चिकु, योनिद्वार पर की गुटिका, -आधानम् दाम्पत्य-सुख प्रदान करना, —घ्नः शिव का विशेषण, —देवः पूर्ण स्वेच्छाचारी, लम्पट - दैवत विवाह की अधिष्ठात्री देवता, —दैवतम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र, —नेत्रघ्नः विष्णु का विशेषण, —भक्षकः विट, दलाल, भड़ुआ, —वेदनम् वैवाहिक आनन्द की उद्घोषणा।

भगन्दर [भग + दृ + णिच् + खच्, मुम्] एक रोग जो गुदावर्त में व्रण के रूप में होता है।

भगवत् (वि०) [भग + मतुप्] 1 यशस्वी प्रसिद्ध 2 सम्मानित श्रद्धेय, दिव्य, पवित्र (देव उपदेव तथा अन्य प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय व्यक्तियों का विशेषण) —अथ भगवान् कुशली काश्यपः श० ५ भगवन्परव-नयं जनः रघु० ५।८९ इसी प्रकार भगवान् वासुदेव -आदि (पु०) 1 देव देवता 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4. जिन का विशेषण 5 बुद्ध का विशेषण।

भगवदीयः [भगवत् + छ] विष्णु का पूजक।

भगालम् [भज् + कालन कुत्वम्] खोपड़ी।

भगालिन् (पु०) [भगाल + इनि] शिव का विशेषण।

भगिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [भग + इनि] 1 फलता फूलता, भव्य भाग्यशाली 2 वैभवशाली शानदार।

भगिनिका [भगिनी + कन् + टाप्, ह्रस्वम्] बहन।

भगिनी [भगिन् + ङीप्] 1 बहन 2 सौभाग्यवती स्त्री 3 स्त्री०। सम० —पतिः, —भर्तृ (पु०) बहन का पति, बहनोई।

भगिनीयः [भगिनी + छ] बहन का पुत्र, भानजा।

भगीरथः [?] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा का नाम सगर का प्रपौत्र, जो अतिशय घोर साधना करके स्वर्ग से दिव्य गंगा का उतार कर इस पृथ्वी पर लाया तथा राजा सगर के ६० हजार पुत्रों (पूर्वपुरुषों) की भस्म को पवित्र करने के लिए इस पृथ्वी से पाताल लोक को ले गया। सम० —पथः,—प्रयत्नः भगीरथ का प्रयास जो किसी अतिदुष्कर कार्य या भीम कर्म को आलंकारिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, —सुता गंगा का विशेषण।

भग्न (भू० क० कृ०) [भञ्ज् + क्त] 1 टूटा हुआ, हड्डी टूटी हुई, टूटा फूटा, फटा-पुराना 2 हताश, ध्वस्त, निराश 3 अवरुद्ध, गृहीत, विलंबित 4 बिगाड़ा हुआ तोड़ा-फोड़ा हुआ 5. पराजित, पूर्णरूप से परास्त, छिन्न-भिन्न किया हुआ उत्तर० ५ 6 ढहाया हुआ, विनष्ट (दे० भञ्ज्),—म् पैर की हड्डी का टूटना। सम० —आत्मन् (पु०) चन्द्रमा का विशेषण, —आपद् (वि०) जिसने कठिनाइयों और आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है,—आश (वि०) निराश —भर्तृ० २।८४, हताश— भर्तृ० ३।५२., —उत्साह (वि०) जिसका उत्साह टूट गया हो, जिसकी शक्ति अवसन्न हो गई हो, जिसका उत्साह, भंग हो गया हो, —उद्यम (वि०) जिसके उद्योग निष्फल कर दिये गये हों, निराश, जिसका विकास अवरुद्ध हो गया हो, —क्रमः —प्रक्रमः अभिव्यक्ति या निर्माण में सममिति का अतिक्रमण, दे० 'प्रक्रमभंग', —चेष्ट (वि०) निराश, हताश,— दर्प (वि०) विनीत, जिसका घमंड टूट गया हो, —निद्र (वि०) जिसकी नींद में बाधा डाल दी गई हो,—पार्श्व (वि०) जिसके पार्श्व में पीड़ा होती हो —पृष्ठ (वि०) 1 जिसकी कमर टूट गई हो 2 सामने आता हुआ, —प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी हो - मनस् (वि०) निरुत्साहित, हतोत्साहित —व्रत (वि०) जो अपने व्रतों में निष्ठावान् न हो —संकल्प (वि०) जिसकी योजनाओं को उत्साहहीन कर दिया गया हो।

भग्नी [= भगिनी, पृषो० साधु] बहन।

भङ्करी (री) [भमिति शब्द करोति भम् + कृ + ट + ङीप्] डांस, गोमक्खी।

भङ्क्ति. (स्त्री०) [भञ्ज् + क्तिन्] टूटना, (हड्डी का) टूटना।

भङ्गः [भञ्ज् + घञ्] 1 टूटना, टूट जाना, छिन्न-भिन्न होना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना—वार्यर्गलाभङ्ग इव प्रवृत्तः —रघु० ५।४५, 2 टूट, हड्डी का टूटना —अस्थिभङ्ग 3 उखाड़ना, काटना —आम्रकलिका भङ्ग — श० ६ 4 पार्थक्य, विश्लेषण 5 अंश, टुकड़ा, खंड, वियुक्त अंश—पुष्पोच्चय पल्लवभङ्गभिन्न कु० ३।६१, रघु० १६।१६ 6 पतन अधःपतन, ध्वंस, विनाश, बर्बादी जैसा कि राज्य, सत्त्व आदि में 7 अलग अलग करना, तितर-बितर करना —दावाभङ्ग. मा० १ 8. हार, पछाड़, पराभव, पराजय पंच० ४।४१, शि० १६।७२ 9 असफलता, निराशा हताश —रघु० २।४२, आशा-भंग आदि 10 अस्वीकृति, इंकारी—कु० १।४२, 11 छिद्र दरार 12 विघ्न, बाधा, रुकावट—निद्रा° गति आदि 13 अननुष्ठान, निष्फल, स्थगन 14 भगदड़ 15 मोड़, तह, लहर 16 सिकुड़न, झुकाव, संकोच या सटाना उत्तर० ५।३६ 17 गति, चाल 18 लकवा, फालिज 19 चालबाजी, धोखेबाजी 20 नहर, जलमार्ग, नाली 21 गोलमोल या घुमाफिराकर कहने या करने का ढंग—दे० भंगि 22. पटसन। सम० —नयः बाधाओं को हटाना,—वासा हल्दी,—सार्थ (वि०) बेईमान, चालबाज।

भङ्गा [भञ्ज्+अ+टाप्] 1 पटसन 2 पटसन से तैयार किया एक मादक पेय। सम० —अक्षम् पटसन का पराग।

भङ्गिः,—गी (स्त्री०) [भञ्ज्+इन्, कुत्वम्, भङ्गि+ङीष्] 1 टूटना, हड्डी का टूटना विच्छेद, प्रभाग 2 हिलोर 3 झुकाव सिकुड़न—भ्रूभङ्गिभिः प्रथम-मधुरासगमे घूर्णितोऽस्मि उत्कूट, श० १३ 4 लहर 5 बाढ़ धारा 6 टेढ़ा मार्ग, घुमावदार या चक्करदार मार्ग 7 गोलमोल या घुमघुमाकर कहने या करने का ढंग वाग्जाल भङ्ग्यन्तरेण कथनात् काव्य० १० बहुभङ्गिविशारद—वेणी० 8 बहाना छद्मवेश आभास प्रतिबिम्बभङ्ग्या धारागमम फेनमिव ... विक्रम० ११ 9 ठाठ-बाठ 10 वक्रोक्ति 11 ... 12 पग—रघु० १३।६९ 13 अन्तराल 14 ... सम०—भक्तिः (स्त्री०) तरंगवत् कदमों या तरंगों की शृङ्खला में विभाजन लहरियेदार ... —मेघ० ६०।

भङ्गिन् (वि०) [भङ्ग+इनि] 1 शीघ्र टूटने वाला भङ्गुर अस्थायी तदपि ... भर्तृ० २। ९१ 2 किसी अभियोग में पछाड़ा हुआ।

भङ्गिमत् (वि०) [भङ्गि+मतुप्] लहरियेदार घराला।

भङ्गिमन् (पुं०) [भङ्ग+इमनिच्] 1 (हड्डी का) टूटना तोड़ना 2 झकोर हिलोर 3 घुमावदार 4 छद्मवेश धोखा 5 आक्षेप, वक्रोक्ति 6 कुटिलता।

भङ्गिलम् [भङ्ग+इलच्] ज्ञानेन्द्रियों में कोई दोष।

भङ्गुर (वि०) [भञ्ज्+घुरच्] 1 टूटने के योग्य भिदुर कड़कड़ाला 2 ढुलमुल पतनशील अस्थिर अनित्य नश्वर आमरणान्ताः प्रणयाः कोपास्तत्क्षणभङ्गुराः हि० १।१८८, शि० १६।२४ 3 परिवर्तनशील ... 4 कुटिल, टेढ़ा 5 वक्र घुमावदार-अधिभृकुटि नव भाति भङ्गुरभ्रू गीत० १० 6 चालबाज बेईमान —रः किसी नदी का मोड़।

भज् i (भ्वा० उभ० भजति ते, परन्तु व्यवहार में आ० भजते) 1 (क) हिस्से करना वितरित करना बाँटना भजेरन् पैतृकं रिक्थम् मनु० ९।१०४ न तत्पुत्रैर्भजेत्सार्धम् —२०९, २११ (ख) निर्दिष्ट करना, नियत करना, अनुभाजन करना शायको भजयेऽध्वरम् ऐ० ब्रा० 2 किसी के लिए प्राप्त करना, हिस्सा लेना, भाग लेना शिष्य वा भजते शीलम् मनु० १०।५९ 3 स्वीकार करना, ग्रहण करना श० ५।२५ 4 (क) आश्रय लेना, (अपने आप को) समर्पित करना, सौंप रखना—शिलातल भेजे—का० १०९, मातर्लक्ष्मि भजस्व कंचिदपरम् —भर्तृ० ३।६४, न कश्चिद्दुर्मतिमापन्नमनुवृत्तोऽपि भजते —श० ५।२०, भामि० १।८३, रघु० १७।२८, (ख) अभ्यास करना अनुगमन करना पालन करना—भेजे धर्ममनातुरः रघु० १।२१ 5 उपभोग करना, अधिकृत करना रखना भोगना अनुभव करना, मनोरंजन करना विधुरपि भजतेतरां कलङ्कम् भामि० १।७४ न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् भर्तृ० २।८० ... श० ७।८ ... रघु० ... १।४३ मा० ३।१ ... १।३५ 6 सेवा में प्रस्तुत रहना सेवा करना रघु० २।२३ पञ्च० १।१ ... 7 आराधना करना सत्कार करना (देव मान कर) पूजा करना 8 चाहना चुनना पसंद करना स्वीकार करना ... मालवि० १। 9 शारीरिक सुखोपभोग करना —रघु० ४।५७ 10 अनुरक्त होना ... 11 अधिकार में करना 12 ... पकना (इस धातु के अर्थ—संज्ञाओं के साथ जुड़कर विविध रूप ग्रहण कर लेते हैं उदा० निद्रां भज् सोना, मूर्च्छां भज् ... भाव भज् प्रेम प्रदर्शित करना आदि) वि— 1 विभक्त करना बाँटना विभाग ... पदविभागकुशल ... नै० १।१९ ... रघु० ११।७२ १०।५८ शि० ११३ 2 अलग 2 करना ... पैतृक ... बाँटना ... 4 सम्मान करना पूजा करना ... हिस्सा लेना हिस्से में किसी को ... (भ्वा० उभ० ...) ... 1 ... ।

भजक [भज्+ण्वुल्] 1 बाँटने वाला वितरक 2 पूजक भक्त उपासक।

भजनम् [भज्+ल्युट्] 1 हिस्से बनाना बाँटना 2 स्वत्व 4 सेवा आराधना पूजा।

भजमान (वि०) [भज्+शानच्] 1 बाँटने वाला 2 उपभोक्ता 3 योग्य सही उचित।

भञ्ज् i (रुधा० प० भनक्ति भग्न इच्छा० बिभङ्क्षति) 1 तोड़ना फाड़ डालना छिन्नभिन्न करना चूर चूर करना टुकड़े टुकड़े करना ... भर्तृ० ६।३८ ... ४।३, ... ३।२२ ... —रघु० ११।३६ 2 उखाड़ना, उखाड़ना ... भट्टि० ९।२ 3 (किले में) दरार डालना 4 ... करना प्रयत्न व्यर्थ करना, निराश करना, प्रगति रोकना ... —कु० ५।११ 5 पकड़ना, रोकना, विघ्न डालना, निर्बाधित

करना —जैसा कि 'भग्नमित्र.' में 6. हराना, परास्त करना—अथापि राम परिभूय रामात् अभाजयाऽ भज्यत स द्विजेन्द्र —भट्टि० २२।१३३, अव —, तोड़ डालना, ध्वस्त करना—कु० ३।७४, प्र—, 1. तोड़ डालना, ध्वस्त करना, धज्जियाँ उड़ाना 2 रोकना गिरफ्तार करना, निर्बाधित करना 3 भग्नाश करना, निराश करना।

ii (चुरा० उभ० भञ्जयति ते) उज्ज्वल करना, चमकाना।

भञ्जक (वि०) (स्त्री०-ञ्जिका) [भञ्ज् + ण्वुल्] तोड़ने वाला, बाँटने वाला।

भञ्जन (वि०) (स्त्री०—नी) [भञ्ज् + ल्युट्] 1 तोड़ने वाला, टुकड़े करने वाला 2 गिरफ्तार करने वाला, रोकने वाला 3. भग्नाश करने वाला 4 प्रबल पीड़ा पहुँचाने वाला, —नम् 1 तोड़ डालना ध्वस्त करना विनष्ट करना 2 हटाना दूर करना भगा देना —सदुदितभयभञ्जनाय यूनाम्—गीत० १० 3 पराजित करना, हराना 4 भग्नाश करना 5 रोकना, विघ्न डालना, बाधा पहुँचाना 6 कष्ट देना, पीड़ित करना —नः दाँतों का गिरना।

भञ्जनक [भञ्जन + कन्] मुख का एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते हैं, होठ टेढ़े हो जाते हैं।

भञ्जरक [भञ्ज् + अरच्] मंदिर के पास उगा हुआ वृक्ष।

भट् i (भ्वा० पर० भटति, भटित) 1 पोषण करना, पालना पोसना, स्थिर रखना 2 भाड़े पर लेना 3 मजदूरी लेना ii (चुरा० उभ० भटयति-ते) बोलना, बातें करना।

भटः [भट् + अच्] 1 योद्धा, सैनिक, लड़ने वाला —तद्भटचातुरीतुरी नै० १।१२, धावितस्तत्भर्त्सयंस्तत भटान्य २२।२२ —भट्टि० १४।१०१ 2 भृतिभोगी, भाड़ैत सैनिक, भाड़े का टट्टू 3 जातिबहिष्कृत वर्णसंकर 4 पिशाच।

भटित्र (वि०) [भट् + इत्र] शलाका पर रखकर पकाया गया मांस।

भट्टः [भट् + तन्] 1 प्रभु, स्वामी (राजाओं को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि) 2 विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि भट्टगोपालस्य पौत्रः—मा० १, इसी प्रकार 'कुमारिल भट्टः' आदि 3. कोई भी विद्वान् पुरुष या दार्शनिक 4 एक प्रकार की मिश्र जाति जिसका व्यवसाय भाट या चारणों का व्यवसाय अर्थात् राजाओं का स्तुति गान है—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां भट्टो जातोऽनुवाचक 5 भाट, बन्दीजन। सम०—आचार्यः प्रसिद्ध अध्यापक या विद्वान् पुरुष को दी गई उपाधि 2. मित्र,—प्रयागः =प्रयाग, इलाहाबाद।

भट्टार (वि०) [भट्ट स्वामित्वमिच्छति —ऋ —अण्] 1 श्रद्धास्पद, पूज्य 2. व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होने वाली सम्मानसूचक उपाधि—यथा—भट्टार-हरिचन्द्रस्य गद्यबन्धो नृपायते—हर्ष०।

भट्टारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [भट्टार + कन्] श्रद्धेय, पूज्य —आदि दे० ऊ० 'भट्टार'। सम०—वासरः रविवार।

भट्टिनी [भट्ट + इनि + ङीप्] 1 (अनभिषिक्त) रानी, राजकुमारी, (नाटकों में दासियों द्वारा रानी को संबोधन करने में बहुधा प्रयुक्त) 2 ऊँचे पद की महिला 3 ब्राह्मण की पत्नी।

भडः [भण्ड् + अच्, नि० नलोप] विशेष प्रकार की एक मिश्र जाति।

भडिलः [भण्ड् + इलच्, नि० नलोप] 1 नेता, योद्धा 2 टहलुआ नौकर।

भण् (भ्वा० पर० भणति) 1 कहना, बोलना—पुरुषोत्तम इति भणितव्यं—विक्रम० ३, भट्टि० १४।१६ 2 वर्णन करना—काव्य न काव्येन समाधमार्जीत्—नै० १०।५९ 3 नाम लेना पुकारना।

भणनम्, भणितम्, भणितिः (स्त्री०) [भण् + ल्युट्, क्त, क्तिन्] 1 कहना, बोलना, बातें करना, वचन, प्रवचन, वार्तालाप —न ग्रेहमानन्दम जनयति जयजाप भणितिः —भामि० ४।३९, २।७७, श्रीजयदेव भणित हरिरमितम् —गीत० ७, इह रसभणने—तदेव।

भण्ड् i (भ्वा० आ० भण्डते) 1 भर्त्सना करना, झिड़कना 2 खिल्ली उड़ाना, व्यंग्य करना 3 बोलना 4 उपहास करना मखौल करना ii (चुरा० उ० भण्डयति-ते) 1 मंगलवाची बनाना 2 धक्का देना (शुद्धपाठ—भट्)।

भण्डः [भण्ड् + अच्] 1 भांड मसखरा, विदूषक—त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः —सर्व० 2 एक मिश्रजाति का नाम दे० 'भड'। सम०—तपस्विन् (पुं०) बनावटी संन्यासी, ढोंगी —हासिनी वेश्या, वारांगना।

भण्डकः [भण्ड + कन्] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

भण्डनम् [भण्ड् + ल्युट्] 1 कवच, बख्तर 2 संग्राम, युद्ध 3 उत्पात, दुष्टता।

भण्डिः-डी (स्त्री०) [भण्ड् + इ, भण्डि + ङीष्] लहर, तरंग।

भण्डिल (वि०) [भण्ड् + इलच्] सुखद शुभ, सम्पन्न, सौभाग्यशाली,—लः 1 अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, कल्याण 2 दूत 3 कारीगर, दस्तकार।

भदन्तः [भन्द् + झच्, अन्तादेश, नलोपश्च] 1. बौद्ध धर्मानुयायी के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक शब्द —भदन्त शिविरेव न कुप्यति—मुद्रा० ४ 2. बौद्धभिक्षु।

भद्राकः [भन्द् + आक, नलोपः] सम्पन्नता, सौभाग्य।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नि० नलोप] 1 भला, सुखद, समृद्धिशाली 2. शुभ, भाग्यवान् जैसा कि 'भद्रमुख' में 3 प्रमुख, सर्वोत्तम, मुख्य – पप्रच्छ भद्रं विजिताधिपभद्र – रघु० १४।३१ 4 अनुकूल, मंगलप्रद 5 कृपालु, सदय, श्रेष्ठ, सौहार्दपूर्ण, प्रिय, (संबोधन एक वचन में प्रयुक्त होकर अर्थ होता है 'पूज्य श्रीमान्' 'प्रिय मित्र' 'पूज्य महोदये' पूज्य श्रीमति' 6 सुहावना, उपभोग्य, प्रिय सुन्दर – पंच० १।१८१ 7 स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय 8 प्रियतम, प्यारा 9 चटकदार, बाह्यतः रमणीय, पाखण्डी, द्रम् उल्लास सौभाग्य कल्याण, आनन्द समृद्धि भद्र भद्र वितर भगवन् भूयसे मंगलाय – मा० १।३ ६।७ स्वाथ वितरतु भद्रं भूयसे मंगलाय उत्तर० ३।४८ (इस अर्थ में बहुधा ब० व० में प्रयोग) सर्वे भद्राणि पश्यन्तु भद्रं ते 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे' तुम्हें ऐश्वर्यशाली बनाए' 2. सोना 3 लोहा इस्पात, द्र: 1 बैल 2 एक प्रकार का खंजन पक्षी 3 विशेष प्रकार का हाथी 4 छद्मवेषी, पाखंडी—मनु० ९।२५८ 5 शिव का नामान्तर 6 मेरुपर्वत का विशेषण 7 एक प्रकार का कदम्बवृक्ष (भद्रा कृ हजामत करना, बाल मूँडना भद्राकरणम् मुण्डन)। सम० —अङ्गः बलराम का विशेषण,– आकार, – आकृति (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, – आत्मजः तलवार —आसनम् 1 राजासन, राजगद्दी, सिंहासन 2 समाधि की विशेष अवस्थिति, योग का आसन, ईशः शिव का एक विशेषण एला बड़ी इलायची —कपिलः शिव का एक विशेषण कारक–(वि०) मंगलप्रद काली दुर्गा का नामान्तर कुम्भः–किसी तीर्थ के जल से (विशेषकर गंगाजल से) भरा हुआ सुनहरी घड़ा,—गन्धिका आदू के रत्नाभिदों की बनावट, घट, घटक एक घड़ा जिसमें आय की पर्चियाँ डाली जाय दारु (पुं० नपुं०) चीड़ का वृक्ष,—नामन्(पुं०) खजनपक्षी पीठम् 1 राजगद्दी राज-कुर्सी सिंहासन रघु० १७।१० 2 एक प्रकार का पक्षदार कीड़ा, —बलन बलराम का विशेषण —मुख (वि०) मांगलिक चेहरे वाला विनम्र सम्बोधन के रूप में प्रयुक्त मान्यवर महोदय' 'पूज्य श्रीमन्'— श० ७, मृग एक विशेष प्रकार के हाथी का विशेषण, रेणुः इन्द्र के हाथी का नाम, वर्णम् (पुं०) एक प्रकार की नवमल्लिका, —शाखः कार्तिकेय का विशेषण,- श्रयम्, —श्रियम् चन्दन का काष्ठ,-श्री (स्त्री०) चन्दन का वृक्ष,– सोमा गंगा का विशेषण।

भद्रक (वि०) (स्त्री०— द्रिका) [भद्र+कन्] 1 शुभ, मङ्गलमय 2. मनोहर, सुन्दर, - कः देवदारु का वृक्ष।

भद्रंकर (नपुं०) [भद्र+कृ+खच्, मुम्] सुख सम्पत्ति का दाता, समृद्धकारी।

भद्रवत् (वि०)[भद्र+मतुप्] मंगलमय,- (नपुं०) देवदारु का वृक्ष।

भद्रा [भद्र+टाप्] 1. गाय 2. चान्द्रमास के पक्ष की दोयज, सप्तमी और द्वादशी 3 स्वर्गंगा 4 नाना प्रकार के पौधों के नाम। सम०—श्रयम् चन्दन की लकड़ी।

भद्रिका [भद्रा+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1 तावीज 2. दोयज, सप्तमी व द्वादशी नाम की तिथियाँ।

भद्रिलम् [भद्र+इलच्] 1 समृद्धि, सौभाग्य 2 कंपनशील या थरथराहट वाली गति।

भम्भ [भम्+आ+क] 1 मक्खी 2 धुआँ।

भम्भरालिका, भंभराली [भम् इत्यव्यक्तशब्दस्य भर बाहुल्यम् आलाति -भम्भर+आ+ला+क+ङीष् —भम्भराली+कन् टाप्, ह्रस्व] 1 मोमक्खी 2 डाँस।

भम्भारवः [भम्भा+रु+अच्] गाय का रंभाना।

भयम् [बिभेत्यस्मात्, भी-अपादाने अच्] 1 डर आतंक, विभीषा, आशंका (प्रायः अपा० के साथ) भोगे रोग भयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयम् भर्तृ० ३।३३ यदि स्मरमपास्य नास्ति मृत्योर्भयम् वेणी० ३।४ 2 डर, त्रास अगद्भयम् आदि 3 खतरा जोखिम संकट तावद्भयस्य भेतव्यं यावद्भयमनागतम्, आगतं तु भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद्यथोचितम् हि० १।५७ —कः बीमारी रोग। सम० अन्वित,– आक्रान्त (वि०) ज्वरग्रस्त आतुर, आर्त (वि०) डरा हुआ आतङ्कित भयभीत आवह (वि०) 1 भयोत्पादक 2 जोखिम वाला—स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः भग० ३।३५ उत्तर (वि०) भय से युक्त कर (भयकर भी) 1 डराने वाला भयानक, भयपूर्ण 2 खतरनाक संकटपूर्ण इसी प्रकार भयकारक' 'भयकृत डिण्डिमः युद्ध में प्रयुक्त किया जाने वाला ढोल मारू बाजा द्रुत (वि०) भय के कारण भागने वाला, पराजित भगाया हुआ, प्रतीकारः भय को दूर करना, डर हटाना, प्रद (वि०) भयदायक भयपूर्ण, भयानक, प्रस्तावः भय का अवसर,–ब्राह्मणः डरपोक ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो अपनी जान बचाने के लिए (यह समझ कर कि ब्राह्मण अवध्य है) अपने ब्राह्मण होने की दुहाई देता है, विप्लुत (वि०) आतंक-पीडित, व्यूहः डर की अवस्था होने पर सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था।

भयानक (वि०) [बिभेत्यस्मात्–भी+आनक] भयंकर, भीषण, भयजनक, डरावना—किमतः परं भयानकं स्यात् -उत्तर० २, शि० १७।२०, भग० ११।२७, - कः 1 व्याघ्र 2 राहु का नामान्तर 3. भयानक रस, काव्य के आठ या नौ रसों में एक—दे० 'रस' के अन्तर्गत, कम् त्रास, डर।

भर (वि०) [भृ+अच्] धारण करने वाला, देने वाला,

भरणपोषण करने वाला आदि,—रः 1. बोझा, भार, वजन—खुरमर्ये भर इरवा पच० १, "अपने तीन खुरों पर ही अपने आपको सहारा देने वाला", फल-भरपरिणामश्यामजम्बू—आदि—उत्तर० २।२०, भर-श्रमा—मुद्रा० २।१८ 2 बड़ी मात्रा, बड़ा परिमाण, समूह, समुच्चय—वसते भर कुसुमपत्रफलावलीनाम्—भामि० १।९४,५४, शि० ९।८७ 3 प्रकाम, राशि 4 आधिक्य—निर्व्यूढसौहृदभरेति गुणोज्ज्वलेति मा० ६।१७,शोभाभरैः सभृता—भामि० १।१०३, कोपभरेण गीत० ३।३ नाप की एक विशेष माप।

भरटः [भृ+अटन्] 1 कुम्हार 2 सेवक।

भरण (वि०) (स्त्री०—णी) [भृ+ल्युट्] धारण करने वाला, निर्वाह करने वाला सहारा देने वाला, पालन पोषण करने वाला,—णम् 1 पालन-पोषण, निर्वाह करना सहारा देना रघु० १।२४, शा० ७।३३ 2 वहन करने या ढोने की क्रिया 3 लाना प्राप्त करना 4 पुष्टिकारक भोजन भाड़ा मजदूरी—णः भरणी नामक नक्षत्र।

भरणी [भरण+ङीप्] तीन तारों का पुंज या दूसरा नक्षत्र है सम०—भूः राहु का विशेषण।

भरण्डः [भृ+अण्डन्] 1 स्वामी, प्रभु 2 राजा शासक 3 बैल, साँड 4 कीड़ा।

भरण्यम् [भरण+यत्] 1 लालन-पालन करने वाला सहारा देने वाला पालन-पोषण करने वाला 2 मज-दूरी, भाड़ा 3 भरणी नक्षत्र—ण्या मजदूरी भाड़ा। सम०—भुज् (पु०) भृति-सेवक, भाड़े का नौकर।

भरण्युः [भरण्य (नामधा०)+उ] 1 स्वामी 2 प्रजापालक 3 मित्र 4 अग्नि 5 चन्द्रमा 6 सूर्य।

भरतः [भर तनोति—तन्+ड] 1 शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था। इसीके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष है। यह कौरव और पांडवों का दूरवर्ती पूर्वपुरुष था 2 दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैकेयी का बेटा राम का एक भाई यह बड़ा धर्मात्मा और पुण्यशील व्यक्ति था, राम के प्रति इसकी इतनी अगाध भक्ति थी कि जब कैकेयी की गर्हित मांग के अनुसार राम वन में जाने को तैयार हुए तो भरत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि उसकी अपनी माता ने ही राम को निर्वासित किया फलतः उसने अपनी प्रभुसत्ता को अस्वीकार कर राम के नाम (राम की खड़ाऊओं को लाकर उनको राज्यप्रतिनिधि के रूप में सिंहासन पर रखकर) से तब तक राज्यप्रशासन किया जबतक कि चौदहवर्ष का निर्वासन समाप्त करके राम वापिस अयोध्या नहीं आये 3. एक प्राचीन मुनि का नाम जो नाट्यकला तथा संगीतविद्या के प्रवर्तक माने जाते हैं 4. अभिनेता रंगमंच पर अभिनय करने वाला पात्र—भरतैरिव प्रवृत्ति-दामते भरता—मा० ११५ 5 भाड़े का सैनिक, केवल धन के लिए काम करने वाला नौकर 6. जंगली, पहाड़ी 7. अग्नि का विशेषण। सम०—अग्रजः 'भरत का ज्येष्ठ भ्राता', राम का विशेषण—रघु० १४।७३, —खण्डम् भारत के एक भाग का नामान्तर,—ज्ञ (वि०) भरतशास्त्र या नाट्यशास्त्र का ज्ञाता, —पुत्रकः अभिनेता—वर्षः भरत का देश अर्थात् भारत, —वाक्यम् नाटक के अन्त में दिया गया श्लोक, एक प्रकार की नान्दी (नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक भरत मुनि के सम्मानार्थ कहा गया) तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् (प्रत्येक नाटक में उपलब्ध)।

भरथः [भृ+अथ] 1 प्रभुसत्ता प्राप्त राजा 2 अग्नि 3 संसार के किसी एक प्रदेश की अधिष्ठात्री देवी, लोकपाल।

भरद्वाजः [बिभ्रत् सद्बुद्धिं भृ+अत्=भरत् द्वाभ्यां जायते इति—जन्+ड इत्यस्य भरद्वाजः ... कर्म० स०] 1 सात ऋषियों में से एक का नाम 2 चातक पक्षी।

भरित (वि०) [भर+इतच्] 1 परवरिश किया गया, पाला पोसा गया 2 भरा हुआ, भरपूर—अलब्धजाल कर्ता कुसुमभरसौरभ्यभरितम्—भामि० १।५४, ३३।

भरुः [भृ+उन्] 1 पति 2 प्रभु 3 शिव का नामान्तर 4 विष्णु का नाम 5 सोना 6 समुद्र।

भरुज: जा, जी (स्त्री०) [भ इति शब्देन रुजति भ+रुज्+क] गीदड़।

भरुटकम् [भृ+उट+कन्] तला हुआ मांस।

भर्गः [भृज्+घञ्] 1 शिव का नाम 2 ब्रह्मा का नाम।

भार्य [भृज्+ण्यत्] शिव का विशेषण।

भर्जन (वि०) [भृज्+ल्युट्] 1 भूनने वाला तलने वाला पकाने वाला 2 नष्ट करने वाला,—नम् 1 भूनने या तलने की क्रिया 2 कड़ाही।

भर्तृ (पु०) [भृ+तृच्] 1 पति यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् भर्तृ० २।८ स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम् मा० ६।१८ 2 प्रभु स्वामी, महत्तर भर्तुः शापेन मेघ० १, नाग भूत आदि 5 नेता, सेना-पति मुख्य रघु० ७।६१ 4 भरणपोषण कर्ता, भारवहनकर्ता प्ररक्षक। सम०—घ्नी अपने पति का वध करने वाली स्त्री, —दारक युवराज, राजकुमार, राज्याधिकारी, कुमार (नाटक में बहुधा प्रयुक्त सम्बोधन),—दारिका युवराज्ञी (नाटकों में प्रयुक्त सम्बोधन शब्द),—व्रतम् पातिव्रत, पतिभक्ति (ता) साध्वी पतिव्रता पत्नी—तु० पतिव्रता, —शोकः पति की मृत्यु पर शोक,—हरिः एक प्रसिद्ध राजा जो तीन

शतक (शृंगार, नीति, वैराग्य), वाक्यपदीय तथा भट्टिकाव्य का रचयिता है।

भर्तृमती [भर्तृ+मतुप्+ङीप्] विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित हो।

भर्तृसात् (अव्य०) [भर्तृ+साति] पति के अधिकार में °कृता विवाहित हुई।

भर्त्स् (चुरा० आ० भर्त्सयते, कभी २ पर० भी) 1 धमकाना घुड़कना 2 झिड़कना, बुरा भला कहना अपशब्द कहना 3 व्यंग्य करना निस्—, 1 झिड़कना निन्दा करना, गाली देना 2 आगे बढ़ जाना बढ़ कर लगना, लज्जित करना कु० ३।५३, ।

भर्त्सकः [भर्त्स्+ण्वुल्] धमकी देने वाला घुड़कने वाला।

भर्त्सनम्, भर्त्सना, भर्त्सितम् [भर्त्स्+ल्युट् स्त्रियां टाप् क्त वा] 1 धमकाना, घुड़कना 2 धमकी झिड़की 3 बुरा भला कहना, गाली देना 4 अभिशाप।

भर्मन् [भृ+मनिन्, नि० नलोप] 1 मजदूरी भाड़ा 2 सोना 3 नाभि।

भर्मण्या [भर्मन्+यत्+टाप्] मजदूरी भाड़ा।

भर्मन् (नपुं०) [भृ+मनिन्] 1 सहारा संधारण, पालन पोषण 2 मजदूरी, भाड़ा 3 सोना 4 आने का सिक्का 5 नाभि।

भल् I (चुरा० आ०—भालयते भालित) देखना, अवलोकन करना, —नि , (पर० भी) 1 देखना अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना निगाह डालना निभाल्य भूयो निजगौरिमाणं मा नाम मानं ,महतीं वहस्व —भामि० ३।१७६ या —यस्मान् भर्मिनि निभालयसि प्रभातनीलारविन्दमदभञ्जनाईं कटाक्षे ३।८ II (भ्वा० आ०) दे० 'भल्ल्'

भल्ल् (भ्वा० आ० भल्लते, भल्लित) 1 वर्णन करना बयान करना, कहना 2 घायल करना चोट पहुँचाना मार डालना 3 देना।

भल्लः,—ल्ली—ल्लम् [भल्ल्+अच् स्त्रियां ङीप्] एक प्रकार का अस्त्र या बाण—क्वचिदाकर्णविकृष्टभल्लवर्षी —रघु० ९।६६, ४।६३, ७।५८, —ल्लः 1 रीछ 2. शिव का विशेषण 3 भिलावे का पौधा (भल्ली भी)।

भल्लकः [भल्ल+कन्] रीछ।

भल्लातः, भल्लातकः [भल्ल्+अत्+अच्, भल्लात+कन्] भिलावे का पौधा।

भल्लुकः, भल्लूकः [भल्ल्+ऊक, वले पृषो० ह्रस्व] 1 रीछ, भालू—दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनाम् —उत्तर० २।२१ 2 कुत्ता।

भव (वि०) [भवत्यस्मात्—भू+अपादाने अप्] (समास के अन्त में) उदय होता हुआ या उत्पन्न, जन्म लेता हुआ,—वः 1 होना, होने की स्थिति, सत्ता 2. जन्म, उत्पत्ति भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्—रघु० ३।१४, श० ७।२७ 3 स्रोत, मूल 4 सांसारिक अस्तित्व सांसारिक जीवन जीवन— जैसा कि भवार्णव भवसागर आदि में कु० २।५१ 5 संसार 6 कुशल-क्षेम स्वास्थ्य समृद्धि 7 श्रेष्ठता, उत्तमता 8 शिव का नाम दक्षस्य कन्या भवपूर्वपत्नी—कु० १।२१ ३।७२ 9 देव, देवता 10 अभिग्रहण, प्राप्ति। सम० —अतिग (वि०) सांसारिक जीवन पर विजय पाने वाला वीतराग —आत्मजः ब्रह्मा का विशेषण —अन्तरम् दूसरा जीवन (भूत या भावी) पञ्च० १। १०१ —अब्धि:, —अर्णवः, —समुद्रः —सागरः,—सिन्धुः सांसारिक जीवन रूपी समुद्र —आत्मजा, —सी गंगा नदी —अरण्यम् सांसारिक जीवन रूपी जंगल 'सुनसान मसार, —आत्मजः गणेश या कार्तिकेय का विशेषण —उच्छेदः सांसारिक जीवन का विनाश रघु० १४।७४ —क्षितिः (स्त्री०) जन्मस्थान —दवः सांसारिक जंगल की आग —छिद् (वि०) सांसारिक जीवन के बंधनों को काटने वाला जन्म की पुनरावृत्ति को रोकने वाला भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांसव का० १ —छेदः पुनर्जन्म का रोकना शि० १।३९ —दारु (नपुं०) देवदारु का वृक्ष —भूतिः एक प्रसिद्ध कवि का नाम दे० परि० २ भवभूतेः सम्बन्धादभूधरभूरेव भारती भाति एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा। आर्या० सप्त० ३६ —रुद् (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर बजने वाला ढोल —वीतिः (स्त्री०) सांसारिक जीवन से छुटकारा कि० ६।४१।

भवत् (वि०) (स्त्री०—ती) [भू+शतृ] 1 होने वाला, घटित होने वाला घटने वाला 2 वर्तमान समसीन च भव च भावि च—रघु० ८।७८ (सार्व० वि०) (स्त्री०—ती) आदरसूचक या सम्मानसूचक सर्वनाम जिसका अनुवाद है 'आदरणीय' 'श्रीमन्' 'पूज्य श्रीमान्' (मध्यम पुरुष सूचक सर्वनाम के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त परन्तु क्रिया अन्य पुरुष की)—अथवा कथं भवान् मन्यते—मालवि० १, भवन्त एव जानन्ति रघूणां च कुलस्थितिम्—उत्तर० ५।२३, रघु० २।४०, ३।४८ ५।१६ प्रायः इसके साथ 'अत्र' या 'तत्र' भी जोड़ दिया जाता है (शब्दों को देखो) कभी कभी 'स' के साथ लगा दिया जाता है सभवान् विषयेषु यसमवाशिषुक्षी मा० १।९।

भवदीय (वि०) [भवत्+छ] माननीय महोदय का, आपका, तुम्हारा।

भवनम् [भू+ल्युट्] 1 होना, अस्तित्व 2 उत्पत्ति, जन्म 3 आवास, निवास, घर, भवन—अथवा भवन-

भवन्मयात् प्रविष्टोऽस्मि—मृच्छ० ३, मेघ० ३२ 4. स्थान, आवास, आधार जैसा कि 'अविनयभवनम्' में पंच० १।१९१ 5. इमारत 6. प्रकृति । सम० —उदरम् घर का मध्यवर्ती भाग,—पतिः,—स्वामिन् (पुं०) घर का स्वामी, कुल का पिता ।

भवन्तः,—तिः [भू०+झच् (झिच्) अन्तादेश.] इस समय, वर्तमान काल में ।

भवन्ती [भू+शतृ+ङीप्] गुणवती स्त्री ।

भवानी [भव+ङीष्, आनुक्] शिव की पत्नी या पार्वती का नाम—आलम्बिताग्रकरमत्र भवो भवान्या—कि० ५।२९, कु० ७।८४, मेघ० ३६, ४४ । सम० —गुरुः हिमालय पर्वत, —विशेषण, —पतिः शिव का विशेषण —अधिवसति सदा यदेनं जनैरविदितविभवो भवानी-पतिः—कि० ५।२१ ।

भवादृक्ष (वि०) (स्त्री० —क्षी) **भवादृश्** (वि०) **भवादृश** (वि०) (—शी) (वि०) आपकी भाँति, तुम्हारी भाँति ।

भविक (वि०) (स्त्री०—की) 1 अच्छा, उपयुक्त, उपयोगी 2. सुखद, फलता-फूलता हुआ,—कम् सम्पन्नता, कल्याण ।

भवितव्य (वि०) [भू+तव्यत्] होने वाला, घटित होने वाला, होनहार (बहुधा भाववाच्य में प्रयोग होता है अर्थात् करणकारक को कर्ता के रूप में तथा क्रिया नपुं०, ए० व० में रखकर—त्वया मम सहायेन भवितव्यम्—श० २, गुरुणा कारणेन भवितव्यम्—श० ३), —व्यम् अवश्यभावी; भवितव्यं भवत्येव यद्विधेर्मनसि स्थितम्—सुभा० ।

भवितव्यता [भवितव्य+तल्+टाप्] अनिवार्यता, होनी, प्रारब्ध, भाग्य—भवितव्यता बलवती—श० ६, सर्वकषा भगवती भवितव्यतैव—मा० १।२३ ।

भवितृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [भू+तृच्] होने वाला, भावी—रघु० ६।५२, कु० १।५० ।

भविनः [भवाय इनः सूर्यः, पृषो० साधुः] कविः (भविन्—पुं० भी इसी अर्थ में) ।

भविलः [भू+इलच्] 1. प्रेमी, उपपति 2. लम्पट, कामी ।

भविष्णु (वि०) [भू+इष्णुच्]=भूष्णु, होने वाला ।

भविष्य (वि०) [भू+लृट्—स्य+शतृ, पृषो० त् लोपः] 1. आने वाला 2. भावी, आसन्न, निकटवर्ती, —ष्यम् भावी काल, उत्तर काल । सम०—कालः भविष्यत् काल,—ज्ञानम् आगे होने वाली बातों की जानकारी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम ।

भविष्यत् (वि०) (स्त्री०—ती,—न्ती) [भू+लृट्—स्य+शतृ] होने वाला, आगामी समय में होने वाला । सम०—कालः उत्तर काल,—वक्तृ,-वादिन् (वि०) आगे होने वाली घटनाओं को बताने वाला, भविष्य-वाणी करने वाला ।

भव्य (वि०) [भू+यत्] 1. विद्यमान, होने वाला, प्रस्तुत रहने वाला 2. आगे होने वाला, आने वाले समय में घटित होने वाला 3. होनहार 4. उपयुक्त, उचित, लायक, योग्य—कि० ११।१३ 5. अच्छा, बढ़िया, उत्तम 6. शुभ, भाग्यवान्, आनन्दप्रद—कु० १।२४, कि० ११।२३ १०।५१ 7 मनोहर, प्रिय, सुन्दर 8. सौम्य, शान्त, मृदु 9 सत्य,—व्या पार्वती, —व्यम् 1 सत्ता 2 भावी काल 3 परिणाम, फल 4. अच्छा फल, समृद्धि—रघु० १७।५३ 5 हड्डी ।

भष् (भ्वा० पर० भषति) 1. भौंकना, गुर्राना, भूकना 2. गाली देना, झिड़कना डाटना -फटकारना, धमकाना ।

भषः, भषकः [भष्+अच्, क्वुन् वा] कुत्ता ।

भषणः [भष्+ल्युट्] कुत्ता, —णम् कुत्ते का भौंकना, गुर्राना ।

भसद् (पुं०) [भस्+अदि] 1 सूर्य 2. मांस 3. एक प्रकार की बत्तख 4 समय 5 डोंगी 6 पिछला भाग (स्त्री० और नपुं० भी) 7. योनि ।

भसनः [भस्+ल्युट्] मधुमक्खी ।

भसन्तः [भस्+झच् अन्तादेश] काल, समय ।

भसित (वि०) [भस्+क्त] जल कर भस्म बना हुआ, —तम् भस्म—भामि० १।८४ ।

भस्त्रका, भस्त्रा, भस्त्रिः (स्त्री०) [भस्+ष्ट्रन्+कन्+टाप्, भस्त्र+टाप्+भस्त्र+इञ्] 1. धौंकनी 2. जल भरने के लिए चमड़े का पात्र, मशक 3. चमड़े का थैला, झोली ।

भस्मकम् [भस्मन्+कन्] 1 सोना या चांदी 2. एक रोग जिस में जो कुछ खाया जाय तुरंत पचा जैसा ज्ञात हो (परन्तु वस्तुतः पचता नहीं) और तीव्र भूख लगे रहना 3. आँखों का एक रोग ।

भस्मन् (नपुं०) [भस्+मनिन्] 1. राख—(कल्पते) —ध्रुवं चिताभस्मरजो विशुद्धये—कु० ५।७९ 2. विभूति या पवित्र राख (जो शरीर में मली जाती है), (भस्मनि हु राख में आहुति देना अर्थात् व्यर्थ कार्य करना,—भस्माकृ, भस्मीकृ, जला कर राख करना, भस्मीभू जल कर राख हो जाना—भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः—सर्व०) । सम०—अग्निः भोजन के जल्दी पच जाने से तीव्र भूख का लगे रहना, —अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में रह जाय—कु० ४।७२,—आह्वयः कपूर,—उद्धूलनम् —गुण्ठनम् शरीर पर राख मलना—भस्मोद्धूलन भद्रमस्तु भवते—काव्य० १०,—कारः धोबी,—कूटः

राख का ढेर,—अम्बाः,—अम्बिका,—अम्बिनी एक प्रकार का गंधद्रव्य, —तूलम्, 1 कुहरा, हिम 2 धूल की बौछार 3. गाँवों का समूह,—प्रिय शिव का विशेषण,—रोग एक प्रकार की बीमारी तु० भस्माग्नि, —लेपनम् शरीर पर राख मलना —विधि राख से किया जाने वाला अनुष्ठान —वेधक कपूर —स्नानम् राख मल कर निर्मल करना।

भस्मता [भस्मन्+तल्+टाप्] राख का होना।

भस्मसात् (अव्य०) [भस्मन्+साति] राख की स्थिति में —कृ जलाकर राख कर देना।

भा (अदा० पर०—भाति भात प्रेर० भापयति—ते, इच्छा० बिभासति) चमकना उज्ज्वल होना चमकदार या चमकीला होना —पक्षैर्विना सरो भाति सभा खलजनैर्विना, कटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं विषयैर्विना भामि० १।११६ समरीन्य भाति जगती जगती—कि० २।४७ रघु० ३।१८ 2 दिखाई देना प्रतीत होना बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित् महाभाष्य 3 होना विद्यमान होना। इतराना अभि— चमकना दिवि पर्यंत सूर्य इवाभिभाति—महा० आ— 1 चमकना जगमगाना शानदार प्रतीत होना— नरेन्द्रकन्यास्तमवाप्य सत्पतिं तमोनुदं दक्षसुता इवाबभुः—रघु० ३।३३ 2 दिखाई देना, प्रकट होना रघु० ५।१५ १० १३।१४ निस्—,1 चमक उठना जगमगाना अभ्रबीजमत्यन्त निर्बभौ —रघु० ११।६६ 2 प्रतीत करना उद्घाटित करना, विचारों में आगे बढ़ना येषांधर्मो हि निर्बभौ —मनु० ५।६४ ७।१० प्र— 1 प्रकट होना 2 चमकना, प्रकाशित होने लगना प्रभात काल होना —नक्तं प्रभातारजनी श० ४ प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी —रघु० ७।३ प्रति— 1 चमकना चमकदार या चमकीला प्रकट होना प्रतिभात्यद्य वनान्ते कनकाभाम् घट० १५ 2 इतराना बनना 3 दिखाई देना प्रकट होना—स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे श० २।९, रघु० ७।६३, कु० ५।३८ ६।५६ 4 सूझना मन में आना नोत्तरं प्रतिभाति मे वि— 1 चमकना —भर्तृ० २।७१ 2 दिखाई देना प्रकट होना व्यति (आ०) बहुत चमकना, जगमगाना अपि लोकयुगं दृशावपि श्रुतदृष्टा रमणीगुणा अपि श्रुतिगामितया दमस्वसुर्व्यतिभाते नितरां धरापते नै० २।७२ (यहां किया इसी प्रकार 'युगम्', 'दृशौ' और 'गुणा' के साथ भी बन सकती है तु० पा० १।३।१४)।

भा [भा+क+टाप्] 1 प्रकाश आभा, कान्ति, सौन्दर्य —तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः उद्भट 2 छाया, प्रतिबिंब। सम० —ईशः —शः सूर्य —गण तारापुंज, तारकावली,—निकरः प्रकाशपुंज किरणों का समूह,—नेमि सूर्य,—मंडलम् प्रभामंडल तेजोमंडल।

भाकर दे० भास्कर 'भास्' के अन्तर्गत।

भाक्त (वि०) [भक्त+अण्] 1. जो नियमित रूप से दूसरे से भोजन पाता हो, पराश्रित, सेवा के लिए प्रतिभृत अर्थात् अनुजीवी 2 भोजन के योग्य 3 घटिया, गौण (विप० मुख्य) 4 गौण अर्थ में प्रयुक्त।

भाक्तिक [भक्त+ठक्] अनुजीवी, पराश्रयी।

भाक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [भक्षा+अण्] पेटू, भोजनभट्ट।

भाग [भज्+घञ्] 1 खण्ड अंश हिस्सा प्रभाग, टुकड़ा जैसा कि भागहर, भागशः आदि में 2 नियतन, वितरण, विभाजन 3 भाग्य, किस्मत निर्माणभाग परिणत उत्तर० ४ 4 किसी पूर्ण का एक खण्ड भिन्न 5 किसी भिन्न का अंश 6 चौथाई, चतुर्थ भाग 7 किसी वृत्त की परिधि का ३६० वां भाग या अंश 8 राशिचक्र का तीसवां अंश 9 कक्ष 10 कक्ष, अन्तराल जगह क्षेत्र स्थान रघु० १८।४७। सम० —अर्ह (वि०) रिक्थ या पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी —कल्पना हिस्सों का विभाजन —जाति (स्त्री०) (गणित में) भिन्न राशियों के घटा कर सरल करना —धेयम् 1 हिस्सा खण्ड अंश —तीव्रास्त्रभागधेयानि —रघु० १।५० 2 किस्मत भाग्य प्रारब्ध 3 अच्छी किस्मत, सौभाग्य —भागधेय परम पशूना भर्तृ० २।१२ 4 सम्पत्ति 5 आनन्द (य:) 1 कर श० २ 2 उत्तराधिकारी —भाज् (वि०) स्वत्वधारी हिस्सेदार साझीदार —भुज् (पुं०) राजा प्रभु —लक्षणा लक्षणा शब्दशक्ति का एक भेद या शब्द का गौण प्रयोग जिससे शब्द अपने अर्थ का अंश रखता है तथा अंश का त्याग कर देता है, जहदजहल्लक्षणा भी इसे ही कहते हैं उदा० सोऽयं देवदत्तः —हर. 1 सहउत्तराधिकारी 2 (गणित में) भाग या तकसीम —हार. (गणि० में) भाग।

भागवत (वि०) (स्त्री० —ती) [भगवत् भगवत्या वा इदं सोऽस्य देवता वा अण्] 1 विष्णु से संबंध रखने वाला या विष्णु की पूजा करने वाला 2 देवता संबंधी 3 पवित्र दिव्य पुण्यशील, —तः विष्णु या कृष्ण का अनुचर अथवा भक्त —तम् अठारह पुराणों में से एक।

भागशस् (अव्य०) [भाग+शस्] 1 खण्डों में या अंशों में, खण्ड खण्ड करके 2 हिस्से के अनुसार।

भागिक (वि०) [भाग+ठन्] 1 खण्ड सम्बन्धी 2 खण्ड बनाने वाला 3 भिन्न सम्बन्धी 4. ब्याज ग्रहण करने वाला (भागिक शतम्) 'सौ में से एक भाग अर्थात् एक प्रतिशत', इस प्रकार भागिका विंशति आदि)।

भागिन् (वि०) [भज्+घिनुण्] 1 हिस्सों या भागों से युक्त 2 हिस्सा रखने वाला, हिस्सेदार 3 हिस्सा लेने वाला, भाग लेने वाला, साझी यथा सुख'

4. सम्बन्धित, ग्रस्त 5 अधिकृतधारी, स्वामी—मनु० ९।५३ 6 हिस्से का अधिकारी- मनु० ९।१६५, याज्ञ० २।१२५ 7 भाग्यवान्, किस्मत वाला 8 घटिया, गौण ।

भागिनेयः [भगिनी+ढक्] बहन का पुत्र, भानजा,—यी भानजी ।

भागीरथी [भगीरथ+अण्+ङीप्] 1 गंगा नदी का नामान्तर—भागीरथी निर्झरसीकराणाम् कु० १।१५ 2. गंगा की तीन मुख्य शाखाओं में एक ।

भाग्यम् [भज्+ण्यत्] 1 किस्मत प्रारब्ध, तकदीर, सौभाग्य या दैव -स्त्रियाश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः सुभा० (बहुधा ब० व० में) श० ५।३० 2 अच्छा भाग्य या किस्मत रघु० ३।१३ 3 समृद्धि सम्पन्नता—भाग्येष्वनुत्सेकिनी श० ४।१७ 4 आनन्द, कल्याण । सम० आयत्त (वि०) भाग्य पर आश्रित—भाग्यायत्तमतः परम् श० ४।१६ उदयः सौभाग्य का प्रभाव, भाग्यशाली घटना क्रमः भाग्य की चाल किस्मत का फेर भाग्य क्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति मृच्छ० १।१३ योगः भाग्य की वेला किस्मत का मेल - विपर्ययः बुरी किस्मत, दुर्भाग्य-रघु० ८।४७, वशात् (अव्य०) विधि की इच्छा से, भाग्य से किस्मत से भाग्यवश ।

भाग्यवत् (वि०) [भाग्य+मतुप्] 1 भाग्यशाली, सौभाग्यसम्पन्न, आनन्दित 2 समृद्धशाली ।

भाङ्ग (वि०) (स्त्री० गी) [भङ्गा+अण्] पटसन से निर्मित, सन का बना हुआ ।

भाङ्गक [भाङ्ग+कन्] फटा पुराना कपड़ा, जीर्ण शीर्ण चिथड़ा ।

भाङ्गीनम् [भङ्गायाः भवनं क्षेत्रम् खञ्] सन या पटसन का खेत ।

भाज् (चुरा० उभ०) बाँटना वितरित करना दे० 'भज्' प्रेर० ।

भाज् (वि०) [भज्+ण्वि] (प्रायः समास के अन्त में) 1 हिस्सेदार, साझी, भागी 2 रखने वाला, उपभोग करने वाला, अधिकार करने वाला, प्राप्त करने वाला सुख°, रिक्थ° 3 अधिकारी 4 भावुक, अनुभव करने वाला, सचेतन 5. अनुरक्त 6 रहने वाला, आवासी, निवास करने वाला यथा 'कुहरभाज्' 7 जाने वाला, सहारा लेने वाला, खोजने वाला 8 पूजा करने वाला 9. भाग्य में बदा हुआ 10 अवश्यकरणीय, कर्तव्य —भट्टि० १।२१ ।

भाजकः [भाज्+ण्वुल्] 1. बाँटने वाला 2 (गणि० में) वह अंक जिससे भाग किया जाय ।

भाजनम् [भाज्यतेऽनेन भाज्+ल्युट्] 1. हिस्से बनाना, बाँटना 2. (अंक में) भाग 3. पात्र, बर्तन, प्याला, थाली पुष्पभाजनम् —श० ४, रघु० ५।२२ 4 (आल०) आधार ग्रहण करने वाला, आशय स श्रियो भाजनं नरः पंच० १।४३, कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते मा० १।३, उत्तर० ३।१'., मालवि० ५।८ 5 योग्य या पात्र, योग्य पदार्थ या व्यक्ति—भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम् - का० १०८ 6 प्रतिनिधान 7 ६४ पलों की माप ।

भाजितम् [भाज्+क्त] हिस्सा, अंश ।

भाजी [भाज्+घञ्+ङीष्] चावल भात का माड़ दलिया ।

भाज्यम् [भाज्+ण्यत्] 1 अंश हिस्सा, दाय, 3 (अंक में) भाज्य ।

भाटम्, भाटकम् [भट्+घञ् ण्वुल् वा] मजदूरी, भाड़ा, किराया ।

भाटि (स्त्री०) [भट् णिच्+इञ्] 1 मजदूरी भाड़ा 2 वेश्या की कमाई ।

भाट्ट [भट्ट अण्] भट्ट का अनुयायी कुमारिल भट्ट द्वारा स्थापित मीमांसादर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी ।

भाण [भण्+घञ्] नाटककला का एक भेद इसमें केवल रंगमंच पर एक ही पात्र होता है जो अन्तर्वर्तियों के स्थान का आकाशभाषित का यथेष्ट प्रयोग करके पूरा कर देता है भाणः स्याद्धूर्तचरितो नानावस्थान्तरात्मक एकाङ्क एक एवात्र निपुण पण्डितो विट सा० द० ५१३, आगे के श्लोक भी देखिये, उदा० वसन्ततिलक मुकुन्दानन्द लीलामधुकर आदि ।

भाणकः [भण्+ण्वुल्] उद्घोषक घोषणा करने वाला ।

भाण्डम् [भाण्ड्+अच्, भण्+ड स्वार्थे अण् वा—तारा०] 1 पात्र बर्तन बासन (थाली कटोरी गिलास आदि) नीलभाण्डम् 'नील रखने का मटका' इसी प्रकार 'क्षीरभाण्डम् 'दूध की हांडी' सुरा मद्य' आदि 2 सन्दूक ट्रंक पेटी सन्दूकची कुम्भाण्ड —पंच० १ 3 औजार या उपकरण यंत्र 4 सज्जित-उपकरण 5 सामान, बर्तन माल पण्यसामग्री दुकानदार की वाणिज्यवस्तु भाण्डरामानि भाण्डानि—पंच० १ 6 माल की गठरी 7 (आल०) कोई भी मूल्यवान् संपत्ति निधि आसीत् रघुनन्दने तदुभय तत्पुत्रभाण्ड हि मे उत्तर० ४।२४ 8 नदी का तल 9 घोड़े की जीन या साज 10 भड़ैती, मसखरापन,—ण्डः (०,ब०व०) बर्तन, पण्यसामग्री । सम० अ(आ)गार, —रम् भंडारघर, सामान का कोठा (शा० वहाँ घर का सामान और बर्तन आदि रखते जाते हैं) भाण्डागाराण्यकृत विबुधां सा स्वयं भोगभाजि - विक्रमांक० १८।४५ 2 कोष आग° 3 संग्रह, गोदाम, भंडार, —पतिः सौदागर,—पुटः नाई —प्रतिभाण्डकम् विनिमय, सामान की अदलाबदली की समगता,—भरकः बर्तन

की आसर्वस्तु, —मूल्यम् बर्तनों के रूप में पूंजी,—शाला गोदाम, भण्डार।

भाण्डकः,—कम् [भाण्ड+कन्] छोटा बर्तन, कटोरा,—कम् माल, पण्यसामग्री, बर्तन।

भाण्डारम् [भाण्ड+ऋ+अण्] गोदाम, भण्डार।

भाण्डारिन् (पुं०) [भाण्डार+इनि] गोदाम या भण्डार का रखवाला।

भाण्डि (स्त्री०) [भण्ड्+इन् पृषो० साधु] उस्तरे का घर पेटी। सम०—वाहः नाई—शाला नाई की दुकान।

भाण्डिकः—लः [भाण्ड+ठन् भाण्डि+लच्] नाई।

भाण्डिका [भाण्डि+कन्+टाप्] उपकरण औजार यन्त्र।

भाण्डिनी [भाण्ड+इनि+ङीप्] पेटी, टोकरी।

भाण्डीरः [भण्ड्+ईरन् पृषो० साधु] बड़ का या गूलर का वृक्ष।

भात (भू० क० कृ०) [भा+क्त] चमकता हुआ जगमगाता हुआ, चमकीला, त उषःकाल प्रभात प्रातःकाल।

भातिः (स्त्री०) [भा+क्तिन्] 1 प्रकाश चमक कान्ति आभा 2 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान या प्रतीति।

भानुः [भा+तुन्] सूर्य।

भाद्र, भाद्रपदः [भाद्रपदी या पौर्णमासी अस्मिन् मासे भाद्री (भाद्रपदी)+अण्] चान्द्रवर्ष के एक मास का नाम (अगस्त और सितम्बर के मास में आने वाला) —दाः (स्त्री०—ब० व०) पच्चीसवाँ और छब्बीसवाँ नक्षत्र (पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा)।

भाद्रपदी, भाद्री [भाद्रपद+ङीप् भद्रा+अण्+ङीप्] भाद्रपद मास की पूर्णिमा।

भाद्रमातुरः [भद्रमातुरपत्यम् —भद्रमातृ+अण् उकारा देश] सती साध्वी माता का पुत्र।

भानम् [भा भावे ल्युट्] 1 प्रकट होना, दृश्यमान 2. प्रकाश, कान्ति 3 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान।

भानुः [भा+नु] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक 2 प्रकाश-किरण—मण्डिताखिलदिक्प्रान्ताश्चण्डांशो पान्तु भानव —भामि० १।१२९, शि० २।५३,मनु० ८।१३२ 3 सूर्य, —भानुः सकृद्युक्ततुरग एव—श० ५।४, भीममानो निदाघे—भामि० १।३० 4 सौन्दर्य 5 दिन 6 राजा, राजकुमार, प्रभु 7. शिव का विशेषण —स्त्री० सुन्दर स्त्री। सम०—केशरः (रः) सूर्य,—जः शनिग्रह —दिनम्,—वारः रविवार, इतवार।

भानुमत् (वि०) [भानु+मतुप्] 1. ज्योतिर्मान्, चमकीला, जगमग करता हुआ 2 सुन्दर, मनोहर—पुं० सूर्य कु० ३।६५, रघु० ६।३६ अनु० ५।२, —ती दुर्योधन की पत्नी का नाम।

भामिनी [भाम्+णिनि+ङीप्] 1. सुन्दर तरुणी, कामिनी—रघु० ८।२८ 2. कामुकी स्त्री (बहुत प्यार के कारण ऐसी स्त्री के लिए 'चंडी' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है)—उपचीयत एव कापि शोभा परितो भामिनि ते मुखस्य नित्यम् भामि० २।१।

भार. [भृ+घञ्] 1 बोझ, वजन, तोल (आल० से भी) कुचभारानमिता न योषित —भर्तृ० ३।२७, इसी प्रकार —श्रोणीभार मेघ० ८२, भार कायो जीवित वज्रकीलम मा० ९।३७, 2 (आक्रमण आदि का) धक्का (युद्ध आदि का) अत्यन्त विषमपिष्ट भाग उत्तर० ५।५ 3 अतिरेक, भार या उठान —रघु० १४।६८ 4 श्रम, मेहनत अभ्यास 5 राशि बड़ी मात्रा —भार अटा 6 २००० पल माशे के तोल के बराबर 7 बोझा ढोने के लिए बहंगी। सम०—आक्रान्त (वि०) बोझ से अत्यन्त दबा हुआ अधिक बोझा लिए हुए —उद्वह कुली बोझा ढोने वाला —उपजीवनम् बोझा ढोकर जीवन-यापन करना, कुली का जीवन —यष्टि बोझ उठाने की लकड़ी —वाह (वि०) (स्त्री० भारवाही) बोझा ढोने वाला —वाह बोझा ढोने वाला कुली —वाहन बोझा ढोने वाला जानवर (नम्) गाड़ी मालगाड़ी का डिब्बा —वाहिक कुली, —सह (वि०) जो अधिक बोझा उठा सके (अत) बहुत मजबूत बलवान हुए, —हारः बोझा ढोने वाला कुली —हारिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण।

भारण्ड [?] एक प्रकार का काल्पनिक पक्षी जिसका वर्णन केवल कहानियों में पाया जाता है ('भारुड' भी) पंच० ५।१०२।

भारत (वि०) (स्त्री० ती) [भरत+अण्] भरत से सबन्ध रखने वाला या भरत की सन्तान,—त 1 भरत की सन्तान 2 भारतवर्ष या हिन्दुस्तान का निवासी 3 अभिनेता —तम् 1 भरत का देश, भारत शि० १४।५ 2 संस्कृत में लिखा हुआ एक अत्यन्त प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें अनन्त उपाख्यानों के साथ भरतवंशी राजाओं का इतिहास पाया जाता है (व्यास या कृष्ण-द्वैपायन इसके रचयिता माने जाते हैं परन्तु यह जिस विशाल रूप में आज मिलता है निश्चित रूप से अनेक व्यक्तियों की रचना है) अभयाजलिपुटपेय विरचितवान् भारताख्यममृतं य, तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वंदे—वेणी० १।४, व्यासगिरां निर्यासं सारं विश्वस्य भारतं वन्दे, भूषणतयैव संज्ञां यदङ्कितां भारती वहति - आर्या० ३१,—ती वाणी, वाक्य, वचन, वाणी-प्रवाह भारतीनिर्घोष —उत्तर० ३, तमर्चयित्वा भारत्या सुतया योक्तुमहेति—कु० ६।७९ मधुरतर्पायरां निर्मितिनाद्यवतां भारती काव्यमपाति—काव्य० १ 2 वाणी की देवता, सरस्वती 3. विशेष प्रकार की शैली भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नटाश्रयः—सा० द० २८५ 4 लवा, बटेर।

भारद्वाजः [भरद्वाजस्यापत्यम् —अण्] 1 कौरव पांडवों की सैनिक शिक्षा के आचार्य गुरु द्रोण 2 अगस्त्य का नामान्तर 3. मङ्गलग्रह 4 चातक पक्षी, —जम् हड्डी ।

भारयः [भारं याति —या + क] धनुष की डोरी ।

भारविः [?] किरातार्जुनीय नामक संस्कृतकाव्य के रचयिता —तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः, उदिते च पुनर्माघे भारवेर्भा रवेरिव, भारवेरर्थगौरवम् —उद्भट ।

भारिः [इभस्य अरिः पृषो० साधुः] सिंह ।

भारिक, भारिन् (वि०) [भार + ठक्, इनि वा] भारी पु० बोझा ढोने वाला, कुली ।

भार्गः [भर्ग + अण्] भर्ग देश का राजा ।

भार्गवः [भृगोरपत्यम् अण्] 1 शुक्राचार्य, शुक्रग्रह का शास्ता और असुरों का आचार्य 2 परशुराम दे० परशुराम 3 शिव का विशेषण 4 धनुर्धर 5 हाथी । सम० —प्रियः हीरा ।

भार्गवी [भार्गव + ङीप्] 1 दूब 2 लक्ष्मी का विशेषण ।

भार्य. [भृ + ण्यत्] सेवक, पराश्रयी (भरण-पोषण किये जाने के योग्य) ।

भार्या [भर्तुं योग्या + भार्य + टाप्] 1 धर्मपत्नी— सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता हि० १।१९६ 2 मादा जानवर । सम० —आट (वि०) अपनी पत्नी के वेश्यापन से जीवन निर्वाह करने वाला,—ऊढ (वि०) विवाहित (पुरुष)—भार्योढं तमवज्ञाय— भट्टि० ४।१५, —जित पत्नी से प्रभावित पति, जोरू का गुलाम ।

भार्यारुः [भार्या + ऋ + उण्] 1 एक प्रकार का मृग 2 उस बालक का पिता जो अन्य पुरुष की पत्नी से उत्पन्न हो ।

भालम् [भा + लच्] मस्तक, ललाट —यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनम् —भर्तृ० २।४९, (समस्य) वपुः सद्यो भालानलभसितजालास्पदमभूत्—भामि० १।८४ 2 प्रकाश 3 अंधकार । सम० —अङ्कः 1 भाग्यवान् पुरुष जिसके मस्तक पर भाग्य रेखा विराजमान है 2 शिव का विशेषण 3 आरा 4 कछुआ —चक्षुः 1 शिव का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, —दर्शनम् सिंदूर,— दर्शिन् (वि०) 'मस्तक या ललाट को देखने वाला' अर्थात् वह नौकर जो अपने स्वामी की इच्छाओं के प्रति सावधान रहता है, —दृश् (पुं०) —लोचन शिव का विशेषण —पट्टः, —पट्टम् मस्तक, ललाट ।

भालुः [भा + उण्, वृद्धि, रस्य लः] सूर्य ।

भालूकः, भालुकः, भाल्लुकः, भाल्लूकः [भलते हिनस्ति प्राणिनः भल् + उक (ऊक) + अण्, भल्लू (लू) + क + अण्] रीछ, भालू ।

भावः [भू भावे घञ्] 1 होना, सत्ता, अस्तित्व —नासतो विद्यते भावः —भग० २।१६ 2 होना, घटित होना, घटना 3 स्थिति, अवस्था, होने की अवस्था —लताभावेन परिणतमस्या रूपम् —विक्रम० ४, कातरभाव विवर्णभाव आदि 4 रीति, ढंग 5 दर्जा, स्थिति, पद, हैसियत—देवीभावं गमिता —काव्य० १०, इसी प्रकार प्रेष्यभावम् किंकरभावम् 6 (क) यथार्थ दशा या स्थिति यथार्थता, वास्तविकता —भग० १०।८ (ख) निष्कपटता, भक्ति —त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः —रघु० ८।५२, २।२६ 7 सहज गुण, चित्तवृत्ति प्रकृति, स्वभाव —उत्तर० ६।१४ 8 झुकाव या मनोवृत्ति, भावना विचार, मत, कल्पना— पंच० ३।४३, मनु० ८।२५ ४।६५ 9 भावना, संवेग, रस या मनोभाव —एको भावः —पंच० ३।६६, कु० ६।९५ (नाट्य विज्ञान या काव्यरचना में भाव बहुधा प्रकार के होते हैं —प्रधान या स्थायीभाव, तथा गौण या व्यभिचारिभाव । स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं, तदनुसार अपने २ स्थायिभाव से युक्त रस भी आठ या नौ हैं । व्यभिचारिभाव गिनती में तेंतीस या चौंतीस हैं तथा स्थायिभावों का विकास करने एवं संवर्धन करने में सहायक होते हैं, इनके कुछ भेदों की परिभाषा तथा गिनती के लिए—रस० का प्रथम आनन या काव्य० का चौथा समुल्लास देखो) 10 प्रेम, स्नेह, अनुराग—हृन्मानि भावं क्रियया विवव्रुः —कु० १।१५, रघु० ६।१६ 11 अभिप्राय, प्रयोजन, सारांश, आशय, इति भावः (प्रायः भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त) 12 अर्थ, आशय, तात्पर्य, व्यञ्जना —मा० १।२५ 13 प्रस्ताव, संकल्प 14 हृदय, आत्मा, मन—तयोर्विवृतभावत्वात् —मा० १।१२, भग० १८।१६ 15 विद्यमान पदार्थ, वस्तु, चीज, तत्त्व—जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः —मा० १।१७, ३६, रघु० ३।४१ उत्तर० ३।३२ 16 प्राणी, जीवधारी जन्तु 17 भावमय मनन, चिन्तन (=भावना) 18 आचरण, गतिविधि, हावभाव 19 प्रीति द्योतक हावभाव या रस की अभिव्यक्ति, प्रेम संकेत—श० २।१ 20 जन्म, 21 संसार, विश्व 22. गर्भाशय 23 इच्छाशक्ति 24 अतिमानव शक्ति 25 उपदेश अनुदेश 26. (नाटकों में) विद्वान् और सम्माननीय व्यक्ति, योग्य पुरुष (संबोधनशब्द)—भाव अयमस्मि —विक्रम० १, तो खलु भावे तवैव सर्वे वर्णा पाटिता —मा० १ 27. (व्या० में) भाववाचक संज्ञा का आशय, भावात्मक विचार —भावे क्त 28 भाववाच्य 29 (ज्योति० में) जन्मकुंडली के स्थान 30 पदार्थ । सम० —अनुग (वि०) स्वाभाविक, (गा) छाया,— अन्तरम् भिन्न स्थिति —अर्थः 1 स्पष्ट अर्थ या ध्वनि (किसी शब्द या

रसोद्भव की) 2. विषय-सामग्री, —आकूतम् मन के (गुप्त) विचार अमरु ४, —आत्मक (वि०) वास्तविक, यथार्थ,—आभासः भावना का अनुकरण, बनावटी या मिथ्या संवेग,—आलीना छाया, —एकरस (वि०) केवल (निष्कपट) प्रेम के रस से प्रभावित कु० ५।८२,—गम्भीरम् (अव्य०) 1. हृदय से, हृदयतल से 2. गंभीरता के साथ, संजीदगी से, —गम्य (वि०) मन से जाना हुआ—मेघ० ८५, —ग्राहिन् (वि०) 1 आशय को समझने वाला 2. मनोभाव की कदर करने वाला,—जः कामदेव,—ज्ञ —विद् (वि०) हृदय को जानने वाला,—दर्शिन् (वि०) दे० 'भालदर्शिन्', —बन्धन (वि०) हृदय को मुग्ध करने वाला या बांधने वाला, हृदयों की कड़ी को जोड़ने वाला —रघु० ३।२४, —बोधक (वि०) किसी भी भावना को प्रकट करने वाला, —मिश्रः योग्य व्यक्ति, सज्जन पुरुष (नाटकों में प्रयुक्त), —रूप (वि०) वास्तविक, यथार्थ, —वचनम् भावात्मक विचार को प्रकट करने वाला, क्रिया की भाववाचकता को ग्रहण करने वाला,— वाचकम् भाववाचक संज्ञा,—शबलत्वम् नाना प्रकार के संवेगों और भावों का मिश्रण (भावानां बाध्यबाधकभावमापन्नानामुदासीनानां वा व्यामिश्रणम्—रस० तद्गत उदाहरण दे०),—शून्य (वि०) यथार्थ प्रेम से रहित, —सन्धिः दो संवेगों का मेल या सह-अस्तित्व —(भावसन्धिरन्योन्यानभिभूतयोरन्योन्याभिभावनयोग्ययोः सामानाधिकरण्यम्—रस० दे० तद्गत उदाहरण), —समाहित (वि०) भावमनस्क, भक्त,—सर्गः मानसिक सृष्टि अर्थात् मानव की मनःशक्तियों की सृष्टि और उनका प्रभाव (विप० भौतिक सर्ग या भौतिक सृष्टि), —स्थ (वि०) आसक्त, अनुरक्त, कु० ५।५८,—स्थिर (वि०) मन में दृढ़तापूर्वक जमा हुआ—श० ५।२, —स्निग्ध (वि०) स्नेहसिक्त, सत्यनिष्ठा पूर्वक आसक्त—पंच० १।२८५ ।

भावक (वि०) [भू+णिच्+ण्वुल्] 1. उत्पादक, प्रकाशक 2. कल्याणकारक 3. उत्प्रेक्षक, कल्पना करने वाला 4. उदात्त और सुन्दर भावनाओं के प्रति रुचि रखने वाला, काव्यपरकरुचि रखने वाला,—कः 1 भावना मनोभाव 2. मनोभावों (विशेष कर प्रेम के) को बाहर प्रकट करना ।

भावन (वि०) (स्त्री०—नी) [भू+णिच्+ल्युट्] उत्पादक—दे० ऊ० भावक, —नः 1 निमित्तकारण 2. सृष्टिकर्ता—मा० ९।४ 3 शिव का विशेषण—नम् —ना 1. पैदा करना, प्रकट करना 2 किसी के हितों को अनुप्राणित करना 3. अध्यवसाय, कल्पना, उत्प्रेक्षा, विचार, धारणा —मधुरिपुरहमिति भावनशीला—गीत० ६. या भावनया त्वयि लीना—४, पंच० ३।११२ 4 भक्ति भावना, निष्ठा पंच० ५।१०५ 5 मनन, अनुध्यान, भावात्मक चिंतन 6 कल्पना, प्राक्-कल्पना 7 निरीक्षण, गवेषणा 8 निश्चयन, निर्धारण—याज्ञ० २।१४९ 9 याद करना, प्रत्यास्मरण 10 प्रत्यक्ष ज्ञान, संज्ञान 11. (तर्क० में) प्रत्यक्ष ज्ञान से उत्पन्न स्मृति का कारण—दे०, तर्क० में 'भावना' और 'स्मृति' 12 प्रमाण प्रदर्शन, युक्ति 13. सिक्त करना, सराबोर करना, किसी सूखे चूर्ण को रस से भिगोना 14 सुवासित करना, फूलों और सुगंधित द्रव्यों से सजाना ।

भावाटः [भाव भावेन वा अटति अट्+अण्, अच् वा] 1 संवेग, आवेश, मनोभाव 2 प्रेम की भावना का बाह्य संकेत 3 पुण्यात्मा या पुण्यशील व्यक्ति 4 रसिक व्यक्ति 5 अभिनेता 6. सजावट, वेशभूषा ।

भाविक (वि०) (स्त्री०—की) 1. प्राकृतिक, वास्तविक, अन्तर्हित, अन्तर्गत 2 भावुकतापूर्ण, भावुकता या भावना से व्याप्त 3 भावी समय,—कम् 1 उत्कट प्रेम से पूर्ण भाषा 2 (अल० में) एक अलंकार का नाम जिसमें भूत और भविष्यत् का इस विशदता से वर्णन किया गया हो कि वस्तुतः वर्तमान प्रतीत हो। मम्मट की दी हुई परिभाषा—प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः, तद्भाविकम् —काव्य० १० ।

भावित (भू० क० कृ०) [भू+णिच्+क्त] 1 पैदा किया गया, उत्पादित 2 प्रकटीकृत, प्रदर्शित, निदर्शित —भावितविषवेगविक्रियः दश० 3. लालन-पालन किया गया, पाला पोसा गया 4 सम्यक्त किया गया, कल्पना किया गया, कल्पित, कल्पना में उपन्यस्त 5 चिन्तित, मनन किया गया 6 बनाया गया, रूपान्तरित किया गया 7 मन द्वारा पावन किया गया—दे० भावितात्मन् 8 सिद्ध, स्थापित 9 व्याप्त, भरा हुआ, संतृप्त, प्रेरित 10 डुबाया गया, सराबोर, मग्न 11 सुवासित, सुगंधित 12. मिश्रित,—तम् गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल । सम०—आत्मन्,—बुद्धि (वि०) 1. जिसका आत्मा परमात्म-चिन्तन से पवित्र हो गया है, जिसने परमात्मा को प्रत्यक्ष कर लिया है 2. विशुद्ध, भक्त, पुण्यशील—पंच० १।६६ 3 चिन्तनशील, मनस्वी रघु० १।७४ 4. व्यस्त, व्यापृत शि० १२।३८ ।

भावितकम् [भावित+कन्] गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल, तथ्यविवरण ।

भावित्रम् [भू+णि+त्र] तीन लोक (स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताल लोक) ।

भाविन् (वि०) [भू+इनि, णिच्] 1. होनहार, होने वाला,—भूत्यर्थभावि—रघु० ११।४९ 2 होने वाला, भविष्य में घटने वाला, आगे आने वाला लोकेन भावी पितुरेव तुल्यः—रघु० १८।३८, मेघ० ४१

3. भविष्य—समतीतं च भवच्च भावि च—रघु० ८।७८, प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः—काव्य० १०, मै० ३।११ 4. होने के योग्य 5. अवश्यंभावी, भवितव्य, प्राक्नियत या पूर्वनिर्दिष्ट यद्भावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा हि० १ 6. उत्कृष्ट, सुन्दर, भव्य,—नी 1. सुन्दर स्त्री 2. उत्तम या साध्वी महिला—कु० ५।३८ 3. स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

भावुक (वि०) [भू+उकञ्] 1. होने वाला, घटने वाला 2. होनहार 3. समृद्ध, प्रसन्न 4. शुभ, मंगलमय 5. काव्य में रुचि रखने वाला, गुणग्राही,—कः बहनोई (बहुधा नाटकों में प्रयुक्त),—कम् 1. प्रसन्नता, कल्याण, समृद्धि भ्रातृ मो कुरुभवनो भावुकाना परंपराम्—काव्य० ७ ('अप्रयुक्तत्व' नाम काव्य रचना के दोष का उदाहरण 2. प्रेम और प्रणयोन्माद से पूर्ण भाषा।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1. होने वाला, घटित होने वाला, प्रायः 'भवितव्यम्' की भाँति भाववाच्य में प्रयुक्त कि तेर्भाव्यं मम सुदिवसैः—भर्तृ० ३।४ 2. भविष्य 3. अनुष्ठेय या जो पूरा किया जाय 4. सोचे जाने या कल्पना किये जाने योग्य 5. सिद्ध या प्रदर्शित किये जाने योग्य 6. निर्धारण या गवेषणा किये जाने योग्य,—व्यम् 1 प्रारब्ध, अवश्यंभावी 2 भवितव्यता।

भाष् (भ्वा० आ० भाषते, भाषित) 1. कहना, बोलना, उच्चारण करना—स्वयंकमीश प्रति साधु भाषितम्—कु० ५।८१, बहुधा द्विकर्मक,—सीता प्रियामेत्य वचो बभाषे—रघु० ७।६६, आक्षब्ध कामिदं बभाषे—कु० ३।११, भट्टि० ९।१२२ 2. बोलना, संबोधित करना—किंचिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे रघु० २।४६, ३।५१ 3. बोलना, घोषणा करना, प्रकथन करना—क्षितिपालमुच्चैः प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव—रघु० २।५१ 4. बोलना, बातें करना 5. नाम लेना, पुकारना 6. वर्णन करना, अनु 1. बोलना, कहना 2. समाचार देना, घोषणा करना—मनु० ११।२२८, अप—,झिड़कना, बुरा भला कहना, बदनाम करना, निन्दा करना, बुराई करना—अहमणुमात्रं न किंचिदपभाषे—भामि० ४।२७, न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्—कु० ५।८३, अभि—, 1. बोलना, भाषण देना—मनु० २।१२८ 2. बोलना, कहना 3. प्रकथन करना, घोषणा करना, कहना, समाचार देना 4. वर्णन करना, आ—,1. बोलना, भाषण देना,—वैशम्पायनश्चन्द्रापीडमाबभाषे का० ११७ 2. कहना, बोलना,—आभाषि रामेण वचः कनीयान्—भट्टि० ३।५१, परि—,परिपाटी स्थापित करना, औपचारिक रूप से बोलना, प्र—,कहना, बोलना—स्थितधीः किं प्रभाषेत—भग० २।५४, प्रति—,1. बदले में कहना, उत्तर देना—भट्टि० ५।३९ 2. कहना, वर्णन करना 3. एक के बाद बोलना, सुनकर बोलना 4. नाम लेना, पुकारना कामिनि तामुपगीतिं प्रतिभाषन्ते महाकवयः—श्रुत० ६, वि—, ऐच्छिक नियम के रूप में निर्धारित करना, सम्—, मिलकर बोलना, बातचीत करना—मनु० ८।५५।

भाषणम् [भाष्+ल्युट्] 1. बोलना, बातें करना, कहना 2. वक्तृता, शब्द, बात 3. कृपापूर्ण शब्द।

भाषा [भाष्+अङ्+टाप्] 1. वक्तृता, बात—यथा 'चारुभाष.' में 2. बोली, जबान—मनु० ८।१६४ 3. सामान्य या देहाती बोली (क) बोली जाने वाली संस्कृत भाषा (विप० छंदस् या वेद)—विभाषा भाषायाम्—पा० ६।१।१८१ (ख) कोई प्राकृत बोली (विप० संस्कृत) मनु० ८।३३२ 4. परिभाषा, वर्णन—स्थितप्रज्ञस्य का भाषा—भग० २।५४ 5. सरस्वती का विशेषण, वाणी की देवी 6. (विधि में) अभियोग की चार अवस्थाओं में से पहली, शिकायत, आरोप, दोषारोपण। सम०—अन्तरम् 1. अन्य वाणी या बोली 2 अनुवाद,—पादः आरोप, शिकायत—दे० 'भाषा' 6 ऊपर,—समः एक अलंकार का नाम जिसमें शब्दक्रम का न्यास इस प्रकार किया जाता है कि चाहे आप उसे संस्कृत समझें और चाहे प्राकृत (कोई न कोई भेद)—उदा०—मञ्जुलमणिमञ्जीरे कलगम्भीरे विहारसरसीतीरे, विरसासि केलिकीरे किमालि धीरे च गन्धसारसमीरे सा० द० ६४२, (एष श्लोकः संस्कृतप्राकृतशौरसेनीप्राच्यावन्तीनागरापभ्रंशेष्वेकविध एव), किं त्वां भणामि विच्छेददारुणायासकारिणि, कामं कुरु वरारोहे देहि मे परिरंभणम्—सा० ६।११, (यह संस्कृत या शौरसेनी में है) इसी प्रकार ६।१०।

भाषिका [भाषा+कन्+टाप्, ह्रस्वः, इत्वम्] वक्तृता, भाषा, बोली।

भाषित (भू० क० कृ०) [भाष्+क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, उच्चारण किया हुआ,—तम् भाषण, उच्चारण, शब्द, बोली—मनु० ८।२६। सम०—पुंस्क =उक्तपुंस्क।

भाष्यम् [भाष्+ण्यत्] 1 बोलना, बातें करना 2. सामान्य या देहाती भाषा की कोई रचना 3 व्याख्या, वृत्ति, टीका जैसा कि 'वेदभाष्य' में 4 विशेषकर सूत्रों की वृत्ति जिसमें शब्दशः व्याख्या और टिप्पण होते हैं (सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः, स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः)—संक्षिप्तस्याप्यतोऽस्यैव वाक्यस्यार्थगरीयसः, सुविस्तरतरा वाचो भाष्यभूता भवन्तु मे—शि० २।२४ 5. पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि का महाभाष्य। सम०—करः,—कारः—कृत्

(पुं०) 1. भाष्यकार, टीकाकार 2 पतञ्जलि ।

भास् (भ्वा० आ० भासते, भासित) 1 चमकना, जगमगाना, जगमग करना -तावत्कामनृपातपत्रसुषमं बिम्बं बभासे विधो: भामि० २।७४, ४।१८, कु० ६।११, भट्टि० १०।६१ 2. स्पष्ट होना, विशद होना, मन में होना—त्वदङ्गमार्दवे दृष्टे कस्य चित्ते न भासते, मालतीशशभृल्लेखाकदलीनां कठोरता चन्द्रा० ५।४२ 3 प्रकट होना —प्रेर० (भासयति-ते) 1. चमकाना, देदीप्यमान करना, प्रकाशित करना अविवसस्तनुमध्वरदीक्षितामसमभासमभासयदीश्वर: -- रघु० ९।२१, भग० १५।६ 2 जाहिर करना, स्पष्ट करना, प्रकट करना— भट्टि० १५।४२, अव— , 1 चमकना, कि० ३।४६, 2 प्रकट होना, प्रकाशित होना, स्पष्ट होना —आहोस्विन्मुखमवभासते युवत्या: -शि० ८।२९, आ—, प्रकट होना, के समान चमकना, की तरह दिखलाई देना—स्थानान्तरं स्वर्ग इवाबभासे --कु० ७।३, रघु० ७।४३ १४।१२, उद्—, चमकना, के समान दिखाई देना,—निस् -,चमकना- कि० ७।२६, प्रति —, 1 चमकना 2. दिखलाई देना 3 स्पष्ट होना, प्रकट होना, वि , चमकना ।

भास् (स्त्री०) [भास्+क्विप्] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक —वृक्षा निपेतुर्दीवरभास्वभासा: नै० २२।४३, रघु० ९।२१, कु० ७।३ 2. प्रकाश की किरण—कि० ५।३८, ४६, ९।६, रत्न० १।२४, ४।१६ 3 प्रतिबिंब प्रतिमा 4 महिमा, कीर्ति, विभूति 5 लालसा, इच्छा । सम०—कर: 1 सूर्य —शि० ११।६९ रघु० ११।७ १२।२५ कु० ६।४९ 2 नायक 3 अग्नि 4 शिव का विशेषण 5 एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जो ११ वीं शताब्दी में हुए हैं,(रम्)साना, ˚प्रिय लाल, ˚सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी, —करि शनिग्रह ।

भास: [भास् भावे घञ्] 1 चमक प्रकाश कान्ति 2 उत्प्रेक्षा 3 मुर्गा 4 गिद्ध 5. गोष्ठ गोशाला 6 एक कवि का नाम -भासो हास: कविकुलगुरु: कालिदासो विलास: प्रसन्न० १।२२, मालवि० १ ।

भासक (वि०) (स्त्री०—सिका) [भास्+ण्वुल्] 1 प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला, रोशनी करने वाला 2 दिखलाने वाला, विशद करने वाला 3 बोधगम्य बनाने वाला,—क: एक कवि का नाम ।

भासनम् [भास्+ल्युट्] 1 चमकना, जगमगाना 2 ज्योतिर्मय, द्युतिमान् ।

भासन्त (वि०) (स्त्री०—ती) [भास्+झच्, अन्तादेश] 1 चमकदार 2 सुन्दर, मनोहर,—त: 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 नक्षत्र, तारा, —ती नक्षत्र ।

भासु: [भास्+उन्] सूर्य ।

भासुर (वि०) [भास्+घुरच्] 1 चमकीला, चमकदार भव्य कि० ५।५, रघु० ५।३० 2 भयानक, र: 1 नायक 2 स्फटिक ।

भास्मन (वि०) (स्त्री०—नी) [भस्मन्+अण्, भसन्तत्वात् न टिलोप] राख से बना हुआ, राख वाला — शि० ४।६५ ।

भास्वत् (वि०) [भास्+मतुप्, मस्य व] चमकीला, चमकदार द्युतिमान, देदीप्यमान् कु० १।२, ६।६० पुं० 1 सूर्य भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजालि: सुभा०, रघु० १६।४४ 2 प्रकाश, कान्ति, आभा 3 नायक,—ती सूर्य की नगरी ।

भास्वर (वि०) [भास्+वरच्] चमकीला, प्रकाशमान, चमकदार, उज्ज्वल र: 1 सूर्य 2 दिन ।

भिक्ष् (भ्वा० आ० भिक्षते, भिक्षित) 1 पूछना, प्रार्थना करना, मांगना (द्विकर्मक) भिक्षमाणो वनं प्रियां भट्टि० ६।९ 2 याचना करना (भिक्षा की) न यज्ञार्थं शूद्राद्विप्रो भिक्षेत कर्हिचित् मनु० ११।२४ २५ 3 बिना प्राप्त हुए पूछना 4 क्लांत या दुःखी होना ।

भिक्षणम्, [भिक्ष्+ल्युट्,] मांगना, भिक्षा मांगना भिक्षावृत्ति, भिखारीपन ।

भिक्षा [भिक्ष्+अ+टाप्] 1 मांगना याचना करना प्रार्थना करना मनु० ६।५६ 2 दान के रूप में जो चीज दी जाय, भीख,—भवति भिक्षां देहि 3 मजदूरी, भाड़ा 4 सेवा । सम० अटनम् भीख मांगते हुए घूमना (न) भिक्षाचरी, साधु—अन्नम् मांग कर प्राप्त किया गया अन्न, भीख, अयनम् (नम्)= भिक्षाटन, —अर्थिन् (वि०) भीख मांगने वाला(पुं०) भिखारी —अर्ह (वि०) भिक्षा के योग्य दान के लिए उपयुक्त पदार्थ आशिन् (वि०) 1 भिक्षा पर निर्वाह करने वाला 2 बेईमान, उपजीविन् (वि०) भिक्षा पर जीने वाला भिखारी,--करणम् भिक्षा लेना भीख मांगना,—चरणम्,-चर्यम्, चर्या भीख मांगते हुए घूमना पात्रम् भिक्षा ग्रहण करने का बर्तन भीख के लिए कटोरा—इसी प्रकार भिक्षाभाण्डम्, भिक्षाभाजनम्, — माणव: भिखारी बच्चा (तिरस्कार-सूचक शब्द), --वृत्ति: (स्त्री०) भीख मांग कर जीना, साधु या भिक्षुक का जीवन ।

भिक्षाक: (स्त्री०—की) [भिक्ष्+षाकन्] भिखारी, साधु, भिक्षुक ।

भिक्षित (भू० क० कृ०) [भिक्ष्+क्त] याचना की गई, मांगा गया ।

भिक्षु: [भिक्ष्+उन्] 1 भिखारी, साधु भिक्षां च भिक्षवे दद्यात्— मनु० ३।९४ 2 साधु, चौथे आश्रम में पहुंचा हुआ ब्राह्मण (जब कि वह कुटुम्ब, घर द्वार छोड़ कर केवल भिक्षा पर निर्वाह करता है), सन्यासी 3 ब्राह्मण का चौथा आश्रम, सन्यास

4. बौद्ध भिक्षुक। सम० —चर्या भिक्षा माँगना, साधु का जीवन, —संघः बौद्ध भिक्षुओं का समाज —सङ्घाटी फटे पुराने कपड़े, चीवर।

भिक्षुकः [भिक्ष् + उक्] भिखारी, साधु —मनु० ६।५१।

भित्तम् [भिद् + क्त] 1. भाग, अंश 2. खण्ड, टुकड़ा 3. दीवार, विभाजक दीवार।

भित्तिः [भिद् + क्तिन्] 1 तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना, बाँटना 2. दीवार, विभाजक दीवार, समया सौधभित्तिम् —दश०, शि० ४।६७ 3. (अत) कोई स्थान, जगह या भूमि जिस पर कुछ किया जा सके, आधार, आश्रय —चित्र-कर्म रचना भित्तिं विना वर्तते —मुद्रा० २।४ 4 खण्ड, अंश, टुकड़ा, अंश 5 कोई भी टूटी हुई वस्तु 6 दरार, तरेड़ 7 चटाई 8. कमी खोट 9 अवसर। सम० —खातनः चूहा, —चौरः सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर, —पातनः 1 एक प्रकार का चूहा 2. चूहा।

भित्तिका [भिद् + तिकन् + टाप्] 1 दीवार, विभाजक दीवार 2. घर की छोटी छिपकली।

भिद् i (भ्वा० पर० भिन्दति) बाँटना, टुकड़े २ करके बाँटने वाला। ii (रुधा० उभ० भिनत्ति, भिन्ते, भिन्न) तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, काटकर अलग २ करना, फट जाना, छिद्र करना, बीच में से तोड़ना —अतिशीतलमप्यम्भः किं भिनत्ति न भूभृतः —हि० ३।४५ तेषां कथं नु हृदयं न भिनत्ति लज्जा —मुद्रा० ३।३४, शि० ८।३९, मनु० ३।३३ रघु० ८।५५, १२।७७ 2 खोदना, उखेड़ना, खुदाई करना —उत्तर० १।२३ 3 बीच में से निकल जाना —पंच० १।२११, २१२ 4. बाँटना, पृथक्-पृथक् करना —द्विधा भिन्ना शिखण्डिभिः —रघु० १।३९, अप्रसन्न करना —रघु० १३।३ 5. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना तोड़ना, भंग करना —समय लक्ष्मणोऽभिनत् —रघु० १५।९४, निहृतस्य स्थितिं भिन्दन् दानवोऽसौ बलद्विषा —भट्टि० ७।६८ 6. हटाना, दूर करना —शि० १५।८७ 7. विघ्न डालना, रुकावट डालना जैसा कि 'समाधिभेदिन्' में 8. बदलना, परिवर्तन करना, (न) भिदन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः —कु० १।११ या विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः —श० १।१४ 9. खिलाना, फुलाना, फैलाना —सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् —कु० १।३२, नवोपजा भिन्नमिवैकपङ्कजम् —श० ७।१६, मेघ० १०७, 10. तितरबितर करना, बखेरना, उड़ा देना —भिन्नसारङ्गयूथः —श० १।३३, विक्रम० १।१६ 11. जोड़ खोलना, वियुक्त करना, पृथक् २ करना —मुद्रा० ३।१३ 12 ढीला करना, विमोचन करना, खोलना —पर्यङ्कबन्धं निबिडं बिभेद —कु० ३।५९ 13. भेद खोलना, भण्डाफोड़ करना 14. भटकाना, उचाट करना 15 भेद करना, विविक्त करना। कर्मवाच्य—भिद्यते, 1. टुकड़े २ होना, फटना, चरचराना —मृच्छ० ५।२२ 2 बाँटा जाना, वियुक्त किया जाना 3. फैलाना, खिलना, खिलाना 4. शिथिल या विश्रांत किये जाना —प्रस्थानभिन्नां न बबन्ध नीवीम् —रघु० ७।९, ६६ 5 पृथक् होना (अपा० के साथ) रघु० ५।३७, उत्तर० ४ 6. नष्ट किया जाना 7. भंडाफोड़ किया जाना, धोखा दिया जाना, दूर चले जाना —षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः —पंच० १।९९ 8. तंग, पीड़ित, या व्यथित किये जाना प्रेर० भेदयति —ते 1 खण्ड २ करना, फाड़ना, बाँटना फाड़ना आदि 2. नष्ट करना, विघटित करना 3. जोड़ खोलना, पृथक् २ करना 4. भटकना 5. मनोत्थ या सम्बन्ध से डिगाना। इच्छा० (बिभित्सति —ते) तोड़ने की अभिलाष करना, अनु—, बाँटना, तोड़ डालना, उद्—, फूटना, जमना (पौधा) पैदा होना —कु० १।२४ —रघु० १३।२१, निस्—, 1. फाड़ना, फटकर अलग २ होना, टूटना —भट्टि० ९।६७ 2. खोलना, धोखा देना —उत्तर ३।१, प्र—, 1 तोड़ना, फाड़ना, फाड़कर पृथक् २ करना 2. चूना, (हाथी के मदस्थान से) कु० ५।५०, प्रति—, चाप लगाना, बेधना, घुसना 2. भेद खोलना, धोखा देना 3. झिड़कना, गाली देना, निन्दा करना —प्रतिभिन्न कान्तमपराधकृतम् —शि० ९।५८, रघु० १५।२२ 4. अस्वीकार करना, मुकरना, 5. छूना, सम्पर्क करना —कु० ७।३५, वि—, 1 तोड़ना फाड़ना 2. छेद करना, घुसना 3. बाँटना, अलग २ करना 4. उल्लंघन करना 5. बखेरना, तितरबितर करना, सम्—, 1. तोड़ना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, टुकड़े २ होना 2. मिल जाना, संगठित होना, सम्बद्ध होना, मिश्रित होना, मिलाना, एक जगह रखना —अन्योन्यसंभिन्नदृशां सखीनाम् —मा० १।३३, भट्टि० ७।९।

भिदकः [भिद् + क्वुन्] तलवार, —कम् 1. हीरा, 2 इन्द्र का वज्र।

भिदा [भिद् + अङ् + टाप्] 1. तोड़ना, फटना, फाड़ना, चीरना —शि० ६।५ 2. वियोग 3. अन्तर 4. प्रकार, जाति, किस्म।

भिदिः, भिदिरम्, भिदुः [भिद् + इ, किरच् कु वा] इन्द्र का वज्र।

भिदुर (वि०) [भिद् + कुरच्] 1. तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े टुकड़े करने वाला 2. भुरभुरा, शीघ्र टूटने वाला 3. सम्मिश्रित, मिश्रवर्ण, मिला हुआ, संश्लिष्ट —नीलाश्मद्युतिभिदुराम्भसोऽपरत्र —शि० ४।२६, १८।५४, —रः प्लक्ष वृक्ष, —रम् वज्र।

भिद्रः [भिद् + रक्] 1. भेद के बढ़ने वाला शत्रु 2. एक

विशेष मद का नाम—तोयदागम इवोद्ध्यभिद्ययोर्नामधेयसदृशं विचेष्टितम्—रघु० ११।८ (दे० मल्लि०) ।

भिद्रम् [भिद्+रक्] वज्र ।

भिन्दि (दि) पालः [भिन्द्+इन्—भिन्दि पालयति—पाल्+अण्] 1 हाथ से फेंका जाने वाला छोटा भाला 2 गोफिया, (गोफिया या गुलेल जैसा एक उपकरण जिसमें रखकर पत्थर फेंके जायें) ।

भिन्न (भू० क० कृ०) [भिद्+क्त, तस्य नः] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, फाड़ा हुआ 2 विभक्त, वियुक्त 3 पृथक्कृत, विच्छिन्न, अलगाया हुआ 4 फैलाया हुआ, फुलाया हुआ, खुला हुआ 5 अलग, इतर (अपा० के साथ)—तस्मादयं भिन्न 6 नानारूप विविध, 7 ढीला किया हुआ 8 संश्लिष्ट, मिलाया हुआ, मिश्रित 9 विचलित 10 परिवर्तित 11 प्रचण्ड, मदोन्मत्त 12 रहित, हीन, वंचित, (दे० भिद्),—**न्नः** किसी रत्न में दोष या खोट,—**न्नम्** 1 खंड, खण्ड, टुकड़ा 2 मञ्जरी 3 घाव, (छुरे आदि भोंकने का) आघात 4 भिन्न राशि । सम०—**अञ्जनम्** बहुत सी औषधियों को पीसकर तैयार किया गया सुर्मा—प्रयान्ति भिन्नाञ्जनवर्णता घना शि० १२।६८ मेघ० ५९, ऋतु० ३।५, —**अर्थः** स्पष्ट, विशद, सुबोध,—**उदर** 'दूसरी माता से उत्पन्न' सौतेला भाई,—**करटः** मदोन्मत्त हाथी (जिसके मस्तक से मद रिसता है),—**कूट** (वि०) नेतृहीन (सेना आदि),—**क्रम** (वि०) क्रमहीन, क्रमरहित, —**गति** (वि०) 1 पग छोड़ कर चलने वाला, 2 तेज चाल चलने वाला, —**गर्भ** (वि०) (केन्द्र में) टूटा हुआ, अव्यवस्थित, —**गुणनम्** भिन्न राशियों की गुणा, —**घनः** भिन्नराशि का त्रिघात —**दर्शिन्** (वि०) अन्तर देखने वाला, आंशिक —**प्रकार** (वि०) अलग प्रकार या किस्म का —**भाजनम्** टूटा बर्तन, ठीकरा, —**मर्मन्** (वि०) मर्मस्थल में घाव खाया हुआ, प्राणघातक चोट से आहत, —**मर्याद** (वि०) जिसने उचित सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है, निरादरयुक्त,—अपि नामायमभिन्नमर्यादः—उत्तर० ५ 2 असंयत अनियन्त्रित —**रुचि** (वि०) अलग रुचि रखने वाला,—भिन्नरुचिर्हि लोकः रघु० ६।३०,—**लिङ्गम्** —**वचनम्** रचना में लिंग और वचन की असंगति दे० काव्य० १० —**वर्चस्**,—**वर्चस्क** (वि०) मलोत्सर्ग करने वाला, —**वृत्त** (वि०) बुरा जीवन बिताने वाला, परित्यक्त, —**वृत्ति** (वि०) 1 बुरा जीवन बिताने वाला, कुमार्ग का अनुसरण करने वाला 2. अलग प्रकार की भावनाएँ, रुचि या संवेग रखने वाला 3 नाना प्रकार के व्यवसाय करने वाला,—**संहति** (वि०) न जुड़ा हुआ, विघटित,—**स्वर** (वि०) 1. बदली हुई आवाज वाला, हकलाने वाला 2 बेसुरा, —**हृदय** (वि०) जिसका हृदय बींध दिया गया हो रघु० ११।१९ ।

भिरिण्टिका (स्त्री) एक प्रकार का पौधा, श्वेतगुंजा, सफेद घुंघची ।

भिल्लः [भिल्+लक्] एक जंगली जाति । सम०—**गवी** नील गाय, —**तरुः** लोध्रवृक्ष, —**भूषणम्** घुंघची का पौधा ।

भिल्लोटः, —**टकः** [भिल्लप्रियम् उटं पत्रं यस्य ब० स०, भिल्लोट+कन्] लोध्रवृक्ष ।

भिषज् (पुं०) [बिभेत्यस्मात् रोगः भी+षुक् ह्रस्वश्च] 1 वैद्य, चिकित्सक भिषजामसाध्यम् रघु० ८।९३ 2 विष्णु का नाम । सम०—**जितम्** औषधि या दवा —**पाशः** कठवैद्य, —**वरः** श्रेष्ठ वैद्य ।

भिस्सा, भिस्सिटा, भिस्सटा, भिस्सिटा (स्त्री०) भुना हुआ या जला हुआ अनाज ।

भिस्सा (स्त्री०) [भस्+स, टाप्, इत्वम्] उबाले हुए चावल ।

भी (जुहो० पर० बिभेति, भीत) 1 डरना, भय खाना भयभीत होना—मृत्योर्बिभेषि किं बाल न स भीतं विमुञ्चति । रावणाद्बिभ्यती भृशम् भट्टि० ८।७०, शि० ३।४५ 2. आतुर या उत्कण्ठित होना (आ०) प्रेर० (भाययति) डराना, कुञ्चिकयैनं भाययति सिद्धा० (भापयते, भीषयते) डराना, त्रास देना, सशङ्क करना मुण्डो भापयते—सिद्धा० स्तम्भितेन भीषयित्वा धारा-हस्ते परामृशसि—मृच्छ० ५।२८ ।

भी (स्त्री०) [भी+क्विप्] भय, डर, आतंक, त्रास, त्रास, अभीः 'निर्भय'—रघु० १५।८ वधुष्मान् वीतभीर्भीमो दूतो राज्ञ प्रशस्यते—मनु० ७।६४ ।

भीत (भू० क० कृ०) [भी+क्त] 1 सन्त्रस्त डराया हुआ, आतंकित, त्रस्त (अपा० के साथ)—न भीतो मरणादस्मि—मृच्छ० १०।२७ 2 खतरे में डाला हुआ, आपद्ग्रस्त । सम० —**भीत** (वि०) अत्यन्त डरा हुआ ।

भीतङ्कार (वि०) [भीत+कृ+अण्] डराने वाला ।

भीतङ्कारम् (अव्य०) [भीत+कृ+णमुल्] किसी को कायर के नाम से पुकारना ।

भीति (स्त्री०) [भी+क्तिन्] 1 डर, आशंका, भय, त्रास 2 थरकनी थरथराहट । सम०—**नाटितकम्** भयभीत होने का नाट्य करना या हावभाव दिखलाना ।

भीम (वि०) [बिभेत्यस्मात्, भी अपादाने मक्] भयानक, त्रास देने वाला, भयावह, डरावना, भीषण—न जेमिरे भीमविषेण भीतिम्—भर्तृ० २।८०, रघु० १।१६, ३।५४, —**मः** 1. शिव का विशेषण 2. द्वितीय

पाण्डव राजकुमार (यह पवन देव द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था, बचपन से ही यह अपनी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगा, अतः इसका नाम भीम पड़ा। बहुभोजी होने के कारण इसे वृकोदर 'भेड़िये के पेट वाला' भी कहते थे। इसका अचूक शस्त्र इसकी गदा थी। महाभारत के युद्ध में इसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया और युद्ध के अन्तिम दिन अपनी अगाध गदा से दुर्योधन की जंघा को तोड़ दिया। इसके जीवन की कुछ पहली मुख्य घटनाएँ हैं — हिडिंब और बक राक्षस को पछाड़ना, जरासंध को परास्त करना, कौरवों से विशेष कर दुःशासन से (जिसने द्रौपदी के प्रति अपमानजनक आचरण किया) भीषण प्रतिज्ञा, दुःशासन के रक्त को पीकर प्रतिज्ञा की पूर्ति, जयद्रथ को पराजित करना, राजा विराट के यहाँ रसोइये के रूप में कीचक के साथ मल्लयुद्ध, तथा कुछ और कारनामे जिनमें उसने अपनी असाधारण वीरता दिखलाई। इसका नाम अपनी असीम शक्ति व साहस के कारण लोकप्रसिद्ध हो गया)। सम० — **उदरी** उमा का विशेषण, — **कर्मन्** (वि०) भयंकर पराक्रम वाला भग० १।१५, — **दर्शन** डरावनी शक्ल का, विकराल, — **नाद** (वि०) डरावना शब्द करने वाला (दः) 1 भयानक या ऊँची आवाज — शि० १५।१०, 2 सिंह 3 उन सात बादलों में से एक जो सृष्टि के प्रलय के समय प्रकट होंगे, — **पराक्रम** (वि०) भयानक पराक्रम वाला, — **रथी** मनुष्य के सतत्तरवें वर्ष में सातवें महीने की सातवीं रात (यह अत्यन्त संकट का काल कहा जाता है) (सप्तसप्ततिमे वर्षे सप्तमे मासि सप्तमी, रात्रिर्भीमरथी नाम नराणां दुरतिक्रमा।) — **रूप** (वि०) भयानक रूप का, — **विक्रम** (वि०) भयानक विक्रमशील — **विक्रान्त** सिंह, — **विग्रह** (वि०) विशालकाय, डरावनी सूरत का, — **शासन** यम का विशेषण, — **सेनः** 1 द्वितीय पाण्डव राजकुमार 2 एक प्रकार का कपूर।

भीमरम् (नपुं०) युद्ध, लड़ाई।

भीमा [भीम + टाप्] 1 दुर्गा का विशेषण 2 एक प्रकार का गन्धद्रव्य, रोचना 3 कोड़ा।

भीरु (वि०) (स्त्री० — रु, — रू) [भी + क्रु] 1 डरपोक, कायर, भयपूर्ण, — आरप्स्या भीरु हि० २।२६ 2 डरा हुआ (बहुधा समास में) पाप°, अधर्म°, प्रतिज्ञाभंग° आदि, — **रुः** 1 गीदड़ 2 व्याघ्र, — **रु** (नपुं०) चाँदी, — स्त्री० 1 डरपोक स्त्री 2. बकरी 3 छाया 4. कानखजूरा। सम० — **चेतस्** (पुं०) हरिण, — **रन्ध्रः** चूल्हा, भट्टी, — **सत्त्व** (वि०) कायर, डरा हुआ, — **हृदयः** हरिण।

भीरु (रू) क (वि०) [भी + क्रु + कन्, क्लुकन् वा] 1 डरपोक, कायर, बुजदिल, साहसहीन 2 शर्मीला — **कः** 1 रीछ 2 उल्लू 3 एक प्रकार का गन्ना, — **कम्** जंगल, वन।

भीरु (रू) (स्त्री०) [भीरु + ऊङ्, पक्षे ह्रस्वोऽभेदः] डरपोक स्त्री — त्वं रक्षसा भीरु यतोऽपनीता — रघु० १३।२४।

भीलु (लू) क [भी + क्लुकन्] रीछ, भालू।

भीषण (वि०) [भी + णिच् + ल्युट्, षुकागमः] भयानक, विकराल, डरावना, घोर, दारुण — विभ्यति दारुणभीषणाकृत्य — शि० ३।४५, — **णः** (साहित्य में) 1 भयानक रस, दे० भयानक 2 शिव का नाम 3 कबूतर, कपोत — **णम्** भय को उत्तेजित करने वाली कोई भी वस्तु।

भीषा [भी + णिच् + अङ् + टाप्, षुकागमः] 1 त्रास देना या डराने की क्रिया, धमकाना 2 डराना, त्रास देना।

भीषित (वि०) [भी + णिच् + क्त, षुकागमः] डराया हुआ, भयभीत।

भीष्म (वि०) [भी + णिच् + मक्, षुकागमः] भयानक, डरावना, भीषण, कराल, — **ष्मः** (साहित्य में) 1 भयानक रस दे० भयानक 2 राक्षस, पिशाच, दानव, भूत प्रेत 3 शिव का विशेषण 4 शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र (शान्तनु के गंगा से आठ पुत्र हुए, आठवाँ पुत्र यही था, शेष सात पुत्रों के मर जाने के कारण यह आठवाँ पुत्र ही अपने पिता की राजगद्दी का उत्तराधिकारी था। एक बार राजा शन्तनु नदी के किनारे घूम रहे थे तो उनकी दृष्टि सत्यवती नामक एक लावण्यमयी तरुणी कन्या पर पड़ी वह एक मछुवे की बेटी थी। यद्यपि राजा इस समय बूढ़ा हो चुका था फिर भी उसके मन में इसके लिए उत्कट उत्कंठा जागरित हुई, फलतः उसने इस लड़की को प्राप्त करने के लिए कहा। उसके पिता ने यह कहा कि यदि शन्तनु द्वारा हमारी पुत्री के कोई पुत्र हुआ तो राजगद्दी का उत्तराधिकारी होगा, परन्तु शन्तनु के ज्येष्ठ पुत्र विद्यमान होने के कारण ऐसा नहीं हो सकेगा। परन्तु शन्तनु के पुत्र ने अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए उसके सामने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं कभी राजगद्दी पर नहीं बैठूँगा, और न कभी विवाह करूँगा जिससे कि किसी समय भी किसी पुत्र का पिता न बन सकूँ अतः यदि आपकी पुत्री से मेरे पिता का कोई पुत्र होगा तो निश्चित रूप से वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। यह भीषण प्रतिज्ञा शीघ्र ही लोकों में विदित हो गई और तब से लेकर उसका नाम भीष्म पड़ गया। वह आजीवन अविवाहित रहा, और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने

सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया तथा काशिराज की दो कन्याओं के साथ उसका विवाह कराया, एवं अपने पुत्र तथा पौत्रों (कौरव पांडवों) का अभिभावक बना रहा। महाभारत के युद्ध में वह कौरवों की ओर से लड़ा, परन्तु शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने युद्ध में भीष्म को घायल कर दिया, तब उसे 'शरशय्या' पर रक्खा गया। परन्तु अपने पिता से इच्छामृत्यु का वरदान पाने के कारण वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि उत्तरायण में न प्रविष्ट हो, जब सूर्य ने बसन्त विषुव को पार किया तब कहीं उसने अपने प्राण त्यागे। वह अपने संयम, बुद्धिमत्ता, संकल्प की दृढ़ता तथा ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध हो गया)। सम० —जननी गंगा का विशेषण, —पञ्चकम् कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन (यह पाँच दिन भीष्म के लिए पावन माने जाते हैं)। —सूः (स्त्री०) गंगा नदी का विशेषण।

भीष्मकः [भीष्म + कन्] 1. शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र 2. विदर्भ के राजा का नाम, जिसकी पुत्री रुक्मिणी को कृष्ण उठा लाया था।

भुक्त (भू० क० कृ०) [भुज् + क्त] 1 खाया हुआ 2. उपभुक्त, प्रयुक्त 3. भोगा, अनुभव किया 4 अधिकृत किया, (विधि में) अधिकार में लिया—दे० भुज्, —क्तम् 1. उपभोग करने या खाने की क्रिया 2 जो खाया जाय, आहार 3 वह स्थान जहाँ किसी ने खाया है। सम० —उच्छिष्टम्, —शेषः, —समुज्झितम् किये हुए भोजन का अवशिष्ट, जूठन, उच्छिष्ट अंश, —भोग (वि०) 1. जिसने कुछ भोगा है, या आनन्द उठाया है, उपभोक्ता 2. जो प्रयुक्त किया गया है, उपभुक्त, नियुक्त, —सुप्त (वि०) भोजन करके सोया हुआ।

भुक्तिः (स्त्री०) [भुज् + क्तिन्] 1. खाना, उपभोग करना 2. (विधि में) अधिकृत सामग्री, सुखोपभोग पंच० ३।९४, याज्ञ० २।२२ 3. खाना 4. ग्रह की दैनिक गति। सम० —प्रदः एक प्रकार का पौधा, मूंग, —वर्जित (वि०) जिसके उपभोग करने की अनुमति नहीं है।

भुग्न (भू० क० कृ०) [भुज् + क्त, तस्य नः] 1. झुका हुआ, विनत, प्रवण —वायुभुग्न, रुजाभुग्न आदि 2. टेढ़ा, वक्र, —भट्टि० ११।८, विक्रम० ४।३२ 3. टूटा हुआ (भग्न का अर्थ)।

भुज् i (तुदा० पर० भुजति, भुग्न) 1. झुकाना 2. मोड़ना, टेढ़ा करना। ii (रुधा० उभ० भुनक्ति, भुंक्ते) 1. खाना, निगलना, खा पी जाना (आ०)—शयनस्थो न भुंजीत—मनु० ४।७४, ३।१४६, भट्टि० १४।९२, भग० २।५, 2. उपभोग करना, प्रयोग करना, (सम्पत्ति, भूमि आदि को) अधिकार में करना—विक्रम० ३।१, मनु० ८।१४६, याज्ञ० २।२४ 3 शारीरिक उपभोग करना (आ०)—मदयं बुभुजे महाभुजः—रघु० ८।७, ४।७, १५।१, १८।४, सुरूपं वा कुरूपं वा पुमानित्येव भुञ्जते—मनु० ९।१४, 4. हुकूमत करना, शासन करना, प्ररक्षा करना, रखवाली करना (पर०) राज्यं न्यासमिवाभुनक्—रघु० १२।१८, एक: कृत्स्नां (धरित्री) नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति० —श० २।१४, 5. भोगना, सहन करना, अनुभव करना—वृद्धो नरो दुःखशतानि भुङ्क्ते सिद्धा० 6. बिताना, (समय) यापन करना —प्रेर० (भोजयति-ते) खिलाना, भोजन कराना, इच्छा० (बुभुक्षति-ते) खाने की इच्छा करना आदि। अनु— उपभोग करना, (बुरे या भले का) अनुभव करना, (बुरे फल) भुगतना मेघमुक्तविशदां स चन्द्रिकाम् (अन्वभुङ्क्त)—रघु० १९।३९, कु० ७।५, उप—, 1. मजा लेना, चखना —तमाम्रमुपभुज्याना फलानि—कु० ६।१०, 2 शारीरिक रूप से मजे लेना (यथा—स्त्रीसंभोग) 3. खाना या पीना—अधोपभुक्तेन बिसेन कु० ३।३७, पयः पूर्वोपभुक्तं—रघु० २।६५, १।६७, भट्टि० ८।८०, 4 भोगना, सहन करना, झेलना—मनु० १२।८, 5 अधिकार में करना रखना, परि— 1. खाना 2 उपभोग करना, आनन्द लेना—न खलु च परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम्—श० ५।१९, कि० ५।५, ८।५७, सम्— 1. खाना 2. उपभोग करना 3. शारीरिक रूप से मजे लेना।

भुज् (वि०) [भुज् + क्विप्] (समास के अन्त में) खाने वाला, मजे लेने वाला, भोगने वाला, राज्य करने वाला, शासन करने वाला, स्वधाभुज्, हुतभुज्, पाप° क्षिति° मही° आदि, (स्त्री०) 1. उपभोग 2. लाभ, हित।

भुजः [भुज् + क] 1. भुजा—आस्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति—श० १।१३ रघु० १।३४, २।७४, २।५, 2. हाथ 3. हाथी का सूँड 4. झुकाव, वक्र, मोड़ 5. गणितविषयक आकृति का एक पार्श्व, यथा 'त्रिभुज त्रिकोण' 6. त्रिकोण आधार। सम० —अन्तरम्, —अन्तरालम् हृदय, छाती—रघु० ३।५४ १९।३२, मालवि० ५।१०, —आपीडः भुजपाश में जकड़ना, बाहों में लिपटाना, —कोटरः बगल, —ज्या आधार की लम्बरेखा, —दण्डः —बाहुदंड, दंडः, —दलम् हाथ, —बन्धनम् लिपटना, आलिंगन करना—घटय भुजबन्धनम्—गीत० १०, कु० ३।३९, —बलम्—वीर्यम् भुजा की सामर्थ्य, पुट्ठों की ताकत, —मध्यम् छाती —रघु० १३।७३, —मूलम् कंधा, —शिखरम्—शिरस् (नपुं०) कंधा, —सूत्रम् आधार लंबरेखा।

भुजगः [भुजं भजने क, भुज कुटिलीभवन् सन् गच्छति गम्+ड] सांप, सर्प —भुजगाश्लेषसंवीतजानो:—मृच्छ० १।१, मेघ० ६० । सम० —अन्तकः, —अशनः, —आयोजिन् (पुं०), —दारणः, —भोजिन् (पुं०) 1 गरुड 2. मोर 3. और नेवले का विशेषण, —ईश्वरः, —राजः शेष के विशेषण ।

भुजङ्गः [भुजं सन् गच्छति गम्+खच्, मुम् डिच्च] सांप, सर्प —भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्—भर्तृ० २।४ 2. उपपति, रसिया या सौन्दर्यप्रेमी —अभूमिरेषा भुजङ्गभङ्गिभाषितानाम्—का० १९६ 3 पति, प्रभु 4 लौंडा, इल्लती(?) 5 राजा का लम्पट मित्र 6 आश्लेषा नक्षत्र 7 आठ की संख्या । सम० —इन्द्रः नागराज शेषनाग का विशेषण, —ईशः 1 वासुकि का विशेषण 2 शेषनाग का विशेषण 3 पतञ्जलि का विशेषण 4 पिङ्गल मुनि का विशेषण, —कन्या सांप की लड़की, कन्या, —भम् आश्लेषा नक्षत्र, —भुज् (पुं०) 1 गरुड का विशेषण 2 मोर, —लता पान की बेल, ताम्बूली, —हन् (पुं०) गरुड का विशेषण दे० भुजगान्तक आदि ।

भुजङ्गमः [भुज + गम् + खच्, मुम्] 1 सांप 2 राहु का विशेषण 3. आठ की संख्या ।

भुजा [भुज् + टाप्] 1 बाहु, हाथ —निहितभुजा लतयैक(?)... —शि० ७।७१(?) 2 हाथ 3 सांप की कुण्डली 4 चक्कर, घेरा । सम० —कण्टः अंगुली का नाखून, —दलः हाथ, —मध्यः 1 कोहनी 2 छाती, —मूलम् कन्धा ।

भुजिष्यः [भुज्+किष्यन्] 1 दास, नौकर 2 साथी 3 गोखरू, सूत्र जो कलाई पर पहना जाय 4 रोग, —ष्या 1. परिचारिका, सेविका, दासी —अथाङ्गदाश्लिष्टभुजं भुजिष्या —रघु० ६।५३, मृच्छ० ४।८(?), याज्ञ० २।९० 2. वारांगना, वेश्या ।

भुण्ड् (भ्वा० आ० भुण्डते) 1 सहारा देना, स्थापित रखना 2 चुनना, छांटना ।

भुर्भुरिका, भुर्भुरी (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

भुवनम् [भवत्यत्र, भू—आधारादौ—क्युन्] 1 लोक (लोकों की संख्या या तो तीन है—त्रिभुवनम् या चौदह—एकं हि भुवनान्यध्ये ... —भर्तृ० ३।२३ दे० 'लोक' भी, भुवनालोकनप्रीति —कु० २।४५, भुवनविदितम् मेघ० ६ 2 पृथ्वी 3. स्वर्ग 4 प्राणी, जीवधारी जन्तु 5 मनुष्य, मानव 6. पानी 7 चौदह की संख्या । सम० —ईशः पृथ्वी का स्वामी, राजा, —ईश्वरः 1 राजा 2 शिव का नाम, —ओकस् (पुं०) देवता, —त्रयम् त्रिलोकी (भूलोक, अन्तरिक्ष और द्युलोक, या स्वर्गलोक भूलोक और पाताल लोक), —पावनी गंगा का विशेषण, —शासिन् (पुं०) राजा, शासक ।

भुवन्युः [भू + कन्युच्] 1 स्वामी, प्रभु 2. सूर्य 3 अग्नि 4. चन्द्रमा ।

भुवर्, भुवस् (अव्य०) [भू + असुन्] 1 अन्तरिक्ष आकाश (तीनों लोकों में से दूसरा, भूलोक से ठीक ऊपर) 2 रहस्यमय शब्द, तीन व्याहृतियों में से एक (भूर्भुवः स्वः) ।

भुविस् (पुं०) [भू + इसिन्, किन्] समुद्र ।

भुशुण्डिः,—डी (स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्र या अस्त्र ।

भू I (भ्वा० पर०—(कभी आ०)—भवति, भूत 1 होना, घटित होना —कथमेवं ... अस्याः किमभवत् —मा० ९।२९(?) 'उसके भाग्य का क्या हुआ' उत्तर० ३।२७ यद्भावि तद्भवतु, उत्तर० ३, 'होने दो जो कुछ होना है' इसी प्रकार दुःखितो भवति, हृष्टो भवति आदि 2 उत्पन्न होना —यदपत्यं भवेदस्याम् —मनु० ९।१२७, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति —मृच्छ० १।१३ 3 फूटना, निकलना, उदय होना —... —भग० २।६३, १४।१७ 4 घटित होना, उपस्थित होना —नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन —मनु० ८।३५१, यदि समयो भवेत् आदि 5 जीवित रहना, विद्यमान रहना —अभवदभूतपूर्वः राजा चिन्तामणिर्नाम —वास०, अभून्नृपो विबुधसखः परंतपः —भट्टि० १।१ 6 जीवित रहना, जिंदा रहना, सांस लेना —त्वमिदानीं न भविष्यसि —श० ६, आः चारुदत्तहतक अयं न भवसि —मृच्छ० ८, ... न भवसि —मा० ५ (तुम मर चुके हो, अब तुम्हें सांस नहीं आयेगा) भग० ११।३२ 7 किसी भी दशा या अवस्था में रहना, अच्छी या बुरी तरह बीतना —भवान् स्वर्गे कथं भविष्यति —पंच० २ 8 ठहरना, डटे रहना, रहना —उत्तर० ३।१७ 9 सेवा करना, काम आना —इदं पादोदकं भविष्यति —श० १ 10 संभव होना (इस अर्थ में प्रायः लृट् लकार)—भवति भवान् याजयिष्यति —सिद्धा० 11 प्रत्यक्ष करना, प्रकाशन करना, प्रकाशित करना (सम्प्र० के साथ)—वाताय कपिला विद्युत् पीता भवति सस्याय दुर्भिक्षाय सिता भवेत् —महाभा०, ... बभूव —कु० १।२३(?) ... —कि० १८।२७(?), न तस्या ... बभूव —रघु० ६।३४ 12 साथ देना, सहायता करना, देना —अर्जुनोऽभवत् 13 संबन्ध रखना, पास रहना —अस्य ह शतं जाया बभूवुः —ऐत० ब्रा०, मनु० ६।३९ 14 व्यस्त होना, व्याप्त होना (अधि० के साथ)— ... प्रभूत् —महा० 15 पूर्ववर्ती संज्ञा या विशेषण से आगे 'भू' धातु का अर्थ है 'वह होना जो पहले नहीं था' या केवल मात्र 'होना' —श्वेतीभू सफेद होना, कृष्णीभू

काला होना, पयोधरीभू स्तन का काम देना, इसी प्रकार अपवयीभू साधु होना, प्रणिधीभू गुप्तचर का काम करना, आर्द्रीभू पिघलना, भस्मीभू राख बन जाना विषयीभू विषय बनाना, इसी प्रकार एक मतीभू, तरुणीभू आदि विशे०, 'भू' धातु का अर्थ सबद्ध क्रिया विशेषण के अनुसार नाना प्रकार से परिवर्तित होता रहता है उदा० अग्रेभू आगे रहना, नेतृत्व करना अंतर्भू लीन होना, सम्मिलित होना —ओजस्यन्तर्भवत्यन्ये —काव्य० ८ अन्यथाभू और तरह होना, बदलना न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति श० ४, आविर्भू प्रकट होना उदय होना, स्पष्ट होना दे० आविस् तिरोभू ओझल होना दोषाभू सन्ध्या होना, सायंकाल होना पुनर्भू फिर विवाह करना पुरोभू अग्रसर होना, आगे खड़े होना प्रादुर्भू उदय होना, दिखाई देना, प्रकट होना, मिथ्याभू झूठ निकलना, वृथाभू व्यर्थ होना आदि) प्रेर० (भावयति—ते) 1 उत्पन्न करना अस्तित्व में लाना सत्ता बनाना 2. कारण बनना, पैदा करना जन्म देना 3 प्रकट करना, प्रदर्शन करना, निदर्शन करना 4 पालना, परवरिश करना सहारा देना सधारण करना, जान डालना — भूत सृजति वर्धाणि भगवान् भावयन् प्रजा —महा०, देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु व:, परस्पर भावयन्त श्रेय परमवाप्स्यथ भग० ३।११, भट्टि० १६।२७ 5 सोचना, विमर्श करना विचारना, खयाल करना कल्पना करना 6 देखना समझना, मानना अर्थमनर्थं भावय नित्यम् मोह० २ 7 सिद्ध करना, साबित करना, पक्का याज्ञ० २।११ 8 पवित्र करना 9 हासिल करना प्राप्त करना 10 मिलाना, मिश्रण, तैयार करना 11 परिवर्तन करना, रूपान्तरित करना 12 डुबोना,—सराबोर करना। इच्छा०—बुभूषति, होने की या बनने की इच्छा करना, अति,—अतिरिक्त होना आगे बढ़ जाना अधिक हो जाना, अनु—,1 मजे लेना अनुभव करना महसूस करना, भोगना (बुरा या भला) अनुभवसुखमनुभूत— रघु० १।२१ कु० २।४५ रघु० ३।४ आत्मकृतानां हि दोषाणां फलमनुभवितव्यमात्मनैव —का० १२१ श० ५।३ 2 प्रत्यक्ष करना बोध होना समझना 3 जांच करना परीक्षण करना,—प्रेर० —आनन्द मनवाना, अनुभव या महसूस करवाना —आमोदो न हि कस्तूर्या शपथेनानुभाव्यते -भामि० १।१२०, अभि—, 1 विजय प्राप्त करना दमन करना पराजित करना, आगे बढ़ जाना, उत्तम होना —भग० १।३९, कि० १०।२३, रघु० ८।३६ 2 आक्रमण करना, हमला करना -विपदोऽभिभवन्त्यविक्रमम्- कि० २।१४ अभ्यभावि भरताग्रजस्तया—रघु० ११।१६

3 नीचा दिखाना अपमान करना 4 प्रमुख रखना, प्रभाव रखना, व्याप्त होना उद्—उदय होना, उगना उद्भूतध्वनि-, प्रेर० पैदा करना, सृजन करना, जन्म देना रघु० २।६२, परा , 1 हराना, परास्त करना जीत लेना 2 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, सताना, परि 1 हराना दमन करना जीतना, हावी होना (अत) आगे बढ़ जाना पछाड़ देना लग्नद्विरेफ परिभूय पद्मम् मुद्रा० ७।१६ रघु० १०।३५ 2 तुच्छ समझना, उपेक्षा करना, घृणा करना अनादर करना अपमान करना मा मां महात्मन् परिभू भट्टि० ११२२ ४।३७ 3 क्षति पहुंचाना, नष्ट करना, बर्बाद करना 4 कष्ट पहुंचाना, दुःख देना 5 नीचा दिखाना, लज्जित करना प्र , 1 उदय होना निकलना, फूटना जन्म लेना, उपजना पैदा होना (अपा०के साथ,—लोभात्क्रोध प्रभवति हि० १।२७ स्थाय गुणाम्मरीचेर्य प्रभवन्न प्रभापति — श० ७।१९ पुरुष प्रभवृषाम्भोर्विस्मयेन सहर्षिकाम् रघु० १०।५०, मनु० ८।१८ 2 प्रकट होना दिखाई देना हि० ४।८४ 3. घृणा करना बढ़ाना, दे० प्रभुत 4 मजबूत होना शक्तिशाली होना छा जाना, प्रमुख होना बल दिखाना प्रभवति हि महिम्ना स्वेन योगीश्वरीय मा० ९।५२, प्रभवन्ति भगवान् विधि का० ५ 5 योग्य होना समान होना, शक्ति रखना (तुमुन्नन्त के साथ)—कुसुमान्यपि गात्रसङ्गमात् प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि—रघु०८।४४, श० ६।३० विक्रम० १।९ उत्तर० २।८ 6 नियन्त्रण रखना, प्रभाव रखना, छा जाना स्वामी होना (बहुधा संबं० के, कभी २ सप्त० या अधि० के साथ) -यदि प्रभविष्याम्यात्मन —श० १ उत्तर० १, प्रभवति निजस्य कन्यकाजनस्य महाराज —मा० ४ तत्प्रभवति अनुशासने देवी—मेघी० २ 7 जोड़ा का होना प्रभवति मल्लो मल्लाय महाभा० ७ पर्याप्त होना अभीष्ट होना—कु० ६।५९ 9 रक्षा करना (अधि० के साथ)—भूत पहले प्रभवन्नात्मनि—रघु० ३।११ 10 उपयोगी होना 11 मापना करना अनन्य विनय करना वि—(प्रेर०) 1 सोचना विमर्श करना विचारना 2 जानकार होना जानना, प्रत्यक्ष करना देखना— श० ४ 3 फैसला करना निश्चय करना स्पष्ट करना, सम्—, 1 उदय होना, पैदा होना उपजना, फूटना कथमपि भुवनेऽस्मिन्ताद्दृशा सम्भवन्ति —मा० २।९, धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे - भग० ४।८, कि० ५।२२, भट्टि० ६।१३८, मनु० ८।१५५ 2 होना, बनना, विद्यमान होना 3 घटित होना, घटना होना 4 संभव होना, 5 यथेष्ट होना, समान होना ('तुमुन्नन्त' के साथ) —न शक्यते ... सम्भवति ... —कि० १।२७

6. मिलना, एक होना, सम्मिलित होना—संभूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा—शि० २।१००, संभूयेव सुखानि चेतसि—भा० ५।१९ 7. सक्षम होना 8 पकड़ने के योग्य, (प्रेर०) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना 2. कल्पना करना, सोचना, उद्भावन करना, चिन्तन करना 3. अनुमान लगाना, अटकल लगाना—श० २, 4 सोचना, ख्याल करना 5. सम्मान करना, आदर करना, आदर प्रदर्शित करना—प्राप्तोऽसि संभावयितुं वनान्माम्—रघु० ५।११, ७।८ 6 सम्मान करना, उपहार देना, अर्पित करना—कु० ३।३७ 7. मढ़ना, थोपना—मृच्छ० १।३६ ।

ii (भ्वा० उभ० भवति ते) हासिल करना, प्राप्त करना ।

iii (चुरा० आ० भावयते) प्राप्त करना, उपलब्ध करना ।

iv (चुरा० उभ० भावयति—ते) 1. सोचना, विमर्श करना 2. मिलाना, मिश्रित करना 3 पवित्र होना ('भू' के प्रेर० रूप से संबद्ध) ।

भू (वि०) [भू+क्विप्] (समास के अन्त में) होने वाला, विद्यमान, बनने वाला, फूटने वाला, उगने वाला, उपजने वाला, चित्तभू, आत्मभू, कमलभू, चित्तभू आदि—(पुं०) विष्णु का विशेषण ।

भूः (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1 पृथ्वी (विप० अंतरिक्ष या स्वर्ग—दिवं मरुत्वानिव भोक्ष्यते भुवम्—रघु० ३।४, १८।४, मेघ० १८, पतेत्कुम्भनखजाने भुवि सन्ति भूरा 2. जिला, भूखण्ड 3 भूमि, फर्श—प्रासादोपरिभूमय—मृच्छ० १, मणिमयभुवः (प्रासादाः)—मेघ० ६४ 4. भूमि, भूसंपत्ति 5. जगह, स्थान, क्षेत्र, भूखण्ड—ज्ञानभूमि, उपवनभूमि आदि 6. सामग्री, विषय-वस्तु 7. 'एक' की संख्या की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 8. ज्यामिति की आकृति की आधाररेखा 9 (धरती का प्रतिनिधान करने वाली) व्याहृति (तीनों में) व्याहृति या रहस्यमूलक शब्द 'ॐ' जिसका उच्चारण प्रतिदिन संध्या के समय मन्त्रपाठ करते हुए किया जाता है। सम०—अक्षम् सीमा, —आखुः कदम्ब वृक्ष का भेद,—कम्पः भूचाल, —अर्धं धरती का आधा, —कश्यपः कृष्ण के पिता वासुदेव का विशेषण,—काक 1. एक प्रकार का बगुला 2 जलमुर्गी 3 एक प्रकार का कबूतर,—केशः वट-वृक्ष,—केशा राक्षसी, पिशाचिनी, —क्षित् (पुं०) सूअर,—गरम् विशेष प्रकार का जहर, —गर्भः भवभूति का विशेषण,—गृहम्,—गेहम् भूमि के नीचे का कोठा, तहखाना, —गोलः भूमिगोल, भूमंडल—भूगोलमुद्बिभ्रते—गीत० १, °विद्या भूगोल, —घनः काया, शरीर—चक्रम् विषुवरेखा, भूमध्यरेखा —चर (वि०) भूमि पर घूमने वाला या रहने वाला (रः) शिव का विशेषण,—छाया, —छायम् 1. भू छाया, (इसे ही ग्रामीण 'गाहु' कहते हैं) 2. अंधकार—जम्बुः 1 एक जमीन का कीड़ा 2 हाथी, —जम्बुः, —बूः गेहूं —तलम् धरातल, पृथ्वीतल, —तृण (भूस्तृण) एक प्रकार का सुगंधयुक्त घास, —दारः सूअर,—देवः,—सुरः ब्राह्मण, —धनः राजा —धरः 1 पहाड़ 2. शिव का विशेषण 3. कृष्ण का विशेषण 4. 'सात' की संख्या °ईश्वर °राजः हिमालय पहाड़ का विशेषण °जः वृक्ष,—नागः एक प्रकार का धरती का कीड़ा, केंचुआ,—नेतृ (पुं०) प्रभु, शासक, राजा,—पः प्रभु, शासक, राजा,—पतिः 1 राजा, 2. शिव का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण,—पदः वृक्ष,—पदी एक विशिष्ट प्रकार की चमेली,—परिधिः पृथ्वी का घेरा, —पालः राजा, प्रभु—पालनम् प्रभुता आधिपत्य —पुत्रः,—सुतः मंगलग्रह,—पुत्री,—सुता 'धरती की बेटी' सीता का विशेषण,—प्रकंपः भूचाल,—प्रदानम् भूदान,—बिम्बः,—बम् भूलोक, भूमंडल,—भर्तृ (पुं०) राजा प्रभु,—भागः क्षेत्र, स्थान, जगह, —भुज् (पुं०) राजा,—भृत् (पुं०) पहाड़—दशास्ते भूभृतां नाथ प्रमाणीकृत्य जग्राहाविति—कु० १।१, रघु० १७।७८ 2. राजा, प्रभु—निग्रहाय रिपुराज भूभृताम् रघु० ११।८१ 3 विष्णु का विशेषण—मण्डलम् पृथ्वी, भूमण्डल, धरती, —रुह् (पुं०), —रुहः वृक्ष, —लोकः (भूर्लोक) भूमण्डल, —वलयम् भूमण्डल,—वल्लभः राजा, प्रभु, —वृत्तम् भूमध्यरेखा,—शक्रः 'धरती पर इन्द्र', राजा, प्रभु, —शयः विष्णु का विशेषण, —शयम् (पुं०) बमी, दीमक का मिट्टी का टीला,—सुरः ब्राह्मण,—स्पृश् (पुं०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3 वैश्य, —स्वर्गः मेरु पहाड़ का विशेषण,—स्वामिन् (पुं०) भूमिधर, भूमि का स्वामी ।

भूकः,—कम् [भू+कक्] 1. विवर, रन्ध्र, गर्त 2. झरना 3 काल ।

भूकलः [भुवि कलयति—कल्+अच्] अड़ियल घोड़ा ।

भूत (भू० क० कृ०) [भू+क्त] 1 जो हो चुका हो, होने वाला, वर्तमान 2 उत्पन्न, निर्मित 3 वस्तुतः होने वाला, जो वस्तुतः घट चुका हो, यथार्थ 4 ठीक, उचित, सही 5 अतीत गया हुआ 6. उपलब्ध 7. मिश्रित या मिलाया हुआ 8 सदृश, समान दे० 'भू', —तः 1. पुत्र, बच्चा 2 शिव का विशेषण 3 चान्द्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का दिन,—तम् 1. प्राणी (मानव, दिव्य, या अचेतन)—कु० ४।४५, पंच० १।८७ 2. जीवित प्राणी, जन्तु, जीवधारी —भूतेषु किं च करुणां बहुलीकरोति—चारि० १।१२२, उत्तर० ४।६ 3. प्रेत, भूत, पिशाच, दानव 4. तत्त्व (ये पाँच हैं—अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि,

वायु और आकाश)—त वेधा विदधे मूर्त महाभूतसमाधिना रघु० १।२९ 5 वास्तविक घटना, तथ्य, वास्तविकता 6 अतीत, भूतकाल 7 संसार 8 कुशल क्षेम, कल्याण 9 पाँच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम० अनुकम्पा सब प्राणियों के लिए करुणा—भूतानुकम्पा तव चेत् रघु० २।४८, अन्तक मृत्यु का देवता यम अर्थ तथ्य वास्तविक तथ्य यथार्थ स्थिति, सचाई वास्तविकता आर्य कथयामि ते भूतार्थम् श० १ भूतार्थशोभाह्रियमाणनेत्रा कु० ७।१३ क अलाप्स्यत भूतार्थं सर्वो मा नुर्वास्यति मृच्छ० ३।२४ कथनम्, व्याहृति (स्त्री०) तथ्यवर्णन—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुतिः परमेष्ठिनः रघु० १०।३३, आत्मक (वि०) तत्त्वों से युक्त या तत्त्वों से बना हुआ, आत्मन् (पुं०) 1 जीवात्मा (विप० परमात्मा) आत्मा 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 मूलतत्त्व 5 शरीर 6 युद्ध संघर्ष—आदि 1 परमात्मा 2 (सांख्य० में) अहंकार का विशेषण, आर्त (वि०) प्रेताविष्ट आवास्य 1 शरीर 2 शिव का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण आविष्ट (वि०) भूत प्रेतादि से प्रभावित आवेशः भूत या प्रेत का किसी पर सवार होना, —इज्या,—इष्टा भूतों को आहुति देना, इष्टा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, ईशः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण भूतेशस्य भुजंगवल्लिवलयस्रङ्नद्धजूटाजटा मा० १।२ ईश्वरः शिव का विशेषण—रघु० २।४६, उन्माद भूत प्रेतादि के चढ़ने से उत्पन्न पागलपन, — उपसृष्ट — उपहत (वि०) पिशाच से पीड़ित, — ओदनः चावलों की थाली, — कर्तृ कृत् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण कालः 1 बीता हुआ समय (व्या० में) अतीत या भूतकाल, — केशी तुलसी,—क्रान्तिः (स्त्री०) भूत-प्रेत की सवारी, गणः उत्पन्न प्राणियों का समुदाय 2 भूतप्रेत या पिशाचों का समूह कम० १८।४, —ग्रस्त (वि०) जिसपर भूतप्रेत सवार हो गया हो, —ग्रामः 1 जीवित प्राणियों का समूह, समस्त जीव, सृष्टि—उत्तर० ७, मनु० ८।१९ 2 भूतप्रेतों का समूह 3 शरीर, —घ्नः 1 ऊँट 2 लहसुन, (घ्नी) तुलसी — चतुर्दशी कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, — चारिन् (पुं०) शिव का विशेषण, जयः तत्त्वों के ऊपर विजय,—दया सब प्राणियों के प्रति करुणा, प्राणिमात्र पर दया,—धरा, - धात्री —धारिणी पृथ्वी, —नाथ शिव का विशेषण, नायिका दुर्गा का विशेषण,—नाशनः 1 भिलावें का पौधा 2. सरसों 3. कालीमिर्च,—निलयः शरीर,—पतिः 1 शिव का विशेषण—कु० ३।४३, ७४ 2. अग्नि का विशेषण 3 काली तुलसी, —पूर्णिमा आश्विन मास का पूर्णमासी,—पूर्व (वि०) पहले से विद्यमान, पहला भूतपूर्वखरालयम् —उत्तर० २।१७, पूर्वम् (अव्य०) पहले,—प्रकृतिः (स्त्री०) सब प्राणियों का मूल, बलिः=भूतयज्ञ दे० ब्रह्मन् (पुं०) अधम ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मूर्ति पर चढ़ावे से करता है दे० देवल, भर्तृ (पुं०) शिव का विशेषण, भावनः ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण, भाषा - अशिक्षित पिशाचों की भाषा – महेश्वरः शिव का विशेषण, यज्ञः सब प्राणियों को बलि या आहुति देना, दैनिक पाँच यज्ञों में से एक बलिवैश्वदेव, योनिः उत्पन्न प्राणियों का मूलस्रोत राजः शिव का विशेषण वर्गः भूत प्रेतों का समुदाय वासः बहेड़े का वृक्ष, वाहन शिव का विशेषण, विक्रिया 1 अपस्मार, मिरगी 2 भूत या पिशाच की सवारी विज्ञानम्, विद्या पिशाच विज्ञान -वृक्षः विभीतक वृक्ष बहेड़े का पेड़, संसार मर्त्यलोक संचारः भूत पिशाच का आवेश, -संप्लव विश्व का जलप्रलय, या विनाश -सर्गः संसार की सृष्टि, उत्पन्न प्राणियों का समुदाय, सूक्ष्मम् सूक्ष्म तत्त्व, स्थानम् 1 जीवधारी प्राणियों का आवास 2. पिशाचों का वासस्थान, हत्या जीवधारी प्राणियों की हत्या।

भूतमय (वि०) [भूत+मयट्] 1 सब प्राणियों समेत 2 उत्पन्न प्राणियों या मूलतत्त्वों से निर्मित।

भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1 होना, अस्तित्व 2 जन्म उत्पत्ति 3 कुशल-क्षेम कल्याण आनन्द समृद्धि प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् रघु० १।१८, नरपतिकुलभूत्यै २।७४, स पातु वो यस्य ... भगवान मुकुन्द—विक्रमांक० १।२ 4 सफलता अच्छा भाग्य 5 धन-दौलत, सौभाग्य विपत्प्रतीकारपरेण मंगलं निषेव्यते भूतिसमुत्सुकेन वा कु० ५।७६ 6 गौरव, महिमा, विभूति 7 राख—भूतविभूतिरहीन भोगभाजः - कि० १९।७१ (यहाँ 'भूति' शब्द का अर्थ धन भी है), स्फुटोपम भूतिसितेन शंभुना—२।४ 8 रंगीन भारियों से हाथी का शृंगार करना कल्पित... विरचितां भूतिमङ्गे वनस्य मेघ० १९ 9 तपस्या या अभिचार के अनुष्ठान से प्राप्य अतिमानव शक्ति 10 तला हुआ मांस 11 हाथियों का पथ, ति 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 पितृगण का विशेषण। सम०—कर्मन् (नपुं०) कोई भी शुभ कृत्य या उत्सव,—काम (वि०) समृद्धि का इच्छुक (मः) 1 राजमन्त्री 2 बृहस्पति का विशेषण, कालः शुभ या सुखद समय, -कीलः 1 छिद्र, गर्त 1 खाई 3. भूगर्भगृह, तहखाना,—कृत् (पुं०) शिव का विशेषण, गर्भः भवभूति का विशे-

पण, कः शिव का विशेषण, विषासम् धनिष्ठा नक्षत्र, भूषणः शिव का विशेषण,--बाहुनः शिव का विशेषण।

भूतिकम् [भूति+कन्] 1 कपूर 2 चन्दन की लकड़ी 3 औषधि का पौधा, कायफल।

भूमत् (वि०) [भू+मतुप्] भूमिधर—पु० राजा, प्रभु।

भूमन् (पु०) [बहोर्भावः बहु+इमनिच् इलोपे भ्वादेशः] 1 भारी परिमाण, प्राचुर्य, यथेष्टता, बड़ी संख्या —भूम्ना रसानां गहना प्रयोगाः मा० १।४, नभूयंव सुखानि चेतसि पर भूमानमानन्दते ६।९, 2 दौलत नपुं० 1 पृथ्वी 2 प्रदेश, जिला, भूखण्ड 3 प्राणी जन्तु 4 बहुवचनता (संख्या की) आप स्त्रीभूम्नि अमर० नु० पुभूम्न।

भूमय (वि०) (स्त्री -यी) [भू+मयट्] मिट्टी का, मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न।

भूमिः (स्त्री०) [भवन्त्यस्मिन् भूतानि—भू+मि किच्च वा ङीप्] 1 पृथ्वी (विप० स्वर्ग, गगन या पाताल) द्यौर्भूमि-रापो हृदयं यमश्च-पञ्च० १।१८२, रघु० २।७४ 2 मिट्टी, भूमि उत्खातिनी भूमि श० १, कु० १।२४ 3 प्रदेश जिला, देश भू विदर्भभूमिः 4 स्थान, जगह जमीन भूखण्ड प्रमदवनभूमयः—श० ६ अविरथकाभूमि —मे० २२।४१, रघु० १।५२ ३।६१, कु० ३।५८ 5 स्थल स्थिति 6 जमीन भूसम्पत्ति 7 कहानी घर का फर्श यथा 'सप्तभूमिक' प्रासाद में 8 अभिरुचि, हावभाव 9 (नाटक में) किसी पात्र का चरित्र या अभिनय —तु० भूमिका 10 विषय पदार्थ, आधार विश्वासभूमि, स्नेहभूमि आदि 11. दर्जा, विस्तार, सीमा कि० १०।५८ 12 जिह्वा, जबान। सम० अन्तरः पड़ोसी राज्य का राजा, इन्द्रः, —ईश्वरः राजा, प्रभु, कदंबः कदम्ब का एक भेद गुहा भूमि में विवर या गुफा, गृहम् भूगर्भगृह, भौंरा, तहखाना, जम्बुकम् भूधात्र- जः 1 मंगलग्रह 2 नरकासुर का विशेषण 3 मनुष्य 4 भूनिम्ब नाम का पौधा, (जा) सीता का विशेषण, --जीविन् (पु०) वैश्य, -तलम् भूतल, पृथ्वी की सतह - दानम् भूदान,—देवः ब्राह्मण धरः 1 पहाड़ 2 राजा 3. सात की संख्या,—नाथः, पः, पतिः, -पालः, —भुज् (पुं०) राजा प्रभु —रघु० १।४७, —पक्षः तेज घोड़ा, पिशाचम् ताड़ का वृक्ष (जिससे ताड़ी तैयार की जाती है),—पुत्रः मंगलग्रह,—पुरंदरः 1. राजा 2. दिलीप का नाम,—भृत् 1 पहाड़ 2 राजा, —मण्डा एक प्रकार की चमेली,-रक्षकः तेज घोड़ा,—लाभः मृत्यु (शा० मिट्टी में मिल जाना),—लेपनम् गोबर --वर्धनः—नम् मृतक शरीर, शव,— शय (वि०) भूमि पर सोने वाला (यः) जंगली कबूतर,--शयनम्, --शय्या भूमि पर सोना,—सम्भवः—सुतः 1. मंगलग्रह 2 नरकासुर का विशेषण, (—वा—ता) सीता का विशेषण, सन्निवेशः देश का सामान्य दर्शन,—स्पृश् (पु०) 1 मनुष्य 2. मानवजाति 3 वैश्य 4. चोर।

भूमिका [भूमि+कै+क+टाप्] 1 पृथ्वी, जमीन, मिट्टी 2 स्थान, प्रदेश, स्थल (भूका०) 3 कहानी, मकान का 4 पग दर्जा मधुमतीसंज्ञा भूमिका साक्षात्कुर्वतः —योग० या नैयायिकादिभिरात्मा प्रथमभूमिकाया-मवतारितः—सांख्यप्र० 5. लिखने के लिए तख्ता —दे० अक्षरभूमिका 6 नाटक में किसी पात्र का चरित्र या अभिनय —या यस्य युज्यते भूमिका ता खलु तथैव भावेन सर्वे वर्ग्याः पाठिताः, कामन्दक्या प्रथमं भूमिका भाव एवाधीना मा० १, लक्ष्मीभूमि-कायां वर्तमानोर्वशी वारुणीभूमिकायां वर्तमानया मेनकया पृष्टा विक्रम० ३, शि० १।६९ 7 नाटक के पात्र की अभिनय सम्बन्धी पोशाक 8 सजावट 9 किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय।

भूमी [भूमि+ङीष्] पृथ्वी, दे० भूमि। सम० —कदम्बः भूमिकदंब,— पतिः,- भुज् (पु०) राजा,- रुहः (पु०) वृक्ष।

भूयम् (नपुं०) होने की स्थिति—जैसा कि 'ब्रह्मभूयम्' में —दाशरथिभूयम् शि० १४।८१।

भूयशस् (अव्य०) [भूय+शस्] 1 अधिकतर, बहुधा, सामान्यतः, साधारण नियम के रूप में 2 अत्यधिक, बड़े परिमाण में 3. फिर, और आगे।

भूयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [बहु+ईयसुन्, ईलोपे भ्वादेशः] 1 अधिकतर, अपेक्षाकृत संख्या में अधिक या बहुत 2 अधिक बड़ा, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत —कु० ६।१३ 3 अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण 4 बहुत बड़ा या विस्तृत, अधिक, बहुत, असंख्य—भवति च पुन-र्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा—उत्तर० २।४, भद्र भद्र वितर भगवन्भूयसे मङ्गलाय मा० १।३, उत्तर० ३।४, रघु० १७।४१, उत्तर० २।३ 5 सम्पन्न, बहुल - एव-प्रायगुणभूयसी स्वकृतिः—मा० १, अव्य० 1 अधिक, अत्यधिक, अत्यन्त, अधिकतर, बहुत करके 2. और अधिक, फिर, आगे, और फिर, इसके अतिरिक्त, —पादेनमुत्सृज विहङ्गमाद भूयः—विक्रम० ४।१९ रघु० ३।१६, मेघ० १११ 3 बार बार, मुहुर्मुहुः - (इस शब्द का रूप भूयसा जब कि० वि० के रूप में प्रयुक्त होता है तो निम्नांकित अर्थ होते हैं 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, अत्यन्त, अपरिमित, अधि-कांश में—न चारो न च भूयसा मृदुः रघु० ८।८, पदचारेण प्रविष्टः करतलगतयास्य भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2. बहुधा, साधारणतः—भूयसा जीविधर्म एषः—उत्तर० ५)। सम० —दर्शनम् 1. बार बार

देखना 2. बार बार व्यापक दर्शन पर आधारित अनुमान,—भूयस् (अव्य०) पुन पुन, बार बार —भूयोभूय सविपिनमरीरम्ययापर्यटन्तम्—मा० १।१५, —विद्य (वि०) 1 अपेक्षाकृत विद्वान् 2 अत्यन्त विद्वान।

भूयस्त्वम् [भूयस् + त्व] 1 बहुतायत, बहुलता 2 बहुसख्यकता, प्रबलता।

भूयिष्ठ (वि०) [अतिशयेन बहु + इष्ठन् भ्वादेशे युक् च] 1 अत्यत, अत्यत असख्यक या प्रचुर 2 अत्यत महत्त्व पूर्ण, प्रधान, मुख्य 3 बहुत बड़ा या विस्तृत, अत्यधिक, बहुल, बहुत से, असख्य 4 मुख्य रूप से, अत्यत स्वत्वाधित, अत्यत सचरित या युक्त, मुख्यत भरा हुआ या चरित्र से युक्त (समास के अन्त में) अकिञ्चनभूयिष्ठा परिषद् श० १, धूल्यमांसभूयिष्ठ आहारोऽस्यते -श० २, रघु० ४।७० 5 प्राय अधिकतर, लगभग सब (बहुधा 'क्तांत' रूप के पश्चात्)—अयं उदितभूयिष्ठ एव तपन मा० १, निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यम् कु० ३।५२, विक्रम० १।८, —ष्ठम् (अव्य०) 1 अधिकाधिक, अत्यत श० १।३१ 2 अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अधिक से अधिक भूयिष्ठ भव दक्षिणा परिजने श० ४।१७, रघु० ६।४, १३।१४।

भुर् (अव्य०) [भू + रुक्] तीन व्याहृतियों में से एक।

भूरि (वि०) [भू + क्रिन्] 1 बहुत, प्रचुर असख्य, यथेष्ट 2 बड़ा, विस्तृत, (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 इन्द्र का विशेषण (नपु०) सोना (अव्य०) 1 बहुत, अधिक, अत्यधिक नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घना —श० ५।१२ 2 बार बार प्राय मुहुर्मुहु। सम०—गन्धा,—तेजस् (वि०) अतिकान्तियुक्त (पु०) अग्नि, —दक्षिण (वि०) 1 मूल्यवान् उपहार या पुरस्कारों से युक्त 2. पुरस्कार देने में उदार, दानशील,—दानम् उदारता,—धन (वि०) दौलतमद, धनाढ्य,—धामन् (वि०) अतिकीर्ति से युक्त,—प्रयोग (वि०) जिसका बहुत उपयोग हुआ है, सामान्य व्यवहार में आने वाला (शब्द),—प्रेमन् (पु०) चकवा,—भाग: (वि०) धनाढ्य, समृद्धिशाली,—माय: गीदड़ या लोमड़ी, रस गया,—लाभ: बहुत फायदा,—विक्रम (वि०) बड़ा बहादुर, बड़ा योद्धा, —वृष्टि: (स्त्री०) बहुत वारिश, —श्रवस् (पु०) कौरवों के पक्ष से लड़ने वाले एक योद्धा का नाम जिसे सात्यकि ने यमपुर भेजा था।

भूरिज् (स्त्री०) [भू + इजि, पृषो० साधु] पृथ्वी।

भूर्जः [भू + ऊर्ज् + अच्] भोजपत्र का पेड़ भूर्जग्रन्थिः अक्षरविन्यास कि० २, कु० १।७। सम० कण्टकः वर्णसंकर जाति का पुरुष, जाति से बहिष्कृत ब्राह्मण की उसी वर्ण की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—ब्रात्या तु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्जकण्टक मनु० १०।२१, —पत्र भोजपत्र का वृक्ष।

भूमिः (स्त्री०) [भू + मि, नि० उत्वम्] पृथ्वी।

भूष् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—भूषति, भूषयति—ते, भूषित) 1 अलंकृत करना, सजाना, शृंगार करना —भूषि भूषयति भूत वपु - भट्टि० २०।१५ 2 अपने आपको सजाना (आ०) भूषयते कन्या स्वयमेव 3 फैलाना, बखेरना, बिछाना रघु० २।३१, अभि,— अलकृत करना, भूषित करना, सौन्दर्य देना शि० ७।३८, वि , अलकृत करना, सजाना केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषम्- भर्तृ० २।१९, शि० ९।३३, कु० १।२८।

भूषणम् [भूष् + ल्युट्] 1 अलकरण, सजावट 2 अलकार, शृगार, सजावट का सामान क्षीयन्ते खलु भूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम् -भर्तृ० २।१९ रघु० ३।२, १३।५७।

भूषा [भूष् + क + टाप्] 1 सजाना, भूषित करना 2 आभूषण, सजावट जैसा कि 'कर्णभूषा' 3 रत्न।

भूषित (भू० क० कृ०) [भूष् + क्त] सजाया हुआ सुभूषित —मणिना भूषित सर्प किमसौ न भयकर।

भूष्णु (वि०) [भू + स्नु] 1 होने वाला बनने वाला जैसा कि अलभूष्णु 2 धन या समृद्धि की इच्छा करने वाला मनु० ४।१३५।

भृ (भ्वा० जुहो० उभ० भरति ते बिभर्ति—बिभृते भृत कर्मवा० ध्रियते, इच्छा० बिभरिषति या बुभूर्षति)। भरना पेट को न बिभर्ति केवलम्-पच० १।२२ 2 भरना व्याप्त होना पूर्ण होना अभार्षीद् ध्वनिना नाकाम भट्टि० १५।२४ 3 रखना सहारा देना, सभालना, पोषण करना भूर धरित्र्या बिभराम्बभूव रघु० १८।४४ कूर्मो बिभर्ति धरणी खलु पृष्ठकेन चौर० ५०, भट्टि० १७।१६ 4 भधारण करना, दूध पिलाना लालन-पालन करना, प्ररक्षण करना, संभाल रखना, परवरिश करना दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्—हि० १।१५ 5 धारण करना, रखना अधिकार में लेना—तस्याधाभार सलिल शयनीयाम्बुजोम—कि० ७।५७, पिशुनजन खलु बिभर्ति क्षितीन्द्रा—मालवि० १।७४, बालन्यय प्राह बभार बाला —कु० १।३९ इन्दोर्दैन्य त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति —मेघ० ८४, श० २।४ 6 पहनना—बिभ्रज्ज्योत्स्ना मवहलम् श० ७।११, ६।५ विवाहकौतुक ललित विभ्रत एव (तस्य) रघु० ८।१, १०।१० अटाश्च बिभृयाभित्यम्— मनु० ६।६ 7. महसूस करना अनुभव करना, मानना, महन करना (हर्ष या दुःख आदि) भावमुद्धितासहितैर्मुदं जनो नाटकेषु बभार

भोजनं — शि० १४।५०, सवासमविम भक्–भट्टि० १७।१०८, शा० ७।२१ 8 समर्पण करना, प्रदान करना, देना, पैदा करना यौवने सदलङ्कारा शोभा बिभ्रति मुग्धाः मुद्रा० 9 रखना, थामना, धारण करना (स्मृति में) 10 भाड़े पर लेना मनु० ११।६२, याज्ञ० ३।२३५ 11 लाना, ला के जाना, उद्–, धारण करना, सहारा देना, सँभालना–मृणोलमुद्बिभ्रते–गीत० १, सम्–, 1 एकत्र करना, जोड़ना, इकट्ठा रखना –त्यागाय संभृतार्थानाम् रघु० १।७ ५।५ ८।३, भट्टि० ६।८० 2 उत्पन्न करना पैदा करना प्रकाशित करना, सम्पन्न करना –स्मरश्रमसंभृता मुखं स्वेदलवं रघु० ८।५१, कि० ५।४१, मेघ० ११५ 3 सधारण करना पालन-पोषण करना, दूध पिलाना 4 तैयार करना सज्जित करना विक्रम० ५ रघु० १०।५४ 5 देना अर्पित करना, प्रस्तुत करना।

भृकुंश (स) [भ्रुवा कुंश (कुंश् (स) + अच्) भाव प्रकोप इगितज्ञापन यस्य, नि० सम्प्रसारण] स्त्री का वेष धारण करने वाला नट।

भृकुटि ः स्त्री० [भ्रुव कुटि (कुट् + इन्) कौटिल्य नि० सम्प्र०] भौंह। दे० भ्रु (भ्रू) कुटि।

भृम (अव्य०) अग्नि की चटाक आवाज की अभिव्यक्ति करने वाला अनुकरणात्मक (शब्द)।

भृगु [भ्रस्ज् + कु सम्प्र कुत्वम] एक ऋषि जो भृगुवंश का पूर्वपुरुष माना जाता है इस वंश का वर्णन मनु० १।३५ में मिलता है मनु से उत्पन्न दस मूलपुरुषों में से एक (एक बार जब ऋषियों का इस बात पर एक मत न हो सका कि ब्रह्मा विष्णु और शिव में से कौन सा देवता ब्राह्मणों की पूजा का श्रेष्ठ अधिकारी है तो भृगु को इन तीनों देवों के चरित्र का परीक्षण करने के लिए भेजा गया। वह पहले ब्रह्मा के निवास स्थान पर गया और जानबूझ कर प्रणाम नहीं किया इस बात पर ब्रह्मा ने उसे बहुत फटकारा परन्तु क्षमा माँगने पर वह शांत हो गए। उसके पश्चात् वह कैलाश पर्वत पर शिव जी के पास गया तथा पहले की भाँति प्रणामादि के शिष्टाचार का पालन नहीं किया। प्रतिहिंसापरायण शिव क्रुद्ध होकर भृगु को उस समय भस्म कर देना यदि मृदु शब्दों से भृगु ने उन्हें शांत न किया होता। (एक दूसरे वृत्तान्त के अनुसार भृगु का ब्रह्मा ने आदर सत्कार नहीं किया इसलिए भृगु ने शाप दे दिया कि संसार में उसकी आराधना और पूजा नहीं होगी, शिव को भी लिंग बन जाने का अभिशाप दिया क्योंकि जब भृगु शिव के पास गया तो उस समय वह उससे मिल न सका क्योंकि उस समय शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ विराजमान थे, अन्त में वह विष्णु के पास गया और जब उसे सोता हुआ पाया तो उसने विष्णु की छातीपर ठोकर मारी जिससे उसकी आँख खुल गई। क्रोध प्रदर्शन के बजाय उस समय विष्णु ने मृदुता के साथ भृगु से पूछा कि कहीं उनके पैर में चोट तो नहीं लग गई, और यह कहने के साथ ही भृगु का पैर धीरे२ मलने लगा। तब भृगु ने कहा कि यह विष्णु ही सबसे अधिक बलशाली देवता है क्योंकि इसने अपने सबसे शक्तिशाली शस्त्र कृपालुता और उदारता से अपना स्थान सबसे प्रमुख बना लिया है, इसलिए विष्णु ही सब की पूजा का सर्वोत्तम अधिकारी समझा गया) 2 जमदग्नि ऋषि का नाम 3 शुक्र का विशेषण 4 शुक्र ग्रह 5. उत्प्रपात ढलवां चट्टान भृगुपतनकारणमपृच्छम् दश० 6 समतल भूमि, पहाड़ की समतल चोटी 7 कृष्ण का नाम। सम० –उद्वह परशुराम का विशेषण –ज, –तनय शुक्र का विशेषण –नन्दन 1 परशुराम का विशेषण वीरो न यस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽपि उत्तर० ५।३४ 2 शुक्र,–पति परशुराम का विशेषण –भृगुपतियशोवर्त्म यत् क्रौञ्चरन्ध्रम् मेघ० ५७ इसी प्रकार भृगुणां पति –वंश परशुराम से प्रवर्तित वंश –वार शुक्रवार, –शार्दूल, –श्रेष्ठ, –सत्तम परशुराम का विशेषण –सुत –सूनु 1 परशुराम का विशेषण 2 शुक्र का विशेषण।

भृङ्गः [भृ + गन् किच् नुट् च] भौंरा भामि० १।५, रघु० ८।५३ 2 एक प्रकार की भिरें, ततैया 3 एक प्रकार का पक्षी भीम राज 4 लम्पट कामुक, व्यभिचारी, तु० भ्रमर – सोने का कलश,–अभीष्ट, अभ्रक, –वधू भौंरी – भृंगी पुरुष पुरुष स्त्री वाञ्छति नव नवम्। सम०–अभीष्टः आम का पेड़, –आनन्दा यूथिका बेल –आवली भौंरों की पांत मक्खियों का झुण्ड –जम्, 1 अगर 2 अभ्रक (जा) भांग का पौधा,–परिका छोटी इलायची, –राज (पुं०) 1 एक प्रकार की बड़ी मक्खी 2 भंगरा नाम का पौधा –रिटि –रीटि शिव का एक गण (जो बहुत कुरूप कहा जाता है) –रोल एक प्रकार की भिरें, –वल्लभः कदंब वृक्ष का एक भेद।

भृङ्गारः, –रम् [भृङ्ग + ऋ + अण्] 1 सोने का कलश या घट 2 विशेष आकार का कलश, झारी निर्गलत सुरभिमम पूर्णोऽयं भृङ्गारः वेणी० ६ 3 राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला घड़ा –रम् 1 स्वर्ण 2 लौंग।

भृङ्गारिका भृङ्गारी [भृङ्गार + कन् + टाप् ङीष्] झींगुर।

भृङ्गिन् (पुं०) [भृङ्ग + इनि] 1 वट वृक्ष 2 शिव के एक गण का नाम।

भृङ्गिरि (री) टिः [भृङ्ग+रट्+इन्, पृषो० साधु] दे० भृङ्गिरिटि।

भृङ्गेरिटि [भृङ्गे+रिट+इ, अलुक् स०] शिव के एक गण का नाम।

भृज् (भ्वा० आ० भर्जते) भूनना, तलना।

भृंडिका [=भिरिण्टिका, पृषो० साधु] एक प्रकार का पृषणी का पौधा।

भृण्डि (स्त्री०) [?] लहर।

भृत (भू० क० कृ०) [भृ+क्त] 1 धारण किया हुआ 2 सहारा दिया हुआ, सधारित, पालन पोषण किया गया, दूध पिला कर पाला गया 3 अधिकृत, सहित सज्जित 4 परिपूर्ण, भरा हुआ 5 भाड़े पर लिया गया, वैतनिक,—तः भाड़े का नौकर भाड़े का टट्टू वेतनभोगी,—उत्तमस्त्वायुधीयो मो मध्यमस्तु कृषीवल अधमो भारवाही स्यादित्येव त्रिविधो भृत —मिता०।

भृतक (वि०) [भृत भरण वेतनमुपजीवति कन्] मजदूरी पर रक्खा हुआ, वैतनिक —कः भाड़े का नौकर। सम० **अध्यापकः** भाड़े का अध्यापक, **अध्यापित** (वि०) भाड़े के अध्यापक द्वारा शिक्षित (तः) वह विद्यार्थी जो अपने अध्यापक को फीस देकर पढ़ता है (आधुनिक काल का फीस देकर पढ़ने वाला विद्यार्थी) मनु० ३।१५६।

भृति (स्त्री०) [भृ+क्तिन्] 1 धारण करना सभालना सहारा देना 2 सपालन सधारण 3 नेतृत्व करना मार्ग-प्रदर्शन 4. परवरिश सहायता सपोषण 5 आहार 6 मजदूरी, भाड़ा 7 भाड़े के बदले सेवा 8 पूंजी, मूलधन। सम० **अध्यापनम्** वेतन लेकर पढ़ाना (विशेषत वेदाध्ययन), **भुज्** (पु०) वेतनभोगी नौकर, भाड़े का टट्टू —**रूपम्** किसी विशेष काम के लिए पारिश्रमिक के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार।

भृत्य (वि०) [भृ+क्यप् तुक् च] जिसकी परवरिश की जानी चाहिए, पालन-पोषण किये जाने के योग्य —त्यः 1 कोई भी सहायता चाहने वाला व्यक्ति 2 नौकर, आश्रयी, दास 3 राजा का नौकर, राज्य मन्त्री, —त्या पालन-पोषण करना, दूध पिलाना परवरिश करना, देखभाल करना जैसा कि 'कुमारभृत्य' में 2 सधारण, सपोषण 3 जीवित रहने का साधन, आहार 4 मजदूरी 5 सेवा। सम०—जनः 1 सेवक, पराश्रित 2 सेवकजन, —भर्तृ (पुं०) कुल का स्वामी —वर्गः सेवकों का समूह,—वात्सल्यम् नौकरों के प्रति कृपा, —वृत्तिः (स्त्री०) नौकरों का भरण-पोषण मनु० ११।७।

भृत्रिम (वि०) [भृ+क्त्रिमप्] पाला पोसा गया, परवरिश किया गया।

भृमि. [भ्रम्+इ, सप्र०] भवर, जलावर्त।

भृश् (दिवा० पर० भृश्यति) नीचे गिरना, दे० भ्रश्।

भृश (वि०) [भृश्+क] (म० अ० भ्रशीयस्, उ० अ० भ्रशिष्ठ) मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, महान, अत्यधिक, बहुत ज्यादह, —**शम्** (अव्य०) 1 ज्यादह बहुत ज्यादह अत्यत, गहराई के साथ, प्रचण्डता के साथ अत्यधिक, बहुत ही अधिक, बहुत करके —सम-वेक्ष्य कराद था भृशम् कु० ४।२५, रघुभृश यशांसि तेन नाहित रघु० ३।६१, चुकोप तस्मै स भृशम् ३।५६ मनु० ३।१७० ऋतु० १।११ 2 प्राय, बार-बार 3 अपेक्षाकृत अच्छी रीति से। सम० **कोपन** (वि०) अत्यन्त क्रोधी, **दुःखित**, **पीडित** (वि०) अत्यन्त कष्टग्रस्त **सहृष्ट** (वि०) अत्यन्त प्रसन्न।

भृष्ट (भू० क० कृ०) [भ्रस्ज्+क्त] तला हुआ भूना हुआ सका हुआ। सम० **अन्नम्** उबाला हुआ या तला हुआ धान्य अन्न **यवा** (ब० व०) भुने हुए जौ।

भृष्टि (स्त्री०) [भ्रस्ज्+क्तिन्] 1 तलना, भूनना, सकना 2 उजड़ा हुआ बाग या उपवन।

भृ (क्र्या० पर० भृणाति) 1 धारण करना परवरिश करना सहारा देना पालन पोषण करना 2 भर्त्सना 3 कलंकित करना निन्दा करना।

भेक [भी+कन्] मेढक —पद्भ्रे निमग्ने करिणि भेको भवति मूर्धग 2 डरपोक आदमी 3 बादल —की 1 छोटा मेंढक 2 मेंढकी। सम० **भुज्** (पु०) सांप, —**रवः**, —**शब्दः** मेंढकों का टर्राना।

भेड [भी+ड] 1 मेढा भेड़ 2 बेड़ा घन्नई।

भेडू [भेड पृषो० साधु०] मेढा।

भेद [भिद्+घञ्] 1 टूटना टुकड़े टुकड़े होना फाड़ना, (लक्ष्यपर) आघात करना 2 चीरना फाड़ना 3 विभक्त करना, वियुक्त करना 4 बींधना, छिद्रण 5 भग, विदारण 6 बाधा, विघ्न 7 विभाजन, वियोजन 8 छिद्र, गर्त, विवर, दरार 9 चोट, क्षति घाव 10 भिन्नता अन्तर—यथोर्भेदप्रतिपत्तिरस्ति मे—मनु० ३।७७, अगौरवभेदेन —कु० ६।१२, भग० १८।१९, २९ रघु०, काव्य० आदि 11 परिवर्तन, विकार बुद्धिभेदम् भग० ३।२६ 12. फूट, असहमति 13 विवृति, भेद खोलना जैसा कि 'रहस्यभेद' में 14 विश्वासघात, देशद्रोह 15 किस्म, प्रकार —भेदा पद्मनखावयो निधे —अमर० शिरीषपुष्पभेद 16 दैतवाद (राजनय में) शत्रुपक्ष में फूट डालकर उसको जीत कर किसी को ओर करना, शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के चार उपायों में से एक दे० 'उपाय और 'उपायचतुष्टय' 18. पराजय 19 (आयु० में) रेचन विधि, अथवा कोष्ठ साफ करना। सम०—अभेदौ

(द्वि० व०) 1 फूट और मेल, असहमति और सहमति 2 भिन्नता और एकरूपता भेदाभेदज्ञानम् —उन्मुख (वि०) फूटने वाला, खिलने वाला विक्रम० २।७, —कर, —कृत् (वि०) फूट के बीज बोने वाला —दर्शिन्, —दृष्टि, —बुद्धि, (वि०) विश्व को परमात्मा से भिन्न समझने वाला, —प्रत्ययः द्वैतवाद में विश्वास, —वादिन् (पुं०) जो द्वैत सिद्धान्त को मानता है —सह (वि०) 1. जो विभक्त या वियुक्त हो सके 2 कलुषित होने योग्य, दूषणीय, प्रलोभन द्वारा जो फंसाया जा सके।

भेदक (वि०) (स्त्री० —दिका) [भिद् + ण्वुल्] 1 तोड़ने वाला, खण्ड खण्ड करने वाला विभक्त करने वाला, अलग अलग करने वाला 2 बींधने वाला, छिद्र करने वाला 3 नष्ट करने वाला, विनाशक 4 भेद करने वाला, अन्तर करने वाला 5 परिभाषा देने वाला —कः विशेषण या विभेदकारी विशेषता।

भेदनम् [भिद्, भिद् + ल्युट्] 1 टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ना 2 बांटना, अलग अलग करना 3 भेद करना 4 फूट के बीज बोना, मतभेद पैदा करना 5 भेद कर निश्चित करना 6 उघाड़ना, खोलना —नः सूअर।

भेदिन् (वि०) [भिद् + णिनि] फाड़ने वाला, विभक्त करने वाला, भेद करने वाला आदि।

भेदिरम्, भेदुरम् [भिद् + किरच्, कुरच् वा, गुणः] वज्र।

भेद्यम् [भिद् + ण्यत्] विशेष्य संज्ञा। सम० —लिङ्ग (वि०) लिङ्ग द्वारा जो पहचाना जा सके।

भेरः [बिभेत्यस्मात्—भी + रन्] धौंसा, नगाड़ा, बड़ा ढोल।

भेरि, —री (स्त्री०) [भी + क्रिन् बा० गुण भेरि + ङीष्] धौंसा, नगाड़ा (बड़ा ढोल)। भग० १।१३।

भेरुण्ड (वि०) भयानक, भयपूर्ण, डरावना —ण्डः पक्षियों का एक भेद, —ण्डा गर्भाधान, गर्भस्थिति।

भेरुण्डकः [भेरुण्ड + कन्] गीदड़, शृगाल।

भेल (वि०) [भी + रन्, रस्य लः] 1 डरपोक, भीरु 2 मूर्ख, अनजान 3 अस्थिर, चञ्चल 4 लम्बा 5 फुर्तीला, चुस्त, —लः नाव, बेड़ा, किश्ती।

भेलक, —कम् [भेल + कन्] नाव, बेड़ा।

भेष् (भ्वा० उभ०—भेषति —ते) डरना, [illegible] होना, भयभीत होना।

भेषजम् [भेषं रोगभयं जयति —जि + ड तारा०] औषधि, भेषज या दवा [illegible] भेषज- [illegible] १५, [illegible] 2 चिकित्सा का उपाय 3 एक प्रकार का मसाला। सम० —अ (आ) गार, —रम् आगार (औषधविक्रेता) की दुकान, —अङ्गम् कोई चीज जो दवा खाने के बाद ली जाय।

भैक्ष (वि०) (स्त्री० —क्षी) [भिक्षैव तत्समूहो वा —अण्] भिक्षा पर जीवन-निर्वाह करने वाला, —क्षम् 1 मांग, भीख मनु० ६।५५, याज्ञ० ३।४२ 2 जो कुछ भिक्षा में प्राप्त हो, भीख, दान —भैक्षेण वर्तयेन्नित्यम् मनु० २।१८८, ६।५। सम० —अन्नम् भिक्षा में प्राप्त आहार, भिक्षा का अन्न, —आशिन् (वि०) भिक्षा में प्राप्त अन्न को खाने वाला, (पुं०) भिखारी, साधु —आहारः भिखारी, —कालः भीख मांगने का समय, —चरणम्, —चर्यम्, —चर्या भीख मांगने के लिए इधर उधर फिरना, भीख मांगना, भिक्षा एकत्र करना —जीविका, —वृत्तिः (स्त्री०) भिक्षावृत्ति, —भुज् (पुं०) भिखारी, भिखमंगा।

भैक्षवम्, भैक्षुकम् [भिक्षूणां समूहः —अण्] भिखारियों का समूह।

भैक्ष्यम् [भिक्षा + ष्यञ्] मांग कर प्राप्त किया हुआ अन्न, भिक्षा, भीख, दान दे० 'भैक्ष'।

भैम (वि०) (स्त्री० —मी) [भीम + अण्] भीमविषयक, —मी 1 भीम की पुत्री नल की पत्नी दमयन्ती का पितृपरक नाम 2 माघ शुक्ला एकादशी, या उस दिन किया जाने वाला उत्सव।

भैमसेनिः —न्यः [भीमसेन + इञ्, ण्य वा] भीमसेन का पुत्र।

भैरव (वि०) (स्त्री० —वी) [भीरु + अण्] 1 भयानक, डरावना, भीषण भयानक 2 भैरवसम्बन्धी, —वः शिव का (इसके आठ रूप गिनाये गये हैं) एक रूप। —वी 1 दुर्गादेवी का एक रूप 2 हिन्दू-संगीत पद्धति में एक विशेष रागिनी का नाम 3 बारह वर्ष की कन्या या कुमारी जो दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे, —वम् त्रास, भीषणता। सम० —ईशः विष्णु का विशेषण, शिव का विशेषण —तर्जकः, —यातना काशी में जाकर शरीर त्यागने वाले व्यक्तियों की आत्मा को परमात्मा में लीन होने के योग्य बनाने के लिए भैरव द्वारा उनकी विशुद्धि के लिए उनको दी जाने वाली यातना।

भैषजम् [भेषज + अण्] औषधि, दवा, —जः लवा पक्षी, लावक।

भैषज्यम् [भिषजः कर्म भेषज + स्वार्थे वा ष्यञ्] 1 औषधियां देना, चिकित्सा करना 2 दवादारू, औषधि दवाई 3 रोगोपशमशक्ति, नीरोगकारिता।

भैष्मी [भीष्मक + अण् + ङीप्] विदर्भराज भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी का पितृपरक नाम।

भोक्तृ (वि०) [भुज् + तृच्] 1 उपभोक्ता 2 कब्जा करने वाला 3 उपयोग में लाने वाला प्रयोक्ता 4 महसूस करने वाला अनुभव करने वाला भोगने वाला, (पुं०) 1 काबिज, उपभोक्ता, उपयोक्ता 2 पति 3 राजा, शासक 4 प्रेमी।

भोग [भुज् + घञ्] 1 खाना, खा पी जाना 2 सुखोपभोग, आस्वाद 3 स्वामित्व 4. उपयोगिता, उपादेयता 5 हुकूमत करना, शासन, सरकार 6 प्रयोग, (धरोहर आदि का) व्यवहार 7 भोगना, झेलना अनुभव करना 8. प्रतीति, प्रत्यक्षज्ञान 9 स्त्रीसंभोग मैथुन, विषयसुख 10 उपभोग, उपभोग की वस्तु —भोगे रोगभयम् भर्तृ० ३।३५, भग० १।३२ 11 भोजन, दावत, भोज 12 आहार 13 नैवेद्य 14. लाभ, फायदा 15 आय, राजस्व 16 धनसंपत्ति 17 वेश्या को दी गई मजदूरी 18. वक्र घुमाव चक्कर 19. साँप का फैलाया हुआ फन—श्वसदसितभुजङ्गभोगाङ्गदग्रन्थि आदि मा० ५।२३, रघु० १०।७, ११।५९ 20 साँप। सम० –अर्ह (वि०) उपभोज्य (र्हम्) संपत्ति, दौलत –आधिः अनाज, अन्न –आधि बन्धक में रक्खी हुई वस्तु जिसका उपभोग तब तक किया जाय जब तक कि वह छुड़ाई न जाय, –आवली किसी व्यावसायिक प्रशस्तिवाचक द्वारा स्तुतिगान —नग्न स्तुतिव्रतस्तस्य प्रबो भोगावली भवेत् हैम० —आवासः जनानखाना अन्तःपुर –कर (वि०) सुखद या उपभोगप्रद, –गुच्छम् वेश्याओं को दी गई मजदूरी, –गृहम् महिलाकक्ष, अन्तःपुर जनानखाना —तृष्णा सांसारिक उपभोगों की इच्छा —नृगात्मजम् यथाहीवत् पितुराप्नोति न भोगतृष्णया रघु० [illegible] स्वार्थपूर्ण उपभोग मा० २, –देह. भोग शरीर सूक्ष्मशरीर या कारणशरीर जिसके द्वारा व्यक्ति परलोक में अपने पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों का सुखदुःख भोगता है –धर: साँप –पति: राज्यपाल या विषयाधिपति,—पाल: [illegible] –भृतकः भृतक जो केवल जीविका के लिए नौकरी करता है –वस्तु (नपुं०) उपभोग की वस्तु या पदार्थ –सद्मन् (नपुं०) भोगावास दे० –स्थानम् 1 उपभोग का आश्रय शरीर 2 अन्तःपुर।

भोगवत् (वि०) [भोग + मतुप्] 1 सुखद प्रसन्नता देने वाला खुशी देने वाला 2 प्रसन्न समृद्ध 3 फन वाला, मण्डलाकार कुण्डलाकार (पुं०) 1 साँप 2. पहाड़ 3 नृत्य अभिनय, और गायन (स्त्री०—ती) 1 पाताल गंगा का विशेषण 2 नागकन्या 3 पाताल लोक में नाग –पिशाचिकाओं का नगर 4 चान्द्रमास की द्वितीया तिथि की रात।

भोगिकः [भोग + ठन्] साईस, घोड़े का [illegible]

भोगिन् (वि०) [भोग + इनि] 1 खाने वा[illegible] भोक्ता 3 भोगने वाला अनुभव करने [illegible] करने वाला 4. उपभोक्ता स्वामी [illegible] कार अर्थों में (समास के अन्त में प्रयोग) [illegible] 6 [illegible]हार 7 [illegible] में मग्न, विषयवासना[illegible] में

[illegible] पंच० १।६५. (यहाँ इसका अर्थ 'फणा से युक्त' भी है) 8 धनाढ्य सम्पत्तिशाली (पुं०) 1 साँप गजाजिनालम्बि पिनद्धभोगि वा कु० ५। ७८ रघु० २।३२ ४।४८ १०।७, ११।५९ 2 राजा 3 [illegible] 4. नाई 5 गाँव का मुखिया 6 आदरणीय [illegible] जो राजा के अन्तःपुर की स्त्री जो रानी के रूप में अभिषिक्त न हो रखैल उपपत्नी। सम० –इन्द्रः ईश: नाग या वासुकि –कान्तः वायु, हवा –भुज् (पुं०) 1 नवला 2 मोर –वल्लभम् चन्दन।

भोग्य (वि०) [भुज् + ण्यत् कुत्वम्] 1 उपभोग के योग्य या काम में लाने योग्य रघु० ८।१४ पंच० १।१७ 2 भोगने योग्य या सहन करने लायक [illegible] 3 लाभदायक –ग्यम् 1 उपभोग का कोई पदार्थ 2 दौलत सम्पत्ति जायदाद 3 अनाज अन्न –ग्या वेश्या वारांगना।

भोज [भुज् + अच्] 1 मालवा (या धारा) का प्रसिद्ध राजा (ऐसा माना जाता है कि राजा भोज दसवीं शताब्दी के अन्त में या ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में हुए थे। संस्कृत ज्ञान के वह अभिभावक थे। सरस्वतीकंठाभरण आदि कई ग्रंथों का रचयिता समझा जाता है) 2 एक देश का नाम 3 विदर्भ के राजा का [illegible] भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः –रघु० ५।३९ [illegible] (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम। सम० –अधिपः 1 कंस का विशेषण –इन्द्रः भोजों का राजा,–कटम् रुक्मी द्वारा स्थापित एक नगर का नाम –देव:, –राजः राजा भोज दे० (1) ऊपर –पतिः 1 राजा भोज 2 कंस का एक विशेषण।

भोजनम् [भुज् + ल्युट्] 1 खाना, भोजन करना –अजीर्णे भोजनं विषम् 2 आहार 3 भोजन (खाने के लिए [illegible]) देना खिलाना 4 उपयोग करना उपभोग करना 5 उपभोग की सामग्री 6 जिसका उपभोग किया जाय 7 संपत्ति दौलत जायदाद 8 शिव का विशेषण। सम० –अधिकारः खाने का कारबार खाद्य सामग्री का अधीक्षण व रसोइये का पद –आच्छादनम् [illegible], खाना कपड़ा, –काल: [illegible], –त्यागः भोजन करना [illegible] त्याग आहार का त्याग [illegible] –भूमि: (स्त्री०) भोजनशाला खाने का कमरा –विशेषः स्वादिष्ट भोज्य विशिष्ट भोजन –वृत्तिः (स्त्री०) भोजन आहार –व्यग्र (वि०) खाने में व्यस्त [illegible]।

भोजनीय (वि०) [भुज् + अनीयर्] खाद्य सामग्री [illegible] खाद्य आहार।

भोजयितृ (वि०) [भुज् + णिच् + तृच्] जो दूसरों को भोजन कराता खिलाने वाला।

भोज्य (वि०) [भुज् + ण्यत्] 1 जो खाया जा सके

2 उपभोग के योग्य, अधिकार में करने के योग्य 3 भोगने के योग्य, अनुभव करने लायक 4 सभोग सुख के योग्य —ज्यम् 1 आहार, खाना —स्व भोक्ता अहं च भोज्यभूत —पंच० २, कु० २।१५ मनु० ३।२४० 2 खाद्य सामग्री का भंडार, खाद्य पदार्थ 3 स्वादिष्ट भोजन 4 उपभोग। सम० —काल भोजन करने का समय —सम्भव आमरस शरीर का प्राथमिक रस।

भोज्या [भोज्य + टाप्] भोज की एक रानी —रघु० ६।५९ अ० १३।

भोट —एक देश का नाम, (कहते हैं कि 'तिब्बत' का ही यह नाम है)। सम०—अंग 'भूटान' कहलाने वाला प्रदेश।

भोटीय (वि०) [भोट + छ] तिब्बतवासी।

भोभीरा (स्त्री०) मूंगा, विद्रुम।

भोस (अव्य०) [भा + डोस्] संबोधन सूचक अव्यय जिसका अनुवाद होता है 'अरे' 'ओ' 'अहो' 'ओह' 'आह' —भगवन् भो —श० २, (स्वर या सघोष व्यंजन परे होने पर पदान्त विसर्ग का लोप हो जाता है) अयि भो महर्षिपुत्र—श० ७, कभी-कभी इसको दोहराया जाता है भो भो शंकरगृहाधिवासिनो जानपदा —मा० ३ इसके अतिरिक्त 'भो' का प्रयोग शोक तथा 'प्रश्न वाचकता' के लिए भी होता है।

भौजङ्ग (वि०) (स्त्री० —गी) [भुजङ्ग + अण्] सर्पिल, सांप जैसा —गम् आश्लेषा नामक नक्षत्र।

भौट्ट [भोट + अण् पृषो०] तिब्बती तिब्बतवासी।

भौत (वि०) (स्त्री० —ती) [भूतानि प्राणिनोऽधिकृत्य प्रवृत्त तानि देवता वा अस्य अण्] 1 जीवित प्राणियों से संबन्ध रखने वाला 2 मूलभूत, भौतिक 3 पैशाचिक 4 पागल, विक्षिप्त —तः भूतप्रेत व पिशाचों की पूजा करने वाला, देवल, पुजारी —तम् भूत-प्रेतों का समूह।

भौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [भूत+ठक्] 1 जीवित प्राणियों से संबंध रखने वाला —मनु० ३।७४ 2 स्थूल तत्त्वों से निर्मित भौतिक भौतिक —पिंडेष्वनास्था खलु भौतिकेषु —रघु० २।५७ 3 भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला —कः शिव का नाम, —कम् मोती। सम० —मठ विहार, —विद्या जादूगरी अभिचार।

भौम (वि०) (स्त्री०) [भूमि + अण्] 1 पार्थिव 2 पृथ्वी पर होने वाला मिट्टी का बना हुआ लौकिक —भौमो मुनेः स्थानपरिग्रहोऽयम् —रघु० १३।३६ १५।१९ 3 मिट्टी का, मिट्टी से निर्मित 4 मंगल से संबद्ध —मः 1 मंगलग्रह 2 नरकासुर का विशेषण 3 जल 4 प्रकाश सम० —दिनम्, —वारः —वासरः मंगल वार —रत्नम् मूंगा।

भौमन [भुमन् + अण्] देवों के शिल्पी विश्वकर्मा का नाम।

भौमिक (वि०) (स्त्री० —की) } [भूमि + ठक् यत् वा] पार्थिव, लौकिक, पृथ्वी
भौम्य (वि०) }

पर रहने वाला या विद्यमान।

भौरिक [भूरि सुवर्णमधिकरोति – ठक्] राजकीय कोश में सुवर्णाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष।

भौवन दे० भौमन।

भौवादिक (वि०) (स्त्री—की) [भ्वादि+ठक्] भ्वादि अर्थात् भू से आरम्भ होने वाली धातुओं से संबन्ध रखने वाला।

भ्रंश् (भ्वा० आ, दिवा० पर० भ्रंशते, भ्रश्यति, भ्रष्ट (अधिकर० अपा० के साथ) 1. गिरना, टपकना, उलट जाना —हस्ताद्‌भ्रष्टमिदं बिसाभरणम् —श० ३।२६ 2 गिरना विचलित होना अलग छूट जाना —भूपाद्‌भ्रष्टः —हि० ४ रघु० १४।१६ 3 वञ्चित होना —खो देना —भ्रश्येऽसौ धृतेस्तत —भट्टि० १४।७१, पंच २।१०८ ४।३० 4 बच निकलना, भाग जाना —सभायाद् बभ्रंशु केचित् —भट्टि० १४।१०५, १५।५९ 5 क्षीण होना, मुर्झाना, घटना 6 ओझल होना नष्ट होना, अलग होना —कामंदि० १।८ १२ प्रेर० भ्रंशयति—ते। गिराना —पछाड़ देना 2. वञ्चित करना —परि— 1 गिरना टपकना, उलटना फिसलना 2. बहकना, भटकना 3 अलग हो जाना पथभ्रष्ट होना विचलित होना 4 खोना, वञ्चित होना मनु० १०।२० प्र—, 1 गिरना, टपकना फिसलना —प्रभ्रश्यमानाभरणप्रसूनाम्—रघु० १४।५४ 2 खोदेना, वञ्चित होना — प्रभ्रश्यते तेजस —मृच्छ० १।१४ प्रेर० —पछाड़ना नीचे डालना, नीचे गिराना —रघु० १३।३६ वि— 1. गिरना, टपकना 2 बर्बाद होना क्षीण होना 3 गिरना, भटकना, पथभ्रष्ट होना 4 खो देना।

भ्रंशः, —शम् [भ्रंश् भावे घञ्] 1 गिर पड़ना, टपक पड़ना, गिरना, फिसलना, नीचे गिरना—सेतुरप्य न भ्रश्यतो न लोमात्—रघु० १६।७४, कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठ —मेघ० २ 2. क्षीण होना, घटना, ह्रास होना 3 पतन, नाश, बर्बादी, विध्वंस 4. भाग जाना 5 ओझल हो जाना 6 खो जाना, हानि, वञ्चना—स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः —भग० २।६३ इसी प्रकार 'आशिभ्रंश' स्वार्थभ्रंश' 7 भटकने वाला भ्रष्ट हो जाने वाला, विचलित।

भ्रंशथु [भ्रंश् + अथुच्] दे० प्रभ्रंशथु

भ्रंश —) न (वि०) (स्त्री —नी) [भ्रंश् + ल्युट्] 1 नीचे फेंक देने वाला —नम् 1 गिर पड़ने की क्रिया 2 गिरना वञ्चित होना खो देना।

भ्रंशिन (वि०) [भ्रंश् + णिनि] 1 नीचे गिरने वाला, पतनशील 2. जीर्ण होने वाला 3. भटकने वाला, 4 बर्बाद होने वाला, नष्ट होने वाला।

भ्रश् दे० 'भ्रंश'।

भ्रकुंसः [भ्रुवा कुंसो भाषणं यस्य ब० स० अकारादेश] स्त्री की वेशभूषा में नट (नाटक का पात्र)।

भ्रक्ष् (भ्वा० उभ० भ्रक्षति ते) खाना निगलना।

भ्रक्षणम् [भ्रस्ज् + ल्युट्] भूनने की क्रिया, भूनना, सेकना।

भ्रण् (भ्वा० पर० भ्रणति) शब्द करना।

भ्रंशः दे० भृंग।

भ्रम् (भ्वा० दिवा० पर० भ्रमति भ्रम्यति भ्राम्यति भ्रान्त) 1 इधर उधर घूमना, हिलना जुलना मारा मारा फिरना, टहलना, (आल० भी)–भ्रमति भुवने कन्दर्पाज्ञा—मा० १।१४, मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च—३१ (बहुधा स्थान में कर्म) भुवं बभ्राम दश०,–दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस चापलेन—भर्तृ० ३।७७, इसी प्रकार भिक्षां भ्रम् 1 इधर उधर मांगते फिरना 2 मुड़ना चक्कर काटना, घूमना, वर्तुलाकार गति होना– सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने–भर्तृ० २।९५, भ्रमता भ्रमरेण गीत० ३ 3 भटक जाना, भटकाना, इधर-उधर होना विचलित होना 4 डगमगाना, लड़खड़ाना, डावाडोल होना, संदेह की अवस्था में होना, झिझकना मा० ५।२० 5 भूल करना, भूल में ग्रस्त होना गलती पर होना,– आभरणकारस्तु तालव्य इति बभ्राम 6. फुरफुराना, फड़फड़ाना, कांपना, चंचल होना–चक्षुर्भ्राम्यति– पंच० ४।७८ 7 घेरना, प्रेर० (भ्रमयति –ते, भ्रामयति – ते) टहलाना, फिराना, घुमाना चक्कर दिलाना, आवर्तित करना – भ्रमय जलदान् अंभोगर्भान्–मा० ९।४१ 2 भुलाना, भ्रम में डालना गुमराह करना, उलझाना, उद्विग्न करना, झंझट में डालना, चकरा देना, डांवाडोल करना—विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च संमीलयति च उत्तर० १।३५ 3 लहराना, (तलवार) घुमाना, गोलायमान करना —लीलारविन्दं भ्रमयांचकार–रघु० ६।१३ उद् 1 भ्रमण करना इधर उधर घूमना, गड़बड़ा जाना —वायस्यद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्छत्यपि—गीत० ४ 2 भूलना, भूल में पड़ना 3 विक्षुब्ध होना, व्याकुल होना रघु० १२।७८, परि 1 टहलना, घूमना, भ्रमण करना, इधर–उधर हिलना-डुलना —परिभ्रमसि किं वृथा क्वचन चित्त विश्राम्यताम् — भर्तृ० ३।१३७ 2 मंडराना, चक्कर लगाना परिभ्रमन्मूर्धजषट्पदाकुलैः–कि० ५।१४ 3 घूमना, परिक्रमा करना, मुड़ना, 4 घूमना मारा मारा फिरना (कर्म० के साथ) 5 मोड़ना, प्रदक्षिणा करना, वि , 1 घूमना, इधर उधर चक्कर काटना 2. मंडराना, आवर्तित होना, चक्कर खाना 3 उड़ा देना, तितर बितर करना, इधर उधर बखेरना 4. गड़बड़ा जाना, अव्यवस्थित होना, व्याकुल होना, विस्मित होना – भग० ११।१६, (प्रेर०) घबरा देना, उद्विग्न करना प्रभामत्तश्चन्द्रो जगदिदमहो विभ्रमयति काव्य० १०, सम् - 1 घूमना टहलना 2 गलती पर होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, घबड़ा जाना।

भ्रमः [भ्रम् + घञ्] 1 घूमना, टहलना, चहलकदमी करना 2 चक्कर खाना आवर्तित होना, घूम जाना 3 चक्राकार गति परिक्रमा 4 भटकना, विचलित होना 5 भूल गलती अशुद्धि गलतफहमी भ्रान्ति शुक्तौ रजतमिति ज्ञानं भ्रमः 6 गड़बड़ी व्याकुलता उलझन 7 भंवर जलावर्त 8 कुम्हार का चक्र 9 चक्की का पाट 10 खराद 11 घूर्णि 12 फौवारा जल प्रवाह। सम० आकुल (वि०) घबराया हुआ —आसक्त सिकलीगर शस्त्रमार्जक।

भ्रमणम् [भ्रम् + ल्युट्] 1 इधर-उधर घूमना टहलना 2 मुड़ना क्रान्ति 3 विचलन पथभ्रंश 4 कांपना, डगमगाना, चकराना लड़खड़ाना 5 गलती करना 6 घूर्णन, घुमेरी —णी 1 एक प्रकार का खेल 2 जोंक।

भ्रमत् (वि०) [भ्रम् + शतृ] घूमना टहलना आदि। सम० कुटी एक प्रकार का छाता।

भ्रमरः [भ्रम + करन्] 1 मधुमक्खी भौंरा मलिनेऽपि रागपूर्णां विकसितवदनामनल्पजल्पेऽपि त्वयि चपलेऽपि च सरसां भ्रमर कथं वा सरोजिनीं त्यजसि भामि० १।१०० (यहाँ द्वितीय अर्थ भी सुझाया जाता है) 2 प्रेमी सौन्दर्यप्रेमी, लम्पट 3 कुम्हार का चाक –रम् घूर्णन, घुमेरी। सम०– अतिथिः चम्पा का पौधा —अभिलीन (वि०) मक्खियों से लिपटा हुआ रघु० ३।८ —अलकः मस्तक पर की लट, —इष्टः श्योनाक का वृक्ष,—उत्सवा माधवी लता, करण्डकः मक्खियों से भरी हुई पेटी (इसे चोर अपने साथ रखते हैं और जब चोरी करने जाते हैं तो इन मक्खियों को छोड़ देते हैं जिससे कि वह बत्ती बुझा दें) —कीटः भिरों की जाति —प्रियः कदम्ब वृक्ष का एक भेद, — बाधा भौंरे द्वारा सताया जाना–श० १, मण्डलम् मक्खियों (भौंरों) का झुंड।

भ्रमरकः [भ्रमर + कन्] 1 भौंरा 2 जलावर्त, भंवर, —कः, – कम् 1 मस्तक पर लटकने वाली बालों की लट 2 खेलने के लिए गेंद 3 लट्टू।

भ्रमरिका [भ्रमरक + टाप् इत्वम्] सब दिशाओं में घूमने वाली।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम् + इ] 1 आवर्तन, मोड़, चक्राकार गति इधर-उधर घूमना, क्रान्ति—उत्तर० ३।१९, ५।३, मा० ५।२३ 2 कुम्हार का चाक 3 खरादी की खराद 4 भंवर 5 बवंडर 6 गोलाकार सैनिक व्यवस्था 7 भूल, गलती।

भ्रश् दे० **भ्रंश्** ।

भ्राजिमन् (पुं०) [भृशस्य भावः इमनिच्, ऋतो र] प्रचण्डता, अत्यधिकता, उग्रता, उत्कटता ।

भ्रष्ट (वि०) [भ्रश्+क्त] 1 पतित, नीचे पड़ा हुआ 2 गिरा हुआ 3 भटका हुआ, विचलित 4 वियुक्त वञ्चित, निष्कासित, निकाला हुआ—यथा 'भ्रष्टाधिकार' में 5 मुर्झाया हुआ, क्षीण, बर्बाद 6 ओझल, खोया हुआ 7. दुश्चरित्र, दूषितचरित्र । सम० **अधिकार** (वि०) अपनी शक्ति या पद से वञ्चित, पदच्युत, **क्रिय** (वि०) विहित कर्मों को जिसने नहीं किया, **गुद** (वि०) एक प्रकार के गुदरोग से ग्रस्त, **योगः** जो धर्मच्युत हो गया हो ।

भ्रस्ज् (तुदा० उभ० भृज्जति, भृष्ट प्रेर० भर्जयति —ते भ्रज्जयति —ते इच्छा० बिभक्षति बिभर्जिषति, बिभ्रज्जिषति, भूनना, तलना, कड़ाह में सेकना, आग पर भाप भूनना, (आल० से भी) अभ्रज्ज निरूप्य नरेन्द्रशाको रावणमविनयम् —भट्टि० १४।८५ ।

भ्राज् (भ्वा० आ० भ्राजते) चमकना दमकना चमचमाना, जगमगाना —स्फुरदभ्रंजिरे फेणुबंहुधा हरिताक्षता —भट्टि० १४।७८, १५।२४, **वि** जगमग करना, देदीप्यमान होना —विभ्राजसे मकरकेतनमर्चयन्ती —रत्न० १।२१ ।

भ्राजः [भ्राज्+क] सात सूर्यों में से एक, **जम्** एक प्रकार का साम ।

भ्राजक (वि०) (स्त्री०-जिका) [भ्राज्+ण्वुल्] चमकाने वाला, देदीप्यमान, **कम्** पित्त, त्वचा में व्याप्त पित्त ।

भ्राजथुः [भ्राज्+अथुच्] आभा, कान्ति, उज्ज्वलता, सौन्दर्य ।

भ्राजिन् (वि०) [भ्राज्+णिनि] चमकने वाला, जगमगाने वाला ।

भ्राजिष्णु (वि०) [भ्राज्+इष्णुच्] चमकने वाला, देदीप्यमान, उज्ज्वल, दीप्तिकेन्द्र, **ष्णुः** 1 शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण ।

भ्रातृ (पुं०) [भ्राज्+तृच् पृषो०] 1 भाई सहोदर 2. घनिष्ठ मित्र या संबंधी 3 निकटवर्ती रिश्तेदार 4. मित्रवत् संबोधन का चिह्न (प्रिय मित्र,) भ्रातः कष्टमहो —भर्तृ० ३।३७, २।३४, तत्त्वं चिन्तय तदिदं भ्रातः —मोह० । सम० **गन्धि, गन्धिक** (वि०) जिसका भाई केवल नाम के लिए हो, नाम मात्र का भाई, **जः** भतीजा (**जा**) भतीजी— **जाया** (भ्रातृजाया भी) भाई की पत्नी, भाभी, मेघ० १०, **-दत्तम्** बहन के विवाह पर भाई द्वारा बहन को दी गई संपत्ति, **द्वितीया** कार्तिक शुक्ला द्वितीया (इस दिन बहनें अपने भाइयों को अपने घर पर आमंत्रित करती हैं और उनकी खातिर करती हैं, भाई भी इस दिन बहनों को उपहार देते हैं, संभवतः यह दिन इस लिए मनाया जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई को आमंत्रित किया था तु० यमद्वितीया), **पुत्रः** (भ्रातृष्पुत्र) भतीजा, **वधूः** भाई की पत्नी, **श्वशुरः** पति का बड़ा भाई, जेठ,- **हत्या** भाई की हत्या ।

भ्रातृक (वि०) [भ्रातृ+कन्] भाई से संबंध रखने वाला ।

भ्रातृव्य: [भ्रातृ+व्यत्] 1 भाई का बेटा, भतीजा 2 शत्रु, विरोधी ।

भ्रातृवत् (वि०) [भ्रातृ+मतुप्] जिसके एक या अधिक भाई हों ।

भ्रात्रीयः, भ्रात्रेयः [भ्रातृ+छ] भाई का पुत्र, भतीजा ।

भ्रात्रम् [भ्रातृ+अण्] भाईचारा, भ्रातृभाव ।

भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1 इधर उधर घूमा फिरा हुआ 2 मुड़ा हुआ चक्कर खाया हुआ घुमाया हुआ, 3 भूला हुआ कुपथगामी भटका हुआ 4 घबड़ाया हुआ गड़बड़ाया हुआ इधर उधर घूमने फिरने वाला इधर से उधर और उधर से इधर घूमने फिरने वाला, चक्कर काटने वाला **न्तम्** 1 घूमना, इधर उधर फिरना, कः पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं तनचारैः सह —भर्तृ० ३।१८ 2 गलती, भूल ।

भ्रान्तिः (स्त्री०) [भ्रम्+क्तिन्] 1 इधर उधर फिरना, घूमना 2 घूमकर मुड़ना, मटरगश्त करना 3 चक्कर, गोलाकार या चक्राकार घूमना —चक्रभ्रान्तिररान्तरेषु वितनोत्यन्यामिवारावलीम् —विक्रम० १।५ 4 भूल, गलती, भ्रम, व्यामोह, मिथ्याभाव —मिताभिचन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाक विषद्रुमम् उत्तर० १।४६ 5 घबराहट, उद्विग्नता 6 सन्देह, अनिश्चय, शंका । सम० **-कर** (वि०) विक्षोभ करने वाला, भ्रम में डालने वाला, **-नाशनः** शिव का विशेषण, **हर** (वि०) सन्देह या भूल को दूर करने वाला ।

भ्रान्तिमत् (वि०) [भ्रान्ति+मतुप्] 1 घूमने वाला, मुड़ने वाला,—भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम् —मालवि० २।१३ 2. भूल करने वाला, गलती करने वाला, भ्रमयुक्त - पुं० एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की पारस्परिक समानता के कारण एक वस्तु को भूल से अन्य वस्तु समझ लिया जाता है, भ्रान्तिमानन्यसंवित्तत्तुल्यदर्शने —काव्य० १०, उदा० —कपाले मार्जारः पय इति करान् लेढि शशिनः, आदि—विक्रम० ३।२, मा० १।२, भी ।

भ्रामः [भ्रम्+अण्] 1 इधर-उधर घूमना 2 मोह, भूल, गलती ।

भ्रामक (वि०) (स्त्री०—मिका) [भ्रम्+णिच्+ण्वुल्] 1 घुमाने वाला 2 आवर्तित करने वाला 3 उलझाने वाला, धोखा देने वाला —**कः** 1. सूरजमुखी फूल 2 एक प्रकार का चुंबक पत्थर 3. धोखेबाज, बदमाश, ठग 4 गीदड़ ।

भ्रामर (वि०) (स्त्री०—री) [भ्रमरेण संभृतं भ्रमरस्येदं वा अण्] भ्रमर संबंधी,—रः,—रम् एक प्रकार का चुंबक पत्थर —रम् 1. चक्कर काटना, 2. आघूर्णन 3. अपस्मार, मिरगी 4 शहद 5. एक प्रकार का रतिबंध, संभोग का आसन विशेष —री 1. दुर्गा का विशेषण 2. चारों ओर घूमना, प्रदक्षिण करना—दीयतां भ्रामर्यः—कर्पूर० ४, विद्ध० २।

भ्राश् (भ्लाश्) (भ्वा० दिवा० आ० भ्राशते, भ्राश्यते भ्लाशते, भ्लाश्यते) चमकना, दमकना, जगमगाना।

भ्राष्ट्रः, —**ष्ट्रम्** [भ्रस्ज् + ष्ट्रन्, आत्वं अण् वा] कड़ाही —ष्ट्रः 1 प्रकाश 2 अन्तरिक्ष।

भ्राष्ट्रमिन्ध (वि०) [भ्राष्ट्र + इन्ध् + अण्, मुम्] तलने वाला या भूनने वाला, भड़भूजा।

भ्रास् (भ्लास्) दे० 'भ्राश् (भ्लाश्)'।

भ्रु (भ्रू) **कुंसः** (सः) [भ्रुवा कुंसो (सो) भाषणं यस्य ब० स० ह्रस्वो वैकल्पिकः] स्त्री की वेशभूषा में नाटक का पुरुषपात्र।

भ्रुकुटिः —टी [भ्रुवः कुटिः कौटिल्यम्—ष० त०] दे० 'भृकुटि'।

भ्रुड् (तुदा० पर० भ्रुडति) 1 संचय करना, एकत्र करना 2. ढकना।

भ्रू (स्त्री०) [भ्रम् + डू] भौंह, आँख की भौंह —कान्तिभ्रुवोरायतलेखयोर्या—कु० १।४७। सम० —**कुटिः**, —**टी** (स्त्री०) भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता, त्यौरी चढ़ाना, °**बंध**, °**रचना** भ्रूभंग या भ्रूभंगिमा, **भ्रुकुटिं बंध्** या **रच्** भौंहें सिकोड़ना, त्यौरी चढ़ाना —**क्षेपः** भौंहों का सिकोड़ना—भ्रूक्षेपमात्रानुमतप्रवेशाम्—कु० ३।६०, —**जाहम्** भौंह का मूल,—**भङ्गः**, —**भेदः** भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता, त्यौरी—तरङ्गभ्रूभङ्गा क्षुभितविहगश्रेणिरशना विक्रम० ४।२८, सभ्रूभङ्गम् मुखमिव—मेघ० २४, **सभ्रूभङ्गम्** त्यौरी चढ़ा कर, —**भेदिन्** (वि०) त्यौरी चढ़ाये हुए,—**मध्यम्** भौंहों के बीच का स्थान,—**लता** बेल की भांति भौंह, महराबदार या कुटिल भौंह, —**विकारः**, —**विक्रिया**, —**विक्षेपः** भौंहों की सिकुड़न, —**विचेष्टितम्**,—**विभ्रमः** —**विलासः** भौंहों का मोहक संचालन भौंहों की काम केलि, —[illegible] मा० १। २८, मेघ० १६।

भ्रूणः [भ्रूण् + घञ्] 1 गर्भ, कलल 2 (गर्भस्थ) बच्चा, बालक। सम० —**घ्न**, —**हन्** (वि०) भ्रूण हत्या करने वाला, —**हतिः**, —**हत्या** भ्रूण का विनाश, गर्भपात कराना —भ्रूणहत्यां वा एष चरति—नाग० १।६४।

भ्रेज् (भ्वा० आ० भ्रेजते) चमकना।

भ्रेष् (**भ्लेष्**) (भ्वा० उभ०—भ्रेषति —ते, भ्लेषति —ते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2. गिरना, लड़खड़ाना, डगमगाना, फिसलना 3. डरना 4 क्रोध करना।

भ्रेषः [भ्रेष् + घञ्] 1. हिलना-जुलना, गति 2. डगमगाना, लड़खड़ाना, फिसलना 3 विचलित होना, भटकना, पथभ्रष्ट 4. सन्मार्ग से विचलन, अतिक्रमण पाप 2 हानि, वञ्चना।

भ्रौणहत्यम् [भ्रूणहत्या + अण्] गर्भस्थ शिशु का हनन।

भ्लक्ष् दे० भक्ष्।

भ्लाश् दे० भ्राश्।

म

मः [मा + क] 1. काल 2. विष 3 [illegible] 4 चन्द्रमा 5 ब्रह्मा 6. विष्णु 7 शिव 8 यम, —**मम्** 1 जल 2. प्रसन्नता, कल्याण।

मकरः [म + किरं किरति—कृ + अच्—तारा०] 1 एक प्रकार का समुद्री-जन्तु, घड़ियाल, मगरमच्छ, झषाणां मकरश्चास्मि—भग० १०।३१, मकरवक्त्र भर्तृ० ४।४ ('मकर' कामदेव का प्रतीक या **कुलचिह्न** माना जाता है, तु० निम्नांकित समस्त पदों को) 2 मकरराशि 3. मकरव्यूह, सेना का मकराकार स्थिति में क्रमबद्ध करना 4 मकर के आकार का कुण्डल 5. मकर के रूप में हाथों को बांधना 6. कुबेर की नौ निधियों में से एक। सम० —**अङ्कः** 1. कामदेव का विशेषण 2 समुद्र का विशेषण —**अश्वः** वरुण का विशेषण, —**आकरः**, —**आलयः**, —**आवासः** समुद्र, सागर, —**कुण्डलम्** मकर की आकृति का कुण्डल, —**केतनः**, —**केतुः**, —**केतुमत्** (पुं०) कामदेव के विशेषण, —**ध्वजः** 1 कामदेव का विशेषण —तत्प्रसवावधि मकरध्वजजन्मोत्सवादि चौर० ६१ 2 सेना की विशेष व्यूहरचना, —**राशिः** (स्त्री०) मकर राशि, —**संक्रमणम्** सूर्य की मकरराशि में गति, —**सप्तमी** माघशुक्ला सप्तमी।

मकरन्दः [मकरमपि द्यति कामजनकत्वात् दो—अवखण्डने क, पृषो० मुम्—तारा०] 1. फूलों से प्राप्त शहद,

मधु, फूलों का रस- मकरन्दतुन्दिलानाममलिन्दालामय महामान्यः- भामि० १।६, 8 2 एक प्रकार की चमेली 3 कोयल 4. भौंरा 5 एक प्रकार का सुगंधित आम्रवृक्ष, सम् फूलों का केसर।

मकरन्दवत् (वि०) [मकरन्द+मतुप्] मधु से पूर्ण, स्त्री पाटल की बेल या पाटल का फूल।

मकरिन् (पु०) [मकर+इनि] समुद्र का विशेषण।

मकरी [मकर+ङीप्] मादा घड़ियाल। सम०—पत्रम्, —लेखा लक्ष्मी के मुखपर 'मकरी' का चिह्न प्रस्थः एक नगर का नाम।

मकुटम् [मङ्क्+उट, अनुनासिकलोप] ताज-दे० 'मुकुट'।

मकुतिः [मङ्क्+उति पृषो०] शूद्रशासन, राजा की ओर से शूद्रों के लिए आदेश।

मकुरः [मङ्क्+उरच, पृषो०] 1 शीशा, दर्पण 2 बकुल का वृक्ष 3. कली 4 अरब की चमेली 5 कुम्हार के चाक का डंडा।

मकुलः [मङ्क्+उलच्, पृषो०] 1. बकुल का वृक्ष 2 कली।

मकुष्टः, मकुष्टकः [मङ्क्+उ पृषो० नलोप मकु भूमौ स्तकति प्रतिहन्ति—मकु+स्तक्, अच्] एक प्रकार की लोबिया।

मकूष्ठः [मङ्क्+स्था+क] मोठ (लोबिये का एक प्रकार)।

मकूलकः [मङ्क्+ऊलक+कन् पृषो० नलोप] 1. कली 2 दन्ती नामक वृक्ष।

मक्क (भ्वा० आ०—मक्कते) जाना, हिलना-जुलना।

मक्कुलः [मक्क्+उलच्] धूप, गुग्गुल, गंध।

मक्कोलः [मक्क+ओलच्] खड़िया मिट्टी।

मक्ष् (भ्वा० पर० मक्षति) 1 इकट्ठा होना, ढेर लगाना, मिलकर रहना 2 क्रुद्ध होना।

मक्षः [मक्ष्+घञ्] [illegible] सम०—वीर्यः [illegible]।

मक्षि (क्षी) का [मश+स्वुन् [illegible] मधुमक्खी [illegible] [illegible]

मख्, मंख् (भ्वा० पर० मखति, मंखति) [illegible] सरकना।

मखः [मख् संज्ञायां घ] यज्ञ, यज्ञविषयक कृत्य ... अथ अनन्य मगज आजदृत रघु० ५।१६, मनु० ४, ... रघु० ३।३९। सम०—अग्निः, —अनलः यज्ञाग्नि —असुहृद् (पु०) शिव का विशेषण, —क्रिया यज्ञ विषयक कार्य कृत्य,— त्रातृ (पु०) राम का विशेषण, —द्विष् (पु०) पिशाच, राक्षस रघु० ११।२७ —द्वेषिन् (पु०) शिवका विशेषण, —हन् (नपु०) 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण।

मगधः [मगध्+अच, मगं दोषं दधाति वा मग+धा+क] एक देश का नाम, बिहार का दक्षिणी भाग—अस्ति मगधेषु पुष्पपुरी नाम नगरी—दश० अनाथमस्या मगधप्रतिष्ठा—रघु० ६।२१ 2 (ब० व०) बन्दी, भाट,—धाः (ब० व०) 1. मगध देश के निवासी, मागध 2 बड़ी पीपल। सम०—उद्भवा बड़ी पीपल,—पुरी मगध का नगरी,—लिपिः (स्त्री०) मागधी लिपि या लिखावट।

मग्न (भू० क० कृ०) [मस्ज्+क्त] 1 गोता लगाए हुए, डुबकी लगाई हुई 2. मग्नात्मा, डूबा हुआ 3 ... (दे० मस्ज्)।

मघः [मंह्+अच्, पृषो०] 1 विश्व के एक द्वीप या ... का नाम 2 एक देश का नाम 3 एक प्रकार की औषधि 4 सुख 5 मघा नाम का दसवां नक्षत्र, 6 एक प्रकार का फूल।

मघव, मघवन् (पु०) [मघवन्+नु अन्त्यादेश, पृषो०] इन्द्र का नाम।

मघवन् (पु०) [मह पूजायां कनिन् नि० हस्य घ, ...] (कर्तृ० ए० व० मघवा, कर्म० ब० व० मघोनः) 1 इन्द्र का नाम—दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम् रघु० १।२६, ३।४६, कि० ३।४, ३।१ 2 उल्लू, पेचक 3 व्यास का नाम।

मघा [मह्+घ ...] दसवां नक्षत्र पांच तारों का समूह है। सम०—त्रयोदशी माघ कृष्णा त्रयोदशी, —भवः, —भूः शुक्रग्रह।

मङ्क् (भ्वा० आ०—मङ्कते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 सजाना, अलंकृत करना।

मङ्कुरः [मङ्क्+उरच्] दर्पण, शीशा।

मङ्कूरः [मङ्क्+ऊरच्] दावानल, जंगल की आग।

मङ्क्षणम् [illegible]

[illegible]

मङ्क्षु [illegible]

मङ्ग (भ्वा० उभ० मङ्गति-ते) जाना [illegible]

मङ्गः [मङ्ग्+अच्] [illegible] एक भाग।

मङ्गल (वि०) [मङ्ग+अलच्] 1 शुभ, भाग्यशाली, कल्याणकारी, मङ्गलकार्यम्, मङ्गलकार्य में 2. समृद्ध, कल्याणप्रद 3 बहादुर, —लम् 1 शुभत्व, कल्याणकारिता अनेकाना रघूणां च ... माङ्गलमंगलम् उत्तर० ६।४२, रघु० ६।९, १० (ख) प्रसन्नता, सौभाग्य, अच्छी किस्मत, अ

उल्लास पा० १।३, उत्तर० ३।४८ (ग) कुशल क्षेम, कल्याण मंगल—मङ्गल सता किमु न मङ्गलमातनोति भामि० १।१२२ 2 शुभ शकुन, कोई भी शुभ घटना 3 आशीर्वाद नांदी, शुभकामना 4 शुभ या मंगलकारी पदार्थ 5 शुभावसर उत्सव 6 (विवाहादि) शुभ संस्कार 7 कोई पुरानी प्रथा 8 हल्दी ... पतिव्रता स्त्री। सम०—**अक्षता** (ब० व०) आशीर्वाद देते समय ब्राह्मणों के द्वारा ... फेंके जाने वाले चावल, —**अगुरु** (न०) चन्दन का एक भेद, —**अयनम्** आनन्द या समृद्धि का मार्ग, —**अलङ्कृत** (वि०) शुभ अलङ्कारों से अलंकृत कु० ६।८७, —**अष्टकम्** विवाह के अवसर पर दम्पती की मंगलकामना के लिए पढ़े जाने वाले आशीर्वादात्मक मन्त्र श्लोक, —**आचरणम्** [illegible] ... से। किसी भी ग्रन्थ के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली प्रार्थना के रूप में मंगल प्रस्तावना, —**आचार** 1 शुभ ... प्रथा 2 आशीर्वादात्मक नांदी, —**आतोद्यम्** ... के अवसर पर बजाया जाने वाला ढोल, —**आदेशवृत्तिः** भाग्य में विश्वास ... ज्योतिषी, —**आरम्भः** गणेश का विशेषण, —**आलम्भनम्** किसी शुभ वस्तु को स्पर्श करना, —**आलयः**, —**आवासः** देवालय मन्दिर, —**आह्निकम्** मंगलकामना के लिए नित्य अनुष्ठेय धार्मिक कृत्य, —**इच्छु** (वि०) आनन्द या समृद्धि का इच्छुक, —**करणम्** किसी भी कार्य की सफलता के लिए पढ़ी जाने वाली प्रार्थना, —**कारक**,—**कारिन्** (वि०) शुभ मंगलकारी, —**कार्यम्** उत्सव का अवसर, कोई भी मांगलिक कृत्य—कु० ४, —**क्षौमम्** उत्सव के अवसर पर पहना जाने वाला रेशमी वस्त्र—रघु० १२।८, —**ग्रहः** शुभग्रह, —**घटः**,—**पात्रम्** उत्सव के अवसर पर पानी से भरा कलश जो देवों को अर्पित किया जाय, —**छायः** प्लक्ष का वृक्ष, पाकड़ का पेड़, —**तूर्यम्**,—**वाद्यम्** एक वाद्य यन्त्र बिगुल, या ढोल आदि जो उत्सवादिक के शुभ अवसरों पर बजाया जाय—रघु० ३।२०, —**देवता** शुभ या रक्षक देवता, —**पाठकः** भाट, चारण बन्दीजन —आ दुरात्मन् वृथामंगलपाठक शैलूषापसद वेणी० १, —**पुष्पम्** शुभ फूल, —**प्रतिसरः**,—**सूत्रम्** शुभ डोरी, शुभ डोरा जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने गले में तब तक पहनती हैं जब तक उनका पति जीवित है, —अस्त्रे कल्पितमङ्गलप्रतिसरा (मञ्जुना)—मा० ५।१८ 2. तावीज की डोरी, —**प्रद** (वि०) शुभ (दा) हल्दी, —**प्रस्थः** एक पहाड़ का नाम, —**भूषण** वि० शुभ अलंकार अर्थात् जनेऊ या कस्तूरी-तिलक आदि से सुभूषित, —**वचस्** (नपुं०)—**वादः** मंगलात्मक अभिव्यक्ति आशीर्वचन, मंगलाचरण,— **वाद्यम्** दे० 'मंगलतूर्यम्', —**वारः**, —**वासरः** मंगलवार, —**विधिः** उत्सव या कोई शुभकृत्य, —**शब्दः** अभिनन्दन आशीर्वादात्मक अभिव्यक्ति —**सूत्रम्** दे० 'मंगलप्रतिसर', —**स्नानम्** मंगलकामना के लिए किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मङ्गलीय (वि०) [मङ्गल+छ] शुभ सौभाग्यसूचक।

मङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+यत्] 1 शुभ सौभाग्यशाली, किस्मतवाला ... मनु० २।३१ 2 सुखद रुचिकर सुन्दर 3 पवित्र विशुद्ध, पावन उत्तर० ४।१० —**ल्यः** 1 अश्वत्थ वृक्ष 2 नारियल का पेड़ 3 एक प्रकार की दाल, मसूर की दाल, —**ल्या** 1 सुगन्धित चन्दन ... 2 दुर्गा का नाम 3 अगर की लकड़ी 4 एक विशेष सुगंध द्रव्य ... —**ल्यम्** ... 1 ... 2 सोना 3 चन्दन ... 4 सिंदूर 5 दही।

मङ्गल्यक ... एक प्रकार की दाल, मसूर।

मङ्घ (भ्वा० आ० ...) 1 सजाना ... 2 ... चलना 3 ... 4 निन्दा करना 5 आना जल्दी से जाना 6 आरंभ करना ...।

मच् (भ्वा० आ० मचते) 1 दुष्ट होना 2 ठगना धोखा देना 3 शेखी बघारना, घमण्डी या अहङ्कारी होना।

मचर्चिका [मच्+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] ... श्रेष्ठता को प्रकट करने के लिए शब्द के अन्त में लगाया जाने वाला शब्द यथा गोमचर्चिका एक बढ़िया गाय या बैल गु० ...।

मच्छः [मद्+क्विप्=मत्+शो+क] (मत्स्य का भ्रष्ट रूप) मछली।

मज्जन् (पुं०) [मज्ज्+कनिन्] मांस और हड्डियों में रहने वाली मज्जा, पौधे का रस। सम०—**समुद्भवम्** (नपुं०) हड्डी, —**समुद्भवः** वीर्य, शुक्र।

मज्जनम् [मज्ज् भावे ल्युट्] 1 डुबकी लगाना, गोता लगाना पानी में डुबकी, सराबोर होना 2 स्नान करना, नहाना प्रत्ययमज्जनविशेषविविक्तकान्ति रत्न० १।२१, रघु० १६।५७ 3 डूबना 4 मांस और हड्डियों के बीच की मज्जा।

मज्जा [मज्ज्+अच्+टाप्] 1 मांस और हड्डियों के बीच का रस या वसा 2 पौधों का रस। सम० —**रजस्** (नपुं०) 1 एक विशेष नरक 2. गुग्गुल —**रसः** वीर्य, शुक्र,—**सारः** जायफल।

मञ्जूषा दे० मञ्जूषा ।

मञ्च् (भ्वा० आ० मञ्चते) 1 थामना 2 ऊँचा या लम्बा होना 3 जाना, चलना फिरना 4 चमकना 5 अलंकृत करना ।

मञ्चः [मञ्च् + घञ्] 1 शय्या, चारपाई, पलंग, बिस्तरा 2 उभरा हुआ आसन वेदी, सम्मान का आसन राज्यासन सिंहासन—तत्र मञ्चेषु मनोज्ञवेषान् रघु० ६।१ ३।१० 3 मकान, टांड़ (खेत के रखवाले के लिए) 4 व्यासपीठ ऊँचा आसन ।

मञ्चकम् [मञ्च + कन्] 1 शय्या बिस्तरा, पलंग 2 उभरा हुआ आसन या वेदी 3 आग सुरक्षित रखने का स्थान । सम० आश्रय: खटमल खाट में रहने वाला कीड़ा ।

मञ्चिका [मञ्चक + टाप्, इत्वम्] 1 कुर्सी 2 कठौता थाली 3 माची (चार पायों से बना हुआ स्टैण्ड जिसपर बगीचे में भरा सामान रखा जाता है) ।

मञ्जरम् [मञ्ज् + अर] 1 फूलों का गुच्छा 2 मोती 3 तिलक नाम का पौधा ।

मञ्जरि, री (स्त्री०) [मञ्जु + ऋ + इन् शक० पररूपम् पक्षे ङीप्] 1 कोमल अंकुर और निकली महकार मञ्जरी कु० ४।३८ सदृशकान्तिरलक्ष्यत मञ्जरी रघु० ९।४४ १६।५१ इसी प्रकार —स्फुरन्‌कुच कुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी—गीत० १० मुग्ध मुक्ताश्च्यो घन घर्माम्भ कणमञ्जरी—काव्य० २।७१ 2 फूलों का गुच्छा 3 फूल कली 4 फूल का वृन्त 5 समानान्तर रेखा 6 मोती 7 लता 8 तुलसी 9 तिलक का पौधा । सम० चामरम् मञ्जरी की शक्ल का चँवर पंखे जैसी मञ्जरी विक्रम० ४।० नम्र वेतस' का पौधा ।

मञ्जरित (वि०) [मञ्जरा + इतच्] 1 फूलों या बौरों के गुच्छों से युक्त 2 वृत पर लगी हुई कली आदि ।

मञ्जा [मञ्ज् + अच् + टाप्] 1 बकरी 2 बौरों (फूलों) का गुच्छा 3 लता ।

मञ्जिः,— जी [मञ्ज् + इन्, पक्षे ङीप्] 1 फूलों (या बौरों) का गुच्छा 2 लता । सम० फला केले का पौधा ।

मञ्जिका [मञ्ज् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] वेश्या, वारांगना, बाजारू स्त्री, रंडी ।

मञ्जिमन् (पुं०) [मञ्जु + इमनिच्] सौन्दर्य, मनोहरता ।

मञ्जिष्ठा [अतिशयेन मञ्जिमती इष्ठन् मतुपो लोप तारा०] मजीठ । सम० प्रमेहः एक प्रकार का मूत्ररोग,—राग: 1 मजीठ का रंग 2 मजीठ के रंग जैसा आकर्षक और टिकाऊ अर्थात् स्थायी अनुराग ।

मञ्जीरः—रम् [मञ्ज् + ईरन्] नूपुर, पैर का आभूषण शिञ्जानमञ्जुमञ्जीरं प्रविवेश निकेतनम् गीत० ११, या मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम् १ मा० १ — रम् वह खम्भा जिसमें रई की रस्सी लपेटी जाती है ।

मञ्जीलः (पुं०) वह गाँव जिसमें धोबियों का निवास हो ।

मञ्जु (वि०) [मञ्ज् + उन्] प्रिय, सुन्दर, मनोहर मधुर, सुखद रुचिकर, आकर्षक—स्मरसि स्मरमञ्जमञ्जुवञ्जुलस्थितं ते (स्मरामि) उत्तर० ३।४ अयमुदयति मिश्रितः पल्लवस्थाणुपलब्ध मरन्दः मन्दमर्पितमुदो मञ्जुगुञ्जन्ति मञ्जुलाः —भामि० १।७ नन्मञ्जुमञ्जु मिलत्स्तानि तानि—२।५ । सम० केशिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण, गमन (वि०) सुन्दर गति वाला, (ना) 1 हंसिनी 2. राजहंस,—घोष: नेपाल देश का नाम —गिर् (वि०) मधुर स्वर वाला—नाग मञ्जुगिरः शुकाः काव्या० २।९, शुकाः प्यारी राज घोष (वि०) मधुर स्वर बोलने वाला, नाशी 1 सुन्दर स्त्री 2 दुर्गा का विशेषण 3 इन्द्र की पत्नी शची का विशेषण - पाठक तोता प्राण ब्रह्मा का विशेषण भाषिन्, वाच् (वि०) मधुर बोलने वाला गिरमनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक् पञ्जरस्थ —रघु० ५।७४ १०।३९—वक्त्र (वि०) सुन्दर मुख वाला मनोहर स्वन,—स्वर (वि०) मीठे स्वर वाला ।

मञ्जुल (वि०) [मञ्ज् + उ + लच् वा] प्रिय, सुन्दर रुचिकर, मनोहर मधुर सुरीली (आवाज) मृदुति मञ्जुलवञ्जुल सीमनि केलिशयनमनुयातम् गीत० ११ कूजित राजहंसाना वर्धते मदमञ्जुलम्—काव्या० २।३३४ लम् 1 लतामण्डप कुञ्ज, लतागृह 2 निर्झर, कुआँ लः एक प्रकार का जलकुक्कुट ।

मञ्जूषा [मञ्ज + ऊषन् + टाप्] 1 संदूक डब्बा, पेटी, आधार सदायतनरत्नानां मञ्जूषेव मता कुल —भामि० ४।०५, 2 बड़ी टोकरी, पिटारा 3 मजीठ 4 पत्थर ।

मटची, मटती [मट् + अप् = मट + चि + डि + ङीष्, मट् + शप् + ङीष्] ओला ।

मटस्फटि [मट + स्फट + इ] 'घमंड का आरम्भ', आरब्ध अभिमान ।

मटूकम् (नपुं०) छत की मुंडेर ।

मठ् (भ्वा० पर० मठति) 1 रहना, बसना 2. जाना, 3 पीसना ।

मठः, —ठम् [मठन्त्यत्र मठ् घञर्थे क] 1 सन्यासी की कोठरी, साधक की कुटिया 2 विहार, शिक्षालय 3 विद्यामन्दिर महाविद्यालय, ज्ञानपीठ 4 देवालय, मन्दिर 5 बैलगाड़ी —ठी 1 कोठरी 2 मढ़ी, विहार । सम० - आयतनम् विद्यामन्दिर, महाविद्यालय ।

मठर (वि०) [मठ् + अर, ठ अन्तादेश] नशे में चूर, मद्य पीकर मतवाला ।

मठिका [मठ+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] छोटी कोठरी, कुटी, कुटीर।

मड्डुः, मड्डुकः [मस्ज् + डु, मड्डु + कन्] एक प्रकार का ढोल।

मण् (भ्वा० पर० मणति) बजाना, गुनगुनाना।

मणिः (स्त्री० भी, परन्तु विरल प्रयोग) [मण् + इन्, स्त्रीत्वपक्षे वा ङीप्] 1 रत्नजटित आभूषण, रत्न, मूल्यवान् जवाहर—अल्पव्ययशोभाविभवा नृपाणां न जातु मौलौ मणयो वसन्ति भामि० १।७३, मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः —रघु० १।४, ३।१८ 2 आभूषण 3 कोई भी उत्तम वस्तु, तु० रत्न 4 चुम्बक, लोहमणि 5 कलाई 6 अलकलता 7 चिबुक, भगांकुर 8 लिंग का अगला भाग (इन अर्थों में 'मणी' भी लिखा जाता है)। सम० —इन्द्रः, —राजः हीरा, —कण्ठः नीलकण्ठ पक्षी, —कण्ठकः मुर्गा, —कर्णिका, —कर्णी वाराणसी में विद्यमान एक पवित्र कुण्ड, —काचः बाण का वह भाग जहाँ पंख लगा रहता है, —काननम् ग्रीवा, —कारः रत्नजीवी, जौहरी, —तारकः सारस पक्षी, —दर्पणः रत्नजटित शीशा, —द्वीपः 1 अनन्त नाग का फण 2 अमृत सागर में विद्यमान एक काल्पनिक टापू, —धनुः, —धनुस् (नपुं०) इन्द्रधनुष, —पाली जौहरिन, रत्न आभूषणों की देखभाल करने वाली स्त्री, —पुष्पकः सहदेव के शंख का नाम भग० १।१६, —पूरः 1 नाभि 2 रत्नजटित चोली (—रम्) कलिंग देश में विद्यमान एक नगर, —बन्धः 1 कलाई श० ७, 2 रत्नों का बाँधना रघु० १८।२० —बन्धनम् 1 रत्नों का (कलाई में) बाँधना, मणियों की लड़ी 2 कलाई या अंगूठी का वह भाग जहाँ रत्न जड़े जाते हैं श० ६ 3 कलाई श० ३।१, —बीजः, —वीजः अनार का पेड़, —भित्ति (स्त्री०) शेषनाग का महल, —भूः (स्त्री०) रत्नजटित फर्श, —भूमिः (स्त्री०) 1 रत्नों की खान 2 रत्नजटित फर्श, वह फर्श जिसमें रत्न जड़े हों, —मन्थम् सेंधा नमक, —माला 1 रत्नों का हार 2 कान्ति, आभा, सौन्दर्य 3 (कामकेलि में) दाँत से काटे का गोल निशान 4 लक्ष्मी 5 एक छन्द का नाम, —यष्टि (पुं०, स्त्री०) रत्नजटित लकड़ी, रत्नों की लड़ी, —रत्नम् आभूषण, बहुमूल्य गहना, रत्न, जवाहर, —रागः रत्नों का रंग, (—गम्) सिंदूर, —शिला रत्नजटित शिला, —सरः रत्नों का हार, —सूत्रम् मोतियों की लड़ी, —सोपानम् रत्न जटित पौड़ी, जीना, —स्तम्भः रत्नों से जड़ा हुआ खंभा, —हर्म्यम् रत्नजटित या स्फटिक का महल।

मणिकः, —कम् [मणि+कन्] जलकलश, —कः रत्न, जवाहर।

मणितम् [मण् + क्त] एक अस्पष्ट सी सीत्कार जो स्त्री—सम्भोग के समय उच्चरित होती है —शि० १०।७५।

मणिमत् (वि०) [मणि + मतुप्] रत्नजटित (पुं०) 1 सूर्य 2 एक पर्वत का नाम 3 एक तीर्थस्थान का नाम।

मणीचकः [मणी + चक् + अच्] रामचिरैया, —कम् चन्द्रकान्तमणि।

मणीवकम् [मणीव कायति मणी + कै + क] फूल, पुष्प।

मण्ठ् (भ्वा० आ० मण्ठते) 1 प्रबल अभिलाषा करना 2 सस्नेह स्मरण करना, शोक के साथ चिन्तन करना।

मण्ठः [मण्ठ् + अच्] एक प्रकार का पका हुआ मिष्टान्न।

मण्ड् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मण्डति, मण्डयति —ते, मण्डित) 1 अलंकृत करना, सजाना—प्रभवति मण्डयितुं वधूरनङ्गः —कि० १०।५९ भट्टि० १०।२३ 2 हर्ष मनाना।

ii (भ्वा० आ० मण्डते) 1 वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना 2 घेरना, ढकना 3 विभक्त करना, बाँटना।

मण्डः, —ण्डम् [मण्ड् + अच्, मन् + ड तस्य नेत्वम् वा] 1 माड़ा चिकना पदार्थ जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर जम जाता है 2 उबाले हुए चावलों का माँड —नीवारौदनमण्डमुष्णमधुरम् —उत्तर० ४।१ 3 (दूध की) मलाई 4 झाग, फेनक, फफूँदन 5 उफान 6 मांस का माँड 7 रस, सत् 8 सिर, —ण्डः 1 आभूषण, शृंगार 2. मेंढक, 3 एरण्ड का वृक्ष, —ण्डा 1 खींची हुई शराब 2 आँवले का वृक्ष। सम० —उदकम् 1 [illegible] —पः [illegible] मांड पीने वाला [illegible] —हारकः शराब खींचने वाला।

मण्डकः [मण्ड् + कन्] 1 एक प्रकार का [illegible] हुआ मैदा 2 [illegible]

मण्डनम् [मण्ड् + ल्युट्] 1 अलंकृत या सुसज्जित करने की क्रिया, अलंकृत करना [illegible] मण्डनकालहानिः —रघु० १३।१६, [illegible] 2 आभूषण [illegible] —कु० ७।० [illegible] रघु० ८।७१, —नः (मण्डन मिश्र) मीमांसा शास्त्र के एक विद्वान् पंडित जो शास्त्रार्थ में शङ्कराचार्य से हार गये थे।

मण्डपः [मण्ड् भूषां पाति पा + क, मण्ड + कपन् वा] 1 विवाहादि संस्कारों के अवसर पर बनाया गया अस्थायी मण्डप, खुला कमरा, विवाह मण्डप 2 तंबू, मंडवा —रघु० ५।६३ 3 लता कुञ्ज, लतागृह, लतामण्डप

—मंच ७८ 4. किसी देवता का अर्पित किया गया भवन। सम० प्रतिष्ठा देवालय की प्रतिष्ठा।

मण्डपस्थ. [मण्ड् [illegible]] 1. [illegible] 2. [illegible] 3. [illegible] 4 [illegible]

मण्डरी [मण्ड् + अरन् + ङीप्] झिल्ली, झींगुर विशेष।

मण्डल (वि०) [मण्ड् + कलच्] गोल, वृत्ताकार, —लः 1 सैनिकों का गोलाकार [illegible] 2. कुत्ता 3 एक प्रकार का सांप —लम् 1. गोलाकार [illegible] गोलक, चक्र, [illegible], परिधि [illegible] वस्तु [illegible] मण्डलीभूय [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible] 4 परिवेश, सूर्य चन्द्र के इर्द गिर्द [illegible] 5 [illegible] 6 [illegible] [illegible] [illegible] 8. [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] प्रान्त 11 पड़ौस का ज़िला या प्रदेश 12 (राजनीति में) किसी राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ौसियों का वृत्त [illegible] (मण्डलम्) [illegible] (रघु० [illegible] द्वारा उद्धृत कामन्दक के अनुसार राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ौसियों के वृत्त में बारह राजा सम्मिलित हैं: एक तो केन्द्रीय राजा या विजिगीषु, पाँच अग्रवर्ती राज्यों के राजा चार पृष्ठवर्ती राज्यों के राजा, एक मध्यम या अन्तर्वर्ती राजा और एक उदासीन अथवा तटस्थ राजा; [illegible] इन बारह राजाओं की विशेष [illegible] [illegible] [illegible] मल्लि० [illegible] [illegible] [illegible] मल्लि०। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार [illegible] [illegible] [illegible], चार, छः, आठ बारह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विद्वानों के अनुसार वृत्त में केवल तीन ही राजा [illegible] हैं — प्राकृतारि या स्वाभाविक शत्रु (पड़ौसी देश का प्रभु), प्राकृत मित्र या स्वाभाविक [illegible] (केन्द्रीय राजा से मिले हुए दूसरे अन्य राज्यों के [illegible] राज्य हों) और प्राकृतोदासीन या स्वाभाविक तटस्थ (जिसका राज्य स्वाभाविक मित्रराष्ट्र से भी परे हो)। 13. बन्दूक का निशाना लगाते समय विशेष पैंतरा 14. दिव्य विभूतियों का आवाहन करने के लिए एक प्रकार का गुप्त रेखाचित्र या तन्त्र, 15. ऋग्वेद का एक खण्ड (समस्त ऋग्वेद दस मण्डलों या आठ अष्टकों में विभक्त है) 16. एक प्रकार का [illegible] जिसमें गाल चकत्ते पड़ जाते हैं 17. एक प्रकार का [illegible], —ली वृत्त, समूह, संघात (मण्डलीकृ कुण्डलाकार या वृत्ताकार बनाना, लपेटना, मण्डलीभू वृत्त बनाना) सम० —अग्रः झुकी हुई या टेढ़ी तलवार, खड्ग, —अधिपः, अधीशः,—ईशः, ईश्वरः 1 किसी ज़िले या प्रान्त का राज्यपाल या शासक 2. राजा, [illegible] —आवृत्तिः (स्त्री०) गोलाकार गति [illegible] —कार्मुक (वि०) गोलाकार धनुष का धारण करने वाला, —नृत्यम् [illegible] घूमते हुए नाचना, [illegible] —न्यासः [illegible] —पुच्छकः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रान्त का शासक, [illegible] प्रदेश में [illegible] का होना. [illegible]

मण्डलकम् [illegible] 1 वृत्त, 2 [illegible] 3 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मण्डलयति [illegible] गोल या वृत्ताकार बनाना।

मण्डलायित (वि०) [मण्डल [illegible]] गोल, वर्तुल, [illegible] गेंद, [illegible]।

मण्डलित (वि०) [मण्डल [illegible] — मण्डल [illegible]] गोल बना हुआ, [illegible] या गोल बनाया हुआ।

मण्डलिन् (वि०) [मण्डल + इनि] 1 वृत्त बनाने वाला, कुण्डलाकार 2 देश का शासन करने वाला, (पुं०) 1 एक प्रकार का सांप 2 [illegible] सर्प 3 बिलाव 4 [illegible] 5. कुत्ता 6 सूर्य, 7. वटवृक्ष 8. किसी प्रान्त का [illegible]।

मण्डित (वि०) [मण्ड् + क्त] अलंकृत, भूषित।

मण्डूक: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (उकञ्)] मेंढक— [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] सर्प [illegible], सुभा०, —कम् [illegible] का एक प्रकार, [illegible] —की 1 मेंढकी 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 [illegible] पौधों के नाम। सम० —अनुवृत्ति, —प्लुतिः (स्त्री०) मेंढकों की उछल कूद बीच बीच में छोड़ देना, बीच में छोड़कर आगे चलता जाना (व्याकरण में यह शब्द कुछ सूत्र छोड़ कर उनके पूर्ववर्ती सूत्र से आपूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है) —क्रिया ग्रहण सम्बन्ध [illegible] तुल्यानुवर्तन—सिद्धा०—कुलम् मेंढकों का समूह, —योग ध्यान-समाधि का एक प्रकार जिसमें साधक मेंढक की भांति निश्चल होकर समाधिस्थ होता है, —सरस् (नपुं०) मेंढकों से भरा हुआ सरोवर।

मण्डूरम् [मण्ड् + ऊरच्] लोहे का जंग, लोहे का मैल (यह पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है)।

मत (भू० क० कृ०) [मन्+क्त] 1 चिंतित, विश्वसित, कल्पित 2 सोचा हुआ, माना हुआ, खयाल किया हुआ, समझा हुआ 3. मूल्यवान् माना हुआ, सम्मानित, प्रतिष्ठित—रघु० २।१६, ८।८ 4 प्रशंसित, मूल्यवान् 5 अटकल लगाया हुआ, अनुमान लगाया हुआ 6 मनन किया हुआ, चिन्तन किया हुआ, प्रत्यक्ष किया गया, पहचाना गया 7 सोचा गया 8 अभिप्रेत उद्दिष्ट 9 अनुमोदित स्वीकृत (दे० मन्), **तम्** चिन्तन, विचार, सम्मति विश्वास, पर्यवेक्षण—निश्चितमतमुत्तमम् भग० १८।६ केषाञ्चिन्मतेन-आदि 2 सिद्धान्त, उसूल, पन्थ धर्ममत विश्वास—ये मे मतमिद नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः—भग० ३।३१ 3 उपदेश, अनुदेश, सलाह 4. उद्देश्य, योजना, अभिप्राय प्रयोजन 5 समनुमोदन, स्वीकृति प्रशंसा। सम० —**अक्ष** (वि०) पासे के खेल में प्रवीण **अन्तरम्** 1. भिन्न दृष्टि 2 भिन्न पन्थ,—**अवलम्बनम्** विशेष प्रकार की सम्मति रखना।

मतङ्गः [माद्यति अनेन—मद्+अङ्गच् दस्य तः तारा०] 1 हाथी 2 बादल 3 एक ऋषि का नाम—रघु० ५।३३।

मतङ्गजः [मतङ्ग+जन्+ड] हाथी न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गजः मालवि० ३ कि० ५।४७, रघु० १२।७३।

मतल्लिका [मत मतिम् अलति भूषयति मत+अल्+क्वुन् पृषो० साधु] सर्वोत्तमता, सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए इस शब्द को संज्ञाओं के अन्त में जोड़ दिया जाता है, गोमतल्लिका 'श्रेष्ठ गौ' तु० उद्ध।

मतल्ली दे० मतल्लिका।

मतिः (स्त्री०) [मन्+क्तिन्] 1 बुद्धि, समझदारी, भाव, ज्ञान, संकल्प मतिरेव बलाद्गरीयसी हि० २।८६, अल्पविषया मतिः—रघु० १।२ 2. मन, हृदय —मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात्—भामि० ४।२९, इसी प्रकार दुर्मति, सुमति 3. सोचना, विचार, विश्वास, सम्मति, भाव कल्पना, संस्कार पर्यवेक्षण —विविरहो बलवानिति मे मतिः—भर्तृ० २।९१, भग० १८।७८ 4 अभिप्राय, योजना प्रयोजन दे० मत्या 5 प्रस्ताव निर्धारण 6 सम्मान, प्रतिष्ठा, आदर कि० १०।९ 7. अभिलाष, इच्छा, कामना—प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव रघु० ८।९४ 8 सलाह, परामर्श 9 याद, प्रत्यास्मरण (मतिकृ, धा, आधा, मन लगाना, निश्चय करना, सोचना, मत्या (क्रि० वि०) 1. जानबूझकर, साभिप्राय, स्वेच्छा से मत्या भुक्त्वाचरेत् कृच्छ्रम्—मनु० ४।२२२, ५।१९ 2 इस विचार से कि (व्याख्यातया पचायते)। सम० —**ईश्वरः** विश्वकर्मा का विशेषण, —**गर्भ** (वि०) प्रज्ञावान्, बुद्धिमान्, चतुर,—**द्वैधम्** मतविभिन्नता, —**निश्चयः** निश्चित विश्वास, दृढ़ विश्वास,—**पूर्व** (वि०) साभिप्राय, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ, **पूर्वम्**, **पूर्वकम्** (अव्य०) सप्रयोजन, साभिप्राय, स्वेच्छा से, खुशी से,—**प्रकर्षः** बुद्धि की श्रेष्ठता, चतुराई,—**भेदः** विचारभिन्नता,—**भ्रमः**, विपर्यासः 1 व्यामोह, मानसिक भ्रम, मन की भ्रान्ति—श० ६।९ 2. त्रुटि, गलती, भूल गलतफहमी, **विभ्रमः**, **विभ्रंशः** मन की अव्यवस्था या दीवानापन, पागलपन उन्माद, **शालिन्** (वि०) बुद्धिमान् चतुर, **हीन** (वि०) मूर्ख अज्ञानी, मूढ़।

मत्क (वि०) [अस्मद्+कन् मदादेश] मेरा मत्कुलस्य कृत मत्कं मा,कृत्स्य वनं मुमे भट्टि० ८।१६, **त्कः** खटमल।

मत्कुणः [मद्+क्विप्, कुण्+क मत कर्म० स०] 1 खटमल मत्कुणाविव पुरापरिप्लवौ—शि० १९।६८, 2 बिना दांत का हाथी 3 छोटा हाथी 4 बिना दाढ़ी का मनुष्य 5 भैंस 6 नारियल का पेड़, **णम्** टांगों या जंघाओं के लिए कवच। सम० **अरि** पटसन का पौधा।

मत्त (भू० क० कृ०) [मद्+क्त] 1 नशे में चूर, मतवाला, मदोन्मत्त (आलं० से भी)—ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मत्ताश्चकोराङ्गना—विद्ध० १।११, प्रथा मत्तचकोरो अवदितमहो विभ्रममर्यात—काव्य० १०, इसी प्रकार ऐश्वर्य° धन° बल° आदि 2 पागल विक्षिप्त 3 मदवाला, भीषण (हाथी)—रघु० १२।९३ 4 घमंडी, अहंकारी 5 खुश, अतिहृष्ट, हर्षोद्दीप्त 6 प्रीतिविषयक, केलिपरायण, स्वैरी,—**त्तः** 1 पियक्कड़ 2 पागल मनुष्य 3 मदवाला हाथी 4 कोयल 5 भैंसा 6. धतूरे का पौधा। सम० **आलम्बः** (किसी धनी पुरुष के) विशाल भवन की बाड़, **इभः** मदवाला हाथी **गमना** मस्त हाथी के सदृश चाल वाली स्त्री अर्थात् अलसगति,—**काशिनी** (सि) की एक सुन्दर लावण्यवती स्त्री, **दन्तिन्** (पुं०) **नाग** **वारणः** मदवाला हाथी, (—**रम्**—**णम्**) 1. विशालभवन के चारों ओर बाड़ 2. किसी विशालभवन के ऊपर बनी अटारी 3 बरामदा, अलिंद 4 भवन का सुसज्जित बहिर्भाग,—(**णम्**) कटी हुई सुपारी।

मत्यम् [मत+यत्] 1 हल द्वारा बनाया खूड़ 2 ज्ञान प्राप्त करने का साधन 3. ज्ञान का अभ्यास।

मत्सः [मद्+सन्] 1 मछली 2. मत्स्य देश का स्वामी।

मत्सरः [मद्+सरन्] 1 ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2 अतृप्त लालची, लोभी 3. दरिद्र 4 दुष्ट,—**रः** 1 ईर्ष्या, डाह—अपरागवातोऽपि मत्सराणां का० ४५, परवृद्धिषु बद्धमत्सराणां—कि० १३।७, शि० ९।६३.

कु० ५।१७ 2. विरोधिता, शत्रुता रघु० ३।६० 3. घमंड —शि० ८।७१, 4. लोभ, लालच 5. क्रोध, कोपावेश 6. डांस या मच्छर।

मत्सरिन् (वि०) [मत्सर + इनि] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला—परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्—शि० १५।१ २।११५ दुष्टात्मा परगुणमत्सरी मनुष्य —मृच्छ० ९।२७, रघु० १८।१९ 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण 3. लालायित, स्वार्थरत (अधि० के साथ) 4. दुष्ट।

मत्स्य [मद् + स्यन्] 1. मछली—शूले मत्स्यानिवा पक्ष्यन् दुर्बलान्बलवत्तरा मनु० ७।२० 2. मछलियों की विशेष जाति 3. मत्स्य देश का राजा, **मत्स्यौ** (द्वि० व०) मीन राशि, **मत्स्याः** (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम मनु० ७।१९३ याज्ञ० १।८३, । सम० —**अवतारः** मछली एक विशेष प्रकार की सामन्नता **अद्**, **अदन**, **खाद** (वि०) मछलियाँ खाकर पलने वाला, मत्स्यभक्षी —**अवतार** विष्णु के दस अवतारों में सबसे पहला अवतार (सातवें मनु के शासनकाल में दूषित हुई सारी पृथ्वी जलप्लावित हो गई और सातवें मनु तथा सप्तर्षियों (इनको विष्णु ने मछली बनाकर बचा लिया था) को छोड़कर सब जीवधारी प्राणी कालकवलित हो गये। तु० इस अवतार का जयदेवरचित वर्णन प्रलयपयो-धिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदं केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे गीत० १ —**अशनः** 1. रामचिरैया (एक शिकारी पक्षी) 2. मत्स्यभक्षी —**असुरः** एक राक्षस का नाम —**आजीवः** मछुआ, —**आधानी** मछलियाँ रखने की टोकरी (जिसे मछुवे प्रयुक्त करते हैं) —**उदरिन्** (पुं०) विराट का विशेषण, —**उदरी** सत्यवती का विशेषण —**उदरीयः** व्यास का विशेषण —**उपजीविन्** (पुं०) मछुवा,—**करण्डिका** मछलियाँ रखने की टोकरी —**गन्ध** (वि०) मछली की गंध रखने वाला, (**धा**) सत्यवती का नाम —**घण्टः** एक प्रकार की मछली की चटनी —**घातिन्**,—**जीवत्**, —**जीविन्** (पुं०) मछुवा —**जालम्** मछलियाँ पकड़ने का जाल —**देशः** मत्स्यवासियों का देश,—**नारी** सत्यवती का विशेषण,—**नाशकः**,—**नाशनः** मत्स्यभक्षी उकाब, कुररपक्षी—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक, —**बन्धः**, —**बन्धिन्** (पुं०) मछुवा —**बन्धनम्** मछली पकड़ने का कांटा, बंसी, —**बन्ध** (धि) नी मछलियाँ रखने की टोकरी,—**रङ्कः**, —**रङ्गः**, —**रङ्गकः** रामचिरैया (मछली खाने वाला एक शिकारी पक्षी), —**वेधनम्**, —**वेधनी** मछली पकड़ने की बंसी,—**संघातः** मछलियों का झुंड, —**सण्डिका**, —**सण्डी** मोटी या बिना साफ की हुई चीनी ह्री ह्री एवं सीधुपानोद्वेजितस्य मत्स्यण्डिकोपनता—मालवि० ३।

मथ् दे० मन्थ्।

मथ माथ।

मथन (वि०) (स्त्री० —नी) [मथ् + ल्युट्] 1. बिलोने वाला, मंथन करने वाला 2. चोट पहुँचाने वाला, क्षति देने वाला 3. मारने वाला, नष्ट करने वाला, नाशक—मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके गीत० २ —**नः** एक वृक्ष का नाम, —**नम्** 1. मन्थन करना, बिलोना, विक्षुब्ध करना 2. घिसना, रगड़ना 3. क्षति, चोट, नाश। सम० —**अचलः**, —**पर्वतः** मन्दराचल पहाड़ (जिसको रई का डंडा बनाया गया था।

मथि [मथ् + इ] रई का डंडा।

मथित (भू० क० कृ०) [मथ् + क्त] 1. मथा गया, बिलोया गया, विक्षुब्ध किया गया, खूब हिलाया गया 2. कुचला गया पीसा गया चुटकी काटी गई 3. कष्ट-ग्रस्त, दुःखी अत्याचार पीड़ित 4. वध किया हुआ, नाश किया हुआ 5. स्थानभ्रष्ट (दे० मन्थ्), —**तम्** (बिना पानी डाले) मथा हुआ विशुद्ध मट्ठा।

मथिन् (पुं०) [मथ् + इनि] (कर्तृ० ए० व०—मथाः कर्म० ब० व०—मथः) रई का डंडा मृदु प्रभुत्वेषु मथा निवर्तनैर्नदन्मृ कुम्भेषु मृदङ्गमन्थरम् कि० ४।१६, नै० २२।८८, 2. वायु 3. वज्र, 4. पुरुष का लिंग।

मथु (थू) रा [मथ् + उ (ऊ) रच् + टाप्] यमुना नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर, कृष्ण की जन्मभूमि तथा उसके कारनामों का स्थल, यह भारत की सात पुण्यनगरियों में एक है, (दे० अवन्ति) और आज भी हजारों की संख्या में भक्त लोग दर्शनार्थ यहाँ आते हैं। कहा जाता है कि इस नगर को शत्रुघ्न ने बसाया था —निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।२८, कालिन्दकन्या मथुरां गताऽपि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति—६।४८, । सम० —**ईशः**, —**नाथः** कृष्ण का विशेषण।

मद् उत्तमपुरुष सर्वनाम के एक वचन का रूप जो प्रायः समस्त शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है यथा मदर्थे, 'मेरे लिए' 'मेरी खातिर' 'मच्चित्त' 'मेरे विषय में सोचकर' मद्वचनम्, मत्सन्देश, मत्प्रियम् आदि।

मद् i (दिवा० पर० माद्यति, मत्त) 1. मस्त होना, नशे में चूर होना—मौक्ष्य मधुमिलता नु ममाद—शि० १०।२७ 2. पागल होना 3. आनन्द मनाना, खुशी मनाना 4. प्रसन्न या हृष्ट होना। प्रेर० (मादयति) 1. नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना, पागल बना देना 2. (मदयति) उल्लसित करना, प्रसन्न करना, खुश करना—भा० २।१६ 3. प्रणयोन्माद को उत्तेजित करना भा० ३।६, उद्—, 1. मस्त या नशे में चूर होना (आलं० से भी) 2. पागल होना—मनु० ३। १६१, प्रेर०—नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना

अद्यापि मे हृदयमुन्मदयन्ति हन्त भामि० २।५, प्र , 1 नशे में चूर होना, मस्त होना 2 उपेक्षक होना, लापरवाह या असावधान रहित होना (अधि० के साथ) अताऽर्थान्ति प्रमाद्यन्ति प्रमदासु [illegible] मनु० २।२१३ 3 भूलचूक होना, भटक जाना, विचलित होना यथा स्वाधिकारात्प्रमत्त: मेघ० १ मे, 4 गलती करना भूल करना राह भूल जाना- भट्टि० ५।८, १७।३१, १८।८, सम्- 1 नशे में चूर चूर होना 2 हर्षयुक्त होना, प्रसन्न होना।

1 (चुरा० आ० मादयते) प्रसन्न करना, खुश करना।

मद [मद् अच्] 1 मादकता, मस्ती, मदोन्मत्तता —मदेनास्पृश्ये—दश० मदविकाराणां दर्शक—का० ४५, दे० नी० मदस्त पद 2. [illegible] विक्षिप्तता 3 उग्र प्रणयोन्माद, लालसापूर्ण [illegible], कामुकता, मैथुनेच्छा [illegible] स्पष्टरागात् [illegible] १०।८८ 4 मस्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मद [illegible] मदोद्धत महीपतिः [illegible] मदोदग्र, मेघ० [illegible] [illegible] प्रेम, इच्छा, उत्कंठा 6 घमंड, अहंकार, अभिमान [illegible] १।२८० 7 उल्लास, आनन्दातिरेक 8 [illegible] शराब 9 मधु, शहद 10 कस्तूरी 11 [illegible] सम० अत्यय, आतङ्क: [illegible] होने वाला विकार (सिरदर्द आदि) [illegible] 1. मद से अन्धा, पीकर बेहोश, [illegible] हुए अपरिमित मदान्धा [illegible] विक्रम० ४।१३ 2 अभिमान से अन्धा, घमंडी आलयनम् [illegible] नशा दूर करना [illegible] [illegible] [illegible] का हाथी [illegible] [illegible] [illegible] की स्थिति [illegible] आकुल (वि०) मदो [illegible] आढ्य (वि०) [illegible] नशे में चूर [illegible] वेद, आस्त्रात: हाथी की पीठ पर [illegible] बाला ढोल या नगाड़ा [illegible]

आह्व: कस्तूरी [illegible] 1 नशे में चूर मद्यपान से उत्तेजित 2 तीव्र [illegible] 3 अभिमानी घमंडी दर्पयुक्त 4 मदमत्त [illegible] रघु० ६।७ (द:) 1 मदमत्त हाथी 2 [illegible] (दा) खींचा हुई शराब उद्धत उन्मत्त (वि०) 1. पीकर मस्त नशे में चूर 2 अहंकार, [illegible] भरा हुआ-मदोद्धता ककुद्मन्त: सरितां कूलमुद्रुजा: -रघु० [illegible] ३, 3.अभिमानी, घमंडी, अहंकारी,-उद्धूत (वि०) [illegible] से भरा हुआ कु० ३।३१ 2 घमण्ड से फूला हुआ,

—उल्लापिन (पु०) कोयल कर (वि०) मादक, नशे में चूर करने वाला कारिन् (पु०) मदवाला हाथी -कल (वि०) मृदुभाषी अव्यक्तभाषी, अस्पष्ट-[illegible] [illegible] मदमत्त उच्चारण [illegible] उत्तर० १।३१, [illegible] मदकल कूजित [illegible] [illegible] मदवाला प्रचण्ड, मदोन्मत्त विक्रम० [illegible] मदवाला हाथी - कोहल: (स्वच्छन्द [illegible]) मुक्त सांड, क्षय (वि०) [illegible] विक्रम० [illegible] गन्धा 1 मादकपेय 2 पटसन गमन जैसा -च्युत् (वि०) [illegible] मद चुवाने वाला 2 [illegible] 3 आनन्ददायक [illegible]

आलम्, वारि [illegible] के गण्डस्थल से [illegible] [illegible] मदमत्त हाथी [illegible] [illegible] मत्त [illegible] [illegible] विह्वल [illegible] [illegible] शौण्डिका [illegible] -सार [illegible] -स्थानम्, स्थानम् [illegible]

मदन [illegible] [illegible] [illegible] अपवित्र [illegible] अधिक [illegible] अध्यक्ष [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अधीर [illegible] अन्तक, अरि, [illegible], दहन, [illegible] रिपु [illegible] आतुर (वि०) [illegible]

सानुराग **आतुर आर्त, विह्वल पीड़ित** (वि०) कामार्त, प्रेमविह्वल, कामरोगी रघु० १९।३४, श० ३।१०, **आयुधम्** 1 स्त्री की भग या योनि 2 'कामदेव का अस्त्र' अर्थात् लावण्यमयी स्त्री **आलयः, यम्** 1 स्त्री की योनि 2 कमल 3 राजा, **इक्षुकलम्** आमों का राजा, **उत्सवः** कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला वसन्त-कालीन उत्सव (वा) अप्सरा, **उत्सुक** (वि०) प्रेम के कारण उत्कंठित या निढाल —**उद्यानम्** 'प्रमोद वन' एक उद्यान का नाम, **-कण्टकः** 1 प्रेमभावना से उत्पन्न रोमांच 2 वृक्ष का नाम **कलहः** प्रेमकलह, मैथुन [illegible] मा० २।१२, **-कामुकः** पेड़ या कबूतर [illegible] कृष्ण का विशेषण, —**चतुर्दशी** चैत्रशुक्ला चतुर्दशी, इसी दिन कामदेव के सम्मानार्थ मनाया जाने वाला उत्सव, **त्रयोदशी** चैत्रशुक्ला त्रयोदशी या काम के सम्मान में उस दिन मनाया जाने वाला उत्सव —**नालिका** अनोम, स्त्री **पक्षिन्** (पु०) खंजन पक्षी -पाठक कोयल **पीडा, बाधा** प्रेमवेदना, प्रेम की पीर **महोत्सवः** कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला महोत्सव **मोहनः** कृष्ण का विशेषण ललितम् प्रेमकेलि रंगरेली, कामक्रीडा **लेख** प्रेम पत्र **वश** (वि०) प्रेममुग्ध मोहित **शलाका** 1 कोयल (मादा) 2 कामोद्दीपक।

मदनकः [मदन + कन्] एक पौधे का नाम, दमनक।

मदयन्तिका, मदयन्ती [मदयन्ती + कन् + टाप् ह्रस्व मद् + णिच् + शतृ + ङीप्] एक प्रकार की चमेली (अरब की)।

मदयित्नु (वि०) [मद् + णिच् + इत्नुच्] 1 मादक पागल बनाने वाला 2 आनन्द देने वाला [illegible] 1 मदन 2 बादल 3 बलात्कार 4 पीकर पागल हुआ [illegible] पीया हुई शराब (इस अर्थ में नपुं० भी)।

मदारः [मद् + आरन्] 1 मदमाता हाथी 2 सूअर 3 [illegible] 4 प्रेमी, कामुक 5 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 6 ठग या बदमाश।

मदि (स्त्री०) [मद + इन्] पटेला, हेंगा।

मदिर (वि०) [माद्यति अनेन मद् करणे किरच्] 1 आनन्द देने वाला 2 आनन्ददायक, आनन्दित करने वाला, (रः) लाल कत्था, (रा) एक प्रकार का [illegible] समा० **अक्षी**, **ईक्षणा** नयना, लोचना मनोहर और आनन्द भरी आंखों वाली स्त्री, [illegible] [illegible] [illegible] **-आयतनयन** [illegible] बड़ी और मनोहर आंखों वाला [illegible] [illegible] आदर [illegible]।

मदिरा [मदिर + टाप्] 1 खींची हुई शराब [illegible] मदनमदिरा [illegible] भर्तृ० १।८, शि०

११।४९ 2 एक प्रकार का खंजन पक्षी 3 दुर्गा का नामान्तर। सम० **उत्कट, उन्मत्त** (वि) शराब के नशे में चूर, **गृहम्, शाला** मदिरालय, शराबखाना, मधुशाला, **-सखः** आम का पेड़।

मदिष्ठा [अतिशयेन मदिनी - इष्ठन् इनो लोपः, टाप्] खींची हुई शराब।

मदीय (वि०) [अस्मद् + छ, मदादेश.] मेरा मुझसे संबद्ध, —रघु० २।४५, ६५, ५।२५।

मद्गुः [मस्ज् + उ न्यङ्क्वा०] 1 एक प्रकार का जलचर जन्तु, जलकाक, पनडुब्बी पक्षी 2 एक प्रकार का सांप 3 एक प्रकार का जंगली जानवर 4 विशाल नौका या युद्धपोत काऽपि मद्गुरमध्यमानम् दश० 5 एक पतित वर्णसंकर जाति भाट आदि की स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान —दे० मनु० १०।४८ 6. जाति बहिष्कृत।

मद्गुर [मद् + गुर्, उरच् न्यङ्क्वा०] 1 गोताखोर मोती निकालने वाला 2. अर्मनमछली 3 एक पतित वर्ण संकर जाति -दे० मद्गु (5)।

मद्य (वि०) [माद्यत्यनेन करणे यत्] 1 मादक 2 आनंद-दायक, उन्मादमय **द्यम्** खींची हुई शराब, मदिरा मादकपेय-रणक्षितिः शोणितमद्यकुल्या -रघु० ७।४९, —मनु० ५।५६ ९।८४ १०।८९। सम० **आमोदः** मौलसिरी का पेड़ —**कीटः** एक प्रकार का कीड़ा, **द्रुमः** एक प्रकार का वृक्ष, माड़वृक्ष,—**पः** पियक्कड़ शराबी, [illegible] **पानम्** 1 मादक मदिरा पीना 2 कोई भी मादक पेय **-पीत** (वि०) पीकर नशे में चूर —**पुष्पा** धातकी नामक पौधा, **बी,- बी** (बी) **बीजम्** खमीर उठाने वाली औषध खमीर पैदा करने वाली लेई — **भाजनम्** शराब का गिलास, इसी प्रकार **मद्य भाण्डम्**, **मण्डः** शराब का झाग, मद्यफेन. —**वासिनी** धातकी नामक पौधा, -**संधानम्** मदिरा खींचना।

मद्रः [मद् + रक्] 1 देश का नाम 2. उस देश का शासक, —**द्राः** (ब. व०) मद्र देश के अधिवासी —**द्रम्** हर्ष प्रसन्नता (**मद्राकृ** = **मद्राकृ** बालकाटना कैंची से कतरना, मूंडना)। सम० -**कार** (वि०) (मद्रकार भी) हर्षोत्पादक।

मद्रक [मद्र + कन्] मद्र देश का शासक या अधिवासी -**का** (ब०व०) दक्षिण देश की एक पतित जाति।

मधव्यः [मधु + यत्] वैशाख का महीना।

मधु (वि०) (स्त्री [illegible] नपुं० मा० **ध्वी**) [मन्यते इति मधु, मन् + उ नस्य धः] मधुर, सुखद, रुचिकर आनन्द युक्त [illegible] (**धु**) 1 शहद [illegible] मधुनो धारा[illegible]मविघ्नाऽस्त्वपि उत्तर० ३।३४, मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम् 2 पुष्परस या फूलों का रस -कु० ३।३६ देहि [illegible]

—शीत० १० 3 मीठा मादक पेय शराब खींची हुई शराब विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।६५, ऋतु० १।३ 4 पानी 5 शक्कर 6 मिठास —पुं० (धुः) 1 वसन्त ऋतु —क्व नु हृदयङ्गमः सखा कुसुमायोजितकार्मुको मधुः कु० ४।२४-२५, ३।१०, ३०, 2 चैत्र का महीना भास्करस्य मधुमाधवाविव रघु० ११।७ मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादै रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् —ऋतु० ६।२८ 3 एक राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मारा था 4 एक और राक्षस जिसके पिता का नाम लवण था तथा जिसे शत्रुघ्न ने मारा था 5 अशोक वृक्ष 6 कार्तवीर्य राजा का नाम। सम० —अष्ठीला शहद का लौंदा जमा हुआ शहद, —आधारः मोम —आपात (वि०) पहली बार शहद चखने वाला मनु० ११।९ —आम्रः एक प्रकार का आम का वृक्ष, —आसवः (शहद से) खींची हुई मीठी शराब —आस्वाद (वि०) शहद का स्वाद चखने वाला —आहुतिः (स्त्री०) यज्ञ में मिष्टान्न की आहुति देना —उच्छिष्टम्, —उत्थम्, —उत्थितम् मधुमक्खियों का मोम, —उत्सवः वसन्तोत्सव —उदकम् 'मधुजल' शहद मिला हुआ पानी जलमधु —उद्यानम् वसन्तोद्यान —उपघ्नम् मधु का आवास मथुरा का नामान्तर —रघु० १५।१५ —कण्ठः कोयल —करः 1 भौंरा —कुटजे खलु तेनेहा तेने हा मधुकरेण कथम् —भामि० १।१०, रघु० ९।३० मेघ० ३५।४७ 2 प्रेमी कामुक, °गण, °श्रेणि (स्त्री०) मक्खियों का झुंड —कर्कटी 1 मीठा नीबू चकोतरा 2 एक प्रकार का छुहारा, —काननम् —वनम् मधु राक्षस का वन —कारः, —कारिन् (पुं०) मधुमक्खी —कुक्कुटिका —कुक्कुटी एक प्रकार का नीबू का पेड़, —कुल्या मधु की नदी —कृत् (पुं०) मधुमक्खी —केशटः मधुमक्खी, —कोशः, —षः मधुमक्खियों का छत्ता —क्रमः शहद की मक्खियों का छत्ता (ब० व०) मदिरा पान की होड़, आपानक, —क्षीरः —क्षीरकः खजूर का पेड़ —गायनः कोयल, —ग्रहः मधु का तर्पण —घोषः कोयल —जम् मोम, —जा 1 मिसरी 2 पृथ्वी —जम्बीरः एक प्रकार का नीबू —जित् —द्विष् —निषूदनः —निहन्तृ (पुं०), —मथनः —रिपुः —शत्रुः —सूदनः, विष्णु के विशेषण इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता, गीत० ५, रघु० ९।४८ शि० १।१ —तृणः —णम् गन्ना, ईख —त्रयम् तीन मीठे पदार्थ अर्थात् शक्कर शहद और घी —दीपः कामदेव —दूतः आम का पेड़ —दोहः मधु या मिठास निचोड़ना —द्रः 1 भौंरा 2 कामुक —द्रुः लाल फूलों का एक वृक्ष —द्रुमः आम का पेड़ —धातुः एक प्रकार का पीला माक्षिक —धारा शहद की धार, —धूलिः राब, गुड़, —नारिकेलकः एक प्रकार का नारियल —नेतृ (पुं०) भौंरा —पः मधुकर, या पियक्कड़ राजप्रिया कैरविण्यो रमन्ते मधुपैः सह भामि० १।१२६, १।३३ (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) —पटलम् शहद की मक्खियों का छत्ता —पतिः कृष्ण का विशेषण —पर्कः 'शहद का मिश्रण' एक सम्मानयुक्त उपहार जो किसी अतिथि को या कन्या के पिता के द्वार पर आ जाने पर दूल्हे को अर्पित किया जाता है इसमें निम्नांकित पांच पदार्थ रक्खे जाते हैं दधि सर्पिर्जलं क्षौद्रं सिता चैतैश्च पञ्चभिः प्रोच्यते मधुपर्कः समांसो मधुपर्कः उत्तर० ४, आगम्य...मधुपर्कमर्पितम् स तद् व्यधात्, सर्वमुद्दर्शितनाम यदीय गास्य-मधु भीमजाधर मिषेण पुण्याहविधिं तदा कृतम् नै० १६।१३ मनु० ३।११९, यथा आगे —पर्क्य (वि०) मधुपर्क का अधिकारी —पर्णिका —र्णी नील का पौधा —पायिन् (पुं०) भौंरा —पुरम् —री मथुरा का विशेषण मधुपुरी... मधुरामय हरि ... भामि० ४।४४ —पुष्पः 1 अशोक वृक्ष 2 मौलसिरी का वृक्ष 3 दन्ती वृक्ष 4 सिरस का पेड़ —प्रणयः शराब की लत —प्रमेहः मधुमेह, शर्करायुक्त मूत्र —प्राशनम् शुद्धीकरण के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें नवजात शिशु को मधु चटाया जाता है —प्रियः बलराम का विशेषण —फलः एक प्रकार का नारियल —फलिका एक प्रकार का छुहारा —बहुला माधवी लता —बीजः (बी) अनार का वृक्ष —बीजपूरः एक प्रकार का नीबू चकोतरा —मक्षः —क्षा —मक्षिका मधुमक्खी —मज्जनः अखरोट का पेड़ —मदः शराब का नशा —मल्लिः, —ल्ली (स्त्री०) मालती लता —माधवी 1 एक फूल का नाम 2 कोई भी वसन्त ऋतु का फूल —माध्वीकम् एक प्रकार की मादक मदिरा —मारकः भौंरा —मेहः मधुप्रमेह —यष्टि (स्त्री०) गन्ना, मुलहठी —रसः 1 दाख का वृक्ष (जिसमें रस होता है) 2 गन्ना, ईख 3 मिठास (सा) 1 अंगूर का गुच्छा 2 अगर का पेड़ —लग्नः एक वृक्ष का नाम —लिह्, —लेह्, —लेहिन् (पुं०) —लोलुपः भौंरा इसी प्रकार 'मधुलिट्' —वनम् वह वन जहाँ मधु नामक राक्षस रहा करता था जिसको मारकर शत्रुघ्न ने मथुरा नगरी बसाई थी (नि०, कोयल) —वाराः (पुं० ब० व०) बार बार शराब के जाम पर जाम चढ़ाना बार-बार डटकर शराब पान करना अर्थात् बहुधा... मधुवारा... शि० १०।१९ क्षालितं नु शमितं नु वधूनां द्रावितं नु हृदयं मधुवारैः शि० १०।१४ (कभी कभी यह शब्द एक वचनांत भी होता है) दे०

कि० ८।५७, अतः भौंरा मामिक को मरम्भानाम स्मरेत मधुव्रतम् भामि० १।११७, तस्मिन्नद्य मधुव्रते विधिवशात्माध्वीकमाकांक्षति ४६, --शर्करा शहद से तैयार की हुई शक्कर, --शाखः एक प्रकार का (महुए का) पेड़, --शिष्टम्, --शेषम् मोम, --सख सहाय, --सारथि, --सुहृद् कामदेव, --सिक्थक एक प्रकार का विष, --सूदनः भौंरा --स्थानम् मधुमक्खियों का छत्ता, --स्वरः कोयल --हन् (पुं०) 1 शहद का नष्ट करने वाला या एकत्र करने वाला 2 एक प्रकार का शिकारी पक्षी 3 ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 4. विष्णु का नामान्तर।

मधुक [मधु + कन् कै + क वा] 1 एक वृक्ष (--मधूक महुआ) का नाम 2 अशोक वृक्ष 3 एक प्रकार का पक्षी, --कम् 1 रांगा 2 मुलैठी।

मधुर (वि०) [मधु माधुर्यं राति रा --क मध् उरच् वा] 1 मीठा 2 शहदयुक्त मधुमय 3 सुखद मनोहर आकर्षक रुचिकर --अहो मधुरमासां दर्शनम् श० १ कु० ५।९ उत्तर० १।३८ 4 सुरीला (स्वर), --रः लाल रंग का गन्ना ईख 2 चावल 3 राब गुड़ 4 एक प्रकार का आम --रम् 1 माधुर्य 2 मधुरपेय शर्बत 3 विष 1 रांगा --रम् (अव्य०) मिठास से साथ सुहावने ढंग से रोचकता के साथ। सम० --अक्षर (वि०) मधुर ध्वनि वाला मिष्टभाषी रसीला --आलाप (वि०) मधुर शब्दों का उच्चारण करने वाला (--पः) मधुर या सुरीले स्वर मधुरालाप निसर्गपण्डिताम् कु० ५।१६ (--पा) मैना मदनसारिका --कण्टक एक प्रकार की मछली --जम्बीरम् नीबू की एक जाति --त्रयम् मधुत्रयम् दे० --फल एक प्रकार का बेर --बाणिन् वाच् (वि०) मधुरभाषी --श्रवा एक प्रकार का छुहारे का पेड़, --स्वर --स्वन (वि०) मधुर स्वर से गाने वाला मधुरस्वर वाला।

मधुरता, --त्वम् [मधुर + तल् टाप् त्व वा] माधुर्य सुहावनापन, रोचकता।

मधुरिमन् (पुं०) [मधुर + इमनिच्] माधुर्य रोचकता मधुरिमातिशयेन वचोऽमृतम् --भामि० १।११३।

मधुलिका [मधुल + कन् + टाप्, इत्वम्] काली सरसों राई।

मधूक [मह् + ऊक नि० ह्रस्य ध] 1 भौंरा 2 एक वृक्ष का नाम महुआ, --कम् मधुक (महुए) वृक्ष का फूल --दूर्वाङ्कुर मधूकदाम्ना कु० ७।१४, स्निग्धो मधूकच्छविरगण्ड गीत० १०, रघु० ६।२५।

मधूलः [मधु + लाति ला + क पृषो०] एक प्रकार का वृक्ष, --ली आम का पेड़।

मधूलिका [मधूल + कन् + टाप् इत्वम्] एक प्रकार का वृक्ष।

मध्य (वि०) [मन् + यत्, नस्य ध, तारा०] 1 बीच का, केन्द्रीय मध्यवर्ती केन्द्रवर्ती --मेघ० ४६ मनु० २।२१ 2 अन्तर्वर्ती मध्यवर्ती 3 बीच के दर्जे का मध्यम दर्मियाने कद का, बीच का प्रारम्भ विच्छिन्ना विरमन्ति मध्याः भर्तृ० २।२७ 4 तटस्थ, निष्पक्ष 5 न्याय्य, यथार्थ 6 (ज्यो० में) मध्यमान --ध्य, --ध्यम् 1 मध्य केन्द्र मध्य या केन्द्रीय भाग --अद्र मध्यम् दोपहर दिन का मध्य --सहस्रदीधितिरलङ्कुरुते मध्यमह्नः मा० १ सूर्य शिरोबिन्दु पर है। अर्थात् ठीक सिर के ऊपर है व्योममध्ये विक्रम० २।१ 2 शरीर का मध्यभाग, कमर मध्ये क्षामा मेघ० ८०, बद्धं वलग्नतनु-मध्या कु० १।३९ विशालवक्षास्तनुवृत्तमध्यः रघु० ६।३२ 3 पेट उदर मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या वलित्रयं चारु बभार बाला कु० १।३९ 4 किसी वस्तु का भीतरी भाग 5 बीच की स्थिति या दशा 6 बाड़ की काम 7 नभीत में मध्यवर्ती मानक 8 किसी श्रेणी की मध्यवर्ती राशि --ध्या बीच की अंगुली --ध्यम् दस अरब की संख्या (मध्य' के कर्म० करण० अपा० और अधि० के रूप क्रि० वि० की भांति प्रयुक्त होते हैं) (क) मध्यम् में के बीच में (ख) मध्येन में से, बीच से (ग) मध्यात् में से के बीच (षष्ठ० के साथ) में से मध्यात् काक प्रकाश पञ्च० १ (घ) मध्ये 1 बीच में में मध्ये म रघु० १२।२९ 2 में के अन्दर के भीतर, बहुधा (इस कि अव्ययीभाव स० के आदि पद के रूप में प्रयोग हो) यथा० मध्ये भ्रमन् गगा में 'मध्येजठरम्' पेट में भामि० ११२१, मध्येनगरम् नगर के भीतर मध्येनदि नदी के बीच में मध्यपृष्ठम् पीठ पर मध्येभक्तम् भोजन करने के पश्चात फिर दोबारा भोजन करने से पूर्व बीच में ली जाने वाली औषधि मध्येरणम् युद्ध में भामि० १।१२८ मध्येसभ सभा में या सभा के सामने --नै० ६।७६ मध्येसमुद्रम् समुद्र के बीच में शि० ३।३३)। सम० --अङ्गुलि, --ली (स्त्री०) बीच की अंगुली --अह्न (अहन् के स्थान में) मध्याह्न दोपहर --कृत्यम्, --क्रिया दोपहर के समय की जाने वाली क्रिया, --काल --वेला दोपहर का समय --स्नानम् दोपहर का नहाना --अर्क अर्केक्यास --ग (वि०) बीच में जाने वाला --गत (वि०) केन्द्रीय मध्यवर्ती, बीच में होने वाला, --गन्ध आम का पेड़ --ग्रहणम् ग्रहण का मध्य --दिनम् (मध्यंदिनम्' भी) 1 मध्य दिन, दोपहर 2 दोपहर का उपहार, --दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, इसमें सामान्य विशेषण को समस्त विशेष

पर प्रकाश डालता है बीच में स्थापित किया जाता है, उदा०—भट्टि० १०।२४,—देशः 1 मध्यवर्ती स्थान या प्रदेश, किसी चीज़ का मध्यवर्ती भाग 2. कमर 3. पेट 4. याम्योत्तर रेखा 5 केन्द्रीय प्रदेश, हिमालय तथा विन्ध्य पर्वत के बीच का भाग हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि, प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः स कीर्तितः—मनु० २।२१ —देहः शरीर का प्रमुख भाग, पेट,—पदम् मध्यवर्ती पद, °लोपिन् दे० मध्यमपदलोपिन्, —भावः सहधर्मचारिता, समागम —भागः 1 मध्य भाग 2 कमर,—भावः बीच की स्थिति, सामान्य स्थिति,—यवः पीली सरसों के छः दानों के बराबर का एक तोल, राश., —रात्रिः (स्त्री०) आधी रात, रात का बीच —रेखा केन्द्रीय या प्रथमयाम्योत्तर रेखा —लोकः तीनों लोक के बीच का लोक अर्थात् मर्त्यलोक या संसार °ईशः, ईश्वरः राजा, —वयस् अधेड़ उम्र-वाला, —वर्तिन् (वि०) बीच में स्थित, केन्द्रवर्ती (पुं०) विवाचक, मध्यस्थ, —वृत्तम् नाभि, —सूत्रम् = मध्यरेखा दे०,—स्थ (वि०) 1 बीच में स्थित या विद्यमान, केन्द्रीय 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3 बीच का 4 बीच-बचाव करने वाला, दो दलों के बीच मध्यस्थता करने वाला 5 निष्पक्ष, तटस्थ 6 उदासीन, लगाव-रहित—श० ५, (स्थः) निर्णायक, विवाचक, मध्यस्थ 2 शिव का विशेषण, —स्थलम् 1 मध्य या केन्द्र 2. मध्य स्थान या प्रदेश 3. कमर,—स्थानम् 1 बीच का पड़ाव 2. बीच का स्थान अर्थात् वायु 3 तटस्थ प्रदेश —स्थित (वि०) केन्द्रीय, अन्तर्वर्ती।

मध्यतः (अव्य०) [मध्य+तसिल्] 1 बीच से, मध्य से, में से 2 में।

मध्यम (वि०) [मध्ये भवः—मध्य+म] बीच में स्थित या वर्तमान, बीच का, केन्द्रीय पितुः पदं मध्यममुत्पतन्ती—विक्रम० १।१९, इसी प्रकार 'मध्यमलोकपाल.' मध्यमपदम् मध्यमरेखा 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3. बीच का, बीच की स्थिति या विशेषता का, बीच के दर्जे का यथा 'उत्तमाधममध्यम' में 4 बीच का, औसत दर्जे का —तेन मध्यमशक्तीनि मित्राणि स्थापितान्यतः — रघु० १७।५८ 5. बीच के कद का 6 न सबसे छोटा न सबसे बड़ा, (भाई) बीच में उत्पन्न —प्रणमति पितरौ वां मध्यमः पाण्डवोऽयम्—वेणी० ५।२६ 7. निष्पक्ष, तटस्थ,—मः 1 संगीत में पंचम स्वर 2 विशेष संगीत पद्धति 3 मध्यवर्ती देश, दे० मध्यदेश 4 (व्या० में) मध्यम पुरुष 5 तटस्थ प्रभु —वर्णोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते—रघु० १३।७ 6 प्रान्त का राज्यपाल, —मा 1. बीच की अंगुली 2 विवाह योग्य कन्या, वयस्क कन्या 3. कमल का बीजकोष 4 काव्यशास्त्रों में वर्णित एक नायिका, अपनी जवानी की उम्र के बीच पहुँची हुई स्त्री, तु० सा० द० १००, —मम् कमर। सम०—अङ्गुलिः बीच की अंगुली, —आहरणम् (बीज० में) समीकरण में बीच की राशि का निरसन, —जात (वि०) दो के बीच में उत्पन्न, मझला,—पदम् (समास के) बीच का पद, °लोपिन् (पुं०) तत्पुरुष समास का एक अवान्तर भेद जिसमें कि रचना के बीच का शब्द लुप्त कर दिया जाता है, इसका सामान्य उदाहरण 'शाकपार्थिव' है, इसका विग्रह है 'शाकप्रियः पार्थिवः' यहाँ बीच के शब्द 'प्रिय' का लोप कर दिया गया, इसी प्रकार छायातरु व गुडधाना आदि शब्द हैं —पाण्डवः अर्जुन का विशेषण, —पुरुषः (व्या० में) मध्यमपुरुष वह पुरुष जिसको सम्बोधित किया जाय, —भृतकः किसान, खेतिहर (जो अपने लिए और अपने स्वामी के लिए खेती का काम करता है) —रात्रः आधी रात —लोकः बीच का संसार, भूलोक °पालः राजा रघु० २।१६, —वयस् (नपुं०) प्रौढ़ावस्था, बीच की उम्र —वयस्क (वि०) प्रौढ़ बीच की उम्र का —संग्रहः बीच के दर्जे का गुप्तप्रेम, जैसे कि गहने कपड़े, पुष्प आदि उपहार भेज कर परस्त्री को फुसलाना, व्यास ने इसकी निम्नांकित परिभाषा की है प्रेषणं गन्धमाल्यानां धूपभूषणवाससाम्, प्रलोभनं चान्नपानैर्मध्यमः संग्रहः स्मृतः —साहसः तीन प्रकार के दण्डभेदों में द्वितीय प्रकार मनु० ८।१३८ (सः —सम्) मध्यवर्ग के प्रति अपराध या अत्याचार, —स्थ (वि०) बीच में होने वाला।

मध्यमक (वि०) (स्त्री०—मिका) [मध्यम+कन्] बीच का बिल्कुल बीचोंबीच का।

मध्यमिका [मध्यमक+टाप्, इत्वम्] वयस्क कन्या जो विवाह योग्य उम्र की हो गई हो।

मध्ये दे० मध्य के अन्तर्गत।

मध्वः एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्रप्रणेता, वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्तसूत्रों के भाष्यकर्ता।

मध्वकः [मधु+अक्+अच्] भौंरा।

मध्विजा [मधु इजते प्राप्नोति—मधु+इज्+क+टाप्, पृषो० ह्रस्व] कोई भी मादक पेय, खींची हुई शराब।

मन् I (भ्वा० पर० मनति) 1 घमण्ड करना 2 पूजा करना II (चुरा० आ० मानयते) घमण्डी होना, III (दिवा० तना० आ० मन्यते, मनुते, मत) 1 सोचना, विश्वास करना, कल्पना करना, चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, विचारना—शङ्कं केऽपि शशाङ्कं जलनिधौ पङ्के परे मेनिरे—सुभा०, वत्स मन्ये कुमारेणानेन जृम्भकास्त्रमामन्त्रितम्—उत्तर० ५, कथं भवान्मन्यते 'आपकी क्या सम्मति है' 2. ख्याल करना,

आदर करना, मानना, देखना, समझना, मान लेना —सजीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते —भर्तृ० ३।८४, असमस्तधानेन पराध्यंजन्मना स्थितेरभेत्ता स्थितिमन्तमन्वयम्—रघु० ३।२७, १।३२, ६।८४, भग० २।२६, ३५, भट्टि० ९।११७ स्तनविनिहितमपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव भारम्—गीत० ४ 3 सम्मान करना, आदर करना, मान करना, मूल्यवान् समझना, बड़ा मानना, वरेण्य समझना —धन्यानुर्वीकृपा इमे भुवनाधिपत्य भोगादय कृपणलोकमता भवन्ति —भर्तृ० ३।७६ 4. जानना समझना प्रत्यक्ष करना पर्यवेक्षण करना लिहाज करना मत्वा देव धनपति मला यत्र साक्षाद्वसन्तम् मेघ० ७३ 5 स्वीकृति देना, हामी भरना अमल करना —मन्यस्व मम वचनम् ... 6. सोचना विचार विमर्श करना 7. इरादा करना कामना करना आशा करना 8 मन लगाना 'मन् धातु' के अर्थ उस शब्द के अनुसार जिसके साथ इसका प्रयोग होता है विविध प्रकार से बदलते रहते हैं उदा० बहु मन् बहुत मानना बड़ा समझना बहुत मूल्य आंकना, वरेण्य समझना, पूज्य मानना बहु मनुते ननु ते तनुसंगर-पवनचलितमपि रेणुम् गीत० ५, 'बहु' के अन्तर्गत भी दे०, लघु मन् तुच्छ समझना, घृणा करना, अपमान करना —श० ७।१, अन्यथा मन् और तरह सोचना संदेह करना, साधु मन् भला सोचना, अनुमोदन करना, सतोषजनक समझना, श० १।२ असाधु मन् नापसंद करना, तृणाय मन् या तृणवत् मन् तिनके जैसा समझना, हलका मूल्य लगाना तुच्छ समझना —हरिमप्यमस्त तृणाय शि० १५।६१ न मन् अवज्ञा करना, अवहेलना करना, प्रेर० (मानयति-ते) सम्मान करना, श्रद्धा दिखाना, आदर करना, अभिवादन करना, मूल्यवान् समझना मान्यान्मानय —भर्तृ० २।७७, इच्छा० (मीमांसते) 1 विचार विमर्श करना, परीक्षण करना, अन्वेषण करना, पूछताछ करना 2 संदेह करना, पूछताछ के लिए बुलाना (अधि० के साथ), अनु —स्वीकृति देना, हामी भरना, अनुमोदन करना, स्वीकार करना अनुमति देना, अनुज्ञा देना, मंजूरी देना राजन्यान्स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने रघु० ४।८७, १४।२०, तव नाहमनुमन्तुमुत्सहे मोघवृत्ति कलभस्य चेष्टितम्—रघु० ११।३९, कु० १।५९, ३।६०, ५।६८, भर्तृ० ३।२२, रघु० १६।८५, प्रेर०—छुट्टी मांगना, अनुमति मांगना स्वीकृति मांगना—अनुमान्यतां महाराज —विक्रम० २, अभि— 1 कामना करना, इच्छा करना लालायित होना —मनु० १०।९५ 2 अनुमोदन करना, हामी भरना 3 सोचना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, मानना

अव—, घृणा करना, हेय समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना, तुच्छ समझना —चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनी —कु० ५।५३, मनु० ४।१३५, विक्रम० २।११ प्रति—, सोचना, विचारना प्रेर० 1 सम्मान करना, सम्मानित समझना, आदर करना 2. अनुमोदन करना, प्रशंसा करना 3 अनुज्ञा देना, अनुमति देना, वि , (प्रेर०) अनादर करना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना—स्त्रीभिर्विमानितानां कापुरुषाणां विवर्धते मदनः —मृच्छ० ८।९, सम्—, 1 सहमत होना, एकमत होना, एक मत का होना 2. हामी भरना, स्वीकृति देना, अनुमोदन करना, पसंद करना 3 सोचना खयाल करना, मानना 4 स्वीकृति देना, अधिकार देना 5 मान करना, सम्मान करना महत्त्वपूर्ण समझना —कश्चिद्दग्निमिवानाय्य काले सम्मन्यमेऽर्चितम् भट्टि० ६।६५, सममस्त बन्धून् १।२ 6. अनुज्ञा देना अनुमति देना (प्रेर०) सम्मान करना आदर करना प्रतिष्ठा करना।

मननम् [मन् + ल्युट्] 1 सोचना, विचार विमर्श करना गहनचिन्तन करना, अवधारणा करना —मननान्मुनिरेवासि—हरि० 2 प्रज्ञा, समझ 3 तर्कसंगत अनुमान 4 अटकल, अंदाजा।

मनस् (नपुं०) [मन्यतेऽनेन मन् करणे असुन्] 1 मन, हृदय समझ प्रत्यक्षज्ञान प्रज्ञा, जैसा कि सुमनस्, दुर्मनस् आदि में 2. (दर्शन० में) सज्ञान और प्रत्यक्ष-ज्ञान का आन्तरिक अंग या मन, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ आत्मा को प्रभावित करते हैं, (न्या० द० में मन एक द्रव्य या पदार्थ माना गया है जो आत्मा से सर्वथा भिन्न है)—तदेव सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं प्रतिजीवं भिन्नमणु नित्यं च—त० कौ० 3 चेतना, निर्णय या विवेचन की शक्ति 4 सोच, विचार उत्प्रेक्षा कल्पना, प्रत्यय, पश्यमदूरान्मनसाप्यधृष्यम् कु० ३।५१ रघु० २।२७, कायेन वाचा मनसाऽपि शश्वत् —५।५ 5 योजना, प्रयोजन, अभिप्राय 6 संकल्प, कामना इच्छा, रुचि, इस अर्थ में 'मनस्' शब्द का प्रयोग बहुधा धातु के तुमुन्नत रूप के साथ (तुम् के अन्तिम 'म्' का लोप करके) होता है, और विशेषण शब्द बनते हैं —अथ जन द्रष्टुमनास्तपोनिधे— कु० ५।४०, तु० काम 7 विचारविमर्श 8 स्वभाव,प्रकृति,मिजाज 9 तेज,ओज,सत्त्व 10 मानस नामक सरोवर (मनसा मन् सोचना चिन्तन करना याद करना— कु० २।६३, मनः कृ मन को स्थिर करना, विचारों को निर्दिष्ट करना, (सप्त० या अधि० के साथ), मनः बन्ध् मन लगाना स्नेह हो जाना अभिलाषे मनो बबन्धान्यरसान् विलङ्घ्य सा रघु० ३।४, मनः समाधा अपने आपको स्वस्थ करना मनसि

उद्भू मन को पार करना, मनसि कृ सोचना, ध्यान रखना, दृढ़ संकल्प करना, निर्धारण करना, मन में रखना)। सम०—अधिनाथः प्रेमी, पति, —अनवस्थानम् अनवधानता, —अनुग (वि०) मनोनुकूल, रुचिकर, —अपहारिन् (वि०) हृदयहारी, —अभिनिवेशः खूब मन लगाना, प्रयोजन की दृढ़ता, —अभिराम (वि०) मन के लिए सुखद, हृदय को तृप्त करने वाला —रघु० १।३९, —अभिलाषः मन की लालसा या इच्छा, —आप (वि०) हृदयहारी, आकर्षक, सुहावना, —कान्त (वि०) (मनस्कान्त या मनःकान्त) मन का प्रिय, सुहावना रुचिकर, —कारः पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान (सुख या दुःख का) पूरी चेतना, —क्षेपः मन की उचाट, मानसिक अव्यवस्था, —गत (वि०) मन में विद्यमान, हृदय में छिपा हुआ, आन्तरिक, अन्दरूनी, गुप्त, —प्रेय न वक्ष्यति मनोगतमाधिहेतुम् —०३।१२ 2 मन पर प्रभाव डालने वाला, वाञ्छित (तम्) 1 कामना, चाह—मनोगतं सा न शशाक शंसितुम्—कु० ५।५१ 2 विचार, चिन्तन, भाव, सम्मति, —गतिः (स्त्री०) हृदय की इच्छा, —गवी कामना, चाह, —गुप्ता मैनसिल, —ग्रहणम् मन को हराना, —ग्राहिन् (वि०) मन को लुभाने वाला या आकृष्ट करने वाला, —ज, —जन्मन् (वि०) मनोजात, (पु०) कामदेव, —जव (वि०) विचार की भांति, फुर्तीला, आशुगामी 2 चिन्तन और विचारण में तेज, 3. पैतृक, पितृ तुल्य संबन्ध रखने वाला—जवस् (वि०) पिता के समान, पितृतुल्य, —जात (वि०) मन में उत्पन्न, मन में उदित या पैदा हुआ, —जिघ्र (वि०) मन से सूंघने वाला अर्थात् दूसरों के मन के विचार भांपने वाला, —ज्ञ (वि०) सुहावना प्रिय, रुचिकर, सुन्दर, लावण्यमय—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० १।२०, रघु० ३।७, ६।७ (—ज्ञः) एक गन्धर्व का नाम, (—ज्ञा) 1 मैनसिल 2 मादक पेय 3. राजकुमारी, —तापः, —पीडा 1 मानसिक पीडा या वेदना व्यथा 2 पश्चात्ताप, पछतावा, —तुष्टिः (स्त्री०) मन का संतोष, —तोका दुर्गा का विशेषण, —दण्डः मन या विचारों पर पूर्ण नियन्त्रण मनु० १०।१० तु० त्रिदण्डिन्, —दत्त (वि०) दत्तचित्त, जिसका मन किसी वस्तु में पूरी तरह लग रहा हो, मन से दिया हुआ, —दाहः, —दुःखम् मन का क्लेश, पीडा, मनस्ताप —नाशः बुद्धि का नाश, विक्षिप्तता, पागलपन, —नीत (वि०) पसंद किया हुआ, चुना हुआ, —पतिः विष्णु का विशेषण, —पूत (वि०) 1. मन जिसे पवित्र मानता हो, अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित, —मनःपूतं समाचरेत्—मनु० ६।४६ 2. शुद्धात्मा, सचेत, —प्रणीत (वि०) मन को रुचिकर या सुखद, —प्रसादः चित्त की स्वस्थता, मानसिक शान्ति, —प्रीतिः (स्त्री०) मानसिक सन्तोष, हर्ष, खुशी, —भवः, —भूः 1. कामदेव मनोज —रे रे मनो मम मनोभवशासनस्य पादाम्बुजद्वयमनारतमानमन्तम् —भामि० ४।३३, कु० ३।२७, रघु० ७।२२ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद, कामुकता—अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः —रघु० १२।३३, —भवनः कामदेव, —मय (वि) पृथक् देखिये, —यायिन् (वि०) 1 इच्छानुसार गमन करने वाला 2 तेज, फुर्तीला, —योगः दत्तचित्तता, खूब ध्यान देना, —योनिः कामदेव, —रंजनम् 1 मन को प्रसन्न करना 2 सुहावनापन, —रथः 1 मन की गाड़ी, कामना, चाह —अवतरत सिद्धिपथं शब्दः स्वमनोरथस्येव—मालवि० १।२२ मनोरथानामगतिर्न विद्यते —कु० ५।६४, रघु० ३।७२, १२।५९ 2 अभीष्ट पदार्थ—मनोरथाय नाशंसे—श० ७।१३ 3 (नाटक में) संकेत, परोक्ष रूप से या गुप्त से प्रकट की गई कामना, —दायक (वि०) किसी एक व्यक्ति की आशाओं को पूरा करने वाला, (—कः) कल्प तरु का नाम —सिद्धिः (स्त्री०) कल्पना की सृष्टि, हवाई किले बनाना, —रम (वि०) आकर्षक, सुखद, रुचिकर, प्रिय सुन्दर—अरुणनखमनोरमासु तस्याः (अङ्गुलीषु)—श० ६।१०, (—मा) 1 कमनीय स्त्री 2 एक प्रकार का रंग, —राज्यम् 'कल्पना का राज्य' हवाई किला —मनोराज्य विजृम्भणमेतत् यह हवाई किले बनाना है', —लयः चेतना का नाश —लौल्यम् मन की चपलता, मन की लहर या मौज, —वाञ्छा, —वाञ्छितम् हृदय की अभिलाष इच्छा, —विकारः, —विकृतिः (स्त्री०) मन का संवेग —वृत्तिः (स्त्री०) 1 मन की क्रियाशीलता, इच्छाशक्ति 2. स्वभाव, चित्तवृत्ति, —वेगः विचारों की तेजी, —व्यथा मानसिक पीडा या वेदना, —शिलः, —ला मैनसिल मनःशिलाविच्छुरिता निषेदुः कु० १।५५, रघु० १२।८०, —शीघ्र (वि०) मन की भांति तेज, —संगः मन की (किसी वस्तु में) आसक्ति, —संतापः मन की व्यथा, —स्थ (वि०) हृदय में स्थित, मानसिक, —स्थैर्यम् मन की दृढ़ता, —हत (वि०) निराश, —हर (वि०) सुखद, लावण्यमय, आकर्षक, कमनीय, प्रिय—अव्याजमनोहरं वपुः—श० १।१७, कु० ३।३९, रघु० ३।३२ (—रः) एक प्रकार की चमेली, (—रम्) सोना, —हर्तृ—हारिन् (वि०) हृदय को हरण करने वाला, मनोहर, रुचिकर, सुखद—हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—कि० १।४, —हारी असती या व्यभिचारिणी स्त्री, —ह्लादः हृदय का उल्लास, —ह्वा मैनसिल।

मनसा [मनस्+सन्+टाप्] कश्यप की एक पुत्री का नाम, नागराज अनन्त की बहन तथा जरत्कारु मुनि की पत्नी, इसी प्रकार 'मनसादेवी'।

मनसिजः [मनसि जायते—जन्+ड, अलुक् स०] 1. कामदेव रघु० १८।५२ 2 प्रेम, प्रणयोन्माद मनसिजरुजं सा वा दिव्या ममालमपोहितुम् विक्रम० ३।१०, श० ३।९।

मनसिशयः [मनसि शेते—शी+अच् सप्तम्या अलुक्] कामदेव शि० ७।२।

मनस्तः (अव्य०) [मनस्+तस्] मन से, हृदय से —रघु० १४।८१।

मनस्विन् (वि०) [मनस्+विनि] 1 बुद्धिमत्, प्रज्ञावान्, चतुर, ऊँचे मन वाला, उच्चात्मा रघु० १।३२ पञ्च० २।१२० 2 स्थिरमना, दृढनिश्चय दृढ संकल्प वाला कु० ५।६, —नी 1 उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री, मनस्विनीमानविघातदक्षम् कु० ३।३२, मालवि० १।१९ 2. बुद्धिमती या सती स्त्री 3 दुर्गा का नाम।

मनाक् (अव्य०) [मन्+आक] 1. जरा, थोड़ा सा, अल्पमात्रा में, न मनाक् बिल्कुल नहीं। —गान्धविह्वलमना न मनागपि स्या भामि० १।३३, १११ 2. शनैः शनैः, विलंब से। सम०—कर (वि०) थोड़ा करने वाला, (रम्) एक प्रकार की सुगंधयुक्त अगर की लकड़ी।

मनाका [मन्+आक+टाप्] हथिनी।

मनित (वि०) [मन्+क्त] ज्ञात, प्रत्यक्षज्ञान, समझा हुआ।

मनीकम् [मन्+ईकन्] सुर्मा, अंजन।

मनीषा [मनस ईषा ष० त०, शक०] 1 चाह, कामना —यो दुर्जनं वशयितुं तनुते मनीषां भामि० १।९५ 2 प्रज्ञा, समझ 3 सोच, विचार।

मनीषिका [मनीषा+कन्+टाप् इत्वम्] समझ, प्रज्ञा।

मनीषित (वि०) [मनीषा+इतच्] 1 अभिलषित वांछित, पसंद किया गया, प्यारा, प्रिय मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवताः—कु० ५।४ 2 इच्छित,—तम् कामना, इच्छा, अभीष्ट पदार्थ —मनीषितं द्यौरपि येन दुग्धा रघु० ५।३३।

मनीषिन् (वि०) [मनीषा+इनि] बुद्धिमान्, विद्वान्, प्रज्ञावान्, चतुर, विचारशील, समझदार रघु० १।१५, (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष मुनि, पंडित —माननीयो मनीषिणाम्—रघु० १।११, संस्कारवत्येव गिरा मनीषी—कु० १।२८, ५।३९, रघु० ३।४४।

मनुः [मन्+उ] 1. एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो मानव का प्रतिनिधि और मानवजाति का पिता माना जाता है (कभी कभी यह दिव्य व्यक्ति समझे जाते हैं) 2. विशेषतः चौदह क्रमागत प्रजापति या भूलोक प्रभु—मनु० १।६३ (सबसे पहले मनु का नाम स्वायंभुव मनु है, जो एक प्रकार से गौण स्रष्टा समझा जाता है, इससे दस प्रजापति या महर्षियों का जन्म हुआ। इसी को मनुस्मृति नामक धर्मसंहिता का प्रणेता माना जाता है सातवाँ मनु वैवस्वत मनु कहलाता है क्योंकि उसका जन्म विवस्वान् (सूर्य) से हुआ। यही जीवधारी प्राणियों की वर्तमान जाति का प्रजापति समझा जाता है। जल प्रलय के समय मत्स्यावतार के रूप में विष्णु ने इसी मनु की रक्षा की थी। अयोध्या पर शासन करने वाले सूर्यवंशी राजा के सूर्यवंश का प्रवर्तक भी यही मनु समझा जाता है—दे० उत्तर० ६।१८ रघु० १।११ चौदह मनुओं के क्रमशः निम्नलिखित नाम हैं 1 स्वायंभुव 2 स्वारोचिष 3 औत्तमि 4 तामस 5 रैवत 6 चाक्षुष 7 वैवस्वत 8. सावर्णि 9 दक्षसावर्णि 10 ब्रह्मसावर्णि 11 धर्मसावर्णि 12 रुद्रसावर्णि 13 रौच्यदेवसावर्णि 14 इन्द्र सावर्णि। 3 चौदह की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति, —नुः (स्त्री०) मनु की पत्नी। सम०—अन्तरम् एक मनु का काल (मनु० १।७९ के अनुसार यह काल मनुष्यों के ४३२०००० वर्षों का होता है, इसी को ब्रह्मा का १।१४ दिन मानते हैं, क्योंकि इस प्रकार के १४ कालों का योग ब्रह्मा का एक पूरा दिन होता है। इन चौदह कालों में से प्रत्येक का अधिष्ठातृमनु पृथक् २ है, इस प्रकार के छः काल बीत चुके हैं, इस समय हम सातवें मन्वन्तर में रह रहे हैं, और सात और मन्वंतर अभी आने हैं), —जः मानवजाति —अधिपः, —अधिपतिः, —ईश्वरः, —पतिः, —राजः राजा, प्रभु —लोकः मानवों का सृष्टि—अर्थात् भूलोक, —जातः मनुष्य,—ज्येष्ठः तलवार,—प्रणीत (वि०) मनु द्वारा शिक्षित या व्याख्यात,—भूः मनुष्य, मानव, जाति,—राज् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—श्रेष्ठः विष्णु का विशेषण —संहिता धर्मसंहिता जो प्रथम मनु द्वारा रचित मानी जाती है, मनु द्वारा प्रणीत विधिविधान।

मनुष्यः [मनोरपत्यं यत् सुक् च] 1 आदमी, मानव, मर्त्य 2 नर। सम०—इन्द्रः,—ईश्वरः राजा, प्रभु—रघु० २।२, —जातिः मानव जाति, इंसान, —देवः 1 राजा रघु० २।५२ 2 मनुष्यों में देव, ब्राह्मण,—धर्मः 1 मनुष्य का कर्तव्य 2. मानव चरित्र, इंसान की विवेचना, —धर्मन् (पुं०) कुबेर का विशेषण, —मारणम् मानवहत्या, —यज्ञः आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार, गृहस्थ के पाँच दैनिक कृत्यों में एक, दे० नृयज्ञ,—लोकः मरणशील (मर्त्यों) मनुष्यों का संसार, भूलोक, —विश्, —विशा (स्त्री०),—विशम् इंसान, मानवजाति,—शोणितम् मानवरक्त—(पपौ) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम्—रघु० ३।५४,—सभा 1. मनुष्यों की सभा 2. भीड़, जमाव।

मनोमय (वि०) [मनस्+मयट्] मानसिक, आत्मिक। सम० **कोश,—षः** आत्मा को आवृत करने वाले पाँच कोशों में से दूसरा कोश।

मन्युः [मन्+युच्] 1 दोष, अपराध —मुधैव मन्तु परिकल्प्य भामि० २।११ 2 मनुष्य, मानवजाति 3 (स्त्री०) समझ।

मन्तु (पुं०) [मन्+तुन्] ऋषि, मुनि बुद्धिमान् मनुष्य, परामर्शदाता, सलाहकार।

मन्त्र् (चुरा० आ० मन्त्रयते, कभी कभी 'मन्त्रयति' भी मन्त्रित) 1. सलाह लेना, विचार करना, सोच विचार करना मन्त्रणा करना, परामर्श लेना न हि स्त्रीभिः सह मन्त्रयितुं युज्यते पंच० ५ मनु० ७।१४६ 2 उपदेश देना, सलाह देना, परामर्श देना अतीतकालस्य च रक्षणार्थं यन्मन्त्र्यते असौ परमो हि मन्त्रः — पंच० २।१८२ 3 वेदपाठ को अभिमन्त्रित करना जादू से मुग्ध करना 4 कहना, बोलना, बातें करना गुन गुनाना —किमपि हृदये कृत्वा मन्त्रयेते श० १, किमकाकिनी मन्त्रयसि —श० ६ हला मनोलक्षणापरिस रेऽवलोकिता द्वितीया त्वं किं मन्त्रयन्त्यासीः मा० ७ **अनु—**,1 अभिमन्त्रित करना, जादू करना विसृष्टश्च वामदेवानुमन्त्रितोऽश्वः—उत्तर० २ 2 आशीर्वाद देकर विदा करना —रथमारोप्य कृष्णेन यत्र कर्णोऽनुमन्त्रितः —महा०, **अभि—**,1 वेदमन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करना,—पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः —अमर० याज्ञ० २।१०२, ३।३२६ 2 मुग्ध करना, मोहना **आ—**1, विदा करना विसर्जन करना आमन्त्रयस्व सहचरम् - श० ३, कु० ६।९४ 2 बोलना, बुलाना कहना, संबोधित करना, वार्तालाप करना तमामन्त्र्य यांबभूव का० ८१, वेणी० १ 3 कहना, बोलना परिजनोऽप्येवमामन्त्र्यते का० १९५ भट्टि० ९।९८ 4 बुलाना, निमन्त्रित करना, **उप—**,उपदेश देना, उकसाना, फुसलाना, **नि—**,न्योता देना, बुलाना, बुला भेजना – दिग्भ्यो निमन्त्रिताश्चैनमभिजग्मुर्महर्षयः —रघु० १५।५९, ११।३२, याज्ञ० १।२२५, —,जादू से अभिमन्त्रित करना **सम्—**, सलाह करना, परामर्श या सलाह लेना,—मम हृदयेन सह समन्त्रितोऽसि वानसि—मुद्रा० १।

मन्त्रः [मन्त्र्+अच्] 1 (किसी भी देवता को संबोधित) वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वेद मंत्र, (वेद का पाठ तीन प्रकार का है – यदि छन्दोबद्ध और उच्चस्वर से बोला जाने वाला है तो ऋक् है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर से बोला जाने वाला है तो यजुस् है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो साम्न् है) 2. वेद का संहिता पाठ (ब्राह्मण भाग को छोड़कर) 3.मोहन, वशीकरण तथा आवाहन के मंत्र,—न हि जीवन्ति जना मनागमन्त्राः —भामि० १।१११, अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः रत्न० २ रघु० २।३२ ५।५७ 4 (प्रार्थना परक) यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो 'ओं नमः शिवाय' आदि 5 गुप्तवार्ता मंत्रणा परामर्श, उपदेश संकल्प योजना तस्य संवृतमन्त्रस्य रघु० १।२० १७।२० पंच० २।१८२, मनु० ७।१४८ 6 गुप्त योजना या मंत्रणा रहस्य। सम०—**आराधनम्** मोहन परक या आवाहन के मंत्रों से सिद्धि की चेष्टा मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः भर्तृ० ३।४ **उदकम्, –जलम्, –तोयम्** वारि (नपुं०) मंत्रों द्वारा अभिमन्त्रित जल मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ पानी **उपष्टम्भः** परामर्श द्वारा समर्थन करना **करणम्** 1 वेदपाठ 2 सस्वर वेदपाठ करना **कार** वैदिक सूक्तों का कर्ता —**काल** मंत्रणा या परामर्श का समय **कुशल** (वि०) परामर्श देने में चतुर **कृत्** (पुं०) वैदिक सूक्तों का प्रणेता या रचयिता रघु० ५।४ ११६१ १५।३१ 2 मंत्र पाठी 3 सलाहकार परामर्शदाता 4 राजदूत **तत्त्वम्** ज्ञान, विज्ञान **गुप्तिः** (स्त्री०) गुप्त सलाह **गूढः** गुप्तचर गुप्तदूत या अभिकर्ता **जिह्वः** अग्नि—शि० २।१०७, **ज्ञः** 1 सलाहकार परामर्शदाता 2 विद्वान् ब्राह्मण 3 गुप्तचर **द, दातृ** (पुं०) आध्यात्मिक गुरु या आचार्य **दर्शिन्** (पुं०) 1 वैदिक सूक्तों का द्रष्टा 2 वेदों में निष्णात ब्राह्मण, **दीधितिः**, अग्नि, **दृश्** (पुं०) 1 वैदिक सूक्तों का द्रष्टा ऋषि 2. परामर्शदाता सलाहकार, **देवता** मन्त्र द्वारा आहूत देवता **धर** सलाहकार, **निर्णयः** मंत्रणा के पश्चात् अन्तिम निर्णय **पूत** (वि०) मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ **प्रयोगः** मंत्रों का प्रयोग, **बीजम्** (बी) **बम्** मंत्र का प्रथमाक्षर, **भेदः** गुप्त परामर्श का प्रकट कर देना, भेद खोल देना **मूर्तिः** शिव का विशेषण, **मूलम्** जादू —,**यन्त्रम्** जादू के संकेत से युक्त एक रहस्यमूलक रेखाचित्र, तावीज, **–योगः** 1 मंत्रों का प्रयोग 2 जादू, **वर्जम्** (अव्य०) बिना मंत्र बोले,—**विद्** दे० ऊ० 'मन्त्रज्ञ', **विद्या** मंत्रविज्ञान, जादू,—**संस्कारः** वेदपाठ से युक्त कोई संस्कार या अनुष्ठान,—**संहिता** वेद के समस्त सूक्तों का संग्रह, - **साधकः** जादूगर, बाजीगर, **साधनम्** 1 जादू द्वारा वश में करना, या कार्य सिद्धि 2 मोहनमंत्र, आवाहनमंत्र,—**साध्य** (वि०) जादू के मंत्रों से वशीकरण या कार्यसिद्धि के योग्य 2 मंत्रणा द्वारा साध्य,—**सिद्धिः** (स्त्री०) 1 किसी मंत्र की क्रियाशीलता, या सफलता 2. मंत्रज्ञान से प्राप्त होने वाली शक्ति,—**स्पृश्** (वि०) मन्त्रों द्वारा

किसी सिद्धि को प्राप्त करने वाला,—हीन (वि०) वेदमन्त्रों से रहित अथवा विरुद्ध ।

मन्त्रणम् —णा [मन्त्र् + ल्युट्] विचार, परामर्श ।

मन्त्रवत् (वि०) [मन्त्र + मतुप्] मन्त्रों से युक्त—रघु० ३।३१ ।

मन्त्रि. = मन्त्रिन्, दे० ।

मन्त्रित (भू० क० कृ०) [मन्त्र् + क्त] 1 जिसका परामर्श किया जा चुका है 2 जिस पर सलाह की गई परामर्श किया गया है 3 कहा हुआ, बोला हुआ 4 मन्त्र पढ़ा हुआ, अभिमन्त्रित 5 निश्चित निर्धारित ।

मन्त्रिन् (पुं०) [मन्त्र् + णिनि] मन्त्री, सलाहकार राजा का मन्त्री रघु० ८।१७ मनु० ८।१। सम० —धुर (वि०) मन्त्रालय के भार को संभालने में समर्थ,—पति, —प्रधान, —प्रमुखः —मुख्यः, —वरः, —श्रेष्ठ प्रधान मन्त्री मुख्यमन्त्री प्रधानमन्त्री, श्रेष्ठ या प्रमुख मन्त्री —श्रोत्रिय वेदों में निष्णात मन्त्री ।

मन्थ्, मथ् (भ्वा० क्र्या० पर० मन्थति, मथति मथ्नाति मथित, कर्म वा० मथ्यते) 1 बिलोना, मथना (प्रायः द्विकर्मक —सुधा सागरं ममन्थुः —यो देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थे—कि० ५।३० 2. क्षुब्ध करना, हिलाना घुमाना ऊपर नीचे करना तस्मात् समुद्रादिव मथ्यमानात् रघु० १६।७९ 3 पीस डालना, अत्याचार करना, सताना कष्ट देना दुःखी करना मन्मथो मा मथ्न्निजनाम सान्वयं करोति—दश०, प्राणा मध्ये शिशिरमथिता पद्मिनीं वान्यरूपाम् मेघ० ८३ 4 चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना 5 नष्ट करना मार डालना संहार करना, कुचल डालना मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपात् वेणी० १।१५, अमन्थीच्च परानीकम्—भट्टि० १५।४६, १४।३६ 6 तंग करना, विस्थापित करना, उद्- , 1. प्रहार करना मारना नष्ट करना मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम् पञ्च० २।३३, वैरमुन्मथ्य मा० ११८, नष्ट करके या उखाड़ कर 2 हिलाना डुलाना क्षुब्ध करना 3 फाड़ना, काटना या छीलना—रघु० २।३७, नि,—1 बिलोना हिलाना घुमाना अमृतस्यार्थे निर्मथिष्यामहे जलम् महा० 2 रगड़ से आग पैदा करना 3 खरोंचना, पीटना 4 पूर्णतः नष्ट करना कुचल डालना, प्र—, 1 बिलोना (समुद्र) प्रमथ्यमानो गिरिणेव भूयः रघु० ११।१४ 2 तंग करना, अत्यन्त कष्ट देना, दुःखी करना, सताना 3 प्रहार करना, खरोंचना, आघात करना 4 फाड़ डालना, काट देना 5. उखाड़ देना 6 मार डालना, नष्ट करना मा० ७।९, २।९ ।

मन्थः [मन्थ् करणे घञ्] 1. बिलोना, इधर उधर हिलाना, आलोडित करना, क्षुब्ध करना —मन्थादिव क्षुभ्यति गाङ्गमम्भः —उत्तर० ७।१६, रघु० १०।३ 2 प्रहार करना, नष्ट करना 3. मिश्रित पेय 4 रई का डंडा ('मथा' भी) 5 सूर्य 6 सूर्य की किरण 7 आँख का मैल, कीड़, मोतियाबिंद 8 घर्षण से अग्नि सुलगाने का उपकरण । सम० —अचलः,—अद्रिः,—गिरिः, —पर्वतः,—शैलः मन्दर पर्वत (जो रई के डंडे के रूप में प्रयुक्त हुआ)—भामि० १।५५,—उदकः, —उदधिः क्षीर सागर,—गुणः बिलोने के रस्सी, नेता, —जम् मक्खन,—दण्डः,—दण्डकः रई का डंडा ।

मन्थन [मन्थ् + ल्युट्] रई का डंडा,—नम् बिलोना, क्षुब्ध करना बिलोडित करना, इधर उधर हिलाना 2 घर्षण द्वारा आग सुलगाना —नी मथनी, बिलोनी । सम० —घटी बिलोनी मथनी ।

मन्थर (वि०) [मन्थ् + अरच्] 1 शिथिल मन्द, विलम्बकारी सुस्त अकर्मण्य—गर्भमन्थरा— श० ४, प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत् तदैव, वरमन्थरचरणविहारम्—गीत० ११—शि० ६।४०, ७।१८, ५।६७, रघु० १९।२१ 2 जड़ मूढ़, मूर्ख—मन्थरकौलिक 3 नीच गहरा, खोखला मन्थस्वर 4 विस्तृत, विशाल चौड़ा, बड़ा 5 झुका हुआ टेढ़ा वक्र,—रः 1 भंडार कोष 2 सिर के बाल 3 क्रोध गुस्सा 4 ताजा मक्खन 5 रई का डंडा 6 रुकावट बाधा 7 गढ़ 8 फल 9 गुप्तचर सूचक 10 वैशाख मास 11 मन्दर पर्वत 12 हरिण का खोसला —रा कैकेयी की कुब्जादासी जिसने अपनी स्वामिनी को राम के राज्याभिषेक के अवसर पर अपने दो पूर्वदत्त वरदान (एक से राम का चौदह वर्ष के लिए निर्वासन, दूसरे से भरत का राज्यारोहण) राजा से मांगने के लिए उकसाया,—रम् कुसुम्भ । सम० —विवेक (वि०) निर्णय करने में मन्द विवेकशक्ति से शून्य मा० १।१८ ।

मन्थज [मन्थ् + जन्] चक्कर दिलाने से उत्पन्न हुआ ।

मन्थान [मन्थ् + आनच्] 1 रई का डंडा मथानी 2 शिव का विशेषण ।

मन्थानक. [मन्थान + कन्] एक प्रकार का घास ।

मन्थिन् (वि०) [मन्थ् + णिनि] 1 बिलोने वाला मथन करने वाला 2 कष्ट देने वाला, तंग करने वाला (पुं०) वीर्य, शुक्र —नी बिलोनी मथनी ।

मन्द् (भ्वा० आ० मन्दते बहुधा वैदिक प्रयोग) 1 पीकर धुत होना 2 प्रसन्न होना, हर्षयुक्त होना 3 ढीलाढाला होना, शिथिल होना 4 चमकना 5 धीरे २ चलना, टहलना, घूमना ।

मन्द (वि०) [मन्द् + अच्] 1. धीमा, विलम्बकारी, आलसी, सुस्त, मद, अटरपटी करने वाला—(क०) क्रियासिद्धि मन्दो यतिरिव ... —कु० १।११, कन्यारिव ... चलितुं चलति शाखा—गीत० ९ 2. शिथ-

त्साही, तटस्थ—उदासीन 3 जड़, मन्दबुद्धि, मूढ़, अज्ञानी, निर्बल-मस्तिष्क, मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः —मालवि० २।८, मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् - रघु० १।३, द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम् कु० ५।७५ 4 धीमा, गहरा, खोखला (ध्वनि आदि) 5 कोमल, धुंधला, मृदु यथा 'मन्दस्मितम्' में 6 थोड़ा अल्प, ज़रा सा, मन्दोदरी दे० 'अमन्द' भी 7 दुर्बल बलहीन, कमजोर यथा 'मन्दाग्नि' में 8 दुर्भाग्यग्रस्त अभागा 9 मुर्झाया हुआ 10. दुष्ट, दुश्चरित्र 11. शराब की लत वाला, -न्दः 1 शनिग्रह 2 यम का विशेषण 3. सृष्टि का विघटन 4 एक प्रकार का हाथी—शि० ५।४९

न्दम् (अव्य०) 1. धीमे से, क्रमशः, धीरे-धीरे —यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मन्दं विलासादिव —श० २।१ 2 धीरे २, हल्के २, शान्ति से—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम् —मेघ० ९ 3 धीमे-धीमे, मन्द गति से, मन्द स्वर से, हल्केपन से 4 मन्द्रस्वर में, गहराई के साथ (मन्दी कृ ढीलढाल करना,—मन्दीकृतो वेग —श० १, मन्दी भू ढीला होना, कम ताकतवर होना)। सम० —अक्ष (वि०) कमजोर आँखों वाला —अक्षम्) लज्जा का भाव, लज्जाशीलता, शर्मीलापन -अग्नि (वि०) दुर्बल पाचन शक्ति वाला, (ग्निः) अग्निमांद्य, पाचनशक्ति की मन्दता,—अनिलः मृदु पवन, - असु (वि०) दुर्बल श्वास वाला,—आक्रान्ता एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १, -आत्मन् मन्दबुद्धि वाला, मूर्ख, अज्ञानी—मन्दात्मानुजिघृक्षया प्रथित०, —आदर (वि०) 1 कम आदर प्रदर्शित करने वाला, अवज्ञा करने वाला, लापरवाह 2 [illegible],—[illegible] (वि०) हताश, उत्साहहीन—मन्दोत्साहः कृतोऽस्मि मृगयापवादिना माधव्येन—श० २,—उदरी रावण की पत्नी का नाम, पाँच सती स्त्रियों में से एक—दे० अहल्या,—उष्ण (वि०) कोष्ण, गुनगुना (—ष्णम्) कोष्णता, गुनगुनापन,—औत्सुक्य (वि०) धीमी उत्सुकता वाला, पराङ्मुख, रुचिशून्य—मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति—श० १,—कर्ण (वि०) कुछ बहरा, सूक्ति—बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्, 'अभाव की अपेक्षा कुछ होना अच्छा है'—कान्तिः चन्द्रमा, —कारिन् (वि०) धीमे २ काम करने वाला, —गः शनि,—गति,—गामिन् (वि०) शनैः २ चलने वाला, धीमी गति वाला,—चेतस् (वि०) 1. मन्दबुद्धि, मूर्ख, मूढ 2 अन्यमनस्क 3 मूर्छालु, अचेत,—छाय (वि०) धुंधला, मलिन, आभाशून्य -मेघ० ८०,—जननी शनि की माता,—धी,—प्रज्ञ,—मति,—मेधस् मंद बुद्धि, मूर्ख, मूढ, —भागिन्,—भाग्य (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा, दयनीय, बेचारा,—रश्मि (वि०)

धुंधला, —वीर्य: दुर्बल,—वृष्टिः (स्त्री०) हल्की बारिश, —स्मितः,—हासः, हास्यम् हल्की हंसी, मंद मुस्कान।

मन्दकः [मन्द+अट् । अच् शक० पररूपम्] मूंगे का वृक्ष।

मन्दनम् [मन्द्+ल्युट्] प्रशंसा, स्तुति।

मन्दयन्ती [मन्द्+णिच्+शतृ+ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

मन्दर (वि०) [मन्द्+अर] 1 धीमा, विलम्बकारी, सुस्त 2 मोटा, सघन दृढ 3 विस्तृत, स्थूल,—रः 1 एक पहाड़ का नाम (इसको समुद्रमंथन के समय देवासुरों ने मथानी —रई का डंडा बनाया था और सब सुधा का मथन किया था)—पुनर्मन्दरादृतो क्षीरोमय इवाच्युतम् रघु० ४।२७, अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए—गीत० १ सोऽयं मन्दरकुक्षिभ्रमिना भोधिमथनेना शि० २।१०७ कि० ५।३० 2 मोतियों (आठ या सोलह लड़ियों का) का हार 3. स्वर्ग 4 दर्पण ५ इन्द्र के नन्दनकानन में स्थित पाँच वृक्षों में से एक मन्दार वृक्ष, दे० मन्दार। सम० —आवासा, —वासिनी दुर्गा का विशेषण।

मन्दसानः [मन्द्+सानच्] 1 अग्नि 2. जीवन 3. निद्रा ('मन्दसानु' भी लिखा जाता है)।

मन्दाकः [मन्द+आक] धारा, नदी।

मन्दाकिनी [मन्दम् अकति—अक्+णिनि+ङीप्] 1 गंगा नदी—मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः—रघु० १३।४८, कु० १।२९ 2 स्वर्गंगा, वियद्गंगा (मंदाकिनी वियद्गंगा)—मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः [illegible]—मेघ० ६७।

मन्दायते (ना० धा० आ०) 1 शनैः शनैः चलना, विलंब करके चलना, पिछड़ना, मटरगश्त करना, देर लगाना —मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः—मेघ० ४०, विक्रम० ३।१५ 2 दुर्बल होना, कृश होना, धुंधला होना—रघु० ४।४९।

मन्दार: [मन्द्+आरक्] 1 मूंगे का पेड़, इन्द्र के नन्दनकानस्थित पाँच वृक्षों में से एक—हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः —मेघ ७५, ६७, विक्रम० ४।३५ 2 आक का पौधा, मदार वृक्ष 3 धतूरे का पौधा 4 स्वर्ग 5. हाथी,—रम् मूंगे के वृक्ष का फूल—कु० ५।८०, रघु० ६।२३। सम०—माला मदार के फूलों की माला—मंदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२, - षष्ठी माघसुदी छठ।

मन्दारकः मन्दारवः, मन्दारुः [मन्दार+कन्, मन्द+आ+रु+अच्, मन्द्+आरु] मूंगे का वृक्ष दे० 'मन्दार'।

मन्दिमन् (पुं०) [मन्द+इमनिच्] 1 धीमापन, विलंबकारिता 2 सुस्ती, जड़ता, मूर्खता।

मन्दिरम् [मन्द्यतेऽत्र मन्द्+किरच्] 1. रहने का स्थान, आवास, महल, भवन—कु० ७।५५, भट्टि० ८।९९,

रघु० १२।८३ 2 आवास, रहने का घर यथा क्षीराब्धिमन्दिर में 3 नगर 4. शिविर 5 देवालय । सम० —पशुः बिल्ली —मणिः शिव का विशेषण ।

मन्दिरा [मन्दिर + टाप्] घुड़साल, अस्तबल ।

मन्दुरा [मन्द् + उरच् + टाप्] 1 अश्वशाला, घुड़साल अस्तबल —प्रभ्रष्टोऽयं प्लवगः प्रविशति नृपतेर्मन्दिरं मन्दुरायाः —रत्न० २।२ रघु० १६।४१ 2. शय्या चटाई ।

मन्द्र (वि०) [मन्द् + रक्] 1. नीचा गहरा, गंभीर, खोखला, धमधमाता —पयोदमन्द्रध्वनिना धरित्री —कि० १६।३, ७।२२, मेघ० ९९ रघु० ६।५६ —द्रः 1 मन्द्रध्वनि 2 एक प्रकार का ढोल 3 एक प्रकार का हाथी ।

मन्मथः [मन् + क्विप्, मथ् + अच्, ष० त०] 1 कामदेव प्रेम का देवता —मन्मथो मां मथ्नन्निजं नाम सान्वयं करोति —दश० ७१, मेघ० ३३ 2 प्रेम, प्रणयोन्माद —प्रबोधयत्यूर्ध्व इवाद्य मन्मथम् —ऋतु० १।८ इसी प्रकार परोक्षमन्मथ —अप० श० २।१ 3 कैथ । सम० —आनन्दः एक प्रकार का आम का पेड़ —आलयः 1 आम का पेड़ 2 स्त्री की भग —कर (वि०) प्रेमोत्तेजक —युद्धम् प्रेमकेलि, संभोग मैथुन —लेखः प्रेम पत्र —श० ३।२६ ।

मन्मन. (पु०) 1 गुप्त कानाफूसी (दम्पत्योर्जल्पितम् मदम्) करोति मदकारस्य कलिकोत्कलिकाकरं मन्मनो मन्मनोऽप्येष मत्तकोकिलनिःस्वनः —काव्या० ३।११ 2 कामदेव ।

मन्यु [मन् + युच्] 1 क्रोध, रोष नाराजगी, कोप —रघु० २।३२, ४९, ११।४६ 2 व्यथा, शोक कष्ट दुःख —उत्तर० ४।३ कि० १।३५, भट्टि० ३।४९, 3 विपद्ग्रस्त या दयनीय स्थिति कर्मानारान 4 यज्ञ 5 अग्नि का विशेषण 6 शिव का विशेषण ।

मभ् (भ्वा० पर० मभति) जाना, हिलना जुलना ।

मम [अस्मद् शब्द—सर्वनाम उत्तमपुरुष—सम्ब० ए० व०] मेरा । सम० —कारः, —कृत्यम् मेरापन ममता स्वार्थ ।

ममता [मम + तल् + टाप्] 1 अपने मन की भावना स्वार्थ, स्वहित 2 घमंड, अभिमान, आत्मनिर्भरता 3. व्यक्तित्व ।

ममत्वम् [मम + त्व] 1 मेरापन, अपनापन, स्वामित्व की भावना 2 स्नेहयुक्त आदर, अनुराग, ममता —कु० २।१२ 3. अहंकार, घमंड ।

ममापतालः [मम + आल, पृषो०, मकारादेशः, आप —दुकागम] ज्ञानेन्द्रिय का विषय ।

मम्ब् (भ्वा० पर०) जाना, हिलना-जुलना ।

मम्मटः 'काव्यप्रकाश' का प्रणेता ।

मय् (भ्वा० आ० मयते) जाना, हिलना-जुलना ।

मय (वि०) (स्त्री०—यी) 'पूर्ण' 'से युक्त' 'रचित' 'से बना हुआ' अर्थ को प्रकट करने वाला तद्धित का प्रत्यय, उदा० कनकमय, काष्ठमय, तेजोमय और जलमय आदि, —यः 1 एक दानव, दानवों का शिल्पी (कहते हैं कि इसने पांडवों के लिए एक भव्य भवन का निर्माण किया था) 2 घोड़ा 3 ऊँट 4 खच्चर ।

मयटः [मय + अटन्] घासफूस की झोंपड़ी, पर्णशाला ।

मय (यू) ष्टकः [मयुष्टक पृषो० साधु]

मयु [मय + कु] 1 किन्नर स्वर्गीय गवैया 2 हरिण, बारहसिंगा । सम० —राजः कुबेर का विशेषण ।

मयूखः [मा + ऊख मयादेश] 1. प्रकाश की किरण, रश्मि, अंशु कांति, दीप्ति —विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखैः —श० ३।२ रघु० २।४६ शि० ४।५६, कि० ५।५८ 2 सौन्दर्य 3 ज्वाला 4 धूपघड़ी की कील ।

मयूरः [मी + ऊरन्] 1 मोर —स्मरति गिरिमयूर एष देव्याः —उत्तर० ३।२० फणी मयूरस्य तले निषीदति —ऋतु० १।१३ 2 एक प्रकार का फूल 3. ('सूर्यशतक' का प्रणेता) एक कवि —हस्याजषकोरविनकुरनिकरः कर्णपूरो मयूरः —प्रसन्न० १।२२, —री मोरनी —सूक्ति —वर तत्कालोपनता तित्तिरी न पुनर्दिवसान्तरिता मयूरी —विक्र० १ या वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः 'हाथ में आया एक पक्षी झाड़ी में बैठे दो पक्षियों से अच्छा है' अर्थात् नौ नकद न तेरह उधार । सम० —अरि छिपकली —केतुः कार्तिकेय का विशेषण, —ग्रीवकम् तूतिया —चटकः गृह कुक्कुट —चूडा मोर की शिखा —तुत्थम् तूतिया —पत्रिन् (वि०) पक्षयुक्त, मोर के पंखों से युक्त (बाण आदि) —रघु० ३।५६ —रथः कार्तिकेय का विशेषण —व्यंसकः चालाक मोर —शिखा मोर की शिखा ।

मयूरकः [मयूर + कन्] मोर —कः, —कम् तूतिया, नीलाथोथा ।

मरकः [मृ + वुन्] महामारी पशुओं का एक संक्रामक रोग, प्लेग प्रमारक रोग, संक्रामक रोग ।

मरकतम् [मरकं मरणं तरत्यनेन —तृ + ड] पन्ना —वापी चास्मिन् मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा —मेघ० ७६, शि० ४।५६, ऋतु० ३।२१, (कभी-कभी 'मरक्त' भी लिखा जाता है) । सम० —मणिः (पुं०, स्त्री०) पन्ना, —शिला पन्ने की सिल्ली ।

मरणम् [मृ + भावे ल्युट्] 1 मरना, मृत्यु —मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम् —रघु० ८।८७ वा—संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते —भग० २।३४ 2 एक प्रकार का विष । सम० —अंत, —अंतक (वि०) मृत्यु के साथ समाप्त होने वाला, —अभिमुख, —उन्मुख (वि०) मृत्यु के निकट, मरणासन्न, निश्चेष्ट, —धर्मन्

(वि०) मर्त्य, मरणशील, - निश्चय (वि०) मरने के लिए दृढ़ निश्चय वाला पंच० १।

मरतः [मृ+अतच्] मृत्यु।

मरन्दः, - न्दकः [मरणं द्यति खण्डयति मर+दो+क, पृषो०, मरन्द+कन्] फूलों का रस – भामि० १।५, १०।१५, सम०—ओकस् (नपुं०) फूल।

मरारः [मर मरणमलति निवारयति मर+अल्+अण् लस्य रत्वम्] खत्ती, धान्यागार, अनाज का भंडार।

मराल (वि०) [मृ+आलच्] 1 मृदु चिकना स्निग्ध 2 सौम्य कोमल, —लः (स्त्री०—ली) 1 हंस, कलाक राजहंस —मरालकुलनायक कथय रे कथं वर्ततामू —भामि० १।३, विधेहि मरालविकारम्—गीत० ११, नै० ६।७२ 2 एक प्रकार का जलचर पक्षी, कारण्डव 3 घोड़ा 4 बादल 5 अंजन 6 अनारों का बाग 7 बदमाश ठग।

मरि (री) चः [म्रियते नश्यति श्लेष्मादिकमनेन—मृ +इच, इच्वा] काली मिर्च की झाड़ी —चम् काली मिर्च।

मरीचिः (पुं० स्त्री०) [मृ—ईचि] 1 प्रकाश की किरण — न चन्द्रमरीचय —विक्रम ३।१०, सवितुर्मरीचिभि —ऋतु० १।१६, रघु० ९।१३, १३।४ 2 प्रकाश का कण 3 मृगतृष्णा,—चिः प्रजापति, प्रथम मनु से उत्पन्न दस मूल पुरुषों में से एक, या ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में एक, यह कश्यप का पिता था 2 एक स्मृतिकार 3 कृष्ण का नामान्तर 4 कंजूस। सम० —तोयम् मृगतृष्णा,—मालिन् किरणों से घिरी हुई, उज्ज्वल, चमकदार (पुं०) सूर्य।

मरीचिका [मरीचि+कन्+टाप्] मृगतृष्णा।

मरीचिन् (पुं०) [मरीचि+इनि] सूर्य।

मरीचिमत् (पुं०) [मरीचि+मतुप्] सूर्य।

मरीमृश (वि०) [मृश् (यङन्तत्वात् द्वित्वम्) +अच्] बार २ मलने वाला।

मरुः [म्रियतेऽस्मिन् मृ+उ] 1 रेगिस्तान, रेतीली भूमि, वीराना, जल से हीन प्रदेश 2 पहाड़ या चट्टान (पुं०) ब० व०), एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। सम०—उद्भवा 1 कपास का पौधा 2 ककड़ी,—कच्छः एक जिले का नाम, —जः एक प्रकार का गन्धद्रव्य, —देशः 1 एक जिले का नाम 2 जल शून्य प्रदेश, —द्विपः,—प्रियः ऊँट,—भवः,—धन्वम् (पुं०) वीराना, उजाड़,—पथः, - पृष्ठम् रेतीली मरुभूमि वीराना—रघु० ४।३१,—भू. (ब० व०) मारवाड़ देश,—भूमिः (स्त्री०) मरुस्थल, रेतीला मरुप्रदेश,—संभवः एक प्रकार की मूली, - स्थलम्, —स्थली वीराना, उजाड़, बंजर—तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम्—भर्तृ० २।४९।

मरुकः [मरु+क] मोर।

मरुत् (पुं०) [मृ+उति] 1 हवा, वायु, पवन —शिवं प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः रघु० ३।१४ 2 वायु का देवता—कि० २।२५ 3 देवता देवी वैमानिकानां मरुतामपश्यदाकृष्टलीलान्नर लोकपालान् रघु ६।१, १२।१०१ 4 एक प्रकार का पौधा, मरुबक (नपुं०) ग्रन्थिपर्ण नाम का पौधा। सम० —आन्दोल (हरिण या भैंसे की खाल से बना) एक प्रकार का पंखा, —करः एक प्रकार की सेम, लोबिया, —कर्मन् (पुं०) क्रिया उदर वायु अफारा —कोण पश्चिमोत्तर दिशा —गणः देवसमूह,—तनयः, - पुत्रः —सुतः, —सूनुः 1 हनुमान् के विशेषण 2 भीम के विशेषण —ध्वजम् हवा में लहराने वाला झण्डा (सूत का बना कपड़ा) —पटः बादबान —पतिः —पालः इन्द्र का विशेषण —पथः आकाश अन्तरिक्ष —फलम् सिंह —फलम् ओला —रथः 1 विष्णु का विशेषण 2 एक प्रकार का यज्ञ पात्र —रथः वह गाड़ी जिसमें देव प्रतिमाएँ रख कर इधर उधर ले जाई जाती हैं —लोकः वह लोक जिसमें 'मरुत' देवता रहते हैं —वर्त्मन् (नपुं०) आकाश अन्तरिक्ष —वाहः 1 धुआँ 2 अग्नि —सखः 1 अग्नि का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण।

मरुतः [मृ+उत] 1 वायु 2 देवता।

मरुत्तः [मरुत्+तप्] सूर्यवंश का एक राजा, कहते हैं उसने एक यज्ञ किया जिसमें देवताओं ने प्रतीक्षक सेवक का कार्य किया —तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुत परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा सभासद इति।

मरुत्तकः [मरुदिव तरति प्लवति मरुत्+तृ+अच्] मरुबक पौधा।

मरुत्वत् (पुं०) [मरुत्+मतुप् मस्य वः] 1 बादल 2 इन्द्र का नामान्तर 3 हनुमान का नामान्तर।

मरुबः [मृ+उम्] एक प्रकार की बत्तख कारण्डव।

मरुवः [मरु+वा+क, नि० दीर्घ] 1 एक पौधे का नाम, मरुआ 2 राहु का विशेषण।

मरुवक (व) कः [मरुव+कन् वबयोरभेदः] 1 एक प्रकार का पौधा मरुआ 2 चूने का एक भेद 3 व्याघ्र 4 राहु 5 मादस।

मरूकः [मृ+ऊक] 1 मोर 2 बारहसिंगा हरिण।

मर्कटः [मर्क+अटन्] 1 लंगूर बन्दर हारं वक्षसि केनापि दत्तमज्ञेन मर्कटः, लेढि जिघ्रति संक्षिप्य करोत्युन्नतमासनम्—भामि० १।९९ 2. मकड़ी 3. एक प्रकार का सारस 4 एक प्रकार का रतिबंध, संभोग, मैथुन 5 एक प्रकार का विष। सम०—आस्य (वि०) बन्दर जैसे मुंह वाला (स्यम्) तांबा,—इन्दुः आबनूस,—तिन्दुकः एक प्रकार का आबनूस,—पोतः

बन्दर का बच्चा, —आसः मकड़ी का जाला, —शीर्षम् सिंदूर।

मर्कटकः [मर्कट+कन्] 1 बन्दर 2 मकड़ी 3 एक प्रकार की मछली 4 एक प्रकार का अनाज धान्य विशेष।

मर्करा [मर्क्+ अर+टाप्] 1 पात्र बर्तन 2 अन्न कक्षाय छिद्र, सुरंग, विवर, खोह गुफा 3 बांझ स्त्री।

मर्च् (चुरा० उभ० —मर्चयति —ते) 1 लेना 2 मार करना 3 शब्द करना।

मर्जू: [मृज्+ऊ] 1 धोबी 2 [illegible] स्त्री०। मार्ग करना धोना पवित्र करना।

मर्तः [मृ+तन्] 1 मनुष्य मानव मर्त्य 2 [illegible] मर्त्यलोक।

मर्त्य (वि०) [मर्त+यत्] मरणशील [illegible] 1 [illegible] मानव, मनुष्य मनु० [illegible] 2 मर्त्यलोक, भूलोक [illegible] शरीर। सम० —धर्म [illegible] —धर्मन् (वि०) मरणशील आत्मा —निवासिन् (पुं०) मनुष्य मानव —भाव मानवस्वभाव —भुवनम् मर्त्यलोक मूलोक —महित देवता —मुख किन्नर इसका मुख मनुष्य के मुख जैसा तथा और सब शरीर जानवर के शरीर जैसा होता है यह कुबेर का सेवक समझा जाता है) —लोक मनुष्यलोक [illegible] पृथ्वी मर्त्यलोक विशेषि [illegible]

मर्द (वि०) [मृद्+अच्] कुचलने वाला चूर चूर कर देने वाला, पीसने वाला नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयोग), —र्दः 1 पीसना चूरा करना 2 [illegible] प्रहार।

मर्दन (वि०) (स्त्री० —नी) [मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला पीसने वाला नष्ट करने वाला सताने वाला —नम् 1 कुचलना पीसना 2 [illegible] मालिश करना 3 लेप करना (उबटन आदि से) 4 दबाना मांडना 5 पीड़ा देना सताना कष्ट देना 6 नष्ट करना उजाड़ना।

मर्दलः [मर्द+ला+क] एक प्रकार का ढोल [illegible] ६।१३, कु० ६।४०।

मर्ब् (भ्वा० पर० मर्बति) जाना हिलना जुलना।

मर्मन् (नपुं०) [मृ+मनिन्] शरीर का सजीव प्राण मूलक भाग जीवाधारक नाजुक नीला [illegible] सोऽकुर्ममर्माणि कृन्तन्नपि किं न मोदः उत्तर० २।३५, याज्ञ० १।१५३ भट्टि० १६।१५, त्वद्गुरुममर्माणि कर्म करोति —शीम० ४ 2 कोई भी दुर्बल या आलोच्य बिन्दु, दोष, त्रुटि 3 अन्तस्तल सजीव 4 (किसी भी अंग का) संधिस्थान 5 गूढार्थ, (किसी बात का) तत्त्व काव्यमर्म प्रकाशिका टीका, तत्त्वा गंगाधर मर्मप्रकाश तनुते गुरुम् —नागेश० 6 रहस्य भेद। सम० —अतिग (वि०) मर्मवेधी —शि० २०।७० —अन्वेषणम् 1 [illegible] करना 2 दुर्बल और आलोच्य बातों का भाव [illegible] करना, —आवरणम् कवच [illegible] —आविध, —उपघातिन (वि०) (हृदय के मर्म स्थलों को बेधने वाला महावी० ३।१० —कील: पति —ग (वि०) मर्मभेदी तीव्र धार —घ्न (वि०) मर्म पर आघात करने वाला अत्यन्त पीडाकर —चरम् हृदय —छिद्, —भिद (इसी प्रकार —छिन्न, —भिदिन) (वि०) मर्म स्थानों का भेदन या हृदय पर चोट करने वाला, [illegible] 2 प्राणघातक चोट करने वाला [illegible] —ज्ञ (वि०) —विद् (वि०) 1 दूसरे के दोष या दुर्बलताओं को जानने वाला 2 किसी विषय की अत्यन्त गूढ़ बातों को समझने वाला किसी विषय गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला [illegible] (—ज्ञः) कोई भी [illegible] —पारग (वि०) [illegible] अन्तर्दृष्टि रखने वाला पूरा जानकार दूसरे के रहस्यों को जानने वाला —भेद: 1 मर्मस्थानों को बेधना 2 दूसरे के रहस्य या दुर्बलताओं को प्रकट करना —भेदन —भेदिन (पुं०) बाण तीर, —विद् [illegible] —स्थलम् —स्थानम् 1 मर्मस्थल या सजीव भाग 2 कमजोरियाँ, आलोच्य बातें, —स्पृश् 1 मर्मस्पर्शी हृदयस्पर्शी 2 अभिनीत, तीक्ष्ण तेज या कटु (शब्द आदि)।

मर्मर (वि०) [मृ+अरन्, मुट् च] (पत्तों की) खड़खड़ाहट (वस्त्रों की) सरसराहट —नीरेषु तालीवनमर्मरेषु रघु० ६।५७, ४।७३ १६।४१, मधोद्धता [illegible] कु० ३।३१, —र: 1 खड़खड़ाहट की ध्वनि 2 सरसराहट।

मर्मरी [मर्मर+ङीप्] 1 देवदारु का एक भेद 2 हल्दी।

मर्मरीक [म+ईकन्, मुट्] 1 निर्धन पुरुष गरीब 2 दुष्ट मनुष्य।

मर्या [मृ+यत्+टाप्] सीमा हद।

मर्यादा [मर्यायां सीमायां दीयते मर्या+दा+अङ+टाप्] 1 सीमा, हद (आलं से भी) छोर —सीमान्त सरहद, किनारा —मर्यादाव्यतिक्रम पञ्च० १ 2. अन्त अवसान, अन्तिम मंजिल, उद्देश्य 3 तट किनारा 4. चिह्न, सीमाचिह्न 5 नीति का बन्धन निश्चित प्रथा या व्यवस्थित नियम नैतिक विधि 6 शिष्टाचार या औचित्य का नियम, औचित्य की सीमा, सदाचरण का औचित्य —आत्तातापवादभिन्नमर्याद —उत्तर० ५, पंच० १।१४२ 7. संविदा, अनुबंध, करार। सम० —अचलः, —गिरिः, —पर्वतः सरहद पर स्थित पहाड़, —भेदकः सीमाचिह्नों को नष्ट करने वाला।

मर्यादिन् (पु०) [मर्यादा+इनि] पड़ोसी, सीमान्त वासी ।

मर्व् (भ्वा० पर० मर्वति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 भरना ।

मर्शः [मृश्+घञ्] 1 विचारणा 2 परामर्श, मन्त्रणा 3. नस्य, छींक लाने वाला ।

मर्शनम् [मृश्+ल्युट्] 1 रगड़ना 2 परीक्षण, पूछताछ 3 विचारणा, मन्त्रणा 4 उपदेश देना, सलाह देना 5 मिटाना मल देना ।

मर्षः, मर्षणम् [मृष्+घञ्, ल्युट् वा] सहनशीलता, सहिष्णुता, धैर्य ।

मर्षित (भू० क० कृ०) [मृष्+क्त] 1 सहन किया हुआ सबर के साथ सहा हुआ 2 क्षमा किया गया, माफ किया गया, तम् सहनशीलता, धैर्य ।

मर्षिन् (वि०) [मृष्+णिनि] सहन करने वाला धैर्यशील ।

मल् (भ्वा० आ० चुरा० पर० मलते मलयति) थामना, अधिकार में रखना ।

मलः,—**लम्** [मृज्यते शोध्यते मृज्+कल् टिलोप—तारा०] 1 मैल, गन्दगी अपवित्रता धूल, अशुद्ध सामग्री मल दायका मलाः —का० २, छाया न मूर्छति मलोपहत प्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा श० ७।३२ 2 तलछट, कूड़ाकरकट, खाद, पुरीष गोबर 3 (धातुओं का मैल, जंग, खोट 4 नैतिक दोष या अपवित्रता, पाप 5 शरीर का कोई भी अपवित्र स्राव (मनु के अनुसार इस प्रकार के बारह स्राव हैं—वसा शुक्रमसृङ् मज्जा मूत्रविट् घ्राणकर्णविट् श्लेष्माश्रु-दूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः मनु० ५।१३५) 6. कपूर 7 'मसीशोषी' उपकरणविशेष का प्रमार्जन के काम आने वाला भीतरी कवच 8 कमाया हुआ चमड़ा चमड़े का वस्त्र, लम् एक प्रकार की खोटी धातु । सम० —**अपकर्षणम्** 1 मैल दूर करना पवित्र करना 2. पाप दूर करना, —**अरिः** एक प्रकार की सज्जी,—**अवरोधः** कोष्ठबद्धता, कब्ज —**आकर्षिन्** (पु०) झाड़ू देने वाला, भंगी,—**आवह** (वि०) 1 मैल पैदा करने वाला, मैला करने वाला, मलिन करने वाला 2. दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला, —**आशयः** पेट,—**उत्सर्गः** टट्टी जाना, पेट से मल निकालना, —**घ्न** (वि०) परिमार्जक, शोधक —**जम्** पीप, मवाद, —**दूषित** (वि०) मैला, गंदा, मलिन,—**द्रवः** रेचन, अतिसार, —**धात्री** दाई जो बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, —**पृष्ठम्** किसी पुस्तक का पहला पृष्ठ, आवरणपृष्ठ (बाह्य पृष्ठ),—**भुज्** (पु०) कौवा, —**मल्लकः** कौपीन, लंगोट,—**मासः** अंतरीय या लौंद का महीना ('मलमास' इसी लिए कहलाता है कि इस अधिक मास में कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं किया जाता है), —**वाससू** (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, जो स्त्री कपड़ों से हो,—**विसर्गः,**—**विसर्जनम्**, —**शुद्धि** (स्त्री०) मलत्याग, कोष्ठशुद्धि,—**हारक** (वि०) मैल या पाप को दूर करने वाला ।

मलनम् [मल्+ल्युट्] कुचलना पीसना, —**नः** तम्बू ।

मलय [मलते धरति चन्दनादिकम् मल्+कयन्] 1 भारत के दक्षिण में एक पर्वत शृंखला जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं (कविसमुदाय प्रायः मलय-पर्वत से चलने वाली पवन का उल्लेख किया करता है, यह पवन चन्दन तथा अन्य सुगंधित पौधों की सुगंध को इधर उधर फैलाने के साथ-साथ कामार्त व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित करती है) स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ रघु० ४।५१ ९।२५ १३।२ 2 मलयशृंखला के पूर्व में स्थित देश, मलाबार 3 उद्यान 4 इन्द्र का नन्दन कानन । सम० —**अचलः**, —**अद्रिः**, —**गिरिः**,—**पर्वतः** मलय पहाड़,—**अनिलः** —**वातः** —**समीरः** मलयपहाड़ से चलने वाली पवन, दक्षिणीपवन ललितलवंगलता परिशीलनकोमलमलयसमीरे गीत० १, मु० अपगत-दाक्षिण्यदक्षिणानिलहतक पूर्णास्ते मनोरथाः कृत कर्तव्य वहेदानीं यथेष्टम् —का० —**उद्भवम्** चन्दन की लकड़ी —**जः** चन्दन का वृक्ष अयि मलयज महिमाऽयं कस्य गिरामस्तु विषयस्ते भामि० १।११, (**जः**—**जम्**) चन्दन की लकड़ी (—**जम्**) राहु का विशेषण, °**रजस्** (नपुं०) चन्दन का चूरा, —**द्रुमः** चन्दन का पेड़, —**वासिनी** दुर्गा का विशेषण ।

मलाका [मलेन मनोमालिन्येन अकति कुटिलं गच्छति-मल+अक्+अच्+टाप्] 1 शृंगारप्रिय या कामुक स्त्री 2. दूती, अन्तरंग सखी 3 हथिनी ।

मलिन (वि०) [मल्+इनन्] 1 मैला, गन्दा, घिनौना अपवित्र, अशुद्ध, भ्रष्ट, कलंकित, कलुषित (आल० से भी) मन्यास्तद्भूरजसा मलिनीभवन्ति श० ७।५७, किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुध्वे वेणी० ३।४ 2 काला, अन्धकारमय मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म-लक्ष्मीं तनोति श० १।२०, अतिमलिने कर्तव्ये भवति खलानामतीव निपुणा धीः वास०, शि० ९।१८ 3 पापी, दुष्ट, दुश्चरित्र मलिनाचरितं कर्म सुर-भेर्नन्वसांप्रतम् काव्या० २।१७८ 4 नीच, दुष्ट, अधम लघव प्रकटी भवति मलिनाश्रयतः —शि० ९।२३ 5 मेघाच्छन्न, तिरोहित, —**नम्** 1 पाप, दोष, अपराध 2 मट्ठा, 3. सोहागा,—**ना**,—**नी** रजस्वला स्त्री । सम०—**अम्बु** (नपुं०) 'काला पानी' मसी, स्याही,—**आस्य** (वि०) 1. काले या मैले मुंह वाला 2 नीच, गंवार 3. जंगली, क्रूर—**प्रभ** (वि०) तिरोहित, दूषित, मेघाच्छन्न,—**मुख** (वि०) =मलिनास्य, दे०

(स) 1 अग्नि 2. भूत, प्रेत 3 एक प्रकार का बंदर, गोलांगूल।

मलिनयति (ना० धा० पर०) 1 मैला करना, मलिन करना, कलंकित करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, बिगाड़ना—यदा मधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १ बदनामी कमाता है या कलंकित होता है 2 भ्रष्ट करना, पदच्युत करना।

मलिनिमन् (पुं०) [मलिन+इमनिच्] 1 मैलापन, गंदगी, अपवित्रता 2 कालिमा, कालापन—मलिनिमालिनि माधवयोषिताम्—शि० ६।८ 3 नैतिक अपवित्रता, पाप।

मलिम्लुच [मली सन् म्लोचति—मलिन+म्लुच्+क] 1 लुटेरा, चोर ... १६।५९ 2 राक्षस 3 डांस, पिस्सू, मच्छर 4 लौंद का महीना 5 वायु, हवा 6 अग्नि 7 वह ब्राह्मण जो दैनिक पंच महायज्ञ का नहीं करता है।

मलीमस (वि०) [मल+ईमसच्] 1 मैला, गन्दा, अपवित्र, अस्वच्छ, कलंकित, मलिन—या न मलीमसविग्रहवसना मलिर्भूत्—भा० १।३७ रघु० ७।४३ 2 काला, काले रंग का—योषिता न मनाक्कोरकैरपि कज्जलमलीमसम्—शि० ७।३० विमलितामलिमंडल कालिका ... मलीमसा ...—शि० ६।१५८ 3 दुष्ट, पापपूर्ण, मलीमसा—मनो मलीमसा मार्गमने न प्रवृत्तिम्—रघु० ३।४६ —सम् 1 लोहा 2 हरा कसीस।

मल्ल (भ्वा० आ० मल्लते) थामना, अधिकार में करना।

मल्ल (वि०) [मल्ल्+अच्] 1 हृष्टपुष्ट, व्यायामशील बलिष्ठ कि० १८।८ 2 अच्छा, उत्तम—ल्लः 1 बलवान पुरुष 2 कसरती, मुक्केबाज, पहलवान—धनुर्ग्राहान् मल्लाय महा० 3 पान पात्र, प्याला 4 हवनपात्र 5 गाल, कपोल, गण्डस्थल। सम० —**अरि** 1 कृष्ण का विशेषण 2 शिव का विशेषण, —**क्रीडा** मुक्केबाजी या मल्लयुद्ध, —**जम्** काली मिर्च, —**तूर्यम्** एक प्रकार का ढोल, —**भू**, —**भूमि** (स्त्री०) 1 अखाड़ा, मल्लयुद्ध का मैदान 2 एक देश का नाम, —**युद्धम्** कुश्ती करना या मुक्केबाजी, मुष्टियुद्धीय भिड़न्त या मुठभेड़, —**विद्या** मल्लयुद्ध की कला, —**शाला** व्यायामशाला, अखाड़ा।

मल्लकः [मल्ल+कन्, मल्ल्+ण्वुल् वा] 1 दीवट 2 दीया तेलपात्र 3 दीपक 4 नारियल का बना हुआ प्याला 5 दांत 6 एक प्रकार की चमेली।

मल्लिः, —**ल्ली** (स्त्री०) [मल्ल्+इन्, मल्लि+ङीष्] एक प्रकार की चमेली। सम० —**नाथ** (नपुं०) अगर —**नाथः** एक प्रसिद्ध भाष्यकार जो चौदहवीं या पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ (उसने 'रघुवंश' 'कुमारसंभव', 'मेघदूत' 'किरातार्जुनीय', 'नैषधचरित' और शिशुपालवध पर टीकाएँ लिखीं), —**पत्रम्** छत्राक, खीप की छतरी।

मल्लिकः [मल्लि+कन्] 1 एक प्रकार का हंस जिसकी टांगें और चोंच भूरे रंग की होती हैं 2 माघ का महीना 3 जुलाहे की ढरकी, फिरकी। सम० —**अक्षः**, —**आख्यः** एक प्रकार का हंस जिसकी टांगें और चोंच भूरे रंग की होती हैं—एतांस्मन्मदकलमल्लिकाक्षपक्षव्याधूतस्फुरदुरुदण्डपुण्डरीकाः (भुवः विभागाः) —उत्तर० १।३१ मा० ९।१४, —**अर्जुनः** श्रीशैल नामक पर्वत पर विराजमान शिव का एक लिंग, अथवा एक प्रकार की चमेली।

मल्लिका [मल्लिक+टाप्] 1 एक प्रकार की चमेली, ... —रघु० ९।४२ 2 इस चमेली का फूल—शिरसि ... —रघु० १६।५० —मालवि० ४।१५ 3 दीवट 4 किसी विशेष आकृति का मिट्टी का बर्तन। सम० —**ख्यः** एक प्रकार का अगर।

मल्लीकर [अमल्लं मल्लं करोति—मल्ल+च्वि ईत्वम् कृ+अच्] चोर।

मल्लु [मल्ल्+उ] रीछ, भालू।

मव् (भ्वा० पर० मवति) कसना, बांधना।

मव्य् (भ्वा० पर० मव्यति) बांधना।

मश् (भ्वा० पर० मशति) 1 भिनभिनाना, गुंजन करना, शब्द करना 2 क्रोध करना।

मश [मश्+अच्] 1 मच्छर 2 गुंजना, गुनगुनाना 3 क्रोध, सम० —**हरी** मच्छरदानी मसहरी।

मशकः [मश्+वुन्] 1 मच्छर, डांस, —मशकं ... करोति शि० २।३८ मनु० १।४५ 2 चमड़ी का एक विशेष रोग 3 मशक, चमड़े का बना पानी भरने का थैला। सम० —**कुटिः**, —**टी** (स्त्री०), —**वरणम्** मच्छर हटाने का पर्दा,—**हरी** मसहरी, मच्छरदानी।

मशकिन् (पुं०) [मशक+इनि] गूलर का पेड़।

मशुनः (पुं०) कुत्ता।

मष् (भ्वा० पर० मषति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना।

मषि, —**षी** (स्त्री०) [मष्+इन्, मषि+ङीप्]=मसी दे०।

मस् (दिवा० पर० मस्यति) 1 तोलना, मापना, पैमाइश करना 2 रूप बदलना।

मसः [मस्+अच्] माप, तोल।

मसनम् [मस्+ल्युट्] 1 मापना, तोलना 2 एक प्रकार की बूटी।

मसरा [मस् + अरच् + टाप्] एक प्रकार की दाल, मसूर।

मसारः, मसारकः [मस् + विच्, मस परिमाणम् ऋच्छति मस् + ऋ + अण्, मसार + कन्] पन्ना।

मसिः (पुं० स्त्री) [मस् + इन्] 1 स्याही 2 दीवे की स्याही, काजल 3 आंखों में लगाने की काली काजल। सम० **आधारः,– कूपी** **धानम्** **धानी, मणि** स्याही रखने की बोतल, दवात, – **जलम्** रोशनाई, – **पथः** लेखक लिपिकार, – **प्रसूः** कलम लेखनी **प्रसू** (स्त्री०) 1 लेखनी 2 स्याही की बोतल **वर्धनम्** लोबान।

मसिकः [मसि + कन्] सांप का बिल।

मसी [मसि + ङीप्] दे० ऊपर 'मसि'। सम० **जलम्** स्याही,—**धानी** दवात, –**पटलम्** काजल लगाना —**शिरसि मसीपटलम् दधाति** दीप भामि० १।७४।

मसु (सू) रः [मस् + उरच्, ऊरच् वा] 1 एक प्रकार की दाल, मसूर 2. तकिया –**रा** 1 मसूर की दाल 2 वेश्या, रंडी।

मसूरिका [मसूर + कन् + टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार का शीतला रोग, खसरा 2 मसहरी 3 कुट्टिनी, दूती।

मसूरी [मसूर + ङीप्] छोटी चेचक।

मसृण (वि०) [मृश् (दीप्ति) + क, पृषो० साधुः] 1 स्निग्ध, चिकना—**मसृणचंदनचर्चितांगी** गीत० ७ या, सरम मसृणमपि मलयजपंकम् गीत० ६ – मृदु, कोमल, सरल —उत्तर० १।३८ 3 सौम्य, मृदु मधुरमसृणवाणि गीत० १० 4 प्रिय, मनोहर विनयमसृणो वाचि नियम उत्तर० ४।२ ६।२१ 5 चमकीला, उज्ज्वल – मा० १।२०, ६।६, **णा** अलसी।

मस्क् (भ्वा० पर० मस्कति) जाना, हिलना-जुलना।

मस्करः [मस्क् + अरच्] 1 बांस 2 खोखला बांस 3 गति चाल 4 ज्ञान।

मस्करिन् (पुं०) [मस्कर + इनि] 1 सन्यासी या साधु सन्यास आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण धारयन् मस्करिव्रतम् भट्टि० ५।६३ 2. चन्द्रमा।

मस्ज् (तुदा० पर० मज्जति, मग्न–प्रेर० मज्जयति–इच्छा० मिमङ्क्षति) 1 स्नान करना, डुबकी लगाना, पानी में गोता लगाना रघु० १६।१०१ भामि० २।१५ 2 डूबना, डूबना, डूबजाना, नीचे बैठना, गोता लगाना (अधि० या कर्म० के साथ) सावयवं नमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा उत्तर० ३।३८ मा० ९।३० –सोऽस्तव्यून नाम तम सह तेनैव मज्जति–मनु० ४।८१, रघु० १६।७२ 3 डूबना पानी में नष्ट होना 4 दुर्भाग्यग्रस्त होना 5 हतोत्साह होना निराश या उत्साहहीन होना, **उद्** पानी से बाहर आना, दृष्टिगोचर होना, उठना वन्य सरितो गज उन्ममज्ज – रघु० ५।४३ १६।७९ कि० ९।२३ शि० ९।३०, **नि** ,डूबना नीचे बैठना डूब जाना (आलं० से भी) यथा प्लवेनौपलेन निमज्जत्युदके तरन् तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ –मनु० ४।१९४ ९।७२, शोके महत्यधाविरत न्यमाक्षीत भट्टि० ३।२० १५। ३१ शि० ९।७४ गीत० १ 2 भूल जाना डूब जाना ओझल होना नजर से बच निकलना एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः –कु० १।३।

मस्तम् [मस् + क्त] सिर माथा। सम० **दारु** (नपुं०) देवदारु का पेड़, **मूलकम्** गर्दन।

मस्तकः कम् [मस्यति परिमाति [illegible] मस करणेन स्वार्थे क [illegible]] 1 सिर, माथा खोपड़ी अभितोऽस्या ([illegible]) भिक्षुकस्य [illegible] 2 किसी चीज का चोटी या सिर [illegible] मनु० [illegible] वृक्ष [illegible] आदि। सम० **आख्य** [illegible] की चोटी, **ज्वरः,** शूलम् माथे सिरदर्द, **पिण्डकः** [illegible] हाथी के [illegible] उभार **मूलकम्** गर्दन **स्नेहः** मस्तिष्क।

मस्तिकम् [मस्तकम् पृषो० [illegible]]

मस्तिष्कम् [मस्तं मस्तकम् [illegible]] [illegible] (मस्त०) मस्तिष्क [illegible]

मस्तु (नपुं०) [मस् + तुन्] 1 खट्टी मलाई 2 छाछ। सम० **लुङ्गः, लुंगकः** मस्तिष्क [illegible]

मह् I (भ्वा० पर० चुरा० उभ०—महति महयति – महित) सम्मान करना आदर करना, पूजा करना, श्रद्धा रखना महत्त्वपूर्ण समझना, महत्त्व में निरीना महयति महेश्वरम् विबुधा सुभा०, इदयो विन्यस्तैर्महित इव मदारकुसुमैः गीत० ११, कु० ५।२५, ५।१२, कि० ५।७ २४, भट्टि० १०।२, रघु० ११।४९।

II (भ्वा० आ० महते) विकसित होना बढ़ना।

महः [मह् घञर्थे क] 1 उत्सव, त्योहार वधूनामुदय कौमुदीमह मा० ९।२१, स कृत्स्न् मदनमहम्, –प्रसाद् मन्मथमथाप्यनिवर्तनीते महममावितिर्बोधितैः शि० ६।१९, मदनमहम्, –रत्ना० १ 2 उपहार यज्ञ 3 भैंसा 4 प्रकाश, कान्ति नपुं० महस् से भी।

महकः [मह + कन्] 1 प्रमुख पुरुष 2 कछुवा 3 विष्णु का नामान्तर।

महत् (वि०) (म० अ० महीयस् उ० अ० महिष्ठ, कर्तृ० (पुं०) महान् महान्तौ महान्त, कर्म० (ब० व०)

महत्) [मह् +अति] 1 बड़ा, बृहत्, विस्तृत विशाल विस्तीर्ण महान् सिंह व्याघ्र आदि 2 पुष्कल, यथेष्ट विपुल, बहुत से,असंख्य — महाजन, महान्, द्रव्यराशि 3 लम्बा विस्तारित, व्यापक महान्तौ बाहू यस्य स महाबाहु इसी प्रकार महती कथा महानध्वा 4 हृष्टपुष्ट बलवान्, ताकतवर जैसे महान् वीर 5 प्रचंड गहन अत्यधिक महती शिरोवेदना महती पिपासा 6 स्थूल, निबिड सघन — महानन्धकार 7 महत्त्वपूर्ण गुरुतर भारी महत् स्कार्यमुपस्थितम् महती वार्ता 8 ऊँचा उन्नत प्रमुख पूज्य उदात्त महत्कुलम् महान् जन 9 उत्ताल — महान् घोष ध्वनि 10 सबेर या देर में महति प्रत्यूषे प्रातःकाल सबेरे महत्यपराह्णे दोपहर बाद देर में 11 ऊँचा महत्तर (पुं०) 1 ऊँट 2 शिव का विशेषण 3 (सांख्य — महत्तत्त्व बुद्धि तत्त्व (मन से भिन्न) सांख्य० द्वारा माने गये पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा मनु० १.७५, सा० ३।८।४४ आदि नपुं० 1 बड़प्पन अनन्तता असंख्यता 2 राज्य उपनिवेश 3 धार्मिकज्ञान (अव्य०) बहुत अधिक अत्यधिक बहुत ज्यादा अत्यन्त (विशे० महत् शब्द तत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य स्थानों पर आनिर्वाचित ही रहता है परन्तु कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में बदल कर महा बन जाता है) सम० —आकाश विशाल — आशा ऊँची आशा —आश्चर्य (वि०) अत्यन्त आश्चर्यजनक — आश्रय बड़ों का सहारा बड़ों के शरण —कृत (वि०) बड़ों द्वारा कथित या की सम्मत बड़े लोगों के मत में, —क्षेत्र (वि०) विस्तृत प्रदेश पर अधिकार करने वाला —सात्त्विक सांख्य के तत्त्वों में से दूसरा — विलम्ब अत्यधिक, —सेवा बड़ों की सेवा —स्थानम् ऊँचा स्थान उन्नत स्थान

महती [महत् + ङीष्] 1 एक प्रकार की वीणा 2 नारद की वीणा अवेक्षमाण महतीं मुहुर्मुहुः शिशु० १.१० 3 सफेद बैंगन का पौधा 4 बड़प्पन महत्त्व।

महत्तर (वि०) [महत् + तरप्] अपेक्षाकृत बड़ा विशाल — र: 1 प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्माननीय पुरुष—उत्तर० ४ 2 कंचुकी या राज भवन का द्वारप्रतिहार 3 दरबारी 4 गाँव का मुखिया या सबसे बड़ा आदमी।

महत्तरक: [महत्तर + कन्] दरबारी आदमी, किसी राज भवन का बड़ा प्रतिहार।

महत्त्वम् [महत् + त्व] 1 बड़ापन विशालता विस्तृति महाविस्तार 2. शक्तिमत्ता विभूति ऐश्वर्य 3 आवश्यकता 4 उन्नत अवस्था, ऊँचाई, उन्नयन 5 गहनता, प्रचण्डता, ऊँचा परिमाण।

महनीय (वि०) [मह् + अनीयर्] सम्मान के योग्य आदरणीय, प्रतिष्ठित श्रीमान यशस्वी उदात्त श्रेष्ठ — महनीयशासन — रघु० ३।६९, महनीयकीर्ति २।२५।

महन्त [मह् + झच्] किसी पद का मुख्याधिष्ठाता।

महर् (महस्) (अव्य०) [मह् अच्] भूलोक से ऊपर के लोकों में से चौथा लोक (स्वर और जनस् के बीच का लोक। (इसी अर्थ में 'महर्लोक' शब्द भी)।

महल्ल: महल्लिक: [अरबी भाषा से व्युत्पन्न शब्द महल् [ला + क] राजा के अन्तःपुर में रहने वाला खोजा या हिजड़ा।

महल्लक [महल्ल कन्] निर्बल कमजोर पुराना, —क 1 राजा के अन्तःपुर का खोजा या हिजड़ा विशाल भवन महल

महस् (नपुं०) [मह् + असुन्] 1 उत्सव त्योहार का अवसर 2 उपहार आहुति यज्ञ 3 प्रकाश आभा कान्ति स्वमाय महसा भासुरं विश्वमुर्वे — मा० ... ४।१० 4 सात लोकों में से चौथा दे० महर्।

महस्वत् महस्विन् (वि०) [महस् + मतुप् विनि वा] भव्य, उज्ज्वल चमकीला प्रकाशयुक्त भास्वर।

महा [मह् घ टाप् गाय

महा [कर्म० स० और ब० स० में प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य अनियमित शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त 'महत्' का स्थानापन्न रूप] (विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद महा है बहुत अधिक है ... और अनेक शब्द बन सकते हैं उनमें से अपेक्षाकृत आवश्यक या जो कोई विशिष्ट अर्थ रखते हैं दिये जा रहे हैं)। सम० —अक्ष शिव का विशेषण —अंग (वि०) स्थूल महाकाय (—ग: 1 ऊँट 2 एक प्रकार का चूहा 3 शिव का ...", —अंजन एक पहाड़ का नाम — अत्यय महान् संकट का मारा जाना —अध्वनिक (वि०) दूर तक गया हुआ महाप्रयाण ... —अध्वर बड़ा यज्ञ, —अन्नस भारी गाड़ी ... रसोई —अनुभाव (वि०) महाप्रतापी ओजस्वी उदात्त यशस्वी महाशय उदार श्रीमान शि० शि० १।१३ शा० ३।2 गुणवान् ईमानदार धर्मात्मा (—व:) प्रतिष्ठित आदरणीय व्यक्ति, —अन्तक मृत्यु 2 शिव का विशेषण —अन्धकार 1 घोर अन्धेरा 2 आध्यात्मिक अज्ञान, —अन्ध्रा: (ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम —अन्वय, —अभिजन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न सत्कुलोद्भव (—य: —न:) उत्तम जन्म ऊँचा कुल, —अभिषव सोम का अत्यन्त खींचा हुआ रस, —अमात्य (राजा का) मुख्य

या प्रधानमंत्री **अंशुक** शिव का विशेषण **अंबुजम्** दस खरब, **अम्ल** (वि०) बहुत खट्टा ([illegible] इमली का फल **अरण्यम्** सुनसान जंगल विशाल जंगल, **अर्घ** (वि०) अति मूल्यवान् ऊँची कीमत वाला (—र्घः) एक प्रकार की बटेर, **अर्घ्य** (वि०) मूल्यवान् कीमती, **अर्चिस्** (वि०) ऊँची ज्वाला वाला, **अर्णव** 1 महासागर 2 शिव का नामान्तर **अर्बुदम्** एक अरब **अर्ह** (वि० 1 अतिमूल्यवान् बहुत कीमती कु० ५।१५ 2 अनमोल अनमेय उत्तर० ६।११ [illegible] सफेद चन्दन की लकड़ी **अवरोह** वटवृक्ष, **अशनिध्वज** यज्ञ के रूप में एक बड़ा झंडा रघु० ३।५६ **अशन** ([illegible]) पेट भोजनभट्ट, **अश्मन्** (पु०) [illegible] **अष्टमी** आश्विन शुक्ला अष्टमी दुर्गाष्टमी —**असि** बड़ी तलवार, **असुरी** दुर्गा का नामान्तर **अह्न** [illegible] बाद का समय **आकार** (वि०) विस्तीर्ण, विशाल बड़ा,—**आचार्य** 1 प्रधान अध्यापक शिव का विशेषण,—**आढ्य** (वि० धनवान अमीर (—ढ्यः) कदम्ब का वृक्ष **आत्मन्** (वि० 1 महाशय महामनस्क उदारमना महोदय अथ दुरात्मा अथवा महात्मा कौटिल्य मुद्रा० १ [illegible] महात्मना कु० ।७। उत्तर० १।४९ 2 श्रीमान पूज्य श्रेष्ठ प्रमुख (पु०) परमात्मा मनु० १।५६ (महात्मवत् का भी यही अर्थ है जो महामनस् शब्द का) **आनक** एक प्रकार का बड़ा ढोल **आनन्द** 1 बड़ा हर्ष या प्रसन्नता 2 विशेष कर मोक्ष का आनन्द, **आपगा** बड़ी नदी,- **आयुध** शिव का विशेषण —**आरम्भ** (वि०) बड़े बड़े कार्यों में हाथ में लेने वाला साहसिक (—म्भः) कोई बड़ा साहसिक कार्य, **आलय** 1 देवालय 2 पवित्र स्थान आश्रम 3 बड़ा आश्रयस्थान 4 तीर्थस्थान 5 ब्रह्मलोक 6 परमात्मा (—या) एक विशेष देवता का नाम, **आशय** (वि०) महात्मा महामनस्क उदारचेता, उदात्तचरित्र दे० महात्मन् (—यः) 1 उदारमना या उदारचेता व्यक्ति महाशयचक्रवर्ती–भामि० १।७० 2 समुद्र,—**आस्पद** (वि०) 1 उत्तम पद पर अधिकार करने वाला 2 ताकतवर, बलवान, —**आहवः** बड़ा या महासंग्राम, -**इच्छ** (वि०) 1 उदारचेता, उदारमना महामना उदात्तचरित्र -रघु० १८।३३ 2 महान् उद्देश्य और आशाएँ रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, **इन्द्र** 1 महेन्द्र अर्थात् महान् इन्द्र कु० ५।५३, रघु० १३।२०, मनु० ७।७ 2 मुखिया या नेता 3 एक पर्वत शृंखला, °**चाप** इन्द्रधनुष, °**नगरी** इन्द्र की राजधानी अमरावती, °**मंत्रिन्** (पु०) बृहस्पति का विशेषण,—**इष्वास** बड़ा धनुर्धर, बड़ा भारी योद्धा भग० १।४ **ईश** –**ईशान** शिव का नाम **ईशानी** पार्वती का नाम, **ईश्वर** 1 महाप्रभु स्वामी 2 शिव का नामान्तर 3 विष्णु का नाम (—री) दुर्गा का नाम, **उक्ष** ('उक्षन' के स्थान पर) महाकाय बैल हृष्टपुष्ट बैल महाशक्ता बलसंपन्न साँड़ [illegible] रघु० ३।३२ ४।२२ ६।७२ शि० ५।६३, **उत्पलम्** एक बड़ा नील कमल, **उत्सव** 1 एक बड़ा पर्व या हर्ष का अवसर 2 कामदेव, **उत्साह** (वि०) कर्मठ [illegible] धैर्यशाली (—हः) बैल **उदधि** 1 महासागर रघु० ३।१७ 2 इन्द्र का विशेषण [illegible] **उदय** (वि०) बड़ा समृद्ध शाली या [illegible] बड़ा यशस्वी या भाग्यवान समृद्ध (—यः) 1 प्राबल्य उत्कर्ष [illegible] समृद्धि रघु० [illegible] 2 मोक्ष 3 प्रभु स्वामी 4 कान्यकुब्ज या कन्नौज नामक [illegible] की राजधानी [illegible] **उदर** (वि०) बड़े पेट वाला [illegible] 1 बड़ा [illegible] 2 जलोदर —**उदार** (वि०) अतिदानशील या उदारचेता बड़ा [illegible] **उद्यम** ([illegible] बड़ा साहस [illegible] **उद्योग** (वि०) अतिपरिश्रमी मेहनती परिश्रमशील **उन्नत** (वि०) अत्युच्च ऊँचा ([illegible] ताड़ या खजूर का वृक्ष **उपनिषद्** (स्त्री०) [illegible] उपपुराण (आग० भी) [illegible] **उपकार** बड़ा आभार **उपाध्याय** मुख्य गुरु विद्वान अध्यापक **उरग** बड़ा साँप रघु० १२।९८ **उरस्क** (वि०) विशाल वक्षस्थल वाला (—स्कः) शिव का विशेषण **उल्का** 1 एक बड़ा टूटा तारा 2 बड़ी जलती हुई लकड़ी **ऋद्धि** (स्त्री०) बड़ी समृद्धि या सम्पन्नता **ऋषभः** साँड **ऋषि** 1 बड़ा ऋषि या सन्त (मनु० १।३४ में यह शब्द मानवजाति के मूलपुरुष या दस प्रजापतियों के लिए प्रयुक्त हुआ है परन्तु यह बड़ा ऋषि के सामान्य अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 2 शिव का नाम **ओष्ठ** (महोष्ठ) (वि०) बड़े होठों वाला (—ष्ठः) शिव का विशेषण —**ओजस्** बहुत ताकतवर, अतिबलशाली प्रतापी यशस्वी, महौजसो मानधना धनार्चिता: कि० १।१९, (पु.) बड़ा शूरवीर या योद्धा, मल्ल **ओजसम्** विष्णु का चक्र **ओषधि** (स्त्री०) 1 अमोघ औषधि का पौधा, अचूक दवा 2 दूर्वा घास, **औषधम्** सर्वोपरि उपचार, रामबाण सब रोगों की अचूक दवा 3 अदरक 4 लहसुन 5 एक प्रकार का विष, वत्सनाभ, - **कच्छः** 1. समुद्र 2 वरुण का नाम 3 पहाड़ का नाम, **कंद** लहसुन, —**कपर्द** एक प्रकार की सीपी कौड़ी, **कपित्थ**. 1 बेल का पेड़ 2 लाल लहसुन, **कंबु** (वि०) बिल्कुल नंगा (—**बुः**) शिव का विशेषण, **कर** (वि०) 1 लंबी

हाथों वाला 2. जिसको बहुत राजस्व मिलता हो,—कर्णः शिव का विशेषण, —कर्मन् (वि०) बड़े-बड़े काम करने वाला (पु.) शिव का विशेषण,—कालः कृष्ण पक्ष की द्वितीया की रात, - कविः 1. कविशिरोमणि कालिदास भवभूति, बाण और भारवि आदि महाकवि 2. शुक्राचार्य का विशेषण—कान्तः शिव का विशेषण (—ता) पृथ्वी,—काय (वि०) स्थूलकाय, बड़ा भारी-काय, बलिकाय (—यः) 1. हाथी 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण 4. शिव का एक अनुचर, नंदी बैल,—कार्तिकी कार्तिक मास की पूर्णिमा, --कालः प्रलयकर्ता के रूप में शिव का एक रूप 2 एक प्रसिद्ध मन्दिर या शिव (महाकाल) का मन्दिर, ('महाकाल' का यह मन्दिर उज्जैन में विद्यमान है, कालिदास ने अपने मेघदूत की रचना द्वारा इसे अमर कर दिया है, यहाँ (महाकाल=शिव) देवता, उसका मन्दिर, पूजा आदि के साथ-साथ नगरी का सचित्र वर्णन मिलता है दे० मेघ० ३०-३८, रघु० ६।३४ 3. विष्णु का विशेषण 4. एक प्रकार की लौकी या कद्दू, —पुरम् उज्जयिनी की नगरी, —काली दुर्गा देवी का डरावना रूप,—काव्यम् कलात्मक काव्य, महाकाव्य (इसके विषय में पूरा विवरण सो साहित्य शास्त्रियों ने दिया है सा० द० ५५९ में दे०) (महाकाव्य गिनती में पाँच हैं - रघुवंश, कुमारसंभव, किराता-र्जुनीय, शिशुपालवध, और नैषधचरित। यदि खंड-काव्य—मेघदूत भी सूचीमें सम्मिलित किया जाय तो छः महाकाव्य हो जाते हैं परन्तु यह गणना केवल परम्परा-प्राप्त, क्योंकि भट्टिकाव्य, विक्रमांकदेवचरित और हरविजय आदि का भी महाकाव्य की दृष्टि से विचार किये जाने का समान अधिकार है) —कुमारः राजा का सबसे बड़ा पुत्र, युवराज, —कुल (वि०) सत्कुलोत्पन्न, उच्चकुलोद्भव, ऊँचे कुल में उत्पन्न (—लम्) उच्चकुल में जन्म, ऊँचा कुल, —कृच्छ्रम् घोर साधना, भारी तपस्या, - कोशः शिव का विशेषण,

—क्रतुः महायज्ञ, उदा० अश्वमेध—रघु० ३।४६, —क्रमः विष्णु का विशेषण, —क्रोधः शिव का विशेषण,—क्षत्रपः महाराज्यपाल, उपशासक, —क्षीरः गन्ना, ईख,—खर्वः,—र्वम् (बड़ी संख्या सौ खरब की संख्या) —गजः बड़ा हाथी दे० दिक्करिन्, —गणपतिः गणेश देवता का एक रूप, —गंधः एक प्रकार की बेंत (—धम्) एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, —गदः बुखार,

—गुण (वि०) अमोघ अचूक (औषधि आदि)

—गृष्टिः विशाल डील की गाय, —ग्रहः राहु का विशेषण, —ग्रीवः 1 ऊँट 2 शिव का विशेषण,—ग्रीविन् (पु.) ऊँट —घूर्णा खींची हुई शराब, —घोषम् मंडी, मेला (—षः) ऊँचा शोर, कोलाहल, गुलगपाड़ा,

—चक्रवर्तिन् (पु.) सार्वभौम नरेश,—चमूः (स्त्री०) विशाल सेना,—छायः वटवृक्ष,—जटः शिव का विशेषण, —जत्रु (वि०) जिसकी हंसली की हड्डी बहुत बड़ी हो (—त्रुः) शिव का विशेषण, —जनः 1 लोगों का समूह, बहुत से प्राणी, साधारण जनता—महाजनो येन गतः स पन्था: महा० 2. जनसंख्या, भीड़-भाड़ —महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति कु० ५।७० 3 बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित पुरुष, प्रमुख व्यक्ति—महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः, पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम् —सुभा० 4 किसी व्यवसाय का मुखिया 5 सौदागर, व्यापारी —जातीय (वि०) 1 दयाशील 2 उत्तम जाति का,

—ज्योतिस् (पु.) शिव का विशेषण,—तपस् (पु.) 1 कठोर तप करने वाला 2. विष्णु का विशेषण,—तलम् नीचे के सात लोकों में से एक, दे० पाताल,

—तिक्तः निम्बवृक्ष, —तीक्ष्ण (वि०) अत्यंत तेज या तीव्र (स्वाद) निकालती,—तेजस् (वि०) 1. बड़ी भारी कांति या दीप्ति से युक्त 2. तेजस्वी, शक्तिशाली, वीर्ययुक्त (पु०) 1. शूरवीर, योद्धा 2 अग्नि 3. कार्तिकेय का विशेषण (न०) पारा,—दन्तः—दंतः 1 बड़े दांतो वाला हाथी 2. शिव का विशेषण 1 लम्बी भुजा 2. भारी दश दशा (मनुष्य के भाग्य पर) प्रबल ग्रह का प्रभाव, - द्रुम (न पुं०) अश्वत्थ वृक्ष, —देवः शिव का नामान्तर (—वी) पार्वती का नामान्तर, —द्रुमः पीपल का वृक्ष,—धन (वि०) 1 धनाढ्य 2. कीमती, मूल्यवान् (—नम्) 1. सोना, 2. गंध, धूप 3. मूल्यवान् वेशभूषा,—धनुस् (पुं०) शिव का विशेषण,—धातु 1. सोना 2. शिव का विशेषण 3. मेरु का विशेषण,—ध्वजः शिव का विशेषण —नटः बड़ा नर्तक,—नदी 1 नदी, कृष्णा जैसी बड़ी नदी समुद्रमम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा—शि० २।१०० 2. बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी,—नंदा 1 खींची हुई शराब 2. एक नदी का नाम,—नरकः इक्कीस नरकों में से एक,—नलः एक प्रकार का नरकुल, नेवा—आश्विनशुक्ला नौमी, दुर्गानवमी,—नाटकम् 'महानाटक' एक नाटक का नाम जिसे 'हनुमन्नाटक' (हनुमान् के नाम से संबंधित ग्रन्थ के कारण) भी कहते हैं, —नादः 1. ऊँची आवाज़ ... 2. बड़ा ढोल 3. गरजने वाला बादल, 4. शंख 5 हाथी 6 सिंह 7. कान 8. और 9. शिव का विशेषण, (—दम्) एक वाद्ययंत्र,—नाभः शिव का विशेषण,—निद्रा 'महानिद्रा', मृत्यु, - निम्नः विष्णु का विशेषण, - निर्वाणम् (बौद्धों के अनुसार) व्यक्ति-सत्ता का पूर्ण नाश, —निशा 1. आधीरात, रात का दूसरा या तीसरा पहर महानिशा तु विज्ञेया मध्यमं

महानलम्,—नीलः नीली,—नील (वि०) बहुत नील (लः) एक प्रकार का नीलम या पन्ना—शि० ४।४४, ५।४४, रघु० १८।४२, °उपलः नीलम,—नृत्यः शिव का विशेषण, —नेमिः कौवा,—पक्षः 1 गरुड़ का विशेषण 2. एक प्रकार की बत्तख, (-क्षी) उल्लू,—पंचमूलम् पाँच पेड़ों की जड़ों का योग—बिल्वोऽग्निमन्थ स्योनाकः काश्मरी पाटला तथा, सर्वैस्तु मिलितैरेतै स्यान्महापंचमूलकम्, – पंचविषम् पाँच घातक विषों का योग—शृङ्गी च कालकूटश्च मुस्तको वत्सनाभकः, शंखकर्णीति योगोऽयं महापंचविषाभिधः, —पथः 1 मुख्य सड़क, प्रधान वीथी, राजमार्ग –मु० ७।१ 2. परलोक अर्थात् मृत्यु का मार्ग 3. कुछ पर्वत के शिखर जहाँ से भक्त लोग स्वर्गपथ प्राप्त करने के लिए अपने आपको फेंका करते थे 4. शिव का एक विशेषण, —पद्मः एक विशिष्ट बड़ी संख्या, (सौ पद्म की संख्या ?) 2. नारद का नामान्तर 3. कुबेर की नौ निधियों में से एक (द्मम्) 1. श्वेत कमल 2. एक नगर का नाम, °पतिः नारद का नामान्तर,—पराह्णः देर में, दोपहर बाद, —पातकम् बहुत बड़ा पाप, जघन्य अपराध —ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः, महान्ति पातकान्याहुस्तत्संसर्गश्च पंचमम् - मनु० ११।५४ 2 कोई बड़ा पाप, या अतिक्रमण, —पाशः प्रधान मंत्री, -पादः शिव का विशेषण,- पाप्मन् (वि०) अत्यन्त पापपूर्ण या दुर्वृत्त, °पुंसः महान् पुरुष

पुरुषः 1. बड़ा आदमी, एक प्रमुख या पूज्य व्यक्ति। —स्तवं महापुरुषसंविहितं निशम्य उत्तर० ६।७ 2. परमात्मा 3. विष्णु का विशेषण,—पुच्छः एक प्रकार का कीड़ा, – पूजा बड़ी पूजा, असाधारण अवसरों पर अनुष्ठित बहुत पूजा, – पृष्ठः एक ऊँट, - प्रलयः विश्व का विध्वंसन,—प्रभ (वि०) बड़ी भारी कान्ति वाला (—भः) दीपक का प्रकाश,—प्रभुः 1 परमेश्वर 2 राजा महाराज 3. मुख्य 4 इन्द्र का विशेषण 5 शिव का विशेषण 6. विष्णु का विशेषण,—प्रलयः 'महाविनाश' ब्रह्मा की जीवन समाप्ति पर विश्व का पूर्ण विनाश जब कि अपने अधिवासियों सहित समस्त लोक, देव, सन्त, ऋषि आदि स्वयं ब्रह्मा समेत सभी विनाश को प्राप्त हो जाते हैं,—प्रसादः 1. एक बड़ा अनुग्रह 2. (भगवान् की मूर्ति पर चढ़ाया हुआ भोग) एक बड़ा उपहार,—प्राणः 1. श्वास के बिना लेना, मुख खोला स्वास, या स्वाभाविक ध्वनि जो अन्य वर्णों के उच्चारण में की जाती है 2. महाप्राणित है कुछ वर्ण—अर्थात् ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ श ष स ह, 3. पहाड़ी कौवा,—फलम् भारी वाद, —फल (वि०) बहुत फल देने वाला (ला) 1. कड़वी लौकी 2. एक प्रकार की बर्छी, (लम्) बड़ा

फल या पुरस्कार,—बल बहुत मजबूत (लः) हवा (लम्) सीसा °ईश्वरः वर्तमान महाबलेश्वर के निकट स्थापित शिव का लिंग,—बाहु (वि०) लंबी भुजाओं वाला, शक्तिशाली (हुः) विष्णु का विशेषण,—बिल (बि) लम्—1 अन्तरिक्ष 2. हृदय 3. जलकलश, घड़ा 4 विवर, गुफा,—बीज (बी) जः शिव का विशेषण, —बीज (बी) ज्यम् मूलाधार,—बोधिः बौद्धभिक्षु, - ब्रह्मम्,—ब्रह्मन् परमात्मा,—ब्राह्मणः 1 एक बड़ा या विद्वान् ब्राह्मण 2. एक नीच या तिरस्करणीय ब्राह्मण,—भाग (वि०) 1. अतिभाग्यवान्, सौभाग्यशाली, समृद्ध 2. श्रीमान्, पूज्य, यशस्वी—महाभाग काम नरपतिरभिन्नस्थितिरसौ—श० ५।१०, मनु० ३।१९२ 3 अत्यन्त निर्मल या पवित्र, अत्यंत गुणवान्, —भागिन् (वि०) अतिभाग्यवान् या समृद्ध,—भारतम् प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें धृतराष्ट्र और पाण्डु के पुत्रों की प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष का वर्णन है (इसमें अठारह पर्व या अध्याय हैं, कहा जाता है कि इसकी रचना व्यास ने की, दे० 'भारत' शब्द की भी),—भाष्यम् 1 एक बड़ी टीका 2. विशेषकर पाणिनि के सूत्रों पर पतञ्जलि द्वारा लिखा गया महाभाष्य (विस्तृत टीका), —भीमः राजा शान्तनु का विशेषण,—भीरुः एक प्रकार का कीड़ा, गुबरैला,—भुज (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, शक्तिशाली, —भूतम् मूलतत्त्व —दे० भूत—तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९, मनु० १।६, (-तः) एक बड़ा जानवर,—भोगा दुर्गा का विशेषण,—मतिः ऊँची या बुद्धिमान् मति, बृहस्पति, बहादुर,— मति (वि०) 1 उच्चमनस्क 2 चतुर (तिः) बृहस्पति का नाम,—मद (वि०) मदों में अत्यन्त चूर (—दः) मतवाला हाथी, —मनस्,—मनस्क (वि०) 1 उच्चमना, उदारमनस्क, उदाराशय 2. उदार 3 घमण्डी, अभिमानी (पुं०) 'शरभ' नाम का एक कल्पनाप्रसूत जन्तु—मंत्रिन् (पुं०) प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री,—महोपाध्यायः 1. बहुत बड़ा उपाध्याय, अध्यापक, महापंडित, विद्वान् और प्रसिद्ध पंडितों को दी जाने वाली उपाधि - यथा० महामहोपाध्याय-मल्लिनाथ सूरि आदि, - मांसम् मूल्यवान् मांस विशेषकर नरमांस-मा० ५।१२,—मात्रः 1. राज्य का बड़ा अधिकारी, उच्च राज्याधिकारी, मुख्यमन्त्री —स्वर्णे स्वर्णेन भूषाश्च क्रियते माने परिच्छदे, मात्रा च महती सेना महामात्रस्य लक्षणम् - मनु० ९।२५९ 2. महावत, हाथियों पर नियंत्रण रखने वाला पंच० १।१११ 3. हाथियों का अधीक्षक (त्री) 1. मुख्यमन्त्री की पत्नी 2. आध्यात्मिक गुरु की पत्नी, —मायः विष्णु का विशेषण,—माया सांसारिक कारण रूपा अविद्या जिससे यह समस्त भौतिक प्रपञ्च वास्तविक प्रतीत

होता है, भारी हैजा, बबाई रोग, मकामक बीमारी, —माहेश्वरः शिव या महेश्वर का बड़ा भक्त, —मुखः मगरमच्छ, घड़ियाल, —मुनिः बड़ा ऋषि 2. व्यास (नपुं० —नि) आयुर्वेद की जड़ीबूटी, —मूर्धन् (पुं०) शिव का विशेषण, —मूलम् एक बड़ी मूली (लः) एक प्रकार का प्याज, —मूल्य (वि०) अत्यन्त क़ीमती (ल्यः) लाल, —मृग 1 कोई भी बड़ा जानवर 2. हाथी, —मेदः मूंगे का पेड़, —मोहः मन का भारी आकर्षण (—हा) दुर्गा का विशेषण, —यज्ञः महायज्ञ' गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पांच यज्ञ या और कोई धर्मकृत्य —अध्यापन ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्, होमो दैवो (देवयज्ञ) बलिर्भौतो (भूत यज्ञ) नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् मनु० ३।७०–७२, —यमकम् 'बृहद्यमक' अर्थात् किसी श्लोक के चारों चरण जहां शब्दतः एक से हैं, परन्तु अर्थतः भिन्न हैं, उदा० दे० कि० १५।५२, यहां 'विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणाः' पंक्ति के चार भिन्न २ अर्थ हैं, तु० भट्टि० १०।१९ की भी, —यात्रा 'बड़ी तीर्थयात्रा' काशी यात्रा, मृत्यु, —याम्यः विष्णु का विशेषण, —युगम् 'बृहद् युग' मनुष्यों के चार युगों का समाहार अर्थात् ४३२०००० मानववर्ष, —योगिन् (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. मुर्गा, —रजतम् 1 सोना 2 धतूरा, —रजनम् 1. केसर 2 सोना, —रत्नम् बहुमूल्य रत्न, —रथः 1. बड़ी गाड़ी या रथ 2. बड़ा योद्धा या नायक —कृतः प्रभावो धनजयस्य महारथजयद्रथस्य, विपरीतमुत्पादयितुम् वेणी० २, रघु० ९।१, शि० ३।२२ (महारथ की परिभाषा एको दशसहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनां, शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च विज्ञेयः स महारथ), —रस (वि०) अत्यन्त रसीला (सः) 1. गन्ना, ईख 2 पारा 3 बहुमूल्य धातु (सम्) चावलों का जायकेदार मांड, —राजः 1. बड़ा राजा, प्रभु, या सम्राट् 2 राजाओं या बड़े २ व्यक्तियों को ससम्मान संबोधित करने की रीति (महाराज, देव, प्रभु, महामहिम), —चूतः एक प्रकार का आम, —राजिकाः (पुं०, ब० व०) एक देवसमूह का विशेषण (गिनती में यह देव २२० या २३६ माने जाते हैं), —राज्ञी मुख्य रानी, राजा की प्रधान पत्नी, —रात्रिः, —त्री (स्त्री०) दे० महाप्रलय, —राष्ट्रः 1. 'महाराष्ट्र' भारत के पश्चिम में मराठों का एक देश 2. महाराष्ट्र देश के अधिवासी, मराठे (ब० व०) (ष्ट्री) मुख्य प्राकृत बोली, महाराष्ट्र के अधिवासियों की भाषा —तु० दण्डी— महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः —काव्या० १।३४, —रूप (वि०) रूप में बलवान् (पः) 1. शिव का विशेषण 2. राल, —रेतस् (पुं०) शिव का विशेषण, —रौद्र (वि०) बड़ा डरावना (—द्री) दुर्गा का विशेषण, —रौरवः इक्कीस नरकों में से एक मनु० ४।८९–९०, —लक्ष्मी 1. नारायण की शक्ति या महालक्ष्मी 2. दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा बनने वाली कन्या, —लिंगम् बृहल्लिंग (गः) शिव का विशेषण, —लोलः कौवा, —लोहम् चुम्बक, —वनम् 1 एक बड़ा जंगल 2 विध्यवन में एक बड़ा जंगल, —वराहः 'महावराह' विष्णु का विशेषण, तृतीय अवतार 'वराह सूकर' के रूप में, —वसः शिशुमार, सूस, —वाक्यम् 1. लंबा वाक्य 2 अविच्छिन्न रचना या कोई साहित्यिक कृति 3. महत्त्व प्रकाशक वाक्य— जैसे तत्त्वमसि, ब्रह्मैवेदं सर्वम् आदि, —वातः आंधी, झंझावात, —वार्तिकम् पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा रचित वार्तिक, —विदेहा योगदर्शन में प्रदर्शित मन की अवस्थाविशेष या वृत्तिविशेष, —विभाषा सविकल्प नियम, —विषुवम् मेष की संक्रान्ति 'संक्रान्ति वसन्तविषुव (जब सूर्य मीन राशि से मेषराशि पर संक्रमण करता है), —वीरः 1. बड़ा शूरवीर या योद्धा 2. सिंह 3 इन्द्र का वज्र 4. विष्णु का विशेषण 5. गरुड़ का विशेषण 6 हनुमान् का विशेषण 7. कोयल 8. सफेद घोड़ा 9. यज्ञाग्नि 10. यज्ञपात्र 11. एक प्रकार का बाज पक्षी, —वीर्या सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, —वृषः भारी बैल, सांड, —वेग (वि०) बहुत तेज, प्रबलवेग वाला (गः) 1. लंबी चाल प्रबल वेग 2 लंगूर 3. गरुड़ पक्षी, —वेल (वि०) तरंगमय, —व्याधिः (स्त्री०) 1. भारी बीमारी 2 (काला कोढ़) कोढ़ का भयानक रूप, —व्याहृतिः (स्त्री०) अत्यन्त गूढ़ शब्द अर्थात् भूः, भुवस् और स्वर्, —व्रत (वि०) अत्यन्त धर्मनिष्ठ कठोरतापूर्वक व्रत का पालन करने वाला (तम्) 1 महाव्रत, बहुत बड़ा कठिन व्रत, महान् धर्मकृत्य का पालन 2 कोई भी महान् या प्रधान कर्तव्य प्राणैरपि हितावृत्तिरद्रोहो व्याजवर्जनम्, आत्मनीव प्रियाधानमेतन्मैत्रीमहाव्रतम्—महावी० ५।५९, —व्रतिन् (पुं०) 1. भक्त, संन्यासी 2. शिव का विशेषण, —शक्तिः 1. शिव का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण, —शल्कः 1 बड़ा मल—भग० १।१५ 2 कनपटी की हड्डी, मस्तक 3 मानव अस्थि 4 विशिष्ट अंग संख्या, —शठः एक प्रकार का धतूरा, —शब्द (वि०) ऊँची ध्वनि करने वाला, अत्यंत कोलाहलपूर्ण, ऊधम मचाने वाला, —शल्कः समुद्री केकड़ा या झींगा मछली मनु० ३।२७२, —शालः बड़ा गृहस्थ, —शिरस् (पुं०) एक प्रकार का सांप, —शुक्तिः (स्त्री०) मोतियों की सीपी, —शुक्ला सरस्वती का विशेषण, —शुभ्रम् चांदी, —शूद्रः (स्त्री० —द्री) 1. उच्चपदस्थ शूद्र 2. ग्वाला, —श्मशानम्

वाराणसी का विशेषण, —बल: बुद्ध का विशेषण, —श्वास: एक प्रकार का दमा, —श्वेता 1 सरस्वती का विशेषण 2 दुर्गा का विशेषण 3 सफेद खांड, —संक्रांति: (स्त्री०) मकर सक्रान्ति,—सती बड़ी सती साध्वी स्त्री, —सत्ता असीम अस्तित्व, —सत्त्व: यम का विशेषण, —सत्त्व: कुबेर का विशेषण, —संधिविग्रह: शान्ति और युद्ध के मन्त्री का पद, —सख. कुबेर का विशेषण —सर्ज: कटहल,—सांतपन. एक प्रकार की घोर तपस्या —दे० मनु० ११।२१२, —सांधिविग्रहिक: शान्ति और युद्ध का (परराष्ट्र) मंत्री,—सार: एक प्रकार का खैर का वृक्ष, —सारथि: अरुण का विशेषण,—साहसम् अतिसाहस, बलात्कार, अत्यधिक दिलेरी,—साहसिक: डाकू, बटमार, साहसीलुटेरा, —सिंह: शरभ नाम का एक कथा में वर्णित जन्तु,—सिद्धि: (स्त्री०) एक प्रकार की जादू की शक्ति,—सुखम् 1. बड़ा आनन्द 2. संभोग,—सूक्ष्मा रेत,—सूत सैनिक ढोल,—सेन 1 कार्तिकेय का एक विशेषण 2. विशाल सेना का सेनापति (—ना बड़ी सेना, —स्कंध: ऊँट, —स्थली पृथ्वी,—स्थानम् बड़ा पद —स्वन: एक प्रकार का ढोल (—हंस:) विष्णु का विशेषण,—हविस् (नपुं०) घी, —हिमवत् (पुं०) एक पहाड़ का नाम।

महिका [मह्+क्वुन्+टाप्, हृस्वम्] कोहरा, धुंध।

महित (भू० क० कृ०) [मह्+क्त] सम्मानित पूजित, बहुमानित, श्रद्धेय—दे० मह्,—तम् शिव का त्रिशूल।

महिमन् (पुं०) [महत्+इमनिच् टिलोप] 1. बड़प्पन (—लाक्ष० से भी) —अयि मकरन्द महिमायं कथय गिरामन्तु विमले—भामि० १।११ 2. बल, गौरव, ताकत —अचिंत्य कु० २।६, उत्तर० ४।२१ 3. ऊँचा पद उन्नत अवस्था, या ऊँची प्रतिष्ठा 4. सिद्धियों में से एक—अपना शरीर फुलाना—दे० सिद्धि।

महिर: [मह्+इलच्, लस्य रत्वम्] सूर्य।

महिला [मह्+इलच्+टाप्] 1. स्त्री 2. मदमत्त या विलासिनी स्त्री—विरहेण विकलहृदया निर्जलमीनायते महिला भामि० २।६८ 3 प्रियंगु नाम की लता 4. एक प्रकार का गंधद्रव्य या सुगंधित पौधा —रेणुका। सम०—आह्वया प्रियंगु लता।

महिलारोप्यम् दक्षिण भारत में स्थित एक नगर का नाम।

महिष: [मह्+टिषच्] 1 भैंसा (यम का वाहन माना जाता है) गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृंगैर्मुहुस्ताडितम् श० २।६, एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार गिराया था। सम०—अर्दन: कार्तिकेय का विशेषण —असुर. महिष नाम का राक्षस °घातिनी —मर्दनी, —मर्दिनी °सूदनी दुर्गा के विशेषण, —घ्नी दुर्गा का विशेषण, —ध्वज: यम का विशेषण, —पाल: —पालक: भैंस रखने वाला, —वाहन: —वाहन: यम के विशेषण—कृतान्त किं साक्षान्महिषवाहनोऽसाविति पुन काव्य० १०।

महिषी [महिष+ङीष्] 1. भैंस, मनु० ९।५५, याज्ञ० २।१५९ 2. पटरानी, राजमहिषी—महिषीसखः—रघु० १।४८ २।२५, ३।९ 3 रानी 4. पक्षी की मादा 5 स्त्रीदासी, सेविका सैरन्ध्री 6. व्यभिचारिणी स्त्री 7 अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति से अर्जित धन—तु० माहिषिक। सम०—पाल: भैंसों के रखने वाला, —स्तम्भ. भैंस के सिर से अलंकृत खंबा।

महिष्मत् (वि०) [महिष+मतुप्, पृषो० टिलोप] बहुत सी भैंसे रखने वाला, या जहाँ भैंसे बहुतायत से हों।

मही [मह्+अच्+ङीष्] 1 पृथ्वी—जैसा कि महीपाल और महीभृत् आदि में—मही रम्या शय्या—भर्तृ० ३।७९ 2. भूमि, मिट्टी 3 भूसम्पत्ति, जमीन—जायदाद 4. देश, राज्य 5. एक नदी का नाम जो खंभात की खाड़ी में गिरती है 6. (ज्या० में) समतल आकृति की आधाररेखा। सम० —इन:, —ईश्वर: राजा,—न च महीनमहीनपराक्रमम् रघु० ९।५, —कंप: भूचाल —क्षित् (पुं०) राजा, प्रभु रघु० १।११, ८५, १९।२० —ज: 1. मंगलग्रह 2. वृक्ष (—जम्) हरा अदरक, —तलम् धरातल, —दुर्गम् मिट्टी का किला, भूदुर्ग —धर: 1 1. पहाड़ रघु० ६।५२ कु० ६।८९ 2. विष्णु का विशेषण, —ध्र 1 पहाड़ भर्तृ० २।१०, शि० १५।२४, रघु० ३।६० १३।७ 2 विष्णु का विशेषण, —नाथ:, —प:, —पति:, —भुज् (पुं०), —मघवन् (पुं०), —महेन्द्र: राजा भग० १।२०, रघु० २।३४ ६।१३, —पुत्र:, —सुत,—सूनु: 1 मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण, —पुत्री, —सुता सीता का एक विशेषण, —प्रकंप: भूचाल, —प्ररोह:, —रुह् (पुं०) —रुह वृक्ष कि० ५।१०, शि० २०।४९, —प्राचीरम्, —प्रावार समुद्र, —भर्तृ (पुं०) राजा, —भृत् (पुं०) 1 पहाड़ कु० १।२७ कि० ५।१ 2 राजा, प्रभु, —लता केंचुआ —सुर ब्राह्मण।

महीयस् (वि०) [म० अ०, महत्+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा विशाल अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली भारी या महत्त्वपूर्ण अधिक ताकतवर मजबूत पुं० महात्मा, उदारचेता प्रकृति महामना—अथवा महीयस महतो भाग्य समूह्य ... कि० २।२९, शि० २।१३।

महेला महिला। [महिला, पृषो० साधु] स्त्री, नारी।

मा (अव्य०) [मा क्विप्] प्रतिषेधबोधक अव्यय (मनाहीसूचक निपात) प्राय लोट् लकार की क्रिया के साथ जुड़ा हुआ यद्यपि मा कुरु विवादमनाहतेन भामि० ४।४१ (क) लुङ् लकार की क्रिया के साथ

जबकि उसके आगम 'अकार' का लोप भी हो जाता है—पापे रतिं मा कृथा —भर्तृ० २।७७, मा मुमुहत् खलु भवन्तमनन्यजन्मा मा ते मलीमसविकारघना मतिर्भूत् मा० १।३२ (ख) लङ् लकार की क्रिया के साथ भी (यहाँ भी आगम 'अकार' का लोप हो जाता है) मा चैनमभिभाषथा राम० (ग) लृट् लकार या विधि लिङ् की क्रिया के साथ भी 'ऐसा न हो कि' 'ऐसा नहीं कि' अर्थ को प्रकट करने में लघु एनां परित्रायस्व मा कस्यापि तपस्विनो हस्ते पतिष्यति श० २ मा कश्चिन्मम माप्यनयो भवेत् पञ्च० ५, मा नाम देव्याः किमप्यनिष्टमुत्पन्नं भवेत् का० ३०७ (घ) जब अभिप्राय अनिश्चित हो तो शतृन्त (वर्तमानकालिक विशेषण) के रूप में प्रयुक्त मा जीवन्यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति शि० २।४५ या (ङ) सम्भावनार्थक कर्मवाच्य प्रत्ययान्त क्रियाओं के साथ—मैं प्रार्थना, मा कभी कभी बिना किसी क्रिया की अपेक्षा किये प्रयुक्त होता है मा तावत् अरे ऐसा मत (कहो) मा मैवम् मा मामरक्षित मृच्छ० ८ कहीं कोई दुर्गम का आदमी न हो दे० माम के अन्तर्गत, कभी कभी 'मा' के बाद स्म लगा दिया जाता है और उस समय क्रिया में लङ् या लुङ् लकार का प्रयोग होता है तथा आगम 'अकार' का लोप हो जाता है विधि लिङ् के साथ प्रयोग विरल देखा जाता है [illegible] मा स्म गम [illegible] मा स्म प्रतीप [illegible] —श० ४।१७ मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम्

मा [illegible]

[illegible]

[illegible]

लगाना, अटकल लगाना अन्वमीयत शुद्धेति शान्तेन वपुषैव सा—रघु० १५।७७ १७।११ 2 मुकाबला करना, पुनर्मिलित करना, उप तुलना करना समानता करना—तेनोपमीयेत तमालनीलम् शि० ३।८ स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ भर्तृ० ३।२० निस् बनाना, सृजन करना, अस्तित्व में लाना निर्मातुं प्रभवेन्मनोहरमिदं रूपं पुराणो मुनिः—विक्रम० १।८, यस्मादेषां सुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्मितो नृपः—मनु० ७।५ 2 (क) बनाना, रूप बनाना, रचना करना स्नायुनिर्मिता [illegible] हि० १ (ख) बसाना (नगर, पुर आदि) नई बस्ती बसाना—निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।२८ 3 उत्पन्न करना, पैदा करना—सन्ध्याकाल [illegible]—कु० ४।४७ निर्मातुं मम [illegible] 4 रचना करना, लिखना —स्वनिर्मितया टीकया समेतं काव्यम् 5 तैयार करना, निर्माण करना परि— 1 मापना 2 माप कर सीमा लगाना, सीमांकन करना प्र— 1 मापना 2 सिद्ध करना, स्थापित करना, प्रदर्शित करना सम— 1 मापना 2 समान बनाना, बराबर बराबर करना—कान्तामितनयोपदेश्य [illegible] काव्य० १ [illegible] 3 समानता करना, तुलना करना 4 युक्त या सीह्य होना मृणालसूत्रमपि ते न समाति स्तनान्तरे—सुभा०।

मांस नपुं० [?] मांस (इस शब्द के पहले पाँच वचनों के रूप नहीं होते और उसके पश्चात् इसके स्थान में विकल्प से 'मांस' आदेश हो जाता है।)

मांसम् [illegible]

[illegible]

[illegible] उपजीविन् (पुं०) मांस बेचने वाला [illegible] 1 मछली का भोजन 2 मांस के साथ [illegible] चावल, कारि नपुं०) रक्त, कील मांस की [illegible] टिकटी, [illegible] तेजस् (नपुं०) चर्बी, वसा, दारिका (पुं०) खटमिटना [illegible] भाजी [illegible] शरीर के बाल, पिटक,— कम् 1 मांस की टोकरी 2 मांस का बड़ा ढेर —पित्तम् हड्डी,— पेशी 1 पुट्ठा

2. मांस का टुकड़ा 3. आठ से चौदह दिन तक के गर्भ का विशेषण, भेत्तृ,—भेदिन् (वि०) मांस काटने वाला, योनि रक्त-मांस से बना जीव, विक्रय मांस की बिक्री, सार स्नेह चर्बी, वसा, हाला खाल, चमड़ा।

मांसल (वि०) [मांस + लच्] 1 मांस से भरा हुआ 2 पुट्ठेदार, मोटा ताजा, बलवान, हृष्टपुष्ट—उत्तर० १ 3 स्थूलकाय, मजबूत, शक्तिशाली, शाखा ... मांसला भामि० १।३४ 4 (ध्वनि की भांति) गहरा, उत्तर० ... महाकाश ... मा० ९।६३।

मांसिक [मांस ... ठक्] कसाई, मांस विक्रेता।

माकन्द [मा + किम् मा परिमितं सुपर्दित कन्द इव फल अस्य] आम का पेड़, भामि० १।०९ —दी 1 आंवले का पेड़ 2 पीला चन्दन 3 गंगा के किनारे स्थित एक नगर का नाम।

माकर (वि०) (स्त्री०—री) [मकर + अण्] मगरमच्छ से संबद्ध, माघ मास से संबद्ध।

माकरन्द (वि०) (स्त्री०—न्दी) [मकरन्द + अण्] फूलों के रस से प्राप्त या पुष्परस से संबद्ध, शहद से भरा हुआ, मधुमिश्रित—मा० ८।१ ५।१२।

मातलि (पु०) 1 इन्द्र का सारथि मातलि 2 चन्द्रमा।

माक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [मक्षिकाभिः संभृत्य कृतम् अण् पक्षे नि० दीर्घ] मधुमक्खियों से उत्पन्न या प्राप्त,—कम् 1 मधु, भामि० ४।३३ 2 मधु की भांति एक खनिज पदार्थ। सम०—आश्रयम् —मधु मोम, —फल एक प्रकार का नारियल, शर्करा शहदयुक्त खांड।

मागध (वि०) (स्त्री०—धी) [मगध + अण्] मगध देश में रहने वाला, या उससे संबद्ध या मगध के अधिवासी —धः 1 मगध का राजा 2 एक मिश्रजाति (कहा जाता है कि यह जाति वैश्य पिता और क्षत्रिय माता की संतान, इस जाति का कर्तव्य कर्म व्यावसायिक भाटों का कार्य है)—मनु० १०।११।१७ याज्ञ० १।९४ 3 चारण या बन्दीजन, —धाः (ब० व०) मगध के अधिवासी, —धी 1 मगध देश की राजकुमारी, रघु० १।५७ 2 मागधी भाषा, चार मुख्य प्राकृतों में से एक 3. बड़ी पीपल 4 सफेद जीरा 5 परिष्कृत खांड 6 एक प्रकार की चमेली 7 छोटी इलायची।

मागधा, मागधिका [मागध + टाप्, मागध + ठक् + टाप्] बड़ी पीपल।

मागधिक [मगध + ठक्] मगध का राजा।

माघः [मघानक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी माघी सोऽस्मिन् मासे अण्] 1 चान्द्रवर्ष के एक महीने का नाम (यह जनवरी फरवरी मास में आता है) 2 एक कवि का नाम जिसने शिशुपालवध या माघकाव्य की रचना की (कवि ने शि० २०।८०-८४ में अपने कुल का वर्णन इस प्रकार किया है—श्रीशब्दरम्यकृतसर्गसमाप्तिलक्ष्म लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु तस्यात्मजः सुकविकीर्तिदुराशयादः काव्यं व्यधत्त शिशुपालवधाभिधानम्)—उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः, [illegible] —घी माघ मास की पूर्णिमा।

माघवा (स्त्री०) माद्य ...

माघवत (वि०) (स्त्री०—ती) [मघवत् + अण्] इन्द्र से संबन्ध रखने वाला, —ती पूर्वदिशा। सम०—चापम् इन्द्रधनुष, उत्तर० ५।१४।

माघवन (वि०) (स्त्री० ... मघवन् अण्] इन्द्र से शासित या संबद्ध, ... माघवनीम् ... कि० ९।०९ ... धनी विलासवृन्द जय ...।

माघ्यम् माघ ... [illegible] ... फूल।

माकुल [illegible]

माङ्गलिक (वि०) (स्त्री०—की) [मङ्गल + ठक्] 1 शुभ, मंगलसूचक, भाग्यवान, सुखमय, मांगलिक-सूचक ... कि० ५।१४ महावी० ४।३५ भामि० २।१७ 2 सौभाग्यशाली।

माङ्गल्य (वि०) [मङ्गल ...] शुभ, सौभाग्यसूचक, ... 1 सौभाग्यशाली, समृद्धि, कल्याण, सौभाग्य 2 आशीर्वाद, शुभकामना 3 ... कोई भी शुभ कार्य। सम०—मृदङ्ग शुभ अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल, उत्तर० ६।२१।

माच [मा ...] मार्ग।

माचल [मा + अल् + अच्] 1 चोर, लुटेरा 2 मगर मच्छ।

माचिका [मा + ... क + कन् + टाप्, ...] मक्खी।

माञ्जिष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [मञ्जिष्ठया रक्तम् अण्] मजीठ की भांति लाल, —ष्ठम् लाल रंग।

माञ्जिष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [मञ्जिष्ठा + ठक्] मजीठ के रंग में रंगी हुई—उत्तर० ४।२०, महावी० १।१८।

माठर: [मठ + अरन्, तत अण्] 1 व्यास का नाम 2. ब्राह्मण 3 शौण्डिक, कलवार, शराब खींचने वाला 4 सूर्य का एक सेवक।

माठी (स्त्री०) कवच, जिरहबख्तर।

माड: (पु०) 1 विशेष जाति का वृक्ष 2. तोल, माप।

माडि: (स्त्री०) [माड् + क्तिन्] 1 विलक्षण (जो

आदि सूचक न हो) 2. सम्मान करना 3. उदासी, खिन्नता 4. निर्भयता 5. क्रोध, आवेश 6. वस्त्र की किनारी या झालर (गोट) 7. घुंघरा बाल

माणवः [मनोरपत्यम् अण्, अल्पार्थे णत्वम्] 1. लड़का, बालक, छोकरा, बच्चा 2. छोटा मनुष्य, मुन्ना (तिरस्कार सूचक) 3 सोलह (बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवकः [माणव+कन्] 1. लड़का, बालक, बच्चा, छोकरा (प्रायः तिरस्कारसूचक के रूप में प्रयुक्त) 2. छोटा मनुष्य, बौना, मुन्ना—मायामाणवकं हरिम्—भाग० 3 मूर्ख व्यक्ति 4 छात्र धर्मशास्त्र पढ़ने वाला, विद्यार्थी 5. सोलह (या बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवीन (वि०) [माणव+खञ्] बालकों जैसा, बच्चों जैसा।

माणव्यम् [माणवानां समूहः यत्] बच्चों या छोकरों की टोली।

माणिका [मण्+घञ्, नि० णत्वम्+कन्+टाप् इत्वम्] एक विशेष बाट (आठ पल वजन के बराबर) या तोल।

माणिक्यम् [मणि+कन्+ष्यञ्] लाल।

माणिक्या [माणिक्य+टाप्] छिपकली।

माणिबन्धम्, माणिमन्थम् [मणिबन्ध (मन्थ)+अण्] सेंधा नमक।

माण्डलिक (वि०) (स्त्री० —की) [मण्डल+ठक्] किसी प्रान्त पर शासन करने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला,—कः प्रान्त का शासक, राज्यपाल।

मातङ्गः [मतङ्गस्य मुनेरयम् अण्] 1. हाथी—शि० १।६४ 2. नीचतम जाति का पुरुष, चाण्डाल 3. किरात, भील पहाड़ी या बर्बर 4. (समास के अन्त में) कोई भी सर्वोत्तम वस्तु—उदा० बलाहक मातंग। सम० —दिवाकरः एक कवि का नाम,—नक्रः हाथी जैसा विशाल मगरमच्छ—रघु० १३।११।

मातरिपुरुषः [अलुक् समास] 'वह जो घर में अपनी माता के सामने ही अपनी शूरवीरता बताता हो' डरपोक, कायर, शेखीखोरा, बुजदिल।

मातरिश्वन् (पुं०) [मातरि अन्तरिक्षे श्वयति वर्धते श्वि+कनिन् डिच्च, अलुक् स०] वायु—पुनरुक्तविधिवितः मातरिश्वायपुष्पे ज्वलयति मदनाग्निं मालतीनां रजांसि. शि० ११।१७, कि० ५।३६।

मातलिः [मतलस्यापत्यं पुमान्—मतल+इञ्] इन्द्र के सारथि का नाम। सम० —सारथिः इन्द्र का विशेषण।

माता [मान् पूजायां तृच् न लोपः] माता, माँ।

मातामहः [मातृ+डामहच्] नाना, —ही (द्वि० व०) नाना नानी,—ही नानी।

मातिः (स्त्री०) [मा+क्तिन्] 1. माप 2. चिन्तन, विचार, प्रत्यय।

मातुलः [मातुर्भ्राता मातृ+डुलच्] 1. मामा—भग० १।२६ मनु० २।१३०, ५।८१ 2. धतूरे का पौधा 3. एक प्रकार का साँप। सम० —पुत्रकः 1. मामा का बेटा 2. धतूरे का फल।

मातुलङ्गः दे० मातुलिङ्गः।

मातुला, मातुलानी, मातुली [मातुल+टाप्, ङीष्, वा, पक्षे आनुक् च] 1 मामी मामा की पत्नी—मनु० २।१३१, याज्ञ० ३।२३२ 2 पटसन।

मातुलिङ्गः, मातुलुङ्गः [मातुल+गम्+खच्, मुम्, पृषो० साधु] एक प्रकार का नीबू का वृक्ष—(भुवो) भागाः प्रेंखितमातुलुङ्गवृतयः प्रेयो विधास्यन्ति वाम्—मा० ६।१९,—ङ्गम् इस वृक्ष का फल, चकोतरा।

मातुलेयः (स्त्री—यी) [मातुल+ढक्, मातुली+ढक् वा] मामा का पुत्र।

मातृ (स्त्री०) [मान् पूजायां तृच् न लोपः] 1. माँ, माता—मातृवत्परदारेषु यः पश्यति स पश्यति, शाकुनं तु पितुर्माता वीरसेनातिरिच्यते सुभा० 2. माता (आदर तथा वात्सल्य सूचक)—मातर्लक्ष्मि भजस्व कंचिदपरम्—भर्तृ० ३।६४, ८७, अयि मातर्देवयजनसंभवे देवि सीते उत्तर० ४ 3. गाय 4. लक्ष्मी का विशेषण 5. दुर्गा का विशेषण 6. अन्तरिक्ष, आकाश 7. पृथ्वी 8. देव माता—मातृभ्यो बलिमुपहर—मृच्छ० १ (ब० व०) देव माताओं का विवरण, जो शिव की परिचारिका कही जाती हैं परन्तु बहुधा स्कन्द की परिचर्या में लिप्त रहती हैं (ये गिनती में आठ हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चण्डी वाराही वैष्णवी तथा, कौमारी चैव चामुण्डा चर्चिकेत्यष्टमातरः। कुछ के मत में वह केवल सात हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा, माहेन्द्री चैव वाराही चामुण्डा सप्त मातरः। कुछ लोग इनकी संख्या १६ तक बतलाते हैं)। सम० —केशटः मामा,—गणः देव माताओं का समूह,—गन्धिनी विपरीत स्वभाव वाली माता,—गामिन् (पुं०) माता के साथ गमन करने वाला,—गोत्रम् मातृकुल,—घात,—घातकः,—घातिन् (पुं०),—घ्नः माता की हत्या करने वाला,—घातुकः 1 मातृहन्ता 2. इन्द्र का विशेषण,—चक्रम् देवमाताओं का समूह,—देव (वि०) जो माता को ही अपना देवता मानता है, माता को देवता की भांति पूजने वाला,—नन्दनः कार्तिकेय का विशेषण,—पक्ष (वि०) मातृकुल से संबद्ध, (—क्षः) नाना, मामा आदि,—पितृ (द्वि० व०) (मातापितरौ या मातरपितरौ) माता-पिता,—पुत्रौ (मातापुत्रौ) माँ और बेटा,—पूजनम् देवमातृकाओं की पूजा,—बन्धुः,—बान्धवः मातृकुल के संबंधी—रघु० १२।१२, (ब०

व०) मातृकुल के रिश्तेदारों का समूह. वे ये हैं—मातुः पितुः स्वसुः पुत्रा मातुर्मातुः स्वसुः सुता मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः, —मण्डलम् देवमातृकाओं का समूह,—माता (स्त्री०) पार्वती का विशेषण,—मुखः मूर्ख व्यक्ति, भोंदू, —यज्ञः देवमातृकाओं के निमित्त किया गया यज्ञ —वत्सलः कार्तिकेय का विशेषण,—स्वसृ (स्त्री०) (मातृष्वसृ या मातुःस्वसृ) माता की बहन, मौसी, -स्वसेयः (मातृष्वसेय) माता की बहन का पुत्र (यी) मौसी की पुत्री, इसी प्रकार मातृष्वस्रीयः—या।

मातृक (वि०) [मातृ + कप्] 1 माता से आया हुआ, या उत्तराधिकार में प्राप्त - मातृकं च धनुरूर्जितं दधत् रघु० ११।६४, ९० 2 माता संबंधी,—कः मामा, —का 1. माता 2 दादी 3 नानी, दाई 4 स्रोत, मूल 5. देवमातृका 6 अक्षरों में लिखे हुए कुछ रेखाचित्र जो जादू की शक्ति रखने वाले कहे जाते हैं 7 इस प्रकार प्रयुक्त की गई वर्णमाला (ब० व०)।

मात्र (वि०) (स्त्री०—त्रा, त्री) [मा + त्रन्] 'इतनी माप का जितना कि' 'इतना ऊँचा लंबा या चौड़ा जितना कि' 'यहाँ तक पहुँचता हुआ जहाँ तक कि' अर्थों को प्रकट करने के लिए समासों के साथ जोड़ा जाने वाला प्रत्यय, जैसा कि ऊरुमात्री भित्तिः (इस अर्थ में समास के अन्त में 'मात्रा' शब्द का प्रयोग भी विचारणीय है, दे० नी०), —त्रम् 1 तक माप (चाहे वह लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई की हो; चाहे डीलडौल, स्थान, दूरी या संख्या की हो), प्रयोग बहुधा समास के अन्त में उदा० अंगुलिमात्रम् अंगुलि के बराबर चौड़ाई, किंचिन्मात्रं गत्वा कुछ दूरी क्रोशमात्र एक कोस की दूरी पर रेखामात्रमपि रेखा तक की चौड़ाई भी, इतनी चौड़ाई जितनी कि एक रेखा की होती है; - रघु० १।१७ इसी प्रकार जानुमात्रम् निखिलमात्र एक हाथ का फासला शतमात्राः सख्या में सौ गजमात्रम् इतना ऊँचा या बड़ा जितना कि हाथी तालमात्र, यवमात्रम् आदि 2 किसी चीज का पूरा माप, वस्तुओं की पूर्ण समष्टि, राशि जीवमात्र या प्राणिमात्रम् जीवधारियों प्राणियों का समस्त समुदाय, मनुष्यमात्रो मर्त्यः, प्रत्येक मनुष्य मरणशील है 3. किसी चीज का सामान्य माप, केवल एक बात का उससे अधिक नहीं, इसका अनुवाद प्रायः 'केवल,' 'सिर्फ' या 'भी, ही' आदि शब्दों से किया जाता है; —जातिमात्रेण हि० १।५८, केवल जाति से; टिट्टिभमात्रेण समुद्रो व्याकुलीकृतः—२।१४९, केवल टिटहरे के द्वारा, वाचामात्रेण अपठी— श० २, केवल वाणी द्वारा' इसी प्रकार अर्धमात्रम्, कंडावमात्रम्—पंच० १।८१ जातमात्र शब्दों के साथ जुड़ कर 'मात्र' शब्द का अनुवाद 'ज्योंही' 'ही' आदि है, निविष्टमात्रः—रघु० ५।५१, 'ज्योंही वह बैठा गया त्योंही' 'बैठे जाने पर ही', भुक्तमात्रे, 'खाने के बाद ही', प्रविष्टमात्र एव तत्रभवति श० १ आदि।

मात्रा [मात्र + टाप्] 1. माप -देखो 'मात्रम्' ऊपर 2. मापदंड, मानक, नियम 3. सही माप 4. माप की इकाई, एक फुट 5. क्षण 6. कण, अणु 7. भाग, अंश —सुरेन्द्रमात्राश्रितगर्भगौरवात्—रघु० ३।११ 8. अल्पांश, अल्प परिमाण, छोटी माप दे० मात्र (१) 9. अर्थ, महत्त्व—राजेति कियती मात्रा—पंच० १।४०, 'राजा किस अर्थ का है, क्या महत्त्व है उसका' अर्थात् मैं उसे कोई महत्त्व नहीं देता —कायस्थ इति लघ्वी मात्रा मु० १ 10 धन, संपत्ति 11 (छन्दः शास्त्र में) एक मात्रा का काल, ह्रस्व स्वर को उच्चारण करने में लगने वाला काल 12 तत्त्व 13. भौतिक संसार, भूतद्रव्य 14. नागरी के अक्षरों का ऊपरी (अतिरिक्त) भाग, अर्थात् मात्रा 15. कान की बाली 16. आभूषण, अलंकार। सम० —छन्दस्, आर्यामात्रा का छंद, - छन्दकम्, —वृत्तम्, वह छंद जिसका विनियम मात्राओं की गिनती के आधार पर होता है - उदा० आर्या,—भस्त्रा बटवा —संगः गार्हस्थ्य सामग्री या संपत्ति में आसक्ति या अनुराग मनु० ६।५७ —समकः एक प्रकार के छंदों का समूह दे० परिशिष्ट १. —स्पर्शः भौतिक संपर्क, भौतिक तत्त्वों के साथ इन्द्रियों का संयोग, भग० २।१४।

मात्रिका [मात्रा + टक् + टाप्] मात्रा, या छन्दः शास्त्र का ह्रस्वस्वर के उच्चारण में लगने वाला काल (मात्रा)।

मात्सर (वि०) (स्त्री० री) **मात्सरिक** (वि०) (स्त्री० की) [मत्सर + अण् ठक् वा] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, विद्वेषी असूयायुक्त।

मात्सर्यम् [मत्सर + ष्यञ्] ईर्ष्या, डाह असूया, विद्वेष मत्तो मत्सर्येण मात्सर्यम् कथा० २२।४९, कि० ३।५३।

मात्स्यिकः [मत्स्य + ठक्] मछुवा, माहीगीर।

माथः [मथ् + घञ्] 1. बिलोना, मथन, विलोडन करना 2. हत्या, विनाश 3. मार्ग, सड़क।

माथुर (वि०) (स्त्री० री) [मथुरा + अण्] 1 मथुरा से आया हुआ 2 मथुरा में उत्पन्न 3 मथुरा में रहने वाला।

मादः [मद् + घञ्] 1 नशा, मस्ती 2. हर्ष, खुशी 3 घमंड, अहंकार।

मादक (वि०) (स्त्री० दिका) [मद् + णिच् + ण्वुल्] 1. नशा करने वाला, उन्मत्त बनाने वाला, मदोन्मत्त करने वाला 2. आनन्ददायक,—कः दात्यूहपक्षी।

मादन (वि०) (स्त्री०—नी) [मद्+णिच्+ल्युट्] नशे में चूर करने वाला—दे० मादक—नः 1. कामदेव 2. धतूरा,—नम् 1. नशा करना 2 आनन्द देना, उल्लास देना 3. लौंग।

मादनीयम् [मद्+णिच्+अनीयर्] एक नशीला पेय।

मादृश (वि०) (स्त्री०—शी), मादृश् (वि०) मादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [अस्मद्+दृश्+कञ्, क्स (क्विप्, कञ् वा) मदादेशः, आत्वम्] मेरी भाँति, मुझसे मिलता जुलता—प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः कि० १।२५, उत्तर० २, उपचारो नैव कल्प्य इति तु मादृशाः—रघु०।

माद्रकः [मद्र + वुञ्] मद्र देश का राजकुमार।

माद्रवती [मद्र+मतुप्, वत्वम् अण् ङीप्,] पाण्डु की द्वितीय पत्नी का नाम।

माद्री [मद्र+अण्+ङीप्] पाण्डु की द्वितीय स्त्री का नाम। सम०—नन्दनः नकुल और सहदेव का विशेषण —पतिः पाण्डु का एक विशेषण।

माद्रेयः [माद्री+ढक्] नकुल और सहदेव का विशेषण।

माधव (वि०) (स्त्री० वी) [मधु+अण्, विष्णुपक्षे मायाः धवः ष० त०] 1 मधु की तरह मीठा 2. शहद से बना हुआ 3. वासन्ती 4. मधु दैत्य के वंशजों से संबंध रखने वाला, वः कृष्ण का नाम —राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः—गीत० १, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये 2 कामदेव का मित्र वसन्त ऋतु —स्मर पर्युत्सुक एष माधवः कु० ४।२८, स माधवेनाभिमतेन सख्या (अनुप्रयातः) ३। २१ 3 वैशाख मास भास्करस्य मधुमाधवाविव —रघु० ११।७ 4. इन्द्र का नाम 5 परशुराम का नाम 6. यादवों का नाम (ब० व०) शि० १६।२२ 7. सायण का पुत्र एक प्रसिद्ध ग्रन्थकर्ता, सायण और भोगनाथ इसके भाई थे, लोगों की मान्यता है कि माधव पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ यह बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान् था, कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना का श्रेय इसे प्राप्त है। ऐसा माना जाता है कि सायण और माधव दोनों ने मिल कर संयुक्त रूप से चारों वेदों पर भाष्य लिखा—श्रुतिस्मृतिसदाचारपालको माधवो बुधः, स्मार्तं व्याख्याय सर्वार्थं द्विजार्थं स्वोत्तं जगौ। पं० व्या० वि०। सम०—[illegible] =माधवी दे०,—श्रीः वसन्त कालीन सौन्दर्य।

माधवकः [माधव+वुन्] एक प्रकार की नशीली शराब (मधु से बनाई गई)।

माधविका [माधवी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] माधवी लता। —माधविका परिमलललिते गीत० १।

माधवी [मधु+अण्+ङीप्] 1. शर्करायुक्त खांड 2. शहद से तैयार हुआ एक प्रकार का पेय 3. वासन्ती लता जिसके सुगंधि श्वेत फूल आते हैं—पत्राण्यामिव शोभनेन भवता स्पृष्टा लता माधवी श० ३।१० मेघ० ७८ 4 तुलसी 5 कुट्टिनी, दूती। सम० —लता वासन्ती लता, —वनम् माधवी लताओं का उद्यान।

माधवीय (वि०) [माधव + छ] माधवसंबंधी।

माधुकर (वि०) (स्त्री०-री) [मधुकर + अण्] भौंरे से संबद्ध या मिलता-जुलता, जैसा कि 'माधुकरी वृत्ति' में, घर २ पर २ जाकर भिक्षा मांगना, जिस प्रकार मधुमक्खी एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर मधु एकत्र करती है 2 पाँच भिन्न २ स्थानों से प्राप्त भिक्षा।

माधुरम् [मधुर + अण्] मल्लिका लता का फूल।

माधुरी [माधुर + ङीप्] 1 मिठास, मधुर या मजेदार स्वाद—वदने तव यत्र माधुरी सा—भामि० २।१६१, —कान्ताकुचस्वर्णकलशरमाधुरीमधरयन् वाचा विपाको मम— ४।४२, ३७।४३ 2 खींची हुई शराब।

माधुर्यम् [मधुर+ष्यञ्] 1 मिठास, सुहावनापन—माधुर्यमीष्टे हरिणान् ग्रहीतुम्,—रघु० १८।१३ 2 आकर्षक सौंदर्य, उत्कृष्ट सौन्दर्य,—रूपं किमप्यनिर्वाच्यं तनोर्माधुर्यमुच्यते 3 (काव्य० में) मिठास, (मम्मट के अनुसार) काव्य रचनाओं में पाये जाने वाले तीन मुख्य गुणों में से एक—चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते—सा० द० ६०६, दे० काव्य० ८ भी।

माध्य (वि०) [मध्य+अण्] केन्द्री, मध्यवर्ती।

माध्यंदिनः [मध्यंदिन+अण्] वाजसनेयिसंहिता की एक शाखा, नम् शुक्लयजुर्वेद की एक शाखा जिसका अनुसरण माध्यंदिन करते हैं।

माध्यम (वि०) (स्त्री०-मी) [मध्यम+अण्] मध्यवर्ती अंश से संबद्ध, केन्द्रीय, मध्यवर्ती बिल्कुल मध्य का।

माध्यमक (वि०) (स्त्री०-मिका) माध्यमिक (वि०) (स्त्री०-की) [मध्यम+वुञ्, ठक् वा] मध्यवर्ती, केन्द्रीय।

माध्यस्थ्यम् माध्यस्थम् [मध्यस्थ+ष्यञ्, अण् वा] 1 निष्पक्षता 2 उदासीनता [illegible] कु० ५।६० 3 मध्यस्थीकरण, बीचबचाव करना।

माध्याह्निक (वि०) (स्त्री०-की) [मध्याह्न+ठञ्] दोपहर से संबंध रखने वाला।

माध्व (वि०) (स्त्री०-ध्वी) [मधु+अण्] मधुर, मीठा, —ध्वः [मध्व+अण्] मध्वाचार्य का अनुयायी,—ध्वी एक प्रकार की शराब जो मधु से तैयार की जाती है।

माध्वीकम् [मधुना मधूकपुष्पेण निर्वृत्तम् -ईकक्] एक प्रकार की शराब जो मधूक वृक्ष के फूलों से

तैयार की जाती है—पपाव मधु माध्वीकम्—भट्टि० १४।९४ 2. अंगूरों से खींची हुई शराब—सार्ध्वी माध्वीकचिन्ता न भवति भवतः—गीत० १२ (=मधो—टी०) 3 अंगूर। सम०—फलम् एक प्रकार का नारियल।

मान् i (भ्वा० आ० 'मन्' का इच्छा०=मीमांसते) ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०='मन्' का प्रेर०)

मानः [मन्+घञ्] आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, सादर विचार—मानद्रविणाल्पता—पंच० २।१५९, भग० ६।७, इसी प्रकार 'मानधन' आदि 2 गर्व (अच्छे भाव में) आत्मनिर्भरता, आत्मप्रतिष्ठा—अग्निनो मानहीनस्य तृणस्य च समा गतिः—पंच० १।१०६, रघु० १५।८१ 3. अहंकार, घमण्ड, अवलेप, आत्मविश्वास 4 सम्मान की आहत भावना 5. ईर्ष्यायुक्त क्रोध, डाह के कारण उद्दीप्त रोष (विशेषतः स्त्रियों में), क्रोध,—मुच मयि मानमनिदानम्—गीत० १०, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये—९, शि० ९।८४, भामि० २।५६—नम् 1 मापना 2. माप, मापदण्ड 3 आयाम, लंबाई 4. मापदण्ड, मापने का डंडा, मानदण्ड 5. प्रमाण साक्ष्याधिकार, प्रमाण या प्रदर्शन के साधन,—तेऽमी माधुर्यौजःप्रसादा रसमात्रधर्मतयोक्तास्तेषां रसधर्मत्वे किं मानम्—रस०, मानाभावात्, (विवादास्पद भाषा में बहुधा प्रयुक्त) 6. समानता, मिलना-जुलना। सम०—उन्नत (वि०) दर्पवान्, अहंकारी, घमंडी,—उन्नतिः (स्त्री०) बहुत आदर, भारी सम्मान,—उपघातः घमंड का नाश,—कलहः,—कलिः ईर्ष्यायुक्त क्रोध से उत्पन्न झगड़ा,—क्षतिः (स्त्री०)—भंगः,—हानिः (स्त्री०) सम्मान की क्षति, हीनता, अपमान, अप्रतिष्ठा,—ग्रन्थिः सम्मान या गर्व की क्षति—द (वि०) 1. सम्मान करने वाला 2 घमंडी,—दण्डः मापने का डंडा, गज—स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः—कु० १।१,—धन (वि०) सम्मानरूपी धन से समृद्ध—महौजसो मानधना धनार्चिता—कि० १।१९,—धानिका ककड़ी,—परिखण्डनम् मानध्वंस, हीनता,—भङ्ग दे० 'मानक्षति',—महत् (वि०) गौरव से समृद्ध, अत्यंत गर्वीला—किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९,—योगः माप तौल की ठीक रीति—मनु० ९।३३०,—रन्ध्रा एक प्रकार की जलघड़ी, एक छिद्रयुक्त जलकलश जो पानी में रखा हुआ धीरे धीरे भरता रहता है, इसी से समय की माप की जाती है,—सूत्रम् 1. मापने की डोरी 2. (सोने की) जंजीर जो शरीर में पहनी जाय, करधनी।

मानःशिल (वि०) [मनःशिला+अण्] मैनसिल से युक्त।

माननम्,—ना [मान्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. सम्मान करना, आदर करना 2. हत्या—शि० १६।२।

माननीय (वि०) [मान्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित होने का अधिकारी (संबं० के साथ)—मेना मुनीनामपि माननीयाम्—कु० १।१८, रघु० १।११।

मानव (वि०) (स्त्री०—वी) [मनोरपत्यम् अण्] मनु से संबंध रखने वाला, या मनु के वंश में उत्पन्न—मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रसवितारं सवितारम्—उत्तर० ३, मनु० १२।१०७ 2. मानवसंबंधी,—वः 1. मनुष्य, आदमी, इंसान,—यस्मिन्वंशो मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽभवत्, ब्रह्मक्षत्रादयस्तस्मान्मनोर्जातास्तु मानवाः—महा०, मनु० २।९, ५।३५ 3. मनुष्यजाति (ब० व०),—वम् एक विशेष प्रकार का दंड। सम०—इन्द्रः,—ईशः,—पतिः मनुष्यों का स्वामी, राजा, प्रभु०—रघु० १४।३२,—धर्मशास्त्रम् मनुसंहिता, मनुस्मृति,—राक्षसः मनुष्य के रूप में राक्षस या पिशाच, तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये—भर्तृ० २।७४।

मानवत् (वि०) [मान+मतुप्, वत्वम्] घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, दर्पवान्,—ती घमंडी या दर्पोद्धत स्त्री (ईर्ष्या के कारण क्रुद्ध)।

मानव्यम् [मानव+यत्] (माणव्यम् भी) लड़कों का समूह।

मानस (वि०) (स्त्री०—सी) [मन एव, मनस इदं वा अण्] 1 मन से संबंध रखने वाला, मानसिक, आत्मिक (विप० शारीरिक) 2 मन से उत्पन्न, इच्छा से उदित—किं मानसी सृष्टिः—श० ४, कु० १।१८, भग० १०।६ 3. केवल मनसा विचारणीय, कल्पनीय 4. उपलक्षित, ध्वनित 5. 'मानस' सरोवर पर रहने वाला,—सः विष्णु का एक रूप,—सम् 1. मन, हृदय—सपदि मदनानलो दहति मम मानसम्—गीत० १०, अपि च मानसमम्बुनिधिर्—भामि० १।११३, मानसं विषयैर्विना (भामि०) ११६ 2. कैलास पर्वत पर स्थित एक पुनीत सरोवर—कैलासशिखरे राम मनसा निर्मितं सरः, ब्रह्मणा प्रागिदं यस्मात्तदभून्मानसं सरः। राम० (कहा जाता है कि यह सरोवर ही राजहंसों की जन्मभूमि है, राजहंस प्रतिवर्ष वर्षाकाल के आरंभ होने के अवसर पर या बरसाती हवाओं के आगमन पर इस सरोवर के तट पर आ विराजते हैं—मेघश्यामा दिशो दृष्ट्वा मानसोत्सुकचेतसाम्, कूजितं राजहंसानां नेदं नूपुरशिञ्जितम्—विक्रम० ४।१४, १५, यस्यास्तोये कृतवसतयो मानसं संनिकृष्टं नाध्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसाः—मेघ० ७६ दे० मेघ० ११, घट० ९ भी) रघु० ६।२६, मेघ० ६२, भामि० १।३ 3 एक प्रकार का नमक। सम०—आलयः राजहंस, मराल,—उत्क (वि०) मानसरोवर जाने के लिए उत्सुक मेघ० ११,—ओकस्,—चारिन् (पुं०) राजहंस—जन्मन् (पुं०) 1. कामदेव 2. राजहंस।

मानसिक (वि०) (स्त्री० की) [मनस्+ठञ्] मन से उत्पन्न, मन सम्बन्धी, आत्मिक, क: विष्णु का विशेषण ।

मानिका [मन्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार की खींची हुई शराब 2 एक प्रकार का तोल ।

मानित (भू० क० कृ०) [मान+इतच्] सम्मानित आदर-प्राप्त, प्रतिष्ठित ।

मानिन् (वि०) [मान+णिनि] 1 मानने वाला समझने वाला अभिमान करने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि 'पण्डितमानिन्' में 2 सम्मान करने वाला, आदर करने वाला (समास के अन्त में) 3 अभिमानी घमण्डी आत्माभिमानी पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् कि० १।४१ परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्-शि० १५।१ 4 आदरणीय, अतिसम्मानित भट्टि० १।२४ 5 अवज्ञापूर्ण, क्रोधयुक्त रुष्ट (पु०) सिंह —नी 1 आत्माभिमानिनी स्त्री, दृढ़ संकल्प वाली, अपने निश्चय वाली गर्वयुक्त (अच्छे अर्थों में)-वर्तन्ते गीतानवमन्यमानिनी कु० ५।५३ रघु० १३।३८ 2 कुपित स्त्री (ईर्ष्यायुक्त गर्व के कारण) अपने पति से रुष्ट मायवे मा कुरु मानिनि मानमये-गीत० १, कि० ९।३६ 3 एक प्रकार का सुगन्धयुक्त या महकदार पौधा ।

मानुष (वि०) (स्त्री० षी) [मनोरयम् अण्, सुक् च] 1 मनुष्य की, मानवी, इंसानी मानुषी तनु, मानुषी वाक् रघु० ११६०, १६।२२, मनु० ४।१२, ९।११ मनु० ६।१२८ 2 कृपालु, दयालु,—ष: 1 मनुष्य, मानव, इंसान 2 मिथुन, कन्या और तुला राशियों का विशेषण,—षी स्त्री, —षम् 1 मनुष्यत्व 2 मानव प्रयत्न या कर्म ।

मानुषक (वि०) (स्त्री—की) [मानुष+कन्] मनुष्य सम्बन्धी, इंसानी, मरणशील, मर्त्य ।

मानुष्यम्, मानुष्यकम् [मनुष्य—अण् वुन् वा] 1 मानव प्रकृति, मनुष्यत्व, इंसानियत 2 मनुष्य जाति, मानव-सतति 3 मानवसमुदाय ।

मानोज्ञकम् [मनोज्ञ+वुञ्] सौन्दर्य प्रियता मनोहरता ।

मान्त्रिक: [मन्त्र+ठक्] वह जो मन्त्र-तन्त्र से सुपरिचित है, जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक ।

मान्थर्यम् [मन्थर+ष्यञ्] 1 मन्थरता, मन्दता, अकर्मण्यता 2. दुर्बलता ।

मान्दार:, मान्दारव: [मन्दार+अण्] एक प्रकार का वृक्ष ।

मान्द्यम् [मन्द+ष्यञ्] 1 मन्दता, सुस्ती, मन्थरता 2. जड़ता 3. दुर्बलता, निर्बल स्थिति, अग्निमांद्य 4 विराग, उदासीनता 5. रोग बीमारी, अस्वस्थता ।

मान्धातृ (पुं०) [मां धास्यति—माम्+धे तृच्] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा (जो पिता के पेट से उत्पन्न हुआ था), ज्योंही वह पेट से बाहर निकला कि ऋषियों ने पूछा 'कम् एष धास्यति', इस पर इन्द्र नीचे उतरा और उसने कहा "मां धास्यति", इसीलिए वह बालक 'मांधातृ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

मान्मथ (वि०) (स्त्री०—थी) [मन्मथ+अण्] काम से संबंध रखने वाला या काम से उत्पन्न—आश्चर्यक विजयि मान्मथमासीत्—मा० १।२६, ७।४ ।

मान्य (वि०)[मान् अर्चायां कर्मणि ण्यत्] 1 मान करने के योग्य, आदरणीय अहमपि तव मान्या हेतुभिस्तैश्च तैश्च मा० ६।२६ 2 आदर किये जाने के योग्य, सम्मानीय, श्रद्धेय रघु० २।८५ याज्ञ० १।१११ ।

मापनम् मा+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 मापना 2 रूप बनाना बनाना, न: तराजू ।

मापत्य [मा विद्यते अपत्यं यस्य] कामदेव ।

मामक (वि०) (स्त्री०—की) [मम इदम् —अस्मद्+अण्, ममादेश] 1 मेरा 2 (संबोधन में) चाचा ।

मामक (वि०) (स्त्री०—मिका)[अस्मद्+अण्, ममकादेश] मेरा मेरे पक्ष से संबंध रखने वाला,—मामका: पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय—भग० १।१ 2. स्वार्थी, लालची, लोभी, क: 1 कंजूस 2. चाचा ।

मामकीन (वि०) [अस्मद्+खञ्, ममकादेश] मेरा —मो मामकीनस्य मनसो द्वितीयम् निबन्धनम्—मा० २, भामि० २।३२, ३।६ ।

मायः [माया अस्ति अस्य—माया—अण्] 1. जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक 2 राक्षस, भूत प्रेत ।

माया [मीयते अनया मा+य+टाप् वा० नैत्वम्] 1 धोखा, जालसाजी कपट, धूर्तता, दाँव, युक्ति, चाल पञ्च० १।३५१ 2 जादूगरी, अभिचार, जादू-टोना, इन्द्रजाल—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श० ६।७ 3 अवास्तविक या मायावी बिंब, कल्पनासृष्टि, भ्रमलीला, अवास्तविक आभास, छाया—मायां मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि रघु० २।६२, प्राय: समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'मिथ्या' 'आभास' 'छाया' अर्थ को प्रकट करता है उदा० मायावचनम् 'मिथ्या शब्द', मायामृग आदि 4 राजनैतिक दाँवपेंच, चाल, युक्ति, कूटनीति की चाल 5. (वेदान्त० में) अवास्तविकता, एक प्रकार की भ्रान्ति जिसके कारण मनुष्य इस अवास्तविक विश्व को वास्तविक तथा परमात्मा से भिन्न अस्तित्ववान् समझता है 6 (सांख्य० में) प्रधान या प्रकृति 7 दुष्टता 8. दया, करुणा 9 बुद्ध की माता का नाम । सम०—आचार धोखे से काम करने वाला, —आत्मक (वि०) मिथ्या, भ्रान्तिमान्, —उपजीविन् (वि०) जालसाजी और कपटपूर्ण जीवन बिताने वाला—पंच० १।२८८, —कार:, —कृत्, —जीविन् (पुं०) जादूगर, बाजीगर

—कः मायादेवी का पुत्र,—देवी बुद्ध की माता का नाम, °सुतः बुद्ध,—पर (वि०) कपटपूर्ण, भ्रमात्मक,—पटु (वि०) धोखा देने में कुशल, चालबाज, ठग,—प्रयोगः 1 धोखा, चालबाजी या दांवपेंच का प्रयोग 2. जादू का प्रयोग, —मृग (वि०) मिथ्याहरिण, भ्रमात्मक या छाया मृग, —यंत्रम् जादू-टोना,—योग जादू करना, —वचनम् झूठे या कपटपूर्ण शब्द,—वादः भ्रान्ति का सिद्धांत इस सिद्धान्त के अनुसार सारी सृष्टि मिथ्या समझी जाती है, बुद्धवाद, —विद् (वि०) कपट चाल चलने में कुशल, या जादू की कला, —सुतः बुद्ध का विशेषण ।

मायावत् (वि०) [माया+मतुप्] 1 कपटपूर्ण, चालबाज 2. भ्रान्तियुक्त, अवास्तविक भ्रमोत्पादक 3. इन्द्रजाल की कला में कुशल, जादू की शक्ति बनाने वाला —पुं० कंस का विशेषण,—ती प्रद्युम्न की पत्नी का नाम ।

मायाविन् (वि०) [माया अस्त्यर्थे विनि] 1 धोखेबाजी या चाल से काम लेने वाला, कूटयुक्ति का प्रयोग करने वाला, धोखेबाज, चालबाज—भवन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः —कि० १।३० 2. जादू के कार्य में कुशल 3 अवास्तविक, भ्रान्तिजनक, (पुं०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर 2 बिल्ली नपुं० माजूफल ।

मायिक (वि०) [माया+ठन्] 1 कपटमय, चालबाज 2. भ्रान्तिमान्, अवास्तविक, —कः जादूगर, —कम् माजूफल ।

मायिन् (वि०) [माया+इनि] दे० मायाविन् —पुं० 1 बाजीगर 2 धूर्त, ठग 3 ब्रह्मा या काम का नामान्तर ।

मायु: [मि+उण्] 1 सूर्य 2 पित्त दैहिक रस (इस अर्थ में नपुं० भी) ।

मायूर (वि०) (स्त्री०—री) [मयूर+अण्] 1 मोर से संबंध रखने वाला, या मोर से उत्पन्न होने वाला 2. मोर के परों से बना हुआ 3 (गाड़ी की भांति) मोर द्वारा खींचा जाने वाला 4 मोर को प्रिय, —रम् मोरों का समूह ।

मायूरकः, मायूरिकः [मयूर+वुञ्, ठञ् वा] मोर पकड़ने वाला ।

मारः [मृ+घञ्] 1. हत्या, वध, कत्ल —अद्येषप्रतिमायामीषमारो वद कस्माद् राजत० ५।६४ 2. बाधा, विघ्न, विरोध 3 कामदेव,—श्यामात्मा कुटिलः करोतु कबरीभारोऽपि मारोद्यमम् - गीत० ३ (यहाँ 'मार' का सूचक अर्थ 'हत्या' है)—भाम० १।१ 4. प्रेम, प्रणयोन्माद 5. धतूरा 6. अविद्या, (बौद्धों के अनुसार) विनाशक । सम०—अङ्क (वि०) 'प्रेमचिह्नित' प्रेम के संकेत करने वाला - माराङ्के रतिकेलिसंकुलरणारम्भे—गीत० १२, —अभिभू (पुं०) बुद्ध का विशेषण,- अरिः रिपु शिव, —आत्मक (वि०) हत्यारा—कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः कर्तव्यः हि० १, -जित् (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2 बुद्ध का विशेषण ।

मारकः [मृ+णिच्+ण्वुल्] 1 कोई घातक रोग, महामारी, 2. कामदेव 3 हत्या करने वाला, विनाशकर्ता 4 बाज ।

मारकत (वि०) (स्त्री०—ती) [मरकत+अण्] पन्ने से संबद्ध,—काञ्चनकलशीहस्ते मारकती द्युतिम् —हि० प्र० ४१ ।

मारणम् [मृ+णिच्+ल्युट्] 1 हत्या, वध कतल, विनाश —पशुमारणकर्मदारुणः श० ६।१ 2 शत्रु का विनाश करने के लिए किया गया जादूटोना 3 फूंकना, राख कर देना 4. एक प्रकार का विष ।

मारिः (स्त्री०) [मृ+णिच्+इञ्] 1 घातकरोग, महामारी 2. हत्या, बर्बादी, विनाश ।

मारिच (वि०) (स्त्री०—ची) [मरिच+अण्] मिर्च का बना हुआ ।

मारिषः [मा रिष्यति हिनस्ति मा+रिष्+क] किसी मुख्य पात्र को सूत्रधार द्वारा नाटक में संबोधित करने के लिए सम्मानयुक्त रीति आदरणीय, श्रद्धेय —दे० उत्तर० १, मा० १ ।

मारी [मारि+ङीष्] 1 प्लेग, घातक रोग, संक्रामक रोग 2 घातक या मारक रोगों की अधिष्ठात्री देवता दुर्गा ।

मारीच (पुं०) 1 ताड़का और सुन्द राक्षस की सन्तान मारीच नाम का राक्षस। यह स्वर्णमृग का रूप धारण करके राम की दृष्टि से दूर भगा ले गया जिससे कि रावण को सीता का अपहरण करने का अवसर मिल गया 2 एक विशाल या राजकीय हाथी 3 एक प्रकार का पौधा या मिर्च की झाड़ियों का समूह ।

मारुण्ड (पुं०) 1 सर्प का अण्डा 2 मार्ग 3 गाय ढोर का गोबर ।

मारुत (वि०) (स्त्री०—ती) [मरुत्+अण्] 1 मरुत् संबंधी या मरुत् से उत्पन्न होने वाला 2. वायु से संबंध रखने वाला, वायवी, हवाई, —तः 1 हवा—रघु० २।१२, ३४, ४।५४, मनु० ४।१२२ 2. वायु का देवता, पवन की अधिष्ठात्री देवता 3. श्वास क्रिया 4 प्राण, शरीर के तीन मूल रसों (वात, पित्त, कफ) में से एक 5 हाथी की सूंड,—तम् स्वाति नाम का नक्षत्र । सम०—अशनः सांप—आत्मजः—सुतः, —सूनुः 1. हनुमान् के विशेषण 2. भीम के विशेषण ।

मारुतिः [मरुतोऽपत्यम्—इञ्] 1 हनुमान् का विशेषण —रघु० १२।६० 2. भीम का विशेषण ।

मार्कण्डः, मार्कण्डेयः [मृकण्डोः अपत्यम्—अण्, मृकण्डु+ढक्] एक प्राचीन ऋषि का नाम । सम०—पुराणम् (इस ऋषि द्वारा प्रणीत) एक पुराण ।

मार्ग् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मार्गति, मार्गयति-ते) 1. खोजना, ढूंढना 2 तलाश करना, पीछे पड़ना 3 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, कोशिश करते रहना—नात्मोत्कर्षं न मार्गेत परेषां परिनिन्दया, स्वगुणैरेव मार्गेत विप्रकर्षं पृथग्जनात्—सुभा० 4. निवेदन करना, प्रार्थना करना, याचना करना—वरं वरेण्यो नृपतेरमार्गीत भट्टि० १।१२, याज्ञ० २।१६, 5. विवाह के लिए मांगना ।
ii (चुरा० उभ० मार्गयति - ते) 1 जाना, हिलना-जुलना, 2 सजाना, अलंकृत करना । परि—, खोजना, ढूंढना ।

मार्गः [मार्ग्+घञ्] 1. रास्ता, सड़क, पथ (आलं० भी) - अग्निशरण्यमार्गमादेशय—श० ५, इसी प्रकार —विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२, रघु० २।७२ 2. क्रम, रास्ता, मार्ग (जो पार कर लिया गया हो)—वायोरिमं परिवहस्य वदन्ति मार्गम्—श० ७।७ 3 पहुँच, परास - कि० १८।४० 4 चिह्न, व्रणचिह्न —रघु० ४।४८ १४।४ 5 ग्रहपथ 6 खोज, पूछताछ, गवेषणा 7 नहर कुल्या, जलमार्ग 8 साधन, रीति 9. सही मार्ग उचित पथ सुमार्ग, अमार्ग 10 पद्धति, रीति, प्रणाली, क्रम, चलन—ख्याति°—रघु० ७।७१, इसी प्रकार कुल° शास्त्र° धर्म० आदि 11. शैली, वाक्यविन्यास--इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दश गुणाः स्मृताः —काव्या० १।४१, वाचां विचित्रमार्गाणाम्—१।९ 12. गुदा, मलद्वार 13 कस्तूरी 14 'मृगशिरस्' नाम का नक्षत्र 15 मार्गशीर्ष का महीना। सम०—तोरणम् सड़क पर बनाया गया उत्सवसूचक महराबदार द्वार—रघु० ११।५, —दर्शकः पथप्रदर्शक, —धेनुः, —धेनुकम् चार कोस की दूरी,—बन्धनम् रोक, बाड़,—रक्षकः सड़क का रखवाला, सड़क पर पहरा देने वाला,—शोधकः दूसरे के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला, —स्थ (वि०) यात्रा करने वाला, बटोही,—हर्म्यम् राजपथ पर बना हुआ महल ।

मार्गकः [मार्ग+कन्] मार्गशीर्ष का महीना ।

मार्गणम्,—णा [मार्ग्+ल्युट्] 1 याचना करना प्रार्थना करना, निवेदन करना 2 खोजना, तलाश करना, ढूंढना 3 गवेषणा करना, पूछताछ करना, जांचपड़ताल करना,—णः 1 भिक्षुक, अनुनय विनय करने वाला, याचक 2 बाण दूरीरा स्मरमार्गणा काव्य० १०, अर्थोऽयं तस्ताघृमनञ्जमार्गणीर्यदस्य पौरवैरपि येषं कम्बुकम्

—नै० १।४९, विक्रम १।७७, रघु० ९।१७, ६५ 3 'पांच' की संख्या ।

मार्गशिरः मार्गशिरस्, (पुं०) मार्गशीर्षः [मृगशिरा+अण्, मृगशीर्ष+अण्] (नवंबर और दिसंबर में पड़ने वाला) हिन्दुओं का नवां महीना जिसमें कि पूर्णचन्द्रमा मृगशिरस् नक्षत्र में विद्यमान है ।

मार्गशिरी, मार्गशीर्षी [मार्गशिर+ङीप्, मार्गशीर्ष+ङीप्] मार्गशीर्ष के महीने में आने वाली पूर्णमासी का दिन ।

मार्गिकः [मृगान् हन्ति—मृग+ठक्] 1 यात्री 2. शिकारी ।

मार्गित (भू० क० कृ०) [मार्ग्+क्त] 1 खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, पूछताछ किया हुआ, 2 जिसके पीछे २ फिरा गया हो, अभीष्ट, निवेदित ।

मार्ज् (चुरा० उभ० मार्जयति—ते) 1 निर्मल करना, स्वच्छ करना, पोंछना—तु० मृज् 2. ध्वनि करना ।

मार्जः [मृज् (मार्ज् वा)+घञ्] 1 स्वच्छ करना, निर्मल करना धोना 2 धोबी 3 विष्णु का विशेषण ।

मार्जक (वि०) (स्त्री० जिका) [मृज्+ण्वुल्] स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला, धोने वाला ।

मार्जन (वि०) (स्त्री०—नी) स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला,—नम् 1 स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2 पोंछ देना, रगड़ कर मिटा देना 3 साफ कर देना, पोंछ डालना 4 उबटन से मल मल कर शरीर स्वच्छ करना 5 हाथ से या कुशा से शरीर पर जल के छींटे डालना, —नः लोध्रवृक्ष,—ना 1 स्वच्छ करना, निर्मल करना, साफ करना 2 ढोल की आवाज—मायूरी मदयति मार्जना मनांसि—मालवि० १।१८,—नी बुहारी, कूची झाड़ या ब्रुश ।

मार्जारः (रः) बिलाव कपाले मार्जारः पय इति करांल्लेढि शशिनः काव्य० १० 2 गंधमार्जार । सम० —कण्ठः मोर, —करणम् एक प्रकार का मैथुन या रतिबन्ध ।

मार्जारकः 1 बिलाव 2 मोर ।

मार्जारी 1 बिल्ली 2 मुश्क बिलाव ओतु 3 कस्तूरी ।

मार्जारीयः 1 बिलाव 2 शूद्र ।

मार्जितम्-(भू० क० कृ०) 1 स्वच्छ किया हुआ, मल-मल कर मांजा हुआ, निर्मल किया हुआ 2 बुहारा हुआ, झाड़ या ब्रुश से साफ किया हुआ 3 अलंकृत किया हुआ ।

मार्जिता दही में चीनी और मसाले डाल कर बनाया गया स्वादिष्ट पदार्थ श्रीखंड ।

मार्तण्डः 1 सूर्य अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः काव्य० १०, उत्तर० ६।३ 2 मदार का पौधा 3 सूअर 4 बारह की संख्या ('मार्तण्ड' भी) ।

मार्तिक (वि०) (स्त्री० -की) मिट्टी का बना हुआ, मिट्टी का, —कः 1 एक प्रकार का घड़ा 2 घड़े का

इयत्तम्, बाली, – कम् मिट्टी का लौंदा गुरुमध्ये हरिणाक्षी मार्तिकशकलैर्निहन्तुकामं माम् – भामि० २।४९।

मार्त्यम् मरणशीलता।

मार्दङ्गः – ढोलकिया, मृदंग बजाने वाला, – ङ्गम् नगर, कस्बा।

मार्दङ्गिकः – मृदंग बजाने वाला, ढोलकिया।

मार्दवम् मृदुता (शा० और आल०) लचीलापन, दुर्बलता अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु रघु० ८।४३, 'मृदु हो जाता है', स्वशरीरमार्दवम् कु० ५।१८ 2 नरमी, कृपा, कोमलता, उदारता भग० १६।२।

मार्द्वीक (वि०) (स्त्री० – की) अंगूरों से बनाया हुआ, – कम् शराब – शि० ८।७०।

मार्मिक (वि०) – गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, तत्त्व सौन्दर्यादिक से पूर्ण परिचित, (मर्मज्ञ दे०) – मार्मिकः को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम् भामि० १।११७, १।१८, ४।४०।

मार्षः – दे० 'मारिष'।

मार्ष्टिः (स्त्री०) स्वच्छ करना, मलमलकर मांजना, निर्मल करना।

मालः 1 बंगाल के पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम में एक जिले का नाम 2. एक बर्बर जाति का नाम, पहाड़ी 3. विष्णु का नाम, – लम् 1 मैदान 2. ऊँची भूमि उठी हुई या उन्नत की हुई भूमि (मालमुन्नतभूतलम्) क्षेत्रमारुह्य मालम् – मेघ० १६ (क्षेत्रप्रायमुन्नतस्थलम् – मल्लि०) 3 धोखा, जालसाजी। सम० – चक्रकम् कूल्हे का जोड़।

मालकः 1. नीम का पेड़ 2 गाँव के पास का जंगल 3. नारियल के खोल से बना पात्र, – कम् माला।

मालतिः, – ती (स्त्री०) (सुगंधित श्वेत फूलों से युक्त) एक प्रकार की चमेली – तन्मध्ये यदपि च मुकुलकलेनास्वादिता मालती – भाग०, मालकैर्मालतीनाम् – मेघ० ९८ 2. मालती का फूल शिरसि बकुलमालां मालतीभिः समेतां – ऋतु० २।२४ 3 कली, सामान्य फूल 4. कन्या, तरुणी 5 रात 6 चांदनी। सम० – क्षारकः सुहागा, – पत्रिका जायफल का छिलका, – फलम् जायफल, – माला मालती या चमेली के फूलों की माला।

मालय (वि०) (स्त्री० – यी) मलय पर्वत से आने वाला, – यः चन्दन की लकड़ी।

मालवः 1 एक देश का नाम, मध्यभारत में वर्तमान मालवा 2. राग का नाम, या स्वरग्राम की रीति, – वाः (ब० व०) मालवा प्रदेश के अधिवासी। सम० – अधीशः – इन्द्रः, – नृपतिः मालवा का राजा।

मालवकः – 1 मालव वासियों का देश 2 मालवा का निवासी।

मालसी एक पौधे का नाम।

माला 1 हार, स्रज्, गजरा अनाघ्रातपरिमलाऽपि हि हरति दृशं मालतीमाला वास० 2 रेखा, पंक्ति, सिलसिला, श्रेणी या तांता गण्डोड्डीनालिमाला मा० १।१, आबद्धमालाः मेघ० ९ 3 समूह, झुरमुट, समुच्चय 4 लड़ी, कण्ठहार जैसा कि 'रत्नमाला' में 5 जपमाला, जंजीर – जैसा कि 'अक्षमाला' में 6 लकीर, लहर, कौंध जैसा कि 'तडिन्माला' और 'विद्युन्माला' में 7 विशेषणों का सिलसिला 8 (नाटक में) अपने मनोरथ की सिद्धि के लिए नाना वस्तुओं का उपहार। सम० – उपमा उपमा का एक भेद जिसमें एक उपमेय की अनेक उपमानों से तुलना की जाती है उदा० अनयेनेव राज्यश्रीर्दैन्येनेव मनस्विता मम्लौ साथ विषादेन पद्मिनीव हिमाम्भसा काव्य० १०, – कारः, – कारः 1 हार बनाने वाला फूल-विक्रेता माली कुली मालाकारो बकुलमपि कुत्रापि निदधे भामि० १।५४, पंच० १।२४० 2 मालियों की एक जाति, – तृणम् एक प्रकार का सुगंधित घास, – दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, मम्मट ने इसकी परिभाषा बताई है मालादीपकमाद्यं चेद्यथोत्तरगुणावहम् काव्य० १० उदा० मेरे उसी स्थान पर।

मालिकः 1 फूलों का व्यापारी, माली 2 रंगने वाला रंगरेज।

मालिका 1 माला 2 पंक्ति, रेखा, सिलसिला 3 लड़ी कण्ठहार 4 चमेली का एक प्रकार 5 अलसी 6 बेटी 7 महल 8 एक प्रकार का पक्षी 9 मादक पेय।

मालिन् (वि०) 1 माला पहनने वाला 2 (समास के अन्त में) मालाओं से सम्मानित, हारों से सुशोभित गजरों से लपेटा हुआ समुद्रमालिनी पृथ्वी, अंशुमालिन्, मरीचिमालिन्, ऊर्मिमालिन् आदि, – पुं० फूलमाली, हार बनाने वाला, – नी 1 फूलमालिन्, हार बनाने वाले की पत्नी 2. चम्पा नगरी का नाम 3 सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे 4 दुर्गा का नाम 5 स्वर्गंगा 6 एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट १।

मालिन्यम् 1 मैलापन, गन्दगी, अपवित्रता 2 मलिनता दूषण 3 पापपूर्णता 4 कालिमा 5 कष्ट, दुःख।

मालुः (स्त्री०) 1 एक प्रकार की लता 2 एक स्त्री। सम० – धानः एक प्रकार का साँप।

मालूरः 1 बेल का वृक्ष 2. कैथ का वृक्ष।

मालेया बड़ी इलायची।

माल्य (वि०) हार के उपयुक्त या हार से संबद्ध, – ल्यम् 1. हार, गजरा – माल्येन तां निर्वचनं जघान कु०

७।१९, कि० १।२१ 2. फूल—मन० ११।११, मनु० ४।७२ 3 सुमिरनी या शिरोमाल्य। सम० —आपण: फूलों की मंडी,—जीवकः फूलमाली, मालाकार,—पुटम: पटलम,—वृत्तिः फूलों का व्यापारी।

माल्यवत् (वि०) माला धारण किए हुए, हारों से सुशोभित (पुं०) 1 एक पर्वत या पर्वतशृंखला का नाम —उत्तर० १।३३, रघु० १३।२६ 2 सुकेतु का पुत्र एक राक्षस (माल्यवान् रावण का मामा और मंत्री था, उसकी बहुत सी योजनाओं में वह सहायता देता था, अपने पूर्वकाल में घोर तपस्या द्वारा उसने ब्रह्मा को प्रसन्न किया। इसके फलस्वरूप उसके लंकाद्वीप की सृष्टि की गई। कुछ वर्षों वह अपने भाइयों समेत वहाँ रहा, परन्तु बाद में उसने लंका को छोड़ दिया। कुबेर ने फिर लंका पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् फिर जब रावण ने कुबेर को निर्वासित कर दिया तो माल्यवान् फिर अपने बंधु बांधवों समेत वहाँ आ गया और बरसों रावण के साथ रहा)।

माल्लः एक प्रकार की वर्णसंकर जाति।

माल्लवी कुश्ती या मुक्केबाजी की प्रतियोगिता।

माषः 1 उड़द (एक वचन पौधे के अर्थ में तथा ब० व० फल या बीज के अर्थ में) निक्षेप्य प्रतियच्छति माषान् सिद्धा० 2. सोने की एक विशेष तौल, माशा —माषो विंशतिमो भाग पणस्य परिकीर्तितः—या—गुञ्जाभिर्दशभिर्माष 3 मूर्ख बुद्धू। सम० —अद., माष कछुवा —आज्यम घी के साथ पकाये हुए उड़द, —आशः घोड़ा, —ऊन (वि०) एक माशा कम —वर्धकः सुनार।

माषिक (वि०) (स्त्री० —की) एक माशे के मूल्य का।

माषीणम्, माष्यम् उड़दों का खेत।

मास् (पुं०) =मास दे० (पहले पांच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि० के द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से मास के स्थान में 'मास्' आदेश हो जाता है)।

मासः, —सम्—महीना (यह चांद्र, सौर, सावन, नाक्षत्र या बार्हस्पत्य में से कोई भी हो सकता है)—न मासे प्रतिपत्तासे मां चेन्मर्तासि मैथिलि —भट्टि० ८।९५, 2. 'बारह' की संख्या। सम० —अनुमासिक (वि०) प्रतिमास होने वाला, —अन्तः अमावस्या का दिन, —अवधार (वि०) मास में केवल एक बार खाने वाला, —उपवासिनी 1. पूरा महीना भर उपवास रखनेवाली स्त्री 2. कुट्टिनी, लम्पट या दुश्चरित्र स्त्री (व्यंग्योक्तिपूर्वक), —कालिक (वि०) मासिक, —जात (वि०) एक मास का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना हो चुका है, —ज्ञः एक प्रकार का जलकुक्कुट, —देय (वि०) जिसे महीने भर में चुकाना हो, —प्रमितः अमावस्या या प्रतिपदा का चंद्रमा, —प्रवेशः महीने का आरम्भ, —मानः वर्ष।

मासकः महीना।

मासरः उबले हुए चावलों की पीच, मांड।

मासलः वर्ष।

मासिक (वि०) (स्त्री० —की) 1 महीने से संबंध रखने वाला 2 प्रतिमास होने वाला 3 एक महीने तक रहने वाला 4 एक महीने में चुकाया जाने वाला 5 एक महीने के लिए नियुक्त,—कम् प्रत्येक मृत्युतिथि को किया जाने वाला श्राद्ध (मनुष्य के मरने के प्रथम वर्ष में) —पितॄणां मासिकं श्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः।

मासीन (वि०) 1 एक मास की आयु का 2. मासिक।

मासुरी दाढ़ी।

माह् (भ्वा० उभ० माहति —ते) मापना।

माहाकुल (वि०) (स्त्री० —ली) माहाकुलीन (वि०) (स्त्री—ना) 1 सत्कुलोत्पन्न, उत्तम कुल का नामी घराने या प्रख्यात कुल का।

माहाजनिक (वि० स्त्री० —की), माहाजनीन (वि०) (स्त्री० —नी) 1 सौदागरों के लिए उपयुक्त 2 महाजनोचित, बड़े आदमी के योग्य।

माहात्मिक (वि०) (स्त्री० —की) उन्नत-मना, उदाराशय, उत्तम, महानुभाव यशस्वी।

माहात्म्यम् 1 उदाराशयता, महानुभावता 2. ऐश्वर्य, महिमा, उत्कृष्ट पद 3 किसी इष्ट देव या दिव्य विभूति के गुण, या ऐसी कृति जिसमें इस प्रकार के देवी देवताओं के गुणों का वर्णन किया गया हो—जैसा कि देवीमाहात्म्य, शनिमाहात्म्य आदि।

माहाराजिक (वि०) (स्त्री० —की) सम्राट् के उपयुक्त, साम्राज्यसंबंधी, राजकीय या राजोचित।

माहाराज्यम् प्रभुता।

माहाराष्ट्री दे० महाराष्ट्री।

माहिरः इन्द्र का विशेषण।

माहिष (वि०) (स्त्री —षी) भैंस या भैंसे से उत्पन्न या प्राप्त, जैसा कि माहिष दधि।

माहिषिकः 1 भैंस रखने वाला, ग्वाला 2. असती या व्यभिचारिणी स्त्री का यार —माहिषीत्युच्यते नारी या च स्याद् व्यभिचारिणी, तां दुष्टा कामयति यः स वै माहिषिकः स्मृत —कालिका पुराण 3. जो अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति पर निर्वाह करता है —महिषीत्युच्यते भार्या सोपेनोपार्जितं धनम्, उपजीवति यस्तस्याः स वै माहिषिकः स्मृत —बि० पु० पर श्रीधर०।

माहिष्मती एक नगर का नाम, हैहय राजाओं की कुलक्रमागत राजधानी रघु० ६।४३।

माहिष्यः क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक मिश्र या वर्णसंकर जाति।

माहेन्द्र (वि०) (स्त्री०—न्द्री) इन्द्र से संबंध रखने वाला —कु० ७।८४, रघु० १२।८९,—न्द्री 1 पूर्व दिशा 2 गाय 3 इन्द्राणी का नाम।

माहेय (वि०) (स्त्री०—यी) भौतिक, यः 1 मंगल ग्रह 2. मूंगा।

माहेयी गाय।

माहेश्वरः शिव की पूजा करने वाला।

मि (स्वा० उभ० मिनोति, मिनुते लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग) 1 फेंकना, डालना, बखेरना 2. निर्माण करना (मकान) खड़ा करना 3 मापना 4 स्थापित करना 5. ध्यानपूर्वक देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना।

मिच्छ् (तुदा० पर० मिच्छति) 1. विघ्न डालना, बाधा डालना 2 तंग करना।

मित (भू० क० कृ०) 1 मापा हुआ, नपा तुला 2. नाप कर निशान लगाया हुआ, हदबन्दी की हुई, सीमाबद्ध किया हुआ 3. सीमित, परिमित, मर्यादित, थोड़ा, स्वल्प, बचा रखने वाला, संक्षिप्त (शब्द आदि) —पुष्टः सर्वं मितं ब्रूते स मृत्योर्हौ महीभुजाम्—पंच० १।८७, रघु० ९।१४ 4. मापने में, माप का (समास के अन्त में) जैसा कि 'पहुवसुकरिचन्द्रमिते वर्षे' अर्थात् १८८९ 5. जांच पड़ताल किया हुआ, परीक्षित (दे० मा०)। सम०—अक्षर (वि०) 1. संक्षिप्त, नपा-तुला, थोड़े में, सारगर्भित—कु० ५।६१ 2. छन्दोबद्ध, पद्यात्मक,—अर्थ (वि०) नपे-तुले अर्थ वाला आहार (वि०) थोड़ा खाने वाला, (—रः) परिमित आहार, —भाषिन्,—वाच् कम बोलने वाला, नपेतुले शब्दों में अपनी बात कहने वाला महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः—शि० २।१३।

मितङ्गमः (वि०) धीरे-धीरे चलने वाला —मः हाथी।

मितम्पच (वि०) 1. नपा-तुला अन्न पकाने वाला, थोड़ा पकाने वाला 2. मितव्ययी, दरिद्र कंजूस।

मितिः (स्त्री०) 1 मापना, माप, तोल 2 यथार्थ ज्ञान 3. प्रमाण, साक्ष्य।

मित्रः 1. सूर्य 2. आदित्य (इसका वर्णन प्रायः वरुण के साथ मिलता है), त्रम् 1 दोस्त—तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् भर्तृ० २।६८, मेघ० १७ 2 मित्रराष्ट्र, पड़ोसी राजा दे० 'मण्डल'। सम० —आचारः मित्र के प्रति व्यवहार —उदयः 1 सूरज का उगना 2. मित्र का कल्याण या समृद्धि, —कर्मन् (नपुं०) —कार्यम्,—कृत्यम् मित्र का कार्य, मित्रता पूर्ण कार्य या सेवा -रघु० १९।३१,—घ्न (वि०) विश्वासघाती, द्रुह्, द्रोहिन् (वि०) मित्र से घृणा करने वाला, मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला झूठा या विश्वासघाती मित्र, भावः मित्रता, दोस्ती, —भेदः मैत्रीभंग, वत्सल (वि०) मित्रों के प्रति कृपालु, शिष्टाचारयुक्त, —वधः मित्र का वध करना।

मित्रयु (वि०) 1 मित्रवत् आचरण करने वाला, हितैषी 2 स्नेहशील, मिलनसार।

मिथ् (भ्वा० उभ० मेथति—ते) 1 सहकारी बनना, 2. एकत्र मिलाना, मैथुन करना, जोड़ा बनाना 3 चोट पहुँचाना, क्षति पहुंचाना, प्रहार करना, वध करना 4 समझना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, जानना 5 समझना।

मिथस् (अव्य०) 1 परस्पर, आपस में, एक दूसरे को मनु० २।१४७, (प्रायः समास में)—मिथः प्रस्थाने श० २, मिथः समवायात् श० ५ 2 गुप्त रूप से, व्यक्तिगत रूप से, चुपचाप, निजी रूप से - भर्तुः प्रसादं प्रतिनन्द्य मूर्ध्ना वक्तुं मिथः प्राक्रमतैवमेनम्—कु० ३।२, ६।२, रघु० १३।१।

मिथिलः एक राजा का नाम,—लाः (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—ला नगर का नाम, विदेह देश की राजधानी।

मिथुनम् 1 जोड़ा, दम्पती—मिथुनं परिकल्पितं त्वया सहकारः फलिनी च नन्विमौ—रघु० ८।६१, मेघ० १८, उत्तर० २।६ 2 युगल, 3. समागम, संगम 4 मैथुन, संयोग, सहवास 5 मिथुन राशि 6 (व्या० में) उपसर्ग से युक्त धातु। सम० —भावः 1 जोड़ी बनाना, जोड़ा बनने की स्थिति 2. संयोग,- व्रतिन् (वि०) सहवास करने वाला।

मिथुनेचरः चक्रवाक, चकवा—दे० 'द्वन्द्वचर'।

मिथ्या (अव्य०) 1 झूठमूठ, धोखे से, गलत तरीके से, अशुद्धता के साथ बहुधा विशेषण का बल रखते हुए मणी महानील इति प्रभावादल्पप्रमाणोऽपि यथा न मिथ्या रघु० १८।४२, यदुवाच न तन्मिथ्या १७।४२, मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः श० २।५ 2 विपर्यस्त रूप से, विपरीततया 3 निष्प्रयोजन, व्यर्थ, निष्फलता के साथ—मिथ्या कारयते चारैर्घोषणां राक्षसाधिप भट्टि० ८।४४, भग० १८।५९, मिथ्या वद् (वच्) मिथ्या कहना, झूठ बोलना, मिथ्या कृ -, मिथ्या सिद्ध करना, मिथ्या भू, झूठ निकलना, झूठ होना, मिथ्या ग्रह्, गलत समझना, भूल होना या करना समास के आरंभ में प्रयुक्त 'मिथ्या' का अनुवाद 'झूठा' असत्य, अवास्तविक, झूठमूठ, छलयुक्त, जाली आदि शब्दों से किया जा सकता है। सम०- अध्यवसितिः एक अलंकार जिसमें किसी असंभव घटना के आश्रित होने के कारण किसी वस्तु की असंभावना की अभिव्यक्ति हो—किंचिन्मिथ्यात्वसिद्ध्यर्थं मिथ्यार्थान्तरकल्पनम् मिथ्याध्यवसितिर्वेश्यां वशयेत् खस्रजं वहन् कुव०, —अभियोगः झूठा आरोप —अभिशंसनम् झूठी [illegible],

—अभियोगः झूठा या निराधार आरोप, —अभिशंसनम् झूठा आक्षेप, मिथ्या दोषारोपण, —अभिशापः 1. झूठी भविष्यवाणी 2. झूठा या अन्याय्य दावा, —आचारः गलत या अनुचित आचरण, —आहारः गलत भोजन, —उत्तरम् झूठा या गोलमोल जवाब, —उपचारः बनावटी कृपा या सेवा, —कर्मन् (नपुं०) झूठा कार्य, —कोपः, —क्रोधः झूठ मूठ का गुस्सा, —क्रयः मिथ्या मूल्य, —ग्रहः, —ग्रहणम् समझने में भूल होना, गलत समझना, —चर्या पाखंड, —ज्ञानम् अशुद्धि, त्रुटि गलतफहमी, —दर्शनम् पाखंडधर्म, नास्तिकता, —दृष्टिः (स्त्री०) मतविरोध, नास्तिकता के सिद्धान्तों को मानना, —पुरुषः [illegible] पुरुष, —प्रतिज्ञ (वि०) झूठी प्रतिज्ञा करने वाला, दगाबाज, —फलम् काल्पनिक लाभ, —मतिः भ्रम, अशुद्धि, त्रुटि, —वचनम्, —वाक्यम् मिथ्यात्व, झूठ, —वार्ता झूठा विवरण, —साक्षिन् (पुं०) झूठा गवाह।

मिद् I (भ्वा० आ०, दिवा० चुरा० उभ० मेदते, मेद्यति-ते, मेदयति-ते) 1 चिकना या स्निग्ध होना 2 पिघलना 3 मोटा होना 4 प्रेम करना, स्नेह करना।
II (भ्वा० उभ० मेदति-ते) दे० मिथ्।

मिद्धम् 1 तन्द्रा, निठल्लापन, सुस्ती 2 अक्षमा, निढालपन, मन्दता (उ मिद्ध भी)।

मिन्द् (भ्वा० चुरा० पर० मिन्दति, मिन्दयति) दे० मिद् II।

मिन्व् (भ्वा० पर० मिन्वति) 1 छिड़कना, तर करना 2 सम्मान करना, पूजा करना।

मिल् (तुदा० उभ० मिलति-ते, सामान्यतः मिलति मिलित) 1 सम्मिलित होना, मिलना, साथ होना —कमलवती मिलितः रत्न० 4 2. आना या परस्पर मिलना, सम्मिलित होना, इकट्ठे होना, एकत्र होना —ये चान्ये सुहृदः समुद्विमसमये [illegible] लास्ते सर्वत्र मिलन्ति हि० १।२१०, यान्ति किं न मिलन्ति अमरु १०, मिलितशिलीमुख गीत० १, स पार्वे [illegible] न च —शिका० 3 मिश्रित होना, मिलना, संपर्क में आना —मिलति तव तोयैर्मृगमदः —गंगा० ७ 4 मिलना, मुकाबला करना (युद्धादि में) संघर्ष होना, भिड़ना, 5 घटित होना होना 6 मिलना, साथ आ पड़ना प्रेर० मेलयति—ते, एकत्र लाना, इकट्ठे होना, सम्मेलन बुलाना।

मिलनम् 1. सम्मिलित होना, मिलना, एक स्थान पर एकत्र होना 2 मुकाबला करना 3 सम्पर्क, मिश्रित होना, संपर्क में आना [illegible] गीत० ४।

मिलित (भू० क० कृ०) 1 एक स्थान पर आया हुआ, एकत्र हुआ, मुकाबला किया गया, मिश्रित 2 मिला हुआ, मुठभेड़ हुई 3 मिश्रित 4 एक स्थान पर रक्खे हुए, सबको ग्रहण किया हुआ।

मिलिन्दः मधुमक्खी, भौंरा — [illegible] मिलिन्दाः भामि० १।८,१५।

मिलिन्दकः एक प्रकार का साँप।

मिश् (भ्वा० पर० मेशति) 1. शोर करना, कोलाहल करना 2. क्रुद्ध होना।

मिश्र् (चुरा० उभ० मिश्रयति ते 'मिश्र' की ना० धा०) मिलाना, गड़बड़ करना, जोड़ना, घोलना, संयुक्त करना बढ़ाना साथ न मिश्रयति यद्यपि मे वचांसि — श० १।३१, न मिश्रयति लोचने भामि० २।१८०।

मिश्र (वि०) 1 मिला हुआ, घोला हुआ, गड़बड़ किया हुआ मिलाया हुआ गद्य पद्य मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम् —काव्या० १।११ ३१ ३२, रघु० १६। ३२ 2 साथ लगा हुआ, संयुक्त 3 बहुविध, नाना प्रकार का 4 उलझा हुआ, अन्तर्वलित 5. (समास के अन्त में) मिश्रणसंपन्न, अधिकारसंपन्न युक्त, —श्रः 1 आदरणीय या योग्य व्यक्ति यह शब्द प्रायः बड़े बड़े पुरुषों और विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता है आर्यमिश्राः प्रमाणम् मालवि० १ वसिष्ठमिश्र., मदनमिश्र आदि 2 एक प्रकार का हाथी, —श्रम् 1 [illegible] 2 एक प्रकार की मूली, शलजम। सम० —जः अश्वतर, —वर्ण (वि०) मिश्रित रंग का (—र्णम्) एक प्रकार की काली अगर की लकड़ी, —शब्दः अश्वतर।

मिश्रक (वि०) 1 मिश्रित गड्डमड्ड किया हुआ 2 फुटकर, [illegible] 3 व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट करने वाला, —कम् खारी मिट्टी से पैदा किया गया नमक।

मिश्रणम् मिलाना, घोलना, संयुक्त करना।

मिश्रित (भू० क० कृ०) 1 मिला हुआ घुला हुआ, संयुक्त 2 बढ़ाया हुआ 3 आदरणीय।

मिष् I (तुदा० पर० मिषति) 1 आंख खोलना, झपकना 2 देखना, विस्मयपूर्वक देखना [illegible] मिषन्तम् — कु० ४।४६ 3 प्रतिद्वंद्विता करना, होड़ लेना, प्रतिस्पर्धा करना, उद् —, 1 आंखें खोलना —उन्मिषितामिषितमपि — भग० ५।९, 2 (आंखों की तरह) खोलना—कु० ४।२ 3 खुलना, खिलना, कुसुमित होना 4 उदय होना 5 चमकना जगमगाना, नि आंखें मूंदना — भग० [illegible]
II (भ्वा० पर० मेषति) आर्द्र करना, तर करना, छिड़कना।

मिषः प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता, —षम् बहाना छद्मवेश, धोखा,

दांवपेंच, जालसाजी, झूठा आभास —वाल्मेमक्रमेकेन मिषेणानीय दश०, (उत्प्रेक्षा प्रकट करने के लिए बहुधा 'छल' की भांति प्रयुक्त होता है) —स रोमकूपौघमिषाज्जगत्कृता कृताश्च किं दूषणशून्यबिन्दवः —नै० १।२१, वदने विनिवेशिता भुजङ्गी पिशुनानां रसनामिषेण धात्रा—भामि० १।१११।

मिष्ट (वि०) 1. मधुर 2. स्वादिष्ट, मजेदार —किं मिष्टमन्नं खरसूकराणाम्, तु० 'डाई कास्ट पर्ल्स बिफोर स्वाइन' (Why cast pearls before the swine ?) अर्थात् बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद 3. तर किया हुआ, गीला किया हुआ —ष्टम् मिष्टान्न, मिठाई।

मिह् (भ्वा० पर० मेहति, मीढ) 1. मूत्रोत्सर्ग करना 2. गीला करना, तर करना, छिड़कना 3. वीर्यपात करना।

मिहिका पाला, हिम।

मिहिरः 1. सूर्य —अपि तावन्मिहिरोऽपि निर्दयोऽभूत्—भामि० २।३४, याते मय्यचिरान्निदाघमिहिरज्वालाशतैः शुष्कताम्—१।१६, नै० २।३६, १३।५४ 2. बादल 3. चन्द्रमा 4. हवा, वायु 5. बूढ़ा आदमी।

मिहिराणः शिव का विशेषण।

मी i (क्र्या० उभ० मीनाति, मीनीते, श्रेण्य साहित्य में विरल प्रयोग) 1. मार डालना, विनाश करना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 2. घटना, कम करना 3. बदलना, परिवर्तित करना 4. अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० मयति, माययति —ते) 1. जाना, हिलना जुलना 2. जानना, समझना (गतिमत्यर्थ) iii (चुरा० आ० मीयते) मरना, नष्ट होना।

मीढ (भू० क० कृ०) 1. मूत्रोत्सृष्ट, पेशाब किया गया 2. (मूत्र की भांति) बहाया गया।

मीढुष्टमः, **मीढ्वस्** (पुं०) शिव का विशेषण।

मीनः 1. मछली —मूढमीन इव ह्रद— रघु० १।७३, मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु—भामि० १।१७ 2. बारहवीं अर्थात् मीन राशि 3. विष्णु का पहला अवतार दे० मत्स्यावतार। सम० —अण्डम् मछली का अंडा, मछली के अंडों का समूह, —आलयः, —आलिन् (पुं०) 1 मछुवा 2 सारस, —आलयः समुद्र, —केतनः कामदेव, —गन्धा सत्यवती का विशेषण, —गन्धिका जोहड़, तालाब, —रङ्कः, —रङ्गः रामचिरैया चिड़िया (एक शिकारी पक्षी)।

मीनरः मकरमच्छ नाम का समुद्री-दानव।

मीव् (भ्वा० पर० मीवति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 मोटा होना।

मीमांसकः 1 [illegible] करता है, [illegible] करता है, अनुसंधानकर्ता, परीक्षक 2 मीमांसादर्शनशास्त्र का अनुयायी।

मीमांसनम् अनुसंधान, परीक्षण, पूछताछ।

मीमांसा गहन विचार, पूछताछ, परीक्षण, अनुसंधान, रसगङ्गाधरनाम्नी करोति कुतुकेन काव्यमीमांसाम् रस०, इसी प्रकार धर्म°, अलंकार° आदि 2. भारत के छः मुख्य दर्शनशास्त्रों में से एक। (मूल रूप से यह दो भागों में विभक्त है,—जैमिनि द्वारा प्रवर्तित पूर्वमीमांसा, और बादरायण के नाम से विख्यात उत्तरमीमांसा या ब्रह्ममीमांसा। परन्तु इन दोनों दर्शनों में समानता की कोई बात नहीं है। पूर्वमीमांसा तो मुख्यतः वेद के कर्मकाण्डपरक मंत्रों की सही व्याख्या तथा वेद के मूलपाठ के संदिग्ध अंशों का निर्णय करना है। उत्तरमीमांसा मुख्यतः ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। अतः पूर्वमीमांसा को केवल 'मीमांसा' के नाम से तथा उत्तरमीमांसा को 'वेदान्त' के नाम से पुकारते हैं। उत्तरमीमांसा में जैमिनी के दर्शनशास्त्र की उत्तरार्धता की कोई बात नहीं है, इसी लिए उसको अब एक पृथक् दर्शन माना जाता है), मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्—पञ्च० २।३३।

मीरः 1 समुद्र 2. सीमा, हद।

मील् (भ्वा० पर० —मीलति, मीलित) 1. आँखें मूंदना, पलकों का बन्द करना, आँख झपकाना, झपकी —पत्रं विरूपति मीलति भ्रमरांपि शिव तदालोकनात्— गीत० १० 2. मुंदना (आँख या फूलों का) मुंदना या बन्द होना —नयनयुगमामीलत— शि० ११।२, तस्या निमीलतुर्नेत्रे भट्टि० १४।५४ 3. मुर्झाना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना 4. मिलना, एकत्र होना— प्रेर० (मीलयति —ते) बन्द करवाना, मुंदवाना, (आँख या फूल आदि का) बन्द करना —लोचनमामाशामय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, आ—, प्रेर० बन्द करना, नेत्रे चामीलयन्—काव्या० २।११, उद्—1. आँखें खोलना —उदमीलीच्च लोचने भट्टि० १५।१०२, १६।८ 2. जगाया जाना, उद्बुद्ध किया जाना शि० १०।७२ 3. फुलाना, फूंक मारना कि० ४।३, मा० १।३८ 4. प्रसृत किया जाना, फैलाया जाना, मुक्त बनना, मुक्त हो जाना उन्मीलन्मधुगन्ध ····· गीत० १ उत्तर० १।२० 5. दिखाई देना, अंकुर फूटना —न यावदुन्मीलति जन लिपिरिति त्रैलोक्यमुन्मीलति —प्रबोध० १।२, भामि २।७१ (प्रेर०) खुलना तदेतदुन्मीलय चक्षुरायतम् विक्रम० ३।५, मृच्छ० १।११ नि—, 1. आँखें मूंदना रघु० १२।६५ मनु० १।५२ 2 मृत्यु के कारण आँखें मूंदना, मरना —निमिमील नरोत्तमप्रिया हृतचंद्रा तमसेव कौमुदी रघु० ८।३८

. (आँख या फूल आदि का) मुंदना या बन्द होना निमीलितानामिव पङ्कजानाम्—रघु० ७।६४ 5. ओझल होना, नष्ट होना, अस्त होना (आलं०) नरेन्द्रे जीवलोकोऽयं निमीलति निमीलति—हि० ३।१४५, सर्वेनिमीलिताक्ष्यश्च—हरि० (प्रेर०) बन्द करना, मूंदना उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवान्धकारेण—मृच्छ० १।३३, —धर्मिनिमीलितकमलनयन नलिनी—कि० ५।१२, जीवितव्य न्यमीलयत्—काव्या० २।२६१ कु० ३।३६ ५।५७, रघु० १९।२८, सम्—,बन्द होना, मूंदना (प्रेर०) 1 बन्द करना या मूंदना, उपात्तसंमीलितलोचना नृप—रघु० ३।२६, १३।१० 2 संकुचित करना, अंधेरा करना, धुंधला करना—विकारसंमीलितवाक्यविहीना च समाप्यति च—उत्तर० १।३९।

—मीलनम् 1 आँखों का मूंदना, झपकना, आँखें मींचना 2 आँखों का मूंदना 3 फूल का बन्द होना।

मीलित (भू० क० कृ०) 1 बन्द, मुंदा हुआ 2 झपका हुई 3 अंशतः खिला हुआ, नष्ट हुआ, ओझल —तम् (अलं० में) एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं का अन्तर या भेद उनकी प्राकृतिक या कृत्रिम समानता के कारण पूर्णरूप से अस्पष्ट रहता है—मम्मट इसकी परिभाषा करता है—मीलितं यदि सादृश्याद् भेद एव न लक्ष्यते, निजलक्ष्मा तुल्येनापि यदि गृह्यते, भिन्नतया न ज्ञायते—सर्वमालिन्यमपि रक्तता—काव्य० १०।

मीव् (भ्वा० पर० मीवति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 मोटा होना।

मीवरः सेना का नायक, सेनाध्यक्ष।

मीवा [मी + वन्] 1 पेटकृमि, अन्त्रकीट, केंचुआ 2 वायु।

मुः [मुच् + डु] 1 शिव का विशेषण 2 बन्धन, फैलाव 3. मोक्ष 4. चिता।

मुकन्दकः प्याज।

मुकु: [मुच् + उ पृषो०] मुक्ति, छुटकारा, विमोचन, मोक्ष।

मुकुटम् [मङ्क् + उटन् पृषो०] 1 ताज, किरीट, राजमुकुट—मुकुटरत्नमरीचिभिरस्पृशत्—रघु० ९।१३ 2. शिखा 3 शिखर, चोटी या सिरा।

मुकुटी [मुकुट + ङीष्] अंगुलियाँ चटकाना।

मुकुन्दः [मुकुम् दाति दा + क पृषो० मुम्०] 1. विष्णु या कृष्ण का नाम 2. पारा 3. मूल्यवान् पत्थर या रत्न 4. कुबेर की नौ निधियों में से एक 5 एक प्रकार का ढोल।

मुकुरः [मङ्क् + उरच्, उलच्] मुंह देखने का शीशा—गणिकामपि नियतरूपप्रतिपत्ति पश्यन्त एव संभवन्ति, त्वमर्हसि दर्शनमदरुक्मा—कुमुदस्य जायते यस्मात्—वास०, शि० ९।७३, न० २२।४३ 2. कली, दे० 'मुकुल' 3 कुम्हार के चाक का डंडा 4 मौलसिरी का पेड़।

मुकुलः,—लम् [मुच् + उलक्] 1 कली आविर्भूत प्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्—मेघ० २१, रघु० ९।३१, १५।९९ 2 कली जैसी कोई वस्तु—बालक्ष्यदन्तमुकुलान् (तनयान्)—श० ७।१७ 3. शरीर 4. आत्मा, जीव (मुकुलीकृ, कली की भांति मूंदना—कु० ५।६३)।

मुकुलित (वि०) [मुकुल + इतच्] 1. कलियों से युक्त, कलीदार, फूल 2 अधमुंदा, आधाबंद—दरमुकुलितनयनसरोजम्—गीत० २, कु० ३।७६।

मुकुष्ठः, मुकुष्ठकः [मुकु + स्था + क, मुकुष्ठ + कन्] एक प्रकार का लोबिया, मोठ।

मुक्त (भू० क० कृ०) [मुच् + क्त] 1. ढीला किया हुआ, शिथिलित, खुला या खोला किया हुआ 2 स्वतंत्र छोड़ा हुआ, आज़ाद किया हुआ, विश्राम दिया हुआ 3 परित्यक्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ, एक ओर फेंका हुआ, त्याग दिया हुआ 4 फेंका हुआ, डाला हुआ, कार्यमुक्त किया हुआ, ढकेला हुआ 5. गिरा हुआ, अवपतित 6. म्लान, अवसन्न 7. निकाला हुआ, उत्सृष्ट 8. मोक्ष प्राप्त किया हुआ (दे० मुच्),—क्तः जो सांसारिक जीवन के बन्धनों से मुक्ति पा चुका है जिसने सांसारिक आसक्तियों को त्याग कर पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लिया है, अपमुक्तं सम, सुधाविलिप्तं तोतलं युवतीनां च लीलया, मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तो अथवा पशुः—सुभा०। सम०—अम्बरः दिगम्बर संप्रदाय का जैन साधु,—आत्मन् (वि०) जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है (पुं०) 1 सांसारिक वासनाओं और पापों से मुक्त आत्मा 2 वह व्यक्ति जिसकी आत्मा अपमुक्त हो गई है,—आसन (वि०) अपने आसन से उठा हुआ,—कच्छः बौद्ध,—कञ्चुकः वह सांप जिसने अपनी केंचुली उतार दी है,—कण्ठ (वि०) दुहाई मचाने वाला (अव्य० —ण्ठम्) फूट फूट कर ऊँचे स्वर से, जोर से—रघु० १४।६८,—कर, —हस्त (वि०) उदार, खुले हाथ वाला, दानी,—चक्षुस् (पुं०) सिंह,—वसन दे० मुक्ताम्बर।

मुक्तकम् [मुक्त + कन्] 1 अस्त्र आयुधास्त्र 2. सरल गद्य 3 एक पृथक्कृत श्लोक जिसका अर्थ स्वयं अपने में पूर्ण हो दे० काव्या० १।१३—मुक्तकं श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम्।

मुक्ता [मुक्त + टाप्] 1 मोती—हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिंकराः—अमरु १०० (यहां 'मुक्तानां' का अर्थ 'दोषमुक्त संत' भी है) मोती अनेक स्रोतों से उपलब्ध बतलाये जाते हैं परन्तु विशेष कर समुद्री सीपी से प्राप्त होते हैं,—करीन्द्रजीमूतवराहशंखमत्स्याहिशुक्त्युद्भववेणुजानि, मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि—मल्लि०) 2. वेश्या,

गणिका । सम० – अगारः, आगारः मोती का घोंघा, आवलिः,–ली (स्त्री०) कलापः मोतियों का हार गुणः मोतियों का हार, मोतियों की लड़ी मेघ० ६६, रघु० १६।१८ जालम् मोतियों की लड़ी या करधनी, दामन् (नपुं०) मोतियों की लड़ी, पुष्पः एक प्रकार की चमेली प्रसूः (स्त्री०) मोती की शुक्ति प्रालम्बः मोतियों की लड़ी, फलम् 1 मोती कु० १।६ रघु० ६।२८ १६।६२ 2 एक प्रकार का फूल 3 सीताफल या कुम्हड़ा 4 कपूर, मणि मोती मातृ (स्त्री०) मोती का घोंघा, लता, स्रज् हार मोतियों की माला, शुक्ति स्फोट वह घोंघा या सीपी जिसमें से मोती निकलते हैं।

मुक्तिः (स्त्री०) [मुच् + क्तिन्] 1 छुटकारा, निस्तार उन्मोचन 2 स्वातन्त्र्य उद्धार 3 मोक्ष आवागमन के चक्र से आत्मा का मोचन 4 छोड़ना त्याग, परित्याग टालना संसर्गमुक्तिं खलेषु भर्तृ० २।६२ 5 फेंकना गिरा देना छोड़ देना मुक्त करना 6 आजाद करना खोलना 7 ऋण मुक्त होना, ऋण परिशोध करना। सम० क्षेत्रम् वाराणसी का विशेषण मार्गः मोक्ष का रास्ता, मुक्तः लोबान।

मुक्त्वा (अव्य०) [मुच् + क्त्वा] 1 छोड़कर परित्याग करके 2 सिवाय छोड़ कर बिना।

मुखम् [खन् + अच्, डित् धातोः पूर्वं मुट् च] 1 मुँह (आल० से भी) ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक् – १०।९०।१२ सभ्रूभङ्गं मुखमिव – मेघ० २४ त्व मम मुखं भव विक्रम० १ मेरे मुखपात्र या प्रतिनिधिवक्ता बनिये 2 चेहरा मुखमधन्यं परिवृणार्थं मुखां मयावा दृष्टा – विक्रम० १।१३, नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः श० ७।२१, इसी प्रकार चन्द्रमुखी मुखचन्द्र आदि 3 (किसी जानवर की) थूथन थूथनी या मोहरी 4. अग्रभाग, हरावल, पुरोभाग 5 किनारा, नोक, (बाण का) फल, प्रमुख दुर्गन्धिपाण्डुमुखशिलीमुखः कु० ५।५४, रघु० ३।५३ ५० 6 (किसी उपकरण का) की धार या तेज नोक 7 चूचुक स्तनाग्र – कु० १।४०, रघु० ३।८ 8 पक्षी की चोंच 9 दिशा, तरफ जैसा कि दिङ्मुख, अन्तर्मुख में 10 विवर द्वार, मुँह नीवारा शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः श० १।१४, नदीमुखेनेव समुद्र माविशत् रघु० ३।२८, कु० १।८ 11 प्रवेश द्वार दरवाजा, गमन मार्ग 12 आरंभ, शुरू, सखीजनोदीक्षणकौमुदीमुखम् रघु० ३।१, विमर्शापि नरविहितमिवहीविमलयन् बलय नयनयजम् – ९।२५, ५।७६, भट्० २ 13 प्रस्तावना 14 मुख्य, प्रधान, प्रमुख (इस अर्थ में प्रयोग समास के अन्त में) कर्मोन्मुखत्वं मम मरुमुखाम्बुर्मते कर्मपाशान् भामि० ४।२१, इसी प्रकार इन्द्रमुखा देवा' आदि 15 सतह, ऊपरी पार्श्व 16 साधन 17 स्रोत, जन्मस्थान, उत्पत्ति 18 उच्चारण जैसा कि 'मुखसुख' में 19 वेद, श्रुति 20 (काव्य में) नाटक में अभिनयादि कर्म का मूलस्रोत एक संधि। सम० अग्निः 1 दावानल 2 आग के मुख वाला बेताल 3 अभिमन्त्रित या यज्ञीय अग्नि 4 चिता में अग्न्याधान के अवसर पर शव के मुख पर रक्खी जाने वाली आग अनिलः, उच्छ्वास मास, अस्त्रः केकड़ा, आकारः चेहरा, मुखच्छवि दर्शन,– आसवः अधरामृत – आस्रावः, स्रावः थूक मुँह की लार इन्दुः चन्द्रमा जैसा मुँह अर्थात् गोल सुन्दर मुख, उल्का दावानल कमलम् कमल जैसा मुख खुरः दांत गन्धकः प्याज – चपल (वि०) वातूनी वाचाल चपेटिका मुँह पर लगाई जाने वाली चपत चीरिः (स्त्री०) जिह्वा – ज ब्राह्मण जाहम् मुँह की जड़ कण्ठ दूषणः प्याज दूषिका मुहासा निरीक्षकः सुस्त आलसी मुँह की ओर ताकने वाला निवासिनी सरस्वती का विशेषण – पटः घूँघट – कुर्वन् काम अण्मुखपटप्रीतिमेरावतस्य मेघ० ६२ पिण्डः (भोजन का) ग्रास पूरणम् 1 मुँह को भरना 2 एक कुल्ला पानी मुँह भर, प्रसादः प्रसन्नवदन मुख की प्रसन्नमुद्रा प्रिय सतरा बन्धः भूमिका प्रस्तावना बन्धनम् 1 भूमिका 2 ढक्कन आवरण भूषणम् पान लगाना है० ताम्बूल, भेदः चेहरे का विकृत हो जाना मधु (वि) मिष्टभाषी, मधुरस्वर, मार्जनम् मुँह धोना यन्त्रणम् लगाम की मुखरी या बल्गा रागः चेहरे का रंग रघु० १२।८ १७। ३१ लाङ्गूलः सूअर लेपः 1 (ढोलक के) ऊपरी भाग पर लेप करना 2 कफ प्रकृति वाले पुरुष की एक बीमारी वल्लभः अनार का पेड़ वाद्यम् 1 मुँह से बजाया जाने वाला बाजा फूंक मार कर बजाया जाने वाला बाजा 2 मुँह से 'बम बम' शब्द करना वासः, वासनः श्वास को सुगंधित बनाने वाला एक गन्धद्रव्य, विलुण्ठिका बकरी व्यादानम् मुँह फाड़ना, जंभाई लेना, शफ (वि०) गाली देने वाला अश्लीलभाषी बदजबान, शुद्धिः (स्त्री०) मुँह को धोना या निर्मल करना, शेषः राहु का विशेषण - शोधन (वि०) 1 मुँह को स्वच्छ करने वाला 2 तीक्ष्ण तीखा (न) चरपराहट, तीखापन, (नम्) मुँह का साफ करना, श्री (स्त्री) 'मुख का सौन्दर्य' प्रिय मुखमुद्रा, सुखम् उच्चारण की सुविधा, स्रावः (लार) अश्लील मुख, सुरम् होठों की तरावट।

मुखम्पचः [मुख + पच् + खश्, मुम्] भिखारी, साधु।

मुखर (वि) [मुखं मुखव्यापारं कथनं राति रा + क] 1 वातूनी, वाचाल, बकवादू – मुखरा

आलीषु नर्मदाली रत्न० २, मुखरतावसरे हि विराजते —कि० ५।१६ 3. कोलाहलमय, लगातार शब्द करने वाला, टनटन बजने वाला, (पाजेब की भांति) रुनझुन करने वाला—स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते — रघु० ५।७२, अन्तः कूजन्मुखरशकुनो यत्र रम्यो वनान्तः — उत्तर० २।२५, २०, मा० ९।५, मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम् — गीत० ५, मृच्छ० १।३५ 3 ध्वननशील, अनुनादी, गूंजने वाला (प्राय समास के अन्त में)—स्थाने-स्थाने मुखरककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम् — उत्तर० २।१४, मञ्जुली मुखर-शिखरे (लताकुंजे) गीत० २, रघु० १३।४९ 4 अभिव्यञ्जक या सूचक 5. अश्लीलभाषी, गाली देने वाला, बदजबान 6 उपहास करने वाला, हँसी दिल्लगी करने वाला (मुखरीकृ शब्द करवाना, गुंजवाना, प्रतिध्वनित करवाना), —रः 1 कौवा 2. नेता मुख्य या प्रधान पुरुष यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते हि० १।२९, 3 शंख।

मुखरयति (ना० धा० पर०) 1. प्रतिध्वनित या कोलाहलमय करना गुंजाना 2 बुलवाना या बातें करवाना, अत एव शुश्रूषा मां मुखरयति—मुद्रा० ३ 3 अधिसूचित करना, घोषणा करना, अभिज्ञापन करना।

मुखरिका, मुखरी [मुखर+कन्+टाप्, इत्वम्, मुखर+ङीष्] लगाम की वल्गा, लगाम का दहाना।

मुखरित (वि०) [मुखर+इतच्] कोलाहलमय या अनुनादित किया हुआ, बजता हुआ, कोलाहलपूर्ण—गण्डोड्डीनालिमाला मुखरितककुभस्ताण्डवे शूलपाणेः मा० १। १।

मुख्य (वि०) [मुखे आदौ भवः—यत्] 1 मुख या चेहरे से संबंध रखने वाला 2 बड़ा, प्रधान, प्रमुख, प्रथम, सर्व प्रधान, उत्तम, द्विजातिमुख्य, नारीमुख्या, योधमुख्या आदि 3 नेता, पथप्रदर्शक —ख्यम् 1 प्रधान यज्ञकृत्य या धार्मिक संस्कार 2 वेदों का पठनपाठन। सम०—अर्थः शब्द का मुख्य या मूल (विप० गौण) आशय,—चान्द्रः मुख्य चांद्र मास, —नृपः —नृपतिः प्रभुसत्ताप्राप्त राजा, सर्वोपरि प्रभु,—मन्त्रिन् (पुं०) प्रधान मंत्री।

मुगूहः एक प्रकार का जल कुक्कुट।

मुग्ध (वि०) [मुह्+क्त] 1 जड़ीकृत, मूर्छित 2 हतबुद्धि, भ्रमोन्मत्त 3 मूढ, अज्ञानी, मूर्ख, जड़—शशाङ्कभ्रमेण मुग्धेन सुधांशुरिति भाषित —भामि० २।२९ 4 सरल, सीधासादा, भोला भाला—उत्तर० १।४६ 5 भूल करने वाला भूल में पड़ा हुआ 6. बालोचित सरलता से मोहित करने वाला (अभी प्रेमरस से अपरिचित), बालसुलभ, (क) अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु श० १।२५, रघु० ९।३४, (अतः) सुन्दर, प्रिय, मनोहर, कांत—हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे गीत० १, उत्तर० ३।५,—ग्धा कुमारी सुलभ भोलेपन से आकर्षक किशोरी, सुन्दर तरुणी, (काव्यकृतियों में यह एक नायिका का भेद माना जाता है)। सम०—अक्षी सुन्दर आंखों वाली युवती नियोक्तो मुग्धाक्ष्या स खलु रिपुघातावधिरभूत् उत्तर० ३।४४, —आनना सुन्दर मुख वाली, —धी, —बुद्धि, —मति (वि०) मूर्ख, मूढ, जड़, भोला-भाला, —भावः सादगी, भोलापन।

मुच् I (भ्वा० आ० मोचते) धोखा देना, ठगना, दे० मुञ्च्।

II (तुदा० उभ०—मुञ्चति—ते, मुक्त) शिथिल करना, मुक्त करना, छोड़ना, जाने देना, ढीला होने देना, स्वतंत्र करना, छुटकारा करना (बन्धन आदि से) वनाय ''यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच— रघु० २।१ ३।२०, मनु० ८।२०२, मोक्ष्यते सुरबन्दीनां वेणीर्वीर्यविभूतिभिः —कु० २।६१, रघु० १०।४७, मा सभाजनानि मुञ्चतु विक्रम० २, 'भगवान् करे आपके श्रम म्लान न हों,—हतोत्साह न होइए' 2 आवाज करना, ढीला छोड़ना (वाणी की भांति)—कण्ठं मुञ्चति बर्हिणः समदनः मृच्छ० ५।१४, 'अपनी वाणी या कंठ को ढील देता है अर्थात् चीत्कार करता है' 3 छोड़ना, परित्याग करना, उन्मुक्त करना, छोड़ देना, एक ओर डाल देना, उत्सर्ग करना रात्रिर्गता मतिमतां वर मुञ्च शय्याम् —रघु० ५।६, मुनिसुता प्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः श० ६।७, मौनं मुञ्चति किं च कैरवकुले भामि० १।४, आविर्भूते शशिनि तमसा मुच्यमानेव रात्रिः —विक्रम० १।८, मेघ० ९६, ४१, रघु० ३।११ 4 अलग रखना, अपहरण करना, अलगाना, दे० मुक्त 5 डालना, फेंकना, उछाल देना, पटक देना, बोझा उतारना मृगेषु शरान्मुमुक्षोः रघु० ९।५८, भट्टि० १५।५३ 7 निकालना, गिराना, उंडेलना, टपकाना (आंसू) छलकाना —अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः —श० ४।११, चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् मेघ० १२, भट्टि० ७।२ 8 उच्चारण करना, बोलना मा० ९।५, भट्टि० ७।५७ 9. प्रदान करना, अनुदान देना, अर्पण करना 10. पहनना (आ०) 11 उत्सर्ग करना (मल, —का)—कर्मवा० (मुच्यते) ढीला किया जाना, छुटकारा पाना, स्वतंत्र होना, दोषमुक्त होना;—मुच्यते सर्वपापेभ्यः. प्रेर० (मोचयति—ते) 1. स्वतंत्र या मुक्त कराना 2. गिरवाना 3. ढीला छोड़ना, आघात करना, छुटकारा देना 4 उद्धार करना, सुलझाना 5. जुआ हटाना, (घोड़े आदि पर से) साज उतारना

6 प्रदान करना, अर्पण करना 7 प्रसन्न करना आनन्दित करना इच्छा० 1 (मुमुक्षति) मुक्त या स्वतन्त्र करने की इच्छा करना 2 मुमुक्षते,—मोक्षते) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा करना। अव ,उतार देना उठा देना आ, 1 पहनना, धारण करना धारा और बांधना या कसना आमुक्ताभरण द्वितीयम् रघु० १३।२१, १५।८६, १८।३४ कि० ११।१६, आमुञ्चद्वर्म रत्नाढ्यम —भट्टि० १७।५ 2 डालना, फेंकना दागना आमोक्ष्यन्त र्वयि कटा क्षान — मेघ० ३५ उद्, 1 खोलना रघु० ६।२८ 2 ढीला करना मुक्त करना, स्वतन्त्र करना 3 उता रना, बोझ ले आना एक ओर करना, छोड़ना, परि त्याग करना भट्टि० ३।२२ निस्, 1 स्वतन्त्र करना आजाद करना, मुक्त करना हिमनिर्मुक्तयोर्योग चित्रा चन्द्रमसोरिव रघु० १।४६ भग० ७।२८ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना परि ,1 स्वतन्त्र करना, छुटकारा देना, मुक्त करना —मेघापरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा ऋतु० ३।७, चौर० ९ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना प्र ,1 स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना 2 फेंकना डालना उछालना 3 गिराना उत्सर्जन करना, बीज बिखेरना, प्रति ,1 स्वतन्त्र करना मुक्त करना, छुटकारा देना आजाद करना —गर्हित-प्रतिमुक्तस्य रघु० ८।३३ अमुं पुरः प्रतिमोक्तुम र्हसि ३।४६ 2 धारण करना पहनना 3 खाली कर देना छोड़ना, परित्याग करना 4 फेंकना डालना दागना वि — 1 स्वतन्त्र करना मुक्त करना 2 छोड़ देना, एक ओर डाल देना, परित्याग करना, खाली कर देना-—विमुच्य वासांसि गुरूणि साम्प्रतम् ऋतु० १। ७ 3 आने देना ढील देना भट्टि० ७।५० 4 अल-गाना, अलग रखना कु० ३।२१ 5 गिराना (आंसू) ढलकाना विरुमश्रुणि विमुच्य राघव रघु० ८।२५ 6 फेंकना, डालना सम् ,गिराना आप्लावित करना।

मुचकः लाख।

मुचु (चु) कुन्दः 1 एक वृक्ष का नाम 2 मान्धाता के पुत्र एक प्राचीन राजा का नाम (देवासुर संग्राम में देव ताओं की सहायता के बदले उसे बिना किसी रोक के लम्बी नींद का सुख प्राप्त करने का वरदान मिला था। देवों का आदेश था कि जो कोई उसकी नींद में विघ्न डालेगा भस्म हो जायगा। जब कृष्ण ने बल वान् कालयवन को मारना चाहा तो उसे मुचुकुन्द की गुफा में धकेल दिया। वहाँ प्रविष्ट होते ही मुचकुन्द राजा की नेत्राग्नि से कालयवन भस्म हो गया)। सम० प्रसादकः कृष्ण का विशेषण।

मुचिरः [मुच् - किरच्] 1 देवता 2 पुण्य 3 वायु।

मुचिलिन्दः एक प्रकार का फूल, निलपुष्पी।

मुचुटी 1 अंगुलियां चटकाना 2 मुक्का।

मुज्, मुञ्ज् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मोजति मुञ्जति मोजयति ते, मुञ्जयति ते) 1 स्वच्छ करना निर्मल करना 2 शब्द करना।

मुञ्जः [मुञ्ज् + अच्] एक प्रकार का घास (जिससे कि ब्राह्मण की तगड़ी तैयार करनी चाहिए) मनु० ४३ 2 धारापति राजा भज का नाम (कहते हैं कि मुंज राजा भोज का चाचा था)। सम० केशः 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण केशिन् (पुं०) विष्णु का विशेषण बन्धनम् यज्ञोपवीत पह नना अर्थात् तगड़ी धारण करना अर्थात् उपनयन संस्कार वासस् (पुं०) शिव का विशेषण।

मुञ्जरम् [मुञ्ज् + अरन्] कमल की रेशेदार जड़।

मुट् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० मोटति मोटयति ते) 1 कुचलना रगड़ना पीसना चूरा करना 2 कलंकित करना बुरा भला कहना (इस अर्थ में धातु तुदा० की भी है)।

मुण (तुदा० पर० मुणति) प्रतिज्ञा करना।

मुण्ट् भ्वा० पर० मुण्टति) कुचलना पीसना।

मुण्ड् (भ्वा० पर० मुण्डति) 1 क्षौर कर्म करना मूंडना 2 कुचलना पीसना ii भ्वा० आ० मुण्डते) डूबना।

मुण्ड (वि०) [मुण्ड् + अच्] 1 मुंडा हुआ 2 कटा हुआ छाटा हुआ 3 कुण्ठित 4 अधम नीच ड 1 जिसका सिर मुंडा हुआ हो या गंजा हो 2 मुंडा हुआ या गंजा सिर 3 मस्तक 4 राहु 5 पेड़ का तना जिसकी ऊंची ऊंची शाखाएँ काट दी गई हों डः किसी विशेष आयस की स्त्री मलूकी, डम् 1 सिर 2 लोहा। सम०—अयसम् लोहा, फलः नारियल का पेड़, मण्डली एक अनगढ़ जिनके सिर मुंडे हुए हों, लोहम् लोहा,—शालिः एक प्रकार का चावल।

मुण्डकः [मुण्ड + कन्] 1 नाई 2 पेड़ का तना जिसकी सभी बड़ी शाखाएँ काट दी गई हों, ठूंठ, कम् सिर। सम० उपनिषद् (स्त्री०) अथर्ववेद की एक उपनिषद् का नाम।

मुण्डनम् [मुण्ड + ल्युट्] सिर मुंडना, मुंडन।

मुण्डित (भू० क० कृ०) [मुण्ड + क्त] 1 मुंडा हुआ 2 कतरा हुआ या छांटा हुआ छीला हुआ—तम् लोहा।

मुण्डिन् (पुं०) [मुण्ड + इनि] 1 नाई 2 शिव का विशेषण।

मुण्डम् मांसी।

मुद् i (चुरा० उभ० मोदयति ते) 1 मिलाना, साफ करना 2 स्वच्छ करना, निर्मल करना।

ii (भ्वा० आ० मोदते, प्रेर० मोदयति —ते, इच्छा० मुमुदिषते या मुमोदिषते) हर्ष मनाना, प्रसन्न होना हृष्ट या आनन्दित होना यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिता भग० १६।१५, मनु० ४।२३२, २९१ भट्टि० १५।९६, अनु, अनुमोदन करना मंजूरी देना, अनुमति देना स्वीकृति देना रघु० १४।४३, आ , 1 प्रसन्न या हर्षित होना हर्ष मनाना 2 सुगन्धित होना, (प्रेर०) सुगन्धित करना, सुवासित करना परिमलैरामोदयन्ती दिशः भामि० १।०६ प्र ,अत्यंत प्रसन्न होना बहुत खुश होना रघु० ६। ८६ मा० ४।२२।

मुद्, मुदा (स्त्री०) [मुद् + (भावे) क्विप् मुद् टाप्] हर्ष, आनंद प्रसन्नता खुशी, सन्तोष पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः रघु० ३।२५, भवनेन पुरा हरिणेक्षणा मुदमादधाना शि० ४।५८ ९।२३, 'क्षयाद' ... विदर्शित अद्य प्रत्युत मदम् नैषं० ... हिरण्य मुदा गोनः ११ कि० ५।... रघु० ३।३० ।

मुदित (भू० क० कृ०) [मुद् + क्त] प्रसन्न हर्षित आनन्दित खुश हर्षयुक्त, तम् 1 प्रसन्नता, आनंद, खुशी हर्ष 2 एक प्रकार का मैथुनालिङ्गन, ता हर्ष आनंद।

मुदिर [मुद् + किरच्] 1 बादल प्रथुर पुरन्दरधनुर्गुणभिन्नमदृश्यमुदिरमुदारम गीत० २, या, भुजंगमि ... स्य भ्रमिमि मुदिरगलितकलिताय भामि० ...८८ 2 प्रेमी, कामासक्त 3 मेंढक।

मुदी [मुद् + क + ङीष्] ज्योत्स्ना, चाँदनी।

मुद्ग [मुद् + गक्] 1 एक प्रकार का लोबिया, मूंग 2 ढकना, आवरण 3 एक प्रकार का समुद्री पक्षी। सम० भुज्,—भोजिन् (पु०) घोड़ा।

मुद्गरः [मुद् गिरति गृ + अच्] 1 हथौड़ा मोगरी, जैसा कि मोहमुद्गर शंकराचार्य कृत एक छोटा काव्य) में—रघु० १२।७३ 2 गतका गदा 3 मिट्टी के ढेले तोड़ने वाली मोगरी 4 हथकड़ा, लोहे के छोटे मुग्दर 5 कली 6 एक प्रकार की चमेली (इस अर्थ में यह शब्द नपुं भी होता है)।

मुद्गलः [मुद्ग + ला क] एक प्रकार का घास।

मुद्गष्टः (पु०) एक प्रकार की मूंग।

मुद्रणम् [मुद् + रा + ल्युट्, पृषो०] 1 मोहर लगाना, मुद्रांकित करना, छापना, चिह्न लगाना 2 मूंदना बंद करना।

मुद्रयति (ना० धा० पर०) 1 मोहर लगाना अनया मुद्र या मुद्रयेनम् —मुद्रा० १ 2 मुद्रांकित करना, चिह्न लगाना, अंकित करना 3 ढकना, मूंदना (आल०) —विवराणि मुद्रयन् द्रागूर्णायुरिव सज्जनो जयति —भामि० १।९०।

मुद्रा [मुद् + रक् + टाप्] 1 मोहर लगाने या मुद्रांकित करने का उपकरण विशेषतः मोहर लगाने की अंगूठी नामांकित अंगूठी अनया मुद्रया मुद्रयेनम् मुद्रा० १, नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य परस्परमवलोकयतः श० १ 2 मोहर छाप या चिह्न ... का० १०१ सिन्दूरमुद्राङ्कित (बाहु) गीत० ... 3 प्रवेशपत्र, पासपोर्ट (जैसा कि मुद्राङ्कित कर दिया जाता है) अगृहीतमुद्र ... मुद्रा० ... मोहर लगा सिक्का, रुपया पैसा आदि सिक्का 5 पदक तमगा 6 ... चिह्न ... चिह्न 7 बंद करना ... मोहर लगा देना जैसा ... मुद्रा ... 8 रहस्य 9 धर्मनिष्ठ ... की विशिष्ट मुद्रा। सम० —अक्षरम् ... 2 ... (छापने के अक्षर ...) ... जिसके द्वारा ... निकल जाता है, मुद्रांक।

मुद्रिका [मुद्रा ... टाप्] मोहर लगाने की अंगूठी दे० मुद्रा।

मुद्रित (वि०) [मुद्रा + इतच्] 1 मोहर ... चिह्नित, अंकित मुद्रांकित ... मदसमुद्रमुद्रितं महीं निर्व्याजदानाचित —महा० ... मुद्रित ... मधुसूदनम् ... गीत० १ स्वय सिन्दूरेण ... 2 बंद किया हुआ मुद्रा ... अनखिला।

मुधा (अव्य०) [मुह् ... पृषो० ह्रस्व ...] 1 व्यर्थ निष्प्रयोजन निरर्थकता के कारण, बिना किसी लाभ के ... अतीव मुधा ... 2 गलत ... मुधा ... मनु० ३।७८ (पाठान्तर)।

मुनि [मन् + इन्, उच्चे मनुत्व आनर्तादेश] 1 ऋषि महात्मा सन्त, भक्त, तपस्वी मुनीनामप्यहं व्यास भग० १०।३७ मुनेः ... मुनिरिति मुहुः केवल ... रघु० १।८ ... भग० ५।६ 2 ... मुनि ... नाम 3 व्यास का नाम 4 ... का नाम ... 6 सात की संख्या (ब० व०), सप्तर्षि। सम० अन्नम् (न० व०) सन्यासियों का भोजन, ईश ईश, ईश्वरः एक बड़ा ऋषि वृषभ मुनित्रयं ... पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि (जो कि ... प्रेरणा प्राप्त मुनि माने जाते हैं) —मुनित्रय नमस्कृत्य ... त्रिमुनि व्याकरणम् सिद्धा०, त्रितयम् ... पुङ्गव महान् या प्रमुख ऋषि —पुत्रकः 1 खञ्जनपक्षी 2 दमनक वृक्ष

—भोजनम् 1 व्रत 2. उपवास,—व्रतम् संन्यासी की प्रतिज्ञा कु० ५।४८।

मुञ्च् (भ्वा० पर० मुञ्चति) जाना, हिलना-जुलना।

मुमुक्षा [मोक्तुमिच्छा मुच्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] छुटकारे या मोक्ष की इच्छा।

मुमुक्षु (वि०) [मुच्+सन्+उ] 1 मुक्त या स्वतन्त्र होने का इच्छुक 2 कार्यभार से मुक्त होने का इच्छुक 3 (बाण आदि) छोड़ने को प्रस्तुत रघु० ९।५८ 4. सांसारिक जीवन से मुक्त होने का इच्छुक मोक्ष, प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील,—क्षुः मोक्ष के लिए प्रयत्नशील ऋषि कु० २।५१, भग० ४।१५, विक्रम० १।१।

मुमुचान [मुच्+आनच्, सन्वद्भावाद्द्वित्वम्] बादल।

मुमूर्षा [मृ+सन्+अ+टाप्] मरने की इच्छा भट्टि० ९।५७।

मुमूर्षु (वि०) [मृ+सन्+उ] मरणासन्न, मृत्यु के निकट।

मुर् (तुदा० पर० मुरति) घेरना, अन्तर्वृत्त करना, परिवृत्त करना, लिपटना।

मुरः [मुर्+क] एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मार गिराया था, रम् परिवृत्त करना, घेरना। सम० —अरिः 1 कृष्ण का विशेषण—मुरारिमारादुपधार्य— [illegible] गीत० १ 2 'अनर्घराघव' नाटक का प्रणेता,—जित्, —द्विष्, —भिद्, —मर्दनः,—रिपुः,—वैरिन्, —हन् (पुं०) कृष्ण या विष्णु के विशेषण —प्रक्षीणाद्विपिनमुर्वीपति भुजदर्पो मुरभिदा गीत० १, मुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम् १०।

मुरजः [मुरात् वेष्टनात् जायते—जन्+ड] 1 एक प्रकार का ढोल या मृदङ्ग सानन्दं नन्दिहस्ताहत मुरजरवे मा० १।१, संगीताय प्रहतमुरजाः —मेघ० ६४, ५६, मालवि० १।२२, कु० ६।४१ 2. किसी श्लोक की भाषा को मुरज के रूप में व्यवस्थित करना, मुरजबंध भी इसे ही कहते हैं काव्य० ९। सम० —फलः कटहल का पेड़।

मुरजा [मुरज+टाप्] 1. एक बड़ा ढोल 2. कुबेर की पत्नी का नाम।

मुरन्दला एक नदी का नाम (इसे ही बहुधा 'नर्मदा' मानते हैं)।

मुरला [मुर+ला+क+टाप्] केरल देश से निकलने वाली एक नदी का नाम (उत्तर० ३ में 'तमसा' के साथ इसका उल्लेख आता है) मुरलामारुतोद्धूत-मगमत् कैतकं रजः रघु० ४।५५।

मुरली [मुरम् आङ्गुलिवेष्टनं लाति—मुर+ला+क+ङीप्] बांसुरी, वंशी, वेणु। सम०—धरः कृष्ण का विशेषण।

मुर्छ् (भ्वा० पर० मूर्छति, मूर्छित, या मूर्त, इस धातु को 'मूर्छ्' या 'मूर्च्छ' भी लिखते हैं) 1 ठोस बनाना, जमना, गाढ़ा होना 2. मूर्छित होना बेहोश होना, मूर्छा आना अचेतन होना, संज्ञारहित होना—पतति मूर्छति मूर्छत्यपि गीत० ४ कीशाग्निर्जितविश्वमूर्छित-जनाघातेन किं पौरुषम् - गीत० ३, भट्टि० १५।५५ 3 उगना, बढ़ना, बलवान या शक्तिशाली होना मुमूर्छ सहजं तेजो हविषेव हविर्भुजः रघु० १०।७९, मुमूर्छ सख्यं रामस्य १२।५७ मूर्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१८ 4 बल एकत्र करना, मोटा होना, सघन होना तमसां निशि मूर्छताम् विक्रम० ३।७ 5 (क) प्रभाव डालना —छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२ (ख) छा जाना प्रभावित करना न पादपोन्मूलनशक्ति रंहः शिलोच्चये मूर्छति मारुतस्य रघु० २।३४ 6 भरना व्याप्त होना प्रविष्ट होना, फैल जाना कु० ६।५९ रघु० ६।९ 7 मोह का होना 8 बार बार होना 9 ऊँचे स्वर से शब्द करवाना- प्रेर० (मूर्छयति—ते) अभिभूत करना मूर्छित करना [illegible] गीत० १ वि— मूर्छित होना बेहोश होना सम्— 1 मूर्छित होना बेहोश होना 2 ताकतवर या शक्तिशाली होना बलवान होना प्रबल होना कि० ५।४१।

मुर्मुर [मुर्+क पृषो० द्वित्वम्] 1 तुषाग्नि भुस या भूसी से तैयार की हुई अग्नि स्मरहुताशनमुर्मुरचूर्णतां दधुरिवाम्रवणस्य रजःकणाः शि० ६।६ 2 कामदेव 3 सूर्य का एक घोड़ा।

मुर्व् (भ्वा० पर० मुर्वति) बांधना कसना।

मुशली [मुष्+कलच्+ङीष् पृषो० षस्य शः] एक प्रकार का [illegible]।

मुष (स) ली छोटी छिपकली।

मुष् I (क्र्या० पर० मुष्णाति, मुषित इच्छा० मुमुषिषति) 1 चुराना उठा लेना, लूटना डाका डालना, अपहरण करना (द्विक० मानी जाती है, देवदत्तं शतं मुष्णाति परन्तु लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग), मुषाण रत्नानि - शि० १।५१, ३।१८ श्रवस्य मुष्णन् वसु वैनभानः कि० ३।४१ 2 ग्रहण करना, ढकना लपेटना, छिपाना—वैन्यरेणुमुषितार्कदीधितिः —रघु० ११।५१ 3 फीकी बनाना, मन्द करना लजाना 4 पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना—मुष्णन्ति विपक्षोकाना रुचिं परिहतावरे, गीतैर्वराङ्गनानां च कोकिलभ्रमरध्वनिम्—कथा० ५५।१११, रत्न० १।२४, भट्टि० ९।३२, मेघ० ४७, परि— लूटना, वंचित करना—परिमुषितरत्नं त्रिभुवनम् — मा० ५।३०, प्र—, अपहरण करना, निलोप करना भट्टि० १७।६०।

ii (भ्वा० पर० मोषति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, हत्या कराना।

iii (दिवा० पर० मुष्यति) 1. चुराना 2 लोपना, नष्ट करना—भट्टि० १५।१६।

मुषक: [मुष्+क्वुन्] चूहा।

मुषल दे० 'मुसल'।

मुषा-षी [मुष्+क+अप्, ङीष् वा] कुठाली।

मुषित (भू० क० कृ०) [मुष्+क्त] 1 लूटा गया, चोरी किया गया, अपहृत 2. अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया 3. वञ्चित, मुक्त 4 ठगा गया, धोखा दिया गया—दैवेन मुषितोऽस्मि—का०।

मुषितकम् [मुषित+कन्] चुराई हुई संपत्ति।

मुष्क: [मुष्+कक्] 1 अण्डकोष 2 पोता 3 गठीला मजबूत हृष्ट-पुष्ट पुरुष 4 राशि, ढेर, परिमाण, समुच्चय 5. चोर। सम०—देश: अण्डकोष का स्थान,—शून्य: हिजड़ा, बधिया किया हुआ पुरुष,—शोफ: पानी की सूजन।

मुष्ट (भू० क० कृ०) [मुष्+क्त] चुराया हुआ—श० ५।२०,—ष्टम् चुराई हुई सम्पत्ति।

मुष्टि: (पु०, स्त्री०) [मुष्+क्तिच्] 1 भींचा हुआ हाथ, मुट्ठी—कथमासमेत्य विभिदे निविडोऽपि मुष्टि:—रघु० ९।५८, १५।२१, शि० १०।५९ 2 मुट्ठीभर, जितना एक मुट्ठी में आवे, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितक:—श० ४।१४, रघु० १९।५७, कु० ७।६९, मेघ० ९८ 3 मूठ, दस्ता 4. एक विशेष तोल, (=एक पल के बराबर) 5. चुराना का लिया। सम०—देश: धनुष का बीच का भाग, वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है,—द्यूतम् एक प्रकार का खेल, जुआ,—पात: मुक्केबाजी,—बंध: 1. मुट्ठी बांधना 2. मुट्ठीभर,—युद्धम् मुक्केबाजी, घूँसेबाजी।

मुष्टिक: [मुष्टिर्मौचनं प्रयोजनमस्य कन्] 1 सुनार 2. हाथों की विशिष्ट स्थिति 3. एक मल्ल का नाम,—कम् मुक्केबाजी, घूँसेबाजी। सम०—अन्तक: बलराम का विशेषण।

मुष्टिका [मुष्टिक+टाप्] मुट्ठी।

मुष्टिन्धय: [मुष्टि+धे+खश्, मुम्] बच्चा, बालक, शिशु।

मुष्टीमुष्टि (अव्य०) [मुष्टिभि: मुष्टिभि: प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मुक्केबाजी, घूँसेबाजी, हस्ताहस्ति युद्ध।

मुष्ठक: राई, काली सरसों।

मुस् (दिवा० पर० मुस्यति) फाड़ना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना।

मुसल:,—लम् [मुस्+कलच्] 1. गदा, मदा 2 मूसल (चावल कूटने के काम आता है)—मुसलमिवमिदं च पातकाले मुहुरनु यान्ति कलेन हुंकृतेन—मृच्छ० १।४, मनु० ८।३१५। सम०—आयुध: बलराम का विशेषण, उलूखलम् मूसली और ओखल।

मुसलामुसलि (अव्य०) [मुसलै: मुसलै: प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मूसल या गदाओं से लड़ना।

मुसलिन् (पु०) [मुसल+इनि] 1. बलराम का विशेषण 2 शिव का विशेषण।

मुसल्य (वि०) [मुसल+यत्] गदा से चूर-चूर किये जाने अथवा मार दिये जाने योग्य।

मुस्त् (चुरा० उभ० मुस्तयति—ते) ढेर लगाना, इकट्ठा करना, संग्रह करना, संचय करना।

मुस्त:,—स्तम्, —स्ता [मुस्त्+क, स्त्रियां टाप्] एक प्रकार की घास, मोथा—विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षति: पल्वले—श० २।६, रघु० ९।५९, १५।१९। सम०—अद:—आद: सूअर।

मुस्तकम् [मुस्त+कन्] 1 मुस्ता 2 औषधि।

मुह् (दिवा० पर० मुह्यति, मुग्ध या मूढ) मूर्छाना, मूर्छित होना, चेतना नष्ट होना, बेहोश होना—इष्टाह इष्टमाह्न ता स्मरतेव मुमोह स—भट्टि० ६।२१, १।२०, १५।१६ 2 उद्विग्न होना, विक्षुब्ध होना, घबराना 3 मूढ बनना, जड होना, मोहित होना 4 गलती करना, भूल होना—प्रेर० (मोहयति—ते) 1 जड करना, मोहित करना—का मूढमहयतामु ज्ञानमज्ञानमस्या—मा० १।३२ 2. अस्तव्यस्त करना, घबराना, उद्विग्न होना—भग० ३।२, ४।१६, परि—घबराया जाना, उद्विग्न हो जाना (प्रेर० आ०) कुम्हलाना, मुरझाना, लचकाना—भट्टि० ८।६१, व्या—. अचेतन होना, मुग्ध होना, वि—, अव्यवस्थित होना, घबराना, उद्विग्न होना, विक्षुब्ध होना—भग० २।७२, ३।६, २७ 2. मुग्ध होना या मोहित होना, सम् . 1. व्याकुल होना 2. मूर्ख या अज्ञानी होना (प्रेर०) मोहित करना, अचेतन करना—अधर-मधुवमनेन संमोहिता—गीत० १२।

मुहिर (वि०) [मुह्+किरच्] मूर्ख, मूढ, जड,—र: 1 कामदेव 2. मूर्ख, बुद्धू।

मुहुस् (अव्य०) [मुह्+उसिक्] बहुधा, लगातार, निरंतर, बार बार—ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टि:—श० १।७, २।६, (इस अर्थ में प्राय: 'द्वित्व' कर दिया जाता है) मुहुर्मुहु: 1. बार बार, फिर फिर,—ग्य: बहुश: —पृकर्मा सन्नियमेनोऽपि क: कुर्वति मुहुर्मुहु: 2. कुछ समय या क्षण के लिए, थोड़ी देर के लिए मेघ० ११५, उत्तरोत्तर वाक्यखंडों में 'अब, अब' 'एक बार, दूसरी बार' अर्थ को प्रकट करने में प्रयुक्त होता है—मुहुरनुपतति बाला मुहु: पतति विक्षुब्धा, मुहुरालम्बते धीरा मुहु: भीत्यति रोदिती मुग्धा०, मृच्छ० ५।१३। सम०—भाषा,

—वचनम् (नपुं०) पिष्टपेषण, पुनरुक्ति, —व्रणः (पुं०) फोड़ा।

मुहूर्तः,—र्तम् [हुर्छ् + क्त धातो पूर्वं मुट् च] 1 एक क्षण, समय का अल्पांश, निमिष—तथाम्बुधानीकमुहूर्तका लक्ष्ने रघु० ३।५१, संध्याभ्ररेखेव मुहूर्तरागा —पंच० १।१९४, मेघ० १९, कु० ७।५० 2 काल, समय (शुभ या अशुभ) 3 अड़तालीस मिनट का काल, —ज्ञः ज्योतिषी।

मुहूर्तकः [मुहूर्त + कन्] 1 निमिष, क्षण 2 अड़तालीस मिनट का काल।

मू (भ्वा० पर० मवते) बांधना, जकड़ना, कसना।

मूक (वि०) [मू + कन्] 1. गूंगा, मौन, चुप्पा, वाक्-शून्य मूकं करोति वाचालं, मूकाम्बज (काननम्) कु० ३।४०, सखीमिव वीक्ष्य विषादमूकाम् गीत० ७ 2. बेचारा, दीन, दुःखी, —कः 1 गूंगा मौनान्मूक —हि० २।२६ (पाठांतर), मनु० ७।१४९ 2 बेचारा, दीन 3 मछली। सम०—अम्बा दुर्गा का एक रूप, —भावः चुप्पी, मूकता, वाक्शून्यता।

मूकिमन् (पुं०) [मूक + इमनिच्] गूंगापन, मूकता चुप्पी।

मूढ (भू० क० कृ०) [मुह् + क्त] 1 जड़ीभूत मोहित 2. उद्विग्न, व्याकुल विह्वल, सूझबूझ से हीन—किं कर्तव्यतामूढः 'करणीय कर्तव्य की सूझ से हीन व्यक्ति इसी प्रकार 'ह्रीमूढ' मेघ० ६८ 3. नासमझ, मूर्ख, मन्दबुद्धि, जड़, अज्ञानी अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्—रघु० २।४७ 4. खोया, भ्रमपूर्ण, प्रतारित, विचलित 5 अव्यक्त अस्पष्ट 6. सन्देहोत्पादक, —ढः मूर्ख, बुद्धू मन्दमति, अज्ञानी पुरुष—मूढ परप्रत्ययनेयबुद्धिः मालवि० १।२। सम०—आत्मन् 1 मन से जड़ीभूत 2. निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, —गर्भः मृत गर्भ, —ग्राहः अशुद्ध भाव गलत, विचारण, गलत धारणा, —चेतन, —चेतस् (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी —अथ मन्यमुपैति मूढचेतन प्रियनाशे हृदि शल्यमर्पितं रघु० ८।८८, —धी, —बुद्धि, —मति (वि०) निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, सीधासादा कि० १।३०,—सत्त्व (वि०) मोहित, दीवाना।

मूत (वि०) [मू + क्त] 1 बांधा हुआ, कसा हुआ 2. बंदी किया हुआ।

मूत्रम् [मूत्र् + घञ्] मूत्र, पेशाब, नाप्सु मूत्रं समुत्सृजेत्—मनु० ४।५६, मूत्रं प्रकार 'मूत्रा, अशुचि की सम०—आघातः मूत्रसंबंधी रोग, —आशयः पेट के नीचे का स्थान जहाँ मूत्र भरा रहता है, —उत्संगः दे० 'मूत्रकोष', —कृच्छ्रम् पीड़ा के साथ मूत्र का आना, मूत्ररोग, बूंद बूंद पेशाब का पीड़ा देकर आना, —कोशः अंडकोष, पोता, —क्षयः मूत्र का कम कम होना, —जठरः, —रम् मूत्र रुक जाने से पेट की सूजन, —दोषः मूत्रसंबंधी रोग, —निरोधः मूत्र का रुक जाना, —पतनः गंधमार्जार, —पथः मूत्रनलिका, —परीक्षा मूत्रनिरीक्षण, मूत्र की परीक्षा करना, —पुटम् पेट का निचला भाग मूत्राशय, —मार्गः मूत्रनलिका मूत्रद्वार, —वर्धक (वि०) अधिक पेशाब लाने की दवा, मूत्रल, —शूलः, —लम् मूत्रसंबंधी पीड़ा, —संगः पेशाब आने में रुकावट, पीड़ा के साथ रक्त पेशाब आना।

मूत्रयति (ना० धा० पर०) पेशाब, लघुशंका करना तिष्ठन्मूत्रयति महा०।

मूत्रल (वि०) [मूत्र + ला + क] पेशाब लाने वाली (दवा), मूत्रवर्धक औषधि।

मूत्रित (वि०) [मूत्र + इतच्] मूत्र के रूप में निकला हुआ।

मूर्ख (वि०) [मुह्—ख मूर् आदेश] जड़ मन्दमति मूढ, मूढ अनजान —र्खः 1 मन्दमति बुद्ध न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् भर्तृ० २।५ ८, मूर्खस्त्वमाडपराधिन मा प्रतिपादयिष्यसि विक्रम० 2 एक प्रकार का लोबिया। सम० —मूर्खता, जड़ता, अज्ञानता।

मूर्च्छन (वि०) (स्त्री०—नी) [मूर्च्छ् + णिच् + ल्युट्] 1 जड़ीभूत करने वाला जड़ता या बेहोशी पैदा करने वाला, (कामदेव के एक बाण का विशेषण) 2 बढ़ाने वाला वर्धन करने वाला, बल देने वाला, —नम् 1 मूर्छित होना, बेहोश होना 2 (संगी० में) स्वरारोहण, स्वरविन्यास स्वरों का नियमित आरोहणावरोहण, सुखद स्वरसंधान करना, स्वरपरिवर्तन करना, स्वरमाधुर्य, स्वरमाधुर्य —स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्च्छनाम् शि० १।१०, भूयोभूयः स्वयमपि कृता मूर्च्छना विस्मरन्ती मेघ० ८६, वर्णानामपि मूर्च्छनान्तरगतं तारं विरामे मृदु मृच्छ० ३।५, सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः पंच० ५।५४ (मूर्च्छा या मूर्च्छना की परिभाषा क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्, सा मूर्च्छेत्युच्यते ग्रामस्था एता सप्त सप्त च, अधिक विवरण के लिए दे० शि० १।१० पर मल्लि०।

मूर्च्छा [मूर्च्छ् (भावे) अङ् + टाप्] 1 बेहोशी, संज्ञा हीनता रघु० ७।४४ 2 मानसिक अज्ञान या व्यामोह 3 धातु फूंक कर भस्म बनाने की प्रक्रिया,—मूर्च्छां गतो मृतो वा निदर्शनं पारदोऽत्र रसः—भामि० १।८२।

मूर्च्छाल (वि०) [मूर्च्छा + लच्] बेहोश, अचेत, चेतनारहित।

मूर्च्छित (भू० क० कृ०) [मूर्च्छा जाता अस्य-इतच्, मूर्च्छ् + क्त वा] 1 बेहोश, संज्ञाहीन, चेतनारहित 2. मूर्ख, जड़, मूढ 3. बढ़ाया हुआ, वर्धित 4. प्रचंड

किया हुआ, तीव्र किया हुआ 5 उद्विग्न, व्याकुल 6 भरा हुआ, 7 फका हुआ।

मूर्त (वि०) [मूर्छ् + क्त] 1 बेहोश, संज्ञाहीन 2 जड़, मूढ़ 3 शरीरधारी, मूर्तिमान मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथः श० १।३६ प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः उत्तर० ३।१४, रघु० २।६९ ७।७०, कु० ७।४२ पंच० २।९९ 4 भौतिक, पार्थिव 5 ठोस, कड़ा।

मूर्तिः (स्त्री०) [मूर्छ् + क्तिन्] 1 निश्चित आकार और सीमा की कोई वस्तु भौतिक तत्त्व द्रव्य सत्त्व 2 रूप दृश्यमान आकृति शरीर, आकृति मुद्रा० ७।२ रघु० ३।२७ १४।१४ 3 मणिमाला, शरीरधारण प्रतिबिंब करुणस्य मूर्तिः उत्तर० ३।४ रघु० २।१९० 4 प्रतिमा प्रतिमूर्ति पुतला बुत 5 सौन्दर्य 6 ठोसपना कड़ापन। सम० —धर, —संचर (वि०) शरीरधारी मूर्तिमान् उत्तर० ६, —प प्रतिमा का पुजारी जो किसी देव प्रतिमा के पूजाकृत्य में लगाया गया है।

मूर्तिमत् (वि०) [मूर्ति + मतुप्] 1 भौतिक पार्थिव 2 शरीरधारी, देहवान् साकार शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया कु० ६।१५ तव मूर्तिमानिव महोत्सव कर उत्तर० १।१८ रघु० १।४६४ 3 कड़ा ठोस।

मूर्धन् (पुं०) [मुह्यत्यस्मिन्नाहते सति मुह् + कनि उपधाया दीर्घो धातोर्धश्चान्तादेशो रमागमश्च] 1 मस्तक भौं 2 सिर, —नतेन मूर्ध्ना हरिरग्रहीदप शि० १।१८ रघु० १६।८१ कु० ३।१२ 3 उच्चतम या प्रमुख भाग, चोटी शिखर, शृंग सिर अभ्रिङ्कषमनु केन्द्राणा मूर्ध्नि देवानिर्यथा महा० सब राजाओं के शीर्षभाग पर आदि भूभृता पर्वतमूर्धनि श० ५।१७, मेघ० १७ 4 (अत) नेता, मुखिया, मुख्य सर्वोपरि प्रमुख 5 सामने का, हरावल, अग्रभाग म किल संयुगमूर्ध्नि सहायता मघवत प्रतिपद्य महारथ रघु० ९।१९। सम० —अन्तः सिर का मुकुट, —अभिषिक्त (वि०) अभिमन्त्रित, किरीटधारी, यथाविधि पद पर प्रतिष्ठापित, —रघु० १६।८१ (क्तः) 1 अभिमन्त्रित या अभिषिक्त राजा 2 क्षत्रिय जाति का पुरुष 3 मन्त्री 4 मूर्धाभिषिक्त (1) अभिषेक अभिमन्त्रण, प्रतिष्ठापन, —अवसिक्तः 1 ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति 2 अभिमन्त्रित राजा —कर्णी, —कर्परी (स्त्री०) छतरी —जः 1 (सिर के) बाल —पर्याकुला मूर्धजा —श० १।३०, विललाप विकीर्णमूर्धजा— कु० ४।४, 'बालकानिरके में उस स्त्री ने अपने बाल नोच डाले' 2 अयाल —ज्योतिस् (नपुं०) दे० ब्रह्मरन्ध्र या मुद्रा भागे —पुष्पः सिरीस का पेड़, —रसः उबले चावलों का मांड, —वेष्टनम्, साफा मुकुट शिरोभाग्य।

मूर्धन्य (वि०) [मूर्ध्नि भव यत्] 1 सिर पर विद्यमान 2 मूर्धन्य अर्थात् मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण ऋ, ॠ, ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष् —ऋटुरषाणां मूर्धा 3 सबसे प्रमुख सर्वोत्तम।

मूर्धन्वत् दे० मूर्धन्।

मूर्वा, —र्वी, मूर्विका [मुर्व् + अच् + टाप् ङीप् वा मूर्वा कन् + टाप् इत्वम्] एक प्रकार की लता जिसके रेशों से धनुष की डोरी व क्षत्रियों की (कटिसूत्र) तगड़ी तैयार की जाती है।

मूल् I (भ्वा० उभ० मूलति —ते) जड़ जमना, दृढ़ होना, स्थिर होना II (चुरा० उभ० मूलयति—ते मूलित) पौधा लगाना, उगाना, पालना, जड़ उखाड़ना, जड़ से काटना मूलाच्छेदन करना कि० १।४१ विनष्ट करना विध्वंस करना, निस्— जड़ से उखाड़ना उन्मूलित करना।

मूलम् [मूल् + क] 1 जड़ (आल० से भी) नवमूलानि गृहाण्यवान्त तयाव म० ७।२० या, शाखिनां दीनमूला १।०० मूलबन्ध जड़ पकड़ना जड़ जमना, —वृद्धमूलस्य मूलं हि महद्वैरतरो स्त्रियः —शि० २।३८ 2 जड़ किसी वस्तु का सबसे नीचे का किनारा या छोर कस्याश्चिदासीद्रसना तदानीम्-अङ्गुष्ठमूलार्पितसूत्रशेषा रघु० ७।१० इसी प्रकार प्राकारमूल मेघ० ९१ 3 नीचे का भाग या किनारा आधार किसी या का किनारा जिसके सहारे वह किसी दूसरी वस्तु से जुड़ी हो बाहुर्मूलम् शि० ७।३० इसी प्रकार पादमूल, कर्णमूल, ऊरुमूलम् आदि 4 आरंभ शुरू आमूलाच्छ्रोतुमिच्छामि श० १ 5 आधार, नींव स्रोत, मूल, उत्पत्ति —सर्वोऽर्हस्य मूलका —महा०, रत्नागृहे स्थितिमूलम उत्तर० १।६ इति केनाप्युक्त मम मूलं मृगयम् इसका स्रोत या प्रमाण मालूम किया जाना चाहिए' 6 किसी वस्तु का तल या पैर, पर्वतमूलम् गिरिमूलम् आदि 7 पाठ मूल संदर्भ (भाष्य से विभिन्न) 8 पड़ौस आस पास, सामीप्य 9 मूलधन मूलपूंजी 10 कुलक्रमागत सेवक 11 वर्गमूल 12 राजा का अपना निजी प्रदेश स पुष्पमूलप्रत्यन्त रघु० ४।२६ मनु० ७।१८४ 13 विक्रेता जो स्वयं विक्रेय वस्तु का स्वामी न हो— मनु० ७।२०२ (अस्वामिविक्रेता कुल्लू०) 14 ग्यारह नक्षत्रों का पुञ्ज जो सत्ताइस नक्षत्रों में से उन्नीसवां (मूलनक्षत्र) है 15 झाड़ी झाड़ झंखाड़ 16 पीपरा मूल 17 अंगुलियों की विशेष स्थिति। सम० —आधारम् 1 नाभि 2 जननेन्द्रिय के ऊपर एक रहस्य मय वृत्त —आभम्

मूली,—आयतनम् मूल आवासस्थान—,आशिन् (वि०) जो कन्दमूलादि खाकर जीवित रहे, आह्वम् मूली, —उच्छेदः पूर्णध्वंस पूर्णविनाश, पूरी तरह उखाड़ फेंकना,—कर्मन् (नपुं०) जादू, —कारणम् मूलहेतु आदि कारण, कु० ६।१३, —कारिका भट्टी चूल्हा —कृच्छ्र: कृच्छ्रम् एक प्रकार की तपस्या जिसमें जड़ें खाकर निर्वाह करना—केशर: नींबू —गुण: किसी मूल का गुणक —ज जड़ होने से उत्पन्न होने वाला पौधा (—जम्) हरा अदरक —देव: कंस का विशेषण —द्रव्यम् धनम् मूलधन माल पूंजी —धातुः लसीका —निकृन्तन (वि०) जड़ से काट डालने वाला, —पुरुष: वंशपरम्परा में किसी परिवार का वंशप्रवर्तक पुरुष —प्रकृति (स्त्री०) माया का प्रधान या प्रकृति —फलद: कटहल का पेड़ —भद्र: कंस का विशेषण —भृत्य पुराना तथा कुलक्रमागत सेवक —वचनम् मूलपाठ —वित्तम् पूंजी —वाणिज्य वस्तु माल —विभुजः रथ —शाकट: —शाकिनम् वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मूल पौधे बोए जाते हैं —स्थानम् 1 आधार नींव 2 राजधानी 3 हवा वायु —स्रोतस् (नपुं०) प्रधान धारा या किसी नदी का उद्गम स्थान।

मूलक:, —कम् [मूल + कन्] 1 मूली 2 खाद्य जड़ —क: एक प्रकार का विष। सम० —पोतिका मूली।

मूला [मूल + अच् + टाप्] 1 एक पौधे का नाम शतावर 2 मूल नक्षत्र।

मूलिक (वि०) [मूल + ठञ्] मूलभूत मौलिक —क: भक्त, संन्यासी।

मूलिन् (पुं०) [मूल + इनि] वृक्ष।

मूलिन (वि०) [मूल + इन] जड़ जमने से उगने वाला।

मूली [मूल + ङीष्] एक छोटी छिपकली।

मूलेर: [मूल + एरक्] 1 राजा 2 जटामांसी बालछड़।

मूल्य (वि०) [मूल + यत्] 1 उखाड़ने योग्य 2 मोल लेने के योग्य —ल्यम् 1 कीमत मोल लागत— क्रीणन्ति स्म प्राणमूल्यैर्यशांसि शि० १८।१५ शान्ति० ३।१२ 2 मजदूरी, किराया या भाड़ा वेतन 3 लाभ 4 पूंजी, मूलधन।

मूष् (भ्वा० पर० मूषति मूषित) चुराना लूटना अप-हरण करना।

मूष: [मूष् + क] 1 चूहा, मूसा 2 गोल खिड़की मोखा रोशनदान।

मूषक: [मूष + कन्] 1 चूहा मूसा 2 चोर। सम० —अराति: बिलाव —वाहन: गणेश।

मूषणम् [मूष् + ल्युट्] चुराना, चुपके से खिसका लेना उठा लेना।

मूषा, मूषिका [मूष + टाप् मूषिक + टाप्] घरिया कुठाली।

मूषिक: [मूष + किकन्] 1 चूहा 2 चोर 3 शिरीष का पेड़ 4 एक देश का नाम। सम० —अङ्क:, —अञ्चन: —रथ: गणेश के विशेषण —अद: बिलाव —अराति: बिलाव —उत्कर: —स्थलम् बांबी।

मूषिकार: (पुं०) चूहा।

मूषी, मूषीक: मूषीका [मूष + ङीष् मूष + ईकन् स्त्रियां टाप् च] चूहा मूस, मूसा।

मृ (तुदा० आ० [परन्तु लिट् लुङ् और लृङ् में पर०] म्रियते मृत) मरना, नष्ट होना, प्राण को प्राप्त होना, जीवन से विदा लेना प्रेर० (मारयति) मारना, वध करना, हत्या करना इच्छा० (मुमूर्षति) 1 मरने की इच्छा करना 2 मरने के निकट होना मरणासन्न अवस्था में होना, मृत्यु के मुख में पड़ना ... अनुमरण करना ... ।

मृक्ष दे० म्रक्ष।

मृग् (दिवा० पर०, चुरा० आ०, मृगयति, मृगयते, मृगित) 1 ढूंढना, तलाश करना खोज करना, ... मृगा ... कु० ... अन्वेषण करना, मृगावास... 2 शिकार करना, पीछा करना, शिकार करना, खोज करना 3 अनुसंधान करना, 4 पूछना ... अनुसंधान करना, ... 5 मांगना याचना करना एताबदेव मृगये प्रतिपक्षहेतो: भा० ४।२०।

मृग: [मृग् + क] 1 चौपाया जानवर सर्वांगको मं सत्कार ... ... पु०, ... दे० नी० मृगाधिप: 2 हरिण, बारहसिंगा ... शब्द... मृगा —श० १।१४ रघु० १।४९ ५० आश्रममृगोऽयं न हन्तव्य: श० १।३ आखेट 4 चन्द्रमा का लाञ्छन जो हरिण के रूप में लगा हुआ है 5 कस्तूरी 6 खोज तलाश 7 पीछा करना, अनुसरण, शिकार 8 पूछताछ गवेषणा 9 प्रार्थना निवेदन 10 एक प्रकार का हाथी 11 मनुष्यों की एक विशिष्ट श्रेणी ... ... मृगोऽयम् शब्द० 12 मृगशिरा नक्षत्र 13 मार्गशीर्ष का महीना 14 मकर राशि। सम० —अक्षी हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—अङ्क: 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हवा —अङ्गना हरिणी —अजिनम् मृगछाला —अण्डजा कस्तूरी,—अद्

(पुं०),—**अधमः,** अत्यन्त छोटा शेर या चीता लकड़बग्घा,—**अधिपः,** —**अधिराजः** सिंह,—**केशरी** सिंह,—इक्षिप्तमृगयूथो मृगाधिपः—शि० २।५३, मृगाधिराजस्य वचो निशम्य —रघु० २।४१, **अरातिः** 1 सिंह 2 कुत्ता,—**अरिः** 1 सिंह 2 कुत्ता 3 शेर 4. वृक्ष का नाम, **अशनः** सिंह,—**आविधम्** (पुं०) शिकारी [illegible] मकर राशि,—**इन्द्रः** 1 सिंह —नवो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी रघु० २।३० 2 शेर 3 सिंह राशि, **आसनम्** सिंहासन —**आस्यः** सिंह का विशेषण [illegible] **उत्कः** बाज पक्षी —**दृश्** [illegible] **ईक्षणा** हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री —**ईश्वरः** 1 सिंह 2 सिंहराशि, **उत्तमम्,** उत्तमाङ्गम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज, **काननम्** उद्यान, [illegible] प्रकार का [illegible] [illegible] **गृहम** मृगमरीचिका [illegible] भावना **जीवनः** [illegible] [illegible], **तृष्णा,** तृष्णिका (स्त्री०) मृगमरीचिका [illegible] मृगतृष्णास्विव [illegible] [illegible] —**दंशकः** कुत्ता, **दृश्** हरिणी जैसी [illegible] —मृगदृशः [illegible] [illegible] —**धूर्तः** शिकारी, —**द्विष्** (पुं०) सिंह —**धूर्तः** [illegible] **धूर्तकः** गीदड़ —**नयना** हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री, —**नाभिः** 1 कस्तूरी —कु० १।५४, ऋतु० ६।१२ [illegible] रघु० १७।२४ 2 हरिण जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है रघु० ४।७४, —**जा** कस्तूरी, —**पतिः** 1 सिंह 2 हरिण 3 शेर, —**पालिका** कस्तूरीमृग —**पिप्लुः** चन्द्रमा —**प्रभुः** सिंह —**बन्धिनी** [illegible] —**बाणः** [illegible] —**बन्धिनी** हरिणों को पकड़ने का जाल, —**मदः** कस्तूरी —कुचतटगतो यावन्मातर्मिलति तव तोयैर्मृगमदः गंगा० ७ मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे —गीत० ७, —**वासा** कस्तूरी का थैला, —**मन्द्रः** हाथियों की एक श्रेणी, —**मातृका** हरिणी, —**मुखः** मकर राशि, —**यूथम्** हरिणों का झुण्ड, —**राज्** (पुं०) 1 सिंह शि० ९।१८ 2 शेर 3 सिंह राशि, —**राजः** 1 सिंह रघु० ६।३ 2 सिंह राशि 3 शेर 4 चन्द्रमा, —**धारिन्,** —**लक्ष्मन्** (पुं०) चन्द्रमा, —**रिपुः** सिंह,—**रोमम्** ऊन, —**जम्** ऊनी कपड़ा,—**लाञ्छनः** चन्द्रमा —अङ्कविरोहितमृगलाञ्छनचन्द्रमा मृगलाञ्छन —शि० ९।२३, —**जः** बुधग्रह, —**लेखा** चन्द्रमा में हरिण जैसी धारी—मृगलेखामुषसीव चन्द्रमा रघु० ८।४२ —**लोचनः** चन्द्रमा (—**ना, नी**) हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री, —**वाहनः** वायु, —**व्याधः** 1 शिकारी 2. [illegible] नक्षत्रपुंज 3 शिव का विशेषण, —**शावः** छौना, हरिण का बच्चा —मृगशावैः सममेधितो जनः —श० २।१८ —**शिरः,** —**शिरस्** (नपुं०) शिरा नाम का नक्षत्र (मृगशिरस्) का नाम जो तीन तारों का पुंज है, —**शीर्षम्** मृगशिरा नाम का नक्षत्रपुंज, (**र्षः**) मार्गशीर्ष का महीना, —**शीर्षन्** (पुं०) मृगशिरा नाम का नक्षत्र,—**श्रेष्ठः** शेर, —**हन्** (पुं०) शिकारी।

मृगणा [मृग् + युच् + टाप्] खोजना, तलाश करना, पूछताछ, अनुसंधान।

मृगया [मृग् स्वार्थे णिच् + श, पक्षे क] शिकार, पीछा करना—मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः श० २।५, मृगयापवादिना माढव्येन श० २ [illegible] मृगयाविहारिणः [illegible]।

मृगयुः [मृग् अस्त्यर्थे युच्] 1 शिकारी, बहेलिया, [illegible] [illegible] —शि० २।८० 2 गीदड़ 3 ब्रह्मा का विशेषण।

मृगव्यम् [मृग् + व्यध् + ड] 1 पीछा करना, शिकार [illegible] 2 निशाना, लक्ष्य।

मृगी [मृग + ङीप्] 1 हरिणी, मृगी 2 स्त्रियों की चार श्रेणियों में एक विशिष्ट श्रेणी, सम० —**दृश्** (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आंखें हरिण जैसी होती हैं, —**पतिः** कृष्ण का विशेषण।

मृग्य (वि०) [मृग् + यत्] खोजे जाने या तलाश किये जाने योग्य, शिकार किये जाने के योग्य —तत्र मूलम् मृग्यम्।

मृज् i (चुरा० उभ० मार्जयति) शब्द करना।

ii (अदा० पर० चुरा० उभ० मार्ष्टि, मार्जयति—ते, इच्छा० मिमृक्षति या मिमार्जिषति), 1 पोंछना, धो डालना, स्वच्छ करना, साफ करना 2. बुहारी देकर साफ करना (आलं० में भी) —वदनं वाग्ममार्ज शि० ६।७१, 3 चिकना करना, (घोड़े आदि को) खरहरे से रगड़ना 4 सजाना, अलंकृत करना 5. निर्मल करना, पानी से धोना, साफ करना —जलं [illegible] मार्जनं समुपद्ध दाशाधान् भट्टि० १४।९२, (शुद्धान् चक्रुः या शोधितवन्तः), **अव —,** 1. मलना, गुदगुदाना 2 धो डालना, **उद्**—,पोंछ देना, हटाना,—रघु० १५।३२, **नि —,** पोंछना, धो देना **परि —,** पोंछ डालना, धो देना, हटाना —(बाष्प) करागेण परिमार्ष्टुमैच्छन—रघु० १४।३८ 2. मलना गुदगुदाना, **प्र —,** पोंछ डालना, हटाना, प्रायश्चित्त करना स्वभावलोलेत्ययशः प्रमृष्टम् रघु० ६।४१, प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामा विक्रम० ३, मालवि० ४, **वि —,** 1. पोंछ डालना, पोंछ देना 2 निर्मल करना स्वच्छ करना **सम् —,** 1 बुहार कर साफ करना, निर्मल करना 2. पोंछ देना, पोंछ डालना, हटाना 3 मलना, गुदगुदाना 4 निथारना, छानना।

मृजः [मृज् + क] 'मुरज' नाम का वाद्यविशेष।

मृजा [मृज् + अङ् + टाप्] 1 स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, नहाना-धोना 2. स्वच्छता, निर्मलता —भट्टि० २।१३, शुद्धि 3. आकार-प्रकार, निर्मल त्वचा और स्वच्छ मुखमण्डल ।

मृजित (वि०) [मृज् + क्त] धो डाला गया, स्वच्छ किया गया, हटाया गया ।

मृडः [मृड् + क] शिव का विशेषण ।

मृडा, मृडानी, मृडी [मृड + टाप्, मृड + ङीष्, पक्षे आनुक्] पार्वती का विशेषण —शङ्कु सुन्दरि कालकूटमपिबत् मूढो मृडानीपतिः —गीत० १२ ।

मृण् (तुदा० पर० मृणति) वध करना, हत्या करना, नष्ट करना ।

मृणालः, लम् [मृण् + कालन्] कमल की तन्तुमय जड़, कमल-तन्तु —भङ्गेऽपि हि मृणालानामनुबध्नन्ति तन्तवः —हि० १।९५, सूत्रं मृणालादिव राजहंसी —विक्रम० १।१९, ऋतु० १।१९, विक्रम० ३।१३, —लम् सुगंधित घास की जड़, वीरणमूल । सम० —भङ्गः कमलतन्तु का टुकड़ा, —सूत्रम् कमलवृन्त का तन्तु ।

मृणालिका, मृणाली [मृणाल + कन् + टाप् इत्वम्, मृणाल + ङीष्] कमलवृन्त या तन्तु —परिमर्दितमृणालीम्लानमङ्गम्—मा० १।२२, या, परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४ ।

मृणालिन् (पुं०) [मृणाल + इनि] कमल ।

मृणालिनी [मृणालिन् + ङीष्] 1. कमल का पौधा 2. कमलों का समूह 3. जहाँ कमल बहुतायत से मिलते हों ।

मृत (भू० क० कृ०) [मृ + क्त] 1 मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त 2 मृतक जैसा, व्यर्थ, निष्फल —मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं मैथुनमप्रजम्, मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः पंच० २।९४ 3. भस्म किया हुआ, फूँका हुआ —मूर्च्छां गतो मृतो वा निदर्शनं पारदोऽत्र रसः भामि० १।८२, —तम् 1 मृत्यु 2. भिक्षा से प्राप्त अन्न, दान या भिक्षा दे० अमृतम् (८) । सम० —अङ्गम् शव, —अण्डः सूर्य, —अशौचम् किसी संबंधी की मृत्यु से उत्पन्न अपवित्रता, अशौच, दे० 'अशौच', —उद्भवः समुद्र, सागर, —कल्प (वि०) मृतप्राय, बेहोश, —गृहम् कबर, —दारः रंडवा, विधुर, —निर्यातकः जो शवों को कब्रिस्तान में ढोकर ले जाता है, —मत्तः, —मत्तकः गीदड़ —संस्कारः अन्त्येष्टि या और्ध्वदैहिक कृत्य, —संजीवन (वि०) मुर्दों को जिलाने वाला (—नम्, —नी मुर्दों का पुनर्जीवन करना, (—नी) मुर्दों को जिलाने का मंत्र, गंडा या ताबीज, —सूतकम् मरे हुए (मृत जात) बच्चे को जन्म देना, —स्नानम् किसी की मृत्यु होने पर स्नान करना ।

मृतकः, कम् [मृत + कन्] मुर्दा शव —भुवन में जीवन्तः ऽयहह मृतका मन्दमतयो, न येषामानन्दं जनयति जगन्नाथभणितिः —भामि० ४।१९, —कम् किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर उत्पन्न अशौच । सम० —अंतकः गीदड़ ।

मृतण्डः (पुं०) सूर्य ।

मृतालकम् [मृत + अल् + णिच् + ण्वुल्] एक प्रकार की मिट्टी, पिंडोर या चिक्कण मृत्तिका ।

मृतिः (स्त्री०) [मृ + क्तिन्] मृत्यु, मरण ।

मृत्तिका [मृद् + तिकन् + टाप्] 1 पिंडोर मिट्टी मनु० १।१८२ 2 ताजी मिट्टी 3 एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी ।

मृत्युः [मृ + त्युक्] 1 मरण —जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च —भग० २।२७ 2 मृत्यु का देवता यमराज 3 ब्रह्मा का विशेषण 4 विष्णु का विशेषण 5 माया का विशेषण 6 कलि का विशेषण 7 काम देव । सम० —तूर्यम् एक प्रकार का ढोल जो और्ध्वदैहिक संस्कार के अवसर पर बजाया जाता है, —नाशकः, पारा, —पः शिव का विशेषण, —पाशः मृत्यु या यम का फंदा —पुष्पः ईख, गन्ना, —प्रतिबद्ध (वि०) मरणशील, मर्त्य —फला, केला, —बीज, —बीजः बांस, —राज् (पुं०) मौत का देवता, यमराज —लोकः 1 मुर्दों की दुनिया यमलोक 2 भूलोक मर्त्यलोक तु० 'मर्त्यलोक —वञ्चनः 1. शिव का विशेषण 2 पहाड़ी कौवा, —सूतिः (स्त्री०) केकड़ी ।

मृत्युञ्जयः [मृत्यु + जि + खच्, मुम्] शिव का विशेषण ।

मृत्स्ना, मृत्स्ना [मृद् + स (स्न) + टाप्] 1 मिट्टी, पिंडोर 2 अच्छी मिट्टी या पिंडोर, चिक्कण मिट्टी 3 एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी ।

मृद् (क्या० पर० मृद्नाति, मर्दित) 1 निचोड़ना दबाना भींचना —मम च मर्दित कौम कल्ककर्मी... वेणी० ५।२० 2 कुचलना रौंदना टुकड़े टुकड़े कर देना, ध्वस्त करना, नष्ट करना, पीस देना, रगड़ देना, बकनाचूर कर देना —नानामर्दीत्स्वावदीचं —भट्टि० १५।१९, आक्रान्तमृद्नाग्रीतनाभकर्त —रघु० १८।५ 3 मसलना, गुदगुदाना, घिसना, स्पर्श करना शि० ८।६१ 4 जीत लेना, आगे बढ़ जाना 5 पोंछ देना, रगड़ देना, हटाना, अभि —निचोड़ना भींचना, कुचलना, अव —रौंदना कुचलना, उप —1 निचोड़ना भींचना 2 नष्ट करना, मार डालना, दमन देना —पामिकानत्रुपमदा नै० ५।११०, परि —, भींचना निचोड़ना —परिमृदितमृणाली दुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४ 2 मार डालना नष्ट करना 3 फाड़ देना, रगड़ देना, प्र —कुचलना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या कर देना —वि —, 1. भींचना, निचोड़ना 2 चकनाचूर करना कुचलना, पीसना —मनु० ६।७० 3 मार

डालना, नष्ट करना, सम्—, इकट्ठा कर निचोड़ना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या करना।

मृद् (स्त्री०) [मृद् + क्विप्] 1 मिट्टी, मिट्टी मिट्टी का गारा — आमोद कुसुमभव मृदेव धत्ते मृद्गन्ध न हि कुसुमानि धारयन्ति — सुभा०, प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः — उत्तर० २।४ 2 मिट्टी का ढेला, चिकनी मिट्टी का लौंदा 3 मिट्टी का टीला 4 एक प्रकार की सुगंधित मिट्टी। सम० — **कणः** मिट्टी की डली या लौंदा, — **करः** कुम्हार, — **कांस्यम्** मिट्टी का बर्तन, — **गः** एक प्रकार की मछली, — **चयः** (मृच्चयः) मिट्टी का ढेर, — **पचः** कुम्हार, — **पात्रम्**, — **भाण्डम्** मिट्टी का बर्तन, मिट्टी के बने पात्र, — **पिण्डः** मिट्टी का लौंदा, — **बुद्धिः** 'मिट्टी' बुद्धि, यथा च मृत्पिण्डबुद्धिना नवीन मृदीतम् — श० ६, — **लोष्टः** मिट्टी का ढेला, — **शकटिका** (मृच्छकटिका) मिट्टी की छोटी गाड़ी, (शूद्रक द्वारा लिखित इस नाम का एक नाटक)।

मृदङ्गः [मृद् + अङ्गच् किच्च] 1 एक प्रकार का ढोल या मुरज, डफली 2 बांस। सम० — **फलः** कटहल का वृक्ष।

मृदर (वि०) [मृद् + अरच्] 1 क्रीडाशील, खिलाड़ी 2 क्षणभङ्गुर, क्षणिक, अस्थायी।

मृदा दे० 'मृद्' (स्त्री)।

मृदित (भू० क० कृ०) [मृद् + क्त] 1 मींचा हुआ, निचोड़ा हुआ — स्तनमर्दिता ... — भर्तृ० २।४४ 2 कुचला गया, पीसा गया, नाश डाला गया, रौंदा गया, मार डाला गया 3 मसल दिया गया, हटाया गया (दे० मृद्)।

मृदिनी [मृद् + क + इनि + ङीप्] अच्छी चिकनी मिट्टी।

मृदु (वि०) (स्त्री० — दु, — द्वी) [मृद् + कु] (म० अ० म्रदीयस्, उ० अ० म्रदिष्ठ) 1 चिकना, कोमल, पतला, लचीला, सुकुमार — मृदु तीक्ष्णतरं यदुच्यते तदिदं मन्मथ दृश्यते त्वयि — मालवि० ३।२, अथवा मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते प्रजान्तकः — रघु० ८।४५, ५७ श० १।१०, ४।१०, 2 कोमल, सुकुमार, नम्र — न खरो न च भूयसा मृदुः — रघु० ८।९, बाणं कृपामृदुमनाः प्रतिसंजहार — ९।५७ 'दया के कारण कोमल मन वाला' ११।८३, श० ६।१ महीतलं स्पृशन्नभिमृदुलानिलः — रघु० ५।५८, 'दयार्द्र' ... नदीरयः पातयत्यपि मृदूत्कटद्रुमम् — ११।७६, 'मृदु और मन्द पवन भी' 3 दुर्बल, कमजोर — सर्वथा मृदुरसौ राजा — हि० ३, ततस्ते मृदवोऽभूवन् गन्धर्वाः शर पीडिताः — महा० 4, मध्यम, मधम, — **दुः** शनिग्रह, — **दु** (अव्य०) कोमलता से, मन्दस्वर में, मधुर ढंग से — स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः — श० १।२३, वादयते मृदु वेणुम् — गीत० ५। सम० — **अङ्ग** (वि०) कोमल अंगों वाला, (— **ङ्गम्**) टीन, रांगा (— **ङ्गी**) कोमल अंगों वाली स्त्री, — **उत्पलम्** कोमल अर्थात् नीलकमल, — **कार्ष्णायसम्** सीसा, — **कोष्ठ** (वि०) नरम कोठे वाला जिसे हलके विरेचन से दस्त आ जाय, — **गमन** (वि०) मन्द या अलसपूर्ण चाल वाला, (— **ना**) हंसी राजहंसी, — **चर्मिन्**, — **छदः**, — **त्वच्**, — **त्वचः** (पुं०) एक प्रकार के भोजपत्र का वृक्ष, — **पत्रः** सरकंडा या नरकुल, — **पर्वकः**, — **पर्वन्** (नपुं०) नरकुल, बेंत — **पुष्पः** शिरीष का वृक्ष, — **पूर्व** (वि०) जो आरम्भ में मृदु हो, स्निग्ध हो, सौम्य तथा सुहावना हो — **भाषिन्** (वि०) मधुर बोलने वाला, — **रोमन्** (पुं०) — **रोमकः** खरगोश, — **स्पर्श** (वि०) छूने में नरम।

मृदुत्पलम् [मृद् + उद् + ... + कन्] सोना, स्वर्ण।

मृदुल (वि०) [मृदु + लच्] 1 स्निग्ध, कोमल, सुकुमार 2. ऋजु, नरम साधु — **लम्** 1. जल 2 अगर की लकड़ी का एक भेद।

मृद्वी, **मृद्वीका** [मृदु + ङीष्, पक्षे कन् + टाप् च] अंगूरों की बेल या गुच्छा — वाचं तदीयां परिपीय मृद्वीं मृद्वीकया तुल्यरसां स हंसः — नै० ३।६०, भामि० ४।१३, ३७।

मृध् (भ्वा० उभ० मर्धति-ते) गीला होना या गीला करना।

मृधम् [मृध् + क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई — मर्त्यावबहिरमङ्गल भुजयोर्बलमस्य पश्यत मृधेऽधिकुप्यतः — कि० १२।३९, रघु० १३।६५, महावी० ५।१३।

मृन्मय (वि०) [मृद् + मयट्] मिट्टी का बना हुआ, रघु० ५।२।

मृश् (तुदा० पर० मृशति, मृष्ट) 1. स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना 2 मलना, गुदगुदाना 3 सोचना, विमर्श विचार करना, अभि —, स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना, आ —, स्पर्श करना, हाथ लगाना, हाथ डालना (आल० से भी), नवातपामृष्टसरोजचारुभिः — कि० ४।१४, ... कु० ३।६४, शि० ९।३४ 2. झपट्टा मारना, खा जाना — रघु० ५।१९, 3 आक्रमण करना, हमला करना; आमृष्टं न. पद व्यां — कु० २।३१, परा —, 1 स्पर्श करना, मलना, गुदगुदाना — परामृशन् हर्षजडेन पाणिना तदीयमङ्गं कुलिशव्रणाङ्कितम् — रघु० ३।६८, शि० १७।११, मृच्छ० ५।२८ 2 किसी पर हाथ डालना, आक्रमण करना, हमला करना, पकड़ लेना — मृच्छ० १।३९ 3 दूषित करना, भ्रष्ट करना, बलात्कार करना, 4 विचार विमर्श करना, चिंतन करना — किं भवितेति सशङ्कं पङ्कजनयना परामृशति — भामि० २।५३ 5. मन से सोचना, प्रशंसा करना — अन्धारम्भे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवता ... परामृशति — काव्य० १, परि —, 1 स्पर्श करना, जरा छू जाना — ... परि- मृष्टदेवलोकम् — भट्टि० १०।४५ 2. ज्ञात करना, वि —,

1 स्पर्श करना 2 चिन्तन करना, सोचना, विचार करना, मनन करना—वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः कि० २।३०, रामप्रवासे व्यमृशन्न दोषं जनापवादं सनरेन्द्रमृत्युम्—भट्टि० ३।७, १०।२८ कु० ६।८७ भग० १८।६३ 3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, पर्यवेक्षण करना 4 परीक्षा लेना, परीक्षण करना—[illegible] प्रयासं [illegible] भामि० १।

मृष् i (भ्वा० पर० मर्षति) छिड़कना ii (भ्वा० [illegible] मर्षति—ते) बर्दाश्त करना, सहन करना—आदि [illegible] दिवा० उभ०) iii (दिवा०, चुरा० उभ०—[illegible] मर्षयति—ते मर्षित) 1 झेलना, भोगना सहन करना [illegible]—नाल्किमिदमकार्यमनुष्ठितं दैवेन, लोको न मृष्यतीति उत्तर० ३ रघु० ९।६२ 2 अनुमति देना, इजाज़त देना 3 क्षमा करना, माफ करना दोषमुक्त करना, क्षमाशील होना—मृष्यन्तु [illegible] बालिशता नाटयपात्रा—उत्तर० ६, प्रथममिति [illegible] दुहितृजनस्यैकोऽपराधो भगवत्या मर्षयितव्यः—[illegible], आर्य मर्षय मर्षय—वेणी० १, [illegible] मर्षं —मृच्छ० १।

मृषा (अव्य०) [मृष् + का] मिथ्या, गलती से, असत्यता के साथ, झूठमूठ—यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे न धनिनां ब्रूषे न चाटु मृषा—भर्तृ० ३।१४७, मृषाभाषासिन्धौ—[illegible] २।२४ 2 व्यर्थ, निष्प्रयोजन निरर्थक। सम०—**अध्यायिन्** (पुं०) एक प्रकार का सारस, —**अर्थक** (वि०) 1 असत्य 2 बेहूदा (—कम्) असंगति, असंभावना, —**उद्यम्** [illegible], झूठ, [illegible] —[illegible] मृषा [illegible] —**भाषम्** [illegible], असत्य, झूठ, —**भाषिन्**, —**वादिन्** (पुं०) झूठा, झूठ बोलने वाला, —**वाद** [illegible] असत्योक्ति, [illegible], [illegible] —**वाद** 1. असत्योक्ति, झूठ, मिथ्या 2 [illegible] 3 असत्य, असत्योक्ति।

मृषात्मक: [मृषा + अज् + कै + क], आम का पेड़।

मृष्ट (भू० क० कृ०) [मृज् मृश् वा + क्त] 1 स्वच्छ किया हुआ, निर्मल किया हुआ 2 [illegible] हुआ 3. प्रमार्जित, चमकाया हुआ 4 छुआ हुआ 5 [illegible] हुआ, विचार हुआ 6 चटपटा मसालेदार, [illegible]। सम०—**गन्धः** चटपटी और रोचक गंध।

मृष्टि: (स्त्री०) [मृज् (मृश्) + क्तिन्] 1 स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2 चमकाना, प्रमार्जन करना, तैयारी करना 3 स्पर्श, संपर्क।

मे (भ्वा० आ० मयते, मित [illegible] [illegible]) विनिमय करना, अदला बदली करना, नि—, **विनि**—, विनिमय या अदला बदली करना।

मेकः [मे इति कायति शब्दं करोति मे + कै + क] बकरा।

मेकलः (मेकल' भी) 1 एक पहाड़ का नाम 2 बकरा। सम०—**अद्रिजा**, **कन्यका**, **कन्या** नर्मदा नदी के विशेषण।

मेखला [मीयते प्रक्षिप्यते कायमध्यभागे—मी + खल + टाप्] 1 करधनी, तगड़ी, कमरबन्द कटिबन्ध [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। सम०—[illegible] **बन्ध** [illegible]।

मेखलालः [illegible] अल् + अच् [illegible] शिव का विशेषण।

मेखलिन् (पुं०) [मेखला + इनि] 1 शिव का विशेषण 2 **धर्मदीक्षा** [illegible]।

मेघः [मेहति वर्षति जलम्, मिह् [illegible]] 1 बादल [illegible] [illegible] **मेघ**० [illegible] [illegible] **धाम** [illegible], **अध्वन्** [illegible] **मार्ग** बादलों का [illegible] **अन्त** [illegible] **अरि** [illegible] **अस्थि** [illegible] **आगमः** [illegible], —**आडम्बर**: [illegible] **आटोप** [illegible] **आच्छादन** [illegible] **आलोक** [illegible] **आस्फोट** [illegible] **आस्पद** [illegible], **उदक** [illegible] **कफः** [illegible], [illegible] **गर्जनम्**, **गर्जना** [illegible] **आवली** 1 [illegible] 2 [illegible], **ओघकः**, [illegible] **ज्योतिस्** (पुं० नपुं०) [illegible], **डम्बर** बादलों की गरज **दीपः** बिजली **द्वारम्** [illegible], **नादः** 1 बादलों की गरज 2 [illegible] का विशेषण 3 रावण के पुत्र इन्द्रजित् का विशेषण **अनुलासिन्**, **अनुलासकः** [illegible], [illegible] **जित्** (पुं०) [illegible] का विशेषण, **निर्घोषः**

बादलों की गरज, —पंक्तिः, —माला बादलों की श्रेणी, —पुष्पम् 1 पानी 2 ओला 3 नदियों का पानी —प्रसवः पानी, —मूर्तिः वज्र, —मण्डलम् अन्तरिक्ष, आकाश, —मालः, —मालिन् (वि०) बादलों से घिरा हुआ, —योनि: धुंआ, धूआँ —रवः गरज, —वर्णा नील का पौधा, —वर्त्मन् (नपुं०) अन्तरिक्ष, —वह्नि: बिजली —वाहनः 1 इन्द्र का विशेषण —मातलि रथ मेघाभिन मघवाहन कि० १३।१८ 2 शिव का विशेषण, —विस्फूर्जितम् 1 गरज बादलों की गड़गड़ाहट 2 एक छन्द का नाम छं० मं० ? —वेश्मन (नपुं०) अन्तरिक्ष —सार एक प्रकार का कपूर —सुहृद् (पुं०) मोर —स्तनित.., —...।

मेघङ्कर (वि०) [मेघ कर्मणि ? कृ + अच्] बादलों को पैदा करने वाला।

मेचक (वि०) [मच् ... कुन् च] काला, गहरा नीला, काले रंग का, ... [illegible] ... मेघ ... मालवि० ... ४।३, ... ६।४८, ... —कः 1 कालापन, गहरा नीला रंग 2 मोर की पूँछ (पंख) की आँख (चन्द्रक) 3 बादल 4 धूआँ 5 चूचुक 6 एक प्रकार का रत्न —कम् अन्धकार। —आपगा यमुना का विशेषण।

मेट् मेड् (भ्वा० पर० मेटति, मेडति) पागल होना।

मेठका आँगन का पेड़।

मेठ 1 मेढ़ 2 हाथी का रखवाला, महावत।

मेंठ मेथि 1 खंभा, स्तम्भ 2 खलिहान में गड़ा हुआ खंभा जिसके बैल बांधे जाते हैं ताकि बैल आदि बांधने का खूँटा 4 गाड़ी के ढांचे को सहारा देने के लिए डण्डा।

मेढ्र [मिह + ष्ट्रन्] [illegible] ... मूत्र ... [illegible] ... [illegible] ... उ० ... —म० —ज: (पुं०) [illegible] की मुराई का ... —ज ... —रोग लिंग संबंधी रोग।

मेढ्रक: [मेढ्र + कन्] 1 भेड़ 2 शिव ... का अन्तरिक्ष।

मेण्ठ, मेण्ढ हाथी का रखवाला महावत।

मेढ़ मेढ़क मेष, भेड़।

मेढ़ दे० मेढ़।

मेथ (भ्वा० उभ० मेथति ते) 1 मिलना 2 एक दूसरे से मिल जाना (भा०) 2 बुरा भला कहना 4 जानना समझना 5 मार मारना चोट पहुँचाना जान से मार डालना।

मेथिका, मेथिनी [मेथ + ण्वुल् + टाप् इत्वम्, मेथ + णिनि + ङीप] एक प्रकार का घास मेथी।

मेद [मेदते स्निह्यति —मिद + अच्] 1 चर्बी 2 एक विशेष प्रकार का वर्णसंकर जाति 3 एक नाग राक्षस का नाम। सम० —जम् एक प्रकार का गूगल, —भिल्ल: एक पतित जाति का नाम।

मेदक: [मिद् + ण्वुल्] अर्क जो शराब खींचने के काम आता है।

मेदस् (नपुं०) [मेदते स्निह्यति मिद् + असुन्] 1 चर्बी वसा (शरीर के सात धातुओं में से एक जिसका पेट में विद्यमान होना माना जाता है) मनु० ३।१८२, याज्ञ० ३।६४ 2 मांसलता, शरीर का मोटापा —मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः श० २।५। सम० —अर्बुदम् एक चर्बी रसौली, —कृत् (पुं०, नपुं०) मांस —ग्रन्थि मेद युक्त गांठ या रसौली, —अच्, —तेजस (नपुं०) हड्डी —पिण्ड, चर्बी का ढ़ेला,—वृद्धिः (स्त्री०) 1 चर्बी की वृद्धि, मोटापा 2. फोतों का बढ़ जाना।

मेदस्विन (वि०) [मेदस् + विनि] 1 मोटा, स्थूलकाय 2 मजबूत हृष्टपुष्ट शि० ५।६४।

मेदिनी [मेद इनि + ङीप्] 1 पृथ्वी —स नामवनि ... हीपां नवामपि मेदिनी रघु० १।६५, ... [illegible] ... —कि० १३।५१ 2 जमीन, भूमि मिट्टी 3 स्थान, जगह 4 एक कोश का नाम। सम० —ईशः —पतिः राजा, —द्रवः धूल।

मेदुर (वि०) [मिद् + घुरच्] 1 मोटा 2 चिकना, स्निग्ध मृदु 3 ठोस सघन श० ८।११ फूला हुआ, भरा हुआ, ढका हुआ (प्रायः करण० के साथ या समास के अन्त में) मेघैर्मेदुरमम्बरम् —गीत० १, ... [illegible] ... मेदुर (पद्य...म्) —१।

मेदुरित (वि०) [मेदुर + इतच्] मोटा, फुलाया हुआ, सघन किया हुआ उत्तर० ... ।

मेद्य (वि०) [मेद + यत्] 1 चर्बीयुक्त 2. सघन, मोटा।

मेध् (भ्वा० उभ० दे० 'मेथ्'

मेधः [मेध्यते हन्यते पशुः अत्र —मेध् + घञ्] 1. यज्ञ जैसा कि 'नरमेध' में 2 यज्ञीय पशु, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु। सम० —जः विष्णु का विशेषण।

मेधा [मेध् + अच् + टाप्] (ब० स० में धु, धुष्, तथा स्वल्प के पूर्व आने पर मेधा का बदल कर मेधस रूप रह जाता है) 1 धारणात्मक शक्ति, (स्मरण शक्ति की) धारणाशक्ति धीर्धारणावती मेधा —अमर० 2 प्रज्ञा बुद्धि भग० १०।३४, मनु० ३।२६३ याज्ञ० ३।१७३ 3 सरस्वती का एक रूप 4 यज्ञ। सम० —अतिथि मनुस्मृति का एक विद्वान् भाष्यकार —रुद्र कालिदास का विशेषण।

मेधावत् (वि०) [मेधा + मतुप् वत्वम्] बुद्धिमान्, समझदार।

मेधाविन् (वि०) [मेधा + विनि] 1 बहुत समझदार, अच्छी स्मरणशक्ति वाला 2 बुद्धिमान्, समझदार, प्रज्ञावान् —पुं० 1 विद्वान् पुरुष, ऋषि, विद्यासम्पन्न 2 तोता 3. मादक पेय।

मेधि दे० 'मेथि' ।

मेध्य (वि०) [मेध्+यत् मेधाय हितं यत् वा] 1. यज्ञ के लिए उपयुक्त—याज्ञ० १।१९४, मनु० ५।५४ 2. यज्ञ संबंधी, यज्ञीय—मेध्येनाश्वेनेजे, रघु० १३।५, 3. विशुद्ध, पुण्यशील, पवित्रात्मा, रघु० १।८४ ३।३१, १४।८१, —ध्यः 1. बकरा 2. खैर का पेड़ 3. जौ (मेदिनी के अनुसार), —ध्या कुछ पौधों के नाम ।

मेनका [मन्+वुन् अकारस्य एत्वम्] 1 एक अप्सरा (शकुन्तला की माता) का नाम 2. हिमालय की पत्नी का नाम । सम० —आत्मजा पार्वती का नाम ।

मेना [मान+इनच्, नि० साधु] 1 हिमालय की पत्नी का नाम—मेनां मुनीनामपि माननीयाम् (उपयेमे) कु० १।१८, ५।५ 2. एक नदी का नाम ।

मेनादः [मे इति नादोऽस्य] 1 मोर 2 बिलाव 3 बकरा ।

मेन्धिका, मेंधी (स्त्री०) एक पौधा जिसे मेंहदी कहते हैं (इसके पत्तों से लाल सा रंग निकाला जाता है, जिससे कि अंगुलियों के नाखून, पैरों के तले तथा हाथ की हथेलियाँ रंगी जाती हैं) ।

मेप् (भ्वा० आ० मेपते) जाना, हिलना-जुलना ।

मेय (वि०) [मा (मि)+यत्] 1 मापने योग्य, जो मापा जा सके 2 जिसका अनुमान लगाया जा सके 3. पहचाने जाने के योग्य, ज्ञेय, जो जाना जा सके ।

मेरुः [मि+रु] उपाख्यानों में वर्णित एक पर्वत का नाम (ऐसा माना जाता है कि समस्त ग्रह इसके चारों ओर घूमते हैं, यह भी कहते हैं कि मेरु सोने और रत्नों से भरा हुआ है) —विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः —नै० १।१६, स्थाणवन्त्येव समाप्तहेममहिमा मेरुर्न मे रोचते भर्तृ० ३।१५१ 2 रुद्राक्षमाला के बीच का गुरिया 3 हार के बीच की मणि । सम० —यन्त्रम् (पुं०) शिव का विशेषण, —यन्त्रम् तकुवे के आकार की बनी एक आकृति ।

मेरुकः [मेरु+कन्] धूप, धूनी ।

मेलः [मिल्+घञ्] मिलाप, एकता, समाज, समवाय, सभा ('मेलक' भी) ।

मेलनम् [मिल्+णिच्+ल्युट्] 1 एकता, संयोग 2. समाज 3 मिश्रण ।

मेला [मिल्+णिच्+अच्+टाप्] 1. मिलना, समागम 2. समवाय, सभा, समाज 3. कूची 4. नील का पौधा 5. स्याही, मसी 6. संगीत की माप, स्वरग्राम । सम० —अम्बुः,—अम्बु,—नन्दः,—मन्दा दवात, कलम दान, दवात ।

मेव् (भ्वा० आ० मेवते) पूजा करना, सेवा करना, टहल करना ।

मेषः [मिषति अन्योऽन्य स्पर्धते —मिष्+अच्] 1. मेढ़ा, मेढ़ 2 मेष राशि । सम० —अण्डः इन्द्र का विशेषण, —कम्बलः एक ऊनी कंबल या धुस्सा, —पालकः —पालः गडरिया, —मांसम् मेढ़ या बकरे का मांस, —यूथम् भेड़ों का रेवड़ ।

मेषा [मिष्यतेऽसौ मिष्+घञ्+टाप्] छोटी इलायची ।

मेषिका, मेषी [मेष+कन्+टाप्, इत्वम्, मेष+ङीप्] भेड़ (मादा) ।

मेहः [मिह्+घञ्] 1 लघुशंका करना, मूत्र करना 2 मूत्र 3 मूत्र संबंधी रोग 4 मेढ़ा 5 बकरा । सम० —घ्नी हल्दी ।

मेहनम् [मिह्+ल्युट्] 1 मूत्रोत्सर्ग करना 2 मूत्र 3 लिंग ।

मैत्र (वि०) (स्त्री० —त्री) [मित्र+अण्] 1 मित्रसंबंधी 2 मित्र द्वारा दिया गया 3 दोस्ताना, कृपापूर्ण सौहार्दपूर्ण कृपालु मनु० २।८७ भग० १२।१३ 4 मित्र नाम के देवता से संबंध रखने वाला (जैसा कि 'मुहूर्त') कु० ७।६, —त्रः 1 ऊँचा या पूर्ण ब्राह्मण 2 एक विशेष वर्णसंकर जाति मनु० १०। २३ 3 गुदा —त्री 1 मित्रता, दोस्ती, सद्भाव 2 घनिष्ठ संबंध या साहचर्य मिलाप, संपर्क प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः मेघ० ३१ 3 अनुराधा नाम का नक्षत्र —त्रम् 1 मित्रता दोस्ती 2 मलोत्सर्ग करना—मनु० ६।१५२ 3 अनुराधा नाम का नक्षत्र, (इसी अर्थ में 'मैत्रभम्' शब्द भी) ।

मैत्रकम् [मैत्र+कन्] मित्रता दोस्ती ।

मैत्रावरुणः [मित्रश्च वरुणश्च द्व० स०, मित्रावरुणौ, मित्रावरुण+अण्] 1 वाल्मीकि का विशेषण 2. अगस्त्य का विशेषण 3 यज्ञ के प्रतिनिधि ऋत्विजों में से एक ।

मैत्रावरुणिः [मित्रावरुण+इञ्] 1 अगस्त्य का विशेषण 2 वशिष्ठ का विशेषण 3 वाल्मीकि का विशेषण ।

मैत्रेय (वि०) (स्त्री० —यी) [मैत्रे मित्रतायां साधु, मैत्र+ढञ्] दोस्त या मित्र से संबंध रखने वाला, दोस्ताना,—यः एक वर्णसंकर जाति का नाम ।

मैत्रेयकः [मैत्रेय+कन्] एक वर्णसंकर जाति का नाम मनु० १०।३३ ।

मैत्रेयिका [मैत्रेयक+टाप्, इत्वम्] मित्रों या मित्रराष्ट्रों में संघर्ष, मित्रयुद्ध ।

मैत्र्यम् [मित्र+ष्यञ्] मित्रता, दोस्ती, मैत्री ।

मैथिलः [मिथिलायां भवः —अण्] मिथिला का राजा रघु० ११।३२, ४८,—ली सीता का नाम रघु० १२।२९ ।

मैथुन (वि०) (स्त्री० —नी) [मिथुनेन निर्वृत्तम्—अण्] 1. युग्मरूप, जुड़ा हुआ 2. विवाहसूत्र में आबद्ध 3. संयोग से संबन्ध रखने वाला,—नम् 1. रति क्रीडा,

संभोग, सुरत मैथुनमप्रजम् — पंच० २।१४ 2 विवाह 3 मिलाप, समागम । सम० —ज्वरः मैथुनोन्माद का उत्तेजना, —धर्मिन् (वि०) सहगामी, —वैराग्यम् स्त्री-संभोग से विरक्ति ।

मैथुनिका [मैथुन + वुन् + टाप्, इत्वम्] विवाह द्वारा मिलाप, वैवाहिक गठबंधन ।

मैधावकम् (नपुं०) समझ बूझ ।

मैनाकः [मेनकायां भव अण्] हिमालय और मेना के पुत्र (एक पर्वत) का नाम, यही एक ऐसा पर्वत था जिसके पंख समुद्र से मित्रता होने के कारण अक्षुण्ण रहे जबकि इन्द्र ने और दूसरे पर्वतों के काट डाले। कु० १।२० । सम० —स्वसृ (स्त्री०) पार्वती का विशेषण ।

मैनालः (पुं०) मछुआ, माहीगीर ।

मैन्दः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मार गिराया था। सम० —हन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण ।

मैरेयः, —यम्, मैरेयकः, —कम् [मिरा देशभेदे भव ढक्] एक प्रकार का मादक पेय — अभिरजति वधूभिः पीतमैरेयरिक्तम् — शि० ११।५१, सुभा० ३८ ।

मैलिन्दः [मिलिन्द + अण्] मधुमक्खी, भौंरा ।

मोकम् (नपुं०) किसी जानवर की उतरी हुई खाल ।

मोक्ष् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मोक्षति, मोक्षयति-ते) 1 छोड़ना, स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, मुक्ति देना 2 ढीला करना, खोलना, बिखेरना 3 बलपूर्वक छीनना 4 डालना, फेंकना, उछालना 5 ढलकाना ।

मोक्षः [मोक्ष् + घञ्] 1 मुक्ति, छुटकारा, रिहाई, स्वतन्त्रता — साऽऽप्लुता नव बन्धे मोक्षे न प्रभवति — का०, मेघ० ६१, कल्पमोक्षात् शुकादय — रघु० १२।१८ धुर्याणां च धुरो मोक्षम् १।५४ 2 उद्धार, परित्राण, मोचन 3 परममुक्ति, आवागमन अर्थात् पुनर्जन्म के चक्कर से आत्मा की मुक्ति, मानवजीवन के चार उद्देश्यों में से अन्तिम, दे० अर्थ, कु० ५।८, १८।२०, रघु० १०।८४, मनु० ६।३५ 4 मृत्यु 5 अधःपतन, अवपतन गिरना — वृन्तश्लथांसंस्पर्शमोक्षात् — कु० ३।३१ 6 ढीला करना, खोलना, बन्धन मुक्त करना — वेणीमोक्षोत्सुकानि — मेघ० ९९ 7 टपकाना, गिराना, बहाना — बाष्पमोक्षः, अश्रुमोक्षः 8 निकालना, लगाना, फेंकना, दागना — बाणमोक्ष — रघु० ३।५५ 9 बखेरना, छितराना 10 (किसी ऋण आदि का) परिशोध करना 11 (ज्योतिष में) ग्रहणग्रस्त ग्रह की मुक्ति । सम० —उपायः मोक्ष प्राप्त करने का साधन, —देवः चीनी यात्री ह्यूनत्सांग के साथ जोड़ा हुआ विशेषण, —पुरम्, —पुरी कांची नामक नगरी का विशेषण ।

मोक्षणम् [मोक्ष + ल्युट्] 1 छोड़ना, मुक्त करना, परम मुक्ति, स्वतन्त्रता देना 2 उद्धार, छुटकारा 3 ढीला करना, खोलना 4 छोड़ना, परित्याग करना, त्याग देना 5 टपकाना 6 अपव्यय करना ।

मोघ (वि०) [मुह् + घ अच् वा, कुत्वम्] 1. व्यर्थ, अर्थहीन, निष्फल, लाभरहित अप्रफल — याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा — मेघ० ६, मोघवृत्ति कलमस्य चेष्टितम् — रघु० ११।३९, १८।६५, भग० ९।१२ 2 निरुद्देश्य निष्प्रयोजन, अनिश्चित 3. छोड़ा गया परित्यक्त 4 आलसी, —घः बाड़, घेरा, झाड़बन्दी, —घम् (अव्य०) व्यर्थ, बिना किसी प्रयोजन के, बिना किसी उपयोग के । सम० —कर्मन् (वि०) अलाभयुक्त कार्यों में व्यस्त, —पुष्पा बांझ स्त्री ।

मोघोलिः झाड़बन्दी, बाड़ ।

मोचः [मुच् + अच्] 1 केले का पौधा 2 शोभाञ्जन या सोहञ्जन का पेड़, —चा 1 केले का वृक्ष 2 कपास का पौधा 3 नील का पौधा —चम् केले का फल ।

मोचकः [मुच् + ण्वुल्] 1 भक्त, सन्यासी 2 परममुक्ति, छुटकारा 3 केले का पौधा ।

मोचन (वि०) (स्त्री०—नी) [मुच् + ल्युट्] छोड़ने वाला, स्वतन्त्र करने वाला, —नम् 1 छोड़ना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना, मोक्ष 2 जुआ उतारना 3. निर्मुक्त करना उत्सर्जन करना 4. किसी कर्तव्यभार या ऋण का परिशोध करना । सम० —पट्टकः छन्ना, (कपड़ा जिससे दूध जल आदि छाना जाय) ।

मोचयितृ (वि०) [मुच् + णिच् + तृच्] छुड़ाने वाला, स्वतन्त्र करने वाला ।

मोचाटः [मुच् + णिच् + अच् = मोच + अट् + अच्] 1 केले का गूदा या फल 2 चन्दन की लकड़ी ।

मोटकः, —कम् [मुट् + ण्वुल्] बटी, गोली, —कम् कुश घास की दो पत्तियाँ जो श्राद्ध के अवसर पर दी जाती हैं, (अन्तर्कुशपत्रद्वयम्) ।

मोट्टायितम् [मुट् + घञ् वा० वुक्, + क्यङ् + (भावे) क्त] जब कभी बातचीत चलती है या अन्यमनस्का होकर नायिका कान आदि कुरेदती है तो उस समय चुपचाप बिना इच्छा के अपने प्रिय के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति । उज्ज्वलमणि में इसकी परिभाषा दी है — कान्तस्मरणवार्तादौ हृदि तद्भावभाविते । प्राकट्यमभिलाषस्य मोट्टायितमुदीर्यते ॥ दे० सा० द० १४१ भी ।

मोदः [मुद् + घञ्] 1 आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी — यथानन्दाय मोदाय उत्तर० २।१२, रघु० ५।१५ 2 गन्धद्रव्य, सुगंधि । सम० —आख्यः आम का पेड़ ।

मोदक (वि०) (स्त्री०—का,—की) [मोदयति—मुद् + णिच् + ण्वुल्] सुहावना, आनंदप्रद, प्रसन्नतादायक, —कः-

—कम् मिठाई, लड्डू -याज्ञ० १।२८९,—कः एक वर्ण संकर जाति (क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न)।

मोदनम् [मुद्+ल्युट्] 1 हर्ष, प्रसन्नता 2 प्रसन्न करने की क्रिया 3 मोम।

मोदयन्तिका, मोदयन्ती [मुद्+णिच्+शतृ+ङीप्=मोदयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार की चमेली।

मोदिन् (वि०) [मुद्+णिनि] 1 प्रसन्न, खुशी भरा 2. प्रसन्नता-दायक, आनन्दप्रद, —नी 1. नाना प्रकार (अजमोद, मल्लिका, जूही) के पौधों के नाम 2 कस्तूरी 3 मादक या खींची हुई शराब।

मोरटः [मुर्+अटन्] 1 मीठे रस वाला एक पौधा 2 ताजी ब्याई गाय का दूध, —टम् गन्ने की जड़।

मोषः [मुष्+घञ्] 1 चोर, लुटेरा 2 चोरी, लूट 3 खसखसोट, चोरी, उठा ले जाना, हटाना (आलं० से भी)—न पुष्पमोषमर्हत्युद्यानलता – मृच्छ० १, दृष्टिमोषे प्रदोषे—शिश० ११ 4 चुराई हुई संपत्ति। सम० —कृत् (पुं०) चोर।

मोषकः [मुष्+ण्वुल्] लुटेरा, चोर।

मोषणम् [मुष्+ल्युट्] 1. लूटना, खसोटना, चोरी करना, ठगना 2 काटना, 3. नष्ट करना।

मोषा [मुष्+अ+टाप्] चोरी, लूट।

मोहः [मुह्+घञ्] 1. चेतना की हानि, मूर्छित होना, निःसंज्ञा, बेहोशी —मोहेनान्तर्वरतनुरियं लक्ष्यते मुच्यमाना—विक्रम० १।८, कु० ३।७३ 2 घबराहट, व्यामोह, उद्विग्नता, अव्यवस्था—यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव—भग० ४।३५ 3 मूर्खता, अज्ञान, दीवानापन —तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्—रघु० १।२, भ० ७।२५ 4 त्रुटि, भूल अशुद्धि 5 आश्चर्य, अचम्भा 6 कष्ट, पीड़ा 7 शत्रु की सेना को शत्रु को परास्त करने में प्रयुक्त की जाय 8. (दर्शन० में) व्यामोह जो मनुष्य को पहचानने में अवरोधक है, (इसके अनुसार मनुष्य को सांसारिक पदार्थों की वास्तविकता में विश्वास होता है, और वह विषय सुखों से तृप्ति करने का अभ्यस्त हो जाता है)। सम० —कलिलम् मोटा और व्यामोहक जाल, मिथ्या अन्धविश्वास, —जालम् व्यामोहक जाल,—रात्रिः (स्त्री०) प्रलय की रात जब कि समस्त विश्व नष्ट हो जाएगा —शास्त्रम् मिथ्या सिद्धान्त या सूत्र।

मोहन (वि०) (स्त्री०—नी) [मुह्+णिच्+ल्युट्] 1 वशीभूत करने वाला 2 व्याकुल करने वाला उद्विग्न करने वाला, विक्षुब्ध करने वाला 3 व्यामोहक, भ्रामक 4 आकर्षक, —नः 1 शिव का विशेषण 2. काम के पाँच बाणों में से एक धतूरा, —नम् 1. वशीभूत करना 2 मूढ करना, घबरा देना, विक्षुब्ध करना, 3. जड़ता, बेहोशी 4. दीवानापन, व्यामोह, गलती 5. फुसलाना प्रलोभन करने के लिये जादू-टोना। सम० —अस्त्रम् एक ऐसा जादुई-अस्त्र जो उस व्यक्ति को जिस पर कि चलाया जाय, मुग्ध कर दे।

मोहनकः [मोहन+के+क] चैत का महीना।

मोहित (भू० क० कृ०) [मुह्+क्त] 1. वशीभूत किया हुआ 2 घबराया हुआ, विक्षुब्ध 3 व्यामुग्ध, आकृष्ट, मुग्ध किया हुआ, फुसलाया हुआ।

मोहिनी [मुह्+णिच्+णिनि+ङीप्] 1. एक अप्सरा का नाम 2. मनोहारिणी स्त्री (अमृत बाँटने समय राक्षसों को ठगने में विष्णु ने यही रूप धारण किया था) 3 एक प्रकार का चमेली का फूल।

मौक (कु) लि (पुं०) कौवा —अमर० ४।२९।

मौक्तिकम् [मुक्तैव स्वार्थे ठक्] मोती —मौक्तिकं न गजे गजे —सुभा०। सम० —आवली मोतियों की लड़ी —गुम्फिका मोती की मालाएँ गूँथने वाली स्त्री —प्रसवम् (नपुं०) मोतियों की लड़ी अथवा मोतियों को जन्म देने वाली सीपी —शुक्तिः (स्त्री०) मोतियों की सीपी, —सरः मोतियों की लड़ी या हार।

मौक्यम् [मूक+ष्यञ्] गूँगापन, चुप्पी, मौन।

मौकुलिः [मुकुल+इञ्] एक कुल का नाम —पदे पदे मौकुलिभिः कुलायितम् —का०।

मौखर्यम् [मुखरस्य भावः ष्यञ्] 1 वाचालता, बहुभाषिता 2. गाली, मानहानि, झूठा आरोप।

मौख्यम् [मुख+ष्यञ्] पूर्ववर्तिता, वरिष्ठता।

मौग्ध्यम् [मुग्ध+ष्यञ्] 1 मूर्खता मूढ़ता 2 कपटहीनता सरलता, भोलापन 3. लावण्य, सौन्दर्य।

मौचम् [मोच+अण्] केले का फल।

मौञ्ज (वि०) (स्त्री० —ञ्जी) [मुञ्ज+अण्] मूँज की घास का बना हुआ, —ञ्जः मूँज की घास का गन्ना।

मौञ्जी [मौञ्ज+ङीप्] मूँज की घास की तीन लड़ की बनी, ब्राह्मण की मेखला —कु० ५।१०, मनु० २।४२। सम० —निबन्धनम्,—बन्धनम् मूँज की घास का बना कटिसूत्र पहनना, उपनयन संस्कार - मनु० २।१७१, १९१।

मौढ्यम् [मूढ+ष्यञ्] 1 अज्ञान अथवा मूर्खता 2 लड़कपन।

मौद्गम् [मुद्गानां क्षेत्रम्—अण्] मूँग की मात्रा।

मौद्गलिकः [मुद्गल+ठक्] मुल्लमाई।

मौद्गलिकः [मुद्गल+इञ्] कौवा।

मौद्गीन (वि०) [मुद्ग+खञ्] (खेत) जो कालायत (मूंग) बोने के उपयुक्त हो।

मौनम् [मुनेर्भावः —अण्] चुप्पी, मूकभाव, —मौनं सर्वार्थसाधनम्, मौनं त्यज 'चुप्पी तोड़ो' मौनं समाचर 'मौन का नाटक रचाओ'। सम० —मुद्रा मौन धारण की अभिव्यक्ति,—व्रतम् चुप रहने की प्रतिज्ञा।

मौनिन् (वि०) (स्त्री०- नी) [मौन+इनि] चुप रहने की प्रतिज्ञा का पालन करने वाला चुप मूक, भग० १२।१९ पुं० एक पुण्यशील ऋषि, संन्यासी, साधु।

मौरजिक [मुरज+ठक्] मृदंग बजाने वाला।

मौर्वर्यम् [मुर्ख+ष्यञ्] मूर्खता बुद्धूपन अज्ञता।

मौर्य [मुराया अपत्यम् मुरा+ण्य] चन्द्रगुप्त से आरम्भ करके राजाओं का एक वंश मौर्य नव राजनि मुद्रा० ४।१५ मौर्येष्विधर्मार्थमिरभ्यो प्रकल्पिता महा० (इस सन्दर्भ में मौर्य शब्द के अर्थ में [illegible]) ।

मौर्वी [मूर्वायाः विकारः अण् ङीप्] 1 धनुष की डोरी मौर्वी [illegible] कु० ३।५५ मौर्वी [illegible] भावना रघु० ६।१४ १२।८८ कु० ३।५५ 2 [illegible] मेखला (ब्राह्मण के प्रयोग के लिए) मनु० २।४०।

मौल (वि०) (स्त्री०- ली) [मूल+अण्] 1 मूलक 2 प्राचीन (प्रथा आदि) बहुत समय से चला आती हुई 3 [illegible] कुल में उत्पन्न [illegible] की सेना में पाया हुआ [illegible] मनु० ७ रघु० १९।५७ [illegible] रघु० १२।१२ १८।१० ९८।३१ ।

मौलि (वि०) [मूले [illegible] भवः] प्रधान, प्रमुख [illegible] मौलि [illegible] भामि० ४।२१ लि० 1 प्रधान सिर मौलि सा [illegible] रघु० १७।४१ कु० ७।३५ 2 किसी वस्तु का सिर या चोटी [illegible] उत्तर० २।३२ 3 [illegible] [illegible] 2 चूड़ा शिखा, केश [illegible] [illegible] 3 जूड़ा, [illegible] [illegible] मणि, [illegible] मुकुट को [illegible] मुकुटम् राज किरीट।

मौलिक (वि०) (स्त्री०- की) [मूल+ठञ्] 1 मूलभूत 2 मुख्य प्रधान 3 घटिया।

मौहूर्त [मुहूर्त+अण्] मुहूर्त विचारक।

मौष्टा [मुष्टि प्रहरण [illegible] क्रीडायाम् मुष्टि+ण] मुक्के बाजी घूंसे बाजी मुष्टामुष्टि मुठभेड़।

मौष्टिक [मुष्टि+ठक्] बदमाश, ठग धूर्त।

मौसल (वि०) (स्त्री०- ली) [मुसल+अण्] 1 मूसल की भांति बना हुआ, मूसल के आकार का 2 (युद्ध आदि) जो गदाओं से लड़ा जाय 3 (पर्व आदि) जो गदा युद्ध से संबद्ध हो।

मौहूर्तः, मौहूर्तिकः [मुहूर्त+अण्, ठक् वा] ज्योतिषी।

म्ना (भ्वा० पर० मनति, म्नात) 1 (मन में) दोहराना 2 परिश्रम पूर्वक याद करना 3 स्मरण करना, आ—, 1 सोचना, मनन करना—पाठामृतमधमनारतमाकलनान् भामि० ४।०२ 2 परम्परानुसार दे देना, निर्धारित करना, उल्लेख करना, सौंपना, सौंपना त्यामामनन्ति प्रकृतिं पुरुषार्थप्रवर्तिनीम् कु० २।१३, ५।८१, ६।३१ 3 अध्ययन करना, सीखना, याद करना यदुवृद्धा मन्वानः [illegible] कु० ६।१६, भट्टि० १०। ३० समा— 1 आवृत्ति करना 2. निर्धारित करना निर्दिष्ट करना न हि धर्मसूत्रकाराः समामनन्ति [illegible] ४।

म्नात (भू० क० कृ०) [म्ना+क्त] 1 दोहराया गया 2 याद किया गया अध्ययन किया गया।

म्रक्ष् (भ्वा० पर० म्रक्षति) 1 रगड़ना 2 [illegible] जमा करना इकट्ठा करना 3 लेप करना, रगड़ना, चुपड़ना 4 मिश्रण करना मिलाना।

म्रक्षः [म्रक्ष्+घञ्] पाखंड कपटाचरण।

म्रक्षणम् [म्रक्ष्+ल्युट्] 1 शरीर पर उबटन मलना 2 लेप करना चुपड़ना 3 संचय करना ढेर लगाना 4 तेल, मल्हम।

म्रद् (भ्वा० आ० म्रदते प्रेर० म्रदयति ते) पीसना, चूरा करना कुचलना रौंदना।

म्रदिमन् (पुं०) [मृदु+इमनिच्] 1 कोमलता, मृदुता 2 मृदुता दुर्बलता (स्वभाव) हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम् शि० २।४९।

म्रुच् (भ्वा० पर० म्रोचति) जाना हिलना-जुलना।

म्लुच् (भ्वा० पर० म्लोचति) जाना हिलना-जुलना।

म्लेछ् (चुरा० उभ० म्लेछयति- ते) काटना, विभक्त करना।

म्लान (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त] मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

म्लान (भू० क० कृ० [म्लै क्त त [illegible]) 1 मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 2 क्लान्त थका हुआ निढाल 3 निर्बल क्षीण, दुर्बल कृश 4 मलिन [illegible] अवसन्न [illegible] मलिन। सम० अङ्ग (वि०) क्षीणकाय (गी [illegible] स्त्री [illegible] मनस् (वि०) उदास मन वाला उत्साहहीन [illegible]।

म्लानि (स्त्री०) [म्लै+क्तिन्] 1 मुर्झाना कुम्हलाना, [illegible] 2 क्लान्ति, थकावट थकान 3 उदासी, खिन्नता 4 गन्दगी।

म्लायत्- म्लायिन् (वि०) [म्लै+शतृ, णिनि वा] कुम्हलाता हुआ पतला और कृश होता हुआ।

म्लास्नु (वि०) [म्लै+स्नु] 1 मुर्झाया हुआ या कुम्हलाया हुआ या होने वाला 2. पतला और कृश होने वाला 3. निढाल और क्लान्त होने वाला।

म्लिष्ट (वि०) [म्लेच्छ्+क्त नि० साधु] 1 अस्फुट बोला हुआ (मानो बर्बर लोगों ने बोला हो) 2 अस्पष्ट असभ्य (बर्बर), असंस्कृत 3 कुम्हलाया हुआ मुर्झाया हुआ, —ष्टम् अस्फुट या असंस्कृत भाषण।

म्लुच्, म्लुञ्च्, दे० म्रुच् म्रुञ्च्।

म्लेच्छ् या म्लेछ् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० म्लेच्छति म्लेच्छयति, म्लिष्ट म्लेच्छित) अव्यक्तरूप से बोलना अस्फुट स्वर से बोलना, या बर्बरतापूर्वक बोलना।

म्लेच्छः [म्लेच्छ्+घञ्] 1 असभ्य अनार्य (जो संस्कृत भाषा न बोलता हो, जो हिन्दू या आर्य पद्धतियों का पालन न करता हो) विदेशी —ग्राह्या म्लेच्छप्रसिद्धिस्तु विरोधादर्शने सति जै० न्या० म्लेच्छान् मूर्छयते या —म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् —गीत० १ 2 जाति से बहिष्कृत नीच मनुष्य बौधायन 'म्लेच्छ' शब्द की परिभाषा देता है — गोमांसखादको यस्तु विरुद्धं बहु भाषते सर्वाचार विहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते 3 पापी, दुष्ट पुरुष —छम् तांबा। सम० —आख्यम् तांबा —आशः गेहूँ —आस्यम् —मुखम् तांबा —कन्दः लहसुन —जातिः (स्त्री०) असभ्य जंगली (बर्बर) जाति पहाड़ी बर्बर, —देशः, —मण्डलम् वह देश जहाँ अनार्य लोग (बर्बर) रहते हों विदेश या असभ्य देश मनु० २।२३ —भाषा विदेशी भाषा —भोजनः गेहूँ। —नम् जौ —वाच् (वि०) बर्बर जाति की या विदेशी भाषा बोलने वाला।

म्लेच्छित (भू० क० कृ०) [म्लेच्छ्+क्त] अस्फुट रूप से या बर्बरतापूर्वक बोला हुआ —तम् विदेशी भाषा 2 व्याकरण विरुद्ध शब्द या भाषण।

म्लेट्, म्लेड् (भ्वा० पर०) पागल होना।

म्लेव् (भ्वा० आ० म्लेवते) पूजा करना, सेवा करना।

म्लै (भ्वा० पर० म्लायति म्लान) मुर्झाना, कुम्हलाना, म्लायते कुम्हलाना —रघु० [illegible] 2 थक जाना, निढाल होना, श्रान्त या क्लान्त होना [illegible] मालती रघु० [illegible] भट्टि० [illegible] 3 उदास या खिन्न होना [illegible] [illegible] बलहीन होना 5 ओझल होना, [illegible] — प्रेर० 1 मुर्झाना, कुम्हलाना [illegible] 2 निर्बल या क्षीण करना [illegible] प्र 1 मुर्झाना कुम्हलाना 2 उदास या खिन्न होना 3 निढाल होना 4 मलिन या [illegible] होना।

य

य [या+ड] 1. जो चलता है या गतिमान है जाने वाला, गन्ता 2. गाड़ी 3 हवा, वायु 4 मिलाप 5 यश 6 जौ।

यकन् (नपुं०) जिगर (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, कर्म०, द्वि० व० के पश्चात् यकृत् शब्द का ही यह वैकल्पिक रूप है)।

यकृत् (नपुं०) [य सयमं करोति कृ क्विप् तुक् च] जिगर, या तद्गत प्रभावशालिता। सम० —आत्मिका तैलचोर (भौंरे के आकार का एक छोटा सा कीड़ा)। —उदरम् जिगर की वृद्धि, —कोषः जिगर का ढकने वाली झिल्ली।

यक्षः [यक्ष्यते—यक्ष्+(कर्मणि) घञ्] एक देवयोनि विशेष जो धनसम्पत्ति के देवता कुबेर के सेवक हैं तथा उसके कोष और उद्यानों की रक्षा करते हैं यक्षानमी [illegible] प्रामाणदास्मिन्ता [illegible] मेघ० ? ६६, भग० १०।२३ ११।२२ 2 एक प्रकार का भूत प्रेत 3 इन्द्र का महल 4 कुबेर —क्षी यक्ष जाति की स्त्री। सम० —अधिपः, —अधिपतिः, इन्द्रः सभा का राजा कुबेर —आवासः [illegible] —कर्दमः एक प्रकार का लेप जिसमें कपूर अगर कस्तूरी और कक्कोल समान मात्रा में डाले जाते हैं (कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार चन्दन और केसर भी इसमें सम्मिलित किये जाते हैं) (कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्दमः अमर०, कुङ्कुमागुरुकस्तूरी कर्पूर चन्दनं तथा। महासुगन्धमित्युक्तं नामतो यक्ष कर्दमः॥) —ग्रहः यक्ष या भूत प्रेत के द्वारा ग्रस्त व्यक्ति —तरुः बरगद —धूपः गुग्गल राल —रसः एक प्रकार का मादक पेय —राजः (पुं०) यक्षों के राजा कुबेर का नाम —रात्रिः दीवाली का उत्सव —वित्तः यक्ष जैसा अर्थात् जो विपुल धनराशि का स्वामी हो परन्तु व्यय कुछ न करे।

यक्षिणी [यक्ष+इनि ङीप्] 1 यक्ष जाति की स्त्री 2 कुबेर की पत्नी का नाम 3 दुर्गा की सेवा में रहने वाली परिचारिका 4 एक अप्सरा (इसको नगुण मनोरंजक वासियों से कहा जाता है)।

यक्ष्म, यक्ष्मन् (पुं०) [यक्ष्+मन् मनिन् वा] 1 फेफड़ा

का रोग, क्षयरोग 2 रोगभार्त । सम० —ग्रहः क्षयरोग का आक्रमण, —ग्रस्त (वि०) क्षयरोगी, —घ्नी अंगूर ।

यक्ष्मिन् (वि०) [यक्ष्म + इनि] जो क्षयरोग से ग्रस्त या पीड़ित है — मनु० ३।१५४ ।

यज् (भ्वा० उभ० यजति-ते, इष्ट, कर्मवा० इज्यते, इच्छा० यियक्षति-ते) 1 यज्ञ करना, याग पूर्वक पूजा करना (प्राय: 'यज्ञार्थक' शब्दों के करण० से सम्बद्ध), —यज्ञेन यज्ञमयजन्त —मनु० ३।७०, ५।५३, ६।३६, ११।४०, भट्टि० १।१९,— इसी प्रकार 'अश्वमेधेनेजे, पाकयज्ञैरजे' - आदि 2 आहुति देना (देवतापरक कर्म० तथा यज्ञीय साधन या आहुतिपरक करण० के साथ) —पशुना रुद्रं यजते, पितॄन् यजति — महा०, मनु० ४।२१, ११।११८ 3 पूजा करना सुशोभित करना सम्मान करना, आदर करना, प्रेर० (याजयति-ते) 1 यज्ञ करवाना 2 यज्ञ में सहायता देना । अ, परि, प्र यज्ञ करना आहुति देना, सम् आहुति देना पूजा करना, समयाक्षीत्सम भट्टि० १५।९९ ।

यजतिः [यज् + तिप्] 1 उन यज्ञीय अनुष्ठानों का पारिभाषिक नाम जिनके साथ 'यजति' क्रिया का प्रयोग होता है । आगे के विवरण के लिए 'जुहोति' शब्द देखो । ।

यजत्रः [यज् + अत्रन्] 1 वह गृहस्थ जो यज्ञीय अग्नि को स्थिर रखता है, अग्निहोत्री, —त्रम् अभिमन्त्रित अग्नि का स्थापन रखना ।

यजनम् [यज् + ल्युट्] 1 यज्ञ करने की क्रिया 2 यज्ञ, देवयजन सम्भवे देवि सीते उत्तर० ४ 3 यज्ञ करने का स्थान ।

यजमानः [यज् + शानच्] 1 वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है और उसका व्ययभार स्वयं वहन करता है 2 वह व्यक्ति जो अपने लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को नियुक्त करता है 3. आतिथेयी संरक्षक, धनी व्यक्ति 4 कुल का प्रधान पुरुष । सम० —शिष्यः स्वयं यज्ञ करने वाले ब्राह्मण का शिष्य — श० ४ ।

यजिः [यज् + इन्] 1 यज्ञकर्ता 2 यज्ञ करने की क्रिया 3 यज्ञ—दानमध्ययनं यजिः — मनु० १०।७९ ।

यजुस् (नपुं०) [यज् + उसि] 1 यज्ञीय प्रार्थना या मन्त्र, 2 यजुर्वेद का पाठ, यजुर्वेद के गद्यात्मक मन्त्रों का संग्रह जो यज्ञ के अवसर पर पढ़े जाय —सु० मन्त्र 3. यजुर्वेद का नाम । सम० —विद् (वि०) यज्ञीय विधि का ज्ञाता, —वेदः तीन (अथर्व वेद को सम्मिलित करके) या चार प्रधान वेदों में द्वितीय (यह यज्ञ सम्बन्धी पवित्र पाठ का गद्यात्मक संग्रह है, इसकी दो मुख्य शाखाएं हैं - तैत्तिरीय या कृष्णयजुर्वेद, तथा वाजसनेयि या शुक्लयजुर्वेद ।

यज्ञः [यज् + (भावे) नङ्] 1 याग या मख, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य—यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा, तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत. — आदि 2 पूजा का कार्य, कोई भी पवित्र या भक्ति सम्बन्धी क्रिया (प्रत्येक गृहस्थ, विशेषत: ब्राह्मण को प्रति पाँच ऐसे भक्तिपरक कृत्य प्रतिदिन करने पड़ते हैं, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ, यही पाँचों सम्मिलित रूप से 'पञ्च महा यज्ञ' कहलाते हैं, दे० 'महायज्ञ' और 'पञ्च' शब्द पृथक्-पृथक्) 3 अग्नि का नाम 4 विष्णु का नाम । सम० —अंशः यज्ञ का एक भाग, —अंशभुज् (पुं०) देवता देव- कु० ३।१४ —अगारः,—रम् एक यज्ञीय भूमि,—अङ्गम् 1 यज्ञ का एक अंग 2 कोई भी यज्ञीय आवश्यकता, यज्ञ का साधन —यज्ञाङ्गयोनित्वमवेक्ष्य यस्य—कु० १।१७, (—ग:) 1 गूलर का पेड़ 2 विष्णु का नाम, —अरि. शिव का विशेषण, —आत्मन्: देव, —ईश्वरः, —ईशः (पुं०) —ईश्वर: विष्णु का नाम, —उपकरणम् यज्ञपात्र या यज्ञ का कोई आवश्यक उपकरण,—उपवीतम् द्विजों द्वारा पहना जाने वाला यज्ञोपवीत (अब आज कल और निम्न जातियाँ भी पहनती हैं) जो बायें कन्धे के ऊपर तथा दाहिनी भुजा के नीचे पहना जाता है दे० मनु० २।६३ (मूल रूप से 'यज्ञोपवीत' उपनयन संस्कार का ही नाम है जिसमें जनेऊ पहना जाय), —कर्मन् (वि०) यज्ञकार्य में व्यस्त (नपुं०) यज्ञीय कृत्य, —कल्प (वि०, यज्ञ की प्रकृति का, या यज्ञ के समान, —कीलक: वह खूँटा जिसके साथ यज्ञीय बलि-पशु बाँधा जाता है —कुण्डम् हवनकुण्ड, अग्निकुण्ड, —कृत् (वि०) यज्ञानुष्ठान करने वाला, (पुं०) 1 विष्णु का नाम 2 यज्ञ कराने वाला पुरोहित,—क्रतुः 1 यज्ञीय कृत्य 2 पूर्णकृत्य या मुख्य अनुष्ठान 3 विष्णु का विशेषण,—घ्न: वह राक्षस जो यज्ञों में विघ्न डालता है, —दक्षिणा यज्ञीय उपहार, यज्ञानुष्ठान कराने वाले पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा, —दीक्षा 1 किसी यज्ञीय कृत्य में प्रवेश या उपक्रम 2 यज्ञ का अनुष्ठान मनु० ५।१६९,—द्रव्यम् यज्ञ के लिए प्रयुक्त होने वाली कोई वस्तु (उदा० यज्ञ पात्र आदि), —पतिः 1 जो किसी यज्ञ की स्थापना या प्रति करता है दे० 'यजमान' 2 विष्णु का नाम, —पशुः 1 यज्ञ के लिए पशु, यज्ञीय बलि 2. घोड़ा, —पुरुषः, —फलदः विष्णु के विशेषण, —भागः 1. यज्ञ का एक अंश, यज्ञ के उपहारों में हिस्सा 2 देव, देवता, —भुज् (पुं०) देव, देवता, —भूमिः (स्त्री०) यज्ञ के लिए स्थान, यज्ञीय भूमि, —भृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण, —भोक्तृ (पुं०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण,

रसः, —रेतस् (नपुं०) सोम, —वराहः सूकरावतार में विष्णु, —वल्लिः, —ल्ली (स्त्री०) सोम की बेल या पौधा, —वाटः यज्ञ के लिए तैयार की गई या घेरी गई भूमि —वाहन विष्णु का विशेषण, —वृक्षः वट वृक्ष, —वेदिः,—दी (स्त्री०) यज्ञ की वेदी, —शरणम् यज्ञकक्ष या अस्थायी छप्पर जिसके नीचे बैठकर यज्ञ किया जाय, —शाला यज्ञ का कमरा, —शेषः, —षम् यज्ञ का अवशिष्ट—यज्ञशेष तथामृतम् मनु० ३।२८५, —श्रेष्ठा सोम का पौधा —सदस् (नपुं०) यज्ञ में उपस्थित जनसमुदाय, —संभारः यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री, —सारः विष्णु का विशेषण, —सिद्धिः (स्त्री०) यज्ञ की पूर्ति, —सूत्रम् दे० यज्ञोपवीत, —सेनः राजा द्रुपद का विशेषण,—स्थाणुः यज्ञ का खम्भा,—हन् (पुं०) —हनः शिव का विशेषण ।

यज्ञिकः [यज्ञ+ठन्] ढाक का पेड़ ।

यज्ञिय (वि०) [यज्ञाय हितं—घ] 1 यज्ञसम्बन्धी, यज्ञा-नुकूल, या यज्ञपरक 2 पुनीत, पवित्र, दिव्य 3 अर्च-नीय, पूजनीय 4 भक्त, पुण्यशील, —यः 1. देव, देवता 2 तीसरा युग द्वापर । सम० —देशः यज्ञों का देश —कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः, स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्त्वतः परः मनु० २।२३, —शाला यज्ञमण्डप ।

यज्ञीय (वि०) [यज्ञ+छ] यज्ञ संबंधी —यः गूलर का पेड़ । सम०—ब्रह्मपादपः विकङ्कत नामक पेड़ ।

यज्वन् (वि०) (स्त्री०—यज्वरी) [यज्+क्वनिप्] यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला आदि, (पुं०) 1 जो वेदविहितविधि के अनुसार यज्ञा-नुष्ठान करता है, यज्ञों का अनुष्ठाता —नीपान्वयः पार्थिव एष यज्वा रघु० ६।४६, १।४४, ३।३९, १८।११, कु० २।४६ 2 विष्णु का नाम ।

यत् (भ्वा० आ० यतते, यतित) 1 यत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, उद्योग करना (बहुधा सम्प्र० या तुमुन्नन्त के साथ) —सर्वः कल्ये वयसि यतते लब्धु-मर्थान् कुटुम्बी विक्रम० ३।१ 2. प्रयास करना, उत्सुक या आतुर होना, उत्कण्ठित होना—या न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः सारतरागमना यतमानम् शि० ४।४५, रघु० ९।७ 3 हाथ पैर मारना, निरन्तर उद्योग करना, श्रम करना 4. सावधानी बरतना, खबरदारी रहना—भग० २।६० —प्रेर० (यातयति-ते) 1. लौटाना वापिस करना, बदला देना, हरजाना देना, फेर देना 2. घृणा करना, निन्दा करना 3. प्रोत्साहन देना, प्राण फूंकना, सजीव बनाना 4 सताना, दुःखी करना, परेशान करना 5 तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, आ—, 1. प्रयास करना कोशिश करना 2. भरोसे पर रहना, निर्भर रहना, (अधि० के साथ)—अथ त्वय्यायत्तामहे महावी० १।४१, निस् —, प्रेर० 1 लौटाना, फेर देना —निर्यातय हस्तन्यासम्— विक्रम० ५ मनु० ११।१६४ 2 बदला देना, वापिस करना, प्रतिक्रिया करना —रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै रामा०, प्र—, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, प्रति—, चेष्टा करना (प्रेर०) फेर देना, वापिस करना दे० निस् पूर्वक यत्, सम्—, संघर्ष करना, तर्क वितर्क करना —देवासुरा वा एषु लोकेषु समयेतिरे ।

यत (भू० क० कृ०) [यम्+क्त] 1 प्रतिबद्ध, दमन किया हुआ, नियंत्रित, पराभूत 2 सीमित, संयत, मर्यादित —यत् महावत द्वारा हाथी को एड़ लगाना । सम० —आत्मन् (वि०) स्वयं अपने को अनुशासित करने वाला, स्वसंयत, जितेन्द्रिय, (नपुं०) मनात्मन राजयितुं यतस्य कु० ३।१६, १।५ —आहार (वि०) मिताहारी, संयमी —इन्द्रिय (वि०) जितेन्द्रिय पवित्र, धर्मात्मा, —चित्त, —मनस्, —मानस (वि०) मन को वश में रखने वाला —वाच् (वि०) मितभाषी, मौनी, मौनावलंबी दे० 'वाचंयम' —व्रत (वि०) 1 प्रतिज्ञा का पालन करने वाला अपने व्रत को पूरा करने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

यतनम् [यत्+ल्युट्] चेष्टा, प्रयत्न ।

यतम (वि०) (नपुं० —मत्) [यद्+डतमच्] जो या कौन सा (बहुतों में से) ।

यतर (वि०) (नपुं० —रत्) [यद्+डतरच्] जो (दो में से) ।

यतस् (अव्य०) [यद्+तसिल्] (बहुधा सम्बन्धबोधक सर्वनाम 'यद्' के अपा० के रूप में प्रयुक्त) 1 जहाँ से (व्यक्ति या वस्तु का उल्लेख करते हुए) जिस जगह से, जिस स्थान से या जिस दिशा से —यतस्त्वया ज्ञानमशेषमाप्तम् रघु० ५।४ (यत —यस्मात् जिस से) —यतश्च भयमाशङ्केत्प्राचीं तां कल्पयेद्दिशम् मनु० ७।१८९ 2 जिस कारण, जिस लिए, 3 क्योंकि, चूँकि, के कारण से, इस लिए कि —उवाच चैनं परमार्थतो हरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम् कु० ५।७५, रघु० ८।७६, प्रायः सहवर्ती 'ततः' के साथ, रघु० १६।७४ 4 जिस समय से लेकर, जब से कि 5 ताकि, जिससे कि (यतस्ततः 1 जिस किसी जगह से, किसी भी दिशा से 2. चाहे किसी व्यक्ति से 3 चाहे जहाँ, चारों ओर, किसी भी दिशा में, मनु० ४।१५, यतो यतः 1. चाहे जिस जगह से 2. चाहे जिस से, किसी भी व्यक्ति से 3 चाहे जहाँ, चाहे जिस दिशा में —यतो यतः षट्चरणोऽभिवर्तते —श० १।२४, भग० ६।२६; यतः प्रभृति जिस समय

से लेकर)। सम० —ज (वि०) जिससे उत्पन्न, —मूल (वि०) जिसमें जन्म लेने वाला, या जिसमें उदित।

यति (सर्व० वि०) [यद् परिमाणे अति] (रूप केवल बहुवचन में, कर्तृ० और कर्म० यति) जितने, जितनी बार, जितने कि।

यतिः (स्त्री०) [यम् + क्तिन्] 1 प्रतिबंध, रोक नियंत्रण 2 रोकना, ठहरना, आराम 3 दिग्दर्शन 4 संगीत में विराम 5 (छन्द० में) विश्राम यतिर्जिह्वेष्ट-विश्रामस्थानं कविभिरुच्यते सा विच्छेदविरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया छ० १, सर्वेषामपि यतीनां ... 6 विधवा, — ति स —न्नी जिसने संसार का त्याग किया है और अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है यथा ज्ञान विना हस्ती तथा ज्ञानं विना यतिः भामि० १।११९।

यतित (वि०) [यत् + क्त] चेष्टा की गई, प्रयत्न किया गया, कोशिश की गई, प्रयास किया गया।

यतिन् (पुं०) [यत + इनि] संन्यासी।

यतिनी [यतिन् + ङीप्] विधवा।

यत्नः [यत् (भावे) नङ्] 1 प्रयत्न, चेष्टा, प्रयास, कोशिश, उद्योग यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः हि० प्र० ३१ 2 मेहनत, गंभीर मनोयोग, अध्यवसाय 3 तत्परता, उत्साह, सावधानता, जागरूकता—महीक्षितां यत्नपरा देवदासी रघु० २।५६, प्रतिपालयमायीयतां यत्नः —श० १ 4 पीड़ा, कष्ट, श्रम, कठिनाई सेवा ... उत्पाद्य ... यत्नः कु० १।३५ ७।६६, रघु० ७।१४।

यत्र (अव्य०) [यद् + त्रल्] 1 जहाँ जिस स्थान में, जिधर सैव सा (स्त्री) चलति यत्र हि चित्तम् ... ५।५७, कु० १।७, १० 2 जब, जैसा कि यत्र काले में 3 चूँकि क्योंकि जब से जहाँ (कभी कभी जहाँ कहीं यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः तर्क० यत्र यत्र चाहे जिस स्थान में, सर्वत्र, यत्रकुत्र, यत्रक्वचन क्वापि 1 जहाँ कहीं, चाहे जिस जगह 2 जब कभी।

यत्रत्य (वि०) [यत्र + त्यप्] जिस स्थान का, जिस स्थान पर रहता हुआ।

यथा (अव्य०) [यद् प्रकारे थाल्] 1 स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) कथितरीति के अनुसार यथाज्ञापयति महाराजः "जैसा कि महाराज आज्ञा करते हैं" (ख) नामतः, जैसा कि आगे आता है तद्यथानुश्रूयते पं० १, उत्तर० २।४ (ग) जैसा कि, की भाँति (तुलनात्मक तथा समानता के चिह्न का सूचक) आलोकय वत्सरत्यं मुखे यथा श्री —उत्तर० ४।८, कु० ४।३४, प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीन-पतिका यथा (न मुञ्चति) काव्य० १० (घ) जैसा कि उदाहरणस्वरूप —दृष्टान्ततः यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः यथा महानसे तर्क० पञ्च० १।३८८ (ङ) प्रत्यक्ष उक्ति का आरंभ करने के समय प्रयुक्त, अन्त में चाहे इति हो या न हो अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमा-भोगस्तपोवनस्येति—श० १ विदितं खलु ते यथा स्मर क्षणमप्युत्सहते न मां विना कु० ४।३६ (स्त्री०) जिससे कि इसलिए कि ... यथा ... रघु० ... 2 तथा के सहसंबन्ध में प्रयुक्त होकर इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) जैसा, वैसा (इस अवस्था में तथा के स्थान में एवं और तद्वत् भी बहुधा प्रयुक्त होते हैं) यथा वृक्षस्तथा फलम् ... (इस अवस्था में संबंध की समानता को अधिक आश्चर्यजनक और प्रभावशाली बनाने के लिए एव शब्द यथा के साथ अथवा दोनों के साथ जोड़ दिया जाता है) यथैव ... सर्वैव ... —उत्तर० ... न तथा ... (या ... यथा ... (जितना-जितना जैसा कि) —कु० ५।३० उत्तर० २।६ विक्रम० ४।३३ इस अर्थ में 'तथा' का बहुधा लोप कर दिया जाता है तब उस अवस्था में 'यथा' का अर्थ उपर्युक्त (क) में दिया हुआ है, (ख) ताकि जिससे कि (यहाँ 'यथा' 'जिससे' और 'तथा' 'कि' को सूचित करता है) —यथा बन्धुजनशोच्या न भवति ... निर्वाहय श० ४ तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यसे जनैः का० १०१ तस्मिन् ... यथा नाम सांयात्रिकास्तथा-हाम रघु० १।७२, ३६, ३।६६ १९।६८, (ग) क्योंकि इसलिए, क्योंकि, अतः यथा इमे ... र्गणा ... तर्कयामि आदि मा० ८ कभी-कभी 'तथा' का लोप कर दिया जाता है—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम् सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः —मेघ० ९ (घ) यदि —तो, इतने विश्वास से कि, बड़े निश्चय से (उक्ति और अनुरोध का दृढ़ रूप) वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे तथा विश्वंभरे देवि मामन्तर्धातुमर्हसि रघु० १५।८१, यथा यथा—तथा तथा—जितना अधिक ... उतना ही ... जितना कम ... उतना ही यथायथा यौवनमति-चक्राम तथा तथावर्धतास्य संतापः —का० ५९, मनु० ८।२८६ १२।७४ यथा-तथा किसी रीति से किसी भी ढंग से यथाकथंचित् किसी न किसी प्रकार। (विशे० अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'यथा' का प्राय अनुवाद किया जाता है —के अनुसार, के अनुरूप, तदनुसार, तदनुरूप, के अनुपात से, अधिक न होकर, दे० समस्त शब्द नीचे, —अंशम्, —अंशतः

(अव्य०) ठीक-ठीक अनुपातनुरूप में, **अधिकारम्** (अव्य०) अधिकार या प्रमाण के अनुसार, **अधीत** (वि०) जैसा पढ़ा हुआ या अध्ययन किया हुआ है, मूलपाठ के समनुरूप,—**अनुपूर्वम्—अनुपूर्व्यम्**, **अनुपूर्व्या** (अव्य०) नियमित क्रम या परम्परा में, क्रमशः, यथाक्रम, **अनुभूतम्** (अव्य०) 1 अनुभव के अनुसार 2. पूर्वानुभव के अनुरूप,—**अनुरूपम्** (अव्य०) यथार्थ समनुरूपता में, उचित रूप से, **अभिप्रेत** **अभिमत**, **अभिलषित**, **अभीष्ट** (वि०) जैसा कि चाहा था, जैसा कि इरादा था या इच्छा की थी, इच्छा के अनुकूल **अर्थ** (वि०) 1 सचाई के अनुरूप, सत्य, वास्तविक, सही सोऽयेति वाभान्य यथार्थभाषी रघु० १४।४८ इसी प्रकार 'यथार्थानुभव' (सही या शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान) और 'यथार्थवक्ता' 2 सत्य अर्थ के समनुरूप, अर्थ के अनुसार सही ठीक, उपयुक्त सार्थक कृतिर्वामिन्नव नामारं (अर्थात् शत्रुघ्न) यथार्थमरिनिग्रहात् रघु० १५।६ यदि मत्ता शिशुपाल तां यथार्थां शि० १६।८५, कि० ८।२९ कु० १।१६ 3 योग्य, उपयुक्त (**र्थम्** **अर्थेन**) सत्यतापूर्वक, सही, उचित प्रकार से, **अक्षर** (वि०) सार्थक, अक्षरश सत्य कि० १।१, **नामन्** (वि०) जिसका नाम अर्थ की दृष्टि से सही है या पूर्णत सार्थक है (जिसके कार्य नाम के अनुरूप हैं) भुवि तेऽपि यथार्थनाम्न सिद्धि न मन्दा मालवि० ४, परन्तपो नाम यथार्थनामा रघु० ६।२१, **वर्ण** गुप्तचर ('यथार्हवर्ण के स्थान पर), **अर्ह** (वि०) 1. गुणों के अनुसार अधिकारी 2 समुचित, उपयुक्त न्यायोचित, **वर्णः** गुप्तचर, दूत **अर्हम्**, **अर्हतः** (अव्य०) गुण या योग्यता के अनुरूप—रघु० १६। ४०, **अर्हणम्** (अव्य०) 1 औचित्य के अनुसार 2. गुण या योग्यता के अनुरूप,— **अवकाशम्** (अव्य०) 1 कक्ष या स्थान के अनुसार 2 जैसा कि अवसर हो, अवसरानुकूल, अवकाशानुकूल, औचित्यानुकूल 3 ठीक स्थान पर प्राक्पञ्चमूर्ध्न्युपरि यथावकाशं निनाय —रघु० ६।१४, **अवस्थम्** (अव्य०) दशा या परिस्थिति के अनुकूल, **आख्यात** (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पूर्वोल्लिखित,—**आख्यातम्** (अव्य०) जैसा कि पहले बतलाया गया है, **आगत** (वि०) मूर्ख, जड़, (अव्य० **तम्**) जैसा कि कोई आया, उसी रीति से जैसे कि कोई आया यथागत मातलिसारथिर्ययौ रघु० ३।६७,—**आचारम्** अव्य० प्रथा के अनुसार, जैसा कि प्रचलन है, **आम्नातम्**, **आम्नायम्** (अव्य०) जैसा कि वेदों में विहित है **आरम्भम्** (अव्य०) आरम्भ के अनुसार, नियमित क्रम या अनुक्रम में, **आवासम्** (अव्य०) अपने रहने

के अनुसार, प्रत्येक अपने अपने निवास के अनुसार, **आशयम्** (अव्य०) 1 इच्छा या आशय के अनुसार 2 करार के अनुसार, **आश्रमम्** (अव्य०) आश्रम या किसी व्यक्ति के धार्मिक जीवन के विशिष्ट के अनुसार, **इच्छा**, **इष्ट**, **ईप्सित** (वि०) इच्छा या कामना के अनुसार, अपनी रुचि के अनुकूल, यथेष्ट, जैसा कि चाहा गया हो या कामना की गई हो, (अव्य० **च्छम्**, **ष्टम्**, **तम्**) 1 इच्छा या कामना के अनुसार, इच्छा या मन के अनुकूल रघु० ४।५१ 2 जितनी आवश्यकता हो, मन भर कर यथेष्ट भुङ्क्ते मासम् चौर० ३ **ईक्षितम्** (अव्य०) जैसा कि स्वयं देखा हो जैसा कि स्वयं प्रत्यक्ष किया हो, **उक्त** **उदित** (वि०) जैसा कि ऊपर कहा गया है, पूर्वोक्त उपर्युल्लिखित यथोक्ता [illegible] [illegible] यथोक्तव्यापारा श० [illegible] [illegible] **उचित** (वि०) उपयुक्त, उचित [illegible] [illegible] (अव्य० **तम्**) [illegible] उपयुक्त रूप से, उचित रूप से **उत्तरम्** (अव्य०) नियमित क्रम या [illegible] क्रमश [illegible] यथोत्तरम् मा० [illegible] [illegible] **उत्साहम्** (अव्य०) 1 अपनी शक्ति या [illegible] के अनुसार 2 अपनी पूरी शक्ति से **उद्दिष्ट** (वि०) जैसा कि वर्णन किया गया है या [illegible] है, (**ष्टम्**) या **उद्देशम्** (अव्य०) निर्दिष्ट रीति से, **उपजोषम्** (अव्य०) मन या इच्छा के अनुसार **उपदेशम्** (अव्य०) जैसा कि परामर्श या अनुदेश दिया गया है **उपयोगम्** (अव्य०) आवश्यकता या कार्य की दृष्टि से परिस्थिति के अनुसार, **काम** (वि०) इच्छा के अनुरूप (अव्य० **मम्**) रुचि के अनुकूल इच्छा के अनुसार मन भर कर यथाकामार्चितार्थिनाम् रघु० १।६, [illegible], **कालम्** (वि०) समय पर घटित, **कालः** ठीक या सही समय उचित समय रघु० १।६ (अव्य०-**लम्**) ठीक समय पर समयानुकूल, मौसम के अनुसार —[illegible] यथाकालप्रबोधिनाम् रघु० १।६, **कृत** (वि०) जैसा कि मान लिया गया है किसी नियम या प्रथा के अनुसार किया गया, प्रथानुकूल मनु० ८।१८३ **क्रमम्**, **क्रमेण** (अव्य०) ठीक क्रम या परम्परा से नियमित क्रम से, सही रूप में, उचित रीति से - रघु० ३।१०, ५।२३, **क्षमम्** (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार जितना सम्भव हो, **ज्ञान** (वि०) पूर्ण जानकारी सहित, **ज्ञानम्** (अव्य०) जहाँ तक अधिक से अधिक जानकारी या बुद्धि के अनुसार, **ज्येष्ठम्** (अव्य०) पद के अनुसार, वरिष्ठता के अनुसार, -**तथ** (वि०) 1 सत्य, सही 2. परिशुद्ध यथा, (—**थम्**) किसी वस्तु के विवरण या

विशेषताओं का आख्यान, विवरण सूचक या सूक्ष्म कथन, (अव्य० -थम्) 1. यथार्थतः, सूक्ष्मतया 2. सही तौर पर, उचित रूप से, जैसा कि वस्तुतः बात हो, —दिश्,—दिशम् (अव्य०) सब दिशाओं में,- निर्दिष्ट (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है, जैसा कि ऊपर विशेषता बता दी गई है—यथानिर्दिष्टव्यापारा सखी —आदि,—न्यायम् (अव्य०) न्यायतः, सही रूप से, उचित रीति से— मनु० १।१, पूर्वम् (अव्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अवसरों पर था, —पूर्व (वि०), पूर्वक (वि०) जैसा कि पहले था, पूर्ववर्ती - रघु० १२।४८, (—कम्)—पूर्वकम् (अव्य०) 1 जैसा कि पहले था -मनु० ११।१८७ 2. क्रम या परंपरा में, क्रमशः —एते मान्या यथापूर्वम् -याज्ञ० १।३५, प्रदेशम् (अव्य०) 1 उचित या उपयुक्त स्थान में -यथाप्रदेशं विनिवेशितेन- कु० १।४९, आसञ्जयामास यथाप्रदेशं कण्ठे गुणम् —रघु० ६।८३, ७।३४ 2 विधि या निदेश के अनुसार, —प्रधानम्, प्रधानतः (अव्य०) पद या स्थिति के अनुकूल, पूर्ववर्तिता के अनुसार —आलोकमार्गेण सुरानशेषान् संभावयामास यथाप्रधानम् कु० ७।४६, -प्राणम् (अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, अपनी पूरी शक्ति से, प्राप्त (वि०) परिस्थितियों के अनुरूप, - प्रार्थितम् (अव्य०) प्रार्थना के अनुकूल,- बलम् (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के साथ, अपनी ताकत से, - भागम्, भागशः (अव्य०) 1 प्रत्येक के भाग के अनुसार, ठीक अनुपात से 2. प्रत्येक अपने क्रमिक स्थान पर—यथाभागमवस्थिता मनु० १।११ 3 ठीक स्थान पर यथाभागमवस्थितेऽपि रघु० ६।१९, —भूतम् (अव्य०) जो कुछ हो चुका उसके अनुसार, सचाई के अनुसार, सत्यतः, यथार्थतः,—मुखीन (वि०) ठीक सामने देखने वाला (सब० के साथ) (मृगः) यथामुखीनः सीतायाः पुप्लुवे बहु लोभयन् भट्टि० ५।४८, यथम् (अव्य०) 1. यथा योग्य, जैसा कि योग्य है, यथोचित कि० ८।२ 2. नियमित क्रम में, पृथक् पृथक् एक एक करके शीकरव्यो मुक्ताफली विप्रकीर्णा यथायथम् सा० द० ३३७ —युक्तम्, -योगम् (अव्य०) परिस्थितियों के अनुकूल, यथायोग्य, उपयुक्त रूप से, योग्य (वि०) उपयुक्त, योग्य, उचित, सही,—रुचम्, रुचि (अव्य०) अपनी पसन्द या रुचि के अनुकूल, रूपम् (अव्य०) 1 रूप या दर्शन के अनुसार 2 ठीक-ठीक, यथोचित, यथायोग्य, वस्तु (अव्य०) जैसे कि तथ्य है, यथार्थतः, विशुद्ध रूप से, सचमुच, विधि (अव्य०) नियम या विधि के अनुसार, ठीक ठीक, यथोचित यथाविधिहुताग्नीनाम् रघु० १।६, नमस्कारोऽयमप्रीत्या मैथिलेयौ यथाविधि—१५।३१, ३।७०,—विभवम् (अव्य०) अपनी आय के अनुपात से, अपने साधनों के अनुरूप,—वृत्त (वि०) जैसा कि हो चुका है, किया गया है, (—त्तम्) वास्तविक तथ्य, किसी घटना की परिस्थितियाँ या विवरण,—शक्ति, - शक्त्या (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के अनुसार, जहाँ तक संभव हो, —शास्त्रम् (अव्य०) धर्मशास्त्रों के अनुसार जैसा कि धर्मशास्त्रों में विहित है मनु० ६।८८, श्रुतम् (अव्य०) 1 जैसा कि सुना है, या बताया गया है 2 (यथाश्रुति) वैदिक विधि के अनुसार, संख्यम् अलंकार शास्त्र में एक अलंकार यथासंख्य क्रमेणैव क्रमिकाणां समन्वय —काव्य० १० उदा० शत्रुं मित्रं विपत्तिं च जय रञ्जय भञ्जय चन्द्रा० ५।१०७, (—ख्यम्), संख्येन (अव्य०) संख्या के अनुसार, क्रमशः, संख्या के सम्बन्ध याज्ञ० १।२१,—समयम् (अव्य०) 1 उचित समय पर करार के अनुसार, सर्वसम्मत वचन के अनुसार, संभव (वि०) संभव, जो हो सके, सुखम् (अव्य०) 1. मन या इच्छा के अनुसार 2. आराम से, सुखपूर्वक, इच्छानुकूल, जिससे सुख हो, —अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते संवाहयामि चरणावुत पद्मताम्रौ— श० ३।२२, रघु० ८।४८, ४।८३, स्थानं सही और उचित स्थान, (अव्य० —नम्) उचित स्थान पर, ठीक ठीक, स्थित (वि०) 1. वास्तविक तथ्य या परिस्थितियों के अनुकूल, जैसी कि स्थिति हो भट्टि० ८।८ 2 यथार्थ, उचित रूप से,—स्वम् (अव्य०) 1. अपने अपने क्रम से, क्रमशः अध्यासते चीरभृतो यथास्वम् रघु० १३।२२, कि० १४।४३ 2. वैयक्तिक रूप से रघु० १७।६५, 3 ठीक ठीक, यथोचित, सही रूप से।

यथावत् (अव्य०) [यथा+वति] 1. ठीक ठीक, ज्यों का त्यों, यथोचित, सही रूप से, प्रायः विशेषण के बल के साथ अध्यापिपद् गाधिसुतो यथावत्— भट्टि० २।२१, निर्वर्तयामास यथावदाहुः— रघु० ३।२८ 2. विधि या नियम के अनुसार, जैसा कि नियमों द्वारा विहित है,—ततो यथावद् विहिताध्वराय - रघु० ५।१९, मनु० ६।१, ८।२१४।

यद् (सर्व० वि०) [यज्+अदि, डित्] (कर्तृ० ए० व०, पु० यः, स्त्री० या, नपुं० यत् द्) सम्बन्धबोधक सर्वनाम जो जौन सा, जो कुछ (क) इसका उपयुक्त सहसम्बन्धी 'तद्' है, - यस्य बुद्धिर्बलं तस्य, परन्तु कभी-कभी 'तद्' के स्थान पर इदम्, अदस् या एतद् को भी प्रयुक्त किया जाता है, कभी कभी 'यद्' शब्द अकेला ही प्रयुक्त होता है, तथा उसके सहसम्बन्धी सर्वनाम का ज्ञान प्रकरण से ही कर लिया जाता है, दोनों सम्बन्ध-

बोधक सर्वनाम बहुधा एक ही वाक्य में प्रयुक्त किये जाते हैं यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् (ख) जब इस शब्द की आवृत्ति कर दी जाती है तो इसका अर्थ होता है 'समष्टि' तथा इस शब्द का अनुवाद होता है 'जो कोई' 'जो कुछ', इस अवस्था में सह-सबंधी सर्वनाम 'तद्' की भी आवृत्ति की जाती है—यो यः शस्त्रं बिभर्ति स्वभुजगुरुबलः पाण्डवीनां चमूनाम् ... क्रोधान्धस्तस्य तस्य स्वयमिह जगतामन्तकस्यान्तकोऽहम् —वेणी० ३।३० (ग) जब 'यद्' का किसी प्रश्नवाचक सर्वनाम या उससे व्युत्पन्न किसी और शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है, साथ में निपात 'चिद्' 'चन' या 'अपि' लगे हों या न लगे हों तो इसका अर्थ होता है 'कुछ भी' 'चाहे जो कोई' 'कोई' येन केन प्रकारेण जिस किसी प्रकार से, किसी न किसी प्रकार से, यत्र कुत्रापि या का वा या कश्चन आदि यत्किञ्चिदेतत् यह तो केवल तुच्छ बात है। यानि कानि च मित्राणि आदि (अव्य०) अव्यय के रूप में 'यद्' नाना प्रकार से प्रयुक्त होता है 1 किसी प्रत्यक्ष या आश्रित वाक्य को आरम्भ करने में अन्त में चाहे 'इति' हो या न हो तथ्यो यत्प्रवादो वत्सवन्तसपदमनुबध्नातीति का० ७३—तस्य कदाचित्किन्नता समुत्पन्ना यदर्थोत्पत्त्युपायाश्चिन्तनीया कर्तव्याश्च—पञ्च० १ 2 क्योंकि चूँकि प्रियमाचरितं लते त्वया मे ... यदियं पुनरप्यपाङ्गनेत्रा परिकृतार्धमुखी मयाद्य दृष्टा विक्रम० १।१७ या किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत् —मुद्रा० २।१८ रघु० १।२७, ८७ इस अर्थ में यद् के पश्चात् इसका सहसम्बन्धी तद् या तत आता है, दे० नै० २२।४६। सम० —अपि (अव्य०) यद्यपि, अगर्चे वृक्ष वत्सा यदपि भवान् —मेघ० २७ —अर्थम्,—अर्थे (अव्य०) 1 जिस लिए, जिस कारण, जिस वास्ते, जिस हेतु यत्सत्यं... यदर्थमस्मि हरिणा भवत्सकाशं प्रेषित श० ६, कु० ५।५२ 2 चूँकि, क्योंकि—नून दैव न शक्यं हि पुरुषेणातिवर्तितुम्, यदर्थं यत्नवानेव न लभे विप्रता विभो—महा०, —कारणम्,—कारणात् (अव्य०) 1 जिस लिए, जिस कारण 2 चूँकि, क्योंकि,—कृते (अव्य०) जिस लिए, जिस वास्ते, जिस पुरुष या वस्तु के लिए,—भविष्यः भाग्यवादी (जो कहता है 'जो होना है वह होगा') —पंच० १।३१८, —वा (अव्य०) अथवा, या,—नैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः—भग० २।६ (भाष्यकार बहुधा इस शब्द को विकल्पार्थ बतलाते समय प्रयुक्त करते हैं), —वृत्तम् साहसिकता, —सत्यम् (अव्य०) निश्चय ही, सचाई तो यह है कि, वस्तुत सत्यमूच —अमङ्गलाशंसया वो वचनस्य यत्सत्यम् कम्पितमिव मे हृदयम्—वेणी० १, मुद्रा० १, पुष्प० ४।

यदा (अव्य०) [यद्काले दाच्] 1 जब, उस समय जब कि यदायदा जब कभी, यदैवतदैव उसी समय, ज्योंही, यदाप्रभृति तदाप्रभृति जब से लेकर तब से लेकर 2. यदि पत्र नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्—भर्तृ० २।९३ 3 जब कि, चूँकि, यतः।

यदि (अव्य०) [यद्+णिच्+इन्, णिलोप] 1 अगर, जो 'दशासूचक, और इस अर्थ में प्राय विधिलिङ् के साथ प्रयोग, परन्तु कभी-कभी भविष्यत्काल अथवा वर्तमानकाल के साथ भी, प्राय इसके पश्चात् 'तर्हि' और कभी कभी 'तत' 'तदा, तत् या अत्र का प्रयोग किया जाता है। पार्थैस्तपोभिरथवाभिमतं मदीयं कृत्य घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात् —मा० १।९, वदसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमति घोरम् गीत० १०, यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र (कस्तर्हि) दोष हि० प्र० ३१ 2 चाहे अगर यद प्रदोष स्फुरदम्बुधारकं विभावरी यद्यरुणाय कल्पते कु० ५।४० 3 बशर्ते कि अब कि 4 यदि कदाचित शायद यदि तावदेव क्रियता शायद आप ... पूर्व स्पृष्टं यदि किल भवेदङ्गमेभिस्तवेति मेघ० १०३ माल० ३।१०८ (यद्यपि) हालाँकि, अगर्चे —शि० १६।८२ भग० १।३८ ग० १।३१ यदि वा या यद्वा अथेम यदि वा नो जयेयु भग० २।६ भर्तृ० २।८३ या शायद, कदाचित्, भले ही प्राय निश्चयवाचक सर्वनाम से भी आवश्यकतानुसार आशय अभिव्यक्त कर दिया जाता है उत्तर० १।१२, ६।५।

यदु [यज्+उ पृषो० जस्य द] एक प्राचीन राजा का नाम ययाति और देवयानी का ज्येष्ठ पुत्र यादवों का वंश प्रवर्तक। सम० —कुलोद्वह,—नन्दन,—श्रेष्ठ कृष्ण का विशेषण।

यदृच्छा [यद्+ऋच्छ+अङ+टाप्] 1 मनपसन्द करना, स्वेच्छा, (कार्य करने की) स्वतन्त्रता 2 संयोग, घटना, इस अर्थ में प्राय करण० एक व० में प्रयोग होता है और 'घटनावश', 'संयोगवश' शब्दों से अनुवाद किया जाता है—किरातविमुखं यदृच्छयाऽऽगतम्— का०, 'देखने का संयोग हुआ', आदि—अभिष्टवेनुगम्य यदृच्छयाऽऽगता सुतकण्ठा यदुयोश नन्दिनी रघु० १।८२, विक्रम० १।१०, कु० १।५४। सम० —अभिज्ञ दैविक अथवा स्वयंसेवक साक्षी, —संवाद 1 अकस्मात् वार्तालाप 2. स्वतन्त्र अथवा संयोगवश मिलन, घटनावश मिलाप।

यदृच्छातस् (अव्य०) [यदृच्छा+तसिल्] अकस्मात्, घटनावश, संयोग से।

यन्तृ (पुं०) [यम्+तृच्] 1. नियंत्रक, राज्यपाल, शासक 2. चालक (जैसे कि हाथी का, गाड़ी का), कोचवान सारथि—यन्त्रा गजस्याभ्यपतद्‌गजस्थ रघु० ७।३७, अथ यन्तारमादिश्य धुर्यान् विश्रामयेति स १।५४ 3. महावत, हस्ति चालक, हस्त्यारोही।

यन्त्र् (भ्वा० चुरा० उभ० यन्त्रति-ते) नियंत्रण में करना, दमन करना, रोकना, बांधना, कसना, बाध्य करना शापयन्त्रितपौलस्त्यबलात्कारकचग्रहैः. रघु० १०।४७, नि , 1 दमन करना, नियंत्रण में करना बेड़ियाँ डालना 2 कसना, बांधना, सम् , रोकना, नियंत्रण में करना, ठहराना मर्यन्त्रितो मया रथ श० १।

यन्त्रम् [यन्त्र् + अच्] 1 जो नियन्त्रण करता है, या थामता है, थूणी, खंभा, सहारा टेक जैसा कि 'मृद्यन्त्र' में (इस शब्द के नीचे उद्धरण देखिये) 2 डोरी, पट्टी कसना, कटबंध या ग्रंथि, चमड़े का तस्मा 3 शल्योपयोगी उपकरण विशेष कर कुंठा उपकरण (विप० शस्त्र) 4 कोई भी उपकरण या मशीन, यन्त्र, साधन, सामान्य उपकरण -कूपयन्त्रम्-मृच्छ० १०।५९, 'कुएँ से पानी निकालने वाली मशीन' इसी प्रकार 'तैल', जल° आदि 5 चटकनी, कुंडी, ताला 6. नियन्त्रण, बल 7 तावीज, एक रहस्यमय ज्योतिष का रेखाचित्र जो तावीज की भाँति प्रयुक्त किया जाय। सम० -उपलः चक्की, का पाट, -करण्डिका एक प्रकार का जादू का पिटारा, -कर्मकृत् (पुं०) कलाकार, शिल्पकार, -गृहम् 1. तेली का कोल्हू 2. निर्माणशाला, शिल्पगृह, -चेष्टितम् जादू का करतब, जादू-टोना, -युक्त (वि०) (द्वार) कुंडी या चटखनी जिसमें लगी हुई है, -नालम् यन्त्रमूलक कोई नली,—पुत्रकः, -पुत्रिका यन्त्रचालित गुड़िया, या पुतली जिसमें डोरी या तार आदि कोई ऐसी कल लगी हो जिससे कि पुतली नाचे, -प्रवाहः पानी की एक कृत्रिम सरिता रघु० १६।४९,—मार्गः एक नली या पतनाला, -शरः कोई तीर या अस्त्र जो किसी यंत्र द्वारा छोड़ा जाय।

यन्त्रकः [यन्त्र् + ण्वुल्] 1 जो कल-पुर्जों से सुपरिचित हो 2. कुशल यान्त्रिक,—कम् 1. पट्टी (आयु० में) 2. खैराद

यन्त्रणम्,—णा [यन्त्र् + ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 नियन्त्रण, दमन, रोक-थाम - करकमलवल्गुरान्तरे ललितयन्त्रणाकुञ्चितेन पतति, मै० २।२ 2. निरोध, प्रतिबंध, रोक --ह्रीयन्त्रणां तत्क्षणमन्वभूवन्नन्योन्यलोलानि विलोचनानि कु०७।७५, रघु० ७।२३ 3. कसना, बांधना, —निविडपीनकुचद्वययन्त्रणा तव तराम तरामगात् प्रतिबध्नती —नै० ४।१० 4. कष्ट, व्याकुलता, निग्रह, कष्ट, पीड़ा या वेदना (जो विवशता से उत्पन्न हो)—अलमनुपचारयन्त्रणया मालवि० ४ 5. अभिरक्षा 6. पट्टी।

यन्त्रणी, यन्त्रिणी [यन्त्रण + ङीप्, यन्त्र् + णिनि + ङीप्] पत्नी की छोटी बहन, छोटी साली।

यन्त्रित (वि०) [यन्त्र + इतच्, यन्त्र् + णिनि वा] 1. (घोड़ा आदि) जो जीन व साज से सुसज्जित हो 2 पीड़ा पहुँचाने वाला, 3 जिसने तावीज बांधा हुआ हो।

यम (भ्वा० पर० यच्छति यत, इच्छा० यियंसति) 1 रोकना दमन करना नियन्त्रण करना, वश में करना दबाना, ठहराना, बन्द करना—यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञः कठ०, यतश्चितात्मन्--भग० ४।२१, ६० ५ 2 प्रदान करना, देना, अर्पण करना-प्रेर० (यमयति-ते) नियन्त्रण करना रोकना आदि, आ 1 विस्तार करना, लम्बा करना फैलाना,--धनुरायम्य सिद्धा०, श्वासमायच्छमान श० ४ (पाठान्तर) 2 ऊपर खींचना वापिस खींचना आयच्छति कूपाद्रज्जुम् सिद्धा०, बाणामुद्धनमायमीत् भट्टि० ६।१९ 3 नियन्त्रित करना थामना दबाना, (श्वास आदि) रोकना—मनु० ३।२१७, ११।१००, याज्ञ० १।२४ अपनाई लेना, (आ०) लम्बा बढ़ जाना 5 ग्रहण करना अधिकार करना, रखना—श्रियमायच्छमानाभिरुत्तमाभिरनुत्तमाम् - भट्टि० ८।१९ 6 के आने नेतृत्व करना, उद् , (प्राय आ०) 1 उठाना, ऊपर करना, उन्नत करना शस्त्र उद्यम्य—श० १, परस्य दण्ड नोद्यच्छेत् मनु० ४।१०४, रघु० ११।१७, १५।२३, भट्टि० ४।३१ 2 तैयार होना, प्रस्थान करना, आरम्भ करना, (तद्० या तुमुन्नन्त के साथ) उद्यच्छमाना गमनाय भूय --रघु० १६।२९, भट्टि० ८।४७ 3 प्रयास करना, घोर प्रयत्न करना उद्यच्छति वेदम् —सिद्धा० 4 शासन करना, प्रबन्ध करना, हकूमत करना, उप (आ०) 1 विवाह करना - भवानिमाम्. समर्पयामुपयांस्त श० ५, (मेना) आत्मानुरूपां विधिनोपयेमे कु० १।१८ रघु० १४।८७, शि० १५।२७ 2 पकड़ना, थामना, लेना, स्वीकार करना अधिकार करना अस्त्राण्युपायंसत जित्वराणि - भट्टि० १।१६, १५।२१, ८।३३ 3. प्रकट करना, संकेत करना—भट्टि० ७।१०१, नि-, 1 नियन्त्रित करना, दमन करना, रोकना, वश में करना, शासन करना—प्रकृत्या नियता स्वया —भग० ७।२०, (सुता) शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् --कु० ५।५, 'उसे हटा नहीं सका' आदि 2. दबाना, निलंबित करना, रोकना, (श्वास आदि) मनु० २।१९२ न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति मनु० १०।५९, 'न दबाता है न छुपाता

हैं' आदि 3 दान करना, देना—को न कुले नियमनानि नियच्छतीति श० ६।२४ 4. सजा देना, दण्ड देना नियन्तव्यश्च राजभि मनु० ९।२।१३ 5 विनियमित करना या निर्देशित करना 6. प्राप्त करना, अवाप्त करना—तावज्जपन्प्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति याज्ञ० ३।११५, मनु० २।९३ 7 धारण करना (प्रेर०) 1 नियंत्रित करना, वश में करना, विनियमित करना, रोकना, दण्ड देना नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः श० ५।८ 2 बाँधना, कसना शि० ७।५०, रघु० ५।७३ 3. मर्यादित करना, हलका करना, विश्राम देना कु० १।६१, विनि , दमन करना, नियमन रखना, भग० ६।२४, सम् 1 नियन्त्रित करना दमन करना, रोकना, नियमन में रखना (आ०)—भग० ६।३६, मनु० २।१०० 2 बांधना, कैद करना, बनाना, बंदी बनाना —वानर मा न सयसी भट्टि० ९।५०, मालवि० १।७, रघु० ३।२०, ४२ 3 एकत्र करना (आ) -व्रीहीन्संयच्छते—सिद्धा० 4. बन्द करना भेजना भग० ८।१२।

यमः [यम्+घञ्] 1 सयत करना, नियमित करना, दमन करना 2. नियन्त्रण, सयम 3 आत्मनियन्त्रण 4 कोई महान् नैतिक कर्तव्य या धर्मसाधना (विप० नियम)—तप्ता यमेन नियमेन तपाऽमुनैव— नै० १३।१६, यम और नियम की निम्न प्रकार से भिन्नता दर्शायी गई है—शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यम , नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् अमर०, है० कि० १०।१० पर मल्लि० भी, यमो की संख्या बहुधा दस बतलाई जाती है, परन्तु भिन्न भिन्न लेखकों ने उनके भिन्न भिन्न नाम दिये हैं -उदा० ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमकल्कता, अहिंसाऽस्तेयमाधुर्ये दमश्चेति यमा. स्मृता याज्ञ० ३।३१३, या आनृशंस्यं दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् , प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश। कभी-कभी यम केवल पाँच ही बताये जाते हैं—अहिंसा सत्यवचनं ब्रह्मचर्यमकल्कता, अस्तेयमिति पञ्चैते यमाख्यानि व्रतानि च 5 योग प्राप्ति के आठ अंगों या साधनों में पहला साधन। आठ अंग यह हैं —यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि 6 मृत्यु का देवता, मृत्यु का मूर्त रूप, यह सूर्य का पुत्र माना जाता है - यमालयमे त्वयि यमादपि दण्डधारे उत्तर० २।११ 7 यमल—यमौ सम्बद्धौ अपि यदौ च (अर्थात् नकुलसहदेवौ) कथैव नास्ति—वेणी० २।२५, यमयोश्चैव गर्भेषु जन्मतो ज्येष्ठता मता मनु० ९।१२६ 8 जोड़े में एक —मम् जोड़ा, जोड़ी। सम० अनुगः अनुचरः यम का सेवक या टहलुआ, अन्तकः 1 शिव का विशेषण 2 यम का विशेषण किङ्करः यम का सेवक, मृत्यु का दूत, कीलः विष्णु, -ज (वि०) जन्म से जुड़वा, यमल प्रसूता आवां यमजौ उत्तर० ६, दूतः 1 मृत्यु का दूत 2 कौवा, द्वितीया कार्तिक शुक्ला दूज जब बहनें अपने भाइयों का सत्कार करती हैं, भाईदूज, तु० भ्रातृद्वितीया, धानी यम का निवास स्थान नर सभागारे त्रिशति यमधानीत्रय निकाम् भर्तृ० ३।११२, भगिनी यमुना नदी, यातना मरणोपरांत पापियों को यम के द्वारा दी जाने वाली पीड़ा (कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग भीषण यातनाएं या घोर पीड़ा' प्रकट करने के लिए भी किया जाता है) राज् (पु०) यम मृत्यु का देवता, सभा यमराज का न्यायसभा, सूर्यम एक भवन जिसमें केवल दो कमरे हों, एक का मुंह पश्चिम को तथा दूसरे का उत्तर को हो।

यमकः [यम+स्वार्थे कन्] 1 प्रतिबन्ध रोक 2 यमल या जुड़वाँ 3 एक महान् नैतिक या धार्मिक कर्तव्य दे० यम,—कम् 1 दोहरी पट्टी 2 (अलं० में) एक ही श्लोक में किसी भी स्थान पर शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति परन्तु अर्थ की भिन्नता के साथ एक प्रकार की लय (इसके कई भेदों का वर्णन काव्या० ३।२।५२ में किया है) आवृत्ति वर्णसंघातगोचरां यमक विदु काव्या० १।६१, ३।१, सा० द० ६४०।

यमन (वि०) (स्त्री० —नी) [यम्+ल्युट्] सयमी दमन करने वाला, शासक आदि,—नम् 1 सयम करना, दमन करना, बाँधना 2 उतरना, थमना 3 विराम, विश्राम, नः मृत्यु का देवता यम।

यमनिका [यमन+कन्+टाप्, इत्वम्] पर्दा, ओट, तु० जवनिका।

यमल (वि०) [यम+ला+क] जोड़ला, जोड़ों में से एक, —लः दो की संख्या, —लौ (द्वि० व०) जोड़ी, —लम् —ली मिथुन, जोड़ी।

यमवत् (वि०) [यम+मतुप्, वत्वम्] जिसने अपनी वासनाओं पर सयम कर लिया है, आत्म नियंत्रित —यमवतामवतां च धुरि स्थित - रघु० ९।१।

यमसात् (अव्य०) [यम+साति] यम के हाथों में उसकी शक्ति मे, यमसात् कृ मृत्यु का सौंपना।

यमुना [यम्+उनन्+टाप्] एक प्रसिद्ध नदी का नाम (जो यम की बहन मानी जाती है)। सम०- भ्रातृ (पु०) मृत्यु का देवता यम।

ययातिः [यस्य यायोऽरिव याति सर्वत्र रम्यतीति] एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा का नाम, नहुष का पुत्र, [ययाति ने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा

दासी के रूप में देवयानी के साथ गई, क्योंकि इसने किसी समय देवयानी का अपमान किया था और उस अपमान की क्षतिपूर्ति के लिए आज शर्मिष्ठा को देवयानी की सेविका बनना पड़ा (दे० देवयानी)। परन्तु ययाति को इस दासी से प्रेम हो गया, फलतः उसने गुप्त रूप से उससे विवाह कर लिया। इस बात से खिन्न होकर देवयानी अपने पिता के पास चली गई और उनसे अपने पति के आचरण की शिकायत की। शुक्राचार्य ने ययाति को अकालिक वार्धक्य तथा अशक्तता से ग्रस्त कर दिया। ययाति ने जब बहुत अनुनय विनय किया तो प्रसन्न होकर शुक्राचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बुढ़ापे को किसी को दे सकता है यदि वह लेना स्वीकार करे। उसने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा, परन्तु सब से छोटे पुरु को छोड़कर किसी ने भी बुढ़ापा लेना स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप ययाति ने अपना बुढ़ापा पुरु को देकर उसकी जवानी ले ली। इस प्रकार इस नमूद्ध यौवन को पाकर ययाति फिर विषयवासनाओं तथा आमोद प्रमोद में व्यस्त रहने लगा। इस प्रकार का क्रम १००० वर्ष तक चला परन्तु ययाति की तृप्ति नहीं हुई। आखिरकार बड़े प्रयत्न के साथ ययाति ने इस विलासी जीवन को छोड़कर, पुरु की जवानी उसको वापस कर दी और उसे राज्य का उत्तराधिकारी बना स्वयं शेषजीवन बिताने तथा परमात्मचिन्तन करने के लिए वन को प्रस्थान किया]

ययावर:—यायावर दे०।

ययिः, यी (पुं०) [या+ई, किन्, धातोर्द्वित्वम्] 1. अश्वमेध या अन्य किसी यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा—शि० १५।९९ 2 घोड़ा।

यर्हि (अव्य०) [यद्+र्हिल्] 1 जब, जब कि जब कभी 2. क्योंकि, यतः, चूँकि, (इसका उपयुक्त सहसम्बन्धी 'तर्हि' या 'एतर्हि' है परन्तु अभिजात साहित्य में इसका विरल प्रयोग है)।

यवः [यु+अच्] 1 जौ यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयः मृच्छ० ४।१७ 2 जौ के दाने या जौ के दानों का भार 3 लम्बाई की एक माप एक अंगुल का १/६ या १/८ 4 हाथ की अंगुलियों में बना जौ के दाने का चिह्न जो धनधान्य, प्रजा, और सौभाग्य का सूचक है। सम० —**अङ्कुरः, प्ररोहः** जौ का अंकुआ या पत्ती, **आग्रयणम्** जौ की खेती का पहला फल, **क्षारः** जवाखार, शोरा, सज्जी, **शूकः**,—**शूकजः** जौ की भूसी को जला कर उसकी राख से तैयार किया गया क्षारीय नमक, सज्जी,—**सुरम्** जौ की शराब, यवमद्य।

यवनः [यु+युच्] 1. यूनान देश का निवासी, यूनान देश का वासी 2 विदेशी, जंगली —मनु० १०।४४ (आजकल इस शब्द का प्रयोग मुसलमान और यूरोपियन के लिए भी किया जाता है) 3 गाजर।

यवनानी [यवनानां लिपिः यवन+आनुक्, ङीप् च] यवनों की लिपि या लिखावट।

यवनिका, यवनी [यु+ल्युट्+ङीप्=यवनी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 यवनस्त्री यूनान देश की स्त्री या मुसलमानी, यवनी नवनीतकोमलाङ्गी—जग०, यवनीमुखपद्मानां सेहे मधुमदं न सः रघु० ४।६१, (नाटकों से ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व काल में यवन बालाएँ राजाओं की परिचारिका के रूप में नियुक्त की जाया करती थीं विशेषकर राजाओं के धनुष और तरकस को सम्भालने के लिए, उ० एष बाणासनहस्ताभिर्यवनीभिः परिवृत इत एवागच्छति प्रियवयस्यः —श० २, प्रविश्य शार्ङ्गहस्ता यवनी श० ६, प्रविश्य चापहस्ता यवनी —विक्रम० ५ आदि) 2. परदा।

यवसम् [यु+असच्] घास, चारा, चरागाहों का घास —यवसेन्धनम् पञ्च० १, याज्ञ० ३।३०, मनु० ७।७५।

यवागूः (स्त्री०) [यूयते मिश्र्यते यु+आगू] चावलों का माड़ चावलों के माड़ की कांजी या जौ आदि किसी और अन्न की कांजी यवागूर्विरलद्रवा—सुश्रु०, यवागू कल्पते यवागू महा०।

यवानिका, यवानी [दुष्टो यवो यवानी—यव+ङीप्, आनुक्, पश्चात् कन्+टाप् ह्रस्व] अजवायन।

यविष्ठ (वि०) [युवन्+इष्ठन्, यवादेश] कनिष्ठ, सबसे छोटा, -ष्ठः सबसे छोटा भाई, कनिष्ठ भ्राता।

यवीयस् (वि०) [युवन्+ईयसुन् यवादेश] छोटा, बच्चा —पुं० 1 छोटा भाई 2 शूद्र।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातो: युट् च] प्रसिद्धि, ख्याति कीर्ति, विश्रुति विस्तीर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि मनु० ७।३४, यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः—रघु० ३।४८, २।४०। सम० —**कर** (वि०) (यशस्कर) कीर्ति देने वाला यशस्वी मनु० ८।३८७, —**काम** (वि०) (यशस्काम) 1 प्रसिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक 2 उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी,—**कायम्**, शरीरम् प्रसिद्धि के रूप में शरीर, कीर्तिदेह, —यशः शरीरे भव मे दयालुः—रघु० २।५७, रघु० १।५७, भर्तृ० २।२४,—**द** (वि०) (यशोद) कीर्तिकर (दः) पारा (दा) नन्द की पत्नी और कृष्ण की पालक माता का नाम, —**धन** (वि०) (वि०) कीर्ति ही जिसका धन है, ख्याति में समृद्ध, अत्यंत विश्रुत—अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद् यशोधनानां हि यशो गरीयः —रघु० १४।३५, २।१,—**प्लक्षः**

यशरूपी ढोल,—शेष (वि०) जिसकी केवल ख्याति शेष हो, सिवाय कीर्ति के जिसका और कुछ न बचा हो, —अर्थात् मृतव्यक्ति, तु० कीर्तिशेष, (षः) मृत्यु।

यशस्य (वि०) [यशसे हितम्—यत्] 1. सम्मान या कीर्ति की ओर ले जाने वाला—मनु० २।५२ 2. विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात।

यशस्विन् (वि०) [यशस्+विनि] प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत।

यष्टिः,—ष्टी (स्त्री०) [यज्+क्तिन् नि० न सम्प्रसारणम्] 1. लकड़ी, लाठी 2. सोटा गदका गदा 3 खम्भा, स्तून, स्तम्भ 4 अड्डा—जैसा कि 'वासयष्टि' में 5 वृन्त सहारा 6. झंडे का डंडा जैसा कि 'ध्वजयष्टि' में 7 डंठल, वृन्त 8 शाखा, टहनी 'कदम्बयष्टि स्फुटकोरकेव'—उत्तर० ३।४१ इसी प्रकार 'चूतयष्टि'—कु० ६।२ सहकारयष्टि आदि 9 डोरी लड़ी (जैसे मोतियों की) हार, —विमुच्य सा हारमहार्यनिश्चया विलोलयष्टि प्रविलुप्तचन्दनम् कु० ५।८ रघु० १३।५४ 10 कोई लता 11 कोई भी पतली या सुकुमार वस्तु ('शरीर' अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों के पश्चात् समास के अन्त में प्रयोग) ... तनुयष्टि कु० ... सुकुमार ... सम०—ग्रहः गदाधारी, लाठी रखने वाला —निवासः मोर आदि पक्षियों के बैठने का अड्डा —वृक्षेशया यष्टिनिवासभङ्गात् ... रघु० १६।१४ 2 खड़े हुए डंडों पर स्थित कबूतरों का घर या छतरी —प्राण (वि०) 1 निर्बल शक्तिहीन 2 प्राणहीन।

यष्टिकः [यष्टि+कन्] टिटहरी पक्षी।

यष्टिका [यष्टिक+टाप्] 1 लाठी ... गदका 2 (एक लड़का) मोतियों का हार।

यष्टी दे० यष्टि।

यष्टृ (पुं०) [यज्+तृच्] पूजा करने वाला यजमान।

यस् (भ्वा० दिवा० पर० यसति यस्यति यस्त) प्रयास करना, कोशिश करना, परिश्रम करना। प्रेर० यासयति—ते कष्ट देना आ 1 प्रयास करना कोशिश करना चेष्टा करना मुद्रा० ३।१४ 2 थका देना थक जाना —आयस्यसि ... भट्टि० ६।६१ १५।५४, (प्रेर०) कष्ट देना सताना, पीड़ा देना प्र, प्रयास करना, कोशिश करना।

या (अदा० पर० याति, यात) 1 जाना हिलना—जुलना चलना, आगे बढ़ना,—ययौ तदीयामवलम्ब्य चाङ्गुलिम् रघु० ३।२५, अम्बरयायी ... २।१६ 2 चढ़ाई करना आक्रमण करना मनु० ७।१८३ 3 जाना प्रयाण करना, कूच करना (कर्म० या सप्र० के साथ अथवा 'प्रति' के साथ) 4 गुजर जाना, वापिस होना, विदा होना 5 नष्ट होना, ओझल होना—यातस्तवापि च विवेक भामि० १।६८, आम्यक्रमेण हि ... यान्ति मृच्छ० १।१३ 6 गुजर जाना, बीतना (समय का) —... यात तु काव्य० १० 7 टिकना 8. होना, घटित होना 9 जाना, घटना, होना (प्राय भाववाचक संज्ञा के कर्म० के साथ) 10 उत्तराधिकार समाप्त ... न त्वस्य सिद्धौ यास्यामि सर्गव्यापारमात्मना कु० २।५४ 11 मैथुनसंबंध स्थापित करना 12 प्रार्थना करना, याचना करना 13 ढूंढना, खोजना (गम् की भांति 'या' के अर्थ भी संयुक्त संज्ञा शब्द के अनुसार नाना प्रकार से बदलते रहते हैं उदा० अधो या ... चलना, अनुरूप करना, मार्ग दिखाना, अधो या डूबना अस्त या छिपना, अन्त होना क्षीण होना उदय या उदय होना नाश या नष्ट होना, सिद्धी या ... आना ... पद प्राप्त करना, पार या पार जाना, स्वामी होना, पार कर जाना, आगे बढ़ जाना, प्रकृति या फिर स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करना लघुता या हल्का होना वश या वश में होना अंधकार में आना, आकुलता या व्याकुल या निश्चिन्त होना, विपर्यास या परिवर्तित होना ... बदलना शिरसा मही या भूमि पर सिर झुकाना आदि) प्रेर० (यापयति—ते) 1 चलाना भाग जाना 2 हटाना दूर हांकना रघु० ९।३१ 3 व्यय करना (समय) बिताना —... भामि० १।७ मेघ० ८९ 4 सहारा देना पालनपोषण करना इच्छा० (यियासति) जाने की इच्छा करना, जाने का होना, अति 1 पार जाना अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना 2. आगे बढ़ना, अधि—, चले जाना आगे बढ़ना ... निकलना कृतोऽधियास्यामि ... भट्टि० ८।९०, अनु, 1 अनुसरण करना पीछे जाना (आल० में भी) अनुयास्यन्मुनि ... श० १।२३ कु० ५।१ भट्टि० २।३७ 2 ... करना बराबर करना स किलानुपयास्यति ... रघु० १।२१ ९।६, शि० ... 3 साथ चलना अनुद्यत् —, क्रमशः चलना, अप चले जाना, विदा होना वापिस होना अभि पहुंचना जाना, नजदीक होना अभिययौ स हिमाचलमुच्छ्रितम् कि० ५।१, रघु० ९।२७ 2 प्रयाण करना, आक्रमण करना —रघु० ५।३० 3 अंगीकार करना आ—, 1 आना, पहुँचना, निकट होना 2 पहुँचना, प्राप्त करना, भुगतना, किसी भी अवस्था में होना, यथा मृत्यु, नाश आदि, उप—, 1 पहुँचना निकट आना कि० ६।१६ 2. (किसी विशेष अवस्था को) प्राप्त होना—मृत्यु, अनुराग

रथम् आदि, निस् , 1 निकलना, बाहर जाना - रघु० १२।८३ 2 गुजरना, (समय) बीतना, परि - , चारों ओर घूमना चक्कर काटना, प्रदक्षिणा करना, प्र , 1 चलना, जाना—यस्मादुभुन नवरदैवत-वत्प्रयाति मृच्छ० १।२७ 2 प्रयाण करना, कूच करना, प्रति , वापिस आना लौटना रघु० १।७५, १५।१८, ८।९०, प्रत्युद् - , (आदर स्वरूप) उठकर मिलना, अभिवादन करना, सत्कार करना -मानर्घ्यां मर्घ्यमादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरि कु० ६।५०, मेघ० २२, रघु० १।४९ विनिस् , बाहर आना, निकल आना में से चले आना प्राणास्तस्या विनिर्ययुः सम् 1 चले जाना, विदा होना, मार्ग पार करना ... 2 जाना प्रविष्ट होना यथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही भग० २।२२ 3 पहुँचना।

यागः [यज् + घञ्, कुत्वम्] 1 उपहार यज्ञ आहुति 2 कोई भी अनुष्ठान जिसमें आहुतियाँ दी जाय रघु० ८।३०।

याच् (भ्वा० आ० याचते विरल प्रयोग—याचति याचित) मांगना, याचना करना, निवेदन करना प्रार्थना करना, अनुरोध करना अनुनय विनय करना (द्विकर्म० के साथ) बलिं याचते वसुधाम् सिद्धा०, पितर प्रणिपत्य ...—रघु० ८।१२, भट्टि० १४।१०५ (उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई महान् परिवर्तन नहीं होता)।

याचकः (स्त्री०—की) [याच् + ण्वुल्] भिक्षुक, भिखारी, आवेदक—तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचक—सुभा०।

याचनम्, ना [याच् + ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 मांगना याचना करना, निवेदन करना 2 प्रार्थना अनुरोध आवेदन याचना मानभङ्गाय, वध्यतामभयप्रार्थना-ञ्जलिः रघु० ११।७८।

याचनकः [याचन + कन्] भिखारी अभियोक्ता, आवेदक।

याचिष्णु (वि०) [याच् + इष्णुच्] भीख मांगने पर उतारू याचनाशील मांगने के स्वभाव वाला।

याचित (भू० क० कृ०) [याच् + क्त] मांगा गया, निवेदन किया गया, याचना किया गया अनुरोध किया गया प्रार्थना की गई।

याचितकम् [याचित + कन्] भिक्षा में प्राप्त वस्तु उधार ली हुई कोई वस्तु।

याच्ञा [याच् + नङ् + टाप्] 1 मांगना, याचना करना 2 भिखारीपन 3 प्रार्थना, निवेदन अनुरोध—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६।

याजकः [यज् + णिच् + ण्वुल्] 1 यज्ञ कराने वाला, यज्ञ कराने वाला पुरोहित 2 राजकीय हाथी 3 मदोन्मत्त हाथी।

याजनम् [यज् + णिच् + ल्युट्] यज्ञ का सञ्चालन या अनुष्ठान कराने की क्रिया मनु० ३।६५, १।८८।

याज्ञसेनी [यज्ञसेन + अण् + ङीप्] द्रौपदी का पितृपरक नाम।

याज्ञिक (वि०) (स्त्री०—की) [यज्ञाय हितं यज्ञः प्रयोजन-मस्य वा ठक्] यज्ञसंबंधी, —कः यज्ञ कराने वाला, या यज्ञ करने वाला, या यज्ञ कराने वाला पुरोहित।

याज्य (वि०) [यज् + ण्यत्] 1 याग करने के योग्य 2 यज्ञ संबंधी 3 जिसके लिये यज्ञ किया जाय 4 शास्त्र द्वारा जो यज्ञ करने का अधिकारी माना हुं —ज्यः यज्ञकर्ता यज्ञसंस्थापक, —ज्यम् उपहार या दक्षिणा जो यज्ञ कराने के उपलक्ष्य में प्राप्त हो।

यात (भू० क० कृ०) [या + क्त] 1 गया हुआ, प्रयात, चला हुआ 2 गुजरा हुआ विसर्जित, दूर गया हुआ (दे० या), —तम् 1 चाल, गति 2 प्रयाण 3 भूतकाल। सम० —याम, —यामन् (वि०) 1 बासी, इस्तेमाल किया हुआ विकृत, परित्यक्त, जो निरर्थक हो गया है अयातयाम यद्य० दश० 2 कच्चा, अधपका (भोजन आदि) यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्—भग० १७।१० 3 जीर्ण, थका हुआ, घिसा हुआ।

यातनम् [यत् + णिच् + ल्युट्] 1 प्रतिकार बदला, प्रतिशोध प्रतिहिंसा जैसा कि 'वैरयातन' में 2 प्रतिहिंसा, वैरयातन, —ना 1. प्रतिशोध क्षतिपूर्ति, बदला 2 कष्ट, संपीडन, वेदना 3 यम के द्वारा पापियों को दी गई यातना, नरक की यन्त्रणा (ब० व०)।

यातुः [या + तुन्] 1 यात्री बटोही 2 हवा 3 समय, —पु०, नपुं० भूतप्रेत, पिशाच राक्षस। सम० —धानः भूत प्रेत पिशाच भट्टि० २।३१, रघु० १२।४५।

यातृ (स्त्री०) [यत् + तृच्, वृद्धिश्च] जिठानी या देवरानी।

यात्रा [या + ष्ट्रन् + टाप्] 1 जाना, गति सफर, रत्ना० ३।११ रघु० १८।१६ 2 सेना का प्रयाण चढ़ाई, आक्रमण मार्गशीर्षे शुभे मासि यायाद्यात्रां महीपति मनु० ७।१८२, पंच० ३।३७ रघु० १३।५६ 3 तीर्थाटन यथा तीर्थयात्रा 4 तीर्थ यात्रियों का समूह 5 उत्सव, पर्व किसी उत्सव या संस्कार का अवसर कालप्रियानाथस्य यात्राप्रसङ्गेन —मा० १, उत्तर० 6 जुलूस, उत्सवयात्रा, प्रवृत्ता खलु यात्रायां मुग्धा मालती मा० १ ६।१२ 7 सड़क 8 जीवन का सहारा जीविका निर्वाह, यात्रामात्र प्रसिद्ध्यर्थं—मनु० ४।३, शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः भग० ३।८ 9 (समय का) बीतना 10 लोकव्यवहार यात्रा चैव हि लौकिकी —मनु० ११।१८४, लोकयात्रा वेणी० १, मनु० ९।२७ 11. रीति, उपाय,

तरकीब 12. प्रथा, प्रचलन, दस्तूर, रीति एषोदिता लोकयात्रा नित्यं स्त्रीपुंसयोः परा मनु० ९।२५, (लोकचार—कुल्लू०) 13. वाहन, सवारी।

यात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [यात्रा+ठक्] 1 यात्रा करता हुआ 2. किसी यात्रा या आन्दोलन से सम्बद्ध 3. जीवन-धारण की आवश्यक सामग्री 4. प्रचलित, प्रथानुकूल, —कः यात्री, —कम् 1. प्रयाण, अभियान या चढ़ाई 2 खाद्य सामग्री, (यात्रा के लिए) रसद, सम्भरण।

याथातथ्यम् [यथातथ+ष्यञ्] 1 वास्तविकता सचाई 2. न्याय्यता, औचित्य।

याथार्थ्यम् [यथार्थ+ष्यञ्] 1 वास्तविक या सही प्रकृति, सचाई, सच्चा चरित्र न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः—कु० ५।७७, रघु० १०।२४ 2 न्याय्यता, उपयुक्तता 3. उद्देश्य की पूर्ति या निष्पन्नता।

यादवः [यदोरपत्यम् अण्] यदु की सन्तान, यदुवंशी।

यादस् (नपुं०) [यान्ति वेगेन—या+असुन्, दुगागम] कोई भी विशालकाय जलजन्तु, समुद्री दानव—यादांसि जलजन्तवः—अमर०, वरुणो यादसामहम्—भग० १०।२९, कि० ५।२९, रघु० १।१६। सम०—पतिः, —नाथः (यादसां पतिः, यादसां नाथः भी) 1 समुद्र, 2. वरुण का नाम—रघु० १७।२१।

यादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी), यादृश्, यादृश (वि०) (स्त्री०—शी) [यद्+दृश्+क्स, क्विन्, कञ् वा, आत्वम्] जिस प्रकार का, जिसके समान, जिस प्रकृति का, जैसा।

यादृच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) [यदृच्छा+ठक्] 1. ऐच्छिक, स्वतः स्फूर्त, स्वतंत्र 2 आकस्मिक, अप्रत्याशित।

यानम् [या भावे ल्युट्] 1 जाना, हिलना-जुलना, चलना टहलना, सवारी करना जैसा कि गजयानम्, उष्ट्र्° रथ° आदि 2 जलयात्रा, यात्रा समुद्रयानकुशला—मनु० ८।१५७, याज्ञ० २।३८ 3. अभियान करना, आक्रमण करना (राजनीति के छः गुणों में से एक) अहिनाम् प्रत्यनीकस्य रणे यानम्—अमर०, मनु० ७।१६० 4. वाहन, परिजन 5 सवारी, वाहन, गाड़ी, रथयानं समारूढः कौबेरम् रघु० १५।४५, १३।६९, कु० ६।७६, मनु० ७।१२०। सम०—पात्रम् जहाज, नौका, —भङ्गः जहाज का टूट जाना,—मुखम् गाड़ी का अगला भाग, गाड़ी का वह भाग जहाँ जुआ रखा जाता है।

यापनम्,—ना [या+णिच्+ल्युट्, पुकागम, स्त्रियां टाप् च] 1 जाने देना, हांक कर बाहर निकालना, निष्कासन, हटाना 2 (किसी रोग की) चिकित्सा या शमन 3. समय बिताना जैसा कि 'कालयापन' में 4 विलम्ब, दीर्घसूत्रता 5 सहारा, निर्वाह 6. प्रचलन, अभ्यास।

याप्य (वि०) [या+णिच्+ण्यत्, पुकागम] 1 हटाये जाने के योग्य, निकाले जाने के योग्य अथवा अस्वीकार किए जाने के योग्य 2 नीच, तिरस्करणीय, मामूली, अनावश्यक। सम०—यानम् शिबिका या पालकी, डोली।

यामः [यम्+घञ्] 1 निरोध, धैर्य, नियन्त्रण 2. पहर, दिन का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय—पश्चिमाद्यामिनीयामात्प्रसादमिव चेतना—रघु० १७।१, इसी प्रकार यामवती, त्रियामा आदि। सम०—घोषः 1 मुर्गा 2. घण्टा या घड़ियाल जिसमें रात के पहरों की टनटन होती है यन्द्रध्वनिर्ग्रामाद्यामघोष—रघु० ६।५६ —वृत्तिः प्रत्येक घण्टे के लिए निर्दिष्ट कार्य —वृत्तिः (स्त्री०) पहरा देना, चौकीदारी करना।

यामकम् [याम+कन्+अण्] जोड़ी, मिथुन।

यामवती [याम+मतुप् वत्वम् ङीप्] रात कि० ८।५६

यामि,—मी (स्त्री०) [याति कुलात् कुलान्तरम्—या+मि, ङीप् च] 1 बहन (दे० जामि)—शि० १५।५३ 2 रात।

यामिकः [यामे नियुक्तः याम+ठक्] पहरेदार, रात को पहरे पर नियुक्त, चौकीदार मै० ५।११०।

यामिका, यामिनी [यामिक+टाप्, याम+इनि+ङीप्] रात—सविता विधवति विधुरपि सवितरति दिनन्ति यामिन्य, यामिनयन्ति दिनानि च सुखदुःखवशीकृते मनसि काव्य० १०। सम०—पतिः 1 चन्द्रमा 2. कपूर।

यामुन (वि०) (स्त्री०—नी) [यमुना+अण्] यमुना से सबद्ध, या निकला हुआ, या यमुना से उत्पन्न, —नम् एक प्रकार का अंजन, सुर्मा।

यामुनेष्टकम् [यमुना+इष्टकम्] सीसा धातु।

याम्य (वि०) [यम+ष्यञ्] 1 दक्षिणी—हार रत्नसुवीथ्यम् भट्टि० १४।१५ 2 यम से संबंध रखने वाला या यम से मिलता जुलता। सम०—अयनम् दक्षिणायन, मकरसंक्रांति, —उत्तर (वि०) दक्षिण से उत्तर को जाने वाला।

याम्या [याम्य+टाप्] 1 दक्षिणदिशा 2 रात्रि।

यायजूकः [यज्+यङ्+ऊक] बार २ यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला, जो लगातार यज्ञ करता रहता है, इज्याशीलः न यायजूक मह मिक्षुमुख्यैः—भट्टि० २।२०।

यायावर (वि०) [पुनः पुनः याति देशान्तरं गच्छति या+यङ्+वरच्] परिभ्रमणशील साधु, संत,—यायावराः पुष्पफलेन चान्ये प्राणयन्त्यर्थान् जनमर्थनीयम् भट्टि० २।२०, महाभागाभिविप्रमजनि यायावरकुले

—शाकुन्तल० ११३ (यहाँ 'यायावर' एक कुल का नाम है)।

याव:,—यावक:,—कम् [यु+अच्+अण्, याव+कन्] 1. जौ से तैयार किया हुआ आहार 2. लाख, लाल रंग, महावर—अस्यन् रम परिरक्ततयात्मा यावकेन वियतापि यवत्या —शि० १०।९, १५।१३, कि० ५।४० ।

यावत् (वि०) (स्त्री०—ती) [यद्+वतुप्, आत्वम्] ('तावत्' का सहसंबंधी) 1 जितना, जितने ('जितने' के लिए यावत् तथा 'उतने' के लिए तावत् का प्रयोग होता है) पूरं तावन्तमेवास्य मनोऽपि नविरतापम् । दीर्घवक्कामस्तोऽपयो यावन्मात्रेण भाव्यतः—कु० २।३३ ते तु यावन्त एवाजौ तावांश्च ददृशे स तैः —रघु० १२। ४५, १२।१५ 2 जितना बड़ा, जितना विस्तृत, जितना बड़ा या विस्तृत, विस्तृत यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके, तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः —भग० २।४६ १८।५५ 3 सब, समस्त (यहाँ दोनों मिल कर समष्टि या साकल्य का अर्थ प्रकट करते हैं) —यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्, भग० अव्य०, 'यावत्' अकेला प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जहाँ तक, तक, पर्यन्त, जब तक कि, (कर्म० के साथ)—स्वस्त्यस्तु यावत् पुत्रयोरवेक्षस्व —उत्तर० ७, कियन्तमवधि यावदस्मच्चरितं चित्रकारैरालिखितम् —उत्तर० १, सर्पकोटरं यावत्, पंच० १ (ख) तभी, ठीक उसी समय, इसी बीच में (तुरन्त किये जाने वाले कार्य का दर्शाने वाला), —तद्यावत् गृहिणीमाहूय संगीतकमनुतिष्ठामि —श० १, यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि —श० ३ 2 यदि यावत् और तावत् मिलकर प्रयुक्त हों तो निम्नांकित अर्थ प्रकट होता है (क) इतनी देर कि, इतने समय तक कि —यावद्विभोगोऽनवधानं सावधिकवधिकमवसर्जिततो रक्त —भाव० ८ (ख) ज्योंही, ज्योंही, अभी, इसी समय - एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छामि ... 'तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे —हि० १।१०४ मेघ० १०५, कु० ३।७२ (ग) जबकि, उसी समय तक —आश्रमवासिनो यावदवेक्ष्य तावदारोहतु —कियन्ता वाजिन —श० १, प्राय 'न' के साथ भी प्रयोग जब कि 'यावन्न' का अर्थ होता है इससे पूर्व कि —यावदेते सरसो नोत्पतन्ति तावदेतेभ्यः प्रवृत्तिरवगमयितव्या —विक्रम० ४ (घ) जब, जिस समय —यावदुत्थाय निरीक्षते तावद् हंसा प्रलोकितः —हि० ३। सम० —अन्तम्, —अन्ताय (अव्य०) अन्त तक, आखीर तक, —अर्थ (वि०) आवश्यकता के अनुसार, उतने जितने कि अर्थ प्रकट करने के लिए आवश्यक है (सम०)—यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधव विरराम —शि० २।१३, (अव्य० —अर्थम्) 1 उतना जितना उपयोगी हो 2 सभी अर्थों में—अथवापि च विराजितेयदे यावदर्थम्—भर्तृ० ३।३० (पाठान्तर),—इष्टम्, —ईप्सितम् (अव्य०) यथेच्छ, इच्छा के अनुकूल, —इष्टम् (अव्य०) आवश्यकता के अनुसार, जितना आवश्यक हो,—जन्म,—जीवम्,—जीवेन (अव्य०) जीवन भर, जीवनपर्यन्त, आजीवन,—बलम् (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना अधिक से अधिक बल हो,—भाषित —उक्त (वि०) उतना जितना कहा जा चुका है, —मात्र (वि०) 1 इतना बड़ा, इतना विस्तृत, जहाँ तक व्यापक हो—कु० २।३३ 2 नगण्य, तुच्छ, मामूली,—सत्यम्,—शक्ति (अव्य०) जहाँ तक संभव हो, अपनी शक्ति के अनुसार —इसी प्रकार 'यावत्सत्त्वम्'।

यावन (वि०) (स्त्री०—नी) [यवन+अण्, यु+णिच्+ल्युट् वा] यवनों से संबंध रखने वाला, न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि—सुभा०,—नः लोबान ।

यावस: [यवस+अण्] 1. घास का ढेर 2. चारा, खाद्य-सामग्री ।

याष्टीक (वि०) (स्त्री०—की) [यष्टि प्रहरणमस्य —ईकक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—कः लाठी से सुसज्जित योद्धा ।

यास्क: [यस्कस्यापत्यम् यस्क+अण्] निरुक्तकार का नाम ।

यु I (अदा० पर० यौति युत, प्रेर० यावयति, इच्छा० यियविषति या युयूषति) 1. सम्मिलित होना, मिलना 2. मिलाना, बहुमद्द करना ।

II (जुहो० पर० युयोति) अलग-अलग करना ।

III (क्या० उभ० युनाति, युनीते) बाँधना, जकड़ना, सम्मिलित होना, मिलना ।

प्र , बांधना, अनुष्ठान करना, अभि , विधान करना अन्योन्य सम् अभियुत: क्रव्यान्सर्वान्स्तु भीषणान्—भट्टि० ८।९ ।

युक्त (भू० क० कृ०) [युज्+क्त] 1. सम्मिलित, मिला हुआ 2. जकड़ा हुआ, जुए में जोता हुआ, साज-सामान से समद्ध 3. युक्त किया हुआ, मुव्यवस्थित 4. सहित 5 सुसज्जित, युक्त, भरा हुआ, सहित (समास में या करण० के साथ) 6 स्थिर, तुला हुआ, लीन, व्यस्त (अधि० के साथ) 7 कर्मपरायण, परिश्रमी 8. कुशल, निपुण, चतुर 9 योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त (सम्ब० या अधि० के साथ) 10 आदिकालीन, मौलिक (शब्द), —क्तः महात्मा जो परब्रह्म परमात्मा से सायुज्य प्राप्त कर चुका है,—क्तम् जोड़ी, जुआ या युग्म । सम०—अर्थ (वि०) समझदार, विवेकी, सार्थक, —कर्मन् (वि०) जिसे किसी कर्तव्य कर्म पर

लगाया जाता है,—दण्ड (वि०) न्यायोचित दंड देने वाला—रघु० ४।८, -मनस् (वि०) सावधान, -रूप (वि०) योग्य, उचित, लायक, उपयुक्त (संबं० या अधि० के साथ) —अस्य यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव — श० १।७, अनुकारिणि पूर्वेषां युक्तरूपमिदं त्वयि २।१६।

युक्तिः (स्त्री०) [युज्+क्तिन्] 1 मिलाप, संगम, सम्मिश्रण 2. प्रयोग, इस्तेमाल, काम में लाना 3 जुए में जोतना 4 व्यवहार, प्रचलन 5 उपाय, तरकीब, योजना, कौशल 6. कपटयोजना, कूटयुक्ति, दाव-पेंच 7. औचित्य, योग्यता, सामंजस्य, संगति, उपयुक्तता 8 कौशल, कला 9 तर्कना, युक्ति, दलील 10 अनुमान, निगमन 11 हेतु, कारण 12 क्रमबद्धता, रचना — मम शक्तिमद् वाचोयुक्तिः मा० १ 13 (विधि में) संभावना, परिस्थिति की गणना या विशेषता (समय, स्थान आदि की दृष्टि से)—युक्तिप्राप्तिक्रियाचिह्नसंबन्धाभोगहेतुभिः याज्ञ० २।९२, २१२ 14 (नाटकों में) घटनाओं की नियमित शृंखला, तु० सा० द० ३४३ 15. (अलं० में) किसी के प्रयोजन या अभिप्राय की प्रच्छन्न अथवा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 16 कुल राशि, योग 17 धातु में खोट मिलाना। सम० —कथनम् हेतुओं का वर्णन, —कर (वि०) 1 उपयुक्त, योग्य 2 सिद्ध, —ज्ञ (वि०) तरकीब या उपायों में कुशल, आविष्कार कुशल, —युक्त (वि०) 1. उपयुक्त, योग्य 2 विशेषज्ञ, कुशल 3 स्थापित, सिद्ध 4 तर्कयुक्त।

युगम् [युज्+घञ्, कुत्वम्, गुणाभाव] 1 जुआ (पुं० भी इस अर्थ में) —युगव्यायतबाहुः रघु० ३।३४, १०।६७, शि० ३।६८ 2. जोड़ा, दम्पती, युगल — कुचयोर्युगेन तरसा कलिता शि० ९।७२, स्तनयुग श० १।१९ 3 श्लोकार्ध जिसमें दो चरण होते हैं, युग्म 4 सृष्टि का युग (युग चार हैं कृत या सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि प्रत्येक की अवधि क्रमशः १७२८०००, १२९६०००, ८६४००० और ४३२००० वर्ष है, चारों को मिलाकर ४३२०००० वर्ष का एक महायुग होता है) ऐसा माना जाता है कि युगों की उत्तरोत्तर घटती हुई अवधि के अनुसार शारीरिक और नैतिक शक्ति भी मनुष्यों में बराबर गिरती गई है, संभवतः इसीलिए कृतयुग को स्वर्ण युग और कलियुग को लौहयुग कहते हैं — धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे भग० ४।८, युगशतपरिवर्तान् —श० ७।३४ 5 पीढ़ी, जीवन, — आ सप्तमात् युगात् —मनु० १०।६४, आत्मपूर्वकर्मा युगे ऽपि पञ्चमे सप्तमेऽपि वा याज्ञ० १।९६ (युगे = जन्मनि मिता०) 6. 'चार' की संख्या की अभिव्यक्ति, 'बारह' की संख्या के लिए विरलप्रयोग। सम० —अन्तः 1 जुए का किनारा 2 युग का अन्त, सृष्टि का अन्त या विनाश —युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत शि० १।२३, रघु० १३।६ 3 मध्याह्न, दोपहर, —अवधिः सृष्टि का अन्त या विनाश कि० १७।४० —कीलकः जुए की कीली —पार्श्वग (वि०) जुए के पास आने वाला, जुए में जुतने वाला बैल, —बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला—कु० २।१८।

युगन्धरः,—रम् [युग+धृ+खच् मुम्] गाड़ी की ओढ़ी जिसके साथ जुआ कस दिया जाता है।

युगपद् (अव्य०) [युग+पद्+क्विप्] एक ही समय सब एक साथ सब मिलकर उसी समय कु० ३।११ प्रायः समास में श० ४।२।

युगलम् [युज्+कलच्, कुत्वम्] जोड़ा दम्पती बाहु° हस्त° चरण° आदि।

युगलकम् [युगल+कन्] 1 जोड़ी 2 श्लोकार्ध जो मिलकर पूरा श्लोक या वाक्य बनाते हैं दे० युग्म।

युग्म (वि०) [युज्+मक्, कुत्वम्] सम० —युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु, तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्तवे स्त्रियम् मनु० ३।४८ याज्ञ० १।७९, 1 जोड़ी दम्पती, दे० अयुग्म 2 संगम, मिलाप 3. (नदियों का) संगम 4 जुड़वां 5 श्लोकार्ध जिन दो से मिलकर पूरा एक वाक्य बने —द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तम् 6. मिथुन राशि।

युग्य (वि०) [युगाय हितं यत्] 1 जोतने के योग्य 2 जुता हुआ, साज सामग्री से सन्नद्ध 3 खींचा गया जैसा कि 'अश्वयुग्यो रथः' में, —ग्यः जुता हुआ या खींचने वाला जानवर, विशेषतः रथ का घोड़ा —युग्यं रथं तस्मै प्रजिघाय पुरन्दरः — रघु० १२।८४।

युज् I (रुधा० उभ० युनक्ति, युङ्क्ते, युक्त) 1 सम्मिलित होना, मिलना, अनुरक्त होना, संबद्ध होना, जुड़ना —तमर्थमिव भारत्या सुतया योक्तुमर्हसि —कु० ६।७९ दे० कर्मवा० नीचे 2 जोतना, जीन कसकर सन्नद्ध करना, लगाना —भानुः सकृद्युक्ततुरंग एव श० ५।४ भग० १।१४ 3 सुसज्जित करना, से युक्त करना जैसा कि गुणयुक्त में 4 प्रयुक्त करना, काम में लगाना, इस्तेमाल करना —प्रज्ञाने कर्मणि तथा मत्कृतं पार्थ युज्यते भग० १७।२६, मनु० ७।२०४ 5 नियुक्त करना, स्थापित करना (अधि० के साथ) 6 निदेशित करना, (मन आदि का) स्थिर करना जमाना 7 अपना ध्यान संकेन्द्रित करना —मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः —भग० ६।१४, युञ्जन्नेवं सदात्मानं १५ 8 रखना, स्थिर करना, जमाना (अधि० के साथ)

9 तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सज्जित करना, युक्त करना 10 देना, प्रदान करना, सादर समर्पित करना—आशिषं युयुजे, कर्मवा० (युज्यते) 1 संयुक्त होने के योग्य रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी कु० ४।४४, रघु० ८।१७ 2 प्राप्त करना, स्वामी होना—इष्टेन युज्यस्व—श० ५, महावी० ७ रघु० २।६५ 3 योग्य या सही होना समुचित होना उपयुक्त होना (अधि० या संबंध के साथ) या यस्य युज्यते भूमिका ता खलु भावेन तथैव सर्वे वयं पात्रिता मा० १ शैलस्यास्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते हि० १ 4 तैयार होना—सर्वा युद्धाय युज्यस्व भग० २।३८ ५० 5 लुप्त होना लीन होना निर्दोशान [illegible] मनु० [illegible] १४।२० कि० ३।१३। प्रेर० (यो [illegible] यति—ते) 1 सम्मिलित होना [illegible] करना रघु० ७।१४ 2 उधार देना समर्पण करना प्रदान करना रघु० १०।५६ 3 नियुक्त करना काम पर लगाना इस्तेमाल करना [illegible] यम्—रघु० ४।१७ 4 बढ़ाना [illegible] और निर्देशित करना [illegible] यजयते [illegible] भर्तृ० [illegible] 5 उत्तेजित करना प्रेरित करना उकसाना 6 सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 7 तैयार करना सुव्यवस्थित करना सुसज्जित करना इच्छा० (युयुक्षति ते) सम्मिलित होने की इच्छा करना जानने की इच्छा करना देव की कामना करना अनु— (आ०) 1 पूछना प्रश्न करना [illegible] गुरुमीश्वर [illegible] रघु० [illegible] शि० १०।६८ 2 परीक्षण करना आरंभ करना मनु० ७।१९ अभि (आ०) कोशिश करना, काम में लग जाना 2 आक्रमण करना धावा करना [illegible] 3 दावा करना दावे करना मनु० ८।५२ 4 अधिकार जताना मांग प्रस्तुत करना (जैसे कि किसी कानूनी अभियोग में) [illegible] देय [illegible] विक्रम० ४।१७ याज्ञ० २। 5 करना [illegible]

[illegible] करना सम्मिलित करना संयुक्त करना 2 कार्य करना प्रणाम करना [illegible] 3 तैयार करना उप (आ०) 1 इस्तेमाल करना काम में लाना [illegible] शि० [illegible] रघु० ८।२१ मालवि० [illegible] 2 खाना [illegible] अनुभव करना (आत्म० में भी) रघु० १८।४६ भर्तृ० ८।३० 4 उपभोग करना [illegible] मनु० [illegible] नि (आ०) 1 नियुक्त करना प्रतिनियुक्त करना आदेश देना (अधि० के साथ) [illegible] नियुक्ता: मा० १।९ अमात्यवर्गे तत्र [illegible] कार्यपर [illegible] नियुक्तः श० १ कु० ३।१३ रघु० ५।२९ 2 सम्मिलित होना, मिलना 3 नियत करना आदिष्ट करना। (प्रेर०) 1 सम्मिलित करना, मिलाना, से युक्त करना, प्रदान करना—कु० ४।४२ 2 जोतना, सन्नद्ध करना, 3 उकसाना, प्रेरित करना—श० ३।१ प्र—, (आ०) 1 इस्तेमाल करना, काम में लाना—अयमपि च गिरं नस्त्वत्प्रबोधप्रयुक्ताम्—रघु० ५।७५, मङ्गलार्थे साधुभावे च सच्छब्दः प्रयुज्यते—भग० १७।२६ 2 नियत करना काम में लगाना निदेशित करना आदेश देना [illegible] प्रयुक्तवान् कुलकीर्तिलोपे भग० ३।५४ प्रयुक्तवान् [illegible] दुष्करे त्वाम—३।५१, कु० ७।८५ 3 देना प्रदान करना अभिदान करना [illegible] प्रयुयुजे [illegible] रघु० १।१६ २।७०, ५।३५ १२।१८ 4 छिड़कना चूकना, [illegible] रघु० २।७० 5 उत्तेजित करना प्रेरित करना प्रवणा देना हांकना कु० ११२१, भग० ३।३६ 6 मनन करना करना—रघु० ५।८६ १७।१४ 7 रंगमंच पर प्रतिनिर्देशित करना अभिनय करना नाट्य करना उत्तर रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते उत्तर० १।२ परिषदि प्रयुञ्जानस्य मम कु० १ 8 इस्तेमाल करने के लिए उधार देना (धन आदि) ब्याज पर देना मनु० ८।१४६ वि, (आ०) 1 छोड़ना परित्याग करना कि० २।४९, रघु० १३।६३ 2 अलग-अलग करना [illegible] वियुक्ते [illegible] कु० ५।२६ 3 ढीला करना शिथिल करना विनि 1 इस्तेमाल करना व्यय करना 2 नियुक्त करना काम में लगाना बांटना अनुभाजन करना वितरण करना प्रत्येक [illegible] कु० ७।२१ 4 वियुक्त करना अलग करना सम् सम्मिलित होना (कर्मवा० में)—[illegible] रघु० ५।२४ (प्रेर०) मिलाना सम्मिलित करना।

(भ्वा० चुरा० पर० यावति योजयति) जोतना मिलाना जोतना दे० ऊपर युज्।

[illegible] मन को संकेन्द्रित करना (युज् के कर्मवा० रूप के अर्थ में)।

युज् (वि०) युज् [illegible] (समास के अन्त में) 1 जुड़ा हुआ [illegible] जुता हुआ जोता जाता हुआ 2 सम [illegible] पुं० 1 [illegible] जो योग देता है [illegible] आपको भाव [illegible] में [illegible] रखता है 3 जोड़ा जन्मो (इस अर्थ में नपुं० भी)

युज्यान (युज्+शानच्) 1 हांकने वाला रथवान् 2 वह ब्राह्मण जो परमात्मा से सायुज्य प्राप्त करने के लिए [illegible] में व्यस्त है।

युत (भू० क० कृ०) [यु+क्त] 1 जुड़ा हुआ सम्मिलित,

मिला हुआ 2. से युक्त या सहित —जैसा कि 'युगलय-युक्तो करः' में।

युतकम् [युत+कन्] 1 जोडी 2 मिलाप, मित्रता, मैत्री 3. विवाहोपहार 4 स्त्रियों की एक प्रकार की वेश-भूषा 5. स्त्रियों के वस्त्र की किनारी या झालर।

युतिः (स्त्री॰) [यु+क्तिन्] 1 मिलाप, संगम 2 सुसज्जित होना, 3 स्वामित्व प्राप्त करना 4 जोड़, योग 5 (ज्योति॰ में) समयुक्ति, दो ग्रहों का स्पष्ट योग।

युद्धम् [युध्+क्त] 1 संग्राम, समर, लड़ाई, भिड़न्त, मुठभेड़, संघर्ष, द्वन्द्व वत्स केय वार्ता युद्ध युद्धमिति उत्तर॰ ६ 2 (ज्योति॰ में) ग्रहों का ... या विरोध। सम॰—अवसानम् युद्ध की समाप्ति, सुलह, —आचार्यः सैन्यशिक्षा का गुरु, उन्मत्त (वि॰) युद्ध के लिए पागल, रणोन्मत्त,—कारिन् (वि॰) लड़ने वाला, संघर्षशील,—भूः, भूमिः (स्त्री॰) रणक्षेत्र, मार्गः सैनिक कूटचाल या छलबल, युद्धाभिनय तिकड़मबाजी, रङ्गः रणक्षेत्र, लड़ाई का अखाड़ा, वीरः 1 योद्धा, शूरवीर, मल्ल 2 (अलं॰ में) सैन्यविक्रम से उत्पन्न वीरता का मनोभाव, वीररस दे॰ सा॰ द॰ २३४ 'युद्धवीर' के नीचे रस॰, —सारः घोड़ा।

युध् (दिवा॰ आ॰ युध्यते, युद्ध) लड़ना, संघर्ष करना, विवाद करना, युद्ध करना—मनु॰ ११२३, भट्टि॰ ५।१०१, प्रेर॰ (योधयति—ते) 1 लड़वाना 2 युद्ध में सामना करना या विरोध करना—रघु॰ १२।५० -इच्छा॰ (युयुत्सते) लड़ने की इच्छा करना, नि—, मल्लयुद्ध करना, विरोध करना, प्रति—, युद्ध में सामना करना, विरोध करना।

युध् (स्त्री॰) [युध्+क्विप्] संग्राम, जंग, लड़ाई, मुठभेड़ —निवारयिष्यन् युधि ... —भट्टि॰ २।२१, नयति वायु पटुता युधि विक्रमं भर्तृ॰ २।६३।

युधानः [युध्+आनच्, स च कित्] योद्धा, क्षत्रिय जाति का पुरुष।

युप् (दिवा॰ पर॰ युप्यति) 1 मिटा देना, विलुप्त करना 2. कष्ट देना।

युयुः [या+यङ्+डु] घोड़ा।

युयुत्सा [युध्+सन्+अङ्+टाप्] लड़ने की इच्छा, विरोधी इरादा।

युयुत्सु (वि॰) [युध्+सन्+उ] लड़ने की इच्छा वाला

युवतिः,—ती (स्त्री॰) [युवन्+ति, ङीप् वा] तरुणी स्त्री, तरुणी नारी (चाहे मनुष्य की हो या किसी पशु की हो) युवयुवतिसंबन्धं किम ... —कु॰ २।८, इसी प्रकार 'इभयुवति'।

युवन् (वि॰) (स्त्री -युवतिः, ती, यूनी—म॰ अ॰ —यवीयस् या कनीयस्, उ॰ अ॰—यविष्ठ या कनिष्ठ) [यौतीति युवा, यु+कनिन्] 1 तरुण, जवान, वयस्क, परिपक्वावस्था को प्राप्त 2 हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ 3 श्रेष्ठ, उत्तम। पुं॰ (कर्तृ॰ युवा, युवानौ, युवान, कर्म॰ ब॰ व॰ यून, करण॰ ब॰ व॰ युवभि आदि) 1 जवान आदमी, तरुण,—आ यूनित स्मितप्रभि ... रघु॰ ६।८१ 2 छोटा सन्तान (बड़ी सन्तान जीवित रहते हुए) —जीवति तु वंश्ये युवा पा॰ ४।१।१६३ (दे॰ इस पर सिद्धा॰)। सम॰ - खलति (वि॰) (स्त्री॰-ति ती) जवानी में ही गंजा, जरत् (स्त्री॰ ती) जवानी में ही बूढ़ा दिखाई देने वाला समय से पूर्व बूढ़ा हो जाने वाला, राज (पुं॰) राज्य ... उत्तराधिकारी राज्याधिकारी राजकुमार राजा का उत्तराधिकारी पुत्र, (असौ) नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु॰ ३।३५।

युष्मद् [युष्+मदिक्] मध्यमपुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक रूप (कर्म॰ त्वम्, युवाम् यूयम्) तू, तुम (कई समासों के आरंभ में प्रयुक्त)।

युष्मादृश, स (वि॰) [युष्मद्+दृश्+क्विन् आत्वम्] तुम्हारी तरह।

यूक, का [यु+कन्, दीर्घ, स्त्रियां टाप्] जूँ मनु॰ १।४५।

यूतिः (स्त्री॰) [यु+क्तिन्, नि॰ दीर्घ] मिश्रण, मिलाप संबंध, संयोग, करोमि वो वहिर्वर्तीन् ... —भट्टि॰ ७।६९।

यूथम् [यु+थक्, पृषो॰ दीर्घ] रेवड़, लहंडा, भीड़, टोली झुण्ड (जैसे वन्य पशुओं का) - स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं वशा विक्रम॰ ४।२५, श॰ ५।५। सम॰ नाथ, पः, पतिः 1. किसी टोली या दल का नेता 2. किसी रेवड़ या भीड़ (प्रायः हाथियों की) का मुखिया, विशालकाय हाथी - गजयूथप यूथिकाशबलकेशी विक्रम॰ ४।२४।

यूथिका, यूथी [यूथ पुष्पवृन्दमस्ति अस्याः —यूथ+ठन् +टाप्, यूथ+अच्+ङीप्] एक प्रकार की चमेली जुही, बेला या इसका फूल यूथिकाशबलकेशी -विक्रम॰ ४।२४, मेघ॰ २६।

यूपः [यु+पक्, पृषो॰ दीर्घ] 1. यज्ञ की स्थूणा (यह प्रायः बाँस या खदिर वृक्ष की लकड़ी से बनाई जाती है) जिसके साथ बलि दिया जाने वाला पशु, मेध के समय बाँध दिया जाता है अथोपनेत्रायुजमेव वैदिकी ... न ... कु॰ ५।७३ 2 विजय-स्मारक, विजयोपहार।

यूषः, —षम्, यूषम् (पुं॰, नपुं॰) [यूष्+क, कनिन् वा] रसा, शोरबा, मांसरसा, मटर का रसा ('यूषम्' शब्द के

पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते कर्म० द्वि० ब० के पश्चात् युष् के स्थान में विकल्प से यथन हो जाता है) ।

येन (अव्य०) [यद् शब्द का करण० का एक वचनांत रूप जो क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त होता है] 1 जिससे जिसके द्वारा जिस लिए जिस कारण से जिसके साधन से कि तद् वन मना प्रतिमल रघ्ना न मुखनाम रघु० १५।६८ १४।७ 2 जिससे कि दर्शय ते चौर्यमिह यत् व्यापारमामि पंच० ८ 3 चूँकि क्योंकि ।

योक्त्रम् [युज्+ष्ट्रन्] 1 डोरी रस्सी तस्मा रज्जु 2 हल के [illegible] की 3 वह रस्सी जिसके द्वारा किसी पशु को गाड़ी के जूए से बाँध दिया जाता है

योग [युज् भावादौ घञ् कुत्वम्] 1 जोड़ना मिलाना 2 मिलाप, संपर्क मिश्रण [illegible] शमिन समुद्र गता गाङ्गेव यामुन श० ३।२० गुणमहता महते गुणाय योग कि० १०।५ (वा) योगमुपसंग्लो अदयोरिवाम्बु रघु० ६।६५ 3 संपर्क स्पर्श संबंध तमङ्कमारोप्य शरीरयोगजैः सुखैर्निषिञ्चन्तमिवा मृतं त्वचि रघु० ३।२६ 4 काम में लगाना प्रयोग इस्तेमाल [illegible] शक्यास्त्रा परिनिष्ठुम मनु० ९।१० रघु० १०।८६ 5 पद्धति रीति, क्रम साधन कथायोगेन बुध्यते-हि० १ बातचीत के क्रम में 6 फल परिणाम (अधिकतर समास के अन्त में या अपा० के साथ) रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति-श० २।१४ कु० ७।५५ 7 जुआ 8 वाहन सवारी गाड़ी 9 जिरहबख्तर कवच 10 योग्यता औचित्य उपयुक्तता 11 व्यवसाय कार्य व्यापार 12 दावपेंच चालबाजी कूट चाल 13 तरकीब योजना उपाय 14 कोशिश उत्साह परिश्रम अध्यवसाय मनु० ७।४४ 15 उपचार चिकित्सा 16 इन्द्रजाल अभिचार मंत्रयोग जादू जादू-टोना 17 अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति अधिग्रहण 18 धन दौलत, द्रव्य 19 नियम विधि 20 पराश्रय संबंध नियमित आदेश या संयोग एक शब्द की दूसरे शब्द पर निर्भरता 21 निर्वचन या अर्थ की दृष्टि से शब्द व्युत्पत्ति 22 शब्द के निर्वचनमूलक अर्थ (विप० रूढि) 23 गंभीर भावचिन्तन मन का एकाग्रीकरण परमात्मचिन्तन, जिसे योगदर्शन में 'चित्तवृत्तिनिरोध' कहा है सती सती योगविसृष्ट-देहा -कु० १।२१ योगेनान्ते तनुत्यजाम रघु० १।८ 24 पतंजलि द्वारा स्थापित दर्शन पद्धति जो सांख्य दर्शन का ही दूसरा भाग समझा जाता है परन्तु व्यवहारतः यह एक पृथक् दर्शन है (योगदर्शन का मुख्य सिद्धांत उन उपायों की शिक्षा देना है जिनके द्वारा मानव आत्मा पूर्ण रूप से परमात्मा में मिल जाय और इस प्रकार मोक्ष की प्राप्ति हो जाय । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गंभीर भावचिन्तन ही मुख्य साधन बताया गया है इस प्रकार के योग या मन के एकाग्रीकरण के समुचित अभ्यास के लिए विस्तार के साथ नियमों का प्रतिपादन किया गया है) 25 (गण में) जोड़ संकलन 26 (ज्योति० में) संयुक्ति दो ग्रहों का योग 27 तारापुंज 28 विशेष प्रकार का ज्योतिषीय समय-विभाग (इस प्रकार के बहुधा २७ योग गिनाये गये हैं) 29 किसी नक्षत्र पुंज का मुख्य तारा 30 भक्ति परमात्मा की पवित्र खोज 31 भद्दिया गुप्तचर 32 द्रोही विश्वासघाती । सम० अंगम् योग की प्राप्ति के साधन (यह गिनती में आठ हैं नामों के लिए दे० यम ५) –**आचार** 1 योग का अभ्यास या पालन 2 बुद्ध के उस संप्रदाय का अनुयायी जो केवल विज्ञान या प्रज्ञा के वास्तविक अस्तित्व को ही मानता है –**आचार्य** 1 जादू का शिक्षक 2 योग दर्शन का अध्यापक –**आधमनम** [illegible] धोखेबाजी से भरी बन्धकावस्था –मनु० ८।१६५ –**आरूढ** (वि०) (सूक्ष्मभावचिन्तन में निमग्न –**आसनम्** सूक्ष्मभावचिन्तन के अनुरूप अंग-स्थिति –**इन्द्रः** –**ईशः**, **ईश्वरः** 1 योग में निष्णात या सिद्धहस्त 2 जिसने अलौकिक शक्ति सम्पादन कर ली है 3 जादूगर 4 देवता 5 शिव का विशेषण 6 याज्ञवल्क्य का विशेषण –**क्षेमः** 1 सामान की सुरक्षा संपत्ति की देखभाल 2 दुर्घटनाओं से संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए शुल्क, बीमा 3 कल्याण कुशलक्षेम सुरक्षा समृद्धि तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्- भग० ९।२२ सुखायामेव अनन्या योगक्षेमं वहन्ति मालवि० ४ 4 संपत्ति, लाभ फायदा (पुं०, नपुं० द्वि० व० भी से नपुं० ए० व० भी) (संपत्ति का) अधिग्रहण और संरक्षण, उपार्जन और सुरक्षा पुरानी का संरक्षण तथा नूतन का अधिग्रहण (जो पहले से अप्राप्त हो) अलब्धलाभो योगः स्यात् क्षेमो लब्धस्य पालनम् दे० याज्ञ० १।१०० और उस पर मिता०, –**चूर्णम्** जादू का चूर्ण जादू की शक्ति वाला चूरा,– कस्मिन्नपि योगचूर्णमिश्रितमौषधं [illegible]–मुद्रा० २ –**तारका**, –**तारा** नक्षत्रपुंज का मुख्य तारा,–**दानम्** 1 योग के सिद्धान्तों का संचारण 2. चालबाजी से युक्त उपहार –**धारणा** सतत भक्ति अध्यवसाय –**नाथः** शिव का विशेषण –**निद्रा** अर्धचिन्तन और अर्धनिद्रित अवस्था जागरण और निद्रा के मध्य की स्थिति अर्थात् लघुनिद्रा योगनिद्रा गतस्य मम–पंच० १ हि० ३।७५, मर्तृ० ३।४१ 2. युग के अन्त में

विष्णु की निद्रा रघु० १०।१४, १३।६, —वस्त्रम् भावसमाधि के अवसर पर संन्यासियों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र जो पीठ से लेकर घुटनों तक शरीर को ढक लेता है, —शक्तिः विष्णु का विशेषण, —शक्ति 1 भक्ति की शक्ति, भावचिंतन की शक्ति, अलौकिक शक्ति 2. जादू की शक्ति, —माया 1 योग की जादू जैसी शक्ति 2 ईश्वर की सर्जन शक्ति जिससे कि देवता के रूप में मूर्त सृष्टि की रचना की जाती है (भगवत सर्जनात्मा शक्ति) 3 दुर्गा का नाम —रूढ़ नारंगी, —रूढ (वि०) वह शब्द जिसके निर्वचनमूलक अर्थ भी हैं, साथ ही उसका विशेष परंपरागत अर्थ है, उदा० 'पंकज' इसका व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है 'कीचड़ से उत्पन्न होने वाला कोई भी पदार्थ' परन्तु प्रचलन या परंपरा के प्रयोगानुसार इसका अर्थ कीचड़ में उत्पन्न किसी वस्तु अर्थात् 'कमल' में प्रतिबद्ध हो जाता है तु० आनन्दवर्धन कारी —रोचना एक प्रकार का जादू का लेप जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य और अभेद्य हो जाता है —मम च परितुष्टेन योगरोचना मे दत्ता मृच्छ० ३, —वर्तिका जादू का लैम्प या बत्ती, —वाहिन् (पुं०, नपुं०) औषधियों को मिलाने का माध्यम —उदा० शहद नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु सुश्रु० —वाही 1. रेह, सज्जी 2 मधु 3 पारा —विक्रय धोखे की बिक्री, —विद् (वि०) योग का जानकार (पुं०) 1 शिव का विशेषण 2 योगाभ्यासी 3 योग सिद्धान्तों का अनुयायी 4 जादूगर 5 दवाइयों के बनाने वाला, —विभागः बहुधा एक स्थान पर जुड़े हुओं को अलग-अलग करना, विशेषतः सूत्र के शब्दों का अलग अलग करना, एक ही नियम के दो तीन टुकड़े करना (महाभाष्य में पतंजलि ने इसका बहुत प्रयोग किया है—उदा० अदसो मात् पा० १।१।१२), —शास्त्रम् योगदर्शन, —समाधिः आत्मा का गूढ़ भावचिन्तन में लीन होना —तमसः परमापदव्ययं पुरुषं योगसमाधिना रघुः—रघु० ८।२४, योगविधि ८।२२, —सार सब रोगों की एक दवा, रामबाण, सर्वव्याधिहर, —सेवा भावचिन्तन का अभ्यास करना।

योगिन् (वि०) [युज्+घिनुण्, योग+इनि वा] 1 से युक्त, या सहित 2. जादू की शक्ति से युक्त, पुं० 1 चिन्तनशील महात्मा, भक्त, संन्यासी—सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः—पंच० १।२८५, अभूच्च योगी किल कार्तवीर्यः—रघु० ६।३८ 2 जादूगर, ओझा, मायाविन् 3. योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी, —नी 1 जादूगरनी, अभिचारिका, ओझाइन, मायाविनी 2 डाकिनी 3. शिव या दुर्गा की सेविकाओं की टोली (यह गिनती में आठ माने जाते हैं)।

योगेश्वरम् (नपुं०) सीसा, रांग।

योग्य (वि०) [योगमर्हति यत्, युज्+ण्यत् वा] 1 लायक, उचित, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त —योग्यो ऽस्य वृष्यते नर 2 योग्य, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त, सक्षम, अर्ह (अधि० संप्र०, संब० के साथ तथा समास में प्रयुक्त) 3 उपयोगी, सेवा करने के योग्य 4 योग या भावचिन्तन के योग्य, —ग्यः पुष्टि या नक्षत्रों का कलधिता, —ग्या 1 अभ्यास व्यवहार अपर प्रणिधानयोग्यया मरुतः पञ्चशरीरगोचरान् रघु० ८।१९ इसी प्रकार 'मानयोग्या' काव्या० ७।२८३, 'धनुर्योग्या' अस्त्रयोग्या आदि 2 सैनिक कवायद, व्यायाम —ग्यम् 1 सवारी गाड़ी वाहन 2 चन्दन की लकड़ी 3 रोटी 4 दूध।

योग्यता [योग्य+तल्+टाप्] 1 सामर्थ्य सक्षमता —न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः रामा० 2 अनुकूलता, औचित्य 3 सुपूर्वकता 4 (न्या० में) ज्ञान की अनुकूलता या संगति शब्दों द्वारा संकेतित वस्तुओं के पारस्परिक संबंध की असंगति का अभाव उदा० अग्निना सिञ्चति में योग्यता नहीं है इसकी परिभाषा यह है एकपदार्थेऽपरपदार्थसंसर्गो योग्यता —त० कौ०।

योजनम् [युज् भावादौ ल्युट्] 1 जोड़ना मिलाना मिलना 2 प्रयोग करना, स्थिर करना 3 तैयारी व्यवस्था 4 व्याकरणसम्मत रचना शब्दान्वय 5 आठ चार मील अथवा चार कोस की दूरी की माप —न योजनशतं दूरं वाह्यमानस्य तृष्णया हि० १।१४६ 6 उत्तेजित करना भड़काना 7 मन का संकेन्द्रीकरण भाव (—योग), —ना 1 संगम, मिलाप, संबंध 2 व्याकरणसम्मत शब्दान्वय। सम० —गन्धा 1. कस्तूरी 2. व्यास की माता सत्यवती।

योजनम् दे० योजनम्।

योध [युध्+अच्] 1 योद्धा, सैनिक, लड़ाकू, —महारथौ-र्विराटं योधमुख्यं महा० 2. संग्राम, लड़ाई। सम० —अगारः, —रम् सैनिकों का निवास, सैन्यावास, बारक, —धर्मः सैनिकों का कानून, सैन्यविधि या नियम, —संरावः लड़ाकू सिपाहियों की पारस्परिक ललकार, आह्वान।

योधनम् [युध् भावे ल्युट्] संग्राम, लड़ाई, मुठभेड़।

योधिन् (पुं०) [युध्+णिनि] योद्धा, सिपाही, लड़ाकू।

योनिः (पुं०, स्त्री०) [यु+नि] 1 गर्भाशय, बच्चेदानी, भग, स्त्रियों की जननेन्द्रिय 2. जन्मस्थान, मूलस्थान, उद्गम, मूल, जन्मदायक कारण, निर्झर, फौवारा —या योनिः सर्वबैराणां सा हि लोकस्य निर्वृतिः उत्तर० ५।३०, कु० २।६, ३।१६, उत्पत्ति या उदित के अर्थ में प्रयोग प्रायः समास के अन्त में सम०

५।२२ 3. स्थान 4. आवास, स्थान, भाजन या पात्र, आसन, आधार 5. घर, मांद 6. कुल, गोत्र, वंश, जन्म, अस्तित्व का रूप —जैसा कि 'मनुष्ययोनि, पक्षि°, पशु°' आदि 7. जल। सम०—गुणः जन्मस्थान या गर्भाशय का गुण, —ज (वि०) गर्भाशय से जन्म लेने वाला, जरायुज, —देवता पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, —भ्रंशः नक्षत्रगामी का अपने स्थान से हट जाना, —रञ्जनम् रज.स्राव, —लिङ्गम् भगांकुर, लिङ्ग, —संकरः अवैध अन्तर्जातीय विवाहों से उत्पन्न वर्ण संकर जाति।

योनी दे० योनि।

योपनम् [युप्+ल्युट्] 1 मिटाना, विलुप्त करना 2 कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय 3 विकलता, घबराहट 4. उत्पीडन, अत्याचार, दमन।

योषा, योषित् (स्त्री०), योषिता [यौति मिश्रीभवति यु +स+टाप्, योषति पुमांसम्, युष्+इति, योषित् +टाप्] स्त्री, लड़की तरुणी जवान स्त्री—गजकुम्भीना रमणवसति योषितां तत्र नक्तम्—मेघ० ३७, शि० ४।४२, ८।२५।

यौक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [युक्तित आगत ठक्] 1 उपयुक्त, योग्य, उचित 2 तर्क संगत, तर्क या हेतु पर आधारित 3 तर्क्य, अनुमेय 4. प्रचलित प्रथानुकूल, —कः राजा का आमोदप्रिय साथी तु० 'नर्मसचिव'।

यौग: [योग+अण्] योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी।

यौगपद्यम् [युगपद्+ष्यञ्] समकालिकता, समसामयिकता।

यौगिक (वि०) (स्त्री० की) [योग+ठक्] 1 उपयोगी, सेवा के योग्य, उचित 2 प्रचलित 3 व्युत्पन्न निर्वचनमूलक, शब्दव्युत्पत्ति के अनुरूप (विप० रूढ या परम्परागत) 4 उपचार परक 5 योग संबंधी, योग से व्युत्पन्न।

यौतक (वि०) (स्त्री०—की) [युते विवाहकाले अधिगत वुञ्] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति जिस पर उसका एकान्ततः अपना ही अधिकार हो, ऐसी सम्पत्ति जिस पर यथार्थतः उसका ही एकमात्र अधिकार हो —'विभागभावना ज्ञेया गृहक्षेत्रैश्च यौतकैः' याज्ञ० २।१४९, —कम् 1. निजी सम्पत्ति 2 स्त्री का दहेज, स्त्रीधन (विवाह के अवसर पर कन्या को उपहार में दिया गया धन) मातुस्तु यौतकं यत् स्यात् कुमारी भाग एव सः मनु० ९।१३१।

यौतवम् [यु+तु=योतु+अण्] एक प्रकार की माप।

यौध (वि०) (स्त्री०—धी) [योध+अण्] लड़ाकू, लड़ने-वाला।

यौन (वि०) (स्त्री०—नी) [योनितः योनि सम्बन्धात् वा आगतम् अण्] 1. उदर 2 वैवाहिक, विवाह संबंधी मनु० २।१०, —नम् विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध —मनु० ११।१८०।

यौवतम् [युवतीनां समूहः अण्] तरुणियों या जवान स्त्रियों का समूह अवधृत्य दिवोऽपि यौवतैर्न सहाधीतवतीमिमामहम् नैष० २।४१ 2 तरुणी स्त्री का गुण (सौन्दर्य आदि) तरुणी स्त्री होने की अवस्था अहो विदग्धयौवतं वहसि सन्ति पूर्वागता गीत० १०, (सुरसुन्दरी रूपम्)।

यौवनम् [यूनो भाव अण्] 1 जवानी (आल० से भी) तारुण्य तरुणाई, वयस्कता मूर्खत्वस्य च यौवनस्य च सखे मध्ये मधुश्री स्थिता—विक्रम० २।७, यौवनेऽभ्यस्तविद्यानाम् रघु० १।८, ६।५० दिन-यौवनोत्थान्— १३।२० 2. जवान व्यक्तियों का विशेष कर तरुणियों का समूह। सम० —अन्त (वि०) जवानी में समाप्त होने वाला जवी जवानी होना कु० ६।४४, —आरम्भः जवानी का उभार, खिलती हुई जवानी, —दर्पः 1 जवानी भरा अभिमान 2. जवानी में सहजसुलभ अविवेक, —लक्षणम् 1. जवानी का चिह्न 2 आकर्षण, लावण्य 3. स्त्रियों के कुच।

यौवनकम् [यौवन+कन्] जवानी।

यौवनाश्व. [युवनाश्व+अण्] युवनाश्व का पुत्र मान्धाता।

यौवराज्यम् [युवराज+ष्यञ्] युवराज का पद या अधिकार, यौवराज्येऽभिषिक्तः, (युवराज पद का मुकुट धारण किये हुए)।

यौष्माक (वि०) (स्त्री०—की), यौष्माकीण (वि०) [युष्मद्+अण्, खञ् वा, युष्माक आदेशः] तुम्हारा, आपका।

र

रः [रा+ड] 1. अग्नि 2. गर्मी 3. प्रेम, इच्छा 4. चाल, गति।

रंह् (भ्वा० पर० रंहति) हिलना—जुलना, वेग से चलना, जल्दी करना —न ररंहाश्वकुञ्जरम्— भट्टि० १४।९८, प्रेर० (रंहयति से—कुछ के अनुसार चुरा० उभ०) 1. जल्दी से चलाना, प्रेरणा देना 2. बहाना 3. आना 4. बोलना।

रंहतिः (स्त्री०) [रंह्+क्तिन्] चाल, वेग।

रंहस् (पुं०) [रह् + असुन्, हुक् च] 1. चाल, वेग, रघु० २।३४ शि० १२।७, कि० २।४० 2. आतुरता, प्रचण्डता, उत्कटता उग्रता।

रक्त (भू० क० कृ०) [रञ्ज् करणे क्तः] 1 रंगीन, रंगा हुआ, हल्के रंग वाला, रंग लिप्त– आभाति बालातपरक्तसानुः रघु० ६।६० 2 लाल, गहरा लाल रंग, लोहितवर्ण, साध्य तेज प्रतिनवजपापुष्परक्तं दधानः मेघ० ३६, इसीप्रकार रक्ताशोक, रक्तांशुक आदि 3 मुग्ध, सानुराग, अनुरक्त, प्रेमासक्त– अयमैन्द्रीमुखं पश्य रक्तश्चुम्बति चन्द्रमाः चन्द्रा० ५।५८ (यहां यह द्वितीयार्थ भी रखता है) 4 प्रिय वल्लभ 5 सुहावना, आकर्षक, मधुर, सुखद श्रोत्रेषु संमूर्छति रक्तमासां गीतानुगं वारिमृदङ्गवाद्यम्–रघु० १६।६४ 6 खेल का शौकीन, खिलाड़ी, क्रीडाप्रिय, –क्तः 1 लाल रंग 2 कुसुम्भ, –क्ता 1 लाख 2 गुंजा का पौधा, –क्तम् 1 रुधिर 2 तांबा 3 जाफरान 4 सिन्दूर। सम० –अक्ष (वि०) 1 लाल आंखों वाला 2 डरावना (–क्षः) 1 भैंसा 2. कबूतर, –अङ्गः मूंगा, –अङ्गः 1 खटमल 2 मङ्गलग्रह 3 सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल, –अधिमंथः आंखों की सूजन –अंबरम् लाल वस्त्र (–रः) गेरुआ वस्त्रधारी परिव्राजक, –अर्बुदः रसौली, –अशोकः लाल फूलों वाला अशोक वृक्ष–मालवि० ३।५, –आधारः चमड़ी, खाल, –आभ (वि०) लाल दिखाई देने वाला, –आशयः एक प्रकार का आशय जिसमें रुधिर रहता है तथा जिससे निकलता रहता है (हृदय, तिल्ली और जिगर आदि), –उत्पलम् लालकमल –उपलम् गेरु, लाल मिट्टी, –कण्ठ, –कण्ठिन् (वि०) मधुरकण्ठवाला (पुं०) कोयल पक्षी, –कंदलः मूंगा, –कमलम् लाल कमल –चन्दनम् 1 लाल चन्दन, जाफरान, केसर, –चूर्णम् सिन्दूर, –छर्दिः (स्त्री०) रुधिर की कै करना, –जिह्वः सिंह, –तुण्डः तोता, –दृश् (पुं०) कबूतर, –धातुः 1 गेरु या हरताल 2 तांबा –पः पिशाच, भूत-प्रेत, –पल्लवः अशोकवृक्ष, –पा जोंक –पातः मरकुल्या, –पाद (वि०) लाल पैरों वाला, (–दः) 1 लालपैरों का पक्षी, तोता 2 युद्धरथ 3 हाथी, –पायिन् (पुं०) खटमल, –पायिनी जोंक –पिण्डम् 1 लाल रंग की फुन्सी 2 नाक और मुंह से रक्तस्राव होना, –प्रमेहः मूत्र के साथ रक्त का निकलना –फलम् मांस, –मोक्ष –मोक्षणम् रुधिर निकलना, फस्त, –वरटी चेचक, –वर्गः 1 लाख 2 अनार का पेड़ 3 कुसुम्भ, –वर्ण (वि०) लाल रंग का (–र्णः) 1 लाल रंग 2 बीरबहूटी नामक कीड़ा (–र्णम्) सोना, –वसन, –वासस् (वि०) लाल रंग की वस्त्र भूषा धारण किये हुए, सारस, –शासनम् सिन्दूर, –शीर्षकः एक प्रकार का सारस, –सरोरुहम् लाल कमल,–सारम् लाल चन्दन।

रक्तक (वि०) [रक्त + कन्] 1 लाल, 2 सानुराग, अनुरक्त, स्नेहशील 3 सुहावना, विनोदप्रिय 4 रक्तरञ्जित –कः 1 लाल रंग की वेशभूषा 2. सानुराग व्यक्ति, शृङ्गार-प्रिय पुरुष 3 खिलाड़ी।

रक्तिः (स्त्री०) [रञ्ज् + क्तिन्] 1 सुहावनापन, प्रियता, आकर्षण, लावण्य 2 आसक्ति, स्नेह, निष्ठा, भक्ति।

रक्तिका [रक्ति + कन् + टाप्] गुंजा का पौधा या इसका बीज जो तोलने (एक रत्ती) के काम आता है।

रक्तिमन् (पुं०) [रक्त + इमनिच्] ललाई।

रक्ष् (भ्वा० पर० रक्षति, रक्षित) 1 रक्षा करना, चौकीदारी करना, देखभाल करना पहरा देना (पशु आदि) पालना राज्य करना, (पृथ्वी पर) शासन करना यथाक्रमा प्रतिकृति रक्षतु–श० ६ ...स्यमि किंचद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति –श० १।१३ 2 सुरक्षित रखना, (भेद) न खोलना – हृस्य रक्षति 3 बचा... करना, बचाना, बचा कर रखना (बहुधा अपा० के साथ) ...निःशेष ... रक्षेदधर्मात्–कि० २।८, आपदर्थे धनं रक्षेत् हि० १।४१ रघु० २।५० ११।७७ 4 टालमटूल करना– मुद्रा० १।२ (अभि परि सम् आदि उपसर्ग जुड़ने पर इस धातु के अर्थों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता)।

रक्षक (वि०) (स्त्री –क्षिका) [रक्ष् + ण्वुल्] चौकसी रखने वाला रक्षा करने वाला –कः रखवाला, अभिभावक, चौकीदार, पहरेदार।

रक्षणम् [रक्ष् + ल्युट्] रक्षा करना बचाव, संधारण, चौकसी, देखभाल आदि ('रक्षणम्' भी) की रास, लगाम।

रक्षस् (नपुं०) [रक्ष्यते हविरस्मात्, रक्ष् + असुन्] भूत-प्रेत पिशाच, भूतना, बैताल –पर्यन्तं महतामपि रक्षसां भीमकर्मणाम, ... रणे हता– उत्तर० २।१५। सम० –हन्, –नाथः रावण का विशेषण –जननी रात्रि,– सभम् राक्षसों की सभा।

रक्षा [रक्ष् भावे अ + टाप्] 1. बचाव, संधारण, चौकसी मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युष्मास्ववस्थिता – कु० २।२८, शि० १८।३१, श० १।१४, रघु० २।४, मेघ० ४३ 2 देखभाल सुरक्षा 3 चौकसी, पहरा 4 ताबीज या जंतर, परिरक्षा, जैसे कि नीचे 'रक्षाकरण' में अभिभावक देवता 6. भस्म, राख 7 रक्षाबन्धन, राखी (विशेषकर श्रावण पूर्णिमा के दिन कलाई में बांधी जाने वाली रेशम या सूत की डोरी) ताबीज या जंतर के रूप में (इस अर्थ में 'राखी' शब्द भी प्रयुक्त है)। सम०–अधिकृतः किसी प्रदेश का अधीक्षक कार्य

सुपुर्द किया गया है, अधीक्षक या शासक अथवा राज्यपाल 2 दण्डनायक, मजिस्ट्रेट 3 मुख्य आरक्षाधिकारी अधीक्षक 1 कुली, द्वारपाल 2 अन्तःपुर का पहरेदार 3 गाडू, जौहरी नाटक का पात्र अभिनेता,—करण्ड रत्नकरण्डकम् नगीने की डिबिया, मल्ल आदि की डिबिया अत्र रत्नकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते श० ३ —गृहम् प्रसूति का गृह रत्नगृहमत्र दीपा प्रत्यादिष्टा इवाभवन् रघु० १०।६९ पात्र. एक प्रकार का आभूषण पात्र, —पुरुष पहरेदार चौकीदार प्रहरी प्रदीप वह दीपक जो भूत प्रेत से बचाव के लिए जलता हुआ रखा जाता है भूषणम् मणि —रत्नम एक प्रकार का आभूषण जो जादू से भरी भूत प्रेतादि की बाधा से बचाव के लिए पहना जाता है।

रक्षिन् (पुं०) (रक्ष्+णिनि) पहरेदार, चौकीदार [illegible] —नै० १९ पु० 1 रक्षा करने वाला संरक्षक बचाने वाला 2 चौकीदार संतरी प्रहरी [illegible] नाम रक्षिण मनु० [illegible]

रघु [मर्यादित ज्ञानसामान प्राप्नोति [illegible]] एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा दिलीप का पुत्र और अज का पिता। ऐसा प्रमाण प्राप्त है कि इसका नाम रघु (रघ् या लघ् जाना) इस कारण पड़ा था क्योंकि इसके पिता ने यह पहले ही जान लिया था कि यह बालक विद्या के पार पहुंचेगा अथवा अपि युद्ध में अपने शत्रुओं को भी पराभूत कर देगा—तु० रघु० ३।२१ अपने नाम की सार्थकता के अनुसार उसने दिग्विजय आरम्भ किया समस्त भारत भूमण्डल का चक्कर लगाया और लौटते समय विजयोपहार के साथ राजधानी आया। वापस आकर विश्वजित् यज्ञ का आयोजन किया और दक्षिणा में ब्राह्मणों को सर्वस्व दे डाला तथा अज को अपने राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया)। सम० [illegible] —नाथ —पति [illegible] सिंह [illegible] के विशेषण

रङ्कु (वि०) [रम्+उ पृषो० [illegible]] 1 अधम दरिद्र भगवा अभागा दयनीय 2 मन्द —रङ्कुभिमार्गे मन्द [illegible] भूमा प्रचारी भूतनया [illegible] मा० ५।१६ बुभुक्षित या भुखमरी आदमी [illegible]

रङ्कु [रम्+कु] हरिण [illegible] मृग नै० [illegible]

रङ्ग [रञ्ज् भावे घञ्] 1 रङ्ग वर्ण रञ्जन का मसाला रङ्ग या रंगत 2 रङ्गमञ्च नाट्यशाला, नाट्यगृह अखाड़ा सार्वजनिक आमोदस्थल जैसा कि रङ्ग [illegible] श० २० [illegible] यथा भवन धातुवर्ण [illegible] शंकु रामवण्णानिव [illegible] इत्र सर्वेषा रङ्ग शु० ९ रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात् पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृति सांख्य० ५९ रणक्षेत्र 6 नाचना, गाना, अभिनय 7 आमोद मनोविनोद 8 मुहाना 9 स्वर का अनुनासिक उच्चारण सरक्षम कथ्यप्रोक्तमम रथीवेति निदर्शनम शिक्षा० ३०, इसी प्रकार २६ [illegible] सम० [illegible] अङ्गणम् अखाड़ा, नाट्यघर अवतरणम् 1 रङ्गमञ्च पर प्रवेश 2 अभिनेता या नाट्यपात्र का व्यवसाय —अवतारक —अवतारिन् (पुं०) अभिनेता, नाटक का पात्र,—आजीव 1 अभिनेता 2 चित्रकार इसी प्रकार उपजीविन् (पुं०) —कार जीवक चित्रकार रंगसाज —चर 1 अभिनेता, नाटक का पात्र 2 तलवारबाज —देवता मदिरा सार्वजनिक आमोद प्रमोद की अधिष्ठात्री देवी —द्वारम् 1 रङ्गशाला का द्वार 2 किसी नाटक का प्रस्तावना या प्रस्तावना —भूति (स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा की रात —भूमि (स्त्री०) 1 रङ्गमञ्च नाट्यशाला 2 अखाड़ा रणक्षेत्र —मण्डप रङ्गशाला —माता (स्त्री०) 1 लाख लाक्षा महावर इसे पैदा करने वाला कीड़ा 2 कुटनी दूती —वस्तु (नपुं०) रंग —शाला अखाड़ा बाड़ा जहाँ नाटक नाच आदि होते हों शाला नाचघर रंगमञ्च नाटकघर।

रङ्ग् (भ्वा० उभ० रङ्गति—ते) 1 जाना 2 शीघ्र जाना प्रस्थान करना —द्राघम् [illegible] —भट्टि० १४।९५

रच् (चुरा० उभ० रचयति—ते, रचित) 1 व्यवस्थित करना सजाना तैयार करना, बना लेना रचना करना—पुष्पाणां प्रकर स्मितेन रचिता नो कुन्दजात्या [illegible] —अमरु० ४० रचयति शयनं सचकितनयनम्—गीत० ५ 2 बनाना रूप देना निर्माण करना रचना करना पैदा करना—मार्गाचिरशर्मार्चितं मदनं —रघु० १३।७५ मत्वार्थं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते —भर्तृ० २।६ भीतो वा रचयाञ्जलिम् वेणी० ३।४० 3 लिखना रचना करना (किसी कृति आदि की) प्रकाश करना—अङ्कपादी प्रगलाया विबुद्धास्मरीरचत्—[illegible] ० ६ श० ३।१५ 4 रखना स्थिर करना जमाना रचयति चिकुरे कुरवककुसुमम्—गीत० ७ कु० ४।१८ ३० श० ६।१७ 5 अलंकृत करना सजाना सम० ६६ 6 (मन को) लगाना अ व्यवस्थित करना वि 1 व्यवस्थित करना 2 रचना करना 3 कार्यान्वित करना पैदा करना बनाना मेघ० ९५ भामि० १।३० ।

रचना [रच्+युच्+टाप्] 1 व्यवस्था, तैयारी विन्यास अभिषव सजीव आदि 2 बनाना सर्जन करना उत्पन्न करना अन्यैव कापि रचना वचनावलीनां भामि० १।६९ इसी प्रकार भ्रुकुटि रचना [illegible] 3 सम्पन्नता पूर्ति, निष्पत्ति,

कार्यान्वयन—कुरु मम वचनं सत्वररचनम् गीत० ५, रघु० १०।७७ 4. साहित्यिक रचना या सृजन, निर्माण, संरचना—सन्निधत्ता वस्तु रचना सा० द० ४२२ 5 बाल संवारना 6 सैन्यव्यूहन 7 मन की सृष्टि, कृत्रिम उद्भावना।

रजः दे० रजस्।

रजकः [रञ्ज्+ण्वुल्, नलोप] धोबी।

रजका,—की [रजक+टाप्, ङीष् वा] धोबन।

रजत (वि०) [रञ्ज्+अतच्, नलोप] 1 चाँदी के रंग का, चाँदी का बना हुआ 2 उज्ज्वल,—तम् 1 चाँदी —शुक्तौ रजतमिदमिति ज्ञानं भ्रमः कि० ७।४१, नै० २२।५२ 2 स्वर्ण 3 मोतियों का आभूषण या माला 4 रुधिर 5 हाथी दाँत 6 नक्षत्रपुंज, तारा समूह।

रजनि,—नी (स्त्री०) [रज्यतेऽत्र, रञ्ज्+कनि, ङीप् वा] रात—हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् गीत० ५। सम०—करः चन्द्रमा,—चरः रात को घूमने वाला पिशाच, बेताल,—जलम् ओस,—पतिः,—रमणः चन्द्रमा,—मुखम् सन्ध्या, सायंकाल।

रजनिमन्य (वि०) (वह दिन) जो रात जैसा काला या रात जैसा दिखाई दे भट्टि० ७।७३।

रजस् (नपुं०) [रञ्ज्+असुन्, नलोप] 1 धूल, रेणु, गर्द —धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति श० ७।१७, वातोद्धतैरपि रजोभिरलङ्घनीया १।८, रघु० १। ४२, ६।३२ 2 फूल की रज या पराग —मुग्धाङ्कुश शवरजोमधुरेणुरम्या (कथा) उ० ४।१० मेघ० ३३,६५ 3 सूर्य किरणों में फैले हुए कण, कोई भी छोटा सा कण मनु० ८।१३२ याज्ञ० १।३६२ 4. जुती हुई भूमि, कृषियोग्य खेत 5 अन्धकार अन्धेरा 6 मलिनता, आवेश, नैतिक या मानसिक अन्धकार—अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः रघु० ९।७४ 7 सब प्रकार के भौतिक द्रव्यों के तीन गुणों अथवा तीन गुणों में से दूसरा (दूसरे दो गुण हैं सत्त्व और तमस्, जीवजन्तुओं में बड़ी भारी क्रियाशीलता का कारण 'रजस्' समझा जाता है, यह गुण मनुष्यों में बहुतायत से पाया जाता है जैसे कि देवताओं में सत्त्व तथा राक्षसों में तमस् पाया जाता है) अन्तर्गतमपास्तं मे रजसोऽपि परं तमः कु० ६।६० भग० ६।२७, मा० १।२० 8 रजस्राव, ऋतुस्राव मनु० ४।४१, ५।६६। सम०—गुणः दे० (7) ऊपर,—तमस्क (वि०) रज और तम दोनों गुणों से प्रभावित,—तोकः,—कम्,—पुत्रः 1 लोलुपता, लालच 2. रज का पुतला यह प्रकट करने के लिए कि यह व्यक्ति तुच्छ है, नगण्य है, इस शब्द का प्रयोग किया जाता है,—दर्शनम् प्रथम बार रजोधर्म का होना, सबसे पहला रजस्राव,—बन्धः रजोधर्म का बन्द हो जाना,—रस अन्धेरा,—शुद्धिः रजोधर्म की विशुद्ध दशा,—हरः 'मैल हटाने वाला' धोबी।

रजसानुः [रज्यतेऽस्मिन्—रञ्ज्+असानुः] 1 बादल 2 आत्मा, दिल।

रजस्वल (वि०) [रजस्+वलच्] 1 मैला, धूल से भरा हुआ रघु० ११।६० शि० १७।६१ (यहाँ इसका अर्थ 'रजोधर्म से होने वाली' भी है) 2 आवेश या मनोवेग से भरा हुआ मनु० ६।७७,—लः भैंसा,—ला 1 रजस्वला स्त्री—रजस्वलाः परिमलिनाम्बरा... शि० १७।६१ याज्ञ० ३।२९ रघु० ११।६० 2 विवाह के योग्य कन्या।

रज्जु (स्त्री०) [सृज्+उ, असुमागम, धातोरादिलोपः, आगमसकारस्य जकारः रकारादेश ...] 1 रस्सी, डोरी, सुतली 2 कलेजा, स्तम्भ से मिलने वाली स्नायु 3 स्त्रियों के सिर की चोटी। सम०—बालकम् एक प्रकार का जंगली मुर्गा,—पेडा ... रज्जुपाल, पेड़ा सुतली से बनी हुई टोकरी।

रञ्ज् (भ्वा० दिवा० उभ०—रजति-ते, रज्यति-ते, रक्त, कर्मवा० रज्यते, इच्छा० रिरङ्क्षति) 1 रंगे जाने के योग्य, लाल रंग से रंगना, लाल होना, चमकना,—कोप रज्यन्मुखश्री उत्तर० ५।०, रज्ज्वलय रज्यन्—५।२६ नै० ३।१२० ७।६० २२।१० 2 रंगना, हलका रंग देना रंगीन बनाना, रंगलेप करना 3 अनुरक्त होना, भक्त बनना (अधि० के साथ) देव निज निषधराजरुचस्त्यजतीः भवादरज्यन्न नलेन बिदर्भसुभ्रू नै० १३।३८ सा० द० १११ 4 मुग्ध होना, प्रेमासक्त होना स्नेह की अनुभूति होना 5 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, खुश होना प्रेर० (रञ्जयति—ते) 1 रंगना, हलका रंगना, रंगीन बनाना, लाल करना, रंगलेप करना—सा रञ्जयित्वा चरणौ कृताशी: कु० ७।१९, ५।८१ कि० १।४०, ४।१४ 2. प्रसन्न करना, तृप्त करना, मनाना, सन्तुष्ट करना—ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति भर्तृ० २।३ (इस अर्थ में 'रजयति' भी है० कि० ५।२५) स्फुरतु कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी रञ्जयतु तव हृदयदेशम् गीत० १० 3 प्रेम करना, जीत लेना, सन्तुष्ट रखना मनु० ७।१९ 4 हरिण का शिकार करना (इस अर्थ में केवल 'रजयति'), अनु—, 1 लाल होना, शि० ९।७ 2 स्नेहशील होना, भक्त होना, अनुरक्त बनना, प्रेम करना, पसन्द करना (अधि० के साथ कर्म० के भी) पंच० १।१०१, मनु० ३।१७३ 3 खुश होना—भग० ११।३६ अप—, 1 असन्तुष्ट होना, सन्तोषरहित होना,

(अपा० के साथ, नयहीनादपरज्यते प्रज कि० २।४९ 2 पीला होना, विवर्ण होना श्यामायरक्ता [illegible] श० ६।५ उप-, 1 ग्रहणग्रस्त होना, [illegible] रज्यते भगवान्चन्द्र मुद्रा० १ 2 हलका रंग का होना, रंगीन होना शि० २।१० 3 कष्टग्रस्त या विपद्ग्रस्त होना वि-, 1 रागरहित होना मलिन होना, घटिया या भद्दा होना कथा अपि विरज्यत निःस्नेहा [illegible] पंच० [illegible] (यहाँ यह द्विर्थीयाय भी रखता है) 1 असन्तुष्ट होना, [illegible] होना, नापसंद करना घृणा करना विरानुरक्ता [illegible] विरज्यते जन मृच्छ० १।५३ [illegible] सर्व भा विरक्ता मन [illegible] भट्टि० [illegible] [illegible] होना [illegible]

रञ्जक [illegible] 1 [illegible] रंगरेज 2 [illegible] कम् 1 [illegible] चन्दन 2 [illegible]

रञ्जनम् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 प्रसन्न करना, खुश करना [illegible] प्रसन्नता देना [illegible] रघु० [illegible] 4 [illegible] चन्दन की लकड़ी।

रञ्जनी [रञ्जन + ङीप्] नील का पौधा।

रट् (भ्वा० पर० रटति रटित) 1 चिल्लाना, चीत्कार करना चीखना, रुदन करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना [illegible] भट्टि० १५।२७ [illegible] राक्षसो भूमौ ररास च भयंकरम् [illegible] 2 जोर से बोलना, उद्घोषणा करना 3 प्रसन्नता से चिल्लाना, प्रशंसा करना आ- पुकारना चिल्लाना प्रियसहचर मपश्यन्त्यातुरा [illegible] घ० ८।

रटनम् [रट् + ल्युट्] 1 क्रन्दन की क्रिया, चिल्लाना जोर से आवाज देना 2 प्रशंसा का चीत्कार [illegible]

रण् (भ्वा० पर० रणति, रणित) ध्वनि करना, टनटनाना, झुनझुनाना, झनझनाना (पायजेब आदि का) रण [illegible] पर्याप्तमिश्रश्रुतिमण्डलैः स्वरैः शि० १।१०, [illegible] वितानम् गीत० २।

रण-,-णम् [रण् + अप्] 1 संग्राम समर युद्ध, लड़ाई रणं प्रववृते तत्र भीमं प्लवगरक्षसाम् - रघु० १२।७२ [illegible] रणे [illegible] कुमा० 2 युद्धक्षेत्र, णः 1 शब्द, शोर 2 सारंगी बजाने का गज 3 गति, चाल। सम० -अङ्गणम् युद्ध का आंगन, -अङ्गम् युद्धास्त्र शस्त्र तलवार, [illegible] प्रजज्वल —भट्टि० १४।९९, —अङ्गणम्,-अजिरम् युद्धक्षेत्र -अपेत (वि०) युद्ध में भागने वाला भगोड़ा [illegible] रणरेणाप्रमू [illegible] वि० १५।३३ —आतोद्यम्, —तूर्यम्, दुन्दुभि सैनिक ढोल भार बाजा, —उत्साहः युद्ध में प्रदर्शित विक्रम [illegible] (स्त्री०), —क्षेत्रम्, —भूः (स्त्री०) —भूमि (स्त्री०) —स्थानम् युद्धक्षेत्र —धुरा युद्ध में आगे रहना, युद्ध का भार [illegible] भग० ३।५ [illegible] वि०) युद्ध का शौकीन लड़ाकू —मत्तः हाथी [illegible] —मुखम् (पुं०) —शिरस् (नपुं०) 1 युद्ध का अगला भाग, लड़ाई का मुख्य भाग कु० ६।३०, [illegible] 2 सेना का अग्रभाग [illegible] हाथी के दाँतों के मध्य का फासला, [illegible] युद्धक्षेत्र [illegible] हंस, मच्छर [illegible] 1 [illegible] उत्कण्ठा 2 खोई हुई वस्तु [illegible]

रणकः, कम् 1 चिन्ता, बेचैनी, खेद, [illegible] कष्ट या सन्ताप (प्रेम में [illegible] आ० १।८१ [illegible] 2 [illegible] इच्छा [illegible] कामदेव [illegible] मार्क [illegible] सैन्यविज्ञान [illegible] युद्ध विज्ञान [illegible] युद्ध [illegible] युद्ध [illegible] युद्ध की सामग्री सैनिक साज-सामान [illegible] सहायक [illegible] विजयदायक, विजयचिह्न

रणत्कारः [रणत् + कृ + घञ्] 1 खड़खड़ाहट झनझनाहट या खनखन की आवाज 2 (मक्खियों का) भनभनाना।

रणितम् [रण् + क्त] [illegible] झनझनाहट या खनखन की आवाज।

रण्डः [रम् + ड] 1 वह पुरुष जो पुत्रहीन मरे 2 बंजर वृक्ष, [illegible] व्यभिचारी स्त्रियों को सम्बोधित करने में तिरस्कारक शब्द [illegible] पण्डितमानिनि—पंच० १।३० (पाठान्तर) [illegible] पापा [illegible] नूर्गेनिनीम, [illegible] नियोजय प्रबो० [illegible] 2 विधवा स्त्री— रण्डा पीनपयोधरा कति मया नाढ्गाढमालिङ्गिता प्रबो० ३।

रत (भू० क० कृ०) [रम् + क्त] 1 प्रसन्न, खुश तृप्त 2 प्रसन्न या खुश स्नेहशील मुग्ध अनुरक्त 3 जुड़ा हुआ व्यस्त संलग्न (दे० रम्), तम् 1 प्रसन्नता 2 मैथुन संभोग रघु० १९।२३ २५ मेघ० ८९ 3 उपस्थ इन्द्रिय। सम० -अर्थिन् वेश्या रती,—अर्थिन् (वि०) कामुक कामासक्त —उद्वहः कोयल,—उद्वहनम् 1 दिन 2 आनन्द के लिए स्नान,—कीलः कुत्ता, —कूजितम् कामासक्त व्यक्ति की मैथुन के समय की सीत्कार,- ज्वरः कौवा, -तालिन् (पुं०) स्वेच्छाचारी, कामासक्त,- ताली कुटनी, दूती, -नारीचः 1 विषयी 2 कामदेव मदन 3 कुत्ता 4 मैथुन के समय की

कोप, भीषणता 4 खेद, शोक 5 हर्ष आनन्द, खुशी मनसि रभसविभवे हरिरवतु सुकृतेन गीत० ५।

रम् (भ्वा० आ० रमते परन्तु वि, आ, परि उपसर्ग लगने पर पर०, रत) 1 प्रसन्न होना, खुश होना, हर्ष मनाना, तृप्त होना रहसि रमते—मा० ३।२— मनु० २।२२३ 2 हर्षित होना प्रसन्न होना आनन्द मनाना, स्नेहशील होना (करण० और अधि० के साथ) लोकाधाकृुर्वदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि मेघ० २७, व्यजेष्ट षड्वर्गमरंस्त नीतौ भट्टि० १।२ 3 खेलना क्रीडा करना प्रेमालिङ्गन करना जी बहलाना राजप्रिया कैरविण्यो रमन्ते मधुपैः सह भामि० १।१२६ (यहाँ दूसरा अर्थ भी संकेतित है) भट्टि० ६।१५ ६७ 4 संयोग करना सा त्वया सह रमते हि० ३ ९ रहना, ठहरना टिकना प्रेर० (रमयति ते) प्रसन्न करना खुश करना सन्तुष्ट करना—इच्छा० (रिरमिषते) क्रीडा करने की इच्छा करना शि० ४।१८ अभि- हर्ष मनाना प्रसन्न या आनन्दित होना अनुरक्त होना भट्टि० १।७, भग० १८।४५ आ (पर०) 1 आनन्द लेना, खुशी मनाना भट्टि० ८।८ ३।३८ 2 ठहरना थमना छोड़ देना (बोलना आदि) समाप्त करना मनु० २।७३ उप (पर० और आ०) 1 थकना, अन्त करना समाप्त करना [illegible] लज्जा —कि० ९।१४ [illegible] 2 रुकना थमना —[illegible] महारथा [illegible] २।५५, भट्टि० [illegible] कि० [illegible] 3 मृत होना, अन्त होना भग० ६।२० 4 मरना [illegible] उपरत, परि (पर०) प्रसन्न होना वश होना —भट्टि० ८।५३ वि— (पर०) 1 अन्त होना समाप्त होना अवसान होना [illegible] रात्रिरेव व्यरंसीत्—उत्तर० १।२७ 2 रुकना बन्द होना थमना छोड़ देना (बोलना आदि) [illegible] विरत मुनीन्द्रे—रघु० २।४८ [illegible] २।१९३ अपा० के साथ [illegible] विषयेभ्य भामि० ४।०४ उत्तर० ५। सम — (आ०) प्रसन्न होना हर्ष मनाना भट्टि [illegible]

रम (वि०) [रम् + अच्] सुहावना आनन्दप्रद, [illegible] आदि, —मः 1 [illegible] खुशी 2 प्रेमी, पति 3 कामदेव

रमठम् [रमे अठ] हींग। सम० —ध्वनि हींग।

रमण (वि०) (—णी स्त्री०) [रम्यति—रम् णिच् + ल्युट्] सुहावना, मनोरंजक, आनन्दप्रद मनोहर भट्टि० ६।७ —णः 1 प्रेमी पति [illegible] रमणाः [illegible] रघु० १४।२७, मेघ० ३७८७ कु० ४।२१ शि० ९।६० 2 कामदेव 3 गधा [illegible] —णम् 1 क्रीडा करना 2 प्रेमालिंगन, जी बहलाना केलिक्रीडा 3. रति मैथुन 4 हर्ष, उल्लास 5 कूल्हा, पुट्ठा।

रमणा, रमणी [रमण + टाप्, ङीप् वा] 1 सुन्दर तरुण स्त्री, लता रम्या सेयं भ्रमरकुलरम्या न रमणी भामि० २।१८ 2. पत्नी स्वामिनी —भोगः का रमणी बिना सुभा०।

रमणीय (वि०) [रम्यतेऽत्र रम् आधारे अनीयर्] सुहावना आनन्दप्रद प्रिय मनोहर सुन्दर किमत्र चैतस्मिन् प्रकृतिरमणीय विक्रमितम् भामि० २।१०।

रमा [रमयति रम् + अच् + टाप्] 1 पत्नी स्वामिनी 2 लक्ष्मी विष्णु की पत्नी तथा धन दौलत की देवी 3 धन। सम० —कान्त, —नाथ, —पति विष्णु का विशेषण —वेष्ट: तारपीन।

रम्भा [रम्भ् + अच् + टाप्] 1 केले का पौधा [illegible] मालवि० १० [illegible] नै० २।६३ २।३७ 2 गौरी का नाम नलकुबर की पत्नी और इन्द्र के स्वर्ग में अप्सर सुन्दरी मानी जाती है रम्भोरुयुगल सुन्दरी [illegible] रघु० [illegible] नै० १।३७ सम० —ऊरु (वि०) (स्त्री० —रु, —रू) केले के खम्भे जैसी जंघाओं वाला या वाली [illegible] रघु० ६।३४।

रम्य (वि०) [रम्यतेऽत्र रम्] 1 सुहावना सुखद आनन्दप्रद रुचिकर रम्यास्तपोवनानां क्रियाः समवलोक्य श० १।१३ 2 सुन्दर प्रिय मनोहर सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं श० १।२० ५।७, —म्यः एक प्रकार का वृक्ष, —म्यम् वीर्य।

रय् (भ्वा० आ० रयते रयित) जाना हिलना जुलना।

रय [रय् + अच्] 1 नदी की धारा प्रवाह —आवृक्कूलय [illegible] मेघ० ५० 2 वेग, चाल वेग [illegible] 3 उत्साह उत्कण्ठा [illegible]

रल्लक [रमण [illegible] कन् 1 ऊनी वस्त्र कंबल 2 पलक मारना [illegible] को न गया मत- [illegible] 3 एक प्रकार का हरिण।

रव [रु + अप्] 1 कन्दन चीख चीत्कार हू हू (आम जता की) [illegible] 2 गाना (पक्षियों की) कूजनध्वनि रघु० ९।[illegible] 3 मनुष्यों की [illegible] शब्द कोलाहल [illegible]

रवण (वि०) [रु + युच्] 1 शब्द करने वाला, चिल्लाने वाला चीखने वाला 2 स्वरयुक्त, झनझनायमान [illegible] भट्टि० ५।२४ 3 तीक्ष्ण, गर्म 4 चंचल, अस्थिर, —णः 1. ऊँट शि० १२।१ 2 कोयल, —णम् पीतल, कांसा।

रविः [रु + इ] सूर्य — सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८। सम०—कान्तः सूर्यकान्तमणि, —जः, —तनयः, —पुत्रः, —सूनुः 1 शनिग्रह 2 कर्ण के विशेषण 3 बालि के विशेषण 4 वैवस्वत मनु के विशेषण 5 यम के विशेषण 6 सुग्रीव के विशेषण, —दिनं,—वारः, —वासरः, —वासरम् रविवार, आदित्यवार, —संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

रशना, रसना [अश् + युच्, रशादेश] 1 रस्सी, डोरी 2 रास, लगाम 3 कटिबंध, कमरबंद, स्त्रियों की करधनी — रशनापि तव घनजघनमण्डले घोषयतु मन्मथनिदेशम् गीत० १०, रघु० ७।१०, ८।५७, मेघ० ३५ 4 जिह्वा भामि० १।१११। सम० —उपमा उपमा अलंकार का एक भेद, यह उपमाओं की एक शृंखला है जिसमें पूर्व उपमेय, आगे चलकर उपमान बनता जाता है सा० द० ६६४।

रश्मिः [अश् + मि धातोरुट् रश् + मि वा] 1 डोर, डोरी, रस्सी 2 लगाम, रास — मुक्तेषु रश्मिषु निरायतपूर्वकाया श० १।८, रश्मिसंयमनात् श० १ 3 सांटा, हंटर 4 किरण, प्रकाश किरण — श० ७।६, नै० २२।५६, इसी प्रकार 'हिमरश्मि' आदि। सम० —कलापः चव्वन लड़ियों की मोतियों की माला।

रश्मिवत् (पुं०) [रश्मि + मतुप्] सूर्य।

रस् I (भ्वा० पर० रसति रसित) 1 दहाड़ना, हू हू करना, चिल्लाना, चीखना — करोच कण्ठ पक्ष रराम —रघु० १६।७८, शि० ३।४८ 2 शब्द करना, कोलाहल करना, टनटन करना, झनझन करना — राजन्योर्पनिमयणाय रसति स्फीतो यशोदुन्दुभिः वेणी० १।२५, रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले गीत० १० 3 प्रतिध्वनि करना, गूंजना।

II (चुरा० उभ० रसयति-ते रसित) चखना, स्वाद लेना —मृद्वीका रसिता भामि० ४।१३ शि० १०।२३।

रसः [रस् + अच्] 1 सार, (वृक्षों का) दूध, रस, मधुरस कुसुमरस आदि 2 तरल, द्रव कु० १।७ 3 पानी —सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८ भामि० २।१४४ 4 मदिरा, शराब —मनु० २।१७७ 5 घूट एक मात्रा, खुराक 6 चखना, रस, स्वाद (आल० से भी) (वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों में से एक रस छः हैं कटु, अम्ल, मधुर, लवण तिक्त, और कषाय) —परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्तु पुरुषः मुद्रा० ३।४, उत्तर० २।२ 7 चटनी, मिर्च मसाला 8 कोई स्वादिष्ट पदार्थ—रघु० ३।४ 9 किसी वस्तु के लिए स्वाद या रुचि, पसन्दगी, इच्छा इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति —मेघ० ११२ 10 प्रेम, स्नेह अरसा वस्मिन्महाशौ रसः —उत्तर० १।३९, प्रसरति रसो निर्वृतिघनः ६।११, 'प्रेम की अनुभूति'—कु० ३।३७ 11 आनन्द, प्रसन्नता, खुशी— रघु० ३।२६ 12 लावण्य, अभिरुचि, सौन्दर्य, लावण्य 13 करुणरस, भाव-भावना 14 (काव्य रचनाओं में) रस नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति काव्य० १, (रस प्रायः आठ हैं — शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः। बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥ परन्तु कभी कभी 'शान्त' रस को जोड़ कर नौ रस बना दिये जाते हैं —निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः काव्य० ४, कभी कभी दसवां रस 'वात्सल्य' और मिला दिया जाता है। प्रत्येक काव्यरचना के रस आवश्यक घटक है, परन्तु विश्वनाथ के मतानुसार 'रस' काव्य की आत्मा है वाक्यं रसात्मकं काव्यम् —सा० द० ३) 15 सत्, सार, तत्त्व, सर्वोत्तम भाग 16 शरीर के संघटक द्रव 17 वीर्य 18 पारा 19 विष, जहरीला पेय, जैसा कि 'तीक्ष्णरसदायिन' में 20 कोई भी खनिज या धातुसंबंधी लवण।

सम०—अञ्जनम् रसौत, एक प्रकार का —अम्लः अमलबेत,—अयनम् 1 अमृत, कोई औषध जो बुढ़ापे को रोक कर जीवन को लम्बा करे,—निखिलरसायनमहितो गन्धेनोग्रेण लशुन इव—रस० 2. (आल०) अमृत का काम देने वाला अर्थात् जो मन को तृप्त भी करे साथ ही हर्षित भी करे, आनन्दयानि कुवलयरसायनानि मा० १।१८, मनसश्च रसायनानि —उत्तर० १।३६, श्रोत्र कर्ण० आदि 3 रसायन, रसायन °श्रेष्ठः पारा, —आत्मक (वि०) 1 रसीला, रसदार 2. तरल, द्रव, —आभासः किसी रस का बाहरूप या केवल प्रतीति 2 किसी रस का अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन, —आस्वादः 1 सत् या रस आदि चखना 2. काव्यरस की अनुभूति, काव्य सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण जैसा कि 'काव्यामृतरसास्वाद' में,—इन्द्रः 1 पारा 2 पारसमणि, चिन्तामणि (कहते हैं कि इसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है), —उद्भवम्, —उद्भवम् मोती,—कर्मन् (नपुं०) उन वस्तुओं को तैयार करना जिनमें पारा इस्तेमाल किया जाता है, —केसरम् कपूर, —गन्धः, —गन्धम् लोबान की तरह का खुशबूदार गोंद, —रसज्ञ, —ज्ञ (वि०) 1 रसों का ज्ञाता 2. आनन्द मनाने वाला, —जः राब, सीरा, —जम् रुधिर,—ज्ञ (वि०) 1. जो रस की उत्तमता को परखता है, जो स्वाद जानता है, संसारिकेषु च सुखेषु वयं रसज्ञाः उत्तर० २।२७ 2 वस्तुओं के सौन्दर्य को पहचानने में सक्षम (—ज्ञः) 1. स्वाद का जानकार, भावुक, विवेचक, काव्यमर्मज्ञ, कवि 2 रससिद्धि का ज्ञाता 3 पारे

के योग से बनने वाली औषधियों के तैयार करने वाला वैद्य, (—ला) जिह्वा,—भामि० २।५९, —तेजस् (नपुं०) रुधिर,—दः वैद्य,—धातु (नपुं०) पारा, —प्रबन्धः कोई भी काव्यरचना, विशेष कर नाटक, —फलः नारियल का पेड़, —भङ्गः रस का टूट जाना या अवरोध, —भवम् रुधिर,—राजः पारा, —विक्रयः मदिरा की बिक्री,—शास्त्रम् रससिद्धि का विज्ञान, —सिद्ध (वि०) 1 काव्य-सम्पन्न, रसवेत्ता —जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कवीश्वराः—भर्तृ० २।२४ 2 रससिद्धि में कुशल, —सिद्धिः (स्त्री०) रससिद्धि में कुशलता।

रसनम् [रस्+ल्युट्] 1. क्रन्दन करना चिल्लाना, चिंघाड़ना, शोर मचाना, टनटन करना, कोलाहल करना 2. बादलों की गड़गड़ाहट, बादलों की गरज 3 स्वाद, रस 4. स्वाद लेने की इन्द्रिय, जिह्वा —इन्द्रियं रसग्राहकं रसनं जिह्वाग्रवर्ति—तर्क०, मनु० १५।९ 5 प्रत्यक्षीकरण, गुणागुणविवेचन, ज्ञान - सर्वेऽपि रसनाद्रसाः —सा० द० २४४।

रसना दे० रसनम्। सम०—रदः पक्षी, —लिह् (पुं०) कुत्ता।

रसवत् (वि०) [रस+मतुप्] 1 रसेदार, रसीला 2. स्वादिष्ट, मसालेदार, मजेदार, सुरस —संसारविषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले, काव्यामृतरसास्वादः सङ्गमः सज्जनैः सह 3. तर, गीला, पानी से आर्द्र 4 मनोहर, शानदार, प्रांजल, परिष्कृत 5. भावों से भरा हुआ, जोशीला 6. स्नेहसिक्त, प्रेमपूरित 7 साहसी रसिक,—ती रसोई।

रसा [रस्+अच्+टाप्] 1 निम्नतर नारकीय प्रदेश, नरक 2. पृथ्वी, भूमि, मिट्टी—भामि० १।५९, स्मरस्य युद्धरङ्गतां रसारसारसारसा—भामि० २।१० 3 जिह्वा। सम०—तलम् 1 पृथ्वी के नीचे सात पातालों में से एक, दे० पाताल 2 नीचे की दुनिया, नरक,— राज्यं यातु रसातलं पुनरिदं न प्राणितुं काङ्क्षये भामि० २।११ जातिर्यातु रसातलम्—भर्तृ० २।३९।

रसालः [रसम् आलाति—आ+ला+क, ष० त०] 1 आम का पेड़,—पुष्पा रसालकुसुमानि समाश्रयन्ते —भामि० १।१७ 2 गन्ना, ईख,—ला 1 जिह्वा 2 वह दही जिसमें शक्कर तथा मसाले मिला दिए गये हों 3. 'दूर्वा' घास, दूब 4 अंगूरों की बेल या अंगूर, —लम् लोबान।

रसिक (वि०) [रसोऽस्त्यस्य ठन्] 1 मसालेदार, मजेदार, स्वादिष्ट 2. शानदार, ललित, सुन्दर 3 जोशीला 4. उत्तमता या रस को पहचानने वाला, स्वादयुक्त, गुणग्राही, विवेचक—तद् भूतं प्रबन्धं काव्यरसिकाः ... —भूत० ४० 5. आनन्द लेने वाला, खुशी मनाने वाला, प्रसन्नता अनुभव करने वाला, अच्छा (प्राय: समास में) —इयं मालती नवलता सदृश समोपरसिकेन देवता मन्मथेन मया च तुभ्यं दीयते —मा० ६, इसी प्रकार 'कामरसिक'—भर्तृ० ३।११२, परोपकाररसिकस्य—मृच्छ० ६।१९, —कः 1 रसिया, गुणग्राही, सहृदय पुरुष तु० अरसिक 2 स्वेच्छाचारी 3 हाथी 4 घोड़ा, —का 1 ईख का रस, राब, शीरा 2 जिह्वा 3 स्त्रियों की करधनी— दे० 'रसना' भी।

रसित (भू० क० कृ०) [रस्+क्त] 1 चखा हुआ 2. रस या मनोभाव से युक्त 3 मुलम्मा चढ़ा हुआ —तम् 1 शराब या मदिरा 2 क्रन्दन, दहाड़, गरज, चिंघाड़ कोलाहल शोर—हेमकक्ष्यरसितप्रतिमानगर्भि मा० ९।३।

रसोनः [रसेनैकेन ऊनः] लहसुन तु० लशुन।

रस्य (वि०) [रस+यत्] रसवाला, मजेदार सुस्वादु, रुचिकर रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः भग० १७।८।

रह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० रहति, रहयति —ते, रहित) छोड़ देना, त्याग देना, परित्याग करना तिलांजलि देना, छोड़कर अलग हो जाना रहयत्यापदुपेतमायतिः —कि० २।१४।

रहणम् [रह्+ल्युट्] छोड़ कर भाग जाना, परित्याग कर देना, अलग हो जाना सहकारमृते समये वह का रहणस्य केन सस्मार पदम् मको० २।१४।

रहस् (नपुं०) [रह्+असुन्] 1 एकान्तता, एकान्तवास, अकेलापन, एकाकीपन, निर्जनता रघु० ३।३ १५।९२ पंच० १।१३८ 2 उजड़ा हुआ या सुनसान स्थान छिपने की जगह 3 भेद की बात, रहस्य 4 मैथुन, संभोग 5 गुप्त इन्द्रिय -(अव्य०) चुपचाप, चोरी बचा कर, गुप्त रूप से, एकान्त में, निर्जनस्थान में, अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्सङ्गतं रहः —श० ५।२४, प्रायः समास में—गूढं रहः प्रणयमप्रतिपद्यमाने ५।२१।

रहस्य (वि०) [रहसि भवः—यत्] 1 गुप्त, निजी, प्रच्छन्न 2 भेदभरा, —स्यम् 1 भेद (आलं० से भी) —स्वयं रहस्यभेदः कृतः —विक्रम० २ 2. रहस्य से भरा जादू, मन्त्र, (अस्त्रसंबंधी) भेद, गुप्त बात—सरहस्यानि जृम्भकास्त्राणि—उत्तर० १ 3 आचरण का भेद या रहस्य, गुप्त बात—रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते उत्तर० २।२ 4 गुह्य या गोपनीय सिद्धान्त, एक रहस्यमय सिद्धान्त—भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् —भग० ४।३, मनु० २।१४०, (अव्य०—स्यम्) चुपचाप, गुप्तरूप से—याज्ञ० ३।३०१ (यहाँ यह विशेषण के रूप में भी समझा जा सकता है)। सम०—आख्यायिन् (वि०) भेद की बात

बताने वाला—रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः—श० १।२४,—भेदः—विभेदः किसी भेद या गुप्त बात का खोलना,—व्रतम् 1. गुप्त प्रतिज्ञा या साधना 2. जादू के अस्त्रास्त्रों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए एक रहस्यमय विज्ञान।

रहित (भू० क० कृ०) [रह् कर्मणि क्त] 1 छोड़ा गया, छोड़ दिया गया, परित्यक्त, सम्परित्यक्त 2. वियुक्त, मुक्त, वञ्चित, हीन, के बिना (करण० के साथ या समास के अन्त में रहितो भिक्षुभिर्ग्रामे याज्ञ० ३।५९, गुणरहित, मन्त्ररहित आदि 3 अकेला, एकाकी, —तम् गोपनीयता, पर्दा या ओट।

रा (अदा० प० [illegible]) देना, अनुदान देना, समर्पण करना—स रातु वो दुश्च्यवनो भावुकानां परम्पराम् काव्य० ७।

राका [रा+क+टाप्] 1 पूर्णिमा का दिन, विशेषरूप से रात्रि, दाक्षिण्य भजते कलानिधिरयं राकासुना म्लायति भामि० २।७२, ५४, ९४, १५०, १६५, १७५, ३।११ 2 पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी 3. वह कन्या जिसे अभी रजोधर्म होना आरम्भ हुआ है 4 खुजली, खाज।

राक्षस (वि०) (स्त्री०-सी) [रक्षस् इदम् अण्] दैत्य या राक्षस से संबंध रखने वाला, पैशाची, निशाचर के स्वभाव वाला—उत्तर० ५।३०, मनु० ९।१२,—सः 1. पिशाच, भूतप्रेत, बैताल, दानव, शैतान 2. हिन्दू-धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित विवाह के आठ भेदों में से एक प्रकार जिसमें दुलहिन के सम्बन्धियों को युद्ध में परास्त कर कन्या को बलात् उठाकर ले जाया जाता है—राक्षसो युद्धहरणात्—याज्ञ० १।६१, तु० मनु० ३।३३ भी (इसी ढंग से कृष्ण रुक्मिणी को उठा लाया था) 3. ज्योतिर्विषयक एक योग 4 नन्द राजा का मन्त्री, जो मुद्राराक्षस नाटक में एक प्रधान पात्र है, —सी पिशाचिनी।

राखा दे० लाखा (कदाचित् अशुद्ध रूप है)।

रागः [रञ्ज् भावे घञ्, नलोपकुत्वे] 1 वर्ण, रंग, रंजक वस्तु 2. लाल रङ्ग, लालिमा,—अधरः किसलयरागः—श० १।२१ 3. लाख रङ्ग, लाल रङ्ग की लाख, महावर,—रागेण बालारुणकोमलेन चूतप्रवालोष्ठमलञ्चकार—कु० ३।३०, ५।११ 4. प्रेम, प्रणयोन्माद, स्नेह, प्रीतिविषयक या काम-वासना, मलिनेऽपि रागपूर्णाम्—भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'लाली' भी है) —अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं व्यसनकृशा परिपालयांबभूव—कु० ४।४६, दे० 'अनुराग' भी 5. भावना संवेग, सहानुभूति, हित 6. हर्ष, आनन्द 7. क्रोध रोष 8. प्रियता, सौन्दर्य 9. संगीत के राग या स्वरग्राम मूलराग छः हैं भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा। श्रीरागो मेघरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः—भरत। दूसरे लेखकों ने भिन्न-भिन्न नाम बतलाये हैं, प्रत्येक राग के अनुरूप उनके साथ छः छः रागिनियाँ होती हैं, इस प्रकार सबको मिलाकर संगीत के अनेक राग हो जाते हैं) 10. संगीत की स्वरलहरी, संगीतमाधुर्य—तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, अहो रागपरिवाहिणी गीतिः—श० ५ 11 खेद, शोक 12 लालच, ईर्ष्या। सम०—अन्वित (वि०) क्रोधी, —चूर्णः 1. खैर का वृक्ष 2. सिन्दूर 3 लाख 4 होली के उत्सव पर एक दूसरे पर फेंका जाने वाला गुलाल या अबीर 5. कामदेव,—द्रव्यम् रंगने वाला पदार्थ, रङ्गलेप, रङ्ग,—बन्धः भावना का प्रकटीकरण, (नाना प्रकार संवेगों के) उपयुक्त वर्णन से उत्पन्न रुचि—भावो भावं नुदति विषयाद्रागबन्धः स एव—मालवि० २।९,—वृन्तः (पुं०) कामदेव,—सूत्रम् 1. रङ्गीन धागा 2. रेशमी धागा 3. तराजू की डोरी।

रागिन् (वि०) [राग+इनि] 1. रङ्गीन, रङ्गा हुआ 2 रङ्ग करने वाला, रङ्गलेप करने वाला 3. लाल 4. भावना और आवेश से पूर्ण, क्रोधी 5. प्रेमपूरित 6. आवेश, स्नेहशील, प्रणयानुरागपूर्ण, अभिलाषी, लालायित (समास के अन्त में), (पुं०) 1. चित्रकार 2. प्रेमी 3. स्वेच्छाचारी, कामासक्त,—णी 1. संगीत के स्वरग्राम की विकृतियाँ जिनमें से तीस या छत्तीस भेद गिनाये जाते हैं 2. स्त्रैणी, कुलटा, कामुकी।

राघवः [रघोर्गोत्रापत्यम् — अण्] 1. रघुवंशी, रघु की संतान विशेषतः राम 2. एक प्रकार का बड़ा मत्स्य—मालवि० १।५५।

राङ्कव (वि०)(स्त्री०—वी) [रङ्कोरयं विकारो वा तल्लोमजातत्वात् अण्] रङ्कु नाम की हरिण जाति से सम्बन्ध रखने वाला, या इसके बालों से बना हुआ, ऊनी—विक्रमांक० १८।११,—वम् 1. हरिण के बालों से बनाया हुआ ऊनी कपड़ा, ऊनी, वस्त्र 2. कम्बल।

राज् (भ्वा० उभ० राजति—ते, राजित) 1. (क) चमकना, जगमगाना, शानदार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमुख होना—रेजे ग्रहमयीव सा—भट्टि० ११।१५, राजन् राजति वीरवैरिवनिता वैधव्यदस्ते भुजः—काव्य० १०, रघु० ३।७, कि० ४।२४, ११।६ (ख) प्रतीत होना, लगना दिखाई देना,—दोषान्तराणि राजन्ते ऐसे गुणविरम्भत—कु० १।४९ 2. हुकूमत करना, शासन करना—प्रेर० (राजयति-ते) चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना। वि—,प्रेर० चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना, अलंकृत करना, देदीप्यमान करना—विराजयन्त्युज्ज्वलदीधितिक्रियाभी राजितव्यं वपुः—उत्तर० ६।१८, नीराजयति भूपालाः पादपीठान्तभूतलम्—काव्य० २ 2. आरती उतारना, नीराजन करना (युद्ध या अभियान की दृष्टि से प्रस्थान करते हुए सैनिकों के भाग की पूजना)

—नानायोधसमाकीर्णो नीराजितहयद्विपः काम० ४।६६ वि —, 1. चमकाना, - भामि० १।८८ 2. दिखाई देना, प्रतीत होना - रघु० २।२०।

राज् (पुं०) [राज्+क्विप्] राजा, सरदार, युवराज।

राजकः [राजन्+कन्] छोटा राजा, मामूली राजा, —**कम्** राजा या राजाओं का समूह, प्रभुसत्ता प्राप्त राजाओं का समुदाय - सहते न जनोऽप्यधःक्रियां किमु लोकाधिकधाम राजकम् —कि० २।४७, शि० १४।४३।

राजत (वि०) (स्त्री० -ती) [रजत+अण्] चांदी का, चांदी का बना हुआ, शि० ४।१३, -**तम्** चांदी।

राजन् (पुं०) [राज्+कनिन्, रञ्जयति रञ्ज्+कनिन् नि० वा] 1. राजा, शासक, युवराज, सरदार या मुखिया (तत्पुरुष समास के अन्त में 'राजन्' का बदल कर 'राज' बन जाता है) बंगराजः, महाराज आदि —तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात् - रघु० ४।१२ 2. सैनिक जाति का पुरुष, क्षत्रिय शि० १४।१४ 3. युधिष्ठिर का नाम 4. इन्द्र का नाम 5. चन्द्रमा—भामि० १।१२६ 6. यक्ष। सम० —**अङ्गनम्** राजकीय कचहरी या दरबार, महल का आंगन, —**अधिकारिन्**, —**अधिकृतः** 1. राजकीय अधिकारी या अफ़सर 2. न्यायाधीश, —**अधिराजः**, —**इन्द्रः** राजाओं का राजा, सर्वोपरि राजा, प्रमुख प्रभु, सम्राट्, —**अनकः** 1. घटिया राजा, छोटा राजा, 2. एक प्रकार की उपाधि जो पहले पूजनीय विद्वानों और कवियों को दी जाती थी, —**अपसदः** अयोग्य या पतित राजा, —**अभिषेकः** राजा का राजतिलक, —**अर्हम्** अगर की लकड़ी, एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, —**अर्हणम्** राजकीय सम्मानसूचक उपहार, —**आज्ञा** राजा का अनुशासन, अध्यादेश, अथवा आदेश, —**आभरणम्** राजा का आभूषण, —**आवलिः**, —**ली** राजकीय वंशावली, राजवंशावली, —**उपकरणम्** (ब० व०) राजकीय साज सामान, राजचिह्न, —**ऋषिः** (राज ऋषिः या राजर्षिः) राजकीय ऋषि, सन्तसमान राजा, क्षत्रिय जाति का पुरुष जिसने अपने पवित्र जीवन तथा साधनामय भक्ति से ऋषि का पद प्राप्त किया हो। जैसे पुरूरवा, जनक और विश्वामित्र, —**करः** राजा को दिया जाने वाला शुल्क, —**कार्यम्** राज्य का कार्य, —**कुमारः** युवराज, —**कुलम्** 1 राजकीय परिवार, राजा का कुटुम्ब 2 राजा का दरबार 3. न्यायालय (राजकुले कथ्, या निविद् (प्रेर०) न्यायालय में किसी के विरुद्ध अभियोग चलाना, या नालिश करना) 4. राजा का महल 5. राजा, महाराज (बोलने की सम्मानसूचक रीति), —**गामिन्** (वि०) राज्याधीन, या राजाधिकार में होने वाली सम्पत्ति आदि (जिस सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न हो), —**गृहम्** 1. राजकीय निवास, राजा का महल 2. मगध के मुख्य नगर या राजधानी का नाम (जो पाटलिपुत्र से लगभग ७५ या ८० मील की दूरी पर स्थित है) —**चिह्नम्** राजचिह्न, राजाधिकार या राजशक्ति, —**तालः**, —**ताली** सुपारी का पेड़, —**दण्डः** 1. राजा के हाथ का डंडा 2. राज शासन या राजाधिकार 3. राजा द्वारा दिया गया दण्ड, —**दन्तः** (दन्तानां राजा) आगे का दांत नै० ७।४६, —**दूतः** राजदूत, राजा का प्रतिनिधि, —**द्रोहः** राजा के विरुद्ध विश्वासघात, राजसत्ता के विरुद्ध आन्दोलन, राजविद्रोह, —**द्वार्** (स्त्री०), —**द्वारम्** राजा के महल का मुख्य द्वार या फाटक, —**द्वारिकः** राजमहल का ड्योढ़ीवान्, —**धर्मः** 1. राजा का कर्तव्य 2. राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला नियम या विधि (प्रायः ब० व० में) —**धानम्**, —**धानिका**, —**धानी** राजा का निवास स्थान, मुख्य नगर, राजधानी, शासन के कार्यालय का स्थान, —रघु० २।२०, —**धुर्** (स्त्री०), —**धुरा** शासन का उत्तरदायित्व या भार, —**नयः**, —**नीतिः** (स्त्री०) राज्य का प्रशासन, सरकार का प्रशासन, राजनय राजनीतिज्ञता, —**नीलम्** पन्ना, मरकत मणि, —**पट्टः** घटिया हीरा, —**पथः**, —**पद्धतिः** (स्त्री०), —राजमार्ग दे०, —**पुत्रः** 1. राजकुमार, युवराज 2. क्षत्रिय, सैनिक जाति का पुरुष 3 बुधग्रह, —**पुत्री** राजकुमारी, —**पुरुषः** 1 राजा का सेवक 2. मन्त्री, —**प्रेष्यः** राजा का सेवक (—**ष्यम्**) राजा की सेवा (अधिक शुद्ध 'राजप्रैष्य'),

—**बीजिन्**, —**वंश्य** (वि०) राजा की सन्तान, राजवंशज, —**भृतः** राजा का सिपाही, —**भृत्यः** 1. राजा का सेवक या मन्त्री 2. कोई सरकारी अधिकारी, —**भोगः** राजा का भोजन, खाना —**भौतः** राजा का विदूषक या [illegible], —**मन्दिरम्** (नपुं०) राजा का [illegible], —**मार्गः** 1. मुख्य मार्ग, मुख्य सड़क, राजकीय या मुख्य पथ, मुख्य सड़क या प्रधान मार्ग 2 राजाओं की कार्य-विधि, प्रणाली, या रीति, —**मुद्रा** राजा की मोहर, —**यक्ष्मन्** (पुं०) क्षयरोग, फुफ्फुसीय क्षयरोग, तपेदिक, —राजयक्ष्मपरिहानिराययौ कामयानसमवस्थया तुलाम् रघु० १९।५०, राजयक्ष्मेव रोगाणां समूहः स महीभृताम् - शि० २।९६ (इस शब्द की व्याख्या के लिए दे० मल्लि० इस पर और शि० १३।२९ पर), —**यानम्** राजा की सवारी, पालकी —**योगः** 1. जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों का ऐसा संयोग जिससे उस व्यक्ति के राजा होने का संकेत मिले 2. धार्मिक चिन्तन का एक सरल योग (राजाओं द्वारा अभ्यास करने योग्य) जो हठयोग (दे०) जैसे और कठोर योगों से भिन्न है, —**रङ्गम्** चांदी, —**राजः** 1 प्रमुख राजा, सर्वोपरि प्रभु, सम्राट

2 कुबेर का नाम अन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राज राजस्य दध्यौ मेघ० 3 3 चन्द्रमा रीति (स्त्री०) कांसा फूल **लक्षणम्** 1 मनुष्य के शरीर पर कोई ऐसा चिह्न जो उसकी भावी राजकायता को प्रकट करे 2 राजकीय चिह्न, राजचिह्न राज [illegible] **लक्ष्मी,श्री** (स्त्री०) राजा का सौभाग्य या समृद्धि (देखा का मस्तक [illegible]) राजा की कीर्ति या महिमा— रघु० ४।३ **वंश** [illegible] राजाओं का वंश **वंशावली** राजाओं का [illegible] राजाओं का वंश विवरण **विद्या** राजनीति [illegible] राजा का [illegible] [illegible] राजा का अनुशासन [illegible] [illegible] **समद** [illegible] [illegible] **सायुज्यम्** [illegible] **सारस** [illegible] **सूय** [illegible] [illegible]

राजन्य [illegible]

राजन्यकम् [illegible]

राजवत् [illegible]

राजस [illegible]

राजसात् (अ०) [illegible] राजा के अधीन [illegible]।

राजि—जी (स्त्री०) [राज् + इन् वा ङीप्] धारी, रेखा, पंक्ति कतार सर्वे पश्चिमान्प्रत्यग्राजिलेखाकारि लोकालोकस्य भामि० ४।४४ वानराजि— रघु० १२।७, कि० ६।५।

राजिका [राजि + कन् + टाप्] 1 रेखा पंक्ति कतार 2 खेत 3 काली सरसों 4 सरसों (एक परिमाण तोल)।

राजिल [राज + इलच्] साँप की एक सरल जाति जिसमें विष नहीं होता [illegible] [illegible] प्रवनत [illegible] सु० हुडुभ'।

राजीव [illegible] 1 एक प्रकार का [illegible] 2 [illegible] नील कमल कु० [illegible] -अक्ष [illegible] कमल जैसी आँखों [illegible]

राज्ञी [illegible] रानी राजा की पत्नी।

राज्यम् [illegible] राजन् वत् [illegible] 1 राजसत्ता प्रभुसत्ता राजकीय अधिकार राजपद [illegible] 2 राजधानी [illegible] 3 हकूमत राज्य शासन [illegible] **अङ्गम्** राज्य का [illegible] राजशासन की आवश्यक सामग्री [illegible] **अधिकार** [illegible] अधिकार **अपहरणम्** [illegible] ग्रहण करना **अभिषेक** राजा का [illegible] सिंहासनारोहण [illegible] राजा द्वारा दिया जाता [illegible] हुआ सिंहासन [illegible] पद्धति राज्य [illegible] धुरा, [illegible] [illegible] मोक्ष [illegible] की इच्छा [illegible] **सुखम्** राजकीय— [illegible]।

राढा [illegible] 1 [illegible] के एक जिले का नाम [illegible] [illegible]।

रात्रि—**त्री** (स्त्री०) [illegible] [illegible] नय [illegible] अट 1 बनैला [illegible] 2 [illegible] अन्धः (वि०) जिस रात को दिखाई न दे [illegible] (रात्रिचर भी) (स्त्री० [illegible]) 1 निशाचर [illegible] 2 पहरेदार [illegible]

चौकीदार 3 पिशाच, भूत, प्रेत—(त) यातं बने रात्रि चरी हुतोके भट्टि० २।२३, —**चर्या** 1 रात में इधर उधर घूमना 2. रात का होने वाला कार्य या संस्कार —**जम्** तारा, नक्षत्रपुंज —**जलम्** ओस —**जागर** 1 रात को पहरा देना रात को जागते रहना रात में बैठे रहना रघु० १९।३४ 2 कुत्ता —**दल** आधी रात —**मध्यरात्रि** —**पुष्पम्** कुमुद (जो रात को ही खिलता है) —**योग** रात का आ जाना —**रक्षः, —रक्षक** पहरेदार रखवाला, —**राग** अंधकार घना अंधेरा,—**वासस्** (नपुं०) 1 रात की वेशभूषा 2 अंधकार —**विगम** रात का अंत दिन का निकलना पौ फटना, प्रभात का प्रकाश —**वेद** —**वेदिन** (पुं०) मुर्गा।

रात्रिन्दिवम्, रात्रिन्दिवा (अव्य०) [द्व० स०] रात दिन लगातार अनवरत रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति श० ५।४।

रात्रिम्मन्य (वि०) [रात्रिम् + मन् + खश्] रात की भांति दिखाई देने वाला (जैसे दुर्दिन या मेघाच्छादित दिन हो) तु० 'रजनिमन्य'।

राद्ध (भू० क० कृ०) [राध् कर्तरि कर्मणि वा क्त] 1 आराधित, प्रसादित मनाया गया 2 कार्यान्वित सम्पन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित 3 पकाया हुआ (खाना) राधा हुआ 4 तैयार किया हुआ 5 प्राप्त किया हुआ हासिल किया हुआ 6 सफल, सौभाग्यशाली प्रसन्न 7 जादू की शक्ति से पूर्ण दे० राध। सम० —**अन्त** सिद्ध या स्थापित तथ्य, प्रदर्शित उपसंहार या सचाई, अन्तिम निर्णय, सिद्धांत मत सर्वैर्माणिकराद्धान्ता नितरामनपेक्षितत्वा इतीदानीमुपगादयाम शारी० —**अन्तित** (वि०) प्रदर्शित प्रमाणों द्वारा स्थापित तर्कसिद्ध।

राध् I (स्वा० पर० राध्नोति राद्ध इच्छा० रिरात्सति परन्तु 'मारना चाहता है' के लिए रित्सति) 1 राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना 2 सम्पन्न करना कार्यान्वित करना, पूरा करना अनुष्ठान करना निष्पन्न करना 3 प्रस्तुत करना तैयार करना 4 अनिष्ट करना नष्ट करना मार डालना उजाड़ना वानरा मृगरान् रेधु भट्टि० १०।१९।

II (दिवा० पर० राध्यति, राद्ध) 1 अनुकूल या दयालु होना, 2 सम्पन्न, या पूर्ण होना 3 सफल होना कामयाब होना, समृद्ध होना 4 तैयार होना 5 मार डालना नष्ट करना, प्रेर० (राधयति—ते) 1 राजी करना 2 सम्पन्न करना पूरा करना **अनु**— आराधना करना, पूजा करना, मनाना, **अप**— 1 कष्ट करना, ठेस पहुँचाना, पाप करना (संब० य, अधि० के साथ, अथवा स्वतन्त्र रूप से) यस्मिन्—नो पश्यपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला— श० ४ अपराद्धोऽस्मि तत्र भवतः कण्वस्य श० ७ 2 चूक जाना लक्ष्यवेध न कर सकना शि० २।२७ 3 सताना, चोट पहुँचाना अनिष्ट करना—न तु ग्रीष्मस्यैव सुभगमपराद्धं युवतिषु श० ३।९ **आ**— आराधना करना (प्रेर०) 1 राजी करना मनाना प्रसन्न करना तरेषा केनापि पर्यारिराधयिषमाराध्य वसुधा भर्तृ० ३।३४, ४।६ ५ 2 पूजा करना सेवा करना मेघ० ४५ **वि**— चोट पहुँचाना अनिष्ट करना कष्ट करना ठेस पहुँचाना क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः – शि० २।४३ विराद्धः एवं भवता विराद्धा बहुधा च नः – २।४१।

राध [राधा (विशाखा नक्षत्र) पौर्णमासी राधी सा अस्मिन् अस्ति राधी + अण्] वैशाख का महीना।

राधा [राध्नोति साधयति कार्याणि राध् अच् टाप्] 1 समृद्धि सफलता 2 ग्वाले की पत्नी जिस पर कृष्ण भगवान का बड़ा अनुराग था (इसकी प्रणयप्रीति को जयदेव ने अपने गीतगोविन्द की रचना द्वारा अमर कर दिया है) नदिम् राधे गृहं प्रापय गीत० १ 3 अधिरथ की पत्नी तथा कर्ण की पालिका माता का नाम 4 विशाखा नाम का नक्षत्र 5 बिजली।

राधिका इ० राधा।

राधेय [राधा + ढक्] कर्ण का विशेषण।

राम (वि०) [रम् कर्तरि घञ् ण वा] 1 सुहावना आनन्दप्रद, हर्षदायक 2 सुन्दर, प्रिय मनोहर 3 मलिन धूमिल काला 4 श्वेत —**मः** 1 तीन प्रसिद्ध व्यक्तियों का नाम —(क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जो कृष्ण का भाई था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र या सीताराम रामायण का नायक। [जब राम बालक ही थे तो विश्वामित्र दशरथ की अनुमति लेकर लक्ष्मण समेत राम को राक्षसों से अपने यज्ञों की रक्षा करने के लिए अपने आश्रम में ले गये। राम ने अल्पायु होते हुए भी राक्षसों को मार गिराया और पुरस्कार के रूप में ऋषि से कई दिव्य अस्त्र प्राप्त किए। उसके पश्चात् राम विश्वामित्र के साथ जनक की राजधानी मिथिला नगरी गए जहाँ शिव के धनुष को झुकाने का आश्चर्य जनक कार्य करके सीता से विवाह किया और वापिस अयोध्या आ गए। यह देखकर कि राम ही राज्य का उपयुक्त अधिकारी हो रहा है दशरथ ने उसे अपना युवराज बनाने का निश्चय किया परन्तु राज्याभिषेक के दिन दशरथ की प्रियपत्नी कैकेयी ने अपनी दुष्ट दासी मन्थरा के द्वारा भड़काए जाने पर दशरथ को अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वरदान पूरा करने के लिए कहा एक से उसने रामका चौदह वर्ष

का निर्वासन तथा दूसरे से अपने प्रिय पुत्र भरत का युवराज के रूप में राज्याभिषेक माँगा। राजा को इस माँग से भयानक धक्का लगा, उसने कैकेयी को उन दुष्ट माँगों से हटाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु अन्त में उसे झुकना पड़ा। तुरन्त ही आज्ञाकारी पुत्र राम अपनी सुन्दर तरुण पत्नी सीता तथा भक्त भ्राता लक्ष्मण के साथ निर्वासित होने को तैयार हो गये। उसका निर्वासन काल बड़ी-बड़ी घटनाओं से भरा हुआ है, दोनों भाइयों ने कई शक्तिशाली राक्षसों का काम तमाम कर दिया, फलतः रावण की द्वेषाग्नि भड़क उठी। दुष्ट रावण ने मारीच की सहायता से राम की शक्ति का देखने के लिए उसकी प्रिय पत्नी सीता का बलात् अपहरण किया। सीता का पता लगाने के लिए अनेक निष्फल पूछताछों के पश्चात् हनुमान् ने पता निश्चय किया कि सीता लंका में है और फिर उसने राम को प्रेरित किया कि लंका के ऊपर चढ़ाई की जाय तथा दुष्ट रावण को मौत के घाट उतारा जाय। वानरों ने समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया जिसके ऊपर से अपनी असंख्य सेना के साथ पार होकर राम लंका में प्रविष्ट हुए तथा उसे जीत कर सब राक्षसों समेत रावण का वध किया। इसके पश्चात् राम अपनी पत्नी सीता, तथा अन्य युद्ध मित्रों के साथ विजयपताका फहराते हुए वापिस अयोध्या आये जहाँ वसिष्ठ द्वारा उनका राज्याभिषेक किया गया। राम ने बहुत वर्षों तक न्यायपूर्वक राज्य किया उसके पश्चात् कुश युवराज बनाया गया। राम, विष्णु भगवान का मानवी अवतार माना जाता है दे० जयदेव—वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं दशमुखमौलिबलिं रमणीयं। केशव धृतरघुपतिरूप जय जगदीश हरे—गीत० १। सम०—अनुज एक प्रसिद्ध सुधारक, वैष्णवी सम्प्रदाय के प्रवर्तक तथा कई पुस्तकों के प्रणेता वैष्णव, अयनम् (नम्) 1 राम के साहसिक कार्य 2. वाल्मीकिप्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें सात काण्ड तथा २४००० श्लोक हैं। गिरिः एक पहाड़ का नाम,—(यक्षः) स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु—मेघ० १ —चन्द्रः, भद्रः दशरथ के पुत्र राम का नाम, दूतः, हनुमान् का नाम नवमी चैत्रशुक्ला नवमी राम की जयन्ती, सेतुः राम का पुल भारत और लंका को मिलाने वाला रेत का पुल जिसे आजकल 'एडम्स ब्रिज' कहते हैं।

रामठः,—ठम् [रम् + अठ बाहुलकात्] हींग।

रामणीयक (वि०) (स्त्री० की) [रमणीय + वुञ्] प्रिय, सुन्दर सुखद, कम् प्रियता, सौन्दर्य—वा रामणीयकमिवैकनिधिर्दिदृक्षया वा मा० १।२१ ९।४७, तथैन्दिवम् एव यन्निद्रागारविनिगमनीयकम्—नै० २। ४४, कि० १।३३ ४।४।

रामा [रमतेऽनया रम करणे घञ्] 1 सुन्दरी स्त्री, मनोहारिणी तरुणी—अथ रामा विकसन्मुखी बभूव भामि० २।१६, ३।६ 2 प्रिया, पत्नी, गृहस्वामिनी रघु० १२।२३ १४।२७ 3 स्त्री,—रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम्—ऋतु० ६।२५ 4 नीच जाति की स्त्री 5 सिंदूर 6 हींग।

राम्भः [रम्भा + अण्] बाँस की लाठी जिसे ब्रह्मचारी या सन्यासी रखते हैं।

रावः [रु + घञ्] 1 क्रन्दन चीत्कार, चीख, दहाड़, किसी जानवर की चिंघाड़ 2 शब्द, ध्वनि—मृगशावकराव—मालवि० १।२१ मधुरिपुरावम्—गीत० ११।

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु + णिच् + ल्युट्]

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु + णिच् + ल्युट्] क्रन्दन करने वाला, चीखने वाला, दहाड़ने वाला शोक के कारण रोने वाले वाला—णः एक प्रसिद्ध राक्षस लंका का राजा, राक्षसों का मुखिया (रावण के पिता का नाम विश्रवा तथा माता का केशिनी या कैकसी था इसी लिए वह कुबेर का सौतेला भाई था। पुलस्त्य ऋषि का पौत्र होने के कारण वह पौलस्त्य कहलाता है। मूल रूप से लङ्का पर पहले कुबेर का अधिकार था, परन्तु रावण ने उसे वहाँ से निकाल दिया और लंका को अपनी राजधानी बनाया। उसके दस सिर (इसीलिए वह दशग्रीव दशवदन, आदि कहलाता है) और बीस भुजाएँ थीं, कुछ के अनुसार उसकी टाँगें भी चार थी (दे० रघु० १२।८८ और उस पर मल्लि०) ऐसा वर्णन मिलता है कि रावण ने ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए दस हजार वर्ष तक कठोर तपश्चर्या की, और प्रति हजार वर्ष के पश्चात् अपना सिर ब्रह्मा के आगे प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने नौ सिर प्रस्तुत किये और दसवाँ सिर प्रस्तुत करने वाला ही था कि ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि उसकी मृत्यु न मनुष्य द्वारा होगी और न देवता द्वारा। इस शक्ति से सम्पन्न होकर वह बड़ा अत्याचार करने लगा, उसने लोगों को सब प्रकार से सताना आरम्भ किया। उसकी शक्ति इतनी अधिक हो गई कि देवता भी उसके घरेलू नौकरों की भाँति उसकी सेवा करने लगे। उसने अपने समय के सभी राजाओं को जीत लिया परन्तु कार्तवीर्य ने उसे कारागार में डाल दिया जब कि रावण ने उसके देश पर आक्रमण किया। एक बार उसने कैलास पर्वत उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु शिव ने ऐसा दबाया

कि उसकी अगुलियाँ कुचल गई। फलत उसने शिव की एक हजार वर्ष तक इतने ऊँचे स्वर से स्तुति की कि उसका नाम रावण पड़ गया और तब शिव ने उस पीड़ा से मुक्त कर दिया। परन्तु यद्यपि वह इतना बलवान और अजेय था तो भी उसका अन्तिम दिन निकट आ गया। राम जिन्होंने इस राक्षस का वध करने के लिए ही विष्णु का अवतार धारण किया था, अपना निर्वासित जीवन वन में रहकर बिता रहा था। एक दिन रावण ने उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया और उसने अपनी पत्नी बन जाने को [illegible] करता रहा परन्तु उसने रावण की प्रार्थना को ठुकरा दिया और वह उसके यहाँ रहती हुई भी पतिव्रता सती साध्वी बनी रही। अन्त में राम ने अपनी वानरसेना की सहायता से लंका पर चढ़ाई की और रावण तथा उसकी सेना का काम तमाम किया। वह राम का [illegible] शत्रु था और इसलिए यह कहावन प्रसिद्ध हुई [illegible] रामरावणयोरिव)।

रावणि [रावणस्यापत्यम्—इञ्] 1 इन्द्रजित का नाम [illegible] रावणिरशाब्दयो यो [illegible] पहीतम भट्टि० १५।७८, ८० 2 रावण का कोई पुत्र भट्टि० १५।७९, ८०।

राशि [अश्नुते व्याप्नोति—अश् इञ् [illegible]] 1 ढेर, अंबार, समूह, परिमाण [illegible] तोयराशि, गुणराशि आदि 2 अंक या संख्याएँ जो अंकगणित की किसी विशेष प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त की जायें (जैसे बढ़ना, गुणा करना आदि) 3 राशिचक्र, बारह राशियाँ। सम० अधिप कुण्डली में किसी विशेष घर का स्वामी, चक्रम् राशिमण्डल, बारह राशियाँ, त्रयम् त्रैराशिक गणित, भाग किसी राशि का भाग या अंश, [illegible] सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों का राशिचक्र में से होकर मार्ग अर्थात् किसी ग्रह का किसी राशि पर रहने का काल।

राष्ट्रम् [राज्+ष्ट्रन्] 1 राज्य, देश, साम्राज्य — राष्ट्र दुर्गबलानि च— अमर० मनु० ७।१०९, १०।६१ 2 जिला, प्रदेश, देश, मण्डल जैसा कि महाराष्ट्र में —मनु० ७।३२ 3 अधिवासी, जनता, प्रजा मनु० ९।२५४, [illegible] कोई राष्ट्रीय या सार्वजनिक संकट।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1 किसी राज्य या देश का वासी मनु० १०।६१ 2 किसी राज्य का शासक राज्यपाल।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय (वि०) [राष्ट्र+घ, घ] राज्य से सम्बन्ध रखने वाला, य 1 राज्य का शासक राजा —जैसा कि 'राष्ट्रियश्याल' में मृच्छ० ९ 2 राजा का साला (रानी का भाई) [illegible] राष्ट्रियमुख्यात् [illegible] श० ६।

रास् (भ्वा० आ० रासते) क्रन्दन करना, चिल्लाना, किलकिलाना, शब्द करना, हू हू करना।

रास [रास्+घञ्] 1 कोलाहल, कोलाहल [illegible] 2 शब्द, ध्वनि 3 एक प्रकार का नाच जिसका अभ्यास कृष्ण और गोपिकाएँ करती थीं, विशेषतः वृन्दावन की गोपियाँ [illegible] रासे रसे [illegible] वेणी० १ [illegible] रासे हरिमिह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] क्रीडा, मण्डलम् श्रीकृष्ण का नाच तथा वृन्दावन की गोपिकाओं का [illegible] नाच।

रासकम् [रास+कन्] एक प्रकार का [illegible] [illegible] सा० द० ५४८।

रासभ [रासे शब्दायते] गधा, [illegible]

राहित्यम् [रहित+ष्यञ्] बिना किसी वस्तु के रहना, अभाव, किसी वस्तु का न होना।

राहु [रह् [illegible]] [illegible] राक्षस का नाम, विप्रचित्ति और सिंहिका का पुत्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (अब समुद्रमंथन के परिणाम स्वरूप समुद्र से निकला अमृत देवताओं को दिया जाने लगा तो राहु ने वेश बदलकर उनके साथ स्वयं भी अमृत [illegible] चाहा। परन्तु सूर्य और चन्द्रमा को इस बात का पता लगा तो उन्होंने विष्णु को इस चालाकी का ज्ञान कराया। फलतः विष्णु ने राहु का सिर काट डाला परन्तु चूंकि थोड़ा सा अमृत वह चख चुका था तो उसका सिर अमर हो गया। परन्तु कहते हैं कि पूर्णिमा या अमावस्या को वह दानव चन्द्र और सूर्य को अब भी सताता रहता है रघु० मेघ० ४।३४। ज्योतिष में राहु भी केतु की भांति समझा जाता है यह आठवाँ ग्रह है या चन्द्रमा का आरोही शिरोबिन्दु है) 2 ग्रहण या ग्रस्त होने का क्षण। सम० ग्रसनम्,—ग्रास, दर्शनम्, स्पर्श (चांद या सूर्य का) ग्रहण, सूतकम् राहु का जन्म अर्थात् (चांद या सूर्य का) ग्रहण याज्ञ० १।१४६ तु० मनु० ४।११०।

रि I (तुदा० पर० रियति) [illegible] जाना, हिलना जुलना।

I (क्र्या० उभ० दे० 'री')।

रिक्त (भू० क० कृ०) [रिच्+क्त] 1 खाली किया गया, साफ किया गया, निकाला गया 2 खाली, शून्य 3 से रहित, वञ्चित, के बिना 4 खोखला किया गया (जैसे हाथ की अंजलि) 5 गरीब 6 विभक्त, वियुक्त (दे० रिच्) [illegible] 1 खाली स्थान, शून्यक, निर्जनता 2 जंगल, उजाड़, बियाबान। सम०—पाणि, हस्त (वि०) खाली हाथ वाला (फल आदि के) उपहार

से रक्षित अहमपि देवीं प्रेक्षितुमरिक्तपाणिर्भवामि मालवि० ४।

रिक्तक (वि०) [रिक्त+कन्] दे० 'रिक्त'।

रिक्ता [रिक्त+टाप्] चान्द्रमास के पक्ष की चतुर्थी नवमी या चतुर्दशी का दिन।

रिक्थम् [रिच्+थक्] 1 दायभाग, उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति, मरने के पश्चात् विरासत में छोड़ी हुई सम्पत्ति विभजरन् सुताः पित्रोरूर्ध्वं रिक्थमृणं समम् याज्ञ० २।११७, मनु० ९।१०४, न तं गर्भं पित्र्यं रिक्थमर्हति श० ६ 2 सम्पत्ति धनदौलत मामार्ग मनु० ८।२९ 3 सोना। सम०—आद, —ग्राह, —भागिन् (पु०), —हर, —हारिन् (पु०) उत्तराधिकारी।

रिङ्ख्, रिङ्ग् (तुदा० पर० रिङ्खति रिङ्गति) 1 रेंगना, हाथ पाँव चलना 2 धीरे से चलना।

रिङ्खणम्, रिङ्गणम् [रिङ्ख्+ल्युट्] 1 रेंगना, पेट के बल चलना (घुटनियों चलना) 2 (सदाचार से) विचलित होना, कुमार्गगामी होना।

रिच् (रुधा० उभ० रिणक्ति रिङ्क्ते रिक्त) 1 खाली करना, रिताना, साफ करना, निर्मल करना रिण (?) अलंकर्तव्यम् भट्टि० ९।३१ भ्राविर्भूते शशिनि तमसा रिच्यमानेव रात्रिः विक्रम० ३।८ 2. वञ्चित करना, विरहित करना (प्रायः भू० क० कृ० में) दे० रिक्त, अति—, आगे बढ़ना, प्रगति करना पीछे छोड़ देना (कभी का० में और अपा० के साथ) गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते पञ्च० ४।८१ हि० ४।१३१, भग० २।३६ वाचः कर्मातिरिच्यते उपदेश से निदर्शन उत्तम है उपदेशक कुछ बैठकर देता परिपूर्ण (Example is better than Precept) व्यति—, 1 आगे बढ़ना पीछे छोड़ देना, प्रगति करना 2. बढ़ाना, विस्तार करना, व्यति— बढ़ जाना पीछे छोड़ना स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते रघु० १०।३०।

ii (भ्वा० चुरा० पर० रेचति, रेचयति, रेचित) 1 विभक्त करना, वियुक्त करना, अलग-अलग करना 2. परित्याग करना, छोड़ना 3 सम्मिलित होना, मिलना, आ—, सिकोड़ना, खेल-खेल में चलना आरोचना भ्रूभ्रू कटाक्षैः — कु० ३।५।

रिटिः [रि+टिक्] 1. एक प्रकार का बाजा 2. शिव के एक सेवक (गण) का नाम—तु० भृङ्ग (बे) रिटि'।

रिपुः [रप्+उन्, पृषो० इत्वम्] शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी।

रिफ् (तुदा० पर० रिफति, रिफित) 1 कटकटाने का शब्द करना 2 बुरा भला कहना, कलङ्क लगाना।

रिश् (भ्वा० पर० रेशति, रिष्ट) 1 क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, ठेस पहुँचाना तस्येहार्थो न रिच्यते—महा०, तेन यायात्सतां मार्गं तेन गच्छन् न रिष्यते मनु० ४।१७८ 2. मार डालना, नष्ट करना भट्टि० ९।३१।

रिष्ट (भू० क० कृ०) [रिष्+क्त] 1 क्षतिग्रस्त चोट पहुँचाया हुआ, 2 अभागा —ष्टम् 1 उत्पात, क्षति, हेम 2 बदकिस्मत, दुर्भाग्य 3 विनाश, हानि 4 पाप 5 सौभाग्य, समृद्धि।

रिष्टि (स्त्री०) [रिष्+क्तिन्] दे० ऊ० 'रिष्टम्', पु० तलवार।

री i (दिवा० आ० रीयते) टपकना, बूंद-बूंद गिरना, रिसना पसीजना, बहना।

ii (क्या० उभ० रिणाति रिणीते रीण-प्रेर० रेपयति-ते) 1 जाना हिलना-जुलना 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना मार डालना 3 हुङ्कार करना।

रीढा (स्त्री०) 1 निन्दा झिड़की कलङ्क 2 घर्म जुवा

रीढकः (पु०) मेरुदण्ड रीढ की हड्डी।

रीढा [रिह्+क्त+टाप्] अनादर, तिरस्कार अपमान।

रीण (भू० क० कृ०) [री+क्त] टपका हुआ बहा हुआ, बूंद बूंद करके गिरा हुआ।

रीतिः (स्त्री०) [री+क्तिन्] 1 हिलना-जुलना, बहना 2 गति क्रम 3 धारा, नदी 4 रेखा, सीमा 5 प्रणाली ढंग, तरीका, मार्ग शैली, विधा, प्रक्रिया—रीति गिरामममृतवृष्टिकरीं तदीयां भामि० ३।१९, मदंसेषा विहिता रीतिः माल० २, उक्तरीत्या, अनया रीत्या आदि 6 रिवाज, प्रथा प्रचलन 7 शैली वाक्यविन्यास—पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्था विशेषवत्। उपकर्त्री रसादीनां सा पुनः स्याच्चतुर्विधा। वैदर्भी चाथ गौडी च पाञ्चाली लाटिका तथा सा० द० ६२०—५ 8 पीतल, कांसा (इस अर्थ में 'रीती' भी) 9 लोहे का जंग, मुर्चा 10 धातु के तल पर लगा जारेय।

रु (अदा० पर० रौति रवीति रुत) क्रन्दन करना, कूजन करना चिल्लाना, चीखना जोर से बोलना, दहाड़ना (मक्खियों का) भनभनाना, शब्द करना कर्णे कल किमपि रौति शनैर्विचित्रम्—शि० ११।४१, भट्टि० ३।१७, १२।७२ १४।२१, वि— 1 क्रन्दन करना विलाप करना शोक में रोना—अनु सहचरीं दूरे मत्वा विरौति समुत्सुकः विक्रम० ४।२० भट्टि० ५।५४, ऋतु० १।२७, 2. कोलाहल करना, शोर मचाना न स विरौति न चापि स शोभते पञ्च० १।७५, भीमंस्वाद् गृहस्य विरुतं कपाटं मृच्छ० ३, एते न एव गिरयो विरुवन्मयूराः उत्तर० २।२३।

रुक्म (वि०) [रुच्+मक्, नि० कुत्वम्] उज्ज्वल, चमकदार —क्मः सोने का आभूषण—शि० १५।७८,—क्मम् 1 सोना, 2. लोहा। सम०—कारकः सुनार,—पृष्ठक

(वि०) सोने के मुलम्मे से युक्त, सोना चढ़ा हुआ, —वाहन द्रोणाचार्य का नामान्तर।

रुक्मिन् (पुं०) [रुक्म + इनि] भीष्मक के ज्येष्ठ पुत्र तथा रुक्मिणी के भाई का नाम।

रुक्मिणी [रुक्मिन् + ङीप्] विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री का नाम (रुक्मिणी की सगाई रुक्मिणी के पिता ने शिशुपाल से कर दी थी, परन्तु रुक्मिणी गुप्त रूप से कृष्ण से प्रेम करती थी। उसने कृष्ण को एक पत्र भेज कर प्रार्थना की कि उसका अपहरण कर लिया जाय। बलराम सहित कृष्ण आया और रुक्मिणी के भाई को युद्ध में परास्त कर रुक्मिणी को उठा कर ले गया। रुक्मिणी से कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जन्म हुआ)।

रुग्ण (वि०) =रुग्ण, दे०।

रुग्ण (भू० क० कृ०) [रुज् + क्त] 1 टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट 2 व्यर्थीकृत 3 झुका हुआ, वक्रीकृत 4 क्षति ग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 5 रोगी, बीमार (दे० रुज्)। सम०—रय (वि०) जिसका आक्रमण रोक दिया गया हो, जिसका धावा विफल कर दिया गया हो।

रुच् (भ्वा० आ० रोचते, रुचित) 1 चमकना, सुन्दर या शानदार दिखलाई देना, जगमगाना —रुरुचिरे रुचिरे क्षणविभ्रमा —शि० ६।४६, मनु० ३।६२ 2 पसन्द करना, (अन्य व्यक्तियों से) प्रसन्न होना, (वस्तुओं से) प्रसन्न होना, रुचिकर होना, (प्रसन्न व्यक्ति के लिए सम्प्र० तथा वस्तु के लिए कर्त०) —न मजा रुरुचिरे रमणीभ्य —कि० ९।३५, यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत् तस्य सुन्दरम् हि० २।५३, कई बार व्यक्ति के लिए षष्ठी —दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्–मृच्छ० १।११ प्रेर०—(रोचयति ते) पसन्द कराना, रुचिकर या सुहावना करना भट्टि० ३।१६, इच्छा० (रुरु–रोचिषते) पसन्द करने की इच्छा करना, अभि , पसन्द करना, रुचिकर होना —यदभिरोचते भवते विक्रम० २, प्र—, 1 बहुत चमकना 2 पसन्द किया जाना, वि० चमकना, जगमगाना— रघु० ६।१, १३।१८, भट्टि० ८।६८।

रुच्, रुचा (स्त्री०) [रुच् + क्विप्, रुच् + टाप्] 1 प्रकाश, कान्ति, उज्ज्वलता, —अवदात्य ... —शि० १३।५३, ९।२३, २५ ... शि० ५।४३, मेघ० ४४ 2 रङ्ग, छवि (समास के अन्त में) ... रघु० ८।४३, कु० ३।६२, कि० ५।४५ 3 अभिरुचि, इच्छा।

रुचक (वि०) [रुच् + क्वुन्] 1 रुचिकर, सुखद 2 क्षुधा वर्धक या भूख बढ़ाने वाली (औषधि) 3 तीक्ष्ण, चरपरा, —कः 1 नीबू 2 कबूतर, —कम् 1 दाँत 2 गले का आभूषण विशेष, हार 3. पौष्टिक या पाचनशक्ति वर्धक 4 माला, हार 5 काला नमक।

रुचा दे० 'रुच्'।

रुचि (स्त्री०) [रुच् + कि] 1 प्रकाश, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता, —रुचिमिन्दुदले करोत्यजः परिपूर्णेन्दुरुचिर्महीपतिः —शि० १६।७१, रघु० ५।६७, मेघ० १५ 2 प्रकाश किरण जैसा कि 'रुचिभर्तृ' में 3 छवि, रङ्ग, सौन्दर्य बहुधा समास के अन्त में —पटम् ... शि० ९।१९ 4 स्वाद, मजा —जैसा कि 'रुचिकर' में 5 सुस्वाद भूख क्षुधा 6 कामना, इच्छा, खुशी, —स्वरुच्या स्वेच्छा से, खुशी से 7 अभिरुचि स्वाद —विमार्गगायाश्च रुचिः स्वकान्ते भामि० १।१२५, 'अभिरुचि या प्रेम' —न स क्षितीशो रुचये बभूव, ... रघु० ६।३०, नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् मालवि० १।४ 'आसक्त' 'व्यस्त' या 'अनुरक्त' के अर्थ में प्रयोग बहुधा समास के अन्त में ... मा० ५।२९ 8 एकाग्रता, किसी की बात में तल्लीनता। सम०—कर (वि०) 1 स्वादिष्ट, चटपटा मजेदार 2 इच्छा का उत्तेजक 3 क्षुधावर्धक पौष्टिक —भर्तृ (पुं०) 1 सूर्य शि० ९।१३ 2 पति।

रुचिर (वि०) [रोचते रुच् + किरच्] 1 उज्ज्वल, चमकदार, प्रकाशमान, जगमगाता, —हेम रुचिराम्बर ... चौर० १४ ... आदि 2 स्वादिष्ट, मजेदार 3 मधुर, ललित 4 भूख वर्धक, भूख बढ़ाने वाला 5 पौष्टिक, बलवर्धक —रा 1 एक प्रकार का पीला रंग 2 वृत्तविशेष दे० परिशिष्ट 1 —रम् 1 केसर 2 लौंग।

रुच्य (वि०) [रुच् + क्यप्] उज्ज्वल, प्रिय आदि दे० 'रुचिर'।

रुज् (तुदा० पर० रुजति रुग्ण) 1 तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करना, नष्ट करना रघु० ९।६३, १२।७३ भट्टि० ४।४२ 2 पीड़ा देना, क्षति पहुँचाना, अस्वस्थ करना, रोगग्रस्त करना ... भट्टि० ८।१२० 3 झुकना।

रुज्, रुजा (स्त्री०) [रुज् + क्विप्, रुज् + टाप्] 1 भङ्ग, विभञ्जन 2 पीड़ा, व्यथा, यातना, वेदना ... श० ३।४, ... हृदयप्रमाथिनी मालवि० ३।२, ... रघु० ८।५० 4 थकावट, श्रम, प्रयत्न, कष्ट। सम०—प्रतिक्रिया प्रतिकार या रोग की चिकित्सा, इलाज चिकित्सा का व्यवसाय, 3 भेषजम् औषध, —सद्मन् (नपुं०) विष्ठा, मल।

रुण्ड,—ण्डम् [रुड् + ड, रुण्ड + अच् वा] सिर रहित शरीर, धड़भाग, कबन्ध —... उत्तर० ५।६, मा० ३।१७।

रुत [रु + क्त] ... चहचहाना, ...

करना, कोलाहल, (पक्षियों का) कूजना (मक्खियों का) भनभनाना [illegible] कोकिल [illegible] [illegible] अविराम [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]।

[illegible] (भ्वा० पर० [illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible] (भ्वा० [illegible]) 1 अवरुद्ध करना [illegible] रोकना [illegible] मना करना [illegible] — विक्रम० [illegible] [illegible] ३७, ९१, प्राणापानगती [illegible] 2 थामना, सधारण करना (सिर में [illegible]) दबाना [illegible] कुसुमसदृशं प्रायशो [illegible] प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि मेघ० १० 3 बन्द करना, ताला लगाना, रोकना, घेरना, बन्द कर देना — अधि० के साथ परन्तु कभी-कभी द्विकर्म० के साथ भट्टि० ६ ३५ [illegible] [illegible] 4 बाधना, सीमित करना [illegible] [illegible] भर्तृ० २।६ 5 घेरा डालना, घेरना, नाकेबन्दी करना — रुन्धन्तु वारणघटा नगरं मदीया

मुद्रा० ४।१३ [illegible] निकाल [illegible] भट्टि० १४, २९ 6 छिपाना, ढकना [illegible] करना [illegible] करना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] 1 अवरुद्ध करना [illegible] रोकना [illegible] 2 बाधा डालना [illegible] रोकना [illegible] ३ [illegible] अधिकार में करना, बलात् [illegible]।

[illegible] [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पुं०) पिशाच।

रुश [illegible] [illegible] [illegible] प्रकार का हरिण रघु० ९।५१ ७४

रुष् (भ्वा० पर० रुशति) चोट पहुँचाना, जान से मार डालना, नष्ट करना।

रुशत् (वि०) [रुश् + शतृ] चोट पहुँचाने वाला, अरुचिकर (शब्द आदि जो) बुरे लगें।

रुष् I (दिवा० पर० रुष्यति-विरलप्रयोग-रुष्यते रुषित, रुष्ट) रूसना, नाराज होना, क्रुद्ध होना—तस्तोऽभ्यवदन

दैन्य—भट्टि० १७।४०, मामुहो मा रुषोऽधुना —१५।१६, ९।२०।

ii (भ्वा० पर० रोषति) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. नाराज करना, सताना।

रुष्, रुषा (स्त्री०) [रुष्+क्विप्, रुष्+टाप्] क्रोध, रोष, गुस्सा,—निर्बन्धसजातरुषा रघु० ५।२१, प्रत्यु्न्म- निर्बन्धरुषा हि सन्त —१६।८०, १९।२०।

रुह् (भ्वा० पर० रोहति, रूढ) 1. उगना, फूटना, अंकुरित होना, उपजना—रूढरागप्रवाल:—मालवि० ४।१, केसरैरर्धरूढै: —मेघ० २१, छिन्नोऽपि रोहति तरु —भर्तृ० २।८७ 2. उपजना, विकसित होना, बढ़ना 3. उठना, ऊपर चढ़ना, उन्नत होना 4. पकना, (व्रण आदि का) स्वस्थ होना—प्रेर० (रोपयति—ते, रोहयति—ते) 1. उगाना, पौधा लगाना, भूमि में (बीज) बखेरना 2. उठाना, उन्नत करना 3. सौंपना, सुपुर्द करना, देखरेख में देना,—गुणवत्सुतरोपितश्रिय —रघु० ८।११ 4. स्थिर करना, निर्देशित करना, जमाना—रघु० ९।२२, इच्छा० (रुरुक्षति) उगाने की इच्छा करना, अधि—, चढ़ना, सवार होना, सवारी करना—रघु० ७।३७, कु० ७।५२ (प्रेर०) उन्नत होना, ऊपर उठाना, बिठाना —रघु० १९।४४, अव—, नीचे आना, उतरना—श० ७।८, आ—, चढ़ना, सवार होना, पकड़ लेना, सवारी करना, (आ पूर्वक रुह् धातु के अर्थ प्रयुक्त संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार के होते हैं— उदा० प्रतिज्ञाम् आरुह् वचन देना, प्रतिज्ञा करना, तुलाम् आरुह् समानता के स्तर पर होना, संशयं आरुह् जोखिम उठाना, सन्दिग्धावस्था में होना आदि), (प्रेर०) 1 उन्नत होना, उठाना 2. रखना, जमाना, निवेशित करना 3. मढ़ना, थोपना, आरोपित करना 4. (धनुष पर) प्रत्यंचा चढ़ाना 5. नियुक्त करना, कार्य भार सौंपना, प्र—, उगना, अंकुरित होना—न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति—मृच्छ० ४।१७, वि—, उगना, अंकुर फूटना रघु० २।२६, मृच्छ० १।९ (प्रेर०) (व्रण आदि का) स्वस्थ होना, सम्—, उगना, रघु० ९।४७।

रुह्, रुह (वि०) (समास के अन्त में) [रुह्+क्विप्, क वा] उगा हुआ या उत्पन्न, जैसा कि 'महीरुह्' और 'पङ्केरुह्' में।

रुहा [रुह्+टाप्] दूर्वा घास, दूबड़ा।

रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1 खुरदरा, कठोर, (स्पर्श या शब्द आदि) जो मृदु न हो, कड़ा—रूक्षस्वरं वाशति वायसोऽयम्—मृच्छ० ९।१०, कु० ७।१७ 2 कसैला (स्वाद) 3. ऊबड़-खाबड़, असम, कठिन, कर्कश 4. दूषित, मलिन, मैला रघु० ७।७०, मुद्रा० ४।५ 5. क्रूर, निर्दय, कठोर नितान्तरूक्षाभिनिवेशमीशम् रघु० १४।४३, श० ७।१२, पंच० ४।९१ 6. नीरस, भुना हुआ, सूखा, बीरान स्निग्धश्यामा: क्वचिदपरतो भीषणाभोगरूक्षा:—उत्तर० २।१४, (रूक्षीकृ—, ऊबड़-खाबड़ करना, मैला करना, मिट्टी लथेड़ना)।

रूक्षणम् [रूक्ष्+ल्युट्] 1 सुखाना, पतला करना 2. (आयु० में) (शरीर की) मेद को घटाने की चिकित्सा।

रूढ (भू० क० कृ०) [रुह्+क्त] 1 उगा हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ, उपजा हुआ 2 जन्मा हुआ, उत्पन्न 3 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विकसित 4 उठा हुआ, चढ़ा हुआ 5 विस्तृत बड़ा, स्थूलकाय 6 विकीर्ण, इधर उधर फैला हुआ 7 विदित, ज्ञात, व्यापक —अन्तर्गतम पावन हृत्युदग्र क्षपरथ शब्दो भुवनेषु रूढ रघु० २।५३, (यहाँ शब्द का अर्थ यौगिक है) 8 सर्वजनस्वीकृत, परंपराप्राप्त, प्रचलित, सर्वप्रिय (शब्द या अर्थ, विप० यौगिक या निर्वचनमूलक अर्थ) —व्युत्पत्तिरहिता शब्दा रूढा आखण्डलादय:, नाम रूढमपि च व्युदपादि—शि० १०।२३ 9 निश्चित निर्दिष्ट किया हुआ।

रूढि: (स्त्री०) [रुह्+क्तिन्] 1. उगना, उगमना, 2 जन्म, पैदायश 3 वृद्धि, विकास, वर्धन, प्रवृद्धता 4. ऊपर उठना, चढ़ना 5 प्रसिद्धि, ख्याति, बदनामी —शि० १५।२६ 6. परम्परा, प्रथा, परंपरागत रिवाज —शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी, 'विधि से प्रथा अधिक बलवती है' 7 सामान्य प्रचार, साधारण व्यापकता या प्रचलन 8 सर्वमान्य अर्थ, शब्द का प्रचलित अर्थ मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्—काव्य० २।

रूप् (चुरा० उभ० रूपयति—ते, रूपित) 1 रूप बनाना, गढ़ना 2. रूप धर कर रंगमंच पर आना, अभिनय करना, हावभाव प्रदर्शित करना —रथवेग निरूप्य—श० १ 3. चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक पालन करना, देखना, नजर डालना 4. मालूम करना, ढूंढना 5 मनन करना, विचार करना 6. तय करना, निश्चय करना 7 परीक्षा करना, अन्वेषण करना 8. नियुक्त करना, वि—, विरूपित करना, रूप बिगाड़ना।

रूपम् [रूप्+क, भावे अच् वा] 1 शक्ल, आकृति, सूरत विरूप रूपवन्तं वा पुमानित्येव भुञ्जते—पंच० १।१४३, इसी प्रकार 'कुरूप' 'सुरूप' 2 रूप या रंग का प्रकार (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में एक)—चक्षुर्मात्र ग्राह्यमात्रभिमान् गुणो रूपम्—तर्क० (यह छ: प्रकार का है: शुक्ल, कृष्ण, पीत, रक्त, हरित और कपिल, यदि 'चित्र' को जोड़ दिया जाय तो सात हो जाते

है) 3 कोई भी दृश्य पदार्थ या वस्तु 4 मनोहर रूप या आकृति, सुन्दर सूरत, सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य —मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः श० १। २६, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम्—भर्तृ० २।२०, रूप जरा हन्ति आदि 5 स्वाभाविक स्थिति या दशा, प्रकृति, गुण, लक्षण, मूलतत्त्व 6 ढंग, रीति 7 चिह्न, चेहरा-मोहरा 8 प्रकार, भेद, जाति 9 प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया 10 सादृश्य, समरूपता, 11. नमूना, प्रकार, ढंग 12 किसी क्रिया या संज्ञा का व्युत्पन्न रूप, विभक्ति या लकार के चिह्न से युक्त रूप, 13 'एक' की संख्या, गणित की एक इकाई 14 पूर्णांक 15. नाटक, खेल, दे० रूपक 16 किसी ग्रंथ को बार बार पढ़ कर [illegible] कण्ठस्थ करके पारंगत होने की क्रिया 17 पशु 18 ध्वनि, शब्द, (रूप का प्रयोग बहुधा समास के अन्त में होता है यदि निम्नां कित अर्थ हो—'बना हुआ' 'से युक्त' 'के रूप में' 'मामल' सूरत शक्ल में तपोरूप धनं धर्मरूप सखा) । सम० अभिग्राहः ज्ञानेन्द्रियों द्वारा किसी पदार्थ के रंग रूप का प्रत्यक्ष करना, अभिग्राहित (वि०) काम करते हुए पकड़ा गया, मौके पर पकड़ा गया,—आजीवा वेश्या, रंडी गणिका,—आश्रयः अत्यंत सुन्दर व्यक्ति, इन्द्रियम् आँख, रंगरूप को प्रत्यक्ष करने वाली इन्द्रिय, -उच्चयः ललित रूपों का समूह श० २।९, —कारः,—कृत् (पुं०) मूर्तिकार, शिल्पी, —तत्त्वं अन्तर्हित गुण, मूलतत्त्व, धर (वि०) रूप धरे हुए, छद्मवेषी, नाशनः उल्लू, लावण्यम् रूप की उत्कृष्टता, चारुता, विपर्ययः विरूपण, शारीरिक रूप में विकृत परिवर्तन, शालिन् (वि०) सुन्दर, संपद्, संपत्तिः (स्त्री०) रूप की उत्कृष्टता, सौन्दर्य की वृद्धि, सौन्दर्यातिरेक ।

रूपकः [रूप्+ण्वुल्, रूप+कन् वा] विशेष सिक्का, रुपया -कम् 1 शक्ल, आकृति, सूरत, (समास के अन्त में) 2 कोई वर्णन या प्रकटीकरण 3 चिह्न, चेहरा-मोहरा 4 प्रकार, जाति 5 नाटक, खेल नाट्य-कृति (नाट्य रचनाओं के प्रमुख दो भेदों में से एक, दृश्य, इसके फिर आगे दस भेद हैं, इसके अतिरिक्त इसके और अवान्तर भेद हैं जो गिनती में अठारह हैं तथा 'उपरूपक' नाम से विख्यात हैं)—दृश्यं तत्राभि-नेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम्- सा० द० २७२, २७३ 6 (अलं० में) अंग्रेजी के मैटाफर (metaphor) के अनुरूप एक अलंकार जिसमें उपमेय को उपमान के ठीक समानरूप वर्णन किया जाता है—तद्रूपकमभेदो य उपमा नोपमेययोः—काव्य० १० (विवरण के लिये देखो यही स्थान) 7 एक प्रकार का तोल । सम०—तालः संगीत में विशेष समय,—उक्तिः आलंकारिक या रूपकोक्ति ।

रूपणम् [रूप्+ल्युट्] 1 आरोप वर्णन या आलंकारिक वर्णन 2 गवेषण, परीक्षा ।

रूपवत् (वि०) [रूप+मतुप्, वत्वम्] 1 रंगरूप वाला 2 शारीरिक, दैहिक 3 सशरीर 4 मनोहर, सुन्दर, —ती सुन्दरी स्त्री ।

रूपिन् (वि०) [रूप+इनि] 1 के सदृश दिखाई देने वाला 2 सशरीर, मूर्तिमान् 3 सुन्दर ।

रूप्य (वि०) [रूप+यत्] सुन्दर ललित, —प्यम् 1 चांदी 2 चाँदी (या सोने) का सिक्का, मुद्रांकित सिक्का, रुपया 3. शुद्ध किया हुआ सोना ।

रूष् । (भ्वा० पर० रूषति, रूषित) 1 अलंकृत करना, सजाना 2 पोतना, चुपड़ना, मण्डित करना, लीपना (मिट्टी आदि से) ।

॥ (चुरा० उभ० रूषयति—ते) 1 कांपना 2. फट जाना ।

रूषित (भू० क० कृ०) [रूष्+क्त] 1 अलंकृत 2. पोता हुआ, ढका हुआ, बिछाया हुआ 3 मिट्टी में लथेड़ा हुआ 4 खुरदरा, ऊबड़ खाबड़ 5 कूटा हुआ, चूर्ण किया हुआ ।

रे (अव्य०) [रा+के] संबोधनात्मक अव्यय —रे रे शंकर-गृहाभिवासिनो वानरा: —श० १ ।

रेखा [लिख्+अच्+टाप्, लस्य रः] 1. लकीर, धारी, मदरेखा, दानरेखा, रामरेखा आदि 2. लकीर की माप, आस्पाप, लकीर इतना —न रेखामात्रमपि व्यतीयुः रघु० १।१७ 3 पंक्ति पदाम, लकीर, श्रेणी 4. आलेखन, रूपरेखा, चित्रांकन लावण्यं रेखया किंचिदन्वितम् - श० ६।१४ : भारतीय ज्योतिषियों की प्रथम याम्योत्तर रेखा जो लंका से उज्जैन होते हुए मेरु पर्वत तक खिंची हुई है 6. पूर्णता, सन्तोष 7 धोखा, चालबाजी । सम० अंशः रेखांश, ग्रीनिचांश के बाद, देशान्तरीय बाद,- अक्षरम् प्रथम याम्योत्तर रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी, किसी स्थान का देशान्तर,—आकार (वि०) परम्परा प्राप्त, रेखामय, धारीदार, - गणितम् ज्यामिति ।

रेच दे० 'रेचक' ।

रेचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [रेचयति रिच्+णिच् +ण्वुल्] 1 रिक्त करने वाला, निर्मल करने वाला 2 दस्तावर, मृदुक्षय (मल को ढीला करने वाला) 3. फेफड़ों को खाली करने वाला श्वास को बाहर फेंक वाला,—कः 1 श्वास का बाहर निकालना बहिःश्वसन, निःश्वसन विशेष कर एक नथने से (विप० पूरक अर्थात् अन्तः श्वसन, सांस अन्दर ले जाना और कुम्भक, श्वास को जहां का तहां रोकना) 2 बस्तियन्त्र या पिचकारी 3 जवाखार, शोरा, —कम् दस्तावर, विरेचन ।

रेचनम् [illegible] [रिच् + ल्युट्] 1 रिक्त करना 2 घटाना, कम करना 3 श्वास बाहर निकालना 4 निर्मल करना 5 मल बाहर निकालना।

रेचित (वि०) [रिच् + णिच् + क्त] रिताया गया, साफ किया गया [illegible]

रेणु (पुं०, स्त्री०) [illegible] 1 धूल, [illegible] — रघु० [illegible] 2 पराग, पुष्प [illegible]

रेणुका [illegible] जमदग्नि की पत्नी [illegible]

रेतस् [illegible]

रेफ [illegible] 2 [illegible]

रेभ [illegible]

रेवत [illegible]

रेवती [illegible]

रेवा [रेव् + अच् + टाप्] नर्मदा नदी का नाम — रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम् — मेघ० १९।

रेष् (भ्वा० आ० रेषते, रेषित) 1 [illegible] हिनहिनाना 2 हिनहिनाना।

रेषणम्, रेषा [रेष् + ल्युट्, रेष् + अ, टाप्] हिनहिनाना।

रै (पुं०) [राते दै] (कर्तृ० रा: रायौ राय:) दौलत, सम्पत्ति, धन।

रैवतः, रैवतक: [रेवत्या अदूरो देश: — अण्, रैवत + कन्] द्वारका के निकट विद्यमान पहाड़ (इस पहाड़ के विवरण के लिए दे० शि० ४)।

रोकम् [रु + कन्] 1 छिद्र 2 नाव, जहाज 3 हिलता हुआ, लहराता हुआ।

रोग: [रुज् + घञ्] रुजा, बीमारी, व्याधि, मनोव्यथा या आधि, अशक्तता — मनापयन्ति कमपरमपूरुष न रोगा — हि० ३।११७, भोगे रोगभयम् — भर्तृ० ३।३५। सम० — आयतनम् शरीर, — आर्त (वि०) रोगग्रस्त, बीमार, — शान्ति: (स्त्री०) रोग का उपशमन या चिकित्सा, — हर (वि०) चिकित्सापरक, (— रम्) औषधि, — हारिन् (वि०) चिकित्साविषयक, (— पुं०) वैद्य, डाक्टर।

रोचक (वि०) [रुच् + ण्वुल्] 1 सुखद, रुचिकर 2 भूख बढ़ाने वाला, क्षुधोत्तेजक, — कम् 1 भूख 2 मन्दाग्नि को दूर करने वाली कोई पुष्टि कारक औषधि — [illegible] एक पौष्टिक [illegible] कांच की चूड़ियाँ या अन्य बनावटी आभूषण बनाने वाला।

रोचन (वि०) (स्त्री० — ना, — नी) [रुच् + ल्युट्] [illegible] 1 प्रकाशकारी [illegible] 2 [illegible]

[illegible]

रोचिस् [illegible]

रोदनम् [illegible]

रोधस् (नपुं०) [illegible] 1 [illegible] पृथ्वीराजविजय [illegible] विक्रम० [illegible]

रोध [रुध् + घञ्] 1 रोकना, पकड़ना, रुकावट डालना — शि० १०।४, अवरोध, घेरा, बाधा, रोक, धीमा करना, दबाना — वाराणसी प्रतिहता स्मृतिरामकथा — [illegible] ७।४२, उपरोध कि० ५।१५, नाग० [illegible] 3 बन्द करना, रोकना, नाकाबंदी करना, घेरा डालना — [illegible] पुरी — रघु० ११।५० 4 बांध।

रोधन: [रुध् + ल्युट्] बुधग्रह, — नम् ठहराना, रोकना, बन्दी बनाना, नियन्त्रण, रोक थाम।

रोधस् (नपुं०) [रुध् + असुन्] 1 तट, पुश्ता, बांध — नकुला रोधस्तनकुम्भ। गाहमान [illegible] विक्रम० १।८ रघु० ५।४२ मेघ० ५१ 2 किनारा, ऊंचा तट — रघु० ८।३३। सम० — वक्र, — वती 1 नदी 2 वेग से बहने वाली नदी।

रोध्र [रुध् + रन्] एक प्रकार का वृक्ष, लोध्रवृक्ष, — ध्रम् पाप — ध्रम् अपराध, क्षति।

रोप [रुह् + णिच् + अच्, हस्य प] 1 उगाना, बोना 2. पौध लगाना 3. बाण — शि० १५।१२० 4 छिद्र, गड्ढा।

रोपणम् [रुह्+णिच्+ल्युट्, हस्य पः] 1 सीधा खड़ा करना, जमाना, उठाना 2 पौध लगाना 3. स्वस्थ होना, 4. (व्रण आदि पर) स्वास्थ्यप्रद औषध का प्रयोग।

रोमकः [रोमन्+कन्] 1 रोम नाम का नगर 2. रोमवासी, रोम नगर का निवासी (ब० व० में)। सम० —**पत्तनम्** रोम नगर, —**सिद्धान्तः** पाँच मुख्य सिद्धान्तों में से एक (रोमवासियों से प्राप्त होने के कारण ही लगभग 'रोमक' यह नाम पड़ा)।

रोमन् (नपुं०) [रु+मनिन्] मनुष्य और अन्य जीव जन्तुओं के शरीर पर होने वाले बाल, [illegible] आदि [illegible] मनु० [illegible] —**अङ्कः** [illegible] —रघु० [illegible] —**अञ्चः** [illegible] आनन्द आदि से [illegible] रोंगटे खड़े होना [illegible] —**आलिः** [illegible] रोमों की पंक्ति [illegible] रोमावली [illegible] कुमा० [illegible] —**उद्गमः**, —**उद्भेदः** [illegible] —**कूपः** [illegible] —**गर्तः** [illegible] —**पुलकः** [illegible] —**राजिः** [illegible] —**विकारः**, —**विक्रिया**, —**विभेदः** पुलक, रोमांच [illegible] कु० ३।६८ —**हर्षः** [illegible] रोमांच [illegible] पुलक [illegible] —**हर्षण** (वि०) [illegible] रोंगटे खड़े कर देने वाला [illegible] —**णः** [illegible] सूत का नाम [illegible] व्यास का एक शिष्य जिसने शौनकमुनि को कई पुराण सुनाये थे (—**णम्**) शरीर पर रोंगटे खड़े होना, पुलक।

रोमन्थः [रोमं मन्थाति —मन्थ्+अण्, पृषो० मलोपः] 1. जुगाली करना, खाये हुए घास को चर्वण करना —छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु —श० २।८ 2. (आलं.) लगातार पिष्टपेषण।

रोमश (वि०) [रोमाणि सन्त्यस्य श] बालों वाला, बहुत से रोओं से युक्त, पशमदार या ऊर्णामय, —**शः** 1 भेड़, मेंढा 2 कुत्ता, सूअर।

रोरुदा [रुद्+यङ्+अ+टाप्] प्रचण्डक्रन्दन, अत्यन्त विलाप —कण्ठयन् [illegible] —भट्टि० ३।३२।

रोलम्बः [रो+लम्ब्+अच्] भौंरा —रम्या रोलम्बकाली केशपाशः —[illegible] भामि० १।११८।

रोषः [रुष्+घञ्] क्रोध, कोप, गुस्सा —रोषोऽपि निर्मलधियां रमणीय एव —भामि० १।९२, ९४।

रोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [रुष्+युच्] क्रोधी, चिड़चिड़ा, गुस्सैल, —**णः** 1 कसौटी 2. पारा [illegible]

रोहः [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] अंकुर।

रोहणः [illegible] —**द्रुमः** [illegible] चन्दन का पेड़।

रोहन्तः [illegible]

रोहि [illegible] 1 एक प्रकार का हरिण 2 [illegible] 3 वृक्ष [illegible]

रोहिणी [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] —**शः** [illegible] चन्द्रमा [illegible]

रोहित (वि०) (स्त्री०—ता, रोहिणी) [illegible] लाल रंग का [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] एक प्रकार का [illegible] मछली [illegible] 1 रुधिर 2 [illegible] अश्वः अग्नि।

रोहितः [रुह्+इतन्] 1 एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार का हरिण।

रौक्ष्यम् [रूक्ष+ष्यञ्] 1 कठोरता, सूखापन, अनुपजाऊपन 2. खुरदुरापन, कर्कशता, क्रूरता —प्रतिपक्षरौक्ष्यम् —रघु० ५।५८, निवेश्य १४।५८।

रौद्र (वि०) (स्त्री०—द्री, द्री) [रुद्र+अण्] 1. रुद्र जैसा प्रचंड, चिड़चिड़ा, गुस्सैल 2. भीषण, बर्बर, भयानक,

अवस्थी, क्षः 1 रुद्र का उपासक 2 गर्मी, उत्कण्ठा, सरगर्मी, त्रास, मन्यु या भीषणता का मनोभाव दे० सा० द० २३२ या काव्य० ४, क्षम् 1 क्रोध, कोप 2 उग्रता, भीषणता, बर्बरता 3 गर्मी, उष्णता सूर्यताप।

रौप्य (वि०) [रूप्य + अण्] चाँदी का बना हुआ, चाँदी, चाँदी जैसा — प्यम् चाँदी।

रौरव (वि० (स्त्री०—वी) [रुरु + अण्] 1 रुरु मृग की खाल का बना हुआ रघु० ३।३१ 2 डरावना भयानक 3 जालसाजी से भरा हुआ, बेईमान, वः 1 बर्बर 2. एक नरक का नाम—मनु० ४।८८।

रौहिणः [रोहिण + अण्] 1 चन्दन का वृक्ष 2 वटवृक्ष।

रौहिणेयः [रोहिणी + ढक्] 1 बछड़ा 2 बलराम का नामान्तर 3 बुधग्रह — यम् पन्ना, मरकतमणि।

रौहिष (पु०) एक प्रकार का हरिण।

रौहिष [रुह् + टिषच् धातोश्च वृद्धि] दे० रोहिष, —षम् एक प्रकार का घास।

ल

लः [ली + ड] 1 इन्द्र का विशेषण 2 (छन्द० में) लघु, ह्रस्व मात्रा 3 पाणिनि द्वारा प्रयुक्त (दस लकारों के लिए) पारिभाषिक शब्द, जो दस काल तथा अवस्थाओं को प्रकट करते हैं।

लक् (चुरा० उभ० लाकयति — ते) 1 स्वाद लेना 2 प्राप्त करना।

लकः [लक् + अच्] 1 मस्तक 2 जंगली चावलों की बाल।

लकचः, लकुचः [लक् + अचन्, उचन् वा] बड़हर का पेड़, —चम् बड़हर का फल।

लकुटः [लक् + उटन्] मुद्गर, सोटा।

लक्तकः [लक् + क्त + कन्, रक्त + कै + क रस्य लत्वं वा] 1 लाख, महावर 2 चिथड़ा जीर्ण कपड़ा।

लक्तिका [लक्तक + टाप्, इत्वम्] छिपकली।

लक्ष् I (भ्वा० आ० लक्षते, लक्षित) प्रत्यक्ष करना समझना, अवलोकन करना देखना।

II (चुरा० उभ० लक्षयति — ते लक्षित) 1 देखना अवलोकन करना, निरखना ज्ञात करना प्रत्यक्ष करना आर्यपुत्र शून्यहृदय इव लक्ष्यसे विक्रम० २, रघु० ९।७०, १६।७ 2 चिह्न लगाना प्रकट करना, चरित्रचित्रण करना संकेत करना अत्रभूत-प्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्षिता मनु० ९।३५ 3 परिभाषा करना इदानीं कारणं लक्षयति— आदि 4 गौण रूप से संकेत करना गौण अर्थ में साथक करना यथा गंगा शब्दः स्रोतसि सबाध इति तट लक्षयति तद्वत् यदि तटेऽपि सबाध स्यात्सप्रयोजन लक्षयेत् काव्य० २ अत्र गावश्चो वाहीकार्थं लक्षयतः — सा० द० २ 5 लक्ष्य करना 6 खयाल करना आदर करना, मानना अभि — अंकित करना देखना आ—, देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना— आलक्ष्य दन्तमुकुलान—श० ७।१७ नातिपर्याप्तिमालक्ष्य मत्कुक्षेरद्य भोजनम् —रघु० १५।१८ उप— 1 देखना, अवलोकन करना निगाह डालना अंकित करना मन्मथमुपलक्षितं भवत्या—श० ३ 2 अंकित करना चिह्न लगाना—याज्ञ० १।३० २।१५१ 3 प्रकट करना, मनोनीत करना 4 अतिरिक्त उप लक्षित होना, वस्तुत अभिव्यक्त की अपेक्षा अधिक सम्मिलित करना — मन्त्रग्रहणेन ज्योतिःशास्त्रमुप-लक्ष्यते मनु० ३।१६२ पर कुल्लू० 5 मनन करना, विचारकोटि में लाना 6 खयाल करना, मानना वि —, 1. अवलोकन करना, ध्यान देना देखना 2. चरित्रचित्रण करना अन्तर प्रकट करना 3 व्याकुल होना चकित होना घबरा जाना निर्व्यापारविल क्षितानि माल्यवन् बलानि—उत्तर० ६ सम् — 1 अव लोकन करना प्रत्यक्ष करना देखना ध्यान देना आश्चर्यदर्शनः संलक्ष्यते मनुष्यलोकः, श० ७, संलक्ष्यते न छिदुरोऽपि हारः रघु० १६।६२, 'ध्यान नहीं दिया जाता या ज्ञात नहीं होता' ८।४२ 2 परीक्षण करना सिद्ध करना निर्धारित करना हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा रघु० १।१० 3 सुनना जानना समझना 4 चरित्रचित्रण करना भेद बतलाना।

लक्षम् [लक्ष् + अच्] 1 सौ हज़ार (इस अर्थ में पु० भी) इक्ष्वाकूणां शता सहस्रं सहस्री —अलमोहरते सुभा० यथा लक्षाण्येन निर्भया याज्ञ० ३।१०२ 2 चिह्न, चाँदमारी लक्ष्य निशाना—प्रत्यादिष्टलक्ष्या— मुद्रा० १ 3 निशान, निशानी, चिह्न 4 दिखावा बहाना जाल साज़ी धोखेबाज़ी, जैसा कि लक्षसुप्त में झूठमूठ सोया हुआ। सम० अधीशः लाखों की सम्पत्ति का स्वामी।

लक्षक (वि०) [लक्ष् + ण्वुल्] अप्रत्यक्षरूप से सूचित करने वाला गौण रूप से अभिव्यक्त करने वाला, —कम् सौ हज़ार, एक लाख।

लक्षणम् [लक्ष्यतेऽनेन-लक्ष् करणे ल्युट्] 1 चिह्न, निशानी, निशान, संकेत, विशेषता, भेद बोधक चिह्न,—वधूदुकूलं कलहंसलक्षणम्—कु० ५।६७, अनारंभो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम् सुभा० अध्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६, १२।८७ गर्भलक्षण —श० ५, पुरुषलक्षणम्, वीर्यवत्ता का चिह्न या पुंस्त्व-द्योतक इन्द्रिय 2 (रोग का) लक्षण 3 विशेषण, खूबी 4. परिभाषा, यथार्थ वर्णन 5. शरीर पर भाग्य-सूचक चिह्न (यह गिनती में ३२ हैं)—द्वात्रिंशल्लक्षणो-पेत 6 (शुभाशुभ भाग्य का सूचक) शरीर पर बना कोई चिह्न क्व तद्विधस्त्वं क्व च पुण्यलक्षणा कु० ५।७३, क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम् —रघु० १४।५ 7. नाम, पद, आख्या (प्रायः समास के अन्त में) —विदिशालक्षणां राजधानीम्— मेघ० २५, मै० २७।४१ 8 श्रेष्ठता उत्कर्ष, अच्छाई जैसा कि 'आहितलक्षण —रघु० ६।७१ में (यहाँ मल्लि० इस शब्द का अनुवाद करता है 'प्रख्यातगुण और अमर० का उद्धरण —गुणे प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ—देता है) 9 उद्देश्य, क्रियाक्षेत्र या लक्ष्य, ध्येय 10 (कर आदि का) निश्चित भाग—मनु० ८।४०५ 11. रूप, प्रकार प्रकृति 12 कर्तव्यनिर्वाह, कार्यप्रणाली 13 कारण, हेतु 14 सिर, शीर्षक, विषय 15. बहाना, छद्मवेश (=लक्ष) प्रसुप्तलक्षण —मा० ७,—णः सारस,—णा 1 उद्देश्य, ध्येय 2 (अल० में) शब्द का परोक्षप्रयोग या गौण सार्थकता, शब्द की एक शक्ति, इसकी परिभाषा इस प्रकार है —मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्, अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया काव्य० २, दे० सा० द० १३ भी 3 हंस। सम० अन्वित (वि०) शुभलक्षणों से युक्त, -ज्ञ (वि०) (शरीर पर विद्यमान) चिह्नों की व्याख्या करने में सक्षम,—भ्रष्ट (वि०) अभागा, दुर्भाग्यग्रस्त, लक्षणा -अहल्लक्षणा, दे०,- संनिपातः दाग लगाना कलंकित करना।

लक्षण्य (वि०) [लक्षण + यत्] 1 चिह्न का काम देने वाला 2 अच्छे लक्षणों से युक्त।

लक्षशस् (अव्य०) [लक्ष + शस्] लाख-लाख करके अर्थात् बड़ी संख्या में।

लक्षित (भू० क० कृ०) [लक्ष् + क्त] 1 देखा गया अवलोकित चिह्नित, निगाह डाली गई 2 प्रकट किया गया, संकेतित 3 चरित्रचित्रित, चिह्नित, अलग बताया गया 4. परिभाषित 5 उद्दिष्ट 6 परोक्ष रूप से अभिव्यक्त संकेतित, इशारा किया गया 7 पूछताछ की गई, परीक्षित।

लक्ष्मण (वि०) [लक्ष्मन् + अण्, न वृद्धि] 1 चिह्नों से युक्त 2 शुभलक्षणों से युक्त, सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला 3 समृद्धिशाली, फलता-फूलता —णः 1 सारस 2. सुमित्रा नामक पत्नी से उत्पन्न दशरथ का एक पुत्र (बचपन से ही लक्ष्मण राम में इतना अधिक अनुरक्त था कि वह उनकी वनयात्रा में जाने को तैयार हो गया। राम के चौदह वर्ष के निर्वासन काल में घटित घटनाओं में लक्ष्मण का बड़ा हाथ था। लङ्का के युद्ध में उसने कई बलवान् राक्षसों को, विशेष कर रावण के पुत्रों में अत्यंत शक्तिशाली मेघनाद को मार डाला। सबसे पहले तो स्वयं लक्ष्मण ही मेघनाद की शक्ति का शिकार हुआ, परन्तु हनुमान् द्वारा लाई गई संजीवन बूटी के उपयोग से सुषेण वैद्य ने उसे फिर जीवित कर दिया। एक दिन काल साधु के वेश में राम के पास आया और कहा कि "जो कोई उनको एकान्त में वार्तालाप करते हुए कभी देख ले तो तुरन्त उसका परित्याग किया जाना चाहिए" यह बात मान ली गई। एक बार लक्ष्मण ने राम व सीता की एकान्तता में भंग डाल दिया, फलतः लक्ष्मण ने अपने भाई राम के वचन को 'स्वयं सरयू में स्नान करके' सत्य सिद्ध करके दिखा दिया (दे० रघु० १५।९२-५, उस का विवाह ऊर्मिला से हुआ, तथा अंगद और चन्द्रकेतु नामक दो पुत्र हुए), —णा हंसिनी,—णम् 1 नाम अभिधान 2. चिह्न, संकेत, निशानी। सम०—प्रसूः लक्ष्मण की माता सुमित्रा।

लक्ष्मन् (नपुं०) [लक्ष् + मनिन्] 1. चिह्न, निशान, निशानी, विशेषता—शि० ११।१०, कि० ११।२८, १४।१४, रघु० १०।३० कु० ७।४३ 2. चित्ती, धब्बा —मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति—श० १।२०, मा० ९।२५ 3 परिभाषा -पुं० 1. सारस पक्षी, 2 लक्ष्मण का नामान्तर।

लक्ष्मीः (स्त्री०) [लक्ष् + ई, मुट् + च] 1. सौभाग्य, समृद्धि, धनदौलत सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्—कि० ८।१८, तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान् संरुणद्धि भर्तृ० २।१७ 2. सौभाग्य, अच्छी किस्मत 3. सफलता, सम्पन्नता उत्तर० २।१८ 4. सौन्दर्य, प्रियता, अनुग्रह, लावण्य, आभा, कान्ति—मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति - श० १।२० मा० ९।२५, ५।३९, ५२, ९।२, कु० १।४९ 5 सौभाग्यदेवी समृद्धि, सौन्दर्य, लक्ष्मी विष्णु की पत्नी मानी जाती है (देवासुरों द्वारा अमृत प्राप्ति के लिए समुद्रमंथन किए जाने पर अन्य मूल्यवान् रत्नों के साथ लक्ष्मी भी समुद्र से निकली)—इयं गेहे लक्ष्मीः उत्तर० १।३८ राजकीय या प्रभुशक्ति, उपनिवेश, राज्य (यह बहुधा रानी की सपत्नी के रूप में मानी जाती है, और राजा की रानी के रूप में इसका मूर्तरूपेण किया जाता है)—तामेकभार्यां परिवादभीरोः साध्वीमपि त्यक्तवतो नृपस्य, वक्षस्यसंघट्टसुखं वसन्ती रेजे सपत्नी-

रहितोऽव लक्ष्मीः—रघु० १४।८६, १२।२६ 7. नायक की पत्नी 8. मोती 9. हल्दी । सम०—ईशः 1. विष्णु का विशेषण 2. आम का वृक्ष 3. समृद्ध या भाग्यशाली पुरुष,—कान्तः 1. विष्णु का विशेषण 2. राजा —पुष्पम् लाल कमल का फूल, —तालः एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष,—नाथः विष्णु का विशेषण,—पतिः 1. विष्णु का विशेषण, 2. राजा —बिभ्राय लक्ष्मीपतिलक्ष्म कार्मुकम् —कि० १।४४ 3. सुपारी का पेड़, लौंग का वृक्ष,—पुत्रः 1. घोड़ा 2. कामदेव का नाम [illegible], —पुष्पः लाल,—पूजनम् लक्ष्मी के पूजन करने का कृत्य (दुल्हन को विवाह करके घर लाने के पश्चात् दूल्हे द्वारा दुल्हन के साथ मिलकर किया जाने वाला अनुष्ठान) —पूजा कार्तिकमास की अमावस्या के दिन किया जाने वाला लक्ष्मीपूजन (साहूकार, [illegible] साहूकार और व्यापारियों के द्वारा [illegible] वाणिज्यवर्ष, आज के दिन [illegible] नया वर्ष आरम्भ होता है), [illegible] विष्णु का विशेषण, —वसतिः (स्त्री०) [illegible] कमल का फूल, [illegible] [illegible],—[illegible] लक्ष्मी की कृपा [illegible] [illegible] [illegible] चन्द्रमा के विशेषण ।

लक्ष्मीवत् (वि०) [लक्ष्मी + मतुप्, मस्य वः] 1 भाग्यशाली, किस्मत वाला, अच्छे भाग्य वाला 2 धनवान्, धनी, समृद्ध [illegible] सुन्दर ।

लक्ष्य (सं० कृ०) [लक्ष् + ण्यत्] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 6 [illegible] किये जाने योग्य 7. [illegible] रूप से प्रकट किया जाना [illegible] किये जाने योग्य निरूपणीय, —क्ष्यम् 1. उद्देश्य, निशाना, चिह्न, चाँदमारी, उद्दिष्ट भेद्य, (आलं० से भी) —उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले श० २।५, दृष्टिं लक्ष्येषु बध्नन् —मुद्रा० १।२, रघु० ३।६१, ९।११, ९।६७, कु० ३।४७, ६४, ५।४९ 2. निशान, निशानी 3. वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है (विप० लक्षण)—लक्ष्यैकदेशे लक्षणस्यावर्तनमव्याप्तिः—तर्क० 4. परोक्ष या गौण अर्थ जो लक्षणा शक्ति से प्रतीत हो,—वाच्यलक्ष्यव्यंग्या सर्वाः—काव्य० २ 5. बहाना, झूठमूठ, छद्मवेश —इदानीं परोक्षे किं लक्ष्यसुप्तमुत परमार्थसुप्तमिदं द्वयम् —मृच्छ० ३, ३।१८, कान्तं वक्त्रमनाः सखीसिद्धिकालक्ष्येण प्रतिमुखमभ्यागि चकार —शि० ८।३५, रघु० ६।५८ 6. लाख, सौ हजार । सम०—क्रम (वि०) ध्वनि आदि अर्थ जिसकी प्रक्रिया (क्रमिक रूप में) पश्चाल्लक्ष्य है, —भेदः, —वेधः निशाना लगाना —कि० ३।२७,—सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ, —हन् (वि०) निशाना मारने वाला, (पुं०) बाण, तीर ।

लख्, लङ्ख् (भ्वा० पर० लखति लङ्खति) जाना, हिलना जुलना ।

लग् (भ्वा० पर० [illegible]) 1 [illegible] —पृच्छ० ४, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1. [illegible]

लगड [illegible] मनोहर, सुन्दर ।

लग्नक (पुं० [illegible]) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] ।

लगुडः, लगुरः, लगुलः [लग् + उलच्, [illegible]] मुद्गर, [illegible], लाठी, सोटा ।

लग्न (भू० क० कृ०) [लग् + क्त] 1 जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, सटा हुआ, दृढ़ थामा हुआ —लताविटपे एकावली लग्ना—विक्रम० १ 2. स्पर्श करना, संपर्क में आना 3 अनुषक्त, संबद्ध 4. चिपटा हुआ, जुड़ा हुआ, साथ लगा हुआ 5. काटना, (रेखा आदि का) मिलाना 6. ध्यानपूर्वक अनुसरण करना, आसन्न या निकटवर्ती 7. व्यस्त, काम में लगा हुआ 8. [illegible]

(वै० लग्),—ग्नः 1. भाट, चारण 2 मदोन्मत्त हाथी, —ग्नम् 1. संपर्क बिन्दु, मिथश्छेदन-बिंदु, वह बिन्दु जहाँ कि क्षितिज और क्रान्ति—वृत्त या ग्रहपथ मिलते हैं 2 क्रान्ति वृत्त का बिन्दु जो एक समय क्षितिज या याम्योत्तर—रेखा पर होता है 3. वह क्षण जिसमें सूर्य का प्रवेश किसी राशि विशेष में होता है 4. बारह [illegible] की आकृति 5 शुभ या सौभाग्य प्रद क्षण 6 (अत:) [illegible] —अह., दिनम्, दिवस., वासर, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लघु (वि०) (स्त्री० —घु, —घ्वी) [illegible] 1 हल्का, जो भारी न हो [illegible] माद्यपि न याचक [illegible] रिक्त सर्वो भवति हि लघु पूर्णता गौरवाय मेघ० २० (यहाँ शब्द का अर्थ 'तिरस्करणीय' भी है) रघु० ९।६२ 2. छोटा, कम, न्यून —पंच० १।१९३, शि० ९।३८, ७८ 3. ह्रस्व, संक्षिप्त, सामासिक —लघुसंदेशपदा सरस्वती —रघु० ८।७७ 4. क्षुद्र, तुच्छ, नगण्य, महत्त्वहीन —कायस्थ इति लघ्वी मात्रा —मुद्रा० १ 5. नीच, अधम, निम्न, तिरस्करणीय —शि० ९।२९, पंच० १। १०९ 6. अशक्त, दुर्बल 7. ओछा, मन्दबुद्धि 8. फुर्तीला, चुस्त, चपल, स्फूर्त श० २।५ 9. तेज, द्रुतगामी, त्वरित —किञ्चित् पश्चात् व्रज लघुगतिः मेघ० १६, रघु० ५।४५ 10. सरल, जो कठिन न हो रघु० १२।६६ 11. सुपाच्य, सुपाच्य, हल्का (भोजन) 12. ह्रस्व (जैसे कि छन्द शास्त्र में स्वर) 13. मृदु, मन्द, कोमल 14 सुखद, रुचिकर, वांछनीय —रघु० १।१२, ८० 15. प्रिय, मनोहर, सुन्दर 16 विशुद्ध, स्वच्छ, —घु अव्य० 1. हल्केपन से, क्षुद्रभाव से, अनादरपूर्वक 2 शीघ्र, फुर्ती से [illegible] [illegible] 1. काला अगर, [illegible] 2 अगर की विशेष [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] —वित्त, [illegible] (वि०) 1. [illegible] 2. अल्पबुद्धि 3 [illegible] [illegible] —हस्त (वि०) अनायास [illegible] (वि०) सुपाच्य, —वृक्ष: एक प्रकार का [illegible] वृक्ष, [illegible] (वि०) 1 (वर्ण आदि) [illegible] 2 [illegible] [illegible] (स्त्री०) एक प्रकार का [illegible] —भावः [illegible] [illegible] [illegible] वृक्ष, [illegible] —मूलम् [illegible] [illegible] (वि०) 1 [illegible] 2. [illegible] [illegible] [illegible] (वि०) [illegible] (वि०) 1 [illegible] 2. [illegible] (वि०) [illegible] —हस्त (वि०) [illegible] (वि०) 1 [illegible] [illegible] रघु० ९।६२ 2 [illegible], फुर्तीला, (स्त्र:) [illegible] या कुशल धनुर्धर।

लघुता, —त्वम् [लघु + तल् + टाप्, लघु + त्व वा] 1. हल्कापन, ओछापन 2 छोटापन, थोड़ापन 3. नग-ण्यता, महत्त्वहीनता, तिरस्कार, मर्यादा का अभाव —इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः 4. अप-मान, निरादर—पंच० १।१४०, १५१ 5. शिथि-

शीघ्रता, फुर्ती 6. अविवेक, अविलम्बता 7 सुगमता, सुविधा 8. मानमर्दी, निरर्थकता 9 स्वेच्छाचारिता।

लघ्वी [लघु+ङीष्] 1. कोमलांगिनी स्त्री 2. हल्की गाड़ी—शि० १२।२४।

लङ्का [लङ्क्+अच्, मुम् च] 1. रावण का निवास और राजधानी, वर्तमान सीलोन टापू या तद्वर्ती राजधानी उस समय की लंका है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार वह लंका सीलोन के वर्तमान टापू से कहीं अधिक बड़ी थी। मूलरूप से यह माल्यवान् के लिए बनाई गई थी 2. व्यभिचारिणी स्त्री, रंडी, वेश्या 3. शाखा 4. एक प्रकार का अनाज। सम०—अधिपः, —अधिपतिः, —ईशः, —ईश्वरः, —नाथः, पति लंका का स्वामी अर्थात् रावण या विभीषण, —अरिः राम का विशेषण, —दाहिन् (पुं०) हनुमान् का विशेषण।

लङ्घनी [लङ्ग्+ल्युट्+ङीप्] लगाम की बल्गा (लोहे का बना वह भाग जो मुँह में रहता है), मुखरी।

लङ्गः [लङ्ग्+अच्] 1 लंगड़ापन 2 संघ समाज 3 प्रेमी, यार (उपपति)।

लङ्गूलम् [लङ्ग्+ऊलच् पृषो०] जानवर की पूँछ, तु० 'लांगूलम्' से।

लङ्घ् (भ्वा० उभ० लङ्घति-ते, लङ्घित, इच्छा० लिलङ्घिषति-ते) 1. उछलना कूदना, छलांग लगाना 2. सवारी करना, चढ़ना—अन्ये चालङ्घिषु शैलान्—भट्टि० १५।१२ 3. परे चले जाना, अतिक्रमण करना—लङ्घते स्म मुनिरेष विमानिम्—नै० ५।४ उपवास करना, अनशन करना 5 सूखना, सूख जाना (पर०) 6. झपट्टा मारना, आक्रमण करना, आ जाना, क्षति पहुँचाना—पल्लवान् हरिणो लङ्घितुमागच्छति—शाकवि० ४, प्रेर० या चुरा० उभ० (लङ्घयति—ते) 1. ऊपर से कूद जाना, छलांग लगा देना, परे जाना—सागरः प्लवगेन्द्रेण क्रमेणैकेन लङ्घितः—महा०, मनु० ४।३८ 2 तय कर लेना, चल कर पार कर लेना (दूरी आदि) रघु० १।४७ 3 सवारी करना, चढ़ना—रघु० ४।५२ 4 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना रघु० १।१९ याज्ञ० २।१८७ 5. नष्ट करना, अपमान करना, निरादर करना, उपेक्षा करना—हस्त इव भूतिमलिनो यथा यथा लङ्घयति खलः सुजनम्, दर्पणमिव तं कुरुते तथा-तथा निर्मलच्छायम्—वास० 6 रोकना, विरोध करना, ठहराना, टालना, हटाना भाग्य न लङ्घयति कोऽपि विधिप्रणीतम्—सुभा०, मृच्छ० ६।२ 7 आक्रमण करना, झपट्टा मारना, अतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना—रघु० ११।९२ 8. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अपेक्षाकृत अधिक चमकना, ग्रहणग्रस्त करना—(मदं) जगत्प्रकाशं तदशेषमिज्यया भवद्गुरुर्लङ्घयितुं ममोद्यतः रघु० ३।४८ 9 उपवास करवाना 10 चमकना 11 बोलना, अति—, 1 परे चले जाना, ऊपर से छलांग लगा देना 2 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना, उद्—, 1 पार जाना, पार कर लेना, परे चले जाना—शि० ७।७४ 2. सवारी करना चढ़ना 3. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना—मुद्रा० १।१०, शि० १२।५७ वि—, 1 पार जाना, उछलकर पार करना यात्रा करना—निवेशयामास विलङ्घिताध्वा—रघु० ५।४२, १६।३२, शि० १२।२४ 2 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना बाहर कदम रखना अवहेलना करना, उपेक्षा करना—गन्तुं प्रवृत्ते समयं विलङ्घ्य कु० ५।२५, रघु० ५।४८ 3 औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना रघु० ९।७४ 4 उठाना, चढ़ना, ऊपर जाना कि० ५।१, नै० ५।२ 5 छोड़ देना, परित्याग करना एक ओर फेंक देना—मनोज्ञवल्गान्यरसान् विलङ्घ्य सा—रघु० ३।४ 6 आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना हरि कर्णोत्पलं प्रायस इव दृष्ट्या विलङ्घ्यसे काव्या० २।२२४ 7 उपवास कराना।

लङ्घनम् [लङ्घ्+ल्युट्] 1 छलांग लगाना कूदना 2. उछल कर चलना, यात्रा करना, पार जाना, चलना, गतिशील होना—मृगमेव पथि शीघ्रलङ्घनाः—घट० ८ 3 सवारी करना, चढ़ना उठना (आलं० से भी) नभोलङ्घन—रघु० १६।३३, अनोच्चमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुकः—कु० ५।६४, उच्चपद प्राप्त करने को इच्छुक 4 धावा बोलना, एकाएक आक्रमण द्वारा दुर्गादि हथिया लेना, अधिकार में कर लेना—जैसा कि दुर्गलङ्घनम् में 5. आगे बढ़ना, परे चले जाना, बाहर कदम रखना, उल्लंघन, अतिक्रमण 'आज्ञालङ्घन' नियमलङ्घनम् आदि 6 अवहेलना करना, घृणा करना, तिरस्कार पूर्वक व्यवहार करना, अपमान करना प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामा वि० ३, मालवि० ३।२२ 7 अन्यायाचरण, मानहानि, अपमान 8 अनिष्ट, क्षति, जैसा कि आतपलङ्घनम् में दे० 9 उपवास करना, संयम शि० १२।२५ (यहाँ इसका अर्थ छलांग भी होता है) 10 घोड़े का एक कदम।

लङ्घित (भू० क० कृ०) [लङ्घ्+क्त] 1 ऊपर से कूदा हुआ पार गया हुआ 2 यात्रा द्वारा पार किया हुआ 3. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया हुआ 4 अवज्ञात, अपमानित अनादृत (दे० 'लङ्घ्')।

लच्छ् (भ्वा० पर० लच्छति) चिह्न लगाना, दागना, तु० 'लक्ष्'।

लज् I (तुदा० आ० लजते) लज्जित होना।

II (भ्वा० पर० लजति) कलंकित करना आदि, दे० 'लञ्ज्' भ्वा०।

III (चुरा० पर० लाजयति) 1. दिखाई देना, प्रतीत

होना, चमकना 2. ढकना, छिपाना (कुछ विद्वानों के मतानुसार इसी अर्थ में 'लाजयति' रूप भी बनता है)।

लज्ज् (तुदा० आ० लज्जते लज्जित) लज्जित होना, शर्मिंदा होना।

लज्जका [लज्ज्+अच्+कन्+टाप्] जंगली कपास का पौधा।

लज्जा [लज्ज्+अ+टाप्] 1 शर्म—कामातुराणां न भयं न लज्जा—सुभा०, विहाय लज्जाम् रघु० २।४०, कु० १।४८ 2 शर्मीलापन, विनय शृङ्गारलज्जां निरूपयति—श० १, कु० ३।७, रघु० ७।२५ 3 छुईमुई का पौधा। सम०—अन्वित (वि०) विनयशील, शर्मीला,—आवह,—कर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) लज्जाजनक, शर्मनाक, अकीर्तिकर, कलंकी,—शील (वि०) शर्मीला, शालीन,—रहित—शून्य,—हीन (वि०) निर्लज्ज, ढीठ, बेहया।

लज्जालु (वि०) [लज्जा+आलुच्] विनयशील, शर्मीला पुं०, स्त्री० छुईमुई का पौधा।

लज्जित (भू० क० कृ०) [लज्ज्+क्त] 1 विनयशील, शर्मीला 2. लजाया हुआ, शर्मिंदा।

लञ्ज् i (भ्वा० पर० लञ्जति) 1. कलंक लगाना, निन्दा करना, बदनाम करना 2 भूनना, तलना।

ii (चुरा० उभ० लञ्जयति—ते) 1. क्षतिग्रस्त करना, प्रहार करना, मार डालना 2 देना 3. बोलना 4 सबल या शक्तिशाली होना 5. निवास करना, 6. चमकना।

लञ्जः [लञ्ज्+अच्] 1 पैर 2 धोती की लांग या किनारा जो पीछे कमर में टांग लिया जाता है—तु० कक्षा 3. पूंछ।

लञ्जा [लञ्ज+टाप्] 1 धार 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 लक्ष्मी का नामान्तर 4 निद्रा।

लञ्जिका [लञ्ज्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] रण्डी, वेश्या।

लट् (भ्वा० पर० लटति) 1 बालक बनना 2 बालकों की तरह व्यवहार करना 3 बच्चों की भांति तोतली बातें करना, तुतलाना 4 क्रन्दन करना, रोना।

लटः [लट्+अच्] 1 मूर्ख, बुद्धू 2 त्रुटि, दोष 3 लुटेरा।

लटकः [लट्+क्वुन्] ठग, बदमाश, पाजी, दुष्ट।

लटभ (वि०) [प्राकृत 'लडह' शब्द से गढ़ा, स्वयं 'लडह' शब्द भी इस 'लटभ' से ही बना प्रतीत होता है] लावण्यमय, मनोहर, सुन्दर, आकर्षक, प्रिय,—अति-क्रान्तः कालो लटभललनाभोगसुलभः—भर्तृ० ३।१२, (यहाँ भाष्यकार 'लटभ' का अर्थ 'सलावण्य' करते हैं), तस्याः पावनलावण्यैः लोभते लटभभुवः—विक्रमांक० ८।६, बिल्हण ने इस शब्द को इसी पुस्तक में और तीन स्थानों पर प्रयुक्त किया है यहाँ इसका अर्थ 'तरुणी स्त्री' या 'सुन्दरी स्त्री' प्रतीत होता है—उदा० किं वा वर्णनया समस्तलटभाल-ङ्कारतामेष्यति—८।८९, अनर्घ्यलावण्यनिधानभूमिर्न कस्य लोभं लटभा तनोति ९।६८ केशवल्लविभ्रमलट-भानां पिच्छतामिव चकार लभिकम् ११।१८।

लड्डः (पुं०) दुष्ट, बदमाश, दे० 'लटक'।

लट्वः [लटे क्वन्] 1 घोड़ा 2. नाचने वाला लड़का 3 एक जाति का नाम,—ट्वा 1 एक प्रकार का पक्षी 2 मस्तक पर बालों का घूंघर, अलक 3. चिड़िया, गोरैया 4 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 5 एक फल 6 जाफरान, केसर 7 व्यभिचारिणी स्त्री।

लड् i (भ्वा० पर० लडति) खेलना, क्रीडा करना, हाव-भाव दिखलाना।

ii (भ्वा० पर०, चुरा० पर० लडति, लडयति) 1. फेंकना, उछालना 2. कलंक लगाना 3. जीभ लप-लपाना 4 तंग करना, सताना।

iii (चुरा० उभ० लाडयति—ते) 1 लाड प्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2. सताना।

लडह (वि०) [प्राकृत शब्द] सुन्दर, मनोहर।

लडु=लटक दे०।

लड्डुः, लड्डुकः (पुं०) एक प्रकार की मिठाई, लड्डू, मोदक (चीनी, आटा, घी आदि पदार्थों को मिलाकर बनाये हुए गोल गोल पिंड)।

लण्ड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लण्डति, लण्डयति—ते) 1. ऊपर को उछालना, ऊपर की ओर फेंकना 2 बोलना।

लण्डम् [लण्ड्+घञ्] विष्ठा, मल।

लण्ड्रः [संभवतः ग्रीक् भाषा के लीड्रेस् (*Ln. drés*) शब्द का आधुनिक रूप] लन्दन।

लता [लत्+अच्+टाप्] 1 बेल, फैलने वाला पौधा लताभावेन परिणतमस्या रूपम् विक्रम० ४, श्लेष लतावमनोज्ञपल्लवा रघु० ३।७, (विशेष रूप से 'भुजा' 'भौं' 'बिजली' आदि अर्थों को प्रकट करने वाले शब्दों के साथ समास के अन्त में, सौन्दर्य, कोमलता तथा पतलेपन को प्रकट करने के लिए प्रयोग भुजलता बाहुलता, भ्रूलता, विद्युल्लता, इसी प्रकार अलक°, अलक° आदि, तु०, कु० २।६४, मेघ० ४७, श० ३।१५, रघु० ९।४५) 2 शाखा 3 प्रियंगु लता 4 माधवी लता 5 कस्तूरी लता 6. हंटर या कोड़े सचाका 7 मोतियों की लड़ी 8. सुकुमार स्त्री। सम०—अन्तम् फूल, —अम्बुजम् एक प्रकार की ककड़ी, —अर्कः हरा प्याज, —अलकः हाथी,—आननः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा,—उद्गमः लता का ऊपर को चढ़ना,—करः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा, —कस्तूरिका, —कस्तूरी कस्तूरी की बेल,—गृहः, —गृहम् लतागृह, लताकुंज—कु० ४।४१,—जिह्वः,

—**रज्जुः** सांप,—**तरुः** 1. साल का वृक्ष 2. संतरे का पेड़,—**पनसः** तरबूज,—**प्रतानः** लतातन्तु रघु० २।८,—**भवनम्** लतागृह, लताकुञ्ज, —**मणिः** मूँगा,—**मण्डपः** लताकुंज, लतागृह —**मृगः** बन्दर, —**मातृका** अंकुर, [illegible],—**वलयः**,—**यम्** लताकुंज, —**वृक्षः** नारियल का पेड़, —**वेष्टः** एक प्रकार का रतिबंध, संभोग का प्रकार,—**वेष्टनम्**,—**वेष्टितकम्** आलिंगन का प्रकार।

लतिका [लता+कन्+टाप्, ह्रस्वः] छोटी लता, बेल 2. मोतियों की लड़ी।

ललिका [लल्+ष्वुन्+टाप्] एक प्रकार की छिपकली।

लप् (भ्वा० पर० लपति) 1. बोलना, बातें करना 2. बातें बातें करना [illegible] 3 कानाफूसी करना [illegible] [illegible], प्रेर० (लापयति—ते) बातें करवाना, **अप** [illegible] [illegible] 2 छिपाना [illegible] [illegible]

[illegible]

लपनम् [लप्+ल्युट्] 1. [illegible], बोलना 2. मुख।

लब्ध (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त] 1. [illegible] प्राप्त किया, अधिगत 2. लिया, प्राप्तकिया 3. [illegible] प्राप्त किया, भाग पाया 4 [illegible] किया (भाग आदि से), वे० लब्ध [illegible] जो प्राप्त कर लिया गया, या सुरक्षित हो गया [illegible] हि० २।८, रघु० १९।३। सम०—**अवसर** (वि०) 1. जिसने कोई अवसर प्राप्त कर लिया है 2 जिसकी कहीं पहुँच हो गई है या प्रवेश मिल गया है —रघु० १६।७,—**अवकाश**,—**अवसर** (वि०) 1. जिसे किसी बात का अवसर मिल गया है 2. (कोई भी बात) जिसे (कार्य के लिए) क्षेत्र मिल गया है [illegible] काशा मे प्रार्थना श० १ 3 जिसने फुरसत प्राप्त करली है, जिसे अवकाश का समय मिल गया है, इसी प्रकार 'लब्धक्षण', —**आस्पद** (वि०) जिसने कहीं पैर जमा लिया है, या कोई पद प्राप्त कर लिया है — मालवि० १।१७, —**उदय** (वि०) 1. जन्म लिया हुआ, उत्पन्न, उदित [illegible] [illegible] 2 समृद्धिशाली [illegible] [illegible] [illegible] —**काम** (वि०) जिसे अभीष्ट पदार्थ मिल गये हैं —**कीर्ति** (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध [illegible] —**चेतस्**,—**संज्ञ** (वि०) जिसे होश आ गया है [illegible] [illegible] हो गई है —**जन्मन्** (वि०) [illegible] पैदा, —**नामन्** —**नाश** (वि०) [illegible] [illegible]

[illegible]

लब्धि [illegible]

लब्धव्य (वि०) [illegible] [illegible]

लभ् (भ्वा० आ० लभते, लब्ध) 1. प्राप्त करना, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible], [illegible] 5 [illegible] 6 [illegible] करना, [illegible] 7 जानना, सोचना, [illegible] [illegible] करना, समझना [illegible] [illegible] भाग० ६, [illegible] मनु० ८।१६९, पर कुल्लू० 8. (किसी बात को करने के) योग्य होना ('तुमुन्' के साथ) [illegible] न लभ्यते, [illegible] लभ्यते [illegible] (उपसर्गों के साथ प्रयुक्त होकर 'लभ्' के अर्थों में तदनुकूल परिवर्तन हो जाता

है, उदा० गर्भंलभ् गर्भवती होना, गर्भ धारण करना, पदं लभ्, आस्पदं लभ् पैर जमाना, प्रभाव रखना, दे० 'पद' के नीचे, आस्पदं लभ् पग रखना, प्रविष्ट होना, कैवेयत: [illegible] भोपदेषा रघु० ६।६६ अन पर प्रभाव नहीं पड़ा, चैतन्यं लभ् [illegible] आना, जन्म लभ् पैदा होना, कि० ५।४३, प्रकाश लभ् भेंट होना, [illegible] होना, दर्शन करना [illegible] होना [illegible] — [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] 3 [illegible] [illegible] 1 [illegible] करना [illegible] — [illegible] 1 [illegible] [illegible] प्राप्त करना [illegible] 2 [illegible] करना [illegible] पुनरपि [illegible] ३ [illegible] करना, अनुभव करना [illegible] १०।३, १८।२१ मनु० ११,१७ उपा-, 1 कलंक लगाना, बुरा भला कहना, भूठमूठ बात कहना, झूठी कोटी सुनाना [illegible] मौवनमूपालभस्व मां किमुपालभसे श० १, कु० ५। ५८, रघु० ७।१४ शि० ९।६०, प्रति-, 1 वसूल करना, फिर से उपलब्ध करना 2 हासिल करना प्राप्त करना, विप्र-, 1 ठगना धोखा देना आंख में धूल झोंकना 2 वसूल करना फिर से प्राप्त करना 3 अपमान करना, अनादर करना सम्, हासिल करना।

लम्भनम् [लभ् + ल्युट्] 1 हासिल करने की क्रिया, प्राप्त करना 2 प्रत्यय (पहुंचाने) की क्रिया।

लम्भनः [लभ् + वसच्] 1 दौलत, धन 2 जो निवेदन करता है, निवेदक,—सम्, घोड़े को बांधने की रस्सी (पु० भी)।

लभ्य (वि०) [लभ् कर्मणि यत्] 1. प्राप्त होने के योग्य, पहुंचने के योग्य अवाप्त होने या प्राप्त करने के योग्य — [illegible] फले लोभादुद्बाहुरिव वामन: रघु० १।३, ४।८८ कु० ५।१८ 2 मिलने के योग्य कु० १।४० 3. योग्य, उपयुक्त, उचित 4. सुबोध।

लमकः [रम् + क्वुन्, रस्य लः वा] प्रेमी, यार (उपपति)।

लम्पट (वि०) [रम् + अटन्, पुक्, रस्य लः] 1 लालची, लोलुप, लालायित 2 विषयी विलासी, कामुक, व्यसनी इन्द्रियपरायण —ट: स्वेच्छाचारी दुश्चरित्र, दुराचारी ('लम्पाक' शब्द भी इसी अर्थ में)।

लम्फ: [लम्फ् + घञ्] कूद उछाल छलांग।

लम्फनम् [लम्फ् + ल्युट्] कूदना उछलना।

लम्ब् [illegible] 1 लटकना टांगना, [illegible] [illegible] 3 नीचे आना डूबना [illegible] नीचे गिरना [illegible] 4 पीछे रहना, पिछड़ना 5 विलम्ब करना ठहरना 6. ध्वनि करना प्रेर० [illegible] 1 नीचे लटकाना 2 ऊपर [illegible] करना 3 बढ़ाना (हाथ आदि) फैलाना [illegible] रघु० १३।[illegible] [illegible] ६।७१ अव— लटकना, [illegible] होना [illegible] 2 नीचे आना, उतरना 3 थामना मुड़ना, झुकना या सहारा लेना, पालनपोषण करना [illegible] श० २ दधी [illegible] रघु १।२५ 4 थामना संभालना, पालनपोषण करना जीवित रहना (आल० से भी) [illegible] रघु ७।९, कु० ३।५५ ६।६८, हृदय न त्ववलम्बितुं क्षमा — रघु० ८।६० 5 निर्भर रहना, टिकना—व्यवहारोऽत्र [illegible] मृच्छ० ९ भट्टि १८।४१ 6. सहारा लेना, आश्रय लेना, भरोसा करना, धैर्यमवलम्ब् धैर्य या साहस से काम लेना,—कि स्वातन्त्र्यमवलम्बते — [illegible] ५, [illegible] - कु० १।५२, शि० २।१५ आ-, 1. आराम करना (किसी के सहारे) झुकना 2. लटकना, लम्बित होना विक्रम० ५।२, हथियाना, पकड़ना —[illegible] राम —भट्टि० ६।३५, १४।९५ 4 पालनपोषण करना, थामना, उत्तरदायित्व लेना –[illegible]— रघु० १८।११ 5. निर्भर होना —[illegible]—श० ३० ६१ 6. सहारा लेना, आसरा लेना, हाथ पकड़ना, धारण करना—[illegible] न [illegible] —मुद्रा० २।२०, कि० १७।१४, उद्—, खड़ा होना, सीधा खड़ा

होना,—पादेनैकेन गगने द्वितीयेन च भूतले, तिष्ठाम्युल्लम्बितस्तावद्यावत्तिष्ठति भास्कर मृच्छ० २।१० वि—, 1 लटकाना, लटकना, स्थगित होना रघु० १०।६२ 2. अस्त होना, क्षीण होना (सूर्यादि का) 3 ठहरना, झिझकना, रह जाना— कु० ७।१३, 4 देर करना, मन्दगति होना —विलम्बितफलैः कालं निनाय स मनोरथैः —रघु० १।३३, किं विलम्ब्यते त्वरित तं प्रवेशय —उत्तर० १।

लम्ब (वि०) [लम्ब्+अच्] 1. नीचे की ओर लटकता हुआ, झुकता हुआ, लम्बमान, दोलायमान —पाण्डयोऽयमंसार्पितलम्बहार —रघु० ६।६०, ८१, मेघ० ८४ 2. लटकता हुआ, अनुषक्त 3 बड़ा, विस्तृत 4 विस्तीर्ण 5 लंबा, ऊँचा, —बः 1 लम्बमापक 2. लह-अक्ष-रेखा, किसी स्थान के ऊर्ध्वबिन्दु और ध्रुवबिन्दु का मध्यवर्ती चाप, अक्षरेखा का पूरक। सम० —उदर (वि०) बड़े पेट वाला, तोंदवाला, स्थूलकाय भारीभरकम (रः) 1 गणेश का नामांतर 2 भोजनभट्ट, —ओष्ठः (लम्बो—बौ—ष्ठः) ऊँट, —कर्णः 1 गधा, 2 बकरा 3. हाथी 4 बाज, शिकरा 5 पिशाच, राक्षस,—जठर (वि०) मोटे पेट वाला, भारीभरकम, —पयोधरा वह स्त्री जिसके स्तन भारी हों और नीचे को लटकते हों,—स्फिच् (वि०) जिसके नितंब भारी और उभरे हुए हों।

लम्बकः [लम्ब+कन्] (ज्या० में) 1 लंबरेखा 2 अक्षरेखा का पूरक, (ज्यो० में) लह—अक्षरेखा।

लम्बनः [लम्ब्+ल्युट्] 1 शिव का विशेषण 2 कफ—प्रधान प्रकृति, —नम् 1 नीचे लटकना, निर्भर रहना, उतरना आदि 2. झालर 3 (चन्द्रमा के) देशान्तर में स्थान-भ्रंश 4 एक प्रकार का लंबा हार।

लम्बा [लम्ब+टाप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2 लक्ष्मी का विशेषण।

लम्बिका [लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कोमल तालु का लटकता हुआ मांसल भाग, उपजिह्वा, कण्ठ के अन्दर का कौवा।

लम्बित (भू० क० कृ०) [लम्ब्+क्त] 1 नीचे लटकता हुआ, झुकता हुआ 2 स्थगित 3 डूबा हुआ, नीचे गया हुआ 4 सहारा लिये हुए, अनुषक्त (दे० लम्ब्)।

लम्बुषा (स्त्री०) सात लड़ियों का हार।

लम्भः [लभ्+घञ्, मुम्] 1. सिद्धि, अवाप्ति 2. मिलन 3 पुनः प्राप्ति 4 लाभ।

लम्भनम् [लभ्+ल्युट्, मुम्] 1 सिद्धि, अवाप्ति 2. पुनः प्राप्ति।

लम्भित (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त, मुम्] 1 उपार्जित, हासिल, प्राप्त 2 दत्त, 3 सुधारा हुआ 4 नियुक्त, प्रयुक्त 5. संबोधित 6 कहा गया, संबोधित।

लय् (भ्वा० आ० लयते) जाना, हिलना-जुलना।

लयः [ली+अच्] 1 चिपकना मिलाप, लगाव 2 प्रच्छन्न, छिपा हुआ 3 सगलन, पिघलना, घोल 4 अदर्शन, विघटन, घुलाना, विनाश, नष्ट या विघटित होना, नष्ट होना 5 मन की लीनता, गहन एकाग्रता अनन्य भक्ति (किसी भी पदार्थ के प्रति)—पश्यन्ती शिवरूपिणं लयवशादात्मानमभ्यागता— मा० ५।२, ७, ध्यानलयेन गीत० ४ 6 संगीत की लय (तीन प्रकार की द्रुत, मध्य और विलंबित) किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः रघु० ९।३५, पादन्यासो लयमनुगत मालवि० २।९ 7 संगीत में विश्राम 8 आराम 9 विश्राम स्थान आवास, निवास अलया—शि० ४।५७, 'कोई स्थिर निवास न रखते हुए, घूमते हुए' 10 मन की शिथिलता, मानसिक अकर्मण्यता 11 आलिंगन। सम० आरम्भः, आलम्बः, पात्र, अभिनेता, नर्तक, कालः (सृष्टि का) प्रलयकाल, गत (वि०) विघटित, पिघला हुआ,—पुत्री नटी, अभिनेत्री, नर्तकी।

लयनम् [ली+ल्युट्] 1. अनुषक्त होना, जुड़ना, चिपकना 2 विश्राम, आराम 3 विश्रामस्थल, घर।

लर्ब् (भ्वा० पर० लर्बति) जाना, हिलना-जुलना।

लल् I (भ्वा० उभ० ललति—ते) खेलना, क्रीडा करना, इठलाना, किलोल करना—पनसफलानीव वानरा ललन्ति मृच्छ० ८।८, वनकलभा इव अम्बुजा ललाम ४।२८।

II (चुरा० उभ० या प्रेर० लालयति—ते, लालित) खेलने की प्रेरणा देना, पुचकारना, लाड-प्यार करना, दुलार करना, प्रेमालिंगन करना लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः, तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत् सुभा०—कु० ५।१५ 2 इच्छा करना।

III (चुरा० उभ० लालयति –ते) 1 लाड-प्यार करना, मृच्छ० ४।२८ 2 जीभ लपलपाना 3 इच्छा करना।

लल (वि०) [लल्+अच्] 1. क्रीडासक्त, विनोद प्रिय 2 लपलपाने वाला 3 अभिलाषी, इच्छुक। सम० जिह्व =ललजिह्व, जीभ से लपलप करने वाला।

ललत् (वि०) [लल्+शतृ] 1. खेलने वाला, विहार करने वाला 2. लपलपाता हुआ। सम० – जिह्व (वि०) (ललज्जिह्व) 1 जीभ से लपलपाने वाला 2. बर्बर, भीषण (ह्वः) 1 कुत्ता 2. ऊँट।

ललनम् [लल्+ल्युट्] 1 क्रीडा, खेल, आमोद, रंगरेली 2. जीभ बाहर निकालना।

ललना [लल्+णिच्+ल्युट्+टाप्] स्त्री,—बाल नाशकोपललनाविरचितरतं पिरंस्रो—शि० १५।८८

2 स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 जिह्वा। सम० प्रिय: कदंब का पेड़।

ललनिका [ललना+कन्+टाप् ह्रस्वम्] छोटी स्त्री, अभागी स्त्री काव्या० ३।५०।

ललन्तिका [लल्+शल्+ङीप्+कन्+टाप् ह्रस्व] 1 लंबी माला 2 छिपकली।

ललाक [लल्+आकन्] पुरुष का लिंग जननेन्द्रिय।

ललाटम् [लड्+अच् डस्य लः, ललमटति अट्+अण् वा] मस्तक लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः —हि० १।२१, नै० १।१५। सम०—अक्ष शिव का विशेषण, तटम् मस्तक का ढलान माथा—पट्टः, पट्टिका 1 मस्तक का सपाट तल 2 (सेहरा) शिरो वेष्टन, त्रिमुकुट, सिर की चोटी केशबंध, लेखा मस्तक की रेखा।

ललाटकम् [ललाट+कन्] 1 मस्तक 2 सुन्दर माथा।

ललाटंतप (वि०) [ललाट+तप्+खश् मुम्] 1 (मस्तक) को जलाने या तपाने वाला ललाटंतपस्तपति तपन मा० १ उत्तर० ६, सूर्य ऊपर ठीक सिर पर चमक रहा है'—ललाटंतपसप्तसप्ति—रघु० १३।४१ 2 (अत्य) बहुत पीडाकर निर्निर्ललाटंतपनिष्ठुराक्षरा नै० १।१३८ —पः सूर्य।

ललाटिका [ललाट+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] 1 मस्तक पर पहना जाने वाला आभूषण, टीका 2 मस्तक पर चन्दन का या अन्य किसी सुगंधित चूर्ण का तिलक —कु० ५।५५।

ललाटूल (वि०) उन्नत और सुन्दर मस्तकवाला।

ललाम (वि०) (स्त्री०—मी) [लड+क्विप् डस्य लत्वम्, तम् अमति अम्+अण्] सुन्दर प्रिय, मनोहर —मम् मस्तक का आभूषण, टीका, सामान्य अलंकार (इस अर्थ में पुं० भी)—अहं तु तामाश्रमललामभूतां शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि श० २ शि० ४।२८ 2. कोई भी श्रेष्ठ वस्तु 3 मस्तक का तिलक 4 चिह्न प्रतीक, तिलक 5 झण्डा, पताका 6 पंक्ति, माला, रेखा 7 पूंछ 8 अयाल, गरदन के बाल 9 प्राधान्य मर्यादा, सौन्दर्य 10 सींग,—मः घोड़ा।

ललामकम् [ललाम+कन्] फूलों का गजरा जो मस्तक पर धारण किया जाता है।

ललामन् (नपुं०) [लल+इमनिन्] 1 अलंकार, आभूषण 2 (अत) कोई भी अपने प्रकार की श्रेष्ठवस्तु —कन्याललाम कमनीयमजस्य लिप्सो—रघु० ५।६४ 'कन्याओं में श्रेष्ठ या अलंकारभूत' 3 झंडा पताका 4 साम्प्रदायिक चिह्न, तिलक, संकेत, प्रतीक 6 पूंछ।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1 क्रीडासक्त, खेलने वाला, इठलाने वाला 2 शृंगारप्रिय, क्रीडाप्रिय, स्वेच्छाचारी विषयासक्त 3 प्रिय, सुन्दर मनोहर, प्रांजल, मसीकालकितललितैर्ज्योत्स्नाप्रायैरकृत्रिमविभ्रमैः (अपर्के) उत्तर० १।२०, विधाय सृष्टिं ललितां विधातुः—रघु० ६।३७, १९।३९, ८।१, मा० १।१५, कु० ३।७५, ६।४५ मेघ० १२,६४ 4 सुहावना, लावण्यमय, रुचिकर क्रिया प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ— रघु० ८।६७ सर्वाङ्गतेव ललिताभिनयस्य शिक्षा—मालवि० ४।१, विक्रम० २।१८ 5 अभीष्ट 6 मृदु, कोमल शि० ७।६४ 7 थरथराता हुआ, कम्पायमान —तम् 1 क्रीडा, रंगरेली, खेल 2 शृंगार परक विनोद, [illegible], स्त्रियों में प्रीति विषयक हावभाव शि० ९।७९, कि० १०।५२ 3 सौन्दर्य, लावण्य, आकर्षण 4 कोई भी प्राकृतिक या स्वाभाविक क्रिया 5 सरलता, भोलापन। सम०—अर्थ (वि०) सुन्दर या प्रीतिविषयक अर्थ वाला विक्रम० २।१४, पद (वि०) [illegible] श० १, प्रहार: मृदु या कोमल आघात।

ललिता [ललित+टाप्] 1 स्त्री 2 स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 कस्तूरी 4 दुर्गा का एक रूप 5 विभिन्न छन्दों के नाम सम, पञ्चमी आश्विनशुक्ल का पाँचवां दिन सप्तमी भाद्रपद के शुक्लपक्ष का सातवां दिन।

लव: [लू+अप्] 1 उत्पाटन, उल्लुञ्चन 2 कटाई, (पके अनाज की) लावनी 3 अनुभाग, टुकड़ा, खण्ड, कवल या ग्रास 4 कण बूंद, अल्पमात्रा थोड़ा (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—अलकलवमुच —मेघ० २० ७०, आचाम ति स्वेदलवान् मुखे ते—रघु० १३।२०, ६।५७ १६।६६, अम० १५।९७ अमृत०—कि० ५।४४, भ्रूक्षेपलक्ष्मीलवक्रीते दास इव गीत० ११, इसी प्रकार तृण°, अपराध° ज्ञान°, सुख° धन° आदि 5 ऊन, पशम 6 क्रीडा 7 समय का सूक्ष्म विभाग (एक निमेष का छठा भाग) 8 किसी भिन्न राशि अंश 9 (ज्योति० में) घात 10 हानि, विनाश 11 राम का एक पुत्र, यमल (जोड़वां) में से एक—दूसरे का नाम कुश था, लव का अपने भाई कुश के साथ वाल्मीकि मुनि के द्वारा पालनपोषण हुआ, सभास्थल आदि स्थानों में पाठ करने के लिए दोनों को महा कवि द्वारा रामायण की शिक्षा दी गई, (इस नाम की व्युत्पत्ति के लिये दे० रघु० १५।३२), —वम् 1 लौंग, 2 [illegible] —वम् (अव्य०) कुछ, थोड़ा सा—लवमपि लवङ्गे न रमते—सरस्वती० १।

लवङ्गः [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा द्वीपान्तरानीतलवङ्गपुष्पैः—रघु० ६।५७, ललित लवङ्गलता परिशीलन कोमल मलयसमीरे गीत० १,—म् लौंग। सम० कलिका लौंग।

लवङ्गकम् [लवङ्ग+कन्] लौंग।

लवण (वि०) [लू+ल्युट् पृषो० णत्वम्] 1 खारीय सलोना, नमकीन 2 प्रिय मनोहर, —णः 1 खारी स्वाद 2 नमकीन पानी का समुद्र 3 एक राक्षस का नाम मधु का पुत्र, यह शत्रुघ्न के द्वारा मारा गया था —रघु० १५। २१६ २६ 4 एक नरक का नाम —णम् 1 नमक 2 समुद्री नमक, लूण 3 कृत्रिम नमक। सम० —अन्तक शत्रुघ्न का विशेषण —अब्धि खारी समुद्र —असुरनिषूदक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पुं०) समुद्र —रघु० [illegible] नमकीन पानी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आलय समुद्र —उत्तमम् 1 [illegible] [illegible] —उद 1 समुद्र 2 [illegible] [illegible] —जलधि —अल समुद्र [illegible] नमक [illegible] [illegible] समुद्र नमकीन समुद्र [illegible]

लवणा [लवण+टाप्] [illegible] [illegible]

लवणिमन् (पुं०) [लवण+इमनिच्] 1 नमकीनपन, लावण्य 2 सौन्दर्य [illegible]

लवनम् [लू भावे करणे वा ल्युट्] 1 [illegible] (फसल आदि का) [illegible] 2 [illegible] [illegible] दराती हँसिया।

लवली [लव+ला+क+ङीष्] एक प्रकार की [illegible] —मया लब्ध [illegible] [illegible] ३।४० ।

लवित्रम् [लूयतेऽनेन—लू+इत्र] काटने का उपकरण दराती, हँसिया।

लश् (चुरा० उभ० लशयति —ते) किसी कला का अभ्यास करना, दे० लस्।

लशुनम् (न०) —नः, —नम् [अश् उनन् लश्च] लहसुन —निखिलरसायनमहितो गन्धेनोग्रेण लशुन इव —भामि० (—भामि० १।८१), यथा [illegible] भामि० १।९३।

लष् (भ्वा० दिवा० पर० लषति, लष्यति, लषित) चाहना, इच्छा करना, लालायित होना, उत्सुक होना (प्राय 'अभि' उपसर्ग के साथ), अभि—, चाहना, इच्छा करना, लालायित होना—न [illegible] भट्टि० ७।२२, तेन [illegible] —रघु० १९।१२।

लषित (भू० क० कृ०) [लष्+क्त] चाहा हुआ, वाञ्छित।

लषकः [लष्+वुन्] नाटक का पात्र, अभिनेता, नट, नर्तक।

लस् (भ्वा० पर० लसति, लसित) 1 चमकना, दमकना, जगमगाना मुक्ताहारेण लसता हसतीव स्तनद्वयम् —काव्य० १० [illegible] गीत० १०, अमरु ९६ नै० २२।५३ 2 प्रकट होना [illegible] [illegible] 3 आलिंगन करना 4 खेलना किलोल करना उछल कूद करना, नाचना [illegible] 1 चमकना शोभा बढ़ाना [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible]

[illegible]

लसा [illegible] [illegible]

लसीका [illegible] [illegible]

लसित (भू० क० कृ०) [लस्+क्त] [illegible] [illegible] [illegible] प्रकट हुआ [illegible] [illegible] उछल कूद करना [illegible] दे० 'लस्'।

लसीका [लस्+ईकन्+कन्+टाप्] 1 थूक 2 पीप मवाद 3 ईख का रस 4 [illegible] का रस।

लस्ज् (भ्वा० आ० लज्जते लज्जित) 1 शर्मिन्दा होना लज्जा अनुभव करना (बहुधा करण० या तुमुन्नत के साथ) स्त्रीजन [illegible] न लज्जसे —रत्न० २ भट्टि० १५।३३ 2 शर्मिन्दा लजाना प्रेर० (लज्जयति ते) लज्जित करना रघु० १९।१४, वि—, शर्मीला या विनीत होना संकोच करना पयोमुकाग्नेष-विलज्जमाना —कु० ११४, रघु० १४।२७।

लस्त (वि० [लस् + क्त] 1 आलिंगित, भुजपाशबद्ध 2 दक्ष कुशल।

लस्तकः [लस्त+कन्] धनुष का मध्यभाग, वह भाग जहाँ हाथ से पकड़ा जाता है।

लस्तकिन् (पुं०) [लस्तक+इनि] धनुष।

लहरि, री (स्त्री०) [लेन इन्द्रेण इव ह्रियते अन्तर्गमनाय ल+हृ+इन्, पक्षे ङीष्] लहर, तरंग, बड़ी

लहर, श्वास करेणास्मिन्नात्मा अर्गनि विजयन्ता लहरय गगा० ४०, इमा पीयूषलहरी जगज्जनक निर्मिताम्—५३ इसी प्रकार आनन्द॰ करुणा॰, सुधा॰ आदि ।

लक्ष् (भ्वा० पर० लाति) लेना ग्रहण करना ग्रहण करना सभालना -लक्ष् लक्ष्यते भट्टि० १४।९४, १४।८९

लाकुटिक (वि०) (स्त्री० की) (लकुट + ठक्) लाठी या सोंटे से सुसज्जित क मन्त्री पहरेदार पंच० ४ ।

लाक्षकी (स्त्री०) सीता का नाम ।

लाक्षणिक (वि०) (स्त्री० -की) (लक्षणया बोधयति ठक्) 1 वह जो चिह्न या निशानों से परिचित हो 2 विशिष्ट सदेश 3 गौण अर्थ रखने वाला गौण अर्थ में प्रयुक्त (शब्द आदि लक्षक जो वाच्य और व्यजक से भिन्न हो) व्यवहारिके लाक्षणिक शब्दा-स्त्र व्यञ्जकस्त्रिधा काव्य० २ 4 गौण निकृष्ट 5 पारिभाषिक —क पारिभाषिक शब्द ।

लाक्षण्य (वि०) (लक्षण वेत्ति ष्यञ्) 1 चिह्न सबधी सकेतद्योतक 2 लक्षणों का ज्ञान, लक्षण या सकेतों की व्याख्या करने के योग्य ।

लाक्षा (लक्ष्यतेऽनया लक्ष् + अच् पृषो० वृद्धि) एक प्रकार का लाल रंग महावर, लाख (प्राचीनकाल में यह स्त्रियों की एक प्रसाधन सामग्री थी वे इससे अपने पैर के तलवे तथा ओष्ठ रगती थी तु० अल क्तक । कहते हैं कि बीरबहूटी नामक कीड़े से अथवा किसी विशेष वृक्ष की छाल से यह रंग तैयार किया जाता था) – निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारस केनचित् (तरुणा) श० ४।५, ऋतु० ६।१३ वि० ५।१२३ 2 बीरबहूटी जिससे यह रंग बनता है । सम० तरु वृक्ष एक वृक्ष का नाम पलाश ढाक प्रसाद,—प्रसादन लाल लोध्रवृक्ष, रक्त (वि०) लाख में रंगा हुआ ।

लाक्षिक (वि०) (स्त्री० -की) (लाक्षा + ठक्) 1 लाख से सबंध रखने वाला, लाख से बना हुआ या रंगा हुआ 2 एक लाख (सख्या) से सबद्ध ।

लाख् (भ्वा० पर० लाखति) 1 सूख जाना नीरस होना 2 अलकृत करना 3 पर्याप्त होना, सक्षम होना 4 प्रदान करना 5 रोकना ।

लागुडिक (वि०) (लगुड + ठक्) दे० लाकुटिक ।

लाघ् (भ्वा० आ० लाघते) बराबर होना, पर्याप्त होना, सक्षम होना ।

लाघवम् (लघोर्भाव अण्) 1 अल्पता, क्षुद्रता 2 लघुता, हल्कापन 3 अविचार, निष्फलता 4 नगण्यता 5 अनादर, घृणा अपमान, अप्रतिष्ठा—मैवं लाघव कारिणी कुलविय त्वाने सवृत्ति विदु —मुद्रा० ३।१४ भग० २।३५ 6 फुर्ती चुस्ती, वेग 7 क्रियाशीलता दक्षता तत्परता हस्तलाघवम् 8 सर्वलामुखी प्रतिभा बुद्धिलाघवम् 9 सक्षेप, (अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता) 10 (कविता में) मात्रा की कमी ।

लाङ्गलम् (लङ्ग् + कलच्, पृषो० वृद्धि) 1 हल 2 हल की शक्ल का शहतीर 3 ताड़ का वृक्ष 4 शिश्न, लिंग, 5 एक प्रकार का फूल । सम० – ग्रह हाली, किसान दण्ड हल का लट्ठा हलस, ध्वज बलराम का नामान्तर पद्धति (स्त्री०) खूड़, हल से बनी रेखा सीता फाल हल की फाली ।

लाङ्गलिन् (पुं०) (लाङ्गल इनि) 1 बलराम का नाम —वन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली या सिषेवे मेघ० ४९ 2 नारियल का पेड़ 3 साँप

लाङ्गली (लाङ्गल अच् + ङीप्) नारियल का पेड़ ।

लाङ्गलीषा (लाङ्गल + ईषा) हलस हल का लट्ठा ।

लाङ्गुलम् (लङ्ग उलच् वा० वृद्धि) 1 पूँछ 2 शिश्न लिंग ।

लाङ्गूलम् (लङ्ग् + ऊलच् पृषो०) 1 पूँछ —लाङ्गूलचाल नमधश्चरणावपातम् भूमौ निपात्य वदनोदरदर्शनं च । श्वा पिण्डदस्य कुरुते—भर्तृ० २।३१ कुत्ता पूछ हिलाता है' 2 शिश्न लिंग ।

लाङ्गूलिन् (पुं०) (लाङ्गूल + इनि) बन्दर लगूर ।

लाञ्छ् (भ्वा० पर० लाञ्छति लाञ्छित) 1 कलक लगाना निन्दा करना 2 भूनना तलना ।

लाज (लाज अच्) गीला धान —जा (ब० व०) भुना हुआ या तला हुआ धान (स्त्री० जी) (ल) अवाकिरन्बाललता प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्या —रघु० २।१०, ४।२७ ७।२५ कु० ७।६९, ८० ।

लाञ्छ् (भ्वा० पर० लाञ्छति) 1 भेद करना, चिह्नित करना विशिष्ट बनना 2 सजाना, अलकृत करना ।

लाञ्छनम् (लाञ्छ् कर्मणि ल्युट्) 1 चिह्न, निशान, निशानी, विशिष्टताद्योतक चिह्न यथाम्बुधाराकमुहूर्तलाञ्छने (धनुषि) रघु० ३।५३, प्राय समास के अन्त में 'चिह्नित विशिष्टीकृत' अर्थ बतलाने के लिए—आनेऽ य देवस्य तथा विवाहमहोत्सवे साहसलाञ्छनस्य विक्रमांक० १०।२, रघु० ६।१८, १६।८४, इसी प्रकार श्रीकण्ठपदलाञ्छन मा० १, श्रीकण्ठ' विशेषण को धारण करते हुए 2 नाम अभिधान 3 दाग, धब्बा, अपकीर्ति का चिह्न 4 चन्द्रमा का कलक (—मा धब्बा) कु० ७।३५ 5 सीमान्त ।

लाञ्छित (वि०) (लाञ्छ् + क्त) 1 चिह्नित, लक्षणयुक्त, विशिष्ट 2 नामी नामक 3 विभूषित 4 सुसज्जित ।

लाट (पुं० ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम एव च (लाटानुप्रास) प्रायेण लाटजन-प्रियत्वाल्लाटानुप्रास सा० द० १०, ट: 1. लाट देश का राजा 2 पुराने जीर्णशीर्ण वस्त्र 3 कपड़े

4 बच्चों जैसी भाषा। सम०- अनुप्रासः अनुप्रास अलंकार के पाँच भेदों में से एक, शब्द या शब्दों की पुनरावृत्ति उसी अर्थ में परन्तु भिन्न प्रयोग के साथ मम्मट ने उसका सोदाहरण निरूपण किया है —शब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः उदा० वदन वरवर्णिन्यास्तस्याः, सत्य सुधाकर सुधाकर क्व नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत्—या यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य काव्य० ९।

लाटक (वि०) (स्त्री० -टिका) [लाट् + वुन्] लाट देश से संबद्ध।

लाटिका, लाटी [लट् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्, लाट् अण् + ङीष्] रचना की एक विशेष रीति दे० सा० द० ६२९ 2 एक प्राकृतिक बोली का नाम दे० काव्या० १।३५।

लाड् (चुरा० उभ० लाडयति -ते) 1 लाड़प्यार करना पुचकारना, दुलारना 2 कलंकित करना, निन्दा करना 3 फेंकना, उछालना तु० लड्।

लाण्डनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।

लात (भू० क० कृ०) [ला + क्त] लिया, ग्रहण किया।

लापः [लप् + घञ्] 1 बोलना, बातें करना 2. बिल बिलाना, तुतला कर बोलना।

लाबः, **लावकः** [लू + घञ्, पृषो०] एक प्रकार का लवा पक्षी, बटेर।

लाबुः (बूः) (पुं०) एक प्रकार की लौकी, तूमड़ी।

लाबुकी (स्त्री०) एक प्रकार की सारंगी।

लाभः [लभ् + घञ्] 1 उपलब्धि, प्राप्ति, अवाप्ति, अधिग्रहण—शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभममन्यत—रघु० १२।१०, स्त्रीरत्नलाभम्—७।३४, ११।९२, क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ -रघु० ८।८७ 2 नफा, मुनाफा फायदा सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ भग० २।३८, याज्ञ० २।२५९ 3 सुखोपभोग 4 लूट का माल, विजित प्रदेश 5 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, सबोध। सम० -कर, -कृत् (वि०) लाभकारी, फायदेमंद —लिप्सा लाभ की इच्छा, लोलुपता, लालच।

लाभकः [लाभ + कन्] फायदा, मुनाफा।

लामज्जकम् [ला + क्विप्, ला आदीयमाना मज्जा सारो यस्य ब० स०, कप्] एक सुगन्धयुक्त घास विशेष की जड़, खस, वीरणमूल।

लाम्पट्यम् [लम्पट + ष्यञ्] लम्पटता, कामुकता, भोगासक्ति।

लालनम् [लल् + ल्युट्] 1 दुलारना, लाड़ प्यार करना पुचकारना सुतलालनम् आदि 2 तुष्ट करना आवश्यकता से अधिक स्नेह करना आत्मरञ्जन, अत्यधिक लाड़प्यार—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः दे० लल्।

लालस (वि०) [लस् + यङ्, लुक् द्वित्वम्, अच्] 1 अत्यंत लालायित बहुत इच्छुक, आतुर प्रणाम-लालसाः का० १४ ईशानसंदर्शनलालसानाम् कु० ७।५६ शि० ४।६ 2 आनन्द लेने वाला, भक्त, अनुरागी लीन विलासलालसम् गीत० १ शाक, मृगया आदि।

लालसा [लस् स्पृहायां यङ् लुक् भावे अ] 1 प्रबल इच्छा उत्कण्ठा, बड़ी अभिलाषा उत्सुकता 2 याचना निवेदन, अभ्यर्थना 3 खेद दुःख 4 दोहद: गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

लालसीकम् (नपुं०) चटनी।

लाला [लल् + णिच्, अच्, टाप्] लार थूक मनु० ५।९। सम० —भक्षः लार भक्षक 1 लार बहाना 2 मकड़ा।

लालाटिक (वि०) (स्त्री० -की), [ललाटं पश्यति ठञ्] 1 मस्तक पर स्थित या मस्तकसंबंधी 2 भाग्य से मिलना या भाग्य पर निर्भर रहने वाला प्राप्तिस्तु लालाटिकी उद्भट 3 निकम्मा, नीच, कमीना —कः 1 सावधान सेवक (शा० जो अपने स्वामी की मुखमुद्रा से समझ लेता है कि अब क्या क्या करना आवश्यक है) 2 निठल्ला, लापरवाह निरर्थक व्यक्ति 3 एक प्रकार का आलिंगन।

लालाटी [ललाट + अण् + ङीप्] मस्तक, माथा।

लालिक [लाला + ठञ्] भैंसा।

लालित (भू० क० कृ०) [लल् + णिच् + क्त] 1 दुलार किया गया, लाड़प्यार किया गया, लालन किया गया, अत्यंत स्नेह किया गया 2 सत्पथ से डिगाया गया 3 प्रेम किया गया, अभिलषित, —तम् आनन्द, प्रेम, हर्ष।

लालितक [लालित + कन्] लाडला, दुलारा, प्रिय, स्नेह-भाजन।

लालित्यम् [ललित + ष्यञ्] 1 प्रियता, लावण्य, सौन्दर्य, आकर्षण, माधुर्य, वर्णितं पदलालित्यम् उद्भट 2 प्रीति विषयक हाव भाव।

लालिन् (पुं०) [लल् णिच् + णिनि] बहकानेवाला, फुसलाने वाला।

लालिनी [लालिन् + ङीप्] स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

लालुका (स्त्री०) एक प्रकार की माला, हार।

लाव (वि०) (स्त्री० -वी) [लू कर्तरि घञ्] 1 काटने वाला, लुनाई करने वाला, उखाड़नेवाला—कुशलविलावम् रघु० १३।४३ 2. उत्पाटन करने वाला, एकत्र करने वाला 3 काट कर गिराने वाला, मारने वाला, नष्ट करने वाला भट्टि० ६।८७, -वः 1 काटना 2 लवा नामक पक्षी।

लावक: [लू+ण्वुल्] 1 काटने वाला, खंड-खंड करने वाला 2. लावनी करने वाला, एकत्र करने वाला 3. लवा, बटेर।

लावण (वि०) (स्त्री०—णी) [लवण संस्कृतम् अण्] 1. नमकीन 2. लवण से युक्त, लवण द्वारा संस्कृत।

लावणिक (वि०) (स्त्री०—की) [लवणे संस्कृत ठण्] 1 नमकीन, नमक से प्रसाधित 2. नमक का व्यापारी 3. प्रिय, सुन्दर, लावण्यमय—शि० १०।३८, (यहाँ इसका अर्थ 'नमक का व्यापारी' भी है), —क: नमक का व्यापारी, —कम् लवण-पात्र, नमक का बर्तन।

लावण्यम् [लवण+ष्यञ्] 1 नमकीनपना 2 सौन्दर्य सलोनापन मनोहरता —तथापि तस्या लावण्य रेखया किंचिदन्वितम्—श० ६।१३, कु० ७।१८, उज्ज्व० में लावण्य की परिभाषा —मुक्ताफलेषु छायायास्तरलत्वमिवान्तरा प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते। सम० —अर्जितम् विवाहिता स्त्री की निजी सम्पत्ति जो विवाह के अवसर पर उसे अपने पिता या सास से प्राप्त हुई हो।

लावण्यमय, लावण्यवत् (वि०) [लावण्य+मयट्, मतुप् वा] प्रिय, मनोहर।

लावाणक: [लू+आनक] मगध के निकट एक जिले का नाम।

लाविक: [लाव+ठक्] भैंसा।

लाशुक (वि) (स्त्री०—का,—की) [लष्+उकञ्] लोलुप, लोभी, लालची।

लास: [लस्+घञ्] 1 कूदना, खेलना, उछलना, नाचना 2. प्रेमालिंगन, केलि क्रीडा 3 स्त्रियों का नाच, रामलीला 4 रसा, झोल।

लासक (वि०) (स्त्री०—सिका) [लस्+ण्वुल्] 1 खेलने वाला, किलोल करने वाला, विहार करने वाला 2 इधर उधर घूमने वाला, —क: 1 नर्तक 2. मोर 3. आलिंगन 4 शिव का नामान्तर, —कम् चौबारा, बुर्ज।

लासकी [लासक+ङीप्] नर्तकी।

लासिका [लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 नर्तकी 2 वेश्या, स्वेच्छाचारिणी या अभिचारिणी स्त्री।

लास्यम् [लस्+ण्यत्] 1. नाचना, नृत्य, —आरेभे धास्यति कस्य लास्यमधुना...वाला नियाको यम—भामि० ४।४२, रघु० १६।१४ 2. गाने बजाने के साथ नाच 3. वह नृत्य जिसमें प्रेम की भावनाएं विभिन्न हाव भाव तथा अंगक्रियाओं द्वारा प्रकट की जाती हैं, —स्य: नट, नर्तक, अभिनेता —स्या नर्तकी।

लिकुच [लक्+उच, पृषो० इत्वम्] दे० 'लकुच'।

लिक्षा [लिखे मा० १।१] 1 लीख, जूँ का अंडा 2 अत्यन्त सूक्ष्म माप (जो खस खस के दाने के बराबर मानी जाती है)—जालान्तरगते भानौ यच्चाणु दृश्यते रजः, तैस्त्रसरेणुभिस्तैर्बहुभिर्लिक्षा, या, त्रसरेणवोऽष्टौ विज्ञेया लिक्षैका परिमाणतः मनु० ८।१३३, दे० याज्ञ० १।३६२ भी।

लिक्षिका [लिक्षा+कन्+टाप्, इत्वम्] लीख।

लिख् (तुदा० पर० लिखति, लिखित) 1 लिखना, लिख रखना, अनुरकण करना, रेखांकन करना, उत्कीर्ण करना,—अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख उद्भट, नागाक्षरैर्यामिमिते कठिन्या निशा ऽलिखद् ज्योति-सम प्रशस्तिम्—नै० २२।५४, याज्ञ० २।८७, श० ७।५ 2 रेखाचित्र बनाना, रेखा खींचना, आरेखन, चित्रित करना, रङ्ग भरना—मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनिकरे गीत० ७ सत्सादृश्य विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती —मेघ० ८५, ८०, कु० ६।८८, विस्तरा पाश्वे वाक्पुलेखा लिखेश काव्य० १० 3 खुरचना, रगड़ना, घिसना, फाड़ देना —न किंचिदूचे चरणेन केवलं लिलेख वाष्पाकुललोचना भुवम् कि० ८।१४, मूर्ध्ना दिवमिवालेखीत् —भट्टि० १५।२२ 4 शल्यक्रिया करना, खाल काटना 5 स्पर्श करना, खरोंच पैदा करना 6. (पक्षी की भांति) चोंचें मारना 7 चिकना करना 8. स्त्री के साथ सहवास करना, आ—, 1. लिखना, चित्रित करना, रेखाएँ खींचना मा० १।३१ 2 रङ्ग भरना, चित्र बनाना —आलिखित इव सर्वतो रङ्गः श० १, त्वामालिख्य प्रणयकुपिताम् मेघ० १०५, रघु० १९।१९ 3 खुरचना, छीलना, उद् —, 1 खुरचना, छीलना, फाड़ना, खोदा लगाना शि० ५।२०, मनु० १।२३ 2 पीस डालना, रोगन करना—त्वष्टा विवस्वन्तमिवोल्लिलेख,—कि० १७।४८, रघु० ६।३२, श० ६।६ 3. रङ्ग भरना, लिखना, चित्रित करना—कु० ५।५८ 4 खोदना, काटकर बनाना, प्रति—,उत्तर देना, जवाब देना, बदले में लिखना, वि—,लिखना, अनुरकण करना 2. रेखाकन करना, रङ्ग भरना, चित्रित करना, चित्र बनाना —लिलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम् गीत० ४ 3 खुरचना, छीलना, फाड़ना —मन्द शब्दायमानो विलिखति शयनादुत्थितः क्ष्मां खुरेण- काव्य० १०, व्यालिखव्यवः पुटेन लसती - नै० २।२, पादेन हैमं विलिलेख पीठम् - रघु० ६।१५, कु० ७।२३ 4 रोपना, —माला—हि० ४।३५ पाठान्तर, सम् - खुरचना, छीलना।

लिखनम् [लिख्+ल्युट्] 1 लिखना, अनुरकण 2 रेखाकन रङ्ग भरना 3. खुरचना 4. लिखित दस्तावेज, लेख या हस्तलेख।

लिखित (भू० क० कृ०) [लिख्+क्त] लिखा हुआ, रङ्ग भरा हुआ, खुरचा हुआ आदि दे० लिख्, —त: विधि या धर्मशास्त्र के एक प्रणेता का नाम (शंख के साथ

इस नाम का उल्लेख मिलता है) —तम् 1 लेख दस्तावेज 2 कोई पुस्तक या रचना।

लिगुः [लिग् + कु] 1 हरिण 2 मूर्ख, बुद्धू —नपुं० हृदय।

लिङ्ख् (भ्वा० पर० लिङ्खति) जाना, हिलना, जुलना।

लिङ्ग् I (भ्वा० पर० लिङ्गति, लिङ्गित) जाना, हिलना जुलना II (चुरा० उभ० लिङ्गयति-ते) 1 रङ्ग भरना, चित्रित करना 2 किसी संज्ञाशब्द को उसके लिङ्ग के अनुसार रूपरचना करना।

लिङ्गम् [लिङ्ग + अच्] 1 निशान, चिह्न, निशानी, प्रतीक, बिल्ला, प्रतीक, विभेदक चिह्न, लक्षण —यतिपार्थिवलिङ्गधारिणौ रघु० ८।१६, मोनवीवदोलिङ्गदर्शी १४।७१, मनु० १।३० ८।२५, २५२ 2 अवास्तविक या मिथ्या चिह्न वेश, छद्मवेश, धोखे में डालने वाला बिल्ला —लिङ्गैर्मुदः संवृतविक्रियास्ते रघु० ७।३० क्षपणकलिङ्गधारी मुद्रा० १ न लिङ्गं धर्मकारणम् —हि० ४।८५ दे० नी० लिङ्गिन् 3 लक्षण, रोग के चिह्न 4 प्रमाण के साधन, प्रमाण, सबूत, साक्ष्य 5 (तर्क० में) किसी प्रतिज्ञा का विधेय 6 लिङ्गचिह्न 7 यानि गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गम् न च वयः उत्तर० ४।११ 8 पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 9 (व्या० में) स्त्री या पुरुषवाची शब्द पहचानने का चिह्न, लिङ्ग 10 शिवलिङ्ग 11 देवमूर्ति, प्रतिमा 12 एक प्रकार का संबंध या अभिसूचक (जैसे कि संयोग, वियोग और साहचर्य आदि) जो किसी शब्द के किसी विशेष संदर्भ में अर्थ निश्चित करने का काम देता है, उदा० कुपितो मकरध्वजः में कुपित शब्द मकरध्वज शब्द के अर्थ का 'काम' के अर्थ में संकेत कर देता है काव्य० २, तथा तत्स्थानीय भाष्य 13. (वेदान्त० में) सूक्ष्म शरीर, दृश्यमान स्थूल शरीर का अविनश्वर मूल शरीर, तु० पञ्चकोश। सम० —अग्रम् लिङ्ग की मणि, सुपारी, —अनुशासनम् व्याकरण विषयक लिङ्ग ज्ञान के नियम जिनसे शब्द के लिङ्गों का ज्ञान मिलता है, —अर्चनम् शिव की लिङ्ग के रूप में पूजा, —देहः —शरीरम् सूक्ष्म शरीर दे० लिङ्ग (१३) ऊपर, —धारिन् (वि०) बिल्लाधारी, —नाशः 1. विशिष्ट चिह्नों का लोप 2. शिश्न का न रहना 3. दृष्टिशक्ति का अभाव, एक प्रकार का आँखों का रोग, —परामर्शः (तर्क० में) शिविह्न को ढूंढना या विचारना (उदा० 'अग्नि' का सूचक चिह्न 'धूआं' है) —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, —प्रतिष्ठा 'लिङ्ग' अर्थात् शिवजी की पिण्डी की स्थापना, —वर्धन (वि०) पुरुष की जननेन्द्रिय में उत्तेजना पैदा करने वाला, —विपर्ययः लिङ्गपरिवर्तन —वृत्ति (वि०) धार्मिक [illegible] वृत्ति [illegible] कार्यों में पाखण्ड करने वाला, —वेदी वह आधार जिस पर शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है।

लिङ्गकः [लिङ्ग + कै + क] कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड़।

लिङ्गनम् [लिङ्ग् + ल्युट्] आलिङ्गन करना।

लिङ्गिन् (वि०) [लिङ्ग + इनि] 1 चिह्न या निशान रखने वाला 2 विशिष्टतायुक्त 3 बिल्ला या निशान रखने वाला, दिखाई देने वाला, छद्मवेषी, पाखण्डी, झूठे चिह्न धारण करने वाला (समास के अन्त में) —स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः कि० १।१ इसी प्रकार लिङ्गिन् 4 लिङ्ग से युक्त 5 सूक्ष्म शरीरधारी —पुं० 1 ब्रह्मचारी ब्राह्मण, संन्यासी पञ्च० ४।३९ 2 शिवलिङ्ग की पूजा करने वाला 3 पाखण्डी, बना हुआ भक्त, संन्यासी 4 हाथी 5 (तर्क० में) प्रतिज्ञा का विषय।

लिपि, **—पी** [लिप् + इक, ङीप् वा] 1 लीपना, पोतना 2 लिखना, लिखावट 3 लिखित अक्षर, वर्ण, वर्णमाला —लिपेर्यथावद् ग्रहणेन वाङ्मयं नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत् रघु० ३।२८ ८६ 4 लिखने की कला 5 (अक्षर, दस्तावेज, या हस्तलेख आदि) लिखना —अय शरीरो भविलोपि वेबसी लिपि ललाटेऽर्थिजनस्य जाग्रतीम् नै० १।१५ १३८ 6 चित्रकला, रेखांकन। सम० —कर 1 पलस्तर करने वाला, सफेदी करने वाला, राज 2 लेखक, लिपिक 3 उत्कीर्णक (उभरा हुआ लिखने वाला, नक्काशी करने वाला) ('लिपिकर' भी), —कारः लेखक, लिपिक, —ज्ञ (वि०) जो लिख सकता है, —न्यासः लिखने या नकल करने की कला, —फलकम् लिखने का पट्ट या तख्ता, —शाला वह स्कूल जहाँ लिखना सिखाया जाय, —सज्जा लिखने का सामान या उपकरण।

लिपिका [लिपि + कन् + टाप्] दे० 'लिपी'।

लिप्त (भू० क० कृ०) [लिप् + क्त] 1 लीपा हुआ, पोता हुआ, साना हुआ, ढका हुआ 2 दाग लगा, बिगड़ा हुआ, दूषित, मलिन 3 विषयुक्त, (बाण आदि) जहर में बुझाया हुआ 4 खाया हुआ 5 जुड़ा हुआ, मिला हुआ।

लिप्तकः [लिप्त + कन्] जहर में बुझा तीर।

लिप्सा [लभ् + सन् भावे अ] 1 प्राप्त करने की इच्छा, भामि० १।१२५ 2 अभिलाषा।

लिप्सु (वि०) [लभ् + सन् + उ] प्राप्त करने का इच्छुक।

लिबिः, **—बी** (स्त्री०) [लिप् + इन् बा० पस्य बः] दे० 'लिपि'।

लिबिकरः [लिबि करोति + कृ + ट पृषो० द्वितीयायाः अलुक्] लिपिक, लेखक, लिपिकार।

लिम्प् (तुदा० उभ० लिम्पति-ते, लिप्त) 1 लीपना, पोतना

सानना लिम्पतीव तमोऽङ्गानि—मृच्छ० १।३४ 2 ढक देना बिछा देना शि० ३।४८ 3 दाग लगाना, दूषित करना, मलिन करना, कलंकित करना, कलुषित करना य करोति स लिप्यते पंच० ४।६४ न मां कर्माणि लिम्पन्ति भग० ४।१४, १८।१७ मनु० १०।१०६ 4 प्रज्वलित करना सुलगाना—तस्यालिपत शाकाग्नि स्वान्तं काष्ठमिव ज्वलन् भट्टि० ६।००, अनु - लीपना पोतना वपुरम्बक्लिप्त न वपु –शि० ४।५१ १२ 2. ढक देना, फैलाना घेर लेना रघु० १०।१० शि० ७।७ अव—,लीपना पोतना ,कर्मवा०, घमंड करना घमंडी बनना उत्पन्न होना, आ – 1 लीपना पोतना उत्तर० ३।३९, ऋतु० ६।१२ 2 दूषित करना दाग लगाना, उप ,धब्बा लगाना मलिन करना भग० १३।३२, वि लीपना पोतना मलना ऋतु० ५।७९ भट्टि० ३।२०, १५।६ शि० १६।६४ ।

लिम्पः [लिप् + श मुम्] लेप पोतना मालिश ।

लिम्पट (वि०) [लम्पट, पृषो०] कामासक्त, विषयी, —टः व्यभिचारी, दुश्चरित्र ।

लिम्पाकः [लिप् + आकन् पृषो०] 1 नींबू या चकोतरे का वृक्ष 2 गधा, —कम् चकोतरा, नीबू ।

लिश् I (तुदा० पर० लिशति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2. चोट पहुँचाना दे० रिष् ।
II (दिवा० उभ० लिश्यति ते) छोटा होना घटना ।

लिष्ट (भू० क० कृ०) [लिश् + क्त] जो छोटा हो गया हो, घट गया हो या न्यून हो गया हो ।

लिश्वः [लिश् + वन्] अभिनेता, नर्तक ।

लिह् (अदा० उभ० लेढि, लीढे लीढ, इच्छा० लिलिक्षति ते) 1 चाटना कपाले मार्जारः पय इति करांल्लेढि शशिनः—काव्य० १९ भामि० १।१९, कि० ५।३८, शि० १।४० 2 चाट जाना, चखना, घूंट-घूंट से पीना, लप-लप करके पीना नै० २।१९ १०० अव , 1 चाटना, लपलप करके पीना थोड़ा थोड़ा करके चखना मधव्यालावलीढात्मन गंगा० ५० वेणी० ३।५, भामि० १।१११ 2 चबाना, खाना दर्भैरर्धावलीढै श० १।७, मृच्छ० १।९, आ- 1 चाटना, लपलप करके पीना 2. घायल करना आघात पहुँचाना—सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रै —रघु० २।३७ 3 (आँखों से) ग्रहण करना, देखना,—स ताम्या- मालीढा परमरमणीया तव तनु गंगा० ३२, उद् , चमकाना, घर्षण द्वारा चिकना बनाना, रगड़ना मणि शाणोल्लीढ भर्तृ० २।४४, परि , सम्—, चाटना— भट्टि० १३।४२ ।

ली I (क्र्या० पर० लनाति) पिघलना द्रवित होना ।
II (क्र्या० पर० [illegible]) 1 [illegible]

III (दिवा० आ० लीयते, लीन) 1 चिपकना, दृढ़ता पूर्वक जमे रहना, जुड़ जाना मालवि० ३.५ 2 भुजपाश में बांधना आलिंगन करना 3 लटना, विश्राम करना टेक लेना ठहरना, रहना, दुबकना, छिपना, लुकना (भुजा झुकना) लीयन्ते मुकुलान्तरेषु शनकै संजातलज्जा इव रत्न० १।२९, रघु० ३।९, श० ६।१६, कु० १।१४, ७।२१ भट्टि० १८।१३, कि० ५।२६ 4 विघटित होना पिघलना 5 चिप- चिपा लगना 6 लीन हो जाना, भक्त या अनुरक्त ।—। माधवमनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना गीत० ४ 7 नष्ट होना भाग होना प्रेर० (लापयति ते) लापयति-ते लीनयति-ते लाययति-ते) पिघलाना, विघटित करना तरल बनाना गलाना ('लापयते' का सम्मान या सम्मानित करने के अर्थ में प्रयुक्त होना है जटाभिर्लापयते पूजामधिगच्छति सि० पा० १।३।७०), अभि 1 जुड़ना, चिपकना--रघु० ३।८ 2 ढक लेना, ऊपर फैला देना—पश्चादुच्चैर्भु- जतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः मेघ० ३८ आ ,1 बस जाना, छिपना, दुबकना, विक्रम० २।२३, 2. जुड़ना चिपकना -रघु० ४।५१, नि , 1 चिपकना, जमे रहना, लेट जाना, आराम करना, बस जाना, उतर पड़ना निलिल्ये मूर्ध्नि गृध्रोऽस्य भट्टि० १४।७६, २।५ 2 दुबकना, छिपना, अपने आपको छिपा लेना गुहा—न्यलेषत भट्टि० १५।३२ निशि रहसि निलीय गीत० २ 3 अपने आपको छिपा लेना (अपा० के साथ) -मातुर्निलीयते कृष्ण सिद्धा० 4 मरना नष्ट होना, प्र , 1 लीन होना, विघटित होना, गल जाना आत्मना कृतिना च त्वमात्मन्येव प्रलीयसे—कु० २।१० यस्मिन्नात्मने प्रलीयन्ते तन्नैवाव्यक्तसंज्ञके भग० ८।१८, मनु० १।५४ 2 नष्ट होना, लोप होना 3 नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना वि , 1 जुड़ना, चिपकना, जमे रहना 2 विश्राम करना टिक जाना, उतर पड़ना पुरोऽस्य यावन्न भुवि व्यलीयत शि० १।१२ 3 विगलित होना, पिघल जाना लीन होना महावीर० ६।६०, ७।१४ 4 लीन होना, ओझल होना 5 नष्ट होना, सम् 1 चिपकना जुड़ना 2 लेट जाना, बस जाना ठहरना 3 दुबकना छिपना 4 पिघलना ।

लीक्का (स्त्री०) लीख युकाड, दे० लिक्षा ।

लीढ (भू० क० कृ०) [लिह् + क्त] चाटा गया, चुसकी ली गई चखा गया खाया गया आदि०, दे० 'लिह्' ।

लीन (भू० क० कृ०) [ली + क्त] 1 जुड़ा हुआ, चिपका हुआ लगा हुआ 2 दबकाया हुआ, छिपाया हुआ,

4 पिघला हुआ, विगलित मा० ५।१० 5 पूर्णरूप से विलीन, या निगलित, गहरा जुड़ा हुआ नद्य सागरे लीना भवन्ति 6 भक्त, छोड़ा हुआ 7 आसक्त लुप्त (दे० ली)।

लीला [ली + क्विप् लियं लाति ला + क वा] 1 खेल क्रीडा, विनोद दिलबहलावा, आनन्द मनोरंजन क्लम ययौ कन्दुकलीलयापि या कु० ५।१९ (प्राय समास के प्रथमखण्ड के रूप में प्रयुक्त) लीला कमल, लीलाशुक आदि 2 प्रीतिविषयक मनोविनोद स्वेच्छाचारिता, रतिक्रीडा केलिक्रीडा—उन्मत्तलील गति रघु० ३।७ ८।२२ ९।७०, भ्रूभ्यां नियमभ महो विनाऽपि हेलाभीलाभि किमु सा रतिकारणे रमणी —शि० ८।-४, मेघ० ३५, (उज्ज्वलनीलमणि ने इस अर्थ में 'लीला' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है

अप्राप्तवल्लभसमागमनायिकाया सख्या पुरोऽत्र निजचित्तविनोदबुद्ध्या। आलापवेशगतिहास्य विलोकनाद्यैः प्राणेश्वरानुकृतिमाकलयन्ति लीलाम्॥)

3 आसानी से, सुविधा, क्रीडामात्र, बच्चों का खेल लीलया जघान 'आसानी से मार डाला 4 दर्शन आभास, हावभाव, छवि य मर्गां प्राप्तपि नाकिलोक रघु० ६।३८ 'पताकी की भांति दिखलाई देने वाला 5 सौन्दर्य, लावण्य लालित्य —मुहुरवलोकित मण्डनलीला गीत० ६ रघु० ६।, १६।७१ 6 बहाना छद्मवेश ढोंग 'बनावट यथा लीलामनुष्य लीलानट। सम० अ (आ) गार, रम्,— गृहम् गेहम्, वेश्मन् (नपु०) आनन्द-भवन रघु० ८।९५, अब्ज (नि०) ... वाला अब्जम् अम्बुजम्, अरविन्दम्, कमलम् तामरसम्, पद्मम् कमल खिलौना कमल का फूल या खिलौने की भांति हाथ में लिया हुआ रा रघु० ६।१३, मेघ० ३५ कु० ६।८४ अवतार (विष्णु का) पृथ्वी पर मनोरंजन के लिए उतरना, उद्यानम् 1 प्रमोदवन 2 स्वर्ग इन्द्र का स्वर्ग कलहः क्रीडामय कलह, प्रणय कलह, चतुर (वि०) विशुद्ध मनोरंजन मनुष्य कामी मनुष्य छद्म वेशी मात्रम् क्रीडामात्र, केवल खेल बच्चों का खेल, अनायास, रति. (स्त्री०) मनोविनोद क्रीडा वापी आनन्दवापिका शुक. आनन्द के लिए पाला हुआ तोता।

लीलायितम् [लीला + क्यच् क्त] खेल क्रीडा मनोरंजन, आनन्द।

लीलावत् (वि०) [लीला + मतुप् मस्य व] क्रीडामय खिलाड़ी ती 1 मनोहर या आकर्षक स्त्री 2 शृंगारप्रिय या स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 दुर्गा का नाम।

लुक् (अव्य०) पाणिनि द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो प्रत्ययों का लोप करने के लिए काम में आता है।

लुञ्च् (भ्वा० पर० लुञ्चति लुञ्चित) 1 तोड़ना, खींचना, छीलना काटना 2 फाड़ देना, उखाड़ देना, नोच डालना।

लुञ्च,—चनम् [लुञ्च् + घञ् ल्युट् वा] छीलना उखाड़ना।

लुञ्चित (भू० क० कृ०) [लुञ्च् + क्त] 1 छीला हुआ 2 तोड़ा हुआ, उखाड़ा हुआ फाड़ा हुआ।

लुट् I (भ्वा० आ० लोटते) 1 मुकाबला करना पीछे धकेलना विरोध करना 2 चमकना 3 कष्ट उठाना। II (चुरा० उभ० लोटयति-ते) 1 बोलना 2 चमकना III (भ्वा० दिवा० पर० लोटति, लुट्यति) 1 लोटना जमीन पर लुढ़कना दे० लुठ् 2 संबद्ध होना 3 अपहरण करना लूटना खसोटना (संभवतः लुण्ट् या लुण्ठ्)।

लुठ् I (भ्वा० पर० लोठति) प्रहार करना पछाड़ देना। II (भ्वा० आ० लोठते) 1 भूमि पर लोटना इधर उधर करवटें बदलना गुड़मुड़ी खाना लुढ़कना इधर उधर घूमना — मणिर्लुठति पादेषु काचः शिरसि धार्यते हि० २।६८ लुठति न सा हिमकरकिरणेन गीत० ७ हारा इव हरिणाक्षीणां लुठन्ति स्तनमण्डले अमरु० १००, भट्टि० १३।४८ भामि० २।१७६ प्र लिटना लुढ़कना आदि, शि० ५।१०८।

लुठनम् [लुठ् + ल्युट्] लोटना लुढ़कना इधर उधर घूमना।

लुठित (भू० क० कृ०) [लुठ् + क्त] लोटा हुआ, लोटता हुआ या जमीन पर लुढ़कता हुआ।

लुड् I (भ्वा० पर० लोडति) हिलाना डुलाना क्षुब्ध करना बिलोना आलोडित करना पर० (लोडयति ते) व्याकुल करना बिलोना विलोडित करना (इसी अर्थ में वि उपसर्ग के साथ प्रयुक्त) —शि० ११।८ १०।६४। II (तुदा० पर० लुडति) 1 जुड़ना चिपकना 2 ढकना।

लुण्ट् (भ्वा० पर० लुण्टति) 1 जाना 2 चुराना, लूटना, खसोटना 3 लँगड़ा या विकलांग होना 4 आलसी या सुस्त होना। II (भ्वा० पर० चुरा० उभ० लुण्टयति-ते) 1 लूटना खसोटना चुराना 2 अवज्ञा करना, घृणा करना।

लुण्टाक (वि०) (स्त्री० की) [लुण्ट् + षाकन्] चोरी करने वाला (आल० से भी) लुटेरा, डाकू—नयनानां हृदयलुण्टाकी परितश्चलाना निवारयति कान्ता० ८० ... भामि० ५।

लुण्ठ् (भ्वा० पर० लुण्ठति) 1 जाना 2 हरकत देना, क्षुब्ध करना गति देना 3 सुस्त होना 4 लँगड़ा होना 5 लूटना खसोटना 6 मुकाबला करना।

लुण्टक [लुण्ठ [illegible]] लुटेरा डाकू चोर।

लुण्ठनम् [लुण्ठ [illegible] ल्युट्] लूटना लूटना चुराना [illegible] दैत्या इव लुण्ठनाय काव्यार्थचौरा प्रगुणीभवन्ति [illegible] विक्रमांक० १।११।

लुण्ठा [लुण्ठ [illegible]] 1 [illegible] 2 [illegible]

लुण्ठाक [लुण्ठ [illegible]] 1 लुटेरा 2 कौवा

लुण्ठि [illegible] (स्त्री०) [लुण्ठ् + इन् लुण्ठि + [illegible]] लूटमार लूटना डकैती डालना

लुण्ड् (चुरा० उभ० लुण्डयति [illegible]) लूटमार करना डकैती डालना

लुण्डिका [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

लुम्बी [illegible]

लुन्थ् (भ्वा० [illegible]) 1 प्रहार करना [illegible] पहुँचाना [illegible] 2 कुपित होना पीड़ित होना [illegible]

लुप् (दिवा० पर० लुप्यति) 1 घबड़ा देना विस्मित करना 2 [illegible] घबड़ा जाना

[illegible] (तुदा० उभ० लुम्पति—ते [illegible]) 1 तोड़ना [illegible] करना [illegible] करना परित्यक्त करना [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 छीन लेना [illegible] [illegible] करना [illegible] दबा देना ओझल [illegible] [illegible] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करना प्रहार करना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिया [illegible]

लुप्त (भू० क० कृ०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] हुआ [illegible] [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] व्यवहार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर्थात [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] बीच पद लुप्त हो गये हों—दे० काव्य० १० उपमा के अन्तर्गत [illegible] (वि०) लुप्त पदों से युक्त, **पिण्डोदक-क्रिया** (वि०) श्राद्धकर्म से विरहित, **प्रतिभ** (वि०) जिसने अपनी प्रतिभा खो दी है प्रज्ञाहीन विवेकशून्य [illegible] **प्रतिभ** (वि०) तर्कनाशक्ति से हीन।

लुब्ध (भू० क० कृ०) [लुभ् + क्त] 1 लालची लोभी, [illegible] 2 इच्छुक लालायित उत्सुक यथा धनलुब्ध, [illegible] और गुणलुब्ध आदि में [illegible] 1 शिकारी [illegible]

लुब्धक [लुब्ध [illegible]] 1 शिकारी बहेलिया मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम् लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति भर्तृ० २।६१ 2 [illegible] 3 स्वेच्छाचारी 4 [illegible] का [illegible] नाम।

लुभ् (दिवा० पर० लुभ्यति लुब्ध) 1 लालच करना [illegible] उत्सुक होना (सम्प्र० या अधि० के [illegible] तदपि गाथा लब्धे मनाय 2 [illegible] घबरा जाना [illegible] विस्मित होना भटकना—प्रेर० ([illegible]) ललचाना लालायित करना, उत्कण्ठित करना [illegible] बहु लोभयन भट्टि० ५। वासना को उत्तेजित करना 3 फुसलाना बहकाना [illegible] देना आकृष्ट करना लोभ्यमान [illegible] रघु० १९। [illegible] अस्तव्यस्त करना अव्यवस्थित करना व्याकुल [illegible] [illegible] इच्छुक होना (प्रेर०) [illegible] फुसलाना वि— अव्यवस्थित [illegible] (प्रेर०) [illegible] [illegible] आकृष्ट करना [illegible] विलोभ्यमान [illegible] [illegible] 2 बहकाना मनोरंजन [illegible]

लुम्ब (भ्वा० पर० [illegible] चुरा० उभ० लुम्बति लम्बयति [illegible]) [illegible]

लुम्बिका [illegible] एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

लुल (भ्वा० पर० लोलति लुलित) 1 लोटना इधर-उधर [illegible] इधर उधर घूमना करवटें बदलना—लुलित [illegible] कि० ८।६ शि० ३।७२ [illegible] [illegible] क्षुब्ध करना कंपा- [illegible] अव्यवस्थित करना [illegible] दबाना कुचलना [illegible] (लोलयति [illegible]) हिलाना [illegible] [illegible] इधर उधर चक्कर काटना [illegible] अव्यवस्थित [illegible] करना (बालों को) छितराना।

लुलाय, मुलाय [लल् घञर्थे क, नमाप्नोति अण्] भैंसा खुरविक्षुण्णरिणी सिन्धकायो लुलाय ।

लुलित (भू० क० कृ०) [लल् क्त] 1 हिलाया हुआ करवट बदला हुआ, इधर उधर लुढ़का हुआ लपलपा मान लहराता हुआ—मुरालप्राप्तिनिर्मिलमम्भसो स्रोतस नीलुलित नवन्दे रघु० १६।५४ ४२ 2 मसला किया हुआ दु खित लुलितमकरन्दो मधुप० वेणी० १।१ 3 अव्यवस्थित (बाल) बिखराये हुए, कुमा० ४।१४ 4 दबाया हुआ कुचला हुआ क्षतिग्रस्त श० ३।२७ 5 दबाने वाला मर्मस्पर्शी [illegible] धानाक (कनकवलयम्)—श० ३।१४ 6 थका हुआ झुका हुआ – अलसलुलितमुग्धान्यध्वसम्पातखेदात् (अगकानि) उत्तर० १।२४, मा० १।१५ 3।६ 7 प्राजल सुन्दर घन लुलितपल्लवम् भट्टि० ९।५६ ।

लुप् (भ्वा० पर० लोपति) दे० 'लुभ्' ।

लुभकः [रुचे अभच् नित लुश् च] मदोन्मत्त हाथी ।

लुह् (भ्वा० पर० लोहति) लालच करना उत्सुक होना, लालायित होना । तु० 'लुभ्' ।

लू (क्र्या० उभ० लुनाति लुनीते, लून प्रेर० लावयति - ते, इच्छा० लुलूषति ते) 1 काटना, कतरना चुटकी से पकड़ना, वियुक्त करना, विभक्त करना, तोड़ना, लुनाई करना (फूल) चुनना शरासनज्या-मलुनाद् बिडौजस रघु० ३।५९ ७।४५, १२।४३ —पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम्–शि० १।५१, क्रीडन्ति कार्कन्धि लुनपर्णं पञ्च० १।१८७, कु० ३।६१, भग० ९।८० 2 काट देना पूर्णत नष्ट कर देना, विध्वस करना—लोकानलावीद्विजिताश्च तस्य—भट्टि० २।५३ आ , आहिस्ता से उखाड़ना—कु० २।४१ वि , काटना छाँटना, उखाड़ देना–उत्तर० ३।५ ।

लूता [लू + तक् + टाप्] 1 मकड़ी 2 चींटी । सम० तन्तुः मकड़ी का जाल कंटकः 1 लंगूर 2 एक प्रकार का चमेली का फूल ।

लूतिका [लूता + कन् + टाप्, इत्वम्] मकड़ी ।

लून (भू० क० कृ०) [लू + क्त] 1 काटा गया छाँटा गया, वियुक्त किया गया, काट दिया गया 2 तोड़ा गया, (फूल आदि) चुने गये 3 नष्ट किया हुआ 4 कर्तन किया गया, कुतरा गया 5 घायल किया गया, - नम् पूँछ ।

लूनक [लू + नक्] पूछ । सम० विषः जहरीली पूँछ वाला' वह जानवर जो अपनी पूँछ से डंक मारता है ।

लूष् (भ्वा० पर० लूषति) 1 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 2 लूटना डकैती डालना, चुराना ।

लेख [लिख् घञ्] 1 लिखावट दस्तावेज [illegible] मर्मपि नो वरमिद मुद्रा मदीया यत मुद्रा० ५।१८, निर्दोषि [illegible] लेखेन खलूक्ता खलु वाचिकम् शि० २।७० अनङ्गलेख कु० १।७, मन्मथलेख श० ३। ४. 2 देव सु० । सम० अधिकारिन् (पु०) पत्र लिखने का कार्य भारवाहक (राजा का) सचिव, अर्ह एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष ऋषभः इन्द्र का नामान्तर पत्रम्, पत्रिका 1 पत्र में लिखी कोई बात पत्र लेख या लिखावट 2 करार या पट्टा दस्तावेज (विधि) सन्देश लिखा हुआ सदेसा, -हार. -हारिन (पु०) पत्रवाहक ।

लेखक [लिख् + ण्वुल्] 1 लिखने वाला लिपिक लिपि [illegible] 2 [illegible] । सम० दोष, प्रमाद, लिपिक की भूल लिपिकार की त्रुटि ।

लेखन (वि०) (स्त्री० नी) [illegible] लिखने वाला [illegible] [illegible] नम् 1 लिखना अक्षरविन्यास करना 2 खुरचना, छीलना 3 खरोंच मार्ग करना 4 पतला करना, कृश या दुबला करना [illegible] ताड़पत्र (लिखने के लिए),—नी 1 कलम लिखने के लिए नरकुल, नरकुल का कलम 2 चम्मच । सम० साधनम् लिखने की सामग्री या उपकरण ।

लेखनिकः [लेखन + ठन्] पत्रवाहक ।

लेखिनी [लेख् + ल्युट् + ङीप्] 1 कलम 2. चम्मच ।

लेखा [लिख् + अ + टाप्] 1 रेखा धारी लकीर–कालिमा वांगायनलेखयोर्या कु० १।३३ कु० ७।१६ ८१ कि० १६।२ मेघ० ४४ विद्युल्लेखा फेनलेखा मदलेखा आदि 2 लकीर सीमा या मेड़, पंक्ति चौड़ी धारी लिखावट चित्रण आलेखन चित्रण पाणिलेखाविधिषु नितरा वर्तते कि करोमि मा० ४।३५ 4 दूज का चाँद, चाँद की रेखा लक्ष्यावगा चाद्रमसीव लेखा कु० १।२५ –।३४, कि० ५।६६ 5 आकृति, समानता, छाप, निशान उदाम मयावल मत्यपादलेखा कि० ५।४० 6 गोट किनारी झालर, झालर 7 चोटी ।

लेख्य (वि०) [लिख् + ण्यत्] अंकित किये जाने के योग्य, लिखे जाने योग्य [illegible] जाने योग्य, खुरचे जाने योग्य —म् 1 लिखने की कला 2 लिखना प्रतिलिपि करना 3 लेख पत्र दस्तावेज हस्तलेख 4 शिलालेख 5 चित्रण [illegible] 6. चित्रित आकृति । सम० आरूढ (वि०) लिखा गया लिख [illegible] गया, गत (वि०) चित्रित चित्रांकित चूर्णिका [illegible] पत्रम्, पत्रकम् 1 [illegible] पत्र दस्तावेज 2 ताड़ का पत्ता प्रसङ्गः दस्तावेज स्थानम् लिखने का स्थान ।

लेन —तास [illegible]

लेप् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

लेप [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

लेपक [illegible]

लेपन [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

लेप्य [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

लेप्यमयी [illegible]

लेलायमाना [illegible]

लेलिह [illegible]

लेलिहान [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

लेश [illegible] 2 [illegible]

[illegible] कि मम्मट न इस [illegible] काव्य० [illegible] सम०—[illegible] मुचित।

लड्वा [illegible]

लेष्टु [illegible] सम०—**भेदन** [illegible]

लैंगिक [illegible]

लैह [illegible] 1 [illegible] मचना [illegible] 2 चलना 3 [illegible] करना 4 [illegible]

लेहन [illegible] जिह्वा से आचमन करना।

लैहिन [illegible]

लैह्य [illegible] 1 [illegible] बस्तु। [illegible] 2 [illegible]

लैङ्गम [illegible] अठारह पुराणों [illegible] पुराण का नाम।

लैङ्गिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [illegible] 1 किसी लिङ्ग य निशान [illegible] 2 अनुमित [illegible]

लोक् (भ्वा० आ० लोकते, लोकित) देखना, नजर डालना, [illegible] ,देखना निगाह डालना [illegible] दिवा सूर्यस्य कि [illegible] निगाह डालना प्रत्यक्षज्ञान [illegible]

[illegible] लोकति, ते लोकित) 1 देखना निगाह डालनी निहारना प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 जानना जानकार होना 3 चमकना 4 [illegible] **अव**— 1 देखना निहारना निगाह [illegible] (नाटकों में) 2 मालूम करना [illegible] निरीक्षण करना —अवलोकयामि [illegible] ८ 3 परखना मनन करना [illegible] कु० ८।५० रघु० ८।१४ **आ**— 1 [illegible] प्राप्त करना निहारना निगाह [illegible] 2 [illegible] करना विचार करना [illegible] भर्तृ० [illegible] अभिवादन करना, [illegible] वि— 1 देखना निहारना निगाह [illegible] करना विलोक्य वृद्धोक्ष [illegible] कु० [illegible] 2 [illegible] करना ढूंढना।

लोक [illegible] 1 दुनिया संसार [illegible] यदि कहा जाय तो

लोक तीन हैं स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौदह हैं सात तो पृथ्वी से आरम्भ करके ऊपर क्रमश एक दूसरे के ऊपर अर्थात् भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तपोलोक और सत्य या ब्रह्मलोक तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक दूसरे के नीचे अर्थात अतल वितल सुतल रसातल तलातल महातल और पाताल) 2 भूलोक पृथ्वी इहलोके 'इस संसार में' (विप० परत्र) 3 मानव जाति मनुष्य जाति मनुष्य लोकातिग लोकोत्तर इत्यादि 4 प्रजा राष्ट्र के व्यक्ति (विप० राजा) स्वसुख निरभिलाष खिद्यसे लोकहेतो श० ५।७ रघु० ४।८ 5 समुदाय समूह समिति आकृष्टलीलान् नरलोकपालान् रघु० ६।१ अशाम नर लिपिपाल लोक ७।३ 6 क्षेत्र इलाका जिला प्रान्त 7 सामान्य जीवन, (संसार का) सामान्य व्यवहार

लोकवत्तु लीलाकैवल्यम् ब्रह्म० २।१।३३ यथा लोके कस्यचिदाप्तैषणस्य राज्ञः शारी० (इसी ग्रन्थ के और अन्य स्थल) 8 सामान्य लोक प्रचलन (वि० वैदिक प्रयोग या वाग्धारा वेदोक्ता वैदिका शब्दा सिद्धा लोकाच्च लौकिका प्रियतद्धिता दाक्षिणात्या यथा लोके वेद चेति प्रयोक्तव्ये यथा लौकिकवैदिके ष्विति प्रयुज्यते महा० (और अन्य अनेक स्थानों पर)—अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८ 9 दृष्टि, दर्शन 10 सात या चौदह की संख्या। सम० अतिग (वि०) असाधारण अति प्राकृतिक अतिशय (वि०) संसार के लिए श्रेष्ठ असाधारण, अधिक (वि०) असाधारण असामान्य सर्वं पण्डितराजराजितिलकेनाकारि लोकाधिकम् —भामि० ४।४४, कि० २।४७ अधिप 1 राजा 2 सुर देव अधिपति संसार का स्वामी —अनुराग 'मनुष्य जाति से प्रेम' विश्वप्रेम साधारण हितैषिता परोपकार, अन्तरम् परलोक दूसरी दुनिया भावी जीवन रघु० १।६९ ६।४५ लोकान्तर गम्, प्राप्त मरना अपवाद सब लोगों में बदनामी सार्वजनिक निन्दा लोकापवादो बलवान्मतो मे रघु० १४।४० अभ्युदयः लोककल्याण – अयन नारायण का सामान्य अलोक एक काल्पनिक पहाड़ जो इस पृथ्वी को घेरे हुए है और निर्मल जल के उस समुद्र से परे स्थित है जिसने सात महाद्वीपों में से अन्तिम द्वीप को घेर रक्खा है इस लोकालोक से परे घोर अन्धकार है और इस ओर प्रकाश है इस प्रकार यह पहाड़ इस दृश्यमान संसार को अन्धकार के प्रदेश से विभक्त करता है प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचल रघु० १।६८ (आगे की व्याख्या के लिए दे० भा० १०।७० पर डा० भाण्डारकर का नोट) (कौ) दृश्यमान और अदृष्ट लोक आचार सामान्य प्रचलन सार्वजनिक या साधारण प्रथा लोकव्यवहार आत्मन् (पु०) विश्व की आत्मा आदि 1 संसार का आरंभ 2 संसार का रचयिता आयत (वि०) नास्तिकतासंबंधी अनात्मवाद संबंधी (तः) भौतिकवादी नास्तिक चार्वाक दर्शन का अनुयायी (तम्) भौतिकवाद नास्तिकता (इसके वर्णन का सर्वदर्शनसंग्रह के प्रथम अध्याय में देखिए) आयतिक नास्तिक अनात्मवादी ईश 1 राजा (संसार का प्रभु) 2 ब्रह्मा 3 पारा उक्ति (स्त्री०) 1 कहावत लोकोक्ति 2 सामान्य चर्चा लोकमत उत्तर (वि०) असाधारण असामान्य अप्रचलित लोकोत्तरा च कृतिः भामि० १।६९ ३८ रुलनी मोड़ (र) राजा एषणा स्वर्ग की इच्छा कण्टक कष्ट देने वाला या दुष्ट पुरुष मानवजाति का अभिशाप दे० कण्टक कथा सर्वप्रिय कहानी कर्तृ कृत (पु०) संसार का रचयिता गाथा परंपरा से चली आई गाथा जन गाथा गान, चक्षुस् (नपुं०) सूर्य चारित्रम् लोकव्यवहार जननी लक्ष्मी का विशेषण जित् (पु०) 1 बुद्ध का विशेषण 2 संसार का विजेता ज्ञ (वि० संसार का जानने वाला ज्येष्ठ बुद्ध का विशेषण तत्त्वम् मनुष्यजाति का ज्ञान त्रयम् त्रयी सामूहिक रूप से तीनों लोक उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽपि रघु० १४।७३ द्वारम् स्वर्ग का दरवाजा धातु संसार का विशेष प्रकार का विभाजन धातृ (पु०) शिव का विशेषण नाथ 1 ब्रह्मा 2 विष्णु 3 शिव 4 राजा प्रभु 5 बुद्ध मनु (पु०) शिव का विशेषण प पाल दिक्पाल लोकपालाभिनय नमस्ते भर्ता महता प्रष्टुमना मलोकपाल विक्रम० २।१८ रघु० २।७५ ~ ९ १७।७८ (और एक गिनती में आठ हैं दे० अष्ट दिक्पाल) 2 राजा प्रभु पंक्ति (स्त्री०) मनुष्यजाति का आदर साधारण आदरणी पा पति 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 राजा प्रभु पथ पद्धति (स्त्री०) साधारण व्यवहार दुनिया का तरीका पितामह ब्रह्मा का विशेषण प्रकाशन सूर्य प्रवाद किंवदन्ती अफवाह सर्वसाधारण में प्रचलित बात प्रसिद्ध (वि०) मुख्यात विश्वविख्यात बन्धुः बान्धव सूर्य बाह्य, बाह्य (वि०) 1 समाज से बहिष्कृत बिरादरी से खारिज 2 दुनिया से भिन्न सनकी अकेला (ह्य) जातिच्युत व्यक्ति यात्रा मानी हुई या प्रचलित प्रथा, मातृ (स्त्री०) लक्ष्मी का

विशेषण, **मार्गः** लोकसमत प्रथा, **यात्रा** 1 दुनिया के मामले, लौकिक जीवनचर्या, लोकव्यवहार पर किन्तु लोकयात्रा महावी० ५, यावदयं ससारस्तावत्प्रसिद्धैवेयं लोकयात्रा शंकी० ३ 2 सामारिक अस्तित्व, जीवनचर्या मा० ८ 3 आजीविका वृत्ति, **रक्षः** राजा, प्रभु **रञ्जनम्** जनता का मनुरंजन करना, सर्वप्रियता, **रवः** जनश्रुति सार्वजनिक चर्चा, **लोचनम्** सूर्य **वचनम्** सार्वजनिक किंवदन्ती अफवाह -**वाद** किंवदन्ती सामान्य चर्चा सार्वजनिक अफवाह मा लोकवादश्रवणादहासीः रघु० १४।६१ **वार्ता** किंवदन्ती अपवाद **विद्विष्ट** (वि०) जिससे सब लोग घृणा करते हों जिसे लोग पसन्द न करते हों **लिपि** 1 बाय लिपि का प्रकार लोक में प्रचलित प्रणिपाः 2 संसार की स्थापना **विश्रुत** (वि०) दूर दूर तक मशहूर सर्वविख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी **वृत्तम्** 1 सब व्यवहार संसार में प्रचलित प्रथा 2 इधर उधर की बात गपशप **वृत्तान्तः**, **व्यवहारः** 1 सदाचार, लोकरीति, साधारण प्रथा -श० ५ 2 घटनाक्रम -**श्रुतिः** (स्त्री०) 1 जनश्रुति 2 विस्तीर्ण ख्याति कीर्ति **संकरः** समाज की साधारण अव्यवस्था **संग्रहः** 1 समस्त विश्व 2 लोककल्याण 3 लोगों का भला: चाहना -**साक्षिन्** (पुं०) 1 ब्रह्मा या विश्वात्मा 2 अग्नि,-**सिद्ध** (वि०) 1 लोगों में प्रचलित रिवाजी, प्रचलित 2 लोक या समाज द्वारा स्वीकृत **स्थितिः** (स्त्री०) 1 विश्व का अस्तित्व या स्थायित्व सार्वभौम अधिनियम 2 विश्वनियम,-**हास्य** (वि०) समाज द्वारा उपहसित उपहसित, लोकनिन्दित **हित** (वि०) मनुष्य जाति के लिए कल्याणकारी (**तम्**) जनसाधारण का कल्याण।

लोकनम् [लोक् + ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निहारना।

लोकम्पृण (वि०) [लोक + पृण् + क मुमागम] संसार में व्याप्त या संसार को भरने वाला, लोकम्पृणं परिमलैः परिपूरितस्य काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या -भामि० १।७० ।

लोच् (भ्वा० आ० लोचते) देखना निहारना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना निरीक्षण करना (चुरा० उभ० या प्रेर० लोचयति-ते), दिखलाना, **आ** 1. देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 विचारना विमर्श करना चिन्तन करना, सोचना आलोचयन् विस्तारमम्भसां दिशानाम्-भट्टि० ७।६१ भू० उभ० लोचयति-ते 1 बोलना 2 चमकना।

लोचम् [लोच् + अच्] आंसू।

लोचकः [लोच् + ण्वुल्] 1 मूर्ख पुरुष 2 आँख की पुतली 3. दीपक की बत्ती का काजल एक प्रकार का कान का कुंडल 5 काली या नीली वेशभूषा 6. धनुष का डोरी 7 स्त्रियों द्वारा मस्तक पर धारण किया जाने वाला आभूषण टीका 8 मांसपिंड 9. साँप की केंचुली 10 झुर्रीदार चमड़ी 11 भौं जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हैं 12 केले का पौधा।

लोचनम् [लोच् + ल्युट्] 1 देखना, दृष्टि, दर्शन 2 आँख शोचनमायान्ति समय चतुरा लोचने मीलयित्वा—मेघ० ९१० । सम० **गोचर**, **पथः**, **मार्गः** दृष्टि परास, दृष्टिक्षेत्र ।

लोट् (भ्वा० पर० लोटति) पागल या मूर्ख होना।

लोठ् [लुठ् + घञ्] भूमि पर लोटना लुढ़कना।

लोड् (भ्वा० पर० लोडति) पागल या मूर्ख होना।

लोडनम् [लोड् + ल्युट्] अशान्त करना उद्विग्न करना आलोडित करना

लोणारः [लवण + ऋ + अण, पृषो०] नमक का एक प्रकार।

लोलः [लु + लन्] 1 आंसू 2 निशान चिह्न निशानी।

लोप्त्रम् [लुप् + त्रन्] चुराई हुई सम्पत्ति लूट का माल लोप्त्रेण (लोप्त्रेण) गृहीतस्य कुम्भीलकस्यास्ति वा प्रतिवचनम् -विक्रम० २ ।

लोध्रः **लोध्र** [रुणद्धि औषधम् रुध् + रन्] लाल या सफेद फूलों वाला वृक्ष विशेष लोध्रद्रुमं सानुमतः प्रफुल्लम् रघु० २।२९ **पुष्पेण** मालकस्थम लोध्रपाण्डुला २।२ कु० ७।९

लोपः [लुप् + घञ्] 1 दूर करना, बचना 2 हानि. विनाश 3 उन्मूलन, आक्रमण (प्रथाओं का) व्याघात अन्तर्धान अपकर्षण 4 उल्लंघन, अतिक्रमण रघु० १।३६ 5 अभाव असफलता अनुपस्थिति रघु० १।६८ 6 भूल-चूक, त्रुटि —तद्गुणेष्विव लोपे स्यात् काश्य० १०७ अदर्शन वर्णलोप (व्या० में), अदर्शनं लोपः पा० १।१।६०।

लोपनम् [लुप् + ल्युट्] उल्लंघन अतिक्रमण 2 भूल चूक ।

लोपा **लोपामुद्रा** [लुप् + णिच् + अच् टाप्, लोपा + मुद्रा कर्म० स०] विदर्भराज की एक कन्या, अगस्त्य मुनि की पत्नी (कहा जाता है कि विभिन्न जन्तुओं के अत्यन्त सुन्दर भागों से मुनि ने स्वयं इस कन्या का निर्माण किया था जिससे कि उसे अपने मन की पत्नी मिल सके इसके पश्चात् इसे चुपचाप विदर्भराज के महल में पहुँचा दिया गया जहाँ वह राजा की पुत्री के रूप में रही। बाद में अगस्त्य मुनि के साथ इसका विवाह हुआ। लोपामुद्रा ने अगस्त्य मुनि से कहा कि सुख से साथ रहने के लिए विपुल धनराशि प्राप्त करो। तदनुसार मुनि पहले तो राजा श्रुतर्वन् के पास गया, वहाँ से फिर

और राजाओं के पास, इस प्रकार वह अगस्त्य धनाढ्य राक्षस इल्वल के पास गया, और उसे परास्त कर उसकी विपुलधनराशि से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट किया)।

लोपाकः, लोपापकः [लोपम् आदर्शनमाप्नोति—लोप+आप्+ण्वुल्] एक प्रकार का गीदड़, शृगाल।

लोपाशः, लोपाशकः [लोपमा कुत्सितभावं चकितमश्नाति—लोप+अश्+अण्, लोप+अश्+ण्वुल्] गीदड़, लोमड़।

लोपिन् (वि०) [लुप्+णिनि] 1 क्षतिग्रस्त करने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला 2 लुप्त होने वाला।

लोप्त्रम् [लुप्+त्रन्] दे० 'लोत्रम्'।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1. लोलुपता, लालसा, लालच, अतितृष्णा—लोभश्चेदगुणेन किम् भर्तृ० २।५५ 2. इच्छा, उत्कण्ठा (संब० के साथ या समास में) —कङ्कणस्य तु लोभेन—हि० १।५, आननस्पर्शलोभात् —मेघ० १०५। सम०—**अन्वित** (वि०) लालुप, लालची, लोभी,—**विरहः** लालुपता का अभाव —हि० १।

लोभनम् [लुभ्+ल्युट्] 1 प्रलोभन, ललचाना, बहकाना, फुसलाना 2. सोना।

लोभनीय (वि०) [लुभ्+अनीयर्] फुसलाने वाला, प्रलोभन देने वाला, आकर्षक, इसी प्रकार 'लोभ्य'।

लोमः (पु०) पूंछ।

लोमकिन् (पु०) [लोमक+इनि] एक पक्षी।

लोमन् (नपुं०) [लू+मनिन्] मनुष्य और जानवरों के शरीर पर उगने वाले बाल, दे० रोमन्। सम० —**अञ्चः**='रोमाञ्च' दे०,—**आलिः**,—**ली**, **आवलिः**, —**ली**,—**राजिः** (स्त्री०) छाती से लेकर नाभि तक बालों की पंक्ति—दे० रोमावली आदि,—**कर्णः** खरगोश, —**कीटः**, जूं, यूका,—**कूपः**,—**गर्तः**,—**रन्ध्रम्**, बिवरम् बाल में छिद्र,—**घ्नम्** दूषित गंज,—**मणिः** बालों से बनाया हुआ तावीज, **वाहिन्** (वि०) पक्षधारी, —**संहर्षण** (वि०) पुलकित करने वाला, रोमाञ्च पैदा करने वाला,—**सारः** पन्ना, **हर्ष**, **हर्षण**, **हर्षिन्** —दे० रोमहर्ष, **हृत्** (पु०) हरताल।

लोमश (वि०) [लोमानि सन्ति अस्य—लोमन्+श] 1. बालों वाला, ऊनी, रोएँदार 2. ऊनी 3 बालों वाला,—**शः** भेड़, मेंढा, **शा** 1 लोमड़ी 2. गीदड़ी 3. लंगूर 4. कासीस। सम० **मार्जारः** गन्धबिलाव।

लोमाशः [लोमन्+अश्+अण्] गीदड़, शृगाल।

लोल (वि०) [लोड्+अच्, डस्य लः, लुल्+घञ् वा] 1. हिलता हुआ, लोटता हुआ, कांपता हुआ, दोलायमान, थरथराता हुआ, बहता हुआ, लहराता हुआ, (जैसे कि बाल, अलकें) परिच्युतस्तत्कुचकुम्भमध्यात् किं शोषमायासि मृणालहार | न सूक्ष्मतन्तोरपि तावकस्य तत्रावकाशो भवतः किमु स्यात्—(यहाँ लोल शब्द का अर्थ अस्पष्ट है) ज्यिभिरसनामिवान्तर्बह्निम्—कि० ३।२० लोलांशुकस्य पवनाकुलितांशुकान्तम्—वेणी० ३।८८ लोलापाङ्गै-र्लोचनैः मेघ० २७, रघु० १८।४२ 2 विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन, परेशान 3 चञ्चल, चपल, परिवर्ती, अस्थिर, चंचल, लोलां सर्वगुणनावतारसहितां स्वभावान्तरं यत्र दधाति—रघु० ६।४१, इसी प्रकार कु० १।४२ 4 अस्थायी, नश्वर—श० १।२० 5 आतुर, उत्सुक, उत्कण्ठित (प्रायः समास में)—अर्थलोलः कविकुलवनिता—प्र० 'लोलोऽसि'—उत्तर० ३।८, कर्ण लोल कर्णागतक्रमभृतान्तर्गता—मेघ० १०; शि० १।११, १८।४६, २०।५५, कि० ४।२०, मेघ० ६१, रघु० ३।२३, ९।३७, १६।१४, ६१, **ला** 1 लक्ष्मी का नाम 2 बिजली 3 जिह्वा। सम० **अक्षि** (नपुं०) चञ्चल नेत्र, **अक्षिका** चञ्चल नेत्रों वाली स्त्री, **जिह्व** (वि०) चञ्चल जिह्वा से युक्त, लालची,—**लोल** (वि०) अत्यन्त गतिशील वाला, सदैव बेचैन।

लोलुप (वि०) [लुप्+यङ्+अच्, पृषो० भस्य पः] बहुत उत्सुक, अत्यन्त इच्छुक, लालायित, लालची, अभिनव-मधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम्, कमलवसति-मात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम्—श० ५।१, मियस्त्वदाभाषणलोलुपं मनः—शि० १।४०, रघु० १९।२४,—**पा** लालसा, उत्कण्ठा, उत्सुकता।

लोलुभ (वि०) [लुभ्+यङ्+अच्] अत्यन्त लालसायुक्त, लालची, दे० 'लोलुप'।

लोष्ट् (भ्वा० आ० लोष्टते) ढेर लगाना, अम्बार लगाना।

लोष्टः, **ष्टम्** [लुष्+तन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा—पर-द्रव्येषु लोष्टवत् यः पश्यति स पश्यति, समलोष्टकाञ्चन —रघु० ८।२१, **ष्टम्** लोहे का मोर्चा, जंग। सम० **घ्नः**,—**भेदनः**, **नम्** ढेलों को फोड़ने का उपकरण, पटेला, हेंगा।

लोष्टुः [लुष्+तुन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा।

लोह (वि०) [लूयतेऽनेन, लू+ह] 1 लाल, लाल रंग का 2 तांबे का बना हुआ, ताम्रमय 3 लोहे का बना हुआ,—**हः**,—**हम्** 1 तांबा 2 लोहा 3 इस्पात 4. कोई धातु 5. सोना 6. रुधिर 7. हथियार—मनु० ४।३२१ 8 मछली पकड़ने का कांटा,—**हः** लाल बकरा,—**हम्** अगर की लकड़ी। सम०—**अजः** लाल बकरा,—**अभि-सारः**, **अभिहारः** 'नीराजन' से मिलता जुलता एक सैनिक संस्कार,—**उत्तमम्** सोना,—**कान्तः** चुम्बकमणि, चुम्बक,—**कारः** लुहार,—**किट्टम्** लोहे का जंग,—**घातकः** लुहार,—**चूर्णम्** रगड़ने से निकला हुआ लोहे का भाग, लोहे का जंग,—**जम्** 1 कांसा 2 लोहे का बुरादा, —**जालम्** कवच,—**जित्** (पु०) हीरा,—**द्राविन्** (पु०) सुहागा,—**नालः** लोहे का बाण,—**पृष्ठः** एक

[illegible] **प्रतिमा** 1 [illegible] 2 [illegible] **बद्ध** (वि०) [illegible] **मृत्तिका** [illegible] [illegible] **शङ्कु** [illegible] **लकरम** [illegible]

लोहम (पुं०) [illegible]

लोहिका [illegible]

लोहित (वि०) [illegible] **लोहिता**, **लोहिनी**) [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible] प्रकार के [illegible] मनु० [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 6 एक प्रकार का [illegible] का अपूर्ण रूप। सम० **अङ्ग** 1 [illegible] 2 एक प्रकार का साँप 3 [illegible] **अम्बुज** [illegible] **अयस** (नपुं०) [illegible] **अशोक** लाल फूलों का अशोक वृक्ष **अक्ष** [illegible] **ईक्षण** (वि०) [illegible] **उद** (वि०) लाल या रुधिर के समान रंग वाले पानी वाला **कल्माष** (वि०) [illegible] **क्षय** रुधिर का नाश **ग्रीव** अग्नि का विशेषण **चन्दनम** [illegible] **पुष्पक** अनार का वृक्ष **मृत्तिका** [illegible] **शतपत्रम** [illegible] कमल।

लोहितक (वि०) (स्त्री० **तिका**) [लोहित + कन्] लाल, क 1 [illegible] 2 मंगल ग्रह 3 एक प्रकार का चावल [illegible]

लोहितिमन् (पुं०) [लोहित + इमनिच्] लालिमा, लाली।

लोहिनी [लोहित [illegible] तकार [illegible]] वह स्त्री जिसकी चमड़ी लाल रंग की हो।

लोकायतिक [लोकायत [illegible]] [illegible] नास्तिक अनात्मवादी भौतिक [illegible]

लौकिक (वि०) (स्त्री० **की**) [illegible] [illegible] 1 सांसारिक दुनियावी भौतिक ऐहिक 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] लौकिक [illegible] [illegible] **कम्** [illegible] (वि०) [illegible] प्रथाओं से [illegible] [illegible]

लौक्य (वि०) [लोक + ष्यञ्] 1 सांसारिक दुनियावी [illegible] 2 सामान्य [illegible] रिवाज।

लोड (भ्वा० पर० **लोडति**) [illegible]

लौल्यम [लोल + ष्यञ्] 1 चञ्चलता अस्थिरता [illegible] 2 उत्सुकता उत्कण्ठा लालच, लालसापूर्णता अत्यन्त [illegible] या अभिलाषा [illegible] रघु० ३।६१ [illegible] कु० ६।३० ।

लौह (वि०) (स्त्री० **ही**) [लोह + अण्] 1 लोहे का बना हुआ लोहा 2 [illegible] 3 धातु का बना 4 ताँबे के रंग का लाल **हम्** लोहा, भट्टि० १५।१३ [illegible] **आत्मन्** (पुं०) [illegible] (स्त्री०) [illegible], कड़ाही [illegible] **जम्** लोहे का [illegible] **बन्धः** [illegible] लोहे की बेड़ी, [illegible] लोहे का [illegible] **शङ्कु** लोहे की [illegible]

लौहित [लोहित + अण्] शिव का त्रिशूल।

लौहित्य [लोहित + ष्यञ्, स्वार्थे ष्यञ् [illegible]] [illegible] नदी का नाम ब्रह्मपुत्र [illegible] [illegible] प्राग्ज्योतिषेश्वर [illegible] रघु० ४।८१ [illegible] किसी प्रमाण के कहता है [illegible] येन) **त्यम्** लाली।

ल्यी **ल्यी** (क्र्या० पर० [illegible]) मिलना [illegible] सम्मिलित होना [illegible]

ल्वी (क्र्या० पर० [illegible]) जाना [illegible] पहुँचना।

वः [वा + ड] 1 वायु हवा 2 भुजा 3 वरुण 4 समाधान 5 सम्बोधित करना 6 मांगलिकता 7 निवास, आवास 8. समुद्र 9 व्याघ्र 10 कपड़ा 11 राहु, **वम्** वरुण (रागिनी) अव्य० की भांति, के समान 'जैसा कि' मणी वोष्ट्रस्य लम्बते प्रियौ वत्सतरौ मम-सिद्धा० (यहाँ शब्द 'व' अथवा 'वा' हो सकता है)।

वंशः [वमति उद्गिरति वम् + श तस्य नेत्वम्] 1 बांस—धनुर्वंशविशुद्धोऽपि निर्गुणः किं करिष्यति—हि० प्र० २३, वंशभवो गुणवानपि सङ्गविशेषेण पूज्यते पुरुषः भामि० १।८० (यहाँ 'वंश' का अर्थ 'कुल या परिवार' भी है) मेघ० ७९ 2. जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा—स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् हि० २, क्व सूर्यप्रभवो वंशः रघु० १।२, इ० वंशकरम्, वंशस्थिति आदि 3 लाठी 4 बांसुरी मुरली, अलगोजा या विषकोनाद कूजद्भिरापादित-वंशकृत्यम् रघु० २।१२ 5. समूह, संघात, समुच्चय (प्राय एक समान वस्तुओं का)- सान्द्रीकृत स्यन्दन-वंशचक्रे रघु० ७।३९ 6 आर-पार शहतीर 7 (बांस में) जोड़ 8 एक प्रकार का ईख 9 रीढ़ की हड्डी 10. साल का वृक्ष 11 लम्बाई नापने का एक विशेष माप (दस हाथ के बराबर)। सम० **अङ्कुरः,** **अङ्कुरः** 1 बांस का किनारा 2 बांस का अंखुआ, **अनुकीर्तनम्** वंशावली—**अनुक्रमः** वंशावली, —**अनुचरितम्** एक परिवार या कुल का इतिहास —**आवली,** वंशतालिका, वंशविवरण, -**आह्वः** वंशलोचन —**कठिनः** बांसों का झुरमुट, **कर** (वि०) 1 कुल-प्रवर्तक 2 वंशस्थापक रघु० १८।३१ (—रः) मूल-पुरुष, **कर्पूरलोचना** रोचना, **लोचना** वंसलोचन, तबाशीर,- **कृत्** पु०) कुल संस्थापक, या वंशप्रवर्तक, -**क्रमः** वंशपरंपरा, **क्षीरी** वंसलोचन,—**चरितम्** कुलपरिचय,—**चिन्तकः** वंशावली जानने वाला **छेत्तृ** (वि०) किसी कुल का अन्तिम पुरुष, -**ज** (वि०) 1. कुल में उत्पन्न रघु० १।३१ 2. सत्कुलोद्भव (—**जः**) 1 प्रजा, सन्तान, औलाद 2 बांस का बीज (—**जम्**) वंसलोचन, **नर्तिन** (पु०) नट, मसखरा, —**नाडि**(**ली**) का बांस की बनाई बांसुरी,-**नाथः** किसी वंश का प्रधान पुरुष, **नेत्रम्** ईख की जड़, **पत्रम्** बांस का पत्ता (**त्रः**) नरकुल, **पत्रकः** 1 नरकुल 2 पौंडा, गन्ने का श्वेत प्रकार, (—**कम्**) हरताल, —**परंपरा** वंशानुक्रम, कुलपरम्परा, **पूरकम्** गन्ने की जड़, **भोज्य** (वि०) आनुवंशिक (—**ज्यम्**) आनुवंशिक मूलसंपत्ति,—**लक्ष्मीः** (स्त्री०) कुल का सौभाग्य, **वितति:** (स्त्री०) 1 परिवार, सन्तान 2 बांसों का झुरमुट, **शर्करा** वंसलोचन, **शलाका** वीणा में लगी बांस की खूंटी, **स्थिति** (स्त्री०) कुल की अविच्छिन्नता रघु० १८।३१।

वंशकः [वंश + कन्] 1 एक प्रकार का गन्ना 2 बांस का जोड़ 3 एक प्रकार की मछली, **कम्** अगर की लकड़ी।

वंशिका [वंश + ठन् + टाप्] 1 एक प्रकार की बांसुरी अगर की लकड़ी।

वंशी [वंश + अच् + ङीप्] 1 बांसुरी मुरली न वंशी-मशाम्योद्भवि कन्दर्पोद्भविलासम्-हंस० १०८, कामिन्योद्भवेषो नु स वाऽप्यहं यामि वंशी वत गीत० ९ 2. शिरा या धमनी 3 वंसलोचन 4 एक विशेष तोल। सम० **धर,** -**धारिन्** (पु०) 1 कृष्ण का विशेषण 2 वंशी बजाने वाला।

वंश्य (वि०) [वंशे भवः यत्] 1 मुख्य शहतीर से संबंध रखने वाला 2 मेरुदंड से संबंध रखने वाला 3 परिवार से संबंध रखने वाला 4 अच्छे कुल में उत्पन्न, उत्तम कुल का 5 वंशज, वंशप्रवर्तक -**श्यः** 1 सन्तान परंपरा (ब० व०) इतरेऽपि रघोर्वंश्याः रघु० ११।३६ 2 पूर्वज पूर्वपुरुष (नृपसत्त्व) वंश्याः पिण्ड-विच्छेदर्शिनः रघु० १।६६ 3 परिवार का कोई सदस्य 4 आरपार शहतीर 5 भुजा या टांग की हड्डी 6 शिष्य।

वह् दे० वंह्।

वक् दे० वङ्क्।

वकुः दे० वङ्कुः।

वक्क (भ्वा० आ० वक्कते) जाना, हिलना डुलना।

वक्तव्य (सं० कृ०) [वच् + तव्य] 1 कहे जाने या बोले जाने के योग्य बोला जाने वाला या प्रकथन के योग्य —नहि वक्तव्यं न वक्तव्यम् (महा० में अनेक बार) 2 किसी विषय में कहे जाने के योग्य 3 गर्हणीय दूषणीय, निन्दनीय 4 नीच दुष्ट, कमीना 5 उत्तरदायी उत्तरदायी 6 आश्रित, **व्यम्** 1 बोलना, भाषण 2 विधि, नियम सिद्धान्त वाक्य 3 कलंक, निन्दा भर्त्सना।

वक्तृ (वि०, या पु०) [वच् तृच्] 1 बोलने वाला, बातें करने वाला, वक्ता 2 वाक्पटु, प्रवक्ता किं करिष्यन्ति वक्तारः श्रोता यत्र न विद्यते नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति? सुभा० 3 अध्यापक, व्याख्याता 4 विद्वान पुरुष, बुद्धिमान व्यक्ति।

वक्त्रम् [वक्ति अनेन वच्—करणे ष्ट्रन्] 1 मुख 2 चेहरा —सद्वक्त्र मद्गीतान न नीलता पूर्वे न चाद्रदृष्टा भर्तृ० ३।१४७ 3 थूथन, प्रोथ चोंच 4 आरम्भ 5 (बाण की) नोक किसी पात्र की टोंटी 6 एक प्रकार का वस्त्र 7 अनुष्टुप् से मिलता-जुलता एक छन्द, इ०

सा० द० ५६७, काव्या० १।२६। सम० आसव· नार खुरः दा ब ग्रा ग — तालम् मह से बजाया जाने वाला आद्ययन्त्र, हलम् नान्दु पद· परदा रथ्रम् गन्वविवर परिस्पन्द भाषण, भेदिन् (वि०) चरपरा, तीक्ष्ण —वास सस्ता, शोधनम् 1 मुह साफ करना 2 नादू, चकोतरा, शोधिन् (नपु०) चकोतरा (पु०) नकार का वृक्ष।

वक्र (वि०) [वङ्क् रन पृषो० नलोप] 1 कुटिल (आल० से भी) झुका हुआ टेढ़ा चक्करदार घुमावदार — वक्र पन्था यदपि भवत प्रस्थितस्योत्तराशाम् मेघ० २७, कु० ३।२९ 2 गोलमोल परोक्ष टाल मटोल, अस्पष्ट घुमा फिरा कर बात कहना द्वयर्थक या सन्दिग्ध (भाषण) किमेतैर्वक्रभणितैः रत्न० २ वक्रवाक्यरचनारमणीय ... वक्रोक्ति परिहास शि० १०।१२ ... भी 3 छल्लेदार, लहरियेदार, घुंघराले (बाल) 4 प्रतिगामी (गति आदि) 5 बेईमान आत्माऊ कुटिल स्वभाव का 6 ... (ग्रह आदि) 7 छन्दशास्त्र की दृष्टि से गुरु (दीर्घ) —क्र 1 मंगलग्रह 2 शनिग्रह 3 शिव त्रिपुर राक्षस —क्रम् 1 नदी का मोड़ 2 (ग्रह का) प्रतिगमन। सम० अङ्गम् टेढ़ा, अवयव ग) 1 हंस 2 चकवा 3 सांप उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार का नाम जिसमें टालमटोल करने वाली बात या तो श्लेषपूर्ण ढंग से कही जाती है या स्वर बदल कर। मम्मट इसकी परिभाषा इस प्रकार देता है यदुक्तमन्यथा वाक्यमन्यथान्येन योज्यते श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा काव्य० ९ उदाहरण के लिए मुद्रा० का आरम्भिक श्लोक (धन्या केयं स्थिता) देखिए 2 ... कटाक्ष ... वक्रोक्तिमार्गनिपुण ... न था 3 ... कण्ट बेर का पेड़ कण्टक बेर का पेड़ —खड्ग, खड्गक कटा· टेढ़ा तलवार गति, गामिन (वि०) 1 टेढ़ा ... वाला, चक्करदार 2 ... बेईमान ... ग्रीव ... —चञ्चु तोता तुण्ड ... गणेश ... 2 तोता दंष्ट्र सूअर दृष्टि (वि) 1 भैंगा ... 2 ईर्ष्यापूर्ण दृष्टि ... 3 द्वेष करने वाला, (स्त्री०) ... तिरछी निगाह ... नक्र 1 तोता 2 नीच पुरुष नासिक ... —पुच्छ, पुच्छिक कुत्ता पुच्छ ... बालधि लांगूल कुत्ता भाव ... धोखा ...

वक्रय (पु०) मूल्य ... (क्रय ...) ।

वक्रिन् (वि०) [वक्र + इनि] 1 कुटिल 2 प्रतिगामी (पु०) जैन या बुद्ध।

वक्रिमन् (पु०) [वक्र + इमनिच्] 1 कुटिलता वक्रता, 2 वाक्छल टालमटोल सन्दिग्धता, चक्कर, घुमाव, (वाणी की) पराक्षता ... मुग्धाक्षपन्दी गिरा वक्रिमा गीत०, ३ 3. धूर्तता चालाकी मक्कारी।

वक्रोष्ठि, वक्रोष्ठिका (स्त्री०) [वक्र ओष्ठो यस्याः ब० स० कप टाप इत्वम] मृदु मुसकान।

वक्ष् (भ्वा० पर०, वक्षति) 1 वृद्धि को प्राप्त होना बढ़ना 2 शक्तिशाली होना 3 क्रुद्ध होना 4 संचित होना।

वक्षस् (नपु०) [वह् + असुन्, सुट् च] छाती हृदय सीना वक्षःस्थल ... रघु० ३।३४। सम० ज ... रुह् (वक्षोज वक्षोरुह, वक्षोरुह) स्त्री की छाती भामि० २।१७, स्थलम् (वक्ष या वक्षःस्थलम्) छाती या हृदय।

वख्, वङ्ख् (वखति वङ्खति) जाना हिलना झुकना।

वगाह [भागुरिमत अवगाह इत्यत्र अकारलोप] दे० अवगाह।

वङ्क [वङ्क् + अच] नदी का मोड़।

वङ्का [वङ्क् टाप्] घोड़े की जीन की अगली मेंढी।

वङ्किल [वङ्क् + इलच्] कांटा।

वङ्क्रि [वकि + क्रिन् इदित्वात् नलोपो नुम] 1 (किसी जानवर या भवन की पसली) (कुछ लोग इस शब्द को स्त्रीलिंग बनाते हैं) 2 छत का शहतीर 3 एक प्रकार का वाद्य यन्त्र (इन दो अर्थों में नपु० भी)।

वङ्क्षु [वह् कुन् नुम्] गंगा नदी की एक शाखा।

वङ्ग् (भ्वा० पर० वङ्गति) 1 जाना 2 लंगड़ाना, लंगड़ा कर चलना।

वङ्गा (ब० व०) [वङ्ग् + अच्] बंगाल प्रदेश तथा उसके अधिवासियों का नाम वङ्गानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान् —रघु० ४।३६, रत्नाकर समारम्य ब्रह्मपुत्रान्तगं प्रिये वङ्गदेश इति प्रोक्त — ङ्ग 1 कपास बैंगन का पौधा —ङ्गम् 1 सीसा 2 रांगा। सम० अरि हरताल, ज 1 पीतल 2 सिंदूर, जीवनम् चांदी शुल्वजम् कांसा।

वच् (अदा० पर० वक्ति) 1 जाना 2 तेजी से चलना, 3 आरम्भ करना 4 निन्दा करना दूषित ... ना।

वच (अदा० पर०) (आर्धधातुक लकारों में अदा० भी, कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि सार्वधातुक लकारों में अन्य पुरुष बहुवचन के रूप नहीं होते हैं तथा कुछ के अनुसार समास बहुवचन में वक्ति उक्तम) 1 कहना बोलना वैराग्यादिव वक्ति काव्य० १०

(प्रायः दो कर्मों के साथ)—तामवनुस्ते प्रियमप्यमिथ्या रघु० १४।६, कभी कभी 'भाषण' अर्थ को बतलाने वाले शब्दों के साथ दूसरी विभक्ति में—उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः रघु० ३।५०, २।५९, न एवं वक्ष्यते वाक्यम् रामा० 2. वर्णन करना, बयान करना—रघूणामन्वयं वक्ष्ये रघु० १।९ 3. कहना, समाचार देना, घोषणा करना, प्रकथन करना—उच्यतां मद्वचनात् सारथिः—श० २, मेघ० ९८ 4. नाम लेना, पुकारना—तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्यते मनु० १।७९, प्रेर०—(वाचयति ते) 1. बुलवाना 2 निगाह डालना, पढ़ना, अवलोकन करना 3 कहना, बोलना, प्रकथन करना 4 प्रतिज्ञा करना, इच्छा० (विवक्षति) बोलने की इच्छा करना, (कुछ) कहने का इरादा करना, अनु—बाद में कहना, आवृत्ति करना, पाठ करना, (प्रेर०) मन में पढ़ना—नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य—श० १, निस् 1 अर्थ करना, व्याख्या करना—वेदा निर्वक्तुमक्षमाः 2 वर्णन करना, बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना 3 नाम लेना, पुकारना, प्रति—, उत्तर में बोलना, जवाब देना, प्रतिवाद करना—न चेद्रहस्यं प्रतिवक्तुमर्हसि—कु० ५।४२, रघु० ३।४८, वि—, व्याख्या करना, सम्—कहना, बोलना।

वचः [वच्+अच्] 1. तोता 2. सूर्य, —चा 1 मैना पक्षी 2. एक सुगन्धित जड़, —चम् बोलना, बातें करना।

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1. बोलने, उच्चारण करने या कहने की क्रिया 2. भाषण, उद्गार, उक्ति, वाक्य—ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः—कु० २।५, प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार मेघ० ४ 3. दोहराना, पाठ करना 4. मूल, वाक्य विन्यास, नियम, विधि, धार्मिक ग्रन्थ का सन्दर्भ—शास्त्रवचनं, श्रुतिवचनं, स्मृतिवचनम् आदि 5. आदेश, हुक्म, निदेश, 'मद्वचनात्' मेरे नाम से अर्थात् मेरे आदेश से 6 उपदेश, परामर्श, अनुदेश 7. घोषणा, प्रकथन 8. (व्या० में) (वर्ण का) उच्चारण 9. शब्द की यथार्थता—अथ पयोधर शब्दः मेघवचनः 10. (व्या० में) वचन, (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इस प्रकार वचन तीन होते हैं) 11. सूखा अदरक। सम०—उपक्रमः प्रस्तावना, आमुख, —कर (वि०) आज्ञाकारी, आदेश का पालन करने वाला,—कारिन् (वि०) आज्ञा पालन करने वाला, आज्ञाकारी, —ग्राहः प्रवचन, —ग्राहिन् (वि०) आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत,—पटु (वि०) बोलने में चतुर, —विरोधः विधियों की असङ्गति, विरोध, पाठ की असङ्गतता,—शतम् सौ वाक्य, अर्थात् बार बार घोषणा, पुनरुक्त उक्ति, —स्थित (वि०) ('वचने स्थित' भी) आज्ञाकारी, अनुवर्ती।

वचनीय (वि०) [वच्+अनीयर्] 1. कहे जाने, बोले जाने या वर्णन किये जाने के योग्य 2 निन्दनीय, दूषणीय,—यम् कलंक, निन्दा, निर्भर्त्सना—न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२, वचनीयमिदं व्यवस्थितं रमण त्वामनुयामि यद्यपि—४।२१ भवति योऽविमृश्य वक्तव्यता—पंच० १।७५ कि० १।३९, ६९, मृच्छ० ४।११।

वचरः (पुं०) 1 मुर्गा 2 बदमाश, नीच, शठ, दुष्ट।

वचस् (नपुं०) [वच्+असुन्] 1 भाषण, वचन, वाक्य, —उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः रघु० ३।२५, ४७, इत्यध्याभिचारि तद्वचः कु० ५।३६ वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् सुभा० 2. हुक्म, आदेश, विधि निदेशाज्ञा 3 आदेश परामर्श 4 (व्या० में) वचन। सम०—कर (वि०) 1 आज्ञाकारी, अनुवर्ती 2 दूसरों की आज्ञा पालन करने वाला,—क्रमः प्रवचन, —ग्रहः कान, —प्रवृत्तिः (स्त्री०) भाषण करने का प्रयत्न—श० ७।१७।

वचसाम्पतिः [वचसां वाचां पतिः षष्ठ्या अलुक्] बृहस्पति का विशेषण, गुरु ग्रह।

वज् (भ्वा० पर० वजति) जाना, हिलना-जुलना, इधर-उधर घूमना। ii (चुरा० उभ० वाजयति-ते) काटछांटकर ठीक करना, तैयार करना 2 बाण की नोक में पर लगाना 3. जाना, हिलना-जुलना।

वज्रः,—ज्रम् [वज्+रन्] 1 वज्र, बिजली, इन्द्र का शस्त्र, (कहते हैं कि इन्द्र का वज्र दधीचि की हड्डियों से बना था)—आशासन्ते समितिषु सुराः सक्तवैरा हि दैत्यैरस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे—श० २।१५ 2. इन्द्र के वज्र जैसा कोई भी घातक या विनाशकारी हथियार 3 हीरे की अणि, मणि माणिक्यों को बींधने का उपकरण—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः रघु० १।४ 4. हीरा, यथा वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि उत्तर० २।७, रघु० ६।१९ 5. कांजी, —ज्रः 1. एक प्रकार का सैनिकव्यूह 2 एक प्रकार का कुश नामक घास 3. अनेक पौधों के नाम, —ज्रम् 1 इस्पात 2. अभ्रक 3 वज्र जैसी या कठोर भाषा 4. बालक, बच्चा 5. आंवला। सम०—अङ्कः साँप,—अभ्यासः अन्योन्यगुणन, —अशनिः इन्द्र का वज्र, —आकरः हीरों की खान, रघु० १८।२१, —आख्यः एक बहुमूल्य पत्थर, मणि,—आघातः 1 बिजली का प्रहार 2. (आल० से) आकस्मिक धक्का या संकट, —आयुधः इन्द्र का हथियार, —आङ्गुरः हनुमान् का विशेषण, —कीलः वज्र, बिजली, वज्र की कील—कीलित वज्रकीलम् मा० ९।३७,

उत्तर० ४।२३ आत्म् बिजली बिजली गोप., सर्वतोष नीलपत्र बज्र् निर्घ घर्मम् (पु०) गैर। जित् (पु०) मा ज्वलनम ज्वाला बिजली तुषक. 1 निद्र 2 मन्त्र हीम 3 गरुड 4 गणेश, तुल्य नीलम बभ्रु एक प्रकार का काढ़ा दन्त 1 सूअर 2 चूहा दशन एक चूहा देह, देहिन् (वि०) दृढ़ शरीर वाला यह इन्द्र का विशेषण वज्रवक्षभाव रघु ४।१०१ —नाभ कृष्ण का सुदर्शन चक्र निर्घोष,—निष्पत्र बिजली की कड़क, पाणि इन्द्र का विशेषण यद्य सुरक्षित वज्रपाणि रघु० ८।८० पात बिजली का गिरना विजली का आघात पुष्पम् तिल का फूल भृत् इन्द्र का विशेषण मणि हीरा कड़ा पत्थर भर्तृ० ७।१९ —मुष्टि इन्द्र का विशेषण एक भुजा —लेप एक प्रकार का कड़ा सीमेंट वज्रलेपघटितेव मा० ५।१० उत्तर० ८ (इसके प्रयोग से बनने वाले पदार्थों के लिए दे० बृहत्० अ० ५७) —लोहक चुम्बक —व्यूह एक प्रकार का सैनिक व्यूह शल्य साही नामक जानवर —सार (वि०) पत्थर की भांति कठोर विजली की शक्तिवाला अत्यन्त कड़ा वज्र न निशित निपातो वज्रसारा शराः मा० १।१० त्वमपि कुसुमबाणान्वज्रसारी करोषि ३।३,—सूचि, ची (स्त्री०) हीरे की सुई —हृदयम् पत्थर जैसा कड़ा दिल।

वज्रिन् (पु०) [वज्र + इनि] 1 इन्द्र ननु वज्रिण एव वीर्यमेतद्विजयन्ते द्विषतो यदस्य पक्ष्याः —विक्रम० १।५, रघु० ९।२४ 2 उल्लू।

वञ्च् (भ्वा० पर० वञ्चति) 1 जाना, पहुँचना ववञ्चुरथो-दुर्गाक्षितिम् —भट्टि० १४।७४ ७।१०६ 2 घूमना 3 चुपचाप चले जाना खिसक जाना प्रेर० (वञ्च-यति—ते) 1 टालना, बचना खिसकना खिसकना अहिं वञ्चयति प्रवञ्चयन मायाच स्वधा व्यतिनेर द्विषाम् भट्टि० ८।४३ 2 ठगना धोखा देना चाल-बाजी करना (आ० मानी जाती है पर बहुधा पर० भी)—मृगीत्स्वामेव वञ्चयन्ते—भट्टि० १९।१५ कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् गीत० ८, (वञ्चित) वञ्चयेत् प्रभावस रघु १०।१३ कु० ४।१० ५।४९ रघु० १०।५३ 3 वंचित करना दरिद्र करना रघु० ७।८।

वञ्चक (वि०) [वञ्च् णिच् + ण्वुल्] 1 मायावी, धोखेबाज, मक्कार 2 ठगने वाला धोखा देने वाला —कः 1 बदमाश ठग उचक्का 2 गीदड़ 3 छछूंदर 4 पालतू नेवला।

वञ्चतिः (पु०) अग्नि, आग।

वञ्चथ [वञ्च् अथ] 1 ठगना बदमाशी अथवा चालाकी 2 बदमाश उचक्का 3 कोयल

वञ्चनम् —ना [वञ्च् ल्युट्] 1 ... 2 ठगना धोखा आत्मा वा ... सत्यमेव कुर्वन्ति बहुधा वि वञ्चनी—मृच्छ० ९।०८ स्वर्गादि मुक्त वञ्चनामिव ... —कु० ५।४७ 3 माया ... 4 ... भति अज्ञान—दीर्घरागवञ्चना मा० ३ रघु ९।२६।

वञ्चित (भू० क० कृ०) वञ्च् क्त 1 प्रतारित ठगा गया 2 ... एक प्रकार की पहेली या बुझौवल।

वञ्चुल (वि०) (स्त्री० ली) [वञ्च् उलच्] धोखे से पूर्ण जालसाज मक्कार, बेईमान —ल गीदड़।

वञ्जुल [वञ्च् उलच् पृषो० चस्य जः] 1 बेंत या नरकुल —आमञ्जुवञ्जुललतानि च तान्यमूनि नीरन्ध्रनील निचुलानि सरित्तटानि— उत्तर० २।२३, या, मञ्जुल-वञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले —गीत० १ 2 एक प्रकार का फूल 3 अशोकवृक्ष 4 एक प्रकार का पक्षी। सम० द्रुम अशोकवृक्ष प्रिय बेंत।

वट् I (भ्वा० पर० वटति) घेरना।

II (चुरा० उभ० वाटयति ते) 1 कहना, 2 बांटना, विभाजन करना 3 घेरना, घेरा डालना।

वट [वट् + अच्] 1 बड़ का पेड़—अयं च चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि वट श्यामो नाम उत्तर० १ रघु० १३।५३ 2 छोटी सुक्ति या कौड़ी 3 छोटी गेंद, गोलिका, वटिका 4 गोलबांक, शून्य 5 एक प्रकार की रोटी 6 डोरी रस्सी (इस अर्थ में नपुं० भी) 7 रूप-सादृश्य। सम० पत्रा श्वेत तुलसी का एक भेद (—त्रा) चमेली,— वासिन् (पुं०) यक्ष।

वटक: [वट + कन् वट् + ण्वुल् वा] 1 बाटी, एक प्रकार की रोटी 2 छोटा पिंड, गेंद गोली वटिका।

वटर [वट् + अरच्] 1 मुर्गा 2 चटाई 3 पगड़ी 4 चोर, लुटेरा 5 गई का डंडा 6 सुगंधित घास।

वटाकर:, वटारक: (पु०) डोरा डोरी।

वटिक [वट् + इन् + कन्] शतरंज का मोहरा।

वटिका [वट् + इन् + कप् + टाप्] 1 टिकिया, गोली 2 शतरंज का मोहरा।

वटित (वि०) [वट + इत] डोरीदार वर्तुलाकार—पु० ... क।

वटी [वट् + अच् + ङीप्] 1 रस्सी या डोरी 2. गोली, टिकिया।

वटु. [वटति अल्पवस्त्रम् वट् + उ.] 1 छोकरा, लड़का जवान, किशोर (बहुधा अंग्रेजी के 'चैप'—chap या फैलो—fellow शब्द के समान प्रयोग) चापल्योऽयं वटुः श० २, मिथार्थताभाति किमन्यद वटु

पुनर्विवक्षु स्फुरितोष्ठ ... कु० ५।८३ २० वह स भी 2 ब्रह्मचारी।

बटुक [बटु + कन्] 1 छोकरा, लड़का 2 ब्रह्मचारी 3 मूर्ख, बुद्धू।

बठ (भ्वा० पर० बठति) 1 ... 2 मोटा होना।

बठर (बठ + अरन्) 1 ... 1 ... 3 ... डाक्टर 4 ...।

बडभि, भी दे० वलभि ...।

बडवा [बल ... लस्य डत्वम्] 1 घोड़ी ... जिसने घोड़ी के रूप में ... नाम के दो पुत्र उत्पन्न ... 4 वडवा रखैल 5 ब्राह्मण ... स्त्री ... सम० अग्नि, अनल समुद्र के ... रहने वाला आग, मुख 1 समुद्र के ... वाली आग 2 शिव ...।

बडा [बड + अच् – टाप्] एक प्रकार का ...।

बडिशम् [बडिश ... लस्य डत्वम्] दे० बडिश।

बड ... [विशाल, बड़ा, महान्।

बण् (भ्वा० पर० बणति) शब्द करना, ध्वनि करना।

बणिज् (पुं०) ... 1 सौदागर, व्यापारी–पण्यानाम ... वणिजः ... मालवि० ... 2 तुला राशि (स्त्री०) पण्यवस्तु व्यापार। सम० कर्मन् (नपुं०) –क्रिया क्रयविक्रय व्यापार –जन 1 ... व्यापारी वर्ग 2 व्यापारी सौदागर, पथ 1 व्यापार क्रयविक्रय 2 सौदागर 3 ... की दुकान, वाणिज्य 4 तुला राशि, वृत्ति (स्त्री०) व्यापार क्रयविक्रय मनु० ३।८१ –सार्थ ... का दल, टाला।

बणिज [वणिज् अच् (स्वार्थ)] सौदागर, व्यापारी 2 तुला राशि।

बणिजक [वणिज + कन्] सौदागर, वणिक।

बणिज्य, बणिज्या [वणिज ... व्यापार क्रयविक्रय।

बण्ट् (भ्वा० पर० ... बण्टति ...) बांटना, अंश बनाना, विभाजन करना, हिस्से करना।

बण्ट [बण्ट + घञ्] 1 भाग या खण्ड, अंश, हिस्सा 2 ... 3 अविवाहित पुरुष, कुँआरा।

बण्टक [बण्ट ... स्वार्थे कन्] 1 बाँटने वाला, वितरक ... 2 ... 3 भाग, अंश, हिस्सा।

बण्टनम् [बण्ट + ल्युट्] विभाजन करना, अंश बनाना, बाँटना या विभक्त करना।

बण्टाल बण्डाल [बण्ट + आलच् पक्षे पृषो० टस्य डत्वम्] 1 योद्धाओं की प्रतियोगिता 2 कुदाल, खुर्पा 3 नाव।

बण्ड (भ्वा० आ० बण्डते) अकेले जाना, बिना किसी का साथ लिए चलना।

बण्ड (वि०) ... 1 अंगविहीन 2 ठिगना 3 ... अविवाहित पुरुष, कुँआरा 2 सेवक 3 ... राजा।

बण्डर ... 1 ... का आयोजन, ... 3 (बण्डरे क०) ... 5 ... की पूँछ ...।

बद् (भ्वा० पर० ...) 1 बोलना, ... 2 ... (चुरा० ...) ... बोलना, ...।

बध्र (वि० ...) ... अंधे ... जिसकी ... के ... बाला ... नहीं है 2 ... व्यभिचारिणी स्त्री ...।

बधर (...) 1 ... 2 हिजड़ा।

बत (वि०) ... की भावना का ... के साथ लगाया ... धनवत् ... रूपवान, सुन्दर ... (इस प्रकार बन ...) ... कृ० के ... बना ... सद्धा ... शब्दों के साथ ... उदा० ... सर्वभूतानि ...।

बत (अव्य०) दे० वत

बतस ...

बतोका ... अकाल ... बांझ ... किसी ... हो गया हो।

बत्स ... 1 ... किसी जानवर का बच्चा ... पुराण ... कु० १। 2 लड़का

पुत्र, (यह शब्द इस अर्थ में बहुधा संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है वात्सल्य द्योतक शब्द 'मेरे प्रिय' 'मेरे लाल' आदि शब्दों में व्यवहृत), अयि वत्स कृत क्लान्तमतिविलयन किमपराद्धं वत्सेन —उत्तर० ६ 3 सन्तान, बच्चे जीववत्सा जिसके बच्चे जीवित हों 4 वर्ष 5 एक देश का नाम (इसकी राजधानी कौशाम्बी थी जहाँ उदयन राज्य करता था), या उसके अधिवासी स्त्री 1 बछिया 2 छाती ... वत्स सीते (बेटी सीता) आदि ... एक प्रकार की ककड़ी अदन भेड़िया ईश —राजः वत्स देश का राजा ... नाम ... (वि०) बच्चों का प्यार ... गाय जो बछड़े से मिलने को ... है —कम 1 एक वृक्ष का नाम 2 ... अत्यन्त कठोर दिल वाला ... कृष्ण या बलराम ... शाला गोशाला।

वत्सक (वत्स + कन्) 1 नन्हा बछड़ा, बछड़ा 2 बच्चा 3 कुटज नाम का पौधा —कम् पुष्पकसीस।

वत्सतर (वत्स + तरप्) व. बछड़ा जिसने अभी हाल में दूध चूसना छोड़ा है, अभी तक जिसके ऊपर जुआ नहीं रक्खा गया है, महोक्षता वत्सतरः स्पृशन्निव रघु० ३।३२ श्रोत्रियातिथिसत्कारार्थ ... महोक्षं वा निर्वपन्ति गृहमेधिनः उत्तर० ४।

वत्सर (वस् सरन्) 1 वर्ष याज्ञ० १।२०४ 2 विष्णु का नाम। सम० **अन्तकः** फाल्गुन ... **ऋणम्** वह ऋण जो वर्ष के समाप्ति पर वापिस किया जाय।

वत्सल (वि०) (वत्स प्रीति ला + क) 1 बच्चों को प्यार करने वाला, बच्चों के प्रति स्नेहशील जैसा कि वत्सला धेनु माता 2 स्नेहशील और प्रिय स्नेहानुरागी, दयालु —करुणामयस्नेहवत्सल ... जनस्य ... मा० ... रघु० ... ८।४१ इसी प्रकार शरणागतवत्सल दीनवत्सल आदि, स्त्री घास से प्रज्वलित अग्नि ... वत्स को प्यार करने वाली गाय —लम् स्नेह प्यार।

वत्सलयति (ना० धा० पर०) उत्कण्ठ पैदा करना, उत्सुक बनाना, स्नेहयुक्त करना —नूनमनपत्यता मां वत्सलयति श० ७।

वत्सा, वत्सिका (वत्स टाप् वत्सा कन् ... इत्वम् बछिया, बछड़ी।

वत्सिमन् (पुं०) (वत्स इमनिच्) बचपन, कौमार्य, उम्र की अवाणी।

वत्सीय (वत्स + छ) गाय चराना।

वद् (भ्वा० पर० वदति, परन्तु कुछ अर्थों में तथा कुछ उपसर्गों के साथ आ० द० ... उदित कर्म वा० उद्यते इच्छा० विवदिषति) 1 कहना बोलना उच्चारण करना संबोधन करना बातें करना —वद प्रदोष स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणाय कल्पते —कु० ५।४४ वदना ... रघु० १।४९ वाक्पटुओं में प्रमुख 2 घोषणा करना, कहना, समाचार देना, सूचित करना या लोकादि वर्णन स्वयम् 3 किसी के विषय में कहना, वर्णन करना भग० ... 4 संकेत करना ... बताना ... 5 नाम लेना, पुकारना ... अप्रतिवाद्य ... वृथा —चन्द्रा० ... करना ... क्रन्दन करना गान करना —वर्षाः ... वदन्ति मधुरा वाच —... धार्मिक या प्रबोधता दर्शन किसी विषय ... अधिकारी होना (आ०) ज्ञाने वदते गणितिज्ञेयवदन वाप० 9 चमकना उज्ज्वल या देदीप्यमान दिखलाई देना (आ०) भट्टि० ... 1) प्रयत्न करना, चेष्टा करना (क्षेत्रे) ... वदते सिद्धा० प्रेर० ... 1 ... 2 शब्द करवाना, बाजा बजाना —... वादयन्ती —विक्रम० १।१० वादयते मृदु ... ग्रन्थ० ९, अनु- 1 बोलने में नकल करना ... शुकस्य मञ्जु-वाक्पटुत्व ... रघु० ... प्रतिध्वनि करना, गूंजना (इस अर्थ में अनुवदति वा०), 3 अनु- ... करना ... प्रतिध्वनि करके) ... भट्टि० ८।२९ समर्थन के रूप में आवृत्ति करना, अप-, (सर्वत्र ... आ०) 1 बुरा भला ... कहना, निन्दा करना ... शि० १०।१९ ... माघ —भट्टि० ८।१५ ... खण्डन करना अभि-, ... करना, मूल्य या वजन ... वाक्प्रयुक्त ... कि०... 2 ... अभिवादन करना (प्रेर०) ... उप- (आ०) 1 फुसलाना, आराधना करना, फुसलाना —भट्टि० ८।२८ 2 मनाना, अनुकूल करना ... निन्दा करना ... प्र- ... 2 ... भट्टि० ... 3 नाम ... प्रति- ... रघु०

३।६४ 2 बोलना, उच्चारण करना 3 दोहराना प्रे-, (आ०) 1 [illegible] करना [illegible] स्वर विवदमानो भ्रामरी 2 भिन्नमत का होना [illegible] विवाद [illegible] विवदमाना [illegible] ९ 3 (न्यायालय आदि में) [illegible] विप्र प्र आ, वादविवाद करना [illegible] झगड़ा करना भट्टि ८।१८, विसम् 1 असंगत होना भिन्न मत का होना 2 असफल होना (प्रेर०) असमान बनाना सम 1 बातें करना संबोधित करना 2 [illegible] वार्तालाप करना प्रवचन करना [illegible] होना अनुकूल होना समान होना (करण० के साथ)—अन्य मुख [illegible] —उत्तर० ६ 1 नाम लेना पुकारना [illegible] उच्चारण करना (प्रेर०) 1 परामर्श करना [illegible] (करण० के साथ) करना 2 [illegible] करना बाद्य यंत्र बजाना सम (आ०) (मनुष्यों का समूह) ऊँचे स्वर से या स्पष्ट बोलना सम्प्रवदन्त ब्राह्मणा —सिद्धा० 2 क्रन्दन करना क्रन्दन ध्वनि का उच्चारण करना (पर०)—संप्रवदन्ति कुक्कुटा महा०

वद (वि०) [वद्+अच्] बोलने वाला बात करने वाला अच्छा बोलने वाला।

वदनम् [वद्+ल्युट्] 1 चेहरा आमोदविवृतवदना [illegible] विभावयन्ती श० ३।१३ इसी प्रकार मुखवदना चन्द्रवदना आदि 2 मुख वदने विनिवेशिता [illegible] —शाकु० ३।१९ 3 [illegible] 4 अगला भाग 5 [illegible] सम० [illegible]

वदन्ती [वद्+झच्+ङीप्] भाषण प्रवचन।

वदान्य (वि०) [illegible] दे० वदान्य।

वदर [illegible] दे० बदर।

वदाल [illegible] 1 [illegible] एक प्रकार का समुद्री मछली।

वदावद (वि०) [illegible] वद+अच् नि०] 1 बोलने वाला वक्ता 2 [illegible]

वदान्य (वि०) [वद्+आन्य] 1 धारा प्रवाह से बोलने वाला [illegible] मधुर बोलने वाला 3 उदार दानशील [illegible] उदार या दानशील [illegible] —भामि० [illegible] नै० ५।१८ [illegible]

वदि (अव्य०) [illegible] (दे० सुदि)

वद्य (वि०) [वद्+यत्] 1 कहने के योग्य [illegible] अयोग्य पु० अवद्य 2 कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का एक पक्ष वद्यपक्ष कृष्णपक्ष)—द्यम् भाषण, इधर उधर की बातें करना।

वध (भ्वा० पर० वधति) मारना वध करना (लौकिक या शास्त्रीय संस्कृत में इसका प्रयोग केवल लुङ् व आशीर्लिङ् में हन धातु के स्थान पर होता है)।

वध [हन्+अप् वधादेश] 1 मार डालना हत्या [illegible] —आत्मना वधमाहर्ता क्वासौ विहगस्तस्कर विक्रम० ५।१ मनुष्यवध [illegible] आदि 2 आघात प्रहार 3 [illegible] 4 लोप, [illegible] 5 [illegible] गुणा, सम० **अङ्गारकम्** विष [illegible] **अर्ह** (वि०) फांसी के दंड का अधिकारी **उद्यत** (वि०) 1 हत्या करने वाला 2 हत्यारा [illegible] उपाय हत्या की तरकीब **कर्माधिकारिन्** (वि०) [illegible] **जीविन्** (पुं०) 1 शिकारी 2 कसाई **दण्ड** 1 शारीरिक दण्ड (हाथ आदि काटना) 2 फांसी **भूमि** (स्त्री०) **स्थली** (स्त्री०) **स्थानम्** 1 फांसी की जगह 2 वधशाला [illegible] फांसी मृच्छ० १०।

वधक [हन्+वुन् वध च] 1 जल्लाद, फांसी पर लटकाने वाला 2 कातिल हत्यारा।

वधत्रम् [वध्+अत्रन्] घातक हथियार।

वधित्रम् [वध्+इत्र] 1 कामदेव 2 कामोन्माद, कामातुरता।

वधु, वधुका [वधू नि० ह्रस्व] 1 पुत्रवधू, स्नुषा 2 युवती स्त्री।

वधू (स्त्री०) [उह्यते पितृगेहात् पतिगृहं वह्+ऊधुक्] 1 दुलहिन वर से बध्वा सह राजमार्गं प्राप [illegible] —रघु० ७।४ १९ [illegible] [illegible] प्रजापतिः —श० ५।१५ कु० ६।८० 2 पत्नी भार्या—[illegible] —कु० ६।८९, रघु० १।९० 3 पुत्रवधू [illegible] रघुकुलमहत्तराणां वधू —उत्तर० ४ ४।१६ [illegible] पार्थिवानाम् १।९ महिला तरुणी, स्त्री—[illegible] —गीत० [illegible] —कि० ३।६१ नै० २०।८७ मेघ० १६,४७,६५ 5 अपने से छोटे रिश्तेदार की पत्नी नाते में छोटी स्त्री [illegible] भी पशु की मादा मृगवधू (हरिणी) [illegible], गजवधू आदि। सम०—**गृहप्रवेश** —**प्रवेश** [illegible] प्रथम प्रवेश समारंभ [illegible] स्त्री पक्ष विवाह के अवसर [illegible] —**वस्त्रम्** दुलहिन की वेशभूषा, वैवाहिक पोशाक।

वधूटी [अल्पवयस्का वधू वधू+टि+ङीप्] 1 तरुणा स्त्री नवयुवती—स्य वधूटीमाराय प्राप काश्यप गच्छति महावीर० ५।१७ गोरवधूटीदृकूलचौराय (कृष्णाय) भाषा० १, पुत्रवधू।

वध्य (वि०) [वधमर्हति वध+यत्] 1 मारे जाने के योग्य, हत्या किये जाने के योग्य 2 जिसे प्राण दण्ड की आज्ञा मिल चुकी है 3 शारीरिक दण्ड दिये जाने के योग्य, शारीरिक रूप से दण्ड्य, —**ध्य** 1 शिकार मृत्यु की तलाश में मुद्रा० १।९ २ शत्रु०। सम० —**पटह** ढोल जो किसी को फांसी पर लटकाते समय बजाया जाय। —**भू, भूमि** (स्त्री०) —**स्थलम्, स्थानम्** फांसी घर —**माला** फूलों की माला जो फांसी पर लटकने के लिए तैयार व्यक्ति को पहनाई जाय।

वध्या [वध्य+टाप्] वध हत्या कत्ल।

वध्रम् [बन्ध+ष्ट्रन्] 1 चमड़े का तस्मा शि० २०।५० 2 सीसा, —**ध्री** चमड़े की पट्टी।

वध्र्यश्वः [वध्रि+अश्व] जुना।

वन् (भ्वा० पर० वनति) 1 सम्मान करना पूजा करना 2. सहायता करना 3 शब्द करना 4 व्यापृत या व्यस्त होना।

II (तना० उभ० वनोति, वनुते) 1 याचना करना, कहना, प्रार्थना करना (द्विक० धातु मानी जाती है) —नोपदाविनर नैव यातको वनुते अलम् 2 खोज करना, प्राप्त करने की चेष्टा करना 3 जीतना, स्वामित्व प्राप्त करना।

III (भ्वा० पर० चुरा० उभ० वनति, वानयति—ते) 1 अनुग्रह करना, सहायता करना 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3 ध्वनि करना 4 विश्राम करना।

वनम् [वन्+अच्] अरण्य जंगल, वृक्षों का झुरमुट —एको वासः पत्तने वा वने वा भर्तृ० ३।१२० वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणाम् 2 गुल्म, झुण्ड, पद्म क्यारी में उगे हुए कमल या अन्य पौधों का समुच्चय —विकसिता पद्मवनावतीर्णा रघु० १६।१६ ५।८६ 3. आवासस्थान निवासस्थान, घर 4 फौवारा (पानी का) झरना पानी —शि० ६।७३ 6 लकड़ी काष्ठ (समास) में प्रथमपद के रूप में इसका प्रयोग 'जंगली' 'वनैला' अर्थों में होता है उदा० वनवराह, वनक दली वनपुष्पम् आदि)। सम० —**अग्निः** दावानल —**अजः** जंगली बकरा —**अन्तः** किसी जंगल की सीमा या दामन रघु० ७।५८ 2 वन्यप्रदेश जंगल —उत्तर० २।२५ —**अन्तरम्** 1 दूसरा जंगल 2 जंगल का भीतरी प्रदेश कि० ४।२६, —**अरिष्टा** जंगली हल्दी,—**अलक्तम्** लाल मिट्टी गेरू या लाल खड़िया —**अलिका** सूरजमुखी, —**आखुः** खरगोश,—**आखुक** एक प्रकार का लोबिया —**आपगा** जंगली नदी अर-ण्यसरिता —**आर्द्रकः** जंगली अदरक —**आश्रमः** जंगल में आवास, वानप्रस्थ—जीवन का तीसरा आश्रम —**आश्रमिन्** (पु०) वानप्रस्थी संन्यासी तपस्वी —**आश्रयः** 1 वनवासी 2 एक प्रकार का पहाड़ी कौवा —**उत्साहः** गैंडा —**उद्भवा** जंगली कपास का पौधा —**उपप्लवः** दावानल —**ओकस्** (पु०) 1 वन-वासी जंगल में रहने वाला 2 संन्यासी तपस्वी 3 जंगली जानवर जैसे कि बन्दर सूअर —**कणा** वन पिप्पली —**कदली** जंगली केला, —**करिन्** (पु०) —**कुञ्जरः** गज जंगली हाथी —**कुक्कुटः** जंगली मुर्गा —**खण्डम्** जंगल का एक भाग —**गजः** जंगली हाथी —**गहनम्** झुरमुट जंगल का सघन भाग —**गुप्तः** भेदिया जासूस —**गुल्मः** जंगल झाड़ी —**गोचर** (वि०) बार-बार जंगल में जाने वाला (रः) 1 शिकारी 2 वनवासी (रम्) वन जंगल —**चम्पकः** 1 देवदार का वृक्ष 2 अगर की लकड़ी, —**चन्द्रिका, —ज्योत्स्ना** एक प्रकार की चमेली —**चम्पकः** जंगली चम्पा का पौधा —**चर** (वि०) वनवासी वन में विचरने वाला वन देवता (रः) 1 वनवासी, वन में रहने वाला जंगली आदमी उपलभ्य चराम्पिय पर्वविचारादविषय शतय-स्वनो वनचरा वसतिम् कि० ६।२९, मेघ० १२ 2 वन्य पशु 3 आठ पैरों वाला शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु, —**चर्या** जंगल में घूमना या निवास, —**छागः** 1 जंगली बकरा 2 सूअर, —**ज** 1 हाथी 2 एक प्रकार का सुगन्धित घास 3 जंगली नींबू का पेड़ (—जम्) नीलकमल, —**जा** 1 जंगली अदरक 2 जंगली कपास का पौधा —**जीविन्** वनवासी जंगली आदमी,—**दः** बादल —**दाहः** दावानल, —**देवता** वनदेवी, वनपरी रघु० २।१२ १२ श० ४।४, कु० ३। ५२ ६।३९, —**द्रुमः** जंगली पेड़ —**धारा** वृक्षावलि, छायादार मार्ग —**धेनुः** (स्त्री०) गाय जंगली भैंस की मादा —**पांसुलः** शिकारी —**पार्श्वम्** जंगल के आस पास का क्षेत्र वनप्रदेश, —**पुष्पम्** जंगली फूल —**पूरक** जंगली नीबू का पेड़ —**प्रवेशः** तपस्विजीवन का आरम्भ, —**प्रिय** कोयल, (—यम्) दालचीनी का पेड़ —**बर्हिण** —**बर्हिणः** जंगली मोर —**भूः** जंगल की भूमि —**मक्षिका** गोमक्खी डांस —**मल्ली** जंगली चमेली, —**माला** जंगली फलों की माला जैसी कि श्री कृष्ण पहनते थे रघु० १।५१ इसका वर्णन है आजानुलम्बिनी माला सर्वर्तु कुसुमोज्ज्वला। मध्ये स्थूलकदम्बाढ्या वनमालेति कीर्तिता। —**धर** श्रीकृष्ण का विशे-षण —**मालिन्** (पु०) कृष्ण का एक विशेषण धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली गीत०

५, तव विरहे वनमाली सखि सीदति गीत० ५ —मालिनी द्वारका नगर का नामान्तर —मुच् (वि०) जल डालने वाला रघु० ९।२२ (पु०) मूल बादल, —मुद्ग: एक प्रकार की मूंग, —मोचा जंगली केला —रक्षक वन का रखवाला —राज सिंह, —रुहम् कमल का फूल, —लक्ष्मी (स्त्री०) जंगल का आभूषण या सौंदर्य 2 केला —लता जंगली बेल लता दूरीकृता खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभि: —श० १।१७ —वह्नि:, —हुताशन: दावानल —वास: 1 जंगल में रहना, वन में वास श० ४।१० 2 जंगली या यायावरीय (घुमक्कड़) जीवन 3 वनवासी वन में रहने वाला, —वासन: गंधबिलाव, —वासिन् (पु०) 1 जंगल में रहने वाला, वनवासी 2 तपस्वी इसी प्रकार 'वनस्थायिन्', —व्रीहि: जंगली चावल —शोभनम् कमल —श्वन् (पु०) 1 गीदड़ 2 व्याघ्र 3 गंधबिलाव, —सक्तुः एक प्रकार का शाल मभूर —सद्, —संवासिन् (पु०) वनवासी —समीर्जनी (स्त्री०) जंगली कपास का पौधा —स्थ 1 हरिण 2 तपस्वी —स्था बरगद का पेड़ —स्थली जंगल जंगल की भूमि, —स्रज् (स्त्री०) जंगली फूलों की माला।

वनर (पु०) दे० 'वानर'।

वनस्पति: [वनस्य पति नि० सुट्] 1 एक बड़ा जंगली वृक्ष, विशेषकर वह जिसमें बिना बौर आये फल लगता है 2 वृक्ष, पेड़ तमाशु विघ्नं तपसस्तपस्वी वनस्पतिं वज्र इवावभज्य कु० ३।७४।

वनायु: [वन+इण्+उण् वन् आयुः ...] ... का नाम रघु० ५।७३ । सम० —ज (वि०) वनायु में उत्पन्न घोड़ा आदि।

वनि: (स्त्री०) [वन्+इ] कामना इच्छा।

वनिका [वनी ...] ... 'अशोकवनिका'।

वनिता [वन्+क्त+टाप्] ... वद्धस्नेहा ... पतिव्रता ... —मेघ० ८ 2 पत्नी, ... रंजनी ... —कु० १।१० रघु० ... किसी भी प्रेयसी स्त्री ... सम० —द्विष् (पु०) स्त्रीद्वेषी स्त्रियों से घृणा करने वाला, —विलास: स्त्रियों का इच्छानुकूल मनोरंजन।

वनिन् (पुं०) [वन+इनि] 1 वृक्ष 2 सोमलता 3 वान-प्रस्थ, तीसरे आश्रम में रहने वाला।

वनिष्णु (वि०) [वन्+इष्णुच्] मांगने वाला, याचना करने वाला।

वनी [वन+ङीप्] जंगल, अरण्य, (वृक्षों का) झुरमुट अवनीतलमेव साधु मन्ये न वनी माधवनी विलासहेतु: —जग०।

वनीपक:, **वनीयक:** [वनीं याचनामिच्छति वनि+क्यच्, +ण्वुल्] भिक्षुक भिखारी वनीपकानां स हि कल्पवृक्ष: —नै० १५।९०।

वनेकिंशुका: (ब० व०) [वने किंशुक इव, सप्तम्या अलुक्] जंगल में किंशुक अनायास ही मिलने वाला पदार्थ।

वनेचर: [वने चरति—चर्+ट सप्तम्या अलुक्] जंगल में रहने वाला, —र: 1 वनवासी जंगल में रहने वाला आदमी वनेचराणां वनितासखानाम् कु० १।१० ... 2 संन्यासी तपस्वी 3 वन्य पशु 4 वनदेवता, वनमानुष 5 पिशाच।

वनेज्य [वने इज्य, स० त०] एक प्रकार का आम।

वन्द् (भ्वा० आ० वन्दते वन्दित) प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना श्रद्धांजलि प्रदान करना— जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ रघु० १।१, १३।७७, १४।५ 2 आराधना करना, पूजा करना 3 प्रशंसा करना स्तुति करना अभि—, प्रणाम करना सादर नमस्कार करना—रघु० १६।८१।

वंदक [वन्द्+ण्वुल्] प्रशंसक।

वंदथ [वन्द्+अथ] प्रशंसक चारण या भाट, स्तुति गायक।

वंदनम् [वन्द्+ल्युट्] 1 नमस्कार, अभिवादन 2 श्रद्धा सत्कार 3 किसी ब्राह्मणादि का (चरणस्पर्श करते हुए) प्रणाम 4 प्रशंसा, स्तुति—ना 1 पूजा, अर्चना 2 ... —नी 1 पूजा अर्चना 2 प्रणाम 3 याचना 4 मृतक को पुनर्जीवित करने वाली औषधि। सम० —माला, —मालिका द्वार पर लगाई गई फूलमाला।

वंदनीय (वि०) [वन्द्+अनीयर्] अभिवादन के योग्य, सत्कार के योग्य, —या हरताल गोरोचना।

वंदा [वन्द्+अच्+टाप्] भिक्षुणी, भीख मांगने वाली स्त्री।

वंदारु (वि०) [वन्द्+आरु] प्रशंसा करने वाला 2 श्रद्धालु सम्मानपूर्ण, विनीत, शिष्ट परमनुगृहीतो ... मुद्रा० ७, —रु: प्रशंसा।

वंदिन् (पु०) [वन्द्+इनि] 1 स्तुति गायक, चारण, भाट, अग्रदूत (भाट या चारण एक विशिष्ट जाति है जो क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की सन्तान है) 2 बंदी, कैदी।

वंदी (स्त्री०) [वन्दि+ङीष्] दे० बंदी। सम० —पाल: कारागाराध्यक्ष, जेलर।

वंद्य (वि०) [वन्द्+ण्यत्] 1 सत्कार के योग्य, श्रद्धेय 2 सादर नमस्करणीय रघु० १३।७८, कु० ६।८३, मेघ० १२ 3. स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

वंद्र [वद् + रक्] पूजा करने वाला भक्त [illegible] नमाः।

वंधुर (वि०) दे० बधुर।

वंध्य वन्ध्या दे० वन्ध्य बध्या।

वन्य (वि०) [वने भव यत्] 1 जंगल में [illegible] वाला, जंगल में उगा [illegible] या उत्पन्न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] 35 [illegible] न्य जंगली [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इतर (वि०) [illegible] हाथ [illegible] हाथी।

वन्या [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

वप [illegible] 1 बोना [illegible] पौधा लगाना [illegible] 2 फेंकना [illegible] पैदा करना 4 [illegible] [illegible] [illegible] पौधा लगाना भूमि में [illegible] 1 बिखेरना [illegible] फेंकना 2 बोना 3 [illegible] उद्वेलना, **नि** 1 (बीज) [illegible] बिखेरना 2 [illegible] [illegible] [illegible] मनु० [illegible] कु० [illegible] 3 [illegible] का वध करना **निस्**— 1 बिखेरना [illegible] 2 प्रस्तुत करना, दान करना [illegible] [illegible] [illegible] 3 तर्पण करना [illegible] 4 अनुष्ठान करना **प्रति** 1 बोना 2 [illegible] लगाना, जमाना, [illegible] [illegible] 3 जमाना [illegible] जड़ना प्र [illegible] डालना, प्रस्तुत करना [illegible]

वपः [वप् [illegible]] 1 बीज बोना 2 [illegible] बीज [illegible] बोने वाला 3 मूंडना, मुंडना।

वपनम् [वप् [illegible]] 1 बीज बोना 2 मूंडना [illegible] मनु० [illegible] 3 [illegible] वीर्य 1 [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] 3 [illegible]

वपा [वप् [illegible]] 1 चर्बी, [illegible] 2 छिद्र [illegible] 3 बमी दीमकों द्वारा [illegible] मिट्टी का टीला। सम० **कृत** [illegible]

वपिल [वप् [illegible]] प्रजापति, पिता।

वपुन [illegible] देवता।

वपुष्मत् (वि०) [वपुस् + मतुप्] 1 मूर्त, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2 सुन्दर, मनोहर [illegible] [illegible]

वपुस् (नपुं०) [वप् + उसि] 1 (क) शरीर, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रूप, आकृति, मूरत या छवि [illegible] [illegible] [illegible] 2 [illegible] प्रकृति [illegible] 3 सौन्दर्य, सुन्दर रूप या छवि। [illegible] **गुण**, **प्रकर्ष** रूप की श्रेष्ठता, वैयक्तिक [illegible] [illegible] **वपुर्गुणात्** कु० [illegible] [illegible] रघु० [illegible] वि० **धर** [illegible] 1 मन 2 सुन्दर, **धरम्** शरीर [illegible]

वप्तृ (पुं०) [वप् + तृच्] 1 (बीज का) बोने वाला, पौधा लगाने वाला, किसान [illegible] [illegible] [illegible] मनु० [illegible] 2 [illegible] कवि [illegible] या प्रजापति [illegible]

वप्र [illegible] [वप् + रन्] दुर्गप्राचीर, मिट्टी की दीवार [illegible] की भित्ति [illegible] (ऊर्मीय) [illegible] जिसमें कि मांड [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किसी पहाड़ या चट्टान का ढलान [illegible] कि० [illegible] 4 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 6 किसी भवन की नींव 7 शहरपनाह या दुर्गप्राचीर 8 [illegible] नगर का फाटक 8, खाई 9 वृत्त का व्यास 10 खेत 11 मिट्टी का टीला (जिसको कि हाथी या सांड टक्कर मारे) — **प्र** पिता, **प्रम्** सीसा। सम० **अभिघातः** (किसी पहाड़ या नदी आदि के) तट-बंध पर टक्कर मारना कि० ५।[illegible] तु० 'तटाघात' [illegible] **क्रीडा** किसी टीले या तटबन्ध पर हाथी (या सांड) का टक्कर मार कर विहार करना—वप्र-क्रियामक्षवतस्तटेषु रघु० ५।४४, वप्रक्रीडापरिणत गजप्रेक्षणीय ददर्श - मेघ० २।

वप्रि [वप् + क्रिन्] 1 खेत 2 समुद्र।

वप्री [वप्रि + ङीष्] मिट्टी का टीला [illegible]

वभ्र (भ्वा० पर० वभ्रति) जाना, हिलना-जुलना।

वम् (भ्वा० पर० वमति, वांत, प्रेर० वामयति, वमयति, परन्तु उपसर्गयुक्त होने पर केवल 'वमयति') 1 वमन करना, थूक देना, मुँह से बाहर निकालना—रक्तं चावमिषुर्मुखैः—भट्टि० १५।९२, ९।१०, १४।३० 2. बाहर भेजना, उडेलना, बाहर करना, उद्गीरण करना, बाहर निकालना, उत्सर्जन करना (आलं० में भी) किमात्मेयथाया विकृत इव तेजांसि वमति —उत्तर० ६।१४, मा० २।७, रघु० १६।६६, मेघ० २०, अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्—वास० 3 बाहर फेंकना, नीचे डाल देना—वान्तमाल्य—रघु० ७।६ 4 अस्वीकृत करना, **उद्**— 1. थूक देना, उद्वमन करना 2 कै करना, भेज देना, उडेल देना—उद्वामेन्द्रसिक्ता भूर्बिलमग्नाविवोरगाः —रघु० १२।५, मुद्रा० ६।१३।

वमः [वम्+अप्] कै करना, वमन करना बाहर निकालना।

वमथुः [वम्+अथुच्] 1. कै करना, उद्वमन, थूकना 2. हाथी के द्वारा अपनी सूँड से फेंका गया पानी।

वमनम् [वम्+ल्युट्] 1. कै करना, उलटी 2. बाहर खींचना, बाहर निकालना, जैसा कि 'स्वर्गाभिष्यन्दवमनम्' में, रघु० १५।२९, कु० ६।३७ 3. उलटी लानेवाली 4. आहुति देना ... भी जोंक।

वमनीया [वम्+अनीयर्+टाप्] मक्खी।

वमिः [वम्+इन्] 1. आग 2. ठग, बदमाश—मिः (स्त्री०) 1. बीमारी, जी मिचलाना 2. उलटी लाने वाली (औषधि)।

वमी [वमि+ङीष्] उलटी करना।

वंभारवः [प० त०] पशुओं के रांभने की आवाज।

वम्रः,—म्री [वम्+रक्, वम्र+ङीष्] चिऊँटी। सम० —कूटम् बांबी।

वय् (भ्वा० आ० —वयते) जाना, हिलना-जुलना।

वयनम् [वे+ल्युट्] बुनना।

वयस् (नपुं०) [अज्+असुन्, वीभावः] 1 आयु, जीवन का कोई काल या समय,—गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः उत्तर० ४।११, नव वयः —रघु० २।४७, पश्चिमे वयसि - १९।१, न खलु वयस्तेजसो हेतुः—भर्तृ० २।३८, तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते —रघु० ११।१, कु० ५।१६ 2 जवानी, जीवन का प्रमुख अंश—वयोगते ... वनिताविलास सुभा० इसी प्रकार 'अतिक्रान्तवयाः' 3. पक्षी—रमणीया समये वयं वयः—नै० २।६२, मृगवयोगवयोपचितं वनम् रघु० ९।५३, २।९, शि० ३।५५, ११।४७ 4 कौवा —पंच० १।२३ (यहाँ इसका अर्थ 'पक्षी' भी हो सकता है)। सम०—अतिग—अतीत (वि०) (वयोतिग आदि) बड़ी आयु का, बूढ़ा, जीर्ण, शक्तिहीन,—अधिक (वि०) (वयोधिक) आयु में अधिक, वयोवृद्ध, वरिष्ठ **अवस्था** (वयोऽवस्था) जीवन की एक अवस्था, आयु की माप,—मा० ९।२९,—**कर** (वि०) स्वास्थ्य देनेवाला जीवन को पुष्ट करनेवाला, आयु बढ़ानेवाला **गत** (वि०) 1 वयस्क 2. वयोवृद्ध **परिणतिः, परिणामः** आयु की परिपक्वावस्था, वयोवृद्धता—**प्रमाणम्** 1 जीवन का माप या लम्बाई 2 जीवन की अवधि,—**वृद्ध** (वि०) (वयोवृद्ध) बूढ़ा, बड़ी आयु का,—**सन्धिः** 1 जीवन के एक काल से दूसरे काल में संक्रमण—यथा वयःसन्धय 2 वयस्कता, परिपक्वावस्था (वयस्क होने का काल),—**स्थ** (वि०) (वयःस्थ-या-वयस्थ) 1 जवान 2. वय प्राप्त, बालिग 3 बलवान, शक्तिशाली (—स्था) सखी, सहेली, —**हानिः** (वयोहानि) 1 जवानी का ह्रास 2. यौवन का ह्रास।

वयस्य (वि०) [वयसा तुल्यः यत्] 1 समान आयु का 2 समसामयिक,—स्यः मित्र, सखा, साथी (प्रायः समान ही आयु का)—स्या सखी, सहेली।

वयुनम् [वय्+उनन्] 1 ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति 2 मन्दिर (उणादिसूत्रों में इस शब्द को इसी अर्थ में पुंल्लिङ्ग भी बतलाया गया है)।

वयोधस् (पु०) [वयो यौवनं दधाति —वयस्+धा+असि] युवा या प्रौढ व्यक्ति।

वयोरंगम् [वयसा रंगमिव] सीसा

वर् (चुरा० उभ० वरयति—ते, वृ या वॄ का प्रेर० रूप) माँगना, चुनना, छाँटना, खोज करना,—दे० 'वृ'।

वर (वि०) [वृ कर्मणि अप्] 1 श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दरतम, या अत्यंत मूल्यवान्, छांटा हुआ, बढ़िया (संबं० या अधि० के साथ अथवा समास के अन्त में) वनिता वरः रघु० १।५९, वेदविदां वरेण—५।२३, ११। ५४, कु० ६।१८, नृवरः, तरुवरः, सरिद्वराः आदि 2. अपेक्षाकृत अच्छा, दूसरे से अच्छा, पश्चिमो वरितो वराः मनु० १२।१०३, याज्ञ० १।३५१,—रः 1 चुनने और छांटने की क्रिया 2 छांट, चुनाव 3 वरदान, आशीर्वाद, अनुग्रह, वरं वृ या याच् वर मांगना, प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व—रघु० २।६३, भवल्लब्धवरोदीर्ण—कु० २।३२, ('वर' और 'आशिस्' का अन्तर जानने के लिए दे० 'आशिस्') 4. भेंट, उपहार, पारितोषिक, पुरस्कार 5. कामना, इच्छा 6 याचना, अनुरोध 7. दूल्हा, पति—वर वरयते कन्या, दे० वम् (२) के नीचे भी 8. पाणिग्रहणार्थी, विवाहार्थी 9. स्त्रीधन, दहेज 10. जामाता 11. कामुक, कामासक्त 12 चिड़िया,—रम् आफ़्रान, केसर, ('वरम्' को पृथक् देखिये)। सम०—अंग (वि०) उत्तम रूप

शाला (–णः) हाथी (–णी) हल्दी, (–णम्) 1 सिर 2. उत्तम भाग 3 [illegible] 5 हरी दारचीनी, –**अगना** कमनीय स्त्री,–**अर्ह** (वि०) [illegible] जाने के योग्य, **आजीवन** (पुं०) [illegible] –**आरोह** (वि०) सुन्दर कमर वाला (–**हः**) उत्तम सवार (–**हा**) सुन्दर स्त्री –**आलिः** [illegible], **आसनम्** 1 उत्तम चौकी 2. मुख्य आसन, सम्मान की कुर्सी 3. जीना गुलाब,–**उरु:**, –**रू:** (स्त्री०) सुन्दर स्त्री (जो० सुन्दर जंघाओं से युक्त स्त्री), –**ऋतु:** इन्द्र का विशेषण, **चन्दनम्** 1 एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी 2. देवदारु वृक्ष का पेड़, –**तनु** (वि०) सुन्दर [illegible] स्त्री [illegible] [illegible] –**तनुः** [illegible] नाम [illegible] –**त्वचः** नाम का पेड़ –**द** (वि०) 1 वर देने वाला, वरदान प्रदान करने वाला 2. [illegible] (–**दः**) 1 [illegible] 2. [illegible] (–**दा**) 1 नदी का नाम मार्क० [illegible] 2. कुमारी कन्या, –**दक्षिणा** दुलहिन के पिता द्वारा दूल्हे को दिया गया उपहार, –**दानम्** वर प्रदान करना –**द्रुमः** अगर का वृक्ष,–**निश्चयः** दूल्हे का चुनाव –**पक्षः** (विवाह में) दूल्हे के दल के लोग [illegible] ९।८५, –**प्रस्थानम्** यात्रा विवाह संस्कार के लिए दूल्हे का जलूस के रूप में दुलहिन के घर की ओर कूच करना, –**फलः** नारियल का पेड़, –**बाह्लीकम्** जाफरान, केसर, –**युवतिः**, –**ती** (स्त्री०) सुन्दर तरुणी स्त्री, –**रुचिः** एक कवि और वैयाकरण का नाम (विक्रमादित्य राजा के दरबार के नवरत्नों में से एक, दे० नवरत्न; कुछ लोग पाणिनि के सूत्रों पर प्रसिद्ध वार्तिककार कात्यायन से इसकी अभिन्नता सिद्ध करते हैं),–**लब्ध** (वि०) जिसने वरदान प्राप्त कर लिया है (–**ब्धः**) चम्पक वृक्ष, –**वत्सला** सास, श्वश्रू, –**वर्णम्** सोना, –**वर्णिनी** 1. उत्तम और सुन्दर रंगरूप वाली स्त्री 2 स्त्री 3 हल्दी 4 लाख 5 लक्ष्मी का नामान्तर 6 दुर्गा का नामान्तर 7 सरस्वती का नाम 8. [illegible] नाम की लता, –**स्रज्** दूल्हे की माला, वह माला जो दुलहिन, दूल्हे के गले में डालती है।

वरकः [वृ+वुन्] 1. इच्छा, प्रार्थना, वर 2. चोगा [illegible] का एक प्रकार, –**कम्** 1 नाव को ढकने की चादर 2. [illegible], [illegible]।

वरटः [वृ+अटन्] 1. हंस 2 एक प्रकार का अनाज 3 एक प्रकार का बर्र, भिड़,–**टा**,–**टी** 1 हंसिनी [illegible] [illegible] [illegible]–नै० १।१३९ 2 भिड़ बर्र या उसके प्रकार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तत्र-तत्र गच्छता–मृच्छ० १,–**टम्** [illegible]

वरणम् [वृ+ल्युट्] 1 छांटना, चुनना 2 मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना 3 घेरना, घेरा डालना 4 ढकना, पर्दा डालना, प्रच्छन्न करना 5 दुलहिन का चुनाव –**णः** 1 परकोटा, फसील 2 पुल 3 वरण नामक वृक्ष 4 वृक्ष –इह सियवरस्य वरणा- वरणा... [illegible] कि० ५।२५ 5 ऊँट। सम० –**माला**,–**स्रज्** दे० वरस्रज्।

वरणसी (अधिक प्रचलित रूप = वाराणसी)–दे०।

वरण्डः [वृ+अण्डच्] 1 समुदाय, वर्ग 2 मुँह पर निकली फुंसी 3 बरामदा 4 घास का ढेर 5 आला (अदि- [illegible] [illegible] इव दुरधिरोहणम् पातितः–मृच्छ० [illegible] [illegible] शब्द का अर्थ सन्दिग्ध है, इसका अर्थ प्रतीत होता है ऊपर लटकती हुई या उभरी हुई [illegible] [illegible] यदि और ऊपर उठाई गई तो उसका टूटना [illegible] निश्चित है, यही बात सूत्रधार के विषय में है जिसकी आशाएँ अत्यन्त ऊँची उठी परन्तु केवल निराशा में परिणत होने के लिए)।

वरण्डकः [वरण्ड+कन्] 1 मिट्टी का टीला 2. हाथी की पीठ पर बना हौदा 3 दीवार 4. मुँह पर मुहासा।

वरण्डा [वरण्ड+टाप्] 1. बर्छी, छुरी 2 एक पक्षी –सारिका 3. दीपक की बत्ती।

वरत्रा [वृ+अत्रन्+टाप्] फीता, (चमड़े का) तस्मा या पट्टा, शि० ११।४४ 2 घोड़े या हाथी का तंग।

वरम् (अव्य०) [वृ+अप्] अपेक्षाकृत, श्रेष्ठतर, श्रेयस्कर, अधिक अच्छा कभी कभी यह अपा० के साथ प्रयुक्त होता है–अभियोगमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः कि० १।८, परन्तु इस शब्द का प्रयोग बहुधा बिना किसी शर्त के होता है, 'वरम्' प्राय उस वाक्य खंड के साथ प्रयुक्त होता है जिसमें अपेक्षित वस्तु विद्यमान है, तथा 'न च' 'न तु' और 'न पुनः' उन वाक्यखंड के साथ जिनमें वह वस्तु विद्यमान है जिसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती को प्रमुखता दी गई है। (दोनों क्रा० में रक्खे जाते हैं), वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतं ... वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनसुखम् हि० १, वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः –हितो०, कभी कभी 'न' का प्रयोग 'न तु और पुनः' के बिना भी होता है–याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा–मेघ० ६।

वरलः [वृ+अलच्] एक प्रकार की बर्र, भिड़,–**ला** 1 हंसिनी 2 एक प्रकार की भिड़, बर्र।

वरा [वृ+अच्+टाप्] 1 त्रिफला 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य 3 हल्दी 4 पार्वती का नाम।

वराक (वि०) (स्त्री०–**की**) [वृ+षाकन्] बेचारा, दय- नीय और मन्दभाग्य दुःखी अभागा (बहुधा दया [illegible] [illegible] [illegible]) तन्मया न युक्तं कृतं यत्स

वराकोऽपमानित पंच० १, तदिममुज्झितहानजीविता वराकीं नानुकंपसे मा० १०,-कः 1 शिव 2 संग्राम, युद्ध।

वराट: [वरमल्पमटति अट्+अण्] 1 कौड़ी 2 रस्सी, डोरी।

वराटक: [वराट+कन्] 1 कौड़ी—प्राप्ता काणवराटकाऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम्—भर्तृ० ३।४ 2 कमल फूल का बीजकोष 3 डोरी, रस्सी (इस अर्थ में 'नपुं०' भी)। सम०—**रजस्** (पुं०) नाग केसर नामक वृक्ष।

वराटिका [वराट+कन्+टाप्, इत्वम्] कौड़ी—भामि० २।४२।

वराण: [वृ+शान च] इन्द्र का विशेषण।

वराणसी दे० वाराणसी।

वरारकम् [वर+ऋ+ण्वुल्] हीरा।

वराल:, वरालक: [वृ+आलच्, स्वार्थे कन् च] लौंग।

वराशि:-सि: [वरम् आवरणमश्नुते वर+अश्+इन्, वरं श्रेष्ठं, अस्यते क्षिप्यते वर+अस्+इन्] मोटा कपड़ा।

वराह: [वराय अभीष्टाय मुस्तादिलाभाय आहन्ति भूमिम्—आ+हन्+ड] सूअर, बधिया किया गया सूअर,—विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले—श० २।६ 2 मेंढा 3 बैल 4 बादल 5 मगरमच्छ 6. शूकराकृति में बना सैनिक व्यूह 7 विष्णु का तीसरा वराह—अवतार—तु० वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना। केशव धृतशूकररूप जय जगदीश हरे—गीत० १ 8. एक विशेष माप 9 वराहमिहिर का नामान्तर 10 अठारह पुराणों में से एक। सम०—**अवतार:** विष्णु का तीसरा अवतार, वराहावतार,—**कंद:** वाराहीकंद, एक खाद्य पदार्थ,—**कर्ण:** एक प्रकार का बाण,—**कर्णिका** एक प्रकार का अस्त्र,—**कल्प:** वराहावतार का समय, वह काल जब विष्णु ने वराह का अवतार धारण किया,—**मिहिर:** एक विख्यात ज्योतिर्वेत्ता, बृहत्संहिता का प्रणेता (राजा विक्रमादित्य की राजसभा के नवरत्नों में से एक),—**शृंग:** शिव का नाम।

वरिमन् (पुं०) [वर+इमनिच्] श्रेष्ठता, सर्वोपरिता, प्रमुखता।

वरिवसित (वि०) स [वरिवस् (स्या)+इतच्] पूजा गया, सम्मानित, अर्चित, सत्कृत।

वरिवस्या [वरिवसः पूजायाः करणम् वरिवस्+क्यच्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, अर्चना, भक्ति।

वरिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वरः उरुर्वा उरु+इष्ठन् वरादेशः उरु की उ० अ०] 1 सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ, अत्यन्त पूज्य, प्रमुख 2 अत्यन्त विशाल उत्तम 3. अत्यन्त विस्तृत 4. गुरुतम,—**ष्ठ:** 1. तित्तिर पक्षी, तीतर 2 सन्तरे का पेड़,—**ष्ठम्** 1. तांबा 2 मिर्च।

वरी [वृ+अच्+ङीप्] 1 सूर्य की पत्नी छाया 2 शतावरी नाम का पौधा।

वरीयस् (वि०) [अयमनयोरतिशयेन वरः उरुर्वा उरु+ईयसुन्, वरादेशः, उरु की म० अ०] 1 अपेक्षाकृत अच्छा अधिक श्रेष्ठ, अधिमान्य 2 अत्युत्तम, बहुत अच्छा मा० १।१६ 3 अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा या विस्तृत।

वरी (स्त्री) **वर्द:** [व—विधा॰...] ...ईवर्द ... सामी ईवर्दश्च कर्म० स०] बैल साँड।

वरुट: (पुं०) म्लेच्छ जाति का नाम।

वरुड: (पुं०) एक नीच जाति का नाम।

वरुण: [वृ+उनन्] 1 आदित्य का नाम (बहुधा मित्र के साथ युक्त होकर) 2 परवर्ती पौराणिकता के अनुसार) समुद्र की अधिष्ठात्री देवता, पश्चिम दिशा का देवता (हाथ में पाश लिए हुए)—यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्, वरुणो पाशेनामहम्—भग० १०।२९, प्रतीचीं वरुण पाति—महा० अनिमकिरिमय ...प्रतीचीं दिशा ... शि० ९।७ 3 समुद्र 4 अन्तरिक्ष। सम०—**अंगरूह:** अगस्त्य का विशेषण,—**आत्मजा** मदिरा (समुद्र से निकलने के कारण इसका यह नाम पड़ा),—**आलय:,—आवास:** समुद्र,—**पाश:** घड़ियाल,—**लोक:** 1 वरुण का संसार 2 जल।

वरुणानी [वरुण+ङीष्, आनुक्] वरुण की पत्नी।

वरूत्रम् [वृ+ऊत्र] उपरीय वस्त्र, दुपट्टा।

वरूथम् [वृ+ऊथन्] 1 एक प्रकार का लकड़ी का बना, आवरण जो रथ की टक्कर हो जाने पर रथ की रक्षा करे (इस अर्थ में पुं० भी)—वरूथो रथगुप्तिर्या तिरोधत्ते रथस्थितिम् 2 कवच, बख्तर 3 ढाल 4 घर, समुच्चय, समवाय,—**थ:** 1 कोयल 2. काल।

वरूथिन् (वि०) [वरूथ+इनि] 1. कवचधारी, बख्तरयुक्त 2 आवरण रखने या बचाव करने में गुप्त—अवनियमरथेन वरूथिना, जितवता किल तस्य धनुर्भृतः रघु० ९।११ 3 बचाने वाला, आश्रय देने वाला 4 गाड़ी में बैठा हुआ,—(पुं०) 1 रथ 2 अभिरक्षक, प्रतिरक्षक,—**नी** सेना—स्वकिससलिलामुत्तरिष्यतो ग्राम वरूथिनी—शि० १२।७७, रघु० १२।५०।

वरेण्य (वि०) [वृ+एन्य] 1 अभिकामणीय, वाञ्छनीय, पात्र मर्णीय अतेन वेदितव्यानि गुह्ययोग्यांं पानि वरेण्येन रघु० ६।२४ 2 (अत:) सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, प्रमुख, पूज्यतम, मुख्य—येषां विषाय पुनरुक्त-

मिवेन्दुबिंब दूरीकरोति न कथं विदुषां वरेण्यः—भामि० २।१५८, तन्मविलुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि —ऋक् ३।६२।१०. रघु० ६।८४, भट्टि० १।४, कु० ७।९० **—ण्यम्** जाफरान, केसर।

वरोट: [वराणि श्रेष्ठानि उटानि दलानि यस्य ब० स०] मरुवे का पौधा,—टम् मरुए का फूल।

वरोल: [वृ+ओलच्] बर्र, भिड़।

वर्कर: [वृक्+अरन्] 1 भेड़ या बकरी का बच्चा, मेमना 2. बकरा 3 कोई पालतू जानवर का बच्चा 4 आमोद, क्रीड़ा विहार, मनोरंजन। सम० **—कर्कर** चमड़े की रस्सी या तस्मा जिससे बकरा या भेड़ बांधी जाय।

वर्कराट: [वर्कर परिश्रमम् अटति गच्छति वर्कर+अट्+अण्] 1 तिरछी नज़र, कटाक्ष 2 स्त्री के कुचों पर उसके प्रेमी के नखक्षतों के चिह्न।

वर्कुट: (पुं०) कील, अर्गला, चटखनी।

वर्ग: [वृज्+घञ्] 1 श्रेणी, प्रभाग, समूह, दल, समाज, जाति, संग्रह (एक समान वस्तुओं का), —त्वयि वर्गास्त्वनुत्तारिताः —रघु० १०।२९, इसी प्रकार शौरवर्ग, नक्षत्रवर्ग आदि 2 दल, पक्ष, कु० ३।१३ 3 प्रवर्ग 4 एक स्थान पर वर्गीकृत शब्दसमूह यथा मनुष्यवर्ग, जलचरवर्ग आदि 5 वर्णमाला में व्यंजनों का समूह 6 अनुभाग, अध्याय, या पुस्तक का परिच्छेद 7 विशेषरूप से ऋग्वेद के अध्यायान्तर्गत अवभाग, सूक्त 8 घात, दो समान अंकों का गुणनफल 9 सामर्थ्य। सम० **—अन्त्यम्, —उत्तमम्** पांचों वर्गों में से प्रत्येक का अंतिम वर्ण अर्थात् अनुनासिक अक्षर **—घन:** वर्ग का घनफल **—पदम्, —मूलम्** वर्गमूल, वह अंक जिसके घात से कोई वर्गांक बने, **—वर्ग:** वर्ग का वर्ग।

वर्गणा (स्त्री०) गुणन, घात।

वर्गशस् (अव्य०) [वर्ग+शस्] समूहों में श्रेणीवार।

वर्गीय (वि०) [वर्ग+छ] किसी श्रेणी या प्रवर्ग से संबद्ध, सहपाठी।

वर्ग्य (वि०) [वर्ग+यत्] एक ही श्रेणी का, —र्ग्य: एक ही श्रेणी या दल से संबद्ध, सहपाठी, सहकारी सहाध्यायी (विद्या में) या वर्ग, मुझसे अधिका या समझ प्राचीन नवीन सर्व [illegible] —शि० [illegible]

वर्च् (भ्वा० आ० वर्चते) चमकना, उज्ज्वल या आभायुक्त होना।

वर्चस् (नपुं०) [वर्च्+असुन्] 1 शक्ति, बल, ओजस 2 प्रकाश, तेज, उज्ज्वलता 3 रूप, आकृति 4 मल 5 विष्ठा, मल। सम० **—ग्रहः** कोष्ठबद्धता, कब्ज़।

वर्चस्कः [वर्चस्+कन्] 1 उजाला, कान्ति 2 वीर्य 3 विष्ठा।

वर्चस्विन् (वि०) [वर्चस्+विनि] 1 शक्तिशाली, ओजस्वी, सक्रिय 2 दीप्तिमान, उज्ज्वल, तेजस्वी।

वर्ज् [वृज्+घञ्] छोड़ देना, परित्याग।

वर्जनम् [वृज्+ल्युट्] 1 छोड़ना, त्याग, तिलांजलि 2 वैराग्य 3. अपवाद, बहिष्करण 4 चोट, क्षति, हत्या।

वर्जम् (अव्य०) निकाल कर, बाहर करके, सिवाय (समास के अन्त में), यौवनसौन्दर्यवर्जम् [illegible] कु० [illegible]।

वर्जित (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, अलगाया हुआ 2 परित्यक्त, उत्सृष्ट 3 बहिष्कृत 4 वंचित, विरहित, हीन जैसा कि 'गुणवर्जित' में।

वर्ज्य (वि०) [वृज्+ण्यत्] 1 टाले जाने के योग्य, बिदकाये जाने के योग्य 2 बहिष्कृत किये जाने के योग्य या छोड़े जाने के योग्य 3 छोड़कर, सिवाय के।

वर्ण् (चुरा० उभ० वर्णयति-ते वर्णित) 1 रंग करना, रंगीन करना, रंगना, चमकाना हि भरता वर्णवर्णितस्या-[illegible] सुभा० 2 बयान करना, वर्णन करना, व्याख्या करना, लिखना, चित्रित करना, अंकित करना, निरूपण करना, वर्णित उपदेशेन हरेरिव प्रकारेण —शि० २, कि० ५।१० 3 प्रशंसा करना, स्तुति करना 4 फैलाना, विस्तृत करना 5 रोशनी करना, उप बयान करना, वर्णन करना, **निस्—** 1 ध्यान से देखना, सावधानता पूर्वक अंकित करना 2 देखना, निहारना।

वर्ण: [वर्ण्+घञ्] 1 रंग, रोगन —अन्न कृष्णस्यामपि अचिरात् वर्णमात्रेण कृष्णः —मेघ० ४९, 2 रोगन, रंग, देo वर्ण् (1), 3. रंग, रूप, सौन्दर्य, [illegible] अन्नमवलम्ब शार्ङ्गिणो वर्णचौरे—मेघ० ४६, रघु० ८।४२ 4 मनुष्य श्रेणी, जनजाति या कबीला, जाति (मुख्य रूप से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र वर्ण के लोग) वर्णानामानुपूर्व्येण —मनु० न कश्चित् [illegible] श०० ५।१०, रघु० ५।१९ 5 श्रेणी, वंश, जनजाति, प्रकार, जाति जैसा कि सवर्णम् अक्षरम् में 6 (क) अक्षर, वर्ण, ध्वनि में [illegible] विक्रम० ५ (ख) शब्द, मात्रा —मा० २० ९, 7 ख्याति, कीर्ति, प्रसिद्धि, [illegible] रघु० ६।२१ 8 प्रशंसा 9 वस्त्र, सजावट 10 बाहरी छवि, रूप, आकृति 11 चादर, दुपट्टा 12 हाथी के लिए ढकना, झूल 13 किसी विषय का क्रमपरित में, गीतक्रम [illegible] कु० ५।५६, [illegible] अर्थात् गान का विषय बना हुआ

14. हाथी की झूल 15 गुण, धर्म 16 धर्मानुष्ठान 17 अज्ञात राशि **—र्णम्** 1 केसर, जाफरान 2 रंग दार उबटन या सुगन्धद्रव्य। सम० **—अङ्का** लेखनी **—अपसदः** जातिच्युत **—अपेत** (वि०) जातिशून्य जातिच्युत, पतित **—अर्हः** एक प्रकार का लोबिया **—आगमः** किसी अक्षर का आइना मबेद्वर्णागमाद्धम सिद्धा०, **—आत्मन्** (पुं०) शब्द, **—उदकम्** रंगीन पानी रघु० १६।७० **—कूपिका** दवात **—क्रमः** 1. वर्ण व्यवस्था, रंगों का क्रम 2 वर्णमाला **—चारकः** चितेरा, **—ज्येष्ठः** ब्राह्मण **—तूलि**, **—तूलिका** तूली (स्त्री०) कूची चितेरे का बुश, **—द** (वि०) रंगसाज (**—दम्**) दारुहल्दी **—दात्री** हल्दी **—दूतः** पत्र **—धर्मः** प्रत्येक जाति के विशिष्ट कर्तव्य **—नाशः** किसी अक्षर का लोप हो जाना, **—पुष्पम्** पारिजात का फूल, **—पुष्पकः** पारिजात **—प्रकर्षः** रंग की श्रेष्ठता, **—प्रसादनम्** अगर की लकड़ी, **—मातृ** (स्त्री०) लेखनी, पेंसिल, कूची, **—मातृका** सरस्वती, **—माला**, **—राशिः** (स्त्री०) अक्षरों की यथाक्रमसूची वर्णमाला, **—वर्तिः**, **—वर्तिका** (स्त्री०) रंग भरने की तूलिका **—विपर्ययः** वर्णों का उलट फेर—(भवेत्) सिंहो वर्णविपर्ययात्—सिद्धा० **—विलासिनी** हल्दी, **—विलोडकः** 1 सेंध लगाकर घर में घुसने वाला 2. साहित्य चोर (आ० शब्दचोर), **—वृत्तम्** वर्णों की गणना के आधार पर विनिर्यामित छन्द या वृत्त (विप० मात्रावृत्त), **—व्यवस्थितिः** (स्त्री०) वर्णव्यवस्था, वर्णविभाग, **—शिक्षा** वर्णमाला सिखाना, **—श्रेष्ठः** ब्राह्मण, **—संयोगः** एक ही वर्ण के लोगों में विवाहसंबंध होना, **—संकरः** 1 अन्तर्जातीय विवाह के कारण वर्णों का सम्मिश्रण 2 रंगों का मिश्रण —चित्रेषु वर्णसंकरः —का० (यहाँ, दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) शि० १४।३७, **—संघातः**, **—समाम्नायः** वर्णमाला।

वर्णकः [वर्णयति—वर्ण् + ण्वुल्] 1 मुखावरण, नकाब अभिनेता की वेशभूषा 2 चित्रकारी, चित्रकारी के लिए रंग शि० १६।६२ 3 रंगलेप या कोई उबटन के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तु एतैं पिष्टतमालवर्णकनिभैराक्लिप्तमम्भोधरैः मृच्छ० ५।४६, भट्टि० १९।११ 4 भाट, चारण, स्तुतिगायक 5 चन्दन (वृक्ष)। **—का** 1 कस्तूरी 2 रंगलेप, चित्रकारों के लिए रंग 3. उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा **—कम्** 1 रंगलेप, रंग, वर्ण श० ६।१५ 2 चन्दन 3 परिच्छेद अध्याय, प्रभाग।

वर्णनम्, **—ना** [वर्ण् + ल्युट्] 1 चित्रकारी 2 वर्णन आलेखन, चित्रण स्वभावोक्तिरसौ चारु यथावद्वस्तुवर्णनम् काव्य० १० 3 लिखना 4 वक्तव्य, उक्ति 5 प्रशंसा, स्तुति (—ना केवल इसी अर्थ में)।

वर्णसिः [वृ + असि, नुक्] जल।

वर्णाटः [वर्ण + अट् + अच्] 1 चित्रकार 2 गायक 3 जो अपनी आजीविका अपनी पत्नी के द्वारा करता है, स्त्रीकृताजीव।

वर्णिका [वर्णाः अक्षराणि लेख्यत्वेन सन्त्यस्याः ठन्] 1 अभिनेता की वेशभूषा या नकाब 2 रंग, रंगलेप 3 स्याही मसी लेखनी पेंसिल। सम० **—परिग्रहः** स्वांग भरना या नकाब धारण करना अत्र प्रकरणनायकस्य मालतीरूपधारणे माधवस्य वर्णिकापरिग्रहः कथम् मा० ९।

वर्णित (भू० क० कृ०) वर्ण् +क्त] 1 चित्रित 2 वर्णन किया गया, बखान किया गया 3 स्तुति की गई, प्रशंसा की गई।

वर्णिन् (वि०) [वर्णोऽस्यास्ति इनि (समास के अन्त में प्रयुक्त)] 1 रंग रूप वाला 2 जाति से संबंध रखने वाला पुं० 1 चित्रकार 2 लिपिकार, लेखक 3 ब्रह्मचारी, वै० ब्रह्मचारिन् अथाह वर्णी कु० ५।६९, ५०, वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी विचक्षणः प्रस्तुतमाचचक्षे रघु० ५।१९ 4 इन चार मुख्य वर्णों में से किसी एक वर्ण का व्यक्ति। सम० **—लिङ्गिन्** (वि०) ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण किए हुए, या उसके चिह्नों को धारण करने वाला स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः कि० १।१।

वर्णिनी [वर्णिन् + ङीप्] 1 स्त्री 2 चारों वर्णों में से किसी एक वर्ण की स्त्री 3 हल्दी।

वर्णुः [वृ + णु नित्] सूर्य।

वर्ण्य (वि०) [वर्ण् + ण्यत्] वर्णन करने के योग्य (उपमा और प्रस्तुत शब्दों की भाँति यह 'वर्ण्य' शब्द भी काव्य ग्रन्थों में प्राय प्रयुक्त होता है)। **—र्ण्यम्** केसर, जाफरान।

वर्तः [वृत् + घञ्] (प्राय समास के अन्त में) जीविका, वृत्ति जैसा कि 'कष्टवर्तः' में। सम० **—लोहम्**

वर्तक (वि०) [वृत् + ण्वुल्] जीवित विद्यमान, वर्तमान **—कः** 1 बटेर, लवा 2 घोड़े का सुम **—कम्** एक प्रकार का पीतल या कांसा।

वर्तका, **—की** [वर्तक + टाप्, ङीष् वा] बटेर लवा।

वर्तन (वि०) [वृत् + ल्युट्] 1 टिकाऊ रहने वाला, ठहरने वाला, विद्यमान 2 स्थिर, न टिकना, बौना **—नी** 1 मार्ग, सड़क 2 जीना, जीवन 3 पीसना, चूर्ण बनाना 4 तकुआ **—नम्** 1 ... विद्यमान रहना 2 ठहरना, डटे रहना, निवास करना 3 कर्म, गति, चेष्टा ... इयमसि ... मधुरा ... उत्तर० १।२४ (यहाँ शब्द का अर्थ आवास या निवास भी है) 4 जीवित रहना

जीवनयापन करना (समास के अन्त में) 5 आजीविका, जीवन निर्वाह वृत्ति 6 जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, व्यवसाय 7 चालचलन व्यवहार आचरण 8 मजदूरी वेतन, भाड़ा 9 व्यापार लेन देन 10 तकवा 11 गोलक, गेंद।

वर्तनिः [वर्तन्तेऽस्यां जना वृत् + नि] 1 भारत का पूर्वी भाग, पूर्ववर्ती प्रदेश 2. सूक्त प्रशंसा स्तोत्र —नि: (स्त्री०) मार्ग सड़क।

वर्तमान (वि०) [वृत् + शानच् मुक्] 1 मौजूद विद्यमान 2 जीता हुआ जीवित रहने वाला समसामयिक प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः मालवि० १ 3 घूमना चक्कर काटना, घूम जाना न. (व्या० में) वर्तमान काल—वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा—पा० ३।३।१३१।

वर्तरुकः [वर्त + रा + उक] 1 पानी जोहड़ 2 भँवर चक्कर, जलावर्त 3 कौवे का घोंसला 4 द्वारपाल 5 नदी का नाम।

वर्तिः, —**र्ती** (स्त्री०) [वृत् + इन् या ङीप्] 1 कोई भी लिपटी हुई गोल वस्तु पदार्थ, बत्ती 2. उबटन मल्हम, आँखों का लेप काजल, अंजन (गोली या टिकिया के रूप में) —सा पुनर्मम प्रथमदर्शनात्प्रभृत्यमृतवर्तिरिव चक्षुषोरानन्दमुत्पादयन्ती मा० १, इयम् मूलवर्तिर्नयनयोः उत्तर० १।३८, कर्पूरवर्तिरिव लोचनतापहर्त्री —भामि० ३।१६ विद्ध० १ 3 दीपक की बत्ती मा० १०।४ 4 (कपड़े की) झालर फलके, किनारी 5 जादू का अंजन 6 बर्तन के चारों ओर का उभार 7 जर्राही उपकरण (रक्तनाल आदि) 8. धारी, रेखा।

वर्तिकः [वृत् + तिकन्] बटेर, लवा।

वर्तिका [वृत् तिकन्, टाप्] 1 चित्रेरे की कूँची तूलिका —चित्रफलके चित्रवर्तिकाश्च मा० १, अंगुलिक्षरणसन्नवर्तिकः रघु० १९।१९ 2. दीपक की बत्ती 3 रंग, रंगलेप 4 बटेर, लवा।

वर्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वृत् + णिनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1 रहा रहने वाला, होने वाला, सहारा लेने वाला, टिकने वाला स्थित 2 जाने वाला, गतिशील मुड़ने वाला 3 अभिनय करने वाला, व्यवहार करने वाला 4 अनुष्ठाता, अभ्यास करने वाला।

वर्तिर (**री**) रः [वृत् + इरच्, पक्षे पृषो० दीर्घ] बटेर लवा

वर्तिष्णु (वि) [वृत् + इष्णुच्] 1 चक्कर काटने वाला 2. वर्तमान, बना रहने वाला 3 वर्तुलाकार।

वर्तुल (वि०) [वृत् + उलच्] गोल कुण्डलाकार मण्डलाकार —लः 1. एक प्रकार की दाल मटर 2 गेंद —लम् वृत्त।

वर्त्मन् (नपुं०) [वृत् + मनिन्] 1 रास्ता, सड़क, पथ, मार्ग पगडंडी वर्त्म भानोस्त्यजाशु मेघ० ३९, पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना, स्थलमार्ग से आकाशवर्त्मना 'आकाश के मार्ग में 2. (आलं०) रीति मार्ग, सर्वसम्मत तथा निर्धारित प्रचलन, प्रचलित रीति या आचरण क्रम —मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः भग० ३।२३, रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्, न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः रघु० १।१७ (यहाँ पर शाब्दिक अर्थ भी अभिप्रेत है), अकृपणपन्थाः पुलस्त्यालयं स्थितिः भवति नु कु० ६।२० रखवाले के रूप में 3 स्थान, कम के लिए क्षेत्र न नाम कर्मविदधि प्रदीपलाभ कि० १४।१४ 4 पलक 5 धार, किनारा। सम० पात मार्ग में व्यतिक्रम,—**बन्ध**., **बधक** पलकों का एक रोग

वर्त्मनि.,—**नी** (स्त्री०) सड़क रास्ता।

वर्ध् (चुरा० उभ० वर्धयति—ते, वर्धापयति भी) 1. काटना बाँटना मूँडना 2 पूरा करना।

वर्धः [वर्ध् + अच् घञ् वा] 1. काटना, बाँटना 2 बढ़ाना वृद्धि या समृद्धि करना 3. वृद्धि, बढ़ोतरी, —**र्धम्** 1 सीसा 2 सिंदूर।

वर्धक, **वर्धकि**, **वर्धकिन्** (पुं०) [वृध् + णिच् + ण्वुल्, वर्ध् + कन्, वा, वर्ध् + अच् + कन् + इनि] बढ़ई।

वर्धन (वि०) [वृध् णिच् + ल्युट्] 1 बढ़ने वाला, उगने वाला 2 बढ़ाने वाला, विस्तृत करने वाला, आवर्धन करने वाला —नः 1 समृद्धिदाता 2 वह दाँत जो दाँत के ऊपर उगता है 3 शिव का नाम —नी 1 बुहारी, झाड़ू 2 विशेष आकार का जलघट, —नम् 1 उगना फलना फूलना 2. विकास, वृद्धि, समृद्धि, आवर्धन विस्तार 3 उन्नति 4 उल्लास, सजीवता 5 शिक्षा देना पालन-पोषण करना 6. काटना, बाँटना जैसा कि 'नाभिवर्धनम्' में।

वर्धमान (वि०) [वृध् + शानच्] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला —नः 1 एरंड का पौधा 2 एक प्रकार की पहेली 3 विष्णु का नाम 4 एक जिले का नाम (इसी को लोग वर्धमान बर्दवान मानते हैं) —नः, —नम् 1 एक विशेष सूरत की तश्तरी, ढक्कन 2 एक रहस्यमय रेखाचित्र 3 वह भवन जिसका दक्षिण की ओर कोई द्वार न हो, —ना एक जिले का नाम (वर्तमान बर्दवान)। सम० —पुरम् बर्दवान नामक नगर।

वर्धमानकः [वर्धमान + कन्] एक प्रकार का पात्र, तश्तरी, ढक्कन ढकनी।

वर्धापनम् [वर्धं छेदं करोति वृध् + णिच् + आप ततो भावे ल्युट्] 1 काटना बाँटना 2 नालच्छेदन या

तत्संबंधी कोई संस्कार 3 जन्मदिन का उत्सव 4 कोई सामान्य उत्सव जब समृद्धि की मंगलकामनाएँ तथा बधाइयों की अभिव्यक्ति की जाती है।

र्धित (भू० क० कृ०) [वृध् + णिच् + क्त] 1 विकसित बढ़ा हुआ 2 विस्तृत किया हुआ विशाल बनाया हुआ।

र्धिष्णु (वि०) [वृध् + इष्णुच्] विकसित होने वाला बढ़ने वाला, फलने फूलने वाला।

र्ध्रम् [वृध् + रन्] 1 चमड़े का तस्मा या पट्टी 2 चमड़ा 3 सीसा।

र्ध्रिका, वध्री [वर्ध्र + ङीष्, वध्री + कन् + टाप् ह्रस्व] चमड़े का तस्मा या पट्टी।

वर्मन् (नपुं०) [आवृणोति अनेन—वृ + मनिन्] 1 कवच जिरहबख्तर स्वहृदयमर्माणि वर्म करोति सजलनलिनीदलजालम् गीत० ४ रघु० ४।५६ मुद्रा० २।८ 2 छाल, वल्कल, पुं० क्षत्रियों के नामों के साथ लगने वाला एक प्रत्यय यथा चन्द्रवर्मन् प्रहारवर्मन् पुं० दास। सम० हर (वि०) 1 कवचधारी 2 इतना बड़ा जो कवच धारण कर सके (अर्थात् युद्ध में भाग लेने के योग्य) आन्वयिकमीतिमथ वर्महरं कुमारम्—रघु० ८।९४।

वर्मणः (पुं०) नारङ्गी का पेड़।

वर्मि: (पुं०) मत्स्य विशेष वामी मछली।

वर्मित (वि०) [वर्मन् + इतच्] जिरहबख्तर पहने हुए कवच से सुसज्जित।

वर्य (वि०) [वृ + यत्] 1 चुने जाने या छांटे जाने के योग्य पात्र 2 सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ मुख्य, प्रधान (बहुधा समास के अन्त में) अन्वीरं स कपिवर्यः किरातवर्यं कि० १२।५४,—र्यः कामदेव,—र्या 1 वह कन्या जो स्वयं अपना पति वरण करे 2 कन्या।

वर्वट दे० 'बर्वट'।

वर्वणा दे० 'बर्वणा'।

वर्वर (वि०) [वृ + अरच्, बुट् च] 1 हकलाने वाला 2 बल खाता हुआ, रः 1 बर्बर देश का वासी 2 बुद्धू, प्रलापी मूर्ख 3 आतिथ्य 4 घुंघराले बाल 5 हथियारों की झनकार 6 नृत्य की एक भावमुद्रा, री 1 एक प्रकार की मक्खी 2 वनतुलसी —रम् 1 पीला चन्दन 2 सिन्दूर 3 लोबान।

वर्वरकम् [वर्वर + कन्] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

वर्वरीक [वृ + ईकन्, बुक्, अभ्यासस्य] 1 घुंघराले बाल 2 एक प्रकार की तुलसी 3 एक झाड़ी विशेष।

वर्वु (र्बू) रः [वृ + ऊरच्, पक्षे वस्य वः] एक वृक्ष विशेष बबूल कीकर।

वर्ष,—र्षम् [वृष् भावे घञ् कर्तरि अच् वा] 1 वर्षा, बारिश, वृष्टि की बौछार विद्युत्स्तनितवर्षेषु मनु० ४।१०३ मेघ० ३५ 2 छिड़कना, उण्डेलना बरसना बौछार सुरभि सुरविमुक्तम् पुष्पवर्षं पपात रघु० १२।१०२, इसी प्रकार शरवर्षं शिलावर्षं, यथा लाजवर्ष आदि 3 वीर्यपात 4 वर्ष साल (प्रायः नपुं०) इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रमभ्यस्यतीव व्रतमासिधारम् रघु० १३।६७ न ववर्ष वर्षाणि द्वादश दशशताक्षः दश०, वर्षभोग्येण शापेन मेघ० १ 5 सृष्टि का प्रभाग, महाद्वीप (इस प्रकार के प्रायः नौ महाद्वीप गिनाये गये हैं 1 कुरु 2 हिरण्मय 3 रम्यक 4 इलावृत 5 हरि 6 केतुमाला 7 भद्राश्व 8 किन्नर और 9 भारत) एतद्गुरुगुरुभारभारत वर्षमद्य मम वर्तते वशे शि० १४।५ 6 भारतवर्ष हिन्दुस्तान 7 बादल (हेमचन्द्र के अनुसार केवल पुं०)। सम० अंशः, अंशकः, अंगः महीना मास, अंबु (नपुं०) बारिश का पानी अयुतम् दस हजार वर्ष अर्चिस (पुं०) मंगलग्रह अवसानम् शरद ऋतु अघोष मेंढक, आमदः मोर—उपलः ओला करः बादल, री) झींगुर कोशः,—षः 1 मास महीना 2 ज्योतिषी गिरिः, पर्वतः वर्ष पहाड़ अर्थात् वह पर्वतशृंखला जो सृष्टि के भिन्न भिन्न प्रभागों को एक दूसरे से पृथक् करती है जः (वि०) (वर्षज भी) बरसात में उत्पन्न धरः 1 बादल 2 हिजड़ा अन्तःपुर का रक्षक खोजा मालवि० ४ (इसी अर्थ में वर्षवर शब्द भी है) पूगः वर्षों का समुच्चय प्रतिबन्धः सूखा अनावृष्टि प्रियः चातक पक्षी वरः हिजड़ा अन्तःपुर का रक्षक खोजा वृद्धिः (स्त्री०) जन्मदिन शतम् शताब्दी सौ वर्ष —सहस्रम् एक हजार वर्ष।

वर्षक (वि०) [वृष् + ण्वुल्] बरसने वाला।

वर्षणम् [वृष् + ल्युट्] 1 वृष्टि वर्षा 2 छिड़कना बौछार, (समा० में भी) द्रव्यवर्षणम् धन की बौछार या धन बखेरना।

वर्षणि (स्त्री०) [वृष् + अनि] 1 वृष्टि 2 यज्ञ यज्ञ सम्बन्धी कृत्य 3 क्रिया कर्म 4 टिकना रहना, डटे रहना वर्तन।

वर्षा [वृष् + अच् + टाप्] (प्रायः स्त्री०, ब० व०) 1 बरसात वर्षाऋतु, वर्षावायु ग्रीष्मे पञ्चाग्निमध्यस्थो वर्षासु स्थण्डिलेशयः—याज्ञ० ३।५२, भट्टि० ७।१ 2 बारिश, वृष्टि (इस अर्थ में एक वचन)। सम० कालः बरसात, वर्षाऋतु, इसी प्रकार 'वर्षासमय', कालीन (वि०) वर्षा से उत्पन्न या संबंध रखने वाला भू (पुं०) 1 मेंढक 2 एक कृमि विशेष, इन्द्रगोप, भू, भ्वी (स्त्री०) मेंढकी या छोटा मेंढक रात्रः 1 बरसात की रात 2 बरसात।

वर्षिक (वि०) [वर्ष + ठिकन्] बरसने वाला, बौछार करने वाला कम् अगर की लकड़ी।

वर्षितम [वृष् + क्त] वृष्टि, वर्षा।

वर्षिष्ठ (वि०) [अतिशयेन वृद्ध: वृद्ध + इष्ठन्, वर्षादेश: वृद्ध का उ० अ०] 1 अत्यंत बूढ़ा, बहुत बड़ा 2 अत्यंत बलवान 3 विशालतम, अत्यंत विस्तृत।

वर्षीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [अयमनयोरतिशयेन वृद्ध: वृद्ध + ईयसुन्, वर्षादेश: वृद्ध का म० अ०] 1 अपेक्षाकृत बड़ा, बहुत बूढ़ा 2 अपेक्षाकृत बलवान।

वर्षुक (वि०) (स्त्री०—की) [वृष् + उकञ्] बरसने वाला, ...

वर्ष्मन् (नपुं०) [वृष् + मनिन्] 1 शरीर ... 2 ... 3 ... सुन्दर या मनोहर ...

वह्, वह्, वह्ल, वर्हिण / **वर्हिस्, वर्हिस्** } दे० 'बर्ह, बर्हण, बर्हिण, बर्हिस्'।

वल् (भ्वा० आ० ...) 1 जाना, ...

... (बहुधा ... से संयोजित)।

वल दे० 'बल'।

वलक्ष, दे० 'बलक्ष'।

वलभ, **वलभि** [...] ...

वलम् ... 2 ... 3 ... घूमना ...

वलभि, —**भी** [...] ... (वलभि, ... का प्रयोग भी अनेक बार होता है) 1 ... छप्पर का ढांचा ... 2 (घर का) सबसे ऊंचा भाग ... 3 सौराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत एक नगर का नाम ...

वलय ... 2 ... 4 ...

वलयित (वि०) [वलय + इतच्] घिरा हुआ, ... लपेटा हुआ।

वलाक दे० 'बलाक'।

वलाहक दे० 'बलाहक'।

वलि (स्त्री०) (...—ली भी लिखा जाता है) 1 ... सिकन या झुर्री ... 2 ... के ऊपरी भाग में ... झुर्री, सिकुड़न (विशेष कर स्त्रियों के ... सौन्दर्य का चिह्न समझा जाता है) ... 3 छप्पर की छत की बंडेरी। सम० —**भृत्** (वि०) ... —**मुख**,—**वदन** बंदर ...

वलिक ... छप्पर की छत का किनारा, ओलती।

वलित (भू० क० कृ०) [वल् + क्त] 1 गतिशील 2 ... घूमा हुआ, मुड़ा हुआ 3 घिरा हुआ, लिपटा हुआ 4 झुर्रीदार ...

वलिन (वि०) [...] ... झुर्रीदार, सिकुड़ा हुआ ... जिसमें झुर्रियां पड़ी हुई हों, पिलपिला ...

वलिमत् (वि०) [वलि + मतुप्] झुर्रीदार।

वलिर (वि) [वल् + किरच्] भेंगी आंख वाला, एंचा-ताना, कनखी से देखने वाला।

वलिशम्, —शी [वलि + शो + क, वलिश + ङीष्] मछली पकड़ने का कांटा।

वलीकम् [वल् + कीकन्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती शि० ३।५३।

वलूकः [वल् + ऊक] एक पक्षीविशेष, —कम् कमल की जड़, बिस।

वलूल (वि०) [वल् + लच् ऊङ्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली।

वल्क् (चुरा० उभ० वल्कयति-ते) बोलना।

वल्कः, —कम् [वल् + क कस्य नेत्वम्] 1 वृक्ष की छाल स वल्कवासांसि तवाधुना हरन् करोति मन्युं न कथं धनंजय —कि० १।३५, रघु० ८।११, भट्टि० १०।१ 2 मछली की खाल की परत या पपड़ी 3 भाग, खण्ड। सम० —द्रुमः वृक्षविशेष, लोध्र लोध्र वृक्ष का एक भेद।

वल्कलः, —लम् [वल् + कलच्, कस्य नेत्वम्] 1 वृक्ष की छाल 2. वल्कल से बनाई गई पोशाक छाल से बने वस्त्र—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी श० १।२०, १९, रघु० १२।८, कु० ५।८, हैमवल्कला —६।६, 'मुनहरी छालवस्त्र धारी' (तु० चीरपरिग्रहा कु० ६।९२)। सम० संवीत (वि०) छालवस्त्रधारी।

वल्कवत् (वि०) [वल्क + मतुप्] मछली (जिसके शरीर पर पपड़ी हो)।

वल्कलिः [वल्क् + इलच्] कांटा।

वल्कुटम् (नपुं०) छाल, वक्कल।

वल्ग् (भ्वा० उभ० वल्गति-ते, वल्गित) हिलना-जुलना, जाना, इधर उधर घूमना, शि० १२।२० 2 कूदना उछलना, चौकड़ी भरना, छलांग मार कर चलना, सरपट दौड़ना (आत्म० में भी) -पंच० १।६२ 3. नाचना—भर्तृ० ३।१२५ शि० १८।५३ 4 प्रसन्न होना—भट्टि० १४।२८ 5 खाना, शि० १४।२९, 6. अकड़ कर चलना, डींग मारना—भामि० १।३२।

वल्गनम् [वल्ग् + ल्युट्] उछलना, कूदना, सरपट दौड़ना। रघु० ९।५१।

वल्गा [वल्ग् + अच् + टाप्] लगाम, रास आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते मृच्छ० १।५०।

वल्गित (भू० क० कृ०) [वल्ग् + क्त] 1 कूदा हुआ छलांग लगाई हुई, उछला हुआ 2 प्रदर्शित किया गया, नचाया गया—काव्या० २।३३, —तम् 1 सरपट दौड़, घोड़े की एक प्रकार की दौड़ 2 अकड़ कर चलना, शेखी बघारना, डींग मारना -निर्मिन्नस्पन्दनाङ्कोऽपि गुरुकम्पेव वल्गितम् —शि० २।२७।

वल्गु (वि०) [वल् सवरणे उ गुक् च] 1 प्रिय, सुन्दर, मनोहर आकर्षक रघु० ५।६८, शि० ५।२९ कि० १८।११ 2 मधुर भामि० २।१३६ 3 मूल्यवान्, —ल्गुः बकरा। सम०—पत्रः एक प्रकार की जंगली दाल।

वल्गुक [वल्गु + कन्] मनोहर, प्रिय, सुन्दर—कम् 1 चन्दन 2 मूल्य 3. लकड़ी।

वल्गुलः [वल्गु + उल] गीदड़।

वल्गुलिका [वल्गुल + कन् + टाप् इत्वम्] 1 तेलचोर 2 पेटी, डब्बा।

वल्भ् (भ्वा० आ०) खाना, निगलना।

वल्मिकः,—**वल्मिकिः** (पुं० नपुं०) दे० 'वल्मीक'।

वल्मी [वल् + अच्, मुम्, नि० ङीष्] चिऊंटी। सम० —कूटम् बामी दीमकों द्वारा बनाया मिट्टी का टीला।

वल्मीकः,—**कम्** [वल् + ईक, मुट् च] बामी दीमकों से बनाया गया मिट्टी का टीला, धर्म शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिका मनु०, मेघ० १५ श० ७।११ —कः 1 शरीर के कुछ भागों का सूज जाना हाथी पांव 2 वाल्मीकि कवि। सम० —शीर्षम् एक प्रकार का सुरमा (जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है)।

वल्ल् (ल्यू) [?] (चुरा० पर० वल्लयति) 1 काट डालना 2 निर्मल करना।

वल्ल् (भ्वा० आ० वल्लते) 1 ढकना 2. ढका जाना 3 जाना हिलना जुलना।

वल्लः [वल्ल् + अच्] 1 चादर 2 दो गुञ्जाओं के बराबर भार (वजन) 3 दूसरा बाट जो डेढ़ या दो गुञ्जा के बराबर होता है (आयु० में) 4 प्रतिषेध।

वल्लकी [वल्ल् + वुन् + ङीष्] वीणा अजस्रमास्फालितवल्लकीगुणक्षतोज्ज्वलाङ्गुष्ठनखांशुभिन्नया—शि० १।९, ४।५७ कु० १।८, रघु० ८।४१, १९।१३।

वल्लभ (वि०) [वल्ल् + अभच्] 1 प्यारा, अभिलषित, प्रिय 2 सर्वोपरि—भः 1 प्रेमी, पति मा० ३।८ शि० ११।३३ 2 कृपापात्र, पंच० १।५३ 3. अधीक्षक, अध्यक्षक 4 मुख्य गोप 5 उत्तम घोड़ा (शुभ लक्षणों से युक्त)। सम०—आचार्यः वैष्णव संप्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक का नाम, वाक्ः मार्हिक।

वल्लभायितम् [वल्लभ + क्यङ् + क्त] मुरतानन्द का आसन विशेष, रतिबन्ध, तु० 'पुरुषायित'।

वल्लरम् [?] 1 अगर की लकड़ी 2 निकुञ्ज 3 झुरमुट।

वल्लरी,—**री** (स्त्री०) [वल्ल् अरि वा ङीप्] 1 बेल, लता- प्रतानानिनि वल्लरीषु गाढभरने गमनाय वल्लरी— कु० ४।३१ नवीनवल्लरी मा० ५।६ 2 मञ्जरी।

वल्वजः (स्त्री०—जी) [वल्ल्+वा+क] दे० 'बल्वज' शि० १२।३९।

वल्लिः (स्त्री०) [वल्ल्+इन्] 1 लता, बेल—भुजगवल्लिवलयस्खलद्भुटा जटा मा० १।२ 2. पृथ्वी। सम०—दूर्वा एक प्रकार का घास।

वल्ली (स्त्री०) [वल्लि+ङीष्] बेल फुलावदार पौधा, लता। सम०—अम्ल मिर्च, —वृक्षः साल का वृक्ष।

वल्लूरम् [वल्ल्+ऊरन्] 1 निकुञ्ज पर्णशाला 2. वन स्थली, कुरमुट 3 मञ्जरी 4 अनजुता खेत 5. ऊसर स्थान, जंगल, उजाड़ 6. सूखा मांस।

वल्लूरम् [वल्ल्+ऊरन्] 1. सूखा मांस 2 (ग्रामीण) सूअर का मांस—रम् 1 कुरमुट 2 उजाड़ स्थान 3. अनजुता खेत।

वश् i (भ्वा० आ० वशते) 1 प्रसन्न होना सर्वोत्तम होना 2 झुकना 3. मार डालना, चोट पहुँचाना 4 बोलना 5 देना।

ii (चुरा० उभ० वशयति-ते) 1 बोलना 2 चमकना।

वल्मिक, वल्मीक दे० वल्मिक, वल्मीक।

वश् (अदा० पर० वष्टि, उशित) 1 चाहना, इच्छा करना, लालसा करना—निन्दा वशिष्ठमन्त्र्यर्थे निशात शातम्—शान्ति० २।९, अमी हि वीर्यप्रभवं भवस्य जयाय सेनान्यमुशन्ति देवाः—कु० ३।१५, श० ३।२० 2. अनुग्रह करना 3 चमकना।

वश (वि०) [वश् कर्तरि अप् भावे अप् वा] 1 अधीन प्रभावित, प्रभावगत, नियन्त्रणगत (प्रायः समास में) शोकवश, मृत्युवश आदि 2 आज्ञाकारी, विनीत, अनुवर्ती 3. विनम्र, वशीकृत 4 मुग्ध, आकृष्ट 5. जादू द्वारा वश में किया हुआ, —शः, —शम् 1 अभिलाषा, चाह, इच्छा 2 शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण, स्वामित्व, अधिकार, अधीनता, दीनता, स्ववश 'अपने अधीन' स्वतन्त्र, परवश 'दूसरों के प्रभाव में'—अनयत् प्रभुशक्तिसम्पदा वशमेको नृपतीननन्तरान्—रघु० ८।१९, वशं नी, —आनी अधीन करना, वश में करना, जीत लेना, वशं गम्, —इ,—या, अधीन होना, मार्ग से हट जाना, दब जाना विनीत होना—न मुनेः वश वशिनामुत्तम गन्तुमर्हसि—रघु० ८।१०, वशे कृ या वशीकृ वश में करना, हावी होना, जीत लेना, मुग्ध करना, जादू से वश में करना, वशात् (अव्य०) क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'शक्ति के द्वारा' 'प्रभाव के द्वारा' 'के कारण' 'प्रयोजन से' अर्थ प्रकट करता है, दैववशात्, वायुवशात्, कार्यवशात् आदि 3. पालतू, रहने वाला 4 जन्म, —शः वेश्याओं का वासस्थान, चकला। सम०—अनुग, —वर्तिन् (इसी प्रकार 'वशगत') (वि०) आज्ञाकारी, दूसरे की इच्छा का वशवर्ती, विनीत, अधीन (पु०) सेवक, —आपन्नः सम [illegible] —क्रिया जीतना, अधीन करना —ग (वि०) अधीन आज्ञाकारी भर्तृ० ३।१८ (—गा) आज्ञाकारिणी पत्नी।

वशंवद (वि०) [वश+वद्+खच्, मुम्] आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, अधीन प्रभावित—शा० तथा आत्म०, कोपस्य वि.न् करणीय वशंवदा.नु—भामि० ३।९, २।१४६ ४५३ नै० १।३३, मा इदर्शं गुरुहनंस-[illegible] नागा० ११।

वशका [वश+कै+क, टाप्] आज्ञाकारिणी पत्नी।

वशा [वश्+अच्+टाप्] 1 स्त्री, अबला 2 पत्नी 3 पुत्री [illegible] 5 गाय 6 बाँझ स्त्री 7 बन्ध्या गाय [illegible] स्थानेषु [illegible] प्रियतमा यथा [illegible] विक्रम० ४।२५।

वशि [वश+इन्] 1 अधीनता 2 सम्मोहन, सम्मोहकता (नपुं०) वशता।

वशिक (वि०) [वश+ठन्] शून्य, रहित, —का अगर की लकड़ी।

वशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वश अस्त्यस्य इनि] 1 शक्तिशाली 2 नियन्त्रण में, वशीभूत, अधीन, विनीत 3 जिसने अपनी विषयवासनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है, जितेन्द्रिय (संज्ञा शब्द की भांति भी प्रयुक्त) रघु० २।७०, ८।९० १९।१, श० ५।२८।

वशिनी [वशिन्+ङीप्] शमीनामक जैसी का पेड़।

वशिरः [वश्+किरच्] एक प्रकार की मिर्च, —रम् समुद्रीनमक।

वशिष्ठ दे० वसिष्ठ।

वश्य (वि०) [वश्+यत्] 1 वश में होने के योग्य, नियन्त्रणीय, शासित होने के योग्य—आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति—भग० २।६४ 2 वशीभूत, विजित, सधा हुआ, विनीत—भग० ६।३६ 3 प्रभाव या नियन्त्रण में, अधीन, आश्रित, आज्ञाकारी—वश्य पुत्रा भर्तृहरा गमहो धार्मिकः सुखी। हि० प्र० १८, (प्रायः समास में) (मन) शुचि व्याक्याय समाधि[illegible] कु० [illegible],—श्यः सेवक, आश्रित,—श्या स्त्री या आज्ञाकारिणी पत्नी, व वश्यामिव देवी वाक्यत्येवानुवर्तते उत्तर० १।२ (जिसका भाषा पर पूरा नियन्त्रण है), —श्यम् लौंग।

वश्यका [वश्य+कन्, टाप्] दे० 'वश्या'।

वष् (भ्वा० पर० वषति) क्षति पहुँचाना, चोट मारना, वध करना।

वषट् (अव्य०) [वह्+डषटि] किसी देवता को आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द (देवता के लिए सम्प्र० के साथ) इन्द्राय वषट् पूष्णे वषट्

आदि। सम० **वस्तु** (न०) पुरोहित [illegible] का उच्चारण करके आशीर्वाद देना, **कार** [illegible] शब्द का उच्चारण करना।

वषट् (स्त्री० [illegible]) [illegible]

वष्कय [illegible]

वष्कयणी, वष्कयिणी (स्त्री०) [illegible] [illegible] गाय जिसके बड़ा [illegible] [illegible] बछड़ा [illegible] गया है।

वस [illegible] 1 रहना [illegible] निवास करना [illegible] वास करना (प्राय [illegible] सम० के साथ) [illegible] 2 [illegible] होना [illegible] [illegible] (सम०) बिताना [illegible] आवास देना [illegible] 1 रहना बसना निवास [illegible] प्रियामुखं [illegible] शि० [illegible] 2 [illegible] या अङ्डा पर बैठना [illegible] करना **आ**— (सम० के साथ) निवास [illegible] [illegible] 2 [illegible] 3 व्यय करना (समय) बिताना **उप** 1 रहना ठहरना (इस अर्थ में कर्म० के साथ) 2 [illegible] रखना अनशन करना—मनु० [illegible] में भी) [illegible] **नि**— 1 रहना निवास करना ठहरना [illegible] निवसन्ति [illegible] हरिणा [illegible] सिध्यति [illegible] —भग० [illegible] 2 [illegible] होना विद्यमान होना [illegible] 3 अधिकार करना बसना अधिकार में लेना **निस्**, रह चुकना [illegible] (किसी विशेष काल) का [illegible] तक आना [illegible] निर्वासित करना बाहर निकाल देना [illegible] देना—रघु० १४।६७ **परि**—, 1 निवास करना ठहरना 2 रात बिताना—दे० पर्युषित **प्र**, 1 रहना निवास करना 2 विदेश जाना यात्रा करना घर से बाहर जाना [illegible] करना [illegible] प्रवसन्त्वाय [illegible] मनु० [illegible] रघु० [illegible] (प्रेर०) देशनिकाला देना निर्वासित करना **प्रति**-, निकट रहना पास में होना **वि**, परदेश में रहना (प्रेर०) देश निकाला देना निर्वासित करना भट्टि० ४।३५ **विप्र**, [illegible] करना घर से बाहर जाना रघु० [illegible] **सम्**, 1 रहना निवास करना 2 साथ [illegible] मनु० [illegible] याज्ञ० [illegible] 1 (अदा० आ० वस्ते) [illegible] धारण करना **वसन** [illegible] बसाना [illegible] शि० ९।१६ रघु० [illegible] कु० [illegible] भट्टि० ६।२० **प्र**० [illegible] **नि**, मुसज्जित करना [illegible] **वि**, [illegible] पहनना भट्टि०

[illegible]

[illegible] 1 [illegible]

[illegible]

वसति [illegible] 1 रहना [illegible] वसति [illegible] 2 [illegible] आवास [illegible] [illegible] 3 [illegible] रात [illegible] [illegible] 5 रहने और आराम करने का समय अर्थात् रात्रि [illegible] रघु० [illegible] (वसति [illegible] मल्लि०) उसने रात को विश्राम किया [illegible]

वसनम् [वस [illegible]] 1 रहना निवास करना ठहरना 2 घर निवास स्थान 3 प्रसाधन करना वस्त्र धारण करना कपड़ा पहनना 4 वस्त्र कपड़ा परिधान कपड़े [illegible] बसाना [illegible] मलिनवसने [illegible] 5 करधनी तगड़ी

वसन्त [वस [illegible]] 1 वसन्त ऋतु बहार का मौसम (चैत्र और वैशाख यह दो मास वसन्त ऋतु के होते हैं) [illegible] वसन्त [illegible] सर्व प्रिये चारुतर वसन्ते—ऋतु० [illegible] विहरति हरिरिह सरसवसन्ते गीत० 1 [illegible] कामदेव का साथी माना जाता है [illegible] कु० [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] [illegible] सम० **उत्सव** [illegible] वसन्त ऋतु की रंगरेलियां (यह आनन्दमङ्गल पहले चैत्र की पूर्णिमा को होली—उत्सव के अवसर पर मनाये जाते हैं)

काल [illegible] वसन्त की लहर वसन्त ऋतु घोषित (पुं०) कोयल, [illegible] 1 वासन्ती या माधवी लता 2 वासन्ती [illegible] दे० वसन्तोत्सव तिलक [illegible] वसन्त ऋतु का अलंकार – फुल्लं वसन्ततिलक तिलक [illegible] छंद० [illegible] ([illegible]) एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट [illegible] दूत 1 [illegible] 2 चैत्र का महीना 3 [illegible] आम [illegible] वृक्ष [illegible] का फूल [illegible] आम [illegible] वृक्ष पंचमी माघ शुक्ला पंचमी [illegible] कामदेव के विशेषण

वसा [वस + [illegible]] [illegible] पशुओं के पुट्ठे की चर्बी–[illegible] 2 [illegible]

आढ्य, आढ्यक [illegible] (पुं०) कुत्ता।

वसि [वस + इन्] 1 कपड़ा 2 [illegible]

वसित (भू० क० कृ०) [illegible] पहना हुआ [illegible] किया हुआ 2 [illegible] आदि) [illegible]

वसिरम् [वस [illegible]] [illegible]

वसिष्ठ (वशिष्ठ भी लिखा जाता है) 1 [illegible] मुनि का नाम सूर्यवंशी राजाओं का कुल पुरोहित कई वैदिक सूक्तों के [illegible] विशेष [illegible] सातवें मंडल के [illegible] तथा [illegible] के आदर्श प्रतिनिधि विश्वामित्र ने उनकी [illegible] करने का बहुत प्रयत्न किया और इसी [illegible] सम्बन्धी अनेक उपाख्यान प्रचलित हो गए [illegible] विश्वामित्र 2 स्मृति के प्रणेता का नाम [illegible] ऋषि के नाम पर ही इसका नाम [illegible] लिया जाता है)।

वसु (नपुं०) [वस् उन्] 1 दौलत धन [illegible] [illegible] गुणैकपक्षता वसूपमानस्य [illegible] [illegible] रघु० [illegible] 2 मणि रत्न 3 [illegible] 4 पानी 5 वस्तु द्रव्य 6 एक प्रकार का नमक 7 एक जड़ी–विशेष वृद्धि (पुं०) 1 एक देव समूह (इस अर्थ में ब० व०) जो गिनती में [illegible] आप 2 ध्रुव 3 सोम 4 [illegible] 6 अनल 7 प्रत्यूष और 8 प्रभास कभी [illegible] के स्थान में [illegible] को गिनते हैं [illegible] [illegible] प्रत्यूषश्च प्रभासश्च [illegible] [illegible] 2 [illegible] की संख्या 3 कुबेर 4 शिव [illegible] अग्नि 6 वृक्ष 7 [illegible] 9 [illegible] 1 प्रकाश की किरण [illegible] [illegible] -शि० [illegible]

[illegible] कि० [illegible] अवस्थाओं में [illegible] 12 [illegible] [illegible] ओ (औ) [illegible] 1 इन्द्र [illegible] 2 कुबेर [illegible] [illegible] भूमि [illegible] [illegible] [illegible] देखो [illegible] [illegible] [illegible] प्राण [illegible] स्थली [illegible]

वसु [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

[illegible] स्मृति [illegible]

वसुमत (पुं०) [illegible]

वसुल [illegible]

वसूरा [illegible]

वस्क [illegible]

वस्क्य [illegible]

वस्कयणी [illegible]

वस्करातिका [illegible]

वस्त् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

वस्त [illegible]

वस्तक [illegible]

वसति [illegible] 1 निवास आवास [illegible] नीमा। [illegible] [illegible] का नाम [illegible]

वस्तु [illegible] 2 [illegible]

मृदु वस्तु किमपि मृदुलंवारभ्यो ... रघु० ८।४५ कि ...

वस्तुनीष्टेप्यना ... समाप्त ... वैभव 4 मत ... 5 सामान ... मूलपदार्थ (आलं० ...) ... वस्तुका ... कथवस्तु ...

अभाव 1 ... 2 ... हानि, उत्थापनत ... द्वारा ... उपमा ... का एक भेद ... वस्तूपमेव सा ... उपमा की बात है जहाँ साधारण धर्म ... गया है) उपहित ... व्यवहृत उपयुक्त ... मात्रम् किसी विषय का केवल ... द्वारा (जिस बाद में ...)।

वस्तुतम् (अव्य०) ... 3 इसका ... है कि ...।

वस्त्यम् [वसि ...] ... शि० १३।६१।

वस्त्रम् [वस् + ष्ट्रन्] 1 ... कपड़ा ... 2 ... अगार,—कम् ... की ... कुट्टिमम् ... 2 छतरी ... में ... निर्णेजक ... परिधानम् ... पुत्रिका ... पूत (वि०) ... में छाना हुआ ... वेश्म, ... (न०) ...

वस्नम् ... 2 ... 4 ...

वस्नसा [वस् + मन] कमरबंद पटका या तागड़ी।

वस्मसा [वस् ... इ + टाप्] कण्डरा ...।

वह (चुरा० उभ० वहयति—ते) उज्ज्वल करना ...।

वह (भ्वा० उभ० वहति—ते ऊढ कर्म० उह्यते) 1 ले जाना ... धारण करना वहन करना ... (प्राय दो कर्म० के साथ) ... शि० ११ ... 2 ढोना ... अग्नि या ... रघु० ... ऋतु० ... 5 धारण करना ... अनुभव करना ... 6 विवाह करना ... कु० ५।७० मनु० ३।३८ 7 रखना ... अधिकार में करना ... वहति ... 8 धारण करना प्रदर्शित करना, दिखाना—... 9 सहन करना ... 10 भुगतना, ... 11 (इस अर्थ में तथा ... अर्थों में अकर्मक) धारण किया जाना ले जाया जाना ... बहुत ... 12 (नदी आदि का) बहना ... 13 हवा का) चलना ... (आह्यति ...) 1 ... 2 ... 3 आर पार जाना, पारगमन करना ...

मेघ० ३८ 4 उपयोग करना, ले जाना भट्टि० १४।२३, इच्छा० (विवक्षति ते) ले जाने की इच्छा करना, अति , गुजारना, (समय) बिताना, मुख्य रूप से प्रेर०, मा० ६।१३, रघु० ९।७०, अप—, 1 हाँक कर दूर भगा देना, हटाना, दूर ले जाना रघु० १३। २२, १६।६ 2 छोड़ना, त्यागना, तिलांजलि देना रघु० ११।२५ 3 घटाना, व्यवकलन करना, आ— 1 पूरी तरह समझा देना 2 जन्म देना पैदा करना प्रवण होना या झुकना ...रघु० ११।७३, श० ३।८ 3 वहन करना, कब्जे में करना रखना चौर० १८ 4 बहना 5 प्रयोग करना उपयोग करना (प्रेर०) (देवता का) आवाहन करना उद् । विवाह करना पार्थिवीमुदवह द्रघुद्वह रघु० ११।५० मनु० ३।८ भट्टि० २।०८ 2 ऊपर उठाना उन्नत होना सम्भालना जीवित रखना, ऊँचे उठाना, सहारा देना —रघु० १६।६ भुगतना अनुभव करना 5 अधिकार में करना, रखना, पहनना, धारण करना, कु० १।१९, विक्रम० ४।४२ ७ समाप्त करना, पूरा करना, उप , 1 निकट लाना 2 उपक्रम करना आरम्भ करना नि—, सभाले रखना, जीवित रखना, सहारा देना वेदानुद्धरते जगन्निवहते गीत० १, निस्—, 1 समाप्त होना 2 अवलम्बित होना, की सहायता से निर्वाह करना (प्रेर०) समाप्ति तक ले जाना, पूरा करना, समाप्त करना प्रबंध करना श० ३ परि , छल करना, प्र , वहन करना ले जाना खीचने रहना 2 बह, ले जाना, ले जाना वहन करते जाना—भट्टि० ८।५२ 3 सहारा देना (भार) वहन करना 4. बहना 5 निकलना 6 रखना अधिकार में करना स्पर्श करना या महसूस करना, वि विवाह करना सम्, , 1 ले जाना धारण किये जाना 2 मसलना दबाना दे० प्रेर० 3 विवाह करना दिखाना प्रदर्शित करना प्रस्तुत करना (प्रेर०) मसलना, या मालिश करना श० ३।२१ ।

वह: [वह्+कर्तरि अच्] 1 वहन करने वाला, ले जाने वाला, सहारा देने वाला 2 बैल के कंधे 3 सवारी यान 4 विशेष करके घोड़ा हवा, वायु 6 मार्ग सड़क 7 नद, नाला 8 चार द्रोण की माप ।

वहतः [वह्+अतच्] 1 यात्री 2 बैल ।

वहतिः [वह्+अतिः] 1 बैल 2 हवा, वायु 3 मित्र, परामर्शदाता, सलाहकार ।

वहती, वहा [वहति+ङीप्, वह+टाप्] नदी, सरिता ।

वहतुः [वह्+अतु] बैल ।

वहनम् [वह्+ल्युट्] 1 ले जाना, धारण करना ढोना 2. सहारा देना 3 बहना 4 गाड़ी, यान 5 नाव, डोंगी ।

वहन्तः [वह्+झच्] 1 वायु 2 शिशु ।

वहल (वि०) दे० बहल' ।

वहित्रम्, वहित्रकम् वहिनी [वह्+इत्र, वहित्र+कन वह्+इनि+ङीप्] डोंगी बेड़ा, नाव किश्ती,—प्रत्य वस्यदृश्यत किमपि वहित्रम्—दश०, प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेद विहितवहित्रचरित्रमखेदम् —गीत०१ ।

वहिस् दे० बहिस् ।

वहिष्क (वि०) [वहिस्+कन्] बाहरी, बाह्यपत्रसबधी ।

वहेडक (पु०) बहेड़े का पेड़, विभीतक का वृक्ष ।

वह्नि: [वह्+नि 1 अग्नि आगे पतितो वह्नि स्वयमेवोपशाम्यति सुभा० 2 पाचनशक्ति, आमाशय का रस 3 हाज़मा भूख लगना 4. यान । सम० कर (वि०) अन्तर्दाहक 2 पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला क्षुधावर्धक,—काष्ठम् एक प्रकार की अगर की लकड़ी गन्ध धूप, लोबान, गर्भ 1 बांस 2 शमी या जैंडी का वृक्ष, तु० अग्निगर्भ, दीपक कुसुम का पेड़ भोग्यम् घी -मित्र हवा, वायु रेतस् (पु०) शिव का विशेषण,—लोहम्, लोहकम् तांबा वर्णम् लाल रंग का कुमुद, रक्तोत्पल वल्लभा राल बीजम् 1 सोना 2. चूना—शिखम् 1 केसर 2 कुसुम, सख हवा सज्ञक: चित्रकवृक्ष ।

वह्यम् [वह्+यत्] 1 गाड़ी 2 यान, सवारी —ह्या एक मुनि की पत्नी ।

वह्लिक, वह्लीक दे० बह्लिक, बह्लीक' ।

वा (अव्य०) [वा+क्विप्] 1 विकल्प बोधक अव्यय, या परतु सस्कृत में इसकी स्थिति भिन्न है, या तो यह प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है, अथवा अन्तिम के साथ परन्तु यह वाक्य के आरंभ में कभी प्रयुक्त नही होता ...2 इसके निम्नांकित अर्थ है (क) और भी वायुर्वा दहनो वा—गण०, अस्ति ते माता स्मरसि वा तातम् उत्तर० ४, (ख) के समान जैसा कि ...मन्ये तुहिनमर्थिता पद्मिनी वान्यरूपाम् —मेघ० ८३ मणी वोष्ट्रस्य लबेते सिद्धा० क्रुद्धो गर्जति वातिदर्पितबलो दुर्योधनो वा शिखी मृच्छ० ५।६ मालवि० ५।१२, शि० ३।६३, ४।३५ ९।६४ कि० ३।१३ (ग) विकल्प से (इस अर्थ में बहुधा इसका प्रयोग व्याकरण के नियमों में जैसा कि पाणिनि के सूत्र —होता है) दोषो णौ वा चित्तविरागे पा० ६।४।९० ९१ (घ), सभावना (इस अर्थ में वा बहुधा प्रश्नवाचक सर्वनाम और उससे व्युत्पन्न हुए 'नाम' जैसे शब्दों के साथ जोड़ दिया जाता है तथा 'सभवत या 'कदाचित्' शब्दों से उसे अनूदित किया जाता है कस्य वान्यस्य वचसि मया स्थातव्यम् का०, परिवर्तिनि ससारे मृत को वा न जायते—पंच०

१।२७, (ङ) कभी कभी केवल पादपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है 3 जब वा की पुनरुक्ति की जाती है तो इसका अर्थ होता है 'या—या' 'या तो—या'—शमोत्स वीया वा मूर्तिर्मलमथो मम —कु० २।६१, तत्र परिश्रमानुरोधाद्वा उदात्तकथावस्तुगौरवाद्वा नवनाटक दर्शनकुतूहलाद्वा भवद्भिरवधान दीयमान प्रार्थये विक्रम० १, (अथवा या कुछ-कुछ अन्यथा दे० 'अथ' के नीचे न वा नहीं, न तो न यदि वा अगर अन्यथा, किं वा कि क्या, आया कि आदि।

वा (भ्वा० अदा० पर० वाति वात या वान) 1 हवा का चलना बाता वाता दिशि दिशि न वा सप्तधा सप्तभिन्ना - वेणी० ३।६ विशा प्रसेदुर्मरुतो ववु सुखा —रघु० ३।१४, मेघ० ४२, भट्टि० ७।१ ८।६१ 2 जाना, हिलना-जुलना 3 प्रहार करना चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना प्रेर० (वापयति - ते) 1 हवा चलवाना 2 वाजयति से झूलना आ, हवा का चलना —बद्धा बद्धा भित्तिशाकाममुष्मिन्नाक नावात्मातङ्गिवा निहन्ति —कि० ५।३६, भट्टि० १४।९७, निस् —, 1 बिलना 2 ठंडा होना, शान्त होना, (आल० से भी) वपुर्जलार्द्रापवनैर्न निर्ववौ —शि० १।६५ त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितं सुभा० 3 फूंक मारना, बुझना, निष्प्रभ होना —निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्, निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं सन्धुक्षयतीव वपुर्गुणेन कु० ३।५२, शि० १४।८५, (प्रेर०) 1 फूंक मारना, बुझाना 2 शान्त करना, गर्मी दूर करना, शीतल करना—रघु० ३।११ रघु० १९।५६ 3 रिझाना, सान्त्वना देना, आराम पहुँचाना रघु० १२।६३, प्र वि हवा का चलना —वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणाम् —ऋतु० ६।२३।

वांश (वि०) (स्त्री० शी) [वंश -अण्] बांस का बना हुआ, शी वंसलोचन।

वांशिकः [वंश+ठक्] 1 बांस काटने वाला 2 बांसुरी बजाने वाला, बाँसुरिया।

वाकम् [बक+अण्] सारसों का समूह या उड़ान।

वाकुल दे० 'बाकुल'।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1. वक्तृता वचन, कथन, उक्ति कथन मनु० मे वाक्यम् 'मेरे वचन सुनो', वाक्यं न क्षमिष्यते 'आज्ञा पालन नहीं करता है' —शि० २।२४ 2 बात, उपवाक्य (किसी विचार का पूर्णोच्चारण)—वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः —सा० द० ६, औत्पत्तिकं च नवेहाद्यवे समासौ तद्धितो तथा—काव्य १० 3 तर्क, अनुमान (तर्क में) 4 विधि, नियम, सूत्र। सम०—अर्थः वाक्य का अर्थ, उपमा दण्डी के अनुसार उपमा का एक भेद दे० काव्या० २।४९ आलापः वार्तालाप, बातचीत प्रवचन खंडनम् किसी उक्ति या तर्क का निराकरण पदीयम् भर्तृहरि द्वारा रचित एक पुस्तक का नाम —पद्धतिः (स्त्री०) वाक्य बनाने की रीति, वाक्यविन्यास, रूपरचना —प्रबंधः 1 पुस्तक सबद्ध रचना 2 वाक्य प्रवाह, प्रयोगः वक्तृता को काम में लाना भाषा का उपयोग, भेदः भिन्न उक्ति विभिन्न वक्तव्य मुद्रा० ? रचना, विन्यासः वाक्य में शब्दों का क्रम शब्द योजना, वाक्यरचनाविचार, शेषः 1 किसी बात का अवशिष्ट भाग पूरा न किया गया या अपूर्ण वाक्य सदावकाश हव तं वाक्य शेष विक्रम० ३ 2 ऐन दश वाक्य।

वागर [वाचा इयर्ति गच्छति वाच्+ऋ+अच्] 1 ऋषि मनि पुण्यात्मा 2 विद्वान ब्राह्मण विद्यार्थी 3 शूर वीर सूरमा 4 सान सिल्ली 5 बाधा रुकावट 6 निश्चिति 7 बड़वानल 8 भेड़िया।

वागा (स्त्री०) लगाम।

वागुरा [वा हिंसने उरच् गुक् च] जटकेदार पिंजड़ा, जाल, पाश, फन्दा, जालीदार फन्दा कोवा दुर्जन-वागुराम् पतितं क्षेमेण यान पुमान् —रघु० ११।४६। सम० वृत्तिः जंगली जानवरों को पकड़ कर प्राप्त हुए वाली आजीविका (-त्ति) बहेलिया, शिकारी।

वागुरिकः [वागुरा+ठक्] बहेलिया, शिकारी, हरिण पकड़ने वाला रघु० ९।५३।

वाग्मिन् (वि०) [वाच् अस्त्यर्थे ग्मिनि चस्य कः] 1 वाक्पटु, वाक्चतुर 2 बातूनी 3 शब्दाडम्बरपूर्ण शब्दसमाकुल पु० 1 प्रवक्ता सुवक्ता—अभिलोडिम कार्यस्य कारणं वाग्मिनो वृथा शि० २।२७, १०९ कि० १६।६, पञ्च० ४।८९ 2 बृहस्पति का नाम।

वाग्य (वि०) [वाच् यच्छति—यम्+ड] 1 कम बोलने वाला, मितभाषी 2 सत्य बोलने वाला, ग्यः विनय, नम्रता।

वांकः (पु०) समुद्र।

वांछ् (भ्वा० पर० वांछति) अभिलाषा करना, इच्छा करना।

वाङ्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [वाच्+मयट्] 1 शब्दों से युक्त रघु० ३।२८ 2 वाणी या वचनों से संबन्ध रखने वाला —मनु० १२।६, भग० १७।१५ 3 वाणी से युक्त 4 वाक्पटु अलंकारपूर्ण, वाग्मितायुक्त,—यम् 1 वाणी भाषा—व्यवस्यतत्रभवतीनेदेशिरेविनंचिरमसीवाङ्मयं यास्यं वैतोवतविव विमलता —कम० १ कु० ७।९० शि० २।७२ 2 वाग्मिता 3 आलंकारिक, यी सरस्वती देवी।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप् दीर्घोऽसम्प्रसारणं च] 1 वचन, शब्द, पदावली (विप० अर्थ) वागर्थाविव

संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये —रघु० १।१ 2 वचन, बात, भाषा, वाणी—वाचि पुण्यापुण्यहेतवः —मा० ८, लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते, ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति —उत्तर० १।१०, विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे —कि० १।१०, 'यह वचन कहे', 'निम्नांकित कहा' १४।२, रघु० १।५९, शि० २।१३, २३, कु० २।३ 3 वाणी, शब्द —अशरीरिणी वागुदचरत्—उत्तर० २, मनुष्यवाचा —रघु० २।५३ 4 उक्ति, वक्तव्य 5 भरोसा, प्रतिज्ञा 6 पदोच्चय, कहावत, लोकोक्ति 7 विद्या की देवी सरस्वती। सम० —अर्थः (वागर्थ) शब्द और उसका अर्थ —रघु० १।१, उ० ६०, —आडम्बरः (वागाडम्बर) शब्दाडम्बर, वाग्जाल, —आत्मन् (वागात्मन्) (वि०) शब्दों से युक्त उत्तर० २, —ईशः (वागीश) 1 सुवक्ता, वाक्पटु 2. देवताओं के गुरु बृहस्पति का विशेषण 3 ब्रह्मा का विशेषण —कु० २।३, (—शा) सरस्वती का नाम, —ईश्वरः (वागीश्वर) 1 सुवक्ता, वाक्पटु 2 ब्रह्मा का विशेषण, (—री) वाणी की देवता सरस्वती देवी, —ऋषभः (वागृषभ) बोलने में प्रमुख, वाक्पटु या विद्वान् पुरुष, —कलहः (वाक्कलह) झगड़ा, उत्पात, —कीरः (वाक्कीर) पत्नी का भाई, —गुदः (वाग्गुद) एक प्रकार का पक्षी, —गुलिः, —गुलिकः (वाग्गुलि आदि) राजा का पानदान-वाहक—तु० 'ताम्बूलकरंक वाहिन्', —चपल (वि०) (वाक्चपल) बकवास करने वाला, निरर्थक और असंगत बातें करने वाला, —चापल्यम् (वाक्चापल्यम्) निरर्थक बातें, बकवास, गपशप, —छलम् (वाक्छलम्) शब्दों के द्वारा बेईमानी, टालमटूल उत्तर, गोलमाल—मुद्रा० १, —जालम् (वाग्जालम्) शब्दाडम्बरपूर्ण असार बातें शि० २।२७, —डंबरः (वाग्डंबर) 1 निस्सार उक्ति 2. बड़े बोल, —दंडः (वाग्दण्ड) 1 भर्त्सनापूर्ण वचन, डांट-फटकार, झिड़की 2 बोलने पर नियन्त्रण, शब्दों या वचनों पर रोक —तु० त्रिदंड, —दत्त (वाग्दत्त) (वि०) प्रतिज्ञात, वचनबद्ध, जिसकी सगाई हो चुकी हो, (—त्ता) वचनबद्ध या सगाई हुई कन्या, —दरिद्र (वाग्दरिद्र) (वि०) वचनों में दरिद्र अर्थात् कम बोलने वाला, —दलम् (वाग्दलम्) ओष्ठ—दानम् (वाग्दानम्) सगाई, —दुष्ट (वाग्दुष्ट) (वि०) 1 गाली देने वाला, बदजबान, अश्लीलभाषी 2. व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषा बोलने वाला, (—ष्टः) 1. निन्दक 2. वह ब्राह्मण जिसका उपनयनसंस्कार ठीक समय पर न हुआ हो, —देवता, —देवी (वाग्देवता, वाग्देवी) वाणी की देवता सरस्वती देवी —वाग्देवतायाः सांमुख्यमाधत्ते —मा० द० १, —दोषः (वाग्दोष) 1. (अपविकार) शब्द का उच्चारण वाग्दोषात् गर्दभो हतः —हि० ३ 2 अपशब्द, मानहानि 3 व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषण, —निबंधन (वाग्निबंधन) (वि०) वचनों पर आश्रित रहने वाला, —निश्चयः (वाङ्निश्चय) मुँह के वचन से सगाई, विवाह-संविदा, —निष्ठा (वाङ्निष्ठा) (अपने वचनों या प्रतिज्ञा) के प्रति भक्ति या श्रद्धा, —पटु (वि०) (वाक्पटु) बोलने में कुशल, वाक्चतुर, —पति (वि०) (वाक्पति) वाक्चतुर, अलंकारयुक्त, (तिः) बृहस्पति का नाम (इस अर्थ में 'वाचस्पति' का भी प्रयोग होता है) —पारुष्यम् (वाक्पारुष्यम्) 1 भाषा की कर्कशता 2 शब्दों द्वारा अपमान अपशब्दयुक्त भाषा, मानहानि, —प्रचोदनम् (वाक्प्रचोदनम्) वचनों में अभिव्यक्त किया गया आदेश, —प्रतोदः (वाक्प्रतोद) वचनों द्वारा उकसाना, भड़काने वाली या उपालम्भयुक्त भाषा, —प्रलापः (वाक्प्रलाप) वाग्मिता, —यमनम् (वाग्यमनम्) भाषण बंद करना, चुप करना —भट्टि० १३, —मनसे (द्वि० व०—वाङ्मनसी—वैदिक भाषा में) वाणी और मन, —मात्रम् (वाङ्मात्रम्) केवल वचन, —मुखम् (वाङ्मुखम्) किसी वक्तृता का आरंभ या प्रस्तावना, आमुख, भूमिका, —यत (वि०) (वाग्यत) जिसने अपनी वाणी को नियंत्रित कर लिया है या दमन कर लिया है, मौनी, —यमः (वाग्यमः) जिसने अपनी वाणी को नियंत्रित कर लिया है, मुनि, ऋषि, —यामः (वाग्याम) मूक पुरुष, —युद्धम् (वाग्युद्धम्) शब्दों की लड़ाई, गरमागरम वादविवाद या चर्चा, विवादास्पद विषय, —वज्रः (वाग्वज्र) 1. कठोर (वज्र की भांति) शब्द —[illegible] वाग्वज्रः—उत्तर० १ 2. कठोर भाषा, —विदग्ध (वाग्विदग्ध:) (वि०) बोलने में कुशल (—ग्धा) मधुरभाषिणी और मनोहारिणी, —विभवः (वाग्विभव) शब्दों का भंडार, वर्णनशक्ति, भाषा पर आधिपत्य—मा० १।२६, रघु० १।९, —विलासः (वाग्विलासः) ललित या प्रांजल भाषा, —व्यवहारः (वाग्व्यवहार) मौखिक विचारविमर्श —प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रं किमत्र वाग्व्यवहारेण —मालवि० १, —व्ययः (वाग्व्यय) शब्दों का ह्रास, —व्यापारः (वाग्व्यापार) 1 बोलने की रीति 2. वाक्शैली का अभ्यास, —संयमः (वाक्संयम) भाषण या बोलने पर नियंत्रण

वाचः [वच् + णिच् + अच्] 1. एक प्रकार की मछली 2 मदन नाम का पौधा।

वाचंयम (वि०) [वाचो वाक्यात् यच्छति विरमति—वाच् + यम् + खच् नि० अम्] जिह्वा को रोकने वाला, पूर्ण निःस्तब्धता रखने वाला, चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी —उपस्थिता देवी [illegible]

३, विद्वांसो वसुधातले परवच श्लाघासु वाचंयमा भामि० ४। ४२ रघु० १३।४४ —म: मौन रहने वाला मुनि।

वाचक (वि०) [वक्ति अभिधावृत्त्या बोधयति अर्थान् वच् +ण्वुल्] 1 बोलने वाला घोषणा करने वाला, व्याख्यात्मक 2 अभिव्यक्त करने वाला अर्थ बतलाने वाला प्रत्यक्ष संकेत करने वाला (शब्द के रूप में 'लाक्षणिक' और 'व्यंजक' से भिन्न) दे० काव्य० २ 3 मौखिक—कः 1 वक्ता 2 पाठक 3 महत्त्वपूर्ण शब्द 4 दूत।

वाचनम् [वच्+णिच्+ल्युट्] 1 पढ़ना पाठ करना 2. घोषणा, प्रकथन, उच्चारण जैसा कि स्वस्ति वाचनं 'पुण्याहवाचनम्' में।

वाचनकम् [वाचन+कन्] पहेली बुझौवल।

वाचनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वचनेन निर्वृत्तम् ठञ्] मौखिक, शब्दों में अभिव्यक्त।

वाचस्पति [वाचः पतिः षष्ठ्यलुक्] वाणी का स्वामी देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण।

वाचस्पत्यम् [वाचस्पति+ष्यञ्] वाक्पटुतायुक्त भाषण, वक्तृता प्रभावशाली भाषण तदूराकृत्य कृतिभिर्वा चस्पत्यं प्रतायते शि० ३।१६ (शि० २।३०)।

वाचा [वाच्+टाप्] 1 भाषण 2 धार्मिक ग्रन्थों का पाठ, सूत्र 3 शपथ।

वाचाट (वि०) [वाच् आटच् बहु निन्दितं भाषते] वाचाल, बहुत बातें करने वाला ... —वेणी० ३, महावीर० ५, भट्टि० ... ।

वाचाल (वि०) [वाच्+आलच् बहु वदति] 1 ... हल्लापूर्ण, शब्दायमान ... 2 ... करने वाला, दे० वाचाट शि० ४।४ ...।

वाचिक (वि०) (स्त्री०—की) [वाचा कृतं, वाचा+ठक्, वच् +ठक्] 1 शब्दों से ... अभिव्यक्त ... पारुष्यम् 2 मौखिक ... मौखिक रूप से ... व्यक्त,—कम् 1 संदेश ... —वाचिकमप्यार्येण सिद्धार्थकाच्छ्रोतव्यमिति लिखि तम् मुद्रा० ५ ... वाचिकम् शि० २।७० 2 समाचार, खबर।

वाचोयुक्ति (वि०) [वाचो युक्तिः यस्य ब० स० षष्ठ्या अलुक्] बोलने में कुशल, वाक्पटु —क्तिः (स्त्री०) 'शब्दों का क्रम' घोषणा, अभिज्ञापन, भाषण ... मल्लिष्य वाचोयुक्ति—मा० १।

वाच्य (वि) [वच्+कर्मणि ण्यत्] 1 कहे जाने या बतलाये जाने के योग्य, सम्बोधित किये जाने योग्य—वाच्य स्त्वया मद्वचनात्स राजा—रघु० १४।६१, 'मेरी ओर से राजा को कहिए' 2. अभिधानीय, मुख्यवाचक, विशेषक 3 अभिव्यक्त (शब्दार्थ आदि) तु० लक्ष्य व्यंग्य 4 दूषणीय, निन्दनीय डांटे फटकारे जाने योग्य —शि० २०।६४, कि० ३।१४, —च्यम् 1 कलंक निन्दा, झिड़की प्रमदामनु संस्थितः शुचा नृपतिः सन्निति वाच्यदर्शनात् रघु० ८।७२ ८४, चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः श० ५।१५ शि० ३।५८ 2 अभिव्यक्त अर्थ जो अभिधा द्वारा ज्ञात हो तु० लक्ष्य व्यंग्य अपि तु वाच्यवैचित्र्यप्रतिभासादेव चारुत्वप्रतीतिः—काव्य० १० 3 विधेय 4 क्रिया की वाच्यता (कर्मवाच्य या भाववाच्य)। सम० अर्थः अभिव्यक्त अर्थ—चित्रम् अधम काव्य के दो भेदों में से एक इसमें वाच्य सौन्दर्य चमत्कारपूर्ण तथा शब्दों द्वारा व्यक्त विचारों की अभिव्यंजना में निहित है (चित्र० ...चित्र) दे० 'चित्र' भी —वज्रम् कठोर और कर्कश भाषा।

वाज [वज् गत्यादौ घञ्] 1 बाजू पंख 2 पक्ष 3 बाण का पंख 4 युद्ध लड़ाई 5 ध्वनि —जम् 1 घी 2 श्राद्ध या और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रदान किया गया पिण्ड 3 भोज्यसामग्री 4 जल 5 यज्ञ की पूर्ति का मन्त्र। सम० पेय, यम् एक विशेष यज्ञ का नाम —जः 1 विष्णु का नाम 2 शिव का नाम ... सनि सूर्य

वाजसनेय [वाजसनेः सूर्यस्य छात्रः वाजसनि+ढक्] शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता के प्रणेता याज्ञवल्क्य का नाम

वाजसनेयिन् [वाजसनेय+इनि] 1 शुक्लयजुर्वेद के प्रणेता याज्ञवल्क्य मुनि का नाम 2 ... अनुयायी वाजसनेयि सम्प्रदाय के ...

वाजिन् [वाज+इनि] 1 घोड़ा न मर्दमा वाजि ... रघु० ३।४३ ४।२५ ... 2 बाण 3 पक्षी 4 यजुर्वेद की वाजसनेयी शाखा का अनुयायी। सम० पृष्ठ, शाल- ... —भोजनः एक प्रकार का ... मेध अश्वमेध यज्ञ —शाला अस्तबल, घुड़साल।

वाजीकर (वि०) [वाज+च्वि+कृ+अच्] कामकेल इच्छाओं का उद्दीपक।

वाजीकरण [वाज च्वि+कृ+ल्युट्] कामोद्दीपकों द्वारा कामना ... उद्दीपन करना।

वांछ् (भ्वा० पर० वांछति, वांछित) अभिलाषा करना, चाहना न मृगयाऽऽसन्नं न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्—कि० १।१९, अभि, सम्, कामना करना, अभिलाषा करना, इच्छा करना, —भट्टि० १७।५१।

वांछनम् [वाञ्छ् + ल्युट्] कामना, इच्छा करना ।

वांछा [वाञ्छ् + अ + टाप्] कामना, इच्छा अभिलाषा, वाञ्छा सज्जनसंगमे भर्तृ० २।६२ ।

वांछित (भू० क० कृ०) [वाञ्छ् + क्त] अभीष्ट, इच्छित —तम् अभिलाष, इच्छा ।

वांछिन् (वि०) [वाञ्छ् + णिनि] 1 अभिलाषी 2 विलासी ।

वाट, **टम्** [वट् + घञ्] 1 बाड़ा घिरा हुआ स्थान, अहाता —स्ववाटकुक्कुटविजयहृष्ट —दश० [illegible] प्रकार देश, श्मशान आदि 2 उद्यान उपवन, फलोद्यान 3 सड़क 4 [illegible] 5 [illegible] विशेष । सम० धान ब्राह्मण स्त्री से पतित ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान [illegible] ।

वाटिका [वट् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] 1 [illegible] जहाँ पर कोई भवन बनाना हो 2 [illegible] अयं देशोऽणेन वक्षमानिकामावाप [illegible] 3 इसी प्रकार पुष्प अशोक आदि ।

वाटी [वाट + ङीष्] 1 वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाया है 2 [illegible] आवास स्थान 3 अहाता बाड़ा 4 उद्यान उपवन फलोद्यान वाटीभुवि क्षिति भुजाम आत्म [illegible] 5 सड़क 6 पानी रोकने के लिए लकड़ी के [illegible] का बाँध 7 एक प्रकार का अन्न ।

वाट्या, **वाट्यालक**, **वाट्याली** [वाटी + यत् + टाप्, वाटी + अल् [illegible] वाट्यालय + ङीष्] एक पौधे का नाम अतिबला ।

वाड् (भ्वा० आ० वाडते) स्नान करना, गोता लगाना ।

वाडव [वडवायाः अयम्, वडवा + अण्] 1 [illegible] 2 ब्राह्मण [illegible] [illegible] अग्नि [illegible] समुद्र के [illegible] वाली आग ।

वाडव्य [illegible] ।

वाडव्यम् [illegible] ।

वाढ [illegible] ।

वाण [illegible] ।

वाणि [illegible] ।

वाणिज [illegible] ।

वाणिज्यम् [illegible] ।

वाणिनी [illegible] 2 [illegible] १७२ ।

वाणी [वण् + इञ् + ङीप्] 1 भाषण, वचन, भाषा वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते भर्तृ० २।१९ 2 बोलने की शक्ति 3 ध्वनि, आवाज—वक्रा वाणी मयूरस्य अमर० इसी प्रकार आकाशवाणी 4 साहित्यिक कृति या रचना—मन्दाकिनी मा कुरु विषादमनादरेण मात्सर्यमग्नमनसां सहसा खलानाम् भामि० ४।४१ उत्तर० ७।२१ 5 प्रशंसा 6 विद्या की देवी सरस्वती ।

वात (चुरा० उभ० वातयति–ते) 1 हवा का चलना 2 [illegible] करना, हवा चलाकर करना 3 सेवा करना 4 प्रसन्न करना 5 जाना ।

वात (भू० क० कृ०) [वा + क्त] 1 बहा हुआ 2 इच्छित [illegible] प्रार्थित —तः 1 हवा वायु 2 वायु का देवता, वायु का अधिष्ठात्री देवता 3 शरीर के तीन [illegible] में से एक 4 गठिया सन्धिवात । सम०— अट 1 [illegible] वातहरिणा 2 सूर्य का घोड़ा —अट [illegible] का रोग [illegible] अतिसार, शरीरगत वायु के विकृत होने से उत्पन्न पेचिश —अयनम् पत्ता, अयनः घोड़ा (नम्) 1 खिड़की झरोखा— मा० २।११ कु० ७।५९ रघु० ६।२४ १३।२१ 2 अलिन्द, द्वारमण्डप 3 सड़का मंडप, अयु [illegible] —अरि एरण्ड का वृक्ष [illegible] बहुत तेज चलने वाला घोड़ा [illegible] कस्तूरी [illegible] (स्त्री०) भंवर, आहत (वि०) 1 हवा से हिलाया हुआ 2 गठिया रोग से ग्रस्त आहति (स्त्री०) हवा का प्रचण्ड झोंका, [illegible] (स्त्री०) 1 वायु की अधिकता 2 गदा, मुद्गर लोहे की [illegible] से जटित लाठी, —[illegible] (नपुं०) पाद मारना, कुण्डलिका मूत्ररोग जिसमें मूत्र पीड़ा के साथ बूंद बूंद उतरता है कुम्भः हाथी का [illegible] केतु धूल केलि 1 प्रेमरसयुक्त [illegible] प्रेमियों की कानाफूसी 2 प्रेमी या प्रेमिका के शरीर पर नख क्षत गुल्मः 1 आँधी अंधड़ 2 गठिया ज्वर [illegible] वायु से उत्पन्न बुखार [illegible] पुत्र भीम हनुमान पोथः पोथक [illegible] का वृक्ष [illegible] का पेड़ प्रकोप वायु की अधिकता प्रमी (पुं० स्त्री०) तेज चलने वाला हरिण [illegible] मृग वेग से दौड़ने वाला हरिण [illegible] शाणिनम् [illegible] —रंगः [illegible] का वृक्ष —रूष 1 तूफान प्रचण्ड हवा आँधी 2 इन्द्रधनुष 3 [illegible] रोग —व्याधि गठिया का [illegible] वस्ति (स्त्री०) मूत्ररोकना —वृद्धि (स्त्री०) [illegible] का सूजना शीघ्रम् [illegible] शूलम् उदर पीड़ा के साथ [illegible] सारथि आग ।

वातक [illegible] 1 [illegible] 2 एक पौधे का नाम ।

वातकिन् (वि०) (स्त्री०--नी) [वातोऽतिशयितोऽस्त्यस्य वात+इनि, कुक्] गठिया रोग से ग्रस्त।

वातप्रमीः [वातमभिमुखीकृत्य प्रमिमीते गच्छति—वात+प्र+मा+ईण्, मुम्] तेज दौड़ने वाला हरिण।

वातर (वि०) [वात+रा+क] 1 तूफ़ानी, झंझामय 2 तेज, फुर्तीला। सम०—अयणः 1 बाण 2 बाण की उड़ान, तीर के लक्ष्य तक पहुँचने की दूरी, तीरंदाज 3. चोटी, शिखर 4 भाग 5 पागल या नशे में उन्मत्त पुरुष 6 निठल्ला 7 सरल वृक्ष, चीड़ का पेड़।

वातल (वि०) (स्त्री०-ली) [वातं लाति वात+ला+क] 1. तूफ़ानी झंझामय 2 हवा से फूला हुआ —लः 1 वायु 2 चना।

वातापिः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसको अगस्त्य ने खा कर पचा लिया। सम०—द्विष् (पुं०),—सूदन,—हन् (पुं०) अगस्त्य के विशेषण।

वातिः [वा+तिप्] 1 सूर्य 2. वायु, हवा 3 चन्द्रमा। सम०—गः,—गमः बैंगन ('वातिगम' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है)।

वातिक (वि०) (स्त्री०-की) [वातावात+ठञ्] 1 तूफ़ानी, हवाई, झंझामय 2. गठियाग्रस्त, सन्निपात से पीड़ित 3. पागल,—कः वायु की विकृत अवस्था से उत्पन्न ज्वर।

वातीय (वि०) [वात+छ] हवादार,—यम् भात का मांड।

वातुल (वि०) [वात+उलच्] 1 वायु रोग से ग्रस्त, गठिया पीड़ित 2 पागल, वातप्रकोप के कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो—हि० २।१६,—लः बवंडर।

वातुलिः [वा+उलि, तुट्] बड़ा चमगीदड़।

वातूल (वि०) [वात+ऊलच्] दे० 'वातुल'।

वातृ (पुं०) [वा+तृच्] हवा, वायु।

वात्या [वातानां समूहः यत्] तूफ़ान, अन्धड़, बवंडर, तूफ़ान या झंझामय वायु वात्याभिः पर्वतीकृताः रत्नदीपवरा इतो मुनयः—भामि० १।१३, रघु० ११।१६, शि० ५।३९, वेणी० २।२१।

वात्सकम् [वत्स+वुञ्] बछड़ों का समूह।

वात्सल्यम् [वत्सलस्य भावः ष्यञ्] 1. (अपने बच्चों के प्रति) स्नेह, वत्सलता—कुमारस्ते—न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति—कु० ५।१४, पतिवात्सल्यात्—रघु० १५।९८, इसी प्रकार भार्या° प्रजा° शरणागत° आदि 2 वात्सल्य या पक्षपात।

वाद्धिकः,-की (स्त्री०) शूद्र स्त्री की ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न पुत्री।

वात्स्यायनः [वत्सस्य गोत्रापत्यम्—वत्स+यञ्+फक्] 1 कामसूत्र (रतिशास्त्र पर लिखा गया एक ग्रन्थ) के प्रणेता 2 न्यायसूत्र पर लिखे गये भाष्य के प्रणेता।

वादः [वद्+घञ्] 1 बातें करना, बोलना 2 भाषण, कथन, बात—सत्यवादी मर्कोपत्य तथ्यं प्रस्तुत दीपिका —शि० २।५५, इसी प्रकार 'वीतवचाद'—रति० ८, मालवाद आदि 3 वक्तव्य, उक्ति आरोप—अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः—भग० २।३६ 4 वर्णन, वृत्त—शाकुन्तलादीनां व्याख्यानम् मा० ३।३ 5 विचार विमर्श, विचार, वादविवाद, तर्क वितर्क—वादे वादे जायते तत्त्वबोधः—सु० १०, योगा० मनु० ८।२६५ 6 उत्तर 7 विधि, व्याख्या 8 प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धान्त, रस, इत्यादि पर शास्त्रकारों के विभिन्न मतों पर। 9 ध्वनि, ध्वनि 10 किंवदन्ती, अफ़वाह 11 (विधि में) अभियोग नालिश। सम०—अनुवादौ (पुं० द्वि० व०) 1 उक्ति और उत्तर, अभियोग तथा उसका उत्तर, दोषारोपण तथा उसका बचाव 2 वादविवाद, शास्त्रार्थ,—कर,—कृत् (वि०) विवाद करने वाला,—ग्रस्त (वि०) विवादास्पद विवादग्रस्त—वादग्रस्तोऽयं विषयः,—पटु (वि०) तर्कसंगत उत्तर देने में निपुण, प्रतिवादी, प्रतिवाद शास्त्रार्थ,—युद्धम् विवाद, तर्कवितर्क, विवादः तर्कवितर्क, विचारविमर्श, वाक्प्रतियोगिता।

वादकः [वद्+णिच्+ण्वुल्] बजाने वाला।

वादनम् [वद्+णिच्+ल्युट्] 1 ध्वनि करना 2 बाजा बजाना।

वादर (वि०) (स्त्री०-री) [बदराया कार्पास्याः विकारः बादर+अण्] कपास से युक्त या कपास से निर्मित,—रः कपास का पौधा,—रम् सूती कपड़ा।

वादरंगः [वादर+गम्+खच् मुम्] पीपल का पेड़, गूलर का वृक्ष।

वादरायण दे० 'बादरायण'।

वादालः [वाद+आ+ला+क, पृषो०] अयंग मछली।

वादि (वि०) [वादयति व्यक्तमुच्चारयति+वद्+णिच्+इञ्] बुद्धिमान् विद्वान्, ज्ञानी।

वादित (भू० क० कृ०) [वद्+णिच्+क्त] 1 उच्चरित करवाया गया, बुलवाया गया 2 बजाया गया ध्वनि किया गया।

वादित्रम् [वद्+णित्र] 1 बाजा नै० २२।२२ 2 संगीत।

वादिन् (वि०) [वद्+णिनि] 1. बोलने वाला, बातें करने वाला; प्रवचन करने वाला 2 दृढ़तापूर्वक कहने वाला 3 तर्कवितर्क करने वाला, विवादी मुद्रा० ५।१०, रघु० १०।१२ 3 दोषारोपण करने वाला अभियोक्ता 4 (अभिनय का) प्रतिपादक।

वादिश. (पुं०) विद्वान् पुरुष, ऋषि विद्याव्यसनी।

वाद्यम् [वद्+णिच्+यत्] 1 बाजा 2 बाजे की ध्वनि रघु० १९।६४, (वाद्यध्वनि मन्त्रि)। सम० —**कर:** सङ्गीतज्ञ —**भाण्डम्** 1 बाजों का समूह बाद्य यन्त्रों का ढेर 2 मृदंग आदि बाज।

वाध्, **वाध**, **वाधक**, **वाधन-ना**, **वाधा** दे० 'बाध्' बाध, बाधना-ना, बाधा।

वाधू (धू) यम् [वधू (धु) + यत् कुक्] विवाह।

वाध्रीणस: [=वार्ध्रीणस पृषा०] गैंडा।

वान (वि०) [वन्+अण्] 1 सिला हुआ 2 (हवा से) सूखा हुआ, शुष्क 3 जंगली —**नम्** 1 सूखा फल (पु० भी) 2 (हवा का) चलना 3 सीना 4 गुदगुदाना, हिलना-जुलना 5 गन्ध द्रव्य, खुशबू 6 वृक्षों का समूह या झुरमुट 7 बुनना 8 तिनकों से बनी चटाई 9 घर की दीवार में छिद्र।

वानप्रस्थ: [वने वनसमूहे प्रतिष्ठते स्था+क] 1 अपने धार्मिक जीवन के तीसरे आश्रम में प्रविष्ट ब्राह्मण 2. वैरागी, साधु 3 मधूक वृक्ष 4 पलाश वृक्ष ढाक।

वानर: [वानं वनसम्बन्धि फलादिकं राति गृह्णाति रा+क वा विकल्पेन नरो वा] बन्दर, लंगूर। सम० —**अक्ष:** जंगली बकरा —**आघात:** लोध्र नामक वृक्ष —**इन्द्र:** सुग्रीव या हनुमान् —**प्रिय:** खिरनी (क्षीरिन्) का पेड़।

वानल: [वानं वनजातं निर्गन्धता लाति ला+क] तुलसी का पौधा (काली तुलसी)।

वानस्पत्य: [वनस्पति+ष्यञ्] वह वृक्ष जिसका फल उसकी मञ्जरी से उत्पन्न होता है, उदा० आम का पेड़।

वाना [वान+टाप्] बटेर, लवा।

वानायु [वनायु पृषा०] भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित देश। सम० —**ज:** वनायु घोड़ा अर्थात् वनायु देश में उत्पन्न घोड़ा।

वानीर: [वन्+ईरन्+अण्] एक प्रकार का बेंत—स्मरामि वानीरगृहेषु सुप्त: रघु० १३।३५, मेघ० ४१ मा० ९।१५ रघु० १६।३०, १६।२१।

वानीरक: [वानीर+कन्] मुञ्ज नामक घास, एक प्रकार का नड़।

वानेयम् [वन+ढञ्] एक सुगंधित घास, मोथा।

वान्त (भू० क० कृ०) [वम्+क्त] 1 कै की गई, थूका गया 2 उगला गया, प्रक्षिप्त, उड़ेला हुआ। सम० —**अद:** कुत्ता।

वान्ति: (स्त्री०) [वम्+क्तिन्] 1 वमन 2 प्रक्षेप, उगाल। सम० —**कृत्** वमन कराने वाला।

वान्या [वन+यत्+टाप्] जंगलों या उपवनों का समूह।

वाप: [वप्+घञ्] 1 बीज बोना 2 बुनना 3 क्षौरकर्म करना, बाल मूंडना मनु० ११।१०८। सम० —**दण्ड:** जुलाहे का करघा।

वापनम् [वप्+णिच्+ल्युट्] 1 बुआना 2 मुंडन, क्षौर।

वापित (भू० क० कृ०) [वप्+णिच्+क्त] 1. बोया हुआ 2 मूंडा हुआ।

वापि:, —**पी** (स्त्री०) [वप्+इञ् वा ङीप्] कुआँ बावड़ी पानी का विस्तृत आयताकार जलाशय वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा मेघ० ७६। सम० —**हः** चातक पक्षी।

वाम (वि०) [वम्+ण, वा+मन् वा] 1 बायाँ (विप० दायाँ) विलोचनं दक्षिणमञ्जनेन संभाव्य तद्वञ्चितवामनेत्रा—रघु० ७।८ कु० ७।८२ 2 बाईं ओर स्थित या विद्यमान—वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्ध:—मेघ० ९ (वामेन क्रिया विशेषण के रूप में इसी अर्थ का प्रकट करता है) मद: वामेनात्र वटस्तमध्वगजन: सर्वात्मना सेवते काव्य० १०) 3 (क) उलटा, विरुद्ध विरोधी विपरीत, प्रतिकूल तदहो कामस्य वामा गति: गीत० १२ मा० ९।८, भर्तृ० ६।१७ (ख) विरुद्ध-कार्य करने वाला, विपरीत प्रकृति का श० ४।१८ (ग) कुटिल, वक्रप्रकृति दुराग्रही, हठी, श० ६ 4. दुष्ट दुर्वृत्त अधम नीच कमीना कि० ११।२४ 5 प्रिय सुन्दर लावण्यमय जैसा कि 'वामलोचना', —**म:** 1 सजीव प्राणी, जन्तु 2 शिव 3 प्रेम का देवता कामदेव 4 सांप 5 औड़ी, ऐन स्तन की छाती, —**मम्** धनदौलत, जायदाद। सम० —**आचार:**, —**मार्ग:** तांत्रिक मत में प्रतिपादित अनुष्ठानपद्धति, —**आवर्त:** शंख जिसका घुमाव दाईं ओर से बाईं ओर का गया हो, —**उरु**, —**ऊरू** (स्त्री०) सुन्दर जंघाओं वाली स्त्री, —**दृश्** (स्त्री) (मनोहर आँखों से युक्त) स्त्री, —**देव:** 1 एक मुनि का नाम 2. शिव का नाम, —**लोचना** मनोहर आँखोंवाली स्त्री—विरूपाक्षस्य जयिनीस्ता: स्तुमो वामलोचना:—काव्य० १०, रघु० १९।१३, —**शील** (वि०) कुटिल या वक्र प्रकृति का (—**ल:**) कामदेव का विशेषण।

वामक (वि०) [वाम+कन्] 1 बायाँ 2. विपरीत, विरुद्ध मा० १।८ (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं)।

वामन (वि०) [वम्+णिच्+ल्युट्] 1 (क) कद में छोटा, ठिगना, बौना —**कलवामनम्** शि० १३।१२ (ख) (अत:) स्वल्प ह्रस्व थोड़ा, लंबाई में कम—वामनार्चिरिव दीपभाजनम् रघु० १९।५१ क्रम क्रम तानि (दिनानि) च वामनानि—नै० २२।५७ 2 विनत, नम्र —शि० १३।१२ 3. दुष्ट नीच, ओछा, —**न:** बौना, ठिगना—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामन: रघु० १।३, १०।६० 2 विष्णु का पाँचवाँ अवतार जब उन्होंने बलि राक्षस का विनाश करने के लिए बौने के रूप में जन्म लिया, (दे० बलि)—छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन पदनखनीरजनितजनपावन

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे गीत० १ 3 दक्षिण दिशा का दिक्पाल हाथी 4 पाणिनि के सूत्रों पर काशिकावृत्ति नामक भाष्य के प्रणेता 5 अंकोट नामक वृक्ष। सम० आकृति (वि०) ठिगना, पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वामनिका [वामनी + कन् + टाप् ह्रस्व] ठिगनी स्त्री

वामनी [वामन + ङीप्] 1 बौनी स्त्री 2 घोड़ी 3 एक स्त्रीविशेष।

वामलूर [वाम + लू + रक्] बांबी दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का ढेर।

वामा [वामति सौन्दर्यम् वम् + अण + टाप्] 1 स्त्री 2 मनोहारिणी स्त्री- नामि० ४।३१ ८२ 3 गौरी 4 लक्ष्मी 5 सरस्वती।

वामिल (वि०) [वाम + इलच्] 1 सुन्दर मनोहर 2 घमंडी, अहंकारी 3 चालाक कपटपूर्ण।

वामी [वाम + ङीष्] 1 घोड़ी—अधोदृवामीशतवाहितार्थं रघु० ५।३२ 2 गधी 3 हथिनी 4 गीदड़ी।

वाय [वे + घञ्] बुनना सीना। सम०—**दण्ड** जुलाहे का करघा।

वायकः [वे + ण्वुल्] 1 जुलाहा 2 ढेर समुच्चय संग्रह।

वायनम्, वायनकम् [वे + णिच् + ल्युट् वायन + कन्] नैवेद्य, उत्सव के अवसर पर किसी देवता या ब्राह्मण को दिया गया मिष्टान्न उपवास रखना आदि।

वायव (वि०) (स्त्री०—**वी**) [वायु + अण्] वायु से सबद्ध या प्राप्त 2 हवाई।

वायवीय, वायव्य (वि०) [वायु + छ यत् वा] हवा से सम्बन्ध रखने वाला हवाई। सम० **पुराणम्** एक पुराण का नाम।

वायसः [वयांसि एव स्वार्थे] 1 कौवा बलिमिव परिमोक्तुं वायसास्तर्कयन्ति मृच्छ० १०।३ 2 सुगन्धित अगर की लकड़ी अगुरुकाष्ठ 3 तारपीन। सम०—**अराति** अरि उल्लू, **आह्वा** एक प्रकार अक्षय शाक —**इक्षुः** एक प्रकार का लम्बा घास।

वायुः [वा उण् युक् च] 1 हवा पवन —वायुर्विघूनयति चम्पकपुष्परेणून् कवि० (इसका उत्पत्ति के लिए दे० मनु० १।७६ सात पवनमार्ग हैं आवह प्रवह संवह उद्वहस्तथा विवहाख्यः परिवहः परावह इति कमात्) 2 वायुदेवता पवनदेवता 3 जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण पांच प्रकार का वायु गिनाया गया है प्राण अपान समान व्यान और उदान 4 वात प्रकोप, वातरोग से ग्रस्त होना। सम० **आस्पदम्** आकाश, अन्तरिक्ष **केतुः** धूल **कोण** पश्चिमोत्तर कोण,—**गण्डः** अफारा (जो अपच के कारण हुआ हो),—**गुल्मः** 1 आँधी तूफ़ान 2 भंवर जलावर्त पवन का परास, —**ग्रस्त** (वि०) 1 वातरोग से ग्रस्त जिसे अफारा हो गया हो 2 गठिया रोग से ग्रस्त **जात** **तनयः**, **नन्दनः** **पुत्रः**, **सुतः**, **सूनुः** हनुमान या भीम के विशेषण, **दारु** **वाहनः** —**निघ्न** (वि०) वात प्रकोप से पीड़ित सनकी पागल, उन्मत्त —**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक **फलम्** 1 ओला 2 इन्द्रधनुष **भक्ष**, **भक्षण** भुज (पु०) 1 जो केवल वायु पीकर रहे, सन्यासी 2 साँप—**मं०** पवना शन **राशि**, **रुग्ण** (वि०) वायुप्रकोप के कारण अस्वस्थ रघु० ९।६२—**वर्त्मन्** (पु०, नपु०) आकाश अन्तरिक्ष **वाह** धुआं **वाहिनी** शिरा धमनी, शरीर की नाड़ी **वेग**, **सम** (वि०) पवन की भांति तेज **सख** **सखि** (पु०) आग।

वार (नपु०) [वृ णिच् क्विप्] जल भामि० १।३। सम०—**आशयम्** जलाशय किटि (वा किटि) मत्स्य **ज** ह सिर्ती या हुस **व** वल्क **वरम्** 1 जल 2 रेशम 3 मालाग 4 आम का बीज 5 घोड़े के गरदन की भौरी 6 शाल **धि** समुद्र **भवम्** एक प्रकार का नमक **पुष्पम्** (वा पुष्पम्) **लौङ**—**भव** मगरमच्छ घड़ियाल **मुच्** (पु०) बादल **राशि** समुद्र **वह** किश्ती नाव **सदनम्** (वा सदनम्) जलाशय टंकी **स्थ** (वि०) (वा स्थान) जल में विद्यमान।

वारः [वृ घञ्] 1 आवरण चादर 2 समुदाय बड़ी संख्या जैसा कि वारयुवति में 3 ढेर परिमाण 4 रेवड़ लहंडा शि० १८।५६ 5 सप्ताह का एक दिन यथा बुधवार शनिवार 6 समय बारी वारा कस्य वारः समायातः पञ्च० १ रघु० ११।१८ अंग्रेजी के 'टाइम्ज' Time शब्द की भांति बहुधा ब० व० में प्रयुक्त **बहुवारान्** बहुत बार कतिवारान् (कितनी बार) 7 अवसर मौका 8 दरवाजा फाटक 9 नदी का सामने का तट 10 शिव **म्** 1 मदिरा पात्र 2 जलौघ जल का ढेर। सम० **अंगना**—**नारी**, **मुख्या** (वस्ता०) **वनिता** (स्त्री०) **वनिता**, **विलासिनी** **सुन्दरी**—**स्त्री** गणिका बाजारू स्त्री वेश्या रण्डी रखैल रघु० १९।२६ शृंगार० १६, **कीर** 1 पत्नी का भाई साला (त्रिका० के अनुसार) 2 बड़वाग्नि 3 कंघी 4 अ 5 युद्ध का घोड़ा (यह अर्थ मेदिनीकोश में दिया हुआ है) **बु** (**बु**) या कोई वा वृक्ष **मुख्या** प्रधान वेश्या वा (वा) स **अधबन्धक** शिर **बन्धाः** रघु० ४।८ **वाणि** 1 बांसुरिया मुरली बजाने वाला 2 वादित्र कुशल 3 वर्ष 4 न्यायाधीश (- णि) वेश्या, **वाणी** **बंधः** **सैवा** 1 वेश्यावृत्ति, रंडी का व्यवसाय 2 वेश्याओं का समुदाय।

वारक (त्रि०) [वृ णिच् + ण्वुल्] रुकावट डालने

वाला, विरोध करने वाला, —कः 1 एक प्रकार का घोड़ा 2 सामान्य घोड़ा 3 घोड़े का कदम, —कम् 1. पीड़ा होने का स्थान 2 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, ह्रीबेर।

वारकिन् (पु०) [वारक + इनि] 1 विरोधी, शत्रु 2. समुद्र 3 शुभ लक्षणों से युक्त एक घोड़ा 4 वह संन्यासी जो केवल पत्ते खाकर रहता है।

वारंकः (पु०) पक्षी।

वारंगः [वृ + अंगच्, णित्] किसी चाकू या दस्ता या तलवार की मूठ।

वारटम् [वृ + णिच् + अटन्] 1 खेत 2 खेतों का समूह, —टा हंसिनी।

वारण (वि०) (स्त्री० —णी) [वृ + णिच् + ल्युट्] हटाने वाला, मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, —णम् हटाना, रोकना, अड़चन डालना, न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् भर्तृ० २।१७ 2 रुकावट, विघ्न 3 मुकाबला विरोध 4 प्रतिरक्षा, सुरक्षा, प्ररक्षा, —णः 1 हाथी —न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् भर्तृ० २।१७, कु० १।३७, रघु० १२।९३, शि० १८।५६ 2 कवच, जिरहबख्तर। सम० —बुसा, —सा, —वल्लभा केले का वृक्ष, —साह्वयम् हस्तिनापुर का नाम।

वारणसी दे० 'वाराणसी'।

वारणावत (पु०, नपुं०) एक नगर का नाम।

वारतम् [वरता + अण्] चमड़े का तस्मा।

वारंवारम् (अव्य०) [वृ + णमुल् द्वित्वम्] प्रायः, बहुधा, बार बार, फिर फिर वारंवारं तिरयति दृशोरुद्गमं बाष्पपूरः मा० १।३५।

वारटा [वार + स्था + क + टाप्] 1 वर्र, भिड़ 2 हंसिनी, तु० 'वरटा'।

वाराणसी [वरणा च असी च तयोः नद्योरदूरे भवा इत्यर्थे अण् + ङीप्, पृषो० साधुः] बनारस का पावन नगर।

वारांनिधिः [वारां जलानां निधिः, षष्ठ्यलुक् स०] समुद्र।

वाराह (वि०) (स्त्री० —ही) [वराह + अण्] सूअर से सम्बद्ध, मुद्रा० ८।१९, याज्ञ० १।२५९, —हः 1. सूअर 2 एक प्रकार का वृक्ष। सम० —कल्पः वर्तमान कल्प (जिसमें हम रह रहे हैं) का नाम, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक।

वाराही [वाराह + ङीप्] 1. सूअरी 2 पृथ्वी 3. 'वराह' के रूप में विष्णु भगवान की शक्ति 4. माप। सम० —कंदः महाकंद, गेंठी।

वारि (नपुं०) [वृ + इञ्] 1 जल यथा अवमत्य तितिक्षेत नरो वारिमिवाञ्जलिः सुभा० 2 तरल पदार्थ 3 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, ह्रीबेर, —रिः, —री (स्त्री०) 1. हाथी को बांधने का रस्सा वारी वारि-स्तम्भे वारणानाम् शि० १८।५६ रघु० ५।४५, 2 हाथी को बांधने का रस्सा 3 हाथियों को पकड़ने का गढ़ा या पिंजरा 4 बंदी, कैदी 5 जलपात्र 6 सरस्वती का नाम। सम० —ईशः समुद्र, —उद्भवम् कमल, —ओकः जोंक, —कर्पूरः एक प्रकार की मछली, इल्लीश, —कुब्जकः सिंघाड़ा शृंगाटक का पौधा —क्रिमिः जोंक —चत्वरः जलाशय —चर (वि०) जलचर (—रः) 1 मछली 2 कोई जलजन्तु —ज (वि०) जल में उत्पन्न, (—जः) 1 शंख शि० १५।३४ 2 कोई घोंघा, सिप्पी (—जम्) 1 कमल शि० ४।६६ 2 एक प्रकार का नमक 3 एक प्रकार का पौधा, गौरसुवर्ण 4 लौंग, —तस्करः बादल, —त्रा छतरी, —दः बादल —तिमिरं वारिदवारिदस्यामुरे —मृच्छ० ५।—, मालवि० १।३० (—दम्) एक प्रकार का गन्धद्रव्य, —द्रः चातक पक्षी —धरः बादल—नवधारिधराच्छयाद्दहोनिर्मलनिभः च निशानवल्लकरमुद्रे —विक्रम० ४।३ —धारा वृष्टि की बौछार, —धिः समुद्र—वारिधिसुतामक्ष्णां दिदृक्षु जनैः —गीत० १२, —नाथः 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण 3 बादल, —निधिः समुद्र, —पथः, —थम् 'समुद्र यात्रा' जलयात्रा, —प्रवाहः झरना, जलप्रपात, —मसिः, —मुच्, —रः बादल, —यंत्रम् जलघटिका, रहट। मालवि० २।१३, —रथः डोंगी, नाव, घड़नई, —राशिः 1. समुद्र सरोवर, —रुहम् कमल, —वासः कलाल, शराब बेचने वाला, —वाहः, —वाहनः बादल, —शः विष्णु का नाम —संभवः 1. लौंग 2. अंजनविशेष 3. खस की सुगन्धित जड़, उशीर।

वारित (भू० क० कृ०) [वृ + णिच् + क्त] 1. हटाया हुआ, मना किया हुआ, रोका हुआ 2 परिरक्षित प्ररक्षित।

वारी दे० (स्त्री०—वारि)।

वारीटः [वारी + इट् + क] हाथी।

वारुः [वारयति रिपून् वृ + णिच् + उण्] विजयकुंजर, जंगी हाथी।

वारुटः (पु०) अरथी, (वह टिकटी जिस पर शव रख कर श्मशानभूमि में ले जाया जाता है)।

वारुण (वि०) (स्त्री०—णी) [वरुणस्येदम्—अण्] 1 वरुण-संबंधी 2 वरुण को सादर समर्पित 3. वरुण की दिया हुआ, —णः भारतवर्ष के नौ प्रभागों या खण्डों में से एक, —णम् पानी।

वारुणिः [वरुण + इञ्] 1 अगस्त्य मुनि 2 भृगु।

वारुणी [वारुण + ङीप्] 1 पश्चिम दिशा (वरुण के द्वारा अधिष्ठित दिशा) 2. कोई मदिरा—मद्योपि वौश्चिकीहव्ये वारुणीर्यामयोगने कि० ३।११, रघु० ११।५०

(यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) कु० ४।१२ 3 शतभिषज् नामक नक्षत्र 4 एक प्रकार का घास दूब। सम०—**वल्लभ** वरुण का विशेषण।

वारक [वृ+णिच्+ईक] नाग जाति का प्रधान —**कम्** 1 आँख का मैल या कीचड़ 2 कान का मैल 3 नाव में से पानी उलीच कर बाहर निकालने का बर्तन।

वारेन्द्री बंगाल के एक भाग का नाम, वर्तमान राजशाही।

वार्क्ष (वि०) (स्त्री०—र्क्षी) [वृक्ष+अण्] वृक्षों से युक्त —**र्क्षम्** जंगल।

वार्णिकः [वर्ण+ठञ्] लिपिकार, लेखक।

वार्ताक, वार्ताकि (स्त्री०) **वार्ताकिन्** (पुं०), **वार्ताकी** (स्त्री०) **वार्ताकु** (पुं० स्त्री०) [वृत+काकु अस्य वृद्धिश्च वातांक इञ् इनि वा वृत+काकु ईत्वं वृद्धिश्च वृत+काकु वृद्धि] बैंगन का पौधा।

वार्तिका (स्त्री०) बटेर, लवा।

वार्त (वि०) [वृत्ति+अण्] 1 स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त 2 हलका, कमज़ोर, सारहीन 3 व्यवसायी —**र्तम्** 1. कल्याण, अच्छा स्वास्थ्य, सर्वत्र नो वार्तमवेहि राजन् रघु० ५।१३, १३।७१ स पृष्टः सर्वतो वार्तमाख्यद्राज्ञे न संततिम्— १५।४१ कि० ३।६८ 2 कुशलता, दक्षता—अनुयुक्त इव स्ववार्तमुच्चैः —कि० १३।३४ 3 भूसी, बुरा।

वार्ता [वार्त+टाप्] 1 ठहरना, डटे रहना 2 समाचार, खबर, गुप्त बात, मालविकाया का वार्ता—रघु० ४ 3 आजीविका, वृत्ति 4 खेती, वैश्य का व्यवसाय रघु० १६।२, मनु० १०।८०, याज्ञ० १।३१० 5 बैंगन का पौधा। सम०—**आरंभः** व्यापारिक उपक्रम या व्यवसाय—**वह**, —**हर** 1 दूत 2 अगरान, मोमबत्ती आदि पदार्थ बेचने वाला,—**वृत्ति** जो खेती के व्यवसाय से निर्वाह करे,—**व्यतिकर** सामान्य विवरण।

वार्तायनः [वार्तानामयनमनेन] समाचारवाहक, दूत, भेदिया, जासूस।

वार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [वृत्ति+ठक्] 1 समाचार संबन्धी 2 समाचार लाने वाला 3 व्याख्यात्मक, कोष सम्बन्धी,—**कः** 1 दूत, भेदिया 2 किसान (वैश्यवर्ण का व्यक्ति) —**कम्** एक व्याख्यापरक अतिरिक्त नियम जो उक्त, अनुक्त, या किसी अधूरी बात की व्याख्या करता है अथवा किसी छूटी हुई बात को जोड़ देता है—उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्ति (चिन्ता) कारि तु वार्तिकम् (यह शब्द पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा निर्मित व्याख्यापरक नियमों के लिए विशेषरूप से प्रयुक्त होता है)।

वार्त्रघ्नः [वृत्रहन्+अण्] अर्जुन का नाम—कु० १५।१।

वार्द्धकम् [वृद्धानां समूहः तस्य भावः कर्म वा वुञ्] 1 बुढ़ापा—किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्द्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४ रघु०, १।८ मै० १।७७ 2 बुढ़ापे की दुर्बलता 3 बूढ़ों का समुदाय।

वार्द्धक्यम् [वार्द्धक+ष्यञ्] 1 बुढ़ापा 2 बुढ़ापे की दुर्बलता।

वार्धुषि, वार्धुषिकः, वार्धुषिन् (पुं०) [=वार्धुषिक पृषो० साधुः वृद्ध्यर्थं द्रव्यं वृद्धिं वा प्रयच्छति वृद्धिटक् वृधुषि आदेशः अन्दृष्टान्त इति] सूदखोर, ब्याज पर रुपया देने वाला।

वार्धुष्यम् [वार्धुषि+ष्यञ्] सूद, अत्यन्त ऊँचा सूद दर से लगाई ब्याज।

वार्ध्रम, वार्ध्री [वर्ध्र+अण् ङीप् वा] चमड़े का तस्मा।

वार्ध्रीणसः [वार्ध्री इव नासिका अस्य ब० स० नासिकायाः नस आदेशः णत्वम्] गैंडा ।

वार्मणम् [वर्मन्+अण्] कवचधारी पुरुषों का समूह।

वार्यम् [वृ+ण्यत्] आशीर्वाद, वरदान (ब० स०) सम्पत्ति, जायदाद।

वार्वणा [वार्वाणं+अण्+टाप्], नीले रंग की मक्खी।

वार्ष (वि०) (स्त्री०—र्षी) [वर्ष+अण्] 1 वर्षा से संबन्ध रखने वाला 2 वार्षिक।

वार्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [वर्ष+ठक्] 1 वर्षा संबन्धी—वार्षिकं संजहारेन्द्रो धनुर्जैत्रं रघूद्वहः—रघु० ४।१६ 2 सालाना, प्रतिवर्ष घटित होने वाला 3 एक वर्ष तक रहने वाला—मानुषाणां प्रमाणं स्याद्भुक्तिर्वै दशवार्षिकी इसी प्रकार वार्षिकमन्नम्—याज्ञ० १।१२४,—**कम्** बड़ा बूटी।

वार्षिलः [वार्षिला शिला पृषो० साधुः वा] ओला।

वार्ष्णेय [वृष्णि+ढक्] 1 वृष्णि की सन्तान 2 विशेष रूप से कृष्ण 3 नल के सारथि का नाम।

वार्ह, वार्हद्रथ, वार्हद्रथि, वार्हस्पत, वार्हस्पत्य, वार्हिण, वाल, वालक } दे० बार्ह, बार्हद्रथ, बार्हद्रथि, बार्हस्पत, बार्हस्पत्य, बार्हिण, बाल, बालक।

वालखिल्य दे० बालखिल्य।

वालि [वाले केश जातः वल+इञ्] प्रसिद्ध वानरराज बालि जो उसके छोटे भाई सुग्रीव की इच्छानुसार राम के द्वारा मारा गया।

(वर्णन ऐसा मिलता है कि वानरराज बालि अत्यन्त बलवान था कहते हैं कि इसने रावण को जब वह उससे लड़ने गया पकड़ कर अपनी काख में दबा लिया। जब बालि दुन्दुभि के भाई को मारने के लिए किष्किन्धापुरी से बाहर गया तो उसके भाई सुग्रीव ने बालि को युद्ध में मरा जान, उसका सिंहासन हथिया लिया। जिस समय बालि वापिस आया

तो सुग्रीव को भाग कर ऋष्यमूक पर्वत पर शरण लेनी पड़ी। सुग्रीव की पत्नी तारा को वालि ने छीन लिया, परन्तु राम के द्वारा वालि का वध होने पर वह फिर सुग्रीव को मिल गई)।

वालुका [वल् + उण् + कन् + टाप्] 1 रेत, बजरी—अकूतस्योपकूलं वालुकास्विव मूत्रितम् 2 चूर्ण 3 कपूर, —का,—की एक प्रकार की ककड़ी। सम०—आत्मिका शर्करा।

वालेय दे० बालेय।

वाल्क (वि०) (स्त्री०—ल्की) [वल्क+अण्] वृक्ष की छाल से बना हुआ।

वाल्कल (वि०) (स्त्री०—ली) [वल्कल+अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ, —लम् वल्कल की पोशाक, —ली मदिरा, शराब।

वाल्मीकः, वाल्मीकिः [वल्मीके भवः इञ् वा] एक विख्यात मुनि तथा रामायण के प्रणेता का नाम (जन्म से यह ब्राह्मण था परन्तु बचपन में मातापिता द्वारा परित्यक्त होने पर यह कुछ बर्बर पहाड़ियों को मिल गया जिन्होंने इसे चोरी करना सिखलाया। यह शीघ्र ही चौर्यकर्म में प्रवीण हो गया और कुछ वर्षों तक बटोहियों को मारने और लूटने का कार्य करता रहा। एक दिन उसे एक महामुनि मिला जिसको इसने मार डालने का भय दिखा कर कहा कि जो कुछ पास है सब निकाल कर रख दो। परन्तु मुनि ने इसे कहा कि पहले घर जाकर अपनी पत्नी और बच्चों को पूछो कि क्या वह लोग तुम्हारे इस अनन्त अत्याचार व लूटमार के जो तुम अब तक करते रहे हो साझीदार हैं। वह तुरन्त घर गया परन्तु उनकी अनिच्छा को जानकर बड़ा उद्विग्न हुआ। तब मुनि ने उसे 'मरा' 'मरा' (जो 'राम' प्रतीप है) उच्चारण करने के लिए कहा और अन्तर्धान हो गया। यह लुटेरा इस शब्द का वर्षों जप करता रहा, यहां तक कि उसका शरीर दीमकों द्वारा लाई गई मिट्टी से ढक गया। वही मुनि फिर आया और उसने इसे बांबी से निकाला वल्मीक (बांबी) से निकलने के कारण इसका नाम वाल्मीकि पड़ गया। यही बाद में बड़ा प्रसिद्ध मुनि हुआ। एक दिन जब कि वह स्नान कर रहा था, उसने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को बहेलिये द्वारा मरते हुए देखा, इस पर इस ऋषि के मुख से उस दुष्ट बहेलिये के लिए अनजान में कुछ अभिशाप के शब्द निकल गये जिन्होंने अनुष्टुप् छन्द में श्लोक का रूप धारण किया। रचना की यह नई शैली थी। ब्रह्मा के आदेश से इसने 'रामायण' नामक प्रथम काव्य की रचना की। जब राम ने सीता का परित्याग कर दिया तो इस ऋषि ने सीता को अपने आश्रम में शरण दी, उसके दोनों पुत्रों का पालन पोषण किया, उन्हें शिक्षा दी। बाद में इसने इनको राम के सुपुर्द कर दिया।

वाल्लभ्यम् [वल्लभ+ष्यञ्] प्रिय होने का भाव, वल्लभता।

वावदूक (वि०) [पुनः पुनरतिशयेन वा वदति—वद्+यङ्, लुक्, द्वित्वम्=वावद्+ऊकञ्] 1 बातूनी, मुखर 2 वाक्पटु।

वावय [वय्+यङ्, लुक् द्वित्वम्, अच्] एक प्रकार की तुलसी।

वावुट (पुं०) नाव, डोंगी।

वावृत् (दिवा० आ० वावृत्यते) 1 छांटना, पसन्द करना, चुनना, प्रेम करना—ततो वावृत्यमानासौ रामशालां न्यविक्षत भट्टि० ४।२८ 2 सेवा करना।

वावृत्त (वि०) [वावृत्+क्त] छांटा गया, चुना गया, पसंद किया गया।

वाश् I (दिवा० आ० वाश्यते वाशित) 1 दहाड़ना, क्रन्दन करना, चीत्कार करना, चिल्लाना, हू हू करना, (पक्षियों का) गुनगुनाना, ध्वनि करना (शिवा) ता शिवा प्रतिभयं ववाशिरे—रघु० ११।६१, शि० १८।७५, ७६, भट्टि० १४।१४, ७६ 2 बुलाना।

वाशक [वाश्+ण्वुल्] दहाड़ने वाला, मुखर, निनादी।

वाशनम् [वाश्+ल्युट्] 1 दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, आक्रोश करना 2 पक्षियों का चहचहाना, कूकना, (मक्खियों का) भिनभिनाना।

वाशि [वाश्+इञ्] अग्नि, आग।

वाशितम् [वाश्+क्त] पक्षियों का कलरव।

वाशिता वासिता [वाशि+टाप्, वस्+णिच्+क्त+टाप्] 1 हथिनी अभ्यपद्यत स वासितासखः पुष्पिता कमलिनीमिव द्विपः रघु० १९।११ 2. स्त्री।

वाश्र [वाश्+रक्] दिन, —श्रम् 1 आवास स्थान, घर 2 चौराहा 3 गोबर।

वाष्पः, —ष्पम् दे० 'बाष्प'।

वास् I (चुरा० उभ० वासयति—ते) 1 सुगंधित करना, सुवासित करना, धूप देना, धूनी देना, खुशबूदार करना वासितामनविशेषितगंधा कि० ९।८०, प्रकटितपटवासैर्वासयन् काननानि गीत० १, उत्तर० ३।९९, रघु० ४।७४, मेघ० २०, ऋतु० ५।५ 2. सिक्त करना, भिगोना 3 मसाला डालना, मसालेदार बनाना।

II (दिवा० आ०) दे० 'वाश्'।

वासः [वास्+घञ्] 1 सुगंध 2 निवास, आवास—वासो यस्य हरेः करे—भामि० १।६३, रघु० १९।१२,

भग० १।४४ 3 आवास, रहना, घर 4 जगह, स्थिति 5. कपड़े, पोशाक। सम० अ(आ) गारः,—रम्, —गृहम्, वेश्मन् (नपुं०) घर का आन्तरिक कक्ष विशेषतः शयनागार धर्मासनाद्विशति वासगृहं नरेन्द्रः — उत्तर० १।७, विक्रम० १, —कर्णी वह कमरा जहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन (नाच, कुश्ती तथा अन्य प्रतियोगिताएँ) होते हैं —ताम्बूलम् अन्य सुगन्धित मसालों से युक्त पान, —भवनम्, —मन्दिरम्, —सदनम् निवासस्थान, घर —यष्टिः (स्त्री०) पक्षियों के बैठने का डंडा, छतरी, अड्डा, वर्णी० २।१, मेघ० ७९, —योगः एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण —सज्जा— वासकसज्जा दे०।

वासक (वि०) (स्त्री० —का —सिका) [वास् + णिच् + ण्वुल्] 1 सुगन्धित करने वाला, सुवासित करने वाला, धुपाने वाला, धूप देने वाला 2 बसाने वाला, आबाद करने वाला, —कः वस्त्र, कपड़े। सम० —सज्जा, —सज्जिका वह स्त्री जो अपने प्रेमी का स्वागत, सत्कार करने के लिए अपने आपको वस्त्रालंकार से भूषित करती तथा घर को साफ सुथरा रखती है, विशेषतः उस समय जब कि प्रेमी का मिलन नियत किया हुआ हो; आठों नायिका नायिकाओं का भेद साहित्यदर्पणकार परिभाषा देता है — कुरुते मंडनं यस्या (या तु) सज्जिते वासवेश्मनि सा तु वासकसज्जा स्याद्विदितप्रियसंगमा १२० अर्थात् विलसित विगलितलज्जा विलपति रोदिति वासकसज्जा गीत० ६।

वासतः [वास् + अतच्] गधा।

वासतेय (वि०) (स्त्री० —यी) [वसतये हितं साधुर्वा ढञ्] निवास करने के योग्य, —यी रात।

वासनम् [वास् + ल्युट्] 1 सुगन्धित करना, सुवासित करना 2 धुपाना 3 निवास करना, टिकना 4 आवासस्थान, निवासस्थान 5 कोई पात्र, आधार, टोकरी, सन्दूक, बर्तन आदि याज्ञ० २।६५ (वासनं निक्षेपाधारभूतं संपुटादिकं समुद्रं सप्रमुद्रमित्यादि-यत्नम्) 6 ज्ञान 7 वस्त्र, परिधान 8. गिलाफ, लिफाफा।

वासना [वास् + णिच् + युच् + टाप्] 1 स्मृति से प्राप्त ज्ञान, तु० भावना 2 विशेषतः अपने पहले के शुभाशुभ कर्मों का अनजाने में मन पर पड़ा हुआ संस्कार जिससे सुख या दुःख की उत्पत्ति होती है 3 उत्प्रेक्षा, कल्पना, विचार 4 मिथ्या विचार, अज्ञान 5 अभिलाषा, इच्छा, रुचि सम्पादयामनवधीरितमौ भवस्तु—गीत० ३ 6 आदर, कभी आदर, सम्मान, दुर्गा (पार्वती) मत्तं ममासु मदनं वासना जाएकेतु—मालवि० ४।१७।

वासन्त (वि०) (स्त्री० —ती) [वसन्त + अण्] 1 वसन्तकालीन, माघवी, बहार के लायक, वसन्तऋतु में उत्पन्न 2 यौवन का वसन्त, जवान 3 परिश्रमी, सावधान (कर्तव्यपालन में), —न्तः 1 ऊँट 2 जवान हाथी 3 कोई भी जवान जन्तु 4 कोयल 5 दक्षिणी पवन, मलय पहाड़ से चलने वाली हवा, तु० मलय समीर 6 एक प्रकार का लोबिया 7 लम्पट, दुराचारी, —ती 1 एक प्रकार की चमेली (सुगन्धित फूलों से लदी हुई) वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवैः—गीत० १ 2 बड़ी पीपल 3 जूही का फूल 4 कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव —तु० वसन्तोत्सव।

वासन्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [वसन्त + ठक्] वसन्त ऋतु से संबद्ध —कः 1 नाटक का विदूषक या हसोड़ा 2 अभिनेता।

वासरः —रम् [सुप्तं वासयति अत्र, वास् + अरः] (मध्याह्न का) एक दिन। सम० —सङ्गः प्रातःकाल।

वासव (वि०) (स्त्री० —वी) [वसुरेव स्वार्थे अण्, वसूनि सन्त्यस्य अण् वा] इन्द्र सम्बन्धी, पाइलो वासवी दिगन्तरीन का० वासवीनां चमूनाम् मेघ० ४३ —वः इन्द्र का नाम कु० ३।२, रघु० ५।५। सम० —दत्ता 1 सुबन्धु की एक रचना 2 कई कहानियों में वर्णित नायिका (इस स्त्री) का वर्णन भिन्न भिन्न कवि विविध प्रकार से करते हैं। 'कथासरित्सागर' के अनुसार वह उज्जयिनी के महाराजा चण्डमहासेन की पुत्री थी जिसका अपहरण वत्स के राजा उदयन ने किया था। श्रीहर्ष उसे प्रद्योत राजा की पुत्री बतलाते हैं (दे० रत्न० १।१०) और मल्लि० की टीका के अनुसार प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे वह उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री थी। भवभूति कहते हैं कि उसके पिता ने उसकी सगाई राजा संजय के साथ की थी, परन्तु उसने अपने आपको उदयन की सेवा में अर्पित किया (दे० मा० २)। परन्तु सुबन्धु की वासवदत्ता की वत्स की कहानी में कोई समानता नहीं। हाँ, उसका नाम अवश्य एक ही था। भवभूति के अनुसार उसके पिता ने उसकी सगाई पुष्पकेतु के साथ की थी, परन्तु कन्दर्पकेतु उसे अपहृत कर ले गया। यह संभव है कि 'वासवदत्ता' नाम की कई नायिकाएँ हों)।

वासवी [वासव + ङीप्] व्यास की माता का नाम।

वासस् (नपुं०) [वस् आच्छादने असि णिच्च] वस्त्र, परिधान कपड़े वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि भग० २।२२, कु० ३।९, मेघ० ५९।

वासि. (पुं०, स्त्री०) [वस् + इञ्] बसूला, छोटी कुल्हाड़ी, छेनी, —सिः निवास, आवास।

वासित (भू० क० कृ०) [वास्+क्त] 1 सुवासित, या सुगन्धित 2 भिगोया, तर किया हुआ 3 मसालेदार मसाला डाला गया 4 कपड़े पहने हुए, वस्त्रों से सज्जित 5 जनपूरित आबाद 6 विख्यात प्रसिद्ध —**तम्** 1 पक्षियों का कलरव या कूजना 2 ज्ञान —दे० वासना (४)।

वासिता [वास्+क्त+टाप्] दे० वाशिता।

वासिष्ठ (वि०) (स्त्री० —ष्ठी) [वसिष्ठ+अण्] वसिष्ठ संबंधी, वसिष्ठ द्वारा रचित (ऋग्वेद का सातवाँ मण्डल) जैसा कि ऋग्वेद का दसवाँ मण्डल —ष्ठः वसिष्ठ की सन्तान।

वासु [सर्वत्र वसति वस्+उण्] 1 आत्मा 2 विश्वात्मा, परमात्मा 3 विष्णु।

वासुकि, **वासुकेय** [वसुक+इञ्, ढक् वा] नाग विख्यात नाग का नाम नागराज (कहते हैं कि यह कश्यप का पुत्र था) कु० २।३८, भग० १०।२८।

वासुदेव [वसुदेवस्यापत्यम् अण्] 1 वसुदेव की सन्तान 2 विशेष रूप से कृष्ण।

वासुरा [वस्+उरण्+टाप्] 1 पृथ्वी 2 रात 3 स्त्री 4 हथिनी।

वासूः (स्त्री०) [वास+ऊ] तरुणी कन्या, कुमारी (मुख्यतः नाटकों में प्रयुक्त) प्रसीद वासू शिरसि गृहीता मृच्छ० १।४१ वासु प्रसीद —मृच्छ०।

वास्त दे० वास्त।

वास्तव (वि०) (स्त्री० —वी) [वस्तु+अण्] 1 असली सच्चा, सारयुक्त 2 निर्धारित, निश्चित —वम् कोई भी निश्चित या निर्धारित बात।

वास्तवा [वास्तव+टाप्] प्रभात, उषा।

वास्तविक (वि०) (स्त्री० —की) [वस्तुतो निर्वृत्तः ठञ्] सच्चा, असली, सारगर्भित, यथार्थ, विशुद्ध।

वास्तिकम् [वस्त+ठक्] बकरों का समूह।

वास्तव्य (वि०) [वस्+तव्यत्, णित्] 1 निवासी, वासी, रहने वाला, पुरेऽस्य वास्तव्यकुटुम्बिता ययुः शि० १।६६ 2 रहने के योग्य, वास करने के योग्य —**व्यः** 1. आवासी, रहने वाला, निवासी नानादिगन्तवास्तव्यो महाजनसमाज —मा० १, —**व्यम्** 1 रहने के योग्य स्थान, घर 2 बसति, निवासस्थान।

वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुण्] 1 घर बनाने की जगह, भवनभूखण्ड जगह 2 घर आवास, निवास भूमि,—रवेरविषये वास्तु किं न दीपः प्रकाशयेत् सुभा० मनु० ३।८९। सम० —**याग** घर की आधारशिला रखते समय किया जाने वाला यज्ञानुष्ठान।

वास्तेय (वि०) (स्त्री० —यी) [वस्ति+ढञ्] 1 रहने के योग्य, निवास करने के योग्य 2 पेड़ू संबंधी।

वास्तोष्पतिः [वास्तोः पतिः, नि० षष्ठ्या अलुक्, षत्वम्] 1 एक वैदिक देवता (घर की आधारशिला की अधिष्ठात्री देवता मानी जाती है) 2 इन्द्र का नाम।

वास्त्र (वि०) [वस्त्र+अण्] वस्त्र से निर्मित —**स्त्रः** कपड़े से ढकी हुई गाड़ी।

वास्प दे० बाष्प।

वास्पेय [वास्पाय हितं वास्प+ढक्] नागकेशर नाम का वृक्ष।

वाह् (भ्वा० आ० वाहते) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, उद्योग करना।

वाह (वि०) [वह्+घञ्] ढोने वाला, ले जाने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि वनवाह और भारवाह —**हः** 1 ले जाना, धारण करना 2 कुली 3 खींचने वाला जानवर, बोझा ढोने वाला जानवर 4 घोड़ा रघु० ४।५६, ५।७३, १४।४७ 5 सांड मनु० ३।६४ 6 भैंसा 7 गाड़ी रथ 8 भुजा 9 वायु हवा 10 एक मापविशेष जो दस कुम्भ या चार भार के तुल्य होता है वाहो भारचतुष्टय। सम० —**द्विषत्** (पुं०) भैंसा —**श्रेष्ठ** घोड़ा।

वाहक [वह्+ण्वुल्] 1 कुली 2 गाड़ीवाला, गाड़ीवान् चालक 3 घुड़सवार।

वाहनम् [वाहयति—वह्+णिच्+ल्युट्] 1. धारण करना, ले जाना, ढोना 2. (घोड़े आदि को) हाँकना 3 गाड़ी, किसी प्रकार की सवारी मनु० ७।७५, ९।२८४ 4 खींचने वाला या सवारी का जानवर जैसा कि घोड़ा —न कृपापश्यता प्राप्तहस्तिनम् —वाहन रघु० १।४८, ९।२५, ६० 5 हाथी।

वाहसः [न वहति गच्छति वह्+असच्] 1 परनाला, जलमार्ग 2 बड़ा नाग अजगर।

वाहिकः [वाह+ठक्] 1 बड़ा ढोल 2 बैलगाड़ी 3 बोझा ढोने वाला।

वाहितम् [वह्+णिच्+क्त] भारी बोझ।

वाहित्थम् [वाहित्+स्था+क] हाथी के मस्तक का ललाट से नीचे का भाग।

वाहिनी [वाहो अस्त्यस्याः इनि ङीप्] 1 सेना —भागीरथ प्रथमजे न वाहिनीम् —रघु० ११।६, १२।६६ 2 अक्षौहिणी सेना जिसमें ८१ गजारोही ८१ रथारोही २४३ अश्वारोही तथा ४०५ पदाति सम्मिलित हैं 3 नदी। सम० —**निवेशः** सेना का पड़ाव, शिविर —**पतिः** 1 सेनापति, सेनाध्यक्ष 2 (नदियों का स्वामी) समुद्र।

वाहीक दे० बाहीक।

वाहुक दे० बाहुक।

वाह्य दे० 'बाह्य'।

वाह्लि (पुं०) एक देश का नाम, (आधुनिक बलख)। सम० —**ज** बलख देश का घोड़ा।

वाह्लिः (ह्लीः) क (पुं०) 1 एक देश का नाम (आधुनिक बलख) 2 बलख देश का घोड़ा, बलख देश में पैदा घोड़ा —कम् 1 आर्द्रक, केसर 2 हींग।

वि (अव्य०) [वा + इण् स च डित्] 1 धातु और संज्ञा शब्दों के पूर्व जुड़ कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है— (क) पृथक्करण, वियोजन (एक ओर, अलग अलग, दूर, परे आदि) यथा वियुज्, विहृ, विचल् आदि (ख) किसी धर्म का उलटा, यथा क्री खरीदना, विक्री बेचना, स्मृ याद करना, विस्मृ भूल जाना (ग) प्रभाग यथा विभज्, विभाग (घ) विशिष्टता यथा विशिष्, विशेष, विविच्, विवृ (ङ) विशेषीकरण, व्यवच्छेद (च) क्रम, व्यवस्था यथा विधा, विरच् (छ) विरोध यथा विरुध्, विराध, अभाव यथा विनी, विनयन (ज) विचार यथा विचर्, विचार (झ) शीघ्रता—विक्रम 2 संज्ञा या विशेषण शब्दों में (जो कि क्रिया से बने हुए न हों) जुड़कर 'वि' निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) निषेध या अभाव (ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग अधिकतर उसी प्रकार होता है जैसे कि अ या 'निर्' का, अर्थात् इसके लगने पर बहुव्रीहि समास बनता है—विधवा, व्यसु आदि (ख) तीव्रता, महत्ता यथा विकराल (ग) वैविध्य—यथा विचित्र (घ) अन्तर—यथा विलक्षण (ङ) बहुविधता—यथा विविध (च) वैपरीत्य, विरोध यथा विलोम (छ) परिवर्तन—यथा विकार (ज) अनौचित्य—यथा विकर्मन्।

विः (पुं० स्त्री०) [वा + इण्, स च डित्] 1 पक्षी 2. घोड़ा।

विंश (वि०) (स्त्री०—शी) [विंशति + डट्, ते लोप] बीसवाँ, —शः बीसवाँ भाग।

विंशक (वि०) (स्त्री०—की) [विंशति + ड्वुन्, तिलोप] बीस।

विंशतिः (स्त्री०) [द्वे दश परिमाणमस्य नि० सिद्धि] बीस, एक कौड़ी। सम० —ईशः, —ईशिन् (पुं०) बीस गाँवों का शासक।

[illegible] [विगत के अर्थ कुत या क्व] ताजी ब्यायी गाय का दूध।

विकङ्कतः,—तः [वि + कङ्क् + अटन्, अतच् वा] एक वृक्ष विशेष (जिसकी लकड़ी से श्रुवा बनते हैं) —रघु० ११।२५।

विकच (वि०) [विकस् + अच्] 1 खिला हुआ, फूला हुआ, खुला हुआ, (जैसा कि कमल आदि) - विकचकिंशुकसंहतिरुच्चकैः -शि० ६।२१, रघु० ९।३७ 2 फैलाया हुआ, बखेरा हुआ —भामि० १।३ 3 बालों से शून्य, —चः 1 बौद्धसाधु 2 केतु।

विकट (वि०) [वि + कटच्] 1 विकराल, कुरूप 2 (क) [illegible] पृथुललाटतटघटित[illegible] वेणी० १ [illegible] विकटविषुमुद्- [illegible] (ख) [illegible] मधुमधुरम् उत्तर० [illegible] कुसुमयश [illegible] घमंडी [illegible] महावीर० [illegible] त्योरी चढ़ाये हुए [illegible] अद्भुत या गम्भीर।

विकत्थन [illegible] 1 [illegible] अपनी प्रशंसा करने वाला [illegible] मुद्रा० [illegible] 2 व्यंग्यात्मक प्रशंसा करने वाला —नम् 1 डींग मारना, शेखी जमाना 2 व्याजोक्ति, मिथ्या प्रशंसा।

विकत्था [वि + कत्थ् + अङ् + टाप्] शेखी बघारना, डींग, आत्मश्लाघा, दर्पोक्ति 2 प्रशंसा, मिथ्या प्रशंसा, व्याजोक्ति।

विकम्प (वि०) [विशेषेण कम्पो यस्य प्रा० ब०] 1 दीर्घ निःश्वास लेने वाला 2 अस्थिर, चंचल।

विकरः [विकीर्यते हस्तपादादिकमनेन—वि + कृ + अप्] बीमारी, रोग।

विकरणः [वि + कृ + ल्युट्] क्रियारूपरचनापरक विशिष्ट जोड़ (अनुबन्धी), क्रिया के रूपों की रचना के समय धातु और लकार के प्रत्ययों के बीच में रक्खा जाने वाला गणद्योतक चिह्न।

विकराल (वि०) [विशेषेण करालः प्रा० स०] अत्यंत डरावना या भयानक, भयपूर्ण।

विकर्णः [विशिष्टौ कर्णौ यस्य प्रा० ब०] एक कुरुवंशी राजकुमार का नाम —भग० १।८।

विकर्तनः [विशेषेण कर्तनं यस्य प्रा० ब०] 1 सूर्य—उत्तर० ५ 2 मदार का पौधा 3 वह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

विकर्मन् (वि०) [विरुद्धं कर्म यस्य प्रा० ब०] अनुचित रीति से कार्य करने वाला, —पुं० अवैध या प्रतिषिद्ध कार्य, पापकर्म - भग० ४।१७, मनु० ९।२२६। सम० —क्रिया अवैध कार्य, अधार्मिक आचरण, —स्थ (वि०) प्रतिषिद्ध कार्यों को करने वाला, दुष्कर्मों में व्यस्त।

विकर्षः [वि + कृष् + घञ्] 1 अलग—अलग रेखांकन करना, स्वतन्त्र रूप से खींचना 2 तीर, बाण।

विकर्षणम् [वि + कृष् + ल्युट्] कामदेव के पाँच बाणों में

से एक,- -लप् 1 रेखांकन, खींचना, अलग-अलग खींचना 2 तिरछा फेंकना।

विकल (वि०) [विगत: कलो यस्य प्रा० ब०] 1. किसी भाग या अंग से वञ्चित, सदोष, अधूरा, अपाहज विकलांग —कूटकृद्विकलेन्द्रियाः—याज्ञ० २।७०, मनु० ८।६६, उत्तर० ४।२४ 2 डरा हुआ, त्रस्त 3 शून्य, विरहित —आरामाधिपतिर्विवेकविकलो —भामि० १। ३१, मृच्छ० ५।४१ 4. विक्षुब्ध, कमजोर, उत्साह शून्य, हतोत्साह, म्लान, अवसन्न, स्फूर्तिहीन—किमिति विषीदसि रोदिषि विकला विहसति युवतिसभा तव सकला—गीत० ९, विरहेण विकलहृदया—भामि० २।७१, १६०, आयुर्गले विकलविकलं—गीत० १२, उत्तर ३।३१, मा० ७।१, ९।१२ 5 मुर्झाया हुआ, क्षीण। सम० —अंग (वि०) अधिक या कम अंगों वाला, —इन्द्रिय (वि०) जिसकी ज्ञानेन्द्रियाँ दूषित या विकृत हैं, —पाणिक: लूला-लंगड़ा।

विकला [विगत: कलो यस्या:—प्रा० ब०] कला का साठवाँ भाग।

विकल्पः [वि+क्लृप्+घञ्] 1. सन्देह, अनिश्चय, अनिर्णय, संकोच—तत् सिषेवे नियोगेन स विकल्पपराङ्मुखः—रघु० १७।४९ 2. शंका, मुद्रा० १ 3. कूटयुक्ति, कला मायाविकल्परचितैः रघु० १३।७५ 4. वरणस्वतन्त्रता, (व्या० में) वैकल्पिक 5. प्रकार, भेद 6. अशुद्धि, भूल, अज्ञान। सम० —उपहारः वैकल्पिक पुरस्कार, —जालम् जाल की तरह का अनिर्णय, दुविधा।

विकल्पनम् [वि+क्लृप्+ल्युट्] 1. सन्देह में पड़ना 2. इच्छा की छूट 3 अनिर्णय।

विकल्मष (वि०) [विगत: कल्मषो यस्य प्रा० ब०] निष्पाप, कलंकरहित, निर्दोष।

विकषा (सा) [वि+कष् (स्) +अच्+टाप्] बंगाली मजीठ।

विकसः [वि+कस्+अच्] चन्द्रमा।

विकसित (भू० क० कृ०) [वि+कस्+क्त] खिला हुआ, पूरा खुला हुआ या फूला हुआ —भामि० १।१००।

विकस्व (स्व) र (वि०) [विकस्+वरच्] 1. खुला हुआ, फूला हुआ—कुसेशयैरत्र जलाशयोषिता मुदा रमन्ते कलभा विकस्वरैः शि० ४।११ 2. ऊँचे स्वर वाला, (ध्वनि आदि) जो स्पष्ट सुनाई दे, उपचीयमान वैकृतास्वरवशुखावस्य विकस्वरस्वरैः—नै० २।५।

विकारः [वि+कृ+घञ्] 1. रूप या प्रकृति का परिवर्तन, रूपान्तरण, प्राकृतिक अवस्था से व्यत्यय, तु० विकृति 2. परिवर्तन, अदल-बदल, सुधार—पंच० १।४४ 3. बीमारी, रोग, व्याधि—विकार खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य श० ४, कु० २।३८ 4. मन या अभिप्राय का बदलना—मूर्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१९ 5. भावना, संवेग—उत्तर० १।३५, ३।२५, ३६ 6. विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग कि० १७।२४ 7 विकृत रूप, आकुञ्चन (भ्रूभङ्ग, हावभाव आदि) प्रमथमुखविकारैर्हासयामास गूढम् कु० ७।९५ 8. (सांख्य० में) जो पुरुष्मोन या प्रकृति से विकसित हो। सम० —हेतुः प्रलोभन, फुसलाना, उद्वेग का कारण—विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः—कु० १।५९।

विकारित (वि०) [वि+कृ+णिच्+क्त] परिवर्तित पथभ्रष्ट, भ्रष्टाचारग्रस्त।

विकारिन् (वि०) [वि+कृ+णिनि] परिवर्तनशील, संवेग तथा अन्य संस्कारों को ग्रहण करने वाला, प्रमथि भुवने कदर्पाज्ञा विकारि च यौवनम्—मा० १।१७।

विकालः, **विकालकः** [विरुद्ध: कालः प्रा० स०] सन्ध्या, सायंकालीन झुटपुटा, दिन की समाप्ति।

विकालिका [विज्ञात: कालो यया—प्रा० ब०] पानी में रक्खा हुआ छिद्रयुक्त ताम्रकलश जो क्रमश: पानी भरने के द्वारा समय का अंकन करता है—तु० मानरन्ध्रा।

विकासः [वि+कस्+घञ्] 1 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखलावा 2. खिलना, फूलना (इस अर्थ में प्राय: विकाश लिखा जाता है) —कु० ३।२९ 3. खुला सीधा मार्ग—कि० १५।५२ 4. टेढ़ा मार्ग—कि० १५।५२ 5. हर्ष, आनन्द—कि० १५।५२ 6. उत्सुकता, प्रबल उत्कंठा—शि० ९।४१ (यहाँ इसका अर्थ खिलना, भी है) 7. एकान्तवास, एकाकीपन, सूनापन।

विकासक (वि०) (स्त्री० —सिका) [वि+कास्+ण्वुल्] 1. प्रदर्शन करने वाला 2. खोलने वाला।

विकाशनम् [वि+काश्+ल्युट्] 1. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखावा 2. खिलना, (फूलों का) फूलना।

विकाशि (सि) न् (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+काश् (स्)+णिनि] 1. दिखाई देने वाला, चमकने वाला 2. फूलने वाला, खुलने वाला, खिलने वाला।

विकासः [वि+कस्+घञ्] खिलना फूलना—दे० ऊ० विकाश।

विकासनम् [वि+कस्+ल्युट्] फूलना, खुलना, खिलना।

विकिरः [वि+कॄ+अप्] 1. बिखरा हुआ भाग या गिरा हुआ नन्हा टुकड़ा 2. जो फाड़ता या बखेरता है पक्षी —कंकोलीफलजग्धिमुग्धविकिरव्याहारिणस्तद्भुवो ग्रामाः मा० ९।१९ 3. कूआँ 4. वृक्ष।

विकिरणम् [वि+कॄ+ल्युट्] 1. बखेरना, इधर उधर फेंकना छितराना 2. दूर-दूर तक फैलाना 3. फाड़ डालना 4. हिंसा करना 5. ज्ञान।

विकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+कॄ+क्त] 1 बखेरा हुआ छितराया हुआ 2 प्रसृत 3 विख्यात। सम० **केश**, **मूर्धज** (वि०) बालों को नोचने वाला, बालों को बिखेरने या उलझ-पुलझ करने वाला,—**जम्** एक प्रकार की सुगन्ध।

विकुण्ठः [विगता कुण्ठा यस्य प्रा० ब०] विष्णु का स्वर्ग।

विकुर्वाण (वि०) [वि+कृ+शानच्] 1 परिवर्तित होने वाला, या परिवर्तन करने वाला 2 प्रसन्न, खुश, हृष्ट।

विकुस्र [वि+कस्+रक उत्वम्] चन्द्रमा।

विकूजनम् [वि+कूज्+ल्युट्] 1 गुटरगूं करना, कलरव करना 2 (अंतड़ियों या नलों में) गुड़गुड़ाहट।

विकूणनम् [वि+कूण्+ल्युट्] तिरछी चितवन कटाक्ष।

विकूणिका [वि+कूण्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] नाक।

विकृत (भू० क० कृ०) 1 परिवर्तित, बदला हुआ, सुधारा हुआ 2 रोगी बीमार 3 क्षतविक्षत विकलित जिसकी सूरत बिगड़ गई हो 4 अपूर्ण अधूरा 5 आवेशग्रस्त 6 पराङ्मुख रूठा हुआ 7 बीभत्स 8 अनोखा असाधारण (दे० वि पूर्वक कृ) —**तम्** 1 परिवर्तन, सुधार 2 और भी बिगड़ जाना, बीमारी 3 अरुचि जुगुप्सा।

विकृतिः (स्त्री०) [वि+कृ+क्तिन्] (अभिप्राय मन, रूप आदि का) बदलना भिन्नविकृतिः, अगुलीयक सुवर्णस्य विकृति 2 अस्वाभाविक, अचानक घटित होने वाली परिस्थिति, दुर्घटना मरणं प्रकृति शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः रघु० ८।८७ 3. बीमारी 4 उत्तेजना, उद्वेग, क्रोध, रोष कि० १३।५६, शि० १५।११ ४०, दे० 'विकार' और 'विक्रिया' भी।

विकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+कृष्+क्त] 1 अलग-अलग घसीटा हुआ, इधर उधर खींचा हुआ 2 आकृष्ट, खींचा हुआ, किसी की ओर आकृष्ट 3 विस्तारित फैलाया हुआ 4 शब्दायमान (दे० वि पूर्वक कृष्)।

विकेश (वि०) (स्त्री० शी) [विकीर्णाः केशा यस्य प्रा० ब०] 1 बिखरे बालों वाला 2 बिना बालों का गंजा (सिर), —**शी** 1. ढीले बालों वाली स्त्री 2 बालों के शून्य (गंजी) स्त्री 3 चोटी, या बालों की छोटी छोटी लटों को मिला कर बनाई हुई चोटी, वेणी।

विकोश —**ष** (वि०) [विगत कोशो यस्य प्रा० ब०] 1 बिना भूसी का 2 बिना म्यान का, बिना ढका हुआ कि० १३।६५ रघु० ७।४८।

विक्कः [विच्+कै+क] तरुण हाथी।

विक्रमः [वि+क्रम्+घञ् अवृद्धि वा] 1 कदम, डग पग रघु० ७।६, तु० त्रिविक्रम 2 कदम रखना, चलना 3. पकड़ रखना प्रभाव डाल लेना 4 वीरता शौर्य, नायक की बहादुरी, अनुत्सेक खलु विक्रमालंकारः विक्रम० १ रघु० १२।८७ ९३ 5 उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध राजा का नाम दे० परि० २ 6 विष्णु का नाम। सम० **अर्कः** **आदित्यः** दे० विक्रम **कर्मन्** (नपुं०) शूरवीरता का कार्य पराक्रम के करतब।

विक्रमणम् [वि+क्रम्+ल्युट्] (विष्णु का) एक डग छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन गीत० १।

विक्रमिन् (वि०) [वि+क्रम्+णिनि] पराक्रमी शूरवीर पुं० 1 सिंह 2 नायक 3 विष्णु का विशेषण।

विक्रय [वि+क्री+अच्] बिक्री बेचना मनु० ३।५४। सम० **अनुशय** बिक्री का खण्डन करना—**पत्रम्** बिक्री का पत्र बैनामा।

विक्रयिकः, **विक्रयिन्** (पुं०) [विक्रय+ठन्, णिनि वा] व्यापारी विक्रेता बेचने वाला।

विक्रवः [वि+क्रम्+रक अ+इ रेफादेश] चोर।

विक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+क्रम्+क्त] 1 परे चला गया हुआ, डग भरे हुए 2 शक्तिशाली शूरवीर, बहादुर, पराक्रमी 3 विजयी, (अपने शत्रुओं को) पराभूत करने वाला, —**तः** 1 शूरवीर योद्धा 2. सिंह, —**तम्** 1 पग डग 2 घोड़े की सरपट चाल 3. शूरवीरता, बहादुरी पराक्रम।

विक्रान्तिः (स्त्री०) [वि+क्रम्+क्तिन्] 1 कदम रखना, डग भरना 2. घोड़े की सरपट चाल 3. शूरवीरता बहादुरी, पराक्रम।

विक्रान्तृ (वि०) [वि+क्रम्+तृच्] बहादुर, विजयी, पुं० सिंह।

विक्रिया [वि+कृ+श+टाप्] 1. परिवर्तन, सुधार बदलना—श्मश्रुप्रवृद्धिजनिताननविक्रियान् —रघु० १३। ७१, १०।१७ 2 विक्षोभ उत्तेजना उद्वेग, जोश आना अथ तेन निगृह्य विक्रियामभिशप्तः फलमेतदन्वभूत् कु० ४।४१, ३।३४ 3 क्रोध गुस्सा, अप्रसन्नता शापान्तो मे ... मनो यायाति विक्रियाम् सुभा०, निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृतिः ... रघु० ७।३० 4 उभार, अनिष्ट कु० ६।२९ (विक्रियायै ... शोष' मल्लि०) 5. (भौंहे इत्यादि) चुनना, आकुंचन या (भौंहों की) सिकुड़न भ्रूविक्रियायां विरतप्रसंगैः कु० ३।४७ 6 आकस्मिक आन्दोलन जैसा कि 'रोमविक्रिया' में विक्रम० १। १२ 'रोमांच होना' 7. अकस्मात् रोगग्रस्तता, बीमारी 8 उल्लंघन (उचित कर्तव्य का) बिगाड़ देना रघु० १५।४८। सम० **उपमा** दण्डी द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद दे० काव्य० २।४१।

विक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+क्रुश्+क्त] 1 चिल्लाया हुआ चिल्लाया 2 कठोर, क्रूर, निर्दय, —**ष्टम्**

1. सहायता प्राप्त करने के लिए क्रन्दन करना, दुहाई देना 2 गाली ।

विक्रेय (वि०) [वि + क्री + यत्] बेचने के योग्य, (कोई वस्तु) बिक्री कर दी जाने के योग्य ।

विक्रोशनम् [वि + क्रुश् + ल्युट्] 1 चिल्लाना चीत्कार करना 2 गाली देना ।

विक्लव (वि०) [वि + क्लु + अच्] 1 भयभीत भड़का हुआ चौंका हुआ [illegible] आवेगाक्षम [illegible] रघु० ११।२८ कु० ४।३९ 2 [illegible] शि० ११।५४ मेघ० ३७ 3 [illegible] शि० ९।६ 6 [illegible] उत्तेजित, घबराया हुआ, [illegible] शि० [illegible] 8 दुःखी, खिन्न, [illegible] [illegible] [illegible] प्रख्यातविक्रम [illegible] [illegible] ।

विक्लिन्न (भू० क० कृ०) [वि + क्लिद् + क्त] 1 अच्छी तरह भीगा हुआ 2 मुर्झाया हुआ 3 पुराना ।

विक्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि + क्लिश् + क्त] 1 अत्यन्त कष्टग्रस्त दुःखी 2 [illegible] किया हुआ — **ष्टम्** उच्चारण दोष ।

विक्षत (भू० क० कृ०) [वि + क्षण् + क्त] फाड़ कर अलग अलग किया हुआ घायल, चोट पहुँचाया हुआ, आघातग्रस्त ।

विक्षाव [वि + क्षु + घञ्] 1 खाँसी छींक आना 2 शोर ।

विक्षिप्त (भू० क० कृ०) [वि + क्षिप् + क्त] 1 बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ छितराया हुआ [illegible] हुआ 2 अलग करना [illegible] 3 [illegible] प्रेषित 4 भ्रान्त व्याकुल विक्षुब्ध 5 निराकृत [illegible] पूर्वक [illegible] ।

विक्षीणक (पुं०) 1 शिव के [illegible] 2 देवसभा ।

विक्षीर, [illegible] मदार का पौधा ।

विक्षेपः [वि + क्षिप् + घञ्] 1 इधर उधर [illegible] 2. डालना फेंकना 3 [illegible] करना [illegible] संहार) रघु० ५।४५ 4 भेजना, प्रेषण 5 [illegible] हटाना, हड़बड़ी व्याकुलता मा० ? 6 भय, 7 तर्क का निराकरण 8 तृतीय [illegible] ।

विक्षेपणम् [वि + क्षिप् + ल्युट्] 1, फेंकना, डालना निकाल बाहर करना 2 प्रेषण, भेजना 3 बखेरना छितराना 4 हड़बड़ी, व्याकुलता ।

विक्षोभः [वि + क्षुभ् + घञ्] 1 हिलाना, हलचल, आन्दोलन, [illegible] रघु० १।४३ 2 मन की हलचल, ध्यान हटाना, खलबली 3 द्वन्द्व, संघर्ष ।

विख, विखु, विख्य, / **विखु, विखु, विख्र** [विगता नासिका यस्य ब० स० नासिकायाः [illegible] का आदेश] नासिका से रहित, बिना नाक ।

विखण्डित (भू० क० कृ०) [वि + खण्ड् + क्त] 1 टूटा हुआ विभक्त किया हुआ 2 दो खण्डों में किया हुआ ।

विखानसः (पुं०) एक प्रकार का साधु ।

विखुर (पुं०) 1 राक्षस, पिशाच 2 चोर ।

विख्यात (भू० क० कृ०) [वि + ख्या + क्त] 1. प्रख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध [illegible] 2 नामवर नामधारी 3 स्वीकृत माना हुआ ।

विख्याति (स्त्री०) [वि + ख्या + क्तिन्] प्रसिद्धि, कीर्ति यश [illegible] ।

विगणनम् [वि + गण् + ल्युट्] 1 गिनना, [illegible] 2 [illegible] 3 ऋण [illegible] ।

विगत (भू० क० कृ०) [वि + गम् + क्त] 1 [illegible] 2 जो अलग किया गया है वियुक्त 3 मृतक 4 विरहित शून्य मुक्त (समास में) विगतभय 5 खोया हुआ 6 धुंधला, अस्पष्ट सम० — **आर्तवा** वह स्त्री जिसे बच्चा होना (या रजोधर्म होना) बन्द हो चुका हो — **कल्मष** (वि०) निष्पाप पवित्र — **भी** (वि०) निर्भय, निडर, — **लक्षण** (वि०) भाग्यहीन अशुभ ।

विगन्धक [विरुद्धः गन्धो यस्य ब० स०] इंगुदी नाम का पेड़ ।

विगम [वि + गम् + अप्] 1 प्रस्थान करना, अन्तर्धान [illegible] रघु० ११।३७ [illegible] कु० ६।६२ 2 [illegible] 3 [illegible] ।

विगर [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] ।

विगर्हणम् [illegible] निन्दा [illegible] ।

विगर्हित (भू० क० कृ०) [वि + गर्ह् + क्त] 1 निन्दित [illegible] 2 तिरस्कृत 3 [illegible] प्रतिषिद्ध 4 नीच [illegible] ।

विगलित (भू० क० कृ०) [वि + गल् + क्त] 1 बूंद बूंद करके टपका हुआ [illegible] 2 [illegible] गया हुआ 3 [illegible] 4 [illegible] 5 तितर बितर हुआ 6 ढीला किया हुआ खोला हुआ विक्रम० ४।१० 7 खुला हुआ बिखरा हुआ, अस्तव्यस्त (बाल आदि) (दे० वि पूर्वक 'गल्') ।

विगानम् [विरुद्धं गानं प्रा० स०] 1 निन्दा, भर्त्सना, मान-

हानि, बदनामी 2 परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध । असंगति (शाकरभाष्य में पौन पुन्येन प्रयोग) ।

विगाहः [वि+गाह्+घञ्] डुबकी लगाना, स्नान, गोता ।

विगीत (भू० क० कृ०) [वि+गै+क्त] 1 निन्दित, बुराभला कहा गया, डांटा फटकारा गया 2 विरोधी, असंगत ।

विगीतिः (स्त्री०) [वि+गै+क्तिन्] 1. निन्दा, बुराभला कहना, झिड़कना 2 परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध ।

विगुण (वि०) [विगत विपरीतो वा गुणो यस्य ब० स०] 1 गुणों से शून्य, निकम्मा, बुरा —भग० ३।३५, शि० ९।१२, मुद्रा० ६।११ 2 गुणों से हीन 3. बिना रस्सी का —मुद्रा० ७।११ ।

विगूढ (भू० क० कृ०) [वि+गुह्+क्त] 1 भेद, गुप्त, छिपा हुआ 2 निर्भर्त्सित, निन्दित ।

विगृहीत (भू० क० कृ०) [वि+ग्रह्+क्त] 1 विभक्त, भग्न किया हुआ, विश्लिष्ट किया हुआ, (समास के रूप में) विघटित—विग्रह किया हुआ 2 पकड़ा हुआ 3. मुकाबला किया गया, विरोध किया गया (दे० वि पूर्वक ग्रह्) ।

विग्रहः [वि+ग्रह्+अप्] 1. फैलाव, विस्तार, प्रसार 2. रूप, आकृति, शक्ल 3. शरीर—अयी विग्रहवत्येव सममध्यात्मविद्यया—मालवि० १।१४, गूढ विग्रह रघु० ३।३९, ९।५२, कि० ६।११, १२।४३ 4 पृथक्करण, विघटन, विश्लेषण, वियोजन (यथा समास के घटक पदों को पृथक् पृथक् करना) वृत्त्यर्थ समासार्थ) बोधक वाक्य विग्रह. 5 कलह, झगड़ा, (बहुधा प्रणयकलह) विग्रहाच्च शयने पराङ्मुखी-र्नानुनेतुमबलाः स तत्वरे—रघु० १९।३८, ९।४३, शि० ११।३५ 6 संग्राम, शत्रुता, लड़ाई, युद्ध, (विप० संधि) नीति के छः गुणों में से एक दे० गुण 7 अननुग्रह 8. भाग, अंश, प्रभाग ।

विघटनम् [वि+घट्+ल्युट्] अलग-अलग करना, बर्बादी, विनाश ।

विघटिका [विभक्ता घटिका यया—ब० स०] समय की माप, एक घड़ी का साठवाँ भाग, पल (या लगभग चौबीस सेकेण्ड के बराबर समय) ।

विघटित (भू० क० कृ०) [वि+घट्+क्त] 1 वियुक्त, अलग-अलग किया हुआ 2. विभक्त ।

विघट्टनम्, —**ना** [वि+घट्ट्+ल्युट्] 1 प्रहार करना, टक्कर मारना 2 घिसना, रगड़ना 3. वियोजन, बिगाड़ना, खोलना 5. ठेस पहुंचाना, चोट पहुँचाना ।

विघट्टित (भू० क० कृ०) [वि+घट्ट्+क्त] 1. विभक्त किया हुआ, वियुक्त किया हुआ, अलग-अलग किया हुआ, तितर-बितर किया हुआ—भर्तृ० ३।५४ 2. खोला हुआ, ढीला किया हुआ, विवृत किया हुआ 3 रगड़ा हुआ, चोट दिया हुआ 4 हिलाया हुआ, विक्षुब्ध हुआ 5 चोट पहुँचाया हुआ, आघात किया हुआ ।

विघनः [वि+हन्+अप् घनादेशः] मोगरी, हथौड़ा ।

विघसः [वि+अद्+अप् घसादेशः] 1 आधा चबाया किया हुआ ग्रास, भोजन पदार्थ का अवशेष या जूठन—विघसो भुक्तशेषं तु—मनु० ३।२८५, उत्तर० ४।१६, मा० ५।१४ 2 भोजन, सम् ग्रास । सम०—**आशः**, **आशिन्** (पुं०) भुक्तशेष या बचाखुचा जूठन का खाने वाला ।

विघातः [वि+हन्+घञ्] 1 विनाश, हटाना, दूर करना—क्रिया प्रयाता मघवा विघातम्—कि० ३।५२ 2. हत्या, वध 3. बाधा, रुकावट, विघ्न—किया विघाताय कथं प्रवर्तसे रघु० ३।४४, अध्वरविघातशान्तये—११।१ 4. थप्पड़, प्रहार 5 परित्याग करना, छोड़ना । सम० —**सिद्धि** (स्त्री०) बाधाओं का दूर करना ।

विघूर्णित (भू० क० कृ०) [वि+घूर्ण्+क्त] लुढ़काया हुआ, दोलायित, (आंखें आदि) चारों ओर घुमाई हुई ।

विघृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+घृष्+क्त] 1. अत्यन्त रगड़ा हुआ, घिसा हुआ 2 पीडित ।

विघ्नः (विरलतः नपुं०) [वि+हन्+क] 1 बाधा, हस्तक्षेप, रुकावट, अड़चन—कृता धर्मक्रियाविघ्ना सतां रक्षितरि त्वयि रघु० १।६४, १।३३, कु० ३।४० 2 कठिनाई, कष्ट । सम०—**ईशः**,—**ईशानः**,—**ईश्वरः** गणेश का विशेषण, बाहुलेयः गुहः,—**कर**,—**कर्तृ**, **कारिन्** (वि०) विरोध करने वाला, अवरोध करने वाला —**ध्वंसः**,—**विघातः** बाधाओं को दूर करना, —**नायकः**, —**नाशकः**, **नाशनः** गणेश के विशेषण, —**प्रतिक्रिया** बाधाओं का दूर करना—रघु० १५।३, —**राजः**, **विनायकः**,—**हारिन्** (पुं०) गणेश के विशेषण,—**सिद्धिः** (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना ।

विघ्नित (वि०) [विघ्न+इतच्] बाधायुक्त, अड़चनों से भरा हुआ, अवरुद्ध, रुकावटसहित ।

विङ्क्लः (पुं०) घोड़े का खुर ।

विच् (जुहो० उभ० उभ० वेवेक्ति, वेविक्ते, विक्त, रिक्त, विक्त) 1. वियुक्त करना, विभक्त करना, अलग-अलग करना 2 विवेचन करना, विभेद करना, अन्तर पहचानना 3 वञ्चित करना, हटाना (करण० के साथ) भट्टि० १८।१०३, वि—, 1. वियुक्त करना, दूर करना विविक्ताभि दिव सुरान्—भट्टि ६।३६ 2 अन्तर पहचानना, विवेचन करना 3. निर्णय करना, निश्चय कर, निर्धारण करना—रे अथ तद् वस्तु यदि विमृश्य विविच्य कथयामि—भामि० १।१०८ 4 वर्णन करना, वर्णित करना 5. फाड़ देना ।

विचकिलः [विच्+क, विल्+क, क० स०] एक प्रकार चमेली, मदन नामक वृक्ष ।

विचक्षण (वि०) [वि+चक्ष्+ल्युट्] 1 स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, सावधान 2. बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान् रघु० ५।१९ 3 विशेषज्ञ, कुशल, योग्य—रघु० १३।६९, —णः विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् आदमी- न दत्त्वा कस्यचित्कन्यां पुनर्दद्याद्विचक्षणः मनु० ९।७१ ।

विचक्षुस् (वि०) [विगतं विनष्टं वा चक्षुर्यस्य] अंधा, दृष्टिहीन 2 व्याकुल, उदास ।

विचयः [वि+चि+अप्] 1. खोज ढूंढ, तलाश उत्तर० १।२३ 2 छानबीन, तहक़ीकात ।

विचयनम् [वि०+चि+ल्युट्] खोजना, छानबीन करना ।

विचर्चिका [विशेषेण चर्च्यते पाणिपादस्य त्वक् विदार्यते अनया वि+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] खुजली, विसर्पिका, खाज ।

विचर्चित (वि०) [वि+चर्च्+क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मालिश किया हुआ ।

विचल (वि०) [वि+चल्+अच्] 1 इधर उधर घूमने वाला हिलने वाला, थरथराने वाला, लड़खड़ाने वाला, चंचल 2 अभिमानी, घमंडी ।

विचलनम् [वि+चल्+ल्युट्] 1 स्पन्दन 2. व्यतिक्रम 3. अस्थिरता, चंचलता 4. अभिमान ।

विचारः [वि+चर्+घञ्] 1 विमर्श, विनिमय, चिंतन, सोच—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२ 2 परीक्षा, विचारविमर्श, गवेषणा, तत्त्वार्थविचार 3 (किसी बात की) जाँच-पड़ताल मृच्छ० ९।४३ 4. निर्णय, विवेचन विवेक, तर्कना -विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् -रघु० २।४७ 5. निश्चय, निर्धारण 6. चयन 7 संदेह, संकोच 8 दूरदर्शिता, समर्थता। सम०—ज्ञ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्णायक, —भूः (स्त्री०) 1. न्यायाधिकरण, न्यायासन 2 विशेष कर यम की न्यायासन, —शील (वि०) विचारपूर्ण, सचेत, दूरदर्शी,—स्थलम् 1 न्यायाधिकरण 2 तर्कसंगत चर्चा ।

विचारकः [वि०+चर्+ण्वुल्] छानबीन या तहक़ीकात करने वाला, न्यायाधीश ।

विचारणम् [वि+चर्+णिच्+ल्युट्] 1 चर्चा, चिन्तन, परीक्षा, पर्यालोचन, अन्वेषण 2 संदेह, संकोच ।

विचारणा [वि+चर्+णिच्+युच्+टाप्] 1 परीक्षण विचारविमर्श, गवेषणा 2 पुनर्विचार, सोच-विचार चिन्तन 3 संदेह 4 दर्शनशास्त्र की मीमांसापद्धति ।

विचारित (भू० क० कृ०) [वि+चर्+णिच्+क्त] 1 सोचा गया, पूछताछ की गई, परीक्षा की गई, विचारविमर्श किया गया 2 निश्चित, निर्धारित ।

विचिः (पु०, स्त्री०) **विचीः** (स्त्री०) [विच्+इन् स च कित्, विचि+ङीप्] लहर, तरंग ।

विचिकित्सा [वि+कित्+सन्+अ+टाप्] 1. सन्देह, शक 2 भूल, चूक ।

विचित (भू० क० कृ०) [वि+चि+क्त] खोजा, तलाशी ली गई ।

विचितिः (स्त्री०) [वि+चि+क्तिन्] ढूंढना, खोज, तलाश करना ।

विचित्र (वि०) [विशेषेण चित्रम्, प्रा० स०] 1 रंग-बिरंगा, चितकबरा, चित्तीदार, धब्बेदार 2. नानाविध, बहुविध 3 रंगलिप्त 4. सुन्दर, मनोहर क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम् ऋतु० १।२ 5 आश्चर्यजनक, अचंभे वाला, अजीब—हृत अभिलषितानां ही विचित्रो विपाकः —शि ११।६४ —त्रम्—1 बहुरङ्गी रङ्ग 2 आश्चर्य। सम० —अङ्ग (वि०) चितकबरे शरीर वाला, (—ङ्गः) 1 मोर 2 व्याघ्र, —देह (वि०) मनोहर शरीर वाला (—हः) बादल, —रूप (वि०) विविध प्रकार का,—वीर्यः एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, (यह सत्यवती नामक पत्नी से उत्पन्न राजा शन्तनु का एक पुत्र तथा भीष्म का सौतेला भाई था। जब निस्सन्तानावस्था में इसकी मृत्यु हो गई तो इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र (विवाह होने से पहले ही उत्पन्न) व्यास को बुलाया और नियोग की विधि से विचित्रवीर्य के नाम पर सन्तानोत्पादन के लिए प्रार्थना की। व्यास ने माता की आज्ञा का पालन किया और फलतः अम्बिका तथा अम्बालिका (उसके भाई की विधवा पत्नियों) में क्रमशः धृतराष्ट्र और पाडु का जन्म हुआ) ।

विचित्रकः [विचित्र+कप्] भोजपत्र का पेड़,—कम् आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा ।

विचिन्वत्कः [वि+चि+शतृ+कन्] 1 खोज 2 गवेषणा 3 शूरवीर ।

विचीर्ण (वि०) [वि+चॄ+क्त] 1 अधिकृत, व्याप्त 2 प्रविष्ट ।

विचेतन (वि०) [विगता चेतना यस्य प्रा० ब०] 1. चेतना-रहित, निर्जीव, अचेतन, मृतक 2. प्राणहीन ।

विचेतस् (वि०) [विगतं चेतो यस्य—प्रा० ब०] 1 संज्ञाहीन, मूढ, अज्ञानी 2. व्याकुल, घबराया हुआ, उदास ।

विचेष्टा [विशिष्टा चेष्टा प्रा० स०] प्रयत्न, उद्यम, कोशिश ।

विचेष्टित (भू० क० कृ०) [वि+चेष्ट्+क्त] 1 उद्योग किया गया, कोशिश की गई, संघर्ष किया गया 2 परीक्षण किया गया, गवेषणा की गई 3 कुकृत, मूर्खतापूर्वक किया गया, —तम् 1 कर्म, कार्य 2. प्रयत्न, आन्दोलन, उद्योग, साहसिक कार्य 3. भावभंगी 4. कार्यकरण, संवेदना, खेल—विक्रम० २।९ 5. कूट प्रबन्ध, षड्यन्त्र ।

विच्छ् i (तुदा० पर० विच्छति—विच्छायति-ते भी—) जाना, हिलना-जुलना ।

ii (चुरा० उभ० विच्छर्दयति-ते) 1 चमकना 2 बोलना।

विच्छन्दः, विच्छन्दकः [विशिष्ट छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन् —ब० स० पक्षे कन् च] महल, विशालभवन जिसमें कई खण्ड या मञ्जिलें हों।

विच्छर्दकः [वि+छृद्+ण्वुल्] महल, प्रासाद, दे० ऊ० 'विच्छंद'।

विच्छर्दनम् [वि+छृद्+ल्युट्] कै करना, उलटी करना, उगलना।

विच्छर्दित (भू० क० कृ०) [वि०+छृद्+क्त] 1 कै किया हुआ, उगला हुआ 2 जिसकी अवज्ञा की गई हो, जिसकी उपेक्षा की गई हो 3 टूटा-फूटा, न्यूनीकृत।

विच्छाय (वि०) [विगता छाया यस्य - प्रा० ब०] निष्प्रभ, धुन्धला,—रत्न० १।२६,—यः मणि, रत्न।

विच्छित्तिः (स्त्री०) [वि+छिद्+क्तिन्] 1 काट डालना फाड़ देना मालवि० ३।११ 2 बांटना, अलग-अलग करना 3 अन्तर्धान, अनुपस्थिति, लोप 4 विराम 5 शरीर को उबटन या रङ्गलेप से रङ्गना रङ्ग-चित्रण, महावर—श० ७।५, शि० १६।८४ 6. सीमा (घर आदि की) हद 7 कविता में विराम, यति 8. विशेष प्रकार की शृङ्गारप्रिय भावभंगिमा, जिसमें वेशभूषा के प्रति उपेक्षा भी सम्मिलित हो (अपने व्यक्तिगत सौन्दर्य के अभिमान के कारण)—स्तोकाप्याकल्परचना विच्छित्तिः कांतिपोषकृत् सा० द० १३८।

विच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि+छिद्+क्त] 1 फाड़ा हुआ, काटा हुआ 2 तोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ, विभक्त, वियुक्त अर्धे विच्छिन्नम् श० १।९ 3 हस्तक्षेप किया गया, रोका गया 4 अन्त किया गया, बन्द किया गया, समाप्त किया गया 5 चितकबरा 6 गुप्त 7 उबटन आदि रङ्गलेप से पोता गया (दे० वि पूर्वक छिद्)।

विच्छुरित (भू० क० कृ०) [विच्छुर्+क्त] 1 ढका गया ऊपर से फैलाया गया पोता गया 2 जड़ा गया 3 लीपा गया, पोता गया।

विच्छेदः [वि+छिद्+घञ्] 1 काट डालना काटना, विभक्त करना, वियोग मा० ६।११ 2 तोड़ना—शि० ६।५१ 3 रोक, हस्तक्षेप विराम बन्द कर देना विच्छेदमाप भुवि यस्तु कथाप्रबन्धः का०, निद्राविच्छेददर्शितः रघु० १।६६ 4 हटाना, प्रतिषेध 5 फूट अनबन 6 पुस्तक का अनुभाग या परिच्छेद 7. अन्तराल, अवकाश।

विच्युत (भू० क० कृ०) [वि+च्यु+क्त] 1 भ्रष्ट पतित नीचे गिरा हुआ 2 स्खलित, पातित 3 व्यतिक्रान्त, पथविचलित।

विच्युतिः (स्त्री०) [वि+च्यु+क्तिन्] 1 भ्रंश पतन, पृथक् होना वियोग 2 ह्रास, क्षय, पतन 3 विफलता 4 गर्भस्राव, असफलता जैसा कि 'गर्भविच्युति' में।

विज् i (जुहो० उभ० वेवेक्ति, वेविक्ते, विक्त) 1 वियुक्त करना, विभक्त करना 2 भेद करना, अन्तर पहचानना, विवेचन करना (प्राय: वि पूर्वक, तथा विपूर्वक विच् के समान)।

ii (तुदा० आ०, पधा० पर० विजते, विनक्ति, विग्न) 1 हिलना कांपना 2 विक्षुब्ध होना, भय से कांपना 3 डरना, भयभीत होना—चकंद विग्ना कुररीव भूयः रघु० १४।६८ 4 दुःखी होना कष्टग्रस्त होना प्रेर० (वेजयति ते) त्रास देना डराना, उद्-, डरना, उद्-, भयभीत होना, डरना (प्राय अपा० के साथ, कभी कभी संब० के साथ) नीचणाद् ह्रिजते मुद्रा० ३।५ यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः भग० १२।१५ भट्टि० ७।९२ 2 खिन्न या कष्टग्रस्त होना दु:खी होना न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् भग० ५।२० 3 ऊबना (अपा० के साथ) जीवितादुद्विजमानेन मा० ३, मनो नोद्विजते तस्य दहतोऽपमहर्निशम्, उद्विजन्ते नु समागदमारारास्वर्वेदिन कवि० 4 डराना, कष्ट देना, (प्रेर०) 1 त्रास देना, तंग करना कु० १।५ ११ 2 डराना।

विजन (वि०) [विगतो जनो यस्मात् ब० स०] अकेला, सेवानिवृत्त, एकाकी नम् एकान्त स्थान, सुनसान स्थान (विजने निर्जन रूप से)।

विजननम् [वि+जन्+ल्युट्] जन्म प्रसूति, प्रसव।

विजन्मन् (वि० या पु०) [विरुद्ध जन्म यस्य प्रा० ब०] हरामी, जो अवैधरूप से उत्पन्न हुआ है।

विजपिलम् [विज्+क पिल+क, कर्म० स] गारा, कीचड़।

विजयः [वि+जि+अच्] 1 जीतना हराना पराभव करना 2 जय पराभव, जय यात्रा—कि० १०।३५ रघु० १२।६४, कु० ३।१९ श० ७।१४ 3 देवताओं का रथ, विमान रथ 4 अर्जुन का नाम महा० नाम की व्याख्या करता है—अभिप्रयामि संग्रामे यदहं युद्धदुर्मदान्, नाजित्वा विनिवर्तामि तेन मां विजयं विदुः 5 यम का विशेषण 6 बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष 7 विष्णु के सेवक का नाम। सम०—अभ्युपायः विजय का साधन या उपाय कुञ्जरः लड़ाई का हाथी, —छंदः पाँचसौ लड़ी का हार, —डिण्डिमः सेना का विशाल ढोल, —नगरम् एक नगर का नाम, —मर्दलः एक विशाल सैनिक ढोल,—सिद्धिः (स्त्री०) सफलता, जीत फतह।

विजयंतः (पु०) इन्द्र का नाम।

विजया [विजय+टाप्] 1 दुर्गा का नाम 2 उसकी सेवि-

कार्यों में से एक — मुद्रा० १।१ 3. एक विशेष विद्या जो विश्वामित्र ने राम को सिखाई थी — भट्टि० २।२१ 4 भांग 5 एक उत्सव का नाम =विजयोत्सव, दे० नी० 6 हरीतकी। सम० — उत्सवः दुर्गादेवी के सम्मान में उत्सव जो आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाता है, — दशमी आश्विनशुक्ला दशमी।

विजयिन् (पुं०) [वि+जि+इनि] विजेता, जीतने वाला।

विजरम् [विगता जरा स्मात् — प्रा० ब०] वृक्ष का तना।

विजल्पः [वि० + जल्प्+घञ्] 1 बाल कलरव ऊटपटांग या मूर्खतापूर्ण बात 2 सामान्य वार्ता 3 दुर्भावनापूर्ण या विद्वेषपूर्ण भाषण।

विजल्पित (भू० क० कृ०) [वि+जल्प्+क्त] 1 कहा गया, जिससे बातें की गईं 2 भोली भाली बात, बाल सुलभ तुतलाहट।

विजात (भू० क० कृ०) [विरुद्ध जातं जन्म यस्य — प्रा० ब०] 1 नीच कुलोत्पन्न, वर्णसंकर 2 उत्पन्न, जन्मा हुआ 3 रूपान्तरित, — ता माता, मातृका वह स्त्री जिसके अभी सन्तान हुई हो।

विजातिः (स्त्री०) [विभिन्ना जातिः प्रा० स०] 1 भिन्न मूल या जाति 2 भिन्न प्रकार, जाति, या कुटुम्ब।

विजातीय (वि०) [विजाति+छ] 1 भिन्न प्रकार या जाति का, असमान, विषम 2 भिन्न वर्ण या जाति का 3. मिली जुली जाति का।

विजिगीषा [वि+जि+सन्+अ+टाप्] 1. जीतने की या विजय प्राप्त करने की इच्छा 2. आगे बढ़ने की इच्छा, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, महत्त्वाकांक्षा।

विजिगीषु (वि०) [वि+जि+सन्+उ] 1 जीत का इच्छुक, विजय करने की इच्छा वाला — यशसे विजिगीषूणाम् — रघु० १।७ 2. प्रतिस्पर्धी, महत्त्वाकांक्षी, — षुः 1. योद्धा, शूरवीर 2 प्रतिस्पर्धी, समकक्ष प्रतिपक्षी।

विजिज्ञासा [वि+ज्ञा+सन्+अ] स्पष्ट जानने की इच्छा।

विजित (भू० क० कृ०) [वि+जि+क्त] पराजित किया हुआ, जीता हुआ, जिसके ऊपर विजय प्राप्त की गई हो, हराया हुआ। सम० — आत्मन् (वि०) जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर दिया है, जितेन्द्रिय, — इन्द्रिय (वि०) जिसने इन्द्रियों का दमन कर दिया है, या नियन्त्रण कर लिया है।

विजितिः (स्त्री०) [वि+जि+क्तिन्] जीत, फतह, विजय — काव्या० ३।८५।

विजिलः, — लम् (म्, — लम्) [विज्+इलच्, इलच् वा] चटनी (कांजी मिश्रित)।

विजिह्म (वि०) [विशेषेण जिह्म — प्रा० स०] 1. कुटिल मुड़ा हुआ, मुड़ा हुआ — कि० १।२१, रघु० १९।३५ 2. बेईमान।

विजुलः [विज्+उलच्] शाल्मलि या सेमल का पेड़।

विजृम्भणम् [वि+जृम्भ्+ल्युट्] 1 मुँह फाड़ना, जम्भाई लेना 2 बौर आना, कली आना, खिलना, उन्मुक्त होना, वनेषु सायतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु — रघु० १६।४७ 3 दिखलाना, प्रदर्शन करना, खोलना 4 फैलाना 5 मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, रंगरेलियाँ।

विजृम्भित (भू० क० कृ०) [वि०+जृम्भ्+क्त] 1. मुँह फाड़ा, जम्भाई ली — पृच्छ० ५।५१ 2 उद्घाटित, निष्कासित फैलाया हुआ 3. प्रदर्शित, दिखाया गया, प्रकट किया गया — रघु० ७.४२ 4 दर्शन दिये गये 5. खेला गया, — तम् 1 क्रीडा, मनोरंजन 2 अभिलाषा इच्छा 3 प्रदर्शन, प्रदर्शनी — अज्ञानविजृम्भितम् 4 कृत्य, कर्म, आचरण — मा० १०।२१।

विज्जनम्, — लम् [विष्+जन् (जड् डलयोरभेदः) + अच्] 1 एक प्रकार की चटनी, दे० 'विजुल' 2 तीर, बाण।

विज्जुकम् (नपुं०) दारचीनी।

विज्ञ (वि०) [वि+ज्ञा+क] 1 जानने वाला, प्रतिभावान्, बुद्धिमान्, विद्वान् 2. चतुर, कुशल, प्रवीण, — ज्ञः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष।

विज्ञप्त (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञप्+क्त] सादर कहा गया, याचित।

विज्ञप्तिः [वि+ज्ञा+क्तिन्] 1. सादर उक्ति या समाचार, प्रार्थना, अनुरोध 2. घोषणा।

विज्ञात (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+क्त] 1 विदित, जाना हुआ, प्रत्यक्ष ज्ञात किया हुआ 2 विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध।

विज्ञानम् [वि+ज्ञा+ल्युट्] 1 ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ, — विज्ञानमय कोश, 'प्रज्ञा का म्यान' (आत्मा के पाँच कोशों में से दूसरा) 2 विवेचन, अन्तर पहचानना 3 कुशलता प्रवीणता — प्रयोगविज्ञानम् — श० १।२ 4. सांसारिक या लौकिक ज्ञान, सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान (विप० ज्ञानम् ब्रह्म या परमात्मविषयक ज्ञान) — भग० ३।४१ ७।२, (भग० का समस्त सातवाँ अध्याय ज्ञान और विज्ञान की व्याख्या करता है) 5 व्यवसाय, नियोजन 6 संगीत। सम० — ईश्वरः याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा नामक टीका का प्रणेता, — पादः व्यास का नाम, — मातृकः बुद्ध का विशेषण, — वादः ज्ञान का सिद्धान्त बुद्ध द्वारा सिखाया गया सिद्धान्त।

विज्ञानिक (वि०) [विज्ञान+ठन्] बुद्धिमान्, विद्वान् दे० 'विज्ञ'।

विज्ञापकः [वि+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्, पुकागमः] 1 सूचना देने वाला 2 अध्यापक, शिक्षक।

विज्ञापनम्, —ना [वि+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1 शिष्ट उक्ति या सवाद, प्रार्थना, अनुरोध —कालप्रयुक्ता खलु कार्यविद्भिर्विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति —कु० ७।९३, रघु० १७।४० 2 सूचना, वर्णन 3 शिक्षण।

विज्ञापित (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] 1 शिष्टतापूर्वक कहा हुआ या सवाद दिया हुआ 2 प्रार्थित 3 ससूचित 4 शिक्षित।

विज्ञाप्तिः [वि+ज्ञा+णिच्+क्तिन्, पुकागमः] दे० 'विज्ञप्ति'।

विज्ञाप्यम् [वि+ज्ञा+णिच्+यत्, पुकागमः] प्रार्थना —उत्तर० १।

विज्वर (वि०) [विगतो ज्वरो यस्य—ब० स०] ज्वर से मुक्त, चिन्ता या दुःख से मुक्त।

विज्वलम्(नपुं०) आँखों की सफेदी, नेत्रों का श्वेत भाग।

विञ्जोलिः, —ली (स्त्री०) [विज्+उल, पृषो० साधुः] रेखा, पंक्ति।

विट् (भ्वा० पर० वेटति) 1 ध्वनि करना 2 अभिशाप देना, दुर्वचन कहना।

विटः [विट्+क] 1. जार, यार, उपपति—मा० ८।८, शि० ४।४८ 2. लंपट, कामुक 3 (नाटकों में) किसी राजा या दुश्चरित्र युवक का साथी, किसी ऐसी वेश्या का साथी, जिसको गायन, संगीत तथा कविता निर्माण की कला में कुशलता प्राप्त हो, नायक पर आश्रित पराश्रयभोजी जो विदूषक का कार्य करे—दे० मृच्छ० अंक -१, ५ व ८) परिभाषा के लिए दे० सा० द० ७८ 4 धूर्त, ठग 5 भांडू, दल्लाली 6. चूहा 7 खैर या खदिर का पेड़ 8 नारंगी का पेड़ 9. पल्लवयुक्त शाखा। सम० —माक्षिकम् एक प्रकार का खनिजपदार्थ, सोनामाखी, —लवणम् रोगनाशक नमक।

विटङ्कः [विशेषेण टंक्यते बध्यते इति —वि+टङ्क्+घञ्] 1 चिड़िया-घर, कबूतर का दरबा 2 सबसे ऊँचा सिरा, कलश व कंगूरा, ऊँचाई —अयमेव महीधर विटङ्कः—मा० १०, विक्रम० ५।७७।

विटङ्ककः [विटङ्क+कन्] दे० विटङ्क।

विटङ्कित (वि०) [वि+टङ्क्+क्त] चिह्नित, मुद्रांकित।

विटपः [विटं विस्तारं वा पाति पिबति—पा+क] 1 शाखा, (लता या वृक्ष की) टहनी —कोमलविटपानुकारिणौ बाहू श० १।२१, ३१, मदनेन तरुर्न पातितः क्षपिता तद्विटपाश्रिता लता रघु० ८।४७, शि० ४।४८, कु० ६।४१ 2 झाड़ी 3 नया अंकुर या किसलय—शि० ७।५३ 4 गुल्म, झुण्ड, झुरमुट 5 विस्तार 6. अण्डकोश पटल।

विटपिन् (पुं०) [विटप+इनि] 1 वृक्ष —परितो वृष्टाश्च विटपिन सर्वे भामि० १।२१, २९ 2 वटवृक्ष, गूलर। सम० —मृगः बन्दर, लंगूर।

विट्ठ (ठ्ठ) लः (पुं०) विष्णु या कृष्ण का रूप (बम्बई प्रान्त में स्थित पंढरपुर में इस रूप की पूजा होती है)।

विठङ्कु (वि०) बुरा, दुष्ट, अधम, नीच।

विठरः (पुं०) बृहस्पति का नाम।

विड् (भ्वा० पर० वेडति) 1 अभिशाप देना, दुर्वचन कहना, बुरा भला कहना 2 जोर से चिल्लाना।

विडम् [विड्+क] एक प्रकार का कृत्रिम नमक।

विडङ्ग, —गम् [विड्+अङ्गच्] एक प्रकार का शाक, वायविडंग (कृमिनाशक औषधि के रूप में बहुधा प्रयुक्त)।

विडम्बः [विडम्ब्+अच्] 1 नकल 2. दुःखी करना, तंग करना, कष्ट देना।

विडम्बनम्, —ना [विडम्ब्+ल्युट्] 1 नकल 2 छद्मवेश, छलमुद्रा 3 धोखेबाजी, जालसाजी 4 क्लेश, सताप 5 पीड़ित करना, दुःख देना 6. निराश करना 7. मजाक, उपहास, परिहासविषय —इयं च तेऽन्या पुरतो विडम्बना कु० ५।७०, असति त्वयि वारुणीमदः प्रमदानामधुना विडम्बना ४।१२।

विडंबित (भू० क० कृ०) [विडंब्+क्त] 1 अनुकरण किया गया, नकल किया गया, परिहास किया गया, मजाक बनाया गया 3 ठगा गया 4 क्लेश पहुँचाया गया, सतप्त किया गया 5 हताश किया गया 6 नीच, कमीना, दीन।

विडारकः [विडाल+कन्, लस्य रः] बिलाव।

विडालः, विडालकः (पुं०) दे० बिडाल, बिडालक।

विडीनम् [वि+डी+क्त] पक्षियों की एक उड़ानविशेष। दे० डीन।

विडुलः [विड्+कुलच्] एक प्रकार की बेंत।

विडूरजम् [विडूर+जन्+ड] वैदूर्य, नीलम।

विडौ (डो) जस् (पुं०) [विट् व्यापकम् ओजो यस्य ब० स०] इन्द्र का नाम, दे० 'बिडौजस्'।

वितंसः [वि+तंस्+घञ्] 1. पक्षियों का पिंजरा 2 रस्सी, शृंखला, जाल या जंजीर आदि जिनसे बंधे पशु पक्षी कैद किये जाय।

वितण्डः [वि+तड्+अच्] 1. हाथी 2 एक प्रकार का ताला या चटखनी।

वितण्डा [वितण्ड+टाप्] 1 मिथ्या आक्षेप, निराधार छिद्रान्वेषण, ओछा तर्क निरर्थक तर्कवितर्क—स (जल्प) प्रतिपक्षस्थापनाहीनो वितण्डा गौत० 2 नुक्ताचीनी, दोषपूर्ण आलोचना 3 [illegible] 4 गुग्गुल, धूप।

वितत (भू० क० कृ०) [वि+तन्+क्त] 1 [illegible]

हुआ, विस्तृत किया हुआ, बिछाया हुआ 2 आयत, विशाल, विस्तीर्ण 3 सम्पन्न, निष्पन्न कार्यान्वित —वितत्यज्ञ श० ७।३४ 4 ढका हुआ 5 प्रसृत —दे० वि पूर्वक तन्, तम् कोई भी ऐसा उपकरण जिसमें तार लगे हों वीणा आदि। सम धन्वन् (वि०) जिसने अपने धनुष को पूरी तरह तान लिया है।

विततिः (स्त्री०) [वि+तन् क्तिन] 1 विस्तार प्रसार 2 परिमाण समूह गुल्म झुण्ड 3 रेखा पंक्ति मा० ९।८७।

वितथ (वि०) [वि+तन्+क्थन] 1 झूठ मिथ्या— असत्यमना न भवता वितथ विकत्थसे वेणी० ३। ५।४१, रघु० ९।८ 2 व्यर्थ निष्फल गया वितथ प्रयत्न में।

वितथ्य (वि०) [वितथ+यत्] मिथ्या दे० ऊपर।

वितद्रु (स्त्री०) [वि+तन्+द्रु, दुर पंजाब की एक नदी का नाम, वितस्ता या झेलम नदी।

वितंतु (पु०) अच्छा घोड़ा स्त्री० विधवा।

वितरणम् [वि+तृ+ल्युट्] 1 पार जाना 2 उपहार दान 3 छोड़ देना, त्याग करना, तिलाञ्जलि देना।

वितर्कः [वि+तर्क्+अच्] 1. युक्ति, दलील अनुमान 2 अन्दाज अटकल, कल्पना, विश्वास शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्क कु० १।४१ 3 उद्भावन, चिन्तन भर्तृ० ३।४५ 4 सन्देह, कि० ४।५, १३।२ 5 विचारविनिमय, विचारविमर्श।

वितर्कणम् [वि+तर्क्+ल्युट्] 1. तर्क करना 2 अटकल करना, अन्दाज लगाना 3. सन्देह 4. तर्क वितर्क।

वितर्दि, -र्दी वितर्दिका, (स्त्री०) [वि+तर्द्+इन्, वितर्दि+ङीष्, वितर्दि+कन्+टाप्] 1 आंगन में बना हुआ चौकोर चबूतरा 2 छज्जा, बरामदा।

वितर्द्धिः, -र्द्धी, वितर्द्धिका (स्त्री०) दे० वितर्दि आदि।

वितलम् [विशेषेण तलम् —प्रा०स०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात तलों में से दूसरा—दे० पाताल या लोक।

वितस्ता (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसको यूनानी Hydaspes कहते हैं तथा जो आजकल झेलम या वितस्ता के नाम से विख्यात है।

वितस्तिः [वि+तस्+ति] बारह अंगुल की लम्बाई की माप (हाथ को पूरा फैला कर अंगूठे से कन्नी अंगुली तक की दूरी)।

वितान (वि०) [वि+तन्+घञ्] 1 खाली, रीता 2 सार- 3. हतोत्साह, उदास रघु० ४।८६ 4 बुद्धू, जड़ 5. दुष्ट, परित्यक्त —नः, —नम् 1 फैलाना प्रसार करना विस्तार करना—शि० ११।२८ 2. शामियाना, चंदोवा विद्युल्लेखाकनककचिरश्रीवितान ममाभ्रम् विक्रम० ४।१३, रघु० १९।३९ कि० ३।४२, शि० ३।५० 3 गद्दी 4 समूह, परिमाण समवाय कि० १३।६१, मा० ६।४ 5 यज्ञ, आहुति —विनानेष्वप्येव तव मम च साम विधिरभूत वेणी० ६।३०, ३।१६, शि० १४।१० 6 यज्ञ की वेदी 7 ऋतु, मौसम, —कम् अवकाश विश्राम।

वितानकः, —कम् [वितान+कन्] 1 प्रसार 2 ढेर, परिमाण समूह राशि मा० २।६ 3 शामियाना, चंदोवा 4 ... ।

वितीर्ण [वि+तॄ+क्त] 1 पार किया हुआ पास से गुजरा हुआ 2 दिया हुआ अर्पित प्रदत्त कि० ... ५।५४ 3 नीचे गया हुआ उतरा हुआ ... 4 छाया गया 5 दमन किया गया ... (दे० वि पूर्वक तॄ)।

वितुन्नम् ... 1 सुनिषण्णक नामक शाक सुसना ... नाम का पौधा सेवार।

वितुन्नकम् [वितुन्न+कन्] 1 धनिया 2 तूतिया —कः ... ।

वितुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+तुष्+क्त] असन्तुष्ट, अप्रसन्न सन्ताप से शून्य

वितृष्ण (वि०) [विगता तृष्णा यस्य प्रा० ब०] इच्छा से मुक्त सन्तुष्ट।

वित् (चुरा० उभ० वित्तयति ते, कुछ के मतानुसार वित्तापयति ते भी) पुरस्कार देना, दान देना।

वित्त (भू० क० कृ०) [विद् लाभे+क्त] 1 पाया, खोजा 2 लब्ध अवाप्त 3 परीक्षित अनुसंहित 4 विख्यात, प्रसिद्ध, —त्तम् 1 धन दौलत जायदाद, संपत्ति, द्रव्य 2 शक्ति। सम —आगमः, —उपार्जनम् धन का अधिग्रहण,—ईशः कुबेर का विशेषण, मनु० १०।२३, मनु ७।४, —द दाता, दाता,—माया संपत्ति।

वित्तवत् (वि०) [वित्त+मतुप्] धनवान्, दौलतमंद।

वित्तिः (स्त्री०) [विद्+क्तिन्] 1 ज्ञान 2 निर्णय, विवेचन चिन्तन 3 लाभ, अधिग्रहण 4 संभावना।

वित्रासः [वि+त्रस्+घञ्] भय, झटका, त्रास या डर।

वित्सनः [विद्+क्विप् सन्+अच्] बैल, सांड।

विथ् (भ्वा० आ० वेथते) प्रार्थना करना, निवेदन करना।

विथुर [व्यथ्+उरच् संप्रसारण च] 1 राक्षस 2 चोर।

विद् (अदा० पर० वेत्ति या वेद, विदित इच्छा० विविदिषति) 1 जानना समझना, सीखना मालूम करना, निश्चय करना खोजना अवैस्यवमतोयस्य स्थिमा दक्षिणन कथम् भट्टि० १०६ न मोहांध कथमयमपूवेत्तु देव पुराणम् वेणी० १।२३, ३।३९, श० ५।२७, भग० ४।३५ १।११ 2. महसूस करना, अनुभव करना मुद्रा० ३।८ 3 मुंह ताकना, सम्मान करना, मानना, जानना, समझना विद्धि व्याधिव्यालग्रस्त लोक शोकहतं च समस्तम् मोह० ५, भग०

२।१७, रघु० ३।३९, मनु० १।३३, कु० ६।३०, प्रेर०—(वेदयति ते) 1 जतलाना, सूचना देना, सूचित करना, अवगत कराना, बताना 2 अध्यापन करना, व्याख्या करना,—वेदार्थस्वानवेदयत् सिद्धा० 3 महसूस करना, अनुभव करना मनु० १२।१३ **आ**, (प्रेर०) 1 घोषणा करना कहना, प्रकथन करना —किमिति नावेदयति अथवा किमावेदितेन वेणी० १, रघु० १२।५५, कु० ६।२१ भट्टि० ३।४९ 2 प्रदर्शन करना, दिखाना इंगित करना आवेदयति प्रत्यासन्नमानदमग्रजातानि शुभानि निमित्तानि का० 3 प्रस्तुत करना, देना **नि**— (प्रेर०) 1 बताना समाचार देना, सूचित करना (संप्र० के साथ)—रघु० २।६८ 2 अपनी उपस्थिति की घोषणा करना —कथमात्मानं निवेदयामि— श० १ 3 इंगित करना, दिखलाना द्विगवरस्तेन निवेदितं वसु—कु० ५।७२ 4 प्रस्तुत करना, उपस्थित होना भेंट चढ़ाना—मनु० २।५१, याज्ञ० १।२७ 5 देख रेख में सौंपना, दे देना, **प्रति**—(प्रेर०) समाचार देना सूचित करना, **सम्**—, (आ०) जानना, सावधान होना भट्टि० ५।३७ ८।१७ 2 पहचानना, (प्रेर०) जतलाना, प्रत्यक्ष ज्ञान कराना भट्टि० १७।६३।

II (दिवा० आ० विद्यते, वित्त) होना, विद्यमान होना —अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते मृच्छ० ९।३७, नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः भग० २।१६ (तु० 'अस्')।

III (तुदा० उभ० विंदति —ते, वित्त) 1 हासिल करना प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपलब्ध करना—एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विंदते फलम्—भग० ५।४ याज्ञ० ३।१९२ 2 मालूम करना, खोजना पहचानना, यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विंदति मातरम्- सुभा० कु० १।६ मनु० ८।१०९ 3 महसूस करना, अनुभव करना—रघु० १४।५६, भग० ५।२१ ११।२४ १८।४५ 4. विवाह करना -मनु० ९।६९, **अनु**— 1 हासिल करना, प्राप्त करना 2 भुगतना, अनुभव करना महसूस करना पाप मदमने वि वा मनापमनु विंदसि —भामि० २।११२, गीत० ४।

IV (रुधा० आ० वित्ते वित्त या विन्न) 1 जानना समझना 2 मानना, लिहाज करना, समझना—न तृणेह्वीति लोकोऽयं विन्ते मा निष्पराक्रमम्—भट्टि० ६।३९, 3 मालूम करना भेंट होना 4 तर्क करना विमर्श करना 5 परीक्षण करना, पूछताछ करना।

V (चुरा० आ० वेदयते) 1 कहना, प्रकथन करना, घोषणा करना, समाचार देना 2 महसूस करना अनुभव करना 3 रहना (निम्नांकित श्लोक में धातु के गर्वमसाम्य न विद्यते, विंते धर्म सदा सद्भिस्तेषु पूजां च विंदति)।

विद् (वि०) [विद् + क्विप्] (समास के अन्त में) जानने वाला, जानकार, वेदविद् आदि, (पुं०) 1 बुधग्रह 2. विद्वान् पुरुष बुद्धिमान मनुष्य (स्त्री०) 1 ज्ञान 2 समझ, बुद्धि।

विद [विद् + क] 1 विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य, पंडितजन 2 बुधग्रह, **दा** 1 ज्ञान अधिगम 2 समझदारी।

विदंशः [वि + दंश् + घञ्] चटपटा भोजन जिसके खाने से प्यास अधिक लगे।

विदग्ध (भू० क० कृ०) [वि + दह् + क्त] 1. जला हुआ, आग से भस्म हुआ 2 पका हुआ 3 पचा हुआ 4 नष्ट किया हुआ, गला-सड़ा 5 चतुर, कुशाग्रबुद्धि, निपुण, सूक्ष्मदर्शी 6 धूर्त कलामिज्ञ, षड्यन्त्रकारी 7 अनजला या अनपचा,—**ग्धः** 1 बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष, विषयव्यसनी 2 स्वेच्छाचारी, **ग्धा** चालाक, चतुर स्त्री, कलाविद् स्त्री।

विदथः [विद् + कथच्] 1 विद्वान् पुरुष, विषयव्यसनी 2 सन्यासी, मुनि।

विदरः [वि + दृ + अप्] तोड़ना फटना विदीर्ण होना **रम्** काँटेदारी नाशपाती, ककारी वृक्ष।

विदर्भाः (पुं०, ब० व०) [विगता दर्भा कुशा यत] 1 एक ज़िले का नाम, आधुनिक बरार-अस्ति विदर्भो नाम जनपदः—दश०, अस्ति विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम् मा० १, रघु० ५।४०, ६०, नै० १।५० 2 विदर्भ के निवासी, **र्भः** 1 विदर्भ देश का राजा 2 सूखी या मरुभूमि। सम० **जा**, **तनया**, **राजतनया**, **सुभ्रू** विदर्भ- राज की पुत्री दमयन्ती के विशेषण।

विदल (वि०) [विपर्यस्तानि दलानि यस्य वि + दल् क] 1 टुकड़े टुकड़े हुए आरपार चीरा हुआ 2 खुला हुआ (फूल आदि) खिला हुआ **लः** 1 विभक्त करना अलग अलग करना 2 फाड़ना टुकड़े टुकड़े करना 3 रोटी 4 पहाड़ी आबनूस, **लम्** 1 बाँस की खपच्चियों की बनी टोकरी या खपच्ची डालियों की बनी वस्तुएँ 2 अनार की छाल 3 टहनी 4 किसी द्रव्य की फाँक।

विदलनम् [वि + दल् ल्युट्] खण्ड खण्ड करना, फाड़ कर अलग अलग करना काटना विभक्त करना।

विदार [वि + दृ + घञ्] 1 फाड़ना, चीरना खण्ड खण्ड करना 2 संग्राम युद्ध 3 (किसी नदी या तालाब का) ऊपर से बहना जलप्लावन।

विदारक [वि + दृ + ण्वुल्] 1 फाड़ने वाला बाँटने वाला 2 नदी की धार के मध्य में स्थित वृक्ष या चट्टान

(जो नदी के मार्ग को विभक्त कर दे) 3 किसी शुष्क नदी के पाट में पानी के लिए बनाया गया छिद्र।

विदारणः [वि+दृ+णिच्+ल्युट्] 1 नदी के मध्य में स्थित चट्टान या वृक्ष (जिससे नाव बाँध दी जाय) 2. संग्राम, युद्ध 3 कर्णिकार या कनियर का वृक्ष, —णा संग्राम, युद्ध, —णम् 1 फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, चीरना, छिन्न करना, तोड़ना—भूम मध्ये स्वर्णाविदारण वस्त्र मुद्रा० ५।६ मुतजनहृदयविदारणममसिजनखरुचिविशृंखलाम गीत० १ कि० १४। ९४ (१४[a] विदारण विदारण का कार्य करना है। 2 ध्यान से देना 3 वध करना।

विदारुः [वि+दृ+णिच्+उ] छिपकली।

विदित (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1 ज्ञात, समझा हुआ, सीखा हुआ 2 सूचित 3 विश्रुत, विख्यात प्रसिद्ध भुवनविदित वंशे—मेघ० ६ 4 प्रतिज्ञात, इकरार किया हुआ, —तः विद्वान पुरुष, विद्याव्यसनी —तम् ज्ञान, सूचना।

विदिश् (स्त्री०) [दिशयो विगता] दो दिशाओं का मध्यवर्ती बिन्दु।

विदिशा (स्त्री०) दशार्ण नामक प्रदेश की राजधानी (वर्तमान भेलसा नगर) तेषां (दशार्णानां) दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्—मेघ० २४ 2 मालवा प्रदेश की एक नदी का नाम 3 —विदिश् दे०।

विदीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+दृ+क्त] 1 फाड़ा हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ, विदारण किया हुआ, फाड़ कर खोला हुआ 2 खोला हुआ, फैलाया हुआ (दे० विपूर्वक दृ)।

विदुः [विद्+कु] हाथी के गंडस्थल का मध्य भाग, हाथी का ललाट (हस्तिकुम्भमध्यभाग)।

विदुर (वि०) [विद्+कुरच्] बुद्धिमान्, मनीषी, —रः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 2 धूर्त आदमी, षड्यन्त्रकारी 3 पाण्डु के छोटे भाई का नाम (जब सत्यवती को ज्ञात हुआ कि व्यास द्वारा उसकी दोनों पुत्रवधुओं से उत्पन्न दोनों पुत्र शारीरिक रूप से सिंहासन के अयोग्य हैं क्योंकि धृतराष्ट्र अन्धा था तथा पांडु पीला एवं अस्वस्थ था—तो उसने उन्हें एक बार फिर व्यास की सहायता मांगने के लिए कहा। परन्तु व्यास मुनि को तपोमय उग्र दृष्टि से भयभीत होकर बड़ी विधवाने अपनी एक दासी को अपने वस्त्र पहना कर उनके पास भेजा और यही दासी विदुर की माता बनी। यह अपनी बड़ी बुद्धिमत्ता सच्चाई और घोर निष्पक्षता के कारण प्रसिद्ध है वह पांडवों से विशेष स्नेह रखते थे, तथा कई बार उन्हें अनेक संकटग्रस्त विपत्तियों से बचाया)।

विदुलः [वि+दुल्+क] 1 एक प्रकार का कांसा, बेंत 2 लोबान की तरह का एक सुगंधित गंधरस।

विदून (भू० क० कृ०) [वि+दू+क्त] कष्टग्रस्त, संतप्त दुःखी (दे० वि पूर्वक दु)।

विदूर (वि०) [विशेषण दूर प्रा० स०] जो बहुत दूर हो दूरस्थित—सरिद्विदूरान्तरभावतन्वी रघु० १३।४८, —रः पहाड़ का नाम जहाँ से वैदूर्यमणि निकलती है—विदूरभूमिनवमेघशब्दादुद्भिन्नया रत्नशलाकयेव—कु० १।२४ दे० इस पर ग्या शि० ३।४५ पर मल्लि० **विदूरम्**, **विदूरेण**, **विदूरतः**, **विदूरात्** शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'दूर से' 'दूरी पर' 'दूर' अर्थ को प्रकट करते हैं। सम० —ग (वि०) दूर दूर तक फैला हुआ —जम् वैदूर्य मणि।

विदूषक (वि०) (स्त्री०—की) [विदूषयति स्व पर वा—वि+दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1 दूषित करने वाला, मलिन करने वाला, भ्रष्ट करने वाला 2 बदनाम करने वाला, गाली-गलौज बकने वाला 3 रसिक, मसखरा ठिठोलिया —कः 1 हँसोड़, भांड, परिहासक 2. विशेषतः नाटक में नायक का दिल्लगीबाज साथी और अन्तरंग मित्र जो अपनी अनोखी वेशभूषा बातचीत हावभाव, मुखमुद्रा आदि से तथा अपने आपको परिहास का पात्र बना कर उल्लास में वृद्धि करता है, सा० द० ७९ पर दी गई परिभाषा कुसुमवसंताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः, हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः 3 स्वच्छाचारी, लपट।

विदूषणम् [वि+दूष्+ल्युट्] 1 मलिनीकरण, भ्रष्टाचार 2 दुर्वचन, झिड़की, परिवाद।

विदृतिः [वि+दृ+क्तिन्] सीवन, सन्धि।

विदेशः [विप्रकृष्टो देशः प्रा० स०] दूसरा देश, परदेश भजते विदेशमधिकेन जितस्तदनुप्रवेशमथवा कुशलः —शि० ९।४८। सम० —ज (वि०) विदेशी, परदेशी।

विदेशीय (वि०) [विदेश+छ] परदेशी, विदेशी।

विदेहाः (पु० ब० व०) [विगतो देहो देहसबंधो यस्य —प्रा० ब०] एक देश का नाम, प्राचीन मिथिला (दे० परि० ३)—रघु० ११।३६ १२।२६ 2 इस देश के निवासी, —हः विदेह का राजा, —हा विदेह।

विद्धम् (भू० क० कृ०) [व्यध्+क्त] 1 बींधा हुआ चुभा हुआ, घायल, छुरा भोंका हुआ 2. पीटा हुआ, कशाहत, कशाहत 3 फेंका गया, निर्देशित, प्रेषित 4 विरोध किया गया 5 मिलता जुलता, —द्धम् घाव। सम० —कर्ण (वि०) जिसके कान छिदे हों।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1 ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान (…ता) विद्यासम्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि

—रघु० १।८८ विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् भर्तृ० २।२० (कुछ विद्वानों के मतानुसार विद्या चार हैं आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती काम०, कि० २।६ इन चारों में मनु० ७।४३ पांचवीं विद्या—आत्मविद्या को और जोड़ देता है। परन्तु विद्या साधारणतः चौदह मानी जाती हैं - अर्थात् चार वेद छः वेदांग धर्म मीमांसा तर्क या न्याय और पुराण दे० चतुर के नीचे चतुर्दश विद्या तथा नै० १।४) 2 यथार्थ ज्ञान अध्यात्म ज्ञान —उत्तर० ६।६ तु० अविद्या 3 जादू मन्त्र 4 दुर्गादेवी 5 ऐन्द्रजालिक कुशलता। सम०—अनुपालिन्—अनुसेविन् (वि०) ज्ञानोपार्जन करने वाला, ज्ञानवान्,—अर्जनम् —अभ्यासः, ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा ग्रहण करना, अध्ययन —अर्थः ज्ञान की खोज —अर्थिन् (वि०) छात्र विद्याव्यसनी, शिष्य,—आलयः विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामन्दिर —उपार्जनम् =विद्यार्जनम्,—करः विद्वान् पुरुष, —चण, —चुञ्चु (वि०) अपने ज्ञान एवं शिक्षा के लिए प्रसिद्ध, —देवी सरस्वती देवी,—धनम् विद्यारूपी दौलत, —धरः (स्त्री० —री) एक देवयोनि विशेष, अर्धदेवता,—प्राप्तिः =विद्यार्जन,—लाभः 1 ज्ञान की प्राप्ति 2 ज्ञान के द्वारा प्राप्त किया गया धन आदि, —विहीन (वि०) निरक्षर, अज्ञानी,—वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ शिक्षा में प्रगतिशील —व्यसनम्, —व्यसनिता ज्ञान की खोज।

विद्युत् (स्त्री०) [विशेषेण द्योतते —वि+द्युत्+क्विप्] बिजली —वाताय कपिला विद्युत् —महा०, मेघ० ३८, ११५ 2 वज्र। सम० —उन्मेषः बिजली की कौंध,—जिह्वः एक प्रकार का राक्षस —ज्वाला,—द्योतः बिजली की कौंध या कांति —दामन् (नपुं०) वक्र गति से युक्त बिजली की कौंध या चमक, —पातः बिजली का गिरना या प्रहार, —प्रियम् कांसा,—लता, —लेखा (विद्युल्लता, विद्युल्लेखा) 1 बिजली की कौंध या लहर 2 वक्रगतिशील या कुटिल बिजली।

विद्युत्वत् (वि०) [विद्युत्+मतुप्] बिजली से युक्त —मेघ० ६४, (पुं०) बादल कु० ६।२७।

विद्योतन (वि०) (स्त्री० —नी) [वि+द्युत्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला 2 सोदाहरण निरूपण करने वाला व्याख्या करने वाला।

विद्रः [व्यध्+रक्, सम्प्रसारणम्] 1 फाड़ना टुकड़े टुकड़े करना, छेद करना 2 दरार छिद्र विवर।

विद्रधिः [विद्+रा+कि पृषो०] पीपदार फोड़ा।

विद्रवः [वि+द्रु+अप्] 1 भाग जाना, उड़ान प्रत्यावर्तन 2 आतंक 3 प्रवाह 4 पिघलना गलना।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त] नींद से जागा हुआ उद्बुद्ध।

विद्रावणम् [वि+द्रु+णिच्+ल्युट्] 1 भगाना, खदेड़ना हाँक कर दूर करना पराभव करना 2 गलाना पिघलाना।

विद्रुमः [विशिष्टो द्रुमः] 1 मूंगे का वृक्ष (लाल रंग के मूल्यवान मूंगा (मणिमणि) का पैदा करने वाला) 2 मूंगा प्रवाल —प्रवालपर्यायमणि विद्रुमेषु रघु० १३।१३ कु० १।४४ 3 कोंपल या किसलय। सम० —लता 1 मूंगे की शाखा 2 एक प्रकार का गन्धद्रव्य —नलिका नलिका नामक एक गंध द्रव्य।

विद्वस् (वि०) [विद्+क्वसु] (कर्तृ० ए० व० पुं० विद्वान् स्त्री० विदुषी, नपुं० विद्वत्) 1 जानने वाला (कर्म० के साथ) अनन्यः बह्वर्थो विद्वान् न विभेति कदाचन तव विद्वानपि नायकारणम् रघु० ८।७६ कि० ११।३० 2 बुद्धिमान् विद्वान् (पुं०) विद्वान् मनुष्य या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्याव्यसनी कि वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम् रघु०५।१८। सम० —कल्प, —देशीय —देश्य (वि०) (विद्वत्कल्प, विद्वद्देशीय विद्वद्देश्य) थोड़ा पढ़ा लिखा कम विद्वान् —जनः (विद्वज्जन) विद्वान या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि।

विद्विष् (पुं०) विद्विषः [वि+द्विष्+क्विप् क वा] शत्रु दुश्मन—विद्विषोऽप्यनुनय भर्तृ० २।७७ रघु० ३।६० याज्ञ० १।१६२।

विद्विष्ट (भू० क० कृ०) [वि+द्विष्+क्त] घृणित, अनीप्सित कुत्सित।

विद्वेषः [वि+द्विष्+घञ्] 1 शत्रुता, घृणा कुत्सा मनु० ८।३४६ 2 तिरस्करणीय घमण्ड यहाँ (मानहानि)—विद्वेषोऽभिमतप्राप्तावपि गर्वान्निरादर —भारत।

विद्वेषणः [वि+द्विष्+ल्युट्] 1 घृणा करने वाला, शत्रु, —णी रोषपूर्ण स्वभाव की स्त्री,—णम् घृणा और शत्रुता पैदा करना 2 शत्रुता, घृणा।

विद्वेषिन्, विद्वेष्टृ (वि०) [विद्विष्+णिनि, तृच् वा] घृणा करने वाला शत्रुतापूर्ण (पुं०) घृणक, शत्रु।

विध् (तुदा० पर० विधति) 1 चुभोना, काटना 2 सम्मान करना, पूजा करना 3 राज्य करना, शासन करना प्रशासन करना।

विधः [विध्+क] 1 प्रकार, किस्म यथा बहुविध, नानाविध में 2 ढंग, रीति रूप 3 तह (समास के अन्त में विशेष कर अंकों के पश्चात्) त्रिविध, अष्टविध आदि 4 हाथियों का आहार 5 समृद्धि 6 छेद करना।

विधवनम् [वि+धू+ल्युट्] 1 हिलाना, विक्षुब्ध करना 2 थरथराहट कंपकंपी।

विधवा [विगतो धवो यस्या सा] रांड, बेवा या नारी विधवा जाता गृहे रोदिति तस्यति सुभा० । सम० —आवेदनम् बेवा स्त्री से विवाह करना, —गामिन् जो विधवा स्त्री से सहवास करता है ।

विधवनम् [वि + धू + ल्युट्] थरथराहट, विक्षोभ ।

विधस् (पुं०) सर्व सृष्टि का उत्पादक ब्रह्मा ।

विधा [वि + धा + क्विप्] 1 ढंग रीति रूप 2 प्रकार किस्म 3 समृद्धि, सम्पन्नता 4 हाथी घोड़ा का चारा खाद्य पदार्थ 5 छेद करना 6 किराया, मजदूरी ।

विधातृ (पुं०) [वि + धा + तृच्] 1 निर्माता, स्रष्टा —कु० ७।३६ 2 स्रष्टा, ब्रह्मा—विधाता भद्रं नो वितरतु मनोज्ञाय विधये -मा० ६।७ रघु० १।३५ ६।११, ७।३५ 3 अनुदाता, दाता प्रदाता -कु० १।५७ 4 भाग्य, दैव—हि० १।४० 5, विश्वकर्मा 6. कामदेव 7 मदिरा । सम० —आयुस् (पुं०) 1 सूर्य की चमक, धूप 2. सूरजमुखी फूल, —भू नारद का विशेषण ।

विधानम् [वि + धा + ल्युट्] 1 क्रम से रखना, व्यवस्था करना 2. अनुष्ठान, निर्माण, करण,—कार्यान्विवनेपथ्य-विधानम् श० १, आज्ञा° यज्ञ° आदि 3 सृष्टि, रचना —रघु० ६।११, ७।१४, कु० ७।६६ 4 नियोजन, उपयोग, प्रयोग प्रतिकारविधानम् रघु० ८।४० 5 नियत करना, विहित करना, आदेश देना 6. नियम, उपदेश, अध्यादेश, धार्मिक नियम या विधि, निदेश—मनु० ९।१४८, याज्ञ० १६।२४, १७।२४ 7 ढंग, रीति 8 साधन या तरकीब 9. हाथियों का आहार (जो उन्हें मदोन्मत्त करने के लिए दिया जाता है) विधानसंपादितदानशोभितैः —का० (यहाँ 'विधान' का अर्थ 'नियम' भी है) शि० ५।५१ 10. धन दौलत 11 पीड़ा, वेदना, सन्ताप, दुःख 12 शत्रुता का कार्य । सम० —गः, —ज्ञः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, —युक्त (वि०) वेदविधि के अनुरूप, या अनुकूल ।

विधानकम् [विधान + कन्] दुःख, कष्ट, पीड़ा ।

विधायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [वि + धा + ण्वुल्] 1. क्रमबद्ध करने वाला, व्यवस्थित करने वाला 2. बनाने वाला, निर्माण करने वाला, सम्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला 3 रचना करने वाला 4. व्यवस्थित करने वाला, विहित करने वाला, निर्धारित करने वाला 5 अर्पण करने वाला, सौंपने वाला, (किसी की देख रेख में) हवाले करने वाला ।

विधिः [वि + धा + कि] 1. करना, अनुष्ठान, अभ्यास कृत्य, कर्म - ब्रह्मध्यानाभ्यासविधिना योगनिद्रां गतस्य —भर्तृ० ३।४१, दीक्षाविधि —रघु० ८।२२, सेवा-विधि—मा० १।१५ 2. प्रणाली, रीति, पद्धति, साधन, ढंग पंच० १।३७६ 3 नियम, समादेश, कोई विधि जो सबसे किसी बात का लागू करती है (यह 'विधि' शब्द नियम और परिसंख्या से भिन्न है) विधिरत्यन्तमप्राप्तौ ' वेद विधि या नियम, अध्यादेश, निदेश, कानून वेदाज्ञा धार्मिक समादेश (विप० 'अर्थवाद' अर्थात् व्याख्यापरक उक्ति जिसमें आख्यान और दृष्टान्तों का चित्रण हो दे० अर्थवाद) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् श० ७।२९, रघु० २।१६ 5 कोई धार्मिक कृत्य या संस्कार, धार्मिक रस्म, संस्कार—स देवं स्वयं कर्मसु धर्मचारिणा त्वमन्तरायो भवसि च्युतो विधिः —रघु० ३।४५, १।३४ 6 व्यवहार, आचरण 7 दशा विक्रम० ४ 8 रचना, बनावट सामग्र्यविधौ कु० ३।२८, कल्याणी विधिषु विचित्रता विधातुः कि० ७।७ 9 स्रष्टा 10. भाग्य, दैव, किस्मत विधौ वामारम्भे मम समुचितैषा परिणतिः मा० ४।४ 11. हाथियों का खाद्य पदार्थ 12 काल 13 डाक्टर, वैद्य 14. विष्णु । सम० —ज्ञ (वि०) कर्मकाण्ड का ज्ञाता (—ज्ञः) कर्मकाण्ड में विख्यात ब्राह्मण, कर्मकाण्डी, —दृष्ट, —विहित (वि०) नियत, विहित, —द्वैधम् नियमों की विविधता, विधि या समादेश की विभिन्नता, —पूर्वकम् (अव्य०) नियमानुकूल, —प्रयोगः नियम का व्यवहार, —योगः भाग्य का बल या प्रभाव, —वधूः (स्त्री०) सरस्वती का विशेषण, —हीन (वि०) नियम शून्य, अप्रामाणिक, अनियमित ।

विधित्सा [वि + धा + सन् + अ + टाप्] 1. सम्पन्न करने की इच्छा 2. आयोजन, प्रयोजन, इच्छा ।

विधित्सित (वि०) [वि + धा + सन् + क्त] किये जाने के लिये अभिप्रेत, —तम् इरादा, अभिप्राय, आयोजन ।

विधुः [व्यध् + कु] 1 चन्द्रमा, सविता विधवति विधुरपि सवितरति दिनंति यामिन्यः काव्य० १० 2. कपूर 3 पिशाच, राक्षस 4. प्रायश्चित्तपरक आहुति 5. विष्णु का नाम 6. ब्रह्मा । सम० —क्षयः चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, कृष्ण पक्ष का समय, —पंजरः (विधुंतुदः भी) राहु, कटार, —प्रिया रोहिणी नक्षत्र ।

विधुत दे० 'विधूत' ।

विधुतिः (स्त्री०) [वि + धु + क्तिन्] हिलना, कंपकंपी, थरथराहट वैनायक्यश्चिरं वो वदनविधुतयः पान्तु चीत्कारवत्यः मा० १।१ ।

विधूननम् [वि + धू + णिच् + ल्युट्, नुक्, पृषो० ह्रस्वः] 1. हिलना, झूलना, विक्षुब्ध होना 2 कंपकंपी, थरथराहट ।

विधुन्तुदः [विधुं तुदति पीडयति —विधु + तुद् + खश्,

मुम्] राहु विधुमिव विधुन्तुद दलवलनगलितामृतधारम् गीत० ४, नै० ४।७१, शि० २।६१ ।

विधुर (वि०) [विगता धूः कार्यभारो यस्मात् प्रा० ब०] 1 दुःखी विरहग्रस्त, कष्टग्रस्त, शोकाकुल दयनीय मा० २।३, ९।११, उत्तर० ३।१८ ६।४१ कि० ११।२६ 2. जिससे प्रेम करने वाला कोई न रहा हो शोकग्रस्त पत्नी या पति की विरहव्यथा से व्याकुल मयि च विधुरे भाव कान्ता प्रवृत्तिपराङ्मुख विक्रम० ४।२० विधुरा ज्वलनातिसर्जनान्ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम् कु० ४।३२, शि० ६।२९ १२। ८ 3 शून्य वञ्चित विरहित मुक्त सा हि कलङ्कविधुरा मधुराननश्री —भामि० २।५ 4 विरोधी वैरी शत्रु पञ्च० २।८१,—र रडुवा,–रम् 1 खटका भय, चिन्ता 2 पति या पत्नी से वियोग प्रेमी या प्रेमिका द्वारा व्याकुलता ।

विधुरा [विधुर+टाप्] दही जिसमें चीनी व मसाले डाले हुए हों ।

विधुवनम् [वि+धु+ल्युट्, कुटादित्वात् साधु] हिलना, थरथरी, कंपकंपी ।

विधूत (भू० क० कृ०) [वि+धू+क्त] 1 हिला हुआ, उथलपुथल हुआ, तरंगित 2 थरथराता हुआ 3 उखाड़ा हुआ, मिटाया हुआ, हटाया हुआ 4 अस्थिर 5 परित्यक्त,—तम् विरक्ति, अरुचि ।

विधूतिः (स्त्री०) **विधूननम्** [वि+धू+क्तिन्, वि+धू+णिच्+ल्युट्, नुक्] हिलना, थरथरी, कंपकंपी विक्षोभ ।

विधृत (भू० क० कृ०) [वि+धृ+क्त] 1 पकड़ा हुआ, थामा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2 वियुक्त, अलग-अलग रक्खा गया 3. धारण किया गया, कब्जे में किया गया 4 रोका गया, नियन्त्रित किया गया 5. सहारा दिया गया, प्रदर्शित, समर्थित (दे० वि पूर्वक धृ) —तम् 1 आदेश की अवहेलना 2 असन्तोष ।

विधेय (सं० कृ०) [वि+धा+यत्] 1 किये जाने के योग्य, अनुष्ठेय 2 विहित या नियत किये जाने के योग्य 3 (क) आश्रित, निर्भर अथ विधिविधेय परिचय मा० २।१३ (ख) अधीन, प्रभावित, नियन्त्रित, दमन किया गया पराभूत किया गया (प्राय समास में) निद्राविधेयं नरदेवसैन्यम् रघु० ७।६२ प्रभावयमानस्मरसेनाविधेयीकृतोऽसि मा० १ भग० २।६४, मुद्रा० ३।१, शि० ३।२०, रघु० १९।४ 4 आज्ञाकारी, शासनीय, अनुवर्ती वश्य अविवेकविधेय पुमान् गौरिवैति विधेयताम् —कि० ११।३३ 5. (व्या०) विधेय - (कर्त्ता के संबंध में कही गई बात) होने के योग्य—अत्र मिथ्यामहिमत्व नानुवाद्य अपि तु विधेयम् काव्य ७ —यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य,—कि० १६।६२ 2. प्रतिज्ञा या प्रस्थापना की उक्ति, —यः सेवक, भृत्य । सम० —अविमर्शः समासगत दोष जिससे विधेय आश्रित स्थिति का हो जाय या उसका अधूरा कथन किया जाए अविमृष्टः प्राधान्येनानिर्दिष्टो विधेयांशो यत्र काव्य० ७. उदा० उस स्थान पर देखो —आत्मन् (पुं०) विष्णु, —ज्ञ (वि०) जो अपना कर्तव्य जानता है पञ्च० १।३३७, —पदम् 1. सम्पन्न किया जाने वाला उद्देश्य 2. कर्ता के संबंध में कही गई उक्ति विशेष ।

विध्वंस [वि+ध्वंस्+घञ्] 1 बर्बादी विनाश 2 शत्रुता अरुचि नाराजगी 3 अपमान अपराध ।

विध्वंसिन् (वि०) [वि+ध्वंस्+णिनि] बर्बाद होने वाला टुकड़े टुकड़े हो जाने वाला ।

विध्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+ध्वंस्+क्त] 1 बर्बाद हुआ विनष्ट 2. इधर उधर बिखेरा हुआ, छितराया हुआ 3 अस्पष्ट धुंधला 4 ग्रहणग्रस्त ।

विनत (भू० क० कृ०) [वि+नम्+क्त] 1 झुका हुआ, नंगा हुआ 2 अवनत हुआ, लटकता हुआ मुड़ा हुआ श० ३।११ 3 डूबा हुआ अवसन्न 4 झुका हुआ, कुटिल वक्र 5 विनीत, शिष्ट (दे० वि पूर्वक नम्) ।

विनता [विनत+टाप्] 1 अरुण और गरुड़ की माता जो कश्यप की एक पत्नी थी दे० गरुड़ 2 एक प्रकार की टोकरी । सम० —नंदन, —सुत, —सूनु गरुड़ या अरुण के विशेषण ।

विनतिः (स्त्री०) [वि+नम्+क्तिन्] 1 नमना, झुकना, नीचे को होना 2 विनय, विनम्रता 3 प्रार्थना ।

विनद [वि+नद्+अच्] 1 ध्वनि, कोलाहल 2 एक वृक्ष का नाम ।

विनमनम् [वि+नम्+ल्युट्] झुकना, नमना, सिर और कंधे झुका कर चलना ।

विनम्र (वि०) [वि+नम्+र] 1 झुका हुआ, झुक कर चलता हुआ कि० ८।१ 2 अवनत, डूबा हुआ 3 विनयशील विनीत ।

विनम्रकम् [विनम्र+कन्] 'तगर' वृक्ष का फूल ।

विनय (वि०) [वि+नी+अच्] 1 डाला हुआ, फेंका हुआ 2 गुप्त 3 अशिष्टाचारी, —यः 1 निर्देश अनुशासन अनुदेश (अपने कर्तव्यबोध में) नैतिक प्रशिक्षण —रघु० १।८, मा० १०।५ 2. औचित्य, शिष्टाचार, सुशीलता श० १।२९ 3 शिष्ट आचरण, सज्जनोचित व्यवहार मर्यादित, अच्छा चलन—रघु० ६।७९, मा० १।१८ 4 शालीनता, विनम्रता सुतनु लोभजो आगंतुक एतेन विनयमाहात्म्येन उत्तर० १, विद्या ददाति विनयम्, तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत रघु० ३।३४, १०।७१, (यहाँ मल्लि० 'विनय' शब्द का

अर्थ इन्द्रियजय बतलाता है जो हमारे मतानुसार अनावश्यक है) 5 श्रद्धा शिष्टता सौजन्य 6 सदाचरण " सौंप देना, दूर करना, हटाना शि० १०। ४२ 8 जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है —विनीतः 9 व्यापारी, सौदागर। सम० —आत्मन् (वि०) झुका हुआ विनम्र —आहित (वि०) शालीन आज्ञाकारी अनुवर्ती —वेष (वि०) मृदुभाषी मिलनसार,—सत्त्व (वि०) विनयशील शालीन।

विनयनम् (वि० + नी + ल्युट्) 1 हटाना दूर करना —मेघ० ५२ 2 शिक्षा शिक्षण प्रशिक्षण अनुशासन।

विनशनम् [वि + नश् + ल्युट्] नाश हानि विनाश लोप —नः उस स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी रेत में लुप्त हो गई है मनु० २।२१।

विनष्ट (भू० क० कृ०) [वि + नश् + क्त] 1 नष्ट उच्छिन्न बर्बाद 2 ओझल लुप्त 3 बिगड़ा हुआ भ्रष्ट।

विनस (वि०) (स्त्री०—सा,—सी) बिगड़ी नासिका प्रस्थ नासिकाशब्दस्य समादेशः, बिना नाक का नाकरहित —भट्टि० ५।८।

विना (अव्य०) [वि + ना] बगैर सिवाय। (कर्म० करण० या अपा० के साथ) यथा रामं विना रामेण विना यथा मान विना नृपः यथा रामं विना कुत्रो तथा ज्ञानं विना यतिः भामि० १।११९, पक्षैर्विना मरो भाति मद बालजनैर्विना कटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं विषयैर्विना १।११६ विना वाहुमहास्तम्भ क्रियमाणसर्वंगता मुद्रा० ३ शि० २।२, (विना कृ छोड़ना परित्याग करना विरहित करना वञ्चित करना—मद नेन विनाकृता रतिः कु० ४।२१ काम से विरहित)। सम० —उक्ति (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें बिना किसी की दृष्टि से सुन्दर ढंग से प्रयुक्त होता है —विनार्थसम्बन्ध एव विनोक्तिः —रस० दे० काव्य० १० भी।

विनाडि, विनाडिका [विगता नाडि नाडिका वा यया] समय की एक माप जो घड़ी के साठवें भाग के बराबर होती है एक पल या चौबीस सेकंड।

विनायक [विशिष्टो नायक: प्रा० स०] 1 (बाधाओं के) हटाने वाला गणेश 3 बुद्ध धर्म का देवरूप अध्यापक 4 गरुड़ 5 रुकावट अड़चन।

विनाश [वि + नश् + घञ्] 1 नाश बर्बादी भारी हानि, क्षय 2 हटाना। सम० —उन्मुख (वि०) नष्ट होने वाला मरने के लिए तैयार —धर्मन्, —धर्मिन् (वि०) क्षीण होने वाला, नष्ट होने वाला क्षणभंगुर विषयेषु विनाशधर्मसु त्रिदिवस्थेष्वपि निःस्पृहो ऽभवत् रघु० ८।१०।

विनाशनम् [वि + नश् + णिच् + ल्युट्] विनाश बर्बादी उन्मूलन —नः विनाशक विनाशकर्ता।

विनाह [वि + नह् + घञ्] कुएँ के मुंह का ढकना। पु० वीनाह।

विनिक्षेप [वि + नि + क्षिप् + घञ्] फेंक देना भेज देना।

विनिग्रह [वि + नि + ग्रह् + अप्] 1 नियन्त्रण करना दमन करना वश में करना भग० १३।८ १७।१६ मनु० ९।२६३ 2 पारस्परिक विरोध या अवरोध न्याय।

विनिद्र (वि०) [विगता निद्रा यस्य प्रा० ब०] 1 निद्ररहित जागा हुआ (आल० से भी) रघु० ५।६५ 2 मुकुलित खुला हुआ खिला हुआ फूला हुआ —विनिद्रमन्दाररजोरुणाङ्गुली कु० ५।८०।

विनिपात [वि + नि + पत् + घञ्] 1 अध:पतन गिरना —भारः प्रयाणे नियत: वरं हि विनाशः बर्बादी विनाश —स्वकृतमपातः अर्थात् विनिपात: शानमूलम् —भग० २।९ (यहाँ यह प्रयत्न अब या प्रकट करना है) कि० ११।८ 3 क्षय मृत्यु 4 नरक नारकीय यन्त्रणा —श० ५।९ घटना घटित होना 6 पीड़ा दुःख 7 अनादर।

विनिमय [वि + नि + मी + अप्] 1 अदला-बदली वस्तु के बदले वस्तु का लेन देन —कार्यविनिमयेन—मालवि० १ संपद्विनिमयेनाभौ दधतुर्भुवनद्वयम् रघु० १।२६ 2 न्यास धरोहर अमानत।

विनियोग [वि + नि + सिच् + घञ्] (आँखों का) झपकना।

विनियत (भू० क० कृ०) [वि + नि + यम् + क्त] नियन्त्रित रोका गया प्रतिबद्ध विनियमित—यथा विनियताहार तथा विनियतवाक् आदि में।

विनियम [वि + नि + यम् + अप्] नियन्त्रण प्रतिबन्ध रोक।

विनियुक्त (भू० क० कृ०)[वि + नि + युज् + क्त] 1 अलग किया हुआ ढीला विच्छिन्न 2 अनुबद्ध, नियुक्त 3 व्यवहृत 4 समादिष्ट विहित।

विनियोग [वि + नि + युज् + घञ्] 1 अलग होना जुदा होना विच्छिन्न होना 2 छोड़ना त्यागना तिलाञ्जलि देना 3 काम में लगाना उपयोग, प्रयोग नियत्रण —प्रभुः विनियोगेष्व सार्वभौमेषु वस्तुषु रघु० १७।२५, प्रत्याद्य विनियोग किसी कर्तव्य पर लगाना कार्याधिकार कार्यभार—विनियोग-प्रसादा हि किंकरा: प्रभविष्णुषु कु० ६।६२ 5 रुकावट अड़चन।

विनिर्जय [वि + निर् + जि + अच्] पूर्ण विजय।

विनिर्णय [वि + निर् + नी + अच्] 1 पूर्ण रूप से निबटारा या निर्णय पूरा फैसला 2 निश्चय 3 निश्चित नियम।

विनिर्बन्ध [वि + नि + र् + बन्ध् + घञ्] आग्रह दृढ़ता।

विनिर्मित (भू० क० कृ०) [वि+निर्+मा+क्त] 1 बनाया हुआ, निर्माण किया हुआ 2 बना हुआ, रचा हुआ।

विनिवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+वृत्+क्त] 1 लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2 ठहरा हुआ, थमा हुआ, रुका हुआ 3 (सेवा) मुक्त, फारिग।

विनिवृत्तिः (स्त्री०) [वि+नि+वृत्+क्तिन्] 1 विश्रान्ति, रुकना, हटना —शक्राभ्यसूयाविनिवृत्तये —रघु० ६।७४ 2 अन्त, अवसान, समाप्ति।

विनिश्चयः [वि+निस्+चि+अच्] 1 स्थिर करना, तय करना, निश्चय करना 2 फैसला, पक्का निश्चय।

विनिश्वासः [वि+नि+श्वस्+घञ्] कठिनाई से सांस लेना, आह भरना, आह (गहरी सांस)।

विनिष्पेषः [वि+निस्+पिष्+घञ्] चूर चूर करना, कुचलना, पीस डालना।

विनिहत (भू० क० कृ०) [वि+नि+हन्+क्त] 1 आहत, घायल 2 मार डाला हुआ, पूरी तरह पराजित किया हुआ, —तः 1 कोई बड़ा या अनिवार्य संकट, जैसे कि भाग्य-दोष से या दैवात् आपद्ग्रस्त होना 2 अपशकुन, धूमकेतु।

विनीत (भू० क० कृ०) [वि+नी+क्त] 1 दूर ले जाया गया, हटाया गया 2 सुप्रशिक्षित, अनुशासित 3 सस्कृत, आज्ञापालक, सुशील, विनम्र, विनीत, सौम्य 5 शिष्ट, शालीन, सौजन्यपूर्ण 6 प्रेषित, विसर्जित 7 पालतू, सधाया गया 8 सीधा, सरल (वेशभूषा आदि) 9. आत्म संयमी, जितेन्द्रिय 10 सजा प्राप्त, दण्डित 11 शासनीय, शासन किये जाने के योग्य 12 प्रिय, मनोहर (दे० वि पूर्वक नी), —तः 1 सधाया हुआ घोड़ा 2 व्यापारी।

विनीतकम् [विनीत+कन्] 1 गाड़ी, सवारी (डोली आदि 2 ले जाने वाला, वाहक।

विनेतृ (पुं०) [वि+नी+तृच्] 1 नेता, पथ प्रदर्शक 2 अध्यापक, शिक्षक —रघु० ८।९१ 3. राजा, शासक 4. सजा देने वाला, दण्ड देने वाला —अथ विनेता दृप्तानाम् —महावी० ३।६९, ४।१, रघु० ६।३९, १४।२३।

विनोदः [वि+नुद्+घञ्] 1 हटाना, दूर करना —श्रम विनोद 2 मनोरंजन (किसी कार्य, कोई भी रोचक या रंजनकारी व्यवसाय —प्रयोजन —समाविनोदैरपगा- नाना विनोदाः —मेघ० ८३ 3 खेल, क्रीडा, आमोद प्रमोद 4 उत्सुकता, उत्कण्ठा 5 आनन्द, प्रसन्नता —विलसितविनोदाय- सुलभम् —उत्तर० २।३०, अनयत् रसिकजनानां मनोरम रतिरसभावविनोदम —गीत० १ 6. एक प्रकार का रतिबन्ध।

विनोदनम् [वि+नुद्+ल्युट्] 1. हटाना 2. मनोरंजन आदि —दे० 'विनोद'।

विन्दु (वि०) [विद्+उ, नुमागम.] 1 मनीषी, बुद्धिमान् 2. उदार, —न्दुः बूंद, दे० 'बिन्दु'।

विन्ध्यः [विन्ध्यति करोति भयम्] एक पर्वत श्रेणी जो उत्तर भारत को दक्षिण से पृथक् करती है, यह सात कुल पर्वतों में से एक है, यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा है, दे० मनु० २।२१, (एक उपाख्यान के अनुसार विन्ध्य पर्वत को मेरु पर्वत (हिमालय पहाड़) से ईर्ष्या हुई। अतः उसने सूर्य से मांग की कि जिस प्रकार वह मेरु के चारों ओर घूमता है, उस प्रकार उसे विन्ध्य के चारों ओर घूमना चाहिए, सूर्य ने विन्ध्य पर्वत की मांग ठुकरा दी। फलतः विन्ध्य पर्वत ने ऊपर को उठना आरंभ किया जिससे कि सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग रोका जा सके। देवताओं में आतंक छा गया, उन्होंने अगस्त्य मुनि से सहायता मांगी। अगस्त्य विन्ध्य पर्वत के पास गया और उससे निवेदन किया कि मेरा नीचे झुक जाओ जिससे कि मुझे दक्षिण में जाने का मार्ग मिले, और जब तक मैं वापिस न आऊँ इसी प्रकार झुके रहो। विन्ध्य पर्वत ने इस बात को मान लिया (क्योंकि एक वर्णन के अनुसार अगस्त्य मुनि विन्ध्य पर्वत का गुरु माना जाता है) परन्तु अगस्त्य फिर दक्षिण से वापिस न लौटा, और विन्ध्य को मेरु जैसी उन्नतता न मिल सकी) 2. शिकारी। सम० —अटवी, विन्ध्य महावन, —कूटः, —कूटनम् अगस्त्य ऋषि के विशेषण, —वासिन् (पुं०) वैयाकरण व्याडि का विशेषण, (—नी) दुर्गा का विशेषण।

विन्न (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1. ज्ञात 2 हासिल, प्राप्त 3 विचार विमर्श किया हुआ, अनुसंहित 4 रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 5 विवाहित (दे० विद्)।

विन्नकः [विन्न+कन्] अगस्त्य का नाम।

विन्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+अस्+क्त] 1 रक्खा हुआ, डाला हुआ 2 जड़ा हुआ, फर्श जमाया हुआ या खड़ंजा लगाया हुआ 3 स्थिर 4. क्रमबद्ध 5 समर्पित 6 उपस्थित किया गया, प्रस्तुत 7. जमा किया हुआ, निक्षिप्त।

विन्यासः [वि+नि+अस्+घञ्] 1 सौंपना, जमा करना 2 धरोहर 3. क्रमपूर्वक रखना, समंजन, निपटारा, अक्षरविन्यासः अक्षर उत्कीर्ण करना —प्रत्यक्षरश्लेषमय- प्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिः —वास०, किसी ग्रन्थ की रचना 4 संग्रह, समवाय 5 स्थान, आधार।

विपक्व (वि०) [वि+पच्+क्त, —मप्] 1 पूर्ण रूप से पका हुआ, परिपक्व 2. विकसित, (पूर्वकृत्यों के परिणाम स्वरूप) पूर्णता को प्राप्त।

विपक्व (वि+पच्+क्त) 1 पूर्णरूप से पका हुआ और पक्व 2 विकसित, पूर्ण अवस्था को प्राप्त कि० ६।१६ 3 पकाया हुआ।

विपक्ष (वि०) [विरुद्धः पक्षो यस्य प्रा० ब०] वैरी शत्रुतापूर्ण प्रतिकूल विरुद्ध — **क्षः** 1 शत्रु विरोधी प्रतिरोधी रघु० १३।७५ शि० ११।१० 2 वह पत्नी जिसका दूसरी के साथ प्रतिद्वंद्व हो ... रघु० १०।०० 3 अपवाद कि० ... 4 (तर्क में) नकारात्मक दृष्टान्त विपक्षियों की ओर से दिया गया दृष्टान्त, अर्थात् वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो। ... —तर्क० मुद्रा० ...।

विपञ्चिका, विपञ्ची (विपञ्च+कन्...) 1 वीणा 2 खेल क्रीडा मनोरंजन।

विपण, विपणनम् (वि+पण्+अप्...) 1 विक्री मनु० ३।१५२ 2 छोटा व्यापार।

विपणि, णी (स्त्री०) [विपण्+इन् विपणि ङीष्] 1 बाजार मण्डी हाट ... विपणि ... मनु० ८।१८ ... ५।२४ रघु० १६।४१ 2 बिक्री के लिए रक्खा हुआ माल सामान 3 वाणिज्य ... मनु० १०।११६।

विपणिन् (पुं०) [विपण+इनि] व्यापारी, सौदागर दुकानदार शि० ५।...।

विपत्ति (स्त्री०) [वि+पद्+क्तिन्] 1 संकट दुर्भाग्य अनर्थ अनिष्टपात ... संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता सुभा० 2 मृत्यु विनाश और ... कु० ... दुस्तर ... विपाक वेणी० ... रघु० १।८५ ... रघु० ... 3 यातना — **त्ति** (पुं०) ... कि० १५।१६।

विपथः [विरुद्धः पन्थाः प्रा० स०] बुरी सड़क कुमार्ग। (शा० तथा आल०)।

विपद् (स्त्री०) [वि+पद्+क्विप्] 1 संकट दुर्भाग्य आपदा ... कि० ... 2 मृत्यु ... रघु० १२।३१। सम० **उद्धरणम्** —**उद्धार**, मुसीबत से ... काल आवश्यकता का समय संकट ... **युक्त** (वि०) अभागा दुःखी।

विपदा दे० 'विपद्'।

विपन्न (भू० क० कृ०) [वि+पद्+क्त] 1 मरा हुआ 2 नष्ट ... अभागा ... 4 ... वह ...।

विपरिणमनम्, विपरिणामः [वि+परि+नम्+ल्युट्, घञ् वा] 1 परिवर्तन बदलना 2 रूपपरिवर्तन, रूपान्तरण।

विपरिवर्तनम् [वि+परि+वृत्+ल्युट्] इधर उधर मुड़ना लुढ़कना।

विपरीत (वि०) [वि+परि+इ+क्त] 1 प्रतिवर्तित ... 2 प्रतिकूल विरोधी प्रतिकूल ओंधा रघु० ... 3 अशुद्ध नियमविरुद्ध मिथ्या असत्य ... 6 अनुकूल उल्टा 6 व्यत्यस्त ... 7 अनिष्टकर ... 1 दुश्चरित्रा स्त्री ... **कर, कारक—कारिन्, कृत** (वि०) ... विरुद्ध ढंग से कार्य करने ... —**चेतस्**—**मति** (वि०) जिसका ... उल्टा ...।

विपलाशः [विगतानि पलाशानि यस्य प्रा० ब०] पलाश का वृक्ष ...।

विपर्ययः [वि+परि+इ+अच्] 1 वैपरीत्य, व्यतिक्रम, औंधापन ... यदि अन्यथा हुआ यदि इसके विपरीत हुआ 2 (अभिप्राय वेश आदि का) बदलना ... 3 अभाव अनस्तित्व ... रघु० ... ५ पूर्ण विनाश ध्वंस 6 विनिमय, अदल बदल ... उल्लंघन भूल, कुछ का कुछ समझना 8 संकट दुर्भाग्य उल्टा भाग्य 9 शत्रुता दुश्मनी।

विपर्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+परि+अस्+क्त] 1 परिवर्तित ... उलटा हुआ ... उत्तर० १ 2 विरोधी प्रतिकूल 3 भ्रम से वास्तविक समझा हुआ।

विपर्यायः [वि+परि+इ+घञ्] 1 उलटापन वैपरीत्य, ... 'विपर्यय'।

विपर्यासः [वि+परि+अस्+घञ्] 1 परिवर्तन वैपरीत्य ... व्यतिक्रम ... 2 विरोधिता अननुकूलता ... 3 ... परिवर्तन ... 4 त्रुटि भूल।

विपलम् [विगतः पलं येन—प्रा० स०] क्षण, समय का अत्यन्त छोटा प्रभाग (जो पल का साठवाँ या छठा भाग समझा जाता है)।

विपलायनम् [विशेषेण पलायनम् प्रा० स०] दौड़ जाना विभिन्न दिशाओं को भाग जाना।

विपश्चित् (वि०) [विप्रकृष्टं चिनोति चेतति चिन्तयति वा वि+प्र+चित्+क्विप् पृषो०] विद्वान् बुद्धिमान विपश्चिता विनियुक्त गुरुणा गुरुप्रियम् रघु० ३।२९ पुं० एक विद्वान या बुद्धिमान पुरुष मुनि भवन्ति ते सभ्यतमा विपश्चितां मनोगतं वाचि निवेशयन्ति ये—कि० १४।४।

विपाक [वि+पच्+घञ्] 1 पकाना सेकाना भोजन बनाना 2 पाचनशक्ति 3 पकना पकवना परिपक्वता विकास (आल० भी)-अमी पयस्तव ... पिशङ्गता गता विपाकेन फलस्य शालय कि० ४।२६ आशा विपाका मम मालवि० ४।१२ मेरे परिपक्व पूर्ण विकसित अथवा गौरवान्वित शब्द परिणाम फल नतीजा पूर्वजन्म अथवा इस जन्म के कर्मों का फल अहो मे दारुणतरः कर्मणां विपाकः का० ३५४ ममैव जन्मान्तरपातकानां विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः रघु० १४।६२ भर्तृ० ३।१९ महावी० ५।२६ 5 (क) अवस्थापरिवर्तन उत्तर० ४।६ (ख) असंभावित बात या घटनाक्रमविपर्यय भाग्य का पलटा खाना दुःख, संकट उत्तर० ३।३ ४।१२ 6 कठिनाई उलझन 7 रसास्वाद स्वाद।

विपाटनम् [वि+पट्+णिच्+ल्युट्] 1 खण्ड खण्ड करना फाड़ कर खोलना 2 उखाड़ना 3 अपहरण।

विपाठ (पुं०) एक प्रकार का लम्बा बाण।

विपाण्डु, विपाण्डुर (वि०) [विशेषेण पाण्डु, पाण्डुर प्रा० स०] विवर्ण पीला कि० ५।१६ शि० ९।३ इसी प्रकार विपाण्डुर शि० ४।५ रत्न० २।४।

विपादिका (स्त्री०) 1 पैर का एक रोग बिवाई 2 प्रहेलिका पहेली।

विपाश्, विपाशा (स्त्री०) [पाशं विमोचयति वि+पश+णिच्+क्विप् वि पश्+णिच् अच् टाप्] पंजाब की एक नदी, वर्तमान व्यास नदी।

विपिनम् [वपन्ति ... वप्+इनन् ...] जंगल वन अटवि, कुञ्ज ... विपिनं ... विपिनानि प्रकाशानि शक्तिमत्त्वच्चकार सः रघु० ४।३१।

विपुल (वि०) [विशेषेण पोलति वि+पुल्+क] 1 विशाल विस्तृत ... विस्तीर्ण, चौड़ा प्रशस्त विपुलं नितम्बम् ... ३।३ ... विपुलम् ... विपुलम् पृष्ठम् विपुलं कुक्षि 2 प्रचुर पुष्कल ... —कि० १८।१४ 3 गहरा, अगाध—महावी० १।२, रोमाञ्चित, पुलकित शि० १६।३ (यहाँ प्रथम अर्थ भी घटता है) —लः 1 मेरु पर्वत 2 हिमालय पर्वत 3 सम्माननीय पुरुष। सम०—छाय (वि०) छायादार छायामय अथवा विशाल कुल्हों वाली स्त्री —मति (वि०) मनीषी प्रज्ञावान —रसः गन्ना ईख।

विपुला [विपुल+टाप्] पृथ्वी।

विपूय [वि+पू+क्यप्] मूंज नामक घास।

विप्र [वप्+रन् पृषो० अत इत्वम्] ब्राह्मण ... ब्राह्मण ... पीपल का पेड़। सम०—ऋषिः ब्रह्मर्षि दे० —काष्ठम् कई का पौधा —प्रियः ... —समागमः ब्राह्मणों का समाज या सम्मेलन —स्वम् ब्राह्मण की संपत्ति।

विप्रकर्ष [वि प्र कृष् घञ्] दूरी फासला।

विप्रकार [वि प्र+कृ घञ्] 1 अपमान ... दुर्व्यवहार तिरस्कारयुक्त व्यवहार कि० ... 2 क्षति अपराध 3 दुष्टता 4 विरोध प्रतिक्रिया 5 प्रतिहिंसा।

विप्रकीर्ण (वि०) [वि+प्र कॄ क्त] 1 इधर उधर फैलाया हुआ तितर बितर किया हुआ बिखरा हुआ 2 ढीला (बाल आदि) बिखरे हुए 3 प्रसारित बिछाया हुआ चौड़ा विस्तृत।

विप्रकृत (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृ+क्त] 1 आहत जिसे चोट पहुँचाई गई है घायल 2 अपमानित जिसे गाली दी गई है जिसके साथ कटु व्यवहार किया गया है 3 जिसका विरोध किया गया है प्रतिहिंसित जिससे बदला ले लिया गया है (दे० विप्र पूर्वक कृ)।

विप्रकृतिः (स्त्री०) 1 क्षति आघात 2 अपमान अपशब्द कटुव्यवहार 3 प्रतिहिंसा बदला।

विप्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि प्र कृष्+क्त] 1 खींच लिया गया हटाया हुआ 2 फासले पर दूर का दूरवर्ती 3 सुदीर्घ लम्बा किया गया विस्तारित।

विप्रकृष्टक (वि०) [विप्रकृष्ट+कन्] दूरवर्ती फासले पर।

विप्रतिकार [वि प्रति+कृ घञ्] 1 प्रतिक्रिया विरोध वचनविरोध 2 प्रतिहिंसा।

विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] 1 पारस्परिक असंगति प्रतिकूलता मतभेद झगड़ा विरोध (मतों का या हितों का) असहमति आपत्ति 3 ... घबराहट 4 पारस्परिक सम्बन्ध परिचय जानपहचान।

विप्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [वि+प्रति पद्+क्त]

1. परस्परविरुद्ध, विरोधी, असहमत 2 घबड़ाया हुआ, व्याकुल, हैरान 3 मुकाबले का, विवादग्रस्त 4 परस्परसंयुक्त या सम्बद्ध ।

विप्रतिषेधः [वि + प्रति + सिध् + घञ्] 1 नियन्त्रण में रखना, वश में रखना 2 समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो बातों का विरोध, दो समान हितों का संघर्ष —हरिविप्रतिषेधं तमाचचक्षे विचक्षणः शि० २।६ (तुल्यबलविरोधो विप्रतिषेधः मल्लि०) 3 (व्या० में) दो नियमों का (जिनसे दो भिन्न नियमों के अनुसार व्याकरण की दो भिन्न प्रक्रियाएं सम्भव हों) संघर्ष, समानरूप से महत्त्वपूर्ण दो नियमों की टक्कर —विप्रतिषेधे परं कार्यम् पा० १।४।२, (इस पर दे० काशिका या महाभाष्य) 4. रोक, वर्जन ।

विप्रसृत (स्त्री०) [वि + प्रति + सृ + घञ्, पक्षे दीर्घः] 1 पछतावा शि० १०।२० 2 क्रोध, रोष, गुस्सा 3. बुराई, अनिष्ट ।

विप्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [वि + प्र + दुष् + क्त] 1 दूषित, विकृत, मलिन 2 भ्रष्ट ।

विप्रनष्ट (भू० क० कृ०) [वि + प्र + नश् + क्त] 1 खोया हुआ, लुप्त 2 व्यर्थ, निरर्थक ।

विप्रमुक्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + मुच् + क्त] 1 स्वतन्त्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, खुला छोड़ा हुआ 2. फेंकी का निशाना बनाया गया, बन्दूक से दागा गया 3 छुटकारा पाया हुआ ।

विप्रयुक्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + युज् + क्त] 1. पृथक् किया हुआ, वियुक्त, विच्छिन्न 2. अलग हुआ, अनुपस्थित मेघ० २ 3 मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ, वञ्चित, विरहित, बिना (समास में) ।

विप्रयोगः [वि + प्र + युज् + घञ्] 1 अनैक्य, पार्थक्य, वियोग, अलगाव, जैसा कि 'प्रिय' में 2 विशेषकर प्रेमियों का विछोह— मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः मेघ० ११५, १०, रघु० १३।२६, १४।६६ 3. कलह, असहमति ।

विप्रलब्ध (भू० क० कृ०) [वि + प्र + लभ् + क्त] 1. धोखा दिया गया, ठगा गया 2 निराश किया गया 3 चोट पहुंचाया गया, क्षतिग्रस्त, ब्धा वह स्त्री जो अपने प्रियतम को नियत स्थान पर न पाकर निराश हो गई हो (काव्यग्रन्थों में वर्णित एक नायिका) सा० द० ११८ पर दी गई परिभाषा — प्रिय कृत्वापि संकेतं यस्या नायाति संनिधिम् । विप्रलब्धेति सा ज्ञेया नितान्तमवमानिता ॥

विप्रलम्भः [वि + प्र + लम्भ् + घञ्] 1 धोखा, छल, चालाकी— कि० ११।२७ 2 विशेषकर मिथ्या उक्तियों या झूठी प्रतिज्ञाओं से छलना 3 कलह, असहमति 4 अनैक्य, पार्थक्य, अलगाव 5 प्रेमियों का विछोह —युक्तं प्रियजनस्य कातरं विप्रलम्भपरिशङ्कि चेतः रघु० १९।१८ वेणी० ३।१२० (अलं० में) विप्रलम्भ शृंगार (इसमें नायक नायिका के वियोग-जन्य संताप आदि का वर्णन किया जाता है) शृंगार के दो मुख्य भेदों में से एक (विप० संभोग) अपरः (विप्रलम्भः) अभिलाषविरहेर्ष्याप्रवासशापहेतुक इति पञ्चविधः काव्य० ४, यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ सा० द० २१२ पर आगे ।

विप्रलापः [वि + प्र + लप् + घञ्] 1 व्यर्थ या निरर्थक बात, बकवास, असम्बद्ध या निरर्थक 2 पारस्परिक वचनविरोध, विरोधी उक्तियां 3 झगड़ा, तू तू मैं-मैं 4 अपनी प्रतिज्ञा तोड़ना, वचन पूरा न करना ।

विप्रलयः [विशेषेण प्रलयः प्रा० स०] पूर्ण विनाश या विघटन, सर्वनाश — विप्रलब्धेन मया मन्दभाग्यायाः सुदूरमपि सावधानया विप्रलीनान् कृतानि (?) ...विप्रलयं कृत उत्तर० ६।६ ।

विप्रलुप्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + लुप् + क्त] 1. अपहृत, छीना हुआ 2 बाधायुक्त, हस्तक्षेप किया गया ।

विप्रवाजिन् (पुं०) [वि + व्रज् + णिच् + णिनि] दो वृक्षों के नाम, अशोक और किंकिरात ।

विप्रवासः [वि + प्र + वस् + घञ्] परदेश में रहना, विदेश में निवास करना (अपनी जन्मभूमि से दूर रहना) ।

विप्रश्निका [विशेषेण प्रश्नो यस्याः वि + प्रश्न + कप् + टाप्, इत्वम्] स्त्री, ज्योतिषी, जो भाग्य की बातें बतलाए ।

विप्रहीण (वि०) [वि + प्र + हा + क्त] वञ्चित, विरहित ।

विप्रिय (वि०) [वि + प्री + क, इयङ्] अरुचिकर, जो पसन्द न हो, जो सुखद न हो, जो स्वादिष्ट न हो, —यम् अपराध, अनिष्ट, अरुचिकर कार्य —मनसापि न विप्रियं मया कृतपूर्वं तव किं जहासि माम् रघु० ८।५२, कु० ४।७, कि० ९।३९, शि० १५।११ ।

विप्रुष् (स्त्री०) [वि + प्रुष् + क्विप्] 1 (पानी या किसी अन्य द्रव की) बूंद —सनाम नवजलविप्रुषो गृहीत्वा —शि० ८।४० स्वेदविप्रुषः २।१८ 2 चिह्न, बिन्दु, धब्बा ।

विप्रोषित (भू० क० कृ०) [वि + प्र + वस् + क्त] 1 परदेश में रहना, जन्मभूमि से दूर होना, अनुपस्थित 2 निर्वासित, देशनिकाला प्राप्त रघु० १२।११ । सम० —**भर्तृका** वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हुआ है ।

विप्लवः [वि + प्लु + अप्] 1 बहना, इधर-उधर टहलना, विभिन्न दिशाओं में बहना 2 विरोध, वैपरीत्य

3. हैरानी, व्याकुलता 4. हुल्लड़, हंगामा, हल्ला-गुल्ला मालवि० १ 5. निर्जनीकरण, वह संग्राम जिसमें लूटपाट खूब हो, शत्रु से भय 6. बलात् लूटपाट 7. हानि, विनाश—सत्त्वविप्लवात् रघु० ८।४१ 8. आपदा, आपत्काल अथवा मम भाग्यविप्लवात् —रघु० ८।४७ 9. दर्पण पर जमी हुई धूल या जंग —अपर्वजितविप्लवे शुचौ मतिरादर्श इवाभिदृश्यते —कि० २।२६, (यहाँ 'विप्लव' का प्रमाणभाव' अर्थात् तर्काभाव भी है) 10. अतिक्रमण, उल्लंघन कि० १।१३ 11. अनिष्ट, संकट 12. पाप दुष्टता, पापमयता।

विप्लाव: [वि+प्लु+घञ्] 1. जलप्लावन, बाढ़ 2. उपद्रव 3. घोड़े की सरपट दौड़।

विप्लुत (भू० क० कृ०) [वि+प्लु+क्त] 1. जो इधर उधर बह गया हो 2. डूबा हुआ, निमग्न, बाढ़ग्रस्त, किनारों से बाहर होकर बहा हुआ 3. हैरान, परेशान 4. विध्वस्त, उजाड़ा हुआ 5. लुप्त, ओझल 6. अपमानित, अनादृत 7. बर्बाद 8. तिरोहित, विकम्पित 9. दुश्चरित्र, लम्पट, दुराचारी, लुच्चा 10. विपरीत, उलटा 11. मिथ्या, झूठा उत्तर० ४।१८।

विप्लुष् दे० 'विप्रुष्'।

विफल (वि०) [विगत फलं यस्य- प्रा० ब०] 1. फलरहित, अनुपयोगी, व्यर्थ, प्रभावशून्य, अलाभकर—मम विफलमेतदनुरूपमपि यौवनं गीत० ७, अगता बा विफलेन किं फलम् रस०, शि० ९।६, कु० ७।६६, मेघ० ६८ 2. बेकार, निरर्थक।

विबंध: [वि+बन्ध्+घञ्] 1. कोष्ठबद्धता 2. रुकावट।

विबाधा [विशिष्टा बाधा—प्रा० स०] पीड़ा, वेदना, सन्ताप, मानसिक कष्ट।

विबुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+बुध्+क्त] 1. उठाया हुआ, जगाया हुआ, जागरूक श० २ 2. फुलाया हुआ, मकरंदयुक्त पूरा खिला हुआ 3. चतुर कुशल।

विबुध: [विशेषेण बुध्यते बुध्+क] 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि, मुनि सकलं सांख्यदर्शनं भो इत्याहुर्विबुधा जनाः पंच० २।४३ 2. सुर, देवता, —अमृतपा विबुधसख परन्तप भट्टि० १।१, गोप्तारं न निधीनां महयन्ति महेश्वरं विबुधा सुभा० 3. चाँद। सम० **अधिपतिः,** **इन्द्रः,** **ईश्वरः** इन्द्र का विशेषण,— **द्विष्,** **शत्रुः** राक्षस विक्रम० १।३।

विबुधान: [वि+बुध्+शानच्] 1. विद्वान् पुरुष 2. अध्यापक।

विबोध: [विबुध्+घञ्] 1. जागरण, जागते रहना 2. प्रत्यक्षज्ञान, खोजना 3. बुद्धि, प्रतिभा 4. जाग जाना, सचेत होना, अल० से ३३ या ३४ व्यभिचारी भावों में से एक, निद्रानाशोत्तरं जायमानो बोधो विबोधः— रस०।

विब्बोक दे० 'बिब्बोक'।

विभक्त (भू० क० कृ०) [वि+भज्+क्त] 1. बाँटा हुआ, विभाजित की हुई संपत्ति आदि) 2. बटा हुआ, स्वार्थ की दृष्टि से अलग अलग किया हुआ, 'विभक्ता भ्रातर:' में 3. जुदा किया हुआ, अलग किया हुआ, भिन्न किया हुआ,—शि० १।३ 4. विभिन्न, विविध 5. सेवानिवृत्त, एकान्तवासी 6. नियमित, मर्यादित 7. विभूषित (दे० वि पूर्वक भज्), **क्तः** कार्तिकेय।

विभक्तिः (स्त्री०) [वि+भज्+क्तिन्] 1. बाँटना, प्रभाग, विभाजन, बटवारा 2. पार्थक्य, स्वार्थ में अलगाव 3. हिस्सा दायभाग 4. (व्या० में) संज्ञा शब्दों के साथ लगा कारक या कारक चिह्न।

विभंग: [वि+भञ्ज्+घञ्] 1. टूटना, अस्थिभंग 2. ठहराना, अवरोध, पड़ाव भाग० ७।२६ 3. झुकना, (भौंहों आदि का) सिकोड़ना भ्रूविभंगकुटिलं च वीक्षितं—रघु० १९।१७ 4. शिकन, झुर्री 5. पग, सीढ़ी रघु० ६।३ 6. फट पड़ना प्रकटीकरण विविधविकार विभंगम् गीत० ११।

विभव: [वि+भू+अप्] 1. दौलत, धन, सम्पत्ति—अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः सन्तु नाम श० ४।८, रघु० ८।६९, 2. ताकत, शक्ति, पराक्रम, बड़प्पन एतावान्मम मतिविभवः विक्रम० २, वाग्विभव मा० १।२०, रघु० १।९, कि० ५।२१ 3. उन्नत अवस्था पद, प्रतिष्ठा 4. महत्ता 5. मोक्ष, मुक्ति।

विभा [वि+भा+क्विप्] 1. प्रकाश, आभा 2. प्रकाश, किरण 3. सौन्दर्य। सम० **करः,** **सूर्यः**—अत्र बत त्वम तेजःपुञ्जो विभाति भर्त—काव्य० १० 2. मदार का पौधा 3. चन्द्रमा, **वसुः** 1. सूर्य 2. अग्नि—सवितेव्यामि तव विभावसौ —कु० ४।३४, रघु० ३।३७, १०।८३, भाग० ७।९ 3. चन्द्रमा 4. एक प्रकार का हार।

विभागः [वि+भज्+घञ्] 1. प्रभाग, विभाजन, अंश (दायभाग आदि का)—समस्तत्र विभागः स्यात् मनु० ९।१२० २१०, याज्ञ० २।११४ 2. दायभाग 3. भाग या हिस्सा 4. बाँटना, अलग-अलग करना, पार्थक्य (न्या० में यह एक गुण माना जाता है)—कु० २४, भाग० ३।२९ 5. अंश 6. अनुभाग। सम०—कल्पना हिस्सा का नियत करना—याज्ञ० २।१४९ **धर्मः** दायभाग की विधि, बंटवारे का कानून,—**पत्रिका** विभाजन की दस्तावेज, **भाज्** (पु०) पहले से बटी हुई सम्पत्ति का हिस्सेदार याज्ञ० १।१२२।

विभाजनम् [वि+भज्+णिच्+ल्युट्] बटवारा, वितरण करना।

विभाज्य (वि०) [वि+भज्+ण्यत्] 1. अंशों में विभक्त किये जाने के योग्य, बाँटे जाने के योग्य 2. विभाजनीय।

विभातम् [वि+भा+क्त] प्रभात की फटना।

विभावः [वि+भू+घञ्] मन या शरीर को किसी विशेष स्थिति में विकसित करने वाली दशा रस भाव की उद्बोधक स्थिति, तीन मुख्य भावों में से एक (दूसरे दो हैं अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव) रत्या द्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः सा० द० ६१ (इसके मुख्य अवान्तर भेद हैं—आलम्बन और उद्दीपक -दे० आलंबन) 2 मित्र परिचित

विभावनम्,—ना [वि+भू+णिच्+ल्युट्] 1 स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान, या निश्चय, विवेक निर्णय 2 विचार विमर्श गवेषण परीक्षा 3 प्रत्यय कल्पना -ना (अलं० में) एक अलंकार (जिसमें बिना कारण के कार्यों का होना वर्णन होता है -क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना काव्य० १०।

विभावरी [वि+भा+वनिप्+ङीप् र आदेश] 1 रात—अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला विभावरी कथय कथं भविष्यति मालवि० ४।१५ ५।७ कु० ५।४४ 2 हल्दी 3 कुटनी 4 वेश्या कामचारिणी स्त्री 6 मुखरा स्त्री 6 मूली।

विभावित (भू० क० कृ०) [वि+भू+णिच्+क्त] 1 प्रकटीकृत स्पष्ट रूप से दर्शनीय किया हुआ 2 ज्ञात माना हुआ निश्चित किया हुआ 3 देखा हुआ सोचा हुआ 4 निर्णीत विवेचन किया हुआ 5 अनुमित संकेतित 6 सिद्ध मतसम्मत। सम० **एकदेश** (वि०) जिसके साथ एक भाग का पता लगाया गया अर्थात् जो (विवादास्पद विषय के) एक भाग के संबंध में अपराधी पाया गया विभावितैकदेशेन देयं यदभियुज्यते विक्रम० ४।१७।

विभाषा [वि+भाष्+अ+टाप्] 1 ईप्सित वस्तु विकल्प 2 नियम की वैकल्पिकता।

विभासा [वि+भास्+अ+टाप्] प्रकाश कान्ति आभा।

विभिन्न (भू० क० कृ०) [वि+भिद्+क्त] 1 तोड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ खण्ड खण्ड किया हुआ बींधा हुआ, घायल 3 दूर हटाया हुआ भगाया हुआ तितर बितर किया 4 हैरान परेशान व्याकुल 5 इधर उधर डोला हुआ 6 निराश किया हुआ 7 विविध, नानाप्रकार के 8 मिश्रित, मिलाया हुआ चितकबरा, रंगबिरंगा विभिन्नवर्णा गरुडाग्रजेन सूर्यस्य रथ्याः परितः स्फुरन्त्या शि० ४।१४ (दे० वि पूर्वक भिद्), -न्नः शिव का नाम।

विभीतः, -कः, विभीतकः, -कम्, विभीतकी विभीता [विशेषेण भीतः विभीत+कन् विभीतक+ङीप्, विभीत+टाप्] एक वृक्ष का नाम बहेड़ा, (त्रिफला में से एक) बहेड़े का पेड़।

विभीषक (वि०) [विशेषेण भीषयते - वि+भी+णिच्+ण्वुल् षुक् आगम] डरावना, त्रास या भय पैदा करने वाला।

विभीषिका [वि+भी+णिच्+ण्वुल्+टाप्, षुकागम ह्रस्व अ] 1 त्रास 2 डराने के साधन, हौआ (चिड़िया को डराने के लिए फूस का पुतला) बू डू —यदि न मनि सन्देह केचमन्या विभीषिका— उत्तर० ४।२९।

विभु (वि०) (स्त्री० भु, —भ्वी) [वि+भू+डु] 1 ताकतवर शक्तिशाली 2 प्रमुख, सर्वोपरि 3 योग्य, समर्थ (तुमुन्नन्त के साथ) (ब्रनु) पूरयितुं भवति विभवः शिखरमणिरुचः —कि० ५।४३ 4 आत्मसंयमी, धीर जितेन्द्रिय —समपरमन्त्रं न विप्रकुर्वन्ति विभुमपि न यदमी स्पृशन्ति भावाः —कु० ६।९५ 5 (न्याय० में, नित्य० सर्वव्यापक, सर्वगत —भुः 1 अन्तरिक्ष 2 आकाश 3 काल 4 आत्मा 5 स्वामी शासक प्रभु राजा 6 सर्वोपरि शासक मनु० ५।१४ १०।१० 7 सेवक 8 ब्रह्मा 9 शिव —कु० ७।१९ 10 विष्णु।

विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] वक्र झुका हुआ, टेढ़ा कुटिल।

विभूति (स्त्री०) [वि+भू+क्तिन्] 1 ताकत, शक्ति बड़प्पन शि० १४।५ कु० २।६१ 2 समृद्धि, कल्याण 3 प्रतिष्ठा उच्च पद 4 धन, प्राचुर्य महिमा कान्ति अहो राजाधिराजमन्त्रिणो विभूतिः -मुद्रा० ३ रघु० ८।३६ ... धन- रघु० ४।१९ ६।७६ १७।४३ 6 अतिमानव शक्ति (इसके आठ शाखाएँ सम्मिलित हैं अणिमन्, लघिमन्, प्राप्ति, प्राकाम्यम्, महिमन् ईशिता, वशिता और कामावसायिता) कु० २।११ 7 कंडों की राख।

विभूषणम् [वि+भूष्+ल्युट्] अलंकार, सजावट,—विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम् भर्तृ० २।७ रघु० १६।८०।

विभूषा [वि+भूष्+अ+टाप्] अलंकार, सजावट,— सुपेदेर्भसमलिलोदगमो विभूषा —कि० ७।५, रघु० ४।५४ 2 प्रकाश कान्ति 3 सौंदर्य, आभा।

विभूषित (भू० क० कृ०) [वि+भूष्+णिच्+क्त] अलंकृत सुशोभित सुभूषित।

विभृत (भू० क० कृ०) [वि+भृ+क्त] सम्भाला गया, ... दिया गया सधारित या समर्थित।

विभ्रंश [वि+भ्रंश्+घञ्] 1 गिरना, टूट पड़ना 2. ह्रास, क्षय बर्बादी 3 चट्टान।

विभ्रंशित (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1. बहकाया गया फुसलाया गया 2 वंचित, विरहित।

विभ्रम [वि+भ्रम्+घञ्] 1 इधर उधर टहलना

घूमना 2 भ्रमण, फेरा, इधर उधर लुढ़कना 3. त्रुटि, भूल, गलती 4 उतावली, अव्यवस्था, हड़बड़ी, गड़बड़ी विशेषतः प्रेम के कारण उत्पन्न मन की अस्थिरता —चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो भवेत् 5 (अतः) हड़बड़ी के कारण अलंकारादिक का उलटा सीधा पहनना विभ्रमस्त्वरयाऽकाले भूषास्थान विपर्ययः, दे० कु० १।४ तदुपरि मल्लि० 6 रंगरेलियाँ, कामकेलि, आमोद-प्रमोद मा० १।२६, ९।३८ 7 सौन्दर्य, कान्तित्व, लावण्य नै० १५।२५, उत्तर० १।२०, १४, ६।४, शि० ६।४६, ७।१५, १६।६४ 8 सन्देह, आशंका 9. सनक, वहम।

विभ्रमा [वि+भ्रम्+अच्+टाप्] बुढ़ापा।

विभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1 गिरा हुआ, पड़ा हुआ अलग किया हुआ 2 क्षीण, लुप्त, पतित, बर्बाद 3 ओझल, अन्तर्हित।

विभ्राज् (वि०) [वि+भ्राज्+क्विप्] चमकीला, दीप्तिमान्, प्रकाशमान।

विभ्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+भ्रम्+क्त] 1 चक्कर खाया हुआ 2. विक्षुब्ध, व्याकुल, अव्यवस्थित, हड़बड़ाया हुआ 3 भ्रम में पड़ा हुआ, भूल करने वाला। सम० —नयन (वि०) विलोलदृष्टि, चपल आँखों वाला, —शील (वि०) 1 जिसका चित्त अव्यवस्थित हो 2. मद्य में चूर, मतवाला, —लः 1. बन्दर 2. सूर्यमंडल या चन्द्रमंडल।

विभ्रान्ति (स्त्री०) [वि+भ्रम्+क्तिन्] 1 चक्कर, फेरा 2. हड़बड़ी, त्रुटि गड़बड़ी 3 उतावली, जल्दबाजी।

विमत (भू० क० कृ०) [वि+मन्+क्त] 1 असहमत, असम्मत, भिन्न मत रखने वाला 2 विषम, असंगत 3. अनादृत, अपमानित, उपेक्षित, —तः शत्रु।

विमति (वि०) [विरुद्धा विगता वा मतिर्यस्य —प्रा० ब०] मूर्ख, प्रज्ञाशून्य, मूढ़,—तिः (स्त्री०) 1 असम्मति, असहमति, मतविभिन्नता 2. अरुचि 3. जड़ता।

विमत्सर (वि०) [विगतः मत्सरो यस्य —प्रा० ब०] ईर्ष्या से मुक्त, ईर्ष्यारहित — भग० ४।२२।

विमद (वि०) [विगतः मदो यस्य —प्रा० ब०] 1. नशे से मुक्त 2. हर्षशून्य, निर्मद।

विमनस्, विमनस्क (वि०) [विरुद्धं मनो यस्य, पक्षे कप्, प्रा० ब०] 1. उदास, विषण्ण, अवसन्न, खिन्न, म्लान—उत्तर० १।७ 2. अनमना 3. हैरान, परेशान 4. नाराज 5. जिसका मन या भावना बदली हुई हो।

विमन्यु (वि०) [विगतः मन्युर्यस्य —प्रा० ब०] 1 क्रोध से मुक्त 2. शोक से मुक्त।

विमयः [वि+मी+अच्] विनिमय, अदला-बदली।

विमर्दः [वि+मृद्+घञ्] 1. चूरा करना, कुचलना, चकना चूर करना 2. मसलना, रगड़ना —विमर्दसुरभिर्बकुलावलिका खल्वहम् मालवि० ३, रघु० ५।६५ 3 स्पर्श 4 उबटन आदि शरीर पर मलना 5 संग्राम, युद्ध, लड़ाई, भिड़न्त विमर्दक्षमां भूमिमवतराव — उत्तर० ५ 6 विनाश, उजाड़, —रघु० ६।६२ 7 सूर्य और चन्द्रमा का मेल 8. ग्रहण।

विमर्दक [वि+मृद्+ण्वुल्] 1 पीसने वाला, चूरा करने वाला, चकनाचूर करने वाला 2 गन्ध द्रव्यों की पिसाई 3 ग्रहण 4 सूर्य और चन्द्र का मेल।

विमर्दनम्,—ना [वि+मृद्+ल्युट्] 1 चूरा करना, कुचलना, रौंदना 2 आपस में मसलना, रगड़ना 3 विनाश हत्या 4 गन्ध द्रव्यों की पिसाई 5 ग्रहण।

विमर्शः [वि+मृश्+घञ्] 1 विचार विनिमय, सोच विचार परीक्षण चर्चा 2 तर्कना 3 विपरीत निर्णय 4 सकोच सदेह 5 पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी छाप, दे० वासना।

विमर्षः [वि+मृष्+घञ्] 1 विचार, विचारविनिमय 2 अधीरता, असहिष्णुता 3 असन्तोष अप्रसन्नता 4 (नाटक में) नाटकीय कथा वस्तु की सफल प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रसंगाख्यान के सफल प्रक्रम में किसी अदृष्ट दुर्घटना के कारण परिवर्तन सा० द० ३३६ पर इसकी परिभाषा यह है —यत्र मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः, शापाद्यैः सान्तरायश्च स विमर्श इति स्मृतः दे० मुद्रा० ४।३, (इन सब अर्थों के लिए बहुधा 'विमर्श' लिखा जाता है)।

विमल (वि०) [विगतो मलो यस्मात् —प्रा० ब०] 1 पवित्र, निर्मल, मलरहित, स्वच्छ (आल० से भी) 2. साफ, शुभ्र स्फटिक जैसा, पारदर्शी (जैसे जल) विमलं जलम् 3. श्वेत, उज्ज्वल, —लम् 1 चाँदी की कलई 2 मालक सेलखड़ी। सम० —दानम् देवता के लिए चढ़ावा, —मणिः स्फटिक।

विमांसः, —सम् [विरुद्धं मांसम् —प्रा० स०] अस्वच्छ मांस (जैसे कुत्ते का)।

विमातृ (स्त्री०) [विरुद्धा माता—प्रा० स०] सौतेली माँ। सम० —जः सौतेली माँ का बेटा।

विमानः, —नम् [वि+मन्+घञ्, वि+मा+ल्युट् वा] 1 अनादर, अपमान 2 माप 3. गुब्बारा, व्योमयान (आकाश में घूमने वाला) पदं विमानेन विगाहमान रघु० १३।१, ७।५१, १२।१०४, कु० २।४५, ७।४०, विक्रम० ४।४३, कि० ७।११ 4. यान, सवारी रघु० १६।६८ 5 कमरा, दरबार कमरा या सभाभवन—रघु० १७।९, 6 (सात मंजिलों का) महल —नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमीः — मेघ० ६९ 7 घोड़ा। सम० —चारिन्, —यान (वि०) गुब्बारे में बैठ कर घूमने वाला, —राजः 1 श्रेष्ठ व्योमयान उत्तर० ३ 2. व्योमयान का संचालक।

विमानना [वि+मन्+णिच्+युच्+टाप्] अनादर, निरादर, अपमान, प्रतिष्ठा भंग—विमानना सुभ्रु कुतः पितुर्गृहे—कु० ५।४३, अयमप्राप्य विमानना कथंचित् —रघु० ८।८।

विमानित (भू० क० कृ०) [वि+मन्+णिच्+क्त] अनादृत, निरादृत।

विमार्गः [विरुद्धो मार्गः—प्रा० स०] 1 खराब सड़क 2 कुपथ, दुराचरण, अनैतिकता 3 झाड़ू। सम० —गा असती स्त्री—विमार्गगायाश्च रुचिः स्वकान्ते भामि० १।१२५, —गामिन्, —प्रस्थित (वि०) असदाचारी—श० ५।८।

विमार्गणम् [वि+मार्ग्+ल्युट्] ढूंढना, खोजना, तलाश करना।

विमिश्र, विमिश्रित (वि०) [वि+मिश्र्+अच्, क्त वा] मिला हुआ, सम्पृक्त, गड्डमड्ड किया हुआ (करण० के साथ या समास में)—पुंभिर्विमिश्रा नागेन्द्र—महा०, इन्द्रयोगिन्द्र को न को न समीप क्रीडाविमिश्रो रसः—गीत० ५।

विमुक्त (भू० क० कृ०) [वि+मुच्+क्त] 1 आजाद किया हुआ, रिहा किया हुआ, स्वतन्त्र किया हुआ, 2 परित्यक्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, पीछे रहा हुआ 3 स्वतन्त्र 4 जोर से फेंका गया, (बन्दूक से) दागा गया 5 अभिव्यक्त। सम० —कण्ठ (वि०) क्रन्दन करने वाला, फूट फूट कर रोने वाला।

विमुक्ति (स्त्री०) [वि+मुच्+क्तिन्] 1 रिहाई, छुटकारा 2. वियोग 3. मोक्ष, उद्धार।

विमुख (वि०) (स्त्री०—खी) [विरुद्धमननुकूलं मुखं यस्य प्रा० ब०] 1. मुंह मोड़े हुए 2 पराङ्मुख, अनिच्छुक, विरुद्ध—न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः—मेघ० १७,२७, (रघूणां) मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति—रघु० १६।८, १९।४७ 3 शत्रु—हि० १।१३० 4 रहित, शून्य (समास में)—करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम्—रघु० ८।६७।

विमुग्ध (वि०) [वि+मुह्+क्त] अव्यवस्थित, घबराया हुआ, व्याकुल।

विमुद्र (वि०) [विगता मुद्रा यस्य—प्रा० ब०] 1 बिना मोहर लगा 2 खुला हुआ, मुकुलित, खिला हुआ।

विमूढ (भू० क० कृ०) [वि+मुह्+क्त] 1. घबराया हुआ, व्याकुल 2 बहकाया हुआ, लुभाया हुआ, फुसलाया हुआ 3. जड़।

विमृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+मृज्+क्त] 1. मला हुआ, पोंछा गया, साफ किया गया 2. सोचा हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तन किया हुआ।

विमोक्षः [वि+मोक्ष्+घञ्] 1 रिहाई, मुक्ति, छुटकारा 2 गोली दागना, निशाना लगाना 3. मुक्ति।

विमोक्षणम्,—णा [वि+मोक्ष्+ल्युट्] 1 छुटकारा, रिहाई मुक्त करना 2. गोली दागना 3. त्यागना, छोड़ना, परित्यक्त करना 4 (अण्डे) देना।

विमोचनम् [वि+मुच्+ल्युट्] 1. खोल देना, जूआ हटा लेना 2 रिहाई, स्वतन्त्रता 3 छुटकारा, मोक्ष।

विमोहन (वि०) (स्त्री०—ना,—नी) [वि+मुह्+णिच्+ल्युट्] 1 रिझाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना, —नः, नम् नरक का एक प्रभाग, —नम् फुसलाना, लुभाना, आकृष्ट करना।

विम्बः,—म्बम् दे० 'बिम्ब'।

विम्बकः दे० 'बिम्बक'।

विम्बटः [विम्ब्+अट+अच्, शक० पररूपम्] राई का पौधा।

विम्बिका दे० 'बिम्बिका'।

विम्बा,—म्बी (स्त्री०) [विम्ब्+अच्+टाप्, ङीष् वा] एक बेल का नाम।

विम्बित दे० 'बिम्बित'।

विम्बुः (पुं०) सुपारी का पेड़।

वियत् (नपुं०) [वियच्छति न विरमति वि+यम् +क्विप्, म लोपः, तुकागमः] आकाश, अन्तरिक्ष, निरभ्रव्योम—पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति—श० १।७, रघु० १३।४०। सम० —गंगा 1 स्वर्गीय गंगा 2. आकाशगंगा,—चारिन् (वियच्चारिन्) (पुं०) चील,—भूतिः (स्त्री०) अंधकार, —मणिः (वियन्मणिः) सूर्य।

वियातिः (पुं०) पक्षी

वियमः [वि+यम्+अप्] 1. प्रतिबंध, रोक, नियन्त्रण 2 दुःख, पीड़ा, कष्ट 3 विराम, पड़ाव।

वियात (वि०) [विरुद्ध निन्दा यातः—प्रा० स०] 1. धृष्ट 2 साहसी, निर्लज्ज, ढीठ।

वियाम दे० 'वियम'।

वियुक्त (भू० क० कृ०) [वि+युज्+क्त] 1. विच्छिन्न, पृथक्कृत, अलग किया हुआ 2. जुदा किया हुआ, परित्यक्त 3 मुक्त, वंचित (करण० के साथ या समास में)।

वियुत (भू० क० कृ०) [वि+यु+क्त] वियुक्त, विरहित, वञ्चित—विक्रम० ४।१८।

वियोगः [वि+युज्+घञ्] 1 जुदाई, विच्छेद,—अयमेकपदे तया वियोगः सहसा चोपनतः सुदुःसहो मे—विक्रम० ४।३, त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि समवस्था दृश्यते—श० ४, सघने भृशमरति हि सद्वियोगः—कि० ५।४१, रघु० १२।१०, शि० १२।६३ 2. अभाव, हानि 3 व्यवकलन।

वियोगिन् (वि०) [वियोग+इनि] वियुक्त—(पुं०) चक्रवाक।

वियोगिनी [वियोगिन्+ङीप्] 1 अपने पति या प्रेमी

वियुक्त स्त्री,—गृहिणी:खमिति कविर्मनीषी निरवैषीवस ता वियोगिनीति भामि० ४।३५ 2 एक छन्द या वृत्त का नाम (दे० परि० १)।

वियोजित (भू० क० कृ०) [वि+युज्+णिच्+क्त] 1. अलगाया हुआ 2. जुदा किया हुआ, वञ्चित।

वियोनिः,—नी [विविधा विरुद्धा वा योनि: प्रा० स०] 1. नाना जन्म 2. पशुओं का गर्भाशय (मनु० १२।७७ पर कुल्लू०) 3. हीन या कलंकपूर्ण जन्म।

विरक्त (भू० क० कृ०) [वि+रञ्ज्+क्त] 1. बहुत लाल, लालिमा से युक्त —रघु० १३।६४ 2. बदरंग 3. अनुरागहीन, स्नेहशून्य, अप्रसन्न—भर्तृ० २।२ 4 सांसारिक राग या लालसा से मुक्त, उदासीन 5 आवेशपूर्ण।

विरक्तिः (स्त्री०) [वि+रञ्ज्+क्तिन्] 1 चित्तवृत्ति में परिवर्तन, असन्तोष, अपरितृप्ति, स्नेहशून्यता 2 अलगाव 3. उदासीनता, इच्छा का अभाव, सांसारिक लालसा या आसक्तियों से मुक्त।

विरचनम्,—ना [वि+रच्+ल्युट्] 1. क्रम व्यवस्थापन —शि० ५।२१ 2. रचना करना सजाना 3. निर्माण करना, सृजन करना 4. साहित्य-रचना करना, संकलन करना।

विरचित (भू० क० कृ०) [वि+रच्+क्त] 1 क्रम से रक्खा गया, बनाया गया, निर्मित, तैयार किया गया 2. घटित किया हुआ, सरचना किया हुआ 3. लिखा हुआ, साहित्य-सृजन किया हुआ 4 काट-छांट किया गया, सवारा गया, परिष्कृत किया गया, बनाव-सिंगार किया गया 5. धारण किया गया, पहनाया गया 6. जड़ा गया, बैठाया गया।

विरज (वि०) [विगत रजो यस्मात् —प्रा० ब०] जिस पर धूल या गर्द न हो, जिसमें राग न हो,—जः विष्णु का विशेषण।

विरजस्, विरजस्क (वि०) [विगत रज: यस्मात् यस्य वा प्रा० ब०] 1. जिस पर धूल न पड़ी हो, राग रहित —शि० २०।८० 2 जिसका रजोधर्म आना बंद हो गया हो।

विरजस्का [विरजस्+कप्+टाप्] वह स्त्री जिसको रजोधर्म आना बन्द हो गया हो।

विरंचः, —चिः [वि+रच्+अच्, इन् वा, मुम्] ब्रह्मा।

विरटः (पुं०) एक प्रकार का काला अगुरु, अगर का वृक्ष।

विरणम् [विशिष्टो रणो मूलं यस्य —प्रा० ब०] एक प्रकार का सुगन्धित घास, मु० वीरण।

विरत [वि+रम्+क्त] 1. बन्द किया हुआ, रुका हुआ (अपा० के साथ) 2. विश्रान्त, थका हुआ, ठहरा हुआ 3. समाप्त, उपसंहृत, समाप्ति पर —विरत गेयमृतुर्निरुत्सवः रघु० ८।६६।

विरतिः (स्त्री०) [वि०+रम्+क्तिन्] 1 बन्द करना, ठहरना, रोकना 2. विश्राम, अवसान, यति 3. सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता —भर्तृ० ३।७९।

विरमः [वि+रम्+अप्] 1 रोक थाम 2. सूर्य का छिपना।

विरल (वि०) [वि+रा+कलन्] 1 छिद्रों से युक्त, जिसके बीच में अन्तराल हो, पतला, जो सघन न हो, सटा हुआ न हो —विपर्यास यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् —उत्तर० २।२७, भवति विरलभक्तिम्लनि पुष्पोपहारः —रघु० ५।७४ 2. पतला, कोमल 3. ढीला, विस्तृत 4 विरला, दुर्लभ, अनूठा —पंच० १।२९ 5. कम, थोड़ा (संख्या या परिमाण संबंधी) —तस्य किमपि काव्यानां जानाति विरला भुवि—भामि० १।११७, विरला नपच्छवि —शि० ९।३ 6 दूरवर्ती, दूरस्थ, लम्बा (समय या दूरी आदि), —लम् दही, जमाया हुआ दूध, —लम् (अव्य०) कठिनाई से, कभी कभी जो बहुतायत से न हो, नहीं के बराबर। सम० —जानुक (वि०) धनु —पदी, जिसके घुटनों में अधिक दूरी हो, —द्रवा, एक प्रकार की लपसी।

विरस (वि०) [विगत रसो यस्य प्रा० ब०] 1 स्वादरहित, फीका, नीरस 2. अप्रिय, अरुचिकर, पीड़ाकर—तावत्कोकिल विरसान् यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन् —भामि० १।७ 3 क्रूर, निर्दय, —सः पीड़ा।

विरहः [वि+रह्+अच्] 1. बिछोह, वियोग 2 विशेषत प्रेमियों की जुदाई—सा विरहे तव दीना —गीत० ४, क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे —रघु०, मेघ० ८, १२, २९, ८५, ८७ 3 अनुपस्थिति 4 अभाव 5 उजड़ना, परित्याग, छोड़ देना। सम० —अनलः वियोगाग्नि, —अवस्था वियोगदशा, —आर्त, —उत्कण्ठ, —उत्सुक (वि०) वियोग का कष्ट भोगने वाला, बिछोह के कारण दु:खी, —उत्कण्ठिता वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के वियोग से दु:खी है, काव्यग्रंथों में वर्णित एक नायिका दे० सा० द० १२१, —ज्वरः वियोग की वेदना या ज्वर।

विरहिणी [विरहिन्+ङीप्] 1 अपने पति या प्रेमी से वियुक्त स्त्री 2 मजदूरी, भाड़ा।

विरहित (भू० क० कृ०) [वि+रह्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2. वियुक्त 3. अकेला, एकाकी 4 हीन, शून्य, मुक्त (बहुधा समास में)।

विरहिन् (वि०) (स्त्री० विरहिणी) [विरह+इनि] अनुपस्थित, अपनी प्रेयसी या प्रेमी से वियुक्त होने वाला, —स्मरति मुवनिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते —गीत० १।

विरागः [वि+रञ्ज्+घञ्] 1 रंग का बदलना 2 वृत्तिपरिवर्तन, स्नेहाभाव, असंतृप्ति असन्तोष,—

विरागकारणेषु परिहृतेषु मुद्रा० १ 3 अरुचि, इच्छा न होना 4 सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता, राग से मुक्ति ।

विराज् (पुं०) [वि+राज्+क्विप्] 1 सौन्दर्य, आभा 2 क्षत्रिय जाति का पुरुष 3 ब्रह्मा की प्रथम सन्तान दे० मनु० १।३२ तस्मात् विराडजायत ऋग० १०। ९०।५ (यहाँ विराज् को पुरुष से उत्पन्न बतलाया गया है) 4 शरीर —स्त्री० एक वैदिक वृत्त या छन्द का नाम ।

विराज दे० 'विराज्' ।

विराजित (भू० क० कृ०) [वि+राज्+क्त] 1 देदीप्यमान, प्रकाशित 2 प्रदर्शित, प्रकटीकृत ।

विराट ['विराट्' राजा यत्र] 1 भारतवर्ष के एक जिले का नाम 2 मत्स्य देश के एक राजा का नाम (पाण्डव लोगों ने एक वर्ष तक इस राजा की सेवा में छद्मवेश में रहकर अपने अज्ञातवास का समय बिताया) यह उनके निर्वासन का तेरहवाँ वर्ष था। विराटराज की कन्या उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ। उत्तरा परीक्षित की माता थी। परीक्षित ने हस्तिनापुर में युधिष्ठिर के बाद राज्य की बागडोर सम्भाली। सम० —जः एक प्रकार का घटिया हीरा —पर्वन् (नपुं०) महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटकः [विराट+कन्] घटिया प्रकार का हीरा, हीरे की घटिया प्रकार ।

विराणिन् (पुं०) [वि+रण्+णिनि] हाथी ।

विराद्ध (भू० क० कृ०) [वि+राध्+क्त] 1 विरुद्ध, प्रतिकूल 2 कुपित, अपमानित, घृणापूर्वक व्यवहृत उद्धरण देखिये वि पूर्वक राध् के नीचे ।

विराध [वि+राध्+घञ्] 1 विरोध 2 सताना, सन्तप्त करना, झगड़ना 3 राम के द्वारा मारा गया एक बलवान् राक्षस ।

विराधनम् [वि+राध्+ल्युट्] 1 विरोध करना 2 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, पीड़ित करना 3 पीड़ा, वेदना ।

विरामः [वि+रम्+घञ्] 1 रोकना, बन्द करना 2 अंत, समाप्ति, उपसंहार रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् गीत० ५ उत्तर० ३।१६ मा० १।३८ 3 यति, ठहरना, आवाज का रुकना या थमना मृच्छ० ३।५ 4 एक छोटी तिरछी लकीर जो व्यंजन के नीचे लगाई जाती है प्रायः वाक्य के अन्त में हलचिह्न 6 विष्णु का नाम ।

विराल दे० 'बिडाल' ।

विरावः [वि+रु+घञ्] कोलाहल, शोर, ध्वनि आलोकमार्गं सहसा व्रजन्त्या विरावैः रघु० २।९ १६।३१ ।

विराविन् (वि०) [विराव+इनि] 1 रोने वाला, चिल्लाने वाला और सताने वाला 2 विलाप करने वाला, —णी 1 रोने या चिल्लाने वाली 2 झाड़ ।

विरिञ्च, विरिञ्चन: [वि+रिच्+अच्, ल्युट् वा मुम्] ब्रह्मा ।

विरिञ्चि [वि+रिच्+इन् मुम्] 1 ब्रह्मा विक्रम० १।६६ नै० ३।६६, शि० ९।९, 2 विष्णु 3 शिव ।

विरुग्ण (भू० क० कृ०) [वि+रुज्+क्त] 1 टुकड़े टुकड़े हुआ 2 विनष्ट 3 मुड़ा हुआ 4 कुंठा ।

विरुत (भू० क० कृ०) [वि+रु+क्त] 1 चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ 2 गुंजायमान, झंकारपूर्ण —तम् 1 चिल्लाना, चीखना, दहाड़ना, आदि 2 चिल्लाहट, ध्वनि, शोर, कोलाहल, घोष 3 गाना, भिनभिनाना, कूजना, गुंजारना परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम् श० ४।९ ।

विरुद, —दम् (पुं० नपुं०) 1 घोषणा करना 2 जोर से चिल्लाना 3 स्तुतिपरक कविता गद्यपद्यमयी राजस्तुतिर्विरुदमुच्यते सा० द० ५७० नदन्ति मददन्तिनः परिलसन्ति वाजिव्रजाः पठन्ति विरुदावलीमहितमन्दिरे बन्दिनः रस० ।

विरुदितम् [विरुद+इतच्] जोर से रोना धोना, विलाप करना उत्तर० ३।२० (पाठान्तर) ।

विरुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+रुध्+क्त] 1 बाधित, रोका गया, विरोध किया गया, रुकावट डाली गई 2 घेरा हुआ, कैद में बन्द किया हुआ 3 विपरीत, घेरा डाला हुआ, नाकेबन्दी की गई 4 विपरीत, असंगत, बेमेल, असंबद्ध 5 प्रतिकूल, विरोधी, गुणों में विपरीत 6 (न्या० में) विरोधी, वैपरीत्य को सिद्ध करने वाला (जैसा कि तर्क० में हेतु), उदा० शब्दो नित्यः कृतकत्वात् तर्क० 7 विरोधी, उल्टा, शत्रुतापूर्ण 8 अननुकूल, अनुपयुक्त 9 प्रतिषिद्ध, वर्जित (भोजन आदि) 10 अशुद्ध, अनुचित —द्धम् 1 विरोध, वैर या शत्रुता 2 वैमत्य, असहमति

विरूक्षणम् [वि+रूक्ष्+ल्युट्] 1 रूखा करना 2 रक्तस्राव को रोकने का काम करने वाली (औषधि) 3 कलंक, निन्दा 4 अभिशाप, कोसना ।

विरूढ (भू० क० कृ०) [वि+रुह्+क्त] 1 उगाया हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ मुद्रा० १।९ 2 उत्पादित, उपजाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ 3 उगा हुआ, अभिवर्धित 4 मुकुलित, खिला हुआ 5 चढ़ा हुआ, सवारी की हुई ।

विरूप (वि०) (स्त्री० —पा, —पी) विकृत रूप वाला, भा० व०, 1 विरूपित, कुरूप, बदशक्ल, भद्दी सूरत पञ्च० १।१४३ 2 अप्राकृतिक, विकटाकार 3 विविधरूप, विविधरूपों वाला —पम् 1 कुत्सित

रूप, कुरूपता 2. रूप, स्वभाव या चरित्र की विभिन्नता। सम० —अक्ष (वि०) भद्दी आँखों वाला वपुर्विरूपाक्षम् कु० ५।७२, (—क्षः) शिव (विषम संख्या की आँखें होने के कारण) वृथा वच मनसिज जीवयन्ति वृथैव या, विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुमो वामलोचनाः विद्ध० १।२ कु० ६।२१, —करणम् 1 बदसूरत बनाना 2 क्षति पहुँचाना,— चक्षुस् (पु) शिव का विशेषण —रूप (वि०) भद्दा, बेडौल।

विरूपिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [विरुद्धं रूपमस्ति अस्य विरूप+इनि] भद्दा, कुरूप बदसूरत।

विरेकः [वि+रिच्+घञ्] 1 मलाशय को रिक्त करना साफ करना 2 विरेचक, जुलाब की दवा।

विरेचनम् दे० 'विरेक'।

विरेचित (वि०) [वि+रिच्+णिच्+क्त] पेट साफ किया गया, पेट निर्मल और रिक्त किया गया।

विरेफः [विशिष्टः रेफो यस्य वि+रिफ्+अच्] 1 नदी सरिता 2 'र' अक्षर का अभाव।

विरोकः, —कम् [वि+रुच्+घञ्, अच् वा] छिद्र, सूराख दरार, —कः प्रकाश की किरण।

विरोचनः [विशेषेण रोचते वि+रुच्+ल्युट्] 1 सूर्य 2. चन्द्रमा 3. अग्नि 4 प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता का नाम। सम० —सुतः बलि का विशेषण।

विरोधः [वि० रुध्+घञ्] 1. प्रतिरोध रुकावट विघ्न 2. नाकेबन्दी, घेरा, आवरण 3 प्रतिबन्ध, रोक 4. असंगति, असम्बद्धता, परस्परविरोध 5 अर्थ विरोध वैषम्य 6 शत्रुता, दुश्मनी विरोधो विश्रान्तः—उत्तर० ६।११, पंच० १।३३२, रघु० १०।१३ 7 कलह असहमति 8 संकट, दुर्भाग्य 9 (अलं० में) प्रतीयमान असंगति जो केवल शाब्दिक हो, तथा सदर्थ को ठीक से अन्वित करने पर स्पष्ट हो जाय, इसमें परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले शब्द (जो वस्तुएं वैसे न न हों) सम्मिलित रहते हैं, वस्तुओं का ऐसा वर्णन करना जो मिली हुई प्रतीत हों, परन्तु वस्तुतः हों भिन्न भिन्न, (इस अलंकार का बाण और सुबन्धु ने बहुत उपयोग किया है पुष्करवर्पि पविश्रा कृष्णोऽप्यसुदर्शनः, भरतोऽपि शत्रुघ्न आदि उदाहरण प्रसिद्ध हैं) मम्मट ने इसकी परिभाषा दी है—विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः काव्य० १०, इस अलंकार का नाम विरोधाभास भी है। सम०—उक्तिः (स्त्री०), —वचनम् परस्परविरोध, विवाद, —कारिन् (वि०) झगड़ा करने वाला, —कृत् (वि०) विरोधी (पु०) शत्रु।

विरोधनम् [वि+रुध्+ल्युट्] 1 बाधा डालना, विघ्न डालना, रुकावट डालना 2. घेरा डालना, नाकेबंदी करना 3 प्रतिरोध करना, मुकाबला करना 4 परस्परविरोध असंगति।

विरोधिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [वि+रुध्+णिनि] 1 मुकाबला करने वाला, प्रतिरोध करने वाला, अवरोध करने वाला 2 घेरा डालने वाला 3 परस्पर विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी असंगत तपोवन श० १ 4. विद्वेषी शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल विरोधिसत्त्वोज्झितपूर्वमत्सरम् कु० ५।१७ 5 झगड़ालू पु० शत्रु शि० १६।६४।

विरोपणम् [वि+रुह्+णिच्+ल्युट्] (घाव आदि का) भरना व्रणविरोपणं तैलम् श० ४।१४।

विल् i (तुदा० पर० विलति) 1 ढकना, छिपाना 2 तोड़ना, बाँटना ii (चुरा० उभ० वेलयति-ते) फेंकना, धकेलना।

विलम् दे० 'बिल'।

विलक्ष (वि० [विलक्ष्+अच्] 1 जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो 2 व्याकुल विह्वल 3 आश्चर्यान्वित अचंभे में पड़ा हुआ 4 लज्जित, शर्मिंदा अथान्ते मार्गेषु स्खलितस्तदा भवति च व्रीडाविलक्षश्चिरम् श० ६।५ अनोखा, अनूठा।

विलक्षण (वि०) [विगतं लक्षणं यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हों 2 भिन्न इतर 3 अनोखा असाधारण, अनूठा 4 अशुभ लक्षणों से युक्त —णम् व्यर्थ या निरर्थक स्थिति।

विलक्षित (भू० क० कृ०) [वि+लक्ष्+क्त] 1 चिह्नित, प्रत्यक्षीकृत दृष्ट आविष्कृत 2 विवेचनीय 3. उद्विग्न, घबराया हुआ विह्वल, व्याकुल 4 प्रकुपित, नाराज।

विलग्न (वि०) [वि+लग्+क्त] 1 चिपटा हुआ, चिपका हुआ, अवलम्बित, बंधा हुआ श० ७।२५, शि० ९।२० 2. डाला हुआ, स्थिर किया हुआ, निविष्ट कु० ७।५० 3 बीता, बीता हुआ (समय आदि) 4 पतला, छरहरा, सुकुमार मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या कु० १।३९, विक्रम० ४।३७, —ग्नम् कमर 2. कूल्हा 3 [illegible] का उदित होना।

विलङ्घनम् [वि+लङ्घ्+ल्युट्] 1 अतिक्रमण करना, लाँघ जाना 2 अपराध, अतिक्रमण, क्षति।

विलङ्घित (भू० क० कृ०) [वि+लङ्घ्+क्त] 1 पार या परे गया हुआ दुहराया हुआ 2. अतिक्रांत 3. आगे गया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4. परास्त, पराजित।

विलज्ज (वि०) [विगता लज्जा यस्य प्रा० ब०] निर्लज्ज बेशर्म।

विलपनम् [वि+लप्+ल्युट्] 1 बातें करना 2 निकम्मी बातें करना, बड़बड़ाना, बहकना 3. विलाप करना, रोना-धोना,—विलपनविनोदोऽप्यसुलभः—उत्तर० ३।३० 4 कीचड़, तलछट।

विलपितम् [वि+लप्+क्त] 1 विलाप करना, क्रन्दन 2 रोदन।

विलम्बः [वि+लम्ब्+घञ्] 1 लटकना, दोलायमान होना 2 धीमापन, देरी, दीर्घसूत्रता।

विलम्बनम् [वि+लम्ब्+ल्युट्] 1 लटकना, निर्भर होना 2 देरी, टालमटोल — न कुरु निरवधिर्नाविलम्बनम् गीत० ५, या तन्मुग्धविलम्बनमसौ रम्योऽभिसारक्षणः ... मदेव

विलम्बिका [वि+लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कोष्ठबद्धता।

विलम्बित (भू० क० कृ०) [वि+लम्ब्+क्त] 1 लटका हुआ, निर्भर 2 स्थगित, टाला हुआ 3 आश्रित ... मन्द, धीमा ... लम्बा, विलम्बकारी ...।

विलम्बिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [विलम्ब+णिनि] 1 नीचे लटकता हुआ, निर्भर, लटकने वाला — ... विलम्बिना घना श० ६।२० ... अलघुविलम्बि ... कि० ... रघु० १६।१८, १८।२४, मच्छ० ५।१३ 2 देर करने वाला, टालमटोल करने वाला, मन्द रहने वाला — ... विलम्बित ... गीत० ...।

विलम्भः [वि+लभ्+घञ्, मुम्] 1 उदारता 2 भेंट, दान।

विलयः [वि+ली+अच्] 1 पिघलना, पिघलना 2 विनाश, मृत्यु, अन्त — उत्तर० ६ 3 संसार का विघटन या विनाश (**विलयं गम्** —अन्त होना, अन्त हो जाना, समाप्त हो जाना — ... शि० ९।१३।

विलयनम् [वि+ली+ल्युट्] 1 घुल जाना, पिघल जाना, घोल या विघटन 2 अन्त हो जाना, मूर्छा आ जाना 3 हटाना, दूर करना 4 नरम करना 5 नरम करने वाली औषधि।

विलसत् (शत्रन्त वि०) (स्त्री० —ती) [वि+लस्+शतृ] 1 चमकने वाला, प्रकाशमान, उज्ज्वल 2 चमचमाने वाला, सहसा कौंधने वाला 3 लहराने वाला 4 क्रीडा-प्रिय, विनोदप्रिय।

विलसनम् [वि+लस्+ल्युट्] 1 चमकना, चमचमाना, चमकना, जगमगाना 2 क्रीडा करना, इठलाना, चोंचले करना।

विलसित (भू० क० कृ०) [वि+लस्+क्त] 1 चमकता हुआ, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ 2 प्रकट हुआ, प्रकटीकृत 3 क्रीडापर, स्वेच्छाचारी, —**तम्** 1 चमकना, जगमगाना 2 चमक दमक — रत्नाभूषा मुद्र मुग्ध हिरण्मयाना भासमानाभिर्दिविलसितानि ... कि० ५।४६, मेघ० ८१, विक्रम० ४ 3 दर्शन, प्रकटीकरण — जैसा कि अनङ्गविलसितम् आदि में 4 क्रीडा, खेल, रंगरेली, अनुराग, हावभाव।

विलापः [वि+लप्+घञ्] क्रन्दन, शोक करना, रोदन — कराहना, लक्ष्मणाणां पुनरुक्तविलापार्थेक ... रघु० १४।७८।

विलालः [वि+लल्+घञ्] 1 बिलाव 2 उपकरण, यन्त्र।

विलासः [वि+लस्+घञ्] 1 क्रीडा, खेल, मनोरंजन 2 कौतुक, मनोविनोद, लहर, प्रसन्नता, जैसा कि विलासमेखला रघु० ८।६४ में, इसी प्रकार विलासकानन विलासमन्दिरम् आदि 3 ललित अभिनय, रंगरेली, अनुराग, कामकला, प्रेमचेष्टा — ... कु० ५।२३, शि० ९।५९ 4 लालित्य, सौन्दर्य, चारुता, लावण्य, मा० ५।६ 5 चमक दमक।

विलासनम् [विलस्+णिच्+ल्युट्] 1 क्रीडा, खेल, मनोरंजन 2 कामुकता, रंगरेली।

विलासवती [विलास+मतुप्+ङीप्, मस्य वः] स्वेच्छाचारिणी या कामुक स्त्री — रघु० ९।४८, ऋतु० १।१२।

विलासिका [वि+लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक नाटिका में पूर्ण एकाङ्की ... सा० द० ५५२ पर इस प्रकार दी है — शृङ्गारबहुलैकाङ्का दशलास्याङ्गसंयुता विदूषकविटाभ्यां च पीठमर्देन भूषिता। हीना गर्भविमर्शाभ्यां संधिभ्यां हीननायका स्वल्पवृत्ता सुनेपथ्या विख्याता सा विलासिका।

विलासिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [विलास+इनि] क्रीडा युक्त, लीलापर, रंगरेली में व्यस्त, कामुक, चाव से करने वाला — रघु० ६।१४, पुं० 1 विषयी, प्रेमी, भक्त, रसिकजन ... कु० ५।७ 2 अग्नि 3 चन्द्रमा 4 साँप 5 कृष्ण या विष्णु का विशेषण 6 शिव का विशेषण 7 कामदेव का विशेषण।

विलासिनी [विलासिन्+ङीप्] 1 रमणी 2 हावभाव करने वाली स्त्री — ... मधुरधूनिकरं ... विलासिनी ... गीत० १, कु० ७।५९, शि० ८।७० रघु० ६।१७ 3 स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

विलिखनम् [वि+लिख्+ल्युट्] खुरचना, कुरेदना, लिखना।

विलिप्त (भू० क० कृ०) [वि+लिप्+क्त] लीप हुआ, पोता हुआ, चुपड़ा हुआ।

विलीन (भू० क० कृ०) [वि + ली + क्त] 1 चिपकने वाला, चिपटा हुआ, अनुषक्त 2 अड्डे पर बैठा हुआ बसा हुआ उतरा हुआ 3 संसक्त, संस्पर्शी 4 पिघला हुआ, घुला हुआ, गलाया हुआ 5 अन्तर्हित ओझल 6 मृत, नष्ट।

विलुंचनम् [वि + लुंच् + ल्युट्] फाड़ डालना, छीलना।

विलुंठनम् [वि + लुंठ् + ल्युट्] लूटना डाका डालना।

विलुप्त (भू० क० कृ०) [वि + लुप् + क्त] 1 तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ—पंच० २।२ 2 पकड़ा हुआ, छीना हुआ, अपहरण किया हुआ 3 लूटा हुआ, डाका डाला हुआ 4 विनष्ट बर्बाद 5 विगाड़ा हुआ तोड़ा-फोड़ा हुआ।

विलुंपकः [वि + लुप् + ण्वुल्, मुम्] चोर, लुटेरा अपहर्ता।

विलुलित (भू० क० कृ०) [वि + लुल् + क्त] 1 इधर उधर घूमने वाला, अस्थिर, हिला हुआ लुढ़का हुआ थरथराता हुआ 2 क्रमरहित, क्रमशून्य गलित कुसुमदलविलुलितकेशा —गीत० ७।

विलून (भू० क० कृ०) [वि + लू + क्त] कटा हुआ काट डाला हुआ, चीरा हुआ काट कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विलेखनम् [वि + लिख् + णिच् + ल्युट्] 1 खुरचना कुरेदना, गूदना 2 खोदना 3 उखाड़ना।

विलेपः [वि + लिप् + घञ्] 1 उबटन, मल्हम 2 चूना 3 लिपाई-पुताई।

विलेपनम् [वि + लिप् + ल्युट्] 1 लीपना पोतना 2 मल्हम, उबटन, कोई भी शरीर पर लेप करने के योग्य सुगन्धित पदार्थ (केसर व चन्दन आदि) —यान्येव सुरभिकुसुमधूपविलेपनादीनि का०।

विलेपनी [विलेपन + ङीप्] 1 सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित स्त्री 2 सुवेषा 3 चावल का मांड।

विलेपिका, विलेपी, विलेप्य [विलेपी + कन् + टाप् ह्रस्वः विलेप + ङीष्, वि + लिप् + ण्यत्] चावल का मांड।

विलोकनम् [वि + लोक् + ल्युट्] 1 देखना निहारना, दृष्टि डालना कि० ५।१६ 2 दृष्टि निरीक्षण —शि० १।२९।

विलोकित (भू० क० कृ०) [वि + लोक् + क्त] 1 देखा गया, निरीक्षण किया गया, समीक्षित, निहारा गया 2. परीक्षित, चिन्तन किया गया —तम् दृष्टि नजर —श० २।३।

विलोचनम् [वि + लोच् + ल्युट्] आँख रघु० ७।८ कु० ४।१, ३।६७। सम० अम्बु (नपुं०) आँसू।

विलोडनम् [वि + लोड् + ल्युट्] विक्षुब्ध होना, दोलायमान होना, हिल-जुल मन्थन करना शि० १४।८३।

विलोडित (भू० क० कृ०) [वि + लोड् + क्त] डुलाया हुआ, बिलोया हुआ हिलाया हुआ, विक्षुब्ध, तम् बिलोया हुआ दूध।

विलोप. [वि + लुप् + घञ्] 1 ले जाना, अपहरण करना पकड़ना लूटना 2 लोप, हानि, नाश अवसान।

विलोपनम् [वि + लुप् + ल्युट्] 1 काट डालना 2 अपहरण 3 नष्ट करना विनाश।

विलोभः [वि + लुभ् + घञ्] आकर्षण, फुसलाहट, प्रलोभन।

विलोभनम् [वि + लुभ् + णिच् + ल्युट्] 1 मोह लेना, ललचाना 2 रिझाना प्रलोभन फुसलाना 3 प्रशंसा खुशामद।

विलोम (वि) (स्त्री०—मी) [विगत लोम यत्र—प्रा० ब०] 1 व्युत्क्रान्त प्रतिकूल प्रतिलोम विपरीत विरुद्ध 2 प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न 3 पिछड़ा हुआ —मः विपरीत क्रम प्रतिलोम 2 कुत्ता 3 साँप 4 वरुण —मम् रहट कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र। सम० उत्पन्न —ज —जात, —वर्ण (वि०) प्रतिकूल क्रम से उत्पन्न अर्थात् ऐसी माता से जन्म लेना जो पिता की अपेक्षा उच्च वर्ण की हो, —पु० प्रतिलोमज भी —क्रिया —विधि 1 प्रतिकूल कर्म 2 प्रतिलोम नियम (गणि० में) —जिह्वः हाथी।

विलोमी [विलोम + ङीष्] आँवला।

विलोल (वि०) [विशेषेण लोलः —प्रा० स०] 1 दोलायमान काँपता हुआ थरथर करने वाला अस्थिर डोलने वाला चंचल इधर उधर लुढ़कने वाला पृषतीषु विलोलमीक्षितम् रघु० ८।५९ शि० ८।८ १५।६२ २०।४४ वेणी० ३।२८ रघु० ७।४१ १६।६८ 2 ढीला बिखरा हुआ बिखरे हुए (बाल आदि) उत्तर० ३।४।

विलोहित: [विशेषेण लोहितः —प्रा० स०] रुद्र का नाम।

विल्ल दे० 'बिल्ल'।

विल्व दे० 'बिल्व'।

विवक्षा [वच् + सन् + अ + टाप्] 1 बोलने की इच्छा 2 अभिलाषा इच्छा 3 अर्थ, आशय 4, इरादा प्रयोजन।

विवक्षित (वि०) [विवक्षा + इतच्] 1 कहे जाने या बोले जाने के लिए अभिप्रेत—विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति श० ३ 2 अर्थयुक्त अभिप्रेत, उद्दिष्ट 3 अभिलषित इच्छित 4 प्रिय —तम् 1 प्रयोजन अभिप्राय 2 आशय अर्थ।

विवक्षु (वि०) [वच् + सन् + उ] बोलने की इच्छा वाला,—कु० ५।८३।

विवत्सा [विगतः वत्सो यस्याः प्रा० ब०] बिना बछड़े की गाय।

विवधः [विवधः विगतो वा वधः हननं गतिर्वा यत्र प्रा० ब०] 1 बोझा ढोने के लिए जूआ 2 मार्ग, सड़क 3 बोझा भार 4 अनाज का संग्रह 5 घड़ा।

विवधिकः [विवध+ठन्] 1 बोझा ढोने वाला, कुली 2 फेरी वाला, आवाज लगा कर बेचने वाला।

विवरम् [वि+वृ+अच्] 1. दरार, छिद्र, रन्ध्र, खोखलापन, रिक्तता मत्स्यकार विवर विकाशने लाघवोरसि स रामसायक रघु० ११।१८, ९।६१, १९।७ 2. अन्तःस्थान, अन्तराल, बीच की जगह श० ७।७ 3 एकान्त स्थान कि० १२।३७ 4 दोष, त्रुटि, ऐब, कमी 5 विच्छेद, घाव 6 'नौ' की संख्या। सम० —नालिका बांसुरी, वंशी, मुरली।

विवरणम् [वि+वृ+ल्युट्] 1 प्रदर्शन, अभिव्यंजन, उद्घाटन, खोलना 2 अनावृत करना, खुला छोड़ना 3 विवृति, व्याख्या, वृत्ति, टीका, भाष्य।

विवर्जनम् [वि+वृज्+ल्युट्] छोड़ना, निकाल देना, परित्याग ... याज्ञ० १।१८१।

विवर्जित (भू० क० कृ०) [वि+वृज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 2 परिहृत 3 वञ्चित, विरहित, के बिना (प्रायः समास में) 4 प्रदत्त, वितरित।

विवर्ण (वि०) [विगत वर्णो यस्य प्रा० ब०] 1 विवर्ण का, निष्प्रभ, पाण्डु, फीका—नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः—रघु० ६।६७ 2 जिस पर कोई रंग न चढ़ा हो, निर्जल, श० ३।१४, 3 नीच, दुष्ट 4. अज्ञानी, मूढ़, निरक्षर, र्णः जाति-बहिष्कृत, नीच जाति से संबंध रखने वाला।

विवर्तः [वि+वृत्+घञ्] 1 गोल चक्कर खाना, चारों ओर घूमना, भंवर 2 आगे को लुढ़कना 3 पीछे को लुढ़कना, लौटना 4 नृत्य 5. बदलना, सुधारना, रूप में परिवर्तन, बदली हुई दशा या अवस्था—शब्दब्रह्म-णस्तादृशं विवर्तमितिहासं रामायणं प्रणिनाय उत्तर० २, एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् उत्तर० ३।४७, महावी० ५।५७ 6 (वेदान्त० में) एक प्रतीयमान भ्रान्तिजनक रूप, अविद्या या मानव की भ्रांति से उत्पन्न मिथ्या रूप, (यह वेदान्तियों का एक प्रिय सिद्धांत है जिसके अनुसार यह समस्त संसार एक माया है मिथ्या और भ्रान्तिजनक रूप जब कि ब्रह्म या परमात्मा ही वास्तविक रूप है, जैसे कि सांप, रस्सी का विवर्त है, इसी प्रकार यह संसार उस पर ब्रह्म का विवर्त है, यह भ्रान्ति या माया सत्य ज्ञान अथवा विद्या से ही दूर होती है, तु० भवभूति विद्याकल्पेन मरुता मेघानां भूयसामपि, ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः—उत्तर० ६।६ 7. ढेर, समुच्चय, संग्रह, समवाय। सम० —वादः वेदान्तियों का सिद्धांत कि यह दृश्यमान संसार माया है केवल ब्रह्म ही एक वास्तविकता है।

विवर्तनम् [वि+वृत्+ल्युट्] 1. चक्कर खाना, घूमना, भंवर 2 इधर उधर लुढ़कना, करवटें बदलना श० ५।६ 3 पीछे लुढ़कना, लौटना 4 नीचे को लुढ़कना, उतरना 5 विद्यमान रहना, दृढ़ रहना 6 सम्मान अभिवादन 7 नाना प्रकार की दशाओं व स्थितियों में से गुजरना 8 परिवर्तित दशा—उत्तर० ४।१५, मा० ४।७।

विवर्धनम् [वि+वृध्+ल्युट्] 1 बढ़ना 2 वृद्धि, वर्धन, बढ़ती 3 विस्तार, अभ्युदय।

विवर्धित (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2 प्रगत, प्रोन्नत, आगे बढ़ाया हुआ 3 संतुष्ट, प्रहृष्ट।

विवश (वि०) [वि+वश्+अच्] 1 अनियन्त्रित, जो वश में न किया गया हो 2 लाचार, आश्रित, अधीन, दूसरे के नियन्त्रण में, असहाय—परीता रक्षोभिः श्रयति विवशा कामपि दशाम् भामि० १।८३, मुद्रा० ६।१८, शि० ७०।५८ हि० १।१७२, महावी० ६।३२, ६३ 3 बेहोश, जो अपने आपको काबू में न रख सके विवशा कामवधूर्विबोधिता—कु० ४।१ 4. मृत, नष्ट—उपलब्धवती दिवश्च्युतं विवशा शापनिवृत्ति-कारणम् रघु० ८।८२ 5 मृत्युकामी, मृत्यु की आशंका करने वाला।

विवसन (वि०) [विगत वसन यस्य प्रा० ब०] नंगा, दिगंबर, —नः जैन साधु।

विवस्वत् (पुं०) [विशेषेण वस्ते आच्छादयति—वि+वस्+क्विप्+मतुप्] 1 सूर्य—त्वष्टा विवस्वतमिवो-ल्लिलेख कि० १। ८८, ५।४८, रघु० १०।३०, १७।१८ 2 अरुण का नाम 3 वर्तमान मनु का नाम 4 देव 5 अर्क का पौधा, म...।

विवहः [वि+वह्+अच्] आग की सात जिह्वाओं में से एक।

विवाकः [विशिष्टो वाको यस्य प्रा० ब०] न्यायाधीश, तु० प्राड्विवाक'।

विवादः [वि+वद्+घञ्] (क) कलह, प्रतियोगिता, संघर्ष विषय शास्त्रार्थ, विचारविमर्श, वाद-विवाद, झगड़ा, झंझट—अलं विवादेन,—कु० ५।८३ एतयोर्विवाद एव मे न रोचते मालवि० १ एकान्तर प्रापित-योर्विवादः—रघु० ७।५३ (ख) तर्क, तर्कना, चर्चा 2 वचनविरोध एव विवाद एव प्रत्यायर्यति—श० ७ 3 मुकदमेबाजी कानूनी नालिश, कानूनी संघर्ष, सीमाविवाद, विवादपदम् आदि, परिभाषा इस प्रकार की गई है ...र्णादिदायकलहे द्वयोर्बहुतरस्य वा विवादो व्यवहारस्य, दे० 'व्यवहार' भी 4 उच्च-क्रंदन, क्रन्दन 5 आदेश, आज्ञा—रघु० १८।४३। सम० —अर्थिन् (पुं०) 1 मुकदमेबाज 2 वादी अभियोक्ता, प्रत्यभियोक्ता,—पदम् कलह का लीवक, —वस्तु (नपुं०) कलह का विषय, विचारणीय विषय।

विवादिन् (वि०) [विवाद + इनि] 1. कलह करने वाला, तर्क-वितर्क करने वाला, तर्कप्रिय, कलहशील 2 (कानूनी पहलू पर) विवाद करने वाला—पुं० मुकदमेबाज, कानूनी अभियोग में भाग लेने वाला।

विवारः [वि + वृ + घञ्] 1 मुंह, विस्तार 2. अक्षरों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विस्तार (एक अभ्यंतर प्रयत्न, विप० संवार, दे० पा० १।१।९ पर सिद्धा०)।

विवासः, विवासनम् [वि + वस् + णिच् + घञ्, ल्युट् वा] देश निर्वासन, देशनिकाला, निष्कासन, रामस्य गात्र-मसि दुर्वहगर्भखिन्नसीताविवासनपटोः करुणा कुतस्ते —उत्तर० २।१०।

विवासित (भू० क० कृ०) [वि + वस् + णिच् + क्त] देश से निर्वासित किया गया, देश निकाला दिया गया, निष्कासित।

विवाहः [वि + वह् + घञ्] शादी ब्याह (हिन्दू स्मृतिकारों ने आठ प्रकार के विवाह बताये हैं ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः मनु० ३।२१, दे० याज्ञ० १: ५८, ६१ भी, इन शब्दों की व्याख्या के लिए उस शब्द को देखो)। सम० **चतुष्टयम्** चार पत्नियों से विवाह करना, **दीक्षा** विवाह संस्कार या कर्म।

विवाहित (भू० क० कृ०) [वि + वह् + णिच् + क्त] ब्याहा हुआ।

विवाह्यः [वि + वह् + ण्यत्] 1. जामाता 2 दूल्हा।

विविक्त (भू० क० कृ०) [वि + विच् + क्त] 1 वियुक्त, पृथक्कृत, अलगाया हुआ, वियुक्त 2 अकेला, एकाकी, निवृत्त, विलग्न 3 एकल एकी 4. प्रभिन्न, विवेचन किया हुआ 5 विवेकशील 6 पवित्र, निर्दोष रघु० १।२१,—**क्तम्** 1. एकान्त स्थान, निर्जन स्थान शि० ८।३० 2. अकेलापन, निर्जनता, एकान्तस्थान—**क्ता** भाग्यहीन या अभागी स्त्री, जो अपने पति की प्यारी न हो, दुर्भगा।

विविग्न (वि०) [विशेषेण विग्न, वि + विज् + क्त] अत्यंत क्षुब्ध, या डरा हुआ रघु० १८।१३।

विविध (वि) [विभिन्ना विधा यस्य—प्रा० ब०] नाना प्रकार का, विभिन्न प्रकार का, बहुरूपी, विश्वरूपी, प्रकीर्ण मनु० १।८, ३९

विवीतः [विशिष्टं वीतं गवादिप्रचारस्थानं यत्र प्रा० ब०] घिरा हुआ स्थान बाड़ा, जैसे चरागाह।

विवृक्त (भू० क० कृ०) [वि + वृज् + क्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त, सपरित्यक्त।

विवृक्ता [विवृक्त + टाप्] वह स्त्री जिसको उसका पति प्यार नहीं करता, तु० 'विविक्ता'।

विवृत (भू० क० कृ०) [वि + वृ + क्त] 1 प्रदर्शित, प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2 स्पष्ट, सामने खुला हुआ 3. खुला हुआ, अनावृत, नंगा पड़ा हुआ 4. खोला, प्रकट किया हुआ, नग्न, उद्घाटित 5. उद्घोषित 6 भाष्य किया गया, व्याख्या की गई, टीका की गई 7. विस्तारित, फैलाया गया 8 विस्तृत, विशाल, प्रशस्त। सम० **अक्ष** (वि०) बड़ी बड़ी आँखों वाला, (क्षः) मुर्गा, **द्वार** (वि०) खुले दरवाजों वाला कु० ४।३६।

विवृतिः (स्त्री०) [वि + वृ + क्तिन्] 1 प्रदर्शन, प्रकटीकरण 2. विस्तार 3. अनावरण, व्यक्तीकरण 4 भाष्य, टीका, वृत्ति, व्याख्यान।

विवृत्त (भू० क० कृ०) [वि + वृत् + क्त] 1 मुड़ कर आया हुआ 2 मुड़ना, चक्कर काटना, लुढ़कना, भंवर।

विवृत्तिः (स्त्री०) [वि + वृत् + क्तिन्] 1 मुड़ना, भंवर, चक्कर 2 (व्या०) उच्चारण भंग।

विवृद्ध (भू० क० कृ०) [वि + वृध् + क्त] 1 विकसित 2 बढ़ा हुआ, आवर्धित, ऊँचा किया हुआ, बढ़ाया हुआ, तीव्र (शोक हर्षादिक) 3. विपुल विशाल, प्रचुर।

विवृद्धिः (स्त्री०) [वि + वृध् + क्तिन्] 1 बढ़ना, वर्धन, बढ़ती, विकास पयः पूर्वैः स्वनिःश्वासैः कवोष्णमुपभुज्यते 1 (?) रघु० १।६७, विवृद्धिमत्राश्नुवते वसूनि १३।४, इसी प्रकार शोक' 'हर्ष' आदि 2. समृद्धि।

विवेकः [वि + विच् + घञ्] 1 विवेचन, निर्धारण, विचारणा, विभेद, कथमपि यातस्तथापि च विवेकः भामि० १।९८,९९, ज्ञानोऽप्य जलधर तावको विवेक —९६ 2 विचार, विचारविमर्श, गवेषणा यज्जन्मागारविवेकतस्त्वमपि यत्काव्येषु लीलायितम् गीत० १२, इसी प्रकार द्वैत° धर्म° 3. भेद, अन्तर, (दो वस्तुओं में) प्रभेद नीरक्षीर विवेके हंसालस्य त्वमेव तनुषे चेत् भामि० १।१३, भट्टि० १९।६० 4 (वेदान्त० में) दृश्यमान जगत् तथा अदृश्य आत्मा में भेद करने की शक्ति, माया या केवल बाह्य रूप से वास्तविकता को पृथक् करना 5 सत्य ज्ञान 6 जलाशय, पात्र, जलाधार। सम०—**ज्ञ** (वि०) विवेकशील, विवेचक,—**ज्ञानम्** विवेचन करने की शक्ति, **दृश्वन्** (पुं०) सूक्ष्मदर्शी पुरुष, **पदवी** पुनर्विमर्श, विचार, चिन्तन।

विवेकिन् (वि०) [विवेक + इनि] विवेचक, विचारवान्, विवेकशील, पुं० 1. न्यायकर्ता, गुणदोषविवेचक 2 दार्शनिक।

विवेक्तृ (पुं०) [वि + विच् + तृच्] 1. न्यायकारी 2 कवि, दार्शनिक।

विवेचनम्,—ना [वि + विच् + ल्युट्] 1. गुणदोषविचारणा 2. विचारविमर्श, विचार 3. फैसला, निर्णय।

विवोढृ (पुं) [वि + वह् + तृच्] दूल्हा, पति।

विव्वोक दे० बिब्बोक बिब्बोकस्से मुरविजयिनो वरमेपानी वपुर्व- उ० म० ४३।

विश् (तुदा० पर० विशति, विष्ट) 1 प्रविष्ट होना, जाना, दाखिल होना विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम् कु० ५।३० रघु० २।१०, १२, मेघ० १०२, भग० ११।२९ 2 जाना या पहुंचना अधिकार में आना किसी के हिस्से में पड़ना—उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोसलेश्वरम् रघु० ४।७० 3 बैठ जाना, बस जाना 4 घुस जाना व्याप्त हो जाना 5 स्वीकार करना, उत्तरदायित्व लेना प्रेर० (वेशयति—ते) घुसाना प्रविष्ट कराना इच्छा० (विविक्षति) प्रविष्ट होने की इच्छा करना अनु , 1 सम्मिलित होना 2 किसी का अनुगमन करना बाद में प्रविष्ट होना अनुप्र सम्मिलित होना (आल० से) दूसरे की इच्छानुसार अपने आप को ढालना, यस्य यस्य हि यो भावस्तस्य तस्य हि तं नर, अनुप्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं नयेत् पञ्च० १।६८, अभिनि (आ०) 1 सम्मिलित होना अधिकार करना 2 सहारा लेना अधिकार कर लेना अभिनिविशते सन्मार्गम् सिद्धा०, मम तावन्मतमभिनिविशते —मुद्रा० ५।१२, भट्टि० ८।८०, आ ,1 प्रविष्ट होना रघु० ३।४६ 2 अधिकार करना, कब्जे में ले लेना काबू कर लेना 3 पहुंचना 4. किसी विशेष स्थिति पर पहुंचना, उप 1 बैठ जाना, आसन ग्रहण करना भग० १।४६ 2 डेरा डालना 3 स्वीकार करना अभ्यास करना प्रायमुपाविशति 4 उपवास करना भट्टि० ७।७५, नि , (आ०) 1 बैठ जाना, आसन ग्रहण करना —नवाम्बुदश्याम वपुर्न्यविक्षत (आसने) शि० १।१९ 2. पड़ाव डालना, डेरा लगाना रघु० १२।६८ 3 प्रविष्ट होना, रामशाला न्यविक्षत भट्टि० ४।२८, ६।१४३, ८।७, रघु० ९।८२ 4 स्थिर किया जाना, निर्दिष्ट किया जाना सूर्य-निविष्टदृष्टि -रघु० १४।६६ 5 व्यस्त होना, अनु-रक्त होना, तुल जाना, अभ्यास करना श्रुतिग्रामा-ध्यगो विद्वान्स्वधर्मे निविशेत वै मनु० २।८ 6 विवाह करना ('निर्विश्' के स्थान पर), (प्रेर०) 1 जमाना, निविष्ट करना, (मन चित्त) लगाना, भग० १२।८ 2 स्थित करना, धरना, रखना रघु० ६।११ ४।३९ ७।६३ 3 बिठाना, स्थापित करना रघु० १५।९७ 4 जीवन में स्थित कराना विवाह कराना—श० ४।१९ 5. (सेना आदि का) डेरा डालना रघु० ५।४२, १६।३७ 6 रेखांकन करना चित्रित करना, चित्र बनाना - चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा —श० २।९, मालवि० ३।११ 7 लिख लेना, उत्कीर्ण करना—विक्रम० २।१४ 8. सुपुर्द करना, सौंपना रघु० १९।४, निस् , 1 सुखोपभोग करना —ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान् रघु० ६।३४, निर्विष्टविषयस्नेहः स दशान्तमुपेयिवान् रघु० १२।१, ४।५१, ६।५०, ९।३५, १३।६०, १४।८०, १८।३, १९।४७, मेघ० ११० 2 अलंकृत करना, आभूषित करना 3 विवाह करना, प्र ,1 प्रविष्ट होना 2 आरम्भ करना, शुरु करना, (—प्रेर०) प्रस्तुत करना प्रवेष्टा के रूप में आगे आगे चलना, विनि रक्खा जाना बिठाया जाना, (प्रेर०) 1 स्थिर करना, रखना कु० १।४९, रघु० ६।६३, मधुरिपु कुचकलश विनिवेशय—गीत० १२ 2. बसाना, नई बस्ती बसाना—कु० ६।३७, सम् —, 1 प्रविष्ट होना 2 सोना लेटना आराम करना—संविष्टः कुशशयने निशां निनाय रघु० १।९५ मनु० ४।५५, ७।२२५ 3 सहवास करना, मैथुन करना षोडशर्तु-निशा स्त्रीणां तस्मिन् युग्मासु संविशेत् याज्ञ० १।७९ मनु० ३।४८ 4 सुखोपभोग करना, समा— 1 प्रविष्ट होना भट्टि० ८।२७ 2 पहुंचना 3 लग जाना तुल जाना सनि (प्रेर०) 1 रचना करना 2 स्थापित करना, ऊपर धरना रघु० १२।५८।

विश् (पुं०) [विश् + क्विप्] 1 तीसरे वर्ण का मनुष्य वैश्य 2 मनुष्य 3 राष्ट्र, स्त्री० 1 राष्ट्र, प्रजा 2 पुत्री। सम० - पण्यम् सामान्य व्यापारिक माल पतिः (विशांपति' भी) राजा, प्रजा का स्वामी।

विशम् [विश् + क] कमल की नली के तन्तु रेशे—तु० बिस। सम० आकरः एक प्रकार का पौधा, मत्र-चूड़ कठा सारस।

विशङ्कट (वि०) (स्त्री०—टा —टी) [वि + शङ्क् + अटच्] 1 बड़ा विशाल, बृहत् —विशङ्कटो वक्षसि बाणपाणि भट्टि० २।५०, शि० १३।३४ 2 मजबूत प्रबल शक्तिशाली।

विशङ्का [विशिष्टा विगता वा शङ्का प्रा० स०] डर, आशङ्का।

विशद (वि०) [वि + शद् + अच्] 1 स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, विमल विशुद्ध—योगनिद्रान्तविशदैः पावनै-रवलोकनैः रघु० १०।१४, १९।३९. रत्न० ३।९ कि० ५।१२ 2. सफेद, विशुद्धश्वेत रङ्ग का —निर्धौ-तहारगुलिकाविशदं हिमाम्भः रघु० ५।७०, कु० १।४० ६।२५, शि० ९।२६, कि० ४।२१ 3. उज्ज्वल चमकीला, सुन्दर -कु० ३।३३, शि० ८।७० 4 साफ, स्पष्ट प्रकट 5 शान्त, निश्चिन्त आराम सहित—जातो ममायं विशदः प्रकामं (अन्तरात्मा)—श० ४।२२।

विशय [वि + शी + अच्] 1 सन्देह, अनिश्चयता, अधि-करण के पांच अंगों में से दूसरा 2 शरण, सहारा।

विशरः [वि+शॄ+अप्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना फाड़ डालना 2 वध, हत्या, विनाश।

विशल्य (वि०) [विगत शल्यं यस्मात् प्रा० ब०] कष्ट और चिन्ता से मुक्त, सुरक्षित।

विशसनम् [वि+शस्+ल्युट्] 1 वध, हत्या पशुमेघ —उत्तर० ४।५ 2 बर्बादी,—नः 1 कटार टेढ़े फल की तलवार 2 तलवार।

विशस्त (भू० क० कृ०) [वि+शस्+क्त] 1 काटा हुआ चीरा हुआ 2 उजड्ड, अशिष्ट 3 प्रशस्त, विख्यात।

विशस्तृ (पुं०) [वि+शस्+तृच्] 1 हत्या करने वाला या बलि के लिए वध करने वाला व्यक्ति 2 चाण्डाल।

विशस्त्र (वि०) [विगत शस्त्रं यस्य] बिना हथियारों के, शस्त्ररहित जिसके पास बचाव के लिए कुछ न हो।

विशाखः [विशाखानक्षत्रे भव —विशाखा+अण्] 1 कार्त्तिकेय का नाम महावी० २।३८ 2 धनुष से तीर छोड़ते समय की स्थिति (इसमें धनुर्धारी एक पग पीछे तथा एक जरा आगे करके खड़ा होता है) 3 भिक्षुक, आवेदक 4 तकुवा 5 शिव का नाम। सम०—जः नारंगी का पेड़।

विशाखल दे० विशाख (2)।

विशाखा [विशिष्टा शाखा प्रकारो यस्य —प्रा० ब०](प्रायः द्विवचनान्त) सोलहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित होते हैं —किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशांकलेखामनुवर्तेते — श० ३।

विशायः [वि+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना, शेष पहरेदारों का बारी-बारी से पहरा देना।

विशारणम् [वि+शॄ+णिच्+ल्युट्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना फाड़ना 2 हत्या, वध।

विशारद (वि०) [विशाल+दा+क, लस्य रः] 1 चतुर, कुशल, प्रवीण विज्ञ, जानकार (प्रायः समास में) —वाग्विशारदः विशारदः रघु० ९।२९ ८।१० 2. विद्वान्, बुद्धिमान् 3 मशहूर, प्रसिद्ध 4 साहसी, भरोसे का,—दः बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़।

विशाल (वि०) [वि०+शालच्] 1 विस्तृत, बड़ा, दूर तक फैला हुआ, प्रशस्त, व्यापक, चौड़ा, —मुहुर्विशालैरपि भूरिभाल— शि० ३।५०, ११।२३, रघु० २।२१, ६।३२, मेघ० ६।२१ 2 समृद्ध, भरपूरा — श्रीविशालां विशालाम्—मेघ० ३० 3 प्रमुख, श्रीमान् महान्, उत्तम, प्रधान, —लः 1 एक प्रकार का हरिण 2 एक प्रकार का पक्षी, —ला 1 उज्जयिनी नगर का नाम पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालाम् — मेघ० ३० 2. एक नदी का नाम। सम० —अक्ष (वि०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला, (—क्षः) शिव का विशेषण (—क्षी) पार्वती का विशेषण।

विशिख (वि०) [विगता शिखा यस्य प्रा० ब०] मुकुटरहित, बिना चोटी का, बिना नोक का,—खः 1 बाण, माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना — गीत० ४, रघु० ५।५०, महावी० २।३८ 2 एक प्रकार का नरकुल 3 एक लोहे का कौवा।

विशिखा [विशिख+टाप्] 1 फावड़ा 2 तकुवा 3. सुई या पिन 4 बारीक बाण 5 राजमार्ग 6 नाई की पत्नी।

विशित (वि०) [वि+शो+क्त] तेज, पैना।

विशिपम् [विशो कपन्] 1 मन्दिर 2 आवासस्थान घर।

विशिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+शिष्+क्त] 1 विलक्षण, स्वतन्त्र 2 विशेष, असामान्य, असाधारण, प्रभेदक 3 विशेषगुणसम्पन्न, लक्षणयुक्त, विशेषतायुक्त, सविशेष 4 श्रेष्ठ सर्वोत्तम, प्रमुख, उत्कृष्ट, बढ़िया। सम० अद्वैतवाद रामानुज का एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार ब्रह्म और प्रकृति समरूप तथा वास्तविक सत्ता मानी जाती है अर्थात् मूलतः दोनों एक ही है, — बुद्धिः (स्त्री०) प्रभेदक ज्ञान, प्रभेदीकरण,—वर्ण (वि०) प्रमुख या श्रेष्ठ रंग का।

विशीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+शॄ+क्त] 1 छिन्न-भिन्न किया हुआ, तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 3 गिरा हुआ,- कु० ५।२८ 4 सिकुड़ा हुआ, संकुचित, या झुर्रियाँ जिसमें पड़ गई हों। सम० पर्णः नीम का पेड़, मूर्ति (वि०) जिसका शरीर नष्ट हो गया हो, अनंग कु० ५।५४ (र्तिः) काम देव का विशेषण।

विशुद्ध (वि०) [वि+शुध्+क्त] 1 शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ 2 पवित्र निर्मल, निष्पाप 3 बेदाग, निष्कलंक 4 सही, यथार्थ 5 सद्गुणी, पुण्यात्मा, ईमानदार खरा मा० ७।१ 6 विनीत।

विशुद्धिः (स्त्री०) [वि+शुध्+क्तिन्] 1 पवित्रीकरण, शुद्धिकरण तदनन्तरमवाप्य कल्पते ध्रुवं चिताभस्मरजो विशुद्धये कु० ५।७९, मनु० ६।१२, मनु० ६।६९, ११।५३ 2 पवित्रता, पूर्णपवित्रता,—रघु० १।१०, १२।४८ 3 याथातथ्य, यथार्थता 4 परिष्कार, शुद्धसुधार 5 समानता, समता।

विशूल (ब०) [विगत शूलं यस्य प्रा० ब०] निरस्त्रधारी, जिसके पास बर्छी न हो— रघु० १५।५।

विशृंखल (वि०) [विगता शृंखला यस्य— प्रा० ब०] 1 जो शृंखला में न बंधा हो (शा०) 2. निर्मुक्तचित्त, अनियंत्रित, अप्रतिबद्ध, निरंकुश, बेरोक—शि० १२।७— भामि० २।१७७ 3 सब प्रकार के नैतिक बंधनों से मुक्त, लम्पट भर्तृ० ३।५९।

विशेष (वि०) [विगतः शेषो यस्मात्—प्रा० ब०] 1 असीम 2 पुष्कल, प्रचुर- रघु० २।१४, —षः 1 विभेदन, विभेदीकरण 2. प्रभेद, अन्तर निर्विशेषो

विशेष: —भर्तृ० १।५० 3. विशिष्टतायुक्त अन्तर, अनोखा चिह्न, विशेष गुण, विशेषता, वैशिष्ट्य प्राय समास में प्रयुक्त तथा 'विशिष्ट' और 'अजीब' शब्दों से अनूदित श० ६।६ 4 अच्छा मोड़, रोग में मोड़ अर्थात् अपेक्षाकृत अच्छा परिवर्तन – अस्ति मे विशेष —श० ३, 'अब अपेक्षाकृत अच्छा हूँ' 5 अवयव अंग भूषेव लावण्यमयान् विशेषान् कु० १।२५ 6. जाति, प्रकार प्रभेद, भेद, ढंग (प्राय समास के अंत में)—भूतविशेष अमर० ४, परिमलविशेषान् पञ्च० १, कदलीविशेषा कु० १।३६ 7 विविध उद्देश्य, नाना प्रकार के विवरण (ब० व०) —मेघ० ५८, ६४ 8 उत्तमता, श्रेष्ठता, भेद, प्राय समास के अन्त में, उत्तम, पूज्य, प्रमुख, उत्कृष्ट अनुभावविशेषात्तु रघु० १।३७, वपुर्विशेषेण कु० ५।३१, रघु० २।७, ६।५, कि० ९।५८, इसी प्रकार आकृतिविशेषा 'उत्तम रूप' अतिथिविशेष 'पूज्य अतिथि' आदि 9. अनोखा विशेषण, नौ द्रव्यों में से प्रत्येक की शाश्वत विभेदक प्रकृति 10. (तर्क० में) वैयक्तिकता (विप० सामान्य) अनुठापन 11. प्रवर्ग, वर्ग 12. मस्तक पर चन्दन या केसर का तिलक 13. वह शब्द जो किसी अन्य शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है, दे० विशेषण 14 ब्रह्मांड का नाम 15 (अल० में) एक अलंकार का नाम जिसके तीन भेद बतलाये गये हैं, मम्मट ने इसकी परिभाषा यह दी है —विना प्रसिद्धमाधारमाधेयस्य व्यवस्थितिः, एकात्मा युगपद् वृत्तिरेकस्यानेकगोचरा। अन्यत्प्रकुर्वतः कार्यमशक्यस्यान्यवस्तुनः, तथैव करणं चेति विशेषस्त्रिविधः स्मृतः काव्य० १०। सम० —अतिदेशः विशेष अतिरिक्त नियम, विशेष विस्तारित प्रयोग,—उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें कारण के विद्यमान रहते हुए भी कार्य का होना नहीं पाया जाता —विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः काव्य० १०, उदा० हृदि स्नेहक्षयो नाभूत्स्मरदीपे ज्वलत्यपि, —ज्ञ, —विद् (वि०) 1. भेदों को जानने वाला, गुणदोषविवेचक, पारखी 2. विद्वान्, बुद्धिमान् मनु० २।३, —लक्षणम्,—लिङ्गम् विशेष या अलग करने वाला चिह्न, —वचनम् वि पाठ या विधि,—विधिः, —शास्त्रम् विशेष नियम।

विशेषक (वि०) [वि+शिष्+ण्वुल्] प्रभेदक, —कः, —कम् 1. एक प्रभेदक विशिष्टता या लक्षण विशेषण 2. चन्दन या केसर का माथे पर लगा तिलक —शिशु० ३।५ 3 रंगीन उबटन तथा अन्य सुगंधित पदार्थों से मुख या शरीर पर रेखांकन करना—स्वेदोद्गमः किंपुरुषाङ्गनानां चक्रे पदम् पत्रविशेषकेषु —कु० ३।३३, रघु० ९।२९, कि० ३।६३, १०।१४, —कम् तीन श्लोकों का समूह जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य बनता है —द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तं त्रिभिः श्लोकैर्विशेषकम्, कलापकं चतुर्भिः स्यात्तदूर्ध्वं कुलकं स्मृतम्।

विशेषण (वि०) [वि+शिष्+ल्युट्] गुणवाचक —णम् 1 विभेदन, विवेचन 2 प्रभेदन, अन्तर 3 वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करता है, गुणवाचक शब्द, गुण, विशेषता, (विप० विशेष्य), (विशेषण तीन प्रकार का माना जाता है व्यावर्तक, विधेय और हेतुगर्भ) 4 प्रभेदक लक्षण या चिह्न 5 जाति प्रकार।

विशेषतस् (अव्य०) [विशेष+तस्] विशेष रूप से, खास तौर से।

विशेषित (भू० क० कृ०) [वि+शिष्+णिच्+क्त] 1 विलक्षण 2 परिभाषित जिसके विवरण बता दिये गए हों 3. विशेषण के द्वारा जिसकी भिन्नता दर्शा दी गई हो 4 श्रेष्ठ बढ़िया।

विशेष्य (वि०) [वि+शिष्+ण्यत्] 1. विलक्षण होने के योग्य 2. मुख्य, बढ़िया —ष्यम् वह शब्द जिसे विशेषण के द्वारा सीमित कर दिया गया हो, वह पदार्थ जो किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित, या विशिष्ट कर दिया गया हो, संज्ञाशब्द, विशेष्यं नाभिधा गच्छेत्क्षीणशक्तिर्विशेषणे काव्य० २।

विशोक (वि०) [विगतः शोकः यस्य प्रा० ब०] शोक से मुक्त, प्रसन्न, —कः अशोक वृक्ष,—का शोक से छुटकारा।

विशोधनम् [वि+शुध्+ल्युट्] 1 शुद्ध करना स्वच्छ करना (आल० से) —राज्यकंटकविशोधनोद्यतः विक्रम० ५।१ 2 पवित्रीकरण निष्पाप या दोषरहित होना 3 प्रायश्चित्त, परिशोधन।

विशोध्य (वि०) [वि+शुध्+ण्यत्] पवित्र किये जाने के योग्य, निर्मल या शुद्ध किये जाने के योग्य।

विशोषणम् [वि+शुष्+ल्युट्] सुखाना, शुष्कीकरण।

विश्रणनम्, विश्राणनम् [वि+श्रण्+ल्युट्, पक्षे णिच्] प्रदान करना समर्पण करना, अनुदान, उपहार, दान —विश्राणनाच्चान्यपयस्विनीनाम् रघु० २।५४।

विश्रब्ध (भू० क० कृ०) (विस्रब्ध भी) [वि+श्रम्भ्+क्त] 1 शान्त किया गया, विश्वास किया गया, सौंपा गया 2 विश्वस्त, निडर, भरोसा करने वाला मुद्रा० ३।३ 3 विश्वसनीय, भरोसे का 4 निश्चल, सौम्य, शान्त, निश्चिन्त 5 दृढ़, स्थिर 6 नम्र, विनीत 7 आत्यधिक, बहुत ज्यादह, —ब्धम् (अव्य०) विश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ, बिना डर व संकोच के विश्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले श० २।६।

विश्रमः [वि+श्रम्+अप्] 1 आराम, विश्रान्ति 2 विराम, विश्राम।

विश्रम्भः [वि+श्रम्भ्+घञ्] 1 विश्वास, भरोसा अन्तरंग विश्वास, पूर्ण घनिष्ठता या अन्तरंगता विश्रम्भादुरसि निपत्य लब्धनिद्राम्—उत्तर० १।४९, मा० ३।१ 2 गुप्त बात, रहस्य विश्रम्भेष्वभ्यन्तरीकरणीया —का० 3 आराम, विश्राम 4 स्नेहसिक्त परिपृच्छा 5. प्रेम-कलह, प्रीतिविषयक झगड़ा 6. हत्या। सम० **आलापः**, **कथा** गुप्त वार्तालाप वार्तालाप, **पात्रम्**, **भूमिः**, **स्थानम्** विश्वास करने के योग्य पदार्थ या व्यक्ति, विश्वस्त विश्वसनीय व्यक्ति।

विश्रयः [वि+श्रि+अच्] शरण आश्रयस्थल।

विश्रवस् (पुं०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, जो कैकसी से उत्पन्न रावण, कुंभकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा का पिता था, कुबेर के एक पुत्र का नाम जो उसकी पत्नी इडाविडा से उत्पन्न हुआ था।

विश्राणित (भू० क० कृ०) [वि+श्रण्+णिच्+क्त] प्रदान किया गया, अर्पित किया गया निःशेषविश्राणितकोशजातम् रघु० ५।१।

विश्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+श्रम्+क्त] 1 बन्द किया हुआ, रोका गया 2 आराम किया हुआ, विश्राम किया हुआ 3 सौम्य, शान्त, स्वस्थ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) [वि+श्रम्+क्तिन्] 1 आराम, विश्राम 2. रोक, थाम।

विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] 1 रोक, थाम 2 आराम, चैन विश्रामो हृदयस्य यत्र उत्तर० १।३९ 3. शान्ति, सौम्यता, स्वस्थता।

विश्रावः [वि+श्रु+घञ्] 1 चूना, टपकना, बहना ('विस्राव' के स्थान में) 2 ख्याति, कीर्ति।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि+श्रु+क्त] प्रख्यात, लब्धप्रतिष्ठ, यशस्वी, प्रसिद्ध 2 प्रसन्न, आनन्दित, खुश 3 बहता हुआ।

विश्रुतिः (स्त्री०) [वि+श्रु+क्तिन्] प्रसिद्धि, ख्याति।

विश्लथ (वि०) [विशेषण श्लथ प्रा० स०] 1. ढीला, शिथिल, खुला हुआ,—रघु० ६।७३ 2 स्फूर्तिहीन निस्तेज।

विश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+क्त] वियुक्त, पृथक्कृत, अलग अलग किया हुआ रघु० १४।७६।

विश्लेषः [वि+श्लिष्+घञ्] 1 अलगाव, वियोजन 2 वियोग प्रेमियों अथवा पति-पत्नी का विछोह 3 वियोग तमयाविश्लेषदुःखे श० ४।५, चरणाग्विदविश्लेष—रघु० १३।२३ 4. अभाव, हानि, लाकावस्था 5 दरार, छिद्र।

विश्लेषित (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+णिच्+क्त] अलग किया हुआ, वियुक्त जुदा किया हुआ।

विश्व (सा० वि०) [विश्+क्व] 1 सारे सारा, समस्त, सार्वलौकिक 2 प्रत्येक, हरेक, (पुं० ब० व०) दस देवों का समूह (यह विश्वा के पुत्र समझे जाते हैं, इनके नाम हैं वसु सत्य क्रतुर्दक्ष काल कामो धृति कुरु, पुरूरवा माद्रवाश्च विश्वेदेवा प्रकीर्तिता— **श्वम्** 1 सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त संसार इद विश्व पाल्यम्— उत्तर० ३।३०, विश्वस्मिन्नधुनान्य कुलव्रत पालयिष्यति कः भामि० १।१३ 2 सूखा अदरक, सोंठ। सम० **आत्मन्** (पुं) 1. परमात्मा (विश्व की आत्मा) 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण— अथ विश्वात्मने गौरी संदिदेश मिथः सखीम् कु० ६।१ 4 विष्णु का विशेषण, **ईशः**, **ईश्वरः** 1 परमात्मा, विश्व का स्वामी 2 शिव का विशेषण **कद्रु** (वि०) दुष्ट नीच, दुर्वृत्त, (**द्रुः**) 1. शिकारी कुत्ता, मृगयाकुक्कुर 2 स्वर, **कर्मन्** (पुं०) 1 देवों का शिल्पी, तु० त्वष्टृ 2 सूर्य का विशेषण, **आ**, सुता, सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, **कृत्** (पुं०) 1 सब प्राणियों का स्रष्टा 2. विश्वकर्मा का विशेषण— **केतुः** अनिरुद्ध का विशेषण, **गंधः** प्याज, (**न्धम्**) लोबान, गुग्गुल, —**गन्धा** पृथ्वी, **जनम्** मानवजाति, **जनीन**,—**जन्य** (वि०) मानवमात्र के लिए हितकर, मनुष्य जाति के उपयुक्त, सब मनुष्यों के लिए लाभकर—भट्टि० २।४८, २१।१७, **जित्** (पुं०) 1 यज्ञ विशेष का नाम रघु० ५।१ 2 वरुण का पाश **देव** विश्व (पुं०) के नीचे दे०, **धारिणी** पृथ्वी, **धारिन्** (पुं०) देव **नाथः** विश्व का स्वामी, शिव का विशेषण, **पः** (पुं०) 1 सब का रक्षक 2 सूर्य 3 चन्द्रमा 4. अग्नि, **पावनी**, **पूजिता** तुलसी का पौधा, **प्सन्** (पुं०) 1 देव 2 सूर्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि का विशेषण **भुज्** (वि०) सर्वोपभोक्ता, सब कुछ खाने वाला (पुं०) इन्द्र का विशेषण, **भेषजम्** सूखा अदरक, सोंठ, **मूर्ति** (वि०) सब रूपों में विद्यमान, सर्वव्यापक, विश्वव्यापी,— मा० १।३,—**योनिः** 1 ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,— **राज्**, **राजः** विश्वप्रभु, **रूप** (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान (**पः**) विष्णु का विशेषण, (**पम्**) अगर की लकड़ी, —**रेतस्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, **वाह** (वि०) (स्त्री० विश्वौही) सब कुछ ढोने वाला, सब का भरण पोषण करने वाला, **ब्रह्म** पृथ्वी, **सृज्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, स्रष्टा प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः—कु० ३।२८, १।४९।

विश्वंकरः [विश्वं सर्वं करोति प्रकाशयति कृ+ट, द्वितीयाया अलुक्] आँख, (कुछ के अनुसार—अपुं०)।

विश्वतस् (अव्य०) [विश्व + तसिल्] सब ओर, सर्वत्र, सब जगह — भामि० १।३०। सम० — **मुख** (वि०) सब ओर मुख किये हुए — भग० ९।१५।

विश्वथा (अव्य०) [विश्व + थाल्] सर्वत्र, सब प्रकार।

विश्वंभर (वि०) [विश्व बिभर्ति विश्व + भृ + खच्, मुम्] सब का भरणपोषण करने वाला, —रः 1 सर्व व्यापक प्राणी, परमात्मा 2 विष्णु का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण, —रा पृथ्वी — विश्वंभरा भगवती भवतीमसूत — उत्तर० १।९ विश्वंभराप्यतिलघुर्नरनाथ तवाब्धिके नियतम् — काव्य० १०।

विश्वसनीय (स० कृ०) [वि + श्वस् + अनीयर्] 1 विश्वास किये जाने के योग्य, विश्वासपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके 2 विश्वास उत्पन्न करने के योग्य — श० २ मालवि० ३।

विश्वस्त (भू० क० कृ०) [वि + श्वस् + क्त] 1 जिस पर विश्वास किया गया है, निष्ठ, जिस पर भरोसा किया गया है 2 विश्वास करने वाला, भरोसा करने वाला 3 निडर, विश्रब्ध 4 विश्वास के योग्य, जिस पर भरोसा किया जा सके।

विश्वावसु (पुं०) [विश्वं दधाति पालयति — विश्व + धा णिच् + असुन्, पूर्वदीर्घ] देव, सुर।

विश्वानरः [विश्व + नर पूर्वपददीर्घ] सविता का विशेषण।

विश्वामित्र [विश्व + मित्र, विश्वमेव मित्रं यस्य ब० स०, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक विख्यात ऋषि का नाम। यह कान्यकुब्ज का राजा होने के कारण क्षत्रिय था, इसके पिता का नाम गाधि था। एक बार वह मृगया के लिए घूमता-घूमता वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ अनेक गौओं को देख कर उसने अनन्त धन राशि देकर भी उनको लेना चाहा और न मिलने पर बलात् उनको छीनने का प्रयत्न किया। इस बात पर एक महान संघर्ष हुआ, और राजा विश्वामित्र पूर्ण रूप से परास्त हो गया। इस पराजय से विश्वामित्र अत्यन्त क्षुब्ध हुआ और साथ ही वसिष्ठ के ब्राह्मणत्व की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या करता रहा। यहाँ तक कि बाद में उसे क्रमशः राजर्षि ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली, परन्तु उसे सन्तोष न हुआ क्योंकि वसिष्ठ ने अपने मुख से उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहा। विश्वामित्र हजारों वर्ष तपस्या करता रहा, तब कहीं जाकर वसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहा। विश्वामित्र ने कई बार वसिष्ठ को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया, उदाहरणतः वसिष्ठ के सौ पुत्रों को विश्वामित्र ने मौत के घाट उतार दिया, परन्तु वसिष्ठ तब भी नहीं घबराया। अन्ततः ब्रह्मर्षि बनने से पहले विश्वामित्र की शक्ति बहुत अधिक था, उदाहरणतः उसने त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने, इन्द्र के हाथ से शुनःशेप की रक्षा करने तथा ब्रह्मा की भांति पुनः सृष्टि की रचना करने में अत्यधिक बल का प्रदर्शन किया। वह बालक राम का साथी और परामर्शदाता था, इसने राम को अनेक आश्चर्य जनक अस्त्र प्रदान किये)।

विश्वावसुः [विश्व + वसु पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक गन्धर्व का नाम।

विश्वास [वि + श्वस् + घञ्] 1 भरोसा, प्रत्यय, निष्ठा — विश्रम्भ — दुर्जनः प्रियवादीति नैतद्विश्वासकारणम् — पंच० १।३८ रघु० १।५१ कि० ८।१०३ 2 भेद, रहस्य, गोपनीय समाचार। सम० — **घातः**, — **भंगः** विश्वास को तोड़ देना, धोखा देना, द्रोह, — **घातिन्** (पुं०) धोखा देने वाला मनुष्य, द्रोही, — **पात्रम्**, — **भूमिः**, — **स्थानम्** भरोसे की वस्तु, विश्वसनीय या भरोसे का मनुष्य, विश्वासी पुरुष।

विष् I (जुहो० उभ० वेवेष्टि, वेविष्टे, विष्ट) 1. घेरना 2. फैलाना, विस्तार करना, व्यापक होना 3 सामने लाना, मुकाबला करना (परिनिष्ठित संस्कृत में इसका प्रयोग बहुधा नहीं होता)

II (क्रया० पर० विष्णाति) वियुक्त करना, अलग-अलग करना।

III (भ्वा० पर० वेषति) छिड़कना, उड़ेलना।

विष् (स्त्री०) [विष् + क्विप्] 1 मल, विष्ठा, लीद 2 फैलाना, प्रसारण 3 लड़की जैसा कि 'विट्पति' में। सम० — **कारिका** (विट्कारिका) एक प्रकार का पक्षी, — **ग्रहः** (विड्ग्रह) कोष्ठबद्धता, कब्ज, — **चर** — **वराहः** (विट्चर, विड्वराह) पालतू या गाँव का सूअर, — **लवणम्** (विड्लवणम्) एक प्रकार का औषधियों में प्रयुक्त होने वाला नमक, — **संगः** (विट्संग) कोष्ठबद्धता, कब्ज — **सारिका** (विट्सारिका) एक प्रकार का पक्षी मैना

विषम् [विष् + क] 1 जहर, हलाहल (इस अर्थ में पुं० भी कहा जाता है), विषं भवतु मा भूद्वा फटाटोपो भयंकरः — पंच० १।२०४ 2. जल, विषं जलधरैः पीतं मूर्छिताः पथिकाङ्गनाः — चन्द्रा० ५।८२, (यहाँ दोनो अर्थ अभिप्रेत हैं) 3 कमलडण्डी के तन्तु या रेशे 4 लोबान, एक सुगन्धित द्रव्य का गोंद, रस गन्ध। सम० — **अक्त**, — **दिग्ध** (वि०) जहरीला, जहरीला, — **अङ्कुरः** 1 बर्छी 2 विष में बुझा तीर — **अन्तक** शिव का विशेषण — **अपह**, — **घ्न** (वि०) विषनाशक निर्विषकारक औषधि — **आननः**, — **आयुधः**, — **आस्यः** साँप, — **आस्वाद** (वि०) जहर चखने वाला, — **कुम्भः** जहर से भरा हुआ घड़ा, — **कृमिः** जहर में पला हुआ कीड़ा, — **न्याय** दे० न्याय के अन्तर्गत, — **ज्वरः** भैंसा

—रः बादल (रम्) तूतिया, —वल्लकः साँप, —वर्धिन्-मृत्युकः,—मृत्युः एक पक्षी (इसे चकोर कहते हैं), —धरः साँप—भामि० १।७४, °विलम् विषधर प्रवेश, साँपों का बिल, —पुष्पम् नील कमल, —प्रयोगः जहर का इस्तेमाल, जहर देना,—भिषज्,—वैद्य विषनाशक औषधियों का विक्रेता, साँपों के काटने की चिकित्सा करने वाला सप्रति विषवैद्यानां कर्म-मालवि० ४, - मन्त्रः 1 साँप के काटे का विष उतारने का मन्त्र 2. सपेरा, बाजीगर, - वृक्षः जहरीला पेड़, विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् —कु० २।५५, °न्याय न्याय के नीचे देखो, —वेगः जहर का संचार या प्रभाव, —शालूकः कमल की जड़, - शूकः,—शृङ्गिन्, —शृङ्गम् (पुं०) भिड़, बर्रे, —हृदय (वि०) विषाक्त दिलवाला अर्थात् दुष्टहृदय, मक्कारत्वा ।

विषक्त (भू० क० कृ०) [वि + सञ्ज् + क्त] 1. दृढ़ता-पूर्वक जमा हुआ, सटा हुआ 2. चिपटा हुआ, चिपका हुआ ।

विषण्डम् [विशेषेण षंडम् —प्रा० स०] कमलकन्दी के तन्तु या रेशे ।

विषण्ण (भू० क० कृ०) [वि+सद्+क्त] खिन्न, मुंह लटकाये हुए, उदास, दुःखी, निरुत्साह, हताश । सम० —मुख, वदन (वि०) उदास दिखाई देने वाला, —रूप (वि०) उदासी की अवस्था में पड़ा हुआ ।

विषम (वि०) [विगतो विरुद्धो वा समः —प्रा० स०] 1 जो सम या समान न हो, खुरदरा, ऊबड़-खाबड़ पथिषु विषमेष्वप्यचलता मुद्रा० ३।३, पञ्च० १६४, मेघ० १९ 2. अनियमित, असमान—मा० ९।४३ 3 उच्चा-वच, असम 4. कठिन, समझने में दुष्कर, आश्चर्य-जनक कि० २।३ 5 अगम्य, दुर्गम — कि० २।३ 6. मोटा, स्थूल 7 तिरछा मा० ४।२ 8 पीड़ाकर, कष्टदायक—भर्तृ० ३।१०५ 9. बहुत मजबूत, उत्कट —मा० ३।९ 10. खतरनाक, भयानक मृच्छ० ८।१, २७ मुद्रा० १।१८, २।२० 11 बुरा, प्रतिकूल, विपरीत—पंच० ४।११ 12. अजीब, अनोखा, अनु-पम 13 बेईमान, छलपूर्ण, -मम् 1. असमता 2. अनोखापन 3 दुर्गम स्थान, चट्टान, गढ़ा आदि 4. कठिन या खतरनाक स्थिति, कठिनाई, दुर्भाग्य, दुर्गं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा-कृतानि भर्तृ० २।९७, भग० २।२ 5 एक अलंकार का नाम जिसमें कार्य कारण के बीच में कोई अनोखा या अघटनीय संबंध दर्शाया जाता है यह चार प्रकार का माना जाता है -दे० काव्य०, का० १२६ व १२७, -मः विष्णु का नाम । सम० —अक्षः, —ईक्षणः,—नयनः, नेत्रः,—लोचनः शिव के विशेषण, —अन्नम् अनोखा या अनियमित आहार —आयुधः,—इषुः, —शरः कामदेव के विशेषण, —कालः अननुकूल ऋतु, —चतुरस्रः, —चतुर्भुजः विषम कोण वाला चतुष्कोण, —छदः सप्तपर्ण नाम का पेड़, —ज्वरः कभी कम तथा कभी अधिक होने वाला बुखार, —दशा दुर्भाग्य, —विभागः सम्पत्ति का असमान वितरण, —स्थ (वि०) 1. दुर्गम स्थिति में होने वाला 2 कठिनाई में रहने वाला, घबराया ।

विषमित (वि०) [विषम + इतच्] 1 ऊबड़-खाबड़ किया हुआ, असम, कुटिल 2 सिकुड़न वाला, त्योरीदार 3 कठिन या दुर्गम बनाया गया ।

विषयः [विषिण्वन्ति स्वात्मकतया विषयिणं सम्बध्नन्ति — वि + सि + अच्, षत्वम्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त पदार्थ (यह पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के अनुरूप गिनती में पाँच हैं रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द जिनका संबंध क्रमशः आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है), —श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् श० १।१ 2. लौकिक पदार्थ, या वस्तु, मामला, लेन-देन 3. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त आनन्द, लौकिक या मैथुनसंबन्धी उपभोग, वासनात्मक पदार्थ (प्रायः ब० व० में), यौवने विषयैषिणाम्—रघु० १।८, निर्विष्टविषयस्नेह.—१२।१, ३।७०, ८।१०, १९।४९, विक्रम० १।९, भग० २।५९ 4. पदार्थ, वस्तु, मामला, बात—नायौ न जग्मुर्विषयान्तराणि—रघु० ७।१२, ८।८९ 5 उद्दिष्ट पदार्थ या वस्तु, चिह्न, निशाना भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः श० १।३१, शि० ९।४० 6 कार्यक्षेत्र, पराग, पहुँच, परिधि —भीमिनेरपि पथिनामविषये तव प्रिये —उत्तर० ३।४५, सकलवचनानामविषयः—मा० १।३०, ३६, उत्तर० ५।१९, कु० ६।१७ 7 विभाग, क्षेत्र, प्रान्त, भूमि, तत्त्व सर्वेष्वेषितिकत्वात्पव्यवहारविषय विक्रम० १ 8 विषयवस्तु, आलोच्य विषय, प्रसंग, —भामि० १।१०, इसी प्रकार 'श्रृङ्गारविषयिको ग्रन्थः' ऐसी पुस्तक जिसमें प्रीतिविषयक बातों का उल्लेख हो 9 व्याख्येय प्रसंग या विषय, शीर्षक, अधिकरण के पाँचों अंगों में से पहला 10. स्थान, जगह—परिसरविषयेषु लीढमुक्ताः कि० ५।३५ 11. देश, राष्ट्र, राज्य, प्रदेश, मंडल, साम्राज्य 12 शरण, आश्रय 13. ग्रामों का समूह 14 मैत्री, पति 15. वीर्य, शुक्र 16. धार्मिक अनुष्ठान (विषये की बाबत, के विषय में, के संबंध में, इस मामले में के बारे में, बाबत—या तत्रास्ते युवतिविषये सृष्टिरा-द्येव धातुः— मेघ० ८२, स्त्रीणां विषये, धनविषये आदि) । सम० —अभिरतिः 1. सांसारिक विषय वासनाओं में आसक्ति कि० ६।४४, इसी प्रकार

अभिलाषः—कि० ३।१३, आत्मक (वि०) सांसारिक पदार्थों से युक्त, आसक्त,—निरत (वि०) विषयवासनाओं में लिप्त, विषयी, विलासी, इन्द्रियासक्त, आसक्ति उपसेवा निरतिः (स्त्री०) प्रसंग भोगविलास कामासक्ति, ग्राम उन पदार्थों का समूह जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाने जाते हैं,—सुखम् इन्द्रियासक्ति, विषयोपभोग।

विषयायिन् (पुं०) [विषयान् अयते प्राप्नोति विषय+अय्+णिनि] 1 इन्द्रियसुखों में लिप्त, भोगविलासी 2. संसार के कार्यों में लिप्त मनुष्य 3 कामदेव 4 राजा 5 ज्ञानेन्द्रिय 6 भौतिकवादी।

विषयिन् (वि०) [विषय+इनि] इन्द्रियसुखसंबंधी, शारीरिक, पुं० 1 सांसारिक पुरुष, विषयी, दुनियादार आदमी 2 राजा 3 कामदेव 4 भोगविलासी, लंपट पंच० १।१४६, श० ५, नपुं० 1 ज्ञानेन्द्रिय 2 ज्ञान।

विषलः (पुं०) जहर, हलाहल।

विषह्य (वि०) [वि+सह्+यत्] 1 सहन करने के योग्य, जो बर्दाश्त किया जा सके अविषह्यव्यसनेन धूमिताम् कु० ४।३०, रघु० ६।४७ 2 जो बताया जा सके जो निर्धारित किया जा सके मनु० ८।२६५, सम्भव, शक्य।

विषा [विष्+अच्+टाप्] 1. विष्ठा, मल 2 प्रतिभा, समझ।

विषाणः, णम्, णी [विष्+कानच्, स्त्रियां ङीप्] 1 सींग साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः भर्तृ० २।१२, कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत् —२।५ 2 हाथी या सूअर के दांत—तप्तानामुपदधिरे विषाणभिन्नाः प्रह्लादं सुरकरिणां घनाः क्षरन्तः कि० ७।१३, शि० १।६०।

विषाणिन् (वि०) [विषाण+इनि] सींगों वाला या दांतों वाला, पुं० 1 वह जानवर जिसके सींग हों या दांत बाहर निकले हों 2 हाथी शि० ४।६३, १२।७७ 3. सांड।

विषादः [वि+सद्+घञ्] 1 खिन्नता, उदासी उत्साहहीनता, रंज, शोक महति मा कुरु विषादम् भामि० ४।४१ विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।३५ रघु० ८।५४ 2 निराशा, हताशा, नैराश्य, विषादलुप्तप्रतिपत्तिसैन्यम्—रघु० २।४० (विषादश्चेतसो भंग उपायाभावनाशयोः) 3 थकान, म्लान अवस्था सा० २।५ 4 मन्दता जड़ता संज्ञाहीनता।

विषादिन् (वि०) [विषाद+इनि] 1 खिन्न उद्विग्न 2 उदास, विषण्ण।

विषारः [विष+ऋ+अच्] सांप।

विषालु (वि०) [विष+आलुच्] विषैला, जहरीला।

विषु (अव्य०) [विष्+कु] 1 दो समान भागों में, समान रूप से 2 भिन्नतापूर्वक, विविध प्रकार से 3 समान, सदृश।

विषुपम् [विषु+पा+क] दो स्थलबिन्दु जहाँ पर सूर्य विषुवत् रेखा को पार करता है।

विषुवम् [विषु+वा+क] मेषराशि या तुलाराशि का प्रथम बिन्दु जिसमें सूर्य शारदीय या वासन्तिक विषुव में प्रविष्ट होता है, विषुवीय बिन्दु। सम०—छाया मध्याह्नकाल में धूपघड़ी के शंकु की छाया, दिवस विषुवीय दिन रेखा विषुवीय रेखा, संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का विषुवीय मार्ग।

विषूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, षत्वम्] हैजा।

विष्क (चुरा० उभ० विष्कयति ते) 1. वध करना चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना (इस अर्थ में केवल आत्मनेपदी) 2 देखना, प्रत्यक्ष करना।

विष्कन्दः [वि+स्कन्द्+अच्, षत्वम्] 1 तितरबितर होना 2 जाना गमन।

विष्कम्भः [वि+स्कम्भ्+अच्] 1 अवरोध, रुकावट, बाधा 2 दरवाजे की सांकल, चटकनी 3. घर में लगा शहतीर 4 थूणी, खंभ 5 वृक्ष 6 (नाटकों में) नाटकों के अंकों के मध्य में मध्यरंग का दृश्य जो दो मध्यम या निम्नदर्जे के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, तथा जिसमें श्रोताओं के सामने अंकों के अन्तराल में तथा बाद में होने वाली घटनाओं को संक्षेप में कह कर नाटक की कथावस्तु के अवान्तर भागों का नाटक की मुख्य कथा से संबन्ध स्थापित कर दिया जाता है। साहित्यदर्पण में इसकी निम्नांकित परिभाषा दी गई है वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावङ्कस्य दर्शितः। मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां संप्रयोजितः। शुद्धः स्यात् स तु सङ्कीर्णो नीचमध्यमकल्पितः —३०८ 7. वृत्त का व्यास 8. योगियों की विशेष मुद्रा 9 विस्तार, लम्बाई।

विष्कंभक दे० विष्कम्भ।

विष्कंभित (वि०) [विष्कंभ+इतच्] बाधायुक्त, अवरुद्ध।

विष्कंभिन् (पुं०) [विष्कम्भ+इनि] द्वार की अर्गला सांकल या चटकनी।

विष्किरः [वि+कृ+क, सुट्, षत्वम्] 1 इधर उधर बखेरना, फाड़ डालना 2 मुर्गा 3 पक्षी, तीतर की जाति का पक्षी—छायापस्किरमाणविष्किरमुखव्याकृष्टकीटत्वचः उत्तर० २।९।

विष्टपः,—पम् [विश्+कपन् तुट्] संसार भुवन—कु०

३।२०, तु० त्रिविष्टप । सम० हारिन् (वि०) जो संसार को प्रसन्न करता है भर्तृ० २।२५ ।

विष्टब्ध (भू० क० कृ०) [वि+स्तम्+क्त] 1 पक्का जमाया हुआ भली भांति आश्रित 2 टेक लगा हुआ, सहारा दिया हुआ 3 अवरुद्ध, सबाध 4 लकवा के रोग से ग्रस्त, गतिहीन ।

विष्टम्भः [वि+स्तम्भ्+घञ्] 1 पक्की तरह से जमाना 2. अवरोध, रुकावट, बाधा 3 मूत्रावरोध, मलावरोध कोष्ठबद्धता 4 लकवा 5. ठहरना, टिकाव ।

विष्टर [वि+स्तृ+अप्, षत्वम्] 1. आसन, (स्टूल, कुर्सी आदि) रघु० ८।१८ 2 तह, परत, बिस्तरा (कुश आदि घास का) 3. मुट्ठीभर कुशाघास 4. यज्ञ में ब्रह्मा का आसन 5. वृक्ष । सम० भाज् (वि०) आसन पर बैठा हुआ, आसन पर विराजमान— कु० ७।७२, —श्रवस् (पु०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण —शि० १४।१२ ।

विष्टिः (स्त्री०) [विष्+क्तिन्] 1 व्याप्ति 2 कर्म, व्यवसाय 3. भाड़ा, मजदूरी 4 बेगार 5. प्रेषण 6 नरकवास ।

विष्ठलम् [विदूरं स्थलम् प्रा० स०] दूरवर्ती स्थान, फासले पर स्थित ।

विष्ठा [वि+स्था+क+टाप्, षत्वम्] 1 मल, लीद, पाखाना, मनु० ३।१८०, १०।९१ 2 पेट ।

विष्णुः [विष्+नुक्] देवत्रयी में दूसरा, जिसको संसार का पालनपोषण सौंपा गया है, (इस कर्तव्य को भिन्न भिन्न अवतार धारण करके संपन्न किया जाता है अवतारों के विवरण के लिए दे० अवतार) इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है यस्माद्विश्वमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः, तस्मादेवोच्यते विष्णुर्विशधातोः प्रवेशनात् — 2 अग्नि 3 पुण्यात्मा 4 विष्णु स्मृति के प्रणेता । सम० कांची एक नगर का नाम, क्रमः विष्णु के पग, गुप्तः चाणक्य का नाम —तैलम् एक प्रकार औषधियों से बनाया गया तेल —दैवत्या प्रत्येक पक्ष (चान्द्रमास के) की एकादशी और द्वादशी —पदम् 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2 क्षीरसागर 3 कमल, —पदी गंगा का विशेषण, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, —प्रीतिः (स्त्री०) विष्णुपूजा को स्थापित रखने के लिये ब्राह्मणों को अनुदान के रूप में दी गई शुल्क से मुक्त भूमि —रथः गरुड़ का विशेषण, —लिंगी बटेर पक्षी, —लोकः विष्णु का संसार, —वल्लभा 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 तुलसी का पौधा, —वाहनः, —वाह्यः गरुड़ के विशेषण ।

विष्यन्दः [वि+स्यन्द्+घञ्] धड़कन, स्पन्दन, धक धक होना।

विष्फारः [वि+स्फुर्+णिच्, उकारस्य आत्वम्] 1 धनुष की टंकार 2 खड़खड़ाहट ।

विष्य (वि०) [विषेण वध्यः विष+यत्] विष देकर मारे जाने योग्य, जिसको ज़हर देकर मार दिया जाय ।

विष्यन्दः [वि+स्यन्द्+घञ्] बहना, टपकना ।

विष्व (वि०) पीड़ाकर, क्षतिकर, उत्पातकारी ।

विष्वच्, विष्वञ्च् (वि०) [विषुम् अञ्चति विषु+अञ्च्+क्विन्] (कर्तृ०, ए० व० पु० विष्वङ्, स्त्री० विषूची नपु० विष्वक्) 1 सर्वत्र जाने वाला, सर्वव्यापक, विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 2 भागों में अलग अलग करने वाला 3 भिन्न, (विष्वक् शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इस का अर्थ है 'सर्वत्र' 'सब ओर' 'चारों तरफ' शि० १५।५९, पञ्च० २।२, मा० ५।४, ९।२५) । सम० सेन (विष्वक्सेन, या विष्वक्सेन) विष्णु का विशेषण शाम्यमाप कमलासनविष्वक्सेनसेवितयुगान्तपयोधे शि० १०।५५ विष्वक्सेनः स्वतनुमविशत्सर्वलोकप्रतिष्ठाम् रघु० १५।१०३, —प्रिया लक्ष्मी का नाम ।

विष्वणनम्, विष्वाणः [वि+स्वन्+ल्युट्, घञ् वा षत्वम्] भोजन करना, खाना ।

विष्वद्र्यच् (ञ्च्) (वि०) (स्त्री० विष्वद्रीची) [विष्वच्+अञ्च्+क्विन् अद्रि आदेश] सर्वत्र, सर्वव्यापक, विष्वद्रीचीर्विक्षिपन् सैन्यवीचीः शि० १८।७५ विष्वद्रीच्या भुवनमभितो भासते यस्य भासा भामि० ४।१८ ।

विस् I (दिवा० पर० विस्यति) डालना, फेंकना, भेजना । II (भ्वा० पर० वेसति) जाना हिलना-जुलना ।

विस् दे० 'बिस' ।

विसंयुक्त (भू० क० कृ०) [वि+सम्+युज्+क्त] अलग अलग किया हुआ पृथक् पृथक् किया हुआ ।

विसंयोगः [वि+सम्+युज्+घञ्] अलग-अलग होना, बिछोह वियोग ।

विसंवादः [वि+सम्+वद्+घञ्] 1 धोखा, प्रतिज्ञा भंग करना निराशा 2 असंगति, असंबद्धता, असहमति 3 वचनविरोध ।

विसंवादिन् (वि०) [विसंवाद+इनि] 1 निराश करने वाला, धोखा देने वाला 2 असंगत विरोधात्मक 3 भिन्न मत रखने वाला असहमत रघु० १२।६७ 4 आत्मसात न करने वाला ।

विसंष्ठुल (वि०) [वि+सम्+स्था+उलच्] 1 अस्थिर, विक्षुब्ध 2 असम ।

विसंकट (वि०) [विशिष्टः संकटो यस्मात् प्रा० ब०]

भयानक, डरावना—मा० ५।१३—मु० विसंकट, —टः 1 सिंह 2 इंगुदी का वृक्ष ।

विसंगत (वि०) [वि+सम्+गम्+क्त] अयोग्य, असम्बद्ध, बेमेल ।

विसंधि [विरुद्ध सन्धि, प्रा० स०] अनभिमत सन्धि या सन्धि का अभाव (यह साहित्यरचना में एक दोष माना जाता है) दे० काव्य० ७ ।

विसर [वि+सृ+अप्] 1 जाना 2 फैलाना, विस्तार करना 3 भीड़, समुच्चय, रेवड़, लहण्डा 4 बड़ी राशि ढेर मा० १।३७ ।

विसर्ग [वि+सृज्+घञ्] 1 भेज देना उद्गार 2 गिराना उड़लना, बूंद-बूंद करके गिराना रघु० १६।६८ 3 डालना फेंकना 4 प्रदान करना, भेंट दान —आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६ (यहां शब्द का अर्थ उड़लना भी है) ५ भेज देना, विसर्जन 6 परित्याग छोड़ देना 7 उत्सर्जन मलत्याग जैसा कि पुरीष विसर्ग में 8 जुदाई वियोग 9 मोक्ष 10 प्रकाश, ज्योति 11 लिखने में एक प्रतीक जो स्पष्ट रूप से महाप्राण है तथा दो बिन्दु ( ) लगा कर प्रकट किया जाता है 12 सूर्य का दक्षिणायन 13 लिङ्ग शिश्न ।

विसर्जनम् [वि+सृज्+ल्युट्] 1 उद्गार, प्रेषण, उंडेलना —अवसरा वसुवृष्टिविसर्जनैः—रघु० ९।६ 2 प्रदान करना भेंट दान रघु० ९।६ 3 मलत्याग मनु० ४।४८ 4 डाल देना त्याग देना, परित्याग करना—रघु० ८।२५ 5 भेज देना विदा करना 6 (देवता को) विदा करना (विप० आवाहन) 7 किसी विशेष अवसर पर सांड को छोड़ देना ।

विसर्जनीय (वि०) [वि+सृज्+अनीयर्] परित्यक्त किए जाने के योग्य —यः विसर्ग ( ) दे० ।

विसर्जित (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+णिच्+क्त] 1 उद्गीर्ण उगला गया 2 प्रदत्त 3 छोड़ा गया, त्याग दिया गया परित्यक्त 4 भेजा गया प्रेषित 5 विदा किया गया तिरस्कृत किया गया ।

विसर्प [वि+सृप्+घञ्] 1 रेंगना सरकना 2 इधर से उधर जाना और आना 3 फैलाव प्रसार—उत्तर० १।३५ 4 किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनपेक्षित फल 5 एक प्रकार का रोग सूखी खुजली । सम० —घ्न मोम ।

विसर्पणम् [वि+सृप्+ल्युट्] 1 रेंगना सरकना धीमे धीमे चलना 2 प्रसारण फैलाव विस्तरण ।

विसर्पि, विसर्पिका दे० उ० विसर्प (५) ।

विसल दे० विसल ।

विसार [वि+सृ+घञ्] 1 फैलना विस्तार, प्रसार 2. रेंगना, सरकना 3 मछली,—रम् 1 लकड़ी 2 शहतीर ।

विसारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [वि+सृ+णिनि] 1 फैलाने वाला प्रसार करने वाला 2 रेंगने वाला, सरकने वाला, पु० मछली ।

विसिनी दे० 'बिसिनी' ।

विसिल दे० बिसिल ।

विसूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] हैजा ।

विसूरणम्,—णा [वि+सूर्+ल्युट्] दुःख, शोक ।

विसूरितम् [वि+सूर्+क्त] पश्चात्ताप, दुःख ... ता बुखार, ज्वर ।

विसृत (भू० क० कृ०) [वि+सृ+क्त] 1 फैलाया हुआ विस्तृत किया हुआ प्रसारित किया हुआ 2 विस्तारित माना हुआ 3 कहा हुआ ।

विसृत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [वि+सृ+क्वरप् तुक्] 1 इधर उधर फैलने वाला, व्याप्त होने वाला विसृत्वरैरंशुभिरुह्यां ज्योतिः—शि० ३।११ 2 रेंगना सरकना ।

विसृमर (वि०) [वि+सृ+क्मरच्] 1 रेंगने वाला सरकने वाला शनैः शनैः चलने वाला—विसृमराहंसितहृय वेणी० ४ ।

विसृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+क्त] 1 उद्गीर्ण उगला हुआ 2 उत्पन्न, निःसृत 3 छलकाया हुआ, टपकाया हुआ 4 भेजा हुआ प्रेषित —रघु० ५।२९ 5 विदा किया गया, जाने दिया गया कारागार से मुक्त किया गया रघु० २।९ 6 निकाल बाहर किया गया फेंका ... दिया गया, प्रदत्त स्वीकृत धर्मेष्वात्मविसृष्टेषु रघु० १।४४ 8 परित्यक्त उन्मुक्त छुटाया गया (दे० वि पूर्वक सृज्) ।

विस्त दे० बिस्त ।

विस्तर [वि+स्तॄ+अप्] 1 विस्तार, फैलाव 2 सूक्ष्म विवरण ब्यौरेवार वर्णन, सूक्ष्म ब्यौरे सविस्तर ... वाक्यस्यार्थगरीयसः, सुविस्तरतरा वाचो ... भवन्तु मे शि० २।२४ (विस्तरेण विस्तरतः, विस्तरशः ब्यौरेवार विस्तारपूर्वक पूरी तरह से सूक्ष्म विवरण सहित पूरी विशेषताओं के साथ —श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण भगवन् ... मुद्रा० १ भग० ११।२ 3 सुविस्तरता प्रसार अत्यधिक विस्तरेण 4 बहुसंख्या परिमाण, समुच्चय संख्या ... आसन तिपाई ।

विस्तार [वि+स्तॄ+घञ्] 1 फैलाव विस्तृति प्रसारण—... मा० १।२७ 2 चौड़ाई ... 3 फैलाव विपुलता ... मेघ० ९८ 3 ...

तावच्छ्रुतविस्तारः क्रियताम्—श० ७ 5. वृत्त का व्यास 6. झाड़ी 7. नूतन पल्लवों से युक्त पेड़ की शाखा ।

विस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. बिछाया गया, फैलाया गया, विस्तार किया गया 2. चौड़ा, विस्तृत 3. विशाल, बड़ा, विस्तारयुक्त । सम० —वर्णम् एक प्रकार की जड़, मानक ।

विस्तृत (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. प्रसारित, फैलाया गया, विस्तारयुक्त 2. चौड़ा, फैला हुआ 3. विपुल 4. सुविस्तृत, लंबा-चौड़ा ।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि+स्तृ+क्तिन्] 1. विस्तार फैलाव 2. चौड़ाई, फासला, विशालता 3 वृत्त का व्यास ।

विस्पष्ट (वि०) [विशेषेण स्पष्टः—प्रा० स०] 1. सीधा, साफ़, सुबोध 2. प्रकट, स्फुट, सुव्यक्त, खुला, प्रत्यक्ष ।

विस्फारः [वि+स्फुर्+घञ्, उकारस्य आकारः] 1. थरथराहट, कम्पन, धड़कन 2. धनुष की टंकार ।

विस्फारित (भू० क० कृ०) [विस्फार+इतच्] 1. थरथरी पैदा की गई 2. कम्पमान, थरथराता हुआ 3 टंकारयुक्त 4. विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ 5. प्रकटित प्रदर्शित ।

विस्फुरित (भू० क० कृ०) [वि+स्फुर्+क्त] 1 थरथराने वाला, कांपने वाला 2. सूजा हुआ, विस्तारित ।

विस्फुलिङ्गः [वि+स्फुर्+ड=विस्फु तादृशं लिङ्गमस्ति अस्य] 1. आग की चिनगारी अग्नेर्यथालो विस्फुलिङ्गा विप्रतिष्ठेरन्—शारी० 2. एक प्रकार का विष ।

विस्फूर्जथुः [वि+स्फूर्ज्+अथुच्] 1. दहाड़ना, गरजना, कड़कना 2 बादल की गरज, बिजली की कड़क 3 बिजली जैसी कड़क, अकस्मात् आघात या आपात—मखैव जन्मान्तरपातकानां विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः—रघु० १४।६२ 4. (लहरों का) आन्दोलित होना, लहरों का उठना—महोर्मिविस्फूर्जथुनिर्विशेषा.—रघु० १३।१२ ।

विस्फूर्जितम् [वि+स्फूर्ज्+क्त] 1. दहाड़, चीत्कार 2. कुड़कना 3. फल, परिणाम भर्तृ० २।१२५, ३। १४८ ।

विस्फोटः,—टा [वि+स्फुट्+घञ्] 1 फोड़ा, अर्बुद, रसौली 2. शीतला, चेचक ।

विस्मयः [वि+स्मि+अच्] 1 आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा, अचरज—पुष्प प्रथमुत्थाम्नो धस्यमन महर्षिविस्मय—रघु० १०।५१ 2. आश्चर्य या अचम्भे की भावना, जिससे अद्भुत रस की निष्पत्ति होती है, सा० द० २०७ पर इसकी परिभाषा दी गई है: विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु, विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः 3 घमंड, अभिमान, - तप क्षरति विस्मयात् —मनु० ४।२३७ 4. अनिश्चय, सन्देह । सम० —आकुल, आविष्ट (वि) आश्चर्ययुक्त, अचरज से भरा हुआ ।

विस्मयंगम (वि०) [विस्मय गच्छति—विस्मय+गम्+खच्, मुम्] अचरज से भरा हुआ, आश्चर्यजनक ।

विस्मरणम् [वि+स्मृ+ल्युट्] भूल जाना, विस्मृति, स्मृति का न रहना, बिसर जाना श० ५।२३ ।

विस्मापन (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+स्मि+णिच्+ल्युट्, पुकागम, आत्वम्] आश्चर्यजनक, —नः 1. कामदेव 2 चाल, धोखा, भ्रम, —नम् 1 आश्चर्य पैदा करना 2 कोई भी आश्चर्यजनक वस्तु 3. गन्धर्वों का नगर (पु० भी कहा जाता है) ।

विस्मित (भू० क० कृ०) [वि+स्मि+क्त] 1 आश्चर्यान्वित, चकित, भौचक्का, हक्काबक्का 2 उलटपुलट किया गया 3 घमंडी ।

विस्मृत (भू० क० कृ०) [वि+स्मृ+क्त] भूला हुआ ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि+स्मृ+क्तिन्] भूल जाना, बिसार देना, अस्मरण ।

विस्मेर (वि०) [वि+स्मि+रन्] भौचक्का, आश्चर्यान्वित, चकित ।

विस्रम् [विस्+रक्] कच्चे मांस की गंध के समान गंध । सम० —गन्धिः हरताल ।

विस्रंसः,—सा [वि+स्रंस्+घञ्] 1. नीचे गिरना 2 क्षय, शैथिल्य, कमज़ोरी, निर्बलता ।

विस्रंसन (वि०) [वि+स्रंस्+ल्युट्] 1 पतनशील या गिरनेवाली —बन्धमोहनमौलिपूर्णनयनन्दारविस्रंसन—गीत० ३ 2. खोलने वाला, ढीला करने वाला नीवीविस्रंसनः करः काव्य० ७ —नम् 1 अधःपतन 2 बहना, टपकना 3 खोलना, ढीला करना 4 रेचक, दस्तावर ।

विस्रब्ध, विस्रंभ दे० विश्रब्ध, विश्रम्भ ।

विस्रसा [वि+स्रस्+क+टाप्] क्षय, निर्बलता, जर्जरता ।

विस्रस्त (भू० क० कृ०) [वि+स्रंस्+क्त] 1. ढीला किया हुआ 2. दुर्बल, बलहीन ।

विस्रावः, विस्रावः [वि+स्रु+अप्, घञ् वा] बहना, बूंद बूंद टपकना, चूना, रिसना ।

विस्रावणम् [वि+स्रु+णिच्+ल्युट्] रक्त बहना ।

विस्रुतिः (स्त्री०) [वि+स्रु+क्तिन्] बह जाना, चूना, रिसना ।

विस्वर (वि०) [विरुद्ध विगतो वा स्वरो यस्य प्रा० ब०] बेसुरा ।

विहग [विहायसा गच्छति गम्+ड, नि०] 1 पक्षी मेघ० २८, ऋतु० १।२३ 2 बादल 3. बाण 4 सूर्य चांद 6 नक्षत्र ।

विहंगः [विहायसा गच्छति — गम् + खच्, मुम्] 1 पक्षी रघु० १।५१, मनु० २।५५ 2 बादल 3 बाण 4. सूर्य 5 चन्द्रमा। सम० –इन्द्रः,– ईश्वरः,– राजः गरुड़ के विशेषण।

विहंगमः [विहायसा गच्छति — गम् + खच्, मुम्, विहा-देश] पक्षी – (गृह दीर्घिकाः) मदकलोलकलोलविहंगमाः रघु० ९।३७, मनु० १।३९, हि० १।३७।

विहंगमा, विहंगिका [विहंगम + टाप्, विहग + कन् + टाप्, इत्वम्] बिहंगी, वह बांस जिसके दोनों सिरों पर बोझ बांध कर लटका दिया जाता है।

विहत (भू० क० कृ०) [वि + हन् + क्त] 1. पूरी तरह आहत, वध किया गया 2 चोट पहुंचाई गई 3. अवरुद्ध, विरोध किया गया, मुकाबला किया गया।

विहतिः [वि + हन् + क्तिन्] मित्र, साथी, – (स्त्री०) 1 हत्या करना, प्रहार करना 2 असफलता 3 पराजय, हार।

विहननम् [वि + हन् + ल्युट्] 1 हत्या करना, प्रहार करना 2 चोट, क्षति 3. अवरोध, रुकावट, अड़चन 4 रुई धुनने की धुनकी।

विहरः [वि + हृ + अप्] 1. अपहरण करना, हटाना 2. वियोग, विछोह।

विहरणम् [वि + हृ + ल्युट्] 1. दूर करना, अपहरण करना 2. सैर करना, हवाखोरी, इधर उधर टहलना 3. आमोद-प्रमोद, मनोरञ्जन।

विहर्तृ (पुं) [वि + हृ + तृच्] 1. अपहर्ता 2. लुटेरा।

विहर्षः [विशिष्टो हर्षः प्रा० स०] बहुत अधिक प्रसन्नता, उल्लास।

विहसनम्, विहसितम्, विहासः [वि + हस् + ल्युट्, क्त घञ् वा] मन्द हंसी, मुस्कान।

विहस्त (वि०) [विगतः हस्तो यस्य प्रा० ब०] 1. हस्तरहित 2. घबराया हुआ, व्याकुल, पराभूत, शक्तिहीन किया हुआ, मा० १, रघु० ५।४९ 3. अशक्त (उपयुक्त कार्य करने के लिए) अक्षम, यथा विहस्तचरणम् मालवि० ४ 4 विद्वान्, बुद्धिमान्।

विहा (अव्य०) [वि + हा + आ, नि०] स्वर्ग, बैकुण्ठ।

विहापित (भू० क० कृ०) [वि + हा + णिच् + क्त, पुकागमः] 1 परित्यक्त कराया गया 2 तोड़ मरोड़ कर निकाला गया, छुड़ाया गया, –तम् भेंट, दान।

विहायस् (पुं० नपुं०) [वि + हा + असुन्, नि० वृद्धि], आकाश, अन्तरिक्ष कि० ११।४३, (पु) पक्षी – मै० ३।९९।

विहायस दे० 'विहायस्'।

विहारः [वि + हृ + घञ्] 1. हटाना, दूर करना 2. सैर सपाटा, हवाखोरी, भ्रमण, सैर करना 3. क्रीड़ा, खेल, मनोविनोद, मनोरञ्जन, आमोद-प्रमोद, विलास विहारसौंकानुपदेन मार्गः रघु० १६।२६, ७६, ५।४१, ९।६८, १३।३८, १९।३७ 4. पग रखना, कदम बढ़ाना, — दरमन्थरचरणविहारम् — गीत० ११, कि० ४।१५ 5. वाटिका, उद्यान, विशेषतः प्रमोदवन 6. कन्धा 7. जैनमन्दिर या बौद्धमन्दिर, मठ, आश्रम या संघाराम 8. मन्दिर 9. वाक्शक्ति का गूढ़ विस्तार। सम० —भूमिः प्रमोदकानन, –दासी संन्यासिनी, भिक्षुणी।

विहारिका [विहार + कन् + टाप्, इत्वम्] बौद्धमठ।

विहारिन् (वि०) [विहार + इनि] मनोविनोदी या दिलबहलाव करने वाला मृगयाविहारिणः – श० १।

विहित (भू० क० कृ०) [वि + धा + क्त] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, कृत, बनाया हुआ 2. व्यवस्था किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सुव्यवस्थित, निर्धारित, निर्धारित 3. आदिष्ट, विधान किया हुआ, समादिष्ट 4. निर्मित, संरचित 5. रखा हुआ, जमा किया हुआ, 6. सुसज्जित, सम्पन्न 7. किये जाने के योग्य 8. वितरित, बांटा गया (दे० वि पूर्वक धा), —तम् आदेश, आज्ञा।

विहितिः (स्त्री०) [वि + धा + क्तिन्] 1. अनुष्ठान, किया कर्म 2. व्यवस्था।

विहीन (भू० क० कृ०) [वि + हा + क्त] 1. छोड़ा गया, परित्यक्त, त्यक्त गया 2. शून्य, रहित, वञ्चित (प्रायः समास में) – विद्याविहीनः पशुः – भर्तृ० २।२० 3. अधम, नीच, कमीना। सम० —जाति –योनि (वि०) नीच घर में उत्पन्न, नीच कुल में पैदा हुआ।

विहृत (भू० क० कृ०) [वि + हृ + क्त] 1. क्रीड़ा की, खेला हुआ 2. फैलाया हुआ, –तम् स्त्रियों द्वारा प्रेम प्रदर्शित करने की दस रीतियों में से एक दे० सा० द० १२५, १४६, (इस अर्थ में 'विहृत' भी लिखा जाता है)।

विहृतिः (स्त्री०) [वि + हृ + क्तिन्] 1. हटाना, दूर करना 2. क्रीड़ा, मनो विनोद, विहार 3. प्रसार,

विहेठकः [वि + हेठ् + ण्वुल्] क्षति पहुंचाने वाला।

विहेठनम् [वि + हेठ् + ल्युट्] 1. क्षति पहुंचाना, चाकर करना 2. मसलना, रौंदना 3. कष्ट देना 4. पीड़ा, दुःख, सताना

विह्वल (वि०) [वि + ह्वल् + अच्] 1. विक्षुब्ध, अशान्त, व्याकुल, घबराया हुआ रघु० ८।३७ 2 डरा हुआ, संत्रस्त 3. उन्मत्त, आपे से बाहर 4. कष्टग्रस्त, दुःखी—कु० ४।४ 5. विषादपूर्ण 6. गला हुआ, पिघला हुआ।

वी (अदा० पर० वेति—शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग), 1. जाना, हिलना-जुलना 2. पहुंचना 3. व्याप्त होना

4. जाना, पहुँचाना 5, फेंक देना, डालना 6 खाना उपभोग करना 7 प्राप्त करना 8 गर्भधारण करना उत्पन्न करना 9 पैदा होना जन्म लेना 10 चमकना सुन्दर होना ।

वीकः [अज्+कन्, वी आदेश] 1 वायु 2 पक्षी 3. मन ।

वीकाश दे 'विकाश' ।

वीक्षम् [वि+ईक्ष्+अच्] 1 दृश्य पदार्थ 2 अचम्भा आश्चर्य, क्षः, क्षा, देखना, ताकना ।

वीक्षणम्,—णा [वि+ईक्ष्+ल्युट्] देखना निहारना दृष्टि डालना ।

वीक्षितम् [वि+ईक्ष्+क्त] दृष्टि झलक ।

वीक्ष्य (वि०) [वि+ईक्ष्+ण्यत्] 1 देखे जाने के योग्य 2. दृश्य, दृष्टिगोचर, क्ष्यः 1 नर्तक नट, अभिनेता पात्र 2 घोड़ा, क्ष्यम् 1 देखे जाने के योग्य कोई भी वस्तु, दृश्यमान पदार्थ 2 आश्चर्य अचम्भा ।

वीङ्खा [वि+इङ्ख्+अ+टाप्] 1 जाना, हिलना जुलना, प्रगति 2 घोड़े का कदम 3. नाच 4 मनाम मिलन ।

वीचिः (पु०, स्त्री०) **वीची** [व+ईचि, डिच्च, वाचि -ङीष्] 1 लहर—समुद्रवीचीव चलस्वभावा -पंच० १।१९४, रघु० ६।५६, १२।१००, मेघ० ४८ 2 असावधानि, विचारशून्यता 3 आनन्द, प्रसन्नता 4 विश्राम, अवकाश 5 प्रकाश की किरण 6 स्वल्पता । सम० —मालिन् (पु०) समुद्र ।

वीची दे० 'वीचि' ।

वीज् I (भ्वा० आ० वीजते) जाना ।

II (चुरा० उभ० वीजयति ते) पंखा करना, पंखा करके ठंडा करना स वीज्यते मणिमर्यरिव तालवृन्तैः —मृच्छ० ५।१३, कु० २।४२ अभि , उप परि , पंखा करना ऋतु० ३।४ म० ३ ।

वीज वीजक, वीजल, वीजिक वीजिन्, वीज्य दे० बीज बीजक, बीजल, बीजिक बीजिन् और बीज्य ।

वीजन. [वीज्+ल्युट्] 1 चक्रवाक 2 एक प्रकार का चकोर, नम् 1 पंखा करना कु० ४।३६ 2 पंखा ।

वीटा [वि+इट्+क+टाप्] 1 लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, गुल्ली (लगभग एक बालिश्त) जिसको लड़के डंडा मार कर खेलते हैं गुल्ली डंडा ।

वीटिः, वीटिका, वीटी [वि+इट्+इन अ व किए वीटि +कन्+टाप्, वीटि+ङीष् वा] 1 पान का वृक्ष 2. पान लगाना 3 बन्धन, गाँठ ग्रंथि (पहने जाने वाले वस्त्र की) 4 चोली की तनी अमरु २३ ।

वीणा [वेति वृद्धिमाश्रमपगच्छति -वी+न, नि० णत्वम्] 1. सारंगी, वीणा मूकीभूताया वीणायाम् का०, मेघ० ८६ 2 बिजली । सम० —आस्यः नारद का विशेषण —अङ्क वीणा की गर्दन—मालवि० १।८०,—वाद., वादक वीणा बजाने वाला ।

वीत (भू० क० कृ०) [वि इ+क्त] 1 गया हुआ, अन्तर्हित 2 जो चला गया विदा हो गया 3 जिसको त्याग दिया गया, छोड़ा उन्मुक्त 4 अलगाया हुआ विमुक्त किया हुआ 5 अनुमोदित पसंद किया गया 6 युद्ध के अयोग्य 7 पालतू शान्त 8 मुक्त, शून्य (बहुधा समास में) वीतचिन्त वीतस्पृह वीतभी, वीतशोक आदि —त. हाथी या घोड़ा जो युद्ध के अयोग्य हो या सधाया न गया हो, तम् (हाथी को) अंकुश से गोदना तथा पैरों से प्रहार करना,- वीतवीतभया नागा कु० ६।३९ (पाठान्तर—दे० इस पर मल्लि०) शि० ५।४७ । सम० —कल्मष (वि०) निष्पाप, निर्दोष, —भय (वि०) निर्भय निडर । (य) विष्णु का विशेषण —मल (वि०) पवित्र निर्मल —राग (वि०) 1 इच्छारहित कु० ६ ४३ 2 निरावेश सौम्य शान्त 3 विवर्ण बिना रंग का (ग.) एक ऋषि जिसने अपने रागों का दमन कर लिया था —शोक (अशोक) अशोक वृक्ष ।

वीतंस [विशेषेण वक्रित तन्यते मृगाय वि+तन्+ घञ् उपसर्गस्य दीर्घ] 1 पींजरा या जाल जिसमें पक्षी या अन्य वन्य पशु फंसाये जाते हैं 2 चिड़ियाघर शिकार के पशुओं को पालने का स्थान ।

वीतनौ (पु०, द्वि० व०) [विशिष्टं तनोति वि+तन् +अच्, पृषो० दीर्घ] गले के अगल बगल के पार्श्व ।

वीति [वी+क्तिन् 'वाहु' वि (स्त्री०) 1 गति, चाल 2 पैदावार उपज 3 सुखोपभोग 4 भोजन करना 5 प्रकाश कान्ति । सम० —होत्र 1 अग्नि 2 सूर्य ।

वीथि, **थी** (स्त्री० [विथ्+इन ङीप् वा, पृषो० 1 सड़क, मार्ग रघु० ७।४ 2 पंक्ति, कतार 3 हाट आपणिका मा० ५ दुकान शि० १।३ 4 नाटक का एक भेद नाट्य परिभाषा सा० द० निम्नांकित है वीथ्यामेको भवेद् वडिरेकोऽत्र कल्प्यते, आकाशभाषितैरुक्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिमाश्रितः। सूचयेद्भूरि शृङ्गारं किञ्चिदन्यान्रसानपि। मुखनिर्वहणे सन्धी अर्थप्रकृतयोऽखिलाः, ५२० ।

वीथिका [वीथि+कन्+टाप्] 1. सड़क आदि 2 चित्रशाला चित्रसारी (जिस पर चित्र चित्रित किये जाते हैं चित्रागार चित्रकर्मलिखितनिवेशितानि उत्तर० १ ।

वीध्र (वि०) [विशेषेण इन्धे वि+इन्ध्+रक्, उपसर्गस्य दीर्घ] निर्मल स्वच्छ, ध्रम् 1 आकाश 2 वायु हवा 3 अग्नि ।

वीनाह [वि + नह् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] कुएँ का ढक्कन या मणि।

वीध्रा (स्त्री०) विद्युत्, बिजली।

वीप्सा [वि + आप् + सन् + अ + टाप् ईत्वम्] 1 परिव्याप्ति 2 (निरन्तर प्रकट करने के लिए) शब्द द्विरुक्ति यथा वृक्षं वृक्षं सिञ्चति इत्यादि पुनरावृत्ति 3 सामान्य पुनरुक्ति।

वीभ् (भ्वा० आ० वीभते) शेखी मारना, डींग मारना।

वीर (वि) [अजे रक् वीभावश्च] 1 शूर वीर 2 ताकतवर शक्तिशाली —रः 1 शूरवीर योद्धा प्रबल —कोऽप्येष संप्रति नवः पुरुषावतारो वीरो न यस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽपि —उत्तर० ५।३४ 2 (काव्य० में) वीरभावना, शौर्य्य, इसके चार भेद (दानवीर धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर) किए गये हैं स्पष्टीकरण के लिए दे० ४८ संदर्भ का 3 अभिनेता 4 आग 5 यज्ञ की अग्नि 6 पुत्र 7 पति 8 अर्जुन वृक्ष 9 विष्णु का नाम —रम् 1 नरकुल 2 मिर्च 3 चावल का माँड 4 उशीर का जड़, खस। सम० —आशंसनम् 1 निगरानी रखना 2 युद्ध में अग्रिम या भयप्रद 3 छायी हुई आशा, —आसनम् 1 ध्यान-अभ्यास करते समय एक विशेष मुद्रा, परिभाषा के लिए दे० पर्यंक (३) 2 एक घुटना मोड़ कर बैठना 4 सन्तरी की चौकी, —ईशः, —ईश्वरः 1 शिव के विशेषण 2 महान् वीर, —उज्झः वह ब्राह्मण जो यज्ञाग्नि में आहुति नहीं डालता अग्निहोत्र न करने वाला ब्राह्मण, —कीटः तुच्छ सैनिक, —जयन्तिका 1 रणनृत्य 2 संग्राम, युद्ध, —तरुः अर्जुनवृक्ष, —धन्वन् (पुं०) कामदेव, —पानम् (—नम्) एक उत्तेजक या श्रमापहारक पेय जो सैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर पीते हैं, —भद्रः 1 एक शक्तिशाली शूरवीर जिसे शिव ने अपनी जटाओं से निकाला था दे० दक्ष 2 माना हुआ योद्धा 3 अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा 4 एक प्रकार का सुगन्धित घास, —मुद्रिका पैर की मध्यमा अंगुली में पहना जाने वाला छल्ला, —रजस् (नपुं०) सिन्दूर, —रसः 1 वीरता का भाव 2 सामरिक भावना, —रेणुः भीमसेन का नाम, —विप्लावकः शूद्र से धन लेकर हवन करने वाला, —वृक्षः 1 अर्जुन वृक्ष 2 भिलावें का वृक्ष, —सूः (स्त्री०) शूरवीर पुरुष की माता (इसी प्रकार वीरजननी, —प्रसू, —प्रसविनी), —सैन्यम् लहसुन, —स्कन्धः भैंसा —हन् (पुं०) 1 वह ब्राह्मण जिसने दैनिक अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है 2 विष्णु।

वीरणम् [वि + ईर् + ल्युट्] एक सुगन्धित घास उशीर (जिसकी जड़ें —खस— शीतलता प्रदान करने के लिए प्रयुक्त होती हैं)।

वीरणी [वीरण + ङीष्] 1 तिरछी चितवन कटाक्ष 2 गहरा स्थान।

वीरतर [वीर + तरप्] 1 महान् वीर 2 बाण, —रम् एक प्रकार का सुगन्धित घास उशीर।

वीरभवर [वीर + भू + खच् मुम्] 1 मोर 2 वन्य पशुओं के साथ लड़ाई 3 पकड़ने का आखेट।

वीरवत् (वि०) [वीर + मतुप्] शूरवीरों से भरा हुआ —ती वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों।

वीरा [वीर + टाप्] 1 शूरवीर पुरुष की स्त्री 2 पत्नी 3 माता गृहिणी 4 मुरा नामक एक गन्धद्रव्य 5 शराब 6 अगर की लकड़ी 7 केले का पेड़।

वीरिणम् दे० वीरण।

वीरुध् —धा (स्त्री०) विरोधेन रुणद्धि अन्यान् वृक्षान् वि रुध् + क्विप् पक्षे टाप् उपसर्गस्य दीर्घः] 1 फैलने वाली लता, लता प्रतानिनी वीरुध् —भट्टि० आत्मस्थितिप्रमवा ममापवर्गैर्विघटितो वीरुधाम् शा० ५।१९ कु० ४।३४ रघु० ८।३६ 2 शाखा अङ्कुर 3 काटने पर ही बढ़ने वाला पौधा 4 बेल, लता, झाड़ी —कि० ४।१९।

वीर्यम् [वीर + यत्] 1 शूरवीरता पराक्रम, बहादुरी —वीर्यावदानेषु कृतावमर्षः —कि० ३।४३, रघु० २।४, ३।६२ ११।७८, वेणी० ३।३ 2 बल, सामर्थ्य 3 पुंस्त्व 4 ऊर्जा, दृढ़ता, साहस 5 शक्ति, क्षमता —० ३।२ 6 (औषधियों की) अचूकता, अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः कि० २।२४, कु० २।४८ 7 शुक्र, बीज —कु० ३।१५, पञ्च० ४।५० 8 आभा, कान्ति 9 गौरव, महिमा। सम० —ज पुत्र —प्रपातः वीर्य का क्षरण या स्खलन।

वीर्यवत् (वि०) [वीर्य + मतुप्] 1 मजबूत हृष्टपुष्ट, बलवान् 2 अचूक, अमोघ।

वीवधः [वि + वध् + घञ् पृषोदरादित्वात् दीर्घत्वम्] 1 बोझा ढोने के लिए जुआ बहँगी 2 बोझा 3 अनाज का भण्डार भरना 4 मार्ग, सड़क।

वीवधिकः [वीवध + ठन्] बहँगी ढोने वाला।

वीहारः [वि + हृ + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 जैन विहार या बौद्धमठ 2 देवालय।

वुङ्ग् (भ्वा० पर० वुङ्गति) छोड़ना परित्याग करना।

वुस् (चुरा० उभ० वुस्तयति-ते) 1 चोट पहुँचाना वध करना 2 नष्ट करना।

वुभूर्षु (वि०) [वृ + सन् + उ] पसन्द करने का इच्छुक।

वुस दे० बुस।

वृक्ण (वि०) [व्रश्च् + क्त] काटा हुआ फटा हुआ।

वृ i (स्वा० स्वा०, क्र्या० उभ० वृणोति-ते, वृणोति-वृणुते, वृणाति-वृणीते, वृत, कर्मवा० व्रियते) 1 छांटना, चुनना, पसन्द करना —वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः —कि० २।३०, तेनैव तेन प्राक्—कु० २।५६, बयार

रामस्य वनप्रयाणम्—भट्टि० ३।६ 2 अपने लिए चुनना (आ०) वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः—कि० २।३०, रघु० ३।६ 3 विवाह के लिए वरण करना, प्रणय-प्रार्थना करना, प्रणययाचना करना —महावी० १।२८, अनर्घ० ३।४२ 4 प्रार्थना करना, निवेदन करना, याचना करना 5 ढकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना—मेघैर्वृतनभस्तमा —मृच्छ० ५।१४ 6 घेरना, लपेटना भट्टि० ५।१०, रघु० १२।६१ 7 परे हटना, दूर करना, नियन्त्रण करना, रोकना 8 विघ्न डालना, विरोध करना, अड़चन डालना, प्रेर०—(वारयति ते) 1 ढकना छिपाना 2 (किसी वस्तु से) आँख फेर लेना (अपा० के साथ) 3 रोकना, हटाना, नियन्त्रण करना, दबाना रोक थाम करना, विघ्न डालना—शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्—भर्तृ० २।११, इच्छा० वुवूर्षति-ते, विवरिषति-ते, विवरीषति-ते, चुनने की इच्छा करना, अप , खोलना (प्रेर०) ढकना, छिपाना अपा—, खोलना आ—, 1 ढकना, छिपाना, गुप्त रखना आवृण्वानो रजोभिः रन्ध्रेषु प्रहरन् रिपून् रघु० १७। ६१, भट्टि० ९।२४ 2. भरना, व्याप्त होना मन० १३।११, मनु० २।१४४ 3 चुनना, इच्छा करना 4. निवेदन करना, प्रार्थना करना 5 घेरना, नाके बंदी करना, रोकना —रघु० ७।३१ 6 दूर रखना भट्टि० १४।१०९, नि—, घेरा डालना, घेरना भट्टि० १४। १९, (प्रेर०)—परे हटना दूर करना, आँख फेरना (अपा० के साथ) - पापान्निवारयति योजयते हिताय —भर्तृ० २।७२, निर् , (बहुधा क्तांत रूप) प्रसन्न होना, संतुष्ट या संतृप्त होना निर्वृवार मधुनीन्द्रियवर्गः—शि० १०।३, दे० निर्वृत, परि—, घेरना, प्र—, 1. ढकना, लपेटना प्रावारिषुरिव ज्योर्ष्णी क्षिप्ता वृक्षाः समन्ततः भट्टि० ९।२५ 2 पहनना, धारण करना 3. चुनना, छाटना, प्रा—, पहनना, धारण करना, वि—, 1 ढक देना, ठहरना 2 खोलना—कु० ४।२६ 3. तह खोलना, भंडाफोड़ करना, भेद खोलना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना मै० ९।१, कु० ३।१५, रघु० ९।८५, भट्टि० ७।७३ 4 सिखाना, व्याख्या करना, स्पष्ट करना—महावी० २।४३ 5. बीनना, भामि० १।५ 6 [illegible]ना विनि—, (प्रेर०) रोकना, दूर हटाना, दबाना विनयं विनिवार्य मा० १।१८ सम्—, 1 छिपाना, ढकना, प्रच्छन्न करना—मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठम्—श० ३।२५, २।१०, रघु० १। २०, ७।१० 2 दबाना, नियमित करना, विरोध करना भट्टि० ९।२७ 3 बन्द करना।

ii (चुरा० उभ० वरयति—ते) 1 वरण करना, चुनना —वरं वरयते कन्या माता वित्तम् पिता श्रुतम्—पंच० ३।६७ 2 विवाह के लिए पसन्द करना 3 याचना करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना।

वृह्, वृहित दे० 'बृह्' बृहित।

वृक् (भ्वा० आ० वर्कते) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।

वृकः [वृ+कक्+] 1 भेड़िया 2 लकड़बग्घा 3 गीदड़ 4 कौवा 5 उल्लू 6 लुटेरा 7. क्षत्रिय 8 तारपीन 9 गन्धद्रव्यों का मिश्रण 10 एक राक्षस का नाम 11 एक वृक्ष का नाम, बकवृक्ष 12 जठराग्नि। सम० अरातिः, अरिः कुत्ता,—उदरः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2. द्वितीय पांडव राजकुमार भीम का विशेषण मग० १।१५, कि० २।१ —दंशः कुत्ता, —धूपः 1 तारपीन 2. मिश्रगन्ध, —धूर्तः गीदड़।

वृक्कः,—क्का 1 हृदय 2 गुर्दा (इस अर्थ में द्वि० व०)।

वृक्ण (भू० क० कृ०) [व्रश्च्+क्त] 1 कटा हुआ, फाड़ा हुआ 2 फाड़ा हुआ 3 तोड़ा हुआ।

वृक्त (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] स्वच्छ किया गया, साफ किया गया, निर्मल किया गया।

वृक्ष् (भ्वा० आ० वृक्षते) 1 स्वीकार करना, चुनना 2 ढकना।

वृक्षः [व्रश्च्+क्स] 1 पेड़—आरमापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम्। सम० अदनः 1 बढ़ई की चौरसी 2 कुल्हाड़ी 3 बड़ का पेड़ 4 पियाल वृक्ष, आम्लः आमड़ा, आलयः एक पक्षी, —आवासः 1 एक पक्षी 2 सन्यासी, आश्रयिन् (पुं०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, कुक्कुटः जंगली मुर्गा खंडः निकुंज, वृक्षों का समूह,- चरः बन्दर, छाया वृक्ष की छाया (यम्) सघन छाया, बहुत से वृक्षों की (गाढ़ी) छाया,- धूपः तारपीन, नाथः बड़ का पेड़ - निर्यासः गोंद राल पाकः बड़ का पेड़,—भिद् (स्त्री०) कुल्हाड़ी, मर्कटिका गिलहरी, वाटिका, वाटी उद्यान, उपवन, शयः छिपकली, - शायिका गिलहरी।

वृक्षकः [वृक्ष+कन्] 1. छोटा पेड़ कु० ५।१४ 2 पेड़।

वृच् (रुधा० पर० वृणक्ति) छांटना, चुनना।

वृज् i (अदा० आ० वृक्ते) टाल जाना, कतराना, परित्याग करना।

ii (रुधा० पर० वृणक्ति) 1. टाला जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना 2. चुनना—आसामेकतमां वृङ्धि सवर्णां स्वर्गभूषणाम् भाग० 3 प्रायश्चित करना, पोंछ डालना, निर्मल करना नष्टे रेत पिता वृक्तामित्यस्यैतन्निदर्शनम् —मनु० ९।२० 4 मुड़ना, आँख फेरना।

iii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० वर्जति, वर्जयति—ते, वर्जित) 1 कतराना, टाल जाना 2 छोड़ना, परित्याग करना 3. निकाल देना, एक ओर रख देना 4 अलग रहना 5 टुकड़े टुकड़े कर देना (कविप्रयोग से अद्भुत

निम्नांकित पद्य धातु के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है वृणक्ति वृजिनै. भय वृङ्क्ते च वृषले सह, वर्जयन्नार्जवापेतं स वर्जयति दुर्जनं , अप 1. नष्ट करना 2. समाप्त करना 3. छोड़ना, त्याग देना रघु० १७।१९. कि० १।२९ 4 उडेलना, फेंकना शि० १३।३७ आ , 1 झुकना, मुड़ना, आवर्ज्य शाखा सदय च यामा - रघु० १६।१९, १३।१७, आवर्ज्य दृष्टी मेघ० ४६ 2 प्रस्तुत करना, देना रघु० १।६२, ६७, ८।२६, कु० ५।३४ 3 पराजय करना, जीतना, परि , टाल जाना कतराना, वि --1 कतराना, टाल जाना 2 विरहित करना वञ्चित करना ।

वृजनः [वृज् क्यु] 1 बाल 2 घुंघराले बाल,— नम् 1 पाप 2 संकट 3 आकाश 4 घेर, बाड़ा, विशेषतः एक गोचरभूमि ।

वृजिन [वृजे इनच् कित् च] 1 कुटिल, झुका हुआ, वक्र 2 दुष्ट, पापी, — नः 1 बाल, घुंघराले बाल 2 दुष्ट पुरुष – वृणक्ति वृजिनै सदा —कवि०, —नम् 1 पाप,—सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि भग० ४।३६, रघु० १४।५७ 2 पीड़ा, दुःख (इस अर्थ में पुं० भी माना जाता है) ।

वृण् (तना० उभ० वृणोति, वृणुते) खाना, उपभोग करना

वृत् i (दिवा० आ० वृत्यते) 1 चुनना, पसंद करना – तु० वावृत् 2 वितरण करना, बाँटना ।

ii (चुरा० उभ० वर्तयति ते) चमकना ।

iii (भ्वा० आ० वर्तते, परन्तु लुङ्, लृट्, लृङ् तथा लृङ् लकार में एवं सन्नंत में पर० भी, वृत्त) 1 होना, विद्यमान होना, डटे रहना, मौजूद होना, जीते रहना, टिके रहना इदं मे मनसि वर्तते,—श० १, अय विषवेऽस्माकं महत्कुतूहलं वर्तते पंच० १, नराः कृतकाः कथय रे कथं वर्तताम् - भामि० १।३, केवल सहायक के रूप में बहुधा प्रयुक्त, क्वासि हरितो हरीचव वर्तन्ते वाजिन —श० १ 2. किसी विशेष दशा या परिस्थिति में होना—वस्थितो वयसि वर्तमानस्य—का०, इसी प्रकार दुःखे, हर्षे, विषादे—वर्तते 3. होना, घटित होना, आ पड़ना, सामने आना—सीता देखा कि वृत्तमित्यस्ति काचित्प्रवृत्तिः—उत्तर० २, सायं संप्रति वर्तते पथिक रे स्थानान्तरं गम्यताम् सुभा०, 'अब सायंकाल हो गया है' ·· ' शृङ्गार० ९, भग० ५।२६ 4. चलते रहना, प्रगतिशील रहना —सर्वथा वर्तते यज्ञ—मनु० २।१५, निवर्तविजिता वर्तते—भट्टि० २।३७, रघु० १२।५९ ५ सधारित या संपोषित होना, जीवित रहना, जीते रहना (करण० से भी) —कथमनुबन्धनाशिरिविवर्तितंबाला—का० १७२, मनु० ३।७७ 6. मुड़ना, मुड़कर रहना, चक्कर खाना—सावधिर्व लोकयात्रा वर्तते -वेणी० ३ 7 अपने आप को कार्य में लगाना, काम में लगना, आरम्भ करना (अधि० के साथ) भगवान् काश्यपः शाश्वते ब्रह्मणि वर्तते श० १, इतरो दहने स्वकर्मणां ववृते ज्ञानमयेन वह्निना रघु० ८।२०, मनु० ८।३४६, भग० ३।२२ 8. कर्तव्य निभाना, व्यवहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना (प्रायः अधि० के साथ या स्वतंत्र रूप से) – आर्योऽस्मिन् विनयेन वर्तताम् उत्तर० १, कविनिसर्गलीधुनेन भरतेषु वर्तमान मा० १, औदार्यमेव वर्तितुम्—रघु० १०।२५, मनु० ७।१०४, ८।१७३, ११।३० 9 कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना—साध्वीं वृत्तिं वर्तते 'वह सत्कार्य में प्रवृत्त होता है' 10. अर्थ रखना, अभिप्राय बतलाना, अर्थ में प्रयुक्त होना —पुष्यसमीपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दो वर्तते—पा० ४। २।३ पर महाभाष्य (प्रायः कोशों में इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) 11 प्रवृत्त करना, प्रेरित करना (सप्त० के साथ)—युवेव कि कार्ये यो वै मिथुनाय वर्तते 12 सहारा लेना, आश्रित होना—प्रेर० (वर्तयति ते 1 घूमना कराना 2. घुमाना, चक्कर दिखाना श० ७।६ 3. (अस्त्र-शस्त्र) घुमाना, चौतरे बढ़ाना, घुमा कर फेंकना—भट्टि० १५।३७ 4. कार्य करना, अभ्यास करना, प्रवर्तित करना—मा० ९। ३३ 5. संपन्न करना निबटाना, व्याज देना, चक्कर डालना सोऽधिकारमभिकः कुलोचितं काश्चन स्वयमवर्तयत्समाः —रघु० १९।४, महावी० ३।२३ 6. बिताना, (समय आदि) गुजारना 7. जीवन निर्वाह करना जीते रहना कि० २।१८, रघु० १२।२० 8 वर्णन करना, बयान करना—दश० (विवृत्तति, विवर्तिषते), अति—, 1 परे जाना, आगे बढ़ जाना, मा० १।२६ 2 आगे निकल जाना, सर्वोत्कृष्ट होना कि० ३।४०, शि० १४।५९ 3. उल्लंघन करना, बाहर कदम रखना, अतिक्रमण करना—शि० ६।१९ 4 उपेक्षा करना, अवहेलना करना—मनु० ५।१६ 5. चोट पहुँचाना, अतिग्रस्त करना, नाराज करना 6 पराजित करना, वशीभूत करना 7. (समय का) बिताना 8. विलंब करना देरी करना —मनु० २।३८, अनु -, 1 अनुसरण करना अनुगत होना, अनुकूल कार्य करना - प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते—शि० १५।४१, मा० १।२ 2. अनुरंजन करना, दूसरे की इच्छा के अनुसार अपने आपको बनाना, दूसरे के द्वारा पथप्रदर्शन प्राप्त किया जाना 3. आज्ञा मानना 4 विनम्रता-नम्रता, नकल करना 5. इलाज करना, खुश करना 6. (व्या० में) किसी पूर्ववर्ती सूत्र से आवृत्ति प्राप्त करना (प्रेर०) 1. मुड़ना 2. अनुगमन

करना, आज्ञा मानना, अप--, 1 मुड़ जाना, पीठ मोड़ना -तस्मादपावर्तत दूरकृष्टा नीत्येव लक्ष्मी प्रतिकूलदैवात्—रघु० ६।५८, ७।३३ 2. व्यत्यस्त या व्युत्क्रान्त होना, उलटा हो जाना --कि० १२।४९ 3. मुँह नीचे कर लेना मा० ३।१७, (प्रेर०) एक ओर हो जाना, झुकना मा० १।४०, कि० ४।१५, अभि , 1. पहुँचना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना -इत एवाभिवर्तते—श० १, रघु० २।१० 2 आक्रमण करना, धावा बोलना टूट पड़ना —कि० १३।३ 3. आरम्भ करना, (दिन), निकलना 4. सर्वोपरि होना, सबसे ऊपर होना 5 होना, मौजूद होना, घटित होना, आ--, 1 चक्कर खाना 2. वापिस आना—रघु० १।८९, २।१९ 3. पास जाना, 4 बेचैन होना, चक्कर खाना-मा० १।४१, उद्-,1 बढ़ना 2.उदित होना, बढ़ना 3. घमंडी या अभिमानी होना 4 उमड़ना, बह निकलना—उद्वृत्तः क इव सुखावह परेषाम् —शि० ८।१८, मुद्रा० ३।८, रघु० ७।५६, उप , 1. पहुँचना 2 लौटना नि , 1. वापिस आना, लौटना - न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्—श० ३।१, कु० ४।३०, रघु० २।६३, भग० ८।२१, १५।४ 2. भाग जाना, पलायन करना भट्टि० ५।१०२ 3. मुड़ जाना, आँखें फेर लेना - रघु० ५।२३, ७।६१ 4. अलग रहना प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात् मनु० ५।४९, १।५३, भट्टि० १।१८, निवृत्तमांसस्तु जनकः - उत्तर० ४ 5 मुक्त होना, बच निकलना -भग० १।३९ 6. बोलना बन्द कर देना, रुक जाना, ठहर जाना 7 हट जाना अन्त होना, बन्द हो जाना, अन्तर्धान होना-- भग० २।५९, १४।२२, मनु० ११।१८५, १८६ 8 रुकवाना, निकलवाना, (प्रेर०) 1. लौटाना, वापिस भेजना रघु० २।३, ३।४७, ७।४४ 2. वापिस लेना, दूर रहना, मुड़ जाना, मन फेर लेना रघु० ७।२८, कु० ५।११, निस् , 1. समाप्त होना, अन्त होना, भट्टि० ८।९९ 2 संपन्न होना—रघु० १७।६८, मनु० ७।१६१, 3. रुक जाना, न होना,-- भट्टि० १६।६, (प्रेर०) 1. सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना—रघु० २।४५, ३।३३, ११।३०, परा -, लौटना, वापिस आना, परि -, 1. घूमना, चक्कर खाना- कु० १।११ 2. इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर आना जाना 3 बदलना, विनिमय करना, अदला-बदली करना 4. पीठ मोड़ना रघु० ४।७२, विक्रम० ११७ 5. होना, आ पड़ना - मा० ९।८ 6. क्षीण होना, नष्ट होना, लुप्त होना--मा० १०।६, प्र—, 1. आगे चलना, चलते जाना, प्रगति करना, पंच० १।८१ 2. उदित होना, उत्पन्न होना, फूट निकलना 3 होना, घटित होना, आ पड़ना 4 आरम्भ करना, शुरू करना, (प्राय तुमुन्नन्त)—हन्त प्रवृत्त संगीतकं मालवि० १, कु० ३।२५ 5 प्रयत्न करना, ओर लगाना प्रवर्तताम् प्रकृतिहिताय पार्थिवः श० ७।३५ 6 अमल करना, अनुसरण करना पंच० १।११६, 7 कार्य में लगना, व्यस्त होना, श० १, कु० ५।२३ 8 करना, कार्य में लगना—श० ६, 9. व्यवहार करना 10 व्याप्त होना, विद्यमान होना राजन् प्रजासु ते कच्चिदपचारः प्रवर्तते रघु० १५।४७ 11 ठीक उतरना 12 बिना रुकावट के प्रगति करना, फलना-फूलना, भग० १७।२४, मनु० ३।६१ (प्रेर०) 1 प्रगति करना जारी रखना मुद्रा० १ 2 सूत्रपात करना 3 जारी करना, स्थापित करना, बुनियाद रखना 4 हाँकना, प्रेरित करना, उकसाना उद्दीप्त करना 5 उन्नति करना प्रगति करना, प्रतिनि , 1 पीठ मोड़ना, लौटना —गन्धेव पुन. प्रतिनिवृत्त मा० १।२९, विक्रम० १ 2 चक्कर काटना, वि , 1 मुड़ना, लुढ़कना, चक्कर काटना, घूमना मा० १।४० 2 एक ओर हो जाना, झुकना—रघु० ६।१६, श० ७।११ 3 होना, घटित होना विनि -, 1 लौटना 2 रुक जाना अन्त होना भ० २।५९, मनु० ५।७ 3 हाथ खींचना, मुड़ जाना, अलग रहना देवमात् मुद्धात् आदि, विपरि चक्कर काटना (आल० में भी) भग० ९।१०, व्याप , 1 लौटना, वापिस मुड़ना—येन कथ कथमपि व्यावर्तते- मा० १।१८ 2 हाथ खींचना छोड़ देना उत्तर० ५।८, व्या. 1 वापिस जाना, मुड़ना महभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया—रत्न० १।२ 2 मुड़ना, हटना, उलट होना—विषयव्यावृत्तकौतूहल विक्रम० १।९, (प्रेर०) प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना निकाल देना, गिरफ्तार करना --तु शब्द पूर्वपक्षं व्यावर्तयति शारी० अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वर रघु० १५।७, सम् , 1 होना, घटित होना --मे यथोक्ता सवृत्ता पंच० १ 2 पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना 3 घटित होना, आ पड़ना 4. सम्पन्न होना।

वृत (भू० क० कृ०) [वृ+क्त] 1. छांटा गया, चुना गया 2 ढका गया, पर्दा डाला गया 3. छिपाया गया 4 घेरा गया, लपेटा गया 5 सहमत या अभ्यस्त 6 किराये पर लिया गया 7. खिलाड़ा गया, विख्यात किया गया 8 संचित, भेंट किया गया।

वृतिः (स्त्री०) [वृ + क्तिन्] 1. छाँटना, चुनना 2. छिपाना ढकना, गुप्त रखना 3. याचना करना, निवेदन करना 4. अनुरोध, प्रार्थना 5. घेरना, लपेटना 6 बाड़बंदी, बाड़, बाड़ा --मेघ० ७८।

वृत्तिकर (वि०) [वृत्ति + कृ + ट, मुम्] धन्न बाना लगाने वाला — रः विकंकत नाम का पेड़।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृत् + क्त] 1 जीवित विद्यमान 2 घटित घटित 3 सम्पूरित समाप्त 4 अनुष्ठित कृत किया गया 5 गुजरा हुआ बीता हुआ 6 गोल वर्तुलाकार रघु० ६।३८ 7 मृत स्वर्गगत 8 दृढ़ स्थिर 9 गठित अधीन 10 प्रख्यात 11 प्रसिद्ध (दे० वृत्) — त्तः कछुवा — त्तम् 1 बात घटना 2 इतिहास वर्णन रघु० १५।६८ 3 समाचार खबर 4 प्रवर्तन पेशा जीवनवृत्ति व्यवसाय ... मनु० १०।७३ ... आचरण व्यवहार ... धर्म कृत्य जैसा कि सद्वृत्त या दुर्वृत्त में 6 ... प्रचलन या कानून अथ इस प्रकार के नियम या ... 8 गोल घेरा ... की परिधि 9 छन्द ... मात्राओं की गणना के आधार पर ... (विप० ...) दे० परि० ... — सम० — अनुपूर्व ... गोल ढलवाकार कु० १।३५ — अनुसार 1 ... नियम की अनुरूपता 2 छन्द का अनुरूपता — अन्त 1 अवसर ... बात ... दयाकुला स्म ... 2 समाचार खबर ... विक्रम० ४ रघु० १४।८७ 3 वर्णन इतिहास कथा आख्यान कहानी 4 विषय प्रकरण 5 प्रकार किस्म 6 ... अवस्था दशा 8 कुलयोग समष्टि 9 विश्राम अवकाश 10 गुण प्रकृति — दर्पोद्धतो ... — गन्धि (नपुं०) एक प्रकार ... जैसा ... — चौल (वि०) मुण्डित जिसका मुण्डन संस्कार हो चुका हो — उत्तर० ... — पुष्पः 1 बेंत बानीर 2 सिरस का पेड़ 3 कदम्ब का पेड़ — फलम् 1 बेर उन्नाव का पेड़ 2 अनार का पेड़ — शस्त्र (वि०) जिसने शस्त्र विज्ञान में पाण्डित्य प्राप्त कर लिया है — भट्टि० ९।१९।

वृत्ति [वृत् + क्तिन्] 1 अस्तित्व सत्ता 2 टिकना रहना, ... किसी विशेष स्थिति में होना जैसा कि विकल्पवृत्ति या निरक्षवृत्ति में 3 अवस्था दशा 4 कार्य गति कृत्य कार्यवाही शालीनमकामाम ... रघु० ३।४३ कु० ३।७३ श० ४।१५ क्रम, प्रणाली ... २।१९ 6 आचरण व्यवहार ... — कृत ... आदि 7 पेशा व्यवसाय काम धंधा, रोजगार जीवन चर्या (प्राय समास के ... में) — वार्धके मुनिवृत्तीनाम् — रघु० १।८, श० ५।६, पंच० ३।१२५ 8 जीविका, सधारण जीविका के उपाय (बहुधा समास में) — रघु० ... श० ७।१२ कु० ५।२८, (जीविका के विभिन्न उपायों के लिए दे० मनु० ४।४-६) 9 मजदूरी, भाड़ा 10 क्रियाशीलता का कारण 11 सम्मानपूर्ण बर्ताव 12 भाष्य टीका, विवृति — सद्वृत्ति सन्निबन्धना शि० २।११४ काशिकावृत्ति आदि 13 चक्कर काटना मुड़ना 14 किसी वृत्त या पहिये की परिधि 15 (व्या०) जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े 16 शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिधान, संकेत अथवा व्यंजना की जाय (यह शक्तियाँ अभिधा लक्षणा और व्यंजना के नाम से विख्यात) 17 रचना की शैली (ये चार हैं कैशिकी भारती सात्वती और आरभटी) ... — सम० — अनुप्रास एक प्रकार ... अनुप्रास दे० काव्य० ९ — उपाय जीविका ... — कर्शित (वि०) जीविका के अभाव में असन्तुष्ट ... मनु० ... पञ्च० ... — छेद जीविका के साधनों से वञ्चित, — क्षय ... जीविका का अभाव पञ्च० १।१५३ — स्थ (वि०) 1 किसी भी स्थिति या नियुक्ति में रहने वाला 2 सदाचारी अच्छा बर्ताव करने वाला, — (स्थः) छिपकली गिरगिट

वृत्र [वृत् + रक्] 1 एक असुर का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था (वह ... प्रकार का मूर्तरूप माना जाता है) दे० इन्द्र 2 ... 3 अन्धकार 4 शत्रु 5 ... 6 पर्वत। सम० — अरि — द्विष् (पुं०) — हन् (पुं०) इन्द्र के विशेषण — ... वृत्रघातो कु० ११२०, बाधा हरि वृत्रहण स्मिमत — ७।४६।

वृथा (अव्य०) [वृ + थाल् किच्च] 1 बिना किसी अभिप्राय के व्यर्थ निरर्थक बिना किसी काम के (बहुधा विशेषण की शक्ति से युक्त) — व्यर्थ यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे वीर्यं हरीणां वृथा — उत्तर० ३।४५ शिव यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः — कु० ५।४५ 2 अनावश्यक रूप से 3 मूर्खता से आलस्य पूर्वक, ... 4 गलत तरीके से, अनुचित रूप से (... के आरम्भ में वृथा शब्द का अनुवाद 'व्यर्थ, निरर्थक' अनुचित मिथ्या या आलसी, किया जा सकता है। सम० — अट्या आलस्यता के साथ टहलना, सामोद भ्रमण करना — आकारः मिथ्या रूप, खाली तमाशा — कथा बेहूदी बात, — दानम् (नपुं०) अलाभकर या व्यर्थ दान, — ... वह उपहार जो प्रतिज्ञात होने पर भी न दिया गया हो, — बुद्धि (वि०) दुर्बुद्धि मूर्ख — मांसम् वह मांस जो देवताओं

या पितरों के लिए अभिप्रेत न हो वादिन् (वि०) मिथ्या साक्षी, - श्रमः व्यर्थ चेष्टा या कष्ट उठाना।

वृद्ध (वि०) [वृध् + क्त] (म० अ० ज्यायस् या वर्षी यस्, उ० अ० ज्येष्ठ या वर्षिष्ठ) 1 बड़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2 पूर्णविकसित बड़ी उम्र का 3 बूढ़ा वयोवृद्ध, बहुत वर्षों का वृद्धास्ते न विचारणीय चरिताः - उत्तर० ५।२५ 4 प्रगत या विकसित (समास के अन्त में), तु० वयोवृद्ध, धर्मवृद्ध ज्ञान वृद्ध, आगमवृद्ध 5 बड़ा विशाल 6 एकत्रित संचित 7 बुद्धिमान्, विद्वान्, -द्धः 1 बूढ़ा व्यक्ति हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् रघु० १।४५ ९।८, मेघ० ३० 2 योग्य या आदरणीय पुरुष 3 मुनि, सन्त 4 वंशज, -द्धम् गुग्गुल। सम० -अङ्गुलि (स्त्री०) पैर का अंगूठा -अवस्था बुढ़ापा -आचार: प्राचीन प्रथा, -उक्षः बूढ़ा बैल,—काकः पहाड़ी कौवा —नाभि (वि०) स्थूलकाय मोटे पेट वाला —भाव बुढ़ापा, -वचः प्राचीन ऋषियों का उपदेश -वाहन आम का पेड़, -श्रवस् (पुं०) इन्द्र का विशेषण —सभ वृद्धजनों की सभा, -सूत्रकम् रुई का गल्हा कपास का गाला, इन्द्रतूल।

वृद्धा [वृद्ध + टाप्] 1 बूढ़ी स्त्री 2 वंशजा (स्त्री)।

वृद्धिः [वृध् + क्तिन्] 1 विकास, बढ़ोत्तरी, वर्धन सम्वर्धन पुपोष वृद्धि हरिदश्वदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः रघु० ३।२२, तपोवृद्धि ज्ञानवृद्धि आदि 2 (चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना, पर्यायपीतस्य सुरैर्हिमांशोः कलाक्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः रघु० ५।१६ कु० ३।१ 3 धन की वृद्धि समृद्धि, धनाढ्यता — पंच० २।११२ 4 सफलता, बढ़ावन, उन्नति, प्रगति परिवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनां - शि० १५।१ 5 दौलत जायदाद 6 ढेर, परिमाण, समुच्चय 7 सूद, ब्याज, सरला वृद्धि, चक्रवृद्धि 8 सूदखोरी 9 लाभ फायदा 10 अण्डकोष की वृद्धि 11 शक्ति या राजस्व का विस्तार 12 (व्या० में) स्वरों का लंबा करना या वृद्धि, अ, इ, उ, ऋ (चाहे ह्रस्व हों या दीर्घ) और लृ को क्रमशः आ, ऐ औ, आर् और आल् में बदलना 13 परिवार में (प्रसव के कारण) उत्पन्न अशौच, जननाशौच। सम० -आजीव - आजीविन् (पुं०) सूदखोर, साहूकार, ब्याज पर रुपया उधार देनेवाला,—जीवनम्,—जीविका सूदखोरी, साहूकारी —द (वि०) समृद्धि को उन्नत करने वाला, -पत्रम् एक प्रकार का उस्तरा, -श्राद्धम् पुत्रजन्मादि के उत्सव पर पितरों का श्राद्ध, नान्दीमुख श्राद्ध।

वृध् I (भ्वा० आ० — परस्मै० लुट्, लृट्, लृङ् लङ् और सन्नन्त में पर० वर्धते, वृद्ध, इच्छा० विवृत्सति या विवर्धिषते) 1 विकसित होना बढ़ना विस्तृत होना, मजबूत या बलवान् होना फलना समृद्ध होना—अन्योन्यजयसंरम्भो ववृधे वादिनोरिव रघु० १२।९२, १०।७८, धनक्षये वर्धति जाठराग्निः मुद्रा० भट्टि० १४।१३ १९।२६ 2 जारी रखना टिकाऊ रहना 3 उठना, चढ़ना 4 बधाई का कारण होना -(प्राय दिष्ट्या के साथ) दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन पुत्र मुखदर्शनेन चायुष्मान् वर्धते श० ७ धर्मपत्नी के मिलने के उपलक्ष्य में आपको बधाई हो, प्रेर० (वर्ध यति-ते, वर्धापयति—ते भी) 1 विकसित कराना बढ़ाना, वृद्धिपूर्वक करना ऊँचा उठाना ऊँचा करना उन्नत करना वर्धयन्निव तत्कूटानुद्धूतैर्धातुरेणुभिः रघु० ४।७१ 2 समृद्ध करना यशस्वी बनाना विस्तीर्ण करना बड़ाई करना हि० ३।३ 3 बधाई देना अभिनन्दन करना (इस अर्थ में वर्धापयति) अभि , विकसित होना बढ़ना क्षीणं क्षीणोऽपि शशी भूयो भूयोऽभिवर्धते नित्यम् काव्य० १० परि प्र वि , विकसित होना बढ़ना, समृद्ध होना सम् — बढ़ना रघु० ५।६।

II (चुरा० उभ० वर्धयति-ते) 1 बोलना चमकना।

वृषलान [वृषे छन्दसि असामान्य किन्] मनुष्य।

वृषसानु [वृष + असामुच्] 1 मनुष्य 2 पत्ता 3 कर्म, कार्य।

वृन्तम् [वृ + क्त नि० मुम्] 1 किसी फल या पत्ते का डंठल, डंडी - वृन्ताच्छ्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९ 2 घड़ौंची 3 स्तन की चौंडी या अग्रभाग।

वृन्ताकः, -की [वृन्त + अक + अण्] बैंगन का पौधा।

वृन्तिका [वृन्त + कन् + टाप् इत्वम्] छोटा डंठल।

वृन्दम् [वृ + दन्, नुम्, गुणाभाव] 1 समुच्चय समूह बड़ी संख्या, दल अनुगतमलिवृन्दैर्गण्डभित्तीर्विहाय रघु० १२।१०२, मेघ० ९९ इसी प्रकार अभ्र° 2 ढेर, परिमाण।

वृन्दा [वृन्द + टाप्] 1 पवित्र तुलसी 2 गोकुल के निकट एक वन। सम० -अरण्यम्, -वनम् गोकुल के निकट एक जंगल—वृन्दारण्ये वसतिरधुना केवलं दुःखहेतुः पदा० ३८।४१ रघु० ६।५० — वनी तुलसी का पौधा।

वृन्दार (वि०) [वृन्द + वृ + अण्] 1 अधिक, बड़ा, विशाल 2 प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3 सुहावना, आकर्षक, सुन्दर।

वृन्दारक (वि०) (स्त्री०—का, -रिका) [वृन्द + आरकन्, पक्षे टाप्, इत्वम् च] 1 अधिक, बड़ा, बहुत 2 प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3 सुहावना, आकर्षक, सुन्दर, मनोहर 4 आदरणीय, सम्माननीय -कः 1 देव, सुर

भिन्नो वृन्दारण्य मततिमिलवृन्दारकवृत मामि० ४१५ 2 किसी भी चीज का मुख्य (समास के अन्त में) दे० (२) ऊपर।

वृन्दिष्ठ (वि) [अयमेषामतिशयेन वृन्दारकः इष्ठन्, वृन्दादेश] 1 अत्यन्त बड़ा या विशालतम 2 अत्यन्त मनोहर, सुन्दरतम।

वृन्दीयस् (वि०) ['वृन्दारक' की म० अ० अयमनयोरतिशयेन वृन्दारकः + ईयसुन्, वृन्दादेश] 1 अपेक्षाकृत बड़ा विशालतर 2 अपेक्षाकृत मनोहर सुन्दरतर।

वृश् (दिवा० पर० वृश्यति) छांटना, चुनना।

वृशः [वृश् + क] चूहा, —सा एक औषधि अडूसा —म् अदरक।

वृश्चिक [वृश्च् + कन्] 1 बिच्छू 2 वृश्चिक राशि 3 केंकड़ा 4 कानखजूरा 5 बमन्वा गोबर का कीड़ा 6 एक रोएदार कीड़ा।

वृष् I (भ्वा० पर० वर्षति वृष्ट) 1 बरसना (बहुधा 'इन्द्र' 'पर्जन्य' या बादल आदि सार्थक शब्दों के साथ कर्ता के रूप में, या कभी-कभी भावात्मक रूप में) द्वादशवर्षाणि न ववर्ष दशशताक्षः दश०, काले वर्षतु मेघाः, गर्जं वा वर्ष वा शक्र मृच्छ० ५।३१, मेघा वर्षन्तु गर्जन्तु मुञ्चन्त्वशनिमेव वा —५।१६ 2 बारिश करना, उड़ेलना, बौछार करना —वर्षतीवाञ्जनं नभः —मृच्छ० १।३४ इसी प्रकार—शरवृष्टिम् कुसुमवृष्टि वर्षति आदि 3 बरसाना हलकाना 4 अनुदान देना, अर्पण करना 5 नष्ट करना 6 पैदा करना, उत्पन्न करना 7 सर्वोपरि शक्ति रखना 8 प्रहार करना, चोट मारना, अभि—, 1 बौछार करना बरसाना, उड़ेलना छिड़कना रघु० १।८४ १०।४८ 2 प्रदान करना अर्पण करना, प्र—, बरसाना बौछार करना यस्यायमभितः पुष्पैः प्रवृष्ट इव केसरैः —राम० (उत्तर० ६।३६)।

II (चुरा० आ० वर्षयते) 1 शक्तिशाली या प्रमुख होना, 2 उत्पन्न करने की शक्ति रखना।

वृषः [वृष् + क] 1 सांड असपदस्तस्य वृषेण गच्छतः —कु० ५।८०, मेघ० ५२, रघु० २।३५, मनु० ९।१२३ 2 वृष राशि 3 किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम, अपने दल का सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्त में) मुनिवृषः, कपिवृष आदि 4 कामदेव 5 मजबूत या व्यायामशील व्यक्ति 6 कामातुर, रतिग्रन्थों में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक दे० रति० ३७ 7 शत्रु विपक्षी 8 चूहा 9 शिव का नदी बैल 10 नैतिकता न्याय 11 गुण सत्कर्म या पुण्यकार्य—न सद्गतिः स्याद् वृषराजिनानाम् नीति० ९।६२, (यहाँ 'वृष' का अर्थ सांड भी है) 12 कर्ण का नामान्तर 13 विष्णु का नाम 14 एक विशेष औषधि का नाम —भम् मोर का पंख। सम० —अङ्कः शिव का विशेषण— रघु० ३।२३ 2 पुण्यात्मा, सद्गुणी 3 भिलावाँ 4 षढ, —अंशः छोटा ढोल, —अञ्चनः शिव का विशेषण —अन्तकः विष्णु का विशेषण, —आहार बिलाव, —उत्सर्गः मृत पुरुष के नाम पर दाग कर सांड छोड़ना, —दंशः,—दंशकः बिलाव, —ध्वजः 1 शिव का विशेषण रघु० ११।४४ 2 गणेश का विशेषण 3 सद्गुणी, पुण्यात्मा, —पतिः शिव का विशेषण, —पर्वन् (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2 एक राक्षस का नाम जिसने असुराचार्य शुक्र की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं से संघर्ष किया, इसकी पुत्री शर्मिष्ठा का विवाह ययाति के साथ हुआ—दे० ययाति और देवयानी 3 बर्र, भिरड़ —भासा इन्द्र और देवताओं का आवास—अर्थात् अमरावती, —लोचनः बिलाव —वाहनः शिव का विशेषण।

वृषणः [वृष् + क्यु] अण्डकोष, अंड या फोते।

वृषन् (पुं०) [वृष् = कनिन्] 1 सांड 2. वृषराशि 3 किसी वर्ग का मुखिया—महावी० १।७ 4 बीजाश्व, सांड, घोड़ा 5 पीड़ा, शोक 6 पीड़ा के प्रति असंवेदनता 7 इन्द्र का नाम—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम् —कु० ५।६१, ८०, रघु० १०।५२, १७।७७ 8. कर्ण का नाम 9 अग्नि का नाम।

वृषभः [वृष्+अभच् किच्च] 1 सांड 2 कोई भी नर जानवर 3 अपने वर्ग का मुखिया (समास के अन्त में) द्विजवृषभ — रघु० १।५, ४।२१ 4 वृषराशि, 5 एक प्रकार की औषधि—तु० ऋषभ 6 हाथी का कान 7 कान का विवर। सम० —पतिः,—ध्वजः शिव के विशेषण— रघु० २।३६, कु० ३।६२।

वृषभी (स्त्री०) [वृषभ + ङीष्] 1 विधवा 2 कवच।

वृषलः [वृष् = कलच्] 1 शूद्र 2 घोड़ा 3 लहसुन 4. पापी, दुष्ट, अधर्मी 5 जाति से बहिष्कृत 6 चन्द्रगुप्त का नाम (विशेषतः चाणक्य द्वारा प्रयुक्त—दे० मुद्रा० अंक १, ३)।

वृषलकः [वृषल + कन्] तिरस्करणीय शूद्र।

वृषली [वृषल + ङीष्] 1 बारह वर्ष की अविवाहित कन्या रजस्वला होने पर भी विवाह न होने के कारण पिता के घर रहने वाली कन्या—पितुर्गेहे च या नारी रजः पश्यत्यसंस्कृता भ्रूणहत्या पितुस्तस्याः सा कन्या वृषली स्मृता 2 रजस्वला 3 बांझ स्त्री 4 मृतोत्पन्न बच्चे की माता 5 शूद्र की पत्नी या शूद्रा स्त्री। सम०— पतिः शूद्र स्त्री का पति, —सेवनम् शूद्रा स्त्री के साथ संभोग।

वृषसृक्की (स्त्री०) बर्र, भिरड़।

वृषस्यन्ती [वृष + क्यच्, सुक्, शतृ + ङीप् नुम्] संभोग करने की इच्छा वाली स्त्री (पुरुष में कर्म० के साथ,

रघुनन्दन वृषस्यन्ती शूर्पणखा प्राप्ता—महावी० ५ भट्टि० ४।३० रघु० १२।३४ 2 कामासक्ता या कामातुरा स्त्री 3 गर्भायी हुई गाय।

वृषाकपायी [वृषाकपे पत्नी वृषाकपि+ङीप ऐ आदेश] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 गौरी का विशेषण 3 शची का विशेषण 4 अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण 5 सूर्य की पत्नी ऊषा का विशेषण।

वृषाकपि [वृष. कपि यस्य—ब० स० पूर्वपददीर्घ] 1 सूर्य का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 इन्द्र का विशेषण अग्नि का विशेषण।

वृषायण (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 गौरैया चिड़िया।

वृषिन् (पु०) [वृष+इनि] मोर।

वृषी (स्त्री०) संन्यासी या ब्रह्मचारी का आसन (कुश घास से बना हुआ)।

वृष्ट (भू० क० कृ०) [वृष्+क्त] 1 बरसा हुआ 2 बरसता हुआ 3 बौछार करता हुआ उडेलता हुआ।

वृष्टि (स्त्री०) [वृष्+क्तिन्] 1 बारिश बारिश की बौछार आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः मनु० ३।७६ 2 (किसी भी वस्तु की) बौछार अस्त्रवृष्टि रघु० ३।५८ पुष्पवृष्टि २।६० इसी प्रकार शर° धन° उपल° आदि। सम० काल बरसात का समय जीवन (वि०) बारिश द्वारा सिंचित (प्रदेश), भू देवमातृक० भू मेंढक।

वृष्टिमत् (वि०) [वृष्टि मतुप्] बरसने वाला बरसाती (पु०) बादल।

वृष्णि (वि०) [वृषे नि किच्च] 1 धर्मभ्रष्ट पाखंडी 2 क्रुद्ध कोपाविष्ट (पु०) 1 बादल 2 मेंढा 3 प्रकाश की किरण 4 कृष्ण के किसी पूर्वज का नाम 5 कृष्ण का नाम 6 इन्द्र 7 अग्नि। सम० गर्भ कृष्ण का विशेषण।

वृष्य (वि०) [वृष+क्यप] 1 जिसके ऊपर बरस सके बौछार की जा सके 2 कामोद्दीपक वाजीकर पुंस्त्व बढ़ाने वाला ष्या माष उड़द।

वृह्, वृहत्, वृहतिका दे० बृह्, बृहत् बृहतिका।

वृहती [वृह्+अति+ङीप्] 1 नारद की वीणा 2 छत्तीस की संख्या 3 बृहती (छन्द) बोगा आवरण 1 भाजन आसन (जैसे जलाशय) दे० 'बृहती भी। सम० —पतिः बृहस्पति का विशेषण।

वृहस्पति दे० 'बृहस्पति'।

वॄ (क्रया० उभ० वृणाति वृणीते वर्त्त कर्मवा० वूर्यते इच्छा० वुवूर्षति-ते विवरिषति-ते) छांटना चुनना (दे० वृ 1)।

वे (भ्वा० उभ० वयति-ते उत प्रेर० वाययति-ते) 1 बुनना सितासितैर्वर्णैर्वयन्ति सन्तानमेते ३० १।१० 2 बाल गूथना, पीछे लगाना 3 सीना 4 बनाना रचना नत्थी करना प्र—, 1 बुनना 2 बांधना, कसना 3 जमाना स्थिर करना 4 परस्पर बुनना यथोचित करना दे० 'प्रोत'।

वेकट (पु०) 1 जौहरी 2 जौहरी 3 युवा पुरुष।

वेग [विज्+घञ्] 1 आवेग संवेग 2 गति प्रवेग शीघ्रता 3 विक्षोभ 4 अविच्छिन्नता प्रचण्डता बल 5 प्रवाह धारा जैसा कि अम्बुवेग में 6 तेज कियाशीलता सत्त्व 7 शक्ति सामर्थ्य—मदनज्वरस्य वेगान् ३० 8 सक्रिय क्रिया (विष आदि का) प्रभाव रघु० १२ विक्रम० ४।१८ 9 शीघ्रता 10 स्फुर्ति अवश्य स्नायु प्रजा पत्र० १।१०० 11 बाण की गति 12 प्रेम प्रणयोन्माद 13 आनन्द प्रसन्नता 14 मलत्याग 15 शुक्र वीर्य, सम० अनिल 1 आंधी का झोंका विक्रम० ४।४ 2 प्रचण्ड वायु, आघात 1 अकस्मात् वेग का अवरोध गति को रोकना 2 मलावरोध कोष्ठबद्धता नाशन श्लेष्मा कफ वाहिन (वि०) स्फूर्त तेज विधारणम् गति का रोकना सर सच्चर।

वेगित (वि०) (स्त्री० नी) [वेग इनि] तेज स्फूर्त द्रुतगामी प्रचण्ड फुर्तीला (पु०) 1 हरकारा 2 बाज की नदी।

वेङ्कट (पु०) एक पहाड़ का नाम वेंकटाचल।

वेण [विच्+अच+टाप्] भाड़ा मजदूरी।

वेडम् [विड्+अच्] एक प्रकार का बन्धन।

वेडा [वेड+टाप्] किश्ती नाव।

वेण्, वेन् (भ्वा० उभ० वेणति-ते वेनति-ते) 1 जाना हिलना जुलना 2 जानना, पहचानना प्रत्यक्ष करना 3 विचारविमर्श करना सोचना 4 लेना 5 बाजा बजाना।

वेण [वेण् अच्] 1 गायक जाति का पुरुष—तु० मनु० १०।१९, वणानां भाण्डवादनम् १०।४९ 2 एक राजा का नाम अङ्ग का पुत्र और स्वायंभुव मनु का वंशज (जब यह राजा बना तो उसने सब प्रकार की पूजा व यज्ञादि को बन्द करने की घोषणा कर दी। ऋषियों ने इसका बड़ा विरोध किया परन्तु जब उसने उनकी एक न सुनी तो उन्होंने अभिमन्त्रित कुशतृण की पत्ती से उसकी हत्या कर दी। अब देश में कोई शासक न रहा। तब उन्होंने उस मृतक शरीर की जंघा को मथा तब उसमें से एक निषाद निकला जो शरीर का ठिगना तथा चौड़े मुख वाला था। उसके पश्चात् उन्होंने उसकी दाहिनी भुजा को मथा जहां से भव्य पृथु (दे० पृथु) का

जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार वह भली भांति शासन करने लगा, परन्तु बाद में वह जैन-नास्तिकता में फंस गया। यह भी कहा जाता है कि उसने वर्णव्यवस्था में गड़बड़ी फैलाई, तु० मनु० ७।४१, ९।६६-६७)।

वेणा [वेण+टाप्] एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में आकर मिलती है)।

वेणिः,–णी (स्त्री०) [वेण्+इन्, ङीप् वा] 1 गुंथे हुए बाल, बालों की मींडी, –नरङ्गिणी वेणिरिवायता भुवः –शि० १२।७५, मेघ० ९८ 2 बालों की एक अनलंकृत चोटी जो पीठ पर लटकती रहती है (कहा जाता है कि वही स्त्रियां ऐसी चोटी करती हैं जिनके पति घर पर न हों) वनान्निवृत्तेन रघूत्तमेन मुक्ता स्वयं वेणिरिवाबभासे –रघु० १४।१२, अबलावेणिमोक्षोत्सुकानि–मेघ० ९९, कु० २।६१ 3 अनवच्छिन्न प्रवाह, धारा, सरिता जलवेणिरम्यां रेवां यदि प्रेक्षितुमस्ति कामः –रघु० ६।४३ मेघ० २९, तु० 'त्रिवेणी' शब्द की भी 4 दो या अधिक नदियों का संगम 5. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम 6 एक नदी का नाम। सम० –**बन्धः** गुंथे हुए बाल, मींडी रघु० १०।४७,–**वेधनी** जोंक,–**वेधिनी** कंघी, –**संहारः** 1. बालों को गूंथ कर मींडी बनाना वेणी० ६ 2 भट्टनारायणकृत एक नाटक का नाम।

वेणुः [वेण्+उण्] 1 बांस, मलयेऽपि स्थितो वेणुर्वेणुरेव न चन्दनम् सुभा०, रघु० १२।४१ 2. नरकुल 3 बंसरी, मुरली –नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम् गीत० ५। सम० –**जः** बांस का बीज, –**ध्मः** बांसुरी बजाने वाला, मुरलीवाला, –**निस्रुतिः** ईख –**यष्टिः** बांस की लकड़ी, –**वादः**, –**वादकः** मुरली वाला, बांसुरी बजाने वाला –**बीजम्** बांस का बीज।

वेणुकम् [वेणु+कन्] बांस की मूठ वाला अंकुश।

वेणुजम् [वेणु+जनन्] काली मिर्च।

वेतं (ड) **डः** (पुं०) हाथी भामि० १।६२।

वेतनम् [अज्+तनन् वीभावः] 1 किराया, मजदूरी, भृति, मजदूरी, वृत्ति –रघु० १७।६६ 2 आजीविका, जीवननिर्वाह का साधन। सम०–**अदानम्**,–**अनपाकर्मन्** (नपुं०), –**अनपक्रिया** 1. पारिश्रमिक या मजदूरी न देना 2 मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रगमन, –**जीविन्** (पुं०) वृत्ति पाने वाला, वैतनिक।

वेतसः [अज्+असुन् तुक् च, वीभाव] 1 नरसल नरकुल, बेंत –यद्वेतसः कुब्जलीलां विडम्बयति स किं स्वयं प्रभावतः पञ्चभ्यः –उ० ९२३ रघु० ९।७५ 2 नींबू, बिजौरा।

वेतसी [वेतस्+ङीप्] नरसल,–वेतसीतरुतले–काव्य० १।

वेतस्वत् (वि०) (स्त्री०—ती) [वेतस+ड्मतुप्, मस्य वः] जहाँ नरकुल बहुतायत से पाये जायं।

वेतालः [अज्+विच्, वी आदेशः, तल्+घञ्, कर्म० स०] 1. एक प्रकार की भूतयोनि, पिशाच, प्रेत, विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत –मा० ५।२३, शि० २०।६० 2 द्वारपाल।

वेत्तृ (पुं०) [विद्+तृच्] 1. ज्ञाता 2. ऋषि, मुनि 3 पति, पाणिग्रहीता।

वेत्रः [अज्+त्रल्, वी भाव.] 1. बेंत, नरसल 2. छड़ी, छड़ी, विशेष कर द्वारपाल की छड़ी,–वामप्रकोष्ठार्पितहेमवेत्र –कु० ३।४१। सम० –**आसनम्** बेंत की बनी गद्दी,–**धरः** –**धारकः** 1 द्वारपाल 2 आसाधारी, छड़ीबरदार।

वेत्रकीय (वि०) [वेत्र+छ, कुक्] वेत्रबहुल जहाँ नरकुल बहुत पाये जायें।

वेत्रवती [वेत्र+मतुप्+ङीप्] 1. स्त्री द्वारपाल 2. एक नदी का नाम मेघ० २४।

वेत्रिन् (पुं०) [वेत्र+इनि] 1 द्वारपाल, दरबान 2. चोबदार।

वेथ् (भ्वा० आ० वेथते) प्रार्थना, निवेदन करना, कहना।

वेदः [विद्+घञ्, अच् वा] 1 ज्ञान 2 आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ (मूलरूप से केवल तीन वेद थे, ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद जिन्हें समष्टिरूप से 'त्रयी' कहते थे परन्तु बाद में 'अथर्ववेद' उनके साथ जोड़ दिया गया। प्रत्येक वेद के दो भाग हैं –मन्त्र या संहिता पाठ तथा ब्राह्मण भाग। हिन्दुओं की नितान्त धर्मनिष्ठता के अनुसार वेद अपौरुषेय (जो पुरुष द्वारा की गई रचना न हो) हैं, क्योंकि वह परमात्मा से प्रकट हुए या सुने गये हैं, इसीलिए उन्हें 'श्रुति' कहते हैं, इसके विपरीत 'स्मृति' अर्थात् जो याद रक्खे जाय या जो पुरुषों की कृति हो, दे० 'श्रुति' तथा 'स्मृति' भी, इसीलिए बहुत से ऋषि जिनका नाम वेद के सूक्तों से सम्बद्ध है 'द्रष्टारः' देखने वाले कहलाते हैं, उन्हें 'कर्तार' या 'स्रष्टार' अर्थात् रचयिता नहीं कहा जाता) 3. कुशा घास का गुच्छा मनु० ४।३६, 4 विष्णु का नाम। सम० –**अङ्गम्** 'वेद का अंग' एक प्रकार के ग्रन्थ जो मन्त्रोच्चारण, व्याख्या और संस्कारों में यत्र-तत्र सही विनियोग में सहायता देने के लिए प्रयुक्त होते हैं और वेदाध्ययन में सहायक हैं, (वेदांग गिनती में छः हैं 1 शिक्षा, अर्थात् उच्चारण-विज्ञान 2 छन्दस छन्द शास्त्र, 3 व्याकरण 4 निरुक्त अर्थात् वेद के कठिन शब्दों की निर्वचनपरक व्याख्या 5. ज्योतिष अर्थात् नक्षत्र-विद्या या गणितज्योतिष और 6. कल्प अर्थात् कर्म-काण्ड या अनुष्ठानपद्धति), **अधिगमः**, **अध्ययनम्**

धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन, —अध्यापकः वेद का पढ़ाने वाला, धर्मगुरु,—अन्तः 1 'वेद का अन्त' (वेद के अन्त में आने वाली) उपनिषद् 2. हिन्दुओं के छः मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन ('वेदान्त' इसलिए कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्य-क्षेत्र की शिक्षा देता है, या इसलिए कि यह उन उप-निषदों पर आधारित है जो वेद का अन्तिम भाग हैं), (दर्शन की इस पद्धति को कभी-कभी 'उत्तरमीमांसा' के नाम से पुकारते हैं, यही जैमिनि की पूर्वमीमांसा का उत्तरार्ध, या अन्तिम भाग है, परन्तु व्यवहारतः यह एक स्वतन्त्र शास्त्र है, दे० मीमांसा, यह हिन्दुओं के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सर्वेश्वरवाद का प्रवर्तक है, इसके अनुसार समस्त विश्व एक ही अनादि शक्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा का सश्लिष्ट रूप है, दे० 'ब्रह्मन्' भी) °ग, °ज्ञः, वेदान्त दर्शन का अनुयायी —अन्तिन् (पुं०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी —अर्थः वेदों का अर्थ, —अवतारः वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय संदेश —आदि (नपुं०) —आदिवर्णः —आदिबीजम् 'ओम्' की पुनीत ध्वनि, —उक्त (वि०) शास्त्रसम्मत, वेदविहित, —कौलेयकः शिव का विशेषण, —गर्भः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण —ज्ञः वेदों को जानने वाला ब्राह्मण, —त्रयम्, त्रयी सामूहिक रूप से तीनों वेद, —निन्दकः नास्तिक पाखण्डी, श्रद्धाहीन (जो वेद के स्वरूप तथा उसके अपौरुषेयत्व पर विश्वास नहीं करता है), —निन्दा अविश्वास, पाखण्ड, —पारगः वेदों में पारंगत ब्राह्मण —मातृ (स्त्री०) वैदिक पुनीत मंत्र, गायत्रीमंत्र —वचनम्, —वाक्यम् वेद का मूलपाठ, —वदनम् व्याकरण —वासः ब्राह्मण —बाह्य (वि०) वेद के विरुद्ध, जो वेद में उपलब्ध न हो —विद् (पुं०) वेदविशारद ब्राह्मण, —विहित (वि०) वेदों में जिसका विधान पाया जाय, —व्यासः व्यास का विशेषण जिसने वेदों को वर्तमान रूप दिया है, दे० व्यास, —संन्यासः वेदों के कर्मकाण्ड का त्याग।

वेदनम्, वेदना [विद्+ल्युट्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान 2 भावना, संवेदन 3 पीड़ा, संताप, क्लेश, अपि अवेदनाज्ञं कुलिशक्षतानाम् कु० १।२० रघु० ८।५० 4 अधिग्रहण, दौलत, जायदाद 5 विवाह —मनु० ३।४४, ९।६५, याज्ञ० १।६२।

वेदारः [वेद+ऋ+अण्] गिरगिट।

वेदिः [विद्+इन्] विद्वान् पुरुष, ऋषि, पंडित, —दिः,—दी (स्त्री०) 1 यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी, 2 वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों—मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या—कु० १।३९ (कुछ लोग इस शब्द का अर्थ इस स्थान पर 'मोहर की अंगूठी' समझते हैं 3 किसी मन्दिर या महल का चौकोर सहन 4 मुद्रा—अंगूठी 5 सरस्वती 6. भूखण्ड, प्रदेश। सम०—जा द्रौपदी का विशेषण, क्योंकि यह राजा द्रुपद की यज्ञवेदी के मध्य से उत्पन्न हुई थी।

वेदिका [वेदी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 यज्ञभूमि या वेदी 2 चबूतरा उच्चसमतलभूमि (जो प्रायः धर्मकृत्यों के लिये ठीक की गई हो—सप्तपर्णवेदिका—श०१, कु० ३।४४ 3 आसन 4 वेदी, ढेर, टीला, मन्दाकिनीसैकतवेदिकाभिः कु० १।२९, 'वेदी या रेत के टीले बना कर' 5 आंगन में बीच में बना चौकोर चबूतरा 6 लतामंडप, निकुंज।

वेदिन् (वि०) [विद्+णिनि] 1 ज्ञाता जैसा कि 'कृत-वेदिन्' में 2 विवाह करने वाला (पुं०) 1 जानकार 2 अध्यापक 3 विद्वान् पुरुष 4 ब्राह्मण का विशेषण।

वेदी दे० वेदि (स्त्री०)।

वेद्य (वि०) [विद्+ण्यत्] 1 ज्ञात होने के योग्य 2 व्याख्येय या शिक्षणीय 3 विवाहित होने के योग्य।

वेध [विध्+घञ्] 1 छेद करना, बींधना, छिद्र युक्त करना 2 घायल करना, घाव 3 छिद्र, खुदाई या गर्त 4. (खुदाई की) गहराई 5 समय की माप विशेष।

वेधकः [विध्+ण्वुल्] 1 नरक के एक प्रभाग का नाम 2 कपूर, धान्य बाल में विद्यमान चावल।

वेधनम् [विध्+ल्युट्] 1. छेदने या बींधने की क्रिया 2 प्रवेशन, छेदन 3 शून्यीकरण, वेधन 4 चुभोना, घायल करना 5 (खुदाई की) गहराई।

वेधनिका [वेधनी+कन्, टाप्, ह्रस्व] एक तेज नोक वाला उपकरण जिससे मणि या सीप आदि में छिद्र किये जाते हैं, बर्मा।

वेधनी [वेधन+ङीप्] 1 हाथी का कान बींधने वाला उपकरण 2 एक तेज नोक का सीप व मणि आदि को बींधने वाला उपकरण, बर्मा।

वेधस् (पुं०) [विधा+असुन्, गुण] 1 स्रष्टा भा० १।२१ 2 ब्रह्मा विधाता न वेधा विदधे नूनं महा-भूतसमाधिना रघु० १।२९, कु० २।१६, ५।४१ 3 गौण सृष्टिकर्ता (जैसे कि ब्रह्मा से उत्पन्न दस प्रजापति) कु० २।१८ 4 शिव 5 विष्णु 6 सूर्य 7 मदार का पौधा 8 विद्वान् पुरुष।

वेधसम् [वेधस+अच्] अंगूठे की जड़ के नीचे का हथेली का भाग।

वेधित (भू० क० कृ०) [वेध+इतच्] बींधा हुआ छिद्रित।

वेन् (भ्वा० उभ० वेनति-ते) दे० वेण्।

वेन्ना दे० 'वेणा'।

वेप् (भ्वा० आ० वेपते, वेपित) कांपना, हिलना, थरथराना, फरकना—कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी,—भग० ११।३५, रघु० ११।६५, प्र ,थरथराना, धड़कना, कांपना—कु० ५।२७,७४।

वेपथुः [वेप्+अथुच्] थरथरी, कंपकपी, (स्तनों का) हिलना अद्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिक श० ११३०, शि० ९।२२, ७३, रघु० ११। २३, कु० ४।१७, ५।८५।

वेपनम् [वेप्+ल्युट्] थरथरी, कंपकपी।

वेमः, वेमन् (पुं०, नपुं०) [वे+मन्, मनिन् वा] करघा खड्डी महासिवेम्न सहकृत्वरी बहुम्- नै० १।१२, तुरीवेमादिकम् तर्क०।

वेरः, **रम्** [अज्+रन्, वीभाव] 1 शरीर 2 केसर जाफरान 3 बैंगन।

वेरकः (पुं०) गौफ कपूर छोटी आमि का पुष्प **रम्** बेर का फल।

वेल् I (भ्वा० पर० वेलति) 1 जाना, हिलना जुलना 2 हिलना, इधर उधर घूमना, कांपना।
II (चुरा० उभ० वेलयति ते) समय की गणना करना।

वेलम् [वेल्+अच्] उद्यान, वाटिका।

वेला [वेल्+टाप्] 1 समय —वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि —श० ४ 2 ऋतु, अवसर 3 विश्राम का अन्तराल अवकाश 4 लहर, प्रवाह धारा 5 समुद्र तट, समुद्री किनारा वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गा रघु० १३।१२,१५, ११३०, ८।८०, १७।३७, शि० ३।७९ ९।३८ 6 सीमा हदबन्दी 7 भाषण 8 बीमारी 9 सहज मृत्यु 10 मसूड़े। सम० **कूलम्** ताम्रलिप्त नामक जिला, **-मूलम्** समुद्र-तट, **वनम्** समुद्रीकिनारे का जंगल।

वेल्ल् (भ्वा० पर० वेल्लति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 हिलाना, कांपना, इधर उधर फिरना भर्तृ० ११५५ शि० ७।७२।

वेल्लः, वेल्लनम् [वेल्ल्+घञ्, ल्युट् वा] 1 हिलना गतिशील होना 2 (भूमि पर) लोटना।

वेल्लहल [वेल्ल+हल्+अच् पृषो०] लम्पट दुराचारी।

वेल्लिः (स्त्री०) [वेल्ल्+इन्] लता, बेल तु० वल्लि।

वेल्लित (भू० क० कृ०) [वेल्ल्+क्त] 1 कंपायमान थरथराने वाला, हिलाया हुआ 2 टेढ़ा-मेढ़ा **तम्** 1. जाना, चलना-फिरना 2 हिलना।

वेवी (अदा० आ० वेवीते) 1 जाना 2 प्राप्त करना 3. गर्भधारण करना, गर्भवती होना 4 व्याप्त करना 5 डाल देना, फेंकना 6 खाना 7 कामना करना, चाहना (शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग)।

वेशः [विश्+घञ्] 1. प्रवेशद्वार 2 अन्त प्रवेश, पैठना 3 घर, आवासस्थान 4 वेश्याओं का घर, चकला,—तरुणजनसहायश्चिन्त्यतां वेशवासः मृच्छ० ११३१ 5 पोशाक, वस्त्र, कपड़े (इस अर्थ में 'वेष' भी लिखा जाता है) मृगयावेषधारी,—विनीतवेषेण —श० १, कृतवेशे केशवे गीत०११। सम० -दानम् सूरजमुखी फूल,—धारिन् (वि०) छद्मवेषी, कपटरूपधारी—नारी, वनिता वेश्या—मुद्रा० ३।१०—वासः वेश्याओं का घर, चकला।

वेशक [वेश+कन्] घर।

वेशनम् [विश्+ल्युट्] 1 प्रवेश करना, प्रवेशद्वार 2 घर।

वेशन्तः [विश्+झच्] 1 छोटा तालाब, पोखर 2 आग।

वेशरः [वेश+रा+क] खच्चर।

वेश्मन् (नपुं०) [विश्+मनिन्] घर निवासस्थान आवास भवन, महल—रघु० १४।१५ मेघ० २५, मनु० ४।७३ ९।८५। सम० **कर्मन्** (नपुं०) घर बनाना **कलिङ्गः** एक प्रकार की चिड़िया,- **नकुलः** छछून्दर **भूः** (स्त्री०) वह स्थान जहाँ घर बनाना है भवननिर्माण के लिए भूखण्ड।

वेश्यम् [विश ण्यत वेशाय हित वा यत्] वेश्याओं का घर चकला।

वेश्या [वेशेन पण्ययोगेन जीवति वेश्+यत्—टाप्] बाजारू स्त्री रंडी गणिका, रखैल मृच्छ० ११३२, मेघ० ३५ याज्ञ० ११४१। सम० -**आचार्यः** 1 वह पुरुष जो वेश्याओं का स्वामी हो उन्हें रखता हो 2 भड़वा 3 लौंडा गांडू **आश्रयः** वेश्याओं का वासस्थान चकला **गमनम्** व्यभिचार रंडीबाजी **गृहम्** चकला, **जनः** रंडी, **पणः** भोग के लिए स्त्री को दी जाने वाली मजदूरी।

वेसर (पुं०) खच्चर।

वेष दे० वेश।

वेषणम् [विष+ल्युट्] अधिकृत वस्तु स्वामित्व कब्जा।

वेष्ट् (भ्वा० आ० वेष्टते) 1 घेरना, अहाता बनाना घेरा डालना लपेटना 2 चाबी देना मरोड़ना 3 वस्त्र पहनना। प्रेर० (वेष्टयति ते) 1. घेरना 2 घेराबन्दी डालना आ , तह करना परि , सम् -परस्पर तह करना लपेटना, मरोड़ना उमेठना।

वेष्ट [वेष्ठ+घञ्] 1 घेरा घिराव 2 बाड़ा बाड़ 3 पगड़ी 4 गोंद राल रस 5 तारपीन। सम० —**वंशः** एक प्रकार का बांस **सारः** तारपीन।

वेष्टक [वेष्ट्+ण्वुल्] 1 बाड़ा बाड़ 2 लौकी—**कम्** 1 पगड़ी 2 चादर, लबादा 3 गोंद, राल 4 तारपीन।

वेष्टनम् [वेष्ट्+ल्युट्] 1 लपेटना, चारों ओर से घेरना,

घेराबन्दी करना,—अङ्गुलिवेष्टनम्, 1. अंगूठी 2 कुंडलित होना, मोल मरोड़ी लेना, रघु० ४।१८ 3 लिफाफा, लपेटन 4 ओढ़नी, ढकना, सन्दूक 5 पगड़ी, शिरमुकुट—अस्पृष्टालकवेष्टनौ रघु० १।४२, शिरसा वेष्टनशोभिना —८।१२ 6 बाड़ा, घेर - क्रीडाशैल कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीय —मेघ० ७७ 7 पगड़ी, कमरबन्द 8 पट्टी 9 बाहरी कान 10. गुग्गुल 11 नृत्य की विशेष मुद्रा।

वेष्टनकः [वेष्टन + कन्] संभोग के अवसर की विशेष आसनस्थिति।

वेष्टित (भू० क० कृ०) [वेष्ट् + क्त] 1 घिरा हुआ, घेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ बन्द किया हुआ 2. लिपटा हुआ, वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ 3 ठहराया हुआ, रोका हुआ विघ्न डाला हुआ 4 घेराबन्दी किया हुआ।

वेष्पः, वेष्यः [विषे प] जल, पानी।

वेष्या: दे० 'वेश्या'।

वेसरः [वेस् + अरन्] खच्चर — शि० १२।१९।

वेस (श) वारः [वेस् + वृ + अण्] गर्म मसाला, (जीरा राई, मिर्च, अदरक आदि के योग से तैयार किया गया मसाला)।

वेह् (भ्वा० आ० वेहते) दे० वेह्।

वेहत् (स्त्री०) [विशेषेण हन्ति गर्भम् - वि + हन् + अति] बांझ गौ।

वेहारः [= विहार, पृषो०] एक देश का नाम, बिहार।

वेह्ल् (भ्वा० पर० वेह्लति) जाना, हिलना-जुलना।

वै (भ्वा० पर० वायति) 1 सूखना, शुष्क होना 2 म्लान, निढाल, अवसन्न।

वै (अव्य०) [वा + ऐ] स्वीकृति या निश्चयवाचक अव्यय (निःसन्देह, सचमुच, वस्तुतः) परन्तु केवल पूरक के रूप में प्रयुक्त आपः वै नरसूनवः मनु० १।१०, २।२३१, ९।४७, ११।३३ यह कभी कभी सम्बोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा कभी कभी अनुनय को प्रकट करता है।

वैशसिक (वि०) (स्त्री० की) [विशसिक + अण्] वीमे में आक्ष लिया हुआ।

वैकक्षम् [विशेषेण कक्षमिव व्याप्नोति अण्] 1 एक माला या यज्ञोपवीत की भांति एक कन्धे के ऊपर से तथा दूसरे कन्धे के नीचे से धारण की जाती है 2 उत्तरीय वस्त्र, चोगा, ओढ़नी।

वैकक्षकम्, वैकक्षिकम् [वैकक्ष + कन्, ठन् वा] यज्ञोपवीत की भांति बायें कन्धे के ऊपर तथा दायें कन्धे के नीचे से पहनी जाने वाली माला।

वैकटिकः (पुं०) जौहरी।

वैकर्तनः [विकर्तनस्यापत्यम् - अण्] कर्ण का नाम।

वैकल्पम् [विकल्प + अण्] 1. ऐच्छिकता 2 संशय, संदिग्धता 3 अनिश्चय, असमंजस।

वैकल्पिक (वि०) (स्त्री० की) [विकल्प + ठक्] 1 ऐच्छिक 2 संदिग्ध, ससंशय, अनिश्चित, अनिर्णीत।

वैकल्यम् [विकल + ष्यञ्] 1 त्रुटि, कमी, अधूरापन 2 अङ्गभङ्ग, विकलाङ्ग या पंगु होना 3. अक्षमता 4 विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना, 5 अनस्तित्व।

वैकारिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकार + ठक्] 1. विकार-विषयक 2 विकारशील 3 विकृत।

वैकाल [विकाल + अण्] तीसरा पहर, मध्याह्नोत्तर काल, सायंकाल।

वैकालिक (वि०) (स्त्री०—की) **वैकालीन** (वि०) [विकाल + ठक्, ख वा] सायंकालसम्बन्धी या सायंकाल के समय घटित होने वाला।

वैकुण्ठः [विकुण्ठायाः भार्यायाः भवः अण्] 1 विष्णु का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण 3 तुलसी का पौधा, —ठम् 1 विष्णु का स्वर्ग 2 अभ्रक। सम० —चतुर्दशी कार्तिकशुक्ला चौदस, —लोकः विष्णु की दुनिया।

वैकृत (वि०) (स्त्री० —ती) [विकृत + अण्] 1. परिवर्तित 2 बदला हुआ —तम् 1 परिवर्तन, अदल-बदल, हेर फेर 2 अरुचि, जुगुप्सा, घिनौनापन 3 अवस्था या सूरत शक्ल में परिवर्तन, विरूपता आदि नै० ६।५ 4 अपशकुन, कोई भी अनिष्टसूचक घटना —मरुप्रतीपपवनादि वैकृतं प्रेक्ष्य रघु० ११।६२। सम० —विवर्तः दुर्दशा दयनीय दशा, कष्टग्रस्त —वैकृतविवर्तदारुण मा० १।३९।

वैकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकृति + ठक्] 1 परिवर्तित सक्रामित 2 विकृति सम्बन्धी (सांख्य० में)।

वैकृत्यम् [विकृत + ष्यञ्] 1 परिवर्तन, अदल-बदल 2 दुःखद स्थिति दयनीय दशा 3 जुगुप्सा।

वैक्रान्तम् [विक्रान्त्या दीप्यति विक्रान्त + अण्] एक प्रकार का रत्न।

वैक्लव, वैक्लव्यम् [विक्लव + अण, ष्यञ् वा] 1 गड़बड़ी, विक्षोभ घबराहट 2 कुल्हड़ हलचल 3. कष्ट, दुःख, शोक, रंज श० ४।६, वेणी० ५, मृच्छ० ३।

वैखरी [विशेषेण खं राति—रा + क + अण् + ङीप्] 1 स्पष्ट-उच्चारण ध्वनि-सम्पादन दे० कु० २।१७ पर मल्लि० 2 वाक्‌शक्ति 3 वाणी, भाषण।

वैखानस (वि०) (स्त्री०—सी) [वैखानसस्य इदम्-अण्] किसी वानप्रस्थ, संन्यासी, या भिक्षु आदि से सम्बद्ध, वैखानसं किमनया व्रतमाप्रदानाद् व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम् श० १।२७, —सः वैरागी, वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में वास करने वाला ब्राह्मण — रघु० १४।२८, भट्टि० ३।४६।

वैगुण्यम् [विगुण + ष्यञ्] 1. गुण या विशेषण का अभाव

2. सद्गुणों का अभाव, त्रुटि, दोष, कमी 3 गुणों की भिन्नता विविधता, विरोधिता 4 घटियापन, तुच्छता 5 अकुशलता।

वैचक्षण्यम् [विचक्षण + ष्यञ्] कौशल, निपुणता प्रवीणता।

वैचित्त्यम् [विचित्त + ष्यञ्] शोक मानसिक विकलता, अफसोस - मा० ३।१।

वैचित्र्यम् [विचित्र + ष्यञ्] 1 विविधता विभिन्नता 2 बहुविधता 3 अचरज 4 विस्मयोत्पादकता जैसा कि वाक्यवैचित्र्य में काव्य० १० 5 आश्चर्य।

वैजननम् [विजनन + अण्] गर्भ का अन्तिम मास।

वैजयन्त [वैजयन्ती + अण्] 1 इन्द्र का महल 2 इन्द्र का झण्डा 3 ध्वज पताका 4 घर।

वैजयन्तिक [वैजयन्ती + ठक्] झण्डा उठाने वाला।

वैजयन्तिका [वैजयन्ती + कन् + टाप् ह्रस्व] 1 झण्डा पताका (प्राकृ० से भी) सर्वाधारणीय दृश्य मकर केतोर्जगदिह्यवैजयन्तिका कन्यायतनवती मा० १ 2. एक प्रकार की मोतियों की माला।

वैजयन्ती [वि + जि + झच् = विजयन्त + अण् + ङीप्] 1 झंडा पताका – स्मरपरिणाहविजयवैजयन्ती–मा० ३।१९ 2 चिह्न 3 माला हार 4 विष्णु का हार 5 एक शब्दकोश का नाम।

वैजात्यम् [विजाति + ष्यञ्] 1 जाति या प्रकार की भिन्नता 2 जाति या वर्ण की भिन्नता 3 अचरज 4 जातिबहिष्कार – वदनलनी स्वेच्छाचारिता।

वैजिक (वि०) दे० बैजिक।

वैज्ञानिक (वि०) (स्त्री० की) [विज्ञान + ठक्] चतुर कुशल प्रवीण।

वैज्ञाल दे० वैज्ञाल।

वैण [वेणु + अण्] बाँस का काम करने वाला ...

वैणव (वि०) (स्त्री० वी) [वेणु + अण्] 1 बाँस से बना ... 2 बाँस ... — वैणव ... वेणु।

वैणविक [वैणव + ठक्] बाँसुरी बजाने वाला।

वैणविन (पुं०) [वैणव + इनि] शिव की उपाधि।

वैणिक [वीणा + ठक्] वीणा बजाने वाला।

वैणुक [वेणु + अण्] बाँसुरी बजाने वाला बाँसुरी बजाने वाला, – कम् अंकुश दे० अंकुश।

वैतंसिक [वितंस + ठक्] मांस विक्रेता।

वैतण्डिक [वितण्डा + ठक्] वितण्डावादी व्यर्थ विवाद करने वाला छिद्रान्वेषी।

वैतनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वेतन + ठक्] वेतन से निर्वाह करने वाला —कः 1 वेतन लेकर काम करने वाला श्रमिक 2 वेतन भोगी (कर्मचारी)।

वैतरणि, - णी (स्त्री०) [वितरणेन दानेन लभ्यते — वितरण + अण् + ङीप्, पक्षे पृषो० ह्रस्व] 1 नरक की नदी का नाम 2 कलिङ्ग देश की नदी का नाम।

वैतस (वि०) (स्त्री० सी) [वेतस + अण्] 1 बैंत से सम्बन्ध रखने वाला 2 नरकुल जैसा अर्थात् अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के सामने घुटने टेक देने वाला – जैसा कि वैतसी वृत्ति' रघु० ४।३५, पञ्च० ३।१९।

वैतान (वि०) (स्त्री० नी) [वितान + अण्] यज्ञीय, पवित्र वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु श० ४।७, – नम् 1 यज्ञीय कार्य 2 यज्ञीय आहुति।

वैतानिक (वि०) (स्त्री० – की) [वितान + ठक्] दे० वैतान।

वैतालिक [विविधमन्तालमत्ति व्यवहरति – ठक्] 1 भाट, चारण 2 जादूगर बाजीगर, विशेषकर वह जो वेताल का भक्त हो।

वैत्रक (वि०, (स्त्री० की) [वेत्र + वुञ्] बैंत से युक्त नरकुल का।

वैद [वेद + अण्] बुद्धिमान् मनुष्य, विद्वान् पुरुष।

वैदग्ध्यम्, वैदग्धी, वैदग्ध्यम् [विदग्ध + अण् — वैदग्ध + ङीप् विदग्ध + ष्यञ्] 1 कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता – अहो वैदग्ध्यम् मा० १ प्रकर्षविन्यास-वैदग्ध्यनिधि – वाम० शि० ४।२६ 2 कमस्थापन में कौशल सौन्दर्य मा० १।३७ 3 बुद्धिमत्ता स्फूर्ति, चतुराई रस० २ बुद्धि।

वैदर्भ [विदर्भ + अण्] विदर्भ देश का राजा —र्भी 1 दमयन्ती 2 रुक्मिणी 3 रचना की विशेष शैली मा० द० में दी गई परिभाषा —माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका। अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥ ६२६ दण्डी ने बड़ी सूक्ष्मता पूर्वक गौडी रीति से इसकी विभिन्नता दर्शायी है— दे० काव्या० १।४०—५३।

वैदल (वि०) (स्त्री० ली) [विदलस्य विकारः विदल + अण्] 1 बैंत या टहनियों से बनाया हुआ —लः 1 एक प्रकार की रोटी 2 कोई भी दाल का अनाज — लम् 1 ... का कमण्डलु भिक्षापात्र 2 बाँस या टहनियों की बनी चटाई या आसन।

वैदिक (वि०) (स्त्री० की) [वेद वेदाध्यीत वा ठञ् वेदेषु विहित वेद + ठक्] 1 वेदों से व्युत्पन्न या वेदों के समनुरूप वेदविषयक 2 पवित्र वेदविहित, धर्मशास्त्रा कु० ५।७३ — कः वेदों में निष्णात ब्राह्मण। सम० पाशः वेद का अल्पज्ञान रखने वाला कठज्ञानी, जिसे वेद का अधूरा ज्ञान हो।

वैदुषी (स्त्री०) **वैदुष्यम्** [विद्वस्+अण्+ङीप्, विद्वस् ष्यञ्] ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता।

वैदूर्य (वि०) (स्त्री०—री,—र्यी) [विदूर+ष्यञ्] विदूर से उत्पन्न या लाया गया, र्यम् वैदूर्य मणि, नीलम —कु० ७।१०, शि० ३।४५।

वैदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [विदेश+ठञ्] दूसरे देश से संबंध रखने वाला, अन्य देश का, और देशों से लाया हुआ,—कः अन्य देश का व्यक्ति विदेशी।

वैदेश्यम् [विदेश+ष्यञ्] विदेशीपन, विदेशी होना।

वैदेहः [विदेह+अण्] 1 विदेह देश का राजा 2 विदेह का रहने वाला 3 व्यापारी वैश्य 4 ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान मनु० १०।११, हा (पु० ब० व०) विदेह देश के राष्ट्रजन —ही सीता —वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे रघु० १४।३३ (यहाँ 'वैदेही' शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व कर दिया गया है)।

वैदेहकः [वैदेह+कन्] 1 व्यापारी 2 वैदेह (४)।

वैदेहिकः [विदेह+ठक्] सौदागर।

वैद्य (वि०) (स्त्री०—द्यी) [वेद+यत्] 1 वेद सम्बन्धी आध्यात्मिक 2 आयुर्वेद सम्बन्धी आयुर्वेद विषयक द्यः [विद्या अस्ति अस्य विद्या+अण्] 1 विद्वान् पुरुष, विद्यावान्, पण्डित 2 आयुर्वेदाचार्य, चिकित्सक वैद्ययत्नपरिभाविनं गदं न प्रदीप इव वायुमत्यगात् रघु० १९।५३, वैद्यानामातुरः श्रेयान् —सुभा० 2. वैद्य जाति का पुरुष, जो वर्णसंकर समझा जाता है (वैश्य स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान)। सम० क्रिया वैद्य का व्यवसाय चिकित्सक के रूप में अभ्यास, नाथ 1 धन्वन्तरि 2 शिव।

वैद्यक [वैद्य+कन्] वैद्य चिकित्सक, कम् चिकित्सा विज्ञान।

वैद्युत (वि०) (स्त्री०—ती) [विद्युत+अण्] बिजली से सम्बद्ध या उत्पन्न बिजली वृक्षस्य वैद्युत इवाग्निरुपस्थितनाशम् विक्रम० ४।१०, उत्तर० ५।१३। सम० अग्नि, अनलः वह्निः बिजली की आग।

वैध (वि०) (स्त्री०—धी), **वैधिक** (वि०) (स्त्री०—की) [विधि+अण्, ठक् वा] 1 नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, निश्चित, कर्मकाण्डविषयक 2 कानूनी विधि या कानून सम्मत।

वैधर्म्यम् [विधर्म+ष्यञ्] 1 असमानता, भिन्नता 2 लक्षण गुणों का अन्तर 3 कर्तव्य या आचार का अन्तर 4 वैपरीत्य 5 अवैधता अनौचित्य, अन्याय 6 पाखण्ड।

वैधवेयः [विधवा+ढक्] विधवा का पुत्र।

वैधव्यम् [विधवा+ष्यञ्] विधवापन, कु० ४।१, मालवि० ५।

वैधुर्यम् [विधुर+ष्यञ्] 1 शोकावस्था 2 विक्षोभ थरथरी, सिहरन।

वैधेय (वि०) (स्त्री०—यी) [विधि+ढक्] 1. नियमानुकूल, विहित 2. मूर्ख, बुद्धू, जड़, यः मूढ, जड़मति—प्रकृपत्येव वैधेय श० २ विक्रम० २।

वैनतेयः [विनता+ढक्] 1 गरुड़ — वैनतेय इव विनतानन्दन —का० रघु० ११।५९ १६।८८, भग० १०।३० 2 अरुण।

वैनयिक (वि०) (स्त्री० -की) [विनय+ठक्] 1 शिष्टता सौजन्य सदाचरण या अनुशासनसम्बन्धी 2 शिष्टाचार का व्यवहार करने वाला क सामरिक रथ।

वैनायक (वि०) (स्त्री० की) [विनायक+अण्] गणेशसम्बन्धी मा० १।१।

वैनाशिक [विनाशं खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थ विनाश ठक्] 1 बौद्ध सम्प्रदाय के दर्शन-सिद्धान्त 2 उस सम्प्रदाय का अनुयायी।

वैनाशिक [विनाश+ठक्] 1 दास 2 मकड़ी 3 ज्योतिषी 4 बौद्धों के सिद्धान्त ५ उन सिद्धान्तों का अनुयायी।

वैनीतक दे० विनीतक।

वैपरीत्यम् [विपरीत+ष्यञ्] 1 विरोधिता विरोध 2 असंगति।

वैपुल्यम् [विपुल+ष्यञ्] 1 विस्तार, विशालता 2 पुष्कलता, बहुतायत।

वैफल्यम् [विफल+ष्यञ्] निरर्थकता विफलता।

वैबोधिक [विबोध+ठक्] 1 चौकीदार 2 विशेषकर वह जो रात में सोने वालों को पहरा देते समय समय की घोषणा करके जगाता रहता है कि० ५।७४

वैभवम् [विभु+अण्] 1 बड़प्पन यश महिमा, चमकदमक ठाठ-बाट दौलत 2 शक्ति ताकत कि० १२।३।

वैभाषिक (वि०) (स्त्री० की) [विभाषा+ठक्] ऐच्छिक, वैकल्पिक।

वैभ्रम् (नपुं०) विष्णु का वैकुण्ठ।

वैभ्राजम् [विभ्राज+अण्] स्वर्गीय उपवन या उद्यान।

वैमत्यम् [विमत+ष्यञ्] 1. मतभेद अनबन 2 नापसंदगी अरुचि।

वैमनस्यम् [विमनस्+ष्यञ्] 1 मन का उचाटपना, मानसिक अवसाद शोक उदासी -श० ६ 2. रोग।

वैमात्र, **वैमात्रेय** [विमातृ+अण्, ढक् वा] सौतेली माँ का बेटा।

वैमात्रा, **वैमात्री**, **वैमात्रेयी** [वैमात्र+टाप्, ङीप् वा, वैमात्रेय+ङीप्] सौतेली माँ की बेटी।

वैमानिक (वि०) (स्त्री० की) [विमान+ठक्] देवयान में आसीन,—कः गगनविहारी।

वैमुख्यम् [विमुख+ष्यञ्] 1. मुंह मोड़ना, पलायन, प्रत्यावर्तन 2 अरुचि, जुगुप्सा ।

वैमेयः [विमेय+अण्] बदला, विनिमय ।

वैयग्रम्, वैयग्र्यम् [व्यग्र+अण्, ष्यञ् वा] 1 व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट 2 अनन्य भक्ति, तल्लीनता महावी० ७।३८ ।

वैयर्थ्यम् [व्यर्थ+ष्यञ्] व्यर्थता, अनुत्पादकता ।

वैयधिकरण्यम् [व्यधिकरण+ष्यञ्] भिन्न स्थानों में होने का भाव, दे० 'व्यधिकरण' ।

वैयाकरण (वि०) (स्त्री० णी) [व्याकरणमधीते वेत्ति वा अण्] व्याकरणविषयक व्याकरणसम्बन्धी,—णः व्याकरण जानने वाला वैयाकरणकिरातादपशब्दमृगाः क्व यान्तु संत्रस्ताः सुभा० । सम०—पाशः जिसे व्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो —भार्यः जिसकी पत्नी व्याकरण को जानने वाली हो ।

वैयाघ्र (वि०) (स्त्री० घ्री) [व्याघ्र+अञ्] 1 चीते की तरह का 2 चीते की खाल से ढका हुआ —घ्रः चीते की खाल से ढकी हुई गाड़ी ।

वैयात्यम् [वियात+ष्यञ्] 1 साहस, अविनय, निर्लज्जता अन्यदाभूषणं पुंसः क्षमा लज्जेव योषिताम् पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव—शि० २।४४ 2 उजड्डपन, अक्खड़पन ।

वैयासिकः [व्यासस्य अपत्यम्, व्यास+इञ्, अकङ् आदेशः, यकारात् पूर्वं ऐच्] व्यास का पुत्र ।

वैरम् [वीरस्य भावः—अण्] 1 विरोध, शत्रुता, दुश्मनी वैमनस्य, द्रोह, प्रतिपक्ष, कलह वालेन वैराण्यपि यान्ति नाशनम् सुभा०, अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम् श० ५।२३, 'वैरभाव में परिणत हो जाता है,' विधाय वैरं सामर्षे नरोऽरौ य उदासते प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम् शि० २।४२ 2 घृणा, प्रतिहिंसा 3 शूरवीरता पराक्रम । सम० —अनुबन्धः शत्रुता का आरम्भ, अनुबन्धिन् (वि०) शत्रुता की ओर ले जाने वाला —आतङ्कः अर्जुनवृक्ष —आनृण्यम्, —उद्धारः, —निर्यातनम्, —प्रतिक्रिया —प्रतीकारः —यातना, —शुद्धि (स्त्री०) —साधनम् शत्रुता का बदला बदला देना, प्रतिहिंसा कर कार, —कृत् (पु०) शत्रु —भावः शत्रुतापूर्ण स्वभाव —रक्षिन् (वि०) शत्रुता का निवारण करने वाला ।

वैरक्तम्,—क्त्यम् [विरक्त+अण्, ष्यञ् वा] 1 सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव 2 अप्रसन्नता, नापसन्दगी, अरुचि ।

वैरङ्गिकः [विरङ्गम् विरागं नित्यमर्हति ठक्] जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, संन्यासी, वैरागी ।

वैरल्यम् [विरल+ष्यञ्] 1 न्यूनता, विरलता 2 ढीलापन 3 मृदुता ।

वैराग्यम् दे० 'वैराग्यम्' ।

वैरागिकः, वैरागिन् (पु०) [विराग+ठक्, विराग+अण्+इनि] वह संन्यासी जिसने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है ।

वैराग्यम् [विरागस्य भावः ष्यञ्] 1 सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बंधनों से उदासीनता, विरक्ति भग० ६।३५, १३।८ 2 असन्तुष्टि, अप्रसन्नता असंतोष काम प्रकृतिवैराग्यं सद्यः शमयितुं क्षमः रघु० १७।५५ 3 अरुचि, नापसन्दगी 4 रंज, शोक, अफसोस ।

वैराज (वि०) (स्त्री०—जी) [विराज्+अण्] ब्रह्मासंबंधी—उत्तर० २ ।

वैराट (वि०) (स्त्री० टी) [विराट+अण्] विराट संबंधी,—टः एक प्रकार का मिट्टी का कीड़ा, इन्द्रगोप ।

वैरिन् (वि०) [वैर+इनि] विरोधी, शत्रुतापूर्ण (पु०) शत्रु,—शौर्यं वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम् भर्तृ० २।३९, भग० ३।३७, रघु० १२।१०४ ।

वैरूप्यम् [विरूप+ष्यञ्] 1 विरूपता, कुरूपता रघु० १२।४० 2 रूपों की विभिन्नता या वैविध्य ।

वैरोचनः, वैरोचनिः, वैरोचि [विरोचनस्यापत्यम् अण्, इञ् वा, विरोच+यञ्] विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण ।

वैलक्षण्यम् [विलक्षणस्य भावः—ष्यञ्] 1 आश्चर्य 2 वैपरीत्य, विरोध 3 अन्तर, भेद ।

वैलक्ष्यम् [विलक्ष+ष्यञ्] 1 उलझन, गड़बड़ी 2 अस्वाभाविकता, कृत्रिमता वैलक्ष्यस्मितम् 'कृत्रिम या बलपूर्वक की गई मुस्कान 3 लज्जा 4 वैपरीत्य, व्युत्क्रम ।

वैलोम्यम् [विलोम+ष्यञ्] विरोध व्युत्क्रम, वैपरीत्य ।

वैल्व (वि०) दे० 'बैल्व' ।

वैवधिकः [विवध+ठक्] 1 फेरी वाला आवाज लगा कर बचने वाला 2 (बहंगी में रख कर) भार ढोने वाला ।

वैवर्ण्यम् [विवर्णस्य भावः—ष्यञ्] 1 रंग या चेहरे की आभा का परिवर्तन, फीकापन, निष्प्रभता 2 विभिन्नता, विविधता 3 जाति से विचलना ।

वैवस्वतः [विवस्वतोऽपत्यम् अण्] 1 सातवाँ मनु०, जो वर्तमान युग का अधिष्ठाता है मनु के नीचे दे० वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम् रघु० १।११ उत्तर० ६।१८ 2 यम रघु० १५।४५ 3 शनिग्रह —तम् विवस्वान् के पुत्र सातवें मनु द्वारा अधिष्ठित वर्तमान युग या मन्वन्तर ।

वैवस्वती [वैवस्वत+ङीप्] 1 दक्षिण दिशा 2 यमुना नदी ।

वैवाहिक (वि०) (स्त्री० की) [विवाह+ठञ्] विवाहसंबंधी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला कु० ७।२,—कः,—कम् विवाह, शादी, -कः पुत्र वधू का श्वसुर, या दामाद का श्वसुर।

वैशद्यम् [विशद+ष्यञ्] 1 स्वच्छता, निर्मलता (आल०) 2. स्पष्टता 3 सफेदी 4 शान्ति, (मन की) स्वस्थता।

वैशसम् [विशस+अण्] 1. विनाश, हत्या, वध कु० ४।३१, उत्तर० ४।२४, ६।४० 2 दुःख सन्ताप, पीड़ा, कष्ट, कठिनाई—उपरोधवैशसम्—मुद्रा० २ मा० ९।३५।

वैशस्त्रम् [विशस्त्र+अण्] 1 असुरक्षा 2. राजकीय शासन।

वैशाखः [विशाख+अण्] 1 चान्द्रवर्ष का दूसरा महीना (अप्रैल-मई) 2. रई का डण्डा दुततरकरवशा क्षिप्तवैशाखशैले कलशिमुदधिगुर्वीं वल्लवा लोडयन्ति—शि० ११।८, —खम् बाण चलाते समय की एक मुद्रा, दे० 'विशाख' —खी वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशिक (वि०) [वेशेन जीवति वेश+ठक्] वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त—वैशिकीं कलाम् मृच्छ० ११३, वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त कलाएँ,—कः वो वेश्याओं के साहचर्य में रहता है, शृङ्गार-साहित्य में पाया जाने वाला एक नायक, —कम् वेश्यावृत्ति, वेश्याओं की कलाएँ।

वैशिष्ट्यम् [विशिष्ट+ष्यञ्] 1 भेद, अन्तर 2 विशिष्टता, विशेषता, अनूठापन—वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत्सार्थसंभवा सा० द० २० 3 श्रेष्ठता— सा० द० ७८ 4 विशिष्टस्वरूपसम्पन्नता।

वैशेषिक (वि०) (स्त्री०—की) [विशेष पदार्थभेदमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः—विशेष+ठक्] 1 विशेषता युक्त 2 वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों से संबंध रखने वाला —कम् छः हिन्दूदर्शनशास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे, गौतम के न्यायदर्शन से इसकी भिन्नता इस बात में है कि इसमें सोलह के बजाय केवल सात तत्त्वों का विवेचन है तथा 'विशेष' पर विशेष बल दिया गया है।

वैशेष्यम् [विशेष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोत्तमता।

वैश्यः [विश+ष्यञ्] तृतीय वर्ण का पुरुष, इसका व्यवसाय व्यापार और कृषि है विशत्याशु पशुम्यश्च कृष्यादानरुचिः शुचिः, वेदाध्ययनसम्पन्नः स वैश्य इति संज्ञितः पद्म०। सम०—कर्मन् (नपुं०) —वृत्तिः (स्त्री०) वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, खेती आदि।

वैश्रवणः [विश्रवणस्यापत्यम् अण्] 1 धन का स्वामी कुबेर,—विभाति यस्यां ललितालकायां मनोहरा वैश्रवणस्य लक्ष्मीः भामि० २।१० 2. रावण का नाम। सम०—आलयः,—आवासः 1 कुबेर का आवासस्थल 2 वट का वृक्ष,—उदयः वड का पेड़।

वैश्वदेव (वि०) (स्त्री०—वी) [विश्वदेव+अण्] विश्वेदेवों से सम्बन्ध रखने वाला, —वम् 1 विश्वेदेवों को प्रस्तुत किया गया उपहार 2 सभी देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वदेव यज्ञ में आहुति देकर)।

वैश्वानरः [विश्वानर+अण्] 1 अग्नि का विशेषण,—स्मरत्वाण्डवरङ्गताण्डवनटो दूरेऽस्तु वैश्वानरः भामि० ११५७ 2. जठराग्नि अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् (भग०) 3 परमात्मा।

वैश्वासिक (वि०) (स्त्री०—की) [विश्वास+ठक्] विश्वसनीय, गोपनीय।

वैषम्यम् [विषम+ष्यञ्] 1 असमता 2 ऊबड़खाबड़पना, कठोरता 3 असमानता 4 अन्याय 5 कठिनाई, विपत्ति, संकट 6 एकाकीपन।

वैषयिक (वि०) (स्त्री०—की) [विषय+ठक्] 1 किसी पदार्थ-सम्बन्धी 2 विषयों से सम्बन्ध रखने वाला, वासनात्मक, शारीरिक —कः कामी, लम्पट।

वैष्टुतम् [विष्टुत्या निर्वृत्तम् विष्टुति+अण्] भस्मीकृत आहुतियों की राख।

वैष्णुः [विश+ष्णुन्, वृद्धि] 1 अन्तरिक्ष आकाश 2 हवा वायु 3 लोक, विश्व का एक प्रभाग।

वैष्णव (वि०) (स्त्री०—वी) [विष्णु+अण्] 1 विष्णु सम्बन्धी, रघु० ११।८५ 2 विष्णु की पूजा करने वाला, —वः तीन महत्त्वपूर्ण आधुनिक हिन्दू सम्प्रदायों में से एक, दूसरे दो हैं शैव और शाक्त, —वम् भस्मीकृत आहुतियों की राख। सम०—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वैसारिणः [विशेषेण सरति विसारी मत्स्य स एव विसारिन् अण्] मछली।

वैहायस (वि०) (स्त्री०—सी) [विहायस्+अण्] हवा में विद्यमान, हवाई।

वैहार्य (वि०) [विशेषेण ह्रियते—वि+हृ+ण्यत्+अण्] जिससे हंसी दिल्लगी की जाय, जिसे उपहास का विषय बनाया जाय (जैसे पत्नी का भाई या ससुराल का कोई रिश्तेदार)।

वैहासिकः [विहास करोति-विहास+ठक्] हंसोकड़ा, विदूषक।

वोड्रः [वा+उड्रः] 1 एक प्रकार का साँप 2 एक तरह की मछली।

वोड्री [वोड्र+ङीष्] पण का चौथा भाग।

वोढृ (पुं०) [वह्+तृच्] 1 ढोने वाला, कुली 2 नेता

3. पति 4 साँड 5 रथवान् 6 खींचने वाला घोड़ा।

वोण्टः (पुं०) डंठल, वृन्त।

वोद (वि०) [अवसिक्तमुदकं यत्र-प्रा० ब०, उदकस्य उदादेशः, भागुरिमते अकार लोप:-] तर, गीला, आर्द्र।

वोदालः [वोद आर्द्रं सत् अलति वोद+अल्+अच्] अर्मन मछली।

वोर (ल) कः [अवनतः लेखनकाले उरो यस्य-प्रा० ब०, कप्, अवस्य अकारलोपः, पृषो० मस्य वः पक्षे रलयोरभेदः] लिपिकार, लेखक।

वोरटः [वा इति रटन्ति भृङ्गा यत्र-वा+रट्+क] कुन्द का एक भेद।

वोलः [वुल्+अच्] गुग्गुल, रसगंध।

वोल्लाहः (पुं०) [illegible] का घोड़ा।

वौढ (वि०) दे० 'वोढ'।

वौषट् (अव्य०) [उह्यतेऽनेन हविः [illegible]] देवों को आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला वषट्कार या मांगलिक शब्द।

व्यंसकः [विशिष्टः अंसो यस्य प्रा० ब०, [illegible]।

व्यंशुक (वि०) [विगतम् अंशुकं यस्य-प्रा० ब०, वस्त्रहीन, विवस्त्र, नंगा-कि० ९।४४

व्यंसक [वि+अंस+ण्वुल्] धूर्त, ठग जैसे कि मयूरव्यंसक वचन मोर धूर्तमयूर।

व्यंसनम् [वि+अंस्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना।

व्यक्त (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज्+क्त] 1 प्रकटीकृत, प्रदर्शित 2 विकसित, रचित कु० २।११ 3 स्पष्ट, प्रकट, साफ, सरल, भिन्न, विशद रूप से विद्यमान 4 विशिष्ट, विदित, विख्यात 5 अकेला मनुष्य 6 बुद्धिमान्, विद्वान् –क्तम् (अव्य०) स्पष्ट, स्पष्ट रूप से, साफतौर पर, निश्चित रूप से। सम० –गणितम् अंकगणित, –दृष्टार्थः वह साक्षी जिसने घटना अपनी आँखों से देखी है, गवाह, –राशिः ज्ञात अंक, –रूपः विष्णु का विशेषण, –विक्रम (वि०) शक्ति प्रदर्शित करने वाला।

व्यक्तिः (स्त्री०) [वि+अञ्ज्+क्तिन्] 1 प्रकटीकरण, दृश्यमानता, विशद प्रत्यक्षज्ञान –रात्रः समकमेवाम्बरात् [illegible] व्यक्तिर्भविष्यति–मालवि० 1 स्नेहव्यक्ति मेघ० १२ 2 दृश्यमान सूरत, स्पष्टता, विशदता श० ७।८ 3 भेद, विवेचन, –न सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः –रघु० १।१० 4 वास्तविक रूप या प्रकृति, सच्चरित्र,–न हि ते भगवान् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः –भग० १०।१४ 5 वैयक्तिकता (विप० जाति) भग० ८।१८ 6 अकेला मनुष्य, पुरुष 7 (व्या० में) लिंग 8 विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय।

व्यग्र (वि०) [विरुद्धम् अग्रति वि+अग्+रक्] 1 व्याकुल, विस्मित, उचाट 2 आतङ्कित, भयभीत 3 किसी कार्य में साभिप्राय व्यस्त (अधि० या करण० के साथ अथवा समास में) रघु० १७।२७, महावी० १।१३, ४।२८, कु० ७।२, उत्तर० १।२३, मालवि० १।१२३ शि० २।७९।

व्यङ्ग (वि०) [विगतं वा अङ्गं यस्य प्रा० ब०] 1. देहहीन 2 अङ्गहीन, विकल, विकलाङ्ग, अपाहज, लुञ्जा –गः 1 लुञ्जा 2 मेंढक 3 गाल पर पड़े काले धब्बे।

व्यङ्गुलम् (नपुं०) लम्बाई का अत्यन्त छोटा माप, अंगुल का ६० वां अंश।

व्यङ्ग्य (वि०) [वि+अञ्ज्+ण्यत्] 1 व्यञ्जना शक्ति द्वारा ध्वनित, परोक्षसङ्केत द्वारा सूचित 2 ध्वनित (अर्थ), –ग्यम् उपलक्षित अर्थ, व्यङ्ग्योक्ति, परोक्ष सङ्केत (तुल० वाच्य मुख्यार्थ और लक्ष्य गौण या संकेतित अर्थ) –इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः काव्य० १।

व्यच् (तुदा० पर० विचति, कर्मवा० विच्यते) ठगना, धोखा देना, चाल चलना।

व्यजः [वि+अज्+घञ्] पंखा।

व्यजनम् [वि+अज्+ल्युट्] पंखा –निर्वातिव्यजनम्–हि० [illegible] १६०, रघु० ८।४०, १०।५२ [illegible]।

व्यञ्जक (वि०) (स्त्री० –ञ्जिका) [वि+अञ्ज्+ण्वुल्] 1 स्पष्ट करने वाला, संकेतक, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला 2 अर्थ को उपलक्षित या ध्वनित करने वाला (शब्द) (तुल० वाचक और लाक्षणिक), –कः 1 नाटकीय हावभाव, आन्तरिक भावों को उपयुक्त हावभाव द्वारा प्रकट करने वाला बाह्य संकेत 2 संकेत, प्रतीक।

व्यञ्जनम् [वि+अञ्ज्+ल्युट्] 1 स्पष्ट करना, संकेत करना, प्रकट करना 2 चिह्न, निशान, संकेत 3 स्मारक [illegible] ९ 4 उपवेश, परिधान–शि० २।५६, तपस्विव्यञ्जनोपेताः 5 व्यञ्जन अक्षर 6. लिङ्गद्योतक चिह्न अर्थात् स्त्री या पुरुष का परिचायक अङ्ग 7 अधिकार-चिह्न, बिल्ला 8 वयस्कता का चिह्न 9 दाढ़ी 10 अङ्ग, सदस्य 11 मिर्च मसाला, चटनी, सिझाई हुई वस्तु –मं० १६।१०४ 12 तीनों शब्दशक्तियों में अन्तिम जिससे अर्थ उपलक्षित या ध्वनित होता है, दे० व्यञ्जना (इस (४) अर्थ में यह 'व्यञ्जना' भी लिखा जाता है)। सम० –[illegible] (वि०) वह जिसके पश्चात् व्यञ्जन अक्षर आता हो, –सन्धिः व्यञ्जन वर्णों का संयोग या संश्लेष।

व्यञ्जना दे० ऊ० 'व्यञ्जन' (12)।

व्यञ्जित (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज्+क्त] 1 साफ किया गया, प्रकट किया गया, संकेत किया गया

2 चिह्नित, भिन्न, विभिन्न 3 सुझाव दिया गया, ध्वनित।

व्यतिक्रमकः व्यतिक्रमणः [क्रम्+ण्वुल्, ल्युट् वा, विशेषेण न क्रम्यते] अरण्ड का पेड़।

व्यतिकरः [वि+अति+कृ+अप्] 1 मिश्रण, अन्त मिश्रण, इकट्ठा मिला देना तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वो—रघु० ८।९५, व्यतिकर इव भीमस्तामसो वैद्युतश्च—उत्तर० ५।१२, मा० ९।५२ 2 सम्पर्क, मिलाप, सम्मिलन मालवि० १।४, शि० ४।५३, ७।२८ 3 रचना कु० ५।८५ 5 घटना सम्भूति, वृत्तान्त, वस्तु, मामला एवंविधे व्यतिकरे —'ऐसी बात होने पर' 6 अवसर 7 मुसीबत, संकट 8 पारस्परिक सम्बन्ध पारस्परिकता 9 विनिमय, अदलाबदली।

व्यतिकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+अति+कृ+क्त] 1 मिला हुआ, मिश्रित 2 मयुक्त।

व्यतिक्रमः [वि+अति+क्रम्+घञ्] 1 अतिक्रमण, विचलन भटकना 2 उल्लंघन, भंग, अननुष्ठान —यथा 'समय' व्यतिक्रम—रघु० १।७९ 3 अवहेलना उपेक्षा, भूल 4 वैपरीत्य, उलट व्यत्यास 5. पाप दुर्व्यसन जुर्म 6 आपत्काल दुर्भाग्य।

व्यतिक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+अति क्रम्+क्त] 1 पार किया गया, अतिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया, उपेक्षित 2 औंधा, विपर्यस्त 3 बीता हुआ, गुजरा हुआ (समय)।

व्यतिरिक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+रिच्+क्त] 1 वियुक्त, भिन्न अव्यतिरिक्तोयमस्मच्छरीरात् —का०, कु० १।३१, ५।२२ 2 आगे बढ़ने वाला, सर्वोत्कृष्ट होने वाला, आगे निकल जाने वाला 3 प्रत्याहृत, रोका हुआ 4 अलगाया हुआ।

व्यतिरेकः [वि+अति+रिच्+घञ्] 1 भेद, अन्तर 2 वियोग 3 निष्कासन अपवर्जन 4 श्रेष्ठता, आगे बढ़ जाना, आगे निकल जाना 5 वैषम्य, असमानता 6 (तर्क० में) अनन्वय (विप० अन्वय) उदा० 'यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमो नास्ति' यह व्यतिरेक व्याप्ति का उदाहरण है 7. (अलं० में) एक अर्थालंकार जिसमें किन्हीं विशेष दशाओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतर बताया जाता है—उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेक स एव सः काव्य० १०।

व्यतिरेकिन् (वि०) [व्यतिरेक+इनि] 1 भिन्न 2 आगे बढ़ जाने वाला आगे निकल जाने वाला 3 बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला 4 अभाव या अनस्तित्व दर्शाने वाला जैसा कि 'व्यतिरेकिलिङ्गम्' में।

व्यतिषक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+सञ्ज्+क्त] 1 आपस में मिला हुआ, पारस्परिक सम्बन्धयुक्त, शृंखलाबद्ध या एकत्र जुड़ा हुआ 2. अन्त मिश्रित 3 अन्तर्जातीय विवाह करने वाला।

व्यतिषङ्गः [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1 पारस्परिक सबन्ध, अन्योन्यसम्बन्ध 2 अन्त मिश्रण 3 संयोग, या मिलाप।

व्यति (ती) हारः [वि+अति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य इकारस्य दीर्घः] 1 अदल-बदल, विनिमय 2 पारस्परिकता, अन्त परिवर्तन रघु० १०।९३।

व्यतीत (भू० क० कृ०) [वि+अति+इ+क्त] 1 गुजरा हुआ, गया हुआ बीता हुआ पार किया हुआ रघु० १५।१४ 2 मृत 3 छोड़ा हुआ परित्यक्त, विसर्जित 4 अवज्ञात।

व्यतीपातः [वि+अति+पत्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 समूचा प्रयाण, सम्पूर्णविचलन 2 भारी उत्पात, भारी संकट को सूचित करने वाला अपशकुन 3 अनादर तिरस्कार।

व्यत्ययः [वि+अति+इ+अच्] 1 पार करना 2 विरोध, वैपरीत्य 3 व्यत्यस्त क्रम व्युत्क्रान्ति 4 अन्त परिवर्तन रूपान्तरण 5 अवरोध अड़चन।

व्यत्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+अस्+क्त] 1 व्युत्क्रान्त, विपर्यस्त 2 विपरीत, विरोधी 3 असंगत व्यत्यस्तलपति भामि० २।८४ 4 तिरछे रखे हुए, इस प्रकार रक्खी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरी को काटती हो व्यत्यस्त पाद, व्यत्यस्त भुज आदि।

व्यत्यासः [वि+अति+अस्+घञ्] 1 व्युत्क्रान्त स्थिति या क्रम 2 विरोध, वैपरीत्य।

व्यथ् (भ्वा० आ० व्यथते, व्यथित) 1 शोकान्वित होना, पीड़ित होना, कष्टग्रस्त होना, विक्षुब्ध या अशांत होना —विश्वम्भराऽपि नाम व्यथते इति जितमपत्यस्नेहेन उत्तर० ७, न विव्यथे तस्य मन कि० ११२ २४ 2 आन्दोलित होना, डोलायमान होना—कि० ५।११ 3 कांपना 4 भयभीत होना 5 चूकना, चूक होना, प्रेर० (व्यथयति—ते) पीड़ा देना, कष्ट देना, नाराज करना दुःखी करना उत्तर० १।२८, प्र अत्यन्त क्रुद्ध होना—भग० ११।२०।

व्यथक (वि०) (स्त्री० थिका) [व्यथ्+णिच्+ण्वुल्] पीड़ाजनक, दुःखद, कष्टकर कि० २।४।

व्यथनम् [व्यथ्+ल्युट्] पीड़ा देना, सताना।

व्यथा [व्यथ्+अङ्+टाप्] 1 पीड़ा, वेदना, आधि—ता च व्यथा प्रथयकण्टकतामवाप्य—उत्तर० ४।२३ १।१२ 2 भय, आतंक, चिन्ता —स्वमन्त्रिणमनक्षमात्म तवृद्व्यथाम् रघु० ११।६२ 3 विक्षोभ, अशान्ति 4 रोग।

व्यथित (भू० क० कृ०) [व्यथ् + क्त] 1 कष्टग्रस्त, दुःखी, पीडित 2 आतङ्कित 3 विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन।

व्यध् (दिवा० पर० विध्यति, विद्ध) 1 बींधना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना छुरा भोंकना, मार डालना —अक्षिताराम् विव्याध द्विषतः म मर्माणि —शि० १९।९९, विद्धमात्र —रघु० ५।५१ ९।६०, १४।७०, भट्टि० ५।५२, ९।६६, १५।६९ 2. सुराख करना, छिद्र करना, आरपार बींधना 3 खोदना गड्ढा करना, अनु—, 1 बींधना, चोट पहुँचाना घायल करना 2 गूँथना, घेरना 3 जड़ना खचित करना—दे० अनुविद्ध अप—, 1 फेंकना डालना, उछालना —महावी० २।२३, रघु० १०।४८ 2 बींधना हृदयमग्नौ मे पक्ष्मलाक्ष्या कटाक्षैरपह्नुतमपविद्ध पीतमुन्मूलितं च —मा० १।२८ 3 त्यागना, परित्यक्त करना आ—, 1 बींधना 2 फेंकना, डालना, दे० आविद्ध, परि—, सम्—, बींधना, घायल करना।

व्यधः [व्यध् + अप्] 1 बींधना, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना शि० ७।२४ 2 आघात करना घायल करना, प्रहार 3 छिद्र करना।

व्यधिकरणम् [वि + अधि + कृ + ल्युट्] भिन्न आधार या स्थान पर जीवित रहना (जैसा कि 'व्यधिकरण बहुव्रीहि' में अर्थात् वह बहुव्रीहि समास जहाँ पहला पद दूसरे पद से नितान्त भिन्न कारक का हो, यदि उसका विग्रह करके देखा जाय उदा० चक्रपाणि चन्द्रमौलि आदि।

व्यध्वः [व्यध् + ध्वन्] चाँदमारी के पीछे का टीला, निशाना, लक्ष्य।

व्यध्वः [विरुद्ध अध्वा प्रा० स०] कुमार्ग बुरी सड़क।

व्यनुनादः [विशिष्ट अनुनाद प्रा० स०] प्रतिध्वनि ऊँची गूँज।

व्यन्तरः [विशिष्ट अन्तरो यस्य —प्रा० ब०] 1 पिशाच यक्ष आदि एक प्रकार का अतिप्राकृतिक प्राणी।

व्यप् (चुरा० उभ० व्यपयति—ते) 1 फेंकना 2 घटाना, बरबाद करना, कम करना।

व्यपकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि + अप् + कृष् + क्त] एक ओर खींचा हुआ, दूर किया हुआ हटाया हुआ।

व्यपगत (भू० क० कृ०) [वि + अप् + गम् + क्त] 1 गया हुआ, विसर्जित, अन्तर्हित सखो मे व्यपगतः भर्तृ० २।८, मेघ० ७६ 2 हटाया हुआ 3 गिराया हुआ।

व्यपगमः [वि + अप + गम् + अप्] विसर्जन, अन्तर्धान।

व्यपत्रप (वि०) [विगता अपत्रपा यस्य —प्रा० ब०] निर्लज्ज, ढीठ।

व्यपदिष्ट (भू० क० कृ०) [वि + अप + दिश् + क्त] 1 नामाङ्कित 2 बतलाया गया, प्रस्तुत किया गया घोषित 3 बहाने या छल के रूप में प्रतिपादित किया गया।

व्यपदेशः [वि + अप + दिश् + घञ्] 1 निरूपण, सन्देश, सूचना 2 नामकरण नाम रखना 3. नाम, अभिधान, उपाधि एवं व्यपदेशभाज.—उत्तर० ६।४, परिवार, वंश,—अथ कोऽस्य व्यपदेश —श० ७, व्यपदेशमाविलयितु किमीहसे जनमिम च पातयितुम् श० ५।२० 5 कीर्ति यश प्रसिद्धि 6 चाल, बहाना, छल, उपाय 7 जालसाजी, चालाकी।

व्यपदेष्टृ (पु०) [वि + अप + दिश् + तृच्] छलिया, धोखेबाज।

व्यपरोपणम् [वि + अप + रुह् + णिच् + ल्युट्, ह्रस्व प.] 1 उन्मूलन उखाड़ना 2 भगाना, हटाना, दूर करना 3 काट डालना फाड़ डालना, तोड़ लेना—चुकोप तस्मै स भृशं सुरश्रियः प्रसह्य केशव्यपरोपणादिव —रघु० ३।५६।

व्यपाकृतिः (स्त्री०) [वि + अप + आ + कृ + क्तिन्] 1 निष्कासन दूरीकरण, निकाल देना 2 मुकरना।

व्यपायः [वि + अप + इ + घञ्] अन्त, लोप, समाप्ति, —कु० ३।३३, रघु० ३।३७।

व्यपाश्रयः [वि + अप + आ + श्रि + अप्] 1 उत्तराधिकारिता 2 शरण लेना, सहारा लेना, भरोसा करना भग० ३।१८ 3 निर्भर होना धर्मो रामव्यपाश्रय —राम०।

व्यपेक्षा [वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्] 1. प्रत्याशा, आशा 2 लिहाज विचार रघु० ८।२४ 3 पारस्परिक सम्बन्ध अन्योन्याश्रय 4 पारस्परिक लिहाज 5 व्यवहार 6 (व्या० में) दो नियमों का पारस्परिक प्रयोग।

व्यपेत (भू० क० कृ०) [वि + अप + इ + क्त] 1 वियुक्त अलगाया हुआ 2 गया हुआ विसर्जित, (प्राय समास में व्यपेतकल्मष, व्यपेतभी व्यपेतहर्ष आदि)।

व्यपोढ (भू० क० कृ०) [वि + अप् + वह् + क्त] 1 निकाला गया, हटाया गया 2 विपरीत, विरोधी कि० ४।१२ 3 प्रकटीकृत, प्रदर्शित, बतलाया गया।

व्यपोहः [वि + अप + ऊह् + घञ्] निकालना, दूर करना, अलग रखना।

व्यभि (भी) चारः [वि + अभि + चर् + घञ्] 1 दूर चले जाना विचलन, सन्मार्ग छोड़ देना, कुमार्ग का अनुसरण करना, मनःक्षमव्यसनिनं व्यभिचारविवर्जितम् हि० ३।१६ भग० १४।२६ 2 अतिक्रमण, उल्लंघन मनु० १०।२४ 3 अशुद्धि, जुर्म, पाप 4 विच्छेद्यता, अलग होने की सामर्थ्य 5 अनभिमत, अनाचार पति-पत्नी में अविश्वास, पतिव्रत या पत्नी-

व्रत का अभाव—व्यभिचाराज्तु भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति निन्द्यताम् —मनु० ५।१६४, वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे —रघु० १५।८१, याज्ञ० ११७१ 6 असंगति, अनियमितता, अपवाद 7 (तर्क० में) आभासी हेतु, हेत्वाभास साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता।

व्यभिचारिणी [व्यभिचारिन् + ङीप्] असती स्त्री परपुरुषगामिनी स्त्री।

व्यभिचारिन् (वि०) [व्यभिचार + इनि] 1 भटका हुआ भूला हुआ पथभ्रष्ट, भ्रान्त नियम भंग करने वाला 2 अनियमित असंगत 3 असत्य मिथ्या दे० अव्यभिचारिन् 4 श्रद्धाहीन जो ब्रह्मचारी न हो परस्त्रीगामी, (पुं०) व्यभिचारिभाव संचारिभाव सहकारी भाव (विप० स्थायी भाव) यद्यपि स्थायी भावों की भाँति यह सहकारी भाव रस का कोई आधारभूत रूप नहीं बनाते फिर भी यह अवस्थान रस के पोषक हैं, अतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह रस की पुष्टि करते हैं। इनकी संख्या तैंतीस या चौंतीस हैं इनकी गणना के लिए दे० काव्य० ४ कारिका ३१—३४, सा० द० १६९ या रस० प्रथम आनन, तु० विभाव और स्थायिभाव भी।

व्यय् I (चुरा० उभ० व्यययति-ते) 1 जाना हिलना जुलना 2 व्यय करना प्रदान करना अर्पण करना। II (भ्वा० उभ० व्ययति-ते) जाना हिलना-जुलना। III (चुरा० उभ० व्याययति-ते व्यापयति-ते भी) 1 फेंकना डालना 2 हाँकना।

व्यय (वि०) [वि + इ + अच्] परिवर्तनीय परिणामशील, विकारवान् —तु० अव्यय, यः 1 (क) हानि लोप, विनाश—आपाद्यते न व्ययमन्तरायैः कच्चिन्महर्षेस्त्रिविधं तपस्तत् —रघु० ५।५, १२।३३ (ख) लागत लगाना, त्याग—प्राणव्ययेनापि मया विधेय —मा० ४।४ कु० ३।२३ 2 रुकावट, अड़चन—रघु० १५।३७, 3 क्षय ह्रास, पराजय, अधःपतन 4 खर्च मूल्य, परिव्यय, विनियोग प्रयोग, (विप० आय) आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः पंच० १।१६३, आयाधिकं व्ययं करोति अपनी आय से अधिक व्यय करता है'—रघु० ५।१२, १५।३ मनु० ९।११ 5 अपव्यय फिजूलखर्ची। सम०—पर (वि०) मुक्तहस्त से खर्च करने वाला—पराङ्मुख (वि०) कृपण, कंजूस, मक्खीचूस—शील (वि०) अतिव्ययी फिजूलखर्च,—शुद्धि (स्त्री०) हिसाब चुकाना।

व्ययनम् [व्यय् + ल्युट्] 1 खर्च करना 2 बर्बाद करना विनष्ट करना।

व्ययित (भू० क० कृ०) [व्यय् + क्त] 1 व्यय किया गया खर्च किया गया 2 बर्बाद किया गया, अपग्रस्त।

व्यर्थ (वि०) [विगतोऽर्थो यस्मात् —प्रा० ब०] 1 अनुपयोगी निरर्थक विफल अलाभकर व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे —उत्तर० ३।४५ 2 अर्थहीन निरर्थक बेकारी।

व्यलीक (वि०) [विशेषेण अलति—वि + अल + कीकन्] 1 मिथ्या झूठा 2 कुत्सित अनभिमत असुखद 3 जो मिथ्या न हो शि० ९।११ कः 1 स्वेच्छाचारी 2 गाढ़ लौण्डा—कम् कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु अप्रियता—[illegible] व्यलीक [illegible] सुतनयस्य [illegible] शि० ९।६ 2 बेचैनी का कारण पीड़ा [illegible] कि० ३। १९ कु० [illegible] 3 दोष अपराध अतिक्रमण, अनुचित कार्य [illegible] प्रतिकूल मर्यादा का उल्लंघन [illegible] 4 धोखाधड़ी छल [illegible] 5 मिथ्यापन 6 [illegible] वैपरीत्य।

व्यवकलनम् [वि + अव + कल् + ल्युट्] 1 वियोग 2 (गणि० में) घटाना एक राशि में से दूसरी राशि कम करना।

व्यवक्रोशनम् [वि + अव + क्रुश् + ल्युट्] दूसरे से आपस में गाली-गलौज।

व्यवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि + अव + छिद् + क्त] 1 काट डाला गया [illegible] फाड़ा गया 2 वियुक्त विभक्त 3 विशिष्ट किया गया विशिष्ट 4 अंकित चिह्नित [illegible] काव्या० ११० 5 अवरुद्ध बाधित।

व्यवच्छेद [वि + अव + छिद् + घञ्] 1 काट डालना फाड़ देना 2 विभाजन वियोजन 3 चीर फाड़ करना 4 विशिष्टीकरण विभेदक विशेषता 6 वैलक्षण्य वैशिष्ट्य 7 निर्धारण 8 बन्दूक दागना तीर छोड़ना 9 किसी पुस्तक का अध्याय या अनुभाग।

व्यवधा [वि + अव + धा + अङ् + टाप्] 1 व्यवधायक 2 आड़ पर्दा आवरण 3 छिपाव दुराव।

व्यवधानम् [वि + अव + धा + ल्युट्] 1 हस्तक्षेप अन्तःक्षेप बिचाव 2 अवरोध दृष्टि से गुप्त रखना दृष्टि विमानव्यवधानमुक्ता पुनः सहस्रार्चिषि सन्निधत्ते रघु० १३।४८ 4 छिपाना ढाँपना 5 पर्दा आवरण 6 ढकना आवरण कु० ३।४८ 7 अन्तराल अवकाश 8 (व्या० में) किसी अक्षर या मात्रा का बीच में आ पड़ना।

व्यवधायक (वि०) (स्त्री० —यिका) [वि + अव + धा + ण्वुल्] 1 बीच में आ पड़ने वाला, आवरक, ढकने

वाला 2. अवरोध करने वाला, छिपाने वाला 3 मध्यवर्ती ।

व्यवधिः [वि + अव + धा + कि] आवरण, हस्तक्षेप आदि, दे० व्यवधान ।

व्यवसायः [वि + अव + सो + घञ्] 1 प्रयत्न, चेष्टा ऊर्जा, उद्योग, धैर्य — करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः हि० २।१४ 2 संकल्प, प्रस्ताव, निर्धारण — मल्लीबकार मरणव्यवसायबुद्धिम् — कु० ४।४५, 'मरने के संकल्प का विचार' भग० २।४१ १०।३६ 3 कृत्य, कर्म, क्रिया — व्यवसाय प्रतिपत्तिनिष्ठुरः रघु० ८।६५ 4 व्यापार नौकरी, वाणिज्य 5 आचरण व्यवहार 6 उपाय, कूटयुक्ति, बुगत 7 डींग मारना 8 विष्णु ।

व्यवसायिन् (वि०) [व्यवसाय + इनि] 1 ऊर्जस्वी उद्योगी, परिश्रमी 2 दृढ संकल्पी धैर्यवान् ।

व्यवसित (भू० क० कृ०) [वि + अव + सो + क्त] 1 प्रयास किया गया कोशिश की गई भग० ९।९, 2 जिम्मेवारी ली गई 3 संकल्प किया गया निर्धारित निश्चित 4 प्रकल्पित आयोजित 5 प्रयत्नशील दृढ निश्चयी 6 धनवान्, ऊर्जस्वी 7 ठगा गया, छला गया, — तम् निश्चयन, निर्धारण ।

व्यवस्था [वि + अव + स्था + अङ् + टाप्] 1 समंजन क्रमस्थापन, निपटारा यथा वर्णाश्रम व्यवस्था 2 स्थिरता निश्चितता, रघु० ३।५४ 3 दृढ़ता दृढ़ आधार — आजानुलम्बस्फुरणी पृथिव्या व्यवस्थानाय — कु० ११३३ 4 संबद्ध स्थिति 5 निश्चित नियम कानून मर्यादा आदेश, निर्णय कानूनी सलाह, कानून की लिखित घोषणा (विशेष कर संदिग्ध स्थलों पर या जहाँ विरोधी पाठों का समंजन करना हो) 6 सहमति संविदा 7 अवस्था दशा ।

व्यवस्थानम्, व्यवस्थितिः (स्त्री०) [वि + अव + स्था + ल्युट् क्तिन् वा] 1 क्रमबन्धन, समाधान निर्धारण, फ़ैसला 2 नियम, विधान, निश्चय 3 स्थिरता, अचलता 4 दृढ़ता, धैर्य 5 वियोग ।

व्यवस्थापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [वि + अव + स्था णिच् + ण्वुल्, पुक्] 1 क्रमस्थापन करने वाला, उपयुक्त क्रम में रखने वाला समंजन करने वाला, स्थिर करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फ़ैसला करने वाला 2 वह जो कानूनी सलाह देता है 3 प्रबन्धक (वर्तमान प्रयोग) ।

व्यवस्थापनम् [वि + अव + स्था + णिच् + ल्युट्, पुक्] 1 क्रमस्थापन, उपयुक्त समंजन 2 स्थिर करना, निर्धारण, निश्चय करना फ़ैसला करना ।

व्यवस्थापित (भू० क० कृ०) [वि + अव + स्था + णिच् + क्त पुक्] क्रमबद्ध, निश्चित आदि, °वाच् — कु० ५।६८ ।

व्यवस्थित (भू०क०कृ०) [वि + अव + स्था + क्त] 1 क्रम में रक्खा हुआ, समंजित, क्रमविन्यस्त 2 निश्चित, स्थिर — कि व्यवस्थितविषया क्षात्रधर्माः - उत्तर० ५ 3 फ़ैसला किया गया, निर्धारित, कानून द्वारा घोषित 4 एक ओर रक्खा हुआ वियुक्त 5 निकाला हुआ (रस आदि) 6 आधारित, अवलम्बित । सम० — विभाषा निश्चित इच्छा ।

व्यवस्थितिः दे० 'व्यवस्थान' ।

व्यवहर्तृ (पु०) [वि + अव + हृ + तृच्] 1 किसी व्यवसाय का प्रबन्धकर्ता 2 नालिश करने वाला, अभियोक्ता, वादी या मुद्दई 3 न्यायाधीश 4 साथी, संगी ।

व्यवहार [वि + अव + हृ + घञ्] 1 आचरण, बर्ताव, कर्म 2 मामला, व्यवसाय काम 3 पेशा, धंधा 4 लेनदेन कामकाज 5 वाणिज्य, तिजारत, सौदागरी 6 रुपये पैसे का लेनदेन, सूदखोरी 7 प्रचलन प्रथा दस्तूर, रिवाज 8 सबन्ध मेलजोल — पञ्च० १।७२ 9 न्यायालयी या अदालती कार्यविधि, किसी अभियोग या मामले की छानबीन न्याय प्रशासन, — व्यवहारासनमाददे युवा — अल लज्जया व्यवहारस्था पृच्छति मृच्छ० ९ 10 कानूनी झगड़ा, अभियोग, नालिश कानूनी मुकदमा मुकदमेबाजी, व्यवहारोऽयं चारुदत्तमवलम्बते इति लिख्यतां व्यवहारस्य प्रथम पाद केन सह मम व्यवहारः मृच्छ० ९, रघु० १७। ११ 11 कानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुकदमेबाजी का अवसर । सम० — द्वयम् दीवानी और फ़ौजदारी कानूनों का समूह, — अभिशस्त (वि०) अभियोजित दावारोपित — आसनम् न्यायाधिकरण न्यायासन — रघु० ८।१८ — ज्ञ 1 जो व्यवसाय को समझता है 2 वयस्क युवा, बालिग, 3 जो न्यायालयीय कार्यविधि से परिचित हो, — तन्त्रम् आचरणक्रम, मा० ४, — दर्शनम् जाँच, न्यायिक जाँच-पड़ताल, — पदम् व्यवहार विषय, — पादः 1 कानूनी कार्यवाही की चार अवस्थाओं में से कोई सी एक 2 चौथी अवस्था अर्थात् निर्णयपाद जिसमें व्यवस्था या फ़ैसला बतलाया गया है — मातृका 1 कानूनी प्रक्रिया 2 न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी कर्म या विषय, (इसके तीस शीर्षक गिनाये गये हैं), - विधिः कानून का नियम, विधिसंहिता, — विषयः (इसी प्रकार — पदम् — मार्गः, — स्थानम्) कानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय (यह विषय अठारह हैं, इनके नामों की जानकारी के लिए दे० मनु० ८।४—७) ।

व्यवहारकः [वि+अव+हृ+ण्वुल्] विक्रेता, व्यापारी, सौदागर।

व्यावहारिक (वि०) (स्त्री०—का,—की) [व्यवहार+ठञ्] 1. व्यवसाय सम्बन्धी 2. व्यवसाय में लगा हुआ, अभ्यासप्राप्त 3. न्यायालयसबंधी, क़ानूनी 4. मुकदमेबाज 5. प्रचलित, रूढ या प्रथानुसार।

व्यवहारिका [वि+अव+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 रिवाज, प्रथा 2 झाड़ू 3 इंगुदी का वृक्ष।

व्यवहारिन् (वि०) [व्यवहार+इनि] 1 व्यवसायी, कर्मशील, अभ्यासपरायण 2 अभियोग में व्यस्त, मुकदमेबाज 3 चिरप्रचलित, प्रथानुसार।

व्यवहित (भू० क० कृ०)[वि+अव+धा+क्त] 1 अलग अलग रक्खा हुआ 2 किसी अन्तःक्षिप्त वस्तु के कारण वियुक्त किया गया - शि० २।८५ 3 बाधित, रोका गया, अवरुद्ध, अड़चन से युक्त 4 दृष्टि से ओझल, छिपाया हुआ, गुप्त 5 जिसका निरन्तर सम्बन्ध न हो 6 किया गया, सम्पन्न 7 भूला हुआ छोड़ा हुआ 8 आगे बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ 9. विपक्षी, विरोधी।

व्यवहृतिः (स्त्री०) [वि+अव+हृ+क्तिन्] 1 अभ्यास, प्रक्रिया 2. कर्म, सम्पादन।

व्यवायः [वि+अव+अय्+अच्] 1 वियोजन, विश्लेषण (अवयवों का) पृथक्करण 2. विघटन 3 आवरण छिपाव 4 हस्तक्षेप, अन्तराल वटकृत्वाकुनुमव्यवायेऽपि 5 अड़चन, रुकावट 6 मैथुन, सम्भोग 7 पवित्रता, —कम पीड़ित, आभा।

व्यवायिन् (पुं०) [व्यवाय+इनि] 1 विलासी, स्वेच्छाचारी 2. कामोद्दीपक, वाजीकरण।

व्यवेत (भू० क० कृ०) [वि+अव+इ+क्त] 1 विदा भिन्न, विविक्त 2. भिन्न।

व्यष्टि (स्त्री०) [वि+अश्+क्तिन्] 1 वैयक्तिकता, एकाकीपन 2 वितरणशील फैलाव 3 (वेदान्त० में) समष्टि को उसके पृथक्-पृथक् अवयवों के रूप में देखना, एक अश (विप० समष्टि)।

व्यसनम् [वि+अस्+ल्युट्] 1 फेंक देना, दूर कर देना, विसर्जन, विभाजन 3 उल्लंघन, अतिक्रमण 4 हानि विनाश, पराजय, पतन, दोष, दुर्बलपक्ष अमात्यव्यसनम्—पंच० ३, स्वबलव्यसनैः—कि० १३।१५ 5 (क) विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, संकट, अभाव्य—अज्ञातभर्तृव्यसना मुहूर्तं कृतोपकारेव रतिर्बभूव कु० ३।७३, ४।३०, रघु० १२।५७ (ख) आपत्काल, आवश्यकता—स सुहृद् व्यसने यः स्यात् —पंच० १।३२७ 'आवश्यकता पड़ने पर जो मित्र रहे वही मित्र है' 6 (सूर्य आदि का) अस्त होना तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्याम् श० ४।१ (यहाँ 'व्यसन' का अर्थ 'पतन' भी है) 7 दुर्व्यसन, बुरी लत, बुरी आदत मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग् विनोदः कुतः श० ४।५, रघु० १८।१४, मालवि० १।३०९ (इस प्रकार के दुर्व्यसन दस बताये गये हैं मनु० ७।४७—८) समानशीलव्यसनेषु सख्यम् —सुभा० 8. सक्तता, जुट जाना, परिश्रमपूर्वक आसक्ति — विद्यायां व्यसनं भर्तृ० २।६२-३ 9 बहुत ज्यादा आर्द्र होना 10 कुर्म, पाप 11. दण्ड 12. अयोग्यता, असफलता 13 निष्फल प्रयत्न 14 हवा, वायु। सम० अतिभारः भारी अनर्थ या संकट रघु० १४।६८, —अन्वित, - आर्त पीड़ित (वि०) संकटग्रस्त, दुःख में फंसा हुआ।

व्यसनिन् (वि०) [व्यसन+इनि] 1 किसी दुर्व्यसन में ग्रस्त, दुश्चरित्र 2 अभागा भाग्यहीन 3 किसी कार्य में अत्यन्त संलग्न (प्रायः समास में)।

व्यसु (वि०) [विगताः असवः प्राणा यस्य प्रा० ब०] निर्जीव, मृतक शि० २०।३।

व्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अस्+क्त] 1 डाला हुआ, फेंका हुआ, उछाला हुआ मा० ५।२३ 2 तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ उत्तर० ५।१४ 3 हटाया हुआ दूर फेंका हुआ 4 वियुक्त विभक्त अलगाया हुआ विक्रम० ५।२३ 5 पृथक् रूप से विचारित, एक एक करके ग्रहण—किं पुनर्व्यस्तं —उत्तर० ५, तदपि किं व्यस्तमपि विलोचने—कु० ५।७२ 6 सरल, समासरहित (शब्द आदि) 7 बहुविध, 8 हटाया गया, निकाला गया 9 विक्षुब्ध, कष्टमय अव्यवस्थित 10 क्रमरहित, अस्तव्यस्त, विशृङ्खलित 11 उलटाया हुआ, उलट-पुलट किया हुआ 12 विपरीत (अनुपात आदि)।

व्यस्तारः (पुं०) हाथी के गण्डस्थलों से मद का निकलना।

व्याकरणम् [व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा येन—वि+आ+कृ+ल्युट्] 1 विग्रह, विश्लेषण 2 व्याकरण सम्बन्धी शब्द पृथक्करण प्रक्रिया, छः वेदांगों में से एक, व्याकरण —सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत्प्राणान् प्रियान् पाणिनेः पंच० २।३३।

व्याकारः [वि+आ+कृ+घञ्] 1 रूपान्तरण, रूपपरिवर्तन 2 विरूपता।

व्याकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+आ+कॄ+क्त] 1 बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ 2. अस्तव्यस्त किया हुआ।

व्याकुल (वि०) [विशेषेण आकुल —प्रा० स०] 1. विक्षुब्ध, विस्मित, घबराया हुआ, किंकर्तव्य विमूढ, शोकव्याकुल, बाष्प° 2 आतंकित, उद्विग्न, भयभीत वृष्टिव्याकुलगोकुल गीत० ४ 3 भरापूरा, घिरा हुआ 4 संलग्न, व्यस्त आलोके ते निपतति पुरा सा

वलिभ्याकुला वा मेघ० ८५ 5 चमकने वाला, इधर उधर हिलजुल करने वाला—उत्तर० ३।८३ ।

व्याकुलित (वि०) [वि+आ+कुल्+क्त] विक्षुब्ध, हतबुद्धि, घबराया हुआ, उद्विग्न आदि ।

व्याकूतिः (स्त्री०) [विशिष्टा आकूतिः—प्रा० स०] चालबाजी, छद्मवेश, धोखा ।

व्याकृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] 1. विश्लिष्ट, वियुक्त 2. व्याख्यात, स्पष्ट किया गया 3 विकृत, व्याकृष्ट, बिगाड़ा हुआ, विरूपित ।

व्याकृतिः (स्त्री०) [वि+आ+कृ+क्तिन्] 1 विग्रह 2 विश्लेषण, व्याख्या 3 रूप परिवर्तन, विकास 4 व्याकरण ।

व्याकोश (ष) (वि०) [वि+आ+कुश् (ष)+अच्] 1. फुलाया हुआ, प्रफुल्लित पुष्पित मुकुलित —व्याकोशकोकनदतां दधते नलिन्यः शि० ४।४६ 2 विकसित —भर्तृ० ३।१७ ।

व्याक्षेपः [वि+आ+क्षिप्+घञ्] 1 इधर उधर उछालना 2 अवरोध, रुकावट 3 विलम्ब —अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६ 4 उलझन ।

व्याख्या [वि+आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1. वृत्तान्त, वर्णन 2 स्पष्टीकरण, विवृति, टीका, भाष्य ।

व्याख्यात [वि+आ+ख्या+क्त] 1 कथित, वर्णित 2 स्पष्टीकृत, विवृत, टीकायुक्त ।

व्याख्यातृ (पुं०) [वि+आ+ख्या+तृच्] व्याख्याकार, भाष्यकार ।

व्याख्यानम् [वि+आ+ख्या+ल्युट्] 1 समूचन, वर्णन 2 भाषण, वक्तृता 3 स्पष्टीकरण, विवृति अर्थकरण टीका ।

व्याघट्टनम् [वि+आ+घट्+ल्युट्] 1 बिलोना, मथना 2 रगड़ना, घर्षण ।

व्याघातः [वि+आ+हन्+क्त] 1 रगड़ना 2 थप्पड़, प्रहार 3 विघ्न, रुकावट 4 वचन विरोध 5 एक अलंकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण से उत्पन्न दिखाये जाते हैं, मम्मट इसकी परिभाषा निम्नांकित करता है यद्यथा साधितं केनाप्यपरेण तदन्यथा । तथैव यद्विधीयेत स व्याघात इति स्मृत ।। काव्य० १०, उदा० दे० विक्र० १।२, या विरूपाक्ष के नीचे दिया गया उद्धरण ।

व्याघ्रः [व्याजिघ्रति—वि+आ+घ्रा+क] 1 बाघ, चीता 2 (समास के अन्त में) सर्वोत्तम, प्रमुख, मुख्य —जैसा कि नरव्याघ्र या पुरुषव्याघ्र में 3 लालरंग का एरंड का पौधा — स्त्री मादा चीता — व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती भर्तृ० ३।१०९ । सम० —आटः चातक पक्षी, —आस्यः बिलाव, —नखः, —नखम् 1. बाघ का पंजा 2. एक प्रकार का गन्धद्रव्य 3 खरोंच, नखक्षत, —नायकः गीदड़ ।

व्याजः [व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन—वि+अज्+घञ्] 1. धोखा, चाल, छल, चालबाजी 2. कला कौशल — अव्याजमनोहरं वपुः श० १।१८, 'स्वाभाविक रूप से प्रिय' 3 बहाना, छद्मवेश, व्याज — ध्यानव्याजमुपेत्य —गीत० ११, रघु० ४।२५, ५८, १०।६६ ११।६६ 4 युक्ति, चाल, कूटयुक्ति — व्याजार्धसन्दर्शितमेखलानि—रघु० १३।४२ । सम०—उक्तिः (स्त्री०) एक अलङ्कार जिसमें किसी कारण के स्पष्ट फल का जानबूझ कर कोई दूसरा कारण बताया जाता है, जहाँ वास्तविक भावना को कोई दूसरा कारण बनाकर छिपा लिया जाता है —दे० काव्य० १० 'व्याजोक्ति' के नीचे 2. परोक्ष संकेत, अन्योक्ति, —निन्दा छल या कपट से की गई निन्दा, —सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ, —स्तुतिः (स्त्री०) अर्थों के आडम्बरी' (I. ,) से निकला जुमला एक अलङ्कार जिसमें व्यक्त की गई प्रशंसा से निन्दा तथा प्रत्यक्ष निन्दा से स्तुति उपलक्षित होती है—व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा रूढिरन्यथा —काव्य० १० ।

व्याडः [वि+आ+अड्+अच्] 1 मांस भक्षी जानवर, जैसे कि चीता शेर आदि 2. बदमाश, गुण्डा 3 सांप 4 इन्द्र तु० 'व्याल' ।

व्याडिः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण ।

व्यात्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+दा+क्त] विवृत, फैलाया गया, फुलाया गया ।

व्यात्युक्षी [वि+आ+अति+उक्ष्+णिच्+अङ्+ङीष्] जलविहार जलक्रीडा ।

व्यादानम् [वि+आ+दा+ल्युट्] खोलना, उद्घाटन ।

व्यादिशः [विशेषेण आदिशति स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति —वि+आ+दिश्+क] विष्णु का विशेषण ।

व्याधः [व्यध्+ण] 1 शिकारी, बहेलिया (जाति से या पेशे के कारण) 2 दुष्ट मनुष्य, अधम पुरुष । सम० —भीतः हरिण ।

व्याधामः, व्याधावः [व्याध+अम्+णिच्+अच्] इन्द्र का वज्र ।

व्याधि [वि+आ+धा+कि] 1 बीमारी, रोग, व्यथा, अस्वस्थता (प्रायः शारीरिक—विप० 'आधि' अर्थात् मानसिक रोग दुःख, चिन्ता आदि)—रिपुरस्यातीरेकलः सततव्याधिरनीतिरस्तु ते शि० १६।११ (यहाँ 'व्याधि' का अर्थ 'आधि से युक्त' भी है) तु० आधि 2 कोढ़ । सम० —कर (वि०) अस्वास्थ्यकर, —ग्रस्त (वि०) रोगाक्रान्त, बीमार ।

व्याधित (वि०) [व्याधि सञ्जातोऽस्य इतच्] रोगाक्रान्त, बीमार ।

व्याघूर्ण (भू० क० कृ०) [वि+आ+घूर्+क्त] झकोला हुआ, कांपता हुआ, थरथराता हुआ।

व्यानः [व्यानिति सर्वशरीरं व्याप्नोति वि+आ+अन्+अच्] शरीरस्थ पाँच प्राणों में से एक जो समस्त शरीर में व्याप्त है।

व्यानतम् [वि+आ+नम्+क्त] मैथुन का एक विशेष प्रकार, रतिबन्ध।

व्यापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [विशेषेण आप्नोति वि+आप+ण्वुल्] 1. फैला हुआ, बहुग्राही, प्रसारी, विस्तृत रूप से फैलने वाला, सर्वगामी—तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्च व्यापको महिमा हरेः—कु० ६।७१ 2. नितान्त सहवर्ती,—कः नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित विशेषण, —कम् नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित गुण।

व्यापत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्तिन्] 1. बर्बादी, संकट, दुर्भाग्य—मनु० ६।२० 2. स्थानापन्नता 3 मृत्यु रघु० १२।५६।

व्यापद् (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्विप्] 1. संकट, दुर्भाग्य, भर्तृ० ३।१०५ 2. रोग 3 विशृङ्खलता, चित्तविक्षेप 4 मृत्यु, निधन।

व्यापनम् [वि+आप्+ल्युट्] फैलना, पैठना, सर्वत्र फैल जाना।

व्यापन्न (भू० क० कृ०) [वि+आ+पद्+क्त] 1 दुर्भाग्यग्रस्त, बर्बाद 2. विफल, उलट गया (गर्भस्राव हो गया) 3. चोट लगा हुआ, घायल 4 मृत, उपरत, मरा हुआ जैसा कि 'अव्यापन्न' में 5. विक्षिप्त, विकृत 6. स्थानापन्न, परिवर्तित।

व्यापादः, व्यापादनम् [वि+आ+पद्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. हत्या, वध 2. बर्बादी, विनाश 3 दुर्भावना, द्वेष।

व्यापादित (भू० क० कृ०) [वि+आ+पद्+णिच्+क्त] 1. वध किया हुआ, कत्ल किया हुआ, विनष्ट किया हुआ 2. बर्बाद, घायल, चोटिल।

व्यापारः [वि+आ+पृ+घञ्] 1. नियोजन, संलग्नता, व्यवसाय, धन्धा ततः प्रविशति यथोक्तव्यापारा शकुन्तला श० १, कु० २।५४ 2. प्रयोग, काम —मु० २।४ 3. पेशा, वाणिज्य, व्यवसाय, कार्य यथा 'शस्त्रव्यापार' में 4. कर्म, क्रिया, निष्पादन 5. कार्यपद्धति, प्रक्रिया, कृत्य, प्रभाव—(शर्तं) व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम्—श० १।२७, तस्यानुमेने भगवान् विमन्युर्व्यापारमात्मन्यपि सायकानाम् कु० ७।९३, विक्रम० ३।१७ 6. ऊपर रक्खा जाने वाला, मालवि० ४, १४ 7. उद्योग, प्रयत्न—आर्याप्यरुन्धती तत्र व्यापारं कर्तुमर्हति कु० ६।३२, 'उस दिशा में कार्य करने के लिए प्रसन्न होंगी' (व्यापारं कृ 1. भाग लेना 2. प्रभाव डालना 3. हाथ डालना—जैसा कि 'अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति पंच० १।२१)।

व्यापारित (भू० क० कृ०) [वि+आ+पृ+णिच्+क्त] 1. काम पर लगाया हुआ, स्थापित, नियोजित, नियुक्त —रघु० २।३८ 2. रक्खा हुआ, निश्चित, जमाया हुआ वेणी० ३।११।

व्यापारिन् (पुं०) [व्यापार+इनि] 1. विक्रेता, व्यापार करने वाला 2. व्यवसायी।

व्यापिन् (वि०) [वि+आप्+णिनि] 1. व्याप्त होने वाला, अपूर्ण करने वाला, अधिकार करने वाला (समास के अन्त में) 2. सर्वव्यापक, महाविस्तृत, नितान्त सहवर्ती 3 आवरक (पुं०) विष्णु का विशेषण।

व्यापृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+पृ+क्त] 1 काम में लगा हुआ, व्यस्त, नियोजित (अधि० के साथ) 2 स्थापित, स्थिर किया हुआ—(पुं०) कर्मचारी, मन्त्री।

व्यापृतिः (स्त्री०) [व्याप्+क्तिन्] 1. काम में लगाना व्यस्त करना, व्यवसाय स्वस्वव्यापृतिमग्नमानसतया भामि० १।५७ 2 प्रकार्य, कर्म 3 चेष्टा 4 पेशा, व्यवसाय दे० 'व्यापार'।

व्याप्त (भू० क० कृ०) [वि+आप्+क्त] 1 चारों ओर फैला हुआ, पैठा हुआ, व्यापक, विस्तार किया हुआ, आच्छादित, ढका हुआ 2 व्यापक, सर्वत्र फैला हुआ 3. भरा हुआ, पूर्ण 4 चारों ओर से लपेटा हुआ, घिरा हुआ 5. स्थापित, जमाया हुआ 6. प्राप्त किया हुआ, अधिकृत 7 समझा हुआ, सम्मिलित 8. नितांत सम्बद्ध (तर्क० में) 9 प्रसिद्ध, विख्यात 10 फलाया हुआ, बिछाया हुआ।

व्याप्तिः (स्त्री०) [वि+आप्+क्तिन्] 1. प्रसार, फैलाव 2 (तर्क० में) विश्वतः फैलाव, नितांत सहवर्तिता, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला होना—यत्र-यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति साहचर्यनियमो व्याप्तिः—तर्क० 3. सार्वजनिक नियम, विश्वव्यापकता 4. पूर्णता 5 प्राप्ति। सम० ग्रहः सार्वजनिक सहवर्तिता का बोध, ज्ञानम् सार्वजनिक सहवर्तिता की जानकारी।

व्याप्य (वि०) [वि+आप्+ण्यत्] व्यापकता के योग्य भरे जाने के योग्य, —प्यम् (तर्क० में) अनुमान प्रक्रिया का चिह्न (=हेतु, साधन)।

व्याप्यत्वम् [व्याप्य+त्व] नियतता। सम० असिद्धिः (स्त्री०) अधूरी अटकल, अपूर्ण अनुमान।

व्याप्युषी —व्याप्युषी (दे०)।

व्यामः—व्यायमम् [वि+आ+यम्+घञ्, ल्युट् वा] एक माप विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर

फैलाये हो तो हाथों की अंगुलियों के कोरों के बीच की दूरी।

व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र+अच्] मिला हुआ मिश्रित, गड्ड-मड्ड किया हुआ।

व्यामोह [वि+आ+मुह्+घञ्] 1 प्रणयोन्माद 2 व्याकुलता, परेशानी बेचैनी कमस्यालममूज्झित जिनमिति व्यामोहकोलाहल गीत० १०, काव्या० ३।१०१।

व्यायत (भू० क० कृ०) [वि+आ+यम+क्त] 1 लम्बा, विस्तृत युगव्यायतबाहुरंसल – रघु० ३।३४ 2 फुलाया हुआ खुला हुआ 3 जिसने व्यायाम किया है अनुशिष्ट 4 व्यस्त, काम में लगा हुआ अधिक 6 कठोर दृढ़ (मजबूत गहन अत्यधिक 7 ताकतवर, शक्तिशाली 8 गहरा कु० ५।५४।

व्यायतत्वम् [व्यायत+त्व] पुट्ठों का विकास श० २।४।

व्यायाम [वि+आ+यम्+घञ्] 1 विस्तार करना फैलाना 2 कसरत, शारीरिक व्यायामों का अभ्यास – शि० २।९४ 3 थकान, श्रम 4 प्रयत्न, चेष्टा 5 बाहुयुद्ध, संघर्ष 6 दूरी की माप विशेष (व्याम दे०)।

व्यायामिक (वि०) (स्त्री० की) [व्यायाम+ठक् मल्लविद्या-विषयक शारीरिक कसरत संबंधी।

व्यायोग [वि+आ+युज्+घञ्] नाट्यसाहित्य में एक प्रकार का एकांकी नाटक सा० द० ५१४ पर इसकी निम्न परिभाषा दी गई है – ख्यातेतिवृत्तो व्यायोग स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः। हीनो गर्भविमर्शाभ्यां नरैर्बहुभिराश्रित। एकाङ्कश्च भवेदस्त्रीनिमित्तसमरोदय। कैशिकीवृत्तिरहित प्रख्यातस्तत्र नायक। राजर्षिरथ दिव्यो वा भवेद्धीरोद्धतश्च स। हास्यशृङ्गारशान्तेभ्य इतरे ऽत्राङ्गिनो रसा।

व्याल (वि०) [वि+आ+अल्+अच्] 1 दुष्ट दुर्व्यसनी –व्यालद्विपा यन्तृभिरुन्मदिष्णव शि० १२।२८ यथा गज व्यालमिवापराद्ध कि० १७।२५ 2. बुरा पापिष्ठ 3 क्रूर भीषण बर्बर कि० १३।४ –ल 1 खूनी हाथी व्याल बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धु समुज्जृम्भते भर्तृ० २।६ 2 शिकार का जानवर 3 सांप–शि० ३।२९ 4 बाघ, मा० ३।५ 5 चीता 6 राजा 7 ठग बदमाश 8 विष्णु। सम० –नख एक प्रकार की बूटी, –ग्राह, –ग्राहिन् (पु०) सपेरा, –मृगः 1 जंगली जानवर 2. शिकारी चीता, –रूपः शिव का विशेषण।

व्यालकः [व्याल+कन्] दुष्ट या खूनी हाथी।

व्यालम्बः [विशेषेण आलम्बते वि+आ+लम्ब्+अच्] एक प्रकार का एरंड का पौधा।

व्यालोल (वि०) [वि+आ+लोड्+अच् इस्यल] 1 कांपने वाला थरथराने वाला 2 अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त व्यालोल केशपाश गीत० ११।

व्यावकलनम् [वि+आ+अव+कल्+ल्युट्] घटाना।

व्यावक्रोशी, व्यावभाषी [वि+आ+अव+क्रुश् (भाष्) +णिच्+अञ्+ङीप्] परस्पर दुर्वचन कहना आपस की गालीगलौज।

व्यावर्तः [वि+आ+वृत्+घञ्] 1 घेरना, लपेटना 2 क्रान्ति भ्रमण, चक्कर खाना 3 फटी हुई अर्थात् आगे को निकली हुई नाभि।

व्यावर्तक (वि०) (स्त्री० तिका) [वि+आ+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1 लपटने वाला घेरा डालने वाला 2 निकालने वाला अपवर्जन करने वाला, वियुक्त करने वाला 3 मुड़ने वाला ' ताक लाने वाला।

व्यावर्तनम् [वि+आ+वृत्+ल्युट्] 1 घेरना लपेटना 2 घूमना मुड़ना चक्करखाना शि० ५।३० 3 रस्सी आदि का गाल लपेट पट्टी।

व्यावल्गित (भू० क० कृ०) [वि+आ+वल्ग्+क्त] घबराया हुआ क्षुभित, विक्षुब्ध।

व्यावहारिक (वि०) (स्त्री०–की) [व्यवहार+ठक्] 1 व्यवसाय संबंधी प्रयोगात्मक 2 कानूनी वैध 3 प्रथागत प्रचलित 4 भ्रमात्मक–क: प्रातिभासिक,–कः परामर्शदाता, मंत्री।

व्यावहारी [वि+आ+अव+हृ+णिच्+अञ्+ङीप्] पारस्परिक लेन देन।

व्यावहासी [वि+आ+अव+हस्+णिच्+अञ्+ङीप्] पारस्परिक अवज्ञा, एक दूसरे की हंसी उड़ाना।

व्यावृत्ति (स्त्री०) [वि+आ+वृत्+क्तिन्] 1 आवरण परदा डालना 2 निकाल देना निष्कासन।

व्यावृत्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+वृत्+क्त] 1 हटाया हुआ वापिस लिया गया व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्य श्रुतौ तस्करता स्थिता रघु० १।२७ विक्रम० १।७ 2 वियुक्त किया गया अलग हटाया हुआ 3 निकाला हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 4 चक्कर खाया हुआ मुड़ा हुआ 5 लपेटा हुआ घिरा हुआ 6 रुका हुआ उपरत – कु० २।६५ 7 फाड़कर टुकड़े टुकड़े किए हुए।

व्यासः [वि+अस्+घञ्] 1 वितरण विभाजन 2 समास का विग्रह या विश्लेषण 3 अलगाव, पृथक्ता 4 प्रसार, फैलाव 5 अर्ज चौड़ाई 6 वृत्त का व्यास 7 उच्चारणदोष 8 व्यवस्था सकलन 9 व्यवस्थापक, संकलयिता 10 एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह पराशर का पुत्र था, सत्यवती इसकी माता थी) (सत्यवती का शन्तनु के साथ विवाह होने से पूर्व इसका

जन्म हुआ था) और जन्म होते ही वह वन में चला गया। वहाँ वह वानप्रस्थ होकर घोर तपस्साधना में लीन रहा जब तक कि इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियों में सन्तान उत्पन्न करने के लिए इसे नहीं बुलाया। इस प्रकार वह पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर का पिता था। पहले पहले वह रंग का काला होने तथा एक द्वीप पर सत्यवती से जन्म लेने के कारण 'कृष्णद्वैपायन' कहलाया, परन्तु बाद में इसका नाम व्यास पड़ा क्योंकि इसने ही वेदों के मन्त्रों को क्रमबद्ध कर वर्तमान रूप दिया। "विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इतिस्मृतः"। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसी ने महाभारत की रचना कर उसे गणपति द्वारा लेखबद्ध करवाया। अठारह पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का रचयिता भी इसी को माना जाता है, यह सात चिरजीवियों में से एक है (दे० 'चिरजीविन्') 11 वह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणों की कथा करता है।

व्यासक्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+सञ्ज्+क्त] 1. जो दृढ़ता पूर्वक डटा रहे 2. जुड़ा हुआ, लगा हुआ, जुटा हुआ व्यस्त, (अधि० के साथ) 3 वियुक्त, पृथक् किया हुआ, अलग किया हुआ 4 परेशान, व्याकुल, घबराया हुआ।

व्यासङ्गः [वि+आ+सञ्ज्+घञ्] 1. सटा होना, डटे रहना, जुटा रहना 2. एकनिष्ठता, भक्ति—भामि० १।७९ 3. अपरिश्रम अध्ययन 4. ध्यान 5. पृथक्ता, संयोग।

व्यासिद्ध (भू० क० कृ०) [वि+आ+सिध्+क्त] 1. प्रतिषिद्ध, वर्जित 2. निषिद्धपण्य, चोरी का माल।

व्याहत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हन्+क्त] 1 अवरुद्ध, रोका हुआ 2 हटाया हुआ, पीछे धकेला हुआ 3. विफल किया हुआ, निराश कि० ३।४० 4 व्याकुल, घबराया हुआ, आतंकित। सम० —अर्थता रचना का एक दोष —दे० काव्य० ७।

व्याहरणम् [वि+आ+हृ+ल्युट्] 1 बोलना, उच्चारण करना 2. भाषण, वर्णन।

व्याहारः [वि+आ+हृ+घञ्] 1 भाषण, बोलना, ५,८ —उत्तर० ४।१८, ५।२९ 2. आवाज, स्वर, ध्वनि भट्टि० ५।१।

व्याहृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हृ+क्त] कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ।

व्याहृतिः (स्त्री०) [वि+आ+हृ+क्तिन्] 1 उच्चारण, भाषण, कथन न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्—कु० ३।६० 2. वक्तव्य, अभिव्यक्ति—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुतिः परमेष्ठिनः —रघु० १०।३३ 3. सन्ध्या करते समय प्रतिदिन प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारित ईश्वर परक शब्द विशेष (यह व्याहृतियाँ तीन हैं—भूर्, भुवस्, तथा स्वर् जिनका 'ओ३म्' के पश्चात् उच्चारण किया जाता है, कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार व्याहृतियाँ गिनती में सात हैं)।

व्युच्छित्तिः (स्त्री०), **व्युच्छेदः** [वि+उत्+छिद्+क्तिन्, घञ् वा] काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश।

व्युत्क्रमः [वि+उत्+क्रम्+घञ्] 1 अतिक्रमण, विचलन 2. उलटा क्रम, वैपरीत्य 3. अव्यवस्था, गड़बड़ी।

व्युत्क्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+उत्+क्रम्+क्त] 1. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया गया 2 जो विदा हो गया हो, छोड़कर चला गया हो, बीत गया हो।

व्युत्थानम् **व्युत्थितिः** (स्त्री०) [वि+उ+स्था+ल्युट् क्तिन् वा] 1 महान् क्रियाकलाप 2 किसी के विरुद्ध खड़े होना, विरोध, रुकावट 3. स्वतन्त्र कर्म, मनोऽनुकूल कार्य 4 (योग० में) धार्मिक मनोयोग की पूर्ति या भावात्मक मनन 5 एक प्रकार का नृत्य 6 (हाथी को) उठाना —शि० १८।२९

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) [वि+उत्+पद्+क्तिन्] 1 मूल, उत्पत्ति 2 व्युत्पादन, निर्वचन 3 पूरी प्रवीणता, पूरी जानकारी 4 विद्वत्ता, ज्ञान —व्युत्पत्तिरावर्जितकोविदापि न रञ्जनाय क्रमते जडानाम् विक्रम० १।१५, १८।१०८।

व्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [वि+उत्+पद्+क्त] 1. उत्पादित, पैदा किया गया 2 निर्वचन द्वारा निर्मित 3 व्याकरण द्वारा निष्पन्न, निरुक्त, (शब्द) जिसके निर्वचन का पता लग गया हो (विप० अव्युत्पन्न या मूल) 4 पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया महावी० ४।५७ 5 पूरी तरह प्रवीण, विद्वान्, पण्डित।

व्युत (भू० क० कृ०) [वि+उन्द्+क्त] गीला, आर्द्र, भिगोया हुआ।

व्युदस्त (भू० क० कृ०) [वि+उद्+अस्+क्त] एक ओर फेंका हुआ, अस्वीकृत, दूर किया हुआ।

व्युदासः [वि+उद्+अस्+घञ्] 1. एक ओर फेंकना, अस्वीकृति 2. (व्या० में) निकाल देना 3 प्रतिषेध 4. उपेक्षा, उदासीनता 5. हत्या, विनाश शि० १५।१७

व्युपदेशः [वि+उप+दिश्+घञ्] व्याज, बहाना।

व्युपरमः [वि+उप+रम्+अप्] विराम, यति, समाप्ति।

व्युपशमः [वि+उप+शम्+अप्] 1 विराम का अभाव 2 शान्ति 3 पूर्ण विराम (यहाँ 'वि' का अर्थ 'तीव्रता' है।

व्युष्ट (भू० क० कृ०) [वि + उष् + क्त] 1 जलाया गया 2 पौ फटी, प्रभात हो गया 3 उज्ज्वल या स्वच्छ किया गया हुआ, **ष्टम्** 1 पौ फटना, प्रभात शि० १२।४ 2 दिन 3 फल।

व्युष्टि (स्त्री०) [वि + वस् + क्तिन्] 1 प्रभात 2 समृद्धि 3 प्रशंसा 4 फल परिणाम।

व्यूढ (भू० क० कृ०) [वि + वह् + क्त] 1 फैलाया हुआ, विकसित, विशाल, व्यापक व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः रघु० १।१३ 2 इकट्ठा किया हुआ 3 क्रमबद्ध, व्यवस्थित, (सेना आदि) मुव्यवस्थित भग० १।२ 4 अव्यवस्थित, क्रमहीन 5 विवाहित। सम० **कङ्कट** (वि०) कवचधारी, जिरह बख्तर पहने हुए।

व्यूत (वि०) [वि + वे + क्त] 1 अन्तर्ग्रथित, गांठा गया, बुना हुआ।

व्यूतिः (स्त्री०) [वि + वे + क्तिन्] 1 बुनाई, सिलाई 2 बुनाई का मजदूरी।

व्यूह [वि + ऊह् + घञ्] 1 सैनिक विन्यास मनु० ७।१८७ 2 सेना, दल, टुकड़ी, व्यूहावुभौ तावितरेतरस्मात् भङ्गं जयं चापतुरव्यवस्थम् रघु० ७।५४ 3 बड़ी संख्या, समवाय, समुच्चय, समूह 4 भाग, अंश 5 शरीर 6 तर्कना, निर्माण 7 तर्कना, तर्क। सम० **पार्ष्णि** (स्त्री०) सेना का पिछला भाग, **भङ्ग**, **भेद** सैनिक व्यूह को तोड़ देना।

व्यूहनम् [वि + ऊह् + ल्युट्] 1 सेना को व्यवस्थित करना, सेना को क्रमबद्ध करना 2 शरीर के अंगों को सरचना।

व्यृद्धि (स्त्री०) [विगता ऋद्धिः प्रा० स०] 1 समृद्धि का अभाव, बुरी किस्मत, दुर्भाग्य (विगता ऋद्धि व्यृद्धि) जैसा कि यथावत्स्कव्युद्धिम् शि० [illegible]।

व्ये (भ्वा० उभ० व्ययति, [illegible]) 1 ढकना, 2 सीना।

व्योकार [व्या + कृ + अण्] लुहार।

व्योमन् (नपुं०) [व्ये + मनिन्, पृषो०] आकाश, अन्तरिक्ष —अम्बरव्यापारम् [illegible] —काव्य० १० मेघ० ४७ रघु० १३।६७ नै० २२।४८ 2 जल 3 सूर्य का मन्दिर [illegible]। सम० **उदकम्** ओस का पानी, ओस, **केश**, **केशिन्** (पुं०) शिव का विशेषण, **गङ्गा** स्वर्गीय गंगा, **चारिन्** (पुं०) 1 देव 2 पक्षी 3 सन्त, महात्मा 4 ब्राह्मण 5 तारा, **धूम** बादल, **नासिका** एक प्रकार की बटेर, **पदम्**, **मण्डलम्** [illegible] पताका —**मुद्गर** हवा का झोंका, **यानम्** विमान, आकाशयान, **सद्** (पुं०) 1 देव, सुर 2 गन्धर्व 3 भूत-प्रेत, इसकी रूह,—**स्पृश्** (वि०) गगनचुम्बी अत्यन्त ऊँचा।

व्रज् (भ्वा० पर० व्रजति) 1 जाना, चलना, प्रगति करना नाविनीतैर्व्रजेद् धुर्यैः मनु० ४।६७ 2. पधारना, पहुँचना, दर्शन करना मामेकं शरणं व्रज—भग० १८।६६ 3 विदा होना, सेवा से निवृत्त होना, पीछे हटना 4 (समय का) बीतना इयं व्रजति यामिनी त्यज नरेन्द्र निद्रारसम् विक्रम० ११।३४, (यह धातु प्रायः गम् या या धातु की भाँति प्रयुक्त होती है) **अनु** 1 बाद में जाना, अनुगमन करना मनु० ११।११ कु० ४।३८ 2 अभ्यास करना, सम्पन्न करना 3 सहारा लेना **आ** — आना, पहुँचना, **परि** भिक्षु या साधु के रूप में इधर-उधर घूमना, सन्यासी या परिव्राजक हो जाना **प्र** — 1 निर्वासित होना 2 सांसारिक वासनाओं को छोड़ देना, चौथे आश्रम में प्रविष्ट होना अर्थात् संन्यासी हो जाना— मनु० ६।३८, ८।३६३।

व्रज [व्रज् + क] 1 समुच्चय, समूह, रेवड़, समूह —तेनाग्रतः पौरजनस्य तस्मिन् विहाय सर्वान्नृपतीन्निपेतुः रघु० ६।७ ७।६७ शि० ६।६ १८।३३ 2 ग्वालों के रहने का स्थान 3 बाड़ा, गोशाला शि० २।६४ 4 आराम, विश्रामस्थल 5 सड़क, मार्ग 6 बादल 7 मथुरा के निकट एक जिला। सम० **अङ्गना**, **युवतिः** (स्त्री०) व्रज में रहने वाली स्त्री, ग्वालिन भामि० २।१६५ **अजिरम्** गोशाला **किशोरः**, —**नाथ**, —**मोहन**, —**वर**, —**वल्लभः** कृष्ण के विशेषण।

व्रजनम् [व्रज् + ल्युट्] 1 घूमना फिरना, यात्रा करना 2 निर्वासन, देश निकाला।

व्रज्या [व्रज् + क्यप् + टाप्] 1 साधु या भिक्षु के रूप में इधर-उधर घूमना 2 आक्रमण, हमला, प्रस्थान 3 ढेर, समवाय, जनजाति या कबीला, सम्प्रदाय 4 रंगभूमि, नाट्यशाला।

व्रण् (भ्वा० पर० व्रणति) ध्वनि करना।

ii (चुरा० उभ० व्रणयति - ते) चोट पहुँचाना, घायल करना।

व्रण, **व्रणम्** [व्रण् + अच्] 1 घाव, क्षत, जख्म, चोट रघु० १२।[illegible] 2 फोड़ा, नासूर। सम० **अरिः** बोल नामक गन्धद्रव्य, **कृत्** (वि०) घाव करने वाला (पुं०) भिलावे का पेड़ — **विरोपण** (वि०) घाव भरने वाला श० ४।१३ **शोधनम्** घाव को साफ करना तथा पट्टी बाँधना, **हृत्** एरंड का पौधा।

व्रणित (वि०) [व्रण + इतच्] घायल, जिसके खरोंच आ गई हो उत्तर० ४।३।

व्रत, **व्रतम्** [व्रज् + घ, जस्य तः] 1 भक्ति या साधना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञा का पालन, प्रतिज्ञा, प्रण—अभ्यर्चनीय व्रतमास्थितारम्—रघु० १३।६७, २।४, २५, (भिन्न भिन्न पुराणों में अनेक व्रतों का वर्णन किया गया है,

परन्तु उनकी संख्या निश्चित नहीं हो सकी क्योंकि बराबर नये नये व्रतों की रचना प्रतिदिन होती रहती है यथा सत्यनारायण व्रत 2. संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्चय—सोऽभूत् भग्नव्रतः शत्रूनुद्धृत्य प्रतिरोपयन् रघु० १५।४२, इसी प्रकार 'सत्यव्रत, दृढव्रत इत्यादि 3 भक्ति या आस्था का पदार्थ भक्ति जैसा कि पतिव्रता (पतिर्व्रतं यस्या सा) यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रता—भग० ९।२५ 4 संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास जैसा कि अर्कव्रत में 5 जीवन चर्या आचरण चालचलन श० ५। ६ 6 अध्या देश विधि नियम 7 यज्ञ 8 कर्म करतब कार्य। सम०—आचरणम् किसी प्रतिज्ञा का पालन करना —आदेशः (किसी द्विज के) बालक का यज्ञोपवीत संस्कार, —उपवासः किसी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अनशन करना —ग्रहणम् किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए संकल्प लेना —चर्यः ब्रह्मचारी वेदविद्यार्थी दे० ब्रह्मचारिन्, —चर्या ब्रह्मचर्य का पालन करना, —पारणम्, —णा उपवास खोलना या प्रतिज्ञा की सफल समाप्ति —भङ्गः 1 संकल्प तोड़ना 2 प्रतिज्ञा तोड़ना —भिक्षा उपनयन संस्कार के अवसर पर भिक्षा मांगना —लोपनम् प्रतिज्ञा को तोड़ना, —वैकल्यम् किसी धार्मिक संकल्प का अधूरा रह जाना, —संग्रहः व्रत की दीक्षा लेना, —स्नातकः वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था को पूरा कर लिया है अर्थात् ब्रह्मचर्य नामक प्रथम आश्रम—दे० स्नातक।

व्रततिः, —ती (स्त्री०) [प्र+तन्+क्तिन् च पृषो० पस्य व व्रतति+ङीष्] 1 बेल लता पादाकृष्टव्रततिवलयासङ्गसंजातपाशः श० १।३३ रघु० १४।१ 2 फैलाव विस्तार।

व्रतिन् (वि०) [व्रत+इनि] प्रतिज्ञा पालन करने वाला भक्त पुण्यात्मा, (पुं०) 1 ब्रह्मचारी 2 संन्यासी भक्त—श० ५।९ 3 जो यज्ञ का उपक्रम करता है—दे० यजमान।

व्रश्न दे० 'व्रश्च'।

व्रह्मन् दे० 'ब्रह्मन्'।

व्रश्च् (तुदा० पर० वृश्चति, वृक्ण, प्रेर० व्रश्चयति—ते इच्छा० विव्रश्चिषति या विव्रक्षति) 1 काटना काट डालना, फाड़ना, चीरना 2 घायल करना।

व्रश्चनः [व्रश्च्+ल्युट्] 1 छोटी आरी 2 बारीक रेती जिसे सुनार काम में लाते हैं —नम् काटना, फाड़ना घायल करना।

व्राजिः (स्त्री०) [व्रज्+इञ्] हवा का झोंका, तूफानी हवा, झंझावात।

व्रातः [वृ+अतच्, पृषो० साधु] समुदाय, रेवड़, समुच्चय —व्रताकाशा यान्ती—भामि० २९, रघु० १२।९४, शि० ४।३५, —तम् 1 शारीरिक श्रम मजदूरी 2 दैनिक मजदूरी 3 यदा-कदा कार्य में नियुक्ति।

व्रातीन (वि०) [व्रातेन जीवति—व्रात+ख] दैनिक-मजदूरी से जीविका चलाने वाला किराये का मजदूर बेलदार, मल्ली वाला।

व्रात्य [व्रातात् समूहात् च्यवति यत्] 1 प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो मुख्य संस्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (जिसका उपनयन संस्कार नहीं हुआ) आविबहिष्कृत भवन्त्या हि व्रात्यायमर्तानपालश्च परित्यक्तव्रात्यागमनम् मनु० १०। 2 नीच पुरुष अधम पुरुष 3 विशेष जाति (शूद्रपिता और क्षत्रिय माता की संतान) का पुरुष। सम०—ब्रुवः अपने आपको व्रात्य कहता है —स्तोमः उपर्युक्त संस्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण छीने गये अधिकारों को फिर से प्राप्त करने के लिए किया गया यज्ञ।

व्री I (क्र्या० पर० व्रिणाति व्रीणाति) छांटना चुनना तु० वृ०।

II (दिवा० आ० व्रीयते व्रीण) 1 जाना हिलना-जुलना 2 चुना जाना।

व्रीड् (दिवा० पर० व्रीड्यति) 1 लज्जित होना शर्मिन्दा होना 2 फेंकना डालना भेज देना।

व्रीडः, —डा [व्रीड्+घञ्—व्रीड अ+टाप्] 1 लज्जा प्रेमादिकार्यासमागमैर्विलिल्ये शि० ३।६० व्रीडमावहति मे स (सम्प्रति) सम्प्रति रघु० ११।७३ 2 विनय लज्जाशीलता शि० १०।१८।

व्रीडित (भू० क० कृ०) [व्रीड्+क्त] लज्जित किया गया शर्मिन्दा लज्जाशील।

व्रीस् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० व्रीसति व्रीसयति—ते) क्षति पहुंचाना हत्या करना।

व्रीहिः [व्री+हि किच्च] 1 चावल जैसा कि ब्रह्मव्रीहि में 2 चावल का दाना। सम०—अगारम् धान्यागार, —पर्णी —काञ्चनम् मसूर की दाल —राजिकम् चना, कागु या कागनी चावल।

वुड् (तुदा० पर० वुडति) 1 ढकना 2 इकट्ठा होना 3 एकत्र करना संचय करना 4 डूबना, नीचे जाना।

व्रूस् (भ्वा० पर० उभ०) दे० 'व्रीस्'।

व्रैहेय (वि०) (स्त्री०—यी) [व्रीहि+ढक्] 1 चावलों के योग्य 2 चावल के साथ बोया हुआ —यम् चावल का खेत —यम् खेत जिसमें चावल बोये जाने चाहिए।

व्ली (क्र्या० पर० व्लिनाति—व्लीनाति विरल प्रयोग—प्रेर० व्लेपयति) 1 जाना हिलना-जुलना 2 धारण पोषण करना, थामे रखना, निर्वाह करना 3 छांटना, चुनना।

व्लेक्ष् (चुरा० उभ० व्लेक्षयति—ते) देखना।

शः [शो + ड] 1. काटने वाला, विनाशकर्ता शि० १४। ४९ 2. शस्त्र 3. शिव — शम् आनन्द—मनु० ७।१६।

शंयु (वि०) [शं शुभम् अस्त्यस्य शम् + युस्] प्रसन्न, समृद्ध भट्टि० ४।१८।

शंव [शम् + व] 1 प्रसन्न, भाग्यशाली (पुं०) 1 ठीक दिशा में हल चलाना 2 इन्द्र का वज्र 3 मूसल के सिरे जो लोहे का बना होता है।

शंस् (भ्वा० पर० शंसति, शस्त, कर्मवा० शस्यते) 1 प्रशंसा करना, स्तुति करना, अनुमोदन करना — साधु सार्थिर्वति भूपान् शशंसुर्वीक्ष्य ... —राम० [illegible] ५।१ 2 कहना, बयान करना, अभिव्यक्त करना, [illegible] करना, सूचित करना, घोषणा करना, विवरण देना (सम्प्र० या कभी संब० के साथ अथवा स्वतंत्र रूप से) शशंस सीता परिदेवनान्तमनुष्ठितं शासनमग्रजाय रघु० १४।८३, न मे ह्रिया शंसति किंचिदीप्सितम् [illegible] ४।३०, ५।३३, ११।४८, कु० ३।६०, ५।४९ 3 संकेत करना, कह रखना, बताना [illegible] मावशो माधवश्री नियोगे पूर्वं शंसत्यादरं [illegible] मालवि० [illegible] कि० ५।२३, कु० ३।४४ 4 आवृत्ति करना, पाठ करना 5 चोट मारना, क्षति पहुँचाना 6 बुरा भला कहना, बदनाम करना, अभि—, 1 अभिशाप देना 2 दोषारोपण करना, निन्दा करना, बदनाम करना याज्ञ० ३।२८६ 3 प्रशंसा करना, आ (प्रायः आ) 1 आशा करना, प्रत्याशा करना, इच्छा करना, अभिलाषा करना — स्वकार्यसिद्धिं पुनराशशंसे कु० ३।५७ [illegible] भट्टि० [illegible] 2 आशीर्वाद देना [illegible] 3 कहना, घोषित करना [illegible] प्र—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आशीर्वाद करना, गुणकथन करना, श्लाघा करना [illegible] मनु० ५।१०३ [illegible] भट्टि० [illegible] रघु० ५।२५, १७।३६।

शंसनम् [शंस् + ल्युट्] 1 प्रशंसा करना 2 कहना, वर्णन करना 3 पाठ करना।

शंसा [शंस् + अ + टाप्] 1 श्लाघा 2 अभिलाषा, इच्छा, आशा 3 दोहराना, वर्णन करना।

शंसित (भू० क० कृ०) [शंस् + क्त] 1 जिसकी श्लाघा की गई हो, स्तुति की गई हो 2 बोला गया, कहा गया, उक्त, घोषित 3 अभिलषित, इच्छित 4 निश्चय किया गया, स्थापित, निर्धारित 5 जिस पर मिथ्या दोषारोपण किया गया हो, कलंकित।

शंसिन् (वि०) [शंस् + इनि] (प्रायः समास के अन्त में) 1 श्लाघा करने वाला 2 कहने वाला, घोषणा करने वाला, सूचित करने वाला, प्रभावनी दोहद-शंसिनः [illegible] रघु० १४।४९ 3 संकेत करने वाला, पहले से कह रखने वाला — भूयान् सन्नद्धकारणशंसिन कु० [illegible], प्रार्थनासिद्धिशंसिन रघु० १।४२ शि० ९।७७ 4 शकुन बताने वाला, भविष्य कथन करने वाला रघु० ३।१४ १२।९०।

शक् (स्वा० पर० शक्नोति, शक्त) 1 योग्य होना, सक्षम होना, सबल होना, अमल में लाना (प्रायः तुमुन्नन्त के साथ, प्रयुक्त होकर 'सकना' अर्थ प्रकट करना)—अवशयन वक्तुमशक्नुवन्त्य शाखाभिरावर्जित-पल्लवाभि रघु० १३।२४, भट्टि० ३।६ भग० २० कभी कभी कर्म० या सम्प्र० के साथ—मनु० ११।१९४ 2 सहन करना, बर्दाश्त करना 3 शक्तिशाली होना कर्मवा० समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के योग्य होना (निम्नांकित तुमुन्नन्त का कर्मवा० का अर्थ देना) तत्कर्तुं शक्यते 'यह किया जा सकता है' इच्छा० (शिक्षति) 1 समर्थ होने की इच्छा करना 2 सीखना।

ii (दिवा० उ० शक्यति—ते, शक्त) 1 समर्थ होना, अमल में लाने की शक्ति रखना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना।

शक [शक + अच्] 1 एक राजा (विशेषतः 'शालिवाहन' परन्तु इस शब्द के सही अर्थ तथा क्षेत्र के विषय में अभी तक विद्वानों में मतैक्य नहीं हो सका) 2 काल संवत् (यह शब्द विशेष रूप से शालिवाहन संवत् के लिए जो ख्रीस्ताब्द से ७८ वर्ष के पश्चात् प्रारम्भ हुआ प्रयुक्त होता है) —का (पुं० ब० व०) 1 एक देश का नाम 2 एक विशेष जन-जाति या राष्ट्र का नाम (मनु० १०।४४ में पौण्ड्रक के साथ इस शब्द का भी प्रयोग मिलता है) सम० —अन्तकः, —अरिः राजा विक्रमादित्य के विशेषण जिसने शकों का उन्मूलन किया —अब्दः शकसंवत् का वर्ष, —कर्तृ, —कृत् (पुं०) संवत् का प्रवर्तक।

शकट,—टम् [शक् + अटन्] गाड़ी, छकड़ा, भार ढोने की गाड़ी रोहिणी शकटम् पञ्च० १।२१३, २११, याज्ञ० ३।४२ —टः 1 सैनिक व्यूहविशेष मनु० ७।१८७ 2 एक विशेष प्रकार की तोल जो एक गाड़ी-भर बोझ या २००० पल के बराबर है 3 एक राक्षस का

नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही, मार डाला था 4. तिनिश नामक पेड़। सम० अरिः,—हन् (पुं०) कृष्ण के विशेषण, आह्वा रोहिणी नामक नक्षत्र (इसका आकार 'शकट' जैसा होता है), —विलः जलकुक्कुट।

शकटिका [शकट+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटी गाड़ी, खिलौना-गाड़ी जैसा कि 'मृच्छकटिका' में।

शकन् (नपुं०) मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों का मल, लीद गोबर आदि (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० से आगे विकल्प से 'शकृत्' आदेश हो जाता है)।

शकलः [शक्+कलक्] 1 भाग, अंश, हिस्सा, टुकड़ा खण्ड (इस अर्थ में नपुं० भी) उपलशकलमेतद्भेदकं गोमयानाम् मुद्रा० ३।१५ रघु० २।४६ ५।७० 2. वल्कल, छिलका 3 (मछली की) खाल, परत।

शकलित (वि०) [शकल+इतच्] खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

शकलिन् (वि०) [शकल+इनि] मछली।

शकारः (पुं०) राजा की रखैल का भाई, राजा की उस पत्नी का भाई जिससे विधिपूर्वक विवाह न किया गया हो, अनूढा भ्राता (इसका वर्णन बहुधा मिश्रित मिलता है, नीच कुल में जन्म लेने के कारण मूर्खता, घमंड, आदि अवगुणों के विद्यमान रहते हुए भी राजा का साला होने के कारण इसे उच्चपद प्राप्त होता है, शूद्रकरचित मृच्छकटिक नाटक में यह प्रमुख भाग लेता है, मिथ्या दंभ, हलकापन तथा ओछापन इसके चरित्र की विशेषता है बार-बार उसके उच्चसम्बन्ध का उल्लेख, उसकी उपहासास्पद मूर्खता, एवं प्रमाद तथा अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर नायिका का गला घोटने की क्रूरता इसकी योग्यता के परिचायक हैं सा० द० ८१ में इसकी परिभाषा दी गई है मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः। सोऽयमनूढाभ्राता राज्ञः श्यालः शकार इत्युक्तः॥

शकुनः [शक्+उनन्] 1 पक्षी शकुनोच्छिष्टम् - याज्ञ० १।१६८ 2 पक्षिविशेष, चील, गिद्ध, —नम् 1 शगुन, लक्षण, शुभाशुभ बतलाने वाला चिह्न कि० १।८३ 2 शंकासूचक शगुन। सम० —ज्ञ (वि०) शगुनों का जानने वाला, —ज्ञानम् शगुनों का ज्ञान, भवितव्यता, होनहार, —शास्त्रम् वह शास्त्र जिसमें शगुनसम्बन्धी विचार किये गये हैं, शगुन शास्त्र।

शकुनिः [शक्+उनि] 1 पक्षी - उत्तर० २।२५, मनु० १२।६३ 2 गिद्ध, चील, बाज 3 मुर्गा 4 गान्धारराज सुबल का एक पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी का भाई, इस प्रकार यह दुर्योधन का मामा था। इसी ने पांडवों को उजाड़ने के लिए दुर्योधन की अनेक दुरभियोजनाओं में सहायता दी। आजकल इस नाम का प्रयोग उस दुर्वृत्त रिश्तेदार के लिए होता है जिसका परामर्श बर्बादी का कारण बने। सम० —ईश्वरः गरुड़, —प्रपा पक्षियों को पानी पिलाने की कूंड, —वादः 1 पक्षी का कूजन 2 मुर्गे की बांग।

शकुनी [शकुन+ङीष्] 1 चिड़िया गौरैया 2 एक पक्षिविशेष।

शकुन्तः [शक्+उन्त] 1 एक पक्षी चमकार्पितशकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलम् श० ७।११ 2 नीलकण्ठ पक्षी 3 पक्षिविशेष।

शकुन्तकः [शकुन्त+कन्] पक्षी।

शकुन्तला [शकुन्तैः लायते—ला+कार्थे क, टाप्] विश्वामित्र ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गई मेनका अप्सरा से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री (जब मेनका स्वर्ग गई तो वह इस बच्ची को एकान्त जंगल में छोड़ गई वहाँ पक्षियों ने इसका पालन पोषण किया इसी लिए इसका नाम शकुन्तला पड़ा। बाद में यह महर्षि कण्व को मिली। कण्व ने उसे अपनी पुत्री की भाँति पाला। जब आखेट करता हुआ दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम की ओर आया तो वह शकुन्तला के लावण्य से आकृष्ट हो गया। उसने शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे राजी कर उससे गान्धर्व विवाह कर लिया (दे० दुष्यन्त)। शकुन्तला से एक पुत्र पैदा हुआ, इसका नाम भरत था यह चक्रवर्ती राजा बना इसी के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

शकुन्तिः [शक+उन्ति] पक्षी कलमविरलरम्यकांडा क्वणन्तु शकुन्तयः उत्तर० ३।२८।

शकुन्तिका [शकुन्ति+कन्+टाप्] 1 पक्षी—उत्तर० १।४५ 2 पक्षिविशेष 3 टिड्डा, झींगुर।

शकुलः, —ली [शक्+उलच्] एक प्रकार की मछली। सम० —अदनी एक जड़ीबूटी, कटकी या कुटकी —अर्भकः एक प्रकार की मछली।

शकृत् (नपुं०) [शक्+ऋतन्] मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों की लीद गोबर आदि। सम० —करिः (पुं०, स्त्री०) —करी बछड़ा - शकृत्करिर्वत्स —सिद्धा०, —द्वारम् गुदा, मलद्वार, —पिण्डः, —पिण्डकः गोबर का गोला शकृत्पिण्डप्रदिग्धैः शकृत्पिण्डकालातम् उत्तर० ४।२३।

शक्करः, **शक्करिः** [शक+किरच्, श+कृ+अच् कर्म० स०] बैल, साँड़।

शक्करी [शक्कर+ङीप्] 1 नदी 2 करधनी, मेखला 3 मांस आदि की स्त्री।

शक्त (भू० क० कृ०) [शक्+क्त] 1 योग्य, सक्षम, समर्थ

(सम्ब०, अधि० या तुमुन्नन्त के साथ) – बहुवोऽस्य कर्मणः शक्ताः वेणी० ३, तस्योपकारे शक्तस्त्वं किं जीवन् किमुतान्यथा –भ० 2 मज़बूत, ताकतवर, शक्तिशाली 3 धनाढ्य, समृद्धिशाली मनु० ११।९ 4 सार्थक, अभिव्यञ्जक (शब्द) 5 चतुर प्रज्ञावान् 6 प्रियवादी।

शक्तिः (स्त्री०) [शक् + क्तिन्] 1 बल, योग्यता, धारिता, सामर्थ्य ऊर्जा पराक्रम दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या पंच० १।३६१ ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ रघु० १।२२ इसी प्रकार यथाशक्ति, स्व शक्ति आदि राज्यशक्ति (इस के तीन तत्त्व हैं 1 प्रभुशक्ति या प्रभावशक्ति 'राजा की अपनी प्रमुख पदश्री' 2 मन्त्रशक्ति 'सत्परामर्श की शक्ति तथा 3 उत्साहशक्ति 'प्रेरकशक्ति') राज्य नाम शक्ति त्रयायत्तम् दश०, त्रिसाधना शक्तिरिवार्थसञ्चयम् रघु० ३।१३ ६।३३ १७।६३ शि० २।२६ 2. रचनाशक्ति, काव्य शक्ति या प्रतिभा – शक्तिर्नि-पुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् काव्य० १ दे० तत्स्थानीय व्याख्या 3 देव की सक्रिय शक्ति, यह शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी दिव्यता (इनकी गिनती विभिन्न प्रकार से की जाती है कहीं आठ कहीं नौ और कहीं पचास तक) स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः –मा० ५।१, श० ७।३५ 4. एक प्रकार का अस्त्र –शक्तिखण्डार्पितेन गाण्डीविनोक्तम् वेणी० ३, तस्मै विभद्द भीमतरं शक्त्या वक्षसि लक्ष्मणम् रघु० १२।७७ 5 बर्छी, नेजा, शूल भाला 6 (न्या० में) किसी पदार्थ का उसके बोधक शब्द से सम्बन्ध 7 कारण की अन्तर्हित शक्ति जिससे कार्य की उत्पत्ति होती है 8 (काव्य० में) शब्दशक्ति या शब्द की अर्थशक्ति (यह संख्या में तीन हैं अभिधा लक्षणा, व्यञ्जना) सा० द० ११ 9 अभिधाशक्ति संकुचितार्थ (विप० लक्षणा और व्यञ्जना), 10 स्त्री की जननेन्द्रिय भग, शाक्तसम्प्रदाय के अनुयायियों द्वारा पूजित शिवलिङ्ग की मूर्ति। सम० –अर्धः उद्योग तथा श्रम के फलस्वरूप हाँपना तथा शरीर का पसीने से तर होना, –अपेक्ष, –अपेक्षिन् (वि०) सामर्थ्य का ध्यान रखने वाला, –कुण्ठनम् शक्ति को कुण्ठित करना, –धर (वि०) 1 बल या अर्थ को धारण करने वाला 2. बर्छीधारी, (–रः) बल या अर्थ का बोध अथवा शब्दशक्ति का ज्ञान 3 बर्छीधारी, भालाधारी 4 शिव का विशेषण 5 कार्तिकेय का विशेषण –ग्राहक (वि०) शब्द के अर्थ की स्थापना या निर्धारण करने वाला, (–कः) कार्तिकेय का विशेषण, –त्रयम् राज्यशक्ति के घटक तीन तत्त्व दे० शक्ति (2) ऊपर, –धर (वि०) शक्तिशाली (–रः) 1 बर्छीधारी 2. कार्तिकेय का विशेषण, –पाणिः, –भृत् (पु०) 1 बर्छीधारी 2 कार्तिकेय का विशेषण, –पातः शक्ति क्षय, पराजय, –पूजकः शाक्त, –पूजा शक्ति की पूजा, –वैकल्यम् शक्तिक्षय, दुर्बलता अक्षमता, –हीन (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, बलरहित, नपुंसक –हेतिकः भाला धारी, बर्छीधारी।

शक्तितः (अव्य०) [शक्ति + तसिल्] शक्ति के अनुसार यथायोग्य, यथाशक्ति।

शक्न, शक्ल (वि०) [शक् + न क्न वा] मिष्टभाषी, प्रियवादी।

शक्य (सं० कृ०) [शक् + यत्] 1 संभव क्रियात्मक किये जाने के योग्य (प्रायः तुमुन्नन्त के साथ) शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् भर्तृ० २।११ रघु० २।४० ५४ 2 कार्यान्वयन के योग्य 3 कार्यान्वयन में सरल 4 प्रत्यक्ष कथा गया, अभिहित (शब्दार्थ आदि) शक्योऽर्थोऽभिधया ज्ञेयः सा० द० ११ ८ सभाव्य (कभी-कभी 'शक्यम्' शब्द कर्मवा० में तुमुन्नन्त के साथ विधेय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, उस समय तुमुन्नन्त का वास्तविक अभिप्राय कर्म० में होता है एवं हि प्रणयवती सा शक्यमुपेक्षितुं कुपिता —मालवि० ३।२२, शक्यं अरविन्दसुरभिः कणवाही मालिनीतरङ्गाणाम् अङ्गैरनङ्गतप्तैरविरलमालिङ्गितुं पवनः श० ३।६ विभूतयः शक्यमवाप्तमूर्जिता —कुमा०, भग० १८।११। सम० –अर्थः प्रत्यक्ष अभिहितार्थ।

शक्रः [शक् + रक्] 1 इन्द्र – एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते कुव० 2 अर्जुन का वृक्ष 3. कुटज का पेड़ 4 उल्लू 5 ज्येष्ठा नक्षत्र 6 चौदह की संख्या। सम० –अशनः कुटज का वृक्ष, –आख्यः उल्लू, –आत्मजः 1 इन्द्र का पुत्र जयन्त 2 अर्जुन, –उत्थानम्, –उत्सवः भाद्रपदशुक्ला द्वादशी को इन्द्र के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव पर्व, –गोपः एक प्रकार का लाल कीड़ा, तु० इन्द्रगोप –जः, –जातः कौवा –जित्, –जित् (पु०) रावण के पुत्र मेघनाद के विशेषण, –द्रुमः देवदारु का वृक्ष, –धनुस्, –शरासनम् इन्द्रधनुष –ध्वजः इन्द्र के सम्मान में स्थापित झंडा, –पर्यायः कुटज का वृक्ष, –पादपः 1 कुटज का पेड़ 2 देवदारु वृक्ष, –प्रस्थम् इन्द्रप्रस्थ –भवनम्, –भुवनम्, –वासः स्वर्ग, बैकुण्ठ, –मूर्धन् (नपुं०) –शिरस् (नपुं०) बांबी, वल्मीक –लोकः इन्द्र का संसार, –वाहनम् बादल, –शाखिन् (पु०) कुटज का वृक्ष, –सारथिः इन्द्र का रथवान्, मातलि का विशेषण, –सुतः 1 जयन्त का विशेषण 2 अर्जुन का विशेषण, 3 बालि का विशेषण।

शक्राणी [शक्र + ङीप्, आनुक्] इन्द्र की पत्नी, शची।

शक्रिः [शक् + क्रिन्] 1 बादल 2 इन्द्र का वज्र 3 पहाड़ 4 हाथी।

शक्वरः [शक् + वन्, र] साँड, बैल, तु० शक्कर।

शङ्क् (भ्वा० आ० शङ्कते, शङ्कित) 1 संदेह करना, अनिश्चित होना, संकोच करना, संदिग्ध होना—शङ्के जीवति वा न वा—राम० 2 डरना, भय होना, त्रस्त होना (अपा० के साथ)—मार्गाच्छङ्कते विवस्वत—भट्टि० १५।२९ अशङ्कितेभ्यः शङ्केत शङ्कितेभ्यश्च सर्वशः—सुभा० 3 शंका करना, अविश्वास करना, भरोसा न करना—स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः—मृच्छ० ४।२ 4 सोचना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, संभव समझना, शंका करना, डरना—त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्याः—मेघ० ९५ नाहं पुनस्तथा त्वयि यथा हि मां शङ्कसे भीरु—विक्रम० ३।१४, भट्टि० ३।२६, नै० २।१८ 5 आक्षेप करना, आपत्ति या शंका या एतराज उठाना—अनेन शङ्क्यते (बहुधा विवादास्पद भाषा में प्रयुक्त) न च ब्रह्मणः प्रमाणान्तरगम्यत्वं शङ्कितुं शक्यम्—सर्व० अभि—, 1 शंका करना 2 संदिग्ध या अनिश्चयी होना—मनु० ६।६६ आ—, आशङ्का करना, भरोसा न करना, संदेह रखना—भट्टि० २।१२ 2 सन्देह करना, विश्वास करना, सोचना—अग्निशङ्कय यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्—श० १।२८ शि० ३।१७ भट्टि० ६।६ मनु० ७।१८९ 3 डरना, आशंका करना—भरतागमनं पुनः आशङ्क्य—रघु० १२।२४, पंच० १।३१२ 4 आक्षेप करना, संदेह करना—अत एव न ब्रह्मशब्दस्य जात्याद्यर्थान्तरमाशङ्कितव्यम्—शारी० (तथा कुछ अन्य स्थानों पर) परि—, 1 शंका करना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना—पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम्... परिशङ्कते—गीत० ६ 2 संदेह करना, संदेहशील होना 3 डरना, भयभीत होना—रघु० ८।७८ वि—, 1 शंका करना, डरना, संदेहशील या शंकालु होना—विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम्—श० ३।१४ सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते—५।१७ 2 सत्ता का चिंतन करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना—विशङ्कमानो रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह—गीत० ७।

शङ्कः [शङ्क् + अच्] कर्षक बैल, (गाड़ी) खींचने वाला बैल।

शङ्कर (वि०) (स्त्री०—रा, री) [शं सुखं करोति—कृ + अच्] आनन्द या समृद्धि देने वाला, शुभ, मङ्गलमय,—रः 1 शिव 2 विख्यात आचार्य और ग्रन्थप्रणेता शङ्कराचार्य, दे० परि० २,—री 1 शिव की पत्नी पार्वती 2 मंजिष्ठा, मजीठ 3 शमीवृक्ष।

शङ्का [शङ्क् + अ + टाप्] 1 संदेह, अनिश्चितता 2 संकल्प-विकल्प, दुविधा 3 आशंका, अविश्वास, अनिष्टशंका, अपायशंका, अनिष्टशंका आदि 4 डर, आशंका, त्रास, आतंक—वामशङ्कयेव मेनका नामाप्सरा प्रेषिता—श० १, कैकेयीशङ्कयेवाह—रघु० १२।२ १३।४२ मेघ० ६० 5 आशा, प्रत्याशा 6 (भ्रान्त) विश्वास, आशंका, (मिथ्या) धारणा—रजतमपि शिरस्यन्यस्य क्षिप्त्वा भुजङ्गपरिशङ्कया—श० ७।२४ कुर्वन् वधूजनमनःसु शशाङ्कशङ्काम्—कि० ५।१८ हरितरुणोद्गमशङ्कया—५।३८।

शङ्कित (भू० क० कृ०) [शङ्क + क्त] 1 सन्दिग्ध, आशंका युक्त, भग्न 2 शंकालु, आशंका करने वाला, अविश्वासपूर्ण 3 अनिश्चित, संदिग्ध 4 भयपूर्ण, सशंक, आतंकित (दे० शङ्क्)। सम०—चित्त,—मनस् (वि०) 1 भीरु, कातरहृदय 2 शंकाकुल, अविश्वासपूर्ण 3 संदिग्ध।

शङ्किन् (वि०) [शङ्का + इनि] सन्देह करने वाला, शंका करने वाला, डरने वाला, विश्वास करने वाला (समास के अंत में)—त्वदुपासनशङ्कि मे मनः—रघु० ८।५४ अभिसरण पण्डशङ्की—श० ७।

शङ्कु [शङ्क्—उण] 1 नेजा, बर्छी, सुर्वाली कील, शाकिन कटार (प्रायः समास के अंत में) शाकशङ्कु—शाक की कटार अर्थात् तीक्ष्ण एवं दुर्दर्शनीय शाक—रघु० २।२५ रघु० ८।९३ 2 खूंटा, आवा... 3 ... मस्त... रघु० १२।९५ 4 बाण की नोक, नोक, कील या ... 5 (कटे हुए वृक्ष का) तना, पेड़ का ठूंठ, ... पेड़ 6 हाथी की सूंड 7 बारह अंगुल की माप 8 गज मापने का डंडा 9 (ज्या० में) लम्बाई या ऊँचाई 10 सौ खरब या एक लाख की संख्या 11 पत्तों के रेशे 12 वल्मीक, बमी 13 पुरुष की जननेन्द्रिय 14 एक प्रकार की मछली, नेनुवा 15 राक्षस 16 विष 17 पाप 18 जलचर विशेष का कच्छप 19 शिव 20 साल का पेड़। सम०—कर्ण (वि०) जिसके कान खूंटे के समान लंबे और नुकीले हों, (—र्ण) गधा,—तरु,—वृक्ष साल का पेड़।

शङ्कुला [शङ्कु + ला] 1 एक प्रकार का चाकू या सुपारी काटने का सरौता 2 सरौता। सम०—खण्ड सरौते से काटा हुआ टुकड़ा।

शङ्ख—भ्वा० उभ०। **शङ्खः**,—**ख्म्** 1 शंख, घोंघा—न श्वेतभावमुज्झति शङ्खः शिखिभुक्तमुक्तोऽपि—पंच० ४।११ शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक्—भग० १।१८ 2 मस्तक की हड्डी—कु० ७।३३ 3 कनपटी की हड्डी 4 हाथी के दोनों दाँतों के बीच का भाग 5 दस नील की संख्या 6 सैनिक ढोल या मारूबाजा 7 एक प्रकार का गन्धद्रव्य, नखी 8 कुबेर की नवनिधियों में से एक 9 एक राक्षस जिसको विष्णु ने मारा था 10 एक स्मृतिकार (लिखित के साथ

सयुक्त नाम का उल्लेख)। सम० —उदकम् शंख में डाला हुआ पानी, —कारः, —कारकः शंखकार नाम की एक वर्णसंकर जाति, —चरी, —चर्ची (मस्तक पर लगाया गया) चन्दन का तिलक —चूर्णम् शंख को पीस कर बनाया गया चूरा, —द्रावः, —द्रावकः एक प्रकार का घोल जिसमें शंख भी घुल जाता है, —ध्मः —ध्मा (पुं०) शंख बजाने वाला, —ध्वनिः शंख की आवाज (कभी-कभी, परन्तु प्राय आतंक या निराशा की द्योतक ध्वनि) —प्रस्थः चन्द्रमा का कलंक — भृत् (पुं) विष्णु का विशेषण —मुखः घड़ियाल मगर —स्वनः शंखध्वनि।

शङ्खकः,—कम् [शंख + कन्] 1 शंख 2 कनपटी की हड्डी 3 कड़ा [शङ्खक - न, कड़ा [शि० १३।४१]।

शङ्खनकः, (—खः) एक छोटा शंख या घोंघा।

शङ्खिन् (पुं०) [शङ्ख + इनि] 1 समुद्र 2 विष्णु 3 शंख बजाने वाला।

शङ्खिनी [शङ्खिन् + ङीप्] काम शास्त्र के लेखकों के अनुसार स्त्रियों के किये गये चार भेदों में से एक, रति मञ्जरी में लिखा है —दीर्घातिदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता। रेखात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा संभोगकेलिरसिका किल शङ्खिनी सा— ६, दे० चित्रिणी हस्तिनी और पद्मिनी भी 2 प्रेतात्मा, अप्सरा परी।

शच् (भ्वा० आ० शचते) बोलना, कहना, बतलाना।

शचिः,—ची (स्त्री०) [शच् + इन शचि + ङीष्] इन्द्र की पत्नी रघु० ३।१३, २३। सम० —पतिः, —भर्तृ (पुं०) इन्द्र के विशेषण।

शञ्च् (भ्वा० आ० शञ्चते) जाना, हिलना-जुलना।

शट् (भ्वा० पर० शटति) 1 बीमार होना 2 बांटना वियुक्त करना।

शट (वि०) [शट् + अच्] खट्टा, अम्ल कसैला।

शटा [शट + टाप्] सन्यासी के उलझे बाल—दे० जटा।

शटि (स्त्री०) [शट् + इन्] कचूर का पौधा, आमा हल्दी।

शठ् I (भ्वा० पर० शठति) 1 धोखा देना ठगना, जालसाजी करना 2 चोट मारना, मार डालना 3 कष्ट उठाना।

II (चुरा० पर० शाठयति) 1 समाप्त करना 2 असमाप्त छोड़ देना 3 जाना, हिलना-जुलना 4 आलसी या सुस्त होना 5 धोखा देना, ठगना (इस अर्थ में 'शठयति')।

शठ (वि०) [शठ् + अच्] 1 चालाक धोखेबाज, जालसाज, बेईमान कपटी 2. दुष्ट, दुर्वृत्त, —ठः 1 बदमाश, ठग, धूर्त मक्कार मनु० ४।३०, भग० १८।२८ 2 झूठा या धोखेबाज प्रेमी (जो एक स्त्री के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है परन्तु मन किसी दूसरी स्त्री में रमाया रहता है)—शठमस्मि गत सुचिरस्मिते विदितः कैतववत्सलस्तव - रघु० ८।४९, १९।३१ मालवि० ३।१९, सा० द० शठ की इस प्रकार परिभाषा देता है - शठोऽयमेकत्र बद्धभावो यः दर्शितबहिरनुरागो विप्रियमन्यत्र गूढमाचरति —७८ 3. मूढ बुद्ध 4 मध्यस्थ बिचवैया 5 धतूरे का पौधा 6 आलसी पुरुष, सुस्त व्यक्ति, —ठम् 1 लोहा 2 तगर, आच्छादन।

शणम् [शण् + अच्] सन, पटसन। सम० —सूत्रम् 1 सन की बनी डोरी या रस्सी 2 सन का बना जाल 3 रस्सियां डोरियाँ।

शण्ड [शण्ड + अच्] 1 नपुंसक हिजड़ा 2 सांड 3 छोड़ा हुआ सांड, खुला सांड, मनुष्यवत् दे० षंड या षण्ड भी।

शण्ढ [शाम्यति ग्राम्यधर्मात्—शम् + ढ] 1 हिजड़ा, नपुंसक 2 अन्तःपुर में रहने वाला टहलुआ पुरुषसेवक (हिजड़ों या बधिया किये गये पुरुषों में से चुना हुआ) 3. सांड 4 छोड़ा हुआ सांड 5 पागल आदमी।

शतम् [दश दशतः परिमाणमस्य - दशन् + त, श आदेश नि० साधु] सौ की संख्या—निष्कं वर्षेष्ट छात्र —काशि० ७।६, शतमेकोऽपि सन्धत्ते प्राकारस्थो धनुर्धरः पञ्च० १।२२९। 'शत' शब्द किसी भी लिंग के बहुवचनान्त संज्ञा शब्दों के साथ एक वचन में ही प्रयुक्त होता है —शतं नराः, शतं नार्यः, या शतं गृहाणि इस दशा में यह संख्यावाचक विशेषण माना जाता है परन्तु कभी कभी द्विवचन तथा बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है —द्वे शते, त्रय शतानि आदि। सब० के संज्ञा-शब्द के साथ भी प्रयुक्त होता है - गवां शतम्, समास के अन्त में यह अपरिवर्तित रूप में रह सकता है यथा भर्तृ शतकम् या बदल कर 'शती' हो जाता है यथा गोवर्धनाचार्य की कृति 'आर्यासप्तशती') 2 कोई भी बड़ी संख्या। सम० —अक्षी 1. रात्रि, 2. दुर्गादेवी, —अङ्गः गाड़ी, रथ का विशेषण दूडरथ —अनीकः बूढ़ा आदमी, —अरम्, —आरम् इन्द्र का वज्र, —आनकम् श्मशान कब्रिस्तान, —आनन्दः 1 ब्रह्मा 2 विष्णु कृष्ण 3 विष्णु का वाहन 4. गौतम और अहिल्या का पुत्र, जनकराज का कुल पुरोहित उत्तर० १।१६, —आयुस् (वि०) सौ वर्ष तक जीवित रहने वाला या टिकने वाला, —आवर्तः, —आवर्तिन् (पुं०) विष्णु, —ईशः 1 सौ के ऊपर शासन करने वाला, 2 सौ गांव का शासक मनु० ७।११५, - कुम्भः एक पहाड़ का नाम (कहते हैं कि वहाँ पर सोना पाया जाता है), —भम् सोना —कृत्वः (अव्य०) सौ गुणा, —कोटि (वि०) सौ धार वाला,

(वि.) इन्द्र का वज्र (स्त्री०) एक अरब या सौ करोड़ की संख्या, —क्रतुः इन्द्र का विशेषण रघु० ३।३८, —काञ्चनम् सोना,—गु (वि०) सौ गायों का स्वामी, —गुण, —गुणित (वि०) सौगुणा बढ़ा हुआ —विक्रम० ३।२२, —ग्रन्थि (स्त्री) दूर्वा घास, —घ्नी 1 एक प्रकार का शस्त्र जो अस्त्र की भांति प्रयुक्त किया जाय (कुछ विद्वानों के मतानुसार यह एक प्रकार का राकेट है परन्तु दूसरों के मतानुसार यह एक प्रकार का विशाल पत्थर है जिसमें लोहे की शलाकाएँ जड़ी हुई हैं यह लम्बाई में चार ताल है —शतघ्नी च चतुस्ताला लोहकण्टकसंचिता या अय कण्टकसंछन्ना शतघ्नी महती शिला) रघु० १२।९५ 2 बिच्छू की मादा 3 गले का एक रोग —जिह्व शिव का विशेषण,— तारका, —भिषज्, —भिषा (स्त्री०) सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र —दला सफेद गुलाब,—द्रु. (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसका वर्तमान नाम सतलज है —धामन् (पुं०) विष्णु का विशेषण, —धार (वि०) सौ धारों वाला (—रम्) इन्द्र का वज्र,— धृतिः 1 इन्द्र का विशेषण 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 स्वर्ग —पत्रः 1 मोर 2. सारस 3 कठ—बढ़ई पक्षी, 4 तोता या तोते की जाति, (त्रा) स्त्री (त्रम्) कमल आवृत्तवृत्तशत पत्रनिभ (आननम्)-बहल्या— मा० ७।२९ —योनि ब्रह्मा का विशेषण —कम्पेन मूर्ध्ना शतपत्रयोनिं (सभाव-यामास) कु० ७।४६ —पत्रकः कठबढ़ई, -पद, —पाद् (वि०) सौ पैरों वाला, —पदी कानखजूरा —पद्मम् 1 वह कमल जिसमें सौ पंखुड़ियाँ हों 2 श्वेत कमल —पर्वन् (पुं०) बांस (स्त्री०) 1 आश्विन मास की पूर्णिमा 2 दूर्वा घास 3 कटुक का पौधा —ईशः शुक्र ग्रह —मोदः (स्त्री०) अरबदेश की चमेली —मख, —मन्युः 1 इन्द्र के विशेषण, कि० २।२३, भट्टि० १।५, कु० २।६४, रघु० ९।१३ 2 उल्लू, —मुख (वि०) 1 जिसके सौ रास्ते हों 2. सौ द्वार या मुंह वाला —विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः —भर्तृ० २।१०, (यहाँ शब्द का (१) अर्थ भी है। (—खम्) सौ रास्ते या द्वार (—खी) बुहारी झाड़ू —मूला दूर्वा घास, दूबड़ा, —यज्वन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, —यष्टिकः सौ लड़ियों का हार —रूपा ब्रह्मा की एक पुत्री (जो ब्रह्मा की पत्नी भी मानी जाती है, अपने पिता के साथ इस व्यभिचार के परिणाम स्वरूप उनसे स्वायम्भुव मनु का जन्म हुआ), —वर्षम् सौ बरस, शताब्दी, —वेधिन् (पुं०) एक प्रकार का खटमिठा शाक, चोका, —सहस्रम् 1 सौ हजार 2 कई हजार अर्थात् एक बड़ी संख्या, —साहस्र (वि०) 1 सौ हजार से युक्त 2 सौ हजार में मोल लिया हुआ, —ह्रदा 1 बिजली कु० ७।३९, मृच्छ० ५।४८ 2 इन्द्र का वज्र।

शतक (वि०) [शत + कन्] 1 सौ 2 सौ से युक्त, —कम् 1 शताब्दी 2 सौ श्लोकों का संग्रह जैसा कि 'नीति,' 'वैराग्य' और शृङ्गार अर्थात् नीति आदि विषयक सौ श्लोकों का संग्रह।

शततम (वि०) (स्त्री०—मी) [शत + तमप्] सौवाँ।

शतधा (अव्य०) [शत + धाच्] 1 सौ तरह से 2 सौ भागों में या सौ टुकड़ों में 3 सौगुना

शतशस् (अव्य०) [शत + शस्] 1 सौ सौ करके 2 सौ बार शतशः हो प्रश्ना० ३ मनु० १०।५८ सौगुना 3 सौ तरह से विविध प्रकार से नाना प्रकार से भग० ११।५।

शतिक (वि०) (स्त्री० —की) शत्य (वि०) [शत + ठन्, यत् वा] 1 सौ से युक्त याज्ञ० २।३२४ 2 सौ से सम्बन्ध रखने वाला 3 सौ में प्रतिशत 4 सौ से मोल लिया हुआ 5 सौ से बदला किया हुआ 6 सौ प्रतिशत शुल्क या कर देने वाला 7 सौ का सूचक

शतिन् (वि०) [शत + इनि] 1 सौगुणा 2 असंख्य 3 सौ का स्वामी निष्कानां शतिनः ... शिशु० ५।१६ रघु० १।७२।

शत्रि [शद् + त्रिप्] हाथी।

शत्रु [शद् + त्रुन्] 1 पराजय करने वाला विनाशक विजेता 2 दुश्मन बैरी प्रतिपक्षी तथा शत्रौ च मित्रे च यतिनिश्चय, अपगत शुभा० 3 राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी पड़ोस का प्रतिद्वन्द्वी राजा। सम० —उपजाप दुश्मन की गुप्त कानाफूसी शत्रु का विश्वासघात —कर्षण, —दमन, —निबर्हण (वि०) शत्रु का दमन करने वाला शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला —घ्नः शत्रुओं को नष्ट करने वाला सुमित्रा का पुत्र होने के कारण लक्ष्मण का सगा भाई राम का भाई। इसने लवण नामक राक्षस का वध किया मथुरा को बसाया सुबाहु और शत्रुघाती नाम के इसके दो पुत्र थे। दे० रघु० १५ —पक्षः 1 शत्रु का पक्ष या दल 2 प्रतिपक्षी, विरोधी —विनाशनः शिव का विशेषण —हत्या शत्रु की हत्या —हन् (वि०) शत्रु का वध करने वाला।

शत्रुञ्जय [शत्रु + जि + खच्, मुम्] 1 हाथी 2 एक पहाड़ का नाम गिरनार पर्वत।

शत्रुन्तप (वि०) [शत्रु + तप् + खच्, मुम्] अपने शत्रु को पराभव करने वाला या नष्ट करने वाला।

शत्वरी (स्त्री०) रात।

शद् I (भ्वा० पर० (परन्तु सार्वधातुक लकारों में आ० शीयते शद्) 1 पतन होना, नष्ट होना, मुर्झाना, कुम्हलाना 2 जाना —प्रेर० (शादयति—ते) 1 पहुँचाना

ठेलना 2 शातयति ते (क) गिराना नीचे फेंक देना काट डालना शि० १६।८० १५।२४ (ख) वध करना, नष्ट करना।

II (भ्वा० पर० शदति) जाना (प्राय 'आ' पूर्वक)।

शद [शद्+अच्] खाद्य शाकभाजी (फल मूल आदि)।

शद्रि. [शद्+क्रिन्] 1 हाथी 2 बादल 3 अर्जुन, द्रि (स्त्री०) बिजली।

शद्रु (वि०) [शद्+रु] 1 जाने वाला गतिशील 2. पतनशील नश्वर क्षय होने वाला।

शनकैः (अव्य०) [शनैः+अकच्] शनैः शनैः दे० शनैः।

शनिः [शो+अनि किच्च] 1 शनिग्रह (सूर्य का पुत्र, जो काले रंग का या काले वस्त्रों में सज्जित बतलाया गया है) 2 शनिवार 3 शिव। सम० —प्रदोषः शिव की (सायंकालीन) पूजा जो शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को शनिवार आ पड़ने पर की जाती है — प्रियम् नीलमणि —वारः —वासरः शनिवार का दिन।

शनैस् (अव्य०) [शण्+डैस पृषो० नुक्] 1 आहिस्ता से, धीमे चुपचाप 2 यथाक्रम क्रमशः थोड़ा थोड़ा करके धर्मं शनैः संचिनुयात् —कु० ३।५९, मनु० ३।२१३ 3 उत्तरोत्तर, उपयुक्त क्रम में मनु० १।१५ 4 मृदुता से, नरमी से 5 सुस्ती के साथ आलस्यपूर्वक शनैः शनैः आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता। सम० —चर (वि०) शनैः शनैः घूमने वाला या चलने वाला शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा मनु० १।१७, (यहां इसका अर्थ शनि भी है) (—रः) शनिग्रह।

शन्तनुः [शं मंगलात्मका तनुर्यस्य ब० स०] एक चन्द्रवंशी राजा जिसने गंगा व सत्यवती से विवाह किया। गंगा का पुत्र भीष्म था तथा सत्यवती के चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुए। भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहा तथा इसके छोटे भाई निस्सन्तान स्वर्ग सिधारे दे० 'भीष्म'।

शप् (भ्वा०, दिवा० उभ० शपति ते, शप्यति ते शप्त) 1 अभिशाप देना कोसना अशपद्रुद्र मानुषीति ताम् —रघु० ८।८० सोऽभूत् परासुरथ भूमिपतिं शशाप (पद्य.) ९।७८ १।७७ 2 शपथ लेना, कसम उठाना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना, सौगन्ध खाना (प्राय. प्रतिज्ञात में सप्र० तथा प्रतिज्ञाता के लिए करण० प्रयुक्त होता है) —भरतेनात्मना चाहं शपे ते मनुजाधिप। यथा नान्येन मृग्येयमृते रामविवासनात् रामा० कर्मरहित प्रयोग होने पर शपथवस्तु में करण० तथा जिसके द्वारा शपथ का जाय उसमें सप्र० प्रयुक्त होता है सत्य [illegible] पादपद्मस्पर्शेन [illegible] अशपत् [illegible]

सीतायै स्वमोहिनम् भट्टि० ८।७४, ३३, कभी कभी शप का सजातीय कर्म के अनुसार प्रयोग होता है सहस्रशोऽसौ शपथानशप्यत् —भट्टि० ३।३२ 3 कलंकित करना धमकाना बुरा-भला कहना, गाली देना (सप्र० के साथ या स्वतन्त्ररूप से) —द्विषद्भ्यस्त्वाशपन्नथा भट्टि० १७।४, प्रतिपाचमदत्त केशव शपमानाय न चेदिभूभुजे शि० ४।२५, प्रेर० (शापयति ते) शपथद्वारा बांध लेना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना शापितोऽसि मोक्षाद्याञ्चकाम्यया मृच्छ० ३, मा० ८।

शप [शप्+अच्] 1 अभिशाप, सरापना कोसना 2 शपथ सौगन्ध।

शपथ [शप्+अथन्] 1 कोसना 2 अभिशाप आक्रोश फटकारना 3 सौगन्ध कसम खाना शपथ लेना या दिलवाना शपथैरपि आमोदो न हि कस्तूर्याः शपथेनानुभाव्यते —भामि० १।१२० मनु० ८।१०९ 4 शपथपूर्वक अनुरोध सौगन्ध से बांधना —मा० ३।

शपनम् [शप्+ल्युट्] दे० शपथ।

शप्त (भू० क० कृ०) [शप्+क्त] 1 अभिशप्त 2 जिसने सौगन्ध खाली है 3 बुरा भला कहा गया दुर्वचन कहा गया (दे० शप्)

शफ, शफम् [शप्+अच्, पृषो० पस्य फ] 1 खुर 2 वृक्ष की जड़।

शफरः (स्त्री० री) [शफं राति रा+क] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली —[illegible] चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि मेघ० ४० शि० ८।२४। कु० ४।२९। सम० —अधिपः इल्लीश नामक मछली।

शबर (र, रं) [शव अरन्] 1 पहाड़ी, असभ्य भील, असभ्य जाति राजन् गुञ्जाफलाना सज इति शबरा नैव हारं हरन्ति काव्य० १० 2 शिव 3 हाथ 4 जल 5 एक शास्त्र विशेष या धार्मिक पुस्तक 6 मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार —री 1 भीलनी 2 राम की अनन्य भक्त एक भीलनी। सम० —आलय जंगली, पहाड़िया और भीलों का निवासस्थान —लोध्रः जंगली लोध का वृक्ष।

शबल (व) ल (वि०) [शप्—अलच् बस्य च] 1 धब्बेदार, रंग बिरंगा, चितकबरा रघु० ५।६४, १३।५६ महावीर० ७।२६ 2 नानारूप अनेक भागों में विभक्त —ल नानाप्रकार का रंग, —ला —ली 1 धब्बेदार या चितकबरी गाय 2 कामधेनु, —लम् पानी।

शब्द (चुरा० उभ० शब्दयति—ते शब्दित) 1 ध्वनि करना, शोर मचाना 2 बोलना पुकारना आवाज देना [illegible] दिशा. [illegible] 1 नाम

लेना, पुकारना अत एव मागरिकेति शब्द्यते रत्न० ४, **अभि—**, नाम रखना, **प्र—**, व्याख्या करना, **सम्—** बुलाना ।

शब्दः [शब्द् + घञ्] 1 ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय आकाशगुण, रघु० १३।१ 2 आवाज, कलरव (पक्षियों का या मनुष्यादिकों का), कोलाहल, विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः श० १।१४, भग० १।१३, श० ३।१, मनु० ४।११३, कु० १।४५, 3 बाजे की आवाज वाद्यशब्द, पञ्च० २।२४, कु० १।४५ 4 वचन, ध्वनि, सार्थक ध्वनि, शब्द (परिभाषा के लिए दे० महाभाष्य की प्रस्तावना), एक शब्दः सम्यग्ज्ञातः सम्यक् प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग्भवति, इसी प्रकार शब्दार्थौ 5 विकारीशब्द, संज्ञा, प्रातिपदिक 6 उपाधि, विशेषण यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्यः—कु० १।१३, श० २।१४, नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।३५, २।५३, ६४ ३।४९, ५।२२, १८।४१ विक्रम० १।१ 7 नाम, केवल नाम जैसा कि 'शब्दपति' में 8. शाब्दिक प्रामाणिकता (नैयायिकों के द्वारा 'शब्द प्रमाण' माना जाता है) । सम० **—अतीत** (वि०) शब्दों की शक्ति से परे, अनिर्वचनीय, **—अधिष्ठानम्** कान, **—अध्याहारः** (शब्दन्यूनता को पूरा करने के लिए) शब्दपूर्ति,—**अनुशासनम्** शब्दों का शास्त्र अर्थात् व्याकरण, **—अर्थः** शब्द के अर्थ (**र्थौ**—द्वि० व०) शब्द और उसका अर्थ अदोषौ शब्दार्थौ काव्य० १, **—अलङ्कारः** वह अलङ्कार जो अपने शब्द सौन्दर्य पर निर्भर करता है, तथा जब उसी अर्थ को प्रकट करने वाला दूसरा शब्द रख दिया जाता है तो उसका सौन्दर्य लुप्त हो जाता है (विप० अर्थालङ्कार) उदा० दे० काव्य० ९, **—आख्येय** (वि०) शब्दों में भेजा जाने वाला समाचार मेघ० १०३ (**यम्**) मौखिक या शाब्दिक सन्देश, **—आडम्बरः** वाग्जाल, वाक्प्रपंच शब्दाधिक्य, अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द, **—आदि** (वि०) 'शब्द' से आरम्भ होने वाले (ज्ञान के विषय) रघु० १०।२५, **—कोशः** अभिधान, शब्दसंग्रह, **—गत** (वि०) शब्द के अन्दर रहने वाला, **—ग्रहः** 1 शब्द पकड़ना 2. कान, **—चातुर्यम्** शैली की निपुणता, वाक्पटुता, **—चित्रम्** कविता की अन्तिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक (अवर या अधम) (इस प्रकार के काव्य में सौन्दर्य उन शब्दों के प्रयोग में है जो कर्णमधुर होते हैं, 'चित्र' के अन्तर्गत दिया हुआ उदाहरण देखो), **—चौरः** 'शब्दचोर' साहित्यचोर, **—तन्मात्रम्** ध्वनि का सूक्ष्म तत्त्व, **—पतिः** नाममात्र स्वामी, नाम का प्रभु—नृपः शब्दपतिः क्षितेरभूत् स्वयि मे भावनिबन्धना रतिः—रघु० ८।५२, **—पातिन्** (वि०) शब्द सुन कर ही अदृश्य निशाना लगाने वाला, शब्दवेधी, निशाना लगाने वाला रघु० ९।७३ **—प्रमाणम्** शाब्दिक या मौखिक प्रमाण, **—बोधः** मौखिक साक्ष्य से प्राप्त ज्ञान **—ब्रह्मन्** (नपुं०) 1 वेद 2. शब्दों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मा या परमात्मसम्बन्धी ज्ञान उत्तर० २।७ २० 3 शब्द का गुण, 'स्फोट', **—भेदिन्** (वि०) शब्दवेधी निशाना लगाने वाला (पुं०) 1 अर्जुन का विशेषण 2 गुदा 3 एक प्रकार का बाण **—योनिः** (स्त्री०) धातु, मूल शब्द,—**विद्या, —शासनम्, —शास्त्रम्** शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण —अनन्तपार किल शब्दशास्त्रम्—पञ्च० १, शि० २।११२, १४।२४, **—विरोधः** (शास्त्र में) शब्दों का विरोध, **—विशेष** ध्वनि का एक भेद, —**वृत्तिः** (स्त्री०) साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग, **—वेधिन्** (वि०) ध्वनि सुनकर ही शब्दवेधी निशाना लगाने वाला दे० शब्दपातिन् (पुं०) 1 अर्जुन का विशेषण 2 एक प्रकार का बाण, **—शक्तिः** (स्त्री०) शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की सार्थकता— दे० शक्ति **—शुद्धिः** (स्त्री०) 1 शब्दों की पवित्रता 2 शब्दों का शुद्ध प्रयोग,—**श्लेष** शब्दों में अनेकार्थता, द्व्यर्थकता (यह अलङ्कार 'अर्थश्लेष' से इसलिए भिन्न है कि इसके सपर्यायक शब्दों को हटाकर समानार्थक शब्दों को रख देने मात्र से श्लिष्टता नष्ट हो जाती है, क्योंकि अर्थश्लेष अपरिवर्तित ही रहता है शब्दपरिवर्तनसहत्वमर्थश्लेष),—**संग्रहः** शब्दकोश, शब्दावली, **—सौष्ठवम्** शब्दों का लालित्य, लालित्य और प्राञ्जल शैली **—सौकर्यम्** अभिव्यक्ति की सरलता ।

शब्दन (वि०) [शब्द् + ल्युट्] 1 शब्द करनेवाला, ध्वननशील —**नम्** ध्वनन, कोलाहल करना, शब्द करना 2 आवाज, कोलाहल 3 पुकारना, बुलाना 4. नाम लेना ।

शब्दायते (नामधातु आ०) 1 कोलाहल करना, शोर करना शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः मेघ० ५६ 2 क्रन्दन करना, दहाड़ना, चिल्लाना, चीं चीं करना भट्टि० ५।५०, १४।९१ 3 बुलाना, पुकारना एते हस्तिनापुरगामिनः ऋषयः शब्दायन्ते श० ४, मुद्रा० १, मृच्छ० १, वेणी० ३ ।

शब्दित (भू० क० कृ०) [शब्द + क्त] 1 ध्वनित, आवाज निकाली गई, (बाजाघण्टादिक) बजाया गया 2. कहा गया, उच्चारण किया गया 3. बुलाया गया, पुकारा गया नाम रक्खा गया, अभिहित ।

शम (अव्य०) [शम् + विच्] कल्याण, आनन्द, समृद्धि, स्वास्थ्य को द्योतन करने वाला अव्यय, आशीर्वाद या मंगल कामना प्रकट करने के लिए प्रयुक्त (संप्र० या षष्ठी० के साथ) शं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा

(आधुनिक पत्रों में शुभ समाप्तिसूचक प्रयोग इति शम्)। सम० - कर दे० धातु के नीचे, शान्ति (वि०) आनन्द प्रदान करने वाला मंगलमय, शुभ पाकः 1 लाख, महावर, लाल रंग 2 पकाना परिपक्व करना, भू दे० धातु के नीचे।

शम् I (दिवा० पर० शाम्यति, शान्त) 1 शान्त होना चुप होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना शाम्यत्यप्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः कु० २।४० रघु० ७।३ शान्तो लब —उत्तर० ६।७ 2 थमना, ठहरना समाप्त होना चिन्ता ... सकलाऽपि ... —भामि० ३।७, न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति मनु० २।९४, 'सन्तुष्ट नहीं होता 3 शान्त होना, बुझना ... रघु० २।१४ उत्तर० ५।१ 4 नाश करना, समाप्त करना, नष्ट करना, मार डालना (इसी अर्थ में कभी-कभी) - प्रेर० (शमयति—ते परन्तु देखना अर्थ में शामयति—ते दे० शम्) 1 प्रसन्न करना, उपशमन करना शान्त करना धीरज देना सांत्वना देना, डाढ़स बंधाना क्रोधिनमं शमयिना वचनैस्तवाशिषम्, भामि० ३।१, श० ५।७ 2 अन्त करना, रोकना —कु० २।५६ 3 हटाना, दूर करना प्रतिकूलं दैवं शमयितुम् श० ? दमन करना, पराजय बनाना, हराना, छीनना, परास्त करना शमयति गजानन्यान् गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्—विक्रम० ५।१८ रघु० ९।१०, ११।१९ 5 मार डालना, नष्ट करना वध करना—वेणी० ५।५ 6 शान्त करना, बुझाना मेघ० ५३ हि० १।८८ 7 त्याग देना, रुकना थमना, उप 1 शान्त करना भट्टि० ७।१५ 2 थमना, ठहरना, बुझना 3 ... शान्त होना ... प्रशान्त ... उत्तर० ६ ... मूर्छाना ... (प्रेर०) 1 सांत्वना देना प्रसन्न करना शान्त करना —मनु० ८।३९१ दूर करना, बुझाना शीतल करना, दबा देना - ... मेघ० ... 3 हटाना अन्त करना, नष्ट करना (अपकार) प्रशमयेत्—रघु० १५।४५ ... जीतना परास्त करना वशीभूत करना —मुद्रा० १०।६० प्रतिनिवृत्त होना, समझौता करना, ... होना प्रशमनाय विवाद ... श० ५।१८ सम् 1 शान्त करना 2 निराकृत होना बुझना ... मत्सामवतीः ... भट्टि० १८।१० 3 ... जाना।

II (चुरा० आ० शामयते—ते) 1 देखना, निगाह डालना, निरीक्षण करना 2 दिखलाना, प्रदर्शन करना नि , 1 देखना, अवलोकन करना 2 सुनना, कान देना निशाम्य प्रियमर्थं भा० ७।

शम [शम् + घञ्] 1 मुकना, शान्ति, धैर्य 2 विश्राम, ठहराव, आराम, निवृत्ति 3 वासनाओं पर प्रतिबन्ध या अभाव मानसिक शान्ति, विरक्ति शमरतेऽमरतेजसि पार्थिवे रघु० ९।४, कि० १०।१०, १६।४८, शि० २।९४ श० २।७, भग० १०।४ 4 निराकरण, लघूकरण, उन्मूलन सन्तापीकरण (शोक, प्यास भूख आदि का) प्रशमन शममुपयातु ममापि चित्तदाहः उत्तर० ६।८ शममेष्यति मम शोकः कथं ... 5 शान्ति, जैसा कि शमोपन्यासे वणी० ... (संसार की समस्त भ्रान्तियों व आसक्तियों से) मोक्ष 7 हाथ। सम० अन्तकः कामदेव (मानसिक शान्ति का नष्ट करने वाला), पर (वि०) शान्त, मूक विषयविरागी।

शमथ [शम् + अथच्] 1 शान्ति, स्थिरता, विशेषतः मानसिक शान्ति आवेशाभाव 2 परामर्शदाता, मन्त्री।

शमन (वि०) (स्त्री० —नी) [शम् णिच् + ल्युट्] शमन करने वाला, दमन करने वाला, उपशमन करने वाला आदि, नम् 1 प्रसन्न करना, निराकरण करना, ढाढ़स बंधाना, ... करना 2 स्वैर्य, शान्ति 3 अन्त, ठहराव, मर्यादित विनाश 4 चोट पहुँचाना, घायल करना 5 यज्ञ के लिए पशुवध करना, पशुमेध 6 निगल जाना, चबाना न 1 एक प्रकार का हरिण, बारहसिंगा 2 मृत्यु का देवता यम। सम० स्वसृ (स्त्री०) यमस्वसा, यमुना नदी का विशेषण।

शमनी [शमन + ङीप्] रात्रि। सम० सद (षद्) राक्षस, पिशाच, भूत, प्रेत।

शमल [शम् + कलच्] 1 मल, लीद, विष्ठा 2 अपवित्रता, पाप, कलौंछ 3 पाप, नैतिक मलिनता।

शमित (भू० क० कृ०) [शम् + णिच् + क्त] 1 प्रसन्न किया गया, निराकृत, ढाढ़स बंधाया गया, शान्त 2 धीमा किया गया, चिकित्सा की गई, आरोग्यकृत किया गया 3 विश्राम दिया गया 4 शान्त, सौम्य परिशमित किया गया, मृदु किया गया।

शमिन् (वि०) [शम् + इनि] 1 सौम्य, शान्त, प्रशान्त 2 जिसने अपने आवेशों पर ... ... आत्मनियन्त्रित ... ।

शमी, शमि ... 1 एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसमें अग्नि रहती है) अग्निगर्भां शमीमिव श० ४।... मनु० ... याज्ञ० १।३०। 2 फली, छीमी, सेम सम० गर्भः 1 अग्नि का विशेषण 2 ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण धान्यम् फलियों में उत्पन्न या होने वाले द्विदलीय धान्य।

शम्पा [शम् + पा + क] बिजली।

शम्ब् i (भ्वा० पर० शम्बति) जाना, हिलना-जुलना। ii (चुरा० पर० शम्बयति) संचय करना, ढेर लगाना।

शम्ब (वि०) [शम्ब् + अच्] 1 प्रसन्न, भाग्यशाली 2. बेचारा, अभागा,— बः 1 इन्द्र का वज्र 2 मूसली का लोहे का बना सिर 3 लोहे की जंजीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय 4 नियमित रूप से हल चलाना 5 जुते हुए खेत में हल चलाना (शम्बाकृ दोबारा हल चलाना)।

शम्बरः [शम्ब् + अरच्] 1. एक राक्षस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था 2 पहाड़ 3 एक प्रकार का हरिण 4 एक प्रकार की मछली 5 युद्ध —रम् 1 जल 2 बादल 3 दौलत 4 संस्कार या कोई धार्मिक अनुष्ठान। सम०—अरिः, —सूदनः प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण, —असुरः शंबर नामक राक्षस।

शम्बरी [शम्बर + ङीष्] 1 माया, जादू 2 रचना जादू गरनी।

शम्बलः,—लम् [शम्ब् + कलच्] 1 तट, किनारा 2 पाथेय, मार्गव्यय, राहखर्च 3 स्पर्धा, ईर्ष्या।

शम्बली [शम्बल + ङीष्] कुटनी।

शम्बुः, शम्बुकः, शम्बूकः [शम्ब् + उण्, शम्बु + कन्] द्विकोषीय घोंघा।

शम्बूकः [शम्ब् + ऊक] 1. द्विकोषीय घोंघा 2 शंख 3 घोंघा 4 हाथी की सूंड की नोक 5 एक शूद्र (इसे राम ने उसकी ज्ञानि के लिए वर्जित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था, दे० उत्तर० २, तथा रघु० १५)।

शम्भः [शम् + भ] 1. प्रसन्न मनुष्य 2 इन्द्र का वज्र।

शम्भली [शम्भल + ङीष्] दूती, कुटनी।

शम्भु (वि०) [शम् + भू + डु] आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला —भुः 1 शिव 2 ब्रह्मा 3. ऋषि, श्रद्धेय पुरुष 4 एक प्रकार का सिद्ध। सम० —तनयः, —नन्दनः, —सुतः कार्तिकेय या गणेश के विशेषण, —प्रिया 1 दुर्गा 2 आमला की, —वल्लभम् श्वेत कमल।

शम्या [शम् + यत् + टाप्] 1 लकड़ी की छड़ी या खूंटी 2 डंडा 3 जुए की कील, सिलम 4 एक प्रकार की झांझ 5 यज्ञीय पात्र।

शय (वि०) (स्त्री०—या, यी) [शी + अच्] लेटने वाला, सोने वाला, (प्रायः समास के अन्त में) —रात्रिजागरपरो दिवाशयः —रघु० १९।३४ इसी प्रकार उत्तानशय, पार्श्वशय, पृष्ठेशय बिलेशय आदि —यः 1 नींद 2. बिस्तरा, शय्या 3 हाथ 4 साँप विशेषतः अजगर 5 दुर्वचन, कोसना, अभिशाप।

शयण्ड (वि०) [शी + अण्डन्] निद्रालु, सुस्त प्राणी।

शयथ (वि०) [शी + अथच्] निद्रालु, सोया हुआ,—थः 1 मृत्यु 2 एक प्रकार का साँप, अजगर 3 मछली।

शयनम् [शी + ल्युट्] 1 सोना, निद्रा, लेटना 2. बिस्तरा, शय्या शयनस्थो न भुञ्जीत मनु० ४।७४, रघु० १।९५ विक्रम० ३।१० 3 मैथुन, संभोग। सम० —गृ (आ) गारः, —गृहम्, शयनकक्ष, सोने का कमरा, —एकादशी आषाढ़ शुक्ला एकादशी (इस दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए लेट जाते हैं), —सखी एक शय्या पर साथ सोने वाली सहेली —स्थानम् सोने का कमरा शयनकक्ष।

शयनीयम् [शी + अनीयर्] बिस्तरा, शय्या, परिशून्यं शयनीयमद्य मे रघु० ८।६६ कान्तासखस्य शयनीय शिलातलं ते उत्तर० ३।२१ (इसी अर्थ में शयनीयकम्)।

शयानकः [शी + शानच् + कन्] 1 गिरगिट 2 एक साँप, अजगर।

शयालु (वि०) [शी + आलुच्] निद्रालु, तन्द्रालु आलसी शि० २।८० —लुः 1 एक प्रकार का साँप अजगर 2 कुत्ता 3 गीदड़।

शयित (भू० क० कृ०) [शी कर्तरि क्त] 1 सोने वाला विश्रान्त, सुप्त 2 लेटा हुआ।

शयुः [शी + उ] बड़ा साँप अजगर।

शय्या [शी आधारे क्यप् + टाप्] 1 बिस्तरा, बिछौना शय्या भूमितलम् शान्ति० ४।९, मही रम्या शय्या भर्तृ० ३।७९, रघु० ५।६६ 2. बांधना, गठरी करना। सम० —अध्यक्षः, —पालः राजा के शयनकक्ष का अधीक्षक, —उत्सङ्गः पलंग का एक पार्श्व, —गत (वि०) 1 पलंग पर लेटा हुआ 2 रोगी, —गृहम् शयन-कक्ष, रघु० १६।४।

शर [शृ + अच्] 1 बाण, तीर अथ स निशितनिपाता शरमारा शरासने श० १।१० 2 एक प्रकार का सफ़ेद सरकंडा या घास शरकाण्डपाण्डुगण्डस्थला मालवि० ३।८, कुशेन सीता शरपाण्डुरेण रघु० १४।२६, शि० ११।३० 3 दूध जमे हुए दूध की मलाई, मलाई 4 चोट, क्षति, घाव 5 पाँच की संख्या, —रम् पानी। सम० —अग्र्यः बढ़िया तीर —अभ्यासः तीरंदाजी, —असनम्, —आसनम् धनुष, कमान रघु० ३।५२, कु० ३।६४, —आक्षेपः तीरों की वर्षा, —आरोपः, —आवापः धनुष, —आश्रयः तरकस —आहत (वि०) जिसके तीर लगा हो, —इषीका बाण, —इष्टः आम का वृक्ष, —ओघः बाणों का समूह बाणवर्षा —काण्डः 1 सरकुल की डंडी 2 बाण की लकड़ी, —क्षेपः बाण से लक्ष्यभेद करना तीरंदाजी, —जः, —जन्मन् (पु०) कार्तिकेय का विशेषण —रघु० ३।२३ —जालम् बाणों का समूह या ढेर

–धिः तरकस, –पातः बाण का छोड़ना, –स्थानम् बाण का निशाना, –पुङ्खः, –पुङ्खा बाण का परदार किनारा, –फलम् बाण का फल, –भङ्गः एक ऋषि जिसके दर्शन राम ने दण्डकारण्य में किये थे, रघु० १३।४५, –भूः कार्तिकेय, –भल्लः धनुर्धर, तीरंदाज, –वनम् (–वणम्) सरकण्डों का झुरमुट, मेघ० ४५, –उद्भवः, –भवः कार्तिकेय के विशेषण, –वर्षः बाणों की वर्षा या बौछार, –वाणिः 1 बाण का सिरा 2 धनुर्धर 3 बाणनिर्माता 4 पदाति, –वृष्टिः (स्त्री०) बाणों की बौछार, –व्रातः बाणों का समूह, –संधानम् बाण का निशाना लगाना, ... –शरसंधान... –संभृत (वि०) बाणों से ढका हुआ, –स्तम्बः सरकण्डों का गुच्छा।

शरटः [शॄ+अटन्] 1. गिरगिट 2. कुसुम्भ।

शरणम् [शॄ+ल्युट्] 1 प्ररक्षा, सहायता, सान्त्वना और रक्षा, रघु० १६।६४, विक्रम० ५।७, उत्तर० ६।२३ 2 आसरा, आश्रयस्थान, कु० ३। ... 3 ओट, सहारा, निवास ... (सर्वनामों के लिए भी प्रयुक्त) ... शरणम् ... मेघ० ... –शरणं गम्, इ या शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना ... शरणम्, भामि० ... 4 शरणालय, रौवागार, ... श० ५ 5 आवास, घर, निवासस्थल, मुद्रा० ३।१५, भट्टि० ६।९ 6. भट, बिल, माँद 7 क्षति, हत्या। सम० –आर्थिन् (वि०), –एषिन् (वि०) शरण या रक्षा ढूंढने वाला, –मनु० ७।९६, –आगत, –आपन्न (वि०) प्ररक्षा या शरण में गया हुआ, आश्रय लेने वाला, आश्रयार्थी, –उन्मुख (वि०) शरण या प्ररक्षा खोजने वाला – रघु० ६।२१।

शरण्डः [शॄ+अण्डच्] 1 पक्षी 2 गिरगिट 3 ठग, धूर्त 4 लम्पट, स्वेच्छाचारी 5 एक प्रकार का आभूषण।

शरण्य (वि०) [शरणे साधु, यत्] ... शरण देने वाला, परक्षक, ... असौ शरण्यः शरणोन्मुखानाम् –रघु० ... शरण्यो लोकानाम् महावी० ४।१, रघु० ... १६।६४, ... कु० ५।७६ 2 जिसे रक्षा की आवश्यकता है, दीन, दयनीय, –ण्यः शिव का विशेषण, –ण्यम् 1 आश्रयस्थल, शरणगृह 2 प्ररक्षक, जो शरणागत की रक्षा करता है 3 प्ररक्षा, प्रतिरक्षा 4 क्षति, चोट।

शरण्युः [शॄ+अन्यु] 1 प्ररक्षक 2 बादल 3 हवा।

शरद् (स्त्री०) [शॄ+अदि] 1 पतझड़, शरदृतु (आश्विन तथा कार्तिक मास में होने वाली ऋतु), यायावी बोधयामास न शक्यः प्रथमं शरद्, रघु० ४।२४ 2. वर्ष, –त्वं जीव शरदः शतम्, रघु० १०।१, उत्तर० १।१५, मालवि० १।१५। सम० –अन्तः शरद् का अन्त, सर्दी का मौसम, –अम्बुधरः शरदृतु का बादल, –उदाशयः शरत्कालीन सरोवर, –कामिन् (पुं०) कुत्ता, –कालः शरत् काल, पतझड़ का मौसम, –घनः, –मेघः शरदृतु का बादल, –चन्द्रः (शरच्चन्द्रः) शरत्कालीन चन्द्रमा, –त्रियामा शरत्कालीन रात्रि, –पद्मः, –धामः श्वेत कमल, –पर्वन् (नपुं०) कोजागर नाम का उत्सव, –मुखम् शरदृतु का आरम्भ।

शरदा [शरद्+टाप्] 1 पतझड़ 2 वर्ष।

शरदिज (वि०) [शरदि जायते–जन्+ड, सप्तम्या अलुक्] पतझड़ या शरदृतु से सम्बन्ध रखने वाला।

शरभः [शॄ+अभच्] 1 हाथी का बच्चा 2 आख्यायिकाओं में वर्णित आठ पैरों का जन्तु जो सिंह से बलवान् होता है ... 3 ऊँट 4 टिड्डा 5 टिड्डी।

शरयुः, (यूः) (स्त्री०) [शॄ+अयु, पक्षे ऊङ्] एक नदी, सरयू, दे० सरयु (यू)।

शरल (वि०) [शॄ+अलच्] दे० 'सरल'।

शरलकम् [शरल+कन्] पानी।

शरव्यम् [शरवे शरक्षिप्तये हितम्–शरु+यत्] तीर मारने का निशाना, लक्ष्य (आलं० से भी)–सौ ... रघु० ११।२७, कु० ... शरव्य ... रघु० ३।४२, शि० ... श० ... शरव्यताम् ...

शराटि, –टिः [शर+अट्+इन्, ...] एक प्रकार का पक्षी।

शराह (वि०) [शॄ+आरु] क्षतिकर, अनिष्टकर, क्षतिकारक।

शरावः, –वम् [शर ... अव्+अण्] 1 कम गहरा बर्तन, थाली, मिट्टी का सकोरा, ... विक्रम० ३, मनु० ... 2 ढक्कन ... 3 दो कुडव के बराबर माप।

शरावती ... एक नगर जिसको रामके पुत्र लव ने बसाया था, रघु० १५।९७।

शरिः (पुं०) [भूमावपि यौवनस् श ...] पैदा करना, जन्म देना।

शरीरम् [शॄ+ईरन्] (जड़ चेतन पदार्थों की) काया, देह, शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् कु० ५।३३ 2 ... 3 दैहिक शक्ति 4 मृत शरीर, शव। सम० –अन्तरम् 1 शरीर का आन्तरिक भाग 2 दूसरा शरीर, –आवरणम् 1. खाल, चमड़ी, –कर्तृ (पुं०) पिता, –कर्षणम् शरीर को

कृशता,—**जः** 1. रोग 2. काम, प्रणयोन्माद 3. कामदेव 4. पुत्र, सन्तान—कि० ४।३१,—**तुल्य** (वि०) समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर,—**दण्डः** 1. शारीरिक दंड 2. कार्य-साधना (जैसा कि तपस्या में),—**धृक्** (वि०) शरीरधारी, **पतनम्**, **पातः** मृत्यु, मौत,—**पाकः** (शरीर की) कृशता,—**बद्ध** (वि०) शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी—कु० ५।३०,—**बन्धः** 1. शारीरिक ढांचा—रघु० १६।२३ 2. शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का जन्म—रघु० १३।५८,—**बन्धकः** सशरीर प्रतिभू,—**भाज्** (वि०) शरीरधारी, शरीरी (पुं०) जन्तु, शरीरधारी प्राणी,—**भेदः** (आत्मा से) शरीर का वियोग, मृत्यु,—**यष्टिः** (स्त्री०) पतला शरीर, सुकुमार, दुबला-पतला,—**यात्रा** आजीविका,—**विमोक्षणम्** आत्मा का शरीर से छुटकारा, मुक्ति,—**वृत्तिः** (स्त्री०) शरीर का पालनपोषण—रघु० २।४५,—**वैकल्यम्** शारीरिक रोग, बीमारी, व्याधि,—**शुश्रूषा** व्यक्तिगत सेवा,—**संस्कारः** 1. व्यक्ति की सजावट 2. नाना प्रकार के शुद्धिसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल करना,—**संपत्तिः** (स्त्री०) शरीर की समृद्धि, (अच्छा) स्वास्थ्य,—**सादः** शरीर की दुर्बलता, कृशता—रघु० ३।२,—**स्थितिः** (स्त्री०) 1. शरीर का पालन-पोषण—रघु० ५।९ 2. भोजन करना, खाना (का० में बहुधा प्रयुक्त)।

शरीरकम् [शरीर+कन्] 1. देह 2. छोटा शरीर,—**कः** आत्मा।

शरीरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शरीर+इनि] शरीरधारी, शरीरयुक्त, शरीरी—करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी—उत्तर० ३।४, मालवि० १।१० 2. जीवित (पुं०) 1 कोई भी शरीरधारी वस्तु (चाहे जड हो चाहे चेतन) शरीरिणा स्थावरजंगमानां सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव—कु० १।२३, रघु० ८।४३ 2 सजीव प्राणी 3 मनुष्य आत्मा (शरीर से युक्त)—रघु० ८।८९, भग० २।१८।

शर्करजा [शृ+करन्+जन्+ड+टाप्] कणयुक्त चीनी, मिश्री।

शर्करा [शृ+करन्+टाप्] 1 कणयुक्त चीनी 2 कंकड़ी, रोड़ी, बजरी—मृच्छ० ५ 3 कंकरीला कण 4. बालू से युक्त भूमि, रेत 5 टुकड़ा, खण्ड 6. ठीकरा, 7. कोई भी कड़ा कण जैसा कि 'जलशर्करा', पानी का कण अर्थात् ओला 8 पथरी का रोग। सम०—**उदकम्** खांडमिश्रित जल, चीनी डाल कर मीठा किया हुआ पानी,—**सप्तमी** वैशाख शुक्ला सप्तमी के दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान।

शार्करिक (वि०) (स्त्री०—की) **शार्करिल** (वि०) [शर्करा+ठक्, इलच् वा] कंकरीला, बजरीदार, किरकिरा।

शर्करी (स्त्री०) 1. नदी 2. करधनी, मेखला।

शर्धः [शृध्+घञ्] 1 अपानवायु का त्याग, अफारा (इस अर्थ में नपुं० भी होता है) 2. दल, समूह 3. सामर्थ्य, शक्ति।

शर्धंजह (वि०) [शर्ध+हा+खश्, मुम्] अफारा उत्पन्न करने वाला,—**हः** उड़द या माष की दाल।

शर्धनम् [शृध्+ल्युट्] अपानवायु को छोड़ने की क्रिया।

शर्ब् (भ्वा० पर० शर्बति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

शर्मन् (पुं०) [शृ+मनिन्] ब्राह्मण के नाम के आगे जोड़ी जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशर्मन्, तु० वर्मन्, दास, गुप्त (नपुं०) 1 प्रसन्नता, आनन्द, खुशी—त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितं व्रतम्—नै० १।५०, रघु० १।६९, मनु० ३।९७ 2 आशीर्वाद 3 घर, आधार (इस अर्थ में बहुधा वैदिक)। सम०—**द** (वि०) आनन्ददायक (—**दः**) विष्णु का विशेषण।

शर्मरः [शर्मन्+रा+क] एक प्रकार का परिधान, वस्त्र।

शर्या [शृ+यत्+टाप्] 1. रात्रि 2. अंगुली।

शर्व् (भ्वा० पर० शर्वति) 1. जाना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना।

शर्वः [शृ+व] 1. शिव—रघु० ११।९३, कु० ६।१४ 2 विष्णु।

शर्वरः [शृ+ष्वरच्] कामदेव,—**रम्** अन्धकार।

शर्वरी [शृ+वनिप्, ङीप्, वनो र च] 1 रात—शशिनं पुनरेति शर्वरी—रघु० ८।५६, ३।२, ११।९३, शि० ११।५ 2 हल्दी 3. स्त्री। सम०—**ईशः** चन्द्रमा।

शर्वाणी [शर्व+ङीष्, आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शर्वरीक (वि०) [शृ+ईकन्, द्वित्वादि] उपद्रवी, क्रूर,—**कः** धूर्त, पाजी, दुर्जन।

शल् i (भ्वा० आ० शलते) 1. हिलाना, हरकत देना, क्षुब्ध करना 2. काँपना।
ii (भ्वा० पर० शलति) 1 जाना 2. तेज दौड़ना।
iii. (चुरा० आ० शालयते) प्रशंसा करना।

शलः [शल्+अच्] 1. भाला, बर्छी 2 मेढा 3. भृंगी नाम का शिव का एक गण 4 ब्रह्मा,—**लम्** साही का कांटा (कुछ के अनुसार पुं० भी)।

शलकः [शल+कन्] मकड़ा, मकड़ी।

शलङ्कुः [शल्+अङ्कुच्] राजा, प्रभु।

शलभः [शल्+अभच्] 1 टिड्डा, टिड्डी—श० १।३२ 2 पतंगा—कीरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते—वेणी० १।१९, शि० २।११७, कु० ४।४०।

शललम् [शल्+अलच्] साही का कांटा, —ली 1 साही का कांटा 2 छोटी साही।

शलाका [शल्+आक, टाप्] 1 छोटी छड़ी, खूंटी, डण्डा, कील, टुकड़ा, पतला सोंटा — अयस्कान्तमणिशलाका — मा० १ 2 पेन्सिल (आंख में सुर्मा आंजने की) सलाई — अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः ॥ शिक्षा० ५८, कु० १।४७ रघु० ७।८ 3 बाण 4 नोक, तेज़ा 5 एक नोकदार शल्यचिकित्सा (घाव की गहराई नापने के लिए) 6 छतरी की तीली 7 (हाथ पैर की अंगुलियों की जड़ की) हड्डी—याज्ञ० ३।८५ 8 अंकुर, फुनगी, कोंपल—कु० १।२४ 9 दन्त मंजन की कूंची 10 दांत साफ करने की कूची दांत-कुरेदनी 11 साही 12 हाथी दांत या हड्डी का बना जुआ खेलने का आयताकार (पासा) टुकड़ा। सम० —धूर्तः (शलाकाधूर्तः) उचक्का, ठग —परि (अव्य०) जुए में सफल पासा पड़ना, तु० परि —अक्षपरि।

शलाटु (वि०) [शल्+आटु] अनपका —टु कन्द विशेष।

शलाकालोमिः (पुं०) ऊंट।

शल्कम्, शल्कलम् [शल्+कन्, कलच् वा] 1 मछली का वल्कल या छिलका मनु० ५।१६, याज्ञ० १।१७८ 2 वल्कल, छाल (वृक्षों की) 3 भाग, अंश, खण्ड।

शल्कलिन्, शल्किन् (पुं०) [शल्कल (शल्क)+इनि] मछली।

शल्भ् (भ्वा० आ० शल्भते) प्रशंसा करना।

शल्मलिः, —ली (स्त्री०) [शल्+मलच्, इत पक्षे ङीप्] रेशमी रुई का वृक्ष, सेमल।

शल्यम् [शल्+यत्] 1. बर्छी नेज़ा भाला 2 बाण तीर — शल्य निखातमुदाहारयतामुरस्तः रघु० ९।७८ शल्यप्रोतम् ९।७५ श० ६।९ 3 कांटा खपची 4 मेख, खूंटी, सूणी (उपर्युक्त चारों अर्थों में पु० भी होता है) 5 शरीर में घुसा हुआ कोई पीड़ाकारक कांटा आदि — अलातशल्यम् उत्तर० ३।३५ 6 (आलं०) हृदयविदारक शोक या किसी तीक्ष्ण पीड़ा का कारण — उद्धृतविषादशल्यः कथयिष्यामि — श० ७ 7 हड्डी 8 कठिनाई, कष्ट 9 पाप, जुर्म 10 विष, —ल्यः 1 साही, झाऊ वृक्ष 2 कंटीदार झाड़ी 3 (आयु० में) शल्यचिकित्सा में खपचियों का उखेड़ना 4 बाड़ सीमा 5 एक प्रकार की मछली 6 मद्रदेश का राजा पांडु की द्वितीय पत्नी माद्री का भाई नकुल और सहदेव का मामा (महाभारत के युद्ध में उसने पांडवों की ओर से लड़ने का विचार किया परन्तु दुर्योधन ने चालाकी से उस पर प्रभाव डाल कर उसे अपनी ओर कर लिया, फलतः वह कौरवों की ओर से लड़ा। कर्ण के सेनापति बनने पर वह उसका सारथि बना, और कर्ण की मृत्यु हो जाने पर उसे कौरव सेना का सेनापतित्व मिला। एक दिन तक उसने सेनापतित्व का भार संभाला परन्तु दूसरे दिन युधिष्ठिर ने उसे मौत के घाट उतार दिया)। सम० —अरिः युधिष्ठिर का विशेषण, —आहरणम्, —उद्धरणम्, —उद्धारः, —क्रिया, —शास्त्रम् कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर में असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है, —कण्ठः झाऊ वृक्ष, —लोमन् (नपुं०) साही का कांटा —हृत् (पुं०) निरैया निराने वाला।

शल्यकः [शल्य+कन्] 1 सांग नेज़ा सलाख 2 खपची, फांस कांटा 3 झाऊ वृक्ष, साही।

शल्लः [शल्+ल, अच्] मेंढक, —ल्लम् वल्कल छाल।

शल्लकः [शल्ल+कन्] वृक्ष, लोध वृक्ष, —कम् वल्कल छाल।

शल्लकी [शल्लक+ङीष्] 1 साही 2 एक वृक्ष विशेष जो हाथियों को बहुत प्रिय है —तु० उत्तर० ३।२१ ३।६, मा० ९।६ विक्रम० ४।२३। सम० —द्रवः धूप, लोबान।

शल्वः [शल्+वन्] एक देश का नाम, दे० 'शाल्व'।

शव् (भ्वा० पर० शवति) 1 जाना, पहुंचना 2 बदलना परिवर्तन करना रूपान्तर करना।

शवः, —वम् [शव्+अच्] लाश, मुर्दा शरीर मनु० १०।५५, सम० —आच्छादनम् मृतक शरीर का आवरण, कफन, —आश (वि०) मुर्दा खाकर जीने वाला — भट्टि० १२।७५, —काम्यः कुत्ता, —यानम्, —रथः मुर्दा ढोने की गाड़ी अरथी एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं।

शबर, शबल दे० शवर शवल।

शवसानः [शव+असानच्] 1 यात्री 2 मार्ग, सड़क —नम् कब्रिस्तान शवाधिष्ठान।

शशः [शश्+अच्] 1 खरगोश, खरहा —मनु० ३।२७० ५।१८ 2 चन्द्रमा का कलंक (जो खरगोश की आकृति का समझा जाता है) 3 कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक भेद। ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं: मृदुवचनसुशील कोमलाङ्गः सुकेशः सकलगुणनिधानं सत्यवादी शशोऽयम् —शब्द० दे० रति० ३५ भी 4 लोध्र वृक्ष 5 बोल नामक गंधयुक्त गोंद। सम० —अङ्कः 1 चांद 2 कपूर —अर्धमुख (वि०) अर्धचन्द्राकार सिर वाला (बाण आदि) —मूर्तिः चन्द्रमा का विशेषण "लेखा चांद की कला चन्द्रकला, —अदः 1 बाज, श्येन 2 पुरञ्जय के पिता इक्ष्वाकु का एक

पुत्र, —अदनः बाज, श्येन, —ऊर्णम्, —लोमम् खरगोश के बाल, खरहे की खाल, —धरः 1 चन्द्रमा—प्रसरति शशधरबिंबे गीत० ७ 2 कपूर —मौलिः शिव का विशेषण, —लुप्तकम् नखक्षत, नाखून का घाव, —भृत् (पुं०) चांद —भृत् (पुं०) शिव का विशेषण,—लक्षणः चांद का विशेषण,—लाञ्छनः 1 चन्द्रमा कु० ७।३६, 2 कपूर—वि(वि)न्दुः 1. चांद 2 विष्णु का विशेषण —विषाणम् —शृंगम् खरगोश का सींग (असंभव बात का संकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितान्त (असंभावना) कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत् —भर्तृ० २।५, शशशृंगधनुर्धरः दे० 'खपुष्प', —स्थली गंगा यमुना के बीच की भूमि, दोआबा।

शशकः [शश + कन्] 1 खरगोश खरहा 2 शश (३)।

शशिन् (पुं०) [शशोऽस्त्यस्य इनि] 1 चांद शशिन पुनरेति शर्वरी रघु० ८।५६, ६।८५, मेघ० ४१ 2 कपूर। सम० —ईशः शिव का विशेषण, —कला चन्द्रमा की एक रेखा मुद्रा० १।१, —कान्तः चन्द्रकान्तमणि (—तम्) कमल, —कोटिः चन्द्रशृंग, —ग्रहः चन्द्रमा का ग्रहण, —जः बुध का विशेषण (चन्द्रमा का पुत्र), —प्रभ (वि०) चन्द्रमा की कांति वाला, चांद जैसा उज्ज्वल और श्वेत रघु० ३।१६, (—भम्) कुमुदिनी,—प्रभा चांद का प्रकाश, —भूषणः, —भृत्, (पुं०) —मौलिः, —शेखरः शिव के विशेषण —लेखा चन्द्रमा की कला।

शश्वत् (अव्य०) [शश् + वत्, बा] 1 लगातार, अनादि काल से, सदा के लिए 2 सतत बार-बार, सर्वदा बहुधा, पुनः पुनः—रघु० २।४५, ४।३०, मेघ० ५५ 3 समास में प्रयुक्त होने पर 'शश्वत्' का अर्थ है टिकाऊ नित्य' यथा शश्वच्छान्ति अर्थात् नित्य शान्ति।

शष्कुः (ष्कु) ली [शष् (स) + कुलच् + ङीष्] कान का विवर, श्रवण मार्ग अवलम्बितकर्णशष्कुलीकलसीकं रचयन्नवोचत नै० २।८, याज्ञ० ३।९६ 2 एक प्रकार की तली हुई रोटी याज्ञ० १।२८३ 3 शाबल की कानी 4 कान का एक रोग।

शष्पः (ष्पा) [शष् + पक्] प्रतिभाक्षय, औसान का अभाव, —ष्पम् नया घास उत्तर० ४।२७, रघु० २।२६।

शस् I (भ्वा० पर० शसति) काटना मारडालना, नष्ट करना, वि—काट डालना, मार डालना उत्तर० ४। II (अदा० पर० शस्ति) सोना, तु० 'सस्' से भी।

शसनम् [शस् + ल्युट्] 1 घायल करना, मार डालना 2 बलि, मेघ, (यज्ञ में पशु का)।

शस्त (भू० क० कृ०) [शंस् + क्त] 1 प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया 2. शुभ आनन्दप्रद 3 यथार्थ, सर्वोत्तम 4 अतिप्रसन्न, घायल 5. वध किया हुआ —स्तम् 1 आनन्द, कल्याण 2 श्रेष्ठता, मांगलिकता 3 शरीर 4 अंगुलित्राण (इसी अर्थ में 'शस्तकम्' भी)।

शस्तिः (स्त्री०) [शंस् + क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति।

शस्त्रम् [शस् + ष्ट्रन्] 1 हथियार, आयुध क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति —सुभा०— रघु० २।४०, ३।५१, ६२, ५।२८ 2 उपकरण, औजार 3 लोहा 4 इस्पात, 5 स्तोत्र। सम० —अभ्यासः शस्त्रास्त्रों के चलाने का अभ्यास, सैनिक व्यायाम, —अयसम् 1 इस्पात 2 लोहा,—अस्त्रम् प्रहार करने और फेंक कर मारने वाले हथियार, आयुध और अस्त्र 1 आयुध या शस्त्र —आजीवः —उपजीविन् (पुं०) पेशेवर सिपाही, —उद्यमः (प्रहार करने के लिए) शस्त्र उठाना, —उपकरणम् युद्ध के उपकरण या शस्त्रास्त्र, सैनिक सामग्री, —कारः शस्त्रनिर्माता —कोषः किसी हथियार का म्यान, आवरण, —ग्राहिन् (वि०) (युद्ध के लिए) शस्त्रास्त्र धारण करने वाला उत्तर० ५।११,—जीविन्, —वृत्ति (पुं०) शस्त्रप्रयोग के द्वारा जीवन यापन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक, —देवता 1. आयुधों की अधिष्ठात्री देवता 2 देवरूपधारी हथियार, —धरः शस्त्रभृत्,—न्यासः हथियार डाल देना, इसी प्रकार शस्त्र (परि) त्यागः, —पाणि (वि०) शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रों से सुसज्जित (पुं०) सशस्त्र योद्धा —पूत (वि०) 'शस्त्रों द्वारा पवित्रीकृत' युद्धक्षेत्र में मारे जाने से मुक्त —अशस्त्रपूतं निर्व्याजं (महामांस)—मा० ५।१३ (दे० शब्द की जगद्धरकृत व्याख्या) अहमपि तस्य मिथ्याप्रतिज्ञावैलक्ष्यसंपादितमशस्त्रपूतं मरणमुपदिशामि वेणी० ३, —प्रहारः हथियार से किया गया आघात —भृत् (पुं०) सैनिक योद्धा रघु० २।४० —मार्जः हथियार साफ करने वाला, शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर, —विद्या —शास्त्रम् शस्त्र विज्ञान, —संहतिः (स्त्री०) 1 शस्त्रसमूह 2 आयुधागार, —संपातः हथियारों का अकस्मात् गिरना, —हत (वि०) हथियार से मारा गया —हस्त (वि०) शस्त्रधर (—स्तः) शस्त्रधारी मनुष्य।

शस्त्रकम् [शस्त्र + कन्] 1 इस्पात 2 लोहा।

शस्त्रिका [शस्त्रक + टाप्, इत्वम्] चाकू।

शस्त्रिन् (वि०) [शस्त्र + इनि] शस्त्रधारी, हथियारबंद, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित।

शस्त्री [शस्त्र + ङीप्] चाकू—तथ्यमप्येव विवेकवल्लीलतिका शस्त्रीयु रचयेत् क सुभा०, शि० ६।४०।

शस्यम् [शस् + यत्] 1 अन्न, धान्य दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम् रघु० १।२६ 2 किसी वृक्ष या पौधे का फल या उपज—शस्य क्षेत्र

गर्त प्राहु [illegible] धान्यमुच्यते दे० [illegible] भी 3 गुण। सम० **कोषम्** अन्न का [illegible] **भक्षक** (वि०) अन्नहारी अनाज खाने वाला **मञ्जरी** अनाज की बाल **मालिन** (वि०) [illegible] हो —**शालिन्** **सपत्र** (वि०) अन्न या धान्य से परिपूर्ण **शूकम** अनाज का [illegible] **सपद्** (स्त्री०) अनाज की [illegible] **सम्ब** [illegible]) [illegible] शाल का [illegible], साल का पेड़।

शाक, **कम** [illegible] [illegible] शाक, साग भाजी [illegible] [illegible] [illegible] की भाँति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अन्यै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — **क** 1 शक्ति [illegible] हुआ 2 सागौन का वृक्ष 3 [illegible] 4 [illegible] का नाम — दे० [illegible] 5 वर्ष, [illegible] [illegible] सम० **अङ्गम्** [illegible] **अम्लम** [illegible] [illegible] **आख्य** [illegible] [illegible] **आहार** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] **वृक्षिका** [illegible] **वृक्ष** सागौन का वृक्ष **पत्र** 1 [illegible] 2 [illegible] **पार्थिव** [illegible] [illegible] [illegible] **प्रति** [illegible] **पाय** [illegible] **वृक्ष** सागौन [illegible] **शाकटम** **शाकिनम** [illegible] भाजी [illegible] [illegible] [illegible]

शाकट (वि०) (स्त्री० [illegible]) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] — **ट** 1 गाड़ी [illegible] 2 [illegible] (नपुं०) [illegible] [illegible]

शाकटायन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

शाकटिक (वि०) (स्त्री० **की**) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

शाकटीन [illegible] [illegible] [illegible] बोझ [illegible] [illegible] [illegible]

शाकल (वि०) (स्त्री० **ली**) [शकल + अण्] [illegible] से सम्बन्ध रखने वाला — **ल** ऋग्वेद की एक शाखा इस शाखा के अनुयायी (ब० व०)। सम० **प्रातिशाख्यम** [illegible] [illegible] शाखा ऋग्वेद का [illegible] पाठ जो शाकल [illegible] [illegible] है।

शाकल्य [शकल + यञ्] [illegible] एक प्राचीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है (कहा जाता है कि इसी ने ऋग्वेद के पद पाठ का व्यवस्थापन किया था)।

शाकारी (स्त्री०) प्राकृत का एक निम्नतम रूप, शकार द्वारा बोली जाने वाली जैसा कि मृच्छकटिक में।

शाकिनम [शाक + इनच्] खेत जैसा कि शाकशाकिनं में।

शाकिनी [illegible] 1 साग भाजी का खेत 2 दुर्गा देवी की सेविका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाती है।

शाकुन (वि०) (स्त्री० —**नी**) [शकुन + अण्] 1 पक्षियों से सम्बन्ध रखने वाला [illegible] [illegible] 2 शकुन सम्बन्धी 3 [illegible] [illegible]।

शाकुनिक [illegible] [illegible] बहेलिया, चिड़ीमार — [illegible] [illegible] [illegible] — **कम्** शकुनों की व्याख्या।

शाकुनेय [illegible] [illegible] [illegible]

शाकुन्तल [illegible] [illegible] भरत का मातृपरक नाम ([illegible]) — **लम** कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक।

शाकुलिक [illegible] [illegible] मछुआ, मछली पकड़ने वाला।

शाक्कर [illegible] + अण्] बैल।

शाक्त (वि०) (स्त्री० —**क्ती**) [शक्ति + अण्] 1 शक्ति सम्बन्धी 2 [illegible] की [illegible] प्रतिमा से सम्बन्ध रखने वाला — **क्त** [illegible] शक्तिपूजक ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] ही दिव्यशक्ति की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का है पवित्र अर्थात् दक्षिणाचार, या अपवित्र अर्थात् वामाचार)।

शाक्तिक [illegible] 1 शक्तिपूजक 2 बर्छी [illegible] रखने वाला।

शाक्तीक [illegible] [illegible] बर्छी रखने वाला भालाधारी।

शाक्तेय [illegible] [illegible] [illegible] का उपासक।

शाक्य [illegible] [illegible] 1 बुद्ध के कुटुम्ब का नाम 2 बुद्ध। सम० **भिक्षुक** बौद्धभिक्षु, **मुनि** **सिंह** बुद्ध के विशेषण।

शाक्री [illegible] अण् [illegible] 1 इन्द्र की [illegible] 2 दुर्गादेवी।

शाक्वर [illegible] [illegible] [illegible] आक्वर।

शाखा [illegible] [illegible] + अच् + टाप्] 1 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शाखा [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] अनुभाग [illegible] [illegible] [illegible] का भाग या उपभाग 5 सम्प्रदाय [illegible] 6 परम्परा प्राप्त वेद का पाठ किसी सम्प्रदाय द्वारा मान्यता [illegible] परम्परागत पाठ यथा [illegible] शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि। सम० **अन्तरम्** दे० 'न्याय' के अन्तर्गत **नगरम्**, **पुरम्** नगरोपान्त नगर परिसर, **पित्त**

शरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों में सूजन, -भृत् (पुं०) वृक्ष, -भेदः (वेद की) शाखाओं का अन्तर, -मृगः 1 बन्दर, लंगूर 2 गिलहरी, -रण्डः अपनी शाखा के प्रति द्रोह करने वाला, वह ब्राह्मण जिसने अपनी वैदिक शाखा को बदल दिया है, -रथ्या गली, वीथिका।

शाखालः [शाखा+ला+क] एक प्रकार का बेंत वानीर।

शाखिन् (वि०) [शाखा+इनि] 1 शाखाधारी (आल० से भी) 2 शाखाओं से युक्त, शाखामय 3 (वेद के) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाला -(पुं०) 1 वृक्ष श० १।१५ 2 वेद 3 वेद की किसी भी शाखा का अनुयायी।

शाखोटः, शाखोटकः [शाख्+ओटन्, शाखोट+कन्] एक वृक्ष, पेड़ - कस्त्वं भो कथयामि दैवहतकं मां विद्धि शाखोटकम्—काव्य० १०।

शाङ्कर [शङ्कर+अण्] बैल।

शाङ्करिः [शङ्कर+इञ्] 1 कार्तिकेय 2 गणेश 3 अग्नि।

शाङ्खिकः [शङ्ख+ठक्] 1 शङ्खकार, शङ्ख को काट कर उसकी चीजें बनाने वाला 2 एक वर्णसङ्कर जाति 3 शङ्ख बजाने वाला—शि० १५।७२।

शाटः, शाटी [शट्+घञ्, शाट+ङीष्] 1 वस्त्र, कपड़ा 2 अधोवस्त्र, साड़ी।

शाटकः,-कम् [शाट+कन्] 1 वस्त्र, कपड़ा अधोवस्त्र, साड़ी—पञ्च० १।१४४।

शाठ्यम् [शठ+ष्यञ्] बेईमानी, छल, कपट, चालाकी, चालबाजी, दुष्कर्म—आजन्मनः शाठ्यमशिक्षितो यः श० ५।२५, मुद्रा० १।१।

शाण (वि०) (स्त्री०-णी) [शणेन निर्वृत्तम् अण्] सन का बना हुआ, पटसन का बना हुआ—णः 1 कसौटी—भामि० १।७३, भर्तृ० २।४४, 2 सान रखने वाला पत्थर 3 आरा 4 चार माशे की तौल, -णम् 1 मोटा कपड़ा, बोरे या थैले आदि बनाने का कपड़ा 2 सन का बना वस्त्र—मनु० २।४१, १०।८७। सम०—आजीवः शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर।

शाणिः [शण्+इण्] एक पौधा जिसके रेशों से वस्त्र बनता है, पटुआ।

शाणित (भू० क० कृ०) [शण्+णिच्+क्त] सान पर रक्खा हुआ, घिसा हुआ, (सान पर रख कर) पैनाया हुआ।

शाणी [शाण+ङीप्] 1 कसौटी 2 सान 3 आरा 4 सन का बना वस्त्र 5. फटा कपड़ा, चिथड़ा 6 छोटा पर्दा या तंबू 7 अंगविक्षेप, हाथ या आँख आदि से संकेत करना।

शाणीरम् [शण्+ईरन्] शोण नदी का तट, शोण नदी का भूभाग।

शाण्डिल्यः [शण्डिल+यञ्] 1 एक ऋषि जिसने विधि-शास्त्र पर ग्रन्थ लिखा 2 बिल्ववृक्ष, बेल का पेड़ 3 अग्नि का रूप। सम०—गोत्रम् शाण्डिल्य का परिवार।

शात (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1 तीक्ष्ण किया हुआ, पैनाया हुआ 2 पतला, दुबला 3 दुर्बल, कमजोर 4 सुन्दर मनोहर 5 प्रसन्न फलता फूलता,—तः धतूरे का पौधा, -तम् आनन्द प्रसन्नता खुशी मानिनी जनजनितशातम्—गीत० १०। सम०-उदरी कृशोदरी, पतली कमर वाली स्त्री शि० ५।२३ रघु० १०। ६९,-शिख (वि०) तेज नोक वाला, तीक्ष्ण नोकदार।

शातकुम्भम् [शतकुम्भे पर्वते भवम् अण्] 1 सोना—शि० ९।९, नै० १६।३८ 2 धतूरा।

शातकौम्भम् [शतकुम्भ+अण्] सुवर्ण सोना।

शातनम् [शो+णिच्, नुक्+ल्युट्] 1 पैनाना तेज करना 2 काटने वाला विनाशकता रघु० ३।४८ 3 गिराना या नष्ट करना 4 कृश या क्षीण करना 5 पतला या छोटा होना पतलापन 6 मुर्झाना कुम्हलाना।

शातपत्रकः,-की [शतपत्र+अण्+कन्] चाँद का प्रकाश।

शातभीरुः [शाता सुखदा भीरुः भीरुता यस्याः -ब० स०] एक प्रकार की मल्लिका।

शातमान (वि०) (स्त्री०-नी) [शतमानेन क्रीतम् अण्] एक सौ में मोल लिया हुआ।

शात्रव (वि०) (स्त्री०-वी) [शत्रु+अण्] 1 शत्रुसंबंधी रघु० ४।४२ 2 विरोधी शत्रुतापूर्ण —वः दुश्मन कि० १४।४४ १८।२०, वेणी० ५।१, भट्टि० ५। ८१ कि० १४।८ मुद्रा० २।५, -वम् 1 शत्रुओं का समूह 2 शत्रुता दुश्मनी यदीशात्रवशात्रवे रघु०।

शात्रवीय (वि०) [शत्रु+छ] 1 शत्रुसंबंधी 2 विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

शाद [शद्+घञ्] 1 छोटी घास 2 कीचड़। सम०-हरित -तम् नये घास के कारण हरियाली भूमि, वह भूमि जिस पर हरियाली छा गई है।

शाद्वल (वि०) [शादाः सन्त्यत्र वलच्] 1 तृणयुक्त 2 जहाँ नई घास, या हरी हरी घास उग आई हो 3 हरा भरा, सब्ज हरियाली से युक्त, -लः, -लम् घास से युक्त भूमि, हरियाली, चरागाह शाद्वलम् शाम्भि०।

शान् (भ्वा० उभ० शीशांसति-ते— निश्चित रूप से शान् का इच्छा० रूप, मूल अर्थ में प्रयुक्त), तेज करना पैनाना।

शानः [शान्+अच्] 1 कसौटी 2 सान का पत्थर। सम०—पादः 1 चन्दन पीसने का पत्थर 2 पारि-यात्र पर्वत।

शान्त (भू० क० कृ०) [शम् + क्त] 1 प्रसन्न किया हुआ, दमन किया हुआ, धीरज दिलाया हुआ, सन्तुष्ट किया हुआ, प्रशान्त—रघु० १२।२० 2. चिकित्सित, सान्त्वना दिया हुआ—शान्तरोग 3 घटाया हुआ, कम किया हुआ, समाप्त किया हुआ, हटाया हुआ, बुझाया हुआ—शान्तरथक्षोभपरिश्रमम् रघु० १।५८, ५।४७, शान्तार्चिषं दीपमिव प्रकाशः कि० १७।१६ 4 विरत ठहराया हुआ—कु० ३।४२ 5 मृत, उपरत 6. शान्त किया हुआ, दबाया हुआ 7. सौम्य, चुपचाप, यथार्थ, निस्तब्ध, मूक, मौन—शान्तमिदमाश्रमपदम् श० १।१६ ४।१९ 8. सधाया हुआ पाला हुआ रघु० १४।७९ 9 आवेशरहित, आराम में, सन्तुष्ट 10 सदाचार 11 पवित्रीकृत 12 शुभ (शकुन) (शान्तं पापम् अहो ! नहीं यह कैसे हो सकता है, भगवान करे ऐसी अशुभ या दुर्भाग्यपूर्ण घटना न घटे—श० ५, मुद्रा० १), —तः 1 वैरागी, संन्यासी 2 शान्ति, निस्तब्धता, मौनभाव, सांसारिक विषय वासनाओं के प्रति तटस्थता की प्रभावना—दे० निर्वेद और रस —तम् (अव्य०) बस, और नहीं, ऐसा नहीं, शर्म की बात है, चुप रहो, भगवान् न करे—शान्तं कथं दुर्जनाः पौरजानपदाः—उत्तर० १, तामेव शान्तमथवा किमिहोत्तरेण १।२६। सम०—आत्मन्,—चेतस् (वि०) सौम्य, शान्तमना धीर स्वस्थमना, —तोय (वि०) जिसका पानी स्थिर हो,—रसः मौनभाव—दे० ऊ० शान्तम्।

शान्तनव. [शन्तनु + अण्] शन्तनु का पुत्र भीष्म।

शान्ता [शान्त + टाप्] दशरथ की पुत्री जिसे लोमपाद ऋषि ने गोद ले लिया था तथा जो ऋष्यशृङ्ग को ब्याही गई थी। दे० उत्तर० १।४ 'ऋष्यशृङ्ग' भी।

शान्तिः (स्त्री०) [शम् + क्तिन्] 1 प्रशमन, निराकरण, सान्त्वना, हटाव—अम्बरविघातशान्तये रघु० ११।६२ 2 धैर्य, प्रशान्तता, निःशब्दता, अमनचैन, विश्राम कु० ४।१७, भाग० ६।१ 3 वैरनिरोध भामि० १।२५ 4 विराम, निवृत्ति 5 आवेश का अभाव, मौनभाव तथा सांसारिक भोगों के प्रति पूर्ण उदासीनता—रघु० ७।७१ 6 सान्त्वना, ढाढस 7 साम, क्रूरकर्मविधान, विरोधोपशमन 8 मृत्यु की तृप्ति 9 प्रायश्चित्त अनुष्ठान, पाप को दूर करने के लिए पुष्टिप्रद अनुष्ठान 10 सौभाग्य, बधाई, आशीर्वाद, माङ्गलिकता 11 दोषमार्जन, कलङ्क से मुक्ति, परिरक्षण। सम०—उदकम्,—जलम्,—सलिलम् शान्तिकर तथा प्रसादपूर्ण जल, —कर, —कारिन् (वि०) सान्त्वक, प्रशामक,—गृहम् विश्रामकक्ष,—होमः पाप का निवारण करने के लिए यज्ञ करना। मनु० ४।१५०।

शान्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [शान्ति + कन्] प्रायश्चित्तात्मक, सान्त्वनाप्रद, पुष्टिकर, —कम् संकट को दूर करने के लिए किया गया अनुष्ठान।

शान्त्व दे० 'सान्त्व'।

शाप: [शप् + घञ्] 1 अभिशाप, अवक्रोश, फटकार—शापेनास्तं गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः मेघ० १, ९२, रघु० १।७८, ५।५६, ५९, ११।१४ 2. सौगन्ध, शपथोक्ति 3 दुर्वचन, मिथ्या आरोप। सम०—अन्तः अवसानम्, निवृत्तिः (स्त्री०) अभिशाप की समाप्ति, मेघ० ११०, रघु० ८।८२, —अस्त्रः 'अभिशाप को ही जिसने अपना आयुध बनाया है' ऋषि, महात्मा रघु० १५।३,—उत्सर्गः अभिशाप का उच्चारण, उद्गारः, —मुक्तिः, —मोक्षः अभिशाप से छुटकारा, —प्रस्त (वि०) अभिशाप से दबकर परिश्रम करने वाला, —मुक्त (वि०) अभिशाप से जिसने छुटकारा पा लिया है, —यन्त्रित (वि०) अभिशाप के कारण नियन्त्रणपूर्ण।

शापित (भू० क० कृ०) [शप् + णिच् + क्त] 1 सौगन्ध में बंधा हुआ, शपथपूर्वक उक्त 2 गृहीतशपथ, जिसने शपथ ले ली है।

शाफरिक [शफरान् हन्ति-शफर + ठक्] मछुआ, मछली पकड़ने वाला।

शाब (व) र (वि०) (स्त्री०—री) [शब (व) र + अण्] 1 असभ्य, जंगली 2 नीच, कमीना, अधम, —रः 1 अपराध, दोष 2. पाप, दुष्टता 3 लोध्र नामक वृक्ष —री प्राकृत बोली का एक निम्नरूप (पहाड़ी लोगों से बोली जाने वाला)। सम०—भेदाख्यम् (भेदाक्षम् भी) तांबा।

शाब्द (वि०) (स्त्री०—ब्दी) [शब्द + अण्] 1 शब्द सम्बन्धी या शब्द से व्युत्पन्न 2 ध्वनि पर निर्भर या ध्वनि सम्बन्धी (विप० आर्थ) 3 शाब्दिक, मौखिक 4 स्वनशील, मुखर, —ब्दः वैयाकरण। सम०—बोधः शब्दों के अर्थ का अवबोध या प्रत्यक्षीकरण, —व्यंजना शब्दों पर आधारित व्यङ्ग्योक्ति।

शाब्दिक (वि०) (स्त्री०—की) [शब्द + ठक्] 1 जबानी, मौखिक 2 निनादी, —कः वैयाकरण।

शामन: [शमन + अण्] यम, —नम् 1 हत्या, वध 2 शान्ति, अमनचैन 3 अन्त, —नी दक्षिण दिशा।

शामित्रम् [शम् + णिच् + इत्रच्] 1 यज्ञ करना 2 मेघ, यज्ञ में पशुवध करना 3 यज्ञ के लिए बलिपशु बांधना 4 यज्ञीय पात्र।

शामिलम् [शमी + ष्लञ्] भस्म, राख।

शामिली [शामिल + ङीप्] यज्ञीय स्रुवा, स्रुच्।

शाम्बरी [शम्बर + अण् + ङीप्] 1 बाजीगरी, जादूगरी 2 जादूगरनी।

शाम्बविक: [शम्बु + ठक्] शंखों का व्यापारी।

शाम्बु (बू) क, [शम्बुक + अण्] द्विकोषीय घोंघा।

शाम्भव (वि०) (स्त्री० वी) [शम्भु + अण्] शिव सम्बन्धी अनु शाम्भवति शाम्भवो गणपतेराख् सुधार्त फणी पञ्च० १।१५९, व 1 शिवोपासक 2 शिव जी का पुत्र 3 कपूर 4 एक प्रकार का विष वम् देवदारु वृक्ष

शाम्भवी [शाम्भव + ङीप्] 1 पार्वती 2 एक पौधा नीलदूर्वा।

शायक [शो + ण्वुल] 1 बाण 2 तलवार तु० सायक।

शार् (चुरा० उभ० शारयति ते) 1 दुर्बल करना 2 कमजोर होना।

शार (वि०) [शार् + अच् शृ + घञ् वा] चितकबरा धब्बेदार चित्तीदार रंग र 1 रंगबिरंगा रंग 2 हरा रंग 3 हवा वायु 4 शतरंज का मोहरा गोट भर्तृ० ३।३९ 5 क्षति पहुँचाने वाला आघात करने वाला।

शारङ्ग [शारम् अङ्गम् यस्य ब० स०] 1 चातक पक्षी 2 मोर 3 भौंरा 4 हरिण 5 हाथी तु० सारंग।

शारङ्गी [शारङ्ग + ङीप्] एक संगीत वाद्य विशेष जो गज से बजाया जाता है तु० सारंगी।

शारद (वि०) [शरदि भवम् अण्] 1 पतझड़ से संबंध रखने वाला शरत्कालीन (इस अर्थ में स्त्री०—शारदी है) विमलशारदचन्द्रिकाचन्द्रिका भामि० १।११२ रघु० १०।१९ 2 वार्षिक 3 नया नूतन 4 अनुभवहीन नौसिखिया 5 विनीत शर्मीले लजालु 5 सकाल माहमहान द 1 वर्ष 2 शरत्कालीन बीमारी 3 शरत्कालीन धूप 4 एक प्रकार का लोबिया या उड़द 5 बकुल का वृक्ष मौलसरी —दी कार्तिक मास की पूर्णिमा दम् 1 अनाज धान 2 श्वेत कमल दा 1 एक प्रकार की वीणा या सारंगी 2 दुर्गा 3 सरस्वती।

शारदिक [शरद् ठञ्] 1 शरत्कालीन रोग 2 शरत्कालीन धूप या गर्मी कम् शरत्कालीन या कार्तिक श्राद्ध।

शारदीन (वि०) [शरद् ख] शरत्कालीन पतझड़ सबन्धी।

शारि. [शृ + इञ्] 1 शतरंज का मोहरा गोट 2 छोटी गोल गेंद 3 एक प्रकार का पासा रि (स्त्री०) 1 सारिका पक्षी मैना 2 जालसाजी चाल 3 हाथी की झूल। सम०—फट्ट,—फलक,—फलम्,—कम् शतरंज खेलने की बिसात।

शारिका [शारि + कन् + टाप्] 1 एक पक्षी मैना 2 तन्त्रयुक्त वाद्ययन्त्रों को बजाने वाला गज 3 शतरंज खेलना 4 शतरंज का मोहरा गोटी।

शारी [शारि + ङीष्] एक पक्षी मैना।

शारीर (वि०) (स्त्री० री) [शरीर + अण्] 1 शरीर से संबद्ध शारीरिक दैहिक 2 शरीरधारी मूर्तिमान् र शरीरधारी जीवात्मा मानवात्मा, वैयक्तिक आत्मा 2 साँड 3 एक प्रकार की औषधि।

शारीरक (वि०) (स्त्री० की) [शरीर + कन् + अण्] शरीर संबन्धी कम् 1 मूर्तिमान् जीव जीव के स्वरूप की पृच्छा (ब्रह्मसूत्रों पर शङ्कराचार्य द्वारा किया गया भाष्य)। सम० सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र।

शारीरिक (वि०) (स्त्री०—की) [शरीर + ठक्] दैहिक शरीर संबन्धी भौतिक

शारुक (वि०) (स्त्री०—की) [शृ उकञ्] अनिष्टकर चोट पहुँचाने वाला उपद्रवी।

शार्कक [शर्क + अण् कन्] दानेदार चमकीली खांड मिसरी।

शार्कर (वि०) (स्त्री०—री शर्करा अण्) 1 चीनी का बना हुआ, शर्करामिश्रित 2 पथरीला कंकरीला र कंकरीला स्थान 2 दूध का झाग पपड़ी 3 मलाई।

शार्ङ्ग (वि०) [शृङ्ग + अण्] 1 सींग का बना हुआ सींग वाला 2 धनुर्धारी धनुष से सुसज्जित भट्टि० ।१९।३ ङ्गः —ङ्गम् 1 धनुष 2 विष्णु का धनुष। सम०—धन्वन् (पुं०), धर पाणि भृत् विष्णु के विशेषण।

शार्ङ्गिन् पुं० [शार्ङ्ग इनि] 1 धनुर्धर धनुर्धारी 2 विष्णु का विशेषण असमरक्षणार्थैव प्रवृत्तिभवि शार्ङ्गिणः रघु० १०।१७ मघ० ६६

शार्दूल [शृ ऊलच् दुक् च] 1 व्याघ्र, चीता 3 राक्षस 4 एक पक्षी समास के अन्त में प्रमुख या मुख्य पुरुष अग्रणी जैसा कि नरशार्दूल में तु० कुञ्जर। सम० चर्मन् व्याघ्र का चर्म विक्रीडितम् 1 व्याघ्र की क्रीडा 2 एक छन्द का नाम शार्दूलविक्रीडितम् ... 2 छन्द या वृत्त ... वृ० ९।

शाल (वि०) [शाल अण्] 1 ... 2 उदार ... र ... शाल

शाल (भ्वा० आ० शालते) 1 प्रशंसा करना खुशामद करना 2 चमकना 3 पूर्ण ... शि० ... पर भवि० ... कहना।

शाल [शल् घञ्] 1 एक वृक्ष ऊँचा लंबा और शानदार —रघु० ३।३२ शि० ३।६८ 2 वृक्ष पेड़ —रघु० १।१३ वेणी० ४।३ 3 बाड़ा, बाड़ 4 एक प्रकार की मछली 5 राजा शालिवाहन। सम० —भञ्ज विष्णु भगवान्

की आवर्श प्रस्तरमूर्ति जैसा कि शिवलिंग, °गिरि पर्वत का नाम, °शिला शालग्राम पत्थर,—ख:,—निर्यास: सालवृक्ष का प्रसाव, राल रघु० १।३१, —भञ्जिका 1 गुड़िया, पुत्तलिका, मूर्ति —विद्ध० १, नै० ७।८३ 2 वेश्या, रंडी,—भञ्जी गुड़िया, पुत्तलिका —वेष्ट: साल के पेड़ से निकली राल, तु० 'सार' —सार: 1 उत्कृष्ट-वृक्ष 2 हींग।

शालव: [शाल+वल्+ड] लोध्र वृक्ष।

शाला [शाल्+अच्+टाप्] 1 कक्ष, प्रकोष्ठ, बैठक कमरा—गृहैश्शालैरपि भूरिशालै: शि० ३।५० इसी प्रकार मणिशाला, रंगशाला आदि 2 घर, आलय —रघु० १६।४१ 3 वृक्ष की मुख्य शाखा 4. वृक्ष का तना। सम०—अजिर:, —रम् मिट्टी का कसोरा, —मृग गीदड़ —वृक: 1 कुत्ता—भामि० १।३४ 2. भेड़िया हरिण 4 बिल्ली 5 गीदड़ 6 बन्दर।

शालाक: (पुं०) पाणिनि।

शालाकिन् (पुं०) [शालाक+इन्] 1 भाला रखने वाला बर्छीधारी 2 जर्राह 3 नाई।

शालातुरीय: [शलातुर+छ] पाणिनि का विशेषण (जन्म स्थान 'शलातुर' होने के कारण 'शालोत्तरीय' भी लिखा जाता है)।

शालारम् [शाला+ऋ+अण्] 1 ज़ीना, सीढ़ी 2 पिंजरा।

शालि: [शाल्+णिनि] चावल न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते मुद्रा० १।३, यथा प्रकीर्णं न भवन्ति शालयः मृच्छ० ४।१६ 2 गन्धबिलाव। सम० —ओदन:, —नम् भात (उत्कृष्टतर प्रकार का) —गोपी चावल के खेत की रखवाली करने वाली स्त्री रघु० ४।२० —चूर्णं, —र्णम् चावल का आटा —पिष्टम् स्फटिक —भवनम् चावल का खेत —वाहन: भारत का एक विख्यात राजा जिसके नाम से विक्रमाब्द ७८ में एक संवत्सर आरंभ हुआ —होत्र 1 शालिहोत्रिस्तेन प्रणयनो ग्रन्थ: 2 घोड़ा —होत्रिन् (पुं०) घोड़ा।

शालिक: [शालि+ठन्] 1 जुलाहा 2 [illegible] शुल्क।

शालिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [शाला+इनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1 सहित, युक्त, सम्पन्न, कामशीला, चमकदार—कि० ८।१३ १२, भट्टि० ४।७ 2 सहन।

शालिनी [शालिन्+ङीप्] 1 घर की स्वामिनी गृहिणी 2 छन्द का नाम दे० परि० १।

शालीन (वि०) [शाला+खञ्] 1 विनीत नम्रस्वभाव लजीला, शर्मीला, विनयशीलाङ्ग स्वाभाव —मालवि० ४, रघु० ६।८१ १।१३ शि० १६।८३ 2 सदृश, समान, —न: गृहस्थ (शालीनी कृ विनयी बनाना, विनम्र करना)।

शालु: [शाल्+उण्] 1 मेंढक 2. एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, —लु (नपुं०) कुमुदिनी की जड़।

शालु (लू) कम् [शल्+ऊकण्] 1 कुमुदिनी की जड़ 2 जायफल, —क: मेंढक।

शालु (लू) र: [शाल्+ऊर] मेंढक।

शालेयम् [शालि+ढक्] चावलों का खेत।

शालोत्तरीय: [शालोत्तर ग्राम भव —छ] पाणिनि का विशेषण —दे० शालातुरीय।

शाल्मल: [शाल+मलच्] 1 सेमल का पेड़ 2 भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक।

शाल्मलि: [शल्+मलिच्] 1 सेमल का पेड़—भामि० १।११५, मनु० ८।२४६ 2 भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक 3 नरक का एक भेद। सम० —स्थ: गरुड का विशेषण।

शाल्मली [शाल्मलि+ङीष्] 1 सेमल का पेड़ 2 पाताल लोक की एक नदी 3 नरक का एक भेद। सम० —वेष्ट:, —वेष्टक: सेमल के पेड़ का गोंद।

शाल्व: [शाल्+व] 1 एक देश का नाम 2. शाल्व देश का राजा।

शाव (वि०) (स्त्री०—वी) [शव+अण्] शवसम्बन्धी, (किसी रिश्तेदार की) मृत्यु से उत्पन्न—दशाहं शाव-माशौचं सपिण्डेषु विधीयते —मनु० ५।५९, ६१ 2. भूरे रंग का, गहरे पीले रंग का, —व: किसी जानवर का छोटा बच्चा, कुरङ्ग मृगछौना, वन्यपशुशावक क्व वय क्व च परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितो जन: —श० २।१८, मृगराजशाव रघु० ६।३, १८।३७।

शावक: [शाव+कन्] किसी भी वन्य पशु का बच्चा।

शावर दे० 'शाबर'।

शाश्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [शश्वत् भव: अण्] नित्य, सनातन चिरस्थायी शाश्वतीः समाः —उत्तर० २।५ 'अपरिमित वर्षों के लिए' 'सदा के लिए' 'समस्त आगामी समय के लिए' उत्तर० २।५ रघु० १४।१४ —त: 1 शिव 2. व्यास 3 सूर्य —तम् (अव्य०) नित्य निरन्तर, सदा के लिए।

शाश्वतिक (वि०) (स्त्री०—की) [शाश्वत+ठञ्] नित्य स्थायी सनातन सतत—शाश्वतिको विरोध: नैसर्गिक विरोध।

शाश्वती [शाश्वत+ङीप्] पृथ्वी।

शाष्कुल (वि०) (स्त्री०—ली) [शष्कुल+अण्] मांस [illegible]

शाष्कुलिकम् शष्कुली—ठक् पूरियों का ढेर।

शास् (अदा० पर० शास्ति शिष्ट) 1 अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, प्रशिक्षित (इस अर्थ में धातु द्विकर्म० है) माणवकं धर्मं शास्ति —सिद्धा०, भट्टि० ६।१० शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् —भग०

२।७ 2. राज्य करना, शासन करना, अनन्यशासना-मुर्वी शशासैकपुरीमिव—रघु० १।३०, १०।१, १४।८५, १९।५७, श० १।१४, भट्टि० ३।५३ 3 आज्ञा देना, समादिष्ट करना, निदेश देना, हुक्म देना रघु० १२।३४, कु० ६।२४, भट्टि० ९।६८ 4 कहना सम्वाद देना, सूचित करना, (सम्प्र० के साथ) तस्मिन्नायोधनं वृत्तं लक्ष्मणायाशिषन्महत् भट्टि० ६।२७, मनु० ११।८२ 5 उपदेश देना स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम् कि० १।५ 6 आदेश देना, राजाज्ञा लागू करना 7 दण्ड देना सजा देना निर्दोष बनाना, मनु० ८।१३५ ८।२९ 8 सधाना वशीभूत करना महावी० ६।२०, अनु, 1 (क) उपदेश देना, प्रेरित करना—कु० ५।५, (ख) अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, आज्ञा देना आदेश करना - रघु० ६।५९, १३।७५ भट्टि० २०।१७ 2 राज्य करना, शासन करना 3 सजा देना दण्ड देना वेणी० २ 4. प्रशंसा करना, स्तुति करना आ—, (बहुधा आ०) 1 आशीर्वाद देना, आशीर्वाद उच्चारण करना, ऋक्छन्दसा आशास्ते श० ४, उत्तर० १ 2. आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना (इस अर्थ में पर०) भट्टि० ६।४ 3 इच्छा करना, सोचना, आशा करना, प्रत्याशा करना—सर्वमस्मिन्नयमाशास्महे श० ७ आशासत ततः शान्तिमस्तु रत्नीमहाबलम्—भट्टि० १७।१, ५।१६, मनु० ३।८० 4 प्रशंसा करना, प्र , 1. अध्यापन करना, शिक्षण देना, उपदेश करना, भट्टि० १९।१९ 2 आदेश देना, समादिष्ट करना प्रशाधि यन्मया कार्यम् मार्कण्डेय० 3 राज्य करना, शासन करना, प्रभु बनना—वां प्रशाधि सलिलावधिकालम् नै० ५।२८ रघु० ६।७६, ९।१ 4 दण्ड देना, सजा देना 5 प्रार्थना करना, याचना करना, मलाशा करना, (आ०) इह कश्चित् पूर्वेभ्यो समाशाक प्रशास्महे उत्तर० १।१ (आपूर्वक शास के अर्थ में प्रयुक्त)।

शासनम् [शास् + ल्युट्] 1 शिक्षण, अध्यापन अनुशासन 2 राज्य, प्रभुत्व, सरकार अनन्यशासनामुर्वीम् रघु० १।३०, इसी प्रकार 'अप्रतिशासनम्' 3 आज्ञा, आदेश, निदेश —तदभिरति देवस्य शासनं प्रमाणीकृतम् श० ६, रघु० ३।६९, १४।८३, १८। १८ 4 राजविज्ञप्ति, अधिनियम राजाज्ञा 5 विधि नियम 6 व्यवहार, राजा द्वारा दान की हुई भूमि अधिकारपत्र अहं त्वा शासनशतेन योजयिष्यामि —पञ्च० १, याज्ञ० २।२४०, २९ 7 पट्टा, दस्तावेज़ लिखित समझौता 8 आवेशों का नियन्त्रण (समास के अन्त में प्रयुक्त 'शासन' का अर्थ है, दण्ड देने वाला, विनाशक, या मारक यथा स्मरशासन, पाकशासन)। सम० पत्रम् 1 वह ताम्रपत्र जिस पर भूदान की राजाज्ञा खोदी गई हो 2 वह कागज जिस पर कोई राजाज्ञा अंकित हो, हारिन् (पु०) राजदूत, सन्देशवाहक रघु० ३।६८।

शासित (भू० क० कृ०) [शास + क्त] 1 राज्य किया गया शासन किया गया 2 दण्डित।

शासितृ (पु०) [शास + तृच्] 1 राज्य करने वाला, शासक 2 दण्ड देने वाला श० १।२५।

शास्तृ (पु०) [शास् + तृच्, इडभाव] 1 अध्यापक, शिक्षक 2 शासक राजा प्रभु 3 पिता 4 बुद्ध या जैन धर्म का गुरु आचार्य।

शास्त्रम् [शिष्यतेऽनेन—शास् + ष्ट्रन्] 1 आज्ञा, समादेश नियम विधि 2 वेदविधि, धर्मशास्त्र की आज्ञा 3 धार्मिक ग्रन्थ वेद धर्मशास्त्र द० नी० समस्तपद 4 विद्याविभाग विज्ञान इति गुह्यतमं शास्त्रम् भग० १५।२० शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिः—रघु० १।१९, प्रायः समास के अन्त में विषयद्योतक शब्द के पश्चात् या उस विषय पर समष्टि-अध्ययन का संचित भण्डार वेदान्त शास्त्र न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र अलंकार शास्त्र आदि 5 पुस्तक, ग्रन्थ सर्वं एव चिरेणावकारं सुमनोहरं शास्त्रम् पञ्च० १ 6 सिद्धान्त (विप० प्रयोग या अभ्यास) -मालवि० १। सम० अतिक्रमः अननुष्ठानम् वैदिक विधियों का उल्लंघन धार्मिक प्रामाणिकता की अवहेलना, अनुष्ठानम् वेदविधि का पालन या तदनुरूपता अभिज्ञ (वि०) शास्त्रों में निष्णात अर्थः 1 वेदविधि का अर्थ 2 वैदिक विधि या शास्त्रीय वक्तव्य, आचरणम् वेदविधि का पालन, उक्त (वि०) शास्त्रविधि से विहित, शास्त्रों की आज्ञा, वैध, कानूनी, कारः, कृत् (पु०) 1. किसी धर्मशास्त्र का रचयिता 2 ग्रन्थ प्रणेता कोविद (वि०) शास्त्रों में निष्णात गण्ड दिखाऊ पाठक इनका अध्ययन करने वाला विद्यार्थी पल्लवग्राही चक्षुस् (नपुं०) व्याकरण (शास्त्रों का समझने के लिए आँख) ज्ञ, विद (वि०) शास्त्रों का ज्ञाता,० ज्ञानम् धर्मशास्त्र का ज्ञान, वेद की जानकारी तत्त्वम् शास्त्रों में वर्णित सचाई, वैदिक सत्य दर्शिन् (वि०) धर्मशास्त्रों का ज्ञाता दृष्ट (वि०) धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त, दृष्टि (स्त्री०) शास्त्रीय दृष्टिकोण योनिः शास्त्रों का स्रोत या उद्गमस्थान विधानम्, विधिः शास्त्रीय विधि, वेदाज्ञा विप्रतिषेधः, विरोधः 1 शास्त्रीय विधियों का पारस्परिक विरोध, विधि विधान की असंगति 2 वेद विधि के विरुद्ध आचरण विमुख (वि०) अध्ययन से पराङ्मुख पञ्च० १, विरुद्ध (वि०) शास्त्रों के विपरीत अवैध, गैरकानूनी,

—**व्युत्पत्तिः** (स्त्री०) धर्मशास्त्रों का अन्तरंग ज्ञान, शास्त्रों में प्रवीणता, **—शिल्पिन्** (पुं०) काश्मीरदेश, **—सिद्ध** (वि०) धर्मशास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित ।

शास्त्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शास्त्र+इनि] शास्त्रों में अभिज्ञ, कुशल (पुं०) शास्त्रों में पारंगत, विद्वान् पुरुष, महान् पंडित ।

शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रेण विहित: छ] 1 वेदविहित शास्त्रानुमोदित 2 वैज्ञानिक ।

शास्य (वि०) [शास्+ण्यत्] 1 सिखलाये जाने योग्य, उपदेश दिये जाने योग्य 2 विनियमित या शासित किये जाने के योग्य 3 दण्डनीय, दण्डार्ह ।

शि (स्वा० उभ० शिनोति शिनुते) 1 तेज करना, पैनाना 2 कृश करना, पतला करना 3. उत्तेजित करना 4 सावधान होना 5 नाजुक होना ।

शि: [शो+विवप्] 1 माङ्गलिकता, सौभाग्यपन 2 स्वस्थता, सौम्यता, शान्ति अमन-चैन 3 शिव का विशेषण ।

शिंशपा [शिंश पाति—शिंश+पा+क पृषो० साधु:] 1 शीशम का पेड़ 2 अशोक वृक्ष ।

शिक्कु (वि०) [शिक्+कु पृषो०] सुस्त, आलसी अकर्मण्य ।

शिक्यम् [शिक्+यक् पृषो०] साथ न्यु० शिक्य ।

शिक्यम्, शिक्या [शक्+यत् कुगागम इत आदेश: —शिक्य+टाप्] 1 रस्सों से बुना हुआ, छींका, झोला 2 बहंगी पर लटका कर ले जाये जाने वाला बोझ ।

शिक्यित (वि०) [शिक्य+इतच्] छींके में लटकाया हुआ ।

शिक्ष् (भ्वा० आ० शिक्षते शिक्षित) सीखना, अध्ययन करना, ज्ञानार्जन करना—अशिक्षतास्त्रं पितुरेव मन्त्रवत्—रघु० ३।३१।

शिक्षक: (स्त्री० शिक्षका, शिक्षिका) [शिक्ष्+ण्वुल्] 1 सीखने वाला 2 अध्यापक, सिखाने वाला,—यस्योभयं साधु (अर्थात् क्रिया और संक्रान्ति:) स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६ ।

शिक्षणम् [शिक्ष्+ल्युट्] 1 सीखना, अधिगम, ज्ञानार्जन 2 अध्यापन, सिखाना ।

शिक्षमाण: [शिक्ष्+शानच्] शिष्य, विद्यार्थी, विद्याभ्यासी ।

शिक्षा [शिक्ष् भावे अ+टाप्] 1 अधिगम, अध्ययन ज्ञानाधिग्रहण—रघु० १।८८ 2 किसी कार्य को करने के योग्य होने की इच्छा, निष्णात होने की इच्छा 3 अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण—काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास—काव्य० १, अमूल्य मन्त्र प्रणिपातशिक्षया—रघु० ३।२५, मालवि० ४।९, रणशिक्षा 'युद्धविज्ञान' 4. छ वेदांगों में से एक जिसके द्वारा शब्दों का सही उच्चारण तथा संधि के नियम सिखाये जाते हैं 5 विनय विनम्रता । सम० **—कर:** 1 अध्यापक, शिक्षक 2 व्यास **—नर:** इन्द्र का विशेषण, **—शक्ति:** (स्त्री०) कुशलता ।

शिक्षित (भू० क० कृ०) [शिक्ष्+क्त, शिक्षा जाताऽस्य —तार० इतच्] 1 अधिगत अधीत 2 अध्यापित सिखाया—शिक्षितराजवृत्तम्—रघु० ५।२१ 3 प्रशिक्षित अनुशासित 4. सधाया हुआ, विनयशील 5 कुशल चतुर 6. विनीत लज्जाशील: सम० **—अक्षर** शिष्य **—आयुध** (वि०) हथियारों के संचालन में अभिज्ञ ।

शिखण्ड: [शिखामण्डति-अम् ड शक० पररूपम्] 1 मुंडन संस्कार के अवसर पर रखी गई शिखा चोटी या दोनों पार्श्व में छोड़े गये बाल काकपक्ष 2 मोर की पूंछ ।

शिखण्डक: [शिखण्ड इव+कन्] 1 चूडाकर्म संस्कार के अवसर पर सिर पर रखी गई चोटी 2 सिर के पार्श्वभागों में छोड़े गये बाल (क्षत्रियों के लिए यह चोटी तीन या पाँच होती हैं) उत्तर० ४।१९, 3 कलगी बालों का गुच्छा, जूडा या शेखर 4 मयूरपुच्छ ।

शिखण्डिक: [शिखण्डिन् + कै+क] मुर्गा ।

शिखण्डिका दे० शिखण्ड (1) ।

शिखण्डिन् (वि०) [शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि] कलगीदार, शिखाधारी (पुं०) 1 मोर नदति स एष वधूसख: शिखण्डी—उत्तर० ३।१८ रघु० १।३९ कु० १।१५ 2 मुर्गा 3 बाण 4 मोर की पूंछ 5 एक प्रकार की चमेली 6 विष्णु 7. द्रुपद के एक पुत्र का नाम (शिखण्डी मूलरूप से स्त्री था, क्योंकि अंबा ने भीष्म से बदला चुकाने के लिए द्रुपद के घर जन्म लिया (दे० अंबा)। परन्तु जन्म से ही उस कन्या की पुत्ररूप में घोषणा की गई और पुत्र की भांति ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई। समय पाकर उसका विवाह हिरण्यवर्मा की पुत्री से हुआ, परन्तु जब हिरण्यवर्मा को ज्ञात हुआ कि मेरा जामाता तो सचमुच स्त्री है तो उसे बड़ा दुःख हुआ इसलिए उसने इस धोखा दिये जाने के कारण द्रुपद की राजधानी पर चढ़ाई करने की सोची। परन्तु शिखण्डी ने एक जंगल में रह कर घोर तपस्या की और किसी उपाय से उसने अपना स्त्रीत्व यक्ष को देकर उसका पुरुषत्व बदले में प्राप्त किया और इस प्रकार द्रुपद के ऊपर आए हुए संकट को टाला। बाद में महा-

भारत के युद्ध में भीष्म पितामह की मृत्यु का एक साधन बना। जब अर्जुन ने शिखंडी को अपने योद्धा के रूप में आगे कर दिया तो भीष्म पितामह ने स्त्री के साथ युद्ध करने से हाथ खींच लिया। बाद में अश्वत्थामा ने शिखंडी को मार डाला)।

शिखण्डिनी [शिखण्डिन्+ङीप्] 1 मोरनी 2 एक प्रकार की चमेली 2 द्रुपद की पुत्री दे० ऊ० शिखण्डिन्।

शिखर, -रम् [शिखा अस्त्यस्य—अरच् आलोपः] 1 चोटी पहाड़ का सिरा या शृंग ... गौरी शिखरं शिखं ... कु० ५।७, १। मेघ० १८ 2 वृक्ष का सिर या चोटी 3 कलगी, चूडा 4 तलवार की नोक या धार 5 चोटी शृंग शीर्षबिन्दु 6 काख, बगल 7 बालों का खड़ा होना 8 अरबी चमेली की कली 9 एक लाल की भांति मणि। सम०—वासिनी दुर्गा का विशेषण।

शिखरिणी [शिखरिन्+ङीप्] 1 नारीरत्न 2 श्रीखंड मिश्रित दही जिसमें मसाले पड़े हों श्रीखंड 3 रोमावली जो वक्षःस्थल से चलकर नाभि को पार कर जाती है 4 एक छन्द का नाम दे० परि० १।

शिखरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शिखरमस्त्यस्य इनि] 1 चोटी वाला शिखाधारी 2 नुकीला शिखरयुक्त शिखरिदशना मेघ० ८२ (पु०) 1 पहाड़ ... भर्तृ० २।७६ मघ० १३, रघु० ९।१४, ४४ 2 पहाड़ी दुर्ग 3 वृक्ष 4 टिटिहरी 5 अपामार्ग का पौधा।

शिखा [शी+खक् ह्रस्वश्च नेत्वम् पृषो०] 1 सिर की चोटी पर बालों का गुच्छा मुद्रा० २।३० शि० ४।५० मा० १०।१९ 2 चोटी शिखाग्रन्थि 3 चूडा कलगी 4 चोटी, शिखर, शीर्षबिन्दु कि० ६।१७ 5 तेज सिरा, धार, नोक या सिरा श० १।४, मालवि० १।० 6 वस्त्र का छोर श० १।१८ 7 अग्नि ज्वाला प्रभामहत्या शिखयेव दीप कु० १।२८, रघु० १७।३४ 8 प्रकाश की किरण कु० ३।३८ 9 मोर की कलगी 10 जटायुक्त जड़ 11 शाखा (विशेष रूप से जड़ पकड़ती हुई) 12 प्रधान या मुखिया 13 कामज्वर। सम० —तरुः दीपाधार, दीवट —धरः मोर °जम् मोर का पंख —धारः मोर, —मणिः चूड़ामणि, —मूलम् 1 गाजर 2 मूली, —वरः कटहल का पेड़,—वल (वि०) नुकीला कलगीदार, (—लः) मोर —वृक्षः दीपाधार, दीवट —वृद्धिः (स्त्री०) प्रतिदिन बढ़ने वाला ब्याज।

शिखावलः [शिखा+आवलच्] मोर की कलँगी।

शिखावत् (वि०) [शिखा+मतुप्] 1 कलगीदार 2 ज्वालामय, (पु०) 1. दीपक 2 आग।

शिखिन् (वि०) [शिखा अस्त्यस्य इनि] 1 नुकीला 2 कलगीदार शिखाधारी 3 घमंडी (पु०) 1 मोर मेघ० ११।५९ विक्रम० २।२३ शि० ६।१० 2 अग्नि ... शि० १।७ 3 मुर्गा 4 बाण 5 वृक्ष 6 दीपक 7 सांड 8 घोड़ा 9 पहाड़ 10 ब्राह्मण 11 साधु 12 केतु 13 तीन की संख्या 14 लिबक वृक्ष। सम० —कण्ठम् नीला थोथा —ग्रीवम् ... नीला थोथा —ध्वजः 2 कार्तिकेय का विशेषण 2 धूआं —पिच्छम् —पुच्छम् मोर की पूंछ —युपः ... —वर्धकः ... —वाहनः कार्तिकेय का विशेषण —शिखा 1 ज्वाला 2 मोर की कलगी।

शिग्रु [शि ...] 1 सागभाजी 2 सहिजन का पेड़।

शिञ्ज् (भ्वा० ...) ... गूंजना

शिङ्ख् (भ्वा० पर०) सूंघना।

शिङ्घाणः [शिङ्घ्+आनच् पृषो० ...] 1 नाक का मल 2 ... 1 नाक का मैल ... 2 ... 3 लोहे का जंग।

शिङ्घाणकः, —कम् [शिङ्घ्+आनच्] नासिकामल सिणक कफ बलगम।

शिञ्ज् (अदा० आ० ...) टनटनाना झनझनाना खड़खड़ाना शि० १०।६२।

शिञ्जः [शिञ्ज्+घञ्] टंकार झनझनाहट खनखन या झनझन की ध्वनि विशेषकर धातु आदि गहनों की झंकार।

शिञ्जाजिका (स्त्री०) करधनी।

शिञ्जा [शिञ्ज्+अ+टाप्] 1 टंकार झंकार आदि 2 धनुष की डोरी।

शिञ्जित (भू० क० कृ०) [शिञ्ज्+क्त] टंकार झंकार —तम् टंकार (झांझ आदि गहनों की) झंकार कांजन राजहंसानां नेव नूपुरशिञ्जितम् विक्रम० ४।१२।

शिञ्जिनी [शिञ्ज्+णिनि+ङीप्] 1 धनुष की डोरी 2 झांझर नूपुर (पैरों में पहना जाने वाला गहना)।

शिट् (भ्वा० पर० शेटति) तुच्छ समझना घृणा करना तिरस्कार करना।

शित (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1 तेज किया हुआ पैनाया हुआ 2 पतला हुआ 3 क्षीण हुआ क्षीण दुर्बल बलहीन। सम० —धार (वि०) तेज धार वाला —शूकः 1 जौ 2 गेहूँ।

शितद्रु (स्त्री०) सतलज नाम की नदी दे० शतद्रु।

शिति (वि०) [शि+क्तिच्] 1 श्वेत 2 काला शि० १५।४८ – शि- भुर्जवृक्ष। सम०— कण्ठ 1 शिव

का विशेषण —यस्यात्मा शितिकण्ठस्य सैनापत्यमुपेत्य व —कु० २।६१ ६।८१ 2 मार —भवन शितिनिकर [illegible] कण्ठलक्ष्मीमिव दधति स्फुरितांशुमेणुशाखा —शि० ४।५६ 3 जलकुक्कुट —छद पक्षा हंस —रत्न नीलम —वासस् (पुं०) बलराम का विशेषण —शिखर यस्य शितिवाससस्तरम् —शि० ३।६।

शिथिल (वि०) [श्लथ + इलच् पृषो०] ढीला खुला मुक्त विश्रान्त 2 विगलित [illegible] हुआ [illegible] 3 वियुक्त डाल से टूटा हुआ [illegible] 4 निढाल निबलं असमर्थ 5 दुर्बल कमजोर [illegible] [illegible] 6 [illegible] [illegible] 8 मुर्झाया हुआ 9 [illegible] 10 अनावधान 11 ढीलढाले ढंग से किया हुआ जिसका सम्पादन न किया गया हो 12 [illegible] —लम् 1 ढीलापन [illegible] 2 मम (शिथिलो कृ 1 ढीला करना [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] —रघु० ९।४१ शिथिली भू 1 ढीला होना मुक्त होना 2 गिर पड़ना —मक्क० १।१२।

शिथिलयति (ना० धा० पर०) 1 विश्राम करना, ढीला करना 2 छोड़ देना परित्याग करना —वेणी० [illegible] —विक्रम० [illegible]।

शिथिलित (वि०) [शिथिल + इतच्] 1 ढीला [illegible] हुआ 2 विश्रान्त [illegible] हुआ 3 खुला हुआ प्रविलीन।

शिनि [illegible] यादवों के वंश का एक योद्धा (शिनेर्नप्तृ (पुं०) सात्यकि)।

शिपि [शो + क्विप् शा [illegible] पृषो० [illegible]] प्रकाश की एक किरण (स्त्री०) त्वचा, चमड़ा —(नपुं०) जल —संज्ञा [illegible] शिपिविष्ट प्रकाशते [illegible] —मम० —विष्ट (वि०) (शिपिविष्ट तथा शिपिविष्ट भी लिखा जाता है) 1 किरणों से व्याप्त 2 गंजा गंजे सिर वाला 3 कोढ़ी (—ष्ट) 1. विष्णु 2 शिव 3 गंजी खोपड़ी वाला 4 शिश्न चर्मविहीन —कोढ़ी।

शिप्र [शि [illegible]] हिमालय पर्वत पर स्थित एक सरोवर।

शिप्रा [शिप्र + टाप्] शिप्र सरोवर से निकली एक नदी का नाम जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है —शिप्रावात [illegible] इव प्रार्थनाचाटुकारः —मेघ० ३१।

शिफ दे० शिफा।

शिफा (स्त्री०) 1 रेशेदार जड़ 2 कमल की जड़ 3 जड़ 4 कोड़े की मार 5 माँ 6 एक नदी, —सम० —धर शाखा —रुह वटवृक्ष।

शिफाक [शिफा + कन्] कमल की जड़।

शिबि (वि) [शि + वि] 1 शिकारी जानवर 2 भूर्ज वृक्ष 3 एक देश का नाम (ब० व०) 4 एक राजा का नाम (कहते हैं कि कबूतर के रूप में इसने बाज़ रूपधारी इन्द्र से अग्नि की रक्षा की थी और बाद में कबूतर के बराबर अपना मांस इन्द्र के सामने प्रस्तुत किया था) नै० [illegible]।

शिबिका [शिब करोति शिव शिब —ण्वुल्] 1 पालकी डोली 2 अर्थी।

शिबिर [शि [illegible] अच् शो + किरच्] 1 शाही डेरा [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] एक प्रकार का अन्न

शिबि [illegible] भूस्नभार [illegible] पालकी [illegible]

शिम्बा [illegible] छीमी सेम।

शिम्बिका [शिम्बा + कन् टाप् इत्वम्] 1 फली सेम 2 एक प्रकार के काले उड़द (कुछ के अनुसार पुं० भी)।

शिम्बी [स्त्री०] 1 फली सेम 2 एक प्रकार का पौधा।

शिरम् [illegible] 1 [illegible] 2 पिप्पलीमूल (इन अर्थों में कुछ के अनुसार पु० भी) [illegible] 1 शय्या 2 अज-[illegible] —सम० —ज बाल।

शिरस् (नपुं०) [श्रि + असुन् निपात] 1 सिर —शिरसा श्लाघते पूर्वं (गुण) [illegible] कण्ठे नियच्छति —सुभा० 2 खोपड़ी 3 चूड़ा चोटी शिखर (पहाड़ आदि का) हिमगौरैरचलाधिप शिरःसि —कि० ५। ११ शि० ४।५४ 4 वृक्ष की चोटी 5 किसी चीज का सिरा —शिरोबिन्दु शिरसि महीपटल बभाति [illegible] —भामि० ११७४ 6 चूड़ा कलश [illegible] [illegible] अग्रभाग अगला भाग सेना का अगला भाग [illegible] उत्तर० ३।५ 8 मुख्य प्रधान, मुखिया (बहुधा समास के अन्त में) (समास के आरम्भ में पूर्व शिरस् बदल कर समास में शिरो हो जाता है), —सम० —अस्थि (शिरोऽस्थि) खोपड़ी —कपालिन् (पुं०) मनुष्य-खोपड़ी रखने वाला संन्यासी, —गृहम् सबसे ऊपर का घर —अट्टालिका —ग्रह सिर पीड़ा सिर दर्द —छेद —छेदनम् (शिरच्छेद आदि) सिर काट देना सिर कलम कर देना —ताणिन् (पुं०) हाथी —त्रम्, —त्राणम् 1 लोहे का टोप [illegible] शिरस्त्रैश्चषकान्तरैव

रघु० ७।४९ ६६, अपनीतशिरस्त्राणा –७।६४ 2 सिर की टोपी पगड़ी,–धरा –धि ग्रीवा गरदन, शि० ४।५२ ५।२५ –पीड़ा सिर दर्द –फल नारियल का पेड़ –भूषणम् सिर पर पहनने का आभूषण –मणि 1 मस्तक पर धारण करने का रत्न 2 चूड़ामणि 3 विद्वान् पुरुषों के लिए सम्मानद्योतक उपाधि –मर्मन् (पुं०) सूअर, –मालिन् (पुं०), शिव का विशेषण –रत्नम् शिरोमणि –रुजा सिरदर्द, –रुह् (पुं०) –रुह: (शिरसिरुह्,-रुह भी) सिर के बाल –ऋतु० १।४ कु० ५।९, रघु० १५।१६, –वर्तिन् (वि०) मुखिया (पुं०) मुख्य, प्रधान के रूप में रहने वाला –वृत्तम् मिरच, –वेष्ट:, –वेष्टनम् सिर पर पहनने का वस्त्र पगड़ी –शूलम् सिरदर्द –हारिन् (पुं०) शिव का विशेषण।

शिरसिज: [शिरसि जन् +ड सप्तम्या अलुक्] सिर के बाल,–शि० ७।६२।

शिरस्कम् [शिरस् + कन्] 1 लोहे का टोप 2 पगड़ी टोपी।

शिरस्का [शिरस्क + टाप्] पालकी।

शिरस्तस् (अव्य०) [शिरस् + तस्] सिर से कु० ३।०९, भर्तृ० २।१०।

शिरस्य (वि०) [शिरसि भव यत्] सिर संबंधी या सिर पर स्थित, –स्य: स्वच्छ केश।

शिरा (शृ + क + टाप्] नलिका के आकार की शरीर की वाहिका नाड़ी, खून की नाड़ी रक्तवाहिनी नाड़ी। सम०—**पत्र**: कपित्थ कैथवृक्ष, –**वृत्तम्** सीसा।

शिराल (वि०) [शिरा + लच्] स्नायवी शिरायुक्त शिरा बहुल।

शिरि: [शृ + कि] 1 तलवार 2 वध करने वाला कत्ल करने वाला 3 बाण 4 टिड्डी।

शिरीष: [शृ + ईषन् किच्च] सिरस का पेड़,– **षम्** सिरस का फूल (यह सुकुमारता का नमूना समझा जाता है) –शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्क: —कु० १।४१, ५।४, रघु० १६।४८, मेघ० ६५।

शिल् (तुदा० पर० शिलति) सिलौंछन, सिला चुगना बालें इकट्ठा करना।

शिल:,–लम् [शिल् + क] सिलौंछन, बालें चुनना,–दे० मनु० १०।११२ पर कुल्लू०। सम० –**उञ्छ:** 1 शिलावृत्ति 2. अनियमित वृत्ति।

शिला [शिल + टाप्] 1. पत्थर चट्टान 2 चक्की 3 चौखट की नीचे की लकड़ी 4 खंबे की चोटी 5 कंडरा, रक्तवाहिका 6 मन शिला, मैनसिल 7 कपूर। सम० **अष्टक**: 1 छिद्र 2 बाड़, बाड़ा 3 चौबारा, अटारी, –**आत्मजम्** लोहा,–**आत्मिका** कुठाली, घरिया, –**आरम्भा** काष्ठकदली, जंगली केला, –**आसनम्** 1 पत्थर का आसन, चौकी आदि 2 शैलेय गन्धद्रव्य, गुग्गुल,– **आह्वम्** शिलाजतु – **उच्चय:** पहाड़ विशाल चट्टान –रघु० ७।२४,– **उत्थम्** शैलेयगन्धद्रव्य, गुग्गुल, –**उद्भवम्** 1 शैलेयगन्धद्रव्य 2 बढ़िया किस्म की चन्दन की लकड़ी, –**ओकस्** (पुं०) गरुड़ का विशेषण –**कुट्टक**: पत्थर तोड़ने की छेनी, टाँकी, –**कुसुमम्**, –**पुष्पम्**, शैलेय गन्धद्रव्य, –**ज** (वि०) शिलाजीत, खनिजद्रव्य (–**जम्**) 1 शिलाजीत 2 शैलेयगन्धद्रव्य 3 पेट्रोल 4 लोहा 5 कोई भी शिलीभूत पदार्थ –**जतु** (नपुं०) 1 शिलाजीत 2 गेरु –**जित्** (स्त्री०) –**जतु** शिलाजीत –**धातु**: 1 खड़िया मिट्टी 2 गेरु 3 सफ़ेद शिलीभूत पदार्थ, –**पट्ट**:, पत्थर की शिला, [illegible] –**पुत्र**:,–**पुत्रक**: मसाला पीसने का छोटी शिला सिल, –**प्रतिकृति** (स्त्री०) प्रस्तर मूर्ति –**फलकम्** पत्थर की सिल, –**भवम्** शैलेयगन्धद्रव्य –**भेद**: संगतराश की छेनी टाँकी –**रस**: 1 शैलेयगन्धद्रव्य 2 धूप, –**वल्कलम्** एक प्रकार की काई जो पत्थर पर जम जाती है –**वृष्टि** (स्त्री०) 1 पत्थरों की वर्षा 2 ओलों की बारिश –**वेश्मन्** (नपुं०) गुफा पत्थर की दरार –**व्याधि** शिलाजीत।

शिलि [शिल् + इन्] **भूर्जपत्र** (स्त्री०) चौखट की नीचे की लकड़ी।

शिलिन्ध्र: [शिलि + धा + क पृषो० मुम्] एक प्रकार की मछली।

शिली [शिलि ङीप्] 1 दरवाजे की चौखट की नीचे की लकड़ी 2 एक प्रकार का भूकीट केंचुआ 3 खंभे की चोटी 4 भाला 5 बाण 6 मण्डूकी मेंढकी। सम० –**मुख**: भौंरा मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे–गीत० १ रघु० ४।५७ 2 बाण–सा कुसुमघटितशिलीमुखमनोहरान्मन्मथयाधिक प्रभव बनात् सम्यभिन्न –का० २२५, या पुनरहिका शमुद्यावृगमित दर्शन शिलीमुखवर्णोऽप्यभवत शि० २।४१ (दोनों संदर्भों में शब्द (1) तथा (2) अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) 3 मूर्ख।

शिलीन्ध्र: [शिली धरति धृ + क पृषो० मुम्] 1 एक प्रकार की मछली 2 एक वृक्ष, –**ध्रम्** 1 कुकुरमुत्ता साँप की छतरी, जैसा कि 'उच्छिलीन्ध्र' में 2 केले के वृक्ष का फूल–प्रविपुलनिध्र शिलीन्ध्रमुपभिन्नमि –शि० ६।३- या, आविर्भवन्कन्दलिना शिलीन्ध्रे –१२ 3 ओला।

शिलीन्ध्रकम् [शिलीन्ध्र + कन्] कुकुरमुत्ता, खुंब साँप की छतरी।

शिलीन्ध्री [शिलीन्ध्र + ङीप्] 1 मृत्तिका, मिट्टी 2 केंचुआ।

शिल्पम् [शिल् + पक्] 1 कला ललितकला, यान्त्रिक

कला, (इस प्रकार की कलाएँ चौंसठ गिनाई गई हैं) 2 (किसी भी कला में) कुशलता, कारीगरी। मालवि० १।६, मृच्छ० ३।१५ 3 विदग्धता, चतुरता 4 कार्य, शारीरिक श्रम या कार्य 5 कृत्य, अनुष्ठान 6 यज्ञीय क्षमता, स्रुवा। सम० **कर्मन्** (नपुं०) क्रिया कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी **-कारः, कारकः, -कारिन्** दस्तकार, कारीगर, **-शालम्, -शाला** कारखाना, निर्माणी, शिल्पविद्यालय शिल्पगृह **शास्त्रम्** 1 कला विषय पर (चाहे ललित हो या यान्त्रिक) लिखा गया ग्रंथ 2 शिल्पविज्ञान।

शिल्पिन् (वि०) [शिल्प + इनि] 1 ललित या यान्त्रिक कला संबंधी 2 यान्त्रिक, पु० **शिल्पी** (पुं०) 1 दस्तकार कलाकार कारीगर 2 जो किसी भी कला में प्रवीण हो।

शिव (वि०) [शेते पापम्—शी + वन् पृषो०] 1 शुभ मांगलिक सौभाग्यशाली—इय शिवाय नियतेरिवायति कि० ४।२१, १।१८, रघु० ११।३३ 2 स्वस्थ प्रसन्न, समृद्ध सौभाग्यशाली शिवानि वस्तीर्थजलानि कच्चित् रघु० ५।८, (अनुपप्लवानि शान्त) शिवास्ते सन्तु पन्थान 'भगवान् आपकी यात्रा सफल करें'—**वः** हिन्दुओं के तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति) में से तीसरा देव जिसका कार्य सृष्टि का संहार करना है जिस प्रकार ब्रह्मा का कार्य उत्पादन तथा विष्णु का सृष्टि-पालन है तस्य देव केशवो वा शिवो वा —भर्तृ० ३।१५ 2 पुरुष की जननेन्द्रिय लिंग 3 शुभ ग्रहों का योग 4 वेद 5 मोक्ष 6 पशुओं का बांधने का खूंटा 7 सुर देवता 8 पारा 9 गुग्गुल 10 काला धतूरा, **-वौ** (पुं० द्वि व०) शिव और पार्वती कि० ५।४०, **-वम्** 1 समृद्धि कल्याण मंगल आनन्द नव कर्मणि दर्शितं शिवम् नै० २।६२, रघु० १।७० रा० १।६० 2 परमानन्द मांगलिकता 3 मोक्ष 4 जल 5 समुद्री नमक 6 सेंधा नमक 7 शुद्ध सुहागा। सम० **-अक्षम्** रुद्राक्ष दे० **-आत्मकम्** सेंधा नमक **-आवेदकः** 1 शुभ समाचार लाने वाला 2 भविष्यवक्ता **आलयः** 1 शिव का आवास 2 श्मशान, लाल तुलसी (-**यम्**) 1 शिव मन्दिर 2 श्मशान **-इतर** (वि०) अशुभ, दुर्भाग्यपूर्ण—शिवेतर क्षतये काव्य० १ **-कर** (शिवकर' भी) (वि०) आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद, **-कीर्तनः** भृंगी का नाम **-कृति** (वि०) समृद्ध, आनन्दित, **-गतिः** मंगलमय, **-तातिः** (वि०) जिसका अन्त कल्याणकारी हो आनन्ददायक, मंगलप्रद प्रयत्न कुरुष्वोऽस्य कलत्र शिवतातिरस्य भवतु मा० ६।७ 2 मृदु आ राजसी न हो मा भूत्समागमभयेन शिवतातिरेषि —१।४९, (**-तिः**) मांगलिकता, आनन्द **दत्तम्** विष्णु का चक्र, **द्रुम** (नपुं०) देवदारु का पेड़ **द्रुमः** बेल का पेड़,—**द्विष्टा** केतकी का पेड़, **-धातुः** पारा, **-पुरम्,-पुरी** बनारस, वाराणसी,—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक, **प्रियः** 1 स्फटिक 2 बक नाम का पेड़ 3 धतूरा, **-मल्लकः** अर्जुनवृक्ष,—**राज-धानी** वाराणसी,- **रात्रिः** (स्त्री०) फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी जब शिव के सम्मान में कठोरव्रत का पालन किया जाता है, **लिङ्गम्** शिव जिसकी पिंडी या लिंग के रूप में पूजा होती है, **लोकः** शिव का संसार —**वल्लभः** आम का वृक्ष,(**-भा**) पार्वती,- **वाहनः** सांड **बीजम्** पारा, **शेखरः** 1 चांद 2 धतूरा, **सुन्दरी** दुर्गा का विशेषण।

शिवकः [शिव + कन्] 1 वह खूंटा जिसके साथ प्रायः गौ आदि पशु बांधे जाते हैं 2 वह स्तंभ जिससे पशु अपना शरीर रगड़ता है, पशुओं के शरीर को खुज-लाने के लिए खूंटा।

शिवा [शिव + टाप्] 1 पार्वती 2 गीदड़ी अहानि निशा-मस्तिके शिवारुतैः कि० १।३८, हेरम्ब द्वारे शिव-शिव शिवानां कलकलः—मालवि० १।२२ रघु० ७।५०, ११।६१ १०,३९ 3 मोक्ष 4 शमी (जैंडी) का वृक्ष 5 आंवला 6 दूर्वाघास दूब 7 पीला रंग 8 हल्दी सम० **अरातिः**, कुत्ता -**प्रियः** बकरा, **-फला** शमी (जैंडी) का वृक्ष **-रुतम्** गीदड़ का रोना कि० १।३८।

शिवानी [शिव + ङीप् आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शिवालुः [शिव + आलुच्] गीदड़।

शिशिर (वि०) [शश् किरच्—नि] ठंडा, शीतल सर्द जमा हुआ कुरु मदुरस्तनचन्दनशिशिरतरेण करेण पयोधरे गीत० १२, रघु ५।५९, १६।३, १६।४९ **-र, -रम्** 1 ओस तुषार या पाला—पपाता शिशिर-द्रुमम् जाता मन्य शिशिरमथिता पद्मिनी वान्यरूपाम् -मेघ० ८३ 2. जाड़े का मौसम (माघ और फाल्गुन की) सर्दी कच्छेदु स्खलित गतेऽपि शिशिरे पुंस्कोकि-लाना रुतम् श० ६।३ 3 ठंडक शीतलता। सम० **अंशुः -करः**, -**किरणः**,—**दीधितिः**,—**रश्मिः** चन्द्रमा—**बुध** इव शिशिरांशोः—विक्रम० ४।२१, शिशिरकिरण-कान्तं वासरान्तेऽभिसार्य कि० ११।२१, शिशिरदीधि-तिना रजन्य ऋतु० ३।२, **अत्ययः अपगमः**, जाड़े का अन्त वसन्त ऋतु, स्वहस्तलून शिशिरात्य-यस्य (पुष्पोच्चयः)—कु० ३।६१ उपहित शिशिराप-गमश्रिया रघु० ९।३१ —**कालः**, **समयः** जाड़े की ऋतु —**घ्नः** अग्नि का विशेषण।

शिशुः [शो + कु सन्वद्भाव, द्वित्वम्] 1 बालक, बच्चा, शिशुर्वा शिष्या वा- उत्तर० ४।११ 2 किसी भी जानवर का बच्चा (बछड़ा पिल्ला, छौना आदि)

श० ११२४, ७।१४ १८ 3 आठ या सोलह वर्ष से कम आयु का बालक। सम०—क्रन्द - क्रन्दनम् बच्चे का रोना, गन्धा एक प्रकार की मल्लिका, पाल दम घोष का पुत्र तथा चेदि देश का राजा (विष्णुपुराण के अनुसार यह राजा पूर्वजन्म में राक्षसों का राजा पापी हिरण्यकशिपु था जिसे नरसिंह का रूप धारण कर विष्णु ने मार गिराया था। उसके पश्चात् इसने दस सिर वाले रावण के रूप में जन्म लिया और राम ने इसको मार डाला। फिर इसी ने दमघोष के घर जन्म लिया और विष्णु के अष्टम अवतार कृष्ण भगवान् से और भी अधिक [illegible] के साथ निरन्तर द्वेष करता रहा (दे० शि० १)। जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण [illegible] भला बुरा कहने लगा, कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काट डाला। इसकी मृत्यु ही माघकवि के प्रसिद्धकाव्य का विषय है), हन्, (पुं०) कृष्ण का विशेषण, मार शुंभ नाम का [illegible] वाहक —वाहक जंगली बकरा।

शिशुक. [शिशु + कन्] 1 बालक बच्चा 2 किसी भी जानवर का बच्चा 3 वृक्ष 4 सूंस।

शिश्नम् शिस्नम् [शश् + नक् इत्वम्] पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग याज्ञ० ११९३, मनु० ११।१०४।

शिश्विदान (वि०) [श्वित् + शानच् सन्वत् [illegible] द्वित्वम् [illegible]] 1. पवित्र आचरण वाला, सद्गुणी, पुण्यात्मा 2 दुष्ट पापी।

शिष् I (भ्वा० पर० शेषति) चोट पहुँचाना मार डालना।

II (भ्वा पर० चुरा० उभ० शेषति शेषयति—ते) अवशिष्ट छोड़ देना, बचा देना।

III (रुधा० पर० शिनष्टि शिष्ट) 1 बाकी छोड़ना, बचा रखना, अवशिष्ट छोड़ना 2 दूसरा से भिन्न करना—प्रेर० (शेषयति—ते) छोड़ना, बच बाकी छोड़ना, पीछे छोड़ना (प्रायः कर्मवा० में) स्नपन नीवार इवावशिष्ट रघु० ५।१५ क्रियदवशिष्टं रजन्याः श० ४, निद्रागमर्सीन [illegible] महावी० ६, भग० ३।[illegible] [illegible] —दे० 'उच्छिष्ट', परि , अवशिष्ट छोड़ना [illegible] वि— बचिना कर्णपुरुषोचिता मया आमि० ११५३, वि—, 1 विशिष्ट करना, विशेष रूप से बढ़ना, विभाग करना 2 भेद करना, विवेचन करना 3 बढ़ाना ऊँचा करना वृद्धि करना गहरा करना पुनरुक्तावृत्तिरुभं मदाकुल: [illegible] विशिनष्टि मनोहरम्-मा० ४।६, उत्तर० ४।[illegible] (कर्मवा०) 1 भिन्न होना रघु० १७।६० 2 अपेक्षाकृत अच्छा या ऊँचे दर्जे का होना आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना, (अपा० के साथ) अपेक्षाकृत बढ़िया और दूसरों से अच्छा होना मनु० २।८३ ३।२०३ (प्रेर०) आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना-मृच्छ० ८।४, मालवि० ३।५।

शिष्ट (भू० क० कृ०) [शास् + क्त, शिष् + क्त वा] 1 बाकी बचा हुआ बचा हुआ, अवशिष्ट बाकी 2 आदिष्ट, समादिष्ट 3 प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट 4 सधाया हुआ पालतू वश्य 5 बुद्धिमान विद्वान् कि० २।१० 6 सदाचारसम्पन्न माननीय 7 [illegible] 8 मुख्य प्रधान श्रेष्ठ उत्तम पूज्य प्रमुख, ष्ट प्रमुख या पूज्य व्यक्ति 2 बुद्धिमान पुरुष 3 परामर्शदाता। सम० आचार 1 बुद्धिमान [illegible] का आचरण [illegible] — सभा [illegible] पूज्य [illegible]।

शिष्टिः (स्त्री०) [शास् + क्तिन्] 1 शासन 2 आज्ञा [illegible] 3 सजा दण्ड।

शिष्य [शास् + क्यप्] 1 छात्र चेला विद्यार्थी शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् भग० २।७ 2 क्रोध आवेश। सम० परम्परा चेलों का अनु क्रम किसी गुरु-संप्रदाय की परम्परा शिष्यमण्डली [illegible] शिष्टिः (स्त्री०) छात्र का शोधन, भर्त्सना।

शिह्ल शिह्लक [शिह्ल [illegible] स्त्रि० सस्य वा] शैलेय गन्धद्रव्य।

शी (अदा० आ० शेते शयित कर्मवा० शय्यते, इच्छा० शिशयिषते) 1 लेटना लेट जाना विश्राम करना आराम करना इयमत्र कालीयन शिलायां तथा शाते भग० २।१९ 2 सोना (आत्म० से भी) —किं नि शङ्कं शेषे शेषे वयसि समागतो मृत्यु। अथवा सुखं शयीता निकटे जागर्ति जाह्नवी जननी भामि० ४।३० भर्तृ० ३।७१ कु० ५।१२, प्रेर० (शाययति —ते) सुलाना, लिटाना अति— 1 मात्रे से पहले करना 2 बाद में सोना अपेक्षाकृत देर तक सोना [illegible] सुसंस्कृत मद्रा० ३ श्रेष्ठ होना आगे बढ़ जाना पूर्वान्महाभाग तयातिशेषे रघु० ५।१४ [illegible] किं० ६।१२ भट्टि० ७।४६ पर० आगे बढ़ने का कारण बनना- सामान्य [illegible] मुद्रा० ३।१७ अधि— (स्थान में कर्म० के साथ) लेटना, सोना आराम करना अध्यशयिष्ट शाम भट्टि० १५।१४, अनु पृष्ठकन्धिसयोर्मनि महत्य [illegible] पृथ्वीधिशाने रघु० १।१६ ११।४९ १९।१२ कि० ११३८, 2 बसना रहना भट्टि० १०।३५, उप सोना निकट लेटना, सम , मह में होना सहायक कर्म [illegible] कि० ३।१४, ४२, भामि० २।११५।

शी [शी + क्विप्] 1 निद्रा विश्राम 2 शान्ति।

शीक् (भ्वा० आ० शीकते) 1 तर करना छिड़कना 2 धीरे धीरे जाना [illegible] ॥ (भ्वा० पर० चुरा० उभ० शीकति शीकयति-ते) 1 क्रोध करना 2 आर्द्र करना गीला करना।

शीकर [शीक् अरन्] 1 वायुप्रेरित छींटे सूक्ष्मबौछार [illegible] — कु० [illegible] [illegible] परिवहन्तो [illegible] [illegible] वृक्ष [illegible]

शीघ्र (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रम [illegible] [illegible] कार्मिक [illegible] कारिन (वि०) [illegible] बुद्धि (वि०) [illegible] [illegible] वेधिन [illegible]

शीघ्रिन (वि०) [illegible]

शीघ्रिय (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible]

शीघ्य [शीघ्र यत्] [illegible]

शीत (अव्य०) आकस्मिक [illegible] [illegible] प्रकट करने वाली ध्वनि (विशेषकर आनन्दातिरेक की वह ध्वनि जो संभोग के समय होती है)। सम० कार —कृत् (पुं०) [illegible] [illegible] सिसकारी

शीत (वि०) [श्यै क्त] 1 ठंडा शीतल [illegible] [illegible] कुसुमाकरस्य [illegible] 2 मन्द सुस्त [illegible] आलसी 4 [illegible] मुस्त [illegible] 1 एक प्रकार का [illegible] 2 [illegible] वृक्ष 3 आदि की ऋतु [illegible] [illegible] 1 ठंडक शीतलता सर्दी [illegible] [illegible] करता [illegible] 2 जल 3 दालचीनी। सम० अंशु 1 चाँद [illegible] [illegible] शीतांशु [illegible] [illegible] 2 कपूर अद्रि समूहों के एकत्र [illegible] [illegible] पार्वतीया अद्रि हिमालय पहाड़ अश्मन् (पुं०) चन्द्रकान्तमणि आर्त (वि०) [illegible] ठिठुरा हुआ [illegible] काल आदि की ऋतु सर्दी का मौसम कालीन (वि०) जाड़े में होने वाला [illegible] [illegible] एक प्रकार का धार्मिक साधना [illegible] [illegible] 1 चाँद 2 कपूर [illegible] 1 दीपक 2 दर्पण [illegible] ज्योतिस् चाँद —पुष्प शिरीष का वृक्ष शिरस का पेड़ पुष्पक [illegible] [illegible] [illegible] कपूर भानु चाँद भीरु [illegible] [illegible] की मल्लिका मयूख मरीचि, रश्मि 1 चाँद 2 कपूर [illegible] [illegible] वृक्ष (पुं०) चाँद [illegible] [illegible] शीतक [illegible] —शिव [illegible] [illegible] (नपुं०) 1 सेंधानमक 2 [illegible] स्पर्श (वि०) ठंडक पहुँचाने वाला।

शीतक (वि०) [illegible] [illegible] 1 [illegible] 2 जाड़े की ऋतु सर्दी का मौसम 3 [illegible] 4 [illegible] [illegible]।

शीतल (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1 चाँद 2 [illegible] [illegible] अनुष्ठान [illegible] [illegible] 6 [illegible] सम० छद [illegible] प्रद [illegible] चन्दन षष्ठी [illegible]

शीतलक [illegible] [illegible]

शीतला [illegible] 1 चेचक 2 चेचक (शीतला) की अधिष्ठात्री देवता। सम० पूजा शीतला देवी की पूजा

शीतली [illegible] चेचक

शीता [illegible]

शीतालु (वि०) [शीत सहने [illegible] आलुच्] सर्दी से [illegible] [illegible] सर्दी लग गई है जाड़े के [illegible] शि० ६।६१।

शीत्य दे० [illegible]

शीधु (पुं० नपुं०) [illegible] 1 [illegible] [illegible] मदिरा [illegible] 2 [illegible]। सम० गन्ध [illegible] मौलसिरी का पेड़ [illegible]।

शीन (वि०) [श्यै + क्त] 1 जमा हुआ घनीभूत [illegible] 1 जड़ बुद्धू 2 अजगर।

शीभ् (भ्वा० आ० शीभते) 1 शेखी बघारना 2 बतलाना कहना [illegible] (कथन)

शीभ्य [शीभ् [illegible]] 1 साँड 2 शिव।

शीर [illegible] [illegible] [illegible] भी।

शीर्ण (भू० क० कृ०) [शॄ + क्त] 1 कुम्हलाया हुआ मुर्झाया हुआ सड़ा हुआ 2 सूखा [illegible] 3 [illegible] चूर चूर हुआ 4 दुबला पतला कृश (दे० शॄ) —अंघ्रि एक प्रकार का गन्ध द्रव्य। सम० अंघ्रि, पाद 1 यम का विशेषण 2 शनिग्रह का विशेषण —पर्णम्

कुम्हलाया हुआ पत्ता (इसी प्रकार शीर्णपत्रम् (र्ण·) नीम का पेड़, —वृन्तम् तरबूज।

शीर्वि (वि०) [शॄ + क्विन्] विनाशकारी, आघातयुक्त अनिष्टकर क्षतिकर।

शीर्षम् [शिरस् पृषो० शीर्षादेश शॄ + क सुक् च वा] 1 सिर शीर्षे सर्पो देशान्तरे वैद्यः —कर्पूर० मुद्रा० १।२१ 2 काला अगर। सम० —अवशेष केवल सिर ही बचा हुआ, —आमयः सिर का कोई भी रोग —छेदः सिर काट डालना —छेद्य (वि०) जिसका सिर काट डालना चाहिए सिर काट कर मारे जाने के योग्य उत्तर० २।८ रघु० १५।५१ —रक्षकम् लोहे का टोप।

शीर्षक [शीर्ष + कन्] राहु का विशेषण —कम् 1 सिर 2 खोपड़ी 3 लोहे का टोप 4 सिर का वस्त्र (टोपी टोप आदि) 5 व्यवस्था निर्णय न्यायालय का निर्णय।

शीर्षण्यः [शीर्षन् + यत्] साफ तथा सुलझे हुए सिर के बाल —ण्यम् 1 लोहे का टोप 2 टोप टोपी।

शीर्षन् (नपुं०) [शिरस् शब्दस्य पृषो० शीर्षन् आदेश] सिर, (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'शिरस्' या 'शीर्ष' का विकल्प से आदेश हो जाता है)।

शील् I (भ्वा० पर० शीलति) 1 मननशील होना, भली भाँति सोचना 2 सेवा करना, सम्मान करना पूजा करना 3 अभ्यास करना अभ्यास करना।

II (चुरा० उभ० शीलयति—ते) 1 सम्मान करना पूजा करना 2 बार बार अभ्यास करना प्रयोग करना अध्ययन करना, चिन्तन करना ध्यान करना —श्रुतिशतमपि भूयः शीलितं भारतं वा —भामि० २।२४ शास्त्राण्यपि सुनयः सुशीलनाम् —कि० १२।१२ 3 धारण करना पहनना—न मलिन कुचग्रं सपदि सर पुष्पं शीलय शैलनिवासम्—गीत० ५ 4 जाना दर्शन करना बार बार जाना —मदनगमनाय निशि गहन मपि शीलितम् —गीत० ७ स्मेराननां सपदि शीलय सौधमौलिम्—भामि० २।४ अनु —, परि —, बार बार अभ्यास करना, सुधारना चिन्तन करना —उपश्रुतोऽपि मनसा परिशीलितोऽसि —राज०।

शील [शील् + अच्] अजन्तः —लम् 1 स्वभाव, प्रकृति चरित्र, प्रवृत्ति रुचि आदत प्रथा —समानशीलव्यसनेषु सख्यम् सुभा० अनुसक्त तुम्र्यत्न प्रवण लीन अभ्यास आदि अर्थ प्रकट करने के लिए बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त —कलहशील कलह करने के स्वभाव वाला —भगवाल् भावनाशील चिन्तनशील, इसी प्रकार 'दान', 'मृगया', 'दया' 'पुण्य', 'आश्वासन' आदि 2 आचरण, व्यवहार 3 अच्छा स्वभाव, अच्छी प्रकृति शीलं परं भूषणम् —भर्तृ० २।८२ पंच० ५।२ 4 सद्गुण, नैतिकता सदाचरण, सज्जीवन शुचिता, ईमानदारी—दौमनस्यान्नृपतिर्विनश्यति शीलं खलोपासनात् —भर्तृ० २।४२, ७९, तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदेशतां गतम् —कु० ५।३६ कि० ११।७१ रघु० १०।७० 5 सौन्दर्य, सुन्दर रूप। सम० —खण्डनम् शुचिता या नैतिकता का उल्लंघन—पंच० ४ —धारिन् (पुं०) शिव का विशेषण —वञ्चना शुचिता का उल्लंघन प्रार्थ्येय शीलवञ्चना—मृच्छ० ९।४४।

शीलनम् [शील् + ल्युट्] 1 बार बार अभ्यास प्रयोग अध्ययन सवधन 2 निरन्तर प्रयोग 3 सम्मान करना सेवा करना 4 वस्त्र पहनना।

शीलित (भू० क० कृ०) [शील् + क्त] 1 अभ्यस्त प्रयुक्त 2 धारण किया हुआ 3 बार बार किया हुआ देखा हुआ 4 कृतार्थ युक्त सोहन सम्पन्न।

शीवन (पुं०) [शीङ् + क्वनिप्] अजगर।

शुशुमार [शिशुमार का भ्रष्ट रूप] सूँस, समुद्री जल जन्तु।

शुक् (भ्वा० पर० शोकति) जाना हिलना जुलना।

शुक [शुक् + क] 1 तोता आ मना मत्वदगण काव्यले शुकसारिका —सुभा०, गृहेशराजमृकुटि नैषधीर्णपदवा यज्ञे। त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः —काव्या० २।० 2 सिरस का पेड़ 3 व्यास का एक पुत्र (कहा जाता है कि शुक व्यास के वीर्य से उत्पन्न हुआ था जब घृताची नाम की अप्सरा शुकी के रूप में इस पृथ्वी पर घूम रही थी तो उसको देख कर व्यास का वीर्यपात हो गया था। शुक जन्म से ही दार्शनिक था उसने अपनी नैतिक वाक्पटुता से स्वर्गीय अप्सरा रम्भा के काम मार्ग पर प्रेरित करने के प्रत्येक प्रयत्न का सफलता पूर्वक मुकाबला किया। कहते हैं कि उसी ने राजा परीक्षित को भागवत पुराण सुनाया। अत्यन्त कठोर साधक के रूप में उसका नाम किंवदन्ती की तरह प्रसिद्ध हो गया —कम् 1 कपड़ा वस्त्र 2 लोहे का टोप 3 पगड़ी 4 वस्त्र की किनारी या झालरी। सम० —अदनः अनार का पेड़ —तरुः, —द्रुमः सिरस का पेड़ —नासः (वि०) तोते जैसी नाक वाला, —नासिका तोते की नाक जैसी नाक —पुच्छः गन्धक —पुष्पः, —प्रियः सिरस का पेड़ —पुष्पा जामुन का पेड़ —वल्लभः अनार का पेड़ —वाहः कामदेव का विशेषण।

शुक्त (भू० क० कृ०) [शुच् + क्त] 1 उज्ज्वल, विशुद्ध स्वच्छ 2 अम्ल खट्टा 3 कर्कश खुरदरा, कड़ा, कठोर 4 संयुक्त जुड़ा हुआ 5 परित्यक्त, एकाकी,

शुक्तम् 1 मांस 2 कांजी 3 एक प्रकार का खट्टा तरल पदार्थ (सिरका आदि)।

शुक्ति (स्त्री०) [शुच् क्तिन्] 1 सीप [illegible] मोती की सीप [illegible] गुणाः [illegible] शिलामासनु। [illegible] मनु० [illegible] रघु० १३।१७ 2 शंख 3 [illegible] 4 [illegible] [illegible] उद्धव [illegible] पुष्प [illegible] [illegible]

शुक्तिका [illegible]

शुक्र [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]
कम् 1 [illegible] 2 [illegible] **शुक्र** [illegible] **कर** [illegible] **वार** **वासर** [illegible] **शिष्य** [illegible]।

शुक्ल, शुक्लिय [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

शुक्ल (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]
क्लम् 1 चाँदी 2 [illegible] 3 [illegible] मनु० **शुक्ल** **अपाङ्ग** [illegible] **केश** मनु० [illegible] **अम्लम्** एक प्रकार का खट्टा साग **वृक्ष** —उपला [illegible] **कण्टक** एक प्रकार का जल कुक्कुट **कर्मन्** (वि०) शुद्धाचारी सद्गुणी **कुष्ठम्** सफ़ेद कोढ़ **धातु** खड़िया मिट्टी **पक्ष** मास का सुदी पक्ष **वस्त्र** (वि०) श्वेत वस्त्रधारी —**वायस** सारस

शुक्लक (वि०) [शुक्ल कन्] मतर [illegible] 1 सफ़ेद रंग 2 चान्द्र मास का सुदी पक्ष।

शुक्लल (वि०) [शुक्ल+ला+क] सफ़ेद।

शुक्ला [शुक्ल+टाप्] 1 सरस्वती 2 [illegible] चीनी 3 श्वेतवर्ण वाली स्त्री 4 काकोली नाम का पौधा।

शुक्लिमन् (पुं०) [शुक्ल+इमनिच्] श्वेतता, सफ़ेदी।

शुक्ति [शुच् क्तिन्] 1 वायु हवा 2 प्रकाश कान्ति 3 अग्नि।

शुङ्ग [illegible] 1 बड़ का पेड़ 2 पेंवदी [illegible] 3 अनाज की [illegible] किसारु।

शुङ्गा [शुङ्ग+टाप्] 1 नूतन कली का कोष 2 जौ या अनाज की बाल किसारु।

शुङ्गिन् (पुं०) [शुङ्गा+इनि] बड़ का पेड़ वटवृक्ष।

शुच् (भ्वा० पर० शोचति) खिन्न होना दुःखी होना [illegible] विलाप करना [illegible] भट्टि० [illegible] 2 खेद प्रकट करना पछताना [illegible] विलाप करना खेद प्रकट करना [illegible] पञ्च० [illegible] वेणी० ५।४ उत्तर० ३।३२ **परि** विलाप करना शोक मनाना।
[illegible] (दिवा० उभ० शुच्यति ते) 1 खिन्न होना दुःखी होना 2 आर्द्र होना 3 चमकना 4 स्वच्छ या निर्मल होना 5 कुम्हलाना मुर्झाना।

शुच्, शुचा (स्त्री०) [शुच्+क्विप् टाप् वा] रंज शोक कष्ट दुःख—विकल्पकरणं पाण्डुच्छाय शुचा परिदुर्बलं —उत्तर० ३।२२ काम बौधनि मे नाथ इति मा विजहौ शुचम रघु० [illegible] मेघ० ८८ श० ४।१८।

शुचि (वि०) [शुच्+कि] 1 विमल विशुद्ध स्वच्छ [illegible] शुचिमानस [illegible] ५।१३ 2 श्वेत [illegible] उज्ज्वल चमकदार—प्रभवति शुचि बिम्बोद्ग्राहे [illegible] उत्तर० २।४ 4 सद्गुणी पवित्र तमा पुण्यात्मा निष्पाप निष्कलंक [illegible] श० ४।७ रघु० [illegible] रघु० ३।४८ कि० ५।१३ [illegible] पवित्रीकृत [illegible] 6 ईमानदार [illegible] मनु० [illegible] पञ्च० [illegible] 7 [illegible] 1 श्वेत वर्ण 2 पवित्रता पवित्रीकरण 3 [illegible] 4 शुद्धता यथार्थता 5 ब्रह्मचारी की [illegible] 6 पवि[illegible] 7 ब्राह्मण 8 ग्रीष्म ऋतु [illegible] विरसौरभसपद [illegible] ५।२८ रघु० ३।३ कु० ५।२० 9 ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने 10 [illegible] 11 सूर्य 12 चन्द्रमा 13 अग्नि 14 शृङ्गार रस 15 शुक्रग्रह 16 चित्रक वृक्ष। सम०—**द्रुम** पवित्र वट-वृक्ष **मणि** स्फटिक **मल्लिका** एक प्रकार की चमेली नवमल्लिका **रोचिस्** (पुं०) चन्द्रमा, **व्रत** (वि०) पुण्यात्मा सद्गुणी,—**स्मित** (वि०) मधुर मुस्कान वाला —कु० ५।२०, रघु० ८।४८।

शुचिस् (नपुं०) [शुच् + इसुन्] प्रकाश कान्ति।

शुध् (भ्वा० पर० शुध्यति) 1 स्नान करना नहाना धोना 2 निचोड़ना (रस) निकालना 3 अर्क खींचना 4 बिलोना।

शुटीर [– शौटीर पृषो०] वीर नायक।

शुठ् I (भ्वा० पर० शोठति) 1 बाधा डाल जाना [illegible] बट डाली जानी 2 लड़खड़ाना [illegible] 3 मुकाबला करना।

II (चुरा० उभ० शोठयति–ते) सुस्त [illegible] होना, मन्द होना।

शुण्ठ् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० शुण्ठति शुण्ठयति ते) 1 पवित्र करना 2 सूखना [illegible] (1) [illegible]

शुण्ठि ठी (स्त्री०) **शुण्ठ्यम्** [शुण्ठ् [illegible] शुण्ठ + यत्] सोंठ, सूखा अदरक।

शुण्ड [शुण्ड + अच्] 1 मदमाते हाथी के [illegible] निकलने वाला रस 2 हाथी की सूँड।

शुण्डक [शुण्ड + कन्] 1 शराब [illegible] 2 एक प्रकार का सैनिक संगीत या वाद्ययन्त्र

शुण्डा [शुण्ड + टाप्] 1 हाथी की सूँड 2 खींची हुई शराब 3 मद्यपानगृह, मधुशाला 4 कमल डंडी 5 वेश्या रंडी 6 कुटनी दूती। सम० **पानम्** मदिरालय शराबखाना।

शुण्डार [शुण्ड + ऋ + अण्] 1 शराब खींचने वाला 2 हाथी की सूँड या नासाग्र [illegible] महावीर० [illegible]

शुण्डाल [शुण्डार [illegible]] हाथी।

शुण्डिका [शुण्डा + कन् [illegible]] दे० शुण्डा

शुण्डिन् (पुं०) [शुण्ड + इनि] 1 शराब खींचने वाला कलाल 2 हाथी। सम० **मूषिका** [illegible]

शुतुद्रि, –द्रू (स्त्री०) [illegible]

शुद्ध (भू० क० कृ०) [illegible] 1 विशुद्ध निर्मल पवित्रीकृत [illegible] 2 [illegible] अन्वयोपेत [illegible] 3 [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] विशुद्ध [illegible] 11 अद्वितीय 12 अनिवार्य 13 पैनाया हुआ [illegible] किया हुआ 14 अननुनासिक [illegible]

द्धम् 1 कोई भी विशुद्ध वस्तु 2 विशुद्ध [illegible] 3 सेंधा नमक 4 काली मिर्च। सम० **अन्तः** [illegible] का अन्तःपुर, रनवास [illegible] **–अन्तपालः**, **रक्षक** अन्तःपुर का रखवाला, **आत्मन्** (वि०) शुद्धात्मा ईमानदार **ओदन** (शुद्धोदन) [illegible] का पिता, **°सुतः** बुद्ध, **चैतन्यम्** विशुद्ध प्रतिभा प्रज्ञा **बोध** [illegible] **भाव** [illegible] (वि०) विशुद्धमना निर्दोष ईमानदार।

शुद्धि (स्त्री०) [illegible] 1 पवित्रता, स्वच्छता [illegible]

शुध् [illegible]

शुन [illegible] करना

शुनःशेप [illegible] वरुण [illegible] पुत्र [illegible] उसको बलि [illegible] उसको [illegible] राजा अपनी प्रतिज्ञा [illegible] किसी न किसी बहाने टालता [illegible] अजीगर्त [illegible] पुत्र [illegible] स्थान पर बलि [illegible] किया। परन्तु बालक शुनःशेप ने विष्णु इन्द्र तथा अन्य देवताओं की स्तुति

करके अपने आपको मृत्यु से बचा लिया। उसके पश्चात् विश्वामित्र ने उस लड़के को अपने कुल में गोद ले लिया और उसका नाम रक्खा देवरात)।

शुनकः [शुन्+क शुन्+कन्] 1 भृगुवंश में उत्पन्न एक ऋषि का नाम 2 कुत्ता।

शुनाशीरः (सी) रः [शुनाशीरौ वायुसूर्यौ अस्य स्तः इति अच्] 1 इन्द्र का विशेषण 2 उल्लू।

शुनिः [शुन्+इन्] कुत्ता।

शुनी (स्त्री०) (श्वन्+ङीप्) कुतिया, कुक्कुरी।

शुनीरः [शुनी+र] कुतियों का समूह।

शुन्ध् (भ्वा० चुरा० उभ० शुन्धति ते शुन्धयति ते) 1 पवित्र या विमल होना 2 निर्मल करना, पवित्र करना।

शुन्ध्युः [शुन्ध्+युच्] हवा, वायु।

शुभ् (भ्वा० आ० शोभते) 1 चमकना, शानदार होना, सुन्दर या मनोहर दिखाई देना—शुशुभे शोभते गगनं विरचनाद्भुतम्येन उत्तर० १ रघु० ८।६ 2 शोभायमान प्रतीत होना सुभ हि दूष्यान्तनुमय शोभते मृच्छ० १।४० उपयुक्त होना, शोभा देना, योग्य होना (सं० के साथ)—रामभद्र इत्येवोपचारः शोभते तात परिजनस्य उत्तर० १ प्रेर० (शोभयति ते) सजाना, सँवारना, अलंकृत करना, वि चमकना, शानदार दिखाई देना।

[1]**शुभ** (वि०) [शुभ्+क] 1 चमकीला, उज्ज्वल 2 सुन्दर, मनोहर, अक्षये शुभे सुन्दरनमस्तदीय कु० १।३५ 3 मांगलिक, सौभाग्यशाली, प्रसन्न, समृद्धिशाली 4 प्रमुख, भद्र, सद्गुणी पञ्च० १।३५८ —भम् माङ्गलिकता, कल्याण, अच्छा भाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि मा० ११।३ 2 अलंकार 3 जल 4 एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी। सम० —अङ्ग शिव का विशेषण —अङ्ग (वि०) सुन्दर (गी) 1 सुन्दर स्त्री 2 कामदेव की पत्नी रति —अपाङ्गा सुन्दर स्त्री —अशुभम् सुख दुःख, भला बुरा —आचार (वि०) पवित्र आचरण वाला, सदाचारी —आनना सुन्दरमुखी स्त्री —इतर (वि०) (वि०) 1 बुरा, खराब 2 अशुभ, अमांगलिक —उदर्क (वि०) जिसका अन्त आनन्दप्रद हो —कर (वि०) कल्याणकर, मांगलिक —कर्मन् (नपुं०) पुण्यकार्य —गन्धकम् एक गन्धद्रव्य, बोल —ग्रह अनुकूल ग्रह, —दन्ती सुन्दर दाँतों वाली —लग्नम् शुभ मुहूर्त, मंगल घड़ी —वार्ता शुभ समाचार —वासनः मुख को सुवासित करने वाला गंधद्रव्य —शंसिन् (वि०) शुभसूचक, मंगल की सूचना देने वाला —रघु० ३।१४ —स्थली 1 वह भवन जहाँ यज्ञों का अनुष्ठान होता हो, यज्ञभूमि 2 मंगलभूमि।

शुभंयु (वि०) [शुभमस्त्यस्य—युस्] 1 मंगलमय, सौभाग्यसूचक, भाग्यशाली, मंगलान्वित—अथिक शुशुभे शुभंयुना द्वितयेन द्वयमेव संगमम् रघु० ८।६, भट्टि० १।२०।

शुभङ्कर (वि०) [शुभ+कृ+अच् मुम्] 1 कल्याणकारी 2 आनन्दवर्धक।

शुभंभावुक (वि०) [शुभम्+भू+णिच्+उकञ्] सजाया हुआ, सुभूषित, अलंकृत, उज्ज्वल।

शुभा [शुभ+टाप्] 1 कान्ति, प्रकाश 2 सौन्दर्य 3 इच्छा 4 गोरोचन, गोरोचना 5 शमी वृक्ष 6. देवसभा 7 दूब 8 प्रियंगु लता।

शुभ्र (वि०) [शुभ्+रक्] 1 चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2 श्वेत, पश्यति पिनाकहस्त शशिशुभ्र शालमपि शैलं काव्य० १० रघु० २।६९, —भ्रः 1 श्वेत रंग 2 चन्दन (नपुं०) —भ्रम् 1 चाँदी 2 अभ्रक 3 सेंधा नमक 4 कसीस। सम० —अंशुः, —करः 1 चन्द्रमा 2 कपूर —रश्मिः चन्द्रमा।

शुभ्रा [शुभ्र+टाप्] 1 गंगा 2 स्फटिक 3 वंशलोचन।

शुभ्रिः [शुभ्+क्रिन्] ब्रह्मा का विशेषण।

शुम्भ् (भ्वा० पर० शुम्भति) 1 चमकना 2 बोलना 3 आघात पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

शुम्भः [शुम्भ्+अच्] एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार डाला था। सम० —घातिनी, —मर्दिनी दुर्गा का विशेषण।

शुर् (शूर्) र् (दिवा० आ० शूर्यते) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना।

शुल्क् (चुरा० उभ० शुल्कयति ते) 1 लाभ उठाना 2 अदा करना, देना 3 रचना करना 4 कहना, वर्णन करना 5 छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना।

शुल्क —कम् [शुल्क्+अच्] 1 चुंगी, कर, महसूल, सीमाशुल्क, निश्चित वह कर जो राज्य द्वारा घाट या मार्ग आदि पर लिया जाता है—क चुंगी, तस्यार्थे ऋणम् शुल्कार्थे विषयाद्धनम्—हि० ३।१२५ मनु० ८।१५९ याज्ञ० २।४७ 2 किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अगाऊ धन 3 (कन्या का) विक्रय मूल्य, कन्या के पिता को कन्या के बदले दिया गया धन वीर्यशुल्केति कन्यासमर्थया रघु० ११।४७ न कन्यायाः पिता विद्वान् गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि मनु० ३।५१, ९।९३, ९८ 4 विवाहोपहार 5 विवाह निश्चित करने के लिए दिया गया धन, दहेज 6 वर पक्ष की ओर से दुल्हिन को दिया गया उपहार। सम० —ग्राहक, —ग्राहिन् (वि०) शुल्कसंग्रहकर्ता —द 1 विवाहोपहार देने वाला 2 वाग्दत्त, विवाहार्थी प्रेमी, —स्थानम् शुल्क जमा करने की जगह, चुंगीघर।

शुल्वम् [शुल्व्+अच् पृषो०] 1 सुतली, रस्सी, डोरी 2 नाता।

शुल्क् (भ्वा०) (चुरा० उभ० शुल्क-ल्क-यति, —ते) देना, प्रदान करना 2. भेजना, तितर बितर करना, 3. मापना।

शुल्बम् (ल्बम्) [शुल्ब्+अच्] 1 रस्सी, डोरी 2 तांबा 3. यज्ञीय कर्म 4. जल का सामीप्य, जल का निकटवर्ती स्थान 5 नियम, क़ानून, विधिविधान,- ल्वा, —ल्वी दे० ऊपर।

शुश्रू (स्त्री०) [श्रु+बङ् लुक्, द्वित्वादि+क्विप्] माता।

शुश्रूषक (वि०) [श्रु+सन्, द्वित्वादि+ण्वुल्] सावधान, आज्ञाकारी, कः सेवक, टहलुआ।

शुश्रूषणम्, -णा [श्रु+सन्+द्वित्वादि+ल्युट्] 1 सुनने की इच्छा 2. सेवा, टहल 3. आज्ञाकारिता, कर्तव्यपरायणता।

शुश्रूषा [श्रु+सन्, द्वित्वादि+अ+टाप्] 1 सुनने की इच्छा—अतएव शुश्रूषा मां मुखरयति मुद्रा० १ 2. सेवा, टहल 3 कर्तव्यपरायणता, आज्ञाकारिता 4. सम्मान 5 बोलना, कहना।

शुश्रूषु (वि०) [श्रु+सन्, द्वित्वादि+उ] 1 सुनने का इच्छुक 2. सेवा या टहल करने की इच्छा वाला 3. आज्ञाकारी, सावधान।

शुष् (दिवा० पर० शुष्यति, शुष्क) 1 सूखना, शुष्क होना, खुश्क होना—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि —भर्तृ० ३।९२ 2. मुर्झा जाना, प्रेर० (शोषयति-ते) 1. सुखाना, मुर्झाना, शुष्क होना 2 कृश करना, उद्—, परि— , 1 सुखाया जाना, सुखाना —भट्टि० १०।४१, अम० १।२९ 2 म्लान होना कुम्हलाना, मुर्झाना, वि—, सम् , सुखाया जाना।

शुष:, शुषी [शुष्+क, शुष+ङीष्] 1 सूखना, सुखाना 2. बिल, सुरंग।

शुषि: [शुष्+कि] 1. सुखाना 2. रन्ध्र, छिद्र 3 सांप के विषैले दांत का पोला भाग।

शुषिर (वि०) [शुष्+किरच्] छिद्रयुक्त, रन्ध्रमय,—र: 1. आग 2. चूहा,—रम् 1 छिद्र 2. अन्तरिक्ष 3 हवा या फूंक से बजने वाला बाजा।

शुषिरा [शुषिर+टाप्] 1 नदी 2. एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

शुष्मः [शुष्+इकन्, स च कित्] हवा, वायु।

शुष्क (भू० क० कृ०) [शुष्+क्त] 1 सूखा, मुर्झाया हुआ —तावकाणां शुष्कं करिष्यामि—मृच्छ० ८ 2 भुना हुआ स्थान 3 मुर्झाया, सिकुड़न वाला, कृश 4 झूठ मूठ, व्यर्थ, अकारण, नकली कारिन स्म कुरुते करभोरु हरिं शुष्करुदितं च सुखेऽपि शि० १०।१० 5 रिक्त, व्यर्थ, अनुपयोगी, अनुत्पादक मालवि० २ 6. निराधार, निष्कारण 7 बुरा लगने वाला, कठोर —तस्मै वाक्शुल्कं शुष्कं शुष्का विरमयेत्- मनु० ११।३५। सम०—अङ्ग (वि०) कृशकाय, (गी) छिपकली, —अन्नम् वह अनाज जिसमें से भूसा अलग नहीं किया गया —कलहः 1 व्यर्थ या निराधार झगड़ा 2 बनावटी झगड़ा—मुद्रा० ३, —वैरम् निराधार वैर, —व्रणः वह घाव जो अच्छा हो गया है, घाव का चिह्न।

शुष्कलः,—लम् [शुष्क+ला+क] 1 सूखा मांस 2. मांस।

शुष्मः [शुष्+मन्, किच्च] 1 सूर्य 2 आग 3 वायु, हवा 4 पक्षी,—ष्मम् 1 पराक्रम, सामर्थ्य 2 प्रकाश, कान्ति।

शुष्मन् (पुं०) [शुष्+क्ष मनिन्] अग्नि शि० १४।२२ —(नपुं०) 1 सामर्थ्य, पराक्रम 2 प्रकाश, कान्ति।

शूकः,—कम् [श्वि : कक्, सम्प्रसारणम्] 1 जौ की बाल दाढ़ी 2 पौधों के कड़े रोएँ, शूल च शूकं शूके—भामि० १।२४ 3 नोक सिरा, तेज किनारा 4 सुकोमलता, करुणा 5 एक प्रकार का विषैला कीड़ा। सम० —कीटः,—कीटकः एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएँ खड़े हों, —धान्यम् कोई भी ऐसा अन्न जो बालों टूंडो में से निकलता है (जौ आदि), —शिम्बी, —शिम्बा, —शिम्बिका, —शिम्बि केवांच, कपिकच्छु।

शूकल: [शूक+कन्] 1 एकार का अन्न 2 सुकोमलता करुणा।

शूकर: [शू इत्यव्यक्तं शब्दं करोति शू+कृ+अच्] सूअर- गच्छ शूकर भद्रं ते वद सिंहो मया हतः पण्डिता एव जानन्ति सिंहशूकरयोर्बलम्—सुभा०। सम० —इष्टः एक प्रकार का घास, मोथा।

शूकलः [शूकवत् क्लेशं ददाति—शूक+ला+क] अड़ियल घोड़ा।

शूद्रः [शुच्+रक्, पृषो० चस्य द, दीर्घः] चौथे वर्ण का पुरुष, हिन्दुओं के चार मुख्य वर्णों में से अन्तिम वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह 'पुरुष या ब्रह्मा' के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्भ्यां शूद्रो अजायत ऋक्० १०।९०।१२, मनु० १।८७, उसका मुख्य कर्तव्य तीनों उच्चवर्णों की सेवा करना है- तु० मनु० १।९१)। सम०—आह्निकम् शूद्र का दैनिक अनुष्ठान,—उदकम् शूद्र के स्पर्श से दूषित जल, —कृत्यम्,—धर्मः शूद्र का कर्तव्य,—प्रियः प्याज,—प्रेष्यः तीनों उच्चवर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो शूद्र का सेवक हो —भूयिष्ठ (वि०) जहाँ अधिकांश शूद्र रहते हों,—याजकः जो शूद्र के लिए यज्ञ का सम्पादन करता है,—वर्गः शूद्रश्रेणी या सेवकवर्ग,—सेवनम् शूद्र की सेवा करना, शूद्र का सेवक बनना।

शूद्रकः [शूद्र+कन्] एक राजा, मृच्छकटिक का प्रख्यात प्रणेता।

शूद्रा [शूद्र + टाप्] शूद्र वर्ण की स्त्री। सम०—भार्यः जिसकी पत्नी शूद्रवर्ण की हो, -वेदनम् शूद्रस्त्री से विवाह करना,—सुतः (किसी भी जाति के पिता द्वारा) शूद्र माता का पुत्र।

शूद्राणी, शूद्री [शूद्र + ङीप् पक्षे आनुक्] शूद्र की पत्नी।

शून (भू० क० कृ०) [श्वि + क्त] 1 सूजा हुआ 2 वर्धित उगा हुआ, समृद्ध।

शूना [श्वि अधिकरणे क्त, सम्प्र० दीर्घश्च] 1 मृदु तालु, घंटी, उपजिह्विका 2 बूचड़खाना 3 कोई भी वस्तु (जैसे कि घर गृहस्थी का कुछ सामान) जिससे जीव हिंसा होती हो (यह गिनती में पांच हैं—चूल्हा, चक्की बुहारी, ओखली और जलपात्र)—पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः। कण्डनी चोदकुम्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन् —मनु० ३।६८।

शून्य (वि०) [शूनायै प्राणिवधाय हितं तद्भवस्थानत्वात् यत्] 1 रिक्त, खाली 2. सूना (हृदय, तथा चितवन आदि के लिए भी प्रयुक्त) गमनमलसं शून्या दृष्टिः मा० १।१७ दे० नी० शून्यहृदय 3 अविद्यमान 4 एकान्त, निर्जन, विविक्त, वीरान—शून्येषु शूरा न के काव्य० ७, भट्टि० ५।९, उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 5 खिन्न, उदास, उत्साहहीन शून्या जगाम भवनाभिमुखी कथंचित् —कु० ३।७५, कि० १७।३९ 6 नितान्त रहित, वञ्चित, विहीन, अभावयुक्त (करण० के साथ या समास में) अंगुलीयकशून्या मे अङ्गुलिः श० ५, दया° ज्ञान° आदि 7 तटस्थ 8 निर्दोष 9 अर्थहीन, निरर्थक शि० ११।४ 10. निर्वस्त्र, नंगा,—न्यम् 1 निर्वात्तता, रिक्त, खोखलापन 2 आकाश, अन्तरिक्ष 3 सिफर, बिन्दु 4. अस्तित्वहीनता (पूर्ण, असीम) अविद्यमानता—शून्य शून्य मिवेदम् मै० १।२१। सम०—मध्यः खोखला नरकुल,—मनस्—मनस्क (वि०) अन्यमनस्क, अन्यचेता —मूल, -वदन (वि०) हक्का-बक्का, उदास किंकर्तव्य विमूढ़, —वादः वह दार्शनिक सिद्धान्त जो (जीव ईश्वर आदि) किसी भी पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करता, बौद्ध दर्शन, —वादिन् (पुं०) 1 नास्तिक 2 बौद्ध, —हृदय (वि०) 1 अन्यमनस्क विक्रम० २, श० ४ 2. खुले दिल वाला, जो दूसरों पर किसी प्रकार का संदेह न करे।

शून्या [शून्य + टाप्] 1 खोखला नरकुल 2 बांझ स्त्री।

शूर् (चुरा० उभ० शूरयति-ते) 1 वीरता के कार्य करना, आक्रमणकारी होना 2 प्रबल उद्योग करना।

शूर (वि०) [शूर् + अच्] बहादुर, वीर, पराक्रमी, साहसी—शूरेषु शूरा न के काव्य० ७, —रः 1 सूरमा, योद्धा, पराक्रमी 2 सिंह 3 सूअर 4 सूर्य 5 साल का पेड़ 6 कृष्ण का दादा, एक यादव। सम०—कीटः तिरस्करणीय योद्धा, महावीर० ६।३२,—मानम् अभिमान, अहंकार, —सेन (पुं० ब० व०) मथुरा के निकट एक देश या उस देश के अधिवासी रघु० ६।४५।

शूरणः [शूर् + ल्युट्] सूरन नामक एक खाद्यमूल, कंद।

शूरंमन्य (वि०) [आत्मानं शूरं मन्यते—शूर + मन् + खश्, मुम्] जो व्यक्ति अपने आपको पराक्रमी समझता है।

शूर्पः, —र्पम् [शू + प ऊत्वं नित्] छाज,—र्पः दो द्रोण का तोल। सम०—कर्णः हाथी,—नखा, —खी (नखा के स्थान पर, जिसके नख छाज जैसे लंबे चौड़े हों, रावण की बहन का नाम (वह राम के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उनसे विवाह करने की प्रार्थना करने लगी। परन्तु राम ने कहा कि मेरे साथ तो मेरी पत्नी है, अच्छा हो कि तुम लक्ष्मण के पास जाओ। परन्तु जब लक्ष्मण ने भी उसकी प्रार्थना न मानी तो वह वापिस राम के पास आई। इस बात पर सीता को हंसी आ गई। फलतः शूर्पणखा ने अपने आपको अत्यधिक अपमानित समझकर बदला लेने की इच्छा से भीषण रूप धारण किया और सीता को खाने के लिए दौड़ी। परन्तु उसी समय लक्ष्मण ने उसके कान और नाक काट ली और उसका रूप बिगाड़ दिया—रघु० १२।३२ ४०),—वातः छाज को हिलाने से उत्पन्न हवा —श्रुतिः, हाथी।

शूर्पी [शूर्प + ङीष्] 1 छोटा छाज या पंखा 2. शूर्पणखा।

शूर्मिः, —र्मी (पुं०, स्त्री०) शूर्मिका, शूर्मी [शूरं ऊर्मिः अस्ति अस्याः, पक्षे अच्, शूर्मि + कन् + टाप्, शूर्मि ङीप्] 1 लोहे की बनी प्रतिमा 2. घन, निहाई।

शूल् (भ्वा० पर० शूलति) 1 बीमार होना 2. कोलाहल करना 3 गड़बड़ करना, बिगाड़ना।

शूलः,—लम् [शूल् + क] 1 पैना या नोकदार हथियार, नुकीला कांटा, नेजा, बर्छी, भाला 2 शिव का त्रिशूल 3 लोहे की सलाख (जिस पर मांस भूना जाता है) शूले संस्कृतं शूल्यम्—तु० शूल 4 एक स्थूण जिसके सहारे अपराधियों को सूली दी जाती थी—(बिभर्त्) स्कन्धेन शूलं हृदयेन शोकम् मृच्छ० १०।२१, कु० ५।७३ 5. तीव्र पीड़ा 6 उदरशूल 7 गठिया, जोड़ों में दर्द 8 मृत्यु 9 झण्डा, ध्वज (शूलाकृ लोहे की सलाख पर रख कर भूनना)। सम०—अग्रम् सलाख की नोक, —अस्थिः (स्त्री०) एक प्रकार का साग, —घ्न, —धातनम् लोहे का बुरादा, लोहे का चूरा जो लोहे को रेतने से निकलता है, —घ्न (वि०) शामक औषधि, वेदनाहर, —धन्वन्, —धर, —धारिन्,—भृत्, —पाणि, —भृत् (पुं०) शिव के विशेषण—अविस्मय-शूलपाणेरभिख्याम्—शि० ४।६५, रघु० २।३८, —शत्रुः एरण्ड का पौधा, —स्थ (वि०) शूली-

पर चढ़ाया गया, —हस्ती एक प्रकार का जौ, —हस्त भालाधारी।

शूलकः [शूल+कन्] अड़ियल घोड़ा।

शूला [शूल+टाप्] 1 अपराधियों को सूली देने की थूणा 2 वेश्या।

शूलाकृतम् [शूल+डाच्+कृ+क्त] भुना हुआ मांस।

शूलिक (वि०) [शूल+ठन्] 1 शूलधारी 2 सलाख पर भुना हुआ —कः खरगोश —कम् भुना हुआ मांस।

शूलिन् (वि०) [शूलमस्त्यस्य इनि] 1 बर्छीधारी —चुकोप लवणः शूली —रघु० १५।५ 2 उदरशूल से पीड़ित (पुं०) 1 बर्छीधारी 2 खरगोश 3 शिव —कुर्वन् सन्ध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम् —मेघ० ३६, कु० ३।५७।

शूलिनः [शूल+इनन्] बरगद का पेड़।

शूल्य (वि०) [शूल+यत्] 1 सलाख पर भुना हुआ म० ३ 2 सूली पाने के योग्य —ल्यम् भुना हुआ मांस।

शूष् (भ्वा० पर० शूषति) 1 पैदा करना, उत्पन्न करना 2 जन्म देना।

शृकालः [=शृगाल] गीदड़ दे० शृगाल।

शृगालः [असृजं लाति—ला+क, पृषो०] 1 गीदड़ 2 ठग धूर्त उचक्का 3 भीरु 4 दुष्ट प्रकृति कटुभाषी 5 कृष्ण। सम० —केलिः एक प्रकार का बेर —जम्बुः, —जम्बूः (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी, खीरा —योनिः गीदड़ की योनि में जन्म लेना —रूपः शिव का विशेषण।

शृगालिका, शृगाली [शृगाल+ङीष्, पक्षे कन्+टाप् ह्रस्वः] 1 गीदड़ी 2 लोमड़ी 3 पलायन प्रत्यावर्तन।

शृङ्खलः,—ला,—लम् [शृङ्खलात् गात्रात् खलति अनेन पृषो०] 1 लोहे की जंजीर, बेड़ी 2 जंजीर हथकड़ी (आलं० भी) —भट्टि० ९।९०, लीलाकटाक्ष मालाशृङ्खलाभिः भर्तृ०, संसारवासनाबद्धशृङ्खलाम् गीत० ३ 3 हाथी के पैरों को बांधने की जंजीर —स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते —रघु० ५।७२, कि० ७।११ 4 कमर की पेटी करधनी 5 नापने की जंजीर 6 जंजीर, श्रेणी, परम्परा। सम० —यमकम् यमक अलङ्कार का एक भेद दे० कि० १५।१६।

शृङ्खलकः [शृङ्खल+कन्] 1 जंजीर 2 ऊँट।

शृङ्खलित (वि०) [शृङ्खला+इतच्] जंजीर में जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ, बंधा हुआ।

शृङ्गम् [शृ+गन्, पृषो० मुम् ह्रस्वश्च] 1 सींग —मध्ये रिवाणां महिषैस्तदम्भः शृङ्गाहतं क्रोशति दीर्घिकाणाम् —रघु० १६।१३, गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्— श० २।६ 2 पहाड़ की चोटी —अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किं स्विदित्युन्मुखीभिः —मेघ० १४, ५२, कि० १४।४२, रघु० १३।२६ 3 भवन की चोटी बुर्जी 4 उत्तुंगता ऊँचाई 5 प्रभुता, स्वामित्व सर्वोपरिता प्रमुखता —शृङ्गं स दृप्तविनयाधिकृतः परेषामत्युच्छ्रितं न ममृषे न तु दीर्घमायुः —रघु० ९।६२, (यहाँ शब्द का अर्थ सींग भी है) 6 चन्द्रचूड़ा, चांद की नोक 7 चोटी नोक अग्रभाग 8 (भैंस आदि का) सींग जो फूंक मार कर बजाया जाता है 9 पिचकारी —वर्णोदकैः काञ्चनशृङ्गमुक्तैः —रघु० १६।७० 10 कामोद्रेक अभिलाषा 11 निशान चिह्न 12 कमल। सम० —अन्तरम् (गौ आदि पशुओं के) सींगों का मध्यवर्ती स्थान —उच्छ्रायः ऊँची चोटी —जः बाण (—जम्) अगर की लकड़ी, —प्रहारिन् (वि०) सींग से मारने वाला —प्रियः शिव का विशेषण —मोहिन् (पुं०) चंपक वृक्ष —वेरम् 1 वर्तमान मिर्जापुर के निकट गंगा के किनारे बसा हुआ एक नगर उत्तर० १।२१ 2 अदरक।

शृङ्गकः, —कम् [शृङ्ग+कन्] 1 सींग 2 चन्द्रमा की नोक चन्द्रचूड़ा 3 कोई भी नोकीली वस्तु 4 पिचकारी रत्न० १।

शृङ्गवत् (वि०) [शृङ्ग+मतुप्] चोटीवाला (पुं०) पहाड़।

शृङ्गाटः, शृङ्गाटकः [शृङ्ग प्राधान्यम् अटति —शृङ्ग+अट्+अण्] 1 एक पहाड़ 2 एक पौधा —कम् —कम् चौराहा।

शृङ्गार [शृङ्ग कामोद्रेकम् ऋच्छति —ऋ+अण्] प्रियवासना, कामोन्माद, रतिरस (काव्यरचनाओं में वर्णित आठ या नौ प्रकार के रसों में सबसे पहला रस, यह दो प्रकार का है —संयोग शृंगार और विप्रलम्भ शृंगार) शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति —गीत० १, (इसकी परिभाषा यह है— पुंसः स्त्रियां स्त्रियाः पुंसि संभोगं प्रति या स्पृहा। स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारत्यादिकारकः॥ दे० सा० द० २१० भी) 2 प्रेम प्रणयोन्माद संभोगेच्छा विक्रम० ३।९ 3 शृङ्गारिक समारोह के उपयुक्त वेश, लालित्य वेशभूषा 4 मैथुन संभोग 5 हाथी के शरीर पर बनाए गए सिंदूर के निशान 6 चिह्न, —रम् 1 लौंग 2 सिंदूर 3 अदरक 4 शरीर पर वस्त्रों के लिए सुगन्धित चूर्ण 5 काला अगर। सम० —चेष्टा कामानुरक्ति का संकेत रघु० ६।१२, —भाषितम् प्रेमालाप प्रणयकथा, —भूषणम् सिन्दूर, —योनिः कामदेव का विशेषण —रसः साहित्यशास्त्र में वर्णित शृंगाररस प्रणयरस —विधिः, —वेषः प्रेमालापों के उपयुक्त वेशभूषा (जिसे पहन कर प्रेमी अपने प्रिय से मिलता है) —सहायः प्रेमव्यापार में सहायक व्यक्ति, नर्मसचिव।

शृङ्गारक [शृङ्गार + कन्] [illegible] सिंदूर।

शृङ्गारित (वि०) [शृङ्गार + इतच्] 1 प्रेमाविष्ट [illegible] 2 सिंदूर से लाल 3 अलंकृत, सजा हुआ।

शृङ्गारिन् (वि०) [शृङ्गार + इनि] शृङ्गारप्रिय, [illegible] प्रणयोन्मत्त (पुं०) 1 प्रणयोन्मत्त प्रेमी 2 लाल 3 हाथी 4 वेशभूषा, सजावट 5 सुपारी [illegible] 6 पान का [illegible]।

शृङ्गिन् [शृङ्ग + इनि] [illegible]

शृङ्गिकनक् [illegible] एक प्रकार [illegible]

शृङ्गिण [शृङ्ग + इनच्] [illegible]

शृङ्गिणी [illegible] 1 [illegible] 2 एक प्रकार [illegible]।

शृङ्गिन् (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible]।

शृङ्गी [illegible]

शृङ्गि [illegible]

शृत [illegible] 2 [illegible] हुआ [illegible]।

[illegible]

शेखर [illegible] 1 [illegible]

[illegible] विप्रलोप [illegible] पुष्पपुरी नाम नगरी [illegible] 2 किरीट, मुकुट 3 चोटी, चूड़ा 4 (समास के अन्त में प्रयुक्त) किसी श्रेणी का सर्वोत्तम या प्रमुख [illegible] 5 [illegible] का [illegible] विशेष [illegible]।

शेफ [illegible] (नपुं०) [illegible], **शेफस्** (नपुं०) [illegible] 1 लिङ्ग, पुरुष की जननेन्द्रिय 2 अण्डकोष 3 [illegible]।

शेफालि [illegible] **शेफालिका** (स्त्री०) [illegible]

शेमुषी [illegible]

शेष [illegible] 2 [illegible]।

शेष [illegible] 2 [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

शेवाल [illegible]

शेवधि [illegible]

शैक्षिक [illegible]

[illegible] 2 [illegible] 4 एक विख्यात [illegible] का नाम जिसके [illegible] एक हजार फणों का होना कहा जाता है [illegible] का वर्णन [illegible]

शय्या के रूप में, या समस्त संसार को अपने सिर पर सम्भाले हुए मिलता है कि शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत् – मुद्रा० २।१८, कु० ३।१३, ६।६८ मेघ० ११० रघु० १०।१३ 5 बलराम (जो शेष का अवतार माना जाता है) 6 फूल तथा अन्य चढ़ावा जो मूर्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है) और उसके पुण्य अवशेष के रूप में पूजा करने वालों में बाँट दिया जाता है – श० ३ कु० ३।२२ 7 उच्छिष्ट अन्न चढ़ावे का अवशेष (शेषे क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ है 1 अन्त में, आखिरकार 2 अन्य विषयों में)। सम० – अवस्था बुढ़ापा, – भागः शेष, बाक़ी – भोजनम् जूठन खाना – रात्रि: रात का चौथा पहर – शयन, – शायिन् (पुं०) विष्णु के विशेषण।

शैक्ष: [शिक्षा वेत्त्यधीते अण् वा] 1 शिक्षा अर्थात् उच्चारण शास्त्र को पढ़ने वाला विद्यार्थी जिसने वेदाध्ययन अभी अभी आरम्भ किया है 2 नौसिखिया, नव-शिष्य।

शैक्षिक: [शिक्षा + ठक्] शिक्षाशास्त्र में निष्णात।

शैक्ष्यम् [शिक्षा + यत्] अभिज्ञ प्रवीणता।

शैघ्र्यम् [शीघ्र + ष्यञ्] फुर्ती, मत्वरता।

शैत्यम् [शीत + ष्यञ्] ठंडक, शीतलता, अभाव शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य – रघु० ५।५४, कु० १।३४।

शैथिल्यम् [शिथिल + ष्यञ्] 1 ढीलापन नरमी 2 मन्दगता 3 दीर्घसूत्रता, अनवधानता 4 कमज़ोरी, भीरुता।

शैनेय: [शिनि + ढक्] सात्यकि का नाम।

शैब्या: (पुं०, ब० व०) [शिबि + यञ्] शिबि की सन्तान, शिबि के वंशज।

शैब्य दे० 'शैव्य'।

शैल: [शिला + अण्] 1 पर्वत, पहाड़ शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे चाण० ५५ शैलसी मलयदर्दुरौ – रघु० ४।५१ 2 चट्टान, बड़ा भारी पत्थर, – लम् 1 सुहागा धूप, गुग्गुल 2 शिलाजीत 3 एक प्रकार का अंजन। सम० – अंग एक देश का नाम, – अग्रम् पहाड़ की चोटी – अट 1 पहाड़ी जंगली 2 किसी देवमूर्ति का पुजारी 3 सिंह 4 स्फटिक, – अधिप:, – अधिराज:, – इन्द्र:, – पति:, – राज: हिमालय पर्वत के विशेषण, – आख्यम् शैलेय-गन्ध द्रव्य, धूप, – कटक: पहाड़ की ढलान, – गन्धम् एक प्रकार का चन्दन, – जम् 1 शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप 2. शिलाजीत, – जा, – तनया, – पुत्री, – सुता पार्वती के विशेषण – अनाप्त प्रागल्भ्य परिग्रहेण शैलतनये – काव्य० १०, कु० ३।६८ – धन्वन् (पुं०) शिव का विशेषण – धर: कृष्ण का विशेषण, – निर्यास: शैलेयगन्धद्रव्य, धूप, – पत्र: बेल का पेड़, – भित्ति: (स्त्री०) पत्थर काटने का उपकरण, टाकी – रन्ध्रम् गुफा कन्दरा, – शिविरम् समुद्र, – सार (वि०) पत्थर की तरह मज़बूत चट्टान की तरह दृढ़ कि० १०।१४।

शैलकम् [शैल + कन्] 1 शैलेयगन्ध द्रव्य धूप 2 शिलाजीत।

शैलादि: [शिलादस्यापत्यम्–शिलाद + इञ्] शिव का गण, नन्दी।

शैलालिन् (पुं०) [शिलालिना मुनिना प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते शिलालि + णिनि] अभिनेता नर्तक।

शैलिक्य: [शलिन शीलमस्यास्य–ठन् शालिक + ष्यञ्] पाखण्डी दम्भी ठग।

शैली [शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि यलोप:] 1 व्याकरण सूत्र की संक्षिप्त वृत्ति 2 अभिव्यक्ति या अलंकरण का एक प्रकार प्रायेणाचार्याणामियं शैली यत्स्वाभि-प्रायमपि परोपदेशमिव वर्णयन्ति मनु० १।४ पर कुल्लू० 3 व्यवहार काम करने का ढंग आचरण क्रम।

शैलूष: [शिलूषस्यापत्यम्–शिलूष + अण्] 1 अभिनेता नर्तक वा शैलूषापसद– वेणी० १, एते पुरुषा सर्व-मेव शैलूषजनं व्याहरन्ति– मदेव अवाप्य शैलूष इवैष भूमिकाम् शि० १।६९ 2 वादित्र-कुशल – वैण्डवादों का नायक संगीत मण्डली का प्रधान 3 संगीत सभा में तालधारक 4 धूर्त 5 बेल का पेड़।

शैलूषिक: [शैलूष तद्वृत्तिम् अन्वेष्टा–ठक्] जो अभिनेता का व्यवसाय करता हो।

शैलेय (वि०) (स्त्री० यी) [शिलायां भव:, शिला + ढक्] 1 पहाड़ी 2 चट्टानों से उत्पन्न 3 पत्थर की तरह कड़ा पथरीला, – य: 1 सिंह 2 भ्रमर, – यम् 1 पर्वत गन्धद्रव्य धूप शैलेयगन्धीनि शिलातलानि रघु० ६।५१ कु० १।५५ 2 सुगन्धित गोंद 3 सेंधा नमक।

शैल्य (वि०) (स्त्री०–ल्या) [शिला + ष्यञ्] पथरीला – ल्यम् चट्टान जैसी कठोरता कड़ापन।

शैव (वि०) (स्त्री० वी) [शिवो देवताऽस्य अण्] शिवसंबंधी – व: 1 हिन्दुओं के तीन मुख्य सम्प्रदायों में से एक 2 शैव सम्प्रदाय का पुरुष, – वम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम।

शैवल: [शी + वलच्] एक प्रकार का जलीय पौधा, पद्म-काष्ठ सेवार काई, शोभा–सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम् श० १।२०, – लम् एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी।

शैवलिनी [शैवल + इनि + ङीप्] नदी।

शैवाल दे० 'शैवल'।

शैब्य [शिबि + ष्यञ्] 1 कृष्ण के चार घोड़ों में से एक 2 पांडव सेना का एक योद्धा, एक राजा का नाम 3 घोड़ा।

शैशवम् [शिशोर्भावः अण्] बचपन, बाल्यावस्था (सोलह वर्ष से नीचे का समय) शैशवात्प्रभृति पोषितां प्रियाम् उत्तर० १।४५ शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्—रघु० १।८।

शैशिर (वि०) (स्त्री० री) [शिशिर + अण्] जाड़े के मौसम से संबन्ध रखने वाला —रः काले रंग का चातकपक्षी।

शैष्योपाध्यायिका [शिष्योपाध्याय + वुञ्] 'अध्यापक' [illegible] के छात्रों को पढ़ाना।

शो (दिवा० पर० श्यति, शात या शित, कर्मवा० शायते, प्रेर० [illegible], इच्छा० शिशासति) 1 पैनाना, तेज करना 2 पतला करना, कृश करना, [illegible] नष्ट करना।

शोक [शुच् + घञ्] अफसोस, रंज, दुःख, कष्ट, विलाप, क्रन्दन, वेदना [illegible] रघु० १४।७० मेघ० ११६। सम० —अग्निः, —अनलः शोक रूपी आग, —अपनोदः रंज को दूर करना, —अभिभूत, —आकुल, —आविष्ट, —उपहत, —विह्वल (वि०) कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त, —चर्चा शोक में लीन, [illegible] —परायण, —लालस (वि०) शोक से ग्रस्त, पीड़ाभिभूत —विकल (वि०) शोकाकुल —स्थानम् शोक का कारण।

शोचनम् [शुच् + ल्युट्] रंज, अफसोस, विलाप।

शोचनीय (वि०) [शुच् + अनीयर्] विलाप करने योग्य, चिन्त्य, शोच्य, दुःखद।

शोच्य (वि०) [शुच् + ण्यत्] 1 शोचनीय, विलाप करने योग्य, चिन्तनीय, दयनीय [illegible] ११० 2 कमीना, दुश्चरित्र।

शोचिस् (नपुं०) [शुच् + इसि] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक 2 ज्वाला। सम० —केशः (शोचिष्केशः) अग्नि का विशेषण।

शौटीर्यम् [शुटीर + ष्यञ्, 'शौटीर्यम्' इति साधु] पराक्रम, शौर्य, शूरवीरता।

शोठ (वि०) [शुठ् + अच्] 1 मूर्ख 2 कमीना, अधम 3 आलसी, सुस्त, —ठः 1 मूर्ख 2 निकम्मा आलसी 3 अधम या कमीना पुरुष 4 धूर्त ठग।

शोण् (भ्वा० पर० शोणति) 1 जाना 2 हिलना जुलना 2 लाल होना।

शोण (वि०) (स्त्री० णा, णी) [शोण् + अच्] 1 लाल, गहरा लाल रंग हुआ लालका रंग —[illegible] कपोलस्य देवि [illegible] वेणी० १।२१ मुद्रा० १।८, कु० १।७ 2 लाल के रंग का, लालिमायुक्त भूरा —णः 1 लोहित वर्ण, लाल रंग 2 आग 3 एक प्रकार का लाल रंग का गन्ना, ईख 4 कुम्मैत घोड़ा 5 एक दरिया का नाम जो गोंडवाना से निकलकर पटना के निकट गंगा में गिरती है —प्रत्यग्रहीत पार्थिववाहिनीं तां भागीरथीं शोण इवोत्तरङ्गः —रघु० ७।३६ 6 मंगलग्रह, —णम् 1 रुधिर 2 सिंदूर। सम० —अम्बुः एक प्रकार का बादल जो प्रलय के समय उठता है, —अश्मन् (पुं०) —उपलः 1 लाल पत्थर 2 लाल एक माणिक्य, —पद्मम् लाल रंग का कमल —रत्नम् लाल नामक [illegible] पद्मरागमणि।

शोणित (वि०) [शोण + इतच्] 1 लाल लोहित, रक्त वर्ण का —तम् 1 रुधिर उपस्थिता शोणितपारणा मे—रघु० २।३९ वेणी० १।२१ मुद्रा० १।८ 2 केसर, जाफरान। सम०—आह्वयम् केसर, जाफरान, —उक्षित (वि०) रक्तरंजित, —उपलः पद्मरागमणि —चन्दनम् लाल चंदन —प (वि०) रुधिर पीने वाला —पुरम् बाणासुर का नगर।

शोणिमन् (पुं०) [शोण + इमनिच्] लालिमा, लाली।

शोथ [शु + थन्] सूजन, स्फीति। सम० —घ्न, —जित् (वि०) सूजन को दूर करने वाला, सूजन या स्फीति को हटाने वाली औषधि —जिह्वा पुनर्नवा रोगः हाथ पाँव आदि में सूजन होने का रोग, जलोदर —हृत् (वि०) सूजन हटाने वाली दवा (पुं०) भिलावां।

शोध [शुध् + घञ्] 1 परिष्कार 2 संशोधन, समाधान 3 ऋणभुगतान [illegible] परितोष [illegible] प्रतिहिंसा प्रतिदान, बदला।

शोधक (वि०) (स्त्री०—का, धिका) [शुध् + णिच् + ण्वुल्] 1 शुद्ध करने वाला 2 रेचक 3 संशोधन करने वाला।

शोधन (वि०) (स्त्री—नी) [शुध् + णिच् + ल्युट्] शुद्ध करने वाला, स्वच्छ करने वाला —नम् 1 शुद्ध करना, स्वच्छ करना 2 संशोधन, (ऋण) परिशोधन करना 3 यथार्थ निर्धारण 4 अदायगी देयाकी ऋण चुकाना 5 प्रायश्चित्त परिशोधन 6 धातुओं को साफ करना 7 प्रतिहिंसा प्रतिदान दण्ड 8 (गणि० में) व्यवकलन 9 तूतिया 10 मल विष्ठा।

शोधनकः [शोधन + कन्] दंड-न्यायालय का एक अधिकारी, मुख्यतः फौजदारी अदालत का अफसर।

शोधनी [शोधन + ङीप्] झाड़ू बुहारी।

शोधित (भू० क० कृ०) [शुध् + णिच् + क्त] 1 शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2 संस्कृत 3 क्षमा हुआ 4 संशोधित समाहित 5 ऋण परिशोध किया हुआ चुकाया हुआ 6 बदला लिया हुआ, प्रतिहिंसा की हुई।

शोध्य (वि०) [शुध् + णिच् + यत्] शुद्ध किये जाने के

योग्य, संस्कृत किये जाने के योग्य, शुद्ध परिशोध किये जाने के योग्य, —ध्यः अभियुक्तव्यक्ति, वह पुरुष जिसने लगाये हुए आरोप से अपने आप को मुक्त करना है।

शोफः [शु+फन्] सूजन, अर्बुद, रसौली, शोथ। सम० —जित्, —हृत् (पुं०) भिलावे का पौधा।

शोभन (वि०) (स्त्री०—नी) [शोभते—शुभ्+ल्युट्] 1 चमकीला, शानदार 2 मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय 3 भद्र, शुभ, सौभाग्य शाली 4 खूब सजाया हुआ 5. सदाचारी पुण्यात्मा, —नः 1 शिव 2 ग्रह 3 अच्छे परिणामों की प्राप्ति के लिए यज्ञाग्नि में दी गई आहुति,—ना 1 हल्दी 2 सुन्दर या रानी स्त्री कु० ४।४४ 3 एक प्रकार का पीला रंग गोरोचना,—नम् 1 सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति 2 कमल।

शोभा [शुभ्+अ+टाप्] 1 प्रकाश कान्ति दीप्ति चमक 2. (क) वैभव, सौन्दर्य, लालित्य आभा, लावण्य —वपुरभिनवमस्याः पुष्यति स्वां न शोभाम्– श० १।१९, मेघ० ५२,५९ (ख) नैसर्गिक सौन्दर्य (पर्वत आदि की) गरिमा,—अद्रिशोभा रघु० २।२९ 3 अलंकार ललित अभिव्यक्ति शोभैव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताम्भोधि वर्णना शि० २।१०७ 4 हल्दी 5 एक प्रकार का रंग, गोरोचना। सम० —अञ्जनः एक वृक्ष का नाम, उपयोगी वृक्ष, सौहजना।

शोभित (भू० क० कृ०) [शुभ्+णिच्+क्त] 1 अलंकृत, चारु, सजाया हुआ 2 सुन्दर, प्रिय।

शोषः [शुष्+घञ्] 1 सूखना, सुखाना हृदयशोषविक्लवाम् —कु० ४।३९ इसी प्रकार आस्यशोष, कण्ठशोष 2, कृशता, कुम्हलाना —शरीरशोष, कुसुमशोष आदि 3 फुफ्फुसीय क्षय, या क्षयरोग सर्वधातुशोषणाद् रसादीनां शोष इत्यभिधीयते सुश्रु०। सम०—संभवम् पिप्पला-मूल।

शोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप् च] 1 सूखना, शुष्क करना 2 सुखाना, कृश करना, —णः कामदेव का एक बाण, —णम् 1 सूखना, शुष्क होना 2 चूसना, रसाकर्षण, अवशोषण 3 निःशोषण, क्लान्ति 4 कृशता, कुम्हलाहट 5 सोंठ।

शोषित (भू० क० कृ०) [शुष्+णिच्+क्त] 1 सुखाया गया 2 कृश हुआ, कुम्हलाया हुआ 3 परिश्रान्त।

शोषिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+णिच्+णिनि] सुखाने वाला, कुम्हलाता हुआ, क्षीण होने वाला।

शौकम् [शुक+अण्] तोतों की डार, तोतों का झुण्ड।

शौक्त (वि०) (स्त्री०—क्ती) [शुक्ति+अण्] अम्ल, सिरके का।

शौक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [शुक्ति+ठक्] 1 मोती से सम्बन्ध रखने वाला 2 खट्टा, सिरके का, तेजाबी।

शौक्तिकेयम्, शौक्तेयम् [शुक्तिका+ढक्, शुक्ति+ढक्] मोती।

शौक्तिकेय [शुक्तिका+ढक्] एक प्रकार का विष।

शौक्ल्यम् [शुक्ल+ष्यञ्] श्वेतता, सफेदी, स्वच्छता।

शौचम् [शुचेर्भावः अण्] 1 पवित्रता, स्वच्छता —मनु० ११।१४५ 2 मलत्याग के कारण दूषित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण विशेषतः किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु होने पर (लोक व्यवहार के अनुसार निश्चित समय पर और कर्म आदि करने के) शुद्ध होना 3 स्वच्छ होना निर्मल होना 4 मलत्याग करना 5 खरापन ईमानदारी। सम० आचारः —कर्मन् (नपुं०) —कल्पः शुद्धि विषयक संस्कार —कूपः संडास शौचालय।

शौचेय [शुचि+ढक्] धोबी।

शौट (भ्वा० पर० शौटति) घमण्डी या अहंकारी होना।

शौटीर (वि०) [शौट+ईरन्] घमण्डी अहंकारी —रः 1 शूरवीर मल्ल योद्धा 2 घमण्डी मनुष्य 3 संन्यासी।

शौटीर्यम्, शौण्डीर्यम् [शौटीर (शौण्डीर)+ष्यञ्] घमण्ड अभिमान दर्प।

शौडृ (भ्वा० पर० शौडति) दे० 'शौट्'।

शौण्ड (वि०) (स्त्री०—डी) [शुण्डायां सुरापाने अभिरतः अण्] 1 शराबी शराब पीने का शौकीन मद्यप 2 उत्तेजित, मतवाला मद में चूर (आल०) अ निकृतिनिपुण न चकित मान्यशौण्ड वेणी० ५।०१ अभिमान में चूर घमण्डी 5 कुशल दक्ष (अधि० के साथ या समास में) अक्षशौण्ड दानशौण्ड आदि।

शौण्डिकः, शौण्डिकम् (पुं०) [शुण्डा सुरा पण्यमस्य ठक् इनि वा] शराब खींचने वाला कलाल, शराब बिकना सुराजीवी —की,—नी कलाली, शराब विक्रेत्री पयोऽपि शौण्डिकीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते हि० ३।११।

शौण्डिकेयः [शुण्डिका+ढक्] राक्षस।

शौण्डी [शुण्डा करिकरः तदाकारः अस्ति अस्याः शुण्डा+अण्+ङीप्] गजपिप्पली, बड़ी पीपल।

शौण्डीर (वि०) [शुण्डा गर्वोऽस्ति अस्य शुण्डा+ईरन्+अण्] 1 घमण्डी, अभिमानी 2 उत्तुङ्ग, उन्नत।

शौद्धोदनि [शुद्धोदन+इञ्] बुद्ध का विशेषण, शुद्धोदन का पुत्र।

शौद्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [शूद्र+अण्] शूद्र सम्बन्धी, —द्रः शूद्रा स्त्री का पुत्र जिसका पिता (तीन वर्णों में से) किसी भी वर्ण का हो दे० मनु० ९।१६०।

शौनम् [शूना+अण्] कसाईखाने में रक्खा हुआ माँस।

शौनकः [शुनक+अण्] एक महर्षि, ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य अनेक वैदिक रचनाओं के प्रणेता।

शौनिक [शुना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्] 1 कसाई —स्वपिमि परिवदामि मृत्यवे, शौनिको गृहशकुन्तिकामिव उत्तर० १।४५ 2 बहेलिया, चिड़ीमार 3 शिकार, आखेट।

शौभ [शोभायै हितम् शोभा + अण्] 1 देवता विमान 2 सुपारी का पेड़।

शौभाञ्जन [शोभाञ्जन + अण्] एक वृक्ष का नाम दे० 'शोभाञ्जन'।

शौभिक [शोभ व्याजपूर्ण शिल्पमस्य शोभ + ठक्] 1 मदारी बाजीगर 2 शिकारी [illegible] हृदये [illegible] शौभिकेन [illegible] भामि० ११२१।

शौरसेनी [शूरसेन + अण् + ङीप्] एक प्रकार की प्राकृत बोली [illegible]।

शौरि [शूर + इञ्] 1 कृष्ण या विष्णु 2 बलराम 3 शनिग्रह।

शौर्यम् [शूरस्य भावः ष्यञ्] 1 पराक्रम, शूरता, वीरता —शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम् भर्तृ० २।३९ [illegible] 2 [illegible] शक्ति [illegible] और [illegible] घटनाओं का [illegible] दे० 'आरभटी'

शौल्क, शौल्किक [शुल्क + अण्, ठञ् वा] शुल्कों का अध्यक्ष या अधिकारी।

शौल्विक (शौल्बिक) [शुल्व + ठक्] तांबे के बर्तन बनाने वाला, कसेरा।

शौव (वि०) (स्त्री० —वी) [श्वन् + अण्, टिलोपः] कुत्तों से संबंध रखने वाला, कुक्कुर संबंधी —वम् 1 कुत्तों का झुंड 2 कुत्तों का स्वभाव।

शौव (वि०) आगामी कल संबंधी।

शौवन (वि०) (स्त्री० —नी) [श्वन् + अण्] 1 कुक्कुर संबंधी 2 कुत्ते के गुणों से युक्त —नम् 1 कुत्ते का स्वभाव 2 कुत्ते की संतति।

शौवस्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [श्वस् + ठक्, तुट् च] आगामी कल संबंधी या आगामी कल तक ठहरने वाला, एकदिवसीय, अल्पजीवी।

शौष्कलः [शुष्कल + अण्] 1 मांस विक्रेता 2 मांसभक्षी, —लम् शुष्क मांस का भंडार।

श्चुत् दे० नी० श्च्युत्।

श्च्युत् (भ्वा० पर० श्च्योतति) 1 चूना, रिसना, बहना [illegible] शि० [illegible] कि० [illegible] 2 डालना, उड़ेलना, गिराना, बखेरना [illegible] बहना, रिसना, टपकना —निश्च्योतन्ते सुतनु कबरीबिन्दवो यावदेते मा० [illegible]।

श्च्योत (श्चोत) तः, **श्च्योतनम् (श्चोतनम्)** [श्च्युत् (श्चुत्) + घञ्, ल्युट् वा] रिसना, बहना, अधिक होना, चूना।

श्मशानम् [श्मानः शवाः शेरतेऽत्र —शी + आनच् डिच्च, अथवा श्मन् शब्देन शवः प्रोक्तः तस्य शानं शयनम्] शवस्थान, कब्रिस्तान, शवदाह स्थान, मरघट —राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः —सुभा०। सम० —अग्निः मरघट की आग —आलयः कब्रिस्तान, —गोचर (वि०) मसान में घूमने वाला मनु० १०।३९, —निवासिन्, —वासिन् (पुं०) भूत, प्रेत, —वासिन् (पुं०) शिव के विशेषण —वेश्मन् (पुं०) 1 शिव का विशेषण 2 भूत-प्रेत —वैराग्यम् [illegible] श्मशान भूमि के दर्शन से उत्पन्न अस्थायी संसार त्याग की भावना —शूलः, —लम् श्मशान भूमि में स्थित वृक्ष या लकड़ी की सूली कु० [illegible] —साधनम् भूत प्रेतों को वश में करने के लिए श्मशान में तांत्रिक मन्त्रों की साधना करना।

श्मश्रु (नपुं०) [श्म मुखं श्रयति —श्मन् + श्रि + डु] दाढ़ी मूंछ —ज्योतिष्मवाहुतश्मश्रु कण्ठनालादपातयत् रघु० १५।५२। सम० —प्रवृद्धिः दाढ़ी का बढ़ना रघु० १३।७१ —मुखी दाढ़ीमूंछ वाली स्त्री, मर्दाना नारी।

श्मश्रुल (वि०) [श्मश्रु + लच्] दाढ़ी मूंछ वाला —भल्लापवर्जितैस्तेषां शिरोभिः श्मश्रुलैर्महीम् (तस्तार) रघु० ४।६३।

श्मील् (भ्वा० पर० श्मीलति) आँख झपकना, पलक मारना, आँखें मटकाना।

श्मीलनम् [श्मील् + ल्युट्] आँख मीचना, पलक झपकना।

श्यान (भू० क० कृ०) [श्यै + क्त] 1 गया हुआ 2 जमा हुआ, पिंडीभूत 3 घनीभूत, चिपकना, गाढ़ा 4 सिकुड़ा हुआ, सूखा भर्तृ० २।८४ —नम् धुआँ।

श्याम (वि०) [श्यै + मक्] 1 काला, गहरा नीला, काले रंग का —प्रत्याख्यातविशेषकं कुरबकं श्यामावदातारुणम् —मालवि० ३।५, विक्रम० २।७ कुवलयदलश्यामस्निग्धः उत्तर० ४।१९ मेघ० १५, २३ 2 भूरा, गहरा-भूरा —मः 1 काला रंग 2 बादल 3 कोयल 4 प्रयाग में यमुना के किनारे स्थित बरगद का पेड़ —यत्र [illegible] कालिन्दीतटे वटः श्यामो नाम —उत्तर० १, सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः —रघु० १३।५३, —मम् 1 समुद्री नमक 2 काली मिर्च। सम० —अङ्ग (वि०) काला (—गः) बुध ग्रह, —कण्ठः 1 शिव (नीलकण्ठ) का विशेषण 2 मोर, —कर्णः अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा, —तमालः वृक्ष,

भास्,- रुचि (वि०) चमकीला काला, सुन्दर: कृष्ण का विशेषण।

श्यामल (वि०) [श्याम + लच्, ला + क वा] काला, गहरानीला, सांवला, मिश्रितश्यामलस्निग्धमुखी प्रभिन्नः वेणी० ४, शि० १८।३६, उत्तर० २।२५, -लः 1 काला रंग 2 काली मिर्च 3. भौंरा 4 वटवृक्ष।

श्यामलिका [श्यामल + कन् + टाप्, इत्वम्] नील का पौधा।

श्यामलिमन् (पुं०) [श्यामल + इमनिच्] कालिमा कालापन श्यामा श्यामलिमानमानयत भो सान्द्रैर्मषीकूर्चकैः विद्ध० ३।१।

श्यामा [श्याम + टाप्] रात, विशेषतः काली रात —श्यामा श्यामलिमानमानयत भो सान्द्रैर्मषीकूर्चकैः विद्ध० ३।१ 2 छांह छाया 3 काली स्त्री 4 स्त्री विशेष (मे० ३।८ पर मल्लि० के अनुसार 'यौवनमध्यस्था' शि० ८।३६, मेघ० ८२, या शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे या सुखशीतला। तप्तकाञ्चन वर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कथ्यते भट्टि० ५।१८ तथा ८।१०० पर एक टीकाकार के अनुसार) 5 निस्सन्तान स्त्री 6 गाय 7 हल्दी 8 मादा कोयल 9 प्रियंगुलता —मालवि० २।७, मेघ० १०४ 10 नील का पौधा 11 तुलसी का पौधा 12 कमल का बीज 13 यमुना नदी 14 कई पौधों का नाम।

श्यामाकः [श्याम + अक्, अच्] एक प्रकार का अन्न धान्य सावां चावल—(न) श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति —श० ४।१३, ('श्यामक' भी)।

श्यामिका [श्याम + ठन् भावे] 1 कालिमा श्यामता कु० ५।२१ 2 मलिनता, खोटापन (धातु आदि को का) —हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा —रघु० १।१०।

श्यामित (वि०) [श्याम + इतच्] काला किया हुआ, कृष्ण रंग का किया हुआ कलूटा।

श्यालः [श्यै + कालन्] पत्नी का भाई, साला।

श्यालकः [श्याल + कन्] 1 पत्नी का भाई 2 साला।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली [श्यालक + ङीप् + टाप् इत्वं वा, श्याल + ङीष्] पत्नी की बहन, साली।

श्याव (वि०) (स्त्री० वा,—वी) [श्यै + वन्] कपिश, गहरा भूरे रंग का, काला, धूसर, धुमैला 2 लाख के रंग का, भूरा, —वः भूरा रंग। सम०—तैलः आम का वृक्ष।

श्येत (वि०) (स्त्री०—ता,—नी) [श्यै + इतच्] सफ़ेद, —तः सफ़ेद रंग।

श्येनः [श्यै + इनन्] 1 सफ़ेद रंग 2. सफ़ेदी 3 बाज, शिकरा 4 हिंसा, प्रचण्डता। सम० —करणम्, —करणिका 1 अलग चिता पर दाह करना 2 बाज की भांति झपट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना, —जिन्, —जीविन् (पुं०) बाज को पकड़ कर तथा उसे बेच कर जीवन निर्वाह करने वाला।

श्यै (भ्वा० आ० श्यायते, श्यान, शीत या शीन) 1. जाना, हिलना-जुलना 2 जम जाना 3 सूख जाना, कुम्हलाना, मुर्झाना, सूख जाना रघु० १०।३७, दे० 'आश्यान' भी।

श्यैनंपाता [श्येनस्य पातोऽत्र अण्, मुम् च] बाज की भांति झपटना, शिकार आखेट।

श्योनाकः, श्योणाकः [श्यै + आणा (ना) क] एक वृक्ष का नाम, सोना पाठा।

श्रङ्क् (भ्वा० आ० श्रङ्कते) जाना, रेंगना।

श्रङ्ग् (भ्वा० पर० श्रङ्गति) जाना, हिलना जुलना रेंगना।

श्रण् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० श्रणति, श्राणयति-ते) देना प्रदान करना अर्पण करना (प्रायः वि पूर्वक) रघु० ५।१।

श्रत् (अव्य०) [श्री + क्विप्] एक प्रकार का उपसर्ग जो 'धा' धातु के पूर्व में लगता है, दे० धा के अन्तर्गत।

श्रथ् I (भ्वा० पर०, क्र्या० पर० श्रथति श्रथ्नाति) चोट पहुंचाना क्षति पहुंचाना मार डालना।

II (भ्वा० पर० पर चुरा० उभ० श्रथति श्राथयति-ते) 1 चोट पहुंचाना, मार डालना 2. खोलना, ढीला करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना।

III (चुरा० उभ० श्रथयति-ते) 1. प्रयत्न करना, व्यस्त रहना 2 निर्बल होना कमजोर होना 3 प्रसन्न होना।

श्रथनम् [श्रथ् + ल्युट्] 1 मारना, विनाश करना 2 खोलना, ढीला करना, मुक्त करना 3 प्रयत्न, चेष्टा 4 बांधना बन्धन में डालना।

श्रद्धा [श्रत् + धा + अङ् + टाप्] 1 आस्था, निष्ठा, विश्वास, भरोसा 2 दैवीसन्देशों में विश्वास, धार्मिक निष्ठा —श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् —श० ७।२९, रघु० २।१६, भग० ६।३७, १७।३ 3 शान्ति मन की स्वस्थता 4. घनिष्ठता, परिचय 5 आदर, सम्मान 6 प्रबल या उत्कट इच्छा—तथापि वैचित्र्यरहस्यलुब्धाः श्रद्धां विधास्यन्ति सचेतसोऽत्र विक्रम० १।१३, मालवि० १।१८ 7 दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा।

श्रद्धालु (वि०) [श्रद्धा + आलुच्] 1 विश्वास करने वाला निष्ठावान् 2 इच्छुक, (किसी वस्तु का) अभिलाषी, —लुः (स्त्री०) दोहदवती, गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु की कामना करे।

श्रम् I (भ्वा० आ० श्रम्भते) 1 दुर्बल होना 2. निडर या विश्वस्त होना 3. ढीला करना विश्राम करना।

II (क्र्या० पर० श्रभ्नाति) 1. ढीला करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना 2 खूब प्रसन्न होना।

श्रथः [श्रन्थ् + घञ्] 1 ढीला करना, स्वतन्त्र करना 2 ढीलापन, 3 विष्णु ।

श्रथनम् [श्रथ् + ल्युट्] 1 ढीला करना, खोलना 2 चोट पहुँचाना, मार डालना, विनाश करना 3 बाँधना, बन्धन में डालना ।

श्रपणम्,—णा [श्रा + णिच् + ल्युट्] उबलवाना, गरम करना ।

श्रपित (भू० क० कृ०) [श्रा + णिच् + क्त] गरम किया गया या उबलाया गया, —ता मांड, काञ्जी ।

श्रम् (दिवा० पर० श्राम्यति, श्रान्त) 1 चेष्टा करना, उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना 2 तप श्चर्या करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना —कियच्चिरं श्राम्यसि गौरि कु० ५।५० 3 श्रान्त होना थकना, परिश्रान्त होना रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणी गाढमुरसि काव्य० १०, शि० १४।३८, भट्टि० १४।११० 4 कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना —यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानाम् —मेघ० ९९, प्रेर० (श्र—श्रा-मयति-ते) थकाना, परि—, अत्यन्त थक जाना,—आ० १, वि—, 1 विश्राम करना, आराम करना ठहरना कु० ३।९ 2 थमना, अन्त होना, दे० 'विश्रान्त' भी रघु० ९।५४, उतरवाना, थमाना ।

श्रमः [श्रम् + घञ्, न वृद्धि] 1 मेहनत परिश्रम चेष्टा, प्रयत्न अलं महीपाल तव श्रमेण रघु० २।३४, आनाति हि पुनः सम्यक् कविरेव कवेः श्रमम्—सुभा० —रघु० १६।३५, मनु० ९।२०८ 2 थकावट थकान, परिश्रान्ति, विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।३५, ६७, मेघ० ९७।५२ कि० ५।२८ 3 कष्ट, दुःख 4 तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन,—दिव यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः कु० ५।४५ 5 व्यायाम विशेषतः सैनिक व्यायाम, कवायद 6 घोर अध्ययन । सम० —अम्बु (नपुं०) —जलम् पसीना —कर्षित (वि०) थका-मांदा, —साध्य (वि०) परिश्रम द्वारा सम्पन्न होने योग्य, कष्टसाध्य ।

श्रमण (वि०) (स्त्री० —णा —णी) [श्रम + युच्] 1 परिश्रमी, मेहनती 2 नीच, अधम कमीना,—णः 1 सन्यासी, भक्त, साधु 2. बौद्धभिक्षु —णा, —णी 1 भक्तिनी, भिक्षुणी 2 लावण्यमयी स्त्री 3 नीच जाति की स्त्री 4 बंगाली मजीठ 5 जटामासी, बालछड़ ।

श्रम्भ् (भ्वा० आ० श्रम्भते, श्रब्ध) 1 उपेक्षक होना, असावधान होना, लापरवाह होना 2 गलती करना, वि—, विश्वास करना, भरोसा करना —दे० विश्रब्ध ।

श्रयः, श्रयणम् [श्रि + अच्, ल्युट् वा] शरण पनाह बचाव आश्रय ।

श्रव [श्रु + अप्] 1 सुनना, जैसा कि 'सुश्रव' में 2 कान 3. किसी त्रिकोण का कर्ण ।

श्रवणः,—णम् [श्रु + ल्युट्] 1 कान —व्यजति मधुपे समूहे श्रवणमपि दधाति गीत० ५ 2 किसी त्रिकोण का कर्ण, —णः, —णा इस नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित हैं), —णम् 1 सुनने की क्रिया,—श्रवण-सुभगम् मेघ० ११ 2 अध्ययन 3 ख्याति, कीर्ति 4 जो सुना गया या प्रकट हुआ, वेद, इति श्रवणात् 'वैदिक पाठ ऐसा होने के कारण' 5. दौलत । सम० —इन्द्रियम् श्रोत्रेन्द्रिय, कान,— उदरम् कान का बाह्य-विवर, —गोचर (वि०) श्रवणपरास के अन्तर्गत (रः) सुनाई देने की सीमा तक, यथा 'श्रवणगोचरे तिष्ठ, अर्थात् जहाँ तक सुनाई देता रहे वहीं तक रहो,—पथः, —विषय कान की पहुँच, श्रवण परास वृत्तान्तेन श्रवणविषयप्रापिणा रघु० १४।८३ —पालिः—ली (स्त्री०) कान का सिरा,—सुभग (वि०) कर्ण-सुखद ।

श्रवस् (नपुं०) [श्रु + असि] 1. कान 2. ख्याति कीर्ति, 3 दौलत 4 सूक्त ।

श्रवस्यम् [श्रवस् + यत्] ख्याति, कीर्ति विभूति ।

श्रवाय्य,—य्य [श्रु + आय्य] यज्ञ में बलि दिये जाने के योग्य पशु ।

श्रविष्ठा [श्रव ख्यातिः अस्ति अस्याः श्रव + मतुप्, इष्ठनि मतुपो लुक्] 1 धनिष्ठा नाम का नक्षत्र 2 श्रवणा नाम का नक्षत्र । सम० —जः बुधग्रह ।

श्रा (अदा० पर० श्राति श्राण या शृत, प्रेर० श्रपयति—ते) पकाना, उबालना, भोजन बनाना परिपक्व करना, पकना ।

श्राण (वि०) [श्रा + क्त] 1 पकाया हुआ, भोजन बनाया हुआ उबाला हुआ 2 आर्द्र, गीला, तर ।

श्राणा [श्राण + टाप्] काञ्जी, यवागू ।

श्राद्ध (वि०) [श्रद्धा हेतुत्वेनास्त्यस्य अण्] निष्ठावान्, विश्वास करने वाला —द्धम् 1 मृतक सम्बन्धियों की दिवङ्गत आत्माओं के सम्मान में अनुष्ठेय संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार श्रद्धया दीयते यस्मात्तस्माच्छ्राद्धं निगद्यते, यह तीन प्रकार का है नित्य, नैमित्तिक और काम्य 2 और्ध्वदैहिक आहुति श्राद्ध के अवसर पर उपहार या भेंट । सम० —कर्मन् (नपुं०) —क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार —कृत् (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला —दः अन्त्येष्टि आहुति या श्राद्ध भेंट करने वाला —दिनम्, —दिवसः उस स्वर्गीय सम्बन्धी की बरसी जिसके सम्मान में श्राद्ध किया जाय, —देवः, —देवता 1 अन्त्येष्टि संस्कार की अधिष्ठात्री देवता 2 यम का विशेषण 3 विश्वेदेव दे० 4 पिता, प्रपितामह —भुज्, —भोक्तृ (पुं०) दिवङ्गत, पूर्व पुरुष ।

श्राद्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [श्राद्धेय, श्राद्ध तद्दानम् भक्ष्यत्वेनास्त्यस्य वा ठन्] श्राद्ध सम्बन्धी और्ध्व दैहिक

भेंट को स्वीकार करने वाला, - कम् श्राद्ध के अवसर पर दिया गया उपहार ।

श्राद्धीय (वि०) [श्राद्ध + छ] श्राद्ध सम्बन्धी ।

श्रान्त (भू० क० कृ०) [श्रम् + क्त] 1 थका हुआ, थका-मांदा, क्लान्त, परिश्रान्त 2 शान्त, सौम्य. - तः संन्यासी ।

श्रान्तिः (स्त्री०) [श्रम् + क्तिन्] क्लान्ति, परिश्रान्ति, थकावट ।

श्रामः [श्राम् + अच्] 1 मास 2 समय 3 अस्थायी छाजन ।

श्रायः [श्रि + घञ्] आश्रय, बचाव, शरण, सहारा ।

श्रावः [श्रु + घञ्] सुनना, कान देना ।

श्रावकः [श्रु + ण्वुल्] 1 श्रोता 2. छात्र, शिष्य — श्रावकावस्थायाम् मा० १०, अर्थात् छात्रावस्था में 3 बौद्ध-भिक्षु, बौद्ध सन्त, महात्मा 4. बौद्ध भक्त 5 नास्तिक 6 कौवा ।

श्रावण (वि०) (स्त्री० — णी) [श्रवण + अण्] 1 कान सम्बन्धी 2 श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न, — णः श्रावण का महीना, (जुलाई—अगस्त में आने वाला) 2 नास्तिक 3 छद्मवेशी 4. एक वैश्य संन्यासी जिसको दशरथ ने अन जाने मार डाला, बाद में उसके माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया कि वह अपने पुत्रों के वियोग से दुःखी हृदय होकर मरेगा ।

श्रावणिक (वि०) [श्रावण + ठक्] श्रावण मास सम्बन्धी, — कः श्रावण का महीना ।

श्रावणी [श्रवणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी — श्रवण + अण् + ङीप्] 1. श्रावण मास की पूर्णिमा 2 एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत बदले जायें, सलोनों, रक्षाबन्धन ।

श्रावस्तिः, — स्ती (स्त्री०) गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा स्थापित एक नगर ।

श्रावित (वि०) [श्रु + णिच् + क्त] कहा हुआ, सुनाया गया, वर्णन किया गया ।

श्राव्य (वि०) [श्रु + णिच् + यत्] 1 सुने जाने के योग्य (विप० दृश्य) 2. जो सुना जा सके, स्पष्ट ।

श्रि (भ्वा० उभ० श्रयति — ते, श्रितः, प्रेर० श्राययति — ते, इच्छा० शिश्रीषति — ते, शिश्रयिषति — ते) जाना, पहुँचना, सहारा लेना, दौड़ होना, बचाव के लिए पहुँच होना, — यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम् — हि० १।१।७१, रघु० ३।७०, १९।१ 2. जाना, पहुँचना, भुगतना, (अवस्था) धारण करना पतिता स्थाणोः श्रयति विवशा कामिनि दशाम् भामि० १।८३, द्विरदेन्द्रमार्गं कलभः श्रयमिव — रघु० ३।३२ 3. चिपकना, झुकना, आश्रित होना, निर्भर रहना — उत्तर० १।३२ 4 निवास करना, बसना 5 सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना 6 सेवन करना काम पर लगाना, 7 संलग्न करना, अनुरक्त होना । अधि —, 1 विश्राम करना 2 सवारी करना, चढ़ना, आ —, 1. सहारा लेना, आश्रय लेना, अवलम्ब होना विक्रम० ५।१७, भट्टि० १४।१११ 2 अनुगमन करना रघु० ८।३५ 3 शरण लेना, निवास करना, बसना रघु० १३।७, पंच० १।५१ 4 आश्रित होना, मनु० ३।७७ 5. धार जाना, अनुभव प्राप्त करना भुगतना, धारण करना एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् — उत्तर० ३।४७ 6 ग्रहण करना, सहारा लेना 7 चुनना, छाटना, पसन्द करना 8 सहायता करना, मदद करना, उद् —, ऊपर उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना, उपा — पहुँच या अवलम्ब होना, भग० ९।३२ उत्तर० १।२७, सम् —, 1 पहुँच होना, सहारा होना शरण में जाना, सहायता के लिए पहुँचना 2 अवलम्बित होना, आश्रित होना — उत्तर० ३।१२, मा० ९।२८ 3 हासिल करना प्राप्त करना 4 अभिगमन करना संभोग के लिए पहुँचना 5 सेवा करना ।

श्रित (भू० क० कृ०) [श्रि + क्त] 1 गया हुआ, पहुँचा हुआ, शरण में पहुँचा हुआ 2 चिपका हुआ सहारा लिया हुआ, बैठा हुआ 3 संयुक्त, सम्मिलित, संबद्ध 4 बचाया हुआ 5 सम्मानित, सेवित 6 अनुसेवी, सहकारी 7 आच्छादित, बिछाया हुआ 8 युक्त, पूरित ९. समवेत, एकत्रित 10 सहित, सपत्न ।

श्रितिः (स्त्री०) [श्रि + क्तिन्] अवलम्ब, सहारा, पहुँच ।

श्रियंमन्य (वि०) 1 अपने आप को योग्य मानने वाला 2. घमंडी ।

श्रियापतिः (पु०) शिव का विशेषण ।

श्रिष् (भ्वा० पर० श्रेषति) जलाना ।

श्री (क्र्या० उभ० श्रीणाति, श्रीणीते) पकाना, भोजन बनाना, उबालना, तैयार करना ।

श्री (स्त्री०) [श्रि + क्विप्, नि०] 1 धन, दौलत, प्राचुर्य, समृद्धि, सुखलता अनिर्वेदः श्रियो मूलम् रामा०, साहसे श्रीः प्रतिवसति मृच्छ० ४, 'सौभाग्य वीरों पर अनुग्रह करता है' — मनु० ९।३०० 2. राजसत्ता, ऐश्वर्य, राजकीय धनदौलत — कि० १।१ 3. गौरव महिमा, प्रतिष्ठा — श्रीलक्षण कु० ७।४५, अर्थात् महिमा या गौरव का चिह्न 4. सौन्दर्य, चारुता, लालित्य, कान्ति (मुख) कमलश्रियं दधौ कु० ५।२१, ७।३२, रघु० ३।८, कि० १।३५ 5 रंग, रूप, कु० २।२ 6 विष्णु की पत्नी लक्ष्मी जो धन की देवी है — आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः — उत्तर०

४।६ ग० ३।१८ कि० १।१ 7 गुण ... 8 ... 9 वृद्धि ... 10 ... 11 ... 12 ... 13 ...

... पद ...

... मन्त्र ...

... (पु०) 1 चाँद 2 ... मस्तक ... वैष्णवों का ... तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है,—भूमि (स्त्री०) 1 विष्णु या ... की प्रतिमा 2 कोई भी प्रतिमा ... 2 ... पुरुषों के नामों के पूर्व ... सूचक पद ... विष्णु का ... 1 ... 2 ... 1 ... का विशेषण, विष्णु ... रघु० १०।१०

अङ्क ... भूम, ...

... 2 ... 3 ...

... 1 ... 2 ... 3 ...

श्रीमत्

... 2 ...

... 1 ... 2 ... 3 ...

... 1 ... 2 ...

... मनु० ... मनु० ९।१००

अभि—, 1 ... 2 ... 1 ... 2 ...

उप— 1 ... 2 ...

प्रति ...

लिए प्रतिज्ञा की जाय —तस्यै प्रतिश्रुत्य रघुप्रवीरस्तदीप्सितम् — रघु० १४।२९, २।५६, ३।६७ १५।४, वि ,सुनना (प्राय क्तात रूप प्रयुक्त), सम् सुनना, ध्यान लगा कर सुनना—सम्शृणोति न चोक्तानि - भट्टि० ५।१९, ६।५, (परन्तु अकर्मक प्रयोग में आ०) हिताम्र य सम्शृणुते स किं प्रभु कि० १।५ ।

श्रुत्यिका (स्त्री०) शोरा सज्जी, क्षार ।

श्रुत (भू० क० कृ०) [श्रु + क्त] 1 सुना हुआ, ध्यान लगा कर श्रवण किया हुआ 2 वर्णित कर्णगोचर 3. अधिगत, निर्धारित, समझा गया 4 सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत रघु० ३।४०, १४।६१ 5 नामक, पुकारा हुआ, तम् 1 सुनने का विषय 2 जो दैवी सदेश से सुना गया अर्थात् वेद, पवित्र अधिगम, पुनीत ज्ञान—श्रुतप्रकाशम् रघु० ५।२ 3 सामान्य अधिगम, विद्या, श्रोत्र श्रुतेनैव न कुण्डलेन (विभाति) भर्तृ० २।७१, रघु० ३।२१, ५।२२, पच० २।१४७, ४।६१ । सम० अध्ययनम् वेदो का पढ़ना अन्वित (वि०) वेदो का ज्ञाता अर्थ मौखिक रूप से या जबानी कहा गया तथ्य, कीर्ति (वि०) प्रसिद्ध, विश्रुत (पु०) 1 उदार व्यक्ति 2 दिव्य ऋषि (स्त्री०) शत्रुघ्न की पत्नी, देवी सरस्वती, धर (वि०) सुनी हुई बात को याद रखने वाला, मेधावी ।

श्रुतवत् (वि०) [श्रुत + मतुप्] वेदज्ञाता, वेदवेत्ता वेदज्ञ रघु० ९।७४ ।

श्रुतिः (स्त्री०) [श्रु + क्तिन्] 1 सुनना शब्दस्य ग्रहणमिति श्रुते—मुद्रा० १।७, रघु० १।२७ 2. कान —श्रुतिसुखभ्रमरस्वनगीतय —रघु० ९।३५, श० १।१, वेणी० ३।२३ 3 विवरण, अफवाह, समाचार, मौखिक सवाद । ध्वनि 5 वेद (दिव्य संदेश होने के कारण-विप० स्मृति—दे० वेद के अन्तर्गत) 6. वैदिकपाठ वेदमंत्र, इतिश्रुते या इति श्रुतिः 'ऐसा वेद कहता है' 7 वेदज्ञान, पुनीतज्ञान, पुण्य अधिगम 8. (सगीत में) सप्तक का एक भाग स्वर का चतुर्थांश या अन्तराल —शि० १।१०, ११।१ (दे० मल्लिनाथ की टीका) 9. श्रवण नक्षत्र । सम० अनुप्रासः अनुप्रास का एक भेद—दे० काव्य० ९ उक्त,—उदित (वि०) वेद-विहित,—कट 1 सर्प 2. तपश्चर्या, प्रायश्चित्त साधना, —कटु (वि०) सुनने में कड़वा (दु) कर्णकटु, अमधुर ध्वनि, (यह रचना का एक दोष माना जाता है), चोदनम्,—ना शास्त्रीय विधि, वेदविधि, —जीविका धर्मशास्त्र, विधिसंहिता, द्वैधम् वेदविधियो का परस्पर विरोध या भिन्नता -धर (वि०) सुनने वाला, —विषयीभूत शब्दों का सार्थ वक्ता, कर्ण-पराग मालवि० ४।२ प्रसादन (वि०) कर्णप्रिय —प्रामाण्यम श्रद्धा की प्रामाणिकता या स्वीकृति मण्डलम् कान का बाहरी भाग, मूलम् 1 कान की जड़,—लपितु किमपि श्रुतिमूले गीत० १ 2 वेद का सहितापाठ, —मूलक (वि०) वेद पर आधारित, - विषयः 1 सुनने का विषय, अर्थात् ध्वनि श० १।१ 2 कर्ण परास एतत्प्रायेण श्रुतिविषयमापतितमथ - का० 3 वेद का विषय 4 धार्मिक अध्यादेश वेधः कान बींधना, —स्मृति (स्त्री०) (द्वि० व०) वेद और धर्मशास्त्र ।

श्रुव [श्रु + क] 1 यज्ञ 2 यज्ञीय स्रुवा ।

श्रुवा [श्रुव + टाप्] 1 यज्ञीय चमच तु० स्रुवा । सम० —वृक्ष विकंटक वृक्ष ।

श्रेढी [श्रेण्यै राशीकरणाय ढौकते—श्रेणी + ढौक् + ड, पृषो०] (गणि० में) भिन्न जातीय द्रव्यो को मिलाने के लिए गणनाका भेद । सम० फलम् श्रेढी का योग जोड़ ।

श्रेणि (पु०, स्त्री०) श्रेणी (स्त्री०) [श्रि + णि, वा ङीष्] 1 रेखा, शृखला, पक्ति, तरङ्गभूभङ्गा क्षुभितविहगश्रेणिरशना वेणी० ४।२८, न षट्पदश्रेणिभिरेव पङ्कज सशैवलासङ्गमपि प्रकाशते कु० ५।९, मेघ० २८ ३५ 2 दल, सघ, समूह उत्तर० ४ 3 व्यापारियो का सघ, शिल्पियो का सघटन, निगम 4 बाल्टी बालटी। सम० धर्मा (पु०, ब० व०) व्यापारिवर्ग या शिल्पकार-सघो के नियम, रीतियाँ आदि ।

श्रेणिका [श्रेणि + कन् + टाप्] तम्बू खेमा ।

श्रेयस् (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यम्-ईयसुन्, श्रादेश] 1 अपेक्षाकृत अच्छा श्रेयस् श्रेष्ठतर, वर्धनाद्रक्षण श्रेय —हि० ३।१, मनु० ३।३५, २।५ 2 सर्वोत्तम श्रेष्ठतम 3 अधिक सुखी या सौभाग्यशाली 4 अधिक आनन्ददायक, प्रियतर (पु०) 1 सद्गुण, पुण्यकर्म, नैतिक गुण, धार्मिक गुण 2 आनन्द, सौभाग्य, मगल, शुभ, कल्याण, आशीर्वाद शुभ परिणाम—पूर्वावधीरित श्रेयो दु खं हि परिवर्तते श० ७।१३, प्रतिबध्नाति हि श्रेय पूज्यपूजाव्यतिक्रम रघु० १।७९, उत्तर० ५।२७, ७।२० रघु० ५।३४ 3 शुभ अवसर श० ७ 4 मोक्ष मुक्ति । सम अर्थिन् (वि०) 1 आनन्द का अन्वेषक, आनन्द का इच्छुक 2 हितैषी, —कर 1 आनन्दप्रद अनुकूल 2 मगलमय, शुभ, परिश्रम मुक्ति प्राप्त करने की चेष्टा ।

श्रेष्ठ (वि०) [अतिशयेन प्रशस्य, इष्ठन्, श्रादेश] 1 सर्वोत्तम अत्युत्तम श्रेष्ठ, प्रमुखतम (सम० या अधि० के साथ) 2 अत्यन्त प्रमुख या समृद्ध 3 प्रियतम, अत्यन्त प्रिय, सबसे अधिक पुराना वृद्धतम ष्ठ 1 ब्राह्मण 2 राजा 3 कुबेर का नाम 4 विष्णु का नाम, ष्ठम् गाय का दूध । सम० -आश्रमः 1 मनुष्य के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आश्रम अर्थात् गृहस्थाश्रम 2 गृहस्थ, वाच् (वि०) वाग्मी ।

श्रेष्ठिन् (वि०) [श्रेष्ठ धनादिकमस्त्यस्य इनि] किसी व्यापारसंघ या शिल्पिसंस्थान का प्रधान या अध्यक्ष—निक्षेपे पतिते हर्म्ये श्रेष्ठी स्तौति स्वदेवताम्—पंच० १।१४।

श्रै (भ्वा० पर० श्रायति) 1 स्वेद आना, पसीना निकलना 2 पकाना, उबालना।

श्रोण् (भ्वा० पर० श्रोणति) 1 एकत्र करना, ढेर लगाना 2 एकत्र होना संचित होना।

श्रोण (वि०) [श्रोण् + अच्] विकलांग लंगड़ा —णः एक प्रकार का रोग।

श्रोणा [श्रोण + टाप्] 1 कांजी 2 श्रवण नक्षत्र।

श्रोणि,—णी (स्त्री०) [श्रोण् + इन् या ङीप्] 1 कूल्हा, नितम्ब, चूतड़ श्रोणीभारादलसगमना मेघ० ८२ श्रोणीभारस्त्यजति तनुताम् काव्य० १० 2 सड़क, मार्ग। सम०—तटम् कमर की ढलान, —फलकम् 1 विशाल कूल्हे 2 नितम्ब, —बिम्बम् 1 गोल कूल्हे विक्रम० ४।१८ 2 कमर-पट्टा, —सूत्रम् 1 मेखला 2. कमर से लटकती हुई तलवार का बन्धन।

श्रोतस् (नपुं०) [श्रु + असुन् तुट् च] 1 कान 2. हाथी की सूँड 3 ज्ञानेन्द्रिय 4 सरिता प्रवाह (स्रोतस् के स्थान पर)। सम०—रन्ध्रम् सूँड का छिद्र, यमुना—मेघ० ४२, (स्रोतोरन्ध्र भी लिखा जाता है)।

श्रोतृ (पुं०) [श्रु + तृच्] 1 सुनने वाला 2 छात्र।

श्रोत्रम् [श्रूयतेऽनेन—श्रु करणे + ष्ट्रन्] 1 कान —भर्तृ० २।७१ 2 वेदों में प्रवीणता 3 वेद। सम०—पेय (वि०) कान से ग्रहण करने के योग्य, ध्यानपूर्वक सुनने के योग्य संदेशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम् मेघ० १३,—मूलम् कान की जड़।

श्रोत्रिय (वि०) [छन्दो वेदमधीते वेत्ति वा - छन्दस् + घ, श्रोत्रादेश] 1 वेद में प्रवीण या कुशल 2 शिष्य अनुशासित होने के योग्य —यः विद्वान् ब्राह्मण, धर्मज्ञान में सुविज्ञ - जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते। विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते —भा० ११५ रघु० १६।२५। सम०—स्वम् विद्वान् ब्राह्मण की संपत्ति।

श्रौत (वि०) (स्त्री०—ती) [श्रुती विहितम् अण्] 1, कान से संबंध रखने वाला 2 वेदसंबंधी, वेद पर आधारित, वेदविहित, —तम् 1 वेदविहित कोई भी कर्म या अनुष्ठान 2 वेदप्रतिपादित कर्मकाण्ड 3. यज्ञाग्नि को संधारण करना 4 तीनों यज्ञाग्नियों की समष्टि (अर्थात् गार्हपत्य आहवनीय और दक्षिण)। सम० —कर्मन् (नपुं०) वैदिक कृत्य, —सूत्रम् वेद पर आधारित सूत्रग्रन्थों का संग्रह (आश्वलायन, सांख्यायन और कात्यायन आदि के नाम से अभिहित)।

श्रौत्रम् [श्रोत्र + (स्वार्थे) अण्] 1. कान 2 वेदों में प्रवीणता।

श्रौषट् (अव्य०) [श्रु + डौषट्] दिवंगत आत्मा या देवों को उद्देश्य करके यज्ञाग्नि में आहुति देते समय उच्चारित होने (बोला जाने) वाला अव्यय, (तु० वषट् या वौषट्)।

श्लक्ष्ण (वि०) [श्लिष् + क्स्न, नि०] 1 कोमल, मृदु, सौम्य, स्निग्ध (शब्द आदि) 2. चिकना, चमकदार, शि० ३।४६ 3 स्वल्प, सूक्ष्म, पतला, सुकुमार 4 सुन्दर, लावण्यमय 5 निश्छल, ईमानदार, खरा।

श्लक्ष्णकम् [श्लक्ष्ण + कन्] सुपारी, पूगीफल।

श्लङ्क् (भ्वा० आ० श्लङ्कते) जाना, हिलना-जुलना।

श्लङ्ग् (भ्वा० आ० श्लङ्गते) जाना, हिलना-जुलना।

श्लथ् (चुरा० उभ० श्लथयति ते) 1 शिथिल या ढीला-ढाला होना 2 दुर्बल या बलहीन होना 3 शिथिल होना ढीला होना विश्राम करना (आल० भी) श्लथयितु जघनक्षमता क्षमता न सहसा सहसा कृतवेपथु शि० ६।५७ परिणामस्नेह श्लथयितुमशक्य खलु यथा—गणा० ३७ 4 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

श्लथ (वि०) [श्लथ् + अच्] 1 बिना बँधा, बिना जकड़ा 2 शिथिल, विश्रांत झुका हुआ फिसला हुआ वृन्ताच्छ्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९, १९।२६ 3 बिखरे हुए (जैसे बाल)। सम० —उद्यम (वि०) जिसने अपने प्रयत्न ढीले कर दिये हों, —लम्बिन् (वि०) ढीला-ढाला नीचे लटकता हुआ, कु० ५।४७।

श्लाख् (भ्वा० पर० श्लाखति) व्याप्त होना, प्रविष्ट होना।

श्लाघ् (भ्वा० आ० श्लाघते) प्रशंसा करना, स्तुति करना सराहना, गुणगान करना तिरस्कृत श्लाघते गुणं (गुण) पर (दोष) कष्टे नियच्छति —सुभा०, यदैव श्लाघ्यते गङ्गा पादेन परमेष्ठिनः कु० ६।७० (कुछ लोग यहाँ 'श्लाघ्यते' के स्थान पर 'श्लाघते' पाठ समझते हैं और उसका अर्थ बताते हैं) 2 शेखी बघारना, घमंड करना, श्लाघिष्ये केन को न्यूनोऽस्मत्पुमानितिमुन्नत भट्टि० १६।४ 3 खुशामद करना, फुसलाकर काम निकालना (सम्प्र० के साथ) —गोपी कृष्णाय श्लाघते सिद्धा०, भट्टि० ८।७३।

श्लाघनम् [श्लाघ् + ल्युट्] 1 प्रशंसा करना, स्तुति करना 2 खुशामद करना।

श्लाघा [श्लाघ् + अ + टाप्] 1 प्रशंसा, स्तुति, सराहना, —कर्ण-जयद्रथयोर्वा काम श्लाघा —वेणी० २ 2 आत्म-प्रशंसा, शेखी बघारना —हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्, या श्लाघा पाण्डुपुत्राणां सैवास्माकं भविष्यति—वेणी० २।४ 3 खुशामद 4 सेवा 5 कामना, इच्छा। सम०—विपर्ययः डींग मारने का अभाव, त्यागे श्लाघा विपर्ययः रघु० १।२२।

श्लाघित (भू० क० कृ०) [श्लाघ्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, सराहा गया।

श्लाघ्य (वि०) [श्लाघ्+ण्यत्] 1 प्रशंसनीय, स्तुत्य — उत्तर० ४।१३ 2 आदरणीय, श्रद्धेय।

श्लिकु [श्लिष्+कु पृषो०] 1 कामुक, लंपट 2 दास 3 ज्योतिष (नपुं०) नक्षत्र विद्या, फलित ज्योतिष।

श्लिक्षु [श्लिष्+क्सु पृषो०] 1 दास 2 सेवक।

श्लिष् (भ्वा० पर० श्लेषति) जलना।

ii (दिवा० पर० श्लिष्यति, श्लिष्ट) आलिंगन करना, श्लिष्यति कुम्भान् पलभरकम्पः ... निमिष्यमाणम् गीत० ६ 2 जमे रहना, चिपके रहना, डटे रहना 3 संयुक्त होना, सम्मिलित होना 4 ग्रहण करना, लेना, समझना नै० ३।६० **आ** **उप** आलिंगन करना, परिरम्भण करना **वि** 1 वियुक्त होना, दूर होना 2 फट जाना, फट कर अलग होना भट्टि० १४।६७ (प्रेर०) अलग-अलग करना मेघ० ७ **सम्** 1 डटे रहना, चिपके रहना 2 सम्मिलित होना, मिलना।

iii (चुरा० उभ० श्लेषयति—ते) जोड़ना, सम्मिलित करना, मिलाना।

श्लिषा [श्लिष्+अ+टाप्] 1 आलिंगन 2 चिपकना, जुड़ जाना।

श्लिष्ट (भू० क० कृ०) [श्लिष्+क्त] 1 आलिंगित 2 चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 3 टिका हुआ, जुड़ा हुआ 4 श्लेष से युक्त, दो अर्थों की संभावना से युक्त अत्र विशेषणानि श्लिष्टानि — काव्य० १०।

श्लिष्टि (स्त्री०) [श्लिष्+क्तिन्] 1 आलिंगन 2 परिरम्भण।

श्लीपदम् [श्रीयुक्तं कुत्सितम् पदम् अस्मात् पृषो०] सूजी हुई टांग या फूला हुआ पैर, फीलपांव। सम०—**प्रभव** आम का पेड़।

श्लील (वि०) [श्री अस्ति अस्य—लच् पृषो०] 1 भाग्यशाली, समृद्ध दे० श्रील 2 शिष्ट, शुद्ध, अनश्लील।

श्लेष [श्लिष्+घञ्] 1 आलिंगन 2 चिपकना, जुड़ना 3 मिलाप, संगम, संपर्क, निरन्तरश्लेषघना का० (यहाँ इसमें अगला अर्थ भी घटित होता है) 4 अनेकार्थ शब्द प्रयोग, एक से अधिक अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग, द्व्यर्थक किसी शब्द या वाक्य को दो या दो से अधिक अर्थों की संभावना (यह एक अलंकार समझा जाता है, कवि इसका बहुत प्रयोग करते हैं, परिभाषा के लिए दे० काव्य० कारिका ८४ तथा ९६)—आश्लेषि न श्लेषकवेर्भवत्या श्लोकद्वयार्थः सुधिया मया किम्—नै० ३।६९, दे० 'शब्दश्लेष' भी। सम०—**अर्थः** अनेकार्थ शब्द प्रयोग, द्व्यर्थक शब्द प्रयोग। **श्लेषिक** (वि०) श्लेष पर टिका हुआ (शा० आधारित)।

श्लेष्मक [श्लेष्मन्+कन्] कफ, बलगम।

श्लेष्मज (वि०) [श्लेष्मन्+जन्+ड] कफ से उत्पन्न, कफजन्य।

श्लेष्मन् (पुं०) [श्लिष्+मनिन्] कफ, बलगम, कफ की प्रकृति, शरीर के तीन रसों में से एक जो शरीर में उत्पन्न होता है। सम०—**ओजस** (नपुं०) कफ की प्रकृति, **घ्नी** 1 मल्लिका, एक प्रकार का मालिया 2 केतकी, केवड़ा।

श्लेष्मल (वि०) [श्लेष्मन्+लच्] कफ प्रकृति का, बलगमी।

श्लेष्मात, श्लेष्मातक [श्लेष्मन्+अत्+अच्, श्लेष्मात+कन्] एक पुष्प विशेष, लिसोड़े का पेड़।

श्लोक् (भ्वा० आ० श्लोकते) 1 प्रशंसा करना, पद्य रचना करना, छन्दोबद्ध करना 2 अर्जित करना 3 त्यागना, छोड़ना।

श्लोक [श्लोक्+अच्] 1 कीर्तिमय प्रशंसन, स्तुति, यश 2 प्रशंसा मनु० ७।५ 3 ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति, उत्तम पुण्यश्लोक में 4 प्रशंसा का विषय 5 किंवदन्ती, कहावत 6 पद्य, कविता रघु० १४।७० 7 अनुष्टुप् छन्द में कोई पद्य या कविता।

श्लोण् (भ्वा० पर० श्लोणति) एकत्र करना, इकट्ठा करना, ढेर लगाना दे० श्रोण।

श्लोण [श्लोण्+अच्] लंगड़ा पुरुष, विकलांग।

श्वङ्क् (भ्वा० आ० श्वङ्कते) जाना, हिलना-जुलना।

श्वच्, श्वञ्च् (भ्वा० आ० श्वचते, श्वञ्चते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 खुला होना, मुँह बाना, फटना, दरार हो जाना।

श्वज् (भ्वा० आ० श्वजते) जाना, हिलना-जुलना।

श्वठ् (चुरा० उभ० श्वठयति—ते) 1 तैयार करना (कुछ के मतानुसार श्वठयति) 2 (श्वाठयति—ते) (क) जाना, हिलना-जुलना (ख) अलंकृत करना (ग) समाप्त करना, संपन्न करना (कुछ के मतानुसार इन अर्थों में केवल श्वठयति)।

श्वण्ठ (चुरा० उभ० श्वण्ठयति—ते) निन्दा करना।

श्वन् (पुं०) [श्वि+कनिन् नि०] (कर्तृ० श्वा, श्वानौ श्वानः, संब० ए० व० शुनः, स्त्री० शुनी) कुत्ता, श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम् सुभा०, मनु० ४।२१६, याज्ञ० २।१०१। सम०—**कीलिन्** (पुं०) शिकारी कुत्तों को पालने वाला, कुत्तों का झुंड। **गणिक** 1 शिकारी 2 कुत्तों को शिक्षण देने वाला। **जीवन** नीच आदमी, नीच व्यक्ति, शिकारी। **निद्रा** वह नींद जिसमें कुत्ते भौंकते हैं। **पच्** (पुं०) **पच** 1 अतिनीच और

पतित जाति का पुरुष जातिबहिष्कृत, चाण्डाल, -याज्ञ० ४।२३ 2 कुत्तों को खिलाने वाला, **पदम्** कुत्ते का पैर **पाक** जाति से बहिष्कृत, चाण्डाल मनु० २९, **फलम्** खट्टा नींबू या चकोतरा, **फल्क** अक्रूर के पिता का नाम **भीरु** गीदड़ **मुखम्** कुत्तों का मुंह, **वृत्ति** (स्त्री०) कुत्ते का जीवन (बहुधा नौकरी की ममता इससे की जाती है)—सेवा लाघवकारिणी कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः मुद्रा० ३।१४ मनु० ४।६ 2 सेवावृत्ति सेवा मनु० ४।४ **व्याघ्र** 1 शिकारी जानवर 2 बाघ 3 चीता **हन्** (पुं०) शिकारी।

श्वच् (चुरा० उभ० श्वचयति-ते) 1 जाना हिलना जुलना 2 खोलना सुराख करना छिद्र करना, 3 घर होना म रहना।

श्वभ्रम् [श्वभ्र् + अच्] रन्ध्र छिद्र विक्रम० ... कि० १४।३२।

श्वश [श्वि + अच्] सूजन शोथ वृद्धि।

श्वयथु [श्वि + अथुच्] सूजन शोथ।

श्वयीची [श्वि + ईचि + ङीप्] बीमारी रोग।

श्वल (भ्वा० पर० श्वलति) दौड़ना फुर्ती से जाना।

श्वल्क (चुरा० उभ० श्वल्कयति-ते) कहना वर्णन करना।

श्वल्ल (भ्वा० पर० श्वल्लति) दौड़ना दे० श्वल्।

श्वशुर [शु आशु अश्नुते आशु + अश् उरच् पृषो०] ससुर पत्नी या पति का पिता मनु० ...।

श्वशुरक [श्वशुर + कन्] ससुर।

श्वशुर्य [श्वशुरस्यापत्यम् श्वशुर + यत्] 1 साला पत्नी या पति का भाई 2 पति का छोटा भाई देवर।

श्वश्रू (स्त्री०) [श्वशुर ऊङ् उकार अकार लोप] सास पत्नी या पति की माँ ...। सम० **श्वशुरौ** (पुं०) (द्वि० व०) सास और ससुर।

श्वस् (अदा० पर० श्वसिति श्वस्त श्वसित) 1 सांस लेना सांस निकालना सांस खींचना ... श्वसत्र श्वसत्सिंहनिर्घोषैः ... रघु० ... 2 आह भरना हांफना लम्बी सांस लेना ... विद्रुमकर्ण ... 3 फुफकार करना ... (प्रेर०) (श्वासयति-ते) सांस दिलाना जीवित रखना **आ** 1 सांस लेना महावीर० ... 2 सांस लेना ढाढ़स बंधाना ... 3 पुनर्जीवित करना भट्टि० ... (प्रेर०) सान्त्वना देना आराम देना प्रसन्न करना **उद्** 1 सांस लेना जीना वेणी० ... मनु० ... 2 उत्साह बढ़ाना जी उठना, हिम्मत बांधना कि० ३।८, शि० १।५८ 3 खुलना, खिलना (जैसे कमल का) शि० १०।५८ ... 4 हांपना गहरा सांस लेना— भट्टि० ६।१२० ... 5 ऊंचा सांस लेना धड़कना 6 उत्सुक होना **नि** **निस्** आह भरना ऊंचा सांस लेना **वि** — विश्वास करना भरोसा करना विश्वास रखना (प्रायः अधि० के साथ) ... विश्वसिमि कुमार कुमारी ... कु० ५।१५,(कभी कभी सब० के साथ) 2 सुरक्षित रहना निर्भय या निश्चिन्त होना — विश्वस्तं ... समन्तात् भट्टि ... **सम्** ... (प्रेर०) सान्त्वना देना प्रोत्साहित करना उत्साह बढ़ाना।

श्वस् (अव्य०) [आगामि अह पृषो०] 1 आने वाला कल —... 2 भविष्य काल समास के आरम्भ में)। सम० **भूत** (वि०) (श्वोभूत) कल होने वाला — **वसीय** **वसीयस** (श्वः वसीयः श्वोवसीयसम्) (वि०) प्रसन्न शुभ भाग्यशाली ... प्रसन्नता सौभाग्य, **श्रेयस्** (श्वः श्रेयस) (वि०) प्रसन्न समृद्ध (सम्) 1 प्रसन्नता समृद्धि 2 ब्रह्म या परमात्मा का विशेषण।

श्वसन [श्वसित्यनेन—श्वस् + ल्युट्] 1 हवा वायु —श्वसन सुरभिगन्धि —शि० ११।... 2 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था **नम्** 1 सांस लेना सांस निकालना ... कि० १०।३४ रघु० ... (यहाँ यह प्रथम अर्थ को प्रकट करता है) ... 2 आह भरना कि० ... सम० **अशन** सांप **ईश्वर** अर्जुन वृक्ष **उत्सुक** सांप **ऊर्मि** (स्त्री०) हवा का झोंका।

श्वसित (भू० क० कृ०) [श्वस् + क्त] 1 सांस लिया ... आह भरा हुआ 2 सांस ... **तम्** 1 सांस लेना सांस निकालना 2 ...।

श्वस्तन (वि०) (स्त्री० नी) **श्वस्त्य** (वि०) ... कल होने वाला ...।

श्वाकर्ण ... कुत्ते ...।

श्वागणिक [श्वगण + ठञ्] कुत्ते ... शिकारी ...।

श्वादन्त ... कुत्ते का दांत।

श्वान [श्वन् + अण्] कुत्ता। सम० **निद्रा** कुत्ते की नींद बहुत हल्की नींद **वैखरी** शुद्ध कुत्ते का गर्राना।

श्वापद (वि०) (स्त्री० दी) [शुन इव आपदं अस्मात्

ब० स, श्वन् + आपद् + अच्] बर्बर, हिंस्र, —दः 1 शिकारी जानवर, जंगली जानवर 2 बाघ।

श्वापुच्छः —च्छम् [शुनः पुच्छम् ष० त०, नि० दीर्घ] कुत्ते की पूंछ, दुम।

श्वाविध् (पुं०) [शुना आविध्यते -श्वन् + आ + व्यध् + क्विप्] साही, शल्यक।

श्वासः [श्वस् + घञ्] सांस लेना, सांस, श्वासप्रश्वास क्रिया, ऊँचा सांस — अद्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः श० १।२९, कु० २।४२ 2 आह, हांपना 3 हवा, वायु 4 दमा। सम० —कासः दमा —रोधः सांस का रोकना, —हिक्का एक प्रकार की हिचकी —हेतिः (स्त्री०) नींद।

श्वासिन् (वि०) [श्वास + इनि] सांस लेने वाला — (पुं०) 1. हवा, वायु 2 श्वास लेने वाला जानवर, जीवित प्राणी 3 जो फूत्कार की ध्वनि के साथ (वर्ण) उच्चारण करता है।

श्वि (भ्वा० पर० श्वयति, शून) 1 विकसित होना, बढ़ना (आलं० से भी) सूजना (जैसे आंख का) — दन्तोऽशिश्वियच्चक्षुरास्य हेतोस्तवाश्वयीत् भट्टि० ६।१९ ३१, १४।७९, १५।३० 2 फलना फूलना, समृद्ध होना 3 जाना, पहुँचना, अभिमुख चलना, उद् —, सूजना, बढ़ना विकसित होना — प्रबलरुदितोच्छूननेत्रं (मुखम्) मेघ० ८४ 2 घमण्डी होना घमण्ड से फूल जाना।

श्वित् (भ्वा० आ० श्वेतते) श्वेत होना सफेद होना — व्यतिकरितदिगन्ता श्वेतमानैर्यशोभिः मा० ७।९।

श्वित (वि०) [श्वित् + क] सफेद।

श्वितिः (स्त्री०) [श्वित् + इन्] सफेदी।

श्वित्य (वि०) [श्वित् + यत्] सफेद।

श्वित्रम् [श्वित् + रक्] 1 सफेद कोढ़ 2. फुलबहरी कोढ़ का दाग (त्वचा पर) — तदल्पमपि नापेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथंचन। स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम् काव्या० १।७।

श्वित्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [श्वित्र + इनि] कोढ़ के रोग से ग्रस्त (पुं०) कोढ़ी।

श्विन्द् (भ्वा० आ० श्विन्दते) सफेद होना।

श्वेत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [श्वित + घञ्, अच् वा] सफेद, —तैः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ—भग० १।१४ —तः 1 सफेद रङ्ग 2. शङ्ख 3 कौड़ी 4. रति कूट पौधा 5. शुक्र ग्रह, शुक्र ग्रह की अधिष्ठात्री देवता 6. सफेद बादल 7 जीरा 8 पर्वतश्रेणी दे० कुलाचल या कुलपर्वत 9 जम्बुद्वीप का एक प्रभाग,—तम् चांदी। सम० —अम्बरः,—वाससः (पुं०) जैन सन्यासियों का एक सम्प्रदाय, —इक्षुः एक प्रकार का ईख, गन्ना,—उदरः कुबेर का विशेषण, —कमलम्, —पद्मम् सफेद कमल —कुञ्जरः इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,—कुष्ठम् सफेद कोढ़, —केतुः बौद्ध श्रमण या जैनसाधु, —कोलः एक प्रकार की मछली, शफर, —गजः —द्विपः 1 सफेद हाथी 2 इन्द्र का हाथी, —गरुत् (पुं०) —गरुतः हंस, —छदः 1 हंस 2 एक प्रकार की तुलसी, सफेद तुलसी, —द्वीपः इस महाद्वीप के अठारह लघु प्रभागों में से एक, —धातुः 1 सफेद खनिज पदार्थ 2. खड़िया मिट्टी, 3 दूधिया पत्थर, —धामन् (पुं०) 1 चांद 2. कपूर 3 समुद्रफेन —नीलः बादल,—पत्रः हंस, —पद्मः ब्रह्मा का विशेषण, —पाटला श्वेतपुष्पवल्ली का फूल —पिङ्गः सिंह,—पिङ्गलः 1 सिंह 2. शिव का विशेषण, —मरिचम् सफेद मिर्च, —माल: 1 बादल 2 धूआं, —रक्तः गुलाबी रङ्ग, —रञ्जनम् सीसा, —रथः शुक्र-ग्रह, —रोचिस् (पुं०) चन्द्रमा, —रोहितः गरुड़ का विशेषण, —वल्कलः गूलर का पेड़ —वाजिन् (पुं०) 1 चन्द्रमा 2. अर्जुन का विशेषण, —वाह् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, —वाहः 1 अर्जुन का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण, —वाहन 1 अर्जुन का विशेषण 2 चन्द्रमा 3 समुद्री दानव, मकरमच्छ, घड़ियाल, —वाहिन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण,—शुङ्गः,—शृङ्गः जौ, —हयः 1 इन्द्र का घोड़ा 2 अर्जुन का विशेषण,—हस्तिन् (पुं०) इन्द्र का हाथी ऐरावत।

श्वेतकः [श्वेत + कन्] कौड़ी, —कम् चांदी।

श्वेता [श्वित् + अच् + टाप्] 1 कौड़ी 2 पुनर्नवा 3 सफेद दूब 4 स्फटिक 5 स्वेतार चीनी 6 बंसलोचन 7 अनेक पौधों के नाम (श्वेत कण्टकारी, श्वेत बृहती आदि)।

श्वेतौही (स्त्री०) [श्वेतवाह + ङीष्] इन्द्र की पत्नी, शची।

श्वैत्यम् (नपुं०) सफेद कोढ़।

श्वैत्यम् [श्वेत + ष्यञ्] 1 सफेदी 2 सफेद कोढ़।

श्वैत्र, श्वैत्र्यम् [श्वित्र + अण्, ष्यञ् वा] सफेद कोढ़।

ष

वि०—बहुत सी धातुएँ जो स से आरम्भ होती हैं, धातुपाठ में 'ष' पूर्वक लिखी जाती हैं जिससे कि यह प्रकट हो सके कि कुछ उपसर्गों के पश्चात् 'स' बदल कर 'ष' हो जाता है। इस प्रकार की धातुएँ 'स' के अन्तर्गत ही अपने उचित स्थान पर मिलेंगी।

ष (वि०) [सो + क, पृषो० षत्वम्] सर्वोत्तम, सर्वो-

त्कृष्ट, —क्षः 1 हानि, विनाश 2 अन्त 3 शेष, अवशिष्ट 4 मोक्ष।

षट्क (वि०) [षड्भिः क्रीतम् षष् + कन्] छः गुना, —**कम्** छः की समष्टि यथा षट्क, उत्तर षट्क आदि।

षड्वा दे० षोढा।

षण्डः [सन् + ड, पृषो० षत्वम्] 1 साँड 2 नपुंसक (भिन्न-भिन्न लेखकों ने नपुंसकों के १४ से २० तक अनेक भेद लिखे हैं) 3 समूह, समुच्चय, संग्रह, ढेर, राशि, (इस अर्थ में नपुं० भी) कलरवमुपगीते षट्पदौघेन धत्ते कुमुदकमलषण्डे तुल्यरूपामवस्थाम्—शि० ११।१५, तु० 'षड' भी।

षण्डकः [षण्ड + कन्] नपुंसक, हिजड़ा।

षण्डाली [षण्ड + अल् + अच् + ङीष्] 1 तालाब, जोहड़ 2 व्यभिचारिणी या असती स्त्री।

षण्ढः [सन् + ढ, पृषो० षत्वम्] 1 नपुंसक, हिजड़ा, याज्ञ० १।२१५ 2. नपुंसकलिंग त्रिवेशं त्रिदिवं षण्ढे अमर०। सम० —**तिलः** बन्ध्य तिल, वह तिल जो उग न सके।

षष् (संख्या० वि०) [सो + क्विप्, पृषो०] (केवल ब० व० में प्रयुक्त कर्तृ० षट्, सब० षण्णाम्) छः—मनु० ११।१६, ८।४०३। सम० —**अक्षीण** (षडक्षीण) मछली, —**अङ्गम्** समष्टि रूप से ग्रहण किये गये शरीर के छः भाग अर्थ बाहु शिरोमध्य षडङ्गमिदमुच्यते 2. वेद के छः अंग सहायक भाग, शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चितिः। ज्योतिषामयनं चैव षडङ्गो वेद उच्यते दे० वेदाङ्ग भी 3 छः शुभ वस्तुएँ अर्थात् मीमांसा से प्राप्त छः पदार्थ—गोमूत्र गोमयं क्षीरं सर्पिर्दधि च रोचना। षडङ्गमेतन्मांगल्यं पठितं सर्वदा गवाम् —**अङ्घ्रिः** (षडङ्घ्रिः) भौंरा, —**अभिज्ञ** (वि०) (षडभिज्ञ) वह जिसमें छः अभिज्ञ हो, मा० ५।१, —**अभिज्ञः** (षडभिज्ञः) देवरूप बौद्ध महात्मा, —**अशीत** (वि०) (षडशीत) छयासीवाँ —**अशीतिः** (स्त्री०) (षडशीतिः) छयासी —**अहः** (षडहः) छः दिन का समय या अवधि —**आननः**, —**वक्त्रः**, —**वदनः** (षडाननः, षड्वक्त्रः, षड्वदनः) कार्तिकेय के विशेषण षडाननापीतपयोधरासु नेता चमूनामिव कृत्तिकासु रघु० १४।२२, —**आम्नायः** (षडाम्नायः) छः तन्त्र, —**ऊषणम्** (षडूषणम्) समष्टि रूप से ग्रहण किये हुए छः मसाले पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम्, —**कर्ण** (वि०) (षट्कर्ण) छः कानों से सुना गया, अर्थात् वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा भी सुना गया, एक से अधिक श्रोताओं को सुनाया गया (परामर्श, भेद आदि)—षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः पञ्च० १।९९, (—**र्णः**) एक प्रकार की वीणा, —**कर्मन्** (नपुं०) (षट्कर्मन्) 1 ब्राह्मणों के लिए विहित छः कर्तव्य - अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा। दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्माण्यग्रजन्मनः मनु० १०।७५ 2 छः कर्म जो ब्राह्मण की जीविका के लिए विहित हैं उञ्छं प्रतिग्रहो भिक्षा वाणिज्यं पशुपालनम्। कृषिकर्म तथा चेति षट्कर्माण्यग्रजन्मनः 3 जादू के छः करतब शान्ति वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन तथा मारण 4 योगाभ्याससंबंधी छः क्रियाएँ धौतिर्बस्ती तथा नेती (नौलिकी) त्राटकस्तथा। कपालभाती चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत्॥ (पुं०) ब्राह्मण, —**कोण** (वि०) (षट्कोण) 1. छः कोणों से युक्त (—**णम्**) 1 षड्भुज, छः कोनिया 2 इन्द्र का वज्र, —**गवम्** (षड्गवम्) 1 छः बैलों की गाड़ी 2 वह जुआ जिसमें छः बैल जोते जाय (कभी कभी अन्य जानवरों के नाम पर) उदा० हस्ति°, °अश्व छः हाथी छः घोड़े आदि, —**गुण** (वि०) (षड्गुण) 1 छः गुना 2 छः विशेषता से युक्त (—**णम्**) 1 छः गुणों का समुदाय 2 किसी राजा की विदेशनीति में प्रयोक्तव्य छः उपाय दे० 'गुण' के अन्तर्गत (२१), तु० 'षाड्गुण्य' के साथ भी —**ग्रन्थि** (वि०) (षड्ग्रन्थि) पिप्परामूल —**ग्रन्थिका** (षड्ग्रन्थिका) शटी, आमाहल्दी, —**चक्रम्** (षट्चक्रम्) शरीर के छः रहस्यमय चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा) —**चत्वारिंशत्** (षट्चत्वारिंशत्) छयालीस, —**चरणः** (षट्चरणः) 1 मधुमक्खी 2 टिड्डी 3 जूँ —**जः** (षड्जः) भारतीय स्वरग्राम के सात प्रधानक स्वरों में से चौथा स्वर (कुछ के अनुसार पहला) क्योंकि यह स्वर छः अंगों से व्युत्पन्न है नासाकण्ठमुरस्तालु जिह्वा दन्तांश्च संस्पृशन्। षड्भ्यः संजायते यस्मात् तस्मात् षड्ज इति स्मृतः कहते हैं कि मोर के स्वर से यह स्वर मिलता-जुलता है, षड्जं रौति मयूरस्तु नार०, षड्जसंवादिनीः केका द्विधा भिन्नाः शिखण्डिभिः रघु० १।३९, —**त्रिंशत्** (स्त्री०) (षट्त्रिंशत्) छत्तीस, —**त्रिंश** (वि०) (षट्त्रिंश) छत्तीसवाँ, —**दर्शनम्** (षड्दर्शनम्) हिन्दू दर्शन के छः मुख्य शास्त्र सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक मीमांसा और वेदान्त, —**दुर्गम्** (षड्दुर्गम्) छः प्रकार के गढ़ों की समष्टि धन्वदुर्गं महीदुर्गं गिरिदुर्गं तथैव च। मनुष्यदुर्गं मृद्दुर्गं वनदुर्गमिति क्रमात्, —**नवतिः** (षण्णवतिः) छियानवे, —**पञ्चाशत्** (स्त्री०) (षट्पञ्चाशत्) छप्पन, —**पदः** (षट्पदः) 1 भौंरा—न पङ्कजं तद्यदलीनषट्पदं न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलम् भट्टि० २।१९, कु० ५।९, रघु० ६।६९ 2 जूँ

°अतिथिः आम का वृक्ष, °आनन्दवर्धनः अशोक या किंकिरात वृक्ष, °ज्य (वि०) जिस की डोरी भौंरों से बनी है (जैसे कि कामदेव का धनुष)—प्राय-श्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम् मेघ० ७३, °प्रियः नागकेशर नाम का वृक्ष, °पदी (षट्पदी) 1 छः पंक्तियों का श्लोक 2. भ्रमरी 3 जूं,—प्रज्ञः (षट्प्रज्ञः) जो छः विषयों से सुपरिचित है अर्थात् चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानव-जीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, ब्रह्मप्रकृति—धर्मार्थ-काममोक्षेषु लोकतत्त्वार्थयोरपि। षट्सु प्रज्ञा तु यस्यासौ षट्प्रज्ञः परिकीर्तितः ॥ 2 विलासी, कामासक्त पुरुष °बिन्दुः (षड्बिन्दुः) विष्णु का विशेषण, °भागः (षड्भागः) छठा भाग, ⅙ भाग श० २।१३, मनु० ७।१३१, ८।३३, °भुज (वि०) (षड्भुज) 1 छः हैं सहायक जिसके, छः कोनों वाला, (—जः) षट्कोण (—जा) 1 दुर्गा का विशेषण 2 तरबूज, °मासः (षण्मासः) छः महीने का समय, °मासिक (वि०) (षाण्मासिक) छमाही, अर्धवार्षिक, °मुखः (षण्मुखः) कार्तिकेय का विशेषण रघु० १७।६७, (—खा) तरबूज,—रसम्—रसाः (पु० ब० व०) (षड्रसम् आदि) छः रसों की समष्टि दे० 'रस' के अन्तर्गत, °रात्रम् (षड्रात्रम्) छः रातों का समय या अवधि, °वर्गः (षड्वर्गः) 1 छः वस्तुओं की समष्टि 2 विशेष रूप से मनुष्य के छः शत्रु, ('षड्रिपु' भी कहते हैं) कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः। कृतारिषड्वर्ग-जयेन—कि० १।९, व्यजेष्ट षड्वर्गम् भट्टि० १।२, —विंशतिः (स्त्री०) (षड्विंशतिः) छब्बीस (षड्-विंश छब्बीसवां), °विध (षड्विध) (वि०) छः प्रकार का, छः गुना रघु० ४।२६ °षष्टिः (स्त्री०) (षट्षष्टिः) छासठ,—सप्ततिः (षट्सप्ततिः) छिहत्तर।

षष्टिः (स्त्री०) [षड्गुणिता दशतिः नि०] साठ मनु० ३।७७, याज्ञ० ३।८४, °तम साठवां। सम०—°भागः शिव का विशेषण,—°मत्तः साठ वर्ष की आयु का हाथी जिसके मस्तक से मद चूता है, °योजनी (स्त्री०) साठ योजन का विस्तार या यात्रा, °संवत्सरः साठ वर्ष की अवधि या समय, °हायनः 1 (साठ वर्ष की आयु का) हाथी 2 एक प्रकार का चावल।

षष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [षण्णां पूरणः षष् + डट्, थुक्] छठा, छठा भाग—षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्यात्पैतृकाद्धनात् मनु० ९।१६४, ७।१३०, षष्ठे भागे विक्रम० २।१, रघु० १७।७८। सम०—°अंशः 1 सामान्य छठा भाग—याज्ञ० ३।३५ 2 विशेष कर उपज का छठा भाग जिसको कि राजा अपनी प्रजा से भूमिकर के रूप में ग्रहण करता है—ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुं षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितायाः—रघु० २।६६, (उपज के भिन्न भिन्न भेद जिनके छठे भाग का अधिकारी राजा है मनु० ७।१३१–२ में बताये गये हैं) °वृत्तिः उपज के छठे भाग का अधिकारी राजा, षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः—श० ५।४, °अन्नम् छठा भोजन, °कालः तीन दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला, जैसा कि प्रायश्चित्तस्वरूप किया जाता है।

षष्ठी [षष्ठ + ङीप्] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ 2 (व्या० में) छठी विभक्ति या सम्बन्ध कारक 3 कात्यायनी के रूप में दुर्गा का विशेषण जो सोलह दिव्य मातृकाओं में से एक है। सम०—°तत्पुरुषः छठी विभक्ति के लोप वाला तत्पुरुष समास ऐसे समास में विग्रह करने पर पहला पद सदैव छठी विभक्ति का होता है, °पूजनम्, °पूजा बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना।

षहसानु [सह् + आनु, असुक्, पृषो० षत्वम्] 1 मोर 2 यज्ञ।

षाट् (अव्य०) [सह् + क्विप् पृषो० षत्वं टत्वम्] सम्बोधक अव्यय।

षाट्कौशिक (वि०) (स्त्री०—की) [षट्कोश + ठक्] छः तहों में लिपटा हुआ।

षाडव [षड् + अव् + अच्, ततः स्वार्थे अण्] 1 राग, मनोवेग 2 भावना, संगीत 3 (संगीत में) एक राग जिस में संगीत के सात स्वरों में से छः स्वर प्रयुक्त होते हैं पंचमं पञ्चभिः प्रोक्तं स्वरैः षड्भिस्तु षाडवः।

षाड्गुण्यम् [षड्गुण + ष्यञ्] 1 छः गुणों की समष्टि 2 राजा के द्वारा प्रयुक्त छः युक्तियाँ, राजनीति के छः उपाय,—शि० २।९३, दे० 'गुण' के अन्तर्गत 3 छः से किसी संख्या का गुणन। सम०—°प्रयोगः राजनीति के छः उपाय, या छः युक्तियों का प्रयोग।

षाण्मातुर [षण्णां मातृणाम् अपत्यम् षण्मातृ + अण् उत्व रपर] छः माताओं वाला कार्तिकेय का विशेषण।

षाण्मासिक (वि०) (स्त्री०—की) [षण्मास + ठक्] 1 छमाही, अर्धवार्षिक 2 छः महीने का, मौक्तिकानां षाण्मासिकानाम्—विद्ध० १।१७।

षाष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [षष्ठ + अण् स्वार्थे] छठा।

षिड्ग [सिट् + गन्, पृषो० षत्वम्] 1 विलासी, ऐयाश, कामुक, कामासक्त 2 प्रेमनिपुण, असंगत प्रेमी षिट षिड्गैरवृत सर्वतोमभेव काचित् शि० ५।३४।

षूः [सू + क्विप्, पृषो० षत्वम्] प्रसूति, प्रजनन ।

षोडश (वि०) (स्त्री० शी) [षोडशन् + डट्] सोलहवाँ - मनु० २।६५,८६।

षोडशन् (सं० वि०) ब० व०, सोलह । सम० — **अंशुः** शुक्रग्रह, — **अङ्ग** (वि०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य, — **अङ्गुलक** (वि०) सोलह अंगुल की चौड़ाई का, — **अङ्घ्रिः** केकड़ा, — **अर्चिस्** (पुं०) शुक्र ग्रह, — **आवर्तः** शंख, — **उपचाराः** (पुं०, ब० व०) किसी देवता को श्रद्धांजलि अर्पित करने की सोलह रीतियाँ जिनकी गिनती यह है — आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । मधुपर्काचमस्नानं वसनाभरणानि च । गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वन्दनं तथा, — **कलाः** चन्द्रमा की सोलह कलाएँ जिनके नाम यह हैं — अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः । शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरेव च । अङ्गदा च तथा पूर्णामृता षोडश वै कलाः, — **भुजा** दुर्गा की एक मूर्ति, — **मातृका** (स्त्री०) ब० व०, सोलह दिव्य माताएँ जिनके नाम निम्नांकित हैं — गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः । शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिः कुलदेवात्मदेवता ॥

षोडशधा (अव्य०) [षोडशन् + धाच्] सोलह प्रकार से ।

षोडशिक (वि०) (स्त्री० की) [षोडशन् + ठक्] सोलह भागों से युक्त, सोलह गुना षोडशिको देवतोपचार ।

षोडशिन् (पुं०) [षोडशन् + इनि] अग्निष्टोम यज्ञ का रूपान्तर ।

षोढा (अव्य०) [षष् + धाच्, षष उत्वम्, धस्य ढत्वम्] छः प्रकार से । सम० — **न्यासः** मंत्र पढ़ते हुए शरीर स्पर्श के छः प्रकार, — **मुखः** छः मुँह वाला, कार्तिकेय, षोढा अन्योऽन्यभेदाभिमुख मर्मभिन्न वाक्य सा शाटकशिते अद्व० ७ ।

ष्ठिव् (भ्वा० दिवा० पर० ष्ठीवति, ष्ठीव्यति, ष्ठ्यूत) 1 थूकना मुँह से लार निकालना, 2 लार टपकना, — भट्टि० १२।१८, नि — , 1 प्रक्षेपण करना, निकालना, फेंकना कु० ४।४ रघु० २।७५ भट्टि० १४।१००, १७।१० १८।१८, काव्या० १।४५ 2 मुँह से लार निकालना मनु० ४।१३२ याज्ञ० ३।२१३ ।

ष्ठीवनम् **ष्ठेवनम्** [ष्ठीव् + ल्युट्, ष्ठिव् + ल्युट्] 1 थूकना 2 लार, थूक, खखार ।

ष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [ष्ठिव् + क्त ऊठ्] थूका हुआ, खखारा हुआ ।

ष्वक्क् **ष्वस्क्** (भ्वा० आ० ष्वक्कते ष्वस्कते) जाना, हिलना-जुलना ।

—

स

स (अव्य०) सह सम तुल्य या सदृश, और एक अथवा समान शब्दों के स्थान पर आदेश होने वाला उपसर्ग जो विशेषण अथवा क्रियाविशेषण बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ समास में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) के साथ मिलाकर के साथ साथ संयुक्त होकर, उन सहित, सपुत्र सभार्य सतृष्ण सधन सानुज सकोप सहर्ष आदि; (ख) समान, सदृश सधर्मन् समान प्रकृति का, इसी प्रकार सजाति सवर्ण (ग) वही सोदर सपक्ष सपिण्ड सजातीय आदि, (पुं०) 1 साँप 2 वायु 3 पक्षी 4 गर्दन 4 षड्ज नामक संगीत स्वर का संक्षिप्त 5 शिव का नाम 6 विष्णु का नाम ।

संयः [सम् + यम् + ड] कंकाल, पंजर ।

संयत् (स्त्री०) [सम् + यम् + क्विप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई — न संयति प्रत्यनिनीकवीरः — रघु० ६।७२, ७।३९, १८।२०, कि० १।१९ शि० १५।१५ । सम० — **वरः** राजा, राजकुमार ।

संयत (भू० क० कृ०) [सम् + यम् + क्त] 1 रोका हुआ, दबाया हुआ, वश में किया हुआ 2 जकड़ा हुआ, एक स्थान पर बाँधा हुआ 3 बेड़ियों से जकड़ा हुआ 4 बन्दी, कैदी कारागामी — रघु० ३।२० 5 तैयार 6 व्यवस्थित दे० यम पूर्वक यम् । सम० — **अञ्जलि** (वि०) जिसने विनीत प्रार्थना के लिए हाथ जोड़े हुए हैं, — **आत्मन्** (वि०) जिसने मन को वश में कर लिया है नियन्त्रितमना आत्मनिग्रही, — **आहार** (वि०) मिताहारी, — **उपस्कर** (वि०) जिसका घर सुव्यवस्थित है, जिसके घर का सामान सब क्रमपूर्वक रक्खा हो, — **चेतस्**, — **मनस्** (वि०) मन को नियन्त्रण में रखने वाला, — **प्राण** (वि०) जिसका श्वास नियन्त्रित किया हुआ है, प्राणायाम का अभ्यास करने वाला, — **वाच्** (वि०) मूक, मौन रहने वाला, मितभाषी ।

संयत्त (वि०) [सम् + यत् + क्त] 1 सन्नद्ध, तत्पर, तैयार महावीर० ५।५१ 2 सावधान, सतर्क ।

संयमः [सम् + यम् + अप्] 1 प्रतिबंध, रोकथाम, नियन्त्रण — श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति — भग०

४।२६, २७ 2. मन की एकाग्रता, योग की अंतिम तीन अवस्थाओं को प्रकट करने वाला शब्द—धारणा-ध्यानसमाधित्रयमन्तरङ्ग संयमपदवाच्यम् सर्व०, कु० २।५९ 3 धार्मिक व्रत 4 धार्मिक भक्ति, तपस्साधना, —स० ४।११ 5. दयाभाव, करुणा की भावना।

संयमनम् [सम्+यम्+ल्युट्] 1 प्रतिबन्ध, रोकथाम 2 अंतःकर्षण श० १ 3 बाँधना उत्तर० १, विक्रम० ३।१६ 4 कैद 5. आत्मोत्सर्ग, नियन्त्रण 6 धार्मिक व्रत या आचार 7 चार घरों का वर्ग, —नः नियामक, शासक,—नी यम की नगरी का नाम।

संयमित (भू० क० कृ०) [संयम+णिच्+क्त] 1. नियमित 2. बद्ध, बेड़ी से जकड़ा हुआ 3. निरुद्ध, रोका हुआ।

संयमिन् (वि०) [सम्+यम्+णिनि] दमन करने वाला, रोकने वाला, नियंत्रित करने वाला —(पु०) जिसने अपने आवेगों को रोक लिया या नियंत्रण में कर लिया, ऋषि, संन्यासी रघु० ८।११, भग० २।६९।

संयानः [सम्+या+ल्युट्] साँचा, —नम् 1 साथ-साथ जाना, मिलकर चलना 2. यात्रा करना, प्रगति करना 3. शव को उठा कर ले जाना।

संयामः [सम्+यम्+घञ्] दे० 'संयम'।

संयावः [सम्+यु+घञ्] गेहूँ के आटे का मिष्टान्न, हलुवा मनु० ५।७।

संयुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+युज्+क्त] 1 मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सम्मिलित 2 सम्मिश्रित, मिला हुआ, संपृक्त 3 सहित 4 संपन्न, से युक्त 5 अन्वित, बना हुआ।

संयुगः [सम्+युज्+क, जस्य गः] 1. संयोजन, मिलाप, मिश्रण 2 लड़ाई, संग्राम, युद्ध, संघर्ष —संयुगे सांयुगीनं तमुद्यतं प्रसहेत कः कु० २।५७, रघु० १।११। सम० गोष्पदम् पिछन्त, नगण्य या तुच्छ झगड़ा मामूली बात पर कलह।

संयुज् (वि०) [सम्+युज्+क्विप्] संबद्ध, संबंध रखने वाला शि० १४।५५।

संयुत (भू० क० कृ०) [सम्+यु+क्त] 1 मिला हुआ, एकत्र जोड़ा हुआ, संबद्ध 2 संपन्न, सहित, दे० सम् पूर्वक 'यु'।

संयोगः [सम्+युज्+घञ्] 1 संयोजन, मिलाप, मिश्रण, संगम, मिलना-जुलना, घनिष्ठता संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् सुभा० 2 जोड़ना (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में से एक) 3 जोड़ मिलाना 4 संबंध आत्मसंयोगः—भा० ६ 5 दो राजाओं में किसी एक से समान उद्देश्य के लिए मिलना 6. (व्या० में) संयुक्त व्यंजन 7 (ज्यो० में) दो तारिकाओं का मिलन 8. शिव का विशेषण। सम० - पृथक्त्वम् अनित्य संबंधों का पार्थक्य,—विरुद्धम् साथ-साथ मिलाकर खाने से रोग उत्पन्न करने वाला खाद्यपदार्थ।

संयोगिन् (वि०) [संयोग+इनि] 1 मिलाया हुआ, सम्मिलित 2 मिलने वाला।

संयोजनम् [सम्+युज्+ल्युट्] 1. मिलाप, एक साथ जोड़ना 2 मैथुन, संभोग।

संरक्त (भू० क० कृ०) [सम्+रञ्ज्+क्त] 1 रंगीन, लाल 2 आवेशपूर्ण, प्रणयाग्नि में दग्ध 3 क्रुद्ध, चिड़चिड़ा, क्रोधाग्नि से जलता हुआ 4 मोहित, मुग्ध 5 लावण्यमय, सुन्दर।

संरक्षः [सम्+रक्ष्+घञ्] प्ररक्षण, देख-भाल, संधारण।

संरक्षणम् [सम्+रक्ष्+ल्युट्] 1 प्ररक्षण, संधारण 2 उत्तरदायित्व निगरानी।

संरब्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रभ्+क्त] 1 उत्तेजित विक्षुब्ध 2 प्रज्वलित, संक्षुब्ध, क्रुद्ध, भीषण 3 वर्धित 4 सूजा हुआ 5 अभिभूत।

संरंभ. [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1 आरंभ 2 हुल्लड़, खलबली, उग्रता, प्रचण्डता श० ७ 3 विक्षोभ, उत्तेजना, हड़बड़ी -कु० ३।४८ 4 ऊर्जा, उत्साह उत्कण्ठा रघु० १०।६६ 5 क्रोध, रोष, कोप -प्रणिपातप्रतीकार संरंभो हि महात्मनाम् रघु० ४।६४, १२।३६, विक्रम० ३।२१, ४।२८ 6 घमंड, अहंकार 7 सोज और जलन (फोड़े फुंसी की)। सम०-रूक्ष (वि०) जो गुस्से के कारण कठोर हो गया हो, रस (वि०) अत्यंत क्रुद्ध, वेग. क्रोध की उग्रता।

संरम्भिन् (वि०) (स्त्री० णी) [संरम्भ+इनि] 1 उत्तेजित, विक्षुब्ध, हड़बड़ी से युक्त शि० २।६७ 2 क्रुद्ध, प्रकुपित, रोषाविष्ट 3 घमंडी, अहंकारी।

संरागः [सम्+रञ्ज्+घञ्] 1 रंगत 2 प्रणयोन्माद, अनुरक्ति 3 रोष क्रोध।

संराधनम् [सम्+राध्+ल्युट्] 1 प्रसन्न करना, मेल करना, पूजा आदि के द्वारा तुष्ट करना 2. संपन्न करना 3 प्रकृष्ट या गहन मनन।

संरावः [सम्+रु+घञ्] 1 गुलगपाड़ा, हल्लागुल्ला, शोरगुल 2 कोलाहल।

संरुग्ण (भू० क० कृ०) [सम्+रुज्+क्त] जो टुकड़े टुकड़े हो गया हो, चूर-चूर, छिन्नभिन्न।

संरुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रुध्+क्त] 1 रोका गया, बाधित, अवरुद्ध 2 ढका हुआ, भरा हुआ 3 घेरा डाला हुआ, वेष्टित, उपरुद्ध 4. ढका हुआ, छिपाया हुआ 5. अस्वीकृत. अटकाया हुआ, दे० सम् पूर्वक रुध्।

संरूढ (भू० क० कृ०) [सम्+रुह्+क्त] 1 साथ साथ

उगा हुआ 2 क्रियान्वित, भाव भरा हुआ, जैसा कि 'सरुद्रत्रण' में 3 फूटा हुआ, अंकुर निकला हुआ, मुकुलित, उपजा हुआ रघु० ६।४७ 4 पक्का जमा हुआ, जिसकी जड़ दृढ़ हो गई हो 5 साहसी, भरोसे का।

संरोधः [सम् + रुध् + घञ्] 1 पूरी रुकावट या विघ्न, अड़चन, रोक, रोक थाम 2 घेराबंदी, घेरना 3. बंधन, बेड़ी 4 फेंकना, डालना।

संरोधनम् [सम् + रुध् + ल्युट्] रुकावट, अड़गाना, रोकना।

संलक्षणम् [सम् + लक्ष् + ल्युट्] निशान लगाना, पहचानना विवेक करना।

संलग्न (भू० क० कृ०) [सम् + लग् + क्त] 1 घनिष्ठ, सटा हुआ, सतत, जुड़ा हुआ 2. गुत्थमगुत्था होना, भिड़ जाना।

संलय [सम् + ली + अच्] 1 लेटना, सोना 2. घुल जाना 3 प्रलय।

संलयनम् [सम् + ली + ल्युट्] 1 जुड़ जाना, चिपक जाना 2 घुल जाना।

संलालित (भू० क० कृ०) [सम् + लल् + क्त] लाड़ लगाया हुआ, प्यार किया हुआ।

संलापः [सम् + लप् + घञ्] 1 सम लाप, बातचीत, प्रवचन 2. गोपनीय या गुप्त बातें, अंतरंग वार्तालाप, 3 (नाटकों में) एक प्रकार का संवाद, सम्भाषण।

संलापकः [संलाप + कन्] एक प्रकार का उपरूपक, संवादात्मक प्रकार का, दे० सा० द० ५४९।

संलीढ (भू० क० कृ०) [सम् + लिह् + क्त] चाटा हुआ, उपभुक्त।

संलीन (भू० क० कृ०) [सम् + ली + क्त] 1 चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 2 साथ साथ मिलाया हुआ 3 छिपाया हुआ, गुप्त रक्खा हुआ 4 ढका हुआ 5 सिकुड़ा हुआ सिकुड़ा हुआ। —कर्ण (वि०) जिसके कान नीचे लटके हों, —मानस (वि०) खिन्नमना, उदास

संलोडनम् [सम् + लोड् + ल्युट्] बाधा डालना गड़बड़ करना।

संवत् (अव्य०) [सम् + वत् [illegible]] 1 वर्ष 2 विशेष कर विक्रमादित्य वर्ष, (जो ईसा० से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था।

संवत्सरः [संवसन्ति ऋतवोऽत्र सम् + वस् + सरन्] 1 वर्ष 2 विक्रमादित्याब्द 3. शिव। सम० —कर [illegible] [illegible], —भृत् (वि०) एक वर्ष में [illegible] रखने वाला (सूर्य) —रथ एक वर्ष का [illegible] मार्ग।

संवदनम् [सम् + वद् + ल्युट्] 1 बातचीत करना मिलकर बातें करना 2 समाचार देना 3 परीक्षण, सवाल करना 4 जादू मंत्र के द्वारा वश में करना 5 मन्त्र, तावीज।

संवरः [सम् + वृ + अप् वा अच्] 1 ढक्कन 2 समझ 3 सपीडन, सकोचन 4 बांध, सेतु, पुल 5. एक प्रकार का हरिण 6 एक राक्षस का नाम- दे० शंबर, —रम् 1 छिपाव 2 सहनशीलता, आत्मनियंत्रण 3. जल 4 बौद्धों का एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान।

संवरणम् [सम् + वृ + ल्युट्] 1 आवरण, आच्छादन 2 छिपाव दुराव — मा० १ 3 बहाना, छद्मवेश दे० संवर भी।

संवर्जनम् [सम् + वृज् + ल्युट्] 1 आत्मसात्करण 2 उपभोग करना खा जाना।

संवर्तः [सम् + वृत् + घञ्] 1 मुड़ना 2 घुलना, विनाश 3 ससार का नियतकालिक प्रलय महावीर० ६।२६ 4 बादल 5 (जल से भरा हुआ) बादल 6 ससार में प्रलय होने पर उठने वाले सात बादलों में से एक 7 वर्ष 8 सग्रह समुच्चय।

संवर्तकः [सम + वृत् + णिच् + ण्वुल्] 1 एक प्रकार का बादल 2 प्रलयाग्नि, विश्वप्रलय के समय ससार को भस्म करने वाली आग —क्लोऽपि वडवानलः सह समस्तासंवर्तकैः — अनं० २।३६, 3 वडवानल 4. बलराम का नाम।

संवर्तकिन् (पु०) [संवर्तक + इनि] बलराम का नाम।

संवर्तिका [संवर्त + टाप्, इत्वम्] 1 कमल का नया पत्ता 2 पराग केसर के पास की पखड़ी 3 दीप शिखा आदि (दीपादे शिखा —तारा०)।

संवर्धक (वि०) (स्त्री० —र्धिका) [सम + वृध् + णिच् + ण्वुल्] 1 पूर्ण विकसित करने वाला बढ़ाने वाला 2 सत्कार करने व प्रम स्वागत करने वाला (अभ्यागतों का) आतिथ्यकारी।

संवर्धित (भू० क० कृ०) [सम + वृध् + णिच् + क्त] 1 पाला-पोसा हुआ, पालन-पोषण किया हुआ 2 बढ़ाया हुआ।

संवलित (भू० क० कृ०) [सम् + वल् + क्त] 1 साथ मिला हुआ, मिलाया हुआ, मिश्रित मा० ६।५ 2 दूर किया हुआ मा० ४।२ 3 सबद्ध, सयुक्त 4 टूटा हुआ उदितोऽस्खलनसंवलिता (ध्वनयः) कि० ६।४।

संवल्गित (वि०) [सम् + वल्ग् + क्त] पददलित किया हुआ —सम् ध्वनि मा० ५।१९।

संवसथः [सम् + वस् + अथच्] मिलकर रहने का स्थान, ग्राम, बस्ती।

संवहः [सम् + वह् + अच्] वायु के सात मार्गों में से तीसरा मार्ग।

संवादः [सम् + वद् + घञ्] 1 मिलकर बोलना, बातचीत, वार्तालाप, कथोपकथन, महावीर० १।१२ 2 चर्चा, वादविवाद 3 समाचार देना 4 सूचना, समाचार 5 स्वीकृति, सहमति 6 समनुरूपता, मेल-जोल, समानता, सादृश्य —क्वचसंवादाक्च मयावगया पृष्ट दशा०, (नाद) विनाकर्षी परिचित इव श्रोत-संवादमेति मा० ५।२० ।

संवादिन् (वि०) [संवाद + इनि] 1 बोलने वाला, बातचीत करने वाला 2 सदृश, समान मिलता-जुलता अनुरूप षड्जसंवादिनी केका —रघु० १।३९, अस्मदङ्गसंवादिन्याकृति उत्तर० ६ ।

संवारः [सम् + वृ + घञ्] 1 आवरण आच्छादन 2 वर्णोच्चारण के समय कण्ठादिको का संकोचन मन्द उच्चारण (विप० विवार) 3 न्यूनता 4 परक्षण, संरक्षण 5 सुव्यवस्थापन ।

संवासः [सम् + वस् + घञ्] 1 मिलकर रहना 2 समाज, मण्डली पंच० १।२५० 3 घरेलू व्यवहार 4 घर, आवास स्थान 5 मनोरंजन के या सभा आदि के लिए खुला मैदान ।

संवाहः [सम् + वह् + घञ्] 1 ले जाना ढोना 2 मिलकर दबाना 3 मालिश करना मुट्ठी भरना 4 वह नौकर जो मालिश करने या मुट्ठी भरने के लिए रक्खा गया हो ।

संवाहकः [सम् + वह् + ण्वुल्] मालिश करने वाला, दे० ऊपर संवाह (4) ।

संवाहनम्,—ना [सम् + वह् + णिच् + ल्युट्] 1 बोझा ढोना, उठाकर ले जाना 2 मालिश करना मुट्ठी भरना,—उत्तर० १।२४, मा० ९।२५ ।

संविक्तम् [सम् + विच् + क्त] अलग किया हुआ, विविक्त ।

संविग्न [सम् + विज् + क्त] 1 विक्षुब्ध, उत्तेजित, अशान्त, उद्विग्न, घबराया हुआ जैसा कि 'संविग्न मानस' में 2. त्रस्त, भीत ।

संविज्ञात (भू० क० कृ०) [सम् + वि + ज्ञा + क्त] विश्वविदित, सबके द्वारा माना हुआ, सर्वसम्मत ।

संवित्तिः (स्त्री०) [सम् + विद् + क्तिन्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान चेतना, भावना स्वस्वंवेद्या मुक्तसंवित्ति स्मरणीयाऽधुनातनी—कि० ११।३४, १६।३२ 2 समझ, बुद्धि 3 पहचान, प्रत्यास्मरण 4 (भावना का) सामञ्जस्य, मानसिक समझौता ।

संविद् (स्त्री०) [सम् + विद् + क्विप्] 1 ज्ञान समझ, बुद्धि - कि० १८।४२ 2 चेतना, प्रत्यक्षज्ञान मा० ६।१३ 3 इकरार, वचन, संविदा, अनुबन्ध, प्रतिज्ञा रघु० ७।३१ 4 स्वीकृति, सहमति 5 माना हुआ प्रचलन, विहित प्रथा 6 संग्राम, युद्ध, लड़ाई 7 युद्ध की ललकार, प्रहरी संकेत 8 नाम, अभिधान 9 चिह्न संकेत 10 प्रसन्न करना, खुश करना, तुष्टीकरण शि० १६।३७ 11 सहानुभूति, साथ देना 12 मनन 13 वार्तालाप, संलाप 14 भोग । सम० —व्यतिक्रमः प्रतिज्ञा भंग करना, संविदा का उल्लंघन ।

संविदा [संविद् + टाप्] करार, प्रतिज्ञा ठेका ।

संविदान (वि०) जानने वाला प्रतिभाशाली 2 सामञ्जस्यपूर्ण ।

संविदित (भू० क० कृ०) [सम् + विद् + क्त] 1 जाना हुआ समझा हुआ 2 पहचाना हुआ 3 सर्वविदित विश्रुत 4 खोजा हुआ 5 सम्मत 6 उपदिष्ट समझाया बुझाया हुआ दे० सम् [illegible] —तम् करार प्रतिज्ञा ।

संविधा [सम् + वि + धा + अङ् + टाप्] 1 व्यवस्था उपक्रमण प्रावधान रघु० ३।९, १४।१७ 2 जीवन यापन का ढंग जीवनचर्या के साधन रघु० १।९४ ।

संविधानम् [सम् + वि + धा + ल्युट्] 1 व्यवस्था प्रबन्ध [illegible] 2 अनुष्ठान 3 साधन [illegible] 4 कार्य 5 (कथानक का) घटनाओं का क्रम मा० ६ ।

संविधानकम् [संविधान + कन्] 1 (कथानक में) घटनाओं का क्रम किया जाना [illegible] संविधान कम् उत्तर० ७ 2 अद्भुत कम असाधारण घटना ।

संविभागः [सम् + वि + भज् + घञ्] 1 विभाजन बांटना 2 भाग अंश दिया ।

संविभागिन् (पुं०) [संविभाग + इनि] सहभागी हिस्सेदार साझीदार ।

संविष्ट (भू० क० कृ०) [सम् + विश् + क्त] 1 सोता हुआ लेटा हुआ रघु० १।९५ 2 साथ-साथ घुसा हुआ 3 मिलकर बैठा हुआ 4 वस्त्र पहने हुए कपड़े धारण किये हुए ।

संवीक्षणम् [सम् + वि + ईक्ष् + ल्युट्] सब दिशाओं में देखना खोज खोई हुई वस्तु की तलाश ।

संवीत (भू० क० कृ०) [सम् + व्ये + क्त] 1 वस्त्रों से सज्जित कपड़े पहने हुए 2 ढका हुआ, लिपटा हुआ, आच्छादित 3 अलंकृत 4 लपेटा हुआ, घेरा हुआ, बन्द किया हुआ, परिवेष्टित 5 अभिभूत ।

संवृक्त (भू० क० कृ०) [सम् + वृज् + क्त] 1 खाया हुआ, उपभुक्त 2 नष्ट ।

संवृत (भू० क० कृ०) [सम् + वृ + क्त] 1 ढका हुआ आच्छादित मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठ (मुखम्)—श० ३।२६ 2 प्रच्छन्न, गुप्त श० २।११ 3 रहस्य 4 समाप्त बन्द, सुरक्षित 5 अवकाश प्राप्त, एकान्तसेवी 6 संकुचित भींचा हुआ 7 बलपूर्वक छीना हुआ जब्त किया हुआ 8 भरा हुआ, पूर्ण 9 सहित, दे० सम् पूर्वक वृ —तम् 1 गुप्त स्थान, एकान्त स्थान

गोपनीयता 2 उच्चारण का एक प्रकार। सम० —आकार (वि०) जो अपनी आन्तरिक भावनाओं को बाहर प्रकट नहीं होने देता है जो अपने मन के विचारों का [illegible] पता नहीं देता, —मन्त्र (वि०) जो अपनी योजनाओं को गुप्त रखता है रघु० १।२०।

संवृति (स्त्री०) [सम् + वृ + क्तिन्] 1 आवरण, आच्छादन 2 छिपाव, रखना, गुप्त रखना कि० १०।८० 3 गुप्त प्रयोजन, अभिसन्धि।

संवृत्त (भू० क० कृ०) [सम् + वृत् + क्त] 1 हुआ, घटा, घटित हुआ 2 [illegible] 3 संचित, एकस्थान पर राशीकृत 4 बीता हुआ, गया हुआ 5 ढका हुआ 6 [illegible] का नाम।

संवृत्ति (स्त्री०) [सम् + वृत् + क्तिन्] 1 होना, घटना, घटित होना 2 निष्पन्नता 3 आवरण।

संवृद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + वृध् + क्त] 1 पूर्ण विकसित, बड़ा हुआ, पूर्ण वृद्धि को प्राप्त 2 ऊँचा, लम्बा, बड़ा हुआ, [illegible] 3 समृद्धिशाली, फलता-फूलता हुआ।

संवेग [सम् + विज् + घञ्] 1 [illegible] 2 प्रचण्ड गति [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible]।

संवेद [सम् + विद् + घञ्] प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, चेतना, भावना।

संवेदनम् [सम् + विद् + ल्युट्] 1 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 2 राग, अनुभूति, भावना, अनुभूति, भोगना —दुःखसंवेदनायैव राम चैतन्यमर्पितम् उत्तर० १।४७ 3 देना, आत्मसमर्पण करना मुद्रा० १।२३।

संवेशः [सम् + विश् + घञ्] 1 निद्रा, विश्राम रघु० १।९३ 2 स्वप्न 3 आसन (कुर्सी आदि) 4 मैथुन, संभोग या रतिबन्ध विशेष।

संवेशनम् [सम् + विश् + ल्युट्] मैथुन, संभोग।

संव्यानम् [सम् + व्ये + ल्युट्] 1 आवरण, परिवेष्टन 2 वस्त्र, कपड़ा, परिधान 3 उत्तरीय वस्त्र शि० १८।९१।

संशप्तकः [सम्यक् शप्तम् शपथकरणं यस्य कप्] वह योद्धा जिसने युद्ध से न भागने की शपथ खायी हो और जो दूसरे योद्धाओं को भागने से रोकने के लिए रक्खा गया हो 2 [illegible] हुआ योद्धा 3 सहयोगी योद्धा 4 वह षड्यन्त्रकारी जिसने किसी को मार डालने का बीड़ा उठाया हो।

संशयः [सम् + शी + अच्] 1 सन्देह, अनिश्चिति, अपकला, संकोच —मनस्तु मे संशयमेव गाहते कु० ५। ४६, त्वत्संभावितमात्मानं बहु मन्यामहे वयम्। प्रायः प्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमादरः कु० ६।२० ... न हि उपपद्यते मा० ६।३९ 2 शंका, भय 3 सन्देह, या अनिर्णय (न्या० में) न्यायदर्शन में वर्णित सोलह पदार्थों में से एक —एकधर्मिकविरुद्धभावाभावप्रकारकं ज्ञानं संशयः 4 डर, खतरा —नासंशयं न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति हि० २।७, यातो पुनः संशयमन्यथैव —मा० १०।१३ कि० १३।१६ वेणी० ६।११ 5 संभावना। सम० —आत्मन् (वि०) सन्देह करने वाला, शंकाशील, आपन्न, उपेत, —स्थ (वि०) सन्देहपूर्ण, अनिश्चित, अस्थिर, —गत (वि०) खतरे में पड़ा हुआ, —छेदः सन्देह का निवारण, निर्णय, —छेदिन् (वि०) सभी सन्देहों को मिटाने वाला, निर्णायक — श० ३।

संशयान, संशयालु (वि०) [सम् + शी + शानच्, संशय + आलुच्] सन्देहपूर्ण, अस्थिर, अनिश्चित, चंचल।

संशरणम् [सम् + शृ + ल्युट्] युद्ध का आरम्भ, आक्रमण, चढ़ाई, धावा।

संशित (भू० क० कृ०) [सम् + शो + क्त] 1 तेज किया हुआ, आलोकित किया हुआ 2 तेज, तीक्ष्ण 3 सर्वथा पूरा किया हुआ, क्रियान्वित, निष्पन्न 4 निर्णीत, सुनिश्चित, निर्धारित, निश्चित। सम० —आत्मन् (वि०) जिसका मन सर्वथा परिपक्व या अनशिष्ट है —व्रत (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली है।

संशुद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + शुध् + क्त] 1 पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, पवित्र 2 पालिश किया हुआ, संस्कृत 3 प्रायश्चित्त के द्वारा विशुद्ध किया हुआ।

संशुद्धि (स्त्री०) [सम् + शुध् + क्तिन्] 1 नितान्त पवित्रीकरण [illegible] १५।११ 2 स्वच्छ करना, विमल करना 3 संशोधन, समाधान, परिशोधन 4 स्वच्छता, सफाई 5 (ऋण का) भुगतान।

संशोधनम् [सम् + शुध् + ल्युट्] पवित्रीकरण, स्वच्छता आदि।

संश्चत् (नपुं०) [सम् + श्चु + शति] दाव-पेंच, चातुरी, इन्द्रजाल, मरीचिका पु० जादूगर।

संश्यान (भू० क० कृ०) [सम् + श्यै + क्त] 1 संकुचित, सिकुड़ा हुआ 2 जमा हुआ, ठिठुरा हुआ 3 लपेटा हुआ 4 उपसन्न।

संश्रय [सम् + श्रि + अच्] विश्रामस्थल, आवास स्थान, निवासस्थान, वासस्थान —परस्पर विरोधिन्योरेकसंश्रयदुर्लभम् विक्रम० ५।२४ रघु० ९।४१, इस अर्थ में प्राय समास के अन्त में, 'साथ रहने वाला' 'संबद्ध या विषयक' 'निर्देशानुसार' —आतिकुलैकसंश्रयान् —श० ५।१७ नौसंश्रय रघु० १६।५७, मनोरथोऽस्याः शशिमौलिसंश्रयः कु० ५।६०, हिंसाया प्रीतिसंश्रय

लक्ष्मी - १।४३ एकार्थसंश्रयमुभयो: प्रयोगम् मालवि० १ 2. प्ररक्षण या शरण की खोज, शरण के लिए दौड़ना, मित्रता करना, पारस्परिक प्ररक्षण के लिए संघटित होना, राजनीति में वर्णित छः उपायों में से एक, दे० 'गुण' के अन्तर्गत भी, मनु० ७।१६० 3 आश्रय, शरण, आश्रम, प्ररक्षण स्थान — अनपायिनि संश्रयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी कु० ४।३१ मेघ० १७, पंच० १।२२ ।

संश्रवः [सम् + श्रु + अप्] 1 ध्यानपूर्वक सुनना 2 प्रतिज्ञा, करार, वादा ।

संश्रवणम् [सम् + श्रु + ल्युट्] 1 सुनना 2 कान ।

संश्रित (भू० क० कृ०) [सम् + श्रि + क्त] 1 शरण में गया हुआ 2 सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ।

संश्रुत (भू० क० कृ०) [सम् + श्रु + क्त] 1 प्रतिज्ञात करार किया हुआ 2 भली भांति सुना हुआ ।

संश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [सम् + श्लिष् + क्त] 1 बांधा हुआ, साथ साथ मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त 2. आलिंगित 3 संबद्ध, साथ साथ जुड़ा 4 सटा हुआ, संस्पर्शी, संसक्त 5 सुसज्जित, युक्त, सहित ।

संश्लेषः [सम् + श्लिष् + घञ्] 1 आलिंगन, परिरम्भण 2. मिलाप, संबंध, संपर्क ।

संश्लेषणम्,-णा [सम् + श्लिष् + ल्युट्] 1 मिला कर बींधना 2. साथ साथ बांधने का साधन ।

संसक्त (भू० क० कृ०) [सम् + सञ्ज् + क्त] 1 साथ जुड़ा हुआ, चिपका हुआ 2 जमा हुआ, संलग्न, आसक्त, सटा हुआ 3 साथ मिलाया हुआ, शृंखलाबद्ध, पास पास मिला हुआ रघु० ७।२८ 4 निकट, आसन्न, सटा हुआ 5 अव्यवस्थित, मिला हुआ, मिश्रित, गड़बड़ किया हुआ — मदमुखरमयूरी मुक्तसंसक्तकेकं मा० ९।१५, कलिन्दकन्या मथुरां गतापि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति रघु० ६।४८ मा० ५।११ 6 डटा हुआ, तुला हुआ 7 साथ, सहित 8. जकड़ा हुआ, प्रतिबद्ध । सम० — मनस् (वि०) जिसका मन किसी विषय पर जमा हुआ हो, — युग (वि०) जुए में जुता हुआ, जीन कसा हुआ शि० ३।६३ ।

संसक्तिः [सम् + सञ्ज् + क्तिन्] 1 सटे रहना, घनिष्ट मिलन या संगम कि० ७।७ 2 घनिष्ट संपर्क, सामीप्य 3 आपसी संगम, घनिष्ठता, घनिष्ट परिचय शि० ९।६७ 4 बांधना, मिला कर जकड़ना 5 भक्ति (किसी वस्तु में) दत्तचित्तता ।

संसद् (स्त्री०) [सम् + सद् + क्विप्] 1 सभा, समिति, न्यायालय — सभामुखाने पुरुषाधिकारं कि० ३।६ ५४ सत्सदि महाकीर्ति - रघु० २ रघु० १६।२४ 2 न्याय मनु० ८।५२ ।

संसरणम् [सम् + सृ + ल्युट्] 1 जाना, प्रगति करना, चक्कर काटना 2 संसार, सांसारिक जीवन, लौकिक सत्ता — ग्रीष्मचण्डकरमण्डलभीष्मज्वालसंसरणतापितमूर्ते: भामि० ४।६ 3 जन्म और पुनर्जन्म 4 सेना का निर्बाध कूच 5 युद्ध का आरम्भ 6 राजमार्ग 7 नगर के दरवाजों के समीप की धर्मशाला ।

संसर्गः [सम् + सृज् + घञ्] 1 सम्मिश्रण, संगम, मिलाप 2. संपर्क, संगति, साहचर्य, समाज — संसर्गमुक्तिः खलेषु भर्तृ० २।६२, श० २।३ 3 सामीप्य, संस्पर्श 4 मेल-जोल, परिचय 5 मैथुन, संभोग मनु० ६।७२ 6 सह-अस्तित्व, घनिष्ठ संबंध । सम० — अभाव: अभाव के दो मुख्य भेदों में से एक, सापेक्ष अभाव जो तीन प्रकार का है (प्रागभाव पूर्ववर्ती अभाव, प्रध्वंसाभाव, आपाती अभाव और अत्यन्ताभाव निरपेक्ष अनस्तित्व), — दोषः साहचर्य या संगति के विशेषकर कुसंगति के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली बुराई या दोष ।

संसर्गिन् (वि०) [संसर्ग + इनि] संयुक्त, मिला हुआ (पुं०) सहचर, साथी ।

संसर्जनम् [सम् + सृज् + ल्युट्] 1 सम्मिश्रण 2 छोड़ना, परित्याग करना 3 खाली करना, शून्य करना ।

संसर्पः [सम् + सृप् + घञ्] 1 सरकना, रेंगना 2 मल-मास, लौंद का महीना जो क्षयमास वाले वर्ष में होता है ।

संसर्पणम् [सम् + सृप् + ल्युट्] 1 सरकना 2 अचानक आक्रमण, सहसा धावा ।

संसर्पिन् (वि०) [संसर्प + इनि] सरकने वाला, रेंगने वाला कु० ७।८१ ।

संसादः [सम् + सद् + घञ्] सभा ।

संसारः [सम् + सृ + घञ्] 1 मार्ग, रास्ता 2 सांसारिक आवागमन, धर्मनिरपेक्ष जीवन, लौकिक जिंदगी, दुनिया, असार संसार उत्तर० १ मा० ५।३०, संसारधन्वभुवि कि सारमामृतमिहाधुना सुभगसे भट्ट० ... या परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जा० १ ... ३ आवागमन, जन्मान्तर, जन्म-परम्परा 4 सांसारिक भ्रम । सम० — गमनम् आवागमन — गुरुः कामदेव का विशेषण, — मार्गः 1 सांसार वाले का क्रम, सांसारिक जीवन 2 योनिमुख, भगद्वार, — मोक्षः, — मोक्षणम् ऐहिक जीवन से मुक्ति ।

संसारिन् (वि०) (स्त्री० -णी) [संसार + इनि] सांसारिक, दुनियावी, इहलोकगामी, पुं० 1 सजीव प्राणी, जन्तु 2 आत्मा, जीवात्मा ।

संसिद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + सिध् + क्त] 1 संपन्न, निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2 जिसे मोक्ष की सिद्धि प्राप्त हो गई है, मुक्त ।

संसिद्धि: (स्त्री०) [सम्+सिध्+क्तिन्] 1 पूर्णता, पूर्ण निष्पन्नता स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम् भाग० क० २।६३ 2 कैवल्य, मोक्ष —संसिद्धिं परमां गताः —भग० ८।१५ ३।२० 3 प्रकृति नैसर्गिक वृत्ति, अवस्था या गुण 4 प्रसन्नता या नशे में चूर स्त्री।

संसूचनम् [सम्+सूच्+ल्युट्] 1 प्रकट करना, सिद्ध करना 2 सूचित करना, कहना 3 संकेत करना, भत्सना करना अर्थस्य संसूचनम् 4 भर्त्सना, झिड़कना।

संसृति (स्त्री०) [सम्+सृ+क्तिन्] 1 मार्ग, धारा, प्रवाह 2 लौकिक जीवन, संसारचक्र 3 देहान्तरगमन, आवागमन-कि मां निपातयसि संसृतिगर्तमध्ये भामि० ४।३२ शि० १४।६३, तु० 'संसार'।

संसृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+सृज्+क्त] 1 मिश्रित, मिला हुआ, साथ साथ मिलाया हुआ, सम्मिलित किया हुआ 2 साझीदारी की भांति साथ साथ संबद्ध 3 प्रशांत 4 पुनर्युक्त 5 फँसा हुआ 6 निर्मित 7 स्वच्छ वस्त्रों से सुसज्जित।

संसृष्टता-त्वम् [सम्+सृज्+क्त+ता (त्वम्)] 1 समाज, संघ 2 (विधि में) आर्थिक हित की दृष्टि से बंधु बान्धवों का ऐच्छिक पुनर्मिलन (जैसे कि पिता और पुत्र का अथवा संपत्ति के विभाजन के पश्चात् भाइयों का)।

संसृष्टि (स्त्री०) [सम्+सृज्+क्तिन्] 1 संबंध, मिलाप 2 सहचर्य, मेल जोल, सहभागिता, साझीदारी 3 एक ही परिवार में मिलकर रहना, दे० संसृष्टता (2) 4 संग्रह, संचय करना, जोड़ना 6 (सा० में) एक ही संदर्भ में दो या दो से अधिक अलंकारों का स्वतंत्र रूप से सह अस्तित्व 'मिथोऽनपेक्षतयैषां (शब्दार्थालंकाराणाम्) स्थिति: संसृष्टिरुच्यते' सा० द० ७५६।

संसेक [सम्+सिच्+घञ्] छिड़कना, जल से तर करना।

संस्कर्तृ (पुं०) [सम्+कृ+तृच्] 1 जो सुसज्जित करता है, खाना बनाता है या किसी प्रकार की तैयारी करता है मनु० ५।५१ 2 जो अभिमंत्रित करता है, पहल करता है उत्तर० ४।२१।

संस्कार: [सम्+कृ+घञ्] 1 पूर्ण करना, सुधार करना, पालिश करना (मणि) प्रयुक्तसंस्कार इवाधिकं बभौ रघु० ३।१८ 2 परिष्कार, शुद्धता, व्याकरण की दृष्टि से (शब्दों की) निर्दोषता कु० १।२८ (यहाँ मल्लि० 'व्याकरणजन्या शुद्धिः' लिखता है) रघु० १५।७६ 3 शिक्षा, अनुशीलन (मानसिक) प्रशिक्षण -निसर्गसंस्कारविनीत इत्यसौ नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।३५ कु० ७।७० 4 तैयार करना, बनाना 5 खाना बनाना, भोज्य पदार्थ तैयार करना 6 शृंगार, सजावट, अलंकार स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते दृष्टान्त० ६९, श० ७।२३, मुद्रा० २।१० 7 अभिमन्त्रण, मन्त्र-शुद्धि, पवित्रीकरण 8 छाप, रूप, सांचा, कार्यवाही, प्रभाव यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत् —हि० प्र० ८, भर्तृ० ३।८४ 9 विचार, भाव, प्रत्यय 10 मन:शक्ति या धारिता 11 कार्य का प्रभाव, किसी कर्म का गुण रघु० १।२० 12. अपनी पूर्व-जन्म की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का गुण, भाव शक्ति की शक्ति, वैशेषिकों द्वारा माने हुए चौबीस गुणों में से एक (यह गुण तीन प्रकार का है, भावना, वेग और स्थिति-स्थापकता) 13 प्रत्यास्मरणशक्ति, स्मरण संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः तर्क० 14 शुद्धिसंस्कार, पुनीत कृत्य, पुण्यसंस्कार संस्कारार्थं शरीरस्य मनु० २।६६, रघु० १०।७९ मनु बारह संस्कारों का उल्लेख करता है—दे० मनु० २।२७ कुछ लेखक इस संख्या को सोलह तक बढ़ाते हैं। 15 धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान 16 उपनयन संस्कार 17 अन्त्येष्टि संस्कार 18 मांजकर चमकाने के काम आने वाला पत्थर, झांवा श० ६।८ (यहाँ संस्कार का अर्थ 'मांजना' भी है)। सम० **पूत** (वि०) 1 पुण्यकृत्यों द्वारा शुद्ध किया हुआ 2 शिक्षा या अन्य संस्कारों द्वारा पवित्र किया हुआ, **रहित, वर्जित, हीन** (वि०) वह द्विज जो संस्कार हीन है अथवा जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, और इस लिए जो व्रात्य (पतित, जाति-बहिष्कृत) हो गया हो, तु० व्रात्य।

संस्कृत (भू० क० कृ०) [सम्+कृ+क्त] 1 पूरा किया गया, परिष्कृत, मांज कर चमकाया हुआ, भावविशुद्धा— संस्कृता सम्मतकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते भर्तृ० २।१९ 2 कृत्रिम रूप से बनाया गया, सुरचित, सुनिर्मित, सुसम्पादित 3 तैयार किया गया, सजाया गया, सुसज्जित किया गया, पकाया गया (भोजन) 4 अभिमन्त्रित, पुनीत किया गया 5 सांसारिक जीवन में दीक्षित, विवाहित 6 स्वच्छ किया गया, शुद्ध किया गया 7 अलंकृत किया गया, सजाया गया 8 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, —तः 1 व्या-करण के नियमों के अनुसार सिद्ध किया गया शब्द, नियमित व्युत्पन्न शब्द 2 द्विजाति का व्यक्ति जिसका शुद्धिसंस्कार हो चुका हो 3 विद्वान् पुरुष, —तम् 1 परिष्कृत या परिमार्जित भाषा, संस्कृत भाषा 2 धार्मिक प्रथा 3 चढ़ावा, आहुति (बहुधा वैदिक)।

संस्क्रिया [सम्+कृ+श+टाप्] 1 शुद्धिसंस्कार

2 अभिमन्त्रण 3 और्ध्वदैहिकक्रिया अन्त्येष्टि संस्कार ।

संस्तम्भ [सम् + स्तम्भ् + घञ्] 1 सहारा टेक 2 दृढ़ करना सबल बनाना जमाना 3 विराम यति 4 जड़ता, लकवा ।

संस्तर [सम् + स्तृ + अप्] 1 शय्या पलंग बिस्तर नवपल्लवसंस्तरेऽपि ते रघु० ८।५७ नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं विभावसौ कु० ४।३४, 2 यज्ञ ।

संस्तव: [सम् + स्तु + अप्] 1 प्रशंसा स्तुति 2 जान पहचान, घनिष्ठता परिचय यथा प्रियसंस्तवेऽपि न सम्भव नि० ८।७५ सर्वगुणैः संस्तुतिरनाव स्थिर निरागिक प्रेम घनागमिश्र ७।२२ शि० ७।३१ ।

संस्ताव: [सम् + स्तु + घञ्] 1 प्रशंसा स्तुति 2 सम्मिलित स्तुतिपाठ 3 यज्ञ में स्तुति पाठक ब्राह्मणों के बैठने का स्थान ।

संस्तुत (भू० क० कृ०) [सम् + स्तु + क्त] 1 प्रशंसित जिसकी स्तुति की गई हो 2 मिलकर प्रशंसा किया गया 3 सम्मत, सवादी 4 घनिष्ठ परिचित ।

संस्तुति (स्त्री०) [सम् + स्तु + क्तिन्] प्रशंसा स्तुति ।

संस्त्याय: [सम् + स्त्यै + घञ्] 1 संचय, राशि संघात 2 सामीप्य 3 फैलाव, प्रसार, विस्तार 4 घर निवासस्थान, आवास संस्त्यायमेव गच्छाम मा० १।१९ 5 परिचय, मित्रों या परिचितों की बातचीत ।

संस्थ (वि०) [सम् + स्था + क] 1 ठहरने वाला, डटा रहने वाला टिकाऊ 2 रहने वाला विद्यमान मौजूद, स्थित (मास के अन्त में) शिष्टा क्रिया कस्य चिदात्मसंस्था मालवि० १।५६ कु० ६।६० मा० ५।१६ 3 पालतू, घरेलू बनाया हुआ, सधाया हुआ 4 स्थिर अचल 5 समाप्त, नष्ट, मृत, स्थः 1 निवासी वास्तव्य 2 पड़ौसी स्वदेशवासी, 3 गुप्तचर ।

संस्था [सम् + स्था + अङ् + टाप्] 1 संघात सभा 2 स्थिति, प्राणी की अवस्था या दशा 3 रूप प्रकृति रघु० १९।३८ 4 धंधा, व्यवसाय, रहन-सहन का बंधा हुआ तरीका पृथक् संस्थाश्च निर्ममे मनु० १।२१ 5 शुद्ध और उचित आचरण 6 अन्त पूर्ति 7 विराम, यति 8 हानि विनाश 9 प्रलय 10 अनुकल्पना 11 राजकीय आज्ञा 12 सोम यज्ञ का एक रूप ।

संस्थानम् [सम् + स्था + ल्युट्] 1 संचय राशि मात्रा 2 प्राथमिक अणुओं की समष्टि 3 आकृति विन्यास आकृतिरवयवसंस्थानविशेष 4 रूप आकृति दर्शन, सूरत, शक्ल स्त्री संस्थानं चाप्सरस्तीर्थमारात् पुलिशपैशा ज्योतिरेकं जगाम श० ५।३० मनु० ९।२६१ 5 रचना, निर्माण 6 पड़ौस 7 आवास का सामान्य स्थल सार्वजनिक स्थान 8 स्थिति अवस्था 9 कोई स्थान या जगह 10 चौराहा 11 निशान चिह्न विशेषक चिह्न 13 मृत्यु ।

संस्थापनम् [सम् + स्था + णिच् + ल्युट्] 1 एक स्थान पर रखना संचय करना 2 जमाना निर्धारित करना, विनियमित करना कुलीन जैसा प्रजासंस्थापनं पुरः मनु० ८।१७२ 3 स्थापित करना पुष्ट करना 4 नियंत्रित करना दमन करना ना 1 नियन्त्रण, दमन 2 शान्त करने के उपाय संस्थापना प्रियतरा विरहातुराणाम् श० ३।३ ।

संस्थित (भू० क० कृ०) [सम् + स्था + क्त] 1 साथ साथ खड़ा होने वाला 2 विद्यमान रहने वाला नियोगसम्स्थित पञ्च० १।१० 3 मरा हुआ मिला हुआ 4 मिलता जुलता, समान 5 संचित राशीकृत 6 स्थिर जमा हुआ स्थापित 7 अन्दर या ऊपर रखा हुआ अन्तर्वर्ती 8 अचल 9 रोका हुआ पूरा किया हुआ अन्त तक निष्पन्न समाप्त श० ३ 10 मृत उपरत ह० मृत पुरुष रथा ।

संस्थिति (स्त्री०) [सम् + स्था + क्तिन्] 1 साथ-साथ होना, मिल के रहना 2 सटा होना, निकटता सामीप्य 3 निवासस्थान आवासस्थल विश्रामगृह यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् मनु० ६।९० 4 संचय ढेर 5 अवधि कालावधि हि० १।४३ 6 अवस्थान स्थिति जीवन की दशा 7 प्रतिबन्ध 8 मृत्यु ।

संस्पर्श [सम् + स्पृश् + घञ्] 1 सपर्क छूना, सम्मिश्रण मिश्रण 2 छुआ जाना प्रभावित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान संवेदन ।

संस्पर्शा [सम् + स्पृश् + अच् + टाप्] एक प्रकार का गन्धयुक्त पौधा ।

संस्फाल [सम्यक् स्फालः स्फुरणं यस्य प्रा० ब०] 1 मेंढा 2 बादल ।

संस्फेट, संस्फोट [सम् + स्फिट (स्फुट्) + घञ्] संग्राम युद्ध ।

संस्मरणम् [सम् + स्मृ + ल्युट्] याद करना मन में लाना ।

संस्मृति (स्त्री) [सम् + स्मृ + क्तिन्] याद प्रत्यास्मरण, संस्मृतिमेत्य भवत्यभवाय कि० १८।२७ ।

संस्रव, संस्राव [सम् + स्रु + अप् घञ् वा] 1 बहना टपकना रिसना 2 सरिता 3 तर्पण या अवशिष्टांश 4 एक प्रकार का चढ़ावा या तर्पण ।

संहत (भू० क० कृ०) [सम् + हन् + क्त] 1 मिलकर आघात किया हुआ घायल 2 बन्द, अवरुद्ध 3 सुग्रथित दृढ़तापूर्वक जुड़ा हुआ 4 मिलाकर जोड़ा हुआ मित्रता में बंधा हुआ कि० १।१९ 5 संयुक्त,

दृढ़, ठोस 6 सबद्ध, युक्त, मिलाकर रक्खा हुआ, शरीर का अंग बना हुआ, सटा हुआ —आत्मसादाय गच्छन्ति सहसा पक्षिणोऽल्पमी —पंच० २।९, ५।२०१ हि० १।३७ 7 एकमत 8 सघात सचित। सम० **—जानु** (वि०) जिसके घुटने आपस में टकराते हों, लगजानुक, **—भ्रू** (वि०) सघन भौंहों से युक्त **—स्तनी** वह स्त्री जिसके दोनों स्तन सटे हुए हों।

संहतता, —त्वम् [सहत + तल्, त्व (त्व)] 1 घना सपर्क, सयोजन 2 सम्पृक्तता 3 सहमति एकता 4 सामनस्य, समेकता।

संहतिः (स्त्री०) [सम् + हन् + क्तिन्] 1 दृढ़ या घना सपर्क, घनिष्ट मेल —कु० ५।८ 2 सघ, संमिलन, सहति —संहतिः श्रेयसी पुंसां स्वकुलैरल्पकैरपि —हि० १, मु० —सघे शक्ति 3. सयुक्तता, दृढ़ता, ठोसपन 4 पुंज, राशि—गुरुता नयन्ति हि गुणा न संहतिः कि० १२।१० 5 सहमति, सामनस्य 6 सचय, ढेर, सघात, समुच्चय —वनान्यवाञ्चाव सकार संहति कि० १४।३४, २७, ३।७०, ५।४, मुद्रा० ३।२ 7. सामर्थ्य 8 पिण्ड, समवाय।

संहननम् [सम् + हन् + ल्युट्] 1 सघनता, दृढ़ता 2 देह, व्यक्ति—अमृताध्मातजीमूतस्निग्धसंहननस्य ते —उत्तर० ६।२१, महावीर० २।४६ 3 सामर्थ्य, दे० संहति भी।

संहरणम् [सम् + हृ + ल्युट्] 1. एकत्र करना, साथ-साथ मिलाना, सचय करना 2 लेना, ग्रहण करना 3. सिकोड़ना 4 नियंत्रित करना 5 नष्ट करना, बर्बाद करना।

संहर्तृ (पु०) [सम् + हृ + तृच्] विनाशक, नष्ट करने वाला।

संहर्षः [सम् + हृष् + घञ्] 1 रोमांच होना, भय या हर्ष से पुलकित होना 2 आनन्द, हर्ष, खुशी 3 प्रतियोगिता, होड़, प्रतिद्वन्द्विता 4 वायु 5 साथ-साथ रगड़ना।

संहातः [सम् + हन् + घञ्, वा० कुत्वाभाव, सघात का पाठान्तर] इक्कीस नरकों में से एक —मनु० ४।८९।

संहारः [सम् + हृ + घञ्] 1. मिलाकर खींचना, या साथ-साथ लाना, सचय करना —अनुभवतु वेणीसहार-महोत्सवम्—वेणी० ६ 2 संकोचन, भींचना, सक्षेपण 3 रोक देना, पीछे खींच लेना, वापिस लेना (विप० प्रयोग या विक्षेप) प्रयोगसंहारविभक्तमन्त्रम् —रघु० ५।५७, ४५ 4 प्रतिबंध लगाना, रोक लेना 5. विनाश, विशेषकर सृष्टि का, प्रलय, विश्वनाश 6. समाप्ति, अन्त, उपसंहार 7 सघात, समूह 8. उच्चारण दोष 9. जादू के अस्त्रास्त्रों को वापिस हटाने के लिए मंत्र या जादू 10 व्यवसाय, कुशलता 11 नरक का एक प्रभाग। सम० **—भैरवः** भैरव का एक रूप, **—मुद्रा** तन्त्रपूजा में विशेष प्रकार की मुद्रा, इसकी परिभाषा —अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वास्यं दक्षहस्तकम्। क्षिप्त्वाङ्गुलीरङ्गुलीभिः संगृह्य परिवर्तयेत्॥

संहित (भू० क० कृ०) [सम् + धा + क्त, हि आदेश] 1 साथ-साथ रक्खा हुआ, मिला हुआ, सयुक्त 2 सहमत, समनस्क, अनुकूल 3 सम्बन्धी 4. सचित 5 अन्वित, सुसज्जित, सहित, युक्त 6 उत्पन्न दे० सम् पूर्वक धा।

संहिता [संहित + टाप्] 1 सम्मिश्रण, सघ, सयोजन 2 सचय, सकलन, संग्रह 3 कोई पद्य या गद्यसग्रह जिसका क्रम सुव्यवस्थित हो 4 विधि या कानूनों का सग्रह या सकलन (किसी विषय के) नियम, नियमावली, सारसग्रह, मनुसंहिता 5 वेद का क्रमबद्ध सत्रपाठ, या विभिन्न शाखाओं के अनुसार उच्चारण-सम्बन्धी परिवर्तनों से युक्त पदपाठ—पदप्रकृतिः संहिता —नि० 6 (व्या० में) सन्धि के नियमों के अनुसार वर्णों का मेल —पा० १।४।१०९, वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात् —सिद्धा०, या, वर्णानामेकप्राणयोग संहिता 7 विश्व को सघटित रखने वाली शक्ति, परमात्मा।

संहृति (स्त्री०) [सम् + ह्वे + क्तिन्] चीखना, चिल्लाना, भारी हंगामा, अत्यन्त शोरगुल।

संहृत (भू० क० कृ०) [सम् + हृ + क्त] 1 मिलाकर खींचा हुआ 2 सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ 3 वापिस लिया हुआ, पीछे खींचा हुआ 4. सचित, सगृहीत 5 पकड़ा हुआ, हाथ डाला हुआ 6. दबाया हुआ, नियन्त्रण में रक्खा हुआ 7 नष्ट किया हुआ।

संहृतिः (स्त्री०) [सम् + हृ + क्तिन्] 1 सिकुड़न, भींचना 2 विनाश, हानि 3. लेना, पकड़ना 4 प्रतिबन्ध 5 सचय।

संहृष्ट (भू० क० कृ०) [सम् + हृष् + क्त] 1. पुलकित, या हर्ष से रोमांचित, प्रसन्न 2 जिसके रोंगटे खड़े हैं या जो कांप रहा है 3 स्पर्धा के भाव से उद्दीप्त।

संह्रादः [सम् + ह्राद् + घञ्] 1 शोरगुल, चीत्कार, हो-हल्ला 2. कोलाहल।

संह्रीण (वि०) [सम् + ह्री + क्त] 1 विनयशील, शर्मीला 2 सर्वथा लज्जित।

सकट (वि०) [कटेन अशुचिना शवादिना सह वर्तमानः] बुरा, कुत्सित, दुष्ट।

सकण्टक (वि०) [कण्टेन सह कप्, ब० स०] 1 कांटेदार, चुभने वाला 2 कष्टप्रद, भयानक, **—कः** जलीय पौधा, शैवाल दे०।

सकम्प, सकम्पन (वि०) [कम्पेन, कम्पनेन सह वा, ब० स०] कांपता हुआ, थरथराता हुआ।

सकरुण (वि०) [करुणया सह ब० स०] कोमल, दयालु ।

सकर्ण (वि०) (स्त्री० र्णा र्णी) [कर्णेन श्रवणेन सह—ब० स०] 1 कान वाला जिसके कान हों 2 सुनने वाला, श्रोता ।

सकर्मक (वि०) [कर्मणा सह [illegible]] 1 कर्मशील या व्यस्त 2 (व्या० में) कर्म रखने वाला (क्रिया) कर्म से युक्त ।

सकल (वि०) [कलया [illegible] सह [illegible]—ब० स०] 1 भागों सहित 2 सब समस्त पूरा पूर्ण 3 सब अंशों से युक्त पूरा (जैसे कि चाँद) यथा [illegible] मधुर [illegible] स्वर वाला । सम० **वर्ण** (वि०) (पर्याप्त पद या वाक्य) क और ल वर्णों से युक्त अर्थात् [illegible] (अर्थात् [illegible]) [illegible] ०१।२३ ।

सकल्प (वि०) [कल्पेन सह ब० स०] यज्ञ संबंधी कृत्य से युक्त वेद के कर्मकाण्ड का अनुसरण [illegible] ०।१६० —ल्प शिव ।

सकाकोल [काकोलेन सह [illegible]] इक्कीस नरकों में से एक नरक दे० मनु० ४।८९ ।

सकाम (वि०) [कामेन सह ब० स०] 1 अनुरक्त प्रणयोन्मत्त [illegible] 2 अभिलाषायुक्त कामी 3 [illegible] पुष्ट [illegible] काम [illegible] [illegible] —मम् (अव्य०) 1 प्रसन्नतापूर्वक 2 संतोष के साथ 3 विश्वासपूर्वक [illegible] ।

सकाल (वि०) [कालेन सह ब० स०] ऋतु के अनुकूल समयोचित —लम् (अव्य०) कालानुकूल समय से पूर्व ठीक समय पर तड़के ।

सकाश (वि०) [काशेन सह ब० स०] दर्शन देने वाला दृश्य प्रस्तुत निकटवर्ती [illegible] उपस्थिति पड़ौस सामीप्य (सकाशम् सकाशात् [illegible] क्रि० वि० की भांति प्रयुक्त 1 निकट 2 निकट से पास से ।

सकुक्षि (वि०) [सह समानः कुक्षिः यस्य ब० स०] एक ही कोख से उत्पन्न एक ही माता से जन्म लेने वाला सहोदर (भाई आदि) ।

सकुल (वि०) [कुलेन सह ब० स०] 1 उच्चकुल से सम्बन्ध रखने वाला 2 एक ही [illegible] में उत्पन्न 3 एक ही परिवार का 4 सपरिवार —लः 1 रिश्तेदार 2 एक प्रकार की मछली सकुल ।

सकुल्य [समाने कुले भवः [illegible]] 1 एक ही परिवार का 2 एक ही गोत्र का परन्तु दूर का रिश्तेदार जैसे कि चौथी, पांचवीं, छठी या सातवीं आठवीं अथवा नवीं पीढ़ी का 3 दूरवर्ती रिश्तेदार ।

सकृत् (अव्य०) [[illegible]] 1 एक बार सकृद्दग्धो [illegible] सकृत्कन्या प्रदीयते । सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् [illegible] एक समय एक अवसर पर, [illegible] एक दम [illegible] [illegible] 3 तुरन्त 4 साथ [illegible] स्त्री० सकृत् [illegible] (प्रायः [illegible]) सम० **गर्भा** 1 [illegible] [illegible] 2 [illegible] स्त्री [illegible] **प्रज** [illegible] **प्रसूता** [illegible] 1 [illegible] स्त्री जिसके केवल एक [illegible] 2 [illegible] केवल एक ही [illegible] 3 [illegible] [illegible] ।

सकैतव [illegible] [illegible] धोखा देने वाला [illegible] ।

सकोप [illegible] [illegible] कुपित [illegible] ।

सक्त [illegible] 1 चिपका हुआ [illegible] 2 [illegible] अनुरक्त [illegible] [illegible] [illegible] 3 [illegible] जुड़ा हुआ [illegible] 4 [illegible] [illegible] वाला । सम० **वैर** (वि०) [illegible] करने वाला—[illegible] ।

सक्थि [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] नाम [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible] ।

सक्तु [illegible] [illegible] सत्तू जौ का [illegible] बना हुआ आटा जो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—[illegible] ।

सक्थि [illegible] [illegible] 1 जांघ (समास में उत्तर पद रूप में [illegible] शब्द के पश्चात् या जब समास में तुलना अभिप्रेत हो तो सक्थि का बदल कर सक्थ हो जाता है दे० पा० ५।४।९८) 2 हड्डी 3 गाड़ी का लट्ठा ।

सक्रिय (वि०) [क्रियया सह ब० स०] फुर्तीला गतिशील ।

सक्षण (वि०) [क्षणेन सह ब० स०] जिसके पास अवकाश हो ।

सखि (पुं०) [सह समानं ख्यायते ख्या [illegible]] (कर्तृ० सखा सखायौ सखायः कर्म० सखायं सखायौ [illegible] [illegible] अधि० ए० व० सख्यौ) मित्र साथी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मालविक [illegible] [illegible] कि० [illegible] (समास के अन्त में सखि शब्द बदल कर सख हो जाता है [illegible] कु० [illegible] [illegible] रघु० ४।८७, १।८८ [illegible] आदि [illegible]) ।

सखी [सखि + ङीष्] सहेली, सहचरी, नायिका की सहेली, [illegible] पूर्वानुभूतेन मम सखि विरहिजनस्य दुरन्ते गीत० १।

सख्यम् [सख्युर्भावः यत्] 1 मित्रता, घनिष्ठता, मैत्री मुमुक्षु सख्य [illegible] रघु० [illegible] ५७ समानशीलव्यसनेषु सख्यम् सुभा० 2 समानता [illegible]।

सगण (वि०) [गणेन सह [illegible]] [illegible] उपस्थित [illegible] शिव [illegible]।

सगर (वि०) [illegible] सूर्यवंशी राजा। [illegible] इसकी माता को [illegible] साठ हजार पुत्र हुए। [illegible] इस बात पर [illegible] घोड़ा ढूंढने का आदेश दिया [illegible] पृथ्वी को खोद [illegible] गई और [illegible] विख्यात हुए [illegible] रघु० [illegible] का आशय [illegible] कई हजार वर्ष के पश्चात् [illegible] का पाताल लोक [illegible] में सफल हुए [illegible] उनकी भस्म [illegible] गया इस प्रकार [illegible] भिजवाया)।

सगर्भ, **—र्भ्य** [illegible] भाई महावीर० [illegible]।

सगुण (वि०) [गुणेन सह [illegible]] 1 [illegible] 2 अच्छे गुणों से युक्त, सद्गुणी 3 [illegible] 4 (धनुष की भांति) [illegible] 5 साहित्यिक गुणों से युक्त।

सगोत्र (वि०) [सह समान गोत्रमस्य [illegible]] एक ही कुल में उत्पन्न बन्धु, रिश्तेदार [illegible] 1 एक ही पूर्वज की सन्तान [illegible] 2 एक ही कुल का [illegible] पिण्ड तर्पण साथ करने वाला व्यक्ति 3 दूर का रिश्तेदार [illegible] परिवार, कुल, वंश।

सग्धि (स्त्री०) [अद् + क्तिन् नि० घिः, सहस्य सः] साथ-खाना, मिलकर भोजन करना।

सङ्कट (वि०) [सम् + कटच्, सम् + कट् + अच् वा] 1 सकरा, सिकुड़ा हुआ, भीड़ा, सकरा 2 अगम्य [illegible] 3 [illegible] भरा हुआ [illegible] महावीर० [illegible] 1 [illegible] सकीर्ण [illegible] 2 [illegible] संकट [illegible]।

सङ्कथा [illegible] समालाप, बातचीत।

सङ्कर [illegible] 1 [illegible] मिलावट [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] अविध्र आश्रित [illegible] में विश्वत (वि०) [illegible] काव्य० १०, [illegible] मा० [illegible] संकर।

सङ्कर्षणम् [illegible] 1 मिलकर खींचना [illegible] 2 आकर्षण 3 हल चलाना [illegible] बलराम का नाम [illegible] संकर्षणात् [illegible] हरि०।

सङ्कल [सम् + कल् + अच् (भावे)] 1 संग्रह, संचय 2 जोड़।

सङ्कलनम् [illegible] 1 ढेर लगाने की क्रिया 2 संपर्क [illegible] 3 टक्कर 4 मरोड़ना, एंठना [illegible]।

सङ्कलित [illegible] [सम् + कल् + क्त] 1 ढेर लगाया गया, संचित किया गया 2 साथ-साथ [illegible] अन्तर्मिश्रित 3 [illegible] 4 जोड़ा गया।

सङ्कल्प [illegible] 1 इच्छा-शक्ति [illegible] मानसिक दृढ़ता [illegible] 2 प्रयोजन, उद्देश्य, इरादा, विचार [illegible] रघु० [illegible] चिन्तन, विचार, विमर्श, उत्प्रेक्षा, कल्पना [illegible] मा० १।३५ [illegible] 5 मन, हृदय, — मा० ७।२ 6 कोई धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा 7 किसी ऐच्छिक पुण्यकार्य से फल की आशा। सम० —ज, —जन्मन् (पुं०) योनिः कामदेव के विशेषण

—भगवन्सङ्कल्पयोने—मालवि० ४, कु० ३।२४, —रूप (वि०) 1. ऐच्छिक 2. इच्छा के अनुरूप।

सङ्कसुक (वि०) [सम्+कस्+उकञ्] 1. अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, अनियमित 2. अनिश्चित, संदिग्ध 3. बुरा, दुष्ट 4. निर्बल, बलहीन, कमजोर।

सङ्कारः [सम्+कृ+घञ्] 1 धूल, बुहारन, कूड़ाकरकट 2 ज्वालाओं के चटखने का शब्द।

सङ्कारी [सकार+ङीप्] वह लड़की जिसका कौमार्य अभी अभी भग्न हुआ हो, नई दुलहिन।

सङ्काश (वि०) [सम्+काश्+अच्] 1 सदृश, समान, मिलता-जुलता (समास के अन्त में) अग्नि°, हिरण्य° 2. निकट, पास, नजदीक, —शः 1 दर्शन, उपस्थिति 2 पड़ोस।

सङ्किलः [सम्+किल्+क] जलती हुई लकड़ी, जलती हुई मशाल।

सङ्कीर्ण (भू० क० कृ०) [सम्+कॄ+क्त] 1 साथ साथ मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित 2 अव्यवस्थित, विमिश्र 3. बिखरा हुआ, फैला हुआ, खचाखच भरा हुआ 4 अस्पष्ट 5 दान बहाता हुआ, मद में चूर —हि० ४।१९ 6 वर्णसंकर जाति का, अपवित्र कुल या संकरजाति में जन्मा हुआ 7 हरामी, दोगला 8. तंग, संकुचित, —र्णः 1 संकर जाति का व्यक्ति 2. मिश्रस्वर 3. वह हाथी जिसके मस्तक से मद बहता हो, मस्तहाथी, —र्णम् कठिनाई। सम० —जाति, —योनि (वि०) वर्णसंकर, दोगली नस्ल का, (जैसे कि खच्चर), —युद्धम् अव्यवस्थित लड़ाई, रणसंकुल।

सङ्कीर्तनम्,—ना [सम्+कृत्+णिच्+ल्युट्, ईत्वम्] 1 प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना 2 (किसी देवता का) यशोगान करना 3 भजन के रूप में किसी देवता के नाम का जप करना।

सङ्कुचित (भू० क० कृ०) [सम्+कुच्+क्त] 1 सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ —सङ्कुचितं [illegible] —विक्रमांक० १।२० 2. सिकुड़न वाला, झुर्रियाँ पड़ा हुआ 3. ढका हुआ, बंद किया हुआ 4 [illegible]।

सङ्कुल (वि०) [सम्+कुल्+क] 1 अव्यवस्थित 2 आकीर्ण, खचाखच भरा हुआ, पूर्ण—तारागणसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः —रघु० ६।२२, मा० १।२ 3 विकृत 4. असंगत, —लम् 1 भीड़, जमघट, भीड़भाड़, समूह, सेना, झुंड —महत [illegible] सङ्कुलेन विजृम्भितायां [illegible] —मा० ? 2 अव्यवस्थित लड़ाई, रणसंकुल 3 असंगत या परस्पर-विरोधी भाषण—उदा०—यावज्जीवमहं मौनी ब्रह्मचारी च मे पिता। माता तु मम वन्ध्यासीत् पुत्रहीनः पितामहः॥

सङ्केतः [सम्+कित्+घञ्] 1 इशारा, इंगित 2 निशान, अंगचेष्टा, सुझाव—मुद्रा० १ 3. इंगितपरक चिह्न, निशानी, प्रतीक 4 सहमति, अभिसमय —सङ्केतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च —सा० द० १२ 5 प्रेमी प्रेमिका का पारस्परिक ठहराव, नियुक्ति, (प्रेमी या प्रेमिका के मिलने का) निर्दिष्ट स्थान —नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुम् —गीत० ५ 6. (प्रेमियों का) मिलन-स्थान, समागम-स्थान —कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका —अमर० 7 प्रतिबंध, शर्त 8 (व्या० में) संक्षिप्त विवृति, सूत्र। सम० —गृहम्, —निकेतनम्, —स्थानम् निर्दिष्ट स्थान, प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान।

सङ्केतकः [सङ्केत+कन्] 1 सहमति, अभिसमय 2 नियुक्ति, निर्देशन 3 प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान 4 वह प्रेमी या प्रेमिका जो मिलन के लिए समय या स्थान का संकेत करे —सङ्केतके चिरयति प्रवरो विनोदः —मृच्छ० ३।३।

सङ्केतित (वि०) [सङ्केत+इतच्] 1 ठहराया हुआ, मिलकर नियमानुसार निर्धारित, साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः —काव्य० 2 आमन्त्रित, बुलाया हुआ।

सङ्कोचः [सम्+कुच्+घञ्] 1 सिकुड़ना, सिकुड़न पड़ना 2 संक्षेपण, न्यूनीकरण, घटाना 3 त्रास, भय 4 बंद करना, मूँदना 5 बाँधना 6 एक प्रकार की मछली, —चम् केसर, जाफरान।

सङ्क्रन्दनः [सम्+क्रन्द्+ल्युट्] श्री कृष्ण का नाम।

सङ्क्रमः [सम्+क्रम्+घञ्] 1 सहमति, समागम, साथ जाना 2 संक्रान्ति, मार्ग, स्थानान्तरण, प्रगति 3 किसी ग्रह का एक राशिचक्र से दूसरी राशि में जाना 4 गमन करना, यात्रा करना, —मः, —मम् 1 कठिन या संकरा मार्ग 2 सेतु, पुल —नदीमार्गेण च तथा संक्रमानवसादयेत् —महा० 3 किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन —ताविमौ संक्रमीकृत्य —दश०, सोऽन्तर्निधिः स्वर्गसङ्क्रमः —भट्टि० ४।२।

सङ्क्रमणम् [सम्+क्रम्+ल्युट्] 1 समागम, सहमति 2 संक्रान्ति, प्रगति, एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाना 3 सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना 4 सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन 5 मार्ग।

सङ्क्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+क्रम्+क्त] 1 ... में से गया हुआ, प्रविष्ट हुआ 2 स्थानान्तरित, न्यस्त, समर्पित —उत्तर० १।२९ 3 पकड़ा, ग्रस्त 4 प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित 5. चित्रित।

सङ्क्रान्ति (स्त्री०) [सम्+क्रम्+क्तिन्] 1 संगमन, मेल 2 एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक का मार्ग, अवस्थान्तर 3. सूर्य या किसी और ग्रहपुंज का एक राशि से

दूसरी राशि में जाने का मार्ग 4 स्थानान्तरण (किसी दूसरे को) सौंपना—संक्रान्तिमा पयसो गण्डूषसङ्क्रान्तय उत्तर० ३।१६ 5 (अपना ज्ञान दूसरे तक) हस्तान्तरित करना, (दूसरों को) विद्यादान की शक्ति —विवादे दर्शयिष्यन्ति क्रियासङ्क्रान्तिमात्मन:—मालवि० १।१८ शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था सङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता—१।१६ 6 प्रतिमा प्रतिबिंब 7 चित्रण।

सङ्क्राम दे० 'संक्रम'।

सङ्क्रीडनम् [सम्+क्रीड+ल्युट्] मिल कर खेलना।

सङ्क्लेद: [सम्+क्लिद्+घञ्] 1 तरी नमी 2 गर्भा धान के पश्चात् प्रथम मास में स्रवित होने वाला रस जिससे भ्रूण के आरम्भिक रूप का निर्माण होता है

सङ्क्षय: [सम्+क्षि+अच्] 1 विनाश 2 पूर्ण विनाश या उपभोग 3 हानि, बर्बादी 4 अन्त 5 प्रलय।

सङ्क्षिप्ति: (स्त्री०) [सम्+क्षिप्+क्तिन्] 1 साथ साथ फेंकना 2 भींचना सङ्क्षेपण 3 फेंकना भेजना 4 साथ में रहना।

सङ्क्षेप: [सम्+क्षिप्+घञ्] 1 साथ साथ फेंकना 2 भींचना, छोटा करना 3 लाघव सङ्हृति 4 तत्वार, सारांश 5 फेंकना भेजना 6 अपहरण करना 7 किसी अन्य व्यक्ति के काम में सहायता देना (सङ्क्षेपेण, सङ्क्षेपत: (क्रि० वि०) थोड़े शब्दों में सङ्क्षेप करके सक्षेप में)

सङ्क्षेपणम् [सम्+क्षिप्+ल्युट्] 1 ढेर लगाना 2 छोटा करना लघूकरण 3 भेजना।

सङ्क्षोभ: [सम्+क्षुभ्+घञ्] 1 आन्दोलन कम्पकंप 2 बाधा, हलचल मृच्छ० ? 3 उथल पुथल उलट पुलट 4 घमड अहंकार।

सङ्ख्यम् [सम्+ख्या+क] समाम युद्ध लड़ाई सङ्ख्य द्विषा बोरसंचकार विक्रम० १।८७ कि० १४।२५ शि० १८।७०।

सङ्ख्या [सम्+ख्या+अङ्+टाप्] 1 गणना गिनती हिसाब लगाना सङ्ख्यामिवैषां भ्रमरश्चकार रघु० १६।४७ 2 अंक 3 अंकवाचक 4 जोड़ 5 हेतु समझ प्रज्ञा 6 विचार विमर्श 7 रीति। सम० अतीत, अतीत (वि०) असंख्य, अगणित गणनातीत वाचक (वि०) संख्या बोधक (क:) अंक।

सङ्ख्यात (भू० क० कृ०) [सम्+ख्या+क्त] 1 गिना गया 2 हिसाब लगाया गया गिना हुआ सम० अनु-ता एक प्रकार की पहेली।

सङ्ख्यावत् (वि०) [सङ्ख्या+मतुप्] 1 संख्या वाला 2 हेतु से युक्त पुं० विद्वान् पुरुष।

सङ्ग: [सञ्ज्+भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2. मिलना, मेल, संगम (जैसे नदियों का) 3 स्पर्श सम्पर्क 4 लगाव, साहचर्य, मैत्री, अनुराग सता सद्भि: सङ्ग: कथमपि हि पुण्येन भवति—उत्तर० २।१, सङ्गमनुवस् संगति में रहना मंडली में रहना,—मुद्रा: मृगं सङ्गमनुव्रजन्ति—मुद्रा० 5 अनुरक्ति, प्रीति, अभिलाषा ध्यायतो विषयान्पुंस: सङ्गस्तेषूपजायते भग० २।६२ 6 सांसारिक विषयों में आसक्ति, मनुष्यों के साथ साहचर्य दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति यति: सङ्गात् भर्तृ० २।४२ 7 मुठभेड़, लड़ाई।

सङ्गणिका [सम्+गण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] श्रेष्ठ या अनुपम प्रवचन

सङ्गत (भू० क० कृ०) [सम्+गम्+क्त] 1 मिला हुआ जुड़ा हुआ, साथ साथ आया हुआ, साहचर्य से युक्त 2 एकत्रित संचित संयोजित, सम्मिलित 3 प्रणयग्रन्थि में आबद्ध, विवाहित 4 मैथुन द्वारा मिला हुआ 5 साथ साथ भरा हुआ, समुचित, युक्तियुक्त सवादा श० ३ 6 से युक्त (जैसे कि वहाँ से) 7 सिकुड़नेवाला सिकुड़ा हुआ, दे० सम् पूर्वक गम् तम् 1 मिलाप, सम्मिलन, मैत्री,—विक्रम० ५।१४ श० ५।२३ 2 समाज, मण्डली 3 परिचय, मित्रता घनिष्टता—कु० ५।३९ 4 सामंजस्यपूर्ण या सुसंगत वाणी, युक्तियुक्त टिप्पण।

सङ्गति: (स्त्री०) [सम्+गम्+क्तिन्] 1 मेल मिलना, संगम 2 संसर्ग, सहयोगिता साहचर्य, पारस्परिक संपर्क मनो हि जन्मान्तरसङ्गतिज्ञम् रघु० ७।१५ 3 मैथुन 4 दर्शन करना बार बार आना-जाना 5 योग्यता उपयुक्तता प्रयोग्यता संकलना, संगत, सम्बन्ध 6 दुर्घटना, संयोग, आकस्मिक घटना 7 ज्ञान 8 अधिक जानकारी के लिए पूछना।

सङ्गम: [सम्+गम्+अप्] 1 मिलना मेल विक्रम० ४।२७ रघु० १२।६६ ९० 2 साहचर्य सगति सहयोगिता पारस्परिक मेलजोल—जैसा कि सद्भि: सगम' में 3 सम्पर्क स्पर्श रघु० ८।४४ 4 मैथुन या रतिक्रिया अयं स ते तिष्ठति सङ्गमोत्सुक: श० ३।१४, रघु० १९।३३ 5 (नदियों का) मिलना संगम स्थान गङ्गायमुनयो: सङ्गम: 6 योग्यता अनुकूलन 7 मुठभेड़ लड़ाई 8 (ग्रहों का) संयोग।

सङ्गमनम् [सम् गम्+ल्युट्] मिलना, मेल दे० 'सङ्गम'।

सङ्गर: [सम्+गृ+अप्] 1 प्रतिज्ञा करार—तमेति तस्याविनय प्रताप: ग्यपहीनसङ्गरभयजन्मा रघु० ५।२६ ११।४० १२।७० 2 स्वीकृति हाथ में लेना 3 सौदा 4 संग्राम, युद्ध, लड़ाई—असरसङ्गमुखीनता महुर्महत सङ्गरसागरान्तरी, शि० १६।६७ 5. ज्ञान 6 निगल जाना 7 दुर्भाग्य, संकट 8 विष।

सङ्गव: [सगता गावो दोहनाय अत्र—नि०] प्रातःस्नान के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पाँच भागों में

से दूसरा है, और जब आगे दूसरे के साथ करने के लिए ले जाई जाती हैं।

सङ्गदः [सम्+गद्+अप्] प्रवचन, समालाप, बातचीत।

सङ्गत (वि०) [सम्+गम्+क्त] 1 संयुक्त, मिला हुआ 2 अनुरक्त, भक्त, स्नेहशील—श० ५।११, रघु० १९।१६, मालवि० ४।२, भग० १।२९, १४।१५।

सङ्गीत (भू० क० कृ०) [सम्+गै+क्त] मिलकर गाया हुआ, सहगान, सम्मिलित कण्ठों से गाया हुआ —तम् 1 सामूहिक गान, बहुत से कण्ठों से मिलकर गाया जाने वाला गान,—अयु मुकण्ठयो मन्यमये सङ्गीत मह- मर्तिका—माम० 2 गायन, मधुर गायन, विशेषतः वह गायन जो नृत्य तथा वाद्ययन्त्रों के साथ गाया जाय, मिताक्षर युक्त गान गीतं वाद्य नर्तनं च त्रय सङ्गीतमुच्यते, किमन्यदस्याः परिषद् श्रुतिप्रसादनतः सङ्गीतात् श० १, मृच्छ० १ 3 संगीत गोष्ठी, सहसंगीत 4 नृत्य वाद्य के साथ गान की कला—भर्तृ० २।१२। सम०—अर्थः 1 संगीत प्रदर्शन का विषय 2 संगीतशाला के लिए आवश्यक सामग्री या उपकरण —मेघ० ५६,—शाला गायनालय,—आ० २,—शास्त्रम् गानविद्या।

सङ्गीतकम् [सङ्गीत+कन्] 1 संगीतगोष्ठी, सुरताल से युक्त गान 2. सार्वजनिक मनोरंजन जिसमें नाच-गाना हो।

सङ्गीर्ण (भू० क० कृ०) [सम्+गृ+क्त] 1 सम्मत स्वीकृत 2. प्रतिज्ञात।

सङ्ग्रहः [सम्+ग्रह्+अप्] 1. पकड़ना ग्रहण करना 2. मुट्ठी बाँधना, मजबूत पकड़ 3 स्वागत, प्रवेश 4 आश्रय, संरक्षण—तथा ग्रामयानानां च कुर्याद्राष्ट्रस्य सङ्ग्रहम् मनु० ७।११४ 5 अनुग्रहण, प्रसादन आदर-सत्कार करना, पालन-पोषण करना मनु० ३।१३८, ८।३११ 6 धरना, संग्रह करना, एकत्र करना संचय करना —तैं कृतप्रकृतिसङ्ग्रहैं रघु० १९।५५, १०।२० 7 शासन करना, प्रतिबंध लगाना, नियन्त्रण करना 8. राशीकरण 9 संयोजन 10 समष्टीकरण (एक प्रकार का 'संयोग') 11 सम्मेल करना अवधारणा 12. संकलन 13. सारांश, सार, संक्षेपण सागरायत सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये मग० ८।११, इसी प्रकार सर्व सङ्ग्रह 14. जोड़, राशि, समष्टि करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः भग० १८।१८ 15 तालिका, सूची 16. भण्डारगृह 17 प्रयत्न, चेष्टा 18 उल्लेख हवाला 19. बड़प्पन, ऊँचापन 20 वेग 21 शिव का नाम।

सङ्ग्रहणम् [सम्+ग्रह्+ल्युट्] 1 पकड़ना, ले लेना 2. सहारा देना, प्रोत्साहित करना 3 सङ्कलन करना, संचय करना 4 जड़ना-जड़ाई करना 5. मढ़ना, जड़ना —कनकभूषणसङ्ग्रहणोचित (मणि·)—पंच० १।७५

6 मैथुन, स्त्रीसमागम 7 व्यभिचार मनु० ८।६, ७२, याज्ञ० २।७२ 8 आशा करना 9. स्वीकार करना, प्राप्त करना, दे० ऊपर।

सङ्ग्रहीतृ (पुं०) [सम्+ग्रह्+तृच्] सारथि।

सङ्ग्रामः [सङ्ग्राम्+अच्] रण, युद्ध, लड़ाई—सङ्ग्रामाङ्गणमागतेन भवता चापे समारोपिते काव्य० १०। सम० —जित् (वि०) युद्ध में जीतने वाला,—पटहः युद्ध में बजाया जाने वाला एक बड़ा भारी ढोल।

सङ्ग्राह [सम्+ग्रह्+घञ्] 1. हाथ डालना, ले लेना 2 बलात् छीन लेना 3 मुट्ठी भींचना 4 तलवार की मूठ।

सङ्घः [सम्+हन्+अप्, टिलोप घत्वम्] 1 समूह समाज समुच्चय, झुण्ड जैसा कि महर्षिसङ्घ, मनुष्यसङ्घ 2 एक साथ रहने वाले लोगों का समूह। सम०—चारिन् (पुं०) मछली,—जीविन् (पुं०) किराये का मजदूर, कुली,—वृत्ति (स्त्री०) संघटनवृत्ति।

सङ्घटना [सम्+घट्+णिच्+युच्+टाप्] साथ साथ मिलना मेल सम्मेल—रत्न० ४।२०।

सङ्घट्ट [सम्+घट्ट्+अच्] 1 सघर्षण के एक साथ मिलना, रगड़ना तरलतरलवाससङ्घट्टजन्मा (दवाग्नि) मेघ० ५३, मा० ५।३ 2 टक्कर झटपट, मुठभेड़ शि० २०।२६ 3 मिलन, संघर्ष 4 मिलना सम्मिलन, टक्कर या स्पर्धा (जैसे कि प्रतिद्वन्द्वी की) रघु० १६।२६ 5 आलिंगन हृदय एक बड़ी सभा, मेला।

सङ्घट्टनम्,—ना [सम्+घट्ट्+ल्युट्] 1 मिला कर रगड़ना, संघर्षण 2 टक्कर झटपट 3 घनिष्ठ सम्पर्क लगाव 4 संपर्क, एक चिपकाव 5 नर्तकों का पारस्परिक लिपटना 6 मिलना मुठभेड़।

सङ्घशस् (अव्य०) [सङ्घ+शस्] झुंडों में, दल बनाकर।

सङ्घर्ष [सम्+घृष्+घञ्] 1 दो चीजों की रगड़, घर्षण 2 पीस डालना चूरा करना 3 टक्कर मार दर 4 प्रतिद्वन्द्विता प्रतिस्पर्धी श्रेष्ठता के लिए होड़ —अन्योन्यमपि च बहिर्मुखैरिव सङ्घर्षे दशा०, यदयाथा यथार्थतया ज्ञानसङ्घर्षो जात: मालवि० १ 5 ईर्ष्या डाह 6 सरकना मन्द मन्द बहना।

सङ्घाटिका [सम्+घट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. जोड़ा, दम्पती 2 दूती, कुटनी 3 गंध।

सङ्घाणकः,—कम् [शिघाण पृषो०] नाक का मल, सिणक।

सङ्घात [सम+हन्+घञ्] 1 मेल, मिलाप, समाज 2 समुदाय, संघात, समुच्चय, उपायसङ्घात इव प्रवृद्ध—रघु० १४।११, कु० ४।६ 3. वध, हत्या 4 कफ 5 अस्थियों का निर्माण 6 नरक के एक प्रभाग का नाम।

सचकित (वि०) विस्मित, भयभीत,—तम् (अव्य०) कांपते हुए, चौंक कर, भौंचक्का होकर, विस्मित होकर।

सखिः [सह्+इन्] 1 मित्र 2 मैत्री, घनिष्ठता स्त्री० इन्द्र की पत्नी, दे० 'शची'।

सचिक्कण (वि०) [सह चिक्कणेन, सहस्य सः, कप्, नि०] चिकनाहट, चौथाई आंखों वाला।

सचिवः [सचि+वा+क] 1 मित्र, सहचर 2 मन्त्री, परामर्श दाता —सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् मनु० ७।५४, रघु० १।३४, ८।३, कार्यान्तरसचिव मालवि० १।

सची दे० शची।

सचेतन (वि०) [सह चेतनया ब० स०, सहस्य सः] चेतनायुक्त, जीवधारी, विवेकपूर्ण।

सचेतस् (वि०) [सह चेतसा ब० स०] 1 प्रज्ञावान् 2 भावुक 3 एकमत।

सचेल (वि०) [सह चेलेन ब० स०] वस्त्र से सुसज्जित।

सचेष्ट: [सच् + अच् [illegible]] आम का वृक्ष।

सजन (वि०) [सह जनेन ब० स०] मनुष्यों या जीवधारी प्राणियों से युक्त —सः एक ही परिवार का व्यक्ति, बन्धु, सम्बन्धी।

सजल (वि०) [सह जलेन ब० स०] जलमय, जलयुक्त, आर्द्र, गीला, तर।

सजाति, सजातीय (वि०) [समाना जातिः अस्य, ब० स० समानस्य सः, समाना जातिर्यस्य—समान + छ] 1 एक ही जाति का, एक ही वर्ग का 2 समान, एक सा —पुं० एक ही जाति के स्त्री और पुरुष से उत्पन्न पुत्र।

सजुष् (स्) (वि०) [सह जुषते जुष् + क्विप् सस्य सः] 1 प्रिय, अनुरक्त 2 साथ लगा हुआ —पुं० (कर्तृ० ए०, सजूः, सजुषी, सजुषः, करण० द्वि० सजूर्भ्याम्) मित्र, साथी। [illegible]

सज्ज (वि०) [सस्ज् + अच्] 1 [illegible] सुसज्जित।

सज्जनम् [सस्ज् + णिच् + ल्युट्] 1 जकड़ना, बाँधना 2 वेशभूषा धारण करना 3 तैयारी करना, शस्त्र धारण करना, सुसज्जित करना 4 चौकीदार, पहरेदार 5 घाट [illegible] —ना 1 सजाना, सँवारना, सुसज्जित करना 2 वस्त्राभूषण धारण करके तैयार होना, सजावट।

सज्जा [सस्ज् + अ + टाप्] 1 वेशभूषा, सजावट 2 सुसज्जा, परिच्छद 3 सैनिक साज सामान, कवच, जिरहबख्तर।

सज्जित (वि०) [सज्जा+इतच्] 1 वस्त्र धारण किये हुए 2 सजाया हुआ 3 तैयार किया हुआ, साज-सामान से लैस 4 सशस्त्र हुआ, हथियारों से लैस।

सज्य (वि०) [सह ज्यया ब० स०, सहस्य सः] 1 धनुष की डोरी से युक्त 2 डोरी से कसा हुआ (धनुष आदि)।

सज्योत्स्ना [सह ज्योत्स्नया ब० स०] चाँदनी रात।

सञ्च [सञ्चयन अत्र—सम् + चि + ड] ग्रंथ लेखन के काम आने वाले पत्रों का संग्रह।

सञ्चत् (पुं०) [सम् + चत् + क्विप्] ठग, धूर्त, बाजीगर।

सञ्चय [सम् + चि + अच्] 1 ढेर लगाना, एकत्र करना 2 ढेर, राशि, संग्रह, भंडार, वाणिज्यवस्तु [illegible] सञ्चय [illegible] नातिसञ्चय —कुमा० 3 भारी परिमाण, समूह।

सञ्चयनम् [सम् + चि + ल्युट्] 1 एकत्र करना, संग्रह करना 2 फूल चुनना, शव भस्म हो जाने के बाद अस्थिसञ्चय करना।

सञ्चर [सम् + चर् + क] 1 मार्ग, एक राशि से दूसरी राशि पर स्थानान्तरण 2 रास्ता, पथ —[illegible] कु० ६।४३, रघु० १६। १८ 3 भारी सड़क, सकरा मार्ग, संकीर्ण पथ 4 प्रवेश द्वार 5 शरीर 6 हत्या 7 विकास।

सञ्चरणम् [सम् + चर् + ल्युट्] जाना, गमन करना, यात्रा करना।

सञ्चल (वि०) [सम् + चल् + अच्] काँपने वाला, ठिठुरने वाला।

सञ्चलनम् [सम् + चल् + ल्युट्] विक्षोभ, कपकपी, हिलना डुलना —[illegible] सञ्चलनाद् [illegible] कि० ९।८।

सञ्चाय्य [सम् + चि + ण्यत् नि०] विशेष प्रकार का यज्ञ।

सञ्चार [सम् + चर् + घञ्] 1 गमन, गति, यात्रा, [illegible] सञ्चारस्तवनीपति —काव्य० १० [illegible] 2 प्रवेश मार्ग, संक्रम 3 पथ, रास्ता, सड़क, दर्रा 4 कठिन प्रगति या यात्रा, कठिनाई, दुःख [illegible] संचरित करना 7 भड़काना 8 मार्गदर्शन करना, मार्ग प्रदर्शन करना 9 संक्रमण, [illegible] 10 सांप के फन में पाई जाने वाली मणि।

सञ्चारक (वि०) [सम् + चर् + ण्वुल्] सञ्चार करने वाला, मार्गदर्शन करने वाला —कः 1 नेता, पथ प्रदर्शक 2 उकसाने वाला।

सञ्चारणम् [सम् + चर् + णिच् + ल्युट्] गतिशील होना, प्रवाहित करना, संप्रेषण, संसृष्ट करना आदि।

सञ्चारिका [सम् + चर् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] 1 दूती, (दो प्रेमियों की) परस्पर संदेशवाहिका 2 कुटनी, कुट्टनी 3 जोड़ा, दम्पती 4 गन्ध।

सञ्चारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सम् + चर् + णिनि] 1 गतिशील, गमनीय—सञ्चारिणी नवर देवतेव—मा० १, कु० ३।५४, ६।६७ 2 पर्यटन, भ्रमण 3 परिवर्तनशील, अस्थिर, चपल 4 दुर्गम, अगम्य 5 क्षणभंगुर जैसे कि भाव, दे० नी० 6. प्रभावशाली 7 आनुवंशिक, वंशपरम्पराप्राप्त (रोग आदि) 8 छूत का रोग 9 प्रयोजन, पुं० 1 वायु, हवा 2 धूप 3 वह क्षणभंगुर भाव जो स्थायी को शक्तिसम्पन्न करता है दे० व्यभिचारिन् ।

सञ्चाली [सम् + चल् + ण + ङीप्] गुंजा की झाड़ी ।

सञ्चित (भू० क० कृ०) [सम् + चि + क्त] 1 ढेर लगाया हुआ, संगृहीत, जोड़ा गया, इकट्ठा किया गया 2 रक्खा गया, जमा किया गया 3 गिना गया, गणना की गई 4 भरा हुआ, सुसम्पन्न, युक्त 5 बाधित, अवरुद्ध 6 सघन, जिसका (जैसे कि जंगल) ।

सञ्चितिः (स्त्री०) [सम् + चि + क्तिन्] संग्रह, सञ्चय ।

सञ्चिन्तनम् [सम् + चिन्त् + ल्युट्] विचार, विमर्श ।

सञ्चूर्णनम् [सम् + चूर्ण् + ल्युट्] चूर चूर करना ।

सञ्छन्न (भू० क० कृ०) [सम् + छद् + क्त] 1 लिपटा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ 2 वस्त्र पहने हुए ।

सञ्छादनम् [सम् + छद् + णिच् + ल्युट्] ढकना, छिपाना ।

सञ्ज् (भ्वा० पर० सजति, सक्त, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के लगाने पर धातु का 'स' बदल कर ष् हो जाता है) 1. संलग्न होना, जुड़े रहना, चिपके रहना, —तुल्यगन्धिषु मत्तेभकटेषु फलरेणव (ससञ्जुः)—रघु० ४।४७ 2 जकड़ना कर्मवा० (सज्यते) संलग्न होना, चिपटना जुड़े रहना प्रेर० (सञ्जयति-ते) इच्छा० (सिसङ्क्षति), अनु—, 1 चिपकना चिपटना 2 जुड़ना, साथ होना मृत्युर्जरा च व्याधिश्च दुःखं चानेककारणम् । अनुषक्तं सदा देहे महा०, उत्तर० ४।२, (कर्मवा०) चिपटना, जुड़ जाना (आल० से भी)—धर्मपूते च मनसि नभसीव न जातु रजोऽनुषज्यते दश०, भग० ६।४, १८।१०, अव—, निलम्बित करना, संलग्न करना, चिपटना, फेंकना, रखना—शि० ५।१६, ७।१६, ९।७, कु० ७।२३ 2 सौंपना सुपुर्द करना, निर्दिष्ट करना, (कर्मवा०) 1 सम्पर्क में होना, मिलते रहना—मृच्छ० १।५८ 2 व्यस्त होना जुट जाना, उत्सुक होना, आ—, 1 जकड़ना जमाना, जोड़ना, मिलाना, रखना—चापमासज्य कण्ठे कु० २।६४, श० ३।२६ (मुझे) मूर्ध स मूर्ध्न्यैरमासजत् —रघु० २।७४ 2 अभिधान करना, प्रेरित करना कि० १३।४४ 3 सिपुर्द करना, निर्दिष्ट करना 4. चिपटना, लगे रहना वि—, 1 लगे रहना, चिपटना, डाल दिया जाना, रक्खा जाना—कण्ठे व्यवसाहुनिषक्तबाहू कु० ३।७, रघु० ९।५०, ११।७०, १२।४५ 2 प्रतिबिम्बित होना—कु० ११०, ७।३६ 3 संलग्न होना प्र—, 1 चिपटना, जुड़ना 2 प्रयुक्त होना, अनुकरण करना, प्रयुक्त किया जाना, सही उतरना, ठीक बैठना इतरेतराश्रय प्रसज्येत, वैयर्थ्यमेव वैवस्वस्य प्रसज्येत शारी० 3 संलग्न होना, तस्यामसौ प्रासजत् दश० व्यति—, मिलाना, साथ-साथ जोड़ना, व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः उत्तर० ६।१२ ।

सञ्ज [सम् + जन् + ड] 1 ब्रह्मा का नाम 2 शिव का नाम ।

सञ्जय [सम् + जि + अच्] धृतराष्ट्र के सारथि का नाम, (संजय ने कौरवों और पाण्डवों के झगड़े में शान्तिपूर्ण समझौता कराने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल रहा। इसी ने अंधे राजा धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाया—भ० गी० १।१) ।

सञ्जल्पः [सम् + जल्प् + घञ्] 1 वार्तालाप 2 अव्यवस्थित बातचीत, बकवाद करना गड़बड़ 3 कोलाहल हंगामा ।

सञ्जवनम् [सम् + जु + ल्युट्] चतुःशाल, आमने सामने के चार घरों का समूह जिनके बीच में आँगन बन गया हो ।

सञ्जा [सञ्ज + टाप्] बकरी ।

सञ्जीवनम् [सम् + जीव् + ल्युट्] 1 साथ साथ रहना 2 जीवित करना, जीवन देना, पुनर्जीवन, पुनः सजीवता 3 इक्कीस नरकों में से एक नरक दे० मनु० ४।८९ 4 चार घरों का समूह, चतुःशाल 5 भी एक प्रकार का अमृत (कहते हैं कि इसके सेवन से मृतक भी पुनर्जीवित हो जाता है) ।

सञ्ज्ञ (वि०) [सम् + ज्ञा + क] 1 जिसके घुटने चलते समय आपस में टकराते हों 2. दृष्टि में आया हुआ 3 नामवाला, नामक दे० नी० संज्ञा, ज्ञम् एक प्रकार का पीला सुगंधित काष्ठ ।

सञ्ज्ञपनम् [सम् + ज्ञा + णिच् + ल्युट् पुकागमः ह्रस्वः] हत्या, वध ।

सञ्ज्ञा [सम् + ज्ञा + अङ् + टाप्] 1 चेतना, होश सञ्ज्ञां लभ् आपद् या प्रतिपद् फिर चैतन्य प्राप्त करना होश में आना 2 जानकारी, समझ 3 बुद्धि, मन 4 संकेत इंगित, निशान, हाव-भाव—मुखार्पितैकाङ्गुलिसंज्ञयैव मा चापलायेति गणान् व्यनैषीत् —कु० ३।४१ 5 नाम पद अभिधान, इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में द्रुमेषुविमुक्ता मृगयुवसञ्ज्ञी भग० १५।५ 6 (व्या० में) 1 विशेष अर्थ रखने वाला नाम या संज्ञा व्यक्ति वाचक संज्ञा 7 'प्रत्यय' का पारिभाषिक नाम 8 गायत्री मन्त्र दे० गायत्री 9 विश्वकर्मा की पुत्री और सूर्य की पत्नी, यम, यमी और दोनों अश्विनी कुमारों की माता, (इस विषय में

एक उपाख्यान प्रसिद्ध है कहते हैं एक बार संज्ञा अपने पितृगृह जाने की इच्छा करने लगी, उसने अपने पति सूर्य से अनुमति मांगी परन्तु वह न मिल सकी। संज्ञा ने अपनी इच्छापूर्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया अतः अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा उसने ठीक अपने जैसी एक स्त्री का निर्माण किया जो मानो उसकी छाया थी (और इसी लिए उसका नाम छाया पड़ा)। उस निर्मित स्त्री को अपने स्थान पर रख कर वह सूर्य को बिना बताए अपने पितृगृह चली गई। बाद में सूर्य व छाया से तीन बालक उत्पन्न हुए (दे० छाया) छाया सुख पूर्वक सूर्य के साथ रहती जब संज्ञा वापस आई तो सूर्य ने उसे घर में नहीं रक्खा। अपमानित और निराश होकर संज्ञा ने घोड़ी का रूप धारण कर लिया और पृथ्वी पर घूमने लगी। समय पाकर सूर्य को वस्तुस्थिति का पता लगा उसने जाना कि उसकी पत्नी घोड़ी के रूप में घूमती है। फलतः उसने भी घोड़े के रूप धारण कर अपनी पत्नी से समागम किया। उससे उसके अश्विनी कुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए)। सम० अधिकार: एक प्रधान नियम जिसके अनुसार तदन्तर्गत नियमों का विषय नाम रक्खा जाता है और वे सब नियम उससे प्रभावित होते हैं विषय विशेषण -सुत: शनि का विशेषण।

सञ्ज्ञानम् [सम्+ज्ञा+ल्युट्] ज्ञानकारी समझ।

सञ्ज्ञापनम् [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1 सूचित करना 2 अध्यापन 3 वध, हत्या।

सञ्ज्ञावत् (वि०) [सञ्ज्ञा+मतुप्] 1 सचेतन होश में आया हुआ पुनर्जीवित 2 नाम वाला।

सञ्ज्ञित (वि०) [सञ्ज्ञा+इतच्] नाम वाला नामक नाम धारी।

सञ्ज्ञिन् (वि०) [सञ्ज्ञा+इनि] 1 नामवाला 2 जिसका नाम रक्खा जाय

सञ्ज्ञु (वि०) संहते जानुनी यस्य—ब० स० जानुस्थाने ज्ञु:] जिसके घुटने चलते समय टकराते हों।

सञ्ज्वर [सम्+ज्वर्+अप्] 1 अतिताप बुखार 2 गर्मी 3 क्रोध।

सट् I (भ्वा० पर० सटति) बाँटना भाग बनाना।

II (चुरा० उभ० साटयति-ते) प्रकट करना प्रदर्शन करना स्पष्ट करना।

सटम्, सटा [सट्+अच्+टाप् वा] 1 संन्यासी की जटाएँ 2 (सिंह की) अयाल मुद्रा० ७।९, श० १।४७ 3 सूअर के खड़े बाल विखन्तमुद्धतसटा: प्रतिहन्तुमीषु: -रघु० ९।६० 4 शिखा, चोटी। सम० -अङ्कः सिंह।

सट्ट् (चुरा० उभ० सट्टयति-ते) 1 क्षति पहुँचाना मार डालना 2 बलवान् होना 3 देना 4 लेना, 5 रहना।

सट्टकम् [सट्ट्+ण्वुल्] प्राकृत भाषा का एक उपरूपक, उदा० कर्पूरमंजरी —दे० सा० द० ५४२।

सट्वा (स्त्री०) [सट्+व, पृषो०] 1 एक पक्षिविशेष 2 एक बाजयन्त्र।

सठ् (चुरा० उभ० साठयति-ते) 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 अधूरा छोड़ देना 3 जाना, हिलना-जुलना 4 अलंकृत करना सजाना।

सणसूत्रम् [=शणसूत्र, पृषो०] सन की बनी डोरी या रस्सी।

सण्ड दे० षण्ड।

सण्डिश: [=सन्दंश पृषो०] चिमटा या सँडासी।

सण्डीनम् [सम्+डी+क्त] पक्षियों की विविध उड़ानों में से एक दे० 'डीन'।

सत् (वि०) (स्त्री०—ती) [अस्+शतृ, अकारलोप] 1 वर्तमान विद्यमान मौजूद—सन्त: स्वत: प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम् भामि० १।१२०, कु० ७।१२ 2 वास्तविक, असली, सत्य 3 अच्छा, सद्गुणसंपन्न, धर्मात्मा या सती—सती योगविसृष्टदेहा कु० १।२१, श० ५।१७ 4 कुलीन, योग्य, उत्तम, जैसा कि 'सत्कुलम्' में 5 ठीक, उचित 6 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 7 सम्माननीय, आदरणीय 8 बुद्धिमान्, विद्वान् 9 मनोहर, सुन्दर 10 दृढ़, स्थिर,—(पुं०) भद्रपुरुष, सद्गुणी व्यक्ति, ऋषि—आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव रघु० ४।८९, अविरत परकार्यकृतां सतां मधुरिमातिशयेन वचोऽमृतम् भामि० १।१११, भर्तृ० २।७८, रघु० १।१०, (नपुं०) 1 जो वस्तुत विद्यमान हो, सत्ता, अस्तित्व, सर्वनिरपेक्ष सत्ता, 2. वस्तुत विद्यमान, सचाई, वास्तविकता 3 भद्र, जैसा कि 'सदसत्' में 4 ब्रह्म या परमात्मा, (सत्कृ आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

सम० —असत् (सदसत्) (वि०) 1 विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2 असली और नकली 3 सत्य और मिथ्या 4 भला और बुरा ठीक और गलत 5 पुण्यात्मा और दुष्ट (नपुं० द्वि० व०) 1 अस्तित्व और अनस्तित्व 2 भलाई और बुराई ठीक और गलत, °विवेक: भलाई और बुराई में अथवा सच और झूठ में विवेक, °व्यक्तिहेतु: भलाई और बुराई के विवेक का कारण—तं सन्त: श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतव: -रघु० १।१०, —आचार: (सदाचार:) 1 सद्व्यवहार, शिष्ट आचरण 2 मानी हुई रस्म, परंपराप्राप्त प्रथा, स्मरणातीत प्रथा मनु० २।१८, —आत्मन् (वि०) गुणी, भद्र, —उत्तरम् उचित या अच्छा जवाब, —कर्मन्

(नपुं०) 1 गुणयुक्त या पुण्यकार्य 2 सद्गुण, पावनता 3 आतिथ्य, —कन्दः आज, बीज, कार. 1 कृपा तथा आतिथ्यपूर्ण व्यवहार, सत्कारयुक्त स्वागत 2 सम्मान, आदर 3 देखभाल, ध्यान 4 भोजन 5 पर्व, धार्मिक त्योहार, —कुलम् सत्कुल, उत्तम कुल, —कुलीन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न उच्चकुलोद्भव, —कृत (वि०) 1 भलीभांति या उचित ढंग से किया गया 2 सत्कार पूर्वक स्वागत किया गया 3 पूज्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित 4 पूजित अलंकृत 5 स्वागत किया गया (तः) शिव का विशेषण, (तम्) 1 आतिथ्य 2 सद्गुण सचिता —कृतिः (स्त्री०) 1 सादर व्यवहार, आतिथ्य आतिथ्यपूर्ण स्वागत 2 सद्गुण सदाचार,—क्रिया 1. सद्गुण, भलाई शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया-श० ५।१५ 2 धर्मपरता, सत्कर्म, पुण्यकार्य 3 आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 4 शिष्टाचार, अभिवादन 5 शुद्धिसंस्कार 6 अन्त्येष्टि संस्कार और्ध्वदैहिक क्रिया, —गतिः (स्त्री०) (सद्गतिः) उत्तम स्थिति, आनन्द, स्वर्गसुख, —गुण (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, पुण्यात्मा (णः) पुण्यकार्य उत्तमता भलाई, नेकी —चरित,— चरित्र (वि०) (सच्चरित —त्र) सदाचारी, ईमानदार पुण्यात्मा धर्मात्मा सूनु सच्चरित —भर्तृ० २।७५, (नपुं०) 1 सदाचार पुण्याचरण 2 सत्पुरुषों का इतिहास—श० १, —चारा (सच्चारा) हल्दी,— चित् (नपुं०) (सच्चित्) पर मात्मा, °अंश सत् और चित् का भाग °आत्मन् (पुं०) सत् और चित् से युक्त आत्मा °आनन्द सत् या अस्तित्व, ज्ञान और हर्ष परमात्मा का विशेषण, - जनः (सज्जनः) भद्र पुरुष पुण्यात्मा — जलम् कमल का नया पत्ता —पथः 1 अच्छा मार्ग 2. कर्तव्य का सन्मार्ग शुद्धाचरण पुण्याचरण 3 शास्त्र विहित सिद्धान्त —परिग्रहः योग्य व्यक्ति से (दान) ग्रहण करना, —पशु यज्ञ में दी जाने वाली बलि के लिए उपयुक्त पशु, शुभाह यज्ञीय बलि, —पात्रम् योग्य व्यक्ति, पुण्यात्मा °वर्षः योग्य आदाता के प्रति अनुग्रह की वर्षा योग्यव्यक्ति के प्रति उदारता का बर्ताव, °वर्षिन् (वि०) पात्रता का विचार कर दान आदि देने वाला,—पुत्रः 1 भला पुत्र, योग्य पुत्र 2 वह पुत्र जो पितरों के सम्मान में सभी विहित कर्मों का अनुष्ठान करे —प्रतिपक्ष (तर्क० में) पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, प्रति तुलित हेतु, वह हेतु जिसके विपक्ष में अन्य समबल हेतु भी हों, उदा० 'शब्द नित्य है क्योंकि वह श्राव्य है, - शब्द अनित्य है क्योंकि वह उत्पन्न हुआ है' —फल अनार का पेड़, —भावः (सद्भावः) 1 सत्ता, विद्यमानता, अस्तित्व 2 वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3 सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, सौजन्य 4 भद्रता, साधुता, —मातुर (सन्मातुर) धर्मपरायण माता का पुत्र —मात्र (सन्मात्र) जिसका केवल अस्तित्व मात्र ज्ञात हो आत्मा —मान (सन्मान) सत्पुरुषों का सम्मान, —मित्रम् (सन्मित्रम्) विश्वासपात्र मित्र —युवतिः (स्त्री०) सती साध्वी स्त्री —वंश (वि०) अच्छे कुल का कुलीन —वचनम् (नपुं०) रुचिकर तथा सुखद भाषण —वस्तु (नपुं०) 1 अच्छी वस्तु 2 अच्छी कथावस्तु विक्रम० १।२ —विद्य (वि०) सुशिक्षित बहुश्रुत —वृत्त (वि०) 1 अच्छे व्यवहार का, सदाचारी, पुण्याचरण करने वाला 2. बिल्कुल गोल वर्तुलाकार सद्वृत्त स्तन मण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति गीत० ३ (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) (त्तम्) 1 सदाचार पुण्याचरण 2 अच्छा स्वभाव रोचक प्रकृति —संसर्गः भलों का संग, —सङ्गः —सङ्गतिः सत्समागम भले मनुष्यों का समाज या मण्डली भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों की संगति तथा सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम् भर्तृ० २ —सम्प्रयोग नहीं प्रयोग - सहाय (वि०) अच्छे मित्र जिसके सहायक हैं, (यः) अच्छा साथी,—सार (वि०) अच्छे रस वाला (रः) 1 एक प्रकार का वृक्ष 2 कवि 3 चित्रकार, —हेतु (सद्धेतु) निर्दोष अथवा वैध कारण।

सतत (वि०) [सम + तन् + क्त सम के म का लोप] निरन्तर नित्य सदा रहने वाला शाश्वत —तम् (अव्य०) लगातार अविच्छिन्न रूप से नित्य, सदा हमेशा सुखभाजः सततं प्रियवादिनः रघु० । मघ० न सति वायु: सतिलस्मभे सततगतिरिव सर्वतिर्यग्ग्रामा काया रघु० सततभाज् तमाधिगच्छति शि० ६।५८ यथा नीचः शालम पतिता यां छायासमर्था मेघ० ६७ —गतिः (वि०) 1 सदैव गतिशील 2 वायु।

सतर्क (वि०) [तर्केण सह ब० स०] 1 तर्क करने में निपुण 2 सचेत सावधान।

सति (स्त्री०) [सन् + क्तिन् बाहुलकात्] 1 उपहार दान 2 अन्त, विनाश।

सती (स्त्री०) [सत् + ङीप्] साध्वी स्त्री (या पत्नी) कु० १।२१ 2 सत्यानिमी दुर्गादेवी कु० १।२१।

सतीत्वम् [सती + त्व] सती होने का भाव सतीपन।

सतीनः [सती + नी + ड] 1 एक प्रकार की दाल मटर 2 बांस।

सतीर्थ, सतीर्थ्य [समानः तीर्थे गुरुर्यस्य ब० स० तीर्थे गुरौ वसति इत्यर्थे यत् प्रत्यय समानस्य

स] सहाध्यायी, साथ अध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी।

सतीकः [सता + कन् + ह] 1 जौ 2 हवा वायु 3 [illegible] (स्त्री० भी)।

सतीर्थ [सत् + [illegible]] सगी चोकर।

सत्ता [सत् + तल् + टाप्] 1 अस्तित्व विद्यमानता होने का भाव 2 वस्तुस्थिति वास्तविकता 3 उत्तमता [illegible] 4 उत्तमता श्रेष्ठता।

सत्त्रम् [बहुधा सत्रम् लिखा जाता है सद् + ष्ट्रन्] 1 यज्ञीय अवधि जो प्रायः 13 से 100 दिन तक होने वाले यज्ञों में पाई जाती है 2 यज्ञमात्र 3 आहुति चढ़ावा उपहार 4 उदारता वदान्यता 5 सद्गुण 6 [illegible] निवासस्थान 7 आवरण 8 धनदौलत 9 [illegible] 10 तालाब पोखर 11 आश्रम [illegible] 12 शरणगृह आश्रम [illegible] स्थान। सम० अयनम् (नम्) यज्ञ का चलने वाला दीर्घ कार्यकाल

सत्रा (अव्य०) [सद् + त्रा] के साथ मिलकर [illegible] सम० हन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण।

सत्रिः [सद् + त्रि] 1 बादल 2 हाथी।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र + इनि] जो निरंतर यज्ञ अनुष्ठान करता रहता है उदार गृहस्थ [illegible]

सत्त्वम् (प्रथम दस अर्थों में पुं० भी होता है। [सतो भावः सत् + त्व] 1 होने का भाव अस्तित्व सत्ता 2 प्रकृति मूलतत्त्व स्वाभाविक चरित्र [illegible] स्वभाव 4 जीवन जान प्राण जीवनीशक्ति [illegible] शक्ति का सिद्धान्त [illegible] 5 चेतना, [illegible] ज्ञान 6 भूत 7 तत्त्वार्थ वस्तु सम्पत्ति [illegible] 8 [illegible], जैसे कि पृथ्वी वायु अग्नि आदि 9 प्राणधारी जीव जानदार जन्तु—[illegible] [illegible] रघु० २।८ १५।१५ [illegible] 10 भूत प्रेत पिशाच 11 भद्रता सद्गुण श्रेष्ठता 12 सचाई वास्तविकता निश्चय 13 सामर्थ्य ऊर्जा साहस बल शक्ति, अन्तर्हित शक्ति [illegible] पुरुषार्थ [illegible] अर्जन महत्ता [illegible] —भामि० रघु० ५।३१ मुद्रा० [illegible] 14 बुद्धिमत्ता अच्छी समझ 15 भद्रता और शुचिता का सर्वोत्तम गुण [illegible] (देवों तथा स्वर्गीय प्राणियों में यह बहुतायत से पाया जाता है) 16 स्वाभाविक गुण या लक्षण 17 संज्ञा नाम। सम० अनुरूप (वि०) मनुष्य के [illegible] स्वभाव या अन्तर्हित चरित्र के अनुसार [illegible] 2 अपने साधन या सम्पत्ति के अनुसार [illegible] (यह मल्लि० की व्याख्या प्रकरणानुकूल उपयुक्त प्रतीत नहीं होती)।—उद्रेक 1 भद्रता के गुण का आधिक्य 2 साहस या सामर्थ्य में प्रमुखता, —[illegible] गर्भ के लक्षण—[illegible] ५, —विप्लव चेतना की हानि, —विशिष्ट (वि०) 1 प्राकृतिक 2 सद्गुणी, पुण्यात्मा, खरा, —संशुद्धिः (स्त्री०) प्रकृति की पवित्रता या खरापन, —संपन्न (वि०) सद्गुणों से युक्त, पुण्यात्मा,—संक्षयः 1 बल या सामर्थ्य की हानि 2 विश्वविनाश, प्रलय, —सार 1 सामर्थ्य का सार, अत्यधिक ताकत 2 अत्यन्त शक्तिशाली पुरुष,—स्थ (वि०) 1 अपनी प्रकृति में स्थित 2 पशुओं में अन्तर्हित 3 सजीव 4 [illegible] विशिष्ट उत्तम, श्रेष्ठ।

सत्त्वमेजय (वि० [सत्त्व + एज् + णिच् + खश्, मुम्] पशुओं या जीवधारी प्राणियों को डराने वाला।

सत्य (वि०) [सते हितम् सत् + यत्] 1 सच्चा, वास्तविक असली जैसा कि सत्यवाक्, सत्यवचन में 2 ईमानदार निष्कपट सच्चा, निष्ठावान् 3 सद्गुणसम्पन्न खरा [illegible] ब्रह्मलोक, सत्यलोक, भूमि के ऊपर सात लोकों में सबसे ऊपर का लोक—दे० लोक 2 पीपल का पेड़ 3 राम का नाम 4 विष्णु का नाम 5 नान्दीमुख श्राद्ध की अधिष्ठात्री देवता,—त्यम् 1 सचाई —सौनात्सत्य विशिष्यते —मनु० २।८३, सत्यं ब्रू 1 सच बोलना 2 निष्कपटता 3 भद्रता, सद्गुण, शुचिता 4 शपथ प्रतिज्ञा गम्भीर दृढोक्ति—सत्याद् गुरुमलोपयन्—रघु० १२।९, मनु० ८।११३ 5. सचाई, प्रदर्शित सत्यता या कृति 6 चारों युगों में पहला युग, स्वर्णयुग, सत्ययुग 7 पानी —त्यम् (अव्य०) सचमुच, [illegible] निस्सन्देह, निश्चय ही वस्तुतः—सत्यं शपामि ते [illegible]—का०, कु० ६।१९। सम० —अनृत (वि०) 1 सच और मिथ्या सत्यानृता च परुषा [illegible] २।१८३ 2 सच प्रतीत होने वाला परन्तु मिथ्या (—तम्,—ते) 1 सचाई और झूठ 2 झूठ और सच का अभ्यास अर्थात् व्यापार, वाणिज्य —मनु० ४।४ ६ —अभिसन्धि (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला निष्कपट,—उत्कर्ष 1 सचाई में प्रमुखता 3 सच्ची श्रेष्ठता, —उद्य (वि०) सत्यवादी, —उपयाचन (वि०) प्रार्थना पूरी करने वाला, —[illegible] सत्य का प्रेमी [illegible] एक ऋषि का नाम,—दर्शिन् (अव्य०) सचाई को देखने वाला, सत्यता को भांपने वाला, [illegible] (वि०) सत्य के गुण से समृद्ध अत्यन्त सच्चा धृति (वि०) [illegible] सत्यवादी —पुरम् विष्णुलोक, —पूत (वि०) सत्यता से पवित्र किया हुआ (जैसे कि वचन) सत्यपूतां वदेद्वाचम्—मनु०—६।४६,—प्रतिज्ञ (वि०) बात का पक्का, अपने वचन का पालन करने वाला, [illegible] सत्राजित् की पुत्री तथा कृष्ण की प्रिय पत्नी का नाम, (इसी सत्यभामा के लिए कृष्ण ने इन्द्र से युद्ध किया, तथा नन्दनवन से पारि-

जात वृक्ष लाकर उसके उद्यान में लगाया), मुमम् स्वर्णकुम, दे० ऊ० सत्य (२) वचस् (वि०) सत्य वादी, सत्यनिष्ठ, (पुं०) 1 सन्त ऋषि 2 महात्मा (नपुं०) सचाई ईमानदारी वद (वि०) सत्यभाषी (सम्) सचाई, ईमानदारी, वाच् (वि) सत्यवादी सत्यनिष्ठ, व्रत (पुं०) 1 सन्त महात्मा, ऋषि कौवा, वाक्यम् सत्यभाषण खरापन वादिन् (वि०) 1. सत्यभाषी 2. निष्कपट, स्पष्टभाषी व्रत व्रत, संगर,—संध (वि०) 1 वादे का पक्का अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला सत्यनिष्ठ, ईमानदार, निष्कपट, शपथम् शपथग्रहण, सकाश (वि०) प्रशस्त, शुभावह वाला देखने में ठीक जचता हुआ, सत्याम)

सत्यंकारः [सत्य+कृ+घञ्, मुम्] सत्य करना वादा पूरा करना, सौदे या संविदा की शर्त पूरी करना 2. बयाने की रकम अगाऊ दिया गया धन, ठेके का काम पूरा करने के लिए जमानत के रूप में दी गई अग्रिम राशि - कि० ११।५० ।

सत्यवत् (वि०) [सत्य+मतुप्] सत्यभाषी, सत्यनिष्ठ, पुं० एक राजा का नाम, सावित्री का पति —ती एक मछुए की लड़की जो पराशर मुनि के सहवास से व्यास की माता बनी, °सुतः व्यास ।

सत्या [सत्यमस्ति अस्या —सत्य अच्+टाप्] 1 सचाई ईमानदारी 2 सीता का नाम 3 द्रौपदी का नाम —कि० ११।५० 4 व्यास की माता सत्यवती का नाम 5. दुर्गा का नाम 6 कृष्ण की पत्नी सत्यभामा का नाम ।

सत्यापनम् [सत्य+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 सत्यभाषण करना, सत्य का पालन करना 2 (किसी संविदा या सौदे आदि की) शर्तें पूरी करना ।

सत्र दे० 'सत्र' ।

सत्रप (वि०) [सह त्रपया—ब० स०] लज्जाशील, विनयी ।

सत्राजित् (पुं०) निघ्न का पुत्र तथा सत्यभामा का पिता (सत्राजित् को सूर्य से स्यमन्तक नाम की मणि प्राप्त हुई थी, और उसने उसको अपने कण्ठ में पहन लिया था। बाद में सत्राजित् ने इस मणि को अपने भाई प्रसेन को दे दिया प्रसेन से यह मणि वानरराज जांबवान् के हाथ लगी, जब कि उसने प्रसेन का वध किया। फिर कृष्ण ने जांबवान् से युद्ध किया और उसे परास्त कर दिया। तब जांबवान् ने अपनी पुत्री के साथ यह मणि कृष्ण को दे दी। दे० जाम्बवत् । कृष्ण ने इस मणि को इसके मूल अधिकारी सत्राजित् को दे दिया। सत्राजित् ने भी कृतज्ञता के कारण यह मणि, अपनी पुत्री सत्यभामा समेत कृष्ण को ही अर्पित कर दी। उसके पश्चात् एक बार जब इस मणि के साथ सत्यभामा अपने पिता के घर विद्यमान थी तो अक्रूर नामक यादव के भड़काने पर, जो स्वयं इस मणि को लेना चाहता था शतधन्वा ने सत्राजित् को मार डाला और वह मणि लेकर अक्रूर को दे दी। उसके बाद कृष्ण ने शतधन्वा को मार डाला। परन्तु जब उन्हें पता लगा कि वह मणि तो अक्रूर के पास है तो उन्होंने कहा कि एक बार वह मणि सब लोगों को दिखा दी जाय तथा फिर अक्रूर ही उस मणि को अपने पास रक्खें) ।

सत्वर (वि०) [सह त्वरया ब० स०] फुर्तीला द्रुत गामी चुस्त रम् (अव्य०) शीघ्र जल्दी से ।

सथूत्कार (वि०) [सह थूत्कारेण] वह मनुष्य जिसके मुँह से बोलते समय थूक निकले र: बात के साथ मुँह से थूक निकलना ।

सद् (भ्वा० पर० कुछ के अनुसार तुदा० पर०—सीदति सद्य 'प्रति' को छोड़कर अन्य इकारान्त तथा उकारान्त उपसर्ग के लगने पर सद् के स् को ष् हो जाता है) 1 बैठना बैठ जाना, आराम करना, लेटना लेट जाना, विश्राम करना बस जाना, अथवा सदुरुक स्मिन् निलम्बे निशिमा गिरेः भट्टि० ९।५८ 2 डूबना, गोते लगाना तेन त्वं विदुषा मध्यं पङ्के गौरिव सीदसि हि० प्र० २४ (यहाँ इस शब्द का अर्थ —४—भी है) 3 जीना, रहना बसना वास करना 4 खिन्न होना हतोत्साह होना, निराश होना, हताश होना, मनसा में डूब जाना नाथ हरे जय नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे गीत० ६ 5 म्लान होना नष्ट होना बर्बाद होना, छीजना, नष्ट होना —विपन्नाया नीतौ सकलमवशं सीदति जगत्—कि० २।७, रघु० ३।६४, हि० २।१३० 6 दुःखी होना पीड़ित होना, कष्टग्रस्त होना असहाय होना कि० ११।६० मनु० ८।२१ 7 बाधित होना, विघ्न युक्त होना, मनु० ९।२४ 8 म्लान होना, क्लान्त होना, थका हुआ होना, निढाल होना, अवसन्न होना — सीदन्ति मे हृदय का०, सीदन्ति मम गात्राणि भग० १।२८ 9 जाना, प्रेर० (सादयति ते) 1 बिठाना आराम कराना इच्छा० (सिषत्सति) बैठने की इच्छा करना, अव , 1 निढाल होना मूर्छित होना, विफल होना, रास्ते से हट जाना कार्याणी पर्यवसीदन्ति कि० २।६ ४।००, भट्टि० ६।२४ 2 भुगतना उपेक्षित होना 3 हतोत्साह होना म्लान होना 4 नष्ट होना क्षीण होना समाप्त होना आत्मकुलसमया वन्धु कृत्याय मालमो दमि —(प्रेर०) 1 अवसन्न करना हतोत्साह करना बर्बाद करना—भग० ६।५ 2. दूर करना, हटाना —अोमुद्रभ्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा श० ५।६ 3 नष्ट

करना मार डालना आ—, 1 नीचे बैठना निकट बैठना 2 पास में रहना 3 पहुँचना उपगमन करना पास आना हिमालयस्याऽलयमाससाद कु० ३।६० शि० ९।८ रघु० ६।८ 4 अकस्मात मिलना प्राप्त करना निमोण करना रघु० २।६० १८।२५ 5 भुगतना—भट्टि० ३।२६ 6 मुठभेड़ होना आक्रमण करना 7 रमना (प्रेर०) 1 दूसरे के द्वारा लाना शामिल करना प्राप्त करना —अमरगणनालेख्यमासाद्य—रघु० ८।९५ 2 उपगमन करना, पास आना पहुँचना अधिकार में करना तत्र स्वस्थानमासाद्य गजनामर्द कर्षति पंच० २।६६ मनु० ३८ भट्टि० १।३ 3 पकड़ लेना—अमत रथवर्त्मेव पूर्वमुस्थित वैनतेयमप्यासाद पंच० १।४ 4 मुठभेड़ होना आक्रमण करना भट्टि० ६।९५, उद् - 1 डूबना (आलं० भी) बर्बाद होना क्षीण होना—उत्सीदेयुरिमे लोका भग० ३।२४ 2 छोड़ देना, त्याग देना 3 विवाह के लिए उठना (प्रेर०) 1 नष्ट करना उन्मूलन करना उत्साद्यन्ते जातिधर्मा भग० १।४३ मनु० ९।२६७ 2 उलटना 3 मलना मालिश करना उप—, 1 निकट बैठना पहुँचना, पास जाना उपसद्य शासन् भट्टि० ९।०२, ६।१३५ 2 सेवा में प्रस्तुत रहना सेवा करना आकल्पसाधनैस्तैस्तैरुपसेदुः प्रसाधकाः रघु० १७।२२ शि० १३।३८ 3 चढ़ाई करना, नि—, 1 नीचे बैठ जाना लेटना विश्राम करना उष्णालुः शिशिरे निषीदति तरोर्मूलालवाले शिखी विक्रम० २।२३ 2 डूबना, विफल होना निराश होना प्र—, 1 प्रसन्न होना कृपालु होना मंगलप्रद होना प्राय चतुर्थ्यन्त के साथ प्रसाद पपाश्लस्थामु रन्तु प्रसाद शाश्वतमस्याम्बशीय रघु० ६।६८ 2 आश्वस्त होना परितुष्ट होना, सन्तुष्ट होना भिद्यन्ते हृदय हि य प्रकुप्यति भुव स तस्मै प्रसीदति पंच० १।२८३ 3 निर्मल होना स्वच्छ होना, स्पष्ट होना चमकना (शा० और आ०) दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखा रघु० ३।१४ प्रससाद शोदयादम्भ कुम्भयोनेर्महौजस ४।२१ 4 फल आना, सफल होना कामयाब होना क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति —रघु० ३।२९ 5 प्रसन्न, (प्रे०) 1 शान्त करना अनुग्रह प्राप्त करना प्रार्थना करना निवेदन करना तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् भग० ११।४४ रघु० १ माल० ३।२ 3 2 स्पष्ट करना चेत प्रसादयति भर्तृ० २।२३ वि— 1 डूबना, थक जाना 2 हताश होना निढाल होना कष्टग्रस्त होना, खिन्न होना, निराश होना, आउम्मोद होना विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम् —गीत० ८,

भग० १।२ भट्टि० ३।८ रघु० ८।३४ प्रेर० 1 निराश करना उदास करना - कष्टग्रस्त करना पीड़ित करना

सद [सद् अच्] वृक्ष का फल

सदशक [दशन सह दशकं ब० स०] केकड़ा।

सदश्वदस्न [सन्तः अश्वाः यस्य ब० स०] बगले का एक भेद एक पक्षी।

सदनम् [सद् + ल्युट्] 1 घर महल भवन 2 स्थान होना क्षीण होना नष्ट होना 3 अवसाद ग्लानि क्लान्ति 4 हानि 5 जल 6 यम का आवास स्थान।

सदय (वि०) [सह दयया ब० स०] कृपालु सुकुमार दयापूर्ण —यम (अव्य०) कृपा करके दया करके।

सदस् नपुं० [सीदन्त्यस्याम—सद् + असि] 1 आसन आवास घर, निवासस्थान 2 सभा पहुँचना मरो नांगि सदः सुरपुत्रैर्विना— मालवि० १।११६, भर्तृ० २।६३। सम० —सद (वि०) सभा में बैठा हुआ रघु० ३।६६ —गृहम् सभा भवन, परिषद्-कक्ष रघु० २।६९

सदस्य [सदसि साधु वसति वा यत्] 1 सभा का सभासद या सभा में उपस्थित व्यक्ति सभा का मेम्बर (पंच, जूरी का सदस्य) 2 याजक यज्ञ में ब्रह्मा या सहायक ऋत्विज् श० ३

सदा (अव्य०) [सर्वस्मिन् काले सर्व + दा सादेश] हमेशा, सर्वदा, नित्य, सदैव। सम० आनन्द (वि०) सदा प्रसन्न रहने वाला (न्द) शिव का विशेषण —गति 1 वायु 2 सूर्य 3 शाश्वत आनन्द मोक्ष, —तोया, —नीरा 1 करतोया नदी का नाम 2 वह नदी जिसमें सदैव पानी रहता है बहती हुई नदी —दान (वि०) मदैव उपहार देने वाला (वह हाथी) जिसके सदैव मद बहता हो—पंच० २।७१ (—नः) 1 मद बहाने वाला हाथी 2 गन्धद्विप 3 इन्द्र के हाथी का नाम 4 गणेश —नत एक पक्षी खंजन —फल (वि०) हमेशा फलने वाला (लः) 1 बेल का पेड़ 2 कटहल का पेड़ 3 गूलर का पेड़ 4 नारियल का पेड़ —योगिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण —शिवः शिव का नाम।

सदृक्ष (स्त्री०—क्षी) सदृश सदृश (स्त्री०—शी) (वि०) [समान दर्शनमस्य दृश् क विवन् कञा वा समानस्य सादेश] 1 समान मिलता जुलता तुल्य, अनुरूप (सम्ब० या अधि० के साथ अथवा समास में प्रयुक्त) 2 योग्य समुचित उपयुक्त समानरूप जैसा कि प्रश्रयसदृश वाक्यम् हि० ३।४१ 3 योग्य लायक आभाप्रद भूतस्य कि सदृशम् कुलस्य रघु० १४।६१ १।१५।

सदेश (वि०) [सह देशेन ब० स०] 1 किसी देश का

हरामी 2 एक ही स्थान से सम्बन्ध रखने वाला 3 आसपासवर्ती, पड़ोसी।

सद्मन् (नपुं०) [सीदत्यस्मिन् सद्+मनिन्] 1 घर, मकान, आवासस्थान —चकितनतनताङ्गी सद्म सख्यो विवेश भामि० २।३२ 2 स्थान, जगह 3 मन्दिर 4 वेदी 5 जल।

सद्यस् (अव्य०) [समानेऽह्नि नि०] 1 आज, उसी दिन —गवादीनां पयोऽन्येद्युः सद्यो वा जायते दधि, पायस्य हि फलं सद्य सुभा० 2 तुरन्त, तत्काल, फौरन, अकस्मात् —चकितनतनताङ्गी सद्म सख्यो विवेश भामि० २।३२ कु० ३।२१, मेघ० १९ 3 हाल ही में, कुछ ही समय पहले जैसा कि सद्यो ... —म० ४ में। सम० —कालः वर्तमान काल, —कालीन (वि०) हाल ही का —जात (वि०) (सद्योजात) अभी पैदा हुआ, (त.) 1 बछड़ा 2 शिव का विशेषण, —पातिन् (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला, नश्वर मेघ० १० —वृष्टि, —शौचम् तत्काल की हुई शुद्धि।

सद्यस्क (वि०) [सद्यस्+कन्] 1 नूतन, अभिनव 2 तात्कालिक।

सद्रु (वि०) [सद्+रु] 1 विश्राम करने वाला, ठहरने वाला 2 जाने वाला।

सद्वन्द्व (वि०) [सह द्वन्द्वेन ब० स०] झगड़ालू, कलहप्रिय, विवादपूर्ण।

सदश्व [सद्+अश्व स्थान] रथ।

सधर्मन् (वि०) [समानो धर्मो यस्य — सधर्म+अनिच्, ब० स०] 1 समान गुणों से युक्त 2 एक जैसा कर्तव्यों वाला 3 उसी जाति या सम्प्रदाय का 4 समान, मिलता-जुलता। सम० —चारिणी वैध स्त्री या स्वायंभुव रीति से विवाहित ... में वह स्त्री।

सधर्मिणी दे० ऊ० 'सधर्मचारिणी'।

सधर्मिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [सह धर्मो इनि अस्य सधर्मं इनि, ब० स०] दे० 'सधर्मन्'।

सधिस् (पुं०) [सह+इसिन् हस्य धः] बैल, सांड।

सध्रीची [सध्र्यच्+ङीप्, अलोप, दीर्घ] सखी, सहेली, अन्तरंग सहेली भट्टि० ६।७।

सध्रीचीन (वि०) [सध्र्यच्+ख अलोप, दीर्घ] साथ रहने वाला, सहचर।

सध्र्यञ्च् (वि०) (स्त्री० सध्रीची) [सहाञ्चति सह+अञ्च्+क्विन्, सध्रि आदेश] साथ चलने वाला, सहचर, साथी, पुं०—सहचर (पति) शि० ८।४४।

सन् (भ्वा० पर० तना० उभ० सनति, सनोति, सनुते सन्त कर्मवा० सन्यते, सायते, इच्छा० सिसनिषति, सिषासति) 1 प्रेम करना, पसन्द करना 2 पूजा करना, सम्मान करना 3 प्राप्त करना, अधिगत करना 4. अनुग्रह के साथ प्राप्त करना 5. उपहारों से सम्मान करना, देना, प्रदान करना, वितरण करना।

सनः [सन्+अच्] हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

सनत् (पुं०) [सन्+अति] ब्रह्मा का विशेषण—(अव्य०) सदा, नित्य। सम० —कुमारः ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक।

सनत्सुत दे० 'सनत्सूत'।

सना (अव्य०) [सदा, नि० दस्य न] हमेशा, नित्य।

सनात् (अव्य०) [सना+अत्+क्विप्] सदा, हमेशा।

सनातन (वि०) (स्त्री० —नी) [सदा+ट्युल्, तुट्, नि० दस्य न] 1 नित्य, निरन्तर, शाश्वत, स्थायी —एष धर्मः सनातनः 2 दृढ़, स्थिर, निश्चित उत्तर० ५।२२ 3 पूर्वकालीन, प्राचीन —नः पुरातन पुरुष विष्णु —सनातनं पितरमुपागमत् स्वयम् भट्टि० १।१ 2 शिव का नाम 3 ब्रह्मा का नाम, —नी 1 लक्ष्मी का नाम 2 दुर्गा या पार्वती का नाम 3 सरस्वती का नाम।

सनाथ (वि०) [सह नाथेन — ब० स०] 1 स्वामी रखने वाला, प्रभु या पति वाला —त्वया नाथेन वैदेही सनाथा ह्यद्य वर्तते रामा० 2 जिसका कोई अभिभावक या संरक्षक हो —सनाथा इदानीं धर्मचारिणः श० १ 3 कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ 4 सम्पन्न, सहित, युक्त, समेत, पूर्ण, प्राय समास में —लतासनाथ इव प्रतिभाति श० १, शिलातलसनाथो लतामण्डपः विक्रम० ९, मेघ० ९८, कु० ७।१६ रघु० १।६२ विक्रम० ४।१०।

सनाभि (वि०) [समानो नाभिर्यस्य ब० स०] 1. एक ही पेट का, सहोदर 2 रिश्तेदार, बन्धु 3 समान, मिलता-जुलता —... सनाभिर्गिरि ... रघु० 4 स्नेहशील, —भिः 1 सगा भाई, नजदीकी रिश्तेदार 2 रिश्तेदार, बन्धु शि० १३।११ 3 रिश्तेदार जो सात पीढ़ी के अन्तर्गत हो।

सनाभ्य [सनाभि+यत्] सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का रिश्तेदार।

सनिः [सन्+इन्] 1 पूजा, सेवा 2 उपहार, दान 3 अनुरोध, सादर निवेदन (स्त्री० भी इस अर्थ में)।

सनिष्ठीवम्, सनिष्ठेवम् [सह निष्ठीव (ष्ठे) वेन ब० स०] वह भाषण जिसमें मुंह से थूक निकले, ऐसी वाणी जिसमें थूक उछले।

सनी [सनि+ङीष्] 1 सादर अनुरोध 2 दिशा 3 हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

सनीड (स) (वि०) [समानं नीडमस्यस्य — ब० स०] 1 एक ही घोंसले में रहने वाला, साथ-साथ रहने वाला 2 निकटस्थ, समीपवर्ती।

सन्नत [सम्+नम्+क्त] दोनों हाथ जुड़े हुए, अञ्जलि सम्पुट।

सन्तक्षणम् [सम्+तक्ष्+ल्युट्] ताना, व्यंग्य कसने की बात।

सन्तत (भू० क० कृ०) [सम्+तन्+क्त] 1 फैलाया हुआ, विस्तारित 2 विस्तारित, अनवरत, अनवच्छिन्न, नियमित 3 टिकाऊ, नित्य 4 बहुत, अनेक —तम् (अव्य०) सर्वदा, लगातार, नित्य, निरन्तर, सदैव।

सन्ततिः (स्त्री०) [सम्+तन्+क्तिन्] 1 विस्तार, फैलाना 2 फासला, प्रसार, विस्तार [illegible] 3 अनवच्छिन्न पंक्ति, अविराम प्रसार, श्रेणी, रेखा, परम्परा, निरन्तरता —विश्वासमतिसन्ततिमार्ग [illegible] स्यैव लता प्रिया मा० ४।१० कुसुमसन्ततिम [illegible] सन्तुतिं —शि० ६।२६ 4 सिलसिला, ओर [illegible] निरन्तरता —रघु० ३।१ 5 कुल, वंश [illegible] 6 सन्तान, प्रजा—सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे रघु० १।६९ 7 ढेर, राशि (अम्बार) —हृष्टा सन्ततिमहसा विहन्तुम् कि० ५।१७।

सन्तपनम् [सम्+तप्+ल्युट्] 1 गरम करना, प्रज्वलित करना 2 पीड़ित करना।

सन्तप्त (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+क्त] 1 गर्म किया हुआ, प्रज्वलित, लाल-गरम, चमकता हुआ 2 दुःखी, कष्टग्रस्त, पीड़ित मेघ० ७। सम० —अयस् (नपुं०) लाल-गरम लोहा —वक्षस् (नपुं०) जिसे सांस लेने में कठिनाई हो।

सन्तमसम् (नपुं०) सन्ततं तमः [सन्तत तमस्, प्रा० स० पक्ष अच्] सर्वव्यापी या विश्वव्यापी अंधकार, घोर अंधकार—विमलज्ञानसन्तमसे परासयम नै० १।९८ शि० १।२२, भट्टि० ५।२।

सन्तर्जनम् [सम्+तर्ज्+ल्युट्] धमकाना, डांटना, डपटना।

सन्तर्पणम् [सम्+तृप्+ल्युट्] 1 सन्तुष्ट करना, सन्तृप्त करना 2 खुश करना, प्रसन्न करना 3 जो खुशी का देने वाला हो 4 एक प्रकार का मिष्टान्न।

सन्तानः —नम् [सम्+तन्+घञ्] 1 बिछाना, विस्तृत करना, विस्तार, प्रसार, फैलाव 2 सैरन्ध्र, अनव-च्छिन्न पंक्ति या प्रवाह, परम्परा, अनवच्छिन्नता —अविच्छिन्नामलसन्ताना कु० ६।६९ सन्तानवाहीनि दुःखानि उत्तर० ४।८ 3 परिवार, वंश, प्रजा, औलाद, बाल-बच्चा —सन्तानार्थाय विधये रघु० १।३४ सन्तानकामाय राज्ञे २।६५, १।८५ 4 इन्द्र के स्वर्गस्थित पांच वृक्षों में से एक।

सन्तानकः [सन्तान+कन्] इन्द्र के स्वर्गीय पांच वृक्षों में से एक वृक्ष या उसका फूल कु० ६।४६, ७।३ शि० ६।६।

सन्तानिका [सम्+तन्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 फेन, झाग 2 मलाई 3 मकड़ी का जाला 4 चाकू या तलवार का फल।

सन्तापः [सम्+तप्+घञ्] 1 गर्मी, प्रदाह, जलन मा० ३।४ 2 दुःख, यातना, मुसीबत, पीड़ा, वेदना, व्यथा —सन्तापसन्ततिमहाव्यसनाय [illegible] तस्यामामकलसन्तदन [illegible] मा० १।२३ 3 आवेश, रोष 4 पश्चात्ताप, पछतावा, रघु० ११।९० 5 तपस्या [illegible] की साधना —सन्ताप दिशतु शिवः शिवा प्रसक्ताम् कि० ५।५०।

सन्तापनम् [सम्+तप्+णिच्+ल्युट्] 1 जलाना, दाह 2 कामदेव के पांच बाणों में से एक —नम् 1 जलाना, झुलसना 2 पीड़ा देना, कष्ट देना 3 उत्तेजित करना, क्षोभ करना।

सन्तापित (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+णिच्+क्त] गरम किया हुआ, कष्टग्रस्त, पीड़ित।

सन्तिः [सन्+क्तिन्] 1 अन्त, विनाश 2 उपहार, भेंट —तु० सनि।

सन्तुष्टिः (स्त्री०) [सम्+तुष्+क्तिन्] पूर्ण सन्तोष।

सन्तोषः [सम्+तुष्+घञ्] 1 तृप्ति, परितुष्टि, सब्र, सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्—सुभा० 2 प्रसन्नता, खुशी, हर्ष 3 अंगूठा या तर्जनी अंगुली।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] प्रसन्न करना, परितृप्त करना, आराम पहुँचाना।

सन्त्यजनम् [सम्+त्यज्+ल्युट्] छोड़ना, त्याग देना।

सन्त्रासः [सम्+त्रस्+घञ्] डर, भय, आतंक।

सन्दंशः [सम्+दंश्+घञ्] 1 चिमटा, सण्डासी 2 स्वरों (या वर्णों) के उच्चारण में दांतों को भींचना 3 एक नरक का नाम।

सन्दंशकः [सन्दंश+कन्] चिमटा, सिंडासी।

सन्दर्भः [सम्+दृभ्+घञ्] 1 मिलाकर सत्थी करना, ग्रथन करना, क्रम में रखना 2 संग्रह, मिलाप, मिश्रण 3 संगति, निरन्तरता, नियमित संबंध, सम्बद्धता —सन्दर्भशुद्धिं गिरां—गीत० १ 4 रचना 5 निबंध, साहित्यिक कृति —रसगङ्गाधरनामा सन्दर्भोऽयं चिरं जयतु रस० उत्तर० ४।

सन्दर्शनम् [सम्+दृश्+ल्युट्] 1 देखना, अवलोकन, निहारना 2 सटकर टकटकी लगा कर देखना 3 मिलना, एक दूसरे को देखना 4 दृष्टि, दर्शन, निगाह 5 ख़याल, ध्यान।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] 1 रस्सी, डोरी 2 भुजबन्धनी, या हाथी का गण्डस्थल जहां से मद बहता है।

सन्दानित (वि०) [सन्दान+इतच्] 1 बद्ध, कसा हुआ 2 कड़ी में जकड़ा हुआ, शृंखलित।

सन्दानिनी [सन्दानं बन्धनं गवाम् अत्र सन्दान+इनि+ङीप्] गोष्ठ, गोशाला।

सन्दावः [सम् + दु + घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन ।

सन्दाहः [सम् + दह् + घञ्] जलन, उपभोग ।

सन्दिग्ध (भू० क० कृ०) [सम् + दिह् + क्त] 1. सना हुआ, ढका हुआ 2. भ्रामक, सन्देहात्मक, अनिश्चित जैसा कि 'सन्दिग्ध मति-बुद्धि' में 3 भ्रान्त, विह्वल मा० १।२ 4 सशंक, प्रश्नास्पद 5. अव्यवस्थित, अस्पष्ट, दुरूह (जैसे कि वाक्य) 6 खतरनाक, जोखिम से भरा हुआ, असुरक्षित 7 विषाक्त ।

सन्दिष्ट (भू० क० कृ०) [सम् + दिश् + क्त] 1 सकेतित, इंगित किया हुआ 2. निर्दिष्ट 3 उक्त, वर्णित, सूचित 4 वादा किया हुआ, प्रतिज्ञात, —ष्टः जिसे सदेश पहुँचाने का कार्य सौंपा गया हो, सदेशवाहक, दूत, हरकारा, —ष्टम् समाचार, सूचना, खबर ।

सन्दित (वि०) [सम् + दो + क्त] बद्ध, श्रृंखलित, बेड़ी से जकड़ा हुआ ।

सन्दी [सम् + दो + ड + ङीष्] खटोला, छोटी खाट, शय्यांकुश ।

सन्दीपन (वि०)(स्त्री०—नी) [सम् + दीप् + णिच् + ल्युट्] 1. सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला, भड़काने वाला उत्तर० ३ 2 उद्दीपक उत्तर० ६,—नः 1. कामदेव के पाच बाणों में से एक,—नम् 1 सुलगाना, प्रज्वलित करना 2 भड़काना, उद्दीप्त करना अनङ्गसन्दीपनमाशु कुर्वते ऋतु० १।१२ ।

सन्दीप्त (भू० क० कृ०) [सम् + दीप् + क्त] 1. सुलगाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ 2. उत्तेजित, उद्दीपित 3. भड़काया हुआ, उकसाया हुआ, प्रणोदित ।

सन्दुष्ट (भू० क० कृ०) [सम् + दुष् + क्त] 1. कलुषित किया हुआ, मलिन किया हुआ 2. दुष्ट, कमीना ।

सन्दूषणम् [सम् + दूष् + णिच् + ल्युट्] मलिन करना, भ्रष्ट करना, विधर्मा करना, खराब करना ।

सन्देशः [सम् + दिश् + घञ्] 1 सूचना, समाचार, खबर 2. संदेश, संवाद सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य मेघ० ७, १३, रघु० १२।६३, कु० ६।२ 3. आज्ञा, आदेश —अनुल्लिखो गुरोः सन्देशः श० ५। सम० अर्थः सदेश का विषय, वाच् सदेश,—हरः 1. संदेशवाहक, दूत 2 दूत, राजदूत ।

सन्देहः [सम् + दिह् + घञ्] 1 संशय, अनिश्चितता, शंका, —अत्र क सन्देहः 2 जोखिम, खतरा, डर —जीवितसन्देहदोलामारोपितः का०, अर्थार्जने प्रवृत्तिः समन्देहा —हि० १ 3 (अल० शा० में) इस नाम का एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों की घनिष्ठ समानता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु को अन्य वस्तु समझ लिया जाय । इस अलंकार को मम्मट तथा अन्य कुछ विद्वान् 'ससन्देह' नाम से भी पुकारते हैं) ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशय —काव्य० १०, यथा० दे० मा० ११२, (पाठान्तर), विक्रम० ३।२ । सम० —दोला अनिश्चितता का झूला, शंका की स्थिति, दुविधा, असमंजस ।

सन्दोहः [सम् + दुह् + घञ्] 1 दूध दुहना 2. किसी वस्तु की समष्टि, समुच्चय, ढेर, राशि, समात कुन्दमाकन्दमधूबिन्दु सन्दोहवाहिना माकन्दोलाम्यति मा० ३ भामि० ४।१९ ।

सन्द्रावः [सम् + द्रु + घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन ।

सन्ध्या [सम् + धा + अङ् + टाप्] 1. मिलाप, साहचर्य 2 घनिष्ठ मेल, प्रगाढ़ सबंध 3 स्थिति, दशा 4. वादा, प्रतिज्ञा, अनुबन्ध, संविदा, करार सम्बन्धित सत्यसन्ध रघु० १४।५२, महावीर० ७।८ 5. सीमा, हद 6 स्थिरता स्थैर्य 7 सध्या 8 मद्यसन्धान ।

सन्धानम् [सम् + धा + ल्युट्] 1 मिलाना, जोड़ना 2 मेल, संगम, सम्बन्ध—यदर्धं विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्—श० १।९, कु० ५।२७, रघु० १२।१०१ 3. मिश्रण, (औषधि आदि का) सम्मिश्रण 4 पुनरुद्धार, जीर्णोद्धार 5. ठीक बैठाना, जमाना (जैसे कि धनुष की डोरी पर बाण का साधना) तत्साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम् श० १।११, शि० २०।८ 6 मैत्री, मेल, दोस्ती, मेल-मिलाप सुकृतदरामुक्तस्थैरो दुःसन्धानत्वम् दुर्जनो भवति हि० १।९२ (यहाँ इसका अर्थ 'मिलाना या जोड़ना' भी है) 7 जोड़, ग्रन्थि पादसङ्कुचा सन्धाने गुल्फ —सुश्रु० 8 अवधान 9. निदेशन 10. समालना 11 (मदिरा का) आसवन 12. मदिरा या उसका कोई भेद 13 पीने की इच्छा उत्तेजित करनेवाली चटपटी चीजें 14 अचार आदि बनाना 15. रक्तआवरोधक औषधियों के द्वारा त्वचा की सिकुड़न 16 कांजी ।

सन्धानित (वि०) [सन्धान + इतच्] 1. मिलाया हुआ, साथ साथ सन्धी किया हुआ 2 बांधा हुआ, कसा हुआ ।

सन्धिः [सम् + धा + कि] 1 मेल, संगम, सम्मिश्रण, सम्बन्ध—सन्धये सरसा सूची तथा छेदाय कर्तरी सुभा०, मेघ० ५८ 2 संविदा, करार 3. मित्रता, गठबंधन, मैत्री, मेल—मिलाप, सन्धिपत्र सुलहनामा (विदेशनीति में प्रयोज्य छः उपायों में से एक) कति प्रकाराः सन्धीनां भवन्ति—हि० (हि० ४।१०९—१२५ तक कई प्रकारों का वर्णन किया है), न्यूनो न हि संबन्धात्सुविश्लिष्टेनापि सन्धिना हि० ११८८ 4. जोड़, (शरीर का) जोड़ —गुणानुरागमकाश्यिलसन्धी —श० ३ 5. (अग्नि की) तह 6 छेद, विवर, दरार 7. विशेषतया सुरंग, या सेंध जो चोर किसी मकान में घुसने के लिए बनाते हैं — —भुजवाहिका परिसरे सन्धिं कृत्वा प्रविष्टोऽस्मि मध्यम-

कम्-सुश्रु० ३ मनु० ९।२७६ 8 पार्श्वभग, प्रभाग 9 (व्या० में) संहिता, उच्चारण की सुगमता के लिए ध्वनिपरिवर्तन की प्रवृत्ति, वर्णविकार 10 अन्तराल, विश्राम 11 संकट काल 12. उपयुक्त अवसर 13 युगान्त-काल 14 (ना० में) प्रभाग या जोड़ (यह संख्या गिनती में पाँच हैं सा० द० ३३०-३३२) कु० ७।९१ 15 भग स्त्री की भग नलिका। सम० —अक्षरम् संयुक्त स्वर सन्ध्यक्षर (ए, ऐ, ओ, औ) —चोरः घर में सेंध लगाने वाला, वह चोर जो घर में पाड़ लगाता है, —छेदः (दीवार आदि में) छिद्र या सुरंग करना, —जम् मादक मदिरा —जीवकः जो अधर्म की कमाई से जीवन-निर्वाह करता है [illegible] अर्थात् स्त्रियों को पुरुषों से मिला कर जीविका अर्जन करने वाला —दूषणम् संधि या सुलह का भंग कर देना [illegible] दूषणानि कि० ३।४७ —बन्धः जोड़ों का बन्धन [illegible] —मुक्तिः (स्त्री०) किसी जोड़ का सम्बन्ध टूट जाना —विग्रहः (पु० द्वि० व०) शांति और युद्ध —अधिकारः विदेश विभाग का मन्त्रालय, —विग्रहकः संधि की बातचीत करने में निपुण —विद् (पु०) संधि की बातचीत करने वाला, —वेला 1 सन्ध्या-काल 2 कोई भी सन्धिकाल —हारकः घर में सेंध लगाने वाला।

सन्धिक [सन्धि+कन्] एक प्रकार का ज्वर।

सन्धिका [सन्धिक+टाप्] (मदिरा का) आसवन।

सन्धित (वि०) [सन्धा+इतच्] 1 मिलाया हुआ जोड़ा हुआ 2 बद्ध कसा हुआ 3 समाहित पुनर्मिलित मित्रता में आबद्ध 4 स्थिर किया हुआ ठीक बैठाया हुआ 5 आपस में मिलाया हुआ 6 अचार डाला हुआ परिरक्षित —तम् 1 अचार 2 मदिरा।

सन्धिनी [सन्धा+इनि+ङीप्] 1 गर्माई हुई गाय (या जो सांड से संयुक्त या उसके द्वारा वाहित गाय) 2 असमय दुही जाने वाली गाय।

सन्धिला [सन्धि+ला+क+टाप्] 1 भीत में किया हुआ छिद्र गड्ढा खिड़ 2 नदी 3 मदिरा।

सन्धुक्षणम् [सम्+धुक्ष्+ल्युट्] 1 सुलगाना, प्रज्वलित होना 2 उत्तेजित करना, उद्दीपन।

सन्धुक्षित (भू०क०कृ०) [सम्+धुक्ष्+क्त] सुलगा हुआ प्रज्वलित, भभकाया हुआ।

सन्धेय (वि०) [सम्+धा+यत्] 1 मिलाये जाने या जोड़े जाने के योग्य 2 पुनर्मिलित होने के योग्य —सुजनस्तु कनकघटवत् दुर्भेद्यश्चाशुसन्धेय हि० १।९२ 3 जिसके साथ संधि की जा सके 4 जिस पर निशाना लगाया जा सके।

सन्ध्या [सन्धि+यत्+टाप् सम्+ध्यै+अङ्+टाप् वा] 1 मिलाप 2 जोड़ प्रभाग 3 प्रातः या सायंकाल का सन्धिवेला, झुटपुटा —अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरःसरः। अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः काव्य० ३ 4 प्रभात काल 5 सायंकाल शाम का समय 6 युग का पूर्ववर्ती समय दो युगों का मध्यवर्ती काल मनु० १।६९ 7 प्रातः काल मध्याह्न काल तथा सायंकाल की ब्राह्मण द्वारा प्रार्थना—मनु० २।६९ [illegible] 8 प्रतिज्ञा वादा 9 हद सीमा 10 चिन्तन मनन 11 एक प्रकार का फूल 12 एक नदी का नाम 13 ब्रह्मा की पत्नी का नाम सम० —अभ्रम् 1 सायंकालीन बादल (सूर्य की सुनहरी आभा से [illegible]) [illegible] 2 एक प्रकार का लाल खड़िया रंग —कालः 1 सन्ध्या का समय 2 शाम —नाटिन् (पु०) शिव का विशेषण —पुष्पी 1 एक प्रकार की चमेली 2 जायफल —बलम् [illegible] —रामः [illegible] ब्रह्मा का विशेषण —वन्दनम् प्रातःकाल और सन्ध्या काल की प्रार्थना।

सन्न (भू० क० कृ०) [सद्+क्त] 1 बैठा हुआ आसीन लेटा हुआ 2 खिन्न दुःखी उदास 3 म्लान विश्रान्त 4 दुर्बल निस्तब्ध कमजोर 5 क्षीण छीजा हुआ 6 नष्ट, लुप्त 7 निश्चल गतिहीन 8 सिकुड़ा हुआ 9 सटा हुआ, निकटस्थ —न्नः पियाल नामक वृक्ष चिरौंजी का पेड़ —न्नम् थोड़ा सा अल्पमात्रा।

सन्नक (वि०) [सन्न+क] नाटा, ठिगना। सम० —द्रुः पियालवृक्ष।

सन्नत (भू० क० कृ०) [सम्+नम्+क्त] 1 झुका हुआ नमन या प्रणत 2 उदास 3 सिकुड़ा हुआ।

सन्नतर (वि०) [सन्न+तरप्] अपेक्षाकृत धीमा (जैसे कि स्वर)।

सन्नति (स्त्री०) [सम्+नम्+क्तिन्] 1 अभिवादन सादर प्रणाम सम्मान 2 विनम्रता 3 एक प्रकार का यज्ञ 4 ध्वनि कोलाहल।

सन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+नह्+क्त] 1 एक साथ मिलाकर कटिबद्ध 2 कवचित सुसज्जित बख्तरबन्द 3 व्यवस्थित तैयार युद्ध के लिए उद्यत शस्त्रास्त्र से पूर्णतः सुसज्जित —नवजलधरः सन्नद्धोऽयं न दृप्तनिशाचरः विक्रम० ४।१ 4 तत्पर उद्यत निर्मित, सुव्यवस्थित कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम् श० १।२० 6 किसी भी वस्तु से युक्त 7 व्यापक 8 निकटस्थ संलग्न सीमावर्ती निकटस्थ।

सन्नय [सम्+नी+अच्] 1 समूह समुच्चय परिमाण संख्या 2 पृष्ठभाग (किसी सेना का) पृष्ठरक्ष)।

सन्नहनम् [सम्+नह्+ल्युट्] 1 तैयार होना, सन्नद्ध होना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना 2 तैयारी 3 कस कर बांधना 4. उद्योग, प्रयत्न।

सन्नाहः [सम्+नह्+घञ्] 1 अपने आपको शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना युद्ध के लिए तैयार होना कवच पहनना 2 युद्ध जैसी तैयारी सुसज्जा 3 कवच, बख्तर असिमन्कली सलास्पृष्टदृष्टवाग्वाणवारण। कव जीवेज्जगज्ज स्यु सन्नाहा सज्जना यदि कीर्ति० १।३६, कि० १६।१२।

सन्नाह्यः [सम्+नह्+ण्यत्] युद्ध का हाथी।

सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1 निकट खींचना, समीप लाना 2 पड़ोस सामीप्य उपस्थिति उत्कण्ठते च युष्मत्सन्निकर्षस्य—उत्तर० ३।३७, रघु० ७।८, ६।१० 3 संबंध, रिश्तेदारी 4 (न्याय० में) इंद्रिय का विषय से संबंध (यह छः प्रकार का है)।

सन्निकर्षणम् [सम्+नि+कृष्+ल्युट्] 1 निकट लाना 2. पहुँचना, समीप आना 3 सामीप्य पड़ोस।

सन्निकृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+नि+कृष्+क्त] 1 समीप आया हुआ 2 समीपवर्ती, सटा हुआ, निकटस्थ, —ष्टम् सामीप्य, पड़ोस।

सन्निचयः [सम्+नि+चि+अच्] संग्रह, संचय।

सन्निधातृ (पुं०) [सम्+नि+धा+तृच्] 1 निकट लाने वाला 2. जमा करने वाला 3 चोरी का माल लेने वाला मनु० ९।२७८ 4 न्यायालय में लोगों का परिचय कराने वाला अधिकारी।

सन्निधानम्, सन्निधिः [सम्+नि+धा+ल्युट्, कि वा] 1 मिलाकर रखना साथ साथ रखना 2 सामीप्य, पड़ौस, उपस्थिति—नै० २।५३ 3 दृष्टिगोचरता दर्शन 4 आधार 5 ग्रहण करना, कार्यभार लेना 6 सम्मिश्रण, समष्टि।

सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना, उतरना, नीचे आना 2 एक साथ गिरना, मिलना, —कि० १३।५८ 3 टक्कर, संपर्क 4 मेल, संगम सम्मिश्रण, मिश्रण, विविध संबंध धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः—मेघ० ५ 5 समाज, समूह, समुच्चय, संख्या —नानारत्नज्योतिषां सन्निपातैः कु० १।१ 6 आना, पहुँचना 7 (वात, पित्त कफ) तीनों दोषों का एक साथ बिगड़ना जिससे कि विषम ज्वर हो जाता है 8 संगीत में एक प्रकार का समय, ताल। सम०—ज्वरः तीनों दोषों के बिगड़ जाने पर उत्पन्न होने वाला भीषण ज्वर।

सन्निबन्धः [सम्+नि+बन्ध्+घञ्] 1 कस कर बांधना 2 संबंध, आसक्ति 3 प्रभावकारिता।

सन्निभ (वि०) [सम्+नि+भा+क] समान, सदृश, (समास के अन्त में प्रयुक्त) अमु० १।११।

सन्नियोगः [सम्+नि+युज्+घञ्] 1 मेल, अनुराग 2. नियुक्ति।

सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] जकड़न, रुकावट।

सन्निवृत्तिः (स्त्री.) [सम्+नि+वृत्+क्तिन्] 1. वापसी —श० ३।१० रघु० ८।४९, १०।२७ 2. दूर रखना 3 निग्रह, सहिष्णुता।

सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] 1 गहरी पैठ, उत्कट भक्ति या अनुराग संलग्नता 2. संचय, समुच्चय, संघात 3 मेल, मिलाप, व्यवस्था रचनीय एव च सुमनसां सन्निवेशः मा० १।९ 4 स्थान, जगह, स्थिति, अवस्था कु० ७।२५, रघु० ६।१९ 5 पड़ौस सामीप्य 6 रूप, आकृति श्यामलशरीरसन्निवेश मा० १, निर्माणसन्निवेश—मा० 7 झोपड़ी, रहने की जगह—रघु० १४।७४ 8 उपवेशनस्थानों पर आसन देना बिठाना—विमला सभावत्सन्निवेश—उत्तर० ७ 9 बीच में रखना 10 नगर के निकट खुला मैदान जहाँ लोग मनोरंजन, व्यायाम आदि के लिए एकत्र होते हैं।

सन्निहित (भू० क० कृ०) [सम्+नि+धा+क्त] 1 निकट रखा गया, पास पड़ा हुआ, निकटस्थ, सटा हुआ, पड़ौस का —श० ४ 2 निकट, समीप, नजदीक 3 उपस्थित—अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १, हृदयसन्निहिते—श० ३।२० 4 जमाया हुआ, रखा हुआ, जमा किया हुआ 5 उद्यत, तत्पर मुद्रा० १ 6 ठहरा हुआ, अवस्थित। सम०—अपाय (वि०) जिसका विनाश निकट ही हो, क्षणभंगुर नश्वर कस्याको अथ सन्निहितापाय —पंच० २।१७७।

सन्न्यसनम् [सम्+नि+अस्+ल्युट्] 1. त्याग, (दुनियादार) छोड़ देना 2 पूर्णवैराग्य, विरक्ति न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति भग० ३।४ 3. सौंपना, सुपुर्द करना।

सन्न्यस्त (भू० क० कृ०) [सम्+नि+अस्+क्त] 1 डाला हुआ, नीचे रखा हुआ 2. जमा किया हुआ 3 सौंपा हुआ, सुपुर्द किया हुआ 4 एक ओर डाला, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] 1 छोड़ना, त्याग करना 2 सांसारिक विषयों तथा अनुरागों से पूर्ण वैराग्य, सांसारिक वासनाओं का परित्याग, भग० ६।२, १८।२, मनु० ६।११४, ५।१०८ 3 धरोहर, निक्षेप 4 खेल में शर्त लगाना 5 शरीर त्यागना, मृत्यु 6 जटामांसी, बालछड़।

सन्न्यासिन् (पुं०) [सम्+नि+अस्+णिनि] 1 जो त्याग देता और जमा कर देता है 2. जो संसार और इसकी आसक्तियों का पूर्णतः त्याग कर देता है,

वैरागी, चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति — भग० ५।३ 3. भोजन का त्याग करने वाला, त्यक्ताहार, — भट्टि० ७।७६ ।

सप् (भ्वा० पर० सपति) 1 सम्मान करना, पूजा करना 2 संबद्ध होना ।

सपक्ष (वि०) [सह पक्षेण — ब० स०] 1 पक्षों वाला, डैनों वाला 2 पक्षवाला, दलवाला 3 एक ही पक्ष या दल का 4 बन्धु, समान, सदृश — (आलं०) द्रुतद्राक्षामिर्दसभरसपक्षा भणितय: भामि० २।७३ 5 जिसमें अनुमान का पक्ष या साध्य विषय विद्यमान हो, — क्ष: 1 समर्थक, अनुगामी, पक्षपाती हिमायती 2. रिश्तेदार, रिश्तेदार - भामि० ४ 3 (तर्क० में) साध्यपक्ष का दृष्टांत, समान उदाहरण—निश्चित-साध्यवान् सपक्ष: तर्क० ।

सपत्न: [सह एकार्थे पतति पत्+न, सहस्य स] शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी — रघु० ९।१८ ।

सपत्नी [समान: पति: यस्या: ब० स० ङीप्, न आदेश] 1. प्रतिद्वन्द्वी या सहपत्नी, प्रतिद्वन्द्वी गृहिणी, सौत (एक ही पति की दूसरी पत्नी) — विस्र सपत्नी भव दक्षिणायाः रघु० ६।११, १४।८६ ।

सपत्नीक (वि०) [सपत्नी+कप्] पत्नी सहित ।

सपत्राकरणम् [सह पत्रेण सपत्र+डाच्+कृ+ल्युट्] 1. इस प्रकार बाण मारना जिससे कि बाण का पुच्छ भाग शरीर में घुस जाय 2. अत्यंत पीडाकारक — शु० निष्पत्राकरण ।

सपत्राकृति: (स्त्री०) [सपत्र+डाच्+कृ+क्तिन्] वेदना, पीडा, अत्यंत कष्ट या सन्ताप ।

सपदि (अव्य०) [सह+पद्+इन्, सहस्य स:] तुरन्त, क्षण भर में, फौरन, तत्काल सपदि मदनानलो दहति मम मानसम् गीत० १०, कु० ३।७६, ६।४ ।

सपर्या [सपर्+यक्+अ+टाप्] 1. पूजा, अर्चना, सम्मान — सोऽहं सपर्याविधिभाजनेन — रघु० ५।२२, २।२२, ११।२५, ११।४९, शि० १।१४ 2. सेवा, परिचर्या ।

सपाद (वि०) [सहपादेन - ब० स०] 1. पैरों वाला 2. एक चौथाई बढ़ा हुआ ।

सपिण्ड: [समान: पिण्डो मृतपुरुषों निवापो वा यस्य - ब० स०] समान पितरों को पिण्डदान देने वाला, एक समान पितरों को पिण्डदान देने के कारण संबंधी, बन्धु याज्ञ० १।५२, मनु० ३।२४७, ५।५९ ।

सपिण्डीकरणम् [सपिण्ड+च्वि+कृ+ल्युट्] समान पितरों के सम्मान में किया जाने वाला विशेष श्राद्ध या अनुष्ठान, (यह श्राद्ध किसी सम्बन्धी की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् किया जाता है, परन्तु आजकल बहुधा मृत्यु के बारहवें दिन ही किया जाने लगा है) ।

सपीति: (स्त्री०) [सह एकत्र पीति: पानम् — पा+क्तिन्] साथ साथ पीना, मिलकर पीना, सहपान ।

सप्तक (वि०) (स्त्री — का, की) [सप्तानां समूह: सप्तन् + कन्] 1. जिसमें सात सम्मिलित हों 2. सात 3. सातवां, — कम् सात वस्तुओं का समूह (कविता आदि का) ।

सप्तकी [सप्तभि: स्वरं इव कायति शब्दायते सप्तन् + कै + क + ङीष्] स्त्री की करधनी या तगड़ी ।

सप्तति (स्त्री०) [सप्तगुणिता दशति नि०] सत्तर, — तम (वि०) सत्तरवाँ ।

सप्तधा (अव्य०) [सप्तन् + धाच्] सात गुण, सात प्रकार से ।

सप्तन् (सं० वि०) [सर्वेव बहुवचनान्त — कर्तृ० व कर्म० सप्त] [सप् + तनिन्] सात । सम० — अङ्ग (वि०) दे० नी० सप्तप्रकृति, — अर्चिस् (वि०) 1 सात जिह्वा या ज्वाला वाला 2 बुरी आंख वाला, अशुभ दृष्टि वाला, (पुं०) 1 अग्नि 2 शनि, — अशीति: (स्त्री०) सतासी, — अश्रम् सातकोण, — अश्व: सूर्य, ॰वाहन: सूर्य, — अह: सात दिन अर्थात् एक सप्ताह, — आत्मन् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण — ऋषि (सप्तर्षि) (पुं० ब० व०) 1 सात ऋषि, अर्थात् मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ 2. सप्तर्षि नामक नक्षत्रपुंज (सात तारों का समूह जो उपर्युक्त सात ऋषि कहे जाते हैं), — चत्वारिंशत् (स्त्री०) सैंतालिस, — जिह्व:, — ज्वाल: अग्नि — अंशु: दे० शि० १४।६ — त्रिंशत् (स्त्री०) सैंतीस, — दशन् (वि०) सत्रह — दीधिति: अग्नि — द्वीपा पृथ्वी का विशेषण, — धातु (पुं० ब० व०) शरीर के सघटक सात मूलतत्त्व अर्थात् अन्नरस, रुधिर, मांस चर्बी, हड्डी, मज्जा वीर्य — नवति: (स्त्री०) सत्तानवे, — नाडीचक्रम् ज्योतिष का एक रेखाचित्र जिसके द्वारा वर्षाविषयक भविष्यकथन किया जाता है, — पर्ण: (इसी प्रकार सप्तच्छद, सप्तपत्र) एक वृक्ष का नाम, — पदी विवाह में सात पग चलना (दूल्हा और दुलहिन विवाह संस्कार के अवसर पर सात पग मिलकर चलते हैं — इसके बाद विवाहसम्बन्ध अटूट हो जाता है), — प्रकृति: (स्त्री० ब० व०) राज्य के सात सघटक अंग — स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च अमर०, दे० 'प्रकृति' भी, — फल: सिरस का पेड़, — भूमिक, — भौम (वि०) सातमंजिला ऊँचा (जैसे कि महल), — रात्रम् सात रात का समय, — विंशति: (स्त्री०) सत्ताइस, — विध (वि०) सातगुना, सात प्रकार का, — शतम् 1 सात सौ 2. एक सौ सात, (ती) सात सौ श्लोकों का संग्रह,

-सप्तिः सूर्य का विशेषण सर्वेषां समर्थैरुत्थामिव नृपगुणैर्दीप्यते सप्तसप्तिः मालवि० २।१३।

सप्तम (वि०) (स्त्री०-मी) [सप्तानां पूरणः सप्तन् + डट्, मट्] सातवाँ, मी (स्त्री०) 1 सातवीं विभक्ति (व्या० में) अधिकरण कारक 2 चान्द्रमास के किसी पक्ष का सातवाँ दिन।

सप्तला (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली।

सप्तिः [सप् + ति] 1 जूआ 2 घोड़ा—जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् सुभा०—दे० सप्तसप्तिः भी।

सप्रणय (वि०) [सह प्रणयेन ब० स०] स्नेही मित्रतापूर्ण।

सप्रत्यय (वि०) [प्रत्ययेन सह ब० स०] 1 विश्वास रखने वाला 2 निश्चित विश्वस्त।

सफर-री [सप् + अरन् पृषो० पस्य फ] छोटी चमकीली मछली पुं० शफर।

सफल (वि०) [सह फलेन ब० स०] 1 फलों से पूर्ण, फल देने वाला, उपजाऊ (आल० से भी) 2. सम्पन्न, पूरा किया गया, कामयाब।

सबन्धु (वि०) [सह बन्धुना—ब० स०] 1 जिसके साथ निकट सम्बन्ध हो 2 मित्रयुक्त मित्रता के सूत्र में बंधा हुआ, —धुः रिश्तेदार बन्धु-बान्धव।

सबलिः [सह बलिना ब० स०] सायंकालीन मुहूर्त गोधूलिवेला।

सबाध (वि०) [सह बाधया ब० स०] 1 बाधापूर्ण 2 पीडादायक।

सब्रह्मचर्यम् [समानं ब्रह्मचर्यम् सहस्य सः] सहपाठता (एक ही गुरु के शिष्य होने के कारण)।

सब्रह्मचारिन् (पुं०) [समानं ब्रह्म वेदग्रहणकालीनं व्रतं चरति चर् + णिनि समानस्य सः] 1 सहपाठी (समान अध्ययन या समान साधना करने वाला) 2 सहभागी सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति — सब्रह्मचारिणी तार्तलिका कब गता का०, हं व्यसनसब्रह्मचारिन् यदि न गुह्यं तत् श्रोतुमिच्छामि - मुद्रा० ६।

सभा [सह भान्ति अभीष्टनिश्चयायमेकत्र यत्र गृहे] 1 जलसा, परिषद्, गुणसभा पंडितसभा कामिनी मात् —पंच० १, न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः हि० १ 2 समिति समाज सम्मिलन बड़ी संख्या 3 परिषद्-कक्ष, या सभा भवन 4 न्यायालय 5 सार्वजनिक जलसा 6 जूआ खाना 7 कोई भी स्थान जहाँ लोग प्रायः आते जाते हों। सम० —आस्तारः 1 सभा में सहायक 2 सभासद, —पतिः सभा का अध्यक्ष सभापति 2 जूए का अड्डा चलाने वाला —पूजा दर्शकों के प्रति सम्मान प्रदर्शन —सद् (पुं०) 1 किसी सभा या जलसे में सहायक 2 सभासद् मेम्बर 3 अदालत की पंचायत का सदस्य, जूरी का सदस्य।

सभाज् (चुरा० उभ० सभाजयति—ते) 1 अभिवादन करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना, श्रद्धांजलि अर्पित करना, बधाई देना— स्नेहात्सभाजयितुमेत्य, उत्तर० १।७, शि० १३।१४, श० ५ 2 सम्मान करना, पूजा करना आदर करना 3 प्रसन्न करना, तृप्त करना 4 सुन्दर बनाना, अलंकृत करना, सजाना —उत्तर० ४।१९ 5 प्रदर्शित करना।

सभाजनम् [सभाज् + ल्युट्] 1 (क) प्रणाम करना, अभिवादन करना, सम्मानित करना, पूजा करना —शि० १३।१४ (ख) स्वागत करना, बधाई देना — रघु० १३।४३, १४।१८ 2 शिष्टता, शिष्टाचार विनम्रता 3. सेवा।

सभाजनः [सह भाजनेन ब० स०] शिव का नाम।

सभिक (भी) कः [सभा द्यूतं प्रयोजनमस्य—ठन्] जुए का अड्डा चलाने वाला, जूआ खेलाने वाला,— स्वयम् स्नाक पूर्वसभिको माथुर इत एवागच्छति मृच्छ० २ याज्ञ० २।१३९।

सभ्य (वि०) [सभायां साधु —यत्] 1 सभा से संबंध रखने वाला 2. समाज के योग्य 3 संस्कृत, परिष्कृत विनीत 4. कुलीन विनम्र, शिष्ट— रघु० १।५५, कु० ७।२९ 5 विश्वस्त विश्वसनीय, ईमानदार, —भ्यः 1 गृहस्थ जिसने अग्नि रक्खी हो 2. सभासद् 3 सभाभिमत कुल में उत्पन्न 4 जूआ-खाने का संचालक 5 द्यूतगृह के संचालक का सेवक।

सभ्यता —त्वम् [सभ्य + तल् + टाप्, त्व वा] विनम्रता सुशीलता, कुलीनता।

सम् (भ्वा० पर० समति) 1 विक्षुब्ध या अव्यवस्थित होना 2 विक्षुब्ध या अव्यवस्थित न होना।
ii (चुरा० उभ० समयति —ते) विक्षुब्ध होना।

सम् (अव्य०) [सो + क्विप्] धातु या कृदन्त शब्दों से पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका निम्नांकित अर्थ है (क) के साथ मिल कर साथ साथ- यथा संगम्, समागम, सन्धा, संयुज् आदि में (ख) कभी कभी यह धातु के अर्थ को प्रकट कर देता है, और इसका अर्थ होता है 1 बहुत, बिल्कुल, खूब पूर्णतः, अत्यन्त —यथा संतुष्, संतोष, सन्यस् संन्यास संताप आदि 2 समास में संज्ञा शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका अर्थ है की भांति, समान, एक जैसा यथा 'समर्थ' में 3 कभी कभी इसका अर्थ होता है निकट, पूर्व, जैसा कि 'समक्ष' में।

सम (वि०) [सम् + अच्] 1 वही, समरूप 2. समान जैसा कि 'समलोष्टकाञ्चन' में रघु० ८।२१, भग० २।३८ 3 के समान, जैसा ही, मिलता जुलता, करण० या सम्बं० के साथ अथवा समास में,—गुणमुक्तो हरिर्दोषोऽपि नेश्वरेन्द्रगुणैः समः —सुभा०—कु० ३।१३, २३

4 समान समतल चौरस [illegible] 4 दूर भटी मंविष्यति [illegible] 5 समसख्या 6 निष्पक्ष न्याययुक्त 7 न्यायोचित ईमानदार खरा 8 भला सद्गुण संपन्न 9 सामान्य मामूली 10 मध्यवर्ती बीच का 11 सीधा 12 उपयुक्त सुविधाजनक 13 [illegible] अचल निरपेक्ष 14 सब प्रत्येक 1५ सारा पूरा समस्त पूरा [illegible] समतल मैदान चौरस देश [illegible] —सम् (अव्य०) 1 स के साथ [illegible] सहित (करण० के साथ) [illegible] हरिणाकुलानि [illegible] 2 एक समान [illegible] 3 के समान इस प्रकार इसी रीति से [illegible] 5 पूर्णतः [illegible] साथ साथ—[illegible] विमृश्य [illegible]

सम० [illegible] समान भाग [illegible] —आकार [illegible] 2 [illegible] आधा दही और आधा पानी [illegible] [illegible] अथवा [illegible] कन्या [illegible] विवाह [illegible] [illegible] समान [illegible] [illegible] (अव्य०) उसी समय [illegible] —कालीन [illegible] समवयस्क [illegible] —कोण [illegible] —क्षेत्र [illegible] नक्षत्रों के [illegible] —[illegible] (वि०) [illegible] [illegible] —[illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

—छेद, —छेदन [illegible] —जाति [illegible] —[illegible] (वि०) समान रूप से देखने वाला [illegible] —[illegible] पक्षपातरहित —दुःख (वि०) दूसरों के दुःख को अपना जैसा दुःख समझने वाला (दूसरों से) सहानुभूति रखने वाला [illegible] —दुःखसुख (वि०) सुख और दुःख का साथी [illegible] —दृष्टि (वि०) पक्षपातरहित —बुद्धि (वि०) 1 निष्पक्ष 2 [illegible] —भाव (वि०) एक-सी प्रकृति या गुण रखने वाला, (—वः) समानता तुल्यता —[illegible] (अव्य०

[illegible] —रेखा [illegible] (वि०) एक समान [illegible] वाले —[illegible] (वि०) [illegible] —[illegible] (वि०) सीधा [illegible] —[illegible] [illegible] —[illegible] [illegible] —वर्तिन् (वि०) [illegible] —[illegible] [illegible] —शोधन [illegible] समान [illegible] [illegible] [illegible] निर्दिष्ट [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

समक्ष (वि०) [illegible] वर्तमान [illegible] अव्य० 1 [illegible] में [illegible] आँखों के सामने [illegible]

समग्र (वि०) सब समस्त [illegible] पूर्ण [illegible] पूरा [illegible]

समङ्गा [illegible] मंजिष्ठ, मजीठ।

समज [illegible] 1 [illegible] पशुओं का झुण्ड पक्षियों [illegible] 2 मूर्खों की सभा [illegible]

समज्या [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

समञ्जस [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] —[illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

सम [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

समतिक्रम [illegible] उल्लंघन [illegible]

समतीत (वि०) [illegible] बीता हुआ [illegible] गया हुआ [illegible]

समद [illegible] 1 [illegible]

भीषण 2. मद के कारण मस्त 3 प्रणयोन्मत्त,—उत्तर० २।२०।

समधिक (वि०) [सम्यक् अधिक—प्रा० स०] 1 अतिशय 2 अत्यंत अधिक पुष्कल, बहुत अधिक उत्तर० ४ —**कम्** (अव्य०) अत्यंत अधिकता के साथ।

समधिगमनम् [सम् + अधि + गम् + ल्युट्] आगे बढ़ जाना पार कर लेना, जीत लेना।

समध्व (वि०) [समानः अध्वा यस्य ब० स०] साथ यात्रा करने वाला।

समनुज्ञानम् [सम् + अनु + ज्ञा + ल्युट्] 1 हामी भरना स्वीकृति देना 2 पूर्ण अनुमति पूरा सहमति।

समन्त (वि०) [सम्यक् अन्तो यत्र ब० स०] 1 हर दिशा में मौजूद विश्वव्यापी 2 पूर्ण समस्त —तः सीमा हद मर्यादा (**समन्तम्**, **समन्ततः**, **समन्तात्** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं सब ओर से, चहुँ ओर, सब ओर, पूर्णरूप से, पूरी तरह से। सम० —**दुग्धा** थूहर —**पञ्चकम्** कुरुक्षेत्र या उसके निकट का प्रदेश—वेणी० ६, —**भद्रः** बुद्ध भगवान —**भुज्** (पुं०) आग।

समन्यु (वि०) [सह मन्युना ब० स०] 1 शोकाकुल 2 रोषपूर्ण, रुष्ट।

समन्वयः [सम् + अनु + इ + अच्] 1 नियमित परंपरा या क्रम 2 संबद्ध अनुक्रम पारस्परिक संबंध तात्पर्य, तत्तु समन्वयात् ब्रह्म० १।१।४ न च तद्गतानां पदानां ब्रह्मस्वरूपविषये निश्चिते समन्वये ऽवगतेऽन्तरकल्पना युक्ता—शारी० 3 संगम।

समन्वित (भू० क० कृ०) [सम् + अनु + इ + क्त] 1 संबद्ध, प्राकृतिक क्रम में आबद्ध 2 अनुगत 3 सहित, युक्त, भरा हुआ ग्रस्त।

समभिप्लुत (भू० क० कृ०) [सम् + अभि + प्लु + क्त] 1 बाढ़ग्रस्त 2 ग्रहण ग्रस्त।

समभिव्याहारः [सम् + अभि + वि + आ + हृ + घञ्] 1. मिलाकर उल्लेख करना 2 साहचर्य साथ 3 शब्द का साहचर्य या सामीप्य, जब कि उस (शब्द) का अर्थ स्पष्ट रूप से निश्चित कर लिया गया हो।

समभिसरणम् [सम् + अभि + सृ + ल्युट्] 1 पहुँचना 2. तलाश करना, कामना करना।

समभिहारः [सम् + अभि + हृ + घञ्] 1 साथ-साथ ले जाना 2 आवृत्ति 3 अतिरिक्त, फालतू।

समभ्यर्चनम् [सम् + अभि + अर्च् + ल्युट्] पूजा करना, अर्चना करना।

समभ्याहारः [सम् + अभि + आ + हृ + घञ्] साथ रहना, साहचर्य।

समयः [सम् + इ + अच्] 1 काल 2 अवसर, मौका 3 योग्य काल, उपयुक्त काल, ऋतु, ठीक वक्त कु० ३।२५ 4 करार, समझौता, संविदा, पहले से किया गया ठहराव मिथः समयात्—श० ५ 5 रूढ़ि, प्रथा 6 चालचलन का संस्थापित नियम, संस्कार, लोकप्रचलन कि० १।२८ उत्तर० १ 7 कवियों का अभिसमय (उदा० बादलों के दर्शन से प्रेमी और प्रेमिका का वियोग हो जाता है) 8 निश्चित निर्धारण 9 अनुबंध शर्त—विक्रम० ५ 10 कानून नियम विनियम याज्ञ० २।१९, 11 निदेश आदेश निर्देश विधि 12 आपत्काल संकटकाल 13 शपथ 14 संकेत इंगित, इशारा 15 भाषा [illegible] 16 पर्यवसान उपसंहार सिद्धांत, प्रसाद बौद्ध वैदिक 17 अंत, उपसंहार समाप्ति 18 सफलता समृद्धि 19 कष्ट का अंत। सम० —**अध्युषितम्** समय जब कि न सूर्य दिखाई देता है न तारे —**अनुवर्तिन्** (वि०) मानी हुई प्रथा का पालन करने वाला, —**अनुसारेण**, —**उचितम्** (अव्य०) अवसर के अनुकूल जैसा मौका हो —**आचारः** लोकप्रचलित आचरण मानी हुई प्रथा —**क्रिया** करार करना —**परिरक्षणम्** किसी समझौते का पालन करना, [illegible] करार [illegible] समयपरिरक्षण क्षम ते—कि० १, —**व्यभिचारः** प्रतिज्ञा तोड़ना ठेके का उल्लंघन [illegible] —**व्यभिचारिन्** (वि०) प्रतिज्ञा या वचन भंग करने वाला।

समया (अव्य०) [सम् + इ + आ] 1 ठीक, ऋतु के अनुकूल ठीक समय पर 2 निश्चित समय पर 3 बीच में के अंदर, (द्वि० के) बीच में 4 निकट (कर्म० के साथ) समया सौधभित्तिम् दश० शि० ६।७३, १५।१९ नल० ३।८।

समरः, —**रम्** [सम् + ऋ + अप्] संग्राम, युद्ध, लड़ाई, रणोद्यतास्ति समरे [illegible] वेणी० ३। सम० —**उद्देशः**, —**भूमिः** रणक्षेत्र, —**मूर्धन्** (पुं०) —**शिरस्** (नपुं०) युद्ध का अग्रभाग।

समर्चनम् [सम् + अर्च् + ल्युट्] पूजा, अर्चना, आराधना।

समर्ण (वि०) [सम् + अर्द् + क्त] 1 कष्टग्रस्त, पीड़ित, घायल 2 पुष्ट निवेदित।

समर्थ (वि०) [सम् + अर्थ + अच्] 1 मजबूत, शक्तिशाली 2. सक्षम, अभ्यनुज्ञात, पात्र, योग्यताप्राप्त प्रतिग्रहसमर्थोऽपि—मनु० ४।१८६, याज्ञ० १।२१३ 3 योग्य, उपयुक्त, उचित—तद्गुणैरुपयुक्तैव राघव प्रत्ययवान समर्थयुक्तम् रघु० ११।७९ 4 योग्य या समर्थित बनाया हुआ तैयार किया हुआ 5 समानार्थी 6 सार्थक 7 समुचित उद्देश्य या बल रखने वाला, अभिप्रायसाधी 8 पास-पास विद्यमान 9 अर्थतः संबद्ध, —**र्थः** 1, (व्या० में) सार्थक शब्द 2 सार्थक वाक्य में मिला कर रक्खे हुए शब्दों की संगति।

समर्धकम् [सम् + अर्ध + ण्वुल्] अगर की लकड़ी ।

समर्धनम् [सम् + अर्ध + ल्युट्] 1 समर्थन, पुष्टि करना, ताईद करना 2 रक्षा करना, सहारा देना, न्यायसंगत सिद्ध करना—विशेषेण्वैतत समर्थनम् —काव्य० ७ 3 बकालत करना, हिमायत करना 4 अनुमान लगाना, विचार करना, चिन्तन करना 5 विचार विमर्श, निर्धारण, किसी वस्तु के औचित्यानौचित्य का निर्णय करना 6 पर्याप्तता, अवकता, उत्पादिता 7 ऊर्जा धैर्य 8 मेदभाव दूर कर फिर समझौता करना, कलह दूर करना 9 आक्षेप ।

समर्धक (वि०) [सम् + ऋध् + ण्वुल्] 1 वरदाता 2. समृद्ध करने वाला ।

समर्पणम् [सम् + अर्प् + ल्युट्] देना, हस्तान्तरण करना, सौंपना, हवाले करना ।

समर्याद (वि०) [मर्यादया सह ब० स०] 1 सीमित, बंधा हुआ 2 निकटवर्ती, समीपवर्ती 3 शुद्धाचारी, औचित्य की सीमा के अन्दर रहने वाला 4 सम्मानपूर्ण, शिष्ट ।

समल (वि०) [मलेन सह ब० स०] 1 मैला, गन्दा, मलिन, अपवित्र 2 पापपूर्ण, —**लम्** पुरीष, मल, विष्ठा ।

समवकार: [सम् + अव + कृ + घञ्] नाटक का एक भेद (सा० द० ५१५ में निम्नांकित परिभाषा दी गई है वृत्तं समवकारे तु ख्यातं देवासुराश्रयम् । संधयो निर्विमर्शास्तु त्रयोऽङ्काः ॥)

समवतार: [सम् + अव + तॄ + घञ्] 1. उतार 2. घाट-जहाँ से किसी नदी या पुण्यस्नानतीर्थ में उतरा जाय —समवतारसमैरसमैस्तटै —कि० ५।७ ।

समवस्था [समा तुल्या अवस्था वा सम् + अव + स्था + अङ् + टाप्] 1 निश्चित अवस्था 2. समान दशा या स्थिति या० ४ 3 अवस्था या दशा —रघु० १९।५०, मालवि० ४।७ ।

समवस्थित (भू० क० कृ०) [सम् + अव + स्था + क्त] 1. स्थिर रहता हुआ 2 स्थिर ।

समवाप्ति: (स्त्री०) [सम् + अव + आप् + क्तिन्] प्राप्ति, अभिग्रहण ।

समवाय: [सम् + अव + इ + अच्] 1. सम्मिश्रण, मिलाप, संयोग, समष्टि, संग्रह—सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवाय —का०, बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः —सुभा० 2. संख्या, समुच्चय, राशि 3 घनिष्ठ संबंध, संसक्ति 4 (वैशे० में) प्रगाढ़ मिलाप, अविच्छिन्न तथा अविभक्त संयोग, अभेद्य सलग्नता या एक वस्तु का दूसरी में अस्तित्व (जैसे पदार्थ और गुण, अंगी और अंग), वैशेषिकों के सात पदार्थों में से एक ।

समवायिन् (वि०) [समवाय + इनि] 1. घनिष्ठ रूप से संबद्ध 2 समुच्चयवाचक, बहुसंख्यक । सम० —**कारणम्** अभेद्य कारण, उपादान कारण (वैशेषिक दर्शन में वर्णित तीन कारणों में से एक) ।

समवेत (भू० क० कृ०) [सम् + अव + इ + क्त] 1 एकत्र आये हुए, मिले हुए, जुड़े हुए, सम्मिलित 2 घनिष्ठता के साथ संबद्ध, अन्तर्भूत, अभेद्य रूप से संयुक्त 3 बड़ी संख्या में समाविष्ट या सम्मिलित ।

समष्टि (स्त्री०) [सम् + अश् + क्तिन्] समुच्चयात्मक व्याप्ति, जैसे वनों का समूह, अवयवों की समस्तता से युक्त अवयवी का पुंज है (विप० व्यष्टि) समष्टिरीश सर्वेषां स्वात्मतादात्म्यवेदनात् । तदभावात्तदन्ये तु ज्ञायन्ते व्यष्टिसंज्ञया ॥ पञ्च० ।

समसनम् [सम् + अस् + ल्युट्] 1 एक साथ मिलाना, सम्मिश्रण 2 संयुक्त करना समस्त (समास युक्त) शब्दों का निर्माण 3 संकुचित करना ।

समस्त (भू० क० कृ०) [सम् + अस् + क्त] 1. एक जगह डाला हुआ, सम्मिश्रित 2. संयुक्त 3 किसी पदार्थ में पूर्णत व्याप्त 4 संक्षिप्त, संकुचित, संक्षेपित 5. सारा, पूर्ण पूरा ।

समस्या [सम् + अस् + क्यप् + टाप्] 1. पूर्ण करने के लिए दिया जाने वाला छन्द का चरण, कविता का वह भाग जो पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया जाय—कः श्रीपतिः का विषमा समस्या —सुभा० । इस प्रकार 'शम्भवीर्यवियन्ती' 'शतकोटिप्रविस्तरम्' 'सुरामाह पुरोधाय' पंक्तियाँ 'एवं सर्वं सुराः शिवो' से पूर्ण हो जाती हैं) 2. (अतः) अधूरे को पूरा करना—गौरीव पत्या सुभगा कदाचित्कर्त्रीयमप्यर्धतनू समस्याम् —नै० ७।८२, (समस् ।ऽ - संघटनम्) ।

समा [सम् + अन् + टाप्] (प्रायः ब० व० में प्रयोग, परन्तु पाणिनि द्वारा एक वचन में भी प्रयुक्त—उदा० समां समाम्—पा० ५।२।१२) वर्ष,—तेनाष्टौ परिगमिताः समाः कथंचित् रघु० ८।९२, तपोश्चतुर्दशैकेन रामं प्राव्राजयत्तमाः १२।६, १९।४, महावीर० ४।४१, अव्य०—से, साथ मिला कर ।

समांसमीना [समां समां विजायते प्रसूते —ख प्रत्ययेन नि०] वह गाय जो प्रतिवर्ष ब्याती है और बछड़ा देती है ।

समाकर्षिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [सम् + आ + कृष् + णिनि] 1. आकर्षक 2 दूर तक गंध फैलाने वाला, या प्रसार करने वाला, पुं० प्रसृत गंध, दूर तक फैली गंध ।

समाकुल (वि०) [सम्यक् आकुलः प्रा० स०] 1. भरा हुआ आकीर्ण, भीड़-भाड़ से युक्त 2. संक्षुब्ध, घबराया हुआ उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ ।

समाख्या [सम् + आ + ख्या + अङ् + टाप्] 1 यश, कीर्ति, ख्याति 2 नाम, अभिधान ।

समाख्यात (भू० क० कृ०) [सम् + आ + ख्या + क्त] 1 हिसाब लगाया हुआ गिना हुआ, आंका हुआ 2. पूर्णत वर्णित, उद्घोषित, प्रकथित 3 विख्यात प्रसिद्ध ।

समागत (भू० क० कृ०) [सम + आ + गम + क्त] 1 साथ साथ आया हुआ, मिला हुआ सम्मिलित संयुक्त 2 पहुँचा हुआ 3 जो संयुक्त अवस्था में हो ।

समागतिः [सम् + आ + गम् + क्तिन्] 1 साथ साथ आना मेल मिलाप 2. पहुँचना, उपागमन 3 समान दशा या प्रगति ।

समागमः [सम + आ + गम + अच्] 1 [illegible] मुठभेड़, सम्मिश्रण —अहो दैवगतिश्चित्रा [illegible] समागम —काव्य० ७ [illegible] 2 सहवास साहचर्य, संगति जैसा कि सत्समागम में 3 उपगमन, पहुँच 4 (ज्योति० में) संयोग ।

समाघात. [सम + आ + हन + घञ्] 1 वध [illegible] 2. संग्राम युद्ध ।

समाचयनम् [सम् + आ + चि + ल्युट्] सञ्चयन बीनना ।

समाचरणम् [सम् + आ + चर् + ल्युट्] अभ्यास करना पालन करना, व्यवहार करना ।

समाचार [सम् + आ + चर घञ्] 1 प्रगमन गति 2 अभ्यास, आचरण व्यवहार 3 सदाचार या अच्छा चालचलन 4 खबर सूचना, विवरण वार्ता ।

समाजः [सम + अज् + घञ्] 1 सभा [illegible] सम्मिलन —विशेषत सर्वविदा समाजे [illegible] मौनमपण्डितानाम् —भर्तृ० २।७ 2. मण्डल गोष्ठी समिति या परिषद् 3 संख्या, समुच्चय, समूह 4 दल आमोद प्रमोद विषयक मिलन 5 हाथी ।

समाजिकः [समाज + ठक] समाज दे० सामाजिक ।

समाज्ञा [सम् + आ + ज्ञा + अङ् + टाप्] यश कीर्ति ।

समादानम् [सम् + आ + दा + ल्युट्] 1 पूर्णत लेना 2 उपयुक्त उपहार लेना 3 जैन सम्प्रदाय का नित्य-कृत्य ।

समादेश [सम् + आ + दिश् + घञ्] आज्ञा हुक्म निदेश निर्देश ।

समाधा [सम + आ + धा + अङ् + टाप्] दे० नी० समाधान ।

समाधानम् [सम् + आ + धा + ल्युट्] 1 साथ साथ रखना मिलाना 2 ब्रह्म के गुणों का मन से चिन्तन करना 3 भावचिन्तन, गहन मनन 4 [illegible] स्वस्थता, (मन की) शान्ति सन्तोष [illegible] मानस, बुद्धे समाधानम् [illegible] 6 सन्देह निवारण करना, पूर्वपक्ष का उत्तर देना आक्षेप का उत्तर देना 7 सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 8 (नाट० में) मुख्य घटना जिस पर नाटक की पूर्ण वस्तुकथा अवलम्बित है ।

समाधि सम् आ + धा + कि] 1 संग्रह करना, स्वस्थ करना (मन को) एकाग्र करना 2 भावचिन्तन किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करना ब्रह्म चिन्तन में पूर्णलीनता अर्थात् (योग की आठवीं और अन्तिम अवस्था) [illegible] समाधिभेदप्रभवो भवन्ति [illegible] कु० ३।५० [illegible] [illegible] 3 एक [illegible] समाधि (मानसम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 17 [illegible]

समाध्मात [illegible] फूंका हुआ [illegible]

समान [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] (करण के साथ) [illegible] (अधिकरण [illegible]) 1 समान आकार वाला 2 [illegible] 3 [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] समान [illegible] वर्ग (जिसमें अनेक [illegible]) [illegible] अर्थ उसी अर्थ वाला [illegible] उत्तम [illegible] को समान [illegible] के कारण समझ है (यह सम्बन्ध सातवीं या [illegible] चौदहवीं

पीढ़ी तक आता है) समानोदकभावस्तु निवर्तेता चतुर्दशात् दे० मनु० ५।६० भी **उदर्य:** एक पेट से उत्पन्न, सहोदर भाई **उपमा** एक प्रकार की उपमा दे० काव्या० २।२१ **काल, कालीन** (वि०) एककालिक समकालीन **गोत्र** = समान गोत्र का [illegible] **कुल** (वि०) समानमूर्ति [illegible] **वर्णन्** (वि० एक ही प्रकार के गुणों से युक्त महान् मूर्तिधारक गुणों को [illegible] वाला [illegible] **सम** स्वर का वही उच्चारण **वृत्ति** (वि०) एक ही वृत्ति वाला।

समानयनम् [सम् + आ + नी + ल्युट्] साथ लाना, सग्रह करना, समालन

समाप [सम् + आप् + घञ्] [illegible] देवताओं के प्रति [illegible] करना या आहुति देना।

समापत्ति (स्त्री०) [सम् + आ + पद् + क्तिन्] 1 मिलना, मुठभेड़ 2 घटना, आकस्मिक घटना, अकस्मात् मुठभेड़ समापत्तिदृष्टेन कांतिमरुपवर्णनं [illegible] क्रियासमापत्तिनिवर्तितानि [illegible] ३।५१।

समापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [सम् + आप् + ण्वुल्] समाप्त करने वाला, समाप्त करने वाला, पूरा करने वाला।

समापनम् [सम् + आप् + ल्युट्] 1 पूर्ति, उपसंहार, समाप्ति करना [illegible] 2 अधिग्रहण 3 मार डालना, नष्ट करना 4 अनुभाग, अध्याय 5 गहन मनन

समापन्न (भू० क० कृ०) [सम् + आ + पद् + क्त] 1 प्राप्त, अवाप्त 2 घटित हुआ [illegible] पहुँचा 4 समाप्त, पूर्ण [illegible] 5 कष्टग्रस्त 6 वध किया हुआ

समापादनम् [सम् + आ + पद् + णिच् + ल्युट्] संपन्न करना, पूरा करना

समाप्त (भू० क० कृ०) [सम् + आप् + क्त] 1 पूरा किया हुआ, संपन्न, पूरा किया हुआ 2 चतुर [illegible]

समाप्तलम्भ [illegible]

+ भप्, प्रभु [illegible]।

समाप्ति (स्त्री०) [सम् + आप् + क्तिन्] 1 [illegible] पूर्ति समाप्त करना 2 [illegible] पूरा करना, पूर्णता 3 [illegible] [illegible] का समाप्त करना।

समाप्तिक (वि०) [समाप्ति + ठन्] 1 अन्तिम, समापक 2 समाप्तिका 3 जिसने कोई काम पूरा किया है [illegible] 1 समापक 2 जिसने वेदाध्ययन का पूर्ण पाठ्यक्रम समाप्त कर लिया है।

समाप्लुत (भू० क० कृ०) [सम् + आ + प्लु + क्त] 1 बाढ़ग्रस्त, बाढ़ में डूबा हुआ 2 भरा हुआ।

समाभाषणम् [सम् + आ + भाष् + ल्युट्] समालाप, बातचीत [illegible] ६।१९६

समाम्नानम् [सम् + आ + म्ना + ल्युट्] 1 आवृत्ति, उल्लेख 2 गणना 3 परम्परा प्राप्त पाठ।

समाम्नाय [सम् + आ + म्ना + य] 1 परम्परागत पाठ, अनुसूचि 2 परम्परागत (शब्द) संग्रह [illegible] उत्त० ६ 3 साहित्य परम्परा, अनुश्रुत पाठ, सम्पूर्ण पाठ [illegible] 5 जोड़, [illegible] समूह [illegible] शिखा० ५७ अर्थात् [illegible] की वर्णमाला जो शिव की कृपा से [illegible] प्राप्त हुई

समाय [सम् + आ + इ + अच्] 1 पहुँचना, आना 2 दर्शन करना

समायत (भू० क० कृ०) [सम् + आ + यम् + क्त] खींचा हुआ, बढ़ाया हुआ, लम्बा किया हुआ

समायुक्त (भू० क० कृ०) [सम् + आ + युज् + क्त] 1 साथ जोड़ा हुआ, सम्बद्ध, संयुक्त 2 [illegible] 3 तैयार किया गया, उद्यत 4 युक्त, सज्जित [illegible] सहित, अन्वित 5 जिसको कोई कार्यभार सौंपा गया है, नियुक्त किया हुआ।

समायुत (भू० क० कृ०) [सम् + आ + यु + क्त] 1 संयुक्त, सम्बद्ध, साथ मिलाया हुआ 2 [illegible] एकत्र किया हुआ 3 सहित, युक्त, सज्जित, अन्वित

समायोग [सम् + आ + युज् + घञ्] 1 मेल, सम्बन्ध, संयोग 2 तैयारी 3 धनुष पर (बाण) साधना 4 समूह, ढेर, समुच्चय 5 कारण, प्रयोजन, उद्देश्य

समारम्भ [सम् + आ + रभ् + घञ्, मुम्] 1 आरम्भ, शुरू 2 साहसिक कार्य, उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य, काम [illegible] [illegible] [illegible] ४।१९ 3 आलेप।

समाराधनम् [सम् + आ + राध् + ल्युट्] 1 सन्तुष्ट करने का साधन, प्रसन्न करना, खुश करना [illegible] [illegible] 2 सेवा [illegible] ९।१०

समारोपणम् [सम् + आ + रुह् + णिच् + ल्युट्, पुक्] 1 अर्पित करना, रखना 2 सौंप देना, हवाले करना

समारोपित (भू० क० कृ०) [सम् + आ + रुह् + णिच् + क्त, पुक्] 1 [illegible] चढ़ाया हुआ, सवार किया हुआ 2 [illegible] हुआ, अथवा बाद समाप्त [illegible] रक्खा गया, पौध लगाई गई, ठहराया गया 4 सौंपा गया, हवाले किया गया।

समारोह [सम् + आ + रुह् + घञ्] 1 चढ़ना, ऊपर आना 2 सवारी करना 3 सहमत होना।

समालम्बनम् [सम्+आ+लम्ब्+ल्युट्] टेक लगाना, सहारा लेना, चिपटे रहना।

समालम्बिन् (अव्य०) [सम्+आ+लम्ब्+णिनि] लटकने वाला, सहारा लेने वाला—नी एक प्रकार का घास।

समालम्भः, समालम्भनम् [सम्+आ+लभ्+घञ्, ल्युट् वा, मुम्] 1 पकड़ना छीनना 2 यज्ञ में बलि पशु का अपहरण करना 3 शरीर पर अंगराग व उबटन आदि का लेप करना—मङ्गलसमालम्भनं विरचयाव —श० ४।

समावर्तनम् [सम्+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापसी 2 विशेष कर वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर वापिस आना।

समावायः [सम्+आ+अव+इ+अच्] 1 साहचर्य, संबंध 2 अविच्छेद्य संबंध दे० समवाय 3 समष्टि 4 समुच्चय संख्या ढेर।

समावासः [सम्+आ+वस्+घञ्] निवास स्थान, घर रहने का स्थान।

समाविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+आ+विश्+क्त] 1 पूर्णतः प्रविष्ट, पूर्णतः अधिकृत, व्याप्त 2 छीना हुआ, पराभूत, एकाधिकृत 3 प्रेताविष्ट 4 सहित 5 निश्चित, स्थिर किया हुआ, बिठाया हुआ 6 सुशिक्षित।

समावृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+वृ+क्त] 1 परिवेष्टित, घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, लपेटा हुआ 2 पर्दा पड़ा हुआ, घूंघट से आच्छादित 3 गुप्त, छिपाया हुआ 4. प्ररक्षित 5. बंद किया हुआ 6 रोका हुआ।

समावृत्तः, समावृत्तकः [सम्+आ+वृत्+क्त, स्वार्थे कन् च] वह ब्रह्मचारी जो अपना वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौट आया है।

समावेशः [सम्+आ+विश्+घञ्] 1 प्रविष्ट होना, साथ रहना 2 मिलना, साहचर्य 3 सम्मिलित करना, समझ 4 घुसना 5 प्रेतावेश 6 प्रणयोन्माद, भावोद्रेक।

समाश्रयः [सम्+आ+श्रि+अच्] 1 प्रश्रय या पनाह ढूंढ़ना 2. शरण, पनाह, प्रश्रय 3 शरणगृह, आश्रमस्थान, घर 4 आवासस्थान, निवास।

समाश्लेषः [सम्+आ+श्लिष्+घञ्] प्रगाढ़ आलिंगन।

समाश्वासः [सम्+आ+श्वस्+घञ्] 1 जी में जी आना, आराम की सांस लेना 2 राहत, प्रोत्साहन, तसल्ली 3. आस्था, विश्वास, भरोसा।

समाश्वासनम् [सम्+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] 1 पुनर्जीवित करना, प्रोत्साहन, आराम देना 2 ढाढस बंधाना —विक्रम० २।

समासः [सम्+अस्+घञ्] 1 समष्टि, मिलाप, सम्मिश्रण 2 शब्दरचना, समाहार, मिलाना (समास के मुख्य चार भेद हैं: द्वन्द्व, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव) 3 पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना 4 संग्रह, संघात 5 पूर्णता, समष्टि 6 सिकुड़न, संहृति, संक्षिप्तता, (समासेन, समासतः थोड़े में, संक्षेप में, लघुता के साथ—एष धर्मस्य वो योनिः समासेन प्रकीर्तितः मनु० २।२५, १।१०, भग० १३।१८ समासतः श्रूयताम् विक्रम० २)। सम०—उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित दी है—परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः काव्य० १०।

समासक्तिः (स्त्री०) **समासङ्गः** [सम्+आ+सञ्ज्+क्तिन्, घञ् वा] मिलाप, साथ-साथ रहना, अनुरक्ति, आसक्ति।

समासञ्जनम् [सम्+आ+सञ्ज्+ल्युट्] 1 मिलाना संयुक्त करना 2 जमाना रखना 3 संपर्क, सम्मिश्रण संबंध।

समासर्जनम् [सम्+आ+सृज्+ल्युट्] 1 पूर्णतः त्याग देना 2 सुपुर्द करना।

समासादनम् [सम्+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1 पहुँचना 2 प्राप्त करना, मिलना, अवाप्त करना 3 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना।

समाहरणम् [सम्+आ+हृ+ल्युट्] संयुक्त करना, संग्रह करना सम्मिश्रण, संचय करना।

समाहर्तृ (पुं०) [सम्+आ+हृ+तृच्] 1 जो संग्रह करने में अभ्यस्त हो 2 (कर आदि का) संग्राहक, जमा करने वाला।

समाहारः [सम्+आ+हृ+घञ्] 1 संग्रह, समष्टि, संघात —आ० ९ 2 शब्दरचना 3 शब्दों या वाक्यों का संयोजन 4 द्विगु और द्वन्द्व समास का समष्टिविधायक एक उपभेद 5 संक्षेपण, संकोचन, संहृति।

समाहित (भू० क० कृ० [सम्+आ+धा+क्त] 1 मिलाया गया, साथ जोड़ा गया 2 समर्पित, तय किया गया 3 इकट्ठा किया गया, संगृहीत, (मन आदि) प्रशांत 4 एकनिष्ठ, लीन, अवेक्षित 5 समाप्त 6 सहमत।

समाहृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+हृ+क्त] 1 मिलाया गया, संगृहीत, संचित 2 पुष्कल, अत्यधिक, बहुत 3 ग्रहण किया गया, स्वीकृत, लिया गया संक्षेप किया गया, कम किया गया।

समाहृतिः (स्त्री०) [सम्+आ+हृ+क्तिन्] संकलन, संक्षेपण।

समाह्वः [सम्+आ+ह्वे+क] चुनौती, ललकार।

समाह्वयः [सम्+आ+ह्वे+अच्] 1 पुकारना, ललकारना 2 संग्राम युद्ध 3 मल्लयुद्ध, दो व्यक्तियों में होने

वाला युद्ध 4 मनोरंजन के लिए जानवरों को लड़ाना जानवरों की लड़ाई पर शर्त लगाना -याज्ञ० २।१८। मनु० ९।२२१ 5 नाम, अभिधान।

समाह्वा [समा आह्वा यस्याः ब० स०] नाम अभिधान शि० ११।२६।

समाह्वानम् [सम् + आ + ह्वे + ल्युट्] 1 मिलकर बुलाना, संबोधन 2 ललकार चुनौती।

समिकम् [समि (सम् + इ + इ) + कन्] भाला, बल्लम।

समित् (स्त्री०) [सम् इ क्विप्] संग्राम युद्ध सांपरायिके ... रघु० ७।३४।

समिता [सम् + इ + क्त + टाप्] गेहूँ का आटा

समितिः [सम् + इ + क्तिन्] 1 मिलना, मिलाप, साहचर्य 2 सभा, रेवड़, लहड़ा शि० ३।३२ 4 संग्राम युद्ध— भ० २।१०, कि० ३।१५, शि० १६।९३ 5 सादृश्य, समता 6 पर्यादन।

समितिञ्जय (वि०) [समिति + जि + खच् मुम्] युद्ध में विजयी।

समिथः [सम् + इ + थक्] 1 संग्राम, युद्ध 2 आग।

समिद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + इन्ध् + क्त] 1. सुलगाया हुआ, जलाया हुआ 2 आग लगाई हुई 3 प्रज्वलित उत्तेजित।

समिध् (स्त्री०) [सम् + इन्ध् + क्विप्] लकड़ी, ईंधन विशेष कर यज्ञाग्नि के लिए समिधाएँ, समिदाहरणाय -श० १, कु० १।५७ ५।३३।

समिधः [सम् + इन्ध् + क] आग।

समिन्धनम् [सम् + इन्ध् + ल्युट्] 1 आग सुलगाना 2 ईंधन।

समिरः [समीर, पृषो०] वायु, हवा।

समीकम् [सम् + ईकक्] संग्राम, युद्ध, —शि० १५।८३।

समीकरणम् [असम् सम् क्रियतेऽनेन सम + च्वि + कृ + ल्युट्] 1 पूरी जानकारी 2. दर्शनशास्त्र की सांख्य पद्धति शि० २।५९।

समीक्षा [सम् + ईक्ष् + अङ् + टाप्] 1 अनुसंधान खोज 2 विचार 3 भलीभांति निरीक्षण, समालोचना 4. समझ, बुद्धि 5 नैसर्गिक सत्य 6 अनिवार्य सिद्धान्त 7 दर्शनशास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीचः [सम् + इ + चट्, कित्, दीर्घ] समुद्र।

समीचकः [समीच + कन्] रतिक्रिया, मैथुन।

समीची [समीच + ङीप्] 1 हरिणी 2 प्रशंसा।

समीचीन [सम् + अञ्च् + क्विन् + ख] 1 ठीक, सही 2 सत्य शुद्ध 3 योग्य, समुचित 4 मुनासिब, —नम् 1 सचाई 2. औचित्य।

समीदः (पुं०) गेहूँ का बारीक मैदा।

समीन (वि०) [समाम् अभीष्टो भूतो भूतो भावी वा—समा + ख] 1 वार्षिक सालाना 2 एक वर्ष के लिए भाड़े पर लिया हुआ 3 एक वर्ष का।

समीनिका [समा प्रायः प्रसूते समा + ख कन् + टाप् इत्वम्] प्रति वर्ष ब्याने वाली गाय।

समीप (वि०) [सङ्गता आपो यत्र-अच् आत ईत्वम्] निकट पास का सटा हुआ नज़दीक —पम् सामीप्य पड़ौस (समीपम्, समीपतः, समीपे (क्रि० वि०) निकट सामने ...

समीरः [सम् + ईर् + अच्] ... धीर-समीरे यमुनातीरे ... 2 ... जैसों का पेड़।

समीरणः [सम् + ईर् + ल्युट्] 1 हवा वायु, समीरणो ... —कु० ३।२१ ... 2 ... 4 एक पौधे का नाम मरुवक ...।

समीहा [सम् + ईह् + अ + टाप्] प्रबल इच्छा, चाह प्रबल उद्योग।

समीहित (भू० क० कृ०) [सम् ईह् क्त] 1 अभिलषित, इच्छित, अभीष्ट 2 आरब्ध —तम् कामना अभिलाषा, इच्छा।

समुक्षणम् [सम् + उक्ष् + ल्युट्] डालना बहाव प्रसार।

समुच्चयः [सम् + उत् + चि + अच्] 1 संग्रह संघात, समष्टि, राशि पुंज 2 शब्दों या वाक्यों का संयोजन ... 3 एक अलंकार का नाम काव्य० १० (११५ से ११६ कारिकाओं तक)।

समुच्चरः [सम् उत् + चर् + अच्] 1 चढ़ना 2 चलना यात्रा करना

समुच्छेदः [सम् उत् + छिद् + घञ्] पूर्ण विनाश, समूलोन्मूलन, उखाड़ देना।

समुच्छ्रयः [सम् + उत् + श्रि + अच्] 1 उत्तुंगता, ऊँचाई 2 विरोध शत्रुता।

समुच्छ्रायः [सम् + उत् + श्रि + घञ्] उत्तुंगता, ऊँचाई।

समुच्छ्वसितम्, समुच्छ्वासः [सम् + उत् + श्वस् + क्त, घञ् वा] गहरी सांस लेना, दीर्घ सांस लेना।

समुज्झित (वि०) [सम् + उज्झ् + क्त] 1 त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ 2 जाने दिया गया 3 मुक्त।

समुत्कर्षः [सम् + उत् + कृष् + घञ्] 1 उन्नति 2. अपने आपको ऊपर उठाना अपनी जाति की अपेक्षा किसी अन्य ऊँची जाति से सम्बन्ध रखना —मनु० ११।५६।

समुत्क्रमः [सम् + उत् + क्रम् + घञ्] 1 ऊपर उठना, चढ़ाई 2 औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना।

समुत्क्रोशः [सम् + उत् + क्रुश् + घञ्] 1 जोर से चिल्लाना 2 भारी कोलाहल 3 कुररी।

समुत्थ (वि०) [सम् + उत् + स्था + क] 1 उठता हुआ,

जागना हुआ 2 उगा हुआ उत्पन्न अन्मा (समास के अन्त में)—अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः रघु० २।७५ भग० ७।२७ 3 घटित होने वाला उत्पन्न।

समुत्थानम् [सम् + उद् + स्था + ल्युट्] 1 उठना जागना 2 पुनरुज्जीवन 3 पूरी चिकित्सा पूरा आराम 4 (घाव आदि का) भरना स्वस्थ होना मनु० ८।२८७ याज्ञ० २।२२२ 5 रोग का चिह्न 6 उद्योग में लगना परिश्रमयुक्त धन्धा जैसा कि संभूय समुत्थानम् मनु० ८।४।

समुत्पतनम् [सम् + उद् + पत् + ल्युट्] 1 उड़ना ऊपर चढ़ना 2 प्रयत्न चेष्टा।

समुत्पत्तिः (स्त्री०) [सम् + उद् + पद् + क्तिन्] 1 पैदा बार जन्म मूल 2 घटना।

समुत्पिञ्ज, समुत्पिञ्जल (वि०) [सम् + उद् + पिञ्ज ...] अत्यन्त क्षुब्ध या अत्यन्त उद्विग्न या घबराया हुआ अव्यवस्थित —जः 1 अव्यवस्थित सेना 2 भारी अव्यवस्था।

समुत्सवः [सम् + उद् + सू + अप्] महान पर्व।

समुत्सर्गः [सम् + उद् + सृज् + घञ्] 1 परित्याग छोड़ना 2 डालना डालना प्रदान करना 3 मलत्याग करना विष्ठा करना मनु० ४।५०।

समुत्सारणम् [सम् + उद् + सृ + णिच् + ल्युट्] 1 हांक देना 2 पीछा करना शिकार करना।

समुत्सुक (वि०) [सम्यक् उत्सुकः प्रा० स०] 1 अत्यन्त बेचैन आतुर अधीर विरहेऽपि समुत्सुक विक्रम० ४।२०, रघु० १।३३ कु० ५।३६ 2 उत्कंठित उत्सुक, शौकीन 3 शोकपूर्ण खेदजनक।

समुत्सेधः [सम् + उद् + सिध् + घञ्] 1 ऊँचाई उन्नति 2. मोटापन स्थूलपन।

समुदक्त (भू०क०कृ०) [सम् + उद् + अञ्च् + क्त] उठाया हुआ, ऊपर खींचा हुआ (जैसा कुएँ से पानी)।

समुदयः [सम् + उद् + इ + अच्] 1 चढ़ाई (सूर्य का) उदय होना 2 उगना 3 समूह, समुच्चय संग्रह ढेर,—सामर्थ्यानामिव समुदयः संचयो वा गुणानाम् —उत्तर० ६।९ 4 सम्मिश्रण 5 संपूर्ण 6 राजस्व 7 प्रयत्न, चेष्टा 8. संग्राम युद्ध 9. दिन 10 सेना का पिछला भाग।

समुदागमः [सम् + उद् + आ + गम् + घञ्] पूर्ण ज्ञान।

समुदाचारः [सम् + उद् + आ + चर् + घञ्] 1 उचित व्यवहार या प्रचलन 2 संबोधित करने की उपयुक्त रीति 3 प्रयोजन, इरादा, मनोरथ।

समुदायः [सम् + उद् + अय् + घञ्] समूह, समुच्चय आदि, दे० 'समवाय'।

समुदाहरणम् [सम् + उद् + आ + हृ + ल्युट्] 1 उद्घोषणा, उच्चारण करना 2 निदर्शन।

समुदित (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + इ + क्त] 1 ऊपर गया हुआ उठा हुआ, चढ़ा हुआ 2 ऊँचा, उन्नत 3 पैदा किया हुआ उगा हुआ, उत्पन्न 4 संहृत किया हुआ संचित संयुक्त मधुराग्योपपन्नाश्च समुदितं सर्वैर्गुणानां गणः रत्न० १।६ 5 सहित, सज्जित।

समुदीरणम् [सम् + उद् + ईर् + ल्युट्] 1 कहना बोलना बोलना उच्चारण करना 2 दुहराना।

समुद्ग (वि०) [सम् + उद् + गम् + ड] 1 उगने वाला ऊपर जाने वाला 2 ... आवरण या ढक्कन ... 1 ढका हुआ संदूक 2 एक प्रकार का कृत्रिम श्लोक— दे० नीचे समुद्गकः।

समुद्गकः [समुद्ग + कन्] 1 एक ढका हुआ संदूक या पेटी ... उत्त० १२।१४।१६।

समुद्गमः [सम् + उद् + गम् + घञ्] 1 उठान चढ़ाई 2 उदय निकलना 3 जन्म पैदायश।

समुद्गिरणम् [सम् + उद् + गॄ + ल्युट्] 1 वमन करना उगलना 2 ... उल्टी 2 उठाना ऊपर करना।

समुद्गीतम् [सम् + उद् + गै + क्त] ऊँचे स्वर से बोला जाने वाला गीत।

समुद्देशः [सम् + उद् + दिश् + घञ्] 1 पूर्णतः निर्देश करना 2 पूर्णाध्ययन विशिष्टीकरण निर्देश करना।

समुद्धत (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + हन् + क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ ऊँचा किया हुआ, उन्नीत 2 उत्तेजित भड़काया हुआ 3 घमंड से फूला हुआ घमंडी अभिमानी 4 अशिष्ट असभ्य 5 धृष्ट ढीठ।

समुद्धरणम् [सम् + उद् + हृ + ल्युट्] 1 ऊपर उठाना ऊँचा करना 2 उठाना 3 बाहर खींच लेना 4 उद्धार, मुक्ति 5 निवारण समूलोन्मूलन 6 (किनारे) से बाहर निकालना 7 वमन किया हुआ या उगला हुआ भोजन।

समुद्धर्तृ (पुं०) [सम् + उद् + हृ + तृच्] मोचक, मुक्तिदाता।

समुद्भवः [सम् + उद् + भू + अप्] जन्म उत्पत्ति।

समुद्यमः [सम् + उद् + यम् + घञ्] 1 ऊपर उठाना 2 बड़ा प्रयत्न, चेष्टा कैकेया सह योद्धव्यमित्युक्त्वा समुद्यमे भग० १।२२ समुद्यम कार्यं 3 उपक्रम, समारंभ 4 धावा चढ़ाई।

समुद्योगः [सम् + उद् + युज् + घञ्] सक्रिय चेष्टा ऊर्जा।

समुद्र (वि०) [सह मुद्रया — ब० स०] मुहर बंद मुहर लगा हुआ, मुद्रांकित, समुद्रा लेख [illegible] [सम् उद् + ऋ + क] 1 सागर, महासागर 2 शिव का विशेषण 3 चार की संख्या। सम० [illegible] 1 समुद्रतट 2 [illegible] [illegible] पृथ्वी [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] बड़ी विशाल मछली [illegible] राम का पुल [illegible] [illegible] (वि० समुद्र पर घूमने वाला) 1 समुद्री व्यापार करने वाला 2 समुद्री कार्य करने वाला, समुद्र में घूमने वाला, इसी प्रकार समुद्र गामिन्, यायिन् आदि [illegible] गृहम् गरमी के दिनों के लिए जल में बना हुआ भवन [illegible] [illegible] पृथ्वी का विशेषण, [illegible] 1 चन्द्रमा 2 अमृत [illegible] [illegible] रतना [illegible] [illegible] 1 समुद्री [illegible] 2 [illegible] [illegible] समुद्र के रास्ते जाना [illegible] समुद्रगा [illegible] (स्त्री०) नदी [illegible] [illegible] सुभगा गंगा नदी

समुद्वह [सम् + उद् + वह् + अच्] 1 [illegible] 2 [illegible] वाला।

समुद्वाह [सम् + उद् + वह् + घञ्] 1 [illegible] 2 विवाह

समुद्वेग [सम् + उद् + विज् + घञ्] बड़ा डर, आतंक, त्रास।

समुन्दनम् [सम् + उन्द् + ल्युट्] 1 [illegible] 2 [illegible] सील, तरी

समुन्न (वि०) [सम् + उन्द् + क्त] गीला, आर्द्र।

समुन्नत (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + नम् + क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2 ऊँचाई, उत्तुंगता (मानसिक भी) ऊँचा, उच्च, प्रमुख [illegible] च सदृशी च समुन्नतिः कु० ६।११, रघु० ३।१० 3 प्रमुखता, ऊँचा पद या मर्यादा, उत्कर्ष, [illegible] [illegible] समुन्नतिम् [illegible] [illegible] [illegible] मुद्रा० 4 उन्नति, समृद्धि, वृद्धि, सफलता, [illegible] सम समुन्नते — कि० २।१४, या प्रकृति [illegible] सा महिमस महते [illegible] [illegible] यथा [illegible] 5 घमंड, अभिमान

समुन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + नह् + क्त] 1 उठा हुआ, उत्फुल्ल 2 भरा हुआ 3 पूरा 4 घमंडी, अभिमानी, [illegible] 5 आत्माभिमानी, पण्डितम्मन्य 6 बंधनमुक्त।

समुन्नय [सम् + उद् + नी + अच्] 1 हासिल करना, प्राप्त करना 2 घटना, बात।

समुन्मूलनम् [सम् + उद् + मूल + ल्युट्] जड़ से उखाड़ना, समूलोच्छेदन, पूर्ण विनाश।

समुपजोषम् [सम् + उप + जुष् + अम्] पहुँच, संपर्क।

समुपजोषम् (अव्य०) [सम + उप + जुष् + अम्] 1 बिल्कुल इच्छा के अनुसार 2 प्रसन्नतापूर्वक।

समुपयोग [सम + उप + युज् + घञ्] मैथुन, संभोग।

समुपवेशनम् [सम + उप + विश् + ल्युट्] 1 भवन, आवास, निवास 2 बैठाना

समुपस्था, समुपस्थानम् [सम + उप + स्था + अङ, ल्युट् वा] 1 पहुँच, पास जाना 2 सामीप्य, निकटता 3 [illegible]

समुपास्थित [illegible]

समुपाक्रमः [illegible] [illegible] [illegible]

समुपेत (भू० क० कृ०) [illegible] 1 मिल कर [illegible] [illegible] 2 पहुँचा 3 [illegible]

समुपोढ (भू० क० कृ०) [सम + उप + वह् + क्त] 1 [illegible] 2 वृद्धि को प्राप्त 3 निकट लाया गया 4 नियन्त्रित।

समुल्लासः [सम + उद् + लस् + घञ्] 1 अत्यन्त चमक 2 अति हर्ष, आनन्द।

समूढ (भू० क० कृ०) [सम + ऊह् (वह्) + क्त] 1 [illegible] लाया गया, एकत्रित 2 संचित, समूहित 3 लपेटा हुआ 4 सहित 5 सद्योजात, जो तुरन्त पैदा हुआ हो 6 शान्त, वशीकृत, शान्त किया हुआ 7 वक्र, झुका हुआ 8 निर्मल, स्वच्छ 9 साथ ही वहन किया गया 10 नैतृत्व किया गया, संचालित किया गया 11 [illegible]

समूरः, समूरु [सम् + ऊरु] [समतौ ऊरू यस्य — प्रा० ब०] एक प्रकार का हरिण।

समूल (वि०) [सह मूलेन — ब० स०] जड़ों समेत जैसा समूलघातम् [illegible] से उखाड़ कर, जड़ समेत शाखाओं को उखाड़ देना।

समूह [सम + ऊह् + घञ्] 1 समुच्चय, संग्रह, जमात, समष्टि, संख्या, जनसमूह, विघ्नसमूह, पदसमूह आदि 2 रेवड़, रेवडी।

समूहनम् [समूह + ल्युट्] 1 साथ मिलाना 2 समूह, राशि।

समूहनी [स + ऊह् + ल्युट् + ङीप्] बुहारी, झाड़ू।

समूह्य [सम + ऊह् + ण्यत्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

समृद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + ऋध् + क्त] 1 समृद्धिशाली, फलता फूलता हुआ, हरा भरा 2 प्रसन्न, भाग्यशाली 3 सम्पन्न, दौलतमंद 4 भरा पूरा, विशेषरूप से युक्त या सम्पन्न, खूब बढ़ा चढ़ा 5 फलवान

समृद्धि (स्त्री०) [सम + ऋध् + क्तिन्] 1 [illegible] वृद्धि, बढ़ती, फलना फूलना 2 सम्पन्नता, सम्पत्ति

ऐश्वर्य 3. धन, दौलत 4. बाहुल्य, पुष्कलता, प्राचुर्य यथा 'धनधान्यसमृद्धिरस्तु' में 5. शक्ति, सर्वोपरिता।

समेत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+इ+क्त] 1. साथ आया हुआ या मिला हुआ, एकत्रित 2. संयुक्त, सम्मिश्रित 3. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 4. से युक्त 5. सहित, सज्जित, युक्त के साथ 6. टक्कर खाया हुआ, भिड़ा हुआ 7. सहमत।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+पद्+क्तिन्] 1. समृद्धि धन की बढ़ती, सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता —सुभा० 2. सफलता, पूर्ति, निष्पन्नता 3. पूर्णता, श्रेष्ठता—जैसा कि 'रूपसम्पत्ति' में 4. प्राचुर्य, पुष्कलता, बाहुल्य।

सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] 1. धन, दौलत —नीता विवोस्साहगुणेन सम्पद्—कु० १।२२, आपत्प्राप्ति प्रशमनफला: सम्पदो ह्युत्तमानाम् मेघ० ५३ 2. समृद्धि, ऐश्वर्य, फलना-फूलना (विप० विपद् या आपद्)—ते भृत्या नृपते: कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च—मुद्रा० १।१५ 3. सौभाग्य, आनन्द, किस्मत 4. सफलता, पूर्ति, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति—श० ७।३० 5. पूर्णता, श्रेष्ठता, जैसा कि 'रूपसम्पद' में —कि० १।३५ 6. धनाढ्यता, पुष्कलता, बाहुल्य, प्राचुर्य, आधिक्य —तुषारवृष्टिक्षतपद्मसम्पदाम् कु० ५।२७, रघु० १०।५९ 7. कोश 8. लाभ, हित, वरदान 9. सद्गुणों की वृद्धि 10. सजावट 11. सही ढंग 12. मोतियों का हार। सम०—वरः, राजा, —विनिमयः हितों या सेवाओं का आदान-प्रदान—रघु० १।२६।

सम्पन्न (भू०क०कृ०) [सम्+पद्+क्त] 1. समृद्धिशाली, फलता-फूलता, धनाढ्य 2. भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न 3. कार्यान्वित, साधित, निष्पन्न 4. पूरा किया गया, पूर्ण कर दिया गया 5. पूर्ण 6. पूर्णविकसित, परिपक्व 7. प्राप्त किया गया, हासिल किया गया 8. शुद्ध, सही 9. सहित, युक्त 10. हुआ हुआ, घटित, —न्नः शिव का विशेषण, —न्नम् 1. धन, दौलत 2. स्वादिष्ट भोजन, मधुर और मजेदार भोजन।

सम्परायः [सम्+परा+इ+अच्] 1. संघर्ष, मुठभेड़, संग्राम, युद्ध 2. संकट, दुर्भाग्य 3. भावी स्थिति, भविष्यं 4. पुत्र।

सम्परायिक (वि०) —कम् [सम्पराय+कन्, ठन् वा] मुठभेड़, संग्राम, युद्ध।

सम्पर्कः [सम्+पृच्+घञ्] 1. मिश्रण 2. मिलाप, मेल-जोल, स्पर्श, —पाहेन नागैश्च सुन्दरीणां सम्पर्कमासिञ्जितनूपुरेण कु० ३।२६, मेघ० ३५, विक्रम० १।१३ 3. संगति, समाज, साथ —न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि—भर्तृ०—२।१४ 4. मैथुन, संभोग।

सम्पा [सम्यक् अतकिंत पतति—सम्+पत्+ड+टाप्] बिजली।

सम्पाक (वि०) [सम्यक् पाको यस्य यस्मात् वा—प्रा०ब०] 1. तार्किक, खूब बहस करने वाला 2. चालाक, चलता पुर्जा 3. लम्पट, विलासी 4. थोड़ा, अल्प, —कः 1. परिपक्व होना 2. आरग्वध वृक्ष।

सम्पातः [सम्+पत्+णिच्+घञ्] 1. त्रिभुज की बढ़ी हुई भुजा से किसी रेखा का मिलना 2. लकुआ।

सम्पातः [सम्+पत्+घञ्] 1. मिल कर गिरना, सहगमन 2. आपस में भिड़ना, मुठभेड़ होना 3. टक्कर, भिड़न्त 4. अधःपतन, उतरना मग० १।२० 5. (पक्षी आदि का) उतरना 6. (तीर का) उड़ान 7. जाना, हिलना-जुलना 8. हटाया जाना, हटाना मनु० ६।५६ 9. पक्षियों की उड़ान विशेष तु० डीन 10. (चढ़ावे का) अवशिष्ट भाग, उच्छिष्ट।

सम्पातिः [सम्+पत्+णिच्+इन्] एक पौराणिक पक्षी, गरुड का पुत्र, जटायु का बड़ा भाई।

सम्पादः [सम्+पद्+णिच्+घञ्] 1. पूर्ति, निष्पन्नता 2. अधिग्रहण।

सम्पादनम् [सम्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. निष्पादन, कार्यान्वयन, पूरा करना 2. उपार्जन करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना 3. स्वच्छ करना, साफ करना, (भूमि आदि) तैयार करना, मनु० ३।२२५।

सम्पिण्डित (भू०क०कृ०) [सम्+पिण्ड्+क्त] 1. राशीकृत 2. सिकुड़ा हुआ।

सम्पीडः [सम्+पीड्+घञ्] 1. निचोड़ना, भींचना 2. पीड़ा, सालना 3. विक्षोभ, बाधा 4. भेजना, निदेशन, आगे आगे हाँकना, प्रचोदन—सम्पीडक्षुभितजलेषु तोयदेषु कि० ७।१२।

सम्पीडनम् [सम्+पीड्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, मिलाकर दाबना 2. प्रेषण 3. दण्ड, कशाघात 4. झकोलना, क्षुब्ध होना।

सम्पीतिः (स्त्री०) [सम्+पा+क्तिन्] मिल कर पीना, सहपान।

सम्पुटः [सम्+पुट्+क] 1. गड्ढा —स्वात्यां सागरशुक्तिसम्पुटगतं (पय:) सन्मौक्तिकं जायते भर्तृ० २।६७, (पाठान्तर) काव्या० २।२८८, मालवि० १।२१ 2. रत्न-पेटी, डिब्बा 3. कुरबक फूल।

सम्पुटकः, सम्पुटिका [सम्पुट+कन्, सम्पुटक+टाप्, इत्वम्] मंजूषा, रत्नपेटी।

सम्पूर्ण (वि०) [सम्+पूर्+क्त] 1. भरा हुआ 2. सारे, सारा, ई० पूर्ण, —र्णम् अन्तरिक्ष।

सम्पृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+पृच्+क्त] 1. एकीकृत, मिश्रित 2. संयुक्त, संबद्ध, घनिष्ठ, संबंध से युक्त —वागर्थाविव सम्पृक्तौ—रघु० १।१ 3. स्पर्श करना।

सम्प्रक्षालनम् [सम् + प्र + क्षल् + णिच् + ल्युट्] 1 पूर्ण मार्जन 2 स्नान, नहलाई-धुलाई 3 जल प्रलय।

सम्प्रणेतृ (पुं०) [सम् + प्र + नी + तृच्] शासक, न्यायाधीश।

सम्प्रति (अव्य०) [सम् + प्रति द्व० स०] अब, आज कल में, इस समय — अधिपद्गतिं हरि हरावलम्ब रघु० ४।८।

सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [सम् + प्रति + पद् + क्तिन्] 1 उपगमन, पहुँच 2 ग्रहण, ज्ञान 3 ठीक ठीक प्रतीति या समझ 4 करार 5 मानना, स्वीकार करना — मुद्रा० ५।१८ 6 किसी तथ्य का मानना 7 ... में विशेष प्रकार का उत्तर 7 ... 8 सहना 9 सहयोग 10 करना, अनुष्ठान।

सम्प्रतिरोधकः [सम् + प्रति + रुध् + ण्वुल्] 1 पूरा अवरोध 2 कैद, जेल।

सम्प्रतीक्षा [सम् + प्रति + ईक्ष् + अङ् + टाप्] आशा लगाना या बाँधना।

सम्प्रतीत (भू० क० कृ०) [सम् + प्रति + इ + क्त] 1 वापिस आया हुआ 2 पूर्ण विश्वास दिलाया हुआ 3 प्रमाणित माना हुआ 4 विश्रुत 5 सम्मान पूर्ण।

सम्प्रतीतिः [सम् + प्रति + इ + क्तिन्] 1 पूरा निश्चय 2 कारापालन, प्रसिद्ध, ख्याति, कुख्याति कु० ३।४१।

सम्प्रत्ययः [सम् + प्रति + इ + अच्] 1 दृढ़ विश्वास 2 करार।

सम्प्रदानम् [सम् + प्र + दा + ल्युट्] 1 पूरी तरह से दे देना, हवाले कर देना 2 उपहार, भेंट, दान 3 विवाह कर देना 4 चतुर्थी विभक्ति द्वारा अभिव्यक्त अर्थ।

सम्प्रदानीयम् [सम् + प्र + दा + अनीयर्] भेंट, दान।

सम्प्रदायः [सम् + प्र + दा + घञ्] 1 परम्परा, परम्परा प्राप्त सिद्धान्त या ज्ञान, परम्परा प्राप्त शिक्षा उत्तर० ५।१५ 2 धर्म शिक्षा की विशेष पद्धति, धार्मिक सिद्धान्त जिसके द्वारा किसी देवताविशेष की पूजा बतलाई जाय 3 प्रचलित प्रथा, प्रचलन।

सम्प्रधारणम् [सम् + प्र + धृ + ल्युट्] निश्चय करना।

सम्प्रधारणा [सम् + प्र + धृ + णिच् + युच्] 1 विचार 2 किसी वस्तु का औचित्य या अनौचित्य निर्धारित करना।

सम्प्रपदः [सम् + प्र + पद् + क] पर्यटन, भ्रमण।

सम्प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [सम् + प्र + भिद् + क्त] 1 फटा हुआ, चिरा हुआ 2 मद में मस्त।

सम्प्रमोदः [सम् + प्र + मुद् + घञ्] अत्यधिक उल्लास।

सम्प्रमोषः [सम् + प्र + मुष् + घञ्] हानि, विनाश, पृथक्करण, अपवाद।

सम्प्रयाणम् [सम् + प्र + या + ल्युट्] विदाई।

सम्प्रयोगः [सम् + प्र + युज् + घञ्] 1. संयोग, मिलाप, सम्मिलन, संयोजन, संपर्क — (जलस्य) उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगात् — रघु० ५।५४, मालवि० ५।३ 3. संयोजक कड़ी, बंधन या जकड़न — एतेन मोचयति भूषणसम्प्रयोगात् मृच्छ० ३।१६ 3 संबंध, निर्भरता 4 पारस्परिक संबन्ध या अनुपात 5 संयुक्त श्रेणी या क्रम 6 मैथुन, संभोग 7 प्रयोग, 8 जादू।

सम्प्रयोगिन् (वि०) [सम् + प्र + युज् + घिनुण्] साथ साथ मिलने वाला, पुं० 1 मेलापक, संयोजक, 2 बाजीगर 3 लम्पट 4 कुटनी, भांडू।

सम्प्रवृष्टम् [सम् + प्र + वृष् + क्त] अच्छी वर्षा।

सम्प्रश्नः [सम्यक् प्रश्नः प्रा० स०] 1 पूरी या शिष्टतापूर्ण पूछ-ताछ 2 पूछताछ, पूछ-ताछ।

सम्प्रसादः [सम् + प्र + सद् + घञ्] 1 प्रसादन, तुष्टीकरण 2 अनुग्रह, कृपा 3 शान्ति, सौम्यता 4 विश्वास, भरोसा 5 आत्मा।

सम्प्रसारणम् [सम् + प्र + सृ + णिच् + ल्युट्] य्, व्, र्, ल्, के स्थान पर क्रमशः इ उ ऋ या ऌ को रखना इग्यणः सम्प्रसारणम् पा० १।१।४५।

सम्प्रहारः [सम् + प्र + हृ + घञ्] 1 पारस्परिक प्रहार 2 मुठभेड़, संग्राम, युद्ध संघर्ष उत्तर० ६।७।

सम्प्राप्तिः (स्त्री०) [सम् + प्र + आप् + क्तिन्] निष्पत्ति, अधिग्रहण।

सम्प्रीतिः (स्त्री०) [सम् + प्री + क्तिन्] 1. अनुराग, स्नेह 2 मनुहार, मैत्रीपूर्ण स्वीकृति 3 हर्ष, उल्लास।

सम्प्रेक्षणम् [सम् + प्र + ईक्ष् + ल्युट्] 1 सर्वेक्षण, अवलोकन 2. विचार करना, गवेषणा करना।

सम्प्रैषः [सम् + प्र + इष् + घञ्] 1 भेजना, बर्खास्तगी 2 निदेश, समादेश, आज्ञा।

सम्प्रोक्षणम् [सम् + प्र + उक्ष् + ल्युट्] मार्जन, जल के छींटे देना, अभिमन्त्रित जल छिड़कना।

सम्प्लवः [सम् + प्लु + अप्] 1 प्लावन, जलप्रलय 2 लहर 3 बाढ़ 4 बर्बाद हो जाना 5 विध्वंस, तहसनहस।

सम्फालः [सम्यक् फालो गमनं यस्य — प्रा० ब०] मेढ़ा, भेड़।

सम्फेटः (पुं०) क्रोधपूर्ण संघर्ष दो क्रुद्ध व्यक्तियों की पारस्परिक मुठभेड़ को अभिव्यक्त करने वाली घटना — दे० सा० द० ३७० उदा० — माधव और अघोरघंटके मध्य मुठभेड़ मा० ५।

सम्ब् (भ्वा० पर० सम्बति) जाना, हिलना-जुलना।

ii (चुरा० उभ० सम्बयति — ते) संग्रह करना, संचय करना।

सम्बम् [illegible] अच्] खेत को दूसरी बार जोतना (सम्बाकृ दो बार हल चलाना) दे० शम्ब भी।

सम्बद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + बन्ध् + क्त] 1 संबंधित,

मिलाकर बांधा हुआ 2 अनुरक्त 3 संयुक्त जुड़ा हुआ, संबंध रखने वाला 4 सहित।

सम्बन्धः [सम् + बन्ध् + घञ्] 1 संयोग मिलाप, साहचर्य 2 रिश्ता रिश्तेदारी 3 छठी विभक्ति या संबंध कारक के अर्थस्वरूप संबंध 4 वैवाहिक संपर्क कु० ६।२९, १० 5 मित्रता का संबंध मैत्री सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः रघु० २।५८ 6 योग्यता औचित्य 7 समृद्धि, सफलता।

सम्बन्धक (वि०) [सम् बन्ध + ण्वुल्] 1 रिश्ता रखने वाला संबंध रखने वाला 2 योग्य उपयुक्त —कः 1 मित्र जन्म या विवाह के कारण बना संबंध एक प्रकार की शान्ति

सम्बन्धिन् (वि०) [सम्बन्ध + इनि] 1 संबंध रखने वाला 2 संयुक्त जुड़ा हुआ अन्तर्हित 3 अच्छे गुणों से युक्त पुं० 1 विवाह के कारण संबंध बना बन्धु — उत्तर० ४।१ 2 रिश्तेदार बन्धु।

सम्बरः [सम्ब् + अरन्] 1 बौद्ध पुरुष 2 एक हरिण विशेष 3 प्रद्युम्न के द्वारा मारा गया राक्षस दे० शम्बर और प्रद्युम्न 4 पहाड़ का नाम —रम् 1 पानी 2 अक। सम० अरि, —रिपुः कामदेव।

—लम्, —लम् [सम्ब् + कलच्] पाथेय यात्रा के लिए सामग्री, मार्गव्यय —लम् पानी।

सम्बाध (वि०) [सम्यक् बाधा यत्र —प्रा० ब०] सकुचित भीड़ से युक्त अवरुद्ध संकीर्ण सम्बाधम् बृहदपि नदवभूव वर्त्म —शि० ८।२, स्रोतिस सबाधवर्त्मभि —रघु० १२।६७ —धः 1 भीड़ का हल्ला 2 दबाव खिंचाव चोट, स्तनसम्बाधमुरो जघान च कु० ४।२६ 3 रुकावट कठिनाई भय विघ्न कि० ३।२३ 4 नरक का मार्ग 5 डर भय 6 भग योनि।

सम्बाधनम् [स + बाध् ल्युट्] 1 रोकना अवरोध 2 भींचना 3 फाटक द्वार फाटक ४ योनि भग 5 शूली या शूली की नोक 6 द्वारपाल।

सम्बुद्धिः (स्त्री०) [सम + बुध् क्तिन्] 1 पूर्ण ज्ञान या प्रत्यक्षज्ञान 2 पूर्ण चेतना 3 पुकारना बुलाना 4 (व्या० में) संबोधन कारक एक वचन सबुद्धौ —पा० ६।१।६९।

सम्बोधः [सम् + बुध् + घञ्] 1 व्याख्या करना निर्देश देना सूचित करना 2 पूर्ण या स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान 3 भेजना फेंक देना 4 हानि विनाश।

सम्बोधनम् [स + बुध + णिच् + ल्युट्] व्याख्या करना 2 संबोधित करना 3 संबोधन कारक 4 ... किसी को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द, विभक्ति सि० ३।१९।

सम्भक्तिः (स्त्री०) [सम् भज् + क्तिन्] 1 हिस्सा करना अधिकार करना 2 वितरण करना।

सम्भग्न (भू० क० कृ०) [सम + भञ्ज् + क्त] छिन्न भिन्न, तितर बितर —ग्नः शिव का विशेषण।

सम्भली [स्त्री भल + अच् + ङीष्] दूती कुटनी दे० शम्भली।

सम्भव [सम + भू अप्] 1 जन्म उत्पत्ति फूटना उगना आगमन ... मुहुः ... मम ... सम्भवो ... भग० ३।१४ (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) ... 2 ... ... 3 कारण मूल, ... 4 ... ... 5 ... ... 6 ... 7 ... 8 ... 9 ... 10 ... एक ... 11 ... ...

सम्भार ... [सम् + भृ + घञ्] 1 एकत्र ... संग्रह करना 2 तैयारी सामग्री आवश्यक वस्तुएँ अपेक्षित वस्तुएँ उपकरण, किसी ... के लिए आवश्यक वस्तुएँ ... मा० ५ रघु० १२।४ विक्रम० ... 3 अनाज संचयक उपादान 4 समृद्धता ... ढेर, कि ... में 5 पूर्णता 6 दौलत धनाढ्यता 7 समारण ... भरण-पोषण।

सम्भावनम् ... [सम् + भू + णिच् + ल्युट्] 1 विचारना, विचारविमर्श करना रघु० ५।२८ 2 ... ... प्रकृतस्य ... काव्य० १० 3 ... कल्पना चिन्तन 4 आदर सम्मान मान प्रतिष्ठा ... ... श० ३।२ 5 ... 6 योग्यता ... कि० ३ ... 7 ... योग्यता 8 संदेह 9 स्नेह प्रेम 10 ख्याति।

सम्भावित (भू० क० कृ०) [सम + भू + णिच् + क्त] 1 ... कल्पित विचारित ... 2 प्रतिष्ठित सम्मानित आदरित ... ३।३६ 3 उपयुक्त योग्य पर्याप्त युक्त 4 संभव।

सम्भाषः [सम् भाष् + घञ्] भाषण ... ८।३६ ...

सम्भाषा [सम् ...] 1 प्रवचन ... 2 अभिवादन 3 ... 4 ... 5 संकेत शब्द ...

सम्भूतिः (स्त्री० सम् + भू + क्तिन्] 1 जन्म, उद्भूत उत्पत्ति रघु० २।१६ 2 अभिवृद्धि मिलाप 3 योग्यता उपयुक्तता 4 शक्ति।

सम्भृत (भू० क० कृ०) [सम्+भृ+क्त] 1 एकत्रित, संगृहीत, सकेन्द्रित 2 उद्यत, तैयार, अन्वित, सज्जित 3 सुसज्जित, संपन्न, युक्त, सहित 4 रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5 पूर्ण, पूरा, समस्त 6 लब्ध, अवाप्त 7 ले जाया गया, वहन किया गया 8 पोषित 9 उत्पादित पैदा किया गया।

सम्भृतिः (स्त्री०) [सम्+भृ+क्तिन्] 1 संग्रह 2 तैयारी, साज-सामान, सामग्री 3 पूर्णता 4 सहारा, संधारण पोषण।

सम्भेद [सम्+भिद्+घञ्] 1 टूटना, टुकड़े-टुकड़े करना 2 मिलाप मिश्रण सम्मिश्रण आलोकतिमिरसम्भेद — मा० ९।११ हर्षोद्गमसम्भेद — मा० ८ 3 मिलना (जैसे निगाहों का) 4 संगम (दो नदियों का) मिलन सद्भुविलसत्पारामिमानसम्भेदमाश्रगाङ्क नगरीमेव प्रविशाव: अयं असौ महानद्या: सम्भेद - मा० ४ मधुमतीसिन्धुसम्भेदपावन ... ।

सम्भोगः [सम्+भुज्+घञ्] 1 आनन्द लेना मजे लेना सरसम्भोगफला प्रिया मुभा० 2 कब्जा उपयोग, अधिकार मनु० ८।२०० 3 रति या मैथुन, सह-वास — सम्भोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानाम् — मेघ० ९९ 4 लम्पट गाढ़ 5 शृंगाररस का एक उपभेद दे० 'शृंगार' के अन्तर्गत।

सम्भ्रम [सम्+भ्रम्+घञ्] 1 मुड़ना आवर्तन, चक्कर काटना 2 जल्दबाजी उतावली 3 अव्यवस्था विक्षोभ, हड़बड़ी कु० ३।४८ 4 डर, आतंक भय — रा० १ कि० १५।२ 5 त्रुटि भूल अज्ञान 6 उत्साह क्रियाशीलता 7 आदर श्रद्धा गृहमुपगते सम्भ्रमविधि भर्तृ० २।६३ मम यौवनं कौशलमस्ति मयि सम्भ्रम—रामा०। सम० **ज्वलित** (वि०) विक्षोभ से उत्तेजित —**भृत्** (वि०) घबड़ाया हुआ हड़बड़ाया हुआ।

सम्भ्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+भ्रम्+क्त] 1 आवर्तित 2 हड़बड़ाया हुआ, विक्षुब्ध, विस्मित आकुल।

सम्मत (भू० क० कृ०) [सम्+मन्+क्त] 1 सहमत, स्वीकृत माना हुआ 2 पसन्द किया हुआ प्रिय प्रियतम 3 समान मिलता-जुलता 4 ख्याल किया गया, सोचा गया विचारा गया 5 अत्यन्त आदृत, सम्मानित प्रतिष्ठित सम० सहमति, दे० सम्मति।

सम्मतिः (स्त्री०) [सम्+मन्+क्तिन्] 1 सहमति 2 समनुकूलता मान्यता अनुमोदन समर्थन 3 अभिलाषा इच्छा 4 आत्मज्ञान आत्मा की जानकारी सत्यज्ञान 5 ख्याल आदर प्रतिष्ठा कथमिव तव सम्मतिः ... कि० १०।२६ 6 प्रेम, स्नेह।

सम्मद [सम्+मद्+अप्] अतिहर्ष खुशी, प्रसन्नता शि० १५।३७।

सम्मर्दः [सम्+मृद्+घञ्] 1 आपस में मिलना, संघर्ष 2 जमघट, भीड़ जमाव पद्मोपमत्तकल्पोऽभूत्सम्मर्दस्तत्र सज्जनाम्- रघु० १५।१०१, मा० १० 3 कुचलना पैरों से रौंदना 4 संग्राम, युद्ध।

सम्मातुर = सन्मातुर दे० 'सत्' के अन्तर्गत।

सम्माद [सम्मद्+घञ्] मद नशा, पागलपन।

सम्मान [सम्+मन्+घञ्] आदर, प्रतिष्ठा, —**नम्** 1 माप 2 तुलना।

सम्मार्जक [सम्+मृज्+ण्वुल्] झाड़ने वाला बुहारी देने वाला भंगी।

सम्मार्जनम् [सम्+मृज्+ल्युट्] 1 बुहारना मांजना 2 निर्मल करना, साफ करना झाड़ना।

सम्मार्जनी [सम्मार्जन+ङीप्] झाड़ू बुहारी।

सम्मित (भू० क० कृ०) [सम्+मा+क्त] 1 मापा हुआ नापा हुआ 2 समान माप विस्तार या मूल्य का सम वैसा ही बराबर मिलता-जुलता कान्तासम्मितत्तयोपदेशयुजे का० १ रघु० ३।१६ 3 इतना बड़ा जितना कि, पहुँचता हुआ 4 समरूप समनुरूप, समानुपातिक 5 से युक्त सुसज्जित।

सम्मिश्र, सम्मिश्रित (वि०) [सम्+मिश्र्+अच् क्त वा] 1 परस्पर मिलाया हुआ अन्तर्मिश्रित।

सम्मिश्रल [सम्मिश्र पृषो० रस्य लः] इन्द्र का विशेषण।

सम्मीलनम् [सम्+मील्+ल्युट्] (फूल आदि का) बन्द होना ढकना लपेटना।

सम्मुख (वि०) (स्त्री०—खा, खी) सम्मुखीन (वि०) [संगत मुखं येन— ब० स०, सर्वस्य मुखस्य दर्शनं—सम्मुख+ख सम प अन्त्य अन्त्यलोप मि०] 1 सामने का, सम्मुख स्थित सामने सामने अभिमुखी, सामना करने वाला काम न तिष्ठति मदाननसम्मुखी सा — ... १।३१ रघु० १५।१६ शि० १०।८६ 2 मुठभेड़ करने वाला मुकाबला करने वाला 3 स्वस्थ।

सम्मुखिन् (पु०) [सम्मुखमस्य अस्ति सम्मुख+इनि] दर्पण शीशा आईना।

सम्मूर्छनम् [सम्+मूर्छ्+ल्युट्] 1 मूर्छा बेहोशी 2 जमना गाढ़ा होना 3 गाढ़ा करना बढ़ना 4 ऊँचाई 5 विश्वव्याप्ति सर्वत्र विस्तार पूर्ण व्याप्ति।

सम्मृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+मृज्+क्त] 1 भली भांति बुहारा गया माँजा-धोया गया 2 छना हुआ, छाना हुआ।

सम्मेलनम् [सम्+मिल्+ल्युट्] 1 परस्पर मिलना मिलाप 2 मिश्रण 3 एकत्र करना संग्रह करना।

सम्मोह [सम्+मुह्+घञ्] 1 घबराहट अव्यवस्था प्रेमोन्माद 2 मूर्छा बेहोशी 3 अज्ञान मूर्खता 4 आकर्षण।

सम्मोहनम् [सम्+मुह्+णिच्+ल्युट्] सम्मुग्ध करना

वशीकरण, म: कामदेव के पाँच बाणों में से एक कु० ३।६६ ।

सम्यच्, सम्यञ्च् (वि०) (स्त्री० —समीची) [सम् + अञ्च् + क्विन्, समि आदेशः पक्षे नलोपः] 1. साथ जाने वाला, साथ रहने वाला 2. सही, युक्त, उचित, यथोचित 3. शुद्ध, सत्य, यथार्थ 4. सुहावना, रुचिकर — किं च कुलानि कवीनां निसर्गसम्यञ्चि रञ्जयतु — रस० 5. वही, एकरूप 6. सब, पूर्ण, समस्त —(अव्य० —सम्यक्) 1. के साथ, साथ-साथ 2. अच्छा, उचित रूप से, सही ढंग से, शुद्धतापूर्वक, सचमुच सम्यगियमाह — श० १, मनु० २।५, १४ 3. यथावत्, यथोचित ढंग से, ठीक-ठीक, सचमुच 4. सम्मान पूर्वक 5 पूरी तरह से, पूर्णतः 6 स्पष्ट रूप से ।

सम्राज् (पुं०) [सम्यक् राजते-सम् + राज् + क्विप्] 1. सर्वोपरि प्रभु, विश्वराट्, विशेषत वह जो अन्य राजाओं पर शासन करता हो तथा जिसने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान कर लिया है —येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः । शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राट् — अमरः, — रघु० २।५ ।

सय् (भ्वा० आ० सयते) जाना, हिलना-जुलना ।

सयूथ्यः [सयूथ + यत्] एक ही वर्ग या जाति का ।

सयोनि (वि०) [समाना योनिर्यस्य ब० स०, समानस्य सादेशः] एक ही कोख का, एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर, — निः 1. सगा या सहोदर भाई 2. सरोता 3. इन्द्र का नाम ।

सर (वि०) [सृ + अच्] 1 जाने वाला, गतिशील 2. रेचक, दस्तावर —रः 1. जाना, गति 2 बाण 3. बालाई, दही का थक्का, मलाई 4. नमक 5 लड़ी, हार —अयं कण्ठे बाहुः शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः — उत्तर० १।३९ २९ 6 जलप्रपात, — रम् 1. जल 2. झील, सरोवर । सम० — सत्वः सारस, — जम् ताजा मक्खन, नवनीत, तु० शरज ।

सरकः, —कम् [सृ + वुन्] 1. सड़क राजमार्ग की अनवरत पंक्ति, 2. मदिरा, उग्र सुरा —चकृषुः सरकं मनः सुरभिभ्रजनैरपपार्श्वसिद्धि सरकं महीभृतः — शि० १०।८०, १०।१२ 4. पीने का बर्तन, शराब पीने का प्याला, कटोरा —शि० १०।२० 5 मेज शराब का वितरण, —कम् 1. आना, गति 2 तालाब, सरोवर 3. स्वर्ग ।

सरघा [सरं मधुविशेषं हन्ति-सर + हन् + ड नि०] मधुमक्खी, —नम्भार सरघास्थानैः स शौडपदैर्निव — रघु० ४।६३, शि० ९५।२३ ।

सरङ्गः [सृ + अङ्गच्] 1 चतुष्पाद, चौपाया, 2 पक्षी ।

सरजस्,—सा (स्त्री०), सरजस्का [सह रजसा — ब० स०, पक्षे कप् + टाप्] रजस्वला स्त्री ।

सरट् (पुं०) [सृ + अटि] 1. हवा, वायु 2. बादल 3. छिपकली 4. मधुमक्खी ।

सरटः [सृ + अटन्] 1 वायु 2 छिपकली —लूता हि सरटानां च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम् — मनु० १२।५७ ।

सरटिः [सृ + अटिन्] 1 वायु 2. बादल ।

सरडुः [सृ + अडु] छिपकली गिरगिट ।

सरण (वि०) [सृ + ल्युट्] 1 जाने वाला, गतिशील 2 बहने वाला, —णम् 1 प्रगतिशील, जाने वाला, बहनशील 2. लोहे का जंग मुर्चा ।

सरणि,—णी (स्त्री०) [सृ + नि] 1 पथ, मार्ग, सड़क रास्ता —आनन्द० १८ 2 क्रम विधि — सीधी अनवरत पंक्ति 4 कण्ठरोग ।

सरण्डः [सृ + अण्डच्] 1 पक्षी 2 लम्पट, दुश्चरित्र व्यक्ति 3. छिपकली 4 धूर्त 5 एक प्रकार का अलंकार ।

सरण्युः [सृ + अन्युच्] 1 वायु, हवा 2 बादल 3 जल 4. वसंत ऋतु 5 अग्नि 6 यम का नाम ।

सरत्निः (पुं०, स्त्री०) [सह रत्निना ब० स०] एक हाथ का माप, तु० रत्नि या अरत्नि ।

सरथ (वि०) [समानो रथो यस्य रथेन सह वा —ब० स०] एक ही रथ पर सवार, — थः रथ पर सवार योद्धा ।

सरभस (वि०) [सह रभसेन ब० स०] 1. वेगवान्, फुर्तीला 2 प्रचण्ड, उग्र 3. क्रोधपूर्ण 4 प्रमत्त, —सम् (अव्य०) अत्यंत वेग से ।

सरमा [सृ + अम + टाप्] 1 देवों की कुतिया 2. दक्ष की पुत्री का नाम 3 रावण के भाई विभीषण की पत्नी का नाम ।

सरयुः [सृ + अयु] वायु, हवा, —युः,—यूः (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है — रघु० ८।९५, १३।६१, ६३, १४।३० ।

सरल (वि०) [सृ + अलच्] 1. सीधा, अवक्र 2 ईमानदार, खरा, निष्कपट, निश्छल 3 सीधासादा, भोला भाला, स्वाभाविक — सरले साहसराग परिहर — मा० ६।१०, अयि सरले किमत्र मया भगवत्या शपथम् — २, —लः 1 चीड़ का वृक्ष — विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम् — कु० १।९, मेघ० ५३, रघु० ४।७५ 2 आग । सम० —अङ्गः सरल वृक्ष का रस, बिरोजा, तारपीन, —द्रवः सुगंधित बिरोजा ।

सरव्य दे० शरव्य ।

सरस् (नपुं०) [सृ + असुन्] 1 सरोवर, तालाब, पोखर, पानी का विशाल सरोवर सरसामस्मि सागरः —भग० १०।०१ 2 जल । सम० —जम्,—जन्मन् (नपुं०) —रुहम्, (सरोजम्, सरोजन्मन्, सरोरुहम्) सरसिजम्, सरसिरुहम् कमल —सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम् — श० १।२०, सरोरुहद्युतिमुष पादास्तवासेवितुम् — गीत० १।३०, —जिनी,—रुहिणी 1. कमल का पौधा

-भ्रमर कथ वा सरोजिनी त्यजसि—भामि० १।१०० 2 कमलों से भरा हुआ सरोवर,—रक्षः (सरोरक्षः) तालाब का संरक्षक, —रुह् (सरोरुह्) (नपुं०) कमल, —वरः (सरोवरः) झील।

सरस (वि०) [रसेन सह ब० स०] 1 रसीला, सजल 2. स्वादु, मधुर 3 आर्द्र शि० ११।५४ 4. पसीने से तर कु० ५।८५ 5 प्रेमपूर्ण, प्रणयोन्मत्त —भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'मधुपूर्ण' भी है) 6 लावण्यमय, प्रिय, रुचिकर, सुन्दर —सरसवसन्त गीत० १ 7 ताजा, नया, —सम् 1 झील, तालाब 2 रसायन विद्या।

सरसी [सरस् + ङीष्] झील, पोखर, सरोवर —भामि० २।१८८। सम० —रुहम् कमल।

सरस्वत् (वि०) [सरस् + मतुप्] 1 सजल जलयुक्त 2. रसीला, मजेदार 3 ललित 4 भावुक, पुं० 1 समुद्र 2 सरोवर 3. नद 4 भैंस 5 वायु का नाम।

सरस्वती [सरस्वत् + ङीप्] 1 वाणी और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता जिसका वर्णन ब्रह्मा की पत्नी के रूप में किया गया है 2 बोली, स्वर, वचन कु० ४।३९, ४३, रघु० १५।४६ 3 एक नदी का नाम (जो कि मरुस्थल के रेत में लुप्त हो गई है) 4 नदी 5 गाय 6. श्रेष्ठ स्त्री 7 दुर्गा का नाम 8 बौद्धों की एक देवी 9 सोमलता 10 ज्योतिष्मती नामक पौधा।

सराग (वि०) [सह रागेण - ब० स०] 1 रंगीन, हल्के रंग वाला, रंगदार—(अकारि) सरागमस्या रसनागुण- स्पदम्—कु० ५।१० 2 लाल रंग की लाख से रंगा हुआ - रघु० १६।१० 3 प्रणयोन्मत्त, प्रेमाविष्ट, मुग्ध —मनेरपि मनोऽवश्य सरागं कुरुतेऽङ्गना—सुभा०।

सराव (वि०) [सह रावेण— ब० स०] 1 शब्द करने वाला, कोलाहल करने वाला, —वः 1 ढक्कन, आवरण 2. कसोरा, चाय की तश्तरी, तु० 'शराव'।

सरिः (स्त्री०) [सृ + इन्] झरना, फौवारा।

सरित् (स्त्री०) [सृ + इति] 1 नदी —अन्या सरितां शतानि हि समुद्रगा: प्रापयन्त्यब्धिम् —मालवि० ५।१९ 2. धारा, डोरी। सम० —नाथः, —पतिः (सरितांपतिः भी), —भर्तृ (पुं०) समुद्र, —वरा (सरिद्वरा) गंगा का नाम, —सुतः भीष्म का विशेषण।

सरि(री)मन् (पुं०) [सृ + ईमनिच्] 1 गति, सरकना 2 वायु।

सरिलम् [सृ + इलच्] जल।

सरीसृपः [कुटिल सर्पति — सृप् + यङ् (लुक्) + द्वित्वादि + अच्] साँप।

सरुः [सृ + उन्] तलवार की मूठ।

सरूप (वि०) [समान रूपमस्य — ब० स०] 1. समान रूप वाला 2. समान, मिलता-जुलता, वैसे ही—रघु० ६।५९।

सरूपता, —त्वम् [सरूप + तल् + टाप्, त्व वा] 1. समानता 2 ब्रह्मरूप हो जाना, मुक्ति के चार प्रकारों में से एक।

सरोष (वि०) [सह रोषेण — ब० स०] 1. क्रुद्ध, रोषपूर्ण 2 कुपित।

सर्कः [सृ + क] 1 वायु, हवा 2 मन।

सर्गः [सृज् + घञ्] 1 छोड़ना, परित्याग 2. सृष्टि —अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रदः विक्रम० १।९ 3 सृष्टिरचना कु० २।६, रघु० ३।२७ 4 प्रकृति, विश्व 5 नैसर्गिक गुण, प्रकृति 6 निश्चय, संकल्प —गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते रघु० ३।५१, १८।१८ शि० १९।३८ 7. स्वीकृति, सहमति 8 अनुभाग, अध्याय, (काव्य आदि का) सर्ग 9 धावा, हमला, (सेना का) प्रयमन 10 मलत्याग 11 शिव का नाम। सम० —क्रमः सृष्टि का क्रम, —बन्धः महाकाव्य,—सर्गबन्धो महाकाव्यम्—सा० द०।

सर्ज् (भ्वा० पर० सर्जति) 1 अवाप्त करना, उपलब्ध करना 2. उपार्जन करना।

सर्जः [सृज् + अच्] 1 साल का पेड़ 2 साल वृक्ष का चूने वाला रस। सम० —निर्यासकः, —मणिः, —रसः बिरोजा, लाख।

सर्जकः [सृज् + ण्वुल्] साल का वृक्ष।

सर्जनम् [सृज् + ल्युट्] 1. परित्याग, छोड़ना 2. ढीला करना 3 रचना करना 4. मलत्याग 5. सेना का पिछला भाग।

सर्जिः, सर्जिका, सर्जी (स्त्री०) [सृज् + इन्, सर्जि + कन् + टाप्, सर्जि + ङीष्] सज्जीखार।

सर्जूः, सर्जूः [सृज् + ऊ] व्यापारी — स्त्री० 1 बिजली 2 हार 3 गमन, अनुसरण।

सर्पः [सृप् + घञ्] 1. सर्पीली गति घुमावदार चाल, खिसकना 2 अनुसरण, गमन 3 नाग, साँप। सम० —अरातिः, —अरिः 1 नेवला 2 मोर 3. गरुड़ का विशेषण, —अशनः मोर, —आवासम् —इष्टम् चन्दन का वृक्ष, —छत्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, खुंब, —तृण —मत्स्यः, —दंष्ट्रः साँप का विषैला दाँत,—धारकः सपेरा, —भुज् (पुं०) 1 मोर 2 सारस 3. अजगर, —मणिः साँप के फन की मणि, —राजः वासुकि।

सर्पणम् [सृप् + ल्युट्] 1 रेंगना, सरकना 2. वक्रगति 3 बाण की भूमि के समानान्तर उड़ान।

सर्पिणी [सृप् + णिनि + ङीप्] 1 साँपनी 2 एक प्रकार की जड़ी बूटी।

सर्पिन् (वि०) [सृप् + णिनि] 1. रेंगने वाला, सरकने वाला, घुमावदार, टेढ़ी चाल चलने वाला 2. जाने

वाला, हिलने-जुलने वाला —यूका मन्दविसर्पिणी —पंच० १।२५२।

सर्पिस् (नपुं०) [सृप् + इसि] पिघलाया हुआ घृत, घी (घृत और सर्पिस् के अन्तर को जानने के लिए दे० आज्य)। सम०—**समुद्रः** घृतसागर सात समुद्रों में से एक।

सर्पिष्मत् (वि०) [सर्पिस् + मतुप्] घी (से प्रसाधित) युक्त।

सर्व् (भ्वा० पर० सर्वति) जाना हिलना-जुलना।

सर्मः [सृ + मन्] 1 वायु, हवा 2 आकाश।

सर्व् (भ्वा० पर० सर्वति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सर्व (सि० वि०) [सृतमनेन विश्वमिति सर्वम् कर्तृ० ब० व० पुं०, सर्वे] 1 सब, प्रत्येक —उपपन्नमिदं सर्व एव हरिः —हि० २।२, निजस्य सर्वो मनसि हि नश्यु पूर्णता गौरवाय मेघ० २०।९,३ 2 पूर्ण, समस्त, पूरा,—**र्वः** 1 विष्णु का नाम 2 शिव का नाम। सम०—**अङ्गम्** समस्त शरीर, —**अङ्गीण** (वि०) समस्त शरीर में व्याप्त या रोमांचकारी सर्वाङ्गीण स्पर्श सुतस्य किल विक्रम० ५।११ —**अधिकारिन्** (पुं०) —**अध्यक्षः** अधीक्षक,—**अन्नीन** सब प्रकार के अन्न को खाने वाला सर्वान्नीनो भिक्षुः आदि, —**आकारम्** (समास में) सर्वथा, पूर्ण रूप से, पूरी तरह से —**आत्मन्** (पुं०) पूर्ण आत्मा, सर्वात्मना सर्वथा पूरी तरह से, पूर्ण रूप से —**ईश्वरः** सबका स्वामी —**ग, —गामिन्** (वि०) विश्वव्यापी, सर्वव्यापक —**जित्** (वि०) सर्वजेता, अजेय, —**ज्ञ,—विद्** (वि०) सब कुछ जानने वाला सर्वज्ञ (पुं०) 1 शिव का विशेषण 2 बुद्ध का विशेषण, —**दमन** (वि०) सब का दमन करने वाला दुर्निवार —**नामन्** (नपुं०) संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समूह —**मङ्गला** पार्वती का विशेषण, —**लोह** लाल तांबा —**लिङ्गिन्** (पुं०) पाखंडी, छद्मवेशी साधु, —**व्यापिन्** (वि०) सर्वत्र व्याप्त रहने वाला, —**वेदस्** (पुं०) सर्वस्व दक्षिणा में देकर यज्ञानुष्ठान करने वाला, —**सहा** (सर्वंसहा भी) पृथ्वी, —**स्वम्** 1 प्रत्येक वस्तु 2 किसी व्यक्ति की समस्त संपत्ति, जैसा कि 'सर्वस्वदंड' में, —**हरणम्** 1 सारी संपत्ति का अपहरण या जब्ती 2 किसी वस्तु का सर्वांश दे० श० १।२४, ६।२, मा० ८।६, भामि० १।६३।

सर्वङ्कषः (वि०) [सर्व + कष् + खच्, मुम्] 'सब कुछ नष्ट करने वाला', सर्वशक्तिमान् सर्वङ्कषा भगवती भवितव्यतैव मा० १।२३, भामि० ४।२, —**षः** दुष्ट, बदमाश।

सर्वतः (अव्य०) [सर्व + तसिल्] 1 प्रत्येक दिशा से, सब ओर से 2 सब ओर, सर्वत्र, चारों ओर 3 पूर्णतः सर्वथा। सम०—**गामिन्** (वि०) 1 सर्वत्र पहुँच रखने वाला —कु० ३।१२, —**भद्रः** 1 विष्णु का रथ 2 बाँस 3 एक प्रकार का चित्रकाव्य उदा० कि० १५।२५ 4 मन्दिर या महल जिसके चारों ओर द्वार हों (इस अर्थ में नपुं० भी) (—**द्रा**) नर्तकी नटी —**मुख** (वि०) सब प्रकार का, पूर्ण, असीमित —श० ५।२५, (—**खः**) 1 शिव का विशेषण 2 ब्रह्मा का विशेषण कु० २।३, (चारों ओर मुख किये हुए) 3 परमात्मा 4 आत्मा 5 ब्राह्मण 6 आग 7 स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व + त्रल्] 1 प्रत्येक स्थान पर, सब जगह पर 2 हर समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + थाल्] 1 हर प्रकार से सब तरह से उत्तर० १।५ 1 बिल्कुल पूर्णतः (प्रायः नकारात्मक) 3 पूर्णतः बिल्कुल नितान्त 4 सब समय।

सर्वदा (अव्य०) [सर्व + दाच्] सब समय सदैव, हमेशा।

सर्वरी दे० 'शर्वरी'।

सर्वशः (अव्य०) [सर्व + शस्] 1 पूर्णतः सर्वथा पूरी तरह से 2 सर्वत्र 3 सब ओर।

सर्वाणी दे० 'शर्वाणी'।

सर्षपः [सृ + अप, सुक्] 1 सरसों —खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति सुभा० मा० — १०।१६ 2 एक छोटा बाट 3 एक प्रकार का विष।

सल् (भ्वा० पर० सलति) जाना, हिलना जुलना।

सलम् [सल् + अच्] जल।

सलज्ज (वि०) [लज्जया सह ब० स०] विनीत, लज्जाशील।

सलिलम् [सलति गच्छति निम्नम् सल् + इलच्] पानी गुणसमञ्जनकारणाद्ध्वा(?) श० १।३। सम०—**अर्थिन्** (वि०) प्यासा —**आशयः** तालाब, ताल पानी की टंकी,—**इन्धनः** बडवानल —**उपप्लवः** जलप्लावन, प्रलय बाढ़ —**क्रिया** 1 अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर जलस्नान 2 जलतर्पण, उदकक्रिया,—**जम्** कमल,—**निधिः** समुद्र।

सलील (वि०) [सह लीलया ब० स०] क्रीडाशील, स्वेच्छाचारी, शृंगारप्रिय।

सलोकता [समानः लोको यस्य इति सलोक तस्य भावः तल् + टाप्] एक ही लोक में होना, किसी विशेष देवता के साथ एक ही स्वर्ग में निवास (मुक्ति की चार प्रकार की अवस्थाओं में से एक)।

सल्लकी [सल् + क्वुन्, पृषो० मस्य सः] एक प्रकार का पेड़, सलाई का पेड़, दे० 'शल्लकी'।

सव [सु+अप्] 1 सोमरस का निकालना 2 चढ़ावा, अर्पण 3 यज्ञ 4 सूर्य 5 चांद 6 प्रजा —**वम्** 1 पानी 2 फूलों से लिया गया मधु।

सवनम् [सु (सू)+ल्युट्] 1 सोम रस का निकालना [illegible] 2 [illegible] सवनाय दीक्षितः रघु० [illegible] 3 स्नान [illegible] 4 [illegible] प्रसव [illegible] पैदा करना।

सवयस (वि०) [illegible] ब० स० [illegible] 1 समवयस्क [illegible] 2 [illegible] आयु के साथी [illegible] सहेली।

सवर (पुं०) 1 [illegible] का नाम 2 जल।

सवर्ण (वि०) [illegible] ब० स० 1 [illegible] [illegible] का [illegible] जुड़ा [illegible] [illegible] 3 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सविकल्प, सविकल्पक (वि०) [सह विकल्पेन ब० स०] 1 [illegible] 2 संदिग्ध 3 [illegible] और कर्म के अन्तर का [illegible] और [illegible] को मानने वाला (विप० निर्विकल्पक)।

सविग्रह (वि०) [सह विग्रहेण ब० स०] 1 [illegible] देहधारी 2 [illegible] 3 [illegible]

सवितर्क, सविमर्श (वि०) [सह वितर्केण विमर्शेन ब० स०], [illegible] **कम्, र्शम्** (अव्य०) [illegible] पूर्वक।

सवितृ (वि०) [illegible] [illegible]

सवित्री [illegible]

सविध (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] **धम्** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १०। [illegible] १६।६ [illegible]

सविनय (वि०) [सह विनयेन ब० स०] विनीत, विनम्र —**यम्** (अव्य०) विनयपूर्वक।

सविभ्रम (वि०) [सह विभ्रमेण ब० स०] क्रीडायुक्त, विलासयुक्त।

सविशेष (वि०) [सह विशेषेण ब० स०] 1 विशिष्ट गुणों से युक्त 2 विशेष, असाधारण 3 विशिष्ट [illegible] 4 प्रमुख, श्रेष्ठ, बढ़िया 5 विलक्षण —**सविशेषम्, सविशेषतः** (क्रि० वि०) विशेष कर, खास तौर से, अत्यन्त [illegible] सविशेषमद्य मे त्रिदशेसार प्रतिभाति मामिनि कु० ५।३८ प्रायः समास में कु० ६।४७ रघु० १६।५३)।

सविस्तर (वि०) [सह विस्तरेण—ब० स०] विवरण सहित, सूक्ष्म [illegible] —**रम्** (अव्य०) विवरण के साथ विस्तार पूर्वक।

सविस्मय (वि०) [सह विस्मयेन ब० स०] आश्चर्या[illegible] [illegible] से युक्त चकित।

सवृद्धिक (वि०) [सह वृद्ध्या ब० स० कप्] जिसका ब्याज [illegible] ब्याज से युक्त।

सवेश (वि०) [सह वेशेन ब० स०] 1 सजा हुआ, अलंकृत वस्त्राभूषणों से युक्त 2 निकट, समीपवर्ती।

सव्य (वि०) [सु+य] 1 बायां, बायीं हाथ 2 दक्षिणी 3 [illegible] पिछड़ा हुआ उल्टा 4 सही —**व्यम्** (अव्य०) [illegible] कर बायें कंधे पर लटकते रहना [illegible] अपसव्य, सम० —**इतर** (वि०) सही ठीक —**साचिन्** (पुं०) अर्जुन का विशेषण, निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् —भग० ११।३३ (महाभारत में [illegible] की व्याख्या निम्नांकित है उभौ मे दक्षिणौ [illegible] गाण्डीवस्य विकर्षणे । तेन देवमनुष्येषु सव्य सारमीति मां विदुः ॥)।

सव्यपेक्ष (वि०) [व्यपेक्षया सह ब० स०] [illegible] [illegible] [illegible]व्यपेक्षश्चेति विप्रतिषिद्धमेतत् मा० १ उ० ६।

सव्यभिचार [सह व्यभिचारेण ब० स०] (न्या० में) [illegible] पांच [illegible] हेत्वाभास में से एक [illegible] [illegible] अवस्था के लिए है, अनैकान्तिक।

सव्याज (वि०) [सह व्याजेन ब० स०] 1 [illegible] 2 [illegible] मिथ्या [illegible]

सव्यापार (वि०) [illegible] ब० स० [illegible] [illegible]

सव्रीड (वि०) [व्रीडया सह ब० स०] 1 [illegible] लज्जाशील शर्मिला।

सव्येष्ठ (पुं०) [सव्येष्ठा, सव्य [illegible]—सव्ये+स्था [illegible] अलुक स० [illegible]] सारथि, रथ हांकने वाला।

सशल्य (वि०) [सह शल्येन—ब० स०] 1 कांटेदार 2 बर्छी या कांटों से बिधा हुआ।

सशस्य (वि०) [सहशस्येन—ब० स०] सस्य से युक्त, अशोपावक—**स्या** सूर्यमुखी फूल का एक भेद।

सश्मश्रु (वि०) [सह श्मश्रुणा—ब० स०] दाढ़ी-मूंछ वाला, स्त्री० वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूंछ दिखाई दे।

सश्रीक (वि०) [श्रिया सह—ब० स०, कप्] 1 समृद्धिशाली, सौभाग्यशाली 2 प्रिय, सुन्दर।

सस् (अदा० पर० सस्ति) सोना।

ससत्त्व (वि०) [सह सत्त्वेन—ब०स०] 1 जीवन शक्ति से युक्त, ऊर्जस्वी, बलवान्, साहसी 2 गर्भवती,—त्वा गर्भवती स्त्री।

ससन्देह (वि०) [सह सन्देहेन—ब० स०] संदिग्ध,—हः एक अलंकार का नाम दे० सन्देह।

ससनम् [सस्+ल्युट्] यज्ञ में पशुओं का वध।

ससन्ध्य (वि०) [सन्ध्यया सह—ब० स०] सन्ध्यावर्ती सायंकालीन।

ससाध्वस (वि०) [सह साध्वसेन—ब० स०] आतंकित, डरा हुआ, भीरु।

सस्जु दे० सज्ज्।

सस्यम् [सस्+यत्] 1 अनाज, अन्न (खेतीगत) धान्य, पृथ्वी के प्रति पुत्रवत् यत्नपूर्वक प्राणिनां सस्यानीव भूमिः ... मनु० ... दे० 'शस्य' भी 2 किसी भी पौधे का फल 3 शस्त्र 4 सद्गुण, खूबी। सम० **इष्टि** (स्त्री०) फसल पक जाने पर नये अन्न से किया जाने वाला यज्ञ,—**घ्न** (वि०) उपजाऊ,—**मारिन्** (वि०) अन्न को नष्ट करने वाला, (पुं०) एक प्रकार का चूहा, घूस,—**संवरः** साल का पेड़।

सस्यक (वि०) [सस्य+कन्] अच्छे गुणों से युक्त, गुणान्वित, श्लाघ्य, प्रशंसनीय,—**कः** 1 तलवार 2 शस्त्र 3 एक प्रकार का मूल्यवान पत्थर।

सस्वेद (वि०) [सह स्वेदेन—ब० स०] पसीने से तर प्रस्विन्न,—**दा** वह कन्या जिसका हाल में ही कौमार्य भंग हुआ हो।

सह् I (दिवा० पर० सह्यति) 1 सन्तुष्ट करना 2 प्रसन्न होना 3 सहन करना, झेलना।

II (भ्वा० आ०—सहते, साढ नि, परि, वि आदि इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सह के स को मूर्धन्य ष हो जाता है यदि सह् के ह का ढ नहीं हुआ) (क) झेलना, सहन करना, भुगतना, दम लाना—...स्त्यानाः मात्रा... भर्तृ० ... पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः कु० ५।४ इसी प्रकार दुःखं क्लेशं आदि रघु० ... ११।५... भट्टि० ... (ख) 1 सहन करना, अनुमति देना—प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयोऽपि सहते ... [illegible] ... २१, वेणी० ..., रघु० १४।६३ 2 क्षमा करना, सहना,—... [illegible] ... कि० ... भग० ... 3 प्रतीक्षा करना, सहन करना ... [illegible] ... रघु० ... ... 4 वहन करना, सहारा देना, ... [illegible] ... 5 सामना करना, विरोध करना, मुकाबला करना 6. दबाना, रोकना 7 योग्य होना (तुम के साथ), प्रेर० (साहयति—ते) 1 धारण करवाना, भुगतवाना 2 धारण करने या सहारा देने के योग्य बनाना ... [illegible] ... इच्छा० (सिसहिषते) सहन करने की इच्छा करना, **उद्**—1 योग्य होना, शक्ति या सामर्थ्य रखना, साहस करना, हिम्मत दिखाना ... [illegible] ... कु० ... मैं सहन नहीं कर सका ... भट्टि० ३। ... [illegible] ... 2 (क) प्रयास करना ... [illegible] ... भट्टि० ... 3 आरम्भ में होना कु० ... 4 आगे बढ़ना, प्रयाण करना ... [illegible] ... भट्टि० ... **परि**—... भट्टि० ... **प्र**—1 सहन करना ... [illegible] ... 2 सामना करना, मुकाबला करना, टक्कर लेना ... [illegible] ... कु० ... 3 ... करना, ... करना 4 योग्य होना 5 शक्ति या ऊर्जा रखना—दे० प्रसह **वि**—1 सहन करना ... रघु० ... 2 मुकाबला करना, सामना करना, ... [illegible] ... 3 योग्य होना 4 अनुमति देना 5 इच्छा करना, पसन्द करना।

सह (वि०) [सह्+अच्] 1 सहन करने वाला ... [illegible] ... 2 धीर 3 योग्य ... [illegible] ... सामर्थ्य।

सह (अव्य०) 1 के साथ, मिलकर, साथ-साथ, सहित, से युक्त (करण० के साथ) ... [illegible] ... कौमुदी ... कु० ... 2 साथ मिलकर, एक ही समय ... [illegible] ... सम० —**अध्यायिन्** (पुं०) सहपाठी,—**अर्थ** (वि०) समानार्थक (र्थः) समान अर्थ ... [illegible] ...—**उक्तिः** (स्त्री०) अलंकारशास्त्र में एक अलंकार का नाम ... [illegible] ... काव्य० १०, उदा० ... रघु० ... **उटजः** पर्णकुटी,—**उदर** ... विक्रमांक० ... [illegible] ... **ऊढ**, **ऊढज**, विवाह के समय ... [illegible] ... (हिन्दूधर्मशास्त्रों में ... [illegible] ...) **कार** ... [illegible] ... (रः) 1 ... 2 ... [illegible] ...—**कारिन्**, **कृत्** (वि०) सहयोग

देने वाला (पुं०) सहयोगी सहकारी, सहकर्मी —कृत (वि०) सहयोग दिया हुआ या सहायताप्राप्त

गमनम् 1 साथ जाना 2 किसी स्त्री का अपने मृत पति के शरीर के साथ जलना, विधवा का सती होना —चर (वि०) साथ जाने वाला, साथ रहने वाला उत्तर० ३।८ (र) 1 साथी मित्र सहभागी 2 [illegible] 3 प्रतिभू (स्त्री० री) 1 सहेली 2 पत्नी सती

चरित (वि०) साथ रहने वाला सेवा में उपस्थित रहने वाला साथ देने वाला —चार 1 साथ रहना 2 सहमति सामञ्जस्य 3 (तर्क० म) हेतु के साथ साध्य का अनिवार्य साथ रहना —चारिन् दे० सहचर, —ज (वि०) 1 अन्तर्जात स्वाभाविक [illegible] 2 आनुवंशिक (ज) 1 सगा भाई 2 नैसर्गिक स्थिति या वृत्ति, —मित्रम् नैसर्गिक दोस्त —जात (वि०) प्राकृतिक दे० सहज —दार (वि०) 1 सपत्नीक 2 विवाहित —देव पांडवों का कनिष्ठ भ्राता नकुल का जुड़वां भाई जो अश्विनीकुमारों की कृपा से माद्री के पेट से उत्पन्न हुआ, यह मानव सौन्दर्य का एक आदर्श माना जाता है, —धर्म समान कर्तव्य —धर्मिन् (पुं०) पति °धर्मिणी 1 धर्मपत्नी, वैध पत्नी 2 सहधर्मी —पांशुक्रीडित, —पांशुकिल (पुं०) सखा बचपन का मित्र [illegible] —पायिन् (पुं०) मित्र हिमायती अनुयायी —भू (वि०) नैसर्गिक सहजात रत्न० १।४ —भोजनम् मित्रों के साथ बैठ कर भोजन करना —मरणम् दे० सहगमन —युध्वन् सखा साथी (युद्ध में साथ देने वाला) —वसति वास मिलकर रहना —सहधर्मचारिणी [illegible] कृत इव सुखविला- किनोपदेशा [illegible] ।

सहता, —त्वम् [सह + तल् + टाप्, त्व वा] मिलाप साहचर्य ।

सहन (वि०) [सह् + ल्युट्] सहन करने वाला, जनन वाला —नम् 1 सहन करना, झेलना 2 सहिष्णुता सहनशीलता ।

सहस् (पुं०) [सह् + असुन्] 1 मार्गशिर का महीना शि० ६।६७ १६।७७ 2 [illegible] —न० 1 शक्ति ताकत सामर्थ्य 2 बल, हिंसा 3 विजय, जय 4 कान्ति, चमक ।

सहसा [सह + सो + आ] 1 बलपूर्वक, जबरदस्ती 2 उतावली के साथ, अविमृश्य बिना विचारे सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३० 2 अकस्मात् अचानक मारुतसख सहसोत्पतिष्णु रघु० १३।११ ।

सहस्रान्त [सह + अमानत] 1 भार 2 [illegible] आवृत्ति ।

सहस्यः [सहसे बलाय हितः सहस् + यत्] पौष मास सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा कु० ५।२६ ।

सहस्रम् [समानं हसति — हस् + र] हजार । सम० —अंशु, —अर्चिस्, —कर, —किरण, —दीधिति, —धामन्, —पाद, —मरीचि, —रश्मि (पुं) सूर्य—श० ७।४ रघु० १३।४८, मुद्रा० ६।१३ —अक्ष (वि०) 1 हजार आंखों वाला 2 जागरूक सतर्क (क्षः) 1 इन्द्र का विशेषण पुरुष का विशेषण ऋक्० १०।९० 3 विष्णु का विशेषण —कृत्वस् (अव्य०) हजार बार —द (वि०) उदार —पत्र कमल —पाद विष्णु का [illegible] रघु० ७।११ —बाहु 1 राजा [illegible] 2 बाण राक्षस का विशेषण [illegible] (कथा के अनुसार विष्णु का), विशेषण —मूर्धन् —मौलि पुं० विष्णु का विशेषण —वेधिन् (पुं०) [illegible] —शीर्ष [illegible] विष्णु का विशेषण ।

सहस्रधा (अव्य०) सहस्र + धाच् हजार भागों में हजार प्रकार से दीर्णं [illegible] सहस्रधात्मयशसा रामेण कि [illegible] उत्तर० ६।४० ।

सहस्रशस् (अव्य०) सहस्र — शस् । हजार-हजार करके ।

सहस्रिन् (वि) [सहस्र + इनि] 1 हजार से युक्त हजारी सहस्रिणी [illegible]—पंच० [illegible] 2 हजारों से युक्त 3 हजार तक (जुरमाना आदि)—मनु० ८।३३६ पुं० 1 हजार मनुष्यों की टोली 2 हजार सैनिकों का सेनापति ।

सहस्वत् (वि०) [सहस् + मतुप्] समर्थ शक्तिशाली ।

सहा [सह् + अच् + टाप्] 1 पृथ्वी 2 घीकुवार का पौधा कटसरैया का पौधा [illegible]

सहाय [सह एति—सह + इ + अच्] 1 मित्र साथी—सहाय- साध्या प्रदिशन्ति सिद्धय —कि० १४।४४ कु० ३।२१ 2 अनुयायी अनुगामी 3 सन्धि द्वारा बनाया गया मित्र 4 सहायक अभिभावक 5 चकवाक 6 एक प्रकार का गन्धद्रव्य 7 शिव का नाम ।

सहायता —त्वम् [सहाय + तल् + टाप् त्व वा] 1 साथियों का समूह 2 साथ मिलाप मैत्री 3 सहायता मदद [illegible] बहुधा सौम्य गतस्त्वमायतो कु० ४।३५ रघु० ९।१९

सहायवत् (वि०) [सहाय + मतुप्] 1 मित्रों से युक्त 2 मित्रों से आवृत्त सहायवान सहायता प्राप्त ।

सहार [सह् + घञ्] 1 आम का पेड़ 2 विश्व का [illegible] ।

सहित (वि०) [सह + इतच्, सह [illegible] हित] सह वा [illegible] सहगत या सेवित साथ-साथ संयुक्त [illegible] सहित [illegible] [illegible] रघु० ८।४ —तम् (अव्य०) साथ-साथ के साथ ।

सहितृ (वि०) [सह् + तृच्] सहन करने वाला, सहनशील सहिष्णु।

सहिष्णु (वि०) [सह् + इष्णुच्] 1 सहन करने के योग्य, झेलने में समर्थ—रविकिरणसहिष्णु क्लेशलेशैरभिन्नम् —श० २।४ 2 क्षमाशील, तितिक्षु, सहनशील सुकरस्तरुवत्सहिष्णुना रिपुरुन्मूलयितुं महानपि —कि० २।५०।

सहिष्णुता, —त्वम् [सहिष्णु + तल् + टाप्, त्व वा] 1 सहन करने की शक्ति, सहारा देने की शक्ति 2 क्षमाशीलता, तितिक्षा।

सहुरि [सह + उरिन्] सूर्य, स्त्री० पृथ्वी।

सहृदय (वि०) [सह हृदयेन—ब० स०] 1 अच्छे हृदय वाला, कृपालु, करुणाशील 2 निष्कपट, —यः 1 विद्वान् पुरुष 2 (गुणों की) सराहना करने वाला रसिक, विवेकशील इत्युद्देश एवं सहृदयस्य च करोति काव्य० १ परिस्फुरन्ति सहृदयधुरीणा कतिपये रस०।

सहृल्लेख (वि०) [हृदयस्य लेखः कालुष्यकरणम्, सह हृल्लेखेन—ब० स०] प्रष्टव्य सदिग्ध —खम् दूषित आहार।

सहेल (वि०) [सह हेलेन —ब० स०] क्रीडाशील केलि परक, विनोदप्रिय।

सहोढ: [सह ऊढेन—ब० स०] चुराये गये सामान के साथ पकड़ा गया चोर।

सहोर (वि) [सह + ओर] अच्छा, श्रेष्ठ, —रः सन्त, महात्मा।

सह्य (वि०) [सह् + यत्] 1 सहन करने के योग्य, सहारा दिये जाने के योग्य, सहन करने योग्य ... शिरोवेदना मुद्रा० ५ मालवि० ३।८ 2 सहन किये जाने योग्य, झेले जाने योग्य ... निरवधिरिदानीं ... 3 सहन करने योग्य 4 सहन करने में समर्थ, सहन करने के योग्य 5 समान ... —ह्यः ... भारत की सात प्रधान पर्वतश्रेणियों में से एक ... पर पश्चिमी घाट का कुछ भाग ... —४।५२ कि० १८।५ —ह्यम् 1 स्वास्थ्य ... 2 सहायता 3 पर्याप्तता ...।

सा [सो + ड + टाप्] 1 लक्ष्मी का नाम 2 पार्वती का नाम।

सांयात्रिक: [संयात्रा + ठञ्] समुद्र-व्यापारी, पोतवणिक, समुद्री व्यापार करने वाला पञ्च० १।११६।

सांयुगीन (वि०) [संयुगे साधु —खञ्] युद्धसबंधी, रण कुशल रघु० ११।३० विक्रम० ५ —नः भारी योद्धा, युद्धकुशल सैनिक —कु० २।५७।

सांराविणम् [सम् + रु + णिनि, संराविन् + अण्] ऊँची आवाज, भारी कोलाहल —उत्ताला कटपूतनाप्रभृतय सांराविणं कुर्वते —मा० ५।११, भट्टि० ७।४३।

सांवत्सर (स्त्री० री) **सांवत्सरिक** (स्त्री० —की) (वि०) [संवत्सर + अण्, ठञ् वा] वार्षिक ... का ज्योतिषी, दैवज्ञ।

सांवादिक (वि०) (स्त्री० —की) [संवाद + ठञ्] 1 (बोलचाल में) प्रचलित 2 विवादग्रस्त —कः तार्किक, नैयायिक।

सांवृत्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [संवृत्ति + ठक्] भ्रामक, अलौकिक (घटना या तत्त्वविषयक)।

सांशयिक (वि०) (स्त्री० —की) [संशय + ठक्] 1 सन्दिग्ध 2 अनिश्चित, अस्थिरमति।

सांसारिक (वि०) (स्त्री० —की) [संसार + ठक्] दुनियावी, लौकिक, सांसारिकेषु च सुखेषु वयं ... —उत्तर० २ ...।

सांसिद्धिक (वि०) [संसिद्धि + ठञ्] 1 प्राकृतिक, स्वतः विद्यमान, सहज, अन्तर्हित 2 स्वभावतः, प्रकृत, स्वतः स्फूर्त 3 स्वयंभू 4 अतिप्राकृतिक साधना से प्राप्त ...। सम० —द्रवः स्वाभाविक तरलता (विप० नैमित्तिक ...)।

सांस्थानिक [संस्थान + ठक्] समानदेशीय, एक ही देश के निवासी।

सांस्राविणम् [सम् + स्रु + णिनि + अण्] सामान्य प्रवाह या सरिता।

सांहननिक (वि०) (स्त्री० —की) [संहनन + ठक्] शारीरिक, कायिक।

साकम् (अव्य०) [सह अकति ... अम्, सादेशः] 1 ... साथ ... गुरुजनैः साकं ... नातिवृत्ता भामि० १।३० ... 2 ... एक ही समय।

साकल्यम् [सकल + ष्यञ्] समष्टि, सम्पूर्णता ... (साकल्येन) ... पूर्ण रूप से ...।

साकूत (वि०) [सह आकूतेन —ब० स०] 1 साभिप्राय ... भावाभिप्राय गीत० २ साकूत ... आदि 2 सप्रयोजन 3 शृंगार प्रिय स्वेच्छाचारी —तम् (अव्य०) 1 अर्थत सार्थकतापूर्वक जैसा कि साकूत या निर्बन्ध में 2 सानुराग 3 भावुकता के साथ, सार्थकतापूर्वक।

साकेतम् [सह आकेतेन —ब० स०] अयोध्या नगरी का नाम साकेतनार्योऽञ्जलिभिः प्रणेमुः रघु० १४।१३ १३।७९, १८।३५, अरुणद्यवनः साकेतम् महा० —ताः (पु०, ब० व०) अयोध्या निवासी।

साकेतक. [साकेत+कन्] अयोध्या का निवासी।

साक्तुकम् [सक्तूनां समाहारः सक्तु+ठञ्] भुने हुए अन्न या सत्तू का ढेर — जौ।

साक्षात् (अव्य०) [सह+अक्ष+आति] 1 के सामने, आँखों के सामने, दृश्य रूप से, हूबहू, स्पष्ट रूप से 2 व्यक्तिशः, वस्तुतः, मूर्तरूप में — साक्षात्प्रियामुपगतामपहाय पूर्वम् श० ६।१९ ।१६ 3 प्रत्यक्ष (समास में प्राय: शरीरी) साक्षाद्धर्म या लक्ष्मी सीधा — साक्षात्कार्यप्रतिबंधः कारणाय मा० १।११ (साक्षात्कृ अपनी आँखों से देखना, स्वयं ज्ञान लेना)। सम० — **करणम्** 1 दृष्टिगोचर करना 2 इन्द्रियग्राह्य बनाना 3 अन्तर्ज्ञानमूलक प्रत्यक्षज्ञान — **कारः** प्रत्यक्ष ज्ञान, सम० आपकारिन्।

साक्षिन् (वि०) (स्त्री० — णी) [सह अक्षि अस्य, साक्षाद् द्रष्टा साक्षी वा, सह+अक्ष+इनि] 1 देखने वाला, अवलोकन करने वाला, सबूत देने वाला, पुं० गवाह, अवेक्षक, चश्मदीद गवाह, आँखों देखा बात बताने वाला — फलमस्य साक्षिणः द्रष्टुमर्हसि कु० ५।६० ।

साक्ष्यम् [साक्षिन्+ष्यञ्] 1 गवाही, शहादत, सबूत — साक्ष्यं विवाहसमाश्रयः रघु० ७।२० 2 अभिप्रमाण, सत्यापन।

साक्षेप (वि०) [सह आक्षेपेण ब० स०] जिसमें आक्षेप या व्यंग्य भरा हो, दुर्वचनयुक्त।

साखेय (वि०) (स्त्री० — यी) [सखि+ढञ्] 1 मित्र सबंधी 2 मैत्रीपूर्ण, सौहार्दपूर्ण।

साख्यम् [सखि+ष्यञ्] मित्रता, सौहार्द।

सागर [सगरेण निर्वृत्त: — अण्] 1 समुद्र, उदधि — सागर सागरोपम (अनन्य सा म्य) सागर विद्यासागर आदि 2 सागर 2 चार या सात की संख्या 3 एक प्रकार का हरिण। सम० अनुकूल (वि०) समुद्र के किनारे स्थित — अन्त (वि०) समुद्र की सीमा से युक्त, जिसके चारों ओर समुद्र आता है — अम्बरा भूमि, पृथ्वी — आलय वरुण का नाम, उत्थम, समुद्रगामिनी गंगा, — गामिनी नदी।

साग्नि (वि०) [सह अग्निना ब० स०] 1 अग्नि सहित 2 यज्ञाग्नि रखने वाला।

साग्निक (वि०) [सह अग्निना ब० स० कप्] 1 यज्ञाग्नि रखने वाला 2 अग्नि से संबद्ध — कः यज्ञाग्नि रखने वाला गृहस्थ।

साग्र (वि०) [सह अग्रेण ब० स०] 1 समस्त 2 अतिरिक्त मात्रा अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला।

साङ्कर्यम् [संकर+ष्यञ्] मिश्रण, सम्मिश्रण, गड़बड़ किया हुआ या मिलाया हुआ घोल।

साङ्कल्प (वि०) (स्त्री० — ल्पी) [संकल्प+अण्] जोड़ या संकलन से उत्पन्न।

साङ्काश्यम्, इक्ष्वाकु जनक के भ्राता कुशध्वज की राजधानी का नाम।

साङ्केतिक (वि०) (स्त्री० — की) [संकेत+ठक्] 1 प्रतीकात्मक, संकेतपरक 2 व्यवहार सिद्ध, रीत्यनुसार।

साङ्क्षेपिक (वि०) (स्त्री० — की) [संक्षेप+ठक्] संक्षिप्त, संकुचित, छोटा किया हुआ।

साङ्ख्य (वि०) [संख्या+अण्] 1 संख्या संबंधी 2 आकलन कर्ता, गणक 3 विवेचक 4 विचारक, तार्किक, तर्क कर्ता — एष निष्ठा सर्वसांख्यानां योगिनां च परायणम् महा० — ख्यः — ख्यम् छः हिन्दू दर्शनों में से एक जिसके प्रणेता कपिल मुनि माने जाते हैं (इस शास्त्र का नाम सांख्य दर्शन इसलिए पड़ा कि इसमें पच्चीस तत्त्व या सत्य सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है, इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य पच्चीसवें तत्त्व अर्थात् पुरुष या आत्मा — का अन्य चौबीस तत्त्वों के शुद्ध ज्ञान द्वारा तथा आत्मा को उनसे समुचित भिन्नता दर्शाकर उसे सांसारिक बंधनों से मुक्त कराना है। सांख्य शास्त्र समस्त विश्व को निर्जीव प्रधान या प्रकृति का विकास मानता है, जब कि पुरुष (आत्मा) सर्वथा निर्लिप्त एक निष्क्रिय दर्शक है। सत्त्वैकत्वात्मक दृश्य के कारण वेदान्त से इसकी समानता तथा [illegible]परक न्याय और वैशेषिक से भिन्नता कही जाती है। परन्तु वेदान्त से भिन्नता की सब से बड़ी बात यह है कि सांख्य शास्त्र द्वैत सिद्धान्तों का समर्थक है, इसको वेदान्त नहीं मानता। इसके अतिरिक्त सांख्यदर्शन परमात्मा को विश्व के स्रष्टा और नियन्त्रक के रूप में नहीं मानता जिसकी कि वेदान्त पुष्टि करता है) — ख्यः सांख्य शास्त्र का अनुयायी भग० ३।५, ५।११। सम० प्रसाद:, मुख्य शिव के विशेषण।

साङ्ग (वि०) [सह अङ्गैः ब० स०] 1 अंगों सहित 2 प्रत्येक भाग से पूर्ण 3 सहायक अंगों से युक्त।

साङ्गतिक (वि०) (स्त्री० — की) [संगति+ठक्] समाज या संघ से संबंध रखने वाला, साहचर्यशील — कः दर्शक, अतिथि, नवागन्तुक।

साङ्गम [संगम+अण्] मिलाप, मिलन, तु० संगम्।

साङ्ग्रामिक (वि०) (स्त्री० — की) [संग्राम+ठञ्] युद्ध संबंधी, योद्धा, जंगजू, सैनिक, सामरिक — उत्तर० ५।१२ — कः सेनाध्यक्ष, सेनापति।

साचि (अव्य०) [सच्+इण्] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, तिर्यक् वक्रगति से, टेढ़े-टेढ़े — साचि लोचनयुगं नमयन्ती कि० ९।४४ १०।५७ (साचीकृ मोड़ना, एक ओर झुकाना, टेढ़ा करना — निनाय साचीकृतचारुवक्त्रः रघु० ६।१४, कु० ३।८, साचीकरोत्याननम् गीत० ४।१४।

साचिव्यम् [सचिव+ष्यञ्] 1 मंत्रालय, मंत्रित्व 2 मंत्रि-मंडल, प्रशासन 3 मैत्री ।

साजात्यम् [सजाति+ष्यञ्] 1 जाति की समानता, वर्ग, श्रेणी या प्रकार की समानता 2 जाति का समुदाय, समजातीयता ।

साञ्जनः [सह अञ्जनेन ब० स०] छिपकली ।

साट् (चुरा० उभ० साटयति–ते) बतलाना, प्रकट करना ।

साटोप (वि०) [सह आटोपेन– ब० स०] 1. घमंड में भरा या फूला हुआ, अहङ्कारी 2 गौरवशाली शानदार 3 उभरा हुआ, बढ़ा हुआ (जैसे पानी से) पंच० १, –पम् घमंड के साथ हेकड़ी के साथ, अकड़ कर इठला कर, रौब से ।

सात् (अव्य०) तद्धित का एक प्रत्यय जो किसी शब्द के साथ इसलिए जोड़ा जाता है कि शब्द से अभिहित वस्तु के साथ किसी वस्तु का पूर्ण परिवर्तन हो जाता है, या वह वस्तु पूर्ण रूप से तदधीन या उसके नियन्त्रण में हो जाती है, भस्मसात् भू बिल्कुल राख बन जाना, अग्निसात् कृत्वा मार्क० ५, भस्मसात्कृत-वतः पितृद्विषः पात्रसाच्च वसुधां ससागराम् – रघु० ११।८६, विभज्य नक्तं सर्वविसात्कृतः नै० १।१६ इसी प्रकार ब्राह्मणसात्, राजसात् आदि० शि० १४।३६ ।

सातत्यम् [सतत+ष्यञ्] निरन्तरता, स्थायित्व ।

सातिः (स्त्री०) [सन्+क्तिन्] 1 भेंट, उपहार, दान 2. प्राप्त करना, हासिल करना 3. सहायता 4 विनाश 5 अन्त, उपसंहार 6. तेज या तीव्र वेदना ।

सातीनः, सातीनकः [सतीन+अण्, सातीन+कन्] मटर ।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०–की) [सत्त्व+ठञ्] 1 वास्तविक, आवश्यक 2 सत्य असली, प्राकृतिक 3 ईमानदार निष्कपट अच्छा 4 सद्गुणी, मिलनसार 5 बलशाली 6 सत्त्वगुण से युक्त 7 सत्त्वगुण से संबद्ध या उत्पन्न–ये च सात्त्विका भावाः –भग० ७।१२, १८।१९ 8 आन्तरिक भावनाओं से उत्पन्न (जैसे प्रेम आदि से) आन्तरिक तद्भूरिसात्त्विकविकारम् पास्तधैर्यमाचार्यक विजयि मान्मथमाविरासीत् मा० १।२६, –कः (आन्तरिक) भावनाओं या संवेगों का बाह्य संकेत काव्य में भावों का एक प्रकार (भाव आठ हैं : स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ॥ –सा० द० १६६ 2 ब्राह्मण 3 ब्रह्मा ।

सात्यकिः [सत्यक+इञ्] यदुवंशी योद्धा जो कृष्ण का सारथि था तथा जिसने महाभारत के युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लिया ।

सात्यवतः, सात्यवतेयः [सत्यवती+अण्, ढक् वा] व्यास मुनि का मातृपरक नाम ।

सात्वत् (पुं०) [सातयति सुखयति–सात्+क्विप्, सात् परमेश्वरः, स उपास्यत्वेन अस्ति अस्य–सात्+मतुप्, मस्य वः] (कृष्ण आदि का) अनुयायी, उपासक ।

सात्वतः (पुं०) 1 विष्णु का नाम 2 बलराम का नाम 3 जाति से बहिष्कृत वैश्य का पुत्र, –ताः (पुं०, ब० व०) एक जाति का नाम शि० १६।१४ ।

सात्वती (स्त्री०) 1 चार प्रकार की नाट्यशैलियों में से एक द० सा० द० ४१६ 2 शिशुपाल की माता का नाम शि० २।११ ।

सादः [सद्+घञ्] 1 बैठना बसना 2 क्लान्ति, थकावट उद्गाढमादमतिवेपथुमत् शि० ९।७३ 3 क्षीणता दुबलापतलापन कृशता–शरीरसादा-दसमग्रभूषणा रघु० ३।२ 4 ध्वंस क्षय नाश विनाश, विश्रान्ति गतिविभ्रमसादनीरवा – रघु० ८।५६, महावी० ३।२४ 5 पीड़ा संताप 6 स्वच्छता, पवित्रता ।

सादनम् [सद्+णिच्+ल्युट्] 1 थकाना क्लान्त करना 2 नष्ट करना 3 थकावट, क्लान्ति 4 घर, निवास स्थान ।

सादिः [सद्+इण्] 1 सारथि रथवान् 2 योद्धा ।

सादिन् (वि०) [सद्+णिच्+णिनि] 1 बैठा हुआ 2 थकाने वाला, नष्ट करने वाला, –पुं० 1 घुड़सवार 2 हाथी पर सवार या रथ में बैठा हुआ ।

सादृश्यम् [सदृश+ष्यञ्] 1 समानता मिलना-जुलना-पन समरूपता मति पुनर्लापमेयसादृश्यानि श० ७ तथाऽप्यभादृश्यमिव प्रयुज्यते कु० ५।३५, ७।१९ रघु० १।४० १५।६७ 2 प्रतिलिपि आलोकचित्र प्रतिमा मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती मेघ० ८४ ।

साद्यन्त (वि०) [सह आद्यन्ताभ्याम् ब० स०] पूरा, समस्त ।

साद्यस्क (वि०) (स्त्री०–स्की) [सद्यस्क+अण्] शीघ्र होने वाला जिसमें विलंब न हो ।

साध् I (स्वा० पर० साध्नोति) 1 पूरा करना, समाप्त करना सफल करना 2 जीतना ।

II (दिवा० पर० साध्यति) पूरा किया जाना, निष्पन्न किया जाना प्रेर० 1 निष्पन्न करना कार्यान्वित करना घटित करना सम्पन्न करना अपि साधय साधयेप्सितम् नै० २।६२, कु० ७।३३, रघु० ५।२५ 2 पूरा करना, समाप्त करना, उपसंहार करना 3 उपलब्ध करना, प्राप्त करना, पाना रघु० १७।३८, मनु० ६।७५ 4 साबित करना, सिद्ध करना 5 दमन करना, पराजित करना, जीतना (शत्रु आदि का), वश में करना –न हि साम्ना न दानेन न भेदेन च पाण्डवाः शक्याः साधयितुम् महा० 6 मार

डालना, नष्ट करना — सुग्रीवान्तकमासेदुः साधयिष्याम इत्यरिम् भट्टि० ७।३१ 7 समझना, मानना 8 चिकित्सा करना स्वस्थ करना 9 जाना, अन्दर आना आगे रास्ता लगाना — साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते—रघु० ११।९१, श० १।७—प्रायेण ध्यानेक साधिर्नमर्थं प्रयुज्यते—मा० द० २।४० 10 (ऋण की भांति) उगाहना 11 पूरा कर देना प्र—(प्रेर०) 1 आगे बढ़ना उन्नति करना 2 निष्पन्न करना कार्यान्वित करना 3 उपलब्ध करना प्राप्त करना 4 पराभूत करना दबाना 5 वस्त्र धारण करना सजाना सम् 1 सफल होना (आ०) 2 निष्पन्न करना पूरा करना — मनु० २।१०० 3 सुरक्षित करना प्राप्त करना 4 बस आना 5 पुनः प्राप्त करना मनु० ८।५० 6 तय किया जाना या चुकता किया जाना मनु० ८।२१३ 7 नष्ट करना मार डालना 8 बुझाना।

साधक (वि०) (स्त्री०—धका —धिका) [साध् + ण्वुल्, सिध् + णिच् + ण्वुल् साधादेश वा] 1 संपन्न करने वाला, पूरा करने वाला कार्यान्वित करने वाला पूर्ण करने वाला 2 दक्ष, प्रभावशाली—कु० ३।१२ 3 कुशल, निपुण 4 जादू से कार्य में परिणत करने वाला, ऐन्द्रजालिक 5 सहायक मददगार।

साधन (वि०) (स्त्री० —नी) [सिध् + णिच् + ल्युट्, साधादेश] निष्पन्न करने वाला कार्यान्वित करने वाला, —नम् 1 निष्पन्न करना कार्यान्वित करना अनुष्ठान करना जैसा कि 'स्वार्थसाधनम्' में 2 पूरा करना, सम्पन्नता किसी पदार्थ की पूर्ण अवाप्ति — प्रजार्थ साधने तौ हि पर्यायोद्यतकार्मुकौ रघु० ४।१६ 3 उपाय तरकीब किसी कार्य को सम्पन्न करने की तदबीर — शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् —कु० ५।३३ ५२ रघु० १।१९ ३।१० ४।३६ ६२ 4 उपकरण अभिकर्ता, कुठार छिदिक्रियासाधनम् 5 निमित्त कारण, स्रोत सामान्य हेतु 6 करण कारक 7. उपकरण, औजार 8 यन्त्र, सामग्री 9 मूल पदार्थ संघटक तत्त्व 10 सेना या उसका अंग मनु० ५।१० 11 सहायता मदद सहारा 12 प्रमाण सिद्ध करना प्रदर्शन करना 13 अनुमान की प्रकिया में हेतु कारण जो हमें किसी परिणाम पर पहुँचाये—साध्ये निश्चितमन्वयेन घटित बिभ्रत् सपक्षे स्थितिं व्यावृत्तं च विपक्षतो भवति यत्तत्साधनं सिद्धये मुद्रा० ५।१० 14 दमन करना जीत लेना 15 जादूमन्त्र से वश में करना 16 जादू या मन्त्र से किसी कार्य को निष्पन्न करना 17. स्वस्थ करना चिकित्सा करना 18 वध करना विनाश करना — ... कि० १०।१७ 19 संराधन प्रसादन तुष्टीकरण 20 बाहर जाना, कूच करना, प्रस्थान 21 अनुगमन पीछे चलना 22 साधना, तपस्या 23 मोक्ष प्राप्त करना 24 औषधि निर्माण, भेषज जड़ी-बूटी 25 (विधि में) ऋण आदि की प्राप्ति के लिए आदेश, जुर्माना करना 26 शरीर का कोई अवयव 27 शिश्न लिंग 28 योनि 29 दौलत 30 मैत्री 31 लाभ, फायदा 32 शव की दाह क्रिया 33 मृतकसंस्कार 34 धातुओं का मारण या जारण। सम० —क्रिया समापिका क्रिया, —पत्रम् लिखित प्रमाण।

साधनता,—त्वम् [साधन + तल् + टाप्, त्व वा] उपायवत्ता, उद्देश्यपूर्ति का जरिया होना — प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता कि० ९।६।

साधना [सिध् + णिच् + युच् + टाप् साधादेश] 1 निष्पन्न करना पूरा करना पूर्ति 2 पूजा अर्चा 3 संराधन, प्रसादन।

साधन्त [साध + झच्, अन्तादेश] भिक्षुक भिखारी।

साधर्म्यम् [सधर्म + ष्यञ्] 1 समानता कर्तव्य की एकता समानधर्मता —पञ्चम लोकपालानामूचुः साधर्म्ययोगतः रघु० १७।७८ 2 प्रकृति की समानता, समान चरित्र, समता, गुणों की समानता — साधर्म्यमुपमा भेदे काव्य० १०, चन्द्रा० १४।२, भाषा० १२।

साधारण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [सह धारणया—ब० स० सधारण + अण्] 1 (दो या दो से अधिक अर्थों में) समान, संयुक्त — साधारणोऽयं प्रणयः—श० ३, साधारणो भूषणभूष्यभावः—कु० १।४२, रघु० १६।५, विक्रम० २।१६ 2 मामूली सामान्य — साधारणी न खलु वाचा मयस्य—श० १, 3 सार्वजनिक विश्वव्यापी 4 मिश्रित, मिला-जुला समान — उत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि—श० ४, दीव्यते स हि संसृष्ट्या साधारणाभिर्मे —कु० ७।४२ 5 तुल्य सदृश, समान 6 (तर्क० में) एक से अधिक निदर्शनों से सम्बद्ध हेत्वाभास के तीन प्रभागों में से एक, अनैकान्तिक —णम् 1 सामान्य या सार्वजनिक नियम, सार्वजनिक विधि या नियम 2 जातिगत या निर्विशेष गुण। सम० —धनम् संयुक्त संपत्ति — स्त्री सामान्य स्त्री, वेश्या रण्डी।

साधारणता, —त्वम् [साधारण + तल् + टाप्, त्व वा] 1 सामुदायिकता विश्वव्यापकता 2 संयुक्त हित।

साधारण्यम् [साधारण + ष्यञ्] समानता —दे० साधारणता।

साधिका [सिध् + णिच् + ण्वुल् + टाप् इत्वम्, साधादेश] 1 कुशल या निपुण स्त्री 2 गहरी नींद।

साधित (भू० क० कृ०) [साध + क्त] 1 निष्पन्न कार्यान्वित अवाप्त 2 पूरा किया हुआ समाप्त 3 सिद्ध प्रदर्शित 4 प्राप्त उपलब्ध 5 उन्मुक्त 6 वश में किया हुआ दमन किया हुआ 7 पूरा किया

हुआ, पुन प्राप्त 8 दण्डित 9. दापित 10 (दंड या जुर्माना) दिया हुआ।

साधिमन् (पुं०) [साधु + इमनिच्] भद्रता, श्रेष्ठता, उत्तमता।

साधिष्ठ (वि०) [साधु या बाढ की उत्तमावस्था अतिशयेन साधु --इष्ठन्] 1 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उचिततम 2 अत्यंत मजबूत, कठोर या दृढ़।

साधीयस् (वि०) [साधु + ईयसुन्, उकारलोप, साधु या बाढ की मध्यमावस्था] 1. अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ भामि० १।८८ 2 कठोरतर, अपेक्षाकृत मजबूत।

साधु (वि०) (स्त्री० --धु,-- ध्वी) [साध् + उन् मध्य० अ० साधीयस्, उत्त० अ० साधिष्ठ] 1 उत्तम, श्रेष्ट, पूर्ण यदत्साधु न चित्रे स्यात्क्रियते तत्तदन्यथा श० ६।१३, आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् १।२ 2. योग्य, उचित, सही जैसा कि 'साधुवृत्त, साधुसमाचार' में 3 गुणी, पुण्यात्मा, सम्माननीय, पवित्रात्मा 4. (क) कृपालु, दयालु रघु० २।२८, पञ्च० १।२४७ (ख) शिष्टाचारी (अधि० के साथ) मातरि साधुः सिद्धा० 5 शुद्ध पवित्र, गौरवयुक्त या श्रेष्ठ (जैसे कि भाषा) 6 सुन्दर, रुचिकर, सुहावना --अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा--कि० १।४ 7. भद्र, कुलीन सत्कुलोद्भव,-- धुः 1 भद्रपुरुष पुण्यात्मा रघु० १३।५५ २।६२, मेघ० ८० 2 ऋषि, मुनि सत- साधो प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् सुभा० 3 सौदागर कि० ०। ७३ 4 जैनसाधु 5 सूदखोर, महाजन (अव्य०) 1 अच्छा बहुत अच्छा, शाबाश बढ़िया साधु गीतम् श० १, साधु १ [illegible] साधु मालवि० ४ 2 काफी, बस। सम० --धी (वि०) अच्छे स्वभाव का, --वादः शाबाश की ध्वनि [illegible] की ध्वनि शि० १८।६९, --वृत्त (वि०) 1 अच्छे चालचलन का, भद्र, सद्गुणी--प्रापण साधुवृत्तानाम- [illegible] भर्तृ० २।८५, (यहाँ दूसरा अर्थ भी अभिप्रेत है।) 2 खूब गोल गोल किया हुआ (--त्तः) सद्गुणी (सद्गुणी [illegible]) अच्छा आचरण सद्गुण, [illegible] भलाई ईमानदारी इसी प्रकार साधु वृत्ति।

साधुनम् [सह आधूनेन ब० स०] 1 हाट, दुकान 2 छतरी 3 [illegible] का [illegible]।

साध्य (वि०) [साध् , णिच् + यत्] 1 कार्यान्वित होने योग्य [illegible] होने योग्य किया जाने योग्य [illegible] निर्द्धिश्यमानम् [illegible] २।१४ 2 जो हो सके जो किया जा सके प्राप्य 3 सिद्ध किये जाने योग्य प्रदर्शनीय [illegible] जाति का यथा रघु० १०।१८ 4 स्थापित करने योग्य, पूरा किये जाने योग्य 5 अनुमेय, उपसंहार्य, --अनुमान तदुक्त यत्साध्यसाधनयोर्वचः --काव्य० १०, जीते जाने के योग्य वश्य, जेय कु० ३।१५ 7 जिसकी चिकित्सा हो सके 8 वध किये जाने योग्य, विनष्ट किये जाने योग्य, --ध्यः दिव्य प्राणियों का एक विशेष वर्ग तु० मनु० १।२२, ३।१९५ 2 देवता 3 एक मन्त्र का नाम, --ध्यम् 1 निष्पन्नता पूर्णता 2 वह बात जो अभी सिद्ध की जानी है प्रमाणित की जाने वाली वस्तु 3 (न्या० में) प्रस्ताव का विषय अनुमानप्रक्रिया का [illegible] यथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुद्रा० [illegible] अभाव- [illegible] की कमी,-- सिद्धि (स्त्री०) 1 निष्पन्नता 2 उपसंहार।

साध्यता [साध्य + तल् + टाप्] 1 सम्भावना [illegible] 2 (रोग का) अच्छा किया जाने की संभावना। सम०--अवच्छेदकम् [illegible] किसी [illegible] गुण का [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible]

साध्वसम् [[illegible] अच्] 1 डर [illegible] [illegible] कुमारसंभव [illegible] कु० ३।५१ [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]।

साध्वी [साधु + ङीप्] 1 सती स्त्री 2 [illegible] स्त्री 3 एक प्रकार की जड़।

सानन्द (वि०) [सह आनन्देन ब० स०] प्रसन्न [illegible]।

सानसि [सन् + [illegible]] सोना [illegible]।

सानसिका सानेयिका, सानेयी [illegible] इत्यादि [illegible] [illegible] [illegible] वाद्यों [illegible]।

सानु (पुं० नपुं०) [सन् + ञुण्] 1 चोटी [illegible] [illegible] सानुनि [illegible] [illegible] मेघ० ७, कु० १।६, कि० [illegible] 2 पहाड़ का [illegible] पर समतल भूमि, पठार 3 अंकुर 4 [illegible] 5 मार्ग 6 [illegible] 7 [illegible] 8 हवा [illegible] 9 विद्वान पुरुष 10 सूर्य।

सानुमत् (पुं०) [सानु + मतुप्] पहाड़ [illegible] की [illegible] का नाम श० ६।

सानुकोश (वि०) [अनुक्रोशेन सह ब० स०] दयालु [illegible]।

सानुनय (वि०) [सह अनुनयेन [illegible]] [illegible]।

सानुबन्ध (वि०) [सह अनुबन्धेन [illegible]] [illegible] [illegible]।

सानुराग (वि०) [सह अनुरागेण ब० स०] [illegible] प्रेम में मस्त।

सान्तपनम् [सम् + तप् + ल्युट् + अण्] एक कठोर व्रत —मनु० ११।२१२।

सान्तर (वि०) [सह अन्तरेण [illegible]] 1 अन्तराल [illegible] अवकाशयुक्त 2 [illegible]।

सान्तानिक (वि०) (स्त्री० —की) [सन्तान + ठक्] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] आता है

सान्त्व [illegible]

सान्त्व, सान्त्वनम् [illegible]

सान्दीपनि [illegible]

सान्दृष्टिक (वि०) (स्त्री० —की) [illegible]

सान्द्र (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] [illegible] १।८८ 3 [illegible] [illegible]

सान्धिक [illegible]

सान्धिविग्रहिक [illegible]

सान्नय [illegible]

सान्नहनिक (वि०) (स्त्री० —की) [illegible]

1 कवचधारी 2 शस्त्र उठाने के लिए कहने वाला, युद्ध के लिए [illegible] का प्रोत्साहन देने वाला [illegible]।

सान्नाय्य [illegible] कोई पदार्थ [illegible] डाला जाय— शि० २।१०८।

सान्निध्यम् [illegible] 1 पड़ोस सामीप्य, [illegible] 2 उपस्थिति, हाजरी [illegible]

सान्निपातिक (वि०) (स्त्री० —की) [सन्निपात + ठक्] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible]

सान्यासिक [illegible] —क 1 [illegible]

सान्वय (वि०) [illegible]

सापत्न (वि०) (स्त्री० —त्नी) सपत्नी से सौतेली [illegible] [illegible]

सापत्न्यम् [illegible] 1 सौतेली पत्नी की दशा 2 [illegible] शत्रुता —त्न्य 1 सौतेली माता का पुत्र 2 शत्रु।

सापराध (वि०) [सह अपराधेन ब० स०] अपराधी [illegible]।

सापिण्ड्यम् [सपिण्ड + ष्यञ्] समान पितरों को पिण्डदान [illegible] सम्बन्ध।

सापेक्ष (वि०) [सह अपेक्षया ब० स०] लिहाज करने वाला [illegible]।

साप्तपद (वि०) (स्त्री०—दी) **साप्तपदीन** (वि०) [सप्तपद + [illegible]] [illegible] मैत्री [illegible] यहाँ [illegible] [illegible] —दम्, —नम् 1 विवाह के अवसर पर दूल्हा व [illegible] द्वारा [illegible] सात प्रदक्षिणाएँ करना [illegible] पक्का बना देता है) 2 मित्रता [illegible]।

साप्तपौरुष (वि०) (स्त्री०—षी) [सप्तपुरुष + अण्] सात [illegible] हुआ [illegible]।

साफल्यम् [illegible] 1 सफलता [illegible] 3 [illegible]।

साबाद [illegible]

साभ्यसूय (वि०) [सह अभ्यसूया या ब० स०] डाह करने वाला [illegible]।

साम् (चुरा० उभ० सामयति-ते) खुश करना, ढाढस बंधाना तसल्ली देना।

सामकम् [समक + अण्] मूल ऋण का साण (वह पत्थर जिस पर औजार तेज किए जाते हैं)।

सामग्री [समग्रस्य भाव ष्यञ् स्त्री षपक्षे ङीष् यलोप] 1 सामान का समूह या संभार उपकरण घर का सामान भर्तृ० ३।१५५ 2 सामान माल असबाब।

सामग्र्यम् [समग्र + ष्यञ्] 1 समग्रता पूर्णता समस्तापन समष्टि प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः कु० ३।२८ - अनुसरणं नौकर चाकर 3 उपकरणों का समूह औजारों का भण्डार 4 भण्डार, सामान।

सामञ्जस्यम् [समञ्जस + ष्यञ्] 1 योग्यता संगति औचित्य, तु० असमञ्जस 2 यथार्थता शुद्धता।

सामन् (नपुं०) [सो + मनिन्] 1 खुश करना शान्त करना, आराम पहुँचाना तसल्ली देना 2 मृदु करना शान्ति के उपाय समझौता-वार्ता करना (राजा के द्वारा अपने शत्रु के प्रति किये जाने वाले चार साधनों में सबसे पहला) सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये—मनु० ७।१०९ 3 शान्तिदायक या मृदु उपाय शान्त या ढाढस बंधाने वाला आचरण मृदुवचन —पंच० ४।२६, ४८ 4 मृदुता, कोमलता 5 छन्दोबद्ध सूक्त या प्रशंसात्मक गान सप्तसामोपगीतं त्वाम् —रघु० १०।२१ भग० १०।३५ 6 सामवेद का मन्त्र 7 सामवेद (सूर्य से उत्पन्न कहा जाता है तु० मनु० १।२३)। सम० –उद्भूतः हाथी –उपचारः –उपायः मृदु और शान्ति देने वाले उपाय कोमल या शान्त युक्तियाँ, –गः सामवेद के मन्त्रों का गायन करने वाला ब्राह्मण –ज, –जात (वि०) 1 सामवेद से उत्पन्न 2 शान्ति के उपायों से उद्भूत (–जः –तः) हाथी—शि० १२।११, १८।३३ –योनिः 1 ब्राह्मण 2 हाथी, –वाद् कृपावचन, मधुरवाक्य —शि० २।… —वेदः चारों में से तीसरा वेद।

सामन्त (वि०) [समन्त + अण्] 1 सीमावर्ती सरहदी पड़ोसी 2 विश्वव्यापक –तः 1 पड़ोसी 2 पड़ोस का राजा 3 माडलिक कर देने वाला राजा सामन्तमौलिमणिरञ्जितपादपीठम् विक्रम० ३।१९ रघु० ५।२८, ६।३३ 4 नेता नायक –तम् पड़ोस।

सामयिक (वि०) (स्त्री०—की) [समय + ठञ्] 1 प्रथानुसारी, परम्परागत 2 सम्मत प्रतिज्ञात 3 करार के अनुरूप नियत समय का पालन करने वाला देवि सामयिका भवाम मालवि० १ 4 समय पालक वक्त का पाबन्द 5 ऋतु के अनुकूल समय पर होने वाला कि० २।१० 6 नियत समय पर होने वाला 7. अस्थायी। सम० –अभावः अस्थायी अनस्तित्व।

सामर्थ्यम् [समर्थ + ष्यञ्] 1 शक्ति, बल क्षमता ताकत 2 उद्देश्य की समानता 3 अर्थ की एकता 4 … योग्यता … शब्द की अर्थप्रकाशक शक्ति 6 हित लाभ 7 दौलत।

सामवायिक (वि०) (स्त्री० –की) [समवाये प्रसृत ठञ्] 1 किसी समूह व संघात से संबद्ध 2 अटूट सम्बन्ध से युक्त –कः मंत्री पार्षद।

सामाजिक (वि०) (स्त्री०—की) [समाज-सभावेशन प्रयोजनमस्य ठञ्] किसी सभा से संबद्ध –कः किसी सभा का सदस्य सभा में दर्शक … प्रयोगान् देशाश्रयान् सामाजिकानुपासमहे मा० १।

सामानाधिकरण्यम् [समानाधिकरण + ष्यञ्] 1 उसी दशा या स्थिति में होना 2 सामान्य पद कार्य या प्रशासन समान सम्बन्ध (जैसे कि कारक का) 3 एक ही पदार्थ से संबन्ध होने का स्थिति।

सामान्य (वि०) [समानस्य भावः ष्यञ्] 1 समान साधारण सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम् कु० ७।४४ आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् सुभा० रघु० १४।६७ कु० ५।२८ 2 सदृश तुल्य समान 3 मामूली औसतदर्जे का नीच का भर्तृ० २।४४ 4 तुच्छ नाचीज –न्यम् 1 समुदाय साधारणता विश्वव्यापकता 2 सामान्य या समष्टिक गुण साधारणलक्षण 3 समष्टि समस्तता 4 भेद प्रकार 5 अनुरूपता 6 समानता समता 7 सार्वजनिक कार्य 8 साधारण उक्ति उक्तिर्याः … विशेषाः … 9 (अलं० में) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित दी है —प्रस्तुतस्य यद् … गुणसाम्यविवक्षया ऐकात्म्यं बध्यते योगात्तत्सामान्यमिति स्मृतम् काव्य० १०। सम० –ज्ञानम् लोकविषयक व्यापक बातों का ज्ञान –पक्षः मध्यस्थिति –लक्षणम् व्यापक परिभाषा तुलि इत्यसामान्यलक्षणानि तर्क० –वनिता सामान्य स्त्री वेश्या –शास्त्रम् साधारण नियम।

सामासिक (वि०) (स्त्री० –की) [समास + ठक्] 1 सामूहिक संयुक्त या समस्त वाक्य समूह … 2 संक्षिप्त संक्षिप्त 3 समासयुक्त –कः समास का प्रकार समासों का वर्ग द्वन्द्वः सामासिकस्य च भग० १०।३३।

सामि (अव्य०) [साम + इन्] 1 आधा अर्थात् अपूर्ण अर्धनिमीलित सामिकृतमण्डन यही कस्तूरी … स्वाका … शि० १३।३१ रघु० १९।१६ 2 कलङ्कपूर्ण नीच निन्दनीय।

सामिधेनी [सम + इन्ध + ल्युट् ङीप्] 1 एक प्रकार का प्रार्थनामन्त्र जिसका पाठ यज्ञाग्नि प्रज्वलित करते

समय या समिधाएँ हवन में डालने समय किया जाता है।

सामोबी (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति।

सामीप्य [समीप + ष्यञ्] [illegible]

सामुद्र (वि०) [illegible] 2 समुद्रमन्था [illegible]

सामुद्रक [illegible]

सामुद्रिक (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

साम्परायिक (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]

सांप्रतिक (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

साम्प्रदायिक (वि०) [illegible]

साम्ब [illegible]

साम्बाधिक [illegible]

साम्भवी [illegible] 2 [illegible]

साम्राज्य [illegible]

साम्राज्यम [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

साय [illegible] 1 [illegible] 2 दिन [illegible] 3 [illegible]

सायक [illegible] 2 [illegible]

सायन्तन [illegible]

सायम [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

सायिन [illegible]

सायुज्यम [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

सार [illegible] 1 आवश्यक 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 17 [illegible]

मैक्स (Climax) नाम अलंकार से मिलता जुलता एक अलंकार - उत्तरोत्तरमुत्कर्षो भवेत्सारः परावधि काव्य १०. -रम् 1. जल 2 योग्यता, औचित्य 3. जंगल, झाड़-झंखाड़ 4 इस्पात, लोहा। सम० --असार (वि०) मूल्यवान् और निर्मूल्य, मज़बूत और दुर्बल, (-रम्) 1. मूल्य और निर्मूल्यता 2. मूल-पदार्थ और रिक्तता 3 सामर्थ्य और कमज़ोर,—गन्धः चन्दन की लकड़ी, -ग्रीवः शिव जी का नाम, -जम् ताज़ा मक्खन, -तरुः केले का पेड़, -दा 1. सरस्वती का नाम 2. दुर्गा का नाम,—द्रुमः खैर का पेड़, -भङ्गः बल की हानि, -भाण्डम् 1. एक प्राकृतिक बर्तन 2 सामान का गट्ठा, पण्यसामग्री 3 उपकरण,—लोहम् इस्पात।

सारघम् [सरघाभिः निर्वृत्तम् अण्] मधु, शहद।

सारङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [सृ+अङ्गच्+अण्] चितकबरा, रंगबिरंगा, -गः 1 रंगबिरंगा रंग 2 चित्र-मृग, कुरंग—एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा—श० १।५ 3. हरिण सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम् मेघ० २० (यहाँ 'हाथी' या 'भ्रमर' के बजाय यही अर्थ लेना ठीक है) 4 सिंह 5 हाथी 6 भौंरा 7 कोयल 8. सारस 9 राजहंस 10 मोर 11. छतरी 12. बादल 13. परिधान 14. बाल 15 शंख 16. शिव का नाम 17 कामदेव 18. कमल, 19 कपूर 20 धनुष 21. चन्दन 22. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 23 आभूषण 24 सोना 25 पृथ्वी 26 रात 27. प्रकाश।

सारङ्गिकः [सारङ्ग हन्ति - ठक्] बहेलिया, चिड़ीमार।

सारङ्गी [सारङ्ग+ङीप्] 1. एक प्रकार का वाद्ययंत्र, सितार, वायलिन 2. चित्तीदार हरिणी।

सारण (वि०) (स्त्री० -णी) [सृ+णिच्+ल्युट्] भेजना, बहाना, -णः 1. पेचिश 2. पँवाड़ी बेर -णम् एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

सारणा [सृ+णिच्+युच्+टाप्] धातुओं की विशेष कर पारे की एक प्रकार की प्रक्रिया।

सारणि, -णी (स्त्री०) [सृ+णिच्+अनि पक्षे ङीप्] 1 नहर, नाली, पतनाला, जलमार्ग 2 एक छोटी नदी।

सारथः [सृ+णिच्+अथ] माप का अन्तर।

सारतः (अव्य०) [सार+तसिल्] 1 धन के अनुसार 2 बलपूर्वक।

सारथिः [सृ+अथिण् सह रथेन समं याति रथं वा] 1 रथवान्, स तावानतेन सारथिना - रघु० १।५४, -रथिना सारथिनासौ 3।६३ 2. साथी सहायक - रघु० 3। ३७ 3 समुद्र।

सारथ्यम् [सारथि+ष्यञ्] रथवान् का पद, गाड़ीवान् का पद।

सारमेयः [सरमा+ढक्] कुत्ता, -यी [सारमेय+ङीप्] कुतिया।

सारल्यम् [सरल+ष्यञ्] सरलता (आल० से भी) सीधापन, ईमानदारी, खरापन।

सारवत् (वि०) [सार+मतुप्] 1 मज़बूत 2. उपजाऊ 3 रसीला।

सारस (वि०) (स्त्री०—सी) [सरस इदम् अण्] सरोवर सम्बन्धी, काव्या० ३।१६, नलोद० २।६०, -सः 1 सारस, (कुछ विद्वानों के अनुसार 'हंस') - विभिद्यमाना विससार सारसानुदस्य तीरेषु तरङ्गसंहतिः कि० ८।३१, शि० ६।७५, १२।४४, मेघ० ३१, रघु० १।४१ 2 पक्षी 3 चन्द्रमा —सम् 1 कमल 2 स्त्री की तगड़ी।

सारसन (म) -नम् [सार+सन्+अच] 1. तगड़ी करधनी —सारसन महान्तः - कि० १८।३२ 2 सैनिक पेटी।

सारस्वत (वि०) (स्त्री० -ती) [सरस्वती देवतास्य, सरस्वत्या इदं वा अण्] 1 सरस्वती देवी से संबद्ध 2. सरस्वती नदी से संबंध रखने वाला - कृत्वा तासामभिगममपाम् सौम्य सारस्वतीनाम् मेघ० ४९ 3 वाक्पटु, -तः 1 सरस्वती नदी के आस पास का प्रदेश 2 ब्राह्मण जाति का एक भेद 3. बिल्वदंड —ताः (पुं० ब० व०) सारस्वत देश के निवासी, -तम् भाषण, वाक्पटुता, -भृङ्गारसारस्वतम् गीत० १२।

सारालः [सार+आ+ला+क] तिल का पौधा।

सारि, —री (स्त्री०) [सृ+इण्] 1 शतरंज का मोहरा, गोट 2 एक प्रकार का पक्षी। सम० -फलकः शतरंज खेलने की बिसात।

सारिका [सरति गच्छति सृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का पक्षी, मैना अप्यन्यो मन्ये वध्यन्ते शुकसारिकाः सुभा०, सारिका पञ्जरस्थाम् —मेघ० ८५।

सारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सृ+णिनि] 1. जाने वाला, सहारा लेने वाला 2 मज़बूत, सारवान्।

सारूप्यम् [सरूप+ष्यञ्] 1 रूप का समता, समरूपता, सादृश्य समरूपता, बिम्ब-प्रतिबिम्बता सा० ० 2 देव से तादात्म्य (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 3 (नाटकों में) रूप-सादृश्य भ्रम से किया जाने वाला (क्रोधादि) उत्पात सा० द० ४८८ 4 किसी पदार्थ को या उसमें मिलती जुलती मूरत को देख कर अभिवादन।

सारोष्ट्रिकः [सार श्रेष्ठ उष्ट्रो यत्र सारोष्ट्र देशभेद तत्र भवः सारोष्ट्र+ठक्] एक प्रकार का विष।

सार्गल (वि०) [सह अर्गलेन — ब० स०] 1 रोका हुआ, अवरुद्ध, अड़चन वाला — रघु० ११७९ ।

सार्थ (वि०) [सह अर्थेन—ब० स०] 1 अर्थयुक्त, सार्थक 2. सोद्देश्य 3. समानार्थक, समानाशय 4 उपयोगी, कामसाधक 5 धनवान्, दौलतमंद, मालदार, —र्थः 1. धनवान् पुरुष 2. सौदागरों की टोली, व्यापारियों का दल — सार्थाः स्वैरं स्वकीयेषु चेरुर्वेश्मस्विवाद्रिषु —रघु० १७।६४, दे० सार्थवाह 3. दल 4 लहड़ा, रेवड़ (एक ही जाति के जानवरों का)—अथ कदाचित्तै-रितस्ततो भ्रमद्भिः सार्थात् भ्रष्टः करभको नामोष्ट्रो दृष्टः — पंच० १ 5. संचय, संग्रह —अभिसार्थं —पञ्च० १, स्वगा चन्द्रमसा वालिमन्योयने काभिजनसार्थं —श० ३ 6 तीर्थयात्रियों की टोली में से एक । सम० —ज काफले में पला हुआ,—वाहः काफले का नेता, व्यापारी, सौदागर — श० ६ ।

सार्थक (वि०) [सह अर्थेन —ब० स० कप्] 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2 उपयोगी, कामचलाऊ, लाभदायक ।

सार्थवत् (वि०) [सार्थ + मतुप्] 1 अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2 बहुत साथियों से युक्त ।

सार्थिकः [सार्थ + ठक्] व्यापारी, सौदागर ।

सार्द्र (वि०) [सह आर्द्रेण — ब० स०] गीला, भीगा, तर, सीला ।

सार्ध (वि०) [सह अर्धेन — ब० स०] जिसमें आधा बढ़ा हुआ हो, जिसमें आधा जुड़ा हुआ हो, जिसमें आधा अधिक हो— 'सार्धशतम्' आदि ।

सार्धम् (अव्य०) [सह + ऋध् + अम्] साथ-साथ, के साथ, के साथ में (करण० के साथ)—वन मया सार्ध-मसि प्रपन्न —रघु० १४।६८, मनु० ४।४३, भट्टि० ६।२६, मेघ० ८९ ।

सार्पः (पुं०) [सर्पो देवताऽस्य सर्प + अण् त्यजा् वा] आश्लेषा नाम का नक्षत्रपुंज ।

सार्पिष (वि०) (स्त्री०—षी), सार्पिष्क (वि०) (स्त्री० —ष्की) [सर्पिस् + अण्, ठक् वा] घी में तला हुआ, घी मिश्रित ।

सार्वकामिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वकाम + ठक्] प्रत्येक इच्छा को शान्त करने वाला समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला — कि० १८।२५ ।

सार्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वकाल + ठक्] नित्य, शाश्वत, सदैव रहने वाला ।

सार्वजनिक (वि०) (स्त्री०—की) **सार्वजनीन** (वि०) (स्त्री०—नी) [सर्वजन + ठक् खञ् वा] सर्वजन व्यापक, विश्वव्यापी, सर्वसाधारण संबंधी ।

सार्वज्ञ्यम् [सर्वज्ञ + ष्यञ्] सर्वज्ञता, सब कुछ जानना ।

सार्वत्रिक (वि०) (स्त्री० —की) [सर्वत्र + ठञ्] प्रत्येक स्थान का, सार्वत्रिक, सब स्थानों या परिस्थितियों से संबंध रखने वाला जैसा कि 'सार्वत्रिको नियमः' में ।

सार्वधातुक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वधातु + ठञ्] संपूर्ण धातुओं से व्यवहृत होने वाला, गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समस्त रूप में लगने वाला, अर्थात् चार गण और चार लकारों के साथ प्रयुक्त होने वाला — कम् चार लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) के तिङादि प्रत्यय (या लिट् तथा आशीर्लिङ् को छोड़ कर और सभी लकारों के तिङ्प्रत्ययों और 'श्' ध्वनि से प्रकट होने वाले विकरण) ।

सार्वभौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वभूत + ठञ्] 1 सभी मूलतत्त्वों या प्राणियों से संबंध रखने वाला 2. सभी जीवधारी जन्तुओं से युक्त ।

सार्वभौम (वि०) (स्त्री०—मी) [सर्वभूमि + अण्] समस्त धरती से संबद्ध या युक्त, विश्वव्यापी, —मः 1 सम्राट् चक्रवर्ती राजा —आज्ञाभङ्गो नरेन्द्राणां …त्वादृशा सार्वभौमाः — मुद्रा० ३।२२ 2 कुबेर की दिशा, उत्तर दिशा का दिक्कुञ्जर ।

सार्वलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वलोक + ठञ्] सब लोकों का ज्ञात, समस्त संसार में व्याप्त, सार्वजनिक, विश्वव्यापी — अनुरागप्रवादस्तु वत्सयोः सार्वलौकिकः — मा० १।१३ ।

सार्ववर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्ववर्ण + ठक्] 1 प्रत्येक प्रकार का, हर तरह का 2 प्रत्येक जाति या वर्ण से सम्बन्ध रखनेवाला ।

सार्वविभक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वविभक्ति + ठञ्] किसी शब्द की सभी विभक्तियों में घटने वाला सभी विभक्तियों से संबद्ध ।

सार्ववेदसः [सर्ववेदस् + अण्] जो किसी यज्ञ या अन्य पुण्य कार्य में अपना समस्त धन दे देता है ।

सार्ववैद्यः [सर्ववेद + ष्यञ्] सभी वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण ।

सार्षप (वि०) (स्त्री०—पी) [सर्षप + अण्] सरसों का बना हुआ, —पम् सरसों का तेल ।

सार्ष्टि (वि०) समान स्थान दशा, या पद से युक्त समान अधिकार रखने वाला ।

सार्ष्टिता [सार्ष्टि + तल् + टाप्] 1 [illegible] … में समानता 2 [illegible] … में परमात्मा से समानता [illegible] … अवस्था [illegible] … मनु० ४।[illegible] ।

सालदर्भ [[illegible]] [illegible] ।

साल [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] …

सालनः [सल् + णिच् + ल्युट्] साल वृक्ष की राल।

सालः [सालं प्राकारोऽस्त्यस्य अस्या. साल + अच्, टाप्] 1 दीवार, फसील 2 घर, मकान दे० शाला। सम० **-करी** 1. घर में कार्य करने वाली 2 बन्दी (विशेष कर वह जो युद्ध में पकड़ लिया गया हो)। **-वृक्ष.** दे० 'शालावृक'।

सालारम् [साला + ऋ + अण्] दीवार में गड़ी खूंटी, ब्रैकेट।

सालूरः [सल् + ऊरच्, णिच्, वृद्धि] मेंढक दे० 'शालूर'।

सालेयम् [साला + ढक्] गाजर, मेथी दे० 'शालेय'।

सालोक्यम् [समानो लोकोऽस्य, ब० स० सलोक + ष्यञ्] 1 उसी लोक या संसार में दूसरे के साथ रहना 2 उसी स्वर्ग में किसी देवता के साथ रहना।

साल्वः [साल्व + अण्] 1 एक देश का नाम, उसके निवासियों का नाम (इस अर्थ में ब० व०) 2. एक राजा का नाम जिसको विष्णु ने मार गिराया था। सम० **-हन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण।

साल्विकः [साल्व + ठक्] सारिका नामक पक्षी, मैना।

सावः [सु + घञ्] तर्पण।

सावक (वि०) (स्त्री०-**विका**) [सु + ण्वुल्] उत्पादक, जन्म देने वाला, पैदा करने वाला, **-कः** जानवर का बच्चा (दे० 'शावक')।

सावकाश (वि०) [सह अवकाशेन ब० स०] जिसको अवकाश हो, अवकाश वाला, खाली, **-शम्** (अव्य०) अवकाश पाकर, अपनी सुविधानुकूल।

सावग्रह (वि०) [अवग्रहेण सह - ब० स०] अवग्रह चिह्न से युक्त।

सावज्ञ (वि०) [सह अवज्ञया ब० स०] घृणा करने वाला, तिरस्कारपूर्ण, अपमान, अनादर करने वाला।

सावदान् [अवदानं सह - ब० स०] [illegible] ग्रन्थ।

सावधान (वि०) [अवधानेन सह ब० स०] 1 ध्यान देने वाला, दत्तचित्त, मनोयोग से, खबरदार 2 चौकन्ना 3 परिश्रमी, **-नम्** (अव्य०) सावधानता से, ध्यानपूर्वक, चौकस होकर।

सावधि (वि०) [सह अवधिना ब० स०] सीमायुक्त, सीमित, मर्यादित, परिभाषित, सीमाबद्ध — सावधि-[illegible] [illegible] नावधि [illegible]।

सावन (वि०) (स्त्री०-**नी**) [सवन + अण्] तीनों सवनों से युक्त या सम्बद्ध, **-नः** 1 यजमान जो यज्ञ में पुरोहितों का वरण करता है 2 यज्ञ का उपसंहार, वह संस्कार जिसके द्वारा यज्ञ की परिपूर्ति हो जाती है 3 [illegible] 4 [illegible] सौरदिवस का नाम 5 सूर्योदय से सूर्यास्त तक का दिन 6 [illegible] वर्ष।

सावय॰ [illegible] [illegible] ब० स०] भागों या अंगों से बना हुआ—सावयवत्वे चानित्यप्रसंगः न ह्यविद्याकल्पितेन रूपभेदेन सावयवं वस्तु संपद्यते शारी०।

सावरः [सवरणं निर्वृत्तं अण्] 1. दोष, अपराध 2. पाप, दुष्टता, जुर्म 3 लोध्र वृक्ष।

सावरण (वि०) [सह आवरणेन - ब० स०] 1 गुप्त, गुप्त रहस्य 2 ढका हुआ, बन्द।

सावर्ण (वि०) (स्त्री० - **र्णी**) [सवर्ण + अण्] एक ही रंग का, एक ही जाति का, एक ही रंग या जाति से सम्बद्ध, **-र्णः** आठवें मनु का मातृपरक नाम, दे० सावर्णि। सम० **-लक्ष्यम्** 1 एक ही रंग या जाति का [illegible] 2 [illegible], खाल।

सावर्णिः [सवर्णा + इञ्] आठवें मनु का मातृपरक नाम (सूर्य की पत्नी सवर्णा से उत्पन्न)।

सावर्ण्यम् [सवर्ण + ष्यञ्] 1 रंग की एकता 2 किसी श्रेणी या जाति की एकता 3. आठवें मनु द्वारा अधिष्ठित मन्वन्तर।

सावलेप (वि०) [सह अवलेपेन] अभिमानपूर्ण, घमंडी, हेकड़ीबाज, **-पम्** (अव्य०) घमंड से, हेकड़ी के साथ, अहंकारपूर्वक।

सावशेष (वि०) [सह अवशेषेण - ब० स०] 1 अवशेष से युक्त, जिसमें कुछ बाकी बचे 2. अपूर्ण, अधूरा, असमाप्त।

सावष्टम्भ (वि०) [सह अवष्टम्भेन - ब० स०] 1 घमंडी, प्रतिष्ठित, उत्कृष्ट, शानदार 2. साहसी, दृढनिश्चयी 3 दृढता से पूर्ण, **-म्भम्** (अव्य०) दृढनिश्चय के साथ, दृढतापूर्वक, साहस के साथ।

सावहेल (वि०) [सह अवहेलया ब० स०] तिरस्कारपूर्ण, निरादर करने वाला, घृणा करने वाला, **-लम्** (अव्य०) निरादर के साथ, घृणापूर्वक।

साविका [सु + ण्वुल् टाप्, इत्वम्] दाई, प्रसव के समय प्रसूता की देखभाल करने वाली।

सावित्र (वि०) (स्त्री० - **त्री**) [सवितृ + अण्] 1 सूर्य सम्बन्धी 2 सूर्य की, सन्तान, सूर्यवंश से सम्बद्ध, (राजाओं के)—[illegible] [illegible] भूमिपाले उत्तर० १।४२ 1 गायत्री मन्त्र से युक्त, **-त्रः** 1. सूर्य 2. भ्रूण, गर्भ 3 ब्राह्मण 4 शिव का विशेषण 5. कर्ण का विशेषण, **—त्रम्** यज्ञोपवीत संस्कार (इसका "सावित्रम्" नाम इसी लिए पड़ा कि इस संस्कार में मुख्यरूप से गायत्री मंत्र का जाप करना पड़ता है उसी समय यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

सावित्री [सवितृ + ङीप्] 1. प्रकाश की किरण 2. ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र (इसका नाम 'सावित्री' सूर्य को सम्बोधित करने के कारण पड़ा, इसे गायत्री भी कहते हैं। अधिक जानकारी के लिए दे० 'गायत्री' 3 यज्ञोपवीत

संस्कार 4 ब्राह्मण की पत्नी 5 पार्वती 6. कश्यप की पत्नी 7 शाल्वदेश के राजा सत्यवान् की पत्नी (सावित्री राजा अश्वपति की एकमात्र सन्तान थी। वह इतनी सुन्दर थी कि वे सब वर जो उसे पाने की इच्छा से वहाँ आये उसकी अभिराम कान्ति से इतने चकित हुए कि वापिस ही लौट गये। विवाह योग्य अवस्था होने पर सावित्री को वर न मिल सका। अन्त में उसके पिता ने उसे कहा कि अब तुम स्वयं जाओ और अपनी इच्छा से अनुरूप वर ढूंढो। सावित्री ने वैसा ही किया और [illegible] वह पिता के पास वापिस आई और [illegible] देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् [illegible] राजा द्युमत्सेन [illegible] जीवन बिता रहे थे। [illegible] उस समय आ गये थे [illegible] अश्वपति [illegible] सुनाया पर यह है [illegible] सत्यवान् [illegible] से तुम्हारे योग्य है परन्तु उसकी आयु अब [illegible] वर्ष और बाकी है [illegible] के लिए वैधव्य [illegible] माता-पिता ने [illegible] प्रयत्न किया परन्तु इस दृढ़ात्मा सावित्री ने [illegible] निश्चय अब नहीं बदल सकता। तदनुसार समय पर उसका विवाह सत्यवान् से हो गया। विवाह के पश्चात् सावित्री ने अपना [illegible] मूल्य आभूषण तथा [illegible] उतार दिये और अपने बूढ़े सास-ससुर की सेवा करने लगी। [illegible] से उसकी सुख-मुद्रा से [illegible] वह प्रसन्न सी रहती थी। [illegible] अभी तक नहीं भूली थी। [illegible] लगी। और अन्त में [illegible] दिन सत्यवान् का प्राणान्त [illegible] गया। उसने अब देखा कि अभी तीन दिन और बाकी हैं, इन तीनों दिन [illegible] उसने व्रत किया और चौथे दिन जब सत्यवान् वन को समिधाएँ लेने के लिए जंगल जाने को तैयार हुआ तो सावित्री भी उसके साथ साथ गई। कुछ समिधाएँ एकत्र करने के पश्चात् सत्यवान् थक कर बैठ गया। और अपना सिर सावित्री की छाती पर रख कर सो गया। उसी समय यमराज आया और सत्यवान् की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर चल दिया। सावित्री ने यह सब देखा और यमराज का पीछा किया। यमराज ने सावित्री को बताया कि सत्यवान् की आयु समाप्त हो चुकी है। परन्तु पतिव्रता सावित्री ने यमराज से ऐसे करुण स्वर से प्रार्थना की कि यमराज ने उस सत्यवान् के प्राणों को छोड़ दिया और कोई वर मांगने के लिए कहा। सावित्री की अनन्य भक्ति तथा [illegible] से प्रसन्न होकर अन्त में यमराज ने सत्यवान् के प्राण भी लौटा दिये। वह प्रसन्न होकर वापिस आई और [illegible] [illegible] [illegible] पतिव्रता [illegible] [illegible] सर्वोत्तम [illegible] [illegible] है।

साविष्कार [illegible]
1 [illegible]

साशंस [illegible] कामना और [illegible] **सम्** (अव्य०) कामना पूर्वक [illegible]

साशङ्क (वि०) [illegible] [illegible]

साशयन्दक (पुं०) [illegible]

साशूक [illegible]

साश्चर्य (वि०) [सह आश्चर्येण ब० स०] 1 आश्चर्य [illegible] आश्चर्यान्वित, **र्यम्** (अव्य०) आश्चर्य के साथ, [illegible] से।

सास्र (**स्र**) (वि०) [सह अस्रेण] 1 खून या [illegible] युक्त [illegible] आँसू से भरा हुआ [illegible]

सासूयी [सा, [illegible] [illegible] क्विप् [illegible]] [illegible] पत्नी की माता।

साष्टाङ्गम् (अव्य०) [सह अष्टाङ्गैः ब० स०] [illegible] [illegible] शरीर के आठ अंगों से पृथ्वी को छूकर दे० 'अष्टन्' के अन्तर्गत अष्टाङ्ग प्रणाम)

सास (अ०) [सह आसेन] धनुर्धारी [illegible]

सासुसु (वि०) बाण फेंकने वाला -कि० १५।१६।

सासूय (वि०) [सह असूयया] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, तिरस्कारपूर्ण, -**यम्** (अव्य०) डाह के साथ, रोषपूर्वक तिरस्कार के साथ [illegible]

सास्ना [सम्+न, णित् वृद्धि] गाय या बैल का गल

कम्बल, [illegible] साम्न विम व लक्षणम [illegible] रोमन्थ [illegible] सायकै निभी [illegible] शि० ५।६२।

साहचर्यम् [illegible] साथ [illegible] साथ साथ बसना [illegible] सो बिसर्गस्थियश्य [illegible] साहचर्यम [illegible] मा० १ कु० [illegible] रघु [illegible] वेणी० १।८ शि० १५।८१।

सावमम [सह + णिच + ल्युट्] सहन [illegible]

साहसम् [illegible] 2 [illegible] जबर्दस्ती [illegible] अपराध [illegible] कार्य 3 [illegible] मनु० [illegible] सम०—**अङ्क** [illegible] 2 [illegible] **अध्यवसायिन** (वि०) [illegible] करने वाला **एकरसिक** (वि०) [illegible] **कारिन्** (वि०) 1 [illegible] [illegible] करने [illegible]।

साहसिक (वि०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] मा० ९ [illegible] मार करने वाला [illegible]।

साहसिन् (वि०) [साहस + इनि] 1 प्रचण्ड [illegible] 2 [illegible] आगे बढ़ने वाला।

साहस्र (वि०) (स्त्री० **स्री**) [सहस्र + अण्] 1 हजार से सम्बन्ध रखने वाला 2 हजार से युक्त 3 एक हजार से मोल लिया हुआ 4 प्रति हजार दिया हुआ (ब्याज आदि) 5 हजार गुणा — **स्रम्** एक हजार सैनिकों का टुकड़ी — **स्रम्** एक हजार का समूह।

साहाय्यकम [illegible] 1 सहायता, साहाय्य मदद [illegible] रघु० १७।५ 2 [illegible] मैत्री [illegible] 3 [illegible] सहायक सेना।

साहाय्यम् [सहाय + ष्यञ्] 1 सहायता मदद, सहारा 2 मैत्री [illegible]।

साहित्यम् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] आलंकारिक रचना [illegible] विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः भर्तृ० ३।१२ 3 [illegible] [illegible] साहित्यदर्पण [illegible] (अलंकार ग्रंथ)।

साह्वम [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]।

साह्वय [illegible] [illegible]।

सि [illegible] सिनोति सिनीते सिनाति [illegible] 1 बांधना [illegible] 2 [illegible]।

सिंह [illegible] 1 शेर (कहा जाता है कि [illegible] 2 [illegible] राशि का चिह्न 3 (समास के अन्त में [illegible]) [illegible] श्रेष्ठ [illegible] रघुसिंह [illegible] **अवलोकनम्** शेर का पीछे मुड़ कर देखना **न्याय** सिंहावलोकन का न्याय [illegible] [illegible] पूर्ववर्ती और परवर्ती [illegible] के अन्तर्गत [illegible] **आसनम्** राजगद्दी, सिंहासन [illegible] **आस्य** [illegible] की [illegible] **प्रज्वलित** [illegible] शिव का विशेषण [illegible] (वि०) शेर की भांति गर्वीला **ध्वनि—नाद** 1 शेर की दहाड़ कु० १।५६ [illegible] 2 [illegible], **द्वारम्** मुख्य दरवाजा [illegible] रचना [illegible], [illegible] एक प्रकार का संभोग [illegible] शिव का विशेषण — **विक्रम** (वि०) 1 शेर की भांति [illegible] 2 [illegible] शेर का मार डालना।

सिंहलम् [सिंह + लाति [illegible]] 1 टिन 2 पीतल 3 [illegible] [illegible] (प्रा० [illegible]) सिंहलेश्वर [illegible] — रत्ना० १, [illegible] (पु० ब० व०) लंका देशवासी लोग।

सिहलकम् [सिहल + कन्] लंका का द्वीप
सिंघाणम् (णम्) [शिङ्घ् ...] 1 [illegible] 2 नाक का मल।
सिहिका [सिंह् ...] [illegible] समय पुष्प पुष्प पुष्प [illegible]
सिही [सिह् ...] 1 [illegible] 2 [illegible]
सिकता [सिक् ...] 1 [illegible]
[illegible]
सिकतिल [illegible]
सिक्त [illegible] 2 [illegible]
[illegible] 3 [illegible]
सिक्थम् [सिच् + थक्] 1 उबले हुए [illegible]
[illegible]
[illegible] 1 [illegible]
माम 2 [illegible]
सिक्थक [illegible]
सिक्थ [illegible]
सिङ्क् (घा) णम् [शिङ्घ् ...] [illegible]
[illegible] 2 नाक का मल
सिङ्खाणी [सिङ्घ् ...] [illegible]
[illegible]
[illegible] 1 [illegible]
[illegible]
(सिमिसिम्) [illegible]
1 छिड़क [illegible]
[illegible]
[illegible] 2 [illegible]
(सिच्...) [illegible]
[illegible] 1 [illegible]
1 मेघ [illegible]

[illegible] 2 [illegible] (प्र०) [illegible]
[illegible]
सिञ्जा [illegible]
सिञ्जित [illegible]
सित [illegible] कन्] 1 सफेद 2 बंधा हुआ [illegible] 3 [illegible] 1 सफेद रंग 2 [illegible]
[illegible] 3 [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]
[illegible]
[illegible] उत्पलम् सफेद [illegible]
[illegible] धातु [illegible]
[illegible]
सिता [illegible]
[illegible]
सिति [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]
सिद्ध [illegible] 1 सम्पन्न [illegible] 2 प्राप्त उपलब्ध [illegible]
[illegible] (जैसे कि नियम) [illegible] किया हुआ [illegible]

(जैसे कि कोई कानूनी अभियोग) 9 दिया गया, चुकाया गया, (ऋण आदि) चुकता किया गया 10. पकाया गया, (भोजन) बनाया गया 11 परिपक्व, पका हुआ 12 सर्वथा तैयार किया गया मिश्रित, (वनस्पति आदि) पकाई गई 13 (रुपया आदि) तैयार 14 वश में किया गया, जीता गया, (जादू के द्वारा) अधीन किया गया 15 वशीभूत किया गया, अनुग्रह बना हुआ 16 पूर्णत: विज्ञ या दक्ष, प्रमाण जैसा कि रससिद्धम् 17. सम्पादित, (साधना आदि के द्वारा) पवित्रीकृत 18. मुक्त किया हुआ 19 अलौकिक शक्ति से युक्त 20 पावन, पवित्र, पुण्यात्मा 21 दिव्य, अविनश्वर, नित्य 22. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 23 [illegible] द्धः 1 अर्धदिव्य प्राणी जो अत्यन्त पवित्र और पुण्यात्मा माना जाता है [illegible] विशेष जिसमें आठ सिद्धियाँ हों— उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते शृङ्गाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः—कु० १।५, 2. अन्तर्दृष्टि प्राप्त सन्त ऋषि या महात्मा (जैसे कि व्यास 3 कोई भी सन्त, ऋषि या महात्मा [illegible] रत्ना० १ 4 जादूगर, ऐन्द्रजालिक 5 कानूनी मुकदमा, अदालती जाँच 6 गुड़, [illegible] सम० अन्तः 1 सर्वसम्मत फल 2. किसी तर्क का प्रदर्शित उपसंहार, किसी प्रश्न का सर्वसम्मत [illegible], सही तथा तर्कसंगत उपसंहार (पूर्वपक्ष के निराकरण के पश्चात्) 3. प्रमाणित तथ्य मानी हुई सच्चाई सिद्धान्त, मत 4 निर्णायक साक्ष्य के आधार पर अवलम्बित कोई माना हुआ मूलपाठ का ग्रन्थ, कोटि (स्त्री०) युक्तिगत बिन्दु जो तर्कसंगत उपसंहार माना जाता है, पक्षः किसी युक्ति का तर्कसंगत पार्श्व, अन्नम् पकाया हुआ भोजन, अर्थ (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सम्पन्न कर लिया है, सफल (—र्थः) 1 सफेद सरसों 2 शिव का नाम 3 [illegible] बुद्ध का नाम, आसनम् धर्मसाधना में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति,—गङ्गा, नदी, सिन्धुः मन्दाकिनी आकाशगंगा, ग्रहः विशेष प्रकार का पागलपन मनोविक्षिप्त, —क्षेत्रम् काशी, धातु पारा पक्ष. किसी प्रतिज्ञा का सर्वसम्मत तथा तर्कसंगत पहलू —प्रयोजनः सफेद सरसों, योगिन् (पुं०) शिव का विशेषण, —रस (वि०) खनिज, धातुमय (—सः) 1 पारा 2 रसायनज्ञाता, सङ्कल्प (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सिद्ध कर लिया है, सेनः कार्तिकेय का नाम, स्थाली ऋषि की बटलोई या पात्र (ऐसा समझा जाता है कि इस बर्तन से इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है और फिर भी यह भोजन से भरपूर रहता है)।

सिद्धता, —त्वम् [सिद्ध+तल्+टाप्, त्व वा] सम्पन्नता, पूर्णता, पूरा करना।

सिद्धि (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] 1 निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पूर्ति, पूरा होना, (किसी पदार्थ की) पूर्ण अवाप्ति —क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे —सुभा० 2 सफलता, समृद्धि, कल्याण, कुशल-क्षेम 3 स्थापना प्रतिष्ठा 4 प्रमाणन, प्रदर्शन, प्रमाण, निर्विवाद परिणाम 5 (किसी नियम या विधि की) वैधता 6 फैसला, निर्णय, व्यवस्था (किसी कानूनी मुकदमे की) 7 निश्चिति, सचाई, यथार्थता, शुद्धता 8 अदायगी (ऋण का) परिशोध 9 तैयार करना (औषधि आदि का) पकाना 10 समाधान या समाधान 11 [illegible] 12 निरपेक्ष पवित्रता या विशुद्धता 13 अतिमानव शक्ति, यह शक्तियाँ आठ हैं—अणिमा लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा तथा ईशित्व या वशित्व तथा कामावसायिता 14 जादू के द्वारा अतिमानव [illegible] 15 [illegible] 16 [illegible] 17 [illegible] मोक्ष 18 [illegible] बुद्धि 19 [illegible] अन्तर्धान होना [illegible] अदृश्य करना 20 जादू की खड़ाऊँ 21 [illegible] 22 दुर्गा का नाम। सम० द [illegible] या सर्वोपरि आनन्दातिरेक देने वाला (—द:) शिव का विशेषण, दात्री दुर्गा का विशेषण, योग. [illegible] का विशेष प्रकार का शुभ संयोग।

सिध् [illegible] सिध्यति, सिद्ध [illegible] [illegible] सिसिध्यति) 1 सम्पन्न होना, पूरा होना, [illegible] सिध्यति [illegible] [illegible] सिध्यन्ति कार्याणि न [illegible] 2 सफल होना, सफलता प्राप्त करना [illegible] प्रक्रिया [illegible] पूरा करना [illegible] 3 अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करना 4 सिद्ध होना, प्रमाणित होना, वैध होना यदि वचनमात्रेणैवाधिपत्यं सिध्यति [illegible] 5 6 व्यवस्थित या अभिनिर्णीत होना 7 सर्वथा तैयार किया हुआ या पकाया हुआ होना 8 विजित या जीता हुआ होना—पंच० ३।३६ प्र—, 1 सम्पन्न होना, कार्यान्वित होना, सफल होना शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः—भग० ३।८ तपसैव प्रसिध्यन्ति —मनु० ११।२३९ 2 उपलब्ध या प्राप्त होना 3 विख्यात होना, दे० 'प्रसिद्ध', सम्—, 1 पूरा किया जाना 2 सर्वथा सम्पन्न या क्रियान्वित होना, पूरी तरह अनुष्ठित होना 3. आनन्दातिरेक प्राप्त करना, प्रसन्न होना—जप्येनैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नात्र संशयः —मनु० २।८७।

ii (भ्वा० पर० सेधति, सिद्ध, इकारान्त उकारान्त

उपसर्गों के पश्चात् 'सिध्' के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1 जाना 2 हटाना, दूर करना 3 नियन्त्रण [illegible] रोकना 4. निषेध करना, [illegible] देना, समादेश देना, निदेश देना 6 [illegible] होना, अप [illegible], दूर करना, [illegible] करना, [illegible] करना, आदि [illegible] 3 [illegible] करना [illegible] दूर करना [illegible] प्रति [illegible] प्रतिषिद्ध [illegible]

[illegible]

विप्रति [illegible] परिवाद करना [illegible]

[illegible] प्रतिषिद्धमिदम् [illegible]

सिध्मम्, सिध्मन् [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible] कुष्ठ [illegible]

सिध्मल [illegible] 1 [illegible] लकड़ी [illegible] काठ [illegible]

सिध्मा [illegible] 1 [illegible] काठ [illegible] 2 [illegible]

सिध्य [illegible]

सिध्र [illegible] 2 [illegible]

सिध्रकावणम् [illegible]

सिन [illegible]

सिनी [illegible]

सिनीवाली [illegible]

[illegible]

सिन्दुकः, सिन्दुवारः [illegible]

सिन्दूर [illegible]

रम् [illegible]

मुद्रा मुद्रित [illegible]

सिन्धुः [illegible]

2 सिन्धुनदी के आस पास का देश 4. मालवा में बहने वाली एक नदी का नाम मेघ० २९ (यहाँ पर मल्लि० का टिप्पण—सिन्धु नाम नदी नु कुमारि [illegible] निरर्थक है) मा० ६।२. (उस स्थान पर [illegible]) 5 हाथी के सूँड से निकला हुआ पानी 6 हाथी के गण्डस्थलों से बहने वाला दान [illegible] बड़ा दरिया या नदी [illegible] सिन्धु—रघु० १३।१५, मेघ० ४६। [illegible] ज (वि०) 1 नदी में उत्पन्न 2 समुद्र में उत्पन्न 3 सिन्ध देश में उत्पन्न, (—जः) चन्द्रमा [illegible] नाम, [illegible]

सिन्धुक सिन्धुवार, [illegible] सिन्धुवार, [illegible]

सि [illegible]

सिन्व [illegible] सिलना [illegible]

सिप्र [illegible] 2 [illegible]

सिप्रा [illegible] 2 [illegible] एक नदी का नाम, दे० [illegible]

सिम (वि०) [illegible]

सिम्बा, –बी [illegible]

सिर [illegible]

सिरा [illegible] 1 शरीर का [illegible] वाहिका [illegible] 2 डोलची, [illegible]

सिल् (तुदा० पर० सेट् [illegible]) 1 सीला [illegible] करना, [illegible] मनोभव [illegible] 2 [illegible] सोच्यति [illegible]

सिकरः [illegible]

सिसाधयिषा [illegible] सिद्ध करने की इच्छा [illegible] 2 [illegible] सिद्ध करने की इच्छा [illegible]

सिसृक्षा [illegible] रचना करने की इच्छा।

[illegible] काटेदार [illegible]

सिह्लः सिह्लक [illegible]

सिह्लकी, सिह्ली [illegible]

सीक् i (भ्वा० आ० सीकते) 1 छिड़कना, छोटी छोटी बूंदें करके बखेरना 2. जाना, हिलना-जुलना।
ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० सीकति, सीकयति—ते) 1 उतावला होना 2 सहिष्णु होना 3 स्पर्श करना।

सीकरः [सीकति सिच्यतेऽनेन + सीक् + अरन्] 1 फुहार वर्षा, जलकण पड़ना, फूही पड़ना 2 छींटे पानी की छोटी छोटी बूंदें, दे० शीकर।

सीता [सि + त पृषो० दीर्घ] 1 हल के चलाने से खेत में बनी हुई रेखा, खूड, हल की फाल से खुदी हुई रेखा 2 जुती हुई या खूडवाली भूमि, हल से जोती हुई भूमि—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम् कु० ५।६१ 3 कृषि, खेती जैसा कि 'सीताद्रव्य' में 4 मिथिला के राजा जनक की पुत्री का नाम, राम की पत्नी का नाम [इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि राजा जनक ने इसे हल की फाल द्वारा बने खूड से प्राप्त किया। बात यह थी कि सन्तान प्राप्ति की इच्छा से राजा ने एक यज्ञ का आरंभ किया था, उसकी तैयारी के समय उसे हल चलाते समय सीता खूड में से मिली। इसीलिए 'अयोनिजा' या 'धरापुत्री' इसके विशेषण हैं। राम के साथ सीता का विवाह हुआ, उनके साथ वह वन में गई। जब रावण उसे वन में से उठा कर ले गया और उसका सतीत्व भंग करने की चेष्टा करने लगा तो सीता ने उसके इस दुष्ट प्रस्ताव को घृणा के साथ ठुकरा दिया। जब राम को इस बात का पता लगा कि सीता लंका में है, तो उसने लंका पर चढ़ाई की रावण और उसकी सेना को मार कर सीता का उद्धार किया। राम के द्वारा पत्नी के रूप में फिर से स्वीकृत किये जाने से पूर्व सीता को भीषण अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा। यद्यपि राम को उसके सतीत्व पर पूरा विश्वास था फिर भी लोकापवाद के कारण उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया। सीता इस समय गर्भवती थी। वाल्मीकि ऋषि के रूप में अपने संरक्षक को पा सीता उन्हीं के आश्रम में रहने लगी वहीं कुश और लव नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया वाल्मीकि मुनि ने बच्चों का पालन पोषण किया। अन्त में वाल्मीकि के द्वारा सीता राम को सौंप दी गई]। 5 एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी 6 उमा का नाम 7 लक्ष्मी का नाम 8 गंगा की चार धाराओं में से एक (पूर्वी धारा) 9 मदिरा। सम०—**द्रव्यम्** खेती के उपकरण, कृषि के औज़ार मनु० ९।२९३, —**पतिः** रामचन्द्र का नाम —**फलः** कुम्हड़े की बेल, (—**लम्**) कुम्हड़ा।

सीतालकः (पुं०) मटर।

सीत्क,-र, **सीत्कृति** (स्त्री०) [सीत् + कृ + घञ्, क्तिन वा] सांस ऊपर खींचने का शब्द, सिसकारी, (आह भरने या सरदी से ठिठुरने के समय सी-सी करना या मर्मर ध्वनि)—यथा दष्टाधर तस्या ससीत्कार-मिवाननम् विक्रम० ४।२१।

सीत्य (वि०) [सीता + यत] जोते गये या हल की फाल से बने खूडों से मापा गया, —**त्यम्** चावल, धान्य, अन्न।

सीदम् (नपुं०) आलस्य शिथिलता सुस्ती।

सीधु (पुं०) [सिध् + उ, पृषो०] राब या गुड़ से बनाई हुई शराब, ईख की मदिरा स्फुरदधरसीधवे तव वदन-चन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम् गीत० १० शि० ९।८७ रघु० १६।५२। सम० —**गन्धः** बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़ —**पुष्पः** 1 कदम्ब का वृक्ष 2 मौल-सिरी का पेड़ —**रसः** आम का पेड़ —**संज्ञः** मौलसिरी का पेड़।

सीध्रम् (नपुं०) गुदा मलद्वार।

सीप (पुं०) नाव की शक्ल का यज्ञ-पात्र।

सीमन् (स्त्री०) [सि + मनिन्, नि० दीर्घ] 1 सीमा हद, दे० सीमा सीमानम् यायन्यशोऽप्यजन्त शि० ३।५७, दे० निःसीमन् भी 2 अण्डकोष सीम्नि पुष्कलको हत सिद्धा०।

सीमन्तः [सीम्नोऽन्त शक० पररूपम्] 1 सीमारेखा, सीमान्त 2 सिर के बालों की विभाजक रेखा सिर की मांग जिसके दोनों ओर बाल विभक्त हों—सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् मेघ० ६५ शि० ८।६९ महावीर० ५।४४। सम० —**उन्नयनम्** बालों का विभाजन बारह संस्कारों में से एक जिसको स्त्रियाँ गर्भाधान के चौथे छठे या आठवें महीने में मनाती हैं।

सीमन्तक [सीमन्त + कन्] विशेष प्रकार के नरक का अधिवासी —**कम्** सिन्दूर।

सीमन्तयति (ना० धा०, पर०) 1 बालों को अलग अलग करना 2 मांग निकालना सेना सीमन्तयन्नरे —कीर्ति० ५।४८।

सीमन्तित (वि०) [सीमन्त + णिच् + क्त] 1 (बाल आदि) विभाजित 2 मांग निकाल कर अलग किये हुए सर्वाङ्गसीमन्तितशैलवीका (प्रदेशाः) शि० ३।८० स्याद्वसीमन्तितमान्द्रकर्दमान् (पथः) कि० ४।१८।

सीमन्तिनी [सीमन्त + इनि + ङीप्] स्त्री, महिला सा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम् हि० २।७, मेघ० ११०, भट्टि० ५।७२।

सीमा [सीमन् + डाप्] 1. हद, मर्यादा, किनारा, छोर सरहद 2 खेत गांव आदि की सीमा पर सीमा प्रान्त टीला या मेंड़ सीमा प्रति समुत्पन्ने विवादे

—मनु० ८।२४५, याज्ञ० २।१५२ 3. चिह्न, सीमान्त 4 किनारा, तीर, समुद्रतट 5 क्षितिज 6 सीवनी, माग (जैसे खोपड़ी की) 7. शिष्टाचार या नीति की सीमा औचित्य की मर्यादा 8 उच्चतम या अधिकतम सीमा, उच्चतम बिन्दु, चरमसीमा सीमेव पद्मासन कौशलस्य भट्टि० १।९ 9 खेत 10 ग्रीवा का पृष्ठ भाग 11 अण्डकोष। सम० अधिपः पड़ोसी राजा, —अन्तः 1 सीमारेखा, छोर, सरहद 2 अधिकतम सीमा, —पूजनम् 1 गाँव की सीमा का पूजन 2 बरात के आने पर गाँव की सीमा पर दूल्हे का सत्कार —उल्लङ्घनम् अतिक्रमण करना, सीमा पार करना सरहद लांघना, —निश्चयः सीमान्त या सीमारेखाओं के विषय में कानूनी निर्णय —लिङ्गम् सीमा चिह्न, भू चिह्न, —वादः सीमा संबंधी झगड़ा, —विनिर्णयः सीमारेखाओं के झगड़ों का फैसला —विवादः सीमासंबंधी झगड़ा या मुकदमबाजी, —धर्मः सीमाविषयक झगड़ों से संबंध रखने वाला कानून —वृक्षः वह पेड़ जो सीमा रेखा का काम दे रहा है, —सन्धिः दो सीमाओं का मिलन।

सीमिकः [स्यम् + किकन्, सम्प्रसारण दीर्घश्च] 1 एक वृक्षविशेष 2 बाम्बी 3 चिऊँटी या ऐसा ही छोटा कोई जन्तु।

सीरः [सि + रक् पृषो०] 1 हल सरा. सीराकर्षण-सुरभि क्षेत्रमारुह्य मालम् मेघ० 2 सूर्य 3 आक या मदार का पौधा। सम० —ध्वजः जनक का विशेषण —पाणिः, —भृत् (पु०) बलराम के विशेषण —योगः हल में पशु को जोतना या हल में जुती पशु की जोड़ी।

सीरकः [सीर + कन्] दे० सीर।

सीरिन् (पु०) [सीर + इनि] बलराम का विशेषण शि० ३।२।

सीलन्धः —ध (पु०) एक प्रकार की मछली।

सीवनम् [सिव् + ल्युट् नि० दीर्घः] 1 सीना, तुरपना टाँका लगाना 2 जोड़, संधिरेखा (जैसे खोपड़ी की)।

सीवनी [सीवन + ङीप्] 1 सुई 2 लिंगमणि का संधि स्थान।

सीसम्, सीसकम्, सीसपत्रकम् [सि + क्विप् पृषो० दीर्घ सी, सा क म, सी + स कर्म० स०; सीस + कन् सीस + पत्रक] सीसा मालवि० ५।१४ याज्ञ० १।१९०।

सीहुण्डः [= सिहुण्ड पृषो०] सेहुँड़ (बाड़ लगाने का एक कांटेदार पौधा)।

सु । (भ्वा० उभ० सुवति—ते) जाना, हिलना-जुलना।

II (भ्वा० अदा० पर० सवति, सौति) शक्ति या सर्वोपरि सत्ता धारण करना।

III (स्वा० उभ० सुनोति, सुनुते, सुत, इकारान्त या उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् धातु के स् को मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1 भींचना, दबा कर रस निकालना 2 अर्क खींचना 3 उंडेलना छिड़कना, तर्पण करना 4 यज्ञानुष्ठान करना, सोमयज्ञ करना 5 स्नान करना, इच्छा० (सुसूषति—ते)। अभि—, 1 सोमरस निकालना 2. मिलाना मिश्रण करना गड्डमड्ड करना यानि वैवाभिषूयन्ते पुष्पमूलफलैः शुभैः—मनु० ५।१० 3 छिड़कना भट्टि० ९।९०, उद् —उत्तेजित करना विक्षुब्ध करना प्र—, पैदा करना, जन्म देना।

सु (अव्य०) [सु + डु] एक निपात जो कर्मधारय और बहुव्रीहि समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, विशेषण और क्रियाविशेषणों में भी जुड़ता है। निम्नांकित इसके अर्थ हैं 1 अच्छा, भला श्रेष्ठ यथा 'सुगन्धि' में 2 सुन्दर, मनोहर—यथा सुमध्यमा सुकेशी आदि में 3 खूब, सर्वथा, पूरी तरह ठीक प्रकार से सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः। सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम् हि० १।२२ 4 आसानी से, तुरन्त यथा 'सुकर और सुलभ में 5 अधिक, अत्यधिक, बहुत अधिक—यथा सुदारुण और सुदीर्घ आदि। सम० —अक्ष (वि०) 1 अच्छी आँखों वाला 2 उग्र और तेज अंगों वाला, —अङ्ग (वि०) सुडौल मनोहर, प्रिय —अच्छ (वि०) दे० शब्द के नीचे, —अन्त (वि०) जिसका अंत भला हो, अच्छी समाप्ति वाला, —अल्प, —अल्पक (वि०) दे० शब्द के नीचे —अस्ति,—अस्तिक दे० शब्द के नीचे, —आकार, —आकृति (वि०) सुनिर्मित, मनोहर, सुन्दर, —आगत दे० शब्द के नीचे —आभास (वि०) बड़ा शानदार व प्रसिद्ध कि० १५।५२,—इष्ट (वि०) भली भाँति किया गया यज्ञ —कृत् (पु०) अग्नि का एक रूप —उक्त (वि०) अच्छा बोला हुआ खूब कहा हुआ—अथवा सूक्तं खलु केनापि—वेणी० 3 (—क्तम्) अच्छी या समझदारी की उक्ति नेनु वाक्पुरो य अज्ञान् पथि सत्ता सूक्तं सुभाष्यन्निधि भर्तृ० २।६ रघु० १५।९५ 2 वैदिक भजन या सूक्त यथा पुरुषसूक्त आदि —दर्शिन् (पु०) मन्त्रद्रष्टा, वैदिक ऋषि —वाच् (स्त्री०) 1 भजन 2 स्तुति का शब्द, —उक्तिः (स्त्री०) 1 अच्छा या सौहार्दपूर्ण भाषण 2 अच्छा या चातुर्यपूर्ण कथन 3 सद्वाक्य. —उत्तर (वि०) 1 अतिश्रेष्ठ 2 उत्तर दिशा की ओर, —उत्थान (वि०) खूब प्रयत्न करने वाला बलशाली, फुर्तीला, (—नम्) प्रबल प्रयत्न या उद्यम,—उन्मद, —उन्माद (वि०) बिल्कुल पागल, दीवाना —उपसदन (वि०) जिसके पास पहुँचना

आसान हो, **उपस्कर** (वि०) अच्छे उपकरणों से युक्त, **कच्छू** खुजली, **-कन्द** 1 प्याज 2 आलू, कचालू, शकरकंद आदि कंद 3 एक प्रकार का घास, **-कन्दक:** प्याज, **कर** (वि०) (स्त्री० रा री) 1 जो आसानी से किया जा सके क्रियात्मक कार्य -वचन सुकरं कर्तुं (अध्यवसितुम्) दुष्करम्-वेणी० ३ करने की अपेक्षा कहना आसान है' 2 जिसका प्रबंध आसानी से किया जा सके (-रा) सुशील गौ (-रम्) दान, परोपकार,- **कर्मन्** (वि०) 1 जो अच्छे कार्य करता है, पुण्यात्मा भला 2 सक्रिय परिश्रमी (पुं०) विश्वकर्मा का नाम **कल** (वि०) (वि०) (धन का) उदारता पूर्वक देने तथा सदुपयोग करने में जिसने कीर्ति अर्जित कर ली हो, **काण्डिन्** (वि०) 1 सुन्दर तनों से युक्त 2 सुंदरता के साथ जुड़ा हुआ (पुं०) भौंरा **कुन्दक** प्याज **कुमार** (वि०) 1 मृदु सुकुमार कोमल 2 सौंदर्ययुक्त तरुण (-र) 1 सुंदर युवक 2 एक प्रकार का गन्ना, **कुमारक:** 1 सुंदर तरुण 2 शालि चावल (-कम्) तमालपत्र, **कृत्** (वि०) 1 भला करने वाला, उपकारी 2 पवित्रात्मा, गुणसंपन्न धर्मात्मा 3. बुद्धिमान विद्वान् 4 भाग्यशाली किस्मत वाला 5 अच्छे यज्ञ करने वाला (पुं०) 1 कुशल कमकर 2. त्वष्टा का नाम, **कृत** (वि०) भली भांति किया हुआ 2 सर्वथा किया हुआ 3 खूब किया हुआ या सुरचित 4 जिसके साथ कृपापूर्वक व्यवहार किया गया हो, सहायता दिया गया मित्रता के सूत्र से आबद्ध 5 सद्गुणी धर्मात्मा पवित्रात्मा 6 भाग्यशाली किस्मत वाला, (-तम्) कोई भी भला या अच्छा कार्य, कृपा अनुग्रह, सेवा—नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभु: भग० ५।१५, मेघ० १७ 2 सद्गुण नैतिक या धार्मिक गुण स्वर्गाभिसंधि-सुकृतं वञ्चनामिव मेनिरे कु० ६।४७ तमिच्छन्त्यम न सुकृतं तवनि—रघु० १४।१६ 3 सौभाग्य, मांगलिकता 4 पारितोषिक, पुरस्कार **कृति** (स्त्री०) 1 कृपा सद्गुण 2 तपस्या करना **कृतिन** (वि०) 1 भलाई करने वाला, कृपापूर्वक व्यवहार करने वाला 2 सद्-गुणसम्पन्न, पवित्रात्मा, भला धर्मात्मा सन्त भक्त निरापद् सुकृतिना कीर्तिश्चिरं वर्तताम् हि० ४। १३२ भग० ७।१६ 3 बुद्धिमान् विद्वान् 4 परोपकारी 5 भाग्यशाली किस्मत वाला —**केशर** (-स) र गलगल का पेड़ **-क्रतु** 1 अग्नि का नाम 2 शिव का नाम 3 इन्द्र का नाम 4 मित्र और वरुण का नाम 5 सूर्य का नाम **-ग** (वि०) 1 सरौली चाल चलने वाला 2 शालीन ललित 3 सुगम्य पंच० ७।१४१ 4 आसानी से समझ आने वाला (वि० सुबो) (-गम्) 1 विष्ठा, मल 2 प्रसन्नता, **-गत** (वि०) 1 भली भांति किया हुआ 2 भली-भांति प्रदान किया हुआ (-त:) बुद्ध का विशेषण, **-गन्ध:** 1 खुशबू अच्छी गंध गन्धद्रव्य 2 गन्धक 3 व्यापारी, (-धम्) 1 चन्दन 2 जीरा 3 नील कमल 4 एक प्रकार का सुगन्धित घास (-धा) पवित्र तुलसी, **-गन्धक:** 1 गन्धक 2 लाल तुलसी 3 नारंगी 4 एक प्रकार की लौकी, **-गन्धि** (वि०) 1 मधुर गन्ध वाला, खुशबूदार, सुरभित 2 सद्गुणों से युक्त पवित्रात्मा (-न्धि:) 1 गन्धद्रव्य सुरभि 2 परमात्मा 3 एक प्रकार का मधुगन्ध वाला आम (-नपुं०-न्धि) 1 पिप्परामूल 2 एक प्रकार का सुगन्धित घास 3 धनिया °त्रिफला 1 जायफल 2 भांग **-गन्धिक** 1 धूप 2 गन्धक 3 एक प्रकार का (बासमती) चावल (-कम्) सफेद कमल **-गम** (वि०) 1 जहाँ आसानी से पहुँचा जाय सुलभ 2 आसान 3 सरल बोधगम्य **-गहना** यज्ञस्थान का अस्पृश्यादि के स्पर्श से बचाने के लिए बनाया गया घेरा **-गृत्ति** द० ऊपर के शब्द **-गृह** (वि०) (स्त्री० ही) सुन्दर घर वाला भली भांति रहने वाला सुगृहा निर्गृही कृता पंच० १।३९० **-गृहीत** (वि०) 1 भली भांति पकड़ा हुआ अच्छा तरह समझा हुआ 2 समुचित रूप से या शुभ रीति से प्रयुक्त **-नामन्** (वि०) 1 वह जिसका नाम मांगलिक रूप से लिया जाय या जिसका नाम लेना (बलि युधिष्ठिर आदि) शुभ समझा जाय प्रातः स्मरणीय सम्मानपूर्वक नाम लेने की रीति का द्योतन करने वाला शब्द सुगृहीत नाम्न: भट्टगोपालस्य पौत्र: मा० १ प्रात: स्मर्तव्य और या नित्याभ्यासी **-ग्रीव** (वि०) अच्छी गर्दन वाला, (-व:) 1 नायक 2 हंस 3 एक प्रकार का शस्त्र 4 सुग्रीव जो बालि का भाई था (कबन्ध की बात सुनकर राम सुग्रीव के पास गये। सुग्रीव ने बतलाया कि किस प्रकार उसके भाई बालि ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। साथ ही अपनी पत्नी का उद्धार करवाने के लिए राम से सहायता मांगी। स्वयं सुग्रीव ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं भी आपकी पत्नी सीता का उद्धार करवाने में आपकी सहायता करूँगा। फलत: राम ने बालि को मार गिराया, सुग्रीव को राजगद्दी पर बिठाया। तब सुग्रीव ने अपनी वानर सेना साथ लेकर राम का साथ दिया जिससे कि राम ने रावण को मार कर सीता का उद्धार किया), °ईश: राम का नाम, **-ग्लह** (वि०) बहुत बड़ा हुआ भाग्य **-चक्षुस्** (वि०) अच्छी आंखों वाला भली भांति देखने वाला, (पुं०) 1 विवेकशील या दिव्यज्ञान संपन्न विद्वान् पुरुष 2 गूलर

का पेड़, —चरित, —चरित्र (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचारयुक्त (—तम्, —त्रम्) 1. सदाचार, अच्छा चालचलन 2 गुण तव सुचरितमफलग्रीव मन प्रतनु—श० ६।११, (—ता, —त्रा) सदाचारिणी, पतिव्रता, और सती साध्वी स्त्री,—चित्रक: 1 राम-चिरैया, एक पक्षी 2 चीतल सांप, —चित्रा एक प्रकार की लौकी, —चिन्ता गहनचिन्तन, सद्विचार, —चिरम् (अव्य०) दीर्घ काल तक, बहुत देर तक, —चिरायुस् (पुं०) सुर देवता, —जन: 1. भला पुरुष, सद्गुणी, परोपकारी 2 सज्जन,—जनता 1 भलाई, नेकी परोपकार, सद्गुण—ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता—भर्तृ० २।८२ 2. भले पुरुषों का समूह, —जन्मन् (वि०) सत्कुलोत्पन्न, कुलीन,—या कौमुदी नयनयोर्भवत: सुजन्मा —मा० १।३४, —जल्प: अच्छी वाणी, —जात (वि०) 1 उच्चकुलोत्पन्न 2. सुन्दर, प्रिय मा० १।१६ रघु० ३।८, —तनु (वि०) 1 सुन्दर शरीर वाला 2. अत्यन्त सुकुमार, दुबला-पतला 3. कृशकाय, दुर्बल-शरीर, (स्त्री० —नु, —नू) कोमलाङ्गी, सुन्दरशरीर —एता सुतनु मुखं ते सख्य: पश्यन्ति हेमकूटगता —विक्रम० १।११, —तपस् (वि०) 1 जो घोर तपस्या करता हो 2. अतिशय तापयुक्त (पुं०) 1 संन्यासी भक्त, साधु, वैरागी 2 सूर्य, (नपुं०) कठोर साधना —तराम् (अव्य०) 1 अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ ढंग से 2 अत्यंत, अधिक, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—तया दुहित्रा सुतरां सवित्री स्फुरत्प्रभामण्डलया चकाशे कु० १।२४, सुतरां दयालु: रघु० २।५३ ४।१९, १८।२४ 3 और अधिक, और भी ज्यादह

सम्प्रत्यवस्था न ते चेत्त्वयि मम सुतरामेष राजन् गतोऽस्मि—भर्तृ० ३।३०, —तर्दन: कोयल, —तलम् 1 'अत्यन्त गहराई' भूमि के नीचे सात लोकों में से एक, दे० 'पाताल' 2 किसी बड़े भवन की बुनियाद —तिक्तक: मूंगे का पेड़, —तीक्ष्ण (वि०) 1 बहुत तेज 2. अत्यंत तीखा 3 बहुत पीडाकारक, (—क्ष्ण:) 1. सहिजन का पेड़ 2. एक ऋषि का नाम —नाम्ना सुतीक्ष्णचरितेन दान्त: रघु० १३।४१, °दशन: शिव का विशेषण, —तीर्थ: 1 अच्छा गुरु 2. शिव का नाम, —तुङ्ग (वि०) बहुत ऊंचा या लंबा, (—ङ्ग:) नारियल का पेड़, —दक्षिण (वि०) 1. अत्यन्त निष्कपट व खरा 2 बहुत उदार यज्ञ में खूब दक्षिणा देने वाला—रघु० १।३०, (—णा) दिलीप राजा की पत्नी का नाम

तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा। पत्नी सुदक्षिणेत्यासीत् रघु० १।३१, ३।१ —दण्ड: बेंत, —दत् (वि०) (स्त्री० —ती) अच्छे दांतों वाला, —दन्त: 1. अच्छा दांत 2. अभिनेता, नर्तक, नट, (—ती) पश्चिमोत्तर दिशा की दिक्करिणी, —दर्श (वि०) (स्त्री० —र्शा, —र्शी) 1. प्रियदर्शन, सुंदर, मनोहर 2. जो आसानी से दिखाई दे (—र्शन:) 1 विष्णु का चक्र, जैसा कि 'कृष्णोऽप्यसुदर्शन:' का० 2 शिव का नाम 3. गिद्ध, (—नम्) जंबू द्वीप का नाम, —दर्शना 1 सुन्दर स्त्री 2. स्त्री 3 आदेश, आज्ञा 4. एक प्रकार की बूटी, —दा (वि०) यथेष्ट, —दामन् (वि०) जो उदारता पूर्वक देता है (पुं०) 1. बादल 2 पहाड़ 3 समुद्र 4 इन्द्र के हाथी का नाम 5 एक दरिद्र ब्राह्मण का नाम जो अपने मित्र कृष्ण से मिलने के लिए भुने चावलों की भेंट लेकर द्वारकापुरी गया था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने फिर धनधान्य और कीर्ति से सम्पन्न किया, —दाय: 1. मांगलिक उपहार 2 विशिष्ट अवसरों पर दिया जाने वाला विशेष उपहार, —दिनम् 1 आनन्दप्रद शुभ दिवस 2 अच्छा दिन, अच्छा मौसम (विप० दुर्दिन), इसी प्रकार 'सुदिनाहम्' इसी अर्थ में —दीर्घ (वि०) बहुत लंबा या, (—र्घा) एक प्रकार की ककड़ी —दुर्लभ (वि०) अत्यन्त दुष्प्राप्य या विरल, —दूर (वि०) बहुत दूर स्थित या दूरवर्ती (—दूरम् 1 बहुत दूर 2 बहुत ऊँचाई तक, अत्यधिक, —दूरात् दूर से, फासले से), —दृश् (वि०) सुन्दर आंखों वाला, (स्त्री०) सुन्दर स्त्री,—धन्वन् (वि०) बढ़िया धनुष को धारण करने वाला, (पुं०) 1 अच्छा तीरंदाज या धनुर्धारी 2 विश्वकर्मा का नाम —धर्म (वि०) कर्तव्यपरायण (स्त्री०) देव परिषद्, देवसभा, —धर्मा, —धर्मी देवसभा यथावृद्धोऽस्मि लोक: सुधर्मानवमा सभाम्—रघु० १७।२८, —धी (वि०) अच्छी समझ वाला, बुद्धिमान् चतुर प्रतिभाशाली, (—धी:) बुद्धिमान् या प्रतिभाशाली पुरुष, विद्वान् पुरुष या पंडित, (स्त्री०) अच्छी समझ, भला ज्ञान, प्रज्ञा,

—नन्द: 1 एक विशेष प्रकार का महल 2 कृष्ण के सेवक का नाम, (—न्दम्) बलराम का मुद्गर

—नन्दा 1 स्त्री 2 उमा या उसकी कोई सखी 3 एक प्रकार का रत्नक, [illegible] स्त्री —नय: 1. अच्छा चालचलन 2. अच्छी नीति, —नयन (वि०) सुन्दर आंखों वाला, (—न:) हरिण, (—ना) 1. सुन्दर आंखों वाली स्त्री 2 सामान्य स्त्री, —नाभ (वि०) सुन्दर नाभि वाला 2. अच्छे नाह या केन्द्र वाला, (—भ:) 1 पहाड़ 2 मैनाक पहाड़, —निभृत (वि०) बिल्कुल अकेला निजी (अव्य० —तम्) चुपचाप, छिपे-छिपे, सट कर निजी रूप में, —निश्चल: शिव का विशेषण, —नीत (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचार युक्त 2 नम्र विनयी (—तम्) 1 अच्छा चालचलन, शिष्ट आचरण 2 अच्छी नीति, दूरदर्शिता —नीति (स्त्री०) 1 अच्छा आचरण, शिष्टाचार,

औचित्य 2 अच्छी नीति 3 ध्रुव की माता का नाम, —शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, सद्गुणी, भला, (—लः) 1 ब्राह्मण 2. शिशुपाल का नाम, — नील (वि०) बिल्कुल काला, या नीला, (—लः) अनार का पेड़, (—ला) सामान्य सन का पौधा, —नेत्र (वि०) सुन्दर आंखों वाला, —पक्व (वि०) 1. अच्छा पका हुआ 2 सर्वथा परिपक्व या पका हुआ (—क्वः) एक प्रकार का सुगन्धित आम, —पत्नी वह स्त्री जिसका पति भद्रपुरुष हो, —पथः 1. अच्छी सड़क 2. सुमार्ग 3. अच्छा चालचलन, —पथिन् (पु०) (कर्तृ० ए० व०—सुपन्थाः) अच्छी सड़क, —पर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णा, —र्णी) 1. अच्छे पत्तों वाला 2 सुन्दर पत्तों वाला, (—र्णः) 1 सूर्य की किरण 2 अर्धदिव्य चरित्र के पक्षियों जैसे प्राणी, देवगन्धर्व 3 अलौकिक पक्षी 4. गरुड़ का विशेषण 5. मुर्गा, —पर्णा, —पर्णी (स्त्री०) 1. कमलों का समूह 2. कमलों से भरा ताल 3. गरुड़ की माता का नाम, —पर्याप्त (वि०) 1. बहुत विस्तार युक्त 2. सुयोग्य —पर्वन् (वि०) अच्छे जोड़ों या सन्धियों वाला, जिसमें बहुत से जोड़ या सन्धियां हों, (पु०) 1. बांस 2 बाण 3. सुर, देवता 4. विशेष चान्द्र दिवस (प्रत्येक मास की पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी और चतुर्दशी) 5 धूआं, —पात्रम् 1 अच्छा या उपयुक्त बर्तन, योग्य भाजन 2 योग्य या सक्षम व्यक्ति, किसी पद के सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति, समर्थ व्यक्ति, —पाद् (स्त्री० पाद्, —पदी) अच्छे या सुन्दर पैरों वाली, —पार्श्वः पाकड़ का पेड़, प्लक्ष, —पीतम् गाजर, (—तः) पांचवां मुहूर्त, (—पुंसी) वह स्त्री जिसका पति भला व्यक्ति हो, —पुष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पा, —ष्पी) अच्छे फूल वाला, (—ष्पः) मूंगे का पेड़ (—ष्पम्) 1 लौंग 2. स्त्रीरज, —प्रलापः स्वस्थ विचार, —प्रतिभा मदिरा, —प्रतिष्ठ (वि०) 1. भली-भांति खड़ा हुआ 2. बहुत प्रसिद्ध, विश्रुत, कीर्तिशाली, विख्यात, (—ष्ठा) 1 अच्छी स्थिति 2. अच्छा मान, प्रसिद्धि, ख्याति 3 स्थापना, निर्माण 4 मूर्ति आदि की स्थापना, अभिषेक, —प्रतिष्ठित (वि०) 1 भली-भांति स्थापित, 2. अभिषिक्त 3 विख्यात, (—तः) गूलर का पेड़, —प्रतिस्नात (वि०) 1 सर्वथा पवित्रीकृत 2. किसी विषय का अच्छा जानकार, —प्रतीक (वि०) 1. सुन्दर आकृति वाला, प्रिय, मनोहर 2. सुन्दर स्कन्ध वाला, (—कः) 1 कामदेव का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. पश्चिमोत्तर दिशा का दिग्गज, —प्रपाणम् अच्छा ताल, —प्रभ (वि०) बड़ा प्रतिभाशाली, यशस्वी, (—भा) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, —प्रभातम् 1. शुभ प्रभात, मंगलमय प्रात: काल दिष्ट्या सुप्रभातमद्य यदयं देवो दृष्ट: उत्तर० ६ 2. प्रातःकालीन ऊषा, —प्रयोगः 1. अच्छा प्रबन्ध, भली-भांति काम में लाया जाना 2. दक्षता, —प्रसाद (वि०) अति करुणामय, कृपानिधि, (—दः) शिव का नाम, —प्रिय (वि०) अत्यन्त प्रिय, रुचिकर, (—या) 1 मनोहारिणी स्त्री 2. प्रेयसी, —फल (वि०) 1. अत्यन्त फल देने वाला, बहुत उत्पादक 2 बहुत उपजाऊ, (—लः) 1 अनार का पेड़ 2 बेरी का पेड़ 3. एक प्रकार का लोबिया, (—ला) 1 कद्दू, लौकी 2. केले का पेड़ 3 भूरे रंग का अंगूर, —बन्धः तिल, —बल (वि०) अत्यन्त शक्तिशाली, (—लः) शिव का नाम, —बोध (वि०) जो आसानी से समझा जाय, (—धः) भला समाचार या उपदेश, —ब्रह्मण्यः 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 यज्ञ में वरण किये गये सोलह पुरोहितों में एक, —भग (वि०) 1 अत्यन्त भाग्यवान् या समृद्धिशाली, प्रसन्न, सौभाग्यशाली, अत्यन्त अनुगृहीत 2 प्रिय, मनोहर, सुन्दर, मनोरम न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्ध युवतिषु—श० ३।९, कु० ४।३४, रघु० ११।८० मा० ९ 3 सुहावना, कृतार्थ, रुचिकर, मधुर—अयमसुभग —मालवि० ३।४, श० १।३ 4 प्रियतम, इष्ट, स्नेही, प्रिय—सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् गीत० ५ 5. श्रीमान्, (—गः) 1. सुहागा 2 अशोक वृक्ष 3 चम्पक वृक्ष 4. लाल कटसरैया, सदाबहार, (—गम्) अच्छा भाग्य °मानिन्, सुभगंमन्य (वि०) अपने आपको सौभाग्यशाली मानने वाला, सुशील हितकर—वाचाल मां न खलु सुभगंमन्यभावं करोति मेघ० ९४, —गा 1 पति की प्रियतमा, प्रेयसी 2 सम्मानित मां 3 कस्तूरिका 4. हल्दी 5 तुलसी का पौधा, °सुतः पतिप्रिया पत्नी का पुत्र —भङ्गः नारियल का पेड़, —भद्र (वि०) अत्यानन्दित या सौभाग्यशाली, (—द्रः) विष्णु का नाम (—द्रा) बलराम और कृष्ण की बहन का नाम जिसका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था। उससे अभिमन्यु नाम का पुत्र पैदा हुआ, —भाषित (वि०) 1. भली भांति कहा गया, सुन्दर रूप से कहा गया 2 सुन्दर भाषण करने वाला, वाग्मी, (—तम्) 1. सुन्दर भाषण, वाग्मिता, अधिगम—शीर्णमङ्गे सुभाषितम्—भर्तृ० ३।२ 2 नीतिवाक्य, सूक्ति, समुपयुक्त कथन सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया। मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तोऽथवा पशुः —सुभा० 3. अच्छी उक्ति —बालादपि सुभाषितं (ग्राह्यम्), —भिक्षम् 1. अच्छी भिक्षा, सफल याचना 2. अन्न की बहुतायत, अनाज खाद्यान्न की प्रचुर राशि, अन्नसंभरण, —भ्रू (वि०) सुन्दर भौंह वाला (स्त्री०—भ्रूः) मनोज्ञ स्त्री (सब

शब्द का सम्बोधन—ए० व० —सुभ्रु बनता है, परन्तु भट्टि, कालिदास और भवभूति जैसे लेखकों ने सुभ्रु का प्रयोग किया है तु० भट्टि० ६।११, कु० ५।४३, मा० ३।८), —मति (वि०) बहुत बुद्धिमान् (स्त्री० —ति) 1 अच्छा मन या स्वभाव, कृपा, परोपकार सौहार्द 2 देवों का अनुग्रह 3 उपहार, आशीर्वाद 4 प्रार्थना, सूक्त 5 कामना, इच्छा 6. सगर की पत्नी का नाम जो साठ हजार पुत्रों की माता थी —मदन आम का वृक्ष, —मध्य, —मध्यम (वि०) पतली कमर वाला, —मध्या, —मध्यमा मनोरम स्त्री, —मन (वि०) बहुत आकर्षक, प्रिय, सुन्दर (—नः) 1 गेहूँ 2 धतूरा (—ना) फूलों से लदी चमेली —मनस् (वि०) 1 अच्छे मन वाला, अच्छे स्वभाव का, उदार 2 खूब प्रसन्न, सन्तुष्ट, (पुं०) 1 देव देवता 2. विद्वान् पुरुष 3 वेद का विद्यार्थी 4 गेहूँ 5 नीम का वृक्ष (स्त्री०, नपुं०—कुछ विद्वानों के अनुसार केवल ब० व० में प्रयोग) फूल रमणीय गन्ध व सुमनसा सन्निवेश —मा० १, (यहाँ सुमनसा ! म दिया गया विशेषणपरक अर्थ भी अभिप्रेत है),—कि सेव्यते सुमनसा मनसापि गन्धः कस्तूरिकाजननशक्तिभृता मृगेण रस० शि० ६।१६ °फलः कैथ, °फलम् जायफल, —मित्रा दशरथ की एक पत्नी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम,—मुख (वि०) (स्त्री० —खा, —खी) 1 सुन्दर चेहरे वाला, प्रिय 2 सुहावना 3 निर्वर्तित, आतुर कि० ६।४२, (—खः) 1 विद्वान् पुरुष 2 गरुड का विशेषण 3 गणेश का विशेषण 4 शिव का विशेषण (—खम्) नाखून की खरोंच (—खा, —खी) 1 सुन्दर स्त्री 2 दर्पण —मूलकम् गाजर —मेधस् (वि०) अच्छी समझ रखने वाला बुद्धिमान, प्रतिभाशाली (पुं०) बुद्धिमान् पुरुष —मेरु 1 सुमेरु नाम का पवित्र पर्वत 2 शिव का नाम, —यवसम् सुन्दर घास, अच्छी चरागाह, —योधन दुर्योधन का विशेषण —रक्षक 1 पेड़ 2 एक प्रकार का आम का पेड़, —रङ्गः 1 अच्छा रंग 2 संतरा °धातु गेरु,—रञ्जन सुपारी का पेड़, —रत (वि०) 1 अति प्रमोदी 2 क्रीडाशील 3 अत्यधिक अनुरक्त 4 करुणामय, सुकुमार (—तम्) 1 बड़ी प्रसन्नता अत्यानन्द 2 संभोग मैथुन रतिक्रिया सुरतमृदिता बालवनिता भर्तृ० २।४४ —ताली 1 दूती, कुट्टनी 2. शिरोभूषण, सिर की माला —प्रसङ्ग कामकेलि में व्यसन कु० २।१० —रतिः (स्त्री०) भोग विलास आनन्द, मजा, —रस (वि०) 1 अच्छे रस वाला, रसीला, मजेदार 2 मधुर 3 ललित (रचना) (—सः, —सा) सिंधुवार पौधा (—सा) दुर्गा का नाम, —रूप (वि०) 1 अच्छा बना हुआ, सुन्दर, मनोहर —सुरूपा कन्या 2. बुद्धिमान्, विद्वान् (—पः) शिव का विशेषण,—रेभ (वि०) अच्छी आवाज वाला —कि० १५।१६, (—भम्) टीन, जस्त,—लक्षण (वि०) 1 शुभ व सुन्दर लक्षणों से युक्त 2. भाग्यशाली, (—णम्) 1 निरीक्षण, सुपरीक्षण निर्धारण, निश्चयन 2 अच्छा या शुभ चिह्न, —लभ (वि०) 1 जो आसानी से मिल सके, सुप्राप्य, प्राप्य, सुकर—न सुलभा सकलेन्दुमुखी च सा विक्रम० २।९, इदमसुलभवस्तु प्रार्थना दुर्निवारम्—२।६ 2. तत्पर, अनुकूल बना हुआ, योग्य, उपयुक्त—चिन्ह्-मृतवचरणोपयोगसुलभो लावारसः केनचित् —र० ४।५ 3 स्वाभाविक, समुपयुक्त—मानुषतासुलभो लघिमा — का० °कोप (वि०) जो शीघ्र क्रुद्ध हो जाय, जो आसानी से भड़काया जा सके, —लोचन (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (—नः) हरिण, (—ना) सुन्दर स्त्री,—लोहकम् पीतल,—लोहित (वि०) गहरा लाल, (—ता) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक —वचनम् 1 सुन्दर चेहरा या मुख 2. खूब उच्चारण, वचनम्, —वचस् (नपुं०) वाग्मिता, —वर्चिक, का सज्जी, क्षार,—वर्ण दे० शब्द के नीचे,—वह (वि०) 1 सहनशील, सहिष्णु 2. धैर्यवान्, झेलने वाला 3 जो आसानी से ले जाया जा सके, —वासिनी 1 विवाहित या एकाकिनी स्त्री जो अपने पिता के घर रहती है 2. विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित है, —विक्रान्त (वि०) बहादुर, साहसी, शूर (—न्तम्) शौर्य,—विद् (पुं०) विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् व्यक्ति (स्त्री०) बुद्धिमती या चतुर स्त्री,—विदः अन्तःपुर का सेवक,—विदत्रम् (पुं०) राजा,—विदल्लः अन्तःपुर का सेवक ('सौविदल्ल' का अशुद्ध रूप) (—ल्लम्) अन्तःपुर, रनिवास,— विदल्ला विवाहित स्त्री,—विध (वि०) अच्छी प्रकार का,—विधम् (अव्य०) आसानी से, —विनीत (वि०) भली-भाँति प्रशिक्षित, विनयी, (—ता) सुशील गाय,—विहित (वि०) 1 भली भाँति रक्खा हुआ, अच्छी तरह जमा किया हुआ 2 सुव्यवस्थित, सुसज्जित, साधनसामग्री से युक्त, भली-भाँति क्रमबद्ध सुविहितप्रयोगतया आर्यस्य न किमपि परिहास्यते — श० १ कल्पद्रुमफलसन्दर्भावसरे तत् सुविहितम् मा० १, —वी (वी) ज (वि०) अच्छे बीजों वाला (—जः) 1. शिव का नाम 2. खसखस (—जम्) अच्छा बीज, बीजसम्पन्न क्यारी,—वीर्य (वि०) 1 अति बलशाली 2. शौर्ययुक्त, शूरवीर, पराक्रमी, (—र्यम्) 1 अतिशौर्य 2 शूरवीरों की बहुतायत 3 बेर का फल, (—र्या) जंगली कपास, —वृत्त (वि०) 1 शिष्टाचार युक्त, सद्गुणी नेक, भला, —मयि तस्य सुवृत्तवर्तते लघु-

सन्देशपदा सरस्वती —रघु० ८।७७ 2. अच्छा गोल, सुन्दर वर्तुलाकार या गोल मृद्नाति सुवृत्तेन सुमृष्टेनातिहारिणा । मोदकेनापि किं तेन निष्पत्तिर्यस्य सेवया,—या सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि च । महतां पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टक (यहाँ सभी विशेषण दोहरे अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं) —वेल (वि०) 1 शान्त, निश्चल 2 विनम्र, निस्तब्ध (—लः) त्रिकूट पर्वत का नाम,—व्रत (वि०) धार्मिक व्रतों के पालन में दृढ़, सर्वथा धार्मिक तथा सद्गुणी, (—तः) ब्रह्मचारी (—ता) 1. सुन्दर व्रत वाली साध्वी पत्नी 2 सुशील गाय, सीधी गाय जिसका दूध आसानी से निकाला जा सके,—शंस (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, श्लाघनीय, —शक (वि०) सुसाध्य, आसान, सरल —शल्यः खदिर वृक्ष,—शाकम् अदरक,—शासित (वि०) भली-भांति नियन्त्रण में, सुनियन्त्रित,—शिक्षित (वि०) सुशिक्षाप्राप्त, प्रशिक्षित, अच्छी तरह सधाया हुआ, —शिखः अग्नि (—खा) 1 मोर की शिखा 2 मुर्गे की कलगी,—शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, मिलनसार (—ला) 1. यम की पत्नी का नाम 2 कृष्ण की आठ प्रेयसियों में से एक, —श्रुत (वि०) 1 अच्छी तरह सुना हुआ 2 वेदज्ञ, (—तः) एक आयुर्वेद पद्धति का प्रणेता, जिसकी कृति, चरक की कृति के साथ-साथ आज भी भारतवर्ष में प्राचीनतम आयुर्वेद का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है,—श्लिष्ट (वि०) 1 भली-भांति जमबद्ध, संयुक्त 2 भली-भांति उपयुक्त मा० १,—श्लेषः आलिंगन या घनिष्ठ मिलाप, —संदृश् (वि०) देखने में रुचिकर,—संहत (वि०) सुनिर्देशित (जैसा कि बाण), —सह (वि०) 1 जो आसानी से सहन किया जा सके 2 सहनशील सहिष्णु (—हः) शिव का विशेषण, —सार (वि०) अच्छे रस वाला, रसीला (—रः) 1 अच्छा रस सत या अर्क 2 मसूर 3 लाल फूल का खदिरवृक्ष, —स्थ (वि०) 1. समुपयुक्त, अच्छे अर्थ में प्रयुक्त 2 अच्छे स्वास्थ्य में स्वस्थ, सुखी 3 अच्छी या समृद्ध परिस्थितियों में समृद्धिशाली 4 प्रसन्न, भाग्यशाली, (—स्थम्) सुख की स्थिति, कल्याण सुस्थे को वा न पण्डित —शि० ३।२१ (इसी अर्थ में सुस्थित) —स्थिता, स्थिति (स्त्री०) 1 अच्छी दशा, कुशल क्षेम, कल्याण, आनन्द 2 स्वास्थ्य रोगोपशमन, —स्मित (वि०) प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराने वाला, (—ता) प्रसन्नवदना, हँसमुख स्त्री, —स्वर (वि०) 1. सुरीला, सुमधुर स्वर वाला 2. उच्च स्वर, —हित (वि०) 1 नितान्त योग्य, या उपयुक्त, समुचित 2 हितकर, श्रेयस्कर 3 मैत्रीपूर्ण, स्नेही 4. सन्तुष्ट (—ता) अग्नि की सात जिह्वाओं में एक, —हृद् (वि०) कृपापूर्ण हृदय वाला हार्दिक, मैत्रीपूर्ण, प्रिय, स्नेही (पुं०) 1 मित्र सुहृद पश्य वसन्त किं स्थितम् —कु० ४।२७, मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः मेघ० ४० 2 मित्र, °भेदः मित्रों का वियोग °वाक्यम् सद्भावपूर्ण सम्मति, —हृदः मित्र, —हृदय (वि०) 1 सुन्दर हृदय वाला 2 प्रिय, स्नेही, प्रेमी ।

सुख (वि०) [सुख्+अच्] 1 प्रसन्न, आनन्दित हर्षपूर्ण, खुश 2 रुचिकर, मधुर, मनोहर, सुहावना दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः रघु० ३।१४ इसी प्रकार —सुखश्रवा निस्वना —३।१९ 3 सद्गुणी पुण्यात्मा 4 आनन्द लेने वाला, अनुकूल श० ७।१८ 5 आसान, सुकर —कु० ५।८९ 6 योग्य, उपयुक्त, —खम् 1 आनन्द, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता, आराम —यदेवोपनत दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् विक्रम० ३।२१ 2 समृद्धि अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगुणं सर्वास्ववस्थासु यत् उत्तर० १।३९ 3 कुशल क्षेम कल्याण स्वास्थ्य देवी सुखं प्रष्टुं गता मालवि० ४ 4 चैन, आराम, (दुःखादिकों का) प्रशमन (प्रायः समास में प्रयुक्त— यथा सुखशयन, सुखोपविष्ट सुखासीन आदि) 5 सुविधा, आसानी, सहूलियत 6. स्वर्ग, वैकुण्ठ 7 जल, —खम् (अव्य०) 1 प्रसन्नता पूर्वक, हर्ष पूर्वक 2 सकुशल स्वस्थ —सुखमास्तां भवान् (भगवान् आपको स्वस्थ तथा सकुशल रक्खे) 3 आसानी से, आराम से असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गडिः —काव्य० १० 4 अनायास, आराम से सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः भर्तृ० २।३ 5 वस्तुतः इच्छा पूर्वक 6 चुपचाप, शान्ति पूर्वक । सम० —आधारः स्वर्ग —आप्लव (वि०) स्नान के लिए उपयुक्त, —आयत —आयनः खूब सधाया हुआ या सीधा घोड़ा, —आरोह (वि०) जिस पर चढ़ना आसान हो —आलोक (वि०) सुदर्शन, प्रिय, मनोहर, —आवह (वि०) आनन्द की ओर ले जाने वाला सुहावना सुखकर, —आशः वरुण का नाम,—आशकः ककड़ी,— आस्वाद (वि०) 1 मधुर स्वादयुक्त, मधुर रसयुक्त 2 रुचिकर, आनन्ददायी (—दः) 1 सुखकर रस 2 (सुख का) उपभोग —उत्सवः 1 आनन्द मनाना, खुशी उत्सव, आनन्दोत्सव 2. पति —उदकम् गरम पानी —उदयः आनन्द की अनुभूति या सुख का उदय, —उदर्क (वि०) फल में सुखदायी —उद्य (वि०) जिसका उच्चारण रुचि के साथ या सुख से हो सके, —उपविष्ट (वि०) आराम से बैठा हुआ सुख से बैठा हुआ —एषिन् (वि०) आनन्द चाहने वाला, सुख की अभिलाषा करने वाला, —कर, —कार, —दायक (वि०) आनन्द देने वाला, सुखकर सुहावना —द (वि०) सुख देने वाला, (—दा)

इन्द्र के स्वर्ग की वारांगना, (तम्) विष्णु का आसन —बोधः 1. सुख संवेदना 2 आसानी से प्राप्य ज्ञान —भागिन्, —भाज् (वि०) प्रसन्न,—श्रव,श्रुति (वि०) कानों को मीठा, कर्णमधुर,—कि० १४।३, —सखिन् सुख का साथी —स्पर्श (वि०) छूने में सुखकर।

सुत (भू० क० कृ०) [सु + क्त] 1 उंडेला गया 2 निकाला गया, या निचोड़ा गया (जैसे कि सोमरस) 3 जन्म दिया गया, उत्पादित, पैदा किया गया, —तः 1 पुत्र 2 राजा। सम० —आत्मजः पोता, (—जा) पोती —उत्पत्तिः (स्त्री०) पुत्र का जन्म, —निर्विशेषम् (अव्य०) 'जो सीधे पुत्र से प्राप्त न हो' पुत्र की भांति रघु० १४। —सप्तकरा सात पुत्रों की माता —स्नेहः पितृप्रेम, वात्सल्य।

सुतवत् (वि०) [सुत + मतुप्] पुत्रों वाला, पुं० पुत्र का पिता।

सुता [सुत + टाप्] पुत्री, समर्थमिव भारत्या सुतया योक्तुमर्हसि कु० ६।७९।

सुतिः [सु + क्तिन्] सोमरस का निकालना।

सुतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [सुत + इनि] बच्चे वाला या बच्चों वाला, (पुं०) पिता।

सुतिनी [सुतिन् + ङीप्] माता सेनाम्बा यदि सुतिनी स्याद्वद वन्ध्या कीदृशी भवति—सुभा०।

सुतुमुल (वि०) अच्छी आवाज वाला।

सुत्या [सु + क्यप्, टाप्, तुक्] 1 सोमरस निकालना, या तैयार करना 2 यज्ञीय आहुति 3 प्रसव।

सुत्रामन् (पुं०) [सुष्ठु त्रायते सु + त्रै + मनिन् पृषो०] इन्द्र का नाम।

सुत्वन् (पुं०) [सु + क्वनिप्, तुक्] 1 सोमरस को उपहार में देने वाला या पीने वाला 2 वह ब्रह्मचारी जिसने (यज्ञ के आरंभ में या पूर्णाहुति पर) आचमन और मार्जन का अनुष्ठान कर लिया है।

सुदि (अव्य०) [सुष्ठु दीव्यति सु + दिव् + डि] चान्द्र मास के शुक्लपक्ष में, तु० 'वदि'।

सुधन्वाचार्यः (पुं०) पतितवैश्य का सवर्णा स्त्री में उत्पन्न पुत्र—तु० मनु० १०।२३।

सुधा [सुष्ठु धीयते पीयते धे (धा) + क + टाप्] 1 देवों का पेय, पीयूष, अमृत निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि नै० १।१ 2 फूलों का रस या मधु 3 रस 4 जल 5 गंगा का नाम 6 सफेदी, पलस्तर, चूना—कैलासगिरिणेव सुधासितेन प्राकारेण परिगता—का०, रघु० १६।१८ 7 ईंट 8 बिजली 9 सेहुंड। सम० —अंशुः 1 चांद 2 कपूर, °रत्नम् मोती, —अङ्गः, —आकरः, —आधारः चांद, —जीविन् (पुं०) पलस्तर करने वाला, ईंट की चिनाई करने वाला राज, —द्रव अमृत के समान तरलद्रव्य, —धवलित (वि०) पलस्तर किया हुआ, सफेदी किया हुआ, —निधि 1 चांद, कपूर, —भवनम् चूने लिपा पुता मकान, —भित्तिः (स्त्री०) 1 पलस्तर की हुई दीवार 2 ईंटों की दीवार 3 पांचवां मुहूर्त या दोपहर बाद, —भुज् (पुं०) सुर, देव, —भृतिः 1 चांद 2 यज्ञ, आहुति, —सद्मन् ईंट या पत्थरों का बना मकान 2 राजकीय महल, —वर्षं अमृतवर्षा,—वर्षिन् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, —वासः 1 चांद 2 कपूर, —वासा एक प्रकार की ककड़ी,—सित (वि०) 1 चूने जैसा सफेद 2 अमृत जैसा उज्ज्वल 3 अमृत से भरा हुआ, जगताशरण्य युक्ता हरिकान्त सुधासितं कि० १५।४५, (यहाँ पर इस शब्द का प्रथम और द्वितीय अर्थ भी घटता है), —सूतिः 1 चांद 2 यज्ञ 3 कमल —स्यन्दिन् (वि०) अमृतमय, अमृत बहाने वाला —भर्तृ० २।६, —स्रवा गलजिह्वा, कागला तालु का लटकता हुआ मांसल भाग, —हृत् गरुड़ का विशेषण, दे० 'गरुड़'।

सुधितिः (पुं०, स्त्री०) [सु + धा + क्तिच्] कुल्हाड़ा।

सुनारः [सुष्ठु नालमस्य—पा० ब०, लस्य रः] 1 कुतिया की औड़ी 2 सांप का अण्डा 3 चिड़िया, गौरैया।

सुनासीरः (शी) र. [सुष्ठी नासी (शी) रम् अग्रसैन्यं यस्य प्रा० ब०] इन्द्र का विशेषण।

सुन्दः (पुं०) एक राक्षस, उपसुन्द का भाई, यह दोनों भाई निकुम्भ राक्षस के पुत्र थे (उन्हें ब्रह्मा से एक वर मिला था—कि वे जब तक स्वयं अपना वध न करें मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे। इस वरदान के कारण वे बड़ा अत्याचार करने लगे। अन्त में इन्द्र को तिलोत्तमा नाम की अप्सरा भेजनी पड़ी जिसके लिए झगड़ा करते हुए दोनों ने एक दूसरे को मार डाला)।

सुन्दर (वि०) (स्त्री०—री) [सुन्द् + अर] 1 प्रिय, मनोज्ञ, मनोहर, आकर्षक 2 यथार्थ, —रः कामदेव का नाम, —री मनोरम स्त्री, एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा—भर्तृ० २।११५ विद्याधरसुन्दरीणाम् कु० १।७।

सुप्त (भू० क० कृ०) [स्वप् + क्त] 1 सोया हुआ, सोता हुआ, निद्राग्रस्त, न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः हि० प्र० ३६ 2 लकवा मारा हुआ, स्तम्भित, सुन्न, बेहोश, दे० स्वप्, —प्तम् निद्रा, गहरी निद्रा। सम० —जनः 1 सोता हुआ व्यक्ति 2 मध्यरात्रि, —ज्ञानम् स्वप्न, —त्वच् (वि०) अर्धांग-ग्रस्त, लकवा मारा हुआ।

सुप्तिः (स्त्री०) [स्वप् + क्तिन्] 1 निद्रा, सुस्ती, ऊंघ 2 बेहोशी, लकवा, स्तम्भ, जाड्य 3 विश्वास, भरोसा।

सुमः [सुष्ठु मीयतेऽत्र सु + मा + क] 1 चांद 2 कपूर 3 आकाश, —**मम्** फूल भामि० १।८४।

सुर [सुष्ठु राति ददात्यभीष्टम्—सु + रा + क] 1 देव देवता —सुराप्रतिग्रहाद् देवा सुरा इत्यभिविश्रुताः राम०, सुधया तर्पयन् सुरान् पितृंश्च विक्रम० ३।७ रघु० ५।१६ 2 ३३ की संख्या 3 सूर्य 4 ऋषि विद्वान् पुरुष। सम० **अङ्गना** दिव्याङ्गना देवी अप्सरा रघु० ८।७९ **अधिप** इन्द्र का विशेषण **अरि** 1 देवों का शत्रु राक्षस 2 झींगुर की चींची, **अर्हम्** 1 सोना 2 केसर जाफरान **आचार्य** बृहस्पति का विशेषण — **आपगा** स्वर्गीय नदी गङ्गा का विशेषण —**आलय** 1 मेरु पर्वत 2 स्वर्ग बैकुण्ठ —**इज्य** बृहस्पति का नाम **इज्या** पवित्र तुलसी **इभ**, **ईश**, **ईश्वर** इन्द्र का नाम **उत्तम** 1 सूर्य 2 इन्द्र **उत्तर** चन्दन की लकड़ी **ऋषि** (**सुरर्षि**) दिव्य ऋषि देवर्षि **कारु** विश्वकर्मा का विशेषण —**कार्मुकम्** इन्द्रधनुष — **गुरु** बृहस्पति का विशेषण **ग्रामणी** (पुं०) इन्द्र का नाम **ज्येष्ठ** ब्रह्मा का विशेषण **तरु** स्वर्ग का वृक्ष कल्पवृक्ष **तोषक** कौस्तुभ नाम की मणि। **दारु** (नपुं०) देवदारु वृक्ष — **दीर्घिका** गंगा का विशेषण **दुन्दुभी** पवित्र तुलसी **द्विप** 1 देवों का हाथी 2 ऐरावत **द्विष्** (पुं०) राक्षस रघु० ? ।?? **धनुस्** (नपुं०) इन्द्रधनुष —सुरधनुरिदं दूराकृष्टं न नाम शरासनम् विक्रम० ४।१ — **धूप** तारपीन राल **निम्नगा** गंगा का विशेषण **पति** इन्द्र का विशेषण **पथम्** आकाश, स्वर्ग **पर्वत** मेरु पहाड़ **पादप** स्वर्ग का वृक्ष जैसे कि कल्पतरु **प्रिय** 1 इन्द्र का नाम 2 बृहस्पति का नाम **भूयम्** देव के साथ अनन्यरूपता देवत्वप्राप्ति देवत्व **भूरुह्** देवदारु वृक्ष **युवति** (स्त्री०) दिव्य तरुणी अप्सरा - **लासिका** मुरली बांसुरी **लोक** स्वर्ग **वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश **वल्ली** पवित्र तुलसी **विद्विष्**, **वैरिन्** —**शत्रु** (पुं०) असुर दानव दैत्य **सद्मन्** (नपुं०) स्वर्ग बैकुण्ठ **सरित्** **सिन्धु** (स्त्री०) गंगा **सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमैशम्**—रघु० २।७५ -**सुन्दरी**, **स्त्री** दिव्याङ्गना अप्सरा विक्रम० १।३।

सुरङ्ग, **गा** [[illegible]] 1 सेंध 2 जमीन के अन्दर मार्ग, मकान के नीचे खोदा हुआ मार्ग —ऐकागारिकेण नायकी सुरङ्गा न खोदिता दश० सुरङ्गया बहिर्निष्पतितेषु तस्मात् महा० २। (सुरुङ्गा भी लिखा जाता है)।

सुरभि (वि०) [सु + रभ् + इन्] 1 मधुर गंध युक्त, सुगन्धयुक्त सुगंध युक्त [illegible] 2 सुहावना [illegible] मनोहर 3 चमकीला मनोहर [illegible] सुरभि-गंधोऽपि 4 प्रियतम मित्रसदृश 5 विख्यात, प्रसिद्ध 6 बुद्धिमान् विद्वान 7 नेक, भला —**भिः** 1 सुगंध खुशबू सुवास 2 जायफल 3 साल वृक्ष की राल, या कोई भी राल 4 चम्पक वृक्ष 5 शमी वृक्ष 6 कदंब का पेड़ 7 एक प्रकार की सुगंधित घास 8 वसन्त ऋतु विक्रम० २।९० (स्त्री०) 1 लोबान की वृक्ष 2 तुलसी 3 माणिया 4 एक प्रकार की सुगंध या सुगंधित पौधा 5 मदिरा 6 पृथ्वी 7 गाय 8 समृद्धि देने में प्रसिद्ध गाय सुता तदीया सुरभेः कृत्वा प्रतिनिधिम रघु० १।८१ ७५ 9 मातृकाओं में से एक (नपुं०) 1 मधुर गंध सुवास खुशबू 2 गंधक 3 सोना। सम० **घृतम्** सुगंधित मक्खन सुगन्धयुक्त घी —**त्रिफला** 1 जायफल 2 लौंग 3 सुपारी **बाण** कामदेव का विशेषण **मास** वसंत ऋतु **मुखम्** वसन्त ऋतु का आरम्भ।

सुरभिका [सुरभि + कन् + टाप्] एक प्रकार का केला।

सुरभिमत् (पुं०) [सुरभि + मतुप्] अग्नि का नाम।

सुरा [सु + क्रन् + टाप्] 1 मदिरा शराब—सुरा वै मलमन्नानाम्—मनु० ११।९३ गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा ९४ 2 जल 3 पानपात्र 4 [illegible]। सम० **आकार** शराब खींचने का भट्टी **आजीव** **आजीविन्** (पुं०) कलाल **आलय** मदिरालय [illegible] **उद** शराब का समुद्र **ग्रह** मदिरा [illegible] रखा हुआ बर्तन **ध्वज** शराब की दुकान के बाहर टंगा हुआ झंडा **प** (वि०) 1 शराबी [illegible] 2 सुहावना रोचक 3 बुद्धिमान **पाणम्**, **पानम्** मदिरा या शराब का पीना **पात्रम्**, **भाजनम्** शराब का प्याला या गिलास **भाग** [illegible] **मण्ड** [illegible] पैदा होने के [illegible] मदिरा के ऊपर जमने वाला झाग **सन्धानम्** शराब खींचना।

सुवर्ण (वि०) [सुष्ठु वर्णोऽस्य प्रा० ब०] 1 अच्छे रंग का सुन्दर रंग का चमकीले रंग का उज्ज्वल [illegible] सुनहरा 2 अच्छी जाति या बिरादरी का 3 अच्छा ख्याति का यशस्वी, विख्यात —**र्णः** 1 अच्छा रंग 2 अच्छी जाति या बिरादरी 3 एक प्रकार का यज्ञ 4 शिव का विशेषण 5 धतूरा **र्णम्** 1 सोना 2 सोने का सिक्का (पुं० भी) **लभ्यते वा सुवर्णानि** [illegible] — मृच्छ० ? 3 सोलह माशे के बराबर सोने का तोल [illegible] १७५ धन के सम्पत्ति (पुं० भी) [illegible] 5 एक प्रकार की पीले चन्दन की लकड़ी 6 एक प्रकार का गेरु। सम० **अभिषेकः** दुल्हा और दुल्हन [illegible] के छोटे जल जिसमें सोने का [illegible] डाला हुआ हो **कदली** केले का एक

प्रकार,—**कर्तृ**, **कार**,—**कृत्** (पुं०) सुनार,—**गणितम्** गणित में हिसाब लगाने की एक विशेष रीति, —**पुष्पित** (वि०) सोने से भरा-पूरा उदा० सुवर्ण-पुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति नरास्त्रयः । शूरश्च कृत-विद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् पञ्च० १।४५,—**पृष्ठ** (वि०) सोना चढ़ा हुआ, सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ, **माक्षिकम्** खनिज पदार्थ विशेष, सोनामाखी —**यूथी** पीली जूही,—**रूप्यक** (वि०) सोने और चाँदी से भरपूर, **रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण **वर्णा** हल्दी, **सिद्ध** जिसने जादू से सोना प्राप्त कर लिया है,—**स्तेयम्** सोने की चोरी (पाँच महापातकों में से एक) ।

सुवर्णकम् [सुवर्ण+कन्] 1 पीतल कांसा 2 सीसा ।

सुवर्णवत् (वि०) [सुवर्ण+मतुप्] 1 सुनहरा 2 सुनहरे रंग का, सुन्दर, मनोहर ।

सुवस (वि०) [सुष्ठु मम सर्वं यस्मात् प्रा० ब० अत्यन्त प्रिय या सुन्दर बहुत सुन्दर या परम सौन्दर्य अत्यधिक आभा या कान्ति कुरबककुसुम चपलासुषम गीत० ७ सुषमाविषये परीक्षणं निखिलं पद्मममाजि तन्मुखात् नै० २।३७ भामि० १। ४६, २।१२ ।

सुषवी [सु+सू+अच्+ङीष्] 1 एक प्रकार की लौकी 2 काला जीरा 3 जीरा ।

सुषाद (पुं०) शिव का विशेषण ।

सुषिः (स्त्री०) [शुष्+इन पृषो० शस्य सः] छिद्र सूराख, तु० 'शुषि' ।

सुषि (षी) म (वि०) [सु+श्यै+मक सम्प्रसारण पृषो०] 1 शीतल, ठंडा 2 सुखकर रुचिकर **मः** 1 शीतलता 2 एक प्रकार का सर्प 3 चन्द्रकान्त मणि ।

सुषिर (वि०) [शुष्+किरच् पृषो० शस्य सः] 1 छिद्रों से पूर्ण, खोखला सरन्ध्र 2 उच्चारण में मन्द **रम्** 1 छिद्र, रन्ध्र सूराख 2 कोई भी बाजा जो हवा से बजे ।

सुषुप्तिः (स्त्री०) [सु+स्वप्+क्तिन्] 1 गहरी या प्रगाढ़ निद्रा, प्रगाढ़ विश्राम 2 भारी बेहोशी आत्मिक अज्ञान अविद्यात्मिका हि बीजशक्तिरव्यक्तशब्द निर्देश्या परमेश्वराश्रया मायामयी महासुषुप्तिर्यस्यां स्वरूपप्रतिबोधरहिता शेरते संसारिणो जीवाः - ब्रह्मसूत्र पर शारी० भाष्य १।४।३ ।

सुषुम्णः [सुष्+म्ना+क] सूर्य की प्रधान किरणों में से एक, **म्णा** शरीर की एक विशेष नाड़ी जो इड़ा तथा पिंगला नाम की नाड़िकाओं के मध्य में स्थित है ।

सुष्ठु (अव्य०) [सु+स्था+कु] 1 अच्छा उत्तमता से साथ सुन्दरता से 2 अत्यन्त, बहुत ज्यादह सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र एतेन विनयमाहात्म्येन उत्तर० १ 3 समयुक्त ठीक,—**शब्द** सुष्ठु प्रयुक्त - सर्व०, अथवा सुष्ठु खल्विदमुच्यते ।

सुस्कम् [सु+अक, सुक्] रस्सी, डोरी, रज्जु ।

सुह्मा (पुं०, ब० व०) एक राष्ट्र का नाम- आत्मा संरक्षितः सुह्मैर्वृत्तिमाश्रित्य वैतसीम्—रघु० ४।३५ ।

सू । (अदा० दिवा० आ०—सूते, सूयते, सूत) उत्पन्न करना, पैदा करना जन्म देना (आल० से भी) असूत सा नागवधूपभोग्यम् कु० १।२० कौन्ति सूते कुसुम या हिमस्ति उत्तर० ५।११, **प्र**—, उत्पन्न करना पैदा करना जन्म देना ।

॥ (तुदा० पर० सुवति) 1 उत्तेजित करना उकसाना प्रेरित करना 2 (ऋण का) परिशोध करना ।

सू (वि०) [सू+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्पन्न करने वाला पैदा करने वाला फल देने वाला (स्त्री०) 1 जन्म 2 माता ।

सूक [सू+कन्] 1 बाण 2 हवा वायु 3 कमल ।

सूकर [सू+करन् कित्] 1 वराह, सूअर—दे० शूकर 2 एक प्रकार का हरिण 3 कुम्हार **-री** 1 सूअरी 2 एक प्रकार की काई, शैवाल ।

सूक्ष्म [सूच्+मन्, सुक् च नेट्] 1 बारीक, महीन, आणविक—आलातरन्ध्रमूर्गावो यत् सूक्ष्मं दृश्यते रजः 2 थोड़ा छोटा—इयमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८ रघु० १८।४९ 3 बारीक, पतला, कोमल, बढ़िया 4 उत्तम 5 तेज तीक्ष्ण, बेधी 6 कलाभिज्ञ, चालबाज, धूर्त प्रवीण 7 यथार्थ, यथातथ्य बिल्कुल सही ठीक—**क्ष्मः** 1 अणु 2 केतक का पौधा 3 शिव का विशेषण **क्ष्मम्** 1 सर्वव्यापक सूक्ष्म तत्त्व परमात्मा 2 बारीकी 3 सन्यासियों द्वारा प्राप्त तीन प्रकार की शक्तियों में से एक तु० माया 4 कलाभिज्ञता प्रवीणता 5 जालसाजी धोखा 6 बारीक धागा 7 एक अलंकार का नाम जिसकी परिभाषा मम्मट ने इस प्रकार दी है कुतोऽपि लक्षितः सूक्ष्मोऽप्यर्थोऽन्यस्मै प्रकाश्यते । धर्मेण केनचिद् यत्र तत्सूक्ष्मं परिचक्षते ॥ काव्य० १० । सम० **एला** छोटी इलायची **तण्डुल** पोस्त **तण्डुला** 1 पीपल, पीपली 2 एक प्रकार का घास -**दर्शिता** सूक्ष्मदृष्टि होने का भाव, तीक्ष्णता अग्रदृष्टि बुद्धिमानी - **दर्शिन्**, **दृष्टि** (वि०) 1 तेज नज़र वाला श्येन जैसी दृष्टि वाला 2 बारीक विवेचनकर्ता 3 तीक्ष्ण, तेज मन वाला —**दारु** (नपुं०) लकड़ी का पतला तख्ता फलक,—**देहः**, **शरीरम्** लिंग शरीर जो सूक्ष्म पंच महाभूतों से युक्त है **पत्र** 1 धनिया 2 एक प्रकार का जंगली जीरा 3 एक प्रकार का

लाल गन्ना 4. बबूल का पेड़ 5 एक प्रकार की सरसों, —पर्णी एक प्रकार की तुलसी,—पिप्पली वनपीपली —बुद्धि (वि०) तेज बुद्धि वाला, प्रखर, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, (स्त्री०—द्धिः) तेज बुद्धि, सूक्ष्म प्रतिभा, मानसिक प्रखरता, —मक्षिकम्, —का मच्छर, डांस, —मानम् यथार्थ माप, सही से गणना (विप० स्थूलमान —जिसका अर्थ है—स्थूली माप, मोटी माप) —शर्करा बारीक बजरी, रेत, बालुका,—शालिः एक प्रकार का बारीक चावल, —षट्पदः एक प्रकार की जूं, जमजूं।

सूच् (चुरा० उभ० सूचयति—ते, सूचित) 1 बींधना 2 निर्देश करना, इंगित करना, बतलाना, प्रकट करना, साबित करना—त्वां सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्भवोऽयं (गन्धः) मृच्छ० १।३५, मेघ० २१, श० १।१४ 3 भेद खोलना, प्रकट करना, भण्डाफोड़ करना —स जातु सेव्यमानोऽपि गुप्तद्वारो न सूच्यते रघु० १७।५० 4 हावभाव व्यक्त करना, अभिनय करना, इशारों से सूचित करना वामाक्षिस्पन्दनं सूचयति, रथवेगं सूचयति—आदि 5 पता लगाना, गुप्त भेद जानना, निश्चय करना। अभि , दिखलाना, संकेत करना अमन्यत नलं प्राप्तं कर्मचेष्टाभिसूचितं—महा०, प्र,—सम्, संकेत करना, सूचित करना मयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् सुभा०।

सूचः [सूच्+अच्] कुशा का नुकीला अंकुर या पत्ता।

सूचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [सूच्+ण्वुल्] 1 संकेतपरक, संकेत करने वाला, सिद्ध करने वाला, दिखलाने वाला 2 प्रकट करने वाला, सूचित करने वाला,—कः 1 वेधक 2 सूई, छिद्र करने या सीने के लिए कोई उपकरण 3. सूचना देने वाला, कहानी बतलाने वाला, बदनाम करने वाला, भेदिया 4 वर्णन करने वाला, पढ़ाने वाला, सिखाने वाला 5 किसी मण्डली का प्रबन्धक या प्रधान अभिनेता 6 बुद्ध 7 सिद्ध 8 दुष्ट, बदमाश 9 राक्षस, पिशाच 10 कुत्ता 11 कौवा 12 बिलाव 13. एक प्रकार का महीन चावल। सम० —वाक्यम् किसी सूचना देने वाले द्वारा दी गई सूचना।

सूचनम्,—ना [सूच् भावे ल्युट्] 1 बींधने या छिद्र करने की क्रिया, सूराख करना, छेदना 2 इशारे से बताना, संकेत करना, सूचित करना 3 विरुद्ध सूचित करना, भेद खोलना, कलंक लगाना, बदनाम करना 4 हावभाव प्रकट करना, उचित चेष्टाओं या चिह्नों से संकेत करना 5. इशारा करना, इंगित 6 सूचना 7 पढ़ाना, दिखाना, वर्णन करना 8 गुप्त भेद जानना, रहस्य का पता लगाना, देखना निश्चय करना 9 दुष्टता बदमाशी।

सूचा [सूच्+अ+टाप्] 1 बींधना 2. हावभाव 3 भेद जानना, देखना, दृष्टि।

सूचिः,—ची (स्त्री) [सूच्+इन् वा ङीप्] 1. बींधना, छेद करना 2 सूई 3. तेज नोक, या नुकीली पत्ती (कुशा आदि की) अभिनवकुशसूच्या परिक्षतं मे चरणम्—श० १, इसी प्रकार 'मुखे कुशसूचिविद्धे'—श० ४।१४ 4 तेज नोक या किसी वस्तु का सिरा—क कर प्रसारयत् पन्नगरत्नसूचये कु० ५।४३ 5. कलिका की नोक 6 एक प्रकार का सैनिकव्यूह, स्तंभ या पंक्ति —दण्डव्यूहेन तन्मार्गं यायात्तु शकटेन वा। वराहमकराभ्यां वा सूच्या वा गरुडेन वा मनु० ७।१८७ 7 समलंबक के पार्श्वों से निर्मित त्रिकोण 8 शंकु, स्तूप 9 अंगचेष्टाओं से संकेत करना, संकेतों द्वारा बतलाना, हावभाव 10 नृत्यविशेष 11 नाटकीय कर्म 12 विषयानुक्रमणिका विषयसूची, 13 फहरिस्त, विवरणिका 14. (ज्याति० में) ग्रहण की सगणना के लिए पृथ्वी का गोला। सम० —अग्र (वि०) सूई की भांति नोक वाला, सूई के समान तेज नोक रखने वाला, पैना किया हुआ, (—ग्रम्) सूई की नोक,—आस्यः चूहा, —कटाहन्याय दे० 'न्याय' के नीचे, —खातः स्तूप की खुदाई, शंकु, —पत्रकम् अनुक्रमणिका, विषयसूचि (—कः) एक प्रकार का शाक, सितावर —पुष्पः केतक वृक्ष —भिन्न (वि०) कली के किनारों का खिलना —पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नैः मेघ० २८, —भेद्य (वि०) 1 जो सूई के द्वारा बींधा जा सके 2 मोटा, सघन, घोर, गाढ़ा, बिल्कुल,—वृन्दालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः 3 स्पर्शग्राह्य, संस्पृश्य, —मुख (वि०) 1 सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला 2 नुकीला, (—खः) 1 पक्षी 2 सफेद कुशा 3 हाथों की विशेष स्थिति (—खम्) हीरा,—रोमन् (पुं०) सूअर, —वदन (वि०) सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला, (—नः) 1. डांस, मच्छर 2 नेवला —शालिः एक प्रकार का बारीक चावल।

सूचिकः [सूचि+ठन्] दर्जी।

सूचिका [सूचि+क+टाप्] 1 सूई 2 हाथी की सूंड। सम०—धरः हाथी, —मुख (वि०) नुकीले मुंह वाला नुकीले सिर वाला, (—खम्) खोल, सीपी, शंख।

सूचित (भू० क० कृ०) [सूच्+क्त] 1 बींधा हुआ, सूराख किया हुआ, छिद्रित 2 इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, सूचना दिया हुआ, संकेतित, इंगित किया हुआ 3 बतलाया गया या हावभावों से संकेतित 4 समाचार दिया गया, उक्त, प्रकट किया गया 5 निश्चय किया गया ज्ञात।

सूचिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [सूच्+णिनि] 1 बेधन वाला, छिद्र करने वाला 2 इशारा करने वाला

सूचना देने वाला, संकेत करने वाला 3. विरुद्ध सूचित करने वाला 4. रहस्य का पता लगाने वाला (पुं०) भेदिया, सूचना देने वाला।

सूचिनी [सूचिन्+ङीप्] 1. सूई 2. रात।

सूची दे० 'सूचि'।

सूच्य (वि०) [सूच्+ण्यत्] सूचित किये जाने योग्य, बताया जाने योग्य।

सूत् (अव्य०) अनुकरणात्मक ध्वनि (जैसे खर्राटे का शब्द)।

सूत (भू० क० कृ०) [सू+क्त] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न, जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ 2. प्रेरित, उद्गीर्ण, —तः रथवान्, सारथि—सूत चोदयाश्वान् पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे—श० १ 2. ब्राह्मणवर्ण की स्त्री में क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न पुत्र (इसका कार्य रथ हाँकने का होता है)—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः—मनु० १०।११, सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्—वेणी० ३।३३ 3. बंदीजन 4. रथकार 5. सूर्य 6. व्यास के एक शिष्य का नाम —तः, —तम् पारा। सम०—तनयः कर्ण का विशेषण, —राज् (पुं०) पारा।

सूतकम् [सूत+कन्] 1. जन्म, पैदायश—मनु० ५।११२ 2. प्रसव (या गर्भपात) के कारण उत्पन्न अशौच (जननाशौच), —कः, —कम् पारा।

सूतका [सूत+कन्+टाप्] जच्चा: प्रसूता, वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जच्चा, —मनु० ५।८५।

सूता [सूत+टाप्] जच्चा स्त्री।

सूतिः (स्त्री०) [सू+क्तिन्] 1 जन्म, पैदायश, प्रसव, जनन, बच्चा पैदा करना 2. सन्तान, प्रजा 3. स्रोत, मूलस्रोत, आदिकारण सपदो सूतिरसूतिरापदाम् —कि० २।५५ 4. वह स्थान जहाँ सोमरस निकाला जाता है। सम०—अशौचम् परिवार में बच्चे के जन्म के कारण अपवित्रता (जो दस दिन तक रहती है), —गृहम् जच्चा घर, प्रसूति-गृह, —मासः (सूतीमासः भी) प्रसव का महीना, गर्भाधान के पश्चात् दसवाँ महीना।

सूतिका [सूत+कन्+टाप्, इत्वम्] वह स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो, जच्चा। सम० —अगारम्, —गृहम्, —गेहम्, —भवनम् जच्चाखाना, सौरी, —रोगः प्रसव के पश्चात् होने वाला रोग, प्रसवजन्य रोग, —षष्ठी प्रसव के पश्चात् छठे दिन पूजी जाने वाली देवी विशेष का नाम।

सूत्करः [सु+उद्+कृ+अच्] मदिरा का खींचना या चुआना।

सूत्या [सू+क्यप्+टाप्, तुक्] दे० 'सुत्या'।

सूत्र् (चुरा० उभ० सूत्रयति-ते, सूत्रित) 1. बाँधना, कसना धागा डालना, नत्थी करना 2. सूत्र के रूप में या संक्षेप से रचना करना—तथा च सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन, जैमिनिरपि इदमपि धर्मलक्षणमसूत्रयत्, आदि 3. योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, ठीक पद्धति में रखना —तन्निपुणं मया निसृष्टार्थदूतीकल्पः सूत्रयितव्यः—मा० १ 4. शिथिल करना, ढीला करना।

सूत्रम् [सूत्र्+अच्] 1. धागा, डोरी, रेखा, रस्सी—पुष्पमालानुषङ्गेण सूत्रं शिरसि धार्यते—सुभा०, मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः—रघु० १।४ 2. रेखा, तन्तु—पुरोधना कर्षति बाष्पितावात्सूत्रं मृणालादिव राजहंसी—विक्रम० १।१९, कु० १।४०, ४९ 3. तार 4 धागों की लाटी 5. यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो पहले तीन वर्ण धारण करते हैं)—शिखासूत्रवान् ब्राह्मणः तर्क० 6. पुत्तलिका का तार या डोरी 7. संक्षिप्त विधि, गुर सूत्र 8. परिभाषा परक संक्षिप्त वाक्य—परिभाषा—स्वल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥ 9. सूत्रग्रन्थ —उदा० मानवकल्पसूत्र, आपस्तंबसूत्र 10. विधि, धर्म-सूत्र, आज्ञप्ति (विधि में)। सम० —आत्मन् (वि०) डोरी या धागे के स्वभाव वाला, (पुं०) आत्मा, —आली माला, (जो कण्ठ में पहनी जावे), हार, —कण्ठः 1. ब्राह्मण 2. कबूतर, पंडुकी 3. खञ्जन पक्षी, —कर्मन् (नपुं०) बढ़ई का काम —कारः, —कृत् (पुं०) सूत्र रचने वाला, —कोणः, —कोणकः डमरु, डुगडुगी, —गण्डिका एक प्रकार की यष्टिका जिसका उपयोग जुलाहे धागे लपेटने में करते हैं, —चरणम् वैदिक विद्यामन्दिर जिनके द्वारा अनेक सूत्रग्रन्थों का निर्माण हुआ, —दरिद्र (वि०) कम धागों वाला वह कपड़ा जिसमें थोड़े धागे लगे हों, झीना —अयं पटः सूत्रदरिद्रतां गतः—मृच्छ० २।९, —धरः, —धारः 1. 'डोरी पकड़ने वाला' रंगमंच का प्रबंधक, वह प्रधान नट जो पात्रों को एकत्र कर उन्हें प्रशिक्षित करता है, तथा जो प्रस्तावना में प्रमुख कार्य करता है—परिभाषा यह है—नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सबीजकम्। रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृतः॥ 2. बढ़ई, दस्तकार 3. सूत्रकार 4. इन्द्र का विशेषण, —पिटकः बुद्धसंबन्धी त्रिपिटक का प्रथम खंड, —पुष्पः कपास का पौधा, —भिद् (पुं०) दर्जी —भृत् (पुं०) सूत्रधार, —यन्त्रम् 1. 'धागा यंत्र' ढरकी 2. जुलाहे की खड्डी, —वीणा एक प्रकार की बांसुरी —वेष्टनम् जुलाहे की ढरकी।

सूत्रणम् [सूत्र्+ल्युट्] 1 मिला कर नत्थी करना, क्रम में रखना, क्रम बद्ध करना 2. सूत्रों के अनुसार क्रमपूर्वक रखना।

सूत्रला [सूत्र+ला+क+टाप्] तकवा, तकली ।

सूत्रामन्=सुत्रामन्—दे०

सूचिका [सूच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेंवई, सीमी ।

सूत्रित (भू० क० कृ०) [सूत्र्+क्त] 1. नत्थी किया हुआ, क्रमबद्ध, प्रणालीबद्ध, पद्धतिकृत 2. सूत्रविहित, सूत्रों के रूप में अभिहित ।

सूत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सूत्र+इनि] 1. धागों वाला 2. नियमों वाला,—(पुं०) कौवा ।

सूद् i (भ्वा० आ० सूदते) 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, मार डालना, नष्ट करना 2. डालना, उंडेलना 3. जमा करना 4. प्रक्षेपण, फेंक देना ।

ii (चुरा० उभ० सूदयति+ते) 1. उकसाना, प्रवर्तित करना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, प्राण फूंकना 2. आघात करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3. खाना पकाना, रांधना, सिझाना, तैयार करना 4. उंडेलना डालना 5. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 6. डालना, फेंकना, नि—, (निषूदयति—ते) मारना ।

सूदः [सूद्+घञ्, अच्, वा] 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. उंडेलना, चुआना 3. कूआं, झरना 4. रसोइया, 5. चटनी, रसा, झोल 6. कोई भी वस्तु सिझायी हुई, तैयार खाना 7. दली हुई मटर 8. कीचड़, दलदल 9. पाप, दोष 10. लोध्र वृक्ष । सम० —कर्मन् रसोइये का काम, —शाला रसोई ।

सूदन (वि०) (स्त्री०—नी) [सूद् ल्युट्] 1. नाश करने वाला, वध करने वाला, विनाशक—दानवसूदन, अरिगणसूदन आदि 2. प्यारा, प्रियतम,—नम् 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. हामी भरना, प्रतिज्ञा करना 3. डाल देना, फेंक देना ।

सून (भू० क० कृ०) [सू+क्त, क्तस्य नः] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, मुकुलित, खुला हुआ, कलिकायुक्त 3. रिक्त, खाली (संभवतः इस अर्थ में शून या शून्य समझ कर),—नम् 1. जन्म देना, प्रसव होना 2. कली, मंजरी 3. फूल ।

सूनरी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।

सूना [सुना: नः दीर्घश्च] 1. कसाई घर, बूचड़खाना, —भवानपि सूनापरिचर इव गृध्र आमिषलोलुपो भीरुकश्च—मा० २ 2. मांस की बिक्री 3. चोट पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना 4. मसूड़ा, काकल 5. करधनी, तगड़ी 6. कलाभिवों की सूजन, हापू 7. प्रकाश की किरण 8. नदी 9. पुत्री,—नाः (स्त्री०, ब० व०) घर में होने वाली पांच वस्तुएं जिनसे जीव हिंसा होने की संभावना होती है, दे० 'सूना' या 'पंचसूना' के अन्तर्गत ।

सूनिन् (पुं०) [सूना+इनि] 1. कसाई, मांस-विक्रेता 2. शिकारी ।

सूनुः [सू+नुक्] 1. पुत्र—पितुरनुमेवैकः सूनुरभवत्—का० 2. बाल, बच्चा 3. पोता (दौहित्र) 4. छोटा भाई 5. सूर्य 6. मदार का पौधा ।

सूनू (स्त्री०) [सूनु+ऊङ्] पुत्री ।

सूनृत (वि०) [सु+नृत्+क- उपसर्गस्य दीर्घः] 1. सत्य और सुखद, कृपालु और निष्कपट—तमसूनृतगिरश्च सूरयः पुण्यमृग्यजुषमभ्यगीषत शि० १४।२१, रघु० १।९३ 2. कृपालु, सुशील, सज्जन, शिष्ट—तां वाग्देवतां मातरं मङ्गलानां धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः—उत्तर० ५।३१, तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता । एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन—मनु० ३।१०१, रघु० ६।२९ 3. शुभ, सौभाग्यसूचक 4. प्रियतम, प्यारा,—तम् 1. सत्य तथा रोचक भाषण 2. कृपापूर्ण एवं सुखकर प्रवचन, शिष्ट भाषा—रघु० ८।९२ 3. मांगलिकता ।

सूपः [सुखेन पीयते—सु+पा+घञर्थे क, पृषो०] 1. यूष रसा—न स जानाति शास्त्रार्थं दर्वी सूपरसानिव —सुभा०, मनु० ३।२२६ 2. चटनी, मिर्च, मसाला 3. रसोइया 4. कड़ाही, बर्तन 5. बाण । सम० —कारः रसोइया, —धूपनम्, —धूपकम् हींग ।

सूमः [सू+मक्] 1. पानी 2. दूध 3. आकाश, गगन ।

सूर् (दिवा० आ० सूर्यते) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. दृढ़ करना या दृढ़ होना ।

सूर्ण (वि०) [सूर्+क्त, क्तस्य न] चोट पहुँचाया हुआ, क्षतिग्रस्त ।

सूरः [सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकानुदयेन—षू+क्रन्] 1. सूर्य 2. मदार का पौधा 3 सोम 4. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 5. नायक, राजा । सम०—चक्षुस् (वि०) सूर्य की भांति चमकीला, सुतः शनि का विशेषण,—सूतः सूर्य का सारथि, अर्थात् अरुण ।

सूरणः [सूर्+ल्युट्] सूरन, जमीकंद ।

सूरत (वि०) [सु+रम्+क्त, पृषो० दीर्घः] 1. कृपालु, दयालु, कोमल 2. शान्त, धीर ।

सूरिः [सू+क्रिन्] 1. सूर्य 2. विद्वान्, या बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि—अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः —रघु० १।४, शि० १४।२१ 3. पुरोहित 4. पूजा करने वाला, जैन मत के आचार्यों को दिया गया सम्मानसूचक पद, उदा०—मल्लिनाथसूरि 5. कृष्ण का नाम ।

सूरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सूर+णिनि] बुद्धिमान्, विद्वान् (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, पंडित ।

सूरी [सूरि+ङीष्] 1. सूर्य की पत्नी का नाम 2. कुन्ती का नाम ।

सूर्क्ष् (भ्वा० दिवा० पर० सूर्क्षति, सूर्क्ष्यति) 1. सम्मान

करना, आदर करना 2. अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना ।

सूर्क्षणम् (**सूर्क्ष्यणम्**) [सूर्क्ष् (सूर्क्ष्य्) + ल्युट्] अनादर, अपमान ।

सूर्क्ष्यः [सूर्क्ष्य् + घञ्] माष, उड़द ।

सूर्प दे० शूर्प ।

सूर्मिः,-र्मी (स्त्री०) [—शूर्मि, पृषो० शस्य सः, पक्षे ङीष्] 1 लोहे या अन्य किसी धातु की बनी मूर्ति —मनु० ११।३ 2 घर का स्तंभ 3 आभा, कान्ति 4 ज्वाला ।

सूर्यः [सरति आकाशे सूर्यः, यद्वा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति- सृ + क्यप्, नि०] 1 सूरज सूर्य तपत्या वरुण्या दृष्टे. कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा -रघु० ५।१३, (पुराणों के अनुसार सूर्य को कश्यप और अदिति का पुत्र माना जाता है तु० श० ७ उसका वर्णन किया जाता है कि वह अपने सात घोड़ों के रथ में बैठ कर घूमता है, अरुण इस रथ का सारथि है। सूर्य भगवान् रथ में बैठा हुआ सब लोकों को, तथा उनके शुभाशुभ कर्मों को देखता है। संज्ञा (छाया या अश्विनी) उसकी प्रधान पत्नी का नाम है, इससे यम और यमुना पैदा हुए, दो अश्विनीकुमारों तथा शनि का जन्म भी इसी से हुआ। राजाओं के सूर्यवंश का प्रवर्तक विवस्वान् मनु भी सूर्य का ही पुत्र था) 2 मदार का पौधा 3. बारह की संख्या (सूर्य के बारह रूपों से व्युत्पन्न)। सम० —अपायः सूर्य का छिपना मेघ० ८०, -अर्घ्यम् सूर्य की सेवा में उपहार प्रस्तुत करना,—अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्तमणि, —अश्वः सूर्य का घोड़ा, —अस्तम् सूर्य का छिपना, —आतपः सूर्य की गर्मी या चमक, धूप,—आलोकः धूप, —आवर्तः एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, हुलहुल, —आह्व (वि०) सूर्य के नाम पर जिसका नाम है, (—ह्वः) मदार का भारी पौधा आक, (-ह्वम्) तांबा, —इन्दुसंगमः (सूर्यचन्द्रमा का मिलन) अमावस्या —दर्शः सूर्येन्दुसंगम अमर०, —उत्थानम्, —उदयः सूर्य का निकलना —ऊढ 1 सूर्य द्वारा लाया गया, सायंकाल के समय आने वाला अतिथि—मनु० १, सूर्य छिपने का समय —कांतः आतशीशा, एक स्फटिक मणि -श० २।७, —कान्तिः (स्त्री०) 1 सूर्य की दीप्ति 2 एक पुष्प विशेष 3. तिल का फूल, —काल दिन का समय, दिन, °अनलचक्रम् ज्योतिष शास्त्र में शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र, —ग्रहः 1 सूर्य 2 सूर्यग्रहण 3 राहु और केतु का विशेषण 4 घड़े का पेंदा, —ग्रहणम् सूर्यग्रहण (चन्द्रमा की छाया पड़ने से सूर्यबिंब का छिप जाना पौराणिक मत से राहु या केतु द्वारा सूर्य का ग्रास), —चन्द्रौ (इसी प्रकार —सूर्याचन्द्रमसौ) (पुं०, द्वि० व०) सूर्य और चांद,—जः तनयः, —पुत्रः 1. सुग्रीव के विशेषण 2 कर्ण के विशेषण 3. शनिग्रह के विशेषण 4. यम के विशेषण,—जा, —तनया यमुना नदी, —तेजस् (नपुं०) सूर्य की चमक या गर्मी, —नक्षत्रम् वह नक्षत्रपुंज जिसमें सूर्य हो,—पर्वन् (नपुं०) (सूर्य के नई राशि में प्रवेश या सूर्यग्रहण आदि का) पुण्यकाल, सूर्यपर्व, —प्रभव (वि०) सूर्य से उत्पन्न—रघु० १।२, -प्रति-चक्रम् =सूर्यकालानलचक्रम्, दे० ऊ०,—भक्त (वि०) सूर्य का उपासक, (—क्तः) बन्धूकवृक्ष या गुलदुपहरिया या इसका फूल, —मणिः सूर्यकान्तमणि, —मण्डलम् सूर्य का घेरा, परिवेश,—यन्त्रम् 1 (सूर्योपासना में व्यवहृत) सूर्य का चित्र या प्रतिमा 2 सूर्य के वेध में काम आने वाला एक उपकरण, —रश्मिः सूर्य की किरण, सूर्य-मयूख या सविता,—लोकः सूर्य का लोक, —वंशः राजाओं का सूर्यवंश (जो अयोध्या में राज्य करते थे) इक्ष्वाकुवंश, —वर्चस् (वि०) सूर्य के समान तेजस्वी, —विलोकनम् बच्चे को चार महीने का होने पर, बाहर ले जाकर सूर्यदर्शन कराने का संस्कार—तु० उपनिष्क्रमणम्,—संक्रमः, —संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, —संज्ञम् केसर, जाफरान,—सारथिः अरुण का विशेषण —स्तुतिः (स्त्री०)—स्तोत्रम् सूर्य के प्रति की गई स्तुति,—हृदयम् सूर्य का एक स्तोत्र ।

सूर्या [सूर्य + टाप्] सूर्य की पत्नी ।

सूष् (भ्वा० पर० सूषति) फल प्रस्तुत करना, उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना ।

सूषणा [सूष् + युच् + टाप्] माता ।

सूष्यन्ती (स्त्री०) प्रसवोन्मुखी, आसन्न प्रसवा ।

सृ (भ्वा० जुहो० पर० सरति, सिसर्ति,—धावति भी, सृत) 1 जाना हिलना-जुलना, प्रगति करना सृपा-प्रदक्षिणं ससुः - भट्टि० १४।१४ 2. पास जाना, पहुँचना— निष्पाद्य हृदयः सेन प्रतीताः ससुरर्णवम् — राम० 3 धावा बोलना, चढ़ाई करना (तं) समराभिमुखं शूरः शार्दूल इव कुञ्जरम् महा० 4 दौड़ना, तेज चलना, खिसक जाना सरति सहसा बाह्वोर्मध्यं गताप्यबला सती मालवि० ४।११ 5. (हवा की भांति) तेज चलना,—स वेहायी सरति सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा —मेघ० ५३ 6. बहना— प्रेर० (सारयति ते) 1 चलना या घूमना 2 विस्तार करना 3. मलना, (अंगुलियों से) शनैः शनैः छूना —तन्वीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचित्- मेघ० ८६ 4 पीछे धकेलना, हटाना सारयन्ती बलाद्बीणां कठिनविषमामेकवेणीं करेण मेघ० ९२, इच्छा० (सिसीर्षति) जाने की इच्छा करना, अनु—,1. अनु-

गमन करना (सभी अर्थों में), पीछे आना, ध्यान देना, पैरवी करना 2. पहुँचना, (अपने को) पहुँचाना— पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीम् मेघ० ३०, तेनोदीचीं दिशमनुसरेः—५७ 3 अनुशीलन करना, पार करना (प्रेर०) 1. अग्रगामी होना वायुरनुसारयतीव माम् राम० 2. पीछे चलना, अप , 1 अलग होना, निवृत्त होना, वापिस लेना यदपसरति मेषः कारणं तत्प्रहर्तुम्—पंच० ३।४३ 2 ओझल होना अन्तर्धान होना (प्रेर०) भिजवाना, पहुँचाना, हटाना, वापिस हटना, दूर हांक देना अपसारय घनसार —काव्य० ९, मनु० ७।१४९, अभि 1 आना, पहुँचना—कि० ८।४ 2. मिलने के लिए आना या आगे बढ़ना (किसी नियत स्थान पर), नियत करके मिलना—सुन्दरीरभिससार—का० ५८, शि० ६।२६ 3. आक्रमण करना, हमला करना, (प्रेर०) नियत करके मिलना, मिलने के लिए आगे बढ़ना वल्लभानभिसिसारयिषूणाम् —शि० १०।२०, कि० ९।३८, सा० द० ११५, उद्– ,(प्रेर०) दूर भगाना, निकाल देना, उप—, 1. पास आना, पहुँचना,—रघु० १९।११ 2. सवन रहना, दर्शन देना—कैलासनाथमुपसृत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।३ 3 चढ़ाई करना, आक्रमण करना 4. आपसी मेल-जोल करना, निस्—, 1 चले जाना, बाहर निकलना, खिसक जाना, निकलना —बाणै स्वरकार्मुकनिःसृतै —राम०, इसी प्रकार —वसुधान्तनिःसृतमिवाहिपतेः —शि० ९।२५ 2. विदा होना, कूच करना —मनु० ६।४ 3. बहना, पसीजना, रिसना —यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः—रघु० २।३६ (प्रेर०) हांक कर दूर करना, निष्कासित करना, बाहर निकाल देना, परि–, चारों ओर बहना—यत्र सरस्वती परिससार—ऐत०, परिससृराप —महा० 2 चक्कर काटना, घूमना प्रदक्षिणं तु परिसृत्य–माम०, (परिपतति– के स्थान पर परिसरति–पाठान्तर) शिखी भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम् —मालवि० २।१३, प्र—, 1 बह आना, भरना, उदय होना, प्रोद्गत होना—लौहित्याद्या महानद्यः प्रससुस्तत्र चाद्भुतम्—महा० 2 आगे आना, आगे बढ़ना वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गाः—रघु० १३।१२, अन्वेषणप्रसृते च मित्रगणे—दश० 3 फैलना, चारों ओर फैलना—कृशानुः किं साक्षात्प्रसरति दिशो नैष नियतम् —काव्य० १०, प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन (दवाग्निः) —ऋतु० १।२५ 4. फैलना, छा जाना, व्याप्त होना —प्रसरति परिमाणी कोऽप्ययं देहदाहः —मा० १।४१, मित्वा मित्त्वा प्रसरति बलात्कोऽपि चेतोविकारः—उत्तर० ३।३६ 5 बिछाया जाना, विस्तार करना—न मे हस्तौ प्रसरतः —श० २ 6 (किसी कार्य को करने के लिए) उन्मुख होना, इच्छुक होना, न मे उचितेषु करणीयेषु हस्तपादं प्रसरति—श० ४ प्रसरति मन कार्यारम्भे 7 छा जाना, आरम्भ करना उपक्रम करना प्रससार चोत्सवः कथा० १९।८९ 8 लम्बा होना, दीर्घ होना विक्रम० ३।२२ 9 मज़बूत होना, प्रबल होना–प्रसृततरं सख्यम् दश० 10 (समय) बिताना, (प्रेर०) 1 फैलाना, बिछाना —भट्टि० १०।४४ 2 बिछाना, विस्तार करना (हाथ आदि) फैलाना— कालः सर्वजनान् प्रसारितकरो गृह्णाति दूरादपि पंच० २।२० 3 फैलाना, बिक्री के लिए बिछाना—केदार कीर्यरिति बुद्धयापणे प्रसारितं क्रय्यम् सिद्धा०, मनु० ५।१२९ 4 चौड़ा करना, (आँखों की पुतली को) फैलाना 5. प्रकाशित करना, ढिंढोरा पीटना, प्रचारित करना, प्रति , 1 वापिस आना, लौटना 2 धावा बोलना, चढ़ आना, आक्रमण करना हमला करना—दैत्य प्रत्यसरद्दैत्य मत्तो मत्तमिव द्विपम् हरि० (प्रेर०) पीछे की ओर धकेलना, बदल देना कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते श० ३।१३, वि ,फैलाना, विस्तृत होना, प्रसृत होना —वनीवक्रमहूमवो वितत्य —शि० ५।८, ९।१९, ३७, कि० १०।५३ (प्रेर०) 1 फैलना, बिछाना 2 व्याप्त होना, सम्—1 फैलना 2 हिलना-जुलना 3 मिलकर जाना या उड़ना 4 जाना, पहुँचना—पापान् संसृत्य संसारान् प्रेष्यतां यान्ति शत्रुषु—मनु० १२।७०, (प्रेर०) 1 ऊपर फैलाना 2 घुमाना, चक्कर देना— जन्ममृत्युजरायैर्नित्यं संसार यति चक्रवत्—मनु० १२।१२४।

सृकः [सृ+कक्] 1. हवा, वायु 2 बाण 3 वज्र 4 कमल, कैरव।

सृकण्डुः (स्त्री०) [सृ+क्विप्, पृषो० तुक् न, सृ+कण्डु क० स०] खुजली।

सृकालः [सृ+कालन्] दे० 'शृगाल'।

सृक्वम्, सृक्वणी, सृक्वन् (नपुं०)
सृक्किणी, सृक्किन् (नपुं०), सृक्कम्,
सृक्वणी, सृक्वन् (नपुं०), सृक्विणी,
सृक्विन् (नपुं०) } [सृज्+क्वन्, क्विन्, क्वनिप् वा] मुँह का किनारा सृक्किणी परिलेलिहन्—पंच० १।

सृगः [सृ+गक्] एक प्रकार का बाण या नेजा, भिंदिपाल।

सृगालः [सृ+गालन्] दे० 'शृगाल'।

सृङ्का (स्त्री०) रत्नों या मणियों से बना हार, मणियों की जगमगाती लड़ी।

सृज् i (तुदा० पर० सृजति, सृष्ट] 1 रचना करना, पैदा करना, बनाना, प्रणयन करना, जन्म देना वर्णन

नारी मस्यां स विराजमसृजत् प्रभुः मनु० १।३२, ३३, ३४, ३९, तन्तुनाभ स्वत एव तन्तून् सृजति —शारी० 2 पहनना, रचना, प्रयोग में लाना 3. जाने देना, ढीला छोड़ना, मुक्त करना 4. उत्सर्जन करना, छितराना, प्रसृत करना, बिखेरना, डालना —बलासुरस कवच इवन्त —भट्टि० ३।१७, आनन्दशीतामिव बाष्पवृष्टि हिमस्रुति हैमवती ससर्ज—रघु० १६।४४, ८।३५ 5 कहला भेजना, उच्चारण करना, कु० २।५३ ७।४७ 6 फेंकना, डाल देना 7 छोड़ना, छोड़ कर चले जाना, त्यागना, हटा देना ।

II (दिवा० आ० सृज्यते) ढीला होना, इच्छा० (सिसृक्षति) रचना करने की इच्छा करना । अति—, 1 देना, अर्पण करना—विक्रम० १।१५, रघु० ११। ४८ 2. त्यागना, पदच्युत करना 3 उगलना 4. अनुज्ञा देना, अनुमति देना, अभि , देना, प्रदान करना, अव , 1 डालना, फेंकना, बोना (बीज) बखेरना, अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् —मनु० १।८ 2 डालना, बूंद-बूंद टपकाना—उत्तर० ३।२३ 3 ढीला छोड़ना, उद्—, 1. उडेलना, उगलना, निकाल देना,— व्यलीकमि स्वाममिवोत्ससर्ज कु० ३।२५, सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रस रवि —रघु० १।१८, उडेल देना, वापिस देना या लौटाना 2 (क) छोड़ कर चले जाना, छोड़ देना, परित्याग करना, —रघु० ५।५१, ६।४६, कु० २।३६, (ख) एक ओर फेंकना, स्थगित करना—स चापमुत्सृज्य विवृद्धमन्यु —रघु० ३।५०, ४।५४ 3 ढीला छोड़ना, स्वच्छन्द घूमने देना तुरङ्गमुत्सृष्टमनर्गल पुन —रघु० ३।३९ 4. दागना, फेंकना, गोली मारना—भट्टि० १४।४५ 5. बोना, (बीज) बखेरना 6 उपहार देना, प्रदान करना 7 बिछाना, विस्तार करना 8 हटाना 9 दूर करना 10 मिटाना, प्रतिबंध लगाना, उप , 1. उडेलना, (जल आदि) प्रस्तुत करना 2 जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना, ससक्त करना, सबद्ध करना —मुख दुःखोपसृष्टम् 3 व्याकुल करना, अत्याचार करना, सताना—रोगोपसृष्टतनुर्दुर्वसर्ति मुमुक्षु —रघु० ८।९४ 4 ग्रहण लगना, ग्रस्त करना, मनु० ४।३७ याज्ञ० १।२७२ 5. पैदा करना, क्रियान्वित करना 6 नष्ट करना, नि , 1 स्वतन्त्र करना, बरी करना —न स्वामिना निसृष्टोऽपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते —मनु० ८।४१४ 2 हवाले करना, सौंपना, सुपुर्द करना – तु० निसृष्ट, प्र , 1 छोड़ना, त्यागना 2 ढीला छोड़ना 3 बोना, बखेरना 4 क्षतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना, वि , 1 त्यागना, छोड़ना, तिलांजलि देना—विसृज सुन्दरि सङ्गमसाध्वसम् —मालवि० ४।१३, पूर्वाभिविसृष्टतल्प रघु० १६।६, भामि० १।७८ 2. जाने देना, ढीला छोड़ना 3 डालना, उडेलना—रघु० १३।२६ 4. भेजना, प्रेषित करना भोयेन दूतो रघवे विसृष्ट— रघु० ५।३९ 5. पदच्युत करना, जाने की अनुमति देना, भेजना— रघु० ८।९१, १४।१९ 6. देना—रघु० १३।६७, १८।७ 7 फेंक देना, डाल देना, बिसार देना, फेंकना—विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखैः—श० ३।२ 8 डालना, गिरने देना, प्रहार करना—विसृज सुद्रमुनौ कृपाणम्—उत्तर० २।१० 9 उच्चारण करना—शि० १५।६२ 10. उतार फेंकना, संबंध-विच्छेद करना,—सम्—, 1. मिलना, मिश्रण करना, संयुक्त करना, संपृक्त करना—समृज्यते सरसिजैररुणांशुभिन्नै —रघु० ५।६९, अम्भारस समृज्य,—ऐत० 2 मिलना,—सौमित्रिणा तदनु ससृजे— रघु० १३।७३, कु० ७।७४ 3. रचना करना ।

सृजिकाक्षारः [ष० त०] सज्जी का क्षार, शोरा, रेह ।

सृञ्जयाः (पु० ब० व०) एक राष्ट्र या जनपद का नाम ।

सृणिः (स्त्री०) [सृ + निक्] अंकुश, हाथी को हाँकने का आंकड़ा—मदान्धकरिणां दर्पोपशान्त्यै सृणि —हि० ३। १६५ शि० ५।५, —णिः 1 शत्रु 2 चन्द्रमा ।

सृणि (णी) का [सृणि + कन् (ईकन्) + टाप्] लार, थूक ।

सृतिः (स्त्री०) [सृ + क्तिन्] 1 जाना, सरकना,—मनु० ६।६३ 2. रास्ता, मार्ग, पथ (आलं० से भी—नैते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन —भग० ८।२७ 3 चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना ।

सृत्वर (वि०) (स्त्री० री) [सृ + क्वरप्, तुक्] जाने वाला, सरणशील, री 1 नदी, दरिया 2 माता ।

सृदरः [सृ + अरक्, दुक्] साँप ।

सृदाकुः [सृ + काकु, दुकच] 1 हवा, वायु 2. अग्नि 3 हरिण 4 इन्द्र का वज्र 5 सूर्यमंडल, स्त्री० नदी, सरिता ।

सृप् (भ्वा० पर० सर्पति, सृप्त, इच्छा० सिसृप्सति) 1 रेंगना, पेट के बल चलना, शनै शनैः सरकना 2 जाना, हिलना-डुलना, अनु—, 1 पास जाना, पहुँचना गिरिमन्वसृपद्राम —भट्टि० ६।२७ 2. पीछा करना भट्टि० १५।५९, अप , 1 चले जाना, पीछे चले जाना, लौट पड़ना—तत्रावस्तिमनेन तपस्विहृतेनापसर्पत - उत्तर० ४ 2 सरक जाना, मन्द मन्द चलना 3 (भेड़िये की भांति) छिप कर देखना—उत्तर० १ 4 अलग होना, छोड़ना उद्—, 1 ऊपर को उठना 2 ऊपर आना, पहुँचना—सरिन्प्रवाहस्तटमुत्ससर्प—रघु० ५।४६, उप , 1 पहुँचना, निकट जाना मालवि० १।१२ 2 हरकत करना, जाना पञ्च० २।२३ 3 पहुँचना, प्राप्त करना, भुगतना दुःखम् सुखम्··· 4 आरंभ करना मनु० १०।१०९ 5. आक्रमण

करना, परि—, 1 चारों ओर घूमना, छा जाना 2. इधर उधर घूमना, प्र—, 1 आगे आना, बाहर निकलना, आगे आना, प्रगति करना—भट्टि० १४। २० 2 फैलाना, प्रसारित करना, (आलं० से भी) रुधिरेण प्रसर्पता—महा०, आलर्क विषमिव सर्वतः प्रसृप्तम्—उत्तर० १।४०, वि—, 1 जाना, प्रयाण करना, प्रगति करना य सुबाहुरिति राक्षसोऽपरस्तत्र तत्र विससर्प मायया रघु० ११।२९, ४।५२ 2 इधर उधर उड़ना या घूमना 3 फैलाना मनोरागस्तीव्रं विषमिव विसर्पत्यविरतम् मा० २।१ 4 साथ साथ बहना नीचे गिरना—(बाष्पौघ) विसर्पन् धाराभिर्लुठति धरणी जर्जरकण उत्तर० १।२६ 5 लेकर चम्पत होना, बच निकलना 6 छा जाना 7 मुड़ना घूमना 8 भिन्न भिन्न दिशाओं में जाना सम्—, 1 हिलना-जुलना ससर्पंत्या सपदि भवतः स्रोतसि च्छाययासौ मेघ० ५१ 2 साथ साथ चलना बहना—मेघ० २९।

सृपाटः [सृप् + काटन्] एक प्रकार की माप।

सृपाटिका [सृपाट + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्व] पक्षी की चोंच।

सृपाटी [सृपाट + ङीष्] एक प्रकार की माप।

सृप्रः [सृप् + क्रन्] चन्द्रमा।

सृभ्, सृम्भ् (भ्वा० पर० सर्भति सृम्भति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सृमर (वि०) (स्त्री०री) [सृ + क्मरच्] गमन करने वाला, जाने वाला—रः एक प्रकार का हरिण।

सृष्ट (भू० क० कृ०) [सृज् + क्त] 1 रचित उत्पादित 2 उडेला हुआ, उगला हुआ 3 ढीला छोड़ा हुआ 4 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 5 हटाया गया दूर भेजा गया 6 निश्चय किया गया निर्धारित 7 संयुक्त, संबद्ध 8 अधिक, प्रचुर असंख्य 9 अलंकृत दे० 'सृज्'।

सृष्टिः (स्त्री०) [सृज् + क्तिन्] 1 रचना कोई भी रचित वस्तु—किं मानसी सृष्टिः श०४ या सृष्टिः स्रष्टुराद्या श०१।१, सृष्टिराद्येव धातुः—मेघ० ८२ 2 संसार की रचना 3 प्रकृति, प्राकृतिक संपत्ति 4 ढीला छोड़ना, उद्गार 5 प्रदान करना, भेंट 6 गुणों की विद्यमानता 7 पदार्थ का अभाव। सम०—कर्तृ (पुं०) स्रष्टा, रचयिता।

सॄ (क्र्या० पर० सृणाति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

सेक् (भ्वा० आ० सेकते) जाना, हिलना-जुलना।

सेकः [सिच् + घञ्] छिड़कना, (वृक्षों को) पानी देना,—सेक सीकरिणा करेण विहितः कामम्—उत्तर० ३।१६, रघु० १।५१, ८।४५, १६।३०, १७।१६ 2 उद्गार, प्रसार 3 वीर्यपात 4 तर्पण, चढ़ावा। सम०—पात्रम् 1 पानी छिड़कने का पात्र, जल-पात्र 2 डोलची, डोका।

सेकिमम् [सेक + डिम] मूली।

सेक्तृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [सिच् + तृच्] सींचने वाला (पुं०) 1 छिड़काव करने वाला 2 पति।

सेक्त्रम् [सिच् + ष्ट्रन्] डोलची, सींचने का पात्र।

सेचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [सिच् + ण्वुल्] सींचने वाला,—कः बादल।

सेचनम् [सिच् + ल्युट्] सींचना (वृक्षों का) पानी देना —वृक्षसेचने द्वे धारयसि मे श० १ 2 छाव छिड़काव 3 मन्द मन्द रिसना टपकना 4 डोलची। सम०—घटः सींचने का बर्तन।

सेचनी [सेचन + ङीप्] डोलची।

सेटुः [सिट् + उन] 1 तरबूज 2 एक प्रकार की ककड़ी।

सेतिका (स्त्री०) अयोध्या का नाम।

सेतु [सि + तुन्] 1. मिट्टी का टीला, मेंड़ किनारा, ऊँचा मार्ग, बाँध—नलिनी क्षतसेतुबन्धनो जलसंघात इवासि विद्रुतः कु० ४।६, रघु० १६।२ 2 पुल—वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम् रघु० १३।२, सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः ४।३८ १२।७०, कु० ७।५३ 3 सीमाचिह्न, मेंड़ मनु० ८। २४५ 4 संकुचित मार्ग, दर्रा संकीर्ण गिरिपथ 5 हद सीमा 6 जंगला, परिसीमा, किसी प्रकार का अवरोध —सूर्ये सर्वकर्माणि विसेरेन् सर्वसत्त्व सुभा० 7 निश्चित नियम या विधि सर्वसम्मत प्रथा 8 'ओम्' पुनीत अक्षर मन्त्राणां प्रणवः सेतुस्तस्मेनु प्रणवः स्मृतः। स्रवत्यनोंकृतं पूर्वं परस्ताच्च विदीर्यते। कालिका०। सम०—बन्धः 1 पुल का निर्माण नवारा की रचना कथोगते किं ब्रलिनाविलासो जले गते किं खलु सेतुबन्धः सुभा० कु० ४।६ 2 चौपड़ शृंखला जो कारोमण्डल समुद्रतट की दक्षिणी सीमा में लंका तक फैली हुई है (कहते हैं कि यही वह पुल है जिसे नलनील ने राम के लिए बनाया था) 3 कोई भी पुल या नवारा,—भेदिन् (वि०) 1 बन्धनों को तोड़ने वाला 2 रुकावटों को हटाने वाला (पुं०) एक वृक्ष का नाम दन्ती।

सेतुकः [सेतु + क] 1 समुद्रतट, नवारा, पुल 2. दर्रा।

सेत्रम् [सि + ष्ट्रन्] बन्धन, हथकड़ी, बेड़ी।

सेदिवस् (वि०) (स्त्री०—सेदुषी) [सद् + लिट् + क्वसु] बैठा हुआ।

सेन (वि०) [सह इनेन ब० स०] प्रभु वाला, जिसका कोई स्वामी हो, नेता हो।

सेना [सि + न + टाप्, सह इनेन प्रभुणा वा] 1 फौज—सेनापरिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्—रघु० १।१९

2. संग्राम के देवता कार्तिकेय की मूर्त पत्नी सेना, फौज—तु० देवसेना। सम०—अग्रम् सेना का अग्रभाग, °गः सेना का नायक या सेनापति, —अङ्गम् सेना का संघटक भाग (यह गिनती में चार हैं- हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्),—चरः 1 सैनिक 2. अनुचरवर्ग, —निवेशः सेना का शिविर रघु० ५।४९, —नी (पुं०) 1 सेना का नायक, सेनापति, सेनाध्यक्ष सेनानीनामहं स्कन्दः भग० १०।२४, कु० २।५१ 2 कार्तिकेय का नाम अथैनमद्रेस्तनया शुशोच सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः रघु० २।३७, —पतिः 1. सेना का नायक 2. कार्तिकेय का नाम —परिच्छद (वि०) सेना से घिरा हुआ (रघु० १।१९ में 'सेना परिच्छद' कभी कभी एक ही शब्द समझा गया और तदनुकूल ही अर्थ किया गया, परन्तु इनको अलग-अलग दो शब्द समझना ज्यादह अच्छा है), —पृष्ठम् सेना का पिछला भाग, —भङ्गः सेना का भग्न हो जाना सर्वथा तितर-बितर होना, अव्यवस्थित रूप से इधर उधर भागना, —मुखम् 1 सेना का एक दस्ता या भाग 2 विशेषतः वह दस्ता जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पदाति हों 3 नगर फाटक के बाहर बना मिट्टी का टीला, —योगः सेना की सुसज्जा, —रक्षः पहरेदार, सन्तरी।

सेफः [सि+फ] पुरुष का लिंग तु० 'शेफ'।

सेमन्ती [सिम्+क्विप्+ङीप्] सफेद गुलाब, सेवती।

सेरः (पुं०) एक विशेष माप, सेर का बट्टा, (लीलावती इसकी परिभाषा की है पादोनगद्याणकतुल्यटङ्कैर्द्विसप्ततुल्यैः कथितोऽत्र सेरः)।

सेराहः (पुं०) दूध के समान श्वेत रंग का घोड़ा।

सेव (वि०) [सि+क] बांधने वाला, कसने वाला।

सेल् (भ्वा० पर० सेलति) जाना, हिलना-जुलना।

सेव् (भ्वा० आ० सेवते, सेवित, प्रेर० सेवयति —ते, इच्छा० सिसेविषते नि परि, वि आदि इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सेव् का स् बदल कर प्रायः मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सम्मान करना, पूजा करना, आज्ञा मानना —प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमाना मुद्रा० ४।२१, या, ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते —१।४ 2 अनुगमन करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 उपयोग में लाना, उपभोग करना —किं सेव्यते सुमनसां मनसापि गन्धः कस्तूरिकाजननशक्तिभृता मृगेण —रस० 4 शारीरिक सुखोपभोग करना—भामि० १।११८ 5 अनुराग करना, अनुष्ठान करना मनु० २।१, कु० ५।३८, रघु० १७।४९ 6. सहारा लेना, आश्रित होना, रहना, बार-बार जाना आना, बसना,—तस्य वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते—विक्रम० २।२३, पंच० १।९, 7 पहरा देना, रखवाली करना, रक्षा करना, आ—, उपभोग करना यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिलाशिखण्डः कु० १।१५, प्रवातमासेवमाना तिष्ठति —मालवि० १ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3 सहारा लेना, उप—, 1 सेवा करना, पूजा करना, सम्मान करना, मनु० ४।१३३ 2 अभ्यास करना, अनुसरण करना, ध्यान देना, पीछा करना 3 व्यस्त होना, उपभोग करना—भग० १५।९, 4 (किसी स्थान पर) नित्य जाना, बसना 5 मलना, मालिश करना, नि-- पीछा करना, अनुसरण करना, संलग्न करना अभ्यास करना कु० १।२३ 2 उपभोग करना निषेवते श्रान्तमना विविक्तम्—श० ५।५, कु० १।६ 3 शारीरिक सुखोपभोग करना—यथा यथा मामरसेशाणा मया पुष्प भराग निरस्य निषेविता भामि० २।१५५ 4. सहारा लेना, बसना, नित्य आना-जाना -कु० ५।७६ 5. उपयोग में लाना, काम में लाना विषमा निषेवितमपाकृतया मधुपैति सर्वमिति मन्यमनः -शि० ९।६८ 6 सेवा में उपस्थित रहना, हाजरी देना 7 नजदीक जाना, पहुँचना 8 भुगतना, अनुभव करना, परि- , 1 सहारा लेना 2 उपभोग करना, लेना।

सेव दे० 'सेवन'।

सेवक (वि०) [सेव्+ण्वुल्] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला, सम्मान करने वाला 2 व्यवसाय करने वाला, अनुरागी 3 आश्रित, दास,—कः 1 टहलुआ, —आश्रित सेवका धर्ममिच्छाद्भिः सेवकं पश्य किं कृतम्। स्वातन्त्र्यं यच्छरीरस्य मूढैस्तदपि हारितम् —हि० २।२० 2 भक्त, पूजक 3 सीने वाला, दर्जी 4 बोरा, थैला।

सेवधि (अव्य०) दे० 'शेव' के अन्तर्गत 'शेवधि'।

सेवनम् [सेव्+ल्युट्] 1 सेवा करना, सेवा हाजरी में खड़े रहना, पूजा करना—पार्थीकृताम्भा गुरुसेवनेन —रघु० १८।३० 2. अनुगमन करना, अभ्यास करना, काम में लगाना मनु० १२।५२ 3 उपयोग करना, उपभोग करना 4 शारीरिक सुखोपभोग करना यत्करोत्येकरात्रेण वृषली सेवनाद्द्विजः—मनु० ११।१७९ 5. सीना, टीका लगाना 6 बोरा, थैला।

सेवनी [सेवन+ङीप्] 1. सुई 2. सीवन, संधिरेखा 3 संधि या सीवन की भाँति शरीर के अंगों का संघात।

सेवा [सेव्+अङ्+टाप्] 1 परिचर्या, खिदमत, दासता, टहल सेवा लाघवकारिणी कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः—मुद्रा० ३।१४, हीनसेवा न कर्तव्या हि० ३।११ 2. पूजा, श्रद्धांजलि, सम्मान 3. संलग्नता,

भक्ति, भाव 4. उपयोग, अभ्यास, काम में लगना, प्रयोग 5 बार बार आना—जाना, आश्रय लेना 6 चापलूसी, बहकाना, चिकने चुपड़े शब्द अर्थं सेवया मध्यस्थानां गृहीत्वा भण—(मालवि० ३। समा० आकार (वि०) वासना के रूप में—विक्रम० ३।१, काकु सेवा में आवाज में परिवर्तन (यह विक्रम० ३।१ में 'सेवाकारा' शब्द का रूपान्तर है), धर्मः 1 सेवा करने का कर्तव्य सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य.—पंच० १।२८५ 2 सेवा का दायित्व,—व्यवहारः सेवा की विधि या प्रथा।

सेवि (नपुं०) [सेव्+इन्] 1 बेर 2. सेब।

सेवित (भू० क० कृ०) [सेव्+क्त] 1 सेवा किया गया, जिसकी टहल की गई है, पूजा किया गया 2 अनुगत, अभ्यस्त, पीछा किया गया 3 जहाँ नित्य-प्रति आया जाय, सहारा लिया गया, जहाँ (लोग) बसे हुए हों, जहाँ संगी-साथी हों 4 उपयुक्त, उपभुक्त,—म् 1 सेब 2. बेर।

सेवितृ (पुं०) [सेव्+तृच्] सेवक, दास।

सेविन् (वि०) [सेव्+णिनि] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला 2. अनुगन्ता, अभ्यासी, उपभोक्ता 3. बसने वाला, रहने वाला, (पुं०) सेवक।

सेव्य (वि०) [सेव्+ण्यत्] 1 सेवा किए जाने के योग्य, टहल किए जाने के योग्य 2. उपयोग में लाने के योग्य, काम में लाने के योग्य 3 उपभोग किए जाने के योग्य 4. देख-भाल किए जाने के योग्य, पहरा दिए जाने के योग्य,—व्यः 1. स्वामी (विप० सेवक),—अयं तावत्सेव्यादभिनिविशते सेवकजनम्—मुद्रा० ५।१२, पंच० १।४८ 2. अश्वत्थवृक्ष, —व्यम् एक प्रकार की जड़। सम०—सेवकौ (पुं०, द्वि० व०) स्वामी और नौकर।

सै (भ्वा० पर०—सायति) बर्बाद होना, क्षीण होना, नष्ट होना।

सैंह (वि०) (स्त्री० —ही) [सिंह+अण्] सिंह से संबद्ध, सिंह सम्बन्धी —भूमि सैंही कि क्वचित् पृतकनक-मालोऽपि लभते हि० १।१७५।

सैंहल (वि०) [सिंहल+अण्] लंका सम्बन्धी, लंका में उत्पन्न, या लंका में होने वाला।

सैंहिकः, —**सैंहिकेयः** [सिंहिका+अण्, सिंहिका+ढक्] राहु का मातृ परक नाम।

सैकत (वि०) (स्त्री० —ती) [सिकता+अत्यर्थ अण्] 1 रेत युक्त या रेत से बना हुआ, रेतीला, कंकरीला —तोयमुत्सृजा(?)प्रतिहतस्य सैकतं सेतुमोष—उत्तर० ३।३६ 2. रेतीली भूमि वाला, —तम् रेतीला तट —मुरजाज इव याम सैकतं मुमनोक्षः —रघु० ५।७५, ८।१८, १०।६९, १३।१७, ६२, १३।७६, १६।२१, कु० १।२९, श० ६।१७ 2. रेतीले तटों वाला द्वीप 3 किनारा या द्वीप। सम० —इष्टम् अदरक।

सैकतिक (वि०) (स्त्री० —की) [सैकत+ठञ्] 1. रेतीले तट से सम्बन्ध रखने वाला 2 घट-बढ़ होने वाला, तरमित, सन्देह की अवस्था में रहने वाला, सन्देहजीवी, —कः 1 साधु 2 सन्यासी, —कम् मंगलसूत्र जो सौभाग्यशाली बनने के लिए कलाई में बांधा जाता है या कण्ठ में पहना जाता है।

सैद्धान्तिक (वि०) (स्त्री० —की) [सिद्धान्त+ठक्] किसी सिद्धान्त या प्रदर्शित सत्य से सम्बन्ध रखने वाला 2 जो वास्तविक सच्चाई को जानता है।

सैनापत्यम् [सेनापति+ष्यञ्] किसी सेना का सेनापतित्व, सेनाध्यक्षता —कु० २।६१।

सैनिक (वि०) (स्त्री०—की) [सेनायां समवैति ठक्] 1 सेनासम्बन्धी 2 फौजी, —कः 1. सिपाही—पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः —रघु० ३।६१ 2. पहरेदार, सन्तरी 3 सामरिक व्यूह में अवस्थित सैन्यसमूह —रघु० ३।५७।

सैन्धव (वि०) (स्त्री०—वी) [सिन्धुनदीसमीपे देशे भव अण्] 1 सिंधु प्रदेश में उत्पन्न या पैदा हुआ 2. सिंधु नदी संबन्धी 3 नदी में उत्पन्न 4. समुद्र संबन्धी, सागर सम्बन्धी, सामुद्रिक,—वः 1. घोड़ा, विशेषतः वह जो सिंधु देश में पला हो—नै० १।७१ 2 एक ऋषि का नाम, —वः,—वम् एक प्रकार का सेंधा नमक,—वाः (पुं०, ब० व०) सिंधु प्रदेश के अधिवासी। सम०—घनः नमक का ढेला,—शिला एक प्रकार का पहाड़ से निकलने वाला नमक।

सैन्धवक (वि०) (स्त्री०—की) [सैन्धव+वुञ्] सैंधव सम्बन्धी, —कः सिंधु देश का कोई आपद्ग्रस्त व्यक्ति जिसकी दशा दयनीय हो।

सैन्धी (स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा (सम्भवतः वह जो ताड़ के रस से तैयार की गई हो) ताड़ी।

सैन्यः [सेनायां समवैति ण्य] 1 सैनिक, सिपाही—शि० ५।२८ 2. पहरेदार, सन्तरी, —न्यम् सेना, सेना की टुकड़ी—स प्रतस्थेऽरिनाशाय हरिसैन्यैरनुद्रुतः —रघु० १२।६७।

सैमन्तिकम् [सीमन्त+ठक्] सिंदूर।

सैरन्ध्रः, **सैरिन्ध्रः** [सीरं हलं धरति—सीर+धृ+क, पृषो० =सीरन्ध्र कृषक तत्संबंधि शिल्पकर्म सीरन्ध्र+अण् पक्षे इत्वम्] 1 घरेलू नौकर, किंकर 2. एक मिश्र जाति, दस्यु जाति के पुरुष तथा अयोगव जाति की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—सैरिन्ध्रं वागुरावृत्तिं सूते दस्युरयोगवे मनु० १०।३२।

सैरन्ध्री, **सैरिन्ध्री** [सैरं (रि) ध्र+ङीष्] 1 दासी या सेविका जो अन्तःपुर में काम करे (सैरन्ध्र 2. में

वर्णित मिश्र जाति की स्त्री) 2. स्वतन्त्र स्त्री जो शिल्पकारिणी के रूप में दूसरे के घर आकर काम करे 3. द्रौपदी का विशेषण (अज्ञात वास में विराट् की पत्नी सुदेष्णा की सेवा करते समय द्रौपदी ने यह नाम रख लिया था)।

सैरिक (वि०) (स्त्री० की) [सीर+ठक्] 1 हल-सम्बन्धी 2. खूडों से युक्त,—कः 1 हल में चलने वाला बैल 2. हाली, हलवाहा।

सैरिभः [सीरे हले तद्वहने इभ इव शूरत्वात्, शक० पर०, सीर+इभ्+अण्] 1 भैसा—अवमानित इव कुलीनो दीर्घं निःश्वसिति सैरिभः—मृच्छ० ४ 2 इन्द्र का स्वर्ग।

सैवाल दे० 'शैवाल'।

सैसक (वि०) (स्त्री की) [सीसक+अण्] सीसे का बना हुआ, सीसा सम्बन्धी।

सो (दिवा० पर० स्यति, सित, प्रेर० साययति ते, इच्छा० सिषासति, कर्मवा० सीयते—इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् 'सो' के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1 वध करना, नष्ट करना 2. समाप्त करना, पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना, अव —, 1 समाप्त करना, पूरा करना —यूपवत्यवसिते क्रियाविधौ रघु० ११।३७, अवसितमण्डनासि—श० ४ 2 नष्ट करना 3 जानना, भट्टि० १९।२९ 4. विफल होना, किनारे पर होना (अक०)—शक्तिमेंमावस्यति हीनयुद्धे—कि० १६।१७, अध्यव —, 1. संकल्प करना, निर्धारित करना, मन पक्का करना —कथमिदानीं दुर्जनवचनादध्यवसितं देवेन—उत्तर० १, अभिघातुमध्यवससौ स गिरा—शि० ९।७६, 2 प्रयास करना, दायित्व लेना, सम्पन्न करना मा साहसमध्यवस्यः—दश०, वक्तुं सुकरमध्यवसातुं दुष्करम् वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 3 दबोच लेना 4. सोचना, विचार करना, पर्यव —, 1 पूरा करना, समाप्त करना 2 निर्धारित करना, संकल्प करना 3 परिणाम होना, घट जाना, समाप्त हो जाना—एग एव समुच्चय सद्योगेऽसद्योगे सदसद्योगे च पर्यवस्यतीति न पृथक् लक्ष्यते काव्य० १० 4 नष्ट होना, खो जाना, क्षीण होना 5. प्रयत्न करना, व्यव—1. जोर लगाना, हाथ-पाँव मारना, कोशिश करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, आरम्भ करना —ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—श० १।१८ 2. चिन्तन करना, कामना करना, चाहना—पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या—श० ४।९ 3 लगातार चेष्टा करना, परिश्रमी या उद्योगी होना 4 संकल्प करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, फैसला करना—श० ५।१८ 5. स्वीकार करना, दायित्व लेना कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे मेघ० ११४ 6. करना, सम्पन्न करना 7 विश्वास करना, विश्वस्त होना, प्रतीत होना 8 विचार-विमर्श करना, समव —, निर्णय करना, आदेश देना मनु० ७।१३।

सोढ (भू० क० कृ०) [सह्+क्त] सहन किया गया, भुगता गया, बर्दाश्त किया गया, झेला गया—आदि दे० 'सह्'।

सोढृ (वि०) (स्त्री०—ढ्री) [सह्+तृच्] 1. सहनशील, बर्दाश्त करने वाला, सहिष्णु 2 शक्तिशाली, समर्थ।

सोत्क, सोत्कण्ठ (वि०) [सह उत्केन, उत्कण्ठया वा ब० स०] 1. अत्यन्त उत्सुक, अतीव आतुर, आकुल, यथा —'सोत्कण्ठमालिंगनम्' 2 खिन्न 3. शोकाकुल, खिद्यमान, —ठम् (अव्य०) 1 अत्यंत उत्सुकता के साथ, बड़ी उत्कंठा के साथ, प्रावृडीयेव बलाकया परमसोत्कण्ठमालिङ्गितः मृच्छ० ५।२३ 2 खेदपूर्वक, दुःखपूर्वक।

सोत्प्रास (वि०) [सह उत्प्रासेन—ब०स०] 1 अत्यधिक 2. अतिशयोक्तिपूर्ण 3. व्यंग्यात्मक, व्यंग्यपूर्ण,—सः अट्टहास,—सः,—सम्. व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति, व्यंग्योक्ति, व्यंग्यवाक्य, तु० व्याजस्तुति।

सोत्सव (वि०) [उत्सवेन सह—ब०स०] उत्सवयुक्त, उछाह भरा, हर्षपूर्ण।

सोत्साह (वि०) [सह उत्साहेन—ब०स०] प्रबल, सक्रिय, उत्साही, वीर,—हम् (अव्य०) फुर्ती से, उत्साह पूर्वक, सावधानी से।

सोत्सुक (वि०) 1. खिन्न, झल्लाने वाला, आतुर. शोकान्वित 2. उत्कण्ठित, लालायित।

सोत्सेध (वि०) [सह उत्सेधेन ब०स०] उन्नीत, उन्नत, ऊँचा, उत्तुंग सोत्सेधैः स्कन्धदेशैः मुद्रा० ४।७।

सोदर (वि०) [समानमुदरं यस्य, समानस्य सः] एक ही पेट से उत्पन्न, सहोदर, —रः सगा भाई, —रा सगी बहन।

सोदर्यः [सोदर+यत्] सहोदर भाई, सगा भाई (आल० से भी)—भ्रातृ. सोदर्यमात्मानमिन्द्रजिद्वधशोभिनः—रघु० १५।२६, अवज्ञासोदर्यं दारिद्र्यम्—दश०।

सोद्योग (वि०) [सह उद्योगेन ब०स०] प्रबल उद्योग करने वाला, परिश्रमी सक्रिय, वीर, मेहनती।

सोद्वेग (वि०) [सह उद्वेगेन—ब०स०] 1. आतुर, आशंकालु 2 शोकान्वित,—गम् (अव्य०) आतुरता के साथ, उतावलेपन से, उत्सुकतापूर्वक।

सोन्नहः [सु+क्विप्+सो, नह्+क=नह] लहसुन।

सोन्माद (वि०) [सह उन्मादेन—ब०स०] पागल, दीवाना, आपे से बाहर, मदविक्षिप्त।

सोपकरण (वि०) [सह उपकरणेन—ब०स०] सब प्रकार

के आवश्यक सामान या उपकरणों से युक्त, समुचित रूप से सुसज्जित, इसी प्रकार 'सोपकार'।

सोपद्रव (वि०) [सह उपद्रवेण—ब०स०] संकट और उपद्रवों से युक्त।

सोपध (वि०) [सह उपधया ब०स०] जालसाजी और धोखे से भरा हुआ, कपटपूर्ण।

सोपधि (वि०) [सह उपधिना—ब०स०] जालसाज, अव्य० कपट के साथ जालसाजी करके अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि —कि० १।४५।

सोपप्लव (वि०) [सह उपप्लवेन —ब०स०] 1 संकटग्रस्त 2. शत्रुओं द्वारा आक्रान्त 3 ग्रहणग्रस्त (जैसे कि चन्द्र व सूर्य)।

सोपरोध (वि०) [सह उपरोधेन—ब०स०] 1 अवरुद्ध, बाधायुक्त 2 अनुगृहीत,—धम् (अव्य०) सानुग्रह सादर।

सोपसर्ग (वि०) [सह उपसर्गेण—ब०स०] 1 संकटग्रस्त, दुर्भाग्यग्रस्त 2 अनिष्टसूचक 3 किसी भूत प्रेत से आविष्ट 4 उपसर्ग से युक्त (व्या० में)।

सोपहास (वि०) [सह उपहासेन ब०स०] व्यंग्यपूर्ण हंसी से युक्त उपालंभपूर्ण व्यंग्यमय सम् (अव्य०) उपालम्भपूर्वक उलाहने के साथ।

सोपाक [=श्वपाक पृषा०] पतित जाति का पुरुष चाण्डाल, दे० मनु० १०।३८।

सोपाधि (वि०) **सोपाधिक** (वि०) (स्त्री०—की) [सह उपाधिना—ब०स० पक्षे कप्] 1 किसी शर्त या सीमा से प्रतिबद्ध, विशिष्ट लक्षणों से युक्त सीमित मर्यादित विशिष्ट (दर्शन० में) 2 विशिष्ट विशेषण से युक्त।

सोपानम् [उप+अन्+घञ् = उपान उपरिगति सह विद्यमान उपान येन - ब०स०] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा जीना सीढ़ी —आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् कु० १।३९। सम०—पङ्क्तिः (स्त्री०) पथ, पद्धति (स्त्री०), परम्परा, मार्ग सीढ़ी, जीना वापी चास्मिन् मरकतशिला बद्धसोपानमार्गा मेघ० ७६ समारुरुक्षुर्दिवमायुषः क्षये ततान सोपानपरम्परामिव—रघु० ३।६९ ६।३ १६।५६।

सोम [सू+मन्] 1 एक पौधे का नाम, प्राचीन काल के यज्ञों में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि 2 सोम नामक पौधे का रस—जैसा कि सोमपा तथा सोमपीथिन् शब्दों में 3 अमृत देवताओं का पेय पदार्थ 4 चन्द्रमा (पुराणों में चन्द्रमा को अत्रि ऋषि की आंख से उत्पन्न होने वाला वर्णन किया गया है (तु० रघु० २।७५), ऐसा भी वर्णन मिलता है कि समुद्रमन्थन के अवसर पर चन्द्रमा भी समुद्र से निकला। पुराणों में वर्णित सत्ताइस नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएँ बतलाई गई हैं, चन्द्रमा की पत्नियाँ कही जाती हैं। चन्द्रमा की कलाओं के पाक्षिक क्षय की घटना का भी समाधान यह किया गया है कि चन्द्रमा की अमृतमयी कलाओं को विविध देवताओं ने बारी बारी से पी लिया इसी प्रसंग में एक और कथा का भी आविष्कार किया गया है जिसमें बतलाया गया है कि चन्द्र १ रोहिणी (दक्ष की २७ कन्याओं में से एक) पर विशेष रूप से अनुरक्त था, अतः उसके श्वसुर दक्ष ने इसे क्षयरोग से ग्रस्त होने का शाप दे दिया, बाद में चन्द्रमा की अन्य पत्नियों के बीच में पड़ने पर यह शाप सीमित कालावधि (पाक्षिक) में बदल दिया गया। यह भी वर्णन मिलता है कि चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण किया उससे चन्द्रमा का बुध नामक एक पुत्र पैदा हुआ। यही बुध बाद में राजाओं के चन्द्रवंश का प्रवर्तक हुआ, (दे० तारा (ख) भी) 5 प्रकाश की किरण 6 कपूर 7 जल 8 वायु हवा 9 कुबेर 10 शिव 11 यम 12 (समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त) मुख्य प्रधान, उत्तम जैसा कि नृसोम में —मम् 1 चावलों की कांजी 2 आकाश गगन। सम० अभिषवः सोमरस का खींचना, —अहः सोमवार, —आख्यम् लाल कमल, ईश्वरः शिव की प्रसिद्ध प्रतिमा सोमनाथ —उद्भवा नर्मदा नदी— रघु० ५।५९ (यहाँ मल्लि० ने अमर० का उद्धरण दिया है रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा। कान्तः चन्द्रकान्त मणि— क्षयः चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, ग्रहः सोमरस रखने का पात्र —ज (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न (—जः) बुधग्रह का विशेषण (—जम्) दूध धारा आकाश, गगन,—नाथः प्रसिद्ध शिव लिंग या वह स्थान जहाँ यह प्रतिमा स्थापित की गई है (इसी प्रतिमा की अतुल धन राशि व वैभव ने गजनी के मोहम्मद गोरी को आकृष्ट किया जिसने १०२४ ई० में सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा और उसके खजाने को उठा कर ले गया)—तेषां मार्गे परिचयवशादर्जितं गुर्जराणां यः सन्तापं शिथिलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य॥ विक्रमांक० १८।८७, —प,—पा (पु०) 1 सोमपायी 2 सोमयाजी 3 पितरों का विशेष समूह— पतिः इन्द्र का नाम, —पानम् सोमरस का पीना पायिन्, पीथिन् (पु०) सोमरस को पीने वाला तत्र केचित् 'सोमपीथिन उदुम्बरनामानो ब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति स्म' मा० १, —पुत्रः —भूः बुधः बुध के विशेषण,—प्रवाकः सोमयज्ञ के पुरोहितों को वरण करने वाला,—बन्धुः कुमुद —यज्ञ, यागः सोमयज्ञ,—योनिः एक प्रकार का पीला और सुगन्धित चन्दन —रोगः, स्त्रियों का

एक विशेष रोग,—लता—वल्लरी 1 सोम का पौधा 2. गोदावरी नदी,—वंशः बुध द्वारा स्थापित राजाओं का चन्द्रवंश, -वारः, -वासरः सोमवार, -विक्रयिन् (पुं०) सोमरस विक्रेता, -वृक्षः,—सारः सफेद खैर का वृक्ष,—सत्त्वा एक प्रकार की ककड़ी,—संज्ञम् कपूर, सद् (पुं०) पितरों का विशेषवर्ग मनु० ३।१९५,—सिन्धुः विष्णु का विशेषण, सुत् (पुं०) सोमरस खींचने वाला,—सुता नर्मदा नदी तु० सोमोद्भव, सूत्रम् शिव लिंग के स्नान का जल निकलने की नाली, °प्रदक्षिणा शिवलिंग की इस तरह परिक्रमा करना कि नाली लांघनी न पड़े।

सोमन् (पुं०) [सु+मनिन्] चन्द्रमा।

सोमिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [सोम+इनि] सोमयज्ञ का अनुष्ठान करने वाला,-(पुं०) सोमयज्ञ का अनुष्ठाता।

सोम्य (वि०) [सोम+यत्] 1 सोम के योग्य 2 सोम की आहुति देने वाला 3 आकृति में सोम से मिलता-जुलता 4 मृदु, सुशील, मिलनसार।

सोल्लुण्ठः, सोल्लुण्ठनम् [उल्लुण्ठेन उल्लुण्ठनेन वा सह ब० स०] व्यंग्य, ताना, चुटकी, ठम्, नम् (अव्य०) व्यंग्यपूर्वक ताने के साथ —उत्तर० ५।

सोष्म (वि०) [सह उष्मणा ब० स०] 1 गरम तप्त 2. (व्या० में) ऊष्मा युक्त (पुं०) ऊष्मवर्ण।

सौकर (वि०) (स्त्री० -री) [सूकर+अण्] सूअर संबंधी सूअर का वि० १।५३।

सौकर्यम् [सू (सु) कर+ष्यञ्] 1 सूअरपना 2 आसानी सुविधा सौकर्यं च कार्यस्यायासेन सिद्धया सामसिद्धया च बोध्यम् 3 क्रियात्मकता, सुकरता 4 निपुणता, कुशलता 5 किसी भोज्यपदार्थ या औषधि की सरल तैयारी।

सौकुमार्यम् [सुकुमार+ष्यञ्] 1 मृदुता सुकुमारता कोमलता—शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्कः —कु० १।४१, 2 जवानी।

सौक्ष्म्यम् [सूक्ष्म+ष्यञ्] बारीकी महीनपना, सूक्ष्मता।

सौखशायनिकः, सौखशायिकः [सुखशयनं पृच्छति सुखशय (न)+ठक्] वह पुरुष जो किसी पुरुष से उसके सुखपूर्वक सोने की बात पूछे —भृगवाद्यैनसुगुप्तान्त सौखशायनिकानृषीन् रघु० १०।१४।

सौखसुप्तिकः [सुखसुप्तिं सुखेन शयनं पृच्छति—ठञ्] 1 किसी अन्य पुरुष से सुखपूर्वक सोने का हाल पूछने वाला 2 चारण, भाट, बन्दी (इसका कार्य राजा या अन्य समृद्धिशाली व्यक्ति को स्तुतिपाठ द्वारा जगाने का होता है)।

सौखिक (वि०) (स्त्री० -की), **सौखीय** (वि०) (स्त्री० -यी) [सुख+ठक्, छण् वा] सुखसम्बन्धी, आनन्ददायक, सुखप्रद।

सौख्यम् [सुख+ष्यञ्] सुख, प्रसन्नता, सन्तोष, सुविधा, आनन्द।

सौगतः [सुगत+अण्] बौद्ध (बुद्ध या सुगत का अनुयायी) (बौद्धों के चार बड़े सम्प्रदाय हैं—माध्यमिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और वैभाषिक)—सौगतजरत्परिव्राजकायास्तु कामन्दक्या प्रथमा भूमिका माध एवाभीते —मा० १।

सौगतिकः [सुगत+ठक्] 1 बौद्ध 2 बौद्धभिक्षु 3 नास्तिक, पाखंडी अविश्वासी, कम् अविश्वास, पाखण्डधर्म, नास्तिकता, अनीश्वरवाद।

सौगन्ध (वि०) (स्त्री०—न्धी) [सुगन्ध+अण्] मधुरगन्धयुक्त, सुगन्धित —न्धम् 1 मधुरगन्धता, सुवास 2 एक प्रकार का सुगन्धित तृण, कतृण।

सौगन्धिक (वि०) (स्त्री०—का—की) [सुगन्ध+ठन्] मधुरगन्ध वाला, सुगन्धित, —कः 1 गन्ध द्रव्यों का विक्रेता, गन्धी 2 गन्धक —कम् 1 सफेद कुमुद 2 नील कमल 3 एक प्रकार का सुगन्धित घास, कत्तृण 4 लाल।

सौगन्ध्यम् [सुगन्ध+ष्यञ्] गन्धमाधुर्य, सुगन्ध सुवास।

सौचिः, सौचिकः [सूचि+इञ्, ठञ्] दर्जी मनु० ४।२१४ पर कुल्लूक।

सौजन्यम् [सुजन+ष्यञ्] 1 नेकी कृपालुता, भलाई उत्तर० ३।१३, मृच्छ० ८।३८ 2 महिमा, उदारता 3 कृपा, करुणा, अनुकम्पा 4 मित्रता, सौहार्द, प्रेम।

सौण्डी [शुण्डा मद्याकारोऽस्ति अस्याः शुण्डा+अण्+ङीप्, पृषो०] पिप्पल।

सौतिः [सूत+इञ्] कर्ण का नामान्तर।

सौत्यम् [सूत+ष्यञ्] सारथि का पद नल० ४।९।

सौत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [सूत्र+अण्] 1 धागे या डोरी से संबंध रखने वाला 2 सूत्रसंबंधी, सूत्र में वर्णित सूत्र में निर्दिष्ट, —त्रः 1 ब्राह्मण 2. कृत्रिम धातु जो केवल सूत्रों में वर्णित हैं नियमित धातुओं की भांति उसकी रूपरचना नहीं होती यौगिक शब्दों के निर्माण में ही उसका उपयोग होता है।

सौत्रान्तिकाः (पुं० ब० व०) बौद्धों के चार सम्प्रदायों में से एक तु० सौगत।

सौत्रामणी [सुत्रामा इन्द्रो देवता अस्याः — सुत्रामन्+अण्+ङीप्] पूर्वदिशा चकोरनयनाद्रूया भवति दिक् च सौत्रामणी विद्ध० ४।१।

सौदर्यम् (नपुं०) [सोदर+ष्यञ्] भ्रातृत्व भाईपना।

सौदामनी, सौदामिनी, सौदाम्नी [सुदामा पर्वतभेद तेन एका दिक्, सुदामन्+अण्+ङीप् पक्षे पृषो० साधुः] बिजली, —सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीम् मेघ० ३९, सौदामिनीव जलदोदर संधिलीना मृच्छ० १।३५।

सौदायिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुदाय+ठञ्] स्त्रीधन, कन्या के विवाह के अवसर पर जो धन उसके माता पिता या संबंधियों द्वारा उसे दिया जाता है, और जो उसकी निजी संपत्ति हो जाता है, —कम् दाज या दहेजसम्बन्धी।

सौध (वि०) (स्त्री०—धी) [सुधया निर्मितं रक्तं वा अण्] 1 अमृतमय अमृतसम्बन्धी 2 पलस्तर से युक्त, या चूने से पुता हुआ, —धः 1 बड़ा भवन जिसमें सफेदी की हुई है, सुधालिप्त, पलस्तरदार 2 विशालभवन, महल, बड़ी हवेली —सौधवासमुटजेन विस्मृतः संचिकाय फलनिःस्पृहस्तपः —रघु० १९।२, ७।५, १३।४० 3 चाँदी 4 दूधिया पत्थर। सम०—कारः 1 पलस्तर करने वाला 2 मकान बनाने वाला, —वासः महल जैसा भवन।

सौन (वि०) (स्त्री०—नी) [सूना+अण्] कसाईपने या कसाईखाने से सम्बन्ध रखने वाला —नम् कसाई के घर का मांस। सम०—धर्म्यम् घोर शत्रुता की अवस्था।

सौनन्दम् [सुनन्द+अण्] बलराम का मूसल।

सौनन्दिन् (पुं०) [सौनन्द+इनि] बलराम का विशेषण।

सौनिकः [सूना+ठण्] कसाई दे० 'शौनिक'।

सौन्दर्यम् [सुन्दर+ष्यञ्] सुन्दरता, मनोहरता, लावण्य, लालित्य—सौन्दर्यसारसमुदायनिकेतनं वा—मा० १।२१, कु० १।४२, ५।४१।

सौपर्णम् [सुपर्ण+अण्] 1 सूखा अदरक, सौंठ 2 मरकत।

सौपर्णेयः [सुपर्ण्याः विनतायाः अपत्यम् सुपर्णी+ढक्] गरुड का विशेषण।

सौप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुप्ति+ठक्] 1 निद्रा-सम्बन्धी 2 निद्राजनक —कम् रात का आक्रमण सोते हुए पर हमला। सम०—पर्वन् (नपुं०) महाभारत का दसवाँ पर्व जिसमें वर्णन किया गया है कि अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृप और कौरवसेना के बचे हुए योद्धाओं ने रात को पांडवशिविर पर आक्रमण कर हजारों सोते हुए सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, —वधः (उपर्युक्त) पांडवशिविर के सैनिकों का रात में संहार —मार्गो ह्येष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना —मृच्छ० ३।११।

सौबलः [सुबल+अण्] शकुनि का नामान्तर।

सौबली, सौबलेयी [सौबल+ङीप्, सुबला+ढक्+ङीप्] धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी।

सौभम् [सुष्ठु सर्वत्र भोके भाति सु+भा+क+अण्] हरिश्चन्द्र का नगर (कहते हैं कि यह नगर अन्तरिक्ष में लटक रहा है)।

सौभगम् [सुभग+अण्] 1 अच्छा भाग्य, सौभाग्य 2. समृद्धि, धन, दौलत।

सौभद्रः, सौभद्रेयः [सुभद्रा+अण्, ढक् वा] सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का विशेषण।

सौभागिनेयः [सुभगा+ढक्, इनङ्, द्विपदवृद्धि] सबसे प्रिय पत्नी का पुत्र।

सौभाग्यम् [सुभगाया सुभगस्य वा भावः—ष्यञ्, द्विपदवृद्धिः] 1 अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत, सौभाग्यशालिता (मुख्यतः इसमें पति-पत्नी का पारस्परिक अनुग्रह प्राप्त करना, तथा एक दूसरे के प्रति दृढ़ भक्ति का होना पाया जाता है)—प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता कु० ५।१, सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती—मेघ० २९, (दोनों स्थानों में 'सौभाग्य' शब्द पर मल्लि० के टिप्पण देखें) 2 स्वर्गीय सुख, माङ्गलिकता 3. सौन्दर्य लावण्य, लालित्य, —(यस्य) हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्—कु० १।३, २।५३, ५।४९, रघु० १८।१९, उत्तर० ६।२७ 4 शोभा, उदात्तता 5 अहिवात (विप० वैधव्य) 6 बधाई, मंगलकामना 7 सिंदूर 8 सुहागा। सम०—चिह्नम् 1 अच्छे भाग्य का चिह्न, अच्छी किस्मत का चिह्न 2 अहिवात का चिह्न (जैसे कि मस्तक पर सिंदूर का तिलक), —तन्तुः (वह सूत्र जो विवाह में वर द्वारा कन्या के गले में बांधा जाता है और जिसे स्त्री विधवा होने तक पहनती है) विवाह-सूत्र, मंगलसूत्र,—तृतीया भाद्रशुक्ल-तृतीया हरितालिका, तीज —देवता सुभदेवता, या अभिभावक देवता, —वायनम् मिष्टान्न का शुभ उपहार या चढ़ावा।

सौभाग्यवत् (वि०) [सौभाग्य+मतुप्] भाग्यशाली, शुभ, —ती विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित है, विवाहित सधवा स्त्री।

सौभिकः [सौभं कामचारिपुरं तन्निर्माणं शीलमस्य—सौभ+ठक्] जादूगर, ऐन्द्रजालिक।

सौभ्रात्रम् [सुभ्रातृ+अण्] अच्छा भ्रातृभाव, भाईचारा, बंधुता सौभ्रात्रमेषां हि कुलानुसारि रघु० १६।१, १०।८१।

सौमनस (वि०) (स्त्री० सा,—सी) [सुमनस्+अण्] 1 भावनानुकूल, सुखद 2 फूलसंबंधी, पुष्पीय, —सम् 1 कृपालुता, उदारता, कृपा 2 आनन्द, सन्तोष।

सौमनसा [सौमनस+टाप्] जायफल का छिल्का।

सौमनस्यम् [सुमनस्+ष्यञ्] 1 मन का संतोष, आनन्द, प्रसन्नता रघु० १५।१४, १७।४० 2. श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को दिया गया फूलों का उपहार।

सौमनस्यायनी [सौमनस्य+अय+ल्युट्+ङीप्] मालती लता की मञ्जरी।

सौमायनः [सोम+फक्] बुध का पितृपरक नाम।

सौमिक (वि०) (स्त्री०—की) [सोम+ठक्] 1 सोमरस-संबंधी, सोमरस से अनुष्ठित यज्ञ 2 चन्द्रमासम्बन्धी।

सौमित्रः, सौमित्रिः [सुमित्रा+अण्, इञ् वा] लक्ष्मण का विशेषण—सौमित्रेरपि पत्रिणामविषये तत्र प्रिये क्वासि भोः—उत्तर० ३।४५।

सौमिल्लः (पुं०) कालिदास का पूर्ववर्ती एक नाटककार—भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनाम्—मालवि० १।

सौमेचकम् (नपुं०) सोना, स्वर्ण।

सौमेधिकः [सुमेधा+ठक्] मुनि, ऋषि, अलौकिक बुद्धिसम्पन्न।

सौमेरव (वि०) (स्त्री०—वी) [सुमेरु+अञ्] सुमेरु संबंधी, सुमेरु से आया हुआ, या प्राप्त,—वम् सोना, स्वर्ण।

सौम्य (वि०) (स्त्री०—म्या,—म्यी) [सोमो देवताऽस्य तस्येदं वा अण्] 1 चन्द्र संबंधी, चन्द्रमा के लिए पावन 2 चन्द्रमा के गुणों से युक्त 3 सुन्दर, सुखद, रुचिकर 4 प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध-सरम्भ मैथिलीहास क्षणसौम्यां निनाय ताम् रघु० १२।३६, (इसके संबोधन का रूप 'सौम्य' शब्द 'श्रीमान् जी' 'सम्मान्य' 'भला मानस' अर्थों को प्रकट करता है—प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव—रघु० १४।५९, सौम्येति चाभाष्य यथार्थवादी—१४।४४, मेघ० ४२ कु० ४।३५, मा० ९।२५ 5 शुभ—म्यः 1 बुधग्रह 2 ब्राह्मण को सम्बोधित करने का समुचित विशेषण—आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने—मनु० २।१२५ 3 ब्राह्मण 4 गूलर का पेड़ 5 काल होने से पूर्व की दशा में रुधिर लसीका, रक्तोदक 6 अन्नरस जो पेट में जाकर जीर्ण होकर बनता है 7 पृथ्वी के नौ खण्डों में से एक—(पुं० ब० व०) 1 मृगशिरा के पांच नक्षत्रों का पुंज 2 पितृवर्ग विशेष—मनु० ३।१९९। सम०—उपचारः शान्त उपाय, मृदु चिकित्सा,—कृच्छ्रः,—कृच्छ्रम् एक प्रकार की धर्म साधना—दे० याज्ञ० ३।३२२,—गन्धी सफेद गुलाब,—ग्रहः शान्त और शुभ ग्रह,—धातुः कफ, श्लेष्मा,—नामन् (वि०) जिसका नाम सुश्रियमधुर हो, सुखद हो—मनु० ३।१०,—वारः,—वासरः बुधवार।

सौर (वि०) (स्त्री०—री) [सूर+अण्] 1 सूर्यसम्बन्धी, सौर्य 2 सूर्य को अर्पित या पावन 3 स्वर्गीय, दिव्य 4 मदिरासम्बन्धी,—रः 1 सूर्योपासक 2 शनिग्रह 3 सौर मास 4 सौर दिन 5 तुम्बुरु नाम का पौधा,—रम् (ऋग्वेद से उद्धृत) सूर्यसम्बन्धी मन्त्रों का समूह। सम०—नक्तम् एक विशेष व्रत जो रविवार को किया जाय,—मासः सौर मास (जिसमें तीस बार सूर्य उदय हो और तीस ही बार अस्त हो),—लोकः सूर्य लोक।

सौरथः [सुरथ+अण्] शूरवीर, योद्धा।

सौरभ (वि०) (स्त्री०—भी) [सुरभि+अण्] सुगन्धित,—भम् 1 सुगन्ध—भामि० १।१८, १२१ 2 केसर, जाफरान।

सौरभेय (वि०) (स्त्री०—यी) [सुरभि+ढक्] सुरभि से सम्बद्ध,—यः बैल।

सौरभी, सौरभेयी [सौरभ+ङीप्, सौरभेय+ङीप्] 1 गाय 2 'सुरभि' नामक गाय की पुत्री—तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः—रघु० २।३।

सौरभ्यम् [सुरभि+ष्यञ्] 1 सुगन्ध, खुशबू, मधुरगन्ध—सौरभ्य भुवनत्रयेऽपि विदितम्—भामि० १।३८, पुनाना सौरभ्यैः—गगा० ४३, रघु० ५।६९ 2 रोचकता, सौन्दर्य 3 सदाचरण, प्रसिद्धि, कीर्ति, ख्याति।

सौरसेनाः (पुं०, ब० व०) एक प्रदेश और उसके अधिवासियों का नाम,—नी दे० शौरसेनी।

सौरसेय [सुरसा+ढक्] स्कन्द का विशेषण।

सौरसैन्धव (वि०) (स्त्री०—वी) [सुरसिन्धु+अण्] आकाशगंगा सम्बन्धी शि० १३।२७,—वः सूर्य का घोड़ा।

सौराज्यम् [सुराज्य+ष्यञ्] अच्छा प्रशासन या राज्य—एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान्—रघु० ५।६०।

सौराष्ट्र (वि०) (स्त्री०—ष्ट्रा, ष्ट्री) [सुराष्ट्र+अण्] सौराष्ट्र (सूरत) नामक प्रदेश सम्बन्धी या वहाँ से प्राप्त,—ष्ट्रः सौराष्ट्र प्रदेश, (पुं० ब० व०) सौराष्ट्र प्रदेश के अधिवासी,—ष्ट्रम् पीतल, कांसा।

सौराष्ट्रकः [सौराष्ट्र+कन्] एक प्रकार का कांसा, फूल।

सौराष्ट्रिकम् [सुराष्ट्र+ठक्] 1 एक प्रकार का जहर।

सौरिः [सूरस्यापत्यं पुमान् इञ्] 1 शनिग्रह का नाम 2 असन नामक वृक्ष। सम०—रत्नम् एक प्रकार का रत्न, नीलम।

सौरिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुर (रा) (सूर)+ठक्] 1 स्वर्गीय, दिव्य 2 मदिरासम्बन्धी, आसवीय 3 मदिरा पर लगा कर, शुल्क,—कः 1 शनि 2 स्वर्ग, वैकुण्ठ 3 कलाल, मदिरा बेचने वाला।

सौरी [सौर+ङीप्] सूर्य की पत्नी।

सौरीय (वि०) (स्त्री०—यी) [सूर+छण्] 1 सूर्य सम्बन्धी 2 सूर्य के योग्य, सूर्य के उपयुक्त।

सौर्य (वि०) (स्त्री०—र्यी) [सूर्य+अण्] सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला, सूर्य का।

सौलभ्यम् [सुलभ+ष्यञ्] 1 प्राप्ति की सुविधा 2 सुकरता, सुलभता, सुगमता।

सौल्विकः [शुल्ब+ठक्] ताम्रकार, कसेरा।

सौव (वि०) (स्त्री०—वी) [स्व (स्वर्)+अण्] 1 अपनी, निजी सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला 2 स्वर्गीय या स्वर्ग सम्बन्धी,—वम् आदेश, राजशासन।

सौवग्रामिक (वि॰) (स्त्री॰—की) [स्वग्राम+ठक्] अपने निजी गाँव से सम्बन्ध रखने वाला।

सौवर (वि॰) (स्त्री॰—री) [स्वर+अण्] 1. किसी ध्वनि या संगीत के स्वर से संबंध रखने वाला 2. स्वरसम्बन्धी।

सौवर्चल (वि॰) (स्त्री॰—ली) [सुवर्चल+अण्] सुवर्चल नामक देश से प्राप्त,—लम् 1. सोंचर नमक 2 सज्जी का क्षार, रेह।

सौवर्ण (वि॰) (स्त्री॰—र्णी) [सुवर्ण+अण्] 1 सुनहरी 2. तोल में एक स्वर्णमुद्रा के बराबर।

सौवस्तिक (वि॰) (स्त्री॰—की) [स्वस्ति+ठक्] आशीर्वादात्मक,—कः कुलपुरोहित, या ब्राह्मण।

सौवाध्यायिक (वि॰) (स्त्री॰—की) [स्वाध्याय+ठक्] स्वाध्यायसम्बन्धी, स्वाध्यायी।

सौवास्तव (वि॰) (स्त्री॰—वी) [सुवास्तु+अण्] अच्छे स्थान पर निर्मित, अच्छी वासभूमि से युक्त।

सौविदः, सौविदल्लः [सु+विद्+क+अण्, सुष्ठु विदन्नृपः त लाति—ला+क+अण्] अन्तःपुर की रखवाली पर नियुक्त व्यक्ति—शि॰ ५।१७।

सौवीरम् [सुवीर+अण्] 1 बेर का फल 2. अंजन, सुरमा 3. कांजी,—रः सुवीर देश या वहाँ का अधिवासी ('अधिवासी' के अर्थ में ब॰ व॰)। सम॰—**अञ्जनम्** एक प्रकार का अंजन या सुरमा।

सौवीरकः [सौवीर+कन्] 1, बेरी, बेर का पेड़ 2. सुवीर देश का अधिवासी 3. जयद्रथ का नाम,—कम् जौ की कांजी।

सौवीर्यम् [सुवीर+ष्यञ्] बड़ी शूरवीरता या विक्रम।

सौशील्यम् [सुशील+ष्यञ्] स्वभाव की श्रेष्ठता, अच्छा नैतिक आचरण, सदाचरण।

सौश्रवसम् [सुश्रवस्+अण्] ख्याति, प्रसिद्धि।

सौष्ठवम् [सुष्ठु+अण्] 1. श्रेष्ठता, भलाई, सौन्दर्य, लालित्य, सर्वोपरि सौन्दर्य—सर्वाङ्गसौष्ठवाभिव्यक्तये विरलनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु मालवि॰ १, शरीरसौष्ठवम् मा॰ १।१७, "जिसके शरीर की काटछांट या टीपटाप अच्छी न हो" 2. परमकौशल, चातुर्य 3 अधिकता 4. लघव, हल्कापन।

सौस्नातिकः [सुस्नात+ठक्] स्नान मंगलकारी होने के सम्बन्ध में पूछने वाला—सौस्नातिको यस्य भवत्यगस्त्यः—रघु॰ ६।६१।

सौहार्दः [सुहृद्+अण्] मित्र का पुत्र, —र्दम् हृदय की सरलता, स्नेह, सद्भाव, मैत्री (वेत्स्यामि) विभाव्य सौहार्दनिधिं सुहृद्भ्यः—रघु॰ १४।१५, सौहार्दहृद्यानि विचेष्टितानि—मा॰ १।४, मेघ॰ ११५।

सौहार्द्यम्, सौहृदम्–द्यम् [सुहृद्+ष्यञ्, अण् वा, यत् वा] मित्रता, स्नेह यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति—मृच्छ॰ १।१३, सखीजनस्ते किमु दत्तसौहृदः विक्रम॰ १।१०, मा॰ १।

सौहित्यम् [सुहित+ष्यञ्] 1 तृप्ति, सन्तुष्टि—शि॰ ५।६२ 2 पूर्णता, पूर्ति 3 कृपालुता, सद्भावना।

स्कन्द् (भ्वा॰ आ॰ स्कन्दते) 1 कूदना 2. उठाना 3. उडेलना, उगलना।

स्कन्द् i (भ्वा॰ पर॰ स्कन्दति, स्कन्न) 1. उछलना, कूदना 2 उठना, ऊपर की ओर उठना, ऊपर को उछलना 3 गिरना, टपकना भट्टि॰ २२।११ 4 फट जाना, छलकना 5. नष्ट होना, समाप्त होना—चस्कन्दे तप ऐश्वरम् 6 बिखर जाना, रिसना 7. उगलना, डालना, प्रेर॰ (स्कन्दयति—ते) 1 उडेलना, फैलाना, डालना, उगलना (जैसे वीर्यस्खलन)—एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत् क्वचित्—मनु॰ २।१८०, ९।५० 2. छोड़ देना, अवहेलना करना, पास से निकल जाना, अव—, आक्रमण करना, धावा बोलना आंधी की भांति झपटना पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम् शि॰ १।५१, आ—, आक्रमण करना, धावा बोलना—आस्कन्दल्लक्ष्मणं वाणैरत्यक्रामच्च तं द्रुतम्—भट्टि॰ १७।८२, परि—, इधर उधर उछलना—मेघनादः परिस्कन्दन् परिस्कन्दन्तमाह्वयत्। अवध्यादपरिस्कन्दं शस्त्रपाशेन विस्फुरन् भट्टि॰ ९।७५, प्र—, 1. आगे को उछलना 2. झपट्टा मारना, आक्रमण करना।

ii (चुरा॰ उभ॰ स्कन्दयति—ते) एकत्र करना।

स्कन्दः [स्कन्द्+अच्] 1. उछलना 2. पारा 3. कार्तिकेय का नाम—सेनानीनामहं स्कन्दः—भग॰ १०।२४, रघु॰ २।३६, ७।१, मेघ॰ ४३ 4. शिव का नाम 5. शरीर 6 राजा 7. नदीतट 8. चतुर पुरुष। सम॰—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक,—**षष्ठी** (स्त्री॰) चैत्र मास के छठे दिन कार्तिकेय के सम्मान में पर्व।

स्कन्दकः [स्कन्द्+ण्वुल्] 1 उछलने वाला 2. सैनिक।

स्कन्दनम् [स्कन्द्+ल्युट्] 1. क्षरण, बहना 2. रेचन, पेट का चलना, (आंतों की या नसों की) शिथिलता 3. जाना, हिलना-जुलना 4. सूखना 5 ठंडक पहुँचा कर रक्त का जमाना।

स्कन्ध् (चुरा॰ उभ॰ स्कन्धयति—ते) एकत्र करना।

स्कन्धः [स्कन्द्यते आरुह्यतेऽसौ सुखेन शाखया वा कर्मणि घञ्, पृषो॰] 1 कंधा 2. शरीर 3. वृक्ष का तना —तीव्राघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः—श॰ १।३४, रघु॰ ४।४७, मेघ॰ ५३ 4. शाखा या बड़ी डाली 5 मानव-ज्ञान की कोई शाखा या विभाग 6. (किसी पुस्तक का) परिच्छेद, अध्याय, खण्ड 7. किसी सेना की टुकड़ी 8. सैनिक समुच्चय, समूह 9 ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय 10 (बौद्ध दर्शन में) जीवन के पाँच तत्त्वरूप—अर्थकार्यशरीरेषु मुक्ताङ्गस्कन्धपञ्चकम्

शि० २।२८ 11 समुदाय, लड़ाई 12. राजा 13 करार 14 मार्ग, रास्ता 15. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 16 कंकपक्षी, बगला। सम० —आवारः 1 सेना या सेना की टुकड़ी 2 राजा का निवास, राजधानी 3 शिविर, —उपानेय (वि०) जो कंधे पर ढोया जाय, शान्ति बनाये रखने के लिए की जाने वाली सन्धि जिसमें अधीनता के चिह्न स्वरूप कोई फल या धान्य उपहार में दिया जाय, —चापः बहंगी, तु० शिक्य। —तरुः नारियल का पेड़, —देशः कंधा, इदमुपहित-सूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे—श० १।१८, —परिनिर्वाणम् शरीर के स्कन्धों (पाँचों तत्त्वों) का पूर्ण लोप या नाश (बौद्ध०), —फलः 1 नारियल का पेड़ 2. बेल का वृक्ष 3. गूलर का पेड़, —बंधना एक प्रकार का सोया मेथी, —मल्लकः कंकपक्षी, बगला, —रुहः बटवृक्ष, —वाहः, —वाहकः बोझा ढोने के लिए सधाया हुआ बैल, लद्दू बैल, —शाखा पेड़ की मुख्य शाखा जो वृक्ष के तने से निकले, —शृंगः भैंस, —स्कन्धः प्रत्येक कंधा।

स्कन्धस् (नपुं०) [स्कन्ध्+असुन्, पृषो०] 1 कंधा 2 वृक्ष का तना।

स्कन्धिकः [स्कन्ध+ठन्] बोझा ढोने के लिए सधाया हुआ बैल, तु० 'स्कन्धवाह'।

स्कन्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्कन्ध+इनि] 1 कंधों वाला 2. डालियों वाला, तने वाला, (पुं०) वृक्ष।

स्कन्न (भू० क० कृ०) [स्कन्द्+क्त] 1 पतित, नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ 2 रिसा हुआ, बूंद बूंद टपका हुआ 3. उगला हुआ, फैलाया हुआ, छिड़का हुआ 4 गया हुआ 5. सूखा हुआ।

स्कम्भ् (भ्वा० आ०, स्वा० क्र्या० स्कम्भते, स्कम्नोति, स्कम्नाति) 1. रचना 2 रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना, अवरोध करना, दबाना, नियन्त्रित करना —प्रेर० (स्कम्भयति—ते या स्कभयति—ते, वि,— बाधा डालना, अवरोध करना।

स्कम्भः [स्कम्भ्+घञ्] 1 सहारा, थूणी, टेक 2 आलंब आधार 3. परमेश्वर।

स्कम्भनम् [स्कम्भ्+ल्युट्] सहारा देने की क्रिया, सहारा, थूणी, टेक।

स्कान्द (वि०) (स्त्री०—दी) [स्कन्द+अण्] 1. स्कन्द-सम्बन्धी 2, शिवसम्बन्धी, —दम् स्कन्द पुराण।

स्कु (स्वा० क्र्या० उभ० स्कुनोति, स्कुनुते, स्कुनाति, स्कुनीते) 1 कूद कर चलना, उछलना, चौकड़ी भरना 2. उठाना, उद्वहन करना 3. ढकना, ऊपर बिछा देना भट्टि० १७।३२ 4 पहुँचना, प्रति—, ढांपना भट्टि० १८।७३।

स्कुन्द् (भ्वा० आ० स्कुन्दते) 1. कूदना 2. उद्वहन करना, उठाना।

स्कोटिका (स्त्री०) पक्षीविशेष।

स्खद् (भ्वा० आ० स्खदते) 1. काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना 2 नष्ट करना 3. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 4. परास्त करना, सर्वथा हरा देना 5 थकाना, श्रान्त करना कष्ट देना 6. दृढ़ करना।

स्खदनम् [स्खद्+ल्युट्] 1. काटना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3 कष्ट देना, दुःखी करना।

स्खल् (भ्वा० पर० स्खलति) 1. लड़खड़ाना, औंधे मुंह गिरना, नीचे गिरना, फिसलना, डगमगाना—स्खलति चरणं भूमौ न्यस्तं न चार्द्रतमा मही —मृच्छ० ९।१३, ५।२४ 2 डगमगाना, लहराना, थरथराना, डगमग होना 3 आज्ञा भंग किया जाना, उल्लंघित होना (किसी आदेश का)—मुद्रा० ३।२५, रघु० १८।४३ 4. सन्मार्ग से च्युत होना—कि० ९।३७ 5 ग्रस्त होना, उत्तेजित होना कि० ३।५३, १३।५ 6. त्रुटि करना, बड़ी भूल करना, गलती करना स्खलतो हि कराकम्बः सुहृत्सचिवचेष्टितम् हि० ३।१३४, (यहाँ यह 'प्रथम' अर्थ को भी प्रकट करता है) 7 हकलाना, तुतलाना, रुक-रुक कर बोलना —वचन-कमलक शिशोः स्मरामि स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते—उत्तर० ४।४, रघु० ९।७६, कु० ५।५६ 8. विफल होना, कोई प्रभाव न होना—रघु० ११।८३ 9. बूंद बूंद गिरना, टपकना, चूना 10. जाना, हिलना-जुलना 11. ओझल होना 12. एकत्र करना, इकट्ठा करना —प्रेर० (स्खलयति-ते) 1. लड़खड़ाने का कारण बनना, 2. त्रुटि या भूल कराना, डगमगाने या डांवाडोल होने का कारण बनना—वचनानि स्खलयन् पदे पदे —कु० ४।१२, स्खलयति वचनं ते संश्रयत्यङ्गमङ्गम्—मा० ३।८, प्र—, धक्कमधक्का होना—रथाः प्रचस्खलतु-रश्वाश्च भट्टि० १४।९८, वि—, गलती करना, बड़ी भूल करना रघु० १९।२४।

स्खलनम् [स्खल्+ल्युट्] 1 लड़खड़ाना, फिसलना, डग-मगाना, नीचे गिर पड़ना 2. डगमगाते हुए चलना 3. सन्मार्ग से विचलन 4 भारी भूल, त्रुटि, गलती 5. विफलता, निराशा, असफलता 6. हकलाना, बोलने में भूल या उच्चारण में अशुद्धि, रुक रुक कर बोलना 7 चूना, टपकना 8. टकराना, उछलना—उत्तर० २।२०, महावीर० ५।४० 9. आपस में घिसना, रगड़ना।

स्खलित (भू० क० कृ०) [स्खल्+क्त] 1. लड़खड़ाया, फिसला, डगमगाया 2 गिरा, पड़ा 3. थरथराने वाला, लहराने वाला, चटपट होने वाला, अस्थिर 4. नशे में चूर, पियक्कड़ 5 हकलाने वाला, रुक रुक कर

बोलने वाला 6. विक्षुब्ध, बाधित 7. त्रुटि करने वाला, बड़ी भूल करने वाला 8. गिरा हुआ, उद्गीर्ण 9. टपकने वाला, चू कर नीचे गिरने वाला 10 हस्तक्षेप किया गया, रोका हुआ 11. व्याकुल 12. बीता हुआ, —तम् 1. लड़खड़ाना, डगमगाना, गिरना 2. सन्मार्ग से विचलन 3 त्रुटि, भूल, गलती, गोत्रस्खलित कु० ४।८ 4. दोष, पाप, अतिक्रमण 5. धोखा, विश्वासघात 6. झांसा, कूटचाल। सम० —सुभगम् (अव्य०) आकर्षक रीति से चले चलना — मेघ० २८।

स्खुड् (तुदा० पर० स्खुडति) ढकना।

स्तक् (भ्वा० पर० स्तकति) 1. मुकाबला करना 2 टक्कर लेना, प्रतिरोध करना, पीछे ढकेलना।

स्तन् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्तनति, स्तनयति—ते, स्तनित) 1. आवाज करना, शब्द करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2. कराहना, कठिनाई से सांस लेना, ऊँचा सांस लेना 3. गरजना, दहाड़ना —तस्मन्नुभ्रंजमुर्मम्लुर्जम्लुलुठिरे क्षता भट्टि० १४।३०, वि , 1. शब्द करना 2 आह भरना 3 विलाप करना, वि , दहाड़ना।

स्तनः [स्तन्+अच्] 1. स्त्री की छाती—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमिती—भर्तृ० ३।२०, (दरिद्राणां मनोरथाः) हृदयेष्वेव लीयन्ते विधवास्त्रीस्तनाविव पंच० २।९१ 2. छाती, किसी भी मादा की चूंची या चूचुक—अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेसरम् श० ७।१४। सम० —अंशुकम् स्तन ढकने का कपड़ा, —अग्रः चूची, —अङ्गरागः स्त्री के स्तनों पर लगाया जाने वाला रंग, —अन्तरम् 1 हृदय 2 दोनों स्तनों के बीच का स्थान — (न) मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे श० ६।१७, रघु० १०।६२ 3 स्तन का एक चिह्न (जो भावी वैधव्य का सूचक कहा जाता है), —आभोगः 1. स्तनों की पूर्णता या फैलाव 2 चूचियों की गोलाई 3 वह पुरुष जिसके स्त्रियों जैसे बड़े स्तन हों, —तटः, —टम् चूचियों का ढलान, —पः,—पा, —पायक, —पायिन् स्तन पान करने वाला, दुधमुंहा, —पानम् स्तनपान करना, —भरः 1. स्तनों की स्थूलता,—पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रताम् —रत्न० १।१ 2. स्त्री जैसे स्तनों वाला पुरुष, —बन्धः एक प्रकार का रतिबन्ध, —मुखम्, —वृन्तम्,—शिखा चूचुक, चूची।

स्तननम् [स्तन्+ल्युट्] 1. ध्वनन, आवाज, कोलाहल 2. दहाड़ना, गरजना, (बादलों का) गड़गड़ाना 3. कराहना 4. कठिनाई से सांस लेना।

स्तनन्धय (वि०) [स्तनं धयति—धे+खश्, मुम् च] स्तन्यपान करने वाला —यदि बुध्यते हरिशिशुः स्तनन्धयो भविता करेणुपरिशोषिता मही भामि० १।५३, तदाङ्कशायी परिवृत्तभाग्यया मया न दृष्टस्तनयः स्तनन्धयः मा० १०।६, —यः शिशु, दुधमुंहा बच्चा रघु० १४।७८, शि० १२।४०।

स्तनयित्नुः [स्तन्+इत्नुच्] 1. गरजना, गड़गड़ाना, बादलों का कड़कड़ाना 2. बादल उत्तर० ३।७, ५।८ 3 बिजली 4 रोग, बीमारी 5 मृत्यु 6. एक प्रकार का घास।

स्तनित (भू० क० कृ०) [स्तन् कर्तरि क्त] 1. ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहलमय मेघ० २८ 2. गरजने वाला, दहाड़ने वाला, —तम् 1 बिजली की कड़कड़ाहट, बादलों की गरज —तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्म भूर्विक्लवास्ताः मेघ० ३७ 2 गरज, शोर 3 ताली बजाने की आवाज।

स्तन्यम् [स्तने भव यत्] मां का दूध, क्षीर—पिब स्तन्यं पोत भामि० १।६०। सम० —त्यागः मां का दूध छुड़ाना, स्तन्यमोचन —स्तन्यत्यागात्प्रभृति सुमुखी दन्तपाञ्चालिकेव मा० १०।५, स्तन्यत्यागं यावत्पुत्रयोरवेक्षस्व उत्तर० ७।

स्तबकः [स्तु+वुन् या स्था+अवक्, पृषो० बवयोरभेदः] गुच्छा, गुच्छ —कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनाम् —भर्तृ० २।१०४, रघु० १३।३२, मेघ० ७५, कु० ३।३९।

स्तब्ध (भू० क० कृ०) [स्तम्भ् कर्मणि कर्तरि वा क्त] 1 रोका हुआ, घेराबन्दी किया हुआ, अवरुद्ध 2 लकवे से ग्रस्त, संज्ञाहीन सुन्न, जड़ीकृत 3 गतिहीन, स्थावर, अचल 4 स्थिर दृढ़ कड़ा, घोर, कठोर 5 ढीठ, अड़ियल, कठोरहृदय, निष्ठुर 6 उजड्ड, मोटा। सम० —कर्ण (वि०) जिसके कान खड़े हों, —रोमन् (पुं०) सूअर, वराह, —लोचन (वि०) जिसकी पलकें न झपकती हों (जैसे देवता)।

स्तब्धता,—त्वम् [स्तब्ध+तल्+टाप्, त्व वा] अनम्यता, दृढ़ता, कड़ाई 2 जाड्य, असंवेद्यता।

स्तब्धिः (स्त्री०) [स्तम्भ्+क्तिन्] 1 स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अनम्यता 2 दृढ़ता, अचलता 3. जाड्य, असंवेदन, अड़ना, धृष्टता।

स्तभ् दे० 'स्तम्भ्'।

स्तभः (पुं०) बकरा, मेढ़ा।

स्तभु (नपुं०) स्तम्भन।

स्तम् (भ्वा० पर० स्तमति) घबरा जाना, व्याकुल होना।

स्तम्बः [स्था+अम्बच् किच्च, पृषो०] 1. घास का पूला —रघु० ४।१५ 2. अनाज के पौधों की पुली जैसा कि 'स्तम्बकरिता' में 3 झुंड, पुंज, गुच्छा उत्तर० २।२९, रघु० १५।१९ 4 झाड़ी, झुरमुट 5 गुल्म, प्रकांड रहित झाड़ी 6 हाथी बांधने का खूंटा 7. खंभा 8 जड़ता, असंवेदना (इन दो अर्थों में 'स्तम्भ')

५ पहाड़ । सम०—करि (वि०) पुलियाँ बनाने वाला, भरोटा बनाने वाला, (रिः) अनाज, धान्य, —करिता पूला या मुट्ठा बनना, प्रचुर या पुष्कल मात्रा में विकास —न शाले स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते—मुद्रा० १।३, —घनः 1 सूर्पा (जिससे घास के गुच्छे गिराये जाय) 2 (धान्य काटने के लिए) दराती 3 तिनी धान एकत्र करने की टोकरी, —घ्न दराती, सूर्पा ।

स्तम्बेरमः [स्तम्बे वृक्षादीना काण्डे गुल्मे गुच्छे वा रमते रम् +अच्, अलुक् स०] हाथी स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते —रघु० ५।८२, शि० ५।३४ ।

स्तम्भ् (भ्वा० आ० स्वा० क्र्या० पर० स्तम्भते स्तभ्नोति स्तभ्नाति, स्तम्भित, स्तब्ध इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् तथा अव के पश्चात् धातु के स् को ष् हो जाता है) 1 रोकना, बाधा डालना, पकड़ना दबाना—कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुष —श० ४।५ 2 दृढ़ करना, कड़ा करना अचल बनाना 3 जड़ बनाना शक्तिहीन करना अगम्य बनाना प्राणा दध्वंसिरे गात्रं तस्तम्भे च हृते प्रिये भट्टि० १४।५५ 4 टेक लगाना सहारा देना थामना सभाले रखना 5 कड़ा होना, सख्त होना, अटल होना 6 घमडी होना, उन्नत होना सीधी गर्दन वाला होना (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न रूप दर्शाये गए हैं स्तम्भते पुरुष प्रायो यौवनेन धनेन च । न स्तभ्नाति स्थितोऽपि न स्तभ्नाति युवाप्यसौ ॥) —प्रेर० (स्तम्भयति ते) 1 रोकना पकड़ना 2 दृढ़ या कड़ा करना 3 गतिहीन करना 4 टेक लगाना सहारा देना । सम० अव 1 झुकना निर्भर होना प्रकृति स्वामवष्टभ्य भग० ९।८ 2 अवरुद्ध करना 3 सहारा देना टेक लगाना 4 थामना कौली भरना आलिंगन करना ५ लपेटना लिफाफे में रखना 6 बाधा डालना रोकना पकड़ना प्रतिबद्ध करना उद् 1 रोकना रुकावट डालना पकड़ना 2 सहारा देना टेक लगाना थाम रखना उप , नि रोकना गिरफ्तार करना, पर्यव घेरना पर्यवष्टभ्यतामत्र करालायतनम् —मा० ५ वि 1 रोकना 2 जमाना, पौधा लगाना आश्रित होना —अयमुच्छ्रितमूर्तिर्मार्गि पार्थिवे च विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते श्री —मुद्रा० ४।१३, सम् , (प्रेर० भी) 1 रोकना प्रतिबद्ध करना, नियन्त्रण करना—प्रयत्नसंस्तम्भितविक्रियाणा कथचिदीशा मनसा बभूवुः—कु० ३।३४ 2 गतिहीन करना अगम्य करना कु० ३।७३ 3 हिम्मत बांधना, साहस करना, प्रसन्न होना, स्वस्थचित्त करना, सचेत होना—देवि संस्तम्भयात्मानम्—उत्तर० ४ 4 दृढ़ या अटल करना, भग० ३।४३, समव , 1 सहारा देना, टेक लगाना 2 सांत्वना देना, प्रोत्साहित करना ।

स्तम्भः [स्तम्भ् + अच्] 1 स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अटलता रम्भा स्तम्भं भजति—विक्रम० १८।२०, गात्रस्तम्भ स्तनमुकुलयोरुत्प्रकम्पं प्रकम्प्य —मा० २।५ तत्स्कन्धोपहितजडिमस्तम्भमभ्येति गात्रम्—१।३५, ४।२ 2 असवेद्यता, जड़ता, बावलापन, अगम्यता, लकवा 3 रोक अवरोध रुकावट—सोऽपश्यत्प्रणिधानेन सन्ततेः स्तम्भकारणम्—रघु० १।७९, वाक्स्तम्भं नाटयति मा० ८ 4 नियंत्रित करना, दमन करना, दबाना—कुलिशभृत्स्तम्भ प्रतिहतविवाकम्पवकिरपि —भर्तृ० ३।६ 5 टेक सहारा, आश्रय 6 स्थूण खभा, पाल 7 प्रकाण्ड (वृक्ष का) तना 8 मूढ़ता, जड़ता 9 भावशून्यता, अनुत्तेजनीयता 10 किसी अलौकिक शक्ति या जादू से भावना या शक्ति का दमन करना । सम०—उत्कीर्ण किसी लकड़ी में खोद कर बनाई गई (मूर्ति), —कर (वि०) 1 गतिहीन करने वाला जड़ता लाने वाला 2 रोकने वाला, (रः) बाड़, —कारणम् अवरोध या रुकावट का कारण,—पूजा विवाह आदि के अवसर पर बनाए गए अस्थायी मण्डपों के स्तम्भों की पूजा ।

स्तम्भकिन् (पु०) चर्मसंमढित एक वाद्ययन्त्र ।

स्तम्भनम् [स्तम्भ् + ल्युट्] 1 रोकना, अवरोध करना, रुकावट डालना गिरफ्तार करना, दबाना, नियंत्रित करना लोलोल्लोलक्षुभितकरणोज्जृम्भणस्तम्भनार्थम् —उत्तर० ३।३६ 2 गतिहीन होना, अकड़ाहट, जड़ता 3 शान्त होना स्वरयांचितता पच० १।३६० 4 दृढ़ या कड़ा करना, दृढ़ता पूर्वक जमाना 5. टेक देना, सहारा देना 6 रुधिर प्रवाह को रोकना 7 कोई भी चीज जो रक्तस्रावरोधक हो 8 (मन्त्रादि के द्वारा) किसी की शक्ति कुंठित करना—दे० स्तम्भ (१०),—न कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

स्तर (वि०) [स्तृ (स्तॄ) + घञ्] फैलाने वाला विस्तार करने वाला, ढकने वाला —रः 1 कोई भी बिछाई हुई चीज परत तह, परत 2 शय्या पलग ।

स्तरणम् [स्तृ (स्तॄ) + ल्युट्] फैलाने की क्रिया बिखेरना, छितराना आदि ।

स्तरि (री) मन् (पु०) [स्तृ + इ (ई) मनिच्] शय्या, पलग ।

स्तरी [स्तृ कर्मणि ई] 1 धूआँ, वाष्प 2 बछिया 3. बांझ गाय ।

स्तवः [स्तु + अप्] 1 प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना 2 प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र ।

स्तवक (वि०) (स्त्री०—विका) [स्तु + वुन्] प्रशंसक,

स्तोता,—कः 1 स्तुति कर्ता, प्रशंसा, स्तुति 3. मंजरियों का गुच्छा 4 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, गजरा, कुसुमस्तबक 5 किसी पुस्तक का परिच्छेद, या अनुभाग 6 समुच्चय—तु० 'स्तबक' भी ।

स्तवनम् [स्तु+ल्युट्] 1 प्रशंसा करना, सराहना 2 सूक्त ।

स्ताव [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसा, स्तुति ।

स्तावकः [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसक, स्तोता, चापलूस ।

स्तिघ् (स्वा० आ० स्तिघ्नुते) 1 चढ़ना 2 धावा बोलना 3 रिसना ।

स्तिप् (भ्वा० आ० स्तेपते) रिसना, बूंद-बूंद टपकना झरना ।

स्तिभिः [स्तम्भ्+इन्, इत्वम्] 1 रुकावट, अवरोध 2 समूह, 3 गुल्म, गुच्छा, पुंज ।

स्तिम्, स्तीम् (दिवा० पर० स्तिम्यति स्तीम्यति) 1 गीला या तर होना 2 स्थिर या अटल होना, कड़ा होना ।

स्तिमित (वि०) [स्तिम् कर्तरि क्त] 1 गीला, तर 2 (क) निश्चल, निश्चेष्ट, शान्त कुमितमुत्कलिकातरलं मनः पय इव स्तिमितस्य महोदधेः —मा० ३।१०, (ख) जमाया हुआ, कठोर अटल, गतिहीन, स्थिर—वाचस्पतिः सन्नपि सोऽष्टमूर्तौ त्वाशास्यचिन्तास्तिमितो बभूव कु० ७।८७ २।५९, मा० १।२७, रघु० २। २२, ३।१७, १३।४८, ७९, उत्तर० ६।२५ 3 मुंदा हुआ, बंद—रघु० १।७३ 4 अकड़ा हुआ, लकवाग्रस्त 5 मृदु, कोमल 6 तृप्त, सन्तुष्ट । सम० वायु शान्त पवन —समाधि स्थिर सविन्नम ।

स्तिमितत्वम् [स्तिमित+त्व] स्थिरता निश्चेष्टता, शान्ति ।

स्तीर्विः [स्तृ+क्विन्] 1 यज्ञ में स्थानापन्न ऋत्विक् 2 घास 3 आकाश, अन्तरिक्ष 4 जल 5 रुधिर 6 इन्द्र का विशेषण ।

स्तु (अदा० उभ० स्तौति-स्तवीति स्तुते स्तुवीते स्तुत इच्छा० तुष्टूषति—ते इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के स् को ष् हो जाता है) 1 प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना स्तुतिगान करना—कीर्तिगान करना ख्याति करना —भामि० १।८१ मुद्रा० ३।१६ भट्टि० ८।९२ १५।६० २१।३ 2 प्रशंसागान करना भजन गाना स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र—, 1 प्रशंसा करना 2 आरंभ करना उपक्रम करना प्रस्तूयताम् विवादवस्तु —मालवि० १ 3 कारण बनना पैदा करना मा० ५।९ सम्, 1 प्रशंसा करना – रघु० १३।६ 2 परिचित होना जानकार या घनिष्ठ संबंध वाला होना (इस अर्थ में प्राय 'क्त' का प्रयोग) अनेकशः संस्तुतमप्यनल्पा नव नव प्रीतिरहो करोति शि० ३।३१, कि० ३।२, दे० 'संस्तुत' भी ।

स्तुक (पु०) बालों की चोटी ग्रंथि या मींढी ।

स्तुका [स्तुक+टाप्] 1 बालों की ग्रंथि या मींढी 2 सांड के दोनों सींगों के बीच के घुंघराले बालों का गुच्छा 3 कूल्हा, जंघा ।

स्तुच् (भ्वा० आ० स्तोचते) 1 उज्ज्वल होना, चमकना, निर्मल स्वच्छ होना 2 मंगलप्रद या शुभ या सुखद होना ।

स्तुत (भू० क० कृ०) [स्तु+क्त] 1 प्रशंसा किया गया, प्रशस्त स्तुति किया गया 2 खुशामद किया गया ।

स्तुतिः (स्त्री०) [स्तु+क्तिन्] 1 प्रशंसा, गुणकीर्तन सराहना श्लाघा स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते रघु० १०।३० 2 प्रशंसात्मक सूक्त, स्तोत्र रघु० ४।६ 3 चापलूसी खुशामद, झूठी प्रशंसा—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुतिः परमेष्ठिनः —रघु० १०।३३ 4 दुर्गा का नाम । सम० —गीतम् स्तुतिगान सूक्त कीर्तिगान —पदम् प्रशंसा की वस्तु —पाठकः कीर्तिगायक प्रशस्तिवाचक भाट, चारण —वादः प्रशंसायुक्त भाषण स्तोत्र —व्रतः भाट ।

स्तुत्य (वि०) [स्तु+क्यप्] श्लाघ्य प्रशंसनीय स्तुत्यं स्तुतिभिरर्थ्याभिरुपतस्थे सरस्वती ... रघु० ४।६ ।

स्तुनकः [स्तु+नक] बकरा ।

स्तुभ् I (भ्वा० पर० स्तोभति) 1 प्रशंसा करना 2 प्रसिद्ध करना स्तुतिगान करना पूजा करना । II (भ्वा० आ० स्तोभते) 1 रोकना दबाना 2 जड़ करना, सुन्न करना जड़ीभूत करना ।

स्तुभः [स्तुभ्+क] बकरा ।

स्तुम्भ् (स्वा० क्र्या० पर० स्तुभ्नोति स्तुभ्नाति) 1 रोकना 2 सुन्न करना जड़ीभूत करना 3 निकाल देना ।

स्तूप (दिवा० पर० चुरा० उभ० स्तूप्यति, स्तूपयति—ते) 1 ढेर लगाना संचित करना चट्टा लगाना, एकत्र करना 2 खड़ा करना उठाना ।

स्तूप [स्तूप्+अच्] 1 ढेर चट्टा टीला (मिट्टी का) 2 बौद्ध स्मारकचिह्न पावन अवशेषों का (जैसे कि बुद्ध के) रखने के लिए एक प्रकार का स्तम्भसदृश स्मृतिचिह्न 3 चिता ।

स्तृ I (स्वा० उभ० स्तृणोति, स्तृणुते स्तृत, कर्मवा० स्तर्यते) 1 फैलाना छितराना, ढकना, बिछाना (मही) तस्तार सरघाव्याप्तैः स क्षौद्रपटलैरिव रघु० ४।६३ कु० १।५८ 2 फैलाना, प्रसार करना, विकीर्ण करना 3 बखेरना छितराना 4 कपड़े पहनाना ढांपना, बिछाना लपेटना 5 मार डालना प्रेर० (स्तारयति —ते) बिछाना, ढांपना, छितराना

— रक्तेनाविकिलद्भूमिं सैन्यैश्चानस्तरद्धलैः —भट्टि० १५।४८, इच्छा० (तिस्तीर्षति ते)।

ii (स्वा० पर० स्तृणोति) प्रसन्न करना, तृप्त करना।

स्तृ (पुं०) [स्तृ + क्विप्] तारा।

स्तृक्ष (भ्वा० पर० स्तृक्षति) जाना।

स्तृतिः (स्त्री०) [स्तृ + क्तिन्] 1 फैलाना बिछाना, प्रसार करना 2 ढकना, कपड़े पहनाना।

स्तृह्, स्तृह् (तुदा० पर० स्तृहति, स्तृहति) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्तॄ (क्र्या० पर० स्तृणाति, स्तृणीते, स्तीर्ण, इच्छा० तिस्तरि (री) षति—ते, तिस्तीर्षते) ढापना बखेरना आदि, दे० स्तृ'। अव ढापना, भरना, बिछा देना- प्रकम्पयन् मामवतस्तरे दिश —कि० १६। २९, आ—ढकना, आच्छादित करना, रघु० ४।६५ उप—, 1 बखेरना 2 क्रम से रखना, परि—, 1. फैलाना, विकीर्ण करना, प्रसार करना भट्टि० १४।११ 2 ढापना (आल० से भी) अथ नागयूथमलिनानि जगत्परितस्तमांसि परितस्तरिरे—शि० ९।१८ अभितस्त पृथासूनुः स्नेहेन परितस्तरे—कि० ११।८ 3 क्रम से रखना वि—, 1 फैलाना, विकीर्ण करना 2 ढापना प्रेर० फैलवाना, प्रसार करवाना —जैसा कि 'पयोधरविस्तारयितृक यौवनम्' श० १ 2 बढ़ना रघु० ७।३९ 3 फैलाना प्रसार करना सम्—, 1 फैलाना, बखेरना—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भा —श० ४।७ 2 बिछाना।

स्तेन् (चुरा० उभ० 'स्तेन' का नामधातु—स्तेनयति-ते) चुराना, लूटना, —मनु० ८।३३३।

स्तेनः [स्तेन् कर्तरि अच्] चोर, लुटेरा —न त स्तेना न चामित्रा हरन्ति न च नश्यति- मनु० ७।८३, —नम् चोरी करना, चुराना। सम०—निग्रह 1 चोरों को दिया जाने वाला दण्ड 2 चोरी को रोकना।

स्तेप् i (भ्वा० आ० स्तेपते) रिसना।

ii (चुरा० उभ० स्तेपयति—ते) भेजना फेंकना।

स्तेमः [स्तिम् + घञ्] नमी, गीलापन।

स्तेयम् [स्तेनस्य भावः यत् न लोपः] 1 चोरी लूट —कु० २।३५ 2 चुराई हुई या चुराये जाने के योग्य कोई वस्तु 3 कोई निजी या गुप्त चीज।

स्तेयिन् (पुं०) [स्तेय + इनि] 1 चोर, लुटेरा 2 सुनार।

स्तै (भ्वा० पर० स्तायति) पहनना अलंकृत करना।

स्तैनम् [स्तेन + अण्] चोरी, लूट।

स्तैन्यम् [स्तेनस्य भावः ष्यञ्] चोरी, लूट,—न्यः चोर।

स्तैमित्यम् [स्तिमित + ष्यञ्] 1 स्थिरता कठोरता, अटलता 2 जड़ता, सुन्नपना।

स्तोक (वि०) [स्तुच् + घञ्] 1 अल्प, थोड़ा—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्—पंच० १।१५०, स्तोक महद्वा धनम् —भर्तृ० २।४९ 2 छोटा 3 कुछ 4 अधम, नीच —कः 1 थोड़ी मात्रा, बूंद 2 चातक पक्षी,—कम् (अव्य०) जरा सा, अपेक्षाकृत कम पयोधरप्रस्रुतत्वाद्विमति बहुतर स्तोकमूर्व्या प्रयाति —श० १।७। सम०—काय (वि०) छोटे शरीर वाला, छोटा, ठिगना, लघु —नम्र, (वि०) जरा झुका हुआ, थोड़ा सा शिथिल या अवसन्न—श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां मेघ० ८२।

स्तोककः [स्तोकाय अल्पबिन्दवे कायति शब्दायते स्तोक + कै + क] चातक पक्षी —मनु० १२।६७।

स्तोकशः (अव्य०) [स्तोक + शस्] थोड़ा-थोड़ा करके, कमी के साथ।

स्तोतव्य (वि०) [स्तु + तव्यत्] प्रशंसनीय, श्लाघ्य, तारीफ के लायक—स्तोतव्यगुणसम्पन्न केषां न स्यात्प्रियो जनः।

स्तोतृ (पुं०) [स्तु + तृच्] प्रशंसक, स्तुतिकर्ता।

स्तोत्रम् [स्तु + ष्ट्रन्] 1 प्रशंसा, स्तुति 2 प्रशस्ति, स्तुतिगान।

स्तोत्रियः,—या [स्तोत्र + घ, स्त्रियां टाप् च] एक विशेष प्रकार की ऋचा, स्तोत्र का पद्य।

स्तोभ [स्तुभ् + घञ्] 1 रोकना, अवरुद्ध करना 2 विराम, यति 3 निरादर तिरस्कार 4 सूक्त, प्रशस्ति 5 सामवेद का एक प्रभाग 6 अन्तर्निविष्ट।

स्तोमः [स्तु + मन्] 1 प्रशस्ति, स्तुति सूक्त 2 यज्ञ, आहुति जैसा कि ज्योतिष्टोम या अग्निष्टोम में 3 सोम द्वारा तर्पण 4 संग्रह, समुच्चय, संख्या, समूह, संघात उत्तर० १।५० 5 बड़ी मात्रा, ढेर भस्मस्तोमपवित्रलाञ्छनमुरो धत्ते त्वच रौरवीम् —उत्तर० ४।२० महावीर० १।१८ —मम् 1 सिर 2 धन दौलत 3 अनाज धान्य 4 लोहे की नोक वाली छड़ी।

स्तोम्य (वि०) [स्तोम + यत्] श्लाघ्य प्रशंसनीय।

स्त्यान (वि०) [स्त्यै + क्त] ढेर के रूप में संचित मा० ९।११ वेणी० १।२१ 2 घना स्थूल, ठोस 3 मृदु स्निग्ध कोमल चिकना 4 शब्दायमान मुखर —नम् 1 सघनता, ठोसपना आकार या फैलाव में वृद्धि दर्शन कुहरभाजामत्र भल्लकयूनामनुरसितगुरूणि स्त्यानमम्बूकृतानि मा० ९।६, उत्तर० २।२१, महावीर ५।४१ 2 चिकनाई 3 अमृत 4 ढीलापन, आलस्य 4 प्रतिध्वनि, गूंज।

स्त्यायनम् [स्त्यै + ल्युट्] ढेर के रूप में संचित करना, भीड़ लगाना समष्टि।

स्त्येनः [स्त्यै + इनच्] 1 अमृत 2 चोर।

स्त्यै (भ्वा० उभ० स्त्यायति-ते) 1 ढेर के रूप में एकत्र किया जाना, इधर-उधर फैलना, विकीर्ण होना —शिशिरकटुकषायः स्त्यायते सल्लकीनाम्—मा० ९।६, २।२१, महावीर० ५।४१ 3. प्रतिध्वनि, गूंज।

स्त्री [स्त्यायेते शुक्रशोणिते यस्याम् स्त्यै+ड्रप्+ङीप्] 1. नारी, औरत 2. किसी भी जानवर की मादा —पशु स्त्री, हरिण स्त्री आदि, श० ५।२२ 3. पत्नी —स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम्—मा० ६।१८, मेघ० २८ 4. स्त्रीलिंग, या स्त्रीलिंग का कोई शब्द आप: स्त्रीभूम्नि—अमर०। सम०—अगारः,—रम् अन्तःपुर, जनानखाना, —अध्यक्षः कंचुकी, —अभिगमनम् संभोग, —आजीवः 1 अपनी स्त्री के सहारे रहने वाला 2. स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराकर जीवनयापन करने वाला, —काम 1. स्त्रीसंभोग का इच्छुक, स्त्रियों के प्रति चाव 2. पत्नी की इच्छा, —कार्यम् 1 स्त्रियों का व्यवसाय 2. स्त्रियों की टहल, अन्तःपुर की सेवा, —कुमारम् एक स्त्री और बच्चा, —कुसुमम् रजःस्राव, स्त्रियों में ऋतु-स्राव, —क्षीरम् माँ का दूध—मनु० ५।९, —ग (वि०) स्त्रियों से संभोग करने वाला, —गवी दूध देने वाली गाय, —गुरुः दीक्षा या मन्त्र देने वाली या पुरोहितानी, —गृहम्=स्त्र्यगारम्, दे०, —घोषः पौ फटना, प्रभात, तड़का, —घ्नः स्त्रीघाती, —चरितम्, —चरित्रम् स्त्री के कर्म, —चिह्नम् 1. स्त्रीत्व की विशिष्टता का कोई निशान 2. स्त्रीयोनि, भग, —चौरः स्त्री को फुसलाने वाला, लम्पट, —जननी केवल कन्याओं को जन्म देने वाली स्त्री, —जातिः (स्त्री०) स्त्रीवर्ग, मादा, —जित स्त्री के वश में रहने वाला, जोरू का गुलाम—स्त्रीजितस्पर्शमात्रेण सर्वं पुण्यं विनश्यति—शब्द०, मनु० ४।२१७, —धनम् स्त्री की निजी सम्पत्ति जिस पर उसका स्वतन्त्र अधिकार हो, —धर्मः 1. स्त्री या पत्नी का कर्तव्य 2. स्त्रीसम्बन्धी नियम 3. रजःस्राव, —धर्मिणी रजस्वला स्त्री, —ध्वजः किसी भी जानवर की मादा या स्त्रीत्वलिंग, —नाथ (वि०) स्त्री जिसकी स्वामिनी हो, —निबन्धनम् स्त्री का विशेष कार्य क्षेत्र, गृहकर्म, गृहिणी का कार्य —पण्योपजीविन् (पुं०) दे० ऊपर 'स्त्र्याजीव', —परः स्त्रियों से प्रेम करने वाला, कामी, लम्पट, —पिशाची राक्षसी जैसी पत्नी, —पुंसौ (पुं०, द्वि० व०) 1 पति और पत्नी 2. स्त्री और पुरुष—कु० २।७, —पुंलक्षणा पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री, मर्दानी स्त्री, —प्रत्ययः (व्या० में) स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए शब्द के अन्त में जुड़ने वाला प्रत्यय, —प्रसंगः (अत्यधिक) संभोग, —प्रसूः (स्त्री०) पुत्रियों को जन्म देने वाली स्त्री—याज्ञ० १।७३—प्रियः (वि०) जिसको स्त्रियाँ प्यार करें (—यः) आम का पेड़,—बाध्यः स्त्री द्वारा परेशान किया जाने वाला, —बुद्धिः (स्त्री०) 1. स्त्री की समझ 2. स्त्री का परामर्श, स्त्री द्वारा दिया गया उपदेश, —भोगः संभोग,—मन्त्रः स्त्रीकौशल, स्त्री की सलाह, —मुखपः अशोकवृक्ष,—यन्त्रम् यन्त्र की भांति स्त्री, स्त्री के रूप में मशीन या यन्त्र—स्त्रीयन्त्रं केन लोके विषममृतमयं धर्मनाशाय सृष्टम्—पंच० १।१९१, —रञ्जनम् पान, ताम्बूल —, रत्नम् श्रेष्ठ स्त्री—स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं वशा—विक्रम० ४।२५,—राज्यम् स्त्रियों द्वारा शासित राज्य या प्रदेश, —लिङ्गम् 1. (व्या० में) स्त्रीवाचकता 2. स्त्रीयोनि, —वशः पत्नी के वश में होना, स्त्री की अधीनता, —विधेय (वि०) पत्नी द्वारा शासित, जोरू-भक्त अपनी स्त्री को बेहद चाहने वाला,—रघु० १९।४, —विवाहः स्त्री के साथ विवाह, —संसर्गः स्त्रियों का साथ, —संस्थान (वि०) स्त्री की आकृति वाला—श० ५।३९, —संग्रहणम् 1 किसी स्त्री का बलात् आलिंगन 2 व्यभिचार, सतीत्वहरण, —सभम् स्त्रियों की सभा, —सम्बन्धः 1 किसी स्त्री के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध 2. वैवाहिक सम्बन्ध 3 स्त्री के साथ सम्बन्ध, —स्वभावः 1 स्त्रियों की प्रकृति 2. हीजड़ा,—हत्या स्त्री का वध या क़तल,— हरणम् 1 स्त्रियों का बलात् अपहरण 2. बलात् सम्भोग, जबरजिनाह।

स्त्रीतमा, स्त्रीतरा (स्त्री०) कुलीन स्त्री, उत्तम जाति की सुसंस्कृत स्त्री।

स्त्रीता,—त्वम् [स्त्री+तल्+टाप्, त्व वा] 1 नारीत्व 2. पत्नीत्व 3. स्त्री होने का भाव, स्त्रैणता।

स्त्रैण (वि०) (स्त्री० —णी) [स्त्रिया इदम् नञ्] 1. मादा, स्त्रीवाचक 2. स्त्रियोचित या स्त्री संबन्धी 3 स्त्रियों में विद्यमान, —णम् 1 स्त्रीत्व, स्त्रियों की प्रकृति, स्त्रीवाचकता—उत्तर० ४।११ 2 मादा का चिह्न, स्त्रीपना—तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्तु दिवसाः—भर्तृ० ३।११३, इदं तत्प्रत्युत्पन्नमति स्त्रैणमिति यदुच्यते—श० ५, तस्य तृणमिव लघुवृत्ति स्त्रैणमाकलयत—का० 3 स्त्रियों का समूह।

स्त्रैणता, —त्वम् [स्त्रैण+तल्+टाप्, त्व वा] 1 स्त्रीवाचकता, स्त्रीपना 2 स्त्रियों के प्रति अत्यधिक रुचि।

स्थ (वि०) [स्था+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) खड़ा होने वाला, ठहरने वाला, डटा रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, वर्तमान आदि तटस्थ, अंकस्थ, प्रकृतिस्थ, तटस्थ।

स्थकरम् [=स्थगर, पृषो०] सुपारी।

स्थग् (भ्वा० पर० या प्रेर० स्थगति, स्थगयति) 1 ढांपना, छिपाना, गुप्त रखना, पर्दा डालना —पराम्बुहस्त्यानान्यपि तनूरुहाणि स्थगयति—मा० १।१४ 2. ढांपना, व्याप्त होना, भरना रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः—काव्य० ७।

स्थग (वि०) [स्थग्+अच्] 1. बदमाश, बेईमान 2. परित्यक्त, निर्लज्ज, जालसाज़, —गः धूर्त, ठग।

स्थगनम् [स्थग्+ल्युट्] छिपाना, गुप्त रखना।

स्थगरम् [थग् अरन्] सुपारी।

स्थगिका [स्थग्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. वेश्या 2. पान की दुकान 3 एक प्रकार की पट्टी।

स्थगित (वि०) [स्थग्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त रक्खा हुआ।

स्थगी [स्थग्+क+ङीप्] पान की डिबिया।

स्थगु [स्थग्+उन्] कूबड़, कुब्ज।

स्थण्डिलम् [स्थल्+इलच्, नुक्, लस्य ड] 1 भूखंड (यज्ञ के लिए चौरस व चौकोर किया हुआ), वेदी—निषेदुषी स्थण्डिल एव केवले—कु० ५।१२ 2. बंजर भूमि 3 ढेलों का ढेर 4 सीमा, हद 5 सीमा चिह्न। सम०—शायिन् (पुं०) ('स्थण्डिलेशय' भी) वह सन्यासी जो बिना बिस्तर के यज्ञभूमि पर सोता है, —सितकम् वेदी।

स्थपतिः [स्था+क, तस्य पति] 1 राजा, प्रभु 2. वास्तुकार 3 रथकार, बढ़ई 4 सारथि 5 बृहस्पति के प्रति बलि देने वाला, बृहस्पति-यज्ञ करने वाला 6 अन्तःपुर रक्षक 7 कुबेर।

स्थपुट (वि०) [तिष्ठति स्था+क, स्थं पुटं यत्र] 1 संकटग्रस्त, विपन्न 2. ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा। सम०—गत (वि०) विषम स्थानों में रहने वाला, कठिनाइयों से ग्रस्त अङ्कुरस्थापयस्थितस्य स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति मा० ५।१६।

स्थल् (भ्वा० पर० स्थलति) दृढ़ता पूर्वक स्थिर रहना, अडिग रहना।

स्थलम् [स्थल्+अच्] 1 कठोर या शुष्क भूमि, सूखी जमीन, दृढ़ भू (विप० जल)—को गुरात्मन् (समुद्र) दीयतां टिट्टिभाण्डानि मो वेतस्थलता त्वां नयामि पंच० 1, इसी प्रकार स्थलकमलिनी या स्थलवर्त्मन् 2. समुद्रतट, समुद्रवेला, बालू-तट 3 पृथ्वी, भूमि, जमीन 4 जगह, स्थान 5 खेत, भूखंड, जिला 6 पड़ाव 7 उभरा हुआ भूखंड, टीला 8 प्रस्ताव, प्रसंग, विषय, विचारणीय बात विवाद°, विचार° आदि 9 खंड या भाग (जैसे किसी पुस्तक का) 10 तम्बू। सम०—अन्तरम् कोई दूसरी जगह,—आरूढ (वि०) धरा पर उतरा हुआ, —अरविन्दम्, —कमलम्, —कमलिनी पृथ्वी पर उगने वाला कमल मेघ० ९०, कु० १।३३,—चर (वि०) भूचर, (जो जलचर न हो),—च्युत (वि०) स्थान से पतित, अपनी पदवी से हटाया हुआ,— देवता स्थानीय या ग्राम्यदेवी,—पद्मिनी भू-कमलिनी,—मार्ग,—वर्त्मन् (नपुं०) भूमि पर बनी हुई सड़क—स्थलवर्त्मना (भूमार्ग से), रघु० ४।६०,—विग्रहः चौरस भूमि पर लड़ा जाने वाला युद्ध,—वृद्धिः (स्त्री०) किसी भी स्थल की वृद्धि भूमि की उपज।

स्थला [स्थल+टाप्] ऊँची की हुई सूखी जमीन जहाँ जल के निकास का अच्छा प्रबंध हो (विप० स्थली, दे० नी०)।

स्थली [स्थल+ङीष] 1. सूखी जमीन, दृढ़ भूमि 2 भूमि का प्राकृतिक स्थल, भूमि या भूखंड (जैसे कि वनस्थली)—विकलाप विकीर्णमूर्धजा समदुःखामिव कुर्वती स्थलीम्—कु० ४।४। सम०—देवता पृथ्वी की देवी, भूमि की अधिष्ठात्री देवी—मेघ० १०६।

स्थलेशय (वि०) [स्थले शेते शी+अच्, अलुक् स०] सूखी जमीन पर सोने वाला,—यः कोई भी जल-स्थलचारी जानवर।

स्थविः [स्था+क्विन्] 1 जुलाहा 2 स्वर्ग।

स्थविर (वि०) [स्था+किरच्, स्थवादेश] 1 दृढ़, पक्का, स्थिर 2 बूढ़ा, वृद्ध, पुराना,—रः 1. बूढ़ा पुरुष 2. भिक्षुक 3. ब्राह्मण का नाम,—रा बूढ़ी स्त्री —स्थविरे का त्वम् अयमर्भक कस्य नयनानन्दकर दश०।

स्थविष्ठ (वि०) [अतिशयेन स्थूल स्थूल+इष्ठन् लस्य लोप] सबसे बड़ा, बहुत हृष्टपुष्ट, सबसे अधिक विस्तृत ('स्थूल' की उत्तमावस्था)।

स्थवीयस् [स्थूल+ईयसुन्, स्थूलशब्दस्य स्थवादेश] सबसे बड़ा, अपेक्षाकृत विस्तृत (स्थूल की मध्यमावस्था)।

स्था (भ्वा० पर० कुछ अर्थों में आत्मनेपद में भी —तिष्ठति ते, स्थित, कर्मवा० स्थीयते, इस धातु के पूर्व इकारान्त उकारान्त उपसर्ग आने पर धातु के 'स्' को ष् हो जाता है) 1 खड़ा होना—एकपादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्—सुभा० 2 ठहरना, डटे रहना, बसना, रहना—स्वे गृहे वा तिष्ठति 3. शेष बचना, बाकी रह जाना—एको मङ्कुरवतास्तिष्ठति —पंच० ४ 4 विलम्ब करना, प्रतीक्षा करना—किमिति स्थीयते श० २ 5 ठहरना, उपरत होना रुकना, निश्चेष्ट होना—तिष्ठत्येव क्षणमथपतिपक्ष्मोत्तिमा व्योममध्ये विक्रम० २।१ 6 एक ओर रह जाना —तिष्ठतु तावत्पत्रलेखावृत्तान्त —का० (इस वृत्तान्त का ध्यान न कीजिए) 7 होना, विद्यमान होना किसी भी स्थिति या अवस्था में होना, (भाव कृदन्त के रूप में प्रयोग)—मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे —कु० १।२, श० १।१, विक्रम० १।१, कार्यं नयमाना तिष्ठति - पंच० १, मनु ७।८ 8 डटे रहना, अनुरूप होना, आज्ञा मानना, (अधि० के साथ)—शासने तिष्ठ भर्तुः— विक्रम० ५।१७, रघु०, ११।६५ 9 प्रतिबद्ध होना—यदि ते तु न तिष्ठेयुरुपायैः प्रथमैस्त्रिभिः—मनु० ७।१०८ 10 निकट होना—न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सु मृतं शूद्रेण नाययेत्—मनु० ५।१०४ 11. जीवित रहना, सांस लेना—वा: क एव यदि स्थिते जलमुक्त-

नीतिमनिर्वृतिस्तिष्ठति—मुद्रा० १ 12. साथ देना, सहायता करना,—उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे । राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः—हि० १।७१ 13. आश्रित होना, निर्भर होना 14. करना, अनुष्ठान करना, अपने आपको व्यस्त करना 15. (आ०) सहारा लेना, (मध्यस्थ मान कर उसके पास) जाना, मार्गदर्शन पाना—संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः—कि० ३।१४ 16. (आ०) (सुरताभिलाष के लिए) प्रस्तुत करना, वेश्या के रूप में उपस्थित होना (सम्प्र० के साथ)—गोपी स्मरात् कृष्णाय तिष्ठते—पा० १।३।२३ पर सिद्धा०,—प्रेर० (स्थापयति—ते) 1. खड़ा करना 2. जमाना, जड़ना, स्थापित करना, रखना, प्रस्थापित करना 4. रोकना 5. पकड़ना रोकना—इच्छा० (तिष्ठासति) खड़े होने की इच्छा करना। अति—, अधिक होना, बढ़ जाना—अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्—अधि—, 1. स्थिर होना, अधिकार करना (कर्म० के साथ)—अध्यासनं गोमविधोऽधितस्थौ—रघु० ६।७३, भट्टि० १५।३१ 2. अभ्यास करना (साधना का)—कि० १०।१६ 3. अन्दर होना, रहना, बसना निवास करना,—वाताणमधितिष्ठति—रघु० १।८०, वीतमरेवभजितसमधितिष्ठतु कण्ठ-तटीमविरतम्—गीत० ११ 4. अधिकार करना, जीतना, पराजित करना, पछाड़ना—अधामे ताम-धितिष्ठत्यम्—भट्टि० ९।७२, १६।४० 5. प्राप्त करना—कि० २।३१ 6. नेतृत्व करना, संचालन करना, शासन करना, निदेश देना, प्रधानता करना यदारथ-तारामधितिष्ठय - उत्तर० ४ 7. राज्य करना, शासन करना, नियंत्रण करना—भग० ४।६ 8. उपयोग करना, काम में लगाना 9. चढ़ना, स्थापित होना, गद्दी पर बैठना—अधिराधिष्ठितराज्य. शत्रुः—मालवि० १।८, अनु—, 1. करना, पालन करना, कार्यान्वित करना, ध्यान देना—अनुतिष्ठस्वात्मनो नियोगम्—मालवि० १ 2. पीछा करना, अभ्यास करना, पालन करना—भग० ३।३१ 3. देना, अनुदान देना, किसी के लिए कुछ करना—(यस्य) लोकाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत्—कु० १।१७ 4. निकट खड़े होना,—मनु० ११।११२ 5. राज्य करना, शासन करना 6. नकल करना 7. अपने आपको प्रस्तुत करना, अव—, (प्रायः आ०) 1. रहना, टिकना, डटे रहना—[illegible] वकल्पते—शान्ति० २।१७ [illegible] मवतिष्ठते—कि० २।१४, रघु० २।११ 2. ठहरना, प्रतीक्षा करना—भट्टि० ८।११ 3. डटे रहना, अनुकूल रहना—भट्टि० ९।१४ 4. जीवित रहना—रघु० ८।८७ 5. निश्चेष्ट रहना, रुकना, ठहरना—भग० ६।१९ ६. आ पड़ना, मिलना, निर्भर होना—यदि

बुद्धिर्हि लोकानां रक्षा कुण्यास्वपस्थिता—कु० २।२८ 7 अलग खड़े होना, अलग रखना 8. निश्चित या निर्णीत होना (प्रेर०) 1. खड़ा करना, रोकना, पड़ाव डालना 2. प्रस्थापित करना, नींव डालना 3. स्वस्थ होना, सचेत होना, आ—, 1. अधिकार करना 2. चढ़ना, सवार होना—यथा 'एकस्कन्ध-मास्थितौ'—रघु० १।३६ में 3 उपयोग करना, अव-लम्ब लेना, सहारा लेना, अनुसरण करना, अभ्यास करना, लेना, आरम्भ करना यथाहि सहसमास्थितव-गुणक—मनु० १०।१२८, २।१३३, १०।१०१ (यह अर्थ नाना प्रकार से—सदा शब्दों के अनुसार जिनके साथ कि शब्द का प्रयोग होता है, बदलता रहता है—दे० कु० ५।२, ८४, मुद्रा० ७।१९, रघु० ६।७२, १५।७९, कु० ६।७२, ७।२९, पंच० ३।२१ आदि) 4 करना, सम्पादन करना, पालन करना 5 अपनाना 6 कवच बांधना 7 दायित्व लेना 8 विशिष्ट ढंग से आचरण करना, व्यवहार करना 9 निकट खड़े होना, उद्,— 1 खड़े होना, उठना, उठ कर खड़े होना—उत्तिष्ठेत् प्रथमं चास्य मनु० २।१९४, यथो निसम्योत्थितमुत्थित सन् रघु० २।६१ 2 त्याग देना, छोड़ना 3 उभर कर आना—रघु० १६।८३ 4 आगे आना, उदय होना, आगे बढ़ना, फूटना, निकलना—मधुतिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तत्फलम्—श० २।१३ 5 उदय होना, उगना, शक्ति में बढ़ना—शि० २।६ 6 सक्रिय होना, उठना, गतिशील होना—क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप—भग० २।३, ३७ 7 चेष्टा करना, कोशिश करना, (आ०) शि० ११।११, शि० १४।१७ (प्रेर०) 1. उठाना, उन्नत करना 2. काम करने के लिए उकसाना, उत्ते-जित करना, उप—, 1. निकट खड़े होना, हिस्से में मिलना,—नाबतमुपतिष्ठति पंच० २।१२१ 2 निकट आना, पहुँचना—कु० २।६४, रघु० १५।७६ 3 प्रतीक्षा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सेवा करना मनु० २।४८ 4 पूजा करना, प्रार्थना के साथ उपस्थित होना, सेवा करना, प्रणाम करना (आ०)—न व्यम्ब-कादन्यमुपस्थिताऽसौ—भट्टि० १।१, उचितमुपतिष्ठ एव मनस्वासनमस्तामुपतिष्ठे—मा० १, रघु० ४।६, १०। ६१, १७।१०, १८।२२ 5 निकट खड़े होना 6. मैथुन के लिए पहुँचना 7. मिलना, संयुक्त होना—गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते—सिद्धा० 8. मैथुन करना (आ०) 9. मित्र बनाना (आ०) 10 पहुँचना, निकट खिंचना, आज्ञावर्ती होना 11. हैसियत से पहुँचना 12. उपस्थित होना (आ०) 13. घटित होना, उत्पन्न होना, परि—, घेरना, चारों ओर खड़े होना, पर्यव—, (प्रेर०) स्वस्थचित्त होना, सचेत होना—पर्यवस्था-

ययारवानम् विक्रम० १, प्र—, (आ०) 1. कूच करना, विदा होना पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना —रघु० ४।६० 2. दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना 3. प्रस्थापित होना 4 पहुँचना, निकट आना (प्रेर०) 1 पीछे हटाना 2. भेजना, तितर-बितर करना तां वपती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठ —रघु० २।७०, प्रति - , 1 दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना, प्रस्थापित होना 2. सहायता किया जाना 3 आश्रित या निर्भर रहना 4 ठहरना, डटे रहना, स्थिर रहना, प्रत्यव , (आ०) विरोध करना, शत्रुवत व्यवहार करना आक्षेप करना (किसी तर्क का। अत्र केचित् प्रत्यव-तिष्ठन्ते शारी०, भामि० १।७७, (प्रेर०) अपने आपको, दृढ़ या स्वस्थ करना, वि , (आ०) 1 अलग खड़े होना 2 स्थिर रहना, डटे रहना, थम जाना, अचल रहना 3 फैलना, विकीर्ण होना, विप्र , (आ०) 1 कूच करना 2 फैलना, व्यव , (आ०) 1 अलग-अलग रक्खा जाना 2 क्रमबद्ध किया जाना 3. निश्चित होना, स्थिर होना, स्थायी होना वच-नीयमिद व्यवस्थितम् कु० ४।२१ 4 आश्रित होना, निर्भर होना, (प्रेर०) 1 क्रमबद्ध करना, प्रबन्ध करना, समजित करना 2 निश्चित करना स्थापित करना 3 पृथक् करना, अलग-अलग रखना, सम् , (आ०) 1 बसना, रहना, परस्पर निकटवर्ती होना —तीक्ष्णादुद्विजते मृदौ परिभवत्रासान्न संतिष्ठते मुद्रा० ३।५ 2 खड़े होना 3 होना, विद्यमान होना, जीवित होना 4 डटे रहना, आज्ञा मानना, सिद्धान्त का निर्वाह करना—दारिद्र्यात्पुरुषस्य बान्धव-जनो वाक्ये न संतिष्ठते मृच्छ० १।३६ 5 पूरा होना यत्र संतिष्ठते यज्ञस्तत्र शौचमिति स्थितिः —मनु० ५।९८ (यज्ञपुण्येन युज्यते —कुल्लू०) 6 समाप्त हो जाना, छिन्न पड़ जाना—भट्टि० ८।११ 7 निश्चेष्ट खड़े रहना, स्थिर हो जाना (पर०) क्षण न संतिष्ठति जीवलोकः क्षयोदयाभ्यां परिवर्तमान —हरि० 8. मरना, नष्ट होना (प्रेर०) 1 स्थापित करना, बसाना 2. रखना 3 स्वस्थचित्त होना, सचेत होना देवि संस्थापयात्मानम् —उत्तर० ४ 4 अधीन करना, नियन्त्रण में रखना —मनु० ९।२ 5 रोकना, प्रतिबद्ध करना 6 मार डालना, समधि—, प्रशासना करना, शासन करना, प्रशासन करना, अधीक्षण करना, समव ,(आ०) 1. स्थिर रहना, अचल रहना 2. निश्चेष्ट रहना 3 तत्पर रहना (प्रेर०) 1. नींव डालना 2. रोकना,- समा , 1. सहना, अभ्यास करना—तपो महत्समास्थाय 2. व्यस्त करना, सम्पा-दन करना 3. प्रयोग में लाना, काम में लगाना 4. अनुसरण करना, पालन करना मनु० ४।२, ७।४४, समुद् , 1. खड़ा होना, उठना 2. फिर कर खड़े होना 3 मृत्यु से उठना, फिर जीवित होना, होश में आना 4 उदय होना, फूटना, समुप—1. निकट आना, पास जाना, पहुँचना 2. आक्रमण करना 3 आ पड़ना, घटित होना 4. डट कर खड़े होना, संप्र , (आ०) कूच करना, विदा होना, संप्रति—, 1 लटकना, आश्रित होना, निर्भर होना 2. दृढ़ होना, स्थिर होना।

स्थाणु (वि०) [स्था + नु, पृषो० णत्वम्] 1. दृढ़, अटल, स्थिर, टिकाऊ, अचल, गतिहीन, —णुः 1. शिव का विशेषण स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रे-यसायास्तु वः विक्रम० १।१ 2 टेक, पोल, स्तम्भ किं स्थाणुरयमुत पुरुषः 3 खूंटी, कील 4 धूपघड़ी का शंकु 5 बर्छी भेजा 6 दीमकों का घोंसला, बामी 7 औषधि या सुगन्ध द्रव्य, जीवक (पुं०, नपुं०) शाखा रहित तना, नंगा ठूंठ, सूखा पेड़, ठूंठ। सम० —छेदः वह जो वृक्षों के तने काटता है, जो तने को छील कर साफ करता है—स्थाणुच्छेदस्य केदारमाहुः शल्यवतो मृगम् —मनु० ९।४४, —भ्रमः किसी ठूंठी या पोल को कुछ और ही समझ लेना।

स्थाण्डिलः [स्थण्डिल + अण्] 1 वह संन्यासी जो बिना बिस्तर के भूमि पर या यज्ञीय भूखंड पर सोता है 2 साधु या धार्मिक भिक्षु।

स्थानम् [स्था + ल्युट्] 1 खड़ा होना, रहना, ठहरना, नैरन्तर्य, निवास स्थान —उत्तर० ३।३२ 2. स्थिर या अटल होना 3 स्थिति, दशा 4. जगह, स्थल, (भवन आदि के लिए) भूमि, सस्थिति अवश्यमेका-मदस्मात्स्थानात्पदात्पदमपि न गन्तव्यम्—का० 5 सस्थान, स्थिति, अवस्था 6 सम्बन्ध, हैसियत पितृस्थाने (पिता के स्थान में या पिता की हैसियत से) 7 आवास, घर निजस्थानं स एव (नक्र) अच्युतः स्थानाच्छुनापि परिभूयते—पंच० ३।४६ 8 देश, क्षेत्र, जिला, नगर 9 पद, दर्जा, प्रतिष्ठा—अमात्यस्थाने नियोजित 10 पदार्थ—गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः —उत्तर० ४।११ 11 अवसर, बात, विषय, कारण पराभूतेरस्थाना-न्यपि तनुतरांश्च स्थगयति —मा० १।१४, स्थाने जरापरिभवस्य तदेव पुसाम् —सुभा०, इसी प्रकार कलह°, कोप°, विवाद° आदि 12. उचित या उपयुक्त जगह स्थानेष्वेव नियोज्यन्ते भृत्याश्चाभरणानि च पंच० १।७२ 13. उचित या योग्य पदार्थ—स्थाने खलु सज्जति दृष्टिः मालवि० १, दे० 'स्थाने' भी 14. अक्षर का उच्चारणस्थान (यह आठ हैं —अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च—शिक्षा० १३

15. पावन स्थान 16. वेदी 17. नवरस्व प्रांगण 18. मृत्यु के बाद कर्मानुसार प्राप्त होने वाला लोक 19. (नीति या युद्ध आदि में) दृढ़ता, आक्रमण का मुकाबला करने के लिए दृढ़ता, मनु० ७।१९० 20. पड़ाव, डेरा 21. निश्चेष्ट दशा, उदासीनता, 22. राज्य के मुख्य अंग, किसी राज्य का स्थैर्य - अर्थात् सेना, कोष, नगर और प्रदेश—मनु० ७। ५६ (यहाँ कुल्लू० 'स्थान' का अर्थ करता है "दंड-कोषपुरराष्ट्रात्मक चतुर्विधम्") 23. सादृश्य, समानता 24 किसी ग्रंथ का भाग या खंड, परिच्छेद या अध्याय आदि 25. अभिनेता का चरित्र 26 अन्तराल, अवसर, अवकाश 27. (संगीत० में) गीत, सुर, स्वर के स्पंदन की मात्रा। सम० **अध्यक्षः** स्थानीय राज्यपाल, स्थान का अधीक्षक, **आसन** (नपुं०, द्वि० व०) बैठा हुआ,—**आसेधः** किसी स्थान पर कैद, कारा बंधन—तु० आसेध,—**चिन्तकः** सेना के शिविर के लिए स्थान की व्यवस्था करने वाला अधिकारी,—**च्युत** दे० 'स्थानभ्रष्ट',—**पालः** रखवाला, पहरेदार, आरक्षी, —**भ्रष्ट** (वि०) किसी पद से हटाया हुआ, विस्थापित, पदच्युत बेकार, **माहात्म्यम्** 1. किसी स्थान का गौरव या महत्त्व 2 किसी स्थान में मानी जाने वाली असाधारण पवित्रता या दिव्य गुण, **योगः** उपयुक्त स्थान का निर्देशन द्रव्याणां स्थानयोगांश्च क्रय-विक्रयमेव च —मनु० ९।३३२,—**स्थ** (वि०) एक ही स्थान पर स्थित, अचल।

स्थानकम् [स्थान+स्वार्थे क] 1. अवस्था, स्थिति 2. नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल उदा० पताकास्थानक 3. शहर, नगर 4 आलवाल 5 शराब की सतह पर उठा हुआ फेन 6. सस्वर पाठ की एक रीति 7 यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुवाक या प्रभाग।

स्थानतः (अव्य०) [स्थान+तसिल्] 1 अपनी स्थिति या अवस्था के अनुसार 2. अपने उपयुक्त स्थान से 3 उच्चारण करने के अंग के अनुरूप।

स्थानिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्थान+ठक्] 1 किसी स्थान विशेष से संबंध रखने वाला, स्थानीय 2 (व्या० में) जो किसी अन्य वस्तु के बदले प्रयुक्त हो, या उसका स्थानापन्न हो,—**कः** 1 कोई पदाधिकारी, स्थानविशेष का रक्षक 2 किसी स्थान का शासक।

स्थानिन् (वि०) [स्थानमस्यास्ति रक्षत्वेन इनि] 1. स्थानवाला 2. स्थैर्यसम्पन्न, स्थायी 3 वह जिसका कोई स्थानापन्न हो (पुं०) 1 मूलरूप या मौलिक तत्त्व, जिसके लिए कोई दूसरा स्थानापन्न न हो—स्था-निवदादेशोऽनल्विधौ—पा० १।१।५६ 2. जिसका अपना स्थान हो, अभिहित।

स्थानीय (वि०) [स्थान+छ] 1 स्थानविशेष से संबद्ध, किसी स्थान का 2. किसी स्थान के लिए उपयुक्त, —**यम्** नगर, शहर।

स्थाने (अव्य०) ['स्थान' का अधि० का रूप] 1. ठीक या उपयुक्त स्थान पर, सही ढंग से, उपयुक्त रूप से, ठीक सचमुच, समुचित रीति से स्थाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः रघु० ७।१३, स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः मालवि० ३।१४, कु० ६।६७, ७।६५ 2 के स्थान में, की बजाय, के बदले, स्थाना-पन्न के रूप में—धातोः स्थाने इवादेशं सुग्रीवं संन्यवेशयत् रघु० १२।५८ 3 के कारण, के लिए 4. इसी प्रकार, भांति।

स्थापक (वि०) [स्थापयति—स्था+णिच्+ण्वुल्] खड़ा करने वाला, जमाने वाला, नींव डालने वाला, स्थापित करने वाला, विनियमित करने वाला,—**कः** 1 मंच के कार्य का निदेशक, रंगमंच प्रबंधक, सूत्रधार 2 किसी देवालय का प्रतिष्ठाता मूर्ति की स्थापना करने वाला।

स्थापत्यः [स्थपति+ष्यञ्] अन्तःपुर का रक्षक, —**त्यम्** वास्तु विद्या, भवननिर्माण कला।

स्थापनम् [स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 खड़ा करने की क्रिया, जमाना, नींव डालना निदेश देना, स्थापित करना, खड़ा बनाना 2 विचारों को जमाना मन का सकेन्द्रित करना, ध्यान, धारणा 3 निवास, आवास 4. पुंसवन संस्कार (जब गर्भवती स्त्री को गर्भस्थ पिण्ड में जीवसंचार का प्रथम लक्षण ज्ञात हो, उस समय यह संस्कार किया जाता है), दे० पुंसवन।

स्थापना [स्था+णिच्+युच्+टाप्, पुक] 1. रखना, जमाना, नींव रखना, स्थापित करना 2. व्यवस्था करना, विनियमन (नाटक में) रंगमंच का प्रबन्ध।

स्थापित (भू० क० कृ०) [स्था+णिच्+क्त पुक] 1 रखा हुआ, जमाया हुआ, अवस्थित, धरा हुआ 2 नींव डाली हुई, निविष्ट 3 खड़ा हुआ, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ 4 निर्देशित विनियमित, आदिष्ट, अधिनियम 5 निर्धारित, तय किया हुआ निश्चित किया हुआ 6 नियत जिसको कोई पद या कर्तव्य सौंपा गया हो 7 विवाहित, जिसका विवाह हो चुका हो—मा० १०।५ 8 दृढ़, स्थिर।

स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+ण्यत् पुकागम] 1 रखे जाने या जमा किये जाने योग्य 2 नींव डाले जाने योग्य, स्थिर या स्थापित किये जाने योग्य, —**प्यम्** धरोहर, अमानत। सम०—**अपहरणम्** धरोहर की वस्तु हड़प कर जाना, अमानत में खयानत।

स्थामन् (नपुं०) [स्था+मनिन्] 1 सामर्थ्य, शक्ति, स्थैर्य, जैसा कि 'अश्वत्थामन्' में, दे० 'अश्वत्था-

मन्' के अन्तर्गत महा० का उद्धरण 2 स्थिरता, स्थायित्व।

स्थायिन् (वि०) [स्था+णिनि युक्] 1 खड़ा रहने वाला, टिकने वाला, स्थित रहने वाला (समास के अंत में) 2. सहन करने वाला, निरन्तर चलने वाला, टिकाऊ, टिके रहने वाला शरीरं क्षणविध्वंसि कल्पांतस्थायिनो गुणाः—सुभा०, कतिपय दिवसस्थायिनी यौवनश्री भर्तृ० २।८२, महावीर ७।१५ 3 जीने वाला, निवास करने वाला, रहने वाला मेघ० २३ 4. स्थिर, दृढ़, पक्का, अपरिवर्ती, जो न बदले—स्थायी भवति (पक्का हो जाता है) (पुं०) 1 नित्य या शाश्वत भावना, (दे० नी० 'स्थायिभाव') शि० २।८७, (नपुं०) 1 कोई भी टिकाऊ वस्तु, दृढ़ स्थान या दशा। सम० भावः मन की स्थिर दशा, टिकाऊ या सदा रहने वाली भावना, (कहते हैं इन 'स्थायिभावों से ही काव्यगत विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है, प्रत्येक रस का अपना स्थायिभाव अलग है) स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं —रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा। जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च सा० द० २०६, तु० व्यभिचारिभाव भाव या विभाव भी।

स्थायुक (वि०) (स्त्री० का की) [स्था+उकञ्, युक्] 1 जो ठहरने वाला हो या जिसमें ठहरने की प्रवृत्ति हो 2 दृढ़, स्थिर, अचल —कः गांव का मुखिया या अधीक्षक।

स्थालम् [स्थलन्ति तिष्ठति अन्नादिकम् आधारे घञ्] 1 थाल थाली, तश्तरी 2 कोई भोजनपात्र पाकयोग्य बर्तन। सम० रूपम् पाकपात्र की आकृति।

स्थाली [स्थाल+ङीप्] 1 मिट्टी का घड़ा या हाँडी, रांधने का बर्तन, कड़ाही बटलोई—नहि भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते महा० स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति तिलखलीमिन्धनैश्चन्दनाद्यैः भर्तृ० २।१०० 2 सोम तैयार करने के काम आने वाला विशेष पात्र, पाटलावृक्ष तुरही के सदृश फूल। सम० पाकः एक धार्मिक कृत्य जिसका अनुष्ठान गृहस्थ करते हैं पुरीषम् पाक पात्र में जमा हुआ मैल या तलछट पुलाकः पाकपात्र में पकाया हुआ चावल, न्यायः दे० न्याय के अन्तर्गत बिलम् पाकपात्र का भीतरी हिस्सा।

स्थावर (वि०) [स्था+वरच्] 1 एक स्थान पर अड़ा हुआ, अचल, अडिग, अचर, जड़ (विप० जंगम) —शरीराणां स्थावरजङ्गमानां सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव कु० १।२३, ६।६७ 2 निश्चेष्ट, निष्क्रिय, मन्द 3 नियमित, स्थापित, रः पहाड़—स्थावराणां हिमालयः भग० १०।२५, रम् कोई भी स्थिर या जड़ पदार्थ (जैसे कि मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जो कि ब्रह्मा की सातवीं सृष्टि हैं तु० मनु० ४१) —मान्यः स मे स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः रघु० २।४४, कु० ६।५८ 2. धनुष की डोरी 3 अचल संपत्ति, माल असबाब 4 पैतृक या कौटुम्बी प्राप्त सम्पत्ति। सम० स्थावरम्, जङ्गमम् 1 चल और अचल संपत्ति 2 चेतन और जड़ पदार्थ।

स्थाविर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [स्थविर+अण्] मोटा, दृढ़, रम् बुढ़ापा।

स्थासक [स्था+स+स्वार्थे क] 1 सुवासित करना, शरीर पर सुगन्धित लेप करना 2. पानी का बुलबुला या कोई तरल पदार्थ —शि० १८।५।

स्थासु (नपुं०) [स्था+सु] शारीरिक बल।

स्थास्नु (वि०) [स्था+स्नु] 1 स्थिर, दृढ़, अचल 2 स्थायी, नित्य टिकाऊ, पायदार—शि० २।९३, कि० २।१९।

स्थित (भू० क० कृ०) [स्था+क्त] 1 खड़ाहुआ, रहा हुआ, ठहरा हुआ 2 खड़ा होने वाला 3. उठकर खड़ा होने वाला, उठा हुआ—स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयाताम् ...छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्—रघु० २।६ 4 टिकने वाला, सहारा लेने वाला, जीवित, विद्यमान, मौजूद स्थित—कस्या केशं स्थिता ते शिरसि महा० ११, मेघ० ७ (प्रायः क्तान्त के साथ विधेयक के रूप में) विक्रम० १।१, श० १।१, कु० १।१ 5 घटित, हुआ हुआ—कु० ४।२७ 6 पड़ाव डाला हुआ, अधिकार किया हुआ, नियुक्त किया हुआ श० ४।१८ 7 क्रियान्वित करने वाला डटा रहने वाला, समनुरूप रघु० ५।३३ 8 निश्चेष्ट खड़ा हुआ, रुका हुआ, ठहरा हुआ 9 जमा हुआ, दृढ़तापूर्वक लगा हुआ कु० ५।८२ 10 स्थिर, दृढ़ जैसा कि 'स्थितधी' और 'स्थितप्रज्ञ' में 11 निर्धारित, दृढ़ निश्चय किया हुआ कु० ४।३९ 12 स्थापित, समाविष्ट 13 आचरण में दृढ़, दृढ़मना 14 ईमानदार, धर्मात्मा 15 प्रतिज्ञा या करार का पक्का 16 सहमत, व्यस्त, संविदाग्रस्त 17 तैयार, निकटस्थ, समीप, तम् स्वयं खड़ा हुआ (जैसे कि शब्द)। सम० उपस्थित (वि०) 'इति' शब्द से युक्त या रहित (जैसे कि शब्द), धी (वि०) दृढ़मनस्क, स्थिरमना, शान्त,—पाठ्यम् खड़ी हुई स्त्रीपात्र द्वारा प्राकृत में पाठ,—प्रज्ञ (वि०) निर्णय या समझदारी में दृढ़, सब प्रकार के भ्रमों से मुक्त, सन्तुष्ट—प्रजहाति यदा कामान्सर्वान् पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते भग० २।५५, प्रेमन् (पुं०) पक्का या विश्वासपात्र मित्र।

स्थितिः (स्त्री०) [स्था+क्तिन्] 1 खड़े होना, रहना, टिकना, डटे रहना, जीवित होना, ठहरना, निवास-

स्थान—स्थितिं नो रे दध्याः क्षणमपि मदान्वेक्षण सखे भामि० १।५२, रसोगृहे स्थितिर्मूलमग्निशुद्धौ त्वनिश्चयः —उत्तर० १।६ 2. रुकना, चुप होकर खड़े होना, एक ही अवस्था में रहना प्रस्थितायां प्रतिष्ठेथाः स्थितायां स्थितिमाचरेः—रघु० १।८९ 3. अडिग रहना, जम जाना, स्थिरता, दृढ़ता, जमे रहना, भक्तिः मम भूयात् परमात्मनि स्थितिः भामि० ४।२३ 4 हालत, अवस्था, परिस्थिति, दशा 5. प्राकृतिक हालत, प्रकृति, स्वभाव —अथवा स्थितिरियं मन्दमतीनाम् हि० ४ 6 स्थिरता, स्थायित्व, चिरस्थायित्व, निरन्तरता—वंशस्थितेरधिगमान्महति प्रमोदे विक्रम० ५।१५, कन्यां कुलस्य स्थितये स्थितिज्ञः कु० १।१८, रघु० ३।२७ 7 आचरण की शुद्धता, कर्तव्यपालन में दृढ़ता, शिष्टता, कर्तव्य, नैतिक सदाचार, औचित्य रघु० ३।२७, ११।६५, १२।३१, कु० १।१८ 8 अनुशासन का पालन, (किसी राज्य में) सुव्यवस्था की स्थापना—रघु० १।२५, 9. दर्जा, पद, ऊँचा पद या दर्जा 10 निर्वाह, जीवन का बने रहना—भा० ९।३२, रघु० ५।९ 11. जीवन में सैरन्तर्य, रक्षितावस्था (मानव की तीन अवस्थाओं में से एक)—सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः —रघु० २।४४, कु० २।६ 12. यति, विराम, विरति 13 कुशलक्षेम, कल्याण 14. सम्मति 15 निश्चित नियम, अध्यादेश, आज्ञप्ति, सिद्धांतवाक्य, नीतिवाक्य 16 निश्चित निर्धारण 17. अवधि, सीमा, हद 18 जड़ता, गतिहीनता 19 सहन की अवधि। सम०—स्थापक (वि०) मूल अवस्था में जमाने वाला, पूर्वावस्था को प्राप्त करने की शक्ति रखने वाला, लचीलेपन को धारण करने वाला, —कः लचीलापन, पूर्वावस्था को पुनः प्राप्त करने की सामर्थ्य।

स्थिर (वि०) [स्था+किरच्, म० अ० स्थेयस्, उ० अ० स्थेष्ठ] 1. दृढ़, स्थिरमति, जमा हुआ भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि—श० ५।२, न स्थास्नु स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः —विक्रम० १।१, कु० १।३०, रघु० ११।१९ 2 अचल, शान्त, गतिहीन—कु० २।३८ 3. दृढ़तापूर्वक जमा उत्तर० १।४० 4. स्थायी, नित्य, शाश्वत मेघ० ५५, भा० १।२५, 5. शान्त, अचेत, स्वस्थचित्त धीर, गंभीर 6 मौन, अक्षुब्ध 7. आचरण में पक्का, दृढ़ 8 सतत, श्रद्धालु, दृढ़-संकल्प 9 निश्चित, विश्वास योग्य 10 कठोर, ठोस 11. मजबूत, अन्तर्दृढ 12 कड़ा, निष्करुण कठोरहृदय कु० ५।४७ —रः देव, सुर 2 वृक्ष, 3 पहाड़ 4 सांड 5 शिव का नाम 6. कार्तिकेय का नाम 7. मोक्ष या निर्वाण 8 शनिग्रह (स्थिरीकृ 1 पुष्ट करना, मजबूत करना, समर्थन करना 2. रुकना, दृढ़ करना 3 प्रसन्न करना, तसल्ली देना, आराम पहुँचाना —श० ४, स्थिरीभू– 1 स्थिर या दृढ़ होना 2. शान्त या धीर होना)। सम० अनुराग दृढ़ आसक्ति वाला, स्नेहसिक्त,– आत्मन्,—चित्त, चेतस् धी,—बुद्धि, मति (वि०) 1 दृढ़मना, विचार या संकल्प का पक्का, दृढ़ संकल्प, रघु० ८।२२, शान्त, धीर, अक्षुब्ध, आयुस्, जीविन् (वि०) दीर्घजीवी, चिरजीवी, आरम्भ (वि०) दायित्व निर्वाह में दृढ़, धैर्यशाली, कुट्टकः 1 लगातार पीसने वाला 2. (बीजग० में) समान भाजक, गन्ध चंपक फूल, छदः भोजपत्र का वृक्ष,—छाय 1 यात्रियों को छाया देने वाला 2 वृक्ष, —जिह्व मछली, जीविता सेमल (शाल्मली) का पेड़,—दंष्ट्रः सांप, पुष्पः 1 चंपक वृक्ष 2 बकुल वृक्ष, मौलसिरी, प्रतिज्ञ (वि०) दृढ़प्रतिज्ञ, हठी, आग्रही 2 वचन का पालन करने वाला, प्रतिबन्ध (वि०) विरोध करने में दृढ़, हठी श० २, फला कुष्माण्डी, —योनिः बड़ा भारी वृक्ष जो छाया और शरण दे, —यौवन (वि०) सदा जवान रहने वाला (न॰) 1 विद्याधर, परी 2 चिरस्थायी तारुण्य, श्री (वि०) सदा रहने वाली समृद्धि वाला, संगर (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सच्चा, बात का धनी, सौहृद (वि०) मित्रता में दृढ़, स्थायिन् (वि०) दृढ़ या अटल रहने वाला, पूर्णतः शान्त रहने वाला (जैसा कि समाधि में)।

स्थिरता, त्वम् [स्थिर+तल्+टाप्, त्व वा] 1 दृढ़ता, स्थैर्य, टिकाऊपन 2 दृढ़ और बलशाली प्रयत्न, पौरुष श० ४।१४ 3 सातत्य, मन की दृढ़ता 4 अचलता।

स्थिरा [स्थिर+टाप्] पृथ्वी।

स्थुड् (तुदा० पर० स्थुडति) ढकना।

स्थुडम् [स्थुड्+अच्, पृषो० हस्य डः] एक प्रकार का लंबा तंबू।

स्थूणा [स्था+नक्, उदन्तादेश, पृषो०] 1 घर का खंभा, स्तूप, स्तंभ 2 पोल या खंभा स्थूणानिखननन्यायेन —शारी० 3 लोहमूर्ति या प्रतिमा 4 घन। सम० —निखननन्याय 'न्याय' के नीचे देखो।

स्थूमः (पु०) 1 प्रकाश 2 चन्द्रमा।

स्थूरः [स्था+ऊरन्] 1. सांड 2 मनुष्य।

स्थूल (वि०) [स्थूल्+अच् म० अ० स्थवीयस्, उ० अ० स्थविष्ठ] 1 विस्तृत, बड़ा बृहत्, विशाल, महान् बहुत्वमपि स्थूलेन स्थीयते बहिरश्मवत् शि० २।७८ (यहाँ छठा अर्थ भी घटता है), स्थूलहस्तावलेपान् मेघ० १४, १०६ रघु० ६।२८ 2 मोटा मांसल, हृष्टपुष्ट 3 मजबूत, शक्तिशाली—स्थूलं स्थूलं श्वसिति –वे० 'कठिनाई से सांस लेता है

4 बेडौल, भद्दा 5. सम्पूर्ण, साधारण, अनाड़ी (आल० से भी) जैसा कि 'स्थूलमानम्' में 6. मूर्ख, मूढ, बुद्धू, नासमझ 7. आलसी, सुस्त, ठप 8 अयथार्थ, —लः कटहल,—लम् 1. ढेर, राशि 2. तम्बू 3. पहाड़ की चोटी। सम०—अन्त्रम् बड़ी आंत जो गुदा के पास तक जाती है,—आस्यः साँप,—उच्चयः 1. पर्वत खण्ड जो गिर कर ऊबड़-खाबड़ टीले जैसा बन गया हो 2 अपूर्णता, कमी, त्रुटि 3. हाथी की मध्यम गति 4 मुहासा 5 हाथी के दांत का रन्ध्र, —काय (वि०) मोटा, मांसल,—कोणः,—क्षेडः बाण —चापः धुनकी,—तालः हिंताल,—धी,—मति (वि०) मूर्ख, बुद्धू,—नालः लम्बी जाति का सरकंडा —नास,—नासिक (वि०) मोटी नाक वाला, (—सः,—कः) सूअर, वराह, —पटः—पटम् मोटा कपड़ा, —पट्टः कपास, —पाद (वि०) मोटे पैर वाला, सूजे पैर वाला, (—दः) 1 हाथी 2. श्लीपद रोग से ग्रस्त व्यक्ति, —फलः सेमल (शाल्मली) का वृक्ष, —मानम् मोटा हिसाब, मोटा अन्दाज, —लक्ष, —लक्ष्य (वि०) 1 दानशील, वदान्य, उदार 2. समझदार, विद्वान् 3. लाभ-हानि दोनों का ध्यान रखने वाला, —जघना बड़ी योनि वाली स्त्री,—शरीरम् भौतिक और नश्वर शरीर (विप० सूक्ष्म (लिंग) शरीर), —शाटकः,—शाटिः मोटा कपड़ा,—शीर्षिका क्षुद्र-पिपीलिका, छोटी चिऊंटी जिसका सिर, शरीर के अनुपात में बड़ा हो, —षट्पदः 1. भौंरा 2. भिड़,—स्कन्धः लकुच वृक्ष, बड़हल का पेड़ —हस्तम् हाथी की सूंड।

स्थूलक (वि०) [स्थूल+कन्] विस्तृत, बड़ा, महान्, विशाल, —कः एक प्रकार की घास या नरकुल (सरकंडा)।

स्थूलता, —त्वम् [स्थूल+तल्+टाप्, त्व वा] 1. विस्तार, विशालता, बड़प्पन 2 सुस्ती, जडता।

स्थूलयति (ना० धा० पर०) बड़ा होना, हृष्ट-पुष्ट होना, मोटा होना।

स्थूलिन् (पुं०) [स्थूल+इनि] ऊंट।

स्थेमन् (पुं०) [स्था+इमनिच्] दृढता, स्थिरता, अचलता, अडिगपन द्राघीयांस सहता स्थेमभाजः —शि० १८।३३, न यत्र स्थेमानं दधुरतिभयभ्रान्तनयनाः—भामि० १।३२।

स्थेय (वि०) [स्था+यत्] जमाये जाने योग्य, रक्खे जाने योग्य, निश्चित या निर्धारित किये जाने योग्य —यः (दो दलों के बीच वर्तमान) 1 झगड़े का फैसला करने के लिए छांटा गया व्यक्ति विवाचक, पंच, निर्णायक 2. पुरोहित।

स्थेयस् (वि०) (स्त्री० —सी) [स्थिर+ईयसुन्, स्थादेश म० अ० 'स्थिर' की] दृढतर, अपेक्षाकृत बलवान्।

स्थेष्ठ (वि०) [स्थिर+इष्ठन्, स्थादेश, उ० अ० 'स्थिर की'] अत्यन्त दृढ, बलवत्तर।

स्थैर्यम् [स्थिर+ष्यञ्] 1 दृढता, स्थिरता, अचलता, निश्चलता 2. निरन्तरता 3 मन की दृढता, संकल्प, स्थायित्व भग० १३।७ 4 सहनशीलता 5. कड़ापन, ठोसपना।

स्थौणेयः, स्थौणेयकः [स्थूणा+ढक्, ढकञ् वा] एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

स्थौरम् [स्थूर+अण्] 1. दृढता, सामर्थ्य, शक्ति 2 गधे या घोड़े पर लादने का पूरा बोझ।

स्थौरिन् (पुं०) [स्थौर+इनि] 1 पीठ पर बोझा ढोने वाला घोड़ा, लद्दू घोड़ा 2 मजबूत घोड़ा।

स्थौल्यम् [स्थूल+ष्यञ्] बड़प्पन, विशालता, हृष्ट-पुष्टता।

स्नपनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. छिड़कना, नहलाना 2 स्नान करना, पानी में डुबकी लगाना रेजे जनैः स्नपनसान्द्रतरार्द्रमूर्तिः—शि० ५।५७।

स्नवः [स्नु+अप्] चूना, रिसना, टपकना।

स्नस् (भ्वा० दिवा० पर० स्नसति स्नस्यति) 1. बसना 2. उगलना (जैसे मुंह से), परित्याग करना।

स्ना (अदा० पर० स्नाति, स्नात) 1. स्नान करना, नहाना, पानी में डुबकी लगाना -मृगतृष्णाम्भसि स्नातः 2. गुरुकुल छोड़ते समय स्नान करने के संस्कार का अनुष्ठान करना, प्रेर० (स्नापयति - ते, स्नपयति—ते) नहलाना, गीला करना, तर करना, छिड़कना - (गोपैः) अपूर्वमेनां स्नपयांबभूवुः कु० ७।१०, स्थितस्नपितावरा—वीत० १२, उत्तर० ३।२३, कि० ५।४४, ४८, शि० २।७, ८।३, मेघ० ४३, इच्छा० (सिस्नासति) स्नान करने की इच्छा करना, अव,—मृत्यु के कारण शोक मनाने के पश्चात् स्नान करना,नि,—गहरी डुबकी लगाना अर्थात् पारंगत होना, दे० 'निष्णात'।

स्नातकः [स्ना+क्त+क] 1. ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन समाप्त कर अनुष्ठेय स्नान की विधि पूरा करने वाला ब्राह्मण 2. वह ब्राह्मण जो वेदाध्ययन समाप्त कर अभी गुरुकुल से लौटा है और गृहस्थ धर्म में दीक्षित हुआ है 3. वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक विधि को पूरा करने के लिए भिक्षु बना हो मनु० ११।१ 4 पहले तीन वर्णों का कोई पुरुष जो गृहस्थधर्म में दीक्षित हो चुका है।

स्नानम् [स्ना भावे ल्युट्] 1 धोना, मार्जन करना, पानी में डुबकी लगाना तत प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यप श० ४ 2. स्नान द्वारा शुद्धि, कोई धार्मिक या सांस्कारिक मार्जन 3. मूर्ति का स्नान कराना 4 कोई वस्तु जो स्नान या मार्जन में काम आवे। सम० —आगारम् स्नानगृह, हौदी स्नान करने की

नीय,—यात्रा ज्येष्ठपूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व,—वस्त्रम् स्नान का वस्त्र—किं पीडितस्नानवस्त्रं मुञ्चेत् द्रुत पय —हि० २।१०६,—विधिः 1. स्नान करने की क्रिया 2 स्नान करने के उचित नियम या रीति ।

स्नानीय (वि०) [स्नानाय हितं छ] स्नान के लिए योग्य, मार्जन के लिए उपयुक्त, स्नान के समय पहना हुआ वस्त्र,—स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रोर्णं वोपयुज्यते —मालवि० ५।१२, —यम् जल या और कोई पदार्थ (जैसे कि उबटना, या सुवासित चूर्ण आदि) जो स्नान के उपयुक्त हो—रघु० १६।२१ ।

स्नापकः [स्ना+णिच्+ण्वुल्, पुक्] अपने स्वामी को स्नान कराने वाला या स्नान के लिए सामग्री लाने वाला नौकर ।

स्नापनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] स्नान कराना, या स्नानकर्ता की टहल करना—मनु० २।२०९ ।

स्नायुः [स्नाति शुध्यति दोषोऽनया—स्ना+उण्] 1 कंडरा, पेशी, नस—स्वल्पं स्नायुवसावशेषमलिनं निर्मांसमप्यस्थि गोः —भर्तृ० २।३० 2 धनुष की डोरी । सम० —अर्मन् आँखों का एक विशेष रोग ।

स्नायुकः [स्नायु+कन्] दे० 'स्नायु' ।

स्नावः, स्नावन् (पुं०) [स्ना+वन्, वनिप् वा] कंडरा पेशी ।

स्निग्ध (वि०) [स्निह्+क्त] 1 प्रिय, स्नेही, हितैषी, अनुरक्त, प्रेमी मा० ५।२० 2 चिकना, तैलाक्त, मसृण, तेल में भीगा हुआ उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे—मेघ० ५९ स्निग्धवेणीसवर्णे —१८, शि० १२।६३, मा० १०।४ 3 चिपचिपा, लसलसा, लेसदार, लिबलिबा 4 प्रकाशित, चमकीला उज्ज्वल, चमकदार—कनकनिकषस्निग्धा विद्युत् प्रिया न ममोर्वशी—विक्रम० ४।१, मेघ० ३७, उत्तर० १।३३, ६।२१ 5 चिकना, स्निग्धकारी 6. गीला, तर 7 शान्त 8 कृपालु, मृदु, सौम्य, मिलनसार —प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः मेघ० १६ 9. प्रिय, रुचिकर, मोहक, रघु० १।३६, उत्तर० २।१४, ३।२२ 10 मोटा, सघन, सटा हुआ —स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु (चक्रे)—मेघ० १ 11 टुका हुआ, जमाया हुआ, (दृष्टि की भांति) टकटकी लगाये हुए, —ग्धः 1 मित्र, स्नेही, मित्र-सदृश, हितैषी—विशे स्निग्धैरुपकृतमपि द्वेष्यतां याति किंचित् हि० २।१६०, या, स स्निग्धोऽकुशलान्निवारयति यः मुद्रा०, पंच० २।१६६ 2 लाल एरण्ड का पौधा 3 एक प्रकार का चीड़ का वृक्ष —ग्धम् 1 तेल 2. मोम 3. प्रकाश, आभा 4 मोटापन, चुरचुरापन । सम०—जनः स्नेही व्यक्ति, हितैषी मित्र —स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनं भवति श० ३, —तण्डुलः एक प्रकार का चावल जो जल्दी उगता है,—दृष्टि (वि०) टकटकी लगाकर देखने वाला ।

स्निग्धता,—त्वम् [स्निग्ध+तल्+टाप्, त्व वा] 1 चिकनापन 2. सौम्यता 3 सुकुमारता, स्नेह, प्रेम ।

स्निग्धा [स्निग्ध+टाप्] मज्जा, वसा ।

स्निह् (दिवा० पर० स्निह्यति, स्निग्ध) 1 स्नेह रखना, स्नेहानुभूति होना, प्रेम करना, प्रिय होना (अधि० के साथ—जिससे प्रेम किया जाय)—किं नु खलु बालेऽस्मिन्नौरस इव पुत्रे स्निह्यति मे मनः—श० ७, स च स्निह्यत्यावयोः—उत्तर० ६ (यहाँ 'आवयो' सम्बन्ध कारक भी हो सकता है) 2 अनायास ही अनुरक्त होना 3 किसी पर प्रसन्न होना, कृपालु होना 4. चिपचिपा होना, लसलसा या लिबलिबा होना 5 चिकना या सौम्य होना, प्रेर० (स्नेहयति ते) 1 चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना, चिकनाना, चिकने पदार्थ से लेप करना चिकना करना, तेल लगाना 2 प्रेम कराना 3 विघटित करना, नष्ट करना, मार डालना ।

स्नु (अदा० पर० स्नौति, स्नुत) 1 टपकना, स्रवण करना बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, पड़ना, रिसना, चूना 2 बहना, क्षर पड़ना, प्र—बह निकलना, उड़ेल देना —प्रस्नुतस्तनी उत्तर० ३ ।

स्नु (पुं०, नपुं०) [स्ना+कु] 1 पहाड़ का समतल भूखंड 2 चोटी, सतह (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता कर्म० द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से यह सानु शब्द के स्थान में प्रयुक्त होता है) ।

स्नु (स्त्री०) [स्नु+क्विप्] स्नायु, कण्डरा, पेशी ।

स्नुत (वि०) [स्नु+क्त] रिसा हुआ बूंद-बूंद करके गिरा हुआ, बहा हुआ आदि ।

स्नुषा [स्नु+सक्+टाप्] पुत्रवधू समुपास्यत पुत्रभोग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रिय श्रिया रघु० ८।१४, १५।७२ ।

स्नुह् (दिवा० पर० स्नुह्यति, स्नुग्ध या स्नूढ) उलटी करना, कै करना ।

स्नेहः [स्निह्+घञ्] 1 अनुराग, प्रेम, कृपालुता, सुकुमारता—स्नेहदाक्षिण्ययोर्योगात् कामीव प्रतिभाति मे विक्रम० २।४ (यहाँ इसमें छठा अर्थ भी घटता है), अस्ति मे सोदरस्नेहोऽप्येतेषु श० १ 2. तैलाक्तता, मसृणता, चिकनापन, चिकनाहट (वैशेषिक के अनुसार २४ गुणों में से एक) 3. मज्जा 4 चर्बी, वसा, कोई भी चिकना पदार्थ 5 तेल निर्विष्टविषयस्नेहः स दशान्तमुपेयिवान् रघु० १२।१ पंच० १।८७, (यहाँ प्रथम अर्थ भी घटता है) रघु० ४।७५

6. शरीरगत कोई भी तरल पदार्थ जैसे कि वीर्य। सम० —अक्त तेल में भिगोया हुआ, चिकनाया हुआ, चर्बी से लिप्त, —अनुवृत्तिः (स्त्री०) स्निग्ध या मित्रों जैसा मेल जोल, —आशः दीपक, —छेदः, —भङ्गः मित्रता का टूट जाना, —पूर्वम् (अव्य०) अनुराग पूर्वक —प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम प्रवाह —श० ४।१६, —प्रिय (वि०) जिसे तेल अधिक प्यारा हो, (—यः) दीपक, —भूः श्लेष्मा, —रङ्गः तिल, —वस्तिः (स्त्री०) तेल की सुई लगाना, तेल का अनीमा करना, गुदा के मार्ग से पिचकारी द्वारा तेल डालना, —विमर्दित (त्रि०) तेल से मालिश किया गया, —व्यक्तिः (स्त्री०) प्रेम का प्रकटीकरण, मित्रता का प्रदर्शन, (प्रवृत्ति) स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् मेघ० १२।

स्नेहन् (पु०) [स्निह् + कनिन्, नि०] 1 मित्र 2. चन्द्रमा 3 एक प्रकार का रोग।

स्नेहन (वि०) [स्निह् + णिच् + ल्युट्] 1 मालिश करने वाला, चिकनाने वाला 2 नष्ट करने वाला —नम् 1. तेल मालिश चिकनाना, तेल या उबटना मलना 2 चिकनाहट 3 उबटन, स्निग्धकारी।

स्नेहित (भू० क० कृ०) [स्निह् + णिच् + क्त] 1. प्रेमपात्र 2 कृपालु, स्नेही 3 लिपा हुआ, चिकनाया हुआ —तः मित्र, प्यारा।

स्नेहिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [स्निह् + णिनि] 1 अनुरक्त, स्नेह करने वाला, मित्र सदृश 2 तैलाक्त, चिकना, चर्बी युक्त (पु०) 1. मित्र 2 मालिश करने वाला, लेप करने वाला 3 चित्रकार।

स्नेहुः [स्निह् + उन्] 1 चन्द्रमा 2 एक प्रकार का रोग।

स्नै (भ्वा० पर० स्नायति) पट्टी बांधना, लपेटना, सुडौल करना, आवृत करना, परिवेष्टित करना।

स्नैग्ध्यम् [स्निग्ध + ष्यञ्] 1 चिकनाहट, स्निग्धता, फिसलन, चिक्कणता 2 सुकुमारता, प्रियता 3 चिकनापन, मृदुता।

स्पन्द् (भ्वा० आ० स्पन्दते, स्पन्दित) 1 धड़कना, धकधक करना अस्पन्दिष्टाक्षि वाम च — भट्टि० १५।२७, १४।८३ 2. हिलना, कांपना, ठिठुरना 3 जाना, गतिशील होना, परि—, धड़कना, कांपना, वि—, इधर-उधर घूमना, संघर्ष करना।

स्पन्दः [स्पन्द् + घञ्] 1 धड़कन, धकधक 2 कंपकंपी, थरथराहट, गति —अमी मन्दस्पन्दं बहिरपि चिरस्यापि विमृशन् —भर्तृ० ३।५१।

स्पन्दनम् [स्पन्द् + ल्युट्] 1 धड़कना, नाड़ी का फड़कना, थरथराहट, कंपकंपी —वामाक्षिस्पंदनं सूचयित्वा मा० १, इसी प्रकार अधर°, बाहु°, शरीर° आदि 2 थरथरी, धड़कन 3 गर्भ में जीव का स्फुरण।

स्पन्दित (भू० क० कृ०) [स्पन्द् + क्त] 1. थरथरीयुक्त, ठिठुरा हुआ 2 गया हुआ, —तम् नाड़ी का स्फुरण, धड़कन, धकधक।

स्पर्ध् (भ्वा० आ० स्पर्धते) 1 स्पृहा करना, होड़ लगाना, मुकाबला करना, प्रतिद्वन्द्विता करना, प्रतियोगिता करना अस्पर्धिष्ट च रामेण—भट्टि० १५।६५ कस्मैस्मह स्पर्धते भर्तृ० २।१६ 2 ललकारना, चुनौती देना, उपेक्षा करना, प्रति—, वि—, चुनौती देना, ललकारना।

स्पर्धा [स्पर्ध् + अङ् + टाप्] प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता, होड़ —आ मनम्तु कृते स्पर्धा गुरुशीर्बलमन्यत 2 ईर्ष्या, डाह 3 चुनौती 4 समानता।

स्पर्धिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [स्पर्धा + इनि] 1 प्रतिद्वन्द्विता करने वाला, होड़ करने वाला, प्रतियोगिता करने वाला, प्रतिस्पर्धाशील तवासरस्पर्धिषु विद्रुमेषु रघु० १३।१३, १६।६२ 2 प्रतिस्पर्धी, ईर्ष्यालु 3. घमंडी, (पु०) प्रतियोगी, समकक्ष व्यक्ति।

स्पर्श् (चुरा० आ० स्पर्शयते) 1 लेना, पकड़ना, छूना 2 मिलना, संयुक्त होना 3 आलिंगन करना, आश्लेषण।

स्पर्शः [स्पर्श् (स्पृश् वा) + घञ्] 1 छूना, संपर्क (सभी अर्थों में) —नदिद स्पर्शक्षमं रत्नम्—श० १।२८, २।७ 2 संयोग (ज्या० में) 3. संघर्ष, मुठभेड़ 4 भावना, संवेदना छूने से होने वाला ज्ञान 5 त्वचा का विषय, स्पर्शग्राह्यता, स्पर्शगुण स्पर्शगुणो वायुः —तर्क० 6 प्रभाव, रोग, बीमारी का दौरा 7 रोग, व्याधि, विकृति आदि या मनोव्यथा 8 (क् से म् तक) पाँचों वर्गों में कोई सा व्यंजन कादयो मान्ताः स्पर्शाः 9 उपहार, दान, भेंट 10. हवा, वायु 11 आकाश 12 एक रतिबंध, —र्शा कुलटा, पुंश्चली। सम० —अज्ञ (वि०) स्पर्शज्ञान से रहित, संवेदनशून्य —इन्द्रियम् स्पर्श का ज्ञान, या स्पर्शज्ञान प्राप्त करने वाली इन्द्रिय, —उष्म (वि०) जिसके पीछे व्यंजन वर्ण हो, —उपलः, —मणिः पारस पत्थर —तन्मात्रम् वह तत्त्व जिसका छूने से ज्ञान हो, —लज्जा छुईमुई का पौधा —वेद्य (वि०) स्पर्श के द्वारा जिसका ज्ञान हो —संचारिन् (वि०) संक्रामक, छूत का, —स्नानम् सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण आरम्भ होने पर स्नान, —स्पन्दः, —स्पन्दः मेंढक।

स्पर्शन (वि०) (स्त्री० —नी) [स्पर्श् (स्पृश् वा) + ल्युट्] 1 छूने वाला, हाथ लगाने वाला 2. ग्रस्त करने वाला, प्रभाव डालने वाला, —नः हवा, वायु, —नम् 1. छूना, स्पर्श, संपर्क 2. संवेदन, भावना 3 स्पर्शेन्द्रिय या स्पर्शजन्य ज्ञान 4. भेंट, दान।

स्पर्शनकम् [स्पर्शन+कन्] सांख्यदर्शन में प्रयुक्त 'त्वचा' का पर्यायवाची शब्द ।

स्पर्शवत् (वि०) [स्पर्श+मतुप्] 1. स्पर्श किये जाने के योग्य 2. मृदु, छूने में रुचिकर या कोमल —कु० १।५५ ।

स्पर्ध् (भ्वा० आ० स्पर्धते) गीला या तर होना ।

स्पर्ष्टृ (पुं०) [स्पृश्+तृच्] मनोव्यथा, शरीर में विकार, रोग ।

स्पश् (भ्वा० उभ० स्पशति) 1 अवरुद्ध करना 2. दायित्व ग्रहण करना, संपन्न करना 3 नत्थी करना 4 छूना, देखना, निहारना, स्पष्ट दृष्टिगोचर होना, जासूसी करना, भांपना, भेद पाना ।

स्पश [स्पश्+अच्] 1 भेदिया, गुप्तचर,—स्पशे शनैर्गतवति तत्र विद्विषाम् —शि० १७।२०, दे० 'आपस्पश' भी 2 लड़ाई, संग्राम, युद्ध 3. (पुरस्कार पाने के लिए) जंगली जानवरों से लड़ने वाला, या ऐसी लड़ाई ।

स्पष्ट (वि०) [स्पश्+क्त] जो साफ साफ़ देखा जा सके, व्यक्त, साफ़ दृष्टिगोचर, साफ़, सरल, प्रकट —स्पष्टे जाते प्रत्यूषे—का० 'जब धूप खिल गई थी' स्पष्टाकृतिः—रघु० १८।३०, स्पष्टार्थः—आदि 2. वास्तविक, सच्चा 3 पूरा खिला हुआ, फूला हुआ 4. साफ साफ़ देखने वाला, —ष्टम् (अव्य०) 1 स्पष्ट रूप से, साफ़ तौर पर, साफ़-साफ़, 2 खुल्लमखुल्ला, साहस पूर्वक (स्पष्टीकृ साफ़ करना, प्रकट करना, व्याख्या खोल कर कहना) । सम० —गर्भा वह स्त्री जिसके गर्भ के चिह्न साफ़ देख पड़ें, —प्रतिपत्तिः (स्त्री०) स्पष्ट ज्ञान, शुद्ध प्रत्यक्षज्ञान,—भाषिन्, —वक्तृ (वि०) साफ़-साफ़ कहने वाला, मुंहफट, खरा, सरल ।

स्पृ (स्वा० पर० स्पृणोति) 1. मुक्त करना, उद्धार करना 2. पुरस्कार देना, अनुदान देना, प्रदान करना 3 रक्षा करना 4. जीवित रहना ।

स्पृक्का [स्पृश्+क्वन् पृषो० ह्रस्व क] एक जंगली पौधा ।

स्पृश् [तुदा० पर० स्पृशति स्पृष्ट] 1. छूना—स्पृशन्नपि गजो हन्ति—हि० ३।१४, कर्णे परं स्पृशति हन्ति परं समूलम्—पंच० १।३०४ 2. हाथ रखना, थपथपाना, छूना—कु० ३।२२ 3. जुड़ जाना, चिपक जाना, संयुक्त होना 4. पानी से धोना या छिड़काव करना मनु० २।६० 5. जाना, पहुँचना—श० २।१४, रघु० ३।४३ 6. प्राप्त करना, हासिल करना, विशेष स्थिति पर पहुँचना —महीक्षितां वरस्ततः स्पृशन्निव—रघु० ३।३२ 7. कार्य में परिणत करना, प्रभावित करना, व्यस्त करना, पसीजना, द्रवीभूत होना मुद्रा० ७।१६, कु० ६।९५ 8. संकेत करना, उल्लेख करना—प्रेर० (स्पर्शयति—ते) 1. छुवाना 2 देना, प्रस्तुत करना —गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोध्नीः—रघु० २।४९, अप=उपस्पृश्, अभि—, छूना, उप—, 1. छूना 2. शरीर पर पानी के छींटे देना या स्नान करना—मनु० ४।१४३ 3 आचमन करना, पानी देना, कुल्ला करना स गव्यस्कन्दमुपास्पृशच्च—भट्टि० २।११, मनु० २।५३, ५।६३, अप उपस्पृश्य 4. स्नान करना—रघु० ५।५९, १८।३१, परि , छूना, सम् , 1. छूना 2 पानी से छिड़काव करना मनु० २।५३ 3. सम्पर्क स्थापित करना ।

स्पृश् (वि०) [स्पृश्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जो छूता है, छूने वाला, ग्रस्त करने वाला, बेधने वाला, मर्मस्पृश्, हृदिस्पृश् आदि ।

स्पृष्ट (भू० क० कृ०) [स्पृश्+क्त] 1 छुआ हुआ, हाथ लगाया हुआ 2. सम्पर्क में आया हुआ, स्पर्शी 3 पहुँचने वाला, उपयोग करने वाला, विस्तार पाने वाला—अस्पृष्टपुरुषान्तरम् कु० ६।७५ 4 ग्रस्त, पकड़ा हुआ मेघ० ९९, अनघस्पृष्टम्—रघु० १०।१९ 5 गन्दा, मलिन—मनु० ८।२०५ 6 जिह्वा के पूर्ण स्पर्श से बना हुआ (पांचों वर्गों में से कोई सा वर्ण) अचोऽस्पृष्टा यणस्त्वीषन्नेमस्पृष्टा शल स्मृता । शेषा स्पृष्टा हल प्रोक्ता निबोधानुप्रदानतः —शिक्षा० ३८ ।

स्पृष्टिः,—स्पृष्टिका (स्त्री०) [स्पृश्+क्तिन्, स्पृष्टि+कन्+टाप्] छूना, सम्पर्क तद्वयस्य असम्ब्रारीरस्पृष्टिकया शापितोऽसि—मृच्छ० ३ ।

स्पृह् (चुरा० उभ० स्पृहयति—ते) कामना करना, लालायित होना, इच्छा करना, उत्सुक होना, चाहना (संप्र० के साथ) स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै श० ७, तव क्लेशायापि स्पृहयन्ती का०, न वैचित्र्येव स्पृहयांबभूव मर्त्यं दिवो नाथकलेश्वराय रघु० १६।४२, भर्तृ० २।४५ ।

स्पृहणम् [स्पृह्+ल्युट्] इच्छा या कामना करने की क्रिया, लालायित होना ।

स्पृहणीय (वि०) [स्पृह्+अनीयर्] चाहने के योग्य, अभिलषणीय, स्पृहा के योग्य, वांछनीय अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः—कु० ३।२०, धन्या त्वमेव जगत स्पृहणीयसिद्धिः मा० १०।२१, परस्परेण स्पृहणीयशोभं न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत् रघु० ७।१४, कु० ७।६०, उत्तर० ६।४० ।

स्पृहयालु (वि०) [स्पृह्+णिच्+आलुच्] इच्छा करने वाला, लालायित, उत्सुक, उत्कण्ठित (संप्र० या अधि० के साथ) भोगेभ्यः स्पृहयालवो न हि वयम् —भर्तृ० ३।६४, भोगेनेषु स्पृहयालुरेव—रघु० १४।४५ ।

स्पृहा [स्पृह्+अङ्+टाप्] इच्छा, उत्सुकता, प्रबल

कामना, लालसा, ईर्ष्या, अभिलाषा—कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम्—वेणी० ३।२९, रघु० ८।३४।

स्पृह्य (वि०) [स्पृह्+णिच्+यत्] वांछनीय, स्पर्धा के योग्य,—ह्यः बिजौरा नीबू।

स्पृ (क्र्या० पर० स्पृणाति) आघात करना, मार डालना।

स्फच् (पुं०) दे० 'स्फिच्'।

स्फट् (भ्वा० पर० स्फटति) फट पड़ना, फूलना।

स्फटः [स्फट्+अच्] सांप का फैलाया हुआ फन तु० फट—टा।

स्फटा [स्फट+टाप्] 1. सांप का फैलाया हुआ फन 2. फिटकिरी।

स्फटिकः [स्फटि+कै+क] बिल्लौर, काचमणि—अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरमयूखाः सुखं प्रविशन्त्युपदेशगुणाः—का०। सम०—अचलः मेरु पर्वत, —अद्रिः कैलास पहाड़, °भिद् (पुं०) कपूर —अश्मन्, —आत्मन्,—मणि (पुं०) शिला बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकारिः, स्फटिकारिका (स्त्री०) फिटकिरी।

स्फटिकी [स्फटिक+ङीप्] फिटकिरी।

स्फण्ट् i (भ्वा० पर० स्फण्टति) फूट पड़ना, खिलना, फूलना।

ii (चुरा० उभ० स्फण्टयति—ते) मखौल करना, मजाक करना, हंसी उड़ाना।

स्फर् दे० स्फुर्।

स्फरणम् [स्फर्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, धड़कना।

स्फल् (भ्वा० पर० स्फलति) कांपना, थरथराना, धड़कना, फड़कना, (चुरा० उभ० या प्रेर० स्फालयति—ते) कंपा देना, हिला देना, था , 1. कंपाना, फड़फड़ाना, हिलाना, झुलाना 2. आघात करना, प्रपीडित करना, थपथप करना आस्फालितं यत्प्रमदाकराग्रैः रघु० १६।१३, उत्तर० ५।९ 3. आघात करना, अनुचित काम उठाना —शि० १।९ 4. (धनुष को) टंकारना।

स्फाटिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्फटिक+अण्] बिल्लौर पत्थर का, —कम् बिल्लौर पत्थर।

स्फाटित (भू० क० कृ०) [स्फट्+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, फटा हुआ, फूला हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

स्फातिः (स्त्री०) [स्फाय्+क्तिन्, यलोपः) 1. सूजन, शोथ 2. वृद्धि, बढ़ती।

स्फाय् (भ्वा० आ० स्फायते, स्फीत) 1. मोटा होना, बड़ा होना, विस्तारयुक्त होना, विशाल होना 2. सूजना, बढ़ना, फूलना संपुपुषे तयोः कोपः पस्फाये बलमायतम भट्टि० १४।१०९—प्रेर० (स्फावयति—ते) बढ़ाना, विकसित करना, विस्तारयुक्त करना, बड़ा करना—तावत्स्फावयतो वधतीर्वानिष्याकिरतो मुहुः —भट्टि० १५।४१, ४।३३, १२।७९, १५।९९।

स्फार (वि०) [स्फाय्+रक्] 1. विस्तृत, बड़ा, बढ़ा हुआ, फुलाया हुआ—स्फारफुल्लत्फणापीठनिर्यत्—आदि—मा० ५।२३, महावीर० ६।३२ 2. अधिक, पुष्कल महावीर० ५।२, भर्तृ० ३।४२ 3. ऊंचा (स्वर), —रः 1. सूजन, वृद्धि, विस्तार, विकास 2. (सोने में पड़ी हुई) फुटकी 3. उभार, मिस्टी 4. धड़कना, थरथरीयुक्त स्पन्दन, धकधक 5. टंकार,—रम् प्रचुरता, आधिक्य, पुष्कलता (स्फारीभू सूज जाना, फूलना, फैलना, बढ़ना, वृद्धि होना सुस्निग्धा विमुखीभवन्ति सुहृदः स्फारीभवन्त्यापदः मृच्छ० १।३६।

स्फारण [स्फुर्+णिच्+ल्युट्, स्फारादेशः] थरथराहट, स्फुरण, कपकंपी।

स्फालः [स्फाल्+घञ्] थरथराहट, धकधक, धड़कन, कंपकपी।

स्फालनम् [स्फाल्+ल्युट्] 1. स्पन्दन, धकधक 2. हिलाना-डुलाना 3. रगड़ना, घिसना 4. थपथपाना, सहलाना (घोड़े आदि को), धीरे-धीरे हाथ फेरना।

स्फिच् (स्त्री०) [स्फाय्+डिच्] चूतड़, कूल्हा,—अंस-स्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयवसुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा—मा० ५।१६।

स्फिट् (चुरा० उभ० स्फेटयति—ते) 1. चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 2. घृणा करना 3. प्रेम करना 4. ढकना।

स्फिट्ट् (चुरा० उभ० स्फिट्टयति—ते) चोट पहुंचाना आदि, दे० ऊपर 'स्फिट्'।

स्फिर (वि०) [स्फाय्+किरच्, म० अ० स्फेयस्, उ० अ० स्फेष्ठ] 1. प्रचुर, प्रभूत, बहुत 2. बहुत से, असंख्य 3. विस्तृत, आयत।

स्फीत (भू० क० कृ०) [स्फाय्+क्त, स्फी आदेशः] 1. सूजा हुआ, बढ़ा हुआ—वेणी० ५।४० 2. मोटा, पीन, बड़ा, विस्तृत, विशाल 3. बहुत से, असंख्य, अधिक, पर्याप्त, पुष्कल, प्रचुर 4. पवित्र—मालवि० ४।१३, सफल, समृद्ध, फलता-फूलता 6. पैतृक रोग से ग्रस्त (स्फीतीकृ बड़ा करना, विस्तृत करना)।

स्फीतिः [स्फाय्+क्तिन्, स्फी आदेशः] 1. वृद्धि, बढ़ती, विस्तार 2. प्राचुर्य, यथेष्टता, पुष्कलता—धनधान्यस्य च स्फीतिः सदा मे वर्ततां गृहे 3. समृद्धि।

स्फुट् i (तुदा० पर०, भ्वा० उभ० स्फुटति, स्फोटति—ते, स्फुटित) 1. फट जाना, अकस्मात् फूट जाना, टूट जाना, अचानक विदीर्ण होना, दरार पड़ना, भंग होना —हा हा! देवि स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः—उत्तर० ३।३८, स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन गीत० ७, भट्टि० १४।५९ १५।७७ 2. फूलना, खिलना, फूल देना, कुसुमित होना—स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय गीत० ९, पंच० १।१३६ काव्य०

३।१६७ 3. भाग जाना, छलांग लगाना, तितर-बितर करना,- तुरङ्गाः पुस्फुटुर्भीताः—भट्टि० १४।६, १०।८ 4. दृष्टिगोचर होना, निगाह में पड़ना, प्रकट होना, स्पष्ट होना ।

ii (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) 1. फटना, तरेड़ आना, टूट जाना 2. निगाह में पड़ना,—प्रेर० स्फोटयति—ते, 1. फट कर टुकड़े टुकड़े होना, खंडशः होना, खोल कर फाड़ना, तरेड़ डालना, बांटना 2. प्रकट करना, बतलाना, स्पष्ट करना 3 खोलना, भंडाफोड़ करना 4. चोट पहुँचाना, नष्ट करना, मार डालना 5. पछोड़ना ।

स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] 1. फट पड़ा, टूट कर टुकड़े हुआ, टूटा हुआ, खंडित 2. खिला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्लित स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् - शि० ६।२५ 3 प्रकटीकृत, प्रदर्शित, स्पष्ट किया हुआ 4. साफ़, स्पष्ट, साफ दिखाई देने वाला या व्यक्त - अत्र स्फुटो न कश्चिदलङ्कार —काव्य० १, कु० ५।४४, मेघ० ७०, कि० ११।४४ 5 प्रत्यक्ष —उत्तर० ३।४२ 6. श्वेत, उज्ज्वल, शुभ्र—मुक्ताफल या स्फुटविद्रुमस्य - कु० १।४४ 7 सुविदित, प्रसिद्ध, —स्फुटनृत्यलीलमभवत्सुतनोः शि० ९।७१ (प्रथित) 8. प्रसारित, विकीर्ण 9 उच्च 10 दृश्यमान, सत्य, —टम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, विशदतया, साफ़ तौर पर, निश्चय ही, प्रकट रूप से । सम० अर्थ (वि०) 1. बोधगम्य, स्पष्ट 2 सार्थक,—तार (वि०) जिसमें तारे रूपी रत्न जड़े हुए हों, उज्ज्वल,—फलम् (ज्या० में) 1. किसी त्रिकोण का यथार्थ क्षेत्रफल 2. किसी गणित का मूलफल,—सारः किसी ग्रह या तारे का वास्तविक आयाम,- सूर्यगतिः (स्त्री०) सूर्य की दृश्यमान या वास्तविक गति ।

स्फुटनम् [स्फुट्+ल्युट्] 1. तोड़ कर खोलना, फाड़ देना, फूट जाना, फट कर खुल जाना 2. प्रसार होना, खुलना, प्रफुल्लित होना ।

स्फुटिः,—टी (स्त्री०) [स्फुट्+इन्, पक्षे ङीप्] पैरों की खाल का फट जाना, बवाई, पैरों का दुःखना या सूजन ।

स्फुटिका [स्फुटि+कन्+टाप्] टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, खंड, फांक ।

स्फुटित (भू० क० कृ०) [स्फुट्+क्त] 1. फटा हुआ, टूट कर खुला हुआ, खंड-खंड हुआ, तरेड़ आया हुआ 2. मुकुलित, खिला हुआ, प्रफुल्लित (जैसा कि फूल) 3. स्पष्ट किया गया, प्रकट किया गया, दिखलाया गया 4. फाड़ा हुआ, नष्ट 5. हंसी उड़ाया हुआ । सम०—चरण (वि०) जिसके पैर फटे हों, बाहर को निकले हुए फीड़े फटे पैर वाला ।

स्फुट्ट् (चुरा० उभ० स्फुट्टयति—ते) तिरस्कार करना, अपमान करना, निरादर करना ।

स्फुड् (तुदा० पर० स्फुडति) ढकना ।

स्फुण्ट् i (भ्वा० पर० स्फुण्टति) खोलना, फुलाना ।

ii (चुरा० उभ० स्फुण्टयति—ते) मखौल करना, मजाक करना, उपहास करना ।

स्फुण्ड् (भ्वा० आ०, चुरा० उभ० स्फुण्डते, स्फुण्डयति—ते) दे० 'स्फुण्ट्' ।

स्फुत् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि । सम० कारः,—कारः 'स्फुत्' ध्वनि, चटचटाने की आवाज ।

स्फुर् (तुदा० पर० स्फुरति, स्फुरित) 1. (क) थरथराना, फड़कना (जैसे आंख का) शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य श० १।१५, स्फुरता वामकेनापि दाक्षिण्यमवलम्ब्यते मा० १।८ (ख) हिलना, कांपना, लरजना, थरथराना स्फुरद-धरनासापुटतया—उत्तर० १।२९, ६।३३ 2. कसमसाना, संघर्ष करना, विक्षुब्ध होना हृत पृथिव्यां कथं स्फुरन्तम् राम० 3 कूच करना, फेंकना, आगे उछलना—पुस्फुरुर्वधा परम्—भट्टि० १४।६ 4 पीछे की ओर उछलना, पलट कर आना 5 उछलना, फूट निकलना, उद्गत होना, उठना —वर्षंत स्फुरति निर्मल यश 6. दृष्टिगोचर होने लगना, दिखाई देने लगना, प्रकट होने लगना, स्पष्ट दिखाई देना, प्रदर्शित होना मुखात्स्फुरन्ती को हर्तुमिच्छति हरेः परिभूय दंष्ट्राम् - मुद्रा० १।८, गलितरुधिरभूषा दृष्टिमोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादा कापि राधा जगाम गीत० ११ 7. दमक उठना, जगमगाना, चिंगारी छोड़ना, चमकना, झलकना, टिमटिमाना —स्फुरति कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी रञ्जयतु तव हृदयदेशम् गीत० १०, (तथा) स्फुरत्प्रभामण्डलया चकाशे कु० १।२४, रघु० ३।६०, ५।५१, मेघ० १५।२७ 8. चमकना, विशिष्टता दिखाना, प्रमुख होना पंच० १।२७ 9. अचानक मन में फुरना, अकस्मात् स्मृति में आना 10. थरथराते हुए चमकना 11. कसमसाना, नष्ट करना —प्रेर० (स्फारयति—ते, स्फोरयति—ते) 1. थरथराना 2. चमकाना, जगमगाना 3. फेंकना, डाल देना, चमचमक उठना, अधि—1. फैलना, प्रकीर्ण होना, छूटना 2. व्याप्त होना, परि—, धड़कना, फड़कना, कम्पायमान करना - तस्याः परिस्फुरितगर्भभरालसायाः—उत्तर० १।२८, प्र—, 1. फड़कना, कांपना 2. फैलना, प्रमुख होना—प्रास्फुरन्नलम्—भट्टि० 3. दूर-दूर तक फैलना, विख्यात होना —वीचिवलय मुखोत्कर्षैः प्रायः प्रस्फुरति स्फुटम्—सुभा०, वि—, 1. फड़कना, कांपना 2. संघर्ष करना 3. चमकना, जगमगाना उत्तर० ४ 4. (धनुष की) टनटनाना, टंकारना

(इसी अर्थ में प्रेर० रूप प्रयुक्त होता है) —कोऽपि विस्फुरितमण्डलचापचक्रं कः सिन्धुराजमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० ३।२५, कि० १४।३१।

स्फुरः [स्फुर् भावे घञ्] 1. धड़कना, थरथराना, फरकना 2. सूजन 3 ढाल।

स्फुरणम् [स्फुर्+ल्युट्] 1. धड़कना, फरकना, थरथराना 2 शरीर के अंगों का (शुभाशुभसूचक) फरकना 3. फूट निकलना, उदित होना, दिखाई देने लगना 4. चमकना, दमकना, जगमगाना, झलकना, टिमटिमाना 5 मन में फुरना, अचानक स्मरण हो जाना।

स्फुरत् (वि०) [स्फुर्+शतृ] धड़कने वाला, चमकने वाला। सम० उल्का उल्कापिंड, टूटा तारा।

स्फुरित (भू० क० कृ०) [स्फुर्+क्त] 1 कंपायमान, धड़कता हुआ 2. हिला-डुला 3. चमकीला, दमकने वाला 4 अस्थिर 5 सूजा हुआ, तम् 1. धड़कना, फरकना, थरथराहट 2 विक्षोभ या मन का संवेग।

स्फुर्छ् (भ्वा० पर० स्फूर्छति) 1 फैलना, विस्तृत होना 2 भूल जाना।

स्फुर्ज् (भ्वा० पर० स्फूर्जति) 1 गरजना, गरजनध्वनि, धमाधम होना, विस्फोट होना,—मनु० १।५३ 2 दमकना, चमकना 3 फट पड़ना, फूटना, स्फूर्जत्येव स एव सम्प्रति मम न्यक्कारभिन्नस्थिते—महावीर० ३।४०, वि , 1 दहाड़ना, गरजना 2. गूंजना 3 बढ़ना 4 चमकना, प्रतीत होना अस्त्येव अवधामता तु भवतो यद् व्योम्नि विस्फूर्जते काव्य० १०।

स्फुल् (तुदा० पर० स्फुलति) 1. कांपना, धड़कना, धकधक करना 2 लपकना, अचानक आ पड़ना 3 स्वस्थ चित्त होना 4. मार डालना, नष्ट करना।

स्फुलम् [स्फुल्+क] तंबू, खेमा।

स्फुलनम् [स्फुल्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, फरकना।

स्फुलिङ्गः, गम्, स्फुलिङ्गा [स्फुल्+इङ्गच्] आग की चिंगारी,—स्फुलिङ्गावस्थया वह्निरेधापेक्ष इव स्थित —श० ७।१५, वेणी० ६।८।

स्फूर्जः [स्फूर्ज्+घञ्] 1 बादलों की गड़गड़ाहट 2. इन्द्र का वज्र 3. अकस्मात् फूट निकलना या उदय होना —जैसा कि 'नर्मस्फूर्ज' में 4 नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसके आरंभ में आनन्द और अन्त में भय की आशंका रहती है।

स्फूर्जथुः [स्फूर्ज्+अथुच्] बिजली की कड़कड़ाहट, गरज।

स्फूर्तिः (स्त्री०) [स्फुर् (स्फुर्छ्)+क्तिन्] 1. धड़कन, स्फुरण, थरथराहट 2. झलक, चौकड़ी 3 कुसुमित, प्रफुल्लता 4. प्रकटीकरण, प्रदर्शन 5. मन में फुरना 6 काव्य की उद्भावना।

स्फूर्तिमत् (वि०) [स्फूर्ति+मतुप्] 1. धड़कने वाला, थरथराने वाला, विक्षुब्ध 2. कोमल हृदय।

स्फेयस् (वि०) अतिशयेन स्फिरः, ईयसुन्, स्फादेशः 'स्फिर' की म० अ०] प्रचुर तर, अपेक्षाकृत विस्तारयुक्त।

स्फेष्ठ (वि०) [स्फिर+इष्ठन्, स्फादेशः, 'स्फिर' की उ० अ०] प्रचुरतम, अत्यंत विस्तारयुक्त।

स्फोटः [स्फुट् करणे घञ्] 1. फूट निकलना, चटक कर खुलना, फट पड़ना 2. भेद खुलना जैसा कि 'मर्मस्फोट' में 3. सूजन, फोड़ा, रसौली 4. शब्द के सुनने पर मन में आने वाला भाव, शब्द सुन कर मन में उत्पन्न होने वाला विचार—बुधैर्वैयाकरणैः प्रधानभूतस्फोटरूपव्यंग्यव्यञ्जकस्य शब्दस्य ध्वनिरिति व्यवहारः कृतः—काव्य० १, सर्व० भी दे० (पाणिनीयदर्शन) 5. मीमांसकों द्वारा माना हुआ नित्य शब्द। सम०—बीजकः भिलावां।

स्फोटन (वि०) (स्त्री० नी) [स्फुट्+ल्युट्] फाड़कर अलग-अलग करना, प्रकट करना, भेद खोलना, स्पष्ट करना, नः परस्पर मिले हुए व्यंजनों का अलग-अलग उच्चारण, नम् फाड़ना, अचानक फट पड़ना, टुकड़े टुकड़े होना, चटकना 2. अनाज फटकना 3 अंगुलियों की ग्रन्थियां चटकाना, अंगुलियां चटकना 4. दो मिले हुए व्यंजनों का अलग करना।

स्फोटनी [स्फोटन+ङीप्] सूराख करने का औजार, बर्मीन का बरमा, बरमा।

स्फोटा [स्फोट+टाप्] सांप का फैलाया हुआ फण।

स्फोटिका [स्फुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक पक्षीविशेष।

स्फोरणम् (दे० स्फुरणम्)।

स्फ्यम् [स्फाय्+यत्, नि० साधुः] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला तलवार के आकार का एक उपकरण—मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८४। सम०—कर्तिः इस उपकरण द्वारा बनाया गया चिह्न (खूड)।

स्म दे० स्मृ।

स्म (अव्य०) [स्मि+ड] एक प्रकार का निपात जो वर्तमान काल की क्रियाओं के साथ (या वर्तमान कालिक कृदंत शब्दों के साथ) जुड़कर भूतकाल का अर्थ देता है भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म पञ्च० कौशाम्बीं स्म प्राणमूल्यैर्यजन्तासि—श्रि० १७।१५ 2 शब्दाधिक्य निपात (बहुधा निषेधात्मक निपात के साथ जोड़ा जाता है मर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः श० ४।१७, मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम् हि० २।७।

स्मयः [स्मि+अच्] 1 आश्चर्य, अचंभा, ताज्जुब 2. अभिमान, घमंड, हेकड़पना, गर्व तस्मै स्मयावेशविवर्जिताय —रघु० ५।१९, भर्तृ० ३।३, ६९।

स्मरः [स्मृ भावे अप्] 1. प्रत्यास्मरण, याद 2. प्रेम 3. कामदेव, प्रेम का देवता,—स्मरपर्युत्सुक एव माधवः —कु० ४।२८, ४२, ४३, सम०—अङ्कुशः 1. अंगुली का नाखून 2. प्रेमी, कामातुर व्यक्ति,—अगारम्

—कूपकः,—गृहम् भगविवरम् स्त्री की योनि, भग, —अन्ध (वि०) कामान्ध, प्रेममुग्ध,—आतुर—आर्त —उत्सुक (वि०) काम से पीड़ित, कामतप्त, कामवश,—आसवः लार,—कर्मन् (नपुं०) कोई भी कामुकतापूर्ण व्यवहार, स्वैरकृत्य,—गुरुः विष्णु का विशेषण —छत्रम् भगशिश्निका, दशा शरीर की कामजन्य अवस्था (यह दस हैं), —ध्वजः 1. पुरुषेन्द्रिय 2. पौराणिक मछली 3 एक वाद्ययन्त्र, (—जम्) भग, (—जा) चाँदनी रात,—प्रिया रति का विशेषण,—भासित (वि०) कामोद्दीप्त,—मोहः कामजन्य संज्ञाहीनता, प्रणयोन्माद,—लेखनी सारिका पक्षी,—वल्लभः 1. वसंत ऋतु का विशेषण 2. अनिरुद्ध का विशेषण,—वीथिका वेश्या, रंडी,—शासनः शिव का विशेषण, —सखः चन्द्रमा, —स्तम्भः लिंग, पुरुष का लिंग, —स्मर्यः रासभ, गधा —हरः शिव का विशेषण ।

स्मरणम् [स्मृ+ल्युट्] 1. स्मृति, याद, प्रत्यास्मरण केवलं स्मरणेनैव पुनासि पुरुषं यतः—रघु० १०।३० 2. चिन्तन करना—यदि हरिस्मरणे सरसं मनः—गीत० १ 3. स्मृति, स्मरणशक्ति 4 परम्परा, परंपरागत विधि इति मनुस्मरणात् (विप० श्रुति) 5. किसी देवता के नाम का मन में जाप करना 6. खेद से याद करना, खेद प्रकट करना 7 काव्यगत प्रत्यास्मरण जो एक अलंकार माना जाता है, इसकी परिभाषा है—यथानुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशे स्मृतिः स्मरणम्—काव्य० १०। सम०—अनुग्रहः 1. कृपापूर्वक स्मरण करना, 2. स्मरण करने की कृपा—कु० ६।१९,—अपत्यतर्पकः कच्छप, कछुवा,—अयौगपद्यम् प्रत्यास्मरणों की समसामयिकता का अभाव, —पदवी मृत्यु ।

स्मार (वि०) [स्मर+अण्] कामदेवसंबंधी—स्मारं पुष्पमयं चापं बाणाः पुष्पमया अपि । तथाप्यनङ्गस्त्रैलोक्यं करोति वशमात्मनः —रम् [स्मृ+घञ्] प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति ।

स्मारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [स्मृ+णिच्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्वं च] ध्यान दिलाने वाला, फिर याद कराने वाला,—कम् किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित कोई संस्था (आधुनिक प्रयोग) ।

स्मारणम् [स्मृ+णिच्+ल्युट्] मनमें लाना, याद दिलाना, स्मरण कराना ।

स्मार्त (वि०) [स्मृतौ विहितः, स्मृतिं वेत्त्यधीते वा अण्] 1 स्मृतिसंबंधी, याद किया हुआ, स्मारक 2. स्मृति के भीतर 3 स्मृति पर आधारित, या स्मृति में अभिलिखित, धर्मशास्त्र में विहित—कर्मस्मार्तं विवाहाग्नौ कुर्वीत प्रत्यहं गृही—याज्ञ० ११९७, मनु० १। १०८ 4. वैध 5. धर्मशास्त्र को जानने वाला 6. गृह्य (जैसे कि अग्नि),—र्तः परंपरागत धर्म का विशेषज्ञ ब्राह्मण 2. परंपराप्राप्त धर्म का अनुयायी 3. (स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक) संप्रदाय ।

स्मि (भ्वा० आ० स्मयते, स्मित) 1. मुस्कराना, हँसना (मंद मंद) काकुत्स्थ ईषत्स्मयमान आस्त—भट्टि० २।११, १५।८, स्मयमानं वदनाम्बुजं स्मरामि—भामि० २।२७ 2. खिलना, फूलना पंच० १।१३६,—प्रेर० (स्माययति ते) 1. मुस्कान पैदा करना, मुस्कराहट को जन्म देना 2. हँसना, उपहास करना 3. आश्चर्यान्वित करना (इस अर्थ में—स्मापयते) इच्छा० (सिस्मयिषते) 1. मुस्कराने की इच्छा करना। उद्, मुस्कराना, हँसना, वि—, 1. आश्चर्य करना, अचंभे में आना—उभयोर्न तथा लोकः प्रावीण्येन विसिष्मिये—रघु० १५।६५, भट्टि० ५।५१ 2. सराहना 3. घमंडी, अहम्मन्य होना—न विस्मयेत तपसा—मनु० ४।२३६, (प्रेर०) मुस्कान पैदा करना, आश्चर्यान्वित कराना, आश्चर्य या अचंभे से भरना—विस्माययन् विस्मितमात्मवृत्तौ—रघु० २।३३, भट्टि० ५।५८, ८।४२ ।

स्मिट् (चुरा० उभ० स्मेटयति ते) 1. अपमानित करना, घृणा करना, नफ़रत करना 2 प्रेम करना 3 जाना ।

स्मित (भू० क० कृ०) [स्मि+क्त] 1. मुस्कानयुक्त, मुस्कराता हुआ 2. फुलाया हुआ, खिला हुआ, प्रफुल्लित, —तम् मुस्कान, मंद हँसी, सस्मितम् मुस्कराहट के साथ, सविकचस्मितम् आदि। सम०—दृश् (वि०) मुस्कानयुक्त दृष्टि रखने वाला (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, —पूर्वम् (अव्य०) मुस्कराहट के साथ, मुस्कान से युक्त,—तस्याविष्कृतनामार्गं स्मितपूर्वमाह—कु० ७।४७ ।

स्मील् (भ्वा० पर० स्मीलति) झपकना, आँख से संकेत करना ।

स्मृ i (स्वा० पर० स्मृणोति) 1. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना 2. प्ररक्षा करना, प्रतिरक्षा करना 3. जीवित रहना ।

ii (भ्वा० पर०—महाकाव्यों में आ० भी—स्मरति, स्मृत—कर्मवा० स्मर्यते) 1. (क) याद करना, मन में रखना, प्रत्यास्मरण करना, मन में लाना, चिंतित होना स्मरसि सुतनो तस्मिन्पर्वते लक्ष्मणेन प्रतिविहितसपर्यासुस्थयोस्तान्यहानि—उत्तर० १।२५, (ख) मन में पुकारना, मन से याद करना, सोचना—स्मरतस्तेऽभीष्टदेवताम्—पंच० १, रघु० १५।४५ 2. किसी देवता के नाम का मन में ध्यान करना या मन में जाप करना,—यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः 3. स्मृति में अंकित करना या अभिलेख करना तथा च स्मरन्ति 4. प्रकथन करना, घोषणा करना, सौंपना, पंच० १।३० 5. खेद के

साथ याद करना, आतुर होना, उत्कंठित होना अभिलाषा करना (बहुधा संबंध के साथ) स्मर्तुं दिशसि न दिव सुरसुन्दरीभ्यः कि० ५।२८, कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति मेघ० ८५, मुद्रा० ५।१४, प्रेर० (स्मारयति-ते, परन्तु अन्तिम अर्थ को प्रकट करने के लिए स्मरयति-ते) 1 याद कराना, फिर ध्यान दिलाना, मन में लाना, सोचना अनेन मन्त्रियाभियोगेन स्मारयसि मे पूर्वशिष्यां सौदामिनीम् मा० १, कर्म कर्मा द्विकर्मक के रूप में प्रयुक्त अपि चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपार्थिवगुणान् स्मारयन्ति प्रकृतीः मुद्रा० १, य एव दुःस्मरः कालः तमेव स्मारिता वयम् उत्तर० ६।३४ 2 सूचना देना 3 खेद के साथ स्मरण कराना, लालायित करना, अभिलाष पैदा करना शि० ६।५६, श० ६४, इच्छा० (सुस्मूर्षते) प्रत्यास्मरण करने की इच्छा करना, अनु , याद करना, प्रत्यास्मरण करना मन में ध्यान करना, अप —, भूल जाना, प्र , भूल जाना, वि , भूल जाना -मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम् श० ५।१, (प्रेर०) भुलाना उत्तर० ?, सम् , याद करना, चिन्तन करना —भग० १८।७६, मनु० ४।१४९, (प्रेर०) ध्यान दिलाना, मन में रखना (पाताल) मामद्य सस्मरयतीव भुजगलोक - रत्न० १।१३ ।

स्मृतिः (स्त्री०) [स्मृ+क्तिन्] 1 याद, प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति अश्वत्थामा करधृतधनुः किं न यातः स्मृतिं ते वेणी० ३।२१, संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः —तर्क०, स्मृत्युपस्थितौ इमौ द्वौ श्लोकौ—उत्तर० ६ 2 चिन्तन करना, मन में ध्यान करना 3 मानव-धर्मशास्त्र, परम्पराप्राप्त धर्मशास्त्र स्मृतिग्रन्थ (नीति और धर्म से संबद्ध) (विप० श्रुति) 4 धर्मसंहिता, स्मृतिग्रन्थ 5 स्मृति का मूलपाठ, धर्मसूत्र, धर्म के नियम—इति स्मृतेः 6 इच्छा, कामना 7 समझ । सम० अन्तरम् दूसरा स्मृतिग्रन्थ,—अपेत (वि०) 1 भूला हुआ 2 शास्त्रविरुद्ध 3 (अतः) अवैध अन्यायपूर्ण,—उक्त (वि०) धर्मशास्त्र में विहित धर्मसूत्र में प्रतिपादित, पथः,—विषयः स्मरणशक्ति का पदार्थ, स्मृतिपथं,—विषयं गम् मरना,—भर्तृ० ३।३७ ३८ प्रत्यवमर्शः स्मृति की धारणाशक्ति, प्रत्यास्मरण की यथार्थता, प्रबन्धः धर्मशास्त्र की कृति,- भ्रंशः स्मृति का भ्रष्ट हो जाना, याद न रहना, रोग. क्षणिक विस्मरण, स्मृति का नाश—श० ७।३२ —विभ्रमः स्मृति की गड़बड़, स्पष्ट याद न रहना विरुद्ध (वि०) अवैध, विरोधः 1 धर्म का वैपरीत्य, अवैधता 2 दो या दो से अधिक स्मृतियों का पारस्परिक विरोध—स्मृतिविरोधं परिहरति—शारी०, —शास्त्रम् 1 धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, धर्म... 2. धार्मिक विधान, शेष (वि०) उपरत, मृत (क... व्यक्ति) शैथिल्यम् स्मरणशक्ति की दुर्बलता,—साध्य (वि०) धर्मशास्त्र से सिद्ध होने योग्य,—हेतुः प्रत्या... स्मरण का कारण मन पर पड़ी हुई छाप, विचार साहचर्य ।

स्मेर (वि०) [स्मि+रन्] 1 मुसकराने वाला विकोश... वृद्धोऽसमधिष्ठितः त्वया महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति। कु० ५।७०, भामि० २।४, ३।२, मा० १० ६ 2 खिला हुआ, फूला हुआ, फैलाया हुआ, प्रफुल्लित अपरिकविकसदन्तविस्मयस्मेरताराः मा० ११२८, 3 चमकीं 4 व्यक्त । सम० विष्किरः मोर ।

स्यदः [स्यन्द्+क] चाल, तीव्रगति, तेजी से चलना, वेग ।

स्यन्द् (भ्वा० आ० स्यन्दते, स्यन्न, इच्छा०—सिस्यन्दिषते, सिस्यन्त्सति-ते, इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्यन्द् के स् को ष् हो जाता है) 1 रिसना, चूना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, स्रवित होना, अर्क निकालना, बहना —अपि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः भामि० १।५ 2 छलकना, उंडेलना 3. भागना, दौड़ना, अनु—,बहना, अभि—, 1 रिसना, बहना 2. बारिश होना, पानी गिरना अभिस्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा गिरिः उत्तर० २ 3. पिघलना—उत्तर० ६, नि —,परि ,बह निकलना, प्र ,बह जाना वि ,बहना—भट्टि० १४।७४ ।

स्यन्दः [स्यन्द् भावे घञ्] 1 बहना टपकना 2 तेजी से जाना, चलना 3 गाड़ी रथ ।

स्यन्दन (वि०) (स्त्री०—ना नी) [स्यन्द्+ल्युट्] 1 जल्दी से जाने वाला, द्रुतगामी, बहने वाला 2 चुस्त, फुर्तीला, शीघ्रगामी—स्यन्दना नो च तुरगाः—कि० १५। १६ —नः युद्ध-रथ, गाड़ी या रथ—धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः—श० १।३३ 2 वायु, हवा 3 एक प्रकार का वृक्ष तिनिश, नम् 1 बहना, टपकना, रिसना 2 तेजी से जाना, बहना 3 पानी । सम० आरोहः रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला ।

स्यन्दनिका [स्यन्दन—ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] थूक की फुटक ।

स्यन्दिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्यन्द्+णिनि] 1. रिसने वाला बहने वाला, टपकने वाला 2 वेग से जाने वाला 3 गतिशील ।

स्यन्दिनी [स्यन्दिन्+ङीप्] 1 लार, थूक 2 वह गाय जो दो बच्चों को एक साथ जन्म दे ।

स्यन्न (भू० क० कृ०) [स्यन्द्+क्त] रिसा हुआ, टपका हुआ, गिरा हुआ ।

स्यम् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्यमति, स्यमयति-ते) 1 शब्द करना, जोर से चिल्लाना, चीखना 2. जाना

3 विचार करना, विमर्श करना, चिंतन करना (केवल इस अर्थ में आ०)।

स्यमन्तकः [स्यम्+अच्+कन्] एक मूल्यवान् मणि (कहते हैं कि यह मणि प्रतिदिन आठ स्वर्ण भार दिया करती थी, तथा सब प्रकार के संकट और अपशकुनों से रक्षा करती थी), अधिक वृत्तांत जानने के लिए दे० 'सत्रा-जित्'।

स्यमि (मी) कः [स्यम्+इकक् ईकक्] 1 बादल 2 बांबी 3 एक प्रकार का वृक्ष 4 समय।

स्यमिका [स्यमिक+टाप्] नील।

स्यात् (अव्य०) [अस् धातु का विधिलिङ् में, प्र० पु० ए० व०] ऐसा हो सकता है, शायद कदाचित्। सम० वादः संभावना की उक्ति संशयवाद (दर्शन० में) वादिन् (पुं०) संशयवादी, स्याद्वाद का अनुयायी।

स्याल० दे० 'श्याल'।

स्यूत (भू० क० कृ०) [सिव्+क्त] 1 सुई से सीया हुआ नत्थी किया हुआ, बुना हुआ (आलं० से भी) चिन्ता सन्ततितन्तुजालनिबिडस्यूतेव लग्ना प्रिया—मा० ५।१० 2 बींधा हुआ —तः बोरा।

स्यूतिः [सिव् भावे क्तिन्] 1 सीना, टाका लगाना 2 सुई का काम 3 थैला 4 वंशावली कुल 5 सतति।

स्यूनः [सिव्+नक्] 1 प्रकाश की किरण 2 सूर्य 3 थैला बोरा।

स्यूमः [सिव्+मक्] प्रकाश-किरण।

स्योनः [=स्यूत, पृषो०] बोरा, थैला।

स्योन (वि०) [=स्यून, पृषो०] सुन्दर, सुखद 2 शुभ मंगलप्रद, —नः 1 प्रकाश की किरण 2 सूर्य 3 बोरा —नम् प्रसन्नता, आनन्द।

स्रंस् (भ्वा० आ० स्रंसते, स्रस्त) 1 गिरना नीचे गिर पड़ना—नास्रसत् करिणां ग्रैवं त्रिपदीच्छेदिनामपि—रघु० ४।४८ गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।३० भट्टि० १४।७२, १५।६१ 2 टूटना, घटना गिर कर टुकड़े टुकड़े होना हाहा देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते देहबन्धः —उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 3 नीचे लटकना 4 जाना—प्रेर० (स्रंसयति-ते) 1 गिराना खिसकाना लुढ़काना, बाधा डालना वातोऽपि नास्रंसयदंशुकानि —रघु० ६।७५ 2 शिथिल करना ढील देना वि खिसकना, ढीला होना, (प्रेर०) 1 गिराना, गिरने देना, —विस्रंसयन्ती नवकर्णिकारम् कु० ३।६२ 2 ढीला करना, शिथिल करना।

स्रंसः [स्रंस्+घञ्] गिरना, खिसकना।

स्रंसनम् [स्रंस्+णिच् ल्युट्] 1 गिरना 2 गिराना, नीचे पटकना।

स्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्रंस्+णिनि] 1 गिरने वाला, खिसकने वाला, लटकने वाला, ढीला होने वाला, मार्ग देने वाला बध्नं स्रंसिनि श्लथहस्तयमिता पर्याकुला मूर्धजा—श० १।२९ 2 निर्भर, लटकता, ढीला लटकने वाला।

स्रंह् (भ्वा० आ० स्रंहते) विश्वास करना, भरोसा करना।

स्रग्विन् (वि०) (स्त्री०—णी) [स्रज्+विनि म० अ० स्रजीयस् उ० अ० स्रजिष्ठ] हार या गजरा पहने हुए—आमुक्ताभरणः स्रग्वी हंसचिह्नदुकूलवान् रघु० १७।२५।

स्रज् (स्त्री०) [सृज्यते सृज+क्विन् नि] गजरा, पुष्पमाला (विशेषतः वह जो मस्तक पर धारण की जाय) स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया श० ७।२४ 2 माला हार। सम० दामन् (स्रग्दामन्) (नपुं०) माला की ग्रंथि या गांठ धर (वि०) मालाधारी गीत० १२ (—रा) एक छन्द का नाम।

स्रज्वा [सृज्+वा नि०] रस्सी डोरी सूत्र।

स्रवृध् (स्त्री०) अपान वायु।

स्रम्भ् (भ्वा० आ० स्रम्भते स्रब्ध) विश्वास करना दे० श्रम्भ वि 1 विश्वस्त होना 2 आश्वस्त होना।

स्रव [स्रु+अप्] 1 चूना रिसना बहना 2 बूंद प्रवाह सरिता विपुलो स्नपयन्ती सा स्तनौ नेत्रजलस्रवैः —राम० 3 फौवारा निर्झर।

स्रवणम् [स्रु+ल्युट्] 1 बहना, चूना, रिसना 2 पसीना 2 मूत्र।

स्रवत् (वि०) (स्त्री० स्रवन्ती) [स्रु+शतृ] बहने वाला रिसने वाला चूने वाला। सम० गर्भा वह स्त्री जिसका गर्भ गिर गया हो 2 दुर्घटना के कारण गिर हुए गर्भ वाली गाय।

स्रवन्ती [स्रवत्+ङीप्] नदी दरिया वार्यम्बिव स्रवन्तीषु रघु० १७।६३।

स्रष्टृ (पुं०) [सृज्+तृच्] 1 बनाने वाला 2 रचने वाला 3 सृष्टिकर्ता विधाता ब्रह्मा का विशेषण—या सृष्टिः स्रष्टुराद्या श० १।१, तत्स्रष्टुरेकान्तरम् —७।२७ 4 शिव का नाम।

स्रस्त (भू० क० कृ०) [स्रंस्+क्त] 1 गिरा हुआ, खिसका हुआ नीचे पड़ा हुआ स्रस्तं शरं चापमपि स्वहस्तात् —कु० ३।५१ कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः प्रतिसायन्न कु० ३।१३, कि० ५।३३, मेघ० ९३ 2 लटका हुआ नीचे लटकता हुआ विषादस्रस्त-सर्वाङ्गी मुद्रा० ४।८, स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात् श० १।३० 3 ढीला किया हुआ 4 च्युत, ढीला पड़ा हुआ 5 लंब, नीचे लटकता हुआ 6 अलग किया हुआ। सम० अङ्ग (वि०) ढीले अंगों वाला 2. मूर्छित, बेहोश।

स्रस्तरः [स्रस्+तरच्, किलाभावलोप] पलंग या सोफा, (विश्राम करने के लिए) बिछौना — शिलातले स्रस्तरमास्तीर्य निषसाद — का०, मनु० २।२०४।

स्राक् (अव्य०) [स्रु+डाक्] फुर्ती से, तेजी से।

स्रावः [स्रु+घञ्] प्रवाह, बहाव, रिसना, बूँद बूँद टपकना।

स्रावक (वि०) (स्त्री० —विका) [स्रु+ण्वुल्] बहाने वाला, उडेलने वाला, रिस कर बहने वाला —कम् काली मिर्च।

स्रिभ् (भ्वा० पर० स्रेभति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्रिम्भ् (भ्वा० पर० स्रिम्भति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्रिव् (दिवा० पर० स्रीव्यति, स्रुत) 1 जाना 2 सूख जाना।

स्रु (भ्वा० पर० स्रवति, स्रुत) 1 बहना, धारा निकलना, चूना, रिसना, बूँद बूँद करके गिरना, टपकना — न हि निम्बात्स्रवेत्क्षौद्रम् — राम० 2 उडेलना, डालना, बहने देना — अम्भोऽशिरं च भूपृष्ठे शोणितं चाप्यसुस्रुवन् — भट्टि० १५।७६, १७।१८ 3 जाना, हिलना-डुलना 4 चूना, खिसक जाना, छीजना, नष्ट होना, कुछ फल न निकलना — सर्वमो ब्रह्म तस्यापि भिन्नभाण्डात्पयो यथा — भाग०, भट्टि० ६।१८, मनु० २।७४ 5 इधर उधर फैलाना, सब दिशाओं में पहुँचाना, प्रकट हो जाना (भेद आदि) प्रेर० (स्रावयति—ते) बहाना, उडेलना, डालना, बखेरना (रक्त आदि) — न गात्रात्स्रावयेदसृक् — मनु० ४।१६९ (उपसर्गों से युक्त हो जाने पर धातु के लगभग वही अर्थ रहते हैं)।

स्रुघ्न (पुं०) एक जनपद या जिले का नाम — स्रुघ्नमभिनिष्क्रामति — सिद्धा० (यह स्थान पाटलिपुत्र से कुछ दूरी पर — कम से कम एक दिन यात्रा पर — स्थित था) तु० — न हि देवदत्तः स्रुघ्ने सन्निधीयमानस्तदहरेव पाटलिपुत्रे सन्निधीयते युगपदनेकत्र वृत्तावस्य प्रसङ्गात् — शारी०।

स्रुघ्नी [स्रुघ्न+अच्+ङीप्] सज्जी खार।

स्रुच् (स्त्री०) [स्रु+क्विप् डिट्, आगमः] लकड़ी का बना एक प्रकार का चमचा जिसके द्वारा यज्ञाग्नि में घी की आहुति दी जाती है, स्रुवा (प्राय: ढाक या खदिर के वृक्ष का बना हुआ) — रघु० ११।२५, मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८३। सम० —प्रणालिका चमचे की नाली।

स्रुत् (वि०) [स्रु+क्विप्, तुक्] (प्राय: समास के अन्त में प्रयुक्त) बहने वाला, रिसने वाला, उडेलने वाला —घर्मेण मध्यामवृतस्रुतेव — कु० १।८, ५, शि० ९।६८।

स्रुतिः (स्त्री०) [स्रु+क्तिन्] 1. बहना, रिसना, धार निकालना, टपकना, चूना — कीटक्षतिस्रुतिनिभिरक्तमिवोद्वमन्तः — मुद्रा० ६।१३, एवं तुषारस्रुतिधौतरक्तम् — कु० १।५, रघु० १६।४४, कि० ५।४४, १६।२, क्षीरस्रुतिसुरभयः (वाताः) — मेघ० १०७ 'रसप्रवहण या स्राव' 2 रसस्रवण, राल 3 धारा।

स्रुवः,—वा [स्रु+क, स्त्रियां टाप् च] 1 यज्ञ का चमचा 2 निर्झर, झरना या प्रणालिका।

स्रेक् (भ्वा० आ०) जाना, गतिशील होना।

स्रै (भ्वा० पर० स्रायति) 1 उबालना 2 पसीना आना — दे० श्रै।

स्रोतम् [स्रु+तन्] धारा, सरिता। दे० स्रोतस्।

स्रोतस् (नपुं०) [स्रु+तसि] 1 (क) सरिता, धारा प्रवाह, जलप्रवाह — पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरिताम् — उत्तर० २।२७, मनु० ३।१६३ (ख) धार, प्रवाहिणी, —नद्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे — रघु० १।७८, स्रोतसेवाह्यमानस्य प्रतीपतरणं हि सत् — विक्रम० २।५ 2 सरिता, नदी, स्रोतसामस्मि जाह्नवी — भग० १०।३१ 3 लहर 4 जल 5 शरीरस्थ पोषण-नलिका 6 ज्ञानेन्द्रिय — निगृह्य सर्वस्रोतांसि — राम० 7 हाथी की सूँड। सम० —**अञ्जनम्** (स्रोतोऽञ्जनम्) सुरमा, —**ईशः** सागर, —**रन्ध्रम्** हाथी की सूँड का छिद्र, नथुना — स्रोतोरन्ध्रध्वनितसुभगं दन्तिभिः पीयमानः — मेघ० ४२, (दे० इस पर मल्लि०) ('स्रोतोरन्ध्र' भी पाठान्तर) —**वहा** नदी — स्रोतोवहा पथि निकामजलामतीत्य जातं सखे प्रणयवान् मृगतृष्णिकायाम् — श० ६।१५, कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी — ६।१६, रघु० ६।५२।

स्रोतस्यः [स्रोतस्+यत्] 1 शिव का नाम 2 चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी [स्रोतस्+मतुप्+(विनि) ङीप्, वत्वम्] नदी।

स्व (सर्व० वि०) [स्वन्+ड] 1 अपना, निजी, (आत्मवाचक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त) —स्वनियोगमशून्यं कुरु — श० ४, प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा — ५।५, (इस अर्थ में प्राय: समास में प्रयुक्त — स्वपुत्र, स्वकलत्र, स्वदृष्ट) 2 अन्तर्जात, प्राकृतिक, अन्तर्हित, विशेष — सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् — मेघ० ८०, श० १।१८, स तस्य स्वो भावः प्रकृतिनियतत्वादकृतकः — उत्तर० ६।१४ 3 अपनी जाति से संबंध रखने वाला, अपनी जाति का —शूद्रैव भार्या शूद्रस्य सा च स्वा च विशः स्मृते — मनु० ३।१३, ९।१०४, —**स्वः** 1 रिश्तेदार, बांधव — पञ्च० २।९६, मनु० २।१०९ 2 आत्मा, —**स्वः,** —**स्वम्** दौलत, सम्पत्ति — जैसा कि 'निःस्व' में। सम० —**अक्षपादः** न्यायदर्शन पद्धति का अनुयायी,

°क्षरम् अपना निजी हस्तलेख, अधिकारः अपना निजी कर्तव्य या राज्य स्वाधिकारात्प्रमत्त मेघ० १, स्वाधिकारभूमी - श० ७, अधिष्ठानम् हठयोग में माने हुए छः चक्रों में से एक, अधीन (वि०) 1. अपने पर आश्रित, आत्मनिर्भर 2 स्वतंत्र 3. अपने बस में 4 अपनी निजी शक्ति में—स्वाधीना वचनीयतापि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलि: मृच्छ० ३।११ °कुशल (वि०) अपनी निजी शक्ति के आधार पर समृद्धिशाली स्वाधीनकुशला सिद्धिमन्त —श० ४, °पतिका, भर्तृका वह पत्नी जिसका अपने पति पर पूरा नियन्त्रण हो, वह स्त्री जिसका पति पत्नी के बस में हो—अथ सा निर्गता बाधा राधा स्वाधीनभर्तृका निजमाह रतिक्लान्त कान्त मण्डनवाञ्छया—गीत०१२, दे० सा० द० ११२, तथा आगे,—अध्यायः 1. मन में पाठ करना, मन मन में इसके जप करना 2 वेदों का पढ़ना, वैदिक पाठ, अनुभूतिः (स्त्री०) आत्म अनुभव 2 आत्मज्ञान स्वानुभूत्येकसाराय नमः शान्ताय तेजसे—भर्तृ० २।१, अन्तम् 1. मन,—शान्ति० ४।५, महावीर ७।१७ 2 कन्दरा, —अर्थः अपना निजी हित, स्वार्थ सर्व स्वार्थ समीहते—शि० २।६५ 2 अपना अर्थ भामि० १।७९ (यहाँ दोनों अर्थ—अभिप्रेत हैं) °अनुमानम् निजी अटकल, आत्मगतात्मक तर्क, अनुमान के दो मुख्य भेदों में से एक, (दूसरा है 'परार्थानुमान') °पण्डित (वि०) 1 अपने निजी कार्यों में चतुर 2. अपना हितसाधन करने में विशेषज्ञ, °पर, °परायण (वि०) अपनी स्वार्थ सिद्धि करने पर तुला हुआ, स्वार्थी, °विघातः अपने उद्देश्य की भग्नाशा, °सिद्धिः (स्त्री०) अपना निजी लक्ष्य पूरा करना, आयत्त (वि०) अपने अधीन, अपने पर आश्रित भर्तृ० २।७ —इच्छा अपनी अभिलाषा, अपनी रुचि, °मृत्युः भीष्म का विशेषण,—उदयः, किसी विशेष स्थान पर किसी स्वर्गीय पिंड या दिव्य चिह्न का उदय होना, उपधिः अचल ग्रह, कम्पनः वायु, हवा, —कर्मिन् (वि०) स्वार्थी, कार्यम् अपना निजी कार्य या स्वार्थ, -गतम् (अव्य०) मन में अपने आपको, एक ओर (नाट्यभाषा में), छन्द (वि०) 1. अपनी इच्छा रखने वाला, अनियंत्रित, स्वेच्छाचारी 2. मनमौजी (- दः) अपनी निजी इच्छा, छांट कल्पना या मर्जी, स्वतंत्रता, (न्दम्) (अव्य०) अपनी इच्छा या मर्जी के अनुसार, स्वेच्छाचारिता के साथ, स्वेच्छा से—स्वच्छन्दं दलदरविन्द ते मरन्दं विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दा:—भामि० १।५. ज (वि०) आत्मजात, (—जः) 1. पुत्र, बाल 2. स्वेद, पसीना, (—जम्) रुधिर, —जनः 1. बंधु, रिश्तेदार—सः प्रत्यादेशात् स्वजनमनुगन्तुं व्यवसिता श० ६।८, पंच० १।५ 2 अपने निजी पुरुष, बंधुबांधव, अपनी गृहस्थी, तन्त्र (वि०) आत्माश्रित, अनियंत्रित, आत्मनिर्भर, स्वेच्छायुक्त, (न्त्रः) अन्धा पुरुष,- देशः अपना देश, जन्मभूमि, °जः °बन्धुः अपने देश का आदमी, धर्मः 1 अपना धर्म 2 अपना निजी कर्तव्य मनु० १।८८ —९१ 3 विशेषता, अपनी निजी संपत्ति, -पक्षः अपना निजी दल, परमण्डलम् अपना और शत्रु का देश, प्रकाश (वि०) 1 स्वतः स्पष्ट 2 स्वतः चमकदार, —प्रयोगात् (अव्य०) अपने प्रयत्नों के द्वारा, —बाहुः 1 अपना निजी योद्धा 2 शरीर रक्षक, भाव: 1 अपनी स्थिति 2 अन्तर्हित या मूलगुण, प्राकृतिक संविधान, अन्तर्जात या विशिष्ट स्वभाव, प्रकृति या स्वभाव, जैसा कि स्वभावो दुरतिक्रम: में, इसी प्रकार कुटिल°, शुद्ध°, मृदु°- चपल° कठोर° आदि, °उक्ति. (स्त्री०) 1 स्वतः स्फूर्त प्रकटन 2 (अलं० में) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का यथावत् या बिल्कुल मिलता-जुलता वर्णन होता है स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादे स्वक्रियारूपवर्णनम् काव्य० १०, या, नाना:- वस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती—काव्या० २।८ एक सिद्धान्त (यह विश्व, मूलतत्त्वों की अपने अन्तर्जात गुणों के अनुसार, प्राकृतिक तथा आवश्यक क्रिया का परिणाम है और उसी के द्वारा इसकी स्थिति है, इसमें परमात्मा की कोई निमित्तकारणता नहीं), °सिद्ध: (वि०) प्राकृतिक, स्वतःस्फूर्त अन्तर्जात,—भूः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, योनि (वि०) मातृपक्ष का संबंधी (पु०, स्त्री०) उत्पत्तिस्थान, जो स्वयं अपना उत्पत्तिस्थान हो, (स्त्री०) कोई बहन या निकटसंबंध वाली कोई स्त्री, रसः 1 प्राकृतिक स्वाद 2 किसी का अपना (अमिश्रित) रस या काव्यगत रस, आत्मानंद, राज् (पु०) परमात्मा, -रूप (वि०) 1 समान, समरूप 2 सुन्दर, सुहावना, प्रिय 3 विद्वान्, समझदार, (-पम्) 1 अपनी शक्ल या सूरत, प्राकृतिक स्थिति या दशा 2 स्वाभाविक चरित्र या रूप, यथार्थ विधान 3 प्रकृति 4 विशिष्ट उद्देश्य 5 प्रकार, किस्म, जाति, °असिद्धिः (स्त्री०) तीन प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, वश (वि०) 1 स्वनियंत्रित 2 स्वतन्त्र, वासिनी विवाहित या अविवाहित स्त्री जो वयस्क होने पर भी अपने पिता के घर ही रहती रहे, —वृत्ति (वि०) स्वावलम्बी, अपने प्रयत्नों से ही जीवनयापन करने वाला, संपूर्ण आत्मरक्षित, स्वरक्षित,—(त्तिः) अपने विचारों पर डटे रहना 2. आत्मस्थिरता 3. आत्मनिर्भरता,—स्थ (वि०) 1. अपने पर डटे रहना 2. स्वाश्रित, स्वावलम्बी, विश्वस्त, दृढ़,

पक्का 3 स्वतन्त्र 4 अच्छा करने वाला, स्वस्थ, नीरोग, आराम देना, सुन्दर स्वस्थ एवास्मि —मा॰ ४, स्वस्थे को वा न पण्डित —पञ्च॰ १।१२७, दे॰ 'अस्वस्थ' भी 5 सन्तुष्ट, प्रसन्न, (—स्थम्) (अव्य॰) आराम से, सुख पूर्वक, शान्ति से, —स्थानम् अपनी जन्मभूमि, अपना निजी आवास स्थल —नक्र स्वस्थान-मासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति पञ्च॰ ३।४६, —हस्त अपना निजी हाथ या लिखाई आत्मलेख दे॰ 'हस्त' के अन्तर्गत, —हस्तिका कुल्हाड़ी —हित (वि॰) अपने लिए हितकर, (—तम्) अपना निजी लाभ, अपना कल्याण।

स्वक (वि) [स्व+अकच्] अपना निजी, अपना।

स्वकीय (वि॰) [स्वस्य इदम्—स्व+छ, कुक् आगम] 1 अपना निजी, अपना 2. अपने परिवार का।

स्वङ्ग् (भ्वा॰ पर॰ स्वङ्गति) जाना, हिलना-जुलना।

स्वङ्गः [स्वङ्ग्+घञ्] आलिंगन।

स्वच्छ (वि॰) [सुष्ठु अच्छ —प्रा॰ स॰] 1 अत्यन्त साफ, पारदर्शी, विशुद्ध, उज्ज्वल, अस्वपारभासी स्वच्छस्फटिक, स्वच्छ मुक्ताफलम्—आदि 2 सफेद 3 सुन्दर 4 स्वस्थ, —च्छः स्फटिक,—च्छम् मोती। सम॰ —पत्रम् तालक, सेलखड़ी, —वालुकम् विशुद्ध खड़िया, —मणि स्फटिक।

स्वञ्ज् (भ्वा॰ आ॰ स्वजते इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्वञ्ज् के स् का ष् हो जाता है) 1 आलिंगन करना कौली भरना—कयाचित्परिचुम्ब्य चिराय सस्वजे—भामि॰ २।१७८, पर्यश्रुरस्वजत मूर्ध्नि चोप-जघ्रौ—रघु॰ १३।७० 2 घेरना मरोड़ना, परि— आलिंगन करना वत्से परिष्वजस्व मां सखीजन च श॰ ४, भामि॰ २।१७८।

स्वद् (चुरा॰ उभ॰ स्व (स्वा) दयति—ते) 1 जाना 2 समाप्त करना।

स्वतस् (अव्य॰) [स्व+तसिल्] अपने आप स्वयम् (निजवाचक के अर्थ में प्रयुक्त)।

स्वत्वम् [स्व+त्व] 1 अपनी विद्यमानता 2 स्वामित्व, स्वामित्व के अधिकार।

स्वद् I (भ्वा॰ आ॰ स्वदते स्वदित) 1 पसन्द किया जाना, मधुर होना, स्वाद में रुचिकर होना (सम्प्र॰ के साथ)—अपूपस्तस्मै स्वदतेऽपूप काशिका, अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा —नै॰ ३।९३, सस्वद मुखमुर प्रमदाभ्य शि॰ १० २३ 2. स्वाद लेना, रस लेना, खाना 3 प्रसन्न करना 4 मधुर करना।

II (चुरा॰ उभ॰ या प्रेर॰ स्वादयति—ते) 1 चखाना, खाना 2 रस लेना 3 मधुर करना, आ— 1 चखना, खाना (अल॰ से भी)—पपावनास्वादितपूर्वमा-शुग -रघु॰ ३।५४ 2 उपभोग करना —मेघ॰ ८७।

स्वदनम् [स्वद्+ल्युट्] चखना, खाना।

स्वदित (भू॰ क॰ कृ॰) [स्वद्+क्त] चखा गया, खाया गया, —तम् उद्गार विशेष जो श्राद्ध में पितरों को पिण्डदान करने के पश्चात् उच्चारित होता है और जिसका अर्थ है भगवान् करे, यह पदार्थ आपको अच्छा लगे, स्वादिष्ट लगे'—मनु॰ ३।२५१, २५४।

स्वधा [स्वद्+आ, पृषो॰ दस्य धः] 1 अपना निजी स्वभाव या निश्चय, स्वत स्फूर्तता 2 मृत पूर्वपुरुषों —पितरों— को प्रस्तुत की गई हवि की आहुति —स्वधासंग्रहतत्पराः रघु॰ १।६६, मनु॰ ९।१४२, याज्ञ॰ १।१०२ 3 मृत पितरों को प्रस्तुत किया भोजन 4 अन्न या आहुति 5 माया या सांसारिक भ्रम अव्य॰ पितरों के सम्मुख आहुति प्रस्तुत करते समय उच्चारित उद्गार, (सम्प्र॰ के साथ) पितृभ्य स्वधा सिद्धा॰। सम॰ कर (वि॰) पितरों के निमित्त आहुति देने वाला, कारः 1 'स्वधा' नाम का शब्द —पूतं हि तद्गृहं यत्र स्वधाकारः प्रवर्तते, प्रियः अग्नि, आम, —भुज् (पु॰) 1 मृत या देवत्व को प्राप्त पूर्वपुरुष 2 देवता, देव।

स्वधितिः (पु॰, स्त्री॰) स्वधिती [स्वधा+क्तिच्, स्वधा ङीप् च] कुल्हाड़ी।

स्वन् (भ्वा॰ पर॰ स्वनति) 1 शब्द करना कोलाहल करना,—घूर्णा पेराश्च सस्वन् —भट्टि॰ १४।३, वेणव कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धता अमर॰ 2. गाना, प्रेर॰ (स्वनयति-ते) 1 गुंजाना 2 शब्द करना 3 अलंकृत करना (इस अर्थ में 'स्वानयति')।

स्वन [स्वन्+अप्] शब्द, कोलाहल शिवाघोरस्वनां पश्चाद् बुबुधे विकृतेति ताम्—रघु॰ १२।३९ जल स्वन आदि। सम॰ उत्साह गैंडा।

स्वनिः [स्वन्+इन्] ध्वनि कोलाहल।

स्वनिक (वि॰) [स्वन+ठक्] ध्वनि करने वाला—जैसा कि 'पाणिस्वनिक' (जो अपने हाथों से तालियाँ बजाता है) में।

स्वनित (भू॰ क॰ कृ॰) [स्वन्+क्त] ध्वनित, शब्दाय मान, कोलाहल करने वाला, —तम् बिजली का शोर, बिजली की गड़गड़ाहट, तु॰ स्तनित।

स्वप् (अदा॰ पर॰ स्वपिति, सुप्त भाववा॰ सुप्यते, इच्छा॰ सुषुप्सति) (कभी-कभी भ्वा॰ उभ॰ स्वपति-ते) सोना, नींद आ जाना, सोने जाना—प्रसजातकिण-स्कन्धः सुख स्वपिति गौर्गलि —काव्य॰ १०, हल स्वपिति केशव भर्तृ॰ २।७६ 2 तकिये का सहारा लेना, विश्राम करना, लेटना, आराम करना 3 मस्तीम होना—भामि॰ ४।१९, प्रेर॰ (स्वापयति-ते) सुलाना

सोने के लिए थपथपाना, अव—, नि,—प्र,—सम् सोना, लेटना—प्रसुप्तलक्ष्मण: भा० ७, कु० २।४२, रघु० ११।४।

स्वप्नः [स्वप्+नङ्] 1. सोना, नींद अकाले बोधितो भ्राता प्रियस्वप्नो वृथा भवान्—रघु० १२।८१, ७।६१, १२।७० 2. स्वप्न, ख्वाब, सुपना आना —स्वप्नेन्द्रजालसदृश: खलु जीवलोक:—शान्ति० २।३, स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श० ६।९, रघु० १०।६० 3. शिथिलता, आलस्य, तन्द्रा। सम०—अवस्था सुपने की दशा, —उपम (वि०) 1. सुपने से मिलता जुलता 2. अवास्तविक या (भ्रमात्मक स्वप्न की भांति) —कर,—कृत् (वि०) निद्रा लाने वाला, निद्राजनक, आस्वापक, —गृहम्,—निकेतनम् सोने का कमरा, शयनकक्ष,—दोषः स्वप्नावस्था में होने वाला शुक्रपात, —धीगम्य (वि०) निद्रा जैसी अवस्था में केवल बुद्धि द्वारा अनुभूत होने वाला—मनु० १२।१२२, —प्रपञ्चः निद्रावस्था में भ्रम, स्वप्न में प्रकट होने वाला संसार, —विचारः स्वप्नों की व्याख्या, —शील (वि०) जिसे नींद आ रही हो, निद्रालु, ऊंघने वाला, —सृष्टिः (स्त्री०) स्वप्नों की रचना, निद्रावस्था में भ्रम।

स्वप्नज् (वि०) [स्वप्+नजिङ्] निद्रालु, सोने वाला, ऊंघने वाला।

स्वयम् (अव्य०) [सु+अय्+अम्] 1. आप, अपने आप (निजवाचकता के रूप में प्रयुक्त तथा प्रत्येक पुरुष में व्यवहार्य यथा मैं स्वयं, तुम स्वयं, वह स्वयं—आदि, कभी कभी बल देने के लिए और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त) विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्—कु० २।५५ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्—सुभा०, रघु० ११।७, २।५६, मनु० ५।३९ 2. आत्मस्फूर्त अपने आप, अनायास, बिना किसी कष्ट या चेष्टा के, स्वयमेवोत्पद्यन्त एवंविधा: कुलपांसवो निःस्नेहाः पशव —का०। सम०—अर्जित (वि०) आत्मार्जित,—उक्तिः (स्त्री०) 1. ऐच्छिक प्रकथन 2. सूचना, अभिसाक्ष्य (विधि में),—ग्रहः बलात् ग्रहण कर लेना, —ग्राह (वि०) ऐच्छिक, स्वयं चुन लेने वाला, (—हः) स्वयं चुन लेना, आत्मचुनाव—कु० २।७, मा० ६।७, —जात (वि०) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो,—दत्त (वि०) अपने आप दिया हुआ, (—त्तः) वह लड़का जिसने अपने आपको दत्तक पुत्र बनने के लिए दत्तकग्राही माता पिता को दे दिया, हिन्दू धर्म शास्त्र में वर्णित बारह पुत्रों में से एक,—भूः ब्रह्मा का नाम —शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः भर्तृ० १।१,—भुवः 1. प्रथम मनु 2. ब्रह्मा का नाम 3. शिव का नाम,—भू (वि०) आप ही आप उत्पन्न होने वाला, (—भूः) 1. ब्रह्मा का नाम 2. विष्णु का नाम 3. शिव का नाम 4. मूर्त 'काल' का नाम 5. कामदेव का नाम, —वरः अपनी छांट, (दुलहिन द्वारा अपने वर का) अपने आप चुनाव, इच्छानुरूप विवाह,—वरा वह कन्या जो अपने पति का आप चुनाव करती है।

स्वर् (चुरा० उभ० स्वरयति-ते) दोष निकालना, कलंक लगाना, बुरा भला कहना, निंदा करना।

स्वर् (अव्य०) [स्वृ+विच्] 1. स्वर्ग, वैकुण्ठ जैसा कि 'स्वर्लोक, स्वर्वेश्या में 2. इन्द्र का स्वर्ग और मृत्यु के पश्चात् पुण्यात्माओं का अस्थायी आवास 3. आकाश, अन्तरिक्ष 4. सूर्य और ध्रुवतारे के बीच का रिक्त स्थान 5. तीनों व्याहृतियों में तीसरी जिसका उच्चारण प्रत्येक ब्राह्मण अपनी दैनिक प्रार्थना में करता है, दे० 'व्याहृति'। सम०—आपगा,—गंगा 1. गंगा की स्वर्ग में बहने वाली धारा, मंदाकिनी 2. आकाशगंगा, छायापथ,—गतिः (स्त्री०) —गमनम् 1. स्वर्ग में जाना, भावी आनंद 2. मृत्यु,—तरुः (स्वस्तरुः) स्वर्ग का एक वृक्ष,—दृश् (पुं०) 1. इन्द्र का विशेषण 2. अग्नि का विशेषण 3. सोम का विशेषण,—नदी (स्वर्णदी) आकाशगंगा,—मणिः एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर,—भानुः राहु का नाम —नूनमेऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्त चिरेण यत्। हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम् शि० २।४९, —मणिः सूर्य, —मध्यम् आकाश का मध्य बिन्दु, ऊर्ध्वबिंदु,—लोकः दिव्य जगत्, स्वर्गलोक, —वधूः (स्त्री०) दिव्य कन्या, अप्सरा, —वापी गंगा,—वेश्या स्वर्ग की गणिका, दिव्य परी, अप्सरा, —वैद्य (पुं०, द्वि० व०) दो अश्विनीकुमारों का विशेषण, —षा 1. सोम का विशेषण 2. इन्द्र के वज्र का विशेषण, —सिन्धुः = स्वर्गंगा।

स्वरः [स्वर्+अच्, स्वृ+अप् वा] 1. शब्द, कोलाहल 2. आवाज स्वरेण तस्याममृतस्रुतेव प्रजल्पितायामभिजातवाचि—कु० १।४५ 3. संगीत के सुर, ध्वनि, लय (सुर सात हैं निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः। पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः —अमर०) 4. सात की संख्या 5. स्वर अक्षर 6. स्वराघात (यह गिनती में तीन हैं— उदात्त, अनुदात्त और स्वरित) 7. श्वासवायु 8. खर्राटे भरना। सम०—अंशः आधा या चौथाई स्वर (संगीत० में), —अन्तरम् दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अवकाश, क्रमभंग,—अन्त (वि०) जिसके बाद स्वर हो, —उपध (वि०) जिसके पूर्व स्वर हो, —ग्रामः सरगम, स्वरसप्तक, स्वरों का समूह,—बद्ध (वि०) ताल स्वर में बंधा हुआ गाना, —भक्तिः (स्त्री०) र् और ल् के उच्चारण में अन्तर्निविष्ट स्वर की ध्वनि जब इन अक्षरों के पश्चात् कोई ऊष्मवर्ण या कोई अकेला

व्यक्त हो (उदा० वर्णे का उच्चारण 'वरिय' है), —भङ्गः 1 उच्चारण का अस्पष्टता, टूटा हुआ उच्चारण, आवाज का बैठ जाना, —मण्डलिका एक प्रकार की वीणा, —मालिका बासुरी, मुरली, —शून्य (वि०) संगीतसुरों से रहित, बेसुरा, संगीत के ताल सुरों से हीन, —संयोगः 1 स्वरों का मिल जाना 2 ध्वनि या स्वरों का मेल —अर्थात् आवाज—अन्य एवंग स्वरसयोग - मृच्छ० १।३, उत्तर० ३, पण्डित कौशिकया इव स्वरसंयोग श्रूयते मालवि० ५, —संक्रमः 1 सुरों के उतार-चढ़ाव का क्रम न तस्य स्वरसंक्रम मृदुगिरः श्लिष्ट च तन्त्रीस्वनम् मृच्छ० ३।५ 2. सरगम, —सन्धि स्वरों का मेल, —साम्न् (पु०, ब० व०) यज्ञीय सत्र में विशेष दिन के [illegible]।

स्वरवत् (वि०) [स्वर + मतुप्] 1 ध्वनियुक्त, निनादी 2 सुरीला 3 स्वरविषयक - स्वराघात से युक्त सस्वर।

स्वरित (वि०) [स्वरो जातोऽस्य इतच्] 1 ध्वनियुक्त 2 ध्वनित, स्वर के रूप में बोला गया 3 उच्चरित 4 स्वरित उच्चारणचिह्न से युक्त —सः उदात्त (ऊँचे) और अनुदात्त (नीचे) के बीच का स्वर समाहार स्वरितः —पा० १।२।३१ दे० इस पर सिद्धा०।

स्वरुः [स्वृ + उ] 1 धूप 2 यज्ञीयस्तम्भ का एक अंश 3 वज्र 4 बाण 5 बाण।

स्वरुस् (पु०) [स्वृ + उस्] वज्र।

स्वर्गः [स्वरितं गीयते गै + क, सु + ऋज् + घञ्] बैकुंठ, इन्द्र का स्वर्ग, अहिरन अहो स्वर्गादधिकतर निर्वृतिस्थानम्—श० ७। सम०—आपगा स्वर्गीय गंगा, —ओकस् (पु०) सुर देव, —गिरिः स्वर्गीय पहाड़, सुमेरु, —द, —प्रद (वि०) स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला,—द्वारम् स्वर्ग का दरवाजा, बैकुंठ का दरवाजा स्वर्ग में प्रवेश स्वर्गद्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपि नोपार्जितः —भर्तृ० ३।१०, —पतिः, —भर्तृ (पु०) इन्द्र, —लोकः 1 दिव्य प्रदेश 2. बैकुंठ,—वधू., —स्त्री (स्त्री०) दिव्य बाला, स्वर्ग की परी, अप्सरा —स्वर्गस्त्रीणां परिष्वङ्ग कथं मर्त्येन लभ्यते,—साधनम् स्वर्ग प्राप्त करने का उपाय।

स्वर्गिन् (पु०) [स्वर्गोऽस्त्यस्य भोग्यत्वेन इति] 1 सुर, देव, अमर, त्वमपि विततयज्ञः स्वर्गिणः प्रीणयालम् श० ७।३४, वेणी० ३० 2 मृतक, मरा हुआ पुरुष।

स्वर्गीय, स्वर्ग्य (वि०) [स्वर्ग + छ, यत् वा] 1. स्वर्ग का, दिव्य, दैवी 2. स्वर्ग को ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला मनु० ४।१३, ५।४८।

स्वर्णम् [सुष्ठु वर्णो वर्णो यस्य] 1 सोना 2 सोने का सिक्का। सम० —अरिः गंधक,—कणः, —कणिका सोने के दाने, —काय (वि०) सुनहरी शरीर वाला, (—यः) गरुड का नाम, —कारः सुनार, —गैरिकम् गेरु, लाल खड़िया —चूडः 1 नीलकंठ 2 मुर्गा,—जम् रांगा, —दीधितिः अग्नि —पक्षः गरुड, —पाठकः सुहागा, —पुष्पः चम्पक वृक्ष, —बंधः सोना गिरवी रखना, —भृङ्गारः स्वर्णपात्र —माक्षिकम् सोनामक्खी नाम का एक खनिज पदार्थ —रेखा रेखा सोने की लकीर, —वणिज् (पु०) 1 सोने का व्यापारी 2 सर्राफ, —वर्णा हल्दी।

स्वर्द् (भ्वा० आ० स्वर्दते) चखना, स्वाद लेना।

स्वल् (भ्वा० पर० स्वलति) जाना, हिलना-जुलना।

स्वल्प (वि०) [सुष्ठु अल्प प्रा० स०, म० अ० स्वल्पीयस् तथा उ० अ० स्वल्पिष्ठ] 1 बहुत छोटा या थोड़ा सूक्ष्म निरर्थक 2 बहुत कम। सम०—आहारः (वि०) बहुत कम खाने वाला, संयमी मिताहारी —कङ्कः चील का एक भेद —बल (वि०) अत्यंत दुर्बल या कमज़ोर —विषयः 1 नगण्य बात 2 छोटा भाग —व्ययः अत्यन्त कम खर्च दरिद्रता,—व्रीड (वि०) बहुत कम लज्जा वाला बेशर्म निर्लज्ज, —शरीर (वि०) बहुत छोटे कद का ठिगना।

स्वल्पक (वि०) [स्वल्प + कन्] बहुत थोड़ा, बहुत छोटा बहुत कम।

स्वल्पीयस् (वि०) [स्वल्प + ईयसुन् 'स्वल्प' की म० अ०] बहुत कम अपेक्षाकृत छोटा अपेक्षाकृत सूक्ष्म।

स्वल्पिष्ठ (वि०) [स्वल्प + इष्ठन् 'स्वल्प' की उ० अ०] अत्यन्त कम सबसे छोटा अत्यन्त सूक्ष्म।

स्वशुरः [= श्वशुर] अपने पति या पत्नी का पिता, श्वसुर तु० 'श्वशुर'।

स्वसृ (स्त्री०) [सु + अस् + ऋन्] बहन भगिनी —स्वसारमादाय विदर्भनाथ पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव रघु० ७।१,२०।

स्वसृत् (वि०) [स्व + सृ + क्विप्] अपनी इच्छानुसार जाने या चलने-फिरने वाला।

स्वस्क् (भ्वा० आ० स्वस्कते) दे० ष्वक्'।

स्वस्ति (अव्य०) [सु + अस् + क्तिच् वा अस्तीति विभक्तिरूपकम् अव्ययम्, प्रा० स०] अव्यय, इसका अर्थ है 'क्षेम, कल्याण हो' आशीर्वाद, जय जयकार, जाते समय की नमस्ते (सम्प्र० के साथ) स्वस्ति भवते श० २, स्वस्त्यस्तु ते रघु० ५।१७ (प्राय अलंकारक्रम में प्रयुक्त)। सम० —अयनम् 1 समृद्धि के दिलाने वाला उपाय 2 मन्त्र पाठ या प्रायश्चित्त द्वारा पाप को हटाना 3 दान स्वीकार करने के बाद ब्राह्मण का धन्यवाद करना प्रास्थानिक स्वस्त्ययन प्रयुज्य —रघु० २।७०, —कः,— भावः शिव का विशे-

वचन, -सूचकः 1 नट 2. ब्राह्मण 3 बन्दी, स्तुति पाठक, —वाचनम्, -वाचनकम्, वाचनिकम् 1 यज्ञ या कोई मांगलिक कार्य आरम्भ करते समय किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य 2. फूलों द्वारा आशीर्वाद या बधाई देने का विशेष कर्म, वाच्यम् बधाई, आशीर्वाद।

स्वस्तिकः [स्वस्ति शुभाय हितं क] 1 एक मंगल चिह्न जो किसी शरीर या पदार्थ पर बनाया जाता है (卐) 2 कोई मंगलद्रव्य 3. चार मार्गों का मिलना 4 भुजाओं को व्यत्यस्त क्रम से छाती पर रखना जिससे कि एक व्यत्यस्त (×) चिह्न बने स्तन-विनिहितहस्तस्वस्तिकाभिर्वधूभिः मा० ४।१०, शि० १०।४३ 5 एक विशेष प्रकार का महल 6. चौराहे से बना हुआ एक त्रिभुजाकार चिह्न 7 एक तरह का पिष्टक 8 विषयी, व्यभिचारी 9 लहसुन, कः, -कम् 1. एक विशेष रूप का मन्दिर या भवन जिसके सामने चबूतरा बना हो 2. एक योगासन।

स्वस्रीयः, स्वस्रेयः [स्वसृ+छ, ढक् वा] भानजा, बहन का पुत्र।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी [स्वस्रीय+टाप्, स्वस्रेय+ङीप्] भानजी, बहन की पुत्री।

स्वागतम् [सु+आ+गम्+क्त] शुभागमन, सुखद अगवानी (मुख्यतः सम्ब० में रक्खे हुए व्यक्ति को अभिवादन करने में प्रयुक्त) स्वागतं देव्यै —नागानं० १, (तस्मै) प्रीत प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार —मेघ० ४, स्वागत स्वानधीकारान् प्रभावैरवलम्ब्य वः। युगपद् युगबाहुभ्यः प्राप्तेभ्यः प्राज्यविक्रमाः —कु० २।१८।

स्वाडि्गकः [स्वाङ्ग+ठक्] ढोल बजाने वाला।

स्वाच्छन्द्यम् [स्वच्छन्दस्य भावः ष्यञ्] अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की शक्ति, स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता —कन्याप्रदानं स्वाच्छन्द्यादासुरो धर्म उच्यते मनु० ३।३१ (स्वाच्छन्द्येन, स्वाच्छन्द्यतः जानबूझ कर, स्वेच्छा से)।

स्वातन्त्र्यम् [स्वतन्त्र+ष्यञ्] इच्छाशक्ति की स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, —न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति मनु० ९।३, न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रियाः याज्ञ० १।८५।

स्वातिः,—ती (स्त्री०) [स्व+अत्+इन्, पक्षे ङीप्] 1. सूर्य की एक पत्नी 2. तलवार 3 शुभ नक्षत्रपुंज 4. पन्द्रहवां नक्षत्र जो शुभ माना गया है स्वात्यां सागरशुक्तिसम्पुटगतं सन्मौक्तिकं जायते—भर्तृ० २।६७। सम० योगः स्वाती का (चन्द्रमा के साथ) योग।

स्वाद् दे० 'स्वद्'।

स्वादः, स्वादनम् [स्वद् (स्वाद्)+घञ्, ल्युट् वा] 1 मजा, रस 2 चखना, खाना, पीना 3 पसन्द करना, मजे लेना, उपभोग करना 4 मधुर करना।

स्वादिमन् (पुं०) [स्वाद+इमनिच्] सुस्वादुता, माधुर्य।

स्वादिष्ठ (वि०) [स्वादु+इष्ठन्, 'स्वादु' की उ० अ०] अत्यन्त मधुर, सबसे मीठा कि स्वादिष्ठं जगत्यस्मिन् सता सद्भिः समागम'।

स्वादीयस् (वि०) [स्वादु+ईयसुन्, 'स्वादु' की म० अ०] अपेक्षाकृत अधिक मीठा, बहुत मधुर—काव्यामृतरसा-स्वाद स्वादीयानमृतादपि।

स्वादु (वि०) (स्त्री०—दु,-द्वी) [स्वद्+उण्, म० अ० स्वादीयस्, उ० अ० स्वादिष्ठ] 1 मधुर, सुहावना, चखने में अच्छा, जायकेदार, मजेदार, रुचिकर, मीठा —तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि —भर्तृ० ३।९२, मेघ० २४ 2 सुखद, रुचिकर, सुन्दर, प्रिय, मनोहर (पु०) मधुररस, स्वाद की मिठास, मजा 2 शीरा, राब, (नपुं०) माधुर्य, मजा, रस —कवि करोति काव्यानि स्वादु जानाति पण्डित सुभा०,—दुः (स्त्री०) अंगूर। सम० अन्नम् मीठा या चुना हुआ भोजन स्वादिष्ट खाद्य, पक्वान्न, —अम्लः अनार का पेड़ —खण्डः 1. किसी मीठी चीज का टुकड़ा 2 गुड़, राब,—फलम् बेर, बदर, —मूलम् गाजर, —रसा 1 द्राक्षा 2 शतावरी पौधा 3 काकोली मूल 4 मदिरा 5 अंगूर, —शुद्धम् 1 सेंधा नमक 2. समुद्री नमक।

स्वाद्वी [स्वादु+ङीप्] द्राक्षा, अंगूर।

स्वानः [स्वन्+घञ्] ध्वनि, कोलाहल।

स्वापः [स्वप्+घञ्] 1 निद्रा, सोना उत्तर० १।३७ 2 सुपना आना, स्वप्न 3 निद्रालुता, ऊंघना, आलस्य 4 लकवा, कम्पवायु, सुन्न हो जाना 5 किसी एक नाड़ी पर दबाव से अस्थायी या आंशिक असंवेद्यता, जड़ता।

स्वापतेयम् [स्वपतेरागतं ढञ्] धन, दौलत, सम्पत्ति—स्वा-पतेयकृते मर्त्याः किं किं नाम न कुर्वते पंच० २।१५६, शि० १४।९।

स्वाफल्कः दे० 'श्वाफल्क'।

स्वाभाविक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वभावादागत —ठञ्] अपनी निजी प्रकृति से सबद्ध, अन्तर्जात, अन्तर्हित, विशेष, प्राकृतिक स्वाभाविकं विनीतत्वं तेषां विनय-कर्मणा। मुमूर्च्छ सहजं तेजो हविषेव हविर्भुजाम् रघु० १०।७९, ५।६९, कु० ६।७१, का: (पुं०, ब० व०) बौद्धों का एक सम्प्रदाय जो सभी वस्तुओं को प्रकृति के नियमानुसार बनी मानते हैं।

स्वामिता,—त्वम् [स्वामिन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1 मालिक-पना, प्रभुत्व, मिल्कियत के अधिकार 2 एकाधत्ता, प्रभुता।

स्वामिन् (वि०) (स्त्री० —नी)[स्व-अस्त्यर्थे-मिनि, दीर्घः] एकायत्त अधिकारों से युक्त -(पुं०) 1. स्वामी,

मालिक, 2. प्रभु, स्वत्वाधिकारी -रघुस्वामिन सच्चरितं— विक्रमांक० १८।१०७ 3. प्रभु, राजा, नरेश 4. पति 5. गुरु 6. विद्वान् ब्राह्मण, अत्यन्त ऊँचे वर्ग का धार्मिक पुरुष या संन्यासी (इस अर्थ में यह शब्द प्रायः नाम के साथ जुड़ता है) 7. कार्तिकेय का विशेषण 8 विष्णु का विशेषण 9 शिव का विशेषण 10. वात्स्यायन मुनि का विशेषण 11. गरुड़ का विशेषण। सम० उपकारकः घोड़ा, कार्यम् किसी राजा या प्रभु का कार्य, पाल (पुं०, द्वि० व०) (पशुओं का) मालिक और रखवाला— मनु० ८।५, —भावः मालिक या प्रभु की अवस्था, मालिकपना, —वात्सल्यम् पति या स्वामी के लिए स्नेह,—सद्भाव 1. मालिक या प्रभु की सत्ता 2 मालिक या प्रभु की अच्छाई, सेवा 1. स्वामी या मालिक की सेवा, टहल 2. पति का आदर, सम्मान।

स्वाम्यम् [स्वामिन्+ष्यञ्] 1. स्वामित्व, प्रभुता, मालिकपना 2. संपत्ति का अधिकार या हक़ 3 राज्य, सर्वोपरिता, शासन।

स्वायंभुव (वि०) (स्त्री०—वी) [स्वयंभू+अण्] 1. ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला— कु० २।१ 2 ब्रह्मा से उत्पन्न, वः प्रथम मनु का विशेषण (क्योंकि वह ब्रह्मा का पुत्र था)।

स्वारसिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वरस+ठक्] अन्तर्वर्ती रस या माधुर्य से ओतप्रोत (काव्यरस)।

स्वारस्यम् [स्वरस+ष्यञ्] 1. स्वाभाविक रस या श्रेष्ठता का रखने वाला 2 लालित्य, योग्यता।

स्वाराज् (पुं०) [स्व+राज्+क्विप्] इन्द्र का विशेषण।

स्वाराज्यम् [स्वराज+ष्यञ्] 1. स्वर्ग का राज्य, इन्द्र का स्वर्ग 2. स्वप्रकाशमान ब्रह्मा से तादात्म्य।

स्वारोचिषः, स्वारोचिष्(पुं०)[स्वरोचिष अपत्यम्+अण्] द्वितीय मनु का नाम —दे० 'मनु' के अन्तर्गत।

स्वालक्षण्यम् [स्वलक्षण+ष्यञ्] विशेष लक्षण, स्वाभाविक अवस्था, खासियत, मनु ९।१९।

स्वाल्प (वि०) (स्त्री०—ल्पी) [स्वल्प+अण्] 1. थोड़ा, छोटा 2. कुछ, कम, ल्पम् 1. थोड़ापन, छुटपन 2. संख्या का छोटापन।

स्वास्थ्यम् [स्वस्थ+ष्यञ्] 1. आत्मनिर्भरता, स्वाश्रयता 2. साहस, दृढसंकल्पता, दिलेरी, दृढ़ता 3 तन्दुरुस्ती, नीरोगता 4. समृद्धि, कुशलक्षेम, सुखचैन 5 आराम, संतोष, हिम्मत—कार्यं यथा स्वास्थ्यम् श० ४।

स्वाहा [सु+आ+ह्वे+डा] 1. सभी देवताओं को बिना किसी विचार के दी जाने वाली आहुति 2. अग्नि की पत्नी का नाम (अव्य०) देवताओं के उद्देश्य से आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द -इन्द्राय स्वाहा अग्नये स्वाहा। सम०—कारः स्वाहा शब्द का उच्चारण करना—स्वाहास्वधाकारविवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि,—पतिः, —प्रियः अग्नि,—भुज् (पुं०) सुर, देव।

स्विद् (अव्य०) [स्विद्+क्विप्] प्रश्नवाचक या पृच्छापरक निपात, प्रायः 'सन्देह' 'आश्चर्य' को प्रकट करता है, इसका अर्थ है 'क्या' 'हैं' 'ए' 'हा, ओ, हो' की ध्वनि 'क्या ऐसा हो सकता है' आदि; इस अर्थ में तथा अनिश्चयार्थ प्रकट करने के लिए ऐसे प्रश्नवाचक सर्वनाम के साथ जोड़ दिया जाता है कास्विदवगुण्ठनवती ...निपरिस्फुटशरीरलावण्या श० ५।१३, मेघ० १४, कभी कभी यह पृथक् रूप से 'या' और 'अथवा' अर्थ को प्रकट करता है, कभी कभी 'नु' 'उत' और 'वा' के साथ जुड़कर; दे० कि० ८।३५, १२। १५. १३।८, १४।६०, 'आहो' के साथ भी।

स्विद् i (दिवा० पर० स्विद्यति, स्विदित या स्विन्न) स्वेद आना, पसीना आना स्विद्यति कूणति वेल्लति —काव्य० १०, उत्तर० ३।४१, कु० ७।७७, मा० १।३५, स त्वां पश्यति कंपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति गीत० ११।

ii (भ्वा० आ० स्वेदते, स्विन्न या स्वेदित) 1. मालिश किया जाना 2 चिकनाया जाना 3. विक्षुब्ध होना —प्रेर० (स्वेदयति ते) 1. पसीना लाना 3 गरम करना।

स्वीकरणम्, स्वीकारः, स्वीकृतिः [स्व+च्वि+कृ+ल्युट् (घञ्, क्तिन् वा)] 1. लेना, ग्रहण करना 2. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना, हामी, प्रतिज्ञा 1 वाग्दान, पाणिग्रहण, विवाह।

स्वीय (वि०) [स्व+छ] अपना, अपना निजी—लोकालोकविसारितेन निहितं स्वीय विशुद्धम् यशः—सा० द० ९७।

स्वृ (भ्वा० पर० स्वरति, इच्छा० सिस्वरति, सुस्वूर्षति) 1. शब्द करना, सस्वर पाठ करना 2. प्रशंसा करना 3 पीड़ा देना या पीड़ित होना 4 जाना, अभि—, प्र—, शब्द करना सम् , पीड़ा देना (आ०) भट्टि० ९।२८।

स्वॄ (क्र्या० प० स्वृणाति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्वेक् (भ्वा० आ० स्वेकते) जाना।

स्वेदः [स्विद् भावे घञ्] पसीना, पसेउ, धर्मबिंदु —अङ्गुलिस्वेदेन दूष्येरन्नक्षराणि—विक्रम० २। सम० —उदम्,—उदकम्, —जलम् पसीना, श्रमकण,—चूषकः शीतल मंद पवन, ठंडी हवा (पसीना सुखाना),—ज (वि०) ताप या भाप से उत्पन्न होने वाला, पसीने से उत्पन्न होने वाला (जूँ, खटमल आदि जीव)।

स्वैर (वि०) [स्वस्य ईरम् ईर्+अच् वृद्धि.] 1. मनमाना आचरण करने वाला, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, निरंकुश—यद्यपि स्वैरवृत्तिर्जनमिह सुखयति-

नमवेमि- श० ५।११, अभ्याहूर्न स्वैरगतं स तस्या —रघु० २।५ 2 स्वतन्त्र, असकोच, विश्वस्त, जैसा कि 'स्वैरालाप' मुद्रा० ४।८ 3 मन्थर, मृदु मन्द मुद्रा० १।२ 4 सुस्त, मद 5. अपनी मर्जी चलाने वाला, ऐच्छिक, यथाकाम,- रम् स्वच्छंदता, स्वेच्छाचारिता, रम् (अव्य०) 1 इच्छा के अनुसार, मनपसन्द, आराम से सार्धा स्वैरं स्वकीयेषु चेरुर्वेश्म स्विवाद्रिषु—रघु० १७।६४ 2 अपने आप, स्वत 3 धनैं धनैं, नम्रता पूर्वक, मृदुता के साथ उत्तर० ३।२ 4 आहिस्ता से, धीमी आवाज में, अस्पष्ट (विप० स्पष्ट)—पश्चात्स्वैरं गज इति किल व्याहृतं सत्यवाचा —वेणी० ३।९।

स्वैरता,—त्वम् [स्वैर + तल् + टाप्, त्व वा] स्वेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता।

स्वैरिणी [स्वैरिन् + ङीप्] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी याज्ञ० ११६७।

स्वैरिन् (वि०) [स्वेन ईरितुं शीलमस्य— स्व + ईर् + णिनि] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी, अनियन्त्रित, निरंकुश।

स्वैरिन्ध्री दे० 'सैरन्ध्री'।

स्वोरसः (पुं०) तैलीय पदार्थ सिल पर पीसने के बाद उस में लगा हुआ (उस पदार्थ का) अंश या तलछट।

स्वोवशीयम् (नपुं०) आनन्द समृद्धि (विशेषकर भावी जीवन के विषय में)।

ह

(अव्य०) [हा + ड] बलबोधक निपात जो पूर्ववर्ती शब्द पर बल देता है, इसका अर्थ है 'सचमुच' यथार्थ में निश्चय ही आदि, परन्तु कभी कभी इसका उपयोग बिना किसी विशेष अर्थ को प्रकट किये केवल पाद पूर्ति के निमित्त भी किया जाता है, विशेष कर वैदिक साहित्य में —तस्य ह शत जाया बभूवुः, तस्य ह पर्वतनारदौ गृह ऊषतुः आदि—ऐत०, यह कभी कभी संबोधन के लिए भी प्रयुक्त होता है तिरस्कार या उपहास के लिए विरल प्रयोग —(पुं०) 1 शिव का एक रूप 2 जल 3 आकाश 4 स्वर्ग।

हंसः [हस् + अच्, पृषो० वर्णागम , भवेद्वर्णागमाद् हंस. —सिद्धा०] 1 राजहंस, मराल, मुर्गाबी, कारण्ड—हंसाः सप्रति पाण्डवा इव वनादज्ञातचर्या गताः मृच्छ०५।६ न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा—सुभा०, रघु० ३।१०, ५।१२, १७।२५ (इस पक्षी का वर्णन जैसा कि संस्कृत के कवियों ने किया है, अधिकतर काव्यात्मक है, उसे ब्रह्मा का वाहन बनाया जाता है, बरसात के आरम्भ में उसे मानसरोवर की ओर उड़ता हुआ बताया जाता है तु० 'मानस'। एक सामान्य कविसमय के अनुसार हंस को दूध और पानी को पृथक्-पृथक् करने वाला विशेष शक्ति सपन्न पक्षी माना जाता है उदा० सार ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् पंच० 1, हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यप श० ६।२७, नीरक्षीरविवेके हंसालस्य त्वमेव तनुषे चेत्। विश्वस्मिन्नधुनान्य कुलव्रतं पालयिष्यति क भामि० १।१३, दे० भर्तृ० २।१८ भी 2 परमात्मा, ब्रह्म 3 आत्मा, जीवात्मा 4 प्राण वायुओं में से एक 5 सूर्य 6. शिव 7 विष्णु 8 कामदेव 9 राजा जो महत्त्वाकांक्षी न हो 10 विशेष सप्रदाय का सन्यासी 11 दीक्षागुरु 12 ईर्ष्या, द्वेष से हीन व्यक्ति 13 पर्वत। सम० —अधिरूढा. स्त्री० अधिरूढा सरस्वती का विशेषण, अभिख्यम चाँदी काला हंसिनी, —कीलकः एक प्रकार का रतिबन्ध,—गति (वि०) हंस जैसी चाल चलने वाला, राजसी ढग से इतरा कर चलने वाला —गद्गदा मधुरभाषिणी स्त्री, —गामिनी 1 हंस की सी मुन्दर गति वाली स्त्री मनु० ३।१० 2 ब्रह्माणी —गुह्यः, —तूलम् हंस के मुलायम पर —दाहनम् अगर की लकडी,—नादः हंस का कलरव, —नादिनी मधुरभाषिणी स्त्रियों का भेद (पतली कमर, बडे नितंब, गज की चाल और कोयल के स्वर वाली) सुदर स्त्री गजेन्द्रगमना तन्वी कोकिलालापसंयुता, नितंबे गर्विणी या स्यात्सा स्मृता हंसनादिनी,—माला हंसों की पंक्ति - कु० १।३०, —युवन् (पुं०) जवान हंस, —रथः, —वाहनः ब्रह्मा के विशेषण,—राजः हंसों का राजा, बड़ा हंस, —लोमशकम्, कासीस, —लोहकम् पीतल, —श्रेणी हंसों की पंक्ति।

हंसकः [हंस + कन्, हस + के + क वा] 1 कारंडव, मराल 2 पैरों का आभूषण, नूपुर, पादजोष सरित इव सविभ्रमप्रपातप्रनदितहंसकभूषणा विरेजु.—शि० ७। २१, (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' में भी प्रयुक्त हुआ है, दूसरे अर्थों के लिए देखो ऊ० 'हस')।

हंसिका, हंसी [हं + कन् + टाप्, हसयम्, हस + ङीप्] हंसनी, मादा हंस।

हंहो (अव्य०) [हम् इत्यव्यक्तं जहाति—हम् + हा + डो] संबोधनात्मक अव्यय जो आवाज देने में प्रयुक्त होता

है जैसे अंग्रेजी का 'हल्लो' (Hallo) शब्द — हहो चिन्मयचित्तचन्द्रमणय: संवर्धयध्वं रसान् —चन्द्रा० १।२ 2. तिरस्कार एवं अभियाचनामूलक अव्यय 3. प्रश्न वाचक अव्यय (नाटकों में इस शब्द का प्रयोग मध्यम पात्रों द्वारा प्राय: संबोधन के रूप में किया जाता है — हहो ब्राह्मण मा कुप्य — मुद्रा० १)।

हक्कः [हक् इति अव्यक्तं कायति—हक्+कै+क] हाथियों को बुलाना।

हंजा, हंजे [हम् इति अव्यक्तं जायतेऽत्र — हम्+जन्+डा (डे)] संबोधनात्मक अव्यय जो किसी दासी या नौकरानी को बुलाने में प्रयुक्त होता है — हंजे कंचणमाले अहम् ईदिसी कडुभासिणी — रत्न० ३।

हट् (भ्वा० पर० हटति, हटित) चमकना, उज्ज्वल होना।

हट्टः [हट्+ट टस्य नेत्वम्] बाजार, हाट, मेला। सम० —चौरकः वह चोर जो बाजार से चीजें चुराये — गंठकटा, —विलासिनी 1 वारांगना, वेश्या, रंडी 2 एक प्रकार का गंधद्रव्य।

हठः [हठ्+अच्] 1 प्रचण्डता, बल 2 अत्याचार, लूट-खसोट, (हठेन, हठात् (क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त) बलपूर्वक, प्रचण्डता से, अचानक, दुराग्रहपूर्वक — अम्बालिका च धर्मकर्मणा हठात् परिणेतुमारब्धमम-नमनीयस — दश०, वानरान् वारयामास हठेन मधुरेण च — राम०। सम० —योगः योग की एक विशेष रीति या भावचिन्तन व मनन का अभ्यास ('राजयोग' से भिन्नता दिखाने के लिए इसका नाम 'हठयोग' पड़ा; इसका अभ्यास भी कुछ कठिन है, इसके अनुपालन की अनेक रीतियाँ हैं, उदा० एक पैर के बल खड़ा होना, हाथों को ऊपर किये रहना, सिर ऊपर करके धूम्रपान करना आदि), —विद्या बलपूर्वक मनन करने का विज्ञान।

हडि: [हड्+इन्, पृषो०] काठ की बेड़ी।

हडि (डि) क:, हडिक: [हड्+इकन्, पृषो०, हड्+इन्, पृषो०, कन् वापि] अत्यंत नीच जाति का पुरुष, भंगी आदि।

हड्डम् [हड्+ड पृषो०] हड्डी। सम० —जम् मज्जा।

हण्डा (अव्य०) [हन्+ड] संबोधनात्मक अव्य० जो निम्न श्रेणी की स्त्रियों को बुलाने में, या निम्नतम जाति (भंगी आदि) के व्यक्तियों द्वारा आपस में एक दूसरे को संबोधित करने में प्रयुक्त होता है — हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति — अमर०, स्त्री० 2. बड़ा मिट्टी का बर्तन।

हण्डिका, हण्डी [हण्डा+कन्+टाप्, इत्वम्, हण्ड+ङीष्] हांडी, मिट्टी का एक बर्तन।

हण्डे (अव्य०) [हन्+डे] दे० 'हंजा (अव्य०)'।

हत (भू० क० कृ०) [हन्+क्त] 1. मारा गया, वध किया गया 2. चोट पहुँचाई गई, प्रहार किया गया, क्षतिग्रस्त 3 नष्ट, बरबाद 4. वञ्चित, हीन, रहित 5 निराश भग्नाश 6. गुणित — दे० हन्, 'निकम्मा' 'अभिशप्त' 'दयनीय' 'अधम' अर्थों को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है — अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं संप्रति विबुद्धम् — श० ६।६, कुर्यामुपेक्षां हतजीविते ऽस्मिन् — रघु० १४।६५, हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः — शि० ११।६४। सम० —आश (वि०) 1 आशा से रहित, निराश, भग्नाश 2 दुर्बल, अशक्त 3 क्रूर, निर्दय, 4 बांझ — नीच, दुष्ट, पापी, अभिशप्त, दुर्वृत्त, —कण्टक (वि०) कांटों से मुक्त, शत्रुओं से रहित, —चित्त (वि०) व्याकुल, घबराया हुआ, —त्विष् (वि०) धुंधला — रघु० ३।१५, —दैव (वि०) हतभाग्य, भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त, —प्रभाव (वि०) —वीर्य (वि०) शक्तिहीन, निर्वीर्य, बलहीन, —बुद्धि (वि०) ज्ञान से वञ्चित, बेहोश, [illegible], —भाग्य (वि०) भाग्यहीन, बदकिस्मत, मूर्ख, बड़ा मूर्ख, बुद्धू, —लक्षण (वि०) शुभलक्षणों से विरहित, अभागा, —शेष (वि०) जीवित बचा हुआ, —श्री, —संपद् (वि०) जिसका वैभव नष्ट हो गया हो, धन के न रहने पर जो दरिद्र हो गया हो, —साध्वस (वि०) जिसका भय नष्ट हो गया हो, भयमुक्त, निर्भय।

हतक (वि०) [हत+कन्] दुःखी, दुःशील, दुर्वृत्त नीच, दुष्ट (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) — न खलु विदितास्ते तत्र निवसन्तश्चाणक्यहतकेन — मुद्रा० २, दुःखिताःस्थ परिभूताःस्थ रामहतकेन — उत्तर० १, —कः नीच पुरुष, कायर।

हतिः (स्त्री०) [हन्+क्तिन्] 1. हत्या, विनाश 2. प्रहार करना, घायल करना 3. आघात, प्रहार 4. नाश, असफलता 5. त्रुटि, दोष 6. गुणा।

हत्नुः [हन्+क्नु] 1. शस्त्र 2. रोग या बीमारी।

हत्या [हन् भावे क्यप्] वध करना, मार डालना, संहार, क़त्ल, अधम्य वध जैसे भ्रूणहत्या, गोहत्या, आदि।

हद् (भ्वा० आ० हदते, हन्न) पुरीषोत्सर्जन, मलत्याग करना, इच्छा० (जिहत्सते)।

हदनम् [हद्+ल्युट्] पुरीषोत्सर्ग, मलत्याग।

हन् (अदा० पर० हन्ति, हत, कर्मवा० हन्यते, प्रेर० घातयति—ते, इच्छा० जिघांसति) 1. मार डालना, वध करना, नाश करना, प्रहार कर देना — [illegible] — उत्तर० २।१५, हतमपि च हन्त्येव मदन [illegible] १।१८ 2. आघात करना, पीटना — [illegible] हन्तुमभ्युद्यता मां विधुर्देवाम्भा मेघराजीव [illegible] — मालवि० ३।२०, शि० ७।५६ 3 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, संताप

देना जैसा कि 'कामहत' में 4. डाल देना, छोड़ देना, —भर्तृ० २।७७ 5. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता—भर्तृ० २।१८ 6. जीतना, पछाड़ देना, पराजित करना, परास्त करना —विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि हन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति मुद्रा० 7. विघ्न डालना, बाधा डालना 8 नष्ट करना, बिगाड़ना—कि० २।३७ 9 उठाना तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः श० १।३२ 10 गुणा करना (गणित में) 11 जाना (काव्य में इसका इस अर्थ में प्रयोग विरल है, और जब कभी प्रयुक्त होता है तो वह काव्य का एक दोष माना जाता है) उदा० - कुम्भं हन्ति कृशोदरी—सा० द० ७, या, तीर्थान्तरेषु स्नानेन समुपार्जितसत्कृतिः । सुरस्रोतस्विनीमेष हन्ति सम्प्रति सादरम्—काव्य० ७, ('असमर्थत्व' दोष का उदाहरण), अति—, अत्यन्त क्षतिग्रस्त करना, अन्तर्, बीच में प्रहार करना, अप , 1 हटाना, पीछे धकेलना, नष्ट करना, वध करना 2 दूर करना, हटाना —न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा — उत्तर० २।४, श० ४।७ 3 आक्रमण करना बलात् ग्रहण करना, अभि— 1 प्रहार करना, आघात करना (आलं० से भी) पीटना—भा० १।३९, मालवि० ५।३ 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना हत्या करना, नष्ट करना 3 प्रहार करना, पीटना (ढोल आदि) मनु०—१।१३ आक्रान्त करना, ग्रस्त कर लेना, परास्त करना, अव—, 1 प्रहार करना मारना, वध करना 2 नष्ट करना हटाना 3 (अनाज की भांति) कूटना, आ—, 1 आघात पहुँचाना, प्रहार करना, पीटना—कुट्टिममाजघान का०, कि० ७।१७ (आ० माना जाता है जब पीटा जाने वाला अपना ही कोई अंग हो—आहते शिरः —सिद्धा०, परन्तु भारवि कहता है 'आजघ्ने विषमविलोचनस्य वक्षः—कि० १७।६३, भट्टि० ८।१५, ५।१०२) रघु० ४।२३, १२।७७, कु० ४।२५, ३०, 2 प्रहार करना, (घंटी आदि) बजाना, (ढोल आदि) पीटना, -भट्टि० १।२७ १७।७, मेघ० ६६, रघु० १७।११, उद् , 1 उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना 2. फूलना, घमंडी होना, दे० उद्धत, उप , 1. प्रहार करना, आघात करना 2. बरबाद करना क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, वध करना लङ्का चोपहनिष्यते-- भट्टि० १६।१२, ५।१२, भग० ३।२४ 3. पीड़ित करना, ग्रस्त करना, परास्त करना, टपकना दारिद्र्योपहत, मन्त्रोपहत, कामोपहत आदि कु० ५।७६, भर्तृ० २।२६, नि , मार डालना, नष्ट करना भट्टि० २।३४, ६।१०, रघु० ११।७१, याज्ञ० ३।२६२ 2. प्रहार करना, आघात करना, तामेव सामर्षतया निजघ्नुः रघु० ७।४४, मेघ० ७।२७ 3. जीतना, हराना—दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या —पंच० १।३६१ 4 पीटना, (ढोल आदि) बजाना, भट्टि० १४।२ 5 प्रतीकार करना, निष्फल करना, भग्नाश करना रघु० १२।९२ 6 (रोग आदि की) चिकित्सा करना 7 अवहेलना करना, 8 हटाना, दूर करना, कि० ५।३६ परा- , 1. जवाबी वार करना, प्रत्याघात करना, पछाड़ देना, पीछे धकेलना, निवारण करना, परास्त कर देना, खदेड़ देना—दैवं यत्पौरुषपराहत राम० 2 आक्रमण करना, धावा बोलना कटाक्षपराहत वदनपङ्कजम् मा० ७ 3 टक्कर मारना, प्रहार करना, प्र 1 वध करना, कतल करना, प्राघातिषत रक्षांसि येनाप्तानि वने मम । न प्रहण्म. कथं पापं वद पूर्वोपकारिणम् —भट्टि० ९।१०२ 2 प्रहार करना, पीटना आघात करना गदाप्रहततनु 3 प्रहार करना, पीटना, (ढोल आदि) रघु० १९।१५, मेघ० ६४ प्रणि — वध करना भट्टि० २।३५, प्रति— , जवाबी वार करना बदले में प्रहार करना (म) विध्यन्तमुद्धतसटा प्रतिहन्तुमीषुः —रघु० ९।६० 2 हटाना, परे करना, रोकना विरोध करना, मुकाबला करना तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः उत्तर० ३।३६ प्रतिहतविघ्नाः क्रियाः समवलोक्य श० ९।१३, मेघ० ५० कु० २।४८, विक्रम० २।९ 3 हटाना, खदेड़ना, धकेलना 4 दूर करना, नष्ट करना यस्य पाप प्रतिजहि जगन्नाथ नमस्य तन्मे — मा० १।३ 5 प्रतीकार करना, उपचार करना, वि 1 वध करना कतल करना, नष्ट करना विध्वस्त करना, प्रहार करना (अस्त्र) सहसा महतिमहसा विहन्तुम् कि० ५।१७ 2 प्रहार करना, जोर से आघात करना 3 अवरोध करना, रुकावट डालना विरोध करना मुकाबला करना विघ्नन्ति रक्षांसि वने क्रतूंश्च भट्टि० १।१७ रघु० ५।२७ 4 अस्वीकार करना इनकार करना भग्न होना रघु० २।५८ ११।२ 5 निराशा करना, हताश करना, सम् , 1 सटा कर मिलाना आपस में जोड़ना हन्तौ संहत्य —मनु० २।७१ दूरं गत हि सघनं भिनत्येव च संहतान् ७।६६ दे० संहत 2 ढेर लगाना संग्रह करना, संचय करना 3 सकुचित करना, सिकोड़ना 4 संघर्ष करना 5 प्रहार करना मार डालना, नष्ट करना, समा , प्रहार करना आघात करना, क्षतिग्रस्त करना ।

हन् (वि०) [हन् क्विप्] वध करने वाला, हत्या करने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त)

जैसा कि वृत्रहन्, पितृहन्, मातृहन्, ब्रह्महन् आदि।

हनः [हन्+अप्] वध, हत्या।

हननम् [हन्+ल्युट्] 1. वध करना, हत्या करना, आघात करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3 गुणा।

हनुः—नू (पुं०, स्त्री०) [हन्+उन्, स्त्रीत्वे वा ऊन्] ठोडी, —नु (स्त्री०) 1. जीवन पर आघात करने वाली चीज 2 शस्त्र 3. रोग, बीमारी 4. मृत्यु 5. एक प्रकार की औषधि 6. स्वेच्छाचारिणी स्त्री, वेश्या। सम० —ग्रहः बन्द जबड़ा, —मूलम् जबड़े की जड़।

हनु (नू) मत् (पुं०) [हनु(नू)+मतुप्] एक अत्यंत शक्तिशाली वानर का नाम (यह अंजना का पुत्र था, इसके पिता पवन या मरुत् थे, इसी कारण इसे मारुति कहते हैं। ऐसा वर्णन मिलता है कि उसमें असाधारण शक्ति और पराक्रम था जो उसने अपने हृदयाराध्य राम की ओर से कई अवसरों पर प्रकट किया। जब रावण सीता को अपहरण करके लंका में ले गया तो हनुमान् ने समुद्र पार करके उसका पता लगाया तथा अपने स्वामी राम को सूचित किया। लंका के महायुद्ध में उसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया)।

हन्त (अव्य०) [हन्+त] प्रसन्नता, हर्ष, और आकस्मिक हलचल को प्रकट करने वाला अव्यय, हन्त भो लब्धं मया स्वास्थ्यम् श० ४, हन्त प्रवृत्तं संगीतकम् —मालवि० १, 2. करुणा, दया—पुत्रक हन्त ते धानाका —गण० 3 शोक, अफसोस—हन्त धिङ् मामधन्यम् —उत्तर० १।४३, स्मरामि हन्त स्मरामि —उत्तर० १, काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया—शा० १।१२, मेघ० १०४ 4 सौभाग्य, आशीर्वाद 5 यह बहुधा आरम्भसूचक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त है—हन्त ते कथयिष्यामि—राम०। सम० —उक्तिः (स्त्री०, करुणा, मृदुता आदि द्योतक शोक, खेद आदि शब्दों का कथन, —कारः 1. 'हन्त' विस्मयादिद्योतक अव्य० 2. किसी अतिथि को दी जाने वाली भेंट—निवीती हन्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेदथ।

हन्तृ (वि०) (स्त्री० —त्री) [हन्+तृच्] 1 प्रहारकर्ता, वधकर्ता, मनु० ५।३४, कु० २।२० 2 जो हटाता है, नष्ट करता है, प्रतीकार करता है,—पुं० 1 हत्यारा क़ातिल 2 चोर, लुटेरा।

हम् (अव्य०) [हा+डमु] 1. क्रोध तथा 2. शिष्टाचार या आदर को प्रकट करने वाला उद्गार।

हम्भा (भा) [हम्+भा+अङ्+टाप्, पक्षे पृषो०] गाय, बैल आदि पशुओं के बोलने का शब्द, रांभना। सम० —रवः रांभना।

हय् (भ्वा० पर० हयति, हयित) 1. जाना 2. पूजा करना 3. शब्द करना 4. थक जाना।

हयः [हय् (हि)+अच्] 1. घोड़ा, भग० ११।१४, मनु० ८।२२६ रघु० ९।१० 2. एक विशेष श्रेणी का मनुष्य —दे० 'अश्व' के अन्तर्गत 3 'सात' की संख्या 4. इन्द्र का नाम। सम० —अध्यक्षः घोड़ों का अधीक्षक —आयुर्वेद अश्वचिकित्साविज्ञान, शालिहोत्रविद्या, —आरूढ अश्वारोही, घुड़सवार, —आरोह 1. घुड़सवार 2. घुड़सवारी, —उत्तमः जी,—उत्तम बढ़िया घोड़ा, —कोविद घोड़ों के प्रबन्ध, प्रशिक्षण तथा चिकित्साविज्ञान से परिचित, —ग्र. घोड़ों का व्यापारी, साइस, पेशेवर घुड़सवार,—प्रियम् (पुं०) जैसा प्रिय जौ, —प्रिया खजूर का वृक्ष, —मारः,—मारकः गंधयुक्त करवीर, कनेर, —मारणः पावन कनेर,—मेधः अश्वमेध यज्ञ—याज्ञ० १।१८१, —वाहन कुबेर का विशेषण,—शाला अस्तबल,—संस्थम् घोड़ों को सधाना या उनका प्रबन्ध करने की कला, —संग्रहणम् घोड़ों का लगाम खींच कर रोकना।

हयङ्कषः [हय+कष्+अच्+मुम्] चालक, रथवान्।

हयी [हय+ङीप्] घोड़ी।

हर (वि०) (स्त्री० रा,—री) [हृ+अच्] 1. ले जाने वाला, हटाने वाला, वञ्चित करने वाला खेदहर, शोकहर 2. लाने वाला, ले जाने वाला, ग्रहण करने वाला अपहर्ता —कि० ५।५०, रघु० १२।५१ 3 पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला 4. आकर्षक, मनोहर 5. अभ्यर्थी, दावेदार, अधिकारी —मनु० २।११९ 6. अधिकार करने वाला,—कु० १।५०, 7 बाँटने वाला —रः 1 शिव, कु० १।५०, ३।४०, ६७, मेघ० ७ 2 अग्नि 3 गधा 4. भाजक 5. भिन्न की नीचे की संख्या। सम० —गौरी शिव और पार्वती का एक संयुक्त रूप (अर्धनारीनटेश्वर), —चूडामणिः शिव की शिखामणि, चन्द्रमा, —तेजस् (नपुं०) पारा, —नेत्रम् 1 शिव की आँख 2 तीन की संख्या, —बीजम् शिव का बीज, पारा,—शेखरा शिव की शिखा, गंगा, —सूनुः स्कन्द रघु० ११।८३।

हरकः [हर+कन्] 1 चोरी करने वाला, चोर 2. दुष्ट, 3 भाजक।

हरणम् [हृ+ल्युट्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना 2. ले जाना, दूर करना, हटाना, चुराना कन्याहरणम् —मनु० ३।३३, रघु० ११।७४ 3. वञ्चित करना, नष्ट करना, जैसा कि 'प्राणहरणम्' में 4. भाग देना 5. विद्यार्थी को उपहार 6. भुजा 7. वीर्य, शुक्र 8. सोना।

हरि (वि०) [हृ+इन्] 1 हरा, हरा-पीला 2. लाखी, लाख के रंग का, लालीयुक्त भूरा, कपिल —हरियुग्यं रथ तस्मै प्राजिघाय पुरन्दरः रघु० १२।८४, ३।४३ 3. पीला, —रिः 1 विष्णु का नाम —हरिर्यथैकः पुरु-

वीराम: स्मृतः—रघु० ३।४९ 2. इन्द्र का नाम —रघु० ३।५५, ६८, ८।७९ 3. शिव का नाम 4. ब्रह्मा का नाम 5 यम का नाम 6. सूर्य 7. चन्द्रमा 8. मनुष्य 9. प्रकाश की किरण 10. अग्नि 11 पवन 12. सिंह—भामि० १।५०, ५१ 13. घोड़ा 14. इन्द्र का घोड़ा सत्यमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिन —श० १, ७।७ 15. लंगूर, बन्दर उत्तर० ३।४८, रघु० १२।५७ 16. कोयल 17 मेंढक 18. तोता 19 सांप 20 खाकी या पीला रंग 21. मोर 22 भर्तृहरि कवि का नाम। सम०—अक्ष: 1 सिंह 2. कुबेर का नाम 3. शिव का नाम, —अश्व: 1 इन्द्र 2. शिव, —कान्त (वि०) 1 इन्द्र को प्रिय 2 सिंह के समान सुन्दर, —केलीय: बंग देश, —चन्दन: एक प्रकार का चन्दन,—चन्दन: —नम् 1 एक प्रकार का पीला चन्दन (लकड़ी या वृक्ष) रघु० ३।५९, ६।६०, श० ७।२, कु० ५।६९ 2. स्वर्ग के पांच वृक्षों में से एक वृक्ष पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः। सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्—अमर०, (—नम्) 1. ज्योत्स्ना 2. केसर, जाफ़रान 3. कमल का पराग,

—तालः (कुछ विद्वान् इसे 'हरित' से व्युत्पन्न मानते हैं) पीले रंग का कबूतर, (—लम्) हरताल कु० १, शि० ४।२१, कु० ७।२३, ३३, (—ली) दूर्वा घास, दूब, —तालिका भाद्रशुक्ला चतुर्थी 2. दूर्वा घास, —तुरङ्गमः इन्द्र का नाम,—दासः विष्णु का उपासक, —दिनम् विष्णु पूजा का विशेष दिन,—देवः श्रवण नक्षत्र,—द्राः हरा रंग,—द्वारम् एक पुण्यतीर्थस्थान,—नेत्रम् 1. विष्णु की आंख 2. सफ़ेद कमल, (—त्र:) उल्लू, —पदम् वसन्त विषुव, —प्रियः 1. कदंब का वृक्ष 2. शंख 3. मूर्ख 4. पागल मनुष्य 5. शिव, (—यम्) एक प्रकार का चंदन, —प्रिया 1. लक्ष्मी 2. तुलसी का पौधा 3. पृथ्वी 4. द्वादशी,—भुज् (पुं०) सांप, —मन्थः, —मन्थकः मटर, चना,—वल्लभः 1. केकड़ा 2. उल्लू,—वल्लभा 1. लक्ष्मी 2. तुलसी,—वासरः विष्णुदिवस, एकादशी, —वाहनः 1. गरुड 2. इन्द्र, °दिश् (स्त्री०) पूर्वदिशा,—शरः शिव का विशेषण (त्रिपुर राक्षस के तीनों नगरों को भस्म करने के लिए शिव ने विष्णु को उनके सरकंडे की भांति प्रयुक्त किया),—सखः एक गंधर्व,—संकीर्तनम् विष्णु के नाम का कीर्तन करना, —सुतः —सूनुः अर्जुन का नाम,—हयः 1 इन्द्र रघु० ३।४८, 2. सूर्य,—हरः विष्णु और शिव की एक संयुक्त देवमूर्ति, —हेतिः (स्त्री०) 1. इन्द्रधनुष कथमवलोक-येयमधुना हरिहेतिमती (ककुभ.)—भा० ९।१८ 2. विष्णु का चक्र, °हूतिः चक्रवाक शि० ९।१५।

हरिकः [हरि सज्ञायां कन्] 1 खाकी या भूरे रंग का घोड़ा 2 चोर 3. जुआरी।

हरिण (वि०) (स्त्री० —णी) [हृ+इनन्] 1. फीका, पीला सा 2 लाल या पीला सफेद,—णः 1 मृग, बारहसिंगा (यह पांच प्रकार का बताया गया है—हरिणश्चापि विज्ञेयः पञ्चभेदोऽत्र भैरव। ऋष्यः खड्गो रुरुश्चैव पृषतश्च मृगस्तथा॥ कालिका०)—अपि प्रसन्नं हरिणेषु ते मन: —कु० ५।३५ 2 सफ़ेद रंग 3. हंस 4 सूर्य 5 विष्णु 6 शिव। सम०—अक्ष (वि०) मृगनयन, हरिण जैसी आंखों वाला, (—क्षी) मृगनयनी सुन्दर आंखों वाली स्त्री —अङ्कः 1 चन्द्रमा 2. कपूर, —कलङ्कः,—धामन् (पुं०) चन्द्रमा —नयन, —नेत्र —लोचन (वि०) हरिणाक्ष, मृग जैसी आंखों वाला —हृदय (वि०) हरिण जैसे दिल वाला, भीरु।

हरिणकः [हरिण+कन्] छोटा हरिण—क्व वत हरिणकानां जीवितं चातिलोलम् श० १।१०।

हरिणी [हरिण+ङीप्] 1. मृगी, मादा हरिण,—चकितहरिणीप्रेक्षणा मेघ० ८२, रघु० ९।५५ १४।६९ 2. स्त्रियों के चार भेदों में से एक ('चित्रिणी' भी कहते हैं) 3 पीले फूल की चमेली 4 सुन्दर स्वर्णमूर्ति 5. एक छन्द का नाम। सम०—दृश् (वि०) हरिण जैसी आंखों वाला (स्त्री०), मृगनयनी—किमपकृतं विपिने हरिणीदृशा —उत्तर० ३।२७।

हरित् (वि०) [हृ+इति] 1. हरा, हरियाला 2 पीला, पीला सा 3. हरियाली लिये पीला,—(पुं०) 1. हरा या पीला रंग 2. सूर्य का घोड़ा, सूर्य के रथ का घोड़ा—सत्यमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः —श० १, दिशो हरिद्भिर्हरितामिवेश्वरः—रघु० ३।३०, कु० २।४३ 3. तेज घोड़ा 4. सिंह 5. सूर्य 6 विष्णु (पुं०, नपुं०) 1. घास 2. दिशा—रघु० ३।३०। सम०—अन्तः दिशाओं का अन्त, दिगन्त,—भामि० १।६०, —अन्तरम् भिन्न प्रदेश, विविध दिशाएँ भामि० १।६५, —अश्वः 1. सूर्य, कि० २।४६, रघु० ३।२२, १८।२३, शि० ११।५६ 2. मदार का पौधा, अर्क, —गर्भः चौड़े पत्तों की हरी हरी कुशा, —मणिः (हरिन्मणि.) मरकत मणि, पन्ना शि० ४।४६, —वर्ण (वि०) हरियाली, हरे रंग का।

हरित (वि०) (स्त्री०—ता, हरिणी) [हृ+इतच्] हरा, हरे रंग का, हरा-भरा—स्वभावान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः —श० ८।१०, कु० ३।१४, मेघ० २१, कि० ५।३८ 2 खाकी,—तः 1. हरा रंग 2 सिंह 3. एक प्रकार का घास। सम०—अश्मन् (पुं०) 1 मरकत मणि, पन्ना 2 तूतिया, नीला थोथा,—छद (वि०) हरे हरे पत्तों का।

हरितकम् [हरित+कै+क] 1 साग-भाजी 2. हरा घास शि० ५।५८।

हरिता [हरित+टाप्] 1. दूर्वा घास 2 हरिद्रा 3. भूरे रंग का अंगूर।

हरिताल दे० हरि के नीचे ।

हरिद्रा [हरि+द्रु+ड+टाप्] 1 हल्दी 2 पिसी हुई हल्दी दे० नै० २२।४९ पर मल्लि० । सम०—आभ (वि०) पीले रंग का, —गणपतिः गणेश गणेश देव का विशेष रूप, —राग, —रागक (वि०) 1 हल्दी के रंग का 2 अनुराग में अस्थिर, (प्रेम में) चंचलमना हलायुध में इसकी परिभाषा क्षणमात्रानुरागश्च हरिद्राराग उच्यते) ।

हरिय [हरि+या+क] पीले रंग का घोड़ा ।

हरिश्चन्द्रः [हरि चन्द्र इव, सुडागम ऋषावेव] सूर्यवंश का एक राजा (यह त्रिशंकु का पुत्र था, अपनी दानशीलता, धर्मिष्ठता तथा सचाई के लिए अत्यंत प्रसिद्ध था। एक बार इसके कुल-पुरोहित वसिष्ठ ने इसकी प्रशंसा विश्वामित्र की उपस्थिति में की विश्वामित्र ने विश्वास नहीं किया। इस पर विवाद खड़ा हो गया, अंत में यह निर्णय किया गया कि विश्वामित्र स्वयं इसके सत्य की परीक्षा लें। तदनुसार विश्वामित्र ने इसे अत्यंत कठिन परीक्षण में डाला जिससे कि यह पता लग सके कि क्या अब भी यह अपने वचनों पर दृढ़ रहता है। इतना होने पर भी राजा ने उस परीक्षण में उदाहरणीय साहस का परिचय दिया। यद्यपि इसे इस परीक्षा में अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा अपनी पत्नी और पुत्र को बेचना पड़ा यहाँ तक कि अन्त में अपने आपको भी एक चाण्डाल के घर बेचना पड़ा। अपने अदम्य साहस और सचाई के लिए हरिश्चन्द्र को अपनी पत्नी को मार डालने के लिए भी तैयार होना पड़ा तब कहीं विश्वामित्र ने अपनी हार मानी और राजा को प्रजा समेत स्वर्ग में ऊँचा आसन दिया गया) ।

हरीतकी [हरि पीतवर्णं फलद्वारा इता प्राप्ता हरि+इ+क्त+कन्+ङीष्] हर्रे का पेड़ ।

हर्तृ (वि०) (स्त्री०—र्त्री) [हृ+तृच्] उठा कर ले जाने वाला, छीनने वाला लूटने वाला ग्रहण करने वाला आदि (पुं०) चोर, लुटेरा भर्तृ० २।१६ 2 सूर्य ।

हर्मन् (नपुं०) [हृ+मनिन्] मुँह फाड़ना जंभाई लेना ।

हर्मित (भू० क० कृ०, [हर्मन्+इतच्] 1 जिसने मुँह फाड़ा है, जिसने जम्हाई ली है 2 डाल दिया गया फेंका गया 3 जलाया गया ।

हर्म्यम् [हृ+यत्, मुट् च] 1 प्रासाद महल, कोई भी विशाल भवन या बड़ी इमारत हर्म्यपृष्ठ समारूढः काकोऽपि गरुडायते —सुभा०, बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ०७, ऋतु० १।२८, भट्टि० ८।१६, रघु० ६।४७, कु० ६।४२ 2 तंदूर, अंगीठी चूल्हा 3 आग का कुंड, यंत्रणा-स्थान, नरक । सम० —अङ्गणम्,—नम् महल का आँगन,—स्थलम् महल का कमरा ।

हर्ष [हृष्+घञ्] 1 आनन्द, खुशी, प्रसन्नता, संतोष, एक सुखात्मक भाव, आनन्दातिरेक, उल्लास, आह्लाद, प्रमोद हर्षो हर्षो हृदयवसति पञ्चबाणस्तु बाण —प्रसन्न० १।२२ सद्यःस्थित. सैनिकहर्षनिस्वनैः—रघु० ३।६१ 2 पुलक, रोमांच रोंगटे खड़े होना—जैसा कि 'रोमहर्ष' में 3 'हर्ष' ३३ या ३४ सचारिभावों में से एक हर्षस्त्विष्टावाप्तेर्मन प्रसादोऽश्रुगद्गदादिकर सा० द० १९५ या इष्टप्राप्त्यादिजन्मा सुखविशेषो हर्ष रस० । सम० —अन्वित (वि०) आनन्दयुक्त, प्रसन्न इसी प्रकार 'हर्षाविष्ट', —उत्कर्षः प्रसन्नता का अभिवृद्ध आनंदातिरेक —उदय आनन्द का होना, —कर (वि०) तृप्त करने वाला प्रसन्न करने वाला, —जड (वि०) मन्द मारे खुशी के जड़वत् हो जाने वाला रघु० ३।६८ —विवर्धन (वि०) आनंद को बढ़ाने वाला, —स्वन आनंद की ध्वनि ।

हर्षक (वि०) (स्त्री०—र्षका, र्षिका) [हृष+णिच्+ण्वुल्] खुश करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनंदयुक्त, सुखकर ।

हर्षण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [हृष्+णिच्+ल्युट्] खुशी पैदा करने वाला प्रसन्न करने वाला आनंद से भरा हुआ, सुखद —णः 1 कामदेव के पाँच बाणों में से एक 2 आँख का एक रोग 3 श्राद्ध की एक अधिष्ठात्री देवता —णम् प्रहर्ष खुशी प्रसन्नता, आनन्द, उल्लास दुर्हृदामप्रहर्षाय सुहृदां हर्षणाय च—महा० ।

हर्षयित्नु (वि०) [हृष+णिच्+इत्नु] आनन्ददायक सुखकर खुश करने वाला प्रसन्नता देने वाला ।

हर्षुल [हृष+उलच्] 1 हरिण 2 प्रेमी ।

हल् (भ्वा० पर० हलति हलित) हल चलाना ।

हलम् [हल् घञर्थे करणे क] लांगल खेत जोतने का एक प्रधान उपकरण वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् । हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् या—हलकलधरे गीत० १ । सम०—आयुध बलराम का विशेषण —धर,—भृत् (पुं०) 1 हाली हल चलाने वाला 2 बलराम का नाम केशवधृतहलधररूप जय जगदीश हरे— गीत० असन्यस्ते सति हलभृतो मेचके वाससीव मेघ० ५९ —भूति, —भृतिः हल चलाना कृषिकर्म किसानी, —हति (स्त्री०) 1 हल के द्वारा प्रहार करना या खूड निकालना 2 जुताई या हल चलाना

हलहला अहो वाह रे आदि आश्चर्यसूचक अव्यय ।

हला [हल इति लीयते हल+ला+क+टाप्] 1 सखी, सहेली 2 पृथ्वी 3 जल 4 मदिरा (अव्य०) नाटकीय भाषा में) किसी सखी या सहेली को संबोधित करना हला शकुन्तले अत्रैव तावन्मुहूर्तं तिष्ठ—श० १, तु० 'हण्डा' भी ।

हलहलम्,—लम् देखो 'हाल (ला) हल'।
हलिः [हल्+इन्] 1. बड़ा हल 2. खूड 3. कृषि।
हलिन् (पुं०) [हल+इनि] 1. हाली, हलवाहा, किसान 2. बलराम। सम० प्रियः कदंब का वृक्ष (—या) मदिरा।
हलिनी [हलिन्+ङीप्] हलों का समूह।
हलीनः [हलाय हितः हल+ख] सागौन का पेड।
हलीषा [हलस्य ईषा—ष० त०, शक० पररूपम्] हल का दण्ड, हलस।
हल्य (वि०) [हल+यत्] 1 जोतने योग्य, हल चलाये जाने योग्य 2. कुरूप विकृताकृति।
हल्या [हल्य+टाप्] हलों का समूह।
हल्लकम् [हल्ल्+क्वुन्] लाल कमल।
हल्लनम् [हल्ल्+ल्युट्] लोटना, इधर-उधर करवट बदलना (सोते समय)।
हल्लीशम् (षम्) [हल्+क्विप् लस् (ष्)+अच्, पृषो० ईत्वम्, कर्म० स०] 1 अठारह उपरूपकों में से एक (एक प्रकार का एकांकी नाटक जिसमें प्रधानतः गायन और नृत्य होता है, तथा इसमें एक पुरुष और सात या आठ नर्तकियाँ भाग लेती हैं—सा० द० ५५५ 2 एक प्रकार का वर्तुलाकार नृत्य।
हल्लीशकः [हल्लीश+कन्] घेरा बनाकर नाचना।
हवः [हु+अ, ह्वे+अप्, सम्प्र०, पृषो० वा] 1. आहुति, यज्ञ 2. आवाहन, प्रार्थना 3. आह्वान, आमन्त्रण 4. आदेश, समादेश 5 बुलावा, बुला भेजना 6 चुनौती, ललकार।
हवनम् [हु+भावे ल्युट्] 1 अग्नि में सामग्री की आहुति देना 2. यज्ञ, आहुति 3 आवाहन 4 बुलावा, आमन्त्रण 5 युद्ध के लिए ललकार। सम० आयुस् (पुं०) अग्नि।
हवनीयम् [हु+अनीयर्] 1 कोई भी वस्तु जो आहुति देने के योग्य हो 2 गरम किया हुआ मक्खन या घी।
हविनी [हु+इवन्+ङीप्] हवनकुण्ड जो भूमि में खोद कर बनाया गया हो, (इसमें आहुतियाँ दी जाती हैं)।
हविष्मत् (वि०) [हविस्+मतुप्] आहुतिवाला।
हविष्यम् [हविषे हितम् कर्मणि यत्] 1. कोई वस्तु जो आहुति के लिए उपयुक्त हो मनु० ३।२५६, ११।७७, १०६, याज्ञ० २।२३९ 2. गर्म किया हुआ मक्खन। सम० —अन्नम् व्रत के तथा अन्य पर्वों के अवसर पर खाने योग्य भोज्य पदार्थ, आशिन्,—भुज् (पुं०) अग्नि।
हविस् (नपुं०) [हूयते हु कर्मणि असुन्] 1 आहुति या हवनीय द्रव्य -बहुति विविहुत या हवि —श० १।१, मनु० ३।८७, १३२, ५।७, ६।१२ 2. गर्म किया हुआ मक्खन 3. जल। सम० —अशनम् (हविरशनम्) घी या हवनीय द्रव्यों का खाया जाना, (नः) अग्नि, —गन्धा (हविर्गन्धा) शमीवृक्ष, जँड का पेड़,—गेहम् (हविर्गेहम्) यज्ञगृह जहाँ अग्नि में आहुति दी जाय, —भुज् (हविर्भुज्) अग्नि अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम्—रघु० १।५६, १०।८०, १३। ४१, कु० ५।२०, शि० १।२, काव्य० २।१६८, —यज्ञः (हविर्यज्ञ) एक प्रकार का यज्ञ, —याजिन् (हविर्याजिन्) -(पुं०) पुरोहित।
हव्य (वि०) [हु कर्मणि+यत्] आहुति के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ,—व्यम् 1 घी 2 देवों को दी जाने वाली आहुति (विप० कव्य) 3 आहुति। सम० -आशः अग्नि, —कव्यम् देवों तथा पितरों की आहुतियाँ—मनु० १।९४, ३।९७ १२८ आगे पीछे,—वाह्,—वाह —वाहन (पुं०) आहुतियों को ले जाने वाला, अग्नि।

हस् (भ्वा० पर० हसति, हसित) 1 मुसकराना, मन्द हंसी हंसना,—हसति यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम्—गीत० १०, भट्टि० ७।६३, १४।९३ 2 हंसी उड़ाना, मजाक करना, उपहास करना (कर्म० के साथ)—यमवाप्य विदर्भभूः प्रभुं हसति द्यामपि शक्रभर्तृकाम् नै० २।१६ 3. (अतः) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, दूसरे को पीछे छोड़ देना—यो जहासेव वासुदेवम्—का०, शि० १।७१ 4 मिलना-जुलना- श्रिया हसद्भिः कमलानि सस्मितैः —कि० ८।४४ 5 मजाक उड़ाना, खिल्ली करना 6 खुलना, खिलना, फूलना —हसत्पुष्पस्मुकीयप्रसूनं 7 चमकाना, मांजकर साफ़ करना—आस्वाम्पेस्यति हसिष्यति पङ्कजाक्षी सुभा०, प्रेर० (हासयति—ते) मंद हंसी हंसना कु० ७।९५, अप—, हंसी उड़ाना, तिरस्कार करना, उपहास करना, अव—, 1 तिरस्कार करना, बेइज्जती करना 2. आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना—स्थिताबहस्येव पुर मघोन भट्टि० १।६, उप -,उपहास करना, तिरस्कार करना, बुरा भला कहना—, तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यसे जनैः का०, घट० १७, परि—, 1 मजाक करना, हंसी उड़ाना 2 उपहास करना, बुरा-भला कहना, (अतः) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना ', अमानानन्दः परिहसति निर्वाणपदवीम् गंगा० ५, प्र , 1 उपहास करना, नमस्कराना नत प्रहस्याहमय पुरन्दरम् रघु० ३। ५१ 3 तिरस्कार करना, बुरा-भला कहना, मजाक उड़ाना—हसन्त प्रहसन्त्येता रुदन्तं प्ररुदन्ति च—सुभा० 4 चमकाना, शानदार दिखाई देना, वि —, 1. मुसकराना, मन्द मन्द हंसना किंचिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे —रघु० २।४६ 2 उपहास करना, बुरा-भला कहना, अपमान करना—किंचिद्वि विचीदति रोदिति विलपन्

विहसति युवतिसभा तव विकला—गीत० ९, गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचना या विहस्येव फेनैः —मेघ० ५० ।

हस [हस्+अप्] 1 हंसी, ठहाका 2 उपहास 3 आमोद, प्रमोद, खुशी, प्रसन्नता ।

हसनम् [हस्+ल्युट्] हंसना ठहाका अट्टहास ।

हसनी [हसन+ङीप्] उठाऊ चूल्हा, कांगड़ी ।

हसन्ती [हस्+शतृ+ङीप] 1 उठाऊ अंगीठा 2 एक प्रकार की मल्लिका ।

हसिका [हस्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] अट्टहास उपहास ।

हसित (भू० क० कृ०) [हस्+क्त] 1 जिसकी हंसी की गई हो हंसा 2 विकसित फूला हुआ —तम् 1 अट्टहास 2 मखौल मजाक 3 कामदेव का धनुष ।

हस्त [हस्+तन न इट्] हाथ, हस्त गत हाथ में पड़ा हुआ या अधिकार में आया हुआ गौतमीहस्ते विसर्जयिष्यामि श० ३ (मैं गौतमी के हाथ (द्वारा) इसे भेज दूंगा) इसी प्रकार 'हस्ते पतिता' 'हस्ते संनिहिता कुरु' आदि धनुषा दत्तहस्ता मेघ० ६० (धनुष का सहारा लिए हुए), हस्ते कृ (हस्तेकृत्य कृत्वा) हाथ से पकड़ना ले लेना हाथ से ले लेना हाथ में पकड़ लेना अधिकार कर लेना लोकोक्ति—हस्तकङ्कणं किं दर्पणे प्रेक्ष्यते (हाथ कंगन को आरसी क्या) अर्थात् हाथ पर रक्खी वस्तु को देखने के लिए शीशे की आवश्यकता नहीं होती 2 हाथी की सूंड कु० १।३६ 3 तेरहवां नक्षत्र जिसमें पाँच तारे सम्मिलित हैं हाथभर, एक हस्तपरिमाण (२४ अंगुल या लगभग १८ इंच की लंबाई, जो कोहनी से मध्य अंगुली की नोक तक होती है) 5 हाथ की लिखाई हस्ताक्षर घनीवोपगतं दद्यात् स्वहस्तपरिचिह्नितम् याज्ञ० २।९३, स्वहस्तकालसंपन्नं शासनम्—१।३२० (तारीख और हस्ताक्षर सहित) धावनामय प्रियायाः स्वहस्त —विक्रम० २ (मेरी प्रिया का आत्मलेख) २।२० (अन आल० में) प्रमाण सबूत मुद्रा० ३ 7 सहायता मदद सहारा—वात्याखेदं कृशाङ्ग्या सुचिरमवयवैर्दत्तहस्ता करोति वेणी० २। १ 8 राशि परिमाण, (बालों का) गुच्छा रचना में 'केश' कच के साथ —पाश पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे अमर० सखि विगलितबन्धे केशहस्ते सुकेश्या सति कुसुमसनाथं किं करोत्येष वर्हीं, विक्रम० ४।१० —स्तम् धौवरेय । सम० अक्षरम् अपने निजी अक्षर, दस्तखत, —अग्रम् अंगुली (क्योंकि हाथ का सिरा यही होती है) —अंगुलिः हाथ की कोई भी अंगुलि अभ्यासः हाथ से काम करने का अभ्यास, अवलम्बः —आलम्बनम् हाथ का सहारा दत्तहस्तावलम्बे प्रारम्भे रत्न० (सहारा दिये जाने पर), —आमलकम् 'हाथ में रक्खा आंवले का फल' यह एक वाग्धारा है, और उस समय प्रयुक्त होती है जब कभी ऐसी बात का निर्देश करना हो जो बिल्कुल स्पष्ट और अनायास ही बोधगम्य हो, —आवाप दस्ताना हस्तत्राण (ज्याघातवारण)—विक्र० ५, ८८ —कमलम् 1 हाथ में लिया हुआ कमल 2 कमल जैसा हाथ कौशलम् हाथ की दक्षता —क्रिया हाथ का काम दस्तकारी —गत —गामिन् (वि०) हाथ में आया हुआ अधिकार में आया हुआ, प्राप्त, गृहीत —व प्रायेण हस्तगता सर्वमपि रघु० ७।६३ ८।? —ग्राह हाथ से पकड़ना —चापल्यम् हस्तकौशल —तलम् 1 हाथ की हथेली 2 हाथी के सूंड की नोक —ताल हथेली बजाना तालियां बजाना, दोष हाथ से होने वाली त्रुटि भूल —धारणम्—वारणम् (हाथ से) आघात का निवारण करना —पादम् हाथ और पैर न मे हस्तपादं प्रसरति श० ४, पुच्छम् कलाई से नीचे का भाग, —पृष्ठम् हथेली का पृष्ठभाग प्राप्त (वि०) 1 हस्तगत 2 उपलब्ध सुरक्षित प्राप्य (वि०) जहाँ आसानी से हाथ पहुंच सके जो हाथ की पहुंच में हो —हस्तप्राप्यस्तवकनमितो बालमन्दारवृक्ष —मेघ० ७५ —बिम्बम् शरीर में उबटन आदि गंध द्रव्यों का लेप, —भूषणम् कलाई पर पहना जाने वाला रत्नाभूषण —लाघवम् 1 हाथ की तत्परता या कुशलता 2 हाथ की सफाई, बाजीगरी,—संवाहनम् हाथ से मलना या मालिश करना—मेघ० ९६ —स्थितिः (स्त्री०) 1 हाथ का श्रम, हाथ से किया जाने वाला काम 2 ?? पारिश्रमिक, मजदूरी —सूत्रम् कलाई में धारण किया हुआ मंगलसूत्र या वलय, कड़ा — कु० ७।२५ ।

हस्तक हस्तकः [हस्त+कन्] 1 हाथ की अवस्थिति ।

हस्तवत् (वि०) [हस्त+मतुप्] दक्ष कुशल, चतुर ।

हस्तिकम् (अ०) [हस्तेन हस्तेन प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् ब० स०, दीर्घ इत्वम्, अव्ययत्वं च] हाथापाई, हस्ताहस्ति अन्यमजनि दश० ।

हस्तिकम् हस्तिनां समूहः कन्] हाथियों का समूह ।

हस्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हस्त शुण्डादण्डोऽस्त्यस्य इनि] 1 करयुक्त 2 सूंडवाला (पुं०) हाथी मनु० ७।९६ १२।४३ (हाथी चार प्रकार के बताये जाते हैं भद्र मन्द मृग और मिश्र) 1 सम० अध्यक्षः हाथियों का अधीक्षक आयुर्वेद हाथियों के रोगों की चिकित्सा से संबद्ध कृति रचना आरोह महावत, या हाथी की सवारी करने वाला, —कक्ष्य 1 सिंह 2 बाघ —कन्द एरंड का पौधा —घ्न 1 हाथी को मारने वाला, —चारिन् (पुं०) पीलवान —दन्तः 1 हाथी का दांत 2 दीवार में गड़ी हुई खूंटी (—तम्) 1 हाथीदांत 2 मूली,— दन्तकम् मूली, —नखम् पुरद्वार पर बना हुआ मिट्टी का ढूहा, —पः —पकः पीलवान, हाथी की

सवारी करने वाला—इति घोषयतीव डिंडिमः करिणो हस्तिपकाहतः क्वणन्—हि० २।८६, —मदः मस्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मदरस,—मल्लः 1 ऐरावत 2. गणेश 3. राख का ढेर 4 धूल की बौछार 5. कुहरा, -यूथ:—थम् हाथियों का समूह, —वर्चसम् हाथी की शान, कान्ति, —वाहः 1 पीलवान 2. हाथियों को हांकने का अंकुश, —षड्गवम् छः हाथियों का समूह, —स्नानम् गजस्नान, हाथी का स्नान अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया हि० १।१८ —हस्तः हाथी की सूंड।

हस्तिन (ना) पुरम् [अलुक् समास हस्तिना तदाख्यनृपेण चिह्नितं तत्कृतत्वात्] राजा हस्तिन् द्वारा बसाया गया नगर, (वर्तमान दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तरपूर्व दिशा में, यही वह नगर है जहाँ महाभारत के कृत्य का केन्द्रीय दृश्य था, इसके अन्य नाम यह हैं—गजाह्वय, नागसाह्वय, नागाह्व और हास्तिन)।

हस्तिनी [हस्तिन् + ङीप्] 1. हथिनी 2 एक प्रकार की औषध और गन्धद्रव्य 3. कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार की स्त्रियों में से एक (इस स्त्री के होंठ, अंगुलियाँ और कूल्हे मोटे, तथा स्तन भारी होते हैं, इसका रंग काला और कामलिप्सा अधिक होती है रतिमंजरी में इसका वर्णन इस प्रकार है स्थूलाधरा स्थूलनितम्बबिम्बा स्थूलाङ्गुलिः स्थूलकुचा सुशीला। कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितान्तभोक्त्री—निनदा वा —खलु हस्तिनी स्यात्- (करिणी मता सा)।

हस्त्य (वि०) [हस्त+यत्] 1 हाथ से संबंध रखने वाला 2. हाथ से किया गया 3 हाथ से दिया हुआ।

हहलम् [ह+हल्+अच्] एक प्रकार का घातक विष।

हहा (पुं०) [ह+हा+क्विप्] एक गन्धर्वविशेष तु० हाहा।

हा (अव्य०) [हा+का] 1 शोक, उदासी, खिन्नता का प्रकट करने वाला अव्यय, आह, हाय, अरे—हा प्रिये जानकि—उत्तर० ३, हा हा देवि स्फुटति हृदयं -उत्तर० ३।३८, हा पितः क्वासि, हे सुभ्रु-भट्टि० ६।११, हा वत्से मालति क्वासि—मा० १० आदि (इस अर्थ में 'हा' प्रायः कर्म० के साथ प्रयुक्त होता है हा कृष्णाभक्तम्—सिद्धा०) 2. आश्चर्य—हा कथं महाराजदशरथस्य धर्मदाराः प्रियसखी मे कौसल्या—उत्तर०४ 3. क्रोध या झिड़की।

हा i (जुहो० आ० जिहीते, हान, कर्मवा० हायते, इच्छा० जिहासते) 1. जाना, हिलना-जुलना—जिहीषा जिहासतां स्फुटमिह भवद्वाम्बरयम्—हस० २८, कि० १३।२३, भट्टि० ११।१८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, उद्—, 1. ऊपर की ओर जाना, (सभी अर्थों में) उठना—यशो रजः पार्थिवमुज्जिहीते—रघु० १३।६४, आविर्भूतानुरागाः क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानो मुद्रा० ४।२१, नै० २२।४५. ५५, उज्जिहीते महाराज त्वं प्रशान्तो न किं पुनः भट्टि० १८।२७, 'तुम क्यों नहीं उठते हो अर्थात् जीवित होते हो' कोलाहलो लोकस्योदजिहीत दश० 'लोगों से एक शोर उठा' 2 जुदा होना, चले जाना उज्जिहानजीविता वराकी नानुकम्पसे मा० १० 3 उठाना —शिरसा यूपमुज्जिहीते-काव्या० 4 चढ़ाना, (भौंहें) उठाना, सिकोड़ना-भट्टि० ३।४७, उप—, नीचे आना, उतरना—निजौजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहामुपाजिहीथा न महीतलं यदि शि० १।२१, सम्—, जाना, पहुँचना, उपभोग करना—जनता समहास्त मुद्गम् नल्हो० १।५४।

ii (जहा० पर० जहाति हीन) 1 छोड़ना त्यागना परिहार करना,—छोड़ देना तजना तिलांजलि देना, परित्याग करना मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् मोह० १ सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति मुद्रा० ४।१३ रघु० ५।७२, ८।५२, १२।२४ १४।६१, ८७, १५।५९, श० ४।१३, भग० २।५० भट्टि० ३।५२, ५।९१, १०।७१, २०।१०, मेघ० ४९, ६०, भामि० २।१२९, ऋतु० १।३८ 2 परित्याग करना जाने देना 3 गिरने देना 4 भूल जाना, उपेक्षा करना, अवहेलना करना 5 बचना बिदकना कर्म० (हीयते) 1 छोड़ दिया जाना, कि० १०।१२ 2 निकाल दिया जाना वंचित किया जाना न्यून होना (करण० या अपा० के साथ) त्रिकालज्ञा अहं प्राणैः भट्टि० १४।३५, जनयित्वा सुतं तस्यां ब्राह्मण्यादेव हीयते मनु० ३।१७ ५।१६१ ९।२११ 3 कम होना घाटा हो जाना प्रायः 'परि' के साथ 4 घटना, कम होना, मुर्झाना क्षीण होना (आल० में भी) क्षय का प्राप्त होना प्रवृद्धो हीयते चन्द्रः समुद्रोऽपि तथाविधः—रघु० १७।७१, हि० प्र० ४८ 5 (जैसे मुकदमे में) हार जाना भगमप्युपक्षस्तु हीयते व्यवहारतः - याज्ञ० २।१९ 6 छूट जाना, भूल जाना 7 कमजोर होना प्रेर० (हापयति ते) 1. छुड़वाना, परित्यक्त कराना 2 अवहेलना करना, चूकना, अनुष्ठान में देर करना शि० १६।३३, मनु० ३।७१, ४।२१, याज्ञ० १।१२१, इच्छा० (जिहासति) छोड़ने की इच्छा करना, अप, छोड़ना, त्यागना, तज देना विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्—रघु० ८।४३ अपा—, छोड़ना, त्यागना, अव—, छोड़ना वंचित होना, परि—, 1, छोड़ना, त्यागना, छोड़ कर चल देना 2. भूल जाना, अवहेलना करना—यथोक्तान्यपि कर्माणि परिहाय -मनु० १२।९२, (कर्मवा०) 1. अल्प

होना, कम होना—आर्यस्य सुविहितप्रयोगतया न किमपि परिहास्यते—श० १ 2. घटिया होना भोजस्विनया न परिहीयते शय्या विक्रम० ३, मालवि० २, प्र - 1. छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना, तिलांजलि देना प्रजहाति यदा कामान्—भग० २।५५ ३९, मोहमेनो प्रहास्यते—राम० 2 आगे देना फेंकना, डाल देना—प्रजह्रु शूलगदृष्टीन्—भट्टि० १४।२३, वि-, छोड़ना, परित्यक्त करना, तजना, छोड़ देना विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्म कार्मुकं जटाधरः सन् जुहुधीह पावकम् कि० १।४४, मेघ० ४१, रघु० २।४० ५।६७ ७० ६।७, १२।१०२, १४।४८, ६९, कु० ३।१, (प्रेर०) पुरस्कार देना।

हाकूर [हा विषादाय पीडायै वा अंग रातिः हा + अंग + रा + क] एक बड़ी मछली।

हाटक (वि०) (स्त्री० —की) [हाटक + अण्] सुनहरा —कम् सोना। सम० —गिरिः सुमेरु पर्वत।

हाडम् [हा करणे मल्] पारिश्रमिक, मजदूरी, भाड़ा।

हानम् [हा + ल्युट्] 1 छोड़ना, त्यागना, हानि, असफलता 2 बच निकलना 3 पराक्रम, बल।

हानिः (स्त्री०) [हा + क्तिन्, तस्य नि] 1 परित्याग, तिलांजलि 2. हानि, असफलता, अनुपस्थिति, अनस्तित्व क्वचित् स्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यत्वहानि —काव्य० १, 'इसमें काव्य की हानि नहीं' 3 हानि, नुकसान, क्षति—प्रासादमल्लिविनिवर्तनेन का हानि करिष्या भवत् सुभा०, का ना हानि मर्व० 4 न्यूनता, कमी यथा हानि क्रमप्राप्ता तथा वृद्धि क्रमागता हरि०, याज्ञ० ३।२०७, २६४ 5 अवहेलना, भूलना भग प्रोत्साह कार्यं 6 नष्ट होना अर्थात् होना हानि का अहानि रघु० १३।१६।

हापिका (स्त्री०) जमुहाई जृंभा।

हायनः, नम् [हा + ल्युट्] वर्ष —नः 1 एक प्रकार का चावल 2 शिखा, ज्वाला।

हारः [हृ + घञ्] 1 ले जाना, हटाना, पकड़ना 2 पहुँचाना 3 अपकर्षण, अलगाव 4 वाहक, हरकारा 5 मोतियों की माला, हार हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले अमरु० १००, पाण्ड्योऽयमंसार्पितलम्बहारः रघु० ६।६० ५।५२, ६।१६, मेघ० ६७ ऋतु० १।४, २।१८ 6 संग्राम, युद्ध 7 (गणि० में) किसी भिन्न का नीचे का अंश 8 भाजक। सम० —आवलिः —ली (स्त्री०) मोतियों की लड़ी—तरुणीस्तन एव शोभते मणिहारावलिरामणीयकम् नै० २।४४, हारावलीतरलकाञ्चितकाञ्चिदाम—गीत० ११, —गुटिः (लि) का माला का दाना या हार का मोती रघु० ५।७०, —यष्टिः हार, मोतियों की लड़ी—दधति पृथुकुचाग्रेऽस्मतैर्हारयष्टिम्—ऋतु० २।२५, १।८, —हूरा एक प्रकार का कालभूरे रंग का अंगूर।

हारकः [हृ + ण्वुल्] 1. चोर, लुटेरा—याज्ञ० ३।२१५ 2 ठग, धूर्त 3 मोतियों की लड़ी 4 (गणि० में) भाजक 5 एक प्रकार की गद्य रचना।

हारि (वि०) [हृ + णिच् + इन्] आकर्षक, मोहक, सुखकर, मनोहर, —रिः (स्त्री०) 1 पराजय 2 खेल में हार 3 यात्रियों का समूह, सार्थवाह। सम० —कण्ठः कोयल।

हारिणिक: [हरिण + ठक्] हरिणों को पकड़ने वाला, शिकारी।

हारित (भू० क० कृ०) [हृ + णिच् + क्त] 1 हरण कराया हुआ, पकड़ाया हुआ 2 उपहार स्वरूप दिया गया, प्रस्तुत किया गया 3 आकृष्ट, —तः 1 हरा रंग 2 एक प्रकार का कबूतर।

हारिन् (वि०) (स्त्री० —णी) [हारो अस्त्यस्य इनि, हृ + णिनि वा] 1 ले जाने वाला, पहुँचाने वाला, ढोने वाला 2 लूटने वाला हरण करने वाला—वाजिकुञ्जराणां च हारिणः याज्ञ० २।२७३, ३।२०८ 3 पकड़ लेने वाला बाधा पहुँचाने वाला, मनु० १२।७८ 4 प्राप्त करने वाला, उपलब्ध करने वाला 5 आकर्षक मोहक, सुखकर, आह्लादकर, आनन्दप्रद तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, शि० १०।१३, ६९ विष्टपहारिणि हरौ—भर्तृ० २।२१ 6 आगे बढ़ने वाला, असामान्य होने वाला 7 हार धारण करने वाला।

हारिद्र [हरिद्रा + अण्] 1 पीला रंग 2 कदंब का वृक्ष।

हारीत [हृ + णिच् + ईतच्] 1 एक प्रकार का कबूतर रघु० ८।४६ 2 धूर्त ठग 3 एक स्मृतिकार का नाम—याज्ञ० १।४।

हार्दम् [हृदयस्य कर्म युवा० अण् हृदादेश] 1. स्नेह, प्रेम अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः कि० १।३३ शि० २।६९, विक्रम० ५।१० 2 कृपा, सुकुमारता 3 इच्छाशक्ति 4 अभिप्राय, अर्थ।

हार्य (वि०) [हृ + ण्यत्] 1 हरण किये जाने योग्य, ढोये जाने योग्य 2 सहन किये जाने योग्य, ले जाये जाने योग्य—पद्मश्चा वारणराजहार्यया कु० ५।७० 3 अपहरण किये जाने योग्य छीने जाने योग्य—रघु० ७।६७ 4 विस्थापित होने योग्य, (हवा आदि के द्वारा) ले जाये जाने योग्य रघु० १६।४३ 5 (अपने संकल्प से) चलायमान होने योग्य कु० ५।८ 6. उपलब्ध किये जाने योग्य, जीते जाने योग्य, आकृष्ट किये जाने योग्य, विजित या प्रभावित किये जाने योग्य वहसि हि धनहार्यं पुण्यभूतं शरीरम्—मृच्छ०

१।३१, कु० ५।९३, मनु० ७।२१७ 7. पकड़े जाने योग्य, लूटे जाने योग्य - मनु० ८।४१७,—र्यः 1. सांप 2. विभीतक या बहेड़े का वृक्ष 3. (गणि० में) भाज्य ।

हालः [हलो अस्त्यस्य अण्, हल एव वा अण्] 1 हल 2. बलराम का नाम 3. शालिवाहन का नाम । सम० —भृत् (पुं०) बलराम का विशेषण ।

हालकः [हाल+कन्] पीले भूरे रंग का घोड़ा ।

हाल (ला) हलम् [=हलाहल, पृषो०] एक प्रकार का घातक विष जो समुद्रमथन के परिणाम स्वरूप मिला था । (अत्यन्त विषाक्त होने के कारण यह प्रत्येक वस्तु को भस्म करने लगा, इसलिए इसे शिव जी ने पी लिया) अहमेव गुरुः सुदारुणानामिति हालाहल मास्म तात दृप्यः। ननु सन्ति भवादृशानि भूयो भुवनेऽस्मिन् वचनानि दुर्जनानाम्—सुभा० 2 (अतः) घातक विष, या जहर, दे० भामि० १।९५, २।७३, पंच० १।१८३, ('हलाहल' और 'हालहल' भी लिखा जाता है) ।

हालाहली, हाला [हालाहल+ङीप्, हल्+घञ्+टाप्] शराब,—मदिरा—हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्काम् - मेघ० ४९, पंच० १।५८, शि० १०।२१ ।

हालिकः [हलेन खनति हलः प्रहरणमस्य तस्येदं वा ठक् ठञ् वा] 1. हलवाला, किसान 2. जो हल चलाये (जैसे कि हल में जुता बैल) 3 जो हल के द्वारा युद्ध करता है ।

हालिनी [हल्+णिनि+ङीप्] एक प्रकार की बड़ी छिपकली ।

हाली [हल्+इण्+ङीप्] छोटी साली ।

हालुः [हल्+उण्] दांत ।

हावः [ह्वे भावे घञ् नि० सम्प्र०, हुकरणे घञ् वा] 1. बुलावा, आमन्त्रण 2. स्त्रियों की नखरेबाजी जो पुरुषों की रत्यात्मक भावनाओं को उत्तेजित करती है, (प्रेम की) रसरेली, मधुरवाचण हावहारि हसित वचनानां कौशलं दृशि विकारविशेषाः—शि० १०।१३, अनु सराग ननु तु सहावम् -भट्टि० ३।४३, (उज्ज्वलमणि ने हाव की परिभाषा निम्नांकित की है —ग्रीवारेचकसंयुक्तो भ्रूनेत्रादिविकासकृत् । भावादीषत् प्रकाशो यः स हाव इति कथ्यते ।। दे० सा० द० १२७ भी ।

हासः [हस्+घञ्] 1. ठहाका, हंसी, मुस्कराहट मालो हासः—शृङ्गार० १२२ 2. हर्ष, खुशी, आमोद 3. हास्यध्वनि, हास्यरस, - दे० सा० द० २०७ 4. व्यंग्यपूर्ण हंसी रघु० १२।३६ 5. खुलना, विकसित होना, फूलना (कमल आदि का)—फुल्लानि सामर्षतयेव तेनु सरोजलक्ष्मीं स्थलपद्महासैः—भट्टि० २।३ ।

हासिका [हस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. अट्टहास 2. खुशी, आमोद ।

हास्य (वि०) [हस्+ण्यत्] हंसने के योग्य, हास्यास्पद, रघु० २।४३,—स्यम् 1. हंसी याज्ञ० १।८४ 2. खुशी, मनोरंजन, क्रीडा मनु० ९।२२७ 3 मजाक, मखौल 4 व्यंग्य, दिल्लगी, ठट्ठा, - स्यः काव्य में वर्णित हास्यरस, परिभाषा—विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत् । हास्यो हासस्थायिभाव ('हासो हास्यस्थायिभाव' के स्थान पर) श्वेतः प्रथमदैवतः सा० द० २२८ । सम० आस्पदम् हंसी की चीज़, हंसी उड़ाने की वस्तु, -पदवी, मार्गः खिल्ली, दिल्लगी—कुण्ठीनीतस्त्रिभुवनजयी हास्यमार्गं दशास्यः विक्रम० १८। १०७, रसः हंसी या आमोदात्मक रस दे० ऊपर 'हास्य' ।

हास्तिकः [हस्तिन्+ठक्] महावत, या गजारोही, कम् हाथियों का समूह शि० ५।३० ।

हास्तिनम् [हस्तिना नृपेण निर्वृत्तम् नगरम्—हस्तिन्+अण्] हस्तिनापुर नगर का नाम ।

हाहा (पुं०) [हा इति शब्दं जहाति—हा+हा+क्विप्] एक गन्धर्व का नाम—(अव्य०) पीड़ा, शोक या आश्चर्य का प्रकट करने वाला उद्गार (यह केवल 'हा' शब्द है, केवल बल देने के लिए इसको 'द्वित्व' कर दिया गया है) । सम० —कारः 1 शोक, विलाप, रोना-धोना 2 युद्ध का शोर, रवः 'हा हा' की ध्वनि ।

हि (अव्य०) (इसका प्रयोग वाक्य के आरम्भ में कभी नहीं होता) इसके अर्थ निम्नांकित हैं: 1 इसलिए कि, क्योंकि (तर्कसंगत युक्ति का निर्देश करना) —अग्निरिहास्ति धूमो हि दृश्यते गण०, रघु० ५।१० 2 निस्सन्देह, निश्चय ही देवप्रमाणप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गजः मालवि० ३ 3 उदाहरणस्वरूप, जैसा कि सुविदित है प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् । सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८ 4 केवल, अकेला (किसी विचार पर बल देने के लिए) मूढो हि मदनेनायास्यते का० १५५ 5 कभी कभी यह केवल पूरक की भांति ही प्रयुक्त होता है ।

हि (स्वा० पर० हिनोति, हित—प्रेर० हाययति, इच्छा० जिघीषति) 1. भेजना, उकसाना 2. डाल देना, फेंकना, (तीर), चलाना, (बन्दूक) दागना गदा चकम्पिता जिघ्ये - भट्टि० १४।३६ 3 उत्तेजित करना, भड़काना, उकसाना, 4. उन्नत करना, आगे बढ़ाना 5 तृप्त करना, प्रसन्न करना, उल्लसित करना 6. जाना, प्रगति करना, प्र , 1. भेज देना, धकेलना 2. फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दाग देना

—विनाशात्तस्य वृक्षस्य रक्षास्तस्यैं महोपल । प्रजिघाय —रघु० १५।२१, भट्टि० १५।१२१ 3 भेजना प्रेषित करना, मा० १, रघु० ८।७९ ११। ४९, १२।८६, भट्टि० १५।१०४ ।

हिंस् (भ्वा० रुधा० पर० चुरा० उभ० हिंसति हिनस्ति, हिंसयति ते, हिंसित) 1 प्रहार करना आघात करना 2 चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना नुकसान पहुँचाना 3 कष्ट देना संताप देना —मा० २।१ 4 मार डालना हत्या करना बिल्कुल नष्ट कर देना कीर्ति मुने दुष्कृत या हिनस्ति उत्त० ५।२१ रघु० ८।४५ भग० १३।२८ भट्टि० ६।३८ १४।२७ १५।५८ ।

हिंसक (वि०) [हिंस + ण्वुल्] हानिकर अनिष्टकर क्षतिकर 1 खूंखार जानवर शिकारी जानवर 2 शत्रु 3 अथर्ववेद में निपुण ब्राह्मण ।

हिंसनम्, ना [हिंस् + ल्युट्] प्रहार करना चोट मारना वध करना मनु० २।१७७, १०।४८ याज्ञ० १।१३३ ।

हिंसा [हिंस् + अ + टाप्] 1 क्षति उत्पात बुराई, नुकसान, चोट (यह तीन प्रकार की मानी जाती है —कायिक, वाचिक और मानसिक) अहिंसा परमो धर्मः 2 वध करना हत्या करना, विध्वंस —रघु० ५।५७, याज्ञ० ३।११३ मनु० १०।६३ 3 लूटना, डाका डालना । सम० —आत्मक (वि०) हानिकर, विनाशकारी, —कर्मन् (नपु०) 1 कोई भी हानिकर या क्षति पहुँचाने वाला कृत्य 2 शत्रु का नाश करने में प्रयुक्त जादू, अभिचार —प्राणिन् अनिष्टकर जन्तु —रत (वि०) उत्पात में संलग्न —रुचि उत्पात करने पर तुला हुआ —समुद्भव (वि०) क्षति से उत्पन्न ।

हिंसारु [हिंसा + आरु] 1 बाघ, चीता 2 कोई भी अनिष्टकर जन्तु ।

हिंसालु (वि०) [हिंसा + आलुच्] 1 हानिकर उत्पाती चोट पहुँचाने वाला 2 घातक —(पु०) उत्पाती या जंगली कुत्ता ।

हिंसालुक (वि०) [हिंसालु + कन्] उपद्रवी या जंगली कुत्ता ।

हिंसीरः [हिंस् + ईरन्] 1 बाघ 2 पक्षी 3 उपद्रवी व्यक्ति ।

हिंस्य (वि०) [हिंस् + ण्यत्] जो क्षतिग्रस्त किया जा सके या मारा जा सके रघु० २।५७, मनु० ५।४१ ।

हिंस्र (वि०) [हिंस् + र] 1 हानिकर अनिष्टकर, उपद्रवी, पीडाकर, घातक मनु० ९।८०, १२।५९ 2. भयंकर 3 क्रूर, भीषण बर्बर —स्रः 1 भीषण जन्तु, शिकारी जानवर, —रघु० २।२७ 2. विनाशक 3 शिव 4 भीम । सम० —पशुः शिकारी जानवर, —यन्त्रम् 1. पिंजरा 2 दुर्भावनापूर्ण अभिप्रायों के लिए प्रयुक्त होने वाला अभिचारमंत्र ।

हिक्क् I (भ्वा० उभ० हिक्कति ते हिक्कित) 1 अस्पष्ट उच्चारण करना 2. हिचकी लेना ।

II (चुरा० आ० हिक्कयते) चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना, वध करना ।

हिक्का [हिक्क् + अ + टाप्] 1 अस्पष्ट ध्वनि 2 हिचकी ।

हिङ्कारः [हिम् इत्यस्य कारः] 1 हिम् की मन्द ध्वनि करना, हुंकार भरना 2 बाघ ।

हिङ्गु (पु०, नपु०) [हिम् गच्छति —गम् + डु नि०] 1 हींग का पौधा 2 इस पौधे से तैयार किया गया पदार्थ जो घर में खाद्यपदार्थों में छौंक के लिए प्रयुक्त होता है । सम० —निर्यासः 1 हींग के वृक्ष का गोंद के रूप में रस 2 नीम का पेड़, —पत्रः इंगुदी का वृक्ष ।

हिङ्गुल,
हिङ्गुलि
हिङ्गुलु (पु० नपु०) } [हिङ्गु + ला + क (कि डु वा)] ईंगुर, सिंदूर ।

हिञ्जीरः (पु०) हाथी के पैरों को बाँधने की बेडी या रस्सी ।

हिडिम्बः (पु०) वह राक्षस जिसे भीम ने मारा था, —म्बा हिडिंब की बहन जिसने भीम से विवाह कर लिया था । सम० —जित्,— निषूदन, —भिद्,—रिपु (पु०) भीम के विशेषण ।

हिण्ड् (भ्वा० आ० हिण्डते, हिण्डित) जाना, घूमना, इधर उधर फिरना, आ —घूमना, या इधर-उधर फिरना —मा० २ ।

हिण्डनम् [हिण्ड् + ल्युट्] 1 घूमना इधर-उधर फिरना 2 संभोग 3 लेखन ।

हिण्डिकः [हिण्ड + इन् हिण्डि + कन्] ज्योतिषी ।

हिण्डिः (स्त्री) —रः [हिण्ड् + ईरन् (इरन्)] 1 समुद्रझाग 2 पुरुष, मर्द 3 बैंगन ।

हिण्डी [हिण्ड् इन + ङीप्] दुर्गा ।

हित (वि०) [धा (स्त्री) क्त] 1 रखा हुआ डाला हुआ पड़ा हुआ 2 थामा हुआ लिया हुआ 3 उपयुक्त योग्य समुचित अच्छा (अप्र० के साथ) —गोभ्यो हितं साहितम् 4 उपयोगी लाभदायक 5 हितकारी, लाभप्रद संपूर्ण, स्वास्थ्यवर्धक (शब्द या भोजन आदि) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः —कि० १।४, १४।६३ 6 मित्रवत्, कृपालु स्नेही, मधुर (प्राय अधि० के साथ) —तः मित्र, परोपकारी, मित्र जैसा परामर्शदाता —हिताश्च सम्पृष्टो न विप्रभु

—कि० १।५, हि० १।३०,—तम् 1. उपकार, लाभ, फ़ायदा 2. कोई भी उपयुक्त या समुचित बात 3. कल्याण, कुशल, क्षेम। सम०—अनुबन्धिन् (वि०) कल्याणप्रद,—अन्वेषिन्, —अर्थिन् कुशलाभिलाषी, —इच्छा सदिच्छा, मंगलकामना,—उक्तिः आरोग्यवर्धक निदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—उपदेशः हितकर उपदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—एषिन् हितेच्छु, भला चाहने वाला, परोपकारी,—कर (वि०) सदा या कृपापूर्ण कार्य करने वाला, मित्र-सा व्यवहार करने वाला, अनुकूल,—काम (वि०) हितेच्छु, मंगलाकांक्षी, —काम्या दूसरे की मंगलकामना, सदिच्छा, —कारिन्, —कृत (पुं०) परोपकारी,—प्रणी (पुं०) गुप्तचर —बुद्धि (वि०) मित्र-से मन वाला, सद्भावनापूर्ण —वाक्यम् मैत्रीपूर्ण परामर्श,—वादिन् (पुं०) सत्परामर्श देने वाला।

हितकः [हित+क] 1 बच्चा 2 किसी पशु का शावक।

हिन्तालः [हीनस्तालो यस्मात्—पृषो०] एक प्रकार का खजूर।

हिन्दोलः [हिन्दोल्+घञ् पृषो०] 1 हिंडोल, झूला 2 श्रावण के शुक्ल पक्ष में दोलोत्सव के अवसर पर कृष्ण भगवान् की मूर्तियों को ले जाने वाला हिंडोल, या दोलोत्सव।

हिन्दोलकः, हिन्दोला [हिन्दोल+कन्, टाप् वा] झूला, हिंडोला।

हिम (वि०) [हि+मक्] ठंडा, शीतल, सर्द, तुषारयुक्त ओसीला,—मः 1 जाड़े की मौसम, सर्द ऋतु 2 चन्द्रमा 3 हिमालय पर्वत 4 चन्दन का पेड़ 5 कपूर, —मम् कुहरा, पाला रघु० १।४६, ९।२५, कु० ७।१९ 2. बर्फ़, पाला—कु० १।३, ११, रघु० ९।२८, १५। ६६, १६।४४, कि० ५।१२ 3 सर्दी, ठंडक 4 कमल 5 ताजा मक्खन, 6 मोती 7 रात 8 चन्दन की लकड़ी। सम० अंशुः 1 चन्द्रमा,—मेघ० ८९, रघु० ५।१६, ६।४७, १४।८०, शि० २।४९ 2 कपूर °अभिख्यम् चाँदी, अचलः—अद्रिः हिमालय पहाड़ —कु० १।५४ रघु० ४।७९, १४।१३, °जा, °तनया 1 पार्वती 2. गंगा, अम्बु,—अम्भस् (नपुं०) 1 शीतल जल 2 ओस रघु० ५।७०,—अनिलः शीतल वायु,—अब्जम् कमल, —अरातिः 1 आग 2. सूर्य,—आगमः जाड़े का मौसम या सर्द ऋतु —आर्त (वि०) पाले से ठिठुरा हुआ, ठंड से जमा हुआ,—आलयः हिमालय पहाड़—कु० १।१, °सुता पार्वती का विशेषण —आह्वः—आह्वयः कपूर, —उस्रः चन्द्रमा,—करः 1. चाँद—लुठति न सा हिमकरकिरणेन —गीत० ७ 2. कपूर, —कूटः 1 जाड़े की ऋतु 2. हिमालय पहाड़,—गिरिः हिमालय पहाड़,—गुः चाँद, —जः मैनाक पर्वत,—जा 1. खिरनी का पेड़ 2. पार्वती, —तैलम् एक प्रकार की कपूर की मल्हम, —दीधितिः चन्द्रमा—शि० ९।२९—दुर्दिनम् अति ठंड से कष्टदायक दिन, ठंड और बुरा मौसम,—द्युतिः चन्द्रमा, —द्रुह (पुं०) सूर्य,—ध्वस्त (वि०) पाले से मारा हुआ, कुतरा हुआ या नष्ट हुआ, —प्रस्थः हिमालय पहाड़, —रश्मि (पुं०) चाँद,—वालुका कपूर,—शीतल (वि०) बर्फ़ की भाँति ठंडा, —शैलः हिमालय पहाड़, —संहति (स्त्री०) बर्फ़ का ढेर, —सरस् 'बर्फ़ की झील, ठंडा पानी' मा० १।३१, —हासकः दलदल में होने वाला खजूर का पेड़।

हिमवत् (वि०) [हिम+मतुप्] हिममय, बर्फ़ीला, कुहरा से युक्त (पुं०) हिमालय पहाड़—रघु० ४।७९, विक्रम० ५।२२। सम०—कुक्षिः हिमालय पर्वत की घाटी,—पुरम् हिमालय की राजधानी औषधिप्रस्थ का नाम, कु० ६।३३ —सुतः मैनाक पर्वत, —सुता 1 पार्वती 2 गंगा।

हिमानी [महद् हिमम् हिम+ङीप् आनुक्] बर्फ़ का ढेर, हिम का समूह हिमसंहति —नगमुपरि हिमानीगौरमासाद्य जिष्णुः कि० ४।३८, भामि० १।२५।

हिरणम् [हृ+क्युन् नि०] 1 सोना 2 वीर्य 3 कौड़ी।

हिरण्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [हिरण+मयट् नि०] सोने का बना हुआ सुनहरी—हिरण्मयी सीतायाः प्रतिकृतिः उत्तर० २ रघु० १५।६१,—यः ब्रह्मा देवता।

हिरण्यम् [हिरणमेव स्वार्थे यत्] 1 सोना,—मनु० २।२४६, ८।१८७ 2 सोने का पात्र मनु० २।२९ 3 चाँदी 4. कोई भी मूल्यवान् धातु 5. दौलत, संपत्ति 6 वीर्य, शुक्र 7 कौड़ी 8 एक विशेष माप 9 मांगल 10 धतूरा 1 सम०—कक्ष (वि०) सुनहरी करधनी पहनने वाला, —कशिपुः राक्षसों के एक प्रसिद्ध राजा का नाम (यह कश्यप और दिति का पुत्र था। यह इतना शक्तिशाली हो गया था कि इसने इन्द्र का राज्य छीन लिया और तीनों लोकों को पीड़ित करने लगा। इसने बड़े-बड़े देवताओं की निन्दा की, और अपने पुत्र प्रह्लाद को, विष्णु को ही परमात्मा मानने के कारण नाना प्रकार के कष्ट दिये, परन्तु बाद में उसे विष्णु ने नरसिंह का अवतार धारण कर यमपुर भेज दिया—दे० प्रह्लाद), —कोशः सोना और चाँदी (चाहे आभूषण बने हों या बिना गढ़ा सोना चाँदी) —गर्भः 1 ब्रह्मा (क्योंकि यह सोने के अंडे से पैदा हुआ) 2. विष्णु का नाम 3 सूक्ष्मशरीर धारण करने वाली आत्मा, —द (वि०) सुवर्ण देने वाला —मनु० ४।२३०, (दः) समुद्र, (दा) पृथ्वी,—नाभः मैनाक पहाड़,—बाहुः 1 शिव का विशेषण 2. सोन नदी, —रेतस् 1. आग—रघु० १८।२५ 2. सूर्य 3 शिव

4. चित्रक या मदार का पौधा,—वर्णा नदी,—बाहुः सोन दरिया ।

हिरण्मय (वि०) (स्त्री० -यी) [हिरण्य+मयट्, नि० मलोप] सुनहरी ।

हिरुक् (अव्य०) [हि०+उकिक्, रुट] 1 के बिना, के सिवाय 2. में, बीच में 3 निकट 4 नीचे ।

हिल् (तुदा० पर० हिलति) केलिक्रीड़ा करना, स्वेच्छा से रमण करना, प्रेमालिंगन करना, कामेच्छा प्रकट करना ।

हिल्लः [हिल्+लक्] एक प्रकार का पक्षी ।

हिल्लोलः [हिल्लोल्+अच्] 1 लहर, झाल 2 हिंडोल राग 3. धुन, सनक 4 एक रतिबंध ।

हिल्वलाः (स्त्री० ब० व०) [इल्वला पृषो०] मृगशिरा नक्षत्र के सिर के पास के पाँच छोटे तारे ।

ही (अव्य०) [हि+डी] 1 आश्चर्य प्रकट करने वाला अव्यय हतविधिललितानां ही विचित्रो विपाकः—शि० ११।६४, या ही चित्रं लक्ष्मणेनोचे—भट्टि० १४। १९ (इस अर्थ में प्रायः नाटकीय भाषा में इसकी आवृत्ति होती है) 2 थकावट, उदासी, खिन्नता तर्क ।

हीन (भू० क० कृ०) [हा+क्त, तस्य न ईत्वम्] 1 छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2 रहित, वञ्चित वियुक्त, के बिना (करण० या समास में)—गुणहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः—सुभा०, इसी प्रकार द्रव्य°, मति° और उत्साह° आदि 3 मुर्झाया हुआ, बर्बाद 4 त्रुटिपूर्ण, सदोष, हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत्ततः मनु० ३।२४२ 5 घटाया हुआ 6 कम, निम्नतर मनु० २।१९४ 7 नीच, अधम, कमीना, दुष्ट,—नः 1 सदोष गवाह 2. अपराधी प्रतिवादी (नारद पाँच प्रकार के बताता है अन्य-वादी क्रियाद्वेषी नोपस्थायी निरुत्तरः । आहूतप्रपलायी च हीनः पंचविधः स्मृतः ॥) । सम०—अङ्ग (वि०) अंगहीन, विकलांग, अपाहज, सदोष मनु० ४।१४१, याज्ञ० १।२२२, कुल, ज (वि०) ओछे कुल में उत्पन्न, नीच परिवार का,—क्रतु (वि०) जो अपने यज्ञानुष्ठान में अवहेलना करता है,—जाति (वि०) 1. नीच जाति का 2. जाति से बहिष्कृत, बिरादरी से खारिज, पतित,—योनिः (स्त्री०) नीची कोटि का जन्मस्थान,—वर्ण (वि०) 1 नीच जाति का 2 घटिया दर्जे का,—वादिन् (वि०) 1 सदोष बयान देने वाला 2 अपलापी 3 गूंगा, मूक—सेवा नीच व्यक्तियों से मेलजोल, सेवा नीच व्यक्तियों की टहल करना ।

हीन्तालः [हीनस्तालो यस्मात्—पृषो०] दलदल में होने वाला खजूर का वृक्ष ।

हीरः [हृ+क, नि०] 1 साँप 2 हार 3 सिंह 4. 'नैषध-चरित' काव्य के रचयिता श्री हर्ष के पिता का नाम, —रः, —रम् 1 इन्द्र का वज्र 2 हीरा, (नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में आने वाला) । सम० —अङ्ग इन्द्र का वज्र ।

हीरकः [हीर+कन्] हीरा ।

हीरा [हीर+टाप्] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 चिऊँटी ।

हीलम् [ही विस्मयं लाति ला+क] पौरुषेय वीर्य ।

हीही (अव्य०) [ही+ही] आश्चर्य और प्रमोद को प्रकट करने वाला अव्यय ।

हु (जुहो० पर० जुहोति हुत— कर्मवा० हूयते, प्रेर० हाव-यति-ते इच्छा० जुहूषति) 1 (हवनकुंड में आहुति के रूप में) प्रस्तुत करना, किसी देवता के सम्मान में भेंट देना (कर्म० के साथ), यज्ञ करना यो मन्त्रपूतां तनुमप्यहौषीत् रघु० १३,४५, जटाधरः सन् जुहुधीह पावकम्—कि० १।४४ हविर्जुहुधि पावके—भट्टि० २०।११, मनु० ३।८७, याज्ञ० १।९९ 2 यज्ञ का अनुष्ठान करना 3 खाना ।

हुड् I (भ्वा० पर० होडति) जाना ।

II (तुदा० पर० हुडति) संचय करना ।

हुड [हुड्+क] 1 मेढ़ा 2 चोरों को दूर रखने के लिए लोहे का काँटा 3. एक प्रकार की बाड़ 4 लोहे का मुद्गर ।

हुडुः [हुड्+कु०] मेढ़ा—जम्बुको हुडुयुद्धेन — पंच० १।१६२ ।

हुडुक्कः [हुड्+उक्क] बालू की घड़ी के आकार का बना एक छोटा ढोल मै० १५।१७ 2. एक प्रकार का पक्षी, दात्यूह 3 दरवाजे की कुंडी 4. मद में चूर पुरुष ।

हुडुत् (नपुं०) [हुड्+उति] 1. साँड का राँभना 2. धमकी का शब्द ।

हुण्डः [हुण्ड्+क] 1 व्याघ्र 2 मेढ़ा 3. बुद्धू 4. ग्रामशूकर 5 राक्षस ।

हुत (भू० क० कृ०) [हु+क्त] 1. आहुति के रूप में आग में डाला हुआ, बलि या भेंट के रूप में होम किया हुआ 2 जिसे आहुति दी जाय—श० ४, रघु० २।७१, ९।११,—तः शिव का नाम,—तम् आहुति, चढ़ावा । सम०—अग्नि (वि०) जिसने अग्नि में आहुति डाली है—रघु० १।६, —अशनः 1 अग्नि—समीरणो नोदयिता भवेति व्यादिश्यते केन हुताशनस्य—कु० ३।२१, रघु० ४।१ 2 शिव का नाम °सहायः शिव का विशेषण —अशनी फाल्गुन मास की पूर्णिमा, होलिका, —आशः आग—प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशम्—रघु० २।७१ —जातवेदस् (वि०) जिसने अग्नि में आहुति दी है —भुज् (पुं०) आग— नैकत्यादिबहुंनभुज इव छिन्नभूयिष्ठधूमा विक्रम० १।९, उत्तर० ५।९, °प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा,—वहः आग— जगाकीर्ण

मन्ये हुतवहपरीत गृहमिव—श० ५।१०, शीतांशुस्तपनो हिम हुतवह गीत० ९, मेघ० ४३, ऋतु० १।२७,—होम: वह ब्राह्मण जिसने आग में आहुति दी हैं, (मम्) जला हुआ शाकल्य ।

हुम् (अव्य०) [हु+डुमि] (मूल रूप से एक अनुकरणात्मक ध्वनि) निम्नांकित अर्थों को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय 1 याद, प्रत्यास्मरण हु ज्ञातम्, या–रामो नाम बभूव हु तदबला सीतेति हुम् 2 सन्देह—चैत्रो हु मैत्रो हुम् 3 स्वीकृति—उत्तर० ५।३५ 4 रोष 5 अरुचि 6 भर्त्सना 7 प्रश्नवाचकता (जादू व मंत्रों में 'हुम्' का सम० के साथ प्रयोग —उदा० ओं कवचाय हुम्,) (हुंकृ 'हुम् की ध्वनि करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना, रांभना यथा अनुहुंकृ 'बदले में 'हुम्' की ध्वनि करना अनुहुंकुरुते घनध्वनि न हि गोमायुरुतानि केसरी—शि० १६।२५) सम० कार:—कृति: (स्त्री०) 1 'हुम्' की ध्वनि करना—पृष्टा पुन पुन कान्ता हुंकारैरेव भाषते 2 गर्जना, ललकार ब्रतहुंकारशंसिन —कु० २।२६, हुंकारेणेव धनुष: स हि विघ्नानपोहति श० ३।१, रघु० ७।५८, कु० ५।५४ 3 दहाड़ना, रांभना 4 सूअर का घुर्घुराना 5 धनुष की टंकार ।

हुर्छ् (भ्वा० पर० हुर्छति) टेढा होना ।

हुल् (भ्वा० पर० होलति) 1 जाना 2 ढांपना, छिपाना ।

हुलहुली [हुल्+क, द्वित्वम्, ङीष् च] हर्ष के अवसरों पर महिलाओं द्वारा उच्चारण की जाने वाली एक अस्पष्ट हर्षध्वनि ।

हुहु (हू) (पुं०) [ह्वे+डु, नि०] एक गन्धर्व विशेष ।

हूड् (भ्वा० आ० हूडते) जाना ।

हूण: (ण) [ह्वे+नक्, सम्प्र०, पत्वे पृषो० णत्वम्] 1 असभ्य, जंगली, विदेशी —सद्योमुण्डितमत्तहूणचिबुकप्रस्पर्धि नारंगकम् 2 एक सोने का सिक्का, (सम्भवत यह हूणों के देश में प्रचलित था), -णा: (पुं०, ब० व०) एक देश या उसके अधिवासियों का नाम—हूणावरोधानां—रघु० ४।६८ ।

हूत (भू० क० कृ०) [ह्वे+क्त सम्प्रसारणम्] आमन्त्रित, बुलाया गया, निमन्त्रित दे० 'ह्वे' ।

हूति: (स्त्री०) [ह्वे+क्तिन्, सम्प्र०] 1. बुलावा, निमन्त्रण 2. चुनौती 3 नाम—जैसा कि 'हरिर्हेतुहूति:' में ।

हूम् दे० हुम् ।

हूरव: [हू इति रवो यस्य ब० स०] गीदड़ ।

हूहू (पुं०) [=हुहु पृषो०] गन्धर्व विशेष ।

हृ (भ्वा० उभ० हरति-ते, हृत, कर्मवा० ह्रियते) लेना, ढोना, पहुँचाना, आगे आगे चलना (इस अर्थ में बहुधा द्विकर्मक प्रयोग)—अजां ग्रामं हरति सिद्धा०, सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य - मेघ० ७, मनु० ४।७४ 2 उठाकर ले जाना, अपहरण करना, दूरी पर ले जाना, भट्टि० ५।४७ 3 अपहृत करना, लूटना, डाका डालना, चुराना—दुर्बला आरब्धवानो हरिष्यन्तीति शङ्कया भामि० ४।४५, रघु० ३।१९, कु० २।४७, भट्टि० २।३९, मनु० ७।४३ 4 विवश करना, वञ्चित करना, छीन लेना, अपहरण करना—वृन्तात्श्लथ हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९, ३।५४, भट्टि० १५।११६, मनु० ८।३३४ 5 ले जाना, प्रतीकार करना, नष्ट करना तथापि हरते ताप लोकानामुन्नतो घन भामि० १।४९ रघु० १५।२४, मेघ० ३१ 6 आकृष्ट करना मुग्ध करना, जीत लेना, प्रभाव डालना अधीन करना वशीभूत करना चेतो न कस्य हरते गतिरङ्गनाया भामि० २।१५७ ये भावा हृदयं हरन्ति १।१०३, तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृत श० १।५, मृगया जहार चतुरेव कामिनी—रघु० ९।६९, १०।८३ विक्रम० ४।१०, ऋतु० ६।२०, भग० ६।४४, २।६० मनु० ६।५९ 7 उपलब्ध करना, ग्रहण करना, लेना प्राप्त करना ततो विंश नृपो हरेत् मनु० ८।३९१ १५३ न हरतु मृगयाताकाम्—दश० 8 रखना, अधिकार में करना भामि० २।१६३ 9 पराभूत करना, ग्रस्त करना भट्टि० ५।७१, शि० ९।६२ 10 विवाह करना —मनु० ९।९३ 11 बांटना—प्रेर० (हारयति-ते) 1 उठवा देना, ढुवाना, पहुँचाना (कोई चीज) किसी के हाथ भिजवाना (करण० के कर्म० के साथ)—भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति—सिद्धा०, जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम् -मेघ० ४, मनु० ८।११४ कु० २।३९ 2 अपहृत करवाना, नष्ट करवाना, वञ्चित होना 3 पुरस्कार देना, इच्छा० (जिहीर्षति—ते) लेने की इच्छा करना । अध्या—, न्यूनपद की पूर्ति करना, अनु—, 1 नकल करना, मिलना-जुलना देहबन्धेन स्वरेण च राममद्रमनुहरसि उत्तर० ४, इसी प्रकार कि० ९।६७ 2 (अपने माता पिता से) मिलना जुलना (इस अर्थ में आ०) दे० पा० १।३। २१ वार्तिक, अप—, 1 छीन लेना, उड़ा लेना—पञ्चात्पुमैरपहृतमर कल्पते विश्रमाय विक्रम० ३।१ 2 पराङमुख होना, मुड़ना- वदनमपहरन्ती (गौरीम्) कु० ७।९५ 3 लूटना, डाका डालना, चुराना 4 (किसी को) वञ्चित करना, दूर करना, नष्ट करना त्वं च कीर्तिमपहर्तुमुद्यत—रघु० ११।७४ 5 आकृष्ट करना, प्रभावित करना, डोर डालना, जीत लेना, वशीभूत करना (ब) प्रियतमा यतमानमपाहरत् रघु० ९।७, इसी प्रकार 'अपह्रियते खलु परिश्रमजनितया निद्रया उत्तर० १, (प्रेर०) (दूसरों से) अपहरण करवाना -कि० १।३१, अभि—,

उठाकर ले जाना, हटाना, अभ्यव—, —ाना (प्रेर०) खिलाना, भोजन कराना, आ—, 1 (क) लाना, ले जाना यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम् रघु० ३।९, १४। ७७ (ख) ढोना, पहुँचाना मनु० ९।५४ 2 निकट लाना, देना अयाचिताहृतम्—याज्ञ० १।१२५ 3 प्राप्त करना, लेना, हासिल करना मनु० २। १८३, ७।८०, ८।१५१ 4 रखना, धारण करना आजह्रतुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविन्दश्रियम-व्यवस्थाम् कु० १।३३ 6 (यज्ञ का) अनुष्ठान करना स विश्वजितमाजह्रे यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम् रघु० ४।८६, १४।८७ 7 वसूल करना वापिस लेना 8 कारण बनना, पैदा करना जन्म देना 9 पहनना, धारण करना 10 आकृष्ट करना 11 हटाना दूर करना—(प्रेर०) 1 मंगवाना 2 खिल-वाना 3 एकत्र करना, परस्पर मिलाना, उद्— 1 बचाना, मुक्त करना, उद्धार करना, छुड़ाना—मा तावदुद्धर शुचो दयिताप्रवृत्त्या विक्रम० ४।१५ 2 खींचना, बाहर निकालना (शस्त्र) उद्धर्तुमैच्छ-त्प्रसभोद्धृतारिः रघु० २।३०, ३।६४ 3 उन्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना, उद्धार करना नमयामास नृपाननुद्धरन् रघु० ८।९ ४।६६ त्रिदिवमुद्धृतदानव-कण्टकम् श० ७।३ 4 उठाना, ऊपर को करना, उन्नत करना, (हाथ आदि) फैलाना मनु० ४।६२, पंच० १।३९३ 5 (फूल आदि) तोड़ना 6 अवलोकन करना —शि० ३।७५ 7 घटाना व्यवकलन करना 8 छाँटना, चुनना, उद्धृत करना—इद पद्य रामायणादुद्धृतम् —(प्रेर०) बाहर निकलवाना रघु० ९।७४, उदा—, 1 वर्णन करना, बयान करना प्रकथन करना कहना बोलना, उच्चारण करना उदाजहार द्रुपदा-त्मजा गिर—कि० १।२७, मृच्छ० ९।४ चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—मालवि० २, मा० १ 2 पुकारना नाम लेना त्वां कामिनो मदनदूतिकामुदाहरन्ति —विक्रम० ४।११, भुताग्निलो दशरथ इत्युदाहृत — भट्टि० १।१ 3. सचित्र बनाना, सोदाहरण निरू-पण करना, उदाहरण या चित्र उद्धृत करना, त्वम-दाहृयस्व कथमन्यथा जनं शि० १५।२९, उप 1 ले जाना, निकट लाना श० १ 2 प्रस्तुत करना प्रदान करना, उपहार देना—नीवारभागधेयमस्माक-मुपहरन्तु—श० २, मातृभ्यो बलिमुपहर—मृच्छ० १, महावीर० ६।२२, रघु० १४।१९, १६।८०, १९।१२, श० ३ 3. (बलि के रूप में) प्रस्तुत करना, उपा—, लाना, ले जाना, निस्—, 1 बाहर निकालना, खींचना, उद्धृत करना—रघु० १४।४२ 2 शव को बाहर निकालना मनु० ५।९१, याज्ञ० ३।१५ 3. (दोष की भांति) दूर करना, परि—, 1 बचना, दूर रहना— स्त्रीसंनिकर्षं परिहर्तुमिच्छन्नन्तर्दधे भूतपतिः सभूतः कु० ३।७४, मनु० ८।४००, कु० ३।४३ 2 त्यागना, परित्यक्त करना, छोड़ना, तिला-ञ्जलि देना—कलि न कथितमिदमनुपदमचिरं मा परि-हर हरिमतिशयरुचिरम्—गीत० ९ 3 हटाना, नष्ट करना, उत्तर देना, प्रत्याख्यान करना (आक्षेप व आरोप आदि का) महाप्रस्य जगतो निमित्त कारणं प्रकृतिश्चेत्यस्य पक्षस्याक्षेप स्मृतिनिमित्त परिहृत । तर्कनिमित्त इदानीमाक्षेप परिह्रियते—शा० भा०, मेघ० १४, प्र—, 1 प्रहार करना, आघात करना, पीटना लतया प्रहरति 'लात मारता है' रघु० ५। ६८, कु० ३।७०, भट्टि० ९।७ 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, घायल करना (अधि० के साथ) —आर्तत्राणाय व शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि श० १। ११, रघु० २।६२, ३।५९ ११।८४, १५।३ 3 आक्र-मण करना, हमला करना 4 फेंकना, डालना, प्रक्षेप करना (अधि० या सप्र० के साथ) 5 छापा मारना, वि— 1 ले जाना पकड़ कर दूर करना 2 हटाना, नष्ट करना, 3 गिरने देना (आँसू आदि) डालना 4 (समय) बिताना 5 मनोरंजन करना आमोद-प्रमोद में व्यस्त होना, खेलना विहरति हरिरिह सरसवसन्ते गीत० १ व्यव—, 1 व्यवहार करना, व्यवसाय करना 2 करना, आचरण करना, व्यापार करना 3 कानून की शरण जाना, कचहरी में नालिश करना अर्थपतिर्व्यवहर्तुमर्थगौरवादभियोक्ष्यते—दश०, व्या—, बोलना, कहना बतलाना, वर्णन करना, प्रकथन करना कु० २।३, ६।२, रघु० ११।८३, सम्—, 1 लाना, मिला कर खींचना 2 (क) सिकोड़ना संक्षिप्त करना, भींचना रघु० १०।३२, (ख) गिरा देना संह्रियतामियम्— का० 3 साथ साथ लाना, एकत्र करना, संचय करना 4 नष्ट करना संहार करना (विप० 'सृज्') अमू युगान्तो-चितकालयोगात् संहृत्य लोकान् पुरुषोऽधिशेते रघु० १३।६ 5 वापिस लेना, रोकना, पीछे खींचना —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् श० २।११, ६।४ न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मन —हि० १।६१ रघु० ४।१६ १२।१०३, मनु० २। २८ 6 दमन करना, नियन्त्रण करना, दबाना क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति कु० ३। 7 बन्द करना, समाप्त करना—समा—, 1 लाना, पहुँचाना, ढोना सर्व एव समाहार्य तथा क्षीरं सहोषधि भट्टि० १५।१०७ 2 संग्रह करना, साथ मिलाना, जोड़ना तत्र स्वयंवर समाहृतराजलोकम्—रघु० ५।६२ भट्टि० ८।६३ 3 खींचना, आकृष्ट करना 4 नष्ट करना, संहार करना मनु० १।१

३२ 5 पूरा करना (यज्ञ आदि) 6 वापिस आना, अपने उचित स्थान को फिर से प्राप्त करना—मनु० ८।३१९ 7. दमन करना, नियन्त्रित करना।

हृ (ह्रि) ह्रीयते (ना० धा० आ०) 1 क्रुद्ध होना, 2. लज्जित होना (करण० या सब० के साथ) —त्वयापि तां मन्मपि दण्डधारिणा कथं न पत्या धरणी हृणीयते नै० १।१३३, दिवाऽपि वज्रायुधभूषणा या हृणीयते वीरवती न भूमि भट्टि० २।३८।

हृणी (णि) या [हृणी + यक् + अ + टाप्] 1 निन्दा, भर्त्सना 2 लज्जा 3 करुणा।

हृत् (वि०) [हृ + क्विप्, तुक्] (केवल समास के अन्त में) ले जाने वाला, अपहरण करने वाला, हटाने वाला, उठाकर ले जाने वाला, आकर्षक।

हृत (भू० क० कृ०) [हृ + क्त] 1. ले जाया गया 2 अपहरण किया गया 3 मुग्ध किया गया 4 स्वीकृत 5. विभक्त, दे० 'हृ'। सम० — अधिकार (वि०) जिसका अधिकार छीन लिया गया है, बाहर निकाला हुआ 2. अपने उचित अधिकारों से वञ्चित किया गया,—उत्तरीय (वि०) जिसका उत्तरीय वस्त्र (चादर दुपट्टा आदि) छीन लिया गया हो,—द्रव्य, —धन (वि०) धन दौलत से वंचित,—सर्वस्व (वि०) जिसका सब कुछ छीन लिया गया हो, बिल्कुल बर्बाद हो गया हो।

हृतिः (स्त्री०) [हृ + क्तिन्] 1. छीन लेना 2. लूटना, खसोटना 3. विनाश।

हृद् (नपुं०) [=हृत्, पृषो० तस्य द, हृदयस्य हृदादेशो वा] (इस शब्द के सर्वनामस्थान के कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'हृदय' के स्थान में यह रूप आदेश हो जाता है) 1 मन, दिल 2 छाती, दिल, सीना—हर्षो हृदि व्याकसपातमलिनोत् कु० ५।५४। सम० आवर्तः घोड़े की छाती के बाल, —कम्पः दिल की कंपन, धड़कन,—गत (वि०) 1. मन में आसीन, सोचा हुआ, अभिकल्पित 2. खाना-पीना गया,—(तम्) अभिकल्पना, अर्थ, आशय,—देशः हृदयतल —पिंडः, -डम्, दिल, रोगः 1. दिल का रोग, दिल की जलन 2. शोक, गम, वेदना 3. प्रेम 4. कुम्भराशि, —लासः (हृल्लासः) 1. हिचकी 2. अशान्ति, शोक,—लेखः (हृल्लेखः) 1. ज्ञान, तर्कणा 2. दिल की पीड़ा, —लेखा (हृल्लेखा) शोक, चिन्ता, —शंकः पेट, —शोकः हृदय की जलन, वेदना।

हृदयम् [हृ + कयन्, दुक् आगमः] 1. दिल, आत्मा, मन —हृदये दिग्धशरैरिवाहतः —कु० ४।२५, इसी प्रकार 'अयोहृदयः—रघु० ९।९, पाषाणहृदय आदि 2. वक्षःस्थल, सीना, छाती —आनमितहृदया निषेदुषी—रघु० ११।१९ 3. प्रेम, अनुराग 4. किसी चीज का रस या आन्तरिक भाग 5. रहस्य विज्ञान, अश्व°, अक्ष°। सम० —आलुः (पु०) सारस,—आविध् (वि०) हृदयविदारक, दिल को बींधने वाला - भट्टि० ६।७३, —ईशः ईश्वरः पति, (—शा, री) 1 पत्नी 2 गृहिणी, —कम्पः दिल का कांपना, धड़कन, —ग्राहिन् (वि०) मनमोहक, —चौरः जो दिल को या प्रेम को चुराता है —छिद् (वि०) हृदय-विदारक, हृदय को बींधने वाला, -विध्,—वेधिन् (वि०) हृदय को बींधने वाला —वृत्तिः (स्त्री०) मन का स्वभाव,—स्थ (वि०) हृदय स्थित, मन में विराजमान, -स्थानम् छाती, वक्षःस्थल।

हृदयङ्गम (वि०) [हृदय + गम् + खच्, मुम्] 1 हृदय को दहलाने वाला, मर्मस्पर्शी, रोमांचकारी 2 प्रिय, सुन्दर,- मा० १ 3 मधुर, आकर्षक, सुखद, रुचिकर - अहो हृदयङ्गमः परिहासः—मा० ३, वल्कलीव हृदयङ्गमस्वना रघु० १९।१३, कु० २।१९ 4. योग्य, समुचित 5 प्यारा, वल्लभ, आंख का तारा माना गया —वव नु ते हृदयङ्गमः सखा कु० ४।२४।

हृदयालु, हृदयिक हृदयिन् (वि०) [हृदय + आलुच्, ठन्, इनि वा] कोमलहृदय वाला, अच्छे दिल वाला, स्नेही।

हृदि (दी) क. (पुं०) एक यादव राजकुमार।

हृदिस्पृश् (वि०) [हृदि + स्पृश् + क्विन्, अलुक् स०] 1. हृदय को छूने वाला 2. प्रिय, प्यारा 3 रुचिकर, मनोहर, सुन्दर।

हृद्य (वि०) [हृदि स्पृश्यते मनोज्ञत्वात् हृद् + यत्] 1. हार्दिक, दिली, भीतरी 2. जो हृदय को प्रिय लगे, स्निग्ध, प्रिय, अभीष्ट, वल्लभ शि० ११।९ 3. रुचिकर, सुखकर, मनोहर मा० ४, रघु० ११। ६८। सम०—गन्धः बेल का पेड़,—गन्धा फूलों से खूब लदा हुआ मोतिया।

हृष् (भ्वा० दिवा० पर० हर्षति, हृष्यति, हृष्ट या हृषित) 1 खुश होना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बाग बाग होना, हर्षोन्मत्त होना—अद्वितीयं रूपानुमत्वा कि जग्न हृष्यति—भामि० २।१०५, भट्टि० १५।१०४, मनु० २।५४ 2 रोमांचित होना, रोंगटे खड़े होना -हृषितास्तनूरुहाः—दश०, हृष्यन्ति रोमकूपाणि —महा० 3 खड़ा होना (कोई अन्य वस्तु—उदा० लिङ्ग का) प्रेर० (हर्षयति-ते) प्रसन्न करना, खुश करना, प्रसन्नता से भर जाना, प्र—, 1 प्रसन्न होना, हर्षोन्मत्त होना— न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य—भग० ५। २०, ११।३६ 2 रोंगटे खड़े होना, (शरीर के बाल) खड़े होना, वि —, हर्षोन्मत्त करना, प्रसन्न होना, खुश होना।

हृषित (भू० क० कृ०) [हृष् + क्त] 1. प्रसन्न, खुश,

आनन्दित, उल्लसित, आह्लादित, हर्षोन्मत्त 2 पुलकित, रोमांचित 3. आश्चर्यान्वित 4. झुका हुआ, विनत 5. निराश 6 ताजा।

हृषीकम् [हृष्+ईकक्] ज्ञानेन्द्रिय। सम० **ईशः** विष्णु या कृष्ण का विशेषण—भग० १।१५ तथा आगे पीछे (हृषीकाणीन्द्रियाण्याहुस्तेषामीशो यतो भवान्। हृषीकेशस्ततो विष्णो ख्यातो देवेषु केशव—महा०)

हृष्ट (भू० क० कृ०) [हृष्+क्त] प्रसन्न, हर्षयुक्त (=हृषित)। सम० **चित्त मानस** (वि०) मन में प्रसन्न, हृदय में खुश, आनन्दित, **रोमन्** (वि०) (हर्ष के कारण) रोमांचित, पुलकित, **वदन** (वि०) प्रसन्नमुख,—**संकल्प** (वि०) संतुष्ट, सुखी **हृदय** (वि०) प्रसन्नमना, प्रफुल्ल, उल्लसित।

हृष्टिः (स्त्री०) [हृष्+क्तिन्] 1 आनन्द, उल्लास हर्ष, खुशी 2 घमंड।

हे (अव्य०) [हा+डे] 1 संबोधनपरक अव्यय (ओ, अरे)—हे कृष्ण, हे यादव हे सखेति भग० ११।४१, हे राजानस्त्यजत सुकविप्रेमबन्धे विरोधम्—विक्रम० १८।१०७ 2 ईर्ष्या, द्वेष, डाह प्रकट करने वाला अव्यय।

हेक्का [=हिक्का, पृषो०] हिचकी।

हेठः [हेठ्+घञ्] 1 प्रकोपन 2 बाधा, अवरोध विरोध रुकावट 3 क्षति, चोट।

हेड् i (भ्वा० आ० हेडते) अवज्ञा करना, अपमान करना तिरस्कार करना।

ii (भ्वा० पर० हेडति) 1 घेरना 2 वस्त्र पहनना।

हेडः [हेड्+घञ्] अवज्ञा, तिरस्कार। सम० **जः** क्रोध, अप्रसन्नता।

हेडावुक्कः (पुं०) घोड़ों का व्यापारी।

हेतिः (पुं०, स्त्री०) [हन् करणे क्तिन् नि०] 1 शस्त्र, अस्त्र—समर विजयी हेतिदलितः—भर्तृ० २।४४, रघु० १०।१२ कि० ३।५६, १४।३० 2 आघात, क्षति 3 सूर्य की किरण 4. प्रकाश, आभा 5. ज्वाला।

हेतुः [हि+तुन्] 1 निमित्त, कारण, उद्देश्य, प्रयोजन —इति हेतुस्तदुद्भवे काव्य० १, मा० १।२३, रघु० १।१०, मेघ० २५, श० ३।११ 2 स्रोत, मूल —स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः—रघु० १।२४, 'अपने प्राणियों को पैदा करने वाले' 3 साधन, उपकरण 4. तर्कयुक्त कारण, अनुमान का कारण, तर्क (पांच अंगों से युक्त अनुमानप्रक्रिया में द्वितीय अंग) 5 तर्क, तर्कशास्त्र 6. कोई भी तर्कयुक्त प्रमाण, या युक्ति 7. साहित्यिक कारण (कुछ विद्वान् इसी को एक अलंकार भी मानते हैं) हेतोर्हेतुमता सार्धमभेदो हेतुरुच्यते (हेतुना, हेतोः कभी कभी हेतौ भी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—'के कारण' 'के निमित्त' 'क्योंकि', (सब० के साथ या समास में प्रयोग वास्त्रविज्ञान-हेतुना, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् रघु० २।४७, विस्मृत कस्य हेतो—मुद्रा० १।१ आदि)। सम० —**अपदेशः** हेतु का उल्लेख (पचांगी अनुमान के रूप में), **आभासः** वह हेतु जो किसी कार्य का कारण तो न हो, परन्तु हेतु सा आभासित हो, कुतर्क, (यह पाँच प्रकार का होता है सव्यभिचार या अनैकान्तिक, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष और बाधित), **उपक्षेपः, उपन्यासः** कारण देना, तर्क उपस्थित करना, **वादः** तर्कवितर्क, शास्त्रार्थ,—**शास्त्रम्** तर्कशास्त्र तर्कयुक्त रचना, स्मृति या श्रुति की प्रामाणिकता पर प्रश्नोत्तर रूप में कृति मनु० २।११

हेतुमत् (पुं०, द्वि० व०) कारण और कार्य, °**भावः** कार्य और कारण में विद्यमान संबंध।

हेतुक (वि०) [हेतु+कन्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) **कः** 1 कारण, तर्क 2 उपकरण 3 तार्किक।

हेतुता,—त्वम् [हेतु+तल्+टाप्, त्व वा] कारणता, कारण की विद्यमानता।

हेतुमत् (वि०) [हेतु+मतुप्] 1 सकारण 2 कारणयुक्त, तर्कयुक्त पुं० कार्य।

हेमम् [हि+मन्] सोना, **म.** 1 काले या भूरे रंग का घोड़ा 2 सोने का विशेष तोल 3 बुध ग्रह।

हेमन् (नपुं०) [हि+मनिन्] 1 सोना 2 जल 3 बर्फ 4 धतूरा 5 केसर का फूल। सम०—**अङ्ग** (वि०) सुनहरी (**गः**) 1 गरुड 2 सिंह 3 सुमेरु पर्वत 3 ब्रह्मा का नाम 5 विष्णु का नाम 6. चम्पक वृक्ष **अङ्गदम्** सोने का बाजूबन्द, **अद्रिः** सुमेरु पर्वत, **अम्भोजम्** सुनहरी कमल,—हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः—मेघ० ६२, **अम्भोरुहम्** सुनहरी कमल—कु० २।४४,—**आह्वः** 1 जंगली चम्पक का पौधा 2 धतूरे का पौधा,—**कन्दलः** प्रवाल, मूंगा,—**करः, कर्तृ,—कारः कारकः** सुनार मनु० १२।६१, याज्ञ० ३।१४७—**किञ्जल्कम्** नागकेसर का फूल,—**कुम्भः** सुनहरी घड़ा **कूटः** एक पहाड़ का नाम श० ७, **केतकी** केवड़े का पौधा जिसके पीले फूल आते हों, स्वर्णकेतकी,—**गन्धिनी** रेणुका नामक गन्धद्रव्य, —**गिरिः** सुमेरु पर्वत, **गौरः** अशोकवृक्ष,—**घ्न** (वि०) सोने से मढ़ा हुआ, (**घ्नम्**) सोने का कंकण, —**ज्वालः** अग्नि, **तारम्** तूतिया,—**दुग्धः, दुग्धकः** गूलर, **पर्वतः** सुमेरु पर्वत,—**पुष्पः,—पुष्पकः** 1. अशोकवृक्ष 2 लोध्रवृक्ष 3 चम्पक वृक्ष, (नपुं०) 1. अशोक का फूल 2 चीनी गुलाब का फूल,—**ल** (**ल**) **कम्**, मोती, **मालिन्** (पुं०) सूर्य,—**यूथिका** सोनजुही, स्वर्णयूथिका,—**रागिणी** (स्त्री०) हल्दी,—**लंबः** विष्णु

का नाम,—शृङ्गम् 1. एक सुनहरी सींग 2. सुनहरी चोटी, —सारम् तूतिया,—सूत्रम्,—सूत्रकम् एक प्रकार का हार।

हेमन्तः,—तम् [हि+झ, मुट् आगमः] छः ऋतुओं में से एक, जाड़े का मौसम (जो मार्गशीर्ष और पौसमास में आता है) नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः। विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतः प्रिये—ऋतु० ४।१।

हेमलः [हेम+ला+क] 1. सुनार 2. कसौटी 3 गिरगिट।

हेय (वि०) [हा+यत्] त्याग करने योग्य।

हेरम् [हि+रन्] 1. एक प्रकार का मुकुट या ताज 2. हल्दी।

हेरम्बः [हे शिवे रम्बति रम्ब्+अच्, अलुक् स०] 1 गणेश 2 भैंसा 3. धीरोद्धत नायक। सम०—जननी पार्वती (गणेश की माता जी)।

हेरिकः [हि+रक्, इट् आगमः] भेदिया, गुप्तचर।

हेलनं—ना [हिल्+ल्युट्] अवज्ञा करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, अपमान करना।

हेला [हेड् भावे डस्य लः] 1. तिरस्कार, अनादर, अपमान शि० ११।७२ 2. केलि, क्रीडा, प्रेमालिंगन, दे० सा० द० १२८, दश० २।३२ 3. सुरत की बलवती इच्छा—प्रौढेच्छयाऽतिरूढानां नारीणां सुरतोत्सवे। शृङ्गारशास्त्रतत्त्वज्ञैर्हेला सा परिकीर्तिता॥ 4. आराम, सुविधा—शि० ११।३४, हेलया आसानी से, बिना किसी कष्ट या असुविधा के 5. चन्द्रिका।

हेलावुक्कः (पुं०) घोड़ों का व्यापारी।

हेलिः [हिल्+इन्] सूर्य, स्त्री०, केलिक्रीडा, सुरतक्रीडा, प्रेमालिंगन।

हेवाकः (पुं०) [यह शब्द कदाचित् फ़ारसी या अरबी से लिया गया है, 'लटभ' शब्द की भांति इसका प्रयोग भी कल्हण बिल्हण आदि परवर्ती साहित्यकारों द्वारा ही हुआ है] उत्कट इच्छा, तीव्र स्पृहा, उत्कण्ठा —असिमग्रासीनदम् निविडासकेषहेवाककीलावेल्लद्बाहुवल्लिलग्ना सकतं राजलक्ष्मीः—विक्रम० १८।१०१, तु० 'हैवाकिन्'।

हेवाकस (वि०) [संभवतः इस शब्द का 'हेवाक' से कोई संबंध नहीं] अत्यंत, तीव्र, उत्कट, प्रचंड हेवाकसस्तु शृङ्गारो हावोऽक्षिभ्रूविकारकृत्—दश० २।३१।

हेवाकिन् (वि०) [हेवाक+इनि] अत्यंत इच्छुक, उत्कंठित (समास में प्रयोग)—आकल्पं महतामहो निरुपमप्रस्थानहेवाकिना निःसामान्यमहत्त्वयोगपिशुना वार्ता विपत्तावपि—कल्हण।

हेष् (भ्वा० आ० हेषते, हेषित) घोड़े की भांति हिनहिनाना, रेंकना, दहाड़ना।

हेषः, हेषा, हेषितम् [हेष्+घञ्, हेष्+अ+टाप्, हेष्+क्त] हिनहिनाहट, रेंक, रथाङ्गसंक्रीडितमश्वहेषः कि० १६।८।

हेषिन् (पुं०) [हेष्+णिनि] घोड़ा।

हेहे (अव्य०) [हे च हे च - द्व० स०] संबोधन परक अव्यय जिसका उपयोग ज़ोर से आवाज़ देने या बुलाने में किया जाता है।

है (अव्य०) [हा+डै] संबोधनात्मक अव्यय।

हैतुक (वि०) (स्त्री० की) [हेतु+ठञ्] 1. कारण परक, कारण मूलक 2 तर्क संबंधी, विवेक परक,—कः 1. तर्कयुक्त हेतुवादी, तार्किक 2 मीमांसक 3. तर्कवादी, अनीश्वरवादी, नास्तिक।

हैम (वि०) (स्त्री० मी) [हिम (हेमन्)+अण्] 1. शीतल, जाड़े का, जाड़े में होने वाला, ठंडा 2. हिम से उत्पन्न—मृणालिनीं हैममिवोपरागम् रघु० १६।७ 2 सुनहरी, सोने का बना हुआ—पादेन हैमं विलिलेख पीठम् -रघु० ६।१५, भट्टि० ५।८९, कु० ६।६, -मम् पाला, ओस, -मः शिव का विशेषण। सम० —मुद्रा,—मुद्रिका सुनहरी सिक्का।

हैमन (वि) (स्त्री०—नी) [हेमन्त एव हेमन्ते भवो वा, अण्, तलोपः] 1. जाड़े में होने वाला, ठंडा शि० ६।५५, कि० १७।१२ 2. जाड़े से संबंध रखने वाला अर्थात् लम्बा (जैसे जाड़े की रातें) शि० ६।७७ 3. सर्दी में उगने वाला या जाड़े के उपयुक्त - हैमनैर्निवसनैः सुमध्यमाः—रघु० १९।४१ 4. सुनहरी, सोने का बना हुआ,—नः। मार्गशीर्ष का महीना 2. जाड़े की ऋतु (=हेमन्त)।

हैमन्तिक (वि०) [हेमन्ते काले भवः ठञ्] 1. जाड़े का, ठंडा 2. सर्दी में उत्पन्न होने वाला,—कम् एक प्रकार का चावल।

हैमल दे० 'हैमन'।

हैमवत (वि०) (स्त्री०—ती) [हिमवतो अदूरभवो देशः तस्येदं वा अण्] 1. बर्फीला 2. हिमालय पर्वत से निकल कर बहने वाला रघु० १६।४४ 3. हिमालय पर्वत पर उत्पन्न, पला-पोसा, स्थित विद्यमान या संबंध रखने वाला। कु० ३।२३, २।६७, —तम् भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

हैमवती [हैमवत+ङीप्] 1. पार्वती का नाम 2. गंगा का नाम 3. एक प्रकार की हरड़, हरीतकी 4. एक प्रकार की औषधि 5. सन का पौधा, अलसी 6. भूरे रंग की किशमिश।

हैयङ्गवीनम् [ह्यो गोदोहात् भवं ह्यस्+गो+ख, नि०] 1. पिछले दिन के दूध से बनाया गया घी, ताजा घी— हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थिताम्—रघु० १।४५, भट्टि० ५।१२ 2. पिछले दिन का मक्खन, ताजा

हैरिकः [हिर+ठक्] चोर।

हैहय (पुं० ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम, यः 1 यदु के प्रपौत्र का नाम 2. अर्जुन कार्तवीर्य (जिसके एक हज़ार भुजाएँ थी, और जिसे परशुराम ने मार गिराया था)—धेनुवत्सहरणाच्च हैहयस्त्वं च कीर्तिमपहर्तुमुद्यत — रघु० ११।७४।

हो (अव्य०) [ह्वे+डो, नि] किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला संबोधनात्मक अव्यय (हे, अरे)।

होड् i (भ्वा० आ० होडते) उपेक्षा करना, अनादर करना।
ii (भ्वा० पर० होडति) जाना।

होडः [होड् + अच्] बेड़ा, नाव।

होतृ (वि०) (स्त्री० त्री) [हु+तृच्] यजमान, हवन करने वाला,- वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री श० १।१, —(पुं०) 1 ऋत्विज् विशेषकर वह जो यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है 2 यज्ञकर्ता रघु० १।६२ ८२, मनु० ११।३६।

होत्रम् [हु+ष्ट्रन्] 1 (घी आदि) कोई भी वस्तु जिसकी हवन में आहुति दी जावे 2 हवन में जलती हुई सामग्री 3 यज्ञ।

होत्रा [होत्र+टाप्] 1 यज्ञ 2 स्तुति।

होत्रीयः [होत्राय हितं होतुरिदं वा छ] देवों को उद्देश्य करके आहुति देने वाला ऋत्विक्,—यम् यज्ञमंडप।

होमः [हु+मन्] यज्ञाग्नि में घी की आहुति देना, (ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले दैनिक पंच यज्ञों में से एक जिसे देवयज्ञ कहते हैं) 2 हवन यज्ञ। सम० अग्निः होम की आग,—कुण्डम् हवनकुंड, —तुरङ्गः यज्ञ का घोड़ा रघु० ३।३८,—धान्यम् तिल, धूमः होम की अग्नि का धुआँ,— भस्मन् (नपुं०) हवन की राख, वेला हवन करने का समय श० ४,— शाला यज्ञशाला, यज्ञगृह।

होमकः दे० 'होतृ'।

होमिः [हु+मि, मुट् च] 1 ताया हुआ मक्खन घी 2 जल 3 अग्नि।

होमिन् (पुं०) [होमोऽस्त्यस्य इनि] होम करने वाला, यजमान, यज्ञकर्ता।

होमीय, होम्य (वि०) [होम+छ, यत् वा] होम से संबद्ध, आहुति दिए जाने के योग्य, हवन संबन्धी, — म्यम् घी।

होरा [हु+रन्+टाप्] 1 राशि का उदय 2 राशि की अवधि का अंश 3 एक घंटा 4 चिह्न, रेखा।

होलाका [हु+क्विप्, ल लाति—ला+क+कन्+टाप्] बसन्त ऋतु के आने पर मनाया गया बसन्तोत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा से पूर्व के दस दिन, विशेषतः तीन या चार दिन (इसी पर्व को हम 'होली' कहते हैं) 2 फाल्गुन मास की पूर्णिमा।

होलिका, होली (स्त्री०) होली का त्योहार, दे० 'होलाका'।

हो, होहो (अव्य०) [ह्वे+डा, नि०] संबोधनात्मक अव्यय, हो, अरे ओ।

हौत्रम् [होतुरिदम्, अण्] होता नामक ऋत्विक् का पद।

हौयंगवम् [होम ष्यञ्] ताया हुआ मक्खन, घी।

ह्नु (अदा० आ० ह्नुते, ह्नुत) 1 ले जाना, लूटना, छिपा देना, वञ्चित करना अध्यगीष्टार्थशास्त्राणि यमस्याह्नोष्ट विक्रमम् भट्टि० १५।८८ 2 छिपाना, ढकना रोकना—मा० १ ३ किसी से छिपाव करना (सम्प्र० के साथ)—गोपी कृष्णाय ह्नुते—सिद्धा०। अप— 1 छिपाना, दुराना मनु० ८।५३, रत्न० २ 2 मुकरना, स्वामित्व का इंकार करना, किसी से कोई चीज़ छिपाना गुणानपह्नुवानस्य जनाय यन्निजाम् (अर्धोरताम) नै० १।४९, नि , 1 छिपाना, गुप्त कर देना—भट्टि० १०।३६ 2 किसी से छिपाना, किसी के सामने मुकर जाना (सम्प्र० के साथ) भट्टि० ८।७४।

ह्यस् (अव्य०) [गते अहनि नि०] बीता हुआ कल। सम०—जात (वि०) जो कल हुआ था।

ह्यस्तन (वि०) (स्त्री० नी) [ह्यस् + ट्युल्, तुट्] बीते कल से संबंध रखने वाला - यथा ह्यस्तनी वृत्ति। सम० दिनम् बीता कल, पिछला दिन।

ह्यस्त्य (वि०) [ह्यस् + त्यप्] कल से संबद्ध (बीते हुए) कल का।

ह्रदः [ह्लाद् - अच्, नि०] 1 गहरा सरोवर, जल का विस्तृत और गहरा तालाब नै० ३।५३ 2 गहरा छिद्र या विवर नि० ५।२१ 3 प्रकाश की किरण। सम० ग्रहः मगरमच्छ।

ह्रदिनी [ह्रद + इनि + ङीप्] 1 नदी 2 बिजली।

ह्रद्रोगः [यूनानी शब्द से व्युत्पन्न] कुम्भराशि।

ह्रस (भ्वा० पर० ह्रसति, ह्रसित) 1 शब्द करना 2 छोटा होना।

ह्रसिमन् (पुं०) [ह्रस्व + इमनिच्, ह्रसादेश] हलकापन, छोटापन, लघुता।

ह्रस्व (वि०) [ह्रस् + वन् म० अ० ह्रसीयस्, उ० अ० ह्रसिष्ठ] 1 लघु, अल्प, थोड़ा 2 ठिगना, कद में छोटा 3 लघु (विप० दीर्घ छन्दशास्त्र में), स्वः बौना। सम० अङ्ग (वि०) ठिगना ठिगना (ग) बौना, गर्भः कुश नामक घास दर्भः छोटा या श्वेत कुशनामक घास,—बाहुक (वि०) छोटी भुजाओं वाला मूर्ति (वि०) कद में छोटा, ठिगना, बौना।

ह्राद् (भ्वा० आ० ह्रादते) 1 शब्द करना 2 दहाड़ना।

ह्रादः [ह्राद् + घञ्] शोर, आवाज - दुन्दुभीनां ह्राद —कि० १६।८, इसी प्रकार 'धनुर्ह्राद' आदि।

ह्रादिन् (वि०) [ह्राद् + णिनि] शब्दायमान, दहाड़ने वाला।

ह्रादिनी [ह्रादिन् + ङीप्] 1 इन्द्र का वज्र 2 बिजली 3 नदी 4 शल्लकी नामक वृक्ष।

ह्रासः [ह्रस् + घञ्] 1 शब्द, कोलाहल 2 घटी, कमी, क्षय, अवनति, पतन मनु० १।८२, याज्ञ० २।२४९ 3 छोटी संख्या।

ह्रिणीयते दे० 'ह्रणीयते' महावीर० १।५१।

ह्रिणीया [ह्रिणी + यक् + अ + टाप्] 1 भर्त्सना, निन्दा 2 शर्म, लज्जा 3 दया तु० ह्रणीया।

ह्री (जुहो० पर० जिह्रेति, ह्रीण, ह्रीत) 1 शर्माना, विनीत होना 2 लज्जित होना (स्वतन्त्र प्रयोग अथवा अपादान स० के साथ)—अजिह्रेत्सार्यपुत्रेण सह गुरुसमीप गन्तुम् श० ७, अन्योऽन्यस्यापि जिह्रीमः किं पुन सहवासिनाम्—कि० ११।५८, रघु० १५।६४, १७।७३, भट्टि० ३।५३, ५।१०२, ६।१३२ -प्रेर० (ह्रेपयति-ते) शर्मिन्दा करना, (आल० से भी) सकौस्तुभं ह्रेपयतीव कृष्णम् रघु० ६।४९ ह्रेपिता हि बहवो नरेश्वराः -११।४०, किं वा जात्या स्वामिनो ह्रेपयति —शि० १८।२३ कि० ११।६६, १३।४१, वेणी० १।१७।

ह्री (स्त्री०) [ह्री + क्विप्] 1 लज्जा—रतेरपि ह्रीपद-मादधाना—कु० ३।५७, दारिद्र्याद् ह्रियमेति ह्रीपरि-गतः प्रभ्रश्यते तेजसः मृच्छ० १।१४, रघु० ४।८० 2 शर्मीलापन, विनय- ह्रीमप्रकण्ठी कथमप्युवाच कु० ७।८५। सम० जित,—मूढ (वि०) लज्जा से अभिभूत या व्याकुल ह्रीमूढानां भवति विफल-प्रेरणा चूर्णमुष्टिः मेघ० ६८, यन्त्रणा लज्जा का बंधन—रघु० ७।६३।

ह्रीका [ह्री + कन् + टाप्] 1 शर्मीलापन लज्जाशीलता, संकोच 2. भीरुता, डर।

ह्रीकु (वि०) [ह्री + उन्, कुक् च] 1. शर्मीला, विनीत, संकोचशील 2. भीरु, कुः 1. राँगा 2. लाख।

ह्रीण, ह्रीत (भू० क० कृ०) [ह्री + क्त, पक्षे तस्य न.] 1. लज्जित—वेणी० २।११ 2 शर्मीला, विनीत—नै० ३।५३।

ह्रीबेरम्,—रम् [ह्रियै लज्जार्थं बेरम् अङ्गम् अस्य क्षुद्रत्वात्, पृषो० वा रस्य ल.] एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

ह्रेष् (भ्वा० आ० ह्रेषते) 1 घोड़े की भाँति हिनहिनाना, रेंकना 2 जाना, सरकना।

ह्रेषा [ह्रेष् + अ + टाप्] हिनहिनाहट।

ह्लग् (भ्वा० पर० ह्लगति) ढापना।

ह्लत्तिः (स्त्री०) [ह्लाद् + क्तिन्, ह्रस्वता] हर्ष, प्रसन्नता।

ह्लस् (भ्वा० पर० ह्लसति) शब्द करना।

ह्लाद् (भ्वा० आ० ह्लादते, ह्लन्न, ह्लादित) 1 प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना 2 शब्द करना, आ , प्र , हर्षित होना, प्रसन्न होना, खुश होना।

ह्लादः, ह्लादकः [ह्लाद् + घञ्, ण्वुल् वा] प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास।

ह्लादनम् [ह्लाद् + ल्युट्] हर्षित होने की क्रिया, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता।

ह्लादिन् (वि०) [ह्लाद् + णिनि] प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला।

ह्लादिनी दे० 'ह्रादिनी'।

ह्वल् (भ्वा० पर० ह्वलति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 थरथराना, काँपना—प्रेर० (ह्वलयति—ते, ह्वालयति—ते, परन्तु पहला रूप उपसर्गयुक्त) हिलाना, कपकपी पैदा करना (विशेषत नींव पूर्वक)।

ह्वानम् [ह्वे + ल्युट्] 1. आमन्त्रण 2 क्रन्दन, शब्द करना।

ह्वृ (भ्वा० पर० ह्वरति) 1 कुटिल होना 2 आचरण में टेढ़ा होना, ठगना, धोखा खाना 3 कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त।

ह्वे (भ्वा० उभ० ह्वयति—ते; हूत, कर्मवा० हूयते, प्रेर० ह्वाययति—ते, इच्छा० जुहूषति—ते) 1. बुलाना—तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रियां बन्धुजनो जुहाव —कु० १।२६ 2. नाम लेकर पुकारना, आवाहन करना, आवाज देना 3. नाम लेना, बुलाना 4. ललकारना 5. प्रतिस्पर्धा करना, होड़ाहोड़ी करना 6 प्रार्थना करना, याचना करना, आ—, 1. बुलाना, निमन्त्रित करना—वत्स! इत एवाह्वयैनम्—उत्तर० ६ 2. ललकारना (आ०)—धनञ्जयीराहूत वैरिराज्ञ्युरारिम् - शि० २०।११, कृष्णश्चाणूरमाह्वयते—सिद्धा०, भट्टि० ८।१८, १५।८९, उप —, उपा , बुलाना, भट्टि० ८।१७, सम् —, समा , मिलकर बलाना।

सम्पूरक

अक्रूरः [न क्रूर—न० त०] एक यादव का नाम जो कृष्ण का मित्र और चाचा था। (यही वह यादव था जिसने बलराम और कृष्ण को मथुरा में आकर कंस को मारने की प्रेरणा दी थी। उसने इन दोनों को अपने आने का आशय बतलाया और कहा कि किस प्रकार अधर्मी कंस ने इनके पिता आनकदुन्दुभि, राजकुमारी देवकी तथा स्वयं अपने पिता उग्रसेन का अपमानित किया। कृष्ण ने अपने आने की स्वीकृति दे दी और प्रतिज्ञा की कि मैं उस राक्षस को तीन रात के अन्दर मार डालूँगा। कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति में सफल हुआ) दे० 'सत्राजित्' भी।

अगस्ति, अगस्त्य [विन्ध्याख्यम् अगम अस्यति, अस् + क्तिच् शक०, या अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तभ्नाति, स्त्यै + क, या अगः कुम्भः तत्र स्त्यानः संहत इत्यगस्त्यः] एक प्रसिद्ध ऋषि या मुनि का नाम। ऋग्वेद में अगस्त्य और वसिष्ठ मुनि मित्र और वरुण की सन्तान माने जाते हैं। कहते हैं कि लावण्यमयी अप्सरा उर्वशी को देखकर इनका वीर्य स्खलित हो गया। उसका कुछ भाग एक घड़े में गिर गया तथा कुछ भाग जल में। घड़े से अगस्त्य का जन्म हुआ इसीलिए इसे कुम्भयोनि कुम्भजन्मा, घटोद्भव कलशयोनि आदि भी कहते हैं। वर्णन मिलता है कि इसने विन्ध्याचल पर्वत को जो बराबर उठता जा रहा था तथा सूर्यमण्डल पर अधिकार करने ही वाला था और जिसने इसके रास्ते को रोक दिया था नीचे हो जाने के लिए कहा। दे० विन्ध्य० (यह आख्यायिका कई विद्वानों के मतानुसार आर्य जाति की दक्षिण देश में विजय और भारत की सभ्यता के प्रति प्रगति का पूर्वाभास देती है।) इसके नाम एक अन्य आख्यायिका के अनुसार समुद्र को पी जाने के कारण पीताब्धि और समुद्रचुलुक आदि भी थे क्योंकि समुद्र ने अगस्त्य को रुष्ट कर दिया था, और क्योंकि अगस्त्य युद्ध में इन्द्र और देवों की सहायता करना चाहता था जब कि देवों का युद्ध कालेय नामक राक्षसों से होने लगा था और राक्षस समुद्र में जाकर छिप गये थे और तीनों लोकों को कष्ट देते थे। उसकी पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। वह विन्ध्य के दक्षिण में कुंजर पर्वत पर एक तपोवन में रहता था। उसने दक्षिण में रहने वाले सभी राक्षसों को नियन्त्रण में रक्खा। एक उपाख्यान में वर्णन मिलता है कि किस प्रकार इसने वातापि नामक राक्षस को खा लिया जिसने मेढ़े का रूप धारण कर लिया था, और किस प्रकार उसके भाई को जो अपने भाई का बदला लेने आया था, अपनी एक दृष्टि से भस्म कर दिया। अपने वनवास के समय घूमते हुए भगवान् राम सीता और लक्ष्मण सहित उसके आश्रम में गये। वहाँ अगस्त्य ने इनका बहुत आदर-सत्कार किया और राम का मित्र सलाहकार और अभिरक्षक बन गया। उसने राम को विष्णु का धनुष तथा कुछ और वस्तुएँ दीं (दे० रघु० १५।५५)। ज्योतिष में इसे तारा भी माना जाता है दे० रघु० ४।२१ भी।

अग्निः [अङ्गति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग् + नि न लोपश्च] अग्नि का देवता। ब्रह्मा का ज्येष्ठ पुत्र। इसकी पत्नी का नाम स्वाहा है। उससे इसके तीन सन्तान हुईं पावक पवमान और शुचि। हरिवंश में इसका वर्णन मिलता है कि इसके वस्त्र काले हैं धुआँ ही इसकी ध्वजा है तथा शिखाएँ इसका भाला है। इसके रथ में लाल घोड़े जुते हैं। यह मेढ़े के साथ या कभी मेढ़े पर सवारी करता हुआ वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णन मिलता है कि अग्नि का शौर्य और विक्रम समाप्त हो गया और वह मन्द हो गया क्योंकि उसने राजा श्वेतकी द्वारा यज्ञ में दी गई आहुतियाँ खा लीं। परन्तु उसने अर्जुन की सहायता से खाण्डववन को निगलकर अपनी शक्ति फिर प्राप्त कर ली। इस सेवा के उपलक्ष्य में ही अर्जुन को गाण्डीव धनुष दिया गया।

अघ [अघ् कर्तरि अच्] एक राक्षस का नाम। यह बक और पूतना का भाई था तथा कंस का सेनापति। एक बार कंस ने इसे कृष्ण और बलराम को मारने के लिए गोकुल भेजा। उसने वहाँ एक विशालकाय अजगर का रूप धारण कर लिया जो चार योजन लंबा था। इस रूप में वह ग्वालों के मार्ग में लेट गया तथा अपना मुँह पूरा खोल लिया। ग्वालों ने इसे एक पहाड़ी गुफा समझा वे इसमें घुस गये सब गौएँ भी इसी में चली गईं। परन्तु कृष्ण ने इसे समझ लिया। फलतः उसने अन्दर घुसकर अपना शरीर इतना फुलाया कि वह अजगररूपी राक्षस टुकड़े-टुकड़े हो गया तब कहीं इस प्रकार कृष्ण ने अपने साथियों की रक्षा की।

अंगद [अङ्ग दाति शोधयति भूषयति अङ्ग दा+क] तारा नाम की पत्नी से उत्पन्न वालि का एक पुत्र। जब राम ने समस्त सेना के साथ लंका को कूच किया तो अंगद को रावण के पास शान्ति के दूत के रूप में भेजा गया जिससे कि समय रहते रावण अपनी जान बचा सके। परन्तु रावण ने घृणापूर्वक उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया, फलतः काल का ग्रास बना। सुग्रीव के पश्चात् किष्किन्धा का राज्य अंगद को मिला। सामान्य बोलचाल में

वह व्यक्ति जो दो पक्षों के बीच असफल मध्यस्थता करता है, अपद नाम से पुकारा जाता है।

अंजना (स्त्री०) मारुति या हनुमान् की माता का नाम। वह कुंजर नामक वानर की कन्या तथा केसरी की पत्नी थी, एक दिन वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठी थी, कि उसका वस्त्र जरा शरीर से हट गया। वायुदेवता उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया, उसने दृश्य शरीर धारण कर अंजना से अपनी इच्छापूर्ति की याचना की। अंजना ने उससे प्रार्थना की कि आप मेरा सतीत्व नष्ट न करें। वायु ने इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु कहा कि तुम्हारे शक्ति और कान्ति में मेरे जैसा पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि मैंने तुम्हारी ओर कामवासना की दृष्टि से देखा है। यह कहकर वायु अन्तर्धान हो गया। यह पुत्र ही मारुति या हनुमान् था।

अत्रि: [अद् + त्रिन् = अत्रि] एक महर्षि का नाम। यह ब्रह्मा की आँख से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों या प्रजापतियों में से एक है। इसकी पत्नी का नाम अनसूया था। उससे तीन पुत्र हुए दत्त, दुर्वासा और सोम। रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और सीता, अत्रि तथा अनसूया के आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने उनका खूब आदर सत्कार किया (दे० अनसूया)। ऋषि के रूप में वह सप्तर्षियों में से एक है, ज्योतिष की दृष्टि से वह सप्तर्षियों में एक तारा है। कहते हैं कि चन्द्रमा इस की आँख से पैदा हुआ -तु० रघु० २।७५।

अदिति: [न दीयते खण्ड्यते बध्यते बृहत्त्वात्—दो + क्तिन्] दक्ष की एक कन्या का नाम जो कश्यप को ब्याही गई: जिस समय विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया तो उस समय वह विष्णु की माता थी। वह इन्द्र की भी माता थी। इसके कारण वह उन अन्य देवताओं की भी माता कहलाती है जो अदितिनन्दन कहलाते हैं।

अनिरुद्ध [न निरुद्ध इति ब० स०] प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। अनिरुद्ध काम का पुत्र और कृष्ण का पोता था। बाणासुर की पुत्री उषा उससे प्रेम करने लगी थी। उसने जादू की शक्ति से अनिरुद्ध को अपने पिता की नगरी शोणितपुर के अपने भवन में मंगवा लिया। (दे० उषा या चित्रलेखा)। बाण ने कुछ रक्षक उसे पकड़ने के लिए भेजे परन्तु पराक्रमी अनिरुद्ध ने उन्हें लोहे की गदा से मौत के घाट उतार दिया। अंततः वह जादू की शक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया। जब कृष्ण, बलराम और काम को उसका पता लगा तो वे उसे लेने गये। वहाँ भारी युद्ध हुआ। बाण की यद्यपि शिव और स्कन्द सहायता करते थे, तो भी वह पराजित हो गया, परन्तु शिव के बीच में पड़ने से उसके प्राण बच गये। अनिरुद्ध को उसकी पत्नी उषा सहित द्वारका में अपने घर लाया गया।

अंधक: [अन्ध + कन्] एक राक्षस का नाम जो कश्यप और दिति का पुत्र था। इसकी शिव ने हत्या कर दी थी। इसके वर्णन मिलता है कि एक हजार भुजाएँ और सिर थे, २००० आँखें और पैर थे। वह अंधों की भाँति चलता था इस लिए लोग उसे अंधक कहते थे, चाहे वह पूर्णत: ठीक ठीक देख सकता था। जब उसने स्वर्ग से पारिजात वृक्ष उठा कर ले जाने का प्रयत्न किया तो शिव ने उसकी हत्या कर दी।

अभिमन्यु (पु०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम। इसकी माता सुभद्रा थी जो श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहन थी। जब द्रोण की सलाह के अनुसार कौरवों ने 'चक्रव्यूह' नाम की विशिष्ट सैन्यस्थिति बनाई, और वह भी इस आशा से कि आज अर्जुन दूर है, उसके अतिरिक्त और कोई पाण्डव इस व्यूह को तोड़ नहीं सकेगा, तो अभिमन्यु अपने चाचा ताउओं को विश्वास दिलाया कि यदि आप लोग मेरी सहायता करें तो मैं अवश्य ही इस व्यूह को तोड़ डालूँगा। तदनुसार वह व्यूह में प्रविष्ट हुआ, कौरवपक्ष के अनेक योद्धाओं को उसने मौत के घाट उतारा। एक बार तो उसने ऐसा घोर पराक्रम दिखाया कि द्रोण, कर्ण दुर्योधन आदि बड़े बड़े महारथी भी उसका मुकाबला न कर सके। परन्तु वह बहुत देर तक इस भीषण युद्ध का सामना न कर सका, अन्त में परास्त हुआ और मारा गया। वह बहुत सुन्दर था। उसकी दो पत्नियाँ थी बलराम की पुत्री वत्सला, तथा राजा विराट की पुत्री उत्तरा। जिस समय वह मारा गया उस समय उत्तरा गर्भवती थी। उससे परीक्षित का जन्म हुआ। परीक्षित ही बाद में हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठा।

अरुण: [ऋ + उनन्] विनता में कश्यप से उत्पन्न एक पुत्र गरुड़ था। गरुड़ का ज्येष्ठ भ्राता ही अरुण बतलाया जाता है। विनता ने समय से पूर्व ही अंडे से बच्चा निकाला, उसकी अभी जंघाएँ नहीं बनी थी, इस लिए उसका नाम 'अनूरु' (ऊरुरहित) या 'विपाद' (पैरों से हीन) पड़ गया। अब अरुण सूर्य का सारथि है। उसकी पत्नी श्येनी थी जिससे 'सम्पाति' और 'जटायु' नामक दो पुत्र पैदा हुए।

अश्वत्थामन् दे० 'द्रोण' भी।

अश्विनीकुमार दे० 'अंगद'

अष्टावक्र: [अष्टकृत्व अष्टसु भागेषु वा वक्र] कहोड के एक पुत्र का नाम। कहोड ऋषि इतने अधिक अध्ययनशील थे कि उन्होंने अपनी पत्नी की उपेक्षा की। इस अवहेलना से क्षुब्ध होकर उनके अजात पुत्र ने जो

अभी गर्भ में ही था, अपने पिता की भर्त्सना की। इस बात से क्रुद्ध होकर पिता ने शाप दिया कि तुम आठ अंगों से टेढ़े-मेढ़े पैदा होगे। एक बार कहोड ने एक बौद्ध से शर्त लगाई और फिर उसमें हार जाने पर कहोड को नदी में डुबा दिया गया। युवा अष्टावक्र ने उस बौद्ध को परास्त किया और अपने पिता को मुक्त कराया। इस बात से प्रसन्न होकर पिता ने समंगा नदी में स्नान करने के लिए कहा। ऐसा कर वह बिल्कुल सरल अंगों वाला हो गया।

न्याय

1. विषकृमिन्याय – विष में पले कीड़ों का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो दूसरों के लिए घातक होते हुए भी उनके लिए ऐसी नहीं होती जो इसमें जन्मे और पले हैं, क्योंकि यह स्थिति तो उनका स्वभाव बन गया है जैसे कि विषकृमि जो विष से ही जन्मा है। विष चाहे दूसरों के लिए घातक हो परन्तु उनके लिए घातक नहीं होता जो उसी विषैली स्थिति में पले हैं।
2. विषवृक्षन्याय –विषवृक्ष का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता जो यद्यपि उत्पातमय या बाधापूर्ण है तो भी उस व्यक्ति के द्वारा जिसने उसे बनाया है, नष्ट किये जाने के योग्य नहीं। जैसे कि एक वृक्ष चाहे वह विष का ही क्यों न हो वह भी लगाने वाले के द्वारा काटा नहीं जाता।
3. स्थालीपुलाकन्याय—पकते हुए बर्तन में से एक चावल देखने का नीतिवाक्य। देगची में पड़े हुए सभी चावलों पर गर्म पानी का समान प्रभाव पड़ता है। जब एक चावल पका हुआ होता है तो यह अनुमान लगा लिया जाता है कि अन्य सब चावल भी पक गए हैं। अत. यह नीतिवाक्य उस दशा में प्रयुक्त होता है जब समस्त श्रेणी का अनुमान उसके एक भाग को देख कर लगाया जाय। मराठी में इसे ही कहते हैं "शितावरून भाताची परीक्षा"।

पण्डावत् (वि०) [पण्डा+मतुप्] बुद्धिमान्—अश्व० ६।
प्रकोप: [प्रा० स०] क्रोध, उत्तेजना, आवेश।
प्राकार: (पुं०) 1. चहारदीवारी, हाता, बाड़ 2. चारों ओर घेरा डालने वाली दीवार, फसील—शतमेकोऽपि सधत्ते प्राकारस्थो धनुर्धर.—पंच० १।२२९।
बाली (स्त्री०) एक प्रकार का कान का आभूषण—अश्व० २४।
युधिष्ठिर: [युधि स्थिर:—अलुक् स०, षत्वम्] 'युद्ध में अडिग' पांडवों में ज्येष्ठ राजकुमार। इसे 'धर्म' 'धर्मराज' और 'अजातशत्रु' आदि भी कहते हैं। यह धर्म द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था। सैन्यचातुरी की अपेक्षा यह अपनी सचाई और ईमानदारी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। अठारह दिन के महाभारत के पश्चात् इसे हस्तिनापुर की राजगद्दी पर सम्राट् के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उसके पश्चात् इसने बहुत दिनों तक धर्मपूर्वक राज्य किया। इसका अधिक विवरण जानने के लिए दे० 'दुर्योधन')।
वैशम्पायन: (पुं०) व्यास के एक प्रसिद्ध शिष्य का नाम। इसने अपने शिष्य याज्ञवल्क्य को कहा कि वह समस्त यजुर्वेद जो तुमने मुझसे पढ़ा है उगल दो। तदनुसार उगल देने पर वैशम्पायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर वह समस्त यजुर्वेद चाट लिया। इसी लिए यजुर्वेद की उस शाखा का नाम 'तैत्तिरीय' पड़ गया। पुराणों का पाठ करने में वैशंपायन अत्यन्त दक्ष और प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उसने समस्त महाभारत का पाठ जनमेजय राजा को सुनाया।
हिरण्याक्ष: (पुं०) एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। हिरण्यकशिपु का जुड़वाँ भाई। ब्रह्मा से वरदान पाकर वह ढीठ और अत्याचारी हो गया, उसने पृथ्वी को समेट लिया और उसे लेकर समुद्र की गहराई में चला गया। अत एव विष्णु ने वराह का अवतार धारण किया, राक्षस को यमलोक पहुँचाया और पृथ्वी का उद्धार किया।

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय – संस्कृत छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पिंगलऋषिप्रणीत छन्दःशास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रन्थ है। अग्निपुराण में भी पिंगलपद्धति पर आधारित छन्दःशास्त्र का पूर्ण विवरण है। और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा रचे गये हैं—उदा० श्रुतबोध वाणीभूषण, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर, वृत्तकौमुदी और छन्दोमंजरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दोमंजरी और वृत्तरत्नाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दों को नहीं रखा गया है।

संस्कृत की रचना या तो गद्य में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः श्लोकों में होती है। श्लोक या पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें या तो अक्षरों की संख्या से विनियमित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो वृत्त होता है अथवा जाति। वृत्त एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। जाति एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निश्चित किया जाता है।

वृत्त तीन प्रकारके होते हैं—(१) समवृत्त —जिसमें श्लोक के चारों चरण समान हों। (२) अर्धसमवृत्त—जिसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हों। (३) और विषमवृत्त जिसके चारों चरण असमान हों।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक साँस में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर इसके साथ चाहे एक व्यंजन हो, चाहे एक से अधिक और चाहे केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) लघु भी होता है, गुरु भी जैसा कि उसका स्वर हो ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ और औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दःशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उसके आगे अनुस्वार या विसर्ग हो, अथवा कोई संयुक्त व्यंजन हो, जैसे कि 'गन्ध' का 'ग' या 'न'। (प्र, ह्र और व्र क इसके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर यद्यपि एक प्रकार की काव्यात्मक छूट के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११ या शि० १०।९०, तथापि यहाँ पर समालोचकों ने छन्द को छन्दःशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुरूप बनाने के लिए संशोधन भी प्रस्तुत किये हैं)। इसी प्रकार पाद का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुरूप लघु या गुरु माना जा सकता है, वह स्वयं चाहे कुछ ही हो।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

मात्राओं की संख्या से निर्धारित होने वाले वृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की संख्या से विनियमित वृत्तों की माप-तोल के लिए छन्दःशास्त्र के लेखकों ने आठ 'गणों' (अक्षरपाद) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या गुरु होने के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥
आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

प्रतीकाक्षरों में अभिव्यक्त (गुरु ऽ, लघु ।) भिन्न-भिन्न गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं

ऽ ऽ ऽ मगण
। ऽ ऽ यगण
ऽ । ऽ रगण
। । ऽ सगण
ऽ ऽ । तगण
। ऽ । जगण
ऽ । । भगण
। । । नगण

इसी प्रकार 'ल' लघु तथा 'ग' गुरु को प्रकट करता है।

विशेष प्रत्येक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती के अनुसार संस्कृत के छन्दःशास्त्रियों ने वृत्तों का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार के 'समवृत्तों' को छब्बीस

श्रेणियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छब्बीस तक पृथक्-पृथक् हो सकती है। इनमें से प्रत्येक श्रेणी में लघु और गुरु की पृथक्-पृथक् भिन्न-भिन्न स्थिति होने के कारण असंख्य वृत्तों की संभावना हो जाती है। उदाहरणतः छः अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली श्रेणी में, (अक्षर चाहे लघु हों या गुरु) संभावित संख्या २×२×२×२×२×२ या २^६=६४ होती है, परन्तु प्रयोग में छः वृत्त भी नहीं आते। यही बात छब्बीस अक्षर वाली श्रेणी की है। वहाँ भी वृत्तों की संभावित संख्या २^२६ या ८७१०८८६४ होती है। परन्तु यदि हम अर्धसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो संभावित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिंगल, लीलावती और वृत्तरत्नाकर के अंतिम अध्याय में संभावित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी नियमित गणना में किसी एक छंद विशेष की निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिये गए हैं। संभावित वृत्तों के इस विशाल समुदाय की तुलना में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिशिष्ट में नहीं रखी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न क्रम में केवल उन्हीं वृत्तों का वर्णन करेंगे जो बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

अनुभाग (क) समवृत्त
अनुभाग (ख) अर्धसमवृत्त
अनुभाग (ग) विषमवृत्त
अनुभाग (घ) जाति आदि

नोट—निम्नांकित परिभाषाओं में गणों का प्रतिनिधित्व करने वाले भ म स और ज य आदि वर्णों के स्वर का बहुधा वृत्त की अपेक्षा के कारण लोप कर दिया जाता है—उदा० 'भ्रभ्न' प्रकट करता है भ र भ न को, इसी प्रकार 'म्तौ' दर्शाता है म त को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में गणक्रम और यति—विराम अर्थात् जहाँ रुक या चरण का सस्वर पाठ करने में जहाँ रुकना होता है, और जो कि परिभाषा में करणकारक द्वारा संकेतित किया गया है—(प्रकोष्ठ में अंग्रेजी अंकों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकांश माघ, भारवि, कालिदास और दंडी की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रतिष्ठा)

कन्या

परि० ग्मौ चेत्कन्या।
गण० ग, म
उदा० भास्वत्कन्या सैका धन्या।
यस्याः कूले कृष्णोऽखेलत्॥

पाँच वर्णों के चरण वाले वृत्त

(सुप्रतिष्ठा)

पंक्ति

परि० भूगौ गिति पंक्ति
गण० भ, ग, ग
उदा० कृष्ण सनाथा तर्णकपंक्तिः।
यामुनकच्छे चारु चचार॥

छः वर्णों के चरण वाले वृत्त

गायत्री

(1) तनुमध्या

परि० त्यौ चेत्तनुमध्या।
गण० त, य।
उदा० मूर्तिर्मुरशत्रोरत्यद्भुतरूपा।
आस्तां मम चित्ते नित्यं तनुमध्या॥

(2) विद्युल्लेखा ('वाणी' भी कहते हैं)

परि० विद्युल्लेखा मो मः।
गण० म, म (३, ३)।
उदा० श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीती।
एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे॥ काव्य० ३।८६।

(3) शशिवदना

परि० शशिवदना न्यौ।
गण० न, य।
उदा० शशिवदनानां व्रजतरुणीनाम्।
अधरसुधोर्मि मधुरिपुरैच्छत्]

(4) सोमराजी

परि० द्विया सोमराजी।
गण० य, य (2, 4)।
उदा० दुरे सोमराजी-समा ते यशःश्री।
जगन्मण्डलस्य छिनत्त्यन्धकारम्॥

सात वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उष्णिक्)

(1) कुमारललिता

परि० कुमारललिता ज्स्गाः।
गण० ज, स, ग (3. 4)।

उदा० मुरारितनुवल्ली कुमारललिता सा ।
सुधीनवनमालां ददात मृगमुग्धी ॥

(2) मदलेखा

परि० मस्गौ स्यान्मदलेखा ।
गण० म, स, ग (3. 4) ।
उदा० रज्जो बाहुविरुग्णात् यस्मीन्नाम्नदलेखा ।
कम्भामूम्मुरत्नभी कस्तूरीरसपर्णा ।

(3) मधुमती

परि० ननगि मधुमती ।
गण० न, न, ग (5. 2) ।
उदा० रविदुहितृतटे नवकुसुमततिः ।
चयित मधुमती मधुमथनमुदम् ॥

आठ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अनुष्टुभ्)

(1) अनुष्टुभ्

(इसे 'श्लोक' भी कहते हैं)

इस छन्द के अनेक भेद हैं। परन्तु जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है उसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, मात्रायें सबकी भिन्न-भिन्न। इस प्रकार प्रत्येक चरण का पाँचवाँ वर्ण लघु, छठा दीर्घ, तथा सातवाँ वर्ण (प्रथम, तृतीय चरण का) दीर्घ, एवं (द्वितीय तथा चतुर्थचरण का) ह्रस्व होता है।
श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

उदा० वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥ रघु० १।१।

(2) गजगति

परि० नभलगा गजगतिः ।
गण० न, भ, ल, ग (4. 4) ।
उदा० रविसुतापरिसरे विहरतो दृशि हरेः ।
व्रजवधूगजगतिर्मुदमलं व्यतनुत ॥

(3) प्रमाणिका

परि० प्रमाणिका जरौ लगौ ।
गण० ज, र, ल, ग (4 4) ।
उदा० पुनातु भक्तिरच्युता सदाच्युताङ्घ्रिपद्मयोः ।
श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका भवाम्बुराशितारिका ॥

(4) माणवक

परि० भात्तलगा माणवकम् ।
गण० भ, त, ल, ग (4. 4) ।
उदा० चञ्चलचूडं चपलैर्वत्सकुलैः केलिपरम् ।
ध्याय सखे स्मेरमुखं नन्दसुतं माणवकम् ॥

(5) विद्युन्माला

परि० मो मो गो गो विद्युन्माला ।
गण० म, म, ग, ग (4. 4) ।
उदा० वासोवल्ली विद्युन्माला बर्हश्रेणी शाक्रं चापम् ।
यस्मिन्नास्ते तापोच्छित्त्यै गोमध्यस्थः कृष्णाम्भोदः ॥

(6) समानिका

परि० ग्लौ रजौ समानिका तु ।
गण० ग, ल, र, ज (4 4)
उदा० यस्य कृष्णपादपद्ममस्ति हृत्-तडागसद्म ।
धीः समानिका परेण नोचिताऽत्र मत्सरेण ॥

नौ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(बृहती)

(1) भुजगशिशुभृता

परि० भुजगशिशुभृता नौ मः ।
गण० न, न, म (7 2.)
उदा० ह्रदतटनिकटक्षोणी भुजगशिशुभृता याऽऽसीत् ।
मुररिपुदलिते नागे व्रजजनसुखदा साऽभूत् ॥

(2) भुजङ्गसङ्गता

परि० सजरैर्भुजङ्गसङ्गता ।
गण० स, ज, र (3 6)
उदा० तरला तरङ्गरिङ्गितैर्यमुना भुजङ्गसङ्गता ।
कथमेति वत्सचारकस्वपनं सदैव तां हरिः ॥

(3) मणिमध्य

परि० स्यान्मणिमध्यं चेद्भमसाः ।
गण० भ, म, स (5 4)
उदा० कालियभोगाभोगगतस्तन्मणिमध्यस्फीतरुचा ।
चित्रपदाभो नन्दसुतश्चारु ननर्त स्मेरमुखः ॥

दस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(पङ्क्ति)

(1) त्वरितगति

परि० त्वरितगतिश्च नजनगैः ।
गण० न, ज, न, ग (5. 5)
उदा० त्वरितगतिर्व्रजयुवतिस्तरणिसुता विपिनगता ।
मुररिपुणा रतिगुरुणा परिरमिता प्रमदमिता ॥

(2) मत्ता

परि० ज्ञेया मत्ता मभसगयुक्ता ।
गण० म, भ, स, ग (4 6)
उदा० पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली
कालिन्दीये तटवनकुञ्जे ।
उद्दीव्यन्तीर्व्रजवनरामा
कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

(3) रुक्मवती (चम्पकमाला)

परि० रुक्मवती सा यत्र भमस्गाः ।
गण० भ, म, स, ग (5. 5)
उदा० [illegible] परिपूर्ते.
यस्य सदा [illegible] वसितः ।

राज्यपदे हुन्याविकधारा
...वती विघ्नः खलु तस्य ॥

ग्यारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(त्रिष्टुभ्)

(1) इन्द्रवज्रा

परि० स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।

गण० त, त, ज, ग, ग (5. 6)

उदा० गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थम्
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(2) उपेन्द्रवज्रा

परि० उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा ।

गण० ज, त, ज, ग, ग (5. 6)

उदा० उपेन्द्रवज्रादिमणिच्छटाभि-
र्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते ।
स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानम्
सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम् ॥

(3) उपजाति

परि० अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥

गण० जब इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा को एक ही श्लोक में मिला देते हैं तो उसे उपजाति वृत्त कहते हैं। इसके चौदह भेद होते हैं।

उदा० अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥ कु० १।१ ।

दे० रघु० २, ५, ६, ७, १३, १४, १६, १८; कु० ३, कु० १७ आदि। जब अन्य वृत्त भी एक ही श्लोक में मिला दिये जाते हैं तो भी उपजाति ही वृत्त होता है। उदा० माघ कवि के निम्नश्लोक में वंशस्थ और इन्द्रवंशा मिला दिए गए हैं।
इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे
गणो नृपाणामथ तोरणाद्बहिः ।
प्रस्थानकालक्षमवेषकल्पना-
कृतक्षणक्षेपमुदैक्षताच्युतम् ॥ शि० १२।१ ।

(4) दोधक

परि० दोधकमिच्छति भत्रितयाद्गौ ।

गण० भ, भ, भ, ग, ग, (6. 5.)

उदा० या न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः
सा रतरागमना यतमानम् ।
तेन सहेह बिभर्ति रहः स्त्री
सार तरागमनायतमानम् ॥ शि० ४।४५ ।

(5) भ्रमरविलसितम्

परि० म्भौ न्लौ गःस्याद् भ्रमरविलसितम् ।

गण० म, भ, न, ल, ग (4. 7)

उदा० प्रीत्यै यूनां व्यवहिततपनाः
प्रौढध्वान्तं दिनमिह जलदाः ।
दोषामन्यं विदधति सुरत-
क्रीडायासश्रमशमपटवः ॥ शि० ४।६२ ।

(6) रथोद्धता

परि० रात्परैर्नरलगै रथोद्धता ।

गण० र, न, र, ल, ग (3. 8 या 4. 7)

उदा० कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो
राममध्वरविघातशान्तये ।
काकपक्षधरमेत्य याचित-
स्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते ॥ रघु० ११।१ ।
दे० कु० ८ भी ।

(7) वातोर्मी

परि० वातोर्मीयं गदिता म्भौ तगौ गः ।

गण० म, भ, त, ग, ग (4. 7)

उदा० ध्याता मूर्तिः क्षणमप्यच्युतस्य
श्रेणी नाम्नां गदिता हेलयापि ।
संसारेऽस्मिन् दुरितं हन्ति पुंसाम्
वातोर्मी पोतमिवाम्भोधिमध्ये ॥

(8) शालिनी

परि० मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।

गण० म, त, त, ग, ग. (4. 7.)

उदा० अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते ।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना
पुंसां श्रद्धा शालिनी विष्णुभक्तिः ॥

(9) स्वागता

परि० स्वागता रनभगैर्गुरुणा च ।

गण० र, न, भ, ग, ग (3. 8)

उदा० यावदागमयतेऽथ नरेन्द्रान् स स्वयंवरमहाय महीन्द्रः ।
तावदेव ऋषिरिन्द्रदिदृक्षुर्नारदस्त्रिदशधाम जगाम ॥
नै० ५।१ ॥

दे० कि० ९, शि० १०.

बारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(जगती)

(1) इन्द्रवंशा

परि० तच्चेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ ॥

गण० इन्द्रवंशा बिल्कुल वंशस्थविल या वंशस्थ (दे० नी० १३वां) के समान है, सिवाय इसके कि इसका प्रथमाक्षर गुरु होता है। त, त, ज, र।

उदा० दैत्येन्द्रवंशाग्निरुदीर्णदीधितिः
पीताम्बरोऽसौ जगतां तमोपहः ।
यस्मिन् ममज्जुः शलभा इव स्वयम्
ते कंसचाणूरमुखा मखद्विषः ॥

(2) चन्द्रवर्त्म

परि० चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रनभसैः ।
गण० र, न, भ, स (4, 8)
उदा० चन्द्रवर्त्म पिहितं घनतिमिरै
राजवर्त्म रहितं जनगमनैः ।
इष्टवर्त्म तदलंकुरु सरसे
कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुतुकी ॥

(3) जलधरमाला

परि० अब्ध्यङ्गैः स्याज्जलधरमाला म्भौ स्मौ ।
गण० म, भ, स, म (4.8)
उदा० या भक्तानां कलिदुरितोत्तप्तानां
तापच्छेदे जलधरमाला नव्या ।
भव्याकारा दिनकरपुत्रीकूले
केलीलोला हरितनुरव्यात् सा वः ॥
दे० कि० ५।२३ ॥

(4) जलोद्धतगति

परि० रसैर्जसजसा जलोद्धतगतिः ।
गण० ज, स, ज, स (6.6)
उदा० समीरशिशिरः शिरस्सु वसताम्
सतां जवनिका निकामसुखिनाम् ।
बिभर्ति जनयन्नयं मुदमपा-
मपायधवला बलाहकततीः ॥ शि० ४।५४ ॥

(5) तामरस

परि० इह वद तामरसं नजजा यः ।
गण० न, ज, ज, य (5 7)
उदा० स्फुटसुषमामकरन्दमनोज्ञम्
व्रजललनानयनालिनिपीतम् ।
तव मुखतामरसं मुरशत्रो
हृदयतडागविकासि ममास्तु ॥

(6) तोटक

परि० वद तोटकमब्धिसकारयुतम् ।
गण० स, स, स, स (4 4.4)
उदा० स तथेति विनेतुरुदारमतेः
प्रतिगृह्य वचो विससर्ज मुनिम् ।
तदलब्धपदं हृदि शोकघने
प्रतियातमिवान्तिकमस्य गुरोः ॥ रघु० ८।९१ ॥
दे० शि० ६।७१ ॥

(7) द्रुतविलम्बित

परि० द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
गण० न, भ, भ, र (4.8 या 4.4.4)
उदा० मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना
मम च मुक्तमिदं तमसा मनः ।
मनसिजेन सखे प्रहरिष्यता
धनुषि चूतशरश्च निवेशितः ॥ शा० ६ ।
दे० रघु० ९, शि० ६ भी ।

(8) प्रभा

परि० स्वरशरविरतिर्ननौ रौ प्रभा ।
गण० न, न, र, र (7 5)
उदा० अतिसुरभिरभाजि पुष्पश्रिया-
मतनुतरतयेव सन्तानकः ।
तरुणपरभृतः स्वनं रागिणा-
मतनुत रतये वसन्तानकः ॥ शि० ६।६७ ॥
कि० ५।२१ भी ।

(9) प्रमिताक्षरा

परि० प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता ।
गण० स, ज, स, स (5 7)
उदा० विहगाः कदम्बसुरभाविह गाः
कलयन्त्यनुक्षणमनेककलम् ।
भ्रमयन्नुपैति मुहुरभ्रमयम्,
पवनश्च धूतनवनीपवनः ॥ शि० ४।३६ ॥
कि० ९, शि० ९ ।

(10) भुजंगप्रयात

परि० भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः ।
गण० य, य, य, य (6. 6)
उदा० धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ॥

(11) मणिमाला

परि० त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवक्त्रैः ।
गण० त, य, त, य (6 6)
उदा० प्रह्वामरमौलौ रत्नोपलक्लृप्ते
जातप्रतिबिम्बा शोणा मणिमाला ।
गोविन्दपदाब्जे राजी नखराणा-
मास्तां मम चित्ते ध्वान्तं शमयन्ती ॥

(12) मालती ('यमुना' भी कहते हैं)

परि० भवति नजावथ मालती जरौ ।
गण० न, ज, ज, र (5 7)
उदा० इह कलयाच्युत केलिकानने
मधुरससौरभसारलोलुपः ।
कुसुमकृतस्मितचारुविभ्रमा-
मलिरपि चुम्बति मालतीं मुहुः ॥

(13) वंशस्थविल (वंशस्थ या वंशस्तनित)

परि० वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ ।
गण० ज, त, ज, र (5. 7)

उदा० तथा समक्षं दहता मनोभवम्
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती ।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता ॥ कु० ५।१ ।
दे० रघु० ३ भी ।

(14) वैश्वदेवी

परि० बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ ।
गण० म, म, य, य (5.7)
उदा० अर्चामन्येषां त्वं विहायामराणा-
मद्वैतेनैकं विष्णुमभ्यर्च्य भक्त्या ।
तत्राशेषात्मन्यर्चिते भाविनी ते
भ्रातः सम्पन्नाराधना वैश्वदेवी ॥

(15) स्रग्विणी

परि० कीर्तितैषा चतूरेफिका स्रग्विणी ।
गण० र, र, र, र (6 6)
उदा० इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता
शातकुम्भद्रवालंकृता शोभते ।
नव्यमेघच्छवि पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी ॥

तेरह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिजगती)

(1) कलहंस (सिंहनाद या कुटजा)

परि० सजसाः सगौ च कथितं कलहंस ।
गण० स, ज, स, स, ग (7 6)
उदा० यमुना विहारकुतुके कलहंसो
व्रजकामिनीकमलिनीकृतकेलिः ।
जनचित्तहारिकलकण्ठनिनादः
प्रमदं तनोतु तव नन्दतनूजः ॥ दे० शि० ६।७२ ।

(2) क्षमा (चन्द्रिका और उत्पलिनी)

परि० तुरगरसयतिर्नौ ततौ गः क्षमा ।
गण० न, न, त, त, ग (7 6)
उदा० इह दुरधिगमैः किंचिदेवागमैः
सततमसुतरं वर्णयन्त्यन्तरम् ।
अमुमतिविपिनं वेद दिग्व्यापिनम्
पुरुषमिव परं पद्मयोनिः परम् ॥कि० ५।१८।

(3) प्रहर्षिणी

परि० त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।
गण० म, न, ज, र, ग (3 10)
उदा० ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्नं
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम् ।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु-
र्मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥
रघु० ४।८८, दे० कि० ७, शि० ८ ।

(4) मञ्जुभाषिणी (सुनन्दिनी, और प्रबोधिता)

परि० सजसा जगौ च यदि मञ्जुभाषिणी ।
गण० स, ज, स, ज, ग (6.7)
उदा० यमुनामतीतमथ शुश्रुवानमुम्
तपसस्तनूज इति नाधुनोच्यते ।
स यदाऽचलन्निजपुरादहर्निशम्
नृपतेस्तदादि समयापि वार्तया ॥शि० १३।१।

(5) मत्तमयूरी

परि० वेदैरन्ध्रैर्म्तौ यसगा मत्तमयूरम् ।
गण० म, त, य, स, ग (4. 9)
उदा० दृष्ट्वा दृश्यान्याचरणीयानि विधाय
प्रेक्षाकारी याति पदं मुक्तमपायैः ।
सम्यग्दृष्टिस्तस्य परं पश्यति यस्त्वाम्
यश्चोपास्ते साधु विधेयं स विधत्ते ॥ कि० १८।
२८, शि० ४।४४, ६।७६, रघु० ९।७५ ।

(6) रुचिरा (प्रभावती)

परि० जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्ग्रहैः ।
गण० ज, भ, स, ज, ग (4 9)
उदा० कदा मुखं वरतनु कारणादृते
तवागतं क्षणमपि कोपपात्रताम् ।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ मालवि० ४।१३ ।
दे० भट्टि० १।१, शि० १७ ।

चौदह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(शक्वरी)

(1) अपराजिता

परि० ननरसलघुगैः स्वरैरपराजिता ।
गण० न, न, र, स, ल, ग (7. 7)
उदा० मदनवधि भुजप्रतापकृतास्पदा
यदुभिरजय्यम् परैरपराजिता ।
व्यजयत समरेसमस्तरिपुव्रजम्
स जयति जगतां गतिर्गरुडध्वजः ॥

(2) असंबाधा

परि० म्तौ न्सौ गावक्षग्रहविरतिरसंबाधा ।
गण० म, त, न, स, ग, ग (5. 9)
उदा० वीर्याग्नौ येन ज्वलति रणवशात् क्षिप्रे
दैत्येन्द्रे जाता धरणिरियमसंबाधा ।
धर्मस्थित्यर्थं प्रकटिततनुसम्बन्धः
साधूनां बाधां प्रशमयतु स कंसारिः ॥

(3) पथ्या (मञ्जरी)

परि० सजसा यलौ च सह गेन पथ्या मता ।
गण० स, ज, स, य, ल, ग (5 9)
उदा० स्वनयन्त्यमूः गमितायामकार्तस्वरा
जलदास्तडित्तुलितकान्तकार्तस्वराः ।
जगतीरिह स्फुरितचारुचामीकराः
सवितुः क्वचित् कपिशयन्ति चामीकराः ॥
शि० ४।२४

(4) प्रमदा (कुररीरुता)

परि० नजभजला गुरुश्च भवति प्रमदा ।

गण० न, ज, भ, ज, ल, ग (6. 8)

उदा० अनतिचिरोज्झितस्य जलदेन चिर-
स्थितबहुबुद्बुदस्य पयसोऽनुकृतिम् ।
विरलविकीर्णवज्रशकला सकला-
मिह विदधाति धौतकलधौतमही ॥ शि० ४।४१ ।

(5) प्रहरणकलिका

परि० ननभनलगिति प्रहरणकलिका ।

गण० न, न, भ, न, ल, ग (7. 7)

उदा० व्यथयति कुसुमप्रहरणकलिका
प्रमदवनभवा तव धनुषि तता ।
विरहविपदि मे शरणमिह ततो
मधुमथनगुणस्मरणमविरतम् ॥

(6) मध्यक्षामा (हंसश्येनी वा कुटिल)

परि० मध्यक्षामा युगदशविरमा म्भौ न्यौ गौ ।

गण० म, भ, न, य, ग, ग (4.10)

उदा० नीतोच्छ्रायं मुहुरशिशिररश्मेरुस्रै-
रानीलाभैर्विरचितपरभागा रत्नैः ।
ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति हंसश्येनी
मध्येऽप्यह्नः स्फटिकरजतभित्तिच्छाया ॥
कि० ५।११ ।

(7) वसन्ततिलका

(वसन्ततिलक, उद्धर्षिणी वा सिंहोन्नता)

परि० उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

गण० त, भ, ज, ज, ग, ग (8.6)

उदा० यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः ।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥ श० ४।१ ।

(8) वासन्ती

परि० मात्तो नो मो गौ यदि गदिता वासन्तीयम् ।

गण० म, त, न, म, ग, ग (4.6.4)

उदा० भ्राम्यद्भृङ्गी निर्भरमधुरालापोद्गीतै-
श्रीखण्डाद्रेरनुपवनैर्मन्दान्दोला ।
लीलालोला पल्लवविलसद्धस्तोल्लासैः
कंसारातौ नृत्यति सदृशी वासन्तीयम् ॥

पन्द्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिशक्वरी)

(1) तूणक

परि० तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तिमम् ।

गण० र, ज, र, ज, र (4.4.4.3 या 7.8)

उदा० सा सुवर्णकेतकं विकासि भृङ्गपूरितम्
पञ्चबाणबाणजालपूर्णमेहितितूणकम् ।
राधिका वितर्क्य माधवाद्य भाति माधवी
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे ॥

(2) मालिनी

परि० ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।

गण० न, न, म, य, य (8.7)

उदा० शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्
जलनिधिमनुरूपं जह्नुकन्यावतीर्णा ।
इति समगुणयोगप्रीतयस्तत्र पौराः
श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः ॥ रघु० ६।८५ ।

(3) लीलाखेल

परि० एकन्यूनौ विद्युन्मालापादौ चेल्लीलाखेलः ।

गण० म, म, म, म, म

उदा० मा कान्ते पक्षस्यान्ते पर्याकाशे देशे स्वाप्सीः
कान्तं वक्त्रं वृत्तं पूर्णं चन्द्रं मत्वा राहुश्चेत् ।
क्षुत्क्षामः प्राटश्चेतश्चेतो राहुः क्रूरः ग्रासात्
तस्मादध्वान्ते हर्म्यस्यान्ते शय्याकाले कर्तव्या ॥
सरस्वती०

(4) शशिकला

परि० गुरुनिधनमनुलघुरिह शशिकला ।

गण० न, न, न, न, स (अन्तिम को छोड़ कर सब लघु)

उदा० मलयजतिलकसमुदितशशिकला
व्रजयुवतिलसदलिक गमनगता ।
सरसिजनयनहृदयसलिलनिधि
व्यतनुत विततरभसपरिसरकम् ॥

सोलह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अष्टि)

(1) चित्र

परि० चित्रसंज्ञमीरितं रजौ रजौ रगौ च वृत्तम् ।

गण० र, ज, र, ज, र, ग (8 8 या 4.4.4 4)

उदा० विद्रुमारुणाधरौष्ठशोभिवेणुवाद्यहृष्ट-
बल्लवीजनाङ्गसङ्गजातपुष्पकण्टकाङ्ग ।
त्वां सदैव वासुदेव पुण्यलभ्यपाद देव
वन्यपुष्पचित्रकेश संस्मरामि गोपवेश ॥

(2) पञ्चचामर

परि० प्रमाणिका पदद्वयं वदन्ति पंचचामरम् ।
(जरौ जरौ जरौ जगौ च पंचचामरं वदेत्)

गण० ज, र, ज, र, ज, ग (8.8 या 4.4.4 4)

उदा० सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
सुराङ्गनाभवल्लकीकरप्रपंचचामर—
स्फुरत्समीरवीजितं सदाच्युतं भजामि तम् ॥

(3) वाणिनी

परि० नजभजरैर्यदा भवति वाणिनी गयुक्तैः ।

गण० न, ज, भ, ज, र, ग ।

उदा० स्फुरतु ममाननेऽत्र ननु वाणि नीतिरम्यम्
तव चरणप्रसादपरिपाकतः कवित्वम् ।
भवजलराशिपारकरणक्षमं मुकुन्दम्
सततमहं स्तवैः स्वरचितैः स्तवानि नित्यम् ॥

सत्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अत्यष्टि)

(1) चित्रलेखा (अतिशायिनी)

परि० ससजा भजगा गु विकृस्वरैर्भवति चित्रलेखा ।
गण० स, स, ज, भ, ज, ग, ग (10. 7)
उदा० इति धौतपुरन्ध्रिमत्सरान् सरसि मज्जनेन
श्रियमाप्तवतोऽतिशायिनीमपमलाङ्गभासः ।
अवलोक्य तदैव यादवानपरवारिराशेः
शिशिरेतररोचिषाप्यपां ततिषु मङ्क्तुमीषे ॥
शि० ८।७१ ।

(2) नर्दटक (कोकिलक)

परि० यदि भवतो नजौ भजजला गुरु नर्दटकम् ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ल, ग (8 9)
उदा० तरुणतमालनीलबहुलोन्नमदम्बुधराः
शिशिरसमीरणाप्यनूतनवारिकणाः ।
कथमवलोकयेयमधुना हरिहेतिमती-
र्मदकलनीलकण्ठकलहैर्मुखराः ककुभः ॥
मा० ९।१८; दे०५।३१ ।

(3) पृथ्वी

परि० जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।
गण० ज, स, ज, स, य, ल, ग (8 9)
उदा० इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषा-
मितश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते ।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकै-
रहो विततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ॥
भर्तृ० २।७६ ।

(4) मन्दाक्रान्ता

परि० मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
गण० म, भ, न, त, त, ग, ग (4. 6 7)
उदा० गोपी भर्तुर्विरहविधुरा काचिदिन्दीवराक्षी
उन्मत्तेव स्खलितकबरी निःश्वसन्ती विशालम् ।
त्वद्बान्धवे मुररिपुरिति भ्रान्तिदूतीसहाया
त्यक्त्वा गेहं झटिति यमुनामञ्जुकुञ्जं जगाम ॥
पदाङ्क० १ ।
[समस्त मेघदूत इसी वृत्त में लिखा गया है]

(5) वंशपत्रपतित

परि० दिङ्मुनिवंशपत्रपतितं भरनभनलगैः ।
गण० भ, र, न, भ, न, ल, ग (10. 7)
उदा० संप्रति लब्धजन्म शनकैः कथमपि लघुनि
क्षीणपयस्युपेयुषि भिदां जलधरपटले ।
खण्डितविग्रहं बलभिदो धनुरिह विविधाः
पूरयितुं भवन्ति विभवः शिखरमणिरुचः ॥

ज्योतिषि रौप्यभित्तिषु पुरः प्रतिफलति मुहुः ।
क्रीडयसंमुखोऽपि रमणैरपहृतवसनाः
काञ्चनकन्दरासु तरुणीरिह नयति रविः ॥
शि० ४।६७ ।

(6) शिखरिणी

परि० रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।
गण० य, म, न, स, भ, ल, ग (6. 11)
उदा० दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः
करिण्यः कारुण्यास्पदमसमशीलाः खलु मृगाः ।
इदानीं लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखानां पुनरयम्
नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः ॥
भामि० १।२ ।

(7) हरिणी

परि० नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।
गण० न, स, म, र, स, ल, ग (6 4 7)
उदा० सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते
किमपि मनसः संमोहो मे तदा बलवानभूत् ।
प्रबलतमसामेवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः
स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया ॥
श० ७।२४ ।

अठारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(धृति)

(1) कुसुमितलतावेल्लिता

परि० स्याद्भूतर्त्वश्वैः कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ नयौ यौ ।
गण० म, त, न, य, य, य (5. 6. 7)
उदा० क्रीडत्कालिन्दीकलितलहरीवारिभिर्वीचिकाख्यैः
वातैः शैत्याढ्यैः कुसुमितलतावेल्लिता मन्दमन्दम् ।
भृङ्गालीगीतैः किसलयकरोल्लासितैर्लास्यलीलाम्
तन्वाना चेतो रमयतितरां चक्रपाणेश्चकार ॥

(2) चित्रलेखा

परि० मन्दाक्रान्ता नपरलघुयुता कीर्तिता चित्रलेखा ।
गण० म, भ, न, य, य, य (4. 7. 7.)
उदा० यद्वृत्तं त्वद्विरह जनितं मूकतां सारकं यदाली-
दाकर्ण्यैवं व्रजयुवति सभा वेदना सा व्यथापि ।
नैतावन्मात्रं कथमपि विमुतानन्तरेखाङ्कितस्य
प्रीतिं तस्या नयनयुगमभूच्चित्रलेखानुतापम् ।

(3) नन्दन

परि० नजभजरैस्तु रेफसहितैः शिवैर्हयैर्नन्दनम् ।
गण० न, ज, भ, ज, र, र (11. 7.)
उदा० तरणिसुतातरङ्गपवनैः सलीलमान्दोलितम्
मधुरिपुपादपङ्कजरजः सुपूतपृथ्वीतलम् ।
मुरहरिचेष्टितकलाकलापसंस्मारकम्,
क्षितितलनन्दनं व्रज सखे सुखाय वृन्दावनम् ॥

(4) नाराच

परि० इह ननरचतुष्कसृष्टं तु नाराचमाचक्षते ।
गण० न, न, र, र, र, र, (8. 5. 5,)

उदा० रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां प्रगृह्य प्रियाम्
प्रियसुहृदि विभीषणे संगमय्य श्रियं वैरिणः ।
रविसुतसहितेन तेनानुयातः ससौमित्रिणा
भुजविजितविमानरत्नाधिरूढः प्रतस्थे पुरीम् ॥
रघु० १२।१०४।

(5) शार्दूलललित

परि० म सो ज सतसा दिनेशऋतुभिः शार्दूलललितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, स, (12 6)
उदा० कृत्वाकसमृने पराक्रमविधिं शार्दूलललितम्
यश्चक्रे क्षितिभारकारिषु दर चैद्यप्रभृतिषु ।
संतोषं परमं तु देवनिवहे त्रैलोक्यशरणम्,
श्रेयो न स तनोत्वपारमहिमा लक्ष्मीप्रियतम ॥

उन्नीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अतिधृति)
(1) मेघविस्फूर्जिता

परि० रसर्त्वश्वैर्यमौ न्सौ ररगुरुयुतौ मेघविस्फूर्जिता स्यात् ।
गण० य, म, न, स, र, र, ग (6 6 7)
उदा० कदम्बामोदाढ्या विपिनपवनाः केकिनः कान्तकेका
विनिद्रा कन्दल्यो दिशि दिशि मुदा दर्दुरा दृप्तनादाः ।
निशा नृत्यद्विद्युद्विलसितलसन्मेघविस्फूर्जिता चेत्
प्रिय स्वाधीनोऽसौ दनुजदलनो
राज्यमस्मात् किमन्यत् ॥

(2) शार्दूल विक्रीडित

परि० सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, त, ग (12 7)
उदा० वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः ।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः ॥
वि० १।१।

(3) सुमधुरा

परि० म्रौ म्नौ मो नो गुरुश्चेद् हयऋतुरसैरुक्ता सुमधुरा ॥
गण० म, र, भ, न, म, न, ग (7 6 6)
उदा० वैदग्धीं प्राकृतस्य वदसि न च ते जिह्वा निपतिता
मध्याह्ने वीक्षसेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता ।
दीप्ताग्नौ पाणिमन्तः क्षिपसि स च ते
दग्धो भवति नो
चारित्र्याच्चारुदत्तं चलयसि न ते देहं हरति भूः ॥
मृच्छ० ९।२१ ।

(4) सुरसा

परि० म्रौ म्नौ यौ नौ गुरुश्चेत् त्वरमुनिकरणैराह सुरसाम् ।
गण० म, र, भ, न, य, न, ग (7 7 5)
उदा० कामक्रीडानुकूलो मधुसमयसमारम्भरभसात्
कालिन्दीकूलकुञ्जे विहरणकुतुकाकृष्टहृदय ।
गोविन्दो वल्लवीनामधररसमुधां प्राप्य सुरसाम्
शङ्के पीयूषपाने प्रचुरकृतसुखं व्यस्मरदसौ ॥

बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(कृति)
(1) गीतिका

परि० सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका ।
गण० स ज ज भ, र, स, ल, ग (5 7 8)
उदा० करतालचञ्चलकङ्कणस्वनमिश्रणेन मनोरमा
रमणीयवेणुनिनादरङ्गिमसंगमेन सुखावहा ।
बहलानुरागनिवासरासमुद्भवा भवरागिणम्
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारु चामरगीतिका ॥

(2) सुवदना

परि० ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्लौ ग सुवदना ।
गण० म, र भ न, य भ ल ग (7 7 6)
उदा० उत्तुङ्गास्तुङ्गकूलं स्रुतमदसलिलाः प्रस्यन्दिसलिलम्
श्यामाः श्यामोपकण्ठद्रुममतिमुखराः कल्लोलमुखरम् ।
स्रोतः खातावसीदत्तटमुरुदशनैरुत्सादिततटाः
शोणं सिन्दूरशोणा मम गजपतयः पास्यन्ति शतशः ॥
मुद्रा० ४।१६ ।

इक्कीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(प्रकृति)
(१) पञ्चकावली (सरसी, धृतश्री)

परि० नजभजजा जरौ नरपते कथिता भुवि पञ्चकावली ।
गण० न ज भ, ज ज ज र (777)
उदा० तुरगशताकुलस्य परितः परमेकतुरङ्गजन्मनः
प्रमथितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता ।
परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
श्चिरविगतश्रियो जलनिधेश्च तदाऽभवदन्तरं महत् ॥
शि० ३।८२ ॥

(2) स्रग्धरा

परि० म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा
कीर्तितेयम् ।
गण० म, र, भ, न, य, य, य (777)
उदा० या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं
या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥
श० १।१ ।

बाईस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(आकृति)
हंसी

परि० मौ गौ नाश्चत्वारो गो गो
वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी ।

गण० म, म, त, न, न, न, स, ग
या (म, म, त, न, न, न, स, ग) (8.14)

उदा० सार्धं कान्तेनैकान्तेऽसौ विकचकमलमधु सुरभि पिबन्ती
कामक्रीडाकूतस्फीतभ्रमदलिरवततरमलम् रसन्ती ।
कालिन्दीये पद्मारण्ये पवनचलनपरिचलदपरागे
कंसारातेः पश्य स्वेच्छं सरसि सललितमिह विलसति हंसी ॥

तेईस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(विकृति)
अद्रितनया

परि० नजभजभा जभौ लघुगुरू बुधैस्तु गदितेयमद्रितनया ।

गण० न, ज, भ, ज, भ, ज, भ, ल, ग (11.12)

उदा० चातरसौरभाधकविकासपत्कुलिगमन्दवृन्तदनुजो
जलधिसुताविलासवसति: सतां गतिरशेषमान्यमहिमा ।
भुवनहिताधतारचतुरश्चराचरधरोऽवतीर्ण इह हि
क्षितितलमेऽस्ति कंसदमनस्तवेति तमवोचदद्रितनया ॥

चौबीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(संकृति)
तन्वी

परि० भूतमुनीनैर्यतिरिह भतना:
स्भौ भनयाश्च यदि भवति तन्वी ।

गण० भ, त, न, स, भ, भ, न, य (5.7.12)

उदा० माधव मुग्धैर्मधुकरविरुतै:
कोकिलकूजितकलकलमुखरै:
कम्प्रमुपेता मलयजपवनै:
प्लावनतोऽन्यविनततनुराहा ।
पद्मपलाशैर्विरचितशयना
देहलसज्ज्वरभरपरिधूर्ना —
निश्वसती सा मुहुरतिपरुषं
श्यामलये तव निवसति तन्वी ॥

पच्चीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अतिकृति)
क्रौञ्चपदा

परि० क्रौञ्चपदा भ्मौ स्भौ ननना
न्याविषुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत् ।

गण० भ, म, स, भ, न, न, न, न, ग (5.5.8.7)

उदा० क्रौञ्चपदालीचिह्निततीरा
बककलहंसकुलकलकल रुचिरा
फुल्लसरोजश्रेणिविकासा
मधुमुदितमधुपरवरमणकरी ।
फेनविकासप्रोज्ज्वलहासा
ललितलहरिभरपुलकितकुलभृत्
पश्य हरेऽसौ कस्य न चेतो
हरति तरलगतिरहिमकिरणजा ॥

छब्बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(उत्कृति)
भुजंगविजृम्भित

परि० वस्वीशाश्वैश्छेदोपेत ममतननरसलगैर्भुजङ्ग-
विजृम्भितम् ।

गण० म, म, त, न, न, न, र, स, ल, ग (8, 11. 7)

उदा० हेलोद्यन्मन्थक्ष्माभृत्पादप्रकटविकट-
भटनभरो रणत्करताडक-
ध्वानश्रेणिश्रुत्यन्तावहै: भुवितरलनव-
किसलयस्तरीकुलहारभृक् ।
भस्मन्यास्त्रीभिर्भक्त्या मुकु-
लितकरकमलयुग कृतस्तुतिरच्युत:
पायाद्विभ्रन्यन् कालिन्दीह्रदकृत-
निजवसतिभुजगभुजङ्गविजृम्भितम् ॥

दंडक

जिन वृत्तों के प्रत्येक चरण में सत्ताईस या इससे अधिक वर्ण होते हैं उनका एक सामान्य नाम दंडक है। इस वृत्त की जाति के चरण में वर्णों की संख्या अधिक से अधिक ९९९ बताई जाती है। प्रत्येक चरण में सबसे पहले दो नगण या छ लघु अक्षर होते हैं, शेष या तो रगण होते हैं या यगण या सभी चरण सगण होते हैं। दण्डक की जिन श्रेणियों का बहुधा उल्लेख मिलता है वे हैं—चण्डवृष्टिप्रपात, प्रचितक, मत्तमातङ्गलीलाकर, सिंहविक्रान्त, कुसुमस्तबक, अनङ्गशेखर, और संग्राम आदि। अन्तिम प्रकार के दण्डक का उदाहरण भा० ५।२३ है।

अनुभाग (ख)

अर्धसमवृत्त

(1) अपरवक्त्र ('वैतालीय' भी कभी कभी)

परि० अयुजि ननरला गुरु: समे
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ।

गण० न, न, र, ल, ग (विषम चरण)
न, ज, ज, र, (सम चरण)

उदा० स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-
स्तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम् ।

मुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगनं चपलामिलितं यथा
शारदनीरधरैरुपचित्रम् ॥

(2) उपचित्र

परि० विषमे यदि सौ सलगा दले
भौ युजि भाद्गुरुकावुपचित्रम् ।
गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)
उदा० मुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगनं चपलामिलितं यथा
शारदनीरधरैरुपचित्रम् ॥

(3) पुष्पिताग्रा (औपच्छन्दसिक)

परि० अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।
गण० न, न, र, य (विषम चरण)
न, ज, ज, र, ग (सम चरण)
उदा० अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं
व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥ कु० ४।४६ ।

(4) वियोगिनी (वैतालीय या सुन्दरी)

परि० विषमे ससजा गुरुः समे
सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।
गण० स, स, ज, ग (विषम चरण)
स, भ, र, ल, ग (सम चरण)
उदा० सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणम्
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ कि० २।३० ।

(5) वेगवती

परि० सयुगात् सगुरू विषमे चेद्
भाविह वेगवती युजि भाद्गौ ।
गण० स, स, स, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)
उदा० स्मरवेगवती व्रजरामा
केशववंशरवैरतिमुग्धा ।
रभसान्न गुरून् गणयन्ती
केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम ॥

(6) हरिणप्लुता

परि० सयुगात्सलघू विषमे गुरु-
र्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।
गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
न, भ, भ, र (सम चरण)
उदा० स्फुटफेनचया हरिणप्लुता
बलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।
सकलहंसकुलारव शालिनी
विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥

विशे० अपरवक्त्र या औपच्छन्दसिक और वैतालीय या वियोगिनी प्रायः जाति समझे जाते हैं (दे० अनुभाग घ) । परन्तु कभी कभी गणयोजना में उनकी परिभाषा दी जाती है, इसी लिए वे यहाँ वृत्तों के अन्तर्गत दे दिये गये हैं ।

अनुभाग (ग)

विषमवृत्त (असमवृत्त)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उद्गता अत्यंत सामान्य वृत्त कहलाता है ।

परि० प्रथमे सजौ यदि सलौ च
नसजगुरुकाण्यनन्तरम् ।
यद्यथ भनजलगाः स्युरथो
सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

गण० स, ज, स, ल (प्रथम चरण)
न, स, ज, ग (द्वितीय चरण)
भ, न, ज, ल, ग (तृतीय चरण)
स, ज, स, ज, ग (चतुर्थ चरण)

उदा० अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुं
विधिवत्तपांसि विदधे धनंजयः ॥ कि० १२।१ ।
दे० कि० १५ भी ।

उद्गता का एक और भेद बताया जाता है जिसके तृतीय चरण में भ, न, ज, ल, ग के स्थान में र, न, भ, ग होते हैं । वृत्तों के अन्य भेद जिनमें प्रत्येक चरण के वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है, 'गाथा' के सामान्यशीर्षक के अन्तर्गत बतलाये हैं । चार से भिन्न चरणों की संख्या वाले वृत्तों के लिए भी यही नाम व्यवहृत होता है । जहाँ तक 'उपजाति' का संबंध है वे किसी भी निर्धारित वृत्त के दो या दो से अधिक चरणों को मिला कर अर्धसमवृत्त या विषमवृत्त बना लिए जाते हैं ।

अनुबन्ध (ख)

जाति

(यह छन्द मात्राओं की संख्या से विनियमित किये जाते हैं)।

(क) इस प्रकार के वृत्तों की अत्यन्त सामान्य प्रकार 'आर्या' है। इसके भी अवान्तर भेद बताये जाते हैं·

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिर्नवैव चार्यायाः॥

इन नौ भेदों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए इनका उल्लेख किया जाता है.

(1) आर्या

परि० यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या॥ श्रु० ४।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्रायें गिनी जाती हैं)। दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० प्रतिपक्षेणापि पतिं सेवन्ते भर्तृवत्सलाः साध्व्यः।
अन्यसरितां शतानि हि समुद्रगाः प्रापयन्त्यब्धिम्॥
मालवि० ५।१९।

गोवर्धन की समस्त 'आर्यासप्तशती' इसी छन्द में लिखी गई है।

(2) गीति

परि० आर्याप्रथमार्धसमं द्वितीयमपि भवति यत्र हंसगते।
छन्दोविदस्तदानीं गीतिंताममृतवाणि भाषन्ते॥

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० पाटीर तव पटीयान् क: परिपाटीमिमामुरीकर्तुम्।
यत्पिषतामपि नृणां पिष्टोऽपि तनोषि परिमलैः पुष्टिम्॥ भामि० १।१२।

(3) उपगीति

परि० आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रथमार्धमपि प्रयुक्तं चेत्।
कामिनि तामुपगीतिं प्रतिभाषन्ते महाकवयः॥
श्रु० ६।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नवगोपसुन्दरीणां रासोल्लासे मुरारातिम्।
अस्मारयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीतेः॥

(4) उद्गीति

परि० आर्याशकलद्वितये विपरीते पुनरिहोद्गीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय चरण में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नारायणस्य सन्ततमुद्गीतिः संस्मृतिर्भक्त्या।
अर्चायामासक्तिर्दुस्तरसंसारसागरे तरणिः॥

(5) आर्यागीति

परि० आर्या प्राग्दलमन्ते ऽधिकगुरु तादृक् परार्धमार्यागीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में बीस मात्राएँ होती हैं।

उदा० मधुपाः सुखिनोऽस्मिन्नवरतममन्दरागतामरसदृशः।
नासेवन्ते रसवन्नवरतममन्दरागतामरसदृक्ष॥
कि० ४।५१।

नोट यह चौथा भेद कभी कभी गणयोजना में भी परिभाषित किये जाते हैं।

(आ) वैतालीय

परि० षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः।
न समाऽत्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः॥

यह चार चरण का श्लोक है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में चौदह लघु मात्राओं का भवन लगता है, और द्वितीय तथा तृतीय चरण में सोलह मात्राओं का। पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छः मात्राएँ होनी चाहिए। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके पश्चात् रगण (ऽ।ऽ) तथा लघु गुरु (।ऽ) होने चाहिएँ। आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि सम चरणों में सभी मात्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिएँ, इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम चरण की (अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अगले चरणों (अर्थात् तृतीय, पंचम और सप्तम) से संयुक्त नहीं होनी चाहिए।

उदा० कुशलं खलु तुभ्यमेव तद्
वचनं कृष्ण यदभ्यधामहम्।
उपदेशपराः परेष्वपि
स्वविनाशाभिमुखेषु साधवः॥ शि० १६।४१।

(इ) औपच्छन्दसिक

परि० पर्यन्ते यौ तथैव शेषमौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्।

यह वैतालीय के समान ही है। इसमें प्रत्येक चरण के अन्त में रगण और ल, ग के स्थान में रगण और यगण होने चाहिएँ। दूसरे शब्दों में यह वैतालीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु जोड़ा हुआ है।

उदा० वपुषा परमेण भूधराणामथ संभाव्यपराक्रमं विभेदे ।
मृगमाशु विलोकयांचकार स्थिरदंष्ट्रोग्रमुखं
महेन्द्रसूनुः ॥
कि० १३।१ ।

इसी प्रकार इसी सर्ग के अगले बावन श्लोकों में । दे० कि० २० भी ।

यह बात ध्यान में रखने की है कि वियोगिनी या सुंदरी तथा अपरवक्त्र, वैतालीय की ही विशेषताएँ हैं, और पुष्पिताग्रा तथा मालभारिणी, औपच्छन्दसिक की । छन्दःशास्त्री वृत्तों की इन दोनों श्रेणियों का प्रतिपादन गणयोजना तथा मात्रा योजना दोनों स्थानों पर करते हैं । इसीलिए यह यहाँ भी दर्शाये गये हैं और अनुभाग (घ) में भी ।

(ई) मात्रासमक

मात्रासमक वृत्त में चार चरण होते हैं, और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ । इसके अत्यन्त सामान्य प्रकार में नवाँ वर्ण लघु और अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है । इसकी परिभाषा की है:-- मात्रासमकं नवमो ल्गान्त्यः ।

परन्तु मात्राओं के ह्रस्व या दीर्घ होने के कारण इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं । उदाहरण के रूप में, यदि नवाँ तथा बारहवाँ वर्ण लघु है, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ है, शेष वर्ण ऐच्छिक हैं, तो वह वृत्त वानवासिका कहलाता है । यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवाँ ह्रस्व हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह वृत्त चित्रा कहलाता है । यदि पाँचवाँ और आठवाँ वर्ण ह्रस्व हैं, नवाँ, दसवाँ, पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह उपचित्रा कहलाता है । यदि पाँचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तथा शेष अनिश्चित हैं, तो वह विश्लोक कहलाता है । कभी कभी एक ही श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे पादाकुलक वृत्त कहते हैं, उसमें कोई विशेष प्रतिबंध भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं का होना आवश्यक है ।

उदा० मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् ॥
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥
मोह० १

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का काल आदि

आर्यभट्ट -एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, जन्मकाल ४७६ ई० ।

उद्भट—अलंकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक। यह काश्मीर के राजा जयापीड की राजसभा का मुख्य पंडित था। इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है।

कय्यट—पतञ्जलिकृत महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक टीका का रचयिता। डाक्टर बुह्लर के मतानुसार यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था।

कल्हण—राजतरंगिणी नामक राजाओं के इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता। यह काश्मीर के राजा जयसिंह का, जिसने ११२९ से ११५० ई० तक राज्य किया, समकालीन था।

कालिदास—अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत और ऋतुसंहार का रचयिता। इसके अतिरिक्त 'नलोदय' तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता। कालिदास का सबसे पहला अविकृत उल्लेख हमें ६३४ ई० (तदनुसार ५५६ शाके) के शिलालेख में मिलता है। इसमें कालिदास और भारवि दोनों को प्रसिद्ध कवि बतलाया गया है। श्लोक यह है :—

येनायोजि न वेश्म,
स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्ति
कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः ॥

हर्षचरित के आरंभ में बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि कालिदास बाण से पहले अर्थात् सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से पहले हुआ था। परन्तु सातवीं शताब्दी से कितना पूर्व इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका। मेघदूत के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए मल्लिनाथ ने निचुल और दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन बताया है। यदि मल्लिनाथ के इस सुझाव को जिसकी सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है, सही मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा यही काल दिङ्नाग का माना जाता है।

एक बात और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो जाय तो कवि के जन्मकाल का सही ज्ञान हो जाय। यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिभावक के रूप में विक्रम का उल्लेख। यह कौन सा विक्रम है, इस बात का अभी पूरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है। प्रचलित परंपरा के अनुसार वह विक्रम संवत् का जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रवर्तक था। यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास निश्चय ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा। परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जिसे हम विक्रम संवत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) कहते हैं वह कोरूर के महायुद्ध के काल के आधार पर बना है। इस युद्ध में विक्रम ने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था। और उस समय ६०० वर्ष पीछे ले जाकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) इसका नामकरण किया। यदि यह मत यथार्थ मान लिया जाय—विद्वान् लोग अभी इस बात पर एकमत दिखाई नहीं देते—तो कालिदास छठी शताब्दी में हुए हैं। अभी इस प्रश्न का पूरा समाधान नहीं हो सका है।

क्षेमेन्द्र—काश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि, समयमातृका तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ।

जगद्धर एक प्रसिद्ध टीकाकार। इसने मालतीमाधव और वेणीसंहार पर टीकाएँ लिखीं। यह चौदहवीं शताब्दी के बाद हुआ।

जगन्नाथ पंडित एक प्रसिद्ध आधुनिक लेखक। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ रसगंगाधर है जिसमें 'काव्य' विषय का विवेचन है। उसकी अन्य कृतियाँ हैं--भामिनीविलास, पाँच लहरियाँ (गंगा, पीयूष, सुधा, अमृत, और करुणा) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ। ऐसा माना जाता है कि वह दिल्ली के सम्राट् शाहजहाँ के काल में हुआ। इसने जहांगीर के राज्य के अन्तिम दिन तथा १६५८ ई० में दारा का अस्थायी राज्यसिंहासनारोहण देखा होगा। अतः इसका जन्म—और कुछ नहीं तो कार्य काल तो अवश्य—१६२० तथा १६६० ई० के बीच में रहा होगा।

जयदेव—गीतगोविन्द नामक ललित गीतिकाव्य का प्रणेता। यह बंगाल के बीरभूमि जिले के किन्दुबिल्व नामक गाँव का निवासी था। कहा जाता है कि वह राजा लक्ष्मणसेन के काल में हुआ जिसकी एकात्मता डाक्टर बुह्लर ने बंगाल के वैद्य राजा से की है। इसका शिलालेख विक्रम संवत् ११७३ अर्थात् १११६ ई०

का मिलता है। अतः यह कवि बारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।

दण्डिन् - यह दशकुमारचरित और काव्यादर्श का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। माधवाचार्य के मतानुसार यह बाण का समकालीन था।

पतंजलि - महाभाष्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

नारायण - (भट्टनारायण) वेणीसंहार का रचयिता। यह नवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अवन्तिवर्मा के राज्यकाल ८५५–८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

बाण—हर्षचरित, कादंबरी और चण्डिकाशतक का विख्यात प्रणेता। पार्वतीपरिणय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती है। इसका काल निर्विवाद रूप से इसके अभिभावक कान्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय ह्यून त्सांग ने समस्त भारत में भ्रमण किया उस समय हर्षवर्धन ने ६२९ से ६४५ ई० तक राज्य किया। इसलिए बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का न्यूनातिन्यून उनका जिनका कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है परिचायक है।

बिल्हण—महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित तथा चौरपञ्चाशिका का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भट्टि यह श्रीस्वामी का पुत्र था। राजा श्रीधरसेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीस्वामी बल्लभी में रहा। लैसन के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५४५ ई० तक था।

भर्तृहरि - शतकत्रय और वाक्यपदीय का रचयिता। तैलंग महाशय के मतानुसार यह ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परंपरा के अनुसार भर्तृहरि विक्रमराजा का भाई था। और यदि हम इस विक्रम को वही मानें जिसने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था, तो हमें समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भवभूति— महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था, और कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा के दरबार में रहता था। काश्मीर के राजा ललितादित्य (६९३ से ७२९ ई०) ने इसे परास्त किया था। अतः भवभूति सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अतः यह काल युक्त है। कालिदास और भवभूति की समकालीनता के उपाख्यान निरे उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं हैं।

भारवि किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता। ६३४ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास - बाण और कालिदास ने इसे अपना पूर्ववर्ती बताया है अतः यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

मम्मट काव्य प्रकाश का रचयिता। यह १२९४ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १२९४ ई० में तो जयन्त ने काव्यप्रकाश पर 'जयन्ती' नामक टीका लिखी है।

मयूर —यह बाण का श्वसुर था। इसने अपने कुष्ठ से मुक्ति पाने के लिए सूर्यशतक की रचना की। यह बाण का समकालीन था।

मुरारि अनर्घराघव नाटक का रचयिता। रत्नाकर कवि ने (जो नवीं शताब्दी में हुआ) अपने हरविजय ३८।६७ में इसका उल्लेख किया है। अतः इसे नवीं शताब्दी से पूर्व का ही समझना चाहिए।

रत्नाकर हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अवन्तिवर्मा (८५५-८८४ ई० तक) इस कवि के आश्रयदाता थे।

राजशेखर बालरामायण, बालभारत और विद्धशालभंजिका का रचयिता। यह भवभूति के पश्चात् दसवीं शताब्दी के अन्त से पूर्व हुआ, अर्थात् यह सातवीं शताब्दी के अन्त और दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

वराहमिहिर एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, बृहत्संहितानामक पुस्तक का रचयिता।

विक्रम —देखो कालिदास।

विशाखदत्त मुद्राराक्षस का रचयिता। इस नाटक की रचना का काल तैलंग महाशय के अनुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी माना जाता है।

शंकर वेदान्त दर्शन का प्रसिद्ध आचार्य, तथा शारीरक भाष्य का प्रणेता। इसके अतिरिक्त वेदान्त विषय पर इसकी अनेक रचनाएँ हैं। कहते हैं कि यह ७८८ ई० में उत्पन्न हुआ और ३२ वर्ष की थोड़ी आयु में ही ८२० ई० में परलोकवासी हुआ। परन्तु कुछ विद्वान् लोगों (तैलंग महाशय तथा डाक्टर भण्डारकर आदि) ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि यह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ होगा। मुद्राराक्षस की प्रस्तावना देखिये।

श्रीहर्ष —यह नैषधचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इसके अतिरिक्त इसकी अन्य आठ दस रचनाएँ भी मिलती

है। इसे प्रायः बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। विल्सन कहता है कि १११३ ई० में अपने पिता कलश के पश्चात् श्रीहर्ष राजगद्दी पर बैठा। अतः रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में १११३ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि दशरूपमें इसके अनेक उद्धरण उपलब्ध हैं। और दशरूप दसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

सुबन्धु वासवदत्ता का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अतः यह सातवीं शताब्दी के बाद का नहीं। इसने धर्मकीर्ति द्वारा लिखित बौद्धसंगति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी शताब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रकाशित कराया।

अंग—गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण राज्य। इसकी राजधानी चंपा थी, जो अंगपुरी भी कहलाता था। यह नगर विक्रशील के पश्चिम में लगभग २४ मील की दूरी पर विद्यमान था। इसी लिए यह या तो वर्तमान भागलपुर था, अथवा उसके कहीं अत्यंत निकट स्थित था।

आंध्र—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह वर्तमान तेलंगण ही माना जाता है। गोदावरी का मुहाना आंध्रों के अधिकार में था। परन्तु इसकी सीमाएँ सम्भवतः पश्चिम में घाट, उत्तर में गोदावरी, तथा दक्षिण में कृष्णा नदी थी। कलिंग देश इसकी एक सीमा था (देखो रघु० ७ वाँ उल्लास)। इसकी राजधानी अंध्रनगर संभवतः प्राचीन वेंगी या वेगी थी।

अवंति—नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक देश। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी जिसे अवंतिपुरी या अवंति और विशाला (मेघ० ३०) भी कहते थे। यह सिप्रा नदी के तट पर स्थित थी। मालवा देश का पश्चिमी भाग है। महाभारत काल में यह देश दक्षिण में नर्मदातट तक तथा पश्चिम में मही के तटों तक फैला हुआ था। अवंति के उत्तर में एक दूसरा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मण्वती नदी के तट पर स्थित दशपुर थी, यह ही वर्तमान धौलपुर प्रतीत होता है। यह रन्तिदेव की राजधानी थी।

अश्मक—त्रावणकोर का पुराना नाम।

आनर्त—देखो सौराष्ट्र।

इन्द्रप्रस्थ—(हस्तिप्रस्थ या गजप्रस्थ भी कहलाता है) इसी नगर की वर्तमान दिल्ली से एकरूपता मानी जाती है। यह नगर यमुना के बाईं ओर बसा हुआ था, जब कि वर्तमान दिल्ली दाईं ओर स्थित है।

उत्कल या ओड्र—एक देश का नाम। वर्तमान उड़ीसा जो ताम्रलिप्त के दक्षिण में स्थित है और कपिशा नदी तक फैला हुआ है—तु० रघु ४।३८। इस प्रांत के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं जहाँ कि जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है।

कनखल—हरद्वार के निकट एक ग्राम का नाम है। यह शैवालिक पहाड़ी के दक्षिणी भाग पर गंगा के किनारे बसा हुआ है। यहाँ के आसपास का पहाड़ भी कनखल कहलाता है।

कपिशा दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

कलिंग—एक देश का नाम जो उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और गोदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है। ब्रिटिशकाल की उत्तरी सरकार से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है। इसकी राजधानी कलिंग नगर प्राचीन काल में समुद्रतट से (तु० रघु० ७ वाँ उल्लास) कुछ दूरी पर संभवत राजमहेन्द्री में थी। दे० 'आंध्र' भी।

कांची—दे० 'द्रविड' के अन्तर्गत।

कामरूप—एक महत्त्वपूर्ण राज्य जो करतोया या सदानीरा के तट से लेकर आसाम की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत तक तथा पूर्व में चीन की सीमा तक फैला हुआ होगा, क्योंकि यहाँ के राजा ने किरात और चीन की सेना के साथ दुर्योधन की सहायता की थी। इस राज्य की प्राचीन राजधानी लौहित्य या ब्रह्मपुत्र नदी के दूसरी ओर प्राग्ज्योतिष थी। तु० रघु० ४।८१।

काम्बोज एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह हिन्दुकुश पहाड़ के उस प्रदेश पर रहते होंगे जहाँ यह बलख से गिलगित को पृथक् करता है, तथा तिब्बत और लद्दाख तक फैला हुआ है। यह प्रदेश घोड़ों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ पर बकरी आदि जानवरों की ऊन से शाल भी बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त यहाँ अखरोट के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। तु० रघु० ४।६९।

कुंतल—चोल देश के उत्तर में स्थित एक देश। ऐसा प्रतीत होता है कि कृष्णा के दक्षिण में कल्याण या कोलियम दुर्ग इस प्रदेश की राजधानी थी। यह देश हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिमी भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

कुरुक्षेत्र—दिल्ली के निकट एक विस्तृत प्रदेश। यहीं कौरव और पांडवों के मध्य महासंग्राम हुआ था। यह थानेश्वर के दक्षिण में इसी नाम के पवित्र सरोवर के निकट एक प्रदेश है जो सरस्वती के दक्षिण से लेकर दृषद्वती के उत्तर तक फैला हुआ है। कभी कभी इस स्थान को 'समन्तपंचक' नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है परशुराम द्वारा वध किये गये क्षत्रियों के रक्त के 'पाँच पोखर'।

कुलूत—एक देश का नाम—वर्तमान कुल्लू प्रदेश। यह प्रदेश कांगड़ा दोआब के उत्तरपूर्व की ओर व्यास (विपाशा) नदी के दाईं ओर स्थित है।

कुशावती या कुशस्थली —यह दक्षिणकोसल प्रदेश की राजधानी है और विन्ध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परन्तु विन्ध्यपर्वत के दक्षिण में होगा। संभवतः यह वही स्थान है जिसे बुंदेलखंड में हम रामनगर कहते हैं। राजशेखर इस कुशस्थली के स्वामी को मध्यदेशनरेन्द्र अर्थात् मध्यभूमि या बुंदेलखंड का राजा कहते हैं।

केकय —सिंधुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

केरल —कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि की लंबी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियां हैं नेत्रवती, क्षरावती तथा कालीनदी। यह काली नदी ही मुरला नदी समझी जाती है। इसका उल्लेख रघु० ४।५५ तथा उत्तर० ३ में किया गया है, यही केरलप्रदेश की मुख्य नदी है। केरल प्रदेश वर्तमान कानड़ा प्रदेश है जिसके साथ संभवतः मलाबार भी जुड़ा हुआ है और कावेरी से परे तक फैला हुआ है।

कोसल एक प्रदेश का नाम जो रामायण के अनुसार सरयू नदी के तटों के साथ साथ बसा हुआ है। इसके दो भाग हैं—उत्तर कोसल और दक्षिण कोसल। उत्तर कोसल का नाम 'गन्द' है और यह अयोध्या के उत्तरी प्रदेश को प्रकट करता है जिसमें गन्द तथा बहराइच सम्मिलित हैं। अज, तथा दशरथ आदि राजाओं ने इसी प्रान्त पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने तो विन्ध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित दक्षिणी कोसल की कुशावती राजधानी में राज्य किया, और लव ने उत्तरी कोसल में स्थित श्रावस्ती में रहकर राज्य किया।

कौशाम्बी वत्स देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इलाहाबाद से लगभग तीस मील की दूरी पर वर्तमान कोसम के निकट स्थित था।

कौशिकी—एक नदी (कुसी) का नाम जो उत्तरी भागलपुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से होती हुई दरभंगा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटों के निकट ऋष्यशृंग ऋषि का आश्रम था।

गौड या पुंड्र—उत्तरी बंगाल। (पुंड्र मूलरूप से 'पुरी' के बेतस प्रदेश को कहते हैं)।

चेदि एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। चेदियों को डाहल और चैपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तट पर बसे हुए थे, वह वही लोग थे जिन्हें हम दशार्ण कहते हैं। एक मत इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग मध्यभारत के वर्तमान बुन्देलखण्ड में रहते थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान चन्देरि था। जबलपुर से नीचे भेरा घाट के आसपास विन्ध्य और रिक्ष पर्वतों के मध्य में नर्मदा के किनारे पर स्थित माहिष्मती नगरी में हैहय या कलचुरी लोग राज्य करते थे।

चोल एक देश का नाम जो कावेरी के तट पर बसा हुआ है यह मैसूर प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुलकेशिन् द्वितीय ने इस नदी को पार करके इस देश पर आक्रमण किया था। यही देश बाद में कर्णाटक कहलाने लगा।

जनस्थान—(मानव बसति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है। और प्रस्रवण नामक पर्वत के निकट स्थित है। प्रसिद्ध पंचवटी (स्थानीय परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक से लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

जालन्धर —वर्तमान जलन्धर दोआब। शतद्रु और विपाशा (सतलुज और व्यास) से सिंचित प्रदेश।

ताम्रपर्णी— मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। यह वही नदी प्रतीत होती है जिसे आजकल ताम्बवारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान से निकलकर तिन्नेवल्ली जिले में से होती हुई मनार की खाड़ी में गिर जाती है, तु० रघु० ४।४९–५०, और वा० रा० १०।५६।

ताम्रलिप्त - दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

त्रिगर्त प्राचीन काल का एक अत्यन्त जलहीन मरु प्रदेश। यह सतलुज का पूर्ववर्ती मरुस्थल था। सरस्वती और सतलुज का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लुधयाना और पटियाला है तथा मरुस्थल का कुछ भाग दक्षिण में है।

त्रिपुर–री—चेदि देश की राजधानी 'नर्मदुहिता अर्थात् नर्मदा की तरंगों से क्षुब्धमान' अतएव इस नदी के किनारे स्थित। जबलपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान तिपुर को ही त्रिपुर माना जाता है।

दशपुर—दे० 'अवन्ति' के अन्तर्गत।

दशार्ण—एक देश का नाम जिसमें से दशार्ण (दसन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान भिलसा माना जाता है। यह वेत्रवती या बेतवा नदी के तट पर स्थित है, तु० मेघ० २४।२५, और कादंबरी। कालिदास ने भी विदिशा नाम की एक नदी का उल्लेख किया है जो संभवतः वही है जिसे हम आजकल ब्यास कहते हैं तथा जो बेतवा में मिल जाती है।

द्रविड़ - कृष्णा और पोलर नदियों के मध्यवर्ती बंगलौर भाग के दक्षिण में स्थित कोरोमंडल का समस्त समुद्रीतट इसमें सम्मिलित है। परन्तु यदि सीमित

रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी कांची थी जिसे आजकल कांजीवरम कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेगवती नदी के किनारे स्थित है।

द्वारका—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

निषध एक देश का नाम जहाँ नल का राज्य था। इस की राजधानी अलका थी जो अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरी भारत का वर्तमान कुमायूं प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक वर्षपर्वत का नाम भी है।

पंचवटी—दे० 'जनस्थान' के अन्तर्गत।

पंचाल एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजशेखर के अनुसार (बा० रा० १०।८६) यह प्रदेश गंगा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसलिए यह गंगा दोआब कहलाता था। द्रुपद के काल में यह प्रदेश चर्मण्वती (चंबल) के तट से लेकर उत्तर में गंगाद्वार तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तर पंचाल कहलाता था। और इसकी राजधानी अहि-च्छत्र थी। इस प्रदेश का दक्षिणीभाग 'दक्षिणपंचाल' कहलाता था जो द्रुपद की मृत्यु के पश्चात् हस्तिनापुर की राजधानी में विलीन हो गया।

पद्मपुर—भवभूति कवि की जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में चन्द्रपुर (वर्तमान चांदा) के निकट कहीं पर बसा हुआ था।

पद्मावती मालवाप्रदेश में सिन्धु नदी के तट पर स्थित वर्तमान नरवाड़ से इसकी एकरूपता मानी जाती है। इसके आस-पास और दूसरी नदियाँ पारा या पार्वती, लूण, और मधुवर हैं जिनका भवभूति ने पारा लावणी और मधुमती के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियाँ हैं। भवभूति के मालतीमाधव का वर्णित दृश्य यह नगर है।

पंपा एक प्रसिद्ध सरोवर का नाम जो आजकल पंपासर कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यमूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी सरोवर से निकली है; विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रदुर्ग के मध्यवर्ती शिलासरोवर से निकला है। यही संभवतः मूल पंपा था, और चन्द्रदुर्ग ही ऋष्यमूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरोवर से नदी में परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पाटलिपुत्र गंगा और शोण नदी के संगम पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्वपूर्ण नगर। यह 'कुसुमपुर' या 'पुष्पपुर' भी कहलाता था। संस्कृत के लौकिक साहित्य में इस नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह नगर एक नदी की बाढ़ की चपेट में आकर नष्ट हो गया।

पांड्य भारत के बिल्कुल दक्षिण में स्थित एक देश जो चोलदेश के दक्षिणपश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और ताम्रपर्णी नदी का स्थान निर्विवाद रूप से निश्चित हो चुका है, तु० बा० रा० २।३१। इस प्रदेश की वर्तमान तिन्नेवली से एकरूपता स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पाण्ड्यदेश की राजधानी का नाम नाग-नगर बताया है जो संभवतः मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान 'नागपत्तन' ही है, तु० रघु० ६।५९-६४।

पारसीक पर्शिया देश के रहने वाले लोग। संभवतः यह शब्द उन जातियों के लिए भी व्यवहार में आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में समावर्ती जिलों में रहते हैं। इनके देश से वनायुदेश नाम से घोड़ों के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र—भारत की एक मुख्य पर्वतश्रृंखला। संभवतः यह वही है जिसे हम शिवालिक पहाड़ कहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में गंगा के दोआब की रक्षा करता है।

प्रतिष्ठान पुरूरवस की राजधानी। पुरूरवा एक प्राचीन काल का चन्द्रवंशी राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के सामने स्थित था। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिले में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इसे गंगा यमुना के संगम पर स्थित बतलाया है। तु० विक्रम० २।

मगध दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुरानी राजधानी गिरिव्रज (या राजगृह) थी। इसमें पाँच पर्वत विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि और वैभार (व्यवहार) गिरि सम्मिलित थे। इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी। परवर्ती साहित्य में मगध का नाम कीकट भी आता है।

मत्स्य या विराट—जयपुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पांडव लोग दक्षिण के उत्तर में शौरसेन तथा रोहितक के भूभाग से होते हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। विराट देश की राजधानी संभवतः बैराट ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में बैराट के नाम से विख्यात है।

मलय भारत की सात मुख्य पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। इसकी एकरूपता संभवतः मैसूर के दक्षिण में फैले हुए घाट के दक्षिणी भाग से की जाती है जो ट्रावनकोर की पूर्वी सीमा बनाता है। भवभूति के कथनानुसार यह प्रदेश कावेरी से घिरा हुआ है (महावीर० ५।३ तथा रघु० ४।४६)। कहते हैं कि यहाँ इलायची, काली मिर्च, चंदन और सुपारी के

वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। रघु० ४।५१ में कालिदास ने बतलाया है कि मलय और दर्दुर यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो वक्षस्थल हैं। अत दर्दुर घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिणपूर्वी सीमा बनाता है।

महेन्द्र भारत की सात मुख्य पर्वतशृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेन्द्रमाले से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है जो कि महानदी की घाटी से गंजाम को विभक्त करता है। संभवतः इसमें महानदी और गोदावरी का अन्तर्वर्ती समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित था।

महोदय (कान्यकुब्ज या गाधिनगर) यह वही प्रदेश है जो गंगा के किनारे वर्तमान कन्नौज नाम से विख्यात है। सातवीं शताब्दी में यह नगर भारत का अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान था। तु० वा० रा० १०।८८-८९।

मानस एक सरोवर का नाम है जो हाटक में स्थित था जिसे आज कल लद्दाख कहते हैं। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुरु था, [illegible] देश है जिसका नाम हरिवर्ष है। पर्वकाल में यह सरोवर किन्नरों के आवास के रूप में विख्यात था। कवियों की उक्ति के अनुसार वर्षा ऋतु के आरम्भ में हंस प्रतिवर्ष यहीं आकर शरण लेते थे।

माहिष्मती दे० चेदि के अन्तर्गत।

मिथिला दे० विदेह के अन्तर्गत।

मुरल दे० केरल के अन्तर्गत।

मेकल अमरकण्टक नाम का पर्वत जहाँ से नर्मदा नदी निकलती है।

लाट एक देश का नाम जो नर्मदा के पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें भड़ौच, खेड़ा, बड़ौदा और अहमदाबाद सम्मिलित थे। कुछ के मतानुसार [illegible] भी इसी में सम्मिलित था।

वंग (समतट पूर्वी बंगाल का एक नाम।) [illegible] या गौड़ देश [illegible] इसमें बंगाल का समतट भी सम्मिलित है। ऐसा प्रतीत होता है कि [illegible], [illegible] और [illegible] भी इसमें सम्मिलित थे।

वलभी दे० सौराष्ट्र के अन्तर्गत।

वाह्लीक, वाहीक पंजाब में रहने वाली जातियों का सामान्य नाम। इनका यह वर्णन करते हैं कि वे पंजाब के उस भाग में रहते थे जिसे सिन्धु नदी तथा पंजाब की अन्य पाँच नदियाँ सींचती हैं परन्तु भारत की पुण्य भूमि से यह बाहर था। यह देश घोड़ों और हाथियों के कारण प्रसिद्ध है।

विदर्भ वर्तमान बरार देश। प्राचीन काल में कुन्तल के उत्तर में स्थित रहा एक बड़ा राज्य था जो कृष्णा के तट से लेकर लगभग नर्मदा के तट तक फैला हुआ था। विशालकाय होने के कारण इसका नाम महाराष्ट्र भी था तु० वा० रा० १०।३८। कुण्डिनपुर जिसे विदर्भ भी कहते हैं इस देश की प्राचीन राजधानी थी। इसीको संभवतः आजकल बीदर कहते हैं। विदर्भ देश को वरदा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी अमरावती है तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठान।

विदिशा– दे० दशार्ण के अन्तर्गत।

विदेह मगध के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मधुबनी के उत्तर में नेपाल में जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में विदेह के अन्तर्गत नेपाल के एक भाग के अतिरिक्त वह सब स्थान जो अब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा तिरहुत के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिमी भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

विराट दे० मत्स्य।

वृन्दावन राधा का वन आज कल मथुरा से कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बसा हुआ स्थान। यह यमुना के बायें किनारे स्थित है।

शक एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमान्त पर बसी हुई थी। संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है। सिथियन से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

शुक्तिमत भारत की सात प्रमुख पर्वतशृंखलाओं में से एक। इसकी सही स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं हो सका है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नेपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक शाखा है।

श्रावस्ती उत्तरी कोशल में स्थित एक नगर का नाम जहाँ पर कहते हैं कि लव राज्य किया करता था (रघु० १५।९७ ने इसको शरावती का नाम दिया है)। अयोध्या के उत्तर में वर्तमान सहेत महेत से इसकी एकरूपता मानी जाती है। यह नगर धर्मपत्तन या धर्मपुरी भी कहलाता था।

सह्य भारत की सात प्रमुख पर्वत शृंखलाओं में से एक। आज कल इसी का नाम सह्याद्रि है। पश्चिमी घाट का मलय के उत्तर में नीलगिरि के संगम तक फैला हुआ है वही सह्याद्रि है।

सिन्धु दे० [illegible] के अन्तर्गत।

सिन्धुदेश वर्तमान सिन्ध प्रदेश जो सिन्धु नदी का ऊपरी भाग है।

सुह्म - एक देश का नाम जो वंग के पश्चिम में स्थित है। इसकी राजधानी ताम्रलिप्त (जिसे तामलिप्त, दामलिप्त, ताम्रलिप्ति तथा तमालिनी भी कहते हैं) की

एकरूपता वर्तमान तमलूक से की जाती है। तमलूक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'कपिशा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर समुद्र के अधिक निकट बसा हुआ था। यहाँ पर ही अधिकांश समुद्री व्यापार किया जाता था। सुह्म लोगों को ही कभी कभी राढ के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पश्चिमी बंगाल के लोग)।

सौराष्ट्र—(आनर्त) काठियावाड़ का वर्तमान प्रायद्वीप। द्वारका आनर्तनगरी या अब्धिनगरी कहलाती थी। पुरानी द्वारका वर्तमान द्वारका से दक्षिण पूर्व में ९५ मील स्थित मधुपुर नामक नगर के निकट बसी हुई थी। यह स्थान रैवतक पर्वत के निकट था। ऐसा ज्ञात होता है कि यही वह स्थान है जिसे जूनागढ़ का निकटवर्ती गिरिनार पर्वत कहते हैं। इस देश की दूसरी राजधानी वलभी प्रतीत होती है। इस नगर के खंडहर भावनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर विल्वी नामक स्थान पर पाये गये हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध सरोवर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

स्रुघ्न—पाटलिपुत्र से थोड़ी दूरी पर यह एक नगर तथा जिला था। यमुना के पुराने तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुग' से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

हस्तिनापुर—'हस्तिन्' नाम का भरतवंश में एक प्रतापी राजा था। उसने ही इस प्रसिद्ध नगर को बसाया था। वर्तमान दिल्ली के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर गंगा की एक पुरानी नहर के किनारे बसा हुआ है।

हेमकूट 'स्वर्णशिखर' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत शृंखला में से एक है जो इस महाद्वीप को सात वर्षों (वर्ष पर्वत) में बाँटती है। बहुधा ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में—या हिमालय और मेरु के बीच में स्थित है तथा किन्नरों के प्रदेश (किंपुरुषवर्ष) की सीमा बनाता है। कु० का० १३६। कालिदास इसके विषय में कहता है "यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में डूबा हुआ है और सुनहरी पानी का स्रोत है" शा० अ० ७।

परिशिष्ट

अंश: [अश् + अच्] विशिष्ट संगीत-ध्वनि ।
अंशकम् [अंश् + ण्वुल्] सूर्य की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, विवाह का उपयुक्त लग्न—अंशके वैवाहिकं लग्नं —नै० १५।८ पर नारायण ।
अंशुकम् [अंशु + कन् स्वार्थे] नेता, दूध बिलोने की क्रिया में प्रयुक्त रस्सी ।
अंशूदकम् (नपुं०) ओस का पानी ।
अकर्मन् [न० त०] 1. कार्य का अभाव, अकरण प्रतिषेधादकर्म मी० सू० १०।८।१० 2 वह कार्य जो विधि से स्वीकृत न हो—अकर्म च दारक्रिया या आधानोत्तरकाले —मै० स० ६।८।१८ पर शा० भा० 3 कार्य करने की उपेक्षा करना—मै०स० ६।३।३ पर शा० भा० ।
अकलङ्क (वि०) कलंकरहित, निष्कलंक ।
अकल्पनम् [न० त०] अनारोपण ।
अकस्मात्: चौथे मनु के पुत्र का नाम ।
अकाण्डताण्डवम् अवांछित हल्लागुल्ला (पाडित्य के निरर्थक प्रदर्शन के विषय में अभिप्रायित) ।
अकालज्ञ (वि०) अनुपयुक्त समय पर करने वाला —अकालज्ञो हि नारीणामकालज्ञो मनोभव रघु० १२।३३ ।
अकालिकम् (अ०) अचानक अकालिक कुर्वां नाभविष्यन् — महा० ५।३२।३० ।
अकिल्बिष (वि०) [न० ब०] निष्पाप, तु० अकृतकिल्बिष जिसने कोई पाप नहीं किया है ।
अकृतक (वि०) [कृ + क्त, न० त० स्वार्थे कन्] जो बनाया हुआ न हो, स्वाभाविक— न तस्य स्वाभावि प्रकृतिनियतत्वादकृतक —उत्तर० ।
अकृत्रिम (वि०) [न० त०] प्राकृतिक, जो मनुष्यकृत न हो ।
अक्क: [अक् + कन्] भड़ार-गृह अक्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत् ।
अक्ता (स्त्री०) [अञ्ज् + क्त] (वेद०) रात ।
अक्लान्त (वि०) [न० त०] जो थका न हो ।
अक्लीबम् (अ०) पूर्णतः, सचाई के साथ ।
अक्ष: [अश् + स] 1 त्रिकोने या पासकी की [illegible] 2. जुआ खेलना । सम० —**दण्ड**: वह लकड़ी जिसमें धुरी लगी रहती है,—**हृदयम्** अज्ञात ज्ञान करने के लिए गणित की प्रक्रिया,—**विद्** जुआ खेलने में निपुण,—**शलाका** पांसा,—**शालिन्**, —**शौण्डिक** जूआघर का अधीक्षक ।
अक्षयनीवी (स्त्री०) स्थायी धर्मार्थ दान-निधि (बौ०) ।
अक्षय्यभुज् (पुं०) [क्षि + यत्, न० त०, + भुज् + क्विप्] अग्नि प्रदहेच्च हि त राजन् कक्षमक्षय्यभुग्यथा—महा० १३।९।२१ ।
अक्षि (नपुं०) [अश् + क्सि] आँख । सम० —**आमय**: आँख का रोग, आँख दुखना, —**श्रवस्** (नपुं०) साँप, तु० नयनश्रवस्, —**संवित्** चाक्षुष संज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान, —**सूत्रम्** आँख का रेखाज्ञानस्तर (प्रतिमाविद्या विषयक), —**स्पन्दनम्** आँख का फरकना ।
अक्षौरिकम् [न० त०] वह दिन या नक्षत्र जिसे चूडाकर्म संस्कार या मुंडन के लिए अशुभ माना गया है ।
अखणया (वेद० अ०) टेढ़े-मेढ़े ढंग से । सम० —**रज्जु**: (स्त्री०) कर्णरेखा, तु०,—**स्तोमीया इष्टका** नामक यज्ञ, तै० सं०, स० ।
अखल: [न० त०] उत्तम वैद्य, मित्र ।
अखिलिका (वन०) कारली नामक वनस्पति ।
अगजा [न गच्छति इति अगः, तस्मात् जायते —अग + जन् + ड] पर्वत की पुत्री, पार्वती अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशं, अनेकद त भक्तानामेकदन्तमुपास्महे । सम० —**जानि**: शिव ।
अगण्ड: [न० ब०] कबन्ध जिसमें हाथ पैर न हों—अगण्डभूतो विवृतं दावदग्ध इव द्रुम रा० ६।६८।५ ।
अगति: [न० त०] बुरा मार्ग, तु० अपथ: । ~
अगद: [न० त० गदाभाव,] औषधि । सम० —**राज**: उत्तम औषधि ।
अगर्भ: [न० त०] नक्कार ।
अगाधसत्त्व (वि०) [न० ब०] प्रबल आत्मशक्ति रखने वाला अगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठ —रघु० ६।२१ ।
अगुल्मकम् [अगुल्मीभूत—न० त०] अस्तव्यस्त, विशृंखलित (सेना) गुल्मीभूतमगुल्मकम् शुक्र० ४।८७० ।
अगोत्र (वि०) जिसका कोई स्रोत या उद्गम स्थान न हो—यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रम्—मुं० १।१।६ ।
अग्नि: [अङ्गति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग् + नि, नलोपश्च] 1. आग 2. पिंगला नाड़ी—यत्र सोम: सहाग्निना महा० १४।२०।१० 3. आकाश अग्निर्मूर्धा—मुं० २।१।४ । सम० —**कृत**: काजू,—**चूड**: लाल शिखा वाला एक जंगली पक्षी, —**चूर्णम्** बारूद, —**द्वारम्** घर का दरवाजा जो आग्नेय दिशा की ओर है,—**यानम्** हवाई जहाज व्योमयान विमानं स्यादग्नियानं तदेव हि —अ० म०, —**वेश**: 1. एक अध्यापक महा० 2. बाइसवाँ मुहूर्त,—**सावर्णि**: एक मनु का नाम,

—सूनुः स्कन्द, तु० अग्निभूः सेनानीरग्निभर्गुह —अम०,—होत्री (स्त्री०) अग्निहोत्र के लिए उपयुक्त गाय—तामग्निहोत्रीमृषयो जगृहुर्ब्रह्मवादिन —भाग० ८।८।२ ।

अग्न्या तित्तिर नाम का पक्षी ।

अग्रः [अङ्ग्+रक्, नलोप] पहाड़ की नोक या अगला भाग अग्रसानुषु नितान्तपिशङ्गैः कि० ९।७ अग्रम् समय का पूर्ववर्ती भाग नैवेह किंचनाग्र आसीत् बृ० १।२।१ । सम० आसनम् सम्मान का प्रथम पद,—उत्सर्ग वस्तु का पहला अंश छोड़ कर उसे ग्रहण करना,—देवी पटरानी, अग्रमहिषी, धान्यम् अनाज, गल्ला, निरूपणम्, भविष्य कथन भविष्य वाणी करना, पूर्व निर्णय, प्रदायिन् जो सबसे पहले देता है—तेषामग्रप्रदायी स्या कल्योत्थायी प्रियंवद - महा० ५।१३५।३५,—भावः पूर्ववर्तिता, यन्त्रम् शल्योपयोगी उपकरण, द्वारः ब्राह्मणों की बस्ती जिसके एक ओर शिव का तथा दूसरी ओर विष्णु का मन्दिर हो, हरे अग्रे हार , हरस्याग्र हार , हारश्च हारश्च हारौ—यस्य स ।

अग्रजा [अग्रे जात , अग्र+जन् + टाप्] आँवले का वृक्ष ।

अघन (वि०) [न० त०] जो घना या ठोस न हो ।

अङ्क+अङ्कम् (अङ्काङ्कम्) [अङ्क् कर्तरि करणे वा अच्, अङ्के मध्ये अङ्काः शतपत्रादि चिह्नानि यस्य —ता०] पानी, जल ।

अङ्ककारः [अङ्क+कारः] सर्वोत्तम योद्धा,—रणत्व । काराविजये तव राम कङ्का · वा० रा० आठवाँ अङ्क मौरव्यमेरुककलिभृतो अंगाङ्ककारे नै० १२।६४ ।

अङ्कित (वि०) [अङ्क् + क्त] चिह्नित, छाप लगा हुआ, मापा किया हुआ, क्रमांकित रावणशराङ्कितकेतुयष्टि रघु० १२ ।

अङ्गम् [अम्+गन्] जैन धर्मावलम्बियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ । सम०—क्रमः वह क्रम या नियमित व्यवस्था जिसके अनुसार कर्मकाण्ड की नाना प्रकार की प्रक्रियायें अपने-अपने महत्त्व के अनुसार सम्पन्न की जाती हैं,—मी० स० ५।१।१४, जम् रुधिर,—मध्यः शरीर का वह भाग जो गुदा और अण्डकोषों का मध्यवर्ती है,—भूमिः चाकू या तलवार का फलका —यदङ्गभूमी क्षमतु.—नै० १६।२२, संग्लोषा यूका, जूँ,—संहिता शब्द के अन्तर्गत स्वर और व्यञ्जनों का उच्चारणविषयक सम्बन्ध,—तै० प्रा०, —सुप्तिः शरीर के अङ्गों का सो जाना ।

अङ्गना [अङ्ग+न+टाप्] प्रियंगु नामक पौधा जिससे सुगन्धित द्रव्य या अञ्जन तैयार किए जाते हैं ।

अङ्गारः-रम् [अङ्ग+आरन्] जलता हुआ कोयला । सम० - अवक्षेपणम् कोयलों को बुझाने या इधर से उधर हटाने वाला बेलचा,- कर्करि (री) जलते हुए कोयलों पर पकी मोटी रोटी, बाटी धानिका अंगीठी, —वृक्षः रक्तकरञ्ज, करौंदा ।

अङ्गुष्करणिकः [ष० त०] सभवतः शपथलेखाधिकारी, (आजकल के Oath Commissioner) जैसा पद) पञ्जीकार ।

अङ्गिका [अङ्ग+इनि+क+टाप्] चोली, अंगिया ।

अङ्गुलीवेष्टः [अङ्गुलि वेष्ट्+घञ्] अंगूठी ।

अङ्गुहो (अ०) क्रोध या शोकद्योतक अव्यय ।

अङ्घ्रि (पु०) [अङ्घ् क्रिन्] 1 पैर 2 किसी भी वस्तु का चतुर्थांश । सम० कवचः जूता अः शः,— पाणि (पि०) पैर का अगला चमने वाला बच्चा, सन्धिः टखना, गिट्टे की हड्डी ।

अचक्रवारि (नपुं०) दीपक के मध्य का उभरा हुआ भाग, दीप दण्ड ।

अचिमयः [न० त० चिम + यच्] पारा पारद ।

अचोदनम् [न० न० नञ् चिच यत्] अव्यादेश निदेशाभाव—इसका सम्बादन प्रयाग नित्यमसमवायात्—मी० सू० ४।२।२६ ।

अच्छ (अ०) प्राप्ति के भाव का द्योतन करने वाला अव्यय, अच्छशब्दो हि आप्तुमित्यर्थं वर्तते मी० स० १०।१।९ पर शा० भा० ।

अच्युतजल्लकिन् (पु०) अमरकोश के एक टीकाकार का नाम ।

अजमीढ़ [अजा मीढ़ा गर्भे सिक्ता यत्र ब० स०] सुहोत्र के एक पुत्र का नाम, यह ऋ० ४।४३ सूक्त का ऋषि हुआ है ।

अजयोनिजः दक्ष प्रजापति —भाग० ४।३०।४८ ।

अजनाभः भारतवर्ष का प्राचीन नाम भाग० ११।२।२४ ।

अजरकः—कम् [न० ब०] अजीर्ण, अपच ।

अजहत्स्वार्थवृत्ति. [न जहत्स्वार्थो यत्र, हा+शतृ, न० ब०] वह शब्द जो अपने भाव को सुरक्षित रखता हुआ समस्त पद के अर्थ में कुछ वृद्धि करता है ।

अजादि. पाणिनि का एक गण ।

अजितकेशकम्बलः पाखण्डी या विधर्मी अध्यापक जिसका बौद्धग्रन्थों में उल्लेख मिलता है ।

अज्ञातवस्तुशास्त्रम् पाखण्ड प्रतिपादक शास्त्र ।

अञ्जकः विप्रचित्ति के पुत्र का नाम—वि० पु० ।

अञ्जलिका [अञ्जलिरिव कायते; कै+क, टाप्] मकड़ी से मिलता-जुलता एक कीड़ा । सम० वेधः एक प्रकार का युद्धकौशल—आनतकाञ्जलिकावेधं नाराचमथ पाण्डवः —महा० ७।२६।२३ ।

अञ्जनकः मनु के एक पुत्र का नाम ।

अञ्जिहिषा [अह्. का सन्नन्त रूप अंह्+सन्+टाप्] जाने की इच्छा भट्टि० ।

अट्टाल (वि०) [अट्ट+अल्+अच्] ऊँचा, उत्तुंग ।

अट्टालः उत्सेध, बुर्ज, विष्कम्भचतुरस्रमट्टालकम् कौ० अ० १।३।

अडागमः [अट् + आगम] भूतकाल द्योतन करने के लिए धातु के पूर्व लगाये जाने वाला 'अ' वार्तिक ६।३०।६०।८।

अडुक हरिण निघ०।

अणुव्रतानि जैनधर्मानुयायी श्रावकों के लिए बारह सामान्य प्रतिज्ञाएँ।

अण्वम् नेद, मार्ग [illegible] को छानने की छलनी का छिद्र।

अण्डक [illegible] शौभनं [illegible] [illegible] —म० पु० [illegible]।

अतःशरणम् [illegible] बाहुल्य, अतिरिक्त मात्रा [illegible] [illegible]।

अतनु (वि०) [न० त०] जो छोटा न हो बहुत प्रचुर [illegible] कि० १६।६०।

अतसि (वेद०) [illegible] [illegible] ऋ० [illegible]।

अतसिका [illegible]।

अतिकल्पनम् [illegible] [illegible]।

अतिकशा (स्त्री०) [अतिक्रान्त कशाम् अत्या० स०] कोड़े की मार का भी न मानने वाला उच्छृङ्खल।

अतिकामकः [प्रा० स०] कुत्ता।

अतिकान्ता [अति + कम् + क्त + टाप्] स्त्री के कामोन्माद की छठी अवस्था अतिकान्तावस्था [illegible] मर्माभिघातानि [illegible] म० को० ९।१७।

अतिक्रान्तिः [अति + क्रम् + क्तिन्] सीमा के बाहर निकल जाना, उल्लंघन।

अतिगृहकम् [प्रा० स०] चौबारा, मियानी [illegible] गृहान् [illegible] ना० ५।१२।१५।

अतिजित (वि०) [प्रा० स०] पूरी तरह पराजित [illegible] महा० ३।७०।५।

अतिधेनु (वि०) [अतिरिक्ता धेनवो यस्य ब० स०] जो बढ़िया से बढ़िया गौओं का स्वामी है।

अतिनामन् (पुं०) छठे मन्वन्तर के सप्तर्षि समुदाय के एक ऋषि का नाम।

अतिपातः [अति + पत् + घञ्] ध्वंस विनाश।

अतिपातित [अति + पत् + णिच् + क्त] १. ध्वंसित, विल-म्बित २. पूर्णतः टूटा हुआ।

अतिपातुक (वि०) अतिक्रमणकारी, बढ़कर [illegible] [illegible] सं० १९।५।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक घनिष्ठता—कौ० अतिपरिचयादवज्ञा।

अतिबाहुः [प्रा० स०] १. असाधारण रूप से बड़ी भुजाओं वाला २ चौदहवें मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम ३ एक गन्धर्व का नाम।

अतिभङ्गम् [प्रा० स०] प्रतिमा विद्या की दृष्टि से मूर्ति में दो तीन वक्रिमा या मोड़ मानव० ६।३।१५-६।

अतियात (वि०) [प्रा० स०] बहुत तेज चलने वाला — महा० ३।७०।१९।

अतिरागः [अत्या० स०] अत्यधिक उत्साह।

अतिरेक [अत्या० स०] १. प्राचुर्य २. बाहुल्य ३ अन्तर — महा० ३।५२।३।

अतिरेचक: एक पौधा जिसका सेवन बहुत दस्तावर होता है।

अतिरोग क्षय रोग, तपेदिक।

अतिलङ्घनम् [अत्या० स०] क्षम्य अपराध दशातिलङ्घना-न्यादृ मनु० ८।२९०।

अतिविष्ठित (वि०) [अत्या० स०] १ बहादुर योद्धा [illegible] २ सीमा का उल्लंघन करने वाला महा० ३।२१५।१६।

अतिवैशस (वि०) [अत्या० स०] चुभने वाले, दारुण, कठोर अतिनाधिभिक [illegible] हिंसा वाचाऽतिवैशसा. भाग० ३।१९।२१।

अतिसृष्टि [अति + सृज् + क्तिन्] उत्कृष्ट रचना।

अतालः [न० त०] सीसा- निघ०।

अत्कः [अत् + कन्] घर का एक कोना, दे० अक्क।

अत्यपक्रम + अपह्नवः [अत्या० + अप + ह्नु + अप्] बिल्कुल मुकर जाना पूर्ण विरोध या निराकरण।

अत्यन्त सहचरित (वि०) निश्चित रूप से साथ जाने वाला —पा० ८।१।१५ वार्तिक।

अत्यन्तीन (वि०) [अत्यन्त + खञ्] १ अत्यन्त गमन-शील २ टिकाऊपन।

अत्यर्थ-वेदनः [अतिक्रान्त अर्थम् — विद् + णिच् + ल्युट्] हाथियों का एक भेद जो बहुत ही संवेदनशील होता है जरा से दण्ड को भी नहीं भूलता, — प्राजनाङ्कु-शदण्डेभ्यो दुराद्विजते हि यः, स्पृष्टो वा व्यथतेऽत्यर्थं स मतोऽत्यर्थवेदनः — मातङ्ग० ८।१९।

अत्यस्त (वि०) [अति + अस् + क्त] फेंका हुआ, लुढ़काया हुआ, दूर परे उछाला हुआ—पा० २।१।२४ तरङ्गा-त्यस्त काशिका।

अत्याश्रमः [अति + आ + श्रम् + घञ्] सन्यास, वैराग्य।

अत्याहारयमाण (वि०) [अति + आ + हृ + णिच् + शानच्] अत्यधिक ग्रहण करने वाला लोभादलक्षणादुर्वर्णमत्या-हारयमाण कौ० अ० १।

अत्रपु (वि०) [न० ब०] टीन का बना हुआ, कलईदार।

अत्रिजात (वि०) [अद्+त्रि+जन्+क्त] तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनुष्य, द्विज।

अत्री अत्रि की पत्नी। सम०—चतुरहः एक यज्ञ का नाम। —जातः 1. चन्द्रमा 2. दत्तात्रेय 3. दुर्वासा, —भारद्वाजिका अत्रि वंशियों का भारद्वाजवंशियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध।

अत्वक्क (वि०) [न० ब०] त्वचारहित, जिस पर खाल न हो।

अथ (अ०) [अर्थ्+ड, पृषो० रलोपः] मङ्गल सूचक अव्यय जो प्रायः रचनाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है। सम० —अतः (अथातः), —अनन्तरम् (अथानन्तरम्) इसलिए, अब, इसके पश्चात् अथातो धर्मजिज्ञासा मनु० १।१।१, —किम् और कितना, और इतना, —तु परन्तु, इसके विपरीत।

अदर्शनम् [दृश्+ल्युट्, न० त०] भ्रम, माया, अदृश्यता - अदर्शनादापतिता पुनश्चादर्शनं गता —महा० ११।२।१३।

अदसीय (वि०) [अदस्+छ] इससे या उससे सम्बन्ध रखने वाला।

अदुपध (वि०) [अत्+उपध न० ब०] वह शब्द जिसकी उपधा (अन्तिम से पूर्ववर्ती) में 'अ' हो।

अदृष्टकल्पना किसी अज्ञात पदार्थ या विचार की कल्पना करना।

अद्भुत (वि०) [अद्+भू+डुतच्] 1 आश्चर्य युक्त 2. ऊँचाई की माप के पाँच अंशों में से एक जहाँ कि ऊँचाई, चौड़ाई से दुगुनी हो हीनं तु द्वय तद् द्विगुण चाद्भुतं कथितम्—मान० ११।२०।२३। सम०— रामायणम् वाल्मीकि द्वारा रचित एक ग्रन्थ,— शान्ति (स्त्री०) 1. अथर्ववेद का ६७ वाँ परिशिष्ट 2. पुराणों में वर्णित एक व्रत का नाम।

अद्रिकटकम् [अद्+क्रिन्+कट्+वुन्] पर्वतश्रेणी।

अद्रेश्य (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य।

अद्वारासङ्गः [न० त०] दरवाजे पर अन्दर आने वालों की भीड़ का न होना—कार्यार्थिनामद्वारासङ्गं कारयेत् —कौ० अ० १।१९।२६।

अद्वैध (वि०) [न० ब०] अविभक्त, कलहव्यापाररहित।

अधम (वि०) [अव्+अम; अवते अमः, वस्य धत्वे च] जो फूंक नहीं मारता, धोंकी नहीं पसारता अधम कुत्सिते न्यूने अधःस्थाप्मानयोरपि नाना०।

अधरकण्टकः एक काँटेदार पौधा, यवासा।

अधिवेदः (अधोवेदः) एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना।

अधिकरणम् [अधि+कृ+ल्युट्] 1. वह स्थान जहाँ अद्भुत कोष एकत्र हों, महा० १२।५९, ४८ 2. विभाग महा० १२।६९।५४। सम० —लेखक (वि०) अधि-लेखाधिकारी जो रूपपत्र तथा अन्य दस्तावेज अपनी देखरेख में तैयार कराता है, नाजिर।

अधिगमः [अधि+गम्+घञ्] जानकारी का समाचार अपनेष्यामि सन्तापं तवाधिगमशासनात्— राम० ५।३५।७७।

अधिपुष्पिका खदिर का वृक्ष, खैर।

अधियज्ञः [अधि+यज्+घञ्] यज्ञ की अधिष्ठात्री देवता।

अधिमुक्तकः [अधि+मुच्+क्त] मालती का एक प्रकार, चमेली।

अधिमुक्तिका [अधि+मुच्+क्तिन्, स्वार्थे कन्] वह सीपी जिसमें मोती रहता है।

अधिरोपः [अधि+रुप्+घञ्] दोषारोपण करना।

अधिकषित (वि०) [अधि+कष्+क्त] शृंगारवर्धक लेप से अभ्यक्त मुखमधिकषितपाण्डुगण्डलेखम्—कि० १०।४६।

अधिवासः [अधि+वस्+घञ्] जन्मभूमि, जन्मस्थान महा० १२।३६।१९।

अधिष्ठानम् [अधि+स्था+ल्युट्] 1. अवस्था, आधार 2. नाश अमित्राणामधिष्ठानाद्वधाद् दुर्योधनस्य च महा० ९।६१।१४। सम० अधिकरणम् नगरनिगम, नगरपालिका का कार्यालय।

अधोनिबन्धः हाथी के कामोन्माद की ऋतु में तीसरी अवस्था मान० १।९।१४।

अध्ययनम् [अधि+इ+ल्युट्] शिक्षा देना, अध्यापन करना कृत्वा चाध्ययनं तेषां शिष्याणां शतमुत्तमम् महा० १२।३१८।१७।

अध्यायिन् (वि०) [अध्याय+सो+अच्, तत इनि] किसी व्रत के पालनहेतु किसी एक ही स्थान पर अवरुद्ध हो जाने वाला महा० १२।६८।६।

अध्यासित (वि०) [अधि+आस्+णिच्+क्त] बैठा हुआ, बसा हुआ।

अध्युषित (वि०) [अधि+वस्+क्त] ठहरा हुआ, रहा हुआ, अधिकार किया हुआ।

अध्यूढः [अधि+वह्+क्त] विवाह से पूर्व गर्भिणी स्त्री का पुत्र अध्यूढश्च तथाऽपरः —महा० १३।४९।८।

अध्वर्युकाण्डम् अध्वर्यु नामक ऋत्विजों के लिए अभिप्रेत मन्त्रों का संग्रह।

अनक्षन् (वि०) (वेद०) अन्धा।

अनघ (वि०) [न० ब०] अनथक, बिना थका हुआ—राम० २।७।३२। सम० —अष्टमी एक व्रत का नाम म० पु० ५५।

अनङ्गः [न० ब०] 1 वायु 2 भूत, पिशाच 3 परछाईं, तु० अनङ्गं मन्मथे वायौ पिशाचच्छाययोरपि।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अन्तरं व्यवधानं, मध्य, अवकाश-

यस्य] सीधा, साक्षात् अथवा अनन्तरकृत किञ्चिदेव निदर्शनम् महा० १२।३२०।१९।

अनन्य (वि०) [नास्ति अन्य [illegible] यस्य] जो किसी और के साथ भाग न ले रहा हो, निर्विरोध अनन्या पृथिवी भुङ्क्ते सर्वभूतहित रत कौ० अ०।

अनयन (वि०) [न० ब०] स्थिर दृष्ट।

अनभ्यावृत्त (वि०) जो [illegible] न [illegible] हयुक्तमनभ्यावृत [illegible]—नै० [illegible] १२।१।१२ पर शा० भा०।

अनयार्थ (वि०) [न० ब०] यथार्थ [illegible] से युक्त न्याय्य, उचित।

अनभिधानम् [न० त०] 1 अभिधान [illegible] अप्रकाशन 2 व्याकरणसम्मत शब्द जो प्रयोग में न आता हो।

अनभिवादकः [न० त०] [illegible] करने वाला, अभिवादी [illegible] भयानम्मम्सकस्मानभिवादक अधि० १।

अनभ्यन्तर (वि०) [न० ब०] अपरिचित, अनजान अनभ्यस्त—अनभ्यन्तरे खल्वावां मदनगतस्य वृत्तान्तस्य —श० ३।

अनराल (वि०) [न० ब०] सीधा अवक्र यत्नहादन-गालमालनीलनीपमालवय कृतम् उत्त० ३।२६।

अनलः [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य, अनान् प्राणान् लाति आत्मसात् वा] क्रोध, [illegible] मुदे मनलदानलदा कि० ५।२५। सम०- **आत्मजः** स्कन्द।

अनवकाशिकः [न० ब०] एक पैर से खड़ा होकर कठोर तपस्या करने वाला शाकशय्या [illegible] सर्व तान-द्रकाशिका -रा० ३।६।३।

अनवक्लृप्तिः (स्त्री०) [अनव [illegible] क्तिन्] [illegible] आवश्यकता, अविश्वसनीयता।

अनवगीत (वि०) [न० ब०] निन्दारहित, निर्दोष—प्रकृत्य कल्याणी मतिरनवगीत परिचय [illegible]।

अनवद्याङ्गी (स्त्री०) [न० ब०] सुन्दरी, जिसके शरीर के अङ्गों में कोई दोष न त्रुटि न हो, [illegible] स्त्री का विशेषण।

अनवसरापः [न० त०] [illegible] ३।११।

अनवर (वि०) [न० ब०] [illegible] न हो, जो घटिया न हो।

अनहंवादिन् (वि०) [अन [illegible] णिनि] अनभि-मानी, जो गर्व न करता हो।

अनाकुल (वि०) पीड़ा से [illegible] व्याकुल [illegible] १२।३२१।३५।

अनाघ्रात (वि०) [अन् आ घ्रा क्त] न सूँघा हुआ, जो हाथ से न छुआ गया हो अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं करसहैः श० २।

अनाच्छद (वि०) [न० ब०] नंगे सिर वाला, जिसके सिर पर पगड़ी या टोपी कुछ भी न हो।

अनारम्भः [न० त०] शुरू न करना, आरम्भ न होना।

अनार्यता [न० त०] अनुपयुक्तता, अयोग्यता।

अनावाप (वि०) जो किसी नई वस्तु का अधिग्रहण नहीं करता है।

अनाश्रयण (वि०) [न० ब०] जिस पर निर्भर न किया जा सके [illegible] भवान् भाग० ४।१८।१०।

अनाश्वासम् (अ०) बिना सांस लिए, बिना आराम किये।

अनास्था [illegible] 1. अस-हिष्णुता 2. आराम का न होना, धैर्य का अभाव — नै० १।८८ पर ना० भा०।

अनिद (वि०) जो देखा या समझा न जा सके इत्यभि-ष्टुय पुरुषं यद्रूपमनिदं यथा भाग० १०।२।४२।

अनिमित्त (क्रि० वि०) जो ज्ञान का वैध साधन न हो, अनिमित्तं विद्यमानोपलम्भनात् — मै० सू० १।१।४।

अनिषेध [अ नि + सिध + घञ्] रति क्रिया का विशिष्ट प्रकार मैथुन का विशिष्ट आसन।

अनिरिण (वि०) [अन - इर् + इनन्, ह्रस्व] जहाँ किसी प्रकार की उथल-पुथल या ऊँच-नीच न हो —तस्मिन् देशे त्वनिरिणे ते तु युद्धमरोचयन् महा० ३।५५।१८।

अनिर्वचनम् [न० त०] चुप रहना, जोर से न बोलना मी० सू० १०।८।५२ पर शा० भा०।

अनिलभक्षः एक प्रकार का रथ (आकार की दृष्टि से रथ [illegible] प्रकार—नभस्वन्, प्रभञ्जन निवान, पवन, परि-पद् [illegible] और अनिल के गिनाये गये हैं मान० ४३।११२-५।

अनिलक्रमसमाधि- ध्यान का एक विशेष प्रकार बु०।

अनिविष्ट (वि०) [अ नि विश् + क्त] अविवाहित, [illegible] अधि० १।

अनिष्ठुर (वि०) जो कठोर न हो, या क्रूर न हो।

अनिपुण (वि०) जो निपुण न हो, कुशल न हो।

अनिष्णात (वि०) अप्राकृतिक।

अनीकस्थानम् [ष० त०] सैनिक चौकी कौ० अ० २।१६।

अनीप्सित (वि०) [अन् + आप् + सन् + क्त] अवांछित, अनचाहा।

अनीर्षु (वि०) [अन् ईर्ष् + उण् [illegible]] जो ईर्ष्यालु न हो, जो डाह न करे भृतपुत्रा भृतामात्या भृतदा-रा [illegible] महा० १२।२१।

अनीह (वि०) [अ ईह् + क] जो प्रयत्नशील न हो, आलसी।

अनुकल्पम् [प्रा० स०] कल्प या [illegible] सृष्टि के साथ-साथ आविर्भाव [illegible] भाग० १।२।

अनुकल्पम् [अनुकृप्+अप्] 1 घटिया स्थानापत्ति —प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३० 2 समान, एक जैसा [illegible] प्रमाणानुकल्पाश्रिन [illegible] भाव० ।

अनुकूलित (वि०) [अनुकूल+इतच्] जिसका स्वागत सत्कार होता है [illegible] [illegible] १० [illegible] ।

अनुक्रम [अनु [illegible] क्रम [illegible]] दैनिक व्यायाम अश्वान् [illegible] मह० [illegible] ।

अनुक्रमम् (अ०) [illegible] प्रतिदिन ।

अनुगीता (स्त्री०) महाभारत के चौदहवें पर्व का एक [illegible] ।

अनुघट्ट (स्त्री०) [illegible] [illegible] ।

अनुजन [अनु [illegible]] [illegible] अनुचर ।

अनुज्ञात (वि०) [अनु+ज्ञा [illegible]] [illegible], [illegible] —[illegible] कृत्स्नमनु[illegible] [illegible] म० [illegible] ।

अनुत्कट (वि०) [न [illegible] उद् [illegible]] [illegible] ।

अनुताक [illegible] [illegible] गान

अनुदिवसम् (अ०) [illegible] प्रतिदिन [illegible] ।

अनुद्रव (वि०) [अनु [illegible]] [illegible] [illegible] सत्कृ[illegible] रा० [illegible] ।

अनुग (वि०) [अनु [illegible]] अनुकूल [illegible] पा० ३।१ १०१ सि० [illegible]

अनुधूपित (वि०) [illegible] [illegible] फला हुआ उद्धत ।

अनुनायक [अनु+नाथ [illegible]] [illegible] [illegible] अनु [illegible] नै० [illegible]

अनुनिशीथम् (अ०) आधी रात के [illegible] ।

अनुनेय (वि०) [अनु [illegible]] [illegible], अनुनीत [illegible] ।

अनुपस्कृत (वि०) [अन [illegible] कृ [illegible] सुगागम] जिसकी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महा० [illegible] 2 [illegible] का [illegible] वाला [illegible] मनु० [illegible] ।

अनुपस्थया [अनु [illegible] स्था] किसी [illegible] का [illegible] [illegible] काम करना ।

अनुपाल [अनु [illegible]] (घोड़े आदि पशुओं का) [illegible] ।

अनुप्रकीर्ण (वि०) [illegible] [illegible] आवृत [illegible] [illegible] ।

अनुप्रभव [अनुप्र+भू+अप्] जन्म-मरण का चक्र ।

अनुप्रवण (वि०) [अनु प्र [illegible]] [illegible], सुहावना —[illegible] जनयन्ति म—महा० [illegible] ।

अनुप्रहित (वि०) [अनु प्र हा क्त] निक्षिप्त [illegible] [illegible] शिशु०—कि० [illegible] ।

अनुभाजित (वि०) [अनु+भाज् [illegible]] जिसकी पूजा किया गया ।

अनुभू [illegible] (स्त्री०) [illegible] ।

अनुभाविर (वि०) [illegible] [illegible] अनुभवशील, [illegible] ।

अनुभृत् [illegible] [illegible] भरण पोषण करने वाला [illegible] ।

अनुमन्त्रित (वि०) [अनु [illegible]] नमस्कार किया गया [illegible] ।

अनुमात्रा (स्त्री०) [illegible] ।

अनुयुज [illegible] [illegible] [illegible] महा० [illegible] ।

अनुयुञ्जक [illegible] [illegible] ।

अनुराद्ध (वि०) [अनु राध्+क्त] [illegible] ।

अनुरुद्ध (वि०) [अनु रुध्+क्त] 1 [illegible] हुआ । 2 [illegible] 3 [illegible] [illegible] हुआ ।

अनुलापन (वि०) [अनुलाप [illegible]] [illegible] वाला [illegible] ।

अनुवाक [illegible] [illegible] [illegible] एक अध्याय [illegible] ।

अनुविषय [अनु वि [illegible]] [illegible] ।

अनुवृत [illegible] [illegible] पूजा करना [illegible] [illegible] ।

अनुशाला (स्त्री०) [illegible] ।

अनुशिष्ट (वि०) [अनु शास्+क्त] 1 [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible] 3 [illegible] निर्दिष्ट अनुशिष्टा- [illegible] ।

अनुशायिन (वि०) [अनु [illegible]] साथ-साथ [illegible] हुआ ।

अनुश्रविक (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] हुआ [illegible] ।

अनुषत्य (वि०) [illegible] (वेद०) [illegible] अनुरूप हो सके ।

अनुसमय [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] तीन प्रकार हैं [illegible] और [illegible] ।

अनुसंधानम् [अनु+सम्+धा+ल्युट्] गवेषणा, खोज।
अनुसंधि [अनु+सम्+धा+कि] गुप्त ताक-झाँक—नै० २।१२९।
अनुसंसृति [अनु+सम्+सृ+क्तिन्] जन्म मरण की आवृत्ति।
अनुसत्या (स्त्री०) अनुगमन करना, अनुसरण करना।
अनुसत्या (स्त्री०) सती प्रथा।
अनुसृत (वि०) [अनु+सृ+क्त] 1 अनुगत 2 [illegible], [illegible] पीछे चलने वाला [illegible] [illegible] [illegible]।
अनूकम् (नपुं०) [अनु+उच्+मयक्+र निपात कुत्सम् ...] [illegible]।
अनूषम् (स्त्री०) [illegible] अनूपग्रामाश [illegible] नै० १७।६९।
अनेकाङ्ग (वि०) [illegible] और अनेक भागों से युक्त बहुत से अवयवों से बना हुआ।
अन्त [अम्+त] [illegible] ... [illegible] १।६१७। सम०
अन्तःकरण (सं०) [illegible] [illegible] जानना [illegible] [illegible] [illegible] — परिच्छद समान के आर [illegible] की परस रचना।
अन्तकाल (पु०) [illegible] अन्त समय] [illegible] [illegible] [illegible] १९।१५।
अन्तर् (अ०) [illegible] (इसका प्रयोग धातुओं के साथ [illegible] और इसे [illegible] माना जाता है) [illegible] भीतर सम०
अङ्कुश (अन्तर्+कुश) [illegible] अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध [illegible] [illegible] अन्तःकुर्वीत [illegible] वलीय [illegible] —गर्भिणी [illegible] इस [illegible] एक बार के भीतर दूसरा बात छिपी रहती है जैसे गर्भाशय में गर्भ [illegible] इसका प्रयोग होता है मौ० सू० १०।३।६० पर शा० भा०, —शायिन् जो अपने हाथों को घुटनों के बीच में रख कर सोता है अन्तर्जानुशयो यस्तु भुञ्जते सक्तभाजन —महा० ३।१००।७५ —मुख (वि०) जिसकी दृष्टि अन्दर की ओर होती है —अन्तर्मुखा सततमा [illegible] [illegible] १३९, —वंशिक अन्तःपुर का अधिकारी मानुसमध्यपरणमस्तवंशिक हस्ता-[illegible] कौ० अ० १।२१।
अन्तरण [illegible] स्तम्भतल का अङ्कुल (आधार) से अन्तराल करना।
अन्तार [अन्त+ऋ+अण्] अहरिया गोपाल [illegible] नि०।
अन्धः [अन्ध+अच्] 1 जिसे आँखों से दिखाई न दे अंधा —अन्ध कूपोऽम्बुवपत्ती विक्र० १०१ 2 अस्पष्ट, धुंधला [illegible] [illegible] [illegible] रा० [illegible]।
अन्धकूप [illegible] [illegible]।
अन्धाम (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १।७।
अन्य (वि०) [illegible] [illegible] सम०—अन्य [illegible] अन्योन्य अन्वयन [illegible] उचित।
अन्वक्ष [अनु [illegible]] [illegible] मा० १६।४३।
अन्वयमानम [अनु [illegible]] [illegible] [illegible] अपने चरित्र के अनुसार [illegible] [illegible] वाला।
अन्वारम्भ (अनु आ+रभ्) [illegible] अनुसरण करना। अनुकूल करना, [illegible] [illegible] [illegible]।
अन्वाहार्य (वि०) [अनु आ+हृ+णिच्] [illegible] [illegible] क्या बाद में [illegible]।
अन्वागर्जित (पु० तु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रत्येकान्वगर्जित [illegible]।
अन्वयार्थिन् (वि०) [illegible] [illegible] [illegible]।
अन्वित (वि०) [अनु+इ+क्त] युक्त [illegible] [illegible] [illegible] वे [illegible]।
अन्वीक्षित (वि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कुसुमा [illegible] [illegible] रा० [illegible]।
अन्विसम (अव्य०) [illegible]।
अप (उप०) [illegible] [illegible] यह धातुओं से पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है अप होता है, [illegible] कमी विकृति [illegible] [illegible] आदि। सम०
अङ्ग [illegible] समाप्ति —रक्त (वि०) [illegible], दूर [illegible] हुआ —आकीर्ण (वि०) दूर [illegible] हुआ, [illegible] —कीर्ति बदनामी, कलंक, —कोश (वि०) आच्छादन [illegible] [illegible] पृथक् [illegible] कोई वस्तु —टीक (वि०) 1 जिस [illegible] [illegible] की सहायता प्राप्त न हो 2 (अ- [illegible]) जिस पर कोई [illegible] या पदार्थ न हो [illegible] (वि०) [illegible] या [illegible] [illegible] हुआ (वस्त्र) [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] महा० १३।१०४।८६, —दानम् [अप+दै+ल्युट्] वह आख्यान जिसमें [illegible] और [illegible] [illegible] का वर्णन हो [illegible] [illegible] [illegible] अपदेश [illegible] स्वात्मप्रसिद्धिमिच्छया। औदार्य शौर्यवीर्येषु [illegible] [illegible]। —[illegible], —[illegible] कर भागना, दौड़ना रा० ६।४०।२५, [illegible] अर्ने-

ठिकता, दुष्टाचरण,—नयः अन्याय, अनुचित व्यवहार—शृणु राजन् स्थिरो भूत्वा तवापनयनो महान्—महा० ६।४९।२२, —नी (भ्वा०) दुर्व्यवहार करना—सर्वो हि साहसं यत्किंचिदवाप्नोति यते रा० ६।६४।१०, —लीन (वि०) गुप्त, छिपा हुआ औपसातमभयादपलीनम्—कि० १।११,—वत्स (वि०) बिना बछड़े का, —वत्सय् (ना० धा०) ऐसा व्यवहार करना जैसा कि बिना बछड़े वाले के साथ किया जाता है, (न बहुत प्यार, न निर्दयता),—वरः अन्दर का कमरा, सुरक्षित कक्ष नै० १८।१८, महा० १२।१३९-४०, —वर्गः अवसान, अन्त, —वर्जित (वि०) निर्लम्बित, लटकाया हुआ —शूद्रः जो शूद्र न हो, द्विज,—ष्ठु (वि०) [अप+स्था+कु] गलत, त्रुटिपूर्ण अपष्ठु पठन् पाठमधियोष्ठि शठस्य ते नै० १७।९६, —सृज् (तुदा०) छोड़ना, त्यागना,—स्वानः झंझावात, आंधी,—हारः संग्रह, अवाप्ति।

अपरतस् (अ०) 1 के सामने 2 पश्चिम की ओर।

अपरतालः [न० ब०] हीप ताली।

अपरापरम् (अ०) [अपर+अपर) आगे और आगे, फिर।

अपवच्य (वि०) [न० ब०] जो पढ़ा न जा सके।

अपरिभिन्नहृदयम् [न० त०] ब्रह्मपर्व।

अपवादानम् [अप्+आ+दा+ल्युट्] स्रोत, कारण नै० २२।१४१।

अपारवार (वि०) [न० ब०] असीम, अपारवारमक्षोभ्य गाम्भीर्यात्सागरोपमम् रा० ५।३८।४०।

अपिनद्ध (वि०) [अपि नह्+क्त] बन्द, ढका हुआ, गुप्त।

अपिपरिक्लिष्ट (वि०) [अपि परि+क्लिश्+क्त] अत्यन्त उत्पीडित, तंग किया हुआ।

अपिस्वित् (अ०) प्रश्नसूचक अव्यय।

अपीत (वि०) [अपि+इ+क्त] 1 विलीन, अन्तर्गत —लोकानपीतान्ददृशे स्वदेहे—भाग० ३।८।१२ 2 मृत।

अपूर्तिः (स्त्री०) [अ+पृ+क्तिन्] कार्य का पूरा न करना।

अपूर्विन् (वि०) (पुं र्वी) जिसने विवाहित जीवन का अपनी पत्नी के साथ इससे पहले उपभोग न किया हो —अपूर्वी भार्यया चार्थी वरुण—रा० ३।१८।४।

अपृथक्त्विन् (वि०) जो पुरुष और प्रकृति के भेद को नहीं समझता 'पृथक्त्वं पुंप्रकृत्योर्विवेक, तदस्यास्तीति पृथक्त्वी, तदन्यस्य' नील०, सर्वाश्रमपृथक्त्वे च दृष्टार्थस्यापृथक्त्विन महा० १२।३०८।१७७।

अपेहि (अप+एहि √इ लोट्, म० ए०) दूर हो जाओ —अपेहि... मामित्—नाग०।

अपोहित (वि०) [अप+ऊह्+णिच्+क्त] 1. हटा हुआ, दूर किया हुआ —न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित् —कि० २।२७ 2 वादविवाद में निराकृत।

अप्रकट (वि०) [न० ब०] जो प्रकट या व्यक्त न हो, जो स्पष्ट या प्रदर्शित न हो।

अप्रख्यता [न० त०] बदनामी, अपकीर्ति—महा० १२।१५८।५।

अप्रचोदित (वि०) [अ+प्र+चुद्+णिच्+क्त] जिसे अभिप्रेरणा या प्रोत्साहन न मिला हो, अनादिष्ट।

अप्रज्ञात (वि०) [अ+प्र+ज्ञा+क्त] अज्ञात, जो समझ में न आया हो आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् —मनु० १।५।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त,—तस्मात्त्वया समारब्धं कर्म ह्यप्रतिमं परैः रा० ६।१२।३५।

अप्रतिबंध. [न० त०] वह आक्षेप जो विश्वासोत्पादक न हो, अवैध निराकरण।

अप्रतिहतः देवताओं का एक प्रकार अपराजित-अप्रतिहत-जयन्त-वैजयन्त कोष्ठकान् पुरमध्ये कारयेत्—कौ० अ० २।४।

अप्रवृत्त (वि०) [अ+प्र+वृत्+क्त] 1 जो किसी कार्य में व्यस्त न हो 2 जो संस्थित या प्रतिष्ठापित न हो 3 अनुपयुक्त।

अप्रसहिष्णु (वि०) [अप्र+सह्+इष्णुच्] जो सहन न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके जगतामोरप्रसहिष्णु वैष्णवम् (चक्रम्)—शि० १।५४।

अप्राज्ञ (वि०) [न० ब०] जो जानकार न हो अज्ञानी।

अप्रादेशिक (वि०) [न० ब०] 1 जो कोई सुझाव न दे सके 2 किसी प्रदेशविशेष से सम्बन्ध न रखता हो।

अप्राधान्य (वि०) [न० ब०] जिसका कोई महत्त्व न हो, गौण।

अप्रोक्षित (वि०) [न० ब०] जहां छिड़का न हुआ हो, जो पवित्र न किया गया हो।

अप्लोहः एक पक्षिविशेष, कुक्कुभा।

अप्सुयोनिः [अलुक् समास] जो जल में पैदा हुआ हो, घोड़ा।

अबद्धवत् (वि०) [अ+बन्ध्+क्तवतु] अर्थहीन, जो व्याकरणसम्मत न हो—यस्मिन् प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि भाग० १।५।११।

अबाधा (स्त्री०) किसी त्रिकोण की आधार रेखा का छिन्न अंश या खण्ड।

अबाधित (वि०) [न० ब०] बाधारहित, निर्बाध, अनियन्त्रित, अनिरुद्ध।

अबीज (वि०) [न० ब०] 1. नपुंसक, निर्वीर्य 2. अकारण, —जः [न० त०] [illegible], जो एक प्रकार के अंगूर,—जम् अनुत्पादक बीज।

अभय (वि०) [न० ब०] प्रतिमा के हाथ की मुद्रा जो भक्त की रक्षा सूचित करती है। सम० वरदः

रक्षण और वर के देने वाला—स्वधन्य' पाशिमभयवरदो दैवतगणः—शी० ।

अभवत् (वि०) [अ+भू+शतृ] अविद्यमान । सम० —**मतयोगः**—**संयोगः**, (काव्य) रचना का दोष —इसके अनुसार शब्द और अर्थ का अभिप्रेत संबंध अपेक्षित रहता है जैसे 'ईक्षसे यत्कटाक्षेण तदा धन्वी मनोभवः' में 'यत्' और 'तदा' का संबन्ध । अन्य उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ५७५ पृष्ठ ।

अभवनिः जन्म का न होना—हरि० ७ ।

अभागिन् (वि०) [न० ब०] 1 अनभ्यस्त—सहते यातना सेतामनर्थानामभागिनी रा० ५।१६।२१ 2 जिसका कोई भाग न हो ।

अभिकर्षणम् [अभि+कृष्+ल्युट्] कृषि का एक उपकरण ।

अभिगृध्न (वि०) प्रबल लालसा से युक्त इच्छुक ।

अभिजित् (पुं०) [अभि+जि+क्विप्] पुनर्वसु का पुत्र हरि०, पुनर्वसु के पिता का नाम वि० पु० ।

अभिज्ञात (वि०) [अभि+ज्ञा+क्त] जानकार ज्ञाता जानने वाला ।

अभित्वरमाणकः [अभि+त्वर्+शानच्, कन्] दूत, संदेशहर ।

अभिदेवनम् [अभि+दिव्+ल्युट्] पासे से खेलने की बिसात महा० ।

अभिद्रुग्ध (वि०) [अभिद्रुह्+क्त] आहत सताया हुआ ।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] गीत गायन—षट्पद मञ्जीमधुराभिधानम् रा० ६।४८।३६ । सम० —**विप्रतिपत्तिः** शब्द और अर्थ का बतुकापन असंगति —मी० सू० १।३।१३ पर शा० भा० ।

अभिनन्दः (पुं०) 1 अमरकोश के एक टीकाकार का नाम 2 योगवासिष्ठसार के रचयिता का नाम ।

अभिनवकालिदास आधुनिक कालिदास, यह पद किसी उत्तम कवि को दिया जाता है, माधवीय शंकर विजय का नाम ।

अभिनवगुप्तः नाट्यशास्त्र और ध्वन्यालोक का प्रसिद्ध भाष्यकार ।

अभिनिस्यन्द [अभि नि+स्यन्द्+घञ्] टपकना, चूना ।

अभिनुन्न (वि०) [अभि+नुद्+क्त] आहत, क्षुब्ध —शिलादण्डकाष्ठाभिनुन्नाङ्गी महा० १४।५८।२९ ।

अभिपन्न (वि०) [अभि+पद्+क्त] 1 स्व..., स्वीकार किया हुआ (अथवा उपपन्न) 2 प्ररक्षित महा० १।५०।२० ।

अभिपातः [अभिपत्+णिच्+घञ्] 1 उत्पन्न होना शलभा विषदभिपातलाघवेन 2 पतन, विनाश ।

अभिपूर्तम् [अभि+पृ+क्त] जो पूर्णतः सम्पन्न हो चुका है—[illegible] ९।५।१३ ।

अभिप्लुत (वि०) [अभि+प्लु+क्त] 1. (भावनादिकम् में) अभिभूत, व्याकुल 2. स्वीकृत ।

अभिमन्यमान (वि०) [अभिमन्+शानच्] किसी वस्तु पर अवैध अधिकार का इच्छुक—ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमान'—कौ० अ० ११६।

अभिमन्युः (पुं०) चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम ।

अभिरम्भित (वि०) [अभिरम्भ्+क्त] पकड़ा हुआ, जकड़ा हुआ —कच्छपं महदभिरम्भितं भाग० ५।८।१५।

अभिराधनम् [अभिराध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, अनुकूल करना —महा० ३।३०३।१४।

अभिलम्भनम् [अभिलम्भ्+ल्युट्] अधिग्रहण करना —शशंस पित्रे तत्सर्वं वयोरूपाभिलम्भनम्—भाग० ९।३।२३।

अभिवक्तृ (वि०) [अभिवच्+तृच्] जो अभिमानपूर्वक या हेकड़ी के साथ बोलता है—महा० १२।१८०।४८।

अभिशीत (—श्यात) (वि०) [अभि+श्यै+क्त—पा० ६।१।२६] शीतल, ठण्डा ।

अभिश्रुत (वि०) [अभिश्रु+क्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध ।

अभिवर्तस्य (वि०) [अभिन्न वर्तस्य शुद्धचारित्र्यादिवर्तस्य न० ब०] विशुद्ध चरित्र वाला, सदाचारी ।

अभिषक्त (वि०) [अभि+सञ्ज्+क्त] 1 भूत प्रेतादि से आविष्ट 2 अपमानित, पराभूत 3 तिरस्कृत, अभिशप्त ।

अभिषङ्गः [अभिसञ्ज्+घञ्] मानसिक क्षोभ की स्थिति —उत्पाटितेन मे मनसोऽभिषङ्गात्— महा० ५।३०।१।

अभिषिक्त (वि०) [अभिषिच्+क्त] राजसिंहासन पर बिठाया हुआ अभिमन्त्रित जलों से स्नान, राजगद्दी पर आसीन कराया गया ।

अभिषेचनम् [अभिषिच्+ल्युट्] राजतिलक करने की तैयारी रा० २।१८।३६।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अप्] स्तुति—रामाभिष्टवसत्कथा रा० २।६।१६।

अभिष्टुत (वि०) [अभि+स्तु+क्त] 1 जिसकी स्तुति की गई हो, जिसका कीर्तिगान किया गया हो 2. जिसका राज्याभिषेक कर दिया गया हो—ओङ्कारेणाभिष्टुतं सोमसलिलं पावनं पिबेत् याज्ञ० ३।३०६।

अभिसंहरणम् [अभि+सम्+हृ+ल्युट्] क्षतिपूर्ति—कौ० अ० ५।

अभिसंहित (वि०) [अभि+सम्+धा+क्त] सम्मिलित, सम्बद्ध रा० ७।८०।११।

अभिसमापन्न (वि०) [अभिसम्+आ+पद्+क्त] सामने सामने होने वाला, सामने होकर मुकाबला करने वाला—नुदत्यभिसमापन्नमङ्गुल्यग्रेण लीलया—रा० ३।१९।३।

अभिसारी (रिः) (स्त्री०) 1. पीछा करना—असुरपुरवधे

अभ्यभिसरीम् प्रति० ३।७ 2 सहायता के लिए जाना।

अभिहार: [अभि + हृ + घञ्] निकट लाना अभिहारा-ड्यिीन च

अभ्य संनिवृत्ति (स्त्री०) फिर वापिस न आना जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा [illegible] रघु० १०।२७।

अभ्यवपद् (दिवा आ०) [illegible]

अभ्यवसन् (दिवा० आ०) [illegible] करना।

अभ्यवस्कन्द [illegible]

अभ्यवहार: [अभि + अव + हृ + घञ्] [illegible] शनोप्यस्य [illegible] ३।१०।३५।

अभ्यसनीय (वि०) [अभ्यस् + अनीयर्] [illegible]

अभ्यस्य [illegible] लायक, [illegible] जाने के लिये।

अभ्याकाङ्क्षम् (वि०) [प्रा० स०] [illegible] किसा [illegible] सन्नह० १२।२५।१३८।

अभ्यादान (न०) [illegible] ध्यान देना 2 [illegible]

अभ्युपपन्न (वि०) [अभि + उप + पद् + क्त] 1 पहुँचा हुआ, पास गया हुआ 2 [illegible] नया [illegible] हत इति [illegible]

अभ्रमु: (स्त्री०) [illegible] की प्रिया हथिनी [illegible] ११।०८।

अभ्रवन्ती (स्त्री०) [illegible] 1 [illegible] 2 [illegible]

अभ्र (देश०) [illegible] होना [illegible]

अमथित (वि०) [न० त०] [illegible]

अमत्सर (वि०) [न० ब०] [illegible] मनु० ३।२३१ [illegible]

अमर (वि०) [मृ + पचाद्यच्] [न० त०] [illegible] -गुरु: बृहस्पति, [illegible] स्वामी।

अमरी (स्त्री०) स्वर्गीय स्त्री, [illegible] अमरीमुखरीकृतम्—कु० १।

अमर्दित (वि०) [मृद् + क्त, न० त०] जो [illegible] गया हो [illegible]

अमर्मवेधिता (स्त्री०) मर्मस्थानों पर न आघात पहुँचाने का गुण, दूसरों की भावनाओं को अपने वाक्यों से छेदना (तीर्थंकर के ३५ वाक्गुणों में से एक)।

अमा [न + मा + क] अमावस्या। सम० -वसु: पुरूरवा के वंश का एक राजा,—सोमवार: [illegible] जिस दिन अमावस्या हो, -हलम् [illegible] का नया आने वाला दल, [illegible] सर्पराक्षस का नाम महा०।

अमित्रकर्म [न० त०] 1 शत्रुतापूर्ण कार्य [illegible] महा० ६।६५।१७।

अमुद्र (वि०) [न० ब०] [illegible]

अमूर्तरजस् (पुं०) [illegible] का नाम [illegible]

अमृत (वि०) [न० ब०] [illegible] ८। १।

अमृत (वि०) [न मृ क्त] 1 जो मरा न हो, जीवित 2 [illegible] अमृत [illegible] (अमृत) [illegible] -ब्रह्मचर्यक [illegible] रत्न, [illegible] नाक्षो [illegible] उपनिषद् का नाम [illegible]

अमोघ [illegible]

अम्ब (पुं०) [illegible] 1 [illegible] सम० -वाला [illegible] -पालिका [illegible]

अम्बरीषिकालिका [illegible]

अम्बालिका [illegible] ३।१२५।१९।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब् + उण्] जल, पानी। सम० -कण: एक अज्ञात पौधा, सिंघाड़ा, [illegible] जलीय पक्षी, -ईशम्, -ईशतम् [illegible] अंजन, -नाथ: समुद्र,

—पतिः बहाव, वेगः पानीका बहाव, बाढ़ यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगा—भग० ११।२८।

अम्बुजिनी (स्त्री०) [अम्बुज+इनि+ङीप्] कमल की बेल। सम०—कुटुम्बिन् (पुं०) सूर्य।

अम्मय (अप्+मय) (वि०) जलयुक्त, जलमय —न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः —भाग०।

अयन (वि०) [अय्+ल्युट्] आने वाला, (प्रयोग प्रायः समस्त पदों में)। सम०—कलाः ग्रहणविषयक विचलन के लिए (मिनटों में) शोधन—सू० सि०, —ग्रहः किसी ग्रह की देशान्तररेखा जब कि वह ग्रहण विषयक विचलन के लिए संयुक्त की गई हो, —सू० सि०, —परिवृत्तिः अयन का बदलना अयनपरिवृत्तिर्व्यत्तशब्देनोच्यते—मी० सू० ६।५।३७ पर शा० भा०।

अयत्नसाध्य (वि०) जो बिना किसी कठिनाई के सम्पन्न हो जाय।

अयत्नोपात्त (वि०) [अयत्न+उपात्त] जो बिना यत्न के प्राप्त हो जाय।

अयथाभिप्रेताख्यानम् (नपुं०) बुरे समाचार को ऊँचे स्वर से उच्चारण करना या अच्छे समाचार को मन्दस्वर में कहना अयथाभिप्रेताख्यान नामाप्रियस्योच्चैः, प्रियस्य च नीचैः कथनम् सि०।

अयस् (वि०) [इ+असुन्] जाने वाला, स्पन्दनशील। सम०—कणपः एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे की बनी गोलियों की बौछार करता है अयःकणपचक्राश्च भुशुण्ड्युद्यतबाहव.—महा० १।२२७।२५, —पिण्डः तोप का गोला।

अयोगः [न+युज्+घञ्] योगाभ्यास में विचलन, दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथ भाग० ६।८।१६।

अयोनि (वि०) [न० ब०] अज्ञात माता-पिता की सन्तान —अयोनि च वियोनिं च न गच्छेत विचक्षण महा० १३।१०३।३३।

अरकः [इयर्ति गच्छत्यनेन ऋ+अप् स्वार्थे कन्] पहिए का अरा।

अरजा (स्त्री०) एक देवी का नाम —ग०।

अरण्यपर्वन् (नपुं०) महाभारत में एक अध्याय का नाम।

अरब्ध (वि०) [न० ब०] जिसमें छिद्र न हों—मयन रन्ध्रमुप इवारब्ध्या —कि० १५।४०।

अरव (वि०) [न० ब०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।

अरस (वि०) [न० ब०] 1 अरसिक, जो ललित कला को न सराह सके —किमस्या नाम स्यादरसपुरुषानादरकृतैः नै० 2. जिसमें कोई सत्व न हो, तेज न हो —अरसो आर्थिजरारविनाशधर्मा —बु० च० ५।१२।

अरात् (अ०) तुरन्त, तत्काल वर्तन्ति यत्नीरया ते तेन साकं पतन्त्यरात् —शुक० ४।१२।६६।

अराम (वि०) [न० ब०] अरुचिकर, दुःखद।

अरिकेलिः [ऋ+इन्+केल+इन्] प्रेमलीला, स्त्रीरमण —अरिकेलिः प्रेमलीला स्त्रीरत्योरथापि कीर्तितः —नाना०।

अरित्रम् [ऋ+इत्र+अरि+त्र, वा] कवच, जो शत्रुओं से रक्षा करे (अरिभ्य. त्रायते) नै० १२।७१।

अरीण (वि०) पूर्ण, भरा हुआ—स्वरमञ्जरीणतत्कण्ठः —नै० ६।६८।

अरुज (वि०) [न० ब०] 1. जो रोग को नष्ट करे, रोग नाशक विसृज्य खलु सर्वेभ्यः कणिकामरुजां स्थिराम् —सु० 2. नीरोग, पीडारहित।

अरुणकेतुब्राह्मणम् (नपुं०) अरुण और केतुओं के ब्राह्मण का नाम।

अरुणपराशराः (पुं०) एक वैदिक शाखा के अनुयायी —अरुणपराशरा नाम शाखिनः—मी० सू० ७।१।८ पर शा० भा०।

अरुद्ध (वि०) [न+रुध्+क्त] निर्बाध, जिसे रोका न गया हो, निर्विघ्न।

अरुन्धतीदर्शनम् (नपुं०) विवाह संस्कार के अवसर पर की जाने वाली एक प्रक्रिया जिसके अनुसार दुलहन को अरुन्धती तारा दिखलाया जाता है।

अरुन्धतीदर्शनन्यायः यह एक न्याय है, इसके अनुसार 'ज्ञात से अज्ञात की भांति क्रमिक शिक्षा ग्रहण की ओर संकेत किया गया है जैसे अरुन्धती को दिखलाने के लिए पहले किसी और ज्ञात तारे की ओर संकेत किया जाय।

अरूप (वि०) (न० ब०) वह यज्ञ जिसमें रूप (द्रव्य और देवता) का अभाव हो।

अरूपिन् (वि०) [न+रूप+इनि] आकाररहित, बिना किसी रूप का—बाधायामुर्मिन्यामामप्रमेयानरूपिणः —भा० १।८१।१६।

अरोगत्वम् [न० त०] रोग से मुक्त होने की स्थिति।

अर्कः [अर्च्+घञ्, कुत्वम्] 1. सूर्य 2. सूर्यकान्त मणि अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके—नै०। सम०—ग्रहः सूर्यग्रहण,—ग्रीव इस नाम का एक 'साम'—पुष्पोत्तरम् इस नाम का एक 'साम',—रेतोजः सूर्य का पुत्र रेवत, —लवणम् यवक्षार।

अर्घः [अर्घ+घञ्] मूल्य, कीमत। सम०—अपचयः मूल्य कम हो जाना, कीमत गिर जाना, —ईश्वरः शिव, —निर्णयः मूल्य निर्धारण।

अर्चनानाः (पुं०) अत्रिकुल से संबंध रखने वाला एक ऋषि।

अर्जित (वि०) [अर्ज्+क्त] अवाप्त, उपार्जित—न मे पितार्जितं किञ्चिन्न मया किञ्चिदर्जितम्। अस्ति मे हस्तिशैलाग्रे वस्तु पैतामहं धनम्—वे० दे०।

अर्जुनवल्कः अर्जुन नामक पौधे का रेशा, तन्तु।

अर्जुनसखः [ब० स०] कृष्ण।

अर्णस् (नपुं०) [ऋ+असुन्, नुट्] 1. पानी, जल 2. रंग —श्रीह्रीविभूत्यात्मवदद्भुतार्णम्—भाग० २।६।४४। सम०—जः (अर्णोज) कमल -त्वमर्णोजनाभ, —जम् कमल, पद्म—वरगिरमुपकम्प्यामिमर्णोरुहाक्षी —उत्त० ७।९२।

अर्थः [ऋ+थन्] विषय, पदार्थ, उद्देश्य, इच्छा, अभिप्राय। सम०—अतिदेश (शब्दों के मुकाबले में) पदार्थों के विषय में लिङ्ग, वचन आदि का विस्तार अर्थात् एक विषय को ऐसा समझना मानो वे संख्या में बहुत हों, स्त्री को ऐसा समझना मानों वह पुरुष हो—त० वा०, —अनुपपत्तिः (स्त्री०) किसी विशेष अर्थ का निकालने या समझाने में कठिनाई,—अनुबन्ध भौतिक कुशलक्षेम से युक्त तस्मिन्कालहितबाध्य धर्म्यमर्थानुबन्धि च —रा० ५।५१।२१,—अभिधानम् अभीष्ट अर्थ का प्रकट करना त० वा० ३।१।२।५,—अभिधानम् (वि०) जिसका नाम प्रयुक्त अर्थ से संबद्ध हो —अर्थाभिधान प्रयोजनसम्बद्धमभिधान यस्य, यथा पुरोडाशकपालमिति—मै० म० ४।१।२६ पर शा० भा०,—आतुरः जो लोभी होने के कारण सदैव धन एकत्र करने के लिए दुःखी रहता हो—अर्थातुराणां न गुरुर्न बन्धुः,—काशिन् (वि०) जो उपादेय दिखाई दे (परन्तु वस्तुतः वैसा न हो),—काठिन्यम् धनसंबंधी कठिनाई निर्बन्धसञ्जातरुषार्थकार्श्यमचिन्तयित्वा—रघु० ५।२१,—किल्बिषिन् (वि०) रुपये पैसे के विषय में बेईमान व्यक्ति,—कोविद (वि०) जो राजनीति के विषय में विशेषज्ञ हो, अनन्तरम् —उवाच रामो धर्मात्मा पुनरप्यर्थकोविद —रा० ६।४।८, —क्रिया 1. सार्थक कार्य, अर्थात् जो कार्य सचमुच किया ही जाना है (विप० शब्दोक्त क्रिया) – असति शब्दोक्ते अर्थक्रिया भवति मै० म० १२।१।१२ पर शा० भा० 2 साभिप्राय क्रिया अर्थात् मुख्य कार्य, —गतिः अर्थ या प्रयोजन का समझ लेना, अर्थावगम, —गूढः किसी उक्ति के अभिप्राय की गूढता, —गृहम् कोश, खजाना—हरि०, —चित्रम् अर्थों पर आधारित एक अर्थालंकार,—दर्शकः अधिनिर्णायक, —दृश् (स्त्री०) सच्चाई तथा तथ्यों का ध्यान रखना —ईशं त्रिलोकगुरुमर्थदृशा च यच्छन् भाग० १०।८६।२१, —द्वयविधानम्, ऐसी विधि जिसके दो अर्थ निकलते हों विधाने चार्थद्वयविधाने दोषः—मै० म० १०।८।७० पर शा० भा० —धनम् धन-संपत्ति पर एक वार्तिक तमूचुरप्यर्थपदं महार्थम्—रा० ७।३६।४५, —धारणम् किसी विषय पर विचारविमर्श, —प्रमाण (वि०) जैसा कि आवश्यकता या प्रयोजन के अनुसार निर्धारित हो (विप० शब्दप्रमाण), —विद्या सांसारिक पदार्थों का ज्ञान, —विपत्तिः उद्देश्य की विफलता —समीक्ष्यतामर्थविपत्तिमार्गताम्—रा० २।१९।४०, —विप्रकर्षः अभिप्रेत अर्थ को समझने में कठिनाई, —विभावक (वि०) धन का देने वाला—विप्रेभ्योऽर्थविभावक—महा० ३।३३।८४,—शालिन् (वि०) धनी पुरुष, धनवान्, —संग्रहः लौगाक्षिभास्कर कृत मीमांसा के एक प्रकरण का नाम,—सतत्त्वम् सचाई, किं पुनरयमर्थसतत्त्वम्—पा० ७।३।७२ पर म० भा०, धन का उपार्जन करना 2 उद्देश्य में सफलता,—हानिः (स्त्री०) धन का नाश, —हारिन् (वि०) धन के चुराने वाला, जो धन चुराता है।

अर्थात् (अ०) [अर्थ का अपादान में ए० व०] सच तो यह है कि, तथ्यतः। सम०—अधिगतम् (अर्थादधिगतम्) संकेत द्वारा समझा हुआ, —कृतम् सचमुच किया हुआ — न चार्थात्कृत चोदक प्रापयति मी० सू० ५।२।८ पर शा० भा०।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+यत्] 1 सच्चा, वास्तविक अर्थ्यं विज्ञापयन्नेव रा० ६।१२७।२५ 2 धन प्राप्त करने में चतुर—तमर्थमर्थशास्त्रज्ञा प्राहुरर्थ्या सुलक्षण —रा० ३।४३।३३।

अर्ध (वि०) [ऋध्+णिच्+अच्] आधा।

अर्धः [ऋध्+घञ्] 1 वृद्धि 2 भाग, अंश, पक्ष। सम० —असिः एक धार की तलवार, छोटी तलवार — अर्धासिभिस्तथा चक्रैः—महा० ७।१३७।१५,—कर्णः अर्धव्यास, आधी चौड़ाई, —चित्र (वि०) अर्धपारदर्शी, एक प्रकार का अर्ध पारदर्शी पत्थर, —जीविका, —ज्या, चाप को एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलाने वाली सरलरेखा,—पञ्चम (वि०) साढ़े चार, —प्राणम् दो भागों का ऐसा संधान करना जैसा कि हृदय के दो टुकड़ों का— मृत्याय कौशिक पुनरर्धप्राणविसिस्मृतम भाग० १।७।९०,—मागधी प्राचीन जैन ग्रन्थों में प्रयुक्त प्राकृत बोली,— वायुः आंशिक पक्षाघात, एकाङ्गी लकवा,— वृद्धि किसी राशि पर देय ब्याज का आधा भाग,— शतम् 1 पचास 2 डेढ़ सौ मै० स० ८।२६७, समस्या श्लोक जिसका पूर्वार्ध एक व्यक्ति बोले, तथा उत्तरार्ध दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरा किया जाय —मै० ८।१०१, —हः उल्लू।

अर्ध्य (वि०) [अर्ध+यत्] अधूरा, जो अभी पूरा किया जाना है—अर्धा है विष्णो विपुषा चिकर्थः—ऋ० १।१५६।१।

अर्पित (वि०) [ऋ+णिच्+क्त] 1. जमाया गया, जड़ा गया —कुमारा विविधैः पुष्पैः परिस्तोमैश्चार्पितम् —रा० ४।११८, रघु० ८।८८ 2. डंडेली गई हस्तार्पितैर्नयनवारिभिरेव (प्रताप)—रघु० ९।७८ 3. परि-

र्पित, सौंपा गया—विवर्पितारम्भ इवावतस्थे कु० ३।४२ 4 प्रति पूर्वक—वापिस सौंपा गया प्रत्यर्पित-न्यास इव श० ।

अर्मः,—र्मम् [ऋ+मन्] 1 आँख का एक रोग 2 कब्रिस्तान ।

अर्माः (ब० व०) खंडहर कूड़ाकर्कट ।

अर्वावाह (पु०) [ऋ+वनिप् अर्वन्+वह्+घञ्] घुड़सवार आगच्छन् [illegible] शिव० २४।६४ ।

अर्वाचीन (वि०) (अर्वाच्+तन) न पहुँचने वाला, परन्तु [illegible] भाग० ५।३।४ ।

अर्ह (वि०) [अर्ह+अच्] योग्य समर्थ [illegible] भाग० [illegible]

अर्हा [अर्ह [illegible]] मान [illegible] ।

अलक्तकाङ्क (वि०) [अलक्त अङ्क] अलक्तक से चिह्नित [illegible] अलक्तकाङ्कानि पदानि पादयो कु० ५ ।

अलक्षण (वि०) [न० त० [illegible]] [illegible] भाग० १२।६। २९ ।

अलक्षमन् (वि०) [illegible] लक्षणों से युक्त [illegible] महा० ६।१०४।४२

अलङ्कारमण्डप (न० स०) [illegible] वह स्थान जहाँ मन्दिर की मूर्तियों का शृंगार किया जाता है ।

अलमक (पु०) मस्तक द० अलिमक ।

अलवण (वि०) [न० ब०] लवणरहित बिना नमक की महा० १३।१९१।१८ ।

अलसगामिनी (स्त्री०) [illegible] महिला ।

अलसिका (स्त्री०) [illegible] ।

अलाकृत (वि०) [illegible] ।

अलातशान्ति (स्त्री०) [illegible] की टीका का चौथा पाद ।

अलाबुवीणा (स्त्री०) तुम्बी के आकार की बनी वीणा

अलीकम् [अल् [illegible]] [illegible] अलीक [illegible] श० [illegible] ।

अलुप्तमहिमन् (वि०) [न० त० [illegible]] जिसकी [illegible] कीर्ति [illegible] ।

अलुप्तप्रकाश (वि०) [न० त०] जिसकी कीर्ति लुप्त नहीं हुई है, यशस्वी ।

अलोलुपत्व [न० त०] आध्यात्मिक शक्ति के लिए [illegible] [illegible] ब्रह्मचर्य पालन (इस व्रत की भावना भौतिक सुखों के विरुद्ध है) [illegible] भाग० ८।३।७ ।

अलोमक, अलोमिक (वि०) [न० ब०] जिसके बाल न उगते हों बिना बालों का ।

अलोल (पु०) चौदह मात्राओं का एक छन्द ।

अल्प (वि०) [अल्+प] थोड़ा, मामूली, नगण्य (विप० महत्, गुरु) । सम० अल्पतरम् वह शब्द जिसमें अपेक्षाकृत दूसरे शब्द से कम वर्ण या मात्राएँ हों पा० २।२।३४, गोधूम एक प्रकार का गेहूँ जो जरा छोटा होता है, नालिक एक छोटा दहलीज या दालान, मान० [illegible], पुण्य (वि०) जिसमें धार्मिक [illegible] नगण्य हो—सत्व (वि०) दुर्बल बलहीन भाग (वि०) जिसका पक्ष नहीं के बराबर हो ।

अल्लकम् (नपुं०) धनिये का बीज ।

अल्लका (स्त्री०) धनिये का पौधा ।

अवतरम् (अ०) और आगे और दूर [illegible] ।

अवकोलक (अव+[illegible]) [illegible] मिट्टी का अन्दर [illegible] महा० १४।६५।१ ।

अवकृत (वि०) [अव+कृ+क्त] नीचे की ओर बढ़ा हुआ, नीचे की ओर झुका हुआ ।

अवकीर्ण (वि०) [अवकृ+क्त] [illegible] तथावकीर्णे तु नराधम महा० ९।४१।१६ ।

अवगल (स्त्री० पर०) नीचे गिर जाना फिसल जाना [illegible] शि० ८।३४ ।

अवघट्टी (पु०) [न० त०] दुर्गन्ध [illegible] भाग० ४।७।४७ ।

अवघाटकम् (नपुं०) एक प्रकार का [illegible] के आकार में [illegible] ।

अवघात (वि० [illegible]) [illegible] ।

अवघुष्ट (वि०) [अव+घुष्+क्त] घोषणा किया गया, [illegible] मुनादी की गई ।

अवघ्रात (वि० [अव+घ्रा+क्त]) सूँघा हुआ चूमा गया अवघ्रातम् [illegible] ।

अवघ्रापणम् [अव+घ्रा णिच्+ल्युट्] सुंघवाना ।

अवचर [अव चर्+अच्] [illegible] भाग० [illegible] ।

अवचि (स्त्री०) [illegible] चुनना तोड़ना ।

अवचिचीषा (अव [illegible]) संग्रह करने की इच्छा [illegible] शि० ६।१० ।

अवचूरि अवचूरिका [illegible] भाष्य टिप्पणी ।

अवच्छटा [illegible] —अवच्छटा कापि कटाक्षस्य नै० १६।६४ ।

अवच्छेद्य (वि०) [अव+छिद्+णिच् यत्] अलग किए जाने के योग्य, पृथक् किये जाने के लायक ।

अवतान [अव+तन्+घञ्] तन्तु, सूत—[illegible] महा० २।२४।२६ ।

अवतृ (भ्वा० पर०) पार करना—त्वयाऽवतीर्णोऽर्णं उता-न्तकाम —भाग० ३।२४।३४।

अवतरणमङ्गलम् (नपुं०) हार्दिक स्वागत।

अवतरणिका (स्त्री०) संक्षिप्त विवरण।

अवतारकृत्यम् (नपुं०) अवतार लेने का भेद।

अवतारोद्देशः (अवतार + उद्देश) अवतार लेने का प्रयोजन।

अवतारणम् [अव + तृ + णिच् + ल्युट्] उतार, अवतार योग्य पौलोमपास्तीकमादिरमावतारणम्—महा० १।२।४२।

अवद्यत् (वि०) [अवदो + शतृ] तोड़ने वाला, शतशो विजि-तानवद्यते कि० १५।४८।

अवधि [अव + धा + कि] शासनादेश, अधिदेश, यय तु भरतदेशाऽवधिं कृत्वा हुरीश्वर-रा० ४।८।२५। सम० —ज्ञानम् जैन शब्दावली में ज्ञान की तीसरी अवस्था जिसमें इन्द्रियातीत विषयों का ज्ञान भी मनुष्य को हो जाता है।

अवहित (वि०) (वेद) [अव + धा + क्त] मग्न, पतित, —त्रित कूपेऽवहितो देवान् हुवत—ऋ० १।१०५।१७।

अवधारणम् [अव + धृ + णिच् + ल्युट्] (नाम का) उच्चा-रण करना—न त्वा देवीमहं मन्ये राज सज्ञावधारणात् रा० ५।३३।१०।

अवधृत (वि०) [अव + धृ + क्त] 1 समझा हुआ, जाना हुआ 2. (ब० व०) इन्द्रियाँ (सांख्य० में)।

अवध्यै (भ्वा० पर०) तिरस्कार करना—सोऽवध्यात सुदैरेवम्—भाग० ३।१७।६।

अवध्यानम् [अव + ध्यै + ल्युट्] तिरस्कार—यथा तरेमद-वध्यानमह—भाग० ५।१०।२४।

अवनिः (स्त्री०) [अव् + अनि] 1 भूमि पृथ्वी 2 नदी। सम० —जः मंगल ग्रह —जा सीता, —भृत् राजा, पहाड़,—सारः केले का पौधा।

अवनिष्ठीव् (दिवा० पर०) किसी पर थूकना अवनिष्ठी वतो दर्पाद् द्वावोष्ठौ छेदयेन्नृप मनु० ८।२८२।

अवनेय (वि०) [अव + नी + ण्यत्] अनुसरण कराये जाने योग्य अरण्येमुनिभिर्जुष्टे अवनेया भविष्यसि—रा० ७।४६।९।

अवन्तिसुन्दरीकथा (स्त्री०) एक रचना जो दण्डी कवि की कृति बताई जाती है।

अवन्तिका (स्त्री०) 1. वर्तमान उज्जैन नगर 2 उज्जैन वासियों की बोली।

अवन्ध्यकोप (वि०) [न० ब०] जिसका कोप प्रभाव रखने वाला है अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदाम् कि० १।

अवपतित (वि०) [अवपत् + क्त] नीचे गिरा हुआ फली-पुंजावपतितैः रा० ३।२८।१२।

अवपानम् (वेद०) [अवपा + ल्यु] पीना पापस्थान अहि-वेनावपानात्—ऋ० १०।१०६।२।

अवलोप्यिका (स्त्री०) (पत्थर आदि कोई) वस्तु जो नगर की दीवार से नगर पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं पर फेंकी जाय महा०।

अवप्लु (भ्वा० आ०) नीचे छलांग लगानी—स्वमिमवमप-हाय मत्प्रोतश्च ऋतमधिकर्तुमवप्लुतो रयस्व भाग० १।९।३७।

अवबोधित (वि०) [अवबुध् + णिच् + क्त] जगाया हुआ —रामो रामावबोधित रघु० १२।२३।

अवभग्न (वि०) [अवभञ्ज् + क्त] टूटा हुआ। जिसकी हड्डी टूट गयी हो, —ग्नः 1 तोड़ देना 2 (नाक या कान का) बींधना।

अवमर्दः [अव + मृद + घञ्] 1 संघर्ष, हलचल न त्वा समासाद्य रणावमर्दे रा० ५।४८।६ 2 एक प्रकार का ग्रहण।

अवमर्दिन् (वि०) [अवमर्द + णिनि] हत्यारा, महात्म-नस्तस्य रणावमर्दिन रा० ५।३७।६५।

अवमर्शित (वि०) [अवमृश् + णिच् + क्त] 1 बिगड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ इति दश कार्यमंश भद्रबद्राव-मर्शितम् —भाग० ४।७।४८।

अवमूत्रयत् (वि०) [अवमूत्र + शतृ] मूत्र करके भूमि को गन्दा करने वाला अवमूत्रयतो मेढ्रम् मनु० ८।२८२।

अवमेहः [अवमिह् + घञ्] विष्ठा, मल काम प्रयाति अहि विश्रवसोऽवमेहम् —भाग० ९।१०।१५।

अवयवप्रसिद्धिः (स्त्री०) (शब्द के) अवयवों का निर्देशन, व्युत्पत्तिपरक सार्थकता न चावयवप्रसिद्ध्या समु-दायप्रसिद्धिर्बाध्यते—मी० सू० ६।८।४१ पर शा० भा०।

अवयुत्यनुवाद (पुं०) किसी वस्तु का अंशों में उल्लेख करना एक न्यूनील इत्यवयुत्यनुवादोऽयं यथाधामेव मी० सू० ६।१।४३ पर शा० भा०।

अवरक्षणी [अवरक्ष् + ल्युट् + ङीप्] घोड़े को बांधने की रस्सी—हरि०।

अवरीकृ (अवर + च्वि + कृ तना० उ०) निकट लाना अवावरीकृतवृहद्कमम मै० १६।२६।

अवरुदित (वि०) [अवरुद् + क्त] जो आंसुओं के गिरने से अपवित्र हो गया हो अवक्षुतावरुदित तथा श्राद्धे च वर्जयेत् महा० १३।९१।४१।

अवरुद्ध (वि०) [अवरुध् + क्त] अत्यन्त व्याकुल—प्रहर्षे-णावरुद्धा सा रा० ६।११३।१४।

अवरोधः [अवरुध् + घञ्] बाध्य करने वाली शक्ति —प्रजानन्दावरोधेन गृहेषु लोक नियमयत् भाग० ५।४।१४। सम० —गृह अन्तःपुर, —जनः अन्तःपुर की महिलाएँ।

अवरोपितः [अवरुह् + णिच् + क्त] 1. सिंहासन से उतारा हुआ, निष्कासित—पुराहं बाधितः राम

राज्यात्स्वादवरोपित —रा० ४।८।३२ 2 घटाया हुआ, कमीकृत हतत्विषमायार्म. पादशस्त्ववरोपित —मनु० १।८२।

अवर्णसंयोगः [न० स०] 1. दो भिन्न ध्वनियों का मेल 2 किसी भी वर्ण से संबंध का अभाव।

अवर्तमान (वि०) [न० त०] जो चालू समय से कोई सम्बन्ध न रखे।

अवलम्बित (वि०) [अवलम्ब् + क्त] चिपका हुआ, पकड़ा हुआ, आश्रित—मर्मभिमृत्य रसादवलम्बित —शि० ६।१०।

अवलेह्य (वि०) [अवलिह् + ण्यत्] चाटने के योग्य।

अवलेखा [अवलिख् + अ, स्त्रियां टाप्] रेखा खींचना, रेखाचित्र बनाना रेखाकृति।

अवलोकनकः [न० स०] दृष्टि, कटाक्ष।

अवशप्त (वि०) [अवशप् + क्त] अभिशप्त—महा० १३।

अवशॄ (क्रया० पर०) 1 टूटना 2 चारों ओर बिखर जाना —स तस्या महिमा दृष्ट्वा समन्तादवशीर्यत रा० १।३७।१३।

अवशीर्ण (वि०) [अव + शॄ + क्त] टूटा हुआ चूर-चूर किया हुआ।

अवषट्कार (वि०) जिसमें 'वषट्' शब्द का उच्चारण न हो, जिसमें वषट् के साथ किसी मन्त्र के उच्चारण की प्रक्रिया न हो।

अवसन्न (वि०) [अवसद् + क्त] बसा हुआ उत्पन्न मृत तमस्त्वेनमत्रेषु सेनाग्रानेषु पञ्चसु रा० ५।४६।२८।

अवसरप्रतीक्षिन् (वि०) [न० स०] जो किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो।

अवसरान्वेषिन् (वि०) [त० स०] जो किसी अवसर की ताक में हो।

अवसायः [अव + सो + घञ्] जो समाप्त करता है अवसायो भविष्यामि दुःखस्यास्य चिरार्जितम् भट्टि० ६।८१।

अवसायक (वि०) [अव + सो + ण्वुल्] विनाशात्मक अवसायिभिः शस्त्रैः सारस्वतमाय —कौशि० १५।३२।

अवस्कन्दः [अव + स्कन्द् + घञ्] (विधि में) दोषारोपण इल्जाम।

अवस्कन्न (वि०) [अव + स्कन्द् + क्त] 1 बिखरा हुआ, फैला हुआ 2 आक्रान्त।

अवस्कारः [अव + स्कृ + घञ्] हाथी के चेहरे का आगे की ओर उभरा हुआ भाग मान० ५।८।१२।

अवस्थानम् [अव + स्था + ल्युट्] 1 सहारा कोऽवलम्बममनुग्रहः भाग० ३।२७।१६ 2 [illegible] स्थिरता अवस्थानावस्थानः परिक्रामसि भाग० ५।२६।१७।

अवस्थापित (वि०) [अव + स्था + णिच् + क्त] जिसमें किसी ने स्नानकार किया है, (जल)।

अवस्फूर्ज् (भ्वा० पर०) गुर्राहट करना, 'घुर्राटा' करना —महा० ६।७।

अवहारः [अव + हृ + घञ्] जो उठा कर ले जाता है न जीवस्यावहारो मा करोति सुभिन यमः भट्टि० ६।८१।

अवह्वे (भ्वा० पर०) (वेद०) पुकारना, बुलाना विश्वो अद्य मरुतामवह्वये ऋ० ५।५६।१।

अवाछिद् (रुधा० पर०) फाड़ देना छिन्न-भिन्न कर देना।

अवाञ्चित (वि०) [अवाञ्च् + क्त] नीचे की ओर झुका हुआ।

अवाचीन (वि०) [अवाच् + ख] 1 जो नीचे निगाह से देखता है दुर्योधनमवाचीनं राज्यकामुकमातुरम् महा० ८।८।१३ 2 नीच, पापी—बुद्धिं तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति महा० ५।३४।८१।

अवासक्त (वि०) जो आसक्त न हो —सु०।

अवान्तरवाक्यम् (नपुं०) सम्पूर्ण कथन के कुछ अंशों को त्याग कर, कथन की हुई उक्ति न च महावाक्ये अवान्तरवाक्यं प्रमाणं भवति मै० स० ६।४।२५ पर शा० भा०।

अवारित (वि०) [अ + वृ + णिच् + क्त] जिसे रोका न गया हो —तम् (अ०) बिना किसी रुकावट के। सम०—कवाटद्वार (वि०) नहीं भिड़ा हुआ अर्थात् खुला हुआ है द्वार जिसके लिए।

अवाह्य (वि०) [न + वह् + ण्यत्] जो ले जाये जाने के योग्य न हो।

अविकच (वि०) [न० त०] जो खिला न हो, अर्थात् बन्द (फूल)।

अविकारिन् (वि०) [न + वि + कृ + णिनि] 1 जिसमें कोई परिवर्तन न हो 2 स्वामिभक्त —स्थाने युद्धे च कुशलानभीरूनविकारिणः मनु० ७।१९०।

अविकार्य (वि०) [न० त०] अपरिवर्त्य अविकार्योऽयमुच्यते भग० २।२५।

अविक्रियात्मक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वभाव अपरिवर्तनीय हो, जिसमें बदलाव न रहे।

अविक्षोभ्य (वि०) [न० त०] 1 जिसमें कोई हलचल न हो 2 जो क्षीण न हो सके अविक्षोभ्याणि रक्षांसि रा० ६।५।१३।

अविखण्डित (वि०) [न० त०] अविभक्त, अविकल।

अविगान (वि०) [न० ब०] [illegible] (सहमत)।

अविघोष (वि०) [न० ब०] [illegible] वाले स्वर जिस में न हों।

अविचक्षण (वि०) [न० त०] 1 अकुशल, जो चतुर न हो, 2 अनजान, अज्ञानी।

अविचिन्त्य (वि०) [न + वि + चिन्त् + ण्यत्] जो समझा न जा सके, जो समझ के बाहर हो।

अविच्छिन्न (ब०) [न० त०] साधारण, सामान्य — न विशेषेण गम्यमविच्छिन्नेन वा पुनः — महा० १२।१५२।२२।

अवितर्कित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, जिसके लिए पहले कभी तर्कना न की हो।

अवितर्क्य (वि०) [न० त०] जिसका अनुमान न लगाया जा सके।

अवितृ (वि०) [अव् + णिच् + तृच्] प्ररक्षक, — भ्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रम् म० ना० २०।३।

अविद (अ०) विस्मयादिद्योतक अव्यय – अर्थ है हन्त, ओह — मृच्छ० १।

अविद् (वि०) [न + विद् + क्विप्] अनजान, अज्ञानी — अविदो भूरितमसो भाग० ३।१०।२०।

अविदूषक (वि०) [न० त०] निरीह, भोलाभाला – अहितं वापि पुरुषं न हिंस्युरविदूषकम् — रा० १।७।११।

अविदूसम् (नपुं०) [अवि + दूस पा० ३।२।३६ वा०] भेड़ का दूध।

अविद्धनस्, — नास् (वि०) [न० ब०] (वह बैल) जिसके नाक में नकेल न डाली गई हो।

अविधायक (वि०) [न + विधा + ण्वुल्] जिसमें विधि या आदेश की शक्ति न हो — नहि विधायकाविधायकयोरेकवाक्यत्वं भवति – मी० सू० १०।८।२० पर शा० भा०।

अविधेय (वि०) [न० त०] 1 जो नियन्त्रण में न आ सके 2 जो शिष्य न बन सके।

अविनाशिन् (वि०) [न० त०] जिसका कभी नाश न हो, आत्मा।

अविनिर्णयः [न + विनिर् + नी + अच्] अनिर्णय, निर्णय का अभाव।

अविनीय (वि०) निष्कपट, निर्दोष।

अविपर्ययः [न० त०] विरोध का अभाव, संशय का अभाव, असन्दिग्ध स्थिति — अविपर्ययाद्विशुद्धम् — सा० का० ६४।

अविप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [न० त०] मतभिन्नता का अभाव — शब्दस्पर्शरूपरसगन्धेष्वविप्रपत्तिः इन्द्रियजयः — कौ० अ० १।६।

अविप्रवासः [न० त०] एकत्र रहना, घनिष्ठ मिलन।

अविप्रहत (वि०) [न० त०] (वह जंगल या मार्ग) जहाँ किसी के पैर न पड़े हों।

अविप्लुत (वि०) [न० त०] अन्यूनीकृत, अविकृत।

अविभावित (वि०) [न० त०] जो हिसाब किताब में न लिया गया हो।

अविरल (वि०) [न० त०] विशाल, स्थूलकाय — अविरलवपुषः सुरेन्द्रगोपाः कि० १०।२७।

अविरलीभावः (पुं०) व्याकरण का एक नियम जिसके आधार पर 'अवि' को 'अविल' हो जाता है।

अविरहित (वि०) [न० त०] अवियुक्त, जो कभी पृथक् न किया गया हो — अविरहितमनेकेनाङ्कभाजा फलेन कि० ५।५२।

अविलङ्घ्य (वि०) [न० त०] गुप्त, जिसका मुकाबला न किया जा सके, जिसको रोका न जा सके — अविलङ्घ्यमलङ्घ्यमपरम् कि० ६।४०।

अविवक्षितवचनता (स्त्री०) उन शब्दों की स्थिति जो अपना शाब्दिक अर्थ प्रकट करने के लिए अभिप्रेत नहीं होते।

अविवक्षितवाच्य (वि०) [न० ब०] ध्वनि काव्य का एक भेद जिसमें शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं है।

अविवेचक (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु के विवेचन की बुद्धि नहीं रखता।

अविवेचना [नञ् + वि + विच् + युच् + टाप्] विवेक बुद्धि का अभाव।

अविशय [अव + शी + अच्] सन्देह का अभाव यवि वा अविशये नियमः मी० सू० ८।३।३?।

अविशेषवचन (वि०) वह कथन जिसमें कोई विशेष विवरण न दिया गया हो — अविशेषितवचनं शब्दो न विशेषव्यवस्थापितो भविष्यति — मी० सू० ४।३।१५।

अविश्रम्भः [न० त०] विश्वास का अभाव, अविश्वास, अप्रत्यय।

अविषक्त (वि०) [न० ब०] निरवबाध, अनियन्त्रित, जिस पर कोई प्रतिबन्ध न हो — तुभ्यं नमस्तेऽस्त्वविषक्तदृष्टये भाग० १०।४०।१२, अविषक्तयोग – कि० १३।२४।

अविषह्य (वि०) [न० ब०] 1 जिसका निर्णय करना कठिन हो — सीमायामविषह्यायाम् मनु० ८।२६५ 2 जो सहा न जा सके — अविषह्यव्यसनेन धूमिताम् कि० ४।१० 3 जहाँ पर पहुँचना कठिन हो — वसुधायविषह्यम् महा० १४।२०।१३।

अविसंवादः [न० त०] विरोध न प्रकट करना, अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन करना।

अविहस्त (वि०) [न० ब०] अनुद्विग्न साहसी — अथ मृगमविहस्तस्तत्र कान्तारगर्भे — शिव० ३६।

अविहा (अ०) हन्त! अहो!।

अविहित (वि०) [न + वि + धा + क्त] जो नियत न किया गया हो, जिसका विधान न किया गया हो।

अवी (स्त्री०) [अवत्यात्मानं लज्जया अव् + ई] रजस्वला स्त्री — उणादि० ३।१५८।

अवीचिसंशोषणः [अवीचि + सम् + शुष् + णिच् + ल्युट्] समाधि का विशेष प्रकार।

अवृष्टिसंरम्भ (वि०) [न० ब०] बारिश के तैयारी किये बिना आरम्भ करने वाला — अवृष्टिसंरम्भमिवाम्बुवाहम् - कु०।

अवेक्षमाण (वि०) [अव+ईक्ष्+शानच्] ध्यान देखने वाला - अवेक्षमाणस्य महीं सर्वानामन्वपेक्षत—रा० ५ ।

अवेदविद् (वि०) [अवेद+विद्+क्विप्] वेदों का न जानने वाला ।

अवेदविहित (वि०) [अवेद+वि+धा+क्त] जिसका वेद में विधान न हो ।

अवेदना [न+विद्+युच्] पीडा का अभाव ।

अवैलक्ष्यम् (नपुं०) लज्जाना, लज्जा का भावना रखना ।

अवैशेषिक (वि०) [न+विशेष+ठक्] जो किसी विशेष परिणाम को दर्शाने वाला न हो, जिसका कोई फल न निकले—अवैशेषिकोऽयं हेतुः मी० सू० ११।१।१ पर शा० भा० ।

अव्यङ्ग्य (वि०) [न० ब०] 1. निरपराध 2. जिसमें ध्वनि या व्यञ्जना का अभाव हो (काव्य में) ।

अव्यतिरेकः [न० त०] अपार्थक्य, निरपवाद, (वि०) [न० ब०] जो भूलने वाला न हो, जो कोई त्रुटि न करे ।

अव्यपदेश्य (वि०) [अव्यपदिश्+ण्यत्] जिसकी परिभाषा न की जा सके ।

अव्यपोह्य (वि०) [अव्यप+ऊह+ण्यत्] जिसकी तुहमाया न जा सके, जिससे इन्कार न किया जा सके ।

अव्ययम् [न० त०] कुशलक्षेम, हित, कल्याण—युधिष्ठिरमथापृच्छत्सर्वांश्च सुहृदोऽव्ययम्—भाग० १०।८३।१ ।

अव्यवच्छिन्न (वि०) [अव्यव+छिद्+क्त] न टूटा हुआ, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा हो, निर्बाध ।

अव्यवसायः [अव्यव+सो+घञ्] निर्णायक शक्ति या संकल्प का अभाव ।

अव्यवसायिन् (वि०) [अव्यवसाय+णिनि] आलसी, जो निर्णायक बुद्धि से रहित है महदप्यर्थमासाद्य यो ह्यव्यवसायिनाम्—महा० २।४१ ।

अव्यविकन्यायः (पुं०) दे० 'अविरविकन्याय', यद्यपि 'अवि' का ही 'आविक' बनता है, परन्तु 'आविक' से 'अविक' (बकरी का मांस) जैसा कोई दूसरा शब्द 'अवि' से नहीं बनता ।

अव्याक्षेपः [न+वि+आ+क्षिप्+घञ्] अविचलितता या आकस्मिक गड़बड़ी का अभाव—अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६ ।

अव्याजकरुणा (स्त्री०) निष्कपट दया स्वाभाविक सहानुभूति अव्याजकरुणामयि लहरी० ।

अव्याहृतम् (नपुं०) [अव्या+हृ+क्त] चुप रहना, न बोलना—अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहुः महा० ५।३६।१२ ।

अशितम् (नपुं०) [अश्+क्त] 1. जो खाया जाय, खाद्य आहृत्यान्नं विप्रा शुचिर्भाषितं च तत्—भाग०

९।४।४० 2. वह स्थान जहाँ पर कोई खाया जाता है- अधिकरणवाचिनश्च - पा० २।३।६८ ।

अशकुनः,—नम् [न० त०] अशुभ शकुन, बुरा शकुन कदाचिदपि सम्यगस्तकर्षेऽशकुनेन स्खलित किरीटोऽपि —शि० १।८३ ।

अशठ (वि०) [न+शठ्+अच्] जो ढीठ न हो, आज्ञाकारी—अजिह्मस्याशठस्य च दासवर्गस्य भावयेत् —मनु० ३।२४६, इह ते मानयस्वाथ मामशठ मम० ।

अशब्दार्थः (अशब्द+अर्थ) 1. शब्द द्वारा अनभिप्रेत अर्थ 2. वह अर्थ जो प्रत्यक्ष रूप से वाक्य से प्रतीत (अभिहित) न होता हो अशब्दार्थोऽपि हि प्रतीयते मी० सू० ४।१।१४ पर शा० भा० ।

अशब्द्य (वि०) [न+शब्द+यत्] जो शब्दों से प्रतीत न होता हो—मी० सू० ५।१।५ ।

अशिथिल (वि०) [न० ब०] 1. जो ढीला न हो, कसा हुआ 2. प्रभावशाली ।

अशिशिर (वि०) [न० ब०] गर्म । सम०—करः, —किरणः, —रश्मिः सूर्य— शीतोष्णं मुकुर्तिरशिरशिशिरे— शि० ५।३१ ।

अशीतल (वि०) [न० ब०] गर्म—[illegible] —शि० ९।८६ ।

अशीतिविकल्पम् (नपुं०) बयासी भक्त जो कृष्णयजुर्वेद के कुछ कारणों में मिलता है ।

अशुभदर्शनम् [अशुभ+दृश्+ल्युट्] बुरा समाचार देना ।

अशुभोदयः (अशुभ+उदय) [अशुभ+उद्+इ+अच्] अशुभ सूचक शकुन ।

अशुष्का (स्त्री०) एक प्रकार का चावल ।

अशोकज (वि०) जो दुःख या शोक से पैदा न हुआ हो, हर्ष या खुशी से उत्पन्न—अशोकजैः..... —रा० ६।१२५।४२ ।

अशोचनम् [न+शुच्+ल्युट्] अपराध, त्रुटि, दोष—दोषेण यदि ते पापे किञ्चित्कृतमशोचनम्—रा० ३।१८।७ ।

अश्मवर्षः [ब० त०] 1. ओले पड़ना 2. (शत्रु पर) पत्थर फेंकना ।

अश्मसात् [अ+अर्श+क्त] बवासीर का एक प्रकार जो पका हुआ न हो—भी० स० २।११ ।

अश्री [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत ।

अश्रीकरम् (नपुं०) [अश्री+कृ+अच्] अशुभ ।

अश्वः [अश्नुते अध्वानं व्याप्नोति, महाशनो वा भवति अश्+क्वन्] घोड़ा । सम०—पालकायनम्, (पुं०) घोड़ों के लिए घास का संग्रहण करने वाला सर्पिदाकार, पर्याणं घोड़े की देख-रेख करने वाला तस्यायुध्यपी कापुत्स्य पुत्रवर्मा महारथः (अंशुमानकरोत्)—रा० १।३९।६७,—[illegible]

चना,—बर्बुरा अश्वाक्ष, रिपुः भैंसा—भा० प्र०, —सधर्मन् घोड़ों की भांति आचरण करने वाला अश्वसधर्माणो हि मनुष्या—की० अ० २१९, —सूत्रम् 'घोड़ों को पालने' के विषय पर एक पुस्तक ।

अश्वतरीरथः [रम्यतेऽनेन रम्+कथन्] खच्चरी द्वारा खींचा जाने वाला रथ ।

अश्वत्थः [न श्वः तिष्ठति इति अश्व+स्था+क] पीपल का पेड़ । सम० —नारायणः भगवान् विष्णु जिनकी पीपल के वृक्ष के रूप में पूजा की जाती है,—पूजा 'सभी देवता पीपल में रहते हैं' ऐसा समझ उनकी पूजा करना—मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे, अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः, —प्रदक्षिणम् धार्मिक संस्क्रिया के रूप में पीपल की परिक्रमा करना ।

अषडक्ष (वि०) [न+षड्+अक्षि] दे० 'अषडक्षीण' । 'ईन' प्रत्यय स्वार्थ को ही प्रकट करता है । अतः 'अषडक्ष' और 'अषडक्षीण' दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है ।

अषडक्षीण (वि०) [न+षड्+अक्षि+ईन] जो छः आँखों से न देखा गया, अर्थात् केवल दो ही व्यक्तियों के द्वारा निर्धारित तथा उन दो को ही ज्ञात (जिसमें तीसरा व्यक्ति सम्मिलित न हो),—मन्त्रम् (नपुं०) रहस्य, गुप्त बात ।

अष्टन् (वि०) [अश् व्याप्तौ कनिन् तुट् च] आठ (समस्त शब्दों में 'अष्टन्' के न का लोप हो जाता है) । सम० —अङ्गम् (अष्टाग) 1 आयुर्वेद पद्धति जिसमें निम्नांकित आठ अंग होते हैं प्रत्याभिधान, मदनिश्चय, कायसौख्य, शल्यकर्म, भूतनिग्रह, विषनिग्रह, बालवैद्य और रसायन 2 बुद्धि की आठ क्रियायें—शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारणा, चिन्तन, ऊहापोह, अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान 3 योगाभ्यास के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि,—अधिकाराः सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति की आठ स्थितियाँ—जल, स्थल, ग्राम, कुल, लेखन, ब्रह्मासन, दण्डविनियोग और पौरोहित्य, —अध्यायी (अष्टाध्यायी) 1 पाणिनि का व्याकरण 2 शतपथ ब्राह्मण, —अन्नानि भोजन के आठ प्रकार—भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य, खाद्य, चर्व्य, निपेय, और भक्ष्य,—आपाद्य (वि०) आठगुना अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्बिषम् मनु० ८।३३७,—उपद्वीपानि छोटे-छोटे आठ द्वीप—स्वर्णप्रस्थ, चन्द्रशुक्ल, आवर्तन, रमणक, मन्दरहरिण, पाञ्चजन्य, सिंहल और लङ्का,—कुलाचलाः आठ मुख्य पर्वत—नील, निषध, माल्यवत्, मलय, विन्ध्य, गन्धमादन, हेमकूट और हिमालय, —कुलगिरयः आठ मुख्य पहाड़, दे० ऊपर,—गन्धाः मन्दिरों में प्रस्तर मूर्ति की स्थापना के लिए लेई या गारा बनाने में प्रयुक्त आठ सुगन्धित द्रव्य—चन्दन, अगरु, देवदारु, कोंकिअन, कुंकुम, शैलज, जटामासी और गोरोचन, —तालम् मूर्तिकला में प्रयुक्त होने वाला माप जिसकी लम्बाई उस मूर्ति के समान होती है जो अपने मुख से आठ गुणा होती है,—देहाः स्थूल और सूक्ष्म शरीर जो गिनती में आठ होते हैं स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, विराट्, हिरण्य, अव्याकृत और मूलप्रकृति, —नागाः 1 आठ सांप—अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, शङ्ख, कुलिक, पद्म और महापद्म 2. आठ दिग्गज—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक, —पक्ष (वि०) (ऐसा कमरा या घर जिसमें) एक ही ओर आठ स्तम्भ लगे हुए हों, —प्रकृतयः पांच महाभूत (अग्नि जल, पृथ्वी, आकाश वायु), मन, बुद्धि और अहंकार —प्रधानाः राज्य के आठ प्रधान अधिकारी—वैद्य उपाध्याय, सचिव मन्त्री, प्रतिनिधि, राजाध्यक्ष प्रधान और अमात्य, —भैरवाः शिव के आठ रू[प] असिताङ्ग, संहार रुरु, काल क्रोध, ताम्रचूड चन्द्रचूड, और महाभैरव, —भोगाः सुखमय जीवन के आठ तत्त्व—अन्न, उदक, ताम्बूल, पुष्प, चन्दन, वसन, शय्या और अलंकार, —मङ्गलघृतम् आयुर्वेद की आठ औषधियाँ मिला कर तैयार हुआ घी —प्रश्नः ज्योतिष में प्रश्न विचार प्रणाली के लिए अपनाया गया एक ढंग,—मधु आठ प्रकार का शहद—माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौतिका, छात्रक, अर्घ्य, औद्दाल और दाल, —महारसाः आयुर्वेद पद्धति के आठ रस वैक्रान्तमणि, हिंगुल पारा, हलाहल, कान्तलोह अभ्रक स्वर्णमाक्षी और रौप्यमाक्षी, —रोगाः आयुर्वेद में वर्णित आठ प्रधान रोग—वातव्याधि, अश्मरी, कुष्ठ मेह, उदक, भगन्दर, अर्श और संग्रहणी, —मातृकाः पराशक्ति के आठ अवतार—ब्राह्मी, माहेश्वरी कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, कौबेरी और चामुण्डा, —मूर्तयः आठ प्रकार की मूर्तियाँ—शैली दारुमयी लौही, लेप्या, लेख्या, सैकती, मनोमयी और मणिमयी, —योगिन्यः आठ योगिनियाँ जो पार्वती की सहेलियाँ थीं—मङ्गला, पिङ्गला, धन्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा, —वर्ग एक प्रकार का रेखाचित्र जो किसी विशेष समय पर ग्रहों की यथार्थ स्थिति दर्शाता है, —सिद्धयः दे० अष्टमहासिद्धयः अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता और प्राकाम्य ।

अष्टमराशिः [ष० त०] किसी व्यक्ति के नक्षत्र की राशि से आठवीं राशि जो प्रायः अशुभ मानी जाती है ।

अष्टगव (वि०) [ब० स०] (गाड़ी) जिसमें आठ बैल

कृते ह्री, - अष्टतः कपाले हविषि, नवि च युक्ते —पा० ६।३।४६ वा०।

अष्टागवम् [अष्टानां गवां समाहारः] आठ गौवों का समूह।

अष्टादश (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह। सम० —तत्त्वानि अठारह प्रधान तत्त्व जिनमें महत्, अहङ्कार, मन, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ गिनी जाती हैं, —धान्यम् अठारह प्रकार का अन्न है—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुकुलत्थकाः, माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः श्यामसर्षपाः। गवेधुकाश्च नीवारा आढक्योऽथ सतीनकाः, चणकाश्चीनकाश्चैव धान्यान्यष्टादशैव तु, —पर्वाणि महाभारत के अठारह खण्ड आदि, सभा, वन, विराट्, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासि, मौसल, महाप्रस्थानक और स्वर्गारोहण।

अस् (दिवा० पर०) युद्ध करना युयोध बलिरिन्द्रेण तारकेण गुहोऽस्यत – भाग० ८।१०।२८।

अस्तः [अस् आधारे क्त, अस्यन्ते सूर्य किरणा यत्र] 1 छिपना, परिसमाप्ति 2 सूर्य का छिपना। सम० —निमग्न (वि०) अस्ताचल के पीछे छिपा हुआ —विडम्बयत्यस्तनिमग्नसूर्यम्—रघु० १६।११, —मस्तकः —शिखरः, अस्ताचल की चोटी, —समयः सूर्य छिपने का समय, मृत्यु का समय —करवालमस्तसमयेऽपि सताम्—शि० ९।५।

अस्तिक्षीर (वि०) [अस्ति क्षीरं यस्य पा० २।२।२४ वा०] जिसके पास दूध हो, दूध रखने वाला।

असङ्क्रान्तः [न+सम्+क्रम्+क्त] अधिमास, मलमास, लौंद का महीना।

असंयाज्य (वि०) [न+सं+यज्+ण्यत्] जिसके साथ मिलकर किसी को यज्ञ करने की अनुमति न हो —मनु०।

असंयोगः [न+सम्+युज्+घञ्] 1. संबंध का अभाव 2. जो संयुक्त व्यञ्जन न हो पा० १।२।५।

असंरम्भः [न+सम्+रम्भ्+घञ्] निर्भयता, निडरता —महा० १४।३८।२।

असंरोधः [न+सम्+रुध्+घञ्] अनाघात।

असंवर (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके, दुर्निवार असंवरे शम्बरवैरिविक्रमे नै० १।५३।

असंहार्य (वि०) [न+सम्+हृ+ण्यत्] 1 अजेय, जिसका मुकाबला न किया जा सके विधिर्भूमिमसंहार्यां प्राणिनां प्रभवोत्तम रा० ५।३७।४ 2 जिसे मार्गभ्रष्ट न किया जा सके।

असकृत्करणम् [असकृत्+कृ+ल्युट्] आवृत्ति, दोहराना।

असकृद्भवः [असकृत्+भू+अप्] दाँत ब० स०।

असकौ (असौ) [अदस्+अकच्, पा० ५।३।७१, कादेशः] 1. वह या यह 2. वह दुष्ट—भार्योढा तमवज्ञाय सर्वं सौमित्रयेऽसकौ—भट्टि० ४।१५।

असक्तिः (स्त्री०) [न+सञ्ज्+क्तिन्] सामान्य सांसारिक पदार्थों और मन का लगाव न होना असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु भग० १३।९।

असङ्करः [न+सम्+कृ+अप्] मिलावट (विशेषकर जातियों में) का अभाव।

असङ्कल्पित (वि०) [न+सम्+कल्प्+क्त] जो कभी कल्पना न किया हो असङ्कल्पितमेवेह यदकस्मात् प्रवर्तते रा० २।२२।२४।

असङ्कुल (वि०)[न+सम्+कुल्+क्त] निर्बाध, अनवरुद्ध —सरित सिप्रामसङ्कुलाम्—रा० ६।७०।१३४।

असदाश्रयः [असत्+आ+श्रि+अच्] अयोग्य व्यक्ति से सम्मिलन।

असद्वस्तु (नपुं०) [क० स०] अविद्यमान चीज।

असद्वादिन् (वि०) [असत्+वाद+णिनि] जो व्यक्ति किसी वस्तु या बात की असत्ता को स्थापित करना चाहता है।

असन्तुष्ट (वि०) [न+सम्+तुष्+क्त] अतृप्त, अप्रसन्न असन्तुष्टो द्विजो नष्टः—नीति०।

असन्तोषः [न+सम्+तुष्+घञ्] अतृप्ति, अप्रसन्नता।

असन्धानम् [न+सम्+धा+ल्युट्]1. निरुद्देश्यता 2. विकलता, पार्थक्य।

असन्नयाणः [क० स०] जो समान रूप से नहीं बँटा हुआ है।

असम्प्रयुक्त (वि०) [नञ्+सम्+प्र+युज्+क्त] जो भलीभाँति प्रशिक्षित न किया गया हो।

असमीक्ष्य (अ०) [न+सम्+ईक्ष्+ल्यप्] न जाँच कर।

असमीचीन (वि०) [न+सम्+अञ्च्+क्विन्+ख] जो सही न हो, त्रुटिपूर्ण।

असमृद्धिः (स्त्री०) [न+सम्+ऋध्+क्तिन्] सफलता का अभाव, किसी भी वस्तु की कमी होना— नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः—मनु० ४।१३७।

असमेत (वि०) [न+सम्+आ+इ+क्त] जो कभी पहुँचा न हो, अनागत, अनुपस्थित—स्वचित्तसमेतपरिच्छद -मनु० ९।७०।

असम्पात (वि०) [न० ब०]अनुपस्थित, जो निकट न हो।

असम्पातः[न+सम्+पत्+घञ्]निष्क्रियता, निठल्लापन, कार्य का रुक जाना असम्पातं करिष्यामि ह्यद्य त्रैलोक्यचारिणाम्— रा० ३।६४।५९।

असम्बद्धार्थव्यवधान (वि०) जिसने असंगत बात को बीच में आकर रोक दिया है —तस्मादसम्बद्धार्थव्यवधानेकवाक्यता —मी० सू० ३।१।२१ पर शा० भा०।

असम्बोधः [न+सम्+बुध्+घञ्] समझ का अभाव।

असम्भाव्य (वि०) [न+सम्+भू+ण्यत्] असंभाव्य, अघटनीय।

असम्भावना [न+सम्+भू+णिच्+युच्+टाप्] सम्मान का अभाव।

असम्भावित (वि०) [न+सम्+भू+णिच्+क्त] अचिन्त्य। सम०—उपमा ऐसी समानता बतलाना जो असंभव हो।

असम्भाष्य (वि०) [न+सम्+भाष्+ण्यत्] जिससे बात करना उचित न हो।

असम्भोज्य (वि०) [न+सम्+भुज्+णिच्+ण्यत्] जो सहभोज में सम्मिलित होने के योग्य न हो - मनु० ९।२३८।

असम्मोहः [न+सम्+मुह्+घञ्] 1. माया या भ्रम से मुक्ति 2. आत्मसंवरण 3. सत्य ज्ञान।

असम्यक्, प्रयोगः [असम्यञ्च्+प्र+युज्+घञ्] अशुद्ध व्यवहार, गलत परिपाटी।

असव्य (वि०) [न० त०] दक्षिण पार्श्व।

असांनिध्यम् [न+संनिधि+ष्यञ्] अनुपस्थिति, अविद्यमानता—असांनिध्यं कथं कृष्ण तवासीद्वृष्णिनन्दन —महा० ३।१४।१।

असामञ्जस्यम् [न+समञ्जस+ष्यञ्] 1. अशुद्धि 2. अनौचित्य।

असाम्प्रतिकता (स्त्री०) [न+सांप्रति+ठक्+ता] अनुचित व्यवहार करने की अवस्था।

असांव्यवहारिक (वि०) [न+संव्यवहार+ठक्] जो लोकव्यवहार न हो, जो परम्परा के विरुद्ध हो।

असावधान (वि०) [न+सह्+अव+धा+ल्युट्] उपेक्षा करने वाला, प्रमादी, लापरवाह।

असाहसिक (वि०) [न+साहस+ठक्] जो साहस के साथ काम न कर सके या जो बिना विचारे न करे—न बहुभिः सहसाऽसाहसिकी - शि० ९।५९।

असिचर्या [असि+चर्+टाप्] तलवार चलाने का अभ्यास।

असिलता (स्त्री०) तलवार का फल—बहुभुजाऽसिलताविलसत्त्विषा—शि० ६।५१।

असिहस्त [न० ब०] जो दाहिने हाथ में तलवार ले कर चलता हो —महा० १।६०।४ पर टीका०।

असितकार्पासी (स्त्री०) काली कपास का पौधा।

असिद्ध (वि०) [न+सिध्+क्त] (व्या० में) अक्रियात्मक प्रतिरूप जहाँ तक, प्रभावशून्य - पूर्वत्रासिद्धम् —पा० ८।२।१।

असिद्धार्थ: [न० त०] वक्तव्य-विषय, बुद्धिपूर्ण राद्धान्त।

असिद्धार्थ (वि०) [न० ब०] जिसने अपने उद्देश्य में सफलता न पाई हो।

असुतृप् (वि०) [असु+तृप्+क्विप्] जो अपने ही सुखोपभोग में मस्त हो, सांसारिक विषय वासनाओं में मग्न --भवन्ति ह्यसुतृपो लुब्धा भाग० १०।१।६७।

असुगन्ध (वि०) [न० ब०] जिसमें सुगन्ध न आती हो।

असुतर (वि०) [न० त०] जो आसानी से पार न किया जाय, जिसमें अनायास साफल्य प्राप्त न हो।

असुन्दर (वि०) [न० त०] जो खूबसूरत न हो।

असुरः [असु+र, असुरता स्थानेषु न सुष्ठुरता, चपला इत्यर्थः] राक्षस। सम०—असृक् राक्षसों का रुधिर -- असुरासृग्जलापकूपचितस्ती—दे० मा० ११,—गुरु: 1 शुक्राचार्य 2 शुक नाम का ग्रह,—द्रुह्, राक्षसों का शत्रु अर्थात् देव पुर किलब्नाति सोम हि सैंहिकेयो-ऽसुरद्रुहाम् - शि० २।३५।

असुषिर (वि०) [न+शुष्+किरच्, सस्य ष.] जिसमें कोई छिद्र न हो, जो दोषी या कपटी न हो।

असूतजरती [असूत+जरती पा० ६।२।४२] वह स्त्री जो बिना किसी बच्चे को जन्म दिये ही बूढ़ी हो गई है।

असूर्त (वि०) [न० ब०] 1. अन्धकारयुक्त 2. अज्ञात, दूरवर्ती। सम०—रजसः वे लोक जो सर्वथा अन्ध-अन्धक रहते हैं असूर्तरजसो नाम धर्मारण्यं महामतिः रा० १।३२।७।

असृज् (नपुं०) [न+सृज्+क्विन्] 1 रुधिर 2. मंगलग्रह 3. जाफ़रान। सम० ग्रहः मंगलग्रह,—स्त्रिग्ध (वि०) खून से लथपथ।

असेवा [न० त०] अभ्यास का अभाव—न तथैतानि शक्यन्ते संनियन्तुमसेवया—मनु० २।९६।

अस्तब्ध (वि०) [न० त०] 1. चुस्त 2. जो घमंडी न हो, हठी न हो—महा० ५।१२।

अस्तोक (वि०) [न० त०] जो थोड़ा न हो, बहुत अधिक।

अस्तोभ (वि०) [न+स्तुभ्+घञ्] बिना किसी अवांछित शब्द के अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः, बिना किसी रोक टोक के।

अस्त्रम् [अस्यते क्षिप्यते-अस्+ष्ट्रन्] 1. फेंक कर वार करने वाला हथियार 2 तीर, तलवार 3. धनुष। सम०—पातिन् (वि०) फेंकी जाने वाला—अस्त्रपातिशिराचूतम्—मृच्छ० ४।१०३७,—भृत् जो तीर ले जाता है, तीर धारण करने वाला, अस्त्रम् धनुष, एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा तीरों की बार की जाय—महा० १।५७।१८।

अस्थानम् [न+स्था+ल्युट्] अस्थायित्व स्थान या प्रवेश—अस्थाने—योवनतयमुनायुक्तमेवाभिरामा—नैष०।

अस्थावर (वि०) [न+स्था+वरच्] चंचल, अधीर।

अस्थि (नपुं०) [अस्+क्थिन्] 1 हड्डी 2. गुठली, या किसी फल की गिरी। सम० कुण्डम् एक नरक का नाम,—संचयनम् स्नायु, कोकरा,—तेजस् (वि०) जो हड्डी को छीन दे, अत्यन्त कठोर वाक्यतीक्ष्णानि-

मदिन:—महा० ३।३१२।३, —कर्मन् और्ध्वदैहिक क्रिया का एक भाग,—विलय किसी पवित्र नदी में किसी मृतक की अस्थियों को प्रवाहित करना,—सार:, —स्नेह: वसा, मज्जा ।

अस्नात (वि०) [न० त०] जिसने स्नान न किया हो ।

अस्पृष्ट (वि०) [न+स्पृश्+क्त] जो (किसी कथन में) आवृत न हो, (उसके) अन्तर्गत न हो अस्पृष्टपुरुषान्तर (जन्म) —कु० ६।७५ ।

अस्पृष्टमैथुना (वि०) [न० ब०] कुमारी अक्षतयोनि ।

अस्पृह (वि०) [न० ब०] निस्पृह, निरिच्छ जिसे इच्छा न हो ।

अस्फुट (वि०) [न० त०] जो पूर्ण विकसित न हो—अस्फुटावयवभेदसुन्दरम् —भाग० ।

अस्मिमान: [न० त०] स्वाभिमान अहंकार ।

अस्मृत (वि०) [न० त०] 1 याद न किया हुआ 2 जिसका प्रामाणिक ग्रन्थों में उल्लेख न हो ।

अस्वाधीन (वि०) [न० त०] जो स्वतन्त्र न हो अस्वाधीन नराधिप वर्जयन्ति नरा दूरात्—रा० ३।३३।५ ।

अस्विन्न (वि०) [न० त०] जिसे भली भांति उबाला न गया हो ।

अस्वेद्य (वि०) [न+स्विद्+ण्यत्] जिसे पसीना लाने के उपयुक्त न समझा जाय ।

अहत (वि०+हन्+क्त] जो बजाया न गया हो—अहताया प्रयाणभेर्याम्—का० ।

अहम् (सर्व०) [अस्मद् का कर्तृकारक एक वचन] मैं । सम०—युस् (पुं०) अहंकारी, जो केवल अपना ही चिन्तन करे —स्तम्भ: अहङ्कार, घमंड ।

अहिचक्रम् [प० त०] तान्त्रिकों का एक आरेख ।

अहिविषापहा (स्त्री०) [अहिविष+अप+हा+अच्+टाप्] एक पौधे का नाम जिसके सेवन से विष दूर हो जाता है ।

अहोलाभकर (वि०) [अल्पेऽपि, अहोलाभो जात इति विस्मयं कुर्वाण] थोड़े लाभ से ही सन्तुष्ट होने वाला व्यक्ति ।

आ

आंहस्पत्य (वि०) [अंहस्पति+यञ्] मलमास संबंधी ।

आकण्ठम् (अव्य०) गले तक । सम०—तृप्त (वि०) स्वादिष्ट भोजनों से गले तक छिका हुआ ।

आकलना [आ+कल्+युच् टाप्] गिनना, समझ, अनुमान, मूल्य आंकना ।

आकल्पम्
आकल्पान्तम् } (अ०) चार युगों के चक्र की अवधि तक, जब तक संसार है तब तक ।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अच्+टाप्] अपेक्षा, आशा —अभयत्वामाकाङ्क्षाया सन्निधानमकारणम् - मै० स० ६।४।२३ पर शा० भा० ।

आकाश:,—शम् [आकाशन्ते सूर्यादयोऽत्र—आकाश्+घञ्] 1 आसमान 2, अन्तरिक्ष 3 मुक्त स्थान । सम० —वणिक: सूर्य, —वप्रदृष्टि:,—वक्षुष्क, जो बिना उद्देश्य के इधर-उधर देखता है, —मुखिन: (ब० व०) शैव सम्प्रदाय के लोग, जो अपना मुंह आकाश की ओर रखते हैं,—मुष्टिहननम् मूर्खता का कार्य जैसे आकाश की ओर घूंसा उठाना, व्यर्थ कार्य,—शयनम् खुली हवा में सोना ।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] एक प्रकार का युद्ध-कौशल—शुक्र० ४।११०० ।

आकूतम् [आ+कू+क्त] (प्राय: समास के अन्त में प्रयुक्त) प्रस्तुतीकरण—शु० पर्माकूतम् ।

आकूति: (स्त्री०) [आ+कू+क्तिन्] शतरूपा और मनु की एक कन्या का नाम ।

आकूपारम् (नपुं०) कुछ साम-मन्त्रों के नाम ।

आकरकर्म (नपुं०) [ष० त०] खनिकार्य—कौ० अ० २ ।

आकरग्रन्थ: [ष० त०] मूलग्रन्थ, आदिग्रन्थ ।

आकररत्नम् [ष० त०] रत्न, जड़ाऊ गहना ।

आकारसवर्ण (वि०) [स० ब०] रंग और आकार में समरूप ।

आकृत (वि०) [आ+कृ+क्त] निर्मित, बना हुआ यदा सम्राड् अभ्याकृते गृहे —ऋ० ८।१०।१ ।

आकृति: (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1 छन्द 2. (गणित) बाईस की संख्या ।

आकृतियोग: [ष० त०] नक्षत्रपुञ्ज ।

आकर्ष: [आ+कृष्+घञ्] 1 धनुष आकर्षफलके घुनेऽक्षे कार्मुकेऽपि च—हेम० 2. विषाक्त पौधा —महा० ५।४०।९ ।

आकृष्ट (वि०) [आ+कृष्+क्त] खींचा हुआ, आकर्षित किया हुआ, ऐंचा हुआ ।

आक्रोश: [आ+क्रुश्+घञ्] चिल्लाना, मृदु क्रोध ।

आकौशलम् (नपुं०) [आ+कुशल+अण्] विशेषता का अभाव, नैपुण्य की कमी विपरीतमथास्मभ्यो मृणान् मृणाकौशलमाप्स्यमेतत्—शि० १९।३० ।

आक्रम: [आ+क्रम्+घञ्] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा—केनाक्रमेण यजमान: स्वर्गं लोकमाक्रमते —पु० ३।१।६ ।

आक्रान्त (वि०) [आ+क्रम्+क्त] 1 अलंकृत, सजा हुआ,—न खलु नरके हाराक्रान्तं घनस्तनमण्डलम् भर्तृ० ३।६७ 2. आरूढ़, चढ़ा हुआ—निर्ययुस्तुरगाक्रान्ता रा० ६।१२७।१३। सम०—मति (वि०) मन से पराजित, अत्यन्त प्रभावित।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] आक्रमण, लूटखसोट यो भूतानि धनाक्रान्त्या वधात्क्लेशाच्च रक्षति—महा० १२।९७।८।

आक्रीडगिरि:, (पर्वत) [त० स०] आमोद गिरि, आमोद प्रमोद के लिए पहाड़—आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिताः स्वेषु वेश्मसु—कु० २।४३।

आक्लिन्न (वि०) [आ+क्लिद्+क्त] 1 स्विन्न 2. दया से पसीजा हुआ।

आक्षपटलिकः [त० स०] 1 पुरातत्त्व और अभिलेखाधिकारी 2 लेखाधिकारी कौ० अ० २।

आक्षर [अक्षर+अण्] वर्णमाला संबंधी।

आक्षिप्त [आ+क्षिप्+क्त] प्रक्षिप्त ठूँसा हुआ।

आक्षेपः [आ+क्षिप्+घञ्] परास (तीर की) पहुँच—सोऽयं प्राप्तस्तवाक्षेपम्—महा० ७।१०२।६। सम०—रूपकम् उपमा अलंकार का वह रूप जिसमें केवल उपमान ही सकेतित हो।

आखण्डल: [आखण्डयति भेदयति पर्वतान्—खण्ड्+डलच्] इन्द्र। सम०—चापः,—धनु. इन्द्रधनुष, सूनु. इन्द्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन—अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रम—कि० १।२४।

आखनिकशाला [ष० त०] खनकार या शिल्पी का कारखाना।

आखुवाहनः [ब० स०] गणेश का नाम।

आखेटिकवनम् [त० स०] शिकार या मृगया के लिए राजकीय जंगल।

आख्या (स्त्री) [आख्यायतेऽनया, आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1. सूरत, शक्ल—न हि तस्य विकल्पाख्या या च मद्वीक्षया हुता—भाग० ११।१८।३७ 2 सौन्दर्य, मनोज्ञता—भूतीषु रुचिराख्यासु—रा० ७।६०।१२।

आख्यात (वि०) [आ+ख्या+क्त] पुकारा गया—सेवा श्ववृत्तिराख्याता मनु० ४।६।

आख्यातम् [आ+ख्या+क्त] आरम्भ करने का शुभ शकुन।

आगतत्वम् (नपुं०) [आगत+त्व] उद्गम मूल जन्मस्थान।

आगतसाध्वस (वि०) [ब० स०] डरा हुआ भीत।

आगमः [आ०+गम्+घञ्] 1 जो बाद में आने वाला है आगमवदन्यलोपः स्यात्—मी० सू० १०।५।१ 2 पूजा की एक रीति—यथाऽऽनुग्रहं आगमाद्विस्तेन सम्प्रतिनायकम्—भाग० ११।३।४८ 3 मात्रा - आग मास्ते शिवास्सन्तु रा० २।२५।२१। सम०—अपायिन् (वि०) जिसका स्वभाव उत्पन्न होने और फिर नाश हो जाने का हो जिसका जन्ममरण होता है—आगमापायिनोऽनित्या भग० २।१४, —शास्त्रम् (नपुं०) 1 'आगम' से संबंध रखने वाला शास्त्र 2. माण्डूक्य का परिशिष्ट, श्रुति (स्त्री०) परम्परा।

आगमित (वि०) [आगम+णिच्+क्त] 1 सीखा हुआ, (किसी से) शिक्षा प्राप्त प्रकृतिष्वेव निपुणागमितम् शि० ९।७९, 2 पठित, जिसने पढ़ लिया है 3 निश्चय किया हुआ।

आगुल्फम् (नपुं०) जूता -हर्ष०।

अग्निहोत्रिक [अग्निहोत्र+ठक्] अग्निहोत्र से सम्बन्ध रखने वाला।

आग्रयणेष्टि (स्त्री०) [ष० त०] ऋतु के प्रथम फल की आहुति

आङ्घ्रिक [अङ्घ्रि+ठक्] घुटनों से नीचे तक पहुँचने वाला कोट।

आङ्गारिक [अङ्गार+ठक्] कोयले को जलाने वाला महा० १२।७१।२०।

आङ्गिरस (वि०) [अङ्गिरस+अण्] गि अष्टता से युक्त वंश का नाम आङ्गिरस वक्तभेदे मुनिभेदे तदीरितम नाना०।

आचन्द्रतारकम् (अ०) जब तक संसार में चाँद और तारे हैं, अर्थात् सदा के लिए।

आचपराच (वि०) [आ+अञ्च्+क्विन्+परापूर्वक +अण्] इधर उधर घूमने वाला।

आचमनवाहिन् (पुं०) [आचमन+वाह् णिनि] पानी निकालने वाला पानी खींच कर निकालने वाला, पनिहारा।

आचान्ति (स्त्री०) [आ+चम्+क्तिन्] मुखशुद्धि के लिए आचमन करना।

आचरित (वि०) [आचर्+क्त] बसाया हुआ, बसा हुआ देशमासाद्य [illegible] शुभम् रा० ११२५। १४।

आचारचाक्रिक [आचार चक्र+इनि] वैष्णव, सम्प्रदाय के सदस्य।

आचारपुष्पाञ्जलि (स्त्री०) (प्रवेश करते समय घर के द्वार पर ही) धार्मिक प्रथा के रूप में पुष्पों का उपहार भेंट करना।

आचार्यदेशीय (वि०) [आचार्यदेश+छ] आचार्य से कुछ निम्न पद का (भाष्यकारों ने इस उपाधि का उन विद्वानों के नामों के साथ जोड़ा है जिनकी उक्ति मात्र के एक अंश को ही प्रकट करती है)।

आचार्यकः [आचार्य+वु+अण्] एकाह—अर्थात् एक दिन तक रहने वाला यज्ञ का नाम।

आचार्यकम् [आचार्य+क] 1 आचार्य का पद- आत्मवाचार्यकं कुर्वन्निव क्रीडाविज्ञानविषयाम्—मा० १।११०६ 2. आचार्य का सम्मान करना यथाकाराचार्यक तव कुन्तीपुत्रो धनञ्जय महा० ७।१४७।९ 3 भाष्यकर्ता या व्याख्याकार का कर्तव्य भुवनव्याख्याचार्यकम् —विक्रम० २८९।

आचेष्टित (वि०) [आ+चेष्ट्+क्त] उपक्रान्त, बचन दिया हुआ, तम् कार्य, कृत्य, कार्यकलाप।

आच्छन्न (वि०) [आ+छद्+क्त] आवृत, ढका हुआ।

आच्छादनम् [आ+छद्+णिच्+ल्युट्] बिस्तरे की चादर।

आजात (वि०) [आ+जन्+क्त] उच्च कुल में उत्पन्न, यो वै कश्चिदिहाजातः क्षत्रियः क्षत्रकर्मवित्—महा० ५।१३४।३८।

आजानिक (वि०) [आ+जाया (जानि) स्वार्थे कन्] अन्तर्जात, नैसर्गिक आजानिकरागभूमिता—नै० १५।५४, अ० स० ५।

आजपादम् (नपुं०) पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र।

आजिमुखम् [ष० त०] युद्ध का अग्रभाग।

आजीवितान्तम् (अ०) मरने तक मृत्युपर्यंत।

आज्यस्थाली [ष० त०] घी का कटोरा।

आज्यभागः [ष० त०] घी की आहुति का हिस्सा।

आञ्जनाभ्यञ्जने (नपुं० कर्म० द्वि० व०) आँखों का अंजन और पैरों का उबटन।

आञ्जलिकः [अञ्जलि+ठक्] अर्धचन्द्र के आकार का एक तीर।

आटविकः [अटव्यां चरति भवो वा ठक्] जंगली जनजाति का चौधरी—कौ० अ० १।१०।

आटूषरोगः [आ+ध्यै क पृषो०, रुज्+घञ्] गठिया सन्धिवात।

आण्डकोशः [अण्ड+अण्+कोश] अंडे का खोल।

आतङ्कम् [आ+तङ्क्+घञ्, कुम्भम्] भरणी नक्षत्र।

आतप्त (वि०) [आ+तप्+क्त] गर्म किया हुआ, आग में तपाया हुआ।

आतिशायिक (वि०) [अतिशय+ठक्] अतिप्रचुर, बहुत अधिक।

आतिष्ठद्गु (अ०) [तिष्ठन्ति गावः यस्मिन्काले दोहाय] उस समय तक जब तक कि गौएँ दुहे जाने के लिए ठहरती हैं (सायंकाल के बाद एक डेढ़ घंटा तक) —आतिष्ठद्गु जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४।१४।

आत्मन् (पुं०) [अत्+मनिण्] मानसिक गुण—आत्मसद्विधैर्या सत्त्वं सत्यमात्मसम्भव—महा० १२।१६७।५। (समस्त शब्दों में आत्मन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम०—आनन्दः आत्मा को प्राप्त होने वाला परम सुख परमानन्द,—औपम्यम् स्वसादृश्य, अपनी तुलनाना-आत्मौपम्येन सर्वत्र भग० ६।३२,—कर्मन् (नपुं०) अपना कर्तव्य, ज्योतिः (नपुं०) आत्मा की प्रभा तेज तृप्त (वि०) अपने में सन्तुष्ट—आत्मतृप्तश्च मानवः—भग० ३।१७, प्रत्ययिक (वि०) अपने अनुभव से जानकारी प्राप्त करने वाला—आत्मप्रत्ययिकं शास्त्रम् महा० १२।२४६।१३, भूः कामदेव,—वर्ग्य (वि०) अपने दल या समुदाय से सम्बन्ध रखने वाला, उद्बाहुना जुहुविरे मुहुरात्मवर्ग्यैः —शि० ५।१५ संस्थ (वि०) अपने पर ही दृष्टि जमाये हुए—आत्मसंस्थं मनः कृत्वा—भग० ६।२५, सतत्त्वम् दे० आत्मतत्त्वम्, —स्थ (वि०) जो अपने अधिकार में हो—आत्मस्थं कुरु शासनम्—रा० २।२१।८।

आत्ययिक (वि०) [अत्यय+ठक्] विलम्बित, जिसमें पहले ही देर हो गई हो—कृत्यमात्ययिकं स्मरन्—रा० ५।५८।४९।

आत्ययिकम् [अत्यय+ठक्] 1 कठिनाई संकट 2 अनिवार्य कर्तव्य।

आत्रेयी [अत्रेरपत्य ढक्, स्त्रियां ङीप्] गर्भिणी स्त्री महा० १२।१६५।५४, आत्रेयीमापन्नगर्भामाहुः—बौ० सू० १। १७ पर शा० भा०।

आथर्वणम् [अथर्वन्+अण्] मारण मारन टोना, जादू।

आदष्ट (वि०) [आ+दश्+क्त] कुतरा हुआ, चोंच मारा हुआ, टूंगा हुआ।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] पुराभूत करना, पराजित करना—अथवा मन्त्रसंग्रहः सूयुरात्मादानाय दुष्कृतम्—महा० १२।२१२।

आदानसमितिः (स्त्री०) जैनियों के पाँच सिद्धान्तों में से एक जिसमें वस्तु को इस प्रकार ग्रहण किया जाता है जिससे कि कोई जीवहत्या न हो।

आदाल्म्यम् निर्भयता महा० १२।१२०।५।

आदिः [आ+दा+कि] 1 प्रथम, प्रारम्भिक 2 साम के सात भेदों में से एक—अथ सप्तविधस्य साम्नि उपासनं नामोपासीत······यदेति स आदिः—छा० २।८।१। सम०—दीपकम् दीपकालंकार का एक भेद (जहाँ क्रिया वाक्य के आरम्भ में हो),—विपुला आर्या छन्द का एक भेद, वृक्षः एक प्रकार का पौधा।

आदित्यदर्शनम् [ष० त०] एक संस्कार जिसमें चार मास के बच्चे को सूर्य दर्शन कराया जाता है।

आदित्यपुराणम् एक उपपुराण का नाम।

आदीनवदर्श (वि०) [आ+दी+क्त+वा+क, दृश्+घञ्] पासे के खेल में अपने साथी खिलाड़ी के प्रति दुर्भावना रखने वाला।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] किसी कार्य को करने का संकल्प, व्रत—उद्धृत में स्वच तीव व्रतादेशं करिष्यति

—रा० २।२२।२८। सम०—कृत् जो आज्ञा का पालन करता है तवादेशकृतोऽस्मियान्तु रा० ५।५२।

आदेशिकः [आदेश+ठक्] भविष्यवक्ता, ज्योतिषी—पुष्य प्रासादिकैरादेशिकैरादिष्टा स्वप्न० १।

आद्यकालिक (वि०) [आद्यो भव यत् - काल+ठक्] केवल वर्तमान को देखने वाला—आद्यकालिकया बुद्ध्या दूरे श्व इति निर्भयाः—महा० १२।३२१।१४।

आधमर्णिकः [अधम+ऋणिकः] कर्जदार, मूलात् द्विगुणा वृद्धिर्गृहीता चाधमर्णिकात् शुक्र० ४।८८०।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] मैथुन—तथापि मृत्युराधानाद्बालकस्य दर्शितः -- भाग० ९।९।३६।

आधिः [आ+धा+कि] बन्धक, एतमाधिं दापयिष्येऽस्मात्तेन मदं क्वचित्—शुक्र० ४।६४१।

आधिमासिक (वि०) [अधिमास+ठक्] अधिमास या मलमास से संबंध रखने वाला—करणाधिष्ठितमाधिमासिकम्—कौ० अ० २।७।

आधिरथिः [अधिरथ+इञ्] अधिरथ का पुत्र, कर्ण—हत्वा भीष्ममाधिरथिर्विजिहितो—महा० ७।२।१।

आधूत (वि०) [आ+धू+क्त] हिलाया हुआ, क्षुब्ध—पवनाधूतलतासु विभ्रमः—रघु० ६।

आधारः [आ+धृ+घञ्] किरण,—आधार आलवाले मन्धुबन्धे च किरणेऽपि च—नाना०। सम०—चक्रम् रहस्यमय या अलौकिक चक्र जो शरीर के मलद्वार के पास पेट में स्थित है—कर्मणाधारचक्रे तत्क्षणमखनाथं धारणास्थं विधेयम् - चक्रेश०।

आनतिकरः [आ+नम्+क्तिन्+कृ+अच्] उपहार, पारितोषिक।

आनद्धः [आ+नह्+क्त] ढोल या नगाड़ा—अथानकानद्धनिस्वानाभ्यनादि -- नै० १५।१६।

आनन्दकरः [आनन्द+कृ+अच्] चन्द्रमा,—काष्ठा यथानन्दकरं मनस्तः भाग० १०।२।१८।

आनन्दतीर्थः द्वैतसंप्रदाय का संस्थापक श्री माध्वाचार्य।

आनन्दभैरवी संगीत का एक भेद।

आनर्तः,—तम् [आ+नृत्+घञ्] नाच।

आनुजीव्यम् [अनुजीवि+ष्यञ्] सेवक के प्रति नम्रता का व्यवहार—चतुष्कुलनिवासाद्यानुजीव्यानभिज्ञः—शुन० १।१९।

आनुपथ्य (वि०) [अनुपथ+ष्यञ्] सड़क के साथ-साथ चलने वाला।

आनुपूर्वीवत् (वि०) [अनुपूर्व+ष्यञ्,+मतुप्] निश्चित, नियत क्रम को रखने वाला।

आनुयात्रम् [अनुयात्रा+अण्] दे० अनुयात्रिक।

आनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठक्] अनुचर, सेवक।

आनुषङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग+ठक्] 1. गौण कार्य 2. विकासक।

आनृत् (दिवा० पर०) नाचना, उछलना—आनृत्यतः शिखण्डिनो—अथ० ४।३७।७।

आनृशंस्यम् [अनृशंस+ष्यञ्] परपीडक की आतुरता—स्त्री प्रपाल्येति कारुण्यादाश्रितेरयानृशंस्यत -रा० ५।१५।५०।

आन्तःपुरिक (वि०) [अन्तःपुर+ठक्] अन्तःपुर से संबंध रखने वाला।

आन्तःपुरी [अन्तःपुरे भव अण्, स्त्रियां ङीप्] अन्तःपुर की सेविका, नौकरानी —नै० १९।६५ पर नारायण।

आन्तरागारिकः [अन्तरागार+ठक्] कञ्चुकी।

आन्तर्वेदिक (वि०) [अन्तर्वेद+ठञ्] यज्ञवेदी के अन्दर वर्तमान।

आन्यतरेय (वि०) [अन्यतरा+ढक्] किसी अन्य विचारधारा या सम्प्रदाय से संबंध रखने वाला।

आपच्छिद (वि०) कठिनाइयों को पार करने वाला।

आपणः [आपण्+घञ्] व्यापारिक क्रियाकलाप, वाणिज्य पिहितापणोदया —रा० २।४८।३७। सम०—वीथिका बाजार, वेदिका विक्रयफलक।

आपदेवः वरुण का नाम, एक मीमांसक का नाम।

आपरपक्षीय (वि०) [अपरपक्ष+छ] कृष्णपक्ष से संबन्ध रखने वाला।

आपातमात्र (वि०) क्षणस्थायी, क्षणमात्र रहने वाला।

आपातिन् (वि०) आक्रमण की इच्छा से आगे बढ़ता हुआ, (किसी शत्रु पर) टूट पड़ने वाला आपातिकौपिकगिराकरणाकुलेन शि० ५।१५।

आपृष्ट (वि०) [आ+प्रच्छ्+क्त] 1. सत्कृत 2. पूछा गया आपृष्टः कस्यचित्कुशलात्।

आपोशानः [ष० त०] एक प्रकार के प्रार्थना मन्त्र जो भोजन से पूर्व और भोजन के पश्चात् आचमन करते समय बोले जाते हैं नै० १९।२८।

आप्त (वि०) [आप्+क्त] लाभप्रद, उपयोगी—अधिष्ठितं हयश्रेष्ठं सुतेनाप्तोपदेशिना -रा० ६।९०।१०। सम०—अधीन (आप्ताधीन) (वि०) विश्वसनीय व्यक्ति पर निर्भर रहने वाला,—आगमः (आप्तागमः) विश्वसनीय वैदिक वाक्य परोक्षमाप्तागमात् सिद्धम् सां० का० ६,—उक्ति (स्त्री०) (आप्तोक्ति) 1 आगम 2 अनुश्रुति 3 सामान्य कथन जो प्रकीमत मान लिया गया हो, —उपदेशः (आप्तोपदेशः) किसी विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा दी गई नसीहत,—आप्तोर्यामः एक प्रकार का यज्ञ।

आप्य (वि०)[आपो देवता अस्य अण्, स्वार्थे ष्यञ्] पनकीड़ा, एक प्रकार का कीड़ा जो पानी में ही उत्पन्न होता है।

आप्यम् (नपुं०) (वेद०) जल, पानी—पृथिव्याप्यतेजोनिलमानि वेदा० २।१२।

आप्यायः [आप्यै+घञ्] पूरा होना, फूलना, मोटा होना।

आप्यायनीय (वि०) [आप्यै+अनीय] सन्तुष्ट होने के योग्य, प्रसन्न होने के योग्य।

आप्रवण (वि०) [आ+प्रु+ल्युट्] ईषत्प्रवण, कुछ ढालीन, थोड़ा झुका हुआ।

आप्लुत (वि०) [आप्लु+क्त] ग्रहणग्रस्त—अवाङ्मुखमभीवीन दृष्ट्वा सोमभिवाप्लुतम् रा० ७।१०६।१।

आप्लुष्ट (वि०) [आप्लुष्+क्त] ईषद्दग्ध, झुलसा हुआ—दिवाकराप्लुष्टविभूषणास्पदाम्- कु० ५।४८।

आफलकः [आ+फल+कन्] घेरा, बाड़ा—वार्याफलकपर्यन्तां पिबन्निक्षुमतीं नदीम् रा० २।७०।३।

आफीनम् (नपुं०) अफ़ीम।

आबद्धमण्डल | (वि०) [न० ब०] गोलाकार बनाना,
आबद्धमालक | माला।

आबभ्रुर (वि०) [आबभ्रु+उरच्] थोड़ा भूरा।

आबालम् (अ०) बच्चे तक, बच्चे से लेकर। सम० गोपालकम् (अ०) बच्चों और ग्वालों समेत —वृद्धम् (अ०) बच्चों से लेकर बूढ़ों तक।

आब्रह्म (अ०) ब्रह्म तक।

आभङ्गम् (नपुं०) किसी मूर्ति की झुकी हुई मुद्रा।

आभात (वि०) [आभा+क्त] 1. चमकीला, देदीप्यमान 2. प्रतीयमान।

आभासः [आभास्+घञ्] 1 मूर्ति ढालने के सौ पदार्थों में से एक 2. एक प्रकार का भवन 3 पूजा की एक अप्रामाणिक रीति—विधर्मः परधर्मश्च आभास उपमा छल:, अधर्मशाखाः पञ्चेमा धर्मज्ञोऽधर्मवत्त्यजेत् —भाग० ७।१५।१२।

आभास्वरः (पुं०) निम्नांकित बारह विषयों का एक समूह तु०—आत्मा ज्ञाता दमो दान्तः शान्तिर्ज्ञानं शमस्तपः काम क्रोधो मदो मोहो द्वादशा भास्वरा इमे तारा०।

आभिप्रायिक (वि०) [अभिप्राय+ठक्] ऐच्छिक, इच्छानुगामी।

आभिमन्यवः [अभिमन्यु+अण्] अभिमन्यु का पुत्र, परीक्षित।

आभियोगिक (वि०) [अभियोग+ठक्] दक्षता से किया गया, चतुराई से युक्त।

आभृत (वि०) [आ+भृ+क्त] 1 उपजाया हुआ, पैदा किया हुआ भाग० ३।२६।६ 2 भरा पूरा, स्थिर —आभृतात्मा मुनिः भाग० ४।८।५६।

आभ्यागारिक (वि०) [अभ्यागार+ठक्] घर में रखने के योग्य।

आभ्र (वि०) [अभ्र+अण्] अभ्रक से निर्मित—चन्द्राभमाभ्रं तिलकं दधाना नै० ११।६२।

आमचेष्टा [म० त०] कच्ची अवस्था में गोता गया काम।

आमन्त्रित (वि०) [आ+मन्त्र्+क्त] मन्त्र बोल कर वर्णित किया गया—अपां आमन्त्रितानाम्—महा० ३।२०।२६। सम० वचनम् संबोधन अर्थ में प्रयुक्त शब्द, विभक्तिः संबोधन अर्थ को प्रकट करने वाली विभक्ति।

आमन्त्रितम् (नपुं०) [आमन्त्र्+क्त] 1 सम्बोधित करना 2. संलाप 3 संबोधन की विभक्ति।

आमालकः (पुं०) पहाड़ी स्थान।

आमिषार्थी (वि०) [अम् टिषच् दीर्घश्च तमर्थयति इति] मांस चाहनेवाला, मांस के लिए निवेदन करने वाला।

आमुकुलित (वि०) [आमुकुल+इतच्] थोड़ा सा खुला हुआ।

आमुक्तम् [आमुच्+क्त] कवच।

आमुचः (पुं०) कांटेदार बांस।

आमोगः (पुं०) कवि की रचना की अन्तिम पंक्ति जिसमें कवि का नाम बताया गया हो यत्रैव कविनामस्यात्स आमोग इतीरितः —संगीत दामोदर।

आम्रः [अमगत्यादिषु रत्दीर्घश्च] आम का वृक्ष। सम० अस्थि आम की गुठली, आम का बीज,—पञ्चमः संगीत का एक विशेष राग, —फलप्रपानकम् आमों के रस से तैयार किया हुआ एक शीतल पेय।

आम्लपञ्चकम् [आम्लपञ्च+कन्] इमली आदि पांच (बेर, अनार, करौंदा, इमली और कमरक) फलों के रस से तैयार किया गया एक आयुर्वेदिक पदार्थ।

आयः [आ+इ+अच्, अय् घञ् वा] आमदनी का स्रोत —मार्गस्थायमलं दर्शनं —महा० १३।१६३।५। सम० वर्जिन् (वि०, राजस्व-समाहर्ता,—मुखम् राजस्व के रूप कौ० अ० २।६ —शरीरम् आय का शरीर कौ० अ० २।६।

आयथापूर्वम्,—पूर्व्यम् (नपुं०) ऐसी स्थिति या अवस्था का होना जैसी पहले नहीं थी।

आयत (वि०) [आयम्+क्त] सुप्त, सोया हुआ,—तं नायतं बोधयेदित्याहुः बृ० ४।३।१४।

आयति. (स्त्री०) [आ+या+क्तिन्] वंश परंपरा, वंशविवरण पीढ़ी—द्रक्ष्यन्ति समरे योधा शलभानामिवायतीः —महा० ७।१४९।३१।

आयस्तम् [आ+यस्+क्त] महान् प्रयत्न, शक्ति का विस्तार—न म गर्वितमायस्तं सहिष्यति दुरात्मवान् रा० ४।१६।९।

आयानम् [आ+या+ल्युट्] घोड़े का आभूषण।

आयुष्यमन्त्रः (पुं०) ऋग्वेद का मन्त्र जो "यो ब्रह्माब्रह्मण उज्जहार···" से आरंभ होता है।

आयुष्यहोमः [आयुः प्रयोजनमस्य यत्, हु+मन्] यज्ञ विशेष जिसके अनुष्ठान से मनुष्य दीर्घजीवी हो सकता है।

आयोजनम् (अ०) एक योजन की दूरी तक।

आयोदः (पुं०) अयोद का पुत्र मुनि धौम्य।

आरङ्गरः (पुं०) मधुमक्खी (वेद०)--आरङ्गरेव मध्वेरयेथे ऋ० १०।१०६।१० ।

आरण्यकसामन् (नपुं०) सामवेद का एक सूक्त ।

आरम्भः [आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1. शुरू 2. पहला अङ्क । सम०-- आरम्भत्वम् क्रियाशीलता के द्वारा ही उत्पादन की स्थिति--मी० सू० ११।१।२०, --रुचिः किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को शुरू करने में रुचि, --शूरः जो व्यक्ति शुरू शुरू में बहुत अधिक उत्साह दिखलाता है ।

आरवडिण्डिमः [ब० त०] एक प्रकार का ढोल--चण्डिरसितरसनारवडिण्डिममभिसर सरसमलज्जम् -गीत० ११।६ ।

आरासः [आ+रास्+घञ्] घोर शब्द ।

आरीण (वि०) [आ+री+क्त] बिल्कुल सूखा हुआ -आरीणलवणजल भट्टि० १२।४ ।

आरुतम् [आ+रु+क्त] क्रन्दन, विलाप, रोना-धोना - निपेतुः शतशस्तत्र दारुणा दारुणारुता रा० ५।१०६।३१ ।

आरुणेयः [आरुणि+ढक्] आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु ।

आरोग्यम् [अरोगस्य भावः--ष्यञ्] रोग से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य । सम०--अम्बु (नपुं०) स्वास्थ्यप्रद जल, --चिन्तामणिः आयुर्वेद के एक ग्रन्थ का नाम --प्रतिपद्व्रतम् स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए एक व्रत ।

आरोपयितृ (वि०) [आ+रुप्+णिच्+तृच्] धारण करने वाला ।

आर्कम् (अ०) [आ+अर्कम्] सूर्य तक -आकल्पमार्कमर्हन् भगवन्नमन्ते--भाग० १०।१६।४० ।

आर्चिक (वि०) [न० ब०] ऋचाओं में विद्यमान ।

आर्चिकम् [अर्चा अस्त्यस्य अण्, स्वार्थे कन्] ऋग्वेद के मन्त्रों से युक्त, सामवेद ।

आर्जवम् [ऋजोर्भावः अण्] सम्मुख भाग, (अधि० आर्जवे = सम्मुख भाग में सीधा) ददर्शास्यार्जवे -- मै० म० ११।१।१५ पर शा० भा० ।

आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] असुविधाजनक आर्ता यस्मिन् काले भवन्ति स आर्तः कालः मै० म० ६।५।३७ पर शा० भा० । सम० --त्राणम् जो कठिनाइयों में ग्रस्त हैं उनको बचाना ।

आर्तवम् [ऋतुरस्य प्राप्त इति अण्] मासिक ऋतुस्राव, - गिरिकाया प्रयच्छाशु हस्या शैलेनसत्तवे महा० १।६३।५५ ।

आर्द्र (वि०) [आ+अर्द्+रक्, दीर्घश्च] गीला, तर । सम० --एधाग्निः आग जो गीली लकड़ियों द्वारा सुरक्षित रखी जाती है--यथार्द्रैधाग्नेः पृथग्धूमा निश्चरन्ति शत०, --कपोलितः उन्माद काल की दूसरी अवस्था में हाथी जब कि उसका गण्डस्थल मद से गीला हो जाता है, --पवकः बांस, --भावः 1 गीलापन 2. कृपा, मृदुता --वपुर्मनोऽप्यस्य दयार्द्रभावम्--रघु० २।११ ।

आर्द्रिका (स्त्री०) हरा या गीला अदरक ।

आर्भवम् [ऋभु+अण्] प्रचुरता, बाहुल्य ।

आर्धनारीश्वरम् [अर्धनारीश्वर+अण्] भगवान् शिव के अर्धनारीश्वर रूप से सम्बद्ध ।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्यावर्त का निवासी 2 योग्य, आदरणीय, सम्मानयोग्य । सम०--आगमः (आर्या+आगम) आर्य जाति की महिला के पास संभोग की इच्छा से पहुँचना अन्त्यस्यार्यागमे वध याज्ञ० २।२९४, --जुष्ट (वि०) आर्यजनों के द्वारा अनुमोदित तथा अनुगत, --मतिः जिसकी बुद्धि बहुत अच्छी है, --वाच् (वि०) आर्य जाति की भाषा बोलने वाला, --शील उत्तम चरित्र से युक्त, अच्छे शील वाला, --सिद्धान्तः आर्यभट्टकृत ग्रन्थ, --स्त्री आर्यमहिला ।

आर्षधर्मः [ऋषि+अण्, आर्ष+ठक्, मत० ष्यञ्] आर्यधर्म, वह धर्म जिसकी ऋषियों ने स्थापना की है ।

आलककन्दकम् (नपुं०) एक प्रकार का मूँगा, प्रवाल--कौ० अ० २।११ ।

आलग्न (वि०) [आलग्+क्त] पालन करता हुआ, चिपका हुआ, अनुरक्त ।

आलम्बनम् [आलम्ब्+ल्युट्] मन के अनुरूप धर्म ।

आलानम् [आलीयतेऽत्र आ+ली+ल्युट्] लगाव या स्थिरता का बिन्दु, (पोल, खूँटा या रस्सी आदि) - उत्खात वा धमिना मना वा गोपाङ्गनानां कुचकुड्मल वा मर्यादिताम्भ कलभस्य नूनमालानमासीत् नयमेव भूमी - कृष्ण० ।

आलापा [आलप्+घञ्, टाप्] संगीत की एक मधुर ध्वनि ।

आलापनम् [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] संगीत शास्त्र के किसी एक राग की विशेषताओं का वर्णन ।

आलिकम [आ+अल्+इन्, कम्+घञ्] एक प्रकार की संगीत रचना, संगीतनिबन्ध ।

आलिजनः [आलि+जन] सहेलियाँ ।

आलेख्यगत (समर्पित) (वि०) [आलेख्यं गतः--ष० त०] चित्र में चित्रित, चित्रित भित्तिदीपा, सहसा हतत्विषा बभूव रालेख्यसमर्पिता इव -- रघु० ३।१५ ।।

आलिङ्ग्य (वि०) [आलिङ्ग्+ण्यत्] आलिङ्गन करने के योग्य मै० ७।६६ ।

आलयः [आलीयतेऽस्मिन् आ+ली+अच्] धाम, आवास, मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिताः केचिदालयाः --रा० ४।४०।२५ ।

आलीन (वि०) [आली + क्त] बन्द, मुक्त—भ्रमरालीनपद्मम् ।

आलीढा [आ + लिह् + क्त + टाप्] ऋतुमती स्त्री—नालीढया परिहृत भक्षयोन कदाचन महा० १८।१०४।६० ।

आलुलित (वि०) [आलुल् + क्त] क्षुब्ध, ईषदुद्विग्न, जरा सा घबराया हुआ ।

आलेपनम् [आलिम्प् + णिच् + ल्युट्] 1 पानी मिला हुआ आटा जिससे घर का द्वार सजाया जाता है, विशेषत दक्षिण भारत में—विधुमालेपनपाण्डुरम् —नै० २।२६ 2 रंगना या सफेदी लीपना आलेपनदानपण्डिता नै० १५।१२ ।

आलोक: [आलोक् + घञ्] 1 केवल दर्शन आलोकमपि रामस्य न पश्यन्ति स्म दुःखिता – रा० २।४७।१२ ।

आलोकक: [आलोक् + ण्वुल्] दर्शक, देखने वाला ।

आवपनम् [आवप् + ल्युट्] 1 उद्गमस्थान –यस्य छन्दोमयं ब्रह्म देह आवपनं विभो भाग० १०।८०।४५ 2. पटसन से निर्मित कपड़ा ।

आवाप: [आवप् + घञ्] तान्त्रिकों के मतानुसार मन्त्र की बार-बार आवृत्ति जिससे अनेक कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है यस्तु आवृत्त्या उपकरोति स आवाप. मै० स० ११।१ पर शा० भा० ।

आवरणम् [आवृ + ल्युट्] 1 कवच कि० १७।५९ 2 भ्रम भ्रान्ति ।

आवरीवस् (वि०) [आवृ यङ् वस्] छादन, चादर, ढकना —अनर्घ० ७३ ।

आवर्जक (वि०) [आवृज् + ण्वुल्] आकर्षक ।

आवर्तनम् [आवृत् + ल्युट्] चक्र, आवर्तनानि चत्वारि - महा० १३।१०७।२० ।

आवासित (वि०) [आवस णिच् क्त] बसा हुआ व्याप्त पूर्ण, भरा हुआ दैत्यावासित दिक् शि० १ ।

आवास् (चुरा० पर०) (आ पूर्वक वास) सुगन्धित करना वास युक्त करना —आवासयन्त्या गन्धेन रा० २।१०३।४१ ।

आवि: (स्त्री०) [अवि एव स्वार्थे अण्] पीड़ा, कष्ट, प्रसववेदना ।

आवितन् (तना० आ०) व्याप्त होना, शील्काकानाविततन्वाना भाग० ३।२०।३७ ।

आवित्त (वि०) [आविद् क्त] विद्यमान ।

आविद्ध (वि०) [आ व्यध् + क्त] पास-पास रक्खा हुआ, छितराया हुआ स पाण्डुराविद्धविमानमालिनीम् रा० ५।२।५३ ।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टिं स्तृणाति बिल् स्तृतौ क] धुंधला, अस्पष्ट, जो देख न सके ।

आविर्भूत (वि०) [आविस् + भू + क्त] प्रकट हुआ हुआ, आविर्भूतप्रथममुकुला कन्दलीश्चानुकच्छम्—मेघ० ।

आविर्मण्डल (वि०) [ब० स०] जो वृत्त के रूप में दिखाई दे—विधुरति धनुराविर्मण्डलं पाण्डुसूनौ—कि० १८।६५ ।

आविर्हित (वि०) [आविस् + धा + क्त] जो दृश्य बना दिया गया हो ।

आवृत्तम् [आवृत् + क्त] बार-बार प्रार्थना या गीत से देवता को सम्बोधित करना ।

आवृद्धबालकम् (अ०) बूढ़ा से लेकर बच्चों तक ।

आव्यक्त (वि०) [आवि + अञ्ज् + क्त] स्पष्ट सुबोध, तद्वाक्यमाव्यक्तपदं निशम्य— रा० ७।८८।२० ।

आशास् (वेद०) (अदा० आ०) दमन करना—ऋ० २।२८।९ ।

आशावासस् (वि०) [ब० स०] नंगा, नग्न ।

आशिक्षा [आशिक्ष् अङ् टाप्] सीखने की इच्छा, वाज० ३०।१० ।

आशुकवि: [क० स०] जो तुरन्त ही (बिना पहले से सोचे) काव्य रचना कर सके ।

आश्रमपरिग्रह: [ष० त०] सन्यास (चौथा आश्रम) ग्रहण करना ।

आश्रमवासिपर्वन् [ष० त०] महाभारत के पन्द्रहवें पर्व का प्रथम अनुभाग ।

आश्रव: [आश्रु + अच्] सांसारिक कष्ट, —मलिनकं-विषाग्मवारा शान्तं प्रथमं ध्यानमनाश्रवप्रकारम् बु० च० ५।१० ।

आश्लेषणम् [आश्लिष् + ल्युट्] आसक्ति, अनुरक्ति ।

आश्वासिक (वि०) [आश्वास + ठक्] विश्वसनीय, विश्वासपात्र ।

आश्विनविद्युतम् (नपुं०) शारदीय विद्युत ।

आस् (आ) (अ०) उदासीनता द्योतक अव्यय ननु आस्ते इत्युपवेशने भवति । नाप्यनुपवेशने एव, औदासीन्येऽपि दृश्यते । मी० सू० ३।६।२४ पर शा० भा० ।

आसक्त (वि०) [आसञ्ज् + क्त] अवरुद्ध, बन्द —कार्तवीर्यभुजासक्तं तज्जलं प्राप्य निर्मलम्—रा० ७।३२।५ ।

आसंज्ञित (वि०) [आसंज्ञा + इतच्] जिसके साथ कोई समझौता हो गया है, सम्मिलित ।

आसद् (प्रेर०) धारण करना, पहनना आसादय कवचं दिव्यं रा० ७।६।६४ ।

आसत्ति: (स्त्री०) [आसद् + क्तिन्] उलझन, घबराहट न च ते क्वचिदासत्तिर्बुद्धेः प्रादुर्भविष्यति—महा० १२।५२।१७ ।

आसनम् [आस् + ल्युट्] 1 हौदा, हाथी की ग्रीवा और पीठ का मध्यवर्ती भाग जहाँ हस्त्यारोही बैठता है 2 तटस्थता—कौ० अ० ७।१ 3 पासे के खेल में प्रयुक्त मोहरा । सम० - मधूककम् बीवं ।

आसन्न (वि०) [आसद्+क्त] अवाप्त, प्राप्त—आह्वोरासन्नां कीर्तिमायं मनन्य—रा० ५।६३।१३। सम० —चर (वि०) आसपास ही घूमने वाला।

आसमुद्रान्तम् (अ०) समुद्र के किनारे तक।

आसुरायणः [आसुरि+फक्] 1 आसुरि की सन्तान 2. एक वैदिक सम्प्रदाय।

आसेचनक (वि०) [आसिच्+ल्युट्+कन्] अत्यंत मनोहर जो असीम सन्तोष के देने वाला हो (उदाहरणत: नैषधासेचनकम्) दे० नैषध० (हिन्दी का संस्करण) पृष्ठ ५५९।

* आस्तरकः [आ+स्तृ+ण्वुल्] बिस्तर बिछाने वाला —कौ० अ० २।१२।

आस्तारकः [आस्तृ+घञ्, स्वार्थे कन्] अंगीठी में लगने वाली जाली, झंझरा।

आस्तीर्ण (वि०) [आस्तृ+क्त] 1 बिखरा हुआ, फैला हुआ 2. ढका हुआ।

आस्थानपद्-पदम् [आस्थान+पद्+क्त] सिंहासन राजगद्दी—दी० १०।५७।

आस्थेय (वि०) [आस्था+ण्यत्] 1. अर्थ्य, जिसके पास पहुँच की जाय, जिससे प्रार्थना की जाय 2. आदरणीय।

आस्फुट् (भ्वा० पर०) आन्दोलन करना, हिलाना।

आस्फोटितम् [आस्फुट्+क्त] तालियाँ बजाना, बाहुओं से प्रहार करना—आस्फोटितनिनादांश्च —रा० ५।४३।१२, तस्यास्फोटित शब्देन रा० ५।४४।७।

आस्यूत (वि०) [आ+सिव्+क्त] मिला कर सीया हुआ।

आस्रु (वि०) [आस्रु+क्विप्] खूब बहने वाला, धारा प्रवाह से रिसने वाला।

आस्नुवत् (वि०) [न० ब०] खूब दूध देने वाली गाय — बणाद्बुहतीं राजुनया अवेन —भाग० १०।१३।३०।

आस्वादित (वि०) [आ+स्वद्+णिच्+क्त] जिसने स्वाद ले लिया हो, अनुभवी—मधु नवमनास्वादितरसम् श०।

आहत्य (अ०) [आहन्+ल्यप्] प्रहार करके, मार कर, पीट कर। सम० वचनम् ललकारने वाला वक्तव्य।

आहारतेजस् (नपुं०) पारा, पारद।

आहार्यशोभा (स्त्री०) बनाया हुआ सौन्दर्य (विप० नैसर्गिक शोभा)।

आहितकः [आ+धा+क्त, स्वार्थे कन्] भाड़े का—कौ० अ० २।१।

आहुत (वि०) [आ+हु+क्त] कृत्रिम, बनावटी —आहुता हि विषयैकतानता ज्ञानधौतमनसं न लिम्पति —नै० १८।२।

इ

इक्षुः [इष्+क्सु] एक प्रकार का बांस—मौक्तिकैरिक्षुकुक्षिजैः —नै० २०।२१ (नारा० भाष्य० इक्षुर्वंशविशेषः)।

इक्षुमती (स्त्री०) [इक्षु+मतुप्+ङीप्] कुरुक्षेत्र प्रदेश में बहने वाली एक नदी।

इक्षुवारि(लि)कः [इक्षु+वल्+ण्वुल्] नरकुल, सरकण्डा।

इङ्गालकः [इङ्ग+आलच्] कोयला—चितेऽङ्गारिङ्गालमिवायसः परै—शि० सं०, इङ्गाल कारिकाग्निविद् नैज०।

इडा } [इल्+अच्, लस्य डत्व वा] सामगान में प्रयुक्त
इळा } स्तोम नामक संगीत।

इडावालः [पं० त०] गुग्गुल।

इत्वीकः (पुं०) कलम घड़ने वाला चाकू।

इतिः (स्त्री०) [इ+क्तिन्] 1 ज्ञान 2. चाल, गति —श० चि०।

इतिक (वि०) [इति+कन्] गतियुक्त, चाल रखने वाला।

इतिहासकथोद्भूतम् [त० स०] किसी पौराणिक आख्यान या महाकाव्य से ली गई कथावस्तु—इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्, काव्यं कल्पान्तरस्थायि —काव्या०।

इल्वकः (पुं०) एक प्रकार का माष।

इन्दीवरम् (नपुं०) नीलकमल - निघ०।

इद्धा (अ०) विशद, प्रकट, स्पष्ट।

इल्वका [इल्+ण्वुल्+टाप्] मृगशीर्ष नक्षत्र पुंज में ऊपर रहने वाला तारा।

इन्दिरारमणः [इन्द्+किरच्+टाप्+रम्+ल्युट्] विष्णु - अन्तरा सकलसुन्दरीयुगलमिन्दिरारमणसञ्चरत् —नारा० ९५।

इन्दुः [उन्द्+उ, ओदेरिच्च] 1 चन्द्रमा 2 अनुस्वार की परिभाषा। सम०—पुष्पी कमल बेल, —वल्ली सोम का पौधा, —शेखरिन् एक पौधे का नाम, —सुतः, —सूनुः बुधनामक ग्रह।

इन्दुकः [इन्दु+कन्] दे० 'इन्दुशेखरिन्'।

इन्द्रः [इन्दतीति इन्द्+रन्] 1. देवों का स्वामी 2. ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय। सम०—आयुधम् 1. इन्द्रधनुष 2 हीरा, —कान्तः पारसीकों के भवन का एक प्रकार —मान०—२१।६०।६८, —च्छन्दः (इन्द्रच्छन्द) मोतियों की माला, —पालि, —कर्म, —जतु (नपुं०) शिलाजीत, बुद्धि वर्धन, —प्रमतिः वैदिक ऋषि, पैल आचार्य का शिष्य, —पत्नी पार्वती, —यज्ञः इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला यज्ञ—स्तोउ

स्माक चौबन्धोचित इन्द्रयशो नामोत्व मविष्यति — बाल० १, — वालकम् हीरे का एक प्रकार, कौ० अ० २।११, — सावर्णिः चौदहवाँ मनु०।

इन्द्रियः [इन्द्र + घ — इय] 1 शक्ति 2 ज्ञानेन्द्रिय। सम० — धारणा ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण, — प्रसङ्गः विषयासक्ति, — संप्रयोगः विषयों से संबद्ध ज्ञानेन्द्रियों की क्रिया।

इन्धनम् [इन्ध् + णिच् + ल्युट्] इच्छाबलोत्थ, वासना — ये तु दग्धेन्धना लोके पुण्यपापविवर्जिता: महा० १२।३४८।२।

इभकर्णक: (पुं०) 1 एक पौधा, ताबड़ा एरण्ड 2 गणेश।

इरिणम् (वेद०) [ऋ + इनन्, किदिच्च] चौसर खेलने की बिसात — प्रवातेजा इरिणे वर्वृताना — ऋ० १०।३४।१।

इरिम्बिठि: (पुं०) कण्वकुल के एक ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई सूक्तों का द्रष्टा है।

इलिनी (स्त्री०) मेधातिथि की पुत्री।

इल्व: (पुं०) परलोक में होने वाला एक काल्पनिक वृक्ष — स आगच्छतील्यं वृक्षम् कौषी० १।५।

इवोपमा उपमा अलंकार जहाँ रचना में 'इव' शब्द का प्रयोग हुआ हो।

इषीका हाथी की आँख की एक पुतली।

इष् (तुदा० पर०) किसी काम को बहुधा करते रहना, बार-बार सम्पन्न करना।

इच्छामात्रम् (अ०) केवल इच्छा द्वारा रचित — इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टि:।

इच्छारूपम् (नपुं०) 1 मानवीकृत इच्छा 2. इच्छानुरूप माना हुआ शरीर 3 दिव्य शक्ति की प्रथम अभिव्यक्ति।

इष्टभागिन् (वि०) [इष्ट + भाग + णिनि] जिसकी महत्त्वाकांक्षा पूरी हो गई है — अपूजयन्राघवमिष्टभागिनम् रा० ६।६७।१७५।

इष्टि: (स्त्री०) [इष् + क्तिन्] कविता के रूप में एक परिसंवाद, संग्रहश्लोक ऋ० १।१६६।१४ पर भाष्य। सम० — आद्यम् एक विशेष और्ध्वदैहिक क्रिया।

इषिका, इषीका [इष् गत्यादौ क्वुन्, अत इत्वम्] एक काँटेदार पौधा — मनिकषीकाभिर्मोचिता परमाणुपात् रा० २।८।३०।

इषुपुष्पा नील का पौधा।

इषूयति (वेद०) प्रयत्न करना।

इष्टकान्यास: ईंटों का आकार प्रकार।

ई

ईक्षणश्रवस् (पुं०) [ब० स०] साँप — तथा नो नैष्ठिकी बुद्धिः सर्वेषामीक्षणश्रव — महा० १।३७।२९।

ईर: [ईर् + अच्] वायु, हवा। सम० — जः, — पुत्रः हनुमान्।

ईलिन: (पुं०) तंसु के पुत्र और दुष्यन्त के पिता का नाम।

ईश: [ईश + क] परमेश्वर, परमात्मा। सम० — आवास्यम् (ईशावास्यम्) ईशोपनिषद् (अपने प्रथमाक्षर के आधार पर) — गीता (स्त्री०) कूर्मपुराण का एक अनुभाग — दण्डः रथ के धुरे की लकड़ी।

ईशानकल्प: चार युगों का एक चक्र।

ईशितव्य (वि०) [ईश् + तव्य] शासन किये जाने के योग्य, नियन्त्रण में रखने के योग्य — ईशितव्यं किमस्माभि भाग० १०।२३।४।

ईश्वरकान्तम् (नपुं०) एक भूखण्ड जिसका समस्त क्षेत्रफल ९६१ वर्ग म। समस्त हो जाता है — मान० ७।४६।४८।

ईश्वरकृष्ण: (पुं०) सांख्यकारिका का कर्ता।

ईषत्कार्य (वि०) [ईषत् + कृ + ण्यत्] जो थोड़े से प्रयत्न से सम्पन्न हो सके — ईषत्कार्यो वधस्तस्य — महा० १।७४।-६।

ईषल्लभ (वि०) [ईषत् + लभ् + खल्] आसानी से उपलब्ध होने वाला — नै० १।१९३।

ईषद्वीर्य: [न० ब०] बदाम का वृक्ष।

ईसराफ (पुं०) फलितज्योतिष में चौथा योग।

ईहि (वेद०) [ईह् + अच्] स्तुति।

उ

उखा (स्त्री०) अजलोष, बथासुवा।

उक्थम् (नपुं०) [वच् + थक्] 1 जीवन, प्राण — उक्थेन रहितो ह्येव मृतक: प्रोच्यते यथा — भाग० ११।५।६ 2 उपादान कारण — एतदेषामुक्थमतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति — बृ० १।६।१।

उक्थ: (पुं०) [वच् + थक्] अग्नि — उक्थो नाम महाभाग त्रिभिरुक्थैरभिष्टुत: महा० ३।२१९।२५।

उखासंभरणम् (नपुं०) शतपथब्राह्मण का छठा अध्याय।

उग्र्य: (पुं०) [उग्राया सम्भूत] एक वैयाकरण का नाम।

उखरम् (नपुं०) खारी झील से निकला हुआ नमक, सांभर नमक।

उग्र (वि०) [उच्+रन्, गश्चान्तादेशः] 1. भीषण, क्रूर, दारुण घोर, प्रचण्ड। सम० —काली दुर्गा का एक रूप, —नृसिंहः नृसिंह का एक रूप, —पीठम् एक भूपरिकल्पना जिसमें क्षेत्रफल ३६ सम भागों में विभक्त होता है —मान० ७।७, —वीर्यः हींग, —श्रवस् रोमहर्षण के पुत्र का नाम।

उचित (वि०) [उच्+क्त] अन्तर्गत, नैसर्गिक उचित च महाबाहु न जहौ हर्षमात्मवान्—(उचित —स्वभाव सिद्धम्)—रा० २।१९।३७। सम० —ज्ञ (वि०) जो औचित्य को समझता है।

उच्च+अवच (उच्चावच) (वि०) [उत्कृष्ट च अपकृष्ट च] ऊँचा-नीचा, छोटा-बड़ा।

उच्चध्वजः शाक्यमुनि का नाम।

उच्चटम् (नपुं०) टीन, रांगा, कलई।

उच्चक्ष् (भ्वा० पर०) टकटकी लगा कर देखना, स्थिर होकर देखना—भाग० ६।१६।४८।

उच्चयापचयौ [उच्चय अपचयश्च, द्व० स०] समृद्धि और क्षय, उत्थान और पतन।

उच्चाटित (वि०) [उद्+चट्+णिच्+क्त] उखाड़ा गया, दूर फेंक दिया गया दशकन्धरो उच्चाटित —भाग० ५।२४।२७।

उच्चारप्रस्रावस्थानम् (नपुं०) शौचालय, सण्डास।

उच्चार्यमाण (वि०) [उद्+चर्+णिच्, कर्मणि शानच्] जो बोला जा रहा है।

उच्चुम्ब् (भ्वा० पर०) मुख ऊपर उठाकर चुम्बन करना।

उच्छिखण्ड (वि०) [ब० स०] (मोर की भाँति) अपने परों को ऊँचा किये हुए।

उच्छिष्ट (वि०) [उत्+शिष्+क्त] जूठा, अपवित्र, अशुद्ध उच्छिष्टमपि चामेध्यम् आहार तामसप्रियम् —भाग०।

उच्छिष्टमोदनम् (नपुं०) मोम।

उच्छृङ्गित (वि०) [उद्+शृङ्ग+इतच्] जिसने अपने सींग ऊपर को सीधे खड़े किए हुए हैं।

उच्छ्रयः [उद्+श्रि+अच्] एक प्रकार का कलात्मक स्तम्भ (रुद्रदामन का जूनागढ़स्थित शिलालेख एप० इंडि० तृतीय० भाग)।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. झाग (जैसे कि समुद्र में)—सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणम् ऋ० ९।८६।४३ 2. बढ़ना, उभार होना।

उच्छ्वासित् (वि०) [उद्+श्वास+णिनि] वियुक्त, विभक्त।

उज्जागरः [उद्+जागृ+घञ्] उत्तेजना, उलटफेर।

उज्जूटित (वि०) [उद्+जूट्+क्त] जिसने अपने सिर के बाल जटा के रूप में शिखा बाँधकर रक्खे हुए हैं।

उज्झटा (स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी।

उज्झित (वि०) [उज्झ्+क्त] 1 परित्यक्त—चिरोज्झितालक्तकपाटलेन ते —कु० ५ 2 निष्कासित, उडेला हुआ—अविरतोज्झितवारि— कि० ५।६।

उट्टङ्कनम् [उत्+टङ्क्+ल्युट्] 1 छाप लगाना, या अक्षर खोदना 2 आधुनिक टाइप करने की क्रिया।

उडुगणाधिपः [त० स०] चन्द्रमा।

उडुपथाधिपम् (नपुं०) मृगशीर्ष नक्षत्रपुञ्ज।

उड्डामरिन् (वि०) [उद्+डामर+णिनि] जो असाधारण रूप से बहुत कोलाहल करता है।

उड्डियानम् (नपुं०) अंगुलियों की विशिष्ट मुद्रा।

उडुम् (नपुं०) 1 जल, मुड़ल 2 पानी।

उत (वि०) [वे+क्त] बुना हुआ, सीया हुआ।

उत्कयति (ना० धा० पर०) बेचैन या आतुर बना देता है मनस्विनीरुत्कयितु पटीयसा शि० १।५९।

उत्कच (वि०) [उत्+कच] जिसके बाल सीधे ऊपर को खड़े हों।

उत्कूर्चक (वि०) [प्रा० स०] जो कूची अपने हाथ में लेकर ऊपर को उठाए हुए है।

उत्कूलनिकूल (वि०) [उत्क्रान्त निर्गतश्च कूलात्] किनारे से कभी नीचे कभी ऊपर होकर बहने वाला।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1 ऊपर को खींचना 2 छील देना, उखाड़ देना।

उत्कर्षणी [उत्कर्षण+ङीप्] एक 'शक्ति' का नाम।

उत्कृष्ट (वि०) [उद्+कृष्+क्त] 1 खींचा हुआ—एरावतविषाणाग्रैरुत्कृष्टकिणवक्षसम् रा० ६।८०।५ 2 तोड़ा हुआ उत्कृष्टपर्णकमला —रा० ५।१९।१५ (उत्कृष्टानि—त्रुटितानि) 3 जोता हुआ—महा० १३।५१।१०।

उत्कोच [उद्+कुच्+अञ्] 1 रिश्वत, घूस—उत्कोचैर्वञ्चनाभिश्च कार्याण्यनुविहन्ति च महा० १२।५६।५१ 2 दण्ड।

उत्कोचिन् (वि०) [उत्कोच+णिनि] जिसे रिश्वत दी जा सके, भ्रष्टाचार में ग्रस्त उत्कोचिनां मृषोक्तीनां वञ्चकानां च या गतिः महा० ७।७३।३२।

उत्कोठ (पुं०) [उत्कुट्+घञ्] कोढ़, कुष्ठ का एक प्रकार।

उत्क्वथ् (भ्वा० पर०) उबाल कर सत्व निकालना कर्म० उबाला जाना, (प्रेम से) उपभुक्त किया जाना।

उत्ताल (वि०) [उत्+तल्+घञ्] विस्तारयुक्त, फैला हुआ। सम० —अर्थ (वि०) उभरी निस्सार उथला, प्रमुख कर्ण व्यूह चौतानपट्ट (आंध्र शिलालेख इंडि० एंटी० भाग ९), —हृदय (वि०) उत्तम हृदय वाला।

उत्तपनः [उद्+तप्+ल्युट्] देदीप्यमान आग।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] बढ़िया, श्रेष्ठ,—मः (पुं०) ध्रुव का सौतेला भाई। सम०—दशतालम् मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की पूर्ण ऊँचाई के १२० सम प्रभागों को इंगित करने के लिए प्रयुक्त होता है —वयसम् जीवन की अन्तिम अवस्था शत० १२।९।१।८, —व्रता पतिव्रता स्त्री हृदयस्येव शोकाग्निसंतप्तस्योत्तमव्रताम् भट्टि० ९।८७,—श्रुत उच्चतम शिक्षा प्राप्त।

उत्तमर (वि) श्रेष्ठ।

उत्तम्भः [उद्+स्तम्भ्+घञ्] आलम्बाकार संरचना —गृह्य० ४७।२१।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1 उत्तर दिशा 2 ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा 3 बाद का 4 आयताकार लंबा मान० १३।६७ 5 आगे की कार्यवाही, अगली प्रक्रिया उत्तरं कर्म यत्कार्यं रा० ५।३ 6 आच्छादन, आवरण- महा० ६।६०।९। सम०—अगारम्। (उत्तरागारम्) ऊपर का कमरा, —अभिमुख (वि०) उत्तर दिशा की ओर मुड़ा है मुँह जिसका, —तापनीयम् नृसिंहतापनीय उपनिषद् का उत्तर भाग, —नारायणः पुरुषसूक्त का उत्तर खण्ड,—वीथिः (स्त्री०) उत्तरीय मण्डल।

उत्तावल (वि०) उतावला, आतुर।

उत्त्रस्त (वि०) [उद्+त्रस्+क्त] डरा हुआ, भयभीत।

उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1 मठ, विहार 2 युद्ध करने के लिए तैयार सेना की स्थिति युद्धानुकूलव्यापार उत्थानमिति कीर्तितम् शुक्र० १।३२५। सम० —वीरः कर्मशील व्यक्ति, —शीलिन् (वि०) सक्रिय, परिश्रमी।

उत्पचनिपचा (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पच + निपच' (अर्थात् पूरी तरह से और भलीभाँति पकाओ) कहा जाय।

उत्पातयोगः [त० स०] फलित ज्योतिष का एक योग।

उत्पतनिपता (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पत (ऊपर को उड़ो) + निपत (नीचे उड़ो)' शब्दों को बार-बार कहा जाय।

उत्पातप्रतीकारः (शान्ति) [ष० त०] अशुभ शकुनों से बचने के लिए शान्ति के उपायों का अवलम्बन, —कौ० अ० २।७।

उत्पत्तिः (स्त्री०) (वेद०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. यज्ञ —उत्पत्तिरिति यजि स्यात् मी०सू० ७।१।३—७ पर शा० भा० 2 मूल विधि, वेद में आधारभूत अध्यादेश, इसे उत्पत्तिश्रुति और उत्पत्तिविधि भी कहते हैं मनु० ४।३।

उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्] एक जड़ी बूटी का नाम।

उत्पादित (वि०)[उद्+पद्+णिच्+क्त]पैदा किया गया।

उत्पाद्य (वि०) [उद्+पद्+णिच्+ण्यत्] जो अभी पैदा किया जाना है- लावण्य उत्पाद्य इवास यत्नः - कु० १।३५।

उत्पलिनी [उत्पल+इनि, स्त्रियां ङीप्] एक शब्दकोश का नाम।

उत्प्रेक्षावयवः [ष० त०] एक प्रकार की उपमा।

उत्प्रेक्षावल्लभः एक कवि का नाम।

उत्प्रेक्षित (वि०) तुलना की गई (जैसा कि उपमा में की जाती है)।

उत्प्रेक्षितोपमा उपमा अलङ्कार का एक भेद।

उत्प्लुत (वि०) [उद्+प्लु+क्त] कूदा हुआ, ऊपर को उछला हुआ।

उत्फुल्ल (वि०) [उद्+फुल्+क्त] उद्धत ढीठ, गुस्ताख।

उत्स्फुलिङ्ग (वि०) [उद्+स्फुलिङ्ग+टच्] जिसमें स्फुलिङ्ग निकलें, चिंगारियाँ उगलने वाला।

उत्सङ्गकः [उद्+सञ्ज्+घञ्, स्वार्थे कन्] हाथ की विशेष मुद्रा।

उत्सन्न (वि०) [उद्+सद्+क्त] संवर्धमान—उत्सन्ना पाण्डवा नित्यम् महा० १।१४०।३।

उत्सत्तिः (स्त्री०) [उद्+सद्+क्तिन्] नाश, विनाश, क्षय।

उत्सन्नकुलधर्मन् (वि०) [ब० स०] जिसकी कुल परम्पराएँ छिन्न-भिन्न हो गई हों उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन, नरके नियतं वासः —भग० १।४६।

उत्सवोदयम् (नपुं०) मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की ऊँचाई के अनुसार उसके मान को इङ्गित करे — मान० ६४।९१-९३।

उत्सवविग्रहः [त० स०] जलूस के रूप में निकाली जाने वाली प्रतिमा, मूर्ति (विप० मूलविग्रह)।

उत्साहः [उद्+सह्+घञ्] अशिष्टता, उजड्डपन।

उत्साहयोगः [त० स०] अपनी सामर्थ्य या शक्ति का उपयोग करना चारेणोत्साहयोगेन मनु० १।२९८।

उत्सेकः [उद्+सिच्+घञ्] उत्साह, मामकस्यास्य सैन्यस्य हृतोत्सेकस्य सञ्जय —महा० ८।७।१।

उत्सूर्यशायिन् (वि०) [उद्+सूर्य+शी+णिच्+इनि] जो सूर्य निकल जाने पर भी सोता रहता है, महा० १२।२२८।६४।

उत्सृतिः (उच्छ्रितिः) (स्त्री०) [उद्+सृ (श्रि)+क्तिन्] उच्चतर जाति मनु० ५।४०।

उत्सृज् (तुदा० पर०) व्यवस्थित करना, जमाना, निश्चित करना - आत्मानं यूपमुत्सृज्य स यज्ञो ऽनन्तदक्षिणः — महा० १२।९७।१०।

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1 राशि, ढेर—अवस्य सुबहून् राजन् उत्सर्गान् पर्वतोपमान् महा० १४।८५।३८ 2. (पुरोहितों की) सेवाएँ उपलब्ध करना उत्सर्गे तु प्रधानत्वात् मी० सू० ३।७।१९ (उत्सर्ग परिक्रय —शा० भा०) ।

उत्सर्गसमिति (स्त्री०) जैनमत का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार मलमूत्रोत्सर्ग करते समय ऐसी सावधानी बरतना, जिससे कि किसी जीव जन्तु की हत्या न हो ।

उत्स्रष्टुकामः, (मना) (वि०) [उत्सृज्+तुमुन्+काम मनो वा] उत्सर्ग करने की (जाने भी दो, रहने भी दो) इच्छा वाला ।

उत्सर्पिन् (वि०) [उत्+सर्प+णिनि] 1 किनारों के बाहर होकर बहने वाला; उत्सर्पिणी न किल तस्य तरङ्गिणी वा- नै० ११।७७ 2. बढ़ाने वाला, उठाने वाला ।

उत्स्नात (वि०) [उद्+स्ना+क्त] जो स्नान करके बाहर निकल आया है ।

उत्स्नेहनम् [उद्+स्निह्+णिच्+ल्युट्] खिसकना, फिसलना, विचलित होना ।

उत्स्मितम् [उद्+स्मि+क्त] मुस्कराहट ।

उत्स्रोतस् (वि०) [उद्+स्रु+तसि] (जीवन में) ऊपर की ओर रुझान रखने वाला ।

उत्स्वापगिरः (ब० व०) नींद में बोले गये शब्द—नै० १२।२५ ।

उदन् [उन्द्+अच्, नलोप] पानी, जल ।

उदकम् [उन्द्+ण्वुल्, नलोप] पानी, जल । सम० —अञ्जलिः 1 चुल्लूभर पानी 2. तर्पण करने के निमित्त जल,—क्ष्वेडिका जलक्रीडा जिसमें परस्पर एक दूसरे पर जल छिड़का जाता है, —प्रवेशः जलसमाधि, जलप्रवाह,—भूः जलयुक्त या गीली भूमि, —मञ्जरी (स्त्री०) आयुर्वेद का एक ग्रन्थ, —वाद्यम् जलतरंग नामक एक वाद्ययन्त्र जिसमें जल से भरे हुए प्याले छड़ी से छुए जाते हैं ।

उदग्रप्लुतत्वम् [उदग्रमग्रं यस्य+प्लु+क्त, तस्य भाव] तेज गति के कारण छलांगें लगाना पश्योदग्रप्लुतत्वात् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति श० १।७ ।

उदञ्जल (वि०) [ब० स०] हस्ताञ्जलि बाँधे हुए कायेन विनयोपेता मूर्ध्नोदयञ्जलेन च—महा० ७।५४।६ ।

उदञ्चित (वि०) [उद्+अञ्च्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, सदञ्चितमुदञ्चितनिकुञ्चितपदम् —पं० ता० स्तु० १ ।

उदण्ड (वि०) [उद्+अण्ड्+अच्] बहुत से अंडे देने वाला ।

उदन् (नपु०) [उन्द्+कनिन्] पानी, जल । सम० —आशयः झील, सरोवर—शरदुदाशये साधुजात-सत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा—भाग० १०।३१।२ —कोष्ठः जलपात्र, जल कलश,—जम् कमल—सर्वा-श्वयोऽङ्घ्र्युदजमच्युतासव ते—भाग० १०।१४।११, —प्लवः पानी की बाढ़ ।

उदपास् (उद्+अप्+अस्—दिवा० पर०) फेंक देना, परित्याग कर देना ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव —भाग० १०।१४।३ ।

उदराग्निः [ष० त०] जठराग्नि, पाचक अग्नि ।

उदराटः [उदर+अट्+घञ् ब० स०] एक प्रकार का कीड़ा जो पेट के बल रेंगता है ।

उदर्कः [उद्+ऋच्+घञ्] वृद्धि —सर्वङ्कर्षपयोदर्कम् —भाग० ३।२३।१३ ।

उदवस्य (वि०) [उद्+अव+सो+अच्] अन्तिम, आखिरी भाग० ४।७।५।६ ।

उदश्रयणम् [उद्+अश्र+क्यङ्+ल्युट्] रुलाना ।

उदस्त (वि०) [उद्+अस्+क्त] बाहर निकला हुआ —परिश्रमद्गात्र उदस्तलोचन —भाग० ३।१९।२६ ।

उदस्तात् (अ०) [उद्+अस्ताति] ऊपर—विधूतवक्त्रोऽथ हरेरुदस्तात्प्रयाति चक्रं नृप शैशुमारम्—भाग० २।२।२४ ।

उदात्तनायकः (पु०) महाकाव्य के उपयुक्त नायक का एक भेद चतुर्वर्गफलोपेतं चतुरोदात्तनायकम्—काव्य० १ ।

उदात्तराघव एक नाटक का नाम ।

उदात्यूहः (पु०) एक प्रकार का जल काक ।

उदानी (ना० धा०) उठाना, उन्नत करना ।

उदारवीर्य (वि०) विपुलशक्तिसम्पन्न, महाबलशाली ।

उदारवृत्तार्थपद (वि०) [ब० स०] जिस (रचना) में शब्द, अर्थ और छन्द सभी उत्तम हों ।

उदारसत्त्वाभिजन (वि०) [ब० स०] जिसका उत्तम कुल में जन्म हो तथा जिसका चरित्र भी अत्युत्तम हो उदारसत्त्वाभिजनो हनूमान्—रा० ४।४७।१४ ।

उदावसुः जनक का एक पुत्र ।

उदय [उद्+इ+अच्] 1 उठना, उगना, ऊपर जाना 2 आरम्भ—अधिगम्योदयं तस्य कार्यस्य प्रत्यवेदयत् महा० ३।२८२।२२ 3 अचूकपना, अमोघता पर्याप्तः परवीरघ्नयशस्यस्ते बलोदयः रा० ५।५६।११ 4 आयुष्यकर्म, दीर्घजीवी होने का यज्ञ हस्ते गृहीत्वा सह राममच्युतं नीत्वा स्ववारं कृत-वत्यथोदयम् भाग० १०।११।२० 5 पूर्वी ज्या प्रथम चान्द्रभवन, इन्दुः इन्द्रप्रस्थ नगर पुरे कुरूणा-मुदयेन्दुमालिनि— महा० ७।२३।२९,- उन्मुख (वि०) उन्नति के द्वार पर, समृद्धि की देहली पर, —भास्कर. एक प्रकार का कपूर नै० १८।१०१,—राशिः नक्षत्र-पुञ्ज जिसमें कि कोई ग्रह क्षितिज में उगता है ।

उदित (वि०) [उद्+इ+क्त] 1 विभूत, विख्यात चिरजीवी समाख्यातो लघुवाक्यैरथोदितः - महा०

१।१३९।१९ 2. आरब्ध, शुरू किया गया—प्रभुभिरुदित आर्यैः—शिव० २६ 3. उद्बुद्ध, जागा हुआ तां रात्रिमुषितं रामं सुखोदितमरिन्दमम् —रा० ६।१२१।१।

उदित्वर (वि०) 1. ऊपर जाने वाला, ऊपर उठने वाला अविचलितमतिर्वेबोद्रेकादुदित्वरविक्रमः—शिव० १४।१०६ 2. आगे बढ़ने वाला —गोप्तु श्रीरिकदित्वरत्वर उपैद् ग्राहग्रहार्तं गजम्—शिव० १८।

उदे (उद् + आ + इ — अदा० पर०) ऊपर आना, उठना, उन्नत होना।

उदेयिवस् (वि०) [उद् + आ + इ (ईयिवस्)] उगा हुआ, उद्भूत, जात— सख उदेयिवान् सात्वतां कुले —भाग० १०।३१।४।

उद्गद्गदिका (स्त्री०) सुबकियाँ लेना—का०।

उद्गल (वि०) [ब० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए।

उद्गारकमणिः [उद् + गृ + ण्वुल् + मण् + इन्] प्रवाल, मूँगा।

उद्गारः [उद्गृ + घञ्] (समुद्री) झाग। —परिवाहेन तु तं दृष्ट्वा सागरोद्गारसंनिभम्—रा० ७।३२।९।

उद्गारचूडः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी।

उद्गीर्ण (वि०) [उद् + गॄ + क्त] 1. वान्त, वमन किया हुआ, —निष्ठ्यूतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयम्। काव्या० 2 बाहर निकाला हुआ, निष्कासित 3. प्रेरित, कराया हुआ—काकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः—गीत० १।३६ 4. उठता हुआ, किनारे से बहता हुआ —उद्गीर्ण इवार्णवो—नै० १७।१६।

उद्गायनम् [उद् + गै + ल्युट्] सामगानों के उच्चारण में एक विशेष अवस्था।

उद्गीतक (वि०) [उद् + गै + क्त + कन्] जो ऊँचे स्वर से गायन करता है।

उद्ग्रथनम् [उद् + ग्रथ् + ल्युट्] बालों को संयुक्त करने के लिए पिन —सामिर्वाक्य शिखः सर्वा वेण्युद्ग्रथनभूतयम् रा० ५।१६७।३०।

उद्ग्रीविका [उद् + ग्रीवा + इनि + कन् + टाप्] पंजों पर खड़े होना —उद्ग्रीविकाचालमिवाम्बभूवन् (रोमाणि) —नै० १४।५३, कामिनिपुलनिकुलमलीका सर्वेणार्थमिवोद्ग्रीविकाशतवातशिजेषु'' प्रदोषेषु—वास०।

उद्घट्टनम् [उद् + घट्ट + ल्युट्] (अत्याचार का) आरंभ।

उद्घोण (वि०) [ब० स०] सूअर की भाँति जिसके नथुने ऊपर को हों—स्फुरदुद्घोणघनः—शिव० २२।१३।

उद्दण्डित (वि०) [उद् + दण्ड् + क्त] उठाया हुआ, [illegible] कथा०।

उद्दण्डशास्त्रिन् पन्द्रहवीं शताब्दी का तमिलदेशवासी एक महान् विद्वान्।

उद्दलन (वि०) [उद् + दल् + ल्युट्] फाड़ देने वाला।

उद्दालकायनः [उद्दालक + फञ्] उद्दालक की सन्तान।

उद्दीर्ण (वि०) [उद् + दॄ + क्त] फटा हुआ।

उद्दीपकः [उद् + दीप् + ण्वुल्] पक्षिविशेष।

उद्दीपिका [उद् + दीप् + ण्वुल् + टाप्] एक प्रकार की चिऊँटी।

उद्घुष्य (अ०) [उद् + घुष् + क्त्वा (ल्यप्)] सार्वजनिक रूप से बदनाम करके या दोषारोपण करके शि० २।११३।

उद्देशतः (अ०) [उद्देश + तसिल्] संकेत करके, विशेषरूप से, मुख्य रूप से, स्पष्टरूप से—एष तूद्देशतः प्रोक्तः —भग० १०।४०।

उद्देश्यपदम् [त० स०] वह शब्द जो कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त हो वे वनमाला इत्युद्देश्यपदम्—सी० कु० ६।६।२० पर शा० भा०।

उद्देशक (वि०) [उद् + दिश् + णिच् + ण्वुल्] उद्देश करता हुआ, इंगित से दर्शाता हुआ।

उद्धत (वि०) [उद् + हन् + क्त] 1. भरपूर, भरा हुआ, समृद्ध— ततस्तु वारीद्धतवेगफेनं—रा० ६।९७।१४२ 2. चमकीला, चमकता हुआ,—[illegible] तेन कोपेनोद्धतपाण्डुना—रा० ६।५५।१९।

उद्धर्ष (वि०) [ब० स०] अधिकतर, प्रचुर—[illegible] बलोद्धर्षापुवेशैरिवार्णवः—रा० ६।७४।१५।

उद्धूत (वि०) [उद् + धूञ् + क्त] 1. फेंका हुआ, उछाला हुआ—उद्धूतमिव सागरम्—महा० ५।१९।१४ 2. अव्यवस्थित बिखरा हुआ—[illegible] रावणस्य तत्—रा० ५।१२।१९ 3. ऊँचा, उन्नत —[illegible] स्थितम्—रा० ५।५६।२९।

उद्य् (= उद् + इ) विद्रुप करना, नष्ट करना— एष त्वां [illegible] शिरो मम—महा० ५।१८९।२३।

उद्धृषित (वि०) [उद् + हृष् + क्त] हर्ष के कारण जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों।

उद्धरणम् [उद् + हृ + ल्युट्] प्रतीक्षा करना, आशा करना —अपि ते [illegible] भुक्त्वा गताः सोद्धरणान् गृहान् —महा० १३।६०।१४।

उद्धारकविधिः (पुं०) [उद् + हृ + णिच् + ण्वुल् + वि + धा + कि] देने की या भुगतान करने की रीति —तत्कथय कथमस्योद्धारकविधिर्भविष्यति—पंच० २।

उद्धारः [उद् + हृ + घञ्] 1. संकलन 2. (खाने के पश्चात्) जो थालियों में बच जाय, उच्छिष्ट। सम० —कोशः एक शब्द का नाम,—विभागः अंशों के प्रभाग, विभाजन।

उद्धारित (वि०) [उद् + हृ + णिच् + क्त] निष्कासित मुक्त, छुड़ाया हुआ।

उद्बद्ध (वि०) [उद् + बन्ध् + क्त] 1 बांधा हुआ 2. बाधित 3. दृढ़, सहृत, कसा हुआ।

उद्बृंहण (वि०) [उद् + बृह् + ल्युट्] बढ़ाने वाला, सशक्त करने वाला, सामर्थ्य देने वाला।

उद्भङ्गः [उद् + भञ्ज् + घञ्] तोड़ कर पृथक् कर देना, वियुक्त कर देना।

उद्भू (भ्वा० पर०, प्रेर०) विचार करना, सोचना विक्रम० ९।१९।

उद्यतायुध(शस्त्र) (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र हाथ में ले लिया है।

उद्यम्या (स्त्री०) जंगल में या सूखी लकड़ी में रहने वाली एक काली विऊंटी, दसौंदी।

उद्यमित (वि०) [उद् + यम् + णिच् + क्त] काम करने के लिए जिसे प्रेरित किया गया है आत्मनो मन्द-मन्दोद्यमितानाम् - कि० ९।६६।

उद्यापनिका [उद् + या + णिच् + पुक् + ल्युट् + कन् + टाप्] यात्रा से वापिस घर आना।

उद्योजित (वि) [उद् + युज् + णिच् + क्त] उठाया हुआ, एक चित्र (जैसे कि बादल)।

उद्योतः (पुं०) [उद् + द्युत् + घञ्] 1 चमक, उद्दीप्ति, उज्ज्वलता, 2. इस नाम का भाष्य जो रत्नावली, काव्यप्रकाश और महाभाष्यप्रदीप पर उपलब्ध है।

उद्योतकरः (पु०) महाभाष्यप्रदीप के भाष्यकार का नाम।

उद्योतनम् [उद् + द्युत् + णिच् + ल्युट्] चमकने या प्रकाशित होने की क्रिया।

उद्रिक्तिः [उद् + रिच् + क्तिन्] आधिक्य — शिवमहिम्न स्तोत्र—१०।

उद्रेचक (वि०) [उद् + रिच् + ण्वुल्] बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उद्वामिन् (वि०) [उद् + वम् + णिनि] उलटी करने वाला।

उद्वहः [उद् + वह् + अच्] कुल या वंश में प्रधान व्यक्ति, पुत्र (जैसा कि 'रघूद्वह' में)।

उद्वाहर्क्षम् (उद्वाह + ऋक्षम्) [ष० स०] विवाह के लिए शुभ नक्षत्र। उद्वाहर्क्षं च विज्ञाय रुक्मिण्या मधुसूदनः—भाग० १०।५३।

उद्वाहिन् (वि०) [ब० स०] चिनगारियों या अग्निकण बरसाने वाला (जैसे कि आँख) —उद्वाह्निलोचनम् शि० ४।२८।

उद्वाहुः विलाप करते हुए नाम लेना, शोकाधिक्य के कारण दोनों भुजाएँ उठा कर क्रन्दन करना उद्वाहुमान पितरं दशरथम् — भट्टि० ३।३२।

उद्विष् (पानी छिड़क कर) मनुष्य को होश में लाना।

उद्वेगा [उद् + विज् + घञ्] सुपारी—वै० ७।४६।

उद्वेगकर | उद्वेगकारक | उद्वेगकारिन् (वि०) [उद्वेग + कृ + अच्, ण्वुल्, णिनि वा] चिन्ताजनक, क्षोभ करने वाला, कष्ट कर या दुःखदायी।

उद्विबर्हणम् [उद् + वि + बृह् + ल्युट्] बचाना, निकालना, उठाना रसां गताया भुव उद्विबर्हणम्— भाग० ३।१३।४३।

उद्वर्तः [उद् + वृत् + घञ्] प्रलयकाल—रा० ६।४४।१८।

उद्वृत्त (वि०) [उद् + वृत् + क्त] उलटा हुआ, उद्घाटित, प्रसारित।

उद्वृत्तः (पु०) नाचते समय हाथों की मुद्रा।

उद्वेष्टनीय (वि०) [उद् + वेष्ट् + अनीय] खोलने के योग्य, बन्धनमुक्त करने के लायक —आद्ये बद्धा विरह दिवसे या शिखादाम हित्वा, शापस्यान्ते विगलितशुचा ता मयोद्वेष्टनीयम् मेघ० ९३।

उद्व्युदस् (उद् + वि + उद् + अस् भ्वा० पर०) पूर्णतः छोड़ देना, त्याग देना।

उन्नादः [उद् + नद् घञ्] कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

उन्नत (वि०) [उद् + नम् + क्त] ओजस्वी, उल्लासपूर्ण, समाधाय समुद्धार्यो धर्मभिश्चिभिरुन्नता — रा० ५। ६१।५। सम० काल छाया को माप कर समय निर्धारित करने की प्रणाली, कोणिका एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

उन्नतिः [उद् + नम् + क्तिन्] दक्ष की पुत्री जिसका विवाह धर्म के साथ किया गया था।

उन्नहन (वि०) [उत् + नह् + ल्युट्] अशृंखल, खुला, मुक्त, बन्धन रहित - मत्सन्नयस्य विभवोन्नहनस्य नित्यम् भाग० ११।१।४।

उन्नाहः [उद् + नह् + घञ्] धृष्टता, हेकड़ी, औद्धत्य, अहंकार।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्मात् ब० स०] 1 तेजस्वी, देदीप्यमान (जैसे कि चन्द्रमा) नीत्वा निर्भरमन्मथोत्सवरसैरुन्निद्रचन्द्रा क्षपा कलि० 2 (बालों की भांति) सीधा खड़ा होने वाला, फैला हुआ।

उन्निद्रकम् | उन्निद्रता [उद् + निद्रा + कन्, ता वा] जागरूकता, जागते रहना।

उन्नेय (वि०) [उद् + नी + ण्यत्] सादृश्य के आधार पर जो अनुमान करने या निर्णय करने के योग्य हो, —शि० भ० १६।

उन्मणिः (पु०) [उत्क्रान्तो मणिम् —अत्या० स०] सतह पर पड़ा हुआ रत्न गिरयो बिभ्रदुन्मणीन् भाग० १०।२०।२६।

उन्मथनम् [उद् + मथ् + ल्युट्] हिला देना, कूर्मे धृतोऽद्रिरमृतोन्मथने स्वपृष्ठे भाग० ११।४।१८।

उन्मत्त (वि०) [उद् + मद् + क्त] 1. बहुत बड़ा, असा-

माल्य उन्मत्तवगा स्त्रजा रा० ५।६२।१२, ०लम् (नपुं०) धतूरे का फल उन्मत्तमासाद्य हर स्मरस्य नै० ३।९८ (भा०)।

उन्मनीभू (भ्वा० पर०) उन्मनस्क होना, क्षुब्ध होना।

उन्मुखता [उन्मुख + ता] आशा या प्रत्याशा की स्थिति।

उन्मुग्ध (वि०) [उद् + मुह् + क्त] 1 उद्विग्न सम्भ्रान्त 2 मूर्ख मूढ।

उन्मूर्छ् (क्या० पर०) समझना, शान्त करना।

उपकर्मन् (नपुं०) उपनयन संस्कार की एक प्रक्रिया जिसमें बालक का सिर सूंघा जाता है।

उपकल्प [उप + कृप् + अच्, घञ् वा] आभरण सप नीथ्यकल्पम भाग० ...।

उपकीचक [उप + कीचक इति + आधा० विग्रह] बांस के वृक्षों की उपशाखा, विराटनगर का राजन कीचक का उपकीचकम् (यहाँ विराट में वि... राट' श्लेष भी हो सकता है)।

उपक्रम [उप + क्रम् + घञ्] 1 ... 2 उड़ान 3 व्यवहार प्रतिक्रिया।

उपक्रान्त (वि०) [उप + क्रम् + क्त] 1 आरब्ध 2 अधिगत 3 अभिहूत।

उपक्षेपक (वि०) [उप + क्षिप् + ण्वुल्] संकेत देने वाला, सुझाव देने वाला।

उपखिलम् (नपुं०) परिशिष्ट का भी परिशिष्ट।

उपगम् (भ्वा० पर०) पूजा करना — सह पत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत् रा० २।६।१।

उपगमनम् [उप + गम् + ल्युट्] याचना स्वीकृति अप्रस्तुत हि प्राणानमुपगमनम् मी० सू० १२।१।२१ पर शा० भा०।

उपजिगमिषु (वि०) [उप + गम् + सन् + उ] पास जाने का इच्छुक नार्थेषणि गृहीतमिषा मध० ४४।

उपगूढ (वि०) [उप + गुह् + क्त] 1 ग्रस्त उत्पीड़ित कन्यागारगूढा तच्छ्वा कृष्णा विषया मक भाग० ४।४।१६ 2 आच्छादित ढका हुआ लताभिः पुष्पिताग्राभिरुपगूढानि सर्वतः रा० ४।१।१।

उपगानम् [उप + गै + ल्युट्] सस्वरगान, संगीत।

उपगेयम् [उप + गै + यत्] गायन गीत।

उपग्रस् (भ्वा० पर०) निगलना, हड़प करना ग्रहणग्रस्त होना।

उपघ्रा (भ्वा० पर०) सूंघना गात्रेषु ... मूर्धनि चोपजघ्रौ रघु० १३।७०।

उपचतुर (वि०) लगभग चार चार के आसपास।

उपचरणम् [उप + चर् + ल्युट्] निकट आना पहुँचना।

उपचरितम् (नपुं०) संधि का विशेष नियम।

उपचार [उप + चर् + घञ्] 1 सेवा पूजा 2 शिष्टता सौजन्य। सम० **वचनम्** आलंकारिक रूप से प्रयुक्त किसी उक्ति के शब्दार्थ का उल्लेख करके एक प्रकार का निराकरणीय आभासी अनुमान, **पदम्** शिष्टता का शब्द औपचारिक उच्चारण।

उपच्छन्न (वि०) [उप + छद् + क्त] गुप्त, छिपा हुआ।

उपच्छल् (पर०) क्षीण होना पकड़ लेना।

उपजानु (वि०) [उप + जन् + ञुण्] घुटने के निकट।

उपतल्प [उप + तल्प + प] 1 ऊपर की मंजिल का कमरा 2 एक प्रकार की ... का चौकोर ...।

उपतीरम् [उप + तृ + यक्] 1 सरोवर या नदी का तट 2 निकटवर्ती प्रदेश महा० ३।१५०।१३।

उपत्यका [उप + त्यकन् + टाप्] पर्वत की तलहटी का निम्नदेश गिरिरुपत्यकारण्य मिन सप्राप्ता श० ५।

उपदर्शनम् [उप + दृश् + ल्युट्] प्रकरण प्रस्तुत मी० सू० ६।१।३५ पर शा० भा०।

उपदर्शितम् [उपदर्श + क्त] प्रकरण बताते हुए उल्लेख करना।

उपदातृ (वि०) [उप + दा + तृच्] देने वाला।

उपदेह [उप + दिह् + घञ्] लपेटना, लेप करना चिह्नित करना —देहोपदेहान्निकर्षसंज्ञीनाम् नै० १०।९७।

उपदेहिका [उपदेह + कन् + टाप्] दीमक।

उपद्रव [उपद्रु + अप्] 1 सप्ताशक मास का छठा भाग। छा० २।८।२ 2 हानि, क्षोभ अश्वस्योपद्रव एष मतो हि ... रा० २।१०/१२६।

उपद्वारम् [अव्य० स०] पार्श्वद्वार।

उपधा (जुहो० उभ०) धोखा देना।

उपधालोप [ष० त०] अन्तिम से पूर्व का लोप।

उपधान (वि०) [उप + धा + ल्युट्] तनाव बढ़ाने के लिए वाद्ययंत्र में के तारों के अंदर रक्खे हुए लकड़ी के टुकड़े तालाग्धाना ... महा० ४।३५।१६।

उपधानीयम् [उप + धा + अनीयर्] 1 तकिया गद्देदार बिछावन 2 पायदान।

उपधाव् (भ्वा० उभ०) पूजा करना।

उपनति [उप + नम् + क्तिन्] 1 झुकाव 2 देय।

उपनम्र (वि०) [उप + नम् + र] आनेवाला, उपस्थित होने वाला।

उपनिबद्ध (वि०) [उप + नि + बन्ध् + क्त] 1 रचित 2 विस्पष्ट किंचिदुपनिबद्ध उत्तर० ७।

उपनिषेव् (भ्वा० पर० आ०) प्रसन्न करना।

उपनिर्गम [उप + निर् + गम् + अच्] मुख्य सड़क, प्रधान मार्ग।

उपनिर्गमनम् [उप + निर् + गम् + ल्युट्] द्वार, दरवाजा।

उपनिहार [उप + निर् + हृ + घञ्] आक्रमण हमला —नेदानीमुपनिहारं रावणो दातुमर्हति रा० ६।७५।२।

उपनिविष्ट (वि०) [उप+नि+विश्+क्त] 1. घेरा डालने वाला रखने वाला, अधिकार करने वाला।

उपनिवेशः [उप+नि+विश्+घञ्] 1 देहात, उपनगर 2 स्थापना।

उपनिषद् [उपनि+षद्+क्विप्] सकेन्द्रेण यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा —छा० १।१।१०।

उपनिषेव् (भ्वा० आ०) अपने आपको संलग्न करना।

उपनयः [उप+नी+अच्] (किसी भी शास्त्र में) दीक्षा।

उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] नियोजन, नियुक्ति, अनुप्रयोग।

उपनीत (वि०) [उप+नी+क्त] 1 विवाहित 2 ब्रह्मचर्य आश्रम में दीक्षित।

उपनुन्न (वि०) [उप+नुद्+क्त] उड़ा हुआ, लहरों में बहा हुआ — द्रुतमरुदुपनुन्नैः शि० ४।६८।

उपनेत्रम् [उप+नी+ष्ट्रन्] ऐनक, चश्मा।

उपन्यस्तम् [उप+नि+अस्+क्त] मल्लयुद्ध के समय हाथों की विशिष्ट मुद्रा ग० ६।४०।२६।

उपपतित (वि०) [उप+पत्+क्त] उपपातक या किसी सामान्य पाप का अपराधी, नगण्य पाप का दोषी।

उपपत्तिः [उप+पद्+क्तिन्] 1 दुर्घटना, संपात—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव महा० १२।२८८।११ 2. उपयुक्त, तर्कसंगत—उपपत्तिमदूर्जिताश्रयं नृपमूचे वचनं वृकोदरः —कि० २।१।

उपपत्तिपरिच्युत (वि०) [त० स०] अनिर्णीत, अप्रमाणित।

उपपत्तिसमः [त० स०] न्यायशास्त्र में वर्णित विरोध जहाँ दोनों विरुद्ध उक्तियाँ सिद्ध की जा सकती हैं।

उपपन्न (वि०) [उप+पद्+क्त] इच्छानुकूल, रुचिकर —उपपन्नेषु दारेषु पुत्रेषु च विधीयते —रा० २।१०२।१८।

उपपाद्य (वि०) [उप+पद्+ण्यत्] 1 अनुपाल्य 2 प्रमाणसापेक्ष 3. सत्ता में आने वाला।

उपपर्वन् (नपुं०) [प्रा० स०] चन्द्रमा के परिवर्तन से पूर्व का दिन।

उपपादः [उप+पद्+णिच्+घञ्] अतिरिक्त, स्तम्भ।

उपप्लवः [उप+प्लु+अप्] हानि, विफलता मायया विभ्रमच्चित्तो न वेद स्मृत्युपप्लवात् —भाग० १०।८४।२५।

उपप्लाव्यम् (नपुं०) मत्स्यदेश की राजधानी का नाम।

उपप्लुत (वि०) [उप+प्लु+क्त] दबाया हुआ, भीगा हुआ—कि० ८।३९।

उपभृ (जुहो० उभ०) धारण करना, वहन करना।

उपभृत (वि०) [उप+भृ+क्त] संगृहीत, निकट लाया गया—शिष्यायोपभृतं तेजो—भाग० ८।१५।२९।

उपभेदः [उप+भिद्+घञ्] उप प्रमाण।

उपमश्रवस् (वि०) (वैद०) [ब० स०] प्रशस्त - यशस्वामित्कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ऋ० २।२३।१।

उपमन्त्रिन् (पुं०) [उपमन्त्र+इनि] 1. अवरपरामर्शदाता, या मन्त्री 2 संदेशवाहक स्मरन्त उपमन्त्रिन् भव्यतामन्यवार्ता भाग० १०।७१।२९।

उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] धर्मविरुद्ध सिद्धान्त — —विधर्मः परधर्मश्च आभास उपमा छल —भाग० ७।१५।१२।

उपमाव्यतिरेक (पुं०) तुलना और वैषम्य का संयोग।

उपमर्दनम् [उप+मृद्+ल्युट] निग्रह निरोध।

उपमेखलम् (अ०) [प्रा० स०] (पर्वत के) ढलान पर।

उपयापनम् [उप+या णिच्+ल्युट्] 1 निकट पहुँचाना 2. विवाह

उपयुक्त [प्रा० स०] अधीनस्थ अधिकारी—कौ० अ० २।५।

उपयोगवत् [उपयोग+मतुप्, मस्य वत्वम्] उपयोगी, काम का।

उपयोगशून्य (वि०) [त० स०] व्यर्थ, निरर्थक।

उपयोज्य (वि०) [उप+युज्+ण्यत्] कार्य में लाने के योग्य।

उपरज्य (अ०) [उप+रञ्ज्+क्त (ल्यप्)] काला कर के, मिटा कर।

उपरञ्जक (वि०) [उप+रञ्ज्+ण्वुल्] 1 रंगने वाला 2 प्रभावशाली।

उपरतशोणिता (वि०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो चुका है।

उपरम्भ् (भ्वा० पर०) प्रतिध्वनि कराना, गुंजाना।

उपरि (अ०) [ऊर्ध्व+रिल्, उप आदेश] ऊपर, उपरांत, बाद। सम० काण्डम् मैत्रायणी संहिता का तीसरा खण्ड, तलम् सतह,- बृहती बृहती छंद का एक भेद, स्थ (स्थ) ऊपर रक्खा हुआ।

उपरुद्ध [उप+रुध्+क्त] कैदी, रोका हुआ।

उपरोधः [उप+रुध्+घञ्] उच्छेद, लोप, निकालदेना आनर्थक्याद्धि प्राकृतस्योपरोधः स्यात् —मी० सू० ८।४।१५। सम० कारिन् (वि०) विघ्नकारी, रुकावट डालने वाला।

उपल [उप+ला+क] नकली बन्दूक द्वारा फेंकी गई गोली। सम०—घर्षिन् (वि०) चक्की पर अनाज पीसने वाला —वृष्टिः ओलों की वर्षा।

उपलब्धिसम [उप+लभ्+क्तिन्+सम्+अच्] न्यायशास्त्र का शब्द जो किसी तर्क का कुतर्क पूर्ण निराकरण दर्शाता है —न्या० द०।

उपलम्भः [उप+लभ्+घञ्, मुम् च] देखना, दर्शन करना।

उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] मन्दता, कुन्दता।

उपलेख [उप+लिख्+घञ्] प्रतिशाख्यों से संबद्ध व्याकरण की एक रचना।

उपलोहम् (नपुं०) [प्रा० स०] गौण धातु, छोटी धातु।

उपवल्गनम् [उप+वल्ग्+ल्युट्] उछलना, नीचे झुक कर चलना, लेटकर खिसकना।

उपवञ्चित (वि०) [उप+वञ्च्+क्त] धोखा दिया गया, ठगा गया, निराश

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] देश स्वभौममेतदुपवर्तनमाश्मनैव नै० ११।२८।

उपवसनम् [उप+वस्+ल्युट्] उपवास करना।

उपोषित (वि०) [उप+वस्+क्त] जिसने उपवास रख लिया है।

उपोषितम् (नपुं०) [उप+वस्+क्त] उपवास रखना।

उपोढा [उप+वह्+क्त+टाप्] छोटी पत्नी जो पति को अधिक प्रिय हो।

उपविद् (वि०) [उप+विद्+क्विप्] 1 लाभ उठाने वाला, प्राप्त करने वाला 2 जानने वाला, (स्त्री०) 1 अधिग्रहण 2. पृच्छा।

उपविष्ट (वि०) [उप+विश्+क्त]। आसीन, अधिकृत।

उपविष्टक (वि०) [उप+विश्+क्त+कन्] जो अवधि पूर्ण होने पर भी अपने स्थान पर दृढ़ता से जमा हुआ है (जैसे कि गर्भाशय में भ्रूण)।

उपवीक्ष् (उप+वि+ईक्ष्) (आ०) 1 देखना 2 उचित या उपयुक्त समझना।

उपव्रजम् (अ०) [प्रा० स०] ग्वालों की बस्ती के पास।

उपशक् (दिवा० उभ०) 1 यत्न करना, सहायता करना 2 जानना, पूछताछ करना 3 (स्वा० पर०) समर्थ या योग्य होना।

उपशम [उप+शम्+घञ्] ज्योतिष में बीसवाँ मुहूर्त। सम०—**व्रतः** (जैन०) मूक रहकर कर्म नाश, कर्म न करना।

उपशयस्थ (वि०) [उपशय+स्था+क] घात में लगा हुआ।

उपशीर्षकम् [उपशीर्ष+कन्] 1. मस्तिष्क रोग 2. मोतियों का हार।

उपशूरम् (अ०) [प्रा० स०] शौर्य की कमी से।

उपशूर (वि०) [प्रा० स०] जिसमें शौर्य की कमी हो।

उपश्रुतिः [उप+श्रु+क्तिन्] 1 जनश्रुति, अफवाह —घोरामुपश्रुतिं कटुकाम् महा० ५।३०।५ 2. अन्तर्निविष्ट, समावेशन—यथा ग्रामाणां वर्णाना गतमानोपश्रुतिः पुरा महा० १२।६४।६ 3 एक देवी का नाम—महा० १२।३४२।४८।

उपश्लोकः [उप+श्लोक्+अच्] दसवें मनु के पिता का नाम।

उपष्टम्भक (वि०) [उप+स्तम्भ्+अच्+कन्] सामर्थ्य देने वाला, पुनर्बलन देने वाला।

उपसंयत (वि०) [उप+सम्+यम्+क्त] सम्बद्ध, पक्का जुड़ा हुआ।

उपसंक्रम् (भ्वा० पर०) अन्दर कदम रखना। घुसना, प्रविष्ट होना।

उपसंसृष्ट (वि०) [उप+सम्+सृज्+क्त] 1. संयुक्त सम्मिलित 2. कष्टग्रस्त, अभिशप्त, निन्दित—ब्रह्मशापोपसंसृष्टे स्वकुले - भाग० ११।३०।२।

उपसंस्कृत (वि०) [उप+सम्+कृ+क्त] 1. निष्पन्न, पक्व, तैयार किया हुआ 2. अलंकृत, भरा हुआ—अमृतोपमतोयाभिः शिवाभिरुपसंस्कृताः—रा० ५।१४।२५।

उपसंहृतिः [उप+सम्+हृ+क्तिन्] 1. उपसंहार, अन्त 2 विपत्ति।

उपसंक्लृप्त (वि०) [उप+सम्+क्लृप्+क्त] ऊपर जमाया हुआ—भाग० ४।९।५५।

उपसंग्रहः [उप+सम्+ग्रह्+अच्] तकिया।

उपसञ्ज् (तुदा० आ०) संलग्न होना अद्यापि नोपसज्जेत स्त्रीषु स्त्रैणेषु चार्थवित्— भाग० ११।२६।२२।

उपसदनम् [उपसद्+ल्युट्] आवास, स्थान (जैसा कि 'ब्रह्मोपसदन' में)।

उपसादनम् [उपसद्+णिच्+ल्युट्] नम्रता पूर्वक किसी के निकट जाना।

उपसन्ध्यम् (अ०) [प्रा० स०] सन्ध्या के निकट—उपसन्ध्यमास्त तनु सानुमतः—शि० ९।५।

उपसाध् (प्रेर० पर०) 1. दमन करना 2. संवारना, व्यवस्थित करना।

उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] बाधा ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः योग० ३।३७।

उपसर्जनीकृत (वि०) [उपसर्जन+च्वि+कृ+क्त] दमन किया हुआ, दबाया हुआ, गौण बनाया हुआ यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ व्यङ्क्तः ध्वन्या०।

उपसर्जित (वि०) [उप+सृज्+क्त] व्यक्त, लीन, विदा किया हुआ तक्षकादात्मनो मृत्युं द्विजपुत्रोपसर्जितात् भाग० १।१२।२७।

उपसृष्ट (वि०) [उप+सृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ—अश्वत्थाम्नोपसृष्टेन ब्रह्मशीर्ष्णोरुतेजसा भाग० १।२।१ 2 बरबाद, ध्वस्त—कालोपसृष्टनिगमावन भाग १०।८३।४।

उपसर्यः [उपसृप्+घञ्] तीन वर्ष का हाथी।

उपस्कन्न (वि०) [उप+स्कन्द्+क्त] सशंकित, कष्टग्रस्त, पसीजा हुआ शोकोपस्कन्नहृदया —रा० ६।१११।८७।

उपस्कारः [उप+कृ+घञ्] अचार, चटनी, मिर्चमसाला।

उपस्तीर्ण [उप+स्तृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ छितराया हुआ 2 वस्त्रावेष्टित, आच्छादित, ढका हुआ 3 उंडेला हुआ।

उपस्थ (वि०) [उप+स्था+क] 1. निकटवर्ती, पास:

(पुं०) आसन एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्—भग० १।४७ 2 सतह—स शयानः धरोपस्थे भाग० ७।१३।१२।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] न्यायालय का कक्ष उपस्थानगत. कार्यार्थिनामद्वारासङ्गं कारयेत्—कौ० अ० १।१४।

उपस्थापना [उप+स्था+णिच्, पुक्+टाप्] जैनसाधु की दीक्षा से संबद्ध संस्कार।

उपस्थितवक्तृ (पुं०) [उपस्थित+वच्+तृच्] आशुवक्ता।

उपस्नुत (वि०) [उप+स्नु+क्त] बहती हुई प्रवहणशील स्वयं प्रवृत्तोऽस्य गुणेभ्यस्नुता कि० १।१८।

उपस्पर्शनम् [उप+स्पृश्+ल्युट्] उपहार।

उपहासकम् [उपहस्+ण्वुल्+कन्] दिल्लगी, हास्यपूर्ण उक्ति।

उपहर्तृ (वि०) [उप+हृ+तृच्] उपहार प्रदान करने वाला, आतिथेयी।

उपहा (जुहो० आ०) उतरना, नीचे आना उपाजिहीथा न महीतलं यदि—शि० १।३७।

उपहार्यम् } [उप+हृ+ण्यत्, ण्वुल् स्त्रियां टाप् च]
उपहारकः } उपहार भेंट।
उपहारिका }

उपहितिः (स्त्री०) [उप+धा+क्तिन्] निष्ठा, भक्ति।

उपहूत (वि०) [उप+ह्वे+क्त] आमन्त्रित, बुलाया गया, आवाहन किया गया।

उपांशु (अ०) [उपगता अंशवो यत्र—ब० स०] 1 मन्द आवाज में, कान में कहना। सम०—जप: मन ही मन में मन्त्रों का जप करना, ग्रहः यज्ञ में निचोड़ कर निकाले हुए सोमरस का परोसना, दण्डः निजी रूप से दिया गया दण्ड,—वधः गुप्त हत्या।

उपाकृत (वि०) [उप+आ+कृ+क्त] 1 अभिमन्त्रित 2. उपयोग में लाया गया—यज्ञेऽप्युपाकृतं विप्रं महा० १२।२६८।२२।

उपाक्रम् (भ्वा० पर०) टूट पड़ना, हमला बोलना।

उपाघ्रा (भ्वा० पर०) 1 सूंघना 2 चूमना (जैसा कि 'मूर्ध्न्युपाघ्राय में')।

उपाङ्गः [प्रा० स०] जैनियों के धार्मिक ग्रंथों का समूह।

उपात्तविद्यः [ब० स०] जिसने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली है—उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी रघु० ५।१।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] सांख्य शास्त्र में वर्णित चार अन्तर्वस्तुओं में से एक प्रकृत्युपादानकालभाग्याख्याः—सां० का० ५०।

उपाधा (जुहो० उभ०) (किसी स्त्री को सतीत्वसमर्पण के लिए) फुसलाना, चरित्रभ्रष्ट करना।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1 किसी क्रिया का गौण उत्पादन, आनुषंगिक प्रयोजन 2 स्वामापत्ति, प्रतिपत्र उपाधिर्न मया कार्यो वनवासे जुगुप्सितः रा० २।१११।२९।

उपाध्वर्युः [प्रा० स०] अध्वर्यु का सहायक।

उपारमः [उप+आ+रम्+अप्] समाप्ति, अन्त।

उपारुद् (अदा० पर०) किसी बात के लिए रोना।

उपार्जित (वि०) [उप+अर्ज्+क्त] 1 उपलब्ध किया हुआ अवाप्त।

उपालभ् (भ्वा० आ०) (बलि पशु के रूप में) मारने के लिए पकड़ना।

उपावृत (वि०) [उप+आ+वृ+क्त] ढका हुआ, गुप्त।

उपाश्लिष्ट (वि०) [उप+आ+श्लिष्+क्त] जिसके आलिङ्गन किया है, या जिसने पकड़ लिया है।

उपासीन (वि०) [उप+आस्+शानच्, ईत्व] 1 निकटस्थ आसपास विद्यमान उपासना करने वाला।

उपस्थित (वि०) [उप+स्था+क्त] 1 सवार, खड़ा हुआ, 2 घटित, प्रस्तुत, आटपका जैसे कि 'व्यसन समुपस्थित में'।

उपायः [उप+अय्+घञ्] दीक्षा, यज्ञोपवीत संस्कार—उपायेन प्रवतरम् उपनयनेन सह प्रवतरन्—मै० सं० पर शा० भा०। सम०—विकल्पः वैकल्पिक तरकीब।

उपेयिवस् (वि०) [उप+इण्+क्वसु—पा० ३।२।१०९] निकट जाने वाला शि० २।११४।

उपेक्षणीय (वि०) [उप+ईक्ष्+अनीयर्] उपेक्षा करने के योग्य, नज़र अन्दाज करने के लायक, परवाह न करने योग्य।

उपैडकीय [ना० धा० पर० उप+एडक+क्यच्—] ऐसा व्यवहार करना जैसा कि भेड़ के साथ किया जाता है पा० ६।१।९४ पर काशिका।

उपेन्द्र+अपत्यम् [ष० त०] कामदेव।

उपात्त (वि०) [उप+आ+दा+क्त] अवाप्त, अर्जित —उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी रघु० ५।१।

उभय (वि०) [उभ+अयट्] दोनों। सम०—अन्वयिन् (वि०) जो दोनों अवस्थाओं में लागू हो सके, —अलङ्कारः एक अलंकार जिसमें अर्थ और ध्वनि दोनों घट सके, —प्रहेलिका दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं को दर्शाने वाला अलंकार, —पदिन् (वि०) जिसमें परस्मै—आत्मने दोनों पद विद्यमान हों, —विपुला एक छन्द का नाम,—विभ्रष्ट (वि०) जो न यहाँ का रहे न वहाँ का, दोनों जगह से असफल, कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति—भग० ६।३८, —स्नातक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और ब्रह्मचर्यव्रत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं मनु० ४।३१ पर कुल्लूक।

उभयतः (अ) [उभय+तसिल्] दोनों ओर से। सम०

पाश (वि०) जिसके दोनों ओर जाल बिछा हो,
पुच्छ (वि०) जिसके दोनों ओर पंख हों **प्रज्ञ**
(वि०) जो बाहर और भीतर दोनों ओर देख सके।

उमामहेश्वरव्रतम् (नपुं०) शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष प्रकार का एक धार्मिक व्रत।

उरगाशन: [ब० स०] सांपों को खाने वाला विष्णु।

उरस् (नपुं०) [ऋ + असुन्, उत्व रपरत्व] छाती। सम० —**कपाट**: चौड़ी सबल छाती —**क्षय**. उरोदिव छाती का रोग, —**स्तम्भ**: दमा।

उरुपराक्रम (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली।

उरुधा (अ०) [उरु + धा] नाना प्रकार से [illegible] भागवतकथा भाग० १।१३।४७।

उर्वशीशाप: [ष० त०] उर्वशी का अर्जुन को शाप जिसके फल-स्वरूप वह हिजड़ा बन गया और यह स्थिति अज्ञातवास में बहुत उपयुक्त रही। (यह उक्ति उस अवस्था में प्रयुक्त होती है जब प्रतीयमान हानिकर घटना लाभदायक सिद्ध हो जाती है)।

उलड् (चुरा० पर० उलण्डयति) बाहर फेंक देना प्रक्षेपण (धातुपाठ)।

उलिः, उल्ली (स्त्री०) सफेद प्याज।

उलूकः [वल + ऊ, सम्प्रसारण] एक ऋषि जिसे वैशेषिक का कर्ता कणाद समझा जाता है।

उलूकजित् (पुं०) कौवा।

उलूलि } (वि०) 1 जोर से क्रन्दन करने वाला, 2 कोलाहलमय विवाहादि शुभ अवसरों पर मधुर स्वर
उलूलु } वेत गान, विशेषतः स्त्रियों का, —नै० १४।५१, अनघ० ३।५५।

उल्बण (वि०) [उत् + बण् (व) ण अच् पृषो० साधु] 1 भयानक 2 पापमय। सम० —**रस**. शौर्य।

उल्लक [उद् + लक् + अच्] एक प्रकार की शराब।

उल्लस (भ्वा० पर० [illegible]) हिलाना लहराना [illegible] [illegible] कि० १६।५७।

उल्लसत् (वि०) [उद् + लस् + शतृ] चमकता हुआ।

उल्लाघ (वि०) [उद् + ला + घन + क] चतुर, प्रसन्न, —**घ** (पुं०) काली मिर्च।

उवट (पुं०) [illegible] प्रातिशाख्य तथा यजुर्वेद का भाष्यकर्ता।

उशत् (वि०) [वश् + शतृ] 1 सुन्दर 2 प्रिय, प्यारा 3 [illegible] 4 अश्लील [illegible] वाचम् [illegible] ।१०।

उशीर [illegible] के पिता का नाम।

उष्णगु [ब० स०] सूर्य।

उष्णोष्ण (वि०) [उष्ण + उष्ण] अत्यन्त गर्म उष्णोष्ण [illegible]।

उषस् (स्त्री०) [उष् + असि] प्रभात, भोर। सम० —**कर** [illegible] —**कल** [illegible] —**पतिः** अनिरुद्ध, —**पूजा** पौषमास में प्रातः काल की जाने वाली उषा की विशेष पूजा।

उष्ट्रनिषदनम् (नपुं०) योग का एक आसन।

उष्ट्रप्रमाण (पुं०) अठपैरा या [illegible] नामक एक जन्तु।

उष्ट्राक्ष [ब० स०] ऊंट जैसी आंखों वाला (घोड़ा), शालि०।

उष्णीष [[illegible] हिनस्ति इष + क] 1 पगड़ी 2 किसी भवन की चोटी।

उहार (पुं०) कछुवा।

ऊ

ऊकाराः (ब० व०) शैव सम्प्रदाय।

ऊखरजम् (नपुं०) 1 लवणयुक्त भूमि से तैयार किया गया नमक 2 यवक्षार कल्मीशोरा।

ऊतिः (स्त्री०) [अव् + क्तिन्] ऊनक शील।

ऊन् (चुरा० पर०) घटना घटाना।

ऊनातिरिक्त (वि०) अत्यधिक या अतिन्यून।

ऊनाब्दिकम् (नपुं०) [ऊनाब्द + ठक्] वर्ष से पूर्व ही मनाया जाने वाला श्राद्ध।

ऊनमासिक (वि०) [ऊनमास + ठक्] नियमित मासिक श्राद्धों के अतिरिक्त जो प्रतिमास श्राद्ध किये जाते हैं और दिनों की संख्या गिनकर एक वर्ष के भीतर ही भीतर मनाये जाते हैं।

ऊरु + अङ्कुम् (ऊर्वङ्कुम्) (नपुं०) स्तम्भ सदृश छत्रक।

ऊर्जमास (पुं०) कार्तिक महीना।

ऊर्जमेध (वि०) [ब० स०] असाधारण बुद्धि से युक्त।

ऊर्ध्व (वि०) [उद् + हा + ड पृषो० ऊर् आदेश] सीधा उन्नत उच्च —**र्ध्वम्** (नपुं०) ऊंचाई, ऊपर। सम० —**नभ** (पुं०) अग्नि —**तिलकः** मस्तक पर जातिसूचक खड़ा तिलक- सूर्यस्पर्धिकिरीटमूर्ध्वतिलकप्रोद्भासि फालान्तरम् सारस्व० २।१। —**वृक्ष** (पुं०) [illegible] केकड़ा —**प्रमाणम्** शीर्षमाप, उन्नयाश, —**वालम्** चमरी हरिण की पूंछ, —**लोचनः** [illegible] का वृक्ष।

ऊर्मिका [[illegible]] खिल्ला।

ऊषपथ्यम् (नपुं०) अपच्य भोजन।

ऊष्मायणम् [ब० स०] ग्रीष्म ऋतु।

ऊहनानम् (नपुं०) [illegible] के [illegible] में से एक।

ऊहनानी (स्त्री०) [illegible] [illegible] अलंकार।

ऋ

ऋक्ष् (स्वा० पर०) जान से मार देना ।

ऋक्षः [ऋष्+स किच्च] एक प्रकार का हरिण — रोहिद्भूतां सोऽन्वधावदृक्षरूपी हृतत्रपः —भाग० ३।३१।३६ । सम० —**इष्टिः** (ऋक्षेष्टि) ग्रहमख, तारों के निमित्त यज्ञ, —**जिह्वम्** एक प्रकार का कोढ़, —**नायक** एक प्रकार की गोलाकार संरचना या निर्माण — अ० पु० १०४, —**प्रियः** बैल, —**विडम्बिन्** (पुं०) धोखा देने वाला ज्योतिषी ।

ऋग्ब्राह्मणम् (ऋच्+ब्राह्मणम्) ऐतरेय ब्राह्मण ।

ऋजुकायः कश्यप मुनि ।

ऋजुलेखा सरलरेखा, सीधी लाइन ।

ऋण् (तना० पर०) जाना ।

ऋणच्छेदः [ऋण+छिद्+घञ्] ऋण का परिशोध ।

ऋणनिर्बन्धनम् (ऋणपत्रम्) (नपुं०) ऋण का स्वीकृति सूचक पत्र, रुक्का ।

ऋणप्रदातृ [ऋण+प्र+दा+तृ] साहूकार, रुपया उधार देने वाला ।

ऋतसामन् (नपुं०) एक साम का नाम

ऋतम्भरा [ऋत+भृ+खच्, मुमागम] बुद्धि, प्रज्ञा योग० १।४८ ।

ऋतुः [ऋ+तु किच्च] मौसम । सम० —**चर्या** (जीवधारियों का) ऋतु के अनुकूल व्यवहार, —**जुष्** (स्त्री०) प्रजनन के उपयुक्त समय पर मैथुन में रत महिला, —**पशुः** ऋतु के अनुकूल यज्ञ में बलि दिये जाने वाला पशु ।

ऋद्धम् [ऋध्+क्त] गाहने के पश्चात् अनाज का संग्रह करना ।

ऋद्धित (वि०) [ऋद्ध+इतच्] समृद्ध बनाया गया — राजसूयजितांल्लोकान् स्वयमेवासि ऋद्धितान् — महा० १८।३।२५ ।

ऋश्यमूकः एक पर्वत का नाम ।

ऋश्यमाचल (पुं०) शंकराचार्य के जीवन से सम्बद्ध केरल में एक पर्वत पर स्थित मन्दिर ।

ऋषिऋणम् (नपुं०) ऋषियों के प्रति जनसाधारण का कर्तव्य, जन समाज पर ऋषियों का ऋण ।

ऋषिका (स्त्री०) ऋग्मन्त्रों की द्रष्ट्री एक स्त्री ।

ऋष्टिः (स्त्री०) [ऋष्+क्तिन्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र — सताडवीणामुरजर्ष्टिवेणुभिः — भाग० ३।१५।२१ ।

ए

एकः [इ+कन्] प्रजापति — एक इति च प्रजापतेरभिधानमिति मै० सं० १०।३।१३ पर शा० भा० —**कम्** 1 मन — एकं विनिन्ये स जुगोप सप्त — बु० च० २।४१ 2 एकता । सम० —**अक्षरम्** (एकाक्षरम्) पुनीत प्रणव, 'ओम्' —**अग्नि** (वि०) जो केवल एक ही अग्नि को रखता है —**अङ्कम्** वह नाटक जिसमें एक ही अङ्क हो, —**अङ्गी** अपूर्ण अधूरा, —°**रूपक** (अधूरा रूपक या उपमा), —**अवयवः** अपाय जिसमें एक अवयव कम हो, —**आहार्य** (वि०) एक सा भोजन करने वाला, जो प्रतिषिद्ध और अनुमत भोजन में विवेक न करे, —**एकशम्** अलग-अलग एक एक करके, —**ग्रामीण** (वि०) एक ही गांव का रहने वाला, —**चरः** तपस्वी, सन्यासी — नाराजके जनपदे चरत्येकचरो वशी रा० २।६७।२३, —**छत्र** (वि०) जो केवल एक ही छत्र से शासित हो, जहाँ एक ही राजा का राज्य हो, —**जीववादः** (दर्शन० में) केवल जीवात्मा का सिद्धान्त, —**दण्डिन्** (पुं०) सन्यासियों की एक श्रेणी, —**धुरीण** (वि०) एक ही भार को उठाने वाला — तत्कण्ठमार्गैकधुरीणयीन — नै० ६।९५, —**नयनः** असुरों का गुरु शुक्राचार्य — (कहते हैं कि वामन ने इनकी एक आंख में तिनका चुभो दिया था), —**निपातः** एक अव्यय जो अकेला ही एक शब्द है —**पादिका** एक ही पैर का सहारा लेकर खड़े होना — अथावलम्ब्य क्षणमेकपादिकाम् नै० १।१२१, —**पार्थिवः** एकमात्र शासक, सम्राट् —न केवलं तद् गुरुरेकपार्थिवः रघु० ३।३१, —**वाक्यम्** वाक्यरचना की दृष्टि से युक्तिसंगत वाक्य, —**वाचक** (वि०) पर्यायवाची, —**वासस्** (वि०) एक ही वस्त्र से आच्छादित, —**विंशक** (वि०) इक्कीसवाँ, —**विंशकः** पूरी जीत कौ० अ० १२, —**वीरः** 1 प्रमुख योद्धा 2 स्कन्द के नौ सहायकों में से एक, —**व्यावहारिकाः** बौद्धों की एक शाखा, —**शेफः** एक ही जड़ का वृक्ष ।

एकशतम् (नपुं०) एक प्रतिशत ।

एकलव्यः (पुं०) द्रोणाचार्य के एक शिष्य का नाम जिसने अपनी गुरुभक्ति के कारण धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त की ।

एकाष्टका (स्त्री०) माघ मास का आठवाँ दिन ।

एकाष्ठी (स्त्री०) कपास का बीज, बिनौला ।

एजत् (वि०) [एज्+शतृ] कांपता हुआ, हिलता हुआ ।

एणतिलकः (—शावकः) [ष० त०] हरिण का बच्चा, छौना ।
एलावालुः [ब० स०] एलवा ।
एलाबहुलकः [ब० स०] शिव जी ।
एतत्पर (वि०) इस पर तुला हुआ, इसमें लीन ।
एतनः [आ+इ+तन] 1. निःश्वास, सांस 2. एक प्रकार की मछली ।
एतावन्मात्र (वि०) [एतद्+वतुप्+मात्रच्] इस स्थान तक, इस माप का, इस अंश तक, ऐसा ।
एलादि (वि०) [ब० स०] कुछ आयुर्वेदिक औषधियों का पुञ्ज-जो इलायची से आरम्भ होती हैं ।
एलासुगन्धि (वि०) इलायची की सुगन्ध से युक्त ।
एव (अ०) [इ+वन्] पुनः, फिर—एवमवाक्स्य पुनरित्यर्थं भविष्यति—मी० सू० १०-८-३६ पर शा० भा० ।
एष् (भ्वा० उभ०) जानना,—एषितुं प्रेषितो याती—भट्टि० ५।८२ ।
एषिका [एष्+ण्वुल्+टाप्] लोहे का शहतीर जिसमें कोई कब्जा या टोपी न हो ।
एष्टव्य (वि०) [एष्+तव्य] जिसके लिए प्रयत्न किया जाय, जिसकी लालसा हो, जिसके लिए लालायित हुआ जाय ।

—

ऐ

ऐककर्म्यम् [एककर्म+ष्यञ्] 1 कार्य की एकता 2 एक ही फल में अंशभागी होने की स्थिति मी० सू० ११।१।१ पर शा० भा० ।
ऐकगुण्यम् [एकगुण+ष्यञ्] एक इकाई का मूल्य ।
ऐकमुख्यम् [एकमुख+ष्यञ्] 1 पूरा अधिकार 2. अधीनता ।
ऐकान्त्यम् [एकान्त+ष्यञ्] 1. एकान्तता, निरपेक्षता, एकान्तवास 2. भिन्नता ।
ऐक्यारोपः [ष० त०] समीकरण ।
ऐतशप्रलापः [ष० त०] अथर्ववेद का एक अनुभाग जिसका द्रष्टा ऐतश ऋषि था (यह भाग कुन्ताप सूक्तों के पश्चात् आता है ।
ऐन (वि०) [इनः सूर्यः, तस्य, इदम्—अण्] सूर्य संबंधी - निर्बन्धं वर्णेन समागमेन -- रा० च० ६।२५ ।
ऐन्दव (वि०) [इन्दु+अण्] चांद का उपासक- मै० ११।७६ । सम०—किशोरः दूज का चांद—ऐन्दव-किशोर शेखर ऐश्वर्यं चकास्ति निगमानाम् — मुक० ।
ऐरम् [इरा+अण्] राशि, ढेर ।
ऐशम् [ईश्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, सर्वोच्चता ।
ऐश्य (वि०) [ईश्+ष्यत्] ईश संबंधी ।
ऐश्वरकारणिकः [ईश्वर+अण्+कारण+ठक्] एक नैयायिक का नाम ।
ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] सर्वशक्तिमत्ता, तथा सर्वव्यापकता की शक्ति महा० १२।१८४।४० ।

— —

ओ

ओकज (वि०) [उच्+क, नि० चस्य कः, तस्मिन् जायते —जन्+ड] घर में उत्पन्न या पले (गौ आदि पशु) ।
ओकणी [ओ+कण्+अच्+ङीप्] सीमावर्ती जंगल ।
ओघः [उच्+घञ्, पृषो० च०] तीन वाद्य विधियों में से एक—नागा० १०।१४ ।
ओजस् [उब्ज्+असुन्, बलोप, गुण] वेग, गति—एष द्युतिवक्षः शैव्ये रथेन पवनौजसा —रा० ७।२९।१२ ।
ओजायितम् [ना० धा० ओज+य+क्त] साहसपूर्ण पग, हिम्मत से युक्त व्यवहार ।
ओपशः (वेद०) तकिया, सहारा, अवलम्बन ।
ओलण्ड् (भ्वा० पर०) फेंक देना, उछाल देना ।
ओषधिः [ओष+धा+कि] 1 सोम का पौधा 2. कपूर ।
ओष्ठः [उष्+थन्] होठ । सम०—अपलोप्य (वि०) जो होठों से खाया जा सके,—प्रकोपः सर्दी के कारण होठों का फटना ।
ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] ओष्ठ संबंधी, जो होठों पर रहे । सम०—योनि (वि०) जो ओष्ठध्वनि से उत्पन्न हो, —स्थान (वि०) जो होठों से उच्चरित हों ।

औ

औग्रसेन: [उग्रसेन+अण्] उग्रसेन का पुत्र कंस।
औच्च्यम् [उच्च+ष्यञ्] देशान्तर, (ग्रह की) दूरी।
औतथ्य (वि०) [उतथ्य+अण्] उतथ्य कुल से संबद्ध, उतथ्य कुल में उत्पन्न।
औत्तमर्णिकम् [उत्तमर्ण+ठक्] कर्ज, ऋण।
औत्थितासनिक: [उत्थितासन+ठक्] बैठने के लिए आसनों का प्रबंध करने वाला अधिकारी—बं० शि० १४९।
औत्पत्तिकम् [उत्पत्ति+ठक्] लक्षण, स्वभाव —औत्पत्तिकेनैव संहननबलोत्पेता भाग० ५।२।२१।
औदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तरी देश से संबंध रखने वाला।
औदुम्बरायण: [उदुम्बर+फक्] एक वैयाकरण का नाम।
औद्ग्राहिक: [उद्ग्राह+ठञ्] 'उद्ग्राह' अर्थात् कर का संग्राहक -घोषाल० २१०।
औपकुर्वाणक (वि०) [उपकुर्वाण+कक्] किसी नियत अवधि के ब्रह्मचारी 'उपकुर्वाण' से संबद्ध।
औपगवि: (पुं०) उद्धव—भाग० ३।४।२७।
औपपत्यम् [उपपति+ष्यञ्] उपपति या जार से प्राप्त होने वाला हर्ष।

औपसन्ध्य (वि०) [उपसन्ध्या+अण्] स या आरंभ होने से जरा पूर्ववर्ती समय से संबद्ध रश्मिभिरौपसन्ध्यैः —नै० २२।५६।
औपस्थितिक [उपस्थिति+ठक्] सेवक एवं भर्तृपादमूला-दौपस्थितिका तुम प्रतिज्ञा० १।
औम (वि०) [उमा+अण्] उमा संबंधी।
औरस (वि०) [उरसा निर्मित+अण्] 1 शारीरिक, व हास्त्यस्यौरसं बलम् महा० ।।२।३१ 2 नैसर्गिक —शिशोरौरसकृतं बलम् महा० ।।२।३।।
और्णस्थानिक [ऊर्णस्थान+ठक्] ऊन विभाग का अधिकारी।
औषधम् [औषधि+अण्] ... औषधम्
निषधमनौषधं जनं शि० १।।
औषधिप्रतिनिधि (पुं०) किसी ... के स्थान में प्रयुक्त होने वाली जड़ी बूटी।
औष्ट्रिक (वि०) [उष्ट्र+ठञ्] ऊँट संबंधी।
औष्ट्रिक: [उष्ट्र+ठक्] 1 ऊँट से प्राप्त (दुग्धादिक) 2 तेली महा० ८।।।

क

कम् [कै+ड] 1 बाल केश 2 महिला का जूड़ा 3 बालों का गुच्छा 4 दुःख 5 विपत्ति 6 जहर 7 भय।
कंश: [क जलं शेते अत्र] जलपात्र।
कंसकृष: [कंस+कृष्+अच्] श्रीकृष्ण का विशेषण —निषेदिवान् कंसकृषः स विष्टरे - शि० १।१६।
ककुदिन् (वि०) [ककुद्+इनि] नेता स्वामी आस्य बिदूष्य ककुदी —महा० १२।२८०।१९।
कक्ष्यम् [कक्ष+यत्] सूखे घास की चरागाह, प्रदर्शन यथा कक्ष्यं चित्रभानुर्हिमात्यये -रा० २।७४।८।
कक्ष्या [कक्ष+यत्+टाप्] 1 सेना का घेरा 2. प्रतिद्वन्द्विता 3 प्रतिज्ञा 4 शेष, अवशिष्ट।
कङ्कवाजल (पुं०) [ब० स०] बाण —अर्शयान कव्यिमिति परम ककुवाहल -रा० ५।२१।२६।
कङ्कटेरी (स्त्री) हरिद्रा, हल्दी।
कङ्कणधारणम् [ष० त०] किसी बड़े यज्ञ का उपक्रम सूचक मुख्य पुरोहित या यजमान की कलाई में सूत्रबन्धन या कड़ा पहनाना।
कङ्केलि: (पुं०) वृक्षविशेष जिसमें वसन्त में फूल आते हैं पद्मनामीशान प्रमदवनकङ्केलितरवे —सौ०।

कचप्लिका (स्त्री०) केवल सिर भिगोना, सिर का स्नान।
कच्छ [क+छा+क] घना जमा हुई बस्ती।
कच्छलिका (स्त्री०) पार का बना ... ।
कञ्चुकीय [कञ्चुक+छ] ... ।
कञ्जिनी [कञ्ज ... +ङीप्] ... ।
कट [कट+अच्] 1 ... 2 ... 3 बाण 4 ... का ... 5 ... की ... । सम० **कुटि** (पुं०) [ष० स०] ... की ... वाली झोंपड़ी — **कृत** (पुं०) ... की ... बनाने वाला — **पूत** हाथी जो ... अवस्था में हो, — **भू** हाथी का, ... का प्रदेश **स्थालम्** शव, लाश, **अक** (पुं०) जनसमुदाय विशेष ... गणा भवन्ति स आसीदोषे महा० १।।। **काम** पूस, चिथड़ा ... ।
कटारिका (स्त्री०) एक छोटी ... छुरी।
कटिनी (पुं०) हस्तिनी।
कटुमञ्जु } मूषा अदर्भक मोठ।
कटुम्भा }
कड् (भ्वा० पर०) एकत्र करना मिट्टी से ढकना।

कट्टारिका (स्त्री०) कसाई की छुरी।

कठः [कठ् + अच्] एक ऋषि का नाम जो वैशम्पायन के शिष्य थे। सम० —**उपनिषद्** एक उपनिषद् का नाम, **कालापाः** कठ और कालाप की शाखाएँ —पा० २।४।३ पर महाभाष्य —से च से कठकालापा रा० २।३२।१८, **धूर्तः** यजुर्वेद की कठ शाखा में प्रवीण ब्राह्मण।

कठिनम् [कठ इनच्] 1 कुदाल —कठिनकाज च रा० २।५५।१७ 2 मिट्टी का बर्तन —महा० ३।२९७।१, 3 कंधे पर जमाया हुआ फीता या बाँस जिससे बोझा ढोया जाय पा० ४।४।७२।

कठिकल्ल. (पु०) एक प्रकार का मेव।

कठुर (वि०) [कठ + उरच्] कठोर, क्रूर।

कठोरित (वि०) [कठोर + इतच्] कड़ा किया गया, सबल बनाया गया।

कडुली (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल।

कडेर एक देश का नाम।

कण [कण + अच] मगरमच्छ।

कणवीरक (पु०) एक प्रकार का सब्जिया।

कण्टक [कण्ट् + ण्वुल] मन दुखाने वाला भाषण।

कण्टकिल. [कण्टक + इलच्] बाँस।

कण्टाफलः [कण्टा - फल् + अच्] सेमल का फल, सेमल का पेड़।

कण्ठ [कण्ठ् + अच्] गला, कण्ठ। सम० —**हार,** दुष्कवेयूरकण्ठश्च महा० ५।१६३।३९, —**नालम्** कण्ठ की नाली, ग्रीवाप्रदेश —**माला** एक रोग का नाम जो प्राय गले में होता है, —**शोषम्** आवाज का कम करना।

कण्ठला (स्त्री०) बेत से निर्मित एक टोकरी।

कण्ठित (वि०) [कण्ठ इतच्] 1 पीए हुए —शराबी 2 नवल उच्चरित —पृषिङ्कण्ठहूका मे धनिष्ठा पारिशा० ३।

कण्ठोपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।

कत्तशब्द (पु०) घासे पकने का शब्द और कत्तशब्दे निर्वाणकरण हरति हृदय मृच्छ० ५।५।

कथ् (अ० उभ०) व्याख्यान करना।

कथकटीका (स्त्री०) रामायण की टीका।

कथन्ता [कथम् + तल्] अवर्णनीय बेचैनी।

कथाशेष (वि०) जो केवल कथा में ही रह गया हो मृत।

कदम्ब [कद् + अम्बच्] 1 धूल 2 सुगन्धि कदम्ब गंध नीचे श्यानिनिशं अणम् म । पन्नग समूहे गन्धे च नाना० । सम० —**युद्धम्** एक रूप शृंगाररस का नाटक आख्या०।

कदली [कदल + ङीष्] केला। सम० —**जाता** 1 एक प्रकार की ककड़ी 2. एक सुन्दर महिला, —**गर्भः** केले का गूदा।

कनकम् [कन + वुन्] सोना, —**कः** (पु०) 1 पलाश वृक्ष 2 धतूरे का पौधा। सम० **कदली** एक प्रकार का केला जिस के पत्ते भूरे होते हैं कीडार्शैल कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीय मेघ० ७९,—**कारः** सुनार, **पट्टम्** कपड़ा जिस पर सोने या जरी का काम हुआ हो पीत कनकपट्टाम अस्त तद्मन शुभम् रा० ५।१५।४५, **पर्वतः** मेरु पहाड़।

कनपः [कनो दीप्तिर्गति शोभा वा पाति स] एक प्रकार का अस्त्र महा० ३।२०।३४।

कनिष्कः एक राजा जो पहली शताब्दी में हुआ।

कनिष्ठा [अतिशयेन युवा युवन् + इष्ठन् कनादेश] छोटी पत्नी।

कनीनिकम् [कनीन + कन्, इत्वम्] कुछ सामग्रियों का समूह।

कनीयस् (पु०) [युवन् + ईयसुन् कनादेश] छोटा भाई —कल्पवानह वाले कनीयास मजस्व मे रघु० १२ 2 कामोन्मत्त, प्रेमी।

कन्तु [कम् + तु] प्रेमी।

कन्दराल [कन्दर + आलच्] अखरोट का वृक्ष।

कन्दर्प. [क कुत्सितो दर्पो यस्मात् —ब० स०] काम देव। सम० **दर्पः** कामदेव की शक्ति - **वह्निः** कामातुरता के कारण होने वाली गर्मी।

कन्दाश [ब० स०] जो कन्द अर्थात् जड़ें खाकर जीवित रहता है।

कन्दुकघातः [ष० त०] गेंद को उछालना —आरामसीमनि च कन्दुकघातलीलालोलायमाननयनाम् —नाग०।

कन्यका [कन्या + कन्, ह्रस्वता] दुर्गा।

कन्यका परमेश्वरी कन्या कुमारी की अधिष्ठात्री देवता।

कन्यस् (वि०) 1 छोटा 2 निम्नतर, नीचे का।

कन्यस. (पु०) सबसे छोटा भाई —सा (स्त्री०) सबसे छोटी अँगुली, —सी सबसे छोटी बहन।

कन्या [कम् + यक् + टाप्] 1 अविवाहित लड़की या पुत्री 2 कुमारी 3 दुर्गा। सम० —**दूषकः** जो कुमारी कन्या से हठसंभोग या जबरजिनाह करता है —**भैक्षम्** लड़की को उपहार के रूप में मांगना, —**व्रतस्था** मासिकधर्म वाली स्त्री—यदि कन्याव्रतस्थाया —कथा०।

कपाटबन्धनम् [ष० त०] दरवाजा बन्द करना।

कपाटिका (स्त्री०) दरवाजा।

कपालमोक्षः [ष० त०] निर्वाण होने पर सन्यासी की कपालक्रिया जो उसके उन्नत जीवन का सूचक है।

कपिमुष्टि (स्त्री०) बन्दर की बंधी मुट्ठी, दृढ रखा हुआ घूसा, (आल०) दृढ़ पकड़।

कपिलत्वम् (नपुं०) कन्धर की विशेषता —कपिलत्वमलवस्थितम्—रा० ५।

कपिलवस्तु उस नगर का नाम जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था।

कपिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कावेरी में मिलती है।

कपोतवृत्तिः (स्त्री०) [ब० स०] कबूतर की स्वभाव होना, अपने भोजन का कुछ भी प्रबन्ध न करना महा० १।२६०।१५।

कपोलवादनम् (नपुं०) अपनी त्रुटि को स्वीकार करने के चिह्न-स्वरूप अपने गालों को थपथपाना।

कपोलपत्रम् (नपुं०) पत्ते से मिलता-जुलता एक चिह्न गालों पर अंकित करना।

कपोलपालिः (—ली) (स्त्री०) गाल का एक पार्श्व।

कबलः [क+बल् (वल्)+अच्] दे० 'कवल'।

कबलम् (नपुं०) हाथियों का एक प्रकार का प्राकृतिक चारा।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] प्रेमी, पति—उदयाचलमुत्तुङ्गं कमनं ... चाहेन्द्र २।१०१।

कमला [कमल+अच्+टाप्] नारंगी, संतरा।

कमलाक्षः [ब० स०] 1 कमल का बीज 2 कमल जैसी आँखों वाला 3. विष्णु।

कमलिका (स्त्री०) छोटा कमल।

कमठः [कम्+अठच्] हाथी की सूंड, गजग्रावरणे ... नाना०।

कम्र (वि०) 1. चमकीला 2 प्रसन्न।

करः [कृ+अप्, अच् वा] 1. हाथ 2 टैक्स, शुल्क। सम० —कच्छपिका (स्त्री०) योग की एक मुद्रा जिसमें हाथ कछुए से मिलते-जुलते हो जाते हैं— कृच्छ्रम् (वि०) दरिद्र, जिसका कठिनाई से निर्वाह हो —तलीकृ हथेली में रखना, चुल्लू की भाँति अञ्जलि में रखना - तत करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विषम् —माघ० ८।७४१,—थाली 1 चमड़े का बना हुआ प्याला 2. जो भिक्षा अपने हाथ में ग्रहण करता है —पर्ण,—पर्णी,—पर्णकः एक पौधे का नाम।

करकवारि [ष० त०] ओलों का पानी— कौ० अ० २।२०।

करटामुखम् (नपुं०) हाथी की कनपटी पर एक छिद्र जिसमें से हाथी की मदोन्मत्तता के समय तरल पदार्थ बहता है।

करणम् (नपुं०) [कृ+ल्युट्] ग्रहों की गति के विषय में वराहमिहिर की एक कृति। सम०—कुतूहलम् ज्योतिषशास्त्र का एक ग्रन्थ,—विभक्तिः तृतीया विभक्ति — कृत्यानां कर्तरि करणविभक्तिसंयोगात् पी० सू० ३। २।१२ पर वा० भा०।

करभः [कृ+अभच्] कौटि, कूल्हा।

करम्भ (वि०) [क+रम्+अच्] गुंथा हुआ, तना हुआ—कामाधिकस्त्वयि रचितो न परमारोहन्ति यथा करम्भवालुकानि —माग० ९।१६।३९।

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] जिसके दांत बाहर को निकले हुए हों।

करालित (वि०) [कराल+इतच्] 1 सताया हुआ 2 आवर्धित, प्रखर किया हुआ।

करिन् (पुं०) [कर+इनि] 1 हाथी 2 'आठ' की संख्या। सम०—मुक्ता मोती,—रतम् संभोग के समय का विशेष आसन, रतिबन्ध—कि० ५।२३ पर टीका,—सुन्दरिका जलमापक, पानी का चिह्न।

करीर(—क) (स्त्री०) 1 झींगर 2 हाथी के दांत की जड़।

करुणाकरः [करुणा+कृ+अच्] दयालु, करुणा करने वाला।

करूषः (पुं०) मर्दी, मदनी, मैल, पाप निर्मलो निष्करूष-एव बुद्ध इन्द्रो यथाभवत् रा० १।२४।२१।

करूषाः (ब० व०) एक देश का नाम रा० १।२४।

कर्क (वि०) [कृ+क] 1 रत्न, मणि 2 नारियल के खोल से बनाया गया पात्र 3 कंधुत।

कर्का (स्त्री०) सफ़ेद घोड़ी।

कर्कन्धु (—न्धू) (स्त्री०) [कर्क कण्टकं दधाति-धा+कू] बेर विशेष का भूण—दशाहेन तु कर्कन्धू —भाग० ३।३१।२।

कर्कन्धुः (पुं०) बिना पानी का कुआँ उणादि० १।२८ पर भाष्य।

कर्करेतम् (नपुं०) पतंग से पकड़ना।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1 रूखा, निष्ठुर 2 दुर्व्यसनी,—शः (पुं०) काले रंग का बकरा।

कर्णः [कर्ण्+अप्] 1 वृत्त की व्यास 2 अन्तर्वर्ती प्रदेश, उपदिशा। सम—अन्तक (—कम्) कर्णपालि,—अन्तु (वि०), —अतीर (वि०), सुनने में कष्टप्रद, —कषायः कान की मवाद—आपीयतो कर्णकषायशोषान्—भाग० २।६।४६, —चूलिका कानों की बाली, —ज्वरम् कान का विकार, —मलम् कान की मैल, चूच, —विष्णुकर्णमलोद्भूतौ दे० म०,—भूषणः कर्णभूषण, —शोधकम् (नपुं०) कान बहने पर कान से निकलने वाला फूल,—हर्म्यम् पार्श्वस्थ बुर्जी।

कर्णेचुरचुरा (स्त्री०) कानाफूसी, कान में कोई रहस्य की बात कहना।

कर्णेजपः [कर्णे+जप्+अच् अलुक्समास] 1 कानाफूसी करना 2 संवादवाहक ... तवाननं कर्णेजपनपीयूषवर्षिता सौ०।

कर्णेरी (स्त्री०) नृत्य का एक भेद।

कर्तृकरम् (नपुं०) 'कर्ता' को दर्शाने वाला शब्द।

कर्तृनिन्दक (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले के संबद्ध।

कर्तरी कर्तरिका [कृत्+अरन् ङीप्, स्त्रियां कन्+टाप्, ह्रस्वत्व] एक प्रकार का चाकू, छुरा।

कर्पूरमञ्जरी (स्त्री०) राजशेखरकृत एक नाटक।

कर्पूरस्तवः [कर्पूर+स्तु+अप्] तन्त्रशास्त्र में वर्णित स्तुतिगान।

कर्मन् (नपुं०) (कृ+मनिन्) 1. कार्य करने की इन्द्रिय —कर्माणि कर्मभिः कुर्वन्—भाग० ११।३।६ 2. प्रशिक्षण, अभ्यास कौ० अ० २।२। सम०—अन्त (कर्मान्तः) कार्यकर्ता कच्चित्त सर्वे कर्मान्ताः रा० २।१००। ५२, —अन्तरम् (कर्मान्तरम्) दूसरा कार्य,—अपनुत्तिः कर्मापनुत्तिः) (स्त्री) कर्म का नाश,—आख्या (कर्माख्या) कर्म के आधार पर नामकरण, —आशयः (कर्माशयः) अच्छे बुरे कर्मों के फलों का संचयस्थान, —गतिः पूर्वकृत कर्मों की दशा—शुभाशुभौ कर्मगतिप्रवृत्ती—कुमार०, —च्छेदः कर्तव्यकर्म पर उपस्थित न रहने के फलस्वरूप हानि—कौ० अ० २।७, —देवः जिसने अपने धर्मपूर्ण कृत्यों के द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया है, —नामधेयम् कुछ कारणों के आधार पर नाम रखना यूँही अपनी इच्छा से नहीं,—निश्चयः किसी कार्य का निर्णय,—श्रुतिः कार्य का आख्यान करने वाली वैदिक उक्ति कर्मश्रुतेः परार्थत्वात्—मी० म० ११।२।६।

कर्पूरकः (पुं०) अदरक जैसा एक सुगन्धित पदार्थ जो औषधियों तथा सुगन्ध द्रव्यों के निर्माण में प्रयुक्त होता है, कचोरा।

कल (वि०) [कल्+घञ्] 1. प्रबल 2. (समासान्त में प्रयुक्त) पूर्ण, भरा हुआ—दीनस्य ताम्राश्रुकलस्य राज्ञः—रा० २।१३।२४। सम०—व्याघ्रः तेंदुआ और मादा चीता से उत्पन्न संकर नस्ल का जानवर, बाघ।

कलङ्कः (पुं०) [कल्+क्विप्, कल् चासौ अङ्कश्च कर्म० स०] सम्प्रदायद्योतक मस्तक पर तिलक—कलङ्कं·· तिलकेऽपि च नाना०।

कलञ्जन्यायः (पुं०) न्याय जिसके अनुसार किसी से संबद्ध निषेध उस कार्य को करने का प्रतिषेध करता है।

कलमगोपवधू (—गोपी), ((गोपालिका) } (स्त्री०) चावलों के खेत की रखवाली के लिए नियुक्त स्त्री, —शि० ६।४९, जानकी० ११।

कलहनाशनः एक पौधा, करञ्ज।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1. हाथी की पूँछ के पास मांसल गद्दी 2. स्वरूप लीलया दधत कलाः—भाग० ३।१।१७ 3. नाशकारी शक्ति संहृत्य कालकलया—भाग० ११। ९।१६। सम०—आरः ललितकलाविद्, कलाविज्ञ।

कलावती (स्त्री०) [कला+मतुप्+ङीप्] एक प्रकार की वीणा।

कलिकारकः (पुं०) 1. करञ्ज वृक्ष 2. पक्षिविशेष।

कलिका [कलि+कन्+टाप्] सर्वोत्तम कवि के लिए सम्मानसूचक उपाधि।

कलिल (वि०)[कल्+इलच्] 1. विकृत, संकुचित 2. सन्दिग्ध, अनिश्चित—एतन्मात्रकारणाच्छेयः कलिलं प्रतिभाति मे—महा० १२।२८७।११।

कलुष (वि०) [कल्+उषच्] 1. गदा, मैला। सम० —आशय (वि०) जहरीला, —दृष्टि (वि०) बुरी दृष्टि से देखने वाला।

कल्किपुराणम् (नपुं०) एक पुराण का नाम।

कल्पः [कल्प्+घञ्] आस्था, विश्वास—लौकिके समवायारे कृतकल्पो विशारदः रा० २।१।२२। सम०—वृक्षः, —तरुः कोई व्यक्ति या पदार्थ जो प्रचुर मात्रा में भलाई करे—निगमकल्पतरोर्गलितं फलं—भाग० १। १।३,—स्थानम् 1. औषधियों के निर्माण की कला 2. विषविज्ञान, भेषजविज्ञान—सुश्रुत।

कल्पकः [कल्प्+ण्वुल्] 1 वृक्षविशेष, कचोरा 2. (वि०) मानकस्वरूप, निश्चित नियमानुकूल—शास्त्रविस्तारकल्पकैः त्रिभिरस्तमकल्पकैः. भाग० १।८।६।

कल्पनाशक्तिः (स्त्री०) [ष० त०] विचार बनाने की सामर्थ्य, विचारों की मौलिकता, भावनाशक्ति।

कल्प (वि०) [कला+यत्] ललित कलाओं में दक्ष।

कल्याण (वि०) [कल्य+अण्+घञ्] यथार्थ, प्रमाणित, युक्तियुक्त—कल्याणी बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे रा० ५।३४।६। सम०—पञ्चकः वह घोड़ा जिसका मुख और पैर सफ़ेद हों।

कल्हणः (पुं०) राजतरंगिणी का रचयिता।

कवि (वि०) [कु+इ] 1. सर्वज्ञ 2 बुद्धिमान्—विः (पुं०) 1 विचारक, कविता करने वाला 2 वाल्मीकि 3. ब्रह्मा। सम०—कल्पितम् कवि की कल्पना, परंपरा कवियों का अनुक्रम अनिर्विण्णकविपरम्परावाहिनि संसारे ध्व०आ० १, —हृदयम् कवि का वास्तविक आशय।

कवित्वम् [कवि+त्व] 1. (वेद) बुद्धिमत्ता 2 कविकौशल।

कशः [कश्+अच्] चर्बी—कशवल्भ्यो मेदसि प्रसिद्ध मी० म० १।४।२२ पर शा० भा०।

कषणः [कष्+ल्युट् पृषो० आत्वम्] मसलना, रगड़ पैदा करने वाला निद्राक्षणोऽद्रिपरिवर्तकषाणकण्ड्व—भाग० २।७।१३।

कषायवसनम् [ष० त०] संन्यासियों की पीले से लाकी रंग की वेशभूषा।

कष्टभ्रातृकः (पुं०) सौतेली मां से उत्पन्न भाई।

कसनः [कस्+ल्युट्] खांसी। सम०—उत्पाटनः (पुं०) एक पौधा जिसके रस के सेवन से खांसी दूर हो जाती है।

का (स्त्री०) 1. पृथ्वी, धरती 2. दुर्गा देवी।

कांस्यम् [कस+छ (ईय)+अञ्, छलोप] कांसी का बना हुआ, पीतल का बना जल पीने का जलपात्र, गिलास। सम०—**उपदोह** (वि०) बर्तन भर कर दूध देने वाला - **दोह** (वि०),—**दोहन** (वि०) दे० कांस्योपदोह **नीलम्**, नीली तुत्थांजन, कासीस।

काकः [कै+कन्] 1. कौवा 2 पानी में केवल सिर डुबोकर नहाना। सम० **अवनी** गुञ्जा का पौधा,—**उडुम्बर**, **उडुम्बरिका** अंजीर का पेड़ गूलर, **अम्बु** गूलर जामुन का पेड़ **तुण्डम्** विशेष रूप से बनाई हुई बाण की नाव,—**तिक्ता**, **तुण्डिका**, **माता**,—**नासिका** वृक्षों के विभिन्न प्रकार, **चर्या** (स्त्री०) जो कुछ उपलब्ध हो उसी को पीकर रहने की कौवे की आदत का अनुसरण करना और केवल निरी आवश्यकता पूरी करना एव गोमृगकाकचर्यया व्रजन् भाग० ५।५।३४ **मैथुनम्** कौओं की रति क्रिया जिसका देखने पर प्रायश्चित्त करना पड़ता है —**स्नानम्** कौवे की भांति स्नान करना, **स्पर्शः** 1 कौवे का छूना जिससे कि फिर स्नान करना पड़ता है 2 मरणु के पश्चात् दसवें दिन जब चावल का पिण्ड कौवों को दिया जाता है।

काकिणिक (वि०) [काकिणी+ठक्] कौड़ी के मूल्य का निकम्मा, अनुपयोगी।

काकोल (पु०) एक वृक्ष का नाम, काकाञ्जन, सोहजना।

काच [कच्+घञ्, कुत्वाभाव] वह मकान जिसमें दक्षिण और उत्तर की ओर कमरे बने हों बृ० सं० ५३।४०। सम० **कामलम्** आंख का एक रोग, काच बिन्दु।

काचिकः (पु०) एक पवित्र वृक्ष (जो मन्दिर के पास उगा हो)।

काच्छप [कच्छप+अण्] कछुवे से सम्बन्ध रखने वाला।

काच्छिका (वि०) मुखपूर्ण ईर्ष्या का निर्माता।

काजम् (नपुं०) लकड़ी की मोगरी।

काञ्चीगुण [पु० न०] 1. तगड़ी की डोर 2 काञ्ची नामक नगरी की समृद्धि काञ्चीगुणाकल्पितसार्थकोका दिग्दक्षिणा कर्कशयज्ञभोग्या जानकी० १।१६।

काठक (वि०) [कठ+वुञ्] कृष्ण यजुर्वेद की कठ संहिता से संबंध रखने वाला।

काण्डकुसुम् (नपुं०) 'कुन्द' फूल।

काण्डमायन (पु०) एक वैयाकरण का नाम।

काण्डानुसमयः (पु०) पहले एक वस्तु व्यक्ति या देवता से सम्बद्ध समस्त प्रक्रिया पूरा करना, फिर दूसरे से संबद्ध फिर तीसरे से, इसी प्रकार चलती रहना।

कादेरी (स्त्री०) हल्दी का पौधा मञ्जिष्ठा का पौधा।

कात्यायनसूत्रम् (नपुं०) कात्यायन का श्रौतसूत्र।

कादम्बरी बाण प्रणीत एक गद्य काव्य (उपन्यास)।

कादिक्षान्तः [क आदि+क्ष—अन्त] व्यञ्जन (क् से लेकर क्ष् की समाप्ति तक जो अक्षर आवें) कादि क्षान्तसमस्तवर्णजननी अन्न०।

कानिष्ठ्यम् [कनिष्ठ+ष्यञ्] सबसे छोटा होने की स्थिति।

कान्तलावकम् (नपुं०) चमड़े का एक भेद कौ० अ० २।११।

कान्ति [कम्+क्तिन्] लक्ष्मी—ददौ कान्ति मुखां अजम् भाग० १०।६५।२९।

कान्दिश (वि०) [काम दिशम] भगाया गया, (युद्धादि में डर कर) भागने वाला दौड़ने वाला।

कापुरुष [कुत्सित पुरुष को कादेश] नीच व्यक्ति, कायर ओछा आदमी।

कापेयम् [कपेर्भाव कर्म वा कपि+ढक्] बन्दर का व्यवहार या आदत।

काबन्ध्यम् [कबन्ध+ष्यञ्] बिना सिर के धड़ का होना।

काम [कम्+घञ्] 1 इच्छा, चाह 2. स्नेह, प्रेम 3 जीवन का एक उद्देश्य (पुरुषार्थ)। सम० **आश्रम** वह आश्रम जहां कामदेव ने तपस्या की थी **ईश्वरी** कामाक्षी जिसने शिव में कामोत्तेजना जगाने के लिए कामदेव का रूप धारण किया, **कार** कार्य करना या स्वतंत्रता अपनी इच्छा के अनुसार काम करना—नात्मनः कामकारो ऽस्ति पुरुषोऽयमनीश्वरः -रा०२।१०१।१८, **कोटिः** (स्त्री०) 1 इच्छाओं की चरम सीमा 2 अभिलाषाओं की पराकाष्ठा 3 दक्षिण में काञ्चीपुरी में शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित आध्यात्मिक संस्था - **तन्त्रम्** एक रचना **दहनम्** फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला एक पर्व जिसमें शिव के द्वारा काम को फुसला कर भस्म कर दिया जाता है, **दानम्** 1 इच्छित पदार्थ का उपहार 2 वेश्याओं द्वारा मनाया जाने वाला एक पर्व —**अर्थ** श्रृंगारिक चेष्टा या व्यवहार **भाज्** विषय भोगों में भाग लेने वाला कामानां त्वा कामभाजं -करोमि कठ १-२४।

कामठक [कमठ+अण्, स्वार्थे कन्] 1 धृतराष्ट्र का नाम 2 एक सांप का नाम जो 'सर्पसत्र' में भस्म हो गया था।

कामन्दकि (पु०) कामन्दकीय नीति का प्रणेता।

कामलता [कम्+णिङ्+कलच्+टाप्] केले का पौधा।

कामिकागम (पु०) आगम शास्त्र का एक ग्रन्थ।

कामिनी (स्त्री०) [काम+इनि+ङीप्] मादक शराब।

काम्बोज (पु०) एक प्रकार का सुपारी का वृक्ष।

काम्बलिक [कम्बल+ठक्] दलिया, जौ की लपसी।

काम्बोज [कम्बोज+अण्] 1 अश्व 2 पुन्नाग नामक वृक्ष।

काम्यक (पु०) महाभारत में वर्णित एक जंगल का नाम।

कायिन् (वि०) [काय + इनि] बड़े आकार प्रकार का, समूलशाखान् पश्यामि निहतान् कायिनो द्रुमान् महा० १२।११३।४।

कायाधव [कयाधु + अण्] कयाधु का पुत्र प्रह्लाद।

कारकम् [कृ + ण्वुल्] 1 इन्द्रिय अंग 2 (व्या० में) वाक्य में संज्ञा और समापिका क्रिया का मध्यवर्ती संबंध। सम० **विभक्ति** संज्ञा और क्रिया में संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया।

कारणम् [कृ + णिच् + ल्युट्] हेतु, निमित्त पूर्व जन्म में आई हुई मति पूर्ववासना महा० १२।...। सम० **कारितम्** (अ०) फलस्वरूप यदि प्रवर्तितो गामो लोककारणकारितम् रा० २।...। **अन्तरम्** (**कारणान्तरम्**) 1 भिन्न प्रसंग परिस्थिति ... हेतु 2 कारण परक हेतु।

कारणता [कारण + तल् + टाप्] कारणता हेतुत्व —प्रलयस्थितिनिर्माणात्मक कारणता ... ।

कारापक [कार + आपक ...] भवन के निर्माण कार्य का अधीक्षक काम की देखभाल करने वाला।

कारुषा (ब०व०) 1 एक देश का नाम 2 अन्तवर्ती जाति का (पिता ब्राह्मण तथा माता वैश्य) पुरुष।

कार्कश्यम् (नपुं०) मल या पाप रा० १।...।

कार्कलास्यम् [कृकलास + ष्यञ्] छिपकली की स्थिति।

कार्णाट भाषा (स्त्री०) कन्नड़ भाषा।

कार्तिक [कृत्तिका + अण्] स्कन्द का विशेषण।

कार्पटिक [कपट + ठक्] कपटी, धोखेबाज ठग।

कार्पासतन्तुः (सूत्रम्) [कर्पासो + अण् कार्पासस्तस्य तन्तुः ब० स०] कपड़े का धागा।

कार्मणत्वम् [कर्मन् + अण् तस्य भाव त्वम्] जादू टोना कार्मणत्वमगमन् रमणेषु शि० १०।३७।

कार्मान्तिक (पु०) उद्योग धंधे और निर्माणकार्यों का अधीक्षक कौ० अ० ...।

कार्मारिक [कर्मार + ठक्] ... कौ० अ० ...।

कायम् [कृ + ण्यत्] ... कार्यशरीर सा० का० ...। सम० **अपेक्षिन्** (वि०) किसी विशेष कार्य को करने वाला, **आश्रयिन्** (वि०) शरीर का सहारा लेने वाला का० ४३, **व्यसनम्** कार्य में विफलता —**वशात्** (अ०) किसी प्रयोजन से किसी काम से।

कालः [कलयति आयुः कल् + णिच् + अच्] 1 सांख्यकारिका में बताये चार पदार्थों में से एक प्रकृतु पादानकालभागाख्या सा० का० ५० 2 समय का कोई भाग। सम० —**अष्टकम्** 1 आषाढ़ मास कृष्णपक्ष के पहले आठ दिन 2 काल भैरव का स्तोत्र जिसमें शंकर की स्तुति की गई है **आर्थिक पंचमास** —**आम्र** 1 आम का एक भेद, 2 एक टापू का नाम —**कञ्जम्** नील कमल, **कण्ठी** कालकण्ठ की पत्नी, पार्वती **कल्लक** ... मौप, **जोषक** जो समय पर मिलने वाले भोजन से ही संतुष्ट है, **दष्टः** जिसे मौत ने डस लिया है ... (कलावीतम्) ... पद्य ... विलम्ब ... समय बिताना ... **पुरुष** यमराज का सेवक, —... समय के ... रूप में विद्यमान ..., **वृत्त** ... एक प्रकार की ..., **सर्वाणी** मनुविद्या जिसमें मनुष्य की अवधि कम की ... —**समन्वित**, (**समायुक्त**), मृत मरा हुआ।

कालकूट (कालमद) ... भगाने वाली औषध।

कालन (वि०) [कल् + णिच् + ल्युट्] नाश करने वाला।

कालिका (स्त्री०) [काल + ठन् + टाप्] 1 एक प्रकार का साग भाजी 2 तन्त्र ... 3 कुहरा धुंध।

कालित (वि०) [काल + इतच्] मृत, मरा हुआ ... मति कालिता भाग० १०।५१।१८।

कालिदास (पु०) 1 एक यशस्वी कवि और नाटककार का नाम 2 नलोदय और श्रुतबोध के प्रणेताओं की भांति अन्य कवि।

कालिय (वि०) [काल + घ] 1 समय से संबद्ध 2 एक सांप का नाम जिसका कृष्ण ने दमन किया था।

कालीन (वि०) [काल + ख] किसी विशेष कालभाग से संबद्ध।

कालेया (पु० ब० व०) [काली + ढक्] कृष्णयजुर्वेद की शाखा या संप्रदाय।

कालोल (पु०) कौवा।

काशिक (वि०) [काशि + ठक्] काशी में बना हुआ रेशमी वस्त्र बनारसी ...।

काशिकाप्रिय ...

काशेय (वि० ...) काशी का, ... से संबंध रखने वाला।

काश्मकराष्टक ... कौ० अ० ...।

काश्यपेय (वि०) [कश्यप + ...(ढक्)] सूर्य गरुड़ और वासुकि ... य (पु०) ...।

काषाय (वि०) ... ।

काषायवसना [ब० स०] विधवा।

काष्ठम् [काश् + क्थन्] लकड़ी। सम० —**अधिरोहणम्** चिता में बैठना ... **भारः** लकड़ियों का गट्ठा ... लकड़ियों का बोझ।

काष्ठा (स्त्री०) 1. पीला रंग 2. शारीरिक रूप या मुद्रा —काष्ठां भगवतो ध्यायेत् —भाग० ३।२८।१२ ।

कासमर्दिनी [ष० त०] खांसी या दमे का नाश करने वाली औषधि का पौधा ।

काह्नम् (नपुं०) [क+अह्नम्] ब्रह्मा का एक दिन (=१००० युग) ।

काहारकः (पुं०) एक जाति का नाम जिसके लोग पालकियों में सवारियों को ढोते हैं ।

कि (जुहो० पर०) चिकेति, जानना ।

किङ्किरिः (स्त्री०) [किं किरतीति -कृ+क, स्त्रियां–ङ] कोयल ।

किञ्चन्यम् [किञ्चन+ष्यञ्] संपत्ति—किञ्चन्ये नास्ति बन्धनम् महा० १२।३२०।५० ।

किट्टुलम् (नपुं०) मैला पानी ।

किम् [कु+डिमु वा०] समासान्त शब्दों में प्राय 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है, और 'तुच्छता', 'घटियापन' दोष या ह्रास का अर्थ प्रकट करता है । सम० —कथिका (स्त्री०) संदेह, संकोच, —कृते (अ०) किसलिए, —ज (वि०) जो कहीं उत्पन्न हुआ हो, जिसका नीचकुल में जन्म हुआ हो, —स्तुघ्नः 'करण' नामक काल के ग्यारह भागों में से एक, —नु (अ०) परन्तु फिर भी, तो भी —किन्नु चित्तं मनुष्याणामनित्यमिति मे मतम् रा० २।४।२७, —पाक (वि०) अपरिपक्व, अज्ञानी, —पाकः आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित एक जड़ी बूटी, —पुरुषः 1 अर्धदेव 2 घटिया मनुष्य, —राजन् बुरा राजा, —विवक्षा निन्दा, बुराई ।

किमरः (पुं०) भ्रमरभण्ड, घड़ियाल ।

किमीय (वि०) [किम्+छ] किसका, किससे संबंध रखने वाला ।

कियत् (वि०) [किमिदंभ्यां वो घः] (पुं० – कियान्, स्त्री० कियती, नपुं० कियत्) 1. कितना अधिक, कितना बड़ा, कितना 2. कुछ, थोड़ा सा । सम० —एतद् किस महत्त्व का, अर्थात् तुच्छ, अतिसामान्य, —आख्यः नगण्य, तुच्छ बात ।

किराटः (पुं०) बेईमान सौदागर, निर्लज्ज व्यापारी—भाग० १२।३।३५ ।

किरातकः [किरं पर्यन्तभूमिं अतति गच्छतीति, स्वार्थे कन्] किरात जाति का मनुष्य ।

किर्मीरत्वच् [ब० स०] सन्तरे का पेड़ ।

किलकिलितम् (नपुं०) हर्षसूचक ध्वनियाँ ।

किलाटः (पुं०) जमा हुआ दूध ।

किशारुः (पुं०) सींगा, फल में कोटा ।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, बुक्] 1. संकट, पाप विशेष पुत्रं कर्तीहि मातुर्यद्धि किल्बिषम्— रा० १।६२।७ 2. धोखा, चालबाजी ।

किशोरः [किम्+शृ+ओरन्, किमोऽन्त्यलोपः, शकारोत्तरलोपः] किसी जानवर का बच्चा, शिशु, शावक ।

कीकट (वि०) [की+कट्+अच्] 1. निर्धन, बेचारा कंजूस, लालची ।

कीकसास्थि (नपुं०) [की+कस्+अच्—ष० त०] कशेरुका, मेरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी ।

कीचकः [चीक्+वुन्, आद्यन्तविपर्ययश्च] बांस जो हवा भर जाने पर शब्द करता है—कीचका वेणवस्ते स्युः ये स्वनन्त्यनिलोद्धता केवल 'बांस' के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त—स कीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैः कु० १।८, रघु० २।१२ ।

कीचकवधः [ष० त० कीचक+हन्+अप्, वधादेश.] 1 भीम के द्वारा कीचक की हत्या 2 एक नाटक का नाम ।

कीटः [कीट्+अच्] 1 कीड़ा । सम० - जग्ध (वि०) कोई वस्तु जिसमें कीड़ा लग गया हो, कीड़े से खाई हुई,—उत्करः बमी, तत्र कीटोत्कराकीर्णे कथा० १०१।२९०।११, —माता, —पावका, -पादी,—जाता (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।

कीनाश (वि०) [क्लिश् -क्न, ईत्व, लस्य लोपो नामागमश्च] 1. धरती जोतने वाला 2 निर्धन, दरिद्र 3 गुप्त हत्या—उपांशुघातिनि—नाना० 4 क्रूर ।

कीरिवारा (स्त्री०) जूं ।

कीर्तनीय, कीर्तन्य (वि०) [कृत्+अनीय, यत् वा] स्तुति किये जाने के योग्य, जिसके यश या कीर्ति का नाम किया जाय

कीर्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1 यश, ख्याति 2 कृपा, प्रसाद । सम० - शेषः जो केवल ख्याति या यश के संसार में ही जीवित हैं, मृत,—स्तम्भः यश या ख्याति के कृत्य का खम्भा ।

कीर्तितव्य (वि०) [कृत्+तव्य] जिसकी स्तुति की जाती है ।

कीलः [कील्+घञ्] 1 जुआरी 2. मूठ, दस्ता ।

कीलप्रतिकीलन्यायः (पुं०) एक न्याय जिसके अनुसार क्रिया एक में रहती है तो प्रतिक्रिया दूसरों में रहती है पा० २।२।६ पर म० भा० ।

कीलालिन् [कीलाल+इनि] छिपकिली, गिरगिट ।

कीशपर्णः, (पर्णिन्) [ब० स०] अपामार्ग नाम का पौधा ।

कु (अ०) [कु+डु] बुराई, ह्रास, अवमूल्य, पाप, ओछापन और कमी को प्रकट करने वाला अव्यय । सम० —चरः घूमने वाला, - कं,—कुरः मशक,—[illegible] [illegible],—चाप् (पुं०) कीचड़,—कोशम् शराब से भरा प्याला, —तपः 1. एक प्रकार का कम्बल जो पहाड़ी बकरियों के बालों से बनता है 2. दिन का आठवाँ मुहूर्त 3. दौहित्र

या भामना 4. सूर्य, —द्वारम् पिछला दरवाजा, —नवनीतम् बुरा मक्खन, थोड़े या मैले मक्खन, —कीलः मुकुट गाय —वक्त्रः, —वस्त्रम् चीथड़ा, चिथड़ा, —धामन् अयोग्य व्यक्ति, —वैद्यः दक्षिणी ध्रुवबिन्दु, —लक्षण (वि०) खोटे चिह्नों से युक्त, —विक्रमः अस्थानप्रयुक्त शूरवीरता, —वेषम् (पुं०) बुरी आदत।

कुकूलाग्निः (पुं०) भूसी या बुरादे से निर्मित आग, कथा० ११७।९२।

कुक्कुटः [कुक्+क्विप्, केन कुटति कुट्+क] 1. मुर्गा, आग की चिंगारी। सम०—अण्डम् मुर्गी का अण्डा, —आभः, —अहिः एक प्रकार का साँप, —आसनम् योग का एक आसन।

कुक्षिगत (वि०) [कुक्ष्यां गत इति त० स०] गर्भस्थ, —दिष्ट्याप्य ते कुक्षिगतः पुमान्—माघ० १०।

कुचः [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूची। सम०—कुम्भः तरुण युवती के स्तन, —कुड्मलम् कली के आकार का स्तन- गोपाङ्गनानां कुचकुड्मल वा—कृष्ण०, कुचकुङ्कुमम् स्तन पर रोली या केसर का लेप।

कुचाष्टम [ब० स०] ग्रहों की विशेष स्थिति जब कि मंगल लग्न से आठवें घर में हो।

कुञ्जरः [कुञ्ज+र] 1. हाथी 2. सिर 3. आजवन 4. आठ की संख्या। सम०—अरिः सिंह, —आरोहः महावत, —च्छायः (गजच्छायः) ज्योतिष का एक योग जिसमें चन्द्रमा मघा नक्षत्र में और सूर्य हस्त नक्षत्र में विराजमान होता है।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] कपटी, वक्र, टेढ़ा, बेईमान। सम०—अलकम्, —कुन्तलम् टेढ़ी अलकें, टेढ़ी जुल्फें कुटिलकुन्तल श्रीमुख च ते जड उदीक्षतां —भाग० १०।३५, —चित्तम् कपटपूर्णमन, टेढ़ा मन —कुबेरसर्वनिवेशिनी कुटिलचित्तविहीनविनोम्-नव रत्न०।

कुटी (स्त्री०) [कुटि+ङीष्] झोपड़ी।

कुटुम्बिनी [कुटुम्ब+इन्+ङीप्] 1. गृहिणी 2. घर की सेविका या नौकरानी।

कुटुम्बिता, —त्वम् [कुटुम्बिन्+ता, त्व] 1 गृहस्थ होने की स्थिति 2. पारिवारिक एकता या सम्बन्ध 3. एक परिवार की भाँति रहना।

कुट्टनम् [कुट्ट्+ल्युट्] 1. काटना 2. पीसना 3. मुक्का बंद करके मस्तक के दोनों ओर थपथपाना, यह मनोरथ को प्रकट करने का चिह्न है।

कुद्दालकः कुदाल, मिट्टी खोदने की जाली।

कुणपाशन (वि०) [कुणप+अश्+ल्युट्] मुर्दों को खाने वाला।

कुणपी [कुण्+कपन्+ङीष्] एक छोटा पक्षी।

कुणालकः (पुं०) एक देश का नाम,—अयं कुणालो वसुसागर लिये विराजते नैकविजातिमण्डन—जानकी० २०।

कुण्डः [कुण्ड्+अ] पानी का बर्तन, पानी का कटोरा। सम०—पायः [कुण्डेन पीयते यत्र क्रतौ] एक यज्ञ का नाम, —भेदिन् (वि०) अनाड़ी, भद्दा, फूहड़।

कुण्डकः [कुण्ड+कन्] बर्तन—कथा० ४।४७।

कुण्डलिका (स्त्री०) कुण्डली, वृत्त।

कुण्डलिन् (वि०) [कुण्डल+इनि] गोलाकार, —ली (पुं०) सुनहरा पहाड़।

कुण्डलिनी (स्त्री०) [कुण्डलिन्+ङीप्] योग शास्त्र में एक नाड़ी का नाम।

कुण्डिका (स्त्री०) [कुण्ड+कन्+टाप्] एक छोटा जोहड़, पोखर तथा कण्डिका -पा० ११११७४ पर म० भा०।

कुतपसप्तकम् [ष० त०] सात वस्तुएँ जो श्राद्ध के अवसर पर मृतक के सम्मानार्थ दान की जायें—यथा खड्ग-पात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्यपात्र, कुशतृण, सवत्सा धेनु, अपराह्णकाल, और कृष्णतिल।

कुतपाष्टकम् [ष० त०] आठ वस्तुएँ जो श्राद्ध के लिए शुभ मानी जाती हैं यथा मध्याह्न, खड्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्य, दर्भ, सवत्सा धेनु, तिल और दौहित्र।

कुतुकित, (—किन्) (वि०) [कुतुक+इतच्, इनि वा] उत्सुक, जिज्ञासु।

कुतृणम् (नपुं०) पनीका पौधा।

कुतोनिमित्त (वि०) किस कारण या हेतु को लिये हुए - कुतोनिमित्तः शोकस्ते —रा० २।७४।२०।

कुत्सला (स्त्री०) नील का पौधा।

कुथकः [कुथ्+अच्, स्वार्थे कन्] रंग-बिरंगा कपड़ा।

कुथिः (पुं०) रज्जू।

कुन्द् (चुरा० पर०) झूठ बोलना।

कुन्ददन्त (वि०) [ब० स०] जिसके दाँत कुन्द पुष्प की भाँति श्वेत तथा चमकीले हों।

कुपित (वि०) [कुप्+क्त] क्रोध दिखाया हुआ, क्रुद्ध, नाराज, क्रोधी।

कुप्यधौतम् [गुप्+क्यप्, कुत्वं] चाँदी।

कुबेर (वि०) [कुत्सितं बेरं शरीरं यस्य, ब० स०] 1 भद्दा, भद्दे अङ्गों वाला।

कुभावि (वि०) प्रकाशपराङ्मुखी की० श० २।११।

कुमार् (चुरा० पर०) खेल से खेलना।

कुमारः [कम्+आरन्, उत उपधायाः] एक धर्मशास्त्र का प्रणेता, —रम् (नपुं०) विशुद्ध सोना। सम०—दासः, 'जानकीहरण' का प्रणेता, एक कवि का नाम, —ललिता (स्त्री०) 1. रंगरेली, मृदु कामक्रीडा 2. एक छन्द का नाम जिसके एक चरण में सात मात्राएँ होती हैं, —सम्भवम् कालिदासकृत एक काव्य का नाम।

कुमारिकापुरम् (नपुं०) कन्याओं की व्यायामशाला महा० ४।११।१२, दश० २।

कुमालकः (पुं०) मालवदेश के एक प्रदेश का नाम।

कुमुदः,—दम् [कौ मोदते इति कुमुदम्] 1 सफेद कमल जो चन्द्रोदय होने पर खिलना कहा जाता है 2 लाल कमल 3 विष्णु का विशेषण 4 कपूर। सम० —आमोद (वि०) चन्द्रमा, सन्ध्या कमल की सुगन्ध से युक्त महिला।

कुम्पः (पुं०) लूला, जिसके हाथ विकृत हों।

कुम्बकुरीरः (पुं०) स्त्रियों के लिए सिर पर पहनने का वस्त्र।

कुम्भः [कु+उम्भ्+अच्] घड़ा, जलपात्र। सम०—उदरः शिव का एक भूतगण, सेवक—रघु० २।३५। —उलूकः उल्लू का एक भेद,—महा० १३।१११। १०१, —कारः नाला, नाक।

कुम्भिन् (वि०) [कुम्भ+इनि] आठ की संख्या।

कुम्भिनी (स्त्री०) [कुम्भिन्+ङीप्] 1 पृथ्वी 2 जमाल गोटे का पौधा।

कुम्भीनसी (स्त्री०) लवणासुर की माता, रावण की बहन।

कुम्भीमुखम् (नपुं०) एक प्रकार का घाव, व्रण।

कुरङ्गलाञ्छनः [ब० स०] चन्द्रमा।

कुरुजाङ्गलाः (ब० व०) एक देश का नाम।

कुरुविन्दः (पुं०) लालमणि, पद्मरागमणि।

कुलम् [कुल्+क] 1. वंश, परिवार 2 समूह 3 रेवड़। सम० अनन्ता देवी का विशेषण, —आख्या, पारिवारिक नाम, वंशात्मक नाम,—आपीडः, —शेखरः परिवार की कीर्ति या यश, —करणिः आनुवंशिक क्षेत्रपाल या अधिकारी,—कलङ्कः परिवार के लिए अपयश, —कुण्डलिनी कौल तन्त्र में स्थित, देवी का एक नाम, गरिमा (पुं०) कुल का गौरव या मर्यादा, —जाता उच्चकुल में उत्पन्न महिला, —दूषण (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, —नाशन (वि०) परिवार को नष्ट करने वाला, —पांसनः जो अपने कुल को कलङ्कित करता है, —पालकम् सन्तरा, नारङ्गी, —भरः (कुलम्भरः) परिवार का पालनपोषण करने वाला,—श्रेष्ठः शिल्पी संघ का मुखिया,—मार्गः कौलों का सिद्धान्त, —साक्षिन् (पुं०) आदरणीय साक्षी की उपस्थिति—मी० सू० ८।१९४।२०१।

कुलत्थिका (स्त्री०) एक प्रकार की दरियाँ —कौ० अ० २।११।

कुलिकः (पुं०) [कुल+ठन्] 1 एक काँटेदार पौधा 'माणिद' 2 शिकारी —कुलिकशतनिपाता कुम्भकर्णो हरिण्यः भाग० १०।८७।१९।

कुली (स्त्री०) परिवारों का समूह।

कुल्मा (स्त्री०) लाल रंग का मजिष्ठा, मजीठ।

कुलाटः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

कुलालचक्रम् [ष० त०] कुम्हार का चाक।

कुलिङ्गः [कु+लिङ्ग्+अच्] 1 चोर महा० १२। १०१।७ 2 हाथी—कुलिङ्गा भीमवृन्दानि मत्तकुञ्जरभुजङ्गया —मेदिनी।

कुल्फ. (वेद०) टखना,—ऋ० ७।५०।२। सम० दघ्न (वि०) टखने तक गहरा— शत० १२।

कुल्माषः [कुल्+विच्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० स०] 1. खिचड़ी जिसमें आधे उबले चावल और दाल हों 2 एक प्रकार का रोग।

कुल्लूकः (पुं०) मनुस्मृति का एक टीकाकार।

कुशी [कुश+ङीष्] गूलर की लकड़ी का टुकड़ा जो स्तोत्र के अन्तर्गत साम मन्त्रों की संख्या गिनने के काम आता है छन्दोगस्तोत्रगणनार्थकुशम् - भागा०।

कुशमुष्टिः [ष० त०] मुट्ठी भर 'कुश' घास।

कुशिकाः (ब० व०) कुशिक मुनि की सन्तान।

कुशेशयनिवेशिनी (स्त्री०) लक्ष्मी देवी।

कुष्ठ. [कु+स्था+क्थन्] कूल्हे में पड़ा गड्ढा।

कुष्माण्डहोमः (पुं) किसी भी बड़े धार्मिक आयोजन से पूर्व किया जाने वाला हवन।

कुसुमम् [कुस्+उम] 1 फूल 2 फल। सम०—अञ्जलिः उदयनाचार्य की एक रचना,—द्रुमः फूलों से भरपूर वृक्ष,—धयः (कुसुमन्धयः) मधुमक्खी—उदलसत्कुसमत्कुसुमन्धयैः रा० च०।

कुसुमयति (कुसुम—ना० धा०, लट्) फूल उत्पन्न करता है, या फूलों से सजाता है।

कुसुम्बरी (स्त्री०) एक पौधे का नाम।

कुहकवृत्तिः (स्त्री०) धूर्तता, चालाकी।

कुहरः [कुह+रा+क] भीतरी खिड़की।

कुहूकालः [ष० त०] चान्द्रमास का अन्तिम दिन अर्थात् चन्द्रमा अदृश्य होता है।

कुहूमुखः [ब० स०] 1 भारतीय कोयल 2. समय।

कुहूमुखम् [ष० त०] नया चाँद।

कुहूलनम् [कु+हूल्+ल्युट्] अमंगल ध्वनि।

कूटम् [कूट+अच्] खोटा सिक्का कूटं हि निपादाना-मेव उपकारकं नार्याणाम् मी० सू० ६।१।५२ पर शा० भा०। सम० —रचना चाल, दाव पेंच, —लेखः बनावटी या जाली दस्तावेज, —संक्रान्तिः आधीरात बीतने पर जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि पर संक्रमण करता है, —हेमम् खोटा सोना।

कूपः [कु+पक्, दीर्घश्च] 1 कुआँ 2 छिद्र जैसा रोमकूप, 3 अर्ध। सम० —कारः, —खनकः कुआँ खोदने वाला, —चक्रम् पानी का चक्र या रहट, —दण्ड मस्तूल—कूपदण्डोऽस्य—रघु० १।१ —वर्णनम् ४।। का स्थान।

कूबरस्थानम् [ष० त०] गाड़ी में बैठने का स्थान ।

कूर्मः [को जले ऊर्मिवेगोऽस्य—पृषो०] कछुवा । सम० —आसनम् योग की एक विशेष मुद्रा, द्वादशी पौषमास के शुक्लपक्ष का ग्यारहवाँ दिन, —पुराणम् एक पुराण का नाम ।

कूर्मक (वि०) कछुवे जैसा बना हुआ ।

कूर्मिका [कूर्म + क + स्त्रियां टाप्, उपधाया इत्वम्,] एक वाद्ययन्त्र ।

कूलिका [कूल + कन् + टाप् इत्वम्] वीणा का निचला भाग ।

कृ (तना० उभ०) ... करना ... आदाने करोति शरः गी० सू० ८।०।८ ।

कृकरज्जन [ष० त०] आग ।

कृकल: (पु०) 1 एक प्रकार का तीतर 2 पाँच प्राणों में से एक ।

कृच्छ्र (वि०) [कृ ... रक्] 1 कष्टप्रद, दुःखदायी । स० ... अर्ध ... दिन तक रहने वाली तपश्चर्या — कृत् (वि०) तपस्वी —सल्पकम् एक प्रकार का ... व्रत ।

कृतम् [कृ + क्त] बस, हो गया । सम० अर्थ (वि०) कृतार्थ [ब० स०] जिसने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया है ... अब और ... करने में असमर्थ है — ... मा० सू० ६।२।२७ पर शा० भा०, — कर (वि०), — कारिन् (वि०) किए हुए कार्य को करने वाला, निरर्थक कृतकरो हि ... स्यात् मी० सू० १०।५।७८ पर शा० भा०, —तीर्थ (वि०) जिसने सुगम या आसान बना दिया ... (वि०) ... —दूषणम् किये हुए का खराब ... —मत्य (वि०) कृष्ट, मारात्मक, ... बारहसिंगा, कृष्णहरिण,—विद् (वि०) कृतज्ञ, ... विस्मृते कृतविदा भाग० ४।९।८, —व्यलीक: जिसने मूर्खे भी माफ करा ली है —संस्कार: 1 जिसने शोधनात्मक सब प्रक्रियाएँ पूरी कर ली हैं 2 सुशिक्षित, तैयार ।

कृतवत् (वि०) [कृत + मतुप्] जिसने कार्य कर लिया है - कृतवानसि विप्रियं न मे - कु० ४।७ ।

कृति: (स्त्री०) [कृ + क्तिन्] 1 कर्मद्योतक संज्ञा 2 क्रिया 3 जादू, 4. जादूगरनी । सम० साध्यत्वम् प्रयत्न करके सम्पन्न होने की स्थिति ।

कृत्यम् [कृ + क्यप्] 1 जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य 2 कार्य 3 प्रयोजन । सम० अकृत्यम् कर्तव्य अकर्तव्य में (विवेक करना), — विधि (पुं०) नियम, उपदेश,—शेष (वि०) जिसने अपना कार्य पूरा नहीं किया है ।

कृत्यम् [कृन्त् + यत्] वास्तुकार का एक उपकरण—महा० १।१९४।६ ।

कृत्यवत् (वि०) [कृत्य + मतुप्] 1 जिसके पास करने के लिए कार्य है 2 जिससे कोई प्रार्थना की गई है 3 चाहने वाला, प्रवक इच्छुक रा० ७।९२।१५ ।

कृन्तनिका [कृन्त् + ल्युट् = कृन्तन, स्वार्थे कन्, इत्वम्] एक छोटा चाकू ।

कृत्वा-चिन्ता (लोकोक्ति) प्राक्कल्पनापरक बात पर विचारविमर्श करना - मैं० म० १०।२। ४९ और ६।८।४२ पर शा० भा० ।

कृपा + आकर:, सागर:,—सिन्धु: (पु०) अत्यन्त कृपालु ।

कृश (वि०) [कृश् + क्त, नि०] 1 दुर्बल, बलहीन 2 नगण्य 3 निर्धन 4 तुच्छ । सम० अतिथि (वि०) जो अपने अतिथियों को भूखा रखता है महा० १२।८।२४ —गव: जिसकी गौवें भूखी रहती हैं —भृत्य जिसके नौकर भूखे रहते हैं ।

कृशानुयन्त्रम् (नपु०) तोप ।

कृष् (तुदा० पर०) कुरेदना, विरेखण करना ।

कृषिद्विष: एक प्रकार का चिड़ा ।

कृषिपाराशर:,-संग्रह: (पु०) कृषि शास्त्र पर एक संग्रह ग्रंथ ।

कृष्ण (वि०) [कृष् + नक्] 1 काला 2 दुष्ट 3 क्रूर 4 भलावा (रीठा) जिससे धोबी कपड़ों पर चिह्न लगाता है महा० १२।२९१।१० । सम०—कञ्चुक: काले चने —गति: (स्त्री०) 1 बारहसिंगा की खाल 2 काला बादल - कृष्णजिनसमा कृष्णा महा० ४।६।९,—ताल एक प्रकार का पौधा जिसका ताल काला होता है, द्वादशी आषाढ़ के कृष्णपक्ष में बारहवाँ दिन, —बीजम् तरबूज, —भस्मन् पारद कुल्हीय, —मृत्तिका 1 काली मिट्टी 2. बारूद ।

कृष्णा (स्त्री०) यमुना नदी ।

कॢप् (प्रेर०) ग्रहण करना, स्वीकार करना— ... कल्पयन् — रा० २।९१।६५ ।

केतुमाल:,-लम् जम्बू द्वीप का पश्चिमी भाग ।

केदार: [केन जलेन दारोऽस्य ब० स०] संगीत शास्त्र में एक राग का नाम ।

केदारक: [केदार + स्वार्थे कन्] चावलों का खेत ।

केन्द्रम् (नपु०) जन्म कुण्डली में पहला, चौथा, सातवाँ एवं दसवाँ स्थान ।

केरलमाहात्म्यम्, } ग्रन्थों के नाम ।
केरलकल्पम्
केरल ...
केरल...

केलि: (पु० स्त्री०) [केल् + इन्] हँसीमजाक, दिल्लगी, रंगरेली । सम० — ... हँसी मजाक में झगड़ा, —... आमोद सरोवर, —वनम् प्रमोदवन ।

केवलव्यतिरेकिन् (पुं०) न्याय सिद्धान्त के अनुसार अनुमान के केवल एक प्रकार से संबन्ध रखने वाला।

केवलाद्वैतम् (नपुं०) दर्शन शास्त्र की एक शाखा।

केवलिन् (वि०) [केवल+इनि] (जैन०) जिसने उच्चतम ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केशः [क्लिश्+अन् लो लोपश्च] 1. बालक 2 सिर के बाल। सम०—आकर्षणम् चुटिया पकड़ कर किसी महिला को खींचना एवं उसका अपमान करना, —कारः एक प्रकार का गन्ना, —कारिन् (वि०) जो बालों को संवारता है, —ग्रन्थिः चुटिया वेणी, —धारणम् बाल रखना, —लुञ्चकः एक जैन साधु का नाम, —वपनम् बाल कटवाना, मुण्डन कराना —व्यपरोपणम् अपमान के चिह्नस्वरूप किसी दूसरे की चुटिया पकड़ना—रघु० ३।५६।

केशवस्वामिन् (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

केश्य (वि०) [केश+य] 1 बालों की वृद्धि के अनुकूल 2. बालों में लगाया हुआ, —श्यम् (नपुं०) सार्वजनिक निन्दा, बदनामी, लोकापवाद।

केसराल (वि०) [केसर+आलच्] पराग से समृद्ध, तन्तुबाहुल्य से युक्त।

केसरिणी [केसर+इनि, स्त्रियां ङीप्] सिंहिनी, शेरनी।

कैमर्थक्यम् (नपुं०) [किमर्थक+ष्यञ्] प्रयोजन का अभाव—कैमर्थक्यान्नियमो भवति—पा० १।८।३ पर म० भा०।

कैमर्थ्यम् [किमर्थ+ष्यञ्] कारण, प्रयोजन।

कैयटः (पुं०) पतंजलिकृत महाभाष्य के टीकाकार वैयाकरण का नाम।

कैरातकम् (नपुं०) एक प्रकार का जहर, गरल।

कैशोरवयस् (वि०) [ब० स०] कुमार, किशोरावस्था का बालक।

कोकडः (पुं०) भारतीय लोमड़।

कोकनुः (पुं०) वनकपोत, जंगली कबूतर।

कोकनदिनी [कोकनद+इनि+ङीप्] लाल कमल न भेक कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः—कथा० १०।७८।

कोटिवर्षः (पुं०) एक छन्द का नाम।

कोटपः, —पालः (पुं०) किले का संरक्षक, गढ़नायक।

कोटिः (स्त्री०) [कुट्+इञ्] असंख्य, अगणित, —कोट्य-[illegible] अंकुशाकार बोधाः—शि० ५।५१। सम०—होमः एक प्रकार का यज्ञीय अनुष्ठान।

कोणवृत्तम् (नपुं०) उत्तरपूर्व से लेकर दक्षिण पश्चिम तक फैला हुआ क्षितिवृत्त या उसके विपरीत।

[illegible] (पुं०) वह व्यक्ति जिसको ब्राह्मण ने बूढ़ा होने का शाप दे दिया है।

कोपसमन्वित (वि०) [तृ० त०] क्रोध से सम्पन्न।

कोपारुण (वि०) [ब० स०] क्रोध के कारण लाल कोपारुण मुनिरधारयदक्षिकोणम् शील०।

कोमल (वि०) [कु०+कलच्, मुट्, नि० गुण] मृदु, मुलायम नरम, —लम् (नपुं०) रेशम।

कोमला (स्त्री०) एक प्रकार का फुआरा।

कोरकित (वि०) [कोरक+इतच्] कलियों से आच्छादित नै० ३।१२१।

कोलकम् [कुल्+अच्, स्वार्थे कन्] 1 एक प्रकार का पौध भाग० ५।४८६ 2 एक प्रकार का गड़ भाग० १०।४१ 3 वे फलादिक जो नींव के भरने में प्रयुक्त होते हैं।

कोशः [कुश्+घञ्, अच् वा] 1 कमल का परिच्छद 2. मांस का टुकड़ा 3 वह प्याला जिसमें युद्धविराम के सन्धिपत्र का सत्यापित करने के चिह्न स्वरूप पेय पदार्थ उड़ेला जाता है देवी कोशमपाययत्—राज० ७।८। सम० वेश्मन् कोशागार—भाण्ड च स्थापयामास तदाये कोशवेश्मनि कथा० २४।१३२।

कोशातकः [कोश+अत्+क्वुन्] बाल।

कोष्ठीकृ (तना० उभ०) घेरना, घेरा डालना—कोष्ठीकृत्य च [illegible] महा० ६।१०१।३२।

कोहल (वि०) [को हलति स्पर्धते अच् पृषो०] अस्पष्ट बोलनेवाला,—लः (पुं०) एक प्राकृत भाषा के वैयाकरण का नाम।

कौचपक (वि०) एक प्रकार की दरी —कौ० अ० २।११।

कौज (वि०) [कुज+ठक्] कुज अर्थात् मंगल से संबन्ध रखने वाला।

कौट्टन्यम् [कुट्टनी+ष्यञ्] कुट्टनी के द्वारा युवतियों को दुराचरण में प्रवृत्त कराना।

कौण्डिन्यः [कुण्डिन+ष्यञ्] एक ऋषि का नाम।

कौतुकवत् (अ०) [कौतुक+अण्, मतुप्] जिज्ञासा के रूप में।

कौथुमः 1 सामवेद की एक शाखा का नाम 2. इस शाखा का अनुयायी ब्राह्मण।

कौमार (वि०) [कुमार+अण्] 1. मुख्य सृष्टि, मुख्य अवतार स एव प्रथमं देवः कौमारं सर्गमाश्रितः भाग० १।३।६। सम०—तन्त्रम् आयुर्वेद शास्त्र का एक अनुभाग जिसमें बच्चों के लालनपोषण का वर्णन है,—व्रतम् ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना।

[illegible] (पुं०) 1. राक्षस 2 वायु 3. शिव 4 अग्नि 5 तपस्या में संलग्न।

कौलमार्गः [कुल+अण्, मार्ग+घञ्, ष० त०] कौलों का सिद्धान्त।

कौलालः [कुलाल+अण् स्वार्थे] कुम्हार।

कौविन्दी [कुविन्द+अण्, स्त्रियां ङीप्] जुलाहे की स्त्री।

कौशिकः [कुश+ठञ्] गोंद गुग्गुल, हींगोटा।

कौशीतकी (स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी ।
कौषीतकम् } (नपुं०) एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम ।
कौषीतकि }
कौस्तुभः [कुस्तुभ + अण्] घोड़े की गर्दन पर बालों का गुच्छा, अयाल ।
क्रकरः (पुं०) कया, चकोर (पक्षी) ।
क्रत्वर्थः [ष० त०] यज्ञ के प्रयोजन को पूरा करने के लिए साधनभूत सामग्री—मै० सू० ४।१।२ पर शा० भा० ।
क्रतुफलम् [ष० त०] यज्ञ का फल ।
क्रप् (भ्वा० आ०) 1. घबरा जाना 2 दुःखी होना ।
क्रप् (चुरा० पर० क्रपयति) स्पष्ट रूप से बोलना ।
क्रमः [क्रम् + घञ्] 1 पग, कदम 2 पैर 3 गति रोक । सम० —आविन् (वि०) उत्तरोत्तर अधिक —माला, —रेखा, —शिक्षा वेद पाठ करने की नाना प्रणालियाँ, —योगेन (अ०) नियमित ढंग से ।
क्रियमाणकम् [कृ + कर्मणि यक् + शानच्, स्वार्थे कन्] साहित्यिक निबन्ध — बृ० सं० ११५ ।
क्रिया [कृ + श, रिङ् आदेश इयङ्] संरचना कर्म । सम० —अर्थ (वि०) 1 वैदिक निषेध जिसके द्वारा किसी कर्तव्य में लगने का निर्देश किया जाता है 2. किसी कार्य के लिए उपयोगी अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम् कु० ५।३३ —आरम्भः पकाना —तन्त्रम् चार तन्त्रों में से एक ।
क्रयविक्रयिन् (वि०) [क्रयविक्रय + इनि] जो कम मूल्य पर वस्तु खरीद कर अधिक मूल्य पर बेच देता है सौदा करने वाला ।
क्रीडनकतया (अ०) [क्रीड् + ल्युट् स्वार्थे कन्, तस्य भाव तल्] किसी बात को खेल की वस्तु की भाँति ग्रहण करना भाग० ५।२६।३२ ।
क्रीडा [क्रीड् + अ + टाप्] 1 संगीत में एक प्रकार की माप 2. खेल का मैदान । सम० —परिच्छदः खिलौना ।
क्रीडितम् [क्रीड् + क्त] खेल ।
क्रोधः [क्रुध् + घञ्] 1 रहस्यपूर्ण अक्षर 'हुम्' या 'हूम्' 2 संवत्सरचक्र में ५९ वाँ वर्ष ('क्रोधन' भी)।
क्रोशः [क्रुश् + घञ्] ४८ मिनट का समय ।
क्रूर (वि०) [कृत + रक्, धातोः क्रू] 1 कठोर, कड़ा 2. निर्दय 3. कर्णकटु—क्रूरक्वणत्कङ्कणानि—म० वी० १।१५ —रम् (नपुं०) उग्रता के साथ । सम० —चरित (वि०) दारुण, भयानक ।
क्रोडकान्ता (स्त्री०) पृथ्वी, धरती ।
क्रोडीकृ [क्रोड + च्वि + कृ तना० उभ०] गले लगाना, आलिङ्गन करना ।
क्रौड (वि०) [क्रोड + अण्] 1. सूअर से संबंध रखने वाला 2. वराह अवतार से सम्बन्ध रखने वाला ।

क्लान्तमनस् (वि०) [ब० स०] निढाल, स्फूर्तिहीन ।
क्लेदित (वि०) [क्लिद् + णिच् + क्त] मलिन, दूषित ।
क्लिश्नत् (वि०) [क्लिश् + ना + शतृ] हटाता हुआ, दूर करता हुआ — मुद्रा० ३।२० ।
क्लिष्ट (वि०) [क्लिश् + क्त] दुःखदायी, कष्टकर ।
क्लिष्टा (स्त्री०) पातञ्जल योगशास्त्र में बताई हुई चित्तवृत्ति का एक भेद ।
क्वाणः [क्वण् + घञ्] ध्वनि, स्वन ।
क्वथित (वि० [क्वथ् + क्त] 1 उबाला हुआ 2 गर्म, —तम् (नपुं०) मादक शराब ।
क्षणः, —णम् [क्षण् + अच्] निर्णय संकल्प मन्तुं भूमि कृतक्षणा — महा० १।६४।७१ । सम० —अर्धम् आधा मिनट —भङ्गवाद बौद्धों का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु लगातार क्षीण होती रहती है —वीर्यम् शुभ समय ।
क्षणपाक [अलुक् समास] एक मिनट में पकी हुई वस्तु ।
क्षतजम् [ष० त०] रुधिर, शोणित ।
क्षति (स्त्री०) [क्षण् + क्तिन्] मृत्यु निधन ।
क्षत्तृ (पुं०) [क्षद् + तृच्] रक्षक ।
क्षत्रविद्या, (—वेद) युद्धकला, युद्धशास्त्र ।
क्षमापनम् [क्षमा ना० धा० णिच् + ल्युट्] क्षमा मांगना । सम०— स्तोत्रम् क्षमा मांगते समय स्तुतिगान ।
क्षम्य (वि०) [क्षमा + य] पृथ्वी में रहने वाला, भौतिक, पार्थिव (वेद०)।
क्षारक्षत (वि०) [तृ० स०] यवक्षार से दुष्प्रभावित ।
क्षाराष्टकम् (नपुं०) आयुर्वैदिक आठ द्रव्यों का संग्रह । इसी प्रकार (क्षारत्रय तथा क्षारपञ्चक) ।
क्षा (स्त्री०) 1 पृथ्वी धरती 2 निद्रा, नींद ।
क्षामम् (नपुं०) जलना जला हुआ स्थान ।
क्षामेष्टिन्यायः (पुं०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार निमित्त को दर्शाने वाले हेतुमत्कारण की रचना इस प्रकार की जाय जिससे कि इसमें नित्य या अनिवार्य परिस्थिति को दूर रक्खा जा सके — मी० सू० ६।४।१७-२१ पर शा० भा० ।
क्षयतिथिः, (—अहः) सूर्योदय से न आरम्भ होने वाला चान्द्र दिवस ।
क्षयमासः [ष० त०] ('मलमास' भी) वह मास जिसमें दो संक्रान्तियाँ आ पड़ें, और जो किसी मंगल या धार्मिक काम के लिए शुभ न माना जाता हो ।
क्षयोपशमः (पुं०) [ष० स०] सक्रिय रहने या होने की इच्छा को सर्वथा नष्ट करने की जैनियों की संकल्पना ।
क्षितिः [क्षि + क्तिन्] समृद्धि — क्षिते रोहः प्रवहः शश्वदेव — महा० १३।७६।१० । सम० —क्षमा धरती की भांति सहनशील — क्षितिक्षमा पुष्करसंनिकाशी — रा०

५,—स्पर्शः धरती छूना (जैसे कि सद्यःप्रसूत बच्चे ने जन्म लेकर धरती छुई),—स्पृश् (पुं०) धरती का वासी, भूमि पर रहने वाला।

क्षीणता [क्षि+क्त+तल् स्त्रियां टाप्] क्षय, कृशता तथा बलहीनता की दशा।

क्षिप् (तुदा० उभ०) 1. शीघ्रता से चलना 2. मर जाना 3. (गणित०) जोड़ना।

क्षिप्त (वि०) [क्षिप्+क्त] 1. फेंका गया, बखेरा गया 2. परित्यक्त 3 उपेक्षित। सम०—उत्तरम् ऐसा भाषण जो उत्तर के योग्य न हो,—योनिः नीच जाति में उत्पन्न।

क्षिप्तिः [क्षिप्+क्तिन्] रहस्य का भंडाफोड़ (नाटक में)।

क्षिप्रनिश्चय (वि०) [ब० स०] जो शीघ्र ही निश्चय कर लेता है—आयत्यां गुणदोषज्ञस्तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः —मनु० ७।१७९।

क्षिप्रसन्धिः (पुं०) एक प्रकार की संधि जो दो सहवर्ती स्वरों में से पहले को अर्धस्वर में बदल कर हो सकती है।

क्षेपणिकः [क्षेपण+ठन्] मल्लाह, नाविक।

क्षीरः,(—रम्) [घस्+ईरन्, उपधालोप, घस्य ककारः, षत्वं च] 1. दूध 2. रस 3. पानी। सम०—उत्तरा जमाया हुआ दूध,—स्नेहः ताजा मक्खन,—कुल्यम् दुग्धपान—कथा० ६३।१८८,—व्रतम् प्रतिज्ञा के फलस्वरूप केवल दूध पीकर निर्वाह करना।

क्षीरस्यति (ना० धा० पर०) दूध की इच्छा करना —क्षीरस्यति माणवकः पा० ७।१।५१ पर म०भा०।

[क्षु] (क्र्या० उभ०) कूदना, उछलना (स्वा० पर० भी) —क्षुणाति च क्षुणीते च क्षुणोत्याक्रमणेऽपि च। क्षुभ्यते चापि पदाप्लवनवाचिन इति भट्टमल्लः।

क्षुद्र (वि०) [क्षुद्+रक्] 1 छोटा 2 सामान्य 3. तुच्छ 4 क्रूर 5 गरीब। सम०—तातः पिता का भ्राता, चाचा,—पदम् लम्बाई मापने का एक गज,—शार्दूलः चीता।

क्षुद्रकः [क्षुद्र+कन्] 1 जो तिरस्कार करता है 2 एक प्रकार का बाण।

क्षोदः [क्षुद्+घञ्] 1. बूंद 2 लौंदा, टुकड़ा 3 पीसना।

क्षुधाशान्तिः, क्षुच्छान्तिः } भूख शान्त करना।

क्षुम्प् (स्वा० आ०) कूदना (दे० 'क्षु' भी)।

क्षुरलक्षणम् (नपुं०) जो क्षौरकर्म, या हजामत बनवाने के लिए शुभलक्षण हो।

क्षेत्रलिप्ता (स्त्री०) [ष० त०] क्रान्तिवृत्त की कला।

क्षेत्रांशः [ष० त०] क्रान्तिवृत्त का अंश या भाग।

क्षेमेन्द्रः (पुं०) बृहत्कथामंजरी का प्रणेता एक काश्मीरी कवि।

क्षौद्रक्यम् [क्षुद्रक+ष्यञ्] क्षुद्रता।

क्षौमभवनम् (नपुं०) मलमल से बनाया गया भवन।

क्ष्मावलयः [ष० त०] क्षितिज।

ख

खसूचिः (पुं०, स्त्री०) 1 तिरस्कारसूचक अभिव्यक्ति (समासान्त में) जैसा कि 'वैयाकरणखसूचिः' (बुरा वैयाकरण—जो अपने ज्ञान को भूल गया)।

खटिका (स्त्री०) भूख लगाने वाली औषधि।

खट्टकः (पुं०) [खट्ट+अच्, स्वार्थे कन्] खाट, आसन।

खड्गः [खड्+गन्] तलवार। सम०—धारा तलवार का फल,—धाराव्रतम् अत्यन्त कठिन कार्य,—विद्या तलवार चलाने की कला।

खण्ड (वि०) [खण्ड्+घञ्] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ 2. त्रुटित,—ण्डः,—ण्डम् महाद्वीप, महादेश। सम०—इन्दुः दूज का चाँद—खण्डेन्दुमुकुटशेखरम् (लिंगम्) वेदपा०,—वाक्यः संक्षिप्त वाक्य में भाष।

खण्डनखण्डखाद्यम् (नपुं०) हर्षकृत एक वेदान्त शास्त्र का ग्रन्थ।

खण्डिकोपाध्यायः (पुं०) बुरा अध्यापक, क्रोधित अध्यापक —खण्डिकोपाध्यायः शिष्याय चपेटिकां ददाति पा० १।१।१ पर म० भा०।

खण्डितव्रत (वि०) [ब० स०] जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है।

खण्डिन् (पुं०) [खण्ड+इनि] एक प्रकार की दाल, पीले मूँग।

खण्डीरः (पुं०) दे० 'खण्डिन्'।

खतमालः (पुं०) 1. धूआँ 2. बादल।

खनिका [खन्+इन्, स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप्] पोखर, ताल।

खरः [ख+रा+क] 1 गधा, खच्चर 2. ठोस, कठोर 3. तीक्ष्ण, तेज 4. सघन 5. क्रूर 6. ६० वर्ष के चक्र में पच्चीसवाँ वर्ष। सम०—कण्डूयनम्, बुराई को और अधिक करना,—गेहम् तम्बू,—[illegible] (वि०) मगरमच्छ,—[illegible] (वि०) गधा, जड़बुद्धि,—सारम् लोहा,—स्पर्श (वि०) गर्म, प्रचण्ड (आँधी, लपट) —वायुर्वाति खरस्पर्शः राम० १।२४।१९।

खरक (वि०) जिसकी सतह खुरदरी हो ऐसा (मोती) —कौ० अ० २।११।

खरोष्ट्री (स्त्री०) एक प्रकार की वर्णमाला।

खर्जूरिका (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
खर्जूरम् (नपुं०) नारियल की गिरी, गोला, खोपा।
खर्मम् (नपुं०) 1. रेशम 2. शौर्य 3 कठोरता।
खर्वटः [खर्व+अटन्] एक इस प्रकार की बस्ती जो पर्वत की तलहटी या नदी के किनारे बसी हो और जिसके निवासियों का व्यवसाय प्राय: वणिग्व्यापार हो। यह गाँव और नगर के बीच की बस्ती के लक्षणों से युक्त होती है।
खर्वाट दे० 'कर्वाट' भीमसेन प्रमथितादुर्योधनवक्षसिनी, शिखा खर्वाटकस्येव कर्णमूलमुपागता नाग०।
खर्वित (वि०) [खर्व+इतच्] जो बौना बन गया हो।
खर्वेतर (वि०) [त० स०] जो नगण्य न हो, जो छोटा न हो।
खलिन् (वि०) [खल+इनि] खल से युक्त, तलछट वाला, —(पुं०) शिव।
खलीकृत (वि०) [खल+च्वि+कृ+क्त] अपमानित —ब्राह्मणस्त्वया खलीकृतः—नाग० ३।
खल्लिकः } एक प्रकार की मछली।
खल्लिशः }

खसः (पुं०) खुजली, खाज।
खा [खर्व्+व+टाप्] 1. पार्वती 2. धरती 3. काली 4. वसुधा —खर्वा क्षमा कमला च धी:—एकार्थ०।
खाद्यपानम् (नपुं०) खाना पीना।
खानोलकः (पुं०) नारियल का पेड़।
खुरासानः (पुं०) खुरासान देश में उत्पन्न एक उत्तम नस्ल का घोड़ा—शाङ्ग० ११।७।
खोलीरकः (पुं०) कोलका बीज।
खेचरी (स्त्री०) एक प्रकार की योगसिद्धि जिसके द्वारा योगी आकाश में उड़ सके—एवं सखीभिरुक्ताहं खेचरीसिद्धिलोलुपा कथा० २०।१०५।
खेटः [खिट्+अच्, खे अटति अट्+अच्] ग्राम, गाँव।
खोरकः (पुं०) किसी जानवर के खुर में होने वाला विशेष रोग।
ख्यातिः (स्त्री०) [ख्या+क्तिन्] दर्शनशास्त्र का एक सिद्धान्त—विकल्पः ख्यातिवादिनाम्—भाग० ११।१६।२४।

ग

गः [गै+क] 1. शिव 2. विष्णु—गः प्रीतोमकः श्रीपतिसत्तमः—एकार्थ०
गगनम् [गच्छन्त्यस्मिन् गम्+ल्युट्, ग आदेश] 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. शून्य 3. स्वर्ग। सम०—रोमन्थः असत्कृति, व्यर्थ पदार्थ, —लिह् (वि०) आकाश तक पहुँचने वाला - दे० अभ्रलिह्।
गङ्गासप्तमी (स्त्री०) वैशाख मास के शुक्ल पक्ष का सातवाँ दिन।
गजः [गज्+अच्] 1 हाथी 2. आठ की संख्या 3. लम्बाई नापने का गज 4. एक राक्षस जिसे शिव जी ने मार दिया था। सम०—गणिका हथिनी जिसका प्रयोग जंगली हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता है—स्वतनुविसरणेन तं प्रलोभ्य द्विपमिव वन्यमिहोपनेतुकामा तर्हि गजगणिकेव वेल्लितासि—जानकी० १६।५२, —गौरीव्रतम् भाद्रपद मास में स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला व्रत, —निमीलिका किसी वस्तु की ओर झूठ-मूठ देखना, जानबूझ कर न देखना, —पुच्छी एक लता का नाम- गजपुच्छीभिर्गा [illegible] रा० ४।१२।३९, —बन्धः 1. खूंटी जिससे हाथी बांधा जाता है 3 एक प्रकार की संभोग मुद्रा 3. जंगली हाथी को पकड़ने की प्रक्रिया नाना०।

गजिन् (वि०) [गज+इनि] गजारोही, हाथी की सवारी करने वाला।
गडूकः [=गण्डूक, पृषो०] 1. तकिया 2. एक प्रकार का जलपात्र।
गणः [गण्+अच्] 1. समूह, संग्रह, समुदाय, रेवड़, लहंडा 2. श्रेणी 3 शिव के अनुचर, जिनका अधीक्षक गणेश है, उपदेव 4 समाज 5. मण्डल 6. जाति। सम० —रत्नमहोदधिः व्याकरणगत शब्दों पर वर्धमान कृत एक ग्रन्थ,— वल्लभः सेनापति—रा० २।८१।१२।
गणकर्णिका संबलक, जिसमें विशेष प्रकार के शोधित शब्दों की सारणी दी हुई होती है—राज० ६।३६।
गणितम् [गण्+क्त] व्यवहार वेत्तुमर्हसि राजेन्द्र स्वाभावगणितं महत् महा० १२।६२।९।
गण्डवाहनम् [गम्+वह्+शानच्] किसी रचना का निर्माण की सापेक्ष ऊँचाई।
गण्डः [गण्ड्+अच्] 1. गाल 2 हाथी की कनपटी 3. बुलबुला 4. फोड़ा, रसौली 5. जोड़, गांठ। सम०—कूपः पहाड़ की सतह, अधित्यका,—भेदः चोर—गण्डभेदभास्त्राः शीर्णं पात्रमपि—अवि० २।
गण्डूषः [गण्ड्+ऊषन्] एक प्रकार की शराब।
गत (वि०) [गम्+क्त] 1 गया हुआ, बीता हुआ 2. मृत,

3. ज्ञात। सम० आगतम् (गतागतम्) [द्व० स०] भूत और भविष्यत् (का वर्णन)—वंशस्यास्य गतागतम्— रा० ७।५११२१,—चेतस्क (वि०) मग्न, लीन, —श्रम (वि०) जो अपनी थकावट का ध्यान नहीं करता है।

गतिमत् (वि०) [गति+मतुप्] उपायज्ञ, तरकीब या रीति का जानकार महा० १२।२८६।७।

गत्वर (वि०) [गम्+क्वरप्, अनुनासिकलोप, तुक् च] तेज चलने वाला,—स्वरः (पु०) एक प्रकार का घोड़ा।

गदः [गद्+अच्] 1 कृष्ण के भाई का नाम 2 कुबेर, 3. शस्त्रास्त्र, हथियार—आयुधे धनदे रोगे पुंसि कृष्णानुजेऽपि च नाना०।

गदि: (स्त्री०) [गद्+इ] व्याख्यान, वक्तृता —एव गदि कर्मगतिर्विसर्गा भाग० ११।१२।१९।

गन्धः [गन्ध्+अच्] 1 गुणों में समानता, सम्बन्ध, बन्धुता 2 गन्धक 3. चन्दन चूरा 4 पड़ौसी। सम०—हस्तिन् हाथी जिसकी मधुर गन्ध इधर-उधर फैलती है, वह गुणों में उत्तम हाथी माना जाता है।

गन्धकपेषिका (वि०) [ष० त०] सेविका जो गन्ध द्रव्य और चन्दन पीस कर तैयार करती है।

गन्धिन् (वि०) [गन्ध्+इ] केवल नामधारी, बहाना करने वाला साऽपि त्वया हन्तव्या रिपुणा भ्रातृगन्धिना —रा० ७।२४।२९।

गन्धर्वतैलम् (नपुं०) [ष० त०] एरण्ड का तेल।

ग (गा) न्धारः (पु०) 1 संगीत में तीसरा स्वर, एक विशेष प्रकार का राग।

गमनम् [गम्+ल्युट्] जानना, समझना नाऽन्त्र स्वरूपगमने प्रभवन्ति भूम्न —भाग० ८।७।३४।

गर्गसंहिता (स्त्री०) गर्ग द्वारा प्रणीत एक ज्योतिष का ग्रन्थ।

गर्मुतम् (नपुं०) एक प्रकार का घास।

गर्भः [गृ+भन्] 1. गर्भाशय, पेट 2 भ्रूण, कमल 3 अग्नि 4 आहार। सम०—धात्रिका (स्त्री०) धात्री, दाई कथा० ३४, —न्यासः आधार रखना, नींव डालना —न्यासनम् नींव का गढ़ा,—संभवः गर्भाशय से जन्म होना।

गर्भिका (स्त्री०) किसी प्रकार के मल का सूक्ष्म अन्तःप्रवेश।

गर्वेशूरः } (वि०) [सप्तमी अलुक् समास] कायर, मन्द-
गर्वेशूर } बुद्धि, जड़।

गलः [गल्+अच्] 1 एक प्रकार की मछली 2 एक प्रकार की घास।

गलुः (पु०) [गल्+उण] एक प्रकार का रत्न।

गवामयनः (पु०) एक वर्ष तक रहने वाला यज्ञयाग।

गव्य (वि०) [गो+यत्] गाय से मिलने वाला पदार्थ, घी दूध आदि,—व्यम् (नपुं०) गवामयनम् नाम का एक श्रौत यज्ञ—'गवामयन सूत्र'—मै० सं० ८।१।१८ पर शा० भा०।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1 गहरा, सघन, चिमका 2 समझने में कठिन 3 ऐसा स्थान जो पार न किया जा सके।

गह्वरी [गह्वर+ङीप्] पृथ्वी।

गह्वरित (वि०) [गह्वर+इतच्] लीन, मग्न—यात्रसेन्या वचः श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत्—महा० २। ६८।४५।

गाङ्गेय (वि०) [गङ्गा+ढक्] गङ्गा में, गङ्गा पर, या गङ्गा से उत्पन्न होने वाला,—यः भीष्म,—यम् 1 सोना 2 मोथा घास।

गाढतरम् (अ०) 1 अधिक कस कर सटा कर 2 अपेक्षाकृत अधिक गहनता से।

गाढवर्चस् (पु०) [ब० स०] मेंढक।

गाढावटी (स्त्री०) एक प्रकार की भारतीय शतरंज।

गाणनिक्यम् [गणनिक+ष्यञ्] लेखाकार का कार्य —अक्षपटले गाणनिक्याधिकारः —कौ० अ० २।७।

गाण्डी (स्त्री०) गैंडा।

गात्रवेष्टनम् (नपुं०) आकर्षी संवेदन।

गात्रिका (स्त्री०) चोली।

गान्धर्वकला,-विद्या, } संगीत की ललित कला, संगीत का
—वेद,—शास्त्रम् } सिद्धान्त, संगीतविज्ञान।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यं इञ्] 1 एक प्रकार का मादक द्रव्य 2 बाईं आँख की शिरा।

गान्धारीग्रामः (पु०) एक प्रकार का संगीतग्राम।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1. मर्यादा 2 उदारता 3 संतुलन।

गायंरः (पु०) गायक।

गार्हकमेधिकाः [गृहकमेधिन्+ठक्] गृहस्थ के धर्म, गृहस्थ के कर्तव्य।

गिर् (गिरा) (स्त्री०) [गृ+क्विप् टाप् वा] 1 वृद्धि वे० गिर्वा एकार्थ० 2. सुना हुआ ज्ञान गिरा वाऽऽत्मानि तपसा ज्ञानन्ती—महा० १।३।५७ (टीका)।

गिरा [गृ+क्विप् टाप् वा] स्तुति (वेद०)।

गिरिशः [गिरि+शङ्] शिव—भाग० ८।६।१५।

गिरिसानुः (पु०) वेदी।

गिलन् (वि०) [गिल्+अच्] निगलने वाला—गिलन्निव एष आकृतिम्—भाग० १०।१३।११।

गीतगोविन्दम् (नपुं०) जयदेव लिखित एक गीतिकाव्य।

गीतरामायणम् (नपुं०) संगीत के सम्भार पाठ के उपयुक्त एक महाकाव्य।

गीतमोदिन् (पु०) किन्नर।

गीतिः [गै+क्तिन्] एक मेय साम।

गुटिकाधनुस् (नपुं०) 'Y' के आकार की एक यष्टिका जिसके साथ एक डोरी बंधी होती है, इससे पक्षियों पर पत्थर के टुकड़े फेंके जाते हैं इसका नाम है "गोफिया"।

गुटिकाबन्धनम् (नपुं०) बन्दूक, नलिका।

गुड: [गुड्+अच्] गोली, वटिका—शार्ङ्ग० १३।१।

गुण: [गुण्+अच्] 1. किसी वस्तु की विशेषता चाहे अच्छी हो या बुरी 2. धागा, डोरी 3. शरीर के (सत्त्व, रज तथा तम) धर्म। सम० -कल्पना किसी वाक्य का अर्थ करते समय आलङ्कारिक भावना को उद्घेत करना,—कार: (भक्ति०) गुणक, गुणा करने वाला,—गौरी अपने उत्तम गुणों से देदीप्यमान महिला अनृतगिर गुणगौरि मा कृथा माम्—शि०, —भाव: किसी अन्य वस्तु की तुलना में गौण पद—परार्थता हि गुणभाव—मैं० सू० ४।३।१ पर शा० भा०,—वाद: 1 गौण अर्थ को सूचित करने वाली उक्ति 2 अन्य तर्कों का विरोध करने वाली उक्ति, —विभाग (वि०) [ब० स०] पदार्थ के अन्य पहलुओं में से किसी विशेषता को पृथक् करके दर्शाने वाला. विशेष: विशेष लक्षण, भिन्न प्रकार की विशेषता, विशेषा: बाहरी ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और अहंकार गुणविशेषा बाह्येन्द्रियमनोऽहङ्काराख्य—सां० का० ३६, संग्रह: अच्छे गुणों का एकत्रीकरण।

गुदनिर्गम: [ष० त०] अर्शादि रोग के कारण कांच बाहर निकल आना।

गुप्तगृहम् (नपुं) शयनकक्ष, शयनागार।

गुप्तवनम् (नपुं०) [कर्म० स०] छिपा हुआ वन।

गुमटी (स्त्री०) अवगुण्ठनवती महिला, घूंघट वाली स्त्री।

गुरु (वि०) [गृ+कु, उत्वम्] 1 भारी (विप० लघु) 2 बड़ा 3 लम्बा 4 कठिन 5 आदरणीय 6. शक्तिशाली,—रु: (पुं०) 1 पिता, प्रपिता, पितामह, पूर्वज 2. सम्माननीय महापुरुष 3 शिक्षक, अध्यापक 4 स्वामी 5 बृहस्पति। सम०—उपदेश: 1 अध्यापक द्वारा शिक्षा 2 शिक्षकों या बड़ों द्वारा दी गई नसीहत, —कण्ठ: मोर, —कुलम् 1. गुरु का वासस्थान आवास विद्यापीठ जहाँ अध्यापक और छात्र मिल कर रहें, —कुलवास: गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करना, —गृहम् 1. शिक्षक का घर 2. बृहस्पति का घर (जन्मपत्रिका में), —भाव महत्त्व, गुरुत्व, —वर्चोघ्न: नीबू, जम्बीर —वर्तिता बड़ों के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शन करना निवेद्य गुरवे राज्यं भजिष्ये गुरुवर्तिता—रा० २।११५।१९, —वृत्ति: मानभंग—अपमानो गुरूणां मतम् महा० १३।३६।६,—स्वम् शिक्षक का धन, संपत्ति।

गुलिक: (पुं०) 1. एक उपग्रह (शनि का पुत्र) जो केरल देश में माना जाता है 2. शिव के पुत्रा वीर 3. विष्णव—गुलिको मन्दतनयो रजबद्दालनोदरो:, शिवजाये —नाना०। सम०—काल: प्रतिदिन का वह समय जो अशुभ माना जाता है।

गुलिका (स्त्री०) गोली—एकाऽपि गुलिका तव नलिका यन्त्रनिर्गता—शिव०।

गुल्म: [गुड्+मक्, डस्य ल:] 1. युद्धशिविर 2. सैनिक-संघ। सम०—कुष्ठम् एक प्रकार का कोढ़।

गुह्य (वि०) [गुह्+क्यप्] 1. छिपाने के योग्य 2. रहस्य, —स्थानम् (नपुं०) गुप्त स्थान—मैथुनं सततं धर्म्यं गुह्ये चैव समाचरेत्—महा० १२।१९३।१७। सम० —दीक्षा गुप्त रूप से और लोगों से गुप्त रख कर —गुरुमन्त्र की दीक्षा देना, अथवा अभ्यास कराना।

गूढ (वि०) [गुह्+क्त] 1 गुप्त, छिपा हुआ 2. आच्छादित 3 अदृश्य 4 रहस्य, —ढम् (नपुं०) एक शब्दालंकार। सम० अर्थ (वि०) आन्तर अर्थ रखने वाला, आलेख्यम् कूटलेख,—कौ० अ० १।१२।

गृत्समद: (पुं०) एक वैदिक ऋषि का नाम (इसका पुराणों में भी उल्लेख है)।

गृद्ध (वि०) [गृध्+क्त] इच्छुक, लालायित, उत्सुक, किसी वस्तु को अत्यन्त चाहने वाला—गृद्धा वायवि संभ्रान्ता महा० १।७२।६।

गृद्धिन् (वि०) [गृद्ध+इन्] दे० 'गृद्ध'।

गृध्य (वि०) [गृध्+यत्] जिसे उत्सुकता पूर्वक बहुत चाहा जाय जिसके लिए प्रबल लालसा की जाय।

गृह् (चुरा० आ०) स्वीकार करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, लेना, निकालना, लीन करना।

गृहम् [ग्रह्+क] 1 घर, आवास, भवन 2 पत्नी 3 गृहस्थ जीवन 4 जन्मकुंडली का घर 5. (शतरंज आदि खेल का) घर। सम० आरम्भ: घर का निर्माण, —ईश्वरी घर की स्वामिनी, गृहिणी,—क्षेत्रम्, —सक्त (वि०) अपने घर की याद करने वाला, जिसका मन अपने घर की ओर ही लगा हो, —दारु (नपुं०) घर में लगा खम्भा, स्तम्भ—नरपतिकुले पार्श्वयाते स्थित गृहदारुवत्—महा० ४।१, —पति: 1 घर का स्वामी 2 गृहस्थ 3 गाँव का मुखिया —गृह्य० २, —भ्रमरी भौंरा, भृंगर्म,—वेदिका: भवन बनाने के लिए संकेतित स्थान,—पोषणम् गृहस्थ का निर्वाह,—मार्जनी 1 घर को झाड़ू से साफ करने वाली 2 बुहारी की मूठ, —वासिन् (पुं०) कबूतर।

गृहकम् [गृह+कन्] घर का बगीचा, वाटिका।

गृह्य (वि०) [गृह्+क्यप्] 1 घरेलू 2 पालतू 3 प्रत्यक्ष, प्रत्यक्षतोऽ—श्वेता० १।१ गृह्यम् (नपुं०) घरेलू काम, गृहस्थ का कर्त्तव्य अनुष्ठान ध०

—सूत्रम् सूत्रों का संकलन जिसमें गृह्य कर्मों के विधान का वर्णन है जैसे कि आपस्तम्बगृह्यसूत्र या बोधायन गृह्यसूत्र ।

गेष्णुः [गै+इष्णुच्] 1. गीत 2. गायक 3. नटनर्तकी ।

गेष्णः (वेद०) गीत (समास में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ है 'स्तुति के योग्य' 'स्तुत्य' जैसा कि 'उरु-गाय' में) ।

गो (पुं०, स्त्री०) [गम्+डो] 1. पशु 2. गौ 3. कोई भी पदार्थ जो गौ से प्राप्त हो 4. आकाश 5. इन्द्र का वज्र 6. प्रकाश, किरण 7. हीरा 8. स्वर्ग 9. बाण । सम० - ग्रहणम् गौएँ पकड़ना, गौएँ चुराना,—चर्या पशु की भाँति केवल अपना भौतिक सुख सोचना —चिकित्सा पशुपालन, काम,—जीव (वि०) गोकुल का व्यवसाय करने वाला, गोपी,—पथः अथर्ववेद का एक ब्राह्मण,—पर्वतम् उस पहाड़ का नाम जहाँ पाणिनि ने तपस्या की थी - अवन्ता०, वृत० २।६८, —पीलुः एक वन पक्षी,—प्रकाण्डम् (वि०) उत्कृष्ट, सबसे ऊपर वाला,—मेदकः वैदूर्य नामक मणि, —यूथम् मल्लयुद्ध में पैंतरेबाज़ चाल—महा० ९।५८।२१,—लोमिका कठोर घास,—वल्लम् गाय के गोबर का चूरा,—विषाणिकः गाय के सींग से निर्मित एक संगीत उपकरण (इसे 'शृंग' भी कहते हैं) —महा० ६।४४।४,—शालिनी आयमीयन,—हरणम् दे० 'गोग्रहणम्' ।

गोलु (भूरा० पर०) गोबर से लीपना, गोबरी फेरना ।

गोमत् (वेद०) [गो+मतुप्] गौओं से समृद्ध स्थान ।

गोमयपायसीयन्यायः (पुं०) एक ही स्रोत से उत्पन्न दो वस्तुओं के गुणों की भिन्नता-जैसे, दूध और गोबर ।

गोम्भिन् [गोभ्+णिनि] वैद्य—गोम्भिनः कारयेत्करम् —महा० १२।८७।३५ ।

गोलिकायनः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा ('गोलिकायन' नामक स्थान में पैदा होने के कारण यह नाम पड़ा) ।

गोष्ठी (स्त्री०) नाट्यगृह, नाटिका के बीच का पर्दा ।

गोहः [गुह्+घञ्] बैल ।

गौणी [गौण+ङीप्] गाय ।

गोलक्रीडा (स्त्री०) गेंद से खेलना, गेंद का खेल ।

गोलदीपिका ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम ।

गोलशास्त्रम् (नपुं०) 1. भूगोल 2. गणित ज्योतिष ।

गोवर्धनः मैनाक पर्वत ।

गौडपादः 'माण्डूक्य' पर (कारिका) लिखने वाला प्रसिद्ध लेखक ।

गौडमालवः (पुं०) संगीतशास्त्र के एक राग का नाम ।

गौधारः, गौधेरः, गौधेयः (पुं०) गोह (जो प्रायः वृक्षों की दरारों में पाई जाती है) ।

गौतमकः [ब० स०] 1. सिर 2. श्री गौतम देव, तथा और गणक ।

गौरी [गौर+ङीष्] 1. एक नागकन्या 2. एक नदी का नाम 3. राग 4. पार्वती । सम०— पूजा आषाढ मास के शुक्लपक्ष के तीसरे दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

गौल्मिक (वि०) [गुल्मक+अण्] गुल्मकों से संबंध रखने वाला ।

ग्रन्थिः [ग्रन्थ्+इन्] 1. पुस्तक का कठिन स्थल – ग्रन्थ-ग्रन्थिं तदा चक्रे मुनिर्गूढं कुतूहलात्—महा० १।१।८० 2. धन्दी, बंध—कथा० ६५।१३५ । सम० — छेदकः एक प्रकार का जेबकतरा, इत्यादि ।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि+कै+क] बांस का अंकुर ।

ग्रन्थिकम् (नपुं०) 1. पीपलामूल 2 गुग्गुल ।

ग्रासप्रमाणम् [ग्रस्+घञ् = ग्रासस्य प्रमाणम् – ष० त०] एक ग्रास का माप ।

ग्रहः [ग्रह्+अप्] 1 युद्ध की तैयारी 2. अतिथि-यथा सिद्धस्य ग्रामस्य ग्रहाणार्थं प्रदीयते—महा १३।१००। ६ । सम०—अवेक्षणः धननमा, – कुण्डलिका,—कुण्डम्, स्थितिः जन्मकुण्डली, किसी भी समय ग्रहों की बताई हुई दशा,—गणितम् फलित ज्योतिष का गणित भाग,—ग्रामणी सूर्य,—चारनिबन्धः ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम, लाघवम् ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम,—स्वरः संगीत राग का पहला स्वर ।

ग्रहणीकपाटः [ष० त०] अतिसार की औषधि ।

ग्राहः [ग्रह्+घञ्] 1 मूठ 2. पकड़ना ।

ग्राह्यम् [ग्रह्+ण्यत्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्षण का विषय ।

ग्राह्यः [ग्रह्+ण्यत्] एक ग्रस्त ग्रह ।

ग्रामः [ग्रस्+मन्, आदन्तादेश] 1 गाँव, पल्ली 2. वंश, समुदाय 1. समुच्चय, समूह । सम०—कायस्थः ग्रामीण लिपिक, तक्षकः गाँव का बढ़ई,—णीः (पुं०) सूर्य के अनुचरों का नेता, उपदेवता,—धर्मः गाँव की प्रथा, रीतिरिवाज,—धान्यम् गाँव में उत्पन्न अन्न, मुख्यः गाँव का मुखिया, - विशेषः संगीत का विशिष्ट स्वर—स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्छना—शि०, – वृद्ध गाँव का बड़ा बूढ़ा – प्राप्यावन्तीनुदयनकथा-कोविदग्रामवृद्धान् मेघ० ३० ।

ग्रामप्रवादिन् (पुं०) गाँव का आलेखक, गाँव की ओर से बोलने वाला शां स० २।३।१।८ ।

ग्रामेयकम् (नपुं०) कुष्ठ का एक भेद ।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रस्+मनिन्] गर्म, उष्ण । ग्रीष्मः (पुं०) ग्रीष्म ऋतु । सम० -वनम् उपवन या वाटिका जो ग्रीष्म ऋतु का विश्राम स्थल हो—कथा० १२३।६६,—सुभग मुग्धकाय ग्रीष्म जो ग्रीष्मऋतु में हवा में इधर उधर उड़ती है ।

ग्लापनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट्,पुक् इत्यागम] 1. मुरझाना कुम्हलाना 2 विध्वंस करना—शाखोदकुम्भाद्वायन-विधूमितारण्यमहीशाश्रितायाः—शत्रा० ४।१४ ।

ग्लपित (वि०) [ग्लै+णिच्+क्त, पुक्, ह्रस्वश्च] 1. क्लान्त, मुर्झाया हुआ, छितराया हुआ—कि० १४।४४, रघु० १६।१८ 2. दुःखी, दुःख दिया हुआ —अत्युत्सवापितसीता:—रा० ७।७।४७।

घ

घटः [घट्+अच्] 1 सिर—समाधिभेदे ना शिर कूटकटेषु च—मेदिनी०, महा० १।१५५।३८ 2 मिट्टी का जलपात्र 3 कुम्भराशि। सम० —उदरः गणेश का नाम, —कञ्चुकिन् (नपुं०) तान्त्रिक और शाक्तों की एक रस्म (इसमें विभिन्न महिलाओं की चोलियाँ एक घड़े में डाल दी जाती हैं और फिर उपस्थित महानुभावों में से प्रत्येक एक एक चोली निकालता है, तथा जिस महिला की वह चोली होती है, उसके साथ उस पुरुष को संभोग करने की अनुमति है) —योनिः, —भवः, अगस्त्य मुनि।

घटा [घट् भाव अङ्, स्त्रियां टाप्] लोहे की प्लेट जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

घटिकामण्डलम् (नपुं०) विषुवद्वृत्त।

घटिकायन्त्रम् (नपुं०) घंटा।

घटीयन्त्रम् (नपुं०) 1 रहट, पानी निकालने का यन्त्र 2. अतिसार भाव० ७।१६।२८।

घट्टित (वि०) [घट्ट्+क्त] 1 मणियुक्त, फलकदार —रत्न० ६।३ 2 दबाया हुआ भींचा हुआ पीसा हुआ।

घण्टाकर्णः (पुं०) 1 शिव का एक गण 2 एक राक्षस का नाम।

घण्टारवः (पुं०) [ष० त०] 1 घण्टे की आवाज —कांस्यघण्टारव —हनु० 2 सण की एक जाति घण्टारव शणपुष्प घण्टानादः नाना०।

घण्टिका (स्त्री०) [घण्टा+ण्वुल्, ह्रस्वः] गले का काकल, उपजिह्वा।

घण्टालः [घण्टा+आलच्] हाथी सूक्ति० ५।६६।

घण्टिकः [घण्टा+ठञ्] घड़ियाल, मगरमच्छ।

घन (वि०) [हन् मूर्तौ अप्, घनादेशश्च] 1 सघन, दृढ़, ठोस 2 मोटा, भरा हुआ 3 पूर्ण विकसित 4. गहरा 5 निर्बाध 6 स्थायी 7 पूर्ण, —नः (पुं०) 1 बादल 2 लोहे की गदा 3. शरीर 4 समुच्चय 5 वेद का सस्वर पाठविशेष, —नम् (नपुं०) 1 कांसा, जस्त 2 लोहा 3 खाल, वल्कल। सम०—ऊरु मोटी जंघाओं से युक्त महिला कुरु घनोरु पदानि शनैः शनैः —वेणी० २।२०, —क्षम (वि०) हथौड़े के आघात के उपयुक्त—भाग० ६।२६।५१, —[illegible] किसी रचना या निर्माण का बाहरी माप, —संवृतिः बड़ी गोपनीयता।

घनता, घनत्वम् [घन+तल्+त्व] 1. सघनता, ठोस होना 2 दृढ़ता, ठोसपना।

घर्घरः (पुं०) [घृ+यङ्—लुक्+अच्] मन्दिर का एक विशेष प्रकार का निर्माण।

घर्म (वि०) [घृ+मक्, नि० गुणः] गर्म, —र्मः (पुं०) 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. पसीना 4. प्रवर्ग्य संस्कार 5 एक देवता का नाम—घर्मः स्वाहाकृते शीघ्रे प्रवर्ग्ये देवतान्तरे। सम० —जातिः पसीने से उत्पन्न जीव, दे० 'स्वेदज'।

घर्षणालः [घर्षण+आलच्] पीसने वाला, बट्टा, लोढ़ी।

घाटनम् [घट्+णिच्+ल्युट्] पटकनी, घूंसा।

घातः [हन्+णिच्+घञ्] हण्टर लगाना कोशाधिष्ठितस्य कोशावच्छेदे घातः —की० अ० २।५। सम० —कृच्छ्रम् (नपुं०) एक प्रकार का मूत्ररोग, —दिवसः अशुभ दिन, जन्मनक्षत्र से सातवाँ नक्षत्र।

घुणक्षत, घुणजग्ध, घुणभुक्त [घुण+क्षत = घुण+जक्ष (अद्) (भुज्)+क्त] घुने से खाया हुआ, घुण लगा हुआ—[illegible] प्राप्तघुणक्षतैकवर्णोपमावाच्यमलं ममार्य—शि० ३।५८।

घुमघुमित (वि०) [घुमघुम+इतच्] सुगन्धित, सुरभित, खुशबूदार।

घुष्टान्नम् (नपुं०) ढिंढोरा पीट कर सबको अन्नदान करना मनु० ४।२०९।

घृत (वि०) [घृ+क्त] 1 छिड़का हुआ 2. चमकीला, —तम् (नपुं०) 1 घी 2 मक्खन 3. शराब मधुस्यतो घृतपृक्ता महा० १।९२।१५। सम० —अक्त (वि०) घी से चुपड़ा हुआ, घी से युक्त, —गन्धः चावलों का एक भेद जिसमें घी की सुगन्ध आती है, —प्राशः, —प्राशनम् घी पीना, —प्लुत (वि०) घी से चुपड़ा हुआ, —हेतु मक्खन।

घृणा [घृ+नक्] शर्म की भावना।

घृणिन् [घृणा+इनि] लज्जालु, शर्मीला।

घोणा [घुण्+अच्+टाप्] 1 (उल्लू की) चोंच 2. (रथ में) पहिये की नाभि।

घोषः [घुष्+घञ्] सस्वर पाठ, मन्त्रोच्चारण—[illegible] ब्रह्मघोषांश्च विराजे ब्रह्मरक्षसाम् रा० ५। सम० —यात्रा सामूहिक रूप से ग्वालों के स्थान पर जाना, सामूहिक तीर्थ यात्रा, —वर्णः घोष प्रयत्न वाला अक्षर, स्वर युक्त या निनादी अक्षर, —वृद्धः ग्रामीण

ग्लावे—ईषद्गृहीतमापाय चोदयामास रघु० १।८५।

घ्रांशु, घ्रांशः (वेद०) [घ्रंस्+विच्, अच् वा] सूर्य की गर्मी, चिलचिलाती धूप।

घ्राण (वि०) [घ्रा+क्त] सूंघा हुआ, णः,—णम् 1. गन्ध 2. गन्ध आना 3. नाक। सं०—दुःखदा नकुछनी, —स्कन्द नाक बहाना, सिनकना।

च

चकोरदृश्,—अक्ष (वि०) [ब० स०] चकोर जैसी आँखों वाला, सुन्दर आँखों वाला—अनुचकार चकोरदृशां कलः—शि० ६।४८।

चक्रम् [क्रियते अनेन, कृ घञर्थे क, नि० द्वित्वम्] 1 गाड़ी का पहिया 2. कुम्हार का चाक 3 गोल तीक्ष्ण अस्त्र 4. तेल का कोल्हू 5. वृत्त। सम०—अरः, —अरम् पहिये का अरा,—अश्मन् एक प्रकार का पत्थर फेंकने का यंत्र,—ईश्वरी जैनियों की विद्या देवी, सरस्वती, —चरः गरजता हुआ बालक,—वर्मन् कश्मीर के एक राजा का नाम - राज० ५।२८७।

चक्षुष्यम् [चक्षुस्+यत्] आँखों के लिए मरहम।

चक्षूर्जबाध (वि०) अनिच्छता पूर्वक अंगविक्षेप करने वाला, अश्लील इंगित करने वाला—भट्टि० ४।१९।

चटकामुखः [ब० स०] एक विशेष प्रकार का बाण।

चणुच्च् (भ्वा० आ० पर०) इधर-उधर घूमना—चञ्चूपुट चटुलचलित चिरं चकोरा—भामि० ८९।९९।

चतुर्, (सं० वि०) [चत्+उरन्] (रचना में 'चतुर्' का 'र्' बदल कर विसर्ग, श्, ष, या स् हो जाता है) चार। सम० अङ्गिकः (चतुरङ्गिक) एक घोड़ा जिसके मस्तक पर बालों के चार घूंघर लहराते हों, —काष्ठम् (चतुष्काष्ठम्) (अ०) चारों दिशाओं में, —किष्कः (चतुष्किष्क) उभरी हुई वर्गाकार बनी चौतरी—महा० १४।८४।३२,—पादम् (चतुष्पादम्) वर्नुविधान जिसमें चार (ग्रहण, धारण, प्रयोग और प्रतिकार) भाग होते हैं, मेधः (चतुर्मेध) जिसने चार बड़े यज्ञों - अश्वमेध, पुरुषमेध, पितृमेध और सर्वमेध का अनुष्ठान सम्पन्न कर लिया है,— सन (चतुस्सन) सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नाम के चारों रूप धारण करने वाला विष्णु।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयवं चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1. चार की संख्या से युक्त, —ष्कम् चार पायों वाला स्टूल, चौकी।

चन्दनपङ्कः [ष० त०] चन्दन का लेप—कुङ्कुमचन्दन-पङ्कविलिप्तः—चौर०।

चन्द्र (वि०) [चन्द्+णिच्+रक्] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. सुन्दर,—न्द्रः (पुं०) 1. चन्द्रमा, चांद 2. कपूर 3 मोर की पूंछ का चन्दा 4 पानी। सम० कला एक प्रकार का ढोल,—कुल्या एक नदी का नाम,—प्रज्ञप्तिः (स्त्री०) जैनियों का छठा उपाङ्ग, - शालाः चबूतरा, खुली छत।

चन्द्रटः (पुं०) आयुर्वेद विषय पर प्राचीन ग्रन्थकर्ता - सुश्रुत भूमिका।

चन्द्रा (स्त्री०) माघ मी० सू० १०।३।४९ पर शा० भा०।

चपेटी (स्त्री०) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का छठा दिन।

चमकसूक्तम् (नपुं०) वेद का एक सूक्त जिसके प्रत्येक मन्त्र में 'च मे' की आवृत्ति की जाती है।

चमसोद्भेदः (पुं०) एक तीर्थस्थान जहाँ से सरस्वती नदी निकलती है।

चम्पा (स्त्री०) अङ्गदेश की राजधानी (वर्तमान भागलपुर)।

चयाङ्कः (पुं०) वप्र, बुर्ज—चयाङ्कमस्तकन्यस्तनालावल्यङ्कु-दुर्गमे - शिव० ९।५१।

चरः [चर्+अच्] वायु, हवा—क्वाहं तमोमहदहंख-चराग्निवार्भूसंवेष्टिताण्डघटसप्तवितस्तिकायः—भाग० १०।१४।११। सम० गृहम् मेष, कर्क, तुला और मकर के घर।

चरकः (पुं०) भारतीय आयुर्वेद का एक प्रवर्तक तथा चरकसंहिता का लेखक।

चरणम् [चर्+ल्युट्] 1 ब्रह्मचर्य के कड़े नियमों को पालन करने वाला अध्येता—महा० ५।३०।७ 2. घर। सम० -उपधानम् पायदान, व्यूहः एक ग्रन्थ जिसमें वेद की शाखाओं का वर्णन है।

चर्चुरम् (नपुं०) दाँतों के कटकटाने का शब्द—भिन्न दधद्दशनचर्चुरशब्दमश्व —शि० ५।५८।

चर्पटः [चृप्+अटन्] चीथड़ा, चिथड़ा।

चर्मिन्नः (पुं०) (वेद०) चमड़े का कवच धारण करनेवाला योद्धा चर्मिणो अभितो जनाः —ऋग्० ८।५।३८।

चर्मरङ्गाः (पुं० ब० व०) मध्य भारत की एक जाति —बृ० सं० १४।

चलच्चञ्चुः [चलत्+चञ्चु] एक प्रकार की मछली।

चलद्विजः (पुं०) कोकिला, भारतीय कोयल।

चातुष्कम् [चातुष्+कन्] एक प्रकार का औजारों का थैला।

चातुरः [चतुर् एव, स्वार्थे अण्] एक छोटा गावदुम तकिया।

चातुरन्त (वि०) [चतुरन्त+अण्] चारों समुद्रों तक समस्त पृथ्वी को अधिकार में करने वाला।

चातुरीकः [चातुरी+कप्] 1. हंस 2. एक प्रकार की बत्तख —कलहंसे च कारण्डे चातुरीकः पुमानयम्—नाना०।

चार [चर एव, अण्] 1. गति, चाल, भ्रमण 2. पैदल सैर करना 3. कारागार 4 हथकड़ी बेड़ी 5 पीपली का वृक्ष, प्रियाल का पेड़।

चार्या (स्त्री०) 1. पथ, मार्ग, आठ हाथ चौड़ी सड़क —कौ० अ० १।३।

चार्वाकः [चारु लोकसम्मत वाको वाक्यं यस्य – पृषो०] दर्शनशास्त्र की चार्वाक शाखा का अनुयायी।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ, स्त्रियां टाप्] दण्ड—प्रशस्य ते करोमि चिकित्सा दण्डपाणिरिव जनतायाः —भाग० ५।१०।७।

चिकित्सु (वि०) [कित्+सन्+उ] बुद्धिमान् चालाक -अथ० १०।१।१।

चिञ्चाम्लम् [ष० त०] इमली से तैयार किया गया यूष या झोल।

चित्तम् [चित्+क्त] 1 हृदय, मन 2. ज्ञान—चित्त चित्तानुपायस्य मुनिरासीत संयत। यच्चित्तं तन्मयो वश्यं गुह्यमेतत्सनातनम् महा० १४।५१।२७। सम० —अर्पित (वि०) दिल में प्रतिष्ठित चित्तार्पितमैणवेक्षणा -नैषध० ९।३१, —नाथः हृदय का स्वामी —चित्तनाथमभिशङ्कितवत्या शि० १०।२८।

चित्तिः (स्त्री०) [चित्+क्तिन्] 1 मानसिक अवस्था —आकूतीनां च चित्तीनां प्रवर्तक नमामि ते—महा० ३।२६३।१० 2. ज्ञानेन्द्रिय सं वैचित्त्यामनुचित्तय उपचक्रमे—भाग० ६।१६।४८ 3. संज्ञान, ज्ञान -चित्तिः सुक् चित्तमाज्यम्—तै० आ० ३।१।

चित्य (वि०) [चिता+यत्] चिता से संबंध रखने वाला —चित्यमाल्यानुरागश्च आयसाभरणोऽभवत्—रा० ६।५८।११।

चिबुकम् [चिब्+अच्, चि+वुक् वा] कमल का फूल —मञ्जुके तिलके हेम्नि पद्मे च चिबुकम्—नाना०।

चित्ताश्वः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा जिसकी गर्दन पर बालों का बड़ा चूनर हो।

चीचीकूची (स्त्री०) अनुकरणमूलक शब्द जो पक्षियों के कलरव को प्रकट करता है।

चीनद्राक्षा (पुं०) दालचीनी।

चीरल्लिः (पुं०) एक प्रकार की बड़ी मछली।

चीरी (स्त्री०) [चीरि+ङीष्] झींगुर, ('चीरीवाकः' भी) इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।

चोदना [चुद्+युच्+टाप्] (पूर्वमीमांसा में) 'अपूर्व' नामक श्रेणी—चोदनेत्यपूर्वं ब्रूम मी० सू० ७।१।७ पर शा० भा०।

चुमचुमायनम् (नपुं०) किसी घाव में चुनचुनाहट होना सुश्रुत० १।४२।११।

चुमुरिः (पुं०) एक राक्षस का नाम।

चेरिका चुकदों की एक उपनगरी—तदेव चेरिका प्रोक्ता नागरी तन्तुवायमू -कामिकागम २०।१५।६६, काम० १०।८५–८८।

चैत्याग्निः [ष० त०] पुनीत अग्नि यज्ञीय अग्नि—गृह्य० ११६।

चौर्णेय (वि०) [चूर्णी+ढक्] केरल प्रदेश के पास 'चूर्णी' नामक नदी से प्राप्त मोती कौ० अ० २।११।

च्यवनः (पुं०) [च्यु+णिच्+ल्युट्] एक ऋषि का नाम।

छ

छद्मीकृ (छद्म+च्वि+तना० उभ०) छद्मी की भाँति प्रयुक्त करना।

छन्दस् (नपुं०) [छन्दयति–छन्द्+असुन्] एक पर्व, त्योहार - वेदे वाक्ये वृत्तभेदे उत्सवेऽपि नपुंसकम् —नाना०।

छलकारम् (अ०) विफल कराने के लिए, जिससे कि सफलता न मिले कथा० १२।४।

छम्बट्कर (वि०) [छम्बट्+कृ+अच्] नष्ट भ्रष्ट करने वाला, –करी (स्त्री०)- एषा घोरतमा सन्ध्या लोकच्छम्ब (म्बट्) करी प्रभो - भाग० ३।१८।२६।

छम्बट्कारः [छम्बट्+कृ+घञ्] नाश, ध्वंस, विनाश।

छलः [छल्+अच्] एक प्रकार का झगड़ा जिसमें अवांछित शब्दों का प्रयोग किया जाय।

छाया [छो+य+टाप्] प्राकृत मूल पाठ का संस्कृत भाषान्तर।

छिद्रम् [छिद्+रक्] 1 प्रमाण – मुष्टिछिद्रविधानम् कौ० अ० २।२ 2. स्थान - भाग० ६।२६।३४ 3. आकाश, अन्तरिक्ष —भाग० १२।४।३०।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] आयुर्वेद में एक प्रकार की शल्य-प्रक्रिया।

छुच्छुः (पुं०) एक प्रकार का जन्तु—बृ० सं० ८६।३७।

छुरितम् [छुर्+क्त] काट, खरोंच।

छुरिका (स्त्री०) तीक्ष्ण बाण।

छेका (छेकः) भवन के आधारस्तंभ में बना पच्चीकारी का नमूना—कामिकागम० ११।७४।

ज

जगद्गुरुः [ष० त०] श्री शंकराचार्य का नाम ।
जगच्चन्द्रिका (स्त्री०) बृहत्संहिता पर भट्टोत्पलकृत एक टीका ।
जगच्चित्रम् (नपुं०) विश्व का एक आश्चर्य पश्यैतानि जगच्चित्रम्—रा० ७।३४।९ ।
जगतीपतिः [ष० त०] शासक, राजा निःसपत्नमपि जगतीपतीनाम् कि० १।१८ ।
जगद्बलः (पुं०) पवनश्वी ।
जटाबन्धनम् [ष० त०] जूड़ा बना कर बांधना ।
जटापाठः (पुं०) वेद मन्त्रों के मूलपाठ को सस्वर पढ़ने की एक रीति ।
जटापाठकः (पुं०) 'जटापाठ' की प्रणाली से वेदपाठ करने में प्रवीण विद्वान् पुरुष ।
जनः [जन्+अच्] 1. प्राणधारी, जीव 2. मनुष्य 3. एक व्यक्ति 4. राष्ट्र, जाति । सम०—आश्रयः विष्णुकुण्डी वंश के राजा की उपाधि, जिसे छन्दोविचिति का प्रणेता समझा जाता है, —जल्पः लोकोक्ति, कहावत, किंवदन्ती, —मारः महामारी ।
जनंसह (वि०) लोगों का दमन करने वाला —अषाळ्हो वनसदो जनंसह—ऋक्० २।२१।३ ।
जनद् (वि०) [जन्+वद्] तरुणवादी (साधारणतः 'जनता वद' प्रयोग प्रचलित) ।
जम्बुमालिन् (पुं०) रावण की सेना के एक राक्षस का नाम ।
जन्तुशासक (वि०) आयुर्वेद का ज्ञान रखने वाला—इति ते कथयिष्य कर्म शास्त्रका जनमासका —महा० ५। ६४।२० ।
जम्भकः [जम्+ण्वुल्, नुम्] 1. द्रोही, विश्वासघाती — साधु भो जम्भक साधु सुश्रु० 2. औषधोपचार — ५।६४।१६ ।
जम्भिका (स्त्री०) जम्हाई की तन्द्री ।
जर्भरि (वि०) (वेद०) सहारा देने वाला सृण्येव जर्भरी तुर्फरी तू ऋक्० १०।१०६।६ ।
जलम् [जल्+अच्] 1. पानी 2. सुगंधयुक्त औषध का पौधा 3. पाप का भूल । सम०—आगमः वर्षा ऋतु, —आघातः करका, कर्करा ओला, करका,—आसः आंख का एक रोग ।
जलाषभेषज (वि०) [ब० स०] उपचारक औषधियां रखने वाला—रुद्रं जलाषभेषजम्—ऋक्० १।४३।४ ।
जवस् (नपुं०) [जु+असुन्] (वेद०) शक्ति, ताकत, वीरता, यामिर्जवो मुनो जवति—ऋक्० ७।२।१८ ।
जल्पजल्पनम् (नपुं०) जल्पपुंजी, जल्पनपिका ।
जलाशयः [ष० त०] जल का आशय, जल के भूमि —बृ० सं० १०४ ।

जातिशुद्धिः (स्त्री०) [जाति+शुध्+क्तिन्] जन्म लेना —जातिशुद्धाभिषिक्ताः— महा० ५।९०।९ ।
जातूभर्मन् (वेद०) (वि०) सदैव पोषण करने वाला— स जातूभर्मा श्रद्दधान ओजः—ऋक्० १।१०३।३ ।
जानराज्यम् [जनराज+ष्यञ्] प्रभुसत्ता—शत० ५।४० ।
जानश्रुतिः (पुं०) छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित एक राजा का नाम ।
जामदग्न्यः [जमदग्नि+यञ्] परशुराम ।
जामातृकम्बलकम् (नपुं०) रूमाल, तौलिया ।
जारणम् [जृ+णिच्+ल्युट्] 1. क्षीण करना 2. धातुओं पर आरेप की पर्त चढ़ाना ।
जाप्य (वि०) 1. स्तुति के योग्य निरर्थकान् जप्याक्यान् महा० ९।४९।३ 2. जिसमें तीन बार दक्षिणा दी जाय जाप्यान् त्रिशुक्लानभिसंधायभिः महा० ३।२९।१३० पर टीका 3. आभिचारोपहार में समृद्ध ।
जालकम् (नपुं०) एक प्रकार का वृक्ष—माघ० ८।२।१९ ।
जालोरः (पुं०) कश्मीर में एक अग्रहार—विहारमग्रहारं च जालोराख्यं च निर्ममे राज० १।९८ ।
जयः [जि+अच्] 1. महाभारत का एक विशेषण—देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्—महा० १।१।१ 2. जयजयकारों से पूर्ण विजय जयेन वर्धयित्वा च रा० ७।२३।३ । सम०—(अजय)=जयाजयौ (—जयाजयौ) जीत तथा हार, —वत (वि०) जीतने वाला, विजयी उक्तविपरीतलक्षणसंपन्नो जयवानो विनिर्दिष्टः बृ० सं० १७।१० ।
जितहस्त (वि०) [ब० स०] जिसने अपने हाथ को अभ्यस्त कर लिया है ।
जित्यः [जि+क्यप्] एक उपकरण जिसके द्वारा जुते हुए खेत को समतल किया जाता है ।
जिह्लिकाः (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम—महा० ६। ९।५९ ।
जिह्मेतर (वि०) [त० स०] जो कपटी न हो—जिह्मेतरैस्तु महत्यनाप्यम् नै० ३।६३ ।
जिह्मित (वि०) [जिह्म+इतच्] 1. व्याकुल—परिजन जिह्मितेक्षणम्—कि० १०।१० 2. टेढ़ा बनाया हुआ, झुका हुआ (जैसा कि 'जिह्मयति' में) ।
जीमूतकः [ब० स०] एक प्रकार का रत्न—कौ० अ० २।११ ।
जीवकोशः (पुं०) सूक्ष्म शरीर, लिङ्गशरीर भाग० १०।८२।४८ ।
जीवन्तिका (स्त्री०) [जीव्+झच्+ङीप्, कन्, ह्रस्वत्व] 1. जीवित शिशुओं की देखभाल करने वाली देवी 2. एक पौधे का नाम ।

जीविका (स्त्री०) [जीव्+अकन्, आत इत्वम्] जिन्दगी कृपणा कर्तिदिष्यामि कथ कृपणजीविका - रा० २। २०।८७।

जुकुटम् (नपुं०) सफेद बैंगन का पौधा।

जुगुप्सितम् [गुप्+सन्+क्त] घृणित कार्य, अरुचिकर कृत्य कर्मजुगुप्सितेन भाग० १।७।४२।

जूर्ण (वेद०) (वि०) [जॄ+क्त] पुराना ऋक्० ६।२।७।

जोषवाकः (पुं०) निरर्थक बात करना जोषवाकं वदत —ऋक्० ६।५९।४।

जूतिः (स्त्री०) [जू+क्तिन्] मन का सकेन्द्रीकरण—ऐत० उ० ५।२।

जैमिनिः (पुं०) एक प्रसिद्ध मुनि जो दर्शन शास्त्र की पूर्वमीमांसा के प्रवर्तक थे। सम०—भागवतम् भागवत का आधुनिक संस्करण, भारतम् महाभारत का आधुनिक संस्करण, शाखा सामवेद की एक शाखा,—सूत्रम् एक ग्रन्थ का नाम।

जैमिनीय (वि०) [जैमिनि+छ] जैमिनी द्वारा रचित, या उनसे संबद्ध।

जैयटः (पुं०) कैयट के पिता का नाम।

जोङ्गाटा (स्त्री०) जौ।

जोषम् (अ०) [जुष्+घञ्] चुपचाप जैसा कि (जोषमास्य चुप रहो) में।

जोष्य (वि) [जुष्+ण्यत्] प्रिय स्नेहाह।

ज्ञमन्य (वि०) अपने आप को बुद्धिमान् समझने वाला।

ज्ञातान्वयः (पुं०) प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न होने वाला पुत्र।

ज्ञातिचेलम् (नपुं०) नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति विभिन्नकर्माशयवाक् कुले गो मा ज्ञातिचेलं भुवि कश्चिद् भूत् भट्टि० १२।७८।

ज्ञातिप्रायः (पुं०) संबन्धियों के लिए आहार, ज्ञातिभोजन -प्रक्षाल्य हस्तावाचम्य ज्ञातिप्रायं प्रकल्पयेत् मनु० ३।२६४।

ज्ञानम् [ज्ञा+ल्युट्] जानकारी का साधन - मै० म० १।१।५ 2 मानसिक बलवेकं वाक्य नु मम ज्ञाने न पूच्यन मज्ञा० ५।१।१। सम०—अग्निः ज्ञान की आग ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन भग० ४।३७ घन (पुं०) शुद्धज्ञान केवलज्ञान निर्विकल्पाय शान्ताय नमो ज्ञानघनाय च भाग० ८।३।१२,—पूर्ण (वि०) खूब सीखा हुआ, पहले से पूरी जानकारी प्राप्त किए हुए, वृद्ध (वि०) ज्ञान या जानकारी में बढ़ा-चढ़ा।

ज्ञानिन (वि०) [ज्ञान+इनि] बुद्धिमान्, समझदार, - (पुं०) बुध ग्रह—ज्ञानी सर्वज्ञजीव्यबोः—नाना०।

ज्मन् (वै०) पृथ्वी पर, धरती पर (केवल अधि० में प्रयोग) अभिद्युभिरेन भूरचक्मन्—ऋक्० ७।२११९।

ज्या [ज्या+अङ्+टाप्] 1 एक प्रकार की लकड़ी की सोटी 2 सेना का पृष्ठभाग—ज्या भूमिज्यौः छम्यावा वाहिन्या पृष्ठभागके नाना०।

ज्येष्ठः [वृद्ध (प्रशस्य)+इष्ठन्, ज्यादेशः] 1. सबसे बड़ा 2 सर्वोत्तम 3 उच्चतम,—(पुं०) एक चान्द्र मास का नाम। सम० राज् (पुं०) प्रभुसत्ता संपन्न राजा—ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पति—ऋक्० २।२३।१, साम्न् एक विशेष साम।

ज्येष्ठा (स्त्री०) 1 लक्ष्मी देवी की बड़ी बहन वारुणी 2 एक देवी का नाम।

ज्योक् (अ०) (वेद०) चिरकाल तक, दीर्घ समय तक —ज्योक् च सूर्यं दृशे - ऋक्० १।२३।२१।

ज्योग्जीवनम् (नपुं०) दीर्घकाल तक जीना, लम्बी आयु होना।

ज्योतिस (नपुं०) [द्युत् इसुन् आदेर्दस्य ज] 1. प्रकाश, कान्ति, आभा, चमक 2 बिजली 3 गाय —श्री० सू० १०।३।४९ पर शा० भा०।

ज्वरः [ज्वर्+घ] 1. ताप, बुखार 2 मानसिक ताप। सम०—अन्तकः शिव का विशेष रूप,—अरिः ज्वर नाशक औषधि, हर (वि०) ज्वरप्रशामक, ज्वर नाशक।

ज्वलनाश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

ज्वाला [ज्वल्+ण+टाप्] 1 आग की लपट, अग्निशिखा 2 दग्धान्न। सम०—मालिन् (पुं०) शिव देवता मालिनी (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप —ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगा—ललिता०, मुखी (स्त्री०) दुर्गा का एक विशेष रूप ज्वालामुख्यां समुत्पन्ना अमेया सर्वसन्धिषु— वाराह पुराण में देवीवचन० रसलक्षणाख्यः शा० सू०।

झ

झञ्झानिलः (पुं०) आंधी की बौछार आंधी के साथ ओलों का पड़ना।

झष्म, झष्मा [झष्+म स्त्रियां टाप्] 1 उष्ण-दुः 2 मछली। सम०— अशिन् (पुं०) अन्तकाल, मछली खाने वाला,—जाल· एक प्रकार की मशीन की ताल, चावल की माप, पूलकम् एक प्रकार का माप।

झणत्कारः (झणत्कारः) (पुं०) (आभूषणों की) खनकने वाली चमक।

[illegible] [ष० त०] मधरलण्ड।
[illegible] (वि०) [झाङ्कार+इनि] 'झङ्कार' ध्वनि को करने वाला।
[illegible] 1. चन्द्रमा की कला 2. बन्दर।
[illegible] (पुं०) एक ऋषि का नाम।
[illegible] (पुं०) हाथी।

[illegible] 1. ध्रुव तारा 2. समूह 3. [illegible] देव।
[illegible] कर्ण का नाम।
[illegible] स्वर्ग।
[illegible] (नपुं०) 1. पान आदि रखने का बक्स, पानदान 2. झोला, थैला।

ञ

[illegible] (पुं०) 1. गायक 2. 'घरघर' का शब्द 3. बैल 4. शुक्र 5. पाँच की संख्या।

ट

[illegible] [टङ्क्+घञ्, वा] 1. टखना –टङ्कोऽस्त्री टङ्कने पुल्के - नाना० 2. (संगीत में) एक प्रकार का माप, 3. [illegible] । सम०—[illegible] [illegible],—[illegible] [illegible]।

टङ्कित (वि०) [टङ्क+कृ+क्त] बांधा हुआ [illegible] न च टङ्कित—हनु०।
[illegible] [टङ्क् +क्त] टङ्कार, टनटन।
[illegible] (पुं०) छोटा थैला।

ठ

[illegible] (पुं०) सौदागर, व्यापारी।

ठिण्ठा (स्त्री०) जूआघर—कुत्र स मन्यक्तिण्ठायां किल-वान् स्थानमाचत कथा० ९२।१२१।

ड

[illegible] (पुं०) [डमर+इनि] एक प्रकार का ढोल।
[illegible] [डम्ब्+अरन्] उच्चस्वर का घोष।
[illegible] (स्त्री०) एक बहुत छोटा पंखदार कीड़ा (जैसे कि पिस्सू)।
[illegible] [डिम्ब्+घञ्] 1. भुयावमान विप्लव, कोलाहल मय चोटी—नै० २२।५१ 2. शरीर- कोष्टा डिम्ब व्यापजय् –शि० १८।७७ 3. बुलबुला, अड राघ० ७।१०७२।

डिम्भः [डिम्भ्+अच्] पौधे का अंकुर, अंखुआ नै० ८।२।
डेरिका (स्त्री०) छछूंदर।

ढ

[illegible] [ढक्क्+ल्युट्] द्वार बन्द करना।
[illegible] (स्त्री०) दुर्गा की मूर्ति की तांत्रिक पूजा।

ढौकित (वि०) [ढौक्+क्त] निकट लाया हुआ।

तक्रम् [तञ्च्+रक्] छाछ, मट्ठा। सम०—कूर्चिका राबड़ी, उबाली हुई छाछ, —पिण्डः छाछ (को कपड़े में से छानने के पश्चात् रहा अवशेष), पपड़ी।

तटः [तट्+अच्] 1. ढलान, कगार, किनारा 2 क्षितिज। सम०—द्रुमः नदी किनारे का वृक्ष, —पातः किनारे का तोड़ कर गिराना, —भूः किनारे की धरती।

तटिनीपतिः [ष० त०] नदियों का स्वामी समुद्र।

तण्डुरीणः [तण्डुर+ख] कीड़ा, कृमि, कीट।

तत्प्रख्यन्यायः (पुं०) मीमांसा शास्त्र का एक नियम जिसके अनुसार किसी यज्ञ का नाम उसकी अभिव्यक्ति के अनुकूल रक्खा जाता है।

तत्त्वम् (नपुं०) शरीर महा० १२।२६७।९। सम० —अभ्यासः वास्तविकता का बार बार अध्ययन —एवं तत्त्वाभ्यासात्—सां० का० ६४, —दर्शिन् (वि०) असलियत को जानने वाला, —भावः प्रकृति, वास्तविक सत्ता, —संख्यानम् सांख्य सिद्धान्त का विवेचन —भाग० ३।२४।१०।

तथावादिन् (वि०) [तथा+वाद+इनि] वैसा होने का दावा करने वाला

तद् (सर्व० वि०) 1 किसी अनुपस्थित वस्तु या व्यक्ति का उल्लेख करने वाला सर्वनाम। सम० —अन्य (वि०) उसको छोड़ कर कोई दूसरा, —अपेक्ष (वि०) उसका ख्याल करने वाला, —कालीन (वि०) उसी काल से सम्बन्ध रखने वाला, —देश्य (वि०) उसी देश से सम्बन्ध रखने वाला, —धर्म्य (वि०) उसी गुण में भाग लेने वाला, —भव (वि०) उसी संस्कृत से जन्म लेने वाला, प्राकृत का एक भेद—तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेक प्राकृतक्रम —काव्या० १, —रूप: (वि०) उसी प्रकार के रूप वाला, —विद्यः उसका ज्ञाता, किसी विशेष क्षेत्र में प्रामाणिकता रखने वाला, —संख्याक (वि०) उस अंक के समान।

तदादितदन्तन्यायः (पुं०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार उत्कर्ष की उक्ति में आरम्भ से लेकर वह सब विवरण सम्मिलित होता है जिसके लिए वह किया जाता है और साथ ही अपकर्ष की उक्ति अन्त तक उस सभी विवरण पर लागू है जिसके लिए वह किया जाता है।

तद्व्यपदेशन्यायः (पुं०) ऊपर बताये गये 'तत्प्रख्यन्याय' के समान।

तननम् (नपुं०) सङ्गीत में आलाप को लम्बा करना, सङ्गीत की गति धीमी करना।

तनु (वि०) [तन्+उ] 1. पतला, दुबला, कृश 2. सुकुमार 3. बढ़िया, नाजुक 4 थोड़ा, छोटा, स्वल्प, —(स्त्री०) 1 शरीर व्यक्ति 2 प्रकृति 3 त्वचा, खाल। सम० —कूप रंध्र, —करणम् (तनूकरणम्) पतला करना, —श्री थोड़े धन वाला।

तन्तुकरणम् (नपुं०) कातना, तार निकालना।

तन्तुकार्यम् (नपुं०) जाला।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1 खड्डी 2 धागा 3 संतत श्रेणी 4 रस्म, व्यवस्था, संस्कार आदि धार्मिक कार्यों का नियमित आदेश 5 मुख्य बात 6 प्रधान सिद्धान्त, नियम 7 ऐसे कृत्यों का समूह जो अनेक प्रधान कार्यों में समान हों—यत्सकृत्कृत बहूनामुपकरोति तत्तन्त्रमित्युच्यते - मैं० स० ११।१।१ पर शा० भा० 2 विश्व की व्यवस्था यन प्रवर्तेत तन्त्रम् महा० १४।२।१४, —ज्ञ विशेषज्ञ—युक्ति किसी एक भाषि का आयोजन कौ० अ० १५।

तन्त्रिभाण्डम् (नपुं०) [ष० त०] तन्त्रीय बाजा।

तन्त्रिल (वि०) [तन्त्र+इलच्] प्रशासनकार्य में कुशल —स्व तन्त्रिल सेनापती राज प्रत्यर्थित—मृच्छ० ६।१६।१७।

तपर्तु (तप+ऋतु) ग्रीष्म ऋतु—तपर्तुपूर्तावपि मेदसां भरा —नै० १।४१।

तपस् (नपुं०) [तप्+असुन्] 1 गर्मी, आग, प्रकाश 2 पीडा, कष्ट 3 तपस्या 4 दण्ड। सम० —अर्थीय (वि०) तपश्चरण के लिए अभिप्रेत—तपोऽर्थीय ब्राह्मणी धत्त गर्भम्—महा० ११।२६।५, —कृश (वि०) तपश्चरण के कारण दुर्बल, —मूल (वि०) तपस्या से उत्पन्न, —वृद्ध (वि०) कठोर तपस्या के फलस्वरूप बूढ़ा।

तप्त (वि०) [तप्+क्त] 1 गर्म किया हुआ, जला हुआ 2. पिघला हुआ 3 पीडित, कष्टग्रस्त 4. अभ्यस्त। सम०—कुम्भ, —कूप एक नरक का नाम, —तप्त (वि०) बार बार उबाला हुआ, बार बार गरम किया हुआ, —मुद्रा किसी गर्म धातु की छाप से शरीर पर किसी विष्णु शस्त्र के रूप में अधिकार चिह्न अंकित करना, —रूपम्, —रूपकम् शुद्ध की हुई चांदी, —वालुका बालू के गर्म कण।

तापिन् (वि०) [ताप+इनि] पीड़ा पहुँचाने वाला —कि० ०।८२।

तरङ्गमालिन् (पुं०) समुद्र।

तरङ्गवती नदी, दरिया।

तरलकरण (वि०) [ब० स०) चञ्चल तथा दुर्बल ज्ञानेन्द्रियों वाला।

तरुकोटरम् (नपुं०) [ष० त०] वृक्ष की कोटर या खोखर।

तरुतूलिका } चमगीदड़।
तरुभूलिका }

[illegible] (स्त्री०) [illegible]।
तर्कुकः (पुं०) भिखारी, मांगने वाला।
तलमुद्रा (स्त्री०) हाथ की विशेष स्थिति।
तलोदरी (स्त्री०) गृहिणी, पत्नी।
तलवः (पुं०) अपनी हथेली से वाद्ययन्त्र को बजाने वाला संगीतकार। सम० —काराः सामवेद की एक शाखा।
तलित (वि०) [तल्+क्त] 1. तला हुआ 2. तलीदार।
तलिन (वि०) [तल्+इनन्] ढका हुआ विक्रमांक० १४।६१। सम० —उदरी पतली कमर वाली महिला।
[illegible] (पुं०) धोखा, चालसाजी [illegible] —माना०।
तसरिका (स्त्री०) बुनना, बुनावट।
[illegible] (स्त्री०) (ज्योतिष शास्त्र का शब्द) षट् कोण।
ताजिकः (पुं०) 1. मध्यवर्ती एशिया में रहने वाली एक जाति 2. एक उत्तम प्रकार के घोड़े की नस्ल।
ताण्ड्यब्राह्मणम् (नपुं०) सामवेद के एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम।
तात्कर्म्यम् (नपुं०) [तत्कर्म+ष्यञ्] व्यवसाय की समानता।
तात्पर्यार्थः (पुं०) किसी उक्ति का सही अर्थ।
तादात्विकः (पुं०) अपव्ययी, यो यद् यद् उत्पद्यते तत्तद् भक्षयति स तादात्विकः कौ० अ० २।९।
ताद्धर्म्यम् (नपुं०) [तद्धर्म+ष्यञ्] गुणों में समानता।
ताद्रूप्यम् (नपुं०) [तद्रूप+ष्यञ्] रूप की समानता।
तापसकः [तापस+क] (=कुतापस) आचारभ्रष्ट संन्यासी।
तामसः (पुं०) चौथे मनु का नाम।
तार (वि०) [तॄ+णिच्+अच्] 1. ऊँचा 2. प्रबल 3. चमकीला 4. उत्तम, —रः (पुं०) धागा, तार।
तारणेयः [तारणा+ढक्] कन्या से उत्पन्न, कानीन, कर्ण 2. सूर्य का भक्त।
तारा [तार+अच्] 1. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक 2. संगीत के एक राग का नाम।
तारिका (स्त्री०) [तॄ+णिच्+ण्वुल्] एक प्रकार की शराब।
[illegible] (नपुं०) एक प्रकार का चन्दन जिसका रंग तोते के पंखों जैसा होता है — कौ० अ० २।११।
तालः [तल्+घञ्] 1. ताड़ का वृक्ष 2. तालियाँ बजाना 3. खट-खट करना 4. हाथ की हथेली 5. तलवार की मूठ 6. ताला, चटखनी। सम० —ज्ञः जो संगीतशास्त्र की ताल को जानता है, —ध्वजः बलराम, —नवमी भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का नवाँ दिन, —पत्रम् ताड़ के वृक्ष का पत्ता, —भङ्गः संगीत में ताल की ताल व लय के मान को सुरक्षित रखने में त्रुटि, ताल का टूट जाना।
[illegible] (वि०) [ब० स०] उतना सा ही कुछ बोलने वाला।
तिग्मांशु [ब० स०] सूर्य।
तितिलम् (नपुं०) 1. ज्योतिषशास्त्र में एक करण 2. तिलों का पिउड़ा, पीठे।
तिथिः [अत्+इथिन्, पृषो०] 1. चान्द्रदिवस 2. पन्द्रह की संख्या। सम० —अर्धः (तिथ्यर्धः) एक करण (आधी तिथि), —क्षयः (ब० स०) किसी भी निर्दिष्ट अवधि में सौर और चान्द्र दिवसों का अन्तर।
तिमिः [तिम्+इन्] 1. समुद्र 2. मीन राशि। सम० —घातिन् (वि०) मछियारा, मछलियाँ पकड़ने वाला, —मालिन् समुद्र।
तिमिला (स्त्री०) संगीत का एक उपकरण, तबला।
तिरस्कारिन् (वि०) [तिरस्कार+इनि] मात करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, — देवि त्वन्मुखपङ्कजेन शशिनः शोभातिरस्कारिणा रत्न० १।२४।
तिर्यच्, तिर्यञ्च (वि०) 1. टेढ़ा, तिरछा, वक्र 2. घुमावदार 3. अन्तर्वर्ती, —(पुं०), —(नपुं०) 1. जानवर, जन्तु (टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, लेट कर चलने वाला सीधे खड़े होकर चलने वाले मनुष्य से भिन्न) 2. पक्षी 3. पौधे। सम० —ज (वि०) किसी जानवर से उत्पन्न, —ज्या टेढ़ी ज्या।
तिलः [तिल्+क] तिल का पौधा। सम० —कल्कः तिलकुट, —मयूरः मोर की एक जाति।
तिहन् (पुं०) 1. रोग 2. चावल, धान्य 3. धनुष 4. भलाई।
तीक्ष्णकण्टकः [ब० स०] तेज कांटेदार पौधा।
तीक्ष्णमार्गः [ब० स०] तलवार — [illegible]मार्गस्य मार्गः — शि० १८।२०।
तीर्थचर्या (स्त्री०) [ष० त०] तीर्थ यात्रा।
तीव्रद्युतिः [ब० स०] सूर्य, सूरज।
तीव्रा (स्त्री०) 1. काली सरसों 2. संगीत का एक स्वर।
तु (अ०) निस्सन्देह — [illegible] — श्रौ० सू० १०।३।७४ पर शा० भा०।
तुङ्ग (वि०) 1. ऊँचा 2. लम्बा 3. मुख्य 4. प्रबल, —ङ्गः (पुं०) पुन्नाग वृक्ष — माना०।
तुङ्गिमन् (पुं०) [तुङ्ग+इमनिच्] ऊँचाई — [illegible] — नैष० २।१४६।
तुच्छदय (वि०) [ब० स०] दयारहित, निर्दय।
[illegible] (वि०) [ब० स०] नगण्य।
तुज् (भ्वा० पर०) निकालना, खींचकर निकालना, [illegible] निकालना।

तुञ्जः [तुञ्ज्+अच्] वज्र ।
तोजः [तुज्+घञ्] वज्र—भाग० १।३१ ।
तुन्दिलित (वि०) [तुन्दिल+इतच्] जिसकी तोंद फूल गई है, मोटे पेट वाला ।
तुम्बारम् (नपुं०) तुम्बा ।
तुर्वकम्बम् (नपुं०) (कोमलापने का) पादयत्न ।
तुला [तुल्+अङ्] 1. घर की छत के नीचे की ओर लम्बा लगा हुआ शहतीर 2. तराजू की डंडी । सम० —अधिरोहणम् मिलता-जुलता, —अनुमानम् सादृश्य, सादृश्य पर आधारित अनुमान,—आरोपणम् तराजू पर रखना अर्थात् तोलना ।
तुल्य (वि०) [तुलया संमितं यत्] 1 उसी प्रकार का, वैसा ही, मिलता-जुलता 2. उपयुक्त 3 अभिन्न, वही —तुल्यम् (अ०) 1. एक साथ 2. समान रूप से । सम०—अक्ष (वि०) समान, बराबर,—नक्तंदिन (वि०) 1. जब रात और दिन दोनों समान हों 2. रात और दिन में कोई भेद न करने वाला, —निन्दास्तुति (वि०) अपनी प्रशंसा या अपयश - दोनों की ओर से उदासीन, —मूल्य (वि०) समान मूल्य का, एक ही क़ीमत का,—योनिः उसी वंश का, उसी कुल में उत्पन्न,—वयस् (वि०) समान आयु का, बराबर की उम्र का, -संख्य (वि०) समान संख्या का ।
तुल्यशः (अ०) समान भागों में, बराबर बराबर ।
तुलसि दे० तुलसी, (कविता में 'तुलसी' को 'तुलसि' भी लिख देते हैं) ।
तुष (तुदा० पर०) चोट पहुँचाना, तंग करना, कष्ट देना, पीड़ित करना ।
तुषी (स्त्री०) नील का पौधा ।
तूलकम् (नपुं०) नीला थोथा ।
तूलपीठी,—पीठिका (स्त्री०) तकुआ, कातते समय जिस पर लपेटा जाता है ।
तूष्णीदण्डः (पुं०) गुप्त रूप से दिया गया दण्ड—कौ० अ० १।११ ।
तृचः, तृचम् [त्रि+ऋच्] ऋग्वेद के तीन मन्त्रों का समूह ।
तृणम् [तृह्+नक्, हलोपश्च] 1. घास 2. तिनका 3. तिनकों की बनी (चटाई आदि) कोई वस्तु । सम० —गणना तिनके की भांति तुच्छ समझना— तृण गणना गुणराशिनो बभेवु—विक्रमांक० १।२, —तुषिकः मानवी पर्वताप- चरक० ४।४।१,—भुज् (वि०) घास खाने वाला, घास चरने वाला, —आलकः सुपारी का पेड़, —अद्भुतः एक प्रकार की मिर्च ।
तृणता [तृण+तल्] 1. तिनके का गुण, निकम्मापन 2. धनुष—शि० १९।६१ ।

तृण्ण (वि०) (वेद०) [तृद्+क्त] कटा हुआ, फाड़ा हुआ ।
तृप्तता [तृप्त+तल्] सन्तोष, तृप्ति ।
तरपतिः [ष० त०] तरणी या नावों का अधीक्षक ।
तरणिकन्यका [ष० त०] यमुना नदी ।
तारकम् [तृ+णिच्+ण्वुल्] तारा—वाजसंज्ञतारकम् —भाग० १३।३।१ ।
तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1. कोप 2. सूर्य । सम० —पुञ्जः प्रभापुञ्ज, कान्ति का समूह ।
तैजस (वि०) [तेजस्+अण्] राजस गुणों से युक्त, —वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा भाग० ३।५।३० ।
तैजसम् (नपुं०) 1. ज्ञानेन्द्रियों का समूह 2. चेतन सृष्टि ।
तैमित्यम् (नपुं०) मन्दता, आलस्य, जड़ता ।
तैर्यग्योन (वि०) [ष० त०] नीच जन्तुओं की सृष्टि से सम्बन्ध रखने वाला ।
तैलम् [तिलस्य तत्सदृशस्य वा विकारः अण्] 1. तेल 2. लोबान । सम०—अम्बुका तेलचट्टा नामक कीड़ा, —किट्टम् खली,—पः,—पायिकः तेल पीने वाला कीड़ा, तेलचट्टा,—पूर (वि०) जो तेल से भरा हुआ हो अर्धपूराः कुरुतप्रदीपाः—कु० १।१० ।
तोटक (वि०) [तोट+कन्] झगड़ालू, - कः (पुं०) शंकर का शिष्य, —कम् (तोटकम्) एक छन्द का नाम ।
तोयम् [तु+यत् नि०] 1. पानी 2 पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रपुंज । सम० —अग्निः बडवाग्नि आग, वाडवानल,—अञ्जलिः देवों और पितरों को संतृप्त करने के निमित्त अञ्जलि भर जल से तर्पण करना ।
तोरणम् [तुर्+युच्, आधारे ल्युट्] 1. डाटदार द्वार 2. बाहरी दरवाजा 3. अस्थायी सजावटी द्वार 4. तराजू को लटकाने के लिए एक तिकोनिया ढांचा ।
तौच्छ्यम् [तुच्छ+ष्यञ्] तुच्छता, नगण्यता ।
तौरङ्गिक (वि०) [तुरङ्ग+ठक्] घुड़सवार ।
तौरुष्किक (वि०) [तुरुष्क+ठक्] तुर्की जाति से सम्बद्ध ।
त्यक्तविधि (वि०) [ब० स०] नियमों का उल्लंघन करने वाला ।
त्यद् (सर्व० वि०) (नपुं० ए० व०— त्यः (पुं०) (वेद०) अदृश्य शब्द त्यज्जातवत्—ऐ० उ० ।
त्याजित (वि०) [त्यज्+णिच्+क्त] 1. वञ्चित —दृष्टोच्छिष्टा त्याजितसत्कामम्— कु० ७।१४ 2. निष्कासित ।
त्रयी (स्त्री०) [त्रय+ङीप्] 1. वेदत्रयी (ऋक्साम्यजुः) 2. तिगुना 3. विवाहित स्त्री (माता) जिसका पति और बच्चे जीवित हैं । सम०—मय (वि०) जो

तीनों (वेदों) से युक्त एकक है, —विद (वि०) जो तीनों वेदों में निष्णात है,— वेद्य (वि०) जो तीनों वेदों के द्वारा जाना जा सकता है— त्रयीवेद्यं हृद्य त्रिपुरहरमाद्य त्रिनयनम् आनन्द० २,—संवरणम् छिपाने या गुप्त रखने की तीन बातें (स्वरन्ध्रगोपन, पररन्ध्रान्वेषणगोपन और मन्त्रगोपन) अर्थात् अपनी दुर्बलता, शत्रु की दुर्बलता और अपनी नीति।

त्रि (सं० वि०) [तॄ+ड्रि] तीन। सम०—अङ्गुलम् तीन अंगुल चौडाई की माप, —आर्षेया (ब० व०) 1 तीन पुरुष बहरा, गूंगा और अन्धा 2. तीन ऋषियों से युक्त प्रवर, —कटु (कटुकम्) सोंठ पीपर और मिर्च का समाहार - करणम् मन, वचन और कर्म से युक्त कार्यकलाप, —करणी और से तिगुना लम्बा किसी वर्ग का पार्श्व, —काण्डम् अमर कोश नामक ग्रन्थ, —कृत्वाकृतम् तीन बार हल से कृष्ट, जिसमें तीन बार हल चल चुका है, —जातम् तीन मसाला (जायफल इलायची दालचीनी) का मिश्रण, —जोनि (वि०) जिसमें तीन पुत्रियाँ लगी हो भाग० ३।८।२०,—णेत्रफलः नारियल, -पिटकम् बौद्धों के तीन धार्मिक पुस्तकों के संग्रह, —भङ्गम् शरीर की ऐसी मुद्रा जिसमें तीन झुकाव हों, —मद तिगुना अहंकार, -मलम् मल मूत्र और कफ तीनों मल —यव (वि०) तोल में तीन जौ के बराबर —लोहकम् सोना, चांदी और तांबा तीन धातुएँ, - वली (स्त्री०) (किसी महिला) के पेट की तीन वलियां, —वृत्ति यज्ञ, मैत्र्य और अध्ययन के द्वारा जीविका,—शर्करा तीन प्रकार की शक्कर, —शवनम् (सवनम्) नैकालिक यज्ञ, —सर मिला कर उबाले हुए, दूध, तिल और चावल —साधन (वि०) तीन प्रकार के साधन जिसे प्राप्त हैं —सामन् (वि०) ऊह, रहस्य और प्रकृति नाम के तीनों सामों को गाने वाला, —सुपर्ण, —सुपर्णम् तीन ऋचाएँ ऋक्० १०।११४।३-५।

त्रिकत्रयम् (नपुं०) त्रिफला त्रिकटु और त्रिमद का सम्मिश्रण।

त्रैराशिक (वि०) [त्रिराशि+ठक्] तीन राशियों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैवेदिक (वि०) [त्रिवेद+ठक्] तीनों वेदों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्वक्ष् (भ्वा० पर०) 1 जाना 2 सिकुड़ना।

त्वरता [त्वर+तल्] शीघ्रता।

त्वरम् (अ०) [त्वर+अच्] जल्दी से शीघ्रतापूर्वक।

त्वष्टि [त्वक्ष+क्तिन्] बढ़ईगीरी।

त्वाष्ट्र (वि०) [त्वष्टृ+अण्] त्वष्टा से सबंध रखने वाला।

त्वाष्ट्री [त्वष्टृ+ङीप्] चित्र नक्षत्र पुञ्ज।

थ

थुड् (तुदा० पर०) 1 ढकना पर्दा डालना 2 छिपाना गुप्त रखना।

थुडनम् [थुड्+ल्युट्] 1 ढकना 2. लपेटना।

द

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] किसी विषय में व्यस्त —दंशितो भव कर्मणि महा० १२।२२।९।

दंस् (चुरा० आ०) 1 डंक मारना 2. देखना।

दक्ष् (भ्वा० प्रेर०) 1. प्रसन्न करना 2 सम्पन्न बनाना —दक्षयन्ब्राह्मणानपूजयत—दि० १४।३५।

दक्षता [दक्ष्+अच्, भावे तल्] कुशलता, नैपुण्य।

दक्षिण (वि०) [दक्ष्+इनन्] अनुकूल।

दक्षिणावर्तकाः (पुं०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाली तान्त्रिक संप्रदाय की पुनीत पीठ।

दक्षिणा (अ०) [दक्षिण+आच्] 1. दक्षिण की ओर, दाईं ओर 2 दक्षिणदेश से,—णा (स्त्री०) (यज्ञादि धार्मिक कृत्यों की समाप्ति पर) ब्राह्मणवर्ग को दी जाने वाली भेंट। सम०—पथिक (वि०) दक्षिणापथ से सम्बन्ध रखने वाला,—प्रतीची दक्षिण-पश्चिम, —प्रत्यञ्च् (वि०) दक्षिण-पश्चिमी, —मूर्तिः (पुं०) शिव का एक रूप।

दण्डः [दण्ड्+अच्] 1 डंडा, लाठी, मुद्गर, गदा 2. हाथी की सूंड 3 लकड़ी की मूठ 4 जुरमाना 5. दुकान 6. राज्यसंघ—कौ० अ० १।५ 7. आघात, चोट —न्यासो दण्डस्य भूतेषु—भाग० ७।१५।८। सम०

—आघातः डंडे की चोट,—आसनम् एक प्रकार का आसन, भूमि पर लम्बा लेट जाना, —उद्यमः दण्डित करने की धमकी देना,—कलितम् मापने के गज की भांति बार-बार आवृत्ति करना - मी० सू० १०।५। ८३ पर शा० भा०,—दानः दण्डग्रस्त करना, दण्ड देना कौ० अ० ४,—निपातनम् जमा करना, —लेशम् थोड़ा सा दण्ड मनु० ८।५१, —वाचिक (वि०) वास्तविक या शाब्दिक (प्रहार), —वारित (वि०) दण्डित होने के डर से कोई काम न करने वाला, दण्ड के डर से रुका हुआ।

दधृष् (वि०) ढीठ, साहसी, गुप्तःज्ञ सुग्रीवो निनदन् दधृक् —भट्टि० ६।११७।

दण्डः (पुं०) यम का विशेषण।

दन्तः [दम्+तन्] 1. दांत 2. हाथी का दांत 3. बाण की नोक 4. पहाड़ की चोटी 5. बत्तीस की संख्या। सम०—उच्छिष्टकम् दांतों में लगा हुआ भोजन का अंश, —पत्रिका कंघी,—बीजः अनार, (दन्तबीज भी) —व्यापारः हाथी के दांत का कार्य।

दन्द्रम्यमाण (वि०) [द्रम्+यङ्+शानच्] भिन्न-भिन्न दिशाओं में चक्कर काटता हुआ— कठ० १।२।५।

दमघोषः (पुं०) एक राजा का नाम, शिशुपाल का पिता।

दमनकः (पुं०) पञ्चतन्त्र की कहानियों में एक गीदड़ का नाम।

दम्भचर्या (स्त्री०) [ष० त०] धोखा, झूठ कपट का आचरण।

दरम् [दृ+अप्] 1. विवर, कन्दरा 2. शंख, (अ०) थोड़ा सा कुछ। सम०—दलित (वि०) जरा सा खुला हुआ, दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा —सौन्दर्य०,—मन्थर (वि०) ईषन्मन्द, जरा धीमा।

दर्भलवनम् [ष० त०] घास काटने का यन्त्र।

दर्विका (स्त्री०) आंखों का अंजन।

दशन् [सं० वि०] दस। सम०—क्षीर (वि०) जिसमें दस मास दूध हो,—वर्गः कष्ट, विपत्ति, —योजनम् दस योजन की दूरी।

दशा (स्त्री०) [दंश्+अङ्, नि० टाप्] 1. किसी कपड़े की किनारी, गोट, मगजी 2. लैम्प की बत्ती 3. आयु 4. अवस्था 5. हालत 6. ग्रहों की स्थिति। सम०—अंशः,—भागः बुरा समय—रा० ३।७३।, —फलम् जन्म पत्री में निर्देशित किसी विशेष समय का फल।

दग्ध (वि०) [दह्+क्त] 1. जला हुआ 2. शोकग्रस्त, दुःखी 3. अमंगल 4. भूखा। सम०—उदरम् जला पेट, भूखा पेट, भूख से मारा हुआ,—व्रणः जल जाने से होने वाला घाव।

दत्त (वि०) [दा+क्त] दिया हुआ। सम०—क्षण (वि०) जिसे कोई अवसर दिया गया है,—दृष्टि (वि०) जिसने ध्यान लगाया हुआ है, जो देख रहा है।

दत्तकचन्द्रिका (स्त्री०) धर्मशास्त्र का एक ग्रन्थ।

दत्ताप्तिः (पुं०) स्वामित्व का परिवर्तन—अथ दत्ताप्तिः किंलक्षणक इति—मी० सू० ४।२।२८ पर शा० भा०।

दहनर्क्षम् (दहन+ऋक्षम्) (नपुं०) कृत्तिका नक्षत्रपुंज।

दानम् [दा+ल्युट्] 1 देना 2 सौंपना 3. उपहार 4 दाम 5. हाथी के गण्डस्थल से बहने वाला रस। सम०- पारमिता उदारता, दानशीलता की सीमा, —वर्षिन् (वि०) मदोन्मत्त हाथी।

देय (वि०) [दा+यत्] समर्पण करने योग्य (मार्ग) पन्था देयो वरस्य मनु० २।१३८।

दाक्षिकन्था (स्त्री०) वाह्लीक देश में स्थित एक स्थान का नाम।

दाडिमबीजः (पुं०) [ष० त०] अनार का बीज।

दाम्नी (स्त्री०) माला।

दायः [दा+घञ्] 1 उपहार 2. वैवाहिक उपहार 3 भाग 4. बपौती, वरासत 5. सम्बन्धी, रिश्तेदार। सम० विभागः संपत्ति का बटवारा।

दाराधिगमनम् [ष० त०] विवाह।

दारुमत्स्याह्वयः (पुं०) मोह।

दारुहारः (पुं०) लकड़हारा।

दारुणम् [दृ+णिच्+उनन्] 1 क्रूरता, भीषणता 2 कठोर, प्रतिकूल नक्षत्र मृग, पुष्य, ज्येष्ठा और मूल।

दारोदर (वि०) जुए से सम्बद्ध, जुआ विषयक।

दार्विका (स्त्री०) एक प्रकार का आंखों का अंजन।

दार्वी (स्त्री०) [दारु+अण्+ङीप्] 1. दारुहल्दी 2 हल्दी का पौधा।

दार्षद (वि०) (—दी स्त्री०) [दृषद्+अण्] 1 पथरीला 2 जो पत्थर पर पीसा जाय।

दार्ष्टान्त (वि०) [दृष्टान्त+अण्] सादृश्य की सहायता से व्याख्या किया गया, उदाहरण देकर समझाया गया।

दार्ष्टान्तिक (वि०) [दृष्टान्त+ठक्] जो उपमा देकर किसी बात को समझाता है।

दालवः (पुं०) एक प्रकार का विष।

दालभ्यः (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

दाशरथ (वि०) [दशरथ+अण्] 1. दशरथ से सम्बन्ध रखने वाला— महा० १२।८।३७ पर टीका।

दाशराज्ञ (वि०) [दशराजन्+अण्] दस राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला।

दासमीयः (पुं०) [मासं भक्तपूर्वं जिसके आत्मानमपि वैतना-

दिव्यस्ता: [illegible] उच्च वर्ण की स्त्री में शूद्र पिता के द्वारा उत्पादित पुत्र ।

दैनकृत्यम् (नपुं०) [ष० त०] नित्य का कार्यक्रम ।

दिनस्पृश् (नपुं०) [दिनस्पृश्+क्विप्] चान्द्रदिवस जो सप्ताह के तीन दिनों के साथ मेल खाता है ।

दिवसावसानम् (नपुं०) सन्ध्याकाल ।

दिवसीकृ (तना० उभ०) रात को दिन में परिणत करना —निशा दिवसीकृता मृच्छ० ४।३ ।

दिवानक्तम् (अ०) [द्व० स०] दिन रात ।

दिव्यावदानम् (नपुं०) बौद्धधर्म का एक ग्रन्थ ।

दिव्यधुनी (स्त्री०) गंगा नदी ।

दिगवस्थानम् [दिक्+अवस्थानम्] अन्तरिक्ष ।

दिग्भ्रमः [दिश्+भ्रम.] दिशा की भ्रान्ति होना ।

दिक्शूलम् [दिश्+शूलम्] दिशाशूल, यात्रियों को किन्हीं विशिष्ट दिनों में विशेष दिशाओं में जाने का प्रतिषेधक योग ।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1. संकेतित, दर्शाया हुआ 2 वर्णित, उल्लिखित 3 निश्चित, नियत,—ष्टः (पु०) समय, -ष्टम् (नपुं०) 1. निदेश 2 भाग्य । सम० गतिः मृत्यु, दृश् न्यायकारी परमात्मा -यस्य तुष्यति दिष्टदृक् भाग० ४।२१।२३, —भाज् (पु०) परमात्मा,—भुज् (वि०) जो अपने कर्मों का फल भोगता है ।

दिष्टिवृद्धिः (स्त्री०) [ष० त०] बधाई, अभिनन्दन, साधुवाद ।

देशना (स्त्री०) [दिश्+युच्+टाप्] निदेश, अध्यादेश —वैकृतीषु देशनासु प्राकृतं धर्मजातमपेक्ष्यते-मी० सू० १०।१।१ पर शा० भा० ।

दीनता (स्त्री०) [दीन+तल्] दुर्बलता, बलहीनता ।

दीव् (भ्वा०, प्रेर० आ०) प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना—[illegible] भ० १८।१२० ।

दीक्षणीयेष्टिः उपनयन संस्कार से पूर्व अनुष्ठेय यज्ञ ।

दीक्षान्तकः (पु०) [illegible] ।

दीक्षायूपः (पुं०) [ष० स०] यज्ञ की स्थूणा ।

दीपः [दीप्+णिच्+अच्] दीप्य, दीपक । सम० —अङ्कुरः दीप्य की लौ, दीये की लौ,—कज्जलम् दीये की स्याही, [illegible] दीवट, दीपक रखने की यष्टि ।

दीप्त (वि०) [दीप्+क्त] 1. जलता हुआ, प्रकाशित, सुलगाया हुआ 2. ज्योतिष्मत्, प्रदीप्त 3. उज्ज्वल,—प्तः (पुं०) 1. सिंह 2. नींबू का पेड़,—प्तम् (नपुं०) सोना । सम० [illegible] सांप, –[illegible] निश्चित एवं वास्तविक परिणाम, —निर्णय (वि०) जिसने अपना पक्का निर्णय कर लिया है ।

दीप्तमणम् [दीप्+मद्+ल्युट्] 1. और की दिशा 2. 'दीपक' नाम का एक अलंकार, इसी का दूसरा नाम ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ् बा०] 1. लम्बा, दूरगामी 2. देर तक रहने वाला, टिकाऊ 3. गहरा 4. ऊँचा । सम० अपाङ्ग (वि०) बड़े कटाक्षों से युक्त (मृग) — अपेक्षिन् (वि०) लिहाज करने वाला, सचेत, सावधान,—आयुष्यः दीर्घायित,—तमस् (पुं०) एक ऋषि का नाम, द्वेषिन् (वि०) जो देर तक बैर-विरोध रखता है, पत्रकः 1. गन्ना 2. एक प्रकार का लहसुन,—पृष्ठः सांप, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, वर्त्तिका, घड़ियाल, मगरमच्छ ।

दुःखम् [दुख्+अच्] 1 अप्रसन्नता, कष्ट, पीड़ा 2. कठिनाई, असुविधा । सम० —गतम् विपत्ति, संकट, जीविन् (वि०) कष्ट में जीवन व्यतीत करने वाला —त्रयम् तीन प्रकार का दुःख आधिभौतिक आधिदैविक और आध्यात्मिक, -दुःखम् (अ०) बड़ी कठिनाई के साथ,—दुःखिन् (वि०) 1. जिसे दुःख पर दुःख उठाने पड़ें 2. जो दूसरों के दुःख से दुःखी हो, —च्छेद्य (वि०) जो कठिनाई से काटा जा सके ।

दुःखाकृत (वि०) [दुःख+आ+कृ+क्त] आहत, दलित, परेशान भ०२२।१३८ ।

दुकूलपट्टः (पु०) रेशमी पट्टा या सिर की पट्टी ।

दुन्दुभिः (पु० स्त्री) [दुन्दु+भण्+ड+ङ] 1. एक प्रकार का बड़ा ढोल 2. विष्णु 3. कृष्ण 4 एक प्रकार का विष 5 संवत्सर चक्र में ५६ वाँ वर्ष ।

दुर् (अ०) ['दुस्' का पर्याय वाची उपसर्ग +दु+डुरू] यह उपसर्ग 'बुरा' 'कठोर' या 'कठिन' के अर्थ को प्रकट करने के लिए नाम पद तथा क्रिया पदों के पूर्व जोड़ा जाता है । सम० —अक्षरम् अमंगल सूचक शब्द,—अपवादः पिशुनवचन, लोकापवाद, —अवगाह्य (वि०) जिसका गुप्त रखना कठिन है,— अवसित (वि०) सीमारहित, अगाध, जो नापा न जा सके, —आढ्य (वि०) निर्धन, धनहीन,—आधिः (पु०) 1 कष्ट, मानसिक चिन्ता 2. क्रोध, —आपूर (वि०) जिसका भरना कठिन हो, जिसकी सन्तुष्टि न किया जा सके,—[illegible] दुर्भाग्य, संकोच,—[illegible] (वि०) जिसे निवारण न किया जा सके, जो किसी प्रकार अपने [illegible] न किया जा सके, —[illegible] (वि०) 1. जिसे प्राप्त करना कठिन हो 2. अजेय, जिस पर आक्रमण न किया जा सके 3. जिसका वर्णन करना कठिन हो,—[illegible] (वि०) जो आसानी से प्रकट न हो सके, —[illegible] (वि०) जिसका बुरा परिणाम हो, जिसका कोई फल न मिले, —[illegible] (वि०) जो असावधानता पूर्वक पढ़ा गया है, जो लापरवाही

से पास नहीं जाता हूँ,—अधीतम् (नपुं०) जिसका भलीप्रकार अध्ययन नहीं किया गया—शास्त्रं दुर्-धीतं यथा—अवि० २।४, -गति खोटी कुसंगति, बदचलन, —नयः 1. बुरी राजनीति 2. अनैतिकता 3. धृष्ठता —नृपः बुरा राजा,—न्यस्त (वि०) दुर्व्यवस्थित, -बाध (वि०) प्रतिबंधरहित, मन (वि०) दुर्मना, दुष्ट मन वाला, भिषज्यम् (नपुं०) अचिकित्स्यता, असाध्यता—मु० उ० ४।३।१४, मदकु (वि०) ढीठ, आज्ञा न मानने वाला, मरम् (नपुं०) कठिन मृत्यु, अप्राकृतिक मरण,—र्षित (वि०) उकसाया हुआ, भड़काया हुआ,-मित्र शत्रु, वैरी, ग्राम-ब्राह्मणों (अप्रहारोपजीवी) को अर्पण के नाम बना हुआ गाँव, -विद्ध (वि०) जिसमें छिद्र ठीक प्रकार न हुआ हो (मोती), विमर्श (वि०) जिसका परीक्षा करना कठिन हो,—विवाहः अनियमित विवाह —व्यवहृतिः (स्त्री०) मिथ्या अभियोग झूठा आरोप।

दुरोणम् (वेद०) आवास, अभिविदु रोणमक् ऋक् ४।४०।५।

दूषक (वि०) [दुष्+णिच्+ण्वुल्] अधार्मिक धर्मभ्रष्ट।

दोषः [दुष्+घञ्] 1 अपराध बुराई, निन्दा त्रुटि 2. पाप, जुर्म 3 अवगुण दुःस्वभाव 4 वात पित्त कफ का विकार। सम० अक्षरम् दोषारोपण, दोषारोप का शब्द आविष्कारणम् दोषों को प्रकट करना,—निकृषणम् त्रुटियों का संकेत करना।

दुस् [दु+सुक्] संज्ञा पदों के साथ, कभी कभी क्रियापदों के साथ भी, लगने वाला उपसर्ग इसका अर्थ है 'बुरा' 'दुष्ट' 'घटिया' 'कठिन' आदि (दुस् का 'स्' स्वरों तथा मृदु वर्णों से पूर्व 'र्' में, 'श' से पूर्व 'श्' में तथा क् प् से पूर्व 'ष्' में बदल जाता है)। सम०—उपस्थान (वि०) अगम्य पहुँच से बाहर, —कुलम् अधम कुल स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि मनु० २।२३८,—कुह (वि०) पाखण्डी, दम्भी० बृद्ध १।१८, —क्रीत (वि०) जो उचित रूप से न खरीदा गया हो,—चिक्यम् ज्योतिष शास्त्र में लग्न से तीसरी राशि,—अधिका लगभग अधिकार—राज० ८।४, —ज्ञेय (वि०) पहचानने में कठिन—प्रव (वि०) दुःखदायी, पीड़ाकर—अथ भीता पलायध्वं दुःखदास्ते विभो यत—रा० २।१०६।२९,—मरम् असामयिक और दुःखद मृत्यु,—सधः 1. कुत्ता 2. गधा,—संदर्शित (वि०) देखने में कुरूप, निन्द्य, कलङ्कयुक्त,—स्थम् (अ०) बुरा, अस्वस्थ—दुःस्थं तिष्ठति यश्च पश्यवशुना कर्मणि तत्कोपवि—अमरु०।

दुग्धकूपिका (स्त्री०) एक प्रकार की रोटी।

दुग्धाब्धिः (पुं०) एक प्रकार की मूल्यवान् मणि।

दूहिलितिका (स्त्री०) एक प्रकार की जानवरों की खाल जिस पर बाल बहुत लगे होते हैं—कौ० अ० २।११।

दूतः [दु+क्त, दीर्घ] 1. हरकारा 2. एलची, राजदूत। सम० काव्यम् 'दूतसम्प्रेषण' के विषय का काव्य, जैसे मेघदूत, वधः (—वध्या) दूत की हत्या करना - दूतवध्यां विगर्हता—रा० ६।५।३,—संपातः,—संप्रेषणम् दूत भेजना।

दूत्यम् [दूत+यत्] दूत का कार्य।

दूर (वि०) [दुर्+इण्+रक्, धातोर्लोपः] 1. फासले पर, दूरी पर, दूर 2 अत्यन्त, बहुत अधिक। सम० —अपेत (वि०) प्रकरण से बाहर, अप्रासंगिक, असंगत आगत (वि०) दूरी से आये हुए, उत्सारित (वि०) दूर भगाया हुआ, पातिन् (पुं०) बाण, पात, पातिन् (वि०) जो दूर से निशाना लगा सकता है -शास्त्रविद्भिरनाधृष्या दूरपाती दृढव्रतः महा० ५।१६६।२५ पातनम् दूर तक निशाना लगाना, श्रवणम्—श्रुति दूर से सुनना (एक 'सिद्धि' का भेद) -श्रवस् (वि०) दूर-दूर तक विख्यात।

दूरता,-त्वम् [दूर+तल्, त्व] दूरी फासला।

दृबक (पुं०) [illegible]

दृढ (वि०) [दृह् [illegible]] 1 [illegible] 2 [illegible] 3 पुष्टाकृत 4 [illegible] श्रुति (वि०) [illegible] रोकने वाला [illegible] पृष्ठक [illegible],—भूमिः यौगिक अध्ययन में [illegible] है, -भक्ति -वैधित [illegible] अ० [illegible] [illegible] दृढमन्यवे [illegible] वृक्षः नारियल का पेड़।

दृति (पुं० स्त्री०) [दृ+क्तिन् ह्रस्व] मिशकारों या नल ना दवगानल [illegible] —भाग० १०।३५।१३।

दर्शनदानि: (स्त्री०) चमक दूर-दूर करना।

दर्शनदर्शम् (अ०) हर दृष्टि में, प्रत्येक दृष्टि में।

दर्शपूर्णमासन्यायः (पुं०) ऐसा नियम जिसके आधार पर वह कार्य जो अनेक फलों का उत्पादक है, एक समय में केवल एक ही फल उत्पन्न कर सकता है, अनेक नहीं—मी० सू० ४।३।२५-२८।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] 1 देखना 2. प्रकट करना 3. जानना 4. दृष्टि 5 निश्चयात्मक कथन, उक्ति —दर्शनादर्शनयोश्च दर्शनं प्रमाणम् मी० सू० १०।७। ३६ पर शा० भा०।

दर्शनीयतम (वि०) [दृश्+अनीयर्+तमप्] जो देखने में अत्यन्त सुन्दर है—दर्शनीयतमं शालम् भाग०।

दर्शनीयमानिन् (वि०) [दर्शनीयमान+इनि] जो अपने सौन्दर्य का अभिमान करता है घमंडी ।

दिदृक्षा (स्त्री०) [दृश्+सन्, अ+टाप्] देखने की इच्छा ।

दिदृक्षु (वि०) [दृश्+सन्+उ] जो देखने का इच्छुक है ।

दृश् (स्त्री०) [दृश्+क्विप्] 1. दृष्टि 2. आंख । सम० —अञ्चलः (दृगञ्चल) कटाक्ष, कनखी,—छदम् (दृक्छदम्) पलक,—निमीलनम् (दृङ्निमीलनम्) आंख मिचौनी, बच्चों का एक खेल, -प्रसादा (दृक्प्रसादा) एक नीला पत्थर जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है, —संगमः दृष्टिमिलन, नज़र मिलना ।

दृशाकुः (पुं०) [दृश्+आकुन्] सूर्य ।

दृश्यम् [दृश्+क्यप्] 1 देखने जाने योग्य 2 सुन्दर 3 काव्य का एक भेद जो देखने के उपयुक्त है (विप० श्रव्य) । सम०—इतर (वि०) जो दिखाई न दे —स्थापित (वि०) आकर्षक रीति से रक्खा हुआ जिससे सभी उसको देख सकें दृश्यस्थापितमूर्ध्वभिक्षाभाजनमुत्ताविनाम्—कथा० २४।१२ ।

दृष्टसार (वि०) [ब० स०] जिसका बल या सामर्थ्य प्रमाणित हो चुका है — दृष्टसारमथ रुद्रकार्मुके रघु० ११ ।

दृष्टिः (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1 नज़र, देखना 2. मानसिक रूप से देखना 3. जानना 4 आंख 5 सिद्धान्त (दे० दर्शन) । सम०—प्रसादः दृष्टि की कृपा, दर्शन का अनुग्रह,—मण्डलम् 1 आंख की पुतली 2 दृष्टिकोण,—रागः आंख द्वारा प्रेम अभिव्यक्ति,—भवल्लभमनदेन कौतुकोऽस्याः दृष्टिरागः कु० २।११-१२, —संभेदः पारस्परिक अवलोकन—स्त्वदादि न निरूपिता अन्योन्यदृष्टिसंभेद—महा० ७ ।

दृषत्कन्दम् (पुं०) चक्की का ऊपर का पाट ।

दृषत्सारम् [ब० त०] लोहा - दृषत्सारस्तत्पामृतमपि —शं० गी० ९।५२ ।

देव (वि०) [दिव्+अच्] 1. दिव्य, स्वर्गीय 2. उज्ज्वल 3. पूजनीय, माननीय, —वः (पुं०) 1. देवता 2 वर्षा का देवता 3. दिव्य मनुष्य, ब्राह्मण—दे० भूदेव 4. देवर, पति का भाई, —वम् (नपुं०) ज्ञानेन्द्रिय । सम०—अर्पणम् 1 देवों के प्रति उपहार 2. वेद—महा० १३।८६।१७ पर टीका, —कुसुमम् लवङ्गपत्री,—खातम्, —खातकम् 1 पहाड़ की कन्दरा 2. सरोवर 3. मन्दिर का निकटवर्ती जलाशय, —गान्धारी संगीतशास्त्र में एक राग का नाम, —ग्रहः भूत-प्रेतों की श्रेणी जो उन्माद पैदा करती है, —तर्पणम् जल के उपहार से देवों को तृप्त करना,—दैवत्य (वि०) जो देवताओं का अभिधान हो, उनके नाम से किया हो,—धिष्ण्यम् देवों का रथ, विमान, —नक्षत्रम् दक्षिणी दिशा में पहले चौदह नक्षत्रों का नाम,—निन्दा नास्तिकता, —निर्माल्यम् देवताओं को उपहार देने में प्रयुक्त (फूल, माला आदि),—पुरोहितः 1 देवों का अपना पुरोहित 2 बृहस्पति ग्रह —प्रसूतः (वि०) प्रकृति से उत्पन्न (जल आदि), —भोगः स्वर्गीय भोग, स्वर्गीय हर्ष, —माया दिव्य भ्रम —तां देवमायामिव वीरमोहिनीम् भाग० १० —मार्गः 1 वायु, अन्तरिक्ष 2 गुदा देवमार्गं च दर्शितम रा० ५।६२, —रातः परीक्षित् का विशेषण,—लक्ष्मम् ब्राह्मणत्व का चिह्न, यज्ञोपवीत —सत्यम् दिव्य सचाई,—हू. बायां कान—भाग० ४।२५।५१ ।

देवितव्य (वि०) [दिव्+तव्यत्] जूए में दांव पर लगाने योग्य ।

देवीपुराणम् (नपुं०) एक उपपुराण का नाम ।

देवीभागवतम् (नपुं०) एक महापुराण का नाम ।

देवीमाहात्म्यम् (नपुं०) मार्कण्डेय पुराण का एक भाग जिसे सप्तशती कहते हैं ।

देश [दिश्+अच्] 1 स्थान 2 प्रदेश 3. क्षेत्र 4. प्रान्त 5. विभाग 6 संस्थान 7 अध्यादेश । सम०—अटनम् किसी देश में भ्रमण करना,—कण्टकः सामाजिक बुराई, देश की प्रगति में बाधक, —कालज्ञ (वि०) जो व्यक्ति कार्य करने के सही स्थान और समय को जानता है, —विद्ध (वि०) ठीक तरह से बिंधा हुआ (मोती) —दर्शक की सापेक्ष स्थिति के आधार पर बना गोल घेरा ।

देशकः [दिश्+ण्वुल्] सङ्केतक, ज्ञापक, अनुबोधक । सम० पद्मम् (नपुं०) छत्रक, खुम्बी ।

देशिकरूपिणी (स्त्री०) अध्यापिका के रूप में देवी, ललिता का विशेषण ।

देष्टव्य (वि०) [दिश्+तव्यत्] इंगित या संकेतित किये जाने के योग्य ।

देहः,—हम् [दिह्+घञ्] 1. काया, शरीर 2. व्यक्ति 3 रूप । सम० —आत्मकः भूत,—कृत् 1. पांच तत्त्व 2. पिता अनरण्यस्य देहकृत् भाग० ९।७।४, —तन्त्र (वि०) शरीर धारी, मूर्तरूप धारण करने वाला, —त्यागः मृत्यु,—भेदः मृत्यु,—यापनम् शरीर का पालन पोषण करना,—विसर्जनम् मृत्यु,—वृन्तम् नाभि,—सारः मज्जा ।

देहिका (स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा ।

दैक्ष (वि०) [दीक्षा+अण्] 'अग्नीषोम' यज्ञ की दीक्षा लेने वाला ।

दैप (वि०) [दीप+अण्] दीपक से सम्बन्ध रखने वाला ।

दैव (वि०) [देव+अण्] 1. देवताओं से सम्बन्ध रखने

वाला 2 दिव्य, स्वर्गीय 3 भाग्य पर निर्भर। सम० —इज्य (वि०) बृहस्पति के लिए पुनीत, —ऊढा 'दैव' विवाह की रीति के अनुसार विवाहित स्त्री, —चिन्ता भाग्यवाद, —रक्षित (वि०) अन्तर्गत, नैसर्गिक, -रक्षित (वि०) देवों से जिसकी रक्षा की गई है—अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं—सुभाष०, —विद् (पुं०) ज्योतिषी, -हत (वि०) जिससे देव घृणा करते हों, भाग्य का मारा।

दैवससरित् (स्त्री०) गंगा नदी।

दैवसिक (वि०) [दिवस+ठक्] एक दिन में जो घटित हो।

दैवाकरि (पुं०) 1 शनि ग्रह 2 यम 3 यमुना नदी।

दैशिक (वि०) [देश+ठञ्] गुरु के द्वारा शिक्षा प्राप्त।

दोधकम् (नपुं०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु को मिला कर दस वर्ण हों।

दोलाचलचित्तवृत्ति (वि०) जिसका मन हिंडोले की भांति इधर उधर झूल रहा है।

दोलायन्त्रम् (नपुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कुछ औषधियां तैयार की जाती हैं।

दोलालोल (वि०) अनिश्चित।

दोस् (पुं०, नपुं०) [दम्यतेऽनेन दम् दोऽसि अर्धर्चा०] ('दोषन्' शब्द को विकल्प से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन के पश्चात् 'दोस्' आदेश हो जाता है) 1 भुजा 2 किसी वर्ग या त्रिकोण की भुजा 3 अठारह इंच की माप माल० १०।१४।

दोहदवु:खशीलता (स्त्री०) गर्भावस्था का बोझा—उपेत्य सा दोहददु:खशीलताम्—रघु० ३।६।

दौधरी (स्त्री०) बृहस्पति और शुक्र ग्रह का चन्द्रमा के साथ संयोग—जातकों के लिए अत्यन्त मङ्गलमय-समझा जाता है।

दौर्जन (वि०) [दुर्जन+अण्] दुष्ट पुरुष से सम्बन्ध।

दौर्भिक्षम् (नपुं०) [दुर्भिक्ष+अण्] अकाल पडना, दुर्भिक्ष होना।

दौर्मत्यम् (नपुं०) [दुर्मुन+ष्यञ्] आज्ञा न मानना।

दौस्थ्यम् (नपुं०) [दुस्थ+ष्यञ्] दु:खद स्थिति।

दौहृदिक: [दोहद+ठक्] प्राकृतिक वृक्षों का माली नै० ६।६१।

द्युपथ: [ब० स०] हवाई मार्ग।

द्युरत्नम् (नपुं०) सूर्य।

द्युसैन्धव: (पुं०) इन्द्र का घोड़ा, उच्चै:श्रवा।

द्यूत:,-तम् [दिव्+क्त,ऊठ् अर्धर्चा०] 1 जुआ खेलना, पासों से खेलना 2. युद्ध, संग्राम 3 जीता हुआ पारितोषिक। सम० —धर्म: जूआ खेलने के नियम, —मण्डलम् जूआघर, -लेखक: जो जूए के खेल के प्राप्तांक लिखता है।

द्योकार (पुं०) स्थपति, वास्तुकार, शीर्षशिल्पी।

द्रङ्ग:,—ङ्गा नगर, पुरी राज०।

द्रवत् (वि०) [द्रु+शतृ] 1 दौड़ता हुआ, बहता हुआ 2 चूता हुआ, टपकता हुआ, बूंद बूंद गिरता हुआ।

द्रवि: (पुं०) (वेद०) धातुओं को गलाने वाला।

द्रविडशिशु (पुं०) द्रविड देश का पुत्र, शैवसंप्रदाय का एक सन्त दयावत्या दत्त द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत् सौन्दर्य०।

द्रविणोद: (पुं०) अग्नि, आग।

द्रविणोदय: [ष० त०] धन की प्राप्ति।

द्रव्यम् [द्रु+यत्] ऋग्वेद का मन्त्र जो साम के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—द्रव्यशब्दस्तु छन्दोगै: ऋक्षु आवर्त्ति में म० ७।२।१४ पर शा० भा०। सम० —शुद्धि: धर्म कार्य के लिए प्रयुक्त पदार्थ की पवित्रता।

द्रष्टुकाम (वि०) दर्शनाभिलाषी, देखने का इच्छुक (पाणिनि के अनुसार 'काम और मनस्' के पूर्व 'तुम्' के 'म्' का लोप हो जाता है)।

द्रष्टुमनस् (वि०) दे० 'द्रष्टुकाम'।

द्राक्केन्द्रम् (नपुं०) अपने अधिकतम वेग के बिन्दु से ग्रह की दूरी।

द्राक्षापाक: (पुं०) काव्यशैली का एक प्रकार जिसमें रचना सरल और मधुर हो (विप० नारिकेलपाक)।

द्राक्षासव: अंगूरों की शराब जो पुष्टिवर्धक के रूप में प्रयुक्त होती है।

द्राघिष्ठ (वि०) [दीर्घ+इष्ठन्] सबसे लम्बा, अत्यन्त लम्बा,—ष्ठ: (पुं०) रीछ।

द्राह्यायण: सामवेदियों के सम्प्रदाय के लिए लिखित श्रौतसूत्र के कर्ता का नाम।

द्रुपाद (वि०) लम्बे पैर वाला।

द्रुतपाति (वि०) [ब० स०] द्रुत गति से जाने वाला।

द्रुतमध्या दे० द्रुतविलम्बित।

द्रुम: [द्रु शाखास्त्यस्य, म] 1 वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर का विशेषण। सम० —उत्पलम् कर्णिकार वृक्ष, कनियर का पौधा —खण्ड:,- षण्ड: वृक्षों की वाटिका, कुंज, - निर्यास: वृक्ष का रस, लोबान, —शिरम् (पुं०) अम्बर।

द्रेक्काण: } (पुं) राशि की अवधि का तीसरा भाग।
द्रेष्काण:

द्रोणकम् (नपुं०) [द्रुण्+अप्, कन्] समुद्र के किनारे का नगर जिसमें किलाबन्दी की गई हो।

द्रोणमुख (वि०) आतिथ्य सत्कार करने में उदार।

द्रौणेयम् (नपुं०) एक प्रकार का नमक।

द्रौहिक (वि०) [द्रोह+ठक्] सर्वेव घृणा का पात्र ।

द्वन्द्वम् [द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्ती-द्विशब्दस्य द्वित्वं पूर्वपदस्य अम्भाव, उत्तरपदस्य नपुंसकत्व—नि०] एक ओर, एकान्त स्थान, द्वन्द्वे ह्येतत् वक्तव्यम् रा० ७। १०३।१३, —आलापः दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप, —गर्भ (वि०) बहुव्रीहि समास जिसके मध्य द्वन्द्व निहित हो, —दुःखम् हर्ष और शोक आदि की परस्पर विरोधी भावनाओं से उत्पन्न दुःख ।

द्वार्य (वि०) [द्वार्+य] दरवाजे पर खड़ा हुआ ।

द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1 दरवाजा 2 प्रवेश द्वार 3 शरीर के नौ द्वार । सम०—बाहुः (पु०) चौखट, —अररिः किवाड़ का पट या पल्ला, —वंशः सरदल ।

द्वि (स वि०) [द्वृ+डि] दो । सम० अन्तर (वि०) दो घटकों द्वारा अन्तरित, —अवर (वि०) न्यूनातिन्यून दो, —आम्नात (वि०) दो बार वर्णित —आहिक (वि०) हर तीसरे दिन होने वाला (बुखार), —एकान्तरम् एक अंश या दो अंश से वियुक्त द्व्येकान्तरासु जातानां धर्म्यं विद्यादिमं विधिम्—मनु० १०।७, —कर (वि०) दो प्रयोजन पूरा करने वाला, —कार्षापणिक (वि०) दो कार्षापण के मूल्य का —चन्द्रधीः आंख में खराबी के कारण दो चन्द्रदर्शन की भ्रान्ति, —ज ब्रह्मचारी, —जानिः जिसके दो पत्नियाँ हैं, —कालकः 1 दो ओर बँटे बाल 2 जिसने अपने बालों को कंघी करके दो भागों में बाँट दिया है, बाहु मनुष्य कथा० ५३।९४, —मातम् सन्ध्या समय, —मुनि (अ०) दो मुनि पाणिनि और कात्यायन, —मुखः दो मुँह वाला साँप, —वर्ग प्रकृति और पुरुष का जोड़ा, —व्याम (वि०) बारह फुट लम्बा (व्याम ६ फुट), —श्रुत, (—श्रुत) (वि०) दो अर्थ प्रकट करने वाला—द्विश्रुतिं च द्विष्टानि वाक्यानि मी० सू० ३।३।१८ पर शा० भा० ।

द्विक (वि०) [द्वि+क] 1 दोहरा दो तह का 2 दूसरा 3 दूसरी बार घटित होने वाला —कः 1 कौवा 2 चक्रवाक पक्षी । सम० पृष्ठ दो कूब वाला ऊँट ।

द्वितीयगामिन् (वि०) जो दूसरे पदार्थ पर घटता हो द्वितीयगामी न हि शब्द एष नः रघु० ३।४९ ।

द्वेषस्थ (वि०) घृणा करने वाला ।

द्वीपवासिन् (वि०) टापू पर रहने वाला, —वासी (पु०) खञ्जरीट पक्षी ।

द्वैधीकरणम् (नपु०) दो भाग करना ।

द्वैहकाल्यम (वि० सप्तरकालमा एकाल्य) दो दिन तक अनुष्ठान चलते रहने की विशेषता ।

ध

धगिति (अ०) एक क्षण में, अकस्मात् ।

धनम् [धन्+अच्] 1 सम्पत्ति, दौलत धन रुपया पैसा 2 कोई भी मूल्यवान् सामान, प्रियतम कोष 3 लूट मार का धन 4 पारितोषिक ५ धनिष्ठा नक्षत्र 6. जमा का चिह्न (विप० ऋण) । सम० आदानम् धन ग्रहण करना, —आशा (स्त्री०) धन की इच्छा —धान्यम् रुपया पैसा तथा अनाज, —धू (पु०) दिखावटी पूँछ वाला किरौला नामक पक्षी —सू (स्त्री०) वह माता जिसके कन्याएँ ही हों ।

धनिन् (वि०) [धन+इनि] वैश्य आदि ऊरुजा धनिनो राजन्—महा० १२।२९६।६ ।

धनुरासनम् (नपु०) योगशास्त्र में वर्णित एक कायिक मुद्रा ।

धनुर्ग्रहम् (नपु०) एक माप, २७ अंगुल की माप एक हस्तपरिमाण की माप ।

धन्वनम् [धन्व्+ल्युट्] 1 धनुष 2 इन्द्रधनुष 3 धनु राशि ।

धमधमाय् (ना० धा०) जगमगाना, पिघल जाना ।

धरः [धृ+अच्] तलवार । सम० —रम् (नपु०) विष, ज़हर ।

धरणीतलम् [ष० त०] धरती की सतह ।

धरणीबिडौज (पु०) [ष० त०] राजा ।

धरा [धृ+अच्+टाप्] पृथ्वी धरती । सम० —उपस्थ (पु०) पृथ्वीतल धरती की सतह ।

धरित्रीभृत् (पु०) [धरित्री+भृ+क्विप्] राजा ।

धर्मः [धृ+मन्] 1 किसी जाति के परम्परागत अनुष्ठान 2 रीति व्यवहार प्रथा 3 नैतिक गुण 4 गुण स्वभाव 5 चार पुरुषार्थों में से एक 6 कर्तव्य 7 न्याय । सम० —अक्षरम् पवित्र मंत्र, आचार का नियम, —अपदेशः धर्मानुष्ठान का बहाना धर्मापदेशात् त्यजतश्च राज्यम् रा० ५।१२८ —आगमम् विधि का क्रम —आहुत् (नपु०) काल जो बीत चुका, —आकूतम् रामायण की एक टीका का नाम —ईप्सु (वि०) धर्मलाभ प्राप्त करने का इच्छुक —उपवासिन् (वि०) धर्मवृद्ध धार्मिक,—कञ्चुक धर्म का कपटपूर्ण उल्लङ्घन, —दक्षिणा धर्मशिक्षा का शुल्क, —परिधानकः हृदय में धर्माचरण का उद्भासन, —प्रतिरूपकः कपटधर्म छद्म धर्म, —प्रधान (वि०) धर्मक्षेत्र में मुख्य —प्रेक्ष (वि०) धार्मिक, गुणी, —बाह्य (वि०) धर्म से पराङ्मुख, धर्म विरोधी, —बुद्धिः आचरण की

धर्मिमत्ता,—सम्बः वेद वाक्यि,—सूत्रम् जैमिनिकृत पूर्वमीमांसा पर लिखा गया ग्रन्थ ।

धर्षणम् [धृष्+ल्युट्] 1 साहस, धृष्टता 2. हराना, पराजय —धर्षणं यस न प्राप्तो रावणो राक्षसेश्वर—रा० ७।३१।३ ।

धातुः [धा+तुन्] 1. घटक, अवयव 2 तत्त्व, प्राथमिक द्रव्य 3 रस, अर्क । सम० गर्भः,—स्तूपः भस्म रखने का पात्र,—चूर्णम् पिसा हुआ खनिज पदार्थ,—प्रसक्त (वि०) रसायन कार्य में व्यस्त ।

धातुकः,-कम् शिलाजीत ।

धातृ (पुं०) [धा+तृच्] भाग्य, किस्मत ।

धात्रीपुष्पिका (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम ।

धान्यम् [धान+यत्] अनाज, अन्न । सम० खलः खलिहान, चौरः अन्न चुराने वाला मुष्टिः मुट्ठी भर अनाज ।

धामवामिन् (वि०) [धामन्+मान+इनि, नलोप] भौतिक सत्ता में विश्वास रखने वाला—नैवेच्छिन् प्रभुर्भूम्न ईश्वरो धाममानिना भाग० ३।११।३८ ।

धामवत् (वि०) [धाम+मतुप्] शक्तिशाली, मजबूत पुरस्सरा धामवता यशोधना कि० १।४३ ।

धाय्या (स्त्री०) [सामिधेनी ऋक् या समिदाधाने पठ्यन] 1 यज्ञाग्नि को सुलगाते समय गाया जाने वाला प्रार्थना मन्त्र 2 इन्धन कोऽकार्ता निजनातनिग्रहकथाधाय्यामभूद्वोपिते राम० २।६, नै० १।५६ ।

धारणम् [धृ+णिच्+ल्युट्] पीड़ा को शान्त करने के लिए मन्त्र । सम० मन्त्रम् एक प्रकार का तावीज ।

धारणा [धृ+णिच्+युच्+टाप्] योग का एक अङ्ग । सम० आत्मक (वि०) जो अपने आपको आसानी से स्वस्थचित्त या प्रशान्त कर लेता है ।

धारयिष्णुता [धृ+णिच्+इष्णुच्+तल्] सहनशक्ति, सहिष्णुता ।

धारा (स्त्री०) मालवा देश की एक नगरी ।

धारा [धृ+णिच्+अङ्+टाप्] 1 पानी की धार, गिरते हुए किसी तरल पदार्थ की पंक्ति 2 बौछार 3 लगातार पंक्ति 4 घड़े में छिद्र 5 किसी वस्तु का किनारा । सम०—आवर्तः भंवर, फिरकी, -ईश्वरः राजा भोज, संपातः लगातार बौछार,—शीत (वि०) धारोष्ण दूध ठंडा किया हुआ ।

धार्मिकः [धर्म+ठक्] 1 न्यायकर्ता 2 धर्मान्ध, कट्टरपन्थी 3. बाजीगर ।

धावितृ (पुं०) [धाव्+तृच्] दौड़ने वाला चौबोदार धावितार कुरङ्गी—महा० ११।२६।५ ।

धित (वि०) [धा+क्त] 1 रक्खा गया, अर्पण किया गया 2. सन्तुष्ट, प्रसन्न ।

धिग्वादः [धिक्+वद्+घञ्] भर्त्सनापूर्ण उक्ति, निन्दा ।

धिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त, दे० पिधान] 1 सुस्थापित 2. खाई में सुरक्षित—खात्वो वैहायसं चापि तत्पुरं व्यूह्य धिष्ठितः—महा० ३।१५।३ 3. ठहरा हुआ, निश्चित ।

धीः [ध्यै भावे क्विप् सम्प्रसारण च] 1. बुद्धि 2. मन, 3 विचार 4 कल्पना 5. प्रार्थना 6. यज्ञ 7. (जन्मकुण्डली में) लग्न से पाँचवाँ घर । सम०—विभ्रमः दृष्टिभ्रम ।

धुन्धुकम् (नपुं०) 1. लकड़ी में विशेष प्रकार का दोष 2 वृक्ष के तने में छिद्र जो उसके क्षय का चिह्न है ।

धुन्धुरिः, री (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, संगीत-उपकरण ।

धुर्यवाहः (पुं०) बोझा ढोने वाला जानवर ।

धुर्यता [धुर वहति यत्, तस्य भावः, तल्] नेतृत्व ।

धूपकः (पुं०) लोबान ।

धूतगुणः जिसने तीनों गुणों को पार कर लिया है, जो अब भौतिक सुखों से परे पहुँच गया है, संन्यासी ।

धूपः [धूप्+अच्] 1 सुगन्ध 2 सुगन्धयुक्त वाष्प या धूआँ । सम०—नेत्रम् धूमनलिका, हुक्के की नली, वर्तिः एक प्रकार की सिगरेट ।

धूमः [धू+मक्] 1 धुआँ 2 वाष्प 3 कुहरा, धुंध । सम० उपहत (वि०) धुएँ के कारण अंधा हुआ, —निर्गमनम् चिमनी जिसमें से धुआँ निकलता है, महिषी धुंध, कुहरा,—योनिः बादल ।

धूमरी (स्त्री०) धुंध, कुहरा ।

धूम्र [धूम तद्वर्णं गति रा+क] 1 धुएँ के रंग का 2. भूरा —कः ऊँट ।

धूलिधूसरित (वि०)मिट्टी में लोटने से भूरा हुआ —गोधूलिधूसरितकोमलकुन्तलाग्रम् कृष्ण० ।

धृ (भ्वा०, तुदा० आ०) इरादा करना, मन करना ।

धृत [धृ+क्त] सकल्प किया हुआ, दृढ़,—रिपुनिबर्हे धृतः —रा० ४।२७।४७ । सम० – उत्सेक (वि०) घमण्डी, - एकवेणि (वि०) एक चोटी धारी – शि० ७।२१, गर्भ (वि०) गर्भिणी, – मानस पक्के इरादे वाला, दृढ़मना ।

धृतिः [धृ+क्तिन्] 1 एक छन्द का नाम 2. अठारह की संख्या ।

धृष्टकेतुः (पुं०) धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम ।

धृष्टवादिन् (वि०) निर्भीक होकर बोलने वाला ।

धेनुः [धयति सुतान् —धे+नु, इच्च] 1. गाय 2. दूध देने वाली गौ 3 पृथ्वी 4 चोटी मी० सू० ७।४।७ पर शा० भा० ।

धेनुका (स्त्री०) 1. हथिनी 2. दुधारू गाय 3. उपहार 4 वध्य 5 पार्वती ।

धेय (वि०) [धे+यत्] कार्य में परिणेय, प्रयोज्य, —अलमाकुलं प्रकृतमुत्तरेण कर्म— कि० ५।१० ।

धैर्यम् [धीरस्य भावः— ष्यञ्] 1. दृढ़ता, स्थायित्व, टिकाऊपन 2. स्वस्थचित्तता, प्रशान्ति 3. साहस । सम० —कलित (वि०) धीर, अक्षुब्ध, —वृत्तिः धीरज से पूर्ण आचरण ।

धौत (वि०) [धाव्+क्त] 1. धोया हुआ, प्रक्षालित, स्वच्छ किया हुआ 2. उज्ज्वल किया हुआ, चमकाया हुआ 3. उज्ज्वल, चमकीला । सम०—अपाङ्ग (वि०) जिसकी कनखियाँ चमकीली हों, —आत्मन् (वि०) पवित्र हृदय वाला ।

धौतेयम् [धौति+ढक्] सैन्धव, पहाड़ी नमक, लाहौरी नमक ।

धौम्यः (पुं०) एक ऋषि का नाम ।

ध्यानाभ्यासयोग्य (वि०) ध्यान का अभ्यास करने के योग्य ।

ध्यानमुद्रा [ष० त०] ध्यान या चिन्तन करने की विशेष स्थिति या मुद्रा ।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] स्थिर, अचल, स्थायी, अनिवार्य, —वः (पुं०) 1. खूंटी —मानस० 2. ज्योतिष का एक योग 3. मूलबिन्दु 4. ध्रुव तारा, —वम् (नपुं०) निश्चित किया बिन्दु, —वा (स्त्री०) धनुष की डोरी । सम०—केतुः एक प्रकार की उल्का, टूटा हुआ तारा, —गतिः निश्चित मार्ग, —चक्रम् ध्रुवीय क्षेत्र, —श्रेणिः ध्रुवों की धारा, —शील (वि०) जिसका आचार निश्चित है ।

ध्वंसः [ध्वंस्+घञ्] 1. अधःपतन, डूबना 2. लुप्त होना, ओझल होना 3. नाश, विनाश, खंडहर । सम० —अभावः पदार्थ के विनाश से उत्पन्न अभाव या सत्ताहीनता, —कारिन् (वि०) 1. नाश करने वाला 2. उल्लंघन करने वाला ।

ध्वस्ताक्ष (वि०) [ब० स०] जिसकी आँखें डूब गई हों (जैसी कि मृत्यु के समय) प्रकीर्णकेशं ध्वस्ताक्षम् – भाग० ७।२।३० ।

ध्वजः [ध्वज्+अच्] 1 लग्न का एक भाग 2. झंडा, 3 पूज्य व्यक्ति 4 ध्वजा की यष्टि 5 चिह्न, प्रतीक । सम० —आरोहणम् झंडा फहराना, —आरोहः झंडे पर एक प्रकार की सजावट, —कूपः धूर्तता, पाखंड ।

ध्वजिन् (वि०) [ध्वज+इनि] धूर्त, पाखंडी—माल० १२।१५८।१८ ।

ध्वनिनालिका (स्त्री०) 1 वीणा 2. एक प्रकार का लम्बोतरा ढोल, ताशा ।

ध्वान्तजालम् रात्रि का आवरण, अन्धकार का समूह ।

न

नंशुक (वि०) [नंश्+वुञ्] हानिकारक, विनाशक ।

नंहुसः [हसन्ति विकसन्ति वे हंसा —नमन्ती हंसा येषां ते नंहुसाः] अपने भक्तों पर कृपा करने वाला महा० १।१७०।१९ पर टीका ।

नकुलः [नास्ति कुलं यस्य, समासे नञो नलोप प्रकृतिभावात्] नीच कुल में उत्पन्न—नकुलः पाण्डुतनये सर्पभुङ्कुलहीनयोः —नाना० । सम० —ईशः तान्त्रिक पूजा की एक रीति, —द्वेषी सर्प --नकुलद्वेषी तथा विकुलः —नाना० ।

नक्तन्तन (वि०) [नक्तं+तन] रात्रि से संबंध रखने वाला रात्रि का ।

नक्रकेतनः [ब० स०] कामदेव ।

नक्रमक्षिका (स्त्री०) [ष० त०] जल की मक्खी ।

नक्षत्रम् [नक्षरति क्षर्+अमन्] 1. तारा 2. तारापुंज, 3. मोती 4. सत्ताइस मोतियों की माला । सम० —इष्टिः एक यज्ञ का नाम, —कल्पविद् (पुं०) ज्योतिषी, —नेमिः नक्षत्र की कालावधि, —लोकः तारों का प्रदेश ।

नखप्रवेशः [ष० त०] नाखून अन्तर्विष्ट करना, पंजा घुसेड़ देना ।

नगापगा } (स्त्री०) पहाड़ी नदी ।
नगनदी }

नगरमण्डना (स्त्री०) वेश्या ।

नगरिन् (पुं०) [नगर+इनि] नगरपाल ।

नग्नहु (नपुं०) आसव तैयार करने के लिए उठाया गया खमीर, किण्वन ।

नग्नचर्या (स्त्री०) नग्न रहने की प्रतिज्ञा ।

नग्नाचार्यः (पुं०) चारण, भाट, स्तुति पाठक ।

नट्टनारायणः (पुं०) संगीत शास्त्र में वर्णित एक राग ।

नटवत् (वि०) [नट+मतुप्] नाटक के पात्र की भांति व्यवहार करने वाला ।

नडमीनः (पुं०) एक प्रकार की मछली ।

नतनाभि (वि०) [ब० स०] सुकुमार, तन्वी —तस्याः प्रविष्टा नतनाभिरन्ध्रं रराज तन्वी नवलोमराजिः - कु० १।३८ ।

नत्यूहः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी —रा० २।५६।९ ।

नदनम् (नपुं०) एक प्रकार का नाच ।

नदीकूलम् [ष० त०] नदी का किनारा, नदी तट ।

नदीतर (वि०) [नदीं तरतीति - तृ+अच्] नदी को पार करने वाला ।

नदीमार्गः [ष० त०] नदी का जलमार्ग।

नदीमुखम् [ष० त०] नदी का मुहाना, जहाँ से नदी निकलती है, नदी का उद्गम-स्थान।

ननान्दृपतिः [ष० त०] ननदोई, पति की बहन का पति।

नन्दकः [नन्द् + ण्वुल्] एक रत्न का नाम कौ० अ० २।११।

नन्दन (वि०) [नन्द् + ल्युट्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला, —नः (पु०) 1. पुत्र 2. मेंढक, —ना (स्त्री) पुत्री, —नम् इन्द्र का नन्दन वन। सम० —जम् पीली चन्दन की लकड़ी, —द्रुमः नन्दन वन का वृक्ष, पारिजातवृक्ष, कल्पवृक्ष, —वनम् दिव्य वाटिका, इन्द्र का उपवन।

नन्दिः (पु०, स्त्री०) [नन्द् + इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, —दि (पु०) 1 विष्णु 2 शिव 3 शिव का गण 4. (नाटक में) नान्दी का पाठ करने वाला। सम० —देवी हिमालय की एक चोटी, —नागरी एक लिपि (लिखावट) का नाम, —पुराणम् एक उपपुराण, —वर्धन मित्र।

नन्दिसुत [नन्दिन् + सुत, नलोप] व्याडि मुनि।

नन्दी (स्त्री०) [नन्द + ङीप्] दुर्गा देवी।

नभि [नभ् + इन्] पहिया।

नभोरूप (वि०) [नह् + असुन् भश्चान्तादेश — ब० स०] अन्धकारयुक्त, काला।

नभोवीथी [नभस् + वीथी] सूर्य का मार्ग, हवाई मार्ग।

नभश्चमस (पु०) [नभस् + चमस] 1 एक प्रकार का मधुपाक 2 चन्द्रमा।

नतनासिक (वि०) [ब० स०] चपटी और मोटी नाक वाला।

नयनम् [नी + ल्युट्] 1 नेतृत्व करना 2 निकट ले आना 3 आँख। सम० —अञ्चल 1. आँख का कोना 2. कटाक्ष, कनखी, —चरितम् 1 कटाक्ष, कनखी 2 दृक्पात, दृष्टिपात, —जम् आँसू, —बुद्बुदम् आँख का गोलक।

नर. [नृ + अच्] 1 मनुष्य 2 व्यक्ति। सम० —चिह्नम् मूँछ, —देव राजा।

नरकचतुर्दशी दीपावली का दिन।

नरकवास. (पु०) नरक में रहना।

नराच. (पु०) एक छन्द का नाम।

नर्कुटकः (पु०) एक छन्द का नाम।

नर्मस्फोट. [नर्मन् + स्फोट, नलोप] 1 प्रेम के प्र० चिह्न 2. मुहासा।

नर्मालाप. [नर्मन् + आलाप, नलोप] प्रेम वार्ता, आमोद-प्रमोद की बातचीत।

नर्मोक्ति. (स्त्री०) [नर्मन् + उक्ति, नलोप] हास्यपरक अभिव्यक्ति।

नर्मय् (ना० धा०) रिझाना, दिल बहलाना।

नर्मायितम् [नर्मय् + क्त] खेल, क्रीडा।

नल. (पु०) [नल् + अच्] 1 सरकण्डा 2 लम्बाई की माप जो चार हाथ के बराबर होती है। सम० —कूबरा एक प्रकार का जलीय जन्तु, —पाक राजा नल द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ।

नलिका (स्त्री०) नली।

नलिनी (स्त्री०) [नल + इनि + ङीप्] 1 कमल का पौधा 2 कमलों से सुवासित सरोवर 3. पुष्प 4 गंगा 5. इन्द्रपुरी (शक्रपुरी)। सम० —दलम्, —पत्रम् कमल का पत्ता।

नवद्वीपः (पु०) एक टापू का नाम। यह गङ्गा और जलङ्गी के संगम पर बंगाल में एक स्थान है जिसे आजकल 'नदिया' कहते हैं।

नवश्राद्धम् (नपुं०) मृत्यु के पश्चात् विषम दिनों में अनुष्ठित श्राद्ध।

नवीभाव. [नव + च्वि + भू + घञ्] नया होना।

नवन् (सं० वि०) [नु + कनिन्, बा० गुण.] (ब० व०) नौ, नौ की संख्या। सम० —कपालः नौ कपाल जैसे ठीकरों में पकाए हुए पिण्ड का उपहार, —गुण (वि०) नौगुणा, नौ तह का, —चण्डिका (स्त्री०) दुर्गादेवी के नौ रूप (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, महागौरी, कालरात्रि और सिद्धिदा), —धातुः (पु०) नौ धातु (हेमताररसा-रानाथ ताम्ररङ्ग च तीक्ष्णकम्। कांस्यकं कान्तलोहं च धातवो नव कीर्तिताः), —पञ्चमम् विवाह के विषय में जन्मकुण्डली में एक शुभ योग जब कि दुल्हन की जन्मराशि दूल्हे की जन्मराशि से पाँचवें या नवें हो।

नष्ट (वि०) [नश् + क्त] 1 खोया हुआ, अन्तर्हित, ओझल 2 मृत, ध्वस्त 3 बिगड़ा हुआ 4 वञ्चित 5 भ्रष्ट, —ष्टम् (नपुं०) 1 नाश 2. अन्तर्धान। सम० —चन्द्रः भाद्रपद मास की चतुर्थी तिथि जब कि चन्द्रमा का देखना निषिद्ध है, —दृष्टि (वि०) अन्धा, —धी (वि०) भूल जाने वाला, ध्यान न देने वाला, —बीज (वि०) नपुंसक पुंस्त्वहीन, —रूप (वि०) अदृश्य।

नष्टाकः (पु०) एक प्रकार का कौवा।

नाकः [न कम् अकं दुःखम् तन्नास्ति यत्र] 1 स्वर्ग 2 अन्तरिक्ष 3 सूर्य। सम० —नदी स्वर्गीय नदी, स्वर्गङ्गा, —नारी अप्सरा, —लोकः स्वर्गलोक, दिव्यलोक।

नाकुः (पु०) वाल्मीकि मुनि।

नागः [न गच्छति इति अगः, न अगः इति नागः] 1. साँप 2 हाथी 3 बादल 4 बिगुल, —गम् 1 टीन 2 सीसा 3 रांगा 4 एक प्रकार का रतिबन्ध। सम० —अञ्जना

(वि०) हाथी पर सवार, —केतुः कर्ण का विशेषण, —द्वीपम् भारत वर्ष का एक टापू, —नासोरू (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सुन्दर जंघाएँ आकार प्रकार में हाथी की सूँड से मिलती जुलती हैं, —वर्णी पान का पौधा, —बन्धः एक प्रकार का नाग, —रिपुः गरुड़ ।

नागरकः [नगर+अण्, स्वार्थे कन्] नगर पिता ।

नागरकाः परस्पर विरोधी ग्रह ।

नागरवृत्तिः [ष० त०] नागरिकों की शिष्टता, शिष्टाचार, शालीनता ।

नागार्जुनः (पुं०) एक बौद्ध भिक्षुक का नाम ।

नागोजीभट्टः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम ।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1. दृश्य काव्य 2. नाट्यरचना के मुख्य दस भेदों में प्रथम भेद । सम० —प्रपञ्चः नाटक करने की व्यवस्था, —प्रयोगः नाटक का अभिनय करना, —रङ्गः नाटक का रङ्गमञ्च, —लक्षणम्, नाट्यरचना विषयक विविध नियम ।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1 नाच 2 नाटक प्रस्तुत करना, अभिनय करना 3 नृत्यकला 4 नाटक के पात्र की वेशभूषा । सम० —अङ्गानि नृत्य के दस भाग —आगारम् नृत्यकक्ष, नाचघर, —रासकम् एक प्रकार का एकाङ्की नाटक, —वेदः नाट्यशास्त्र या नाट्यकला का विज्ञान ।

नाडी [नड्+णिच्+इन्=नाडि+ङीष्] 1 पौधे का नलिकामय डण्ठल 2 कमल का खोखला डण्ठल 3. शरीर का नलिकायुक्त अंग (जैसे कि शिरा या धमनी) । सम० —चक्रम् मूलाधार आदि शरीर के स्नायुओं के तन्त्री केन्द्रों का समूह, —पात्रम् जलघड़ी, —ग्रन्थः ज्योतिष की नाडी शाखा पर एक पुस्तक ।

नाणकम् (नपुं०) सिक्का, मुद्राङ्कित कोई वस्तु । सम० —परीक्षा सिक्के को परखना, —परीक्षिन् (त्रि०) सिक्कों का पारखी, परीक्षक ।

नाथितम् [नाथ्+क्त] माँग, प्रार्थना ।

नार्दयमान (वि०) [नर्द्+यङ्+शानच्] उच्च स्वर से शब्द करने वाला ।

नाना (अ०) [न+नाञ्] 1 भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न रीति से, विविध प्रकार से 2. स्पष्ट रूप से, पृथक् रूप से 3 बिना 4 (समस्त विशेषणों में प्रयुक्त) बहुत से । सम० - आश्रय (वि०) जिसके बहुत से आवास या घर हैं,—गोत्र (वि०) विविध गोत्रों से सम्बन्ध रखने वाला, —धर्मन् (वि०) भिन्न रीति-रिवाजों वाला,—भाव (वि०) भिन्न प्रकृति वाला ।

नानात्वम् (नपुं०) विविधता की स्थिति ।

नान्दन (वि०) [नन्दन+अण्] सुखद, हर्षप्रद —सैषा विदृतिर्नाम द्वास्तदेतन्नान्दनम् — ऐत० उप० ३।१२ ।

नाभस्वत (वि०) [नभस्वत्+अण्] वायु से संबन्ध रखने वाला ।

नाभागः (पुं०) एक राजा का नाम, वैवस्वत मनु का पुत्र, अम्बरीष का पिता ।

नाभिः,-भी (पुं० स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तादेशः] 1. सुंडी 2 सुंडी के समान कोई भी गहराई —पुं० 1 पहिए की नाह 2 केन्द्र, मुख्य बिन्दु 3 क्षेत्र । सम० - गन्धः कस्तूरी की बू या गन्ध,—वर्षम् जम्बू द्वीप के नौ वर्षों में से एक ।

नाभोगः [न+आभोग] 1 देवता 2 साँप नाभोगभोग्यो हरिणाधिरूढ सोऽयं गरुत्मानिव राजतीन्दुः रा० च० ६।८४ ।

नामावशेष (वि०) [ब० स०] जिसका केवल नाम ही रह गया है, मृतक ।

नायकायते (ना० धा० आ०) 1 नायक का अभिनय करना 2 मोतियों के हार में केन्द्रीय रत्न या मणि का काम देना ।

नाराच [नरान् आचामति —आ+चम्+ड, स्वार्थे अण्, नारम् आचामति वा] 1 पूर्वदिशा को जाने वाली सड़क 2 मूर्ति को उसके स्थान पर जमाने के लिए धातु की बनी चटखनी या कील ।

नारायणास्त्रम् (नपुं०) एक अस्त्र का नाम ।

नारायणसूक्तम् (नपुं०) ऋग्वेद का पुरुष सूक्त ।

नारीनाथ (वि०) [ब० स०] जिसके स्वामित्व अधिकार किसी स्त्री के पास हैं ।

नारीमणिः (स्त्री०) [ष० त०] स्त्रीरत्न ।

नालायन्त्रम् 1 ताप 2 निगल, नाली ।

नासत्यौ (पुं०, द्वि० व०) [नास्ति असत्यं यस्य, न० ब० नञ् प्रकृतिवद्भाव] दोनों अश्विनीकुमार ।

नासान्तिक (वि०) [नासा+अन्तिक] नाक तक पहुँचने वाला (लकड़ी आदि) ।

नासावेधः (पुं०) [ष० त०] नाक का बींधना, नासिकावेध संस्कार ।

नासिक (पुं०) महाराष्ट्र प्रान्त में स्थित एक पुण्यस्थान ।

नाहलः (पुं०) जातिच्युत समुदाय का व्यक्ति, जातिबहिष्कृत ।

निःक्षत्र (वि०) [ब० स०] क्षत्रिय रहित ।

निःशङ्क (वि०) [ब० स०] निडर, निर्भय संकोचहीन ।

निःशब्द (त्रि०) [ब० स०] शब्द रहित, जहाँ कोलाहल न हो ।

निःशस्त्र (वि०) [ब० स०] शस्त्रहीन, जिसके पास कोई हथियार नहीं ।

निःश्रेयसम् (नपुं०) [निश्चितं श्रेयः नि०] 1 मुक्ति, मोक्ष 2 आनन्द 3 आस्था, विश्वास ।

निःसंशय (वि०) [ब० स०] निःसन्दिग्ध, निश्चित ।

निःसंग (वि०) [ब० स०] 1 अनासक्त 2 मुक्त 3 स्वार्थरहित।
निःसत्त्व (वि०) [ब० स०] 1 असार 2. बलहीन 3 नगण्य।
निःसीमन् (वि०) [ब० स०] सीमा रहित।
निःस्नेह (वि०) [ब० स०] 1 रूखा 2 भावशून्य।
निःस्पन्द (वि०) [ब० स०] निश्चल, गतिहीन।
निःस्पृह (वि०) [ब० स०] 1 इच्छारहित 2 सन्तुष्ट।
निःस्व (वि०) [ब० स०] अर्थहीन, निर्धन।
निःस्वन (वि०) [ब० स०] निःशब्द शब्द रहित।
निःस्वनः (पुं०) [नि + स्वन + अप्] शब्द, ध्वनि।
निकटवर्तिन् (वि०) [निकट + वृत् + णिनि] निकटस्थ, जो पास ही विद्यमान हो।
निकषणः [नि + कष् + ल्युट्] दे० 'निकष' कसौटी।
निकषायित (वि०) [निकष + क्यङ् + णिच् + क्त] जो किसी बात के लिए प्रमाण या कसौटी मान लिया गया हो (उदा०—वैदुष्यनिकषायितेयं सभा)।
निकाशः [नि + काश् + घञ्] 1 प्रकाश 2 रहस्य - निकाशस्तु प्रकाशे स्यात्सदृशे रहसि स्मृत नाना०।
निकृष्टकर्मन् (वि०) [ब० स०] जो निन्द्य कार्यों के करने में व्यस्त हैं।
निक्रन्दित (वि०) [नि + क्रन्द + क्त] जिसने खूब क्रन्दन किया हो शोर मचाया हो (दूषित स्वर से पाठ किया हो)।
निक्षिप्त (वि०) [नि + क्षिप् + क्त] नियुक्त।
निखिलेन (अ०) पूर्णत, सब मिलाकर।
निगदः [नि + गद् + घञ्] सस्वर पाठ।
निगमः [नि + गम् + अच्] 1 प्रतिज्ञा स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिककर्तुमवप्लुतो भाग० 1।9।37 2 प्राप्ति—पन्था मन्निगमः स्मृतः भाग० 11। 19।42।
निगमसूत्रम् (नपुं०) वह सूत्र जो किसी अनुमान वाक्य का उपसंहार करता है।
निगमात् (अ०) सारांशतः मधुरमेव भाग० 10।??।3?।
निगुप् (भ्वा० पर०) छिपाना गुप्त रखना।
निगूढचारिन् (वि०) [ब० स०] अज्ञात होकर घूमने वाला।
निगोवाहक. (पुं०) विष्णु।
निग्रहः [नि + ग्रह् + अच्] अतिक्रमण -निग्रहाद्धर्मशास्त्राणां महा० 12।24।13।
निग्रहणम् [नि + ग्रह् + ल्युट्] युद्ध लड़ाई।
निघातिन् (वि०) [नि + हन् + णिनि] नाशकर्ता जो नष्ट करता है।
निचित [नि + चि + क्त] बहुकाष्ठ मलावरुद्ध।
निचुलः [नि + चुल् + क] 1 कमल 2 नारियल का पेड़ — नाना०।
निचुलम् (चुरा० उभ०) बक्स में बन्द करना, ढकना निजा बोला वाचो निचुलयति चोलेन नितराम् —सौन्दर्य०।
नितम्बः [नितान्तं तम्यते कामुकैः - नि + तम् + अच्] 1 कूल्हा 2 वीणा का स्पन्दशील फलक 3 ढलान 4 चट्टान।
नितान्तकठिन (वि०) बहुत कठोर, अत्यन्त कड़ा।
नित्य (वि०) [नियमेन भव नि + त्यप्] 1 अनवरत, लगातार, शाश्वत 2 अनश्वर 3 नियमित, स्थिर 4 आवश्यक 5 सामान्य (विप० नैमित्तिक)। सम० अनुबद्ध (वि०) सदैव सबद्ध, - अनुवादः तथ्य की मनोक्ति—मी० सू० 4।1।45, अभियुक्त (वि०) लगातार किसी न किसी कार्य में लीन, कालम् (अ०) सदैव, हर समय,—जात (वि०) लगातार उत्पन्न अथ चैनं नित्यजातं भग० 2।26, बुद्धि (वि०) सभी बातों को सतत या निरन्तर मानने वाला, भाव शाश्वतता, नैरन्तर्य, सम यह विचार कि सभी वस्तुएँ सदैव एक समान रहती हैं।
निदाघ [नि + दह् + घञ् कुत्वम्] आन्तरिक गर्मी। सम० धामन् (पुं०) सूर्य निदाघधामानमिवाधिदीधितिम् शि० 1।24।
निदर्शित (वि०) [नि + दृश् + णिच् + क्त] प्रदर्शित, विदित, प्रमाणित।
निदर्शिन् (वि०) [नि + दृश् + णिच् + णिनि] पथप्रदर्शक, उदाहरण प्रस्तुत करने वाला सतां बुद्धिं पुरस्कृत्य सर्वलोकनिदर्शिनीम् रा० 2।108।18।
निद्रार्दित (वि०) [ब० स०] 'अनिद्रा' रोग से ग्रस्त।
निधनम् (नपुं०) [निवृत्त धनं यस्मात् - ब० स०] जन्मकुण्डली में लग्न से छटी राशि।
निधानम् [नि + धा + ल्युट्] धरोहर।
निन्दनोपमा (स्त्री०) निन्दोपलक्षित उपमा, ऐसी तुलना जिसमें निन्दा प्रकट हो।
निपत् (भ्वा० पर०) विफल होना, अपरिपक्व अवस्था में ही नष्ट हो जाना (जैसे गर्भपात)।
निपाकः [नि + पच् + घञ्] 1 पसीना 2 (कच्चे फल को) पकाना।
निपातः [नि + पत् + घञ्] मिलकर आना, समागम यामामेव निपातेन कललं नाम जायते -महा० 12।320।115।
निफेनम् (नपुं०) अफीम।
निबर्हित (वि०) [नि + बर्ह् + क्त] नष्ट किया गया, दूर किया गया कुलं कुलायोऽस्मि निबर्हिताहृता—कि० 1।29।
निबिडित (वि०) [नि + बि (वि) ड् + क्त] 1. गुत्थमगुत्था,

भारी बनाया हुआ, भीड़ से युक्त, मोटा, 2. दबाकर सटाया हुआ, भींचा हुआ - लङ्कागतुर्निचिकित—वा० रा० ५।१९ ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1. भरा हुआ 2. गुप्त 3. मूक 4 विनीत 5 दृढ़ 6. एकाकी 7. निष्क्रिय, आलसी । सम०—आचार (वि०) दृढ़ आचरण का व्यक्ति,—स्थित (वि०) गुप्तरूप से विद्यमान ।

निम (पु०) लकड़ी की खूटी, मेख ।

निमित (वि०) [नि+मा+क्त] 1. दे० 'निर्मित' उत्पादित 2. मापा गया ।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1 ज्ञान का साधन—तस्य निमित्तपरीष्टिः—मी० सू० १।१।३ 2 कार्य, उत्सव —एतान्येव निमित्तानि मुनीनामूर्ध्वरेतसाम्—महा० १२।६१।६ । सम० ज्ञः (पु०) शकुन के आधार पर भविष्यवाणी करने वाला ज्योतिषी,—नैमित्तिकम् कार्य और कारण, मात्रम् केवल उपकरण स्वरूप कारण—भाग० ११।१३ ।

निमेषान्तरम् [ष० त०] एक क्षण का अन्तराल ।

निम्न (वि०) [नि+म्ना+क] 1 गहरा, नीचा 2. अधम कार्य—निम्नेष्वीहां करिष्यन्ति महा० ३।१९०।२६ । सम० अभिमुख (वि०) निम्नतर स्तर की ओर बहने वाला कु० ५।५ ।

निम्नित (वि०) [निम्न+इतच्] गहरा, डूबा हुआ ।

निम्बपञ्चकम् (नपुं०) नीम वृक्ष से उत्पन्न पाँच पदार्थ —पत्ता, फूल, त्वचा, फल और जड़ ।

निम्बूकपञ्चकम् (नपुं०) नींबू के पाँच भेद (सन्तरा, मुसम्मी, नारंगी, खट्टा या गलगल, कागजी नींबू) ।

नियत (वि०) [नि+यम्+क्त] 1 रोका हुआ, बांधा हुआ 2 आश्रित 3 (व्या० में) अनुदात्त सहित उच्चरित ।

नियमः [नि+यम्+अप्] 1 गुप्त रखना—मन्त्रस्य नियमं कुर्यात् महा० ५।१४९।२० 2 प्रयत्न महा० २।८६।२० । सम० हेतुः विनियमन का कारण, नियमित रखने का कारण ।

नियुक्त (वि०) [नि+युज्+क्त] उपयोग में लाया गया, काम पर लगाया गया ।

नियोक्तव्य (वि०) [नि+युज्+तव्यत्] 1 जिसको कोई कार्य सौंपा जाय 2 नियुक्त किये जाने योग्य 3 जिस पर अभियोग चलाया जाय—मनु० ८।१८९ ।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1 अपरिवर्त्य नियम—न चैव नियोगो बुद्धिपर्व नित्य समास इति मी० सू० १०।६।५ पर शा० भा० 2 सही यथार्थ—कि० १०।१९ ।

निरंश (क) (वि०) [निर्+अंश (क)] जो राशि बिना कुछ बचे रहे, पूरी पूरी बँट सके ।

निरवलम्ब (वि०) [ब० स०] 1. असहाय 2. स्वतंत्र

निरनुग्रह (वि०) [ब० स०] निर्दय, कृपाशून्य, अकृपालु ।

निरनुनासिक (वि०) जो वर्ण नाक से निरपेक्ष हो, जिसमें नाक की सहायता की आवश्यकता न हो ।

निरनुनासिकम् (नपुं०) नारायण भट्ट की एक रचना जिसमें कोई अनुनासिक वर्ण प्रयुक्त नहीं हुआ ।

निरन्नक (वि०) [ब० स०] भूखा, निराहार ।

निरपवाद (वि०) [ब० स०] 1. कलङ्करहित 2. जिसमें कोई अपवाद न हो ।

निरलंकृतिः (स्त्री०) (काव्य में) अलंकार का अभाव, सरलता ।

निरवसाद (वि०) [ब० स०] प्रसन्न, खुश ।

निरायति (वि०) [ब० स०] जिसका अन्त दूर नहीं है नियता लघुता निरायतेः कि० २।१४ ।

निरारम्भ (वि०) [ब० स०] सब प्रकार का कार्य करने से मुक्त (अच्छी भावना से), निष्क्रिय ।

निरावर्ण (वि०) [ब० स०] स्फुट, स्पष्ट, प्रकट ।

निरुपभोग (वि०) [ब० स०] उपभोग शून्य ।

निरुपाधिक (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई शर्त न हो, निरपेक्ष ।

निर्दाक्षिण्य (वि०) [ब० स०] जिसमें शिष्टता या शालीनता न हो, अभद्र ।

निर्धौत (वि०) [निर्+धाव्+क्त] धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ—निर्धौतदानामलगण्डभित्तिः—रघु० २।४३ ।

निर्नायक (वि०) [ब० स०] जिसका कोई नेता न हो ।

निर्बीज (वि०) [ब० स०] नपुंसक, नामर्द, निःशक्त ।

निर्मन्यु (वि०) [ब० स०] निष्कलंक, निरीह, ।

निर्मान (वि०) [ब० स०] 1 आत्मविश्वास से हीन 2 जिसमें स्वाभिमान न हो ।

निर्लक्ष्य (वि०) [ब० स०] अदृश्य, जो दिखाई न दे ।

निर्लून (वि०) [ब० स०] पूरी तरह कटा हुआ ।

निर्वत्सल (वि०) [ब० स०] स्नेहहीन, जिसमें वात्सल्य का अभाव हो ।

निर्विषङ्ग (वि०) [ब० स०] अनासक्त, उदासीन ।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) निष्पन्नता, निष्पत्ति ।

निर्व्यलीक (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म ।

निर्व्यवधान (वि०) [ब० स०] व्यवधानरहित, मुक्त, अनाच्छादित, खुला (स्थान) ।

निर्व्यवस्थ (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई व्यवस्था न रहे, इधर उधर भटकने वाला, असमन्वयित ।

निर्व्याप्ति (वि०) [ब० स०] जिससे कुछ प्राप्ति न हो ।

निर्व्रीड (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म ।

निरयः [निर्+इ+अच्] दे० 'निलय:'– आयासनिरयोद्गीरो निरयादिव मानुषः—रा० च० २। सम० —वर्त्मन् (नपुं०) भौतिक अस्तित्व—यास्तां गृहे निरयवर्त्मनि वर्ततां वः—भाग० १०।८२।३१।

निरस्तसंख्य (वि०) [ब० स०] अनन्त, असंख्य, अनगिनत।

निराकृत (वि०) [ब० स०] 1. निराकरण किया गया 2. तिरस्कृत।

निरुद्ध (वि०) [नि+रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध 2. भरा पूरा, पूर्ण। सम०--वृत्ति (वि०) कार्य करने में जिसकी गति अवरुद्ध हो गई है बाष्पनिरुद्धवृत्तिकण्ठम्।

निरोधः [नि+रुध्+घञ्] लय, लुप्त जाना।

निरूपक (वि०) [नि+रूप्+ण्वुल्] 1 निरूपण करने वाला, पर्यवेक्षक 2. निश्चय करने वाला, घटक।

निरूपित (वि०) [नि+रूप्+क्त] 1. चिह्नित, अंकित 2. नियुक्त 3. निशाना बनाया गया, इंगित।

निर्ऋतिः (स्त्री०) [निर्+ऋ+क्तिन्] 1. मूल नक्षत्र 2. आठ वसुओं में से एक 3. ग्यारह रुद्रों में से एक।

निर्गलित (वि०) [निर्+गल्+क्त] 1. बहा हुआ 2 घुला हुआ, पिघला हुआ।

निर्णयोपमा (स्त्री०) अनुमान पर आश्रित उपमा—काव्या० २।२७।

निर्णिक्त (वि०) [निर्णिज्+क्त] 1. धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. प्रायश्चित्त किया हुआ। सम० -बाहुवलय (वि०) जिसके कड़े या चूड़ियाँ स्वच्छ करके चमका दी गई हों,—मनस् (वि०) स्वच्छहृदय, निर्मल मन वाला।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] करार, प्रतिज्ञा—महा० १३।२३।७०।

निर्देश्य (वि०) [निर्+दिश्+ण्यत्] 1 संकेत किये जाने के योग्य 2 निश्चित किये जाने योग्य 3 उद्घोष्य 4. जिसमें पवित्रता होनी चाहिए सुरापान ब्रह्महत्या ······अनिर्देश्यानि मन्यन्ते महा० १२।१६५।२४।

निर्धूननम् [निर्+धूञ्+ल्युट्] दीर्घ निःश्वास, लहरों की भाँति उठना गिरना।

निर्बन्धपृष्ट (वि०) [त० स०] जिससे आग्रह पूर्वक कोई बात पूछी गई है।

निर्बन्धिन् (वि०) [निर्बन्ध+इनि] आग्रह करने वाला।

निर्भर्त्सनम् [निर्+भर्त्स्+ल्युट्] धमकी देना, अपशब्द कहना, झिड़की देना।

निर्माथिन् (वि०) [निर्माथ+इनि] कुचलने वाला, बिलोने वाला, पीस डालने वाला।

निर्याः [निर्+या+अङ्] मूल्य, भाव, दाम।

निर्माणम् [निर्+मा+ल्युट्] बनाना, बना होना—पूर्वनिर्माणबद्धा हि कालस्य गतिरीदृशी—रा० ७।१६०।२।

निर्यत् (वि०) [निर्+या+शतृ] बाहर जाता हुआ, निकलता हुआ।

निर्याणम् [निर्+या+ल्युट्] नगर से बाहर जाने का मार्ग।

निर्वाणिक (वि०) [निर्वाण+ठन्] मोक्ष की ओर ले जाने वाला।

निर्वासकः [निर्+वस्+णिच्+ण्वुल्] वधक।

निर्योगः [निर्+युज्+घञ्] 1. पूरा करना, सम्पन्न करना, बनाव शृंगार करना—निर्योगात् सुवर्णालङ्कारात् सर्वेभ्योऽर्धं प्रदास्ये—प्रति० १।२१ 2. गाय को खूंटे से बांधने का रस्सा—भाग० १०।२१।१९।

निर्लोड्य (अ०) [निर्+लुड्+ल्यप्] सोचविचार कर।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] स्तुति—महा० १।१०९।२३।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] प्रदान करना, अर्पण करना।

निर्वापित (वि०) [निर्+वप्+णिच्+क्त] बुझाया हुआ।

निर्वासित (वि०) [निर्+वस्+णिच्+क्त] बहिष्कृत, निष्कासित।

निर्वास्य (वि०) [निर्+वस्+णिच्+यत्] बहिष्कार्य, देश से निकालने के योग्य।

निर्विश् (तुदा० पर०) 1. घर में बस जाना 2. प्रविष्ट होना 3 आगे जाना 4. खूब परितोष करना—निर्वेष्टव्य मया तत्र महा० ५।१४६।१९ 5. किसी के साथ रहना—शुश्रूषन्ते प्रावृषि निर्विशन्ताम्—भाग० १।५।२३।

निर्विष्ट (वि०) [निर्+विश्+क्त] 1. घुसा हुआ, चिपका रहा, जुड़ा रहा 2. शिविर में वर्तमान, डेरा डाले हुए।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना—बालकनिर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमुलूखलम्—भाग० १०।१०।२६ 2. बदला लेना भाग० १०।४७।१९।

निर्वारित (वि०) [निर्+वृ+णिच्+क्त] हटाया हुआ, रोका हुआ।

निर्वृत्तमात्र (वि०) जो अभी-अभी समाप्त किया हो।

निर्व्यञ्जक (वि०) [निर्+व्यञ्ज्+ण्वुल्] द्योतित करता हुआ, दिग्दर्शन कराता हुआ—स्नेहस्य निर्व्यञ्जकः—महावी० ५।१२।

निर्विद्ध (वि०) [निर्+व्यध्+क्त] 1. घायल 2. वियुक्त।

निर्वेधः [निर्+व्यध्+घञ्] 1. अन्दर घुस जाना 2. अन्तर्दृष्टि ।

निर्व्युषित (वि०) [निर्+वि+वस्+क्त] व्यय किया गया, बीत गया, अतीत ।

निर्व्यूढ (वि०) [निर्वि+ऊह्+क्त] 1 समरव्यूह में व्यवस्थित 2 सफल 3 बाहर धकेला गया ।

निर्व्यूढिः [निर्वि+ऊह्+क्तिन्] उच्चतम बिन्दु या अंश ।

निर्व्यूहः [निर्वि+ऊह्+अच्] खूंटी–महा० ३।१६०।३९ ।

निर्हरणम् [निर्+हृ+ल्युट्] विषहर, विषनाशक ।

निर्हारः [निर्+हृ+घञ्] घटाना ।

निर्हारिन् (वि०) [निर्हार+इनि] 1 फैलाने वाला 2. एक प्रकार की सुगन्ध जो और सब सुगन्धों से बढ़िया हो ।

निर्ह्रासः [निर्+ह्रस्+घञ्] छोटा करना, संकुचित करना ।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] घर, आवास, निवास ।

निलायनम् [नि+ली+णिच्+ल्युट्] आँखमिचौनी का खेल खेलना—भाग० १०।११।५९ ।

निवहः [नि+वह्+अच्] हत्या, वध ।

निवातकवचाः (पुं०) (ब० व०) एक जनजाति का नाम ।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1 बीज, अन्न के दाने 2. श्राद्ध के अवसर पर पितृतर्पण 3 उपहार । सम० —अञ्जलिः तर्पण के लिए दोनों हाथों की अञ्जलि में लिया हुआ पानी,—अन्नम् यज्ञीय आहार ।

निवारकः [नि+वृ+णिच्+ण्वुल्] प्रतिरक्षक ।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1 घर, मकान, आवास । सम०—भूमिः रहने का स्थान, -रचना भवन, मन्दिर, —स्थानम् रहने की जगह ।

निविध् (तुदा० आ०) 1 फेंकना, बन्दूक का निशाना बनाना 2. (मन को) प्रभावित करना ।

निविद्ध (वि०) [नि+विध्+क्त] कुष्ट, आघर्षित (वेध) ।

निवृत् (भ्वा० आ०) 1 वापिस आना 2. भाग जाना 3 बच निकलना 4 समाप्त होना 5 सम्पन्न होना, प्रेर० बाल छोटे कराना ।

निवृत्त (वि०) [नि+वृत्+क्त] जमा हुआ, व्यवस्थित, विनियमित (जैसे कि सूर्य) । सम०—यौवन (वि०) जिसे फिर जवानी दी गई हो, जिसकी जवानी लौट आई हो ।

निशारत्नम् [ष० त०] 1. चन्द्रमा 2. कपूर ।

निशिचारः [सप्तम्यलुक् समास] निशाचर, राक्षस, पिशाच ।

निःशेषः [निः+शि+घञ्] समाप्ति, खात्मा ।

निश्चारकम् [निः+चर्+ण्वुल्] 1. पुरीषोत्सर्ग 2. वायु, हवा 3. धृष्टता, दुराग्रह, हठ ।

निश्चितार्थ (वि०) [ब० स०] 1. जिसने अपना मन पक्का कर लिया है 2. यथार्थ न्याय करने वाला ।

निश्रयणः [नि+श्रि+आनच्] सान, सिल्ली, सोपान-प्रस्तर ।

निषादस्थपतिन्यायः (पुं०) एक नियम जिसके आधार पर कर्मधारय और तत्पुरुष दोनों समासों की प्राप्ति होने पर, पूर्ववर्ती अर्थात् कर्मधारय ही बलीयान् होता है ।

निषेकः [नि+सिच्+घञ्] आसुत, अक, अर्क ।

निषेक्तृ (पुं०) [नि+सिच्+तृच्] पिता, जनक ।

निषेधिन् (वि०) [निषेध+इनि] 1 प्रत्याख्यान करने वाला, वर्जन करने वाला 2 आगे बढ़ने वाला ।

निष्कम् [निष्क्+अच्] विदाई, प्रस्थान, रवानगी ।

निष्कल (वि०) [निष्कल्+अच्] (संगीत० में) अनुच्चरित या अव्यक्त (वाणी) ।

निष्कालनम् [निष्कल्+णिच्+ल्युट्] दूर भगाना, हटाना ।

निष्कृतिः [नि+कृ+क्तिन्] भर्त्सना, झिड़की —निभया स्वभावचारिण्या निष्कृतिः स्यादतुषिका—महा० १२। ३४।३० ।

निष्कर्षम् [नि+कृष्+अच्] टैक्स लेने के लिए प्रजा का उत्पीडन ।

निष्क्रान्त (वि०) [नि+क्रम्+क्त] 1 बाहर निकला हुआ 2 आगे आया हुआ—अर्धनिष्क्रान्त एवासौ—कु० म० ३।३४ ।

निष्टनः [नि+तनु+अप्] कराहना, आह भरना—रा० ७।२१।१२ ।

निष्ठापित (वि०) [नि+स्था+णिच्+क्त] सम्पन्न, पूरा किया गया—माल० ६ ।

निष्ठानित (वि०) [निष्ठान+इतच्] मिर्च मसालों के छौंक से युक्त, अचार चटनी आदि सहित ।

निष्ठ्यूत (वि०) [नि+ष्ठिव्+क्त] जिसके ऊपर थूका गया हो भाग० ११।२२।५९ ।

निष्पातः [नि+पत्+घञ्] धड़कन, कम्पन ।

निष्पन्द (वि०) [नि+स्पन्द्+अच्] गतिहीन, अचल, स्थिर, —न्दः (पुं०) निश्चलता का कथन—आर्योऽत्र देवि निष्पन्दः—रा० ३।५५।३५ ।

निष्पूर्तम् [निः+पृ+क्त] धर्मशाला, धर्मार्थ बना विश्रामभवन ।

निष्कोश (वि०) [ब० स०] बिना म्यान का ।

निष्प्रपञ्च (वि०) [ब० स०] बिना किसी चालाकी के, ईमानदार, सच्चा ।

निष्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] अच्छी-भांति पकाया हुआ ।

निरुपदेश (वि०) [ब० स०] जिसे कोई उपदेश न मिला हो, अज्ञान ।

निष्पुराण (वि०) [ब० स०] अभूतपूर्व, नया, नूतन ।

निष्प्रतिग्रह (वि०) [ब० स०] जो दान ग्रहण नहीं करता है, उपहार नहीं लेता है।
निष्प्रत्याश (वि०) [ब० स०] निराश, हताश।
निष्प्रवाणि (वि०) [ब० स०] जो खड्डी से अभी आया है, नया (कपड़ा)।
निःशर्कर (वि०) [ब० स०] जिसमें कंकड़ न हों, रोड़े आदियों से मुक्त।
निःसह (वि०) [ब० स०] 1. क्लान्त 2. असहिष्णु।
निःसहाय (वि०) [ब० स०] असहाय, साहाय्यहीन।
निःस्वन (वि०) [ब० स०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।
निःस्पर्श (वि०) [ब० स०] कठोर, कड़ा, रूखा।
निसर्गनिपुण (वि०) [ष० त०] स्वभावतः चतुर।
निसृष्ट (वि०) [नि+सृज्+क्त] सुलगाया हुआ (जैसे आग)।
निस्त्रैगुण्यम् [ब० स०] गुणों का न होना, दोषराहित्य, दोषों का अभाव।
निस्तोदः [नि+तुद्+घञ्] चुभ जाना, चुभ जाना, डंक मारना।
निहित (वि०) [नि+धा+क्त] (सेना की भाँति) कैम्प लगाए हुए, शिविरस्थ। सम०—दण्ड (वि०) कोमल हृदय, कृपालु।
निह्नवः [नि+ह्नु+अप्] 1. मुकर जाना 2 वचन-विरोध, विरोधोक्ति।
नीचानुवर्तिन् (वि०) अधम मार्ग का अनुसरण करने वाला।
नीतिशतकम् (नपुं०) भर्तृहरिकृत नीतिविषयक सौ श्लोकों का संग्रह।
नीरचर (वि०) [स० स०] जल में रहने वाला, जल में घूमने वाला।
नीरजूरी (स्त्री०) हल्दी।
नीराजित (वि०) [निर्+राज्+क्त] देवतार्चन के दीप तथा ज्योति से सुसज्जित, प्रकाशित।
नीलपिटः (पुं०) राजकीय प्रज्ञप्तियों तथा समाचारों का संग्रह।
नीलस्नेहः (पुं०) अतिशय प्रेम।
नीविः,-वी (स्त्री०) [नि+व्ये+इञ्, य लोप, पूर्वस्य दीर्घः] कारागार—नीवी स्वायुबन्धनागारे धने स्त्री-वस्त्रबन्धने नाना०।
नुतिः [नुद्+क्तिन्] हटाना, दूर करना।
नूनभावः (पुं०) सम्भाव्यता, प्रायिकता।
नूनभावम् (अ०) कदाचित्, सम्भवतः।
नृ [नी+ऋन् डिच्च] (पुं० कर्तृ० ए० व० ना) 1. मनुष्य, व्यक्ति (चाहे पुरुष हो या स्त्री) 2. मनुष्य जाति 3. पुंल्लिङ्ग शब्द 4. मोहरा। सम०—कट: मनुष्योचित कार्य, वीर्य,—चक्षस् (वि०) मनुष्यकदी —धाम्यम् बड़ा भवन, बड़ा कमरा,—वाहनम् पालकी।
नृत्तम्, नृत्यम् (नपुं०) [नृत्+क्त, क्यप् वा] नाच, अभिनय। सम०—हस्तः नाचते समय हाथों की स्थिति।
नेती (स्त्री०) योग की एक क्रिया—नाक में डोरी डाल कर मुँह में से निकालना।
नेत्रम् [नी+ष्ट्रन्] 1 मटमल—नाना० 2. वल्कल, वृक्ष की छाल—नाना० 3. आँख। सम०—कार्मणम् आँखों के लिए एक जादू, —चपल (वि०) जिसकी आँखें अधिक झपकती हों, आँखें झपकाने वाला,—पाक: आँखों की सूजन,—बन्ध: 1. आँख मिचौनी खेलना 2 आँखों में धूल झोंकना, —श्रवस् साँप।
नेत्र्यम् (नपुं०) आँखों के लिए उपयुक्त।
नेदीयोमरण (वि०) [ब० स०] जिसकी मृत्यु निकट ही है, मरणासन्न—राज० ४।३१।
नेदिवस् (वि०) शब्दायमान, कोलाहल करने वाला।
नेपथ्यगृहम् (नपुं०) शृंगार भवन, प्रसाधनकक्ष।
नेमिकुम्भारम् (नपुं०) पहिए का घेरा और नाभि।
नेय (वि०) [नी+यत्] 1 ले जाये जाने के योग्य 2. शिक्षा दिये जाने के योग्य—अनेय शिक्षयितुम-योग्य.—महा० ५।७४।४ पर टीका।
नैककोटिसार: (पुं०) करोड़पति, कोट्यधीश।
नैगम: [निगम+अण्] यास्ककृत निरुक्त का एक काण्ड। सम०—काण्ड: दे० 'नैगम'।
नैद्र (वि०) [निद्रा+अण्] 1. उनींदा, निद्रालु 2. बन्द (फूल जिसकी पंखड़ी अभी बन्द हो)।
नैमित्तिक (वि०) [निमित्त+ठक्] 1. किसी कारण से संबद्ध 2. असाधारण। सम०—कर्मन् (नपुं०) किसी विशेष कारण से होने वाला संस्कार (विप० नित्य-कर्म), —लय: ब्रह्मा में लीन हो जाना, ब्राह्मलय (यह लय चार हजार वर्ष के उपरान्त होता है)।
नैर्ऋत (वि०) [निर्ऋति+अण्] दक्षिण-पश्चिम दिशाओं से संबंध रखने वाला।
नैश्चिन्त्यम् [निश्चिन्त+ष्यञ्] चिन्ता से मुक्त होना।
नैष्कर्षिक (वि०) [निष्कर्ष+ठञ्] लकड़ी काटने वाला।
नैष्काम्यम् [निष्काम+ष्यञ्] भौतिक सुखों के प्रति उदासीनता (बृह०)।
नैष्ठिक (वि०) [निष्ठा+ठक्] 1. अन्तिम, उपसंहार परक 2. निश्चित 3. उच्चतम, पूर्ण 4. आजन्म, अनिवार्य—महा० १२।६१।२३। सम०—ब्रह्मचारिन् (वि०) जीवनपर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाला।
नैहार: [नीहार+अण्] कुहरा या धुंध से संबन्ध रखने वाला।
नौसेतु: [ष० त०] किश्तियों से बनाया गया पुल।

न्यन्तः [नि+अन्त] 1. सामीप्य, संनिकटता 2. पश्चिमी पार्श्व—रा० २।६८।१२।

न्यवग्रहः [नि+अव+ग्रह्+अप्] समस्त शब्द के प्रथम खण्ड का अन्तिम स्वर जिस पर स्वराङ्कन नहीं किया गया है।

न्यस्त (वि०) [नि+अस्+क्त] 1. धारण किया हुआ, वस्त्र पहने हुए 2. (स्वर की भांति) मन्दस्वर से युक्त। सम०-न्यस्तव्य (वि०) रख दिए जाने के योग्य, स्थिर किये जाने योग्य,—चिह्न (वि०) बाह्य चिह्न से मुक्त।

न्यासः [नि+अस्+घञ्] लिखित पाठ्य या साहित्यिक मूल पाठ।

न्यायः [नि+इ+घञ्] 1. प्रणाली, रीति, नियम, व्यवस्था 2. औचित्य 3. विधि 4. धर्म 5. न्यायालय द्वारा उद्घोषित निर्णय 6. नीति 7. अच्छा प्रशासन 8. सादृश्य 9. विश्वव्यापी नियम। सम०—आगत (वि०) ईमानदारी से प्राप्त, —आभास: मिथ्यातर्क जिसमें सत्य की झलक आती हो, एक रूपता का आभास, —उपेत (वि०) न्यायानुमत, न्याय्य, अनुमति-प्राप्त, सही ढंग से माना हुआ,—निर्वपण (वि०) यथार्थ न्याय करने वाला,—विद्या,-शास्त्रम् तर्कविद्या, तर्कशास्त्र,—संबद्ध (वि०) युक्तियुक्त, तर्कसंगत।

न्यूनपञ्चाशद्गुणः (पुं०) ऐसा मूर्ख व्यक्ति जिसमें मानवता के गुण पचास प्रतिशत से भी कम हों।

न्यूनता (स्त्री०) 1 कमी, हीनता 2. घटियापन, अधूरापन।

प

पंस्,-श् (भ्वा० चुरा० पर०) नष्ट करना।

पक्तिः [पच्+क्तिन्] पवित्रीकरण,—शरीरपक्तिः कर्माणि—महा० १२।२७०।३८।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1. पका हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ 2. पूर्णविकसित। सम०—कषाय (वि०) जिसके मनोवेग और विषय वासनाएँ शान्त हो गई हैं,—गात्र (वि०) पके गात वाला, दुर्बल शरीर, क्षीणकाय।

पङ्क्तिः [पञ्च्+क्तिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. कतार, श्रेणी। सम०—क्रमः आनुपूर्व्य, परम्परा, क्रमिक अनुक्रमण।

पङ्क्तिशः (अ०) पंक्तिवार, कतारों में।

पङ्ग्वासरः (पुं०) शनिवार।

पक्षः [पक्ष्+अच्] (वेद०) सूर्य, ऋ० १।५३।१६ पर सायण०। सम०—[illegible] तर्कशास्त्र,—निक्षेपः एक पक्ष का ही विचार करना, किसी का पक्षपात करना, —भेदः किसी तर्क के दोनों पहलुओं में विवेक करना, —हतः पक्षाघात, शरीर के एक पक्ष में लकवा, —वायुः,—वातः पक्षाघात, अर्धांग में फ़ालिज, —व्यजनः पंखा।

पक्षितीर्थम् (नपुं०) दक्षिण भारत में एक पुण्य तीर्थ।

पक्ष्मन् [पक्ष्+मनिन्] 1. [illegible] विहस्य पक्ष्माणि मुक्तावलकृतानि—महा० ३।२६८।६ 2. (हरिण के) बाल—निवर्तविश्लेषकलकूलकमपक्ष्मणा—शि० १।८।

पक्ष्मलाक्षी (स्त्री०) [पक्ष्मल+अक्ष्+षिच्] जिस स्त्री की पलकें लम्बी हों।

पचमानक (वि०) [पच्+शानच्, स्वार्थे कन्] अपना भोजन स्वयं पकाने वाला।

पञ्चालिका (स्त्री०) हल का एक भाग।

पञ्चन् (सं० वि०—सर्वदा ब० व०) [पञ्च्+कनिन्] (समास में 'पञ्चन्' के अन्तिम 'न्' का लोप हो जाता है) पाँच। सम० आननः,—आस्यः 1 सिंह 2 किसी भी एक विषय में अन्यतम जैसे कि 'वैद्य पञ्चानन', आयतनम्,—आयतनी पञ्च देवताओं (सूर्य, अम्बिका, विष्णु गणपति और शङ्कर) का समूह जो दैनिक पूजा में सम्मिलित हैं,—उपचारः पूजा के पाँच पदार्थ (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य),—कृत्यम् दिव्य शक्तियों के पाँच कार्य-सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और अनुग्रह,—चामरम् एक छन्द का नाम,—धारणक पाँचों तत्त्वों की सहायता से स्थिर या जीवित,—पादिका शंकर के ब्रह्म सूत्रभाष्य पर पद्मपादाचार्य रचित टीका,—रात्रम् (नपुं०) 1. भासकृत एक नाटक का नाम, दर्शन शास्त्र पर नारद द्वारा रचित एक ग्रंथ,—शीलम् सामाजिक आचरण के पाँच नियम जिन का प्रचार बुद्ध ने किया था,—शुभम् उत्तरायण, शुक्लपक्ष, दिन, हरिवासर और सिद्ध योग का संयोग,—सिद्धान्ती (स्त्री०) ज्योतिष के पाँच सिद्धान्त।

पञ्चम (वि०) [पञ्चन्+डट्+मट्] पाँचवाँ। सम० —आस्यः कोयल,—स्वरम् संगीत के स्वर का नाम।

पञ्जिका (स्त्री०) रजिस्टर या अभिलेख पुस्तिका।

पञ्चीकरणम् [पञ्च+च्वि+कृ+ल्युट्] पाँचों तत्त्वों का मेल जिससे फिर नाना प्रकार के पदार्थों का निर्माण होता है।

पटः-टम् [पट्+क] कपड़ा, वस्त्र। सम० अञ्चलः वस्त्र की गोट, झालर,—उत्तरीयम् चुन्नी, चादर, ओढ़ने का वस्त्र, —वाद्यम् मजीरा, करताल, झांझ, —वासकः सुगन्धित चूर्ण।

पटलः,—लम् [पट्+कलच्, स्वार्थे कन् च] 1 पर्दा, घूंघट 2 पैकट।

पटलिका (स्त्री०) राशि, समुच्चय जैसा कि 'धूलिपटलिका' में।

पटहवेला [ष० त०] वह समय जब कि ढोल बजाया जाता है।

पटुकरण (वि०) [ब० स०] जिसके अंग स्वस्थ हैं —सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः —मेघ० ५।

पट्ट,—ट्टम् [पट्+क्त, इडभाव] 1 (लिखने के लिए) तख्ती 2. राजकीय प्रशस्ति 3 रेशम। सम० अंशुकः रेशमी वस्त्र, —बन्ध, —बन्धनम् सिर पर पगड़ी बांधना, या मुकुट बांधना।

पट्टकिल [पट्ट+कन्+इलच्] एक भूखण्ड को किराये पर जोतने वाला, पट्टेदार।

पणः [पण्+अप्] 1. पासे से खेलना, दांव लगाकर खेलना 2 दांव लगा कर, या होड़ बद कर खेलना 3. दांव पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त 5. पैसा। सम० —अर्थ लाभ ग्रहण करना,—क्रिया 1 दांव पर रखना 2. संघर्ष करना, मुकाबला करना।

पण्य (वि०) [पण्+यत्] 1 बेचने के योग्य, विक्रयार्थ पदार्थ 2. व्यापार, वाणिज्य 3. मूल्य। सम० —जनः व्यापारी,—दासी भाड़े की सेविका, —परिणीता रखैल स्त्री,—संस्था बर्तनों की दुकान।

पणफरम् (नपुं०) जन्मकुंडली में लग्न से दूसरा, आठवाँ, पाँचवाँ और ग्यारहवाँ स्थान।

पण्डिमा (स्त्री) विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता।

पण्डु:,—क: (पुं०) हीजड़ा, क्लीब।

पतङ्गः [पतन् गच्छतीति गम्+ड नि०] 1. घोड़ा 2. सूर्य 3 गेंद 4. पारा 5 टिड्डा। सम० शाव पक्षी का बच्चा।

पतङ्गिका [पतङ्ग+कन्+टाप्, इत्वम्] (स्त्री० 1. धनुष की डोरी 2. छोटा पक्षी 3. मधुमक्खिका।

पतत्प्रकर्ष (वि०) 1. जो तर्कसंगत न हो 2 काव्य सौन्दर्य से रहित।

पताकः [पत्+आक] बाण का निशाना लगाते समय अंगुलियों की विशेष मुद्रा।

पताका [पत्+आक+टाप्] प्रचार, प्रसार—रम्या इति प्राप्तवतीः पताका - शि० ३।५३। सम० —दण्डः ध्वजयष्टिका, झंडे का डंडा।

पताकिन् (वि०) [पताक+इनि] झंडाधारी, पु० रथ।

पतितगर्भा (स्त्री०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

पतितवृत्त (वि०) [ब० स०] लम्पटता का जीवन बिताने वाला, अन्याय।

पत्काषिन् (पु०) पदाति, पैदल सिपाही।

पत्त्यध्यक्षः [पत्ति+अध्यक्ष] पैदल सेना का दलनायक, ब्रिगेडियर, उपचमूपति।

पत्रम् [पत्+ष्ट्रन्] 1. पत्ता (वृक्ष का) 2. (फूल की) पत्ती 3 पत्र, चिट्ठी 4. पक्षी का बाजू 5. तलवार या चाकू का फल। सम०—तण्डुला स्त्री, महिला, —दारकः आरा, लकड़ी आदि चीरने का यन्त्र, —न्यासः बाण में तीर लगाना,—शिरालिका पत्तों की नसें टीपी।

पत्रल (वि०) [पत्र+लच्] पत्तों से समृद्ध।

पथिकः [पथिन्+ष्कन्] मार्ग चलने वाला, यात्री। सम०—जनः एक यात्री, या यात्रियों का समूह।

पथिन् (पु०) [पथ्+इनि] 1 मार्ग 2. यात्रा 3. पराव सम० अदनम् मार्ग में खाने के लिए भोज्य पदार्थ।

पदम् [पद्+अच्] 1. पैर 2 पग 3 पदचिह्न 4. सिक्का अष्टापद पदस्थाने दक्षमुद्रेव लक्ष्यते - महा० १२। २९८।४०। सम०—कमलम् चरण कमल, पैर रूपी कमल, - जालम् शब्द समूह,—रचना 1. साहित्यिक कृति 2. शब्द विन्यास, शक्तिः शब्दों का श्रुतिमधुर मेल।

पदातिलव (वि०) अतिनम्र, अत्यन्त विनीत।

पदीकृ (तना० उभ०) वर्गमूल निकालना।

पद्मम् [पद्+मन्] 1. कमल 2. शरीर की विशेषस्थिति, पद्मासन लगा कर बैठना 3. कुबेर के संग्रह आठ प्रकार के कोषों में से 'पद्मिनी' नामक कोष। सम० प्रिया 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. जरत्कारु की पत्नी मनसा देवी,—मुद्रा तन्त्रशास्त्र का प्रतीक।

पद्यशः (अ०) [पद्य+शस्] अक्षरों की संख्या में।

पद्मिनीकण्टकः (पु०) एक प्रकार का कोढ़।

पद्रः (पु०) [पद्+रक्] ग्राम मार्ग।

पनस्यु (वि०) प्रशंसा के योग्य बात प्रकट करने वाला, यशस्वी।

पपी (पुं०) [पा+ई, द्वित्वं किच्च] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा।

पयोरयः [ष० त०] नदी की धारा।

पर (वि०) [पृ+अप्, अप् वा] 1. दूसरा 2. दूर का 3 इसके बाद का 4. उच्चतर श्रेष्ठ 5. उच्चतम,

प्रमुख 6. विरोधी, 7. प्रतिकूल 8. अन्तिम, —रः (पुं०) 1. दूसरा 2. शत्रु 3. सर्वशक्तिमान्, —रम् (नपुं०) 1. उच्चतम बिन्दु 2. परमात्मा 3. मोक्ष 4 शब्द का गौण अर्थ 5. भावी लोक, इससे परे की दुनिया। सम०—अयनम् (परायणम्) 1. उच्चतम पदार्थ 2 सारांश 3. शुद्ध भक्ति, 4. धार्मिक आश्रम, —अर्थः 1. मुक्ति-महा० १२।२८८।१९ 2. दूसरों के लिए उपयोगी पदार्थ - संघात-परार्थत्वात् —सां० का० १७, —अर्घ्य (वि०) श्रेष्ठ — बसावाटीत् शय्ये परार्घ्यवत्—भट्टि० १।६४, —अवसथशायिन् (वि०) दूसरे के घर सोने वाला, —आश्रित (वि०) दूसरों के द्वारा पालित पोषित, दास, —अहः कोयल, —उपसर्पणम् दूसरों के निकट जाना, —काल (वि०) भावी समय से संबंध रखने वाला, —तर्कुकः भिखारी, भिक्षुक, —तल्पगामिन् (वि०) दूसरे की पत्नी के साथ सोने वाला, —परिग्रहः दूसरों की संपत्ति (जैसे कि 'पत्नी') श० ५, —परिभवः दूसरों से अपमान या तिरस्कार प्राप्त करना, —पाकनिवृत्त (वि०) जो दूसरों के यहाँ भोजन नहीं करता, —पाकरत (वि०) जो अपने पालन पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर करता है, —पाकरुचिः दूसरों के घर पके भोजन की चाह करना।

परथा (अ०) [पर+थाल्] अन्यथा, वरना शील० ५।५।

परम (वि०) [परं परत्वं माति-क] 1. अत्यन्त दूर का, अन्तिम 2. उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम 3. मुख्य, प्रमुख, प्रधान, —मम् (अ०) 1. अच्छा, बहुत अच्छा, हाँ 2. अत्यन्त। सम० अक्षरम् पुनीत अक्षर 'ॐ', —आयुधम् चक्र नामक शस्त्र— रा० ६।५८।१२, —आनन्दः मङ्गलमय जप, —गुह्य (वि०) अत्यन्त रहस्यपुक्त, —पुंस् परमात्मा, परमपुरुष, —प्रवर (वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ, —राजः सर्वोपरि राजा, —समृद्ध (वि०) अत्यन्त सफल, —सम्मत (वि०) परमादरणीय, अत्यन्त माननीय।

परम्परायात (वि०) [त० स०] परम्परा प्राप्त, क्रमानुसार प्राप्त।

परम्परसम्बन्धः (पुं०) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध।

परम्परित (वि०) [परम्परा+इतच्] शृंखला के रूप में, श्रेणीबद्ध।

परमुद्रा (स्त्री०) [त० स०] तंत्रशास्त्र में वर्णित अंगस्थिति।

परस्परविरुद्धक (वि०) आपस में एक दूसरे का विरोध करने वाला।

परस्परव्यावृत्तिः (स्त्री०) आपसी निराकरण, पारस्परिक बहिष्करण।

पराक् दे० 'पराच्'।

पराकृत (वि०) [परा+कृ+क्त] तिरस्कृत, अप्रतिष्ठित, निराकृत।

पराक्षिप्त (वि०) [परा+क्षिप्+क्त] उत्क्षिप्त, बलात् दूर किया गया।

परागः [परा+गम्+ड] सुगन्धित चूर्ण, पुष्परज।

पराच् (वि०) [परा+अञ्च्+क्विन्] अनावृत्त, जो दोहराया न गया हो—अनभ्यासे पराक् शब्दस्य नाचर्थात् मैं० सं० १०।५।४५ पर शा० भा०। सम०—मुख (वि०) बहिर्मुखी, जिसने अपनी आंख बाहरी संसार की ओर लगाई हुई है।

पराचीन (वि०) [पराच्+ख] 1. अनुपयुक्त 2. बाहरी।

पराडीनम् [परा+डी+ल्युट्] पीछे की ओर उड़ना पश्चाद्गति. पराडीनम्—महा० ८।४१।२७।

पराभवः (पुं०) [परा+भू+अप्] ६० वर्ष के संवत्सर चक्र में चालीसवाँ वर्ष।

परासिक्त (वि०) [परा+सिच्+क्त] फेंका हुआ, दूर डाला हुआ।

परासेधः (पुं०) बन्दी बनाना, कारागार में डालना।

परिकल्पित (वि०) [परि+क्लृप्+ल्युट्] विभक्त, बँटा हुआ।

परिक्रमः [परि+क्रम्+घञ्] नदी के प्रवाह का अनुसरण करना। सम०—सहः बकरी।

परिक्रिया (स्त्री०) [प्रा० स०] व्यायाम करना।

परिक्षत (वि०) [परि+क्षण्+क्त] घायल, आहत।

परिक्षिप् (तुदा० पर०) बुरा भला कहना —प्रथयान्यभिमानाच्च परिचिक्षेप राघवम्—रा० २।१०।१२।

परिगाढ (वि०) [परि+गाह्+क्त] बहुत अधिक, अत्यन्त।

परिगुणित (वि०) [परि+गुण्+क्त] 1. जोड़ कर या गुणा करके परिवर्धित 2. पुनरुक्त, पुनरावृत्त।

परिग्रहः [परि+ग्रह्+अप्] 1. शरीर 2. प्रकाशन। सम०—पत्नियों की बड़ी संख्या—परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे—श० ३।

परिग्राह्य (वि०) [परि+ग्रह्+णिच्+ण्यत्] आदर तथा शिष्टता पूर्वक सम्बोधित किये जाने के योग्य।

परिघगुरु (वि०) [ब० स०] लोहे की भाँति भारी।

परिघस्तम्भः (पुं०) चौखट, दरवाजे की बाजू।

परिघ्रा (जुहो० पर०) सर्वत्र चुम्बन करना।

परिचरणकल्पनम् (नपुं०) यज्ञ के अनुष्ठान की विशेष रीति।

परिचारिका [परि+चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] सेविका दासी, सेवा करने वाली नौकरानी।

परिचारितम् [परि+चर्+णिच्+क्त] आमोद, प्रमोद।

परिच्यवनम् [परि+च्यु+ल्युट्] 1 पतित होना, गिर जाना 2 विचलित होना, भटकना।

परिजीर्ण (वि०) [परि+जॄ+क्त] 1 घिसा हुआ, मुरझाया हुआ 2 पचाया हुआ।

परिणामः [परि+नम्+घञ्] 1 परिवर्तन, रूपान्तरण 2 पचाना 3 फल 4 पकना, पूर्णतः विकसित होना 5 अन्त, समाप्ति 6 बुढ़ापा। सम० —शूलम् अपच के कारण उत्पन्न उदर पीड़ा, —मुख (वि०) लगभग समाप्त होने को, —वादः विकासवाद का सांख्य सिद्धान्त।

परिणीतिः (स्त्री०) [परि+नी+क्तिन्] विवाह।

परिणेतव्य (वि०) [परि+नी+तव्यत्] 1 जिसका अभी विवाह होना है 2 जिसका विनिमय होना है।

परितापिन् (वि०) [परिताप+णिनि] तङ्ग करने वाला, उत्पीडक कष्ट देने वाला।

परितुष्टिः [परि+तुष्+क्तिन्] पूर्ण सन्तोष।

परितृषित (वि०) [परि+तृष्+क्त] लालायित, उत्सुक, आतुरतापूर्वक प्रबल इच्छा रखने वाला।

परित्यज् (भ्वा० पर०) किश्ती से उतरना।

परित्याज्य (वि०) [परि+त्यज्+णिच्+यत्] भुलाये जाने योग्य त्याग दिए जाने के योग्य।

परिदीप्त (वि०) [परि+दीप्+क्त] चमकाया गया, ध्यान दिलाया गया।

परिधिः [परि+धा+कि] 1 दीवार बाड़ 2 चन्द्र या सूर्य के चारों ओर वृत्तका आभास 3. क्षितिज, दिशा। सम० —उपान्त (वि०) समुद्र ही जिसकी सीमा है।

परिधारणा (स्त्री०) सन्तोष धैर्य।

परिधीर (वि०) [प्रा० स०] बहुत गहरा (जैसे स्वर या शब्द)।

परिध्वंसः [परि+ध्वंस+घञ्] 1 वर्ण संकरता 2 ग्रहण।

परिनिष्ठित (वि०) [परि+नि+स्था+क्त] 1 नितान्त पूर्ण 2 सम्पन्न परिनिष्ठितकार्यो हि महा० १२। २३८।११।

परिपिच्छम् (नपुं०) मोर का पंख, चन्दा, चन्दे को सजावट की दृष्टि से लगाना—गुञ्जावतंसपरिपिच्छल सन्मुखाय—भाग० १०।१४।१।

परिपृच्छिक (वि०) [परिपृच्छा+ठक्] जिसे कोई॰ 5 मांगने पर ही मिलती है।

परिप्लोषः [परि+प्लुष्+घञ्] आन्तरिक गर्मी।

परिबर्हः [परिब(व)र्ह्+घञ्] सजावट का सामान चंवर आदि राजचिह्न —भाग० ४।३।९।

परिबोधः [परिबुध्+घञ्] तर्क, युक्ति, कारण।

परिभाण्डम् [परिभण्+ड+अच्] गृहस्थ की आवश्यकताएँ।

परिभू (भ्वा० पर०) 1 आगे बढ़ जाना 2 तुष्टि देना, संतृप्त करना—एकमेकेन्द्रियग्रामं शनैः संपरिभावयेत् —महा० १२।१९५।१९।

परिभवनिधानम् [ष० त०] घृणा का पदार्थ, घृणा का पात्र।

परिभावना [परि भू+णिच्+युच्] 1 घृणा 2 (नाटक०) जिज्ञासा को जगाने वाले शब्द।

परिभूत (वि०) [परि भू+क्त] 1 पराजित, हराया हुआ 2 अपमानित।

परिभृष्ट (वि०) [परि+भ्रस्ज+क्त] तला हुआ, भुना हुआ।

परिमण्डित (वि०) [परि+मण्ड्+क्त] अलंकृत, सुभूषित सजाया हुआ।

परिमितवयस् (वि०) [ब० स०] बाल्य अवस्था का, बच्चा, थोड़ी उम्र का।

परिमोटनम् [परिमुट्+ल्युट्] चटकाना, फोड़ना, तोड़ना।

परियन्त्रणा [परि+यन्त्र्+युच्+टाप्] प्रतिबन्ध, रोक।

परिरब्ध (वि०) [परि+रभ्+क्त] आलिङ्गित।

परिलङ्घनम् (नपुं०) [परि+लङ्घ्+ल्युट्] 1 ऊपर से कूदना 2 अतिक्रमण करना।

परिलीढ (वि०) [परि+लिह्+क्त] चारों ओर से चाटा हुआ।

परिलोडित (वि०) [परिलुड्+णिच्+क्त] उछाला हुआ।

परिवत्सः (पुं० बछड़ा, गाय का बच्चा।

परि (री) वादकथा [ष० त०] निन्दनीय बात चीत, बदनामी की बातें।

परि (री) वादकर (पुं०) [अपवाद, मिथ्यानिन्दा, कलंक।

परिवर्जित (वि०) [परि+वृज्+णिच्+क्त] लपेटा हुआ, कुण्डलित किया हुआ, लच्छा बनाया हुआ। सम० संख्य (वि०) असंख्य, अनगिनत।

परिविंशत (वि०) पूरे बीस कम से कम बीस।

परिविष्ट (वि०) [परि+विष्+क्त] 1 घेरा हुआ 2 वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए 3 उपहृत (जैसे कि भोजन)।

परि (री) वर्तः [परिवृत्+घञ्] अव्यवस्था, व्यतिक्रम।

परिवर्तित (वि०) [परिवृत्+क्त] 1 एक ओर किया हुआ हटाया हुआ 2 पूरी तरह लोप किया गया।

परिवृक्ण (वि०) [परि+व्रश्च्+क्त] विकृत, कटा-फटा, खण्डित।

परिवे (भ्वा० उभ०) 1 अन्तर्ग्रथित करना बुनना 2. बांधना।

परिवेल्लित (वि०) [परिवेल्ल्+क्त] घिरा हुआ —भामि० २।१८।

परिशङ्का [परिशङ्क्+अ+टाप्] 1. संशय, आशंका 2. आशा, प्रत्याशा।

परिशंसित (वि०) [परिशंस्+क्त] सम्प्रेषित, वर्णित।

परिशुश्रूषा [परिश्रु+सन्+टाप्, द्वित्वम्] बिना विचार आज्ञापालन।

परिष्प (स्प) न्दः [परिस्पन्द्+घञ्] शौर्य, पराक्रम।

परिसंचक्ष् (अदा० आ०) 1 पृथक् करना, निकाल देना मै० स० १।१।६१ पर शा० भा० 2 गिनना।

परिसामन् (नपुं०) सामसूक्त जिसकी विरल आवृत्ति होती है।

परिसरः [परि+सृ+अ] शिरा, धमनी, वाहिनी।

परिस्कन्धः [परि+स्कन्द्+घञ्] समूह, समुच्चय।

परिस्तोमः [परि+स्तोम्+अच्] 1 रंगीन कपड़ा जो हाथी पर डाला जाता है 2 मसनद।

परिस्रुत (वि०) [परि+स्रु+क्त] बहा हुआ, बूंद-बूंद करके टपका हुआ।

परिहूत (वि०) [परि+ह्वे+क्त] आमंत्रित, बुलाया हुआ।

परिहृ (भ्वा० पर०) 1 निराकरण करना 2. आवृत्ति करना 3. पोषण करना।

परिहारः [परि+हृ+घञ्] 1 त्यागना, छोड़ना 2. हटाना, दूर करना 3. निराकरण करना 4. टालना 5. शुल्क से मुक्ति। सम०—विशुद्धिः (स्त्री०) तपश्चरण द्वारा पवित्रीकरण (जैन०),—हू वह गाय जो बहुत अधिक दिनों के पश्चात् बछड़ा सूती है।

परीष्ट (वि०) [परि+इष्+क्त] वाञ्छनीय, उत्तम, बढ़िया—अस्मै परीष्टमतये हरये नमस्ते -भाग० ६।९।३५।

परुषाक्षेपः [क० स०] कठोर शब्दों में व्यक्त किया गया आक्षेप, ऐतराज।

परेतकल्पः (पुं०) मृतप्राय, मरे हुए के समान।

परेतकालः (पुं०) मृत्यु का समय।

परोक्षजित् (वि०) [परोक्ष+जि+क्विप्] जो विजय प्राप्त करता हुआ किसी से देखा नहीं जाता है, अदृष्टविजयी।

परोक्षबुद्धि (वि०) [ब० स०] तटस्थ, उदासीन।

[illegible] (पुं०) पर्ण के रूप में ढक्कन।

पर्णालः [पर्ण+आलच्] 1. किश्ती 2. एकाकी संघर्ष।

[illegible] [ष० त०] पर्णकुटीनिर्मित पावक।

पर्यङ्कस्थ (वि०) [स० त०] पीठासन पर विराजमान।

पर्यङ्कस्थित (वि०) [स० त०] शय्या पर विद्यमान।

पर्ययः [परि+इ+अच्] हानि, नाश—स्वधर्मपर्ययः -महा० १२।१५।१९।

पर्यवस्थित (वि०) [परि+अव+स्था+क्त] 1. पड़ाव डाला हुआ 2. अविकृत 3. स्वस्थ, शान्त।

पर्यादानम् [परि+आ+दा+ल्युट्] अन्त, समाप्ति।

पर्याप्तकाम (वि०) [ब० स०] जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हों।

पर्यापतत् (वि०) [परि+आ+पत्+शतृ] शीघ्रता करता हुआ, तेजी के साथ दौड़ता हुआ।

पर्याम्नात (वि०) [परि+आ+म्ना+क्त] विख्यात, प्रसिद्ध।

पर्यायः [परि+इ+घञ्] 1. अन्त—पर्यायकाले धर्मस्य प्राप्ते कलिरजायत -महा० ५।७४।१२ 2. एक अलंकार का नाम काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, सा० द० ७३३। सम०—क्रमः परम्परा का सिलसिला।

पर्यायत (वि०) [परि+आ+यम्+क्त] अत्यन्त लम्बा।

पर्यासित (वि०) [परि+अस्+णिच्+क्त] रद्द किया गया, नष्ट किया गया -परैरपर्यासितवीर्यसंपदाम् —कि० १।४१।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] 'नञ्' के प्रयोग द्वारा निषेधार्थकउक्ति—(अब्राह्मणम् आनय)—दे० मै० स० १०।८।१-४ पर शा० भा०।

पर्युपासीन (वि०) [परि+उप+आस्+शानच्, ईत्वम्] 1 बैठा हुआ 2. घिरा हुआ।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+णिच्+क्त] जिसके ऊपर से रात बीत गई हो, बासी, जो ताजा न हो (जैसे रात का रक्खा भोजन)। सम०—वाक्यम् वह वचन जिसका पालन न किया गया हो, टूटी हुई प्रतिज्ञा।

पर्युष्ट (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी।

पर्वतः [पर्व+अतच्] 1. पहाड़ 2. एक ऋषि का नाम। सम०—[illegible] पहाड़ की तलहटी में स्थित समतल भूमि,—रोधस् (नपुं०) पहाड़ी ढलान।

पर्वन् (नपुं०) [पृ+वनिप्] 1. गांठ, जोड़ 2. पोरी, अंश 3 अंग 4. अनुष्ठान। सम०—[illegible] अंगुलियाँ चटकाना (अभिशाप का चिह्न समझा जाता है),—[illegible] चन्द्रमा।

पलः [पल्+अच्] भूसी, छिलका,—लम् 1. मांस 2. ४ कर्ष का बट्टा 3. समय की माप 4. एक छोटी तोल। सम०—अशनम् मांस के लिये चावल।

पलालः [पल्+आलच्] भूसी, तूड़, छिलके। सम०—भारकः छिलकों का बोझ, भूसी का भार।

पलिः (स्त्री०) [पल्+इन्] हाथी के मस्तक से ठीक ऊपर का भाग।

पलित (वि०) [पल्+क्त] बूढ़ा, जिसके बाल पक गये हों, जिसके सिर के बाल सफेद हो गये हों,—तम् 1. सफेद बाल 2. [illegible]। सम०—छद्मन् सफेद

बालों के बहाने - कैकेयी शङ्कयेवाह पलितच्छद्मना जरा - रघु० १२।२,- दर्शनम् सफेद बालों का दिखाई देना।

पल्यङ्कनः (पुं०) बिछुआ।

पल्लवः [पल्+क्विप्, लू+अप्, पल् चासौ लवश्च, क० स०] 1 अङ्कुर, 2 कली 3. विस्तार 4 शक्ति 5. घास की पत्ती 6. कङ्कण 7 वस्त्र का किनारा 8 प्रेम 9 कामकेलि 10. कहानी, कथा।

पल्लवनम् [पल्+क्विप् लू+ल्युट्, पल् चासौ लवनश्च, क० स०] निरर्थक वक्तृता।

पवनम् [पू+ल्युट्] 1 पवित्र करना 2 पिछोड़ना 3. छलनी 4. पानी 5 कुम्हार का आँवा। सम० —चक्रम् बवंडर, भभूला,—पदवी आकाश का प्रदेश।

पवमानसखः [ब० स०] अग्नि।

पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1. पावन, निष्पाप 2 मन को शुद्ध करने का साधन 3. सोमरस को छानने का वस्त्र, छलना या पोना।

पवित्रीकरणम् [पवित्र+च्वि+कृ+ल्युट्] 1. पवित्र करना 2. पवित्र करने का साधन।

पशु (अ०) [दृश्+कु, पशादेशः] देखो! कितना अच्छा!,—शुः (पुं०) जानवर, मवेशी। सम० —एकत्वन्यायः मीमांसा का नियम जिसके आधार पर वाक्य का मुख्यार्थ क्रिया के द्वारा संयुक्त होकर अभिप्रेत वचन को अभिव्यक्त करता है, जै० सू० ४।१।११।१६ पर शा० भा०,—[illegible] मिथ्या सिद्धांत, —समाम्नायः प्राणिजात के नामों का समूह।

पश्चादहः (अ०) [पश्चात्+अहः] तीसरा पहर।

पश्चादुक्तिः (स्त्री०) [पश्चात्+उक्ति.] आवृत्ति, दोहराना।

पश्चिमोत्तर (वि०) [ब० स०] उत्तरपश्चिमी।

पश्चिमसन्ध्या (स्त्री०) सायंकालीन झुटपुटा।

पश्य (वि०) [दृश्+अच् पश्यादेशः] जो केवल देखता रहता है—स्वर्गं पश्यामिव··पुरम्—नै० १६।१२२।

पश्यन्ती (स्त्री०) वज्रिया—महा० ११।९१।३२।

पातव्य (वि०) [पा+तव्यत्] 1. पीने के योग्य, पेय 2. रक्षा किये जाने के योग्य।

पांसुः [पंस्+कु, दीर्घ] चूर्ण, धूल। सम०—क्रीडनम् धूल में खेलना, —कुण्ठित (वि०) धूल से भरा हुआ,—लवणम् एक प्रकार का नमक।

पांसन (वि०) [पंस्+णिच्+ल्युट्] भ्रष्ट करने वाला, बिगाड़ने वाला।

पांगलः (पुं०) विकलांग।

पाकः [पच्+घञ्] शोथ, सूजन। सम०—क्रिया पकाने की क्रिया।

पाक्षकम् (नपुं०) 1. जानवर का पेट 2. पार्श्व भाग।

पाञ्चरात्रम् (नपुं०) 1. एक वैष्णव सम्प्रदाय तथा उसके सिद्धान्त, भक्तिमार्ग 2. पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के शास्त्र, आगम।

पाञ्चालेयः [पाञ्चाली+ढक्] पाञ्चाली का पुत्र।

पाटलकीटः (पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।

पाट्टुपकरः [पाटी+उपकरः] मुख्य लेखाधिकारी।

पाठक्रमः (पुं०) [ष० त०] मूलपाठ के अनुक्रम के अनुसार निर्धारित पाठ।

पाठभेदः [ष० त०] मूलपाठ के रूपान्तर, अर्थान्तर ५. ह।

पाठ्यपुस्तकम् (नपुं०) किसी श्रेणी के लिए निर्धारित पुस्तक।

पाणिः [पण् इण्, आयाभाव.] हाथ। सम०—कच्छपिका (स्त्री०) एक प्रकार की मुद्रा,—गत (वि०) निकट ही,—लाघवम् हाथ की सफ़ाई,—वादः 1. तालियाँ बजाना 2. ढोल बजाना 3. केरल प्रदेश के ढोलकियों का समुदाय।

पाण्डवाभिख्यः [ब० स०] कृष्ण का विशेषण।

पाण्डिमन् (पुं०) [पाण्डु+इमनिच्] सफ़ेदी।

पाण्डुलोहम् (नपुं०) चाँदी।

पातः [पत्+घञ्] (नक्षत्र, ग्रह आदि का) प्रक्षेप।

पातालमूलम् (नपुं०) पाताल लोक की निम्न सतह।

पात्र (वि०) [पातात् त्रायते इति] पापों से छुटकारा दिलाने वाला—सर्वेषामेव पात्राणां परमात्मा महेश्वरः—शा० पा०।

पात्रम् [पा+ष्ट्रन्] 1. प्याला, कटोरा 2. बर्तन 3. आधार 4. योग्य व्यक्ति 5. नाटक में अभिनेता 6. राजा का मंत्री 7. दरिया का पाट 8. योग्यता औचित्य। सम०—उपकरणम् अलङ्करण के बर्तन, सजावट के पात्र जैसे घंटी आदि,—प्रवेशः (नाट० में) रङ्गमंच पर अभिनेता का आगमन, —योजनम् भिन्न-भिन्न प्रकार का अभिनय कराने के लिए, अभिनेताओं का एकत्रीकरण,—परीक्षणम् किसी उपहार को ग्रहण करने के योग्य व्यक्ति की योग्यता की परीक्षा करना,—संस्कारः किसी पात्र या बर्तन को पवित्र करना।

पात्रकरणम् (नपुं०) विवाह—यस्यैव पात्रीकरणेऽभिलाषिक—नै० ९।६८।

पादः [पद्+घञ्] मशक की तली में छिद्र—तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पादादिवोदकम्—मनु० २।९९। सम०—कृच्छ्रम् एक प्रकार का व्रत जिसमें हर तीसरे दिन उपवास रखना पड़ता है,—निषेकः पादपीठ, मूढ़ा, स्टूल,—प्रहृतिः (स्त्री०) लतियाना, —परिचारकः चरण सेवक, विनीत सेवक,—चारः पदाति, पैदल सिपाही,—लग्न पैर में चिपका हुआ,

संहिता कविता के चरणों का जोड़, —जलम् वह पानी जिसका कुछ अंश उबाला हुआ हो।

पादाकुलकम् (नपुं०) एक छन्द का नाम।

पानीयपृष्ठजा (स्त्री०) मोथा नाम का घास जो पानी के किनारे उगता है।

पान्थदुर्गा (स्त्री०) [ष० त०] मार्गव्यापिनी देवी आलिङ्ग्य गीत्वाकृत पान्थदुर्गाम् नै० २४।३७।

पाप (वि०) [पा+प] 1 बुरा, दुष्ट 2 अभिशप्त, विनाशकारी, शरारत से भरा हुआ 3 नीच, अधम। सम० —वंश (वि०) नीच कुल में उत्पन्न, —निग्रहः दुष्टता को रोकना, —शमन (वि०) पाप कर्म को रोकने वाला।

पायसपिण्डारकः (पु०) खीर खाने वाला।

पानितम् (नपुं०) उदकदान, उपहार में दिया गया जल।

पारः [पृ+घञ्] 1 नदी का दूसरा किनारा 2 पार कर लेना 3 सम्पन्न करना 4 पारा 5 अन्त, किनारा 6 सरक्षक - तस्माद् भयाद् येन स नोऽस्तु पार —भाग० ६।९ २४ 2 अन्त महिम्न पारं ते —म० स्त०। सम० —नेतृ (वि०) जो किसी व्यक्ति को किसी कार्य में दक्ष बना देता है।

पारतल्पिकम् [परतल्प+ठक्] व्यभिचार।

पारमार्थिकसत्ता (स्त्री०) परम सत्य का अस्तित्व।

पारमिता [पारम् इत: प्राप्त —पारमित —अलुक् स० —स्त्रियां टाप्] संपूर्ण निष्पत्ति, पूर्णता।

पारमेश्वर (वि०) [परमेश्वर+अण्] परमेश्वर से संबद्ध।

पारम्पर्यक्रमः [परम्परा+ष्यञ्] परम्परा-प्राप्त अनुक्रम।

पारषद्यम् (नपुं०) सदस्यता, किसी सभा का सदस्य बनना। भाग० १।१६।१७।

पारावतघ्नी (स्त्री०) सरस्वती नदी।

पारिणामिक (वि०) [परिणाम+ठक्] 1 पचने के योग्य, जो हजम हो सके 2 जिसमें विकार हो सके, परिवर्त्य।

पारिपन्थिकः [परिपन्था+ठक्] चलती सड़क पर लूटने वाला, डाकू।

पारिप्लवदृष्टि (वि०) [ब० स०] चपल आँखों वाला।

पारिप्लवमति (वि०) [ब० स०] चपल मन वाला।

पारुषिक (वि०) [परुष+ठक्] कठोर, दारुण।

पार्यवसानिक (वि०) [पर्यवसान+ठक्] समाप्ति के निकट आने वाला।

पार्श्वः (पु०) [पर्शु+अण्] 1. एक ऋषि, जैनियों के २३ वें तीर्थंकर का विशेषण 2. पार्श्वभाग। सम० —अवनत (वि०) एक ओर को झुका हुआ (हीरे का एक दोष), —अर्तिः शरीर के पार्श्वभाग में पीड़ा, —परिवर्तनम् (अ०) (इतना हंसना कि जिससे) पार्श्वभाग दुखने लगे, —नाथः शिव का एक विशेषण।

पार्ष्णिविग्रहः [ष० त०] सेना के पिछली ओर आक्रमण करना।

पाशनम् [पाश्+ल्युट्] (शस्त्रों को शाण पर रख कर) तीक्ष्ण-तेज करना।

पालाशविधिः [पलाश+अण् तस्य विधि] ढाक की लकड़ियों से मृतक का दाह संस्कार करना।

पालिज्वरः (पु०) एक प्रकार का बुखार।

पाल्लविक (वि०) [पल्लव+ठक्] विसारी, विसरणशील, विक्षुब्ध।

पावकमणि (पु०) [ष० त०] सूर्यकान्त मणि।

पावकशिखः [ब० स०] जाफरान, अग्निशिख, केसर।

पावकार्चिः (स्त्री०) [ष० त०] अग्नि की ज्वाला।

पावित (वि०) [पू+णिच्+क्त] पवित्र किया हुआ स्वच्छ किया हुआ।

पाव्य (वि०) [पू+णिच् ण्यत्] पवित्र किये जाने योग्य।

पाशिन् (पु०) [पाश+इनि] रस्सी, बेड़ी पाशीकल्मायतामाचकर्ष शि० १८।५७।

पाशुपतव्रतम् (नपु०) पाशुपत सिद्धान्तों के लिए किया गया उपवास, व्रत।

पिककूजनम् (ष० त०) कोयल की कूक।

पिङ्गमूलः [ब० स०] गाजर।

पिङ्गालम् (नपु०) गाजर।

पिच्छलशाखः (पु०) चिपचिपा वृक्ष।

पिञ्जरिकम् (नपु०) एक प्रकार का संगीत-उपकरण।

पिटङ्काश. (पु०) एक प्रकार की छोटी मछली।

पिठरपाकः (पु०) कार्यकारण का मेल।

पिठरी (स्त्री०) कड़ाही, जिसमें कुछ उबाला जाय।

पिण्ड (वि०) [पिण्ड+अच्] 1 ठोस 2 सटा हुआ, सघन। सम० —अक्षर (वि०) संयुक्त व्यञ्जनों से युक्त शब्द, —निवृत्ति सपिण्ड संबंधों की समाप्ति, —पितृयज्ञ: अमावस्या को सध्यासमय पितरों के प्रति आहुति देना, —विधम: (पु०) अपहरण की रीति, गबन का तरीका — कौ० अ० २।८।२६।

पितुपतिः (पु०) भोजन-प्रदाता (सोम का विशेषण)।

पितृत्रयम् [ष० त०] पिता, पितामह तथा प्रपितामह।

पितृवासरपर्वन् (नपुं०) पितरों की पूजा का शुभ समय।

पित्तम् [अपि+दो+क्त, अपे: अकारलोप:] एक तरल पदार्थ जो शरीर के भीतर यकृत में बनता है। सम० —धर (वि०) पित्त प्रकृति का व्यक्ति, —स्रवा (स्त्री०) शरीर में पित्तस्राव।

पिधातव्य (वि०) [अपि+धा+तव्यत्, अपे: अलोप] बन्द किए जाने के योग्य।

पिनह्य (अ०) पहन कर।

पिप्पलकः (पु०) हीरा।

पिप्पलः (पु॰) 1. पिप्पल नाम का वृक्ष 2 कर्मजन्य फल, कर्म का फल—मुण्ड॰ ३।१।१ । सम॰ अदः 1 एक मुनि का नाम 'पिप्पलाद' 2. पिप्पल के बरबटे खाने वाला 3 विषयवासना में लिप्त ।

पिब (वि॰) [पा+अच्, पिबादेश] पीने वाला नक्र-क्रोधयपिबापि वृष्टि —नै॰ ६।१४ ।

पिशितम् [पिश्+क्त] 1. मांस 2 अल्पांश । सम॰ —पिण्डः 1 मांस का टुकड़ा 2 तिरस्कारसूचक शब्द जो शरीर को इंगित करे, प्ररोह. मांस का उभार, रसौली ।

पिशुनित (वि॰) [पिशुन+इतच्] प्रकट किया गया, प्रदर्शित ।

पिष्ट (वि॰) [पिष्+क्त] 1 पीसा हुआ 2. गूंदा हुआ। सम॰ अद (वि॰) आटा खाने वाला,—पाक. पकाया हुआ आटा (रोटी, पूरी आदि) ।

पिष्टातः [पिष्ट+अत्+अण्] सुगन्धित चूर्ण, अबीर जो होली के अवसर पर एक दूसरे पर छिड़क दिया जाता है ।

पिस्पृक्षु (वि॰) [स्पृश्+सन्+उ] 1 छूने की इच्छा वाला 2 आचमन करने का इच्छुक ।

पीठाधिकारः (पु॰) [ष॰ त॰] किसी पद पर नियुक्ति ।

पीड् (चुरा॰ उभ॰) बन्द करना—श्रुतिसमधिकमुच्चैः पञ्चमं पीडयन्तः - शि॰ ११।१

पीडास्थानम् [ष॰ त॰] (फ॰ ज्यो॰ में) ग्रह की किसी अशुभ स्थान पर स्थिति ।

पीत (वि॰) [पा+क्त] 1 पीया हुआ 2 भिगोया हुआ 3 बाष्पीकृत 4. छिड़का हुआ । सम॰ —उदका वह गाय जो पानी पी चुकी है पीतोदका जग्धतृणा कठ॰ -निद्र (वि॰) नींद में डूबा हुआ, मारुतः एक प्रकार का सांप,—स्फोट. खुजली ।

पीयूषभानुः, (धामन्) (पु॰) [ब॰ स॰] चन्द्रमा ।

पुंस् (पु॰) [पा+डुमसुन] 1 जीवित प्राणी 2 एक प्रकार का नरक—अपत्यधर्मान्मि ते पुंसस्त्राणात् महा॰ १४।९०।६३ । सम॰ -रूपम् मानवीरूप, मानवी सूरत ।

पुच्छुकः (पु॰) द्वितीय वर्ष में चल रहा हाथी -मात॰ ५।३ ।

पुञ्जिकस्थ (ला) स्तना (स्त्री॰) एक स्वर्गीय अप्सरा का नाम ।

पुटः,-टम् [पुट्+क] 1. तह 2 अञ्जलि 3 दोना । सम॰ —अञ्जलिः दोनों हथेलियों को मिला कर प्याले की भांति बना लेना,—धेनुः बछड़े वाली गौ जिसका अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है ।

पुटनम् [पुट्+ल्युट्] आच्छादित करना, ढकना ।

पुण्डरीकम् [पुण्ड्+ईकन्, रक् नि॰] एक यज्ञ का नाम ।

पुण्य (वि॰) [पू+यत् गुणागम, ह्रस्व] 1. पवित्र पुनीत 2 अच्छा गुणयुक्त 3. मंगलमय, शुभ 4 सुन्दर मनोज्ञ, रोचक 5 मधुर—ण्यम् (नपु॰) 1. जन्मलग्न से सातवां घर 2 मेष, कर्क, तुला और मकर संयोग । सम॰—निवह (वि॰) गुणयुक्त, —शाला धर्मार्थ भवन, दान-घर, —संचय धार्मिक गुणों का संग्रह ।

पुत्रप्रवरः [ष॰ त॰] ज्येष्ठ पुत्र ।

पुत्रसू (स्त्री॰) [ष॰ त॰] पुत्र की मां ।

पोथित (वि॰) [पुथ्+णिच्+क्त] आघात पहुंचाया हुआ, मारा हुआ, नष्ट किया हुआ ।

पुनर् (अ॰) [पन्+अर्, उत्वम्] फिर, दोबारा, नये सिरे से । सम॰ अन्वयः वापसी, लौटना कि वा गतोऽस्य पुनरन्वयमन्यलोकम्—भाग॰ ६।१४।५७ अपगमः दोबारा चले जाना,—उत्पादनम् फिर उपजाना, पैदा करना,—क्रिया आवृत्ति करना, दोहराना,—नवा एक प्रकार का शाक जिसकी पत्तियां गोल लाल रंग की होती हैं ।—स्नानम् दोबारा नहाना ।

पुपूषा [पू+सन्+अ, धातोर्द्वित्वम्] पवित्र करने की इच्छा ।

पुरनारी (स्त्री॰) [ष॰ त॰] नगरवेश्या ।

पुरंध्रिका (स्त्री॰) [पुर+धृ+खच्, स्वार्थे कन्] पत्नी ।

पुरस्कारः [पुरस्+कृ+घञ्] 1. प्रस्तुत करना, परिचय देना 2 अपने आपको प्रकट करना—कर्महेतुपुरस्कारं भूतेषु परिवर्तते—महा॰ १२।१९।१९ ।

पुरस्कृत्य (अ॰, [पुरस्+कृ+ल्यप्] हुते, के विषय में उल्लेख करके, के कारण ।

पुरोभक्तका (स्त्री॰) प्रातराश, नाश्ता ।

पुराण (वि॰) [पुरा नवम्—नि॰] 1 पुराना 2 बूढ़ा 3 घिसा पिटा,—णम् 1 बीती हुई घटना 2 विख्यात धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं, तथा व्यास द्वारा रचित माने जाते हैं । सम॰—अन्तरम् दूसरा पुराण । प्रोक्त (वि॰) 1 पुराणों में कहा हुआ 2 प्राचीनों द्वारा बतलाया हुआ, विद्या, वेद पुराणों का ज्ञान, पुराणों में वर्णित पाण्डित्य ।

पुराषाह् (वेद॰) अनकों का विजेता, बहुतों को हरानेवाला ।

पुरीषभेदः [पृ+ईषन् किच्च, +भिद्+घञ्] अतिसार दस्त लगना संग्रहणी ।

पुरुकृत्, पुरुकृत्वन् } (वि॰) अचूक, प्रभावशाली ।

पुरुषः [पुरि देहे शेते शी+ड पृषो॰] 1 नर, मनुष्य (विप॰ स्त्री) 2 आत्मा । सम॰ मानिन् (वि॰) अपने आपको साहसी प्रकट करने वाला,—शीर्षक एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रयोग चोर सेंध लगाने में करते हैं,—सारः श्रेष्ठतम नर ।

पुलकः [पुल्+ण्वुल्] गुच्छा, झुंड ।
पुलिन्दः (पुं०) शिकारी, (ब० व०) एक जंगली जाति ।
पुल्कसः (पुं०) एक मिश्रित जाति का नाम भाग० ९।२१।१० ।
पुष्ट (वि०) [पुष्+क्त] 1 पाला पोसा 2. फलता फूलता 3. समृद्ध 4. पूर्ण । सम०—अङ्ग (वि०) मोटे अंगों वाला, जिसे अच्छे पदार्थ भोजन में मिलते रहे हैं —अर्थ (वि०) जो अर्थ की दृष्टि से पूर्णतः स्पष्ट हो ।
पुष्टिः [पुष्+क्तिन्] बहुत से अनुष्ठानों के नाम जो कल्याण की वृद्धि के लिये किये जाते हैं, पुष्टिकर्म । सम०—मार्गः वल्लभाचार्य द्वारा माने गये सिद्धान्तों का समुच्चय ।
पुष्करम् [पुष्कं पुष्टिं राति-रा+क] 1. नीला कमल 2. हाथी के सूंड का किनारा—माल० २।२ । सम०—विष्टरः ब्रह्मा, परमेश्वर, —विष्टरा लक्ष्मी देवी —पुष्टिं कुर्वीत मम पुष्करविष्टरायाः—कनक० ।
पुष्पम् [पुष्प्+अच्] 1 फूल 2. पुष्परागमणि 3 कुबेर का रथ । सम०—अम्बु फूलों का शहद,—आस्तरकः, —आस्तरणम् फूलों से सजावट करने की कला, —वल्ली कनाटिका,—यमकम् अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।
पुष्पधः (पुं०) जाति से बहिष्कृत महिला में ब्राह्मण द्वारा उत्पादित संतान ।
पुष्परत्नः [ब० स०] एक प्रकार की मणि—कौ० अ० २।११।२९ ।
पुस्तम् [पुस्त्+अच्] 1. कोई वस्तु जो मिट्टी, लकड़ी या धातु की बनी हो 2 पुस्तक, हस्तलिखित, पाण्डुलिपि । सम०—पालः भू-अभिलेखों की सुरक्षा पूर्वक रखने वाला ।
पुस्तकः,—कम् [पुस्त+कन्] 1. पाण्डुलिपि 2. एक उभरा हुआ आभूषण । सम०—आगारम् पुस्तकालय, —आस्तरणम् बस्ता, वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें बांधी जाती हैं,—मुद्रा एक प्रकार की तांत्रिक मुद्रा ।
पूतक्रतुः [ब० स०] इन्द्र का विशेषण ।
पूगी (स्त्री०) सुपारी का पेड़ ।
पूजा [पूज्+अ] आदर, सम्मान, पूजा । सम०—उपकरणम् पूजा करने का सामान,—गृहम् जहाँ पूजा का स्थान ।
पूयः [पूय्+अच्] मवाद, किसी फोड़े या फुंसी से निकलने वाला, पीप । सम०—रक्तः, —वहः, एक प्रकार का नरक ।
पूरक (वि०) [पूर्+ण्वुल्] 1. भरने वाला, पूरा करने वाला,—कः (पुं०) बाढ़, जलप्लावन—सिन्ध्वाद्र मलयजपवनपूरकेण—भाग० १०।२९।१५ ।

पूर्ण (वि०) [पूर्+क्त] सर्वव्यापक, सर्वत्र उपस्थित । सम०—अभिषेकः एक प्रकार का धार्मिक स्नान जिसका कौलतन्त्र में विधान निहित है । —गर्भा (वि०) ऐसी गर्भवती जिसके थोड़े ही दिनों में बच्चा होने वाला है, आसन्नप्रसवा,—प्रज्ञः (पुं०) 1. जिसका ज्ञान पूर्णत विकसित हो चुका हो 2 द्वैत सम्प्रदाय के प्रवर्तक माधव का विशेषण ।
पूर्व (वि०) [पूर्व+अच्] 1 पहला, प्रथम 2 पूर्वी, पूर्वदेश 3. प्राचीन, पहला । सम०—अवसायिन् (वि०) जो बात पहले घटती है—पूर्वावसायिन्यश्च वर्णीयांसो जघन्यावसायिभ्य—मै० स० १२।२।१४ पर शा० भा० । —निमित्तम् शकुन, —निर्दिष्ट (वि०) जो पहले ही रखा हुआ है—मनु० ९।२८१, —पश्चात्, —पश्चिम (अ०) पूर्व से लेकर पश्चिम तक, —मारिन् (वि०) पति (या पत्नी) से पहले मरने वाला, —विद् (वि०) जो भूतकाल की बात जानता है, —विप्रतिषेधः पहली उक्ति का विरोध करने वाला कथन,—विहित (वि०) जो पहले ही निर्णीत हो चुका हो ।
पूषानुजः [पूषन्+अनुज.] वृष्टि का देवता—प्राश्य द्रोणसुतो बाणान् वृष्टिं पूषानुजो यथा महा० ८।२०।२९ ।
पृणाका (स्त्री०) किसी जानवर का बाल-बच्चा ।
पृतनापतिः (पुं०) [ष० त०] सेनापति ।
पृथक् (अ०) [प्रथ्+अज्, कित्, सम्प्रसारणम्] 1. अलग 2. अलग-अलग 3. के बिना, के सिवाय । सम०—कार्यम् अलग काम, —वादिन् (वि०) जो द्वैत सिद्धान्त को मानने वाला है,—बीजः भिलावा, —योगकरणम् एक व्याकरणनियम का दो भागों में जुदा जुदा करना ।
पृथक्त्वनिवेशः (पुं०) जुदाई पर डटे रहना—संख्याभावात् पृथक्त्वनिवेशात्—मी० सू० १०।५।१७ ।
पृथिवीभृत् (पुं०) [पृथिवीं बिभर्तीति-भृ+क्विप्] पर्वत, पहाड़ ।
पृथु (वि०) [प्रथ्+कु, संप्रसारणम्] 1. विशाल, विस्तृत 2. प्रचुर पुष्कल 3. बड़ा, 4. असंख्य । सम०—कीर्ति (वि०) दूर-दूर तक विख्यात,—दर्शिन् (वि०) दूरदर्शी, दीर्घदृष्टि ।
पृश्नि (वि०) [स्पृश् नि० किच्च पृषो० सलोपः] 1. ठिगना 2. सुकुमार 3. चितकबरा,—श्निः (स्त्री०) 1. चितकबरी गाय 2. पृथ्वी ।
पृषत्कः [पृष्+अति=पृषत्+कन्] 1. तीर बाण 2. बाण की बरसा ।
पृष्ठम् [पृष्-(स्पृश्)+थक् नि०] 1. पीठ 2. पुस्तक के पत्र का एक पार्श्व 3. छत । सम०—अनीकः पीठ में

बड़ी तीव्र पीड़ा,—भाक्तिन् (वि०) स्वामिभक्त, अनुचर, —समयः मध्याह्न, दोपहर, —भङ्गः युद्ध में लड़ने की एक रीति ।

पृष्ठयम् [पृष्ठ + यत्] 1 मेरुदण्ड 2 मामसग्रह ।

पैथकः [पथ् + वुन्, इत्वम्] मार्ग में बना यात्रियों के लिए शरणगृह मान० ।

पेडालः,—कम् } टोकरी, पेटी ।

पेडालकः,—कम् }

पेथः (पु०) मार्ग, रास्ता ।

पेशिम्मी [पेश + इनि, स्त्रियां ङीप्] गाठगोभी, पातगोभी ।

पेशस् (नपु०) [पेश + असिच्] 1 रूप 2 माना 3 आभा 4 सजावट । सम० कारिन् 1 भिरं 2 सुनार, —कृत् (पु०) 1 हाथ 2 भिरं भाग० ७।१।२८ ।

पेषिः (स्त्री०) [पिष् + इन्] छाछ, तक्र ।

पैसीह (तना० उभ०) कुचलना, पोस देना ।

पैङ्गलः [पिङ्गल + अण्] पिंगल का पुत्र या शिष्य ।

पैङ्गलम् [पिङ्गल + अण्] पिङ्गल मुनि कृत पुस्तिका ।

पैतापुत्रीय (वि०) [पितापुत्र + छ] पिता और पुत्र से संबंध रखने वाला ।

पैप्पलादः [पिप्पलाद + अण्] अथर्ववेद की एक शाखा ।

पैशुनिक (वि०) [पिशुन + ठक्] मिथ्यानिन्दात्मक, अपवाद परक ।

पोतायितम् (नपु०) [पू + तन् = पोत + क्यङ् + क्त] 1. शिशु की भाँति आचरण करना 2. होठ और तालु की सहायता से उच्चरित हाथी की चिंघाड़ ।

पोत्रिप्रवरः [पू + त्र = पोत्र + इनि = पोत्रिन्, तेषु प्रवर] विष्णु भगवान् वाराहावतार हिरण्याक्षे पोत्रिप्रवर-वपुषा देव भवता नारायण।य० ।

पोप्लूयमान (वि०) [प्लु + यङ् + शानच्, द्वित्वम्] बार बार तैरता हुआ लगातार तैरने वाला या बहने वाला ।

पौण्ड्रवर्धनः (पु०) बिहार प्रदेश का नाम ।

पौनर्बीजिकम् (नपु०) पुनः जीव पौधे के बीजों से बना नाबीज ।

पौरन्ध्र (वि०) [पुरन्ध्र + अण्] स्त्रीवाची, नारीजातीय ।

पौषधः (पु०) उपवास का दिन ।

प्रकनम् (नपु०) त्रिकोण ।

प्रकच (वि०) [ब० स०] जिसके बाल सीधे खड़े हों ।

प्रकाङ्क्षा [प्र + काङ्क्ष् + अङ्] भूख, बुभुक्षा ।

प्रकाशः [प्र + काश् + घञ्] ज्ञान । सम० —कः प्रकट करने वाला, व्यक्त करने वाला ।

प्रकृ (तना० उभ०) विवेक करना, भेद करना —मोहात् प्रकुरुते भवान् – महा० ५।१९८।१८ ।

प्रकरः [प्र + कृ + अप्] धोना, माँजना, साफ करना प्रमाणप्रकरकरणे धर्मतोऽस्मि नियुक्ति विक्र० १९४ ।

प्रकरणम् [प्र + कृ + ल्युट्] प्रसंग । सम० —समः समान औचित्य और समान बल के दो तर्क ।

प्रकर्म (नपु०) मैथुन, संभोग (जैसा कि कौ० अ० में कन्याप्रकर्म) ।

प्रकृतिः [प्र + कृ + क्तिन्] परम पुरुष परमात्मा के आठ रूप – मन० ७।४ । सम० अमित्रः सामान्य शत्रु, —कल्याण (वि०) नैसर्गिक सौन्दर्य से युक्त, स्वाभाविक सुन्दर, —भोजनम् यथागति आहार, यथावत् भोजन ।

प्रकृतिमत् (वि०) [प्रकृति + मतुप्] 1 नैसर्गिक, सामान्य 2 सात्त्विक वृत्ति का महानुभाव रा० २।७७।२१ ।

प्रक्रिया [प्र + कृ + श] (आयु० में) योग, नुस्खा ।

प्रकृष् (तुदा० पर०) वेग से खींचना ।

प्रकर्षः [प्र + कृष् + घञ्] विलम्बजनीत ।

प्रकर्षित (वि०) [प्र + कृष् + णिच् + क्त] ढकेला हुआ, बाहर निकाला हुआ ।

प्रक्रमः [प्र + क्रम् + घञ्] चर्चा के बिन्दु पर पहुँचना । सम० —निरुद्ध (वि०) आरंभ में ही रुका हुआ ।

प्रक्षपणम् [प्र + क्षि + णिच् + ल्युट्, प्रक्षापन] विनाश, —राज० ।

प्रख्या [प्र + ख्या + अङ् + टाप्] उज्ज्वलता, आभा, कान्ति ।

प्रगुणीभू (प्रगुण + च्वि + भू भ्वा० पर०) अपने आपको योग्य बनाना, पात्रता प्राप्त करना ।

प्रग्रहः [प्र + ग्रह् + अप्] 1 राजसभासदों को उपहार —कौ० अ० २।७।२५ 2 जोड़ के रखना 3 धृष्टता ।

प्रचकित (वि०) [प्र + चक् + क्त] भय के कारण थर-थर कांपता हुआ ।

प्रचण्ड (वि०) [प्रा० स०] प्रखर, अत्यन्त तीव्र । सम० —तापः अधिकसाली तेज, —भैरवः एक नाटक का नाम ।

प्रचर्या [प्र + चर् + यत् + टाप्] प्रक्रिया ।

प्रचारः [प्र + चर् + घञ्] सरकारी घोषणा, सार्वजनिक उद्घोष ।

प्रचलित (वि०) [प्र + चल् + क्त] घबराया हुआ । —तम् (नपु०) विदाई, विसर्जन ।

प्रचला (स्त्री०) [प्र + चल् + अच् + टाप्] गिरगिट ।

प्रचुरपरिभवः [क० स०] भारी अपमान, बड़ा तिरस्कार ।

प्रच्छन्नबौद्धः (पु०) वेदान्ती के वेश में छिपा हुआ बौद्ध ।

प्रच्यावुक (वि०) [प्र + च्यु + उकञ्] क्षणभंगुर, सहज में टूट जाने वाला, भिदुर ।

प्रजननकुशल (वि०) प्रसूति कार्य में दक्ष ।

प्रजा [प्र + जन् + ड + टाप्] सन्तति पुत्र० ।

प्रजागरणम् [प्र + जागृ + ल्युट्] जागते रहना ।

प्रजृम्भ् (भ्वा० आ०) जम्हाई लेना ।

प्रोक्त (वि०) [प्र+आ+णिच्+क्त] 1. आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ 2 व्यवस्थित—बुद्ध० ।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अङ्+टाप्] प्रकृष्ट बुद्धि, बुद्ध० । सम० अस्त्रम् 1 एक अस्त्र का नाम 2. बुद्धि रूपी शस्त्र, —मात्र केवल बुद्धि (जैसे विज्ञान), पारमिता पारदर्शी गुण बुद्ध०, —चक्षा ज्ञानेन्द्रिय ।

प्रणमित (वि०) [प्र+नम्+णिच्+क्त] झुकाया हुआ, नमस्कार करने के लिए जिसका सिर झुकाया गया है ।

प्रणाय्य (वि०) [प्र+नी+ण्यत्] योग्य, उपयुक्त (वेद०) ।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] हाथी को हाँकने की रीति —मात० १२।६।८ ।

प्रणियोजनम् [प्र+नि+युज्+ल्युट्] 1 गुप्तचर भेजना 2 काम पर लगाना, उपयोग में लाना ।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1 विवाह 2. मैत्री 3 अनुग्रह 4 विनय । सम० मानः प्रेम के कारण ईर्ष्या, विमुख (वि०) 1 प्रेम के विपरीत 2. मैत्री करने में अनुत्सुक ।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1 (दण्ड) देना 2 (सद्भाव) स्थापित करना ।

प्रणीत (वि०) [प्र+नी+क्त] 1. प्रस्तुत किया हुआ 2. कार्यान्वित किया हुआ 3. सिखलाया हुआ 4. किया हुआ, रचा हुआ । सम० अग्निः यज्ञ के निमित्त अभिमन्त्रित की गई आग, आपः (ब० व०) पवित्र जल ।

प्रत्न (वि०) [प्र+टयु, तुट्] पुराना, प्राचीन । सम० हविस् (नपुं०) आहुति देने के लिए अभिप्रेत पुराना घी ।

प्रतानः [प्र+तन्+घञ्] प्रसार, विस्तार, फैलाव ।

प्रतपः [प्र+तप्+अच्] सूर्य की गर्मी, धूप ।

प्रतापः [प्र+तप्+घञ्] अन्तिम चेतावनी देना कौ० अ० १।१६ ।

प्रतराम् (अ०) विशेष रूप से, खास तौर से ।

प्रति (अ०) [प्रथ्+डति] 1 धातु के उपसृष्ट होकर इसका अर्थ है (क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, बदले में, फिर (ग) के विरुद्ध, के प्रतिकूल (घ) ऊपर 2. शब्दों के पूर्व लग कर इसका अर्थ होता है (क) समानता, (ख) विरुद्ध, विरोध में तथा (ग) प्रतिद्वन्द्विता । सम० अनुप्रासः अनुप्रास का एक भेद,—अरिः मुकाबले का प्रतिपक्षी,—अर्कः झूठ-मूठ का सूर्य, बनावटी सूर्य,—आर्द्र (वि०) बिल्कुल ताजा, आक्रन्दः शोक, संवाद, आह्वानः गूंज, प्रतिध्वनि, कर्मन् (नपुं०) व्रत और उपवास,—कारः नकल करना—रा० २।३७।१७ पर टीका कूलिक (वि०) विरोधी,—क्रिया व्यवहार, आचरण न हि मुक्ता सर्वतस्य कस्यचिद् प्रतिक्रिया—रा० ७।१७।१४ चक्रम् शत्रु की सेना,—दूतः बदले में भेजा गया दूत या संदेशवाहक, विषम् विषहर, विष को दूर करने वाली औषध,—वृषः विरोधी साँड ।

प्रतिगृ (क्या० पर०) उत्तर देना ।

प्रतिगरः [प्रतिगृ+अप्] ललकार का उत्तर देना —ओमित्यध्वर्युः प्रतिगर प्रतिगृह्णाति—ऐ० ब्रा० १।८।१ ।

प्रतिघातः [प्रतिहन्+णिच्+अप्] 1 मुकाबला कौ० अ० २।८।२६ 2 नाश, अपमान—भाग० ५।९।३ ।

प्रतिचारः [प्रतिचर्+घञ्] व्यक्तिगत बनाव शृंगार ।

प्रतिज्ञा (प्रति+ज्ञा+अङ्+टाप्) निश्चित समझना, कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति भग० ९।३१ । सम० परिपालनम्,—पालनम् अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना,—धारणम् अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना ।

प्रतिदुह् (नपुं०) ताजा दूध ।

प्रतिदूषित (वि०) [प्रतिदुष्+णिच्+क्त] कलुषित, भ्रष्ट, मिलावटी ।

प्रतिनिग्रहः [प्रतिनि+ग्रह्+अप्] पृथक् नियतीकरण —सा० का० १८ ।

प्रतिनिष्क्रयः [प्रतिनिस्+क्री+अच्] प्रतिहिंसा, बदला लेना ।

प्रतिनिष्पूत (वि०) [प्रतिनिस्+पू+क्त] साफ किया हुआ, पछोड़ा हुआ ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रतिपद्+क्तिन्] 1 प्राप्ति, अवाप्ति 2 प्रत्यक्षीकरण, अवेक्षण 3. यथार्थ ज्ञान 4 स्वीकृति 5. आरम्भ 6. सम्मान 7 समाचार 8. उपाय 9. बुद्धि 10 उन्नति 11 प्रयोग 12 प्रसिद्धि 13 विश्वासी सम० पराङ्मुख (वि०) ढीठ, न दबने वाला, —प्रदानम् उन्नत पद अर्पण करना ।

प्रतिपत्पाठः (पुं०) प्रतिपदा वाले अनध्याय दिन के पढ़ना —प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता—रा० ५ ।

प्रतिपादित (वि०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] प्रकट किया गया ।

प्रतिपाद्य (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+ण्यत्] चर्चा करने के योग्य, व्यवहार में लाने के योग्य ।

प्रतिपाद्यमान (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+य+शानच्] 1 दिया जाता हुआ, उपहृत किया जाता हुआ 2. व्यवहृत किया जाता हुआ 3. चर्चा के अन्तर्गत ।

प्रतिपानम् [प्रतिपा+ल्युट्] पीने का पानी ।

प्रतिपूर्ण (वि०) [प्रति पृ+क्त] प्रसारित, फैलाया हुआ, व्याप्त ।

प्रतिप(ब)न्धी (स्त्री०) प्रत्यारोप, प्रत्युत्तर दुष्टाभिशप्य प्रतिपन्धमुत्तरः नै० ९।१७ ।

प्रतिवच् (अदा० पर०) 1 उत्तर देना, 2 (आ०) मुकर जाना।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] उचाटपना, ध्यानापकर्षण — निद्रा च प्रतिभा चैव ज्ञानाभ्यासेन तत्त्ववित् —महा० १२।२७४।७।

प्रतिभोजनम् [प्रतिभुज्+ल्युट्] विहित पथ्य, नियत किया हुआ आहार।

प्रतिमागृहम् [ष० त०] मूर्तियों का घर।

प्रतियातनिद्र [(वि०) ब० स०] जागा हुआ, जागरूक।

प्रतियातबुद्धि (वि०) [ब० स०] जिसे (पिछली भूली बातें) याद आ गई हों।

प्रतियोगः [प्रति+युज्+घञ्] प्रत्युत्तर, प्रत्युक्तिवचन — सु०च० ४।४१।

प्रतियोद्धृ [प्रति+युध्+तृच्] युद्ध में प्रतिपक्षी।

प्रतिरूढ (वि०) [प्रति+रुह्+क्त] 1 प्रविष्ट अधिकृत 2 स्थापित — भाग० १०।३०।१।

प्रतिवक्तव्य (वि०) [प्रति+वच्+तव्यत्] 1 उत्तर दिये जाने के योग्य 2. वादविवाद किये जाने के योग्य।

प्रतिविधातव्यम् (भाव० क्रि०) ध्यान (सावधानी) रखना चाहिए।

प्रतिविशेषः [प्रा० स०] विशेषता, विलक्षणता।

प्रतिव्याहारः [प्रति वि+आ+हृ+घञ्] उत्तर जवाब।

प्रतिशीर्षकम् [प्रा० स०] निष्कृतिधन, बन्दी मोचन धन। रा० २।५५ पर मल्लि०।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] आश्रम, मठ (जहाँ सदावृत लगा रहता है)।

प्रतिषेधः [प्रति+सिध्+घञ्] 1 निषेधात्मकता का ध्यान दिलाना 2 बाधा।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] व्रत की पूर्ति।

प्रतिष्ठापनम् [प्रति+स्था+णिच्+ल्युट्] समर्थन।

प्रतिष्ठासु (वि०) [प्रति+स्था+सन्+उ] कहीं पर बस जाने का इच्छुक।

प्रतिष्ठित (वि०) [प्रति+स्था+णिच्+क्त] पूरा किया हुआ — महा० ३।८५।११४।

प्रतिसंयात (वि०) [प्रतिसम्+या+क्त] आक्रमणकारी हमला करने वाला।

प्रतिसंरुद्ध (वि०) [प्रतिसम्+रुध्+क्त] सकुचित किया हुआ।

प्रतिसंक्रमः [प्रतिसम्+क्रम्+अच्] विच्छेद विघटन।

प्रतिसंख्यानम् [प्रतिसम्+ख्या+ल्युट्] 1 किसी बात का शान्तिपूर्वक विचार करना 2 सांख्य दर्शन।

प्रतिसंधानम् [प्रतिसम्+धा+ल्युट्] 1 स्मृति, याद 2. उपचार, चिकित्सा।

प्रतिसमासित (वि०) [प्रतिसमास+इतच्] समीकृत, बराबर किया हुआ।

प्रतिसरबन्धः [ष० त०] किसी भी मंगलमय कार्य के आरम्भ के अवसर पर हाथ की कलाई में राखी या पहुँची (पुनीत कलावा) बाँधना।

प्रतिस्वम् (अ०) एक-एक करके, एकैकशः।

प्रतिहत (वि०) [प्रति+हन्+क्त] 1 चौंधियायी हुई (आँखें) 2 कुण्ठित ठूंठा।

प्रतिहारः [प्रति+हृ+घञ्] आगमन की सूचना देना —रा० ७।१।७।

प्रती (प्रति+इ अदा० पर०) (शत्रु का) मुकाबला करना — असंख्यानह तांश्च प्रतीयां रणमूर्धनि — महा० ५।१७२।१३।

प्रतीतात्मन् [प्रति+इत+आत्मन्] विश्वस्त, दृढ।

प्रतीकम् [प्रति+कन्+नि० दीर्घ] 1 चिह्न 2 प्रतिलिपि। सम० — दर्शनम् चिह्नपरक सकल्पना।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च्+ख, अकार, नलोप, दीर्घश्च] अन्तर्मुखी अन्दर की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतीपदीपकम् (नपुं०) दीपक अलंकार का एक भेद।

प्रतूलिका (स्त्री०) एक प्रकार की शय्या।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्णः प्रति] 1 आँखों को जो दिखाई दे, दर्शनीय 2 नयनगोचर, 3 स्पष्ट, साफ़। सम० —पर (वि०) प्रत्यक्ष को ही उच्चतम प्रमाण मानने वाला, —विधानम् स्पष्ट विधि स्पष्ट आदेश, —विषयीभू दृष्टिपरास के अन्तर्गत आना।

प्रत्यक्षरम् (अ०) प्रत्येक अक्षर पर — प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध — वासव०।

प्रत्यक्प्रवण (प्रत्यच्+प्रवण) (वि०) आत्माभिमुख एक आत्मा का भक्त।

प्रत्यभिज्ञादर्शनम् (नपुं०) शैवदर्शन पर लिखा गया एक ग्रन्थ।

प्रत्यभिनन्द् (भ्वा० चुरा० पर०) 1 बदले में नमस्कार करना 2 स्वागत करना।

प्रत्यभ्युत्थानम् (नपुं०) [प्रति+अभि+उद्+स्था+ल्युट्] अतिथि का स्वागत करने के लिए अपने आसन से उठना।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] इन्द्रियों का कार्य — सर्वेन्द्रियगुणग्राह्ये सर्वप्रत्ययहेतवे — भाग० ८।३।१४।

प्रत्यर्चनम् [प्रति+अर्च्+ल्युट्] बदले में नमस्कार करना।

प्रत्यवकर्शन (वि०) [प्रति+अव+कृश्+ल्युट्] विफल कर, महारकारी।

प्रत्यवस्थापन [प्रति+अव+स्था+णिच्+ल्युट्] सुखद, विश्रान्तिदायक, स्फूर्तिजनक।

प्रत्यवेक्षणा (स्त्री०) [प्रति+अव+ईक्ष्+युच्+टाप्] पाँच प्रकार के ज्ञानों में से एक (बौद्ध० में)।

प्रत्यस्त (वि०) [प्रति+अस्+क्त] फेंका हुआ, छोड़ा हुआ — प्रत्यस्तव्यसने — माघ० १०।२३।

प्रत्याचिख्यासुक (वि०) [प्रति+आ+चक्ष्+सानच्, स्वार्थे कन्] निराकरण करने की इच्छा वाला, आक्षेप करने का इच्छुक।

प्रत्यापन्न (वि०) [प्रति+आ+पद्+क्त] 1. वापिस आया हुआ, फिर से एकत्र किया हुआ 2 बहकाया हुआ, बदले हुए मन वाला, विपरीत दृष्टिकोण वाला। —महा० १२।२९१।१८।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] प्रसन्नता हर्षोत्फुल्लता।

प्रत्याहारः [प्रति+आ+हृ+घञ्] प्रस्तावना या आमुख, का विशेष भाग (नाट्य०)।

प्रत्युत्पन्नजातिः (स्त्री०) गुणासहित समीकरण।

प्रत्युपस्थित (वि०) [प्रति+उप+स्था+क्त] 1 समूहगत 2 एकत्र होना, दबाव होना (जैसे मूत्रोत्सर्ग का) 3. विमुख, विपरीत हुआ—श्रेयसि प्रत्युपस्थिते महा० १२।२८, ७।५७।

प्रत्यूढ (वि०) [प्रति+वह्+क्त] 1 प्रत्याख्यात, अस्वीकृत 2. उपेक्षित 3 मात दिया हुआ।

प्रथमकविः (पुं०) वाल्मीकि का विशेषण।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] चतुर, दक्ष, निपुण—तानुवाच विनीतात्मा सूतपुत्रः प्रदक्षिणः -रा० २।१६।५।

प्रदा (जुहो० उभ०) खूब परितोष करना।

प्रदानम् [प्र+दो+ल्युट्] खण्डन करना, निराकरण करना असत्यं हि धर्मस्य प्रदानं धर्म आसुरः—महा० १३।४५।८।

प्रदानकृपण (वि०) [प्र+दा+ल्युट्, प्रदाने कृपणः - त० स०] दरिद्र, उपहारादि समय पर न देने वाला।

प्रदेशः (पुं०) [प्र+दिश्+घञ्] स्वातंत्र्य के क्षेत्र में एक बाधा (जैन०)।

प्रदोहनम् [प्र+दुह्+ल्युट्] खींचना, चोसना।

प्रधनकृत्यम् [ष० त०] युद्ध का व्यवसाय।

प्रधानकारणवादः (पुं०) सांख्य का सिद्धान्त कि प्रधान ही मूल कारण है।

प्रधानवादिन् (वि०) जो व्यक्ति सांख्य के प्रधानकारण को मानने वाला है।

प्रधाविनिका (स्त्री०) भाग कर निकल जाने का मार्ग।

प्रपञ्चः [प्र+पञ्च्+घञ्] हास्यास्पद वार्तालाप (नाट्य०)।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] आक्रमण, धावा।

प्रपुराण (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त पुराना।

प्रपूरणम् [प्र+पृ+ल्युट्] धनुष की डोरी को झुकाना, और बांध देना।

प्रबुद्धता [प्र+बुध्+क्त+ता] प्रज्ञा, बुद्धि।

प्रभग्न (वि०) [प्र+भञ्ज्+क्त] टूट कर टुकड़े-टुकड़े हुआ, कुचला हुआ, हराया हुआ।

प्रभद्रक (वि०) अत्यन्त सुन्दर।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] समृद्धि,—प्रभवार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्—महा० १२।१०९।१०।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] पद्मरागमणि। सम० —भिद् (वि०) उज्ज्वल कि० १६।५८।

प्रभातकरणीयम् [ष० त०] प्रातः काल अनुष्ठेय।

प्रभावन (वि०) [प्र+भू+णिच्+ल्युट्] 1. प्रमुख, प्रभावशाली 2 सृजनात्मक शक्ति, 3. मूल 4. खोलने वाला तदस्त्रं तस्य वीरस्य स्वर्गमार्गप्रभावनम् रा० ४।१७।८।

प्रभाषित (वि०) [प्र+भाष्+क्त] कथित, उद्घोषित।

प्रभुसम्मित (वि०) स्वामी के समान यद्वेदात्प्रभुसम्मितात् —सा० द०।

प्रभुत्वाक्षेपः (पुं०) [ष० त०] आदेश के वचन द्वारा उठाया गया आक्षेप का० २।१३८।

प्रभेदः [प्र+भिद्+घञ्] उद्गम स्थान (जैसे नदी का)।

प्रमाथिन् (वि०) [प्र+मथ्+इनि] नाड़ियों में से रसों का उत्पादक।

प्रमद्वरा (स्त्री०) रुरु नामक मुनि की पत्नी।

प्रमहस् (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली, प्रतापी, तेजस्वी।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] एक प्रकार की माप (संगीत०)। जैसे द्रुतप्रमाण।

प्रमाणानुरूप (वि०) किसी व्यक्ति की शारीरिक शक्ति और डीलडौल के अनुरूप।

प्रमाणतः (अ०) [प्रमाण+तसिल्] माप या तोल के अनुसार।

प्रमात्वम् (नपुं०) निर्विकल्प प्रत्यक्ष ज्ञान की यथार्थता।

प्रमितिः [प्र+मा+क्तिन्] प्रकटीकरण, अभिव्यक्ति।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] 1 गुणी पुरुष का हर्ष, उल्लास (जैन०) 2. एक वर्ष का नाम।

प्रयत्नगौरवम् [ष० त०] यत्नों की बहुलता, परिश्रम की गहराई।

प्रयतात्मन्, प्रयतमानस (वि०) पुनीत मन वाला, जिसने अपने मन को संयत कर लिया है। भग० ९।२६।

प्रयतपाणि (वि०) [ब० स०] सम्मान में हाथ जोड़े हुए।

प्रयन्तृ (पुं०) चालक, उकसाने वाला, भड़काने वाला प्रेरक।

प्रया (अदा० पर०) ग्रस्त होना, अपने ऊपर लेना, उठाना।

प्रयुक्त (वि०) [प्र+युज्+क्त] 1. प्रकल्पित, उपाय द्वारा काम चलाया हुआ 2. खींची हुई (जैसे तलवार)।

प्रयुक्तसत्कार (वि०) [ब० स०] जिसका स्वागत सत्कार किया गया है प्रयुक्तसत्कारविशेषमात्मना न मां परं संप्रतिपत्तुमर्हसि—कु० ५।

प्रयोक्तृ (पुं०) [प्र+युज्+तृच्] प्रापक, समाहर्ता ।

प्रयोगः [प्र+युज्+घञ्] 1 उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम 2 यथावत् रूप, सामान्य उपयोग 3 फेंकना, फेंक कर मार करना (विप० संहार) 4 प्रवर्तन, अनुष्ठान 5 अभ्यास परीक्षणात्मक उपयोग 6 प्रक्रिया क्रम 7 कार्य 8 सस्वर पाठ 9 आरम्भ 10 योजना, तरकीब 11 साधन, उपाय । सम० —ग्रहणम् व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करना, —चतुर (वि०), —निपुण (वि०) व्यवहार में प्रयुक्त करने में दक्ष, स्वयं अभ्यास करने में होशियार, —शास्त्रम् कल्पसूत्र, —विद् (वि०) जो किसी वस्तु के व्यवहार को जानता है ।

प्रलम्बबाहु } (वि०) [ब० स०] जिसकी भुजाएँ
प्रलम्बभुज } लम्बी हैं ।

प्रलयः [प्र+ली+अच्] 1 आध्यात्मिक लय 2 मूर्छा, बेहोशी ।

प्रलापिता [प्रलाप+इनि+तल्+टाप्] प्रेम संबंधी बातचीत ।

प्रलुप्त (वि०) [प्र+लुप्+क्त] लूटा हुआ ।

प्रलुब्ध (वि०) [प्र+लुभ्+क्त] 1 ठग, वञ्चक 2. लोभ में फँसाया हुआ ।

प्रलोपः [प्र+लुप्+घञ्] नाश, संहार ।

प्रवणम् [प्रु+ल्युट्] पहुँच, पैठ ।

प्रवणायितम् [प्रवण+क्यच्+क्त] इच्छा, झुकाव ।

प्रवादः [प्र+वद्+घञ्] झूठा आरोप शि० १।४४ ।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1. मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ उत्तम 2. सबसे बड़ा, —रः (पुं०) 1 बुलावा 2. अग्निहोत्र के अवसर पर ब्राह्मण द्वारा अग्नि का विशेष आवाहन 3 पूर्वज 4 कुल, वंश 5. गोत्र प्रवर्तक ऋषि 6. सन्तति 7 चादर, —रा (स्त्री०) गोदावरी में गिरने वाली एक नदी, —रम् (नपुं०) अगर की लकड़ी, चंदन । सम० —धातुः मूल्यवान् धातु, —ललितम् एक छन्द का नाम ।

प्रवासपर (वि०) परदेश में रहने का व्यसनी ।

प्रवास्य (वि०) [प्र+वस्+णिच्+ण्यत्] निर्वासित किये जाने के योग्य ।

प्रवातशयनम् (नपुं०) ऐसे स्थान पर सोना जहाँ खिड़की या वातायनों के द्वारा हवा खूब आती जाती हो ।

प्रविचारः [प्र+वि+चर्+घञ्] विवेक, प्रभाव, आदि, प्रकार ।

प्रविचारित (वि०) [प्रविचार+इतच्] परीक्षित, सावधानतापूर्वक विचार किया गया ।

प्रविरत (वि०) [प्र+वि+रम्+क्त] जो किसी बात से पराङ्मुख हो गया हो, दूर रहने वाला ।

प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1 रीति, विन्यास 2 रोजगार जैसा कि (मुसलप्रवेश) में ।

प्रविषयः (पुं०) क्षेत्र, परास, पहुँच ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र+वृ+क्त] 1 बहने वाला —प्रवृत्तमुदक वायु महा० १४।४६।१२ 2 आघात करने वाला, चोट पहुँचाने वाला 3 परिचालित, घुमाया हुआ । सम० —चक्रता (स्त्री०) प्रभुसत्ता याज्ञ० १।२६६।

प्रवृत्ति [प्र+वृत्+क्तिन्] 1 गुणक (गणित०) 2. उदय, उद्गम 3 प्रकट होना 4 आरम्भ 5 आचरण 6 कार्य, रोजगार 7 प्रयोग 8 सार्थकता, अर्थ 9. समाचार 10 भाग्य, किस्मत 11. प्रत्यक्ष ज्ञान । सम० —पुरुषः समाचारों का अभिकर्ता —लेखः बाध्यादेश, —विज्ञानम् बाहरी संसार का ज्ञान ।

प्रव्याहरणम् [प्र+वि+आ+हृ+ल्युट्] वाक्शक्ति ।

प्रव्रज्यायोगः [ष० त०] ज्योतिष का एक योग जो संन्यास लेने का निर्देश करता है ।

प्रशंस् (भ्वा० आ०) भविष्यवाणी करना ।

प्रशंसालापः [ष० त०] अभिनन्दन, जयघोष ।

प्रशस्तिः [प्र+शस्+क्तिन्] प्रचार, विज्ञापन ।

प्रशमनम् [प्र+शम्+ल्युट्] शान्ति की स्थापना (किसी राजनीतिक संकट के पश्चात्) ।

प्रस्नुत (वि०) [प्र+स्नु+क्त, तस्य नत्वम्] चूआ हुआ ।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1 सवाल, पृच्छा, पूछताछ 2. न्यायिक पूछताछ 3 विवादास्पद विन्दु 4 समस्या 5 किसी पुस्तक का छोटा अध्याय । सम० —कथा पूछताछ पर समाप्त होने वाली कहानी, —वादिन् ज्योतिषी, आगे होने वाली बात बताने वाला, —विचारः भविष्यकथन विषयक ज्योतिष की एक शाखा ।

प्रसक्त (वि०) [प्र+सञ्ज्+क्त] अत्यन्त आसक्त, किसी बात से चिपका हुआ ।

प्रसङ्गः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1. बढ़ाया हुआ प्रयोग अन्यथ कृतस्वाध्यायाप्रसक्तिः प्रसङ्गः- मी० सू० १२।१।१ पर शा० भा० 2. गौण घटना या कथावस्तु । सम० —समः तर्कसंगत हेत्वाभास जहाँ स्वयं 'प्रमाण' भी सिद्ध किया जाता है ।

प्रसञ्जित (वि०) [प्र+सञ्ज्+णिच्+क्त] सत्ताप्राप्त, अस्तित्व में आया हुआ—प्रसह्य मर्यादां यत्ती प्रसञ्जिते - कौ० २।१९ ।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] भोजन पचने के पश्चात् उसका पोषक रस ।

प्रसेदिवस् (वि०)[प्र+सद्+क्वसु] जो प्रसन्न हो चुका है ।

प्रसन्दानम् [प्र+सम्+दो+ल्युट्] रज्जु, रस्सी, बेड़ी ।

प्रसह्य (अ०) [प्र+सह्+ल्यप्] 1. जीत कर 2 अवश्य ही, निश्चित रूप से । सम० —कारिन् (वि०) जोखिम कार्य करने वाला प्रबल वेग से क्रियाशील ।

प्रसवकालः [ष० त०] प्रसूतिकाल, बच्चा जनने का समय।

प्रसूति [प्र+सू+क्तिन्] उद्भव, उत्पत्ति, कारण—कि० ४।३२।

प्रसृ (भ्वा० पर०) 1 विषण्ण होना (जैसा कि शरीर के तीनों दोषों का) 2 अनुसरण करना 3 सम्प्रसारण अर्थात् अर्धस्वरों को उनके संवादी स्वर में बदलना।

प्रसरः [प्र+सृ+अप्] पसार (जैसा कि 'दृष्टिप्रसर' में)।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1 व्यापारी की दुकान 2 (धूल) उड़ाना 3. फैलाव।

प्रसारिताङ्ग (वि०) [ब० स०] जिसके अंग बहुत फैले हुए हों।

प्रसृप् (भ्वा० पर०) छा जाना, फैल जाना। (जैसे कि अन्धकार)।

प्रस्कन्न (वि०) [प्र+स्कन्द्+क्त] आक्रान्त, जिसके ऊपर धावा बोला गया हो।

प्रस्तरप्रहरणन्यायः [ष० त०] मीमांसा का व्याख्याविषयक एक सिद्धान्त जिसके अनुसार करण द्वारा प्रतिपादित विषयवस्तु की अपेक्षा कर्म द्वारा विहित वर्णन अधिक प्रबल होता है।

प्रस्तावः [प्र+स्तु+घञ्] 1 व्याख्यान का विषय, शीर्षक 2. नाटक की प्रस्तावना 3 साम के परिचायक शब्द।

प्रस्तोतृ (पुं०) [प्र+स्तु+तृच्] उद्गाता की सहायता करने वाला यज्ञीय पुरोहित, ऋत्विज।

प्रस्तोभः [प्र+स्तुभ्+घञ्] संदर्भ, उल्लेख—भाग० ९।१९।२६।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1. दर्शनशास्त्र की एक शाखा 2. धार्मिक भिक्षावृत्ति, प्रव्रज्या—सप्रस्थाना आश्रमधर्मा विशिष्टाः महा० १२।६४।२२। सम०—मङ्गलम् यात्रा आरंभ करते समय माङ्गलिक प्रक्रियाएं।

प्रस्रवः [प्र+स्रु+अप्] 1 धारा (जैसे कि दूध की) 2. [ब० व०] आँसू 3 मूत्र।

प्रस्पर्धिन् (वि०) [प्र+स्पर्धा+इनि] होड़ करने वाला, बराबरी करने वाला।

प्रस्फार (वि०) [प्र+स्फर्+घञ्] सूजा हुआ, फूला हुआ।

प्रहततूर्य (वि०) [ब० स०] जहाँ पर ढोल बजते हों —संगीताय प्रहततूर्या —मेघ०।

प्रहतिः [प्र+हन्+क्तिन्] आघात, चोट, थप्पड़।

प्रहा (जुहो० पर०) छोड़ देना, हार जाना।

प्रह्व (भ्वा० पर०) मुड़ना, उन्मुख होना।

प्रहितसूचन (वि०) संदेश लेकर आने वाला।

प्रहरणकलिका (स्त्री०) एक छन्द का नाम।

प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1 युद्ध 2. हार (गले में पहनने का)।

प्रांशुः [ब० स०] लम्बे क़द का व्यक्ति, क़द्दावर प्रांशुलभ्ये रघु० १।३। सम०—प्राकार (वि०) जिसकी ऊँची दीवारें हों।

प्राकारधरणी [ष० त०] दीवार के ऊपर बना चबूतरा।

प्राकारस्थ (वि०) [स० त०] जो फसील पर खड़ा हो।

प्राकृतमानुष [क० स०] साधारण मनुष्य।

प्राक्तन (वि०) [प्राक्+तन्] 1 पुराना, पिछला, भूत काल का 2 अतीत समय का, पहला, पहले जन्म का, —नम् भाग्य। सम० —कर्मन् (नपुं०) पूर्वजन्म में किया गया कार्य, भाग्य, —जन्मन् (नपुं०) पूर्व जन्म।

प्रागल्भी [प्रगल्भ+अण्+ङीप्] 1 साहस 2 दृढ़ता।

प्रागल्भ्यम् (नपुं०) [प्रगल्भ+ष्यञ्] प्रगल्भता, वीरता चतुरता। सम० —बुद्धिः (स्त्री०) निर्णय करने का साहस, न्याय साहस।

प्रागुण्यम् [प्रगुण+ष्यञ्] सही स्थिति, यथार्थ दशा, दिशा, अनुदेश।

प्राघूर्णिका (स्त्री०) अतिथि सत्कार पाहुनों का स्वागत।

प्राच् (वि०) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1 सामने का, आगे का 2 पूर्वी 3 पहला। सम० —उत्पत्तिः (किसी रोग का) पहला दर्शन, —वचनम् प्राचीन उक्ति, पहले का कथन।

प्राचार (वि०) सामान्य प्रथाओं के विरुद्ध, साधारण अनुष्ठान और सत्प्रथाओं के विपरीत।

प्राचार्य (पुं०) [प्रकृष्ट आचार्य] 1 अध्यापक का अध्यापक 2 सेवानिवृत्त अध्यापक।

प्राचीनमूल (वि०) [ब० स०] जिसकी जड़ें पूर्व दिशा की ओर मुड़ी हुई हों।

प्राच्यपदवृत्ति. (स्त्री०) एक नियम जिसके अनुसार 'अ' से पूर्व किन्हीं विशेष अवस्थाओं में 'ए' अपरिवर्तित अवस्था में रहता है।

प्राच्यवृत्तिः (स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।

प्राजापत्यम् [प्रजापति+ष्यञ्] 1 प्रजननात्मक शक्ति 2 एक यज्ञ का नाम।

प्राज्ञ (वि०) [प्रज्ञ एव—स्वार्थे अण्] 1 बुद्धिमान् 2. समझदार, विद्वान्, —ज्ञः (पुं०) 1 बुद्धिमान् या विद्वान् 2 एक प्रकार का तोता 3. व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता 4 परमेश्वर।

प्राज्ञता, **प्राज्ञत्वम्** [प्राज्ञ+तल्, त्व, वा] बुद्धिमत्ता।

प्राण [प्र+अन्+घञ्] 1 जीवन, जान 2 आहार, अन्न। सम० —कर्मन् (नपुं०) जीवन कार्य, —परिक्षीण (वि०) जिसके जीवन का अन्त निकट है, —परित्राणम् किसी के जीवन की रक्षा करना, बचाना, —[illegible] प्राणप्रिया, 4 विशेष प्राणायाम की क्रिया।

प्रातर् (अ०) [प्र+अत्+अरन्] 1 पौ फटने पर, प्रभात वेला में, तड़के, सवेरे 2 कल सवेरे। सम० —अनुवाकः

वह सूक्त जिससे प्रातःसवन का उपक्रम होता है, —चन्द्रः प्रभातकाल का चन्द्रमा।

प्रातिकामिन् (पुं०) सेवक या दूत।

प्रातिनिधिक: [प्रतिनिधि+ठक्] 1 स्थानापन्न 2 प्रतिनिधिकार, प्रतिनिधित्व।

प्रातीप्यम् [प्रतीप+ष्यञ्] शत्रुता, विरोध।

प्रात्यक्षिक (वि०) [प्रत्यक्ष+ठक्] आँखों को दिखाई देने वाला।

प्रादेशमात्र (वि०) [प्रदेशमात्र+अण्] जरा सा, विचार मात्र देने के लिए, —म् (नपुं०) एक बालिश्त की माप पूरी अंगुलियों को फैलाकर अंगूठे के किनारे से तर्जनी अंगुली के किनारे तक की माप उपविश्य दर्भाग्रे प्रादेशमात्रे प्रच्छिनत्ति न नखेन काशिरगृह्यसू० २।४।

प्राध्व (वि०) [प्रकृष्टोऽध्वा अच् समासः] 1 यात्रा पर गया हुआ 2 पूर्वोदाहरण निर्देशन 3 बन्धन।

प्रान्त: [प्रकृष्टोऽन्तः] 1 किनारा, गोट 2 कोण (आँख, ओष्ठ आदि का) 3 सीमा 4 अन्तिम किनारा। सम० निवासिन् सीमान्त प्रदेश का रहने वाला —भूमी (अ०) अन्त में आखिरकार।

प्रापणम् [प्र+आप्+ल्युट्] व्याख्या, विवरण विचार।

प्रापयिषु (वि०) [प्र+आप्+णिच्+सन्+उ] पहुँचाने की इच्छा वाला।

प्राप्त (वि०) [प्र+आप्+क्त] किसी पूर्वोदाहरण के अनुसार या पूर्वतर्क का अनुगामी। सम० —रूप (वि०) योग्य उपयुक्त —भाव (वि०) 1 बुद्धिमान् 2. सुन्दर।

प्राप्ति: (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1 किसी वस्तु का निरीक्षण करने पर लगाया गया अनुमान 2 (ज्योति० में) ग्यारहवाँ चान्द्रघर।

प्राप्य (अ०) [प्र+आप्+ल्यप्] प्राप्त करके उपलब्ध करके। सम० —कारिन् (वि०) कार्य में नियुक्त होकर ही प्रभावशाली —रूप (वि०) अनायास ही प्राप्त होने वाला।

प्राबरणम् [प्र+अव्+ल्युट्] दूध में तैयार किया हुआ भोजन।

प्रायत्यम् [प्रयत+ष्यञ्] पवित्रता, स्वच्छता।

प्रायुस् (नपुं०) बढ़ी हुई जीवन शक्ति दीर्घतर जीवन।

प्रारब्ध (वि०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरम्भ किया हुआ, शुरू किया हुआ। सम० —कर्मन् कार्य (वि०) जिसने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है —कर्मन् (नपुं०) वह कार्य जो फल देने लगा है।

प्रार्जयितृ (वि०) [प्र+अर्ज्+णिच्+तृच्] जो अनुदान देता है।

प्रार्थ् (चुरा० आ०) आश्रय लेना, सहारा लेना।

प्रार्थ्य (वि०) [प्र+अर्थ+ण्यत्] 1 चाहने योग्य 2 वाञ्छनीय।

प्रालम्बम् [प्रलम्ब+अण्] प्रलम्ब से सम्बन्ध रखने वाला।

प्रावर्तिक (वि०) [प्रवृत+ठक्] वह क्रम जो किसी कार्य पद्धति में सर्व प्रथम अपनाया जाकर बाद में पश्चवर्ती सभी कार्यों में अपनाया जाय, जिससे कि कार्य में पद्धति की एकता बनी रहे।

प्रावादुक: [प्र+वद्+उकञ्] वाद-विवाद में प्रति पक्षी।

प्रासाद: [प्र+सद्+घञ्] 1 महल, भवन 2. राज भवन 3 मन्दिर 4 चबूतरा 5 वेदिका। सम० —गर्भ: महल का आन्तरिक कमरा, —शिखर: महल की चोटी।

प्राहवणीय (वि०) [प्र+आ+ह्वे+अनीय] अतिथि की भाँति स्वागत किये जाने के योग्य।

प्राहुण [प्र+आ+घूर्ण्+क] अतिथि, पाहुना।

प्रिय (वि०) [प्री+क] 1 प्यारा, अनुकूल 2 सुखद, 3 अभिलषित 4 भक्त, अनुरक्त, —य (पुं०) 1 प्रेमी, पति 2 हरिण 3 जामाता, —या (स्त्री) 1 पत्नी 2 महिला 3 छोटी इलायची —यम् (नपुं०) 1 प्रेम 2 कृपा प्रसाद 3 सुखद समाचार। सम० —आलापिन् (वि०) मिष्टभाषी मीठा बोलने वाला —असु (वि०) जिसे अपनी जान बहुत प्यारी हो जीवन को चाहने वाला, —कलह (वि०) झगड़ालू —जीविता प्राणों का प्रेम —संग्रहार (वि०) मुकदमे बाजी को पसंद करने वाला।

प्रियंवद (वि०) [प्रियं ददाति दा+श] अभीष्ट और सुखद वस्तु का दाता।

प्रीति: [प्री+क्तिन्] 1 प्रबल इच्छा 2 संगीत की श्रुति। सम० —संयोग: मैत्री सबन्ध, —संगति: मित्रों का सम्मिलन।

प्रेत: [प्र+इ+क्त] 1 नरक में रहने वाला 2 इस संसार से गया हुआ, मृत 3 पितर। सम० —आवास: एक विशेष नरक, —पात्रम् और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला बर्तन।

प्रेक्षणालम्भम् (नपुं०) (स्त्रियों की ओर) देखना या (उन्हें) स्पर्श करना।

प्रेक्षा [प्र+ईक्ष्+अ+टाप्] कान्ति, आभा प्रेक्षा क्षिपन्त हरितोपलाद्रे भाग० ३।८।२४। सम० —पूर्वम् (अ) देखभाल कर, जान बूझ कर, —प्रपञ्च: रंगमञ्च पर खेला जाने वाला नाटक।

प्रेमार्द्र (वि०) [तृ० त० स०] प्रेम से पसीजा हुआ।

प्रेयकम् (नपुं) एक प्रकार का चमड़ा कौ० अ० २।११।२९।

प्रेयस्यकम् (नपुं०) सौन्दर्य, लावण्य नै० ५।६६।

प्रोच्चल् (भ्वा० पर०) यात्रा पर प्रस्थान करने वाला।

प्रोच्चाटना [प्र+उत्+चट्+णिच्+युच्+टाप्] 1 (भूतप्रेतादि को) भगाना 2 विनाश।

प्रोतमन्न (वि०) [ब० स०] बादलों में डूबा हुआ ।
प्रोतशूल (वि०) [ब० स०] शलाका पर रक्खा हुआ ।
प्रोत्तान (वि०) [प्र+उत्+तन्+क्त] फैलाया हुआ ।
प्रोत्ताल (वि०) [प्रकर्षेणोत्तालः—प्रा० स०] ऊँचे स्वर से बोलने वाला ।
प्रोदर (वि०) [ब० स०] बड़े पेट वाला ।
प्रोद्वीचि (वि०) [प्रा० स०] लहराता हुआ, घटबढ़ होता हुआ ।
प्रोन्नमित (वि०) [प्र+उत्+नम्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, उभारा हुआ ।
प्रोर्णु (अदा० उभ०) अच्छी तरह ढक लेना, चादर लपेट लेना ।
प्रौढ (वि०) [प्र+ऊढ—वह्+क्त] 1. विशाल, बड़ा 2 ग्रस्त, घिरा हुआ । सम०—प्रियः साहसी और विश्वास पात्र स्त्री,—मनोरमा सिद्धान्त कौमुदी पर एक टीका ।
प्रौढिः [प्र+वह्+क्तिन्] औत्सुक्य, उत्कटता, (चरित्र की) गहराई ।
प्रौक्त (वि०) अर्थ सम्पन्न, अर्थ युक्त ।
प्लक्ष द्वारम् (नपुं०) पार्श्वद्वार, भवन के पक्ष का द्वार । —म० पु० २६४।१५ ।
प्लवः [प्लु+अच्] 1. एक जलचर 2. एक संवत्सर का नाम । सम०—कुम्भः तैराक की सहायता के लिए घड़े जैसा बर्तन ।
प्लावयितृ (वि०) [प्लु+णिच्+तृच्] मल्लाह, नाविक ।
प्लुतभेदः (पु०) एक प्रकार का लयित माप ।

फ

फणधरः [फणं बिभर्तीति-भृ+अच्] साँप ।
फणिशयनः (पु०) विष्णु का विशेषण ।
फणिज्झकः (पु०) तुलसी का एक भेद, सफेद मरवा ।
फञ्जकः (पु०) हरी घास ।
फलम् [फल्+अच्] 1. क्षतिपूर्ति, प्रतिपूर्ति 2. लक्ष्यप्राप्ति, संकलन 3. [illegible] 4. [illegible] 5. परिणाम 6. कृत्य 7. उद्देश्य, प्रयोजन 8. उपयोग, लाभ 9. सन्तान, 10 (तलवार का) फलक 11. तीर की नोक । सम०—अधिकारः परिणाम का दावा,—अनुबन्धः फल का अनुरूप परिणाम,—उपभोगः फल का आनन्द लेना,—ग्रन्थः 'ग्रहों का मानवकुल पर प्रभाव' विषयक ज्योतिष का एक ग्रन्थ,—[illegible] परिणाम का अधिग्रहण,—भुज् (पु०) बन्दर,—मूलम् (नपुं०) फल और जड़,—वर्तिः (स्त्री०) कपड़े की बनी बत्ती जिसे चिकना करके विरेचन के लिए गुदा में रक्खा जाता है,—स्नपनम् 'सीमन्तोन्नयन' नामक संस्कार ।
फलकम् [फल+कन्] 1. तख्ता, पट्ट 2. टिकिया 3. कूल्हा 4. हाथ की हथेली 5. ढाल 6. बाण का मुंह 7. [illegible] 8. लकड़ी का पटड़ा 9. (कपड़ा बुनने के लिए) वृक्ष की छाल सन आदि । सम०—परिधानम् वस्त्रों के रूप में वृक्षछाल धारण करना ।
फलिः (पु०) [फल्+इ] एक प्रकार की मछली ।
फल्गुत्वम् मिथ्यापन, झूठपना ।
फालिका (स्त्री०) ग्रास, टुकड़ा—मृदुमांसफालिकाम् नै० १६।८२ ।
फाल्गुनेयः [फाल्गुनी+ढक्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु ।
फिट्सूत्रम् व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसके रचयिता शान्तनवाचार्य थे ।
फुल्लिका (स्त्री०) एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा ।
फूत्कृतिः (स्त्री०) [फूत्+कृ+क्तिन्] फूँक मारना, 'सीटी' शब्द करना ।
फिरङ्गः (पु०) [अं० फिरङ्ग] उपदंश, गर्मी का रोग ।
फुल्लवदन (वि०) [ब० स०] प्रसन्नमुख, खुश दिखाई देने वाला ।
फेण्टकः (पु०) एक प्रकार का पक्षी ।
फेनधर्मन् (वि०) क्षणभंगुर, क्षणस्थायी, बुलबुले की भांति अस्थिर—ब्रह्म० १।१५।२ ।
फेनायितम् [ना० धा० फेन+क्यच्+क्त] मुख के पार्श्ववर्ती भाग से की गई हाथी की झागयुक्त गर्जना, चिंघाड़ मात० २।११ ।
फेरुकः अंडकोष, फोता, मुष्क ।

बकः [मज्ज्+अच्, पृषो०] कान से बालुओं तथा अन्य अनिष्ट पदार्थों को निकालने का एक उपकरण। सम०—विडम्बका,—विडम्बी एक प्रकार की मछली।

बकाची (स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

बटुकः [बटु+कन्] 1 लड़का बच्चा 2 मन्दबुद्धि बालक। सम०—भैरवः भैरव का एक रूप।

बडिशम् (नपुं०) शल्योपयोगी उपकरण।

बत (अ०) यथार्थत उक्त, ठीक कहा हुआ कल्याणी बत गाथेयम् रा० ५।३४।६।

बद्वम् बड़ी संख्या (सायण के मत मे सौ करोड़ की संख्या, औरों के मत से एक हजार करोड़)।

बन्दिः [बन्द्+इ] 1 बन्धन कैद 2 बन्दी, कैदी। सम० —ग्रहः बन्दी बनाना, ग्राहः सेंध लगाने वाला, —ग्राहम् (अ०) बन्दी के रूप में ग्रहण करना, —पालः काराध्यक्ष, शूला कारागमना, वेश्या।

बद्ध (वि०) [बन्ध्+क्त] 1 परिरक्षित 2 बन्धा हुआ, 3 शृंखलित 4 प्रतिबद्ध 5. सहित 6 दृढ़ 7 जड़ा हुआ 8. रचित 9 संकुचित। सम० -अवस्थिति (वि०) सतत, अनवरत, आदर (वि०) व्यसनग्रस्त—बद्धादरोऽपि परदारपरिग्रहे त्वम् रा० च० ५, —मण्डल (वि०) वर्तुलाकार, मंडली में अवस्थित, —मूत्र (वि०) जिसने मूत्र रोक लिया है।

बन्धः [बन्ध्+घञ्] 1 बन्धन 2 केशबन्ध, चोटिला 3 शृंखला, बेड़ी। सम० -कर्तृ (पुं०) बांधने वाला,—मुद्रा बेड़ी की छाप।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] सांसारिकबन्धन (विप० मोक्ष)। सम० रक्षिन् (वि०) काराध्यक्ष।

बन्धनिकः [बन्धन+ठन्] काराध्यक्ष।

बन्धुः [बन्ध्+उ] 1 रिश्तेदार, सम्बन्धी 2 एक दूसरे से सम्बद्ध, भाई 3 मित्र ० नियमक, शासक 5 ज्योतिष की दृष्टि से तीसरा घर। सम०—दायादः रिश्तेदार, उत्तराधिकारी,—प्रिय (वि०) सम्बन्धियों का प्यारा।

बन्धुरित (वि०) [बन्धुर+इतच्] प्रवृत्त, मुड़ा हुआ।

बन्धूकृ (तना० उभ०) मित्र बनाना।

बन्धूर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1 तरंगित, लहरियादार 2 सुखद, प्रसन्नता देने वाला।

बभ्रुकः [भृ+कु, द्वित्व बभ्+उ वा, स्वार्थे कन् च] एक नकुलपुत्र।

बर्कुरः (पुं०) 1 वह हाथी जिसने चौथे वर्ष में दार्पण कर लिया है मात० ५।५ 2 घुंघराला। सम० —अलका (स्त्री) वह स्त्री जिसके मस्तक के घुंघराले बाल हैं।

बर्बरीकम् (नपुं०) 1 घुंघराले बाल 2 सफेद चन्दन की लकड़ी।

बर्हं,—र्हम् [बर्ह्+अच्] 1 मोर का पंख 2 पक्षी की पूंछ 3 मोर की पूंछ 4 पत्ता 5 वृन्द। सम०—अवतंस (वि०) जिसने सिर को पंख लगाकर अलंकृत किया हुआ है,—नेत्रम् मोर की पूंछ पर बना आंख जैसा चिह्न।

बर्हिन्याय (पुं०) मीमांसा का व्याख्याविषयक एक नियम जिसके आधार पर गौण अर्थ की अपेक्षा प्राथमिक अर्थ को प्रधानता दी जाती है—मी० सू० ३।२।१-२।

बर्हिणवाससः (नपुं०) पंखों से बना बाण, वह तीर जिसमें पर लगा है।

बलम् [बल+अच्] 1 शक्ति, सामर्थ्य 2 सेना 3 मोटापा 4 शरीर, आकृति 5 वीर्य 6 रुधिर 7 अङ्कुर 8 शक्ति का देवता 9 हाथ कान्ते विष्णुबले शक —महा० १२।२३९।८ 10. प्रयत्न। सम०—अर्थिन् (वि०) शक्ति या सामर्थ्य का इच्छुक —उपादानम् सेना में भर्ती होना—कौ० अ०,—तापनः इन्द्र का विशेषण,—पुच्छक कौवा, पुच्छकः हरिण विशेष, —मुख्य सेनापति, —वर्जित (वि०) बलहीन, दुर्बल, —समुत्थानम् सशक्त सेना की भर्ती करना।

बलकः (पुं०) स्वप्न।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1. बलवान्, शक्ति संपन्न, प्रबल 2 सघन, मोटा 3. अधिक महत्त्वपूर्ण 4. सर्वज्ञ (पुं०) 1 आठवां मुहूर्त 2. श्लेष्मा, कफ, बलवान ती (स्त्री०) छोटी इलायची।

बलासः (पुं०) 1 एक प्रकार का रोग 2. क्षय, तपेदिक।

बलाहकः [बल+आ+हा+क्वुन्] 1 बादल 2. एक पर्वत 3 विष्णु का एक घोड़ा 4 सांप की एक प्रकार।

बलिः [बल्+इन्] 1 यज्ञ में आहुति, उपहार 2 भूत यज्ञ 3 पूजा, अर्चना 4 उच्छिष्ट भोजन 5. देवता पर चढ़ाया गया उपहार 6 शुल्क, कर 7 चँवर का दस्ता 8 एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। सम०—तिलक मस्तक पर एक रेखा,—बन्धनम् एक नाटक का नाम जो पाणिनि द्वारा रचित समझा जाता है,—बन्धनः (पुं०) विष्णु का विशेषण, विधानम् उपहार रूप में बलि देना,—षड्भाग आय का छठा भाग जो राजा को कर के रूप में दिया जाता है - अरक्षितार राजानं बलिषड्भागहारिणम् मनु० ८।३०८,—होमः अग्नि में आहुति देना।

बलीकः (पुं०) 1 कौवा 2 चालाक, धूर्त, मक्कार।

बस्तमारम् (अ०) बकरे की हत्या के ढंग पर।

बस्ति [बस्त्+इ, वबयोरभेद] 1 मूत्राशय 2 साभर झील से उत्पन्न नमक।

बस्तिकः (पुं०) एक प्रकार का बाण जिसकी नोक शरीर से खींचते समय उसी में रह जाती है —महा० ७। १८९।११ पर भाष्य।

बहिस् (अ०) [बह्+इसुन्] 1. के बाहर, बाहर 2. घर के बाहर 3. बाह्यरूप से 4. पृथक् रूप से 5. सिवाय। सम० —अङ्ग (वि०) बाहरी, दूर से संबन्ध रखने वाला—अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्गं बलीयः मै० सं० १२।२।२९ पर शा० भा०, —दृश (बहिर्दृश) (अ०) अतिरिक्त या फालतू दिखाई देने वाला, —पवमानम् सोमयाग में प्रयुक्त सामसत्र, —प्रज्ञ (वि०) जिसकी योग्यता बाह्य पदार्थों की हो, —मनस् (वि०) जो मन से बाहर हो, —मनस्क (वि०) जो मानस क्षेत्र की बात न हो, —भूति (वि०) जो बाहर बँधा हुआ या रक्खा हुआ हो, —वर्तिन् (वि०) बाहर रहने वाला, —व्यसनिन् (वि०) लंपट, कामुक, इन्द्रियपरायण, —स्थ, —स्थित (वि०) बाहरी, बाहर का, —कार्य (वि०) निकाल बाहर फेंकने के योग्य।

बहु (वि०) [बह्+कु, नलोप] (तु०—बहीयस्, भूयस्, भूयिष्ठ) 1. बहुत, पुष्कल, प्रचुर 2. बहुत से, असंख्य 3. बड़ा, विशाल। सम० —उपयुक्त (वि०) जो कई प्रकार से काम का हो, —क्षारम् साबुन, —क्षीरा अधिक दूध देने वाली गाय, —गुरुः जिसने अध्ययन बहुत कुछ किया है परन्तु भली प्रकार नहीं, —दोहना दे० बहुक्षीरा, बहुत दूध देने वाली गाय, —नर्तकः शरीर, काया, —प्रकृति (वि०) जिसमें क्रियापरक तत्त्व बहुत हों (जैसे समस्त शब्द), —प्रज्ञ (वि०) बहुत बुद्धिमान्, बड़ा समझदार, —प्रत्यर्थिक (वि०) जिसके प्रतिपक्षी और प्रतिद्वन्द्वी अनेक हों, —प्रत्यवाय (वि०) जिसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हों, —रजस् (वि०) बहुत धूल से भरा हुआ, —वादिन् (वि०) बहुत बोलने वाला, —शस्त (वि०) बहुत उत्तम, —संख्यक (वि०) अनगिनत, —सत्त्व (वि०) जिसके पास बहुत से पशु हों, —सहस्र (वि०) हजारों की संख्या में।

बहुल (वि०) [बह्+कुलच्, नलोप] (म०—बंहीयस्, उ०—बंहिष्ठ) 1. मोटा, सघन, सटा हुआ 2. चौड़ा, पुष्कल 3. प्रचुर, यथेष्ट 4. असंख्य, अनगिनत 5. समृद्ध 6. काला, कृष्ण। सम० —अश्वः एक राजा का नाम, —पक्षतिमिरम् कृष्णपक्ष का अंधकार —कूजापुञ्जा बहुलपक्षतिमिरा सीमन्त—नै० २१।१२४।

बाणः [बण्+घञ्] 1 तीर 2 निशाना 3 बाण की नोक 4. ऐन, औड़ी (गाय की) 5 शरीर 6 एक राक्षस, बलि का पुत्र 7 एक कवि का नाम जिसने कादम्बरी और हर्षचरित लिखे हैं 8 अग्नि 9. पाँच की संख्या का प्रतीक 10 चाप की शरज्या। सम० —विद्ध (वि०) बाण से बिंधा हुआ, —पक्षः (पुं०) एक पक्षी, —लिङ्गम् नर्मदा नदी पर उपलब्ध एक श्वेत पत्थर जिसे शिवलिङ्ग के रूप में पूजा जाता है।

बादरिः (पुं०) एक दार्शनिक का नाम।

बाधाविमुक्ति (स्त्री०) [प० त०] भूत प्रेत की पीडा से मुक्ति।

बाधक (वि०) [बाध्+ण्वुल्] पीडादायक, छेड़छाड़ करने वाला।

बाधयितृ (पुं०)[बाध्+णिच्+तृच्] बाधा पहुँचाने वाला, हानि पहुँचाने वाला।

बाध्यबाधकता (स्त्री०) अत्याचारग्रस्त और अत्याचारी की अन्योन्यक्रिया, पीडित और पीडक का पारस्परिक प्रभाव।

बान्धवः [बन्धु+अण्] हितैषी—पैतृष्वस्रेयप्रीत्यर्थं तद्गोत्रस्यात्तबान्धव भाग० १।१९।३५।

बार्हस्पत्याः [बृहस्पति+यक्] राजनीति पर लिखने वालों की शाखा जिसका उल्लेख कौटिल्य ने किया है—कौ० अ० १।१५।

बाल (वि०) [बल्+ण, बाल्+अच] 1 बालक, बच्चा 2 अविकसित (पुरुष या वस्तु) 3 नवोदित (जैसा कि सूर्य या उसकी किरणें) 4 अज्ञान, —लः (पु०) 1 बच्चा 2 अवयस्क 3 मूर्ख 4 भोलाभाला 5 पाँच वर्ष का हाथी 6 नारियल। सम० —अरिष्टः बच्चों को दाँत निकलने का कष्ट, —आमयः बच्चों की बीमारी, बालरोग, —चिकित्सा बच्चों के रोगों का इलाज, —मत्स्यकः मछली, —चूतः आम का पौधा, —मनोरमा सिद्धान्तकौमुदी पर लिखी गई टीका —मरणम् मूर्ख की मृत्यु, —यतिः बालसंन्यासी, —व्रतः मञ्जुघोष (बौद्धश्रमण) का विशेषण।

बालकः [बाल+कन्] 1 बालक, बच्चा 2 आवयवक 3 मूढ़ 4 कड़ा 5 हाथी या घोड़े की पूँछ 6 बाल 7 पाँच वर्ष का हाथी— शि० ५।४७।

बाला [बाल+टाप्] दुर्गा का विशिष्ट रूप। सम० —मन्त्रः बालादेवी का पुनीत मन्त्र।

बालिशमति (वि०) बच्चों जैसी छोटी बुद्धि वाला, बालबुद्धि।

बालेयशाकः एक प्रकार का शाक।

बाष्कलः एक अध्यापक, पैल ऋषि का शिष्य, ऋग्वेदशाखा का संस्थापक।

बाष्पविक्लव (वि०) आँसुओं से अभिभूत।

बास्तिकम् [बास्त+ठक्] बकरियों का झुंड—रा० २।७७।२।

बाह्लिकः विदेशी, दूसरे देश का —न च बाह्लिकान् कुर्वीत पुरराष्ट्रोपघातकान् कौ० अ० ९।४।२२।

बाहुः [बाध्+कु, हकारादेश] 1 भुजा 2 चौखट का बाजू 3 पशु की अगला पाँव 4 (ज्या० में) समकोण त्रिकोण की आधार रेखा 5 रथ का पाँव 6 सूर्य घड़ी पर शङ्कु की छाया 7 बारह अंगुल की माप, एक हाथ की माप 8 धनुष का अवयव। सम०

—अन्तरम् छाती—बाह्वन्तरे मधुजित किणकौस्तुभे या—कण्ठ०, —तरणम् भुजाओं से तैर कर नदी पार करना,—निःसृतम् युद्ध की एक विधा जिसके अनुसार शत्रु के हाथ की तलवार नीचे गिरवा दी जाती है, —प्रचालकम् (अ०) भुजाएँ हिलाना —लोहम् पच्ची बनाने के काम आने वाला धातु, —विघट्टनम्, विघट्टितम् मल्लयुद्ध की एक विशेष मुद्रा।

बाह्य (वि०) [बहिर्भवः—ष्यञ्] 1 बाहर का, बाहरी 2 जाति बहिष्कृत 3 सार्वजनिक, —ह्यः (पु०) 1 विदेशी 2 बिरादरी से निष्कासित 3 प्रतिलोम संबंध से उत्पन्न सन्तान। सम० —अर्थः शब्द का अतिरिक्त, फालतू अर्थ, —कक्षः बाहर की ओर का कमरा, —करणम् बाहरी ज्ञानेन्द्रिय —प्रयत्नः ध्वनियों के उच्चारण के समय बाह्य प्रयत्न।

बिलम् (नपु०) आकाश निघ० ६।३०।

बिडालव्रतिक (वि०) [ब० स०] पाखण्डी कपटी, धूर्त।

बिन्दुः [बिन्द्+उ] 1 बूंद, कण 2. गोल चिह्न 3 हाथी के शरीर पर रंगीन निशान 4 शून्य, सिफ़र 5 (ज्या० में) ऐसा चिह्न जिसकी लम्बाई चौड़ाई कुछ भी न हो 6 पानी की एक बूंद 7 अक्षर के ऊपर लगा बिन्दु जो अनुस्वार का कार्य करता है 8 पाण्डुलिपियों में मिटाये गये शब्द के ऊपर शून्य चिह्न (जो प्रकट करता है कि यह शब्द मिटाया नहीं जाना चाहिए था) 9 (नाट्य० में) विशिष्ट चिह्न जो किसी गौण घटना का आकस्मिक विकास प्रकट करता है 10 (दर्शन० में) विश्वशक्ति का विशिष्ट अवस्था। सम० —च्युतकः एक प्रकार की शब्दक्रीडा —नै० ९।१०४,—प्रतिष्ठामय (वि०) अनुस्वार पर आधारित,—माधवः विष्णु का रूप।

बिम्बः [वी+वन्, नि०] 1 सूर्य या चन्द्र का मण्डल 2 कोई भी थाली की भांति गोल तलीय वस्तु 3 प्रतिमा, छाया, अक्स 4 दर्पण 5 मर्तबान 6 तुलित पदार्थ (विप० प्रतिबिम्ब) 7 मूर्ति आकृति 8 साँचा, उभरा हुआ चित्र।

बिम्बिनी [बिम्ब+इन्+ङीप्] आँख की पुतली।

बिम्बिसारः मगध के एक राजा का नाम जो गौतमबुद्ध का समसामयिक था।

बिरुदः 1 एक पदक या उपाधि जो श्रेष्ठता का द्योतक है 2 स्तुतिपाठ, प्रशस्ति।

बिलायतनम् [ष० त०] अन्तर्भौमिक गुफा।

बिसम् [बिस्+क] 1 कमलतन्तु 2 कमल का तन्तुमय डण्ठल 3 कमल का पौधा। सम० —ऊर्णा कमलतन्तु की ऊन, —गुणः कमलतन्तुओं से बनी रस्सी, —प्रसूनम् कमल फूल, —वर्तिः कमलतन्तु से बनी बत्ती।

बिसिनीपत्रम् कमल का पत्ता।

बीजम् [वि+जन्+ड, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बीज, बीज का दाना 2 बीजाणु, तत्त्व 3 मूल, स्रोत 4 वीर्य 5 कथावस्तु का बीज 6 बीजगणित 7. सचाई 8 आशय 9 प्राथमिक अनन्ताणु का सकलक 10 विश्लेषण 11 जन्म के समय शिशु के हाथों की मुद्रा। सम० —अश्वकः ऊँट,—अर्थ (वि०) प्रजननार्थी, —निर्वापणम् बीज बोना, —प्ररोहिन् (वि०) बीज से उगने वाला —वापः बीज बोना, —स्नेहः शाक का वृक्ष।

बीजाकृत (वि०) (खेत) जिसमें बोने के पश्चात् हल चला दिया जाय।

बुद्ध (वि०) [बुध्+क्त] 1 ज्ञात 2 जागरित 3 प्रकाशित 4 विकसित, —द्धः (पु०) 1 विद्वान् पुरुष 2 (बौद्ध मतानुसार) वह व्यक्ति जिसने 'सत्य ज्ञान' जान लिया है तथा जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व संसार को मोक्ष का मार्ग बतलाता है 3 परमात्मा।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1 प्रत्यक्षीकरण, समझ 2. प्रज्ञा, मति, मेधा 3 सूचना, जानकारी 4. विवेक 5 मन 6 मति, विश्वास विचार 7 इरादा, प्रयोजन, अभिकल्प 8 होश में आना, सुधबुध प्राप्त करना 9 सांख्य के २५ पदार्थों में दूसरा 10 प्रकृति 11 उपाय 12 ज्योतिष की दृष्टि से पाँचवाँ घर। सम०—अधिक (वि०) श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त, —छाया बुद्धि की आत्मा पर प्रतिवर्त क्रिया,—प्रागल्भी समझ की स्वस्थता, —मोहः विचार मूढ़ता, —लाघवम् निर्णयविषयक हलकापन, न्यायलघिमा, नासमझी, —वर्जित (वि०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, —वैभवम् बुद्धि की शक्ति बुद्धि का ऐश्वर्य।

बुभूषु (वि०) [भू+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] 1 समृद्ध होने का इच्छुक 2 कल्याण चाहने वाला।

बुरुडः (पु०) टोकरी बनाने वाला।

बुसा (स्त्री०) [बुस्+अच्+टाप्] (नाट्य० में) छोटी बहन।

बृसय (वि०) (वेद०) प्रबल, बलशाली, बड़ा—बृसयस्य बृहच्छब्दार्थं गमयति मी० सू० १०।१।३२ पर शा० भा०।

बृहत् (वि०) [बृह्+अति] 1 बड़ा, विशाल 2 चौड़ा, प्रशस्त विस्तृत 3 पुष्कल 4 प्रबल, शक्तिशाली 5 लंबा, ऊँचा 6 पूर्ण विकसित 7 सघन, सटा हुआ 8 प्राचीनतम, सबसे पुराना 9 उज्ज्वल 10 स्पष्ट, (पुं०) विष्णु, —ती (स्त्री०) 1 बड़ी वीणा 2 नारद की वीणा 3 छत्तीस की संख्या का प्रतीक 4 पीठ और छाती के बीच का भाग 5 आशय 6 वाणी 7 बड़ा अंडाकार बैंगन (नपु०) 1 वेद 2 ब्रह्मा 3 नैष्ठिक

ब्रह्मचर्यं सावित्रं प्राजापत्यं च ब्राह्मं चाथ बृहत्तथा —भाग० ३।१२।४२। सम० –उत्तरतापिनी एक उपनिषद् का नाम, –तेजस् (पुं०) बृहस्पति ग्रह, –देवता वैदिक देवता विषयक एक ग्रंथ, –नारदीयम् एक उपनिषद् का नाम, –संहिता वराहमिहिर रचित ज्योतिष का एक ग्रंथ, –सामन् सामवेद का एक मंत्र —भग० १०।३५।

बृहस्पतिचक्रम् (नपुं०) साठ वर्षों (संवत्सरों) का काल।

बैल (वि०) [बिल+अण्] बिलों में रहने वाला।

बोक्काणः (पुं०) घोड़े की नाक पर लटकता हुआ थैला जिसमें उसका खाद्य पदार्थ रक्खा रहता है।

बौधायनः (पुं०) एक सूत्रकार का नाम।

बोधिः (बुध्+इन्] 1. पूर्ण ज्ञान या प्रकाश 2. बौद्ध श्रमण की उज्ज्वल बुद्धि 3. पुनीत वटवृक्ष 4. मुर्गा 5. बुद्ध का विशेषण। सम० –अङ्गम् पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपेक्षित वस्तु।

बौद्धावतारः (पुं०) बुद्ध के रूप में भगवान् का अवतार।

ब्रध्नः (पुं०) 1. सूर्य 2. वृक्षमूल 3. दिन 4. आक या मदार का पौधा 5. सीसा 6. घोड़ा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण 8 तीर की नोक 9. एक रोग का नाम। सम० –बिम्बम्, –मण्डलम्, सूर्यमण्डल।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बृंह्+मनिन्, नकारस्याकारे ऋतोरत्वम्] 1. परमपुरुष, परमात्मा 2. अर्थवादपरक सूक्त 3. पुनीत पाठ 4. वेद 5. पुनीत अक्षर ओ३म्—एकाक्षरं परं ब्रह्म मनु० २।८३ 6. ब्राह्मणजाति 7. ब्राह्मण की शक्ति 8. धार्मिक तपश्चरण 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्व 10. मोक्ष 11. वेद का ब्राह्मणभाग 12. धन 13. आहार 14. सचाई 15. ब्राह्मण 16. ब्राह्मणत्व 17. आत्मा। सम०—किल्बिषम् ब्राह्मणों के प्रति किया गया अपराध, –कूर्चः बड़ा विद्वान्, –गीता (स्त्री०) ब्रह्मा का उपदेश जैसा कि महा० के अनुशासनपर्व में दिया गया है, –जिज्ञासा परमात्मा को जानने की इच्छा, –तन्त्रम् वेद की शिक्षा, –दूषक (वि०) वेद के मूलपाठ को दूषित करने वाला, –पारः सब प्रकार के पुनीत ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य, –बलम् ब्रह्मविषयक शक्ति, –बिन्दुः वेदपाठ करते समय मुख से निकली थूक की बूंद, –भूमिजा एक प्रकार की मिर्च, –मुहूर्तः दिन का आरंभिक भाग, ब्राह्मवेला, –रात्रः उषःकाल, –वादः परमात्मा से संबंध रखने वाला व्याख्यान, –श्री एक साममंत्र का नाम।

ब्रह्मण्वत् (पुं०) [ब्रह्मन्+मतुप्] अग्नि का विशेषण।

ब्रह्मीभूतः (पुं०) 1. जिसने ब्रह्मा के साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया है (यह सन्यासियों के विषय में कहा गया है जो इस शरीर को त्याग देते हैं) 2. शङ्कराचार्य।

ब्राह्मनिधिः (पुं०) ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा याजकों के लिए बनाई गई निधि।

ब्राह्मण (वि०) [ब्रह्म वेत्त्यधीते वा ब्रह्म+अण्] 1. ब्राह्मण विषयक 2. ब्राह्मण के योग्य 3. ब्राह्मण द्वारा दिया गया, 4. धर्म पूजा विषयक 5. ब्रह्म को जानने वाला —णः 1. चारों वर्णों में से पहले वर्ण से संबद्ध 2. (पुरुष के मुख से उत्पन्न) ब्राह्मण 3. पुरोहित 4 अग्नि का विशेषण 5. अट्ठाइसवां नक्षत्र, –णम् 1. ब्राह्मणसमाज 2. वेद का वह भाग जिसमें विविध यज्ञों के अवसर पर सूक्तों के प्रयोग का विधान विहित है, यह मन्त्रभाग से बिल्कुल पृथक् है। सम० – अदर्शनम् ब्राह्मण भाग में विहित निर्देश का अभाव —मनु० १०।४३, –ब्रुवः 'ब्राह्मण' नाम, –प्रातिवेश्यः पड़ोसी ब्राह्मण, –भावः ब्राह्मण होने की स्थिति।

भ

भक्तम् [भज्+क्त] 1. भाग, अंश 2. आहार 3. भात, उबले हुए चावल 4. अनाज 5. पानी में उबाला हुआ अन्न 6. पूजा, अर्चा 7. वेतन, पारिश्रमिक 8. एक दिन का भोजन —यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृत्तये - मनु० ११।७। सम०—दासः, –शाला उपाहारशाला, अन्नपानगृह, –साधनम् भोजन की तैयारी —सूपम् दाल की तश्तरी, –सिक्थम् भात का मांड।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1. विभाजन 2. गौण अर्थ, आलंकारिक अर्थ 3. (किसी रोग के प्रति) शरीर की उन्मुखता। सम०—गम्य (वि०) जो भक्ति के द्वारा प्राप्त किया जा सके, जहाँ श्रद्धा और भक्ति से पहुँचा जाय, – मन्द (वि०) जिसमें भक्ति की मन्दभाव हो अर्थात् थोड़ी भक्ति वाला व्यक्ति, – वश्य (वि०) जो भक्ति के द्वारा वश में किया जा सके।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लिए उपयुक्त, – क्ष्यम् (नपुं०) 1. खाने का पदार्थ, आहार, —भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम्—हि० १।५५ 2. जल। सम०—भक्ष्याभक्ष्यम् अनुमत और निषिद्ध भोजन, —भोज्यम् सब प्रकार के भोजन से युक्त।

भगः, –गम् [भज्+घ] 1. सूर्य 2. चांद 3. शिव का रूप 4. सौभाग्य, प्रसन्नता 5. समृद्धि 6. यश, कीर्ति

7. सौन्दर्य 8. श्रेष्ठता 9. प्रेम, प्यार 10. कामकेलि, 11 योनि 12 गुण, धर्म 13 प्रयत्न 14. अवधि, विराग 15. मोक्ष 16. सामर्थ्य 17. सर्वशक्तिमत्ता 18 प्रेम और विवाह की अधिष्ठात्री देवता आदित्य 19. ज्ञान 20. इच्छा 21. अणिमा। सम० दैव. भाग्य का देवता, काम (वि०) संभोग के आनंद का इच्छुक, —वृत्तिः (स्त्री०) वेश्यावृत्ति, वृत्ति (वि०) वेश्यावृत्ति से निर्वाह करने वाला। -

भगवत्पादाः आदि शंकराचार्य की सम्मान सूचक उपाधि।

भग्न (वि०) [भञ्ज्+क्त] 1 टूटा हुआ 2. हताश, विफल 3. अवरुद्ध, स्खलित 4 नष्ट 5. ध्वस्त 6. हारा हुआ। सम० अस्थि (वि०) जिसकी हड्डियाँ टूट गई हैं,—कूबर (वि०) जिसका ऊपर का ढाँचा टूट गया है (जैसे रथ),—तालः (संगीत०) एक प्रकार की माप,—परिणाम (वि०) पूरा करने से रोकने वाला।

भङ्गः [भञ्ज्+घञ्] 1 (बौद्ध०) विश्व में निरन्तर होने वाला क्षय 2 (जैन०) 'स्यात्' से आरम्भ होने वाला तार्किक सूत्र।

भङ्गिः [भञ्ज्+इन्, कुत्वम्; स्त्रियां ङीप्] 1. टूटना 2. हिलना 3. झुकना 4. तरंग 5. बाढ़ 6. विशिष्ट प्रथा, ढंग [illegible] —भाग०। सम० —भाषणम् कूटनीति से युक्त भाषण, —विकारः अपनी मुखमुद्रा को विकृत करना।

भङ्गिनी [भङ्गिन्+ङीप्] नदी, सरिता—वाल्मीकि- [illegible] नै० १८।११७।

[illegible] [भञ्ज्+घुर्+टाप्] व्याख्या।

भट्टनारायणः 'वेणीसंहार' नाटक का प्रणेता।

भट्टिः 'भट्टि काव्य' का रचयिता।

भट्टोजिः एक वैयाकरण का नाम।

भण्डुकः एक प्रकार की मछली।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नलोपः] 1. अच्छा, प्रसन्न, समृद्ध 2. शुभ, मांगलिक 3. श्रेष्ठ, प्रमुख 4 कृपालु 5. सुखद 6. सुन्दर 7. वाञ्छनीय 8. प्रिय 9. दक्ष। सम०—कल्पः बौद्धों के अनुसार वर्तमान युग,—निधिः उपहार के लिए बने पात्र, वाच् (स्त्री०) शुभ वक्तृता, विराज् एक छन्द का नाम।

भद्रक [भद्र+कन्] 1. सुन्दर 2. शुभ 3. सज्जन —कम् (नपुं०) 1. बैठने का विशिष्ट आसन 2. अन्तःपुर।

भद्राकरणम् मुण्डन, समस्त सिर मुंडवाना।

भयालु (वि०) [भय+आलुच्] भीरु कायर।

भरः [भृ+अप्] पराक्रम, श्रेष्ठता, प्रमुखता न खलु वयसा जात्यैवायं स्वकार्यसहो भरः—वि० ५।१८।

[illegible] नाट्यकला।

भर्गस् (नपुं०) [भृज्+असुन्] आभा, कान्ति, चमक।

भर्तव्य (वि०) [भृ+तव्य] 1. सहन करने या ढोने योग्य 2 भाड़े के योग्य, पालन पोषण किये जाने के योग्य।

भर्तृ (पुं०) [भृ+तृच्] 1 पति, 2 स्वामी 3 नेता, सेनापति 4 पालक पोषक, रक्षक 5 सृष्टिकर्ता 6. विष्णु। सम० चित्त (वि०) पति के विषय में सोचनेवाला, देवता पति को देवता मानना, लोकः पति का संसार,—हार्यधन (वि०) जिसकी संपत्ति उसके स्वामी द्वारा जब्त की जा सके, उज्झिता पति द्वारा परित्यक्ता।

भवः [भू+अप्] 1 सत्ता, अस्तित्व 2 जन्म, उत्पत्ति 3 स्रोत, उद्गम 4 सांसारिक सत्ता, सांसारिक जीवन 5 स्वास्थ्य, समृद्धि 6 देवता 7 शिव 8. अधिग्रहण, प्राप्ति 9 श्रेष्ठता। सम० अन्तम् संसार का सबसे अधिक दूरवर्ती किनारा, भङ्गः जन्म मरण से मुक्ति, —भावन (वि०) कल्याणकारी, भीरु (वि०) संसार के अस्तित्व से डरने वाला,—भोगः सांसारिक सुखों का आनन्द लेना, - शेखरः चन्द्रमा,—संगिन् (वि०) भौतिक संसार में अनुरक्त,—संततिः (स्त्री०) जन्म मरण का तांता।

भवद्वसु (वि०) [ब० स०] धनवान्, दौलतमंद।

भवनम् [भू+ल्युट्] जन्माङ्ग, जन्मकुंडली, जन्म-नक्षत्र।

[illegible] (वि०) अच्छे शकुनों वाला।

[illegible] (वि०) [भज्+कन्] भाग से संबंध रखने वाला [illegible] —रा० च० ७।२।

भामी (स्त्री०) कुपिता, खीझने वाली।

भस्मन् (नपुं०) [भस्+मनिन्] 1. राख 2. शरीर पर लगाई जाने वाली भभूत, राख। सम०—अङ्गः एक प्रकार का कबूतर, - अङ्गरागः शरीर पर भस्म रमाना,—अवलेपः शरीर पर भस्म लीपना—अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में बच गया है, —गुण्ठनम् शरीर पर भस्म पोतना,—बाणः कामदेव, चयः राख का ढेर।

भा (अदा० पर०) 1. चमकना 2. फूंक मारना।

बभौ (भा धातु, लिट् लकार, प्र० पु०, ए० व०) 1. चमका 2. प्रसन्न हुआ 3. हुआ 4. हवा चली —बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रो, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रः, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रो, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रः। (सभी अर्थों में प्रयुक्त) —भट्टि० १०।१९।

भागः [भज्+घञ्] 1. हिस्सा—कौ० अ० २।६।१४ 2 चार आभ्यन्तरिकों में से एक (ज्योति०) शा० का० ५० 3. भाग्य की रेखा 4. भाग, अंश 5. भाज्य, विभाजक 6. चौथाई भाग। सम०—अप-

हस्तिन् जो अपना भाग ले लेता है,—लक्षणम् कोष, —पत्रम्—लेख्यम् विभाजन का दस्तावेज ।

भागिन् (वि०) [भाग+इनि] अत्यन्त उपयोगी ।

भागुरिः एक विख्यात वैयाकरण और स्मृतिकार का नाम ।

भाग्य (वि०) [भज्+ण्यत्, कुत्वम्] 1. बांटे जाने के योग्य 2. हिस्से का अधिकारी 3. भाग्यशाली, किस्मत-वाला,—ग्यम् (नपुं०) 1. भाग्य, किस्मत 2. अच्छी किस्मत, सौभाग्य 3. समृद्धि 4. कल्याण, कुशल । सम०—संक्षयः बुरी किस्मत, —[illegible] भाग्य का उदय होना, —ऋक्षम् पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र ।

भाङ्गकः चीथड़ा ।

भाजक् (अ०) जल्दी से, तेजी से ।

[illegible] कूट उपायों के द्वारा यजन करना— कौ० अ० २।८।२१ ।

भाण्डम् [भाण्ड्+अच्] 1. सामान 2. पूंजी, मूलधन 3. बर्तन । सम० —पोषकः बर्तन रखने वाला ।

[illegible] (अ०) प्रतीति के परिमाणस्वरूप ।

भानव (वि०) [भानु+अण्] सूर्यसंबंधी ।

भानुजा: यमुना नदी का विशेषण ।

भामहः अलंकारशास्त्र का एक विख्यात लेखक ।

भारः [भृ+घञ्] 1. बोझा 2. आधिक्य 3. परिमाण 4. बड़ी राशि 5. किसी पर डाला गया कार्यभार । सम०—अवतरणम् बोझा कम करना,—आक्रान्ता एक छन्द का नाम,—उद्वहनम् बोझा उठाना, —ऊढिः (स्त्री०) भारवहन करना, बोझ उठाना,—भः खच्चर ।

भारिकः राशि, ढेर ।

भारती 1. वक्तृता, शब्द, वाक्पटुता 2. वाणी की देवता 3. नाट्यकला 4. किसी पात्र की संस्कृत वक्तृता 5. संन्यासियों के दस भेदों में एक—गोस्वामिन् ।

भारत (वि०) [भरतस्येदम्—अण्] भरतवंशी, —तः 1. भरतकुल में उत्पन्न (जैसे विदुर, धृतराष्ट्र, अर्जुन) 2. भारतवर्ष का निवासी 3. अग्नि,—तम् (नपुं०) 1. भारतवर्ष देश 2 संस्कृत का एक महान् काव्य (इसके लेखक व्यास या कृष्णद्वैपायन माने जाते हैं) 3. संगीतशास्त्र तथा नाट्यकला । सम०—आख्यानम्, इतिवृत्तम्, कथा भरतकुल के राजाओं की कहानी, महाभारत काव्य,—सावित्री एक स्तोत्र का नाम —इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत्— महा० १८।५।६४ ।

भारद्वाजः [भरद्वाज+अण्] 1. भरद्वाज गोत्र से संबंध रखने वाला 2. राजनीति का एक लेखक जिसका कौटिल्य ने उल्लेख किया है ।

भारविः किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता ।

[illegible] 1. अविवाहित वैश्य कन्या में वैश्यजातीय के द्वारा उत्पादित पुत्र 2. अग्नि की पूजा करने वाला ।

भार्गवः [भृगु+अण्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता—भार्गवी शुक्रदेवता मैत्र० ।

भार्यापतित्वम् दाम्पत्य बन्धन ।

भाल्लविः सामवेद की एक शाखा ।

भावः [भू+घञ्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2. कल्याण—भावमिच्छति सर्वस्य—महा० ५।३६।१६ 3. प्रयोजन-द्रोणस्याभावभावे तु—महा० ७।२५।६४ 4 भाग्य 5. वासना, अतीत संकल्पनाओं की सुध 6. छः अवस्था अस्ति, वर्धते, विपरिणमति आदि । सम० —अर्थकः भाववाचक क्रिया, —शक्तिः (स्त्री) मानवी भावनाओं को प्रकट करने की शक्ति— भावनिराकृतीनाम् प्रतिमा० ३,—चेष्टितम् प्रेमद्योतक संकेत या चेष्टाएँ, —निर्वृत्तिः भौतिक सृष्टि सां का० ५२, —मैत्रिः एक प्रकार का नाच, —शबलत्वम् नाना प्रकार की भावनाओं का मिश्रण ।

भावंकम् (वि०) मनोहर, सुहावना ।

भावयितृ (वि०) [भू+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, प्रोन्नायक —लोको भावयिता पुनः—महा० ३।२९।१ ।

भावित (वि०) [भू+णिच्+क्त] 1. अभिनिर्दिष्ट, स्थिर किया हुआ, गड़ाया हुआ 2. अधिकार में किया हुआ, मुट्ठी, पकड़ा हुआ—[illegible] पृथुभावितम् —भाग० ४।१८।११ 3. निमग्न, लीन, पूर्ण—रथाङ्गपार्श्वैरनुभावभावितम् —भाग० १२।१०।४२ 4. प्रसन्न, हृष्ट । सम० आत्मन् (वि०) स्वयं को आगे बढ़ाने वाला, तथा औरों की सहायता करने वाला ।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1. भावी 2. जो सम्पन्न हो सके 3. सिद्ध योग्य होना त्र्यवरैः साक्षिभिर्भाव्यो नृपब्राह्मणसंनिधौ मनु० ८।६० ।

भाषापत्रम् आवेदन पत्र —शुक्र० २।३०९ ।

भाषासमितिः वाणी का नियन्त्रण (जैन०) ।

भाषितृ (वि०) [भाष्+तृच्] बोलने वाला, बातें करने वाला ।

भाष्यभूत (वि०) टीका या भाष्य का काम देने वाला —भाष्यभूता भवन्तु मे— शि० २।२४ ।

भासः एक प्रसिद्ध नाटककार, स्वप्नवासवदत्तम् आदि नाटकों का प्रणेता ।

भिक्षा [भिक्ष्+अ] 1. जीवन निर्वाह का एक साधन 2. मांगना । सम०—भुज् (वि०) भिक्षावृत्ति से निर्वाह करने वाला ।

भिक्षु [भिक्ष्+उन्] 1. भिखारी 2 साधु 3. संन्यासी 4. श्रमण । सम०—भावः श्रमणता, साधुता ।

भिटिकुली कन्दील का एक भेद—कौ० अ० २।११।२९ ।

भिद् (रुधा० पर०) 1. टुकड़े टुकड़े करना, काटना 2. व्याख्या करना—[illegible] न नः कामन्ते मनसापि भेत्तुम्—माघ० ५।१०।८ ।

विवाभवनम् कुडवाला, कुण्डलवाला ।

भिन्न (वि०) [भिद्+क्त] 1 टूटा हुआ, फाड़ा हुआ चीरा हुआ 2 पृथक् किया हुआ, बांटा हुआ 3 वियावत—भिन्नवृत्तिता मनु० १२।३३ 4 रोमाञ्चित (जैसे रोंगटे खड़े हुए) — रा० ६।१०।१८ 5 जिसे चूस दी गई है। सम०—कर्म (वि०) 1 जिसने कामों को बांट दिया है 2 जिसके कान बींध दिये गये हैं, कृत्य: जिसने अपने अनिवार्य कर्तव्य (पितृ ऋण आदि) सम्पन्न कर लिए हैं —वृत्ति (स्त्री०) भिन्न राशियों का भाग।

भीत (वि०) [भी+क्त] 1 डरा हुआ आतङ्कित 2. डरपोक, कायर 3 भयग्रस्त। सम०—गायन लज्जाशील गायक, शर्मीला गाने वाला,—चारिन् (वि०) कातरभाव से व्यवहार करने वाला चित्त (वि०) मन में डरने वाला।

भीति [भी+क्तिन्] 1 डर, आशङ्का, त्रास 2 खतरा जोखिम 3 कंपकंपी। सम० कृत् (वि०) डर पैदा करने वाला छिद् (वि०) डर दूर करने वाला।

भीम (वि०) [भी+मक्] भयानक, डरावना भयपूर्ण —म (पुं०) 1 शिव का विशेषण 2 परमपुरुष 3 भयानक रस 4 दूसरा पाण्डव, मम् (नपुं०) भय, त्रास। सम०—अञ्जनम् (वि०) भीषण शक्ति वाला पाक पूरी तरह पका हुआ भोजन रथ 1 धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 2 श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

भीष्म (वि०) [भी+णिच्+सुक्+मक्] डरावना भयानक भयपूर्ण ष्म: 1 भयानक रस 2 राक्षस पिशाच, भूतप्रेत 3 शिव का विशेषण 4 शन्तनु के द्वारा गंगा से उत्पादित पुत्र। सम० पर्वन् महाभारत का छठा पर्व (अध्याय), स्तवराज महाभारत में शान्तिपर्व के ४७वें अध्याय में निहित भीष्म की प्रार्थना।

भुक्तवत्पश्चात् (अ०) खाने के तुरन्त पश्चात्।

भुग्न (वि०) [भुज्+क्त] 1 विनीत, नत 2 वक्रीकृत मुड़ा हुआ 3 टूटा हुआ 4 हताश, विनम्रीकृत।

भुजः [भुज्+क] 1 बाहु, भुजा 2 हाथ 3. हाथी को सूंड 4 गणित में आकृति का एक पार्श्व जैसे त्रिभुज में 5 त्रिकोण का आधार 6 वृक्ष की शाखा। सम० —अङ्कः आलिङ्गन,—अर्पणम् निर्वाह के अनुदान, —आकम्पः थाम, छाया किसी की भुजाओं द्वारा दिया गया प्रश्रय,—वीर्य (वि०) प्रबल भुजाओं वाला।

भुजकः [भुज्+क=भुज+गम्+ड] सांप, सर्प, की आश्लेषा नक्षत्र। सम० वलयः कड़े की भांति कलाई में गोलाकार लिपटा हुआ सांप,—शायिन् विष्णु का विशेषण।

भुजग [भुज+गम्+खच्, मुम्] 1 सांप 2. नाग, श्रेणी 3 पति, स्वामी 4 आश्लेषा नक्षत्र 5. दूल्हा 6. राजा का बदचलन मित्र। सम०—प्रयातम् एक छन्द का नाम, लता एक छन्द का नाम, शिशु एक छन्द का नाम।

भुजा [भुज्+टाप्] ज्यामिति की आकृति का पार्श्व।

भुजाभुजि (अ०) हाथापाई, हाथों की (लड़ाई)।

भुवनम् [भू+क्युन्] 1 संसार, (संसार की संख्या तीन है या चौदह) त्रिभुवन, चतुर्दशभुवनानि 2. धरती 3 स्वर्ग 4 जन्तु, प्राणी 5 मानव। सम०—ईश्वरी पार्वती का रूप,— तलम् धरती की सतह,—भावन —सृष्टि का कर्ता।

भू (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1 पृथ्वी 2 विश्व 3 धरती। सम० छाया, छायम् धरती की छाया,—तुम्बी एक प्रकार की ककड़ी, बल एक प्रकार का चूहा, या पृथ्वी की छाया, ग्रहण,—विडूरकाक पक्षियों की एक जाति— महा० १२।१६६।१०,—शय्या भूमि पर सोना —स्फोट कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी।

भूत [भू+क्त] 1 होने वाला, वर्तमान 2 उत्पादित, निर्मित 3 वस्तुत होने वाला, सत्य 4 सही, उचित, उपयुक्त 5 अतीत, बीता हुआ 6 प्राप्त 7. मिश्रित 8 समान। सम० अनुवाद बीती हुई बात, या सिद्ध तथ्य का उल्लेख करना,—अभिषङ्ग —आवेश: भूतप्रेत का किसी पर चढ़ना,—धारिन् (पुं०) जो सबकी अवमानना करता है, सबसे घृणा करने वाला, —कोटि निरपेक्ष शून्यता, —सत्या सचाई के साथ, गुण तत्त्वों का गुण,— जननी सब प्राणियों की माता —तन्मात्रम् सूक्ष्मतत्त्व,—पाल जीवित प्राणधारियों का संरक्षक, मय (वि०) सभी प्राणियों में रहने वाला भृत् (वि०) जन्तुओं या तत्त्वों का पालन-पोषण करने वाला —धात्रिका पृथ्वी,—वृष् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण।

भूति (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1 सत्ता, अस्तित्व 2 जन्म, उत्पत्ति 3 कल्याण, कुशलमंगल, समृद्धि 4. सफलता 5 धन, दौलत 6 शान, आभा, कान्ति 7. राख। सम० अर्थम् (अ०) समृद्धि के लिए, कृत् (वि०) कल्याणोत्पादक।

भूमि (स्त्री०) [भू+मि] 1 ज्यामिति की आकृतियों की आधाररेखा 2 किसी चित्र का रेखाचित्र 3 धरती, पृथ्वी। सम०—अनृतम् भूमि के विषय में झूठी गवाही,—खर्जूरिका खजूर वृक्ष का एक प्रकार,—छत्रम् कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी, जम्बुक: गेंगलवह, - परिमाणम् वर्गमाप,—रक्षिक भूमि पर

द्रव हांकने वाला,—समीकृत (वि०) भूमि जैसा बराबर किया हुआ, फर्श के साथ मिलाया हुआ, —संभव:, —सुत 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर ।

भूयस् (वि०) [बहु+ईयसुन्] 1. अपेक्षाकृत अधिक 2. अधिक बड़ा 3. अधिक आवश्यक । सम०—काम (वि०) बहुत अधिक इच्छुक,—भाव: वृद्धि, विकास, —मात्रम् अधिकतर अधिकांश ।

भूरि (वि०) [भू+क्रिन्] बहुत, पुष्कल, असंख्य, पुष्कल । सम०—कालम् (अ०) बहुत समय तक,—कृत्वस् (अ०) बहुत बार, बार-बार, —गुण (वि०) 1. बहुत अधिक बढ़ता हुआ 2. भांति-भांति के फल देनेवाला, —फेना पौधों की एक जाति, —भोग (वि०) नानाप्रकार से सुखोपभोग करने वाला ।

भूरिश: (अ०) [भूरि+शस्] विविध प्रकार से, नाना प्रकार से ।

भूषणवासांसि (नपुं० ब० व०) वस्त्र और आभूषण ।

भृ (जुहो० पर०) संतुलित रखना, समसंतुलन करना ।

भृतक (वि०) [भृत+कन्] 1. पालन पोषण किया हुआ 2. किराये का, —क: (पुं०) भाड़े का सेवक । सम० —अध्यापनम् वैतनिक अध्यापक द्वारा दिया गया शिक्षण —भृति: मजदूरी, पारिश्रमिक, किराया ।

भृति: [भृ+क्तिन्] 1. सहन करना, सहारना, सहारा देना 2. भरणपोषण 3. आहार 4. ले जाना, नेतृत्व करना 5. मूलधन 6. पारिश्रमिक । सम० —अर्थम् निर्वाह के निमित्त, जीविका के लिए ।

भृगु: (पुं०) 1. एक मुनि का नाम 2. जमदग्नि का नाम 3. शुक्र का विशेषण 4. शुक्र नामक ग्रह 5. चट्टान 6. पठार 7. शिव का विशेषण 8. सूत्रधार । सम० —कच्छ:—कच्छम् नर्मदा नदी पर एक तीर्थस्थान, —पतनम् चट्टान से गिरना,—पात: चट्टान से कूदना, छलांग लगाना, —भृङ्ग: एक प्रकार का संगीत का नाम,—आलीढ: आम का वृक्ष ।

भृशदण्ड (वि०) कठोर दण्ड देने वाला ।

भेद: [भिद्+घञ्] 1. दारुण पीड़ा 2. ग्रहों का योग 3. पक्षाघात 4. सिकुड़ना 5. समभुज त्रिकोण की कर्ण रेखा ।

भेदक (वि०) [भिद्+ण्वुल्] 1. वियोजक, विभाजक, तोड़ने वाला 2. नाशक 3. विवेचक 4. रेचक 5. (खेतों की) जोतने वाला 6. पथभ्रष्ट करने वाला ।

भेदन (वि०) [भिद्+णिच्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, विभाजक 2. रेचक,—नम् (किसी पशु का) नाक-छेदन करना ।

भेदनम् (नपुं०) हींग ।

भेषज (वि०) [भेषं रोगभयं जयति-जि+ड] स्वस्थ करने वाला, चिकित्सा किये जाने योग्य, —जम् (नपुं०) 1 औषधि 2. उपचार 3 रोगनाशक मंत्र । सम० —करणम् औषधियों का तैयार करना, —कृत (वि०) स्वस्थ किया हुआ, —वीर्यम् औषधियों की स्वास्थ्यकर शक्ति ।

भोग: [भुज्+घञ्] 1 खाना, खा लेना 2. सुखोपभोग 3. वस्तु 4 उपयोगिता, उपयोग 5. शासन करना 6. उपयोग, प्रयोग 7. सहन करना 8. अनुभव करना, सकल्पना 9 स्त्रीसंभोग 10 आनन्द लेना 11 आहार 12. लाभ 13 आय 14 धन । सम०—भाव: पोषक, भरणपोषण करने वाला,—पत्रम् किराये का दस्तावेज, —भुज् (वि०) सुखोपभोग करनेवाला ।

भोगिराज: [ष० त०] शेषनाग ।

भोग्यवस्तु विलास की सामग्री ।

भोज (वि०) [भुज्+अच्] 1. सुखोपभोग देने वाला 2 उदार, दानशील,—ज: (पुं०) 1 एक प्रसिद्ध राजा का नाम 2. विदर्भदेश का राजा । सम० —चम्पू भोज द्वारा रचित रामायण चम्पू,—प्रबन्ध: बल्लाल की भोजविषयक कृति ।

भोल: वैश्य द्वारा नटी में उत्पादित पुत्र ।

भौजिष्यम् (नपुं०) दासता, सेवकत्व ।

भौत (वि०) [भू+अण्] 1. प्राणिसम्बन्धी 2. भौतिक 3. पागल, —त: 1. भूत पिशाचों की पूजा करने वाला 2 भूतयज्ञ । सम० —बुद्धि (वि०) मूढ, दुर्बुद्धि ।

भौमम् [भूमि+अण्] 1. तत्त्वविषयक वस्तु 2. फर्श 3 भवन की ऊपर की मंजिलें — सप्तभौमाष्टभौमैश्च — रा० ५।२।५० ।

भौमी [भौम+ङीप्] सीता का विशेषण ।

भ्रंश: [भ्रंश्+घञ्] 1. गिरना, फिसल जाना, अध:पतन 2 ह्रास, मुर्झाना 3 नाश, ध्वंस 4 दूर भाग जाना 5. ओझल होना 6 (नाट्य० में) उत्तेजना के कारण वाक्स्खलन ।

भ्रष्ट (वि०)[भ्रंश+क्त] 1 गिरा हुआ, पतित 2 मुर्झाया हुआ 3. भागकर जो बच गया । सम०—अधिकार (वि०) जिससे अधिकार छीन लिये गये हों, पदच्युत, —क्रिय (वि०) जो विहित कर्म करने में असफल रहा, —योग (वि०) जो भक्ति से पतित हो गया हो ।

भ्रम् (भ्वा०, दिवा० पर०) लड़खड़ाना, डगमगाना ।

भ्रम् (प्रेर०) 1 ढिंढोरा पीटना 2. अव्यवस्थित करना ।

भ्रम: [भ्रम्+घञ्] 1. छाता, छतरी 2. कूप ।

भ्रमर: [भ्रम्+करन्] 1. मधुमक्खी 2. प्रेमी 3. कुम्हार का चाक 4. जवान 5. लट्टू । सम०—निकर: मधुमक्खियों का छत्ता,—पदम् एक छन्द ।

भ्रमरित (वि०) [भ्रमर+इतच्] जो भौंरा हो गया है —दयतिविकचकमलकोशमरन्दभ्रमरितका:—शै० २।१०१ ।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] मूर्छा, बेहोशी ।

भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1 इधर-उधर घूमा हुआ 2 चक्कर खाया हुआ 3. भूला भटका 4 घबराया हुआ । सम० **चित्त** (वि०) मन में घबराया हुआ ।

भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+डू] भौं, आँख की भौं । सम० **भङ्गिकृतम्** चुपके-चुपके झाकना, छिपकर देखना, **विजृम्भ** भौंहों को मोड़ना, भौंहे चढ़ाना ।

म

मकर [म विष किरति-कृ+अच्] 1 मगरमच्छ 2 मकर-राशि 3. मकर की आकृति का कुण्डल । सम० **आसनम्** एक प्रकार का योग का आसन,—**वाहन** [illegible] ।

मकरन्द [मकर+दो+क, मुमादेश] 1 पुष्परस, मधु 2. चमेली का फूल 3 कोयल 4 सुगन्धयुक्त आम का वृक्ष 5 (संगीत० में) एक प्रकार का माप ।

मकराक्षिका एक छन्द का नाम ।

मकूलक (पु०) 1. कली 2 दन्ती नाम का वृक्ष ।

मखमृगव्याध (पु०) शिव का विशेषण ।

मखस (पु०) कुसीदक सूदखोर ।

मगधदेशः (पु०) मगध नाम का देश ।

मड्डुकः (पु०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र ।

मङ्गल (वि०) [मङ्ग्+अलच्] 1 शुभ, सौभाग्यशाली 2 समृद्ध 3 वीर, -**लम्** (नपु०) 1 माङ्गलिकता, प्रसन्नता, कल्याण 2 शुभ शकुन 3 आशीर्वाद 4. माङ्गलिक संस्कार (जैसे कि विवाह) 5 हल्दी, -**ल**. (पु०) 1 मङ्गलग्रह 2 अग्नि । सम० —**आवह** (वि०) शुभ,—**ध्वनिः** माङ्गलिक स्वर, **भेरी** माङ्गलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल ।

मज्जनः [मस्ज्+ल्युट्] आठ वर्ष का हाथी—मात० ५।९ ।

मञ्चकनृत्यम् एक प्रकार का नाच ।

मञ्जुनादः मधुर ध्वनि मञ्जीर मञ्जुनादैरिव पदभजन श्रेय इत्यालपन्तम्—नारा० १००।९ ।

मञ्जुघोषः एक जिन का नाम ।

मञ्जुश्रीः एक बोधिसत्त्व का नाम ।

मठाधिपतिः [ष० त०] 1 किसी धर्मसंघ का प्रधान 2 मठ का अधीक्षक ।

मठाम्नायः [ष० त०] विविध आध्यात्मिक श्रेणियों से संबद्ध कोई रचना ।

मणिः [मण्+इन्] 1 रत्न, जवाहर 2 आभूषण 3 सर्वोत्तम पदार्थ 4. चुम्बक 5. कलाई 6 अयस्कान्त मणि 7. स्फटिक । सम० **काञ्चनयोगः** उपयुक्त वस्तुओं का विरल मेल,— **मुक्ताकोटिः** जड़ाऊ पायजेब,—**प्रभा** एक छन्द का नाम,—**बिन्दु** (वि०) रत्नजटित ।

मण्डजातम् (पु०) जमा हुआ दूध, दही ।

मण्डपीठिका परकार के दो चतुर्थांश ।

मण्डनकालः शृंगार (प्रसाधन) समय—मामकाम मण्डन-कालहाने रघु० १३ ।

मण्डनप्रियः (वि०) अलंकारप्रिय, आभूषणों का शौकीन ।

मण्डलम् [मण्ड्+कलच्] 1 गोलाकार वस्तु, पहिया, अंगूठी, परिधि 2 सूर्य परिवेश, चन्द्र परिवेश 3. समुदाय, समूह, सेना 4 समाज 5 वर्तुलाकार गति 6 वृत पट्ट । सम०—**आसन** (वि०) वृत्त में बैठा हुआ,— **कविः** कठ कवि, तुक्कड़ कवि,—**नाभिः** वृत्त का केन्द्र, **माडः** मडवा, प्रशाला,—**वाटः** उद्यान ।

मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1 धाव विद्या में वर्णित एक विशेष मुद्रा 2 जादू की शक्तियों से युक्त एक वृत्त ।

मण्डूकम् हाथ की मूठ ।

मण्डूकपर्णा ब्राह्मी की जाति का एक पौधा ।

मण्डूकपर्णिका दे० 'मण्डूकपर्णी' ।

मण्डूकपर्णी दे० 'मण्डूकपर्णी' ।

मतभेदः [ष० त०] मतों में अन्तर, सम्मतियों की भिन्नता ।

मतिः [मन्+क्तिन्] 1 बुद्धि, समझ, ज्ञान, निर्णयशक्ति 2 मन हृदय 3. विचार, विश्वास, सम्मति, दृष्टिकोण 4. इरादा प्रयोजन 5. प्रस्ताव, संकल्प 6. आदर, सम्मान 7. इच्छा 8 उपदेश 9. स्मृति 10 भक्ति, प्रार्थना । सम० **कर्मन्** बौद्धिक कार्य, **गतिः** (स्त्री०) चिन्तन क्रम, **दर्शनम्** विचारों का अध्ययन ।

मत्ताक्रीडा एक छन्द का नाम ।

मत्तवारणः, —**णम्** 1 किसी भवन की चहारदिवारी 2. खूंटी या ब्रैकेट 3 चारपाई, पलंग ।

मत्स्यः [मद्+स्यन्] 1. मछली 2 मत्स्य देश का राजा । सम०—**उद्वर्तनम्** एक प्रकार का नाच,—**आजीवः** मछियारा, मछली का व्यापार करने वाला,—**सन्तानिकः** पकी हुई मछली चटनी के साथ ।

मथ्य (वि०) [मथ्+ण्यत्] मन्थन क्रिया के द्वारा प्राप्य, मथकर निकाला जाने वाला ।

मदः [मद्+अच्] 1. सौन्दर्य 2 जन्मकुण्डली में सातवाँ घर 3 अभिमान 4. पागलपन 5. अत्यन्त आवेश 6. हाथी के मस्तक से चूने वाला रस 7. प्रेम, मस्ती 8 सुरा,

शराब, 9. मधु 10. वीर्य 11. सोम 12 मद। सम० —भङ्गः घमंड का टूट जाना,—कला एक छन्द का नाम।

मदनम् [मद्+ल्युट्] 1 नशा करना 2. उल्लास, हर्षातिरेक, नः 1. जन्मकुंडली में सातवाँ घर 2 एक प्रकार की संगीतमाप। सम०—अत्यय नशे का आधिक्य, मदातिरेक।

मदिरामत्त (वि०) शराब पीकर धुत अत्यंत नशे में।

मद्यकुम्भः शराब की सुराही, सुरा पात्र।

मद्यबीजम् खमीर उठाने के लिए औषधि।

मद्रदेशः मद्रों का देश।

मद्गुरः एक संकर जाति।

मधु (नपुं०) [मन्+उ, नस्य धः] 1 शहद 2 फूलों का रस 3 मधुमक्खियों का छत्ता 2 मोम। सम०—फाला खरबूज,— पात्रम् सुरापात्र, मांसम् शराब और मांस, —वल्ली 1 एक प्रकार का अंगूर 2 मीठा नींबू।

मधुकासवम् मोम।

मधुमती [मधु+मतुप्+ङीप्] 1 एक नदी का नाम 2 एक देश का नाम 3 'मधु वाता ऋतायते' से आरम्भ होने वाली तीन ऋचाएँ।

मधुरस्वनः [ब० स०] शंख।

मधुराम्लकः कषाय स्वाद, तीखा स्वाद।

मध्यमणिन्यायः एक नियम जिसके आधार पर मुख्य वस्तु दोनों पार्श्वों के बीच में रहे जैसे कि हार में मणि।

मध्यधनम् सामान्य संपत्ति।

मध्यम (वि०) [मध्ये भव म] 1 बीच का, केन्द्रीय 2 अन्तर्वर्ती 3 मध्यवर्ती,—मः 1 नितान्त बीच का पुत्र 2 राज्यपाल 3 भीम का विशेषण (मध्यमव्यायोग), मम् (नपुं०) 1 जो अतिप्रशंसनीय न हो 2. ग्रहण का मध्यवर्ती बिन्दु। सम गतिः किसी ग्रह की औसत चाल, ग्रामः (संगीत० में) मध्यवर्ती लय, व्यायोगः भासकृत एक नाटक।

मध्यमीय (वि०) [मध्यम+छ] बीच का, केन्द्रीय।

मध्योदात्त (वि०) ऐसा शब्द जिसके मध्यवर्ती अक्षर पर उदात्त स्वर हो।

मन् (दिवा० तना० आ०) स्वीकार करना, सहमत होना।

मनस् (नपुं०) [मन्+असुन्] 1 मन, हृदय, समझ, बुद्धि 2 (दर्शन० में) सज्ञान व प्रज्ञान का एक अन्तर्वर्ती अंग, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के विषय आत्मा को प्रभावित करते हैं 3 अन्तःकरण 4. अभिकल्प 5. संकल्प। सम०—ग्राह्य (वि०) मन से ग्रहण किये जाने के योग्य,—व्यवसायः मन का व्यवसाय,—धारणम् अवग्रह की संरचना करना —पर्यायः सत्य के प्रत्यक्षीकरण में अन्तिम के पूर्व की स्थिति (जैन०),—रागः हृदयानुराग, प्रेम,—संतुष्टिः मन का सन्तोष,—संवरः मन का दमन।

मनुः [मन्+उ] मानसिक शक्तियाँ देहोऽसवोऽक्षा मनवो भूतमात्रा—भाग० ६।४।२५।

मनुस्मृति मनुसंहिता, मनु द्वारा प्रणीत धर्मशास्त्र।

मनुष्ययानम् [ष० त०] पालकी, शिबिका।

मनुष्यधर्मकामः मानव की इच्छा।

मनोन्मनी दुर्गा का एक रूप।

मन्त्रः [मन्त्र्+अच्] 1 विष्णु का नाम, शिव का नाम 2 जन्मकुंडली में पाँचवाँ घर 3 वैदिक सूक्त 4. वेद का वह अंश जिसमें संहिता सम्मिलित है 5 प्रार्थना 6 गुप्त योजना 7 नय, नीति। सम० कर्कश (वि०) कूटनीति का समर्थक, जागरः रात के जागरण के अवसर पर मन्त्रों का सस्वर पाठ, रक्षा किसी नीति विचार या रहस्य को गुप्त रखना, —संवरणम् किसी रहस्य, मन्त्रणा या नीति को गुप्त रखना, -स्नानम् स्नान करने के स्थान पर 'अघमर्षण' मन्त्रों का सस्वर पाठ करना।

मन्थ् (भ्वा० क्या० पर०) मिश्रित करना, मिला देना।

मन्थः [मन्थ्+घञ्] 1 मथना, बिलोना, हिलाना 2 मार डालना, नाश करना 3 मिश्रित पेय 4 रई, बिलोने का उपकरण, मन्थनदण्ड 5. सूर्य 6. आँखों के रोहे 7 पेय तैयार करने के लिए आयुर्वेद का एक योग। सम० विष्कम्भः मन्थनदण्ड।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1 ढीला, शिथिल, निष्क्रियात्मक, अलस 2 शीतल, उदासीन 3 मूढ, दुर्बुद्धि, मूर्ख 4 नीचा, गहरा, खोखला 5 मृदु, सुकुमार 6 छोटा 7 दुर्भग न्दः (पुं०) 1 शनिग्रह 2 यम का विशेषण। सम०—आस्यम् संकोच, झिझक, कर्मन् (वि०) कार्य करने में शिथिल,—जरस् (वि०) शनैः शनैः बूढ़ा होने वाला, पुण्य (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, बदकिस्मत।

मन्दामणिः पानी भरने का बड़ा घड़ा।

मन्दिरम् [मन्द्+किरच्] 1 भवन 2 आवास 3 नगर 4 शिविर 5 देवालय 6 काया, शरीर।

मन्दुरा [मन्द्+उरच्] 1 अश्वशाला, अस्तबल, तबेला 2 शय्या, चटाई। सम० पतिः,—पालः अश्वशाला का प्रबन्धकर्ता, भूषणम् बन्दरों की एक जाति।

मन्युसूक्तम् (नपुं०) मन्यु नामक सूक्त जो ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ८३ व ८४वें सूक्त हैं।

ममतायुक्त (वि०) 1 अहंमन्य 2. कंजूस।

ममतायुक्त (वि०) 1 अहंयुक्त 2. अनासक्त।

मयिवसु (वि०) मेरे प्रति शुभ।

मयूखमालिन् (पुं०) सूर्य, सूरज।

मयूरः [मी ऊरन्] 1 मोर 2. एक प्रकार का फूल 3. एक

कवि का नाम (सूर्यशतक का प्रणेता) 1 सम० —कूजनम् मोर का नाच, —पिच्छम् मोर का चंदा।

मयूरिका (स्त्री०) 1 नथ, नाक का छल्ला 2 एक जहरीला जंतु।

मरकतश्याम (वि०) पन्ने जैसा काला ऐसा काला जैसा कि मरकतमणि —माला मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी —श्याम०।

मरणम् [मृ+ल्युट्] 1 मरना मृत्यु 2 एक प्रकार का विष 3 अवसान 4 जन्मकुंडली में आठवां घर 5. शरण, शरणालय। सम०- काल: मृत्यु का समय, —शील (वि०) मर्त्य, मरणधर्मा।

मरीचि [मृ+ईचि] 1 प्रकाश की किरण 2 प्रकाशकण 3 प्रकाश 4 मृगतृष्णा 5 आग की चिनगारी। सम० —पा: (मरीचिपा) ऋषिगण जो सूर्य की किरणें पीकर जीवित रहते हैं —रा० ३।६।२।

मरु [मृ+उ] 1 रेगिस्तान निर्जल प्रदेश 2 पहाड़, चट्टान 3 कुरबक नाम का पौधा 4 मद्यपान का त्याग। सम० —प्रपतनम् पहाड़ से छलांग लगाना।

मरुत् (पुं०) [मृ+उति] 1 वायु हवा, समीर 2 प्राण वायु 3 वायु का देवता 4 देवता 5 मरुबक नाम का पौधा 6 सोना 7 सौन्दर्य। सम० —वृधा वृधा कावेरी नदी।

मर्जू (पुं०) [मृज्+ऊ] 1 धोबी 2 पीठमर्द (स्त्री०) सफाई, पवित्रता।

मर्मन् (नपुं०) [मृ+मनिन्] 1 शरीर का महत्त्वपूर्ण भाग (शरीर का दुर्बल या सुकुमार अंग) 2 त्रुटि विफलता 3 हृदय 4 गुप्त अर्थ 5 रहस्य 6 सत्यता। सम०- घात: मर्मस्थान पर आघात करना, —जम रुधिर।

मर्यादा [मर्या (सीमा)+दा+क] 1 सीमा 2 अन्त 3 किनारा, तट 4 चिह्न 5 नैतिकता की सीमा प्रचलित नियम, प्रचलन 6 औचित्य का सिद्धान्त 7. करार। सम० —स्थ सीमा के अन्दर रहना —वचनम् सीमाविषयक वक्तव्य —व्यतिक्रम: सीमा का उल्लंघन।

मल (वि०) [मृज्+कल, टिलोप] 1 मैला गन्दा 2 कालची 3 दुष्ट, —ल —लम् 1 मैल, गन्दगी धूल अपवित्रता 2 विष्ठा बीट 3 धातुओं का मोर्चा 4 शरीर के मल 5 कपूर 6 कमाया हुआ चमड़ा 7 वात, पित्त तथा कफ नामक दोष। सम० —अपहा एक नदी का नाम, —परिप्लुत (वि०) धूल या गन्दगी से भरा हुआ।

मल्लतालक: (संगीत०) एक प्रकार की माप।

महत् (वि०) (म० महीयस्, उ० महिष्ठ) [मह्+अति] 1 बड़ा, विशाल, विस्तृत 2. पुष्कल, असंख्य 3. दीर्घ, विस्तृत 4 प्रबल, बलशाली 5 महत्त्वपूर्ण, आवश्यक 6 ऊँचा, प्रमुख पूज्य। सम० —आयुधम् महान् शस्त्र, बड़ा भारी हथियार, —औषधि: (स्त्री०) एक आश्चर्यजनक बूटी —कुलम् उत्तम घराना, —द्रुम: सैनिक, जत्था —फल: बेल का वृक्ष, —व्यतिक्रम: 1 भारी अतिक्रमण 2 महान् पुरुष का अनादर।

महा (कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के आरम्भ में 'महत्' शब्द का स्थानापन्न —इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं।) सम० —अनिल: बवंडर महानिलेनेव निदाघज रज: कि० १४।५९ —आरम्भ महान् कार्य विशाल पैमाने पर कार्य का आरम्भ करना, —आलय देवालय, मन्दिर तीर्थ स्थान —आलया-मावस्या वह अमावस्या जिससे महालयपक्ष आरम्भ होता है, —आलयपक्ष: भाद्र और पौष मास का पुनीत पितृपक्ष, —आलयश्राद्ध महालय पक्ष में श्राद्ध करना, —ऊर्मिन (पुं०) समुद्र, —ओघ (वि०) प्रबल धाराओं से युक्त —कल्प: ब्रह्मा के सौ वर्ष, —चक्रम् शक्ति की पूजा में रहस्यमय चक्र —जम्बु: ऊँट, —जव: बारहसिंगा हरिण, —वल्गु बड़े व्याघ्र की एक जाति, —दुर्गम् महान् संकट, —पराक: एक प्रकार की तपस्या, —पुराणम् अठारह पुराणों में एक पुराण, —प्रश्न एक जटिल सवाल, —फेनम् किसी एक प्रकार का चमड़ा, —भाण्डम् मुख्य कोष, —मृत्युञ्जय: 1 मृत्यु के विजेता शिव को प्रसन्न करने का मन्त्र 2 एक औषधि का नाम, —यानम् एक बड़ी सवारी (परवर्ती बौद्ध शिक्षण), —रक: मेंढक —वक्ष: (वि०) अत्यन्त पीठाकार, —लय: 1 महाप्रलय 2 परमपुरुष जिसमें सब महाभूत लीन हो जाते हैं —विपुला एक प्रकार का छन्द, —शिवरात्रि: फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष का चौदहवां दिन, शिवपूजा का माङ्गलिक दिवस —सिकता रेत, बालू —सन्धि (पुं०) एक प्रकार का संगीत माप, —शुभ्रा चांदी।

महिमम् (नपुं०) प्रभुसत्ता, उपनिवेश।

महिमन् (पुं०) [महत्+इमनिच्] आठ सिद्धियों में से एक। महिषमर्दिनी दुर्गादेवी।

मही [मह्+अच्+ङीष्] 1 पृथ्वी धरती भूमि 2 भूसम्पत्ति, जायदाद 3 देश राजधानी 4 खम्भात की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी 5 (ज्या० में) किसी आकृति की आधाररेखा 6 विशाल सेना 7 गाय। सम० —तलम् धरातल —पृष्ठम्, धरातल भूमि की सतह, —करोति बड़ा बनाता है प्रोन्नत करता है।

मांसम् [मन्+स, दीर्घश्च] 1 गोश्त 2 मछली का मांस 3 फल का मांसल भाग, —स: 1. कीड़ा 2 संकर जाति, जो मांस बेचती है। सम० —काम: मांस का शौकीन, —कील: रसौली, —चक्षु: नंगी आंख, —परिवर्जनम् मांस-भक्षण का त्याग।

मोक्षीयते (ना० धा० पर०) मोक्ष के लिए लालायित रहना।
मौक्तिकधातुः एक प्रकार का खनिज धातु।
मागधः [मगध+अण्] 1 मगध देश का राजा 2 साहित्य क्षेत्र में काव्यशैली का एक प्रकार।
मातङ्गलीला हस्तिविज्ञान पर एक कृति।
मातुलाहिः एक प्रकार का साँप।
मातृ (स्त्री०) [मान्+तृच्, नलोप] 1 माता, जननी 2 स्त्रियों के प्रति आदर या सम्मान सूचक संबोधन 3. गाय 4 लक्ष्मी या दुर्गा का विशेषण 5 धरती माता। सम०—दोषः माता का दोष, —भक्तिः माता के प्रति आदर सम्मान, —शासितः मूर्खव्यक्ति, सीधा सादा, भोंदू।
मातृका वीणा की ८ नाड़ियाँ, शिराएँ।
मातृतः (अ०) मातृपरक पक्ष की ओर।
मात्र (वि०) [मा+त्रन्] आरम्भिक विषय।
मात्रा [मात्र+टाप्] 1. परिमाण 2 माप 3. अणु 4. अंश 5. वृत्त, विचार 6. धन 7. तत्त्व 8. भौतिक संसार 9 नागरी अक्षरों में स्वरों का चिह्न 10 कान की बाली 11. आभूषण 12. इन्द्रियों का कार्य 13. विकार। सम० —अङ्गुलम् लगभग एक इंच की माप।

मात्स्यन्यायः एक सिद्धान्त जिसमें बड़ा छोटे को दबाता है, हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।
माधवनिदानम् आयुर्वेद की एक कृति।
माधवी पशुओं की बहुतायत।
मान [मन्+घञ्] 1 आदर, सम्मान 2 घमंड अभिमान, अहंकार 3. आत्माभिमान, आत्मगौरव, —नम् 1 माप 2 निश्चित मापदण्ड 3 आयाम। सम० —अन्ध (वि०) घमंड के कारण अंधा, —अर्ह (वि०) सम्मान के योग्य, आदर का अधिकारी, —अवभङ्गः प्रतिष्ठा भङ्ग होना, कोष का नाश, —विवञ्चनम् खोटे बाटों से तोलकर या मिथ्या मापकर छल करना, ठगना—कौ० अ० २।८।२६, —सार अभिमान की बड़ी मात्रा।
मानसपूजा मानसिक पूजा।
मानुष्यम् [मनोरमम्—अण् षुक् च] 1 मानवता, मनुष्यत्व 2. मनुष्य की परिपक्वावस्था, पूर्ण पुरुषत्व। सम० —अधम नीच पुरुष, ओछा मनुष्य।
मान्द्यव्याज [ष० त०] रोग का बहाना।
माया 1 दुर्गा का नाम 2. दयालुता, कृपा।

य

यकृत् [यं संयमं करोति कृ+क्विप् तुक् च] जिगर। सम०—वैरिन् (पुं०) औषध का एक पौधा, रक्तरोहिड़ा।
यक्षः [यक्ष्+घञ्] 1 देवयोनि विशेष, जो कुबेर के सेवक हैं 2 भूतप्रेत 3. इन्द्र का महल 4 कुबेर 5 पूजा 6. कुत्ता। सम०—धूपः धूपक, लोबान।
यज्ञः [यज्+न] 1 यज्ञ, धार्मिक संस्कार 2 पूजा की प्रक्रिया 3 अग्नि 4 विष्णु। सम०—आयुधम् यज्ञ में प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण, —पुरुषः कृष्ण, —पत्नी यजमान की पत्नी, —शिष्टम् यज्ञ का अवशिष्ट अंश—यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः —भग० ३।१३, —संस्तरः यज्ञ की वेदी की स्थापना तथा इष्टकाचयन।
यज्ञायज्ञीयम् 1 सामसूक्त 2 गरुड के दोनों पंखों का प्रतीकात्मक नाम।
यत्नवत् (वि०) क्रियाशील, परिश्रमी, प्रयत्न करने वाला।
यतगिर् (वि०) [ब० स०] चुप रहने वाला, जिसने अपनी वाणी को नियन्त्रित रखा है।
यतमैथुन (वि०) [ब० स०] जिसने मैथुन त्याग दिया है।
यतिचान्द्रायणम् विशेष प्रकार का तपश्चरण।
यथाकामम् (अ०) जहाँ किसी का मन चाहे, इच्छानुसार।

यत्रकामावसायः योग की एक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य अपने आपको जहाँ चाहे ले जा सकता है।
यत्रसायंगृह (वि०) जहाँ सन्ध्या हो जाय या सूर्यास्त हो जाय वहीं ठहर जाने वाला व्यक्ति।
यथा (अ०) [यद् प्रकारे थाल्] जिस ढंग, जिस रीति से, जैसे, जिस प्रकार। सम०—अनुशस्तम् (अ०) जैसा कि बतलाया गया है, या निर्देश किया गया है—यथा यथानुशस्तमथादि ते हुते वेष्टितम् आप० १।१५।१२,—आचारम् (अ०) आचार के अनुसार—शां० का० ४१, —अन्ध (वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख, —आरोहणम् (अ०) आरोह अनुपात के अनुसार, —उपचारम् (अ०) औचित्य के अनुरूप, शिष्टाचार सापेक्ष, —उपदिष्ट (वि०) जैसा निर्देश दिया गया हो, या जैसा परामर्श दिया गया हो,—कारम् (अ०) जिस किसी रीति से,—पा० ३।४।२८, —उचितम् (अ०) समुचित रीति से, —शक्यम् (अ०) जितनी जल्दी हो सके,—इच्छम् (अ०) अपनी इच्छा के अनुसार, —तथ्यम् (अ०) सचमुच, वास्तव में, —न्यासम् (अ०) जैसा कि विधान है, जैसा कि मूल पाठ में है,—न्युप्त (वि०) जैसा कि धरती में डाला गया है,—पण्यम् (अ०) विशेष वस्तु के मूल्य के

अनुसार, —अर्हम् (अ०) योग्यता के अनुसार —उचितम् (अ०) जैसा अनुकूल हो, जैसा कि उपयुक्त हो, —प्रस्तावम् (अ०) सबसे पहले उपयुक्त अवसर पर, —प्रस्तुतम् (अ०) 1. अन्त में 2 प्रस्तुत विषय के अनुरूप, —भूतम् (अ०) वरीयता के अनुकूल, —मूल्यम् (अ०) मूल्य के अनुसार, —रसम् (अ०) रस या स्वाद के अनुकूल, —लब्ध (वि०) जैसा कि वस्तुतः प्राप्त हो चुका है —विनियोगम् (अ०) निर्दिष्ट प्राथमिकता के अनुसार, —व्युत्पत्ति (अ०) ज्ञान की गहराई के अनुकूल —शब्दार्थम् शब्द के अर्थों के अनुसार —यथाशब्दार्थं प्रवृत्तिः, मं० सू० ११।१।२९ पर भाष्य, —सत्त्वम् (अ०) परिस्थिति के अनुकूल, —समयम् ऋतु के अनुकूल —सारम् गुण के अनुसार, —सूक्तम् (अ०) जैसा कि अतिरिक्त रीति से कहा गया है, —स्थ (वि०) अपने अपने आवास या स्थान के अनुसार।

यदवधि (अ०) जिस समय से।

यदात्मक (वि०) जिस सत्ता परक।

यद्वद (वि०) इच्छानुसार बोलने वाला।

यदीय (वि०) [यद्+छ] जिसका, जिससे संबद्ध।

यन्त्रम् [यन्त्र्+अच्] 1 जो रोकता, या बांधता है 2 सहारा, थूणी 3 बेड़ी, हथकड़ी 4 शल्य क्रिया का उपकरण (यन्त्र) 5 मशीन, इंजन 6 कुंजी, ताला, चाबी 7. प्रतिबन्ध, शक्ति 8 तावीज 9 छिद्र करने की मशीन। सम०—आरूढ (वि०) घूमने वाली मशीन पर चढ़ा हुआ, —भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया-भग०, —कोविद यन्त्रकार, मशीन पर कार्य करने वाला —रा० २।८०।२, —गृहम् यन्त्रागार, जहाँ किसी को यन्त्रणा दी जाती है, —धारागृहम् वह स्थान जहाँ फौवारा लगा हुआ हो, —सूत्रम् गुड़िया या पुत्तलिका को रंगमंच पर हिलाने वाली डोरी।

यन्त्रकम् [यन्त्र+कन्] 1 हाथ से चलायी जाने वाली मशीन, खराद 2 सामान का बंडल निर्योगमाने भरणानि यन्त्रके—कि० १२।९।

यन्त्रिका [यन्त्र्+ण्वुल्] छोटी साली, पत्नी की छोटी बहन।

यन्त्रित (वि०) [यन्त्र्+क्त] 1 जकड़ा हुआ 2 नियमों से नियन्त्रित या प्रतिबद्ध 3 लगाम को चढ़ाने के लिये निकाला हुआ 4 आकृष्ट अथवा मदभिस्नेहा-नुबन्धी यन्त्रितमानसा भाग० १०।२९।२१।

यम (वि०) [यम्+अच्] 1. यमल, जोड़ुआ 2 दोहरा, —मः 1. प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, दमन 2. आत्मसंयम 3. कोई नैतिक कर्तव्य (विप० नियम) 4. योग के आठ अङ्गों में से एक 5. मृत्यु का देवता 6. शनि 7 कौवा 8 'दो' की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 9 लगाम 10 चालक, रथवान, —मम् 1. जोड़ा 2 संयुक्त व्यंजन, —मी यमुना नदी, —मौ (पुं० द्वि० व०) 1 युगल, जोड़ुआ —सूति समयो यमौ —कि० १।३६ 2 अश्विनीकुमार। सम० —अनुजा यमुना नदी, —घण्ट ज्योतिष का एक अशुभ योग, —द्रुम सप्तपर्ण वृक्ष, —पट, —पट्टिका कपड़े की एक पट्टी जिस पर यम, यम के अनुचर तथा नारकीय यातनाओं का चित्रण अंकित रहता है —यमपट्टिकं गृहं प्रविश्य यमपटं दर्शयन् गीतानि गायामि —मुद्रा० १।१८, —व्रतम् 1. यम को प्रसन्न करने के लिए व्रत रखना 2. निष्पक्ष दण्ड विधान—मनु० ९।३०७, —शासन शिव, यमशासनशासनकामनदर्पे-नमायबधार स —रा० च० २।१२, —सादनम् यम का वासस्थान।

यमककाव्यम् यमक-प्रधान कविता, वह काव्य जिसमें यमक अलंकार की बहुलता हो।

यमलार्जुनौ दो अर्जुन के वृक्ष (जिनको कृष्ण ने बचपन में उखाड़ दिया था)।

यमिका एक प्रकार की सूखी खांसी।

यमोषका एक प्रकार का घण्टा जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

यव [यु+अप्] 1 जौ 2 महीने का पहला पक्ष 3. गति, चाल 4 ज्योतिष का एक योग 5. चाव, वेग 6. दुगुना उन्नतोदर शीशा 7. एक राजा का नाम। सम०—क्षोदः चूर्णमात्र आटा जौ, —नाल एक प्रकार का धान्य पौधा

यवनाचार्य ज्योतिष के 'ताजिक' नाम की कृति का विख्यात प्रणेता।

यवनिका—जवनी पर्दा।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातोः युट् च] 1 कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्ध 2. पूज्य व्यक्ति 3. प्रसाद 4 धन 5 आहार 6. जल 7 विरल गुणों का एकत्र समूह 8 परोक्ष कीर्ति—उत्त० उ० ३।१८।१। सम०—दा कीर्ति प्रदान करने वाला।

यष्टि (स्त्री०) [यज्+क्तिन् नि० न संप्रसारणम्] 1 लकड़ी 2 गदा 3 स्तम्भ 4 सहारा, टेक 5. ध्वजदण्ड 6. डोरी, धागा 7 हार, लड़ी। सम०—आघातः डंडे की मार, —उत्थानम् लकड़ी की सहायता से उठना, —यन्त्रम् समय को मापने के लिए ज्योतिष का एक साधन।

यस्मात् (अ०) 1 जिससे, जब से, जिस वास्ते से 2. ताकि, जिससे कि।

या (अदा० पर०) विदा करना।

यागः [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1. यज्ञ, आहुति 2. उपहार

उपहार, प्रदान। सम०—कण्टक 1. बुरा यजमान 2. जो यज्ञ को बिगाड़ता है,—संभरणम् यज्ञीय पदार्थ को लेने वाला—पा० ४।२।२४ पर काशिका, —सूत्रम् यज्ञीय यज्ञोपवीत, जनेऊ।

याच्ञा [याच्+नङ्] 1. मांगना। 2 याचना 3 प्रार्थना सम०—जीविका,—जीवनम् भिक्षावृत्ति पर जीने वाला,—भङ्गः प्रार्थना को ठुकरा देना।

याजूकः यजमान, यज्ञ करने वाला।

याज्ञसेन } शिखण्डी का पैतृक नाम।
याज्ञसेनि } महा० ७।१४।४४

याज्या [यज्+णिच्+यत्+टाप्] आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला यज्ञीय नियम।

यातिकः [यात+ठक्] यात्री।

यातुनारी राक्षसी, पिशाचिनी बभ्राम विजयतो या तु यातुनारी—रा० च० ७।१०।

यातनः नरक में रहने वाला।

यात्राकर (वि०) जीवन का सहारा देने वाला (साधन)

यात्रादानम् यात्रा पर जाते समय दिया गया उपहार।

याथात्म्यम् [यथात्मा+ष्यञ्] वास्तविक स्वभाव या प्रयोजन।

यानम् [या+ल्युट्] 1. जलयान, पोत 2. जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का उपाय—तु० महायान, हीनयान 3. वायवी रथ, हवाई गाड़ी। सम०—आस्तरणम् गाड़ी की गद्दी, बैठने का आसन—मृच्छ०,—स्वामिन् गाड़ी का मालिक।

याम (वि०) (स्त्री०—मी) [यम+अण्] यम से संबन्ध रखने वाला—यामकिंकर यातनाः—मुकुन्द० १०, —मः (पुं०) देवों का समुदाय—यामैः परिवृतो देवैः—भाग० ८।१।१८। सम०—वाजिन् मुर्गा,—पालकः समय पालक, [illegible]।

यामिनचरः] 1. राक्षस 2. उल्लू।
यामिनीचरः]

यामलम् तन्त्रग्रन्थ।

यामिः,—मी, [या+मि, ङीप् वा] 1. दक्षिणी दिशा 2. भरणी नामक नक्षत्र।

यावकः,—कम् [यव+अण्, स्वार्थे कन्] एक व्रत जिस में जौ खाकर रहना पड़ता है।

यावदध्ययनम् (अ०) पढ़ने के समय, विद्यार्थी अवस्था में।

यावत्संभवम् (अ०) जहाँ तक संभव हो।

यावतिथ (वि०) जहाँ तक, जिस बिन्दु तक, जिस अंश तक।

[illegible] पान की बेल।

यामिकः [याम+ठक्] चौकीदार, पहरा लगाने वाला।

युक्त (वि०) [युज्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ बांधा हुआ 2. युद्ध में जोता हुआ 3. व्यवस्थित 4. सम्पन्न 5. संयुक्त, लगा हुआ 6. स्थिर किया हुआ, जमाया हुआ 7. संबद्ध 8. सिद्ध, अनुमित 9. सक्रिय, परिश्रमी 10. (ज्यो०) संयुक्त, मिला हुआ। सम०—चेष्ट (वि०) उचित कार्य में संलग्न,—वादिन् (वि०) उपयुक्त बात कहने वाला।

युक्तकम् [युक्त+कन्] जोड़ा।

युगम् [युज्+घञ्, कुत्व, न गुण] 1. जुआ 2 जोड़ा 3 चन्द्रमा की सापेक्ष स्थिति। सम०—कील् (स्त्री०) जूए की कील,—मात्रम् जूए की लंबाई के बराबर माप अर्थात् चार हाथ की लम्बाई,—वरत्रम् जूए का फीता या तस्मा।

युगन्धर,—रम् गाड़ी की वह लकड़ी जिसमें जूआ लगा रहता है।

युगन्धरा एक देवी योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा—ललिता०।

युगी (स्त्री०) बहुतायत योषयुग्या क्षुरसमृत्स्या युगे रौणादिक कि कुत्वमार्षम्—महाभाष्य ५।६१।३ पर टीका।

युग्म (वि०) [युज्+मक्] सम, दो से भाग होने वाली संख्या, —ग्मम् 1. जोड़ा 2. संघ, जंक्शन 3. संगम 4 युगल 5 मिथुन राशि। सम०—चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में घूमने वाला—विपुला एक छन्द का नाम,—शुक्लम् आंखों में दो सफेदी के बिन्दु।

युङ्ग. } (भ्वा० पर०) छोड़ देना, त्याग देना।
युङ्ग् }

युङ्गिन् (पुं०) [युङ्ग्+इनि] एक संकर जाति।

युछ्, युच्छ् (भ्वा० पर०) 1. भूल करना, भटक जाना 2. विदा होना, चले जाना।

युद्धम् [युध्+क्त] 1. लड़ाई, संग्राम, समर, संघर्ष, समर 2. ग्रहों का विरोध या संघर्ष। सम०—अवहारिकम् युद्ध में जीतने पर प्राप्त सामग्री, संपत्ति,—गान्धर्वम् रणभेरी, युद्ध का गीत,—तन्त्रम् युद्ध विज्ञान, सैनिक शिक्षा,—ध्वानः युद्ध का आक्रन्द,—योजक (वि०) युद्ध भड़काने वाला,—व्यतिक्रमः युद्ध कला के नियमों का उल्लंघन।

युद्धकम् [युद्ध+कन्] संग्राम, रण, समर, लड़ाई।

युधिक (वि०) [युध्+ठन्] लड़ाकू, योद्धा, लड़ने वाला।

योद्धृ (पुं०) [युध्+तृच्] योद्धा, सिपाही।

युयुक्खुरः चीता या हिरण की जाति का जन्तु, क्षुद्र व्याघ्र, बिज्जू।

युवन् (वि०) [यु+कनिन्] 1. जवान 2. हृष्ट-पुष्ट 3. उत्तम, श्रेष्ठ (पुं० युवा) 4. साठ वर्ष का हाथी 5. एक संवत्सर। सम०—जानिः वह पुरुष जिसकी पत्नी जवान है, युवजानिर्धनुष्पाणिः—भट्टि० ५।११, —पलित (वि०) जवानी से पूर्व जिसके बाल पक गये हैं,—पा० २।१।६७ पर भाष्य,—हन् शिशु हत्या।

युवकः [युवन् + कन्, नलोपः] जवान, तरुण ।

युवानक (वि०) [युवन् + आनक न लोपः] तरुण, जवान ।

युवतिः [युवन् + ति] जवान स्त्री, तरुणी । सम० —इष्टा पीले रंग की चमेली, —जन तरुणी स्त्रियाँ ।

युष्मदर्थम् (अ०) आपके लिए, आपकी खातिर ।

युष्मदायत्त (वि०) जो कुछ आपके अधीन है, आपके नियन्त्रण में है ।

युष्मदाह्वानम् (व्या०) मध्यम पुरुष ।

युष्मादृश (वि०) आप जैसा, आपकी तरह का ।

युष्माक (वि०) आपका, आपसे संबंध रखने वाला ।

यूकालिक्षम् 1 जूँ और उसका अंडा (लीख) 2 लीख ।

यूथम् [यु + थक्, पृषो० दीर्घः] रेवड़, लहँडा, समूह, समुदाय । सम० —चारिन् (वि०) जो सामूहिक रूप से (हाथियों की भाँति) घूमता है, किसी रेवड़ में या लहँडे में, —परिभ्रष्ट (वि०) अपने समूह से भटका हुआ, —बन्धः रेवड़, लहँडा ।

यूथशः (अ०) [यूथ + शस्] रेवड़ में, लहँडे में, पंक्ति में ।

यूपः [यु + पक्, पृषो० दीर्घ] 1. यज्ञीय स्थूणा (जो प्रायः बाँस या खैर की लकड़ी की होती है) जिससे यज्ञीय पशु बाँध दिया जाता है 2. विजयस्तम्भ । सम० —कर्णन्यायः वह नियम जिसके अनुसार विकृति से संबद्ध किसी विवरण का उत्कर्ष या अपकर्ष केवल उसी विवरण तक लागू रहेगा जिससे कि तदादितदन्त न्याय का उपयोग न हो सके —मी० सू० ५।१। २७ पर शा० भा० ।

योगः [युज् + घञ्, कुत्वम्] 1. आक्रमण —योगमाज्ञापयामास शिवस्य विषयं प्रति शिव० १३।७, 2. सतत संसक्ति, लगातार मिलाना —मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी —भग० १३।१० 3. समता साम्य —समत्वं योग उच्यते —भग० २।४८ 4. दुःख के 'बों से छुटकारा —दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् भग० 5. मिलाना, जोड़ना 6. संपर्क 7. उपयोग 8. परिणाम 9. जूआ । सम० —अभ्यासिन् (वि०) जो योग का अभ्यास करता है, —आख्या केवल आकस्मिक संपर्क के कारण उत्पन्न नाम —एषा योगाख्या योगमात्रापेक्षा न भूतवर्तमानभविष्यत्कालापेक्षा मी० सू० १।३।२१ पर शा० भा० —आपत्तिः प्रचलन में परिवर्तन, —क्षेमः 1. समृद्धि, सुरक्षा 2. कल्याण, भलाई 3. धार्मिक कार्यों के निमित्त कल्पित संपत्ति —मनु० ९।२१९, —दण्डः योग की शक्ति से युक्त जादू की छड़ी, —नाविकः, —नाविक, एक प्रकार की मछली, —पदम् ध्यानकेन्द्रण की स्थिति, —वाहम् मूर्छा लाने वाले पदार्थों से युक्त शराब, पीनक, —पीठम् योग का अभ्यास करते समय बैठने की विशेष मुद्रा, —पुरुषः गुप्तचर, —यथा योगपुरुषैरन्यान् राजाधितिष्ठति —कौ० अ० १।२१, —भ्रष्ट (वि०) जो योग के मार्ग से पतित हो गया है —शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते —भग०, —माया परमेश्वर से सायुज्य प्राप्त करने का मार्ग, —युक्त (वि०) योगमार्ग में संलग्न —योगयुक्तो भवार्जुन —भग० ८।२७, —वामनम् गुप्त उपाय, कूटयुक्ति, कपटयोजना, कौ० अ० —वाहक (वि०) विघटनकारी (रसा-यन०) —विद्या योगशास्त्र, —संसिद्धिः योगाभ्यास में पूर्णसाफल्य प्राप्त करना, —सिद्धिन्यायः एक न्याय जिसके अनुसार नाना प्रकार के फलों को देने वाली एक विशिष्ट प्रक्रिया एक समय में केवल एक ही फल दे सकती है दूसरा फल प्राप्त करने के लिए उस प्रक्रिया का पृथक् रूप से दूसरा प्रयोग करना पड़ेगा मी० सू० ४।३।२७-२८ पर शा० भा० ।

यौगिक (वि०) [योग + ठक्] अभ्यास के लिए प्रयुक्त (जैसा कि 'यौगिकं चाप' तीरन्दाजी अभ्यास प्राप्त करने के लिए धनुष) ।

योग्य (वि०) [युज् + ण्यत्, योग + यत् वा] 1. उपयुक्त, समुचित 2. पात्र 3. उपयोगी, कामचलाऊ —ग्यः (पुं०) 1 पुष्य नक्षत्र 2. भारवाही पशु, —ग्यम् 1. सवारी, गाड़ी 2. चन्दन 3 रोटी 4. दूध ।

योग्या [योग्य + टाप्] 1. एक देवी का नाम —योगिनी योगदा योग्या —ललिता० 2. पृथ्वी 3. सूर्य की पत्नी का नाम ।

योजनम् [युज् + ल्युट्] 1. जोड़ना, मिलाना 2. तत्परता व्यवस्था 3. परमात्मा 4. अंगुली 5. चार कोस की दूरी ।

योजित (वि०) [युज् + णिच् + क्त] 1. जूए में जोता हुआ 2 प्रयुक्त, काम में लिया गया 3. मिला, संयुक्त 4. सम्पन्न ।

यौधेयः [योधा + ढक्] 1. योद्धा, एक वंश का नाम ।

यौन (वि०) [योनि + अण्] वंश या कुल से संबन्ध रखने वाला ।

योनिः [यु + नि] 1. ऋग्वेद की वह आधारभूत ऋचा जिस पर 'साम' का निर्माण हुआ 2. खोत 3. मूल कारण 4. ज्ञान का स्रोत —योनिश्चेत्प्रमाणं वेदोक्तो धर्ममूल मित्यादिनोक्तमित्यर्थः —मी० सू० २।२५ पर शा० भा० 5. इच्छा —योनिपातालदुस्तराम् —महा० १२।२५०।१५ । सम० —कुण्डः गर्भाशय या मूलस्थान से उत्पन्न कुण्ड, —दोषः 1. योनिसम्बन्धी विकार 2. स्त्री की जननेन्द्रिय में कोई दोष, —मुक्त (वि०) जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पाये हुए, —मुद्रा अंगुलियों द्वारा ऐसी

विशिष्ट आकृति बनाना जो स्त्री की योनि से मिलती जुलती हो,—संवरणम्,—संवृत्ति योनि या भग को सिकोड़ना,—संकटम् पुनर्जन्म ।

यौनाशकुः } विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मृतक
यौनिवृत्ताकुः } व्यक्ति की पत्नी को ग्रहण करने वाला ।

यौगपदम् दे० यौगपद्यम् ।

यौगपद्यम् [युगपद्+य] भिन्न भिन्न स्थानों से एक ही साथ एक वस्तु को देखना—आदित्यवद्यौगपद्यम् मी० सू० १।१।५ ।

यौन (वि०) [योनि+अण्] (समास में) 1. मूल स्थान, उद्गमस्थान—यथाग्नियौनाश्च वसन्ति लोका —महा० १३।१०२।२५ 2. गर्भाधानसंस्कार । सम०—अनुबन्धः रक्तसम्बन्ध,—यौनानुबन्धं च समीक्ष्य कार्यं—की० अ० २।१०,—सम्बन्धः दे० यौनानुबन्ध ।

यौनिकः [योनि+ठक्] मध्यम वायु, सुहावनी हवा ।

यौवनम् [युवन्+अण्] जवानी, वयस्कता । सम०—आरूढ (वि०) किशोर, वयस्क,—उद्भेदः 1. जवानी के आवेश का मादक उत्साह 2 यौन प्रेम, काम वासना 3. जवानी की कली का खिलना 4. वयस्कता प्राप्त करना—कण्टकः,—कण्टकम्,—पिडिका यौवनारम्भ का संकेत करने वाली चेहरे पर छोटी-छोटी फुंसियाँ, प्रान्तः जवानी के किनारे पर,—श्रीः जवानी का सौन्दर्य ।

यौवनीय (वि०) युवक, तरुण ।

य्वागुः चावलों का मांड, यवागू ।

र

रक्ता (स्त्री०) कोढ़ का एक भेद ।

रक्त (वि०) [रञ्ज्+क्त] 1. रङ्गा हुआ, रंगीन 2 लाल 3. प्रिय, प्यारा 4. सुन्दर, सुहावना 5. अनुस्वार युक्त (स्वर),—क्तः (पुं०) 1. लाल रंग 2. मंगल ग्रह 3. शिव,—क्तम् (नपुं०) 1. रुधिर, खून 2. तांबा 3. जाफ़रान 4. सिन्दूर 5. आँखों का एक रोग 6. लाल चन्दन,—क्ता (स्त्री०) 1 लाख 2. गुञ्जा 3. आग की सात जिह्वाओं में से एक । सम०—कुमुदम् लाल कमलिनी,—छद (वि०) लाल पत्तों वाला,—पद्मम् लाल कमल,—बीजः 1. एक राक्षस जिसको दुर्गा देवी ने मारा था 2. अनार का वृक्ष,—विकारः रुधिर का ह्रास,—ष्ठीवी रुधिर थूकने वाला,—स्रावः शरीर के अन्दर नस फट जाने से रक्त बहना ।

रक्ष् (भ्वा० पर०) सावधान होना, जागरूक होना ।

रक्षा [रक्ष्+अ+टाप्] 1. बचाना, रखना 2. सावधानी, सुरक्षा 3. चौकीदारी 4. रक्षा ताबीज 5. भस्म 6, रक्षाबन्धन, पहुँची 7. लाख । सम०—अधिकारः कलाई पर ताबीज की भाँति बाँधी जाने वाली पहुँची, रक्षाबन्धन,—महौषधिः रक्षा करने की श्रेष्ठतम औषधि ।

रक्षिकम् [रक्ष्+क्त, स्वार्थे कन्] सुरक्षा ।

रघुः सूर्यवंश का एक प्रतापी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता । सम०—उद्वहः रघुवंश में सर्वोत्तम, राम,—कारः 'रघुवंश' नामक काव्य का प्रणेता कालिदास ।

रङ्घ् (भ्वा० पर०) जाना ।

रङ्गः [रञ्ज्+घञ्] 1. रंग, वर्ण 2. मंच, क्रीडागार, आमोद का सार्वजनिक स्थान 3. बोलुवर्ग 4. रणक्षेत्र 5. नाचना, गाना, अभिनय करना । सम०—क्षारः सुहागा,—तालः एक प्रकार का सङ्गीत का माप,—दः सुहागा,—नाथ, राज, धामन्,—शायिन् विष्णु के विशेषण (मद्रास राज्य के श्रीरङ्गम् स्थान पर स्थित मन्दिर), प्रवेश रङ्गमञ्च पर पधारना, वेदी पर उपस्थित होना, मङ्गलम् वेदी पर 'आवाहन' उत्सव मनाना ।

रचनम् [रच्+ल्युट्] 1. योजना, उपाय 2. बाण में पंख लगाना ।

रचित (वि०) [रच्+क्त] आविष्कृत, निर्मित । सम० —पूर्व (वि०) जो पहले ही बन चुका है ।

रजयित्री [रञ्ज्+तृच्+ङीप्] स्त्री चित्रकार ।

रजस् (नपुं०) [रञ्ज्+असुन्, नलोपः] 1. धूल, गर्द 2. पुष्प की धूल, पराग 3. अन्धेरा 4. आवेश, नैतिक अन्धकार 5. तीनों गुणों में दूसरा 6. भाप 7. बादल या वर्षा का पानी 8. पाप—प्रायश्चित्तं च कुर्वन्ति तेन तच्छाम्यते रजः—रा० ४।८।१४ । सम०—युज् (वि०) रजोगुण से युक्त, मेघः धूल का बादल,—विधूसर (वि०) धूल से भूरे रङ्ग का हुआ —भुवि तुरगरजो विधूसरविष्वक्...... भाग० १।९।३४ ।

रणः, —णम् [रण्+अप्] 1 युद्ध, लड़ाई 2. युद्धक्षेत्र । सम०—अतिथिः युद्ध चाहने वाला अतिथि—रणाध्वः प्राप्तो रणातिथिः स्कन्द० २।११,—मार्गः युद्धक्षेत्र में लड़ने की रीति,—रणायित (वि०) 'रण-रण' शब्द करता हुआ,—रसिक (वि०) लड़ाई का इच्छुक —शूरः, शौण्डः युद्ध कला में प्रवीण ।

रण्डाश्रमिन् (वि०) जो पैंतालीस वर्ष की आयु के पश्चात् विधुर हो जाता है ।

रतोद्वहः कामकेलि व्यापार परक कौआ।

रतवैपरीत्यम् सम्भोग या मैथुन की प्रक्रिया जिसमें स्त्री पुरुष की भांति आचरण करती है।

रतिः [रम्+क्तिन्] 1. हर्ष, आह्लाद 2 आसक्ति, अनुराग 3. यौनसुख 4. संभोग, मैथुन 5 कामदेव की पत्नी 6. चन्द्रमा की छठी कला। सम० खेदः मैथुन करने से उत्पन्न थकावट, पाशः,—बन्धः मैथुन करने की विशिष्ट रीति,—रहस्यम् कोक्कोक पंडित द्वारा प्रणीत 'कामशास्त्र',—सुन्दरः एक प्रकार का रतिबंध।

रत्नुः (स्त्री०) 1 दिव्यनदी, स्वर्गंगा 2 सत्य से युक्त शब्द या भाषण रत्नुः स्यात् सत्यवाचक कोश०।

रत्नम् [रम्+न, तान्तादेश] 1. रत्न, जवाहर, मूल्यवान् पत्थर 2 कोई भी अमूल्य पदार्थ 3 कोई भी उत्तम या श्रेष्ठ वस्तु 4. जल 5 चुम्बक। सम०—अङ्कुरः मूंगा,—अचलः आख्यानों में वर्णित लंका में स्थित एक पहाड़,—कुम्भः रत्नों से भरा हुआ घड़ा,—कूटः एक पहाड़ का नाम,—गर्भः 1 कुबेर 2 समुद्र,—गर्भगणपतिः गणपति की एक विशेष मूर्ति,—च्छाया रत्नों की कान्ति रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत् पुरस्तात् मेघ०,—धेनुः रत्नों के ढेर में (दान के लिए) दी जाने वाली प्रतीकात्मक गाय,—पञ्चकम् पाँच रत्न—सोना चाँदी, मोती, हीरा, और मूंगा,—वरम् सोना।

रथः [रम्+कथन्] 1 गाड़ी, बहली 2 पैर 3 अंग, भाग, 4 शरीर 5 हर्ष, आह्लाद। सम० आरोहः जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है, उडुपः,—उडुपम् रथ का ढांचा,—घोषः रथ के चलने का 'घरघर' शब्द,—कारकः शूद्र द्वारा सैरन्ध्री में उत्पन्न पुत्र,—विज्ञानम्,—विद्या रथ हाँकने की कला।

रथन्तरम् एक साम का नाम।

रथिन् (वि०) [रथ+इनि] 1 रथ में सवार 2 रथ का स्वामी, (पुं०) 1 क्षत्रिय जाति का पुरुष 2. रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा।

रथ्या [रथ+यत्+टाप्] 1 सड़क 2 सड़कों का संगम स्थान 3. बहुत से रथ या गाड़ियाँ। सम० मुखम् किसी सड़क पर प्रविष्ट होने का द्वार,—मृगः गली का कुत्ता।

रदनः [रद्+ल्युट्] दाँत।

रदनम् [रद्+ल्युट्] फाड़ना, कुतरना, खुरचना।

•रन्ता (स्त्री०) गाय।

रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागम] 1 छिद्र 2 जन्मकुंडली में लग्न से आठवाँ घर। सम०—गुप्तिः दोषों या त्रुटियों का छिपाना।

रपलः [रप्+अलच्] विष, जहर।

रमणकः [रम्+ल्युट्, कन्] एक द्वीप का नाम।

रम्या [रम्+यत्+टाप्] (संगीत०) श्रुति का एक भेद।

रवणः [रु+युच्] 1. ऊँट 2. कोयल 3. मधुमक्खी 4 ध्वनि 5. एक बड़ा खीरा।

रविः [रु+अच्(इ)] 1 सूर्य 2. पर्वत 3. मदार का पौधा 4 बारह की संख्या। सम० इष्टः नारंगी, छतरा,—वारः दिन,—बिम्बम् सूर्यमंडल,—सारथिः 1. अरुण 2 उषःकाल।

रश्मन् [अश्+मुन्, रशादेश] 1. रस्सी 2 लगाम 3. तगड़ी। सम०—पदम् कूल्हा,—ग्राहः रथवान,—मालिन् सूर्य।

रस [रस्+अच्] 1. (वृक्षों का) रस 2. तरल पदार्थ 3 सुरा, पेय 4 घूंट, (दवा की) मात्रा 5. स्वाद, रस 6 प्रेम 7 प्रेम, अनुराग 8 हर्ष, आमोद 9 (साहित्यिक) रस 10. सत, अर्क 11 वीर्य 12. पारा 13 विष 14. गन्ने का रस 15 पिघला हुआ मक्खन 16. अमृत 17 रसा (शाक भाजी का) 18 हरा प्याज 19. सोना 20 छ की संख्या का प्रतीक 21 रसग्रहण करने का अंग जिह्वा भाग०८।२०।२७ 22 पिघली हुई धातु। सम०—इक्षुः गन्ना,—उत्पत्तिः (अल०) 1. रस की निष्पत्ति 2 सजीवन रस की उपज,—घन (वि०) रस से भरा हुआ,—शास्त्रम् भैषज्यविज्ञान,—तन्मात्रम् रस या स्वाद का सूक्ष्म तत्त्व,—निवृत्तिः स्वाद का न होना, रसहीनता,—बंध पारे का निर्माण।

रसना [रस्+युच्] जिह्वा। सम० अग्रम् जिह्वा का अग्रभाग, मूलम् जिह्वा की जड़।

रसवत्ता [रस+मतुप्+तल्+टाप्] कला की परख—या रसवत्ता विहता —वासव०।

रसातलम् [ष० त०] 1 सात लोकों में से एक, पृथ्वी के नीचे का लोक, पाताल 2 लग्न से (जन्मकुंडली में) चौथा घर।

रस्या [रस्+यत्+टाप्] एक देवी का नाम।

रहस्यत्रयम् विशिष्ट द्वैत शाखा के तीन मुख्य सिद्धान्त (ईश्वर, चित् और अचित्)।

रहितात्मन् [ब० स०] जिसके आत्मा न हो (अर्थात् जो अपने आत्मा की बात का आदर न करता हो)।

राक्षस [रक्षस्+अण्] 1 भूत प्रेत, पिशाच 2. हिन्दुओं में आठ प्रकार के विवाहों में से एक 3. एक संवत्सर का नाम।

राग [रञ्ज्+घञ्] 1 प्रज्वलन 2 मिर्चमसाला 3. प्रेम, आवेश, यौनभावना 4. लालिमा। सम०—वर्धनः एक प्रकार का (संगीत का) राग।

राघवायणम् रामायण।

राघवीयम् राघव की एक रचना, कृति।

राजन् [राज् + कनिन्] सोम का पौधा—ऐन्द्रस्य विभिव-हतो राजा चाभिषुतोऽत्र रा० १।१४।६। सम० —उपसेवा, राजा की सेवा करना,—गुह्यम् ऊँचे दर्जे का रहस्य,—देयम् (भागम्) राजकीय दावा, - पत्रिका (स्त्री०) चातकपक्षी,—भिक्षा राजा से आजीविका,—प्रसाद राजा का अनुग्रह, महिषी पटरानी, मार्तण्ड 1. (संगीत०) एक प्रकार की माप 2 इस नाम का एक ग्रन्थ,—राज्यम् कुबेर का राज्य,—लिङ्गम् एक राजचिह्न, वर्त्मन् शाही मर्यादा, —वल्लभ राजा का प्रिय व्यक्ति, वृत्तम् राजा का आचरण,—स्थानीयः राजा का प्रतिनिधि, वाइसराय।

राजन्य (वि०) [राजन् + यत्,] राजकीय, शाही, न्य क्षत्रिय जाति का पुरुष। सम० बन्धुः क्षत्रिय।

राज्यम् [राजन् + यत्, नलोप] 1 राजकीय अधिकार, प्रभुसत्ता 2 राजधानी, देश, साम्राज्य 3 प्रशासन 4. सरकार। सम० — अधिदेवता राज्य की प्रधानता करने वाली देवता, अभिभावकदेव, परिक्रिया प्रशासन, कीर्तिः—श्रीः, प्रभुसत्ता की कीर्ति, स्थितिः सरकार।

राजिः — } (स्त्री०) [राज् + इन्, ङीप् वा] 1. पंक्ति
जी } 2. काली सरसों 3. धारीदार साँप 4 खेत 5. लाल जिह्वा, काकल। सम० फला एक प्रकार की ककड़ी।

राणायनीयः 1. एक आचार्य का नाम 2. वैदिक शाखा का प्रवर्तक।

रात (वि०) प्रदत्त, अनुदत्त।

रात्रिः,—त्री [रा + त्रिप्, ङीप् वा] 1. रात 2. रात का अंधकार 3. हल्दी 4. ब्रह्मा के चार रूपों में से एक 5. दिन रात—दे० म० ८।१।१९ पर शा० भा०। सम० —आगमः रात का आना, द्विषः सूर्य,—मणिः चन्द्रमा —कुङ्कुमः—पतिः चन्द्रमा,—सत्रन्यायः मीमांसा का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार अर्थवाद में वर्णित फल ही ग्रहण किया जाता है जब कि विधि में कर्मफल का वर्णन न किया गया हो।

राधा [राध् + अच् + टाप्] 1. वैशाख महीने की पूर्णिमा 2. अविरतता।

राम (वि०) [रम् + घञ्, ण वा] 1. आह्लादमय, सुखद सुहावना 2. सुन्दर, लावण्यमय 3. श्वेत, मः तीन ख्याति प्राप्त व्यक्ति (क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जिसका भाई कृष्ण था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र, सीताराम। सम० -कान्त कमल का एक भेद, तामस, —तापनी, तापनीय उपनिषद् एक उपनिषद् का नाम,—लीला उत्तरभारत में नवरात्र के दिनों में 'रामायण' का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण।

रमणीयता [रम् + अनीय + तल्] सौन्दर्य, चारुता।

रामण्यकम् सौन्दर्य, मनोज्ञता।

रामा (स्त्री०) एक छन्द का नाम।

रावितम् [रु + णिच् + क्त] ध्वनि, स्वन—स्वरस्येव स्वरस्येन्दूता वीरा रावितपूर्विका रा० ७।७।१२।

राशिः [अश् + इञ्, धातोरकारागमश्च] 1 ढेर, समूह, समुच्चय 2 संख्या (गणित में) 3 ज्योतिष का घर जिसमें २¼ नक्षत्र सम्मिलित होते हैं। सम० —गत (वि०) बीजगणित विषयक, पः ज्योतिष के एक घर का स्वामी दे० राशधिप।

राष्ट्रकः [राष्ट्र + कन्] दे० राष्ट्रिक।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र + ठञ्] 1 किसी देश का निवासी 2. राज्य का शासक 3 राज्यपाल।

रासः [रास् + घञ्] 1 कोलाहल 2 शोर 3 वक्ता 4 एक प्रकार का नृत्य 5 शृङ्खला 6 खेल, नाटक। सम० —केलिः वर्तुलाकार नाच जिसमें कृष्ण और गोपिकाएँ सम्मिलित होती हैं।

रासायन (वि०) [रसायन + अण्] रसायनसंबंधी।

रासायनिक (वि० [रसायन + ठञ्] रसायन संबंधी।

रिक्तीकृ (तना० पर०) 1 रिक्त करना, खाली करना 2 ले जाना, चुरा लेना 2 चले जाना।

रिक्थजातम् (नपुं०) (किसी मृतक व्यक्ति की) समस्त सम्पत्ति सम्पूर्ण आस्ति।

रिष्टः [रिष् + क्त] तलवार, कृपाण।

रीतिः [री + क्तिन्] नैसर्गिक सम्पत्ति, स्वाभाविक गुण।

रुक्म (वि०) [रुच् + मन्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वल, चमकदार 2. सुनहरी,—क्मः। स्वर्णाभूषण 2. धतूरा। सम०—भाव (वि०) सोने की कांति चमकीला—सुनहरी सुनहरी तश्तरी, पुङ्ख (वि०) 1. स्वर्णसार से युक्त सुनहरी बाण वाला 2. सुनहरी मूठ वाला।

रुचिकर (वि०) स्वादिष्ट, भूख बढ़ाने वाला।

रुचिर (वि०) [रुच् + किरच्] सुहावना, सुखद अंब वासवस्य वचनेन रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् कि० १२।१। सम०—अञ्जनः शिग्रु का नाम।

रुचिष्य (वि०) [रुच् + किष्यन्] भूखवर्धक, भूख बढ़ाने वाला।

रुण्ट: [रुण्ट् + अच्] घोड़ी और कुञ्जर के मेल से उत्पन्न।

रुद्र (वि०) [रुद् + रक्] 1. भयानक, भयंकर 2. विशाल —द्रः 1 ग्यारह देवगण, जो शिव का ही अपकृष्ट रूप हैं, शिव उनमें मुख्य हैं 2. अग्नि 3. ग्यारह की संख्या 4 यजुर्वेद का सूक्त जिसमें रुद्र को संबोधित किया गया है। सम० प्रयागः एक तीर्थस्थान का नाम,—यामलम् एक तन्त्र ग्रन्थ का नाम,—वीणा एक प्रकार की वीणा।

रुद्रटः अलंकार शास्त्र के एक लेखक का नाम।

रुद्धा [रुध्+क्त+टाप्] घेरा डालना।

रुद्धमूत्र (वि०) [ब० स०] मूत्रावरोध से रुग्ण व्यक्ति।

रुधिरः,—रम् [रुध्+किरच्] 1 लाल रंग 2 मंगल ग्रह 3 खून, रक्त 4 जाफ़रान। सम० —प्लावित (वि०) खून में भीगा हुआ।

रुरुत्सा [रुध्+सन्+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] अवरोध करने की इच्छा।

रुवथः [रु+अथ, कित्] कुत्ता।

रूढ (वि०) [रुह्+क्त] 1 चढ़ा हुआ, सवार, लदा हुआ 2 दूर-दूर तक विख्यात—आसक्ता धूरियं रूढा—कि० ११।७।७। सम० —वंश (वि०) उच्च कुल का,—व्रण (वि०) जिसके घाव भर गये हों।

रूढि [रुह्+क्तिन्] 1 वृद्धि, विकास 2 जन्म 3 निर्णय 4 प्रथा, रिवाज 5 प्रचलित अर्थ।

रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1 कठोर रूखा 2 तीखा, चरपरा 3 चिकनाई से रहित (जैसे भोजन)—क्ष 1. वृक्ष 2 कठोरता, रूखापन,—क्षम् 1 दही की मोटी तह 2 काली मिर्च। सम० —भाव, रूखा भाव, अमित्रत्व का वर्ताव,—वालुकम् मधु मक्खियों से प्राप्त शहद।

रूषित (वि०) [रुष्+क्त] कोपाविष्ट, क्रुद्ध।

रूप् (चुरा० उभ०) वर्णन करना सविस्मयं रूपयतो नभश्चराम्—कि० ८।२६।

रूपम् [रूप्+क, अच् वा] 1 सूरत, आकृति 2 रंग का भेद (काला, पीला आदि) 3 कोई भी दृश्य पदार्थ 4 नैसर्गिक स्थिति, प्राकृतिक दशा 5. सिक्का (जैसे कि रुपया)। सम० —उपजीवनम् सुन्दर या मोहक रूप के द्वारा जीविका लाभ करना महा० १२। २९४।५,—सौष्ठवम् सौन्दर्य, खूब सूरती—परिकल्पना रूप धरना, रूप धारण करना,—भागानुबन्ध किसी इकाई को भिन्नों में परिवर्तित करना, विभाग किसी पूर्णांक को भिन्न राशियों में विभक्त करना —नृत्यम् एक प्रकार का नाच।

रूप्यम् [रूप्+यत्] 1. चाँदी 2 मुद्राङ्कित सिक्का 3 सेमांडन। सम० —धौतम् चाँदी।

रूष (वि०) [रूष्+अच्] कड़वा।

रेखामात्रम् (अ०) पंक्ति से भी, रेखा द्वारा भी।

रेणुः (पुं०, स्त्री०) [रीयते क्षुः] 1. धूल, धूल कण, रेत 2 फूलों की रज 3 एक विशेष माप-तोल। सम० —उत्पात धूल का उठना,—गर्भ एक घड़े तक चलने वाली बालू की घड़ी।

रेणुकातनय }
रेणुकासुत } [ष० त०] परशुराम का विशेषण।

रेतस् (नपुं०) [री+असुन्, तुट् च] 1. वीर्य, बीज 2 धारा, प्रवाह 3 प्रजा, सन्तान 4 पारा 5 पाप। सम० —सेक मैथुन, संभोग,—स्खलनम् वीर्य का गिर जाना।

रेफ 1 'ररर' शब्द 2. 'र्' अक्षर 3. शब्द कण्ठ सामानि समस्तरेफान्—भाग० ८।२०।२५। सम० —विपुला एक छन्द का नाम, —संधि 'र्' का श्रुतिमधुर मेल।

रैवत [रेवती+अण्] 1 बादल 2 पाँचवें मनु का नाम।

रौक्म्यम् [रुक्म+यञ्] रुधिर, खून।

रोग [रुज्+घञ्] 1 बीमारी, कष्ट 2 रुग्ण स्थान। सम० —उत्क्लेश रोगों का फटना, —हः डाक्टर, रोगियों का चिकित्सक,—ज्ञानम् रोग का निदान, —श्रेष्ठ बुखार,—शम रोग का दूर हो जाना।

रोचक [रुच्+ण्वुल्] शोभा का काम करने वाला या कृत्रिम आभूषणों का निर्माता, रा० २।८३।१३।

रोधस् (नपुं०) [रुध्+असुन्] 1 तट, किनारा 2. पहाड़ का ढलान (जैसा कि 'पर्वतरोधस्' में)।

रोप [रुह्+णिच्, हस्य प, कर्मणि अच्] 1. रोपण करना, पौध लगाना 2. स्थापित करना 3 बाण, तीर। सम० —[illegible] बाणों से उत्पन्न अग्नि—नै० ४।८७।

रोपित (वि०) [रुह्+णिच्+क्त] 1 पौध लगाई हुई 2. जड़ा हुआ रत्न 3. निशाना बांधा हुआ (बाण)।

रोमन् (नपुं०) [रु+मनिन्] 1 शरीर के बाल 2. पक्षियों के पंख 3 मछलियों की त्वचा। सम० —सूची बालों में [illegible] की सूई।

रोमश (वि०) [रोम+श] 1. बालों वाला, ऊनी 2 स्वरों के अशुद्ध उच्चारण से युक्त।

रोमशी [रोमश+ङीष्] गिलहरी।

रोषणता [रोषण+तल्] कोप, गुस्सा।

रोह [रुह्+अच्] 1. ऊँचाई 2. वृद्धि, विकास 3 कली, अंकुर 4 अननात्मक कारण।

रोहिणी [रोह+इनि+ङीष्] 1 लाल रंग की गाय 2 पाँच तारों का पुंज—रोहिणी नक्षत्र 3. वसुदेव की पत्नी और बलराम की माँ 4. बिजली 5. एक प्रकार का इस्पात। सम० —तनय बलराम,—योगः रोहिणी का चन्द्रमा के साथ संयोग।

रौद्र (वि०) [रुद्र+अण्] 1 रुद्र की भाँति प्रचण्ड 2. भीषण भयंकर 3 रुद्र विषयक, रुद्र संबंधी।

ल

लक्षम् [लक्ष्+अच्] 1. एक लाख 2 चिह्न, निशान 3. दिखावा, बहाना, धोखा। सम०- अर्चनम् एक लाख फूलों के उपहार से पूजा करना,- दीपः मन्दिर में एक लाख दीपक एक साथ जलाना।

लक्षणम् [लक्ष्+ल्युट्] 1 चिह्न, संकेतक, टोकन 2 परिभाषा 3. शरीर पर सौभाग्यशाली चिह्न 4 नाम 5. उद्देश्य 6. मैथुनेन्द्रिय। सम०—कर्मन् (नपुं०) परिभाषा।

लक्षणा 1. दुर्योधन की पुत्री का नाम 2 तीन शब्दशक्तियों में से एक।

लक्षितलक्षणा संकेत द्योतक इंगित, गौण संकेत, एक ऐसा संकेत जिससे कोई अन्य संकेत मिले मै० स० १०। ५।५८ पर शा० भा०।

लक्ष्मन् (नपुं०) [लक्ष्+मनिन्] 1. चिह्न 2 धब्बा 3. परिभाषा 4 मुख्य, प्रधान 5. मोती।

लक्ष्मी [लक्ष्+ई, मुट् च] 1 दौलत, समृद्धि, धन 2 सौभाग्य, खुशकिस्मती 3. सौन्दर्य, आभा, कान्ति 4. धन की देवता। सम०—प्रसादः धन की देवता का आशीर्वाद, अनुग्रह, नारायणः विष्णु का विशेषण, विवर्तः भाग्य का फेर, समेत (वि०) सौन्दर्य से युक्त, सौभाग्यशाली।

लक्ष्यम् [लक्ष्+यत्] 1 ध्येय, उद्देश्य 2 चिह्न, टोकन 3 वह वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है 4 गौण अर्थ, अप्रत्यक्ष अर्थ। सम० अभिहरणम् पारितोषिक ले उड़ना, ग्रहः निशाना बांधना,—सिद्धिः, अपने उद्देश्य में सफलता।

लग्न (वि०) [लग्+क्त] शुभ, मांगलिक, —ग्नम् 1 वह बिन्दु जहाँ वृत्तपथ मिलते हैं 2 क्रान्तिवृत्त का बिन्दु जो किसी दत्त काल में क्षितिज या याम्योत्तर रेखा पर होता है। सम०—पत्रिका जन्म समय या विवाह संस्कार के मुहूर्तादिक विवरण से युक्त एक मांगलिक पत्रिका, जन्मपत्रिका, या विवाह पत्रिका।

लगणः पलकों का एक विशेष रोग।

लगुडहस्तः [ब० स०] दण्डधारी।

लघु (वि०) [लङ्घ्+कु, नलोप] 1 हल्का 2 छोटा 3 थोड़ा संक्षिप्त 4 मामूली 5 ओछा, अधम, 6 दुर्बल 7. सुस्त, फुर्तीला 8 द्रुत 9 आसान 10 मृदु 11 सुखद 12. प्रिय, सुन्दर 13 सब प्रकार के भारों से मुक्त —अनोकशायी लघुरल्पप्रचार—महा० १। ९१।५। सम० कोष्ठ (वि०) हल्के पेट वाला —कौमुदी व्याकरण की एक पुस्तक,—तालः संगीत की माप का एक भेद, —नालिका छोटी नली, —पाक (वि०) आसानी से पचने योग्य,—प्रमाण (वि०) आकार प्रकार में छोटा सा —योगवासिष्ठम् योग-वासिष्ठ का सारसंग्रह, —शेखरः संगीत की एक माप।

लघूकृ (तना० उभ०) 1 हल्का करना, बोझ घटाना 2 छोटा करना, घटाना।

लघ्वी (स्त्री०) [लघु+ङीप्] छोटी, थोड़ी, कम लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।

लङ्कूनी [लङ्कून+ङीप्] लकड़ी या रस्सी जिस पर कपड़े सुखाने के लिए लटका दिये जाँय।

लङ्घिमन् [लङ्घ्+इमनिच्] 1 सौन्दर्य 2 लय, एकता।

लङ्घनम् [लङ्घ्+ल्युट्] 1 अतिक्रमण 2 उपवास करना 3 मैथुन, गर्भाधान।

लज्जाकृतिः (स्त्री०) लज्जा का झूठ मूठ प्रदर्शन।

लतारदः (पुं०) हाथी।

लब्ध (वि०) [लभ्+क्त] 1 प्राप्त, अवाप्त 2 गृहीत 3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त, समझा गया 4 (भाग करने के फलस्वरूप) प्राप्त, उपलब्ध। सम०—अनुज्ञ (वि०) जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है, —तीर्थ (वि०) जिसने अवसर से लाभ उठा लिया है, —प्रतिष्ठ (वि०) जिसने कीर्ति प्राप्त कर ली है, जिसने अपनी साख जमा ली है, सम्मानित, —प्रचार (वि०) स्वतंत्रतापूर्वक इधर उधर घूमने वाला, —प्रसाद (वि०) अनुग्रह-प्राप्त प्रिय, —मूल (वि०) विद्वान्, —संज्ञ (वि०) जिसने सुधबुध प्राप्त कर ली है, जो होश में आ गया है।

लम्बदन्ता एक प्रकार की मिर्च।

लम्बरा कम्बल का एक भेद।

लम्बा एक प्रकार का बाबा बेर।

लयशुद्ध (वि०) (संगीत०) वह गाना जिसकी लय और ताल सही हो, जिसमें सामञ्जस्य हो।

ललन्तिका मस्तक के ऊपर पहना जाने वाला एक आभूषण झूमर, भृङ्गारपट्टी—ललन्तिकाकलापकाला—(ललिता त्रिशती स्तोत्र)।

ललामम् [लल्+इमनिच्] 1 आभूषण, अलंकार 2. एक छन्द का नाम।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1 मनोरम, सुन्दर 2. सुखद सुहावना। सम०—प्रियः (संगीत०) एक ताल की लय या माप —वनिता सुन्दर स्त्री, —विस्तरः बुद्ध के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, —विस्तारः एक छन्द का नाम।

ललिता संगीत की एक लय।

ललिताम्बिका
ललितादेवी } ललिता देवी।

ललितासहस्रनामकम् ललिता के हजार नाम।

लवः [लू+अप्] 1. तोड़ना, काटना 2. खेती काटना,

लावनी करना। सम०—इच्छु (वि०) खेती काटने का इच्छुक।

लवङ्गः [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा, —ङ्गम् लौंग। सम०—कलिका लौंग।

लवण [लू+ल्युट्, पृषो० णत्वम्] 1 नमकीन स्वाद 2 एक राक्षस का नाम 3 एक नरक का नाम, —णम् 1 नमक 2 कृत्रिम नमक। सम०—पाटलिका नमक की थैली, —शाकम् नमकीन सब्जी।

लवणित (वि०) [लवण+इतच्] नमकीन, लवणयुक्त।

लसदंशु (वि०) [ब० स०] जिसकी किरणें चमकती हैं।

लाक्षारस महावर या अलक्त का रस—लाक्षारससवर्णाभा— ललिता त्रिशती स्तोत्र।

लाङ्गलम् [लङ्ग्+कलच् पृषो० वृद्धि] 1 हल 2 हल की शक्ल का शहतीर 3 ताड़ का वृक्ष 4 वृक्ष से फल एकत्र करने का बांस 5 एक फूल का नाम।

लाङ्गला नारियल का पेड़।

लाङ्गली केवांच का वृक्ष, गजपीपल—निभृतगृहसङ्गतिभ्रंमत एव तस्यास्तवस्तनद्वयमिषद्वपुः पथिक जातमुच्चैर्घनं हसीव वदति स्फुटं कुसुमहस्तमुत्थाप्य सा भ्रमद्भ्रमरमण्डलध्वनिमयेकला लाङ्गली—जानकी० ११। ९५।

लाङ्गूलचालनम् } पूंछ हिलाना।
लाङ्गूलविक्षेप }

लाजपेया चावल का मांड।

लाभ [लभ्+घञ्] 1 पाया हुआ धन [illegible] १०। ११५ 2 फायदा, आय। सम०—विद् (वि०) जो यह समझता है कि लाभ क्या चीज है जैसे लाभ विदा वर —रा० च०।

लालाभ अपस्मार, मिर्गी।

लाव लवा नामक पक्षी, बटेर।

लावाणक एक द्वीप का नाम।

लालनम् पकड़ना, ग्रहण करना —तोमराङ्कुशलालने —महा० ७।१४२।४५।

लासिक (वि०) [लस+ठक] नाचने वाला—पा० १३।६६।

लिखित् (पु०) [लिख्+तृच्] चित्रकार।

लिगु [लिग्+कु] 1 हरिण 2 मूर्ख, बुद्धू 3 ऋषि, मुनि।

लिङ्गम् [लिङ्ग+अच्] 1 चिह्न निशान 2 प्रतीक विशिष्टता 3 रोग का लक्षण 4 शारीरिक सत्ता —योगेन पूरयुत्तमसत्त्वयुक्तो लिङ्गं व्यपोहेत् कुशलोऽहमाख्यम्—भाग० ५।५।१३। सम०—आयतन वीर शैवों का समवाय, —पीठम् 'शिवलिङ्ग' मूर्ति जिस पर विराजमान है वह चौकी, —शासनम् लिङ्ग ज्ञान पर व्याकरण का एक ग्रन्थ।

लिङ्गालिका चुहिया, छोटी मूसी।

लिपि [लिप्+इक्] 1 लेप 2 लेख 3. अक्षर, वर्णमाला 4 बाहरी सूरत। सम०—कर्मन् (नपुं०) आलेख, चित्रण, —संनाह कलाई पर पहनी जाने वाली पहुंची, रक्षाबन्धन।

लिप्तम् [लिप्+क्त] 1 लिपा हुआ, सना हुआ, 2. खाया हुआ, 3 बलगम, कफ। सम०—वासित लिपी हुई सुगन्ध से सुगन्धित, —हस्त (वि०) सने हुए हाथों वाला।

लुञ्चितकेश जिसने अपने बाल छंटवा कर छोटे करा लिए हैं।

लुञ्ज् (चुरा० उभ०) बोलना, चमकना।

लुण्ठनम् [लुण्ठ्+ल्युट्] 1 लूटना 2. विरोध करना, बाधा डालना।

लुप् (व्या० में) लुप्त होना, मिटना, भूकचूक होना।

लुम्बिनी बुद्ध का जन्मस्थान।

लुस्तम् धनुष का किनारा।

लूताल चीटा, मकौड़ा।

लून (वि०) [लू+क्त] 1. कटा हुआ 2. तोड़ा हुआ 3 (फूल आदि) एकत्र किये हुए। सम०—[illegible], —दुष्कृतः जिसका पापों से छुटकारा हो चुका है, —विष (वि०) जिसकी पूंछ में विष लगा हो।

लेखः [लिख्+घञ्] 1 लेख, लिखित दस्तावेज 2. परमात्मा देवता 3 खरोंच। सम०—अनुजीविन् [illegible] का सेवक, —प्रभु इन्द्र—अवर्णं च [illegible] —नै० २२।११८, —स्खलितम् लिपिकार से की गई अशुद्धि।

लेखिका थोड़ा आघात, सहलाना।

लेखित (वि०) [लिख्+णिच्+क्त] लिखवाया गया।

लेला (केवल करण कारक—लेलया के रूप में प्रयुक्त) कांपना, हिलना।

लेलितक गंधक।

लैङ्ग (वि०) [लिङ्ग+अण्] शब्द के लिङ्ग से संबंध रखने वाला, —ङ्गम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम। सम०—ब्रुव अज्ञानी पुरोहित।

लोक [लोक्+घञ्] 1 संसार, विश्व का एक भाग 2 पृथ्वी, भूलोक 3 मनुष्य जाति 4 प्रजा 5. समूह 6 क्षेत्र 7 दृष्टि 8 वास्तविक स्थिति, प्रकाश —इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम—भाग० ८।३।२५ 9 विषय, ज्ञेय वस्तु—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव—महा० १२।२८८।११। सम०—अभ्युदयः मनुष्य जाति की समृद्धि, —अनुवृत्तम् लोकमत के अनुसार, जनसाधारण की आज्ञाकारिता, —अभिकाङ्क्षित (वि०) जिसे सब चाहें, सर्वप्रिय, —अपवर्जनम् लोगों से छुपे रहना—

लीलाना—रघु० २।२,—वञ्चक (वि०) समाज को धोखा देने वाला, सामाजिक ठग, —वर्त्मः सांसारिक कर्तव्य, —बाह्यः मूर्ख,—परोक्ष (वि०) संसार से छिपा हुआ, —प्रत्ययः सबका विश्वास, विश्व का प्रावल्य,—भर्तृ (वि०) जनसाधारण का पालक पोषक, —यात्रा: संसार के प्रति भक्त रहने की इच्छा लोकैषणा—महा० १०।१८।५ पर शा० भा०,—रावण (वि०) संसार को कष्ट देने वाला—रा० ३।३३।१, —वर्तनम् लोकव्यवहार जिससे संसार की स्थिति बनी रहे,—विरुद्ध (वि०) लोकमत के विपरीत, —विसर्गः 1. संसार का अन्त 2. नीच सृष्टि, —संवादः जनसमुदाय,—सुन्दर (वि०) जिसके सौन्दर्य की सब लोग प्रशंसा करें।

लोकार्थम् (अ०) लोगों की भलाई के लिए।

लोचनम् [लोच्+ल्युट्] 1. दर्शन, दृष्टि, देखना 2 आँख। सम०—अञ्चलः आँख की कोर, आपातः झांकी, —आवरणम् पलक,—रौद्र (वि०) देखने में विकराल।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1. लालच, लालसा 2. इच्छा, प्रबल चाह 3. विस्मय, घबराहट, उलझन। सम० —अभिघातिन् (वि०) जो लालसा के कारण मारता है,—मोहित (वि०) लालच से अन्धा।

लोमकूपः लोमछिद्र।

लोमविष (वि०) [ब० स०] जिसके बालों में जहर भरा हो।

लोमशकर्णः बिल में रहने वाले जन्तुओं की एक जाति।

लोलकर्ण (वि०) प्रत्येक की सुनने वाला।

लोलम्बः भौंरा, भ्रमर।

लोष्टगुटिका मिट्टी की गोली।

लोष्टायते (ना० धा० आ०) ढेले के समान समझना।

लोहः [लूयतेऽनेन—लू+ह] 1. लोहा 2. इस्पात 3. तांबा 4. सोना 5. अगर की लकड़ी। सम०—अग्रम् लोहे की नोक,—उच्छिष्टम्,—उत्थम्,—किट्टम् जंग, लोहे का जंग, —कुम्भी लोहे की घड़िया,—वर्मवत् धातु की तश्तरी से ढका हुआ, —भारः बर्छी।

लोहित (वि०) [रुह्+इतन्, रस्य लः] 1 आँख की पलकों का एक रोग 2 एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

लोहलम् पीतल।

लौकिक (वि०) [लोक+ठक्] 1 सांसारिक 2. सामान्य 3. दैनिक जीवन संबंधी। सम०—अग्निः सामान्य आग जो यज्ञ कार्यों में प्रयुक्त न होती हो,—न्यायः सामान्यतः माना हुआ न्याय।

लौहशास्त्रम् धातुविज्ञान, धातुशोधन विद्या।

व

वंशः [वम्+श] 1 संगीत का एक विशेष स्वर 2. बांस 3. अहंकार, अभिमान 4. कुल। सम०—कर्मन् बांस की दस्तकारी,—कृत्यम् बंसरी बजाना, —जः किसी कुल में उत्पन्न,—पत्रपतितम् सत्रह मात्राओं का एक छन्द, —पात्रम् बांस की बनी टोकरी, —बाह्यः कुल से निष्कासित,—ब्राह्मणम् सामवेद ब्राह्मण का मूल पाठ, —मूल (वि०) संसार में अकेला —वनम् बांसों का जंगल, —वर्धनः पुत्र,—विस्तरः वंशावली—स्थविलम् एक छन्द का नाम।

वंश्यः बन्धुः, संबंधी, अपने कुल का।

वक्तुकाम (वि०) बोलने की इच्छा वाला,

वक्तुमनस् (वि०) बोलने का इच्छुक।

वक्तृप्रयोक्तृ (वि०) सिद्धान्तिक और प्रायोगिक (राजनीतिज्ञ)।

वंक (वि०) [वञ्च्+अच् पृषो० नलोप.] 1. टेढ़ा, मुड़ा हुआ 2. धोखेबाज, [illegible] 3. घुंघराले 4. बेईमान, कपटी, चालबाज, —कः—1. मंगलग्रह 2. शनिग्रह, —कम् 1. (नदी की) टेढ़ी चाल 2. काठी का मोड़। सम० —आयसम् टीन, अस्त,—इतर (वि०) सीधा, —कीलः अङ्कुश,—ग्रीवः ऊंट,—नालम् एक विशेष वाद्योपकरण, ऐसा टेढ़ी काहल।

वङ्गेरिका, } पिटारी, बांस आदि की बनी टोकरी।
वङ्गेरी }

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1 बोलने की क्रिया 2. वक्तृता 3. पाठ करना 4 उपदेश, धार्मिक पुस्तक का अंश 5 आज्ञा, आदेश 6. परामर्श, अनुदेश। सम० अवक्षेपः अपशब्दों से युक्त बात, —[illegible] खुशामदात्मक वक्तृता, मिथ्या भाषाकारिता, —गोचर (वि०) वार्तचीत का विषय बनाने वाला, —गौरवम् शब्दों का आदर करना—पितुर्वचनगौरवात्—रा० १,—व्यक्तिः किसी उक्ति की यथार्थ सार्थकता।

वचोहरः दूत, राजदूत।

वचस्विन् (वि०) वाक्पटु, बोलने में चतुर—इतीरिते वचसि वचस्विनामुना—शि० १७।१।

[illegible] (अ०) [illegible] है।

वणिजः [पण्+इजन्] 1. व्यापार, व्यवसाय 2. [illegible]

3. वक्रता, वक्रत्व, अभिव्यक्ति 3 शब्द की व्यञ्जना शक्ति।

वज्रः [वज्+रन्] 1 बिजली, इन्द्र का शस्त्र 2 रत्न की सूई 3 रत्न, जवाहर 4. एक प्रकार का कुश घास 5 एक प्रकार का सैन्य व्यूह। सम० —अंशुकम् धारीदार कपड़ा, —अङ्कित (वि०) 'वज्रायुध के चिह्न से मुद्रित —आकार (वि०), —आकृति (वि०) वज्र की शक्ल वाला —कीट एक प्रकार का कीड़ा, —पञ्जर सुरक्षित आश्रयगृह —सूचः 1 एक प्रकार का कीड़ा 2 एक प्रकार की समाधि।

वज्रकम् [वज्र + कन्] हीरा, जवाहर।

वटः [वट् + अच्] 1 बड़ का पेड़ 2 गधक 3 शतरंज की गोट। सम० —दलम्, —पत्रम्, —पुटम् बड़ का पत्ता।

वडवा [वल + वा + क + टाप] 1 घोड़ी 2 एक नक्षत्र पुंज जिसे घोड़ी के सिर के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है।

वणिज् (पुं०) [पण् + इजि, पस्य व] 1 व्यापारी सौदागर 2 तुला राशि। सम० —कटक काफला —वह ऊँट —वीथी बाजार।

वत् [मतुप्] अधिकरण अर्थ में तथा 'योग्य' अर्थ में लगने वाला मत्वर्थीय प्रत्यय मं० म० १६।२।५१ पर शा० भा०।

वत (अ०) विस्मयादि द्योतक अव्यय। 'सुना' 'बस' 'खूब' अर्थ को प्रकट करता है।

वत्स [वद् + स] 1 बछड़ा 2 लड़का, पुत्र 3 सन्तान, बच्चा 4 वर्ष 5 एक देश का नाम। सम० —अनुसारिणी लघु और दीर्घ मात्रा का मध्यवर्ती क्रम भंग या अन्तर —पदम् तीर्थ, घाट, उतार।

वत्सायित [वत्स + क्यङ् + णिच् + क्त] बछड़े के रूप में सवलित वत्सायितस्त्वमय गोपगणायितस्त्वम् —नारा०।

वदनम् [वद् + ल्युट्] 1 चेहरा 2 मुख 3 दृश्य 4 सामने का पक्ष 5 पहली राशि 6 त्रिकोण का शिखर। सम० —आमोदमदिरा मुख में मधुरगंध से युक्त सुरा - उदरम् जबड़ा —पङ्कजम् मुखारविन्द, कमल जैसा मुख —पवनः श्वास, साँस।

वधः [हन् + अप्, वधादेश] 1 भग्नाशा 2 (बीज० में) गुणनफल 3 हत्या, कत्ल। सम० —राशि जन्माङ्ग में छठा घर।

वधिका, —कम् कस्तूरी, मुश्क।

वधूकाल वह समय जब कि कन्या दुलहिन बनती है।

वधूवरम् नवविवाहित दम्पति।

वध्यमाल्यम् [ब० स०] फाँसी के दण्ड को प्राप्तदण्ड प्राप्त पुरुष को फाँसी देने के समय पहिनाये जाते हैं।

वनम् [वन्+अच्] 1. जंगल 2. वृक्षों का झुंड 3. घर 4 फव्वारा 5. जल 6. लकड़ी का पात्र 7. प्रकाश की किरण 8 पर्वत। सम० —आश (वि०) केवल जल पीकर जीने वाला, उपल गोबर के उपले, थोहे,—ओषधि जंगली जड़ी बूटी, —शूकरी केवांच, —हास काश नाम का घास।

वन्दनकम् सम्मानपूर्ण अभिवादन।

वन्य (वि०) [वन+यत्] 1. जंगली 2. लकड़ी का बना हुआ, —न्य (पुं०) बन्दर—वन्यानुवर्तोऽस्य नेष्टाना —रा० ३।२८७।२९। सम०—वृत्ति (वि०) जंगली उपज पर ही रहने वाला।

वपनम् [वप्+ल्युट्] 1 बीज बोना 2. हजामत करना 3 वीर्य 4 क्षुर, उस्तरा 5. करीने से रखना, व्यवस्थित करना।

वपा [वप्+अच्+टाप्] 1 चर्बी 2 छिद्र, विवर 3 दीमकों द्वारा बनी बमी 4. उभरी हुई मांसल नाभि।

वपुष्मत् (वि०) [वपुस्+मत्] 1 शरीर धारी 2.हृष्ट-पुष्ट 3 क्षतविक्षत, खण्डित।

वप्र -प्रम् [वप्+रन्] 1 फसील, परिवार, परकोटा 2 ढलान 3 समुच्चय 4 भवन की नींव।

वप्रा वाटिका की क्यारी।

वमथुः [वम्+अथुच्] खाँसी।

वमनम् [वम्+ल्युट्] 1 रुई का धीजना 2. सन, सुतली, पटुआ।

वयोबालः (वि०) अवयस्क बालक, थोड़ी आयु का बालक।

वयुनम् [वय्+उनन्] (वेद०) कर्म, कार्य—विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्—ईश० १८।

वर (वि०) [वृ+अप्] उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, अनमोल, —र 1 वरदान 2 उपहार, पारितोषिक 3 इच्छा 4 प्रार्थना 5 दान 6 दूल्हा 7 जामाता। सम० —वरणि माता —रा० ७।२३।२२, —आरोहः बैल, —द्रुमी पुराना गौड़ देश,—प्रेषणम् विवाह संस्कार का एक भाग जिसके अनुसार दुल्हे के मित्र किसी विशेष परिवार में दुलहन की खोज के लिए जाते हैं —मुख्याः श्रेष्ठजन, —वाक्यम् विवाह में सत्कार की बातें।

वरासि [ब० स०] खड्गधारी, तलवार रखने वाला।

वराहपुराणम् अठारह पुराणों में से एक।

वरिवसितृ (वि०) [वृ+असुन्=वरिवस्+तृच्] पूजा करने वाला—न तस्थिवांसं तस्मिन् वरिवसितरि —शिश०

वरिवस्यति (ना० धा० पर०) अनुग्रह करना, कृपा करना।

वर्णमालासमः [ष० त०] यमदग्नि ऋषि का नाम।
वर्णेशः वर्णेशब्राह्मण्य में वर्णित एक राजा का नाम।
वर्णाष्टकम् [ष० त०] व्यंजनों के आठ समूह।
वर्णोत्तमम् 1. अनुनासिक वर्ण 2. ज्योतिष में किसी ग्रह विशेष की उच्चता को प्रकट करने वाला शब्द।
वर्णीकृत (वि०) [वर्ण+च्वि+कृ+क्त] श्रेणियों में विभक्त जिसके समुदाय बने हुए हों।
वर्णः [वर्ण+अच्] 1. रंग 2. सूरत, शक्ल 3 मनुष्यों की जाति 4. अक्षर, ध्वनि 5. शब्द, भाषा 6 यश 7 प्रशंसा 8. चोगा 9. गीतक्रम। सम० अनुप्रासः अक्षरों का अनुप्रास अलंकार,—अन्तरम् 1. भिन्न जाति 2. स्थानापन्न अक्षर,—अपकृष्ट शूद्र · अवर (वि०) जाति की दृष्टि से अधम ओछा,—कम्बलम् ऊनी कालीन,—परिचय संगीत में दक्षता, —वेणिनी मोटा अनाज, (बाजरा, कोदों), —विपर्यय 1 अक्षरों में परिवर्तन 2. जाति में परिवर्तन।
वर्णकः [वर्ण+ण्वुल्] 1. वक्ता, वर्णन करने वाला 2. आदर्श, नमूना।
वर्णिः [वर्ण्+इन्] 1 सोना 2. सुगन्ध।
वर्तनम् [वृत्+ल्युट्] 1. होना, रहना 2. ठहरना, बसना 3. कर्म, गति 4. जीविका 5. जीवित रहने का साधन 6. आचरण, व्यवहार 7. मजदूरी, वेतन 8. तकला 9. जिससे रंगा जाय- निहितजतुवर्तनाभिताम्रम् —शि० १०।४२ 10. बार बार दोहराया गया शब्द 11. काढ़ा बनाना। सम०—विनिर्भोग मजदूरी बाँटना।
वर्तमानम् [वृत्+शानच्] विद्यमान काल, मौजूदा समय। सम०—आक्षेपः वर्तमान का विरोध,—काल मौजूदा समय।
वर्तिः [वृत्+इन्] अस्थिमज्जा के कारक सूजन।
वर्तिका [वृत्+तिकन्] बत्तिका, डाँडी—पक्षाग्रवर्तिकामेतां महतः संवृतान् पथि महा० १।२१।८।
वर्तित [वृत्+क्त] 1. मुड़ा हुआ, भड़का हुआ 2. उत्पादित निष्पन्न 4. खर्च किया हुआ, बीता हुआ।
वर्तिन् (वि०) [वृत्+णिनि] आज्ञा मानने वाला।
वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] 1. पथ, मार्ग, रास्ता 2. कमरा,कक्ष 3. पलक 4. किनारा। सम० —आयासः यात्रा के परिणामस्वरूप थकान। —पातनम् ताक में रहना, ताड़ में रहना।
वर्त्स्यत् (वि०) [वृत्+स्य+शतृ] होने वाला, प्रगति करने के लिए तत्पर।
वर्ध्रम् [वर्ध्+अच्] चमड़े का तस्मा या फीता।
वर्धकी वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री।
वर्धापक (वि०) [वृध्+णिच्+ण्वुल्, स्वार्थे कन्] आह्लादकर, हर्षप्रद, आनन्ददायक।

वर्धमानः [वृध्+शानच्] 1. जैनियों का २४ वाँ तीर्थंकर 2 पूर्व दिशा का दिक्पाल हाथी। सम० — गृहम् आमोद घर · रा० २।१७।१८।
वर्धमानकः [वर्धमान+कन्] हाथों में दीपक लेकर नाचने वालों की मण्डली।
वर्धापनिकम् 1 बधाई 2. बधाई के चिह्नस्वरूप उपहार।
वर्धापिका परिचारिका, नर्स।
वर्ध्म हर्निया रोग।
वर्ष [वृष्+घञ्] 1 वर्षा होना 2 छिड़काव 3 वर्ष (केवल नपुं० में) 4 महाद्वीप 5 बादल 6 दिन —रा० ७।७३।५ पर टीका 7 वासस्थान। सम० —कालः बरसात की ऋतु, —गणः वर्षों की लम्बी शृंखला,—पत्रम् पत्रा, कलेण्डर, —रात्र. बरसा का मौसम।
वर्षा [वर्ष्+अच्+टाप्] (स्त्रीलिंग ब० व० में प्रयुक्त) बरसात, वर्षा ऋतु। सम० —अघोषः बड़ा मेंढक —भू (पुं०) 1 मेंढक 2 इन्द्रगोप नामक कीड़ा बीरबहूटी, —मदः मोर।
वर्षीयस (वि०) [वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादेश] बहुत बूढ़ा या पुराना।
वर्षीयस् (वि०) [वृष्+ईयसुन्] बौछार करने वाला, —तप कृशा देवमीढा आसीद्वर्षीयसी मही— भाग० १०।२०।७।
वर्ष्मवीर्यम् [ष० त०] शरीर का बल।
वलना [वल्+युच्] घुमाव, फिराव।
वलितम् [वल्+क्त] काली मिर्च।
वल्लजः अन्न का संग्रह —कर्षकैर्वल्लजान् पुष्पता - शि० १४।७।
वलम्बः [अव+लम्ब्+अच्, भागुरिमते अकारलोप] लम्ब रेखा।
वलभिनिवेशः [स० त०] ऊपर का कमरा।
वलयम् [वल्+अयन्] समुदाय।
वलिः [वल्+इन्] 1. तह, झुर्री (खाल पर) 2. पेट के ऊपर के भाग में तह 3 चोरी की मूठ - रत्नच्छायाखचितवलिभिश्चामरैः क्लान्तहस्ता मेघ० ३७। सम० —पलितम् झुर्रियाँ और सफ़ेद बाल (जो बुढ़ापे का चिह्न है), —आमः बादल —मेघ० ११०।
वल्कः [वल्+क] 1. वृक्ष की छाल, वल्कल 2. मछली की खाल 3. वस्त्र। सम० —द्रुमः अनार का पेड़, —वासस् (नपुं०) वल्कल की बनी हुई पोशाक।
वल्कलिन् (वि०) [वल्कल+इनि] 1. वल्कल देने वाला (वृक्ष) 2. वल्कल से आच्छादित।
वल्गकः [वल्ग्+ण्वुल्, स्वार्थे कन्] कूदने वाला, नाचने वाला।
वल्मीकः [वल्+ईक, मुट् च] 1. बमी, दीमकों के

बनाया गया मिट्टी का ढेर 2. शरीर के कुछ भागों में सूजन 3 वाल्मीकि महाकवि । सम०—अग्रम्,—जन्मन् ऋषि वाल्मीकि का विशेषण,—भौमम्,—राशिः बमी ।

वल्लकवधि कोषकार ।

वल्लभजनः स्वामिनी, प्रिया ।

वल्शः शाखा, टहनी अव्यक्तमूलभुवनाङ्घ्रिपेन्द्रमहीन्द्रभोगैरधिवीतवल्शम्- भाग० ३।८।२९ ।

वशाकोशः पालतू हथिनी को उपयोग में लाकर जंगली हाथी को पकड़ने की रीति मान० १०।७ ।

वशीकृत (वि०) [वश+च्वि+कृ+क्त] 1 अभिभूत 2 वश में किया हुआ ।

वशीभूत (वि०) [वश+च्वि+भू+क्त] आज्ञाकारी वश में हुआ ।

वश्यम् [वश्+यत्] 1 जो वश में किया जा सके 2 लौंग ।

वसना [वस्+युच्+टाप्] एक प्रकार का कण्ठाभूषण हार ।

वसाहुत (वि०) अग्नि में उपहुत—प्राज्यमाज्यमसकृद्वषट्कृतम् शि० १४।२५ ।

वसनम् [वस्+ल्युट्] 1 घेरा 2 दालचीनी के वृक्ष का पत्ता 3. तगड़ी (स्त्रियों का एक आभूषण) 4 रहना, निवास करना । सम०—सद्मन् तम्बू टैंट ।

वसन्तदूती कोयल ।

वसामेहः [ष० त०] एक प्रकार का मधुमेह ।

वसुः [वस्+उन्] 1 घी, घृत (जैसा कि वसोर्धारा में), 2 धन, दौलत रत्न जवाहर 3. सोना 4 जल । सम० —उत्तमः भीष्म,—धारिणी धरा पृथ्वी —पालः राजा,—भम् धनिष्ठा नक्षत्र —रोचिस् अग्नि ।

वसोर्धारा रुद्र के निमित्त किए जाने वाले यज्ञ के अन्त में उपहुत हवि का अनवरत भाग ।

वस्तिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+ति] 1 बसना रहना 2 मूत्राशय 3 आंत, पेड़ू । सम० —कर्मन् (नपुं०) अनीमा करना, —कोशः मूत्राशय —बिलम् मूत्राशय का विवर, छिद्र, रन्ध्र ।

वस्तु (नपुं०) [वस्+तुन्] 1 वास्तविकता 2 चीज 3 धन-धान्य 4 सामग्री (जिससे कोई वस्तु बनाई जाय 5 अभिकल्पना योजना । सम० —कालात् (अ०) ठीक समय पर —तन्त्र (वि०) वस्तुनिष्ठ विषयपरक, —निर्देशः 1 विषय सूची 2 एक प्रकार की नान्दी,—पुरुष नायक —अथवा सद्वस्तुपुरुषबहुमानात् विक्रम० १।२ —भाव वास्तविकता, —भूत (वि०) सारयुक्त, तथ्यपूर्ण, यथार्थ,—विनिमय अदला-बदली का व्यापार —शक्तितः (अ०) परिस्थितियों के कारण,—शून्य (वि०) अवास्तविक, —स्थितिः वास्तविकता ।

वस्यस् (वि०) 1. अत्युत्तम 2. अपेक्षाकृत धनवान्, 3 श्रेयान, अधिक समृद्ध (वेद०) श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा तै० उ० ।

वहा [वह्+अच्+टाप्] नदी, दरिया ।

वहनभङ्ग [ष० त०] जहाज का टूट जाना ।

वहित्रम् [वह्+इत्र] 1 किश्ती, पोत 2 चौकोर रथ, वर्गाकार या चतुष्कोण रथ ।

वह्नि [वह्+नि] 1 अग्नि 2 जठराग्नि 3. पाचक अग्नि 4 सवारी 5 यजमान 6. भारवाही जन्तु 7 तीन की संख्या सम० —उत्पातः अग्निमय उल्का,—कोणः दक्षिणपूर्वी दिशा—कोपः, दावाग्नि, —दानम् स्वयं अग्नि की चिता में बैठ कर आत्माहुति करना—बीजम् सोना, —मारकम् पानी, जल, —शेखरम् केसर, कुंकुम, जाफ़रान —संस्कारः दाहसंस्कार, अन्त्येष्टि क्रिया, —साक्षिकम् अग्नि का साक्षी करके ।

वह्निसात्कृ आग लगा देना, अग्नि में जला देना ।

वा (भ्वा० अदा० पर०) सूंघना ।

वाकोवाक्यम् दो व्यक्तियों की बातचीत, वक्तृता और उत्तर ।

वाकोवाक्यम् तर्क शास्त्र, न्यायशास्त्र ।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1. वक्तव्य 2. उक्ति 3 आदेश 4 सगाई । सम० —आडम्बरः बड़े-बड़े शब्दों से युक्त भाषा,—ग्रह जिह्वा में लकवे का होना, —परिसमाप्तिः (स्त्री०) वक्तव्य की संपूर्ति, —विलेखः लेखाधिकारी हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी, —सारथि प्रवक्ता, किसी की ओर से बोलने वाला ।

वाग्मिन् (वि०) [वाच्+ग्मिनि चस्य कः नस्य लोपः] 1 वाक्पटु 2 शब्दों से पूर्ण (पुं०) 1 वक्ता, बोलने वाला 2 बृहस्पति 3 विष्णु 4 तोता ।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप्, दीर्घः] 1 वाणी की देवता सरस्वती । सम० —अपेत (वि०) गूंगा, —आरम्भणी 1. सरस्वती के प्रसाद को प्राप्त कराने वाले ऋग्मन्त्रों का समूह 2 एक वैदिक ऋषि का नाम —उत्तरम् वक्तव्य की समाप्ति या उपसंहार,—केलि, —केली बुद्धि की चतुराई के युक्त वार्तालाप, —गुम्फ कारा, कालभीर,—जीवन. विदूषक ठिठोलिया, —निमित्तम् किसी उक्ति से प्रबोधन या चेतावनी—तच्चाकर्ण्य वाङ्निमित्तक प्रतिपदं स्मरता जीविताशा शिथिलीचकार हर्ष० ५, —पथः शब्दों का परास —पाटवम् वाणी की चतुराई, —पारीण अभिव्यक्ति के परास को पार कर जाने वाला व्यक्ति, वाणी में पारङ्गत, —भट (वाग्भट) 1 आयुर्वेद विषय का प्रसिद्ध लेखक 2 अलंकार शास्त्र का एक प्रणेता, —विद् (वि०) तर्क और युक्तियां देने में प्रवीण, —विनिःसृत उक्तियों

के द्वारा प्रस्तुत,—विस्तरः वाग्विस्तार, वाक्प्रपंच, बहुभाषिता, —सत्वकल्पम् शोभायमान उक्ति, व्यंग्यवाक्य, —संदेशः वातरंजी वक्तृता, बहुविध भाषण, —स्तम्भ (वि०) जिसकी वाणी रुक गई है, जो बोल नहीं सकता।

वाचयितृ (वि०) [वच्+णिच्+तृच्] जो सस्वर पाठ की व्यवस्था करता है।

वाचस्पतिः [षष्ठी अलुक् समास] 1. वाणी का स्वामी 2. देव—महा० १४।२१।९ 3. एक कोशकार का नाम।

वाचस्पतिमिश्रः तत्त्ववार्तिक के प्रणेता का नाम।

वाच्य (वि०) [वच्+ण्यत्] 1. कहे जाने योग्य 2. अभिधा द्वारा प्रकट अर्थ 3. निन्दनीय। सम० —लिङ्ग (वि०) विशेषणपरक,—वर्जितम् कूटोक्ति, अभिधा शक्ति के द्वारा दुर्बोध उक्ति, —वाचकभावः शब्द और अर्थ की स्थिति।

वाजित (वि०) [वाज+इतच्] पंखयुक्त (जैसे कि बाण)।

वाजिन् (वि०) [वाज+इनि] 1. पक्षी प्राणिवाजिनिषे-वितान्—महा० ७।१४।१६ 2. सात की संख्या। सम०—गन्धः एक वृक्ष का नाम,—विष्ठा बड़ का वृक्ष, पूकर।

वाट (वि०) [वट+अण्] बड़ का वृक्ष। —टः (पुं०) किला। सम० —भूमूलकं बाड़।

वाडवहरणम् सांड़ घोड़े को दिया जाने वाला चारा।

वाडवाहारकः समुद्री दानव।

वाणः [वण्+घञ्] ध्वनन—वाणैर्वाणैः समाहतम्—कि० १५।१०। सम०—शब्दः बांसुरी की आवाज।

वात (वि०) [वा+क्त] 1. हवा से उड़ाया हुआ 2. इच्छित, अभिलषित,—तः 1. वायु 2. वायु की अधिष्ठात्री देवता 3. शरीर के तीन दोषों में से एक 4. गठिया 5. जोड़ों की सूजन 6. वायु सरना, शरीर से वायु का निकलना। सम०—अटः बदाम का पेड़, —अशनः सांप—वाताशनोऽहमिति किं विनताङ्गजस्य त्वासाभिमाय भुजगः स्थगयामुताङ्:—रा० च० ५, —आलयम् ऐसा भवन जिसमें दो कमरे हों एक का मुंह पश्चिम की ओर दूसरे का पूर्व की ओर, —आहार (वि०) जो वायु के ही सहारे जीवित रहता है,—कोप शरीर में वायुप्रकोप के कारण हुआ रोग —चक्रम् परकार से गोलाकार चिह्न लगाना —पटः जहाज का पाल, —पुरीशः केरल में गुरुवयूर नामक स्थान पर देवता, —पथः बादल, —सञ्चारः सूखी खांसी।

वातन्धम (वि०) [द्वितीया अलुक्] फूंक मारने वाला।

वातकिन् (वि०) गठिया रोग से ग्रस्त।

वातिक (वि०) [वात+ठक्] 1. तूफानी या वायु से ग्रस्त 2. बकवासी 3. बाजीगर 4. चातक पक्षी।

वादनक्षत्रमाला मीमांसकों के आक्रमण का उत्तर देने वाला वेदान्त का ग्रन्थ।

वादित्रम् [वद्+णित्रन्] बाजायन्त्र, संगीत का उपकरण। सम० —लगुडः ढोलक बजाने की लकड़ी।

वाद्यकम् [वाद्य+कन्] संगीत का उपकरण।

वाध्रूलकम् होठ।

वाधूलम् तैत्तिरीय शाखा का श्रौतसूत्र।

वानचित्रम् विविध रंग का कम्बल।

वानदण्डः जुलाहे की लकड़ी।

वान्त (वि०) [वम्+क्त] 1. उगला हुआ, थूका हुआ 2 उद्वमन किया हुआ 3 गिराया हुआ। सम० —अद् कुत्ता,—आशिन् (पुं०) 1. राक्षस जो विष्ठा पर निर्वाह करता है 2. वह व्यक्ति जो भोजन के लिए अपना गोत्र या वंशावली का उद्धरण देता है, —वृष्टि (वि०) वह बादल जो पानी बरसा चुका है मेघ०।

वापी [वप्+इञ्, ङीप्] बावड़ी, बड़ा कुआं। सम० —जलम् सरोवर का पानी।

वाम (वि०) [वम्+ण अथवा वा+मन्] 1. बांया 2. उल्टा, विपरीत, विरोधी 3. क्रूर, कठोर 4. दुष्ट 5 मनोरम,—मः 1. कामदेव 2. सांप 3. छाती, स्तन, औड़ी 4. निषिद्ध कार्य (जैसे सुरापान), —मम् 1 सम्पत्ति, दौलत 2 दुर्भाग्य, विपत्ति 3 कमनीय वस्तु। सम० —अङ्गी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, कामिनी, —इतर (वि०) दायां,—कुक्षि बाईं कोख,—नयना (स्त्री०) मनोहर आंखों वाली स्त्री, —स्वभाव (वि०) उत्तम चरित्रयुक्त व्यक्ति—निरीक्ष्य कृष्णापकृतं गुरोत्सुतं वामस्वभावा कृपया ननाम च—भाग० १।७।४२,—स्तनः बकरी के गले का निरर्थक स्तन।

वामदेव्यम् सामगान समूह जिसका नाम उसके प्रवर्तक ऋषि वामदेव के नाम पर पड़ गया।

वामनीकृत (वि०) [वामन+च्वि+कृ+क्त] बौना बना हुआ, कद में छोटा बनाया हुआ।

वायसविद्या शकुन की विद्या जो कौवों के निरीक्षण से जानी जाती है।

वायुकुम्भः हाथी के चेहरे का एक भाग—मात० १०।१।

वायुभक्षः 1. जो वायु खाकर जीवित रहता है 2. सांप।

वायुस्कन्धः वायुप्रदेश।

वार्घटीयन्त्रम् रहट, पानी निकालने का यन्त्र।

वार्धानी पानी की सुराही।

वारण (वि०) [वृ+णिच्+ल्युट्] हटाने वाला,—णम् 1. हटाना, रोकना 2. विघ्न, बाधा 3. दरवाजा, किवाड़,—णः 1. हाथी 2. कवच 3. हाथी की सूंड 4. अंकुश। सम० —कृच्छ्रः एक व्रत का नाम, —बुसः पौधे की एक जाति।

वाराशिः [वार्+राशिः] समुद्र ।

वारि (नपुं०) [वृ+इञ्] 1 पानी 2 तरल या पिघला हुआ या बहने वाला पदार्थ । सम० **कूट.** गाँव के चारों ओर की खाई, परिखा, **बिम्ब:** चट्टान का मेंढक, **भव:** शंख, **साम्यम्** दूध ।

वारुणी [वरुण+अण्] शराब का विशेष प्रकार, वारुणी मदिरा पीत्वा भाग० १।१५।२३ ।

वार्कः 1 समुद्रतट, समुद्रवेला 2 अग्नि 3 किवाड़ का जोड़ ।

वार्तानुकर्षक } 1 चर 2 दूत 3 वृत्तवाहक ।
वार्तायन }

वार्ताकर्मन् (नपुं०) खेती और मुर्गी पालन का व्यवसाय ।

वार्तापति नियोजक, काम देने वाला, स्वामी ।

वार्तिकन्याय मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार विवरण यदि मुख्य सामग्री के साथ उपयुक्त न लगे तो उसे सहायक सामग्री के साथ जोड़ दिया जाय मी० सू० ३।१।२३ पर शा० भा० ।

वार्दरम् 1 रेशम 2 जल 3 दक्षिणावर्त शंख ।

वार्दलम् बरसात का दिन ।

वार्मुचम् एक प्रकार का नमक ।

वार्धीणसम् 1 एक पक्षी 2 बूढ़ी बकरी ।

वालुकास्नानम् रेत से स्नान करना, शरीर पर रेत मलना ।

वावात (वि०) प्रिय, प्रीतिभाजन, स्नेहभाजन ।

वास [वस्+घञ्] 1 सुगन्ध 2 रहना 3 आवास 4 एक दिन की यात्रा 5 वासना 6 स्वरूप, आकृति । सम० **पर्यय** आवासस्थान का परिवर्तन, **प्रासाद** महल ।

वासना [वास्+युच्+टाप्] (गणित०) प्रमाण, प्रदर्शन ।

वासनामय (वि०) भाव तथा भावनाओं से युक्त ।

वासित (वि०) [वास्+क्त] पवित्रीकृत शिक्षित उपोन सुधारा गया नै० २१।११९ ।

वासरः,-रम् [वास्+अर] दिन **रः** 1 समय, बारी 2 एक नाग का नाम । सम० **—कन्यका** रात, **कृत्, मणि** सूर्य ।

वासवि 1 इन्द्र का पुत्र जयन्त 2 अर्जुन 3 बालि ।

वासवेय [वासवी+ढक्] व्यास का नाम—महा० १।१।५६ ।

वासस् [वस्+णिच्+असुन्] 1 वस्त्र 2 कफन 3 पर्दा । सम०—**उदकम्** वस्त्र को निचोड़ने पर उससे निकला हुआ पानी जो प्रेतात्माओं को उपहृत किया जाता है—**वृक्ष** आश्रयपादप शरण प्रदान करने वाला पेड़ ।

वासिष्ठम् रक्त, रुधिर, खून ।

वासिष्ठरामायणम् एक ग्रन्थ का नाम (यह योगवासिष्ठ के नाम से भी प्रसिद्ध है) ।

वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुण्] 1 भवन बनाने के निमित्त नियत भूमिखण्ड 2. आवास 3. कक्षाभवन सम० **—कर्मन्** (नपुं०) 1 भवन निर्माण करना, भवन निर्माण का प्रारूप, **ज्ञानम्** वास्तु कला, भवन निर्माण का प्रारूप या अभिकल्प, **देवता** भवन की अधिष्ठात्री देवता, **विद्या** स्थापत्य कला, भवन-निर्माण विज्ञान,— **विधानम्** भवन संरचना, ।

वास्तुक (वि०) यज्ञ भूमि पर अवशिष्ट रही सामग्री उवाचोत्तरतोऽभ्येत्य ममेदं वास्तुकं वसु—भाग० ९।४।६ ।

वाह दिवस, दिन ।

वाह [वह्+घञ्] 1 ले जाने वाला 2. कुली 3. भार-वाहक 4 घोड़ा 5 बैल 6. भैंसा 7 सवारी । सम० **वार** घुड़सवार, **रिपु** भैंसा, **वाहः** रथवान, रथ को हाँकने वाला—स्ववाहवाहोचितवेशपेशलः —नै० १।६६,—**वाहनम्** चम्पू रा० २।५२।९, **वाहम्** (पुं०) अग्नि ।

विरराज् पक्षियों का राजा, बाज पक्षी ।

विक (वि०) [ब० स०] 1 जलहीन 2 अप्रसन्न ।

विकच (वि०) [विकच्+अच्] 1 खिला हुआ, खुला हुआ 2 फैला हुआ, बखेरा हुआ 3. केशशून्य, 4 चमकीला, देदीप्यमान—चन्द्रांशुविकचप्रख्यम्—रा० २।१५।९। सम०—**श्री** (वि०) उज्ज्वल श्री से युक्त, अनिन्द्य लावण्य से सम्पन्न ।

विकचित (वि०) [विकच+इतच्] खुला हुआ, खिला हुआ ।

विकटः गणेश, **-टम्** 1 रसौली 2 चन्दन, 3. कपोल सखिया ।

विकथा असंगत बातें ।

विकर्तृ (वि०) [वि+कृ+तृच्] बाधा डालने वाला — राक्षसा ये विकर्तारः —रा० १।११।१० ।

विकवच (वि०) [ब० स०] कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो ।

विकाङ्क्षा [वि+काङ्क्ष्+अङ+टाप्] 1. मिथ्या उक्ति 2 इच्छा न होना 3 संकोच ।

विकार्य [वि+कृ+ण्यत्] अहं, अहंकार, अभिमान ।

विकाश [वि+काश्+अच्] उज्ज्वलता ।

विकुक्षि (वि०) बड़े पेट वाला उभरी हुई तोंद वाला ।

विकूबर (वि०) जिसमें कोई लम्बी लकड़ी न लगी हो ।

विकृ (तना० उभ०) बदनाम करना, कलङ्क लगाना अनार्य इति मामार्याः ... विकरिष्यन्ति—रा० २।१२।७८ ।

विकृत (वि०) [वि+कृ+क्त] 1 परिवर्तित, बदला हुआ 2 अपूर्ण अधूरा 3. अप्राकृतिक 4 आश्चर्य-जनक 5 विरक्त, **-तम्** (नपुं०) 1 परिवर्तन 2 रोग 3 अरुचि 4 गर्भस्राव—मनु० ११२४७ 5. दुष्कृत्य —रा०—७।६५।१४ ।

विकटनितम्बा 1. एक कवयित्री का नाम 2. डा० राघवन रचित 'एकांकी'।

विकृतिः [वि+कृ+क्तिन्] 1 वक्रता 2 आभास 3. मर्मभाव 4. व्युत्पन्न (व्या० में)।

विकर्षणम् [वि+कृष्+ल्युट्] 1 भोजन से विरक्ति 2. अन्वेषण।

विकृष्टसीमान्त (वि०) जिसकी सीमाएँ अंकित की गई हैं।

विख् (तुदा० पर०) 1. उड़ेलना 2. (ठंडी सांस) आह भरना।

विकिरः [वि+कृ+अप्] कुछ गौण पितरों को प्रसन्न करने के लिए बखेरा गया चावल।

विकिरान्नम् दे० 'विकिरः'।

विकल्प् (भ्वा० आ०) 1. दुविधा का वर्णन करना 2. विचार करना।

विकल्पः [विकल्प्+घञ्] 1 उत्पत्ति—भा० ११।२५।२७ 2 मान लेना, उक्ति 3 उत्प्रेक्षा, कल्पना।

विकल्पित (वि०) [विकल्प्+क्त] 1. तत्पर, व्यवस्थित 2. संदिग्ध, कल्पित 3. विभक्त।

विकेशतारका धूमकेतु, पुच्छलतारा।

विक्रम् (भ्वा० आ०) पराक्रम दिखाना।

विक्रमः [विक्रम्+घञ्] 1. गुरु स्वर, उदात्त स्वराघात 2. जन्म कुण्डली में लग्न से तीसरा घर।

विक्रमितम् [विक्रम्+णिच्+क्त] पराक्रम, शौर्य।

विक्रिया [विकृ+श+टाप्] 1 चोट, आघात, हानि 2. लोप।

विक्रयः [वि+क्री+अच्] 1 बिक्री 2 विक्रयमूल्य 3 मण्डी। सम०—पत्रम् बिक्री की दस्तावेज़, वीथि बाज़ार।

विक्रीडः [वि+क्रीड्+अच्] 1 खेल का मैदान 2 खिलौना।

विक्रोष्टृ (पुं०) [विक्रुश्+तृच्] जो सहायता की पुकार करता है।

विक्लवम् [वि+क्लु+अच्] क्षोभ—रा० २।६४।२५।

विक्लवता [विक्लव+तल्+टाप्] भीरुता, कायरता—भवति हि विक्लवता गुणोऽङ्गनानाम्—शि० ७।४३।

विक्षिप् (तुदा० पर०) 1 दबाना 2. उछालना 3. (धनुष) झुकाना।

विक्षिप्त (वि०) [विक्षिप्+क्त] विस्तारित, प्रसारित फैलाया गया।

विक्षेपः [विक्षिप्+घञ्] 1 अवहेलना (जैसा कि 'समय विक्षेप' में 2. विस्तार।

विगतक्लम (वि०) [ब० स०] जिसकी थकान दूर हो गई है।

विगतासु (वि०) [ब० स०] निष्प्राण, मृतक।

विगद (वि०) [ब० स०] रोग से मुक्त।

विगर्हिताचार (वि०) [ब० स०] जिसका आचरण निंद्य है, घृणित आचरण से युक्त।

विग्रहग्रहणम् [ष० त०] रूप धारण करना, शरीर या मूर्ति धारण करना।

विग्रहेप्सु [ष० त०] लड़ाई का इच्छुक।

विग्रहिन् (पुं०) [विग्रह+इनि] युद्ध मंत्री।

विघसम् [वि+अद्+अप्, घसादेश] 1. मोम 2 अधचबा कौर। सम०—आशः (पुं०) जो खाने से बचे हुए उच्छिष्ट भोजन को चरता है, कौवा।

विघ्नोपशान्ति बाधाओं को हटाना।

विचक्ष् (अदा० आ०) 1. कहना, घोषणा करना 2 प्रकट करना 3 सोचना, अटकल लगाना।

विचटनम् [विचट्+ल्युट्] तोड़ना।

विचन्द्र (वि०) [ब० स०] चन्द्रहीन, चन्द्रमा से रहित।

विचर् (भ्वा० पर०) 1 चरना, घास खाना 2 भूल हो जाना गलती करना—हविषि व्यचरत्तेन वषट्कारं गृणन् द्विज—भाग० ९।१।१५।

विचर (वि०) [विचर्+अच्] भ्रान्त, विचलित—न त्वं धर्मं विचरं सञ्जयेह महा० ५।२९।४।

विचारमूढ (वि०) 1 मूर्ख, 2 निर्णय करने में अज्ञानी।

विचर्मन् (वि०) कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो।

विचलित (वि०) [विचल्+क्त] 1 पथभ्रष्ट, सहीमार्ग से भटका हुआ 2 अवलुप्त, अन्धा किया हुआ।

विचालिन् (वि०) [विचाल+इनि] अस्थिर, परिवर्त्य अस्फुट, विचाली हि मत्सरश्चन्द—मी० सू० ६।७।३८ पर शा० भा०।

विचिकित्सित (वि०) संदिग्ध, संदेह पूर्ण।

विचित्रित (वि०) [विचित्र+इतच्] रंगा हुआ, सजाया हुआ, रंगबिरंगा।

विचिन्तनम् [विचिन्त्+ल्युट्] 1 विचार, चिन्तनम् 2 देख-भाल, चिन्ता, फ़िकर।

विचिन्ता [विचिन्त्+अच्+टाप्] दे० 'विचिन्तनम्'।

विचेयम् [विचि+यत्] गवेषणीय।

विचेष्टनम् [विचेष्ट्+ल्युट्] हाथ पैर हिलाना, प्रयास करना।

विचेष्टा [विचेष्ट्+अङ्+टाप्] 1 प्रयत्न 2 गति 3 व्यवहार।

विच्छिन्न (वि०) [विच्छिद्+क्त] 1 चीरा हुआ, फाड़ा हुआ 2 तोड़ा हुआ, मारा हुआ 3 चितकबरा 4 समाप्त किया हुआ 5 गुप्त 6 उबटन आदि लेप किया हुआ। सम०—आहुति आहुति देना—भङ्ग करके, शीर्णपात्रम् नित्य सन्ध्योपासना करना जिसका नैरन्तर्य भङ्ग हो गया हो—अर्थात् कभी करना

कभी न करना, —प्रसर (वि०) जिसकी प्रगति में बाधा पड़ गई है, —मद्य (वि०) जिसने सुरापान छोड़ दिया है।

विच्छेद [विच्छिद्+घञ्] भेद, प्रकार।

विच्छुरणम् [विच्छुर्+ल्युट्] बिखेरना, छिड़कना, धूर-कना।

विचक्र (वि०) [ब० स०] जिसके पहिये न हों, चक्र-हीन (रथ)।

विजन्या (स्त्री०) गर्भिणी।

विजल (वि०) [ब० स०] जलहीन, जहाँ पानी न हो।

विजर्जर (वि०) 1 जीर्णशीर्ण, टूटा-फूटा 2. छिन्नभिन्न, उच्छिन्न।

विजय [विजि+अच्] 1 जीत, फ़तह 2 एक विशिष्ट मुहूर्त 3 तीसरा महीना 4 एक प्रकार का सैन्यव्यूह। सम०—कांक्षित (वि०) जीत (फ़तह) से प्रोत्साहित, —कटक सेना की एक विशेष टुकड़ी।

विजिघित्स (वि०) [ब० स०] जिसकी भूख नष्ट हो गई हो।

विजिहीर्षा [वि+हृ+सन्+अ+टाप्] इधर-उधर घूमने या खेलने की इच्छा।

विजृम्भिका 1. साँस लेने के लिए मुँह खोलना 2 जम्हाई लेना।

विजृम्भित [विजृम्भ्+क्त] 1 जो जम्हाई ले चुका है 2 जम्हाई लेने वाला।

विज्जिका एक कवयित्री का नाम नीलोत्पलदलश्यामा विज्जिकां मामजानता। वृथैव दण्डिना प्रोक्ता सर्वशुक्ला सरस्वती॥ (उस कवयित्री का अब तक यही एक श्लोक उपलब्ध हुआ है)।

विज्ञानम् [विज्ञा+ल्युट्] 1 ज्ञान का अंग या बुद्धि 2 इन्द्रियगम्य ज्ञान।

विज्ञानभिक्षु एक बौद्ध लेखक का नाम।

विज्ञानस्कन्ध बौद्ध दर्शन के पाँच स्कन्धों में से एक।

विज्ञेय (वि०) [वि ज्ञा+यत्] 1 जानने के योग्य ज्ञेय 2 जिसकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए 3 जिसका ध्यान रक्खा जाय।

विज्य (वि०) [ब० स०] जिसमें डोरी या ज्या न हो (धनुष)।

विटकान्ता 1 हल्दी, हरिद्रा 2. हल्दी का पौधा।

विटङ्क (वि०) उत्तम, सुन्दर, मनोरम—केयूरकुण्डल-किरीटविटङ्कवेषो भाग० ३।१५।२७।

विटप [विट+पा+क] लता, बेल (जैसा कि 'भू-विटप' में)।

विडम्बक (वि०) [वि+डम्ब्+ण्वुल्] नकल करने वाला—परवादभृतकवाक्कविडम्बकराजम् —पतंजलि का लोकपालीय।

विडम्बम् [विडम्ब्+अच्] दिल्लगी की चीज, उपहास की वस्तु।

वितर्क [वितर्क्+अच्] 1 मिथ्या अनुमान 2. इरादा। सम०—पदवी अनुमान के क्षेत्र के अन्तर्गत।

वितान,—नम् [वितन्+घञ्] 1 शामियाना, चंदोवा 2 राशि, ढेर 3 बहुतायत 4 अनुष्ठान 5. निष्पत्ति।

वितानक [वितान+कन्] राशि, ढेर।

वितार (वि०) [प्रा० ब०] 1 जिसमें तारे न हों (आकाश) 2 धूमकेतु के शीर्षभाग से रहित।

वितृप्त (वि०) [वितृप्+क्त] सतुष्ट, सतृप्त।

वित्तविश्राणनम् मूल्यवान उपहारों का वितरण।

विदत् (वि०) [विद्+शतृ] 1 जानने वाला 2 समझदार।

विदितात्मन् (वि०) [ब० स०] 1. जो अपने आपको जानता है 2 प्रसिद्ध।

विदुर [विद्+कुरच्] वेत्ता, ज्ञाता।

विदुल दे० 'विदुर'।

विदुषी जानने वाली, समझदार स्त्री।

विदग्ध (वि०) [विदह्+क्त] 1 परिपक्व 2. दक्ष 3 भूरा, ईषद्रक्त, कुछ-कुछ लाल 4 जला हुआ, भस्मीभूत 5 पचा हुआ। सम०—परिषद् (स्त्री०) चतुर पुरुषों का समाज, —मुखमण्डनम् एक ग्रन्थ का नाम —वचन (वि०) वाग्मी, वाक्पटु।

विदम्भ दरवाजे की कुंजी।

विदश (वि०) [ब० स०] जिसके मगजी या झालर अथवा किनारी न लगी हो, (वस्त्र)।

विदाय [फ़ारसी का शब्द] 1 विदा करना 2. प्रयाण।

विदुरनीति } महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ से ४०
विदुरप्रजागर } तक अध्याय। यहाँ धृतराष्ट्र ने नीति पर व्याख्यान दिया है।

विदूरश्रव (वि०) जो दूर से सुनाई दे।

विदृति (स्त्री०) खोपड़ी की सन्धि या सीवन।

विदेशज (वि०) विदेश में उत्पन्न।

विदेहमुक्ति (स्त्री०) मोक्ष के कारण जन्म मरण से अर्थात शरीर से छुटकारा।

विद्रोह [विद्रुह्+घञ्] अतिरिक्त काम।

विद्धशालभञ्जिका हर्षदेवकृत एक नाटक।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1 दुर्गा देवी 2. सरस्वती देवी 3 ज्ञान, शिक्षा। सम०—आतुर (वि०) जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो—विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा नीति० —ईश शिव का नाम, —कोशगृहम्, —कोशसंग्रह, —कोशसमाश्रय:, पुस्तकालय, —बलम् जादू की शक्ति, —वत् (वि०) शिक्षित, पढ़ालिखा, —वंश अध्ययन की किसी विशिष्टशाखा के अध्यापकों की कालक्रमानुसार सूची।

विद्युदुन्मेषम् (अ०) एक क्षण में, बिजली जैसी तेजी से।

विद्योत (वि०) [विद्युत्+अच्] चकाचौंध करने वाला, जगमगाने वाला।

विद्रुतिः [वि+द्रु+क्तिन्] दौड़ जाना, भाग जाना।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त, नस्य णत्वम्] 1. जागरूक, निद्रारहित 2. निराश, उदास—द्रविणविद्राणवर्णनिधि—हर्ष० ७।

विद्वद्गोष्ठी } **विद्वत्सदस्** } **विद्वत्सभा** } विद्वान् पुरुषों की सभा विद्वन्मण्डली।

विधन (वि०) [प्रा० ब०] निर्धन, धनहीन।

विधर्म (वि०) 1. अधर्मी, अन्यायी 2. धर्मकार्य जो अच्छे आशय से किया गया हो।

विधर्मिन् (वि०) [विधर्म+इनि] 1. भिन्न वर्ग से संबंध रखने वाला (विप० सधर्मिन्) 2. अधर्मी।

विधा (जुहो० उभ०) लीन करना, उपभोग करना।

विधा [वि+धा+क्विप्] उच्चारण।

विधातृ (पुं०) [वि+धा+तृच्] माया, भ्रान्ति।

विधानम् [विधा+ल्युट्] 1. प्रयत्न, प्रयास 2. उपचार 3. भाग्य, नियति 4. विधि 5. (नाटक०) विभिन्न रसों का संघर्ष।

विधिः [वि+धा+कि] 1. उपयोग, प्रयोग 2. अनुष्ठान, अभ्यास 3. प्रणाली, रीति, ढंग 4. नियम 5. क़ानून (विप० अर्थवाद) 6. धर्मकृत्य 7. व्यवहार 8. आचरण 9. सृष्टि 10. निर्माण 11. भाग्य 12. हाथी का आहार 13. वैद्य 14. उपाय, तरकीब। सम० —अन्तः विधिपरक मूल पाठ का उपसंहारात्मक भाग, —अर्थः विधि का आशय, —कर (वि०) विधान को कार्य में परिणत करने वाला, —यज्ञः विधिविधान के अनुसार अनुष्ठित यज्ञ, —स्वरूपम् विधि का स्वरूप, —लोपः विधान का अतिक्रमण, —विपर्ययः, —विपर्यासः दुर्भाग्य, —विभक्तिः (स्त्री०) विधिलिङ् के प्रत्यय —वशात् (अ०) भाग्य से,—विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहम् मेघ० ६।

विधुः [व्यध्+कु] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. राक्षस 4. प्रायश्चित्ताहुति। सम० —परिवेशः चन्द्रमण्डल, —मण्डलम् चन्द्रमा का परिवेश,—मासः चान्द्र महीना।

विधुर (वि०) [विगता धूर्यस्य अच् समा०] 1. विपन्न, असहाय—प्रतिक्रियायै विधुरः—कि० १७।४१ 2. असक्त, अक्षम—[illegible] विधुरवीर्यैः—महा० ७।१४६।२५।

विधुरित (वि०) [विधुर+इतच्] विवर्ण, कान्तिहीन।

विधूम (वि०) [प्रा० ब०] धूएँ से रहित।

विधारणम् [वि+धृ+णिच्+ल्युट्] गिरफ्तार करना, रोकना।

विध्र (वि०) [विगत+अभ्र, [illegible]] निष्कलंक, कलंकरहित।

विनग्न (वि०) [वि+नज्+क्त] बिल्कुल नंगा, दिगम्बर।

विनर्दिन् (वि०) [विनर्द्+णिनि] गरजने वाला (साम मन्त्रों के पाठ करने की एक रीति।

विनयः [वि, नी+अच्] 1. दण्ड—शीलवृत्तमविज्ञाय धास्यामि विनयं परम् महा० ३।३०६।१९ 2. कार्यालय।

विनयकर्मन् (नपुं०) [ष० त०] निर्देश, शिक्षण।

विनाशकालः [ष० त०] विपत्ति का समय।

विनाशहेतु (वि०) [ब० स०] जो नाश का कारण हो।

विनाकृत (वि०) [विना+कृ+क्त] 1 वञ्चित, रहित, मुक्त 2. वियुक्त, एकाकी।

विनाभावः वियोग—अयतं दैवादहं मन्ये राघवस्य विनाभवम् रा० ७।५०।४।

विनायकः [वि+नी+ण्वुल्] नेता, अग्रणी।

विनिकृत (वि०) [वि+नि+कृ+क्त] दुर्व्यवहारग्रस्त, आहत, विकलीकृत।

विनिगमना [वि+नि+गम्+णिच्+युच्+टाप्] संकल्प, निश्चित उपसंहार, कुछ स्वीकार करके शेष को निकाल देना —मी० सू० १०।५।५९ पर शा० भा०।

विनिबर्हण (वि०) [वि+नि+बर्ह्+ल्युट्] परास्त करने वाला, हटाने वाला।

विनिमुच् (क्या० उभ०) (बाण) छोड़ना, (बाण) मारना।

विनियोक्तृ (वि०) [वि+नि+युज्+तृच्] काम देने वाला, स्वामी।

विनियोगः [वि+नि+युज्+घञ्] 1. प्रयोग, उपयोग 2. सहसम्बन्ध।

विनिर्वृत्त (वि०) [वि+निः+वृत्+क्त] 1. पैदा हुआ, निकल आया 2. सम्पूर्ण हुआ, पूरा हुआ।

विनिवेशनम् [विनि+विश्+णिच्+ल्युट्] उठान, निर्माण।

विनिहित (वि०) [विनि+धा+क्त] 1. रखा हुआ, पड़ा हुआ 2. नियुक्त 3. गड़ा हुआ।

विनिह्नुत (वि०) [विनि+ह्नु+क्त] 1. मुकरा हुआ, न अपनाया हुआ 2. छिपा हुआ, छिपाया हुआ।

विनी (भ्वा० पर०) दूर रहना, दूर करना—विनीय भयमात्मनः—महा० ९।३१।२९।

विनीत (वि०) [विनी+क्त] फैलाया हुआ।

विनीतवेषः सामान्य वेषभूषा।

विनेयः [वि+नी+ण्यत्] शिष्य, छात्र विनीतविनेयभृङ्गा।

विनोदपरः } **विनोदरसिकः** } क्रीडाशील, मनोरंजन में व्यस्त, आमोदप्रिय।

विनोदस्थानम् मनोरंजन का स्थान, वन विहार।

विन्यसनम् [विनि+अस्+ल्युट्] रखना, धरना।

विन्यासः [विनि+अस्+घञ्] 1. (शस्त्र) धारण करना 2. बीच में घुसेड़ना 3. पंक्ति (अंगों की), स्थिति।

विपक्षः [प्रा० ब०] 1. निष्पक्षता, तटस्थता 2. वह दिन जब कि चन्द्रमा एक पक्ष से दूसरे पक्ष में संक्रमण करता है।

विपाठः [विपट् + घञ्] एक प्रकार का बाण, तीर विपाट-पञ्चरेण—कि० २०।१७।

विपाटित (वि०) [विपट् + णिच् + क्त] फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विपणः [वि + पण् + अप्] कार्यभार ग्रहण, व्यापार, व्यवसाय—न तत्र विपणः कार्यं खरकण्डूयनं हि तत् —महा० ३।३३।६६।

विपणिजीविका [ब० स०] क्रयविक्रय या व्यापार के द्वारा जीवननिर्वाह करना।

विपणिवीथी [ब० स०] मण्डी, बाजार।

विपण्यु (वि०) 1. जिसने व्यवसाय छोड़ दिया है 2. तटस्थ, उदासीन।

विपत्तिः [विपद् + क्तिन्] अवसान, समाप्ति।

विपत्तिकालः [ष० त०] विपत्ति का समय।

विपन्नदीधिति (वि०) [ब० स०] कान्तिहीन, निष्प्रभ।

विपरिक्रान्त (वि०) साहसी, बलशाली।

विपर्ययः [वि० + परि + इ + अच्] मिथ्याबोध, गलतफहमी —ईशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः —भाग० ११।२।३७।

विपर्यासः [विपरि + अस् + घञ्] 1. ह्रास 2. मृत्यु०। सम० —उपमा, उल्टी उपमा।

विपाकः [वि० + पच् + घञ्] कुम्हलाना, मुरझाना। सम० —दारुण (वि०) परिणाम में भयंकर,—दोषः अग्निमांद्य, अजीर्ण।

विपिनौकस् (पुं०) [ब० स०] 1. लंगूर 2. जंगली जन्तु।

विपुंसक (वि०) [प्रा० ब०] पुंस्त्वहीन, जिसमें पौरुष न हो।

विपुलग्रीव (वि०) [ब० स०] लम्बी गर्दन वाला।

विपुष्ट (वि०) [वि + पुष् + क्त] जिसे पूरा आहार न मिला हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो।

विपूयकम् [वि + पू + क्यप्, स्वार्थे कन् च] सड़ांध, दुर्गंध।

विप्रः [वप् + रन्, अत इत्वम्] भाद्रपद का महीना। सम० —ब्राह्मण माता पिता की ब्राह्मण सन्तान।

विप्रकृ (तना० उभ०) नियत करना, (साक्षी के रूप में) स्वीकार करना।

विप्रकारः [विप्र + कृ + घञ्] 1. विधिविपरीतेति 2. दुष्कृत्य, गलत तरीका।

विप्रकृतिः [वि + प्र + कृ + क्तिन्] परिवर्तन।

विप्रकर्षः [विप्र + कृष् + घञ्] 1. खींचकर दूर करना 2. (व्या० में) दो व्यंजनों के बीच में कोई स्वर जो उन दोनों की निकटता हटावे।

विप्रतिवद (क्रिया० आ०) मिथ्या उत्तर देना।

विप्रतिपत्तिः [वि + प्रति + पद् + क्तिन्] 1. विरोधी भावना 2. गलती, त्रुटि।

विप्रतिपन्न (वि०) [विप्रति + पद् + क्त] परस्पर संयुक्त, आपस में मिले हुए। सम० —बुद्धि (वि०) मिथ्या विचार या धारणा रखने वाला।

विप्रत्ययः [वि + प्रति + इ + अच्] अविश्वास,—यदि विप्रत्ययो ह्येष— महा० १२।१११।५५।

विप्रथित (वि०) [वि + प्रथ् + क्त] प्रसिद्ध, यशस्वी।

विप्रधर्ष [विप्र + धृष् + घञ्] तंग करना, सताना।

विप्रलम्भित (वि०) [विप्र + लम्भ् + क्त] 1. अपमानित 2 अतिक्रान्त।

विप्रलीन (वि०) [विप्र + ली + क्त] तितर-बितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न किया हुआ।

विप्रलुम्पक (वि०) [विप्र + लुप् + ण्वुल्, मुमागमः] लुटेरा, डाकू।

विप्रलोकः [विप्र + लोक् + घञ्] बहेलिया, चिड़ीमार।

विप्रवादः [विप्र + वद् + घञ्] असहमति, मतिभिन्नता।

विप्रवासित (वि०) [विप्र + वस् + णिच् + क्त] प्रवास के लिए गया हुआ, जो परदेश में चला गया है।

विप्रहृत (वि०) [विप्र + हृ + क्त] 1. पटक दिया हुआ, गिराया हुआ 2. कुचला हुआ, रौंदा हुआ।

विप्रहीण (वि०) [विप्र + हा + क्त] वञ्चित, विरहित।

विप्रुष् (स्त्री०) बोलते समय मुंह से निकले थूक के कण।

विप्लवः [वि + प्लु + अप्] पोतभंग, जहाज का विनाश।

विप्लुतभाषिन् (वि०) असंगत बोलने वाला, हकलाने वाला।

विप्लुतिः [वि + प्लु + क्तिन्] विनाश, ध्वंस।

विबन्धु (वि०) [ब० स०] बन्धुहीन, जिसका कोई सगा-सम्बन्धी न हो—भ्रातुर्विबन्धोस्य सुतान् विबन्धून् —भाग० ३।१।६।

विबुधः [वि + बुध् + क] 1. बुद्धिमान्, विद्वान् पुरुष 2. देवता 3. चन्द्रमा। सम०—अनुचरः दिव्य सेवक, —आवासः देवमन्दिर,—इतरः राक्षस।

विबुभूषा [वि + भू + सन् + अङ् + टाप्] अपने आप को प्रकट करने की इच्छा।

विभज् (भ्वा० उभ०) 1. अलग कर देना, दूर हटा देना —विभक्तरत्नः संघातम्—रा० ५।५३।७३ 2. तोड़ना 3. बांटना।

विभङ्गः [वि + भञ्ज् + घञ्] लहर।

विभङ्गुर (वि०) [वि + भञ्ज् + घुरच्] अस्थिर, चंचल।

विभवः [वि + भू + अप्] प्रभुता, दबाव—निजगदा कल्पना निखिलजगदुत्पादविभवप्रतिबोधे—विक्र०।

विभानुगा [विभा + अनुगा] छाया।

विभाजनरेखा [ष० त०] विभाजक रेखा।

विभावर (वि०) [विभा + वनिप्, र आदेशः] उज्ज्वल चमकदार, चमकीला—विभावरी सर्वभूतप्रतिष्ठा संज्ञा मता—महा० १३।२६।८६।

विभिद् (रुधा० उभ०) अतिक्रमण करना, उल्लङ्घन करना।
विभेदः [विभिद्+घञ्] सिकुड़न, (भौंहें) सिकोड़ना।
विभी (वि०) निर्भय, निडर।
विभीषण: एक राक्षस का नाम, रावण का भाई।
विभुता सर्वोपरि सत्ता, यश, कीर्ति।
विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] मुड़ा हुआ, झुका हुआ, वक्र किया हुआ।
विभावनम् [वि+भू+णिच्+ल्युट्] 1. विकास 2. प्रकट 3. दृष्टि, दर्शन।
विभाव्य [विभू+णिच्+ण्यत्] चिन्तनीय, विचारणीय।
विभूतिः [वि+भू+क्तिन्] 1. लक्ष्मी 2. योग्यताएँ—लोकस्य एता मनसो विभूतीः—भाग० ५।११।१२।
विभ्रंशः [वि+भ्रंश्+घञ्] 1. अतिसार, बार-बार दस्त आना 2. उलटफेर, अस्तव्यस्तता।
विमद (वि०) [प्रा० ब०] मद्यपान से मुक्त।
विमर्दनम् [वि+मृद्+ल्युट्] 1. सुगन्ध, खुशबू 2 परिमर्दन, चबाना, पीसना 3. संघर्ष।
विमर्शिन् (वि०) [विमृश्+णिनि] असहिष्णु, अनिच्छुक, विमनस्क।
विमात्र (वि०) मानतोल में बराबर।
विमान: [वि+मा+ल्युट्] 1. दूसरी पालकी 2. जहाज में रहने वाली किश्ती। सम० वाह पालकी उठाने वाला।
विमार्गदृष्टि (वि०) बुरी राह पर आँख रखने वाला, बुरे रास्ते को देखने वाला।
विमृषित (वि०) [वि+मृष्+क्त] आवेगरहित, शान्तचित्त, निरपेक्ष।
विमुक्तमौनम् (अ०) मौनभंग करके।
विमुक्तशाप (वि०) [प्रा० ब०] शाप के प्रभाव से मुक्त।
विमूढसंज्ञ (वि०) [ब० स०] घबराया हुआ, बेहोश।
विमूढात्मन् (वि०) [ब० स०] घबराया हुआ, बेहोश।
विमूर्छित (वि०) [वि+मूर्छ्+क्त] 1. पूर्ण, सब मिला हुआ 2. जमा हुआ, मूर्छा में ग्रस्त।
विमृश: [वि+मृश्+अप्] अनुचिन्तन, सोचविचार, —भाग० ४।२२।२१।
विमोघ (वि०) बिल्कुल फल रहित, निष्फल।
वियत्पताका [ष० त०] बिजली।
वियच्चर: [ष० त०] अन्तरिक्ष।
वियत्य (अ०) अन्तराल पर अवकाश देकर।
वियन्तृ (वि०) [वि+यम्+तृच्] चालकरहित, जिसमें चालक न हो।
वियुज् (रुधा० उभ०) 1. (प्रतिज्ञा) भंग करना 2. छूटना 3. घटाना।

वियुज्य [वियुज्+ल्यप्] वियुक्त होकर, पृथक् एक एक करके व्यस्ततया।
वियोजनम् [वियुज्+ल्युट्] 1. वियोग 2. घटाना।
वियोनि: भिन्न जाति की स्त्री—महा० १३।१४५।५२।
वियोनि (वि०) [प्रा० ब०] 1 नीच कुल में उत्पन्न 2 भगरहित।
वियोनिज पशु, परिन्दा।
विरजा एक नदी का नाम।
विरक्तप्रकृति (वि०) [ब० स०] जिसकी प्रजा उदासीन हो, निर्लिप्त हो।
विरज्य (वि०) विस्तृत, विस्तारयुक्त, दूरतक फैला हुआ।
विरथ्या 1 बुरा मार्ग 2. उपमार्ग, छोटी गली।
विरतप्रसंग: वह बात या विषय जिसकी चर्चा बन्द हो गई हो
विरसमर्पित (वि०) नीरस, उकता देने वाला।
विराज् [विराज्+क्विप्] ब्रह्माण्ड, विश्व। सम० सुत: (विराट्सुत:) स्वर्गीय पितरों की एक श्रेणी।
विरात्र:, त्रम् [प्रा० ब०] रात का तीसरा पहर — कुम्भाय प्रपन्नोपास्य विराय ब्रह्मरक्षसाम्—रा० ५।२१।
विरावण (वि०) [वि०+रु+णिच्+ल्युट्] शोरगुल कराने वाला, हल्लागुल्ला मचवाने वाला।
विरिक्त (वि०) [वि+रिच्+क्त] जिसे दस्त करा दिये गये हों, खाली कराया हुआ।
विरिक्ति [विरिच्+क्तिन्] विरेचन, दस्त करवाना।
विरुज् (स्त्री०) [वि+रुज्+क्विप्] दारुण पीडा।
विरुज् (वि०) नीरोग, स्वस्थ।
विरूपकरूपकम् एक अलङ्कार जहाँ उपमेय बिल्कुल समान न हो।
विरोध [वि+रुध्+घञ्] 1. वैपरीत्य, बाधा, विघ्न 2. प्रतिबन्ध 3. शत्रुता 4. कलह 5 असहमति 6. संकट। सम० आभास: वह अलंकार जहाँ विरोध प्रतीत होता हो, परन्तु वस्तुतः कोई विरोध न हो, -उपमा वैपरीत्य पर आधारित उपमा, —परिहार: 1. विरोध का दूर होना, सामंजस्य स्थापित होना 2 प्रतीयमान विरोध की व्याख्या।
विलक: एक प्रकार का साँप।
विरूढ (वि०) [वि+रुह्+क्त] (घाव) भरा हुआ, स्वस्थ 2. अंकुरित 3. पका हुआ। सम० बोध (वि०) जिसकी बुद्धि परिपक्व हो गई हो।
विरोचनम् [वि+रुच्+युच्] प्रकाश, चमक, दीप्ति।
विरोचिष्णु [वि+रुच्+इष्णुच्] चमकीला, उज्ज्वल।
विलक्ष (वि०) [प्रा० ब०] 1. जिसका कोई विशेष चिह्न या लक्षण न हो 2. (तीर) जिसका निशाना चूक गया हो।

विलग्न (वि॰) [विलग्+क्त] 1. लटकता हुआ 2. पिंजरबद्ध (पक्षी)।

विलापनम् [वि+लप्+णिच्+ल्युट्] रुलाने वाला, विलाप का कारण।

विलम्ब् (भ्वा॰ आ॰) सहारा लेना, निर्भर करना।

विलासः [विलस्+घञ्] 1 सजीवता, हावभाव 2 कामुकता, लम्पटता।

विलायः } [वि+ली+णिच्+घञ्, ल्युट् वा]
विलायनम् } घोल देना, मिलादेना, (धातों का भाँति) मिला, देना।

विलिङ्ग (वि॰) [प्रा॰ ब॰] भिन्न लिङ्ग का।

विलिम्पित (वि॰) [विलिम्प्+क्त] सना हुआ, लिपा हुआ, लेपा हुआ।

विलेपिन् (वि॰) लसदार, चिपका हुआ।

विलीन (वि॰) [विली+क्त] मन में बैठाया हुआ।

विलोप्तृ (पुं॰) [विलुप्+णिच्+तृच्] डाकू, लुटेरा।

विलोभनीय (वि॰) [वि+लुभ्+अनीय] ललचाने वाला, मुग्ध करने वाला।

विलोचनपथः दृष्टि क्षेत्र, दृष्टि का परास।

विलोमपाठः विपरीत क्रम से सस्वर पाठ।

विलोमविधिः किसी कार्य के विपरीत अनुष्ठान का विधान करने वाला नियम।

विवक्षितान्यपरवाच्यम् एक प्रकार का व्यङ्ग्यार्थ।

विवदनम् [वि+वद्+ल्युट्] कलह झगड़ा, मुकदमेबाजी।

विवधा [प्रा॰ स॰] 1 जुआ 2 हथकड़ी, बेड़ी।

विवरम् [वि+वृ+अच्] पाताल लोक।

विवर्णित (वि॰) [विवर्ण+इतच्] अननुमोदित, अस्वीकृत।

विवल्ग् (भ्वा॰ पर॰) कूदना, उछलना, फाँदना।

विवस्वती (स्त्री॰) [विवस्वत्+ङीप्] सूर्य देव की नगरी।

विवाहनेपथ्यम् दुलहिन की वेशभूषा।

विविक्त (वि॰) [विविच्+क्त] जिसने समझ लिया, या सही अनुमान लगा लिया — विविक्त वर्त्मपथो — भाग॰ ५।२६।१७।

विविदिषा [विद्+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा।

विवीताध्यक्षः चरभूमि का अधीक्षक।

विवृ (स्वा॰ क्र्या॰ उभ॰) 1. म्यान से तलवार निकालना 2. कंघे से (बालों की) माँग काढ़ना।

विवृतम् [विवृ+क्त] अनाहत, जिसके घाव नहीं हुआ।

विवृतपौरुष (वि॰) अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने वाला।

विवर्जित (वि॰) [विवृज्+क्त] वह जिससे कोई वस्तु ले ली गय, वञ्चित, विरहित।

विवृत् (भ्वा॰ आ॰) रूपान्तर करना — उभे सह विवर्तेते महा॰ १२।१७४।२२।

विवर्तनम् [विवृत्+ल्युट्] रूपान्तरण।

विवृताक्षः [ब॰ स॰] मुर्गा।

विवेकमन्थरता निर्णय करने में असमर्थता।

विवेकविरहः अज्ञान, ज्ञान का अभाव।

विश् (तुदा॰ पर॰) 1 रंगमंच पर प्रकट होना 2 संयुक्त होना 3 आ पड़ना 4 (किसी कार्य में) व्यस्त हो जाना।

विश् (पुं॰) [विश्+क्विप्] 1 बस्ती 2 संपत्ति, दौलत।

विशङ्कनीय (वि॰) [वि+शङ्क्+अनीय] प्रष्टव्य, पूछने के योग्य, शङ्का किये जाने के योग्य, जिस पर शङ्का की जा सके।

विशद (वि॰) [वि+शद्+अच्] 1 सुकुमार, मृदु 2 दक्ष।

विशल्यकरणी शस्त्रों के लगने से उत्पन्न घावों को स्वस्थ करने की विशेष जड़ी-बूटी।

विशसनम् [विशस्+ल्युट्] 1 युद्ध 2 काटना 3 वध करना, हत्या करना।

विशारद (वि॰) [विशाल+दा+क] 1 प्रवीण 2 बुद्धिमान्, 3 प्रसिद्ध 4 साहसी 5 सौन्दर्योपपन्न शरद् ऋतु सम्बन्धी 6 वक्तृत्व शक्ति से रहित।

विशालकुलम् उत्तम परिवार, प्रसिद्ध वंश।

विशाखा [विशाख+टाप्] कन्यालय।

विशेषकरणम् उन्नति, सुधार।

विशेषधर्मः विशेष कर्तव्य, विशिष्ट धर्मकृत्य या यज्ञ-अनुष्ठान।

विशेषणासिद्धः एक प्रकार का हेत्वाभास।

विशेषणपदम् 1 विशेषता द्योतक शब्द 2 सम्मान सूचक उपाधि।

विशेषतः (अ॰) अनुपात की दृष्टि से — निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो दानं विद्याविशेषतः मनु॰ ११।२।

विशुद्धधी निर्मल मन या उज्ज्वल बुद्धि वाला।

विशुद्धसत्त्व (वि॰) सच्चरित्र, सदाचारी।

विशुद्धिः [विशुध्+क्तिन्] 1 ऋण परिशोध करना 2 प्रायश्चित्त।

विशृङ्खला 'देवी' का विशेषण।

विशीर्ण (वि॰) [विशृ+क्त] 1 रगड़ा हुआ 2. निष्फलीभूत 3. गिरा हुआ (गर्भ आदि)।

विश्रान्तवचस् (वि॰) [ब॰ स॰] 1 वक्तृत्व शक्तिहीन, मूक 2 मृत।

विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] आराम करने का स्थान।

विश्रम्भप्रकाशिन् } (वि॰) विश्वस्त या गुप्त बातें करने
विश्रम्भालापिन् } वाला।

विश्रब्धसुप्त (वि०) शान्ति पूर्वक सोने वाला ।
विश्विः [विष् + क्विन्] मृत्यु ।
विश्वगोचर (वि०) सबके लिए सुगम, जहाँ सबकी पहुँच हो ।
विश्वजीवः विश्वात्मा, ईश्वर ।
विश्वाधारः विश्व का सहारा, ईश्वर ।
विश्वेदेवाः पितरों की एक श्रेणी, देववर्ग ।
विष्कृमिः अँतड़ियों में पड़ने वाला कीड़ा ।
विड्घातः मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रावरोध ।
विड्भङ्गः अतीसार, दस्तों का लगना ।
विड्भुज् (वि०) मल खाकर रहने वाला, गुबरैला ।
विड्वराहः भैंसा ।
विषतन्त्रम् विषविज्ञान, (सर्पादि विषैले जन्तुओं का विष दूर करने की प्रक्रिया ।
विषक्त (वि०) [वि + सञ्ज् + क्त] 1 व्यस्त, चिपका हुआ 2. अतिविस्तारित ।
विषादनम् [वि + सद् + णिच् + ल्युट्] कष्ट देना, सताना ।
विषम (वि०) [प्रा० ब०] 1. जो पूरा न बँट सके 2 अनुपयुक्त । सम० —बाण कामदेव, —नेत्रम् शिव की तीसरी आँख, —नेत्रः शिव का एक विशेषण, —वृत्तम् छन्द जिसके चरण सम न हों ।
विषय [वि + सि + अच्, षत्वम्] 1. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गृहीत होने वाला पदार्थ 2. भौतिक पदार्थ 3. इन्द्रियजन्य आनन्द । सम० —निह्नुतिः किसी बात को मुकर जाना, —पराङ्मुखः भौतिक विषय सुखों से विमुख ।
विषयीकरणम् [विषय + च्वि + कृ + ल्युट्] किसी वस्तु को चिन्तन का विषय बनाना ।
विषह्य (वि०) [वि + सह् + यत्] जीतने के योग्य ।
विषाणः [विष् + कानच्] 1 चोटी 2 चूची 3 अपनी प्रकार का उत्तमोत्तम ।
विषुवत्समयः वह समय जब दिन रात का मान बराबर होता है ।
विष्कम्भ् (स्वा० क्र्या० पर०) 1. समर्थन करना, प्रबल बनाना 2 व्याप्त होना, छा जाना ।
विष्टिकरः दासों का स्वामी, बेगार में पकड़े मजदूरों का स्वामी ।
विष्टिकारिन् बेगार में पकड़ा गया मजदूर जिसे कोई पारिश्रमिक भी नहीं दिया जाता है ।
विष्ठाशिन् [विष्ठा + आशिन्] सूअर, जो मल खाता है ।
विष्णुः [विष् + नुक्] 1 त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) में दूसरा 2 अग्नि 3. पावन पुरुष 4. स्मृतिकार 5. एक वसु 6. श्रवण नक्षत्रपुंज (इसका अधिष्ठात्री देवता विष्णु है) 7 चैत्र का महीना । सम० —क्रान्ता विभिन्न पौधों के नाम, —दत्तः परीक्षित राजा का नाम, —धर्मोत्तरपुराणम् एक उपपुराण का नाम, —प्रिया 1 तुलसी का पौधा 2. लक्ष्मी का नाम —लिङ्गी बटेर ।
विष्वग्गति (वि०) [विष्वच् + गति] सर्वत्र जाने वाला प्रत्येक विषय में प्रविष्ट होने वाला ।
विष्वक्लोपः [विष्वच् + लोप] गड़बड़ाहट, बाधा, विघ्न ।
विसदृश (वि०) असमान, असमरूप ।
विसंमूढ (वि०) नितांत घबराया हुआ ।
बिसा कमल नाल (= बिसं)
विसृज् (तुदा० पर०) (आ० भी) (प्रेर०) प्रकट करना, भेद खोलना, (समाचार) प्रकाशित करना ।
विसृज्यम् [विसृज् + यत्] जो मुक्त किये जाने के योग्य है, सृष्टि, संसार का रचना -कालो वशीकृत-विसृज्य विसर्गशक्तिः भाग० ७।१।२२ ।
विसर्गः [विसृज् + घञ्] विनाश, सृष्टि का लोप ।
विसृप् (भ्वा० पर०) फैलाना, प्रसारित करना ।
विसर्पिन् [विसृप् + णिनि] 1 रेंगने वाला 2 फूट कर निकलने वाला 3 सरकने वाला 4. फैलने वाला (बेल की भाँति) ।
विस्यन्दः [विस्यन्द् + घञ्] बूँद, कण ।
विस्फूर्जः [विस्फूर्ज् + घञ्] दहाड़ना चिंघाड़ना, गरजना ।
विस्फोटकः [विस्फुट् + ण्वुल्] 1. फोड़ा, फुंसी 2. एक प्रकार का कोढ़ ।
विस्मयपदम् आश्चर्य का विषय ।
विस्रगन्धः कच्चे मांस की गन्ध ।
विहतिः (स्त्री०) [वि + हन् + क्तिन्] प्रतिघात, अपसारण, विफलता, मन्दता, अनौचित्य. कोऽप्येषः प्रणय-विहतिव्यस्तवचनं कि० १०।११ ।
विहाय (अ०) [वि + हा + ल्यप्] 1. ...से अधिक, के अतिरिक्त 2. होते हुए भी 3. त्याग, छोड़ कर ।
विहित प्रतिषिद्ध (वि०) जिसका विधान और निषेध दोनों किये गये हों ।
विहरणम् [वि + हृ + ल्युट्] खोलना, फैलाना ।
विहार [वि + हृ + घञ्] (मीमांसा) अग्नित्रय, (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण) ।
विहारभूमिः क्रीडाभूमि, चरागाह ।
विह्वलचेतस् (वि०) [ब० स०] उदास, खिन्नमना जिसका मन बहुत व्याकुल हो ।
वीचिक्षोभ लहरों का उठना, तरंगों से उत्पन्न हलचल ।
वीणापाणि भारती ।
वीतमत्सर (वि०) ईर्ष्या द्वेषादि से मुक्त ।
वीरकाम (वि०) पुत्रैषी, पुत्र का इच्छुक ।
वीरपत्नी [ष० त०] शूरवीर की पत्नी, नायिका ।

वीरवाद [ष० त०] शक्ति का दावा, वीरता जन्य कीर्ति।
वीरव्रत (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर अटल, दृढ़ संकल्प वाला।
वीरक [वीर+कन्] 1. 'करवीर' नाम का पौधा 2 नायक 3 एक शिवगण का नाम।
वीर्यम् [वीर्+यत्] 1. विष 2. मोका 3 पुंस्त्व, जनन—शक्ति 4. बीज, धातु। सम०—आधानम् गर्भाधान,—शुल्क (वि०) चुनौती देकर युद्ध, शक्ति के बल पर प्राप्त।
वृतिद्रुम [ष० त०] सीमावर्ती वृक्ष।
वृतिमार्ग [ष० त०] ऐसी सड़क जिसके दोनों ओर बाड़ लगी हो।
वृक [वृ+कक्] 1 भेड़िया 2 सूर्य।
वृकधूर्तक 1. रीछ 2 गीदड़।
वृक्षामय [ष० त०] लाख, रेजन (राल)।
वृत्तम् [वृत्+क्त] 1 रूपान्तरण 2 आवर्तक।
वृत्तबन्ध छन्दोबद्ध रचना।
वृत्तयुक्त (वि०) गुणों से सम्पन्न।
वृत्त्यर्थम् (अ०) जीविका के लिए।
वृत्तिप्रबन्ध जीविका की व्यवस्था, जीविका का आधार।
वृथान्नम् [वृथा+अन्नम्] केवल एक व्यक्ति के अपने उपभोग के लिए आहार।
वृथार्तवा [वृथा+आर्तवा] बांझ स्त्री।
वृद्धयुवति (स्त्री०) 1 कुट्टिनी 2 दाई, धात्री।
वृद्धि (स्त्री०) [वृध्+क्तिन्] 1 आघात चोट (वृध हिंसायाम्) 2 भूमि का ऊंचा करना 3 लम्बा करना।
वृन्तम् [वृ+क्त, नुम्] गुच्छा, झुंड।
वृष [वृष्+क] 1 जल 2 भवननिर्माण के लिए भूखंड 3 नरजन्तु 4 सांड। सम०—स्यन्दना मरदानी स्त्री, वृषिकम् (पु०) भिड़।
वृषभयानम् बैल गाड़ी।
वृषल [वृष्+कलच्] 1 नाचने वाला 2 बैल।
वृषलीफेन. [ष० त०] ओष्ठ का आर्द्रता।
वृष्णिपाल. ग्वाला, गड़रिया।
वेशदर्प सौन्दर्य का अभिमान।
वेणि [वेण्+इन्] 1 फिर सयुक्त की गई संपत्ति जो पहले से बटी हुई थी 2. जल प्रवाह झरना।
वेणुदलम् बांस का फट्टा।
वेणुयव बांस का चावल, बांसबीज।
वेतालपञ्चविंशति पच्चीस कहानियों की एक कृति।
वेद [विद्+अच्, घञ् वा] 1 ज्ञान 2 हिन्दुओं की पुनीत धर्म पुस्तक ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद 3. 'कुश' का गुच्छा 4 विष्णु। सम०—अनध्यायम् वह अवकाश का दिन जिस दिन वेद का पढ़ना निषिद्ध हो, —बाह्य (वि०) 1. वेद के विपरीत 2 वेदाध्ययन के क्षेत्र से बाहर,—वादाः वेदों के विषय में होने वाली धर्मान्ध व्यक्तियों की बहस वेदवादरता पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः— भग०, श्रुति ईश्वरीय ज्ञान का दैवी संदेश।
वेदिमेखला वेदी के चारों ओर की सीमा को बांधने वाली रस्सी।
वेध (पु०) [विधा+असुन्, गुण.] ज्योतिष का पारिभाषिक शब्द जिसका अर्थ है ग्रहों की स्थिति का निर्धारण।
वेलातिक्रम [ष० त०] सीमा का उल्लंघन।
वेलातिग (वि०) किनारे से बाहर रहने वाला।
वेश्यापति [ष० त०] जार, वेश्या का पति।
वेश्यापुत्र [ष० त०] वेश्या का पुत्र, अवैध पुत्र, हरामी।
वेष्टनम् [वेष्ट्+ल्युट्] वियाम, एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सारा फैलाव।
वैकारिक (वि०) [विकार+ठक्] 1 परिवर्तनीय 2 सत्त्व से सबद्ध वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा—भाग० ३।५।३०।
वैकार्यम् विकार, परिवर्तन।
वैकृतम् [विकृत+अण्] कपट, धोखा।
वैजन्यम् [विजन+ष्यञ्] निर्जनता, एकान्त।
वैडूर्यम् एक प्रकार का रत्न।
वैतानसूत्रम् यज्ञविषयक कुछ सूत्र।
वैदुरिकम् [विदुर+ठक्] विदुर का सिद्धान्त।
वैद्यविद्या [ष० त०] आयुर्वेद शास्त्र।
वैधर्म्यसमः असमानता के कोणों पर आधारित तर्कसंगत भ्रान्ति, हेत्वाभास।
वैभावर (वि०) [विभावर+अण्] रात परक।
वैयवहारिक (वि०) [व्यवहार+ठक्] व्यवहारसिद्ध, रूढ, प्रचलित।
वैयाकरणखसूचि केवल वैयाकरण का विडम्बनाद्योतक शब्द।
वैरायितम् [वैर+क्यष्+क्त] शत्रुता, द्वेष, विरोध।
वैराग्यम् [विराग+ष्यञ्] वर्ण या रंग का लोप।
वैराग्यशतकम् भर्तृहरिकृत एक काव्यरचना।
वैवस्वतमन्वन्तरम् सातवाँ मन्वन्तर, वर्तमान समय।
वैशसम् [विशस+अण्] हिंसा भाग० ५।९।१५।
वैश्रवस्यम् [विश्रवस्+ष्यञ्] विश्वासन।
वैष्टिक बेगार करने वाला, जिसे कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़े।
वैष्णवस्थानकम् (नाटक०) रंगमंच पर लम्बे-लम्बे डग भर कर इधर-उधर टहलना।
वोलक आवर्त, भँवर, चक्कर।

व्यक्ष- विषुवद् रेखा, भूमध्यरेखा ।
व्यङ्कुश (वि०) अनियमित निरंकुश ।
व्यङ्गः [प्रा० ब०] इस्पात ।
व्यजनक्रिया पंखा झलना ।
व्यञ्जना शुद्ध उच्चारण, स्पष्ट उच्चारण—हीनव्यञ्जनया प्रेक्ष्य—रा० २।६४।११ ।
व्यतिकर 1. उत्तेजना, उकसाहट भाग० २।५।२२ 2 विनाश—भाग० १।७।३२ ।
व्यतिक्रमः [वि+अति+क्रम्+घञ्] उल्लंघन, अतिक्रमण तथाव्यतिक्रमं दृष्ट्वा महा० ३।१२।२९ ।
व्यतिषङ्गः [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1 प्रतियुद्ध, शत्रु से भिड़त 2 विनिमय ।
व्यथित (वि०) [व्यथ्+क्त] 1 कष्टग्रस्त पीड़ित 2 क्षुब्ध, डरा हुआ ।
व्यपायनम् [वि+अप+आ+इ+ल्युट्] अपगमन, पलायन, पीछे हटना ।
व्यपवर्गः [वि+अप+वृज्+घञ्] 1 प्रभाग 2 समाप्ति ।
व्यपाश्रय [वि+अप+आ+श्रि+अच्] आश्रयस्थान, सहारा ।
व्यपोह् (भ्वा० पर०) 1 प्रायश्चित्त करना 2 स्वस्थ होना 3 दूर भगाना ।
व्यभिचारकृत् (वि०) अनुचित यौन संबंध करने वाला ।
व्यभिचारिन् (वि०) [वि+अभि+चर्+णिच्+णिनि] 1. कुमार्गगामी दुश्चरित्र 2 अस्थायी ।
व्यय [वि+इ+अच्] (व्या० में) रूपान्तर, शब्द या धातु का विभक्ति में प्रत्यय लगा कर रूप बनाना ।
व्ययशेष खर्च काट कर बची हुई राशि, निवलशेष ।
व्यवच्छेद [वि+अव+छिद्+घञ्] विनाश ।
व्यवधानम् [वि+अव+धा+ल्युट्] (मीमांसा) दुरूह रचना, क्लिष्ट रचना ।
व्यवहित (वि०) [वि+अव+धा+क्त] दूर पार का दूरवर्ती । सम० —कल्पना शब्दों की एक रचना प्रणाली जिसमें एक दूसरे से वियुक्त शब्दों को मिला कर एक वाक्य बनाया जाय ।
व्यवसर्गः [वि+अव+सृज्+घञ्] परित्याग ।
व्यवसायात्मक (वि०) उत्साह से पूर्ण ।
व्यवसायात्मिका (स्त्री०) दृढ़संकल्प से युक्त ।
व्यवस्थानम् [वि+अव+स्था+ल्युट्] निश्चित सीमा ।
व्यवस्थितविकल्पः निश्चित विकल्प ।
व्यवहारः [वि+अव+हृ+घञ्] 1. संविदा 2. गणित के चाल या बल 3. व्यापार 4. मुकदमा 5 प्रथा, रीतिरिवाज । सम०—अर्थिन् (वि०) वादी, मुद्दई, —वादिन् (वि०) जो प्रचलन के आधार पर तर्क करता है ।
व्यवहृतम् [वि+अव+हृ+क्त] व्यापारिक लेन-देन ।

व्यवाय. [वि+अव+अय्+घञ्] 1. दूरी, पार्थक्य 2 प्रवेश, घुसाना ।
व्यसनब्रह्मचारिन् (वि०) साथ-साथ दुःख भोगने वाला ।
व्यसनावासः विपत्ति का घर ।
व्यस्तपुच्छ (वि०) फैलाई हुई पूंछ वाला ।
व्यस्तिका (अ०) बाहों को फैलाकर तथा पैरों को चौड़ा करके (खड़ा होना) ।
व्याकृ (तना० उभ०) भविष्यवाणी करना (बुद्ध०) ।
व्याकरणम् [वि+आ+कृ+ल्युट्] 1 भेद अन्तर 2 भविष्यवाणी ।
व्याकोच (वि०) (फूल की भांति) खिला हुआ, पूर्ण विकसित ।
व्याकोप [वि+आ+कुप्+घञ्] विरोध खंडन ।
व्याक्रोश [वि+आ+क्रुश्+घञ्] चिल्ला चिल्ला कर गालियां देना भर्त्सना करना ।
व्याघारित (वि० जिस पर घी (या तेल) का छींटा दिया गया हो (इसी अर्थ में अभिघारित भी) ।
व्याघूर्णित (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+क्त] लुढ़का हुआ, चक्कर खाया हुआ, व्याघूर्णजगद्घ्नकुण्डकुहरो स नारा० ।
व्याघूर्णत् (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+शतृ] लुढ़कता हुआ, चक्कर खाता हुआ ।
व्याजनिद्रा झूठमूठ की नींद, मन मार कर सोना ।
व्याजव्यवहार कौशलपूर्ण व्यवहार ।
व्याजिह्म (वि०) [वि+आ+जिह्+मन् ह्रस्वादि नि०] कुटिल, तोड़ा मरोड़ा हुआ, झुका हुआ भूमयत्यव्याजिह्मपु-रत्नाम्भिष —भाग० ५।१७ ।
व्याधिनिग्रह रोग को नियंत्रित करना ।
व्याधिस्थानम् शरीर ।
व्याप्तिवादः विश्वव्यापकता का सिद्धान्त ।
व्यापारक (वि०) [वि+आ+पृ+णिच्+ण्वुल्] व्यापारग्रस्त व्यवसाय में लगा हुआ ।
व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र्+अच्] 1 असंगत 2 मिला-जुला 3 संदिग्ध, भ्रामक— व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे —भग० ३।२ ।
व्यामिश्रकम् [वि+आ+मिश्र्+ण्वुल्] नाटकीय संभाषण जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग हुआ हो —रा० २।१।२७ पर टीका ।
व्यायामः [वि+आ+यम्+घञ्] सैनिक अभ्यास, फौज की कवायद ।
व्यावर्जित (वि०) [वि+आ+वृज्+क्त] झुका हुआ ।
व्यावहारिकसत्ता भौतिक अस्तित्व ।
व्यावृत्त (वि०) [वि+आ+वृत्+क्त] परिवर्तित —महा० १२।१४१।१५ ।
व्यासपीठम् पुराणों के व्याख्याता का पद या गद्दी ।

व्यासपूजा गुरु और व्यास की पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमा को होती है।

व्यासासमासौ (द्वि० व०) वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से।

व्युत्क्रान्तजीवित (वि०) मृत, निर्जीव।

व्युत्था (भ्वा० आ०) 1 जीत लेना 2. दूर करना।

व्युपरत (वि०) [वि + उप + रम् + क्त] विश्रान्त, समाप्त, मृत।

व्यूहविभाग: सेना को भिन्न-भिन्न व्यूहों में बाँटना।

व्येक (वि०) जिसमें एक कम हो।

व्योमरत्नम् सूर्य।

व्योमसंकाशा चितकबरी गाय।

व्रजभाषा मथुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।

व्रत:,-तम् [व्रज् + घ, अन्त्य त:] मानसिक क्रिया कलाप व्रतमिति च मानसं कर्म उच्यते—मी० सू० ६।२।२० पर शा० भा०। सम०—**धारणम्** एक धार्मिक व्रत का धारण करना।

व्रात्यकाण्ड: अथर्ववेद का एक काण्ड।

व्रात्यचर्या आहिण्डक या अवधूत का जीवन।

व्रीडादानम् संकोच एवं नम्रतापूर्वक दिया गया उपहार।

व्रीहिवापम् चावल की पौधा लगाना।

व्लेष्क: पाश, जाल।

श

शंस् (भ्वा० पर०) उन ऋग्मन्त्रों में स्तुति गान करना जो गायन के लिए निर्धारित नहीं किये गये अप्रगीतेषु शंसति—मी० सू० ७।२।१७ पर शा० भा०।

शंसित (वि०) [शंस् + क्त] ध्यान दिया गया या मान लिया गया जैसा कि "शंसितव्रत" में।

शंस्य (वि०) [शंस् + ण्यत्] 1 प्रशंसा के योग्य 2 ऊँचे स्वर से पठित।

शकटव्यूह एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह।

शकुलादनी 1 भूकीट, केंचुआ 2 एक जड़ीबूटी (कटकी)।

शक्य (वि०) [शक् + ण्यत्] श्रुतिमधुर शक्य प्रियवद प्रोक्त - इति हलायुध दश० २।५।

शङ्काभियोग: दोषारोपण करना या संदेह करना।

शङ्कराचार्य वेदान्तदर्शन का महत्तम आचार्य अद्वैतवाद का प्रवर्तक जिसने ब्राह्मण धर्म का पुनर्जीवित करने के लिए चतुर्मठ की स्थापना की।

शकुलगुच्छम् (मधुमक्खी या भीड़ आदि) कोड़ों का झुंड।

शकुफला शमी वृक्ष, जंडी का वृक्ष।

शङ्खः [शम् + ख] शंख का बना कंकण। सम० **आवर्त** शंख का झुकाव या गोलाई का मोड़, शम्बुकावर्त, —**समय:** शंख से निर्मित कड़ा बेला शंखध्वनि के द्वारा संकेतित समय।

शतम् (नपुं०) 1 सौ 2 कोई बड़ी संख्या। सम० तलवारें या ढाल जो सौ चन्द्राकृतों से सुसज्जित हो, —**चरणा** शतपदी, कनखजूरा, —**पोत**, मछली —**मयूख:** चन्द्रमा, —**लोचन:** इन्द्र का विशेषण।

शत्रुः [शद् + त्रुन्] 1. दुश्मन, रिपु 2. विजेता, हराने वाला। सम०—**निबर्हण** (वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला, —**कुलम्** रिपु का घर, —**लाव** (वि०) शत्रुओं को मारने वाला।

शनिचक्रम् शनि की स्थिति से शुभाशुभ जानने का एक आलेख, चित्र।

शपित (वि०) [शप् + क्त] शाप दिया हुआ।

शपथकरणम् शपथ उठाना।

शपथपूर्वकम् (अ०) शपथ उठाकर (कहना या करना)।

शफरक: पेटी, बर्तन—हर्ष० ४।

शब्दः [शब्द + घञ्] 1 आवाज (श्रुति विषय और आकाश का गुण) 2 ध्वनि, रव (पक्षियों या विभिन्न प्राणियों का) 3. सार्थक शब्द 4 व्याकरण 5 ख्याति लब्धशब्देन कौसल्ये रा० २।६३।११ 6 पुनीत प्रणव (ओम्)। सम०—**अक्षरम्** पुनीत प्रणव,—**इन्द्रियम्** कान, **गोचर:** 1. वाणी का विषय 2. श्रव्य **वैलक्षण्यम्** शाब्दिक भिन्नता, **संज्ञा** व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द, पा० १।१।६८ —**स्मृति:** (स्त्री०) भाषा विज्ञान।

शमात्मक (वि०) शान्त, स्वभाव से शान्तिप्रिय।

शमोपन्यास शान्ति के लिए बोलने वाला, शान्ति का समर्थन करने वाला।

शमनीय (वि०) [शम् + अनीय] शान्ति देने योग्य, मन को शान्ति प्रदान करने योग्य।

शमीकुण: वह समय जब कि शमी वृक्ष के फल आता है।

शम्भुतेजस् 1 शिव की आभा 2 स्कन्द का विशेषण।

शम्या [शम् + यत् + टाप्] 1 लकड़ी या चौखट 2. जूए की कील 3. एक प्रकार की वीणा 4 यज्ञपात्र 5. एक प्रकार का शल्यचिकित्सापरक उपकरण। सम० **क्षेप:, —पात** दूरी जहाँ तक कोई लकड़ी फेंकी जा सके।

शयनम् [शी+ल्युट्] 1. सोना, लेटना 2. बिस्तरा, खाट 3. सहवास, मैथुनसंबंध। सम०—पालिका सेविका जो राजा की शय्या बिछाती है,—भूमिः शयन कक्ष, सोने का कमरा।

शरक्षेपः बाण फेंकने की दूरी का परास।

शरणम् [शृ+ल्युट्] 1. संरक्षण, सहायता 2 शरणागार, शरणाश्रम 3. आवास, घर 4. विश्रामस्थान 5. आहत करना, हत्या करना। सम०—आपत्तिः शरणार्थ पहुँचना,—आलयः शरणगृह,—द (वि०),—प्रद (वि०) शरण देने वाला।

शरज्ज्योत्स्ना [शरद्+ज्योत्स्ना] शरदृतु की चाँदनी,—शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमकुटाम्-सौन्दर्य लहरी।

शरीरचिन्ता शरीर की देखभाल।

शरीरधातुः बुद्ध के शरीर की अवशिष्ट भस्म।

शरीराकारः, शरीराकृतिः } शारीरिक दर्शन, देह का आकार-प्रकार, सूरत, शक्ल, शरीर का डीलडौल।

शर्करा [शृ+करन्, कस्य नेत्वम्] 1 गन्ने से निर्मित शक्कर 2 कङ्कड़ 3 पत्थरों के टुकड़ों से बहुल भूमि 4 रेत 5 ठीकरा 6. सुनहरी भूमि—स्तिमितजलो मणिशुद्धशर्करः - रा० २।८१।१६।

शर्करिल (वि०) [शर्करा+इलच्] कङ्कड़ के कणों से युक्त (जैसे कि रेतीले तट की हवा)।

शर्मण्य (वि०) [शर्मन्+य] शरण देने वाला, संरक्षण देने वाला।

शलाका [शल्+आक] 1. खूंटी, कील 2 अंगुली—शलाकाजनपातितः—महा० ४।२३।२९। सम०—परीक्षा विद्यार्थी की परीक्षा लेने की रीति जिसके अनुसार पुस्तक में कहीं भी शलाका से संकेत किया जा सकता है,—पुरुषाः ६३ दिव्य जैन,—यन्त्रम् शल्य चिकित्सा से संबद्ध एक उपकरण,—कर्तृ (पुं०) जर्राह, शल्यचिकित्सक,—क्रिया शरीर में घुसे हुए काँटे आदि किसी पदार्थ को बाहर निकालना,—पर्वन् महाभारत का नवाँ खण्ड (पर्व)।

शवशयनम् कब्रिस्तान।

शवशिबिका अर्थी, शव को ले जाने वाली पालकी।

शवशफुली एक प्रकार की मछली।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1. हथियार 2 लोहा 3. इस्पात 4. स्तोत्र। सम०—कर्मन् शल्यक्रिया,—निपातनम् शल्यक्रिया,—व्यवहारः हथियार चलाने का अभ्यास।

शाखाकन्दकः लशुन, प्याज जैसी एक गांठदार कन्द।

शाकपात्रम् सब्जी की तश्तरी।

शाखा परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी विशेष शाखा द्वारा अनुसृत वेद पाठ जैसे शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि। सम०—अध्येतृ वेद की किसी विशेष शाखा के पाठ का पढ़ने वाला विद्यार्थी,—वातः वायु के कारण अंगों में पीड़ा।

शाङ्करपीठ शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित पाँच आध्यात्मिक केन्द्रों में से कोई सा एक।

शाङ्खायनः वेद का एक अध्यापक।

शाण्डिल्यस्मृतिः शाण्डिल्य द्वारा प्रणीत एक धर्मशास्त्र या विधि की पुस्तक।

शातक्रतव (वि०) [शतक्रतु+अण्] इन्द्र संबन्धी।

शातनम् [शो+णिच्, तङ्+ल्युट्] पैनाना, तेज करना, चमकाना।

शान्त (वि०) [शम्+क्त] प्रभावहीन किया हुआ, दूर किया हुआ। सम०—गुण (वि०) उपरत, मृत नृपे शान्तगुणे जाते - रा० २।६५।२४,—रजस् (वि०) 1 धूल रहित 2. निरावेश।

शान्ति (स्त्री०) [शम्+क्तिन्] विनाश, अन्त। सम०—कर्मन् पाप को दूर करने का कोई धार्मिक अनुष्ठान,—वाचनम् ऐसे वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ जो पाप को दूर करने वाले समझे जाते हैं।

शापग्रस्त (वि०) शाप के दुष्प्रभाव से जकड़ा हुआ।

शापाम्बु, शापोदकम् } शाप का उच्चारण करते समय दिये जाने वाले पानी के छींटे।

शाबरभाष्यम् मीमांसा सूत्रों पर किया गया भाष्य।

शामित्रम् [शम्+णिच्+इत्रच्] पशु बलि देने का स्थान।

शाम्बरिक [शम्बर+ठक्] बाजीगर।

शारद (वि०) [शरद्+अण्] चतुर, निपुण।

शारद्वत 'कृप' का नाम।

शारिशृङ्खला एक प्रकार का पासा, शतरंज खेलने की गोट।

शार्व (वि०) [शर्व+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला।

शालङ्कायन एक ऋषि का नाम।

शालङ्कि पाणिनि का नाम।

शाश (वि०) [शश+अण्] खरगोश से प्राप्त, खरगोश सम्बन्धी।

शासनम् [शास्+ल्युट्] 1. धार्मिक सिद्धान्त 2 शौच। सम०—दूषक (वि०) आदेश का पालन न करने वाला,—लङ्घनम् आज्ञा का उल्लंघन करना।

शास्त्रम् [शास्+ष्ट्रन्] 1 आदेश, आज्ञा 2. पावन, विधान, वेद का आदेश 3. ज्ञान का कोई विभाग 4. किसी विषय का सैद्धान्तिक पहलू—[illegible] शास्त्रे च विमृशतु—मालवि० १। सम०—अन्वित (वि०) शास्त्रीय नियमों के अनुकूल,—वक्तृ (पुं०) शास्त्रीय पुस्तकों का व्याख्याता,—वर्जित (वि०) सब प्रकार के नियम या विधि से मुक्त,—वादः शास्त्र के आधार पर किया गया तर्क।

शिक्यपाशः छींका लटकाने के लिए रस्सी ।

शिक्षा [शिक्ष्+अ+टाप्] 1. दण्ड 2. गुरु के निकट विद्याभ्यास 3. उपदेश 4. सलाह । सम० —**आचार** (वि०) (गुरु के) उपदेशों के अनुसार आचरण करने वाला ।

शिखण्डकः [शिखण्ड+कन्] 1. कूल्हे के नीचे शरीर का मांसल भाग 2 शैववाद में मुक्ति की एक विशेष अवस्था ।

शिखाबन्धः सिर के बालों का गुच्छा, चोटी बांधना ।

शिखिन् (वि०) [शिखा+इनि] 1. नोकदार 2. चोटीधारी 3. ज्ञान की चोटी पर पहुँचा हुआ 4 अभिमानी (पुं०) 1. मोर 2 अग्नि । सम० —**कण** आग की चिनगारी, —**भूः** स्कन्द का नाम, —**युक्** कामदेव ।

शिलामुद्रणम् 1. प्रस्तरमुद्रण, पत्थर के द्वारा छापने की प्रक्रिया 2. शिलालेख, पत्थर पर खुदवाया हुआ अनुशासन ।

शिलानिर्यासः शिलाजतु, शीलाजीत ।

शिलाचित (वि०) पत्थर पर बनाया हुआ ।

शिलीपदः पादस्फीति, फील पांव रोग ।

शिल्पगेहम् शिल्पकार का कारखाना, कारीगर के काम करने का स्थान ।

शिल्पजीविन् (वि०) कारीगरी का काम करके जीविकोपार्जन करने वाला व्यक्ति, शिल्पी ।

शिव (वि०) [शी+वन् पृषो०] 1. शुभ, मंगलमय, सौभाग्यसूचक 2 स्वस्थ, प्रसन्न, भाग्यशाली, (पुं०) 1. हिन्दुओं के त्रिदेव में से तीसरा 2 पारा 3. गुग्गुल, स्पिरिट 4 समय 5 नमक, छाछ । सम० —**अद्वैत** शैववाद का दर्शनशास्त्र, —**अर्कमणिदीपिका** अप्पयदीक्षित द्वारा रचित शैववाद पर एक ग्रन्थ, —**कामसुन्दरी** पार्वती का विशेषण, —**पदम्** मोक्ष, मुक्ति, —**बीजम्** पारा ।

शिशयिषा [शी+सन्+अङ्+टाप् धातोर्द्वित्वम्] सोने की इच्छा ।

शिशिरमथित (वि०) सर्दी से ठिठुरा हुआ ।

शिशुः [शो+कु, सन्वद्भाव , द्वित्वम्] 1 बच्चा, बाल 2. किसी भी जन्तु का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, बिल्लीटमा आदि) 3 छठे वर्ष में हाथी । सम० —**नामन्** (पुं०) ऊँट ।

शिश्नम्भर (वि०) विषयी, कामलोलुप ।

शिष्टविगर्हणम् बुद्धिमान् व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली निन्दा ।

शिष्टसम्मत (वि०) विद्वान् पुरुषों द्वारा माना हुआ ।

शीघ्रकेन्द्रम् ग्रहमार्ग से दूरी, फासला ।

शीघ्रपरिधिः (पुं०) ग्रहमार्ग का अधिचक्र ।

शीवर (वि०) 1. मनोरम, रमणीय 2. आनन्दप्रद, सुखमय ।

शीर्षच्छेदिक } (वि०) फांसी पर चढ़ाये जाने के योग्य,
शीर्षच्छेद्य } —**शीर्षच्छेद्यः** स ते राम तं हत्वा जीवय द्विजम्—उत्तर० २।२८ ।

शीर्षत्राणम् शिरस्त्राण, टोप ।

शीर्षपट्टकः दुपट्टा, साफा, पगड़ी ।

शुकसप्ततिः एक तोते के द्वारा अपनी स्वामिनी को सुनाई गई सत्तर कहानियों का संग्रह ।

शुक्रम् [शुच्+रक्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. सोना दौलत 3. वीर्य 4. किसी चीज का सत् 5. पुंस्त्वशक्ति, स्त्रीत्वशक्ति । सम०—**कृच्छ्रम्** मूत्रकृच्छ्र रोग, —**दोषः** वीर्य का दोष ।

शुक्लम् [शुच्+लुक्, कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. श्वेत वस्त्र 3. चाँदी 4. आँख की सफेदी का रोग । सम०—**क्षीरः** एक प्रकार का पौधा, —**देह** (वि०) पवित्र शरीर वाला ।

शुचिकल्पम् एक नवीन जिसके द्वारा आशिकवाली का प्रदर्शन किया जाता है ।

शुचिश्रवस् (पुं०) विष्णु का नाम ।

शुचिषद् (वि०) सन्मार्ग पर चलने वाला ।

शुण्डमूषिका छछूंदर ।

शुण्डादण्डः हाथी का सूंड ।

शुद्ध (वि०) [शुध्+क्त] 1. धोया हुआ, साफ़ किया हुआ, परीक्षित 2. पवित्र, निष्कलंक 3. ईमानदार, धर्मात्मा 4. विशुद्ध, खालिस जिसमें कुछ मिलावट न हो (विप० मिश्र) । सम० —**अद्वैतम्** अद्वैत की वह स्थिति जहाँ कि जीव और ईश्वर का तादात्म्य मायारहित माना जाता है, —**बोध** (वि०) (वेदान्त०) विशुद्ध ज्ञान से युक्त, —**भाव** (वि०) पवित्र मन वाला, —**विष्कम्भकः** नाटक का वह भाग जहाँ केवल संस्कृत बोलने वाले पात्र ही दिखाई दें ।

शुद्धिः [शुध्+क्तिन्] (गणित० में) शेष न छोड़ना ।

शुभमङ्गलम् सौभाग्य, कल्याण, अभ्युदय ।

शुल्काध्यक्षः चुंगी का अध्यक्ष ।

शुल्बसूत्रम् सूत्रग्रन्थ जिसमें श्रौत यज्ञकुण्डों की विविध गणनाप्रक्रिया समाविष्ट है ।

शुष्ककासः सूखी खाँसी ।

शुष्करुदितम् ऐसा रोना जिसमें आँसू न आयें ।

शूकः [श्वि+कक्, सम्प्रसारणम्] 1. प्रकम्प, सुराजक 2 समीर ।

शूद्रः [शुच्+रक्, पृषो० चस्य दः दीर्घश्च] हिन्दु समाज में चौथे वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह पुरुष के पैरों से उत्पन्न हुआ —पद्भ्यां शूद्रोऽजायत—ऋ० १०।९०।१२ ।) । सम० —**अन्नम्** शूद्र द्वारा दिया गया या परोसा गया भोजन, —**घ्न** (वि०) शूद्र की हत्या करने वाला, —**वृत्तिः** शूद्र का व्यवसाय, —**संस्पर्शः** शूद्र से छू जाना ।

शूर: [शूर+अच्] 1. नायक, योद्धा 2. शेर 3. चीता 4. सूर्य 5. साल का वृक्ष 6. मदार का पौधा 7. चित्रक वृक्ष 8. कुत्ता 9. मुर्गा। सम०—वाद: बौद्धों का अनस्तित्व सिद्धांत।

शूल: [शूल्+क] 1 त्रिशूल 2. बेधने योग्य पदार्थ 3. नोकदार हथियार 4. लोहे की सलाख (जिस पर रख कर मांस भूना जाता है) 5. किसी भी प्रकार का दर्द 6. मृत्यु। सम०—अङ्क: शिव का विशेषण -ये समाराध्य शूलाङ्कं—महा० १०।७।४७, -आरोपित (वि०) सलाख पर लटकाया हुआ, सूली पर चढ़ाया हुआ, -आरोप: सूली पर चढ़ाना।

शूल्यमांसम् भूना हुआ मांस।

शूष (वि०) [शूष्+अच्] 1. गुंजायमान 2. साहसी।

शृङ्गम् [शृ+गन् मुम्,ह्रस्वश्च] 1 सींग 2. पर्वत की चोटी 3. ऊँचाई 4 स्त्री का स्तन 5 एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह। सम०—ग्राहिका 1 प्रत्यक्ष रीति 2. (तर्क० में) एक पक्ष लेना।

शृङ्गिन् (वि०) [शृङ्ग+इनि] सींगों वाला जानवर (पुं०) बैल।

शृतपाक (वि०) पूर्णत: पका हुआ।

शृतशीत (वि०) उबाल कर ठंडा किया हुआ।

शेष: [शिष्+अच्] 1. अवशिष्ट वस्तु 2 प्रसाद, कृपा।

शेषाचल: } शेषाद्रि: } तिरुपति की पहाड़ियाँ।

शैक्य: [शिक्य+अण्] 1 एक प्रकार का गोफिया 2. लटकाया हुआ बर्तन।

शैथिल्यम् [शिथिल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता 2 शिथिलता, सुस्ती 3. (दृष्टि की) शून्यता 4 अवहेलना।

शैलगुरु (वि०) पहाड़ जैसा भारी।

शैलनिर्यासम् शिलाजीत।

शैलूषी [शिलूष+अण्+ङीप्] नटी, नर्तकी।

शोकविह्वल } शोकाकुल } (वि०) शोकपीडित, गम का मारा।

शोण [शोण्+अच्] लाल।

शोणितप (वि०) [शोणित+पा+क] रुधिर पीने वाला।

शोणितविस्रवम् रुधिरस्राव।

शोध: [शुध्+घञ्] शुद्धि, सफाई, विरेचन।

शोधनम् [शुध्+णिच्+ल्युट्] 1. मार्जन, परिष्करण 2. पाप अपराधादि से शुद्धि।

शोभनाचरितम् सुन्दर आचरण, सदाचरण।

शोटी वनहल्दिया, पीली हल्दी।

शोषयित्नु: [शुष्+इत्नुच्] सूर्य।

शौङ्गेय: 1. गरुड़ 2. बाज, श्येन।

शौचम् [शुचि+अण्] (तर्पण के लिए) जल।

शौण्डीर्यम् [शौण्डीर+ष्यञ्] 1. शूरवीरता, पराक्रम 2. अभिमान, घमंड।

शौर्यकर्मन् (नपुं०) शूरवीरता का कार्य।

श्वीन (वि०) [श्वस्+ख, टिलोप.] आगामी कल से संबंध रखने वाला।

श्मश्रुकर नाई, हजामत बनाने वाला।

श्मश्रुशेखर नारियल का पेड़।

श्याम: [श्यै+मक्] तमाल का पेड़।

श्यामवल्ली काली मिर्च।

श्यामा दुर्गादेवी का तान्त्रिक रूप।

श्येनकपोतीय (वि०) आकस्मिक संकट।

श्येनपात: बाज का झपट्टा।

श्रद्धाजाड्यम् अंध विश्वास।

श्रद्धेय (वि०) [श्रत्+धा+यत्] विश्वासयोग्य,-श्रद्धेया विप्रलब्धार:—कि० ११।३५।

श्रम् (प्रेर० श्र-श्रामयति) 1 थकाना 2 जीतना, हराना।

श्रमविनोद: क्लांति दूर करना, विश्राम करना।

श्रमार्त (वि०) थक कर चूर-चूर, थकान से पीड़ित।

श्रवणपत्रम् कान की बाली।

श्रवणम्,-ण: [श्रु+ल्युट्] 1 कान 2 त्रिकोण की एक रेखा 3 सुनने की क्रिया। सम० -पूरक कर्णाभरण, -पूरक: कान की बाली, कर्णफूल,— प्रात्यक्षिक: श्रवणगोचर वस्तु, कानों में आना, -भृत (वि०) कहा गया।

श्राद्धमित्र: श्राद्ध के द्वारा बनाया गया मित्र।

श्राद्धार्ह } श्राद्धीय } (वि०) श्राद्ध के लिए उपयुक्त।

श्रावक: [श्रु+ण्वुल्] वह ध्वनि जो दूर से सुनी जाय।

श्रितसत्त्व (वि०) स्वस्थ, शान्त।

श्रितसाहस (वि०) जिसने साहस का आश्रय लिया है, साहसी, दिलेर।

श्री [श्रि+क्विप्, नि० दीर्घ] वेदत्रयी, तीनों वेद।

श्रीमुकुटम् सोना, स्वर्ण।

श्रीमत् (पुं०) 1 तोता 2 सांड।

श्रुति [श्रु+क्तिन्] 1 वाणी 2 कीर्ति 3 उपयोग, लाभ 4 विद्वत्ता, पांडित्य। सम० -अर्थ: वैदिक अर्थसूत्रन, -जाति: नाना प्रकार के दिक्स्वर, -कटुक (वि०) कानों को कष्ट देने वाला, -शिरस् उपनिषदें श्रुतिशिरस्सीमन्तमुक्तामणिम् प्रताप० १।१।

श्रेयोभिकांक्षिन् (वि०) कल्याण चाहने वाला।

श्रेष्ठगन्धिका कस्तूरी।

श्रेष्ठान्वय (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न।

श्रोणिबिम्बम् गोल नितम्ब -श्रोणिबिम्बचलदम्बर भजन रासकेलिरसडम्बरम्— नारा०।

श्रौतस्मार्त (द्वि० ब०) वेद और स्मृति से संबंध रखने वाला।
श्लथबन्धनम् 1. पुट्ठों का विश्राम देना 2. ढीली गाठ।
श्लाघाविपर्ययः शेखी बघारने का अभाव, प्रशंसा या चापलूसी का न होना।
श्लिष्टरूपकम् श्लेषयुक्त रूपक अलंकार, जिस रूपक के एक से अधिक अर्थ होते हों।
श्लेषः [श्लिष्+घञ्] 1 आलिंगन, मैथुन 2 व्याकरण विषयक आगम संयोग 3. एक शब्दालंकार जहाँ एक शब्द के कई अर्थों द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है।
श्लेषोपमा उपमा अलंकार जिसके दो अर्थ होते हों।
श्लेष्म[illegible]दाहः थूकदान।
श्लोक्य (वि०) [श्लोक्+ण्यत्] प्रशंसनीय।
श्वजीविका कुत्ते का जीवन, दासता।
श्वदंष्ट्रा 1 कुत्ते की दाढ़ 2 गोखरू का पौधा।
श्व[illegible]चिः [[illegible] चित्] चन्द्रमा।
श्वशुरगृहम् श्वसुरालय।
श्वसनमनोजव (वि०) वायु और मन की भाँति चंचल।
श्वसनरन्ध्रम् (नाक का) नथुना।
श्वसनसमीरणम् श्वास, साँस।
श्वास [श्वस्+घञ्] व्यञ्जनों के उच्चारण में महाप्राणता।
श्वःप्रभृति (अ०) आगामी कल से लेकर।
श्वोवसीयस (वि०) प्रसन्न, शुभ, मङ्गलमय।
श्वेत [श्वित्+अच्, घञ् वा] 1 सफेद कौड़ी 2. धूमकेतु, पुच्छलतारा 3 चाँदी का सिक्का 4. जीरे का बीज 5 शंख 6 सफेद रंग 7. शुक्र तारा। सम० -अंशुः चन्द्रमा, -अश्वः अर्जुन, -कपोतः 1. एक प्रकार का चूहा 2 एक प्रकार का साँप, -क्षारः यवक्षार, शोरा, —रसः छाछ और पानी बराबर-बराबर मिले हुए —वाराहः कल्प का नाम जो आजकल बीत रहा है।

ष

षडंशः छठा भाग।
षडष्टकम् फलित ज्योतिष का एक योग।
षडूर्मि अस्तित्व की छः लहरें।
षट्पदः 1 मधुमक्खी, भौंरा 2 गीति छन्द।
षड्ऋतु (पुं० ब० व०) छः ऋतुएँ।
षड्भाववाद 'द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय' इन छः द्रव्यों की स्वीकृति पर आधारित सिद्धान्त।
षाडव 1 रसराग की एक जाति जिसमें केवल छः स्वर आते हैं 2 मिठाई, हलवाई का कार्य।
षोडशाह [illegible] का एक भाग।

स

सयत् (स्त्री०) [सम्+यत्+[illegible]] लड़ाई, संग्राम। सम० -धाम (वि०) [illegible] रहने वाला जो सुखद है।
संयन्त्रित (वि०) [संयन्त्र+इतच्] रोका हुआ, बन्द किया हुआ।
संयम् (भ्वा० पर०) 1 रोकना, दमन करना, दबाना 2 सटाना, भींचना।
संयतमैथुन (वि०) जिसने मैथुन करना त्याग दिया है।
संयति [सम्+यम्+क्तिन्] तपश्चर्या, निरोध, संयमन।
संयम [सम्+यम्+अप्] प्रयत्न, उद्योग।
संयोग [सम्+युज्+घञ्] 1 (दर्शन०) भौतिक संपर्क 2 शारीरिक संपर्क 3 योगफल। सम० -विधि 1 सम्मिश्रण की प्रक्रिया 2 जीव और ईश्वर के सायुज्य को दर्शानेवाली वेदान्त की [illegible]।
संयुति [सम्+यु+क्तिन्] (गणित०) दो या दो से अधिक संख्याओं का योगफल।
संरभ् (भ्वा० आ०) करना, प्रवृत्त रहना इत्येव तत्र संरभ्य विलपन्त महा० १२।१९४।३२।
संरब्धनेत्र (वि०) जिसकी आँखें सूज गई हों।
संरब्धमान (वि०) जिसके अभिमान को आघात लग चुका है।
संरम्भ [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1 घृणा, द्वेष — संरम्भयोगेन विन्दते तत्स्वरूपताम् भाग० ७।१।२८ 2 (युद्ध का) वेग, आक्रमण की प्रचण्डता।
संराद्धि [सम्+राध्+क्तिन्] निष्पत्ति, सफलता।
संरुद्ध (वि०) [सम्+रुध्+क्त] 1 बाधायुक्त (शनि) फाल्गुनां मासमरुद्धो देवत्वेन भारत—महा० ६। [illegible] 2 [illegible]।

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] बंधन, क़ैद।
संरूढ (वि०) [सम्+रुह्+क्त] जो गहराई तक घुसा हुआ हो—ततो मांसतिथिच्छस्त्वं संरूढशरविक्षतम् —महा० ३।१७४।११।
संवत्सरनिरोधः एक वर्ष की क़ैद।
संवद् (भ्वा० पर०) परस्पर मिलाना।
संवदनम् [संवद्+ल्युट्] संदेश।
संवादः [सम्+वद्+घञ्] अभियोग, मुक़दमा।
संवादविद्या (दर्शन०) अवलोकन या विश्लेषण का शास्त्र।
संवासः [सम्+वस्+घञ्] सहवास।
संवाहनम् [सम्+वह्+ल्युट्] 1. मार्गदर्शन करना, नेतृत्व करना 2. प्रदर्शन करना, दिखलाना।
संविग्न (वि०) [सम्+विज्+क्त] 1. क्षुब्ध, उत्तेजित 2. भयभीत, डरा हुआ 3. इधर-उधर चक्कर लगाता हुआ।
संविज्ञानम् [सम्+वि+ज्ञा+ल्युट्] 1. सहमति, अनुमोदन 3. सम्यक् ज्ञान 4. प्रत्यक्ष ज्ञान।
संविद् [सम्+विद्+क्विप्] 1. मतैक्य—त्सुतीरकमथामान्यां संविदं वेद निश्चितम् महा० १२।१५१।६ 2. किनारा—संविदा वेलम्—ऐ० उ० १।११।११।
संविधा (स्त्री०) [सम्+वि+धा+क्विप्] व्यवस्था—रावणः संविधं चक्रे महा० ३।२८०।२।
संविभक्त (वि०) [सम्+वि+भज्+क्त] बांटा हुआ, विभाजित, पृथक् किया हुआ।
संवेगः [सम्+विज्+घञ्] फुर्ती।
संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] सोना, नींद लेना संवेशनोत्थापनयोः—प्रतिमा०।
संवारः सम्+वृ+घञ्] बाधा, विघ्न।
संवृतसंवार्य (वि०) जो गोपनीय बातों को गुप्त रखता है।
संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] सिकोड़ना, सिकुड़न,—पर्याप्तम् सम्पूर्णमण्डलः संवर्तविस्तारयोः -म० वी० ५।१।
संवलित (वि०) [सम्+वृत्+क्त] 1. लिपटा हुआ, लपेटा हुआ 2. बराबर बाँटा हुआ।
संवृद्धिः [सम्+वृध्+क्तिन्] पूर्णवृद्धि, अभ्युदय, शक्ति।
संव्यस् (दिवा० पर०) व्यवस्थित करना, एकत्र करना।
संव्यूहः [सम्+वि+ऊह्+घञ्] व्यवस्था, क्रमस्थापन।
संशित (वि०) [सम्+शो+क्त] अपने संकल्प को दृढ़ता पूर्वक निभाने वाला (जैसा कि 'संशितव्रत' कड़ाई के साथ अपना व्रत पूरा करने वाला)।
संशयाक्षेपः एक अलंकार जिसमें संदेह का निवारण समाविष्ट होता है।
संशयोपमा संदेह के रूप में व्यक्त तुलना।
संशुष् (दिवा० पर०) शुष्क करना, सुरक्षित रखना (आकाश से)—संशोष्य विविधं मार्गं—मनु० ७।१८५।
संश्रि (भ्वा० उभ०) सम्भोगसुख के लिए पहुँचना।
संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] 1. आसक्ति 2. किसी पदार्थ का कोई अंश।
संश्रवस् (नपुं०) [सम्+श्रु+असुन्] पूरी कीर्ति या ख्याति।
संश्लिष्ट (वि०) [सम्+श्लिष्+क्त] मिश्रित, अव्यवस्थित,—ष्टम् (नपुं०) राशि, ढेर।
संसक्त (वि०) [सम्+सञ्ज्+क्त] 1 विषयासक्त 2 अनुरक्त।
संसज्जमान (वि०) [सम्+सञ्ज्+शानच्] 1 साथ लगने वाला 2 संकोच करने वाला, झिझकने वाला,—बाष्पमाणेन न भाषेत वाचा संसज्जमानया—रा० २।२५।३९।
संसदनम् [सम्+सद्+ल्युट्] खिन्नता, अवसाद।
संसिद्धिः [सम्+सिध्+क्तिन्] 1. अन्तिम परिणाम 2 अन्तिम लक्ष्य।
संसु (भ्वा० पर०) 1 स्थगित करना, उठा रखना 2 काम में लगाना।
संसारसागरः
संसाराब्धिः
संसारार्णवः } जन्म मरण का समुद्र।
संसारपङ्कः संसार रूपी कीचड़।
संसारवृक्षः सांसारिक जीवन रूपी वृक्ष।
संसेव् (भ्वा० आ०) 1 सम्मिलन करना 2. सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना 3. व्यसनी होना।
संसेवा [सम्+सेव्+अङ+टाप्] 1. (किसी सभा, समाज में) नित्यप्रति जाना 2. उपयोग, काम में लगाना 3. आदर सत्कार, पूजा अर्चना।
संस्कृ (तना० उभ०) 1. शमन करना—ये पक्षापरपक्षदोषसहिताः पापानि संस्कुर्वते—मृच्छ० ९।४ 2. वर्गान्तता पर पहुँचना (गणित०)।
संस्कारवती (स्त्री) जिसे चमका कर उज्ज्वल कर दिया गया है—संस्कारवत्येव गिरा मनीषी—कु० १।२८।
संस्कारवत्त्वम् प्रमार्जन, परिष्कार—कि० १७।६।
संस्कृतात्मन् (वि०) आध्यात्मिक अनुशासन, या धर्मकृत्यों के द्वारा जिसने अपने आपको पवित्र कर लिया है।
संस्कृतिः [सम्+कृ+क्तिन्] 1. परिष्कार 2 तैयारी 3 पूर्णता 4 मनोविकास।
संस्तम्भनम् [सम्+स्तम्भ्+ल्युट्] रोकना, बंधन में डालना, पकड़लेना।
संस्तीर्ण (वि०) [सम्+स्तृ+क्त] बिखराया हुआ, फैलाया हुआ—अभिक्रान्तः प्राप्त संस्तीर्णबर्हीः—बा० ४।८।

संस्था (भ्वा० आ०—प्रेर०) 1 (नगर) निर्माण करना 2 पुन स्थापित करना 3 दाह संस्कार करना, (जैसे अस्थिसंस्थापनम्) अस्थि प्रवाहित करना, या जल समाधि देना।

संस्था [सम्+स्था+अङ्+टाप्] 1 सहमति कृता संस्थामतिक्रान्ता — रा० ४।५७।१८ 2 दाह संस्कार 3 सिपाही, गुप्तचर।

संस्थावृक्षः गमले में लगा पौधा कौ० अ० १।२०।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1 सरकार को सस्थिर रखने का कार्य — कौ० अ० २।७ 2 भाग, प्रभाग, खंड 3 सौन्दर्य, कीर्ति।

संस्थित (वि०) [सम्+स्था+क्त] सुव्यवस्थित संस्थितशास्त्रविधाय —रा० ३।३१।४६।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्] 1 एक ही अवस्था में पंक्ति बद्ध रहना 2. महत्त्व देना 3 रूप, शक्ल 4 सातत्य, नैरन्तर्य।

संहत (वि०) [सम्+हन्+क्त] 1 सुदृढ़ अंगों वाला 2 मारा गया।

संहतहस्त (वि०) एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए।

संहतिः [सम्+हन्+क्तिन्] 1 संधि, (कपड़े की) सीवन 2 मोटा होना, सूजन।

संह्वृ (भ्वा० पर०) विपथगामी करना, भटकाना, भ्रष्ट करना—ध्रुवान् भक्तानसंह्वार्यान् —महा० १२।५७।२३ पर भाष्य।

संहाररुद्रः संहार करने वाला रुद्र देवता।

सकर (वि०) 1 कर युक्त, हाथों वाला 2 कर लगाने योग्य 3 किरणों से युक्त।

सकीलः वह पुरुष जो इतना पुंस्त्वहीन है कि स्वयं संयोग करने के पूर्व अपनी स्त्री को परपुरुष के पास भेजता है।

सकृत्स्नायिन् (वि०) केवल एक बार स्नान करने वाला मनु० ११।२१४।

सकृदाहृत (वि०) जो राशि एक किश्तों में न चुकाकर एकमुश्त चुकाई गई हो।

सकृद्गतिः संभावनामात्र, केवल एक ही विकल्प।

सकृद्विभात (वि०) जो तुरन्त प्रकट हो गया है।

समतिक (वि०) संबंधबोधक अव्यय से जुड़ा हुआ।

सङ्कष्टहरचतुर्थी गणेश की पूजा करने का शुभ दिन माघ कृष्ण या भाद्रकृष्ण चतुर्थी।

सङ्कालनम् [सम्+कल्+णिच्+ल्युट्] दाहसंस्कार।

सङ्कर्षण [सम्+कृष्+ल्युट्] अहंकार।

सङ्करः [सम्+कृ+अप्] गोबर।

सङ्करज } (वि०) जिसके मातापिता भिन्न भिन्न जाति
सङ्करजात } के हों, भिन्न मातापिता की सन्तान।

सङ्करीकरणम् जातियों का मिश्रण।

सङ्कल्प् (भ्वा० आ०) और्ध्वदैहिक कृत्य करना। अन्त्येष्टि करना।

सङ्कल्पप्रभव (वि०) इच्छा से ही उत्पन्न, मानस —सङ्कल्पप्रभवान् कामान् भग०।

सङ्कल्पमूल (वि०) किसी इच्छा पर आधारित।

सङ्क्रन्द [सम्+क्रन्द्+घञ्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. विलाप।

सङ्क्रमणम् [सम्+क्रम्+ल्युट्] मृत्यु —रा० २।११।१२।

सङ्क्रोशः [सम्+क्रुश्+घञ्] ऊँचे स्वर से विलाप करना।

सङ्क्लिष्ट (वि०) [सम्+क्लिश्+क्त] 1. जिस पर खरोंच आ गई हो 2. जिस पर धब्बा आदि पड़ गया हो धूमिल, मलिन।

सङ्क्षय [सम्+क्षि+अच्] 1 शरणागार, घर 2. मृत्यु।

सङ्क्षेपः [सम्+क्षिप्+घञ्] विनाश।

सङ्क्षोभणम् [सम्+क्षुभ्+ल्युट्] क्षोभ का प्रबल आघात, धक्का।

सङ्ख्या [सम्+ख्या+अङ्+टाप्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. नाम 3 ज्यामितिपरक अङ्क।

सङ्ख्यावाचकम् अंक।

सङ्गम् (भ्वा० आ० प्रेर०) 1 दे देना, सौंप देना 2. हल्का करना।

सङ्गतगात्र (वि०) जिसके शरीर में झुर्रियाँ पड़ गई हैं, या सिकुड़ गया है।

सङ्गति [सम्+गम्+क्तिन्] (मीमांसा०) अधिकरण के पाँच अंगों में से एक।

सङ्गुप्ति [सम्+गुप्+क्तिन्] 1. संरक्षण 2. गोपन, गुप्त रखना।

सङ्गोपनम् [सम्+गुप्+ल्युट्] सर्वथा गुप्त रखना।

सङ्ग्रह [सम्+ग्रह्+अच्] छोड़े हुए शस्त्रास्त्रों को वापिस ग्रहण करना।

सङ्ग्रामकर्मन् (नपुं०) युद्ध करना, लड़ाई लड़ना।

सङ्ग्रामपूर्वम् (पुं०) युद्ध का अग्रिम क्षेत्र।

सङ्घवृत्तम् नियम आदि सकार्यों का मिलकर कार्य करने का ढंग (आचरण) कौ० अ० ११।

सङ्घात [सम्+हन्+घञ्] 1 सहयोग— यत्र कोकिल-सङ्घाता —महा० १२।९८।३१ 2 कठोर भाग 3. युद्ध 4 हड्डी 5 सहमना 6 समूह।

सङ्घचारिन् (वि०) समूह में मिलकर चलने वाला।

सङ्घमृत्युः सबकी एकदम मृत्यु।

सङ्घातशिला कड़ा पत्थर जिसपर (नारियल जैसी) वस्तुएँ तोड़ी जाती हैं, पत्थर जैसा कठिन पदार्थ।

सङ्घर्ष [सम्+घृष्+घञ्] 1 शत्रुता 2. कामोत्तेजना।

सङ्घर्षी तरल लाख।

सचराचर (वि०) चर तथा अचर वस्तुओं समेत।

सजागर (वि०) जागरूक, सावधान, सतर्क।

सज्य (वि०) [सज्ज्+अच्] 1 सूत में पिरोया हुआ 2. धनुष की डोरी पर ताना हुआ।

सञ्चयक [सम्+चि+अ, स्वार्थे कन्] साँचा (जैसा कि ईंट पाथने वाले प्रयुक्त करते हैं)।

सञ्चार [सम्+चर्+णिच्+घञ्] 1 मुग्ध करना —संचारः पञ्चवर्गेनाम्यां परमोहनम्—महा० १२।५९।४८ पर भाष्य 2. (जंगली जानवरों के) पदचिह्न।

संचस्कारयिषु (वि०) जीवनसंबंधी धर्मकृत्यों का अनुष्ठान करने का इच्छुक।

सञ्जनन (वि०) [सम्+जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला उत्पादक।

सञ्जातनिर्वेद (वि०) खिन्न, अवसन्न, उदास।

सञ्जातविश्रम्भ (वि० विश्वस्त, भरोसे वाला।

सम्वद् (भ्वा० पर०) प्रतिवेदन देना, वक्तव्य देना।

संजिहान (वि०) [सम्+हा+शानच् धातोर्द्वित्वम्] त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

संडक (वि०) [संड+कन्] नाश करने वाला—कथं करिष्याम संन्यास दुष्कर्षकम्—महा० १२।२७१।३।

संज्ञपित (वि०) [सम्+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागम] बलि दिया गया, नष्ट किया गया—भाग० ४।२८।२६।

संज्ञा [सम्+ज्ञा+क] 1. पगडंडी, पदचिह्न 2. दिशा 3. पारिभाषिक शब्द।

संज्ञासूत्रम् वह सूत्र जिसके आधार पर किसी पारिभाषिक शब्द का निर्माण होता है।

सटाक्षेपः अयाल (केसर) का लहराना—सटाक्षेपभिन्नघनसंहतिः—दुर्गा० ७।

सतोद (वि०) पीड़ित, चुभन जैसी पीड़ा से ग्रस्त।

सत्क्रिया समारोह, अनुष्ठान।

सत्तम (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ (समस्त शब्दों के अन्त में प्रयुक्त जैसे आचार्यसत्तम)।

सत्त्रम् [सद्+ष्ट्रन्] बनावटी रूप, छद्मवेश।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र+इनि] 1 सहपाठी कौ० अ० १।११ 2 विश्वस्त राजदूत।

सत्त्वम् [सत्+त्व] 1. बुद्धि 2. सूक्ष्म शरीर।

सत्त्वतनुः विष्णु का विशेषण।

सत्त्वयोगः 1. मर्यादा 2. जीवन-प्रकाशन, प्राण प्रदान—निजे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा—ह० २।१०।

सत्यम् [सत्+यत्] 1. मोक्ष 2 सचाई 3 निष्कपटता 4. पवित्रता 5 प्रतिज्ञा 6. जल 7 ईश्वर। सम० —आदानः संन्यास,—क्रिया, शपथ ग्रहण करना, —भेदिन् (वि०) प्रतिज्ञा भंग करने वाला,—वचनम् वास्तविक तथ्य,—वीर्तिकम् आध्यात्मिक और भौतिक विश्व,—शीलिन् (वि०) सच बोलने वाला, —संगरः सच्ची प्रतिज्ञा,—संकल्प (वि०) जिसका प्रयोजन या धारणा सत्य है।

सत्रन्यायः मीमांसा का एक नियम जिसके आधार पर एक से अधिक स्वामियों द्वारा अनुष्ठान होने पर यज्ञ में एक ही स्वामी को प्रतिनिधित्व दिया जाता है मी० सू० ६।३।२२ पर शा० भा०।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र+इनि] सहयोगी सहपाठी।

सदर्थः मुख्य विषय या प्रकरण।

सद् [सद्+क्विप्] सभा— भाग० ७।१।२१।

सदोऽजिरम् [सदस्+अजिरम्] दालान, बहुकोष।

सदसस्पतिः [अलुक् समास] सभापति।

सदोत्थायिन् (वि०) सदैव सक्रिय।

सदातन (वि०) सदा रहने वाला, शाश्वत।

सदृशविनिमय (वि०) समान विषयों में भूल करने वाला।

सद्धर्मः वास्तविक कर्तव्य।

सद्यस्कार (वि०) तुरन्त ही अनुष्ठित होने वाला।

सद्यःप्रक्षालक (वि०) जिसके पास केवल एक ही दिन की भोजन सामग्री विद्यमान है—सद्यः प्रक्षालको वा स्यान्माससंचयिकोऽपि वा मनु० ६।१८।

सनत्सुजातः ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में एक।

सनत्सुजातीयम् महाभारत का एक अध्याय जिसमें सनत्सुजात का दार्शनिक व्याख्यान निहित है।

सनातनधर्मः वेदों में प्रतिपादित अत्यन्त प्राचीन धर्म।

सनिकारः (वि०) अपमानजनक।

सन्तानकः [सम्+तन्+घञ्+कन्] 1 स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक, कल्पतरु या उसका फूल 2 लोक-विशेष।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] सुख देना प्रसन्नता देना, सन्तुष्ट करना।

सन्तृण्ण (वि०) [सम्+तृद्+क्त] संयुक्त, मिलाकर बाँधा हुआ।

सन्तारः [सम्+तृ+घञ्] 1 पार करना 2 तीर्थ, घाट।

सन्दंश [सम्+दंश्+अच्] 1 पुस्तक का एक अनुभाग 2 गाँव का एक किनारा।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] हाथी के गण्डस्थल का वह भाग जहाँ से दान झरता है।

सन्देशवचनानि सन्देश के शब्द।

सन्दिग्धपुनरुक्तत्वम् (अलं०) अनिश्चयता के कारण दोबारा कहना।

सन्देहालङ्कारः अलंकार विशेष जिसमें सन्देह बना रहता है।

सन्देह्य (वि०) [सम्+दिह्+ण्यत्] संदिग्ध, संदेह से पूर्ण।

सन्दृब्ध (वि०) [सम्+दृभ्+क्त] मिलाकर धागे में पिरोया हुआ।

सन्धर्षः [सम्+धृष्+घञ्] प्रतीति, धृष्टि ।
सन्धर्षणम् [सम्+धृष्+ल्युट्] काम, उपभोग ।
सन्धिः [सम्+धा+कि] भूखंड जो मन्दिर के लिए धर्मार्थ दिया गया हो कौ० १ में डा० राघवन की टिप्पणी वृत्तिसन्धिप्रतिपादकः ।
सन्धिन् (पुं०) [सम्+धा+इनि] सन्धि इत्यादि का काम करने वाला मन्त्री ।
सन्ध्यापयोदः सन्ध्याकालीन बादल ।
सन्नजिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा बंधी हुई है, जो चुप है ।
सन्नधी (वि०) हतोत्साह, उत्साहहीन ।
सन्नभाव (वि०) निराश ।
सन्नस्वन (वि०) मन्द स्वर से बोलने वाला ।
सन्नादः [सम्+नद्+घञ्] शोरगुल हुल्लड़ ।
सन्नद्ध (वि०) [सम्+नह्+क्त] पूर्ण, भरा हुआ —परमानन्दसन्नद्धो मन्त्री दश० ११३ ।
सन्नतगात्री झुके हुए शरीर वाली महिला ।
सन्नतभ्रू (वि०) भ्रुकुटिविलासयुक्त, त्योरी चढ़ाए हुए ।
सन्नद्धयोध (वि०) जिसकी सेना लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है ।
सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1 आनुमिक विषय या विचार वेदांपवर्कसन्निकर्षे पुरुषाख्या—मी० सू० ११११७७ ।
सन्निपत्य (अ०) [सम्+नि+पत्+य (क्त्वा)], तुरन्त, प्रत्यक्ष, सीधे ।
सन्निपत्योपकारिन् (वि०) भाग या अङ्ग जो सीधा प्रधान का काम दे—मी० सू० १२।१।११ पर शा० भा० ।
सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1 मैथुन 2. युद्ध 3 ग्रहों का विशेष संयोग ।
सन्निपातिन् (वि०) [सन्निपात+इनि] ऐसा अंग जो प्रधान का कार्य करे—मन्त्राश्च सन्निपातित्वात् -मी० सू० १२।१।१९ ।
सन्निभृत (वि०) [सम्+नि+भृ+क्त] 1. गुप्त 2. चतुर, शिष्ट ।
सन्निरुद्ध (वि०) [सम्+नि+रुध्+क्त] 1. नियन्त्रित, रोका हुआ 2 पूर्ण, भरा हुआ ।
सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] 1 कैद 2 संकीर्णता ।
सन्निवायः [सम्+नि+वे+घञ्] सम्मिश्रण, समुच्चय ।
सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] डेरा डालना, शिविर स्थापित करना (जैसा कि "सेनासन्निवेशः") ।
सन्निसर्गः [सम्+नि+सृज्+घञ्]अच्छा स्वभाव, सज्जनतापूर्ण, उदाराशयता ।
सन्नी (उभा० पर०) भरना, पूर्ण करना ।
सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] ठहराव, करार ।
सन्न्याहृत (वि०) अत्यन्त घायल ।

सपरिच्छद (वि०) आवश्यक वस्तुओं से सुसज्जित, दलबल के साथ ।
सपरिहारम् (अ०) आरक्षण सहित ।
सपर्यापर्यायः पूजाकृत्यों की माला—अनल्पविस्मयस्तम्बपूजा सपर्यापर्यायस्तव जननि वर्ते विजयिताम् सौन्दर्य० ।
सप्तकोण (वि०) सात कोणों वाला ।
सप्तपातालम् सात पातालों का समूह ।
सप्तजिह्वः } अग्नि, आग ।
सप्तार्चिः }
सप्तस्वरः सगीत के सात स्वर (अर्थात्—सा, रि, ग, म, प, ध, नी) ।
सप्तास्र (वि०) सात कोणों वाला ।
सप्रख्यातम् दे० 'सम्प्रख्यातम्' ।
सप्रतीक्षम् (अ०) बहुत प्रतीक्षा के पश्चात् ।
सप्रकार (वि०) 1 साधिकारिक 2. समान आकार-प्रकार का ।
सप्रेष्य (वि०) अनुचरों द्वारा सेवित ।
सभक्तः एक ही भोजनशाला में भोजन करने वाला, सहभोजी ।
सभा [सह+भा+क+टाप्, सहस्य सः] 1. साधियों के लिए अतिथिशाला 2. भोजनशाला ।
सभागृहम् } सभा भवन ।
सभामण्डपः }
सभामध्ये (अ०) सभा में ।
सभार्हणीय (वि०) सभा के लिए उपयुक्त ।
सभाजित (वि०) [सभाज्+क्त] सम्मानित ।
सभोद्देशः (सभा+उद्देशः) सभाभवन के आसपास का स्थान ।
सम (वि०) [सम्+अच्] 1. मिश्रित, सामान्य 2. सरल, सुविधाजनक 3. बराबर, वैसा ही । सम०—आकृतिक (वि०) समान रूप से पैरों पर खड़ा हुआ,—कांक्षिन् (वि०) समानता चाहने वाला,—कालक (वि०) समास से युक्त,—भार (वि०) समान भार वाला, जिसके उत्तरदायित्व एक से हों,—गतिः वायु, समान रूप से गति करने वाला—मृत्युकालाभिहार-वान् समगतिः कालेन—महा० १२।२९८।१५,—धर्मा (वि०) एक से स्वभाव वाला,—शील (वि०) एक से शीलशील का, एक ही मापतोल का,—वर्तिन् (वि०) 1. निष्पक्ष 2. समान दूरी पर होने वाला, —विभक्त (वि०) समान रूप से बँटा हुआ, —विषमम् ऊबड़खाबड़, कहीं से नीचा तो कहीं से ऊँचा, श्रुति (वि०) समान अन्तराल से युक्त (संगीत०),—श्रेणिः सीधी पंक्ति, - आसन्नो अर्थ से आगे रहने वाला, - संक्रान्त (वि०) 1. संकुचे में से चुका हुआ 2. जो व्यतीत हो गया, मुक्त हुआ

3. उल्लंघन किया हुआ,—अभिसमयः पूरी समझ, —अनुवर्तिन् (वि०) आज्ञाकारी,—अभिप्लुत (वि०) मिल पड़ने वाला,—अभ्यासः निकटता, उपस्थिति।

समयच्युतिः ठीक समय का चूकना।

समयज्ञः 1. उपयुक्त समय का ज्ञाता 2. जो अपने मूल वचनों को याद रखता है।

समयविद्या ज्योतिष, भविष्यज्ञान।

समरारम्भः लड़ाई का छूट पड़ना।

समर्थक (वि०) [समर्थ्+ण्वुल्] 1. समर्थन करने वाला, प्रमाणित करने वाला 2. सक्षम, योग्य,—कम् (नपुं०) अगर काष्ठ, चन्दन की लकड़ी।

समर्थनम् [समर्थ्+ल्युट्] किसी हानि या अपराध की क्षति पूर्ति करना।

समर्थितम् (अ०) निश्चय से, यथार्थ रूप से।

समवस्कन्दः [सम्+अव+स्कन्द्+घञ्] दुर्गप्राचीर, परकोटा।

समवहारः [सम्+अव+हृ+घञ्] मिश्रण, संग्रह।

समवेक्षणम् [सम्+अव+ईक्ष्+ल्युट्] निरीक्षण, मुआयना।

समवेतार्थ (वि०) सार्थक, शिक्षाप्रद, बोधगम्य।

समस्यापूरणम् } किसी ऐसे श्लोक की पूर्ति करना जिसका
समस्यापूर्तिः } पहला चरण दिया गया हो।

समांसमीन (वि०) एक वर्ष से अधिक आयु का, जो एक वर्ष पूरा कर चुका है।

समाक्रान्त (वि०) [सम्+आ+क्रम्+क्त] 1 रौंदा हुआ, कुचला हुआ 2. जिस पर आक्रमण कर दिया गया है।

समाक्षिक (वि०) शहद मिला हुआ पदार्थ।

समाख्या [सम्+आ+ख्या+अङ्+टाप्] व्याख्या।

समाचेष्टितम् [सम्+आ+चेष्ट्+क्त] 1 व्यवहार 2. प्रक्रिया।

समाजः [सम्+आ+अज्+घञ्] समागम, समुदाय, —काव्य० १०।६०।३८।

समातत (वि०) [सम्+आ+तन्+क्त] 1 विस्तारित फैलाया हुआ 2. लगातार।

समादिष्ट [सम्+दिश्+क्त] निर्धारित, आदिष्ट।

समाधा (जुहो० पर०) 1 (वस्त्र) पहनना 2 कम करना 3. प्रदर्शित करना 4. स्वीकार करना।

समाधानम् [समा+धा+ल्युट्] 1. (किसी उक्ति का) प्रमाण 2. समझौता कर लेना, समस्या का हल कर देना।

समाधानरूपकम् रूपक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी उक्ति का औचित्य सन्निहित होता है।

समाधिनिष्ठ (पुं०) ध्यान में लीन, समाधि में स्थित।

समाधियोगः ध्यान-मग्न का अभ्यास।

समाधूमित (वि०) [समा+धूम्+क्त] धुँआरा हुआ।

समान (वि०) [सम+अन्+अण्] 1 साधारण 2 समस्त (सब्या०) 3 बराबर का, वैसा ही। सम० —करण (वि०) उच्चारण की समान इन्द्रिय वाला, एक ही उच्चारण स्थान वाला (स्वर)।

समानप्रतिपत्ति (वि०) 1. समान अनुराग वाला 2. व्यवहार कुशल, बुद्धिमान्।

समानमान (वि०) समान रूप से सम्मानित।

समानरुचि (वि०) एक सी रुचि वाला।

समापिका [illegible] शब्द का वह भाग जो वाक्य की पूर्ति करता है।

समाप्ति [सम्+आप्+क्तिन्] (शरीर का) विघटन, मृत्यु मनु० २।२४४।

समापत्ति [सम्+आ+पद्+क्तिन्] 1 मूल रूप को धारण करना 2 संपूर्ति।

समाम्नात (वि०) [सम्+आ+म्ना+क्त] 1 दोहराया गया, साथ ही वर्णन किया गया 2. परम्परा से प्राप्त।

समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+य] 1 सामान्यतः वेदपाठ 2 परंपरा से प्राप्त शास्त्रीय वचनों का संग्रह।

समारम्भ [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] साहसिक कार्य की भावना, साहसपूर्ण कार्य।

समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, आराधना।

समारूढ (वि०) [सम्+आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ।

समारोपितकार्मुक (वि०) जिसने धनुष तान लिया है।

समार्ष (वि०) एक ही प्रवर से संबद्ध, समान प्रवर वाला।

समालोकनम् [सम्+आ+लोक्+ल्युट] 1 निरीक्षण 2. सविचार, मनन।

समाविद्ध (वि०) [सम्+आ+व्यध्+क्त, संप्रसारणम्] 1 कम्पित, क्षुब्ध 2 प्रहृत आघात प्राप्त।

समाविष्ट (वि०) [सम्+आ+विश्+क्त] भरा हुआ, युक्त (जैसा कि 'कौतूहलसमाविष्ट')।

समाश्वस्त (वि०) [सम्+आ+श्वस्+क्त] 1 ढाढस बंधाया हुआ, सान्त्वना दी हुई 2. विश्वास करने वाला।

समाहृत (वि०) [सम्+आ+हृ+क्त] खींचा हुआ (जैसे धनुष की डोरी)।

समाहृत्य (अ०) [सम्+आ+हृ+य (क्त्वा)] सब एक साथ मिल कर।

समाहित (वि०) [सम्+आ+धा+क्त] 1. समान, साधारण 2 मिलता जुलता 3 प्रेषित।

समिति [सम्+इ+क्तिन्] सदाचरण का नियम (जैन०)।

समिदाधानम् 1. यज्ञाग्नि पर समिधाएँ रखना 2. ब्रह्मचारी के लिए विहित दैनिक अग्निहोत्र ।
समीक्षा [सम्+ईक्ष्+अङ+टाप्] 1. देखने की इच्छा, दिदृक्षा 2. आध्यात्मिक ज्ञान ।
समीरण [सम्+ईर्+णिच्+ल्युट्] पोत की सज्जा ।
समुच्चयालङ्कारः एक अलंकार का नाम ।
समुच्चयोपमा समुच्चयालंकार से बनी उपमा ।
समुच्छ्रय [सम्+उत्+श्रि+अच्] 1 [illegible] 2 युद्ध, लड़ाई 3. वृद्धि, विकास ।
समुच्छ्रित (वि०) [सम्+उत्+श्रि+क्त] 1. खूब उठाया हुआ 2 हिलोरें लेता हुआ ।
समुच्च (वि०) ऊँचा, समुन्नत ।
समुत्थानम् [सम्+उत्+स्था+ल्युट्] 1. उद्योग —महा० १२।२३।१० 2 (लहरों का) लहराना 3 (पेट की) सूजन ।
समुदायवाचक (वि०) वस्तुओं के समूह को प्रकट करने वाला (शब्द) ।
समुदायशब्दः 'समूह' की अभिव्यक्ति करने वाला शब्द ।
समुद्धत (वि०) [सम्+उत्+हन्+क्त] उद्धत, प्रचण्ड,
समुद्यत (वि०) [सम्+उत्+यम्+क्त] 1 उठाया हुआ, समुन्नत 2. तैयार, तत्पर 3. निष्पन्न ।
समुद्रः अत्यन्त ऊँची संख्या ।
समुद्रदयिता, समुद्रपत्नी, समुद्रयोषित् } नदी, दरिया ।
समुपस्तम्भः [सम्+उप+स्तम्भ्+घञ्] सहारा, [illegible] टेक ।
सम्पातः [सम्+पत्+घञ्] सम्प्रेषण (जैसा कि 'सूत्र-संपात' में) ।
सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] अधिग्रहण ।
सम्पन्नम् [सम्+पद्+क्त] पर्याप्त (श्राद्ध के पश्चात् संतोष का चिह्न) ।
सम्परेत (वि०) [सम्+परा+इ+क्त] मृत ।
सम्पुटः [सम्+पुट्+क] गोलाई ।
सम्पूर्णकाम (वि०) जिसकी कामना पूरी हो गई हो ।
सम्पूर्णफलभाज् (वि०) पूरा फल पाने वाला ।
सम्पर्कः [सम्+पृच्+घञ्] योगफल ।
सम्पृक्त (वि०) [सम्+पृच्+क्त] मिश्र बना हुआ ।
सम्प्रज्ञातः [सम्+प्र+ज्ञा+क्त] योग की एक समाधि जिसमें मनन का विषय स्पष्ट रहता है (विप० असम्प्रज्ञात) ।
सम्प्रतिपत्तिः [सम्+प्रति+पद्+क्तिन्] प्रत्युत्पन्नमतित्व ।
सम्प्रदायप्रद्योतकः वैदिक परम्परा को दर्शाने वाला — सम्प्रदायप्रद्योतकौ अनुग्राहकश्चेति पालकाप्यः ।
सम्प्रदायविगमः परम्परा का लोप ।

सम्प्रयुक्त (वि०) [सम्+प्र+युज्+क्त] प्रेरित, प्रोत्साहित ।
सम्प्रयोगः (वि०) [सम्+प्र+युज्+घञ्] (ज्योति०) चन्द्रमा और नक्षत्रों का संयोग ।
सम्प्रसादः [सम्+प्र+सद्+घञ्] मानसिक शान्ति ।
सम्प्राप्त (वि०) [सम्+प्र+आप्+क्त] पहुँचा हुआ, प्रकट हुआ, अधिगत ।
सम्प्लवः [सम्+प्लु+अप्] 1. अव्यवस्था 2. अवनति 3 तुमुल 4. अन्त, समाप्ति ।
सम्भिन्न (वि०) [सम्+भिद्+क्त] 1. ठोस, भरा हुआ 2 द्रोही, देशद्रोही ।
सम्भेद [सम्+भिद्+घञ्] 1. मुट्ठी भींचना, घूसा तानना 2. विद्रोह 3. बगावत, देशद्रोह ।
सम्भोजनकोष्ठकम् रसोई का घर ।
सम्भव [सम्+भू+अप्] 1. संगत बात 2. संपत्ति, धन महा० १३।६४।११ 3. ज्ञान ईशोप० १२ ।
सम्भविष्णु (वि०) [सम्+भू+इष्णुच्] उत्पादक, रचयिता ।
सम्भावित (वि०) [सम्+भू+णिच्+क्त] जिसके घटने की आशा हो — त्वयि सम्भावितवृत्ति पौरुषम् कि० २।७ ।
संभावितम् अनुमान ।
सम्भृ (जुहो० उभ०) उठाना — दक्षिणं दक्षिणः काले सम्भृत्य स्वमुखं तदा — महा० ५।९७।८२ ।
सम्भृत (वि०) [सम्+भृ+क्त] 1. सम्भावित 2. ऊँची (ध्वनि) ।
सम्भृतश्रुत (वि०) ज्ञान से युक्त ।
सम्भृतसंभार (वि०) सर्वथा उद्यत, पूरी तरह तैयार ।
संभृतस्नेह (वि०) अनुराग से युक्त, अनुरक्त ।
सम्भ्रान्तमनस् (वि०) घबराये हुए मन वाला ।
सम्मतिः [सम्+मन्+क्तिन्] सम्मान देना ।
सम्मतिपत्रकम् न्यायाधिकरण का निर्णय — शुक्र० २।१।०४ ।
सम्मित (वि०) [सम्+मा+क्त] 1. समान महत्त्व का — पुराणं ब्रह्मसम्मितम् — भाग० १।३।४० 2. [illegible] — महा० ५।६८।१ ।
सम्मुखीन (वि०) [सम्मुख+खञ्] योग्य, उपयुक्त ।
सम्मूर्च्छनम् [सम्+मूर्च्छ्+ल्युट्] मिश्रण ।
सम्मर्दः [सम्+मृद्+घञ्] (लहरों की) टक्कर ।
सम्यग्ज्ञानम् सही ज्ञान, सच्ची जानकारी ।
सम्यग्दृष्टिः अन्तर्दृष्टि, अन्तरवलोकन ।
सरः [सृ+अप्] (काव्य०) ह्रस्व स्वर ।
सरस (वि०) काव्यरस से परिपूर्ण — कल्याणिनी सरस-चित्रपदां गुणाढ्याम् — शिवानन्द० १०० ।
सर्गः [सृज्+घञ्] 1. सद्भावनाओं का उत्पादन, — सर्गश्चात्मवेशनम् महा० १२।५९।४४ 2. शब्द के अन्त में महाप्राणता (विसर्ग भी) ।

सर्पगति. [ष० त०] सांप की चाल, (कुश्ती या मल्लयुद्ध में गति) ।

सर्वकष कौशल, विधि, सूक्ष्मयुक्ति ।

सर्व (सर्व० वि०) [सृतमनेन विश्वम्—सृ + व] 1 सब, प्रत्येक 2 समस्त, सब मिल कर । सम०—**अभाव** सब का अनस्तित्व, सब की विफलता, **अर्थचिन्तक** महाप्रशासक,—**अदिन्** (वि०) सब कुछ खा जाने वाला,—**अस्तिवाद** एक सिद्धान्त जिसके आधार पर सभी वस्तुएँ वास्तविक मानी जाती हैं, **काम्य** जिससे सब प्रेम करें, **दृश्** (वि०) सब कुछ देखने वाला —**प्रथमम्** (अ०) सबसे पहले,—**वेशिन्** (पु०) नट नाटक का पात्र,—**सह** (वि०) सर्वव्यापक —**सव** [illegible]-[illegible] यथैक उत सर्वस्मीवसरामि भाग० १०। ८५।४५ सम्भवत वह सब जो अवशिष्ट बचा है, **स्वार:** एक वैदिक याग जिसमें असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए आत्मबलिदान का विधान है ।

सर्वव्यक्त (वि०) सर्वव्यापक विश्वगामी ।

सर्वथा (अ०) [सर्व + थाल्] सब प्रकार से ।

सलिलकर्मन् (नपुं०) जल में तर्पण ।

सलिलप्रिय सूअर ।

सलिलरय. [ष० त०] जल के प्रवाह की शक्ति ।

सवम् [सू—सु + अप्] (वेद०) आदेश, आज्ञा ।

सवनकर्मन् (नपुं०) नित्य होने वाला पुनीत यज्ञिक धर्मकृत्य -अग्निहोत्रादिक ।

सवर्ण (वि०) समान रंग वाली मिश्रवर्णीय ।

सविकार (वि०) 1 अपनी जन्य उपज समेत 2 सड़ने वाला, जो सड़ गल रहा हो ।

सवितृतनय [ष० त०] शनि ग्रह ।

सवितृदैवत हस्त नक्षत्र ।

सवितृकम्पम् (अ०) लज्जा के साथ, घबराहट या उलझन के साथ ।

सव्य (वि०) [सू + यत्] अनभिषुत, जिस पर घी न छिड़का गया हो, शुष्क मी० सू० ४।१।३६ पर शा० भा० ।

सव्यापसव्य (वि०) 1. बायाँ और दायाँ 2. तान्त्रिक पूजा की स्मार्त तथा कौल रीतियाँ—सव्यापसव्य-मार्गस्था: कथिता० ।

सश्रद्ध. ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला ।

सस्यपाल खेत का रखवाला ।

सस्यमञ्जरी अनाज की बाल ।

सस्यवेद कृषिविज्ञान ।

सस्यशूकम् अनाज (गेहूँ जौ आदि) का टूंड, अनाज की बाल ।

सह (वि०) [सह् + अच्] 1 बीर 2. समर्थ, **ह.** (पु०) मार्गशीर्ष का महीना, **हम्** (नपुं०) एक प्रकार का नमक (अ०) के साथ, सहित । सम० —**असम्मत** (वि०) असहमत होने वाला, **आलाप** समालाप, मिल कर बातचीत करना, **उत्थायिन्** (वि०) विद्रोही, षड्यन्त्रकारी, **कर्तृ** (पु०) सहकारी **सहासनम्** एक ही खाट पर मिलकर बैठना — **भाव** 1 साहचर्य 2 सहानुवर्तिता,—**संसर्ग** शारीरिक सम्पर्क ।

सहसापुत्र गोद लिया हुआ पुत्र ।

सहस्रम् [समान हसति—हस् + र] 1 हजार 2. बड़ी संख्या । सम० **अर**, **अरम्** सिर की चोटी में उलटे कमल के समान गर्त जो आत्मा का आसन माना जाता है, **गु** इन्द्र का विशेषण, सूर्य का विशेषण,—**दलम्** कमल का फूल,—**भोजनम्** विष्णु के हजार नामों के पाठ करने के समान एक हजार ब्राह्मणों का भोजन कराना (प्रायश्चित्त कर्म) । —**भित्** (पु०) कस्तूरी, **वेधिन्** (पु०) कस्तूरी

सहायतार्थम् (अ०) [illegible] के [illegible] के लिए ।

[illegible]

सांसर्गिक (वि०) [संसर्ग + ठञ्] संसर्ग से उत्पन्न छूत के (रोग) ।

सांस्कारिक (वि०) [संस्कार + ठञ्] 1 संस्कारों से सम्बन्ध रखने वाला 2 (आधुनिक बोल चाल में) सांस्कृतिक ।

साकमेधीयन्याय मीमांसा का एक नियम जब कि विकृति में उसका अपनी प्रकृति के गुण या धर्म नहीं पाये जाते मी० सू० ५।१।२१-२२ पर शा० भा० ।

साकूतस्मितम् सार्थक मुस्कराहट ।

साक्षात्क्रिया अन्तर्ज्ञान एक प्रत्यक्षज्ञान ।

साक्षिपरीक्षा साक्षियों का परीक्षण ।

साक्षिवाद साक्षिसिद्धान्त ।

सागरमेखला पृथ्वी, धरती ।

सागरसुता लक्ष्मी ।

सागरावर्त समुद्र की खाड़ी ।

साङ्केत्यम् [संकेत + ष्यञ्] 1 सहमति 2. इकरार 3 चिह्न, या उपनाम—साङ्केत्य पारिहास्यं वा वैकुण्ठनामग्रहणम् भाग० ६।२ ।

साङ्ख्यकारिका सांख्यदर्शन पर ईश्वर कृष्ण द्वारा रचित एक ग्रन्थ ।

साङ्गोपाङ्ग (वि०) अपने मुख्य तथा सहायक अंगों सहित (वेद०) ।

सातिशयोक्ति (अलं०) स्वीकृति के बहाने एक आक्षेपी ।

सातिशय (वि०) अत्यधिक, श्रेष्ठतम ।

सात्म्य (वि०) स्वास्थ्यकर, प्रकृति के अनुकूल ।

सात्म्य 1 आदत, स्वभाव 2 प्रकृति के अनुकूल होने का भाव ।

साम्यम् समता, बराबरी।

सात्विक [सत्त्व+ठञ्] शरद् ऋतु की रात्रि।

सात्वत 1 भक्त 2. पांचरात्र शाखा से संबंध रखने वाला,

सात्वतर्षभ कृष्ण का विशेषण।

साधक (वि०) [साध्+ण्वुल्] उपसंहारात्मक उपसंहार परक।

साधनम् [साध्+ल्युट्] 1 उपकरण, अभिकरण 2 तैयारी 3 समपना।

साधनीय् (भ्वा० पर०) साधन होना, उपाय होना।

साधनीय (वि०) [साध्+अनीय] 1 सिद्ध करने योग्य, कार्य को संपन्न करने के लिए उपयोगी 2 प्राप्त करने योग्य।

साधित्सद्धायक (वि०) सिद्ध करने योग्य वस्तु में अन्तर्हित सत्य के लिए तर्कशास्त्र का पारिभाषिक शब्द।

साधर्म्यसमः झूठमूठ का आक्षेप (तर्क०)।

साधारणः न्याय में एक नियम जो मध्यवर्ती हो और सबपर समान रूप से लागू हो।

साधारणपक्ष समान पक्ष, मध्यवर्ती पक्ष।

साधारणीभू (भ्वा० पर०) सामान्य बनना।

साधु (वि०) [साध्+उन्] 1 अच्छा उत्तम 2 योग्य, उचित 3 भला, गुणी 4 सही 5 सुखद। सम० —कृत (वि०) उचित रूप में किया हुआ,—देवी सास, —वृत्त (वि०) सुविचारित, —शील (वि०) धर्मात्मा, —सम्मत (वि०) भले व्यक्तियों का मान्य।

सान्तराय (वि०) [ब० स०] अन्तराल या अवकाश सहित।

सान्तानिक [सन्तान+ठञ्] सन्तान का इच्छुक - नाहं त्वा भस्मसात् कुर्यां स्त्रियं सान्तानिकं सति भाग० ९।९।३०।

सान्द्रस्पर्श (वि०) जो छूने में मृदु हो, चिकना हो।

सान्द्रानन्द आध्यात्मिक सुख—स० सान्द्रानन्दावबोधात्मकमनुपमितम् नारा० १।१।

सामग्र्यम् [समग्र+ष्यञ्] कल्याण कुशलक्षेम अपि लक्ष्मण सीताया सामग्र्यं प्राप्नुयाम् हे रा० ३।५७।२०।

सामन् (नपुं०) [सो+मनिन्] आवाज शब्द, ध्वनि स्वर सामशब्देन लोके अभिधीयते - मी० सू० ७।२।७ पर शा० भा०। सम० —कण्ठम् मित्र के स्वर में, —प्रधान (वि०) पूर्णतः कृपालु या मित्र रूप, —विधानम् 1 एक ब्राह्मण का मूल पाठ 2. साम का प्रयोग।

सामन्तचक्रम् अधीनस्थ राजाओं का मण्डल।

सामन्तवासिन् (वि०) पड़ोसी।

सामयिकम् [समय+ठञ्] 1 समानता 2. प्रतिज्ञा विषयक लेखपत्र।

सामान्यम् [समान+ष्यञ्] 1 सामान्य अन्तर 2 एक अर्थालंकार 3. सार्वजनिक कार्य 4 साधारण लक्षण 5 पहचान। सम० धर्म. (अलं०) (उपमान और उपमेय) का समान गुण,—वादिन् (वि०) समानता को बताने वाला, —शासनम् वह आज्ञा जो सब पर लागू हो।

सामिष (वि०) मांसयुक्त।

सामुदायिक (वि०) [समुदाय+ठन्] समूह से संबंध रखने वाला, सामूहिक।

साम्पराय 1 सहायक 2 आवश्यकता, 3 संकट।

साम्परायिक (वि०) [संपराय+ठक्] 1 पारलौकिक, 2 दूसरे धर्म संबंधी- रा० ४।३।४०।

साम्यम् [सम+ष्यञ्] 1 माप 2 समय।

साय [सो+घञ्] 1 समाप्ति, अन्त 2. संध्या 3 बाण। सम० —अशनम् सायंकाल का भोजन,—धूर्तः 1 शठ 2 चन्द्रमा,—मण्डनम् सूर्यास्त।

सायम्प्रातः (अ०) सवेरे शाम।

सायसवनम् सायंकालीन धर्मानुष्ठान।

सायुध (वि०) सशस्त्र।

सार (स्+घञ्, अच् वा] 1. क्रम, गति 2 मुख्यअंश 3 गोबर 4 मवाद, पस। सम०—जात (वि०) सबल बना हुआ,—गुण प्रधानगुण या धर्म —गुरु (वि०) बोझल, बोझ के कारण भारी,—फल्गु (वि०) बढ़िया और घटिया, उपयोगी और व्यर्थ, —मार्गणम् गूदे या वसा का ढूंढना।

सारङ्गी संगीत का एक विशेष राग।

सारम्भिका मूल्य, डाकू।

सारथि [सृ+अथिण्, सह रथेन सरथ (घोटक: तत्र नियुक्तः) इञ् वा] 1 रथवान् 2 पथप्रदर्शक।

सारसालम् एक प्रकार का साल।

सारसाक्षी कमल जैसी सुन्दर आँखों वाली महिला, पद्माक्षना।

सारसनम् बड़ाकाज, कवच।

सार्थहीन (वि०) समूह से छूटा हुआ, यूथभ्रष्ट।

सार्धवार्षिक (वि०) डेढ़ वर्ष तक रहने वाला।

सार्धसंवत्सरम् डेढ़ वर्ष।

सालङ्कार (वि०) सुभूषित, अलङ्कारों से युक्त।

सावधारण (वि०) सीमित, नियन्त्रित।

सावशेषजीवित (वि०) जिसका जीवन अभी शेष है, जिसने अभी, और जीना है।

सावष्टम्भवास्तु वह भवन जिसके दोनों ओर या सुखी पार्श्ववीथिकाएँ (खुले दालान) हों।

साविक्षीसूत्रम् यज्ञोपवीत।

साश्चर्यचर्य (वि०) आश्चर्ययुक्त आचरण वाला।

सासहि (वि०) [सह्+यङ्] 1 सहनशील 2 जो प्रतिपक्षी का मुकाबला कर सके 3 जीतने वाला।

सास्थि (वि०) हड्डियों से युक्त।

सास्थिस्फालनम् (अ०) हड्डियों की चटखने की ध्वनि के साथ।
साहसकरणम् प्रचण्ड कार्य, अंधाधुंध काम करना।
साहसिक्यम् उतावलापन।
साहस्र (वि०)[सहस्र+अण्] हजारों, असंख्य अनगिनत।
साहाय्यकर (वि०) सहायता करने वाला।
साहाय्यदानम् सहायता देना।
सिंह [हिंस्+अच् पृषो०] एक प्रकार की मशीन ध्वनि
सिंहलकम् एक प्रकार का पीतल।
सिच् (तुदा० उभ०) भिगोना डुबकी लेना।
सिञ्जिनी [सिञ्जा+इनि, पृषो०] धनुष की ज्या या डोरी।
सिता [सो+क्त, स्त्रियां टाप्] 1 चीनी खांड 2 गंगा।
सितासित (वि०) श्वेत और काला मिला हुआ।
सितकण्ठ सफेद गरदन वाला, चातक पक्षी जलकुक्कुट।
सितच्छद राजहंस, मराल, हंसनी।
सितपक्ष हंस, मराल, हंसनी।
सितवारण सफेद हाथी, सितकुञ्जर।
सिताखण्ड एक प्रकार की खांड, मिश्री का डला।
सिद्ध (वि०) [सिध्+क्त] 1 निश्चित अपरिवर्तनीय 2 विशिष्ट पक्का 3 सफल, —द्ध (पुं०) जिसे इसी जीवन में सिद्धि प्राप्त हो गई है। सम०-अञ्जनम् एक प्रकार का अंजन (कहते हैं, इसके प्रयोग से भूगर्भ की वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं), —अर्थक सफेद सरसों, —आदेश 1 ऋषि की भविष्य वाणी 2 भविष्य वक्ता, ज्योतिषी, —औषधम् विशिष्ट औषधोपचार, —काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं, —पथः आकाश सिद्ध पुरुषों का मार्ग —हेमन् शुद्ध स्वर्ण खरा सोना।
सिद्धि (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] उपलब्धता पर्याप्ति।
सिद्धिविनायक गणेश का एक रूप।
सिन्दूरगणपति गणेश की मूर्ति।
सिन्धुलवणम् सेंधा नमक।
सिन्धुसौवीराः सिन्धु नदी के आसपास के प्रदेश में रहने वाले।
सिरापत्र पीपल का वृक्ष।
सिरामूलम् नाभि।
सिराल (वि०) [सिरा+आलच्] अत्यन्त नसों वाला, नस-नाड़ियों के जाल से युक्त।
सिस्नासु (वि०) [स्ना+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] स्नान करने की इच्छा वाला।
सिसिक्षा [सिच्+सन्+अ, धातोर्द्वित्वम्] छिड़कने की इच्छा।
सीताध्यक्ष कृषिका अधीक्षक।
सीधुपानम् मद्यपान, शराब पीना।
सीमाज्ञानम् [सीमा+अज्ञानम्] सीमा की जानकारी न होना।
सीमाकृषाण (वि०) सीमाचिह्न के किनारे हल चलाने वाला।
सीमासेतु पर्वतशृङ्खला या बांध आदि जो सीमा का काम दे।
सीरवाहक हलवाहा, कृषक खेतिहर।
सुकण्टू पञ्जली।
सुकल्प (वि०) दक्ष सुयोग्य।
सुकल्पित (वि०) सुसज्जित हथियारों से लैस।
सुकाव्य अच्छा सोरा।
सुकुज (वि०) अच्छे काम से उत्पन्न।
सुघोष (वि०) मधुर ध्वनि से युक्त मोटी आवाज वाला।
सुचर्मन् भूर्ज वृक्ष भोजपत्र।
सुतप्त (वि०) 1 अत्यन्त तापित 2 कष्टग्रस्त 3 अत्यन्त कठोर (तपश्चरण),
सुनास (वि०) सुन्दर अनुस्वार से युक्त।
सुतार (वि०) 1 अत्यन्त उज्ज्वल 2 बहुत ऊँचे स्वर वाला 3 जिसकी आँखों की पुतलियाँ अत्यन्त सुन्दर हैं।
सुतारा सीमास्वीकृति के नौ भेदों में से एक (सांख्य०)।
सुदक्षिण (वि०) 1 अत्यन्त कुशल 2 अतिविनम्र।
सुदुष्कर (वि०) सुदुर्गम जो बड़ी कठिनाई से किया जा सके।
सुदुश्चिकित्स (वि०) असाध्य रोग से ग्रस्त, जिसके रोग की प्रायः चिकित्सा न हो सके।
सुदेशिक अच्छा पथप्रदर्शक या अध्यापक।
सुनन्दन् बलराम की गदा।
सुनिर्मथित (वि०) भली प्रकार चमकाया हुआ।
सुपठ (वि०) सुवाच्य जो पढ़ा जा सके।
सुपर्ण पक्षी पारद।
सुपेशस् (वि०) सुन्दर सुकुमार।
सुप्रमाण (वि०) बहुत बड़े आकार का।
सुबभ्रु (वि०) गहरा भूरा, धूसर।
सुभगा 1. सुहागिन 2. कस्तूरी।
सुभीरुकम् चाँदी।
सुभूति [सु+भू+क्तिन्] 1 मङ्गल समृद्धि 2 तीतर पक्षी।
सुमहात्यय (वि०) अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण।
सुमर्षण (वि०) [सु+मृष्+ल्युट्] सहनशील।
सुमूल (वि०) बिल्कुल ठण्डा, बिल्कुल मुर्दा।
सुमुहूर्तः शुभ मुहूर्त।
सुमूर्जकः तरबूज।
सुविख्यात (वि०) अत्यन्त चतुर।
सुविकच (वि०) पूर्ण विकसित।
सुविलक्षित (वि०) 1 अकेला 2 निर्जीत।

सुसंवृतिः (स्त्री०) [सु+सम्+वृ+क्तिन्] भली प्रकार छिपाना।
सुसत्य (वि०) अपने वचन का पालन करने वाला।
सुसक्त (वि०) ठीक निशाने पर लगा (तीर आदि)।
सुसेव्य (वि०) सेवा किए जाने योग्य जिसका आसानी से अनुसरण किया जा सके।
सुखाधिष्ठानम् आनन्द का स्थान।
सुखाभियोज्य (वि०) जिस पर आसानी से चढ़ाई की जा सके।
सुखाराध्य (वि०) जिसकी सेवा आसानी से की जा सके जो आसानी से प्रसन्न किया जा सके।
सुखप्रश्नः कुशलक्षेम पूछना।
सुखवह (वि०) मनोरम प्रिय प्यारा।
सुखवेदनम् आनन्द की अनुभूति।
सुखसेव्य (वि०) दे० 'सुसेव्य' ऊपर।
सुधाकण्ठः कोयल।
सुधाकारः सफेदी (चूना) करने वाला।
सुधाक्षालित (वि०) सफेदी किया हुआ
सुधायोनिः चन्द्रमा।
सुधाशर्करः चूने का पत्थर।
सुनफा ज्योतिषशास्त्र का एक योग।
सुनीथ (वि०) [सु+नी+क्थन्] 'सदाचरण' से युक्त, दूरदर्शी मनीषी।
सुन्दरकाण्डम् रामायण का पाँचवाँ काण्ड।
सुप्तघ्नः,-घातकः सोते हुए को मारने वाला धोखेबाज हत्यारा।
सुराद्रिः, सुरपर्वतः मेरु पर्वत सुमेरु पहाड़।
सुरेभः (सुर+इभ) ऐरावत हाथी।
सुरेष्टः (सुर+इष्ट) साल का वृक्ष।
सुरोपम (वि०) (सुर+उपम) देवसमान।
सुरनाल एक प्रकार का घास [illegible]।
सुरतटिनी,-तरङ्गिणी,-धुनी,-नदी,-सरित्,-आपगा (स्त्री०) गंगानदी।
सुरपादपः कल्पवृक्ष।
सुरविलासिनी अप्सरा।
सुरसोता छिपकली।
सुरभिगोत्रम् पशु, गौएँ, बैल।
सुराजीविन् (वि०) शराब बेचने वाला, कलाल।
सुराणः समीर।
सुवर्णचोरिका सोने की चोरी।
सुवर्णधेनुः स्वर्ण निर्मित गाय जो उपहार में दी जाय।
सुवर्णभाण्डम् रत्नमञ्जूषा।
सुवर्णरोमन् (पु०) सुनहरी रोमों वाला मेष।
सुवर्णसानुः मेरु पर्वत।

सुषि (स्त्री०) छिद्र, सूराख ('सुषिर' का वैदिक रूप)
सुषुप्सा [स्वप्+सन्+अ+टाप् धातोर्द्वित्वम्] सोने की इच्छा।
सूक्ष्मम् [सूच्+मन् सुक् च नेट्] 1. दाँत का खोखलापन 2 दम्भ, धोखा 3 कण। सम० -**बलः** सरसों,-**तत्त्वम्** सूक्ष्म तत्त्व -**मति** (वि०) तीक्ष्णबुद्धिवाला, -**शरीरम्** सूक्ष्म शरीर (विप० स्थूल शरीर), -**स्फोटः** एक प्रकार का कोढ़।
सूचनी विषयों की तालिका या सूचि।
सूची [सूच्+ङीप्] (दरवाजे की) चटखनी।
सूचीकर्मन् (नपुं०) सिलाई का कार्य।
सूचीरदः [illegible]
सूचीशिखा सुई की नोक।
सूचीकर्णः सुई का छिद्र।
सूचीसूत्रम् सीने का धागा।
सूत [illegible]।
सूतपौराणिकः पुराणों में वर्णित सूत (कहते हैं कि उसने ही समस्त महाभारत और पुराण सुनाए थे)।
सूतिमारुतः प्रसव वेदना।
सूत्रम् [सूत्र+अच्] 1 मेखला 2 रेखाचित्र, आरेख 3 संकेत आमुख 4 धागा, डोरा 5 रेशा। सम० -**अध्यक्षः** वस्त्रागारक, बुनाई का अधीक्षक, -**क्रीडा** कठपुतली का खेल, (६४ कलाओं में से एक)। -**ग्रन्थः** सूत्रों की पुस्तक -**भृत्** (पु०) 1. सूत्रधार शिल्पी 2 रंगमंच का प्रबंधक -**पातः** 1 माप वाले सूत्र से मापने का कार्य करना 2 कार्य का आरम्भ, -**स्थानम्** आयुर्वेद के एक ग्रंथ का प्रथम खण्ड।
सूदाध्यक्षः प्रधान रसोइया।
सूदशास्त्रम् पाक विज्ञान।
सूनसायकः,-शरः कामदेव सूनसायकनिदेशविधायिन्[illegible]प्रतीन-[illegible] नै० १८।१२८। (सूनसायक पाठ भी मिलता है)।
सूनाध्यक्षः (सूना+अध्यक्षः) कसाईखाने का अधीक्षक।
सूपश्रेष्ठः मूंग, मूंग की फली।
सूपाय (सु+उपाय) अच्छा साधन, तरकीब।
सूरिः [सू+क्रिन्] बृहस्पति।
सूर्यद्वारम् उत्तरायण मार्ग।
सूर्यवारः रविवार आदित्यवार।
सूर्याणी सूर्य की पत्नी।
सृ (भ्वा० जुहो० पर०) पार करना, आर-पार जाना प्रेर० प्रकट करना, व्यक्त करना।
सृका [सृ+वक्+टाप्] 1 गीदड़ 2 सारस।
सृङ्कुरा (स्त्री०) 1 झन-झन करती हुई रत्नों की लड़ी 2 मार्ग, पथ।
सृतिः [सृ+क्तिन्] 1 जन्म-मरण का चक्र—स्वाम्ये

तस्यादधिशयानं सुतिभिर्भर्मनस्या भाग० १०।६०।८३ 2 सृष्टि।

सेकः [सिच् + घञ्] नहाने के लिए फौवारा।

सेचनम् [सिच् + ल्युट्] 1 निर्गमन, उद्गार 2 अभिषेक।

सेतु [सि + तुन्] 1 जलाशय सरोवर 2 व्याख्यापरक भाष्य।

सेतुसामन् सामविशेष।

सेनापत्यम् सेनापति का पद।

सेनावाहः सेनाधीश, सेनाध्यक्ष।

सेनास्थः सैनिक, सिपाही।

सेवनी 1 सुई 2 सीवन, टांका 3 सिर की दो हड्डियों का जोड़।

सेविन् (वि०) [सेव् + णिनि] व्यसनी, उपासक आराधक।

सेश्वर (वि०) ईश्वर की सत्ता मानने वाला।

सेश्वरवादः ईश्वर की सत्ता के समर्थन में तर्क।

सेश्वरसाङ्ख्यम् सांख्य की एक शाखा जो ईश्वर की सत्ता को मानती है।

सैकतिनी [सिकता, इनि + ङीप्] रेत से भरी हुई।

सैन्यम् [सेना + ष्यञ्] शिविर।

सैन्यक्षोभः सेना का विद्रोह।

सोत्प्रासम् (अ०) असावधानी से, उदासीनता के साथ।

सोत्सेक (वि०) अभिमानी, घमंडी।

सोदय (त्रि०) 1 उदय से संबंध रखने वाला 2 सूद सहित, ब्याज के साथ।

सोपग्रहम् (अ०) मैत्रीपूर्ण ढंग से।

सोपस्कार (वि०) सहायक वस्तुओं से युक्त।

सोपाधान (वि०) सामग्री से युक्त।

सोम [सु + मन्] 1 लता 2 एक पितर 3 सोमवार।

सोमप्रवाकः सोमयाग के लिए पुरोहितों को नियत करने के अधिकारों से सम्पन्न व्यक्ति।

सोमसद् (पुं०) पितरों की एक विशेष शाखा।

सोर्णभ्रू (वि०) जिसकी दोनों भौंहों के बीच में बालों का एक वृत्त है।

सौखरात्रिक (वि०) [सुखरात्रि + ठक्] जो दूसरे व्यक्ति को पूछता है कि तुम रात को तो सुख से सोये हो।

सौत्रिकः [सूत्र + ठञ्] 1 जुलाहा 2 बुना हुआ कपड़ा।

सौधोत्सङ्गः [ष० त०] महल की उभरी हुई खुली छत।

सौभपतिः साल्वों का राजा।

सौमङ्गल्यम् [सुमङ्गल + ष्यञ्] सौभाग्य की मङ्गलमय स्थिति, कल्याण, समृद्धि।

सौम्य (त्रि०) [सोम + अण्] उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला।

सौम्यः [सोम + अण्] 1 ब्राह्मण को अभिवादन करते समय प्रयुक्त विशेषण - आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने —मनु० २।१२५ 2. बुध ग्रह 3 विनीत छात्र 4 बायां हाथ 5. मार्गशीर्ष का महीना।

सौरमानम् [ष० त०] सूर्य की गति पर आधारित ज्योतिष की गणना।

सौरत (वि०) [सुरत + अण्] संभोग संबंधी।

सौस्वर्यम् [सुस्वर + ष्यञ्] सुस्वरता, स्वरमाधुर्य, स्वरयोजना।

स्कन्दः [स्कन्द् + अच्] 1 क्षरण 2 ध्वंस।

स्कन्दजननी पार्वती।

स्कन्दपुत्रः स्कन्द का बेटा (चोर के लिए प्रयुक्त शिष्ट नाम)।

स्कन्धः [स्कन्ध + घञ्] 1 कंधा 2 खंड, अंश, भाग 3 पेड़ का तना 4 ग्रन्थ का अध्याय 5 सेना का कोई भाग 6 पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के विषय।

स्कन्धायनः सज्ञान मी० सू० १।१।५ पर शा० भा०।

स्खलनम् [स्खल् + ल्युट्] वीर्यपात।

स्खलित (वि०) [स्खल् + क्त] 1 घायल 2. अपूर्ण अधूरा।

स्खलितम् (नपुं०) हानि विनाश।

स्तबकः बूंद कण, तैलस्य घृतस्य वा स्तबका —मी० सू० ५।२।१७ पर शा० भा०।

स्तनकुड्मलम् स्त्री के उठते हुए स्तन।

स्तनचूचुकम् चूची ढेपनी।

स्तनमुखम् चूची, ढेपनी।

स्तनमध्यम् दोनों स्तनों के बीच का अन्तराल।

स्तनाभुज (वि०) अपने स्तनों से दूध पिलाने वाला पशु (गाय)।

स्तनितकुमाराः (ब० व०) देवताओं की एक श्रेणी।

स्तनितानुभाव (अ०) सुन्दर गर्जनध्वनि के साथ।

स्तनंधय (वि०) स्तन पान करने वाला, दुधमुँहा बच्चा।

स्तब्धपाद (वि०) जिसके पैर गतिहीन हो गये हों, अकड़ गये हों।

स्तब्धकर,-बाहु (वि०) जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों।

स्तब्धमति (वि०) जिसकी बुद्धि कुंठित हो गई हो, मन्दबुद्धि।

स्तम्भ् (क्र्या० आ०) अधिकार करना, फैलाना, प्रेर० दबाना, रोकना।

स्तम्भः [स्तम्भ् + घञ्] 1 अकड़ाहट, निश्चेष्टता 2 मरोड़, ऐंठनी।

स्तम्भिताश्रुवृत्ति (वि०) जिसने अश्रुपात रोक लिया, आँसू रोकने वाला।

स्तम्भितसमस्तजलौघः बादल जिसने समस्त पानी को अपने अन्दर रोक रखा है —मे०।

स्ताम्बेरम [स्तम्बेरम + अण्] हाथी से संबंध रखने वाला।

स्तिमितनयन (वि०) टकटकी लगा कर दृष्टि जमाते हुए।

स्तिमितप्रवाह (वि०) बहुत धीमी गति से बहने वाला ।
स्तीर्विः [स्तृ + क्विन्] भय, डर ।
स्तेन् (चुरा० उभ०) असत्य भाषण से वाणी को अपवित्र करना - स्ता तु यः स्तेनयेद्वाचम् मनु० ४।२५६ ।
स्तोकतमस् (वि०) कुछ काला, जिसमें थोड़ा अंधेरा हो ।
स्तोकायुस् (वि०) थोड़ी आयु वाला ।
स्तोभ 'साम' के रूप में गाये जाने वाले मन्त्र शब्दों की साम की अथवा विविक्तध्वनि —य ऋगक्षरेभ्योऽधिको न च नै मवर्ण स स्तोभो नाम मी० सू० ९।२।३९ पर शा० भा० ।
स्तोमक्षार साबुन ।
स्त्री [स्त्यै + ड्रट् + ङीप्] दीमक, सफेद चींटी ।
स्त्रीकितव. स्त्रियों को फुसला कर छलने वाला ।
स्त्रीविषय मैथुन ।
स्थपत्य [illegible] स्थपत्यमुद्राम्भ अन. परीता - जानकी० ७।१।
स्थलकमल (पु०) स्थलपद्म, (लाङ्गली) भूकमल, स्थल पर उगने वाला कमल पुष्प ।
स्थण्डिलशायिन् (वि०) बिना कुछ बिछाये (ओढ़े) भूमि पर सोने वाला ।
स्थविरधृति (वि०) वृद्धों की मर्यादा रखने वाला ।
स्थाणुः [स्था + नु पृषो० णत्वम्] 1 तना, पेड़ का ठूंठ 2 बैठने की एक विशेष मुद्रा ।
स्थाणुभूत (वि०) जो पेड़ के ठूंठ की तरह गति हीन हो गया हो ।
स्थानम् [स्था + ल्युट्] 1 जीवन क्रम 2 जीवित रहना 3 युद्ध में आक्रमण की एक रीति 4 ज्ञानेन्द्रिय ।
स्थानकुटिकासनम् घर छोड़कर झोंपड़ी में रहना शिरसो मुण्डनाद्वापि न स्थानकुटिकासनात् -महा० ३।२००।१०४ ।
स्थानेपतित (वि०) [अलुक्समास] दूसरे के स्थान पर अधिकार करने वाला ।
स्थापनम् [स्था + णिच् + ल्युट्, पुकागम] 1 बांधना 2. दीर्घायु होना 3 आधार ।
स्थापना [स्थापन + टाप्] 1. नाटक की प्रस्तावना या आमुख 2. आधार भरना ।
स्थाप्य (वि०) [स्था + णिच् + यत्] 1 बंद किये जाने या कैद किये जाने योग्य 2. (शोक में) डूब जाने योग्य ।
स्थायिता 1 स्थैर्य 2. टिकाऊपन ।
स्थालीपुरीषम् पाकपात्र की तली में जमी तलछट, मैल ।
स्थितलिङ्ग (वि०) वह पुरुष जिसका लिङ्ग उत्तेजनावस्था में है ।
स्थितसंकेत, —संविद (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला ।

स्थितसीम (वि०) नैतिकता की सीमा को मानने वाला ।
स्थितिभिद् (वि०) सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाला ।
स्थिर (वि०) [स्था + किरच्] 1. दृढ़, जमा हुआ 2 अचल, निश्चेष्ट 3 स्थायी 4. चिरस्थायी 5. कठोर सख्त 6. ठोस 7. मजबूत । सम० —अपाय (वि०) क्षयशील, जिसका निरंतर ह्रास हो रहा है, —आयति (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला, —वाच् (वि०) जिसकी बात का विश्वास किया जाय, —विक्रम (वि०) दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाने वाला ।
स्थूणाकर्ण 1. एक प्रकार का सैन्यव्यूह 2. रुद्र का एक रूप 3. शिव का एक अनुचर ।
स्थूरीपृष्ठः वह घोड़ा जो अभी सवारी करने के काम में न आया हो — शि० १८।२२ ।
स्थूल (वि०) [स्थूल् + अच्] जो बारीकी या ब्यौरे (व्याख्या या विवरण) के साथ न लेकर मोटे तौर पर दिया गया हो, मौलिक । सम० —इच्छ (वि०) जिसकी इच्छाएं बहुत बढ़ी हुई हों, —काष्ठाग्निः स्कन्धाग्नि, पेड़ के जलते हुए तने की आग, —प्रपञ्चः मौलिक संसार ।
स्थैर्यम् [स्थिर + ष्यञ्] इन्द्रियों का दमन या नियन्त्रण ।
स्नानकलशः, कुम्भः नहाने के लिये जल का घड़ा ।
स्नानतीर्थम् नहाने के लिए पुण्यस्थान, घाट ।
स्नानशाटी नहाने का जाँघिया, कटिवस्त्र ।
स्नायुबन्ध धनुष की डोरी, ज्या ।
स्नायुस्पन्द नाड़ी ।
स्नेहकुम्भ तेल रखने का बर्तन ।
स्नेहकेसरिन् (पु०) एरंड ।
स्नेहविजर्जित (वि०) जिसके शरीर में तेल मला गया हो ।
स्पन्द् (भ्वा० आ०) अकस्मात् फिर जान आ जाना, नाड़ी चलने लगना ।
स्पर्शानुकूल (वि०) छूने पर अच्छा लगने वाला ।
स्पर्शविलक्ष, —सार (वि०) छूने में [illegible] या [illegible] कर ।
स्पर्शगुण. [ष० त०] छूने का गुण (जैसे कि वायु का) ।
स्पष्टाक्षर (वि०) स्पष्टरूप से बोला गया ।
स्पृष्टपूर्व (वि०) जिसे पहले छू चुके हैं ।
स्पृष्टमात्र (वि०) जिसे केवल छूआ ही गया है ।
स्फीत (वि०) [स्फाय् + क्त, स्फीभाव] बढ़ा हुआ, फूला हुआ ।
स्फीतानन्द (वि०) अत्यन्त प्रसन्न, परम आनन्दित ।
स्फुट् (भ्वा० तुदा० पर०) 1. फूट पड़ना, फटना, टूटना 2 खिलना, फूलना 3. (रोग) शान्त होना ।
स्फुट (वि०) [स्फुट् + क] बहुमूल्य असाधारण ।
स्फुटनम् [स्फुट् + ल्युट्] फूलना, बढ़ना, विस्तृत होना ।

स्फूर्ति (स्त्री०) [स्फुर्+क्तिन्] आत्मश्लाघा करना, डींग मारना, शेखी बघारना।
स्मरोद्दीपन (वि०) कामोद्दीपक, प्रेम का जगाने वाला।
स्मरकथा प्रणयालाप, प्रेमालाप।
स्मरशास्त्रम् कामशास्त्र।
स्मार्तविधि, प्रयोगः स्मृतियों में विहित प्रक्रिया।
स्मयदानम् दिखावटी दान।
स्मयमुषित. गर्व चूर करना।
स्मयमान (वि०) जो आश्चर्य करता है।
स्मृ (भ्वा० पर०) शिक्षा देना।
स्मृतम् [स्मृ+क्त] स्मरण, याद।
स्मृतमात्र (वि०) जिसको केवल स्मरण ही किया हो ज्योंही सोचा त्योंही।
स्मृतिशास्त्रम् विधिग्रन्थ।
स्मृतिविनयः अपने कर्तव्य का ध्यान दिलाने के लिए अभिप्रेत डांट फटकार।
स्यन्द. [स्यन्द्+घञ्] 1 बूंद-बूंद टपकना, पसीना 2 आँख का रोग विशेष 3 चन्द्रमा।
स्रंस् (भ्वा० आ०) नष्ट होना ठहरना।
स्रस्तहस्त (वि०) जिसने पकड़ ढीली कर दी हो।
स्रवन्मध्यः मूल्यवान् रत्न जिसके बीच से पानी झरता दिखाई देता है।
स्रुग्जिह्वः अग्नि, आग।
स्रोतस् (नपु०) 1 शरीर के रंध्र (जो पुरुषों में ९ तथा स्त्रियों में ११ होते हैं) 2 वंश परम्परा।
स्वार्जित (वि०) अपना कमाया हुआ।
स्वानन्दः अपने, आप में आनन्द।
स्वकर्मस्थ (वि०) अपने कर्म में लीन, अपने काम में व्यस्त।
स्वकृतम् अपना किया हुआ कार्य।
स्वगोचर (वि०) अपने कार्य तक ही सीमित।
स्वजीव आत्मा।
स्वमनीषा अपना मत या विचार।
स्वयुति आधाररेखा जो कर्ण तथा लम्ब रेखा के सिरों को मिलाती है।
स्वतन्त्रता 1 स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता 2. मौलिकता।
स्वप्नान्तिकम् स्वप्नकालिक चेतना।
स्वप्नज (वि०) नींद में उत्पन्न।
स्वयमधिगत (वि०) 1 खुद प्राप्त किया हुआ 2 स्वयं पढ़ा हुआ।
स्वयमीश्वरः वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो, परमेश्वर।
स्वयमुद्यत (वि०) स्वेच्छा से तैयार।
स्वर्लंघनम् स्वर्ग को लांघकर बैकुण्ठ पहुँचना।
स्वर्भानु सूर्य।
स्वर्यानम् मृत्यु।
स्वर्योषित् अप्सरा।
स्वराङ्कः एक प्रकार की संगीत रचना।
स्वरोपघातः स्वरभंग।
स्वरकम्पः स्वर का हिलना।
स्वरच्छिद्रम् बाँसुरी का स्वरवाला छेद।
स्वरब्रह्मन् नादब्रह्म,
स्वरविभक्तिः स्वरों का पृथक्करण।
स्वरशास्त्रम् ध्वनिविज्ञान, स्वरविज्ञान।
स्वरित (वि०) [स्वर+इतच्] 1 युक्त, मिश्रित 2 उच्चरित, ध्वनित 3 उदात्त अनुदात्त के बीच का स्वर, मध्यमस्वर।
स्वर्गगति—गमनम् मृत्यु, स्वर्ग चले जाना।
स्वर्गमार्ग 1 स्वर्ग जाने का मार्ग 2 स्वर्गंगा।
स्वर्णरेतस् (पु०) सूर्य।
स्वल्पाङ्गुलि कनिष्ठिका, छोटी अंगुलि।
स्वल्पदृश् (वि०) अदूरदर्शी
स्वल्पस्मृति (वि०) जिसे बहुत कम याद रहे।
स्वस्तिकर्मन् (नपु०) कल्याण करना।
स्वस्तिकार स्वस्ति का उच्चारण करने वाला बंदी, चारण।
स्वस्तिक स्वस्तिपाठ करने वाला चारण।
स्वागतप्रश्न मिलने पर स्वास्थ्यादि के संबंध में पूछना कुशल क्षेम की पृच्छा।
स्वादः (काव्य के श्रवण या पठन से) रसानुभव।
स्वादुपिण्डा पिंडखजूर।
स्वादुलुङ्गी मीठा नींबू।
स्वापव्यसनम् निद्रालुता।
स्वामिन् (पु०) 1 यज्ञ का यजमान 2 मन्दिर में स्थापित देवमूर्ति।
स्वास्थ्यम् (शरीर और आत्मा की) स्वस्थ स्थिति।
स्वायत्त (वि०) जो अपने ही अधीन हो अपने ही अधिकार में हो।
स्विदित (वि०) 1 जिसे पसीना निकल आया हो, पसीने से तर 2 पिघला हुआ पसीजा हुआ।
स्विष्ट (वि०) वाञ्छित, प्रिय, सुपूजित।
स्वेदनयन्त्रम् जिससे बफारा दिया जाय, पसीना लाने वाला यंत्र।
स्वैरकथा अबाधित वार्तालाप।
स्वैरविहारिन् इच्छानुसार भ्रमण करने वाला।
स्वैरिणी चमगादड़।

हंसः [हस्+अच्, पृषो० वर्णागमः] 1. घोड़ा 2. उत्तम, श्रेष्ठ (जब समासान्त में प्रयुक्त हो] 3. चांदी 4. बड़ी बड़ी झीलों में रहने वाला एक जलपक्षी 5. आत्मा, जीवात्मा। सम०—अभिख्यम् एक प्रकार की पुष्टिदायक मदिरा, —[illegible] सोंठ,—द्वारम् मानस झील के पास की एक घाटी - हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम्—मेघ०,—संदेशः वेदान्तदेशिक द्वारा रचित एक गीतिकाव्य।

हक्काहूतकः चुनौती, ललकार।

हट्टः [हट्+ट, टस्य नेत्वम्] मंडी, बाजार, मेला। सम० अध्यक्षः मंडी का अधीक्षक, -वाहिनी बाजार में बनी हुई पानी निकलने की नाली, विलासिनी बाजार की गली।

हठपर्णी 1. घोघा 2. शैवाल।

हत्यावादिन् (पु०) जो हिंसा का प्रचार करता है।

हद् (अदा० पर०) दूर करना, नष्ट करना।

हत (वि०) [हन्+क्त] 1. पीड़ित, घायल 2 बलात्कार किया हुआ, भ्रष्ट किया हुआ 3 सदोष 4. आपद्ग्रस्त, विपद्ग्रस्त। सम०—उत्तर (वि०) निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके,—किल्बिष (वि०) जिसके पाप नष्ट हो गये हों. —त्रप (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म, —शिष्ट (वि०) जिसमें शिष्टता न हो, बेढंगा।

हनुभेदः 1. जबड़े का खुलना 2. एक प्रकार का वहम

हनुस्वनः जबड़े से निकलनेवाला स्वर।

हनुमज्जयन्ती चैत्रशुक्ला पूर्णा जो हनुमान् जी का जन्म-दिवस है।

हयः [हय्+अच्] 1. धनुराशि 2. घोड़ा। सम० —अङ्कुः धनुराशि,—आननः,—शाला घुड़साल, अस्तबल अश्वशाला,—[illegible] अस्तबल, —ग्रीवः- मुखः वदनः 1. विष्णु का एक रूप 2 एक राक्षस का नाम।

हर्षिः (पु०) [हृष्+इन्] कामना, इच्छा, अभिलाषा।

हरः [हृ+अच्] 1. शिव 2 अग्नि 3. गधा 4. भाजक 5. पकड़ना, लेना। सम०—अद्रिः कैलास पर्वत, —वल्लभः धतूरे का फल,—सखः कुबेर।

हरिः [हृ+इन्] 1. विष्णु 2. इन्द्र 3. सूर्य 4. अग्नि 4. वायु 6. सिंह 7. घोड़ा 8. बन्दर 9. कोयल 10. सांप 11. मोर 12. सिंह राशि। सम०—चाप इन्द्रधनुष,—बीजम् हरताल, मेध (पु०) विष्णु।

हरिणलाञ्छनः चन्द्रमा।

हरित्पतिः दिशा का स्वामी।

हरितपिङ्गल (वि०) पीलापन लिये हुए भूरा।

हरितोपलः मरकतमणि।

हरितालकः हरिताल पक्षी, एक प्रकार का कबूतर।

हर्मुटः 1. सूर्य 2. कछुआ।

हर्म्यतलम्,—पृष्ठम्,—ऊपरी चौबारा, मकान की ऊपर की मंजिल।

हर्षः [हृष्+घञ्] 1. कामेन्द्रिय की उत्तेजना 2. प्रबल इच्छा 3 प्रसन्नता। सम० —जम् वीर्य,—संफुटः एक प्रकार का रतिबन्ध,—स्वनः आनन्द ध्वनि।

हलम् [हल्+क] 1. हल 2. कुरूपता 3. बाधा 4. झगड़ा। सम०—भूतिः (स्त्री०) हल का वह भाग जिसके भाग में फाली लगी होती है,—दण्डः हलस, हल की लम्बी लकड़ी जिसमें जूआ लगाते हैं,—रेखा: जुताई से बनी लकीर, कूड़, मुखम् फाल।

हविष्मती कामधेनु का विशेषण।

हलन्ती 1. दीमक 2. एक प्रकार की परी।

हस्तः [हस्+तन्] 1. हाथ 2. हाथी का सूंड 3. हस्त नक्षत्र 4 भुजा। सम०—च्युतः (वि०) जो हाथ से निकला हो,—दोषम् (अ०) हाथों में,—वाम (वि०) बाईं ओर स्थित, विन्यासः हाथों की स्थिति —स्वस्तिक हाथों को स्वस्तिक की शक्ल में रखना।

हस्तप्रजीवः पीलवान, हस्तिव्यवसायी।

हस्तिनासा हाथी की सूंड।

हस्तिमुखः—वक्त्रः - वदनः गणेश।

हुंकारः विस्मयादिद्योतक 'हूं' ध्वनि।

हात (वि०) [हा+क्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

हानम् [हा+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्यागना 2. हानि, विफलता 3. अभाव, कमी 4. पराक्रम, बल 5. विश्रान्ति, विराम, अवसान।

हारकुक्षिका मिट्टी का बर्तन।

हारित (वि०) [हृ+णिच्+क्त] 1. खोया गया, चुराया हुआ 2. मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ।

हारिद्र. एक वानस्पतिक विष।

हार्य (वि०) [हृ+ण्यत्] 1. हटाये जाने योग्य 2. मनोहर, आकर्षक।

हालिकः खेत का स्वामी, बड़ा कृषक।

हिंसनीय (वि०) [हिंस्+अनीय] मार डाले जाने योग्य, हिंसा से पीड़ित किये जाने योग्य।

हिंसात्मकम् प्रहार, आक्रमणीय।

हिंसालु (वि०) बहुधा हानिकारक।

हिंस्रः [हिंस्+र] दूसरों के उत्पीड़न में आनन्द मानने वाला व्यक्ति।

हिक्किका, हिक्कितम्
हिक्का } हिचकी का रोग।

हिताशंसा 1 भला चाहना 2. अभिनन्दन, बधाई।

हितप्रवृत्त (वि०) भलाई में लगा हुआ ।

हितवादः मैत्रीपूर्ण परामर्श, सत्परामर्श, भलाई की बात ।

हिन्दुधर्म: (हिन्द (भारत) देश में रहने वालों का धर्म ।

हिमम् [हि+मक्] 1 पाला, कुहरा 2 ठंड 3 कमल 4 ताजा मक्खन 5 मोती 6 रात 7 चन्दन । सम० —अंशुः कपूर, —ऋतुः जाड़े का मौसम, —उपलम् ओला, —ज्योतिस् चन्द्रमा, —झटि धुंध, कोहरा, —शर्करा एक प्रकार की खाँड ।

हिरण्यकर्तृ,—कारः स्वर्णकार, सुनार ।

हिरण्यवर्चस् (वि०) सुनहरी आभा से युक्त ।

हीन (वि०) [हा+क्त, तस्य नः ईत्वं च] 1 जो मुकदमा हार गया है 2. पथभ्रष्ट 3 परित्यक्त, मुरझाया हुआ 4 क्षीण । सम० —पक्ष (वि०) अरक्षित (पुं० दर्शनों की दृष्टि से कमजोर), —पत्र सामान्य गद्दी से उतारा हुआ अधीनस्थ राजा, —सन्धिः अधम राजा के साथ की गई सन्धि ।

हुतशेषम् यज्ञशेष हवन का बचा हुआ अंश ।

हुडुकः (पुं०) (स्त्री०) [हुड् + उक] डिण्डिम वादन ।

हृद् (नपुं०) [हृ+क्विप्, पृषो० तस्य दः] (इस शब्द के पहले पाँच रूप नहीं होते, शेष वचनों में यह विकल्प से 'हृदय' के स्थान में आदेश होता है) 1 मन, दिल 2. आत्मा 3 किसी भी वस्तु का मन 4 छाती । सम०—आमयः हृदय का रोग, —क्रोशन (वि०) दिल को तोड़ने वाला, —सारः साहस, हिम्मत, —स्तम्भः हृदय को लकवा मार जाना, —स्फोटः हृदय का विदीर्ण होना ।

हृदयम् [हृ+कयन्, दुकागम] 1 मन, दिल, आत्मा 2. छाती 3. प्रेम, अनुराग 3. दिव्य ज्ञान 4 वस्तु का सार 5 इच्छा, प्रयोजन । सम० —अवकृष्टः आह भरना, —संकोचनम् दिल का सिकुड़ना, —क्षोभः दिल की धड़कन, —ज्ञः पुत्र, —ज्ञ जो दिल की बात जानता है, —दौर्बल्यम् दिल की कमजोरी, —वैक्लव्यम् विषण्णता, अवसाद ।

हृद्य (वि०) [हृद्+यत्] स्वादिष्ट, रुचिकर ।

हृषित (वि०) [हृष्+क्त, वा० इट्] कुटिल, कुड़ा ।

हेतिः (पुं०) (स्त्री०) [हन्+क्तिन्, नि०] नया अंकुर ।

हेतुः [हि+तुन्] 1 प्रेरणार्थक क्रिया का अभिकर्ता —पा० १।४।५५ 2. प्राथमिक कारण (बुद्ध०) 3 ज्ञान प्रकार और उसके विषय (पाशुपत०) 4 मूल्य, कीमत —[illegible] हेतु —रा[illegible]० ५।३१ 5 कारण । सम० —अवधारणम् तर्क करना (नाटक), —उपमा तर्क युक्त उपमा अलंकार, तर्क सम्मत तुलना, —दृष्टि कारणों की परीक्षा, —रूपकम् एक प्रकार का रूपकालंकार, —विशेषोक्ति एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों का अन्तर तर्क देकर समझाया जाता है —काव्य० [illegible] ।

हेतूपनिषद् वेद के मूल पाठ का भाष्य जिसमें साथ प्रयोजन भी दिया गया है [illegible] ।

हेमन् (नपुं०) [हि+मनिन्] 1 स्वर्ण, सोना 2 जल 3 बर्फ 4 धतूरा 5 कमल का फूल 6. बुधग्रह 7 जाड़े की ऋतु । सम० —[illegible] [illegible], —गर्भ (वि०) जिसके अन्दर सोना हो, —चन्द्रः [illegible] (१०८८ ई०[illegible]), —व्याकरणम् हेमचन्द्र प्रणीत व्याकरण का एक ग्रन्थ ।

हैडिम्ब, हैडिम्बि [हिडिम्बा+अण्, इञ् वा] हिडिम्बा का पुत्र घटोत्कच ।

होतृकर्मन् यज्ञ में होता का कार्य ।

होतृवरणः होता का वरण करना ।

होतृ(षु)षदनम् होता का आसन ।

होलाकाधिकरणन्यायः मीमांसा का एक नियम । इसके अनुसार यदि स्मृति या कल्पसूत्र की कोई उक्ति श्रुति द्वारा समर्थन नहीं प्राप्त कर सकी, तो उसके समर्थन में वेद का कोई अन्य सामान्य वच, अनुमान के आधार पर ढूँढ़ना चाहिए —मी० सू० १।३।१५ [illegible] ।

ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+वन्] जो महत्त्वपूर्ण न हो, अनावश्यक, नगण्य ।

ह्रादः [ह्राद्+घञ्] 1 ध्वनि, आवाज 2. हर्ष प्रसन्नता, अभाव कमी 3 छाती धड़कना ।

ह्रीका [ह्री+कन्] 1 लज्जा 2. भय, —कः (पुं०) 1 बिल्ली 2. नकुला ।

ह्रीपदम् लज्जा का कारण ।